# ΜΕΓΑΛΗ ΕΛΛΗΝΙΚΗ ΕΓΚΥΚΛΟΠΑΙΔΕΙΑ

ΤΟΜΟΣ
ΔΕΚΑΤΟΣ ΕΒΔΟΜΟΣ

ΜΕΣΟΠΟΤΑΜΙΑ – ΜΩΨ

"ΠΥΡΣΟΣ" ΑΝΩΝΥΜΟΣ ΕΤΑΙΡΕΙΑ
ΕΚΔΟΣΕΩΝ & ΓΡΑΦΙΚΩΝ ΤΕΧΝΩΝ
ΙΕΡΑ ΟΔΟΣ 61 ΑΘΗΝΑΙ

Digitized by Google

COPYRIGHT 1931 BY "PYRSOS" Co Ltd ATHENS
PRINTED IN GREECE

Digitized by Google

# ΕΙΣ ΤΟΝ ΙΖ΄ ΤΟΜΟΝ ΕΠΡΑΓΜΑΤΕΥΘΗΣΑΝ ΘΕΜΑΤΑ ΟΙ Κ. Κ.:

| | |
|---|---|
| **'Αδαμαντίου 'Αδαμάντ.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ιστορίας τῆς Βυζαντινῆς Τέχνης ἐν τῷ 'Εθνικῷ Πανεπιστημίῳ | 'Αδ. 'Αδ. |
| **Αἰμιλιανίδης 'Αχ. Κ.**<br>Δικηγόρος | 'Αχ.Κ.Α. |
| **'Αναγνωστόπουλος Γ.Π.**<br>Καθηγητὴς τῆς Γλωσσολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Γ. Π. Α. |
| **'Αναγνώστου Ι. Λ.**<br>'Επιμελητὴς τοῦ 'Εργαστηρίου Παθολογικῆς Φυσιολογίας τοῦ Πανεπιστημίου 'Αθηνῶν | Ι. Λ. Α. |
| **'Ανδρεάδης Θ. Ι.**<br>Πρωτοδίκης | Θ. Ι. Α. |
| **'Ανδριώτης Ν. Π.**<br>Συντάκτης τοῦ 'Ιστορικοῦ Λεξικοῦ τῆς 'Ελληνικῆς Γλώσσης | Ν. Π. Α. |
| **'Αποστολίδης Η. Ν.**<br>Δημοσιογράφος | Η. Ν. Α. |
| **'Αρβανιτάκης Γ. Λ.**<br>Αἰγυπτιολόγος. Διευθυντὴς τῆς Βιβλιοθήκης τοῦ 'Υπουργείου τῶν 'Εξωτερικῶν | Γ. Λ. Α. |
| **Αὐγουστῖνος 'Ι.**<br>Πολιτικὸς Μηχανικὸς | Ι. Α. |
| **'Αφεντάκης Δ. Ν.**<br>Τμηματάρχης τῆς 'Αγροτικῆς Τραπέζης | Δ. Ν. Α. |
| **Βαλάκης Π. Α.**<br>Δρ.Φιλολογίας. Γυμνασιάρχης | Π. Α. Β. |
| **Βάλσας Μ.**<br>Κριτικὸς | Μ. Βς. |
| **Βαρούχα - Χ. Εἰρήνη**<br>'Αρχαιολόγος. 'Επιμελήτρια Νομισματικοῦ Μουσείου | Ε. Β-Χ. |
| **Βατάλας Μάνος Δ.**<br>Δημόσιογράφος | Μ. Δ. Β. |
| **Βαφειάδης Τ.**<br>Φιλόλογος | Τ. Β. |
| **Βελλιανίτης Θ.**<br>Λογογράφος. Πρώην ὑπουργὸς | Θ. Β. |
| **Βέρας Σόλ.**<br>Παιδίατρος | Σ. Β. |
| **Βλησίδης Θρασ.**<br>Βιολόγος. τ. Καθηγητὴς τοῦ Πανεπιστημίου Θεσσαλονίκης | Θ. Βλ. |
| **Βογιαντζῆς Γ. Ι.**<br>Δημοσιογράφος | Γ. Ι. Β. |
| **Βορεάδης Γ.**<br>Γεωλόγος | Γ. Β. |
| **Βρέκοσις 'Αρ. Α.**<br>Δικηγόρος | Α. Α. Β. |
| **Γαβριηλίδης Α.**<br>'Οφθαλμολόγος. Διευθυντὴς τοῦ 'Οφθαλμολογικοῦ Τμήματος τοῦ «Εὐαγγελισμοῦ» | Α. Γ. |
| **Γαλανὸς Σ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Χημείας τῶν 'Εδωδίμων ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Σ. Γ. |
| **Γεδεὼν Μ. Ι.**<br>Μέγας Χαρτοφύλαξ τῆς Μεγάλης τοῦ Χριστοῦ 'Εκκλησίας. 'Ακαδημαϊκὸς | Μ. Ι. Γ. |
| **Γενεράλις 'Εμμ.**<br>Γυμνασιάρχης | Ε. Γ. |
| **Γερογιάννης Κ. Δ.**<br>'Αρχαιολόγος | Κ. Δ. Γ. |
| **Γεωργαλᾶς Γ. Κ.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ανωτ. Γεωπονικῆς Σχολῆς. Διευθυντὴς τῆς Γεωλογικῆς 'Υπηρεσίας τῆς 'Ελλάδος | Γ. Κ. Γ. |
| **Γεωργαντᾶς Φ. Δ.**<br>'Εκπαιδευτικὸς | Φ. Δ. Γ. |
| **Γεωργιάδης Δ. Θ.**<br>Δρ.Νομικῆς. Οἰκονομολόγος | Δ. Θ. Γ. |
| **Γεωργούλης 'Ηρ. Π.**<br>Δρ 'Εμπορικῶν Σπουδῶν | Η. Π. Γ. |
| **Γιακοὲλ Γ. Γ.**<br>Δικηγόρος | Γ. Γ. Γ. |
| **Γιαννουκάκης Δ. Μ.**<br>Καπνοβιομήχανος. Συγγραφεὺς | Δ. Μ. Γ. |
| **Γυπαράκης Ν. Ε.**<br>Μαθηματικὸς | Ν. Ε. Γ. |
| **Δαλέζιος Α. Γ.**<br>Δρ. Φιλοσοφίας | Α. Δ. |
| **Δαραλέξης Χρ.**<br>Θεατρικὸς Συγγραφεὺς | Τ. Δ. |
| **Δασκαλάκης Χ. Ε.**<br>Νομικὸς | Χ. Δ. |
| **Δελιαλῆς Ν. Π.**<br>Βιβλιοχαρτοπώλης | Ν. Π. Δ. |
| **Δεντρινοῦ Εἰρ. Α.**<br>Λογία | Ε. Α. Δ. |
| **Δεστούνης Γ. Κ.**<br>'Ιατρός | Γ. Κ. Δ. |
| **Δημαρᾶ Π. Ι.**<br>Ζωγράφος | Π. Ι. Δ. |
| **Δημαρᾶς Κ. Θ.**<br>Συγγραφεὺς | Κ. Θ. Δ. |
| **Δημάρατος Β. Ι.**<br>Δ. Φ. Καθηγητής | Β. Ι. Δ. |
| **Δημάρατος Ι. Φ.**<br>Δημοσιογράφος | Ι. Φ. Δ. |
| **Δημητριάδης Δ. Α.**<br>Γραμματεὺς τοῦ Πανεπιστημίου 'Αθηνῶν | Δ. Α. Δ. |
| **Διγενὴς Κίμων**<br>'Υποστράτηγος | Κ. Δ. |
| **Δομαζάκις Μ. Γ.**<br>Νομικὸς | Μ. Γ. Δ. |
| **Δούσμανης Βίκτωρ**<br>'Αντιστράτηγος | Β. Δ. |
| **Δραβίλλας Γ. Θ.**<br>Πλωτάρχης - Οἰκονομικὸς | Γ. Θ. Δ. |
| **Δρακουλίδης Ν. Ν.**<br>'Ιατρὸς-Δερματολόγος | Ν. Ν. Δ. |
| **Δρανδάκη Μ. Χ.**<br>Διδασκάλισσα | Μ. Δρ. |
| **Δυοβουνιώτης Κ. Ι.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ιστορίας τῶν Δογμάτων καὶ τῆς Συμβολικῆς ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν. 'Ακαδημαϊκὸς | Κ. Ι. Δ. |
| **† 'Ελιγιᾶ Γιωσὲφ**<br>Λογογράφος. 'Εβραιολόγος | † Γ. Ε. |
| **'Ελλ. Φιλοτελ. 'Εταιρία** | «ΕΦΕ» |
| **Εὐαγγελᾶτος Χ. Γ.**<br>Δήμαρχος Μεσολογγίου. Γενικὸς Γραμματεὺς τῆς «'Ενώσεως τῶν Δήμων καὶ τῶν Κοινοτήτων τῆς 'Ελλάδος» | Χ. Γ. Ε. |
| **Εὐαγγελίδης Ε. Τ.**<br>Φυτοπαθολόγος | Ε. Τ. Ε. |
| **Εὐαγγελίδης Τρ. Ε.**<br>'Ιστοριοδίφης | Τ. Ε. Ε. |
| **Ζακυθηνὸς Δ. Α.**<br>Φιλόλογος | Δ. Α. Ζ. |
| **Ζάρρας Ι. Λ.**<br>Τμηματάρχης 'Υπουργείου 'Εθνικῆς Οἰκονομίας | Ι. Λ. Ζ. |
| **Ζαφειρίου Ν. Ι.**<br>Γυμνασιάρχης | Ν. Ι. Ζ. |
| **Ζέγγελης Κ. Δ.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ανοργάνου καὶ Φυσικῆς Χημείας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν. 'Ακαδημαϊκος | Κ. Δ. Ζ |
| **Ζευγώλης Γ. Π.**<br>Δημοσιογράφος | Γ. Ζ. |
| **Ζῆς Π. Α.**<br>Βοηθὸς τῆς Νευρολογικῆς Κλινικῆς τοῦ Πανεπιστημίου 'Αθηνῶν | Τ. Α. Ζ. |
| **Ζώης Λ. Χ.**<br>'Ιστοριοδίφης | Λ. Χ. Ζ. |
| **Θεοδωρόπουλος Μ. Ι.**<br>Δικηγόρος | Μ. Ι. Θ. |
| **Θεοφανείδης Β. Δ.**<br>'Επιμελητὴς 'Εθνικοῦ 'Αρχαιολογικοῦ Μουσείου | Β. Δ. Θ. |
| **Θηβαιόπουλος 'Αρ. Ε.**<br>Καθηγητὴς | Α. Ε. Θ. |
| **'Ιορδανίδης Ι. Ι.**<br>Παιδαγωγὸς | Ι. Ι. Ι. |
| **'Ιωάννου Ε. (Τέλλος "Αγρας)**<br>Λογοτέχνης | Τ. Α. |
| **'Ιωάννου Π. Α.**<br>Θεολόγος | Π. Α. Ι. |
| **Καζᾶκος 'Αθαν. Α.**<br>Πολιτικὸς Μηχανικὸς | Α. Α. Κ. |
| **Καΐρης Μ. Ν.**<br>Γυναικολόγος-Μαιευτὴρ | Μ. Ν. Κ. |
| **Καιροφύλας Κ.**<br>'Ιστοριοδίφης | Κ. Κ. |
| **Κακριδῆς Γ. Θ.**<br>Μηχανολόγος-'Ηλεκτρολόγος | Γ. Θ. Κ. |
| **† Κακριδῆς Θεοφ. Ι.**<br>Καθηγητὴς τῆς Λατινικῆς Φιλολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | † Θ.Ι.Κ. |
| **Κακριδῆς Ι. Θ.**<br>'Υφηγητὴς τοῦ Πανεπιστημίου Θεσσαλονίκης | Ι. Θ. Κ. |
| **Καλαΐτζῆς Ι. Κ.**<br>Χειρουργὸς | Ι. Κ. Κ. |
| **Καλιτσουνάκις Ι. Ε.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Αρχαίας 'Ελληνικῆς Φιλολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν. 'Ακαδημαϊκὸς | Ι. Ε. Κ. |
| **Καλογερῖκος Π. Α.**<br>Καθηγητὴς τῆς Δραματικῆς Σχολῆς τοῦ 'Εθν. Θεάτρου | Π. Α. Κ. |
| **Καλομενόπουλος Νικ.**<br>'Υποστράτηγος | Ν. Κλς |
| **Καμίνης Ι. Σ.**<br>'Ιατρὸς | Ι. Σ. Κ. |
| **Καμπάνης "Αρ.**<br>Δημοσιογράφος | "Αρ. Κ. |
| **Καμπούρογλου Δ. Γ.**<br>'Ιστοριοδίφης. 'Ακαδημαϊκὸς | Δ. Γ. Κ. |
| **Κανατσούλης Α. Κ.**<br>'Ιατρὸς Καρδιολόγος. Διευθυντὴς τοῦ Καρδιολογικοῦ Τμήματος ΣΤ΄ Στρατιωτικοῦ Νοσοκομείου 'Αθηνῶν | Α. Κ. Κ. |
| **Κανδηλῶρος Τ. Χ.**<br>'Ιστοριοδίφης | Τ. Χ. Κ. |
| **Καράκαλος Τηλ. Ι.**<br>Συνταγματάρχης Πυροβολικοῦ. Πρώην καθηγητὴς τῆς Στρατιωτικῆς Σχολῆς τῶν Εὐελπίδων. Συγγραφεὺς | Τ. Ι. Κ. |
| **Καραμᾶνος Κυρ. Μ.**<br>Φιλόλογος | Κ. Μ. Κ. |
| **Καραμπάτης Δημ.**<br>'Αθλητὴς | Δ. Καρ. |
| **Καράντζας Γ. Α.**<br>Δημοσιογράφος | Γ. Α. Κ. |
| **Κατινάκης Μ. Μ.**<br>Δικηγόρος | Μ. Μ. Κ. |
| **Καψάλης Γερ. Δ.**<br>Πρόεδρος τοῦ 'Εκπαιδευτικοῦ Συμβουλίου τῆς Μέσης 'Εκπαιδεύσεως | Καψ. |
| **Κεραμιδᾶς Τ.**<br>Καθηγητὴς ἐν τῇ 'Ανωτάτῃ Σχολῇ Οἰκονομικῶν καὶ 'Εμπορικῶν 'Επιστημῶν | Τ. Κ. |
| **Κερεστετζῆς Κ. Ι.**<br>'Ιατρὸς - Μικροβιολόγος | Κ. Ι. Κ. |
| **Κλαδᾶς Λυκ. Ν.**<br>'Ηλεκτρολόγος-Μηχανολόγος | Λ. Ν. Κ. |
| **Κλαδᾶς Ν. Θ.**<br>'Υποστράτηγος | Ν. Θ. Κ. |
| **Κοκίδης Ν. 'Ιφ.**<br>'Υποστράτηγος | Ν. Ι. Κ. |
| **Κονταργύρης Α.**<br>'Υφηγητὴς τῆς 'Ορθοπεδικῆς ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Α. Κ. |
| **Κοντογιάννης Κ. Χ.**<br>Πλωτάρχης Π. Ν. | Κ. Χ. Κ. |
| **Κορδᾶτος Γ. Κ.**<br>Κοινωνιολόγος - 'Ιστοριοδίφης. Συγγραφεὺς | Γ.Κ.Κορ |
| **Κορομηλᾶς Γ. Δ.**<br>Δημοσιογράφος | Γ. Δ. Κ. |
| **Κοσμετᾶτος Γ. Φ.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Οφθαλμολογίας, 'Ιστολογίας καὶ 'Εμβρυολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν. 'Ακαδημαϊκὸς | Γ. Φ. Κ. |
| **Κούζης 'Αριστ. Π.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ιστορίας τῆς 'Ιατρικῆς ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | 'Αρ.Π.Κ. |
| **Κούμαρης Ι. Γ.**<br>Καθηγητὴς τῆς 'Ανθρωπολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Ι. Γ. Κ. |
| **Κοφινᾶς Γ. Ν.**<br>Οἰκονομολόγος. Πρώην ὑπουργὸς | Γ. Ν. Κ. |
| **Κοφινιώτης Α. Ε.**<br>Δασολόγος. Διευθυντὴς τῆς Σχολῆς Μετεκπαιδεύσεως Δασικῶν 'Υπαλλήλων | Α. Ε. Κ. |
| **Κυριαζόπουλος Κ. Κ.**<br>'Ιατρὸς-Δερματολόγος | Κ. Κ. Κ. |
| **Κυριάκης Γ. Ε.**<br>Δικηγόρος | Γ. Ε. Κ. |
| **Κυριακίδης Στίλπων Π.**<br>Καθηγητὴς τοῦ Πανεπιστημίου Θεσσαλονίκης | Σ. Π. Κ. |
| **Κυριακόπουλος 'Ηλ. Γ.**<br>Καθηγητὴς τοῦ Συνταγματικοῦ Δικαίου ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Θεσσαλονίκης | Η. Γ. Κ. |
| **Κὼν Ι.**<br>'Επιθεωρητὴς 'Ισραηλιτικῶν Σχολῶν | Ι. Κν |
| **Κωνσταντινίδης Θ. Α.**<br>Δικηγόρος | Θ. Κ. |
| **Κωστίδης Σ.**<br>'Αρχιτεχνίτης | Σ. Κς |
| **Κωστόπουλος Χ. Ν.**<br>Δικηγόρος | Χ. Ν. Κ. |
| **Λαμέρας Κ.**<br>'Ιατρὸς | Κ. Λς |
| **Λαμπίκης Δ. Α.**<br>Δημοσιογράφος | Δ. Α. Λ. |
| **Λαμπρίδη "Ελλη**<br>Δρ τῆς Φιλοσοφίας | Ε. Λ. |
| **Λάσκαρης Ν. Ι.**<br>Θεατρικὸς Συγγραφεύς. 'Ιστορικὸς τοῦ Θεάτρου | Ν. Ι. Λ. |
| **Λαυράγκας Διον.**<br>Μουσικοσυνθέτης | Δ. Λ. |
| **Λεβίδης Ν. Δ.**<br>Πολιτευτής. τ. 'Υπουργός | Ν. Δ. Λ. |
| **Λοβέρδος 'Αλ.**<br>Νομικὸς - Τραπεζικὸς | 'Αλ. Λ. |
| **Λοβέρδος Γ. Ε.**<br>'Ιατρὸς Νευρολόγος | Γ. Ε. Λ. |
| **Λούβαρις Ν. Ι.**<br>Καθηγητὴς τῆς Εἰσαγωγῆς καὶ 'Ερμηνείας τῆς Καινῆς Διαθήκης ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Ν. Λ. |
| **Λουκᾶτος Π.**<br>Δημοσιογράφος | Π. Λ. |
| **Λοῦρος Κ. Ν.**<br>Καθηγητὴς τῆς Μαιευτικῆς Κλινικῆς ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Κ. Ν. Λ. |
| **Λυκούδης Στ. 'Εμμ.**<br>Πλοίαρχος Π. Ν. Διευθυντὴς τῶν Φάρων. Καθηγητὴς παρὰ τῇ Ν. Σ. Δοκίμων. 'Ακαδημαϊκὸς | Σ. Ε. Λ. |
| **Μαγγιῶρος Ν. Ι.**<br>'Αντισυνταγματάρχης 'Επιμελητείας | Ν. Ι. Μ. |
| **Μαγκάκης Μ.**<br>Λαρυγγο - ωτολόγος | Μ. Μ. |
| **Μακρῆς Κ. Γ.**<br>τ. 'Επιμελητὴς τοῦ 'Εργαστηρίου τῆς Φαρμακευτικῆς Χημείας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν | Κ. Γ. Μ. |
| **Μαλτέζος Κ. Χ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Φυσ. Μηχανικῆς καὶ Θεωρ. Φυσικῆς ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ 'Αθηνῶν. 'Ακαδημαϊκὸς | Κ. Χ. Μ. |

Digitized by Google

| | |
|---|---|
| **Μανωλάκος Γ. Δ.**<br>Γυμνασιάρχης | Γ. Δ. Μ. |
| **Μαργέτης Δ.**<br>Γεωπόνος. π. βουλευτής | Δ. Μ. |
| **Μαρινᾶτος Σπ.**<br>Ἔφορος Ἀρχαιοτήτων | Σπ. Μ. |
| **Μάρκου Α. Ι.**<br>Μελισσοκόμος | Α. Ι. Μ. |
| **Μαυρῆς Ν. Γ.**<br>Ἰατρὸς | Ν. Γ. Μ. |
| **Μενεγάκις Ι. Ν.**<br>Ἐπιμελητὴς τοῦ Φυσιολογείου τοῦ Πανεπιστημίου Ἀθηνῶν | Ι. Ν. Μ. |
| **Μητσόπουλος Π.**<br>Τμηματάρχης Ὑπουργείου Ἐθν. Οἰκονομίας | Π. Μ. |
| **Μίνδλερ Μ. Ι.**<br>Δικηγόρος | Μ. Ι.Μ. |
| **Μιχαηλίδης Μ. Γ.**<br>Γυμνασιάρχης | Μ. Γ. Μ. |
| **Μιχαηλίδης Ν. Α.**<br>Ὑφηγητὴς τῆς Μικροβιολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν | Ν. Α. Μ. |
| **Μιχαλόπουλος Ἀλ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Θεωρητικῆς Μηχανολογίας ἐν τῷ Ἐθν. Μετσοβίῳ Πολυτεχνείῳ | Α. Μ. |
| **Μίχας Ἀθ. Π.**<br>Δημοσιογράφος | Ἀθ. Μ. |
| **Μοάτσος Ε. Θ.**<br>Δρ. Δικαίου | Ε. Θ. Μ. |
| **Μοσχόπουλος Νικηφ.**<br>Τμηματάρχης Ὑπουργείου Ἐξωτερικῶν | Ν. Μ. |
| **Μουρέλλος Ι. Δ.**<br>Διευθυντὴς Ἐφημ. «Ἐλευθέρα Σκέψις» Ἡρακλείου | Ι. Δ. Μ. |
| **Μουσοῦρος - Γκύκης Γ.**<br>Γεωπόνος | Γ. Μ. Γ. |
| **Μουστάκας Δ. Ε.**<br>Δρ. Φυσικῶν Ἐπιστημῶν | Δ. Ε. Μ. |
| **Μπαλᾶνος Δ. Σ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Πατρολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν. Ἀκαδημαϊκὸς | Δ. Σ. Μ. |
| **Μπαρμπαστάθης Γ.**<br>Τμηματάρχης Ὑπουργείου Παιδείας | Γ. Μπς |
| **Μπέκερ Π.**<br>Μουσικολόγος | Π. Μ. |
| **Μπεναρόγιας Α. Ε.**<br>Κοινωνιολόγος | Α. Μπεν. |
| **Μπίστη Μ. Σ.**<br>Δρ Φιλολογίας | Μ. Μπ. |
| **Μπρατσιώτης Παν. Ι.**<br>Καθηγητὴς τῆς Εἰσαγωγῆς καὶ Ἑρμηνείας τῆς Π. Διαθήκης τῶν Ο΄ ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν | Π. Ι. Μ. |
| **Μπρούμης Α. Π.**<br>Ἠλεκτρολόγος-Μηχανολόγος | Α. Π. Μ. |
| **Μυλωνόπουλος Σπ. Α.**<br>Δικηγόρος | Σ. Α. Μ. |
| **Μωραΐτης Δ. Ν.**<br>Δρ τῆς Θεολογίας | Δ. Ν. Μ. |
| **Νιελαβιτσκυ Ι.**<br>Ὑποπλοίαρχος τοῦ Α. Ρωσικοῦ Ναυτικοῦ | Ι. Ν. |
| **Νικοτσάρας Γ. Ν.**<br>Πλοίαρχος Π. Ναυτικοῦ | Γ. Ν. Ν. |
| **Νόμπελης Ζ.**<br>Λοχαγὸς Μηχανικοῦ | Ζ. Ν. |

| | |
|---|---|
| **Ξενόπουλος Σ.**<br>Καλλιτέχνης. Καθηγητὴς Σιβιτανιδείου Σχολῆς | Σ. Ξ. |
| **Ξυγγόπουλος Α.**<br>Ἔφορος Ἀρχαιοτήτων | Α. Ξ. |
| **Οἰκονομίδης Ι.**<br>Γραμματεὺς Ἐπαγγελματικῆς Σχολῆς Θεάτρου | Ι. Ο. |
| **Οἰκονόμου Α. Ι.**<br>Γυμνασιάρχης | Α. Ι. Ο. |
| **Οἰκονόμου - Μύλλερ Σ.**<br>Δρ Μαθηματικῶν | Σ. Μ.-Ο. |
| **Παλαιολόγος Κ.**<br>Ἐπιμελητὴς τοῦ Ἐργαστηρίου Φυσικῆς τοῦ Πανεπιστημίου Ἀθηνῶν | Κ. Π. |
| **Παναγιωτόπουλος Ι. Μ.**<br>Καθηγητὴς | Ι. Μ. Π. |
| **Παντελάκης Ε. Γ.**<br>Γυμνασιάρχης | Ε. Γ. Π. |
| **† Παντελεήμων**<br>ὁ Καρυστίας | †Κ. Π. |
| **Παπαγιαννόπουλος Δ. Ν.**<br>Καθηγητὴς τῶν Φυσικῶν Ἐπιστημῶν | Δ. Ν. Π. |
| **Παπαδημητρίου Δ. Φ.**<br>Ἀρχικτηνίατρος | Δ. Π. |
| **Παπαδόπουλος Ἄνθ. Α.**<br>Συντάκτης τοῦ Ἱστορικοῦ Λεξικοῦ τῆς Ἑλληνικῆς Γλώσσης | Α. Α. Π. |
| **Παπαθεοδώρου Ι.**<br>Ἀν. Γεν. Ἀρχίατρος | Ι. Π. |
| **Παπακωνσταντίνου Θ. Φ**<br>Φιλόλογος | Θ. Π. |
| **Παπακωνσταντίνου Κ. Ε.**<br>Δικηγόρος | Κ. Ε. Π. |
| **Παπαλεξάνδρου Κ. Θ.**<br>Δημοσιογράφος | Κ. Θ. Π. |
| **Παπαμῆτρος Δ. Φ.**<br>Δικηγόρος | Δ. Φ. Π. |
| **Παπαντωνίου Ζ.**<br>Λόγιος. Διευθυντὴς τῆς Ἐθνικῆς Πινακοθήκης | Ζ. Π. |
| **Παπαντωνόπουλος Ν. Γ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Ὀδοντοϊατρικῆς τοῦ Ὀδοντ. Σχολείου τοῦ Πανεπιστημίου Ἀθηνῶν | Ν. Γ. Π. |
| **Παπαπασχάλης Ν.**<br>Μηχανικὸς-Τοπογράφος | Ν. Παπ. |
| **Παπᾶς Π. Ν.**<br>Φιλόλογος | Π. Ν. Π. |
| **Παπουτσόπουλος Ι. Γ.**<br>Διευθυντὴς τοῦ Κεντρικοῦ Ἐδαφολογ. Ἐργαστηρίου | Ι. Γ. Π. |
| **Παρασκευόπουλος Ι.**<br>Διευθυντὴς τοῦ Ἀστεροσκοπείου Harvard. Καθηγητὴς τῆς Ἀστρονομίας τοῦ Πανεπιστημίου Harvard | Ι. ΠΑΡ. |
| **Πασχάλης Δ. Π.**<br>Ἱστοριοδίφης. τ. Νομάρχης. Ἀκαδημαϊκὸς | Δ. Π. Π. |
| **Παχυνάκης Δ. Κ.**<br>Τραπεζικὸς | Δ. Κ. Π |
| **Πλακίδης Σ. Μ.**<br>Ἔκτακτος Ἀστρονόμος ἐν τῷ Ἐθνικῷ Ἀστεροσκοπείῳ | Σ. Π. |
| **Πλάτων Ν. Ε.**<br>Φιλόλογος | Ν. Ε. Π. |
| **Πολίτης Λίνος Ν.**<br>Δρ Φιλολογίας. Ἐπιμελητὴς τοῦ Τμήματος τῶν Χειρογράφων τῆς Ἐθνικῆς Βιβλιοθήκης | Λ. Ν. Π. |

| | |
|---|---|
| **Πράτσικας Ἀνδρ.**<br>Ὑφηγητὴς τῆς Παθολογίας ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν. Ἰατρὸς τοῦ Νοσοκομείου Ἐρυθροῦ Σταυροῦ. | Α. Π. |
| **Ράλλης Κ. Μ.**<br>Καθηγητὴς τοῦ Ἐκκλησιαστικοῦ Δικαίου ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν. Ἀκαδημαϊκος | Κ. Μ. Ρ. |
| **Ραλλίδης Ὀδ.**<br>Χειρουργὸς - Γυναικολόγος. | Ο. Ρ. |
| **Σαμοθράκης Α. Θ.**<br>Ἰατρός. Ἱστοριοδίφης | Α. Θ. Σ. |
| **Σαντορίνης Π.**<br>Πολιτικὸς Μηχανικός. Διευθυντὴς κατασκευῶν Στερεᾶς Ἑλλάδος ὑπουρ. Γεωργίας | Π. Σ. |
| **Σαραντῆ Ε. Σ.**<br>Συγγραφεὺς | Ε. Σ. Σ. |
| **Σαρρῆς Ι. Σ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Γεωγραφίας | Ι. Σ. Σ. |
| **Σγουρίτσας Χ. Γ.**<br>Δικηγόρος | Χ. Γ. Σ. |
| **Σκαφίδας Β. Κ.**<br>Λόγιος | Β. Κ. Σ. |
| **Σκλάβος Γ.**<br>Μουσικοσυνθέτης | Γ. Σ. |
| **Σκλαβοῦνος Θ. Γ.**<br>Ὑφηγητὴς τοῦ Πανεπιστημίου τοῦ Μονάχου. Διευθυντὴς τοῦ Παθολογοανατομικοῦ Ἐργαστηρίου τοῦ Νοσοκομείου τοῦ «Ἑλληνικοῦ Ἐρυθροῦ Σταυροῦ» | Θ. Σ. |
| **Σούλης Χ. Ι.**<br>Καθηγητὴς | Χ. Ι. Σ. |
| **Σουλίδης Α. Κ.**<br>Καθηγητὴς τῶν Φυσικομαθηματικῶν | Α.Κ.Σ. |
| **Σοφιανόπουλος Α. Ι.**<br>Καθηγητὴς Δομησίμων Ὑλῶν ἐν τῷ Ἐθνικῷ Μετσοβίῳ Πολυτεχνείῳ | Α. Ι. Σ. |
| **Σπαταλᾶς Γ.**<br>Λόγιος | Γ. Σπ. |
| **Σπεράντσας Σ. Γ.**<br>Ἰατρὸς - Ἀκτινολόγος. Λόγιος | Σ. Γ. Σ. |
| **Σπηλιόπουλος Κ. Β.**<br>Ὑφηγητὴς τοῦ Ἐμπορικοῦ Δικαίου ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν | Κ. Β. Σ. |
| **Σπυρόπουλος Ν. Κ.**<br>Ὑποστράτηγος. Καθηγητὴς ἐν τῇ Στρ. Σχολῇ Εὐελπίδων. Ὑπαρχηγος τοῦ Γενικοῦ Ἐπιτελείου τοῦ Στρατοῦ | Ν. Σς |
| **Στάθης Σ.**<br>Γυμνασιάρχης | Σπ. Σ. |
| **Στασινόπουλος Μ. Δ.**<br>Εἰσηγητὴς Συμβουλίου Ἐπικρατείας | Μ. Δ. Σ. |
| **Στεριώτης Π. Θ.**<br>Διευθυντὴς τοῦ Καποδιστρείου Ἐκπαιδευτηρίου Κερκύρας | Π. Θ. Σ. |
| **Στριφτοῦ Αἰκ.**<br>Φιλόλογος. Βοηθὸς τοῦ Ἐργαστηρίου τῆς Πειραματικῆς Παιδαγωγικῆς τοῦ Πανεπιστημίου Ἀθηνῶν | Τ. Στρ. |
| **Συρμόπουλος Σ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Λογιστικῆς ἐν τῇ Ἀνωτάτη Σχολῇ Οἰκονομικῶν καὶ Ἐμπορικῶν Ἐπιστημῶν | Σ. Σ. |

| | |
|---|---|
| **Σωτηρόπουλος Ν. Κ.**<br>Ἰατρὸς | Ν. Κ. Σ. |
| **Τερζόπουλος Ι. Μ.**<br>Δικηγόρος | Ι. Τ. |
| **Τζώνης Κ. Α.**<br>Ἰατρὸς-Μικροβιολόγος | Κ. Α. Τ. |
| **Γζωρτζόπουλος Χ. Ν.**<br>Δικηγόρος. Ὑφηγητὴς τοῦ Ποινικοῦ Δικαίου ἐν τῷ Πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν | Χ. Ν. Τ. |
| **† Τιμόθεος Βενέρης**<br>Ἐπίσκοπος Ρεθύμνης καὶ Αὐλοποτάμου | †Ρ. Α. Τ. |
| **† Τιμόθεος Θέμελης**<br>Ἀρχιεπίσκοπος Ἰορδάνου | †Ι. Τ. |
| **Τορολόπουλος Ν. Π.**<br>Ἰατρὸς | Ν. Π. Τ. |
| **Τραχίλης Σ.**<br>Καθηγητὴς | Σ. Τ. |
| **Τρεμπέλας Π. Ν.**<br>Θεολόγος - Διευθυντὴς τοῦ Περιοδικοῦ «Ζωὴ» | Π. Ν. Τ. |
| **Τσαγρῆς Ι. Γ.**<br>Χημικὸς - Μηχανικὸς | Ι. Γ. Τ. |
| **† Τσιβιδῆς Α. Τ.**<br>Ἰατρὸς | †Α. Τ. Τ. |
| **Τσιμικάλης Α. Α.**<br>Δρ Οἰκονομικῶν Ἐπιστημῶν | Α. Α. Τ. |
| **Τσιμπίδης Σ.**<br>Λόγιος | Σ Τς |
| **Φάβης Β.**<br>Συντάκτης τοῦ Ἱστορικοῦ Λεξικοῦ τῆς Ἑλλ. Γλώσσης | Β. Φ. |
| **Φίλιππας Ἀγγ. Ν.**<br>Δρ τοῦ Δικαίου | Α. Ν. Φ. |
| **Φίλιππας Σπ. Ν.**<br>Δημοσιογράφος | Σ. Ν. Φ. |
| **† Φιλάρετος Βαφείδης**<br>Μητροπολίτης Ἡρακλείας. Ἱστορικὸς | †Η. Φ. Β. |
| **Φιντικλῆς Θεόκλ. Θ.**<br>Μετεωρολόγος | Θ. Θ. Φ. |
| **Φρυδᾶς Κ. Β.**<br>Βιομηχανολόγος | Κ. Β. Φ. |
| **Φωτεινὸς Ν. Γ.**<br>Δημοσιογράφος | Ν. Φ. |
| **Χαραλαμπίδης Ε. Ι.**<br>Λόγιος | Ε. Ι. Χ |
| **Χαριτάκης Θ.**<br>Μηχανικὸς | Θ. Χ. |
| **Χατζηνικολάου Π. Χ.**<br>Δημοσιογράφος | Π. Χ. |
| **Χατζηπέτρος Π. Π.**<br>Ἀντιπρόεδρος τῆς Θεοσοφικῆς Στοᾶς «Φῶς» | Π. Π. Χ. |
| **Χιοτέλις Α. Σ.**<br>Καθηγητὴς | Α. Σ Χ. |
| **Χόρς Σ.**<br>Καθηγητὴς τῆς Ἀναλυτικῆς Χημείας ἐν τῷ Ἐθνικῷ Μετσοβίῳ Πολυτεχνείῳ | Σ. Χ. |
| **† Χρυσόστομος**<br>Ἀρχιεπίσκοπος Ἀθηνῶν | † Χ. |
| **Χρυσοχοΐδης Ν. Α.**<br>Μουσικοδιδάσκαλος | Ν. Α Χ. |
| **Χυτήρης Σ. Α.**<br>Ἀντεισαγγελεὺς Πρωτοδικῶν | Σ. Α. Χ. |

Digitized by Google

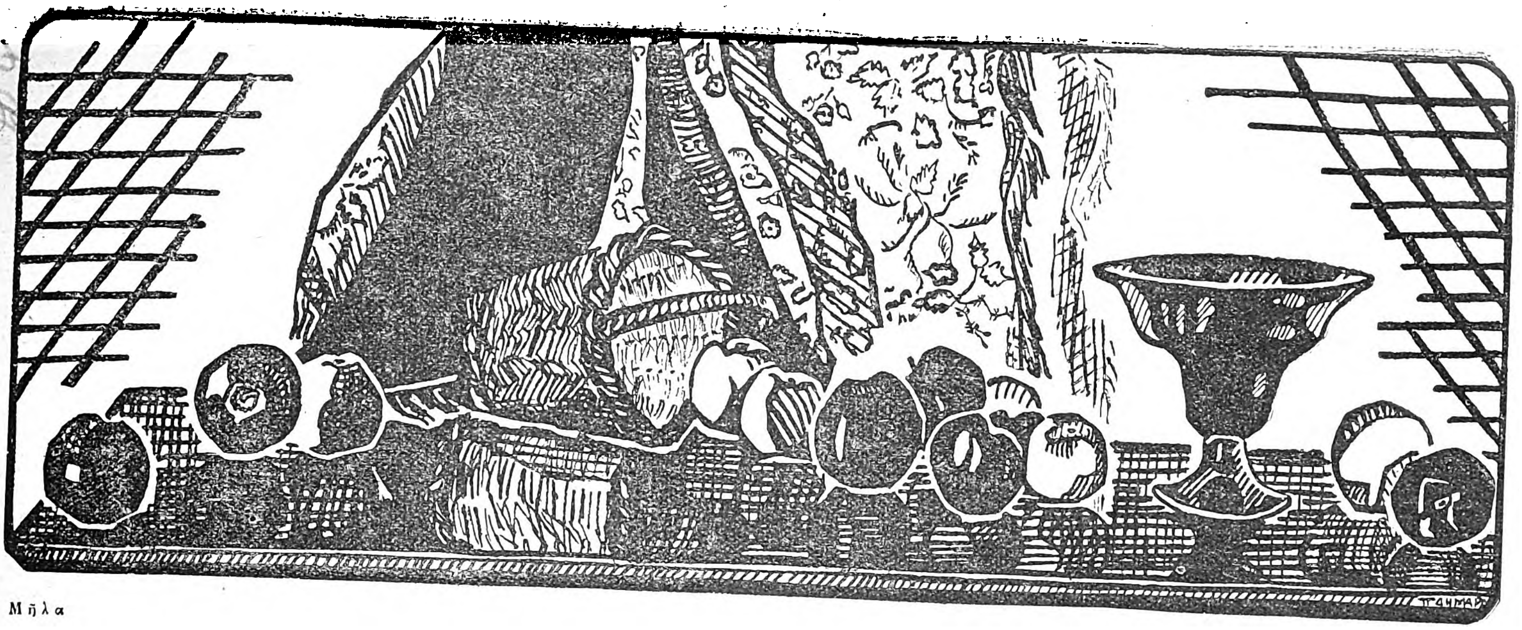

Μῆλα

Π. Ι. Δημαρᾶ

# ΤΟΜΟΣ ΔΕΚΑΤΟΣ ΕΒΔΟΜΟΣ

**Μεσοποταμία** *[Γεωγρ.]*. Ἡ χώρα ἡ κειμένη ἐν τῇ πρόσθεν Ἀσίᾳ, μεταξὺ τῶν δύο ποταμῶν *Εὐφράτου* καὶ *Τίγρητος*. Τὸ ἀρχαιότατον αὐτῆς σημιτικὸν ὄνομα, ἐμφανιζόμενον κατὰ τὸν ΙΣΤ′ π. Χ. αἰῶνα, ἦτο *Ναχαρίν*, τὸ ὁποῖον ὁμοιάζει καταπληκτικῶς μὲ τὴν σημερινὴν ἀραβικὴν λέξιν *ναχράϊν* (δυϊκὸς τοῦ *νάχρ*=ποταμός, ἤτοι οἱ δύο ποταμοὶ) καὶ μὲ τὸ *ναχρίν* (πληθ. τοῦ *νάχρ*). Τοῦ ὀνόματος τούτου ἔκαμνον χρῆσιν οἱ ἀρχαῖοι Αἰγύπτιοι συγγραφεῖς ὡς ἐπιθέτου, ὑπονοουμένης τῆς λέξεως χώρα. Ἄρα τὸ ὄνομα Μεσοποταμία εἶναι σχεδὸν μετάφρασις τοῦ ἀρχαίου σημιτικοῦ ὀνόματος, τὸ ὁποῖον οἱ Αἰγύπτιοι καὶ ἄλλοι μετεχειρίζοντο ὡς ἑνικόν, διδόμενον εἰς τὸν Εὐφράτην ποταμὸν καὶ ἀναφερόμενον ὡς τὸ βόρειον σύνορον τῆς Αἰγύπτου ἐπὶ τοῦ βασιλέως Ἀμενχοτὲπ ἢ Ἀμενόφιος τοῦ Γ′. Τὸ αὐτὸ ὄνομα ἀπαντᾷ εἰς χαναανιτικὰς ἐπιγραφὰς ὡς *Ναχριμίν*, τὸ ὁποῖον φαίνεται, ὅτι ἦτο ἡ φοινικικὴ γραφὴ τοῦ Ναχαρίν. Ἐπὶ πολὺν χρόνον μετὰ τὸν Ἀμένοφιν δὲν ἀπαντᾷ πλέον τὸ ὄνομα Ναχαρίν. Βραδύτερον ἀνευρίσκεται εἰς τὴν Πεντάτευχον ὡς *Ἀρὰμ-Ναχαραΐμ* (ἢ *Ναχαραΐμ*) ἡ χώρα, ἐξ ἧς ἦλθε μία τῶν γυναικῶν τοῦ Ἰσαάκ. Τὸ ἀντίστοιχον ἑλληνικὸν τοπωνύμιον τῶν διαφόρων τούτων τύπων τοῦ ἀρχαιοτάτου Ναχρὶν (ν'χ'ρὶν) εἶναι ἡ παρὰ Στράβωνι (ΙΔ′, 2, 11) *Παραποταμία*, ἐνῷ τὸ *Μεσοποταμία*, τὸ ὁποῖον εἶναι μετάφρασις ἄλλου σημιτικοῦ (συριακοῦ) τύπου, τοῦ *Μπὲθ* (=εἷς μεταξὺ) *Ναχρίν*, εἶναι τύπος νεώτερος, ἀπαντῶν μόλις εἰς τὸν Στράβωνα, ὅστις γράφει: «Μεσοποταμία δὲ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνομάσθη· εἴρηται δ' ὅτι κεῖται τοῦ Εὐφράτου μεταξὺ καὶ τοῦ Τίγριος καὶ διότι ὁ μὲν Τίγρις τὸ ἑωθινὸν αὐτῆς μόνον κλύζει, τὸ δ' ἑσπέριον καὶ νότιον ὁ Εὐφράτης, πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ Ταῦρος ὁ τοὺς Ἀρμενίους χωρίζων ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας». Πρὸ τοῦ Στράβωνος ἐγένετο χρῆσις τῆς λέξεως Μεσοποταμία ἐν τῇ μεταφράσει τῆς Πεντατεύχου ὑπὸ τῶν Ο′. Φαίνεται ὅτι ἡ ὀνομασία αὕτη ἐχρησιμοποιήθη πιθανῶς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου.

Οἱ Ἄραβες καὶ κατ' αὐτοὺς οἱ Τοῦρκοι ὠνόμαζον τὴν Μεσοποταμίαν *Ἐλ-Δζεζιρὲ* (=ἡ νῆσος) καὶ κατὰ τὴν αἰγυπτιακὴν προφορὰν *Ἀλ-Γκαζίρα*. Ἡ ὀνομασία αὕτη ἀπαντᾷ κατὰ πρῶτον παρ' Ἐφραὶμ τῷ Σύρῳ (Δ′ μ. Χ. αἰὼν) ὡς *Γκεζιρθᾶ*, τὸ ὁποῖον εἶναι ὁ συριακὸς τύπος τοῦ *Γκεζίρε* καὶ σημαίνει ὡσαύτως νῆσος, ἐνῷ ὁ Φιλόστρατος ἤδη ἀπὸ τοῦ Γ′ αἰῶνος ἀνέφερεν, ὅτι οἱ Ἄραβες ἐκάλουν τὴν Μεσοποταμίαν νῆσον.

Ἡ ἔκτασις τῆς Μεσοποταμίας δὲν ἦτο πάντοτε γεωγραφικῶς καθωρισμένη. Ὁ Στράβων θεωρεῖ ὡς νότιον σύνορον τῆς Μεσοποταμίας τὸ Μηδικὸν τεῖχος, ἐνῷ ὁ Πλίνιος ἐπεκτείνει τὰ ὅρια τῆς χώρας μέχρι τοῦ Περσικοῦ κόλπου. Ἐπὶ Τραϊανοῦ ἡ Μεσοποταμία ἐξετείνετο πράγματι μέχρι τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ βορείως μέχρι τῆς Ἀρμενίας. Οἱ Ἄραβες λέγοντες Μεσοποταμίαν ἐνόουν τὸ κεντρικὸν μέρος τῆς κοιλάδος τοῦ Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγρητος. Γενικῶς ὅμως Μεσοποταμία καλεῖται ἡ χώρα ἡ ὁριζομένη πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Βαβυλωνίας, πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ ἀρμενικοῦ ὑψιπέδου τοῦ Ταύρου, πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Συρίας καὶ πρὸς Α. ὑπὸ τῆς κυρίως Ἀσσυρίας. Ἀκριβέστερον δὲ ἡ Μεσοποταμία ἄρχεται ἀπὸ τῆς Διαρβεκίρης (Ἀμίδης) καὶ λήγει βορείως τῆς Βαγδάτης, εἰς ὃ σημεῖον προσεγγίζουσι πρὸς ἀλλήλους ὁ Εὐφράτης καὶ ὁ Τίγρης. Ἡ χώρα αὕτη, κειμένη μεταξὺ τῶν δύο ποταμῶν, ἀποτελεῖ τρόπον τινὰ νῆσον, περιβρεχομένην σχεδὸν πανταχόθεν ὑπὸ ὑδάτων, φθάνουσα βορείως σχεδὸν μέχρι τοῦ Ἐρζερούμ καὶ δυτικῶς μέχρι τῆς Συρίας, ἐκτεινομένη ἄρα μεταξὺ 33°20′—38° Α. μήκους καὶ 35°30′—42° Β. πλάτους, ἔχουσα μῆκος 700 περίπου χιλιομέτρων, μέσον πλάτος ἀπὸ τῆς Μοσούλης μέχρι τῆς συμβολῆς τοῦ *Χαμπούρ* καὶ τοῦ Εὐφράτου 200, καὶ ἐπιφάνειαν 140.000 τ. χλμ, ἤτοι ὀλίγον μεγαλυτέραν τῆς ὅλης Ἑλλάδος. Τὸ βόρειον τμῆμα τῆς Μεσοποταμίας εἶναι ὀρεινόν. Μεταξὺ τῆς Διαρβεκίρης, τῆς Οὔρφας καὶ τῆς Μαρντὶν ὑψοῦται ἡ ὀροσειρὰ τοῦ ἡφαιστειώδους *Καρατζᾶ-Δὰγ* (1821 μ.) καὶ τοῦ *Τοὺρ-Ἀμπτίν*, δυτικῶς δὲ τῆς Μοσούλης τὸ ὄρος *Σιντζάρ*. Τὸ ὕψος τοῦ ὀρεινοῦ τούτου μέρους, περιλαμβανομένου μεταξὺ 35°30′ καὶ 38° Α. μήκους, ἀνέρχεται μέχρι 500 μέτρων, τὰ δὲ ὕδατα αὐτοῦ φέρονται διὰ μικρῶν ποταμῶν πρὸς τὸν Τίγρητα καὶ πρὸς τὸν *Ζάμπ*, ἐνῷ πρὸς Δ. φέρονται κυρίως πρὸς τὸν Χαμπούρ, τὸν μεγαλύτερον ποταμὸν τῆς Μεσοποταμίας. Τὸ δυτικὸν καὶ τὸ νότιον τμῆμα τῆς Μεσοποταμίας ἀποτελοῦνται ἀπὸ πεδιάδας λίαν εὐφόρους, σχηματισθείσας ἐκ τῶν προσχώσεων τῶν δύο ποταμῶν.

Πόλεις κυριώτεραι περισωθεῖσαι μέχρι σήμερον ἐκ τῆς ἀρχαίας ἀκμῆς τῆς χώρας εἶναι ἡ *Σαμσὰτ (Σαμόσατα)*, *Ρακκᾶ (Νικηφόριον)*, *Δεῒρ-ἐλ-Ζόρ*, *Ἀνᾶ* καὶ *Χὶτ* ἐπὶ τοῦ Εὐφράτου, *Δζεζίρετ-ἶμπν-Ὀμάρ*, *Μοσούλη* καὶ *Τεκρὶτ* ἐπὶ τοῦ Τίγρητος, *Ἔδεσσα*, *Χαρράν*, *Βιρὰν σεχίρ*, *Ρὰσ-ἐλ-Ἄϊν (Ρησαίνα)*, *Μαρντίν*, *Νισιμπὶν (Νίσιβις*, ἡ *Νασιβίνα* τῶν Ἀσσυρίων) καὶ *Σιντζὰρ (Σιγγάρα)*. Εἰς παλαιοτέρους ὅμως χρόνους, κατὰ τὴν ἀσσυριακήν, τὴν ρωμαϊκὴν καὶ τὴν χαλιφικὴν περίοδον, ἡ Μεσοποταμία ἦτο χώρα πυκνῶς κατῳκημένη, ἔχουσα πολλὰς ἀνθούσας πόλεις· τοιαῦται ἦσαν: ἐπὶ τοῦ Εὐφράτου *Μπιρετζίκ*, *Δζεραμπλούς*, *Τὲλ-ἀχμάρ*, *Καλὰτ-ἐν-Νάδζμ*, *Μπαλίς*, *Καρκισιγὰ* (τὸ *Κιρκήσιον*), ἐπὶ τοῦ Χαμποὺρ τὸ *Κουγιουντζοὺκ* καὶ τὸ *Νιμροὺδ* καὶ ἐπὶ μικροῦ παραποτάμου αὐτοῦ τὸ *Χορσαμπάτ*.

Πολιτικῶς ἡ Μεσοποταμία ἀνήκει σήμερον ἐν μέρει μὲν εἰς τὴν Τουρκίαν (νομοὶ Οὔρφα, Διαρβεκίρ, Μαρντίν), ἐν μέρει εἰς τὸ κράτος τῆς Συρίας καὶ ἐν μέρει εἰς τὸ βασίλειον τοῦ Ἰράκ.

Τὸ κλῖμα εἶναι εἰς τὰ βόρεια ψυχρὸν τὸν χειμῶνα, τὸ δὲ θέρος μᾶλλον εὐκραές. Ἡ περίοδος τῶν βροχῶν διαρκεῖ τὸ ἔαρ καὶ τὸ θέρος. Εἰς τὰ πεδινὰ μέρη τὸ κλῖμα εἶναι θερμόν. Ἡ χώρα παράγει δημητριακά, ὄρυζαν, ὀπωρικά, ἑσπεριδοειδῆ καὶ σταφυλὰς καὶ ἔχει ἀξιόλογον κτηνοτροφίαν. Παρ' ὅλην τὴν γονιμότητα αὐτῆς εἶχε παραμεληθῆ τόσον πολὺ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς σουλτανικῆς Τουρκίας, ὥστε ὁ συνολικὸς πληθυσμὸς αὐτῆς ἀνήρχετο μόλις εἰς 200.000 κατοίκους, ἤτοι εἰς 1 κάτοικον κατὰ τετραγωνικὸν χιλιόμετρον.

—*[Ἱστορ.]* Δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστὸν ποῖοι ἦσαν οἱ κάτοικοι τῆς *Μεσοποταμίας* κατὰ τοὺς προϊστορικοὺς χρόνους. Ὁ ἀρχαιότερος Βαβυλώνιος ἡγεμών, ὅστις ἐκυριάρχησε καὶ ἐν Μεσοποταμίᾳ, φαίνεται ὅτι εἶναι ὁ Λουγκαλζαγκιζὶ (πρὸ τοῦ 2,500 π. Χ.). Γεγονὸς εἶναι ὅτι καὶ ὁ Ἀσσύριος τὴν καταγωγὴν βασιλεὺς τῆς Βαβυλωνίας Σαργὼν ἐξέτεινε τὴν κυριαρχίαν του ἐφ' ὁλοκλήρου τῆς Μεσοποταμίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἡ Μεσοποταμία εἶχεν εὐρυτάτην ἐμπορικὴν ἐπικοινωνίαν, φθάνουσαν μέχρι τῆς Αἰγύπτου. Βραδύτερον προσηρτήθη εἰς τὴν Βαβυλωνίαν. Κατὰ τὸ ἐπακολουθῆσαν μακρὸν διάστημα μέχρι τῆς περσικῆς περιόδου ἡ χώρα παρηκολούθει τὰς περιπετείας τῆς Ἀσσυρίας καὶ Βαβυλωνίας, κατὰ δὲ τοὺς χρόνους τῆς ἐφαρμογῆς τῆς πολιτικῆς τοῦ ὑποχρεωτικοῦ ἐκτοπισμοῦ ὁλοκλήρων πληθυσμῶν ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἄκρου τοῦ κράτους εἰς τὸ ἄλλο ἦλθον εἰς Μεσοποταμίαν καὶ Ἑβραῖοι, τῶν ὁποίων ἴχνη ἀνευρέθησαν ἐν Χαρράν.

Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ναβουχοδονόσορος τὴν Μεσοποταμίαν κατέκτησαν οἱ Μῆδοι, μετὰ δὲ τὴν ἀνατροπὴν τοῦ Ἀστυάγους ὑπὸ τοῦ Κύρου οἱ Πέρσαι. Δὲν εἶναι γνωστὸν εἰς ποίαν ἐκ τῶν κατὰ τὸν Ἡρόδοτον εἴκοσι σατραπειῶν τῆς Περσίας ὑπήχθη ἡ Μεσοποταμία. Κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἀνῆκεν εἰς τὴν Ἀμπὰρ-ναχαρᾶ. Τότε ἔπαυσε καὶ ἡ πολιτικὴ τοῦ ἐκτοπισμοῦ τῶν πληθυσμῶν. Οἱ γενικοὶ διοικηταὶ (σατράπαι) καὶ ἄλλοι ἀνώτεροι ὑπάλληλοι ἦσαν Πέρσαι τὸ γένος, φαίνεται ὅμως ὅτι ὑπῆρχε κάποια τοπικὴ αὐτοδιοίκησις. Ἐπὶ δὲ τῆς περιόδου τῶν Ἀχαιμενιδῶν τῆς Περσίας ἡ ἀραμαϊκὴ γλῶσσα διαδοθεῖσα καθ' ὅλην τὴν Μεσοποταμίαν ἔγινεν ἡ ἐπίσημος γλῶσσα αὐτῆς.

Δὲν εἶναι γνωστὸν κατὰ πόσον ἐπηρεάσθη ἡ χώρα ἐκ τῆς διαβάσεως περσικῶν στρατιῶν πρὸς κατάπνιξιν ἐπαναστάσεων ἐν Συρίᾳ καὶ Αἰγύπτῳ ἢ κατὰ τὴν ἐκστρατείαν ἐναντίον τῆς Ἑλλάδος. Ἡ ἀνάβασις Κύρου τοῦ νεωτέρου, τὴν ὁποίαν παρηκολούθησε καὶ ὁ Ξενοφῶν, ἔγινε κατὰ μῆκος τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Εὐφράτου. Ὁ Μέγας Ἀλέξανδρος διῆλθε τὸ βόρειον τμῆμα τῆς Μεσοποταμίας, χωρὶς νὰ συναντήσῃ ἀντίστασιν. Κατὰ τὴν ἑλληνιστικὴν περίοδον δὲν φαίνεται νὰ ἐξηλληνίσθη ἡ Μεσοποταμία εἰς ὃν βαθμὸν καὶ ἡ Συρία, διότι ἡ ἀραμαϊκὴ παρέμεινεν ὡς γλῶσσα τοῦ λαοῦ ἀκόμη καὶ εἰς τὰς πόλεις. Οὐχ ἧττον ἡ ἑλληνομακεδονικὴ ἐπιρροὴ ἐπεξετάθη τότε πολύ, κυρίως εἰς τὰς πόλεις, ὡς συνάγεται ἐκ τῶν τοπωνυμίων, πολλὰ τῶν ὁποίων σῴζονται καὶ μέχρι σήμερον. Πόλεις τοιαῦται εἶναι ἡ ἀπέναντι τῶν Σαμοσάτων *Σελεύκεια*, ἡ *Ἀπάμεια (Μπιρετζίκ)*, ἡ *Ἱεράπολις (Δζεραμπλοὺς* ἢ *Μεμπίτζ*, ἡ *Εὔρωπος*, ἡ *Νικατορίς*, ἡ *Ἀμφίπολις* (ἴσως ἡ *Θάψακος* τοῦ Ξενοφῶντος), τὸ *Νικηφόριον*, τὸ *Ζηνοδότιον*, ὅλαι παρὰ τὸν Εὐφράτην, ἡ *Ἔδεσσα*, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπελὶχ (Βαλισσός), αἱ *Ἴχναι* (πιθανῶς τὸ σημερινὸν *Χνές*). Αἱ πόλεις αὗται ἔκειντο ἐν τῇ *Ὀσροηνῇ*. Ἓν ἄλλο τμῆμα τῆς χώρας ὠνομάσθη *Μυγδονία* (ἐκ τῆς ἐν Μακεδονίᾳ ὁμωνύμου χώρας). Ἐπὶ τῶν Διαδόχων ἡ χώρα ὑπέφερε πολύ, ὅταν ὁ Εὐμένης διῆλθε δι' αὐτῆς. Τῷ 245 εἰσέβαλε Πτολεμαῖος ὁ Γ′ ὁ Εὐεργέτης κατὰ τὴν πέραν τοῦ Τίγρητος ἐκστρατείαν του. Κατὰ τὴν ἀνάρρησιν Ἀντιόχου τοῦ Γ′ ὁ Μόλων ἐπαναστατήσας εἰσῆλθεν εἰς τὴν Μεσοποταμίαν ἐκ Ν. Ἐν Μεσοποταμίᾳ κατεστράφη τῷ 130 π. Χ. ὁ στρατὸς Ἀντιόχου τοῦ Ζ′. Ἐπὶ τοῦ βασιλέως τῶν Πάρθων Φραάτου Β′ ἡ χώρα ἔπαθεν ἐκ τῶν εἰσβολῶν τῶν Σκυθῶν.

Ἐπὶ Μιθριδάτου τοῦ Β′ ἡ Μεσοποταμία ἦτο ἐπαρχία τοῦ κράτους τῶν Πάρθων, τοῦ ὁποίου ὁ Εὐφράτης ἦτο τὸ πρὸς Δ. σύνορον. Βραδύτερον ἡ Μεσοποταμία ὑπήχθη ὑπὸ τὴν Ἀρμενίαν ἐπὶ Τιγράνου. Μετ' ὀλίγον ὅμως Φραάτης ὁ Γ′ ἀνέκτησε τὰ ἀπολεσθέντα ἐδάφη, ἡ δὲ μετὰ τοῦ Λουκούλλου καὶ τοῦ Πομπηΐου συναφθεῖσα συνθήκη (66 π. Χ.) ἀνεγνώρισεν αὐτὰ ὁριστικῶς ὡς παρθικά. Ἡ κήρυξις τοῦ πολέμου ὑπὸ τῶν Πάρθων

Digitized by Google

κατὰ τῆς Ἀρμενίας ἔσχεν ὡς συνέπειαν τὴν ἔναρξιν ἐχθροπραξιῶν καὶ μετὰ τῆς Ρώμης. Ὁ πόλεμος ὅμως οὗτος ἀπέβη ἀτυχὴς διὰ τοὺς Ρωμαίους καὶ ἡ Μεσοποταμία ὑπετάγη πάλιν ὁλόκληρος εἰς τοὺς Πάρθους. Ἐπὶ τέλους ὅμως ἐπεκράτησαν ὁριστικῶς οἱ Ρωμαῖοι. Τῷ 115, ὅταν ὁ Τραϊανὸς εἰσῆλθεν εἰς Μεσοποταμίαν, δὲν συνήντησε σοβαρὰν ἀντίστασιν καὶ ἡ ρωμαϊκὴ κυριαρχία ἐξετάθη μέχρι Συγκαρᾶ. Ὁ Ἀδριανὸς ἐπανέφερε τὰ σύνορα τοῦ κράτους εἰς τὸν Εὐφράτην, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ Ἀντωνίνου οἱ Ρωμαῖοι πολεμήσαντες κατὰ τοῦ βασιλέως τῶν Πάρθων Βολογάσου ἐκυρίευσαν τὸ Νικηφόριον, τὴν Ἔδεσσαν καὶ τὴν Νίσιβιν καὶ ἐκυριάρχησαν πάλιν τῆς Δ. Μεσοποταμίας μέχρι τοῦ ποταμοῦ Χαμπούρ. Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν ἤρχισε νὰ διαδίδεται καὶ ὁ χριστιανισμός, κατὰ πρῶτον μεταξὺ τῶν ἐκεῖ Ἑβραίων. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μάρκου Αὐρηλίου ἡ χώρα ἐπαναστάτησεν, ἀλλ' ὁ Σεπτίμιος Σεβῆρος ἐξεστράτευσεν αὐτοπροσώπως (195 μ. Χ.) καὶ ὑπέταξε τὴν Μεσοποταμίαν, τῆς ὁποίας μητρόπολις ἔγινε τότε ἡ Νίσιβις.

Ὅταν κατόπιν τοὺς Πάρθους διεδέχθη ἡ περσικὴ δυναστεία τῶν Σασανιδῶν, ἡ Νίσιβις καὶ αἱ Καρραὶ κατελήφθησαν ὑπ' αὐτῶν (233). Ἐπηκολούθησαν μακροὶ ἀγῶνες τῶν Ρωμαίων κατὰ τῶν Περσῶν, καθ' οὓς ὁ Οὐαλεριανὸς ἠχμαλωτίσθη, ὡς λέγεται, παρὰ τὴν Ἔδεσσαν (260). Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Ζηνοβίας, βασιλίσσης τῆς Παλμύρας, ἡ Μεσσοποταμία ἀπωλέσθη ὁριστικῶς διὰ τὴν Ρώμην, καὶ ὁ Εὐφράτης ἔγινε πάλιν τὸ σύνορον τοῦ Ρωμαϊκοῦ κράτους. Βραδύτερον οἱ Ρωμαῖοι ἐξετάθησαν ἐκ νέου μέχρι Κτησιφῶντος, κατόπιν ὅμως ἀπεσύρθησαν πάλιν (283—284). Ἀλλ' ὁ Διοκλητιανὸς προχωρήσας μέχρι Νισίβιος ἐπέβαλεν εἰς τοὺς Πέρσας εἰρήνην, διὰ τῆς ὁποίας ἡ Μεσοποταμία παρεχωρήθη ὁριστικῶς εἰς τὴν Ρώμην (298). Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Χριστιανισμὸς εἶχε διαδοθῆ ἐν Μεσοποταμίᾳ. Εἰς τὴν Α' οἰκουμενικὴν σύνοδον τῆς Νικαίας μετέσχον οἱ ἐπίσκοποι Νισίβιος, Μακεδονοπόλεως (ἐπὶ τοῦ Εὐφράτου Δ. τῆς Ἐδέσσης), Ρησαίνης καὶ Περσίας. Μετὰ τεσσαρακονταετῆ εἰρήνην ἐπανήρχισαν οἱ πόλεμοι· Ὁ Μέγας Κωνσταντῖνος ἡττήθη δὶς ἐν Συγκαρᾷ (348). Τῷ 363 ὁ Ἰουλιανὸς ἐπεχείρησε τὴν ἀτυχῆ ἐκστρατείαν του κατὰ τῆς Περσίας, καθ' ἣν ἐπληγώθη θανασίμως. Διὰ τῆς εἰρήνης, τὴν ὁποίαν συνῆψε κατόπιν ὁ Ἰοβιανός, ὁλόκληρος ἡ Ἀνατολικὴ Μεσοποταμία ἔγινε περσική. Ἡ παράδοις τῆς Νισίβιος εἰς τοὺς Πέρσας κατέπληξε τὸν χριστιανικὸν κόσμον. Τότε ὁ Ἐφραὶμ ὁ Σύρος μετέβη εἰς Ἔδεσσαν, ὅπου ἵδρυσε τὴν λεγομένην «Σχολὴν τῶν Περσῶν». Μετὰ τὴν ἐν Ἐφέσῳ Σύνοδον ἡ Νίσιβις ἀπέβη κέντρον τῶν Νεστοριανῶν. Κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἡ Μεσοποταμία ἔγινε τὸ θέατρον τῶν πολέμων τοῦ Βελισσαρίου καὶ ἄλλων Βυζαντινῶν στρατηγῶν κατὰ τῶν Περσῶν. Κατόπιν ὁλόκληρος ἡ Μεσοποταμία ἔπεσεν εἰς χεῖρας τῶν Ἀράβων, οἵτινες ἐβελτίωσαν τὴν θέσιν τῶν Χριστιανῶν, διότι δὲν ἔκαμαν τότε θρησκευτικὰς διακρίσεις. Λέγεται μάλιστα, ὅτι ὁ Μωαβίας ἀνῳκοδόμησε τὸν θόλον τοῦ ἐν Ἐδέσσῃ μεγάλου χριστιανικοῦ ναοῦ, καταπεσόντα ἐκ σεισμοῦ (678). Ἔκτοτε διεδόθη ἐν Μεσοποταμίᾳ ἡ ἀραβικὴ γλῶσσα, ἐκτοπίσασα τὴν συριακήν, τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν περσικήν. Παρακολουθήσασα κατόπιν τὰς περιπετείας τοῦ κράτους τῶν Ἀββασιδῶν, καταστραφεῖσα ὑπὸ τῶν εἰσβολῶν τῶν Μογγόλων τοῦ Δζεγκὶζ-Χὰν καὶ τῶν Τατάρων τοῦ Ταμερλάνου, κατελήφθη τῷ 1502 ὑπὸ τῶν Σαφαβιτῶν τῆς Περσίας. Ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1516 κατεκτήθη ὑπὸ τῶν Τούρκων οἵτινες παρέμειναν κύριοι τῆς χώρας μέχρι τοῦ τελευταίου ἔτους τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (βλ. λ. *Ἰράκ*).

— *[Ἀρχαιολ.]* Πρῶτος ὁ Carsten Niebuhr (1765) ἐξηρεύνησεν ἐπιστημονικῶς τὴν *Μεσοποταμίαν*. Τῷ 1842 ὁ προξενικὸς πράκτωρ τῆς Γαλλίας Botta ἐνήργησε τὰς πρώτας ἀνασκαφὰς ἐν Νινευΐ. Πολὺ σπουδαιότεραι ὅμως ὑπῆρξαν αἱ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος γενόμεναι ἀνασκαφαὶ ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου Layard, τὸν ὁποῖον ὑπεστήριξε χρηματικῶς ὁ ἐν Κωνσταντινουπόλει πρεσβευτὴς τῆς Ἀγγλίας Sir Stratford Canning. Αἱ ἀνασκαφαὶ αὗται ἐσυνεχίσθησαν ἀπὸ τοῦ 1845 ἐπὶ ἔτη ἐν Νιμρούδ, ἀποτελέσασαι, ἰδίᾳ χάρις εἰς τὴν ἀνακάλυψιν τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ἀσουρμπανιπὰλ (1848), τὴν βάσιν τῆς ἀσσυριολογικῆς ἐπιστήμης (βλ. λ. *Ἀσσυρία* καὶ *Βαβυλωνία*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *M. von Oppenheim*, Vom Mittelmeer zum Persischen Golf (2 τόμ. 1889—1890).—*D. G. Hogarth*, The Nearer East (1902).—*K. Regling*, Zur historischen Geographie des mesopotamischen Parallelograms (ἐν Klio, I, 443—476).—*A.H. Layard*, Nineveh and Babylon (1849—1851).

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἡ Ἀγγλία ἐπιδιώκουσα νὰ ἐξασφαλίσῃ τὴν πλήρη διακατοχὴν τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ τῆς Μεσοποταμίας, ἀποτελούσης τότε μέρος τοῦ τουρκικοῦ κράτους, ἀπέστειλεν ἀγγλοϊνδικὴν μεραρχίαν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατηγοῦ Wilson, μὲ τὴν ἐντολὴν τῆς ὅσον τὸ δυνατὸν ταχυτέρας καταλήψεως τῆς Βαγδάτης, καὶ κατόπιν τοῦ ἀκροτάτου πρὸς ἀνατολὰς σημείου τοῦ ὑπὸ κατασκευὴν τότε σιδηροδρόμου τῆς Βαγδάτης. Ἡ μεραρχία αὕτη, ἀποβιβασθεῖσα τὴν 15ην Ὀκτωβρίου 1914 εἰς τὴν Φάο, κατέλαβε μετ' ὀλίγον τὴν Βασσόραν, καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς Ἰανουαρίου 1915 ἀμαχητὶ τὴν Κορνάχ, καθ' ὅσον τὰ ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατηγοῦ Νουρεδδὶν πασᾶ τουρκικὰ στρατεύματα ἀπεχώρησαν πρὸς βορρᾶν χωρὶς ν' ἀντιτάξωσιν ἄμυναν. Ἐν τῷ μεταξὺ ἀφίκετο καὶ ἑτέρα ἀγγλοϊνδικὴ μεραρχία, ἡ τοῦ στρατηγοῦ Townshend, καὶ ἀπὸ τοῦ Ἀπριλίου 1915 ἤρχισεν ἡ πρὸς Βαγδάτην προέλασις διὰ δύο φαλάγγων, ἐξ ὧν ἡ μὲν δυτικὴ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Mixon ἀκολουθοῦσα τὴν κοιλάδα τοῦ Εὐφράτου ἔφθασε κατὰ Σεπτέμβριον 1915 μέχρι Κερμπελά, ἡ δὲ ἀνατολικὴ ὑπὸ τὸν Τάουνσεντ, ἀκολουθοῦσα τὴν κοιλάδα τοῦ Τίγρητος καὶ ὑποστηριζομένη ὑπὸ στολίσκου ἀναπλέοντος τὸν Τίγρητα, ἔφθασε κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον μέχρι τῆς Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα, ὅπου κατήγαγε περιφανῆ νίκην ἐναντίον τῶν τουρκικῶν στρατευμάτων τοῦ Νουρεδδίν. Ἐνθαρρυνθεὶς τότε ὁ Τάουσεντ ἐκ τῶν ἐπιτυχιῶν τούτων προήλασε μέχρι τῆς Κτησιφῶντος, ἀλλὰ δεχθεὶς τὴν 22αν Νοεμβρίου 1915 ἰσχυροτάτην ἐπίθεσιν τῆς 4ης τουρκικῆς στρατιᾶς (δύο σωμάτων στρατοῦ), τεταγμένης ὑπὸ τὸν Γερμανὸν στρατηγὸν φὸν ντὲρ Γκόλτς, ἀπωθήθη μετὰ τῆς ὑπ' αὐτὸν φάλαγγος πρὸς *Κοὺτ* ἐλ *Ἀμάρα* (βλ. λ.), ὅπου πολιορκηθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων παρεδόθη τὴν 28ην Ἀπριλίου 1916. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν ταύτην πρὸς κατάληψιν τῆς Βαγδάτης, ἔλαβεν ἡ Ἀγγλία σοβαρὰ μέτρα, ἐνισχύσασα ἀρκετὰ τὸν στρατόν της (ἀνελθόντα εἰς 150.000 ἄνδρας) καὶ τάξασα τοῦτον ἀπὸ τοῦ Αὐγούστου 1916 ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Stanley Maude. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως καὶ οἱ Τοῦρκοι (τὴν διοίκησιν τῆς 4ης στρατιᾶς εἶχεν ἀναλάβει ὁ Ἐμβὲρ πασᾶς, ἀντικαταστήσας τὸν ἀποθανόντα ἐκεῖ φὸν ντὲρ Γκὸλτς) ὠργανώθησαν ἀμυντικῶς ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Τίγρητος ἀπὸ Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα μέχρι Σανναιϋρά. Περὶ τὰ μέσα Δεκεμβρίου ἤρχισαν οἱ Ἄγγλοι προελαύνοντες πρὸς κατάληψιν τῆς Βαγδάτης, ἅμα δὲ ἐγένοντο κύριοι ἁπάσης τῆς δεξιᾶς (δυτικῆς) ὄχθης τοῦ Τίγρητος (Φεβρουάριος 1917), ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ τουρκικοῦ μετώπου Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα—Σανναιϋρά, συγχρόνως δ' ἠπείλησαν δι' ὑπερκεράσεως τὸν ἐχθρὸν διὰ στρατεύματος προσπεράσαντος τὸν Τίγρητα δυτικώτερον τῆς Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα· οἱ Τοῦρκοι εὑρεθέντες ὑπὸ τὴν ἀπειλὴν ταύτην, ἐξεκένωσαν τὰς θέσεις των καὶ ὑπεχώρησαν πρὸς Βαγδάτην. Οἱ Ἄγγλοι κατέλαβον τότε τὴν Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα τὴν 24ην Φεβρουαρίου 1917, μεθ' ὃ προχωρήσαντες, ἰδίως διὰ τοῦ ἱππικοῦ των, καταδιώξαντος τοὺς Τούρκους κατὰ μῆκος ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν τοῦ Τίγρητος, κατέλαβον τὴν Βαγδάτην τὴν 11ην Μαρτίου 1917, προκαλυφθέντες μέχρι τοῦ ὕψους Σαμάρα—Μπακοῦμπα. Ἡ ἐπιχείρησις αὕτη παρουσιάζει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι ἐξετελέσθη διαδρομὴ μήκους 180 χιλιομέτρων (ἀπὸ Κοὺτ ἐλ Ἀμάρα μέχρι Βαγδάτης) ἐντὸς δεκαπενθημέρου, καὶ δὴ ὑπὸ καύσωνα φοβερόν, μὲ ἀνεμοστροβίλους ἐκ θερμοτάτης ἄμμου καὶ μὲ προσπέρασιν τοῦ Τίγρητος τρεῖς φοράς. Ἅπασαι αἱ προσπάθειαι τοῦ Ἐνβὲρ πασᾶ πρὸς ἀνακατάληψιν τῆς Βαγδάτης ἀπέτυχον, καθότι ἡ συγκέντρωσις ἐπαρκῶν τουρκικῶν στρατευμάτων προσέκρουσε πρὸ ἀνυπερβλήτων δυσχερειῶν, ἐναντίον τῶν ὁποίων δὲν ἠδυνήθη ν' ἀντεπεξέλθῃ οὐδ' ὁ Γερμανὸς στρατηγὸς Φαλκενχάϊν, ὁ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην διορισθεὶς ἀρχιστράτηγος ἁπάντων τῶν ἐν Ἀσίᾳ τουρκικῶν στρατευμάτων. Εὐθὺς μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Βαγδάτης, ἤρχισαν οἱ Ἄγγλοι προπαρασκευαζόμενοι διὰ τὴν πρὸς βορρᾶν προέλασιν, πρὸς κατάληψιν τῆς Μοσσούλης. Ἡ ἐν λόγῳ προέλασις ἦτο ὑψίστης σημασίας διὰ τοὺς Ἄγγλους, ἀφ' ἑνὸς μὲν διότι θὰ ἐγίνοντο κύριοι ἑνὸς σπουδαίου κέντρου ἀνεφοδιασμοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ διότι θὰ προσήγγιζον πρὸς τοὺς Ρώσους, τοὺς ἀγωνιζομένους τότε ἐν Ἀρμενίᾳ, μεθ' ὧν ἤλπιζον ὅτι θὰ ἐτίθεντο ἐν ἐπαφῇ διὰ τῶν ἐγκαρσίων διαβάσεων τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ταύρου. Ὁ στρατηγὸς Marshall διαδεχθεὶς τὸν ἐκεῖ ἀποθανόντα στρατηγὸν Maude, ἔχων ἤδη ὑπὸ τὰς διαταγάς του περὶ τὰς 250.000 ἀγγλοϊνδικοῦ στρατοῦ, ἤρξατο προελαύνων τὸ τέλος Ὀκτωβρίου 1917 πρὸς Μοσούλην, ἀκολουθήσας ἐν ἀρχῇ τὴν κοιλάδα τοῦ Ντιάλα καὶ κατόπιν στραφεὶς πρὸς βορειοδυσμάς. Ἀφοῦ προηγουμένως οἱ Ἄγγλοι ἔγιναν κύριοι τοῦ Καρατεπὲ (Δεκέμβριος 1917) καὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Εὐφράτου (Μάρτιος 1918), προὐχώρησαν κατόπιν πρὸς βορρᾶν καὶ ἔφθασαν τὸ τέλος Ἀπριλίου εἰς τὴν Ταούκ, τὰ δὲ μέσα Μαΐου εἰς τὸν Ζάμπ. Τέλος, τὸν Σεπτέμβριον 1918, μετὰ ἐξαήμερον αἱματηρὸν ἀγῶνα νοτίως τῆς Μοσούλης, κατώρθωσαν οἱ Ἄγγλοι νὰ ἐξαναγκάσωσιν εἰς παράδοσιν τὰ τελευταῖα λείψανα τοῦ ἐν Μεσοποταμίᾳ τουρκικοῦ στρατοῦ, καὶ τότε νὰ εἰσέλθωσιν ἀμαχητὶ εἰς Μοσούλην τὴν 31ην Ὀκτωβρίου 1918. Ἡ ὁριστικὴ ἧττα τῶν Τούρκων ἐν Μεσοποταμίᾳ συνέπεσε μετὰ τῶν ἐν Συρίᾳ καὶ Παλαιστίνῃ ἡττῶν·

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μεσοποταμίας *ἐπαρχία*** καὶ ***θέμα***. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς βυζαντινῆς κυριαρχίας ἡ ἐπαρχία *Μεσοποταμίας* ἐξετείνετο μεταξὺ Τίγρητος καὶ Εὐφράτου, ἔνθα νῦν τὸ βιλαέτιον Διαρβεκὶρ καὶ μέρος τοῦ βορειοδυτικοῦ τμήματος τοῦ τέως βιλαετίου τῆς Μοσούλης, περιελάμβανε δὲ τὰς πόλεις *Μαρτυρόπολιν, Ἄμιδαν, Δάραν, Νίσιβιν* κ. ἄ., καθὼς καὶ περὶ τὰ 40 ἰσχυρὰ κάστρα. Ἀπὸ τοῦ Η' αἰῶνος, δηλαδὴ μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Ἀράβων κατάκτησιν τῆς χώρας ταύτης καὶ τὴν διαίρεσιν τῆς βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας εἰς μικροτέρας διοικητικὰς περιφερείας (θέματα), ὠνομάσθη *θέμα Μεσοποταμίας* ἡ εἰς τὸ ἀρκτικώτερον τμῆμα τοῦ λεκανοπεδίου τοῦ Εὐφράτου καὶ δυτικῶς τοῦ Ταύρου ἐκτεινομένη περιφέρεια, ἔνθα νῦν τὸ βιλαέτιον Μαμουρὲτ-οὺλ-Ἀζίζ. Ἕδρα τοῦ θέματος τούτου ἦν ἡ *Μελιτηνή*.

Ν. ΚΛΣ

**Μεσοποταμιὰ** *[Γεωγρ.]*. —1) Κώμη τῆς ἐπαρχίας Καλαμῶν τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Παμίσου καὶ τῆς δεξιᾶς τοῦ Ἄριος, καὶ ἦτο ἄλλοτε πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Ἄριος. Ἔχει σταθμὸν τοῦ σιδηροδρόμου Τριπόλεως—Καλαμῶν καὶ συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ μετὰ τῆς Μεσσήνης, τῶν Καλαμῶν καὶ τοῦ Β. τμήματος τοῦ νομοῦ. Παράγει σταφίδα, ἔλαιον, ὀπώρας, σιτηρὰ κλπ. καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον, ἡμιγυμνάσιον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ἀσλάναγα*. Κάτ. (1928) 1.853. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Ἀσπροπουλιὰ (Μπισμπάρδι)*.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καστορίας τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Παράγει σιτηρὰ καὶ ὄσπρια καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Τσετερόκι*. Κάτ. (1928) 1.083. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κολοκυνθοῦ (Τίκβενη)*.

Χ. Δ.

**μεσοποτάμιος** (ὁ, ἡ), καὶ *—α, —ον* (τό)· ὁ μεταξὺ τῶν ποταμῶν κείμενος: «μεσοποτάμιος χώρα» καὶ ἁπλῶς ***μεσοποταμία*** ὡς οὐσ.· || ὁ ἐν τῷ μέσῳ τοῦ ποταμοῦ: «μεσοποτάμιος νησίς».

**Μεσοπόταμον** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Μικροκάστρου (Τσιρούσινον) τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Γιάγκοβα*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 124.

— 2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Νέας Ἀπολλωνίας (Ἐγρῆ-Μπουτζὰκ) τῆς ἐπαρχίας Ἀρναίας (Λιαριγκόβης) τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ἀρτζιλῆ*. Κάτ. (1928) 86.

Χ. Δ.

—**Μεσοπόταμον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐν τῇ Ἀλβανίᾳ Βορείου Ἠπείρου παρὰ τὸ Δέλβινον, πλησίον τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας ἠπειρωτικῆς πόλεως Φοινίκης. Κατοικεῖται ὑπὸ 100 οἰκογενειῶν ἑλληνοφώνων, ἐπιδιδομένων εἰς τὴν γεωργίαν ἐν τῇ πεδιάδι τοῦ Δελβίνου. Τὸ Μεσοπόταμον ἐπὶ τῆς βυζαντινῆς ἐποχῆς ἦτο πόλις ἀξιόλογος, ἥτις παρακμάσασα ὀλίγον κατ' ὀλίγον κατέληξεν εἰς τὸ σημερινὸν χωρίον.

Χ. Ι. Σ.

—**Μεσοποτάμου *μονή***. Ἀρχαία βυζαντινὴ μονὴ τῆς Βορείου Ἠπείρου, κειμένη παρὰ τὸ ὁμώνυμον χωρίον ἐν τῇ πεδιάδι τοῦ Δελβίνου καὶ τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι τοῦ Ἁγίου Νικολάου. Ἐκτίσθη πιθανῶς πρὸ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἐπὶ ἀρχαίου ναοῦ τοῦ Ποσειδῶνος, ὡς ἀναφέρει ἡ παράδοσις. Ἡ μονὴ ἐχρημάτισε καὶ ἕδρα ἐπισκοπῆς μεταφερθείσης ἐκ τῆς Φοινίκης. Ἡ ἐπισκοπὴ αὕτη ἀργότερον μετετέθη εἰς Δέλβινον μὲ τὴν προσωνυμίαν «Φοινίκης καὶ Δελβίνου». Μετὰ τὴν ἐρήμωσιν τοῦ Μεσοποτάμου ἡ μονὴ ἐγένετο ἐξαρχία ἐποπτεύουσα ὁλόκληρον τὴν ἐπαρχίαν Δελβίνου. Ἡ ἐξαρχία αὕτη διετηρήθη μέχρι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ὅτε ὁ ἐπίσκοπος Χιμάρας Στέφανος πρὸς αὔξησιν τῶν πόρων τῆς ἐπισκοπῆς του, οἵτινες εἶχον ἐλαττωθῆ λόγῳ τοῦ ἐξισλαμισμοῦ τοῦ Κουρβελεσίου, ὑπήγαγε τὴν ἐξαρχίαν Μεσοποτάμου εἰς τὴν ἐπισκοπὴν Χιμάρας. Ἡ μονὴ εἶχε σπουδαίαν καὶ πλουσίαν βιβλιοθήκην καταστραφεῖσαν ὑπὸ πυρκαϊᾶς. Τῆς ἀξιολόγου ταύτης μονῆς μόνον ἐρείπια σῴζονται σήμερον.

Χ. Ι. Σ.

**μεσοπρίων** (ὁ) (Mesoprion) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἰχθύων ἀκανθοπτερυγίων τῆς οἰκογενείας τῶν *περκιδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους πέρκας μὲ μοναδικὸν ραχιαῖον πτερύγιον. Γνωστὰ ἐλάχιστα εἴδη ἀπαντῶντα εἰς πάσας σχεδὸν τὰς θαλάσσας.

Δ. Ν. Π.

**μεσοπροσωπία** (ἡ). Καλεῖται ὁ μέσος βαθμὸς τοῦ σχηματισμοῦ τοῦ προσώπου τοῦ ἐκτιμωμένου ἐκ τῆς σχέσεως τοῦ ὕψους πρὸς τὸ πλάτος (προσωπικοῦ δείκτου). Ὁ δείκτης οὗτος λαμβάνεται εἴτε ἐκ τῆς συγκρίσεως τοῦ ὅλου ὕψους (τρίχιον-γνάθιον) πρὸς τὸ πλάτος (ζύγια), ὁπότε ἔχομεν τὸν φυσιογνωμικὸν προσωπικὸν δείκτην, ἀσταθέστερον, ἢ ἐκ τοῦ μορφολογικοῦ ὕψους (ὑπερρίνιον-γνάθιον) πρὸς τὸ πλάτος, ὁπότε ἔχομεν τὸν μορφολογικὸν προσωπικὸν δείκτην, τοῦ μετώπου, ὅπερ ἀνήκει εἰς τὸ κρανίον, ἐξαιρουμένου. Ἀναλόγως τούτου, διακρίνομεν τὴν *εὐρυπροσωπίαν* (x—83,9), τὴν *μεσοπροσωπίαν* (84,0—87,9), τὴν *λεπτοπροσωπίαν* (88,0—x). Ἡ μεσοπροσωπία παρατηρεῖται εἰς πολλοὺς εὐρωπαϊκοὺς λαοὺς καὶ τοὺς Κρῆτας, εἰς

Digitized by Google

τινὰς μογγολικὰς φυλὰς (Γιακοῦται, Τουγκοῦζοι, Κινέζοι), εἰς τοὺς Τατάρους, Ἐσκιμώους, Παπούας, Μαλαίους Μπατὰκ κ. ἄ. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**μεσόπυκνοι φθόγγοι** *[Ἀρχ. Μουσ.]*. Μία τῶν τριῶν διαιρέσεων τῶν κινουμένων φθόγγων τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς. Οἱ μεσόπυκνοι φθόγγοι ἦσαν πέντε: *παρυπάτη ὑπάτων* (Νη τῆς μέσης˙ $do_2$), *παρυπάτη μέσων* (Γα τῆς μέσης˙ $fa_2$), *τρίτη συνημμένων* (Ζω τῆς νήτης ἐν ὑφέσει˙ $si_2$), *τρίτη διεζευγμένων* (Νη τῆς νήτης˙ $do_3$), καὶ *τρίτη ὑπερβολαίων* (Γα τῆς νήτης˙ $fa_3$). Ν. Α. Χ.

**Μεσόπυργος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἄρτης καὶ Τζουμέρκων τοῦ νομοῦ Ἄρτης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Τετραφυλλίας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Σουμεροῦ*. Κάτ. (1928) 464. Χ. Δ.

**μεσόρθιον** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*˙ βλ. λ. *μεσαπευθυσμένον*.

**Μεσορούγι** *[Γεωγρ.]*. Ἓν ἀπὸ τὰ καλούμενα Κλουκινοχώρια τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας τῆς ἐπαρχίας Αἰγιαλείας τοῦ τέως δήμου Νωνάκριδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τῆς Κράθιδος, ἀποτελεῖται δ' ἐκ τοῦ *Ἄνω καὶ Κάτω*. Κάτ. 71 (1928). Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ χωρίον *Σόλος*. Εἶναι πατρὶς τοῦ ποιητοῦ Σπ. Περεσιάδου. Α. Ι. Ο.

**Μεσορουγιώτικα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀγριδεΐκων τῆς ἐπαρχίας Αἰγιαλείας τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 209. Χ. Δ.

**μεσόροφος** (ὁ), ἢ **μεσώροφος**˙ ὁ μέσος ὄροφος, τὸ ὑπὸ τὴν ὀροφὴν κατασκευαζόμενον στενὸν πάτωμα, ἰδίᾳ εἰς ἐμπορικὰ καταστήματα (μετάφρ. τοῦ γερμ. Zuischenstock).

**Μεσορράχη** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κυνουρίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 476.

—2) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἁγίων Ἀναργύρων (Τσουρμακλῆ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Χασὰν Τατάρ*. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 216. Παρ' αὐτὸ κεῖται σιδηροδρομικὸς σταθμὸς μετὰ φερωνύμου συνοικισμοῦ, ἔχοντος κατ. (1928) 30.

—3) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φυλλίδος (Ζίχνης) τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται πρὸς ΝΑ. τῆς Νέας Ζίχνης καὶ ἐγγὺς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Θεσσαλονίκης - Ἀλεξανδρουπόλεως καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ράχωβα*. Κάτ. (1928) 677.

—4) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πετρίνου τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ὀνομαζόμενος πρότερον *Δουβλατάν*. Κάτ. (1928) 74. Χ. Δ.

**Μεσόρρεμα** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται πρὸς Β. τῆς Καβάλλας καὶ ἐγγὺς τῶν ἐρειπίων τῶν ἀρχαίων Φιλίππων, παράγει καπνόν, σιτηρὰ κτλ. καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Σέλιανη*. Κάτ. (1928) 1.207. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ χωρίον *Ματζὰρ - Τσιφλὶκ* καί τινας οἰκογενείας Σκηνιτῶν κτηνοτρόφων. Χ. Δ.

**μεσορρινία** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ὁ ἐκ τῆς σχέσεως ὕψους καὶ πλάτους τῆς ρινὸς λαμβανόμενος μέσος σχηματισμὸς αὐτῆς. Ἐπὶ μὲν τοῦ ζῶντος, ἡ τῆς κεφαλῆς μετὰ τῶν μαλακῶν μορίων, ἡ σχέσις αὕτη, ἢ ὁ ρινικὸς δείκτης, λαμβάνεται μεταξὺ τοῦ ὕψους (ὑπερρίνιον - ὑπορρίνιον) καὶ τοῦ πλάτους τῶν πτερυγίων τῆς ρινὸς (πτερύγια), ὁπότε ἔχομεν δείκτην: *λεπτορρινία* x—69,9, *μεσορρινία* 70,0—84.9, καὶ *πλατυρρινία* 85.0—x. Ἐπὶ τοῦ κρανίου, ὁ δείκτης εὑρίσκεται ἐκ τοῦ ὕψους πάλιν (ὑπερρίνιον-ρινακάνθιον) καὶ τοῦ πλάτους τοῦ ἀπιοειδοῦς τρήματος. Ἔχομεν δὲ τότε λεπτορρινίαν x—46.9, μεσορρινίαν 47,0—50,9 καὶ πλατυρρινίαν 51,0—x. Ἡ μεσορρινία συναντᾶται (μετὰ τῆς *μεσοπροσωπίας* καὶ *λεπτοπροσωπίας* συνήθως) ἐπὶ Κρητῶν, Τυρολῶν, Ρουμάνων, Κινέζων, Ἰαπώνων, Μαλαίων, Ἀμερικανοϊνδῶν, Ταταρων, ἄλλων τινῶν Μογγολικῶν φύλων, Ἀτσιγγάνων, Καυκασίων τινῶν, Σιαμαίων κτλ. (βλ. καὶ *λεπτορρινία*). Γενικῶς, συμπίπτουν αἱ τρεῖς διακρίσεις τῆς ρινός, μὲ τὰς τρεῖς μεγάλας φυλετικὰς ὁμάδας τοῦ κόσμου, ἡ λεπτορρινία πρὸς τοὺς λευκούς, ἡ μεσορρινία πρὸς τοὺς κιτρίνους καὶ ἡ πλατυρρινία πρὸς τοὺς μέλανας, ἐκδηλουμένη εἰς τὰς ἐκσήμους περιπτώσεις ὡς πραγματικὴ *σιμορρινία*. Ι. Γ. Κ.

**μεσορρίνιον** (τό), ἢ **μεσόριον ρινικὸν** *[Ἀνατομ.]*. Διάφραγμα ὀβελιαῖον, διαιροῦν τὸ ὀστεϊνον κύτος τῆς ρινὸς εἰς δύο κοιλότητας, ἀποτελούμενον δὲ ὑπὸ τοῦ καθέτου πετάλου τοῦ ἠθμοειδοῦς ὀστοῦ καὶ τῆς ὕνεως˙ εἰς τὴν ὑπὸ τῶν δύο δὲ τούτων ὀστῶν σχηματιζομένην ἔμπροσθεν γωνίαν ἐναρμόζεται ὁ τετράγωνος ρινικὸς χόνδρος. Ι. Π.

**Μεσορρώπη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐντὸς τῆς μεταξὺ Συμβόλου καὶ Παγγαίου εὐρείας κοιλάδος καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.197. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Μικροχώρι (Ἀχατλὰρ)* καὶ *Τρίτα (Τσιφλίκι)*. Χ. Δ.

**μεσόρχιον** (τό), καὶ **μεσῳοθήκιον** *[Ἀνατομ.]*. Μία τῶν περιτοναϊκῶν πτυχῶν, αἵτινες σχηματίζονται κατὰ τὴν διάπλασιν τοῦ μεσονέφρου καὶ τοῦ γεννητικοῦ ἀδένος, καλούμεναι *σύνδεσμοι τοῦ γεννητικοῦ ἀδένος*˙ διὰ τοῦ μεσορχίου ἢ μεσῳοθηκίου ὁ ὄρχις ἢ ἡ ᾠοθήκη κρέμαται ἀπὸ τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ μεσονέφρου. Ι. Π.

**μέσος**, *—η, —ον*˙ ὁ εὑρισκόμενος μεταξὺ δύο ὁρίων, μεταξὺ ἀρχῆς καὶ τέλους, ἄλλως *μεσαῖος*, κοιν. *μεσανός*: «πρόσθεν μὲν λέων, ὄπισθεν δὲ δράκων, μέση δὲ χίμαιρα», μέσος δάκτυλος»˙ || «μέσος ὅρος»: «δαπανᾷ κατὰ μέσον ὅρον χιλίας δραχμὰς τὴν ἑβδομάδα»˙ || μεταφ. «μέση ὁδὸς» ἡ μέση ἐνέργεια μεταξὺ δύο ἀκροτήτων: «ἠκολούθησε —, ἐβάδισε τὴν μέσην ὁδόν»˙ || «μέση ἐκπαίδευσις» ἡ μεταξὺ ἀνωτάτης καὶ κατωτάτης ἢ στοιχειώδους˙ || «μέση διάθεσις τοῦ ρήματος» (βλ. *διάθεσις*)˙ || «μέση ἢ παθητικὴ φωνὴ τοῦ ρήματος» (βλ. *φωνή*)˙ || «μέσα σύμφωνα» (βλ. *σύμφωνα*)˙ || «μέσος αἰών», ἢ «μέσοι χρόνοι» τὸ μέσον ἐκ τῶν τριῶν τμημάτων, εἰς τὰ ὁποῖα διαιρεῖται ἡ παγκόσμιος ἱστορία, δηλαδὴ τὸ μεταξὺ τῶν ἀρχαίων καὶ τῶν νεωτέρων χρόνων (ἀπὸ τοῦ Μ. Κωνσταντίνου μέχρι τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων)˙ || φρ. «ἐν μέσῃ ἀγορᾷ», «ἐν μέσαις Ἀθήναις», «ἐν μέσῳ χειμῶνι» ἐν τῷ μέσῳ τῆς ἀγορᾶς, — τῶν Ἀθηνῶν, — τοῦ χειμῶνος. Β. Φ.

**— μέσα ρήματα.** Καλοῦνται οὕτω τὰ δηλοῦντα μέσην διάθεσιν τοῦ ρήματος, ἤτοι διάθεσιν μεταξὺ ἐνεργείας καὶ πάθους, ὅτι δηλαδὴ τὸ ὑποκείμενον ἐνεργεῖ καὶ συνάμα δέχεται αὐτὸ τὴν ἐνέργειαν ταύτην. Δέχεται δὲ τὴν ἐνέργειαν 1) κατ' εὐθεῖαν *(μέσα εὐθέα ἢ αὐτοπαθῆ)*, π. χ. λούομαι (= λούω ἐμαυτόν), ἔνθα ἐγὼ ὁ λούων εἶμαι καὶ ὁ λουόμενος ὑπ' ἐμαυτοῦ, 2) πλαγίως, ἤτοι πρὸς ὠφέλειαν ἑαυτοῦ *(μέσα πλάγια ἢ περιποιητικά)*, π.χ. αἰτοῦμαί τι (=αἰτῶ τι ἐμαυτῷ, πρὸς ὠφέλειαν ἐμαυτοῦ, δι' ἐμαυτόν), ποιοῦμαι σύμμαχον, τίθεμαι νόμον, ἀμύνομαι τὸν ἐχθρὸν (=ἀμύνω, ἀποκρούω χάριν ἐμαυτοῦ τὸν ἐχθρόν, ἢ ἁπλῶς τὸν ἐχθρόν μου), σῴζομαι τὰ ὅπλα (= σῴζω χάριν ἐμαυτοῦ τὰ ὅπλα, ὅπερ ἴσον τῷ σῴζω τὰ ὅπλα μου).

Εἰς τὰ πλάγια μέσα ὑπάγονται: 1) Τὰ *ἐντατικά*, δηλοῦντα ἔντασιν τῆς ἐνεργείας τοῦ ὑποκειμένου, π.χ. δρῶμαί τι, ὄψομαί τι, ἀκροῶμαι, θεῶμαι, γεύομαι, ἀγωνίζομαι. 2) Τὰ *δυναμικά*, τὰ δηλοῦντα ὅτι διὰ τῆς δυνάμεως, τῆς φροντίδος, τῶν μέσων του ἐνεργεῖ τὸ ὑποκείμενον, π.χ. λύομαι τὸν αἰχμάλωτον (=διὰ τῶν χρημάτων μου λύω τὸν αἰχμάλωτον˙ βλ. λ. *δυναμικά*). 3) Τὰ *διάμεσα*, δηλοῦντα ὅτι διὰ μέσου ἄλλου τινὸς ἐπιδιώκω πρὸς ὄφελός μου ἐνέργειάν τινα, διδάσκομαι τὸν υἱὸν (=διὰ τοῦ διδασκάλου διδάσκω τὸν υἱόν μου). 4) Τὰ *ἀλληλοπαθῆ*, δηλοῦντα ὅτι ἡ ἐνέργεια δύο ἢ πλειόνων ὑποκειμένων εἶναι ἀμοιβαία (ὅθεν ἀπαντῶσι κατὰ πληθυντικὸν ἀριθμόν), π.χ. λοιδοροῦνται (=λοιδοροῦσιν ἀλλήλους).

Ἤδη παρ' ἀρχαίοις ἡ πρόσθετος σημασία ἡ διακρίνουσα τὸ μέσον τοῦ ἐνεργητικοῦ εἶχεν ἀρχίσει νὰ ἐπισκοτίζεται, διὸ εὕρηνται ἰσοδυνάμως σκοπῶ καὶ σκοποῦμαι, ἀκούω—ἀκούσομαι, δρῶμαί τι —δρῶ. Οὕτω συνέβη ὥστε ἡ νέα Ἑλληνικὴ ν' ἀποβάλῃ τὰ πλεῖστα τῶν μέσων ρημάτων, ἢ μεταχειριζομένη ἁπλῶς τὸ ἐνεργητικὸν (προνοοῦμαι—προνοῶ), ἢ ἐξευρίσκουσα νέους τρόπους (σῴζω τὴν πατρίδα μου, λύω μὲ τὰ χρήματά μου τὸν αἰχμάλωτον, ὑβρίζει ὁ ἕνας τὸν ἄλλον), ἀλλὰ καὶ διέσωσεν ἱκανὰ (ἐργάζομαι, πλύνομαι, παραιτοῦμαι, γυμνάζομαι, ὑβρίζονται). [Πρβλ. *Γ. Χατζιδάκι* ΜΝΕ, Α 435 ἑξ. *Α. Τζαρτζάνου*, Νεοελλ. σύνταξις § 169—175.] Σ. Τ.

**— μέσαι συντεταγμέναι.** Αἱ τιμαὶ τῶν συντεταγμένων, ἃς θὰ εἶχον οἱ ἀστέρες, ἐὰν ὑπῆρχε μόνον τὸ φαινόμενον τῆς μεταπτώσεως, ἤτοι ἂν δὲν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ἡ ἐπίδρασις τῆς κλονήσεως τοῦ γηΐνου ἄξονος (βλ. *κλόνησις*). Σ. Π.

**— μέση ἀνάλογος,** ἢ **μέση γεωμετρική.** Εἷς ἀριθμὸς β λέγεται *μέση ἀνάλογος* μεταξὺ δύο ἄλλων ἀριθμῶν α καὶ γ, ὅταν δύναται νὰ γραφῇ ἡ ἀναλογία, ἥτις ἔχει ὡς ἄκρους τοὺς α καὶ γ καὶ τοὺς δύο μέσους ἴσους πρὸς τὸν ἀριθμὸν β, δηλαδὴ

$$\frac{\alpha}{\beta}=\frac{\beta}{\gamma}$$

ἥτις εἶναι ἰσοδύναμος πρὸς τὴν $\beta^2=\alpha\gamma$. Ἐκ τῆς τελευταίας ταύτης ἰσότητος συνάγομεν ὅτι διὰ νὰ εὑρεθῇ ἡ μέση ἀνάλογος μεταξὺ τῶν δύο ἀριθμῶν α καὶ γ ἀρκεῖ νὰ εὑρεθῇ ἡ τετραγωνικὴ ρίζα τοῦ γινομένου τῶν δύο τούτων ἀριθμῶν.

**— μέση ἀνωμαλία** *[Ἀστρον.]*. Ἡ ἀνωμαλία σημείου τινός, ὅπερ ἀναχωροῦν ἐκ τοῦ περιηλίου συγχρόνως μετά τινος πλανήτου κινεῖται περὶ τὸν Ἥλιον ὁμαλῶς. Ἡ ποσότης αὕτη παρέχεται ὑπὸ τῆς ἐξισώσεως $\mu\chi=\kappa$-ε ημ κ, ἥτις καλεῖται ἐξίσωσις τοῦ Κεπλέρου καὶ διαφέρει τῆς ἀληθοῦς ἀνωμαλίας κατὰ ποσότητα (θ—μχ), ἥτις λέγεται ἐξίσωσις τοῦ κέντρου. Σ. Π.

**— μέση ἐκλειπτικὴ** *[Ἀστρον.]*. Ἡ θέσις τοῦ ἐπιπέδου τῆς ἐκλειπτικῆς. ὅταν δὲν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ἡ ἐπίδρασις τῆς κλονήσεως τοῦ γηΐνου ἄξονος (βλ. *κλόνησις*). Σ. Π.

**— μέση ἐκπαίδευσις**˙ βλ. *ἐκπαίδευσις*.

**— μέση θέσις ἀστέρων** *[Ἀστρον.]*. Ἡ θέσις ἣν θὰ εἶχον οἱ ἀστέρες συνεπείᾳ μόνης τῆς μεταπτώσεως, ἤτοι χωρὶς νὰ ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ἡ ἐπίδρασις τῆς κλονήσεως τοῦ γηΐνου ἄξονος (βλ. *κλόνησις*). Σ. Π.

**— μέση λῆξις**˙ βλ. *γραμμάτια ἰσοδύναμα*.

**— μέση λόξωσις** *[Ἀστρον.]*. Ἡ τιμὴ τῆς λοξώσεως τῆς ἐκλειπτικῆς, ὅταν δὲν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ἡ ἐπίδρασις τῆς κλονήσεως τοῦ γηΐνου ἄξονος (βλ. *κλόνησις*). Σ. Π.

**— μέση συνοδικὴ περίοδος** *[Ἀστρον.]*. Ἡ συνοδικὴ περίοδος, ἢ περιφορὰ οὐρανίου σώματος, ὅπερ ὑποτίθεται κινούμενον ὁμαλῶς (βλ. *πλανῆται*). Σ. Π.

**— μέση τιμὴ** *[Χρηματιστηρ.]*˙ βλ. *δελτίον*.

**— μέση τιμὴ συναρτήσεως** *[Μαθ.]*. Μέση τιμὴ μιᾶς συναρτήσεως φ(χ) εἰς τὸ διάστημα α...β καλεῖται ἡ παράστασις

$$\frac{\varphi(\alpha)+\varphi(\chi_1)+\varphi(\chi_2)+\ldots+\varphi(\chi_{\nu-1})}{\nu}$$

ἔνθα $\chi_1, \chi_2, \ldots\ldots \chi_{\nu-1}$ σημεῖα τοῦ διαστήματος τοιαῦτα, ὥστε:

$$\alpha<\chi_1<\chi_2<\chi_3<\ldots<\chi_{\nu-1}<\beta.$$

**— μέση φλὲψ τῆς κατ' ἀγκῶνα καμπῆς,** ἢ **μέση βασιλική,** ἢ **λοξὴ φλὲψ** *[Ἀνατομ.]*. Φλὲψ ὑποδόριος, ἀρχομένη ἐκ τοῦ ραχιαίου φλεβικοῦ δικτύου τῆς χειρός. Ἐν τῇ κατ' ἀγκῶνα καμπῇ συνάπτει τὴν κεφαλικὴν μετὰ τῆς βασιλικῆς φλεβός, φερομένη λοξῶς ἐκ τῶν κάτω καὶ ἔξω πρὸς τὰ ἄνω καὶ ἔσω ἐπιπολῆς τῆς ἀπονευρώσεως τοῦ δικεφάλου μυός, δι' ἧς καὶ μόνης χωρίζεται ἀπὸ τῆς βραχιονίου ἀρτηρίας. Ι. Π.

**— μέσοι ἦχοι** *[Βυζ. Μουσ.]*. Διαίρεσις τῶν ὀκτὼ ἤχων κατὰ τοὺς ἀρχαίους Βυζαντινοὺς μουσικοδιδασκάλους, προκύπτουσα ἐκ τῆς κατὰ διτονίαν καθόδου ἀπὸ τὰ βάσεως τῶν κυρίων ἤχων πρὸς τοὺς πλαγίους αὐτῶν. Ἐκλήθησαν οὕτως ὡς εὑρισκόμενοι ἐν τῷ μέσῳ τῶν κυρίων καὶ τῶν πλαγίων ἤχων. Ἡ ὀνομασία αὕτη σήμερον σῴζεται μόνον εἰς τὸν εἱρμολογικὸν τέταρτον ἦχον, τὸν καὶ *λέγετον* (βλ. λ.) ὀνομαζόμενον, ὅστις ἔχων τονικὴν βάσιν τὸν φθόγγον *Βου* (mi) καὶ εὑρισκόμενος ἀκριβῶς ἐν τῷ μέσῳ τοῦ τετάρτου καὶ τοῦ πλαγίου τοῦ τετάρτου ἤχου, καλεῖται *μέσος τοῦ τετάρτου*. Ν. Α. Χ.

**— μέσον ἐαρινὸν σημεῖον** *[Ἀστρον.]*. Ἡ θέσις ἣν κατά τινα στιγμὴν ἔχει τὸ ἐαρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον, συνεπείᾳ μόνης τῆς μεταπτώσεως, ἤτοι μὴ λαμβανομένης ὑπ' ὄψει τῆς ἐπιδράσεως τῆς κλονήσεως τοῦ γηΐνου ἄξονος. Σ. Π.

**— μέσον καρδιακὸν νεῦρον** *[Ἀνατομ.]*. Ἓν ἐκ τῶν τριῶν καρδιακῶν νεύρων, τὸ παχύτερον, ὅπερ ἐκφύεται ἐκ τοῦ μέσου αὐχενικοῦ γαγγλίου τοῦ συμπαθητικοῦ καὶ ὅπερ συμβάλλεται μετὰ τῶν λοιπῶν καρδιακῶν νεύρων (τοῦ ἄνω καὶ τοῦ κάτω) εἰς ἀπαρτισμὸν τοῦ ἐπὶ τῆς κοίλης ἐπιφανείας τοῦ ἀορτικοῦ τόξου κειμένου καρδιακοῦ πλέγματος. Ι. Π.

**— μέσον κίνημα** *[Ἀστρον.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ποσότης $\mu=\frac{2\pi}{\chi}$ ἐν τῷ προβλήματι τοῦ Κεπλέρου. Σ. Π.

**— μέσον νεῦρον** *[Ἀνατομ.]*. Νεῦρον μεικτόν, κινητικὸν καὶ αἰσθητικόν, ὅπερ ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ βραχιονίου πλέγματος διὰ δύο ριζῶν, μιᾶς ἄνω ἐκ τοῦ ἄνω στελέχους καὶ μιᾶς κάτω ἐκ τοῦ κάτω στελέχους, περιλαμβανουσῶν τὴν μασχαλιαίαν ἀρτηρίαν καὶ ἑνουμένων ὑπὸ ὀξεῖαν γωνίαν ἔμπροσθεν αὐτῆς. Φέρεται δ' ἐντὸς τῆς αὔλακος τοῦ δικεφάλου μυὸς εἰς τὴν κατ' ἀγκῶνα καμπὴν καὶ εἶτα διὰ τῶν καμπτήρων μυῶν τοῦ πήχεως εἰς τὸν καρπὸν καὶ εἰς τὴν παλάμην, ἔνθα ἀποσχίζεται εἰς τοὺς τελικοὺς αὐτοῦ κλάδους. Τὸ μέσον νεῦρον ἐν τῷ βραχίονι οὐδένα κυρίως χορηγεῖ κλάδον˙ ἐν τῷ πήχει εἶναι μόνον μυϊκόν, ἐννευροῦν πάντας σχεδὸν τοὺς μῦς τῆς καμπτικῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ˙ ἐν δὲ τῇ ἄκρᾳ χειρὶ ἀποφύει τοῦτο μὲν μυϊκὰ κλωνία, τοῦτο δ' ἑπτὰ αἰσθητικὰ νεῦρα, τὰ ἴδια παλαμιαῖα νεῦρα τῶν δακτύλων, διακρινόμενα διὰ τὰ πολυπληθῆ πακινιανὰ σωμάτια. Ι. Π.

Digitized by Google

— **μέσον οὖς** *[Ἀνατομ.]* βλ. λ. *κοῖλον* τύμπανον καὶ οὖς.

— **μέσος ἄξων τῆς Γῆς** *[Ἀστρον.]*. Ἡ θέσις, ἣν ὁ ἄξων τῆς Γῆς θὰ εἶχεν ἑκάστοτε συνεπείᾳ μόνης τῆς μεταπτώσεως, μὴ λαμβανομένης ὑπ' ὄψει τῆς ἐπιδράσεως τῆς *κλονήσεως* (βλ. λ.). Σ. Π.

— **μέσος ἐγκέφαλος** *[Ἀνατομ.]* βλ. λ. *μεσεγκέφαλος*.

— **μέσος Ἥλιος** *[Ἀστρον.]*. Πλαστὸς Ἥλιος, τὸν ὁποῖον φανταζόμεθα διατρέχοντα ὁμαλῶς τὸν ἰσημερινὸν ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς ἐντὸς ἑνὸς ἔτους, δηλαδὴ ἐντὸς τοῦ αὐτοῦ χρονικοῦ διαστήματος, ὅπερ ἀπαιτεῖται ἵνα ὁ ἀληθὴς Ἥλιος διαγράψῃ τὴν ἐκλειπτικήν. Ἡ στιγμὴ τῆς ἄνω μεσουρανήσεως τοῦ μέσου Ἡλίου καλεῖται μέση μεσημβρία καὶ λαμβάνεται ὡς ἀρχὴ τῆς μέσης ἀστρονομικῆς ἡμέρας, τῆς δὲ κάτω μεσουρανήσεως μέσον μεσονύκτιον καὶ λαμβάνεται ὡς ἀρχὴ τῆς μέσης πολιτικῆς ἡμέρας (βλ. *χρόνος* καὶ *ὥρα*). Σ. Π.

— **μέσος ἰσημερινὸς** *[Ἀστρον.]*. Ἡ θέσις, ἣν θὰ εἶχεν ὁ οὐράνιος ἰσημερινὸς συνεπείᾳ μόνης τῆς μεταπτώσεως, ἤτοι μὴ λαμβανομένης ὑπ' ὄψει τῆς ἐπιδράσεως τῆς *κλονήσεως* (βλ. λ.). Σ. Π.

—**μέσος ὅρος** *[Μετεωρολ.—Κλιματολογ.]*. Ἡ μέση τιμὴ ἑνὸς οἱουδήποτε μετεωρολογικοῦ στοιχείου, ὑποκειμένου εἰς διαρκεῖς μεταβολάς, ὅταν δοθῶσιν αἱ διαδοχικαὶ τιμαί, διὰ τῶν ὁποίων διῆλθε τοῦτο κατὰ τὴν διάρκειαν ὡρισμένου χρονικοῦ διαστήματος. Διὰ τοῦ μέσου ὅρου δηλαδὴ ζητεῖται νὰ εὑρεθῇ ἡ τιμή, πέριξ τῆς ὁποίας ἐκυμάνθησαν αἱ τιμαὶ οἱουδήποτε μετεωρολογικοῦ στοιχείου καὶ ἥτις εἶναι τοιαύτη, ὥστε ὅλαι αἱ ἀποχαί, αἵτινες παράγονται ἄνωθεν τῆς τιμῆς ταύτης ν' ἀντισταθμίζωνται ἀκριβῶς ὑπὸ ἐκείνων, αἵτινες παράγονται κάτωθεν ταύτης.

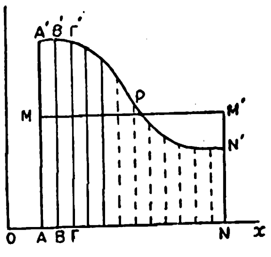


*Γραφικὴ μέθοδος λήψεως μέσου ὅρου.*

Ἔστωσαν αἱ τιμαί:

$$\alpha_1 \; \alpha_2 \; \alpha_3 \; \ldots\ldots \; \alpha_\nu$$

κατὰ τὰ χρονικὰ διαστήματα

$$t_1 \; t_2 \; t_3 \; \ldots\ldots \; t_\nu$$

ἑνὸς ὡρισμένου μετεωρολογικοῦ στοιχείου, ὅπερ μεταβάλλεται κατὰ τρόπον συνεχῆ. Ἐπὶ μιᾶς εὐθείας Ox (βλ. σχ.) ἂς λάβωμεν τὰ μήκη ΟΑ, ΟΒ, ΟΓ, ......ΟΝ ἀνάλογα τῶν χρόνων $t_1$ $t_2$ $t_3$......$t_\nu$ οἵτινες διέρρευσαν ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῶν παρατηρήσεων, καὶ ἀπὸ τῶν σημείων Α, Β, Γ....... Ν ἂς φέρωμεν τὰς καθέτους ΑΑ', ΒΒ', ΓΓ'......ΝΝ' ἀναλόγως τῶν ἀριθμητικῶν τιμῶν $\alpha_1, \alpha_2, \alpha_3$ ...... $\alpha_\nu$ ἃς δίδουσιν αἱ παρατηρήσεις. Οὕτως ΑΑ' θὰ παριστᾷ τὴν ποσότητα τῆς θερμότητος, ἥτις λαμβάνεται παρὰ τοῦ ἡλίου κατὰ τὴν μεσημβρίαν, ΒΒ' τὴν ποσότητα κατὰ τὴν 1 ὥραν μ. μ. κ.ο.κ. Ἡ συνεχὴς καμπύλη, ἥτις διέρχεται διὰ τῶν σημείων Α', Β', Γ' ...... Ν' θὰ ἐκφράζῃ γραφικῶς τὸν νόμον τοῦ φαινομένου συναρτήσει τοῦ χρόνου, δηλαδὴ ἐν τῇ παρούσῃ περιπτώσει τὸν τρόπον, καθ' ὃν ἡ ποσότης τῆς ὑπὸ τοῦ ἡλίου ἀποστελλομένης θερμότητος μεταβάλλεται κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ὡρῶν τῆς ἡμέρας. Ἂς φαντασθῶμεν νῦν ὅτι φέρομεν τὴν εὐθεῖαν ΜΜ' παράλληλον πρὸς τὴν Ox, εἰς τρόπον ὥστε τὸ ὀρθογώνιον ΑΜΜ'Ν νὰ ἔχῃ τὴν αὐτὴν ἐπιφάνειαν πρὸς τὸ καμπυλόγραμμον τραπέζιον ΑΑ'Ν'Ν· τὸ ὕψος ΑΜ τοῦ ὀρθογωνίου τούτου θὰ παριστᾷ τὸν *μέσον ὅρον* ὅλων τῶν τεταγμένων τῆς καμπύλης, ἢ τῶν ὑψῶν ΑΑ', ΒΒ', ΓΓ'..... ΝΝ'. Εἰς τὸ παράδειγμα τοῦτο θὰ εἶναι ἡ σταθερὰ ποσότης τῆς θερμότητος ἣν ὀφείλει νὰ στέλλῃ ὁ ἥλιος κατὰ τὴν διάρκειαν ὁλοκλήρου τοῦ χρόνου ΝΑ, εἰς τρόπον ὥστε εἰς τὸ τέλος τοῦ χρόνου τούτου ἡ ὁλικὴ ποσότης ἡ ληφθεῖσα νὰ εἶναι ἡ αὐτὴ πρὸς ἐκείνην, ἥτις ὑπῆρξεν ἐν τῇ πραγματικότητι, ἐπειδὴ ἐκυμάνθη κατὰ συνεχῆ τρόπον ἀπὸ τῆς τιμῆς ΑΑ' μέχρι τῆς τιμῆς ΝΝ'. Ἐξ αὐτοῦ τούτου τοῦ ὁρισμοῦ τοῦ μέσου ὅρου, ἡ ἐπιφάνεια τοῦ τμήματος ΜΑ'Ρ, ὅπερ εὑρίσκεται ἄνωθεν τῆς εὐθείας ΜΜ', εἶναι ἴση πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ τμήματος Μ'Ν'Ρ, τοῦ εὑρισκομένου κάτωθεν· ἡ ἰσότης αὕτη θὰ ἔπαυε προφανῶς νὰ εἶναι πραγματική, ἐὰν μετακινηθῇ ἡ εὐθεῖα ΜΜ' παραλλήλως πρὸς ἑαυτήν, κατὰ τὴν μίαν ἢ τὴν ἄλλην ἔννοιαν, ἑπομένως εἰς δεδομένην καμπύλην δὲν ἀντιστοιχεῖ παρὰ εἷς καὶ μόνος μέσος ὅρος, ὅστις εἶναι ἐπίσης τελείως καθωρισμένος.

Ὑπάρχει μέγας ἀριθμὸς τρόπων, οἵτινες ἐπιτρέπουν ἐν τῇ πράξει, νὰ προσδιορισθῇ ἡ ἀριθμητικὴ τιμὴ τοῦ μέσου ὅρου, δηλαδὴ τὸ ὕψος ἑνὸς ὀρθογωνίου, οὗτινος ἡ ἐπιφάνεια εἶναι ἰσοδύναμος πρὸς ἐκείνην ἑνὸς καμπυλογράμμου τραπεζίου τῆς αὐτῆς βάσεως. Ἐὰν αἱ διαδοχικαὶ τιμαὶ τοῦ θεωρουμένου φαινομένου συνεδέοντο μετὰ τοῦ χρόνου δι' ἑνὸς μαθηματικοῦ τύπου, θὰ ἠδύνατό τις νὰ ὑπολογίσῃ ἀμέσως τὸν μέσον ὅρον, ἀλλὰ τοῦτο εἶναι μία περίπτωσις, ἥτις δὲν παρουσιάζεται γενικῶς ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ καὶ κλιματολογίᾳ. Ἐὰν ἀποκόψωμεν ἐκ τεμαχίου χαρτονίου ὁμοιομόρφου πάχους τὸ καμπυλόγραμμον τραπέζιον ΑΑ'Ν'Ν καὶ εἶτα ἓν ὀρθογώνιον ἔχον τὴν αὐτὴν βάσιν ΑΝ καὶ ὕψος ἴσον τῇ μονάδι, ὁ λόγος τῶν βαρῶν τῶν δύο τούτων τεμαχίων θὰ παριστᾷ τὸν ζητούμενον μέσον ὅρον.

Ὁ μέσος ὅρος λαμβάνεται ἀκριβέστερον τῇ βοηθείᾳ τῶν ἐμβαδομέτρων, δι' ὧν ὑπολογίζοντες τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ καμπυλογράμμου τραπεζίου ΑΑ'ΝΝ' καὶ διαιροῦντες τὸν λαμβανόμενον ἀριθμὸν διὰ τοῦ μήκους τῆς βάσεως ΑΝ, θὰ λάβωμεν τὸν ζητούμενον μέσον ὅρον.

Ἵνα ὑπολογίσωμεν τὴν μέσην θερμοκρασίαν ἡμέρας τινός, λαμβάνομεν τὰς θερμοκρασίας τῶν 24 ὡρῶν τῆς ἡμέρας, μίαν πρὸς μίαν ἀπὸ μεσονυκτίου εἰς μεσονύκτιον, διαιροῦμεν διὰ 2 τὰς θερμοκρασίας τοῦ μεσονυκτίου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀρχίζει καὶ τοῦ μεσονυκτίου εἰς ὃ τελειώνει ἡ ἡμέρα, προσθέτομεν τοὺς δύο τούτους ἀριθμοὺς μετὰ τῶν 23 ἄλλων ὡριαίων θερμοκρασιῶν καὶ διαιροῦμεν τὸ ἄθροισμα διὰ 24· τὸ πηλίκον Μ ὅπερ λαμβάνεται τοιουτοτρόπως θὰ παριστᾷ κατὰ προσέγγισιν τὴν μέσην θερμοκρασίαν τῆς ἡμέρας. Συνήθως ἀρκεῖ, ἵνα ὑπολογίσωμεν μετ' ἀρκετῆς ἀκριβείας τὸν *ἡμερήσιον μέσον ὅρον* διαφόρων μετεωρολογικῶν στοιχείων, νὰ λάβωμεν τὸν ἀριθμητικὸν μέσον ὅρον ὀκτὼ μόνον παρατηρήσεων, ἀνὰ τρίωρον γενομένων, ἢ ἀκόμη καὶ τὸν ἀριθμητικὸν μέσον ὅρον τριῶν ἢ τεσσάρων παρατηρήσεων γινομένων εἰς καταλλήλους ὥρας.

Ἐκ τῶν ἡμερησίων μέσων ὅρων μετεωρολογικοῦ τινος στοιχείου, λαμβάνεται διὰ μιᾶς τῶν ἀνωτέρω μεθόδων ὁ *μηνιαῖος μέσος ὅρος*. Ὁ ἀριθμητικὸς μέσος ὅρος τῶν ἡμερησίων μέσων ὅρων τῶν 365 ἡμερῶν τοῦ ἔτους παριστᾷ τὸν *ἐτήσιον μέσον ὅρον*, ἀλλ' ἀντὶ νὰ ἐκτελεσθῇ ὁ ὑπολογισμὸς οὗτος, ὅστις εἶναι μακρὸς καὶ ἐπίπονος, λαμβάνομεν τοὺς μηνιαίους μέσους ὅρους. Οὕτω καλοῦντες $A_1$ τὸν μέσον ὅρον τοῦ Ἰανουαρίου, $A_2$ ἐκεῖνον τοῦ Φεβρουαρίου, $A_3$ τοῦ Μαρτίου κτλ. καὶ $A_{12}$ τὸν μέσον ὅρον τοῦ Δεκεμβρίου, ἐργαζόμεθα ὡς ἐὰν ἅπαντες οἱ μῆνες εἶχον τὸ αὐτὸ μῆκος καὶ λαμβάνομεν ὡς μέσον ὅρον τοῦ ἔτους ἐκεῖνο, ὃν δίδει ὁ τύπος:

$$M = \frac{1}{12}(A_1 + A_2 + A_3 \ldots\ldots + A_{12})$$

ἐνῷ ἡ ἀκριβὴς τιμὴ τοῦ μέσου ὅρου θὰ ἦτο προφανῶς διὰ μὲν τὰ κοινὰ ἔτη:

$$M' = \frac{1}{365}(31A_1 + 28A_2 + 31A_3 + \ldots\ldots + 31A_{12})$$

διὰ δὲ τὰ δίσεκτα:

$$M'' = \frac{1}{366}(31A_1 + 29A_2 + 31A_3 + \ldots\ldots + 31A_{12})$$

ἀπεδείχθη ὅμως ὅτι δὲν ὑπάρχει οὐσιώδης διαφορὰ μεταξὺ τῶν ἀριθμῶν Μ καὶ Μ' ἢ Μ''. Εἶναι προφανὲς ὅτι ὅταν πρόκειται περὶ στοιχείου μεταβαλλομένου κατὰ συνεχῆ τρόπον, οἱ *ἡμερήσιοι μέσοι ὅροι*, οἱ *μηνιαῖοι* καὶ οἱ *ἐτήσιοι* ἔχουσιν ἀκριβῆ σημασίαν καὶ παριστῶσι γεγονὸς λίαν ἐκπεφρασμένον, καὶ εἶναι ἐπὶ πλέον αἱ τιμαί, πέριξ τῶν ὁποίων πραγματικῶς ἐκυμάνθησαν τὰ μελετώμενα στοιχεῖα καὶ διὰ τῶν ὁποίων ἀναγκαστικῶς διῆλθον πολλάκις.

Συχνάκις εἰς τὴν μετεωρολογίαν γίνεται χρῆσις τῆς λέξεως *μέσος ὅρος*, κυρίως εἰς τὴν σπουδὴν τῶν περιοδικῶν μεταβολῶν, μὲ ἔννοιαν διάφορον ἐκείνης, ἣν μέχρι τοῦδε ἐθεωρήσαμεν. Λάβωμεν ὡς παράδειγμα τὴν ἡμερησίαν πορείαν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ἀέρος. Λόγῳ εἰδικῶν περιπτώσεων δύναται νὰ παρατηρηθῇ κατὰ μίαν δεδομένην ἡμέραν ἡ θερμοκρασία τοῦ ἀέρος ὅτι ἔλαβε τὴν μεγίστην τιμὴν αὐτῆς περὶ τὴν 10ην π. μ. καὶ ἄλλην τινὰ ἡμέραν τὸ μέγιστον αὐτῆς νὰ παρατηρηθῇ κατὰ τὴν 3ην ἢ 4ην μ. μ., καὶ ἄλλοτε τέλος, ἰδίᾳ κατὰ τὸν χειμῶνα, ἡ θερμοκρασία νὰ ἔχῃ ἀνέλθει ἢ κατέλθει καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς ἡμέρας, χωρὶς νὰ παρατηρηθῇ τὸ μέγιστον κατὰ τὸ μέσον τῆς ἡμέρας, καὶ ἑπομένως ἡ ἡμερησία μεταβολὴ τῆς θερμοκρασίας δὲν θὰ παρουσιασθῇ κανονικὴ ἂν θεωρήσωμεν μίαν πρὸς μίαν ἑκάστην εἰδικὴν ἡμέραν. Ἐὰν ὅμως εἰς τὸ τέλος ἑκάστου μηνὸς προσθέσωμεν διαδοχικῶς πάσας τὰς θερμοκρασίας τὰς παρατηρηθείσας τὴν 1ην ὥραν π. μ. καὶ διαιρέσωμεν τὸ ἄθροισμα αὐτῶν διὰ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἡμερῶν τοῦ μηνός, ἀκολούθως δὲ πράξωμεν τὸ αὐτὸ καὶ διὰ τὰς λοιπὰς θερμοκρασίας τῆς 2 ὥρας, 3 ὥρας κλπ., θὰ ἴδωμεν ὅτι οἱ μέσοι ὅροι παρουσιάζουσι πορείαν κανονικήν. Αὐξάνονται κατὰ συνεχῆ τρόπον ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς τοῦ ἡλίου μέχρι περίπου τῶν πρώτων ἀπογευματινῶν ὡρῶν καὶ εἶτα ἐλαττοῦνται κατὰ τὸ ὑπόλοιπον τῆς ἡμέρας καὶ τῆς νυκτός, οὕτω δὲ καθίσταται σαφὴς ἡ ἡμερησία περιοδικὴ μεταβολή. Γενικῶς διὰ τῶν τοιούτων *ὡριαίων μέσων ὅρων*, συναγομένων ἐκ μακρᾶς σειρᾶς παρατηρήσεων, ἀπαλείφονται αἱ ἀνωμαλίαι, αἱ καλύπτουσαι τὴν συνήθη πορείαν τῶν φαινομένων, καὶ καθίστανται καταφανεῖς αἱ κανονικαὶ μεταβολαὶ αὐτῶν. Ἐὰν θέλωμεν π. χ. νὰ ἀνεύρωμεν τὴν ἐπίδρασιν, ἣν ἀσκεῖ ἡ σελήνη ἐπὶ τῆς πορείας τοῦ βαρομέτρου, θὰ διαιρέσωμεν τὸν χρόνον εἰς σεληνιακὰς ἡμέρας καὶ εἰς κλάσματα αὐτῶν, π. χ. εἰς δωδεκατα, εἶτα θὰ παρατηρήσωμεν τὸ βαρόμετρον κατὰ τὰς ἀρχὰς ἑκάστης σεληνιακῆς ἡμέρας, κατὰ τὸ πρῶτον δωδέκατον, τὸ δεύτερον κτλ., ἐκ τῶν οὕτω δὲ συγκεντρωθεισῶν παρατηρήσεων κατὰ τὴν διάρκειαν ὡρισμένου ἀριθμοῦ ἡμερῶν θὰ σχηματίσωμεν τὸν ἀριθμητικὸν μέσον ὅλων τῶν ἀριθμῶν, οἵτινες ἀντιστοιχοῦσιν εἰς τὴν ἀρχὴν ἑκάστης σεληνιακῆς ἡμέρας, εἶτα ἐκείνους, οἵτινες ἀντιστοιχοῦσιν εἰς τὸ πρῶτον δωδέκατον κοκ. Τὸ εἶδος τοῦτο τῶν μέσων ὅρων χρησιμοποιεῖται ἐπίσης διὰ τὸν ὑπολογισμὸν τῶν *κανονικῶν τιμῶν* (valeurs normales), αἵτινες χαρακτηρίζουσι τὰ διάφορα κλίματα.

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω γίνεται καταφανὲς ὅτι οἱ *ἡμερήσιοι*, οἱ *μηνιαῖοι* καὶ οἱ *ἐτήσιοι μέσοι ὅροι* ἔχουσι σημασίαν γεωμετρικῶς ἀκριβῆ. Τοῦ δευτέρου εἴδους τῶν μέσων ὅρων γίνεται χρῆσις εἰς τὴν ἔρευναν τῶν περιοδικῶν μεταβολῶν καὶ εἰς τὸν προσδιορισμὸν τῶν κανονικῶν τιμῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Angot*, «Traité élémentaire de Météorologie».—*Th. Findiklis*, «La température de l' air à Athènes» (Ann. de l'Obs. Nat. d'Athènes Tome X).

Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

—**μέσος ὅρος ἀληθὴς** *[Κλιματολ.]*. Ἡ μέση τιμὴ ἑνὸς οἱουδήποτε στοιχείου, ὅταν αὕτη ἐξάγεται ἐκ τῶν 24 ὡριαίων παρατηρήσεων. Ὁ ἀληθὴς μέσος ὅρος λαμβάνεται ἐκ τοῦ τύπου τῶν τραπεζίων καὶ ἰσοῦται πρὸς

$$\frac{1}{24}\left[\frac{0+24}{2} + 1 + 2 + 3 \ldots + 23\right]$$

ἐν τῷ ὁποίῳ ἕκαστος ἀριθμὸς ἀπὸ 0 μέχρι 24 παριστᾷ τὴν τιμὴν τοῦ στοιχείου δι' ἑκάστην ὥραν τῆς ἡμέρας. Ἐξάγεται ἐκ τούτου, ὅτι ὁ ὑπολογισμὸς τοῦ ἀληθοῦς μέσου ἀνάγεται εἰς ὑπολογισμὸν ἐπιφανείας καὶ ὅτι πᾶσα ἐμβαδομετρικὴ μέθοδος ἐφαρμοζομένη εἰς τὰς καμπύλας τῶν μετεωρολογικῶν στοιχείων δίδει τὸ αὐτὸ ἀποτέλεσμα. Θ. Θ. Φ.

— **μέσος ὅρος ἀριθμῶν**. Καλεῖται οὕτω τὸ πηλίκον τῆς διαιρέσεως τοῦ ἀθροίσματος τῶν δοθέντων ἀριθμῶν διὰ τοῦ πλήθους αὐτῶν.

— **μέσος συστολεὺς** *[Ναυτ.]*. Συστολεὺς (κοιν. τὸ *μέντζο*, γαλλ. le cargue - fond, ἀγγλ. the bunt - line, Ναυτ. ὀνομ. ἄρθρ. 753) πρὸς ἄρσιν τοῦ μέσου τοῦ ποδώματος κατὰ τὰς συστολὰς τῶν ἱστίων πλὴν τῶν σιπάρων καὶ τῶν φωσώνων τῶν μικρῶν πλοίων μὴ ἐχόντων τοιούτους (βλ. λ. *συστολεὺς* τετραγώνων καὶ σχ.). Σ. Ε. Λ.

— **μέσος χαρακτὴρ** *[Ρητορ.]*. Εἷς τῶν τριῶν χαρακτήρων (*ἁπλοῦς, σεμνός, μέσος*), εἰς οὓς διαιροῦσι τὸ ὕφος ὁ Κικέρων καὶ ὁ Κοϊντιλιανὸς (βλ. λ. *χαρακτὴρ* καὶ *ὕφος*). Ι. Φ. Δ.

— **μέσος χρόνος** *[Ἀστρον.]*. Ἡ ὡριαία γωνία τοῦ μέσου Ἡλίου ἐν ἑκάστῳ τόπῳ. Ἐπειδὴ ὁ ἀληθὴς Ἥλιος κινεῖται ἀνωμάλως, ἡ διάρκεια τῆς ἀληθοῦς ἡλιακῆς ἡμέρας ἢ ὥρας εἶναι διάφορος κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχὰς τοῦ ἔτους. Τοὐναντίον ὁ μέσος ἥλιος κινεῖται ὁμαλῶς, ἤτοι ἡ ὡριαία γωνία αὐτοῦ μεταβάλλεται κατὰ τὸ αὐτὸ ποσὸν ἐντὸς ὡρισμένου χρονικοῦ διαστήματος. Συνεπῶς ἡ ἑκάστοτε τιμὴ αὐτῆς δυνατὸν νὰ παρέχηται διά τινος ὁμαλῶς κινουμένου μηχανισμοῦ, ὅπως ὁ τῶν ὡρολογίων (ἐκκρεμῶν ἢ χρονομέτρων) καὶ δὲν διαφέρει κατὰ πολὺ τῆς ἀντιστοίχου τιμῆς τῆς ὡριαίας γωνίας τοῦ ἀληθοῦς Ἡλίου, ἤτοι τοῦ ἀληθοῦς χρόνου. Διὰ τοὺς δύο τούτους λόγους ὁ μέσος ἡλιακὸς χρόνος χρησιμοποιεῖται ἤδη γενικῶς, τόσον δι' ἐπιστημονικοὺς σκοπούς, ὅσον καὶ διὰ τὰς κοινωνικὰς ἀνάγκας τοῦ ἀνθρώπου.

Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα καὶ τὸν μεσαίωνα τὸ ἡμερονύκτιον διῃρεῖτο εἰς δύο μέρη, τὴν ἡμέραν καὶ τὴν νύκτα, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν φαινομένων τῆς ἀνατολῆς καὶ τῆς δύσεως τοῦ Ἡλίου. Προσέτι ἡ μὲν ἡμέρα διῃρεῖτο εἰς δύο ἴσα μέρη ὑπὸ τῆς στιγμῆς τῆς ἄνω μεσουρανήσεως τοῦ ἡλίου, ἡ δὲ νὺξ εἰς φυλακὰς ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἀνατολῆς, τῆς μεσουρανήσεως καὶ τῆς δύσεως ὡρισμένων ἀπλανῶν. Τόσον ἡ ἡμέρα ὅσον καὶ ἡ νὺξ περιελάμβανον ἑκατέρα ἀνὰ 12 ὥρας μεταβλητῆς διαρκείας, ἀναλόγως τῶν ὡρῶν τοῦ ἔτους. Αἱ μεταβληταὶ αὗται ὧραι ἐκαλοῦντο καιρικαὶ ὧραι, εἰς ἀντιδιαστολὴν ἀπὸ τῶν ἰσημερινῶν ὡρῶν, αἵτινες ἦσαν τῆς αὐτῆς διαρκείας, εἴτε ἀνῆκον εἰς τὴν ἡμέραν εἴτε ἀνῆκον εἰς τὴν νύκτα.

Εἰς τὴν Ἑλλάδα ἡ χρῆσις τοῦ μέσου χρόνου εἰσήχθη ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τοῦ Ἐθνικοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν (1846), ἐν Παρισίοις δὲ τὰ δημόσια ὡρολόγια ἐτέθησαν εἰς μέσον χρόνον ἀπὸ τοῦ 1816. Σ. Π.

**μεσοσαλπιγγικὸς** *σωλὴν* *[Ἀνατομ.]*. Σωλὴν ἐν τῷ κροταφικῷ ὀστῷ, ὅστις δι' ὁριζοντίου διαφράγματος διαιρεῖται εἰς δύο ἡμισωλήνια, ἄγοντα εἰς τὸ κοῖλον τοῦ τυμπάνου τοῦ ὠτός. Ι. Π.

Digitized by Google

**μεσοσαλπίγγιον** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*. Ἡ μοῖρα τῶν πλατέων συνδέσμων τῆς μήτρας, ἡ μεταξὺ τοῦ *μεσῳοθηκίου* (βλ. λ.) καὶ τῆς σάλπιγγος (ἢ φαγωγοῦ) ἐντεινομένη. Ι. Π.

**μεσοσαράκοστο** (τό), καὶ ***μισοσαράκοστο***· συνήθ. πληθυντικῶς ***μεσοσαράκοστα***· εἰς τὸ μέσον τῆς τεσσαρακοστῆς: «θά 'ρθω μεσοσαράκοστα».

**μεσοσιγμοειδὲς** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*. Πτυχὴ τοῦ περιτοναίου μακρά, ἀφ' ἧς κρέμαται ἡ εὐκίνητος πυελικὴ μοῖρα τοῦ σιγμοειδοῦς κόλου· μεταξὺ τῶν δύο πετάλων τοῦ μεσοσιγμοειδοῦς πορεύονται αἱ τρεῖς ἀρτηρίαι καὶ τὰ νεῦρα τοῦ σιγμοειδοῦς κόλου. Ι. Π.

—**μεσοσιγμοειδὲς *κόλπωμα*** *[Ἀνατομ.]*. Τοῦτο εὑρίσκεται ὄπισθεν τοῦ σιγμοειδοῦς κόλου, ἔχον στόμιον, κείμενον ἰσοϋψῶς τῷ ἀκρωτηρίῳ καὶ βλέπον πρὸς τὰ κάτω καὶ ἀριστερά, καὶ πυθμένα, διήκοντα κατὰ μῆκος τῆς ἀριστερᾶς κοινῆς λαγονίου ἀρτηρίας πρὸς τὰ ἄνω, ἐνίοτε μέχρι τοῦ παγκρέατος· εἰς τὸ κόλπωμα τοῦτο δυνατὸν νὰ ἐμπέσωσιν ἐντερικαὶ ἕλικες καὶ οὕτω νὰ παραχθῇ ὀπισθοπεριτοναϊκὴ κήλη. Ι. Π.

**μεσοσκέλιον** (τό), καὶ ***μεσόσκελον***· ἐπὶ τῶν ἵππων καὶ τῶν ἄλλων ὑποζυγίων, τὸ μεταξὺ τῶν σκελῶν ἢ τῶν μασχαλῶν μέρος.

**μεσοσπονδύλιος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἀνὰ μέσον δύο σπονδύλων κείμενος ἢ διὰ πλειόνων σπονδύλων διήκων. Ι. Π.

— **μεσοσπονδύλια *τρήματα*** *[Ἀνατομ.]*. Τρήματα, ἅτινα ἀπαρτίζονται ἐπὶ τὰ πλάγια τῆς σπονδυλικῆς στήλης ἐκ τῆς ἑνώσεως τῶν ἐντομῶν, ἃς ὁ αὐχὴν τοῦ τόξου ἑκάστου σπονδύλου φέρει, μετὰ τῶν ἐντομῶν τοῦ ὑπερκειμένου ἢ ὑποκειμένου σπονδύλου. Τὰ τρήματα ταῦτα, 31 τὸν ἀριθμὸν ὄντα, ἄγουσιν εἰς τὸν νωτιαῖον σωλῆνα καὶ χρησιμεύουσι πρὸς δίοδον τῶν νωτιαίων νεύρων καὶ φλεβῶν. Ι. Π.

— **μεσοσπονδύλιοι *σύνδεσμοι*** *[Ἀνατομ.]*. Οὗτοι, δισκοειδεῖς ἰνοχονδρώδεις ὄντες, παρεμβάλλονται μεταξὺ τῶν σωμάτων τῶν σπονδύλων, ἔχοντες σχῆμα ἀμφικύρτου φακοῦ, οὗ αἱ μὲν ἐπιφάνειαι προσφύονται εἰς τὰς ἀντιστοίχους ἐπιφανείας τῶν σπονδυλικῶν σωμάτων, ἡ δὲ περιφέρεια συνάπτεται μετὰ τῶν ἐπιμήκων συνδέσμων τῆς σπονδυλικῆς στήλης. Ἀποτελοῦνται δ' ἐκ τοῦ περιφερικοῦ ἰνώδους δακτυλίου, ὅστις συνίσταται ἐξ ὁμοκέντρων στιβάδων στερροῦ ἰνώδους συνδετικοῦ ἱστοῦ μετὰ χονδρικῶν κυττάρων, καὶ ἐκ τοῦ κεντρικοῦ πηκτοειδοῦς πυρῆνος, μαλθακοῦ τὴν σύστασιν καὶ ἐλαστικοῦ, στερουμένου ἀγγείων. Χρησιμεύουσι δὲ οὐ μόνον πρὸς συγκράτησιν τῶν σωμάτων τῶν σπονδύλων, ἀλλὰ καὶ πρὸς ἄμβλυνσιν τῶν πλήξεων καὶ τῆς πιέσεως. Ι. Π.

— **μεσοσπονδύλιοι *φλέβες*** *[Ἀνατομ.]*. Αὗται ἀποτελοῦσι συνέχειαν τῶν προσθίων τοῦ σπονδυλικοῦ σωλῆνος πλεγμάτων, συνοδεύουσι δὲ διὰ τῶν μεσοσπονδυλίων τρημάτων τὰ νωτιαῖα νεῦρα. Ι. Π.

**μεσοσταφυλία** *[Ἀνθρωπολ.]*. Ἡ μέση μορφὴ τῆς ὑπερῴας. Ὁ ὅρος ἐλήφθη ἀστόχως ἐκ τῆς *σταφυλῆς* τοῦ στόματος καὶ τοῦ *σταφυλίου*, σημείου μετρήσεως ἐπὶ τοῦ κρανίου. Ἐκ τῆς σχέσεως τοῦ μήκους καὶ τοῦ πλάτους τῆς ὑπερῴας (ἔσωθεν τοῦ φραγμοῦ τῶν ὀδόντων) ἔχομεν τὸν «ὑπερῴϊον δείκτην», ἀναλόγως τοῦ ὁποίου διακρίνομεν: *λεπτοσταφυλίαν, μεσοσταφυλίαν* (80.0 — 84.9) καὶ *βραχυσταφυλίαν* (στενή, μέση, πλατεῖα ὑπερῴα). Γενικῶς, διακρίνονται διὰ τὴν ἄκραν βραχυσταφυλίαν τὰ μογγολικὰ φῦλα. Αἱ λευκαὶ φυλαὶ ἐμφανίζουν μεσοσταφυλίαν καὶ αἱ νεγρικαὶ λεπτοσταφυλίαν, ἔχουν δηλαδὴ τὴν ἐπιμηκεστέραν ὑπερῴαν. Ἄκραν λεπτοσταφυλίαν ἐμφανίζουν τὰ λοιπὰ πρωτεύοντα (πίθηκοι). Ἡ γυνὴ ἔχει εὐρυτέραν ὑπερῴαν τοῦ ἄρρενος. Ι. Γ. Κ.

**μεσόστεγον** *[Ναυτ.]*. Πᾶς ὑπόστεγος χῶρος (κοιν. τὸ *ταμπούκι*, γαλλ. le carosse ἢ le rouf, ἀγγλ. the canopy, Ναυτ. Ὀνοματ. ἄρθρ. 62), κατασκευαζόμενος ἐπὶ τοῦ καταστρώματος τοῦ πλοίου, μεταξὺ προστέγου καὶ ἐπιστέγου, καὶ τοῦ ὁποίου οἱ παράλληλοι τῷ διαμήκει ἐπιπέδῳ τοῖχοι δὲν συμπίπτουν πρὸς τὰς πλευρὰς τοῦ πλοίου, ὄντες ἔνδον ὡς πρὸς αὐτάς. Εἰδικώτερον περίκλειστον κατασκεύασμα ἐπὶ τοῦ μέσου τοῦ καταστρώματος, χρησιμοποιούμενον εἰς τὰ ἐπιβατηγὰ ὡς καπνιστήριον. Σ. Ε. Λ.

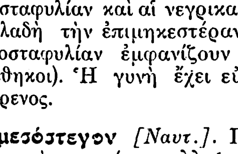

*Μεσόστεγον (Α).*

**μεσόστενος** (ὁ) (Messostenus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ρυγχωτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἰχνευμονιδῶν*, περιλαμβάνον μικροὺς ἰχνεύμονας μὲ σῶμα ἐπίμηκες, πόδας ἐπιμήκεις καὶ πτέρυγας μακράς. Περὶ τὸ μέσον τῆς κεφαλῆς φέρουν ἰσχυρὸν τέρετρον, δι' οὗ προξενοῦσιν ὀπὰς εἰς τοὺς κορμοὺς τῶν δένδρων, ἵνα ἐναποθέσωσι τὰ ᾠά των. Εἴδη τινὰ ἐναποθέτουσι τὰ ᾠά των εἰς τὸ σῶμα τῶν προνυμφῶν ἑτέρων ἐντόμων. Δ. Ν. Π.

**μεσόστεος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μεταξὺ τῶν ὀστῶν κείμενος.

—**μεσόστεοι *μύες*** *[Ἀνατομ.]*. Οὕτω καλοῦνται οἱ μύες, οἱ προσφυόμενοι ἐπὶ τῶν πρὸς ἀλλήλας ἐστραμμένων ἐπιφανειῶν ἀντικειμένων ὀστῶν, πληροῦντες τὰ μεταξὺ αὐτῶν διαστήματα καὶ καταφυόμενοι συνήθως ἐπὶ στοῶν συνεχομένων πρὸς ταῦτα: 1) *Τοῦ ποδός*. Διακρίνονται οὗτοι εἰς *ραχιαίους*, ὄντας τρεῖς, πληροῦντας τὰ μεσόστεα διαστήματα, καὶ εἰς *πελματικούς*, ὄντας ἐπίσης τρεῖς. 2) *Τῆς χειρός*. Οὗτοι πληροῦντες τὰ μεταξὺ τῶν μετακαρπίων ὀστῶν διαστήματα, διῄρηνται εἰς *ραχιαίους*, τέσσαρας ὄντας, καὶ εἰς τρεῖς *παλαμιαίους*. Κοινὸς δὲ χαρακτὴρ τῶν μεσοστέων ἐν γένει μυῶν εἶναι ἡ ἐκ τῶν μετακαρπίων καὶ μεταταρσίων ὀστῶν ἔκφυσις καὶ ἡ εἰς τὰς φάλαγγας τῶν δακτύλων τῆς χειρὸς καὶ τοῦ ποδὸς κατάφυσις. Ι. Π.

—**μεσόστεοι *σύνδεσμοι*** *[Ἀνατομ.)*. Οἱ σύνδεσμοι οἱ καταλαμβάνονοντες τὰ μεταξὺ δύο ἀντικειμένων ὀστῶν διαστήματα (=τὰ μεσόστεα). Ι. Π.

**μεσοστερνικὸν** (τὸ) *[Ἀνθρωπολογ.]*. Ἀνθρωπομετρικὸν συμβατικὸν σημεῖον ἐπὶ τοῦ σώματος. Λαμβάνεται εἰς τὸ σημεῖον τῆς διασταυρώσεως τοῦ ὀβελιαίου ἐπιπέδου μετὰ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ διερχομένου διὰ τῆς τετάρτης πλευροστερνικῆς συγχονδρώσεως ἀμφοτέρωθεν, κατὰ τὸ μέσον δηλαδὴ περίπου τοῦ στέρνου καὶ τὸ ὕψος τῆς συγχονδρώσεως ταύτης. Χρησιμεύει, πλὴν ἄλλων, διότι μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ ὁριζοντίως ἀντιστοίχου σημείου τῆς σπονδυλικῆς στήλης λαμβάνεται τὸ βάθος τοῦ θώρακος ἢ μῆκος· ἐπίσης κατὰ τὸ ὕψος τοῦτο λαμβάνομεν τὴν περίμετρον τοῦ θώρακος ἐνίοτε. Ι. Γ. Κ.

**μεσόστερνον** (τό)· τὸ μέσον στέρνον, τὸ μέσον τμῆμα τοῦ στέρνου.

**μεσοστοίχιον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται τὸ στρῶμα ἐκεῖνο τοῦ φυτικοῦ μορίου, ὅπερ διαχωρίζει τὰς μεμβράνας τῶν κυττάρων.

**μεσοστομίδαι** (οἱ) (Mesostomidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατελμίνθων*, περιλαμβάνουσα μικροτάτους σκώληκας μὲ σῶμα διαφανές, ὅπερ κοσμεῖται διὰ κινητικῶν βλεφαρίδων. Γνωστὰ ἀρκετὰ γένη ζῶντα εἰς τὰ γλυκέα ἢ καὶ θαλάσσια ὕδατα, ἐξ ὧν ἀξιολογώτερον εἶναι τὸ *μεσόστομον* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μεσόστομον** (τὸ) (Mesostomum) *[Ζωολ.]*. Γένος σκωλήκων τῆς οἰκογενείας τῶν *μεσοστομιδῶν*, περιλαμβάνον ἀρκετὰ εἴδη ἀπαντῶντα εἰς τὰ γλυκέα ὕδατα, σχεδὸν ἀποκλειστικῶς τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μεσοστρατῆς**· ἐπίρρ., εἰς τὸ μέσον τῆς στράτας, τῆς πορείας: «μᾶς ἔπιασε βροχὴ μεσοστρατῆς».

**μεσοστύλιον** (τό), καὶ ***μεσόστηλον***· τὸ μεταξὺ δύο στήλων, δύο κιόνων διάστημα.

**μεσοσφαγιτιδικὴ *ἄκανθα*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *ἐνδοσφαγιτιδικὴ ἄκανθα*.

**μεσοσφηνοειδὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ μεταξὺ τῶν σφηνοειδῶν ὀστῶν κείμενος.

**μεσοτάνη** (Mesotan) *[Φαρμ. Χημ.]*. Οὕτως ἐκλήθη ὁ σαλικυλομεθοξυμεθυλεστήρ:

$$C_6H_4\begin{cases}OH\\COO.CH_2OCH_3\end{cases}$$

Διαυγὲς ἐλαιῶδες ὑγρὸν εἰδικοῦ βάρους 1.2 ἕως $15^0$, ὀλίγον διαλυτὸν ἐν ὕδατι, εὐδιάλυτον εἰς ἀλκοόλην, ὀσμῆς ἀσθενῶς ἀρωματικῆς. Ἡ μεσοτάνη ἀνεγράφη ὡς ἀναπλήρωμα τοῦ ἐλαίου τῆς γωλθερίας ἐξωτερικῶς εἰς ἐντριβάς. Κ. Γ. Μ.

**μεσοτάρσιος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἐν τῷ μέσῳ τοῦ ταρσοῦ, ὁ μεταξὺ τῶν ὀστῶν τοῦ ταρσοῦ κείμενος: «μεσοτάρσιος ἄρθρωσις».

—**μεσοτάρσιοι *διαρθρώσεις*** *[Ἀνατομ.]*. Διαρθρώσεις, καθ' ἃς συντάσσονται τὰ ὀστᾶ τοῦ ταρσοῦ πρὸς ἄλληλα. Διαστέλλονται δέ: α') εἰς τὰς *ἀστραγαλοπτερνικὰς* ἢ τὰς κάτωθεν τοῦ ἀστραγάλου· β') τὴν *ἐγκαρσίαν τοῦ ταρσοῦ* ἢ τὴν *χοπάρτειον διάρθρωσιν*· γ') τὴν *σκαφοσφηνοειδῆ*, καὶ δ') τὰς *μεσοσφηνοειδεῖς*, κειμένας μεταξὺ τῶν τριῶν σφηνοειδῶν. Ι. Π.

**μεσοτείχισμα** (τὸ) *[Ὀχυρωτ.]*. Ἐν τῇ παλαιᾷ ὀχυρωτικῇ ἐκαλεῖτο οὕτω τὸ μέσον ἑνὸς τῶν μετώπων τῶν ἔργων τῆς πολυγωνικῆς χαράξεως. Ἡ λέξις ἐτίθετο κυρίως ὡς δεύτερον συνθετικόν, χρησιμοποιουμένου τοῦ ὅρου *προμεσοτείχισμα*, σημαίνοντος τὸ τριγωνικὸν ἔργον τὸ ἐγκαθιστάμενον πρὸ τοῦ μέσου τοῦ μετώπου τῆς πολυγωνικῆς χαράξεως, τὸ ἀντίστοιχον πρὸς τὴν *μήνην* (demi-lune), ἤτοι τὸ τριγωνικὸν ἔργον τὸ πρὸ τοῦ μεταπυργίου τῆς προμαχωνικῆς χαράξεως. Ν. ΝΟΜΠΕΛΗΣ

**μεσότης**, —*ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μέσου, τὸ νὰ εἶναί τι μέσον: «ἡ μεσότης τοῦ ρήματος εἶναι πολλαπλῆ»· || τὸ μέσον μεταξὺ δύο ἄκρων: «ἡ ἀνδρεία εἶναι μεσότης μεταξὺ φόβου καὶ θάρρους»· || μαθημ., ὁ μέσος ὅρος ἀναλογίας τινός: «ἀριθμητικὴ —, γεωμετρικὴ μεσότης».

—*[Φιλοσ.]* Κατὰ τὸν Ἀριστοτέλη ἡ ἠθικὴ ἀρετὴ εἶναι μεσότης «τοῦ μέσου στοχαστική, κειμένη μεταξὺ δύο κακιῶν, τῆς μὲν καθ' ὑπερβολήν, τῆς δὲ κατ' ἔλλειψιν» (*Ἀριστ.* Ἠθ. Νικ. 2, 6, 15). Οὕτω ἡ ἀνδρεία κατ' αὐτὸν εἶναι ἀρετὴ κειμένη μεταξὺ τῆς θρασύτητος καὶ τῆς δειλίας, ἡ σωφροσύνη μεταξὺ ἀκολασίας καὶ ἀναισθησίας, ἡ ἐλευθεριότης μεταξὺ ἀσωτίας καὶ ἀνελευθερίας, ἡ μεγαλοπρέπεια μεταξὺ ἀπειροκαλίας καὶ μικροπρεπείας, ἡ μεγαλοψυχία μεταξὺ χαυνότητος καὶ μικροψυχίας. Τὴν ἀντίληψιν ταύτην ἐπικαλοῦνται πάντες οἱ ὀπαδοὶ τῆς διατηρήσεως τῶν ὑπαρχόντων, καὶ οἱ φοβούμενοι τὰς ἀκρότητας, ἐκτείνοντες τὴν ἀξίαν αὐτῆς ἀπὸ τοῦ ἠθικοῦ εἰς τὸ γνωσιολογικὸν ἐπίπεδον καὶ ὑποστηρίζοντες πολλάκις ὅτι ὅπως «ἐν τῷ μέσῳ ἡ ἀρετὴ» (in medio virtus), οὕτω καὶ «ἐν τῷ μέσῳ ἡ ἀλήθεια» (in medio veritas). —Ω.

**μεσοτοιχία** (ἡ)· τὸ νὰ ὑπάρχῃ μέσος τοῖχος κοινός, χωρίζων δύο οἰκοδομήματα: «μοῦ δίδει ὁ νόμος δικαίωμα μεσοτοιχίας» δηλαδὴ μοῦ ἐπιτρέπει ὁ νόμος νὰ χρησιμοποιήσω ὡς κοινὸν τοῖχον τὸν τῆς παρακειμένης οἰκοδομῆς, καταβάλλων τὸ ἥμισυ τῆς ἀξίας του, «ἠγόρασα τὸ οἰκόπεδον μὲ τὸ δικαίωμα τῆς μεσοτοιχίας».

—*[Νομ.]* Βλ. *μεσότοιχος*.

**μεσότοιχος** (ὁ)· **ὁ ἐν τῷ μέσῳ τοῖχος, ὁ** χωρίζων δύο οἰκήματα ἢ δωμάτια τοῖχος.

— *[Νομ.] Μεσότοιχος* ἢ *κοινὸς τοῖχος* (paries medius, paries communis) ἢ *διαχωριστικὸς τοῖχος* καλεῖται ὁ τοῖχος ὁ ἀνεγειρόμενος ἐπὶ τοῦ κοινοῦ ὁρίου δύο ὁμόρων ἰδιοκτησιῶν καὶ καταλαμβάνων μέρος ἐξ ἑκατέρας τούτων· εἰδικώτερον δὲ διαχωριστικὸς τοῖχος καλεῖται ὁ μὴ ἀποτελῶν στοιχεῖον τοῦ κτηρίου, ἀλλ' ἁπλοῦν περίφραγμα τοῦ οἰκοπέδου. Τὸν ὁρισμὸν τοῦτον, σύμφωνον πρὸς τὴν ἔννοιαν τοῦ μεσοτοίχου, ἣν διαγράφει τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον, δίδει τὸ ἀπὸ 3/22 Ἀπριλίου 1929 διάταγμα «περὶ γενικοῦ οἰκοδομικοῦ ὀργανισμοῦ τοῦ Κράτους», ὅπερ ἐρρύθμισε τὰ περὶ μεσοτοίχου, ἀπὸ τεχνικῆς ἰδίᾳ ἀπόψεως, εἰς ἐκτέλεσιν τοῦ ἀπὸ 17 Ἰουλίου 1923 νομοθετικοῦ διατάγματος «περὶ σχεδίων πόλεων κλπ.», καταργήσαντος τὸ ἰσχὺν νόμου ἔχον βασιλικὸν διάταγμα τῆς 9 Ἀπριλίου 1836 «περὶ σχεδίου πόλεως Ἀθηνῶν», διὰ τοῦ ἄρθρου 8 τοῦ ὁποίου εἶχον ἐπενεχθῆ προσθῆκαι καὶ τροποποιήσεις εἰς τὰς σχετικὰς διατάξεις τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου.

Κατὰ τὸ δίκαιον τοῦτο, ἐφαρμοζόμενον κατ' ἀρχήν, ὁ μεσότοιχος ἀποτελεῖ πρᾶγμα κοινὸν ἐξ ἀδιαιρέτου. Ἕκαστος συγκοινωνὸς δικαιοῦται νὰ ποιῆται ἐλευθέραν τούτου χρῆσιν καὶ νὰ προβαίνῃ εἰς τὰς ἀναγκαίας πρὸς συντήρησιν αὐτοῦ ἐπισκευάς, καὶ ἄκοντος τοῦ ἑτέρου συγκοινωνοῦ, οὐχὶ ὅμως καὶ εἰς μεταβολὰς καὶ βελτιώσεις, δι' ἃς ἀπαιτεῖται κοινὴ συναίνεσις, ἐκτὸς ἂν αὗται συμφέρουν τῇ κοινωνίᾳ. Οὐχ ἧττον ἡ ἀρχὴ καθ' ἣν οὐδεὶς ἄκων μένει ἐν τῇ κοινωνίᾳ δὲν ἐφαρμόζεται ἐπὶ μεσοτοίχου, λόγῳ τῆς φύσεως τῶν πραγμάτων, ἀπαιτουμένης συναινέσεως πάντων τῶν συγκοινωνῶν πρὸς λύσιν τῆς κοινωνίας. Ἕκαστος ἐξ αὐτῶν ἔχει τὰς ἀνηκούσας εἰς τὸν ἰδιοκτήτην ἀγωγάς, ὡς καὶ τὰ παραγγέλματα τῆς νομῆς, κατά τε τῶν λοιπῶν συγκοινωνῶν καὶ τῶν τρίτων. Τὸ δικαίωμα τοῦ μεσοτοίχου, ἐμπράγματον ὂν ἐπὶ ἀκινήτου, συνιστᾶται, ἀλλοιοῦται ἢ καταργεῖται διὰ συμβολαιογραφικοῦ ἐγγράφου, κατὰ τὸν νόμον περὶ χαρτοσήμου. Τὰς διαστάσεις καὶ θέσεις τοῦ μεσοτοίχου, τὸν τρόπον κατασκευῆς αὐτοῦ καὶ τὰς ἐπ' αὐτοῦ ἐπιτρεπομένας στηρίξεις, τὴν χρησιμοποίησιν αὐτοῦ διὰ νέον κτήριον, τὴν ἀποζημίωσιν τοῦ σχετικοῦ δικαιώματος καὶ τὰς λοιπὰς συναφεῖς λεπτομερείας καθώρισεν ἐν κεφαλαίῳ αὐτοῦ XVI τὸ ὡς ἄνω μνησθὲν ἐκτελεστικὸν διάταγμα, δι' οὗ χαρακτηρίζεται ὁ μεσότοιχος ὡς ἔργον δημοσίας τάξεως, ἀποτελοῦν ὑποχρέωσιν εἰς τὸν οἰκοδομοῦντα, ἐκ λόγων κοινῆς ἀσφαλείας, οἰκονομίας καὶ αἰσθητικῆς. Θ. Ι. ΑΝΔΡΕΑΔΗΣ

**μεσότοπον** *[Γεωγρ.]*, Κώμη τῆς ἐπαρχίας Μηθύμνης τοῦ νομοῦ Λέσβου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον, παράγει δὲ γεωργικὰ προϊόντα καὶ ἔλαιον. Κάτ. (1928) 1.918. Χ. Δ.

**Μεσότοπος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Σιδηροχωρίου (Δεμιρλῆ) τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Δουρμουσλοῦ*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 211. Χ. Δ.

Digitized by Google

**μεσοτροχαντήριοι** *γραμμαὶ [Ἀνατομ.].* Γραμμαὶ δύο, προσθία καὶ ὀπισθία, αἵτινες ἀρχόμεναι ἀπὸ τοῦ προσθίου καὶ τοῦ ὀπισθίου χείλους τοῦ μείζονος τροχαντῆρος τοῦ μηριαίου ὀστοῦ φέρονται λοξῶς πρὸς τὰ κάτω καὶ ἔσω καὶ ἀπολήγουσιν ἡ μὲν ὀπισθία εἰς τὸν ἐλάσσονα τροχαντῆρα, ἡ δὲ προσθία εἰς τὸ ἔσω χεῖλος τῆς τραχείας γραμμῆς, ἀφορίζουσαι ἐκ τῶν κάτω τὸν ὕπερθεν αὐτῶν περιθέοντα ἀνατομικὸν αὐχένα. Ι. Π.

**μεσοτρυγικὸν** *ὀξὺ [Ὀργ. Χημ.].* Μία ἐκ τῶν στερεοϊσομερῶν μορφῶν τοῦ *τρυγικοῦ* ὀξέος (βλ. λ.).

**μεσότυφλον** (τὸ) *[Ἀνατομ.].* Πτωχὴ τοῦ περιτοναίου, συνέχεια οὖσα τοῦ μεσεντερίου καὶ περιβάλλουσα διὰ τῶν δύο πετάλων αὐτῆς τὸ τυφλὸν ἔντερον καὶ τὴν σκωληκοειδῆ ἀπόφυσιν. Ι. Π.

**μεσούα** (ἡ) (Mesua) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σταγονοφοριδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς γῆς καὶ οὗ τὸ ἀπόσταγμα τῶν ἀνθέων χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν μυρεψικήν. Δ. Ν. Π.

**Μεσουδὶε** *[Γεωγρ.]·* βλ. λ. *Ἐλοτζρᾶ.*

**Μεσούντα** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἄρτης καὶ Τζουμέρκων τοῦ νομοῦ Ἄρτης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Τετραφυλίας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μουσιούντας.* Κάτ. (1928) 311. Χ. Δ.

**μεσούρανα·** ἐπίρρ. ἀντὶ *μεσοούρανα* (βλ. λ.).

**μεσουράνημα** (τό)· τὸ νὰ φθάσῃ τις εἰς τὸ μέσον τοῦ οὐρανοῦ, εἰς τὸ ζενὶθ τοῦ μεσημβρινοῦ τόπου τινός: «μεσουράνημα τοῦ ἡλίου, — ἀπλανοῦς ἀστέρος» κτλ.»· ‖ μεταφ., τὸ ὕψιστον σημεῖον τῆς ἀκμῆς, τῆς εὐδοκιμήσεως, τῆς δόξης: «τὴν ἐποχὴν ἐκείνην εὑρίσκετο εἰς τὸ μεσουράνημα τῆς δόξης του»· ‖ ὁ μεταξὺ οὐρανοῦ καὶ γῆς χῶρος (Ἀποκαλ. 8, 13).

**μεσουράνησις,** *—εως* (ἡ)· *μεσουράνημα* (βλ. λ.). — *[Ἀστρον.]* Καλεῖται *μεσουράνησις* ἡ διάβασις ἀστέρος διὰ τοῦ μεσημβρινοῦ τόπου τινός. Κατὰ τὴν στιγμὴν ταύτην ἕκαστος ἀστὴρ εὑρίσκεται εἰς τὸ μέγιστον ἀπὸ τοῦ ὁρίζοντος ὕψος αὐτοῦ, ἐπειδὴ δὲ ὁ μεσημβρινὸς ἐν ἑκάστῳ τόπῳ διχοτομεῖ τὰ ἡμερήσια τόξα τῶν ἀστέρων, ὅταν οὗτοι μεσουρανῶσιν, εὑρίσκονται εἰς ἴσην ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ ἀνατολικοῦ καὶ τοῦ δυτικοῦ ὁρίζοντος, ἤτοι τρόπον τινὰ εἰς τὸ μέσον τοῦ οὐρανοῦ, ἐξ οὗ καὶ ἡ προέλευσις τοῦ ὅρου. Ἡ μεσουράνησις λέγεται *ἄνω* ἢ *κάτω*, καθόσον ὁ ἀστὴρ διέρχεται διὰ τοῦ τόξου τοῦ μεσημβρινοῦ, ὅπερ εὑρίσκεται ὑπεράνω ἢ ὑποκάτω τοῦ ὁρίζοντος τοῦ παρατηρητοῦ. Εἰδικῶς προκειμένου περὶ τοῦ Ἡλίου ἡ στιγμὴ τῆς ἄνω μεσουρανήσεως τοῦ κέντρου αὐτοῦ λέγεται *μεσημβρία*, τῆς δὲ κάτω μεσουρανήσεως *μεσονύκτιον*.

Κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς ἄνω μεσουρανήσεως ἀστέρος ἡ ὀρθὴ ἀναφορὰ αὐτοῦ ἰσοῦται πρὸς τὸν ἀστρικὸν χρόνον τοῦ τόπου. Ὡ ἐκ τούτου, πρὸς ἀκριβῆ προσδιορισμὸν τῆς ὥρας ὑπὸ τῶν ἀστεροσκοπείων, παρατηροῦνται διάφοροι ἀπλανεῖς ἀστέρες κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς ἄνω μεσουρανήσεως αὐτῶν. Ἐπίσης κατὰ τὴν αὐτὴν στιγμὴν ὁ προσδιορισμὸς τῆς ζενιθίας ἀποστάσεως τῶν ἀστέρων, γνωστῆς οὔσης τῆς ἀποκλίσεως αὐτῶν, παρέχει τὸ γεωγραφικὸν πλάτος τοῦ τόπου. Τὸ ὄργανον, τὸ ὁποῖον χρησιμοποιεῖται διὰ τοὺς σκοποὺς τούτους, εἶναι ὁ μεσημβρινὸς κύκλος.

Ἐὰν ἀστήρ τις εἶναι ἀειφανής, ἡ παρατήρησις τῶν ὑπὲρ τὸν ὁρίζοντα ὑψῶν αὐτοῦ κατὰ τὰς στιγμὰς τῆς ἄνω καὶ τῆς κάτω μεσουρανήσεως διὰ θεοδολίχου ἢ διὰ μεσημβρινοῦ κύκλου ἐπιτρέπει τὸν προσδιορισμὸν τοῦ γεωγραφικοῦ πλάτους τοῦ τόπου, διότι τὸ ἡμιάθροισμα τῶν δύο τούτων ὑψῶν ἰσοῦται πρὸς τὸ ἔξαρμα τοῦ πόλου. Ἡ στιγμὴ τῆς ἄνω μεσουρανήσεως τοῦ ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου, καθ' ἣν τὸ ἀστρικὸν ὡρολόγιον δεικνύει 0ω. 0λ. 0δ. λαμβάνεται ὡς ἀρχὴ τῆς *ἀστρικῆς ἡμέρας*. Ὁμοίως ἡ στιγμὴ τῆς ἄνω μεσουρανήσεως τοῦ ἀληθοῦς ἢ τοῦ μέσου Ἡλίου ἀποτελεῖ τὴν ἀρχὴν τῆς *ἀληθοῦς* ἢ τῆς *μέσης ἀστρονομικῆς ἡμέρας*. Ἀντὶ τῆς ἀστρονομικῆς ἡμέρας οἱ ἀστρονόμοι ἀπὸ τοῦ ἔτους 1925, κατόπιν ἀποφάσεως διεθνοῦς ἀστρονομικοῦ συνεδρίου, μεταχειρίζονται τὴν *πολιτικὴν ἡμέραν*, ἡ ὁποία ἄρχεται 12 ὥρας ἐνωρίτερον τῆς ἀστρονομικῆς, ἤτοι ἀπὸ τῆς στιγμῆς τῆς κάτω μεσουρανήσεως τοῦ Ἡλίου. Ἀπὸ τοῦ προαναφερθέντος ἔτους τὰ ὑπὸ τῶν διαφόρων ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων παρεχόμενα στοιχεῖα δίδονται διὰ 0ω. 0λ. 0δ. παγκοσμίου χρόνου, ἤτοι διὰ τὴν στιγμὴν τῆς κάτω μεσουρανήσεως τοῦ Ἡλίου ἐν Γρήνουϊτς. Σ. Π.

**μεσουρανῶ** (*—έω*)· εὑρίσκομαι ἐν τῷ μέσῳ τοῦ οὐρανοῦ, εἰς τὸ ζενὶθ τοῦ μεσημβρινοῦ τόπου τινός: «ὁ ἥλιος μεσουρανεῖ», «οἱ μεσουρανοῦντες ἀπλανεῖς ἀστέρες»· ‖ μεταφ., εὑρίσκομαι εἰς τὸ ὕψιστον σημεῖον τῆς ἀκμῆς, τῆς εὐδοκιμήσεως, τῆς δόξης μου: «ἡ φήμη του μεσουρανεῖ».

**μεσουρία** (ἡ) (κοιν. *σακκολέβα τῆς μπούμας*, γαλλ. l'étrangloir, ἀγγλ. the throat brail) *[Ναυτ.].* Ὁ κύριος τῶν συστολέων ἐπιδρόμου καὶ ἡμιολίων, ἔχων τὸ μέσον του εἰς τὸ μέσον τοῦ πρυμναίου λώματος καὶ ὧν διπλοῦς, εἰς παρ' ἑκατέραν τοῦ ἱστίου ἐπιφάνειαν. Διαβαλλόμενος διὰ τροχίλου ὑπὸ τὴν γνάθον τοῦ κέρατος, φέρει πρὸς αὐτὴν τὸ μέσον τοῦ πρυμναίου λώματος τῶν τραπεζοειδῶν ἱστίων. Σ. Ε. Λ.

**μεσοφαλαγγικαὶ** *διαρθρώσεις [Ἀνατομ.].* —1) *Χειρός.* Πλὴν τοῦ ἀντίχειρος, ἔχοντος μίαν μόνον μεσοφαλαγγικὴν διάρθρωσιν, οἱ λοιποὶ δάκτυλοι κέκτηνται ἀνὰ δύο. Αἱ δ' ἀρθρικαὶ ἐπιφάνειαι εἶναι ἔνθεν μὲν ἡ κεφαλὴ τῆς προηγουμένης φάλαγγος, ἔνθεν δ' ἡ γλήνη τῆς ἑπομένης, ὁ δ' ἀρθρικὸς θύλακος ἐνισχύεται ὑπὸ δύο πλαγίων συνδέσμων. Ἐν αὐταῖς τελεῖται κυρίως κάμψις καὶ ἔκτασις.

—2) *Ποδός.* Αὗται παριστῶσι γιγγλύμους ἢ γωνιώδεις διαρθρώσεις· αἱ ἀρθρικαὶ ἐπιφάνειαι αὐτῶν εἶναι ἔνθεν μὲν ἡ κεφαλὴ τῆς προηγουμένης φάλαγγος, ἔνθεν δὲ ἡ γλήνη τῆς ἑπομένης· ὁ δὲ θυλακοειδὴς σύνδεσμος ῥαχιαίως μὲν κρατύνεται ὑπὸ τῶν τενόντων τῶν ἐκτεινόντων μυῶν, πελματιαίως δὲ ὑπὸ ἰνοχονδρίνου πετάλου, τοῦ *γληνιαίου συνδέσμου*, ἐν δὲ τοῖς πλαγίοις ὑπὸ τῶν πλαγίων συνδέσμων. Ἐν αὐταῖς τελεῖται μόνον ῥαχιαία καὶ πελματικὴ κάμψις. Ι. ΠΑΠΑΘΕΟΔΩΡΟΥ

**μεσοφάλαγξ** (ἡ) *[Ἱππολ.].* Καλεῖται τὸ μέσον τμῆμα τῆς φάλαγγος τοῦ ποδὸς τῶν ἵππων (βλ. *φάλαγξ*).

**μεσοφάτνια** *διαφράγματα.* Διαφράγματα χωρίζοντα ἀπ' ἀλλήλων τὰ ὀδοντικὰ φατνία (βλ. *φατνία*).

**μεσοφλεβικός,** *—ή, —όν·* ὁ κείμενος μεταξὺ τῶν φλεβῶν.

**μεσοφόρι** (τό), καὶ *μισοφόρι·* δημοτ., φουστάνι τῶν γυναικῶν φορούμενον ἐσωτερικῶς, ἄλλως *μεσοφούστανο*: «μεταξωτὸ μεσοφόρι», «περπατάει καὶ τρίζει τὸ μεσοφόρι της».

**μεσοφούστανο** (τό)· δημοτ., ἄλλως *μεσοφόρι* (βλ. λ.).

**μεσόφραγμα** (τὸ) *[Ζῳολ.].* Καλεῖται ἡ διαχωριστικὴ μεμβράνα τοῦ μεσοθώρακος τῶν ἐντόμων, ὡς καί τινων μαλακοστράκων.

**μεσοφρυοϊνιακὴ** *καμπύλη [Ἀνατομ.]·* βλ. λ. *κρανίον.*

**μεσόφρυον** (τὸ) *[Ἀνατομ.].* Τὸ μεταξὺ τῶν δύο ὀφρύων διάστημα, ἄνωθεν τῆς ῥίζης τῆς ῥινός. Ι. Π.

**μεσόφωνος** (ἡ) (ἰταλ. mezzo soprano). Γυναικεία ἢ παιδικὴ φωνή, κατέχουσα τὸ μέσον μεταξὺ τῆς ὑψιφώνου καὶ τῆς ἀνθυψιφώνου (κοντράλτο). Ἡ ἔκτασίς της εἶναι:

δηλαδὴ σχετικῶς ὀλίγον ἐκτεταμένη. Ὡς χροιὰ ἡ φωνὴ τῆς μεσοφώνου, παρουσιάζεται ὁμοιάζουσα πρὸς τὴν τῆς ὑψιφώνου εἰς τοὺς ὀξεῖς φθόγγους καὶ πρὸς τὴν τῆς ἀνθυψιφώνου εἰς τοὺς βαρεῖς· ἡ καλυτέρα της περιοχὴ εἶναι ἡ τοῦ κέντρου. Παλαιότερον ἡ φωνὴ τῆς μεσοφώνου ἐχρησιμοποίει ἴδιον γνώμονα, τὸν τοῦ *ντο* ἐπὶ τῆς δευτέρας γραμμῆς· σήμερον τὸ σύστημα τοῦτο ἐγκατελείφθη καὶ ἡ μεσόφωνος ἀναγινώσκει διὰ τοῦ γνώμονος τοῦ *σολ* ὡς καὶ αἱ λοιπαὶ γυναικεῖαι φωναί. Γ. Σ.

**Μεσοχαλδηνοί.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι γνωστοὶ *κρυπτοχριστιανοὶ* (βλ. λ.), οἰκοῦντες τὰς ΒΑ. ἐπαρχίας τῆς Μ. Ἀσίας καὶ ἰδίως τὸ Τοροὺλ (Μεσοχαλδίαν, ἐξ ἧς ἔλαβον καὶ τὸ ὄνομα). Ὑπὸ τῶν Τούρκων ἀποκαλοῦνται «τενεσουρὶ» (=δίθρησκοι). —Ω.

**μεσοχείλιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ κείμενος ἀνὰ μέσον δύο χειλέων.

— **μεσοχείλιος** *αὖλαξ [Ἀνατομ.].* Αὖλαξ, ἥτις χωρίζει τὰ μεγάλα χείλη ἀπὸ τῶν μικρῶν τοῦ γυναικείου αἰδοίου καὶ ἥτις πρὸς μὲν τὰ πρόσω (ἄνω) διήκει μέχρι τῆς κλειτορίδος, πρὸς δὲ τὰ ὀπίσω ἐξαφανίζεται εἰς τὸ περίνεον. Ι. Π.

**μεσοχείμωνο** (τό), καὶ *μισοχείμωνο·* δημοτ., τὸ μέσον τοῦ χειμῶνος: παροιμ. «ἡ γριὰ τὸ μεσοχείμωνο ξεράγγουρο γυρεύει».

**μεσοχόνδριος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μεταξὺ τῶν χόνδρων εὑρισκόμενος.

**Μεσοχώρα** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται 20' ΝΔ. τῶν Τρικκάλων, ἐντὸς ὀρεινῆς καὶ δυσβάτου χώρας τῶν ὑπωρειῶν τῆς Πίνδου, ἧτο ἄλλοτε πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Κοθωνίων καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Βιτσίστα.* Κάτ. (1928) 631. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Πλόπι.* Χ. Δ.

**Μεσοχώρια** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τῆς παραλίας, ὅπου ὁ ὅρμος τῶν Καραλίδων, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 521. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ραπταῖοι* καὶ *Τσακαῖοι.* Χ. Δ.

**Μεσοχωριὸ** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 504. Ε. Γ.

**Μεσοχώριον** *[Γεωγρ.].* —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῶν Βοιῶν καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 315.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς Μεθώνης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτοικοι (1928) 454.

— 3) Χωρίον τοῦ δήμου καὶ τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 208.

— 4) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φθιώτιδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῶν κλιτύων τῆς Οἴτης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Διάσκοβον.* Κάτ. (1928) 378.

— 5) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τῶν συνόρων πρὸς Ν. τῆς νοτιοσλαυικῆς κωμοπόλεως Κέναλι καὶ παρὰ τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Θεσσαλονίκης—Μοναστηρίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Χασάνοβον.* Κάτ. (1928) 639. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἐλεοῦσα (Ραχμανλῆ)* καὶ *Μεσόκαμπος (Ὀρτᾶ Ὀμπᾶ).* Χ. Δ.

**Μεσοχωριτῶν,** *τέως δῆμος — [Γεωγρ.].* Παλαιὸς δῆμος τῆς Κερκύρας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Ἁγίων Δέκα, Ἄνω Βυρροῦ, Βαρυπατάδων, Γαστουρίου, Καλαφατιώνων, Καστελλάνων, Κουραμάδων, Κυνοπιαστῶν, Μπενιτσῶν, Πέλεκα, Συναράδων* καὶ *Ψωραρῶν* μὲ ἕδραν τοὺς Καστελλάνους. Ἠρίθμει 9.500 περίπου κατοίκων. Χ. Δ.

**Μεσόχωρον** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Δρατσίστης τῆς ἐπαρχίας Δράμας τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτοικοι (1928) 137. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Τσιφλὶκ Μαχαλέ.*

**Μέσπιλα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἀσσυρίας, κειμένη παρὰ τὸν Τίγρητα ποταμόν. Ἀναφέρεται ἐν τῇ «Ἀναβάσει» τοῦ Ξενοφῶντος (Γ, 4. 10). Περιεβάλλετο ὑπὸ ὑψηλοῦ τείχους ἐκ λευκοῦ λαξευτοῦ λίθου καὶ εἶναι πιθανῶς ἡ αὐτὴ μὲ τὴν *Νινευΐ.*

**μεσπιλέα** (ἡ) (Mespilus) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ῥοδοειδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη φυόμενα ἐν Ἀσίᾳ. Ἐν Εὐρώπῃ ἀπαντᾷ ἓν εἶδος, ἡ *μεσπιλέα ἡ γερμανική* (Mespilus germanica), ἥτις εἶναι ἰθαγενὲς τῆς Εὐρώπης φυτόν, εὑρίσκεται ὅμως καὶ εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ Περσίαν. Εἶναι δένδρον μετρίου ὕψους, ἐν ἀγρίᾳ δὲ καταστάσει ἀπαντᾷ πολλαχοῦ τῶν ὀρεινῶν μερῶν τῆς Ἑλλάδος καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὰ κοινὰ ὀνόματα *μεσπιλιά, μουσμουλιὰ* καὶ ἐν Κύπρῳ ὑπὸ τὰ κοινὰ ὀνόματα *πολεμιδιὰ* καὶ *πομηλιδιά.* Καλλιεργεῖται εἰς πλείστας χώρας τῆς Εὐρώπης καὶ εὐρέως παρ' ἡμῖν διὰ τὸν βρώσιμον καὶ εὔγευστον καρπόν της, ὅστις εἶναι γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *μούσμουλο* καὶ *μούσμουλο.* Πολλαπλασιάζεται δι' ἐμβολιασμοῦ κυρίως ἐπὶ τῆς κυδωνέας. Ἐξωτικὸν εἶδος, ὅπερ ὑπὸ πλείστας ποικιλίας καλλιεργεῖται καὶ παρ' ἡμῖν, εἶναι ἡ *μεσπιλέα ἡ ἰαπωνικὴ* (Mespilus japonica), ἰθαγενές, ἀειθαλὲς δένδρον, πρωϊανθὸν καὶ πρωϊόκαρπον τῆς Ἰαπωνίας. Καλλιεργεῖται πολλαχοῦ, ἐκτὸς διὰ τοὺς καρπούς του, καὶ ὡς κοσμητικόν, λόγῳ τῶν εὐόσμων ἀνθέων καὶ τοῦ ὡραιοτάτου φυλλώματός του, ὑπὸ πλείστας ποικιλίας καὶ εὐδοκιμεῖ κυρίως εἰς κλίματα εὔκρατα. Ὁ καρπὸς της φέρει 2—4 σπέρματα. Οἱ Ἀμερικανοὶ καλλιεργηταὶ κατώρθωσαν νὰ παραγάγωσι ποικιλίαν τινά, ἥτις φέρει καρποὺς μεγαλυτέρους, εὐχυμοτέρους καὶ πολυσαρκοτέρους, περικλείοντας μικρότατα σπέρματα παρ' ὅ,τι τὸ κοινὸν μεσπιλον. Πολλαπλασιάζεται εὐχερῶς διὰ σπορᾶς ὡς καὶ δι' ἐμβολιασμοῦ τῆς μεσπιλέας τῆς γερμανικῆς ἢ καὶ τῆς κυδωνέας. Κυρίως τὸ εἶδος τοῦτο εὐδοκιμεῖ εἰς ἔδαφος ξηρὸν ἢ τακτικῶς ἀρδευόμενον, βαθὺ καὶ καλῶς λιπασμένον. Τὴν μεσπιλέαν προσβάλλουσι πολλαὶ ἀσθένειαι καὶ δὴ ὁ *ἄνθραξ.* Δ. Ν. Π.

Digitized by Google

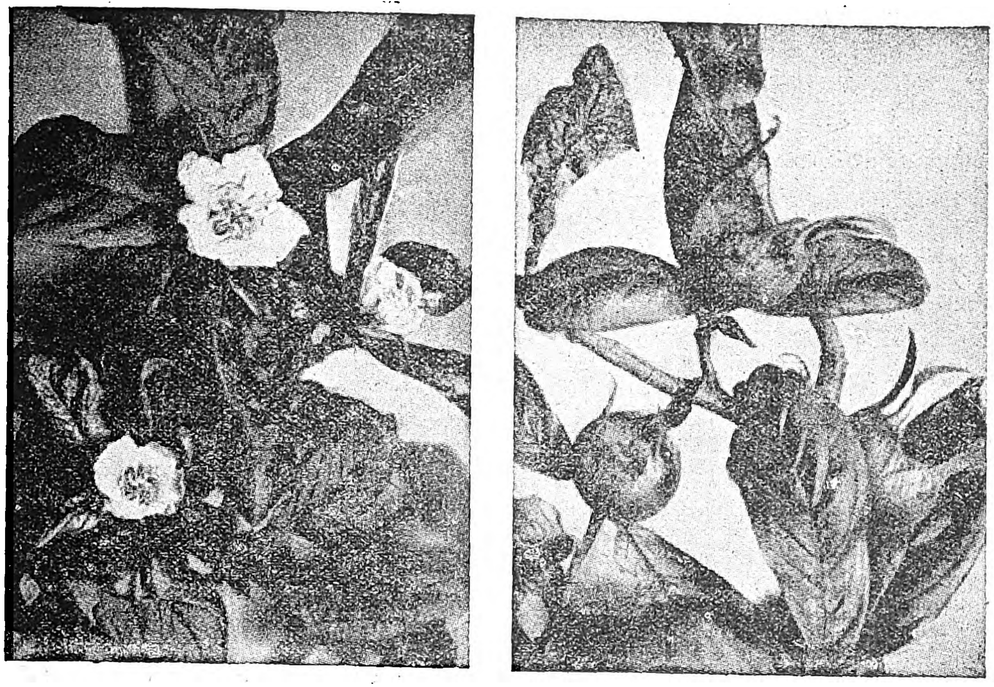

*Κλάδοι μεσπιλέας.*
[1=μετ' ἀνθέων· 2=μετὰ καρπῶν.]

**μεσπιλιά,** ἡ *μεσκουλιὰ* (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μεσπιλέα ἡ γερμανική*.

**Μεσράτα** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μισράτα*.

**Μεσρὼπ ὁ *Μασδότζ*.** Ἀρμένιος ἀρχιερεὺς τοῦ Ε' μ. Χ. αἰῶνος. Ἦτο γραμματεὺς τῆς βασιλικῆς αὐλῆς, μεταφράζων εἰς τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν συριακὴν τὰ βασιλικὰ διατάγματα τοῦ Βαχρὰμ Σαχπούρ. Τῷ 405 ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ καλλιγράφου Ροφανοῦ καὶ μετὰ πολλὰς περιηγήσεις καὶ μελέτας, συνεπλήρωσε τοὺς ἀρχαίους ἀρμενικοὺς χαρακτῆρας καὶ ἐδημιούργησε τὸ ἐκ 36 γραμμάτων ἀποτελούμενον νέον ἀλφάβητον. Σκοπὸς τῆς μεταρρυθμίσεως ταύτης ἦτο ἡ ἐξαφάνισις τοῦ μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἰσχύοντος ξενικοῦ ἀλφαβήτου, εἰς τὸ ὁποῖον ἦσαν γεγραμμένα τὰ διδάγματα τῆς ζωροαστρικῆς θρησκείας. Τοιουτοτρόπως ἐνετάθη ἡ διάδοσις τοῦ Χριστιανισμοῦ διὰ τῆς μεταφράσεως τῶν ἱερῶν βιβλίων. Καὶ ὁ μὲν Μεσρὼπ μετέφρασε τὰς παροιμίας τοῦ Σολομῶντος καὶ ἄλλα βιβλία τῆς Π. Διαθήκης, ὁ δὲ ἀρχιερεὺς Σαχάκ, ὁ ἐπικληθεὶς Μέγας, τοὺς προφήτας καὶ τὰ βιβλία τῆς Κ. Διαθήκης. Τῷ 408 ὁ Μεσρὼπ ἐπεσκέφθη τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου παρουσιάσθη εἰς τὸν αὐτοκράτορα Θεοδόσιον Β' καὶ τὸν πατριάρχην Ἀττικόν, ἐπέστρεψε δὲ φέρων μεθ' ἑαυτοῦ τὸ ἑλληνικὸν κείμενον τῶν εὐαγγελίων καὶ τὰ πρακτικὰ τῆς Α' ἐν Νικαίᾳ οἰκουμενικῆς συνόδου. Κατά τινας μετεφράσθησαν ταῦτα εἰς τὴν ἀρμενικὴν ὑπὸ τοῦ μαθητοῦ του χρονογράφου Κορισὼν ἢ Γκορισών, ὅστις ἔγραψε καὶ βιογραφίαν τοῦ Μεσρώπ. Τῷ 439, ἀποθανόντος τοῦ Σαχάκ, ὁ Μεσρὼπ ἐγένετο ἀρχιερεύς. Ἀπέθανε τῷ 440 (βλ. καὶ λ. *Ἀρμενία [Ἐκκλησ.]*). —Ω.

**Μέσσα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Λακωνικῆς εἰς τὴν χερσόνησον τοῦ Ταϋγέτου καὶ βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου Θυρίδες (Γκρόσσο), κατὰ τὸν ὑπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Τηγάνι σχηματιζόμενον λιμένα (νῦν Μέζαπος), Ἐνωρὶς παρακμάσασα ἐπανεκτίσθη κατὰ τοὺς αὐτοκρατορικοὺς τῆς Ρώμης χρόνους. Ι. Σ. Σ.

**Μέσσαβα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαιοτάτη πόλις τῶν Καρῶν, ἣν ἀνέφερεν ὁ Ἑκαταῖος γεωγραφῶν τὴν Ἀσίαν, ὡς διέσωσε Στέφανος ὁ Βυζάντιος (447,8)· «τὸ ἐθνικὸν Μεσσαβεὺς τῷ τύπῳ τῶν καρικῶν πόλεων». Σ. Ε. Λ.

**Μεσσαία** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Σερρῶν (βλ. *Μεσαία*). Χ. Δ.

**Μεσσάλας** (Messala). Ὄνομα ἐπιφανοῦς οἰκογενείας τῆς ἀρχαίας Ρώμης, κλάδου τοῦ οἴκου τῶν Βαλερίων, ὁ ὁποῖος ἦτο σαβινικῆς καταγωγῆς καὶ διεδραμάτισε σποδαῖον ῥόλον εἰς τὴν Ρωμαϊκὴν ἱστορίαν. Ἱδρυτὴς τῆς οἰκογενείας ταύτης ὑπῆρξεν ὁ *Μάνιος Βαλέριος Μάξιμος Μεσσάλας*, ὅστις ἔλαβε μέρος εἰς τὸν πρῶτον Καρχηδονιακὸν πόλεμον, ἐγένετο ὕπατος τῷ 263 π. Χ. καὶ τιμητὴς τῷ 252. Ἕτεροι διακριθέντες ἀπόγονοί του ὑπῆρξαν ὁ *Μ. Βαλέριος Μεσσάλας Niger*, ἐπιφανὴς ῥήτωρ, σύγχρονος τοῦ Κικέρωνος, γενόμενος ὕπατος τῷ 61 π. Χ. καὶ τιμητὴς τῷ 55. *Μ. Βαλέριος Μεσσάλας*, γενόμενος ὕπατος τῷ 53 π. Χ., φίλος τοῦ Καίσαρος, ἀποσταλεὶς ὑπ' αὐτοῦ εἰς τὴν Ἀφρικὴν καὶ τὴν Ἱσπανίαν καὶ διατελέσας ἐπὶ 55 ἔτη οἰωνοσκόπος. *Μ. Βαλέριος Κορβῖνος Μεσσάλας*, ὁ σημαντικώτερος πάντων, ῥήτωρ, ἱστορικὸς καὶ φιλόλογος, γεννηθεὶς περὶ τὸ 64 π. Χ. καὶ ἀποθανὼν τῷ 13 μ. Χ. Μετέσχε τοῦ ἀγῶνος τοῦ Μ. Ἰουνίου Βρούτου καὶ τοῦ Κασσίου κατὰ τῆς τριανδρίας, βραδύτερον δὲ ὑπεστήριξε τὸν Ἀντώνιον καὶ κατόπιν τὸν Ὀκταβιανόν. Ἀπὸ τοῦ 27 π. Χ. ἀπέσχε τῆς πολιτικῆς καὶ ἠσχολήθη μὲ τὴν ἵδρυσιν μεγαλοπρεπῶν οἰκοδομημάτων ἐν Ρώμῃ, μὲ φιλολογικὰς μελέτας καὶ συναναστροφὰς ποιητῶν καὶ συγγραφέων. Ἡ ῥητορική του δεινότης ἐξαίρεται ὑπὸ τοῦ Σενέκα καὶ Κοϊντιλιανοῦ. Συνέγραψεν «Ἱστορίαν τῶν ἐμφυλίων πολέμων», χρησιμοποιηθεῖσαν ὑπὸ τοῦ Πλουτάρχου· Ὀλίγα σωθέντα ἀποσπάσματα ἐξεδόθησαν ἐν Peter «Histor. Roman. fragm.» (Λειψία 1883) καὶ ἐν Meyer «Orator. Roman. fragm.» (Ζυρίχη 1842). Ὑπὸ τὸ ὄνομά του φέρεται καὶ ἔργον τι «De progeniis Augusti», ὅπερ ὅμως ἀπεδείχθη μεσαιωνικόν. *Μ. Βαλέριος Μεσσαλῖνος*, γενόμενος ὕπατος τῷ 3 π. Χ. Ἀποσταλεὶς τῷ 6 μ. Χ. εἰς τὴν Παννονίαν, ὅπου ἐξερράγη ἐπανάστασις, κατέστειλεν αὐτὴν καὶ ἐτέλεσεν ἐν Ρώμῃ θρίαμβον. Ν. Α.

**Μεσσαλᾶς.** Ὄνομα μιᾶς ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων τῆς Ρώμης οἰκογενειῶν, μεταναστευσάσης εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖθεν μετὰ τὴν ἅλωσιν (1453) εἰς Μεθώνην, ἐκεῖθεν δὲ πάλιν μετὰ τὴν ἅλωσιν ὑπὸ τῶν Τούρκων τῶν φρουρίων τῆς Μεθώνης καὶ Κορώνης (1501) εἰς Κουτήφαρη τῆς Μάνης καὶ ἐκεῖθεν πάλιν εἰς Ζάκυνθον, ὅπου ἐνεγράφη εἰς τὴν χρυσόβιβλον τῷ 1746. Ἐκ τῶν μελῶν αὐτῆς ὁ *Γεώργιος Μεσσαλᾶς* (1690—1751), στρατιωτικός, ἐτιμήθη διὰ τὰς πρὸς τὴν βενετικὴν πολιτείαν ὑπηρεσίας του διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος (1744). Νεώτερα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης διεκρίθησαν εἰς διπλωματικὰς ἰδίως θέσεις καὶ ἄλλα ἀξιώματα: *Διονύσιος* (1827—1909), σπουδάσας τὰ νομικὰ ἐν Παρισίοις καὶ Λονδίνῳ καὶ χρηματίσας ἰδιαίτερος γραμματεὺς τῆς βασιλίσσης Ὄλγας. *Κωνσταντῖνος* (1818—1895), σπουδάσας ἐν Βολωνίᾳ καὶ Πίζῃ τὰ νομικά. Ἔγραψε ποιήσεις καὶ ἄλλα πεζὰ ἔργα. Λ. Χ. Ζ.

**— Μεσσαλᾶς, *Εὐλάμπιος*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ (1864—1925), προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων καὶ προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποστρατήγου. Ὡς νέος ἀξιωματικὸς ὑπηρέτησεν ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν παρὰ τῇ τότε γεωδαιτικῇ ἀποστολῇ τοῦ στρατοῦ. Μετέσχε τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου 1897 μετὰ τοῦ στρατοῦ Ἠπείρου. Φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ταγματάρχου ἀρχικῶς, τοῦ ἀντισυνταγματάρχου κατόπιν, διετέλεσε διοικητὴς τῆς τότε χαρτογραφικῆς ὑπηρεσίας τοῦ στρατοῦ. Εἶτα ὑπηρέτησε παρὰ τοῖς ἀνακτόροις ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α'. Κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους 1912—1913, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου ἀρχικῶς, τοῦ συνταγματάρχου κατόπιν, ὑπηρέτησεν ἀπὸ τοῦ Νοεμβρίου 1912 ὡς διοικητὴς τῆς ὑπηρεσίας μετόπισθεν. Μετὰ τοὺς πολέμους ἐκείνους ἐτοποθετήθη ὡς διοικητὴς τοῦ φρουρίου Θεσσαλονίκης, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τῆς ἀνοίξεως 1917, ὁπότε ἀπηλάθη ἐκ τῆς Θεσσαλονίκης ὑπὸ τοῦ Γάλλου στρατηγοῦ Σαράϊγ. Κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 1917—1920 παρέμεινεν ἐκτὸς τοῦ στρατεύματος. Τὸν Νοέμβριον 1920 ἀνεκλήθη εἰς τὴν ἐνέργειαν, ἀλλὰ δὲν ἀπεδέχθη. Προήχθη τότε εἰς ὑποστράτηγον καὶ ἐξηκολούθησε παραμένων εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μεσσαλῖνα** (Messalina), ***Βαλερία*.** Ρωμαία αὐτοκράτειρα, θυγάτηρ τοῦ Μ. Βαλερίου Μεσσάλα Βαρβάτου, γεννηθεῖσα τῷ 15 μ.Χ. καὶ φονευθεῖσα ἐν Ρώμῃ τῷ 48 μ.Χ. Τῷ 41 ὁ αὐτοκράτωρ Κλαύδιος, γέρων ἤδη, ἀπέπεμψε τὴν σύζυγόν του Πλαυτίαν Οὐγγουλανίλλαν καὶ ἐνυμφεύθη τὴν Μεσσαλῖναν. Ἡ νεαρὰ αὐτοκράτειρα ἦτο τότε 26 ἐτῶν, κασταγή, ἐξαιρέτου καλλονῆς καὶ προικισμένη ἐκ φύσεως μὲ ἰσχυρὸν καὶ σφύζοντα ἐκ ζωῆς ὀργανισμόν, διὰ τοῦτο δὲ εἰς ἄκρον φιλήδονος. Κατ' ἀρχὰς ἔζησε σώφρονα βίον, τοὐλάχιστον ἄνευ δημοσίου σκανδάλου, καὶ ἐγέννησε δύο τέκνα, τὴν Ὀκταβίαν καὶ τὸν Βρεττανικόν. Μετ' ὀλίγον ὅμως ἡ ζωή της ἐν τῷ παλατίῳ ἐξῆψε τὰς φυσικάς της ῥοπὰς καὶ τὴν φιλοδοξίαν της. Ὁ Κλαύδιος, ἀνίκανος νὰ κυβερνᾷ, κατέτριβε τὸν καιρόν του εἰς παιδαριώδεις ἀσχολίας καὶ τέρψεις, ἐγκαταλείψας τὰ ἡνία τῆς αὐτοκρατορίας εἰς τοὺς εὐνοουμένους ἀπελευθέρους του Πολύβιον καὶ Νάρκισσον καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν σύζυγόν του. Ἡ Μεσσαλῖνα ἐξεμεταλλεύθη τὴν παντοδυναμίαν ταύτην πρὸς κορεσμὸν τῶν φιλοδοξιῶν καὶ παθῶν της. Ἐπωφελουμένη παντὸς ἐπαναστατικοῦ κινήματος, καθὼς ἡ λαβοῦσα χώραν τῷ 42 συνωμοσία ὑπὸ τὸν Ἄννιον Βινικιανόν, ἐνήργει ἀθρόας θανατώσεις τῶν πλουσίων Ρωμαίων, τῶν ὁποίων τὰς περιουσίας ἰδιοποιεῖτο· Ἡ ἀνθρωπίνη ζωὴ ἦτο παίγνιον εἰς τὰς χεῖράς της. Ἐθανάτωσε τὴν ἀδελφὴν τοῦ Καλιγούλα Ἰουλίαν Λαβίλλαν, ἢ ἐφθόνει διὰ τὴν καλλονήν της, καθὼς καὶ τὴν θυγατέρα τοῦ Δρούσου Ἰουλίαν. Περιστοιχιζομένη ἀπὸ ἐξαιρετικῶς ὡραίους ἄνδρας, τοὺς ὁποίους ἡ διεφθαρμένη αὐλικὴ ζωὴ συνεκέντρωνεν εἰς τὰ ἀνάκτορα, ἐρρίφθη ἀχαλίνωτος εἰς τὴν ἀκολασίαν, πρὸς τὴν ὁποίαν ἡ ὀργῶσα φύσις της ἔρρεπε καὶ περὶ τῆς ὁποίας καταπληκτικὰς καὶ ἀπιστεύτους ἐνίοτε πληροφορίας μᾶς παρέδωσαν ὁ Τάκιτος, ὁ Πλίνιος ὁ πρεσβύτερος, ὁ Ἰουβενάλης, ὁ Δίων Κάσιος κ. ἄ. Ἀφοῦ ἐχρησιμοποίησεν ἐπὶ μακρὸν ὡς ἐρωμένον της τὸν ἀπελεύθερον τοῦ συζύγου της Πολύβιον, τὸν ἐθανάτωσεν, ἀντικαταστήσασα αὐτὸν διὰ τοῦ ἐπίσης ἀπελευθέρου καὶ παντοδυνάμου εἰς τὰ ἀνάκτορα Μύρωνος, ὁ ὁποῖος ἔσχε τὴν ἰδίαν τύχην. Περισυνέλεξεν εἰς τὰ ἀνάκτορα τὸν Μοντάνον, ὡραῖον ἔφηβον, τὸν ὁποῖον διέκρινεν ἐν τῇ ὁδῷ καὶ κατόπιν τὸν ἐθανάτωσε. Πρὸς τὸν αὐτὸν σκοπὸν ἀνήρπασεν ἀπὸ τὸ θέατρον τὸν μῖμον Μνηστῆρα. Ἐπίσης ὡς ἐρωμένον της ἐχρησιμοποίησε τὸν ἔπαρχον τῆς Γαλατίας Σαβῖνον, τὸν ὁποῖον κατόπιν ἐθανάτωσε. Τὴν αὐτὴν τύχην εἶχον καὶ ὅσοι ἠρνοῦντο νὰ ὑποκύψουν εἰς τὰς ἐπιθυμίας της, καθὼς ὁ ἀνεψιὸς τοῦ Κλαυδίου Βινούκιος καὶ ὁ Σιλανός. Πλὴν τῆς τάσεως αὐτῆς πρὸς τὴν ἀκολασίαν καὶ τὸ ἔγκλημα, ἐξεμεταλλεύθη τὴν ἀδυναμίαν τοῦ συζύγου της πρὸς κορεσμὸν ὅλων τῶν φιλοδοξιῶν της. Διέθετε κατὰ βούλησιν εἰς τοὺς εὐνοουμένους της τὰ ὕπατα τοῦ κράτους ἀξιώματα, παρέσχε δὲ εἰς ἑαυτὴν τὸν τίτλον τῆς Αὐγούστας καὶ τὸ δικαίωμα νὰ παρίσταται εἰς πᾶσαν συνέλευσιν. Ἐκεῖνο ὅμως τὸ ὁποῖον ὑπῆρξεν ἡ καταστροφή της ἦτο ἡ κατόπιν τοῦ ἔρωτος διάστασίς της πρὸς τοὺς ἐν τῷ παλατίῳ παντοδυνάμους ἀπελευθέρους. Καὶ ὁ μὲν Πολύβιος δὲν διέφυγε τὸν θάνατον, ἀλλ' ὁ Νάρκισσος κατώρθωσε νὰ ἀπαλλαγῇ αὐτῆς. Ἡ αὐτοκράτειρα, παρασυρθεῖσα ἀπὸ τὸν ἔρωτα αὐτῆς πρὸς τὸν Γάϊον Σύλιον, τὸν ὡραιότερον ἄνδρα τῆς Ρώμης, τὸν ἠνάγκασε νὰ διαζευχθῇ τὴν γυναῖκά του καὶ ἀποβαλοῦσα πάντα χαλινὸν ἐπωφελήθη τῆς ἀπουσίας τοῦ Κλαυδίου εἰς τὴν Ὀστίαν διὰ νὰ τελέσῃ τοὺς γάμους της μετ' αὐτοῦ ἀναφανδὸν καὶ μετὰ μυθώδους μεγαλοπρεπείας. Ὁ αὐτοκράτωρ, μαθὼν τὰ γενόμενα, ἐπέστρεψεν ἀμέσως εἰς τὴν Ρώμην διὰ νὰ λάβῃ τὰ κατάλληλα μέτρα. Ἡ Μεσσαλῖνα φοβηθεῖσα ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν τὰ δύο τέκνα της διὰ νὰ μεσολαβήσουν ὑπὲρ αὐτῆς. Ὁ αὐτοκράτωρ τὴν ἐκάλεσε ν' ἀπολογηθῇ, ἀλλ' ὁ Νάρκισσος φοβηθεὶς μήπως ὁ αὐτοκράτωρ καμφθῇ, ἐδολοφόνησεν αὐτὴν διὰ τοῦ Εὐόδου εἰς τοὺς κήπους τοῦ Λουκούλλου, ὅπου εἶχε καταφύγει. Πολλαὶ ἀπὸ τὰς περὶ τῆς ζωῆς της πληροφορίας θεωροῦνται σήμερον ὑπερβολικαί· Ἰδίως τὸ ὅτι μετέβαινε μετημφιεσμένη καὶ μὲ τὸ ψευδώνυμον Λυκίσκη εἰς κοινοὺς οἴκους καὶ παρεδίδετο

*Προτομὴ τῆς Μεσσαλίνας.*
[Μουσεῖον Καπιτωλίου.]

Digitized by Google

εἰς τὴν δημοσίαν πορνείαν, ὡς μαρτυρεῖ ὁ Ἰουβενάλης, θεωρεῖται κακόβουλος συκοφαντία τῆς Ἀγριππίνης, τὴν ὁποίαν ἐνυμφεύθη βραδύτερον ὁ Κλαύδιος. Ἡ Μεσσαλῖνα εἰκονίζεται ἐπὶ πλείστων νομισμάτων, δακτυλίων, δακτυλιολίθων καὶ προτομῶν. Ν. ΑΝΔΡΙΩΤΗΣ

**μέσσα ντὶ βότσε** (ἰταλ. messa di voce) *[Μουσ.]*. Ὅρος συνήθης ἐν τῇ ἰταλικῇ μεθόδῳ ᾄσματος, σημαίνων ὅτι ἦχός τις ἐκπεμπόμενος πρέπει νὰ ἀρχίσῃ ὅσον τὸ δυνατὸν σιγά, νὰ αὐξήσῃ βαθμηδὸν εἰς ἔντασιν, νὰ φθάσῃ εἰς τὸ μέγιστον σημεῖον τοῦ «φορτίσσιμο» καὶ εἶτα νὰ ἐπανέλθῃ ἐκ νέου ὀλίγον κατ' ὀλίγον πρὸς τὸ ἀπόλυτον «πιανίσσιμο». Γ. Σ.

**Μεσσαπέαι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Λακεδαίμονος κατὰ τὴν κοιλάδα τοῦ Εὐρώτα, ἐνωρὶς ἐξαφανισθεῖσα. Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐδείκνυεν ἱερὸν τοῦ Μεσσαπέως Διός, βορειοδυτικῶς τῶν Βρυσεῶν, πιθανῶς κατὰ τὸ πυκνὸν δάσος τοῦ νῦν χωρίου Ἁγίου Ἰωάννου εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ Ταϋγέτου. Ι. Σ. Σ.

**Μεσσαπία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ ΝΑ. χερσόνησος τῆς Ἰταλίας, ἧς ὁ παράπλους, ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ Βρεντησίου, ἀπέληγεν εἰς Τάραντα (*Στράβ.* ΣΤ, 282). Ὁ Πολύβιος φαίνεται δίδων μεγαλυτέραν πρὸς βορρᾶν ἔκτασιν εἰς τὴν ὅλην Μεσσαπίαν (Γ, 88, 4). Ἡ ὀνομασία τῆς χερσονήσου εἶχε (κατὰ *Στράβ.* Θ, 405) κοινὸν τὸν ἀνάδοχον πρὸς τὴν τοῦ Μεσσαπίου ὄρους τῆς Ἀνθηδονίας. Πάντως Μεσσαπία εἶναι ἡ σύγχρονος χερσόνησος ἡ τερματίζουσα τὴν Πούλιαν καὶ ἡ ὁποία εἶναι γνωστὴ εἰς τοὺς ναυτικούς μας, παρομοιάζοντας τὸ σχῆμα τῆς Ἰταλίας πρὸς ὑπόδημα, ὡς «τακούνι τῆς Ἰταλίας». Σ. Ε. Λ.

**Μεσσαπικὴ** (ἡ) *[Γλωσσολογ.]*. Καλεῖται *μεσσαπικὴ* (ἤ, ἄλλως, *ἰαπυγική*) ἡ γλῶσσα, ἡ ὁποία ὡμιλεῖτο ἐν Καλαβρίᾳ τῆς ἀρχαίας Ἰταλίας (τῇ σημερινῇ δηλονότι Ἀπουλίᾳ). Ἐλάχιστα—καὶ δυσερμήνευτα—εἶναι τὰ μέχρι τοῦδε ἀνευρεθέντα ἐπιγραφικὰ λείψανά της, δι' ὃ καὶ ἡ γνῶσις τῆς περὶ ἧς ὁ λόγος γλώσσης εἶναι πενιχροτάτη. Τοῦτο μόνον φαίνεται βέβαιον, ὅτι ἡ μεσσαπικὴ (ὅπως καὶ ἡ ἀρχαία βενετική) ἦτο γλῶσσα ἰαπετικῆς (ἢ ἰνδοευρωπαϊκῆς) καταγωγῆς. Γλωσσοδίφαι τινες θεωροῦν τήν τε μεσσαπικὴν καὶ τὴν βενετικὴν συγγενεῖς πρὸς τὴν ἰλλυρικὴν γλῶσσαν, ἄλλοι ὅμως εὑρίσκουν τὴν σύναψιν ταύτην τῆς μεσσαπικῆς πρὸς τὴν ἰλλυρικὴν ἐσφαλμένην καὶ ἀστήρικτον. Γ. Π. Α.

**Μεσσάπιοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Οἱ κάτοικοι τῆς ἀρχαίας *Μεσσαπίας*. Ὡς ἱστορεῖ ὁ Ἡρόδοτος (Ζ, 170) πρόγονοι τούτων ἦσαν ναυαγοὶ Κρῆτες, σταλέντες ὑπὸ Μίνωος πρὸς κατάληψιν τοῦ Καμικοῦ τῆς Σικανίας. Τῶν πλοίων των συντριβέντων ἐπὶ τῶν ἀπορρώγων τῆς Μεσσαπίας, ἐζήτησαν καταφυγὴν εἰς τὴν χερσόνησον καὶ κτίσαντες πόλιν *Ὑρίην*, ἠναγκάσθησαν νὰ παραμείνουν μονίμως πλέον ἐκεῖ καὶ «ἀντὶ μὲν Κρητῶν γενέσθαι Ἰήπυγας Μεσσαπίους, ἀντὶ δὲ εἶναι νησιώτας ἠπειρώτας». Ὑφίσταντο ὅμως συνεχεῖς ἐπιθέσεις τῶν Ταραντίνων (*Παυσαν.* Ι, ι, 6). Κατελήφθη τέλος ἡ χώρα των ὑπὸ τῶν ἐχόντων συμμάχους τοὺς Δαυνίους καὶ τοὺς Πευκετίους Ταραντίνων, ὑποταχθεῖσα εἰς τὴν Ρώμην τῷ 266 π. Χ. Εἰς τὴν χώραν των ἦτο ποτὲ κοινῆς λατρείας «Ἀθηνᾶς ἱερὸν πλούσιόν ποτε ὑπάρξαν» (*Στράβ.* ΣΤ, 281), ὅπερ τῷ 1809 ἦτο χριστιανικὸν ἐρημοκκλήσιον τιμώμενον ἐν ὀνόματι Santa Maria-in-finibus terrae (Géogr. de Strabon, ἐκδ. 1809, II, 400, 4). Σ. Ε. Λ.

**Μεσσάπιον** *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαῖον ὄνομα τοῦ ἐν τῇ Β. Μακεδονίᾳ ὄρους *Βλαχίντζα* (βλ. λ.).

**Μεσσαρᾶ**, *Μεσσαρία [Γεωγρ.]* βλ. *Μεσαρᾶ, Μεσαρία*.

**Μεσσαρέα** *[Γεωγρ.]*. Ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῷ νομῷ Τραπεζοῦντος καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Πυξίτου, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 150 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες διετήρουν 2 ἐκκλησίας καὶ 2 σχολεῖα. Οἱ κάτοικοι, πλὴν τῶν προσφυγόντων πρότερον εἰς Ρωσίαν, ὑπήχθησαν εἰς τὴν ἀνταλλαγὴν τῶν ἑλληνοτουρκικῶν πληθυσμῶν τοῦ 1923. Ε. Ι. Χ.

**Μεσσαρῖται** (οἱ), ἢ *Μασσαρῖται*. Φυλὴ βλαχική, κατοικοῦσα κατὰ τοὺς μεσαιωνικοὺς χρόνους εἰς τὴν Ἤπειρον, θεωρουμένη δὲ ἀλβανικῆς καταγωγῆς ὑπό τινων λόγῳ τῆς ἐπιμειξίας μὲ Ἀλβανούς. Χ. Ι. Σ.

**«Μεσσατζέρο»** (Il Messagero). Ἰταλικὴ καθημερινὴ ἐφημερίς, ἐκδιδομένη ἐν Ρώμῃ. Ἱδρύθη τῷ 1878 ὑπὸ τοῦ *Λουΐτζι Τσεζάνα*. Κατ' ἀρχὰς ὑπῆρξεν ἀνεξάρτητος, κατόπιν διεξήγαγεν ἀντικληρικὸν ἀγῶνα, βραδύτερον ἐγένετο ὄργανον τῶν βιομηχάνων καὶ μετὰ τὰ τελευταῖα περὶ τύπου μέτρα τῆς φασιστικῆς κυβερνήσεως περιῆλθεν εἰς τοὺς φασίστας. Μ. Δ. Β.

**μεσσὲλ** *[Μουσ.]*. Ἴδιον σύστημα, δι' οὗ οἱ Ἄραβες καὶ οἱ Πέρσαι θεωρητικοὶ θεωρίζουν τὰ μουσικὰ διαστήματα. Διὰ τοῦ συστήματος τούτου οἱ Ἄραβες παρεδέχθησαν ὡς σύμφωνα διαστήματα τὴν μεγάλην καὶ μικρὰν τρίτην, ὡς καὶ τὴν μεγάλην καὶ μικρὰν ἕκτην, ἤδη ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, καθ' ἣν δηλαδὴ ἐποχὴν οἱ θεωρητικοὶ τῆς Εὐρώπης δὲν ἠννόουν ν' ἀπομακρυνθῶσι τῶν θεωριῶν περὶ διαστημάτων, τοῦ Πυθαγόρα καὶ τῶν ἄλλων Ἑλλήνων μουσικοθεωρητικῶν. Γ. Σ.

**μεσσελίτης** (ὁ) (Messelit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου μετὰ σιδήρου ἔνυδρον, τοῦ τύπου $(Ca.Fe)_3[PO_4]_2,2H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ τρικλινὲς σύστημα εἰς πίνακας διατεταγμένους ἀστεροειδῶς, εἶναι ὑπόφαιον ἕως ἄχρουν καὶ ἀπαντᾷ ἐπὶ ἀσφαλτούχων σχιστολίθων ἐντὸς φαιανθράκων τοῦ Messel εἰς τὸ Hessen. Γ. Β.

**Μεσσένιους** (Messenius), *Ἰωάννης*. Σουηδὸς ἱστορικὸς καὶ ποιητὴς (1579—1636). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ ἐν Μπράουνσμπεργκ τῆς Πολωνίας ἰησουϊτικὸν κολλέγιον καὶ μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του, ἀφοῦ ἐταξίδευσεν ἐπί τινα χρόνον, ἐγκατεστάθη εἰς Ντάντσιγκ, ἱδρύσας ἐν τῇ πόλει ταύτῃ λύκειον. Τῷ 1608 ἔγραψε τὴν «Γενεαλογίαν τοῦ Σιγισμούνδου», ἐν ᾗ ὑπεστήριξεν ὅτι οἱ πρόγονοι τοῦ πρίγκιπος τούτου ἦσαν ἀπόγονοι τοῦ Καρλομάγνου. Διαψευσθεισῶν ὅμως τῶν ἐλπίδων του ἐπὶ μεγάλης τινὸς γενναιοδωρίας τοῦ Σιγισμούνδου, ἔγραψεν ἑτέραν γενεαλογίαν ὑπὲρ Καρόλου Θ' βασιλέως τῆς Σουηδίας. Κληθεὶς ὑπὸ τούτου μετέβη ὁ Μεσσένιους εἰς Σουηδίαν, ὤμοσε πίστιν εἰς τὸν βασιλέα, ἠπάσθη τὸν προτεσταντισμὸν καὶ διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Οὐψάλης. Κατηγορηθεὶς τῷ 1616 ὡς συνεννοούμενος μετὰ τοῦ Σιγισμούνδου καὶ τῶν Ἰησουϊτῶν, ἐνεκλείσθη εἰς τὸ φρούριον τοῦ Καϊανεμπυργκ, ἀπελευθερωθεὶς τῷ 1635. Κατὰ τὸ ἔτος 1609 συνέλαβε τὸ σχέδιον νὰ γράψῃ τὴν ἱστορίαν τῆς Σουηδίας εἰς 50 δράματα. Τὸ σχέδιον τοῦτο ἐξετελέσθη ἐν μέρει, καθόσον ὁ Μεσσένιους ἔγραψεν ἐξ μόνον δράματα καὶ ἐκ τούτων ἐτυπώθησαν τέσσαρα, ἅτινα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ντίζα», «Σίγκνιλλ», «Σβανχουΐτα» καὶ «Μπλανκαιμαιρέτα». Τὸ σημαντικώτερον ἔργον τοῦ Μεσσένιους εἶναι «Σκανδιναυΐα μετ' εἰκόνων» καὶ τὸ «Χρονικὸν τῶν ἐπισκόπων τῆς Σουηδίας». Ὁ Μεσσένιους ὑπῆρξεν ἐμπνευσμένος ἐπίσης ποιητής. Τὰ ποιήματά του ἐνέχουσί τι τὸ κομψὸν τῶν ἀρχαίων βαλλισμάτων. Γ. Ι. Β.

**Μεσσεντάλια** (Messedaglia), *Ἄγγελος*. Ἰταλὸς οἰκονομολόγος (1820—1901). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Παβίας καὶ τῆς Ρώμης καὶ μέλος ἀνωτέρας ἐπιτροπῆς τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως καὶ ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Περὶ τῆς ἀνάγκης εἰδικῆς πολιτικοδιοικητικῆς ἐκπαιδεύσεως» (1851), «Περὶ τῆς ἐπιστήμης κατὰ τὴν ἐποχήν μας» (1874), «Ἡ στατιστικὴ ἐπιστήμη τοῦ πληθυσμοῦ» (1877), «Τὸ νόμισμα καὶ τὸ νομισματικὸν σύστημα γενικῶς» (1882) κτλ. Μ.Δ.Β.

**Μέσση** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Παγουρίων τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κομοτινῆς, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατοίκους (1928) 376. Χ. Δ.

**μεσσηνέζα** (ἡ) *[Ἰχθυολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῆς *μεσσήνης*, τοῦ λεπτοῦ δηλαδὴ νήματος (κλωστῆς), δι' οὗ προσδένεται τὸ ἄγκιστρον. Ὠνομάσθη δὲ οὕτω ἐκ τῆς Μεσσήνης (πόλεως τῆς Σικελίας), ὅπου τὸ πρῶτον κατεσκευάσθησαν τοιαῦτα νήματα. Δ. Ν. Π.

**Μεσσηνέζης**, *Ἰωάννης*. Ἕλλην πολιτικός, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Αἰγίῳ (1822—1896). Σπουδάσας νομικὰ ἐν Ἀθήναις καὶ Παρισίοις, ἤρξατο πολιτευόμενος τῷ 1853, ἐξελέγη πολλάκις βουλευτὴς Αἰγιαλείας καὶ ἐγένετο πρόεδρος τῆς βουλῆς καὶ τῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Κατὰ τὰς ἐμφυλίους ἔριδας τοῦ Ἰουλίου 1863, μεταβαίνων ἐξ ὀνόματος τῆς συνελεύσεως εἰς τὰ κατεχόμενα ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν ἀνάκτορα, ὅπως συνδιαλλάξῃ αὐτοὺς μετὰ τῶν ἀντιμαχομένων, ἐτραυματίσθη ἐπικινδύνως καὶ διεσώθη ὑπὸ τῶν μελῶν τῆς Γαλλικῆς σχολῆς. Τῷ 1867 μετέσχε τῆς κυβερνήσεως Μωραΐτίνη ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τῆς Παιδείας. Θ. Β.

**Μεσσήνη** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Τριόπα ἐξ Ἄργους, σύζυγος τοῦ Πολυκάονος, υἱοῦ τοῦ Λέλεγος, βασιλέως τῶν Λακεδαιμονίων, ἥτις, ἐνθαρρύνασα αὐτὸν νὰ βασιλεύσῃ τῆς Μεσσηνίας χώρας, ἵδρυσε τὴν ἐπώνυμον αὐτῆς πόλιν Μεσσήνην, ἔνθα ἐτιμᾶτο καὶ ὑπῆρχε «ναὸς καὶ ἄγαλμα χρυσοῦ καὶ λίθου Παρίου» (*Παυσ.* IV, 31, 11). Ἐπίσης ἵδρυσεν ἐν Ἀνδανίᾳ τὰ μυστήρια τῆς Δήμητρος καὶ Περσεφόνης. Ἡ μορφή της φέρεται ἐπὶ τῶν νομισμάτων τῆς Μεσσήνης τῶν αὐτοκρατορικῶν ρωμαϊκῶν χρόνων. Α. Θ. Σ.

**Μεσσήνη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μεσσηνίας, δεξιὰ τοῦ ποταμοῦ Παμίσου, ἐπὶ τῶν δυτικῶν ὑπωρειῶν τῆς Ἰθώμης, ἱδρυθεῖσα τῷ 369 π. Χ. ὑπὸ τοῦ Ἐπαμεινώνδα διὰ τῆς συγκεντρώσεως τῶν διεσκορπισμένων Μεσσηνίων καὶ ὀλίγων Ἀρκάδων, ἵνα χρησιμεύσῃ μετὰ τῆς Μεγαλοπόλεως, Μαντινείας καὶ Ἄργους ὡς φράγμα κατὰ τῶν καταχτητικῶν σχεδίων τῶν Σπαρτιατῶν.

Περιεβάλλετο πανταχόθεν ὑπὸ ἰσχυρῶν τειχῶν μετὰ πύργων καὶ ἐπάλξεων, ἐχόντων περίμετρον 9 χλμ. περίπου, τὰ ὁποῖα, κατὰ τὴν μαρτυρίαν τοῦ Παυσανίου (IV, 31, 5) ἦσαν ὀχυρώτερα τῶν τειχῶν τῆς Φωκικῆς Ἀμβρύσου, τοῦ Βυζαντίου καὶ τῆς Ρόδου, θεωρούμενα ὡς τὰ κάλλιστα τῆς ὅλης Ἑλλάδος. Ἀπετέλουν, οὕτως εἰπεῖν, ὠχυρωμένον στρατόπεδον, καὶ ἦσαν κατεσκευασμένα ἰσοδομικῶς διὰ μεγάλων τιτανολίθων. Ἐκ τῶν σῳζομένων ἐρειπίων αὐτῶν, κατὰ τὴν ΒΑ. πλευράν, ἐνιαχοῦ δὲ καὶ ὁλοκλήρων, καταφαίνεται ἡ ὀχυρωματικὴ τέχνη τοῦ Δ' π. Χ. αἰῶνος, ἐν ὅλῃ της τῇ ἀναπτύξει. Λαμπρὸν παράδειγμα αὐτῶν παρέχει κυρίως ἡ Ἀρκαδικὴ πύλη, κατὰ τὰ ΒΑ. σῳζομένη κατὰ τὸ πλεῖστον, ὡς καί τινες παρ' αὐτὴν πύργοι. Ἐπίσης σῴζονται πλὴν ταύτης πρὸς Ν. ἡ πύλη τῆς Μεσσηνίας καὶ πρὸς Δ. πύλη τις ἀνώνυμος, ἄγουσα πρὸς τὸ σημερινὸν χωρίον Πετράλωνον.

Τὸ κέντρον τῆς ἀρχαίας πόλεως κατέχει τὸ νῦν χωρίον *Μαυρομμάτι*, ἀπέχον 5 ½ ὥρας ΒΔ. τῶν Καλαμῶν, ὅπου σῴζονται οὐκ ὀλίγα ἐκ τῶν δημοσίων οἰκοδομημάτων, τὰ ὁποῖα περιγράφει ὁ Παυσανίας. Παρὰ τὴν ἀγορὰν ὑπῆρχεν ἡ κρήνη Ἀρσινόη, τῆς ὁποίας λείψανα καὶ σήμερον σῴζονται, λαμβάνουσα τὸ ὕδωρ ἐκ τῆς πηγῆς τῆς καλουμένης Κλεψύδρας, παρὰ τὴν ὁποίαν, κατὰ τὸν μῦθον, αἱ νύμφαι Νέδα καὶ Ἰθώμη ἥρπασαν τὸν Δία βρέφος. Ἐνταῦθα ὑπῆρχον ναοὶ τοῦ Ποσειδῶνος, τῆς Ἀφροδίτης, τῆς Εἰλειθυίας, τῆς Δήμητρος, τοῦ Ἀσκληπιοῦ, τὸ μέγαρον τῶν Κουρήτων «ἔνθα ζῷα τὰ πάντα ὁμοίως καθαγιάζουσι», τὸ Πάνθεον τῶν Μεσσηνίων, ἄγαλμα τῆς Μητρὸς τῶν Θεῶν, ἡρῷον τοῦ Ἀριστομένους, ἀνδριὰς τοῦ Ἐπαμεινώνδα, γυμναστήριον καὶ ἄλλα.

Τὰ λείψανα τοῦ μεγαλοπρεποῦς αὐτῆς σταδίου σῴζονται κατὰ τὸ ΝΔ. ἄκρον τῆς πόλεως, μετὰ ναοῦ παρ' αὐτό, τοῦ δὲ μικροῦ αὐτῆς θεάτρου πρὸς Δ. τοῦ χωρίου, κεκαλυμμένα ἐντελῶς σχεδὸν διὰ κισσοῦ. Μικραὶ ἀνασκαφαὶ ἐγένοντο ἤδη κατὰ τὸ 1828 ὑπὸ τῶν Γάλλων τοῦ στρατηγοῦ Μαιζών, τελευταίως δὲ ὑπὸ τοῦ Θ. Σοφούλη, τῶν ὁποίων τὰ ἀρχαιολογικὰ εὑρήματα ὑπάρχουσιν εἰς τὸ ἐν Μαυρομματίῳ μικρὸν μουσεῖον.

Ἡ ἀκρόπολις αὐτῆς ὑψοῦτο ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς Ἰθώμης, ὀχυρωθεῖσα κατὰ τὸν πρῶτον καὶ τρίτον Μεσσηνιακὸν πόλεμον. Ἀποτελεῖ δὲ αὐτὴ ἐπίμηκες ὀροπέδιον, ἐκτισμένον ἐκ τῶν ΝΑ. πρὸς τὰ ΒΔ. καὶ ὑποστηριζόμενον διὰ τειχῶν. Ἐπὶ τοῦ δυτικωτέρου καὶ ὑψηλοτέρου αὐτῆς σημείου ἔκειτο τὸ πάλαι τὸ ἱερὸν τοῦ Ἰθωμάτα Διός, ἡ ἱερωτέρα θέσις τῆς ἀρχαίας Μεσσηνίας, εἰς τὸν ὁποῖον εἶχεν ἀφιερωθῇ τὸ θαυμάσιον χαλκοῦν ἄγαλμα τοῦ θεοῦ, ἔργον τοῦ Ἀργείου καλλιτέχνου Ἀγελάδα, καὶ πρὸς τιμὴν τοῦ ὁποίου ἐτελεῖτο ἐτησίως ἡ ἑορτὴ τῶν Ἰθωμαίων, καθ' ἣν προσεφέροντο αἱματηραὶ θυσίαι. Πρὸς Ν. αὐτῆς ἔκειτο ὁ ναὸς τῆς Λαφρίας Ἀρτέμιδος.

Ἐπὶ τῆς θέσεως τοῦ Ἰθωμάτα Διὸς ἐκτίσθη, ἐπὶ τῆς βασιλείας Λέοντος τοῦ Ἰσαύρου περὶ τὰ 726, ἡ μονὴ τοῦ *Βουλκάνου*, ἐπ' ὀνόματι τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου, ὑπὸ μοναχῶν φευγόντων, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, τὸν εἰκονομάχον βασιλέα. Τὸ νῦν ὅμως κτήριον εἶναι νεώτερον, ἱδρυθὲν τῷ 1712 νοτιώτερον τῆς ἀρχαίας μονῆς, ἔνθα ὑπῆρχε μετόχιον μετὰ ναοῦ, ἀντικατάστησαν τὴν μονήν. Ἡ ἀπ' αὐτῆς θέα ἀπὸ ὕψους 383 μέτρων καὶ ἐν μέσῳ κυπαρίσσων καὶ ἑσπεριδοειδῶν, εἶναι πανοραματική, ἰδίως δὲ πρὸς τὴν Ἀρκαδίαν.

Τὴν πόλιν ἐπολιόρκησε τῷ 214 π. Χ. ὁ στρατηγὸς Φιλίππου τοῦ Ε' Δημήτριος ὁ Φάριος πεσὼν ὑπὸ τὰ τείχη της, τῷ δὲ 202 π. Χ. ὁ τύραννος τῆς Σπάρτης Νάβις. Τότε ὑπερήσπισεν αὐτὴν ὁ Φιλοποίμην, ἀλλ' ὅταν ὁ δημαγωγὸς Δεινοκράτης ἐξήγειρε τοὺς κατοίκους κατὰ τῆς Ἀχαϊκῆς ὁμοσπονδίας, τότε ἠναγκάσθη νὰ σπεύσῃ εἰς τὴν καθυπόταξιν αὐτῆς, ὅπου αἰχμαλωτισθεὶς ἐφονεύθη. Τὸν θάνατόν του ἐξεδικήθη τῷ 182 π. Χ. ὁ Λυκόρτας, ὁ πατὴρ τοῦ ἱστορικοῦ Πολυβίου, ἐξαναγκάσας αὐτὴν νὰ προσχωρήσῃ εἰς τὴν ὁμοσπονδίαν. Ἔκτοτε διετήρησε τὴν ἀνεξαρτησίαν αὐτῆς, μέχρι τῆς ὑποταγῆς τῶν Ἀχαιῶν καὶ τῆς λοιπῆς Ἑλλάδος ὑπὸ τοὺς Ρωμαίους. Ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Παυσανίου (Β' μ. Χ. αἰὼν) ἦτο ἀκόμη ἐπίσημος πόλις.

Τῆς Μεσσήνης σῴζονται ἀργυρᾶ τετράδραχμα καὶ στατῆρες φέροντες τὴν ἐπιγραφὴν ΜΕΣΣΑΝΕΩΝ

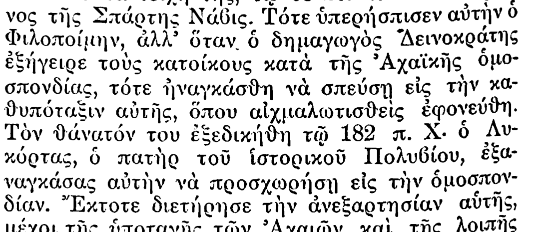

*Νόμισμα Μεσσήνης.*

καὶ κεφαλὴν Δήμητρος ἢ Διὸς τοῦ Ἰθωμάτα. Τῶν αὐτοκρατορικῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, ἀπὸ Σεβήρου μέχρι τοῦ Καρακάλλα, φέρουσι τὴν μορφὴν τῆς

Digitized by Google

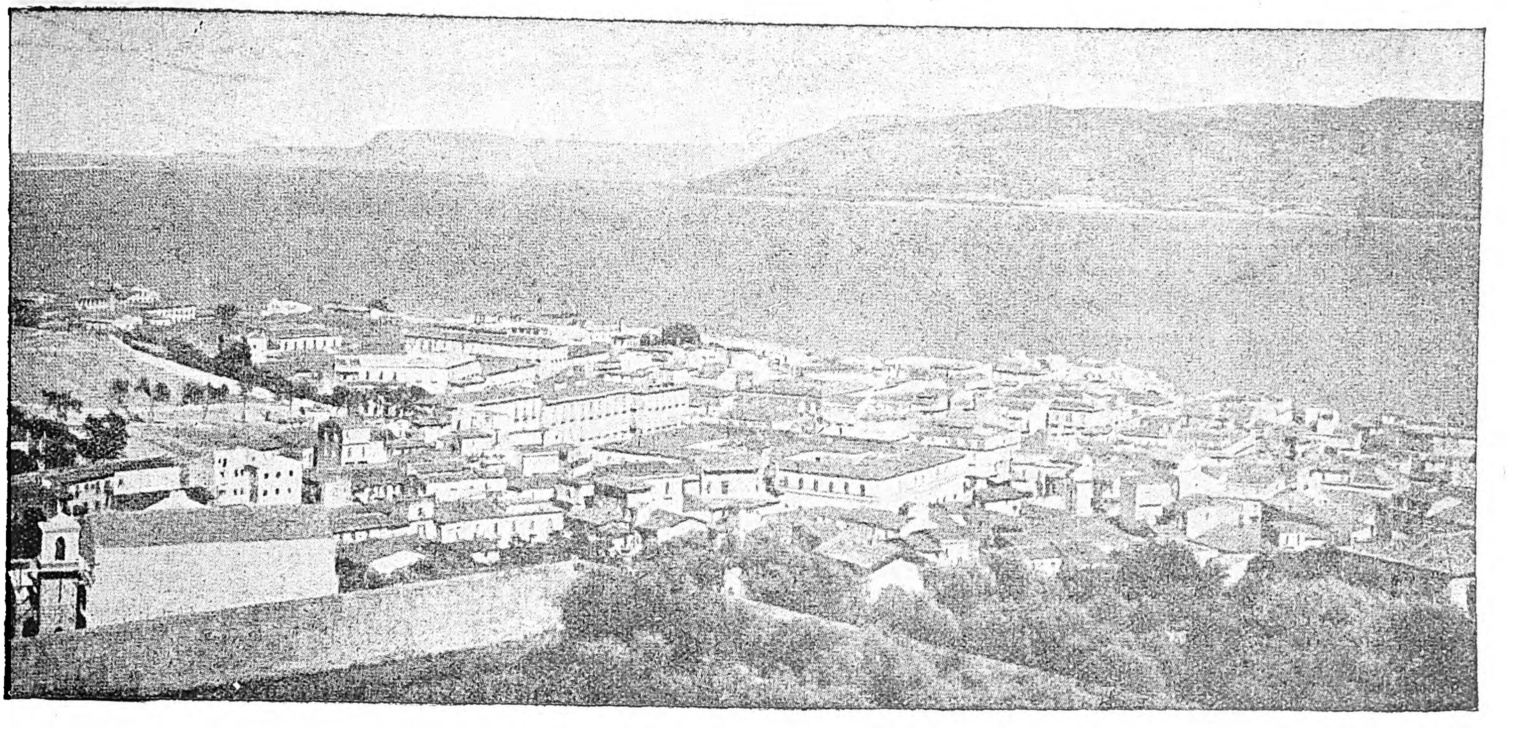

***Μεσσήνη*: Ἄποψις τῆς Μεσσήνης, τοῦ πορθμοῦ καὶ τῶν ἔναντι ἀκτῶν τῆς Καλαβρίας, πρὸ τοῦ σεισμοῦ τοῦ 1908.**

Μεσσήνης θυγατρὸς τοῦ Τριόπα, ἐπωνύμου τῆς πόλεως.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Στ. Οἰκονομάκη*, Τὰ σῳζόμενα περὶ Ἰθώμης, Μεσσηνίας καὶ τῶν πέριξ (Καλάμαι 1879).—*Ν. Πετρῆ*, Περὶ Ἰθώμης καὶ Μεσσήνης, ἐν «Παρνασσῷ» (1878 καὶ 1879). —*Head-Σβορώνου*, Ἱστορία τῶν νομισμάτων τόμ. Α΄ σ. 538.

Α. Θ. Σ.

— **«Μεσσήνη».** Ἐφημερὶς ἐν Καλάμαις, ἱδρυθεῖσα τὴν 11ην Σεπτεμβρίου 1865. —Π.

— **Μεσσήνης *ἐπαρχία*** *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν πέντε ἐπαρχιῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὸν νομὸν Μεσσηνίας, καταλαμβάνουσα τὸ πρὸς Β. τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου τμῆμα αὐτοῦ τὸ περιοριζόμενον ὑπὸ τῶν ἐπαρχιῶν Καλαμῶν πρὸς Α., Πυλίας πρὸς Ν.Δ., Τριφυλίας πρὸς Δ. καὶ ΒΔ. καὶ Μεγαλοπόλεως (νομὸς Ἀρκαδίας) πρὸς ΒΑ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι τὸ πεδινώτερον καὶ εὐφορώτερον ὁλοκλήρου τοῦ νομοῦ, καταλαμβάνεται δὲ κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ὑπὸ τῆς περιάδος τῆς Μεσσήνης, τὴν ὁποίαν διαρρέει ὁ *Πάμισος* ποταμὸς καὶ περιβάλλουσι τὰ ὄρη *Λυκόδημον* πρὸς ΝΔ., *Σέχι* ἢ *Βαρβάρα* καὶ *Ἰθώμη* πρὸς ΒΔ. καὶ *Τετράγιον* πρὸς Β. Κυριώτερα προϊόντα τῆς ἐπαρχίας εἶναι ἡ σταφίς, τὰ σιτηρά, τὸ ἔλαιον, αἱ ἐλαῖαι, τὰ σῦκα, ἡ μέταξα κτλ. Ἐπίσσης ἔχει μικρὰν κτηνοτροφίαν καὶ μελισσοκομίαν. Ἡ βιομηχανία περιορίζεται εἰς μικράς τινας ἐγκαταστάσεις ἐλαιουργικάς, ὀλίγα ἀναπηνιστήρια μετάξης, μικροὺς ἀλευρομύλους κτλ. Αἱ συγκοινωνίαι ἐξυπηρετοῦνται κυρίως διὰ τοῦ σιδηροδρόμου ΣΠΑΠ., τοῦ ὁποίου ἡ γραμμὴ διασχίζει τὸ Β. τμῆμα τῆς ἐπαρχίας ἀπὸ Α. πρὸς Δ. καὶ ἐκπέμπει ἀπὸ τοῦ Ζευγολατιοῦ διακλάδωσιν πρὸς Ν. μέχρι Καλαμῶν, ἐκεῖθεν δὲ δι' ἄλλης μικροτέρας διακλαδώσεως φθάνει μέχρι τῆς Μεσσήνης. Ἐπίσης πυκνὸν δίκτυον ἁμαξιτῶν ὁδῶν μὲ κέντρα τὴν Μεσσήνην καὶ τὸν Μελιγαλᾶν ἐξυπηρετεῖ ἄριστα τὰ χωρία τῆς κοιλάδος τοῦ Παμίσου. Τὸ ἐμπόριον συγκεντροῦται ἐν μὲν τῷ Ν. τμήματι τῆς ἐπαρχίας εἰς Μεσσήνην, ἐν δὲ τῷ βορείῳ εἰς Μελιγαλᾶν καὶ Διαβολίτσι, διοχετεύεται δ' ἐκεῖθεν πρὸς τὰς Καλάμας κυρίως, ἢ ἐξάγεται ἀπ' εὐθείας σιδηροδρομικῶς πρὸς τὰ ἄλλα ἐμπορικὰ κέντρα τῆς Ἑλλάδος (Πάτρας—Πειραιᾶ κτλ.). Ἡ ἐπαρχία ἀριθμεῖ κατοίκους (1928) 54.341 καὶ ἔχει πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν, ἄλλα δὲ ἄξια λόγου κέντρα τὸν *Μελιγαλᾶν*, τὸ *Διαβολίτσι*, τὴν *Μερόπην*, τὴν *Ἀνδρούσαν* κτλ. Οἰκονομικαὶ ἀρχαὶ (ἐφορία καὶ ταμεῖον) ἑδρεύουσιν ἐν Μεσσήνῃ, ὅπου ἐπίσης ἑδρεύει ἡ ὑποδιοίκησις χωροφυλακῆς, ἔχουσα τμῆμα ἐν Μελιγαλᾷ καὶ 7 σταθμοὺς εἰς τὰ λοιπὰ μεγάλα χωρία. Εἰρηνοδικεῖα ὑπαγόμενα εἰς τὸ πρωτοδικεῖον Καλαμῶν ὑπάρχουσι 3 (Μεσσήνης, Μελιγαλᾶ καὶ Ἀνδρούσης). Ἐπίσης λειτουργοῦσι δύο πλήρη γυμνάσια (Μεσσήνης καὶ Μελιγαλᾶ), καὶ δημοτικὰ σχολεῖα εἰς τὰ πλεῖστα τῶν χωρίων. Ἡ ἐπαρχία Μεσσήνης ὑποδιῃρεῖτο ἄλλοτε εἰς 6 τέως δήμους (*Ἀνδανίας, Ἀριστομένους, Εὔας, Ἰθώμης, Οἰχαλίας* καὶ *Παμίσου*), νῦν δὲ εἰς 70 κοινότητας, περιλαμβανούσας 104 πολίχνας, κώμας, χωρία καὶ συνοικισμούς. Αἱ κοινότητες τῆς ἐπαρχίας εἶναι αἱ ἑξῆς ἀλφαβητικῶς: *Ἀβραμιοῦ, Ἀγριλιᾶς (Ἀϊδινίου), Ἀγριλοβούνου, Ἀναλήψεως (Τζιτζωρίου), Ἀνδανίας (Σανδανίου), Ἀνδρούσης, Ἀνθούσης (Ζέζα), Ἄνω Μέλπειας (Ἄνω Γαράντζας), Ἀριστοδημείου (Χασάμπασα), Ἀριστομένους, Βαλύρας (Ἰζεφερεμινίου), Βουτίνων, Βρωμόβρυσης, Δασοχωρίου (Λυκουρεσίου), Διαβολιτσίου, Διοδίων (Λόϊ), Δουσίλας, Δραϊνῶν, Ἑλληνοκκλησιᾶς (Σιάμαρι), Εὔας (Ναζῆρι), Ζερμπίτσας* ἢ *Ζερμπίσιας, Ζευγολατιοῦ, Ἠλέκτρας (Γλιάτων), Καλλιρρόης (Μπούγας), Καργασίου (Τσορωτῶν), Καρτερολίου, Κατσαροῦ, Κάτω Μελπείας (Κάτω Γαράντζας), Κεντρικοῦ (Κούρταγα), Κεφαλληνοῦ, Κουτηφαρίου, Κυνηγοῦ, Κωνσταντίνων, Λάμπαινας (Λεξίου), Λευκοχώρας (Χαστέμι), Λουτροῦ, Λυκοτράφου, Μαγκανιακοῦ, Μαγούλας, Μαδαίνης, Μάλτας, Μάνεσι, Μάντζαρι, Μαυρομματίου Ἰθώμης, Μαυρομματίου Παμίσου, Μελιγαλᾶ, Μερόπης, Μεσσήνης (Νησίου), Μήλας, Μπάλας, Νεοχωρίου Ἀριστομένους, Νεοχωρίου Ἰθώμης, Οἰχαλίας (Ἀλητσελεπῆ), Παραπουγγίου, Πηλαλίστρας, Πιπερίτσης, Πλατανοβρύσου (Πολαίνης), Πολίχνης, Πουλιτσίου, Ρεμματιᾶς (Λούμι), Σιάμου, Σκάλας, Σολακίου, Σπηταλίων (Μισυρλίου* ἢ *Μισερλίου), Στενυκλάρου (Ἀλητουργίου), Στρέφι, Τρικόρφου (Πεντιᾶς), Τσουκαλεΐκων, Φίλιας* καὶ *Χαλβάτσου*.

Χ. Δ.

—**Μεσσήνη** *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Πελοποννήσου, πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας ἀποτελοῦσα ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 6.725. Κεῖται μεσογείως ἐντὸς τῆς ὁμωνύμου πεδιάδος τῆς ἄλλως καλουμένης *Μακαρίας*, παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Παμίσου καὶ μίαν ὥραν βορείως τῶν ἐκβολῶν του. Ὁ ποταμὸς οὗτος περιρρέων παλαιότερον τὴν πόλιν ἔδιδεν αὐτῇ τὴν ὄψιν νησῖδος, ἐξ οὗ καὶ αὕτη ὠνομάζετο *Νησίον*. Τὸ σημερινὸν ὄνομα ἔλαβεν ἐκ τῆς ἀρχαίας ἱστορικῆς πόλεως τῶν Μεσσηνίων τῆς Μεσσήνης, τῆς ὁποίας τὰ ἐρείπια σῴζονται 4 ὥρας βορείως τῆς σημερινῆς, παρὰ τὸ χωρίον Μαυρομμάτι. Ἡ πόλις περιεβάλλετο ἄλλοτε ὑπὸ ἑλῶν, καταφύτων ἐκ καλαμώνων, τὰ ὁποῖα ἐσχηματίζοντο ὑπὸ τοῦ ἐκχειλίζοντος ρεύματος τοῦ Παμίσου καὶ προὐξένουν ἑλώδεις πυρετούς. Τούτων ἡ καταστρεπτικὴ ἐπίδρασις ἔχει περιωρισθῆ σήμερον σημαντικῶς. Ἐπίσης πολλὰς ἐστοίχιζε συχνὰ ζημίας εἰς τὸ Νησίον τὸ ἐκχειλίζον κατὰ τὸν χειμῶνα ρεῦμα τοῦ ποταμοῦ. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς δὲ τῆς τουρκοκρατίας εἶχεν ὀρυχθῆ προστατευτικὴ τάφρος, τὴν ὁποίαν οἱ κάτοικοι διεπέρων παλαιότερον διὰ σχεδιῶν. Σήμερον ἡ τάφρος εἶναι ἐξευγμένη διὰ γεφυρῶν. Ἡ Μεσσήνη συγκοινωνεῖ μετὰ τῶν 10 χλμ. πρὸς Α. κειμένων Καλαμῶν διὰ διακλαδώσεως τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ΣΠΑΠ. μήκους 5 χλμ., ἐκπεμπομένης ἀπὸ τοῦ σταθμοῦ Ἀσπροχώματος. Ἐπίσης εἶναι κόμβος συγκοινωνιῶν δι' ἁμαξιτῶν ὁδῶν, διευθυνομένων ἐκεῖθεν πρὸς Α. (Καλάμαι), πρὸς Β. (κοιλὰς Παμίσου) καὶ πρὸς Δ. (χωρία τοῦ Δ. τμήματος τῆς ἐπαρχίας). Ἡ ἐμπορικὴ αὐτῆς κίνησις εἶναι ἀξιόλογος, συγκεντροῦνται δ' ἐν αὐτῇ τὰ προϊόντα τοῦ Δ. τμήματος τῆς ἐπαρχίας, τὰ ὁποῖα διοχετεύονται πρὸς τὰς Καλάμας. Ἡ βιομηχανία εἶναι μικρά, περιοριζομένη εἰς ὀλίγας ἐγκαταστάσεις κατεργασίας τῶν σύκων, ἐλαιοτριβεῖα καὶ ἕνα ἀλευρόμυλον. Ὁ πληθυσμὸς τῆς πολίχνης εἶναι κατὰ μέγα μέρος γεωργικός, τὰ δὲ κυριώτερα προϊόντα αὐτῆς εἶναι ἡ σταφίς, μέταξα, οἶνος, ἔλαιον, σῦκα, οἶνος κλπ. Περὶ τὰ μέσα τοῦ Αὐγούστου διεξάγεται ἐν τῇ πόλει ἐμποροπανήγυρις.

Ἐν Μεσσήνῃ ἑδρεύει εἰρηνοδικεῖον, πταισματοδικεῖον, ὑποθηκοφυλακεῖον, οἰκονομικὴ ἐφορία (β΄ τάξεως), ταμεῖαν (β΄ τάξεως), ὑποδιοίκησις χωροφυλακῆς, τηλεφωνεῖον, γυμνάσιον καὶ δημοτικὰ σχολεῖα. Ἔχει 3 ναοὺς (Ἁγίου Ἰωάννου Προδρόμου, Τριῶν Ἱεραρχῶν καὶ Ἁγίου Δημητρίου), ὑπάγεται δὲ ἐκκλησιαστικῶς εἰς τὴν μητρόπολιν Καλαμῶν. Κατὰ τὸν μεσαίωνα τὸ Νησίον ὑπήγετο εἰς τὴν ἀκμάζουσαν τότε Ἀνδρούσαν, ἠκολούθησε δὲ τὰς τύχας αὐτῆς κατὰ τοὺς μακροὺς ἐν ΝΔ. Πελοποννήσῳ ἀγῶνας μεταξὺ Φράγκων καὶ Τούρκων. Κατὰ τὸν ΙΖ΄ αἰῶνα ἡ πόλις ἀναφέρεται ἐρημωθεῖσα, κατέστη δὲ κτῆμα (τσιφλίκι) Τούρκου ἀγᾶ ὀνομαζομένου Ἰδρὶς (Ντρίζη), ἀλλ' ἀπὸ τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος ἀναλαβοῦσα προώδευσε σημαντικῶς, κατέστη δὲ κατὰ τοὺς τελευταίους πρὸ τῆς Ἐπαναστάσεως χρόνους ἕδρα τῆς ἐπισκοπῆς Ἀνδρούσης, ἡ ὁποία κατηργήθη μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν, ὑπαχθεῖσα εἰς τὴν τότε ἐπισκοπὴν καὶ νῦν μητρόπολιν Μεσσηνίας (Καλαμῶν). Κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ Ὀρλὼφ ὁ ἀρχηγὸς τῶν Μανιατῶν Σκυλογιάννης Μαυρομιχάλης παρέμενεν ἐν Νησίῳ μετὰ τὴν μετὰ τοῦ Ὀρλὼφ διαφωνίαν του, ἐκεῖθεν δὲ ἀπεσύρθη μετὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Τούρκων εἰς Μελίπυργον, ὅπου πολιορκηθεὶς κατεστράφη μετὰ τῶν συντρόφων του. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν ἡ πόλις προσέφερεν εἰς τὸν Ἀγῶνα πολλὰς ὑπηρεσίας, κατὰ δὲ τὴν ἀπόβασιν τοῦ Ἰβραὴμ εἰς τὴν ΝΔ. Πελοπόννησον (1825), καταληφθεῖσα ὑπέστη πολλὰς ζημίας. Βραδύτερον τὸ πρὸς εἰρήνευσιν τῆς χώρας ἀποσταλὲν σῶμα τοῦ Γάλλου στρατηγοῦ Μαιζῶνος κατέλαβε τὴν πόλιν καὶ διέμεινεν ἐν αὐτῇ ἐπὶ μακρόν. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν διὰ βασιλικοῦ διατάγματος τοῦ Ὄθωνος τὸ *Νησίον* μετωνομάσθη εἰς *Μεσσήνην*.

Χ. Δ.

—**Μεσσήνη, ἢ *Μεσσίνα*** (Messina) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς καὶ πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Σικελίᾳ. Ὁ *νομὸς* περιλαμβάνεται μεταξὺ τοῦ Τυρρηνικοῦ πελάγους πρὸς Β., τοῦ στενοῦ τῆς Μεσσήνης καὶ τοῦ Ἰονίου πελάγους πρὸς Α., τοῦ νομοῦ τῆς Κατάνης πρὸς Ν. καὶ τοῦ νομοῦ τοῦ Παλέρμου πρὸς Δ. Ἔχει ἔκτασιν 3.249 τ. χλμ. καὶ 613.000 κατοίκους. Ἔχει ἔδαφος μᾶλλον ὀρεινόν, ἀποτελοῦν συνέχειαν τῶν Ἀπεννίνων τῆς Καλαβρίας, μὲ κατεύθυνσιν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ σχηματίζον τὴν ὀροσειρὰν Πελοριτάνο, μὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ ὄρος *Ἀντενναμάρε* (1130 μ. ὕψ.) καὶ τὴν ἀπ' Α. πρὸς Δ. κατευθυνομένην ὀροσειρὰν *Νεμπρόντα*, ἥτις ἐκαλεῖτο ἄλλοτε *Ἡρωϊκὰ ὄρη*, μὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ ὄρος *Μοντεζόρο* (1846 μ. ὕψ.). Ἐν αὐτῷ ὑπάρχουν καὶ δύο μικραὶ λίμναι: ἡ τοῦ *Φάρου* παρὰ τὴν Μεσσήνην καὶ ἡ *Μπαλσάνα* παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Μοντεζόρο. Παράγει γεωργικὰ προϊόντα καὶ ἔχει ἄφθονα λατομεῖα γύψου καὶ ἀσβέστου.

Ἡ *πόλις* εἶναι πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ καὶ ἡ σημαντικωτέρα τῆς Σικελίας, μετὰ τὸ Παλέρμον, κειμένη παρὰ τοὺς πρόποδας τῶν ὀρέων Πελοριτάνο, ἐν τῷ στενῷ τῆς Μεσσήνης. Κάτ. 203.609. Πρὸ τῶν σεισμῶν τοῦ 1908 καὶ 1912 ἦτο ἡ σημαντικωτέρα πόλις τῆς Σικελίας μετὰ τὸ Παλέρμον καὶ ἐξετείνετο ἀμφιθεατρικῶς κατὰ μῆκος τῆς παραλίας, ἄνωθεν φυσικοῦ λιμένος (*βλ. λ. Μεσσήνης λιμήν*). Εἰς τὰ πρὸς Δ. τῆς πόλεως ὑψώματα



Digitized by Google

ἐγείρονται τὰ φρούρια Γκονζάγκα καὶ Καστελλάτσιο. Εἶχε θαυμασίαν ρυμοτομίαν, ὡραίας πλατείας, μετ' ἀφθόνων κρηνῶν καὶ πιδάκων, ὡραίας ἐκκλησίας καὶ μεγαλοπρεπῆ, καλλιτεχνικά, δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ κτήρια. Μεταξὺ αὐτῶν εἶναι ἡ ἐν τῇ κατὰ μῆκος τοῦ λιμένος λεωφόρῳ Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ περίφημος κρήνη τοῦ Ποσειδῶνος, κατασκευασθεῖσα τῷ 1546 ὑπὸ τοῦ Μοντόρσολι καὶ μὴ καταστραφεῖσα ἐκ τῶν σεισμῶν. Μεταξὺ τῶν ναῶν οἱ σημαντικώτεροι εἶναι ἡ μητρόπολις, νορμανδικῆς ἐποχῆς, μετὰ 26 μονολιθικῶν ἐκ γρανίτου αἰγυπτιακῶν κιόνων, μωσαϊκῶν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ προσόψεως ἐκ χρωματιστῶν μαρμάρων, πολλάκις καταστραφεῖσα καὶ ἀνακαινισθεῖσα, ὁ ναὸς τοῦ Εὐαγγελισμοῦ ὁ ἀρχαιότερος τῆς πόλεως, ὁ τοῦ Ἁγίου Φραγκίσκου τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ὁ τοῦ Ἁγίου Γρηγορίου τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος κ.τ.λ. Ἐκ τῶν ἄλλων κτηρίων ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὸ δημαρχεῖον, τὸ μέγαρον Ρόκα Γκουελφόνι, τὸ νοσοκομεῖον τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, τὸ μέγα θέατρον τοῦ Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ τοῦ 1850, ἡ ἀγορά, τὰ μέγαρα Μπρουνατσίνι, Γκράνς κ.τ.λ. Πρὸ τῶν σεισμῶν ἦτο ἐκ τῶν ἐμπορικωτέρων πόλεων τῆς Ἰταλίας καὶ εἶχεν ἀκμαιοτάτην ναυτιλίαν. Ὁ λιμὴν αὐτῆς ἐθεωρεῖτο ἐκ τῶν ὡραιοτέρων καὶ τῶν εὐρυτέρων τοῦ κόσμου, δυνάμενος νὰ περιλάβῃ ὑπὲρ τὰ 1000 πλοῖα πάσης χωρητικότητος. Εἶχεν ἐπίσης ἱκανὴν βιομηχανικὴν κίνησιν μὲ ἐργοστάσια κατεργασίας κοραλλίων, ἁλιευτικῶν προϊόντων, μηχανημάτων, ὑφασμάτων, ἀρωμάτων κ.τ.λ. Συνεπείᾳ τῶν σεισμῶν, τὸ ἐμπόριον, ἡ βιομηχανία καὶ ἡ ναυτιλία αὐτῆς κατεστράφησαν σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου. Μετὰ τὰ ληφθέντα ὅμως μέτρα πρὸς ἀνοικοδόμησιν αὐτῆς, ἡ πόλις ἤρχισε νὰ ἀναλαμβάνῃ βαθμιαίως ἀπὸ πάσης ἀπόψεως, χωρὶς ὅμως νὰ φθάσῃ εἰσέτι εἰς τὴν προτέραν αὐτῆς ἀκμήν. Ἔχει πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1549, ἱερατικὴν σχολήν, ἰνστιτοῦτον, τεχνικὰς σχολάς, στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν, Ναυτικὴν σχολήν, Ἀκαδημίαν ἐπιστημῶν, μουσεῖον καλῶν τεχνῶν, ἐν τῷ ὁποίῳ διεσώθη ἐκ τῶν σεισμῶν καὶ τῶν πυρκαϊῶν τὸ περίφημον τρίπτυχον τοῦ Ἀντωνέλλο ντὰ Μεσσίνα, βιβλιοθήκην, ἀνώτερα σχολεῖα, τρία θέατρα, βοτανικὸν κῆπον, εἰδικὸν ἵδρυμα μετὰ σεισμογράφων, βιολογικὸν σταθμὸν κ.τ.λ.

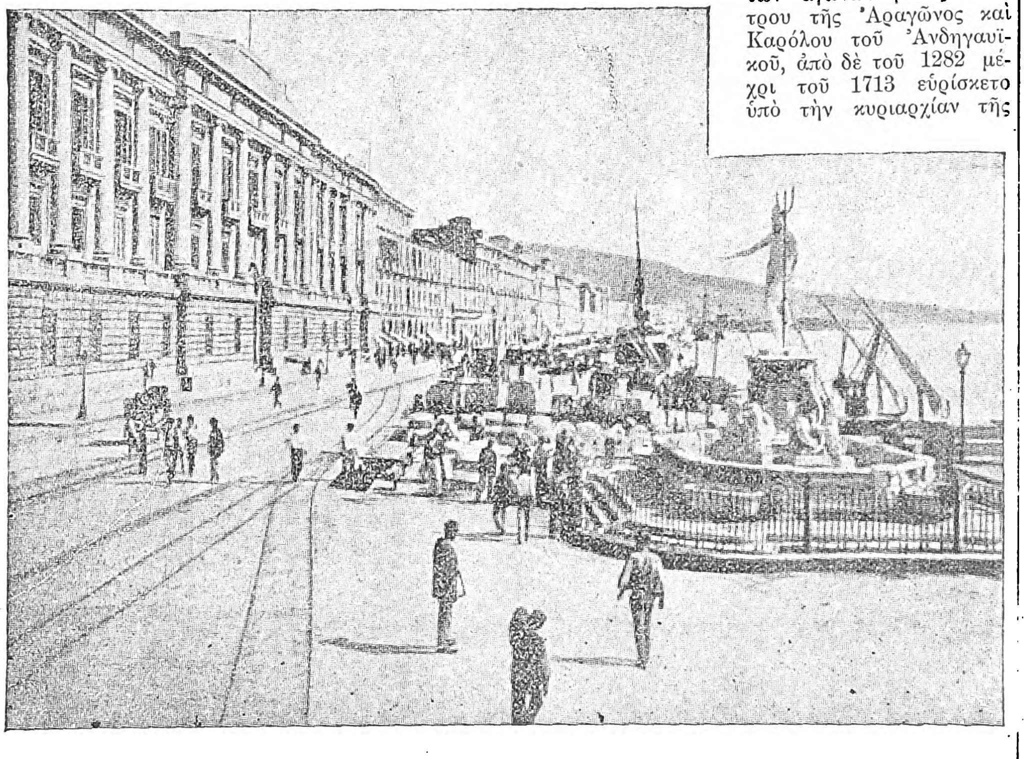

*Μεσσήνη: Ἡ προκυμαία πρὸ τοῦ σεισμοῦ τοῦ 1908 καὶ ἡ κρήνη τοῦ Ποσειδῶνος.*

—*[Ἱστορ.]* Ἡ Μεσσήνη ἱδρύθη τῷ 732 π.Χ. ὑπὸ Κυμαίων ἀποίκων, οἵτινες ἔδωσαν εἰς αὐτὴν τὸ ὄνομα *Ζάγκλη* (=δρέπανον) ἐκ τῆς ἐν σχήματι δρεπάνου γλώσσης γῆς, ἥτις σχηματίζει τὸν λιμένα της. Μετ' ὀλίγον προσετέθησαν ἐν αὐτῇ καὶ Χαλκιδεῖς ἐξ Εὐβοίας, μετὰ δὲ τὴν ἅλωσιν τῆς Μιλήτου ὑπὸ τῶν Περσῶν ἐκλήθησαν ἐν αὐτῇ καὶ πολλοὶ Ἴωνες. Τῷ 488 κατέλαβε τὴν πόλιν ὁ τύραννος τῶν ἐπὶ τῆς ἔναντι αὐτῆς ἀκτῆς Ρηγίνων Ἀναξίλαος, ὁ ὁποῖος ἐγκατέστησεν ἐκεῖ Μεσσηνίους καὶ ὠνόμασεν αὐτὴν *Μεσσήνην*. Τῷ 426 ἡ Μεσσήνη εἶχε συνάψει συμμαχίαν μετὰ τῶν Ἀθηναίων. Κατὰ τοὺς πολέμους τῶν Καρχηδονίων μετὰ τοῦ Διονυσίου τῶν Συρακουσῶν, οἱ πρῶτοι κατέλαβον τὴν πόλιν καὶ κατέστρεψαν αὐτὴν τῷ 396. Ὁ Διονύσιος Β' τῶν Συρακουσῶν κατώρθωσε κατόπιν νὰ τὴν ἀνακαταλάβῃ καὶ νὰ τὴν ἀνοικοδομήσῃ. Καταληφθεῖσα ἐκ νέου ὑπὸ τῶν Καρχηδονίων, ἀπηλευθερώθη ὑπὸ τοῦ Τιμολέοντος τῷ 443. Κατὰ τοὺς πολέμους τῆς Καρχηδόνος καὶ τοῦ Ἀγαθοκλέους τῶν Συρακουσῶν, ἡ Μεσσήνη ἐτάχθη μὲ τὸ μέρος τῆς πρώτης. Τῷ 282 κατέλαβεν αὐτὴν ὁ Ἀγαθοκλῆς διὰ προδοσίας. Κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα δὲ πόλεμον μεταξὺ Μεσσηνίων καὶ Ἱέρωνος Β' τῶν Συρακουσῶν, οἱ Μεσσήνιοι ἠναγκάσθησαν νὰ ζητήσουν τὴν βοήθειαν τῶν Ρωμαίων, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐγένετο ἡ ἀφορμὴ τοῦ πρώτου Καρχηδονικοῦ πολέμου. Ἡ Μεσσήνη περιῆλθεν ἔκτοτε ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Ρωμαίων, οἵτινες τῷ 241 ὠνόμασαν αὐτὴν «civitas foederata». Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Καίσαρος ἔλαβε πάντα τὰ δικαιώματα ρωμαϊκῆς πόλεως, κατὰ δὲ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον ἐτάχθη πρὸς τὸ μέρος τοῦ Σίξτου Πομπηΐου καὶ ἐδῃώθη τῷ 35 π. Χ. ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Ὀκταβίου. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν αὐτοῦ εἰς αὐτοκράτορα, ὁ Ὀκτάβιος ἵδρυσεν ἐν Μεσσήνῃ, διὰ τῆς ἀποστολῆς νέων ἀποίκων, εὐρὺν λιμένα, ὁ ὁποῖος ἔφθασεν εἰς μεγάλην ἀκμήν. Κατὰ τὴν διαίρεσιν τῆς ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας ἡ Μεσσήνη περιῆλθεν εἰς τοὺς αὐτοκράτορας τῆς Ἀνατολῆς, ἐν τῷ λιμένι δὲ αὐτῆς τῷ 547 συνεκέντρωσε τὸν βυζαντινὸν στόλον ὁ Βελισσάριος κατὰ τὴν εἰσβολήν του εἰς τὴν Καλαβρίαν. Τῷ 831 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Συρακουσῶν καὶ τῷ 1061 ὑπὸ τῶν Νορμανδῶν, κληθέντων ὑπὸ τῶν κατοίκων πρὸς ἐκδίωξιν τῶν Μωαμεθανῶν. Τῷ 1190 κατεστράφη ὑπὸ τοῦ Ριχάρδου Α' τῆς Ἀγγλίας, τῷ δὲ 1194 περιῆλθε, μετὰ τῆς λοιπῆς Σικελίας, ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τοῦ Ἐρρίκου Δ' τῆς Γερμανίας. Μετὰ ταῦτα ἀπέβη τὸ θέατρον τῶν ἀγώνων μεταξὺ Πέτρου τῆς Ἀραγῶνος καὶ Καρόλου τοῦ Ἀνδηγαυϊκοῦ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1282 μέχρι τοῦ 1713 εὑρίσκετο ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῆς Ἱσπανίας. Τῷ 1675 ἡ γερουσία τῆς πόλεως, συνεπείᾳ ἐμφυλίων ἐρίδων, ἐκάλεσεν εἰς βοήθειαν τὸν Λουδοβῖκον ΙΕ' τῆς Γαλλίας. Παρὰ τὴν νίκην ὅμως τοῦ γαλλικοῦ στόλου κατὰ τοῦ ὑπὸ τῆς Ἱσπανίας κληθέντος εἰς βοήθειαν ἀγγλοολλανδικοῦ, ἡ πόλις παρέμεινεν εἰς τοὺς Ἱσπανούς. Τῷ 1713 περιῆλθε μετὰ τῆς λοιπῆς Σικελίας εἰς τὸ βασίλειον τῆς Σαβοΐας καὶ τῷ 1720 εἰς τὸ τῆς Σαρδηνίας, ἀκολουθήσασαι ἔκτοτε τὴν τύχην τῆς Σικελίας. Κατὰ τὸν ΙΗ', ΙΘ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ' αἰῶνος ἡ Μεσσήνη ὑπῆρξεν ἐκ τῶν σκληρότερον ἐν τῷ κόσμῳ δοκιμασθεισῶν πόλεων ὑπὸ παντὸς εἴδους θεομηνιῶν, λιμῶν, λοιμῶν, πλημμυρῶν, πυρκαϊῶν καὶ σεισμῶν. Τῷ 1743 ὑπέστη μεγάλας καταστροφὰς ἐξ ἐπιδημίας πανώλους καὶ τῷ 1783 ἐκ σεισμοῦ. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 κατὰ τῶν Βουρβώνων ἐβομβαρδίσθη ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας συνεχῶς. Κατὰ τὸ 1854 οἱ κάτοικοι αὐτῆς ἀπεδεκατίσθησαν ἐξ ἐπιδημίας χολέρας. Ὁ τρομερὸς σεισμός, ὁ ὁποῖος τῇ 28 Δεκεμβρίου 1908 κατέστρεψε τὸ Ν. τμῆμα τῆς Καλαβρίας καὶ τὰς ἔναντι ταύτης ἀκτὰς τῆς Σικελίας, ἐπέφερε μεγίστας καταστροφάς, ἰδίως εἰς τὴν Μεσσήνην. Κατὰ τὸν σεισμὸν τοῦτον ἐτάφησαν ὑπὸ τὰ ἐρείπια τῆς πόλεως 83.000 κάτοικοι αὐτῆς. Ἡ καταστροφὴ ἐπηυξήθη καὶ ἐκ τῶν λαβουσῶν χώραν πυρκαϊῶν καὶ τῆς τρομοκρατήσεως τῶν ἐπιζησάντων κατοίκων, οἵτινες καταφυγόντες εἰς τὸν λιμένα καὶ τὰ ἐν αὐτῷ πλοῖα ὑπέστησαν νέον ἀποδεκατισμὸν ἐκ τῆς συνεπείᾳ τῶν σεισμῶν ἐπισυμβάσης ἀποτόμου ἀμπώτιδος καὶ πλημμυρίδος. Πρὸς βοήθειαν τῶν σεισμοπαθῶν διενηργήθησαν παγκόσμιοι ἔρανοι, πλεῖσται δὲ κυβερνήσεις ἀπέστειλαν εἰδικὰς ὑγειονομικὰς καὶ ἄλλας ἀποστολάς, μεταξὺ δὲ αὐτῶν ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις, ὁ ἑλληνικὸς Ἐρυθρὸς σταυρὸς καὶ ἄλλαι φιλανθρωπικαὶ ὀργανώσεις τῆς Ἑλλάδος ἀπέστειλαν ἰδιαίτερον ἀτμόπλοιον μεθ' ὑγειονομικῆς ἀποστολῆς καὶ εἰς εἴδη βοηθημάτων. Ἡ ἰταλικὴ κυβέρνησις, πλὴν τῶν ἄλλων μέτρων, ἵδρυσε τῷ 1910 εἰδικὸν ὀργανισμὸν ἐπικληθέντα «Μεσσηνιακὴ ἕνωσις», ὑπὸ τύπον συνεταιρισμοῦ, εἰς ὃν μετεῖχον πάντες οἱ ἰδιοκτῆται οἰκοπέδων καὶ οἰκιῶν πρὸς συστηματικὴν ἐπανίδρυσιν τῆς πόλεως, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν νεωτάτων σχεδίων τῶν ἀντισεισμικῶν πόλεων. Χάρις εἰς τὸν ὀργανισμὸν τοῦτον ἡ πόλις κατέστη δυνατὸν νὰ ἀνοικοδομηθῇ κατὰ μέγα μέρος. Τῷ 1912 νέος σεισμὸς καὶ ἐπιδημία χολέρας ἐπέφερον νέας καταστροφὰς εἰς τὴν πόλιν, χωρὶς ὅμως ν' ἀνακόψουν τὸ ταχὺ ἔργον τῆς ἀναδημιουργίας. Ἐν Μεσσήνῃ ἐγεννήθησαν ὁ ἱστορικὸς Δικαίαρχος, ὁ φιλόσοφος Ἀριστοκλῆς ὁ περιπατητικός, ὁ Στέφανος Πρωτονοτάριος, ὁ Ματσέο ντὶ Ρίκκο καὶ ὁ Τομάζο ντὶ Σάσσο, ποιηταὶ τῆς αὐλῆς Φρειδερίκου Β', ὁ ζωγράφος Ἀντωνέλλο ντὰ Μεσσίνα κλπ. Κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἐδίδαξαν ἐν αὐτῇ ὁ γραμματικὸς Κωνσταντῖνος Λάσκαρις, διετέλεσε δ' ἐν αὐτῇ ἐπί τι χρονικὸν διάστημα ἀρχιεπίσκοπος καὶ ὁ Βησσαρίων. Μ. Δ. Β.

— **Μεσσήνης λιμὴν** (Porto di Messina) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὁ ἐπισημότερος τῶν Σικελικῶν λιμένων μετὰ τὸ Παλέρμο καὶ τὴν Κατάνην. Σχηματίζεται ὑπὸ τῆς κυρίως ἀκτῆς τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τῆς μεγαλονήσου καὶ ὑπὸ γλώσσης χθαμαλῆς, ἥτις καμπυλοῦται εἰς σχῆμα δρεπάνου, στρέφουσα τὸ κυρτὸν πρὸς τὸ βόρειον στόμιον τοῦ *πορθμοῦ τῆς Μεσσήνης*. Εἰς τὸ δρεπανοειδὲς δὲ τοῦτο σχῆμά της ὤφειλεν ἡ γλῶσσα, καὶ ἀπ' αὐτῆς ὁ λιμήν, τὴν ἀρχαιοτάτην ὑπὸ τοῦ Ἑκαταίου ἀναφερομένην ὀνομασίαν της *Ζάγκλη*, ὡς καὶ τὴν σχετικὴν παράδοσιν, καθ' ἣν «ἐκεῖ Κρόνον τὸ δρέπανον ἀποκρύψαι, ᾧ τὰ πατρὸς ἀπέκοψεν αἰδοῖα... Τὸ γὰρ δρέπανον, Ζάγκλον οἱ Σικελοὶ καλοῦσιν» (*Στέφ. Βυζ.* 293, 9 ἔκδ. Βερολ.). Κατὰ τὴν σύγχρονον παράδοσιν ἡ κάμψις τῆς γλώσσης πρὸς σχηματισμὸν τοῦ λιμένος συμβολίζει τὸν βραχίονα τοῦ Ἁγίου Ρενιέρι, πάτρωνος τοῦ λιμένος καὶ τῆς πόλεως, δι' ὃ καὶ Braccio di San Ranieri καλεῖται ἡ γλῶσσα καὶ ὁ κατὰ τὴν ἀνατολικωτέραν της ἄκραν φάρος προσγειώσεως (πλάτ. 38° 11' 33'' Β., μῆκ. 15° 34' 33'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 177: The Faro or Strait of Messina). Ἐπὶ τῆς αὐτῆς γλώσσης ἡ ἀκρόπολις, τὰ νεκροταφεῖα τῶν Ἄγγλων καὶ τῶν Γάλλων, καθιστῶντα αὐτὴν γραφικωτάτην, τὸ φρούριον Σὰν Σαλβατόρι ἔχον δεύτερον φάρον, παράπλου αὐτόν, καὶ τὸ φρούριον Καμπάνα ἔχον τρίτον φάρον εἴσπλου καὶ ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι. Τὸ δὲ στόμιον τοῦ λιμένος σχηματιζόμενον μετὰ τῆς χηλῆς τοῦ ὑγειονομείου, ἐφ' ἧς τέταρτος φάρος δεξιᾷ τῷ εἰσπλέοντι, ἔχει εὖρος στομίου 250 μέτρων, τοῦ ἐλλειψοειδοῦς λιμένος ἔχοντος περίμετρον 3 χιλιομ. καὶ βάθη 10 ἕως 36 ὀργυιῶν. Καὶ κατὰ μὲν τὰ Ν. καὶ Α. χηλιδώματα ὁρμίζονται τὰ ἐμπορικὰ καὶ τὰ ξένα πολεμικά, κατὰ δὲ τὸν ἀνατολικὸν μυχὸν εἶναι μικρὰ μὲν ἀλλ' ἄρτια εἰς μέσα ναυτικὴ βάσις τορπιλλοβόλων, ἐν ᾗ καὶ μόνιμος δεξαμενὴ 345×80×24 ποδ., διατιθεμένη ἐν ἀνάγκῃ καὶ πρὸς ἐπισκευὴν ἐμπορικῶν· κατὰ δὲ τὸν ΝΑ. μυχὸν τεχνητὸς αὐλών, ἐν ᾧ εἰσέρχονται μετὰ καταπλησσούσης δεξιότητος τὰ συρμοπορθμεῖα, τὰ μεταφέροντα ἐκ τοῦ ἀπέναντι Ρηγίου ἢ Βίλλα Σὰν Τζιοβάννι τὰς διὰ Σικελίαν προωρισμένας σιδηροδρομικὰς ἁμάξας, αἵτινες ἅμα τῷ κατάπλῳ τοῦ συρμοπορθμείου ζεύγνυνται εἰς τὸν συρμὸν τοῦ σικελικοῦ σιδηροδρόμου, χωρὶς ἐν τῷ μεταξὺ νὰ ἔχωσιν ἐξέλθει αὐτῶν οἱ ἐπιβάται των. Ἡ ἀτμοπλοϊκὴ συγκοινωνία τοῦ λιμένος πρὸς πάντας τοὺς μεγάλους λιμένας τῆς Μεσογείου εἶναι πυκνοτάτη, ἀποτελεῖ δὲ οὗτος σταθμὸν ἀνθρακεύσεως τῶν μεταναστευτικῶν πλοίων καὶ ἰδίως τῶν τῆς Κιούναρδ Λάϊν. Τὰ ἐτησίως καταπλέοντα πλοῖα λογίζονται κατὰ μέσον ὅρον εἰς 860 ἀτμόπλοια, τόννων 1.270.000 καὶ εἰς 36 ἱστιοφόρα τόννων 5000, τὸ δὲ μέσον ποσὸν τῶν ἐτησίως εἰσαγομένων γαιανθράκων εἰς 112.000 τόννους, 9.000 τόννων ἀποτελούντων διαρκὲς ἀπόθεμα. Σπουδαῖα λιμενικὰ ἔργα ὑπὸ κατασκευήν. Σ. Ε. Λ.

— **Μεσσήνης παραλία** (Costera di Messina). *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ἀπὸ *Μεσσήνης* μέχρι *Πελώρου ἄκρας* γραφικὴ παραλία τῆς Σικελίας, ἣν ἔχει πρὸς τ' ἀριστερᾷ του ὁ ἀναπλέων τὸν πορθμὸν ἀπὸ τοῦ Σικελικοῦ πρὸς τὸ Τυρρηνικὸν πέλαγος. Παραθέεται ὑπὸ τῆς ἠλεκτρικῆς τροχιοδρομικῆς γραμμῆς. Κατ' αὐτὴν τὰ προάστεια *Ἅγιος Σωτὴρ* τῆς ποτὲ ἐκεῖ ἑλληνικῆς παροικίας (San Salvator dei Greci), *Πάτσε*, *Γκρόττα* (Grotta), *Γκαντζίρι* (Ganziri) μὲ τὰς δύο λιμνοθαλάσσας του Pantano Grande καὶ Pantano Piccola καὶ τὰ κέντρα ψυχαγωγίας του καὶ τέλος ὁ *Φάρος* (Faro) ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Κάπο Πελόρο (Capo Peloro, «τὸ ὀξύτατον καὶ βορειότατον, ὃ καλεῖται Πέλωρος ἄκρα»,

Digitized by Google

*Πτολεμ.* Γ, δ, 2 Nobbe), λαμβάνον τὴν ὀνομασίαν του ἀπὸ τοῦ παλαιοτάτου ἐκεῖ φάρου, οὗ τὰ ἐρείπια σῴζονται ἔτι (πλάτ. 38° 16′ Β., μῆκ. 15°39′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 177: The Faro or Strait of Messina) ἐγγὺς τοῦ συγχρόνου· Μόνα ἀγκυροβόλια τῆς ἀκτῆς ταύτης, ἀπαλλασσόμενα τῶν ἀπὸ τῶν γκαρόφαλλι κινδύνων, εἶναι τὸ τοῦ Σὰν Σαλβατὸρ ντέϊ Γκρέτσι καὶ τό, ὑπὸ τὸν φάρον, Piana di Faro.

Σ. Ε. Λ.

— **Μεσσήνης** ***πορθμὸς*** (Streto di Messina, Strait of Messina) *[Γεωγρ.]*. Τὸ ἀμφίγειον (ὑπὲρ πᾶν ἄλλο ἀρχαιότατα περιγραφέν, διὰ τῶν περὶ τὴν Σκύλλαν καὶ τὴν Χάρυβδιν ἐν τῇ «Ὀδυσσείᾳ» μηθευομένων) τὸ ἑνοῦν τὸ Σικελικὸν πέλαγος πρὸς τὸ Τυρρηνικὸν καὶ χωρίζον τὴν ΒΑ. Σικελίαν ἀπὸ τῆς Καλαβρίας (ΝΔ. τῆς Ἰταλίας ἐσχατιά). Τὸ νότιον στόμιόν του διανοίγεται μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων *Πούντα Γκρόσσο* τῆς σικελικῆς ἀκτῆς καὶ *Κάπο ντέλλ' Ἄρμι* (ἀρχ. *Λευκόπετρα*) τῆς Καλαβρίας καὶ εὖρος 12 μιλ., μεθ' ὃ χωρεῖ ἐπὶ 14 μίλλ. πρὸς Β., διαρκῶς στενούμενον μέχρι τοῦ βορείου στομίου, εἰσβάλλοντος εἰς τὸν κόλπον τῆς Τζιόγια καὶ διανοιγομένου μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων *Πέτζο* παρὰ τὴν Σκύλλαν τῆς Καλαβρίας καὶ Πελόρο παρὰ τὴν Χάρυβδιν τῆς Σικελίας. Τὸ στενὸν τοῦτο, ὅπερ ἐτρόμαζον οἱ ἀρχαῖοι, περιβάλλοντες αὐτὸ μὲ παραδόσεις ἀνυπάρκτων καὶ φανταστικῶν κινδύνων, εἶναι πράγματι δυσπαράπλευστον εἰς ἱστιοφόρα, λόγῳ τῶν ἀποτόκων τῆς παλιρροίας ροθιάδων δινῶν (ἃς οἱ ἐντόπιοι ὀνομάζουν τανῦν γκαρόφαλι), τῶν δινῶν τῆς Χαρύβδεως τῆς Ὀδυσσείας· Ὁ πορθμὸς οὗτος ἐλέγετο ὑπὸ μὲν τῶν Λατίνων Fretum Siculum, μέχρι δὲ τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος «πορθμὸς τοῦ φάρου» (El Faro) διὰ τὸν ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Πελόρο μεσαιωνικὸν φάρον, οὗ τὰ ἴχνη σῴζονται κατὰ χώραν. Οἱ ἐκεῖ ἐπικρατοῦντες τοπικοὶ ἄνεμοι εἶναι Α. ΝΑ καὶ Δ. ΝΔ., ὧν ὁ δεύτερος ἐγείρει μεγάλην θάλασσαν· τούτους δὲ οἱ ναυτικοί μας ὀνομάζουν «φαρίτες».

Σ. Ε. Λ.

**Μεσσήνη** *[Γεωγρ.]*. Μεσαιωνικὴ πόλις τῆς Ἀν. Θράκης, 4 ὥρας ΝΑ. τῆς Ἀρκαδιουπόλεως (νῦν Λουλὲ-Βουργάζ), ἀποικισθεῖσα, κατά τινα παράδοσιν, ὑπὸ ἀποίκων Μεσσηνίων, ἐπὶ τῆς θέσεως τῆς ὑπὸ τοῦ Ἀττίλα καταστραφείσης τῷ 443 μ. Χ. ἀρχαίας Δρουζιπάρας καὶ ἔχουσα ἀνεξάρτον ἐπισκοπήν. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἦτο μικρὸν καὶ ἄσημον χωρίον, ἀριθμοῦν μέχρι τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν (1923) περὶ τοὺς 750 κατοίκους, ὑπαγομένους θρησκευτικῶς εἰς τὸν μητροπολίτην Βιζύης καὶ διατηροῦντας δημοτικὸν σχολεῖον μετὰ 35 μαθητῶν.

Α.Θ.Σ.

**Μεσσηνία** (καὶ ***Μεσσήνη*** καὶ ***Μεσσηνὶς γῆ***) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν ἓξ χωρῶν τῆς Πελοποννήσου, εἰς τὸ ΝΔ. τμῆμα αὐτῆς· Περιλαμβάνει τὴν δυτικωτάτην τῶν τριῶν νοτίων χερσονήσων τῆς Πελοποννήσου (τὴν *Μεσσηνιακὴν*) καὶ ἐκτείνεται πρὸς Α. μὲν μέχρι τοῦ *Ταϋγέτου*, ὑφ' οὗ ὁρίζεται ἀπὸ τῆς Λακωνίας, πρὸς Β. μέχρι τοῦ ποταμοῦ *Νέδα* (δι' οὗ πάλαι ὡρίζετο ἀπὸ τῆς Ἠλιακῆς Τριφυλίας) καὶ ΒΑ. ὑπὸ ὀρεινοῦ προτειχίσματος, ἐκτεινομένου ἐκ τῶν *Νομίων* ὀρέων (νῦν *Τετράγιον-Ἐλενίτσα)* καὶ συναπτομένου μετὰ τοῦ Ταϋγέτου, δι' οὗ ὁρίζεται ἀπὸ τῆς Ἀρκαδίας. Κατὰ τὰ λοιπὰ μέρη βρέχεται ὑπὸ θαλάσσης. Ὁ ἐκ νότου χωρῶν *Μεσσηνιακὸς κόλπος* διεκρίνετο εἰς τὸ βόρειον ἥμισυ, καλούμενος ἐκ τῆς πόλεως Κορώνης *Κορωναῖος*, καὶ εἰς τὸ νότιον, καλούμενος ἐκ τῆς πόλεως Ἀσίνης *Ἀσιναῖος*. Πᾶσα ἡ ἐπιφάνεια ἀνέρχεται εἰς 2.860 τετραγωνικὰ χιλιόμετρα.

Ἡ Μεσσηνία εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον ὀρεινὴ (κατὰ τὸν Πλίνιον «ἡ χώρα τῶν δέκα ὀκτὼ ὀρέων»). Δύο μεγάλαι πεδιάδες διακρίνονται κατὰ τὸ ἀνατολικὸν μέρος· ἡ βόρειος τῆς *Στενυκλάρου* (νῦν τοῦ *Μελιγαλᾶ*), πρὸς τὰ ἀρκαδικὰ ὅρια, κλειστὴ ἄλλοτε λεκάνη λίμνης, ἔχουσα στενὴν πρὸς Ν. φάραγγα, δι' ἧς οἱ συνενούμενοι ἐν ταύτῃ ρύακες ἐξέρχονται διὰ τῆς *Βαλύρας* (νῦν *Μαυροζούμενας* ἢ *Ξηροπόταμο*) εἰς τὴν νοτίαν καὶ χαμηλοτέραν πεδιάδα *Μακαρίαν*. Αὕτη διαρρέεται ὑπὸ τοῦ *Παμίσου* ποταμοῦ, ὅστις πηγάζει ἀπὸ τὸ βορειοανατολικὸν ἄκρον τῆς πεδιάδος (κατὰ τὸ νῦν χωρίον Ἅγιος Φλῶρος) καὶ ἔχει κατὰ μέγα μέρος δημιουργήσει τὴν εὐφορωτάτην ταύτην πεδιάδα διὰ τῆς ἰλύος αὐτοῦ (ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία Μακαρία). Ὁ Πάμισος δέχεται ἐνταῦθα τὴν Βαλύραν καὶ τὸν ἀνατολικώτερον αὐτοῦ *Ἄριν* (νῦν *ποτάμι τοῦ Ἀριοχωρίου*). Ἡ μεγαλυτέρα καὶ εὐφορωτέρα αὕτη πεδιὰς ἔφθανεν ἄλλοτε μέχρι τῶν ἀντηρίδων τοῦ Ταϋγέτου, ἐξ οὗ κατήρχοντο πρὸς ταύτην καὶ πληθὺς χειμάρρων, ἐν οἷς ὁ *Νέδων*, ἐκβάλλων δύο ὥρας πρὸς Α. τοῦ Παμίσου, κατὰ τὰς σημερινὰς Καλάμας. Βορειοδυτικῶς ὑψοῦται ἡ *Ἰθώμη* τῶν ἀρχαίων, συνεχομένη μετὰ τῶν *Κοντοβουνίων*, τὰ ὁποῖα ὁρίζουν τὴν πεδιάδα· ταῦτα συνέχονται μετὰ τῶν ὀρέων τῆς Κυπαρισσίας, τὰ ὁποῖα κατὰ συνεσφιγμένας οροσειρὰς ἐκτείνονται ἐκ Β. πρὸς Ν. καὶ καταπίπτουσι πρὸς τὴν Μεσσηνιακὴν χερσόνησον (ὕψιστον τὸ *Αἰγαλέον* βλ. λ.). Ταύτην δὲν κατέχουν μακραὶ ὀροσειραί, ὡς τὰς δύο Λακωνικὰς χερσονήσους, ἀλλὰ ὄρη κατοικήσιμα, μετρίου ὕψους, ἐν οἷς καὶ τὸ *Λυκόδημον*, ἡ *Μαθία* τῶν ἀρχαίων, ὑψουμένη μέχρις 957 μ. καὶ κατέχουσα τὸ κέντρον τῆς χερσονήσου. Τὸ παράκτιον ὄρος πρὸς Δ. τοῦ Ἁγίου Νικολάου, ὑψούμενον ἀπὸ τῆς Μεθώνης μέχρι τῆς Πύλου, εἶναι ὡς διακλάδωσις τούτου. Τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς χερσονήσου διαμορφοῖ ἴδιον καὶ ἀπότομον ὄρος, τὸν *Ἀκρίταν* (ὑψ. 516 μ.) κοινῶς *Κάβο Γάλλο*. Ὡς προεκτάσεις τῆς ξηρᾶς εἶναι καὶ αἱ κατὰ τὴν νοτιοδυτικὴν ἀκτὴν τῆς χερσονήσου νησῖδες, *ἡ Θηγανοῦσα* (νῦν *Βενέτικο*), ἡ συστὰς τῶν *Οἰνουσσῶν*, ἡ τὸν λιμένα τῆς Πύλου φράσσουσα νησὶς *Σφακτηρία* καὶ ἡ βορειοτέρα *Πρωτή*. Ἀκολουθεῖ βορειότερον μεταξὺ τῆς ἀκτῆς καὶ τοῦ Αἰγαλέου χαμηλὸν ὀροπέδιον καὶ εὔφορον, διαρρεόμενον ὑπὸ χειμάρρων καὶ φθάνον πρὸς Β. μέχρι τῆς Κυπαρισσίας, ὅπου ἡ βορεία προέκτασις τοῦ Αἰγαλέου (νῦν *Ψυχρό*, ὑψ. 1115 μ.) καταπίπτει παρὰ τὴν ἀκτήν· Ἐκεῖθεν, μεταξὺ Κυπαρισσίας καὶ τοῦ Ἠλειακοῦ ἀκρωτηρίου Ἰχθύος (Κατακώλου) ἀνοίγεται ὁ εὐρὺς *Κυπαρίσσιος* κόλπος, εἰς τὸν ὁποῖον ἐκβάλλει ὁ *Κυπαρισσήεις* ποταμὸς καὶ ἡ *Νέδα* (κοινῶς *Μπούζι*), τὸ ὅριον τῆς ἀρχαίας Μεσσηνίας. Ἡ Μεσσηνία γενικῶς διὰ τῶν δύο μεγάλων σχετικῶς πεδιάδων καὶ τῶν πολλῶν μικρῶν, αἱ ὁποῖαι ἀνοίγονται μεταξὺ τῶν χαμηλῶν ἢ μετρίων αὐτῆς ὀρέων, δὲν ἔχει τὸν χαρακτῆρα ἀγρίας ὀρεινῆς χώρας, δεχομένη δ' ἀφθόνους βροχὰς καὶ οὕτω μὴ στερουμένη πηγῶν καὶ ποταμῶν εἶναι χώρα εὔφορος καὶ καλῶς κατοικουμένη (εἰς τοὺς ἀρχαίους χρόνους εἶχε περὶ τὰς 200 χιλ. κατ.). Τὰ προϊόντα γενικῶς ἦσαν ὅμοια πρὸς τὰ τῆς Λακωνικῆς, πρὸς ἣν ἡ χώρα κατὰ πολὺ ὁμοιάζει· συγκριτικῶς ὅμως εἶναι αὕτη κατὰ πολὺ γλυκυτέρα καὶ εὐφορωτέρα.

***Ἀρχαία τοπογραφία***. Ἡ δυτικὴ Μεσσηνία, τὸ τμῆμα τῆς ἀρχαιοτέρας περιοχῆς τῶν Νηλειδῶν, ἐκτείνεται ἀπὸ τῆς Νέδας μέχρι τοῦ Ἀκρίτα. Κατὰ τὴν κοιλάδα τῆς Νέδας ὁρίζεται ὁ *Αὐλών*, καθ' ὃν καὶ ἡ θέσις *Ὀλουρὶς* ἢ *Ὄλουρα*. Ἡ μόνη σημαντικὴ πόλις τῆς βορειοδυτικῆς ταύτης Μεσσηνίας ἦτο ἡ *Κυπαρισσία* ἢ *Κυπαρισσιαί*, μικρὸν ὑπερκείμεναι τῆς ἀκτῆς (ὑπὸ τὸ βόρειον τμῆμα τοῦ Αἰγαλέου). Τὰ παρατηρούμενα λείψανα τῶν ἑλληνικῶν τειχῶν ἀνάγονται εἰς δύο ἀρχαίας περιόδους. Τέσσαρας ὥρας νοτιώτερον ἔκειτο ἡ ἄσημος *Ἔρανα* (νοτίως τοῦ λιμένος *Ἁγίας Κυριακῆς* καὶ παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ καλουμένου νῦν ποταμίου *Λαγκούβαρδος*). Ἔτι νοτιώτερον σχηματίζεται ἡ *Πλαταμώδης ἄκρα* (νῦν *τοῦ Μαράθου*), ἀντικρὺ τῆς νησῖδος Πρωτῆς, ἥτις πάλαι εἶχεν ὁμώνυμον πολίχνην. Ἀπὸ τοῦ νοτιωτέρου κυκλικοῦ κολπίσκου τῆς *Πύλου* ἄρχεται ἡ χερσόνησος. Τὸν κολπίσκον φράσσει πρὸς Δ. ἡ ἀπότομος νῆσος *Σφακτηρία* ἢ *Σφαγία*, δι' ἧς ἀνοίγονται πρὸς τὴν εἴσοδον δύο στόμια· Πρὸς Β. τοῦ βορείου στομίου (200 μ. εὔρους) ὑψοῦται παράκτιος λόφος χερσονησίζων (μήκους 200 μ.), ἡ θέσις τῆς ἀρχαίας Μεσσηνιακῆς *Πύλου* ἢ τὸ *Κορυφάσιον* (τὸ *Ναυαρῖνον* τοῦ μεσαίωνος), διασῴζον ἔτι λείψανα ἀρχαίων οἰκημάτων καὶ τειχῶν. Ὁ κόλπος τῆς Πύλου χωρίζεται διὰ τοῦ ὄρους τοῦ *Ἁγίου Νικολάου* (ἢ *Κουμπές*, 482 μ. ὑψ.) ἀπὸ νοτιωτέρου καὶ εὐρυχωροτέρου λιμένος, τῆς *Μεθώνης* ἢ *Μοθώνης*. Αὕτη ταυτίζεται μετὰ τῆς Ὁμηρικῆς *Πηδάσου* καὶ ἔχει φρούριον κατεχόμενον κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐπὶ μακρὸν ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν, οἵτινες εὑρόντες κατεστραμμένον ἀνήγειρον αὐτὸ ἐκ νέου. Εἰς τὸν μυχὸν τῆς μέχρι τοῦ *Ἀκρίτα* κολπουμένης ἀκτῆς, ἀπέναντι τῶν Οἰνουσσῶν, σχηματίζεται ὁ λιμὴν *Φοινικοῦς* (νῦν *Ταβέρνα*, παρὰ τὸ χωρίον *Λαχανάδα*). Πρὸς τὴν Μεθώνην ἀντιστοιχεῖ ἡ ΒΑ. τοῦ Ἀκρίτα κατὰ τὸν Μεσσηνιακὸν κόλπον κειμένη Δρυοπικὴ *Ἀσίνη* (ἔνθα παλαίτατα τὸ *Ρίον*). Ἡ πόλις ἀργότερον ἐκτίσθη ὑπὸ κατοίκων ἐκ τῆς πόλεως Κορώνης, ἐκλήθη δ' οὕτω ἀπὸ τῶν μεσαιωνικῶν χρόνων τὸ ἐνταῦθα ἑνετικὸν φρούριον. Βορειότερον, ἐν ὑψηλῇ θέσει καὶ οὐ μακρὰν τῆς θαλάσσης, ἔκειντο αἱ *Κολωνίδες* ἢ *Κολώνη* (παρὰ τὸ νῦν χωρίον *Βουνάρια*). Ἡ δ' ἀρχαία Κορώνη ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ Ἐπαμεινώνδου (καθ' ὃν χρόνον καὶ ἡ Μεσσήνη) ἐν τῇ θέσει πιθανῶς τῆς ἀρχαιοτέρας *Αἰπείας*, ὑπὸ τὰς ὑπωρείας τῆς Μαθίας (παρὰ τὸ χωρίον *Πεταλίδι*). Βορειότερον ὀλίγον ἐκβάλλει τὸ ποτάμιον *Βίας* (νῦν *Τζάνε*), ἐξ οὗ ἄρχεται ἡ παραλία καμπυλουμένη πρὸς Α.

Ἡ ἐκ τοῦ Κυπαρισσίου κόλπου διὰ τοῦ Αὐλῶνος ὁδὸς πρὸς τὴν πεδιάδα τῆς Στενυκλάρου διήρχετο μεταξὺ τῶν ποταμίων *Κυπαρισσήεντος* καὶ *Ἠλέκτρας* (νῦν *ποτάμι τῆς Κλέσουρας*, εἰς τὴν Βαλύραν συμβάλλον), ἔνθα σχηματίζεται μικρὸν ὀροπέδιον (ὑψ. 210 μ.).

Ἐνταῦθα τοποθετεῖται τὸ χωρίον *Δώριον* (πρὸς Β. τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Κοπανακίου) καὶ κατὰ τὴν Βαλύραν ἡ *Πολίχνη* (παρὰ τὸ χωρίον *Βασιλικὸ* πιθανῶς). ΒΔ. τῆς κυρίας κορυφῆς τῶν Νομίων (Τετραγίου) καὶ πρὸς τὰ ἀρκαδικὰ ὅρια ἔκειτο ἐπὶ ὑψηλοῦ βράχου τὸ περίφημον φρούριον *Εἶρα* (παρὰ τὸ χωρίον *Κακαλέτρι*). Ἡ συνήθης ὅμως ἐξ Ἀρκαδίας ὁδὸς ἄγει ἐκ τῆς *Μεγαλοπόλεως* διὰ διόδου (νῦν *Μακρυπλάγι*, ὕψ. 600 μ.) ἀνοιγομένης κατὰ τὴν κοιλάδα τοῦ *Ἀμφίτου* (νῦν *ποτάμι τῆς Κόκλας*), παραποτάμου τοῦ Παμίσου. Κατὰ τὴν ὁδὸν ταύτην ἔκειτο τὸ ἀρχαῖον φρούριον *Ἄμφεια* (τὸ μεσαιωνικὸν *Γαρδίκι*, νῦν *Παλαιόκαστρον τῆς Κόκλας*). Κατὰ δυτικώτερον παραπόταμον, τὸν *Χάραδρον* (νῦν τοῦ *Σανδάνι*) τοποθετεῖται ἐπὶ ὑψώματος ἡ ὀχυρὰ *Ἀνδανία*, ἡ πατρὶς τοῦ Ἀριστομένους (νῦν *Ἑλληνικό*, παρὰ τὸ χωρίον *Λυκούρεσι*)· ἡ περιοχὴ ταύτης ἀνῆκε πρότερον εἰς τὴν ἐνωρὶς ἐκλείψασαν *Οἰχαλίαν*. Ἡ θέσις δὲ τῆς ἀρχαίας Στενυκλάρου παραμένει ἄγνωστος.

Δυτικῶς τῆς στενῆς κοιλάδος, δι' ἧς ἡ Βαλύρα εἰσέρχεται εἰς τὴν Μακαρίαν πεδιάδα, ὑψοῦται ἐπιβλητικὴ ἡ *Ἰθώμη* (ὕψ. 800 μ.), ἡ ἀκρόπολις τῆς ὑπὸ τὴν αἰγίδα τῶν Θηβῶν θεμελιωθείσης μεγάλης πόλεως *Μεσσήνης*. Ἡ πόλις ἐξετείνετο ΝΔ. τῆς Ἰθώμης, τὰ δ' ἐκτεταμένα καὶ νῦν ἔτι πολλαχοῦ διατηρούμενα τείχη περικυκλοῦσι τὸ νῦν χωρίον *Μαυρομμάτι* ἐν εὐρείᾳ περιφερείᾳ. Ἡ νότιος πλευρὰ ὑψοῦται πρὸς τὸ ὄρος *Εὔα (Ἅγιος Βασίλειος)*. Ἐν τῇ πεδιάδι ἦσαν ὀνομασταὶ ἡ *Αἰθαία* ἐπὶ ταῖς πηγαῖς τοῦ Παμίσου (νῦν *Ἅγιος Φλῶρος*) καὶ ἡ *Θουρία* (ἐν θέσει *Ἑλληνικό*, ἀνατολικῶς τοῦ χωρίου *Σπερχογεῖα*). Ἀνατολικῶς ταύτης ἐκτείνεται μέχρι τοῦ Ταϋγέτου ὀρεινὴ χώρα, καθ' ἣν διὰ διαφόρων χαραδρῶν συνίσταται ὁ ὁρμητικὸς χείμαρρος Νέδων. Τὸ τμῆμα τοῦτο ἔφερε τὸ ὄνομα «Δενθελιανὴ περιοχή», καθ' ἣν οἱ Μεσσήνιοι κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἱστορίας των ἐπολέμησαν κατὰ τῶν Λακεδαιμονίων. Ἐν ταύτῃ ἔκειτο, παρὰ τὴν μετέπειτα καλουμένην θέσιν *Λίμναι*, περίοπτον ἱερὸν τῆς *Λιμνάτιδος Ἀρτέμιδος*, ἀναφερόμενον εἰς τὴν ἔκρηξιν τοῦ Α′ Μεσσηνιακοῦ πολέμου (παρὰ τὴν *Παναγίαν Βολιμιώτισσαν*, 2 ὥρας δυτικῶς τῆς Σιτσόβης). Εἰς τὴν πεδιάδα καὶ παρὰ τὸν Νέδοντα ἔκειντο αἱ *Φαραὶ* ἢ *Φηραὶ* (ἔνθα νῦν αἱ *Καλάμαι*). Τρεῖς ὥρας ΝΑ. τῶν Φηρῶν καὶ ἐπὶ ὁμαλοῦ παρὰ τὴν ἀκτὴν ὑψώματος ἔκειτο ἡ *Ἀβία* ἢ *Ἀβέα* (μεταξὺ τῶν νῦν χωρίων *Μεγάλης* καὶ *Μικρᾶς Μαντινείας*), οὐ μακρὰν τῶν πρὸς τὴν Λακωνικὴν ὁρίων, ἅτινα ἀπὸ τοῦ Αὐγούστου καὶ Τιβερίου ἐσχηματίζοντο διὰ τῆς *Χοιρίου* χαράδρας (νῦν *Σανταβᾶς*).

— *[Ἱστορ.]* Ὁ ἀρχαιότατος πληθυσμὸς τῆς *Μεσσηνίας* φαίνεται ὅτι ἀπετελεῖτο ἐκ Λελέγων (ἰδίως ἐν τῷ ἀνατολικῷ τμήματι), Πελασγῶν (πρὸς τὰ ὅρια τῆς Ἀρκαδίας), Αἰολέων καὶ Μινυῶν (κατὰ τὴν δυτικὴν ἀκτήν), οἵτινες δι' οὐδεμιᾶς πολιτικῆς ἑνότητος συνεδέοντο. Κατὰ τὰ Ὁμηρικὰ ἔπη, τὸ μέγιστον τμῆμα τῆς χώρας συνεδέετο μετὰ τῆς Λακωνίας ὑπὸ τὸ σκῆπτρον τῶν Ἀτρειδῶν, ἐνῷ ἡ δυτικὴ ἀκτὴ μέχρι τοῦ Ἀλφειοῦ ἀνῆκεν εἰς τὸν Νέστορα. Κατὰ τοὺς χρόνους τῶν Λελέγων τὴν πρώτην θέσιν τῶν πόλεων κατεῖχεν ἡ *Ἀνδανία*, ἐν τῇ βορείᾳ πεδιάδι. Ὅτε οἱ Δωριεῖς, ἐκ τῆς Ἀρκαδίας κατελθόντες, ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν πεδιάδα ταύτην, οἱ ἀρχαῖοι κάτοικοι ὑπετάγησαν οὐχὶ ἄνευ μαχῶν. Τινὰ τῶν ἰσχυροτέρων καὶ εὐγενεστέρων γενῶν μετῴκησαν εἰς τὴν Ἀττικήν, ὡς οἱ *Νηλεῖδαι*, οἱ *Μεδοντίδαι*, οἱ *Παιωνίδαι* καὶ *Ἀλκμεωνίδαι*, ἄλλα δ' εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Ὁ λοιπὸς πληθυσμός, ἰδίᾳ ὁ γεωργικός, διέμεινε κατὰ τὸ πλεῖστον κάτοχος τῆς ἰδιοκτησίας του καὶ τῶν πολιτικῶν δικαιωμάτων· πλὴν τῆς βορείου πεδιάδος, τῆς *Στενυκλάρου*, ἥτις ὑπήχθη εἰς τὸν βασιλέα τῶν

Digitized by Google

Δωριέων, ὑπῆρχον καὶ τέσσαρες παλαιαὶ κτήσεις ὑπὸ ὑποτελεῖς βασιλεῖς ἢ ἡγεμόνας *(Πύλος, Ρίον, Μεσόλη, Ὑάμεια)*. Ἡ ἀνάμειξις τῶν νικητῶν μετὰ τῶν ἀρχαιοτάτων κατοίκων ἐγένετο τοσοῦτον φιλικῶς, ὥστε ἐν τοῖς μακροῖς πολέμοις μετὰ τῆς Σπάρτης οὐδέποτε ἐπῆλθε μεταξὺ αὐτῶν διάστασις. Τὸ ἀποτέλεσμα τῶν μακρῶν *Μεσσηνιακῶν* πολέμων (βλ. λ.) ἦτο ἡ ἀπώλεια τῆς ἐλευθερίας τῶν Μεσσηνίων, διότι ἡ χώρα των ἀπέβη κτῆσις τῶν Σπαρτιατῶν. Ὅσοι τῶν κατοίκων ἐπροτίμησαν νὰ διαμείνωσιν, ὑπεχρεώθησαν νὰ ἐργάζωνται διὰ τοὺς νικητὰς ὡς εἵλωτες.

Ἀλλὰ τῷ 369 ἐξήγειρε τὸν λαὸν ὁ Ἐπαμεινώνδας, ὅστις ἀποκατέστησε τὴν Μεσσηνίαν ἐλευθέραν διὰ τῆς ἱδρύσεως τῆς πόλεως *Μεσσήνης*, ἣν ὠχύρωσε καὶ κατέστησε πολιτικὸν κέντρον, προσκαλέσας τοὺς ἀπογόνους τῶν διασκορπισθέντων Μεσσηνίων εἰς τὴν πατρίδα των. Καὶ ἐπετέθησαν μὲν κατὰ τῶν Μεσσηνίων οἱ Σπαρτιᾶται μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἐπαμεινώνδου, ἀλλ' οἱ Μεσσήνιοι βοηθούμενοι ὑπὸ Ἀργείων, Ἀρκάδων καὶ Ἀθηναίων ἀντέσχον, ἕως οὗ, τῷ 355 π. Χ., ἀνεγνώρισε καὶ ἡ Σπάρτη τὴν αὐτοτέλειάν των. Ἐπὶ τῆς ἀκμῆς τῆς Αἰτωλικῆς συμπολιτείας ἦσαν φίλοι τῶν Αἰτωλῶν. Κατὰ τὸν μεταξὺ τῆς Αἰτωλικῆς καὶ Ἀχαϊκῆς συμπολιτείας πόλεμον Φίλιππος ὁ Γ', σύμμαχος τῶν Ἀχαιῶν, εἰσήλασεν εἰς τὴν Μεσσηνίαν ἐπιθυμῶν νὰ καταστήσῃ ὑποχείριον ταύτην. Μὴ κατορθώσας ὅμως τοῦτο καὶ ἀποκρουσθείσης τῆς προσβολῆς αὐτοῦ κατὰ τῆς Ἰθώμης, προέβη εἰς φοβερὰν δῄωσιν τῆς πεδινῆς χώρας. Δῄωσιν ὑπέστη καὶ ὑπὸ τοῦ τυράννου τῆς Σπάρτης Νάβιδος, ὁπότε ἔσπευσεν ὁ Φιλοποίμην (τῷ 202 ἢ 201) καὶ ἐδίωξεν αὐτόν. Οἱ Μεσσήνιοι ἠκολούθουν τὴν πολιτικὴν τῶν Αἰτωλῶν καὶ κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ Ἀντιόχου κατὰ τῆς Ρώμης (192—189)· ἀλλὰ μετὰ τὴν παρακμὴν τῶν Αἰτωλῶν ἡ Μεσσηνία ὑπέστη ἐπίθεσιν ὑπὸ τῶν Ἀχαιῶν (191), οἱ δὲ Μεσσήνιοι ἠναγκάσθησαν νὰ ἐπικαλεσθῶσι τὴν μεσολάβησιν τοῦ Ρωμαίου Φλαμινίνου· Οὗτος ὅμως ἐπεδίκασε τὴν χώραν εἰς τὴν Ἀχαϊκὴν συμπολιτείαν, καὶ τοιουτοτρόπως ἡ Πελοπόννησος ἡνώθη εἰς μίαν ὁμόσπονδον πολιτείαν. Ἐν τούτοις ἡ ὀλιγαρχικὴ μερὶς διέκειτο δυσμενῶς πρὸς τὴν ἕνωσιν ταύτην, ὅτε δὲ ὁ ἡγέτης τῶν ὀλιγαρχικῶν Δεινοκράτης ἐκήρυξεν ἐπανάστασιν (τὸ θέρος τοῦ 184), ὁ στρατηγὸς τῶν Ἀχαιῶν Φιλοποίμην, καίτοι γέρων, ἑβδομηκοντούτης καὶ ἀσθενής, ἔσπευσε νὰ δαμάσῃ τὴν ἐπανάστασιν, συνελήφθη ὅμως αἰχμάλωτος καὶ ἐθανατώθη. Οἱ ὁμόσπονδοι Ἀχαιοὶ ἐξηκολούθησαν τὸν πόλεμον ὑπὸ τὸν νέον στρατηγὸν Λυκόρταν, οἱ δ' ἐπαναστάται ἀπεκλείσθησαν εἰς τὴν ἰσχυρὰν Μεσσήνην· μετὰ μακρὸν ἀγῶνα παρεδόθη ἡ πόλις ἄνευ ὅρων εἰς τὸν Λυκόρταν (183). Τότε ἐφηρμόσθησαν ἐπὶ τῶν Μεσσηνίων αἱ ἀνακηρυχθεῖσαι ἀρχαὶ τῆς ἰσότητος ἐν Μεσσήνῃ, οἱ δὲ δῆμοι Ἀβία, Θουρία καὶ Φαραί, χωρισθέντες τῆς πρωτευούσης, μετέσχον τῆς συμπολιτείας ὡς αὐτοτελεῖς ἐπαρχίαι. Ἔκτοτε ἡ Μεσσηνία ἠκολούθησε τὴν τύχην τῆς λοιπῆς Πελοποννήσου.

Ἀπὸ τοῦ Η' μ. Χ. αἰῶνος οἱ κάτοικοι τῆς Πελοποννήσου διὰ λόγους ἀσφαλείας τρέπονται πρὸς τὰ παράλια καὶ ἱδρύουν νέους συνοικισμούς. Ἱδρύονται ἡ *Καλαμάτα*, ἡ *Ἀρκαδία* (ἐπὶ τῆς ἀρχαίας Κυπαρισσίας), τὸ *Ναυαρῖνον* ἐπὶ τῆς Πύλου. Ἡ *Μεθώνη* καὶ ἡ *Κορώνη* εἶναι ὀχυρὰ φρούρια. Τῷ 1205 ὁ Γοδοφρεῖδος Βιλλαρδουῖνος θέλων νὰ πλεύσῃ εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν ἠναγκάσθη ὑπ' ἀντιξόων ἀνέμων νὰ καταφύγῃ εἰς Μεθώνην. Ἀντιληφθεὶς ὅτι ἡ Πελοπόννησος τότε ἦτο ἀπόλεμος, ἐξώρμησε μετὰ τοῦ Γουλιέλμου Σαμπλίττου πρὸς κατάκτησιν τῆς χώρας. Μεταξὺ τῶν κατακτητῶν καὶ τῶν ἐπιχωρίων μία μόνον μάχη συνεκροτήθη, εἰς τὸν ἐλαιῶνα τοῦ *Κούντουρου*, οὐ μακράν, ὡς φαίνεται, τῆς Μεθώνης. Οὕτως ἡ Μεσσηνία περιελήφθη εἰς τὴν ἱδρυθεῖσαν φραγκικὴν ἡγεμονίαν τῆς Ἀχαΐας, πλὴν τῆς Μεθώνης καὶ Κορώνης, τῶν ἐπισήμων τούτων ναυτικῶν σταθμῶν τῆς Μεσογείου, οἱ ὁποῖοι περιῆλθον εἰς τοὺς Βενετοὺς (ἀπὸ τοῦ 1245). Τὰς σπουδαίας βαρωνίας τῆς Καλαμάτας καὶ τῆς Ἀρκαδιᾶς ἔλαβεν αὐτὸς ὁ Βιλλαρδουῖνος. Εἰς τὴν πεδιάδα τῆς Στενυκλάρου καθιδρύθη ἡ βαρωνία τῆς *Γριτζένης*, παραχωρηθεῖσα μετὰ τεσσάρων ἱπποτικῶν τιμαρίων εἰς βαρῶνον καλούμενον Λουκᾶν. Διὰ ταύτης ἐφρουρεῖτο ἡ περὶ τὴν Καλαμάταν ὀρεινὴ χώρα, συγκοινωνοῦσα μετὰ τῆς ἐν τῇ Ἀρκαδίᾳ Βελιγοστῆς διὰ τοῦ στενοῦ τοῦ *Μακρυπλαγίου*, ἔνθα οἱ ἐπιζητήσαντες Ἕλληνες νὰ ἀνακτήσωσι τὴν χώραν κατὰ τὸ 1264 ὑπὸ τὸν Μιχαὴλ Παλαιολόγον ἔπαθον ἧτταν, ζωγρηθέντων τῶν στρατηγῶν Ἀλεξίου Φιλῆ, Μακρηνοῦ καὶ Ἀλεξίου Καβαλλαρίου. Κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος αὐξάνεται ἡ δύναμις τῆς Βενετίας ἐν Πελοποννήσῳ καὶ Στερεᾷ, οἱ Φράγκοι ἐξαλείφονται καὶ διαδέχονται τούτους βαθμηδὸν οἱ Τοῦρκοι. Τῷ 1479 ἡ Κορώνη, ἡ Μεθώνη καὶ τὸ Ναυαρῖνον μετὰ τῶν ἐξαρτημάτων αὐτῶν κατέχονται ὑπὸ τῶν Βενετῶν, ἐνῷ ἡ λοιπὴ Πελοπόννησος εἶχε καταστῇ καὶ πάλιν ἑλληνική. Ἀπὸ τοῦ 1498 καὶ ἑξῆς διατελεῖ ὑπὸ τοὺς Τούρκους καὶ μόνον 30 ἔτη παρέμεινεν ὑπὸ τοὺς Βενετοὺς διὰ τῆς κατακτήσεως τοῦ Μοροζίνη (1688—1715). Κατὰ τὴν γενομένην τὴν ἐποχὴν ταύτην διαίρεσιν τῆς Πελοποννήσου (1689) εἰς ἑπτὰ διοικητικὰ τμήματα, ἡ Μεσσηνία κατὰ τὸ δυτικὸν ἥμισυ ἀνῆκεν εἰς τὸν νομὸν Μεθώνης μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μεθώνην καὶ τὰς περιοχὰς Μεθώνης, Ναυαρίνου καὶ Ἀρκαδιᾶς, ἧς ὁ ἐπίσκοπος ἦρχεν ἐκκλησιαστικῶς τοῦ νομοῦ, κατὰ δὲ τὸ ἀνατολικὸν εἰς τὸν νομὸν Κορώνης μὲ πρωτεύουσαν τὴν Κορώνην καὶ τὰς περιοχὰς Κορώνης, Ἀνδρούσης (ἡ νῦν ἐπαρχία Μεσσήνης) καὶ Καλαμάτας.

Κατὰ τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τοῦ 1769—1770 κατέπλευσε τῇ 23 Ἀπριλίου τοῦ 1770 μοῖρα ρωσικοῦ στόλου ὑπὸ τὸν Ἀλέξιον Ὀρλὼφ εἰς Κορώνην· καὶ ἡ μὲν γενομένη πολιορκία τῆς Κορώνης διελύθη, ἐκυριεύθησαν ὅμως ἡ Κυπαρισσία (Ἀρκαδιά), ἡ Πύλος (Ναυαρῖνον) καὶ ὁ Μυστρᾶς. Ἡ ἀκολουθήσασα ἀτυχία τοῦ κινήματος ἐπέφερε μεγάλας καταστροφὰς ἐκ μέρους τῶν Τουρκαλβανῶν. Κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν οἱ Ἕλληνες, τῇ 22 Μαρτίου 1821, ἐξεπολιόρκησαν τὰς Καλάμας, τὴν Πύλον καὶ τὴν Κυπαρισσίαν, συντόμως δ' ἠλευθερώθη ὅλη ἡ Μεσσηνία, πλὴν τῶν φρουρίων Μεθώνης καὶ Κορώνης.

Τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1825 ὁ Ἰμπραήμ, ἀποβιβασθεὶς εἰς Μεθώνην καὶ νικήσας τοὺς Ἕλληνας ἐν Κρεμμυδίῳ, ἐκυρίευσε τὴν Πύλον (Ναυαρῖνον) μετὰ τῶν φρουρίων αὐτῆς καὶ ἐσχημάτισε πολεμικὸν τρίγωνον, ὅπερ ἀπετέλουν τὰ φρούρια τῆς Μεθώνης, Κορώνης καὶ Ναυαρίνου. Νικήσας τὸν Παπαφλέσσαν καὶ τοὺς περὶ αὐτὸν ἐν Μανιακίῳ, κατέλαβεν ἀμαχητὶ τὸ Νησίον καὶ τὰς Καλάμας καὶ ἔχων ἔκτοτε ὡς ὁρμητήριον τὴν Πύλον καὶ τὴν Μεθώνην ἐλεηλάτει ἀγρίως τὴν Μεσσηνίαν. Τέλος μετὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Πύλου, ἀπεβιβάσθη εἰς Πεταλίδιον γαλλικὸς στρατὸς 14.000 ἀνδρῶν ὑπὸ τὸν Μαιζών, ὅστις ἀπεδίωξε τὸν Ἰμπραήμ, τοὺς Αἰγυπτίους καὶ τοὺς Τούρκους ἐκ τῆς Μεσσηνίας καὶ τῆς λοιπῆς Πελοποννήσου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Niese*, Die aeltere Geschichte Messeniens (ἐν περιοδ. Hermes, τ. 26, ἔτ. 1891).—*Seeliger*, Messenien und der Achaische Bund (Τσίτταου 1897). — *Γ. Παπανδρέου*, Ἡ Μεσσηνία πρὸ Χριστοῦ (1895). — *Κομνηνοῦ*, Μεσσηνιακά.— *Σ. Λάμπρου*, Ἀπογραφὴ τοῦ νομοῦ Μεθώνης ἐπὶ Βενετῶν τῷ 1689 (Δελτίον Ἱστορ. καὶ Ἐθνολ. ἑταιρείας τ. Β' σελ. 686). — *Τοῦ αὐτοῦ*, Τὰ ἀρχεῖα τῆς Βενετίας καὶ ἡ περὶ Πελοποννήσου ἔκθεσις τοῦ Μαρίνου Μικιὲλ (ἐν «Ἱστορικοῖς Μελετήμασι» σελ. 173). Ι. Σ. Σ.

— **Μεσσηνίας *νομός*.** Εἷς τῶν πέντε νομῶν τῆς Πελοποννήσου, καταλαμβάνων τὸ ΝΔ. τμῆμα αὐτῆς. Βρέχεται πρὸς Δ. ὑπὸ τοῦ Ἰονίου πελάγους καὶ πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου, ὁρίζεται δὲ ὑπὸ τῶν νομῶν Ἠλείας πρὸς Β., Ἀρκαδίας πρὸς ΒΑ. καὶ Α. καὶ Λακωνίας πρὸς ΝΑ. Ἔχει ἔκτασιν 3.370 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1928) 247.907 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὰς *Καλάμας*.

—*[Φυσικ. Γεωγρ.]* Τὰ φυσικὰ ὅρια τοῦ νομοῦ *Μεσσηνίας* καθορίζουσι πρὸς Β. ὁ *Ἀλφειός*, ἀπὸ τῆς μετὰ τοῦ *Γορτυνίου* συμβολῆς του μέχρι τῶν ἐκβολῶν, καὶ πρὸς Α. αἱ βορειότεραι προεκτάσεις τοῦ *Ταϋγέτου* καὶ αἱ βορείως αὐτῶν μικρότεραι τῆς κεντρικῆς Πελοποννήσου κορυφαὶ *Λύκαιον* (1.420 μ.), *Τετράγιον* (1.388 μ.) καὶ *Κελενίτσα* (1.297 μ.). Κατὰ ταῦτα ὁ σημερινὸς νομὸς περιλαμβάνει ὁλοκλήρους τὰς ἀρχαίας χώρας *Μεσσηνίαν* καὶ *Πυλίαν* καὶ τμῆμα τῆς Ἀρκαδίας. Ἐπίσης, ἐκτὸς τῆς ἠπειρωτικῆς χώρας περιλαμβάνει καὶ τὰς παρ' αὐτὴν νησῖδας *Οἰνούσας*, τὴν φράσσουσαν τὸν κόλπον τῆς *Πύλου Σφακτηρίαν* καὶ τὴν βορειότερον κειμένην *Πρωτήν*. Τὰ παράλια τοῦ νομοῦ διακόπτουσι δύο μεγάλοι κόλποι, ὁ ἀναπεπταμένος *Κυπαρισσιακὸς* πρὸς τὸ Ἰόνιον καὶ ὁ βαθὺς *Μεσσηνιακὸς* πρὸς Ν., μεταξὺ δὲ τῶν δύο τούτων χωρεῖ ἡ εἰς τὸ ἀκρωτήριον *Ἀκρίτας* (κοινῶς *Ι άλλο*), ἀπολήγουσα πρὸς Ν., χερσονησίζουσα χώρα τῆς *Πυλίας*. Ἐπὶ τῶν παραλίων τῆς Πυλίας ἀνοίγονται δύο μεγάλοι κολπίζοντες λιμένες, ὁ προαναφερθεὶς τῆς Πύλου (*Ναυαρίνου*) καὶ ὁ τῆς *Σαπιέντζας*, φρασσόμενος πρὸς Δ. ὑπὸ τῶν δύο μεγάλων νήσων τοῦ συμπλέγματος τῶν Οἰνουσῶν, *Σχίζας* καὶ *Σαπιέντζας*.

Τὸ ἔδαφος τοῦ νομοῦ εἶναι κατὰ τὸ ἥμισυ σχεδὸν πεδινόν, σχηματίζον μεταξὺ τῶν ὀρέων εὐρείας καὶ εὐφόρους πεδιάδας. Κυριώτερον ὄρος τῆς χώρας εἶναι τὸ ἐπὶ τῶν ἀρκαδικῶν συνόρων *Λύκαιον (Διαφόρτι*, 1.420 μ.). Ἐκ τούτου ἐκπέμπονται πρὸς Δ. ἡ *Μίνθη (Βουνόκας*, 1.222 μ.), δεσπόζουσα τοῦ Β. τμήματος τῆς χώρας, καὶ πρὸς ΝΔ. τὸ *Τετράγιον (Νόμια*, 1.388 μ.) καὶ ἡ *Κελενίτσα* (1.297 μ.). Ἀμφότερα τὰ ὄρη ταῦτα ὑψοῦνται ἐπὶ τῶν πρὸς τὴν Ἀρκαδίαν συνόρων, ἀλλὰ τὸ πρῶτον τούτων προεκτείνεται διὰ δευτερευουσῶν κορυφῶν πρὸς Δ. καὶ φθάνει μέχρι σχεδὸν τῆς θαλάσσης (Κυπαρισσιακὸς κόλπος). Δεύτερον ὄρος τῆς Μεσσηνίας εἶναι ὁ *Ταΰγετος*, ὁ ὁποῖος κατὰ τὸ Β. αὐτοῦ τμῆμα σχηματίζει τὰ μετὰ τῆς Λακωνίας ὅρια καὶ ἐκπέμπει ἐντὸς τοῦ ἐδάφους τοῦ νομοῦ τὴν κορυφὴν *Γόμος* (1.277 μ.), δεσπόζουσαν τῆς πεδιάδος

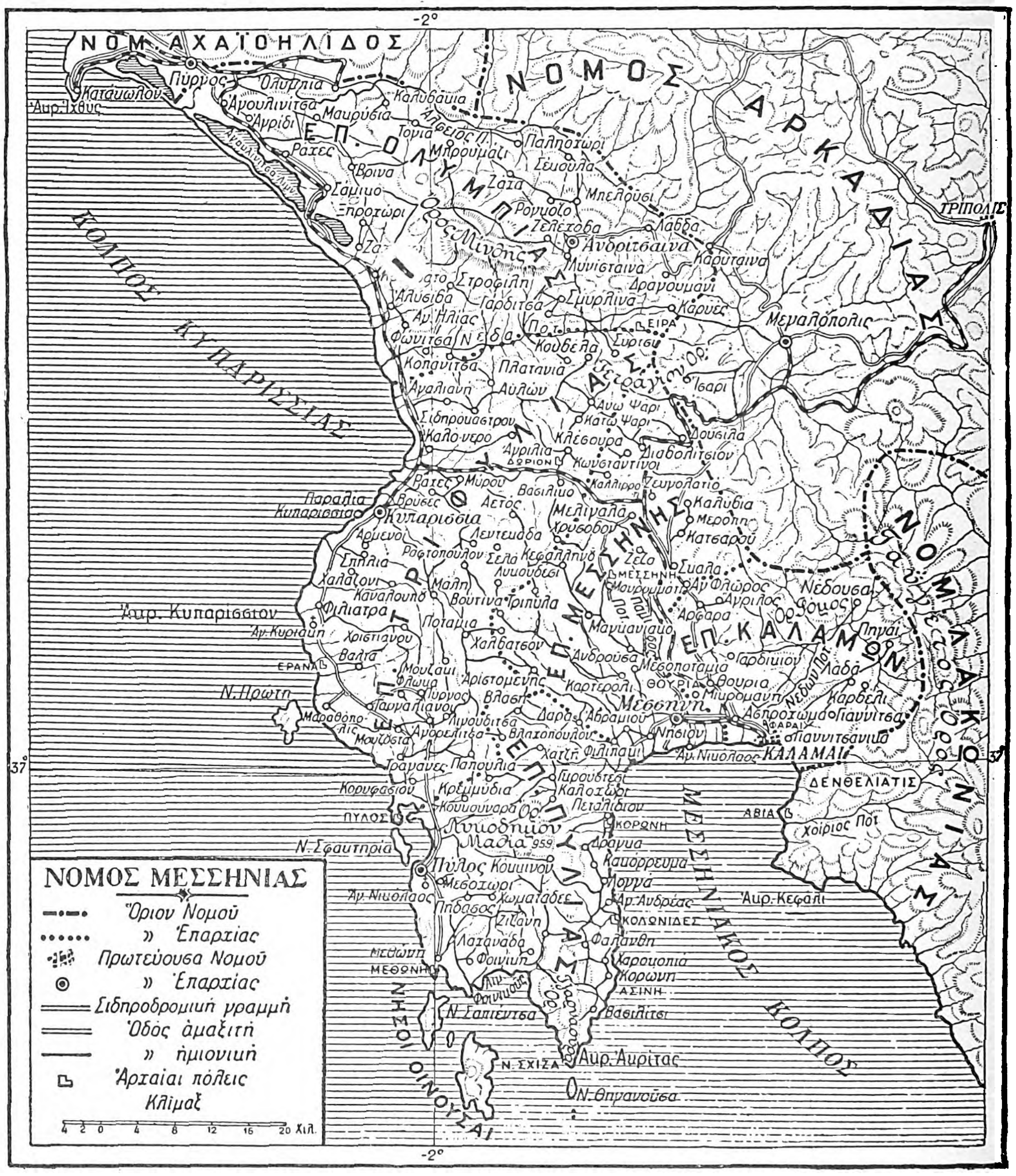


Digitized by Google

τῶν Καλαμῶν. Ἐπὶ τῆς χερσονησιζούσης χώρας τῆς Πυλίας ὑψοῦται τὸ μεμονωμένον *Λυκόδημον (Μαθιάς)* ὄρος (957 μ.), πρὸς Β. δ' αὐτοῦ τὸ ὄρος *Σέχι* ἢ *Βαρβάρα* (1.391 μ.). Τέλος ἄξια μνείας εἶναι ἡ ἱστορικὴ *Ἰθώμη* (802 μ.), ἀπόκρημνον ὄρος ὑπερκείμενον τῆς ἀρχαίας πόλεως Μεσσήνης, καὶ τὸ ὑπερκείμενον τῆς Κυπαρισσίας *Ψυχρὸν* (1.115 μ.), ἀποτελοῦν προέκτασιν τοῦ ὄρους Σέχι. Μεταξὺ τῶν ὀρέων ἀνοίγονται ἐγγὺς τῆς παραλίας ὡραῖαι καὶ εὔφοροι πεδιάδες, τῶν ὁποίων σπουδαιότεραι εἶναι ἡ τῆς Μεσσήνης (ἀρχ. *Μακαρία)*, μεγαλυτέρα πασῶν, ἡ τῶν Καλαμῶν, ἡ τῆς Πυλίας καὶ ἡ τῆς Κυπαρισσίας. Τὴν χώραν διαρρέουσιν οἱ ποταμοί : *Πάμισος*, σχηματιζόμενος διὰ τῆς συνενώσεως τῶν ποταμίων *Ἠλέκτρα (ποτάμι τῆς Κλεισούρας), Λευκασία (ποτάμι τ' Ἀγριλοβούνου* καὶ *Χάραδρος (ποτάμι τῆς Σανδάνης), Νέδων*, πηγάζων ἐκ τοῦ Ταϋγέτου, διασχίζων τὴν πεδιάδα καὶ τὴν πόλιν τῶν Καλαμῶν καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Μεσσηνιακόν, *Ἀλφειός*, παραβρέχων τὸ Β. τμῆμα τῆς χώρας, καὶ *Νέδα*, ῥέων διὰ μέσου κοιλάδος χωριζούσης τὸ ὄρος Μίνθη ἀπὸ τὰς πρὸς Δ. προεκτάσεις τοῦ Τετραγίου καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Κυπαρισσιακόν. Κατὰ μῆκος τῆς Β. παραλίας τοῦ Κυπαρισσιακοῦ, χωριζόμεναι δὲ ἀπὸ τῆς θαλάσσης διὰ στενῆς λωρίδος γῆς, κεῖνται αἱ ἰχθυόεσσαι λιμνοθάλασσαι *Ἀγουλινίτσης* καὶ *Καϊάφα*. Τὸ κλῖμα τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἤπιον κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ δροσερὸν κατὰ τὸ θέρος, χαρακτηρίζεται ὡς τὸ γλυκύτερον τῆς Πελοποννήσου.

—*[Πολιτ. Γεωγρ.]* Ὁ νομὸς *Μεσσηνίας* περιλαμβάνει σήμερον τὰς ἑξῆς 5 ἐπαρχίας : *Καλαμῶν* (ΝΑ. τμῆμα), *Μεσσήνης* (εἰς τὸ μέσον), *Πυλίας* (ΝΔ. τμῆμα), *Τριφυλίας* (Δ. τμῆμα) καὶ *Ὀλυμπίας* (Β. τμῆμα). Ἡ διαίρεσις αὐτὴ ἴσχυσε κατὰ πρῶτον ἀπὸ τοῦ 1845 μέχρι τοῦ 1899, ὁπότε ἡ χώρα ἐχωρίσθη εἰς 2 νομούς, τῆς *Μεσσηνίας*, εἰς τὸν ὁποῖον παρέμειναν αἱ ἐπαρχίαι Καλαμῶν, Μεσσήνης καὶ Πυλίας, καὶ τῆς *Τριφυλίας*, περιλαμβάνουσα τὴν ὁμώνυμον ἐπαρχίαν καὶ τὴν τῆς Ὀλυμπίας. Τῷ 1909 ἐπανῆλθεν ἡ προτέρα διαίρεσις τοῦ 1845.

Πρὸ τῆς εἰς κοινότητας κατανομῆς τῆς Ἑλλάδος, ὁ νομὸς Μεσσηνίας διῃρεῖτο εἰς 31 δήμους, κατὰ δὲ τὸ ἰσχῦον διοικητικὸν σύστημα περιλαμβάνει 2 δήμους, τὸν τῆς πρωτευούσης *Καλαμῶν* καὶ τὸν τῶν *Φιλιατρῶν*, συσταθέντα μετὰ τὴν ἀπογραφὴν τοῦ 1928, καὶ 285 κοινότητας. Κατὰ τὴν ἀπογραφὴν ταύτην αἱ ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τοῦ νομοῦ πόλεις, κῶμαι, χωρία καὶ συνοικισμοὶ ἀνέρχονται εἰς 457. Ἡ Μεσσηνία εἶναι, μετὰ τὴν Ἀττικήν, τὰς Ἰονίους νήσους καὶ τὴν Σάμον, ἡ πυκνότερον κατῳκημένη χώρα τῆς Ἑλλάδος, τὸ δὲ ποσοστὸν τῶν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους αὐτῆς κατοίκων κατὰ τετρ. χλμ., ἀνέρχεται εἰς 74 ψυχάς, ἐνῷ τὸ μέσον ποσοστὸν ἐπὶ ὁλοκλήρου τῆς Ἑλλάδος φθάνει τὰς 49 μόνον κατὰ τετρ. χλμ. Τὰ κυριώτερα ἀστικὰ κέντρα εἶναι αἱ *Καλάμαι* (28.955 κάτ.), τὰ *Φιλιατρὰ* (9.293 κάτ.), ἡ *Μεσσήνη* (6.725 κάτ.), ἡ *Κυπαρισσία* (4.443 κάτ.), οἱ *Γαργαλιάνοι* (7.074 κάτ.), ἡ *Χώρα* (*Λιγούδιστα*, 3.582 κάτ.), ἡ *Πύλος* (2.315 κάτ.), ὁ *Μελιγαλᾶς* (2.279 κάτ.). Δικαστικῶς ὁ νομὸς περιλαμβάνει 2 πρωτοδικεῖα (Καλαμῶν καὶ Κυπαρισσίας) καὶ πλεῖστα εἰρηνοδικεῖα, ἅτινα ὑπάγονται εἰς τὸ ἐφετεῖον Πατρῶν.

Ἐκπαιδευτικῶς ἀποτελεῖ μετὰ τῶν ἐπαρχιῶν Οἰτύλου καὶ Γυθείου τὴν Ι' περιφέρειαν μέσης ἐκπαιδεύσεως μὲ ἕδραν τὰς Καλάμας, καὶ 2 περιφερείας δημοτικῆς ἐκπαιδεύσεως : Μεσσηνίας μὲ ἕδραν τὰς Καλάμας (σχολεῖα 196) καὶ Τριφυλίας μὲ ἕδραν τὴν Κυπαρισσίαν (σχολεῖα 166). Τὰ ἐν τῷ νομῷ σχολεῖα μέσης ἐκπαιδεύσεως εἶναι 7 πλήρη γυμνάσια (2 Καλαμῶν, Ἀνδριτσαίνης, Κυπαρισσίας, Μεσσήνης, Πύλου καὶ Φιλιατρῶν), ἓν πρακτικὸν λύκειον ἐν Καλάμαις καὶ πλεῖστα ἡμιγυμνάσια. Ἐκκλησιαστικῶς διαιρεῖται εἰς δύο μητροπόλεις : Μεσσηνίας μὲ ἕδραν τὰς Καλάμας καὶ Τριφυλίας καὶ Ὀλυμπίας μὲ ἕδραν τὴν Κυπαρισσίαν. Ἡ ὑγιεινὴ κατάστασις τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας εἶναι σχετικῶς καλυτέρα τῆς ἐν τῇ λοιπῇ Πελοποννήσῳ. Οἱ ἑλώδεις πυρετοὶ προσβάλλουσι κυρίως τὰς περιφερείας Ἀγουλινίτσης καὶ Μεσσήνης, τὸ δὲ ποσοστὸν τῶν ἐκ τῶν κοινωνικῶν ἀσθενειῶν προσβεβλημένων εἶναι σχετικῶς μικρόν. Αἱ γεννήσεις ἀνέρχονται εἰς 31 ἐπὶ τοῖς χιλίοις, οἱ δὲ θάνατοι εἰς 15.

—*[Οἰκον. Γεωγρ.]* Ὁ νομὸς *Μεσσηνίας* εἶναι ὁ πλουσιώτερος τῆς Πελοποννήσου, προηγμένος εἰς ὅλους τοὺς κλάδους τῆς ἐθνικῆς οἰκονομίας. Ἡ γεωργικὴ του παραγωγὴ εἶναι μεγάλη, μὲ κύριον προϊὸν τὴν κορινθιακὴν σταφίδα, ἡ ὁποία καλλιεργεῖται κυρίως εἰς τὸ βόρειον τμῆμα καὶ κατὰ μῆκος τῆς παραλίας τοῦ Ἰονίου. Ἐπίσης παράγεται μεγάλη ποσότης ἐλαίου καλῆς ποιότητος, γνωστοῦ ὡς «μανιάτικο» ἢ «ἔλαιον Καλαμῶν», αἱ δὲ ἐλαῖαι τῶν Καλαμῶν φημίζονται διὰ τὴν ἐκλεκτὴν αὐτῶν ποιότητα. Ἄλλο ἐπίσης προϊὸν τῆς Μεσσηνίας εἶναι τὰ ξηρὰ σῦκα τῶν Καλαμῶν, τῶν ὁποίων ἐξάγονται μεγάλαι ποσότητες. Ἐπίσης καλλιεργοῦνται εἰς σημαντικὰς ἐκτάσεις τὰ σιτηρά, τὰ γεώμηλα, τὰ ὄσπρια, τὰ ἑσπεριδοειδῆ καὶ ἡ οἰνοφόρος ἄμπελος. Ὁ κατωτέρω πίναξ δίδει τὴν κατανομὴν τῶν διαφόρων καλλιεργειῶν εἰς στρέμματα, τὸ ποσὸν καὶ τὴν ἀξίαν ἑκάστου τῶν παραχθέντων ἐν τῷ νομῷ γεωργικῶν προϊόντων κατὰ τὸ ἔτος 1928 :

| | *Ἔκτασις εἰς στρέμματα* | *Παραγωγὴ εἰς μετρ. στατῆρας* | *Ἀξία εἰς δραχμὰς* |
|---|---|---|---|
| Σῖτος | 185.814 | 91.191 | 54.321.576 |
| Κριθὴ | 18.700 | 8.972 | 3.965.480 |
| Σμιγὸς | 38.439 | 26.244 | 13.896.798 |
| Ἀραβόσιτος | 62.176 | 32.466 | 13.228.578 |
| Βρόμη | 55.355 | 28.391 | 11.906.611 |
| Σίκαλις | 194 | 143 | 64.520 |
| Φασίολοι ξηροὶ | 5.259 | 2.050 | 2.028.075 |
| Κύαμοι | 771 | 390 | 299.665 |
| Ἐρέβινθοι | 303 | 112 | 70.210 |
| Φακῆ | 1.136 | 400 | 360.916 |
| Ἄλλα ὄσπρια | 2.476 | 1.810 | 600.280 |
| Γεώμηλα | 4.609 | 25.533 | 7.395.665 |
| Λαχανικὰ | 6.345 | 24.148 | 6.260.696 |
| Καπνὸς | 47 | 7 | 10.650 |
| Σησάμιον | 506 | 275 | 461.550 |
| Ἄλλα βιομηχ. προϊόντα | 235 | 48 | 65.735 |
| Σανὸς | 5.905 | 12.159 | 1.985.984 |
| Ξηρὰ τριφύλλια | 8.084 | 19.779 | 2.115.000 |
| Γλεῦκος | 97.553 | 312.003 | 57.330.650 |
| Νωπαὶ σταφυλαὶ | 1.174 | 3.358 | 871.606 |
| Σταφὶς (κορινθ.) | 215.188 | 544.649 | 410.837.525 |
| » (σουλταν.) | 260 | 305 | 466.700 |
| Ἔλαιον | — | 86.671 | 180.322.680 |
| Ἐλαῖαι | — | 6.635 | 4.616.700 |
| Ἑσπεριδοειδῆ κ.λ.π. ὀπωροφόρα | — | — | 60.136.619 |
| Σύνολον | 710.529 | — | 833.650.769 |

Ἡ κτηνοτροφία ἐπίσης εἶναι λίαν προηγμένη, εἰς τὰ ὀρεινότερα ἰδίᾳ χωρία, εἶναι δὲ ἡ Μεσσηνία ὁ δεύτερος χοιροτρόφος νομὸς τῆς Ἑλλάδος. Τὸ ποσὸν τῶν ἀπογραφέντων τῷ 1928 ζῴων παρέχεται ἐν τῷ κατωτέρω πίνακι :

| *Ζῷα καὶ πτηνὰ* | *Ἀροτριῶντα* | *Μὴ ἀροτριῶντα* | *Σύνολον* |
|---|---|---|---|
| Βόες | 7.776 | 2.120 | 9.896 |
| Ἀγελάδες | 5.237 | 1.796 | 7.033 |
| Βούβαλοι | — | 30 | 30 |
| Ἵπποι | 6.775 | 6.001 | 12.776 |
| Φορβάδες | — | 2.800 | 2.800 |
| Ἡμίονοι | 1.742 | 1.390 | 3.132 |
| Ὄνοι | — | 13.778 | 13.778 |
| Πρόβατα | — | — | 215.294 |
| Αἶγες | — | — | 167.291 |
| Χοῖροι | — | — | 41.026 |
| Κόνικλοι | — | — | 13.029 |
| Πτηνὰ κατοικίδια | — | — | 469.996 |

Ἡ σηροτροφία ἀσκεῖται εἰς ὁλόκληρον τὸ Ν. τμῆμα τοῦ νομοῦ καὶ ἰδιαιτέρως εἰς τὴν ἐπαρχίαν Καλαμῶν, τροφοδοτεῖ δὲ τὰς περισσοτέρας μεταξοβιομηχανίας τῆς πρωτευούσης. Ἡ ἁλιεία διενεργεῖται εἰς τὰς λίμνας Ἀγουλινίτσης καὶ Καϊάφα, τὸ δὲ ποσὸν τῶν ἐτησίως ἁλιευομένων ἐν τῇ Πρώτῃ ἰχθύων ἀνέρχεται εἰς 60.000 περίπου ὀκάδας. Ἡ βιομηχανία εἶναι συγκεντρωμένη κυρίως εἰς τὰς Καλάμας, ἔχουσας ἐγκαταστάσεις μεταξοβιομηχανικάς, ἀλευρομύλους (ἐτησία παραγωγὴ 30.000 τόν.), παγοποιεῖα, μακαρονοποιεῖα, χαλβαδοποιεῖα, οἰνοποιεῖα καὶ οἰνοπνευματοποιεῖα, ἐργοστάσια συσκευασίας σύκων, κονσερβῶν, καθαρισμοῦ σταφίδος, μαλλίνων ἐνδυμάτων, ξυλουργεῖα, πυρηνελαιουργεῖα, σαπωνοποιεῖα, καρφοβελονοποιεῖα, πλινθοκεραμοποιεῖα, ἀσβεστοποιεῖα, ξυλουργεῖα, βυρσοδεψεῖα κλπ. Εἰς τὰς λοιπὰς πόλεις καὶ κώμας τοῦ νομοῦ λειτουργοῦσιν ὑπερεξήκοντα ἐγκαταστάσεις δευτερεούσης σημασίας, ἀλευρόμυλοι, ἠλεκτροπαραγωγὰ ἐργοστάσια, ὑδραυλικὰ ἐλαιουργεῖα κλπ. Τὸ ὑπέδαφος τοῦ νομοῦ περικλείει ὀλίγα ἀνθρακωρυχεῖα ἐν Βελίκᾳ καὶ Κορώνῃ, ὀρυχεῖα πισσασφάλτου ἐν τῇ περιφερείᾳ τῶν Γαργαλιάνων, μαγγανίου ἐγγὺς τῆς Κυπαρισσίας κλπ. Ἐκ τῆς ἐκμεταλλεύσεως τούτων ἐξήχθησαν τῷ 1928 γαιανθρακος 13.239 τόννοι (4.420 ἐκ Βελίκας καὶ 8.810 ἐκ Κορώνης), 3.173 τόννοι ἀσφαλτολίθου καὶ 120 μαγγανίου.

Τὸ ἐμπόριον τοῦ νομοῦ συγκεντροῦται κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος εἰς Καλάμας, ὁπόθεν ἐξάγεται διὰ θαλάσσης ἢ μεταφέρεται σιδηροδρομικῶς πρὸς τὰς Πάτρας καὶ τὰς Ἀθήνας. Ἄλλα ἀξιόλογα ἐμπορικὰ κέντρα τοῦ νομοῦ εἶναι ἡ Μεσσήνη, τὰ Φιλιατρά, οἱ Γαργαλιάνοι, ὁ Μελιγαλᾶς, ἡ Ἀνδρίτσαινα κτλ.

Ἡ συγκοινωνιακὴ ἐξυπηρέτησις τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας εἶναι ἀρτιωτάτη. Τὸ ἐπὶ τοῦ ἐδάφους αὐτοῦ μῆκος τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν ΣΠΑΠ ἀνέρχεται εἰς 160 περίπου χλμ. Αἱ γραμμαὶ αὗται διασχίζουσι τὸν νομὸν ἡ μὲν ἀπὸ Πατρῶν ἐρχομένη ἀπὸ Β. πρὸς Ν. μέχρι Καλονέρου, ὁπόθεν στρέφεται πρὸς Α. μέχρι Ζευγολατιοῦ (χλμ. 78) καὶ ἑνοῦται μετὰ τῆς ἀπὸ Τριπόλεως ἐρχομένης (χλμ. 37), ἡ ὁποία ἔχει κατεύθυνσιν ἀπὸ ΒΑ. πρὸς ΝΔ. Ἀπὸ Ζευγολατιοῦ ἡ συνενωθεῖσα γραμμὴ διευθύνεται πρὸς Ν. καὶ φθάνει μέχρι τῶν Καλαμῶν (χλμ. 32). Πέντε χλμ. πρὸ τῶν Καλαμῶν, ἀπὸ τοῦ σταθμοῦ Ἀσπρόχωμα, μικρὰ διακλάδωσις ἐκπέμπεται πρὸς τὴν Μεσσήνην (χλμ. 5). Ἐπίσης ἀπὸ τοῦ Καλονέρου δευτέρα μικρὰ διακλάδωσις (χλμ. 6) διευθύνεται πρὸς τὴν Κυπαρισσίαν. Τὸ δίκτυον τῶν ἁμαξιτῶν ὁδῶν εἶναι πλῆρες, ἰδίως εἰς τὰ πεδινὰ μέρη. Κυριώτεραι ἀρτηρίαι αὐτοῦ εἶναι ἡ κατὰ μῆκος τῆς δυτικῆς παραλίας τοῦ νομοῦ ἀπὸ Κυπαρισσίας μέχρι Μεθώνης, διερχομένη διὰ τῶν Φιλιατρῶν καὶ τῆς Πύλου, ἡ ἀπὸ Καλαμῶν πρὸς τὴν Μεσσήνην καὶ τὴν κοιλάδα τοῦ Παμίσου, προεκτεινομένη πρὸς τὴν Ἀρκαδίαν, ἡ ἀπὸ Καλαμῶν πρὸς τὴν Μάνην καὶ τὴν Λακωνίαν (ὑπὸ κατασκευήν,), ἡ ἀπὸ Ἀνδριτσαίνης πρὸς τὴν Ἀρκαδίαν (Δημητσάνα), ἡ ἀπὸ τοῦ Πύργου πρὸς τὰ χωρία τοῦ βορείου τμήματος τοῦ νομοῦ (ἐπαρχία Ὀλυμπίας) κλπ. Ἐπὶ τῶν ὁδῶν τούτων τακτικαὶ γραμμαὶ αὐτοκινήτων συνδέουσι τὰ χωρία μετὰ τῶν πόλεων καὶ κωμῶν. Λιμένες ἄξιοι λόγου ἐκτὸς τοῦ τῶν Καλαμῶν, ὅστις εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τῆς Ἑλλάδος, ἔχων καὶ ἀξιόλογον διεθνῆ ναυτιλιακὴν κίνησιν, εἶναι οἱ τῆς Κυπαρισσίας, τῆς Πύλου, τῆς Μεθώνης, τῆς Κορώνης κλπ. Ὁ τουρισμὸς περιορίζεται μεταξὺ τῶν ἐπισκεπτῶν τῶν λουτρῶν Καϊάφα καὶ τῶν ἀρχαιολογικῶν καὶ ἱστορινῶν τόπων (ἀρχαίας Μεσσήνης, Κορώνης, Πύλου, τῆς ἐπὶ τῶν Β. συνόρων ἀρχαίας Ὀλυμπίας κλπ.).

Χ. Δ.

— **«Μεσσηνία».** Τίτλος ἑλληνικῶν ἐφημερίδων : — 1) Ἐφημερὶς πολιτικὴ καὶ φιλολογικὴ ἐν Καλάμαις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1857 καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τοῦ 1871. — 2) Ἐφημερὶς ἐν Καλάμαις, ἱδρυθεῖσα περὶ τὰ τέλη τοῦ 1878. — Π.

— **Μεσσηνίας στάσεις.** Ὁ Καποδίστριας περιελθὼν εἰς ἐχθρότητα μετὰ τῆς οἰκογενείας Μαυρομιχάλη, ἀπεμάκρυνε τὰ μέλη αὐτῆς τῶν δημοσίων ὑπουργημάτων, κατεδίωκε δὲ τὸν ἀρχηγὸν τῆς οἰκογενείας ταύτης δι' ὅσα ἐν Μάνῃ συνέβαινον ἔκτροπα. Ἡ κρατοῦσα ἐν αὐτῇ ἔκνομος ἐλευθερία εἶχε καταστῆ ἰσχυροτέρα τῶν τοπικῶν ἀρχῶν, καὶ αὐτῆς ἀκόμη τῆς κρατικῆς ἐξουσίας, ὡς ἐκ τούτου δὲ ὁ Καποδίστριας ἀπεφάσισε νὰ ἐξαλείψῃ τὴν κοινωνικὴν ἐκείνην κατάστασιν, ἐνόμισε δὲ ὅτι ἤθελε δεσπόσει τῆς Μάνης, πατάσσων, ὡς κεφαλὴν αὐτῆς, τὴν μαυρομιχαλικὴν οἰκογένειαν· πρὸς τοῦτο δὲ ἀπέστειλεν ὡς νομάρχην τὸν Γενοβέλην, ὅστις καταληφθεὶς ὑπὸ ὑπερμέτρου ζήλου προέβαινεν εἰς ἐφαρμογὴν τοῦ συστήματος τοῦ κυβερνήτου. Τοῦτο προεκάλεσε τὸ Πάσχα τοῦ 1830 τὴν ἔκρηξιν στάσεως εἰς Τσίμοβαν κατὰ τοῦ νομάρχου, τῆς ὁποίας ἡγεῖτο ὁ ἀδελφὸς τοῦ Πετρόμπεη Τζανῆς Μαυρομιχάλης, ὁ ἐπιλεγόμενος βασιλεὺς τῆς Μάνης. Διὰ τοῦ Γεωργίου Μαυρομιχάλη κατώρθωσεν ὁ Καποδίστριας νὰ προσελκύσῃ εἰς Ναύπλιον τὸν Τζανῆν, ὅπως συζητήσῃ προφορικῶς μετ' αὐτοῦ περὶ τῆς γεννηθείσης ἐν Τσίμοβᾳ διαφορᾶς. Ἀντὶ ὅμως τούτου ἐρρίφθη οὗτος εἰς τὰς φυλακάς, ὡς καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Κατσάκος, ὡς ἀποπειραθεὶς νὰ φονεύσῃ τὸν ἐξάδελφόν του Πιερράκον. Ἀλλ' οὗτος, κατὰ τὸν Ἰανουάριον 1831, δραπετεύσας μετέβη εἰς Μάνην, ὅτε ὁ διοικητὴς Καλαμῶν Κορνήλιος παρεσκευάζετο νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τῶν ἐν Τσίμοβᾳ ἐπαναστατῶν. Διεδόθη ἀμέσως ὅτι ὁ κυβερνήτης φυλακίζει τοὺς Μαυρομιχάλας, καὶ ὁ Κορνήλιος ἐγκαταλειφθεὶς παρὰ πάντων διεσώθη ὑπὸ τοῦ Κωνσταντίνου Μαυρομιχάλη. Ἡ ἐπανάστασις ἐν τούτοις ἐξετάθη, οἱ δὲ πολεμισταί, φέροντες τὰ ἀπὸ τῶν Τούρκων λαφυραγωγηθέντα ὅπλα, αἱ γυναῖκες τὰ κειμήλιά των καὶ τὴν χειμερινήν των προμήθειαν, πάντες προσέφερον τὰ πάντα, ὅπως ἐλευθερώσωσι τοὺς ἐν Ναυπλίῳ δεσμώτας. Πεντακισχίλιοι ἄνδρες ὑπὸ τὸν Κωνσταντῖνον Μαυρομιχάλην ἠπείλουν ὅτι θὰ ἐξεστράτευον κατὰ τοῦ Ναυπλίου, ἂν ἐντὸς μιᾶς ἑβδομάδος δὲν ἠλευθεροῦντο οἱ Μαυρομιχάλαι. Ὁ Κωνσταντῖνος, ὅπως μὴ θεωρηθῇ ὡς λιποτάκτης, ἐπέστρεψεν εἰς Ναύπλιον καὶ ἐτέθη ὑπὸ ἀστυνομικὴν ἐπιτήρησιν. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε συλληφθῆ ὁ Πετρόμπεης καὶ καθείρχθη. Τοῦτο προεκάλεσε τὸν φόνον τοῦ κυβερνήτου. Ἡ ἐπανάστασις δὲν κατηυνάσθη καὶ ἐπὶ Αὐγουστίνου Καποδιστρίου, ὁ δὲ Θέρσιος μεταβὰς εἰς Μάνην προσεπάθησε νὰ κατευνάσῃ αὐτήν. Ἡ στάσις ἔπαυσε μετὰ τὴν ἔλευσιν τοῦ Ὄθωνος.

Θ. Β.

**μεσσηνιακός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μεσσηνίους ἢ τὴν Μεσσηνίαν, ὁ τῶν Μεσσηνίων ἢ τῆς Μεσσηνίας : «Μεσσηνιακὸς πόλεμος,— κόλπος».

— **«Μεσσηνιακή».** Πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Καλάμαις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1891 καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τοῦ 1893. —Π.

— **μεσσηνιακὴ *διάλεκτος*** *[Γλωσσολ.]*. Ἡ διάλεκτος, ἡ ὁποία ὡμιλεῖτο εἰς τὴν ἀρχαίαν Μεσσηνίαν, ἀνῆκεν εἰς τὴν ὁμάδα τῶν δωρικῶν διαλέκτων, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνῆκον, ὡς γνωστόν, καὶ αἱ ἄλλαι διάλεκτοι τῆς Πελοποννήσου, ἐξαιρουμένης τῆς ἀρκαδικῆς. Ἡ διάλεκτος τῶν ἀρχαίων Μεσσηνίων—«ὁμοφώνων τοῖς Λακεδαιμονίοις» κατὰ τὸν Θουκυδίδην—μᾶς εἶναι γνωστὴ (σχεδὸν καθ' ὁλοκληρίαν) ἀπὸ τὰς ἀνευρεθείσας μέχρι τοῦδε ἐπιγραφάς, αἱ ὁποῖαι ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Kolbe ἐν IG. τόμ. V, 2 (ἀριθ. 1351—1496, 1498, 1529—1560) καὶ ἐκ τῶν ὁποίων ἐκτενεστέρα καὶ γνωστοτέρα εἶναι ἡ λεγομένη ἐπιγραφὴ τῆς Ἀνδανίας. Ἀλλ' αἱ ἐπιγραφαὶ αὗται προέρχονται κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν μακεδονικῶν καὶ τῶν κατόπιν χρόνων, καθ' οὓς εἶχεν ἀρχίσει πλέον ἡ ἐπίδρασις τῆς Κοινῆς, δι' ὃ καὶ δὲν μᾶς παρέχουν πιστὴν τὴν εἰκόνα τῆς ἀρχαιοτέρας καὶ ἀμιγεστέρας Μεσσηνιακῆς. Οὕτω, παρὰ τὰ καθαρῶς δωρικὰ καὶ ἰδιωτικὰ μεσ-

Digitized by Google

σηνιακὰ στοιχεῖα, ἀναγινώσκομεν καὶ τὰ ἐκ τῆς Κοινῆς παραληφθέντα *μηθείς, γίνομαι, ἄν* (ἐκ παραλλήλου πρὸς τὸ δωρικὸν *κὰ*) κλ., καὶ δὴ καὶ τύπους κατὰ τὸ ἥμισυ δωρικοὺς καὶ κατὰ τὸ ἥμισυ κοινούς, ὡς λ. χ. *τριακοσιᾶν, ἠξίων,* ἀντὶ τῶν γνησίων δωρικῶν *τριακατιᾶν* (=τριακοσίων), *ἀξίων* (=ἠξίουν) κ.οῦ.κ.

Ἐκ τῶν χαρακτηριστικῶν τῆς ἀρχαίας Μεσσηνιακῆς ἀναφέρομεν: 1) τὴν ἐπέκτασιν τῆς εἰς *—οις* δοτικῆς πληθυντικῆς τῶν δευτεροκλίτων καὶ ἐπὶ τὰ τριτόκλιτα: *πλειόνοις, πάντοις, εὐσεβέοις, ἐπιτελούντοις*=πλείοσι, πᾶσιν, εὐσεβέσιν, ἐπιτελοῦσι (τοῖς) κλπ., 2) τὴν ἐκ παραλλήλου πρὸς τὴν εἰς *—ιος* ἑνικὴν γενικὴν τῶν εἰς *—ις* τριτοκλίτων (πόλις, πανήγυρις κλπ.) χρῆσιν καὶ τῆς ἑν. γενικῆς εἰς *—εος: τᾶς πόλιος* καὶ *πόλεος, παναγύριος* καὶ *παναγύρεος* κ. οὕ. κ., 3) τὴν ἑν. αἰτ. *κλαῖκα* (ἢ *κλᾷκα)*=κλεῖδα καὶ ἐπίθ. *κλαικοφόρος*=κλειδοφόρος, 4) τὴν αὐτοπαθῆ ἀντωνυμίαν *αὐτοσαυτοῖς*=ἑαυτοῖς, 5) τὴν ἀντωνυμίαν *τὶ* μετ' ἀναφορικῆς ἐννοίας, 6) τοὺς τύπους τῆς ὑποτακτικῆς εἰς *ει* ἀντὶ *ῃ* (γ' ἑν. προσώπου): *παραλάβει, παρανομεῖ* κλπ. ἀντὶ τῶν γνωστῶν τύπων *παραλάβῃ, παρανομῇ* κ. οὗ. κ., 7) τοὺς μοναδικοὺς καὶ ἰδιορρύθμους τύπους τῆς ὑποτακτικῆς: *προτίθηντι, προγράφηντι* κλπ., 8) τὴν μετοχὴν τοῦ ἐνεργ. παρακειμένου *κεκλεβὼς*=κεκλοφὼς (τοῦ ῥήματος *κλέπτω)* κ. οὗ. κ., 9) τὸ ἀριθμητικὸν *ἰὸς* ἀντὶ *εἷς* κλπ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. Baunack,* ἐν «Curtius' Studien» τόμ. X, 126 κ. ἑξ.—*A. Thumb,* Handbuch der griech. Dialekte (Heidelberg 1909), σελ. 99 κ. ἑξ.—*Fr. Bechtel,* Die griechische Dialekte, II (Berlin 1923), σελ. 422 κ. ἑξ. — *Γ. Ἀναγνωστοπούλου,* Σύντομος ἱστορία τῶν ἑλλην. διαλέκτων. Α' (Ἀθῆναι 1924), σ. 89.

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

**—Μεσσηνιακοὶ *πόλεμοι.*** Οὕτω καλοῦνται ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος τρεῖς μεταξὺ Σπαρτιατῶν καὶ Μεσσηνίων πόλεμοι, διαρκέσαντες ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ Η' π. Χ. αἰῶνος μέχρι τῶν μέσων τοῦ Ε', ἀφορμὴ τῶν ὁποίων κυρίως ὑπῆρξεν ἡ ζηλοτυπία καὶ πλεονεξία τῶν Σπαρτιατῶν, ὅπως καταλάβωσι τὴν πλουσίαν καὶ εὔφορον χώραν τῆς Μεσσηνίας.

*Α' πόλεμος* (743—724 π. Χ.). Κατὰ τὴν παράδοσιν, ἀφορμὴ τοῦ πρώτου πολέμου ὑπῆρξεν ἡ ἁρπαγὴ Σπαρτιατίδων παρθένων, ἐνῷ ἐπανηγύριζον ἐν τῷ παρὰ τὰ μεθόρια τῶν δύο χωρῶν ναῷ τῆς Λιμνάτιδος Ἀρτέμιδος, ὑπὸ νέων Μεσσηνίων, οἱ ὁποῖοι οὐ μόνον δὲν ἀπέδωκαν αὐτάς, ἀλλὰ καὶ τὸν βασιλέα τῆς Σπάρτης Τήλεκλον, ἀξιώσαντα τὴν ἀπόδοσίν των, ἐφόνευσαν. Ὀλίγον μετὰ ταῦτα οἱ Σπαρτιᾶται ἥρπασαν τὰ ποίμνια τοῦ Μεσσηνίου Πολυχάρους, φονεύσαντες καὶ τὸν φυλάσσοντα αὐτὰ υἱόν του, ἡ δὲ γερουσία τῆς Σπάρτης ἠρνήθη νὰ ἱκανοποιήσῃ τὸν παθόντα. Τότε ὁ Πολυχάρης, ἐκδικούμενος, ἐφόνευε πάντα Σπαρτιάτην, τὸν ὁποῖον συνήντα. Ἐπειδὴ δὲ οἱ Μεσσήνιοι, ἀποδίδοντες τὰ ἴσα, ἠρνήθησαν καὶ οὗτοι νὰ ἱκανοποιήσωσι τοὺς Σπαρτιάτας, οὗτοι εἰσέβαλον διὰ νυκτὸς εἰς τὴν Μεσσηνίαν καὶ καταλαβόντες αἰφνιδίως τὴν ὀρεινὴν πόλιν Ἄμφειαν ἐφόνευσαν πολλοὺς τῶν κατοίκων. Τότε οἱ Μεσσήνιοι, εἰσβαλόντες εἰς τὴν Λακωνικήν, ἐλεηλάτουν τὴν ὕπαιθρον χώραν καὶ τὰ παράλια αὐτῆς. Κατ' αὐτῶν ἐπῆλθον οἱ βασιλεῖς τῶν Σπαρτιατῶν Θεόπομπος καὶ Πολύδωρος, ἀλλ' οἱ Μεσσήνιοι γενναίως ἀνθίσταντο εἰς τὰς προσβολὰς αὐτῶν ὑπὸ τὸν βασιλέα αὐτῶν Εὐφάην. Ὁ πόλεμος παρετείνετο, καὶ τρεῖς μεγάλαι φονικαὶ μάχαι συνεκροτήθησαν, ἐν μιᾷ τῶν ὁποίων ἐφονεύθη καὶ ὁ βασιλεὺς Εὐφάης. Τότε οἱ Μεσσήνιοι, μὴ δυνάμενοι νὰ ἀντισταθῶσιν εἰς τὰς προσβολὰς τῶν Σπαρτιατῶν, κατέλιπον τὴν πεδινὴν χώραν εἰς τὴν διάκρισιν τῶν πολεμίων, καὶ ὑπὸ τὸν νέον βασιλέα αὐτῶν, τὸν Αἰπυτίδην Ἀριστόδημον, ἐκλείσθησαν εἰς τὸ ὀχυρὸν φρούριον τῆς Ἰθώμης, τὸ ὁποῖον μόλις τὸ εἰκοστὸν ἔτος τοῦ πολέμου ἔπεσεν. Ἐρωτηθὲν τὸ μαντεῖον τῶν Δελφῶν περὶ τῆς ἐκβάσεως τοῦ πολέμου, ὑπεσχέθη τὴν νίκην, ἐὰν ἐθυσιάζετο παρθένος ἐκ τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας εἰς τὸν Ἰθωμάταν Δία. Ἐπειδὴ ὅμως ἔφυγεν εἰς Σπάρτην ὁ Λυκίσκος μετὰ τῆς θυγατρός του, εἰς τὴν ὁποίαν ἔλαχεν ὁ κλῆρος, ὁ Ἀριστόδημος προσέφερεν αὐθορμήτως τὴν ἰδίαν θυγατέρα, τὴν ὁποίαν ἐθανάτωσε διὰ τῆς ἰδίας χειρός, ὅταν ὁ μνηστήρ της ἠθέλησε ν' ἀντιστῇ. Ὁ Ἀριστόδημος τότε, βοηθούμενος ὑπὸ Ἀργείων, Σικυωνίων καὶ Ἀρκάδων, ἐπιτεθεὶς κατὰ τῶν Σπαρτιατῶν, οἵτινες κατ' ἀρχὰς εἶχον ἀποθαρρυνθῆ φοβούμενοι τὸν χρησμόν, ἐνίκησεν αὐτούς. Ἀλλ' ἀργότερον, τῷ 726 π. Χ., ἡττήθησαν οἱ Μεσσήνιοι, ὁ δὲ Ἀριστόδημος ἀπελπισθεὶς καὶ μεταμεληθεὶς διὰ τὴν θυσίαν τῆς θυγατρός του ηὐτοκτόνησεν ἐπὶ τοῦ τάφου αὐτῆς. Τέλος οἱ Μεσσήνιοι ἡττήθησαν κατὰ κράτος, οἱ δὲ Σπαρτιᾶται, ἀφοῦ ἐκρήμνισαν τὰ τείχη τῆς Ἰθώμης, ἀνέθεσαν ἐκ τῶν λαφύρων τρίποδας χαλκοῦς εἰς τὸ ἐν Ἀμύκλαις ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος. Ἐκ τῶν Μεσσηνίων ἄλλοι μὲν ἔφυγον εἰς τὴν Ἀρκαδίαν, Ἄργος καὶ Σικυῶνα, οἱ πλεῖστοι ὅμως ἐναπομείναντες ἐγένοντο βαρυτάτου φόρου ὑποτελεῖς εἰς τοὺς Σπαρτιάτας, ἡ δὲ γῆ ἀναδασθεῖσα διενεμήθη εἰς τοὺς ἀκλήρους τῶν Σπαρτιατῶν.

*Β' πόλεμος* (685—667 π. Χ.). Τεσσαράκοντα περίπου ἔτη μετὰ τὸν πρῶτον Μεσσηνιακὸν πόλεμον, ἡ νέα γενεὰ μὴ ἀνεχομένη τὴν δουλείαν καὶ τοὺς καταθλιπτικοὺς ὅρους τῶν πατέρων των, «ὥσπερ ὄνων καταπονουμένων ὑπὸ μεγάλων βαρῶν», ἐπανεστάτησαν ὑπὸ τὸν Αἰπυτίδην Ἀριστομένην, Ἀργεῖοι δὲ καὶ Πισᾶται ὑπὸ τὸν Πανταλέοντα καὶ Ἀρκάδες ὑπὸ τὸν βασιλέα τοῦ Ἀρκαδικοῦ Ὀρχομενοῦ Ἀριστοκράτην ἔσπευσαν εἰς βοήθειαν τῶν Μεσσηνίων, ἐνῷ μετὰ τῶν Σπαρτιατῶν συνέπραττον Κορίνθιοι καὶ Ἠλεῖοι. Στρατὸς μεσσηνιακὸς κατεῖχε τὴν Ἀνδανίαν καὶ Οἰχαλίαν, ὁπότε ὁ Ἀριστομένης, διὰ νυκτὸς ἐλθὼν εἰς τὸν ἐν Λακωνίᾳ ναὸν τῆς Ἀθηνᾶς, καὶ ἀναρτήσας τὴν ἀσπίδα του, ὠχυρώθη εἰς τὸ φρούριον τῆς Εἴρας, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ὁρμώμενος εἰσέβαλλεν ἐπανειλημμένως εἰς εἰς τὴν Λακωνικήν. Οἱ Σπαρτιᾶται τότε, ἐξησθενημένοι ἐκ τοῦ προηγουμένου πολέμου καὶ ἕνεκα ἐσωτερικῶν ῥήξεων, ἐζήτησαν τὴν βοήθειαν τῶν Ἀθηναίων, οἵτινες ἀπέστειλαν τὸν χωλὸν ποιητὴν Τυρταῖον, ὅστις διὰ τῶν ἐμβατηρίων του ἐνεθάρρυνεν αὐτούς, κατορθώσας νὰ ἐπαναφέρῃ τὴν πειθαρχίαν καὶ τὴν παρὰ τὰς ἀριστοκρατικὰς ἀρχὰς παραδοχὴν νέων πολιτῶν, διὰ τῶν ὁποίων ηὔξησεν ὁ ἀριθμὸς τῶν ὁπλιτῶν.

Τῶν Μεσσηνίων οἱ σύμμαχοι, διεσκορπισμένοι ὄντος καὶ μὴ ἔχοντες τὴν ἀπαιτουμένην ἑνότητα. δὲν προσέφερον τελεσφόρον βοήθειαν, Ἐπὶ πλέον ὁ βασιλεὺς τῶν Ἀρκάδων Ἀριστοκράτης, μετὰ τῶν δυνάμεών του, αἵτινες ἀπετέλουν τὰ δύο τρίτα περίπου τῆς ὅλης δυνάμεως τῶν Μεσσηνίων, δωροδοκηθεὶς ὑπὸ τῶν Σπαρτιατῶν ἀπεχώρησε πρὸ τῆς ἐπικειμένης παρὰ τὴν λεγομένην Μεγάλην Τάφρον ἐν Μεσσηνίᾳ μάχης. Πτοηθέντες τότε οἱ Μεσσήνιοι καὶ μὴ δυνάμενοι νὰ μείνωσιν εἰς τὰς πεδιάδας, ὑπέστησαν τρομερὰν ἧτταν, πᾶσα δὲ ἡ δυτικὴ χώρα, πλὴν τῶν φρουρίων τῆς Πύλου καὶ τῆς Μεθώνης, περιῆλθον εἰς χεῖρας τῶν Σπαρτιατῶν. Ἀλλὰ καὶ αὐτὰ τὰ φρούρια τῆς ὀρεινῆς χώρας δὲν ἠδυνήθησαν ἐπὶ μακρὸν ν' ἀντισταθῶσι, καὶ πολλοὶ τῶν Μεσσηνίων ἠναγκάσθησαν νὰ μετοικήσωσιν εἰς Ἀρκαδίαν. Κατά τινα παράδοσιν, εἰς μίαν τῶν ἐπιδρομῶν του ἐκ τῆς Εἴρας συνελήφθη ὁ Ἀριστομένης μετὰ 50 ὀπαδῶν του καὶ ἐρρίφθη εἰς τὸν Κεάδαν τῆς Σπάρτης. Σωθεὶς ὡς ἐκ θαύματος, ἐπέστρεψεν εἰς τὸ φρούριον, τὸ ὁποῖον μετ' ὀλίγον ἐκυριεύθη διὰ προδοσίας, καὶ οὕτω, μετὰ πολυετεῖς ἀγῶνας, ὑπετάγη ἡ Μεσσηνία εἰς τοὺς Σπαρτιάτας. Ὁ Ἀριστομένης τότε λέγεται ὅτι φυγὼν ἐσώθη εἰς τὴν Ρόδον, ὅπου ἐνύμφευσε μίαν τῶν θυγατέρων του μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς χώρας Δαμαγκίου. Οἱ πλεῖστοι τῶν Μεσσηνίων, ἀπάτριδες πλέον, ἔφυγον ἄλλοι μὲν εἰς τὴν Ἀρκαδίαν, ἄλλοι δὲ εἰς τὴν Κυλλήνην, ὁπόθεν ἀργότερον ἦλθον εἰς τὸ Ρήγιον τῆς Κάτω Ἰταλίας, ἐκεῖθεν δὲ εἰς τὴν Ζάγκλην τῆς Σικελίας, τὴν ὁποίαν μετωνόμασαν *Μεσσήνην*. Οἱ Σπαρτιᾶται ἐν τούτοις ἐξηκολούθησαν τὸν πόλεμον κατὰ τῶν συμμάχων τῶν Μεσσηνίων, καὶ ὑπὸ τὸν βασιλέα αὐτῶν Κλεομένην Α' προσέβαλον τοὺς Ἀρκάδας, ἐκυρίευσαν τὸ Ἄργος, ἐξεδίωξαν ἐκ Σικυῶνος τὸν Κλεισθένην καὶ τέλος ἐπετέθησαν κατὰ τῆς Αἰγίνης, διότι ἠρνήθη νὰ βοηθήσῃ αὐτούς. Οὕτως ἡ Μεσσηνία, διεγράφη πλέον ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν αὐθυποστάτων πολιτειῶν.

*Γ' πόλεμος* (464—454 π. Χ.). Οἱ Μεσσήνιοι, τρέφοντες μῖσος καὶ ἐκδίκησιν κατὰ τῶν Σπαρτιατῶν, ἀνέμενον κατάλληλον εὐκαιρίαν ὅπως ἀποτινάξωσι τὸν ζυγόν, καὶ οὕτως, ἐπωφελούμενοι τῆς ἐπαναστάσεως τῶν εἱλώτων, κατόπιν καταστρεπτικοῦ σεισμοῦ ἐν Σπάρτῃ τῷ 364 π. Χ., κατέλαβον τὴν ἀρχαίαν αὐτῶν πόλιν Ἰθώμην, τὴν ὁποίαν ὀχυρώσαντες κατέστησαν κέντρον τῶν ἐνεργειῶν των. Οἱ Σπαρτιᾶται τότε, μολονότι ἐχθρικῶς μᾶλλον διέκειντο πρὸς τοὺς Ἀθηναίους, προσέφυγον καὶ πάλιν εἰς αὐτοὺς ζητοῦντες βοήθειαν, τὴν ὁποίαν καὶ ἀπέστειλαν οὗτοι ὑπὸ τὸν Κίμωνα. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ πολιορκία τῆς Ἰθώμης διήρκει, οἱ Σπαρτιᾶται, ὑποπτευθέντες τοὺς Ἀθηναίους, ἀπέπεμψαν αὐτούς, δικαιολογηθέντες ὅτι δὲν εἶχον πλέον ἀνάγκην αὐτῶν. Μετὰ γενναίαν καὶ μακράν, ἀλλ' ἀνωφελῆ ἀντίστασιν, ἠναγκάσθησαν τέλος νὰ παραδοθῶσιν οἱ Μεσσήνιοι, ἀλλ' ὑπὸ τὸν ὅρον ὅπως ἐξέλθωσιν ἀσφαλῶς τῆς Πελοποννήσου, συμφωνηθέντος δὲ τούτου τὸ πλεῖστον τῶν Μεσσηνίων μετὰ τῶν οἰκογενειῶν των μετῴκησεν εἰς τὴν Ναύπακτον, προθύμως παραχωρηθεῖσαν ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων. Οὕτως ἔληξε καὶ ὁ τρίτος Μεσσηνιακὸς πόλεμος.

Ἔκτοτε οἱ Σπαρτιᾶται ἔμειναν κύριοι τῆς χώρας, μέχρις οὗ ὁ Ἐπαμεινώνδας ἀπηλευθέρωσε τὴν χώραν κατὰ τὴν πρώτην εἰς Πελοπόννησον ἐκστρατείαν αὐτοῦ τῷ 369 π. Χ. καὶ ἵδρυσε διὰ τῆς συγκεντρώσεως τῶν διεσκορπισμένων Μεσσηνίων τὴν νέαν παρὰ τοὺς πρόποδας τῆς Ἰθώμης πόλιν, τὴν Μεσσήνην, καταστήσας αὐτὴν πρωτεύουσαν τῆς ἀπελευθερωθείσης χώρας. Ἐν τούτοις ὁ σκοπὸς τοῦ Ἐπαμεινώνδα δὲν ἐπετεύχθη, ἡ δὲ χώρα δὲν ἠδυνήθη νὰ ἐξυψωθῇ εἰς πολιτικὴν ἀκμήν.

Οἱ Μεσσήνιοι, φοβούμενοι τὴν πλεονεξίαν τῶν Σπαρτιατῶν, συνεμάχησαν μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Μακεδονίας Φιλίππου τοῦ Β'. Κατὰ δὲ τοὺς τελευταίους χρόνους τοῦ περὶ ἀνεξαρτησίας τῆς Ἑλλάδος ἀγῶνος, ὅτε ἡ Ἀχαϊκὴ ὁμοσπονδία παρεῖχε τὴν τελευταίαν ἐλπίδα τῆς ἑνώσεως τῶν Πελοποννησίων, ἔδειξαν ἐπαμφοτερίζουσαν πολιτικήν. Ἐνῷ δὲ αἱ Φαραί, ἡ Θουρία καὶ ἡ Ἀβία προσῆλθον τῷ 182 π. Χ. εἰς τὴν ὁμοσπονδίαν ἐκείνην, ἡ πρωτεύουσα ἐμακεδόνιζεν, ἐπαυξάνουσα οὕτω τὴν διχόνοιαν τῶν ἑλληνικῶν πολιτειῶν, ἥτις διηυκόλυνεν οὐσιωδῶς τὴν νίκην τῶν Ρωμαίων καὶ τὴν ὑποδούλωσιν τῆς Ἑλλάδος.

Α. Θ. Σ.

**Μεσσηνιακὸς *κόλπος*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γ, ιστ' 8) ὀνομασία τοῦ ἀρχαιοτέρου *Ἀσιναίου* κόλπου, τοῦ ἤδη κοινῶς καὶ διεθνῶς *κόλπου τῆς Καλαμάτας*. Ἡ ΝΔ. μεγάλη τῆς Πελοποννήσου κόλπωσις, σχηματιζομένη μεταξὺ τῆς Α. ἀκτῆς τῆς χερσονήσου τοῦ Ταϋγέτου, τῆς κυρίως ἀκτῆς τῆς Μεσσηνίας, καὶ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς χερσονήσου Λυκόδημος (ἀρχ. Ὑάμεια, *Παυσαν.* Δ, ιδ, 3) τῆς Πυλίας, ἔχουσα δὲ ΝΑ. κέρας τὸ Ταίναρον καὶ Δ. τὸν Ἀκρίταν. Τὰ βάθη του εἶναι μεγάλα, ὑπερβαίνοντα εἰς τὸ μέσον τοῦ κόλπου τὰς 400 ὀργυιάς, τῆς ὑφαλοκρηπῖδος τῶν 100 ὀργυιῶν παραθεούσης τὴν μὲν μεσσηνιακὴν ἀκτὴν ἀπὸ 3 κατὰ μέσον ὅρον μιλλίων, τὴν δὲ λακωνικὴν νοτίως τοῦ φάρου Κιτριῶν, ἐξ ἐγγυτάτης ἀποστάσεως. Ἡ γεωγραφική του δὲ ὑφήγησις, ἀρχῆς γινομένης ἀπὸ τοῦ ΝΔ. κέρατος, ἔχει ὡς ἀκολούθως. Ἀκρωτήριον *Κάπο Γκάλλος* (ἀρχ. *Ἀκρίτας)* καὶ πρὸ αὐτοῦ νησῖδες *Βενέτικο* καὶ *Πετροκάραβο* ἢ *Αὐγὸ* (ἀρχ. *Θηγανοῦσσαι)* καὶ εἰς $3\,^{1}/_{2}$ μίλλ. ΒΑ. ἄκρα *Νησακούλια*, ἔχουσα πρὸ αὐτῆς μύρμηκας φερωνύμους, νοτίως της δὲ ὕφορμον *Φανερωμένη*, μεθ' ὃν ὁ ὅρμος *Μέμι*, ἔχων Β. κέρας τὴν χερσόνησον τῆς *Κορώνης* (πλάτ. $36^{0}48'$ Β., μῆκ. $21^{0}58'$ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 682: Gulf of Kalamata καὶ 207: Kastro Tornese to Venetico), ἐφ' ἧς ἡ φερώνυμος κωμόπολις, ἐπέχουσα τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας Ἀσίνης καὶ ἥτις ἀπολήγει εἰς τὴν ἄκραν *Λιβάδια* ἢ *Λεβίδια*, εἰς $2\,^{3}/_{4}$ μίλλ. βορείως τοῦ ὁποίου ὅρμος *Καστέλλια*, καταβαθμὸς τῶν *Κολωνίδων* τοῦ Παυσανίου (Δ, λδ, 8). Ἐπακολουθοῦν αἱ ἄκραι *Ἅγιος Ἠλίας, Ἅγιος Ἀνδρέας, Πισκόπουλο* καὶ *Κολομπέρδα*, κατὰ δὲ τὸν ΒΔ. μυχόν, 10 μίλλ. Β. τῆς συγχρόνου Κορώνης, τὸ *Πεταλίδι*, ἡ *Κορώνη* τῶν ἀρχαίων, ἔχον ὡραῖον ὅρμον· ἐν τῷ ὅρμῳ ἐκβάλλουν 6 χείμαρροι, ὧν ἐπισημότεροι οἱ ἀκραῖοι αὐτῶν *Ἅϊ Γιάννης* ὁ νότιος καὶ *Τυφλὸς* ὁ ΒΑ. Μεθ' ὃ ὕφορμος *Τζιτζόρι* τῆς Μεσσήνης ὁ καταβαθμὸς καὶ εἶτα τοῦ Παμίσου ἡ ἐκβολή, αἱ *Νέαι Καλάμαι* τῆς πόλεως ὁ καταβαθμὸς (ἀρχ. *Φαραί)*. Ἀνατολικῶς τοῦ ἐπινείου ἄρχεται ἡ λακωνικὴ τοῦ κόλπου ἀκτή, ἐφ' ἧς ὁ ὕφορμος *Ἁρμυρὸς* καὶ ἡ ἄκρα *Ξεροκάβι*, παραλία *Μικρᾶς Μαντινείας* καὶ *Δόλων*, ἀκρωτήριον *Σανδοβὰ* καὶ ὅρμος καὶ ἀκρωτήριον *Κιτριὲς* (πλάτ. $36^{0}54'36''$ Β., μῆκ. $22^{0}07'58''$ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Venetico to Spezzia), ἔχον φάρον πορείας (1892: λευκὸν σταθερὸν ἐναλλάσσον πρὸς λευκὴν ἀναλαμπὴν 16 μιλλ.). Πρὸς ΝΑ. δὲ τῶν Κιτριῶν: εἰς 6 μίλλ. ἡ *Καρδαμύλη* (ναυτ. φανός: 1906, σταθ. ἐρυθρ., 6 μιλλ.), εἰς $8^{1}/_{2}$ μίλλ. τὸ *Λεῦκτρο* (ἀρχ. *Λεῦκτρον)*, πρὸ τοῦ ὁποίου, εἰς βάθος 14 ὀργυιῶν, ἀναβλύζει ὑφαλοπηγὴ γλυκέος ὕδατος, εἰς $10^{1}/_{2}$ μίλλ. ἡ *Σελίνιτσα* (ναυτ. φαν.: 1925, λευκ. σταθ., 8 μιλλ.), εὐαναγνώριστος μακρόθεν ἀπὸ τὴν μεγάλην της ἐκκλησίαν, εἰς $12^{1}/_{2}$ τὸ ἀκρωτήριον *Τραχήλας*, μεθ' ὃ αἱ ἄκραι *Καλτέτσι, Σταμάτα* καὶ *Κελέφα*, καθ' ἥν, εἰς $18\,^{1}/_{2}$ μίλλ., ὁ λιμὴν *Λιμένιον* (ναυτ. φανός: 1898, σταθ. ἐρυθρ., 5 μιλλ.) καὶ νοτίως αὐτοῦ οἱ ὅρμοι *Δυρός, Σπαθάρι, Ἄρτζι* καὶ εἰς 17 μίλλ. ἀπὸ τῶν Κιτριῶν τὸ *Μέζαπο*. Μεθ' ὃ ἡ χερσόνησος τοῦ *Κάβο Γκρόσσου* (ἀρχ. *Θυρίδες*), ἔχουσα ἀπορρῶγας ἄκρας τὴν *Κήπουλα* ΒΔ. καὶ *Κάστρο Ὡριᾶς* ΝΔ., ὁ ὅρμος *Γιαλὶ* 6 μίλλ. ΔΒΔ. τοῦ Ταινάρου ὁ ὕφορμος *Κυπάρισσος* καὶ *Μαρμάρι* (ἀρχ. *Ἀχίλλειος λιμὴν)* καὶ τὸ ἀκρωτήριον *Ματαπᾶς* (ἀρχ. *Ταίναρον)*, ἔχον μέγιστον φάρον ἱδρυθέντα τῷ 1887 καὶ ἀνακαινισθέντα (λευκὸν σταθερὸν καὶ ἐρυθρὰ ἀναλαμπή, φωτοβολίας μηχανήματος 36 μιλλ. τῷ 1929).

Οἱ ἄνεμοι πνέουσιν ἐν τῷ κόλπῳ μετ' ἀσυνήθους κάποτε σφοδρότητος, ὑπὸ συνήθεις ὅμως περιστάσεις ἐκδηλοῦνται ὡς ἐγκολπίαι (μπουκαδοῦρες) τὸ ἀπόγευμα καὶ τὰς πρώτας ὥρας τῆς νυκτός, καὶ ὡς ἀπόγειοι τὴν λοιπὴν νύκτα καὶ τὰς πρώτας μετὰ τὴν ἕω ὥρας. Ὑπόκεινται ὅμως αἰφνίδιαι μεταπτώσεις μετὰ λαιλάπων, συνοδευομένων ὑπὸ ὄμβρου καὶ κεραυνῶν, καθ' ἃς ὁ ἄνεμος ἀπὸ ΝΑ. μεταπίπτει αἰφνιδίως εἰς ΒΑ., ἀφ' ἧς διευθύνσεως πνέει μανιωδῶς ἐπί τινας ὥρας, διὰ νὰ ἐπανέλθῃ κατόπιν εἰς τὴν ἀρχικήν του διεύθυνσιν. Οἱ σφοδροὶ ἐν τῷ Σικελικῷ πελάγει ἀπὸ νότου ἄνεμοι φθάνουν ἀσθενεῖς ἐν τῷ κόλπῳ, στέλλοντες ὅμως μέγαν κλύδωνα ἀπὸ τοῦ πελάγους.

Σ. Ε. Λ.

**μεσσήνιος,** *—α, —ον·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν Μεσσήνην, ὁ τῆς Μεσσήνης· || ὡς ἐθνικὸν *Μεσσήνιος, —α·* ὁ κάτοικος τῆς Μεσσηνίας, ὁ ἐκ τῆς Μεσσηνίας καταγόμενος.

**Μεσσηνίτης *κόλπος*** *['Ἀρχ. Γεωγρ.]·* βλ. *Μεσανίτης κόλπος.*

Digitized by Google

**μεσσιανισμὸς** (ὁ). Καλεῖται οὕτω καθόλου ἡ πίστις εἰς τὴν μέλλουσαν ἔλευσιν λυτρωτοῦ *Μεσσίου* (βλ. λ.) ἀπεσταλμένου ἢ μὴ τοῦ Θεοῦ, ἡ ὁποία παρατηρεῖται παρ' ὅλοις σχεδὸν τοῖς λαοῖς καὶ ἀποτελεῖ θρησκευτικὴν καὶ ἰδεαλιστικὴν ἔκφρασιν τοῦ πόθου πρὸς λύτρωσιν ἀπὸ τῶν δεινῶν τῆς παρούσης ζωῆς. Ὁ ἀναμενόμενος οὗτος Μεσσίας, ἄλλοτε σαφῶς καθωρισμένος καὶ περιγεγραμμένος ὑπὸ θρησκευτικῶν συγγραφέων, καὶ ἄλλοτε νεφελωδῶς ὑπάρχων εἰς τὴν συνείδησιν λαοῦ τινος, θεωρεῖται πάντοτε φορεὺς ψυχικῆς καὶ ὑλικῆς βελτιώσεως, ὡς εἶδος κοινωνικοῦ ἀναμορφωτοῦ. Τυπικωτέραν ἐκδήλωσιν τοῦ μεσσιανισμοῦ ἀπαντῶμεν παρ' Ἰουδαίοις, παρ' οἷς διάφοροι συγγραφεῖς ἔχουν ἀσχοληθῆ μὲ τὴν περιγραφὴν τῶν συνθηκῶν, ὑφ' ἃς μέλλει νὰ ἔλθῃ, καὶ τῶν ἰδιοτήτων του. Μετὰ τὴν ἐμφάνισιν τοῦ Ἰησοῦ, ὅστις ἐθεωρήθη πληρῶν τὰ ῥηθέντα ὑπὸ τῶν προφητῶν ὡς πρὸς τὸν Μεσσίαν, ὁ ὁποῖος ἔμελλε νὰ σώσῃ τὸν ἰουδαϊκὸν λαόν, ὁ μεσσιανισμὸς δὲν ἐξηφανίσθη εἰς τοὺς διατηρήσαντας τὴν πίστιν τῶν πατέρων των Ἰουδαίους, ἀλλ' ἐξακολουθεῖ διατηρούμενος παρ' αὐτοῖς καὶ σήμερον. Μεσσιανισμὸς ὑπὸ τὴν εὐρυτέραν ἔννοιαν ἐνεφανίσθη καὶ παρὰ Χριστιανοῖς κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους, ἰδίᾳ ἐν Πολωνίᾳ, ὅπου, ὡς ἦτο ἑπόμενον, συνεδέθη πρὸς τὸν ἀπελευθερωτικὸν ἐθνικὸν ἀγῶνα τοῦ λαοῦ, καὶ ἐγεννήθη ἴσως ἐξ αὐτοῦ. Σπουδαιότεροι ἐκπρόσωποι τοῦ πολωνικοῦ τούτου μεσσιανισμοῦ εἶναι ὁ *Τοβιάνσκι*, ὅστις ἀνέμενε τὴν ἄφιξιν νέου Μεσσίου, προωρισμένου νὰ σώσῃ τώρα πλέον ὄχι τὰ ἄτομα, ἀλλὰ τὰ κράτη καὶ τὰ ἔθνη, ὁ *Ἰ. Βρόνσκι* (βλ. λ.) (1778—1853), ὅστις ὡραματίζετο μίαν ἀνθρωπίνην ἕνωσιν ἐκ λυτρωτικῆς ἀφετηρίας, καὶ ὁ *Μικκίεβιτς* (1798—1855), ὅστις συνεμερίζετο τὰς ἀντιλήψεις τοῦ Τοβιάνσκι. Ὁ νεώτερος μεσσιανισμὸς δὲν εἶναι πάντοτε θρησκευτικοῦ χαρακτῆρος. Στηρίζεται ἐπὶ τῆς ἀντιλήψεως ὅτι, ἀφοῦ ἡ κρατοῦσα κατάστασις πραγμάτων χρῄζει διορθώσεως, εἶναι ἀδύνατον νὰ μὴ παρουσιασθῇ καὶ ὁ ἄνθρωπος, ὅστις θὰ εἶναι ὁ φορεὺς τῆς ἀναμορφωτικῆς δυνάμεως. — Ω.

**Μεσσίας** *[Θρησκειολ.]*. *Μεσσίας* εἶναι ἐπὶ μέρους μορφὴ τῆς περὶ *λυτρωτοῦ* (βλ. λ.) ἰδέας, ἡ δὲ περὶ αὐτοῦ παράστασις στηρίζεται ἐπὶ τῆς αὐτῆς θρησκευτικῆς βάσεως καὶ ἀναφύεται ἐκ τῆς αὐτῆς ψυχολογικῆς ῥίζης. Ἤδη οἱ κατὰ φύσιν ζῶντες λαοὶ κέκτηνται τὴν παράστασιν Μεσσίου, τουτέστι λυτρωτοῦ, ὅστις προσδοκᾶται ὑπ' αὐτῶν καὶ πρὸς τὸ πρόσωπον τοῦ ὁποίου συνδέουσι παντοίας ἐλπίδας. Ὁ ἰσλαμισμός, ὁ ζωροαστρισμός, ἡ ἰνδικὴ θρησκεία γνωρίζουσι τὴν μορφὴν τοῦ Μεσσίου, τὴν φύσιν αὐτοῦ, τὸ ἔργον, τὰς συνθήκας, ὑφ' ἃς μελλει νὰ ἐμφανισθῇ, καὶ τὸν χρόνον, καθ' ὃν θὰ λάβῃ χώραν ἡ ἐμφάνισις αὕτη. Αἱ περὶ Μεσσίου παραστάσεις αὗται, αἱ ὁποῖαι συνδέονται συνήθως πρὸς βαθυστοχάστους ἀλλὰ καὶ λίαν φαντασιώδεις πολλάκις ἰδέας, ἐμφανίζουσι πολλὰς ἀναλογίας καὶ κοινὰ γνωρίσματα. Ἀρκεῖ νὰ παραβάλῃ τις τὸν *Μαντὶ* τῶν σουννιτῶν καὶ τῶν σχιιτῶν πρὸς τὸν *Καλκὶ* τῶν Ἰνδῶν, τὸν *Μαιτρέγια* τῶν αὐτῶν ἢ τὸν *Σαοσυὰντ* τῶν Περσῶν καὶ τούτους πάλιν πρὸς τοὺς γνωστικοὺς καὶ μανιχαϊκοὺς Μεσσίας. Παρὰ ταῦτα, δὲν κατωρθώθη μέχρι τοῦδε ἡ ἐκ μιᾶς θρησκείας ἑρμηνεία τῶν ἀναλογιῶν τούτων καὶ ἴσως θὰ παραμείνῃ αὕτη ἁπλοῦν αἴτημα τῆς ἐπιστήμης.

Ἐν στενοτέρᾳ ἐννοίᾳ νοοῦμεν ὑπὸ τὸν ὅρον Μεσσίας τὸν ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ ἐπηγγελμένον λυτρωτήν, τουτέστι τὸν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ κεχρισμένον ἵνα σώσῃ τοὺς ἀνθρώπους, τὸν Χριστόν. Ἀλλ' ἡ περὶ Μεσσίου παράστασις προσλαμβάνει ἐνταῦθα δύο μορφάς· ἀφ' ἑνὸς μὲν ἐμφανίζεται ὁ προσδοκώμενος Μεσσίας ὡς πολιτικὸς λυτρωτής, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὡς λυτρωτὴς ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας καὶ τῶν ἠθικῶν δεινῶν. Ἐν τῷ μεταγενεστέρῳ ἰουδαϊσμῷ, ἐν τῇ θρησκείᾳ τῶν ἔπειτα Ἰουδαίων, τὴν ὁποίαν μανθάνομεν ἐκ τῆς ἀποκαλυπτικῆς καὶ ἀποκρύφου ἰουδαϊκῆς γραμματείας τῶν τελευταίων π. Χ. αἰώνων, ἐπικρατεῖ ἡ παράστασις Μεσσίου μέλλοντος νὰ ἀπαλλάξῃ τὸν λαὸν τοῦ Θεοῦ ἀπὸ τῶν πολιτικῶν καὶ κοινωνικῶν δεινῶν. Ἡ ἐπικράτησις τῆς παραστάσεως ταύτης ὀφείλεται τὸ μὲν εἰς τὰς συνθήκας, ὑφ' ἃς βιοῦσιν οἱ Ἰουδαῖοι, τὸ δὲ εἰς τὴν ἐπίδρασιν, ἣν ἀπὸ τοῦ Ε' π. Χ. αἰῶνος ἤδη ἀσκεῖ ἐπ' αὐτοὺς ἡ Ἀνατολή, καὶ δὴ ἡ περσικὴ καὶ βαβυλωνιακὴ θρησκεία. Ἡ ἑτέρα τῶν περὶ Μεσσίου παραστάσεων, ἡ καθαρῶς πνευματικὴ καὶ ἠθική, τὴν ὁποίαν ἀντιπροσωπεύουσι πρὸ πάντων οἱ προφῆται τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης, πραγματοποιεῖται ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ Χριστοῦ, ὅστις ἐμφανίζεται ὡς λυτρωτὴς ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας δι' ὁλόκληρον τὴν ἀνθρωπότητα, ἀνεξαρτήτως φυλῆς ἢ καταγωγῆς καὶ δι' ἕκαστον ἄνθρωπον ἰδιαιτέρως. Μετὰ τῆς περὶ Μεσσίου ἰδέας συνδέεται στενῶς ἡ *ἐσχατολογία* (βλ. λ.) καὶ ἡ ἀποκαλυπτικὴ γραμματεία, ὡς οἰκοθεν δὲ νοεῖται αἱ περὶ λυτρωτοῦ παραστάσεις τῶν λαῶν, ὧν τμῆμα ἀποτελεῖ ἡ περὶ Μεσσίου παράστασις ἐν τῇ γενικωτάτῃ τῆς λέξεως σημασίᾳ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. The evolution of the Messianic idea (1923).—*Gressmann*, Der Messias (1929).—*August von Gall*, Βασιλεία τοῦ Θεοῦ (1926).—*Bousset*, Religion des Judentums (γ' ἔκδ. 1926). Ν. Λ.

—*[Θεοσοφ.]* Τὸ ἀνώτερσν Ὄν, τὸ ὁποῖον ἐμφανίζεται συνήθως κατὰ τὴν δημιουργίαν μιᾶς νέας ἀνθρωπίνης φυλῆς ἢ ὑποφυλῆς, καὶ τὸ ὁποῖον δίδει τὴν πνευματικὴν κατεύθυνσιν εἰς τὴν νέαν αὐτὴν φυλήν. Συνηθέστερον ὀνομάζεται *Παγκόσμιος Ἐκπαιδευτὴς* ἢ *Μέγας Ἐκπαιδευτής*. Τοιοῦτοι ὑπῆρξαν ὁ Βούδας, ὁ Χριστός, ὁ Σρῖ-Κρισνᾶς καὶ ἄλλοι. Ὑπάρχει ἐπίσης ἡ ἀντίληψις ὅτι τὸ πρόσωπον, τὸ ὁποῖον ζῇ εἰς τὸν φυσικὸν τοῦτον κόσμον, δὲν εἶναι παρὰ ἡ ἐκδήλωσις ἢ ὁ φορεὺς τοῦ Παγκοσμίου Ἐκπαιδευτοῦ, ἑνὸς ἀνωτάτου Ὄντος τῆς ἀποκρύφου ἱεραρχίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *C. Jinarajadasa*, Ἡ ἀπόκρυφος ἐξέλιξις τῆς ἀνθρωπότητος (1929). Π. Π. Χ.

—**«Μεσσίας»**. Ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1845 καὶ ἐκδιδομένη μέχρι τοῦ 1848. — Π.

**Μεσσιὲ** (Messier), ***Κάρολος***. Γάλλος ἀστρονόμος (1730 — 1817). Ἦτο μαθητὴς τοῦ Delisle καὶ ἠσχολήθη εἰδικῶς εἰς τὴν ἀναζήτησιν κομητῶν μετὰ τοσαύτης ἐπιτυχίας, ὥστε ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ' ἐπωνομάσθη «ἡ ἰκτὶς τῶν κομητῶν» (le furet des comètes). Ὁ Delisle ἀναφέρει τὰς προετοιμασίας τοῦ Μεσσιὲ πρὸς ἀνεύρεσιν τοῦ ἀναμενομένου τότε κομήτου τοῦ Χάλλεϋ καὶ τὸν θρίαμβον τοῦ τελευταίου, ὅταν ὁ κομήτης του ἀνευρέθη χάρις εἰς τὰς ἀναζητήσεις τοῦ Μεσσιὲ 50 ἡμέρας πρὸ τῆς διαβάσεώς του διὰ τοῦ περιηλίου, ἤτοι τὴν 21 Ἰανουαρίου 1759. Ὁ Μεσσιὲ ἠσχολήθη ἐπίσης εἰς τὴν παρατήρησιν τῶν νεφελοειδῶν, συντάξας κατάλογον ἐξ 103 τοιούτων οὐρανίων σωμάτων, δημοσιευθέντα τῷ 1784. Τὰ ἔργα τοῦ Μεσσιὲ ἐδημοσιεύθησαν ἐν τῇ «Connaissance des Temps» καὶ εἰς τὰ «Mémoires» τῆς Ἀκαδημίας, ἧς ἀπετέλεσε μέλος ἀπὸ τοῦ 1770.

Ὁ Λαλάνδος πρὸς τιμὴν τοῦ Μεσσιὲ ἔδωκε τὸ ὄνομα αὐτοῦ εἰς ἕνα ἀστερισμόν, ὃν ἐσχημάτισε μεταξὺ Κασσιόπης, τοῦ Κηφέως καὶ τῆς Καμηλοπαρδάλεως. Ὁ ἀστερισμὸς ὅμως οὗτος δὲν ἀνεγνωρίσθη γενικῶς. Σ. Π.

**Μεσσὶν** *[Στρατ. Ἱστορ.]*. Ἐπειδὴ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον οἱ Γερμανοὶ κατεῖχον ἐπὶ διετίαν τὴν δεσπόζουσαν ἐπὶ τῆς πεδιάδος τῆς Φλάνδρας κορυφογραμμὴν Messines—Wyschaëte (ὀνόματα τῶν ἐπὶ τοῦ λοφώδους ὑψώματος χωρίων), δι' αὐτὸ ἀνέλαβεν ἡ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Πλῶμερ 2α ἀγγλικὴ στρατιὰ ν' ἀπωθήσῃ τὰ ἐπὶ τῆς ἐν λόγῳ κορυφογραμμῆς γερμανικὰ στρατεύματα τῆς 4ης στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Σίξτ φὸν Ἀρνίμ, καὶ νὰ γίνῃ κυρία τῶν ὑψωμάτων τούτων. Τότε ἐπῆλθε τὴν 7ην Ἰουνίου 1917 μάχη, φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα *μάχη τοῦ Μεσσίν*, καταστᾶσα πασίγνωστος λόγῳ τῶν τεχνικῶν μέσων, δι' ὧν ἐπετεύχθη ἡ νίκη ἐκ μέρους τῶν Ἄγγλων. Κατὰ τὴν ἐναντίον τῆς κορυφογραμμῆς ταύτης ἀγγλικὴν ἐπίθεσιν, διετέθη ὁλόκληρος στρατιὰ (3 σώματα στρατοῦ, ἕκαστον ἐκ 4 μεραρχιῶν, καὶ ἓν σῶμα ὡς ἐφεδρεία) ἐναντίον μετώπου 16 χλμ., ὑποστηριζομένη δ' ὑπὸ 1200 πεδινῶν πυροβόλων, 800 βαρέων καὶ 400 ὀβιδοβόλων, ἀποτελούντων τοιουτοτρόπως τὸν φοβερὸν ἀριθμὸν τῶν 2400 πυροβόλων, ἤτοι μὲ τὴν πρωτοφανῆ ἀναλογίαν τοῦ ἑνὸς πυροβόλου ἀνὰ 7 περίπου μέτρα μετώπου. Προσέτι εἶχον κατασκευάσει οἱ Ἄγγλοι, δι' ὑπογείων στοῶν διηκουσῶν ἐγκαρσίως κάτωθεν τῆς κορυφογραμμῆς Μεσσὶν-Βυσχαέτ, 20 παμμεγίστας ὑπονόμους, περιλαμβανούσας ἐντὸς αὐτῶν τὸ συνολικὸν ποσὸν τῶν 500.000 χιλιογράμμων ἐκρηκτικῆς οὐσίας. Τὴν 28ην Μαΐου 1917 ἤρχισεν ὁ βομβαρδισμὸς (προπαρασκευὴ) ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ πυροβολικοῦ, διαρκέσας ἐπὶ 10 συνεχῆ ἡμερονύκτια μετ' ἐξαιρετικῆς διαρκῶς ἐντάσεως, ἀνορύξας κυριολεκτικῶς ἅπαν τὸ ἔδαφος, τὴν δὲ 3ην ὥραν τῆς 7ης Ἰουνίου 1917 ἐξερράγησαν αἱ ὑπόνομοι, ἀνατινάξασαι εἰς τὸν ἀέρα τὰ λοφώδη ὑψώματα, τὰ χωρία, καὶ ἅπαν τὸ ἐπ' αὐτῶν ἔμψυχον καὶ ἄψυχον γερμανικὸν ὑλικόν. Ὡς ἦτο φυσικὴ συνέπεια, ἡ κατάληψις τοῦ ἐν λόγῳ ὑψώματος ἐγένετο εὐχερέστατα ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, καταλαβόντων τοῦτο ἐξ ὁλοκλήρου μέχρι τοῦ ἀπογεύματος τῆς 7ης Ἰουνίου καὶ συγχρόνως αἰχμαλωτισάντων 7.000 Γερμανούς. Οἱ Γερμανοὶ δὲν ἠδυνήθησαν νὰ μεταφέρωσι νέας μονάδας πρὸς ἀντεπίθεσιν, εἰ μὴ τὸ ἀπόγευμα τῆς 8ης Ἰουνίου, ὁπότε ἕως τότε οἱ Ἄγγλοι εἶχον ὀργανωθῆ ἀμυντικῶς ἐπὶ τῶν νέων των θέσεων. Διὰ τὸ ἀξιοσημείωτον, προσθέτομεν ὅτι ἅπασαι αἱ συμμετασχοῦσαι τῆς ἐπιθέσεως ταύτης ἀγγλικαὶ μεραρχίαι ἦσαν ἐντελῶς ἄθικτοι, ἅτε διατελέσασαι ἐν ἀναπαύσει ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ 1917, εἶχον δ' ἐξασκηθῆ τελείως δι' ἐπανειλημμένων ἐκτελέσεων ἐπὶ ἐδάφους ὄπισθεν τοῦ μετώπου, προσομοίου τῷ πραγματικῷ. Ν. Θ. Κ.

**Μεσσίνα** (Messina) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μεσσήνη*.

**Μεσσίνα**, ἢ ***Μεσσήνα***. —1) ***Ἀντονέλλο***. Σικελὸς ζωγράφος (βλ. *Ἀντονέλλο*). —2) ***Ὀνούφριος ντὰ —***. Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. *Γκαμπριέλλο*).

**Μεσσονιὲ** (Meissonier), ***Ἰωάννης-Λουδοβῖκος*** (βλ. *Μαισονιέ*).

**«Μεσσουδιὲ»** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Τουρκικὸν θωρηκτὸν 10.000 τόννων ἐκτοπίσματος, 101 μέτρων μήκους, 18 πλάτους καὶ βυθίσματος 27 ποδῶν, ναυπηγηθὲν τῷ 1874. Ἀνεκαινίσθη τελείως ὑπὸ τῶν ἐν Γενούῃ ναυπηγείων Ansaldo τῷ 1902, ὁπλισθὲν δι' ἀρίστων πυροβόλων (Βίκερς), καὶ ἀπέδωκεν ἱπποδύναμιν 11.000 καὶ ταχύτητα 18 μιλλίων. Τρίτον εἰς τὴν γραμμὴν παραγωγῆς, ἣν ἐτήρει ὁ τουρκικὸς στόλος ἐξερχόμεεος τῶν Στενῶν διὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Ἕλλης, ἔβαλε κατὰ τὴν διάρκειαν ταύτης ἐπιτυχὲς βλῆμα τῶν 235 χιλ. κατὰ τοῦ ἐκτελοῦντος τὴν προχωρητικήν του κίνησιν «Ἀβέρωφ». Κατὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Λήμνου ἐδέχθη βλῆμα τῶν 270 τῆς «Ὕδρας» ἢ τῶν «Ψαρῶν», εἰσδῦσαν ἀπὸ τῆς κορυφῆς τοῦ πυροβολείου του καὶ θέσαν εἰς ἀχρηστίαν τρία πυροβόλα του τῶν 150 καὶ ἐκτὸς μάχης 68 ἄνδρας, ἀξιωματικοὺς καὶ ναύτας τῆς ὁμοχειρίας, βλάψαν δὲ πάντα τὰ διαμερίσματα τοῦ πυροβολείου, καίτοι χωριζόμενα διὰ διαφραγμάτων. Σ. Ε. Λ.

**Μέσσουε** ***ὁ πρεσβύτερος***. Ἄραψ ἰατρός, Χριστιανὸς τὸ θρήσκευμα, ζήσας κατὰ τὸν Θ' μ. Χ. αἰῶνα, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἰωάννης ὁ Δαμασκηνὸς* (Janus Damascenus), οὗ τὸ πλῆρες ὄνομα ἦτο *Ἀμποῦ-Ζαχαρίας-Ἰωάννης* ἢ *Γιαχγιὰ μπὲν Μασάουαϊ*. Ἦτο υἱὸς βοηθοῦ φαρμακείου ἐν Σαποροπόλει (Δζοντισαπούρ), ἔνθα ἐσπούδασεν ὑπὸ τὸν Βαχτίσουα τὴν ἰατρικήν, ἣν ἐξήσκησεν ἐν Βαγδατίῳ, ἔνθα ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ νοσοκομείου καὶ ἰατρὸς τοῦ χαλίφου Χαροὺν καὶ τοῦ Μοτέουεκιλ. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα καὶ ἐδημοσίευσε πολλὰς διαλέξεις αὐτοῦ, ἀλλὰ κυρίως ἐγένετο γνωστὸς ἐκ μεταφράσεων ἀρχαίων ἑλληνικῶν ἔργων. Σπουδαιότερον τῶν ἔργων (ὧν 30 ἀναφέρει ὁ Wüstenfeld) αὐτοῦ, ἀφιερωθὲν τῷ διασήμῳ Ἄραβι ἰατρῷ Χανεΐν, εἶναι οἱ «Ἀφορισμοὶ» αὐτοῦ, οἵτινες ἐπανειλημμένως ἐξεδόθησαν καὶ ἐν λατινικῇ μεταφράσει (Aphorismi Johannis Damasceni, α' ἔκδ., ἐν Βονωνίᾳ 1489). Νεωστὶ ἐξεδόθη γερμανιστὶ ἡ ὀφθαλμολογία αὐτοῦ ὑπὸ C. Prüfer καὶ M. Mayerhof (ἐν «Islam», τόμ. 6, σελ. 217—258).

— **Μέσσουε** ***ὁ νεώτερος*** (Johannes filius Messue ἢ καὶ οὗτος *Ἰωάννης Δαμασκηνός*). Προσωπικότης διαμφισβητουμένη ὑπὸ πολλῶν. Κατὰ Λέοντα Ἀφρικανὸν ἦτο Ἰακωβίτης Χριστιανός, σπουδάσας ἐν Βαγδατίῳ ἰατρικήν, ζήσας ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1015. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τούτου καθ' ὅλον τὸν μεσαίωνα καὶ μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἦτο ἐν πολλῇ χρήσει φαρμακολογικὸν ἐγχειρίδιον, οὗτινος τὸ πρωτότυπον ἀραβικὸν διέμεινεν ἄγνωστον, δι' ὃ καὶ θεωρεῖται ὡς ὑποβολιμαῖον μεσαιωνικοῦ τινος συγγραφέως. Τὰ ἔργα τούτου ἐδημοσιεύθησαν ἐπανειλημμένως «Περὶ καθαρτικῶν φαρμάκων ἢ ἁπλῶν» (de medicinis laxativis ἢ de simplicium), «Ἀντιδοτάριον ἢ περὶ συνθέτων φαρμάκων» (Antidotarium medicam. compositorum) καὶ «Πρακτικὴν ἰατρικήν», ἤτοι θεραπείαν τῶν διαφόρων νόσων ἀπὸ κεφαλῆς, ἐξικνουμένην ὅμως μόνον μέχρι τῶν καρδιακῶν νοσημάτων (Practica medicinarum particularium), ἣν εἶτα συνεπλήρωσεν ὁ μεσαιωνικὸς συγγραφεὺς Pietro di Abano. Τὰ ἔργα τούτου συχνάκις συγχέονται πρὸς τὰ τοῦ Μέσσουε τοῦ πρεσβυτέρου. ΑΡ. Π. Κ.

**Μεσσούνα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ δήμου καὶ τῆς ἐπαρχίας Πλωμαρίου τοῦ νομοῦ Λέσβου. Κάτ. (1928) 282. Χ. Δ.

**Μεσσούνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμβροσίας τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ κατ. (1928) 400. Χ. Δ.

**Μεσσωγὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Μ. Ἀσίας, τὸ σημερινὸν *Κεστανὲ* νταγ (βλ. λ.).

**Μέσσωνα** *[Γεωγρ.]*. Ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Γεμουρᾶ τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 60 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες ὑπήχθησαν εἰς τὴν ἀνταλλαγὴν τῶν πληθυσμῶν τοῦ 1923. Ε. Ι. Χ.

**Μεστὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χίου, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῶν Μαστιχοχωρίων καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 929. Χ. Δ.

—**Μεστὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Χίου (πλάτ. 38° 14' 50" Β., μῆκ. 25° 53' 20" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1645: Khios island and gulf of Smyrna, ἐν ᾧ σημειοῦται Amista, χάρτ. *Ἠλ. Οἰκονομοπούλου*: «Νῆσος Χίος») εἰς 5 χιλιόμετρα ἔνδον, ἡ ΝΔ. τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιά, ἀπόληξις τοῦ βουνοῦ Κασιδόβουνο, καὶ ΒΔ. κέρας τοῦ ὅρμου Αὐλωνιά, ἐπινείου τοῦ εἰς 5 χιλιόμετρα ἔνδον χωρίου *Μεστά*. Ὑπῆρξε τό τε ἀκρωτήριον καὶ ὁ ὑπ' αὐτὸ ὅρμος μία τῶν τοποθεσιῶν, ἐξ ἧς διαπεραιοῦντο εἰς ψαριανὰ πλοῖα τοῦ Ἀγῶνος οἱ φεύγοντες τὸν ὄλεθρον καὶ τὴν καταστροφήν. Σ. Ε. Λ.

**Μεστζὲτ-*Χουσεΐν*** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Κερμπελᾶ*.

Digitized by Google

**μέστι** (τό)· εἶδος ὑποδημάτων (λ. τουρκ.).

**μέστο** (ἰταλ. mesto) *[Μουσ.]*. Μουσικὸς ὅρος ἀποδιδόμενος ἑλληνιστὶ διὰ τοῦ *θλιβερῶς*. Προϋποθέτει ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον βραδεῖαν ἀγωγὴν καὶ ἔκφρασιν θλιβερῶν καὶ πενθίμων συναισθημάτων. Γ. Σ.

**μεστός**, *—ή, —όν*· ὁ πλήρης, ὁ γέμων τινός: «πίθοι μεστοὶ ἐλαίου, — οἴνου» || ἐπὶ καρπῶν, ὥριμος, γινωμένος, μεστωμένος: «τὸ στάρι εἶναι μεστό», «μεστὰ σῦκα, — σταφύλια, — ἀχλάδια»· || μεταφ. «μεστὸς ἀλαζονείας, — οἰήσεως, — φρονήματος».

**μεστότης** *[Ρητορ.]*. Ἓν τῶν σχημάτων τοῦ λόγου· εἶναι δὲ ἡ μεστότης «οὐδὲν ἄλλ' ἢ περιβολὴ πλεονάσασα ἐν ἑαυτῇ, ὥσπερ ἂν εἴ τις λέγοι περιβολὴ περιβεβλημένη... οἱ μερισμοὶ ποιοῦσι μεστὸν τὸν λόγον, ὅταν αὐτοὶ αὐτοῖς ἐπεμβάλλωνται» (*Ἑρμογένους*, «Περὶ ἰδεῶν» α' 272, 16. 273, 3), οἷον ἐν τῇ περιόδῳ: «εἰ μὲν περὶ καινοῦ τινος πράγματος, ὦ Ἀθηναῖοι, κτλ.» ὁ ρήτωρ πρὶν ἐπιφέρῃ τὴν *ἀνταπόδοσιν* ἐπενέβαλεν ἕτερον *μερισμόν*: «εἰ μὲν ἤρεσκέ τι μοι τῶν ὑπὸ τούτων ρηθέντων, ἡσυχίαν ἂν ἦγον· εἰ δὲ μή, τότ' ἂν καὶ αὐτὸς ἐπειρώμην ἃ γινώσκω λέγειν»· κατόπιν ἔρχεται ἡ ἀνταπόδοσις: «ἐπειδὴ δὲ ὑπὲρ ὧν πολλάκις εἰρήκασιν οὗτοι, συμβαίνει καὶ νυνὶ σκοπεῖν» καὶ οὕτως ὁ λόγος *μεστὸς* ἐγένετο. «Ὅλως οὖν ἡ μεστότης γίνεται, ὅταν σχήματα περιβλητικὰ δι' ἀλλήλων πλεονάσῃ κατὰ ἐπεμβολήν, ἢ κατὰ ἐξάρτησιν, ἢ εἰ καὶ ἑτέροις περιβλητικοῖς ἕτερα τοιαῦτα οὑτωσί πως συμπλακείη, οἷον μερισμῷ τῷ καθ' ὑπόστασιν, ἢ ἄλλῳ τῳ ἄλλο τοιοῦτον ἐπεμβληθὲν ἢ ἐξαρτηθὲν» (*Ἑρμογ.* ἔ. ἀ. 274, 23—28). Ι. Φ. Δ.

**Μέστρε** (Mestre) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βενετίας. Κάτ. 17.083. Κεῖται ἐπὶ τῆς διώρυγος Μάργκερα, εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ. ἀπὸ τῆς λιμνοθαλάσσης τῆς Βενετίας, μετὰ τῆς ὁποίας συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἡ Μέστρε εἶναι ὁ ἐπὶ τῆς ἠπειρωτικῆς ξηρᾶς σιδηροδρομικὸς σταθμὸς τῆς Βενετίας καὶ κέντρον τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν πρὸς Πάντοβαν, Τρέντον καὶ Τεργέστην. Ἔχει χυτήρια, ἐργοστάσια μηχανημάτων καὶ ἀλευρομύλους. Μ. Δ. Β.

**Μέστροβιτς** (Mestrovic), *Ἰβάν*. Νοτιοσλάβος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1883. Ἐν μέσῳ παντοίων στερήσεων κατώρθωσε νὰ μεταβῇ εἰς τὴν Βιέννην καὶ νὰ εἰσέλθῃ εἰς τὴν ἐκεῖ Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Τὸ πρῶτον αὐτοῦ ἔργον ἐξέθεσεν ἐν Βιέννῃ τῷ 1902, κατόπιν δὲ εἰς τὰς ἐκθέσεις τοῦ Λονδίνου, τοῦ Μονάχου, τῆς Βενετίας, τῆς Ρώμης καὶ τῶν Παρισίων, ὅπου προεκάλεσε τὴν προσοχὴν τοῦ Ροντέν. Ὑπῆρξεν ὁ κύριος ἐκπρόσωπος τῆς ἐθνικῆς καλλιτεχνικῆς κινήσεως τῶν Νοτιοσλάβων, ἥτις ἐδημιουργήθη πέριξ αὐτοῦ καὶ τῶν γλυπτῶν Ρόζαντιτς καὶ Ντούνταν Πένιτς, τοῦ ζωγράφου Ράτσκι καὶ τοῦ ἀρχιτέκτονος Πλέτσνικ, ἐμφανισθέντων κατὰ πρῶτον ἐν τῇ ἐκθέσει τοῦ Ζάγκρεμπ τῷ 1910, δι' ἔργων ἐμπνευσμένων ἀπὸ τὴν σλαβικὴν ἱστορίαν καὶ τοὺς σλαβικοὺς θρύλους.

*Ἰ. Μέστροβιτς: Μητρότης.*

Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἶχεν ἐγκατασταθῆ εἰς τὸ Λονδῖνον, ὅπου ἐξέθεσε πλεῖστα ἔργα καὶ μνημεῖα Νοτιοσλάβων ἡρώων. Κατόπιν ἐγκατεστάθη ἐν Ζάγκρεμπ, ὅπου διωρίσθη διευθυντὴς τῆς σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, τὰ ὁποῖα διακρίνονται διὰ τὴν θαρραλέαν γραμμὴν καὶ τὴν δύναμιν τοῦ σχεδίου των, τὰ κυριώτερα εἶναι: μία «Ἀποκαθήλωσις», εὑρισκομένη εἰς τὴν Ἐθνικὴν πινακοθήκην τοῦ Λονδίνου, αἱ προτομαὶ τῆς μητρός του (1908), τῆς κυρίας Μπάνατς (1913), τῆς συζύγου του (1915), τοῦ σὲρ Τόμας Μπήτσαμ (1915) ἐν τῇ Ἐθνικῇ πινακοθήκῃ τοῦ Λονδίνου, τῆς λαίδης Κιούναρντ (1915) κτλ., ἡ «Εὔα», οἱ «Πολεμισταί», αἱ «Ἀναμνή-

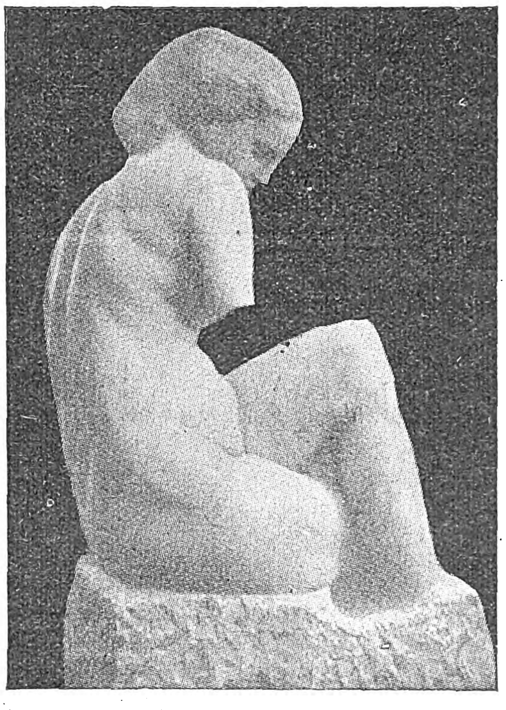

*Ἰ. Μέστροβιτς: Ἀναμνήσεις.*

σεις», ἡ «Ἀθωότης», ἡ «Μητρότης» κλπ., τὸ μνημεῖον τοῦ βασιλέως Πέτρου ἐν Ραγούζῃ, τὸ μνημεῖον τοῦ Ράτσιτς ἐν Κάβτατ, τὸ μαυσωλεῖον τοῦ ἐπισκόπου Πέταρ Πέτροβιτς Νιεγκός, ἐθνικοῦ ποιητοῦ τῶν Μαυροβουνίων, ὁ ἅγιος Φραγκῖσκος τῆς Ἀσσίζης κτλ. Μ. Δ. Β.

**μεστῶ** (*—όω*), *ἀόρ. ἐμέστωσα—ἐμεστώθην*, *παθ. μετχ. μεμεστωμένος*· ποιῶ τι μεστόν, πληρῶ: «ἐμεστώθη φρονήματος, — ὑπερηφανείας».

**μέστωμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μεστώνω*, ἐπὶ καρπῶν: «τὸ μέστωμα τοῦ σιταριοῦ, — τοῦ κριθαριοῦ, — τῶν σύκων, — τῶν ἀχλαδιῶν κτλ.».

**μεστώνω**, *ἀορ. ἐμέστωσα*· μεταβ., ποιῶ τι μεστόν, ὥριμον, ὡριμάζω: «αὐτὴ ἡ ἀχλαδιὰ δὲ μεστώνει τὰ ἀχλάδια της»· || συνήθ. ἀμεταβ., γίνομαι μεστός, ὥριμος, ὡριμάζω: «ἐμέστωσανε τὰ στάρια», «ἐφύσηξε λίβας καὶ δὲν τ' ἄφησε νὰ μεστώσουν», «μεστωμένο σιτάρι, — κριθάρι, —ἀραποσίτι, —καρύδι, —σῦκο κτλ.»· || μεταφ., πληροῦμαι τῶν ἀναγκαίων σαρκῶν, εἶμαι εὐτραφής: «παιδὶ δεμένο, μεστωμένο»· || «δὲν ἐμέστωσε τὸ μυαλό του ἀκόμα» ἄλλως «δὲν ἔπηξε —» (τὸ ρῆμα δημοτικὸς τύπος τοῦ *μεστῶ*, βλ. λ.).

**Μεσχὲδ** *[Γεωγρ.]*. —1) Πρωτεύουσα τῆς περσικῆς ἐπαρχίας Χορασὰν ἐπὶ βραχίονος τοῦ ποταμοῦ Τεδζέντ. Ἔχει περὶ τὰς 60 χιλ. κατ. καὶ εἶναι κέντρον σπουδαῖον ἱπποτροφίας καὶ βιομηχανίας βελούδων. Ἐκ τῶν μνημείων της ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ μαυσωλεῖα τοῦ Ἰμὰμ Ριζοῦ καὶ Ναδὶρ Σάχ.

—2) Πόλις τοῦ Ἰρὰκ Ἀραβῆ, τὴν ὁποίαν ἀνέκτισεν ὁ Μ. Ἀλέξανδρος καὶ μετωνόμασεν *Ἀλεξάνδρειαν*. Κεῖται ἐπὶ βραχίονος τοῦ Εὐφράτου, Ν. τῆς Βαγδάτης. Οἱ Σιῖται θέτουν ἐν αὐτῇ τὸν τάφον τοῦ Ἀλῆ καὶ δι' αὐτὸ εἶναι εἰς αὐτοὺς ἱερὰ ὅσον διὰ τοὺς ὀρθοδόξους Μουσουλμάνους ἡ Μεδίνα. Σήμερον λέγεται καὶ *Νετζέφ*.

— 3) *Μεσχὲδ Χουσὲν* ἢ *Ἰμὰμ Χουσέν*, ἡ ἀρχαία *Κερβέλα*, ἐπὶ βραχίονος τοῦ Εὐφράτου. Ἔχει 50 χιλ. κατ. καὶ εἶναι ἡ ἱερωτάτη πόλις τῶν Σιιτῶν. Κατὰ τὴν παρ' αὐτὴν ἀξιομνημόνευτον μάχην ἔπεσεν ὁ νεαρὸς Χουσὲν υἱὸς τοῦ Ἀλῆ (680 μ. Χ.). Τὸ τζαμίον Σίδνα Χουσὲν εἶναι ἀπρόσιτον εἰς τοὺς ξένους. Κατὰ τὴν ἐπέτειον τοῦ θανάτου του, τὴν 10 Μωχαρρέμ, γίνεται λιτανεία, καθ' ἣν οἱ δερβίσαι πληγώνουν ἑαυτοὺς διὰ τῆς σπάθης των, ἰδίως εἰς τὸ πρόσωπον. Συγκεντροῦνται κατ' αὐτὴν 150—200.000 προσκυνητῶν. Γ. Λ. Α.

**μεσῶ** (*—όω*)· εὑρίσκομαι εἰς τὸ μέσον ἢ εἰς τὸ ἥμισυ, μόνον εἰς τὴν μετχ. τοῦ ἐνεστῶτος: «μεσοῦντος μηνός, —ἔτους», «κατὰ μῆνα Ἀπρίλιον μεσοῦντα», «μεσούσης τῆς ἑβδομάδος, — τῆς παρασκευῆς».

**Μεσωγὶς** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἰωνίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, διαχωρίζον τὴν κοιλάδα τοῦ Καΰστρου (πρὸς Β.), ἀπὸ τῆς τοῦ Μαιάνδρου (πρὸς Ν.), ἔχον ὕψος περὶ τὰ 1800 μ., μετ' ἀποτόμων καὶ δασωδῶν κλιτύων, διακοπτομένων ὑπὸ βαθειῶν χαραδρῶν. Ἐπὶ τῶν πρὸς Β. ὑπωρειῶν, ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Καΰστρου, εὑρίσκονται αἱ πόλεις Θεῖρα, Λύδα, Παζάργερε, ἐνῷ ἐπὶ τῶν πρὸς Ν. ὑπωρειῶν αὐτοῦ, ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Μαιάνδρου, κεῖνται τὸ Ἀϊδίνιον, τὸ Ναζλί, τὸ Μπουλαντάν. Κατὰ τὰ ἔτη 1919 καὶ 1920 τουρκικαὶ ὁμάδες ἀτάκτων (ζεϊμπέκοι) παρηνώχλουν τὰς ἐφοδιοπομπὰς καὶ τὰς συγκοινωνίας τῆς 2ας ἑλληνικῆς μεραρχίας, εὑρισκομένης ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Καΰστρου, καὶ τῆς 1ης τοιαύτης, δρώσης ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Μαιάνδρου, ὁρμώμεναι ἐκ τῆς Μεσωγίδος. Διάφορα ἀποσπάσματα τῶν εἰρημένων μεραρχιῶν συνῆψαν πλείστας ὅσας συμπλοκὰς μετὰ τῶν ζεϊμπέκων τούτων καὶ ἐκαθάρισαν τὴν ὀρεινὴν περιοχὴν μετὰ πολλοῦ κόπου καὶ κατόπιν πολλῶν ταλαιπωριῶν. Ν. ΚΣ

**μεσῳδικὸν** *ᾆσμα*. Ἐκαλοῦντο οὕτω ἐν τῇ ἀρχαίᾳ μετρικῇ τὰ ᾄσματα ἐκεῖνα, τὰ ὁποῖα συγκείμενα κατὰ τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ τέλος ἐξ ὁμοίων μέτρων διεκόπτοντο εἰς τὸ μέσον διὰ τῆς παρεμβολῆς ἀνομοίου μέτρου. Τὰ παρεμβαλλόμενα μέτρα ἦσαν συνήθως οἱ καλούμενοι «μεσῳδικοὶ ἀνάπαιστοι», οἱ ὁποῖοι ἐν τῷ δράματι κατ' ἀρχὰς μὲν ἐχρησιμοποιοῦντο ἐν τῇ ἀρχῇ τῆς περιόδου, ἵνα διὰ τοῦ αὐστηροῦ των ρυθμοῦ εἰσέρχεται ὁ χορὸς μετὰ μείζονος μεγαλοπρεπείας εἰς τὴν σκηνήν, βραδύτερον δὲ χάριν ποικιλίας καὶ ὅπως καταστῇ ἐναργεστέρα ἡ ἀντίθεσις τοῦ σεμνοῦ ἀναπαιστικοῦ ρυθμοῦ πρὸς τὸν μᾶλλον κεκινημένον τῶν χορικῶν ᾀσμάτων, παρενεβάλλοντο ὑπὸ τῶν ποιητῶν μεταξὺ τῶν μελικῶν στροφῶν τῆς παρόδου. Παραδείγματα μεσῳδικῶν ἀναπαίστων ἔχομεν εἰς τὰς παρόδους τοῦ Προμηθέως, Ἀντιγόνης, Φιλοκτήτου, Οἰδίποδος ἐπὶ Κολωνῷ, Ἀλκήστιδος, Μηδείας καὶ Ρήσου, καὶ εἰς τοὺς θρήνους τοῦ Ἀγαμέμνονος, Χοηφόρων, Αἴαντος, Ἀντιγόνης καὶ Ἀλκήστιδος. Ν. Α.

**μεσωθήκιον** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*. Πτυχὴ τοῦ ὀργόνου πετάλου τῶν πλατέων συνδέσμων τῆς μήτρας, περιβάλλουσα διὰ τῶν δύο πετάλων αὐτῆς τὸν ἴδιον σύνδεσμον τῆς ᾠοθήκης· διὰ τοῦ μεσωθηκίου τούτου ἑκάτερος πλατὺς σύνδεσμος διαιρεῖται εἰς δύο μοίρας, τὸ *μεσομήτριον* καὶ τὸ *μεσοσαλπίγγιον*. Ι. Π.

**Μέτα** (Meta) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Κολομβίας, πηγάζων ἀπὸ τὰς Κορδιλλιέρας καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Ὀρενόκον. Εἶναι πλωτὸς καθ' ὅλον τὸν ροῦν του. Δέχεται τὰ ὕδατα τῶν παραποτάμων Τοῦκα, Τσίρα καὶ Κασανάρε. Μ. Ι. Θ.

**μετὰ**· *πρόθ.*, *συντάσσεται*: 1) μετὰ γενικῆς, σημαίνει δὲ τὸ *ὁμοῦ*, *μαζί*, *ἀντίθ. ἄνευ*, *χωρίς*: «ἦλθε μετὰ τῶν γονέων του, — μετὰ τῶν φίλων του», «ἀπέπλευσε μετὰ τῆς ἀκολουθίας του», «ἐπολέμησαν οἱ Ἕλληνες μετὰ τῶν Σέρβων κατὰ τῶν Τούρκων», δηλαδὴ οἱ Ἕλληνες καὶ οἱ Σέρβοι συμμαχοῦντες· || πρὸς δήλωσιν συνοδείας ἢ τρόπου: «μετὰ χαρᾶς», «μετὰ προθυμίας», «μετὰ βίας», «μόλις καὶ μετὰ βίας»· || ἐνίοτε ἡ μετὰ συντάσσεται μετὰ γενικῆς ἐπὶ ἐναντιότητος: «ἐπολέμησαν οἱ Ἕλληνες μετὰ τῶν Τούρκων» ἀντὶ «— κατὰ τῶν Τούρκων» ἡ σόλοικος αὕτη σύνταξις εἶναι ἀποτέλεσμα κακῆς ἐξελληνίσεως τοῦ δημοτικωτέρου «οἱ Ἕλληνες ἐπολέμησαν μὲ τοὺς Τούρκους»· || μετὰ τῶν τύπων τῆς προσωπικῆς ἀντωνυμίας συντάσσεται κατὰ τὸ φαινόμενον μετὰ αἰτιατικῆς, διότι ἡ αἰτιατικὴ τῆς ἀντωνυμίας ταύτης τελεῖ ἐν τῇ δημοτικῇ καὶ τὰ τῆς γενικῆς: «μετὰ μᾶς», «μετὰ σᾶς», «μετὰ μένα», «μετὰ σένα» μαζί μας, — σας, — μου, — σου· ὁμοίως λέγεται «μετὰ 'φτούς», «μετὰ κείνους» ἀντὶ μετ' αὐτῶν, μετ' ἐκείνων· || ἐνίοτε χάριν ἐντονωτέρας δηλώσεως τῆς ἐννοίας συνεκφέρεται μετὰ τοῦ *καί*: «μετὰ καὶ ἑτέρων καλῶν ἀνθρώπων», «ὁ Δεῖνα μετὰ καὶ τῶν τέκνων αὐτοῦ»· ἡ σύνταξις αὕτη εἶναι ἀποτέλεσμα συμφύρσεως τοῦ «ὁ Δεῖνα μετὰ τῶν τέκνων αὐτοῦ» Χ «ὁ Δεῖνα καὶ τὰ τέκνα αὐτοῦ»· 2) μετ' αἰτιατικῆς, σημαίνει δὲ τὸ κατόπιν χρονικῶς καὶ τοπικῶς, ἀντίθ. *πρό*: «μετὰ μεσημβρίαν», «μετὰ τὰς ἑορτάς», «μετὰ τὰ Χριστούγεννα», «μετὰ τὴν Θεσσαλονίκην κατελήφθησαν τὰ Ἰωάννινα», «μετὰ τὴν Ἑλλάδα ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν», «μετὰ τὴν ναυμαχίαν», «μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον»· || «μετὰ Χριστὸν» μετὰ τὴν γέννησιν τοῦ Χριστοῦ: «κατὰ τὸν Β' μετὰ Χριστὸν αἰῶνα» καὶ βραχυγραφικῶς μ. Χ.· || ἄνευ ὀνόματος ὡς ἐπίρρημα, κατόπιν, ὕστερον: «θὰ 'ρθω μετά», «πρῶτα ἔφαγε καὶ μετὰ κοιμήθη»· || καί: «μετὰ ἀπὸ μᾶς θὰ 'ρθῇ σὲ σᾶς», «ἐγὼ θὰ φύγω μετὰ ἀπὸ σένα»· ἡ ἐπιρρηματικὴ χρῆσις τῆς *μετὰ* εἶναι ἤδη παρ' Ὁμήρῳ: «πρόσθε μὲν ἱππῆες, μετὰ δὲ νέφος εἵπετο πεζῶν» (Ἰλ. Ψ, 133), ἀλλ' ἡ νεοελληνικὴ εἶναι ἀσχέτος πρὸς ἐκείνην· εἶναι νεωτέρα μετάστασις ἐκ τοῦ ἐμπροθέτου προσδιορισμοῦ.

Ἐν συνθέσει συνήθως σημαίνει: τὸ ὕστερον: *μετακάρπιον*, *μεθέορτα*, *μεθαύριον*, *μεταπολεμικός*· || μετοχὴν καὶ μετάληψιν: *μεταλαμβάνω*, *μετέχω*, *μετοχή*, *μετάδοσις*· || μεταβολήν: *μεταγγίζω*, *μετατοπίζω*, *μετακινῶ*, *μετανοῶ*, *μεταβιβάζω*, *μεταπείθω*, *μεταπολίτευσις*· || ἐπανάληψιν (ὑπὸ τὴν σημασίαν ταύτην ἡ πρόθεσις λαμβάνει τὴν μορφὴν *ματά*) *ματαλέω*, *ματακάμνω*, *ματαέρχομαι*, *ματαφεύγω*, *ματακλαίω*·

Digitized by Google

ἐνίοτε δὲ λυομένης τῆς συνθέσεως: «δὲν τὸ κάμνω μάτα», «δὲν κλαίω μάτα» κτλ. Β. Φ.

—**μετα-ἑνώσεις** *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὡς τοιαῦται χαρακτηρίζονται ἐν τῇ ὀργανικῇ χημείᾳ τὰ διπαράγωγα ἐκεῖνα τοῦ βενζολίου, εἰς ἃ οἱ δύο ἀντικαταστάται κατέχουσι τὴν 1,3 θέσιν, ἥτις εἶναι ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν 1,5. Αἱ *μετα-ἑνώσεις* εἶναι ἰσομερεῖς πρὸς τὰς ἀντιστοίχους *ὀρθο-ἑνώσεις* καὶ *πάρα-ἑνώσεις* (βλ. λ.). Σ. Γ.

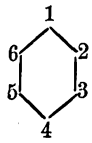

**μεταβάζω**, ἀντὶ *ματαβάζω*· δημοτ., θέτω, βάλλω πάλιν, ἄλλως *ξαναβάζω*.

**μεταβαίνω**, *ἀόρ. μετέβην*· πηγαίνω εἴς τι μέρος: «μεταβαίνω εἰς τὴν πατρίδα μου, — εἰς τὴν Εὐρώπην», «μετέβη εἰς τὴν θέσιν του»· || μεταφ., μετάγομαι, μεταφέρομαι, νοερῶς: «μεταβαίνομεν εἰς ἕτερον ζήτημα, — εἰς τὸ ἀκόλουθον κεφάλαιον»· || «μεταβαίνομεν εἰς τὴν ἡμερησίαν διάταξιν» φρ. συνήθης εἰς τὰς βουλάς, ὅταν μετὰ γενικὴν συζήτησιν ἢ ἐπερωτήσεις ἄρχεται ἡ συζήτησις τῶν ἀναγραφομένων νομοσχεδίων.

**μεταβάλλω**, *ἀόρ. μετέβαλον—μετεβλήθην, παθ. μετοχ. μεταβεβλημένος*· ἀλλάσσω, μετατρέπω: «μεταβάλλω γνώμην, —σχέδιον, — διαγωγήν, — κατεύθυνσιν»· || *παθ. μεταβάλλομαι*· μεταβάλλω γνώμην, μετανοῶ: «εἶμαι πάντοτε ὁ αὐτὸς καὶ οὐδέποτε μεταβάλλομαι»· || καθόλου, μετατρέπομαι, ἀλλάσσω μορφήν, σχῆμα κτλ., ἀλλοιοῦμαι: «μετεβλήθη τὸ χρῶμά του», «τὸ ὕδωρ μετεβλήθη εἰς πάγον».

**μεταβάνι** (τό)· ἰδιωμ. Μεσολογγ., τὸ πήδημα τῶν ψαριῶν εἰς τὰ τζένια κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ ψαρεύματος τῶν μπαφῶν. Χ. Γ. Ε.

**μεταβαπτίζω**· βαπτίζω ἐκ νέου, μεταβάλλω διὰ νέου βαπτίσματος, κοιν. *ξαναβαπτίζω*.

**μετάβασις**, —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταβαίνειν: «μετάβασις εἰς Ἀθήνας, — εἰς Εὐρώπην»· || μεταφ. «μετάβασις εἰς ἕτερον ζήτημα,— εἰς τὴν ἡμερησίαν διάταξιν».

—*[Κανον. Δίκ.]* Βλ. λ. *μετάθεσις ἐπισκόπων*.

—*[Ὁπλομ.]* *Μετάβασις* καλεῖται ἡ κατὰ τὴν συμβολὴν ἢ τὴν ἄσκησιν ταχεῖα προχώρησις ἢ ὑποχώρησις κατὰ δύο βήματα δι' ὀρθώσεως ἐμπρὸς ἢ ὀπίσω. Χρησιμοποιοῦμεν τὴν μετάβασιν ἀντὶ τῶν βηματισμῶν διὰ τὴν ταχυτέραν προχώρησιν ἢ ὑποχώρησιν, προσβάλλοντες ἀτάκτως ὑποχωροῦντα ἀντίπαλον ἢ ὑποχωροῦντες ταχέως στενοχωρούμενοι ὑπὸ τούτου. Τ. Ι. Κ.

**μεταβατικός**, —ή, —όν· ὁ ἁρμόδιος νὰ μεταβαίνῃ ἀπὸ τόπου εἰς τόπον: «μεταβατικὰ ἀποσπάσματα» τὰ αὐτοδιοίκητα καὶ ἀπὸ τόπου εἰς τόπον μεταβαίνοντα· || «μεταβατικὴ διάταξις» διάταξις ἐν νόμῳ ἢ ἐν διατάγματι, ἀποβλέπουσα εἰς τὸν κανονισμὸν ζητήματος προσωρινοῦ ἢ ἐκτάκτου, δηλαδὴ διάταξις μὴ ἀποτελοῦσα μέρος τοῦ ὀργανικοῦ συνόλου· || «*μεταβατικὰ ῥήματα*» (βλ. λ.)· || «μεταβατικοὶ σύνδεσμοι» σύνδεσμοί τινες δηλοῦντες ἁπλῶς μετάβασιν τοῦ λόγου εἰς νέον νόημα, ζήτημα, κεφάλαιον. Τοιοῦτοι εἶναι ἐν μὲν τῇ ἀρχαίᾳ Ἑλληνικῇ οἱ *καί, ἀ δέ, νῦν δέ, εἶτα, οὕτως, τοίνυν, οὖν* (= δέ), *ἀλλά, δὴ* (οἱ τελευταῖοι μετ' ἐλαφρᾶς ἀποχρώσεως ἀντιθέσεως, ἀκολουθίας), ἐν δὲ τῇ νέᾳ Ἑλληνικῇ οἱ *καί, τώρα, λοιπόν, ἔπειτα, ἔτσι*. — Ἐπίρρ. **μεταβατικῶς**. Β. Φ.—Σ. Τ.

— **μεταβατικὰ ῥήματα**. Καλοῦνται οὕτω τὰ ῥήματα τὰ δηλοῦντα ἐνέργειαν μεταβαίνουσαν εἰς τὸ ἀντικείμενον. Ὡς ἐκ τούτου τὰ μεταβατικὰ ῥήματα εἶναι διαθέσεως ἐνεργητικῆς. Μεταβατικά τινα ῥήματα λαμβάνονται καὶ ὡς ἀμετάβατα, π. χ. ἔχω τι—ἔχω καλῶς, τελευτῶ τὸν βίον—τελευτῶ, προσέχω τὸν νοῦν—προσέχω, ἰδίᾳ εἰς τὰ συντιθέμενα μετὰ προθέσεως, βάλλω λίθον, εἰσβάλλω εἰς τὴν χώραν, ἐκβάλλει ὁ ποταμός, καὶ τἀνάπαλιν βαίνω—διαβαίνω τὸν ποταμόν. Ἐν τῇ νέᾳ Ἑλληνικῇ ὡσαύτως τὰ μεταβατικὰ λαμβάνονται καὶ ὡς ἀμετάβατα, ἀνάβω τὴ φωτιά,—ἀνάβει ἡ φωτιά, ἀρχίζω τὸν πόλεμον,—ἀρχίζει ὁ πόλεμος, καὶ τἀνάπαλιν, ἀναβαίνω,—ἀναβαίνω τὴ σκάλα. Καθόλου καὶ εἰς τὴν ἀρχαίαν καὶ εἰς τὴν νέαν Ἑλληνικὴν συχνὴ εἶναι ἡ μετάστασις μεταβατικοῦ εἰς ἀμετάβατον καὶ τἀνάπαλιν, καθ' ὅσον ἡ παρελείφθη ὡς εὐνόητον διὰ τὴν συχνὴν χρῆσιν τὸ ἀντικείμενον (τελευτῶ—τὸν βίον), ἢ ἡ προσοχὴ στρέφεται μόνον εἰς τὴν πρᾶξιν καθ' ἑαυτήν (ἀρχίζω=κάμνω ἀρχήν) ἢ μεταβάλλεται ἡ σημασία (βγαίνω—βγαίνω τὰ ζῶα — ἐξάγω). Σ. Τ.

— **μεταβατικὴ κίνησις** *[Ἀστρον.]*. Ἡ κίνησις οὐρανίου σώματος, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας φαίνεται τοῦτο μεταβάλλον θέσιν μεταξὺ τῶν ἀστέρων καὶ διαγράφον ὡρισμένην τινὰ τροχιὰν ἐπὶ τῆς οὐρανίου σφαίρας ἐντὸς χρονικοῦ τινος διαστήματος.

Συνεπείᾳ τῆς μεταβατικῆς κινήσεως τῆς Γῆς φαίνεται ὁ Ἥλιος μεταβαίνων ἀπὸ ζῳδίου εἰς ζῴδιον καὶ ἐντὸς ἑνὸς ἔτους διαγράφων τὴν ἐκλειπτικὴν κατὰ τὴν ὀρθὴν φοράν. Ὁμοίως καὶ ἡ Σελήνη μεταβάλλει συνεχῶς θέσιν ἐπὶ τῆς οὐρανίου σφαίρας ἐν συγκρίσει πρὸς τοὺς ἀπλανεῖς, ἀλλ' ἡ κατὰ μῆκος μέση κίνησις αὐτῆς ἐντὸς μιᾶς μέσης ἡμέρας ἀνέρχεται εἰς 33' περίπου καθ' ὥραν, ἤτοι εἶναι 13 φορὰς περίπου μεγαλυτέρα τῆς τοῦ Ἡλίου (13° 11'). Ἐπομένως εἶναι λίαν αἰσθητὴ καὶ εἰς τὸν ἄοπλον ἔτι ὀφθαλμόν, καθότι εἶναι ὀλίγον τι μεγαλυτέρα τῆς φαινομένης διαμέτρου αὐτῆς. Συνεπείᾳ τῆς τοιαύτης κινήσεως αὐτῆς ἡ Σελήνη φαίνεται διαγράφουσα ἐντὸς μηνὸς κατὰ τὴν ὀρθὴν φορὰν μέγιστον κύκλον ἐπὶ τῆς οὐρανίου σφαίρας, κείμενον ἐξ ὁλοκλήρου ἐντὸς τῆς ζῳδιακῆς ζώνης, ἤτοι μὴ ἀπέχοντα πολὺ τῆς ἐκλειπτικῆς.

Μεταβατικὴν κίνησιν ἔχουσιν ἐπίσης καὶ οἱ πλανῆται. Ἐξ αὐτῶν οἱ κατώτεροι φαίνονται κυμαινόμενοι ἑκατέρωθεν τοῦ Ἡλίου μετὰ ταχύτητος ὅμως μείζονος ὅταν φέρωνται πρὸς Δ. ἢ ὅταν ἀπομακρύνωνται πρὸς Α. αὐτοῦ. Ὡς ἐκ τῆς τοιαύτης κινήσεως ὁ Ἑρμῆς καὶ ἡ Ἀφροδίτη ἄλλοτε φαίνονται ὡς πρωϊνοὶ ἀστέρες, ἤτοι πρὸ τῆς ἀνατολῆς τοῦ Ἡλίου, καὶ ἄλλοι ὡς ἑσπερινοί, ἤτοι μετὰ τὴν δύσιν αὐτοῦ. Ἐν συγκρίσει πρὸς τοὺς ἀπλανεῖς ἡ κίνησις τῶν δύο τούτων πλανητῶν εἶναι πολύπλοκος καὶ ἀνώμαλος, καθότι ἀκολουθεῖ ἄλλοτε τὴν ὀρθὴν φορὰν καὶ ἄλλοτε τὴν ἀνάδρομον. Τὸ εὖρος τῆς περὶ τὸν Ἥλιον κυμάνσεως ἀνέρχεται διὰ μὲν τὸν Ἑρμῆν εἰς 18°—28°, διὰ δὲ τὴν Ἀφροδίτην εἰς 45°—49°, ὁ δὲ χρόνος μιᾶς πλήρους κυμάνσεως, ἤτοι τὸ διάστημα μεταξὺ δύο διαδοχικῶν μεγίστων ἀνατολικῶν ἀποχῶν, εἶναι διὰ μὲν τὸν πρῶτον 106—130 ἡμέραι, διὰ δὲ τὴν δευτέραν 584 ἡμέραι περίπου.

Προκειμένου περὶ τῶν ἀνωτέρων πλανητῶν, οὗτοι κινοῦνται πάντοτε πρὸς δυσμὰς τοῦ Ἡλίου, μεσουρανοῦντες ἀπὸ ἡμέρας εἰς ἡμέραν ἐνωρίτερον, ἐν σχέσει ὅμως πρὸς τοὺς ἀπλανεῖς φέρονται ἐπὶ τῆς οὐρανίου σφαίρας ἄλλοτε μὲν κατὰ τὴν ὀρθὴν καὶ ἄλλοτε κατὰ τὴν ἀνάδρομον. Συνεπείᾳ τῆς τοιαύτης ἀλλαγῆς φορᾶς οἱ ἀνώτεροι, ὅπως καὶ οἱ κατώτεροι, πλανῆται εἰς ὡρισμένα σημεῖα τῆς τροχιᾶς των, τὰ ὁποῖα καλοῦνται στηριγμοί, φαίνονται ἱστάμενοι (βλ. *πλανῆται*). Σ. Π.

— **μεταβατικὸν ἀπόσπασμα** *[Στρατ.]*. Καλεῖται οὕτω μικρὸν τμῆμα ἐνόπλου στρατεύματος (χωροφυλακῆς ἢ πεζικοῦ), περιερχόμενον τὴν ὕπαιθρον χώραν πρὸς ἐκτέλεσιν ὑπηρεσίας τῆς δημοσίας ἀσφαλείας, π. χ. καταδίωξιν λῃστῶν, φυγοδίκων κλπ. Ν. Θ. Κ.

**μεταβάφω**· ἀντὶ *ματαβάφω*· δημοτ., βάφω ἐκ νέου, ξαναβάφω.

**μεταβιβάζω**, *ἀόρ. μετεβίβασα — μετεβιβάσθην, παθ. μετχ. δημοτ. μεταβιβασμένος*· κάμνω νὰ μεταβῇ τις εἰς ἄλλο μέρος, μεταφέρω, μετακομίζω: «μεταβιβάζω τὸ φορτίον, — τὰς ἀποσκευάς»· || μεταφ. «μεταβιβάζω τὴν διαταγήν, — τὴν παραγγελίαν», ἄλλως *διαβιβάζω*· || «μεταβιβάζω τὴν ἀπαίτησιν» ὑποκαθιστῶ ἄλλον ἀντ' ἐμοῦ εἰς τὸ δικαίωμα ἀπαιτήσεως, ἐκχωρῶ τὰ δικαιώματά μου· ὁμοίως: «μεταβιβάζω συναλλαγματικήν, — γραμμάτιον».

— *[Ἐμπορ.]* Ὁ ὅρος *μεταβιβάζω* εἶναι ἐν χρήσει ἐμπορικῶς ἐπὶ κινητῶν ἀξιῶν κυρίως, ἐν τῇ σημασίᾳ τῆς δι' ἁπλῆς ὀπισθογραφήσεως ἐκχωρήσεως εἰς ἕτερον τοῦ ἐκ τοῦ τίτλου ἀπορρέοντος δικαιώματος (βλ. *κινηταὶ ἀξίαι, συναλλαγματική*). Α. Λ.

**μεταβιβάσιμος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μεταβιβασθῇ: «μεταβιβάσιμος ἀπαίτησις».

**μεταβίβασις**, —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταβιβάζειν, μεταφορά: «μεταβίβασις ἀπαιτήσεως, — συναλλαγματικῆς, — γραμματίου, — χρεογράφων».

— *[Νομ.]* *Μεταβίβασις* εἶναι ἐν γένει ἡ πρᾶξις, δι' ἧς μεταφέρει τις τὴν κατοχήν του ἐπί τινος πράγματος, τὰ δικαιώματα ἢ τὰς ἀγωγὰς αὐτοῦ εἰς ἕτερον πρόσωπον. Ἡ λέξις μεταβίβασις ἔχει τὴν ἔννοιαν τῆς ἐκχωρήσεως, ὅταν δι' αὐτῆς ἓν πρόσωπον ἐκχωρῇ νομίμως μίαν ἀπαίτησιν ἢ ἓν δικαίωμα εἰς τρίτον. Δύναταί τις νὰ μεταβιβάσῃ ἓν δικαίωμα ἢ μίαν ἀγωγὴν μεμονωμένως, ὡς ἐπίσης καὶ μίαν ὁμάδα δικαίων ἢ ἀγωγῶν συνολικῶς.

Πᾶσαι αἱ ἀπαιτήσεις καὶ ἀγωγαί, πάντα τὰ δικαιώματα, ἅτινα ἀπορρέουσιν ἔκ τινος προγενεστέρας συμβάσεως, δύνανται νὰ καταστῶσιν ἀντικείμενον μεταβιβάσεως, ἐφόσον τὰ δίκαια ταῦτα δὲν εὑρίσκονται ἐκτὸς τοῦ ἐμπορίου. Κληρονομίαι μήπω ἐπαχθεῖσαι δὲν δύνανται νὰ ἀποτελέσουν τὸ ἀντικείμενον μεταβιβάσεως, οὐδὲ ἀγωγαὶ ἀφορῶσαι εἰς τὴν προσωπικὴν κατάστασιν ἑνὸς ἀτόμου ἢ δικαιώματα συνδεόμενα ἀποκλειστικῶς πρὸς τὸ πρόσωπον τοῦ δικαιούχου. Μ. Μ. Κ.

— *[Στρατ.]* Βλ. λ. *διαβιβάσεις*.

— **μεταβίβασις κληρονομίας**. Διὰ τῆς ἀποκτήσεως τῆς κληρονομίας ἡ περιουσία τοῦ τελευτήσαντος καθίσταται ἰδία τοῦ κληρονόμου, καὶ ὡς τοιαύτη διὰ τοῦ θανάτου αὐτοῦ μεταβαίνει εἰς τοὺς ἑαυτοῦ κληρονόμους. Τοὐναντίον ἡ ἐπαχθεῖσα μόνον, ἀλλὰ μήπω ἀποκτηθεῖσα κληρονομία δὲν μεταβαίνει εἰς τοὺς κληρονόμους τοῦ εἰς ὃν ἐπήχθη, διότι τὸ ἐκ τῆς κλήσεως δικαίωμα εἶναι κατ' ἐξοχὴν προσωπικὸν δικαίωμα. Τῆς ἀρχῆς ὅμως ταύτης ὑπάρχουσιν ἐξαιρέσεις, ἐπὶ τῶν περιπτώσεων δὲ τούτων λέγεται ὅτι ὑπάρχει *μεταβίβασις* (transmissio) *κληρονομίας*.

1) Ἡ εὐρυτέρα ἐξαίρεσις ὁρίζει ὅτι δύνανται οἱ κληρονόμοι τοῦ κληθέντος νὰ ἀποκτήσωσιν ἀντ' ἐκείνου τὴν κληρονομίαν εἰς πᾶσαν περίπτωσιν, καθ' ἣν δὲν διέρρευσεν ἔτος ἀφ' ὅτου ὁ καλούμενος ἔλαβε γνῶσιν τῆς κλήσεως.

2) Δευτέρα ἐξαίρεσις ἀναφέρεται εἰς τὴν περίπτωσιν, καθ' ἣν κατιόντες ἐγκατεστάθησαν ὑπὸ ἀνιόντων καὶ ἀπέθανον πρὸ τῆς ἀνοίξεως τῆς διαθήκης· ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ἡ ὑπ' αὐτῶν μὴ κτηθεῖσα κληρονομία δύναται νὰ ἀποκτηθῇ ὑπὸ τῶν κατιόντων αὐτῶν.

3) Ἡ τρίτη ἐξαίρεσις ἀναφέρεται εἰς τὴν περίπτωσιν, καθ' ἣν ὁ λόγος δι' ὃν ὁ κληθεὶς δὲν ἀπέκτησε τὴν κληρονομίαν εἶναι λόγος ἀποκαταστάσεως εἰς ἀκέραιον (λ. χ. διὰ παραμελήσεως τῆς προθεσμίας, διότι ἡ ὑπεισέλευσις ἔπρεπε νὰ γίνῃ ἐντὸς προθεσμίας ἢ ὁ κληρονόμος ἦτο ἀπὼν ἕνεκα δημοσίων ὑποθέσεων, ἐν τῷ μεταξὺ δὲ καλεῖται εἰς κληρονομίαν καὶ ἀποθνήσκει χωρὶς νὰ λάβῃ γνῶσιν τῆς ἐπαγωγῆς, ἐν χρόνῳ καθ' ὃν ἠδύνατο νὰ ὑπεισέλθῃ). Ἐν τοῖς θέμασι τούτοις παρεχωρήθη εἰς τοὺς κληρονόμους τοῦ καλουμένου τὸ δικαίωμα νὰ ἀποκτήσωσι, διὰ τῆς εἰς ἀκέραιον ἀποκαταστάσεως, τὴν εἰς ἐκεῖνον ἐπαχθεῖσαν κληρονομίαν.

4) Τέλος ὑπάγεταί πως ἐνταῦθα καὶ ὁ κανών, ὅτι τὸ δικαίωμα προσβολῆς τοῦ κύρους διαθήκης ἕνεκα παραβιάσεως τῆς νομίμου μοίρας μεθίσταται ἐκ τοῦ ἀδικηθέντος κατιόντος εἰς τοὺς κατιόντας αὐτοῦ. Μ. Μ. Κ.

— **μεταβίβασις κυριότητος**. Εἷς τῶν τρόπων τῆς κτήσεως τῆς ἰδιοκτησίας εἶναι καὶ ἡ μεταξὺ ζώντων ἢ αἰτίᾳ θανάτου μεταβίβασις τῆς κυριότητος. Ἡ αἰτίᾳ θανάτου μετάθεσις τῆς κυριότητος ἐπέρχεται διὰ κληρονομίας. Μεταξὺ ζώντων, τῶν μὲν κινητῶν ἡ κυριότης μεταβιβάζεται διὰ *παραδόσεως* (βλ. λ.), τῶν δὲ ἀκινήτων διὰ τῆς μεταγραφῆς τῆς περὶ μεταβιβάσεως τῆς κυριότητος δικαιοπραξίας, ἥτις δέον νὰ συντάσσηται συμβολαιογραφικῶς (βλ. λ. *μεταγραφή*).

Ἡ κυριότης τῶν ἀνωνύμων δημοσίων χρεογράφων ἢ μὴ ὀνομαστικῶν μετοχῶν ἀνωνύμων ἑταιρειῶν ἢ ὁμολογιῶν τραπεζῶν καὶ τοκομεριδίων αὐτῶν μεταβιβάζεται δι' ἁπλῆς παραδόσεως. Ὁ καλῇ τῇ πίστει κάτοχος τῶν τίτλων τούτων λογίζεται κύριος αὐτῶν, μὴ ἐπιτρεπομένης ἀνταποδείξεως.

Οἱ ὀνομαστικοὶ τίτλοι μεταβιβάζονται διὰ τῆς προσηκούσης ἐγγραφῆς τῆς μεταθέσεως τῆς κυριότητος ἐν τοῖς βιβλίοις τοῦ ἐκδόντος αὐτοὺς ἱδρύματος ἢ νομικοῦ προσώπου καὶ τῆς ἐκδόσεως ἑτέρων τίτλων εἰς ὄνομα τοῦ νέου κομιστοῦ. Περὶ μεταβιβάσεως τῆς κυριότητος τῶν πλοίων ὑπάρχουσιν ἐπίσης ἐξαιρετικαὶ διατάξεις, διότι ὁ τίτλος τῆς κτήσεως τῆς κυριότητος τοῦ πλοίου δέον νὰ ἐγγράφηται ἐν τῷ νηολογίῳ. Ἡ μεταβίβασις τῶν ἐνοχῶν, αἱ ὁποῖαι δὲν παρέχουσιν ἐμπράγματον δικαίωμα, ἀλλὰ γεννῶσι μόνον προσωπικὸν δεσμὸν μεταξὺ τῶν ἐνδιαφερομένων, γίνεται δι' ἐκχωρήσεως, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας παραχωρεῖται εἰς ἕτερον ἡ ἀρχικὸς δικαιοῦχος πρόσωπον ἡ ἐξουσία τῆς ἐξασκήσεως τῆς ἐκ τῆς ἐνοχῆς παραχθείσης ἀπαιτήσεως (βλ. λ. *ἐκχώρησις*). Μ. Μ. ΚΑΤΙΝΑΚΗΣ

**μεταβιβαστικός**, —ή, —όν· ὁ σημαίνων μεταβίβασιν: «μεταβιβαστικὰ ῥήματα» (βλ. κατ.).

—**μεταβιβαστικὰ ῥήματα**. Καλοῦνται *μεταβιβαστικὰ* (verba causativa) τὰ ῥήματα, διὰ τῶν ὁποίων δηλοῦται ὅτι οὐχὶ τὸ ὑποκείμενον, ἀλλ' ἄλλος τις (κατ' ἐντολὴν καὶ παραγγελίαν τοῦ ὑποκειμένου) ἐκτελεῖ ἢ ἐξετέλεσε τὸ ὑπὸ τοῦ ῥήματος σημαινόμενον. Οὕτως, ἐνῷ διὰ τῶν ἐνεργητικῶν μεταβατικῶν ῥημάτων *τρώγω* (ψωμὶ κλπ.), *πίνω* (νερὸ κλπ.) δηλοῦται ὅτι αὐτὸ τὸ ὑποκείμενον ποιεῖ τὸ ὑπὸ τῶν ῥημάτων τούτων δηλούμενον, ἀντιθέτως, διὰ τῶν ἀντιστοίχων μεταβιβαστικῶν ῥημάτων *ταγίζω* καὶ *ποτίζω* δηλοῦμεν ὅτι τὸ ὑποκείμενον τοῦτο δὲν ἐκτελεῖ αὐτὸ τὸ ἴδιον, ἀλλὰ γίνεται αἴτιον ὅπως ἐκτελεσθῇ ὑπ' ἄλλου τινὸς τὸ ὑπὸ τῶν ῥημάτων τούτων δηλούμενον, δι' ὃ *ταγίζω*=κάμνω ἄλλον νὰ φάγῃ, δίδω εἰς ἄλλον νὰ φάγῃ, *ποτίζω*=κάμνω ἄλλον ἢ δίδω εἰς ἄλλον νὰ πίῃ. Τὰ μεταβιβαστικὰ ῥήματα διαφέρουν ἀπὸ τὰ λεγόμενα «μέσα διάμεσα» κατὰ τὸ ὅτι τῶν πρώτων ἡ χρῆσις εἶναι καὶ εὐρυτέρα καὶ ποικιλωτέρα, πολλάκις δὲ δηλοῦται δι' αὐτῶν ὅτι καὶ τὸ ὑποκείμενον μετέχει τῆς διὰ τοῦ ῥήματος δηλουμένης ἐνεργείας (λ. χ. κάθισε τὸ παιδὶ =βάλε τὸ παιδὶ νὰ κάτσῃ, δηλαδὴ οὐχὶ ἁπλῶς διάταξε τὸ νὰ κάτσῃ, ἀλλὰ καὶ βοήθησε τὸ πρὸς τοῦτο) πλὴν τούτου τὰ διάμεσα ῥήματα δὲν εἶναι μεταβιβαστικῶν καὶ κατὰ τοῦτο, ὅτι ἡ διὰ τῶν πρώτων δηλουμένη ἐνέργεια τελεῖται ἐπ' ὠφελείᾳ τοῦ ὑποκειμένου (οἰκοδομοῦμαι οἶκον = οἰκοδομῶ ἐμαυτῷ, πρὸς ὠφέλειάν μου, διὰ τῶν οἰκοδόμων κ. οὕ. κ.).

Ἡ μεταβιβαστικὴ ἔννοια τοῦ ῥήματος εἰς ἄλλας μὲν γλώσσας ἐδηλώθη δι' ἰδίου ῥηματικοῦ τύπου, σχηματιζομένου διὰ τοῦ ἐπιθήματος - *ay* - μὲν εἰς



Digitized by Google

τὴν Ἰνδικὴν (bharati=φέρει—bhar-ay-ati=κάμνει ἄλλον νὰ φέρῃ κ. οὕ. κ.), - *dir* - δὲ (κατόπιν συμφώνου) ἢ - *t* - (κατόπιν φωνήεντος) εἰς τὴν Τουρκικήν: yapmak=ποιεῖν—yap-dir-mak=κάμνω, βάζω ἄλλον νὰ κάμῃ, sevmek = ἀγαπᾶν — sev-dir-mek = βάζω ἄλλον ν' ἀγαπήσῃ, okoumak = ἀναγινώσκειν — okou-t-mak = βάζω ἄλλον νὰ διαβάσῃ κ. οὕ. κ. Εἰς ἄλλας ὅμως γλώσσας, ὅπως λ. χ. εἰς τὴν Ἑλληνικὴν καὶ τὴν Λατινικήν, ἡ μεταβιβαστικὴ ἔννοια δὲν ἐδηλώθη δι' ἰδίων τύπων καὶ ἐπιθημάτων, ἀλλ' ἢ ἔμεινε γλωσσικῶς ἀδήλωτος καὶ ἐννοεῖται ἐκ μόνων τῶν συμφραζομένων (πρβλ. τὸ παρ' *Ὁμήρῳ* «('Αγαμέμνων) νῆα θοὴν ἔλαδε προέρυσσε», τὸ παρὰ *Ξενοφῶντι* «Κῦρος τὸν παράδεισον ἐξέκοψε καὶ τὰ βασίλεια κατέκαυσεν» κλ.) ἢ ἐδηλώθη (ἀτελέστερον πάντοτε) κατὰ ποικίλους τρόπους (ἐλπίζω—ἐλπιδοποιῶ = κάμνω ἄλλον νὰ ἐλπίζῃ, παρέχω εἰς ἄλλον ἐλπίδας, ὁρμῶ—παρορμῶ (ἄλλον τινά), φοβοῦμαι—φοβερίζω, κοιμῶμαι—κοιμίζω κλ., ντρέπομαι—ντροπιάζω=κάμνω ἄλλον νὰ ντραπῇ κ.οὕ.κ.). Εἰς τὴν Τσακωνικὴν παρὰ τὰ ῥήματα περνοῦ, ψοφοῦ (περνῶ, ψοφῶ) κ.λ. λέγονται καὶ τὰ μετὰ μεταβιβαστικῆς ἐννοίας: περαΐχου=διαβιβάζω, κάμνω ἄλλον νὰ περάσῃ, ψοφαΐχου=κάμνω (ζῷόν τι) νὰ ψοφήσῃ, γίνομαι αἴτιος νὰ ψοφήσῃ κ.λ. Ἐνίοτε ἡ μεταβιβαστικὴ ἔννοια δηλοῦται περιφραστικῶς: «τοὺς χρηστοὺς πλουτῆσαι ποιήσω», «ἥτις μ' ἐπῆρε γῆμαι τὴν σὴν μητέρα» κλ., «κλαίειν κελεύω» κλ., εἰς δὲ τὴν νέαν Ἑλληνικὴν «ἂν δὲ μὲ θέλῃς νὰ περνῶ ἀπὸ τὴ γειτονιά σου, βάλε νὰ μὲ σκοτώσουνε τὰ γειτονόπουλά σου» κλ. [Βλ. *Γ. Χατζιδάκι*, «Περὶ τῆς μεταβιβαστικῆς διαθέσεως τῶν ῥημάτων» εἰς τὰ Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν, τόμ. Β' (1927), τεῦχ. 1ον, σελ. 16 κ. ἑξ.] Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

**μεταβιῶ** (*—όω*)· ζῶ ἔπειτα, ὕστερον.

**μεταβλαστάνω,** *ἀόρ. μετεβλάστησα·* βλαστάνω μεταβεβλημένος, ξαναβλαστάνω ὑπὸ ἄλλην μορφήν.

**μεταβλητικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἱκανός, ὁ ἁρμόδιος νὰ φέρῃ μεταβολήν.

**μεταβλητός,** *—ή, —όν·* ὁ δυνάμενος νὰ μεταβληθῇ.

— *[Μαθημ.]* Διὰ τοῦ ὅρου *μεταβλητὴ* ἐννοεῖται συλλογικῶς ἡ διαδοχὴ διαφόρων τιμῶν

$$\alpha_1\ \alpha_2\ \alpha_3\ \alpha_4\ .\ .\ .\ \alpha_\nu$$

αἵτινες ἀνήκουν εἰς τὴν αὐτὴν ποσότητα. x. Ἐὰν αἱ ἀορίστου πλήθους τιμαὶ $\alpha_1$, $\alpha_2$ . . . $\alpha_\nu$ εἶναι ἴσαι, τότε ἡ x κατ' ἀντίθεσιν λέγεται *σταθερά*. Οὕτω ἐὰν ἐκ σημείου Σ τῆς διαμέτρου ΑΒ τῆς ἡμιπεριφερείας ΑΓΒ φέρωμεν εὐθείας $\Sigma\alpha_1$ $\Sigma\alpha_2$ $\Sigma\alpha_3$ κλπ., αἱ εὐθεῖαι αὗται εἶναι διάφοροι τὸ μῆκος, λέγομεν δὲ τότε ὅτι ἡ ἐκ τοῦ Σ ἐπὶ τὴν ἡμιπεριφέρειαν εὐθεῖα εἶναι *μεταβλητή*, ἐνῷ ἡ ἀκτὶς ΚΜ εἶναι σταθερά.

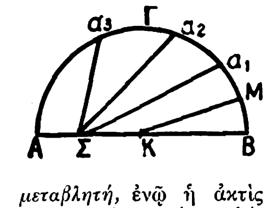


Ἡ μεταβλητὴ ποσότης λέγεται *ἀνεξάρτητος*, ἐὰν εἰς τὴν διαδοχὴν τῶν τιμῶν $\alpha_1$, $\alpha_2$ . . . $\alpha_\nu$ οὐδεὶς περιορισμὸς ὑφίσταται, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν μεταβλητήν, ἥτις ὁρίζεται ἐξ ἄλλης ἀνεξαρτήτου μεταβλητῆς καὶ διὰ τοῦτο δὲν δύναται νὰ λάβῃ οἱανδήποτε τιμήν· δηλαδὴ εἰς ταύτην ἡ διαδοχὴ τῶν τιμῶν ὑπόκειται εἰς περιορισμόν. Σημειωτέον ὅτι μόνον τὸ πλῆθος τῶν ἀνεξαρτήτων μεταβλητῶν ὁρίζεται, ὑπαρχούσης ἐλευθερίας εἰς τὴν ἐκλογὴν αὐτῶν (βλ καὶ λ. *ἀνεξαρτησία [Μαθημ.]*). Ν. Ε. Γ.

—*[Μετεωρ.]* Ὁ ὅρος *μεταβλητὸς* χρησιμοποιεῖται εὐρύτατα ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ, ἰδίᾳ ἐπὶ καιροῦ πρὸς δήλωσιν ὅτι μετὰ χρονικόν τι διάστημα ἐπίκειται ἡ μεταβολή του, ὅτι δηλαδὴ εἶναι καιρὸς ἄστατος. Θ. Θ. Φ.

— **μεταβλητοὶ** ***ἀστέρες*** *[Ἀστρον.]*. Ἀστέρες τῶν ὁποίων τὸ μέγεθος, ἤτοι ἡ φαινομένη λαμπρότης, δὲν παραμένει σταθερόν, ἀλλ' ὑπόκειται εἰς μεταβολὰς περιοδικὰς ἢ μὴ (βλ. *ἀστέρες*). Σ. Π.

**μεταβλητὸς** (ὁ) (Metabletus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 30 εἴδη κανθάρων ἀπαντώντων εἰς τὰς βορείους χώρας τῆς Εὐρώπης καὶ τὴν μεσημβρινὴν Ἀφρικήν. Οἱ μεταβλητοί, γενικῶς, ἔχουσι μικρὸν μέγεθος, σῶμα ἐπίμηκες, κεφαλὴν ἐπιμήκη καὶ τριγωνικήν, ἀπολήγουσαν εἰς ὀξύ, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, ῥύγχος, θώρακα κυπελλοειδῆ καὶ κοιλίαν τετραγωνικὴν κατὰ τὸ πρόσθιον αὐτῆς τμῆμα καὶ ἀπεστρογγυλωμένην κατὰ τὸ ἄκρον της. Ὁ χρωματισμός των εἶναι μελανὸς ἢ χαλκόχρους. Δ. Ν. Π.

**μεταβλητότης** *[Μετεωρ.]*. Ὁ ὅρος οὗτος χρησιμοποιεῖται ὑπὸ δύο διαφόρους σημασίας: α') Εἶναι συνώνυμος μὲ τὴν *μέσην ἀποχὴν* (écart moyen)· οὕτω π. χ. ἐν τῇ σειρᾷ τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων τῶν Ἀθηνῶν, ἐὰν ὑπολογίσωμεν δι' ἑκάστην ὥραν τῆς ἡμέρας, εἰς δεδομένον μῆνα, τὴν ἀποχὴν τῆς μέσης θερμοκρασίας τῆς ὥρας ταύτης ἀπὸ τοῦ γενικοῦ μέσου τῶν 24 ὡρῶν, ὁ μέσος ὅρος τῶν ἀποχῶν τούτων, ἀσχέτως σημείου θετικοῦ ἢ ἀρνητικοῦ, παρέχει τὴν μέσην ἀποχήν, τὴν ὁποίαν ὁ Dove πρῶτος καὶ οἱ μετ' αὐτὸν μετεωρολόγοι ἐκάλεσαν *μέσην μεταβλητότητα* (moyen variabilité). β') Ἐὰν γράψωμεν ἐν σειρᾷ τὴν μίαν κατόπιν τῆς ἄλλης ν+1 ἡμερησίους μέσους τῆς θερμοκρασίας διὰ ν+1 διαδοχικὰς ἡμέρας καὶ ἐὰν ὑπολογίσωμεν τὰς διαφορὰς μεταξὺ ἑκάστης θερμοκρασίας καὶ τῆς ἑπομένης, ὁ ἀριθμητικὸς μέσος τῶν ν τούτων ἀριθμῶν, ἀσχέτου σημείου, εἶναι ἡ μέση μεταβλητότης τῆς θερμοκρασίας διὰ τὴν περίοδον τῶν ν+1 διαδοχικῶν ἡμερῶν. Θ. Θ. Φ.

— **μεταβλητότης** ***κλιματικὴ*** *[Κλιματολ.]*. Κλάδος τῆς γενικῆς κλιματολογίας, ὅστις ἀσχολεῖται μὲ τὴν μεταβολὴν ἢ τὴν σταθερότητα τῶν κλιμάτων τῆς Γῆς· ἐξετάζει δηλαδὴ ποῖα εἶναι σήμερον τὰ κλιματολογικὰ στοιχεῖα καὶ ἂν εἶναι ἀπολύτως σταθερὰ ἢ μεταβλητά. Τοιαῦται φυσικαὶ παραλλαγαὶ οὔτε ἄγνωστοι, οὔτε σπάνιαι εἶναι σήμερον. Οὕτως οἱ παγετῶνες τῶν Ἄλπεων ἠλαττοῦντο σπουδαίως μέχρις ἐσχάτων, καὶ ἤδη αὐξάνουσι τοπικῶς· ἡ ἱστορία τῆς ἀμερικανικῆς λίμνης Bonneville δεικνύει πέντε διαφόρους φάσεις τοῦ κλίματος τοῦ τόπου ἀπὸ τῆς τελείας ξηρασίας μέχρι τῆς ἄκρας πολυομβρίας, καὶ ἐν γένει ἐκ τῆς μελέτης τῶν ὑδάτων διαφόρων λιμνῶν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐξάγεται τὸ συμπέρασμα ἐπανειλημμένων παραλλαγῶν τοῦ κλίματος. Ἡ μείωσις τῶν ὑδάτων τῆς κεντρικῆς Ἀσίας, ἡ παρατηρηθεῖσα ἐν τῇ ἀποξηράνσει τῶν λιμνῶν αὐτῆς, παρατηρεῖται ἤδη εἰς ἱκανὸν μέρος τῆς Εὐρώπης, ἐνεφανίσθη δὲ καὶ εἰς τὴν Ἀμερικήν. Ἡ λίμνη Σίρβα, ἀνακαλυφθεῖσα τῷ 1859 ὑπὸ τοῦ Λιβιγκστῶνος, ἔχουσα μῆκος 48 χλμ. καὶ πλάτος 15—25, ἐξηφανίσθη ἤδη ἐντελῶς, ἡ λίμνη Γκάμη, ἀνακαλυφθεῖσα ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ ἐρευνητοῦ, ἐξέλιπεν ὡσαύτως. Ὁ E. F. Gautier διασχίζων τὴν Σαχάραν μεταξὺ Ἀλγερίας καὶ Νίγηρος ἀπεκάλυψε τὴν ὕπαρξιν ἐξαφανισθέντος μεγάλου κατῳκημένου τμήματος, πιστεύεται δὲ ὅτι ἔλαβε χώραν ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ μία βαθμιαία ἐλάττωσις τῶν ὑδάτων καὶ ὅτι ἡ ἰσημερινὴ βροχερὰ ζώνη μετεκινήθη πάλιν πρὸς βορρᾶν, παρατηρουμένης αὐξήσεως τῆς βροχῆς. Ὅθεν κλιματικαὶ παραλλαγαὶ ἢ κυμάνσεις περὶ μέσην τινὰ κατάστασιν παρετηρήθησαν ἀσφαλῶς ἐπὶ πολλῶν σημείων ὅλων σχεδὸν τῶν ἠπείρων τῆς Γῆς. Ἐκ τῆς παρατηρήσεως διαφόρων φυτολογικῶν καὶ ζῳολογικῶν φαινομένων ἔν τινι τόπῳ δυνάμεθα νὰ κρίνωμεν ἐμμέσως περὶ τῆς σταθερότητος ἢ τῆς παραλλαγῆς τοῦ κλίματος τῆς χώρας. Οὕτω π. χ. ἐν Γαλλίᾳ, κατὰ τὸν Angot, ἡ καλλιέργεια τῆς ἀμπέλου ἔφθανεν ἄλλοτε μέχρι τῆς Πικαρδίας, ἐνῷ σήμερον δὲν ὑπερβαίνει σχεδὸν τὰ βόρεια τοῦ διαμερίσματος τοῦ Seine - Oise. Ἐπίσης διὰ τοιούτων ἐμμέσων μεθόδων ὁ Biot εὗρεν ὅτι ἡ θερμοκρασία τῆς Κίνας, περὶ τὸν παράλληλον 35°, δὲν μετεβλήθη ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος. Ὁ Arago φρονεῖ ὅτι κατὰ μέγα μέρος τὰ διάφορα κλίματα τῆς Γῆς δὲν ὑπέστησαν αἰσθητὰς μεταβολὰς ἀπὸ τῶν ἀρχαίων χρόνων μέχρι σήμερον. Ἡ σπουδὴ τῶν σχετικῶν παρατηρήσεων τῆς βλαστήσεως τῆς ἀμπέλου δεικνύει ὅτι τὸ κλῖμα τῆς Γαλλίας ὑπέστη μὲν περιοδικάς τινας μεταβολάς, ἀλλὰ κατὰ μέσον ὅρον ἔμεινε τὸ αὐτὸ ἀπὸ δεκατεσσάρων καὶ πλέον αἰώνων.

Κατὰ τὰς μελέτας τοῦ καθηγητοῦ Αἰγινήτου ἀνάλογα ἀποδεικνύονται καὶ διὰ τὴν Ἑλλάδα, διὰ τῆς παρατηρήσεως δὲ τῶν φαινομένων τῆς βλαστήσεως τοῦ φοίνικος κατὰ τοὺς ἀρχαίους καὶ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἀπέδειξεν ὅτι ἡ ἐτησία μέση θερμοκρασία τῶν Ἀθηνῶν δὲν μετεβλήθη οὔτε κατὰ ἕνα βαθμὸν ἐντὸς δύο καὶ ἡμισείας χιλιετηρίδων· διότι ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ τοῦ Θεοφράστου ὁ φοίνιξ φύεται καὶ καρποφορεῖ ἐν Ἀθήναις, ἀλλὰ δὲν ὡριμάζουσιν οἱ καρποί του· οἱ δάκτυλοι αὐτοῦ ἔχουσιν ἀνάγκην καὶ σήμερον, ὡς καὶ κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους, μικρᾶς ἀκόμη ποσότητος θερμότητος, ὅπως καταστῶσι μαλακοί, ἀρκετὰ σακχαρώδεις καὶ συνεπῶς εὐχάριστοι εἰς τὴν γεῦσιν. Τὸ αὐτὸ δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν καὶ περὶ τῆς Κύπρου. Ἐπίσης τὴν σταθερότητα τοῦ ἑλληνικοῦ κλίματος ἀπέδειξε τελευταῖον (1925) καὶ ὁ καθηγητὴς Μαριολόπουλος διὰ τῶν φαινομένων τῆς βλαστήσεως τοῦ σίτου, διὰ τὸν ὁποῖον ὑπάρχουσιν ἀκριβεῖς παρατηρήσεις ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἡσιόδου μέχρι σήμερον. Κατὰ τοὺς ἡσιοδείους χρόνους ἐν Βοιωτίᾳ ἡ σπορὰ τοῦ σίτου ἐγίνετο μεταξὺ τῆς 20 Ὀκτωβρίου καὶ τῆς 25 Νοεμβρίου, δηλαδὴ μεταξὺ τῆς πρωϊνῆς δύσεως τῶν Πλειάδων καὶ τοῦ Στέμματος, ὁ δὲ θερισμὸς ἤρχιζε κατὰ τὴν ἀνατολὴν τῶν Πλειάδων, ἤτοι τὴν 15 Μαΐου. Τὸ χρονικὸν διάστημα ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς σπορᾶς μέχρι τοῦ θερισμοῦ ἀνήρχετο εἰς ἑπτὰ μῆνας περίπου, καὶ σήμερον δέ, ἐκ διαφόρων στατιστικῶν τοῦ ὑπουργείου Ἐθνικῆς Οἰκονομίας συνάγεται ὅτι τὸ αὐτὸ χρονικὸν διάστημα χωρίζει τὴν σπορὰν καὶ τὸν θερισμὸν ἐν Βοιωτίᾳ. Κατὰ τὸν Partsch αἱ σημεριναὶ χρονολογίαι τῆς συγκομιδῆς τοῦ οἴνου καὶ τοῦ ἐλαίου ἐν Ἰταλίᾳ συμπίπτουσι πρὸς τὰς ἀρχαίας. Ὁμοίως καὶ ἐν Ἑλλάδι, ὡς γράφει ὁ Αἰγινήτης, αἱ ἐποχαὶ τοῦ τρυγητοῦ τῶν ἀμπελώνων καὶ τῆς συγκομιδῆς τοῦ ἐλαιοκάρπου διατηροῦνται αἱ αὐταὶ κατά τε τοὺς ἀρχαίους καὶ τοὺς νεωτέρους χρόνους, δεικνύουσαι τὴν σταθερότητα τοῦ κλίματος αὐτῆς. Πλὴν τῆς θερμομετρικῆς σταθερότητος τῆς Ἑλλάδος καὶ τὰ λοιπὰ κλιματικὰ στοιχεῖα, ὡς ὁ ἄνεμος, ἡ ὑγρασία, ἡ βροχή, παρέμειναν σταθερὰ μέχρι σήμερον. Παρὰ τὰς γνώμας ὅμως ταύτας, τὰς στηριζομένας ἐπὶ παρατηρήσεων καὶ στατιστικῶν δεδομένων, ὑπάρχουσι καὶ ἀντίθετοι θεωρίαι, καθ' ἃς τὸ ἑλληνικὸν κλῖμα μετεβλήθη ἀπὸ τῶν ἱστορικῶν χρόνων ἐπὶ τὸ θερμότερον καὶ ξηρότερον (βλ. λ. *Ἑλλάς*).

Ὁ ἐν Βέρνῃ καθηγητὴς Brückner, κατόπιν λεπτομερῶν ἐρευνῶν ὁλοκλήρου τοῦ θέματος τῶν κλιματικῶν μεταβολῶν, ἐπρότεινε μίαν τριακονταπενταετῆ περιοδικότητα εἰς τὴν θερμοκρασίαν καὶ τὴν βροχήν. Εἰς τὸν κύκλον, οὗτινος κατὰ μέσον ὅρον τὸ μῆκος ἰσοῦται πρὸς 35 ἔτη, παρατηροῦνται σειραὶ ἐτῶν, αἵτινες εἶναι κάπως ψυχρότεραι καὶ βροχερώτεραι, καὶ εἶτα σειραὶ ἐτῶν, αἵτινες εἶναι κάπως θερμότεραι καὶ ξηρότεραι· τὸ σύστημα εἴς τινας περιπτώσεις εἶναι 20 ἔτη καὶ εἰς ἄλλας 50. Τὸ μέσον διάστημα μεταξὺ δύο ψυχρῶν καὶ ὑγρῶν, ἢ θερμῶν καὶ ξηρῶν, περιόδων εἶναι περίπου 35 ἔτη. Τὸ μέσον εὖρος τῆς κυμάνσεως τῆς θερμοκρασίας ἐπὶ τῇ βάσει μεγάλου ἀριθμοῦ δεδομένων εἶναι ὀλίγον μικρότερον τῶν 2°, αἱ κυμάνσεις τῆς βροχῆς εἶναι περισσότερον ἐκπεφρασμέναι εἰς τὸ ἐσωτερικὸν παρὰ εἰς τὰς ἀκτάς, τὸ δὲ γενικὸν μέσον εὖρος ἰσοῦται πρὸς 12 % καὶ εἰς ἐξαιρετικὰς περιοχὰς πρὸς 24 %.

Ὁ κατωτέρω πίναξ δεικνύει τὰς χρονολογίας καὶ τοὺς χαρακτῆρας τῶν περιόδων τοῦ Brückner:

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Θερμαί: | 1746-1755 | 1791-1805 | 1821-1835 | 1851-1870 | — |
| Ξηραί: | 1756-1770 | 1781-1805 | 1826-1840 | 1856-1870 | — |
| Ψυχραί: | 1731-1745 | 1756-1790 | 1806-1820 | 1836-1850 | 1871-1885 |
| Ὑγραί: | 1736-1755 | 1771-1780 | 1806-1825 | 1841-1855 | 1871-1885 |

Ἡ θεωρία αὕτη τῆς περιόδου ἢ τοῦ κύκλου τῶν κλιματικῶν μεταβολῶν ἀπεκρούσθη ὑπὸ πολλῶν ἐπιστημόνων, ὡς μὴ ἀνταποκρινομένη πρὸς πραγματικὴν περιοδικότητα, διότι παρατηροῦνται μεταβολαὶ κατὰ χρονικὰ διαστήματα λίαν μεταβλητὰ καὶ ἄνευ μεγάλης κανονικότητος. Κατά τινας γεωφυσικούς, περὶ τὸν μεσαίωνα ἔληξεν ἡ περίοδος ἠπειρωτικοῦ κλίματος μετὰ πολὺ ψυχροῦ χειμῶνος καὶ θερμοῦ θέρους καὶ ἤδη ἐπικρατεῖ ἑτέρα, ἀντιστοιχοῦσα εἰς κλῖμα ἠπιώτερον ἢ μᾶλλον θαλάσσιον. Οὕτω λέγεται ὅτι ἡ Ἀδριατικὴ ἐπάγωσε κατὰ τοὺς χειμῶνας 859—860 καὶ 1234 εἰς τοιοῦτον βαθμόν, ὥστε ἔτρεχον ἐπ' αὐτῆς ἅμαξαι, κατὰ τὸν ΙΔ', ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνα πολλάκις ἐπάγωσεν ἡ Βαλτικὴ θάλασσα, κατὰ δὲ τὰ ἔτη 1608 καὶ 1621 καὶ αὐτὸς ὁ Βόσπορος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Δ. Αἰγινήτου*, Τὸ κλῖμα τῆς Ἑλλάδος.—*Julius Hann*, Handbuch der Klimatologie.—*W. Koppen*, Die Klimate der Erde.—*E. G. Mariolopoulos*, Étude sur le Climat de la Grèce. — *Al. Angot*, Traité élémentaire de Meteorologie.—*C. E. P. Brooks*, Climate through the Ages.—*Rob. de Caursy Ward*, The Climate. Encycl. Britannica. Θ. Θ. Φ.

**μεταβολὴ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταβάλλειν, μετατροπή, ἀλλαγή: «ἡ μεταβολὴ τοῦ ἐκλογικοῦ συστήματος», «αἱ μεταβολαὶ τῶν πολιτευμάτων»· || γυμναστικὴ κίνησις, καθ' ἣν ὁ γυμναζόμενος μεταβάλλει μέτωπον κατὰ ἡμικύκλιον, κατὰ δύο ὀρθὰς γωνίας.

— *[Βιολογ.]* Ἐκλήθη *μεταβολὴ* (mutation) ἢ *ἐκτροπὴ* ὑπὸ τοῦ De Vries ἡ δι' ἁλμάτων ἐξέλιξις τῶν εἰδῶν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν βαθμιαίαν ἐξέλιξιν, ἣν παραδέχεται ὁ δαρβινισμός. Θ. Π.

— *[Στρατ.]* Καλεῖται *μεταβολή*: —1) Ἡ κίνησις, δι' ἧς εἴτε ὁ μεμονωμένος πεζὸς ἢ ἱππεὺς ἢ ἡμίονος ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ ἢ ὄχημα πεδινοῦ πυροβολικοῦ, εἴτε ἡ παντὸς ὅπλου μονάς, διατελοῦσα ἐν πυκνῷ σχηματισμῷ, ἀλλάσσει μέτωπον κατὰ 180°, ἤτοι λαμβάνει ἀντίθετον ἀκριβῶς τοῦ μέχρις ὥρας. — 2) Πᾶσα ἀλλαγὴ καταστάσεως τοῦ στρατιωτικοῦ, ἔχουσα ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς οἰκονομικῆς αὐτοῦ καταστάσεως (τῶν ἀποδοχῶν του), ὡς ἡ ἐγγραφὴ ἢ διαγραφή, ἡ εἴσοδος εἰς νοσοκομεῖον ἢ ἡ ἔξοδος ἐξ αὐτοῦ, ἡ φυλάκισις κτλ. Πᾶς στρατιωτικός, μὴ ἔχων κατὰ τὸ τέλος ἑκάστου μηνὸς τοιούτου εἴδους μεταβολάς, σημειοῦται διὰ τοῦ ὅρου *ἀμετάβλητος*. Ν. Θ. Κ.

— *[Ἀρχ. Μουσ.]* Ἡ *μεταβολὴ* ἦτο τὸ ἕκτον τῶν ἑπτὰ μερῶν τῆς ἁρμονικῆς τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς. Ἐκαλεῖτο δὲ οὕτω, κατ' Εὐκλείδην, ἡ μετάθεσις ὁμοίου τινὸς εἰς ἀνόμοιον τόπον καὶ διεκρίνετο τετραχῶς, ἤτοι: κατὰ γένος, σύστημα, τόνον καὶ μελοποιίαν. Καὶ κατὰ γένος μὲν ἐγίνετο μεταβολή, ὅταν ἐκ διατόνου εἰς χρῶμα ἢ ἁρμονίαν ἢ ἐκ χρώματος ἢ ἁρμονίας μετέβαινον εἰς ἕτερον τῶν λοιπῶν γενῶν· κατὰ σύστημα, ὅταν ἐκ συναφῆς εἰς διάζευξιν ἢ τἀνάπαλιν ἐγίνετο ἡ μεταβολή· κατὰ τόνον, ὅταν ἔκ τινος τῶν δεκαπέντα τόνων μετέβαινον εἴς τινα τῶν λοιπῶν, καὶ τέλος κατὰ μελοποιίαν, ὅταν ἐγίνετο μεταβολὴ ἐκ διασταλτικοῦ ἤθους εἰς συσταλτικὸν ἢ ἡσυχαστικὸν ἢ ἐξ ἡσυχαστικοῦ εἴς τι τῶν λοιπῶν ἠθῶν Ν. Α. Χ.

Digitized by Google

— [*Μουσ.*] Διὰ τοῦ ὅρου *μεταβολὴ* (γαλλ. muance, γερμ. Mutation) ἐχαρακτήριζον ἐν τῇ παλαιᾷ μουσικῇ ἀναγνώσει τὴν μετάβασιν ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἑξαχόρδου εἰς τὸ ἄλλο. Ἐπὶ ἀρκετοὺς αἰῶνας, ἀπὸ τῆς Θ' ἑκατονταετηρίδος καὶ ἐντεῦθεν, οἱ θεωρητικοὶ τῆς μουσικῆς ἀπέφευγον τὸ διάστημα τῆς ηὐξημένης τετάρτης: φα - σι ἢ ἠλαττωμένης πέμπτης: σι - φα ὡς κακόηχον. Οἱ τότε θεσπίσαντες τὴν μουσικὴν ἀνάγνωσιν, ἐξ ἧς ἐγεννήθη ἡ σύγχρονος θεωρία, ἀπέφυγον νὰ ὀνομάσωσι τὸν ἕβδομον φθόγγον τῆς κλίμακος (σι), τὸν προκαλοῦντα τὸ κακόηχον διάστημα, προτιμήσαντες νὰ χρησιμοποιῶσι κλίμακας ἀπὸ ἓξ φθόγγους, ἃς ὠνόμασαν *ἑξάχορδα*. Ὁσάκις ὅμως μία μελῳδία ὑπερέβαινε τὸ διάστημα τῆς ἕκτης, μετέβαινον ἐκ τοῦ ἑνὸς ἑξαχόρδου εἰς τὸ ἕτερον διὰ τῆς *μεταβολῆς*, δηλαδή:

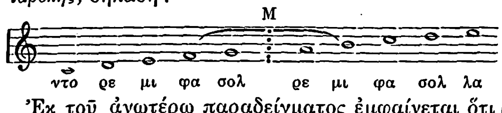


Ἐκ τοῦ ἀνωτέρω παραδείγματος ἐμφαίνεται ὅτι ὁ ἀναγιγνώσκων τὴν κλίμακα, φθάνων εἰς τὸ σημεῖον Μ, ἀντὶ νὰ συνεχίσῃ λέγων λα, σι, ντο, ρε, μι, ὡς θὰ ἔπρεπε, μεταβαίνει εἰς νέον ἑξάχορδον, ἔχον ὡς βάσιν τὸ σολ, τὸ ὁποῖον ὅμως ὀνομάζει ντο καὶ κατ' ἀναλογίαν καὶ τοὺς ὑπολοίπους φθόγγους, προκαλῶν οὕτω μίαν μετάθεσιν ὁλοκλήρου τοῦ ἑξαχόρδου. Ἡ μεταβολὴ γίνεται ἀκριβῶς εἰς τὸ στοιχεῖον Μ. Ἐννοεῖται ὅτι ἐν τῇ πραγματικότητι τὸ διάστημα τῆς ηὐξημένης τετάρτης φα - σι δὲν παύει ὑφιστάμενον, ἔστω καὶ ἂν οὕτω διὰ τῆς μεταβολῆς γράφεται ὡς: φα - μι. Γ. Σ.

— [*Μετεωρ.*] Τὸ πλεῖστον τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς θερμότητος, ἥτις λαμβάνεται παρὰ τοῦ Ἡλίου καὶ ἑπομένως παρουσιάζουσι μίαν *ἡμερησίαν μεταβολήν*, ἥτις εἶναι συνάρτησις τοῦ ὕψους τοῦ Ἡλίου. Ἡ μεταβολὴ λαμβάνει χώραν κατὰ τὴν αὐτὴν φορὰν διὰ τὴν θερμοκρασίαν, τὸν ἄνεμον (εἰς τοὺς χαμηλοὺς σταθμούς), τὴν ἐξάτμισιν, τὴν τάσιν τῶν ὑδρατμῶν (τὸν χειμῶνα) καὶ τὴν νέφωσιν, καὶ ἀντιστρόφως διὰ τὸν ἄνεμον (εἰς τοὺς ὀρεινοὺς σταθμοὺς) καὶ τὴν σχετικὴν ὑγρασίαν. Εἰς τὴν ἡμερησίαν μεταβολὴν ὑπερεπιτίθενται ἄλλαι μεταβολαὶ βραχυτέρων περιόδων· οὕτω π. χ. ἡ πίεσις παρουσιάζει, ἐκτὸς τῶν ἀκανονίστων μεταβολῶν —ἐνίοτε σημαντικῶν— δύο κανονικὰς μεταβολάς, μίαν πρωτεύουσαν τῶν 24 ὡρῶν, τοῦ *ἡμερησίου κύματος*, προερχομένην ἐκ τῆς τοπικῆς θερμάνσεως, καὶ μίαν δευτερεύουσαν τῶν 12 ὡρῶν *ἡμι-ἡμερησίου κύματος*, ὀφειλομένην εἰς τὴν ἡλιακὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ συνόλου τῆς ἀτμοσφαίρας. Ἡ τελευταία αὐτὴ μεταβολὴ παρουσιάζει δύο μέγιστα συνήθως εἰς τὰς 10 καὶ 22 ὥρας καὶ δύο ἐλάχιστα εἰς τὰς 4 καὶ 16 ὥρας, λίαν ἐκπεφρασμένα εἰς τὰς τροπικὰς χώρας, καὶ τροποποιημένα εἰς τὰ μέσα πλάτη ὑπὸ τῶν ἀκανονίστων μεταβολῶν. Θ. Θ. Φ.

— [*Ρητορ.*] *Μεταβολὴ* καλεῖται ἡ τοῦ λεκτικοῦ ποικιλία, δι' ἧς ἀποφεύγομεν τὴν μονοτονίαν ἢ τὸν κόρον, ὃν προξενεῖ ἡ ταυτότης τοῦ μέλους καὶ τοῦ ρυθμοῦ. Κράτιστον λεκτικὸν εἶναι τὸ ἔχον πλείστας ἀναπαύλας καὶ μεταβολὰς ἁρμονίας. Γίνεται δὲ τοιοῦτον, κατὰ τὸν Διονύσιον Ἁλικαρνασσέα, ὅταν τὸ μὲν ἐν περιόδῳ λέγεται, τὸ δὲ ἔξω περιόδου· καὶ ὅταν ἄλλη μὲν περίοδος ἐκ πλειόνων πλέκηται κώλων, ἄλλη δὲ ἐξ ἐλασσόνων· καὶ ὅταν ἐξ αὐτῶν μὲν τῶν κώλων τὸ μὲν εἶναι βραχύτερον, τὸ δὲ μακρότερον· καὶ τὸ μὲν αὐτῶν γοργότερον, τὸ δὲ βραδύτερον, τὸ δὲ ἀκριβέστερον· ἀλλοῖοι δὲ ρυθμοὶ καὶ σχήματα παντοῖα καὶ τάσεις φωνῆς, αἱ καλούμεναι διάφοροι προσῳδίαι, κλέπτουσι διὰ τῆς ποικιλίας τὸν κόρον. Ἔχει δέ τινα χάριν ἐν τοῖς τοιούτοις καὶ τὸ οὕτω συγκείμενον, ὥστε νὰ φαίνηται ὅτι δὲν σύγκειται ἐκ τέχνης, ἀλλὰ φύσει εἶναι τοιοῦτον. Ἥδιστον συνεπῶς καὶ κάλλιστον εἰς τοὺς λόγους εἶναι ἡ μεταβολή. Παράδειγμα δ' αὐτῆς ὅλον τὸ λεκτικὸν τοῦ Ἡροδότου, καὶ τὸ τοῦ Πλάτωνος, καὶ τὸ τοῦ Δημοσθένους· διότι δύσκολον εἶναι νὰ εὕρῃ τις ἄλλους παρὰ τούτους καὶ ἐπεισόδια πλειότερα, καὶ ποικιλίας εὐρωστέρας, καὶ σχήματα πολυειδέστερα μεταχειρισθέντας· ὁ μέν, κατὰ τὸν σχηματισμὸν τῆς ἱστορίας· ὁ δέ, κατὰ τὴν χάριν τῶν διαλόγων· ὁ δέ, κατὰ τὴν χρείαν τῶν ἐναγωνίων λόγων. Ἀλλὰ δὲν ἔχει οὕτω, καὶ ὡς πρὸς τὸ τοῦ Ἰσοκράτους λεκτικὸν καὶ τῶν κατ' αὐτὸν γραψάντων. Καίτοι ἡδέως καὶ μεγαλοπρεπῶς πολλὰ συνέθεσαν οἱ ἄνδρες οὗτοι, περὶ τὰς μεταβολὰς καὶ τὴν ποικιλίαν ὅμως πολλοὶ δὲν εὐτυχοῦσι· διότι ἐπικρατεῖ παρ' αὐτοῖς εἷς περιόδου κύκλος, ὁμοειδὴς σχημάτων τάξις, συμπλοκὴ φωνηέντων ἡ αὐτή, καὶ ἄλλα πολλὰ τοιαῦτα ἐνοχλοῦντα τὴν ἀκοήν. Καὶ αὐτοῦ μὲν τοῦ Ἰσοκράτους αἱ πολλαὶ ἐπανθοῦσαι χάριτες ἐπικρύπτουσι τὴν ἀμορφίαν ταύτην· ἀλλ' εἰς τοὺς ὀπαδούς του, ἐπειδὴ τὰ ὑπάρχοντα λεκτικὰ χαρίσματα εἶναι ὀλιγώτερα, τὸ ἁμάρτημα τοῦτο καταφανέστερον καθίσταται.

Οἱ ἀρχαῖοι τεχνογράφοι δίδουσι τὸν ἑξῆς ὁρισμόν: «μεταβολή ἐστιν, ὅταν τὸ αὐτὸ νόημα διαφόρως ἐξαγγελθῇ» (*Ζωναίου*, «Περὶ σχημάτων» ιγ'), «ὅταν μὴ τὰς πτώσεις μόνον ἀλλὰ καὶ τὰ ρήματα μεταβάλλῃ» (*Τιβερίου*, «Περὶ σχημάτων» 38)· «ἐπὶ τούτου τοῦ σχήματος μετάθεσις μορίων ὅλων γίνεται καὶ καθ' ἕκαστον κῶλον ἢ κόμμα» (*Ἀλεξάνδρου*, «Περὶ σχημάτων» ιστ'), οἷον: «τίς γὰρ συμμαχία σου πράξαντος γέγονε τῇ πόλει; τίς δὲ βοήθεια ἐκ τῆς σῆς εὐνοίας καὶ δόξης; τίς δὲ πρεσβεία; τίς δὲ διακονία, δι' ἣν ἡ πόλις ἐνδοξοτέρα; τί τῶν ἑλληνικῶν ἢ τί τῶν οἰκείων ἁπλῶς ἐπηνώρθωται διὰ σέ; ποῖαι τριήρεις; ποῖα βέλη; ποῖοι νεώσοικοι; τίς ἐπισκευὴ τειχῶν; ἢ ποῖον ἱππικόν; ἢ τῶν ἁπάντων τί χρήσιμον, ἢ τοῖς ἀπόροις πολιτικὴ βοήθεια ἢ χρημάτων εὐπορία;» (*Δημοσθένης*). Ι. Φ. Δ.

—**«Μεταβολή»**. Ἐφημερὶς ἐκδιδομένη ἀπὸ τοῦ 1919 ἐν Ἀγρινίῳ εἰς σχῆμα 2ον ὑπὸ τὴν ἀρχικὴν διεύθυνσιν τοῦ Κλεομένους Κ. Τσάτσου. Π. Ν. Π.

—**μεταβολαὶ ἀστέρων** [*Ἀστρονομ.*]. Καλοῦνται οὕτως αἱ περιοδικαὶ ἢ μὴ αὐξομειώσεις τῆς λάμψεως τῶν *ἀστέρων* (βλ. λ.). Σ. Π.

—**μεταβολὴ ἀριθμοῦ διαττόντων** [*Ἀστρονομ.*]. Ὁ ἀριθμὸς τῶν διαττόντων ὑπόκειται εἰς τριπλῆν μεταβολήν: *ἀζιμουθιακήν, ἡμερησίαν* καὶ *ἐτησίαν* (βλ. λ. *μετεωρικὸς ἥλιος*). Σ. Π.

—**μεταβολὴ γεωγραφικῶν πλατῶν** [*Ἀστρον.*]· βλ. *πλάτος*.

—**μεταβολὴ κλιματικὴ** [*Κλιματ.*]· βλ. *μεταβλητότης κλιματική*.

—**μεταβολὴ ἡμερησία** [*Ἀστρον.*]. Καλεῖται ἡ διαφορὰ δύο διαδοχικῶν ἡμερησίων πορειῶν χρονομέτρου ἢ ἐκκρεμοῦς. Ἐὰν ἐκ μακρᾶς σειρᾶς συγκρίσεων χρονομέτρου ἢ ἐκκρεμοῦς πρὸς ἕτερον πρότυπον καταρτίσωμεν πίνακα τῶν ἡμερησίων πορειῶν αὐτοῦ καὶ ἐξ αὐτῶν ἐξαγάγωμεν τὰς ἡμερησίας μεταβολὰς τῆς πορείας τοῦ χρονομέτρου ἢ ἐκκρεμοῦς, ὁ μέσος ὅρος αὐτῶν καλεῖται *μέση ἡμερησία μεταβολὴ* τῆς πορείας τοῦ ὡρολογίου. Σ. Π.

—**μεταβολῶν λογισμός**. Κλάδος σπουδαῖος τῆς μαθηματικῆς ἐπιστήμης, ἔχων σκοπὸν τὴν ἐπίλυσιν προβλημάτων *μεγίστων* καὶ *ἐλαχίστων* (maximum et minimum) προερχομένων ἐκ τῶν μεταβολῶν τῶν συναρτήσεων καὶ οὐχὶ ἐκ τῶν μεταβολῶν τῶν ἀνεξαρτήτων μεταβλητῶν μόνον. Τὸ θέμα τῶν ἐρευνῶν τοῦ λογισμοῦ τῶν μεταβολῶν εἶναι ἀντίστροφον πρὸς τὸ τοῦ διαφορικοῦ λογισμοῦ. Ἔστωσαν δύο μεταβληταὶ ἡ y καὶ x καὶ ἃς ληφθῇ ἡ x ὡς ἀνεξάρτητος καὶ ἡ y ὡς συνάρτησις ταύτης $y=\sigma(x)$. Ὁ διαφορικὸς λογισμὸς ἐρευνᾷ τὰς μεταβολὰς τῆς y τὰς προερχομένας ἐκ τῆς μεταβολῆς τῆς ἀνεξαρτήτου x, ὅταν ἡ σχέσις ἡ συνδέουσα ταύτας, δηλαδὴ ἡ ἐξίσωσις $y=\sigma(x)$, μένῃ ἀμετάβλητος· ἐνῷ ὁ λογισμὸς τῶν μεταβολῶν ἐρευνᾷ τὰς μεταβολὰς τῆς y τὰς προερχομένας ἐκ τῆς μεταβολῆς τῆς σχέσεως τῆς ἐξισώσεως. Τὴν μεταβολὴν τῆς y συμβολικῶς παριστῶσι διὰ τοῦ ἑλληνικοῦ γράμματος δ προτασσομένου τῆς μεταβλητῆς ποσότητος, ἤτοι $\delta y$ σημαίνει τὴν μεταβολὴν τῆς y τὴν προερχομένην ἐκ τῆς ἀλλαγῆς τῆς ἐξισώσεως τῆς συνδεούσης τὴν y μὲ τὴν ἀνεξάρτητον x. Ἐνῷ εἰς τὸν διαφορικὸν λογισμὸν τὴν μεταβολὴν τῆς y τὴν προερχομένην ἐκ τῆς μεταβολῆς τῆς ἀνεξαρτήτου x (τῆς ἐξισώσεως μενούσης τῆς αὐτῆς) παριστῶσι διὰ $dy$.

Παράδειγμα προβλήματος τοῦ λογισμοῦ τῶν μεταβολῶν ἔστω τὸ ἑξῆς:

Ἐὰν κινητόν τι σῶμα ὑλικὸν ἀφεθῇ ἔκ τινος σημείου Α ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τοῦ βάρους αὐτοῦ μόνον νὰ ὀλισθαίνῃ ἐπὶ κατωφερείας ΑΒ μέχρι τοῦ κατωτέρου σημείου Β, ζητεῖται τί σχῆμα πρέπει νὰ ἔχῃ ἡ γραμμὴ ΑΒ, ἐφ' ἧς κινεῖται τὸ σῶμα, ἵνα τὸ κινητὸν φθάσῃ ἀπὸ τοῦ Α εἰς τὸ σημεῖον Β εἰς τὸ ἐλάχιστον (minimum) χρονικὸν διάστημα; Εὑρίσκεται δ' ἐν τῷ λογισμῷ τῶν μεταβολῶν ὅτι δὲν εἶναι ἡ εὐθεῖα (ὡς θὰ ὑπέθετέ τις), ἀλλ' ἄλλη, καμπύλη, μεγαλυτέρα μὲν εἰς μῆκος τῆς εὐθείας, ἀλλὰ παρουσιάζουσα εἰς τὸ πῖπτον σῶμα ἀποτομότητα, ἕνεκεν τῆς ὁποίας ἀποκτᾷ τὸ κινητὸν μεγαλυτέραν ταχύτητα ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τῆς βαρύτητος. Ἐν τῷ λογισμῷ τῶν μεταβολῶν εὑρίσκεται ὅτι ἡ καμπύλη αὕτη εἶναι ἡ κυκλοειδής.

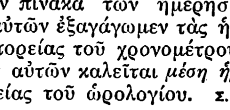


Ὁ λογισμὸς τῶν μεταβολῶν εἶναι κλάδος ἄλλου γενικωτέρου τῆς μαθηματικῆς ἐπιστήμης, τοῦ *συναρτησιακοῦ λογισμοῦ*, εἶναι δέ, ὡς προελέχθη, σπουδαιότατος. Τελευταίως ἔχει καταδειχθῆ ὅτι πλεῖστα προβλήματα τῆς φυσικῆς ἀνάγονται εἰς τοιαῦτα τοῦ λογισμοῦ τῶν μεταβολῶν, ὁ ὁποῖος μέχρι πρὸ ὀλίγων ἐτῶν παρουσίαζεν ἀνυπερβλήτους δυσχερείας, αἵτινες ἐπελύθησαν χάρις εἰς τὰς ἐργασίας μεγάλων μαθηματικῶν, ἐν οἷς ὁ Weierstrass, Darboux, Hilbert καὶ ὁ Καραθεοδωρῆς. Ν. ΓΥΠΑΡΑΚΗΣ

**Μεταβολὴ** [*Βυζ.*]. Κάστρον βυζαντινὸν κείμενον ἐπὶ τοῦ ὄρους Σόφωνος (νῦν Σαπάντζα-ντάγ) τοῦ ὑψουμένου πρὸς Ν. τῆς λίμνης Σαπάντζας (Νικομηδείας). Ὅταν ὁ Φράγκος ἀρχηγὸς μισθοφόρων Ρουσέλιος (Roussel de Bailleul) ἐστασίασε κατὰ τοῦ βασιλέως Μιχαὴλ Ζ' Δούκα (1071—1078), κατέλαβε τὸ φρούριον τοῦτο, ἐξησφάλισεν ἐν αὐτῷ τοὺς θησαυρούς του μετὰ τῆς οἰκογενείας του καὶ εἶτα ἐβάδισε πρὸς τὴν Χρυσόπολιν (βλ. λ. *Ρουσέλιος*). Ν. ΚΛΣ

**μεταβολικὸν παραλήρημα** [*Ψυχοπαθ.*]. Καλεῖται οὕτω τὸ παραλήρημα, καθ' ὃ ὁ πάσχων νομίζει ὅτι μετεβλήθησαν τὰ πάντα περὶ αὐτὸν ἢ ὡρισμένα πρόσωπα ἢ πράγματα. Τὰ ὅρια τοῦ παραληρήματος τούτου εὐρύνονται, ἂν περιλάβωμεν εἰς αὐτὸ καὶ τὰς καταστάσεις μετὰ μεταβολῆς τῶν διαθέσεων τοῦ πάσχοντος. Οὕτως ὁ καταδιωκόμενος νομίζει ὅλους μεταβληθέντας εἰς ἐχθρούς, ὁ μανικὸς ὅτι ἡ κατάστασις αὐτοῦ ἐγένετο εὐτυχὴς κττ. Τὸ μεταβολικὸν παραλήρημα παρατηρεῖται ἐπὶ μελαγχολίας ἰδίᾳ μετ' ἄγχους, ἐπὶ μυστικῶν παραληρημάτων, ἐπὶ ὑστερικῶν καὶ σχιζοφρενικῶν καταστάσεων καὶ δὲν ἔχει ἰδιαιτέραν διαγνωστικὴν ἢ προγνωστικὴν σημασίαν. Τ. Α. ΖΗΣ

**μεταβολισμὸς** (ὁ). Τοῦ ὅρου τούτου γίνεται πολλαπλῆ χρῆσις. Οὕτω καλεῖται ἐν πρώτοις *μεταβολισμὸς* τὸ σύνολον τῶν χημικῶν μεταβολῶν, αἱ ὁποῖαι λαμβάνουν χώραν ἐντὸς τοῦ ὀργανισμοῦ, ἤτοι ἡ ἄλλως λεγομένη *ἐναλλαγὴ τῆς ὕλης*. Διακρίνεται δὲ εἰς *ἀναβολισμόν*, κατὰ τὸν ὁποῖον πλάττονται αἱ διάφοροι οὐσίαι τοῦ ὀργανισμοῦ καὶ ὁ ὁποῖος ἄλλως λέγεται *ἀφομοίωσις*, καὶ εἰς *καταβολισμόν*, κατὰ τὸν ὁποῖον γίνονται ἀποσυνθέσεις καὶ ἀφετεροιώσεις τῶν ὀργανικῶν οὐσιῶν καὶ ὁ ὁποῖος ἄλλως λέγεται καὶ *ἀνομοίωσις*.

Καλεῖται δεύτερον *μεταβολισμός*, ἡ συνεχὴς διὰ τοῦ χρόνου μεταβολὴ τῶν ὀργανισμῶν, ἡ ὁποία ἀποτελεῖ τὴν βάσιν τῆς θεωρίας τῆς ἐξελίξεως. Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

**μεταβολτίνης** (ὁ) (Metavoltin) [*Ὀρυκτολ.*]. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ προϊὸν ἀποσυνθέσεως τοῦ ὀρυκτοῦ βολταΐτου, τὸ ὁποῖον εἶναι ἔνυδρον θειικὸν ἅλας τοῦ σιδήρου ἀλκαλιοῦχον, ὁ δὲ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι: $Fe_6 [OH]_4 (K_2, Na_2, Fe)_5 [SO_4]_{12}. 16 H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν σύστημα ὑπὸ μορφὴν πρισματικήν, ἢ πινακοειδικήν, ἀπαντᾷ δὲ ὡς ἐκ τούτου καὶ εἰς λεπιδοειδῆ συσσωματώματα. Ἔχει χρῶμα ὠχροκίτρινον καὶ τόπον προελεύσεως τὸ Madeni Zakh. Γ. Β.

**Μέταβον** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀρχαία ὀνομασία τῆς ἐν Λευκανίᾳ πόλεως *Μεταποντίου* (βλ. λ.), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Στράβωνος (VI, 265). Α. Θ. Σ.

**Μέταβος** (Metabus) [*Μυθολ.*]. Βασιλεὺς τῶν Οὐόλσκων, σύγχρονος τοῦ Αἰνείου, πατὴρ τῆς γενναίας καὶ πολεμικωτάτης Καμίλλης, μιᾶς τῶν θεραπαινίδων τῆς Ἀρτέμιδος. Α. Θ. Σ.

**μεταβουλεύομαι**· μεταβάλλω, ἀλλάσσω γνώμην, ἄλλως *μεταγιγνώσκω*.

**μεταβρουσίτης** (ὁ) (Metabrushit) [*Ὀρυκτολ.*]. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Ca_2P_2O_7.4H_2O$, ἤτοι περιέχει ἓν μόριον ὕδατος ὀλιγώτερον ἀπὸ τὸ ὀρυκτὸν βρουσίτην. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Sombrero. Γ. Β.

**μεταβυζαντινισμὸς** (ὁ). Καλεῖται οὕτως ἡ ἱστορικὴ περίοδος ἡ ἀμέσως μετὰ τὴν κατάλυσιν τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας (1453) ἐρχομένη, ἥτις εἰς ὅλας αὐτῆς τὰς ὑλικὰς καὶ πνευματικὰς ἐκδηλώσεις φέρει, πλὴν τῶν βυζαντινῶν χαρακτηριστικῶν, τὰ ὁποῖα ὁλονὲν ἐξασθενοῦν, καὶ νέα προμηνύοντα τοὺς νεωτέρους χρόνους.

**μεταβυζαντινός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Βυζαντίου, μετὰ τὴν ἅλωσιν χρόνους: «μεταβυζαντινὴ περίοδος,—τέχνη».

**μεταγγίζ**ˎ, ἀόρ. *μετήγγισα*· μεταφέρω ὑγρὸν ἀπὸ ἀγγεῖον εἰς ἄλλο ἀγγεῖον: «μεταγγίζω οἶνον», κοιν. *τραβατζάρω*.

**μετάγγισις**, —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταγγίζειν, ἡ μεταφορὰ ὑγροῦ ἀπὸ ἀγγεῖον εἰς ἄλλο ἀγγεῖον: «μετάγγισις τοῦ οἴνου».

— [*Οἰνολ.*] Καλεῖται *μετάγγισις* ἡ ἐπὶ τῷ σκοπῷ τῆς ἀπαλλαγῆς ἀπὸ τῆς ὑποστάθμης μεταφορὰ τοῦ οἴνου εἰς νέα καθαρὰ δοχεῖα. Ὁ οἶνος μετὰ τὸ πέρας τῆς ζυμώσεως σχηματίζει ὑποστάθμην, ἀποτελουμένην ἐκ διαφόρων ἀλάτων (τρυγίας κλπ.), ἀρχικῶς παρασυρθεισῶν διὰ τοῦ γλεύκους ὑλῶν ἐκ τῆς σταφυλῆς, ἀδρανοῦς καταστάσης ζύμης, διαφόρων ἄλλων μικροοργανισμῶν κλπ. Ὁ διαυγασθεὶς οἶνος μεταφέρεται διὰ μεταγγίσεως εἰς νέα δοχεῖα, ἐνδείκνυται δέ, ὅπως ἐπιτελῆται ἡ μετάγγισις ἐπὶ καλοῦ καὶ ξηροῦ καιροῦ. Πλὴν τῆς πρώτης μεταγγίσεως, ἥτις γίνεται ἀμέσως μετὰ τὸ πέρας τῆς ζυμώσεως, καλὸν εἶναι ὅπως βραδύτερον ἐπιτελῆται καὶ δευτέρα καὶ τρίτη ἐν ἀνάγκῃ τοιαύτη. Σ. Γ.

**μετάγγισμα** (τό), καὶ **μεταγγισμὸς** (ὁ)· ἄλλως *μετάγγισις* (βλ. λ.).

**μετάγγιστρον** (τό)· τὸ δι' οὗ γίνεται ἡ μετάγγισις ὑγρῶν, συσκευὴ μεταγγίσεως.

Digitized by Google

**Μεταγγίτσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Χαλκιδικῆς τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, ἕδρα ἰδίας κοινότητος. Κατ. (1928) 402.

**Μεταγειτνιὼν** (ὁ) *[Ἀρχ.]*. Ὁ δεύτερος μὴν τοῦ ἀρχαίου ἀττικοῦ ἔτους, ἀντίστοιχος περίπου πρὸς τὸν Σεπτέμβριον. Ἐκαλεῖτο οὕτω, διότι κατὰ τὴν διάρκειαν αὐτοῦ ἐγίνοντο αἱ μετοικήσεις, ἤτοι ἡ ἐκ τῶν θερινῶν διαμονῶν ἐπάνοδος τοῦ ἀγροτικοῦ πληθυσμοῦ εἰς τὸ ἄστυ καὶ ἐπομένως ἡ ἀλλαγὴ τῶν γειτόνων ἑκάστου. Συνεδέετο ἐπίσης ὁ μὴν πρὸς τὴν παράδοσιν τῆς πρώτης συγκεντρώσεως τῶν διεσκορπισμένων συνοικισμῶν τῆς Ἀττικῆς περὶ τὴν Ἀκρόπολιν καὶ τῆς ἱδρύσεως τοῦ ἄστεως. Ἐτελεῖτο κατὰ τὸν μῆνα τοῦτον ἐτησία πάνδημος ἑορτὴ πρὸς τιμὴν τῆς Ἀθηνᾶς, καλουμένη *Συνοίκια*. Ἐπίσης ἐν τῷ δήμῳ τῆς Ἀττικῆς Μελίτῃ ἐτελοῦντο κατ' αὐτὸν τὰ *Μεταγείτνια*, ἑορτὴ πρὸς τιμὴν τοῦ Ἀπόλλωνος Μεταγειτνίου. Ν. Α.

**μεταγένεσις** (ἡ) (métagenèse) *[Βιολ.]*. Ὅρος καθορίζων τὸν τρόπον τῆς ἀναπαραγωγῆς ὀργανικῶν τινων ὄντων, ἄνευ τῆς συμβολῆς τῶν δύο φύλων. Ἡ μεταγένεσις χαρακτηρίζεται ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ὄν τι, πρὶν ἢ ἀποκτήσῃ τὴν ἔνηβον αὐτοῦ μορφὴν καὶ πρὶν ἀναπτυχθῶσι τὰ γεννητικὰ αὐτοῦ ὄργανα, εἶναι δυνατὸν νὰ παραγάγῃ, νὰ γεννήσῃ νέα σπέρματα ἢ γονίδια, ἅτινα ἀναπτυσσόμενα θὰ ἀποβῶσιν ἔνηβα, μετὰ γεννητικῶν ὀργάνων καὶ ἱκανὰ νὰ ἀναπαραχθῶσι διὰ γονιμοποιήσεως. Ἡ μεταγένεσις εἶναι τὸ σύνολον τῶν ἀγάμων γεννήσεων. Μ. Ν. Κ.

**μεταγενέστερος**, *—α, —ον*· ὁ μετὰ ταῦτα, ὁ μετὰ χρονικόν τι σημεῖον λαμβάνων ὑπόστασιν, ἀντίθ. *προγενέστερος*: «τὴν πολιτικὴν ἡμῶν θὰ κρίνουν δικαίως οἱ μεταγενέστεροι», «μεταγενεστέρα διαταγή,—παραγγελία» ἐν σχέσει πρὸς ἄλλην πρότερον ταύτης γενομένην· || «μεταγενέστεροι συγγραφεῖς» οἱ μετὰ τὸν Ἀριστοτέλην ἀκμάσαντες, οἱ τῆς ἀλεξανδρεωτικῆς περιόδου. — Ἐπίρρ. ***μεταγενεστέρως*** (ἡ λ. συγκριτικὸν τοῦ ἀχρήστου *μεταγενής*).

**Μεταγένης**. Ἀρχιτέκτων ἐκ Κνωσοῦ τῆς Κρήτης, υἱὸς τοῦ ἐπίσης ἀρχιτέκτονος Χερσίφρονος, μετὰ τοῦ ὁποίου καὶ συνειργάσθη εἰς τὴν ἀνοικοδόμησιν τοῦ ἐν Ἐφέσῳ διασήμου ναοῦ τῆς Ἀρτέμιδος. Μνημονεύονται ὑπὸ τοῦ Στράβωνος, Πλινίου καὶ Βιτρουβίου. Ὁ τελευταῖος ἀναφέρει καὶ σύγγραμμα τούτων, πατρὸς καὶ υἱοῦ, πραγματευόμενον θεωρητικὰ προβλήματα τῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Ε. Γ.

**μεταγιγνώσκω**, ἀόρ. *μετέγνων*· ἀρχ., μεταβάλλω γνώμην, μετανοῶ, ἄλλως *μεταβουλεύομαι*.

**μεταγίνομαι**· ἀντὶ τοῦ *ματαγίνομαι*· δημοτ., γίνομαι ἐκ νέου, ἄλλως *ξαναγίνομαι*.

**μεταγλωσσογράφος** (ὁ)· ὁ μεταγενέστερος γλωσσογράφος, ὁ καταγράφων καὶ συστηματοποιῶν τὰ εἰς τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον σχόλια τῶν γλωσσογράφων.

—*[Νομ.]* Ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΓ' αἰῶνος μ. Χ. ἀνεφάνη ἐν τῇ Δύσει νέα νομικὴ σχολή, διαδεχθεῖσα ἐν τῇ διδασκαλίᾳ τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου τοὺς *γλωσσογράφους* (βλ. λ.), κληθεῖσα δ' ὡς ἐκ τούτου σχολὴ τῶν *μεταγλωσσογράφων* (postglossatores). Ἐνῷ ὅμως οἱ γλωσσογράφοι διὰ τῆς μεθόδου των ἡρμήνευσαν τὴν ἰουστινιάνειον νομοθεσίαν κατὰ τρόπον σαφῆ καὶ κριτικόν, οἱ μεταγλωσσογράφοι δὲν ἐπεδόθησαν εἰς τοιαύτην ἑρμηνείαν, ἣν ἐθεώρησαν πλήρως γενομένην ὑπὸ τῶν γλωσσογράφων, ἀλλ' ἀντιθέτως πρὸς τούτους χρησιμοποιήσαντες τὴν σχολαστικὴν μέθοδον προσεπάθησαν νὰ καταστήσωσι τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον πρακτικῶς ἐφαρμόσιμον εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ εἰς ὁλόκληρον τὴν δυτικὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Γερμανίαν. Οὕτως οἱ μεταγλωσσσογράφοι συνέτασσον μακροσκελῆ σχόλια, κληθέντες ὡς ἐκ τούτου καὶ σχολιασταὶ (commentatores), εἰς τὰ διάφορα τμήματα τῆς ἰουστινιανείου νομοθεσίας, ἔχοντες ὑπ' ὄψει οὐχὶ τὸ κείμενον αὐτῆς, ἀλλὰ τὰς ἐπ' αὐτοῦ γλώσσας τῶν γλωσσογράφων, τὰ δὲ σχόλια ταῦτα συνίσταντο κυρίως εἰς δημιουργίαν ἐκ τῶν καθ' ἕκαστον περιπτώσεων γενικῶν νομικῶν κανόνων μετὰ ἐπεκτάσεων, διαιρέσεων καὶ ὑποδιαιρέσεων. Διὰ τῆς μεθόδου ταύτης πράγματι δὲν προώδευσεν ἡ ἐπιστήμη τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου, κατωρθώθη ὅμως νὰ δοθῇ εἰς τοῦτο ἐσωτερικὴ δύναμις τοιαύτη, ὥστε νὰ καθίσταται δι' αὐτοῦ δυνατὴ ἐν πολλοῖς ἡ λύσις πασῶν τῶν συγκεκριμένων περιπτώσεων, καὶ ἐκείνων δηλαδή, περὶ ὧν οὐδεμία λύσις δίδεται ἐν τῇ ἰουστινιανείῳ νομοθεσίᾳ. Τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ἀπέκτησεν οὕτως ἐν Ἰταλίᾳ πραγματικὴν ἰσχύν, ὡς γενικὸν δίκαιον συμπληροῦν τὰ κενὰ τοῦ λογγοβαρδικοῦ δικαίου, ὅπερ ἐτέθη ἐν ὑστέρᾳ μοίρᾳ, ὑποβιβασθὲν εἰς ἁπλοῦν τοπικὸν δίκαιον, μὴ δυνάμενον νὰ συμπληρώσῃ ἑαυτό, παροραθείσης τελείως τῆς ἑρμηνείας καὶ τῆς σπουδῆς αὐτοῦ. Διὰ τῆς συνεφαρμογῆς τοῦ ρωμαϊκοῦ καὶ τῶν τοπικῶν δικαίων ἐδημιουργήθη κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον ὑπὸ τῶν μεταγλωσσογράφων ἑνιαῖον ἐν Ἰταλίᾳ δίκαιον παρὰ τὸ κανονικόν, οὗ ἡ ἐφαρμογὴ ἀπεκλείσθη ἀπὸ τὰ κοσμικὰ δικαστήρια. Τὸ ἑνιαῖον ὅμως τοῦτο δίκαιον ἐβασίζετο κυρίως ἐπὶ τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου, ὅπερ διὰ τῆς συμπολιτεύσεως μὲ τὰ τοπικὰ δίκαια κατώρθωσαν οἱ μεταγλωσσογράφοι νὰ προσαρμόσωσι πρὸς τὰς συνθήκας καὶ τοὺς βιοτικοὺς ὅρους τῆς συγχρόνου των κοινωνίας. Τὸ ἔργον τῶν μεταγλωσσογράφων κέκτηται ἐθνικὴν δύναταί τις εἰπεῖν ἀξίαν διὰ τὴν Ἰταλίαν. Καθ' ἣν ἐποχὴν (ΙΔ' αἰὼν) ἡ χώρα αὕτη ἀπέκτα τὴν ἐθνικήν της ἑνότητα καὶ παρὰ ταύτην διὰ τῶν Dante, Petrarca καὶ Boccaccio τὴν ἐθνικήν της φιλολογίαν, ἐχάρισαν οἱ μεταγλωσσογράφοι εἰς ταύτην τὸ ἐθνικόν της δίκαιον. Ἀλλὰ τὸ ἔργον τῶν μεταγλωσσογράφων κέκτηται μεγάλην ὡσαύτως σημασίαν διὰ τὴν ἐν γένει ἱστορίαν τοῦ δικαίου. Διότι διὰ τῆς ἐπεξεργασίας τοῦ ρωμαϊκοῦ νομικοῦ ὑλικοῦ, τῶν γνωμοδοτήσεών των καὶ τῆς ἐν γένει δράσεώς των ὡς νομικῶν, κατώρθωσαν οὗτοι νὰ καταστήσωσι τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ἐφαρμόσιμον ἐν τῇ συγχρόνῳ των κοινωνίᾳ, προετοιμάσαντες τὴν ἀποδοχήν του ἐν Γαλλίᾳ, Γερμανίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ, ἐπιδράσαντες δ' ἐπὶ τὴν νομοθεσίαν ὁλοκλήρου τῆς Εὐρώπης καὶ δὴ κατὰ τρόπον ἀποκλειστικὸν μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Αἱ πόλεις, εἰς ἃς κυρίως ἕδρασαν οἱ μεταγλωσσογράφοι, ἦσαν ἡ Perugia, Padua, Pisa καὶ Pavia, οἱ κυριώτεροι δ' ἐξ αὐτῶν ἦσαν ὁ Durantis (1237—1296), κληρικὸς καὶ νομικός, κληθεὶς ἐκ τοῦ κυρίου του ἔργου «Speculum judiciale» specalator, ὁ Cinus (1270—1336), ποιητὴς καὶ νομικός, εἰσαγαγὼν κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος εἰς Ἰταλίαν ἐκ τῆς Γαλλίας τὴν διαλεκτικὴν ἢ σχολαστικὴν μέθοδον, ὁ μαθητής του Bartolus de Sassoferrato (1314—1357), ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ὁποίου οἱ μεταγλωσσογράφοι καλοῦνται καὶ Bartolistes, θεωρηθεὶς ὡς ὁ διασημότερος Ἰταλὸς νομικὸς τῆς ἐποχῆς του, ἰδίᾳ λόγῳ τῆς ἱκανότητός του εἰς τὸ διαμορφώνειν νομικοὺς ὁρισμούς, καὶ τέλος ὁ μαθητὴς τούτου Baldus de Ubaldis (1327—1400), ἐντριβὴς εἴς τε τὸ ρωμαϊκὸν καὶ τὸ κανονικὸν δίκαιον τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, διάσημος δὲ καταστὰς κυρίως διὰ τὸ πλῆθος καὶ τὴν ἀξίαν τῶν νομικῶν του γνωμοδοτήσεων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *v. Savigni*, Geschichte des römischen Rechts im Mittelalter.—*R. Stintzing*, Geschichte der deutschen Rechtsvissenschaft. – *H. Engelmann*, Die Schul. lehre der Postglossatoren. -- *G. Kaufmann*, Geschichte der deutscheu Universitaeteu. —*Flach*; Études critiques sur l'histoire du droit romain du moyen âge. — *M. Conrat*, Geschichte der Quellen und Litteratur des roemischen Rechts im früheren Mitelalter. Δ. Φ. ΠΑΠΑΜΗΤΡΟΣ

**μεταγλωττίζω**, ἀόρ. *μετεγλώττισα — μετεγλωττίσθην*· μεταβάλλω τὴν γλῶσσαν, τὴν φράσιν κειμένου τινός, μεταφράζω: «ἔργον—, βιβλίον μεταγλωττισθὲν ἐκ τοῦ γερμανικοῦ πρωτοτύπου».

**μεταγλώττισις**, *—εως* (ἡ)· ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταγλωττίζω, μετάφρασις.

**μετάγνοια** (ἡ)· μετάνοια, μεταμέλεια.

**μεταγνωμία** (ἡ) *[Ψυχοφυσ.]*. Ὅρος τῆς μεταψυχικῆς ἢ παραψυχολογίας, εἰσαχθεὶς ὑπὸ τοῦ Ε. Boirac πρὸς δήλωσιν τῆς ἐπιστημονικῶς ἀκαθορίστου εἰσέτι ψυχικῆς ἐκείνης ἰδιότητος, δι' ἧς καθίσταται δυνατὴ εἰς ὡρισμένα ἄτομα ἡ γνῶσις αἰσθητῶν πραγμάτων ἢ σκέψεων κανονικῶς ἀσυλλήπτων παρὰ τῆς ἀνθρωπίνης διανοίας. Ἀντιστοιχεῖ πρὸς ὅ,τι οἱ ὀπαδοὶ τοῦ ζωϊκοῦ μαγνητισμοῦ ἀπεκάλουν *διόρασιν* ἢ *ἐνδόρασιν* (lucidité ἢ clairvoyance), καθότι τὰ εἰς ὑπνοβασίας καὶ ὡρισμένας ψυχώσεις ὑποκείμενα ἄτομα διέκρινον τὰ ἐσωτερικά των ὄργανα ἢ τῶν ἀσθενῶν, τοὺς ὁποίους τοῖς παρουσίαζον, περιέγραφον γεγονότα ἐξ ἀποστάσεως, διεγίγνωσκον τὸ παρελθὸν καὶ προέλεγον τὰ μέλλοντα. Ἡ μεταγνωμία δύναται νὰ διαιρεθῇ εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας, ἀναλόγως τοῦ πεδίου ἐφ' οὗ τὰ φαινόμενα αὐτῆς ἐπεκτείνονται: 1) εἰς *διαισθητικὴν μεταγνωμίαν* (métagnomie intuitive), ἡ ὁποία ἀφορᾷ τὴν ὑπερβατικὴν γνῶσιν ψυχικῶν γεγονότων, καὶ 2) εἰς *αἰσθητικὴν μεταγνωμίαν* (métagnomie perceptive), ἥτις ἀφορᾷ τὴν γνῶσιν φυσικῶν γεγονότων κανονικῶς ἀσυλλήπτων παρὰ τοῦ πνεύματος καὶ τῶν ἀνθρωπίνων αἰσθήσεων.

Ἐὰν ἐξακολουθήσωμεν ὑποδιαιροῦντες τὰ φαινόμενα μεταγνωμίας ἀναλόγως τῶν τυπικῶν χαρακτηριστικῶν των, δυνάμεθα νὰ ὑπαγάγωμεν ταῦτα εἰς φαινόμενα: *τηλεπαθητικῆς* μεταγνωμίας, εἰς ἣν ὑπάγεται ἡ μάντευσις ἢ ἀνάγνωσις ξένης σκέψεως, *τηλαισθητικῆς* ἢ *τηλεοπτικῆς* μεταγνωμίας (ὅρασις γεγονότων λαμβανόντων χώραν μακράν), *προφητικῆς* μεταγνωμίας (γνῶσις μέλλοντος), *κρυπτοσκοπικῆς* μεταγνωμίας (ὅρασις διὰ μέσου ἀδιαφανῶν σωμάτων), *μαντικῆς* μεταγνωμίας (παραισθητικοὶ ὁραματισμοὶ ἐντὸς κρυστάλλου, ὑπολειμμάτων καφέ, κλπ.), *αὐτοσκοπικῆς* μεταγνωμίας (ἱκανότης τοῦ βλέπειν τὰ ἐσωτερικὰ ὄργανα τοῦ ἰδίου του σώματος), *ραβδικῆς* ἢ *ὑλοσκοπικῆς* μεταγνωμίας (ἀνακάλυψις πηγῶν, κοιλοτήτων, μεταλλοφόρων κοιτασμάτων) καὶ *πνευματιστικῆς* μεταγνωμίας (ὑποτιθεμένη ἐπικοινωνία μετὰ πνευμάτων). Ἀντὶ τοῦ ὅρου μεταγνωμία ἕτεροι προέτεινον τοὺς ὅρους *κρυπταισθησία* (Richet), *παναισθησία* (Wasielewski) καὶ *τηλαισθησία* (Myers). Η. Π. Γ.

**μεταγραμματίζω**· μεταβάλλω τὴν θέσιν τῶν γραμμάτων λέξεως.

**μεταγραμματισμὸς** (ὁ)· ἡ μεταβολὴ τῆς σειρᾶς τῶν γραμμάτων μιᾶς λέξεως (καὶ ὁ ἐκ ταύτης ἀπαρτισμὸς νέας).

**μεταγραφεύς**, *—έως* (ὁ)· ὁ μεταγράφων, ὁ μεταβάλλων τὴν γραφὴν λέξεως (βλ. *μεταγράφω*).

**μεταγραφὴ** (ἡ)· ἡ μεταβολὴ τῆς γραφῆς λέξεώς τινος· || νομ., περίληψις ἐπισήμου πράξεως συναλλαγῆς ἀκινήτων, καταχωριζομένη ἐν εἰδικῷ βιβλίῳ τοῦ ὑποθηκοφυλακείου τῆς περιοχῆς τοῦ ἀκινήτου.

— *[Νομ.]* Αἱ δικαιοπραξίαι μεταξὺ ζώντων, αἱ ἔχουσαι ὡς ἀντικείμενον τὴν σύστασιν, μεταβίβασιν ἢ παραίτησιυν ἀπὸ ἐμπραγμάτου τινὸς δικαιώματος (ἐμφυτεύσεως, ἐπιφανείας, δουλείας κλπ.) ἐπὶ ἀκινήτων εἰσὶν ἁπλοῖ τίτλοι πρὸς σύστασιν, μεταβίβασιν ἢ παραίτησιν τῶν δικαίων αὐτῶν, αὐτὴ δὲ ἡ σύστασις, μεταβίβασις ἢ παραίτησις τελειοῦται διὰ τῆς κατακυρώσεως τῆς δικαιοπραξίας ἐν τῷ βιβλίῳ τῶν μεταγραφῶν.

Χρῄζουσαι μεταγραφῆς δικαιοπραξίαι εἰσὶ ποικίλαι, πωλήσεις, ἀνταλλαγαί, δωρεαί, προικίσεις, αἱ κατακυρώσεις πλειστηριαζομένων κτημάτων, αἱ ἐξώδικοι ἢ δικαστικαὶ διανομαί. Τὴν μεταγραφὴν ἐνεργεῖ ὁ ὑποθηκοφύλαξ κατ' αἴτησιν τῶν μερῶν· ὡς δικαιολογητικὸν ἔγγραφον χρησιμεύει ὁ μεταγραπτέος τίτλος. Ἐν τῷ γραφείῳ τῶν κατακυρώσεων κρατεῖται βιβλίον μεταγραφῶν, τὸ ὁποῖον ἔχει δύναμιν δημοσίου ἐγγράφου καὶ τὸ ὁποῖον δύναται νὰ συμβουλευθῇ ὁ βουλόμενος.

Διὰ τῆς μεταγραφῆς καὶ ἀπὸ τῆς μεταγραφῆς τοῦ κτητικοῦ τοῦ ἐμπραγμάτου δικαίου τίτλου περιέρχεται τὸ δίκαιον τοῦτο εἰς τὸν νέον κτήτορα. Ὅθεν μεταξὺ πλειόνων τίτλων κτητικῶν ἐμπραγμάτου δικαίου ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ κτήματος ὑπερισχύει ὁ κατὰ τὴν καταχώρισιν ἀρχαιότερος, ἐπὶ μεταγραφῶν δὲ τῆς αὐτῆς ἡμέρας ὁ κατὰ τὴν γένεσιν ἀρχαιότερος. Μ. Μ. Κ.

— *[Μουσ.]* Ὁ ὅρος *μεταγραφὴ* (γαλλ. transcription) εἶναι πολλάκις συνώνυμος μὲ τὸ *παράφρασις*, εἰδικώτερον ὅμως σημαίνει διασκευὴν ἑνὸς μουσικοῦ ἔργου, δι' ἓν ἢ περισσότερα ὄργανα, διάφορα ἐκείνων, δι' ἃ εἶχεν ἀρχικῶς γραφῆ. Λέγομεν αἴφνης: «μεταγραφὴ δι' ᾆσμα καὶ κλειδοκύμβαλον» ἑνὸς μελοδράματος γραφέντος ἐν πρωτοτύπῳ δι' ᾆσμα καὶ ὀρχήστραν· «μεταγραφὴ διὰ στρατιωτικὴν ὀρχήστραν» ἔργου εὑρισκομένου ἐν πρωτοτύπῳ διὰ κλειδοκύμβαλον· «μεταγραφὴ διὰ χορῳδίαν» μιᾶς μελῳδίας μετὰ κλειδοκυμβάλου κ.τ.λ. Εἴθισται πολλάκις ἀντὶ τῆς λέξεως *μεταγραφὴ* νὰ χρησιμοποιῆται ἡ λέξις *διασκευὴ* (arrangement). Γ. Σ.

**μεταγράφω**, ἀόρ. *μετέγραψα—μετεγράφην*, παθ. μετοχ. *μεταγεγραμμένος*· μεταβάλλω τὴν γραφὴν λέξεώς τινος εἴτε ἐκ τοῦ ὀρθοῦ εἰς τὸ ἐσφαλμένον, εἴτε ἀντιθέτως (ἐν τῇ κριτικῇ καὶ παλαιογραφίᾳ τῶν ἀρχαίων κειμένων), π. χ. «ἡ παρὰ Ξενοφῶντι λέξις *ἤνυτε* μετεγράφη ὑπὸ τῶν ἀντιγραφέων *ἤνοιγε*» καὶ «ἡ παρὰ Ξενοφῶντι παραδοθεῖσα λέξις *ἔμηνε* μετεγράφη ὑπὸ κριτικοῦ *ἔδακνε*»· || νομ., ἐνεργῶ μεταγραφὴν πράξεως συναλλαγῆς ἀκινήτου (βλ. *μεταγραφή*).

**μεταγυρίζω**· ἀντὶ *ματαγυρίζω*· δημοτ., γυρίζω ἐκ νέου, ἐπιστρέφω.

**μετάγω**, ἀόρ. *μετήγαγον—μετήχθην*, παθ. μετοχ. *μετηγμένος*· ὁδηγῶ εἰς ἄλλον τόπον, μεταφέρω, μετακομίζω, μεταβιβάζω.

**μεταγωγεὺς** (ὁ) *[Ἠλεκτρολ.]*· βλ. *μεταφορεύς*.

**μεταγωγὴ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετάγειν, μεταφορά, μετακόμισις.

— *[Χωροφυλ.]* *Μεταγωγὴ* καλεῖται ἐν τῇ χωροφυλακῇ πᾶσα ὑπὸ συνοδείαν μεταφορὰ ἀπὸ τόπου εἰς τόπον ἀτόμων διατελούντων ὑπὸ φύλαξιν, π. χ. καταδίκων, ὑποδίκων, ὀφειλετῶν τοῦ δημοσίου κτλ. Παρὰ ταῖς διαφόροις ἀνωτέραις διοικήσεσι τῆς χωροφυλακῆς ὑπάρχει ὠργανωμένη ὑπηρεσία, καλουμένη *ὑπηρεσία μεταγωγῶν*, ἔχουσα δ' ἀποστολὴν τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἐν λόγῳ μεταφορῶν. Ν. Θ. Κ.

**μεταγωγικὸν** (τό)· οὐσιαστικοποιηθὲν οὐδέτερον τοῦ ἐπιθέτου *μεταγωγικός*, *—ή, —όν*.

— *[Βυζαντ.]* Τὰ *μεταγωγικὰ* ἐν τῷ βυζαντινῷ στρατῷ ἀπετελοῦντο ἐκ σαγματοφόρων κτηνῶν (καμήλων, ἡμιόνων καὶ ὄνων) καὶ ἐξ ἁμαξῶν συρομένων διὰ βοῶν ἢ ἡμιόνων. Γενικῶς ἡ ἀναλογία τῶν μεταγωγικῶν εἰς τὰ σώματα ἐκανονίζετο κατὰ τάγμα (δυνάμεως 200—400 ἀνδρῶν) ὡς ἑξῆς: Ἕκαστος στοῖχος ἐκ 10—12 ἀνδρῶν (ὅστις ἐλέγετο καὶ *ἀκία* καὶ *λόχος* καὶ *κοντουβέρνιον*) διέθετε μίαν ἅμαξαν διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν ἀναγκαίων ἐργαλείων καὶ εἰδῶν τινων ὁπλισμοῦ. Πλὴν ταύτης ὅμως διετίθετο δι' ἕκαστον στοῖχον ἢ ἀνὰ δύο στοίχους ἓν σαγματοφόρον κτῆνος, τὸ ὁποῖον ἐλέγετο *σαγμάριον*, ἐπὶ τοῦ ὁποίου οἱ ἄνδρες ἀπέθετον κατὰ

Digitized by Google

τὰς πορείας τοὺς θώρακας καὶ τὰς σκηνὰς αὐτῶν. Τὰ σαγμάρια ταῦτα εἶχον καὶ ἕτερον σπουδαιότατον προορισμόν, τουτέστι τὴν μεταφορὰν τῶν τροφῶν τοῦ τάγματος, ὁσάκις τοῦτο, ἕνεκα τακτικῶν λόγων, ἦτο ὑποχρεωμένον νὰ ἐνεργήσῃ ἐπὶ ἐδαφῶν ἀνωμάλων, ἐπὶ τῶν ὁποίων δὲν ἦτο δυνατὴ ἡ κίνησις τῶν ἁμαξῶν. Χάρις εἰς τὰ σαγμάρια ταῦτα τὰ βυζαντινὰ στρατεύματα ἐκέκτηντο μίαν θαυμασίαν εὐκινησίαν ἐν ἐκστρατείᾳ.

Πλὴν τῶν μεταγωγικῶν τούτων, ἕκαστον τάγμα διέθετεν, ἀναλόγως τῆς δυνάμεώς του, 12—20 ἁμάξας διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν τροφῶν του καὶ τῶν ἀνταλλακτικῶν βελῶν καὶ τόξων. Ἐπίσης διετίθετο μέγας ἀριθμὸς ἁμαξῶν καὶ σαγμαρίων διὰ τὰς ἀποσκευὰς τῶν ἀνωτέρων μονάδων καὶ διὰ τὰ ἐπιτελεῖα αὐτῶν. Διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν ἀποσκευῶν τοῦ βασιλέως (βασιλικῆς σκηνῆς μετὰ τῶν σχετικῶν ἐπίπλων, ἐπιτραπεζίων σκευῶν, βιβλίων κ.λ.) διετίθεντο ὑπὲρ τὰ 200 σαγμάρια. Κυρίως ὅμως μέγιστος ἀριθμὸς ἁμαξῶν ἀπῃτεῖτο διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν βαρυτάτων πολιορκητικῶν μηχανῶν καὶ τῶν γεφυρῶν ἐκστρατείας.

Ἡ θέσις τῶν μεταγωγικῶν ἐν τῇ φάλαγγι ἐκανονίζετο, ὅπως καὶ παρὰ τοῖς σημερινοῖς στρατοῖς, ἀναλόγως τῆς τακτικῆς καταστάσεως. Ἐφόσον τὸ στράτευμα ἐπορεύετο μακρὰν τοῦ ἐχθροῦ, τὰ μεταγωγικά του ἐβάδιζον ὄπισθεν ἑκάστης μοίρας (σώματος ἀποτελουμένου ἐξ 1—3 χιλ. ἀνδρῶν) ἢ ὄπισθεν ἑκάστης τούρμας (σώματος ἀποτελουμένου ἐκ 3 μοιρῶν). Ἐγγὺς τοῦ ἐχθροῦ ἀπετέλουν μὲν μέρος τῆς φάλαγγος, ἀλλ' ἐπορεύοντο ἐντελῶς κεχωρισμένα τῶν μαχίμων μονάδων, ἐπικειμένης δὲ μάχης ἀπεχωρίζοντο τελείως ἀπ' αὐτῶν καὶ ἐπροστατεύοντο ὑπὸ εἰδικῆς συνοδείας, τέλος δ' ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης ἐτάσσοντο ὄπισθεν τῆς 3ης γραμμῆς τῆς παρατάξεως καὶ εἰς ἀπόστασιν βολῆς τόξου ἀπὸ ταύτης καὶ ἐπροστατεύοντο ὑπὸ 1—2 ταγμάτων. Ἀλλὰ πλὴν τῆς προστασίας ταύτης αἱ ἅμαξαι ἐπροστατεύοντο καὶ ἀφ' ἑαυτῶν. Εἰς τὸ ὄπισθεν μέρος τῆς ἁμάξης ἀνηρτᾶτο ἓν κιλίκιον (χονδρὸν μάλλινον ὕφασμα), ἵνα προστατεύῃ τοὺς ἁμαξηλάτας (οἵτινες ἦσαν ὡπλισμένοι δι' ἀκοντίων καὶ τόξων) καὶ τὰ ὑποζύγια, κατὰ τῶν βελῶν τῶν ἐχθρῶν, οἵτινες ἤθελον τυχὸν ἐπιτεθῆ κατὰ τῶν νώτων τῆς παρατάξεως. Ὅσον ἀφορᾷ τὰ σαγματοφόρα, ταῦτα ἐτοποθετοῦντο κατὰ τρόπον τοιοῦτον, ὥστε νὰ καλύπτωνται ὑπὸ τῶν ἁμαξῶν. Ἐν τέλει τὰ κτήνη ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης «ἐπεδικλώνοντο, ἵνα μὴ σαγιττευόμενα ἢ διὰ τὸν θόρυβον τῆς μάχης ἐνοχλῶσι τὴν τάξιν».

Ταῦτα, ὁσάκις ἐδίδετο μάχη ἐκ συναντήσεως· ὁσάκις ὅμως ὁ στρατὸς ἐξήρχετο πρὸς μάχην ἐκ τοῦ στρατοπέδου του, τὰ μεταγωγικὰ παρέμενον ἐν αὐτῷ ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς φρουρᾶς τοῦ στρατοπέδου. Ὁσάκις ὁ στρατὸς ἐπορεύετο ἐντὸς τῆς ἰδίας αὐτοῦ χώρας καὶ ἐπέκειτο μάχη ἐκ συναντήσεως, τὰ μεταγωγικὰ ἐγκατελείποντο ὄπισθεν, εἰς ἀπόστασιν 30—50 μιλλίων (δηλαδὴ 50—90 χλμ.), καὶ τότε μεταξὺ αὐτῶν καὶ τῆς μαχίμου φάλαγγος ἐγκαθιστῶντο μικρὰ φυλάκια, ἵνα τηρῆται ἡ ἄμεσος ἐπαφὴ καὶ ἡ ταχεῖα καὶ ἀσφαλὴς διαβίβασις πάσης περὶ προχωρήσεως ἢ ὑποχωρήσεως αὐτῶν διαταγῆ τοῦ στρατηγοῦ. Γενικῶς οἱ Βυζαντινοί, οἵτινες εἶχον στρατὸν τελείως ὠργανωμένον, ἀπέδιδον εἰς τὴν ἀπρόσκοπτον λειτουργίαν τῶν μεταγωγικῶν οἵαν σημασίαν ἀποδίδουσιν εἰς αὐτὰ καὶ οἱ ἄριστοι τῶν σημερινῶν στρατῶν, δι' ὃ καὶ ἐπροστάτευον αὐτὰ δι' αὐστηροτάτων νομικῶν διατάξεων. Κατὰ τὴν βυζαντινὴν νομοθεσίαν «οἱ κλέπτοντες ἐν φοσσάτῳ, εἰ μέν εἰσιν ὅπλα τὰ παρὰ τούτων κλεπτόμενα, σφοδρῶς τύπτονται, ἤγουν ἰσχυρῶς δέρονται· εἰ δὲ ὑποζύγια κλέψουσι χειροκοποῦνται, τουτέστι τὰς χεῖρας κόπτονται, διότι τὰ ὑποζύγια ἀναγκαιότερα τῶν ὅπλων εἰσίν». Ν. ΚΛΣ

—*[Τακτ.]* Α. *Μεταγωγικὰ μάχης*. Καλεῖται οὕτω τὸ κλιμάκιον ἑκάστης μικρᾶς μονάδος, τὸ χρησιμεῦον διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν πυρομαχικῶν καὶ τῶν μιᾶς ἡμέρας τροφίμων διὰ τὴν μονάδα ταύτην. Τὰ μεταγωγικὰ μάχης ἀποτελοῦσι μέρος ἀνάσπαστον τῆς σχετικῆς μονάδος, πορεύονται δὲ πάντοτε εἰς τὴν οὐρὰν τοῦ μαχίμου τμήματος τῆς μονάδος των, δι' ὃ πρέπει ν' ἀποτελῶνται πάντοτε ἐκ στοιχείων ὁμοιομόρφων πρὸς τὰ τῆς σχετικῆς μονάδος, δηλαδή, ἐκ φορτηγῶν κτηνῶν προκειμένου περὶ πεζικοῦ ἢ ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, ἐκ βλητοφόρων προκειμένου περὶ πεδινοῦ πυροβολικοῦ, ἐξ αὐτοκινήτων προκειμένου περὶ πυροβολικοῦ αὐτοκινήτου ἕλξεως.

Β. *Μεταγωγικὰ σώματος*. Καλεῖται οὕτω τὸ κλιμάκιον ἑκάστης μικρᾶς μονάδος, τὸ χρησιμεῦον διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν τροφίμων καὶ τῆς νομῆς (συνήθως δι' ἀμφότερα δύο ἡμερῶν) διὰ τὴν μονάδα ταύτην. Τὰ μεταγωγικὰ σώματος πορεύονται χωριστὰ ἀπὸ τῶν σχετικῶν των μονάδων, συνενούμενα ἀνὰ μεγάλην μονάδα ἢ ἀνὰ ἀπόσπασμα, καὶ σχηματίζοντα χωριστὴν φάλαγγα ὑπὸ ἴδιον διοικητήν, ἀκολουθοῦσαν εἰς ἀπόστασιν χιλιομέτρων τινῶν (συνήθως 5—8) ὄπισθεν τῆς οὐρᾶς τοῦ μαχίμου τμήματος ἑκάστης μεγάλης μονάδος (συνήθως μεραρχίας) ἢ ἑκάστου ἀποσπάσματος προκειμένου περὶ προχωρητικῆς πορείας, προπορευομένην δὲ κατὰ χιλιόμετρά τινα (συνήθως 6—10) πρὸ τῆς κεφαλῆς τοῦ μαχίμου τμήματος ἑκάστης μεγάλης μονάδος (συνήθως μεραρχίας) ἢ ἑκάστου ἀποσπάσματος προκειμένου περὶ ὑποχωρητικῆς πορείας. Πορεύονται δ' οὕτω πως, ἵνα, ἀφ' ἑνὸς μὲν μὴ παρεμβάλλωσι δυσχερείας εἰς τὴν πορείαν καὶ τὴν τυχὸν ἀνάπτυξιν πρὸς μάχην τῶν μαχίμων τμημάτων, ἀφ' ἑτέρου δ' εὑρίσκωνται ἐκτὸς τῆς βολῆς τοῦ πυροβολικοῦ τοῦ πεδίου. Ἐπειδὴ τὰ μεταγωγικὰ σώματος δὲν συμπορεύονται μετὰ τῶν μαχίμων τμημάτων ἑκάστης μονάδος, δι' αὐτὸ δυνατὸν νὰ μὴ ἀποτελῶνται ἐκ στοιχείων ὁμοιομόρφων πρὸς τὰ τῆς σχετικῆς μονάδος, τόσον μᾶλλον, διότι ἡ φάλαγξ τῶν μεταγωγικῶν σώματος πορεύεται πάντοτε εἰς βάδην βηματισμόν, καθ' ὅσον αὕτη περιέχει πάντοτε στοιχεῖα ἀνομοιομόρφου κινήσεως (ἡμιόνους, δίτροχα, τετράτροχα ἐζευγμένα ἢ ἡνιοχούμενα κτλ.) (βλ. καὶ λ. *ἀνεφοδιασμός*). Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

—*[Ναυτ.]* Καλεῖται *μεταγωγικὸν* ὑπηρετικὸν πλοῖον τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἢ ἐμπορικὸν ἐπίτακτον ἢ ναυλωμένον πρὸς ἐκτέλεσιν ὑπηρεσίας στρατιωτικῶν μεταφορῶν. Τοιοῦτον δηλαδὴ εἶναι καὶ τὸ ἱππηγὸν καὶ τὸ σκευαγωγὸν καὶ τὸ ὁπλιταγωγόν. Εἰς τὴν παλαιὰν κοινὴν ναυτικὴν γλῶσσαν ὠνομάζετο *στραπόρτο* κατὰ παραφθορὰν τοῦ γαλλικοῦ ὅρου transport. Σ. Ε. Λ.

**μεταγωγικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἁρμόδιος, ὁ ἐπιτήδειος εἰς τὸ μετάγειν, μεταφορικός: «μεταγωγικὴ ὑπηρεσία τοῦ στρατοῦ»· || *μεταγωγικὸν* (τό)· ὡς οὐσ., μέσον μεταφορᾶς, ἰδίᾳ πλοῖον.

— **μεταγωγικὸν σῶμα** *[Στρατ.]*. Καλεῖται οὕτω ἡ ὑπηρεσία τοῦ στρατοῦ, ἡ ἐκτελοῦσα τὰς ὁδικὰς μεταφοράς, τὰς διὰ φορτηγῶν κτηνῶν, τὰς δι' ὀχημάτων, τὰς δι' αὐτοκινήτων, τῶν μεγάλων μονάδων τοῦ στρατοῦ. Τοιοῦτον ὠργανωμένον σῶμα διὰ πρώτην φορὰν παρουσιάσθη παρὰ τοῖς στρατοῖς τοῦ Ναπολέοντος, ἔκτοτε δ' εἰσήχθη παρ' ἅπασι τοῖς στρατοῖς. Ἐν Ἑλλάδι τοιοῦτον σῶμα συνεκροτήθη διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1914. Ν. Θ. Κ.

**μεταγώγιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μεταχθῇ, νὰ μεταφερθῇ.

**μεταγωγὸς** (ὁ)· ὁ μετάγων, ὁ ὁδηγῶν κατ' ἄλλην διεύθυνσιν· || ὄργανον δι' οὗ μεταβάλλεται ἡ φορὰ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος (βλ. λ. *μεταφορεύς*).

**Μεταγωνῖται** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Νομαδικὸς λαὸς τῆς ΒΔ. Ἀφρικῆς, κατοικῶν τὰ παράλια τῆς Μαυριτανίας Τιγγιτανῆς (νῦν Μαρόκον), ἀπὸ τοῦ πορθμοῦ τοῦ Γιβραλτὰρ (Fretum Gaditanum) μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Μολοχὰθ (νῦν Μολούγια). Α. Θ. Σ.

**Μεταγωνῖτις,** καὶ ***Μεταγώνια*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν παραλίων τῆς Μαυριτανίας Τιγγιτανῆς, (νῦν Μαρόκον), ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ πορθμοῦ τοῦ Γιβραλτὰρ (Fretum Gaditanum), μέχρι τοῦ ποταμοῦ Μολοχὰθ (νῦν Μολούγια), πρὸς Δ. τοῦ ὁποίου ἔκειτο τὸ *Μεταγώνιον ἀκρωτήριον* ἢ *Μεταγωνῖτις ἄκρα* (νῦν Capo dell' Agua). Α. Θ. Σ.

**μεταδιδάσκω,** *ἀόρ. μετεδίδαξα—μετεδιδάχθην*· διδάσκων μεταβάλλω τὸ πρότερον διδαχθέν· || κάμνω τινὰ νὰ ἀλλάξῃ γνώμην, μεταπείθω.

**μεταδίδω,** *μετέδωκα* καὶ *μετέδωσα—μετεδόθην*· δίδω μέρος ἔκ τινος ὅλου, κάμνω τινὰ μέτοχον, ἀρχ. *μεταδίδωμι*· || κάμνω τινὰ νὰ δεχθῇ τι: «μεταδίδω τὴν νόσον», «ἡ νόσος μετεδόθη ἐκ καταπλεύσαντος πλοίου»· || «μεταδίδω τὴν κίνησιν» ἐπὶ τῶν μηχανῶν· || «μεταδίδω τὴν εἴδησιν» γνωστοποιῶ, ἀνακοινῶ.

**μεταδόσιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἐκεῖνος ὁ ὁποῖος δύναται νὰ μεταδοθῇ, ἄλλως *μεταδοτικός*: «τὸ νόσημα δὲν εἶναι μεταδόσιμον» ἄλλως *κολλητικός*.

**μεταδοσιμότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μεταδοσίμου, ἄλλως *μεταδοτικότης*: «ἡ μεταδοσιμότης τοῦ νοσήματος».

**μετάδοσις,** *—εως* (ἡ)· δημοτ., *μετάδοση*· δόσις μέρους ἔκ τινος ὅλου, καὶ συνεκδοχικῶς τὸ μεταδιδόμενον: «ἡ ἁγία μετάδοσις» ἄλλως *μετάληψις, κοινωνία*: «πῆρα μετάδοση»· || φρ. «δὲν ἔχω κρασὶ οὔτε γιὰ μετάδοση» οὐδ' ἐλαχίστην ποσότητα· || μεταφορά, μεταβίβασις: «μετάδοσις κινήσεως, — νοσήματος, — εἰδήσεως».

— **μετάδοσις κινήσεως** *[Μηχαν.]*. Ἡ μεταβίβασις κινήσεως ἀπὸ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο. Συνήθως εἰς τὴν μηχανολογίαν πρόκειται περὶ μεταβιβάσεως περιστροφικῆς κινήσεως ἀπὸ μιᾶς ἀτράκτου (ἄξονος) εἰς ἄλλην. Ἡ μετάδοσις αὕτη δύναται νὰ γίνῃ κατὰ δύο τρόπους, διαφέροντας οὐσιωδῶς ἀλλήλων κατὰ τὸ ἑξῆς: Κατὰ τὸν πρῶτον, ἡ μετάδοσις γίνεται τοιουτοτρόπως, ὥστε περιστροφὴ τῆς μιᾶς ἀτράκτου καθ' ὡρισμένην γωνίαν ἰσοδυναμεῖ πρὸς περιστροφὴν τῆς ἑτέρας κατὰ γωνίαν ἐπίσης ὡρισμένην, διδομένην ὑπὸ τῆς λεγομένης *σχέσεως μεταδόσεως*, ἥτις εἶναι τὸ πηλίκον τοῦ ἀριθμοῦ τῶν στροφῶν, ἃς ἐκτελεῖ ἡ μία τῶν ἀτράκτων, πρὸς τὸν ἀριθμὸν τῶν στροφῶν, τὰς ὁποίας ἐκτελεῖ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἡ ἄλλη ἄτρακτος. Ἡ σχέσις μεταδόσεως, κατὰ τὸν πρῶτον αὐτὸν τρόπον μεταβιβάσεως τῆς κινήσεως, παρουσιάζεται ὡς ἀριθμὸς μαθηματικῶς ὡρισμένος, ἐὰν παραμελήσῃ τις τὰς ἀναποφεύκτους, ἀλλὰ πολὺ μικράς, ἐλαστικὰς παραμορφώσεις. Κατὰ τὸν δεύτερον τρόπον, ἡ μετάδοσις γίνεται τῇ βοηθείᾳ τῆς τριβῆς, καὶ ἑπομένως, ἐκτὸς τῶν ἐλαστικῶν παραμορφώσεων, καὶ αἱ μετακινήσεις τριβῆς καθιστοῦν μεταβλητὴν τὴν σχέσιν μεταδόσεως.

Ἡ μετάδοσις τῆς κινήσεως γίνεται διὰ τῶν λεγομένων *στοιχείων μεταδόσεως κινήσεως*. Στοιχεῖα μεταδόσεως ἐνεργοῦντα κατὰ τὸν πρῶτον τρόπον εἶναι σώματα ἐκ περιστροφῆς φέροντα ἐσοχὰς καὶ ἐξοχὰς ἐνεργούσας ἐπ' ἀλλήλων ἢ ἀπ' εὐθείας, ὁπότε αἱ ἐσοχαὶ τοῦ ἑνὸς δέχονται τὰς ἐξοχὰς τοῦ ἄλλου, ἢ ἐμμέσως, τῇ βοηθείᾳ ἁλύσεως, ἥτις περιβάλλει ἀμφότερα τὰ στοιχεῖα. Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν ἀντιστοιχοῦν οἱ *ὀδοντωτοὶ τροχοί*, εἰς δὲ τὴν δευτέραν οἱ *τροχοὶ ἁλύσεως*. Στοιχεῖα μεταδόσεως ἐνεργοῦντα κατὰ τὸν δεύτερον τρόπον εἶναι ἐπίσης σώματα ἐκ περιστροφῆς, ἐφαπτόμενα ἀπ' εὐθείας ἀλλήλων *(τροχοὶ τριβῆς)*, ἢ συνδεδεμένα διὰ τρίτου σώματος, ἱμάντος ἢ καλῳδίου περιλαμβάνοντος ἀμφότερα τὰ στοιχεῖα μεταδόσεως. Μετάδοσις τῇ βοηθείᾳ ὀδοντωτοῦ τροχοῦ καὶ ἀτέρμονος κοχλίου ἀνήκει ἐπίσης εἰς τὸν πρῶτον τρόπον ὡρισμένης σχέσεως μεταδόσεως. Χαρακτηριστικὰ στοιχεῖα τῆς μεταδόσεως κινήσεως εἶναι ἡ σχέσις μεταδόσεως, ὁ ἀριθμὸς τῶν στροφῶν ἀνὰ λεπτόν, καὶ ἡ μεταδιδομένη ἰσχύς. Ἐκ τῶν δύο τελευταίων δύναται νὰ ὑπολογισθῇ εὐκόλως ἡ μεταδιδομένη ῥοπὴ στρέψεως, μέγεθος ἀπαραίτητον διὰ τὸν ὑπολογισμὸν τῶν στοιχείων μεταδόσεως ἀπὸ ἀπόψεως ἀντοχῆς. Γ. Θ. Κ.

**μεταδότης** (ὁ), καὶ *μεταδοτήρ, —ῆρος*· ὁ μεταδίδων, ὁ δι' οὗ μεταδίδεταί τι: «ἠλεκτρικὸς μεταδοτήρ»· || μηχαν., ὄργανον, δι' οὗ μεταδίδεται κίνησις ἀπὸ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο.

**μεταδοτικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἱκανός, ὁ ἐπιτήδειος νὰ μεταδίδῃ τὰς γνώσεις του, ἰδίᾳ ἐπὶ διδασκάλου· || παθ., ὁ μεταδιδόμενος, ὁ εὐκόλως μεταβιβαζόμενος ἀπὸ ἀτόμου εἰς ἄτομον, κοιν. *κολλητικός*: «νόσος μεταδοτική», «ὁ γέλως εἶναι μεταδοτικός»· || *μεταδοτικὸν* (τό)· ὡς οὐσ., ἡ μεταδοτικότης: «τὸ μεταδοτικὸν τοῦ διδασκάλου».

— **μεταδοτικαὶ νόσοι.** Καλοῦνται οὕτω αἱ νόσοι αἱ δυνάμεναι νὰ μεταδοθῶσιν ἀμέσως ἢ ἐμμέσως ἀπὸ νοσοῦντος εἰς ὑγιᾶ. Ὁ συχνότερος καὶ συνηθέστερος τρόπος μεταδόσεως τῶν νόσων τούτων εἶναι ὁ δι' *ἐπαφῆς* τοῦ ὑγιοῦς πρὸς αὐτὴν τὴν ἑστίαν τῆς νόσου ἢ πρὸς πρόσωπα (ἰατρούς, νοσοκόμους, συγγενεῖς) ἐλθόντα εἰς συνάφειαν πρὸς τὸν πάσχοντα. Οὐχὶ σπανίως οἱ περὶ τὸν ἄρρωστον φέρουσι τὰ νοσογόνα σπέρματα ἐν ἑαυτοῖς, χωρὶς ν' ἀσθενήσουν, ἐνῷ δύνανται νὰ μεταδώσουν καὶ διαδώσουν τὴν νόσον. Οἱ τοιοῦτοι καλοῦνται *μικροβιοφόροι*. Ἀλλ' ἡ μετάδοσις γίνεται καὶ δι' ἄλλων τρόπων: α) Διὰ τοῦ *ἀέρος*, μεταφέροντος τὰ μικρόβια τὰ ἀναμεμειγμένα μετὰ τῶν μορίων κονιορτοῦ, ἀντέχοντα δ' εἰς τὴν ξηρασίαν (μικρόβια φυματιάσεως, τετάνου, τύφου, πυογόνον σταφυλόκοκκον). Διὰ τοῦ ἀέρος μεταφέρονται καὶ τὰ διὰ βηχός, πταρμοῦ ἢ ὁμιλίας ἐκτοξευόμενα μικροβιοβριθῆ σταγονίδια, ἐξικνούμενα μέχρις ἀποστάσεως 1—1,50 μέτρων, ὡς ἀπέδειξαν αἱ μικροβιολογικαὶ ἔρευναι. Οὕτω μεταδίδονται ὁ ὀστρακιά, ἡ ἱλαρά, ἡ διφθερῖτις, ἡ πνευμονικὴ πανώλης, ἡ ἐπιδημικὴ μηνιγγῖτις, ἡ πνευμονικὴ φυματίασις, ἡ πνευμονία, ὁ κοκκύτης, ἡ γρίππη καὶ ἡ παρωτιδῖτις. Τινὰ τῶν νοσημάτων τούτων, ὀξέα ἐξανθηματικά, μεταδίδονται καὶ διὰ τῶν ἀποπιπτόντων λεπίων τῆς ἐπιδερμίδος. β) Διὰ τοῦ *ὕδατος*, ἐν ᾧ πολλὰ τῶν μικροβίων διατηροῦνται ζῶντα ἐπὶ μακρόν, ἂν συμβῇ νὰ εἰσπέσουν εἰς αὐτό. Οὕτω διὰ τοῦ ποσίμου ὕδατος δυνατὸν νὰ προέλθουν ὁ κοιλιακὸς τῦφος, ἡ δυσεντερία καὶ ἡ χολέρα. γ) Διὰ τῶν *τροφῶν*, ὅταν αὗται ἐσθίωνται ὠμαὶ ἢ χωρὶς νὰ μαγειρευθῶσιν ἐπαρκῶς. δ) Διὰ τῶν *ἐνδυμάτων* καὶ τῶν διαφόρων *ἀντικειμένων* (ἀγγείων, σκευῶν, ἀθυρμάτων, νομισμάτων, βιβλίων, ἐπίπλων, κιγκλιδωμάτων κλπ.), πρὸς ἃ ἦλθεν εἰς ἐπαφὴν ὁ ἄρρωστος. ε) Διὰ τῶν *κοπράνων, οὔρων* καὶ λοιπῶν *ἐκκριμάτων* τῶν πασχόντων, ἐν οἷς ἐπὶ μακρὸν δύνανται νὰ ζήσουν νοσογόνα σπέρματα διάφορα, ἅτινα διαχεόμενα εὐχερῶς δύνανται νὰ μολύνουν ἄλλους ὑγιεῖς. στ) Διὰ τῶν *ἐντόμων*, μεταφερόντων διὰ νύγματος εἰς τοὺς ὑγιεῖς τὴν πανώλη, τὸν κίτρινον πυρετόν, τὸν ἐξανθηματικὸν τῦφον, τὸν ὑπόστροφον πυρετόν, τὴν ἑλονοσίαν, τὸν δάγγειον, ἴσως δὲ καὶ τὴν λέπραν (ψύλλαι, ἀνωφελεῖς κώνωπες, στεγόμυια ἡ ταινιωτή, φθεῖρες, κόρεις κλπ.). Ἄλλα ἔντομα, καὶ δὴ αἱ μυῖαι, ἐπικαθήμενα ἐπὶ ἐκκριμάτων λοιμωδῶν νόσων, λ. χ. πύου ἢ χολερικῶν ἀποχωρημάτων, παραλαμβάνουν μόρια πλήρη μικροβίων, ἅτινα μεταφέρουν εἴτε ἐπὶ τοῦ σώματος τῶν ὑγιῶν (ἐξ οὗ ὀφθαλμίαι

Digitized by Google

κλπ.), εἴτε ἐπὶ τῶν τροφίμων, ἅτινα οὕτω μολύνονται καὶ μόνον δι' ὑποβολῆς εἰς ὑψηλὴν θερμοκρασίαν εἶναι δυνατὸν νὰ καταστῶσι φαγώσιμα. ζ) Διὰ τῶν *ζῴων*, οἷον μυῶν, οἵτινες εἶναι φορεῖς τῆς πανώλους. Ζῷά τινα, πάσχοντα ἐκ διαφόρων μεταδοτικῶν νόσων (λύσσης, μάλεως, ἄνθρακος), μεταδίδουν εἰς τὸν ἄνθρωπον ταύτας διὰ δήξεως, ἤτοι δι' ἀμέσου ὁδοῦ.

Ὡς θύραι εἰσόδου μολύσματός τινος χρησιμεύουν οἱ ἐκφορητικοὶ πόροι τῶν σμηγματογόνων καὶ τῶν ἱδρωτοποιῶν ἀδένων, ὡς καὶ τὰ θυλάκια τῶν τριχῶν· αἱ λύσεις τῆς συνεχείας τοῦ δέρματος καὶ τῶν βλεννογόνων τῶν ὀργάνων καὶ κοιλοτήτων.

Ἐν τούτοις καὶ ἡ ἐκδήλωσις τῆς μεταδοτικῆς νόσου ἐξαρτᾶται ἐκ πολλῶν συνθηκῶν, ὧν κυριώτεραι εἶναι: 1) Ὁσάκις τὸ παθογόνον μικρόβιον εἶναι τόσον ἰσχυρόν, ὥστε νὰ ἔχῃ τὴν δύναμιν νὰ πολλαπλασιασθῇ ἢ νὰ ἐμπέσῃ εἰς ὄργανον, ὅπερ παρέχει εἰς αὐτὸ ἔδαφος πολλαπλασιασμοῦ. 2) Ὁσάκις ὑπάρχει εὐπάθεια ἢ προδιάθεσις τοῦ προσβαλλομένου, ὀφειλομένη εἰς κληρονομικοὺς ἰδίᾳ λόγους, ὡς λ. χ. ὑπάρχει τοιαύτη προδιάθεσις εἰς τοὺς ἐκ φυματικῶν, ἀλκοολικῶν ἢ συφιλιδικῶν γονέων καταγομένους, δυναμένους νὰ καταστῶσιν εὐάλωτοι ὑπὸ τῆς φυματιάσεως. 3) Ὁσάκις εὑρίσκονται εἰς ἐξασθένησιν αἱ ἀμυντικαὶ δυνάμεις τοῦ ὀργανισμοῦ, ὡς συμβαίνει τοιαύτη εἰς τοὺς βλεννογόνους τοῦ φάρυγγος, τοῦ στομάχου καὶ τῶν ἐντέρων, κατ' ἀκολουθίαν χρονίων ἐξ οἰνοπνεύματος καταχρήσεων ἢ ψύξεως τῶν βλεννογόνων τούτων ἢ ἀπορροφήσεως διαφόρων δηλητηριωδῶν κόνεων, καπνῶν κλπ. Τέλος, ὁσάκις ὑπάρχει ἐλάττωσις τῶν ἀμυντικῶν δυνάμεων τοῦ ὀργανισμοῦ, προερχομένη ἐκ καταπονήσεως σωματικῆς ἢ πνευματικῆς ἢ ἐκ καταχρήσεων, στερήσεων, θλίψεων κλπ. Σ. Γ. Σ.

**μεταδοτικότης** (ἡ). Ἡ ἰδιότης τῆς μεταδόσεως νόσου τινὸς ἀπὸ ἀτόμου εἰς ἄτομον. Ἡ μεταδοτικότης παρατηρεῖται εἰς τὰς μιασματικὰς ἢ λοιμώδεις παθήσεις καὶ τελεῖται διὰ τοῦ ἀέρος, τοῦ ὕδατος, τῶν τροφῶν, τοῦ ἐμβολιασμοῦ, τῶν διαφόρων ἀντικειμένων κλπ. Πᾶσαι αἱ τὸν ὀργανισμὸν ἐξαντλοῦσαι αἰτίαι (στερήσεις τροφῆς, θλίψεις, κάματοι σωματικοὶ ἢ διανοητικοί, κακὴ διαβίωσις κλπ.) δημιουργοῦσι κατάστασιν διευκολύνουσαν τὴν νοσηρὰν μεταδοτικότητα, ὁσάκις ὁ ὀργανισμὸς δὲν ὑφίσταται ἐπίκτητον ἢ συγγενῆ ἀνοσίαν. Ἡ διάρκεια τῆς μεταδοτικότητος τῶν διαφόρων νοσημάτων εἶναι διάφορος, ἀναγκαιοτάτη δὲ ἡ γνῶσις αὐτῆς, προκειμένου νὰ καθορισθῇ καὶ ἡ διάρκεια τῆς ἀπομονώσεως τοῦ ἀρρώστου. Τὸ τοιοῦτον ἰδίως ἔχει σημασίαν ἐν τῇ σχολικῇ ὑγιεινῇ, ἐπιβαλλούσῃ τὴν ἐκ τοῦ σχολείου ἀπομάκρυνσιν μαθητοῦ ἢ μαθητρίας ἐπὶ χρόνον ὡρισμένον, ἀνάλογον πρὸς τὴν ἐκδηλωθεῖσαν λοιμώδη νόσον. Ἐπὶ ἱλαρᾶς π. χ. ἐπιβάλλεται χρόνος ἀπομακρύνσεως 16—25 ἡμερῶν, ἀναλόγως πρὸς τὴν μορφὴν τῆς νόσου, τοῦ παιδίου δεκτοῦ γινομένου μετὰ τὴν λῆξιν τῆς ἀπολεπίσεως καὶ τὴν ἐξαφάνισιν τῆς βηχός. Ἐπὶ κοκκύτου δὲ ἡ διάρκεια τῆς ἀπομακρύνσεως εἶναι 40 καὶ πλέον ἡμερῶν, ἐφ' ὅσον διαρκεῖ ἡ σπασμωδικὴ βήξ. Σ. Γ. Σ.

**μεταζυγώνω**· ἀντὶ ***ματαζυγώνω***· δημοτ., πλησιάζω ἐκ νέου: «δὲ ματαζύγωσε 'ς τὸ σπίτι μας».

**μετάζῳα** (τὰ) *[Ζῳολ.]*. Καλοῦνται οὕτω γενικῶς τὰ πολυκύτταρα ζῷα. Τὸ σῶμα τούτων ἀποτελεῖται ἐκ μεγάλου πλήθους κυττάρων, ἕκαστον τῶν ὁποίων διατηρεῖ αὐθυπαρξίαν τινὰ καὶ ζῇ, διαιρεῖται καὶ ἀποθνήσκει ἀνεξαρτήτως τῶν διαφόρων λειτουργιῶν τῶν γειτόνων του. Ἡ διαφορὰ τῶν μεταζῴων ἀπὸ τῶν πρωτοζῴων ἔγκειται εἰς τὸ ὅτι τὰ ἀποτελοῦντα τὴν ἀποικίαν τῶν πρωτοζῴων κύτταρα εἶναι ὁμοειδῆ μεταξύ των, ἐνῷ τὰ κύτταρα τὰ ἀποτελοῦντα τὸ σῶμα τῶν μεταζῴων εἶναι διάφορα κατὰ μέγεθος, σχῆμα καὶ σύνθεσιν μεταξύ των.

Ἕκαστον μετάζῳον παράγεται ἐκ πρωταρχικοῦ κυττάρου, τοῦ ᾠοῦ. Ἀρχόμενον ἀπὸ τοῦ ᾠοῦ, δὲν λαμβάνει τὴν ὁριστικὴν αὐτοῦ μορφὴν εἰμὴ μόνον μετὰ πάροδον μακροῦ ἢ βραχέος χρονικοῦ διαστήματος. Καθ' ὅλον αὐτὸ τὸ διάστημα τῆς διαμορφώσεώς του καλεῖται *ἔμβρυον* καὶ λαμβάνει ἑκάστοτε διαφόρους μορφάς, αἵτινες καλοῦνται *ἐμβρυακαὶ μορφαί*. Αἱ ἀλλεπάλληλοι φάσεις τῶν ἐμβρυακῶν μορφῶν καλοῦνται *ἐμβρυογενετικὴ ἀνάπτυξις* ἢ *ἐμβρυογένεια* ἢ καὶ *ὀντογένεια*. Αἱ ἐμβρυακαὶ μορφαὶ παρουσιάζουσι μεγάλας διαφορὰς εἰς τὰ διάφορα εἴδη τῶν ζῴων, ἀλλὰ τὸ πρῶτον στάδιον τῆς ἀναπτύξεως πάντοτε καὶ εἰς πάντα τὰ ζῷα εἶναι τὸ αὐτό.

Κατὰ τὴν μεταμόρφωσιν τοῦ ᾠογόνου εἰς ᾠοκοίτην, τὸ θῆλυ κύτταρον πληροῦται θρεπτικῶν οὐσιῶν, αἵτινες ἀπαντῶσιν εἰς τὸ ὥριμον ᾠάριον καὶ εἰς τὸ γονιμοποιηθὲν τοιοῦτον, καὶ αἵτινες μικρὸν κατὰ μικρὸν ἀφομοιοῦνται κατὰ τὸ στάδιον τῆς ἀναπτύξεως, διὰ νὰ χρησιμεύσωσιν εἰς προσεχὲς ἢ ἀπώτερον χρονικὸν διάστημα διὰ τὰς πρώτας θρεπτικὰς ἀνάγκας τοῦ ἐμβρύου. Τὸ σύνολον τῶν θρεπτικῶν τούτων οὐσιῶν, οἱαδήποτε καὶ ἂν εἶναι ἡ φύσις καὶ ἡ σπουδαιότης αὐτῶν, καλοῦνται *λέκυθος* (κρόκος τοῦ ᾠοῦ), καὶ συνίστανται ἐξ ὑδαρῶν συστατικῶν ὑπὸ μορφὴν σταγονιδίων ἢ σφαιριδίων ἀρκετοῦ μεγέθους καὶ εἰς τὸν κόλπον τοῦ πρωτοπλάσματος ἑδρευόντων. Τὸ ποσὸν τῆς λεκύθου, ὅπερ περικλείεται εἰς τὸ ᾠόν, εἶναι διάφορον· ᾠά τινα ἐλαχιστοτάτην ποσότητα λεκύθου περικλείουσιν, ἐνῷ ἕτερα περικλείουσι μεγίστην ποσότητα. Ἐκ τοῦ γεγονότος τούτου τὰ ᾠὰ διαιροῦνται εἰς τρεῖς κατηγορίας: τὰ *ἀλέκυθα*, τὰ *ἑτερολέκυθα* καὶ τὰ *τηλολέκυθα*. Τὰ ἀλέκυθα εἶναι μικρότατα ᾠὰ καὶ περιέχουν ἐλαχίστην ποσότητα λεκύθου. Τὰ ἑτερολέκυθα περιέχουν ἀρκετὴν ποσότητα λεκύθου, ἥτις ἐμφανίζεται ὑπὸ μορφὴν σφαιριδίων μικροῦ ἢ μεγάλου μεγέθους, ἐντὸς τοῦ πρωτοπλάσματος ἐγκεκλεισμένων καὶ διαχωριζομένων μεταξύ των ὑπὸ πρωτοπλασματικῶν λεπίδων. Τὰ σφαιρίδια ταῦτα ἀνίσως κατανέμονται ἐντὸς τοῦ ᾠοῦ καὶ μόνον πέριξ τοῦ πυρῆνος δὲν ὑπάρχουσιν. Εἰς ἕκαστον ᾠὸν διακρίνονται δύο πόλοι: ὁ *πρωτοπλασματικὸς πόλος* καὶ ὁ *λεκυθικὸς πόλος*. Τὰ τηλολέκυθα εἶναι πλουσιώτατα εἰς λέκυθον· τοιαῦτα εἶναι τὰ ᾠὰ τῶν πτηνῶν. Κυριώτερον συστατικὸν τοῦ ᾠοῦ τῶν πτηνῶν εἶναι ἡ λέκυθος· τὰ ἕτερα συστατικὰ τούτου, ἤτοι τὸ λεύκωμα (ἀσπράδι) καὶ ὁ φλοιὸς (τσόφλι), εἶναι προσαρτηματικὰ τῆς λεκύθου στοιχεῖα. Ἡ λέκυθος τοῦ ᾠοῦ παριστᾷ παμμέγιστον κύτταρον, οὗ ὅμως ἡ ζῶσα ὕλη περιορίζεται εἰς ἐλάχιστον ταύτης τμῆμα, καὶ εἰδικῶς εἰς τὸ πρωτοπλασματικὸν τμῆμα, ὅπερ ἀποτελεῖ διαφανῆ κηλῖδα, *χάλαζαν* καλουμένην.

*Διαμερισμὸς τοῦ ᾠοῦ*. Εὐθὺς μετὰ τὴν γονιμοποίησιν, τὸ ᾠὸν διαιρεῖται πλειστάκις καὶ κατ' ἐπανάληψιν εἰς τρόπον, ὥστε νὰ σχηματίζῃ πολυπληθῆ, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, κύτταρα. Τὸ φαινόμενον τοῦτο καλεῖται *διαμερισμὸς* ἢ *καταμερισμός*. Ἡ λέκυθος ἀναλογικῶς ἐπιδρᾷ ἐπὶ τοῦ καταμερισμοῦ τοῦ ᾠοῦ. Ἡ ἀναλογικὴ αὕτη ποσότης τῆς λεκύθου εἶναι ἀδρανὴς καὶ μόνον τὸ πρωτόπλασμα παίζει, εἰς τὸν καταμερισμόν, πρωτεύοντα καὶ ἐνεργητικὸν ρόλον. Ὁ καταμερισμὸς γίνεται περισσότερον κανονικός, ἐφόσον ἡ λέκυθος ἔχει μικροτέραν μᾶζαν. Εἰς τὰ ἀλέκυθα ᾠὰ ἡ δύναμις τῆς ἀδρανείας τῆς λεκύθου εἶναι σχεδὸν μηδαμινή. Τὸ ᾠὸν καταμερίζεται ὁλόκληρον καὶ κατ' ἴσα κύτταρα, ἐφόσον ἡ λέκυθος εἶναι κανονικῶς ἐπὶ τοῦ ᾠοῦ διαμεμερισμένη. Κατὰ τὴν περίπτωσιν ταύτην ὁ καταμερισμὸς εἶναι γενικὸς καὶ ὁμοιομερής, δηλαδὴ κανονικός. Εἰς τὰ ἑτερολέκυθα ᾠὰ τὸ πρωτόπλασμα ἐξαπλοῦται ἐφ' ὁλοκλήρου τοῦ ᾠοῦ. Καὶ κατὰ τὴν περίπτωσιν ταύτην ὁ καταμερισμὸς εἶναι γενικός, ἀλλ' ἀνομοιομερής, διότι τὰ σχηματιζόμενα κύτταρα εἶναι μικρότερα περὶ τὸν πρωτοπλασματικὸν πόρον, ὅπου τὸ πρωτόπλασμα εἶναι ἀπηλλαγμένον ἑτέρων στοιχείων. Εἰς τὰ τηλολέκυθα ᾠὰ ἡ λέκυθος δὲν καταμερίζεται καὶ ὁ καταμερισμὸς λαμβάνει χώραν μόνον εἰς τὸν πρωτοπλασματικὸν πόλον. Εἰς ταῦτα ἓν μόνον τμῆμα τοῦ ᾠοῦ καταμερίζεται καὶ συνεπῶς ὁ καταμερισμὸς εἶναι μερικός.

*Φυσιολογία καὶ ἱστολογία*. Τὰ διάφορα ἀνατομικὰ στοιχεῖα τοῦ ὀργανισμοῦ συμβάλλουν ἀπὸ κοινοῦ εἰς τὸν διαμερισμὸν τῆς φυσιολογικῆς λειτουργίας. Κυριώτερα ἀνατομικὰ στοιχεῖα πρὸς τὸν διαμερισμὸν τῶν ποικίλων σωματικῶν λειτουργιῶν εἶναι οἱ *ἱστοί*. Οὗτοι, ἀναλόγως τῆς ἐργασίας, δι' ἣν προορίζεται ἕκαστος, διακρίνονται εἰς 5 κατηγορίας, τὸν *ἐπιθηλιακόν*, τὸν *συνδετικόν*, τὸν *αἱματικόν*, τὸν *μυϊκὸν* καὶ τὸν *νευρικὸν* ἱστόν.

Ὁ ἐπιθηλιακὸς ἱστὸς ἀποτελεῖται ἀποκλειστικῶς ἐξ ἐπανατεθειμένων ἐπ' ἀλλήλων κυττάρων, ἅτινα συνήθως χωρίζονται μεταξύ των διὰ λεπτοτάτου κυτταρώδους ἐπίσης συστάσεως διαφράγματος. Πολλάκις οἱ ἐπιθηλιακοὶ ἱστοὶ εἶναι οὕτω διατεταγμένοι, ὥστε νὰ σχηματίζωσι λεπτὸν δικτυωτὸν ἐπίστρωμα, ὅπερ ἐπιστρώνει τὸν πεπτικὸν σωλῆνα, τοὺς γεννητικοὺς ἀγωγούς, τοὺς οὐροδόχους ἀγωγοὺς καὶ ἑτέρας σωματικὰς κοιλότητας. Τὰ ὑπὸ τῶν ἱστῶν τούτων σχηματιζόμενα ἐπιστρώματα καλοῦνται *ἐπιθηλιακὰ ἐπιστρώματα*. Τὰ ἐπιθήλια ἐπαναπαύονται ἐπὶ τῆς καλουμένης *ἐπιθηλιακῆς μεμβράνης* καὶ διακρίνονται εἰς *ἁπλᾶ* καὶ εἰς *στρωματοποιημένα*. Πάντα σχεδὸν τὰ ἀσπόνδυλα ἔχουσιν ἁπλᾶ ἐπιθήλια. Εἰς αὐτὰ τὸ ἐξώδερμα ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνον ἐπιστρώματος κυττάρων, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἐπιδερμίδα τῶν σπονδυλωτῶν, ἥτις πάντοτε σχηματίζεται ὑπὸ στρωματοποιημένων κυττάρων. Ἀναλόγως τῆς μορφῆς καὶ τοῦ πάχους τῶν κυττάρων τὰ ἐπιθήλια διακρίνονται εἰς διαφόρους κατηγορίας: *πλακοειδῆ, κυλινδρικά, κυβικά, ἰσοδιαμετρικὰ* κτλ. Τὰ στρωματοποιημένα ἐπιθήλια, σχηματίζονται ἐκ πολλῶν κυττάρων εἰς ἀλλεπαλλήλους ἐπιστρώσεις διατεταγμένων. Τοιαῦτα ἐπιθήλια ἔχουσι, γενικῶς σχεδόν, πάντα τὰ σπονδυλωτὰ ζῷα. Καὶ τὰ ἐπιθήλια ταῦτα διακρίνονται εἰς ἐπιθήλια *πλακοειδῆ*, ὅπως εἶναι τὰ ἐπιθήλια τῆς στοματικῆς κοιλότητος, καὶ *κυλινδρικά*, ὅπως εἶναι τὰ ἐπιθήλια τὰ ἐπιστρώνοντα τὰ τοιχώματα τοῦ οἰσοφάγου καὶ τῆς τραχείας ἀρτηρίας.

Πολλάκις τὰ κύτταρα τὰ ἀποτελοῦντα τὰ ἐπιθήλια φέρουσι κατὰ τὴν ἐπιφάνειάν των κινητικά τινα ὄργανα, ἅτινα ὁτὲ μὲν ἔχουσι μορφὴν λεπτοτάτου μαστιγίου καὶ καλοῦνται *μαστίγια*, ὁτὲ δὲ μορφὴν βλεφαρίδος καὶ καλοῦνται *κινητικαὶ βλεφαρίδες*. Τὸ πλακοειδὲς ἐξώδερμα τῶν σπόγγων εἶναι μαστιγωτόν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸ κυλινδρικὸν ἐξώδερμα τῶν σκωλήκων, ὅπερ εἶναι βλεφαρωτὸν κλ.

Ὁ συνδετικὸς ἱστὸς εἶναι ἀποκλειστικῶς μεσοδερματικὸν παράγωγον καὶ ἀφθονεῖ ἐν ἑκάστῳ ὀργανισμῷ. Ἀπαντᾷ εἰς πάντα τὰ ὄργανα, συνδέων ταῦτα μεταξύ των καὶ συγκρατῶν εἰς τὴν κανονικὴν θέσιν των. Τὰ ἐπιθηλιακὰ κύτταρα, σχεδὸν πάντοτε, ἐπαναπαύονται ἐπὶ τῶν συνδετικῶν ἱστῶν. Αἱ κυψέλαι τῶν πνευμόνων συνδέονται μεταξύ των διὰ τοιούτων ἱστῶν, οἱ διάφοροι μύες μεταξύ των συνδέονται πρὸς ἀλλήλους διὰ διαφραγμάτων ἐκ συνδετικῶν ἱστῶν ἀποτελουμένων, δι' ὁμοίων δὲ ἱστῶν συνδέονται τὰ αἱμοφόρα ἀγγεῖα κτλ. Οἱ συνδετικοὶ ἱστοὶ διακρίνονται εἰς *ἐμβρυώδεις, πηκτωματώδεις* ἢ *μυκώδεις, ἰνώδεις, ἐλαστικοὺς* καὶ *στεατώδεις* ἱστούς. Ὁ ἐμβρυώδης συνδετικὸς ἱστὸς ἀπαντᾷ εἰς τὴν σπονδυλικὴν στήλην τῶν σπονδυλωτῶν καὶ σχηματίζεται ἐξ ἐναποτιθεμένων κυττάρων, ὧν ἡ ἐσωτερικὴ ἐπιφάνεια περικλείει τὴν πρωτοπλασματικὴν μᾶζαν. Ὁ πηκτωματώδης ἢ μυκώδης συνδετικὸς ἱστὸς εἶναι διαφορά τις τοῦ προηγουμένου καὶ ἔχει σύστασιν ὁμοιογενῆ, πηκτωματώδη. Οἱ τοιοῦτοι ἱστοὶ ἐμφανίζονται κατὰ τὴν δευτέραν φάσιν τῆς ἐμβρυακῆς ἀναπτύξεως τῶν μεταζῴων. Ὁ ἰνώδης συνδετικὸς ἱστὸς ἔχει ἀφθόνους ἐλαστικὰς ἶνας, αἵτινες ἀπολήγουσιν εἰς τὰ ἔναρθρα ὄργανα τοῦ ζῴου καὶ ὑποβοηθοῦσι τὰς κινήσεις τῶν μυῶν, τενόντων κτλ. Ὁ ἐλαστικὸς συνδετικὸς ἱστὸς ἀποτελεῖται ἀποκλειστικῶς ἐξ ἐλαστικῶν ἰνῶν, τὸ σύνολον τῶν ὁποίων σχηματίζει τὰς καλουμένας *ἐλαστικὰς μεμβράνας*, ὅπως εἶναι ὁ *ἐλαστικὸς χιτὼν* τῶν ἀρτηριῶν, ὡς ἐπίσης καὶ *ἐλαστικὰ νημάτια*, ὅπως εἶναι τὰ κίτρινα νημάτια, ἅτινα ἑνοῦσι πρὸς ἀλλήλους τοὺς σπονδύλους κτλ. Ὁ στεατώδης συνδετικὸς ἱστὸς εἶναι διαφορὰ τοῦ ἁπλοῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ, ὅστις ἔχει ὅμως τὴν ἰδιότητα νὰ παράγῃ, ἀναλώμασι διαφόρων θρεπτικῶν οὐσιῶν, σταγονίδια λίπους, ἅτινα διογκοῦνται μικρὸν κατὰ μικρὸν καὶ τέλος συνενοῦνται εἰς εὐμεγέθη σταγόνα, πέριξ τῆς ὁποίας ὑπάρχει λεπτότατον πρωτοπλασματικὸν ἐπίστρωμα, ὅπερ περιβάλλει τὸν πυρῆνα. Εἰς τὰ ἐκ τῶν τοιούτων ἱστῶν σχηματιζόμενα στρώματα ὀφείλονται αἱ λιπαραὶ οὐσίαι διαφόρων συστατικῶν, ὡς τὸ λιπῶδες ἐπίστρωμα (λαρδὶ) τῶν χοίρων, τῶν κητῶν κτλ.

Ὁ αἱματικὸς ἱστὸς ἀποτελεῖται ἐκ τῶν ἱστῶν, ὧν τὰ κύτταρα διαχωρίζονται ἀπ' ἀλλήλων ὑπὸ πυκνορρεύστου τινὸς οὐσίας, παρεμφεροῦς πρὸς τὸ αἷμα καὶ τὸ λέμφος τῶν σπονδυλωτῶν. Οὗτος δύναται νὰ θεωρηθῇ διαφορά τις τοῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ μὲ ἐνδιάμεσον ὑδαρῆ σύστασιν καὶ κυρίως χρησιμεύει διὰ τὴν ὑποβοήθησιν τῶν διαφόρων αἱμοφόρων ἀγγείων πρὸς ἐκτόξευσιν τοῦ αἵματος εἰς τὰ διάφορα μέρη τοῦ σώματος.

Ὁ μυϊκὸς ἱστὸς ἀποτελεῖται ἐκ συστήματος ἀνατομικῶν στοιχείων, ἅτινα ἀποκλειστικὸν ἔργον ἔχουσι τὴν λειτουργίαν τῶν κινήσεων ὑφ' ὅλας αὐτῶν τὰς μορφάς. Οἱ μυϊκοὶ ἱστοὶ εὑρίσκονται σχεδὸν πάντοτε εἰς τὸ μεσόδερμα. Ἐξαίρεσιν ἀποτελοῦσι τὰ κοιλεντερωτά, ἅτινα ἐπειδὴ στεροῦνται μεσοδέρματος φέρουσι τοὺς μυϊκοὺς ἱστοὺς εἰς τὸ ἐνδόδερμα καὶ εἰς τὸ ἐξώδερμα.

Ὁ νευρικὸς ἱστὸς ἀποτελεῖται ἐκ τῶν *νευρικῶν κυττάρων* καὶ τῶν *νευρικῶν ἰνῶν*. Τὰ νευρικὰ κύτταρα εἶναι ἀρκετὰ ὀγκώδης πρωτοπλασματικὴ μᾶζα, διαφόρου σχήματος καὶ μεγέθους, καὶ συναθροιζόμενα ὁμοῦ εἰς ὡρισμένον μέρος τοῦ σώματος σχηματίζουσι τὴν *νευρικὴν ἕδραν*, ἐξ ἧς ἐκφύονται πολυπληθεῖς ἀρτηρίαι, αἵτινες καλοῦνται *νευρικαὶ ἶνες*, χρησιμοποιοῦνται δὲ διὰ τὴν μεταβίβασιν εἰς τὰ διάφορα μέρη τοῦ σώματος τῶν διαφόρων ἐντυπώσεων, αἵτινες συναθροίζονται εἰς τὴν ἕδραν τοῦ καθόλου νευρικοῦ συστήματος, ἤτοι εἰς τὸν ἐγκέφαλον.

*Διαίρεσις*. Τὰ μετάζῳα παρουσιάζουσιν ἀξιοπαρατηρήτους μεταξύ των διαφοράς, αἵτινες ἠνάγκασαν τοὺς φυσιοδίφας νὰ κατατάξωσιν αὐτὰ εἰς διαφόρους ζῳολογικὰς ὁμοταξίας. Αἱ δύο μεγάλαι ζῳολογικαὶ ὁμοταξίαι τῶν μεταζῴων εἶναι τὰ *φυτόζῳα* καὶ τὰ *ἀρτιόζῳα*. Ἐκ πρώτης ὄψεως τὰ φυτόζῳα διακρίνονται τῶν ἀρτιοζῴων, διότι τὰ μὲν πρῶτα οὐδεμίαν παρουσιάζουσιν εἰς τὸ σῶμά των συμμετρίαν ἀξονικὴν ἢ καὶ ἀκτινωτήν, τὰ δὲ δεύτερα ἔχουσιν ἀμφίπλευρον συμμετρίαν, ὡς ἐπίσης καὶ ἐκ τοῦ ὅτι τὰ μὲν πρῶτα εἶναι ἀκίνητα ἢ προσκολλῶνται ἐπὶ διαφόρων ἀντικειμένων, τὰ δὲ δεύτερα εἶναι κινητά.

*Πίναξ ἐμφαίνων τὴν διαίρεσιν τῶν μεταζῴων.*

| | *Ὁμοταξία* | |
|---|---|---|
| *Μετάζῳα* | *Φυτόζῳα* | *Ἄθροισμα* |
| | | Κοιλεντερωτὰ |
| | | Σπογγώδη |
| | | Ἐχινόδερμα |
| | *Ἀρτιόζῳα* | Μονομερίδαι |
| | | Σκώληκες |
| | | Νηματέλμινθες |
| | | Ἀρθρόποδα |
| | | Μαλάκια |
| | | Χορδωτὰ |
| | | Σπονδυλωτά. |

Δ. Ν. Π.

**μεταημιπινικὸν** *ὀξὺ [Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *ἡμιπινιτικὰ ὀξέα*.

Digitized by Google

**μεταθειῶδες κάλιον** (τὸ) *[Χημ.]*· βλ. λ. *θειῶδες ὀξύ.*

**μεταθέσιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μετατεθῇ, νὰ ἀλλάξῃ θέσιν· || ***μεταθέσιμον*** (τό)· ὡς οὐσ., ἄλλως ***μεταθετόν.***

**μετάθεσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἀλλαγὴ τῆς θέσεως, μετακίνησις, μετατόπισις· || ἰδίᾳ ἐπὶ ὑπαλλήλων: «μετάθεσις διδασκάλου, —δικαστοῦ, —ἀξιωματικοῦ»· || «ἀμοιβαία μετάθεσις» ἡ ἐναλαγγὴ τῆς θέσεως δύο ὑπαλλήλων· || «μετάθεσις δυσμενὴς» μετάθεσις εἰς μειονεκτικὴν θέσιν· || ὑπὸ τῶν παλ. γραμματικῶν, ἡ μετάθεσις φθόγγου λέξεως: «κραδίη ἀντὶ καρδίη».

*—[Γλωσσολογ.]* Καλοῦμεν *μετάθεσιν* τὴν μεταβολὴν τῆς σειρᾶς τῶν φθόγγων λέξεώς τινος: *κάτοπτρον—κάτροπτον, τάφρος—τράφος* κ. οὗ. κ. Ἐκ τῶν φθόγγων συνηθέστερον μετατίθενται τὰ σύμφωνα (καὶ ἐκ τούτων πάλιν συχνότερον τὰ ὑγρά, σπανιώτερον τὰ λοιπὰ σύμφωνα): Ἀφροδίτα (-τη) —Ἀφορδίτα, κρόταλον—κόρταλον, κροκόδειλος—κορκόδειλος, Ἀσκλαπιὸς (Ἀσκληπιὸς)—Ἀσκαλπιός, πλάνης—πάλνης κλπ. καὶ λατιν. disciplina—displicina, prelum—perlum κλπ. Σπανιώτερον μετατίθενται τὰ φωνήεντα: Μυτιλήνη—Μιτυλήνα, βαπτίζω—βιπτάζω (οὕτω παρὰ τῷ Ἐπιχάρμῳ), μύτιλος—μίτυλος, πέρυσι—πέρισυ, Δανούβιος—Δούναβις κλπ. Ἀξιοσημείωτος εἶναι ἡ μετάθεσις τοῦ δασέος ἐν τῇ ἀρχαίᾳ ἑλληνικῇ: καλχὸς (πρβλ. τὸ ἀρχαῖον κρητικὸν *καυχός*)—χαλκός, κιθὼν — χιτών, Πετθαλὸς—Θετταλός, *προ-hοδος—φροῦδος, προ-hορὸς—φρουρὸς κ. οὗ. κ. Ἐνίοτε παρατηρεῖται ἀμοιβαία μετάθεσις (ἀντιμετάθεσις) δύο συγχρόνως φθόγγων λέξεώς τινος: φαλακρὸς—καλαφρός, parabola—ἱσπαν. palabra (ὅθεν τὸ ἡμέτ. *παλάβρα*) κ. οὗ. κ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Γ. Χατζιδάκι,* «Ἀκαδημεικὰ Ἀναγνώσματα»· (Ἀθῆναι 1924 σελ. 519 κ. ἑξ.). Γ. Π. Α.

*—[Μαθημ.]* Καλεῖται *μετάθεσις* ἡ διάφορος παράθεσις ἀντικειμένων (παριστωμένων διὰ γραμμάτων) ἐπ' εὐθείας γραμμῆς. Οὕτως ἐὰν α, β, γ εἶναι τὰ ἀντικείμενα ταῦτα, δυνάμεθα νὰ τὰ τοποθετήσωμεν ἐπ' εὐθείας γραμμῆς κατὰ ἓξ διαφόρους τρόπους (*μεταθέσεις*) ὡς ἑξῆς:

αβγ βαγ
αγβ βγα
γαβ γβα

Ἐν τῇ ἀλγέβρᾳ δίδεται τὸ πλῆθος τῶν μεταθέσεων τῶν ν ἀντικειμένων (συμβολιζόμενον συνήθως διὰ τοῦ Μν) διὰ τοῦ τύπου:

$$Mν=1\times2\times3\ldots ν$$

Τὸ γινόμενον τοῦτο γράφεται συντόμως διὰ τοῦ συμβόλου: *ν!*

Πλὴν τῶν μεταθέσεων ἐπ' εὐθείας ἔχομεν καὶ τὰς *κυκλικὰς μεταθέσεις,* δηλαδὴ τοὺς διαφόρους τρόπους τοποθετήσεως διαφόρων ἀντικειμένων ἐπὶ περιφερείας κύκλου. Τὸ πλῆθος αὐτῶν δίδεται ὑπὸ τοῦ τύπου:

$$Kν=1\times2\times3\ldots\times(ν-1)=(ν-1)!$$

ἐξ οὗ ἐξάγεται ὅτι τὸ πλῆθος τῶν κυκλικῶν μεταθέσεων ν ἀντικειμένων εἶναι ἴσον πρὸς τὸ γινόμενον τῶν (ν—1) πρώτων φυσικῶν ἀριθμῶν· εἰς τὰς κυκλικὰς δηλαδὴ μεταθέσεις οἱ παράγοντες τοῦ γινομένου εἶναι. κατὰ ἕνα ὀλιγώτεροι τῶν παραγόντων τῶν γινομένων τῶν ἐπ' εὐθείας μεταθέσεων (βλ. λ. *ἄλγεβρα* σ. 449 β'). Ν. Ε. Γ.

*—[Μουσ.] Μετάθεσις* ἢ *μεταφορὰ* (transposition) ἑνὸς μουσικοῦ τεμαχίου σημαίνει ἐκτέλεσιν αὐτοῦ εἰς ἄλλον τόνον ἐκείνου, εἰς ὃν εἶναι γεγραμμένον. Ἡ ἱκανότης τοῦ μεταθέτειν ἀπαιτεῖ ἰδίαν ἐξάσκησιν, ὁσάκις δὲν εἶναι αὕτη προνόμιον ἰδιοφυΐας. Κατὰ κανόνα δυσκολωτέρα εἶναι ἡ μετάθεσις ἐκ πρώτης ὄψεως· καὶ ἂν μὲν πρόκειται νὰ μετατεθῇ ἓν τεμάχιον κατὰ χρηματικὸν ἡμιτόνιον, ἀρκούμεθα ἁπλῶς εἰς τὴν ἀλλαγὴν τοῦ ὁπλισμοῦ, λαμβάνοντες ὑπ' ὄψιν ὅτι ἐκ τόνου μετὰ διέσεων εἰς τόνον μετὰ ὑφέσεων, ἡ ἀναίρεσις γίνεται δίεσις, ἐνῷ ἡ τυχαία ὕφεσις γίνεται ἀναίρεσις ἢ παραμένει ὕφεσις· ἐκ τόνου μετὰ διέσεων πρὸς τόνον μετὰ ὑφέσεων, ἡ ἀναίρεσις γίνεται ὕφεσις καὶ ἡ τυχαία δίεσις, ἀναίρεσις· π. χ.:

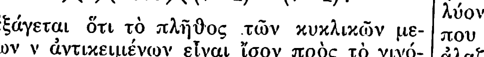

Ἡ μετάθεσις τοῦ τόνου κατὰ διαστήματα μεγαλύτερα τοῦ ἡμιτονίου γίνεται δι' ἀντικαταστάσεως τοῦ γνώμονος. Ἐὰν τὸ ἀνωτέρω παράδειγμα θελήσωμεν νὰ τὸ μεταθέσωμεν κατὰ διατονικὴν ἀνιοῦσαν δευτέραν, ἀρκεῖ τὸν γνώμονα τοῦ *σολ* νὰ τὸν ἀντικαταστήσωμεν μὲ τὸν τοῦ *ντο,* τρίτης γραμμῆς (κοντράλτο) καὶ νὰ ὑπολογίσωμεν τὴν ἐκτέλεσιν κατὰ μίαν ὀγδόην ὀξυτέραν· ἐὰν ἀντιθέτως θελήσωμεν νὰ τὸ μεταθέσωμεν κατὰ διατονικὴν κατιοῦσαν δευτέραν, τότε θὰ ὑποκαταστήσωμεν εἰς τὸν γνώμονα τοῦ *σολ,* τὸν τοῦ *ντο,* τετάρτης γραμμῆς (τενόρου) κ. κ. ἑ. Ἐννοεῖται ὅτι ὁ καλύτερος ὁδηγὸς διὰ τὴν μετάθεσιν εἶναι ἡ πεῖρα. Τέλος ἡ γραπτὴ μετάθεσις εἶναι ἐργασία καθαρῶς μηχανική, ἐκμανθανομένη διὰ σχετικῆς ἐξασκήσεως. Γ. Σ.

*—[Βυζ. Μουσ.] Μετάθεσις* καλεῖται ἡ λῆψις ἄλλου τόνου ἀντὶ ἐκείνου ὅστις εἶναι ἡ φυσικὴ τονικὴ βάσις ἤχου τινός, τηρουμένης ἐν ταυτῷ τῆς ἀναλογίας τῶν τονιαίων διαστημάτων τῆς κλίμακος τοῦ ἤχου τούτου. Ν. Α. Χ.

**— μετάθεσις *αἰσθήσεων.*** Καλεῖται οὕτω τὸ ψυχοφυσικὸν φαινόμενον, καθ' ὃ ἄτομά τινα παραλαμβάνουσιν αἰσθήσεις τινὰς οὐχὶ διὰ τῶν εἰδικῶν ὀργάνων, ἀλλὰ δι' ἄλλων χωρῶν τοῦ σώματος: ἀναγινώσκουσι π. χ. οὐχὶ διὰ τῶν ὀφθαλμῶν, ἀλλὰ διὰ τοῦ δακτύλου ἢ τοῦ μετώπου ἢ τοῦ στομάχου, ὅταν αἱ χῶραι αὗται ἔλθουν εἰς ἐπαφὴν μὲ γραπτόν τι κείμενον. Ὑπάγεται εἰς τὰ φαινόμενα τῆς μεταγνωμίας (διόρασις, κρυπταισθησία κ. τ. τ.).

Παρόμοια φαινόμενα εἶναι ἡ βάδισις τῶν ὑπνοβατῶν διὰ δυσβάτων τόπων, κεκλεισμένοις τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ τὰ φαινόμενα ἐνδοσκοπίας τῶν Richet-Sollier.

Κατὰ τὸν Sollier πρόκειται περὶ ἐξάρσεως τῆς κοιναισθησίας, μετὰ μεταπροβολῆς εἰς τὴν ὅρασιν. Αἱ περιπτώσεις ἀναγνώσεως ἐπιστολῶν μακρὰν κειμένων ἢ ὄπισθεν στερεῶν ἀντικειμένων δέον νὰ μὴ συγχέωνται πρὸς τὴν μετάδοσιν σκέψεως. Τὰ φαινόμενα ταῦτα θεωροῦν σήμερον ἐπιγινόμενα διά τινος ἐκπομπῆς ἐκ μέρους τοῦ ἀτόμου (ἀκτινοβολίας) μετὰ συγχρόνου ἐπανόδου τῶν κυττάρων εἰς τὸ στάδιον τῆς πρωτογόνου καταστάσεως, ὅτε ἕκαστον κύτταρον ἐξετέλει πάσας τὰς λειτουργίας, τουτέστι δὲν ὑπῆρχεν ἡ εἰδίκευσις τῶν κυττάρων πρὸς ὡρισμένην λειτουργίαν. Τ. Α. ΖΗΣ

**— μετάθεσις *τῆς αἰτίας*** *[Ρητορ.].* Ἓν τῶν κεφαλαίων τῶν ἐμπιπτόντων εἰς τὰς διαφόρους στάσεις. «Κατὰ μετάθεσιν ἕξ ἐστι τὰ τῆς διανοίας σχήματα, ἐν οἷς μεθίστησιν ἀφ' ἑαυτοῦ ὃ βούλεται ποιεῖν ἐφ' ἕτερον πρόσωπον· καὶ ἔστι ταῦτα προσωποποιΐα ἠθοποιΐα, μειωτόν, ἐρώτησις, πεῦσις, ἀποποίησις· τούτων δὲ ἕκαστον, τυχὸν προσωποποιΐα καὶ ἠθοποιΐα καὶ μειωτὸν εἰσὶ λόγων, οὓς θέλοντες εἰπεῖν δι' ἑαυτῶν ὀκνοῦμεν καὶ μετατίθεμεν ἐπ' ἄλλο πρόσωπον ἢ ὑφεστηκὸς ἢ μὴ ὑφεστηκὸς ἢ γεγονὸς μὲν οὐκέτι δὲ ὂν» (*Φοιβάμμωνος,* «Περὶ σχημάτων» 3). Ι. Φ. Δ.

**— μετάθεσις *ἐπισκόπων*** *[Κανον. Δίκ.].* Ἡ μετάθεσις τῶν ἐπισκόπων ἀπηγορεύθη ὑπὸ τοῦ ιδ' ἀποστολικοῦ κανόνος, ἔτι δὲ καὶ ὑπὸ τοῦ κανόνος ιε' τῆς α' οἰκουμενικῆς συνόδου ἐπὶ ποινῇ ἐπαναφορᾶς τοῦ εἰς ἑτέραν πόλιν μεταβάντος εἰς τὴν ἐν ᾗ ἐχειροτονήθη ἐκκλησίαν· ὑπὸ τοῦ κανόνος κα' τῆς ἐν Ἀντιοχείᾳ (341) συνόδου· ὑπὸ τοῦ κανόνος α' τῆς ἐν Σαρδικῇ συνόδου (347) ἀπειλήσαντος στέρησιν καὶ αὐτῆς τῆς τῶν λαϊκῶν κοινωνίας κατὰ τῶν παραβατῶν· ὑπὸ τοῦ κανόνος ε' τῆς δ' οἰκουμενικῆς συνόδου (451) καὶ ἐν τῇ ἐν Ἀφρικῇ Ἐκκλησίᾳ ὑπὸ τοῦ κανόνος μη' (νζ') τῆς ἐν Καρθαγένῃ συνόδου, ἥτις ἐξωμοίωσε τὴν μετάθεσιν τῶν ἐπισκόπων πρὸς τὴν ἀναβάπτισιν καὶ ἀναχειροτονίαν· δι' ὃ πρέπει νὰ κωλύηται ἐκείνη, ὡς κωλύονται καὶ αὗται. Ἀπηγορεύθη δ' ἡ τοῦ ἐπισκόπου μετάθεσις, οὐ μόνον πρὸς καταπολέμησιν τῆς ἀλαζονείας καὶ πλεονεξίας ἐνίων ἐπισκόπων ὀρεγομένων μειζόνων καὶ μᾶλλον περιβλέπτων ἐπισκοπῶν, ἀλλὰ καὶ ἐκ τοῦ ὅτι ὁ ἐπίσκοπος ἐλογίσθη συνάπτων οἱονεὶ γάμον πνευματικὸν μετὰ τῆς κληρωθείσης αὐτῷ ἐπισκοπῆς. Οὕτω κατηγόρησεν ὁ Κυπριανὸς τὸν Νοβατιανόν, αὐθαιρέτως καταλαβόντα τὴν θέσιν τοῦ τῆς Ρώμης ἐπισκόπου Κορνηλίου, ὡς μοιχείας ἔνοχον. Ἀπόρροια τῆς τοιαύτης ἐκδοχῆς ὑπῆρξε καὶ ἡ τῆς ἐν Ἀλεξανδρείᾳ συνόδου (340) μομφὴ κατ' Εὐσεβίου τοῦ ἐπισκόπου Βηρυτοῦ, τοῦ κατορθώσαντος τὴν εἰς τὸν ἐπισκοπικὸν τῆς Νικομηδείας θρόνον μετάθεσιν, καὶ ἡ Γρηγορίου τοῦ Ναζιανζηνοῦ διαμαρτύρησις, εἰπόντος, ὅτι πρέπει νὰ τιμήσωσι τὴν ἀλήθειαν οἱ ἰσχυρισθέντες ὅτι ἐζήτησεν ἑτέραν σύζυγον, αὐτὸς ὁ οὐδὲ τὴν ἰδίαν θελήσας, ὡς καὶ ἡ τοῦ Ἱερωνύμου ῥῆσις, εἰπόντος ὅτι οἱ κανόνες ἀπηγόρευσαν, ἵνα ὁ ἐπίσκοπος ἐγκαταλιπὼν τὴν παρθενικὴν κοινωνίαν τῆς πτωχῆς αὐτοῦ Ἐκκλησίας ἐπιζητῇ δίκην μοιχοῦ ἑτέραν πλουσιωτέραν. Ἀποδεικτικαὶ τῆς τοιαύτης ἐκδοχῆς τῆς ἡμετέρας Ἐκκλησίας εἰσὶ καὶ αἱ ἔγγραφοι ὑποσχέσεις, αἱ διδόμεναι ὑπὸ τῶν ἐπισκόπων μετὰ τὴν ἐκλογὴν καὶ χειροτονίαν αὐτῶν, περὶ τοῦ ὅτι οὐδέποτε καὶ ἐπ' οὐδεμιᾷ προφάσει ἤθελον ἐγκαταλίπει τὴν λαχοῦσαν αὐτοῖς ἐπισκοπήν.

Κατ' οἰκονομίαν ἐπετράπη ἡ τῶν ἐπισκόπων μετάθεσις πρὸς τὸ συμφέρον τῆς Ἐκκλησίας καὶ καθόλου ἐξ εὐλόγου αἰτίας, ὡς λ. χ. ὁσάκις ἀποβαίνει ἀδύνατος τῇ ἐπισκοπῇ ἡ τοῦ ἐπισκόπου συντήρησις ὡς ἐκ τῆς πενίας, εἰς ἣν αὕτη περιέστη, ἢ ὁσάκις ἐπικρατεῖ ἡ πεποίθησις ὅτι δι' ἀποκτήσεως δεδοκιμασμένης ἱκανότητος ἐπισκόπου θέλει σωθῇ ἡ ἐπισκοπὴ ἀπὸ βεβαίας καταστροφῆς, ἢ ὁσάκις ὁ ἐπίσκοπος ἕνεκα πολέμου, ἐπιδρομῆς πολεμίων ἢ ἄλλων καιρικῶν περιστάσεων δὲν δύναται νὰ λάβῃ κατοχὴν τοῦ ἀξιώματος ἐν τῇ ἐν ᾗ προωρίσθη ἐπισκοπῇ, ἢ νὰ διατηρήσῃ τὸ ἀξίωμα ἐν ᾗ ἀσκεῖ τοῦτο ἐπισκοπῇ, ἢ ὁσάκις ἕνεκα πολιτικῶν ἀνωμαλιῶν ἀδύνατος ἀποβαίνει ἡ ἐν τῇ ἐπισκοπῇ κανονικὴ ἐκλογὴ καὶ χειροτονία τοῦ ἐπισκόπου, ζητεῖται δ' ἡ ἐκεῖσε διὰ μεταθέσεως ἀποστολὴ ἐπισκόπου τινός. Ἡ μετάθεσις ἐπισκόπων διαιρεῖται εἰς: 1) τὴν κυρίως *μετάθεσιν* ἢ *μετενθρονισμόν,* ἤτοι τὴν κατάστασιν ἐπισκόπου εἰς θρόνον ἀρχιεπισκοπικόν, μητροπολιτικὸν ἢ πατριαρχικὸν καὶ 2) τὴν *μετάβασιν* ἢ *μετακίνησιν* ἤτοι τὴν ἀποστολὴν ἐπισκόπου εἰς ἕτερον ἐπισκοπικὸν θρόνον ἴσον ἢ ὑποδεέστερον. Καθιστᾷ δὲ τὸν μετατιθέμενον γνήσιον τῆς ἐν ᾗ μετετέθη ἐπισκοπῆς ἀρχιερέα, ἀπολαύοντα πάντων τῶν τοῦ γνησίου ἀρχιερέως δικαίων.

Ἡ μετάθεσις γίνεται ὑπὸ τῆς ἁρμοδίας ἀρχῆς ἤτοι τῆς συνόδου, πατριαρχικῆς ἢ ἐπαρχιακῆς, ἢ αὐτοκεφάλου ἐκκλησίας. Ἐν Ἑλλάδι αἱ τῶν ἐπισκόπων μεταθέσεις ἐγίνοντο ἀρχαιότερον ἐγκρίσει τοῦ βασιλέως, μετὰ γνωμοδότησιν τῆς ἱερᾶς συνόδου, κατὰ τὸ ἄρθρον Δ' ἐδαφ. 2 τοῦ ἀπὸ 9 Ἰουλίου 1852 Σ' νόμου «περὶ ἐπισκοπῶν καὶ ἐπισκόπων». Ἡ συγκατάθεσις τοῦ μετατιθεμένου δὲν ἀπῃτεῖτο, ὥστε ἡ τοῦ ἐπισκόπου μετάθεσις ἠδύνατο νὰ γίνῃ καὶ ἄκοντος αὐτοῦ. Νῦν ἡ τῶν ἐπισκόπων μετάθεσις γίνεται μετὰ γνωμοδότησιν τῆς ἱερᾶς συνόδου καὶ ἀπόφασιν τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου διὰ διατάγματος. Μετάθεσις δὲ μετὰ ἐνόρκους ἀνακρίσεις γίνεται ὑπὸ τῆς ἱερᾶς συνόδου διὰ πλειονοψηφίας τῶν δύο τρίτων τῶν μελῶν αὐτῆς μετ' ἀπόφασιν τοῦ ἀνωτέρου ἐκκλησιαστικοῦ δικαστηρίου, ἐκδιδομένην κατὰ τὰ ἐν τῷ νόμῳ ὁριζόμενα καὶ ὑποκειμένην εἰς πάντα τὰ ἔνδικα μέσα.

Ἐπιτρέπεται δὲ νῦν ἡ μετάθεσις ἐπισκόπων: 1) διὰ προαγωγὴν εἰς κενὴν θέσιν· 2) ἀμοιβαίως τῇ αἰτήσει αὐτῶν· 3) τῇ αἰτήσει τοῦ μητροπολίτου εἰς κενὴν θέσιν· καὶ 4) μετὰ προτέραν ἔνορκον ἀνάκρισιν παραγγελλομένην ὑπὸ τῆς ἱερᾶς συνόδου εἴτε εἰς κενὴν θέσιν, εἴτε εἰς μητρόπολιν, ἧς ὁ μητροπολίτης ᾐτήσατο μετάθεσιν. Ἐν τῇ ρωμαϊκῇ Ἐκκλησίᾳ περὶ τῆς μεταθέσεως ἐπισκόπων ποιοῦνται λόγων ὁ κανὼν 315 § 2 ἀριθ. 2 καὶ ὁ κανὼν 430 τοῦ κώδικος τοῦ κανονικοῦ δικαίου.

[Βλ. *Κ. Μ. Ράλλη,* «Περὶ μεταθέσεως ἐπισκόπων κατὰ τὸ δίκαιον τῆς Ὀρθοδόξου Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας» (1898).— Τοῦ *αὐτοῦ,* «Ἐγχειρίδιον τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ δικαίου» (τεῦχ. Α' 1927 σελ. 75—77).]

Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**— μετάθεσις *ὑπαλλήλου.*** Ἡ ἄνευ ἀνανεώσεως τῆς ὑπαλληλικῆς σχέσεως μετακίνησις τοῦ δημοσίου ὑπαλλήλου ἀπὸ τῆς θέσεως, ἣν μέχρι τοῦδε κατεῖχεν, εἰς ἑτέραν ὁμοιόβαθμον. Ἡ μετάθεσις ἀποτελεῖ μέτρον διοικητικόν, ἀποβλέπον συνήθως εἰς τὴν ἀρτιωτέραν καὶ προσφορωτέραν σύνθεσιν τοῦ προσωπικοῦ τῶν δημοσίων ὑπηρεσιῶν, σπανιώτερον δὲ ἡ μετάθεσις ἀποτελεῖ μέτρον πειθαρχικὸν καὶ δὴ ἰδιαιτέραν ποινὴν (δυσμενὴς μετάθεσις), προβλεπομένην ὑπὸ ἐνίων ὀργανικῶν διοικητικῶν νόμων. Κατὰ κανόνα, ἡ ἁρμοδία διὰ τὴν ἔκδοσιν τῆς περὶ διορισμοῦ πράξεως ἀρχή, εἶναι ἁρμοδία καὶ διὰ τὴν μετάθεσιν. Συνεπῶς, ὁ τύπος τῆς περὶ μεταθέσεως πράξεως εἶναι ὁτὲ μὲν διάταγμα, ὁτὲ δὲ ἀπόφασις ὑπουργικὴ ἢ ἀπόφασις ἄλλης ὑποδεεστέρας ἀρχῆς (νομάρχου, διευθυντοῦ κλπ.). Πάντως ὅμως ἡ περὶ μεταθέσεως πρᾶξις στηρίζεται εἰς ἀπόφασιν εἴτε γνωμοδότησιν τοῦ ἁρμοδίου ὑπηρεσιακοῦ συμβουλίου. Ἁρμόδιον εἶναι εἴτε τὸ προϊστάμενον τοῦ οἰκείου κλάδου καὶ ἐν τῷ οἰκείῳ ὑπουργείῳ ἑδρεῦον διοικητικὸν συμβούλιον, εἴτε ἄλλα συμβούλια περιφερειακά, ὡς ὁρίζουσιν οἱ ὀργανικοὶ ἑκάστου διοικητικοῦ κλάδου νόμοι. Ἡ περὶ μεταθέσεως πρᾶξις δημοσιεύεται ἐν περιλήψει εἰς τὴν Ἐφημερίδα τῆς κυβερνήσεως, ἐπιβάλλεται δὲ καὶ ἡ πρὸς τὸν ἐνδιαφερόμενον κοινοποίησις αὐτῆς, ἅτε ἀποτελούσης ἀτομικὴν διοικητικὴν πρᾶξιν. Ἐν τούτοις ἐγένετο δεκτὸν ὅτι «ἡ μετάθεσις θεωρεῖται συντετελεσμένη ἀπὸ τῆς δημοσιεύσεως τῆς περὶ ταύτης πράξεως, ἡ δὲ κοινοποίησις καὶ ἡ ἐγκατάστασις τοῦ μετατεθέντος εἰς τὴν νέαν του θέσιν δὲν δύναται ν' ἀσκήσῃ ἐπιρροὴν ἐπὶ τῆς χρονολογίας, καθ' ἣν ἡ μετάθεσις δέον νὰ θεωρῆται νομίμως συντελεσθεῖσα» (ἀπόφ. Συμβ. Ἐπικρατείας 363/1930).

Κατὰ τὸ ἄρθρον 114 τοῦ Συντάγματος, οἱ μόνιμοι διοικητικοὶ ὑπάλληλοι δὲν μετατίθεται ἄνευ γνωμοδοτήσεως συμβουλίου ὠργανωμένου κατὰ νόμον, ἀποτελουμένου δὲ κατὰ τὰ δύο τρίτα τοὐλάχιστον ἀπὸ μονίμους ὑπαλλήλους. «Ἡ περὶ μεταθέσεως γνωμοδότησις δὲν δύναται, ὡς ἐκ τῆς φύσεώς της, παρὰ νὰ εἶναι ᾐτιολογημένη, εἰς τρόπον ὥστε νὰ διαφωτίζηται τὸ ἐκτελοῦν ὄργανον εἰς τὴν λῆψιν τῆς ἀποφάσεώς του» (ἀπόφ. Συμβ. Ἐπικρατείας 397/1930).

Τῶν δικαστικῶν ὑπαλλήλων, τῶν ἀπολαυόντων ἰσοβιότητος ἢ μονιμότητος ἐν γένει, αἱ μεταθέσεις ἐνεργοῦνται κατὰ τὸ ἄρθρον 96 τοῦ Συντάγματος διὰ διατάγματος «μετὰ σύμφωνον, εἰδικῶς δὲ καὶ ἐμπεριστατωμένως ᾐτιολογημένην γνώμην ἀνωτάτου δικαστικοῦ συμβουλίου, ἀποτελουμένου ἐκ μελῶν τοῦ Ἀρείου Πάγου». Τὴν γνωμοδότησιν ταύτην δύναται ὁ ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης νὰ παραπέμψῃ εἰς τὴν ὁλομέλειαν τοῦ Ἀρείου Πά-

Digitized by Google

γου, ἧς ἡ ἀπόφασις εἶναι ὑποχρεωτική. Κατὰ δὲ τὸν νόμον ΓΥΛΖʹ «Περὶ προσόντων δικαστικῶν ὑπαλλήλων», ὡς ἐτροποποιήθη ὑπὸ τοῦ νόμου 3859 τοῦ 1929, οἱ ἀπὸ τοῦ βαθμοῦ πρωτοδίκου καὶ ἀντεισαγγελέως παρὰ πρωτοδίκαις καὶ ἄνω δικαστικοὶ ὑπάλληλοι ἀπολαύουσιν ἀμεταθέτου ἐπὶ μίαν τριετίαν ἐν τῇ ἕδρᾳ των, οἱ δὲ κατώτεροι ἔμμισθοι ἐπὶ μίαν διετίαν. Πρὸ τῆς συμπληρώσεως τῶν χρονικῶν τούτων ὁρίων δὲν ἐπιτρέπεται μετάθεσις, εἰμὴ εἰς τὰς ἐν τῷ ἄρθρῳ 20 τοῦ νόμου ἀπαριθμουμένας περιπτώσεις ὑπηρεσιακῆς ἀνάγκης καὶ εἰς τὴν περίπτωσιν οἰκείᾳ αἰτήσει ἀμοιβαίας μεταθέσεως. Ἀντιστρόφως, ἐν ἄρθρῳ 22 τοῦ αὐτοῦ νόμου καθορίζονται περιπτώσεις ὑποχρεωτικῆς μεταθέσεως, μετὰ συμπλήρωσιν ὡρισμένου ἐν τῇ αὐτῇ ἕδρᾳ χρονικοῦ ὁρίου, κατὰ τὰς ἐν αὐτῷ διακρίσεις.

Περὶ μεταθέσεων ὑπαλλήλων μὴ μονίμων προβλέπουσιν οἱ σχετικοὶ νόμοι, μὴ ἰσχύοντος ὡς πρὸς τοὺς αὐτοὺς τοῦ ἐν ἄρθρῳ 114 τοῦ Συντάγματος περιορισμοῦ τῆς προηγουμένης γνώμης ὑπηρεσιακοῦ συμβουλίου.

Αἱ περὶ μεταθέσεων ὑπαλλήλων ἐν γένει πράξεις τῶν διοικητικῶν ἀρχῶν, ἀναγόμεναι εἰς ἄσκησιν κυρίως διακριτικῆς ἐξουσίας τῆς διοικήσεως, ὑπόκεινται εἰς δικαστικὸν ἔλεγχον ἐνώπιον τοῦ Συμβουλίου τῆς Ἐπικρατείας διὰ τοῦ ἐνδίκου μέσου τῆς ἀκυρώσεως κατὰ τὸ ἄρθρον 46 τοῦ νόμου 3713, ἐλεγχόμεναι ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τῆς νομιμότητος αὐτῶν πάντοτε, ἀπὸ δὲ τῆς ἀπόψεως τῆς σκοπιμότητος μόνον εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν προσβάλλονται πρὸς ἀκύρωσιν διὰ κατάχρησιν ἐξουσίας. Μ. Δ. ΣΤΑΣΙΝΟΠΟΥΛΟΣ

**μεταθετικός,** *—ή, —όν*· ὁ μεταθέτων.—Ἐπίρρ. ***μεταθετικῶς***· κατὰ μετάθεσιν, διὰ μεταθέσεως.

**μεταθετός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μετατεθῇ, νὰ μετακινηθῇ, ἀντίθ. *ἀμετάθετος*· || ***μεταθετὸν*** (τό), ὡς οὐσ.: «τὸ μεταθετὸν τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων».

— **μεταθετὸν** (τὸ) (transpositeur) *[Μουσ.]*. Λέγομεν ὅτι ἓν ὄργανον εἶνε *μεταθετόν*, ὅταν οἱ ἦχοι, οὓς ἐκπέμπει, δὲν ἀνταποκρίνονται ἀκριβῶς πρὸς τοὺς σημειουμένους φθόγγους, ἢ ὅταν ὁ τόνος ὁ ἀντιστοιχῶν πρὸς τὴν φυσικὴν ἁρμονικήν του κλίμακα γράφεται σταθερῶς εἰς *ντὸ* μεῖζον. Τὰ ὄργανα ταῦτα εἶναι τὰ πλεῖστα τῶν πνευστῶν: εὐθύαυλοι, ἀγγλικὸν κέρας, σαξόφωνα, κέρατα, σάλπιγγες, σαξοκέρατα, κλειδοσάλπιγγες κτλ. Γράφοντες π. χ. τὸν φθόγγον *ντο* καὶ ἐκτελοῦντες αὐτὸν ἐπὶ εὐθυαύλου εἰς *ντο*, θὰ ἔχετε *ντο*· ἐπὶ εὐθυαύλου εἰς *σι ὕφ.*, ὁ αὐτὸς *ντο* θὰ ἀκουσθῇ *σι ὕφ.*· ἐπὶ εὐθυαύλου εἰς *λά*, θὰ ἀκουσθῇ *λὰ* κ.ο.κ. Ἐπὶ τῶν φυσικῶν σαλπίγγων καὶ κεράτων, πρὸ τῆς ἐφευρέσεως τῶν μετ' ἐμβόλων ὀργάνων, ἡ μετάθεσις ἐγίνετο γενικῶς διὰ τῶν ἀνταλλακτικῶν σπειρῶν. Τὰ ἔγχορδα ὄργανα γίνονται μεταθετὰ διὰ τῆς ἀλλαγῆς τοῦ χορδίσματος αὐτῶν. Τὸ σύστημα τοῦτο, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα σκορντατοῦρα (scordatura), ἦτο λίαν ἐν χρήσει παρὰ τοῖς δεξιοτέχναις τοῦ βιολίου τοῦ ΙΖʹ καὶ ΙΗʹ αἰῶνος· συνίστατο δὲ συνήθως εἰς τὸ χόρδισμα τοῦ ὀργάνου κατὰ ἓν ἡμιτόνιον ἐπὶ τὸ ὀξύτερον, εἰς τρόπον ὥστε τὸ τεμάχιον νὰ ἠχῇ ὑψηλότερον καὶ οἱ σημειούμενοι φθόγγοι νὰ εὑρίσκωνται εἰς ἀντίφασιν μὲ τοὺς ἀκουομένους. Γ. Σ.

**μεταθέτω,** *ἀόρ. μετέθεσα—μετετέθην, παθ. μετχ. μετατεθειμένος*· θέτω ἐν ἄλλῳ τόπῳ, ἀλλάσσω τὴν θέσιν τινός, μετακινῶ, μετατοπίζω: «θὰ μεταθέσω τὴν κλίνην μου»· || συνήθ. ἐπὶ ὑπαλλήλων: «τὸν μετέθεσαν εἰς τὰς Πάτρας», «μετετέθη ἀπὸ τὰς Ἀθήνας εἰς ἐπαρχίαν», «κάθε χρόνο μετατίθεται», «μετετέθησαν ἀμοιβαίως»· || «ἡ ἕδρα τοῦ εἰρηνοδικείου, — τοῦ πρωτοδικείου,—τοῦ συμβολαιογραφείου μετετέθη ἀπὸ τῆς κώμης Α εἰς τὴν Β», «ἡ πρωτεύουσα τοῦ κράτους μετετέθη εἰς Ἀθήνας ἀπὸ τὸ Ναύπλιον».

**μεταθώραξ** (ὁ) *[Ζῳολ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ ὀπίσθιον τμῆμα τοῦ θώρακος τῶν ἐντόμων, ἐξ οὗ ἐκφύεται τὸ δεύτερον ζεῦγος τῶν πτερύγων ὡς καὶ τὸ τρίτον ζεῦγος τῶν ποδῶν. Ὁ μεταθώραξ εἶναι τὸ ἀκρότατον τμῆμα τοῦ θώρακος τὸ ἀπ' εὐθείας μετὰ τῆς κοιλίας συνδεόμενον. Δ. Ν. Π.

**μεταίχμιον** (τό)· ὁ μεταξὺ δύο ἀντιπάλων στρατῶν τόπος· || καθόλου, τὸ ἐνδιάμεσον διάστημα, κυριολεκτικῶς καὶ μεταφορικῶς.

**μετακαλίνη** (ἡ) (Metakalin) *[Φαρμ. Χημ.]*. Οὕτω καλεῖται μεῖγμα 80 μ. διπλῆς τινος ἑνώσεως 3 μορίων μετακρεσόλης καὶ 1 μορίου μετακρεσολικοῦ καλίου καὶ 20 μερῶν ἰατρικοῦ σάπωνος. Πρόσφατον τὸ σκεύασμα ἀποτελεῖ πρασίνην κόνιν, διαλυομένην διαυγῶς εἰς 1—2 μ. ὕδατος. Εἰς τὸ ἐμπόριον φέρεται εἰς δισκία 1 γρ., χρησιμεύουσα εἰς τὴν παρασκευὴν ἀπολυμαντικῶν διαλυμάτων. Κ.Γ.Μ.

**μετακαλῶ** *(—έω)*, *ἀόρ. μετεκάλεσα—μετεκλήθην*· στέλλω καὶ προσκαλῶ, καθόλου, προσκαλῶ.

**μετακάμνω,** ἀντὶ *ματαχάμνω*· δημοτ., κάμνω, ποιῶ ἐκ νέου, ἄλλως *ξανακάμνω*: «συχώρα με καὶ δὲν τὸ ματακάμνω».

**μετακάρπιον** (τό)· τὸ μεταξὺ τοῦ καρποῦ τῆς χειρὸς καὶ τῶν δακτύλων μέρος.

—*[Ἀνατομ.]* Ἡ μοῖρα τοῦ σκελετοῦ τῆς χειρός, ἡ περιλαμβανομένη μεταξὺ τοῦ καρποῦ καὶ τῶν φαλάγγων τῶν δακτύλων. Σύγκειται ἐκ πέντε ἐπιμήκων ὀστῶν, ἅτινα παρ' ἀλλήλοις κείμενα ἀπεργάζονται τὸν σκελετὸν τῆς παλάμης· ὀνομάζονται δὲ 1ον, 2ον κλπ., ἀριθμήσεως γιγνομένης ἀπὸ τοῦ κερκιδικοῦ χείλους τοῦ ἀντίχειρος. Ἐκ τῶν δύο ἄκρων αὐτῶν τὸ μὲν ἄνω (τὸ πρὸς τὸν καρπὸν) καλεῖται *βάσις* ἢ *καρπιαῖον ἄκρον*, τὸ δὲ κάτω *κεφαλὴ* ἢ *δακτυλικὸν ἄκρον*. Συντάσσονται δὲ διὰ μὲν τοῦ ἄνω ἄκρου αὐτῶν ἔνθεν μὲν πρὸς ἄλληλα, ἔνθεν δὲ πρὸς τὰ ὀστᾶ τοῦ 2ου στοίχου τοῦ καρποῦ, διὰ δὲ τοῦ κάτω πρὸς τὰς πρώτας φάλαγγας τῶν δακτύλων, κατὰ δὲ τὴν λοιπὴν ἔκτασιν χωρίζονται ἀπ' ἀλλήλων διὰ τῶν *μεσοστέων* διαστημάτων, πληρουμένων ὑπὸ τῶν *μεσοστέων μυῶν*. Ι. Π.

**μετακάρπιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μετὰ τὸν καρπόν, ὁ μεταξὺ τοῦ καρποῦ καὶ τῶν δακτύλων τῆς χειρὸς κείμενος: «μετακάρπια ὀστᾶ»· || *μετακάρπιον* (τό)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).

— **μετακάρπιοι *μεσοβασικαὶ διαρθρώσεις*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *μεσοβασικαὶ* μετακάρπιοι διαρθρώσεις.

— **μετακάρπιοι *μεσοκεφαλικοὶ σύνδεσμοι*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *μεσοκεφαλικοὶ* μετακάρπιοι σύνδεσμοι.

**μετακαρπιοφαλαγγικαὶ *διαρθρώσεις*** *[Ἀνατομ.]*. Διαρθρώσεις, καθ' ἃς ἕκαστος ὅλος δάκτυλος συνάπτεται πρὸς τὸ μετακάρπιον. Αἱ δ' ἀρθρικαὶ ἐπιφάνειαι αὐτῶν ἀποτελοῦνται ἔνθεν μὲν ἐκ τῶν κεφαλῶν τῶν μετακαρπίων, ἔνθεν δ' ἐκ τῶν γληνῶν τῶν πρώτων φαλάγγων· ὁ δ' ἀρθρικὸς θύλακος ἐνισχύεται ὑπὸ δύο πλαγίων συνδέσμων. Κατὰ τὰς διαρθρώσεις ταύτας οἱ δάκτυλοι ἐπιτελοῦσι: αʹ) κάμψιν καὶ ἔκτασιν· βʹ) κερκιδικὴν καὶ ὠλενικὴν ἀπαγωγήν, καὶ γʹ) περιαγωγήν. Ι. Π.

**μετακεντρικός,** *—ή, —όν*· ὁ μετὰ τὸν κεντρικὸν κείμενος.

— **μετακεντρικὴ *ἐνειλιγμένη*** *[Ναυπηγ.]*. Ὁ γεωμετρικὸς τόπος τῶν διαδοχικῶν μετακέντρων, σχηματιζόμενος διὰ τῶν διαδοχικῶν τομῶν τῶν καθέτων ἐπὶ τὴν καμπύλην, ἥτις εἶναι τόπος τῶν κέντρων τῶν ἀντώσεων. Ὡς τοιαύτη ἡ ἐνειλιγμένη λαμβάνει διάφορα σχήματα, ἀναλόγως τοῦ σχήματος τοῦ πλοίου, ἐκ δὲ τοῦ σχήματος αὐτῆς ἐξάγεται ἡ εὐστάθεια τοῦ πλοίου κατὰ τὰς διαφόρους αὐτοῦ ἐγκλίσεις. Ἡ κορυφὴ τῆς ἐνειλιγμένης, ἤτοι τὸ μετάκεντρον τὸ ἀντιστοιχοῦν εἰς τὴν ὀρθὴν θέσιν τοῦ πλοίου, καλεῖται *πρῶτον μετάκεντρον*. Τέλος αἱ ἀποστάσεις τοῦ κέντρου ἀντώσεως, κατὰ τὴν ἐν ἰσορροπίᾳ τοῦ πλοίου θέσιν, ἀπὸ τῶν σημείων καθ' ἃ αἱ ἐφαπτόμεναι τῆς ἐνειλιγμένης συναντῶσι τὸν ἄξονα τοῦ πλοίου, καλοῦνται *ὕψη μετακεντρικά*. Ἐνίοτε πάλιν καλοῦνται *μετάκεντρα* διὰ δεδομένην ἔγκλισιν τὰ σημεῖα καθ' ἃ αἱ ἐφαπτόμεναι τῆς μετακεντρικῆς ἐνειλιγμένης συναντῶσι τὸν ἄξονα τοῦ πλοίου. Σ. Ε. Λ.

— **μετακεντρικὸν *ὕψος*** *[Ναυπηγ.]*· βλ. *μετακεντρικὴ* ἐνειλιγμένη.

**μετάκεντρον** (τὸ) *[Ναυπηγ.]*. Τὸ σημεῖον κατὰ τὸ ὁποῖον ἡ κατακόρυφος ἡ ἑνοῦσα τὸ κέντρον τοῦ βάρους ἐπιπλέοντος σώματος πρὸς τὸ κέντρον τῆς ἀντώσεως αὐτοῦ, ὅταν τὸ σῶμα τοῦτο εἶναι ἐν ἰσορροπίᾳ, συναντᾶται ὑπὸ τῆς κατακορύφου, ἥτις ἀνέρχεται ἀπὸ νέου κέντρου ἀντώσεως, ὅταν τὸ πλέον σῶμα ἐκκλίνῃ δι' οἱονδήποτε λόγον ἀπὸ τῆς θέσεως τῆς ἰσορροπίας του. Κατὰ ταῦτα, ἵνα

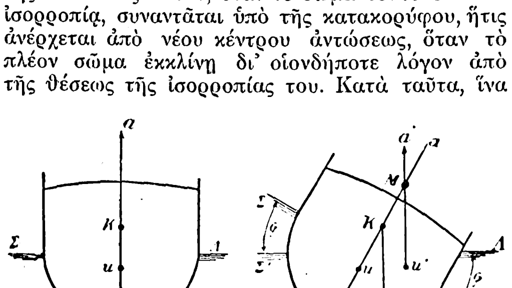


*Ἀριστερᾷ: Πλοῖον ὀρθὸν εἰς ἴσαλον ΣΛ:*

[Κ=τὸ κέντρον βάρους, κ=τὸ κέντρον ἀντώσεως, Κβ=τὸ βάρος τοῦ πλοίου, κα=ἡ ἄντωσις, πάντα ταῦτα ἐπ' εὐθείας καὶ δὴ κατακορύφου.]

*Δεξιᾷ: Πλοῖον ἐγκεκλιμένον ὑπὸ γωνίαν φ.*

[ΣΛ, Κ, κ=τὰ ἀρχικά, ἴσαλος, κέντρον βάρους καὶ κέντρον ἀντώσεως, $\Sigma_1$, $\Lambda_1$, Κ. κʹ=τὰ νέα τοιαῦτα μετὰ τὴν ἔγκλισιν τοῦ πλοίου, Κβʹ=ἡ νέα διεύθυνσις τῆς βαρύτητος, μὴ ταυτιζομένη πλέον πρὸς τὴν ἄντωσιν κʹαʹ, ἀλλὰ γεννῶσα μετ' αὐτῆς, διὰ τὸ παράλληλόν των, ζεῦγος ἀνορθωτικόν, Μ=τὸ μετάκεντρον.]

ἰσορροπῇ τὸ πλέον σῶμα, πρέπει τὸ κέντρον Κ τοῦ βάρους του Κβ καὶ τὸ κέντρον κ τῆς ἀντώσεώς του κα νὰ εὑρίσκωνται ἐπὶ τῆς αὐτῆς κατακορύφου Κκ, καθέτου εἰς τὴν ἴσαλον ΣΛ τοῦ πλωτοῦ. Ὅταν ὅμως τοῦτο ἐκκλίνῃ τῆς θέσεως τῆς ἰσορροπίας του κατά τινα γωνίαν φ, δεχόμενον νέαν ἴσαλον $\Sigma_1\Lambda_1$, τότε τὸ μὲν κέντρον τοῦ βάρους του Κ θὰ μένῃ εἰς τὴν θέσιν του (ἐφ' ὅσον δὲν μετεβάλαμεν αὐτήν, διὰ μετακινήσεως τῶν ἐπὶ τοῦ πλωτοῦ βαρῶν), ἀλλὰ τὸ κέντρον τῆς ἀντώσεως θὰ λάβῃ νέαν τινὰ θέσιν κʹ, δεδομένου ὅτι τὸ σχῆμα τοῦ βρεχομένου μέρους τοῦ πλωτοῦ ἤλλαξε κατόπιν τῆς κλίσεως. Ἀλλὰ τότε δὲν θὰ εἶναι πλέον ἐπ' εὐθείας ἡ βαρύτης Κβ καὶ ἡ ἄντωσις Κα, ἀλλὰ θὰ ἀπέχουν κατά τινα ἀπόστασιν, ἥτις θὰ ἀποτελῇ τὸν μοχλοβραχίονα τοῦ ζεύγους τῶν προμνησθεισῶν δυνάμεων· ἐπὶ πλέον, ἡ νέα ἄντωσις κʹαʹ θὰ συναντήσῃ τὴν κατακόρυφον τῆς ἰσορροπίας κατά τι σημεῖον Μ, ὅπερ εἶναι τὸ προμνησθὲν *μετάκεντρον*. Ἐὰν δὲ ἡ τομὴ αὕτη Μ λάβῃ χώραν ἄνωθεν τοῦ Κ, δηλαδὴ ἂν τὸ μετάκεντρον εὑρίσκεται ἄνωθεν τοῦ κέντρου τοῦ βάρους, ἐκδηλοῦται τότε ζεῦγος εὐσταθείας ἢ ἀνορθωτικόν, καὶ τὸ πλωτόν, εὑρισκόμενον ὑπὸ συνθήκας εὐσταθοῦς ἰσορροπίας, θὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν θέσιν του, ἀφιέμενον ἐλεύθερον τῶν προξενησάντων τὴν κλίσιν του αἰτίων· ἐὰν ὅμως τὸ μετάκεντρον Μ καὶ τὸ κέντρον βάρους Κ συμπίπτουν, τότε τὸ πλωτὸν ὑπὸ οἱανδήποτε κλίσιν κοιμᾶται, διατελοῦν ὑπὸ συνθήκας ἀδιαφόρου ἰσορροπίας· ἐὰν τέλος τὸ μετάκεντρον Μ εὑρεθῇ ὑπὸ τὸ κέντρον βάρους Κ, τότε τὸ πλωτόν, εὑρισκόμενον ὑπὸ συνθήκας ἀσταθοῦς ἰσορροπίας, θέλει ἀνατραπῆ, τῆς βαρύτητος καὶ τῆς ἀντώσεως γεννωσῶν ζεῦγος ἀρνητικῆς εὐσταθείας ἢ ἀνατρεπτικόν.

Προκειμένου περὶ πλοίου, ὅπερ λογίζεται ἐν ἰσορροπίᾳ ἐγκαρσίας εὐσταθείας περὶ ἄξονα παράλληλον τῷ διαμήκει ἐπιπέδῳ (ὅταν τὸ ἐπίπεδον τοῦτο εἶναι κατακόρυφον, δηλαδὴ κάθετον ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς ἰσάλου) καὶ τοιαύτῃ διαμήκους εὐσταθείας περὶ ἄξονα παράλληλον πρὸς τὸ ἐγκάρσιον, γεννῶνται, ὅταν τὸ τοιοῦτον πλοῖον ἐκκλίνῃ τῆς θέσεως τῆς ἰσορροπίας του, εἴτε διατοιχοῦν, εἴτε προνευστάζον, μετάκεντρα καὶ λόγῳ τῶν διαμήκων καὶ λόγῳ τῶν ἐγκαρσίων κλίσεών του. Πάντως, κατὰ τὴν ἐν τῇ θεωρίᾳ τοῦ πλοίου ἀποδεικνυομένην ἀλήθειαν, τὸ μετάκεντρον οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ τὸ κέντρον καμπυλότητος τῆς ἐπιφανείας, ἥτις εἶναι γεωμετρικὸς τόπος τῶν κέντρων ἀντώσεως κατὰ τὰς διαφόρους τοῦ πλοίου κλίσεις, καὶ κατὰ τὴν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν κάθετον ἀκτῖνα τὴν διερχομένην διὰ τοῦ θεωρουμένου κέντρου ἀντώσεως· διὸ καὶ ὀρθότατα παρομοιάζεται τὸ μετάκεντρον πρὸς θεωρητικὸν σημεῖον, ἀφ' οὗ ἀρτᾶται τὸ ταλαντευόμενον πλοῖον. Διὰ τοῦτο καὶ κατὰ τοὺς ὑπολογισμοὺς τοῦ πλοίου καὶ κατὰ τὴν ναυπήγησίν του, ἀλλὰ καὶ κατὰ τὸν ἐξοπλισμόν του καὶ τὰς ἑκάστοτε φορτίσεις του ἀκόμη, λαμβάνεται πρόνοια ὅπως τὸ μετάκεντρον τηρῆται ὑψηλά, δεδομένου ὅτι, εἰς τὰ πολεμικὰ ἰδίως πλοῖα, τὸ κέντρον τοῦ βάρους εὑρίσκεται ὑψηλὰ λόγῳ τοῦ βάρους τῶν θωράκων τῶν πύργων τῶν πυροβόλων καὶ τῶν πολεμικῶν ἱστῶν. Διότι ὅσον τὸ μετάκεντρον πλησιάζει πρὸς τὸ κέντρον τοῦ βάρους, τόσον ἡ ἐγκαρσία εὐστάθεια, ἥτις ἐνδιαφέρει περισσότερον τῆς διαμήκους, καθίσταται ἐπισφαλεστέρα (βλ. καὶ *μετακεντρικὴ* ἐνειλιγμένη). Σ. Ε. Λ.

— **μετάκεντρον *πρῶτον*** *[Ναυπηγ.]*· βλ. *μετακεντρικὴ* ἐνειλιγμένη.

**μετακενῶ** *(—όω)*· κενῶ τι καὶ πληρῶ ἄλλο, μεταγγίζω.

**μετακένωσις,** *—εως* (ἡ)· μετάγγισις.

**μετακίνησις,** *—εως* (ἡ)· ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετακινεῖν, μετατόπισις, μετάθεσις: «μετακίνησις στρατευμάτων».

— *[Κανον. Δίκ.]* Βλ. λ. *μετάθεσις ἐπισκόπων*.

**μετακινητός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μετακινηθῇ: «γέφυρα μετακινητή».

**μετακινναβαρίτης** (ἡ) (Metacinnabarit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀποτελοῦν θειοῦχον ἕνωσιν τοῦ ὑδραργύρου HgS, ἀντίστοιχον πρὸς τὸν κινναβαρίτην, ἀπὸ τὸν ὁποῖον διαφέρει ὡς πρὸς τὴν κρυσταλλογραφικὴν ἀνάπτυξιν. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ κυβικὸν σύστημα ὑπὸ μορφὴν ὀκταεδρικὴν ἢ δωδεκαεδρικὴν καὶ ἔχει λάμψιν μεταλλικήν, σκληρότητα 3, εἰδικὸν βάρος 7,7—7,8 καὶ χρῶμα μαῦρον. Ἀπαντᾷ ὡς σύνδρομον ὀρυκτὸν τοῦ κινναβαρίτου, ἢ ὡς προϊὸν ἀλλοιώσεως αὐτοῦ εἰς τὰ μεταλλεῖα Redington - Mine τῆς Καλιφορνίας, εἰς τὴν Idria κ. ἁ. Γ. Β.

**μετακινοῦμαι** *(—έομαι)*· παθ. τοῦ *μετακινῶ* (βλ. λ.).

**μετακινῶ** *(—έω)*, *ἀόρ. μετεκίνησα—μετεκινήθην*· κινῶν τι ἀλλάσσω τὴν θέσιν του, μετατοπίζω, μεταθέτω: «οὐδὲν μετεκίνησεν ἐκ τῆς θέσεώς του».

**μετακιόνιον** (τό)· τὸ μεταξὺ δύο κιόνων διάστημα, διαστύλιον.

**μετακλασσικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος ἢ ὁ ἀνήκων εἰς τὴν μετὰ τοὺς κλασσικοὺς χρόνους περίοδον.

Digitized by Google

—*['Εγκυκλ.]* Οἱ *μετακλασσικοὶ* χρόνοι ἄρχονται κυρίως ἀπὸ τῆς ἐποχῆς καθ' ἣν αἱ Ἀθῆναι ἔπαυσαν ν' ἀποτελῶσι τὸ κέντρον τῆς πρωτοτύπου καὶ καλλιτέχνου πνευματικῆς δράσεως τῶν Ἑλλήνων, τὴν δὲ θέσιν αὐτῶν κατέλαβεν ἡ Ἀλεξάνδρεια. Ἡ μετακίνησις αὕτη τῶν πνευματικῶν δυνάμεων τοῦ Ἑλληνισμοῦ, ἥτις ἐπῆλθε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ἦτο ἀποτέλεσμα, πλὴν ἄλλων πολλῶν αἰτίων, καὶ τῆς προϊούσης παρακμῆς τοῦ ἀρχαίου (κλασσικοῦ) πνεύματος, ὅπερ ἀπὸ τῶν μακεδονικῶν χρόνων εἶχε παύσει νὰ παράγῃ ἔργα πρωτότυπα καὶ χαρίεντα, καὶ τῆς ἀνάγκης τῆς συγκομιδῆς καὶ μελέτης τῶν πνευματικῶν προϊόντων τῶν κλασσικῶν ἢ ἐγκρίτων χρόνων. Οἱ μετακλασσικοὶ χρόνοι περιλαμβάνουσι τὴν *ἀλεξανδρεωτικὴν* καὶ τὴν *ἑλληνορωμαϊκὴν* περίοδον καὶ διήκουσι μέχρι τοῦ ΣΤ' περίπου μ. Χ. αἰῶνος, ὅτε ἔσβησε τελείως τὸ ἀρχαῖον πνεῦμα. Ι. Φ. Δ.

—**μετακλασσικὴ** ***τέχνη*** *['Ιστορ. Τέχν.]*· βλ. λ. *τέχνη*.

**μετακλαστικὴ** ***κύστις*** *['Ιατρ.]*. βλ. λ. *κύστις μετακλαστική*.

**μετάκλησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ *μετακαλεῖν*, κλῆσις, πρόσκλησις: «μετάκλησις ξένων ὀργανωτῶν».

—*[Τραπεζ.]* Ὁ ὅρος *μετάκλησις* χρησιμοποιεῖται ἐπὶ τῶν τραπεζιτικῶν πιστώσεων καὶ ἰδίως τῶν ἀνοιγομένων ἐπὶ φορτωτικῶν (crédits confirmés documentaires), ἐν αἷς σημαίνει τὴν ἐκ μέρους τοῦ ἐντολοδότου ἄρσιν τῆς ἐνταλθείσης πιστώσεως. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει μετάκλησις εἶναι δυνατὴ μόνον ἐν ᾗ περιπτώσει ὁ δικαιοῦχος αὐτῆς, εἰδοποιηθεὶς ἤδη ἐπισήμως περὶ τῆς ἀνοιγείσης ὑπὲρ αὐτοῦ πιστώσεως, συγκατατίθεται εἰς τὴν ἐγκατάλειψιν αὐτῆς. Α. Λ.

**μετακλητός,** *—ή, —όν*· ὁ μετακληθείς, ὁ διὰ μετακλήσεως προσελθών· || ὁ δυνάμενος νὰ μετακληθῇ.

—**μετακλητοὶ** ***ὑπάλληλοι.*** Εἶναι οἱ μὴ προστευόμενοι ὑπὸ τῆς ἐν ἄρθρῳ 114 τοῦ Συντάγματος θεσπιζομένης μονιμότητος, καλούμενοι συνάμα καὶ *ἀνακλητοὶ* ἢ *ἔκτακτοι*. Δεδομένου ὅτι, ὡς ὁρίζει τὸ Σύνταγμα «οἱ τακτικοὶ ὑπάλληλοι ἀπὸ τοῦ διορισμοῦ αὐτῶν εἶναι μόνιμοι, ἐφ' ὅσον ὑφίστανται αἱ σχετικαὶ ὑπηρεσίαι καὶ θέσεις», ἕπεται ὅτι οἱ μὴ τακτικοὶ ὑπάλληλοι, ἤτοι οἱ ἔκτακτοι ἢ μετακλητοί, δὲν εἶναι μόνιμοι. Ἀλλὰ τὸ κριτήριον τῆς διακρίσεως τῶν τακτικῶν καὶ ἄρα μονίμων ἀπὸ τῶν ἐκτάκτων καὶ ἄρα μετακλητῶν ὑπαλλήλων δὲν εἶναι καθωρισμένον ἐν τῷ Συντάγματι, συνεπῶς ἡ ἐκτίμησις τῆς ἰδιότητος τῶν ὑπαλλήλων ὡς τακτικῶν ἢ μὴ ἐπαφίεται εἰς τὰ δικαστήρια, κρίνοντα ἑκάστοτε ἐπὶ συγκεκριμένων περιπτώσεων. Ἄρα τὸ τυχὸν ἐν νόμῳ καθοριζόμενον κριτήριον δὲν ὑποχρεοῖ τὰ δικαστήρια, ἅτινα δικαιοῦνται νὰ ἐλέγξωσι κατ' οὐσίαν τὸν ὑπὸ τοῦ νόμου διδόμενον χαρακτηρισμὸν τῶν ὑπαλλήλων ὡς ἐκτάκτων καὶ συνεπῶς μετακλητῶν. Οὕτω, δὲν ἀσκεῖ ἐπιρροὴν ἡ τυχὸν διδομένη ὑπὸ τοῦ νόμου ἁπλῆ ὀνομασία τοῦ ὑπαλλήλου ὡς ἐκτάκτου, ἀλλὰ «δέον ἡ ἰδιότης αὕτη νὰ προκύπτῃ ἐξ αὐτῆς τῆς φύσεως τῆς ὑπηρεσίας καὶ τῆς θέσεως ἐν ᾗ διορίζεται ὁ ὑπάλληλος, ὡς καὶ τῆς προσωρινότητος τῆς ὑπηρεσίας, καθόσον ἄλλως θὰ ἠδύνατο ἡ ὑπὸ τοῦ συνταγματικοῦ νομοθέτου ἠγγυημένη μονιμότης νὰ παραβιάζηται ὑπὸ τοῦ κοινοῦ νομοθέτου, προσδίδοντος ἑκάστοτε τὸν χαρακτηρισμὸν τοῦ ἐκτάκτου εἰς ὡρισμένους ὑπαλλήλους, στερουμένους οὕτω τῆς μονιμότητος, χωρὶς ἡ τοιαύτη στέρησις ν' ἀνταποκρίνηται πρὸς τὴν φύσιν τῆς ὑπηρεσίας» (ἀπόφ. Συμβ. Ἐπικρατείας 653 τοῦ 1930).

Ἐκτὸς τῶν ὑπαλλήλων, οἵτινες ὡς ἐκ τῆς ἐκτάκτου καὶ προσωρινῆς φύσεως τῆς θέσεως ἣν κατέχουσι, χαρακτηρίζονται κατὰ τ' ἀνωτέρω ὡς μετακλητοί, δύνανται ἐπὶ πλέον νὰ ἐξαιρῶνται τῆς μονιμότητος καὶ νὰ θεωρῶνται συνεπῶς ὡς μετακλητοί, καίτοι ἀνήκοντες εἰς ὑπηρεσίαν τακτικήν, οἱ πρέσβεις καὶ οἱ διπλωματικοὶ πράκτορες, οἱ γενικοὶ διοικηταί, γενικοὶ γραμματεῖς καὶ γενικοὶ διευθυνταὶ τῶν ὑπουργείων, οἱ νομάρχαι, ὁ ἐπίτροπος τοῦ δημοσίου παρὰ τῇ ἱερᾷ συνόδῳ, οἱ ὑπάλληλοι τοῦ πολιτικοῦ γραφείου καὶ τῶν ἰδιαιτέρων γραφείων τῶν ὑπουργῶν καὶ τῶν προέδρων τῶν βουλῶν. Ἡ ἐξαίρεσις τῶν ὡς ἄνω ὑπαλλήλων ἀπὸ τῆς μονιμότητος καὶ ὁ κατὰ συνέπειαν ταύτης χαρακτηρισμὸς αὐτῶν ὡς μετακλητῶν γίνεται διὰ νόμου, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἄρθρου 114 § 3 τοῦ Συντάγματος. Αἱ δὲ προϋπάρχουσαι τοῦ Συντάγματος ἐξαιρέσεις μονιμότητος τῶν ὑπαλλήλων τούτων ἐξακολουθοῦν ὑφιστάμεναι, κατὰ τὴν ὑπὸ τὸ ἄρθρον 114 ἑρμηνευτικὴν δήλωσιν.

Συνέπεια τοῦ χαρακτηρισμοῦ ὑπαλλήλου τινὸς ὡς μετακλητοῦ εἶναι τὸ δικαίωμα τῆς διοικήσεως, ὅπως ἀπολύῃ τοῦτον κατ' οἰκείαν κρίσιν, πρὸ πάσης καταργήσεως τῆς θέσεως ἣν κατέχει καὶ ἄνευ τῆς διὰ τοὺς μονίμους ἀπαιτουμένης ἐν τῷ Συντάγματι προηγουμένης ἀποφάσεως συμβουλίου ὠργανωμένου κατὰ νόμον καὶ ἀποτελουμένου κατὰ τὰ δύο τρίτα τοὐλάχιστον ἀπὸ μονίμους ὑπαλλήλους. Ἀλλὰ τὸ Σύνταγμα οὐδόλως κωλύει ὅπως αἱ ὑπὲρ τῶν μονίμων θεσπισμέναι ἐγγυήσεις ἐκτείνωνται διὰ νόμου ἐν ὅλῳ ἢ ἐν μέρει καὶ ἐπὶ κατηγοριῶν μετακλητῶν ὑπαλλήλων, κατὰ τὴν κρίσιν τοῦ κοινοῦ νομοθέτου. Μ. Δ. Σ.

**μετάκλισις** (ἡ) (Flexur) *[Γεωλογ.]*. Διατάραξις ἢ μετακίνησις τῆς ἀρχικῆς ὁριζοντίας θέσεως συστήματός τινος στρωμάτων, κατὰ τὴν ὁποίαν δὲν γίνεται διάρρηξις καὶ διαχώρισις τοῦ συστήματος τῶν στρωμάτων εἰς δύο τεμάχη, ἀλλὰ κάμψις τούτων κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε τὰ στρώματα ἀμφοτέρων τῶν πτερύγων τῆς μετακλίσεως νὰ παραμείνουν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον παράλληλα πρὸς τὴν ἀρχικήν των θέσιν, συνδεόμενα μεταξύ των διὰ κεκλιμένου ἢ καθέτου σκέλους. Ἡ μετάκλισις συνίσταται ἐκ τριῶν σκελῶν, τοῦ ἀνωτέρου, τοῦ κατωτέρου καὶ τοῦ ἐνδιαμέσου ἢ συνδετικοῦ. Γεννᾶται διὰ λοξῆς πρὸς τὰ κάτω ἐλξεως ἢ τάσεως τῶν στρωμάτων καὶ οὐχὶ διὰ πτυχώσεως. Συνεπείᾳ τούτου τὸ ἐνδιάμεσον ἢ συνδετικὸν σκέλος καθίσταται συνήθως ἰσχνότερον, δύναται μάλιστα καὶ νὰ διαρραγῇ, ὅτε ἡ μετάκλισις μεταβάλλεται εἰς μετάπτωσιν μετὰ *παρέλξεως* τῶν περάτων τῶν στρωμάτων. Γ. Κ. Γ.

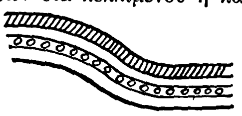

*Σχῆμα μετακλίσεως.*

**μετακομιδὴ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετακομίζειν, μετακόμισις, μεταφορά.

**μετακομίζω,** *ἀόρ. μετεκόμισα—μετεκομίσθην*· κομίζω εἰς ἄλλον τόπον, μεταφέρω: «μετακομίζω τὰς ἀποσκευάς, — τὰ ἔπιπλα κττ.»· || καὶ ἁπλῶς *μετακομίζω*: «αὔριον θὰ μετακομίσω»· || παθ. *μετακομίζομαι*· μεταφέρω τὰ ἔπιπλά μου εἰς ἄλλην κατοικίαν: «αὐτὰς τὰς ἡμέρας δὲν ἔχει καιρόν, διότι μετακομίζεται».

**μετακόμισις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετακομίζειν, μεταφορά, μετοίκησις.

**μετακομιστός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μετακομισθῇ.

**μετακόσμιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἀνήκων ἢ ἀναφερόμενος εἰς τὸ μεταξὺ τῶν κόσμων διάστημα· || ὁ ὢν ἢ γινόμενος πέρα τοῦ κόσμου τούτου ἢ μετὰ θάνατον: «μετακόσμιος ζωὴ» ἡ πέραν τοῦ τάφου ζωή· || ***μετακόσμια*** (τά)· ὡς οὐσ. (λατ. intermundia)· οὕτω ἐκάλει ὁ Ἐπίκουρος τὰ μεταξὺ τῶν κόσμων κενὰ διαστήματα, ἐν οἷς οἰκοῦσιν οἱ θεοί, διάγοντες μακάριον βίον *(Cic.* de fin. 2.23, *Διογ. Λ.* 10,89).

**μετακρολεΐνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *ἀκρολεΐνη*.

**μεταλαβαίνω,** *ἀόρ. ἐ)μετάλαβα*· μεταλαμβάνω τῶν ἀχράντων μυστηρίων, ἄλλως *κοινωνῶ*· || ἐνεργ. παρέχω τὴν ἁγίαν μετάληψιν: «πῆγε ἀξεμολόγητος καὶ δὲν τὸν μετάλαβε ὁ παππᾶς».

**μεταλαμβάνω,** *ἀόρ. μετέλαβον*· λαμβάνω μέρος, μετέχω, κοινωνῶ τινός· || κοινωνῶ τῶν ἀχράντων μυστηρίων, λαμβάνω μετάδοσιν, κοιν. *μεταλαβαίνω*: «μεταλαμβάνει ὁ δοῦλος τοῦ Θεοῦ Δημήτριος».

**μεταλαμπαδεύω**· οἱονεὶ μεταδίδω τὴν λαμπάδα, τὸ φῶς: «ἡ ἑλληνικὴ παιδεία μετελαμπαδεύθη εἰς τὴν Δύσιν».

**μεταλαμπάδευσις,** *—εως* (ἡ)· μεταφ., ἡ μετάδοσις τῆς λαμπάδος, τοῦ φωτός: «ἡ μεταλαμπάδευσις τῆς ἐπιστήμης».

**μετχλδεῦδη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *ἀκεταλδεΰδη*.

**μετάληψις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταλαμβάνειν, τοῦ μετέχειν, μετοχή: «τὰ μετοχῆς καὶ μεταλήψεως σημαντικὰ ῥήματα»· || «ἁγία μετάληψις» τὰ ἄχραντα μυστήρια, ἡ θεία εὐχαριστία.

—*[Λειτουργ.]* Βλ. λ. *κοινωνία*.

—*[Ρητορ.]* Ἡ *μετάληψις* εἶναι εἷς τῶν περὶ τὴν λέξιν τρόπων, γίνεται δὲ ὅταν λαμβάνωμεν λέξιν τινὰ ἀντὶ ἄλλης, οἷον *πῦρ* ἀντὶ Ἥφαιστος (*Κοΐντιλ.* 8. 6, 37). Ι. Φ. Δ.

**Μέταλλα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς ΝΔ. παραλίας τῆς Σαρδηνίας, ὀλίγον ἀπέχουσα τῆς παραλίας, καλουμένη νῦν Antas. Α. Θ. Σ.

**μεταλλαγὴ** (ἡ)· ἀλλαγή, μεταβολή.

**μεταλλακτήρ,** *—ῆρος* (ὁ). Μηχαναὶ ἠλεκτρικαὶ χρησιμοποιούμεναι ἰδίᾳ πρὸς μετατροπὴν συνεχοῦς ῥεύματος εἰς ἐναλλασσόμενον. Αἱ μηχαναὶ αὗται κατασκευάζονται διὰ κοινοῦ ἐπαγωγέως καὶ ἐπαγωγίμου, οἵτινες φέρουσι δύο τύπους συλλεκτῶν διατεταγμένους ἑκατέρωθεν τοῦ ἄξονος περιστροφῆς τοῦ ἐπαγωγίμου, ὧν ὁ εἷς εἶναι τύπος συλλέκτου συνεχοῦς ῥεύματος, ὁ δ' ἕτερος τύπος συλλέκτου ἐναλλασσομένου. Ἐὰν διὰ τῶν ἀκροδεκτῶν πρὸς τὸ μέρος τοῦ συλλέκτου συνεχοῦς ῥεύματος διαβιβάσωμεν συνεχὲς ῥεῦμα, ἡ μηχανὴ τίθεται εἰς περιστροφικὴν κίνησιν καὶ παρέχει ἐκ τοῦ μέρους τοῦ συλλέκτου ἐναλλασσόμενον ῥεῦμα. Κ. Π.

**μεταλλάκτης** (ὁ). Οὕτως ὀνομάζονται πολλάκις οἱ ἐν γένει μετασχηματισταὶ τῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας, γενικώτερον δὲ τὰ τηλεφωνικὰ κέντρα. Α. Π. Μ.

**μεταλλακτός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μεταβληθῇ· || ὁ μεταβεβλημένος· || ***μεταλλακτὸν*** (τό)· ὡς οὐσ., ἡ ἔννοια τοῦ μεταλλάττειν ἢ μεταλλάττεσθαι: «τὸ μεταλλακτὸν τῆς ὕλης».

**μετάλλαξις** (ἡ) (mutatio) *[Μικροβ.]*. Κατὰ τὴν σπουδὴν τῶν μικροβίων παρετηρήθησαν πολλάκις μεταβολαὶ τῶν διαφόρων μορφολογικῶν καὶ βιολογικῶν χαρακτήρων καὶ ἰδιοτήτων αὐτῶν. Αἱ μεταβολαὶ αὗται ἐπέρχονται εἴτε εἰς τοὺς ἐξωτερικοὺς χαρακτῆρας τῶν μικροβίων (μορφή, σχῆμα, βλεφαρίδες κτλ.), εἴτε εἰς τὰς ἰδιαιτέρας βιολογικὰς ἰδιότητας αὐτῶν (ζύμωσις, αἱμολυτικὴ δύναμις, τοξικότης, ὀροαντιδράσεις). Ἡ μεταβολὴ τῶν μικροβίων εἶνε δυνατὸν νὰ ἐπέλθῃ εἴτε βαθμιαίως καὶ προσκαίρως, ὁπότε καλεῖται *εὐμεταβλησία*, εἴτε ἀποτόμως, αἰφνιδίως καὶ ἁλματωδῶς, ὁπότε καλεῖται *μετάλλαξις*. Ἀλλ' ἐνῷ εἰς τὴν εὐμεταβλησίαν ἡ μεταβολὴ εἶναι ἐφήμερος καὶ πρόσκαιρος, ἐπανερχομένης τῆς νέας μορφῆς κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ταχέως εἰς τὴν ἀρχικὴν τοιαύτην, εἰς τὴν μετάλλαξιν ἡ κατάστασις εἶναι ἀνώμαλος καὶ σοβαρά, καθότι μεταβάλλονται πλείονες συνήθως ἰδιότητες τοῦ μικροβίου, συνοδεύεται δὲ ὑπὸ ἐμφανίσεως νέων θετικῶν ἰδιοτήτων μεταβιβαζομένων ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν καὶ ὁδηγουσῶν εἰς τὴν γένεσιν νέων τύπων, φυλῶν καὶ εἰδῶν. Ἡ ἐπάνοδος εἰς τὴν ἀρχικὴν μορφὴν εἶναι ἐπίσης δυνατὴ ἐπερχομένη αἰφνιδίως. Ἡ μετάλλαξις παρετηρήθη οὐ μόνον εἰς τὰ βακτηρίδια, ἀλλὰ καὶ εἰς τὰ πρωτόζῳα (τρυπανοσώματα), παρουσιάζεται δὲ ὑπὸ δύο διαφόρους ἐκφάνσεις. Κατὰ τὴν πρώτην μεταβάλλεται μία μόνον ἰδιότης τοῦ μικροβίου, κατὰ δὲ τὴν δευτέραν μεταβάλλεται ὁλόκληρον τὸ σύμπλεγμα τῶν ἐκδηλώσεων τῆς ζωῆς αὐτοῦ. Καὶ ἡ μὲν μετάλλαξις τῶν μεμονωμένων ἰδιοτήτων παρετηρήθη εἰς τὴν μορφολογίαν τῶν μικροβίων (μέγεθος, ἐκφυλωτικαὶ μορφαὶ πρόσκαιροι ἢ διαρκεῖς, σπόροι καὶ ἀντοχὴ ἢ ἔλλειψις αὐτῶν), εἰς τὸν σχηματισμὸν τῶν ἀποικιῶν, εἰς τὴν ἀντοχὴν αὐτῶν ὡς πρὸς τὸ ὀξυγόνον ἢ τὴν θερμοκρασίαν, εἰς τὴν χημικὴν σύνθεσιν τῆς τροφῆς αὐτῶν, εἰς τὴν ἐναλλαγὴν τῶν προϊόντων (ἄχροα, ἔγχρωμα. νέα εἴδη ἐγχρώμων), εἰς τὰ παραγόμενα παρ' αὐτῶν ἔνζυμα, εἰς τὴν ζυμωτικὴν ἢ αἱμολυτικὴν δύναμιν, τὰς ὀρολογικὰς αὐτῶν ἰδιότητας (συγκόλλησις, σύνδεσις συμπληρώματος), τὰς παθογόνους ἢ τὰς τοξικὰς αὐτῶν ἰδιότητας (ἐλάττωσις ἢ αὔξησις τῆς παθογόνου ἢ τοξικῆς δυνάμεως αὐτῶν). Ἡ δὲ μετάλλαξις τῶν λειτουργικῶν συμπλεγμάτων παρετηρήθη εἰς τοὺς πνευμονιοκόκκους καὶ στρεπτοκόκκους (διάμεσα εἴδη, μετατροπὴ τῶν μὲν εἰς τοὺς δὲ καὶ τἀνάπαλιν), εἰς τοὺς μηνιγγιτιδοκόκκους (διαφοραὶ ὡς πρὸς τὰς ζυμώσεις, τὴν συγκόλλησιν καὶ τὴν τοξικότητα), εἰς τὸν σπληνάνθρακα (ποικιλίαι ὡς πρὸς τὸ ἔλυτρον, τὴν μορφὴν τῶν ἀποικιῶν καὶ τὴν τοξικότητα) καὶ εἰς τὸ βακτηρίδιον τοῦ τύφου (ἄτυπα στελέχη δεικνύοντα ὀρολογικὰς ἀνωμαλίας). Φαίνεται δὲ ὅτι καὶ τὸ περιγραφὲν μετατυφικὸν βακτηρίδιον εἶναι μετάλλαξις. Ἐπίσης τοιαῦται μεταλλάξεις παρετηρήθησαν εἰς τὸ βακτηρίδιον τῆς πανώλους (τύπος ἀνθρώπου, τύπος μυός), εἰς τὸ βακτηρίδιον τῆς διφθερίτιδος (ὡς πρὸς τὰς ἀποικίας καὶ τὴν χρῶσιν), εἰς τὸ χολερικὸν δονάκιον (τύποι μετ' ἀσθενοῦς τοξικότητος ἢ μεθ' αἱμολυτικῆς δυνάμεως. Λίαν ἐνδιαφέρουσαι εἶναι ἐπίσης αἱ παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ ἀθροίσματος τῶν βακτηριδίων τῆς δυσεντερίας, ἔνθα φαίνεται ὅτι πρόκειται περὶ πλειόνων κυρίων τύπων καὶ ἀριθμοῦ σταθεροποιηθέντων εἰδῶν, οὕτως ὥστε εἰς πάσχοντα ἄτομα τῆς αὐτῆς οἰκογενείας καὶ ἐνίοτε εἰς τοὺς αὐτοὺς ἀρρώστους νὰ εὑρεθῶσι ταυτοχρόνως δύο διάφοροι τύποι. Τοῦτ' αὐτὸ παρετηρήθη καὶ ὑπὸ τοῦ Zupnik εἰς τὸ βακτηρίδιον τῆς διφθερίτιδος. Ἐπίσης ἐνδιαφέρον εἶναι τὸ ζήτημα τῆς ποικιλίας τοῦ βακτηριδίου τῆς φυματιάσεως, ὡς καὶ τὸ πρόβλημα τῆς μεταβολῆς τύπου τινὸς εἰς ἕτερον τοιοῦτον. Ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ ταύτῃ ἀναφέρομεν ὅτι ὁ Arloing ἠδυνήθη νὰ παραγάγῃ βακτηρίδιον ἀποδίδον ὁμοιογενὲς καλλιέργημα μετ' ἐξησθενημένης τοξικότητος, οἱ δὲ Calmette καὶ Guerin ἠδυνήθησαν νὰ παραγάγωσι τύπον ἀτοξικόν, καλλιεργοῦντες ἐπὶ θρεπτικοῦ ὑποστρώματος μετὰ χολῆς. Ἡ πρὸς παραγωγὴν εἴδους τινὸς δύναμις τῆς μεταλλάξεως διανοίγει τὴν ὁδὸν πρὸς κατανόησιν τῆς φυλογεννητικῆς παραγωγῆς τῶν παθογόνων αἰτίων ἐκ συγγενῶν σαπροφυτικῶν εἰδῶν. Ἐπίσης διανοίγει τὴν ὁδὸν πρὸς διευκρίνισιν τῶν πάλαι αἰνιγματωδῶν δεδομένων τῆς ἐπιδημιολογίας. Ἡ αἰφνιδία π. χ. ἐξάπλωσις τῆς ἐπιδημίας, ὡς καὶ ἡ ἀπότομος παῦσις αὐτῆς, δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν ὅτι ὀφείλονται εἰς τὰς ποικιλίας



Digitized by Google

τοῦ αἰτίου, ἤτοι τῆς γενέσεως τύπων ἀβληχρᾶς τοξικότητος καὶ παθογόνου δυνάμεως, προερχομένων ἐκ τῶν διαφόρων ὅρων τῆς ζωῆς τῶν μικροβίων.
Ν. Α. Μ.

**μεταλλάσσω**, ἀόρ. *μετήλλαξα—μετηλλάγην*, παρακ. παθ. μετχ. *μετηλλαγμένος*· ἀλλάσσω, μεταβάλλω· || «μεταλλάσσω τὸν βίον» ἀποθνήσκω· || ἀμεταβ., μεταβάλλομαι.

**μεταλλεία** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταλλεύειν, ζήτησις μεταλλείων, ἀνόρυξις τῆς γῆς δοκιμαστικῶς, ἀνερεύνησις.

**μεταλλειολογία** (ἡ)· ἡ μελέτη καὶ ἐνασχόλησις περὶ τὰ μέταλλα, τὰ μεταλλεύματα καὶ τὰ μεταλλεῖα.

—*[Ἐγκυκλοπ.]* Ἡ *μεταλλειολογία* ἀποτελεῖ ἴδιον κλάδον τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, ἀσχολεῖται δὲ εἰδικῶς μὲ τὴν γένεσιν τῶν μεταλλευμάτων καὶ τὴν κατανομὴν τούτων ἐντὸς τοῦ γηΐνου φλοιοῦ ἢ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ. Νοοῦνται δ' ἐν προκειμένῳ ὑπὸ τὸν ὅρον μεταλλεύματα ὄχι μόνον τὰ καθ' αὑτὸ μεταλλοφόρα κοιτάσματα, ἀλλὰ καὶ ἄλλα ἐπίσης βιομηχανικῶς ἐκμεταλλεύσιμα ὀρυκτὰ καὶ πετρώματα, ὡς οἱ γαιάνθρακες, ἡ σμύρις, ὁ ἀμίαντος, ὁ γύψος κλπ. (βλ. λ. *μέταλλον* καὶ *μεταλλοφόρα κοιτάσματα*). Ὡς τέχνη, ἐξ ἄλλου, ἡ μεταλλειολογία ἀσχολεῖται μὲ τὰς μεθόδους τῆς ἀνευρέσεως καὶ τῆς ἐξορύξεως τῶν ἰδίων ὡς ἄνω μεταλλοφόρων καὶ μὴ ὀρυκτῶν (βλ. λ. *μεταλλεῖα*).
—Ρ.

**μεταλλειολόγος** (ὁ)· ὁ περὶ τὰ μεταλλεῖα ἐπιστημονικῶς ἰδίᾳ ἀσχολούμενος: «μηχανικὸς μεταλλειολόγος».

**μεταλλεῖον** (τό)· ὀρυχεῖον μετάλλου, μεταλλωρυχεῖον: «μεταλλεῖον χαλκοῦ, —ἀργύρου, —χρυσοῦ»· || μεταφ., ἐκεῖνος παρ' οὗ τις ὠφελεῖται πολλά: «αὐτὸ τὸ ἐργοστάσιον εἶναι γιὰ μένα μεταλλεῖον»· || «μεταλλεῖον γνώσεων, —ἀνεκδότων κττ.» ἐπὶ ἀνθρώπου κατέχοντος πολλὰς γνώσεις, διηγήσεις κττ.

—*[Ἐγκυκλ.]* Καλεῖται *μεταλλεῖον* τόπος, ἐξ οὗ ἐξάγονται χρήσιμα μεταλλεύματα ἢ ἄλλα ὀρυκτά, ἢ εἰς ὃν εἶναι γνωστὸν ὅτι ὑπάρχουσι τοιαῦται οὐσίαι δυνάμεναι νὰ ἐξορυχθῶσιν ἐπιτυχῶς. Ἐπίσης ὁ ὅρος μεταλλεῖον περιλαμβάνει καὶ τὰς ἐγκαταστάσεις παντὸς εἴδους κτηρίων, στοῶν, φρεάτων, μηχανημάτων καὶ ἄλλων ἔργων πρὸς ἐξόρυξιν τῶν χρησίμων ὀρυκτῶν. Αἱ ἀρχαὶ τῆς μεταλλευτικῆς τέχνης ἀνάγονται εἰς τὴν πρώτην χρησιμοποίησιν σκευῶν καὶ ἐργαλείων ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου. Αἱ ἀρχαιολογικαὶ ἔρευναι τῶν προϊστορικῶν χρόνων ἀπεκάλυψαν κανονικὰς ἐξορύξεις πυριτολίθων (silex), ἀποτελουμένας ἐκ κατακορύφων ὀπῶν βάθους 15 ἕως 20 μέτρων, ὡς μαρτυροῦν ἴχνη ἀρχαίων ὀρυχείων ἐν τῷ διαμερίσματι Μαὶν καὶ Λείγηρος τῆς Γαλλίας, ἐν Βελγίῳ, Γερμανίᾳ, Ἀγγλίᾳ καὶ Σκανδιναυΐᾳ ἐντὸς τῆς πυριτολιθοφόρου κρητίδος τοῦ ἀνωτέρου κρητιδικοῦ, ὡς καὶ εἰς ἄλλας χώρας ὀψιδιανοῦ νεφρίτου κτλ. (π. χ. ἐν τῷ Αἰγαίῳ πελάγει). Αἱ ἐξορύξεις αὗται ἀνάγονται εἰς τὸν παλαιολιθικὸν καὶ νεολιθικὸν αἰῶνα. Αἱ κατόπιν ἐποχαί, κληθεῖσαι *ἐποχὴ τοῦ χαλκοῦ* καὶ *ἐποχὴ τοῦ σιδήρου*, ἔλαβον τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐκ τῆς ἐξορύξεως καὶ χρησιμοποιήσεως τοῦ ὀρειχάλκου καὶ τῶν ἄλλων κραμάτων τοῦ χαλκοῦ καὶ τοῦ κασσιτέρου, ὡς καὶ τοῦ ἀντιμονίου καὶ κατόπιν τοῦ σιδήρου. Αἱ ἐξορύξεις αὗται συνίσταντο ἐν ἀρχῇ εἰς τὴν ἐκμετάλλευσιν ἄμμων μεταλλοφόρων. Προϊστορικαὶ ἐκμεταλλεύσεις χαλκοῦ εἶναι αἱ τῆς Κύπρου, τῆς Ἱσπανίας, τῶν Ἄλπεων, τοῦ Σινᾶ, τῆς Ἄνω Λίμνης (Lake Superior), τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἔνθα εὑρέθησαν γενηΐδες μετὰ λαβῆς ἐκ σχιστοῦ ξύλου, ὡς καὶ εἰς ἄλλους τόπους. Αἱ πρῶται ἐξορύξεις μαγειρικοῦ ἅλατος τῆς Χάλλστατт, τῆς Χάλλ καὶ Χάλλαϊν τοῦ Τυρόλου ἀνάγονται ἐπίσης εἰς τὴν ἀρχαιοτάτην προϊστορίαν. Εἰς τὰς ἱστορικὰς ἐποχὰς ἐμφανίζονται ἐκμεταλλεύσεις μεταλλείων ἐν τῇ Ἀνατολῇ, ἀναγόμεναι εἰς τὴν Γ' καὶ Β' π. Χ. χιλιετηρίδα. Οἱ Φοίνικες μετέφερον τὴν τέχνην τῆς μεταλλείας πιθανώτατα ἐκ Συρίας εἰς τὰς ἄλλας ἀκτὰς τῆς Μεσογείου. Τὰ δὲ περιώνυμα μεταλλεῖα ἀργύρου καὶ μολύβδου τοῦ Λαυρείου (ὁ συνυπάρχων εἰς αὐτὰ ψευδάργυρος δὲν εἶχε κατορθωθῆ ν' ἀποχωρισθῇ ὡς μέταλλον εἰς τὴν ἀρχαιότητα), ἅτινα διατελοῦν εἰσέτι ἐν ἐκμεταλλεύσει, ἀπετέλεσαν κατὰ μέγα μέρος τὴν πηγὴν τοῦ πλούτου καὶ τῆς ἰσχύος τῶν Ἀθηναίων. Οἱ Ἕλληνες καὶ οἱ Ρωμαῖοι διέδωσαν καὶ ἀνέπτυξαν μεγάλως τὴν τέχνην ταύτην καὶ ἐκτὸς τῆς χώρας αὐτῶν εἰς τὴν Νότιον Γερμανίαν, τὸν Ρῆνον, Γαλλίαν, Ἱσπανίαν, Βρεττανίαν κτλ. Οἱ Φράγκοι καὶ οἱ Γερμανοὶ διετήρησαν καὶ διέδωσαν αὐτὴν κατὰ τὸν μεσαίωνα, μεταξὺ τοῦ Θ' καὶ ΙΓ' αἰῶνος, εἰς τὸ Χάρτζ ἐν Σαξωνίᾳ, τὴν Βοημίαν καὶ Σιλεσίαν. Οὕτω τὰ μεταλλεῖα τοῦ Ράμμελσβεργ τοῦ Χάρτζ ἀριθμοῦσιν ἤδη 1.000 ἐτῶν διαρκῆ ζωήν. Ἀπὸ τοῦ ΙΑ' αἰῶνος ἐμφανίζεται συστηματικωτέρα ἐκμετάλλευσις τοῦ γαιάνθρακος ἐν Ἀγγλίᾳ, Βελγίῳ, Γαλλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ, ἀναπτυχθεῖσα κατὰ μὲν τὸν ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνα βαθμιαίως, κατὰ δὲ τὸν ΙΘ' τὰ μέγιστα, διὰ τῆς διαδόσεως τῆς χρήσεως τῶν ἀτμομηχανῶν καὶ τῆς ἀναπτύξεως τῆς μεταλλουργίας. Συγχρόνως ἀνεπτύσσετο μεγάλως ἡ ἐκμετάλλευσις παντοίων μεταλλείων ἕνεκα τῆς ἀναπτύξεως τῆς βιομηχανίας, τῆς ἠλεκτροτεχνίας κλπ. Ἡ δὲ ἀνακάλυψις τῆς Ἀμερικῆς καὶ τῶν ἄλλων χωρῶν ἀπὸ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἔφερεν εἰς φῶς νέους θησαυροὺς μεταλλευτικοὺς ἀνυπολογίστου οἰκονομικῆς σημασίας. Ἡ κατάκτησις τῶν θησαυρῶν τούτων ἄλλωστε πολλάκις ἐπετέλεσε τὸ κύριον ἀντικείμενον τῶν ἐξερευνήσεων καὶ τῶν κατακτητικῶν πολέμων.

Τὴν τεχνικὴν πρόοδον τῶν μεταλλείων χαρακτηρίζουσι δύο μεγάλαι βαθμῖδες: ἡ τῆς χρησιμοποιήσεως τῆς πυρίτιδος περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, καὶ ἡ χρῆσις τῆς κινητηρίου δυνάμεως τοῦ ἀτμοῦ, κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος διὰ τὴν ἄντλησιν τῶν ὑδάτων, καὶ κατόπιν κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα δι' ἄλλας ἀνάγκας τῆς ἐξορύξεως. Ἡ χρῆσις τῆς πυρίτιδος καὶ μετέπειτα τῶν ἄλλων ἐκρηκτικῶν ὑλῶν διηυκόλυνε τὴν ἐξόρυξιν καὶ ἐπολλαπλασίασε τὴν ταχύτητα τῆς προόδου τῶν μεταλλευτικῶν ἔργων. Ἡ δὲ χρῆσις τῆς μηχανικῆς ἀντλήσεως ἐπέτρεψε τὴν κάτω τῆς στάθμης τῶν ἐδαφικῶν ὑδάτων ἐξόρυξιν εἰς πολὺ μεγαλύτερα βάθη. Βεβαίως, ὅπου αἱ ἐκμεταλλεύσεις ἦσαν ἐπὶ ὑψωμάτων εἶχον κατορθώσει οἱ παλαιοὶ μεταλλευταὶ εἴς τινας περιπτώσεις νὰ ἀνορύξωσι μακροτάτας ἐνίοτε στοὰς ἐκροῆς τῶν ὑδάτων ὡς καὶ νὰ χρησιμοποιῶσι τὴν ἐνέργειαν τῶν πτώσεων τῶν ὑδάτων· καὶ ὑπάρχουσι τοιαῦται στοαί, ὡς αἱ μέχρι δεκάδος χιλιομέτρων μήκους ἐξορυχθεῖσαι τοιαῦται τοῦ Χάρτς κατὰ τὸν μεσαίωνα παρὰ τὸ Saint-Andreasberg. Ἀλλὰ πάντοτε ἡ παρουσία τῶν ὑδάτων ἀπετέλεσε τὸ μεγαλύτερον ἐμπόδιον διὰ τοὺς παλαιούς. Ἤδη ἡ ἐκμετάλλευσις τῶν μεταλλείων, χρησιμοποιοῦσα παντοῖα μέσα, ὑπερνικᾷ ὁλονὲν ὄχι μόνον αὐτὸ ἀλλὰ καὶ νέα ἐμπόδια, ἐξ ὧν τὸ μεγαλύτερον εἶναι ἡ αὔξησις τῆς θερμοκρασίας εἰς βάθος, ἥτις δὲν εἶναι ἀδύνατον νὰ ἀντιμετωπισθῇ εἰς τὸ μέλλον εἰς μεγαλυτέραν κλίμακα δι' ἀφθόνου ἀερισμοῦ καὶ ἴσως χρήσεως ψύξεως. Συγχρόνως, διὰ τῆς χρήσεως τῶν μηχανῶν καὶ τῇ βοηθείᾳ πληρεστέρας μορφώσεως τοῦ προσωπικοῦ, καθίσταται ἡ ἐργασία ἀποδοτικωτέρα, ἀνετωτέρα καὶ ἀσφαλεστέρα.

***Ἐκμετάλλευσις τῶν μεταλλείων.*** Αὕτη περιλαμβάνει πράξεις, αἵτινες δύνανται νὰ ὑπαχθοῦν εἰς 16 μεγάλας διαιρέσεις (βλ. λ. *ἐκμετάλλευσις*), ὧν κυριώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς:

*Ἐρευνητικὰ ἔργα.* Ταῦτα συνίστανται εἰς ἐκσκαφὰς ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας, εἰς γεωτρήσεις, εἰς κατασκευὴν στοῶν ὁριζοντίων ἢ κεκλιμμένων ἐντὸς τοῦ κοιτάσματος ἢ τῶν ἰχνῶν αὐτοῦ, φρεάτων ἐρευνητικῶν, ἐγκαρσίων στοῶν ἐντὸς τῶν παρακειμένων ἐδαφῶν πρὸς συνάντησιν τοῦ κοιτάσματος κτλ. (βλ. λ. *ἔρευνα*). Σπουδαῖον βοήθημα παρέχουσιν οἱ ἐπὶ τῆς φύσεως τῶν κοιτασμάτων ἐκ μακρᾶς πείρας, ἐπιβεβαιωθείσης καὶ ὑπὸ τῆς γεωλογίας, συναχθέντες κανόνες: 1) Τῆς *συνεχείας* κατὰ τὴν διεύθυνσιν τῶν κοιτασμάτων. 2) Τοῦ παραλληλισμοῦ τῶν κοιτασμάτων καὶ 3) Τῶν κανόνων τῶν διεπόντων τὰς *μεταπτώσεις* καὶ τὴν ὑπέρβασιν αὐτῶν διὰ καταλλήλου διατάξεως τῆς διευθύνσεως τῶν στοῶν (κανόνες τοῦ Schmidt καὶ τοῦ Carnall)· οἱ κανόνες οὗτοι στηρίζονται ἐπὶ ἁπλῆς ἐφαρμογῆς τῶν μεθόδων τῆς περιγραφικῆς γεωμετρίας διὰ τὴν συνέχισιν τῶν στοῶν ἐντὸς τῆς ἐπιφανείας τῆς μεταπτώσεως πρὸς συνάντησιν τῆς τομῆς τοῦ μετατοπισθέντος στρώματος μετ' αὐτῆς.

*Γεωτρήσεις.* Αὗται ἀποτελοῦσι σπουδαῖον βοήθημα τῶν ἐρευνητικῶν ἐργασιῶν τῶν μεταλλείων, ἰδίως διὰ τὴν ταχεῖαν παροχὴν στοιχείων καὶ τὴν ἔρευναν μεγάλων βαθῶν, ἀλλὰ δὲν πρέπει νὰ ὑπερβάλληται ἡ χρησιμότης τῶν παρεχομένων ὑπ' αὐτῶν πληροφοριῶν περὶ τῆς φύσεως τῶν ἐδαφῶν. Διότι εἶναι ἀσυγκρίτως πενιχρότεραι τῶν παρεχομένων ὑπὸ στοᾶς, φρέατος ἢ κεκλιμένης στοᾶς. Αἱ γεωτρήσεις εἶναι συνήθως κατακόρυφοι, ἀλλὰ δύνανται διά τινων μέσων (περιστροφικαὶ) νὰ γίνωσιν ὁριζόντιοι καὶ κεκλιμέναι ὑπὸ ὡρισμένην γωνίαν, ἐφαρμοζόμεναι δι' ἐρεύνας ἀρχομένας ἐντὸς ὑπογείων ἔργων.

Αἱ γεωτρήσεις εἶναι ἐν χρήσει ἀπὸ πολλοῦ, οἱ δὲ Σῖναι εἶχον ἀναπτύξει παλαιόθεν τὴν διὰ σχοινίου γεώτρησιν, ἥτις τελειοποιηθεῖσα κατέστη τὸ καναδικὸν σύστημα, τὸ ὁποῖον τυγχάνει μεγάλης ἐφαρμογῆς εἰς τὰς γεωτρήσεις πετρελαίου. Ἡ γεώτρησις ἀποτελεῖ καὶ τὸ κανονικὸν μέσον ἐξορύξεως ὡρισμένων κοιτασμάτων, ὡς τοῦ πετρελαίου καὶ τοῦ ἅλατος διὰ διαλύσεως, χωρὶς νὰ λησμονῶμεν τὴν εὐρυτάτην χρῆσιν εἰς τὴν ἀνεύρεσιν ὑπογείων φυσικῶν (ἀρτεσιανὰ φρέατα) ἢ μεταλλικῶν ὑδάτων (βλ. καὶ λ. *γεώτρησις*).

*Ἐξόρυξις.* Εἶναι ἡ ἀπόσπασις τῶν χρησίμων ὀρυκτῶν ἢ πετρωμάτων ἀπὸ τοῦ ἐδάφους. Ἀποτελεῖ δὲ τὸν κύριον σκοπὸν τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῶν μεταλλείων καὶ λατομείων. Τὰ χρησιμοποιούμενα ἐργαλεῖα (ἐκρηκτικαὶ ὗλαι καὶ μηχανικὰ μέσα) ἐξαρτῶνται ἐκ τῆς φύσεως καὶ τῆς σκληρότητος τῶν πετρωμάτων. Ἤδη ἡ ἐργασία τῆς ἐξορύξεως βοηθεῖται μεγάλως διὰ τῆς χρήσεως μηχανικῶν συσκευῶν, ὡς αἱ διατρητικαὶ σφῦραι καὶ μηχαναί, αἱ χαρακτικαὶ μηχαναὶ κτλ. (βλ. καὶ λ. *ἐξόρυξις*).

*Στοαὶ καὶ φρέατα, ὑποστήριξις, ξυλοδεσία.* Αἱ στοαί, κοινῶς *γαλαρίαι* (γαλλ. galerie), ἀποτελοῦσι τὸ σπουδαιότερον μέσον ἐρεύνης τῶν μεταλλοφόρων κοιτασμάτων. Εἶναι ὁπωσδήποτε ὁριζόντιοι (ἢ κεκλιμέναι) δίοδοι, δι' ὧν συγκοινωνοῦσιν αἱ διάφοροι ὑπόγειοι ἐργασίαι πρὸς ἀλλήλας καὶ μετὰ τῆς ἐπιφανείας ἀπ' εὐθείας ἢ διὰ τῶν φρεάτων. Εἰς ἑκάστην στοὰν διακρίνομεν τὴν *ὀροφὴν* (κοιν. *ταβάνι*), τὰς *πλευρὰς (παραμέντα)* καὶ τὸ *δάπεδον (πάτωμα* ἢ *στρῶσιν)*, τὴν *εἴσοδον* ἢ *στόμιον (μποῦκαν)* καὶ τὸ *μέτωπον (προχώρησιν* ἢ *στῆθος)*. Τὸ μέτωπον ἀποτελεῖ τὴν ἐπιφάνειαν, εἰς ἣν καταλήγει στοὰ ἐν προχωρήσει. Διὰ τῆς ἀνορύξεως τοῦ μετώπου προοδεύει ἡ στοὰ πρὸς τὰ πρόσω. Αἱ στοαὶ ἔχουσι σχῆμα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον τραπεζοειδὲς καὶ διαστάσεις ἐξαρτωμένας ἐκ τοῦ σκοποῦ καὶ τοῦ μεγέθους τῆς κυκλοφορίας τῶν βαγονέτων, ἅτινα διατρέχουσιν αὐτάς. Ἔχουσιν ὕψος 1.80 μ. ἕως 2.50 μ. καὶ πλάτος εἰς τὴν βάσιν 1.70 μ. ἕως 4 μ. (διὰ διπλῆν γραμμήν). Ὅταν εἶναι περιωρισμένη ἡ κυκλοφορία, τὸ ὕψος περιορίζεται, ὥστε μόλις νὰ χωρῇ τὸ βαγονέτον, ὠθούμενον ὑπὸ ἐργάτου κύπτοντος τὴν ράχιν. Αἱ ἀρχαῖαι καὶ μεσαιωνικαὶ στοαί, ὅτε ἡ ἐξόρυξις ἦτο δυσχερής, εἶχον διαστάσεις πολλάκις πολὺ μικροτέρας. Αἱ

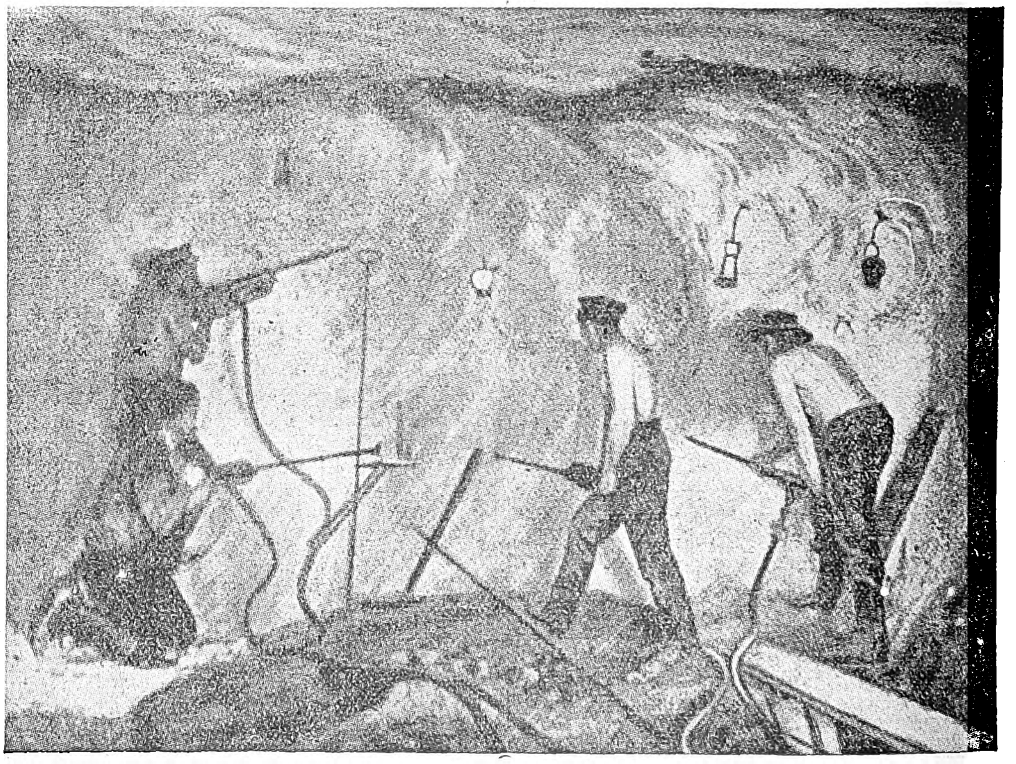

*Ἐξόρυξις εἰς ἁλατωρυχεῖον διὰ διατρητικῶν σφυρῶν.*

Digitized by Google

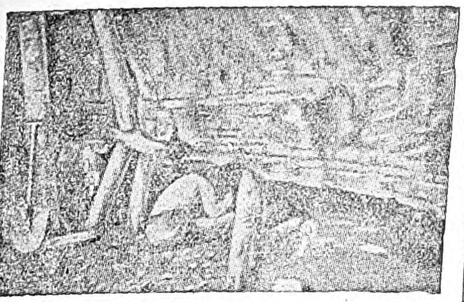

1. Ἐργάτης ἐκτελῶν κούφωμα καὶ ἐξόρυξιν διὰ σφηνῶν.

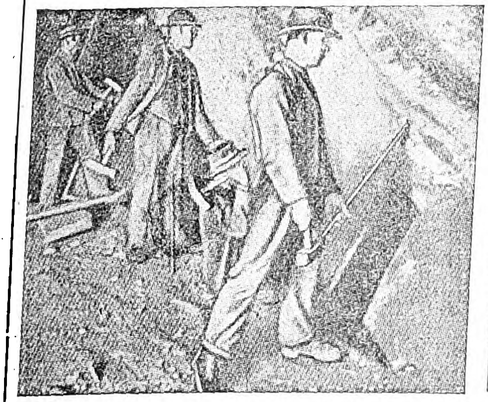

2. Ἐργάται ἐκτελοῦντες ἀνόρυξιν ὑπονόμων διὰ τῆς βαρείας σφύρας καὶ λιθοτόμου (μακαπίου).

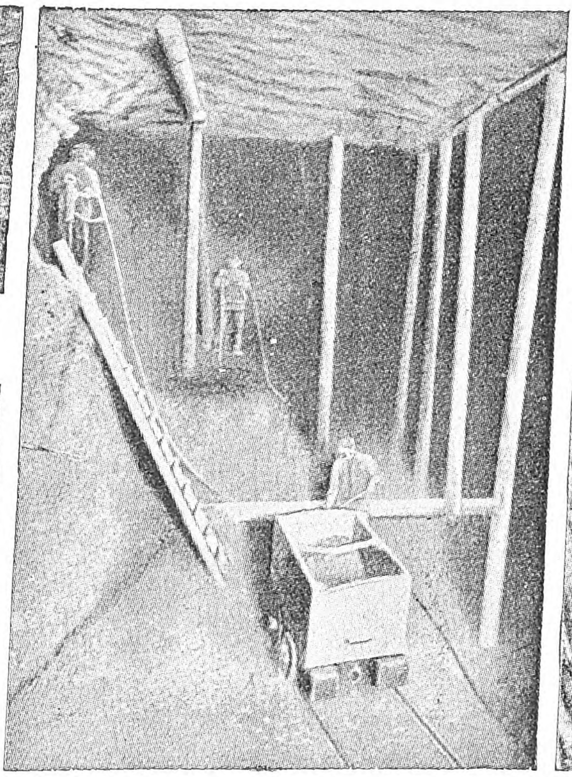

3. Κατασκευὴ ὑπονόμων διὰ αἰροσφυρῶν εἰς μεταλλωρυχεῖον.

4. Ὀρύκτης κατακεκλιμένος ἐντὸς στενοῦ στρώματος, ἐκτελῶν διάτρησιν ἢ κούφωμα.

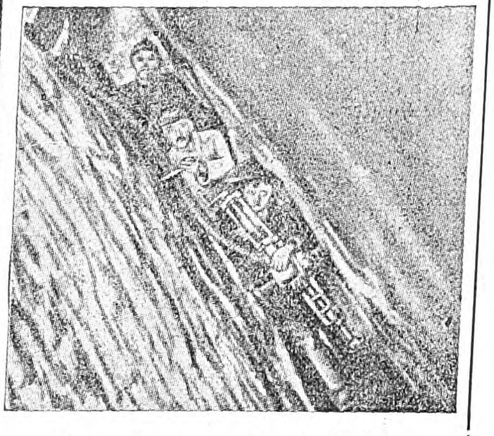

5. Ὀρύκται ἐκτελοῦντες ἐργασίας διὰ διατρητικῆς μηχανῆς εἰς κεκλιμένον στρῶμα στενόν.

παρειαὶ τῶν στοῶν ἐπενδύονται, ὅταν εἶναι ἀνάγκη νὰ ὑποστηριχθῶσι διὰ ξυλοδεσιῶν κτλ. Μικρὰ ἐγκοπὴ εἰς τὸ πλευρὸν χρησιμεύει ὡς αὖλαξ διὰ τὴν ἐπαγωγὴν τῶν ὑδάτων πρὸς τὰ ἔξω. Αἱ στοαὶ δὲν ἀνορύσσονται ἐντελῶς ὁριζοντίως, ἀλλὰ πάντοτε μὲ ἐλαφρὰν ἀνωφέρειαν πρὸς τὰ ἔσω, τὸ μὲν διὰ τὴν διευκόλυνσιν τῆς ῥοῆς τῶν ὑδάτων, καὶ διὰ τοῦτο ἀρκεῖ ἐλαχίστη κλίσις, τὸ δὲ διὰ τὴν διευκόλυνσιν τῆς κυκλοφορίας τῶν βαγονέτων, ἅτινα κατὰ κανόνα εἶναι κενὰ ὅταν εἰσέρχωνται καὶ πλήρη ὅταν ἐξέρχωνται. Διὰ τοῦτο ἡ κλίσις ῥυθμίζεται συνήθως, ἵνα ἡ ἀπαιτουμένη δύναμις

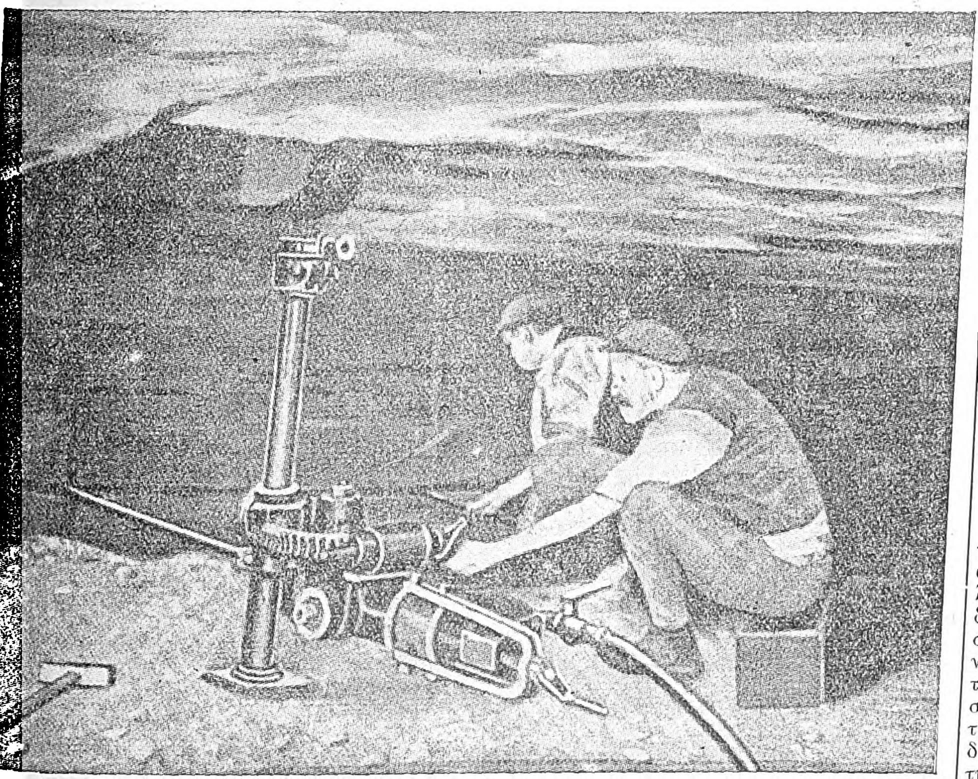

Κουφωτικὴ μηχανὴ ἐργαζομένη εἰς μέσον στρῶμα λιθάνθρακος.

εἶναι ἴση εἰς τὰς δύο περιπτώσεις (*κλίσις ἰσορροπημένης κυλίσεως*, ἴση πρὸς 7 τοῖς χιλίοις).

Ἀναλόγως τῆς φύσεως αὐτῶν αἱ στοαὶ καλοῦνται: 1) *Ἐγκάρσιαι*, ὅταν διαπερῶσαι τὰ στρώματα ἐγκαρσίως χρησιμεύωσιν ἵνα, ἀφοῦ ὑπερβῶσι τὰ ἄγονα πετρώματα, σχηματίσωσι δίοδον πρὸς τὰ χρήσιμα κοιτάσματα, ἢ μεταξὺ αὐτῶν, ἢ ἐντὸς μιᾶς κοίτης. Ἡ διεύθυνσις αὐτῶν εἶναι κάθετος πρὸς τὴν διεύθυνσιν (ὁριζοντίαν γραμμὴν) τῶν διαφόρων συναντωμένων στρωμάτων. 2) *Κατὰ διεύθυνσιν*, ὅταν ἀντιθέτως ἀκολουθῶσι τὴν διεύθυνσιν ἢ τῶν στρωμάτων ἢ τῶν κοιτασμάτων ἢ καὶ μεταπτώσεων (ἐννοεῖται τηρουμένης τῆς ἐλαφρᾶς ὡς ἄνω κλίσεως), βαίνουσαι ἐντὸς αὐτῶν· εἶναι κατ᾽ ἐξοχὴν αἱ στοαὶ ἀναγνωρίσεως, ἐξορύξεως καὶ ἐκμεταλλεύσεως τῶν στρωμάτων. 3) *Κεκλιμέναι στοαί, ἀνωφερεῖς* (κοιν. *καμινέτα*) ἢ *κατωφερεῖς* (*φιρέδες*), συνήθως ἀνορυσσόμεναι ἐντὸς τῶν στρωμάτων, τῶν κοιτασμάτων ἢ τῶν μεταπτώσεων πρὸς ἐπίτευξιν ἐπικοινωνίας μεταξὺ στοῶν εὑρισκομένων εἰς διάφορον ὕψος. Ὅταν ἡ κλίσις εἶναι ἰσχυρά, ἀποτελοῦσι πλέον κεκλιμένα φρέατα.

Τὰ φρέατα ἢ ψυχαγώγια ἀποτελοῦσι μέσα συγκοινωνίας κατακόρυφα ἢ κεκλιμένα, δι᾽ ὧν συγκοινωνοῦσι πρὸς τὰ ἔξω καὶ πρὸς ἄλληλα τὰ εἰς διάφορα βάθη μέρη τῶν μεταλείων, στοαὶ καὶ χῶροι ἐξορύξεως, ὁσάκις δὲν εἶναι δυνατὸν ἢ δὲν ἀρκεῖ λόγῳ τῆς διατάξεως τοῦ ἐδάφους καὶ τοῦ κοιτάσματος νὰ ἐπικοινωνήσωμεν μετ᾽ αὐτοῦ διὰ στοᾶς ὁριζοντίου ἢ κεκλιμένης, ἀνορύσσονται φρέατα. Ἡ ἀνόρυξις φρέατος, ζήτημα σχετικῶς ἁπλοῦν διὰ βάθη κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλα καὶ πετρώματα ἀρκετὰ στερεά, ὀλίγον ὑδροφόρα, καθίσταται πολλάκις πρόβλημα δυσχερέστατον καὶ δαπανηρότατον, ὄχι τόσον ὅταν αὐξάνῃ τὸ βάθος καὶ ὅταν τὰ ἐδάφη εἶναι σαθρά, ἀλλ᾽ ἰδίως ὅταν τὰ συναντώμενα ὕδατα εἶναι πολλά. Αἱ δυσκολίαι, ἰδίως αἱ ἐκ τῶν ὑδάτων, αἵτινες ἦσαν ἀνυπέρβλητοι εἴς τινας περιπτώσεις μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΘ´ αἰῶνος, ὑπερνικῶνται διὰ τῶν νεωτέρων μεθόδων, μόνον δέ, ὡς ἐλέχθη, ἡ αὔξησις τῆς θερμοκρασίας περιορίζει τὸ βάθος τῶν ἐκμεταλλεύσεων. Ἤδη ἐκμεταλλεύσεις εἰς βάθος πλέον τῶν χιλίων μέτρων εἶναι ἀρκετὰ συνήθεις, ὑπάρχουσι δὲ καὶ ἐκμεταλλεύσεις μέχρι βάθους μεγαλυτέρου, ὡς τοῦ Πρζιβρὰμ τῆς Βοημίας (1.500), αἱ τοῦ χαλκοῦ τῆς Ἄνω Λίμνης τῆς Β. Ἀμερικῆς (1.800 μ.), τοῦ Κομστόκ, τῶν χρυσωρυχείων τοῦ Τράνσβααλ. Οἱ ἀρχαῖοι κατήρχοντο μόνον εἰς 100 ἕως 200 μ. βάθος (εἰς τὸ Λαύρειον μέχρι 200 μ.), ἀναχαιτιζόμενοι ὑπὸ τῆς ὑδροστατικῆς στάθμης (στάθμης τῶν ὑδάτων) τῶν στρωμάτων. Τὸ σχῆμα τῆς διατομῆς τῶν φρεάτων εἶναι τετράγωνον, ὀρθογώνιον ἢ στρογγύλον. Τὰ δύο πρῶτα σχήματα, χρησιμοποιούμενα μᾶλλον διὰ μικροτέρας διαρκείας ἐξορύξεις, παρουσιάζουσιν εὐχέρειαν εἰς τὴν ὑποστήριξιν διὰ ξυλοδεσιῶν· χρησιμοποιοῦνται δὲ ἀποκλειστικῶς διὰ κεκλιμένα φρέατα. Τὰ στρογγύλα εἶναι καταλληλότερα διὰ μεγαλυτέραν διατομήν, διὰ τὴν ἀντίστασιν κατὰ τῆς ὠθήσεως τῶν ἐδαφῶν καὶ προκειμένου νὰ γίνῃ μονιμωτέρα ἐπένδυσις διὰ τοιχοποιίας ἢ μετάλλου. Αἱ διαστάσεις τῆς διατομῆς εἶναι διὰ μὲν τὰ τετράγωνα 2 ἕως 4 μ. πλευρᾶς, διὰ τὰ ὀρθογώνια 2 ἕως 3,5 μ. διὰ τὴν μίαν πλευρὰν καὶ 3 ἕως 5 ἢ 6 μ. διὰ τὴν ἑτέραν, διὰ δὲ τὰ στρογγύλα 2,50 ἕως 5 ἢ 6 μ. διαμέτρου ἐσωτερικῆς. Αἱ διαστάσεις αὗται κανονίζονται ἐκ τῶν διαστάσεων τῶν συσκευῶν ἐξαγωγῆς, κλωβῶν ἢ κάδων, τῶν ὁδηγῶν, τοῦ διαμερίσματος τῶν κλιμάκων, ὅταν ὑπάρχωσι, τοῦ διαμερίσματος τῶν σωλήνων ἀντλιῶν καὶ ἀγωγῶν κινητηρίου ἐνεργείας κλπ. Ἡ ἀνόρυξις τῶν φρεάτων γίνεται διὰ πολλῶν συστημάτων, ἐκλεγομένων καὶ μεταβαλλομένων ἀναλόγως τῶν συνθηκῶν, ἤτοι σκληρότητος ἢ σαθρότητος τῶν πετρωμάτων, καὶ τῆς ποσότητος τῶν ὑδάτων.

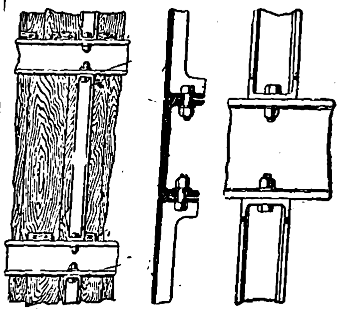

Ἐπένδυσις φρέατος.

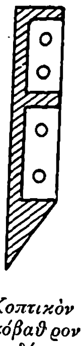

Κοπτικὸν ὑπόβαθρον ἐπενδύσεως φρέατος.

Digitized by Google

- Ἀνόρυξις εἰς ἔδαφος μὴ ὑδροφόρον.
  - στερεόν : συνήθης μέθοδος ἐν ξηρῷ.
  - ἀσταθές : χρησιμοποίησις πασσαλοσανίδων.
- Ἀνόρυξις εἰς ἔδαφος ὑδροφόρον δι' ἐξαντλήσεως τῶν ὑδάτων.
  - στερεόν : συνήθης μέθοδος μετ' ἀντλήσεως τῶν ὑδάτων.
  - ἀσταθές :
    - χρησιμοποίησις πασσαλοσανίδων
    - χρησιμοποίησις κοπτικοῦ ὑποβάθρου.
- Ἀνόρυξις εἰς ἔδαφος λίαν ὑδροφόρον ἄνευ ἐξαντλήσεως τῶν ὑδάτων.
  - ἐν ξηρῷ ἐμμέσως
    - μέθοδος καταψύξεως
    - μέθοδος σιμεντώσεως
    - μέθοδος ἀφυδρεύσεως
  - Ἀμέσως ἄνευ ἐξαντλήσεως τῶν ὑδάτων
    - στερεὰ ἐδάφη
      - μέθοδος Triger διὰ πεπιεσμένου ἀέρος
      - μέθοδος Kind-Chaudron
    - ἐδάφη ἀσταθῆ
      - μέθοδος Honigmann κλπ. ἄνευ ἐπενδύσεως
      - χρῆσις κοπτικοῦ ὑποβάθρου
        - μέθοδος διὰ βυθοκορήσεως
        - μέθοδος Pattberg

Ἡ ἀνόρυξις τῶν φρεάτων γίνεται διὰ τῶν περὶ *ἐξορύξεως* (βλ. λ.) ἐν γένει ἰσχυουσῶν μεθόδων. Τὰ ὑλικὰ ἐξάγονται διὰ κάδου, αἰρομένου διὰ καλῳδίου τυλισσομένου ἐπὶ μαγγάνου, χειροκινήτου διὰ μικρὰ βάθη καὶ μικρὰ φρέατα, ἄλλοτε ἱπποκινήτου καὶ ἤδη μηχανοκινήτου διὰ μεγαλύτερα βάθη. Οἱ κάδοι πολλάκις εἶναι δύο, ὧν ὁ εἷς ἀνέρχεται, ἐνῷ ὁ ἕτερος κατέρχεται. Τὰ παρουσιαζόμενα ὕδατα συλλέγονται εἰς λάκκον ἐκσκαπτόμενον ἐγκαίρως ἑκάστοτε ἐντὸς τοῦ πυθμένος καὶ ἐξάγονται ὅταν εἶναι ὀλίγα διὰ τῶν κάδων (μέχρι 50 λίτρων κατὰ 1′), μέχρι 200 λίτρων κατὰ 1′ δι' εἰδικῶν κάδων, πέραν τούτου μέχρι καὶ 5000 λίτρων κατὰ 1′ δι' ἀντλιῶν, ἢ κάδων καὶ ἀντλιῶν. Αἱ ἀντλίαι ἀνορύξεως φρεάτων εἶναι κρεμασταί, ἵνα δύνανται νὰ ἀπομακρύνωνται ὑψούμεναι κατὰ τὴν ἔναυσιν τῶν ὑπονόμων, καὶ ἵνα εὐκόλως μετατοπίζωνται κατὰ τὴν πρόοδον τῶν ἐργασιῶν. Ἀναλόγως τῶν πετρωμάτων γίνεται προσωρινὴ ἐπένδυσις τῶν παρειῶν διὰ ξυλοδεσίας ἢ διὰ σιδηρῶν δοκῶν. Ἡ ὁριστικὴ ἐπένδυσις γίνεται ἐκ ξυλοδεσίας ἢ ὀπτοπλινθοδομῆς ἢ ὡπλισμένου σκυροδέματος. Αἱ τοιαῦται ἐπενδύσεις ἐκτελοῦνται κατὰ τμήματα διαδοχικά, εἰς τὴν βάσιν δὲ ἑκάστου τμήματος γίνεται ἐξοχὴ πρὸς τὴν περιφέρειαν, ἥτις στερεώνει αὐτὸ ἐπὶ τοῦ ἐδάφους. Εἰς τὰς ζώνας, ὅπου τὰ στρώματα εἶναι ὑδροφόρα, γίνεται στεγανὴ ἐπένδυσις ἐκ θολιτῶν ξύλου δρυὸς ἢ ἐκ χυτοσιδήρου. Ἡ ἐπένδυσις σχηματίζεται ἐκ συνεχοῦς σειρᾶς ὁριζοντίων δακτυλίων, ἐπικειμένων στεγανῶς καὶ ἀποτελούντων τμήματα. Ἡ βάσις αὐτῶν ἐξέχει περιφερικῶς καὶ σφηνοῦται καταλλήλως ἐπὶ τοῦ ἐδάφους διὰ ξυλίνων σφηνῶν καὶ χλόης. Ὄπισθεν τῆς ἐπενδύσεως τίθεται σκυροκονίαμα.

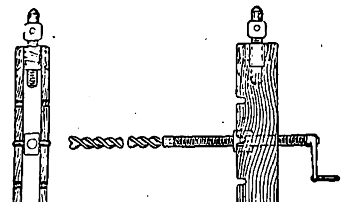

*Διατρητικὴ χειροκίνητος μηχανή.*

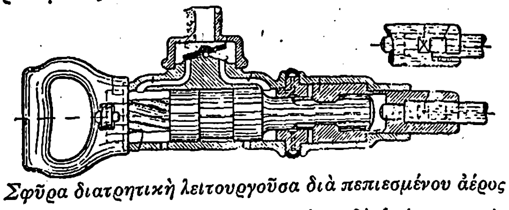

*Σφῦρα διατρητικὴ λειτουργοῦσα διὰ πεπιεσμένου ἀέρος*

Εἰς ἀσταθῆ ἐδάφη γίνεται χρῆσις τοῦ *κοπτικοῦ ὑποβάθρου* ἢ τῆς *κοπτούσης δέσμης*, ἀποτελουμένης ἐκ δακτυλιοειδοῦς χυτοσιδηρᾶς ἢ χαλυβδίνης βάσεως φερούσης περιφερικῶς πέδιλον κατακόρυφον κοπτερόν. Ἐπ' αὐτῆς κτίζεται ἡ ὁριστικὴ ἐπένδυσις ἐκ πλινθοδομῆς ἢ ἡ στεγανὴ ἐπένδυσις ἐν εἴδει κοίλου πύργου καὶ ἀφαιρουμένων τῶν ἐντὸς σαθρῶν ἐδαφῶν αὕτη κατέρχεται κατακορύφως διὰ τοῦ βάρους αὐτῆς μετὰ τῆς πλινθοδομῆς ἢ τῆς στεγανῆς ἐπενδύσεως, ἥτις ἀποτελεῖ τὴν ὁριστικὴν ἐπένδυσιν.

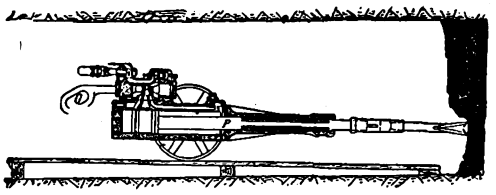

*Ἐκσκαπτικὴ μηχανὴ Zugersoll.*

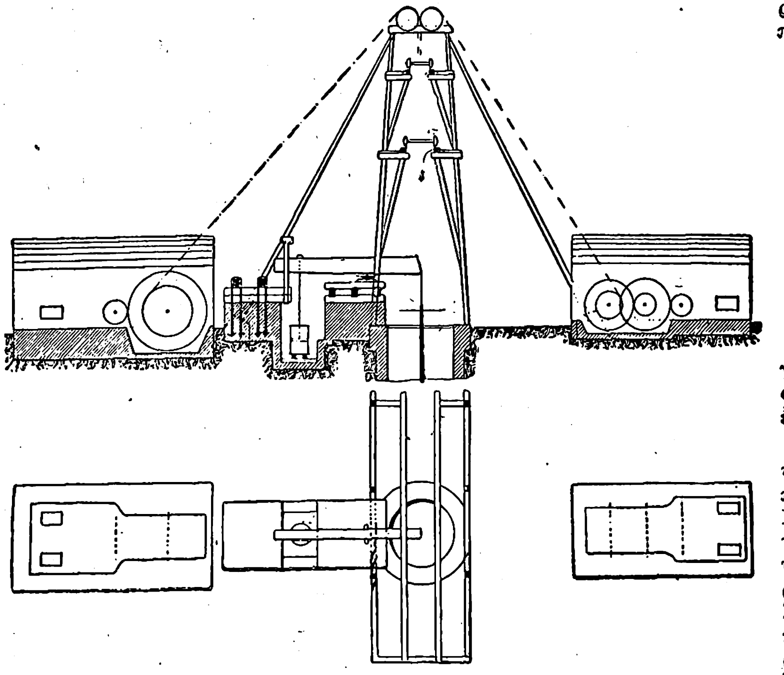

*Σύστημα ἀνορύξεως φρέατος Kind-Chaudron διὰ τρυπάνου.*

Κατὰ τὴν μέθοδον *καταψύξεως*, εἰσαχθεῖσαν περὶ τὸ 1883 ὑπὸ τοῦ Poesch ἐν Σαξωνίᾳ, μεταβάλλεται ὁ χῶρος ἔνθα πρόκειται νὰ ἀνορυχθῇ τὸ φρέαρ εἰς στήλην πεπηγότος ἐδάφους, καὶ ἐντὸς αὐτοῦ ἀνορύσσεται τὸ φρέαρ ἐν ξηρῷ, κατασκευάζεται ἡ στεγανὴ ἐπένδυσις καὶ διακόπτεται ἡ κατάψυξις. Πρὸς σχηματισμὸν τῆς κατεψυγμένης ζώνης ἀνορύσσεται περιφερικῶς εἰς ἀπόστασιν 1 μέτρου ἀπὸ τῆς περιφερείας τοῦ πρὸς ἀνόρυξιν φρέατος σειρὰ γεωτρήσεων ἀπεχουσῶν ἀπ' ἀλλήλων ἐπίσης 1 μέτρον. Αἱ γεωτρήσεις γίνονται ἐπιμελῶς κατακόρυφοι καὶ ἐντὸς αὐτῶν εἰσάγονται σωλῆνες, ὧν ἕκαστος περιέχει ἐσωτερικῶς μικρότερον σωλῆνα· ἐντὸς αὐτῶν κυκλοφορεῖ συνεχῶς ἅλμη ἐκ διαλύσεως ὑδαροῦς χλωριούχου ἀσβεστίου ἢ μαγνησίου, ἥτις προηγουμένως ψύχεται διερχομένη πέριξ τοῦ ὀφιοειδοῦς ψυκτῆρος συνήθους ψυκτικῆς μηχανῆς δι' ἀμμωνίας. Οὕτως ἐπέρχεται πέριξ τῶν σωληνῶν βαθμιαία κατάψυξις τοῦ ἐδάφους μετὰ πάροδον ἑβδομάδων τινῶν, ἐνίοτε καὶ πολλῶν μηνῶν· ὅταν τὰ ὕδατα εὑρίσκωνται ἐν κινήσει ἐντὸς τοῦ ἐδάφους, ὁλόκληρον τὸ ἔδαφος περὶ τὴν ζώνην τῶν γεωτρήσεων εὑρίσκεται πεπηγμένον. Διὰ τῆς μεθόδου ταύτης, οὐχὶ λίαν δαπανηρᾶς, ἀνωρύχθησαν τὰ τμήματα πλείστων φρεάτων εἰς τὴν ζώνην λίαν ὑδροφόρων καὶ σαθρῶν στρωμάτων τῶν ὑπερκειμένων ἐδαφῶν ἀνθρακωρυχείων τῆς Βεστφαλίας, τοῦ Βελγίου, τῆς βορείου Γαλλίας (Ἀρτουά), τῶν σιδηρωρυχείων τῆς Λωρραίνης, σταθμοὶ ὑπογείων σιδηροδρόμων ἐν Παρισίοις κτλ.

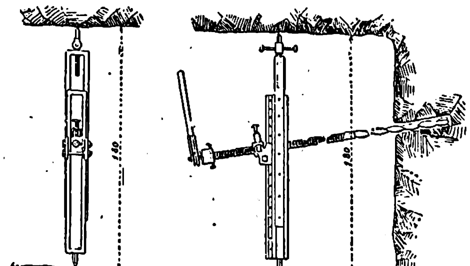

*Χειροκίνητος διατρητικὴ μηχανὴ περιστροφικὴ Lisbet.*

Ἡ μέθοδος τῆς *ἐγχύσεως σιμέντου*, ἐπινοηθεῖσα περὶ τὸ 1905 ὑπὸ τοῦ Porter ἐν Ἀρτουὰ τῆς Γαλλίας, συνίσταται ἐπίσης εἰς τὴν ἀνόρυξιν γεωτρήσεων ἀποκλινουσῶν, ἀλλ' εἰς πολὺ μικρότερον ἀριθμόν, περὶ τὴν ζώνην τοῦ φρέατος, διὰ τῶν ὁποίων ἐγχύνεται ἐντὸς τῶν ρωγμῶν τοῦ ἐδάφους ὑπὸ ἰσχυρὰν πίεσιν μεῖγμα ὕδατος καὶ σιμέντου (γάλα σιμέντου), δι' οὗ κατορθοῦται κατόπιν πήξεως τοῦ σιμέντου ἡ ἔμφραξις τῶν ρωγμῶν τοῦ ἐδάφους καὶ ἡ πλήρης ἢ σχεδὸν πλήρης ἀναχαίτισις τῆς διαρροῆς τῶν ὑδάτων ἐντὸς τοῦ χώρου πρὸς ἀνόρυξιν τοῦ φρέατος. Ἡ ἔγχυσις σιμέντου γίνεται μέχρις ἀρνήσεως, ἥτις καθιστᾷ φανερὰν τὴν ἔμφραξιν τῶν ρωγμῶν. Ἐφαρμόζεται εἰς ἐδάφη ὑδροφόρα στερεά, παρουσιάζοντα ρωγμάς, ἢ σαθρά, ὄχι ὅμως ἀργιλλώδη ἢ ἀμμώδη. Ἡ μέθοδος ἔχει πολλὰς ἐφαρμογάς, καθιστᾷ δὲ περιττὴν τὴν κατασκευὴν σιδηρᾶς στεγανῆς ἐπενδύσεως, ἥτις εἶναι δαπανηρά. Ἄλλαι μέθοδοι εἶναι ἡ τοῦ Triger διὰ πεπιεσμένου ἀέρος, ἐπινοηθεῖσα περὶ τὸ 1839, ἡ τοῦ Kind (1847), τελειοποιηθεῖσα ὑπὸ τοῦ Chaudron περὶ τὸ 1873 κλ.

Ἡ ἄνω περιγραφεῖσα χρῆσις κοπτικοῦ ὑποβάθρου δύναται νὰ γίνῃ καὶ ἐντὸς τοῦ ὕδατος, ἀρκεῖ νὰ κατορθωθῇ ἡ ἀπόσπασις τῶν πετρωμάτων ἐκ τοῦ πυθμένος. Πρὸς τοῦτο δύναται νὰ γίνῃ βυθοκόρησις διὰ καταλλήλου βυθοκορικῆς συσκευῆς, βοηθουμένης εἰς σκληρότερα ἐδάφη διὰ περιστροφικοῦ τρυπάνου.

Ἐν συμπεράσματι, ὁ μηχανικὸς τῶν μεταλλείων διαθέτει ἤδη ἱκανὰ μέσα, ἵνα ἀντιμετωπίσῃ εἰς πάσας τὰς περιπτώσεις καὶ πάντα τὰ βάθη οἱασδήποτε ἐδαφικὰς συνθήκας. Ἡ ταχύτης τῆς ἀνορύξεως εἶναι πολλάκις ἀρκετὰ μεγάλη, 2 ἕως 3 μ. τῆς ἡμέρας, ἐνῷ εἰς τινα συστήματα (π. χ. Kind - Chaudron) 0,30 μ. μόνον.

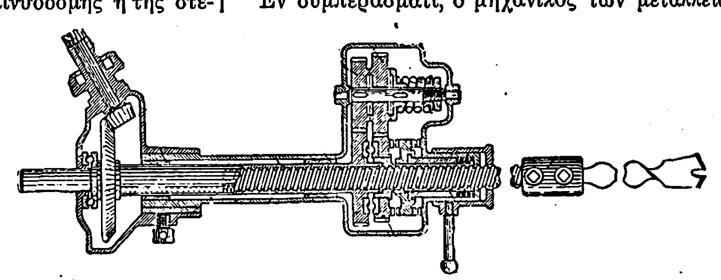

*Περιστροφικὴ διατρητικὴ μηχανὴ Siemens Schuckert.*

*Ὑποστήριξις τῶν στοῶν καὶ ἐργοταξίων*. Πολλάκις, ὅταν τὸ πέτρωμα εἶναι σκληρὸν καὶ ὁμοιογενές, δὲν ὑπάρχει ἀνάγκη ὑποστηρίξεως. Συνήθως ὅμως τὰ ἀνορυσσόμενα κενὰ δὲν δύνανται νὰ παραμένωσιν ἀνοικτὰ ἄνευ καταλλήλου ὑποστηρίξεως. Τὸ ἄνοιγμα κενοῦ ἐντὸς ὑπογείων στρωμάτων προκαλεῖ διατάραξιν τῆς ἰσορροπίας τῶν εἰς βάθος ἐξασκουμένων πιέσεων, ἡ δὲ πίεσις τῶν περὶ τὸ κενὸν ἐδαφῶν τείνει νὰ συμπληρώσῃ αὐτό. Ἐννοεῖται ὅτι ἡ πίεσις αὕτη, ἥτις ἐξασκεῖται συνήθως βαθμιαίως, δὲν ἰσοῦται πρὸς τὴν πίεσιν ὁλοκλήρου τῆς στήλης τῶν ὑπερκειμένων ἐδαφῶν, διὰ τοῦτο ἡ πίεσις τῶν ἐδαφῶν ἐξαρτᾶται μᾶλλον ἐκ τῆς φύσεως αὐτῶν ἢ ἐκ τοῦ βάθους. Κατὰ κανόνα δὲ ἡ δημιουργία κενοῦ δημιουργεῖ μίαν ἀποσυμπίεσιν τῶν πέριξ ἐδαφῶν, ἥτις μεταδίδεται κατ' ἀρχὰς εἰς κῶνον μὲ ἄξονα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον κατακόρυφον ἢ κάθετον ἐπὶ τῆς διευθύνσεως τῶν στρωμάτων, περατούμενον εἴς τινα ἀπόστασιν διὰ κλειστῆς ἐπιφανείας σχηματιζούσης θόλον (*«καμπάναν»*) εἰς τὰ ἐργοτάξια ἢ τὰς στοὰς ἐν περιπτώσει ἐγκατακρημνίσεως. Ὥστε ἡ ὑποστήριξις δὲν ἔχει ἄλλον σκοπὸν ἢ νὰ συγκρατήσῃ ἐπί τινα

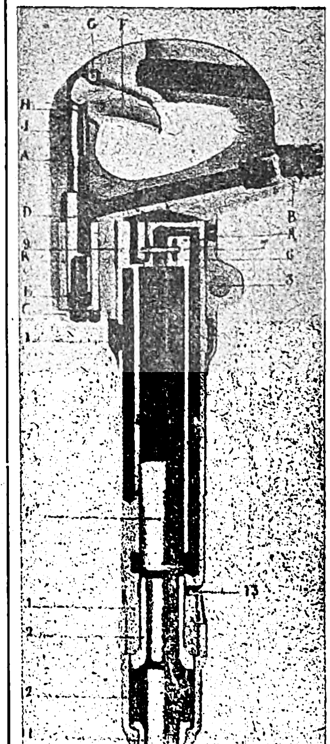

*Σφῦρα ἐξορύξεως ἡμισκλήρων οὐσιῶν, φέρουσα ὀξὺ ἐργαλεῖον ἀντὶ τοῦ πεπλατυσμένου τῶν διατρητικῶν μηχανῶν.*

Digitized by Google

χρόνον, βραχὺν ἢ μακρόν, τὴν ἐξασκουμένην ταύτην πίεσιν· ὅταν δὲ ἡ πίεσις εἶναι μεγάλη καὶ λυγίση ἢ θραύση τὰ μέσα ὑποστηρίξεως, ἀφαιροῦνται τὰ συμπληρώσαντα ἐν μέρει τὸ κενὸν πετρώματα καὶ γίνεται ἀντικατάστασις τῶν ὑποστηριγμάτων, ὁπότε ἐπέρχεται πολλάκις ὁριστικὴ ἰσορροπία. Ὡς ὑποστηρίγματα χρησιμοποιοῦνται κυρίως ξύλα, συνδεόμενα διὰ χονδροειδῶν ἐντορμιῶν καὶ τοποθετούμενα καθέτως καὶ παραλλήλως πρὸς τὰς παρειάς. Τὰ ξύλα ταῦτα εἶναι στρογγύλα, ὡς προέρχονται ἐκ τῶν δασῶν, ἰδίως ἐκ πεύκης, διαμέτρου 13 ἕως 18 καὶ πολλάκις 20 καὶ 25 ἑκατοστομέτρων κατὰ τὸ παχύτερον ἄκρον, μήκους ἴσου

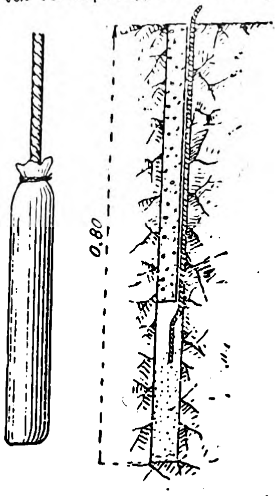


*Φυσίγγιον καὶ ὑπόνομος πυρίτιδος ὑπονομοποιοῦ.*

πρὸς τὰς διαστάσεις τῶν κενῶν τοῦ ὑπὸ ξυλοδεσίαν χώρου καλοῦνται δὲ *στρογγύλια*. Τὰ συμπλέγματα αὐτῶν ἀποτελοῦσι τὰ πλαίσια τῆς ξυλοδεσίας. Ὄπισθεν αὐτῶν τίθενται μικρότεροι κλάδοι ἢ τεμάχια ξύλου καλούμενα κοινῶς *«γαρνιτοῦραι»*, ἤτοι *ἐπένδυσις*. Ἀντὶ ξύλων κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη χρησιμοποιοῦνται καὶ σιδηροῖ στύλοι τηλεσκοπικοί, μήκους μεταβλητοῦ διὰ τὰ ἐργοτάξια, ὅταν εἶναι δυνατὴ ἡ ἀφαίρεσις αὐτῶν μετὰ τὴν ἐξόρυξιν. Ἐπίσης εἰς στοὰς μεγάλης διαρκείας καὶ ἰσχυρῶν πιέσεων γίνεται χρῆσις πλαισίων ἐξ ἰσχυρῶν σιδηρῶν δοκῶν (συνήθως παλαιῶν ῥάβδων σιδηροδρόμων, αἵτινες καὶ αὗται πολλάκις παραμορφοῦνται ἐκ τῆς πιέσεως τῶν ἐδαφῶν). Ἐπίσης γίνεται χρῆσις καὶ πλαισίων ἐκ σιδηροπαγοῦς σκυροκονιάματος. Μονιμωτέραν ἐπένδυσιν ἀποτελεῖ ἡ ξηρολιθιά, ἡ τοιχοποιία ἐξ ὀπτοπλίνθων ἢ λιθοδομῆς ὡς τῶν σηράγγων, ἐκ σκυροκονιάματος μετὰ ἢ ἄνευ ὁπλισμῶν, ὡς ἐφαρμόζεται εἰς στοὰς μεγάλης διαρκείας κτλ. Τέλος ἰσχυρότατον μέσον ὑποστηρίξεως, χρήσιμον εἴς τινας περιπτώσεις, ἀποτελοῦν ὀρθογώνιοι στῦλοι ἐξ ὁριζοντίων διαστρώσεων ξύλων διαδοχικῶς καὶ σταυροειδῶς διατεθειμένων εἰς σωροὺς (pile de bois). Εἰς τὰ ἐργοτάξια ἡ ὑποστήριξις εἶναι ἁπλουστέρα, ἀποτελουμένη ἐξ *ὀρθοστατῶν* ἢ *ψαλιδίων* στηριζόντων διὰ κοίλης ἐγκοπῆς *ὑπέρτονα (κοιν. καπέλλα)* κατὰ μῆκος

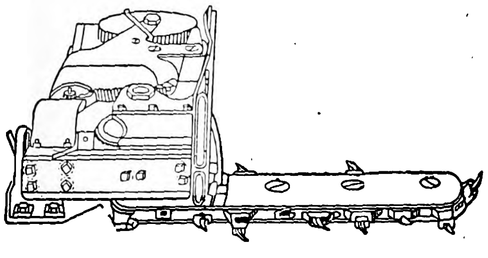

*Χαρακτικὴ μηχανὴ πρὸς ἐκτέλεσιν κουφώματος διὰ τὴν ἐξόρυξιν ἡμισκλήρων οὐσιῶν.*

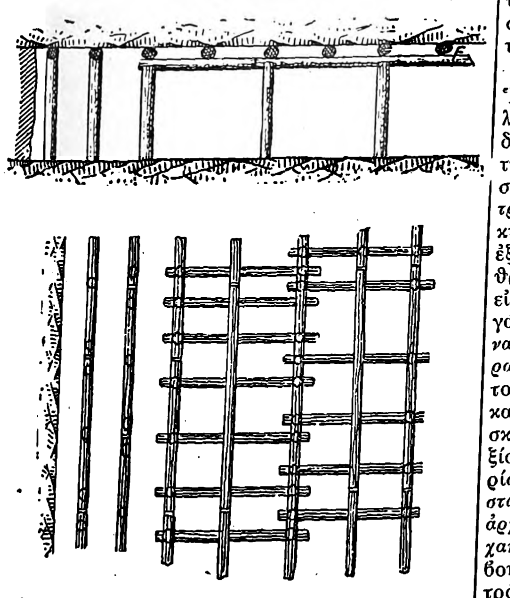

*Ὑποστήριξις ἐργοταξίου δι' ὀρθοστατῶν καὶ ὑπερτόνων, ὡς καὶ πλαισίων.*

τῆς παρειᾶς. Ὅταν αἱ πιέσεις ἀπαιτοῦσι τοῦτο, τίθενται καὶ καθέτως ἄλλα ξύλα μεταξὺ τῶν ὑπερτόνων ἢ καὶ τῶν ὀρθοστατῶν. Εἰς τὰς στοάς, ὅταν ἡ πίεσις τὸ ἀπαιτῇ, τίθενται πλαίσια *(κάσαι)* κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον πλήρη καὶ ἐνισχυμένα. Οἱ πλευρικοὶ κεκλιμένοι συνήθως ὀρθοστάται καλοῦνται *κνῆμαι (γάμπαι)*. Ἡ κλίσις αὐτῶν καὶ ἡ ἁρμολόγησις δι' ἡμιτορμίας ἢ κοίλης ἐγκοπῆς πρὸς τὸ ὑπέρτονον ἀναλόγως τῆς διευθύνσεως τῶν πιέσεων, βοηθεῖ εἰς καλυτέραν κατανομὴν αὐτῶν. Ἡ τοποθέτησις τῆς ὑποστηρίξεως γίνεται εἰς τὰ ἐργοτάξια καὶ στοὰς συνήθως ὑπὸ τῶν ὀρυκτῶν ἢ καὶ δι' ἰδίων ἐργατῶν καλουμένων *ξυλοδετῶν (μποσκαδόρων)*.

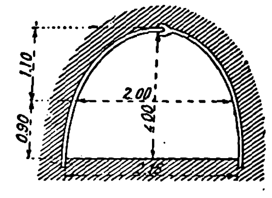


*Μεταλλικὸν πλαίσιον.*

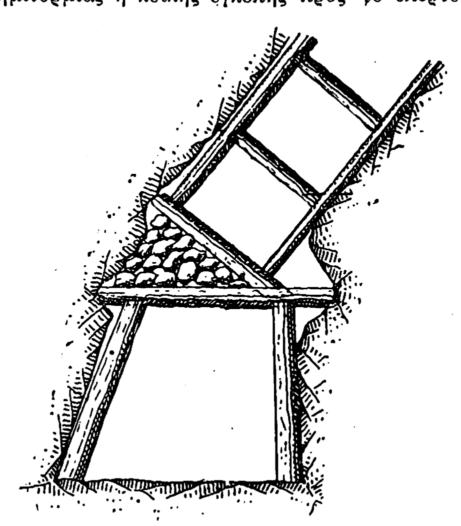

*Σημεῖον συνδέσεως ἐργοταξίου ἰσχυρᾶς κλίσεως καὶ στοᾶς.*

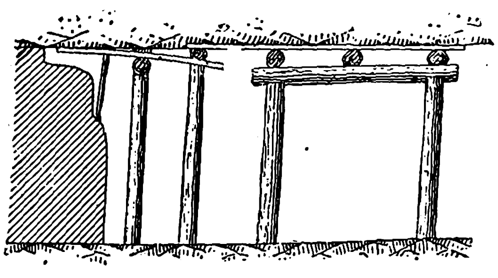

*Ὑποστήριξις ὑπὸ σαθρὰν ὀροφήν.*

***Γενικὴ καὶ εἰδικὴ διευθέτησις τῶν μεταλλείων.*** Ἡ ἐκμετάλλευσις μεταλλείων ἀπαιτεῖ τὴν ἐκτέλεσιν προηγουμένως ἔργων γενικῆς καὶ εἰδικῆς διευθετήσεως. Ἡ γενικὴ διευθέτησις περιλαμβάνει τὴν διαίρεσιν τῆς πρὸς ἐκμετάλλευσιν παραχωρήσεως εἰς *τμήματα* (Divisions), καὶ τούτων εἰς *κέντρα ἐξορύξεως*, κατονομαζόμενα πολλάκις ἐκ τοῦ κυριωτέρου φρέατος ἐξορύξεως. Ἕκαστον κέντρον ἐξορύξεως περιλαμβάνει ὑπογείως (ἢ καὶ ὑπαιθρίως) ἀριθμὸν διαμερισμάτων, ὑποδιαιρουμένων εἰς ἐργοτάξια ἐξορύξεως. Εἰς τὰ ἐργοτάξια ἐργάζονται μία ἢ περισσότεραι ὁμάδες *ὀρυκτῶν (μιναδόρων)* βοηθουμένων ὑπὸ *μεταφορέων (μπαζαδόρων ἢ ἐργατῶν)*. Ἑκάστης ὁμάδος ὑπάρχει πάντοτε ὑπεύθυνος ἀρχηγὸς ὀρύκτης, ὁ *ἐπὶ κεφαλῆς* καλούμενος. Αἱ ὁμάδες ἑκάστου ἐργοταξίου εὑρίσκονται ὑπὸ τὰς διαταγὰς *προϊσταμένου* ἐργοταξίου· οἱ προϊστάμενοι ἐργοταξίου ἑκάστου διαμερίσματος εὑρίσκονται ὑπὸ τὰς διαταγὰς ἑνὸς *ἐπιστάτου*, εἰς ἕκαστον κέντρον ἐξορύξεως ὑπάρχει *ἀρχιεπιστάτης*, ὑπὸ τὰς ἀμέσους διαταγὰς τοῦ *μηχανικοῦ τῆς ἐξορύξεως*, βοηθουμένου πολλάκις ὑπὸ βοηθῶν μηχανικῶν καὶ ἐργοδηγῶν, ὡς καὶ γεωμετρῶν, λογιστῶν κτλ. Ὑπάρχουσιν ἐπιστάται καὶ ἐργοδηγοὶ τῶν ὑπαιθρίων ἐγκαταστάσεων, τῶν ὑπαιθρίων καὶ ὑπογείων γραμμῶν, ἀγωγέων κ.τ.λ, Τοῦ τμήματος προΐσταται μηχανικὸς τμηματάρχης. βοηθούμενος πολλάκις ὑπὸ μηχανικοῦ τῶν ὑπαιθρίων ἐγκαταστάσεων, τοῦ κεντρικοῦ ἠλεκτρικοῦ σταθμοῦ, τῶν πλυντηρίων, σταθμῶν ἢ λιμένων φορτώσεως. Εἰς τὴν γενικὴν διεύθυνσιν ὑπάρχει γενικὸς διευθυντής, ἔχων ἀνάλογον ἐπιτελεῖον λογιστικῆς ὑπηρεσίας, ἐμπορικῆς ὑπηρεσίας, προμηθειῶν, πωλήσεως, ἰατρικῆς ὑπηρεσίας, μηχανικῶν βοηθῶν κτλ. Ὑπ' αὐτὸν ὑπάρχει εἷς ἀρχιμηχανικὸς ἢ ἐνίοτε δύο, εἷς τῶν ὑπογείων ἐργασιῶν καὶ εἷς τῶν ὑπαιθρίων ἐγκαταστάσεων.

Εἰς μεταλλεῖα καὶ μετρίου μεγέθους ἀκόμη ὑπάρχει πλῆθος βοηθητικῶν ἐγκαταστάσεων, σιδηρόδρομος κανονικοῦ πλάτους, λιμενικαὶ ἐγκαταστάσεις ἐπιβιβάσεως ἐπὶ ἀκτῆς θαλασσίας ἢ διώρυγος ποταμοῦ, ἐργοστάσια, ἐγκαταστάσεις οἰκημάτων προσωπικοῦ, ὑπαλλήλων καὶ ἐργατῶν, σχολεῖα, ἐκκλησίαι, λέσχαι, συνεταιριστικὰ πρατήρια κ.τ.λ. Τὸ κέντρον ἐξορύξεως, περιλαμβάνον ὡρισμένην ζώνην τῆς παραχωρήσεως, ἔχει ἔκτασιν ποικίλλουσαν ἀναλόγως τῶν ἐδαφικῶν συνθηκῶν καὶ δύναται ν' ἀπασχολῇ ὀλίγας δεκάδας μέχρι χιλιάδας ἐργατῶν· δύο ἢ τρία κέντρα ἐξορύξεως ἀπαρτίζουσιν ἓν τμῆμα, δύνανται δὲ νὰ ὑπάρχωσι πολλὰ τμήματα. Οὕτω μεγάλα ἀνθρακωρυχεῖα, παράγοντα ἐτησίως 3.000.000 — 5.000.000 τόννων ἀπασχολοῦσι 10.000—15.000 ἐργατῶν ὑπογείως καὶ ὑπαιθρίως· τοιαῦτα ἀνθρακωρυχεῖα ὑπάρχουσι πλεῖστα, π. χ. ἐν Βεστφαλίᾳ, Σιλεσίᾳ, Βελγίῳ, βορείῳ Γαλλίᾳ.

Ὡς πρὸς τὴν διάταξιν ἕκαστον κέντρον ἐξορύξεως ἔχει στοὰν ἢ στοὰς ἐξορύξεως, ἐὰν ἐπιτρέπῃ ἡ κλίσις τοῦ ἐδάφους, ἢ ἓν ἢ περισσότερα φρέατα ἐξορύξεως ἢ καὶ στοὰς καὶ φρέατα. Κατ' ἀρχὴν πρέπει, συμφώνως πρὸς τοὺς κανονισμούς, νὰ ὑπάρχωσι τοὐλάχιστον δύο ἔξοδοι κεχωρισμέναι δι' ἕκαστον ἐργοτάξιον, διαμέρισμα ἢ κέντρον ἐξορύξεως, ἀπαραίτητοι διὰ τὸν ἀερισμὸν καὶ τὴν ἀσφάλειαν. Ἡ πρὸς ἐκμετάλλευσιν ζώνη ὑποδιαιρεῖται δι' ἐγκαρσίων καὶ ὁριζοντίων κατὰ διεύθυνσιν στοῶν εἰς *πατώματα* καὶ *ὑποπατώματα*. Ἡ γενικὴ διευθέτησις περιλαμβάνει τὴν μελέτην καὶ ἐκτέλεσιν πασῶν τῶν ἐγκαταστάσεων τούτων καὶ τὴν ἐκπόνησιν γενικοῦ καὶ εἰδικοῦ προγράμματος ἐργασιῶν, συνήθως ἐπεκτεινομένου εἰς πολυετῆ χρονικὴν περίοδον. Πλεῖστα κέντρα ἐξορύξεως εὑρίσκονται ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ πολλῶν αἰώνων. Ἡ εἰδικὴ διευθέτησις περιλαμβάνει τὰ προπαρασκευαστικὰ ἔργα τῆς ἐξορύξεως ἑκάστου πατώματος ἢ ὑποπατώματος, ἅτινα εἶναι στοαὶ ἐγκάρσιαι καὶ κατὰ διεύθυνσιν ἢ κεκλιμέναι, τυφλὰ φρέατα, τοποθέτησις γραμμῶν, μηχανημάτων κτλ., ὡς καὶ τὰ ἔργα ἀναγνωρίσεως τοῦ κοιτάσματος καὶ βοηθητικὰ ἐρευνητικὰ ἔργα διὰ τὸ ἄμεσον καὶ προσεχὲς μέλλον. Τὰ ἔργα ταῦτα συνδέονται στενῶς πρὸς τὴν ἑκάστοτε ἀναλόγως τῶν γεωλογικῶν καὶ οἰκονομικῶν συνθηκῶν ἐφαρμοζομένην μέθοδον ἐκμεταλλεύσεως. Ἡ ὕπαρξις πατωμάτων καὶ ὑποπατωμάτων προέρχεται ἐκ τοῦ ὅτι συνήθως καθίσταται ἀδύνατος ἡ ἐκμετάλλευσις τοῦ κοιτάσματος καθ' ὅλον αὐτοῦ τὸ ὕψος καὶ διὰ τοῦτο λαμβάνονται διαδοχικῶς ἀνὰ ἓν πάτωμα ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω· Εἰς τὸν πυθμένα ἑκάστου τούτων ἀνορύσσεται στοὰ ὁριζοντία κυκλοφορίας πρὸς τὸ φρέαρ, ἥτις ἀποτελεῖ συγχρόνως τὴν στοὰν κορυφῆς τοῦ ἑπομένου πατώματος. Συνήθως δὲ ἕκαστον πάτωμα ὑποδιαιρεῖται δι' ἄλλων ὁριζοντίων στοῶν εἰς ὑποπατώματα, τὰ ὁποῖα λαμβάνονται συγχρόνως ἢ διαδοχικῶς καὶ ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω. Αἱ στοαὶ κατὰ διεύθυνσιν τῶν πατωμάτων καὶ ὑποπατωμάτων συνδέονται μεταξύ των διὰ κεκλιμένων στοῶν ἢ ἐσωτερικῶν φρεάτων (τυφλῶν φρεάτων) ἐντὸς τοῦ κοιτάσματος ἢ ἐκτὸς αὐτοῦ. Ἡ ἐκτέλεσις τοιούτων στοῶν καὶ φρεάτων προπαρασκευαστικῶν τῆς ἀμέσου ἐκμεταλλεύσεως καλεῖται *χάραξις* τοῦ κοιτάσματος, ὅταν δὲ περιβάλλωσι τμῆμα αὐτοῦ πανταχόθεν, καλεῖται *περιχάραξις* τοῦ *τμήματος* ἢ *στύλου (κολώνας)* τοῦ κοιτάσματος.

***Μέθοδοι ἐκμεταλλεύσεως.*** Αὗται διαιροῦνται εἰς *ὑπαιθρίους* καὶ *ὑπογείους*. Εἰς τὰς ὑπαιθρίους ἐκμεταλλεύσεις ὑπάγεται ὑπὸ τεχνικὴν ἔποψιν καὶ τὸ μέγιστον μέρος τῶν λατομείων. Ὑπάρχουσιν ὅμως καὶ πολλὰ λατομεῖα ἐκμεταλλευόμενα ὑπογείως.

Αἱ ὑπαίθριοι ἐκμεταλλεύσεις ἔχουσιν ἀνάγκην ἐξ ἴσου μεθοδικῆς καὶ συστηματικῆς διευθετήσεως, ὡς καὶ αἱ ὑπόγειοι, συμφώνως πρὸς σαφῶς κεχαραγμένον πρόγραμμα, προσαρμοζόμενον εἰς τὰς ἑκάστοτε γεωλογικὰς καὶ οἰκονομικὰς συνθήκας, ἤτοι τὴν διαμόρφωσιν τοῦ κοιτάσματος καὶ τὴν ἐμπορικὴν ἀξίαν τοῦ ἐξορυσσομένου προϊόντος. Ἐφαρμόζονται δὲ ὄχι μόνον ὅταν τὸ κοίτασμα ἐμφανίζεται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας, ἀλλὰ καὶ ὅταν ὑπάρχῃ ἐπικάλυμμα ἀγόνων ἐδαφῶν, ὧν τὸ πάχος δὲν ὑπερβαίνει ὅριον, καθ' ὃ ἡ ὑπογεία ἐργασία καθίσταται ὀλιγώτερον δαπανηρά. Ἡ ἀφαίρεσις τοῦ ἀγόνου ἐπικαλύμματος καλεῖται *ἀποκάλυψις*. Ἡ ὑπαιθρία ἐξόρυξις γίνεται κατὰ τὴν μέθοδον τῶν ὀρθίων βαθμίδων, καθ' ἣν τὸ μέτωπον ἐξορύξεως προχωρεῖ κλιμακηδόν, ἑκάστης βαθμῖδος χρησιμευούσης πρὸς στήριξιν τῶν ἐργατῶν καὶ ἐγκατάστασιν γραμμῶν ἀπαγωγῆς τῶν ὑλικῶν διὰ βαγονέ-

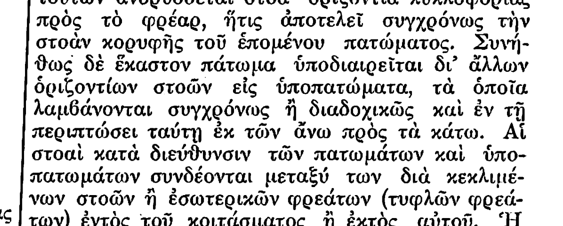

*Ἐργοτάξια ἀνερχομένων μετώπων.*

Digitized by Google

των παραλλήλως πρὸς τὸ μέτωπον. Αἱ γραμμαὶ μετατοπίζονται ἐπὶ τῶν βαθμίδων περιοδικῶς πρὸς τὰ πρόσω. Ἡ ὑπαιθρία ἐξόρυξις συνδυάζεται ἐξαίρετα πρὸς τὴν χρῆσιν μηχανῶν, ὡς ἐκσκαφέων, ἐν εἴδει βυθοκόρου ἢ μηχανικοῦ πτύου, κινουμένων ἐπὶ γραμμῶν ἢ καὶ ἀτερμόνων ταινιῶν, μετὰ ἢ ἄνευ χρήσεως ἐκρηκτικῶν ὑλῶν, ἀναλόγως τῆς σκληρότητος τῶν πετρωμάτων. Ἡ ἀπόδοσις εἶναι ἀρίστη καὶ τὸ κοίτασμα ἀφαιρεῖται ἐξ ὁλοκλήρου. Ὑπαίθριαι ἐκμεταλλεύσεις εἶναι πλεῖσται καὶ σπουδαῖαι, ὡς αἱ τῶν γεηρῶν λιγνιτῶν ἐν Γερμανίᾳ, σιδηρωρυχείων ἐν Λωρραίνῃ, Σουηδίᾳ, παρ' ἡμῖν ἐν Λοκρίδι κτλ. Τὰ πλεῖστα τῶν μεταλλείων τῶν πεπολιτισμένων χωρῶν φέρουσι τὰ ἴχνη τῶν εἰς παλαιὰν ἐποχὴν γενομένων ὑπαιθρίων ἐκμεταλλεύσεων τῶν *ἐμφανίσεων* (βλ. λ.) τῶν κοιτασμάτων (κοιλότητες, σωροὶ ἀπορριμμάτων ἀγόνων).

Αἱ ὑπόγειοι ἐκμεταλλεύσεις στηρίζονται ἐπὶ τριῶν διαφόρων ἀρχῶν, ὧν ἡ προέλευσις χρονολογεῖται ἀπὸ τῶν προϊστορικῶν χρόνων: τῆς ἀφέσεως στύλων ὑποστηρίξεως τῆς ὀροφῆς, τῆς ἐγκατακρημνίσεως καὶ τῆς πληρώσεως τῶν κενῶν ἢ τῆς γομώσεως ἢ λιθογομώσεως. Κατὰ τὴν πρώτην ἀφίενται στῦλοι (κολῶναι) ὑποστηρίξεως τῆς ὀροφῆς ἀνὰ ὡρισμένα διαστήματα ἀναλόγως τῆς ἀντοχῆς τῆς ὀροφῆς καὶ τῶν στύλων, ὥστε τὸ ἐκ τῆς ἐξορύξεως κενὸν παραμένει εἰς τὴν θέσιν του. Οὕτω ἀφαιροῦνται 40°/₀ ἕως 75°/₀ τοῦ μεταλλεύματος, ἀναλόγως τοῦ μεγέθους τῶν στύλων καὶ τοῦ ἀφιεμένου μέρους κοιτάσματος εἰς τὴν ὀροφὴν καὶ τὸ δάπεδον. Ἐφαρμόζεται εἰς σχετικῶς εὐτελῆ μεταλλεύματα καὶ λατομεῖα· οὕτω π. χ. ἐξορύσσεται μέγα μέρος τῶν ὑπογείων σιδηρομεταλλευμάτων τῆς Λωρραίνης, πλεῖστα ἁλατωρυχεῖα κλ. Γίνεται χρῆσις αὐτῆς καὶ ὅταν τὸ μετάλλευμα παρουσιάζῃ πτωχὰ ἢ στεῖρα μέρη, ἅτινα ἀφίενται ὡς στῦλοι ὑποστηρίξεως, ὡς π. χ. ἐν Λαυρείῳ εἴς τινα σημεῖα καὶ εἰς πλεῖστα μεταλλωρυχεῖα, σπανίως δὲ εἰς ἀνθρακωρυχεῖα. Ἐνίοτε καταβάλλεται προσπάθεια μετὰ τὸ πέρας τῆς ἐξορύξεως ν' ἀποκοπῶσι κατὰ τὸν μᾶλλον ἢ ἧττον οἱ στῦλοι ὑποχωρητικῶς.

Κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς *ἐγκατακρημνίσεως* τὸ ἐργοτάξιον ὑποστηρίζεται διὰ ξυλοδεσιῶν καὶ ἡ ἐξόρυξις γίνεται ὅσον τὸ δυνατὸν πληρεστέρα, κατόπιν δ' ἀφήνεται νὰ καταπέσῃ ἡ ὀροφὴ μετὰ μερικὴν ἢ πλήρη ἀφαίρεσιν τῶν ξυλοδεσιῶν, προστατευομένων μόνον τῶν ἀναγκαιουσῶν στοῶν διὰ λιθογομώσεων.

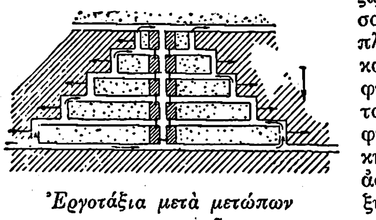

*Ἐργοτάξια μετὰ μετώπων προχωρητικῶν.*

Ἡ μέθοδος αὕτη ἐφαρμόζεται εἰς μεγίστην κλίμακα εἰς μεταλλωρυχεῖα καὶ ἀνθρακωρυχεῖα, ἰδίως ὅταν τὰ ὑπόγεια ἔργα δὲν παρέχωσι, λόγῳ ἱκανοῦ πάχους τοῦ κοιτάσματος, ἀρκετὰ στεῖρα ὑλικὰ διὰ τὴν συμπλήρωσιν τῶν κενῶν, καὶ ὅταν εἶναι δυνατὴ ἡ ἐφαρμογὴ τῆς μεθόδου ἄνευ κινδύνου τοῦ προσωπικοῦ ἢ ἀπωλείας μέρους τοῦ κοιτάσματος λόγῳ ἀποκλεισμοῦ αὐτοῦ ὑπὸ τῶν κατακρημνισθέντων μερῶν. Διὰ τῆς μεθόδου ταύτης ἐξορύσσεται τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ γαιάνθρακος, ἰδίως ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἡνωμέναις Πολιτείαις, ὀλιγώτερον δὲ ἐν Γερμανίᾳ (Σιλεσίᾳ). Εἰς τὰς χώρας ταύτας τὰ στρώματα, λίαν ὁμαλὰ καὶ μέσου πάχους, ἔχοντα κανονικὴν ὀροφὴν καὶ ὀλίγην κλίσιν, προσαρμόζονται ἄριστα πρὸς τὴν οἰκονομικὴν χρῆσιν τῆς ἐν λόγῳ μεθόδου. Ἐπίσης ἐφαρμόζεται καὶ εἰς μεταλλεῖα σιδήρου ἐν Λωρραίνῃ, Βεστφαλίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ, καὶ εἰς πλείστας ἄλλας περιπτώσεις λιγνίτου, ὡς καὶ παρ' ἡμῖν εἰς λιγνιτωρυχεῖα κτλ. Ἐννοεῖται ὅτι ἡ χρῆσις τῆς μεθόδου ταύτης προκαλεῖ κινδύνους μετὰ τὴν ἀφαίρεσιν ἱκανῆς ἐκτάσεως τῶν στρωμάτων, καθότι ἡ καθίζησις τῶν ἐδαφῶν γίνεται καταφανὴς καὶ εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, προκαλοῦσα βλάβας εἰς τὰ ἐπ' αὐτῆς κτήρια, πλημμύρας λόγῳ μεταβολῆς τῆς στάθμης κτλ.

Κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς *λιθογομώσεως* (βλ. λ.) συμπληροῦνται τὰ κενὰ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον πλήρως, ὥστε ἡ ὀροφὴ νὰ παραμένῃ εἰς τὴν θέσιν αὐτῆς ἢ νὰ ἐπιβραδύνεται ἡ καθίζησις αὐτῆς. Ἡ μέθοδος αὕτη ἐπιτρέπει τὴν ἐν πλήρει ἀνέσει καὶ ἀσφαλείᾳ ἀφαίρεσιν τοῦ κοιτάσματος, μειώνουσα τοὺς κινδύνους καταπτώσεως, ὡς καὶ πυρκαϊᾶς, προκειμένου περὶ ἀνθρακωρυχείων, δι' αὐταναφλέξεως τοῦ κοιτάσματος. Ἐπίσης ἐπιτρέπει τὴν ἐλάττωσιν εἰς τὸ ἐλάχιστον τῶν ἀπωλειῶν τοῦ κοιτάσματος δι' ἀφέσεως ἀνεξορύκτων μερῶν. Εἶναι ἡ μόνη τέλος μέθοδος, ἥτις ἐπιτρέπει τὴν ἀσφαλῆ καὶ πλήρη ἐξόρυξιν στρωμάτων ἢ φλεβῶν μεγάλου πάχους ἀνθράκων ἢ μεταλλευμάτων, ὁπότε ἀναγκαιοῖ ἡ εἰσαγωγὴ ἔξωθεν τοῦ ὑλικοῦ λιθογομώσεως. Ἐφαρμόζεται ἐπίσης κατ' ἀνάγκην ὅταν τὸ κοίτασμα εἶναι λεπτὸν καὶ ἀναγκάζεται ἡ ἐκμετάλλευσις νὰ ἀνορύσσῃ στοὰς ἢ καὶ μέρος τοῦ ἐργοταξίου ἐντὸς στείρου ἐδάφους, ὁπότε ἀποβαίνει οἰκονομικωτέρα ἡ τοποθέτησις ὅσον τὸ δυνατὸν περισσοτέρου μέρους αὐτῶν ἐντὸς τῶν κενῶν τῆς ἐξορύξεως. Καὶ ὅταν μὲν διατίθεται σκληρὸν ὑλικὸν εἰς μεγάλα τεμάχια καὶ ἡ ὀροφὴ εἶναι στερεά, γίνονται ξηρολιθίαι, αἵτινες στηρίζουσι καλῶς τὴν ὀροφὴν μετ' ἐλαχίστης καθιζήσεως· τότε ἀρκοῦσι στῦλοι τινὲς ἢ τοῖχοι (κοιν. *μοῦρα*) πρὸς ἐπίτευξιν τοῦ σκοποῦ. Τοῦτο συμβαίνει εἰς πλεῖστα μεταλλωρυχεῖα, π. χ. παρ' ἡμῖν ἐν Λαυρείῳ. Εἴς τινα μεταλλεῖα μάλιστα, ὡς εἶναι τὰ διάσημα ὑδραργυρωρυχεῖα τοῦ Ἀλμαδέν, οἱ τοῖχοι οὗτοι

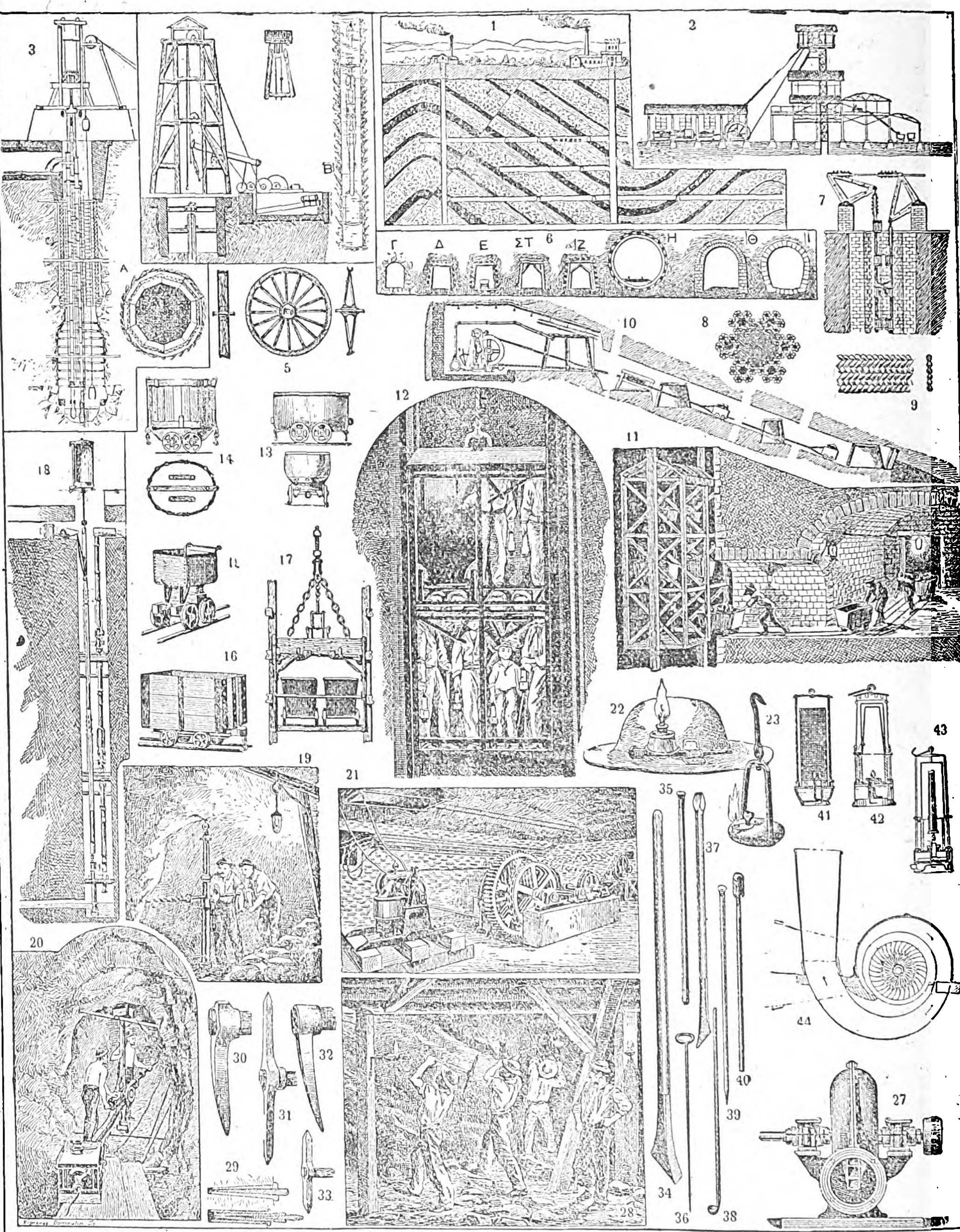

*Μεταλλεῖον.*

[1=Σχηματικὴ παράστασις μεταλλείου (ἀνθρακωρυχείου)· 2=ἰκρίωμα καὶ μηχαναὶ ἐξαγωγῆς· 3=τομὴ φρέατος (Α, ξυλίνη στεγανὴ ἐπένδυσις)· 4=γεώτρησις (Β, γεωτρύπανον)· 5=τροχαλία· 6=στοαὶ (Γ, ἄνευ ὑποστηρίξεως· Δ, μετὰ ἁπλοῦ πλαισίου· Ε, μετὰ διπλοῦ πλαισίου· ΣΤ, μετὰ προσθέτων ὑποστηρίξεως· Ζ, μετὰ ἐνισχυμένου πλαισίου· Η, μετὰ σιδηρᾶς ἐπενδύσεως· Θ, μετὰ τοιχοποιΐας· Ι, μετὰ κοιτοστρώσεως· 7=ταλαντευομένη κλῖμαξ κυκλοφορίας ἐργατῶν· 8=χαλύβδινον στρογγύλον συρματόσχοινον· 9=πεπλατυσμένος ἐξ ἀγαύης κάλως· 10=κεκλιμένον ἐπίπεδον μετὰ βαρούλκου διὰ πεπιεσμένου ἀέρος· 11=κλωβὸς ἀνελκύσεως μεταλλευμάτων· 12=ἀνέλκυσις ἐργατῶν· 13, 14, 15, 16=βαγονέτα μεταφορῶν· 17=κλωβοὶ ἀνελκύσεως βαγονέτων· 18=ἀντλία ἀποστραγγίσεως· 19=χειροκίνητος διατρητικὴ μηχανή· 20=ἠλεκτροκίνητος διατρητικὴ μηχανή. 21=κινητὴρ μηχανικῆς ἕλξεως· 22=λυχνία τοῦ πίλου· 23=λυχνία μετ' ἀκαλύπτου φλογός· 27=φορητὸς ἀνεμιστὴρ δευτερεύοντος ἀερισμοῦ· 28=ἐργασία μετώπου· 29=σφῆνες ἐξορύξεως· 30,31, 32,33=διάφοροι τύποι ἐργαλείων· 34=μοχλός· 35=ξιφίδιον· 36=καρφίς· 37,38,39=ἐργαλεῖα ὀρύξεως διατρυμάτων. 40=γομωτήρ· 41=λαμπτὴρ ἀσφαλείας Davy· 42=λαμπτὴρ ἀσφαλείας Marsaut· 43=λαμπτὴρ ἀσφαλείας Mueseler· 44=ἀνεμιστὴρ Rateau.]

κτίζονται δι' ἀσβέστου καὶ ἄμμου. Εἰς πλείστας ὅμως περιστάσεις γίνεται μόνον μερικῶς ἡ ὑποστήριξις καὶ ἐπέρχεται καθίζησις ποικίλλουσα ἀπὸ 60 °/₀ ἕως 5 °/₀ τοῦ πάχους τοῦ κοιτάσματος. Ἡ μέθοδος αὕτη ἐφαρμόζεται εἰς μεγάλην κλίμακα εἰς ὅσα ἀνθρακωρυχεῖα δὲν γίνεται χρῆσις τῆς ἐγκατακρημνίσεως, ἤτοι εἰς τὰ λεπτὰ στρώματα, ὡς καὶ εἰς τὰ παχέα στρώματα καὶ εἰς πλεῖστα στρώματα μέσου πάχους, ἀλλ' ἀνώμαλα ἢ κακῆς ὀροφῆς, ἢ ὅταν θέλωμεν νὰ μειώσωμεν εἰς τὸ ἐλάχιστον τὰς ζημίας ἐπιφανείας, ὡς ὑπὸ πόλεις ἢ χωρία. Οὕτω χρησιμοποιεῖται πολὺ ἐν Βελγίῳ, Γαλλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ. Τείνει δὲ νὰ ἀναπτυχθῇ ἡ χρῆσις αὐτῆς ἀντὶ τῆς μεθόδου ἐγκατακρημνίσεως, ἂν καὶ τελευταίως διὰ τῆς χρήσεως μηχανικῶν μέσων μεταφορᾶς καὶ ἐξορύξεως ἐντὸς τῶν ἐργοταξίων ἐπετεύχθη τὸ ἄνοιγμα ἐργοταξίων μεγάλου μήκους μέχρις 100 καὶ πλέον μέτρων, ὁπότε μεθοδικὴ καὶ συστηματικὴ μέθοδος ἐγκατακρημνίσεως συνδυάζεται πρὸς τὴν ἔλλειψιν ἐπιτοπίων ὑλικῶν λιθογομώσεως ἐκ τοῦ περιορισμοῦ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν στοῶν χαράξεως.

Ἐν γένει, εἰς πλείστας ἐκμεταλλεύσεις δὲν εἶναι σπάνιον νὰ γίνεται χρῆσις ὄχι μόνον μιᾶς τῶν ἀρχῶν τούτων, ἀλλὰ καὶ τῶν δύο τελευταίων ἢ καὶ τῶν τριῶν ἀρχῶν, ὅπως προσαρμόζωνται ἑκάστοτε εἰς τὰς ἀνάγκας τῆς ἀκολουθουμένης μεθόδου ἐκμεταλλεύσεως. Ἐν πάσῃ ὅμως περιπτώσει ἡ ἀσφάλεια τῶν ἐργαζομένων ἀποτελεῖ τὴν βάσιν αὐτῆς. Τὰ κοιτάσματα ἐμφανίζονται εἰς φλέβας ἢ εἰς στρώματα βλ. *μεταλλοφόροι κοῖται*) καὶ ἡ μέθοδος μεταβάλλεται ἀναλόγως τοῦ πάχους καὶ τῆς κλίσεως αὐτῶν. Εἰς τὴν ἀσφάλειαν καὶ τὴν οἰκονομίαν τῆς ἐξορύξεως συμβάλλει μεγάλως ἡ συγκέντρωσις αὐτῆς καὶ ἡ γοργότης τῆς ἐκτελέσεως. Προκειμένου περὶ φλεβῶν μέσου ἢ μικροῦ πάχους, ὧν ἡ κλίσις εἶναι συνήθως μεγάλη, ἐφαρμόζεται ἡ μέθοδος τῶν *ὀρθίων* ἢ συχνότερον τῶν *ἀνεστραμμένων βαθμίδων*. Κατ' αὐτὴν τὸ μέτωπον προσβολῆς τῆς ἐξορύξεως μετατοπίζεται κατὰ τὴν διεύθυνσιν τοῦ στρώματος κλιμακηδόν, καὶ εἰς μὲν τὴν πρώτην περίπτωσιν ὁ ἐργάτης πατεῖ ἐπὶ τοῦ μήπω ἐξορυχθέντος μεταλλεύματος καὶ ἔχει ὑπὲρ τὴν κεφαλήν του τὰ γεμίσματα τῶν λιθογομώσεων, κατὰ δὲ τὴν δευτέραν ἔχει τὸ μετάλλευμα ὑπεράνω αὐτοῦ καὶ πατεῖ ἐπὶ τῶν γεμισμάτων. Ἡ κλιμακωτὴ διάταξις παρουσιάζει πλεονεκτήματα διὰ τὴν ἐξόρυξιν καὶ διὰ τὴν ἀντοχὴν τῆς ὀροφῆς, ἥτις δὲν ἀποκαλύπτεται ἐπὶ μακρᾶς εὐθείας γραμμῆς. Ἡ μέθοδος ἐφαρμόζεται καὶ ἄνευ λιθογομώσεως δι' ἀφέσεως στύλων ὑποστηρίξεως καθέτων πρὸς τὰς παρειὰς τῆς φλεβός, ὡς καὶ δι'

Digitized by Google

ἐγκατακρημνίσεως, προτιμωμένων τῶν ὀρθίων βαθμίδων καὶ ὑποχωρητικῆς πορείας. Ὅταν αἱ φλέβες εἶναι παχεῖαι ἢ προκειμένου περὶ σωρῶν, χρησιμοποιεῖται ἡ μέθοδος ἀφέσεως στύλων καὶ ἐνδιαμέσων δαπέδων ἐκ μεταλλεύματος, ὡς καὶ ἡ μέθοδος ἐγκατακρημνίσεως κοπτομένων τῶν στύλων καὶ ἐνδιαμέσων δαπέδων τούτων, ὅσον εἶναι δυνατὸν πάντοτε ὑποχωρητικῶς. Ἀσφαλεστέρα μέθοδος εἶναι ἡ χρῆσις λιθογομώσεως μεθ' ὁριζοντίων ζωνῶν, ὡς προκειμένου περὶ γαιανθράκων. Οὕτω ἐκμεταλλεύονται ἐν Ἑλλάδι (Ἑρμιόνη, Κασσάνδρα καὶ ἀλλαχοῦ) μεγάλοι σωροὶ σιδηροπυρίτου, λευκολίθου (ἐν Εὐβοίᾳ) κτλ.

Εἰς τὰ κοιτάσματα, ἅτινα παρουσιάζονται εἰς στρώματα, ὡς τὰ τῶν γαιανθράκων, ἐφαρμόζονται αἱ ἑξῆς μέθοδοι, ἀναλόγως τοῦ πάχους καὶ τῆς κλίσεως: α') Εἰς *στενὰ στρώματα*, πάχους μέχρις 1 μ., ὁπότε τὰ περιττὰ πετρώματα πάντοτε πλεονάζουσιν ἐκ τῶν ἐργασιῶν χαράξεως τοῦ πατώματος καὶ ὑποπατώματος, γίνεται χρῆσις προχωρητικῶν μετώπων, ἄνευ περαιτέρω χαράξεως, μετὰ πλήρους λιθογομώσεως. Τὰ μέτωπα προχωροῦσι κλιμακηδὸν διατεταγμένα εἴτε κατὰ τὴν κλίσιν τοῦ στρώματος ἀνερχόμενα (π.χ. εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα τοῦ Βελγίου πολλάκις, εἰς τὰ λιγνυτωρυχεῖα τῆς Κύμης κλπ.), εἴτε κατὰ τὴν διεύθυνσιν τοῦ στρώματος. Τὰ μέτωπα σχηματίζουσι βαθμῖδας, αἵτινες εἰς τὴν κατὰ διεύθυνσιν προχωρητικὴν μέθοδον προσομοιάζουσι τὰς βαθμῖδας τῶν μεταλλωρυχείων, πλὴν τῶν διαστάσεων αὐτῶν, ἢ εἶναι μεγάλου μήκους, ὅταν ἡ κλίσις εἶναι μικρὰ ἢ μετρία. Τὰ ἀνερχόμενα μέτωπα χρησιμοποιοῦνται μόνον διὰ μικρὰς κλίσεις, τὰ προχωρητικὰ διὰ πάσας τὰς κλίσεις. Ὅταν ἡ κλίσις εἶναι μεγάλη, πλησιάζουσα ἢ φθάνουσα τὸ κατακόρυφον, αἱ βαθμῖδες γίνονται μικρότεραι, ὡς προκειμένου περὶ φλεβῶν μεταλλεύματος. Ἡ χρῆσις μηχανικῶν μέσων ἐξορύξεως καὶ μεταφορᾶς ἐντὸς τοῦ ἐργοταξίου ἐπιτρέπει τὴν χρῆσιν ἐργοταξίων εὐθυγράμμων μήκους 100 μ., ἅτινα διεδόθησαν εἰς πολλὰς περιπτώσεις. Αἱ μέθοδοι αὗται χρησιμοποιοῦνται μεγάλως ἐν Βελγίῳ, Γαλλίᾳ Βεστφαλίᾳ, Σάρρῃ κτλ.

β') Εἰς τὰ *μέσα στρώματα* πάχους 1 ἕως 3 καὶ ἐνίοτε περισσοτέρων μέτρων γίνεται χρῆσις: 1) Τῶν ἄνω μεθόδων ἀνερχομένων ἢ προχωρητικῶν ἐργοταξίων μετὰ πλήρους λιθογομώσεως, εἰσαγομένων ἔξωθεν τῶν ἀναγκαιούντων συμπληρωματικῶν ὑλικῶν. 2) Γίνεται ἐπίσης μεγάλη χρῆσις μεθόδων μετὰ περιχαράξεως καὶ ἐξορύξεως ὑποχωρητικῆς ἢ προχωρητικῆς μετ' ἀφέσεως στύλων προστασίας τῶν στοῶν καὶ ἐγκατακρημνίσεως τοῦ ὑπολοίπου ἢ μερικῆς λιθογομώσεως. Αἱ μέθοδοι αὗται, αἵτινες εἶναι ἐν μεγάλῃ χρήσει, ὡς ἐλέχθη, ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ εἰς στρώματα λίαν κανονικὰ καὶ μικρᾶς κλίσεως, παρουσιάζουσι πλείστας παραλλαγάς. Ἡ περιχάραξις διὰ στοῶν ὁριζοντίων καὶ κεκλιμένων διευκολύνει τὴν ἐξόρυξιν δι' ἐγκατακρημνίσεως διὰ τῶν σχηματιζομένων διόδων, ἀπαραιτήτων διὰ τὰς μεθόδους ταύτας.

Αἱ μέθοδοι αὗται συνίστανται εἰς τὴν περιχάραξιν μακρῶν ἢ βραχέων τμημάτων (κατὰ τὴν ἔννοιαν τῆς διευθύνσεως) καὶ τὴν ἀφαίρεσιν αὐτῶν διὰ διαδοχικῶν ἐργοταξίων ὑποχωρητικῶν κατὰ διεύθυνσιν ἢ ἀνερχομένων. Εἰς τὴν Ἀγγλίαν ἐφαρμόζεται πολὺ εἰς στρώματα μικρᾶς κλίσεως μέθοδος περιωρισμένης χαράξεως, ἡ τοῦ μακροῦ τοίχου (longwall), ὑποχωρητικοῦ (homewards) ἢ προχωρητικοῦ (outwards), μετ' ἀφέσεως στύλων προστασίας τοῦ ζεύγους στοῶν χαράξεως, τὸ ὁποῖον προηγεῖται τῆς ἐξορύξεως. Εἰς τὰς μεθόδους μετὰ λιθογομώσεων, ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω, ἐφαρμόζεται μεγάλως ἐν Γερμανίᾳ μέθοδος ἐξορύξεως διὰ χαράξεως καὶ ἀφαιρέσεως τοῦ στρώματος ἑκάστου ἐργοταξίου διὰ δευτερευόντων μετώπων ἀνερχομένων ἢ κατὰ διεύθυνσιν καὶ πλήρους ἀμέσου λιθογομώσεως (μέθοδος τοῦ Stossbau).

γ') Εἰς τὰ *παχέα στρώματα*, παχείας φλέβας ἢ σωροὺς μεταλλευμάτων, παρουσιάζονται πολλαὶ δυσκολίαι ἐξορύξεως· εἶναι ἀδύνατος ἡ ἐξόρυξις καθ' ὅλον τὸ πάχος καὶ καθίσταται ἀναγκαία ἡ ἀφαίρεσις κατὰ ζώνας αὐτοῦ καὶ πλήρης λιθογόμωσις τῶν διαδοχικῶς ἀφαιρουμένων ζωνῶν. Ἐν τούτοις δὲν ἀποφεύγονται τελείως αἱ δυσκολίαι εἰς τὰ μεταλλεύματα βαρέων μετάλλων καὶ δὲν κατορθοῦται καλὴ ὑποστήριξις τῶν λιθογομώσεων, αἵτινες ὀλισθαίνουσιν ὅταν ἰδίως, ὡς συμβαίνει συνήθως, ἡ κλίσις εἶναι μεγάλη. Εἰς δὲ τοὺς γαιάνθρακας πάλιν ὁ διὰ τῶν ρωγμῶν τῶν γομώσεων κυκλοφορῶν ἀὴρ προκαλεῖ τὴν ὀξείδωσιν τοῦ στρώματος καὶ αὐταναφλέξεις. Ἐπίσης ὑπάρχουσι κίνδυνοι πλημμυρῶν.

Μέθοδοι λίαν ἐπικίνδυνοι ὁλοκληρωτικῆς ἀμέσου ἀφαιρέσεως τοῦ στρώματος εἰς μέγα ὕψος μετ' ἐγκαταστάσεως πραγματικῶν σκαλωσιῶν καὶ ἰκριωμάτων εἰς ἐλάχιστα μέρη σῴζονται, ὡς ἐν Πολωνίᾳ καὶ Σιλεσίᾳ, διὰ λίαν παχέα στρώματα, διὰ συστήματος θαλάμων καὶ ἀποθηκεύσεως προσωρινῆς, ὑποχωρητικῶς μετὰ χάραξιν. Εἰς αὐτὰς πρέπει νὰ ἀναχθῇ καὶ σύστημα ἐκμεταλλεύσεως λατομείων σχιστολίθων στεγάσεως (ἀρδοησίων λίθων, ardoisières) τοῦ Angers τῆς Γαλλίας, κατὰ τὸ ὁποῖον σχηματίζονται κολοσσιαῖοι ὑπόγειοι θάλαμοι μεγάλου ὕψους· ἡ ὀροφὴ αὐτῶν ἐπιθεωρεῖται ἐπιμελῶς πολλάκις τῆς ἡμέρας δι' εἰδικῶν ἰκριωμάτων μονίμων, καὶ ὅταν φανῇ ἐπικίνδυνος ρωγμή, προαναγγέλλουσα κατάπτωσιν, ἐγκαταλείπεται ὁ θάλαμος, ὅστις κατακρημνίζεται μετ' οὐ πολὺ συνήθως.

Αἱ ἐν χρήσει μέθοδοι διακρίνονται εἰς τὴν ἐξόρυξιν διὰ διαδοχικῶν ζωνῶν κεκλιμένων καὶ εἰς τὴν δι' ὁριζοντίων. Κατὰ τὴν μέθοδον τῶν κε-

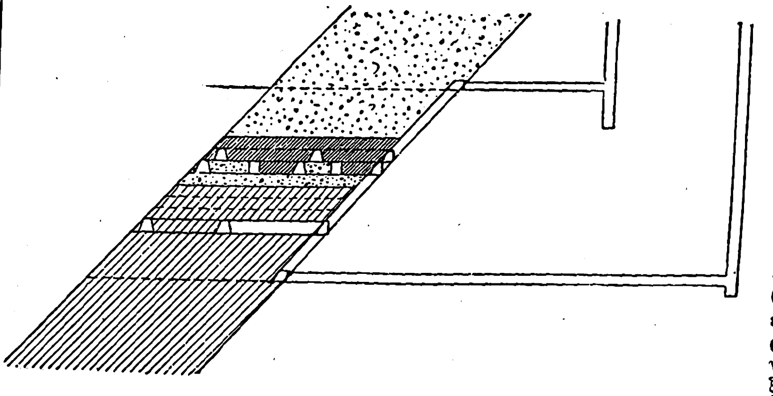

*Ἐκμετάλλευσις δι' ὁριζοντίων ζωνῶν.*

κλιμένων ζωνῶν ἀφαιρεῖται μία ζώνη (ἢ φέτα), πάχους 2 ἕως 3 μ., τοῦ στρώματος ὑποτιθεμένου ὅτι διαιρεῖται εἰς ζώνας ὡς νὰ ἐπρόκειτο περὶ λεπτοῦ ἢ μέσου στρώματος, συμπληροῦται τὸ κενὸν καὶ κατόπιν ἀφαιρεῖται ἡ παραπλεύρως ζώνη καὶ οὕτω καθεξῆς, τῆς λιθογομώσεως ἐνεργούσης ὡς παρειᾶς τοῦ στρώματος (ὀροφῆς ἢ δαπέδου). Λαμβάνεται ἐκ τῶν ἀνωτέρων πρὸς τὰς κατωτέρας ἢ ἀντιθέτως, ἀναλόγως τῆς στερεότητος τοῦ στρώματος ἢ τῆς λιθογομώσεως, στερεὸν στρῶμα, ὅπερ εὐνοεῖ τὴν ἀφαίρεσιν ἐκ τῶν κάτω, ὡς σχηματίζον καλὴν προσωρινὴν ὀροφήν· στερεὰ λιθογόμωσις ἢ σαθρὸν στρῶμα ἐπιβάλλουσι τὴν ἐκ τῶν ἄνω λῆψιν, ἵνα χρησιμεύῃ ἡ λιθογόγόμωσις ὡς ὀροφὴ καὶ ἵνα μή, ἀποσαθρουμένου τοῦ στρώματος, σχηματίζωνται καταπτώσεις, ἢ πυρκαϊαὶ ἐὰν πρόκειται περὶ λιθανθράκων. Ἡ μέθοδος αὕτη, ἐπιμελῶς ἐφαρμοζομένη, χρησιμοποιεῖται διὰ μικρὰς ἢ μετρίας κλίσεις μετ' ἐπιτυχίας, βοηθεῖ δὲ ἡ συχνὴ ὕπαρξις παραλλήλως πρὸς τὸ στρῶμα στείρων διαστρώσεων, αἵτινες χρησιμεύουσιν ὡς ὀροφὴ ἢ δάπεδον τῶν παρακειμένων ζωνῶν ἐξορύξεως· παραδείγματα ἔχομεν εἰς τὰ παχέα καὶ ἀνώμαλα στρώματα λιθανθράκων τῆς Κεντρικῆς Γαλλίας, τῆς Σάρρης, Γερμανίας κλπ.

Ἡ μέθοδος ὁριζοντίων ζωνῶν ἐφαρμόζεται εἰς πάσης κλίσεως (καὶ μέχρι κατακορύφου) παχέα στρώματα, ὡς καὶ φλέβας καὶ σωρούς, συνίσταται δὲ εἰς τὴν λῆψιν τῶν ὑποπατωμάτων ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω συνήθως, διὰ διαδοχικῶν ζωνῶν ἐξορύξεως ὁριζοντίων, ἔνθα τὸ κοίτασμα χρησιμεύει ὡς ὀροφὴ καὶ ἡ λιθογόμωσις ὡς δάπεδον. Ἡ ἐξόρυξις γίνεται διὰ περιχαράξεως καὶ μεθόδων ἀφαιρέσεως τῶν περικεχαραγμένων τμημάτων κατὰ διεύθυνσιν ἢ ἐγκαρσίως ὁμοίως πρὸς τὰς τῶν μέσων στρωμάτων. Ἡ μέθοδος αὕτη παρουσιάζει δυσκολίας, ὡς ἐλέχθη, ἀλλ' ἐπιμελῶς ἐφαρμοζομένη εἶναι ἀσφαλής.

Εἰς τὰς ἄνω μεθόδους ἐκμεταλλεύσεως δέον νὰ προστεθῶσιν αἱ τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῶν διαλυτῶν ἁλάτων (μαγειρικοῦ ἅλατος) διὰ διαλύσεως, εἴτε κατόπιν γεωτρήσεως ἐκ τῶν ἄνω καὶ ἀντλήσεως, προκαλουσῶν ὅμως ἐπικινδύνους καὶ ἀπροόπτους καταπτώσεις λόγῳ τῶν σχηματιζομένων μεγάλων κενῶν καὶ ἐγκαταλειφθεισῶν διὰ τοῦτο, εἴτε δι' ὑπογείων στοῶν καὶ θαλάμων μετὰ στύλων ὑποστηρίξεως, ἔνθα δέσμη ὕδατος ἐκτελεῖ διὰ διαλύσεως τὴν ἐξόρυξιν, ἥτις καταλήγει διὰ τῶν στοῶν εἰς τὴν ἀντλίαν τοῦ φρέατος (ἅλυκαὶ τοῦ Σαλτσβούργου ἐν Αὐστρίᾳ, τοῦ Μαγδεμβούργου κ. ἄ., ἀποτελοῦσαι ἀντικείμενον ἐπισκέψεως τῶν περιηγητῶν διὰ τὴν φαντασμαγορικὴν θέαν τῶν σχηματιζομένων ἐν εἴδει σπηλαίων θαλάμων). Προκειμένου ἐν γένει περὶ τῶν μεθόδων ἐκμεταλλεύσεως, ἐπικρατεῖ εἰς πάσας ἡ ἀρχή, τῆς ὑπάρξεως δύο διόδων, μιᾶς εἰς τὴν κατὰ στρῶσιν ἢ στάθμην καὶ μιᾶς εἰς τὴν ἄνω.

***Παραγωγὴ καὶ μετάδοσις κινητηρίου δυνάμεως.*** Τὰ μεταλλεῖα χρησιμοποιοῦσι κινητήριον δύναμιν εἰς μεγάλην κλίμακα καὶ διὰ τὰς ἐγκαταστάσεις καὶ διὰ τὰς ὑπογείους ἐργασίας. Πηγαὶ ἐνεργείας εἶναι ἡ ὑδραυλικὴ διὰ κίνησιν ὑδραυλικῶν τροχῶν, ἄντλησιν ὑδάτων κτλ., λαβοῦσα νέαν ὤθησιν διὰ τῶν ὑδραυλικῶν ἐγκαταστάσεων. Ἄλλη σπουδαιοτάτη πηγὴ ἐνεργείας εἶναι ἡ τοῦ ἀτμοῦ διὰ λεβήτων. Εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα ὑπάρχουσιν εἰδικαὶ *ἐσχάραι* (βλ. λ.) καύσεως ἀπορριμμάτων διαλογῆς μικρᾶς ἀξίας. Πολλάκις εἰς παλαιοτέρας ἰδίως ἐγκαταστάσεις διεβιβάζετο ὁ ἀτμὸς καὶ ἐντὸς τῶν φρεάτων διὰ τὴν κίνησιν μεγάλων ἀντλιῶν. Ἤδη προτιμᾶται ὁ ἠλεκτρισμός. Εἰς τὰ πλεῖστα τῶν μεταλλείων ὑπάρχει σταθμὸς κεντρικὸς παραγωγῆς ἠλεκτρισμοῦ διὰ γεννητριῶν κινουμένων δι' ἀτμοῦ, προερχομένου ἐκ τῆς καύσεως ἀνθράκων ἢ ἀερίων παρακειμένων ἐγκαταστάσεων παραγωγῆς ὀπτάνθρακος, ἢ ἐξ ἀεριομηχανῶν ἀπ' εὐθείας, ἐκ πτωχοῦ ἀερίου, ἢ πετρελαιομηχανῶν. Συνήθως ὑπάρχει δίκτυον ὑψηλῆς τάσεως διὰ τὴν διανομὴν εἰς τὰ κέντρα ἐξορύξεως μεθ' ὑποσταθμῶν. Ὁ ἠλεκτρισμὸς χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν κίνησιν τῶν πολυαρίθμων κινητήρων τῆς ἐπιφανείας ἀνεμιστήρων φρεάτων, βαρούλκων κλπ., διὰ τὸν φωτισμὸν τῆς ἐπιφανείας καὶ τῶν στοῶν τῶν φρεάτων καὶ ἐνίοτε καί τινων μεγάλων στοῶν. Ἐπίσης καὶ διὰ τὴν ὑπόγειον κινητήριον δύναμιν εἰς πλείστας περιπτώσεις, διὰ τὰς μεγάλας ἀντλίας τῶν φρεάτων, διὰ κίνησιν βαγονέτων, βαρούλκων ἐσωτερικῶν, ἀνεμιστήρων ἐσωτερικῶν, μηχανῶν διατρητικῶν καὶ ἐξορυκτικῶν, ἀντλιῶν ἐσωτερικῶν. Εἰς τὰ λιθανθρακωρυχεῖα, ἔνθα ὑπάρχει ἐπικίνδυνον ἀέριον, ἐπιτρέπεται ὑπὸ ὡρισμένας προϋποθέσεις ἡ χρῆσις ἠλεκτρισμοῦ εἰς κινητῆρας προφυλαγμένους εἰδικῶς. Χρησιμεύει ἐπίσης ὁ ἠλεκτρισμὸς εἰς ἀσφαλιστικὰς λυχνίας μετὰ συσσωρευτῶν διὰ τὸν φωτισμὸν λιθανθρακωρυχείων. Ὁ πεπιεσμένος ἀήρ, παρὰ τὴν κατωτέραν μηχανικὴν ἀπόδοσιν τῆς χρήσεως αὐτοῦ ἔναντι τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, ἀποτελεῖ σπουδαιότατον μέσον μεταδόσεως κινητηρίου ἐνεργείας εἰς τὰ μεταλλεῖα. Διανέμεται ὑπὸ πίεσιν 6 ἀτμοσφαιρῶν συνήθως, παραγόμενος εἰς μεγάλους ἀεροσυμπιεστὰς ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας ἠλεκτροκινήτους ἢ ἀτμοκινήτους (ὑπάρχουσι καὶ στροβιλοσυμπιεσταὶ περιστροφικοί). Δίκτυον σωλήνων μεταφέρει αὐτὸν εἰς τὰ ἐργοτάξια καὶ ὅπου χρειάζεται, ἀποτελεῖ δὲ τὸ κύριον κινητήριον μέσον τῶν ἤδη τόσον διαδεδομένων ἀεροσφυρῶν καὶ διατρητικῶν μηχανῶν, ἐκσκαπτικῶν μηχανῶν, βαρούλκων, ἀνεμιστήρων ἐσωτερικῶν, ἀντλιῶν ἐσωτερικῶν κτλ. Εἶναι μέσον ἁπλοῦν, ἀσφαλὲς εἰς ὅλα τὰ ἀνθρακωρυχεῖα, ὑγιεινόν, διότι προσθέτει καθαρὸν ἀέρα καὶ ψυχρὸν ἕνεκα τῆς ἐκτονώσεως αὐτοῦ εἰς τὴν ἀτμοσφαῖραν τοῦ ἐργοταξίου καὶ διὰ τοῦτο ἡ χρῆσις αὐτοῦ βαίνει αὔξουσα πανταχοῦ.

Τέλος ὁ πεπιεσμένος ἀὴρ ὑπὸ μεγάλην πίεσιν (60 ἕως 80 ἀτμοσφαιρῶν) δι' εἰδικῶν συμπιεστῶν χρησιμεύει εἴς τινας περιπτώσεις πρὸς ἐφοδιασμὸν τῶν ἀεροφυλακίων τῶν μηχανῶν ἕλξεως ὑπογείων συρμῶν.

***Ὑπόγειοι καὶ ἐπίγειοι μεταφοραί.*** Διὰ τὰς ὑπογείους μεταφορὰς εἰς μὲν τὰ ἐργοτάξια γίνεται χρῆσις τῆς βαρύτητος, ἐὰν ἡ κλίσις τὸ ἐπιτρέπῃ, δι' ὀλισθήσεως τῶν τεμάχων ἐπὶ τοῦ δαπέδου ἐντὸς καταλλήλων ἀνοιγμάτων ἢ ἐντὸς ἀνοικτῶν σταθερῶν κυλινδρικῶν ἐλασμάτων (λουκιῶν). Ὅταν ἡ κλίσις εἶναι μικροτέρα, γίνεται χρῆσις τοιούτων παλλομένων διὰ μηχανῆς πεπιεσμένου ἀέρος ἢ ἄλλως. Ἐπίσης γίνεται χρῆσις, ὅταν ἡ κλίσις εἶναι μικρὰ ἢ δὲν ὑφίσταται, κινητῶν ταινιῶν, ἐφ' ὧν φορτώνεται τὸ ὑλικόν. Ἡ χρῆσις τῶν μέσων τούτων ἐπέτρεψε κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τὴν ἐπιμήκυνσιν τῶν ἐργοταξίων εἴς τινας περιπτώσεις ἀπὸ 15 μέτρων εἰς 100 μέτρα, τὴν οἰκονομίαν τῆς χαράξεως καὶ τὴν ἔντασιν τῆς παραγωγῆς τοῦ ἐργοταξίου. Ἐπίσης γίνεται ἐνίοτε χρῆσις μικρῶν ἑλκύθρων συρομένων ἐπὶ τοῦ δαπέδου ἢ ἁπλῶν πτύων καὶ κανίστρων φερομένων ἐπὶ τῶν ἰσχίων διὰ τῶν χειρῶν τῶν μεταφορέων ἐργατῶν. Εἰς δὲ τὰς στοὰς σχεδὸν πάντοτε γίνεται χρῆσις γραμμῶν μετὰ βαγονέτων, αἵτινες ἀντικατέστησαν τὴν μεταφορὰν ἐντὸς κανίστρων ἢ ἑλκύθρων τῶν ἀρχαίων. Ἡ μεταφορὰ ἐντὸς κανίστρων ἢ σάκκων διετηρήθη εἰς τὰ σμυριδωρυχεῖα τῆς Νάξου, εἰς τὰ θειωρυχεῖα τῆς Σικελίας καὶ ἀλλαχοῦ. Ἐχρησιμοποιήθη καὶ τὸ μονότροχον, διατηρούμενον ἐν χρήσει εἰσέτι εἴς τινα προπαρασκευαστικὰ ἔργα καὶ κινούμενον συνήθως ἐπὶ τροχιᾶς ἐκ διπλοσανίδων. Ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος ἐχρησιμοποιήθη ὁ *ξυλόδρομος* ἐκ δύο σειρῶν διπλοσανίδων ἀπεχουσῶν κατὰ 0,03 μ. μόνον, ἐφ' ὧν ἐκινοῦντο βαγονέτα καλούμενα *κύνες* ἦσαν ξύλινα τετράτροχα φέροντα ἀντὶ ὄνυχος ἐπὶ τῶν τροχῶν χονδρὸν καρφίον ἐπὶ τοῦ ἑνὸς ἄξονος ὡς ὁδηγὸν κινούμενον ἐντὸς τῆς ἐγκοπῆς.

Ἡ συσκευὴ αὕτη, ἥτις ἦτο σοβαρὰ πρόοδος διὰ τὴν ἐποχήν της, ἀπετέλεσε τὸν πρόδρομον τῆς σιδηρᾶς γραμμῆς τῶν μεταλλείων καὶ τῶν σιδηροδρόμων ἐν γένει. Ἡ σιδηρᾶ γραμμὴ ἀποτελεῖται ἐκ ράβδων σιδηροδρομικῶν μετὰ κεφαλῆς καὶ πεδίλου ἐπὶ στρωτήρων ξυλίνων ἢ σιδηρῶν. Ἔχει πλάτος 50 ἕως 60 ἑκατοστομέτρων συνήθως καὶ

Digitized by Google

βάρος 6 ἕως 15 χγρ. κατὰ μέτρον (ὅταν κυκλοφορῶσι σχετικῶς βαρεῖαι μηχαναὶ κινητήριοι). Τὸ βάρος τῶν βαγονέτων μεταλλείων *(κουβάδων)* εἶναι συνήθως 250 χγρ. ἕως 400, φερόντων χρήσιμον φορτίον 450 ἕως 1000 χγρ., οὕτως ὥστε νὰ μετακινῶνται εὐκόλως ὑπὸ ἑνὸς ἢ δύο μεταφορέων. Ἡ κλίσις τῆς γραμμῆς διευκολύνει τὴν κίνησιν τῶν βαγονέτων. Διὰ μικρὰς ἀποστάσεις ἢ μικρὰν παραγωγὴν χρησιμοποιεῖται μόνον ἀνθρωπίνη δύναμις διὰ τὴν κίνησιν. Διὰ μεγαλυτέρας ἀποστάσεις σχηματίζονται ἁμαξοστοιχίαι ἐκ περισσοτέρων βαγονέτων συρομένων ὑπὸ ἵππων. Οἱ ἵπποι οὗτοι εἰς τὰ βαθέα φρέατα διαιτῶνται ἐντὸς καταλλήλων στάβλων ὑπογείων, οὐδέποτε ἐξερχόμενοι εἰς

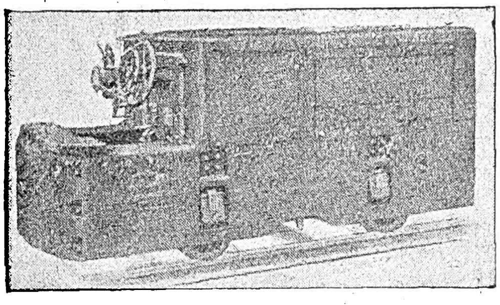

*Ρυμουλκὸς βενζίνης.*

τὴν ἐπιφάνειαν, παρὰ κατὰ τὰς ἡμέρας ἀργίας, ὅταν ὁ κλωβὸς τῆς μηχανῆς ἐξαγωγῆς εἶναι μέγας. Ἡ χρῆσις μηχανικῆς ἕλξεως γίνεται κατὰ πολλοὺς τρόπους καὶ ἐπιτρέπει οἰκονομίαν ἀπέναντι τῆς ἕλξεως δι' ἵππων. Δύναται νὰ γίνῃ χρῆσις μηχανῶν ἕλξεως, ἤτοι ἁμαξῶν ρυμουλκῶν (locomotives de mine), ἔνθα χρησιμοποιεῖται ὡς κινητήριος δύναμις ἀτμὸς μεθ' ἑστίας (μᾶλλον εἰς μόνον τὴν ἐπιφάνειαν), ἄνευ ἑστίας ἐναποθηκευομένου τοῦ ἀτμοῦ ἐντὸς τοῦ λέβητος καὶ γεμιζομένου εἰς τὸν σταθμὸν ἐκ σωλῆνος προσαγωγῆς τοῦ ἀτμοῦ (μικρᾶς διαδόσεως), ἠλεκτρισμοῦ μετὰ συσσωρευτῶν ἢ κάλλιον μετὰ σύρματος ἠλεκτροφόρου τάσεως 110 βόλτ συνεχοῦς ρεύματος τὸ πολὺ στηριζομένου ἐπὶ τῆς ὀροφῆς τῆς στοᾶς καὶ ἠλεκτροφόρου κεραίας ὡς τῶν τροχιοδρόμων, συστήματος ἀταγρευομένου εἰς πλεῖστα τμήματα λιθανθρακωρυχείων, πεπιεσμένου ἀέρος ἀνεφοδιαζομένου, ὡς ἀνωτέρω ἐρρέθη, καὶ μετὰ βενζινομηχανῆς ἢ κάλλιον πετρελαιομηχανῆς· τὸ τελευταῖον τοῦτο σύστημα εἶναι καὶ οἰκονομικόν, ὡς μὴ ἀπαιτοῦν ἐγκαταστάσεις καὶ οἰκονομικὸν εἰς τὴν κατανάλωσιν καυσίμου ὕλης, ὑπερτεροῦν πολλάκις καὶ τῆς συνήθους ἀτμαμάξης στενῆς γραμμῆς τῆς ἐπιφανείας, εἶναι δὲ ἀρκούντως ἀσφαλὲς κατὰ τῶν ἐκρήξεων ἀερίου, ἵνα ἐπιτρέπεται καὶ εἰς λιθανθρακωρυχεῖα. Ἡ χρῆσις πεπιεσμένου ἀέρος εἶναι ἔτι πλέον ἀσφαλὴς ἀλλὰ δαπανηρά.

Ἕτερον μέσον μηχανικῆς ἕλξεως εἶναι ἡ χρῆσις συρματοσχοίνου ἢ ἁλύσεως. Τοῦ συρματοσχοίνου γίνεται μεγάλη χρῆσις εἰς τὰ καλούμενα *κεκλιμένα ἐπίπεδα*, ἔνθα περιελίσσεται περὶ τροχαλίαν ἢ ἐπὶ δύο τυμπάνων ἀποτελούντων μέρος βαρούλκου εὑρισκομένου εἰς τὴν κεφαλὴν κεκλιμένης στοᾶς, ἐφ' ἧς κυκλοφοροῦσιν ἓν ἢ συνήθως δύο κατ' ἀντίθετον φορὰν βαγονέτα, συνδεδεμένα δι' ἀγκίστρου εἰς τὰ ἄκρα τοῦ συρματοσχοίνου, οὕτως ὥστε ὅταν τὸ ἓν ἀνέρχεται τὸ ἄλλο κατέρχεται. Τροχαλία μετὰ πέδης (φρένου) τοῦ βαρούλκου κανονίζει τὴν κίνησιν, ἥτις γίνεται εἴτε διὰ μόνης τῆς βαρύτητος, κατερχομένου τοῦ πλήρους βαγονέτου καὶ ἀναβιβάζοντος τὸ κενόν, εἴτε καὶ διὰ κινητῆρος, ὅταν εἶναι ἀνάγκη νὰ ἀνυψοῦνται καὶ πλήρη βαγονέτα. Τὰ κεκλιμένα ἐπίπεδα ἀποτελοῦσι σπουδαιότατον ὄργανον ὑπογείου μεταφορᾶς ἀπὸ πατώματος ἢ ὑποπατώματος εἰς τὴν κάτω στοὰν τοῦ πατώματος. Ἐπίσης γίνεται χρῆσις συρματοσχοίνου διὰ τὴν ὁριζοντίαν ἕλξιν βαγονέτων κατὰ τρόπον ἀσυνεχῆ, διὰ βαρούλκου μετὰ τυμπάνου, ἢ κατὰ τρόπον συνεχῆ δι' ἀτέρμονος συρματοσχοίνου, ἕλκοντος δύο ἀντιθέτους σειρὰς βαγονέτων, συνδεομένων αὐτομάτως ἐπ' αὐτῶν εἰς μικρὰς ἀπ' ἀλλήλων ἀποστάσεις ἐπὶ τοῦ καλωδίου καὶ ἀποσυνδεομένων ὁμοίων αὐτομάτως. Ἐπίσης διὰ τὸν σκοπὸν τοῦτον γίνεται μεγάλη χρῆσις ἁλύσεων, αἵτινες διὰ τοῦ βάρους των ἀκουμβῶσαι ἐπὶ δικράνου εἰς τὸ χεῖλος τοῦ βαγονίου παρασύρουσιν αὐτὰ καὶ ἀφήνουσιν αὐτομάτως δι' ἐλαφρᾶς ἀνυψώσεως τῆς ἁλύσεως εἰς τὸ τέρμα διὰ τροχαλιῶν (κρεμαστὴ ἅλυσις). Αἱ ἁλύσεις καὶ τὰ συρματόσχοινα εἰς τὰ πέρατα, ὡς καὶ εἰς τὰς καμπύλας, στηρίζονται ἐπὶ τροχαλιῶν, ὧν τινες δύνανται νὰ κινοῦνται ὑπὸ κινητῆρος ἐὰν ἡ γραμμὴ δὲν παρουσιάζῃ ἱκανὴν κλίσιν, ἵνα ἡ κίνησις εἶναι αὐτόματος· ὑπάρχει ἐπίσης τύμπανον τροχοπεδήσεως πρὸς διακοπὴν τῆς κινήσεως ὅταν εἶναι ἀνάγκη. Ἡ φόρτωσις τῶν βαγονέτων γίνεται διὰ χειρός, κανίστρων, πτύων, διὰ τῆς βαρύτητος, ἐὰν ἡ διάταξις τῶν στομίων τῶν λουκίων ἢ θαλάμων φορτώσεως τῶν ἐργοταξίων ἐπιτρέπουσιν αὐτό. Τελευταίως ἐχρησιμοποιήθησαν εἴς τινας περιπτώσεις συσκευαὶ ἐν εἴδει μικροῦ μηχανικοῦ πτύου χωροῦντος ἐντὸς τῶν ἐργοταξίων. Τὰ βαγονέτα ἐξέρχονται πρὸς τὰ ἔξω διὰ τῶν στομίων τῶν στοῶν, ἅτινα εἴτε εὑρίσκονται εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, εἴτε καταλήγουσιν εἰς τὸ πάτωμα φορτώσεως τοῦ φρέατος, ὅπου εἰσάγονται ἐντὸς τοῦ κλωβοῦ τῆς μηχανῆς ἐξαγωγῆς καὶ φέρονται εἰς τὴν ἐπιφάνειαν.

Ἐν πάσῃ περιπτώσει ἡ ἐκφόρτωσις γίνεται εἰς μὲν τὰ κοινὰ βαγονέτα δι' ἀνατροπέων, εἰς δὲ τὰς μικρὰς ἐκμεταλλεύσεις γίνεται χρῆσις βαγονέτων ἀνατρεπομένων εἰς τὸ πλευρὸν (κοιν. *κούνιαι*), ὡς εἰς τὰ ἔργα χωματισμοῦ, ἢ κάλλιον καθ' ὅλας τὰς διευθύνσεις στρεφομένων περὶ ἄξονα κατακόρυφον μετὰ ὁριζοντίου γιγγλύμου διὰ τὴν κένωσιν (κοιν. *σέσουλα*). Αἱ ἐπίγειοι μεταφοραὶ γίνονται εἴτε διὰ στενῶν γραμμῶν, ὡς αἱ ὑπόγειοι, εἴτε (ἰδίως μετὰ τὴν διαλογήν, πλύσιν, πλινθοποίησιν ἢ ἄλλην κατεργασίαν) διὰ γραμμῶν ὁμοίων πρὸς τὰς τῶν ὑπαρχόντων ἐν τῇ περιοχῇ σιδηροδρόμων, ὡς καὶ κεκλιμένων ἐπιπέδων ἐὰν εἶναι ἀνάγκη. Τὰ πλεῖστα τῶν σπουδαίων μεταλλείων ἔχουσιν ἴδιον δίκτυον γραμμῶν συνδεόμενον μὲ τὸ ὑπόλοιπον δίκτυον τῆς χώρας ἢ ἀπολῆγον εἰς λιμένας φορτώσεως, ποταμίους ἢ θαλασσίους· Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τὰ φορτηγὰ αὐτοκίνητα διηυκόλυναν μεγάλως καὶ ἐμείωσαν τὰς δαπάνας διὰ τὰς μεταφορὰς ἐπιφανείας τῶν μικροτέρων ἐκμεταλλεύσεων. Ἐν τούτοις γραμμὴ μεταλλείου στενή, κατάλληλος διὰ μηχανικὴν ἕλξιν διὰ πετρελαιομηχανῆς εἶναι οἰκονομικωτέρα κατὰ τὴν κατασκευὴν καὶ τὴν ἐκμετάλλευσιν, ἔστω καὶ στοιχειώδους ὁδοῦ μετὰ χρήσεως αὐτοκινήτων. Ἕτερον οἰκονομικὸν μέσον μεταφορᾶς ἐπιφανείας, κατάλληλον δι' ἀνώμαλα ἰδίως ἐδάφη καὶ ἀρκετὰ μεγάλην παραγωγήν, εἶναι οἱ καλούμενοι *ἐναέριοι μεταφορεῖς*. Οὗτοι συνίστανται ἐκ συρματοσχοίνων τεινομένων ἐπὶ πύργων ἐκ ξυλίνης ἢ σιδηρᾶς κατασκευῆς. Καὶ κατὰ μὲν τὸ σύστημα τοῦ μονοκαλῳδίου τὸ συρματόσχοινον, σχηματίζον κλειστὸν κύκλωμα ἐκ δύο κλώνων, ἑνὸς μεταβάσεως καὶ ἑνὸς ἐπιστροφῆς, κινεῖται ἐπὶ τροχαλιῶν κειμένων εἰς τὰ σημεῖα ὑποστηρίξεως καὶ τὰ τέρματα καὶ παρασύρει τὰ ἐπ' αὐτοῦ καταλλήλως ἀγκιστρούμενα καὶ ἐξαγκιστρούμενα συνήθως αὐτομάτως εἰδικὰ κρεμαστὰ βαγονέτα καὶ οὕτω σχηματίζεται σειρὰ πλήρων καὶ κενῶν βαγονέτων.

Κατὰ δὲ τὸ σύστημα τῶν δύο καλῳδίων ὑπάρχει σταθερὸν συρματόσχοινον στηριζόμενον ἐπὶ τῶν βάθρων καὶ ἕτερον κινητόν, ὅπερ παρασύρει τὰ βαγονέτα, ἕκαστον δὲ σχηματίζει κλειστὸν κύκλωμα ἐκ δύο κλώνων ὡς προηγουμένως. Τὰ βαγονέτα φέρουσι πρὸς τὰ ἄνω τροχαλίας, ἵνα κινῶνται ἐπὶ τοῦ σταθεροῦ καλῳδίου καὶ παρασύρωνται ὑπὸ τοῦ ἑτέρου. Κινητήριος δύναμις εἶναι πολλάκις ἡ βαρύτης, ὅταν ἡ γραμμὴ παρουσιάζῃ κατωφέρειαν πρὸς τὸν ἀκραῖον σταθμὸν προορισμοῦ, ἢ κινητὴρ κινῶν τὸ καλῴδιον ἕλξεως διὰ τροχαλιῶν. Οἱ ἐναέριοι εἶναι διαδεδομένοι καὶ ἐν Ἑλλάδι ἀπὸ πολλῶν δεκαετηρίδων. Εἶναι δὲ οἰκονομικοί, διότι ἀκολουθοῦσι πολλάκις εὐθεῖαν γραμμήν, ὑπερβαίνοντες εὐκόλως κοιλάδας καὶ ἀνωμαλίας τοῦ ἐδάφους.

***Ἐξαγωγή.*** Ἡ ἐξαγωγὴ εἶναι ἡ μεταφορὰ τῶν προϊόντων ἐκ τῶν ἔσω τοῦ μεταλλείου πρὸς τὰ ἔξω. Προκειμένου περὶ μεταλλείου, οὗ αἱ στοαὶ μεταφορᾶς ἐξέρχονται εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, αὕτη δὲν ἀποτελεῖ τι διάφορον τῆς ὑπογείου μεταφορᾶς.

Ὅταν ὅμως γίνεται διὰ φρέατος, ἀποτελεῖ ἴδιον θέμα μεγάλης σπουδαιότητος μόλις ἡ παραγωγὴ καταστῇ σημαντικὴ ἢ τὸ βάθος σημαντικόν. Ὁ ἁπλούστατος τρόπος ἐξαγωγῆς εἶναι ἡ χρῆσις χειροκινήτου μαγγάνου μετὰ σχοινίου καὶ κάδου, ὡς χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τῶν κοινῶν φρεατωρύχων, ἡ ἀπόδοσις ὅμως εἶναι ἐλαχίστη.

Ἡ χρησιμοποίησις τοῦ ἀτμοῦ καὶ εἶτα καὶ ἄλλων πηγῶν ἐνεργείας ἔδωσε πλήρη λύσιν εἰς τὸ πρόβλημα τῆς ἐξαγωγῆς. Ἡ συσκευὴ ἐξαγωγῆς διὰ φρεάτων ἢ βαρούλκων περιλαμβάνει σήμερον κινητήριον μηχανὴν κινοῦσαν τύμπανον ἢ τροχαλίαν, ἐφ' οὗ περιτυλίσσονται τὰ δύο καλῴδια ἐξαγωγῆς, ἓν ἀνερχόμενον καὶ ἓν κατερχόμενον, σύστημα τροχαλιῶν ἐξαγωγῆς ὑπὲρ τὸ φρέαρ διὰ τῆς μεταβολῆς τῆς κατευθύνσεως τῶν καλῳδίων, διότι κατὰ κανόνα ἡ μηχανὴ εὑρίσκεται παραπλεύρως τοῦ φρέατος, ἰκρίωμα ἐφ' οὗ στηρίζονται αἱ τροχαλίαι ἐξαγωγῆς, κλωβοὺς ἐντὸς τῶν ὁποίων εἰσέρχονται τὰ βαγονέτα καὶ ὁδηγοὺς διὰ τῶν ὁποίων κατευθύνεται ἐντὸς τοῦ φρέατος ἡ κίνησις τῶν κλωβῶν. Ἐπὶ πλέον τὰ φρέατα παρουσιάζουσι καταλλήλους διατάξεις φορτώσεως καὶ ἐκφορτώσεως τῶν κλωβῶν. Τέλος ἡ συσκευὴ ἐξαγωγῆς συμπληροῦται διὰ μέσων ἀσφαλείας καὶ συνεννοήσεως ὡς καὶ δεικτῶν θέσεως τῶν κλωβῶν. Ἡ κινητήριος μηχανὴ ἐξαγωγῆς εἶναι μεγάλη καὶ ἰσχυρὰ ἀτμομηχανή, ὁριζοντία συνήθως, μετὰ δύο τοὐλάχιστον κυλίνδρων, στερεωτάτης κατασκευῆς καὶ ὅσον τὸ δυνατὸν ἀλανθάστου. Ἀπό τινων ἐτῶν γίνεται χρῆσις τελειοτάτων ἀτμομηχανῶν μετὰ βαλβίδων καὶ ρυθμιζομένης ἐκτονώσεως κτλ. Ἡ ἀποκλειστικὴ χρῆσις ἀτμοῦ ὑπεχώρησεν ὀλίγον κατὰ τὴν τελευταίαν εἰκοσιπενταετίαν εἰς τὴν χρῆσιν ἠλεκτροκινητήρων, ἥτις παρουσιάζει ἰδιαιτέραν δυσκολίαν, διότι ἡ ἀπαιτουμένη ἐνέργεια εἶναι ὄχι μόνον μεγάλη, ἀλλὰ καὶ μεταβάλλεται ἀποτόμως, οὖσα μεγίστη κατὰ τὴν ἐκκίνησιν λόγῳ τοῦ μεγέθους τῶν κινουμένων μαζῶν καὶ ἐπιφέρουσα μεγίστας διακυμάνσεις εἰς τὸν σταθμὸν παραγωγῆς, δι' ὃ ἐπεκράτησαν δύο συστήματα ἰδίως μεταξὺ τῶν πολλῶν προταθέντων: 1) Τὸ σύστημα τῆς χρήσεως ἀπ' εὐθείας τριφασικοῦ ρεύματος εἰς ἀσύγχρονον κινητῆρα, ἐπὶ τῷ ὅρῳ ὅμως συνυπάρξεως πολλῶν ὁμοίων μηχανῶν καὶ ἄλλων μεγάλων κινητήρων, ἵνα κατὰ μέσον ὅρον ἐξισοῦταί πως ἡ ζητουμένη ἐνέργεια· οἱ κινητῆρες οὗτοι ἔχουσι καὶ τὸ μειονέκτημα ὅτι δὲν ἐπιτρέπουσιν ἀκριβῆ ρύθμισιν τῆς ταχύτητος. 2) Τὸ σύστημα τῆς χρήσεως ἐνδιαμέσου εἰδικῆς γεννητρίας δυναμομηχανῆς συνεχοῦς ρεύματος κινουμένης διὰ κινητῆρος δεχομένου τὸ ρεῦμα τοῦ σταθμοῦ (σύστημα Leonard) ἄνευ ἢ μετὰ βαρέος σπονδύλου (σύστημα Ilgner) ἐναποθηκεύοντος τὴν ἐνέργειαν καὶ ἐπαναδίδοντος αὐτὴν κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς ζητήσεως. Εἰς μικρὰς μεμονωμένας ἐγκαταστάσεις γίνεται χρῆσις καὶ μικρῶν πετρελαιοκινητήρων.

Τὰ καλῴδια ἐξορύξεως ἀποτελοῦσι τὸ ἀντικείμενον ἐξαιρετικῆς φροντίδος κατασκευῆς καὶ συντηρήσεως διὰ λόγους ἀσφαλείας. Ταῦτα κατασκευάζονται εἴτε ἐκ φυτικῆς οὐσίας ἀρίστης ποιότητος, μὴ σηπομένης, τῆς ἀγαύης τῆς Μανίλλης (ψευδοαλόης), εἴτε ἐκ χάλυβος μεγίστης ἀντοχῆς καὶ ἐξαιρετικῆς ποιότητος (καλουμένου νήματος κλειδοκυμβάλου), ἀντοχῆς ἀπὸ 180 ἕως 220 χγρ. κατὰ χσμ. τετρ. Συνεστραμμένα νήματα ἀποτελοῦσιν ἔμβολα, καὶ ταῦτα συνάπτονται ἢ παραπλεύρως ἀλλήλων σχηματίζοντα ταινίαν (ἐπίπεδα καλῴδια) ἢ συστρέφονται σχηματίζοντα στρογγύλον καλῴδιον, ὡς τὰ συνήθη σχοινία. Τὰ ἐξ ἀλόης φυτικά, λόγῳ τοῦ ἀπαιτουμένου πάχους, εἶναι πάντοτε ἐπίπεδα (χρησιμοποιούμενα εἰσέτι μεγάλως ἐν Βελγίῳ καὶ Γαλλίᾳ), τὰ δὲ χαλύβδινα εἶναι ἄλλοτε ἐπίπεδα καὶ ἄλλοτε στρογγύλα (τὰ πλέον διαδεδομένα σήμερον ἐν Ἀγγλίᾳ, Γερμανίᾳ, Ἀμερικῇ κτλ.). Τὰ καλῴδια ἔχουσι κατ' ἀνάγκην μέγα ἴδιον βάρος, πολλάκις πολλῶν χιλιογράμμων κατὰ μέτρον, ὑπολογίζονται δὲ μετὰ μεγάλης ἐπιμελείας μὲ συντελεστὴν ἀσφαλείας μέγαν.

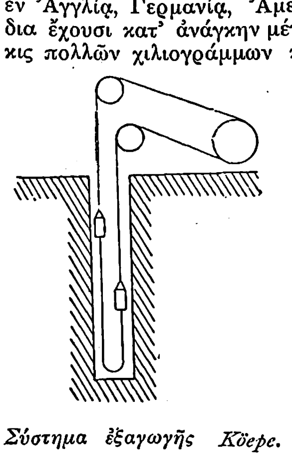

*Σύστημα ἐξαγωγῆς Κöepe.*

Τὰ ἰκριώματα φρεάτων, πολλάκις ὕψους μέχρι 50 μ., ἄλλοτε ξύλινα ἢ λιθόκτιστα, εἶναι σήμερον σιδηρᾶ ἢ καὶ ἐξ ὡπλισμένου σκυροκονιάματος. Οἱ κλωβοὶ εἶναι σιδηρᾶ συγκροτήματα φέροντα δάπεδα μετὰ τροχιῶν, ἅτινα δέχονται τὰ βαγονέτα, εἶναι δὲ πολλάκις πολυώροφοι, φέροντες 1, 2 μέχρι καὶ 16 βαγονέτων ἕκαστος. Ἄλλοτε δὲν ἐγίνετο χρῆσις κλωβῶν, ἀλλ' ἐρρίπτετο τὸ μετάλλευμα ἐντὸς κάδου προσδεδεμένου εἰς τὸ καλῴδιον·

Τὸ σύστημα τοῦτο χρησιμοποιεῖται κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἀνορύξεως τοῦ φρέατος, ὡς καὶ εἴς τινας περιπτώσεις μεταλλωρυχείων λίαν βαθέων, παρουσιαζόντων κεκλιμένον φρέαρ (ὁ κάδος καλεῖται *σκίπ*, ἀγγλ. skip), ὡς π. χ. εἰς τὰ ἀδαμαντωρυχεῖα καὶ χρυσωρυχεῖα τῆς Νοτίας Ἀφρικῆς. Εἰς τὴν θέσιν τοῦ κλωβοῦ δύναται νὰ τεθῇ εἰδικὸς κάδος διὰ τὴν ἄντλησιν τῶν ὑδάτων τοῦ πυθμένος τοῦ φρέατος.

Οἱ κλωβοί, οἱ κάδοι καὶ τὰ σκίπ, ἵνα μὴ συγκρούωνται πρὸς τὰς παρειὰς τοῦ φρέατος καὶ μὴ περιπλέκωνται τὰ καλῴδια, ὀλισθαίνουσι δι' ὀλισθήρων κατὰ μῆκος ὁδηγῶν, οἵτινες εἶναι καλῴδια μετάλλινα λεῖα ἐξωτερικῶς ἢ δοκοὶ ἐκ δρυὸς κατὰ μῆκος διατεθειμέναι ἢ καὶ ράβδοι σιδηροδρομικαί. Τὸ τύμπανον, ἐφ' οὗ περιτυλίσσονται κατ' ἀντίθετον ἕκαστον φορὰν τὰ στρογγύλα καλῴδια, διαιρεῖται εἰς δύο τμήματα συμμετρικὰ δι' ἕκαστον αὐτῶν καὶ εἶναι μεγάλης διαστάσεως, ἵνα τὸ καλώδιον τυλίσσεται εἰς μίαν μόνον διάστρωσιν ἄνευ ἐπικαλύψεως τῶν σπειρῶν. Διὰ τὰ ἐπίπεδα καλῴδια γίνεται χρῆσις δύο τροχαλιῶν, ἐφ' ὧν ἀντιθέτως περιτυλίσσονται αἱ σπεῖραι ἐπικαλύπτουσαι ἀλλήλας, ὡς προκειμένου περὶ ταινίας. Τὰ τύμπανα στρογγύλων καλῳδίων εἶναι πολλάκις κυλινδροκωνικά, ἵνα, ὅταν τὸ καλώδιον εἶναι ἐκτετυλιγμένον εἰς μέγα μῆκος ἐντὸς τοῦ φρέατος, ὁ μοχλοβραχίων γίνῃ μικρότερος καὶ ἡ ἀπαιτουμένη δύναμις διὰ τὴν κίνησιν ὁλοκλήρου τοῦ βάρους τοῦ καλῳδίου γίνῃ μικροτέρα. Τοῦτο συμβαίνει αὐτομάτως διὰ τὰς τροχαλίας περιτυλίξεως τῶν ἐπιπέδων καλῳδίων. Εἴς τινας περιπτώσεις ἐπεζητήθη ἡ ἰσορρόπησις τῶν στατικῶν τούτων ροπῶν τῶν κλωβῶν διὰ τῆς ἀναρτήσεως ὑπὸ τοὺς κλωβοὺς *καλῳδίου ἰσορροπίας* ἐπιπέδου, ἵνα μὴ συστρέφηται, οὕτως ὥστε τὸ μῆκος τῶν δύο κλώνων νὰ διατηρῆται ἴσον ἐντὸς τοῦ φρέατος εἰς οἱανδήποτε

Digitized by Google

θέσιν τῶν κλωβῶν ἐντὸς αὐτοῦ. Τοῦτο ἤγαγεν εἰς τὴν ἐπινόησιν τοῦ συστήματος τοῦ Koepe, καθ᾽ ὃ καταργεῖται τὸ τύμπανον καὶ χρησιμοποιεῖται μία τροχαλία ἀντ᾽ αὐτοῦ, ἐφ᾽ ἧς περιτυλίσσεται στρογγύλον καλῴδιον μοναδικόν.

Τὸ σύστημα τοῦτο διεδόθη μεγάλως εἰς τὰς ἠλεκτρικὰς μηχανὰς ἐξαγωγῆς. Διὰ τὴν εἴσοδον καὶ ἔξοδον τῶν βαγονέτων ἐκ τῶν κλωβῶν, οὗτοι σταματῶσι πρὸ τῶν ἀντιστοίχων δαπέδων τῶν διαφόρων πατωμάτων τοῦ ἐσωτερικοῦ καὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ στομίου τοῦ μεταλλείου, ὥστε νὰ ἐφάπτωνται αἱ τροχιαὶ αὐτῶν, κατάλληλοι δὲ μικροὶ κινητοὶ σύρται, προσηρμοσμένοι ἐπὶ τῶν πατωμάτων τοῦ φρέατος, χρησιμεύουσι διὰ τὴν στερέωσιν τοῦ κλωβοῦ κατὰ τοὺς χειρισμοὺς τῶν βαγονέτων, οἵτινες γίνονται πολλάκις αὐτομάτως πρὸς αὔξησιν τῆς ταχύτητος. Ὑπάρχουσι διάφορα συστήματα ἀσφαλείας καὶ διευκολύνσεως τῶν ἑλιγμῶν, ἤτοι τροχοπέδη διπλῆ ἐπὶ τροχαλίας παραλλήλου πρὸς τὰ τύμπανα, δείκτης τοῦ ὕψους εἰς ὃ εὑρίσκονται οἱ κλωβοὶ διὰ νὰ παρακολουθῇ τὴν κίνησιν ὁ μηχανοδηγὸς ἐκτὸς τοῦ θαλάμου τῆς μηχανῆς, σύστημα τροχοπεδήσεως αὐτομάτου μόλις εἷς κλωβὸς ὑπερβῇ τὸ ἐξωτερικὸν πάτωμα, ἵνα μὴ προσκρούσῃ ἐπὶ τῶν τροχαλιῶν τοῦ ἰκριώματος, σύστημα σημείων ἀκουστικῶν ἢ ὀπτικῶν μετὰ τῶν διαφόρων πατωμάτων, τηλέφωνον μετ᾽ αὐτῶν κτλ. Πολλάκις οἱ κλωβοὶ φέρουσιν ἐλατηριωτὸν ἀλεξίπτωτον, τὸ ὁποῖον συσφίγγεται ἐπὶ τῶν ὁδηγῶν μόλις συμβῇ ὁ κλωβὸς δι᾽ οἱανδήποτε αἰτίαν (θραῦσις καλῳδίου) νὰ παύσῃ ὑποστηριζόμενος ὑπὸ τοῦ καλῳδίου. Ἡ καλὴ λειτουργία τῆς συσκευῆς ἐξαγωγῆς ἐξασφαλίζεται δι᾽ ἐπιμελοῦς ἐπιβλέψεως τῶν μηχανημάτων καὶ λεπτομεροῦς καθημερινῆς ἐπισκέψεως τοῦ καλῳδίου. Ἡ ταχύτης ἣν μεταδίδουσιν εἰς τοὺς κλωβοὺς αἱ μηχαναὶ ἐξαγωγῆς εἶναι μεγάλη, ἂν καὶ στρέφονται βραδέως μᾶλλον, λόγῳ τῆς μεγάλης διαμέτρου τῶν τυμπάνων ἢ τροχαλιῶν. Οὕτω ταχύτης 12 ἕως 17 καὶ πλέον μέχρι καὶ 30 μέτρων κατὰ δευτερόλεπτον (45 ἕως 60 χλμ. καὶ 100 χλμ. καθ᾽ ὥραν περίπου) εἶναι συνήθης εἰς πλεῖστα ἀνθρακωρυχεῖα. Διὰ συντομεύσεως εἰς τὸ ἐλάχιστον τοῦ χρόνου τῆς σταθμεύσεως εἰς τὰ πατώματα διὰ τὴν εἴσοδον καὶ ἔξοδον τῶν βαγονέτων κατορθοῦται ἓν φρέαρ νὰ κάμνῃ 40 ἕως 50 διαδρομὰς ἁπλᾶς καθ᾽ ὥραν εἰς βάθος 500 μέτρων· ἐὰν ὁ κλωβὸς χωρῇ 6 βαγονέτα τῶν 500 χγρ., ἐξάγει καθ᾽ ὥραν 6×500×40 χγρ., ἤτοι 120.000 χγρ. ἢ 120 τόννους, καὶ εἰς τὸ ὀκτάωρον μιᾶς ἀλλαγῆς 900 ἕως 1000, ἤτοι ἐτησίως 300.000 τόννων ἄνθρακος.

***Κυκλοφορία τοῦ προσωπικοῦ.*** Ἡ εἴσοδος καὶ ἡ ἔξοδος τοῦ προσωπικοῦ γίνεται διὰ τῶν στοῶν καὶ τῶν φρεάτων. Ὅταν δὲ ὑπάρχωσι κεκλιμέναι στοαὶ μετρίας κλίσεως, χρησιμοποιοῦνται βαθμῖδες ἐσκαμμέναι ἢ κατεσκευασμέναι ἐπὶ τοῦ δαπέδου. Εἰς τὰ φρέατα γίνεται χρῆσις κλιμάκων σταθερῶν, ὧν ἑκάστη εἶναι μικροῦ μήκους καὶ παρουσιάζει ἀναπαυτήριον δάπεδον διὰ λόγους ἀνέσεως καὶ ἀσφαλείας. Αἱ κλίμακες κλείονται διὰ περιφράγματος λόγῳ ἀσφαλείας. Εἰς τὰς βαθυτέρας ἐξορύξεις αἱ κλίμακες χρησιμοποιοῦνται μόνον ὡς μέσον ἐπιβοηθητικόν, γίνεται δὲ ἡ κυκλοφορία τῶν ἐργατῶν καὶ τοῦ προσωπικοῦ διὰ τῶν κλωβῶν, λαμβανομένων ἰδιαιτέρων προφυλάξεων, ἤτοι ἐλαττώσεως τῆς ταχύτητος εἰς τὸ ἥμισυ τοὐλάχιστον (ὅριον 10 μ. κατὰ δευτερόλεπτον τὸ πολύ), τοποθετήσεως ἰδιαιτέρων θυρῶν εἰς τὸν κλωβὸν κτλ. Κατὰ τὸ 1833 ἐπενοήθη ἐν Γερμανίᾳ σύστημα μηχανικῶν κλιμάκων, διὰ τῶν ὁποίων δύναται νὰ γίνῃ ἡ κυκλοφορία τοῦ προσωπικοῦ ἐντὸς τῶν φρεάτων. Αἱ περίεργοι συσκευαὶ αὗται, ὧν τινες διατηροῦνται εἰσέτι ἐν Χάρτς, Σαξωνίᾳ, εἰς τὰ μεταλλεῖα κασσιτέρου τῆς Κορνουάλλης κ. ἄ., ἀποτελοῦνται ἐκ δύο κατακορύφων στελεχῶν κατὰ μῆκος τοῦ φρέατος, ταλαντευομένων λίαν βραδέως καὶ ἐναλλὰξ πρὸς τὰ ἄνω καὶ τὰ κάτω, οὕτως ὥστε, ὅταν τὸ ἓν ἀνυψοῦται, τὸ ἕτερον κατέρχεται· ἡ ταλάντωσις μεταδίδεται ὑπὸ ἀτμομηχανῆς μετὰ καταρράκτου. Τὰ στελέχη φέρουσι μικρὰ δάπεδα καὶ χειρολαβὰς εἰς ἀπόστασιν ἴσην πρὸς τὸ μῆκος τῆς ταλαντώσεως. Ὁ ἐπιθυμῶν νὰ ἀνέλθῃ ἢ νὰ κατέλθῃ μετατοπίζεται εἰς τὸ τέλος ἑκάστης ταλαντώσεως ἀπὸ τοῦ ἑνὸς στελέχους εἰς τὸ ἄλλο, ἤτοι ἀφήνει κατερχόμενος π. χ. τὸ πρῶτον, ὅταν τοῦτο πρόκειται νὰ ἀρχίσῃ ν᾽ ἀνέρχεται, καὶ μεταπηδᾷ εἰς τὸ δεύτερον, τὸ ὁποῖον πρόκειται ν᾽ ἀρχίσῃ νὰ κατέρχεται. Σταθερὰ ἀναπαυτήρια καὶ κλίμακες ἐξασφαλίζουσι τὸν χρησιμοποιοῦντα ἐν περιπτώσει λάθους κατὰ τὴν ἀλλαγὴν δαπέδου, βραδύτητος κτλ.

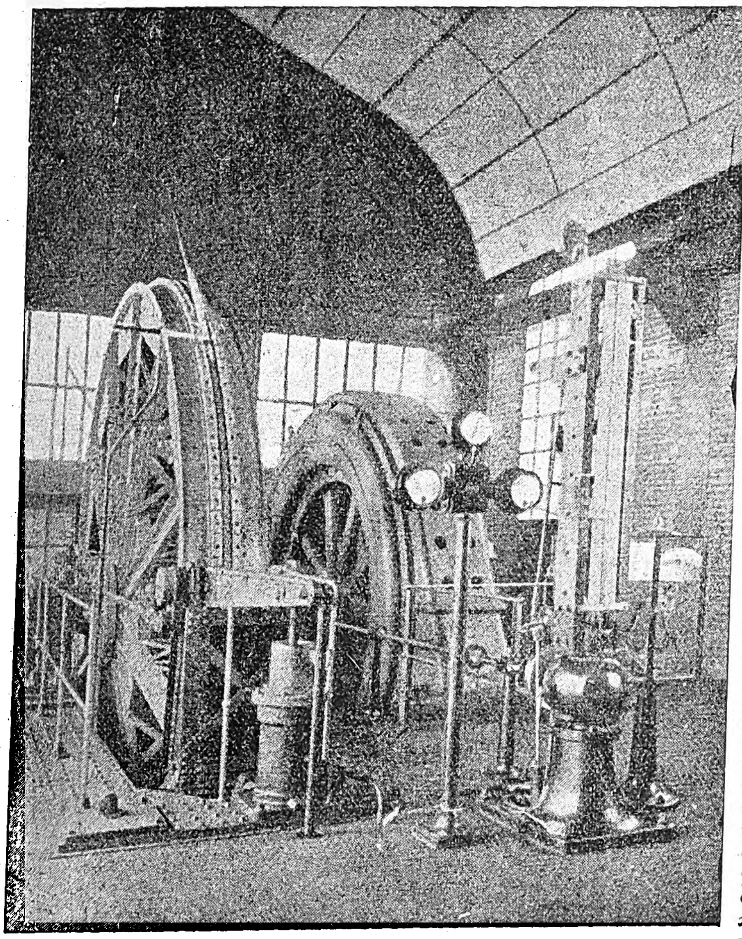

*Ἠλεκτρικὴ μηχανὴ ἐξαγωγῆς 1800 ἵππων Ward-Leonard.*
[Συστήματος Koepe.]

***Ἐξάντλησις τῶν ὑδάτων.*** Τὸ πρόβλημα τῆς ἐξαντλήσεως τῶν ὑδάτων ἀπετέλεσε τὴν ἀφορμὴν τῆς ἐπινοήσεως τῆς ἀτμομηχανῆς. Ἡ προφύλαξις ἀπὸ τῶν ὑδάτων δύναται νὰ γίνῃ καὶ διὰ διοχετεύσεως, ὅταν ἐπιτρέπῃ ἡ διαμόρφωσις αὐτῶν, ὡς καὶ διὰ διατηρήσεως ζώνης προστασίας μὴ ἀφαιρουμένης, ὅταν τὰ ὑδροφόρα στρώματα χωρίζωνται διὰ τοιαύτης ζώνης. Ἐπίσης ἡ χρῆσις τῶν στεγανῶν ἐπενδύσεως τῶν φρεάτων παρακωλύει, ὅταν ὑπέρκεινται ὑδροφόρα στρώματα, τὴν εἰσροὴν αὐτῶν εἰς τὰς ἐργασίας (ὡς ἐν τῇ γαλλοβελγοβεστφαλιακῇ ἀνθρακοφόρῳ λεκάνῃ, ἔνθα τὰ ὑπερκείμενα κρητιδιτικὰ ἐδάφη εἶναι καὶ ὑδροφόρα). Οὕτω κατορθοῦται νὰ προχωρήσωσι καὶ μεταλλεῖα ὑπὸ τὸν πυθμένα τῆς θαλάσσης, ὡς ἐν Κορνουαλλίᾳ, Νιουκάστελ, Νοτίᾳ Οὐαλλίᾳ, Ναγασάκι τῆς Ἰαπωνίας κτλ. Ἄλλο μέσον προστασίας κατὰ τῶν ὑδάτων εἶναι ἡ κατασκευὴ στοᾶς ἀποληγούσης εἰς ὑδροφόρον περιοχὴν φράγματος. Τὰ ῥέοντα ἐντὸς τῶν ἔργων μεταλλείου ὕδατα κατευθύνονται διὰ τῶν στοῶν, παρουσιαζουσῶν πάντοτε κατάλληλον κλίσιν, εἰς τὸ φρέαρ, εἰς τὸν πυθμένα τοῦ ὁποίου σχηματίζεται δεξαμενὴ ἀναλόγου ὄγκου ὑπὸ τὸ τελευταῖον πάτωμα. Τὰ ὕδατα ταῦτα πρέπει νὰ ἐξαντλῶνται. Ὁ ἁπλούστερος τρόπος ἐξαντλήσεως, ὅστις εἶναι πολλάκις λυσιτελὴς καὶ οἰκονομικός, εἶναι ἡ δι᾽ εὐκόλου χειρισμοῦ ἀντικατάστασις τῶν κλωβῶν διὰ δύο μεγάλων καδῶν ἐν εἴδει κινητῆς δεξαμενῆς, οἵτινες διὰ τῆς μηχανῆς ἐξαγωγῆς ἐμβυθιζόμενοι ἀλληλοδιαδόχως εἰς τὴν δεξαμενὴν τοῦ φρέατος ἀνυψοῦνται καὶ ἐκκενοῦνται διὰ καταλλήλων θυρῶν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν. Αἱ εἰς τὰ φρέατα μεταλλείων χρησιμοποιούμεναι ἀντλίαι εἶναι πολλῶν συστημάτων, κατάλληλοι διὰ παροχὰς μεγάλας καὶ διὰ πιέσεις ἐπίσης μεγάλας, λόγῳ τοῦ βάθους τῶν φρεάτων. Εἰς τὰ ἀντλιοστάσια τῶν μεταλλείων, ὅπου τὰ ὕδατα εἶναι πολλά, πρέπει διὰ πᾶν ἐνδεχόμενον νὰ ὑπάρχωσιν ἀντλίαι ἐν ἐπαρκεῖ ἐφεδρείᾳ. Τὸ μεγαλύτερον βάθος ἐξαντλήσεως διὰ μιᾶς μόνης καταθλίψεως εἶναι 900 μέτρων. Εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν μεταλλείων ἐσημειώθησαν μεγάλαι πλήμμυραι τῶν ὑπογείων ἔργων λόγῳ διαφόρων γεγονότων, ὡς συνεπείᾳ πλημμυρῶν τῆς ἐπιφανείας, συνεπείᾳ ἐξορύξεως, καθιζήσεως μετὰ διαταραχῆς τῶν στρωμάτων καὶ δημιουργίας ῥωγμῶν. Συνεπείᾳ τῶν γενομένων συστηματικῶν πολεμικῶν καταστροφῶν εἰς τὸ γαλλοβελγικὸν βόρειον μέτωπον τῷ 1918 ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, διερράγησαν πλεῖσται στεγαναὶ ἐπενδύσεις φρεάτων τῶν ὑδροφόρων κρητιδιτικῶν πετρωμάτων καὶ κατεκλύσθη μέγα μέρος τῆς ἀνθρακοφόρου ταύτης λεκάνης. Αἱ ἀνθρακευτικαὶ ἑταιρεῖαι ἐσχημάτισαν εἰδικὸν σύνδεσμον πρὸς ἐπισκευὴν τῶν φρεάτων καὶ ἐξάντλησιν τῶν ὑπογείων ὑδάτων· Διὰ τῆς ἐγκαταστάσεως ἰσχυροτάτων ἀντλητικῶν μέσων κατωρθώθη ἡ ἐντὸς πέντε ἐτῶν ἐξάντλησις πάντων, ἡ ἀνακατασκευὴ τῶν στεγανῶν ἐπενδύσεων καὶ ἐν γένει ἡ ἐπανεγκατάστασις τῶν ἐργασιῶν.

***Ἀερισμὸς καὶ ὑγιεινή.*** Εἰς βάθος 1000 μέτρων ἡ θερμοκρασία τῶν πετρωμάτων ὑπερβαίνει τοὺς $40^{\circ}$. Λόγῳ ἐπὶ πλέον τῆς ἐπικρατούσης ὑγρασίας τοῦ ἐδάφους, ἡ ἐργασία καθίσταται λίαν ἐπίπονος ἄνευ ἀερισμοῦ πρὸς ἐλάττωσιν τῆς θερμοκρασίας· ἤδη εἰς κεκορεσμένην ὑγρασίας ἀτμοσφαῖραν 26 μόνον βαθμῶν ἡ ἐργασία εἶναι σχεδὸν ἀδύνατος. Ἐξ ἄλλου ἡ ἀναπνοὴ τῶν ἐργατῶν, ἡ καῦσις τῶν λυχνιῶν καὶ πολὺ περισσότερον οἱ καπνοὶ τῆς ἀνατινάξεως τῶν ὑπονόμων μολύνουσι τὴν ἀτμοσφαῖραν τῶν μεταλλείων. Ἐπὶ πλέον αὕτη μολύνεται καὶ ὑπὸ τῆς κόνεως τῶν πετρωμάτων κατὰ τὴν ἐξόρυξιν (ἡ κόνις τοῦ λιθάνθρακος δὲν παρουσιάζει σπουδαίους κινδύνους εἰς τὴν ἀναπνοήν), ὧν ἰδίως ἡ χαλαζιακὴ ἔχει ὀξείας ἀκμὰς ἐπικινδύνους διὰ τοὺς πνεύμονας. Ἑτέρα αἰτία μολύνσεως τῆς ἀτμοσφαίρας τῶν μεταλλείων εἶναι ἡ ὀξείδωσις τοῦ ἄνθρακος τῶν σιδηροπυριτῶν, ἥτις παράγει ἀνθρακικὸν ὀξὺ (ἡ *ἀγκοῦσα* τῶν ἡμετέρων μεταλλευτῶν) ἀνεκτὸν μέχρι 2 % καὶ μονοξείδιον τοῦ ἄνθρακος εἴς τινας περιπτώσεις ἀσυγκρίτως πλέον ἐπικίνδυνον ὑπὸ ἀναλογίαν μόλις 0,01 %. Τὰ ἀέρια ταῦτα παράγονται καὶ ὑπὸ τῶν ἐκρηκτικῶν ὑλῶν. Καλὸς καὶ πλήρης ἀερισμὸς τῶν ὑπογείων ἐργασιῶν ἐξουδετεροῖ κατὰ μέγα μέρος τὰς ἄνω αἰτίας μολύνσεως καὶ δροσίζει τὸν τόπον τῆς ἐργασίας. Εἰς τὰ λιθανθρακωρυχεῖα ὑπάρχει καὶ ἄλλος λόγος τελείου ἀερισμοῦ, ἡ παρουσία τοῦ γνωστοῦ ἀναφλεξίμου ἀερίου, τὸ ὁποῖον ἐκλύεται ἀλλαχοῦ εἰς μεγάλας ποσότητας καὶ ἀλλαχοῦ εἰς μικράς. Τοῦτο, ἀποτελούμενον ἰδίως ἐκ μεθανίου $CH_4$, πυκνότητος πολὺ μικροτέρας τοῦ ἀέρος, εἶναι ἄχρουν καὶ ἄοσμον, δὲν εἶναι δηλητηριῶδες καὶ συγκεντρώνεται λόγῳ τοῦ βάρους αὐτοῦ εἰς τὰ ὑψηλὰ σημεῖα. Εἰς ἀναλογίας ἀπὸ 6 % μέχρι 16 % εἰς τὸν ἀέρα καθίσταται τὸ μεῖγμα ἐκρηκτικὸν ἀναφλεγόμενον. Ἀναφλέγεται δὲ εἰς $650^{\circ}$, παράγον κυανῆν φλόγα. Ὁ ἀερισμὸς ἐπιμελῶς γινόμενος ἀραιώνει τὴν ἀναλογίαν αὐτοῦ καὶ ἀποτελεῖ ἄριστον προφυλακτικὸν μέσον· Διὰ τοῦτο οἱ κανονισμοὶ ἐπιβάλλουσι συνεχῆ ἀνάλυσιν τοῦ ἀέρος τοῦ ἐξερχομένου ἐκ τῶν ἀνθρακωρυχείων καὶ τὴν τήρησιν τῆς ἀναλογίας εἰς μεθάνιον κάτω τοῦ 1 %.

Ὁ ἀερισμὸς εἰς τὰ μεταλλεῖα γίνεται διὰ τῆς κατ᾽ ἀρχὴν ὑπάρξεως δύο στομίων τοὐλάχιστον εἰς πᾶσαν ἐργασίαν (καὶ συνεπῶς δύο φρεάτων κτλ.), ἑνὸς διὰ τὴν εἴσοδον καὶ ἑνὸς διὰ τὴν ἔξοδον τοῦ ἀέρος. Εἰς πλείστας περιπτώσεις ἀρκεῖ ὁ φυσικὸς ἀερισμός, ὅστις σχηματίζεται ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, διότι τὸν μὲν χειμῶνα ἡ ἐσωτερικὴ θερμοκρασία εἶναι μεγαλυτέρα τῆς ἐξωτερικῆς, τὸ δὲ θέρος, ἀντιθέτως· κατὰ τὰς ἐνδιαμέσους δ᾽ ἐποχὰς ἐπικρατεῖ σχετικὴ ἀκινησία. Ὅσῳ βαθύτερα εἶναι τὰ μεταλλεῖα, τόσῳ περισσότερον εἶναι θερμὰ καὶ διατηρεῖται μακρότερον ἡ φορὰ τοῦ χειμερινοῦ ῥεύματος. Ἐν Ἑλλάδι τὰ μεταλλεῖα ἀερίζονται διὰ φυσικοῦ ἀερισμοῦ. Ὁ φυσικὸς ἀερισμὸς δὲν ἀρκεῖ εἰς μεταλλεῖα βαθύτερα καὶ μᾶλλον ἐκτεταμένα, καὶ ἰδίως εἰς τὰ λιθανθρακωρυχεῖα, ὅπου ἐπιβάλλεται ἡ ἀραίωσις τοῦ μεθανίου· διὰ τοῦτο χρησιμοποιεῖται τεχνητὸς ἀερισμός. Ἄλλοτε ἐγίνετο οὗτος διατηρουμένης πυρᾶς εἰς τὸ φρέαρ ἐξόδου ἀέρος. Ἤδη γίνεται χρῆσις ἀνεμιστήρων, ἀπορροφούντων τὸν ἀέρα διὰ τοῦ φρέατος ἐξόδου τοῦ ἀέρος, κλειομένου καταλλήλως τοῦ στομίου αὐτοῦ. Οἱ ἀνεμιστῆρες οὗτοι εἶναι μηχαναὶ μεγάλων διαστάσεων συστήματος περιστροφικοῦ ἐν εἴδει στροβίλου, κεντρόφυγες (Guibal, Ser), ἑλικοκεντρόφυγες ἢ ἑλικοειδεῖς (Rateau), κεντρομόλοι καὶ κεντρόφυγες συγχρόνως (Mortier). Ὑπάρχει πάντοτε καὶ ἐφεδρικὸς ἀνεμιστὴρ ἐγκατεστημένος. Ἐντὸς τῶν ἐργασιῶν ἰδίως τῶν ἀνθρακωρυχείων κανονίζεται τὸ ῥεῦμα τοῦ ἀέρος, ὥστε νὰ διέρχηται διὰ πάντων τῶν μερῶν ἀνερχόμενον, νὰ εἰσέρχηται δὲ εἰς τὸ κατώτερον μέρος διὰ τοῦ φρέατος ἐξαγωγῆς. Ὁ ἀὴρ ἔχει κίνησιν ἀντίθετον πρὸς τὴν τῶν ὀρυσσομένων πετρωμάτων, ἥτις ἀκολουθεῖ τὴν βαρύτητα. Θύραι μετὰ ἢ ἄνευ μικρῶν ἀνοιγμάτων ἢ ἁπλᾶ ὑφάσματα ἐν εἴδει παραπετασμάτων κανονίζουσι τὴν διεύθυνσιν τοῦ ῥεύματος ἀέρος, ὅπου εἶναι ἀνάγκη. Εἰς ἐργασίας ἄνευ διεξόδου χρησιμοποιεῖται διαχώρισμα στεγανὸν κατὰ μῆκος ἢ χονδροὶ σωλῆνες ἐξ ἐλάσματος, οἵτινες ἀρχίζοντες τιθέμενοι πλησίον κλειστῆς θύρας ἀναγκάζουσι τὸ ῥεῦμα ἀέρος νὰ διέλθῃ



Digitized by Google

δι' αὐτῶν μέχρι τῶν πρὸς ἀερισμὸν σημείων, ἐξερχόμενον διὰ τῆς στοᾶς. Αἱ θύραι αὗται ἀνοίγονται μόνον ἐπ' ὀλίγον διὰ τὴν διέλευσιν βαγονέτων ἢ τοῦ προσωπικοῦ. Ὅταν εἶναι ἀνάγκη, τὸ ρεῦμα τοῦ ἀέρος ἐντὸς τῶν σωλήνων τούτων παράγεται διὰ μικροῦ καταθλιπτικοῦ ἀνεμιστῆρος κεντρόφυγος, χειροκινήτου ἢ μηχανοκινήτου. Ἡ ταχύτης τοῦ ρεύματος ἀέρος μετρεῖται ἐντὸς τῶν στοῶν ὑπὸ τῶν μηχανικῶν δι' εἰδικοῦ ἀνεμομέτρου ἐν εἴδει ἑλικοειδοῦς μικροῦ ἀνεμομύλου. Καταγραφικὸν μανόμετρον καταγράφει τὴν διαφορὰν πιέσεως μετὰ τῆς ἀτμοσφαιρικῆς παρὰ τὸν ἀνεμιστῆρα.

Ἡ ὑγιεινὴ δίαιτα τῶν ἐργασιῶν ἐξασφαλίζεται διὰ τοῦ ἐπαρκοῦς ἀερισμοῦ, καθαριότητος κτλ. Ὁ περιορισμὸς τῆς διαρκείας τῆς ἐργασίας εἰς ὀκτὼ ὥρας δι' ἑκάστην ἀλλαγὴν (7 καὶ $7^1/_2$ ἐν Ἀγγλίᾳ σήμερον), καὶ εἰς 6 εἰς ἰδιαιτέρως θερμὰ καὶ ὑγρὰ σημεῖα, ὡς καὶ ἡ Κυριακὴ ἀργία, ἐξουδετέρωσαν μεγάλως τὰ μειονεκτήματα τῶν ὑπογείων ἐργασιῶν. Ἡ ὑπόγειος ἐργασία ἀπαγορεύεται εἰς πάσας τὰς χώρας εἰς γυναῖκας καὶ παιδία κάτω τῶν 12 ἐτῶν. Ἡ κυριωτέρα περίοδος ἐργασίας εἶναι τὸ πρωϊνὸν ὀκτάωρον, τὸ ὁποῖον περατοῦται τὰς πρώτας μεσημβρινὰς ὥρας (π. χ. 6 ἢ 7 π. μ. ἕως 2 ἢ 3 μ.μ.)· ἐνίοτε καὶ τὸ μεταμεσημβρινὸν ὀκτάωρον χρησιμοποιεῖται δι' ἐξόρυξιν. Τὸ νυκτερινὸν χρησιμοποιεῖται δι' ἐπείγοντα ἔργα (ἀνόρυξις φρεάτων, μεγάλων στοῶν, ἐπισκευαί). Ἡ ἐγκατάστασις εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα λουτρῶν διὰ καταιονήσεως, δι' ὧν λούονται ταχέως καὶ καλῶς οἱ ἐργάται μεθ' ἑκάστην ἀλλαγήν, ἡ δημιουργία εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα καὶ εἰς πλεῖστα μεταλλεῖα ὑγιεινῶν ἐργατικῶν κατοικιῶν μετὰ κηπαρίων ἐν εἴδει κηπουπόλεων, ἀπαστραπτούσης τάξεως καὶ καθαριότητος καὶ διαφόρων κοινοχρήστων οἰκημάτων (ἐκκλησιῶν, σχολείων, κέντρων ἀναψυχῆς, γηπέδων παιδιῶν), ἡ βελτίωσις τῶν ἀμοιβῶν, ἀνύψωσε τὴν κοινωνικὴν θέσιν τῶν μεταλλευτικῶν πληθυσμῶν, ἀπεμάκρυνεν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ ἀλκοολισμοῦ καὶ τοὺς κατέστησεν ὑγιεῖς. Ἡ δὲ νομοθεσία, πλὴν τοῦ ὀκταώρου ἐργασίας, θεσπισθέντος τὸ πρῶτον διὰ τὰ μεταλλεῖα, πρὸς καθιέρωσιν ὑφισταμένης ἤδη καταστάσεως εἰς πλείστας μεταλλευτικὰς περιφερείας, καθιέρωσεν ἐπίσης τὴν λειτουργίαν ταμείων συντάξεων καὶ προνοίας ἐν περιπτώσει ἀτυχημάτων (παρ' ἡμῖν νόμος ‚ΒΩΜΑ'), ἀσθενείας, ἀνικανότητος, λόγῳ γήρατος κτλ. Καὶ ἡ σημερινὴ εἰκὼν τῆς μεταλλευτικῆς ζωῆς εἰς πολλὰ πόρρω ἀπέχει τῆς τόσον ἐναργῶς ἀπεικονιζομένης εἰς τὸ διάσημον μυθιστόρημα «Germinal» τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς φυσιοκρατικῆς σχολῆς Ë. Zola. Ἐκ τῶν ἐπικρατουσῶν εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν μεταλλείων ἀσθενειῶν ἡ σπουδαιοτέρα εἶναι ἡ *ἀγκυλοστομίασις*, ἥτις ὡς ἐπιδημικὴ δύναται νὰ ἀποφευχθῇ. Εἴς τινα μεταλλωρυχεῖα, ὅπου συμβαίνει νὰ ὑπάρχῃ μεγάλη ποσότης κόνεως χαλαζίου ἐκ μηχανικῆς διατρήσεως, πρέπει νὰ λαμβάνωνται εἰδικαὶ προφυλάξεις διὰ τὴν μὴ εἰσπνοὴν αὐτῶν, διότι ὁδηγοῦσιν εὐκόλως εἰς τὴν φυματίασιν. Ὁ *νυσταγμὸς* (βλ. λ.) τῶν ὀφθαλμῶν μεταλλευτῶν τινων δὲν ἀποτελεῖ σοβαρὰν πάθησιν. Μεταλλεῖά τινα, ὡς τὰ τοῦ ὑδραργύρου ἐν Ἀλμαδέν, ἀπαιτοῦσιν εἰδικὴν βαθμιαίαν προσαρμογὴν τῶν ἐργαζομένων, ὁμοίως ἀρσενικοῦχά τινα. Εἴς τινα μολυβδοῦχα παρουσιάζεται *μολυβδίασις*, ἰδίως διότι οἱ ἐργάται τρώγουσιν ἐντὸς τοῦ μεταλλείου, χωρὶς νὰ νίπτωνται προηγουμένως (βλ. καὶ λ. *γεωθερμία*).

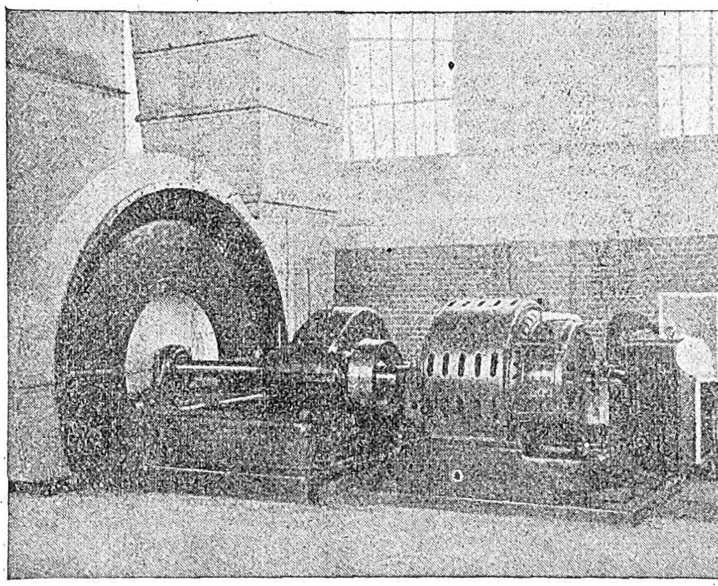

*Ἀνεμιστὴρ ἑλικοκεντρόφυξ διαμέτρου 2. 20 μ.*

***Φωτισμός.*** Πᾶν πρόσωπον εἰσερχόμενον εἰς μεταλλεῖον ὀφείλει νὰ εἶναι ἐφωδιασμένον δι' ἀτομικῆς λυχνίας. Αἱ λυχνίαι, ἀναλόγως τῶν μεταλλείων, εἶναι ἀνοικτῆς φλογὸς ἢ ἀσφαλείας. Ὅπου δὲν ὑπάρχει μεθάνιον, γίνεται χρῆσις τῶν πρώτων. Αὗται ἦσαν εἰς τὴν ἀρχαιότητα πήλινοι ἢ χάλκινοι λύχνοι ἐλαίου, κατόπιν μετάλλινοι, διατηρηθέντες μέχρι πρὸ ὀλίγων ἐτῶν, ὅτε ἀντικατεστάθησαν σχεδὸν πανταχοῦ διὰ τῶν γνωστῶν λυχνιῶν ἀσετυλίνης, εἰσαχθεισῶν ἀπὸ τοῦ 1895, αἵτινες ὄχι μόνον παρέχουσιν ἰσχυρὸν λευκὸν καὶ σταθερὸν φῶς, ἀλλὰ καὶ δὲν μολύνουσι τὴν ἀτμοσφαῖραν διὰ τοῦ σχηματισμοῦ αἰθάλης, ὡς αἱ λυχνίαι ἐλαίου καὶ εἶναι καὶ οἰκονομικώτεραι. Διὰ τὴν γόμωσιν τῶν ὑπονόμων οἱ ἐργάται δέον νὰ ἐφοδιάζωνται διὰ κλειστῶν λυχνιῶν προστατευομένων δι' ὑαλίνων παρειῶν. Μόνιμοι ἐγκαταστάσεις ἠλεκτροφωτισμοῦ δὲν γίνονται εἰμὴ μόνον εἰς στόμια φρεάτων καὶ μεγάλας τινὰς στοὰς ἰσχυρᾶς κυκλοφορίας, διότι αἱ ἐργασίαι τῶν μεταλλείων εἶναι ἐγκατεσπαρμέναι εἰς σημεῖα ἀπέχοντα πολλάκις πολὺ ἀλλήλων ὅπου δὲν ὑπάρχει κατάλληλος διανομὴ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος. Τὸ ζήτημα τοῦ φωτισμοῦ τῶν ἀνθρακωρυχείων παρουσίασεν ἀνυπερβλήτους κινδύνους μέχρι τῆς εἰσαγωγῆς τῆς ἀσφαλιστικῆς λυχνίας Davy (1815), λόγῳ τοῦ δυνατοῦ τῆς ἀναφλέξεως τοῦ μεθανίου. Αἱ ἀσφαλιστικαὶ λυχνίαι στηρίζονται ἐπὶ τῆς ἰδιότητος ἣν ἔχουσι μεταλλικὰ ὑφάσματα (πλέγματα), νὰ μὴ ἐπιτρέπωσι τὴν μετάδοσιν τῆς φλογός, διότι ψύχουσι τὰ ἀέρια τῆς καύσεως. Οὕτως, ἐὰν ἡ φλὸξ τῆς λυχνίας περιβάλλεται πανταχόθεν ὑπὸ μεταλλίνου πλέγματος, ἐμβαπτιζομένη εἰς ἀτμοσφαῖραν μεθανίου ἀναφλέξιμον, μεταδίδει μὲν τὴν ἀνάφλεξιν εἰς τὸ ἐντὸς τῆς λυχνίας μεῖγμα, ὅπερ καίεται ἀπονόμως καὶ σβήνει συγχρόνως τὴν φλόγα, ἄνευ ὅμως ἄλλου κινδύνου. Εἰς τὴν ἀρχικὴν λυχνίαν προσετέθη ταχέως ὑάλινος δακτύλιος, ὅστις ηὔξησε τὴν φωτιστικὴν αὐτῆς δύναμιν (Clanny), κατόπιν δὲ καὶ μικρὰ καπνοδόχος ἐσωτερικῶς, προκαλοῦσα τὸν σχηματισμὸν ζώνης κεκαυμένων ἀερίων ἄνωθι τῆς φλογὸς καὶ ἐμποδίζουσα ἔτι μᾶλλον τὴν μετάδοσιν τῆς ἐκρήξεως (λυχία βελγικὴ Mueseler). Εἰς τὰς νεωτέρας λυχνίας συνήθως ὑπάρχει διπλῆ ἐπικάλυψις διὰ μεταλλίνων ὑφασμάτων, ἵνα μὴ δύναται νὰ γίνῃ ἀνάφλεξις καὶ εἰς ρεῦμα ἐκρηκτικοῦ μείγματος ἀερίων ταχύτητος σημαντικῆς μέχρι 8 μ.. κατὰ δευτερόλεπτον, ὁπότε μὲ τὴν ἁπλῆν λυχνίαν Davy ἡ φλὸξ διεπέρα τὸ πλέγμα. Ἐπὶ πλέον τὸ πλέγμα προφυλάσσεται διὰ μεταλλίνου θώρακος· τέλος, ἀντὶ ἐλαίου χρησιμοποιεῖται μεῖγμα ἐλαίου καὶ βενζίνης ἢ κάλλιον μόνον βενζίνη, ὁπότε αὐξάνει ἡ φωτιστικὴ δύναμις κατὰ πολὺ (1 ἕως 1,5 κηρίου)· ἐπὶ πλέον προσετέθη εἰδικὸς ἐσωτερικὸς ἀναπτήρ, διὰ νὰ δύναται νὰ ἀνάπτῃ ἐκ νέου ἐντὸς τῆς ἐργασίας ἐὰν σβεσθῇ, δι' ἀνατροπῆς, δι' ἀναφλέξεως μεθανίου κλπ. (λυχνίαι Mueseler τελειοποιημέναι, Fumat, Marsaut, Joris, Wolf). Πᾶσαι αἱ λυχνίαι αὗται φέρουσι σύστημα κλεισίματος διὰ μολυβδίνης σφραγῖδος ἢ μαγνητικόν, ἵνα μὴ τυχὸν ἀνοιχθῶσιν ἐντὸς τῶν ἐργασιῶν, ἔχουσι δὲ τὴν πολύτιμον ἰδιότητα ὅτι ἐπιτρέπουσι τὴν ἀνίχνευσιν τοῦ μεθανίου εἰς τὰ ἔργα· διότι ὅταν ἡ ἀτμοσφαῖρα περιέχῃ μικρὰς ἀναλογίας μεθανίου, τοῦτο καίεται σχηματίζον περὶ τὴν φλόγα κυανῆν ἅλω καὶ τὴν σβήνει ἐὰν ἡ ἀναλογία εἶναι ἐκρηκτικὴ (μεταξὺ 6 καὶ 16 %). Ἐπὶ τῆς ἰδιότητος ταύτης στηρίζονται αἱ γριζουμετρικαὶ λυχνίαι (Lampe grisoumétrique Chesneau), αἵτινες φέρουσι κανόνα βαθμολογημένον διὰ τὴν μέτρησιν τοῦ ὕψους τῆς ἅλω περὶ φλόγα, τηρουμένης εἰς ὡρισμένας διαστάσεις. Δι' αὐτῶν γίνεται ἀκριβεστέρα ἀνίχνευσις τοῦ μεθανίου.

Διὰ τῆς ἐφευρέσεως τῶν ἠλεκτρικῶν λυχνιῶν πυρακτώσεως μετὰ μεταλλίνου νήματος (βολφραμίου κτλ.) κατωρθώθη ἀπὸ εἰκοσαετίας ἡ πρακτικὴ κατασκευὴ λυχνιῶν ἀσφαλείας μὲ τάσιν μόνον 2 βόλτ περίπου, ἐχουσῶν ὡς πηγὴν ἠλεκτρισμοῦ ἕνα συσσωρευτὴν βάρους περίπου μόνον 2 χγρ. καὶ φωτιστικῆς δυνάμεως 1.5 κηρίου, αἵτινες διεδόθησαν μεγάλως. Ἀλλ' ἐπειδὴ δὲν ἐπιτρέπουσι τὴν ἀνίχνευσιν τοῦ μεθανίου, διατηρεῖται πάντοτε εἰς τὰ ἐργοστάσια ἀναλογία λυχνιῶν ἐλαίου ἢ βενζίνης. Ἐννοεῖται ὅτι ἔχουσιν ἐπινοηθῇ κατάλληλοι προφυλάξεις, διὰ νὰ μὴ εἶναι δυνατὸς ὁ σχηματισμὸς σπινθήρων ἔξω τῆς λυχνίας ἐκ τοῦ διακόπτου αὐτῆς. Αἱ ἀσφαλιστικαὶ λυχνίαι, ἠλεκτρικαὶ καὶ μή, παραδίδονται εἰς τοὺς ἐργάτας καὶ τὸ προσωπικὸν καθ' ἑκάστην καὶ παραλαμβάνονται παρ' αὐτῶν μετὰ τὴν ἔξοδον ἐκ τῶν ἐργασιῶν καὶ ἐναποτίθενται εἰς εἰδικὰ παρὰ τὰ φρέατα *λυχνιοστάσια*, ὅπου καθ' ἑκάστην ἐπιθεωροῦνται, καθαρίζονται, ἀνεφοδιάζονται εἰς καύσιμον ὕλην ἢ εἰς ἠλεκτρισμόν, ἐπιθεωροῦνται πάλιν καὶ κλείονται καταλλήλως. Τὰ λυχνιοστάσια χρησιμεύουσι συγχρόνως καὶ διὰ τὸν ἔλεγχον κατὰ τὴν εἴσοδον καὶ ἔξοδον τοῦ προσωπικοῦ εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα.

***Ἐξέτασις καὶ πρόληψις κινδύνων.*** Οἱ κοινοὶ εἰς πάσης φύσεως μεταλλεῖα καὶ λατομεῖα κίνδυνοι εἶναι: οἱ ἐκ τῶν καταπτώσεων ὄγκων (κοιν. *βουλιμέντο, μπουλιμέντο*), ἐκ τῆς χρήσεως ἐκρηκτικῶν ὑλῶν, ἐργαλείων, τῆς κυκλοφορίας τῶν βαγονέτων ἐντὸς τῶν φρεάτων, πτώσεως ἐντὸς φρεάτων, πλημμυρῶν, ἀσφυξίας λόγῳ ἐλλείψεως ἀερισμοῦ ἢ ἐκφυγῆς ἀνθρακικοῦ ὀξέος, πυρκαϊᾶς ὑλικῶν κλπ. Εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα προστίθενται καὶ ἄλλοι, ὡς οἱ τοῦ μεθανίου, οἱ τῆς ἀναφλέξεως κόνεως γαιανθράκων, οἱ τοῦ μονοξειδίου ἄνθρακος, ὡς καὶ τῶν αἰφνιδίων ἐκπομπῶν ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Αἱ πυρκαϊαὶ εἰς ἀνθρακωρυχεῖα εἶναι μᾶλλον ἐπεισόδια, προλαμβανόμενα καὶ καταπολεμούμενα συστηματικῶς. Αἱ ἐκρήξεις μεθανίου καὶ κόνεως γαιανθράκων διὰ τὸν πολλάκις μέγαν ἀριθμὸν τῶν θυμάτων καταπλήσσουσι τὴν κοινὴν γνώμην, ἀλλὰ δὲν ἀποτελοῦσι πλέον, χάρις εἰς τὰ λαμβανόμενα μέτρα, τὸν σπουδαιότερον κίνδυνον τῶν μεταλλείων, ὅστις εἶναι αἱ συχναὶ καταπτώσεις ὄγκων. Μόνον καλὴ ξυλοδεσία καὶ ἐξέτασις τῆς ὀροφῆς καὶ τῶν παρειῶν, ἡ καλὴ ἐκλογὴ τῶν ἐργατῶν τῶν ἐπὶ κεφαλῆς συνεργείων καὶ τῶν ἐπιστατῶν, ἡ μέχρι σχολαστικισμοῦ ἐπίβλεψις τῶν ἐργοταξίων στοῶν καὶ φρεάτων, συμφώνως πρὸς τοὺς εἰδικοὺς δι' ἕκαστον μεταλλεῖον κανονισμούς, μειώνουν τοὺς κινδύνους τούτους. Τὸ αὐτὸ λεκτέον καὶ περὶ τῆς χρήσεως ἐκρηκτικῶν ὑλῶν, ἐργαλείων, κυκλοφορίας βαγονέτων, ἀσφυξίας κλπ. Εἰδικῶς εἰς τὰ φρέατα, ὅπου ἡ κυκλοφορία τοῦ προσωπικοῦ γίνεται διὰ τῶν κλωβῶν τῆς μηχανῆς ἐξαγωγῆς, ὑπάρχει εἰδικὴ ἐπίβλεψις τοῦ καλῳδίου καὶ τῶν συσκευῶν, ἀπαιτεῖται δὲ ἡ παρουσία καὶ δευτέρου μηχανοδηγοῦ πλησίον τοῦ ἐπιφορτισμένου τὴν λειτουργίαν τῆς μηχανῆς κλπ. Ἡ χρῆσις ἠλεκτρικῆς ἐναύσεως τῶν ὑπονόμων μειώνει τοὺς κινδύνους ἐκ καθυστερημένης μεταδόσεως τοῦ πυρὸς ὑπὸ τῆς θρυαλλίδος. Οἱ κίνδυνοι πλημμυρῶν ἀφορῶσι μᾶλλον εἰς ὑλικὰς ζημίας ἢ εἰς πρόσωπα, προλαμβάνονται δὲ διὰ τῆς ἐπιβλέψεως τῶν στεγανῶν ἐπενδύσεων τῶν φρεάτων, διὰ φραγμάτων καὶ ἐπαρκῶν ἐγκαταστάσεων ἀντλιῶν.

Τὸ μεθάνιον δὲν ὑπάρχει ἐξ ἴσου εἰς ὅλα τὰ λιθανθρακωρυχεῖα, ἅτινα διαιροῦνται εἰς ἐστερημένα αὐτοῦ, εἰς ἔχοντα μετρίαν ποσότητα καὶ εἰς λίαν μεθανιοφόρα. Ὑπάρχει εἰς ἐξαιρετικὰς περιπτώσεις, εἴς τινα ἄλλα μεταλλεῖα, ὡς τὸ μεταλλεῖον γαληνίτου τῆς Pontpéan (διαμέρισμα Tele-et-Villaîne τῆς Γαλλίας), ἁλατωρυχεῖα, θειωρυχεῖα. λατομεῖα ἀργίλλου· καὶ εἰς τὸ Λαύρειον ἀκόμη ἐνεφανίσθη. Τὸ ἀέριον τοῦτο ὑπάρχει ὑπὸ ἄγνωστον μορφὴν ἐντὸς τῶν λιθανθράκων καὶ ἐκλύεται ὁτὲ μὲν κανονικῶς ἐξ ὅλου τοῦ μετώπου τοῦ στρώματος, ὁτὲ δὲ ἐκ ρωγμῶν, μεταπτώσεων, γειτονευόντων ἐδαφῶν, καὶ ἄλλοτε ἐξ ὡρισμένων σημείων τοῦ στρώματος μετὰ συριγμοῦ ἐν εἴδει δέσμης ἀερίου (φυσητήρ). Εἴς τινα τέλος κοιτάσματα, ὀλίγα εὐτυχῶς (Βελγίου καὶ Νοτίου Γαλλίας) ἐκλύεται ἀποτόμως εἰς τοιαύτας ποσότητας, ὥστε ἐξακοντίζει τὸν λιθάνθρακα τοῦ μετώπου εἰς κόνιν εἰς μεγάλην ἀπόστασιν, μέχρι τῆς ἐπιφανείας διὰ τοῦ φρέατος (π. χ. εἰς τὸ ἀνθρακωρυχεῖον L'Agrappe τῷ 1879 τοιαύτη στιγμιαία ἔκλυσις ἐξηκόντισε 400 τόννους ἄνθρακος, ἐκλυθέντων 100.000 κυβικῶν μέτρων ἀερίου. Αἱ στιγμιαῖαι ἐκλύσεις εἶναι λίαν ἐπικίνδυνοι, διότι προκαλοῦσι, καὶ χωρὶς νὰ ἀναφλεγῶσι, διὰ τῆς ποσότητος αὐτῶν ἀσφυξίαν καὶ διὰ τῆς βιαιότητος αὐτῶν δυστυχήματα. Εἶναι γνωστὸν ἐξ ἄλλου ὅτι εἰς τὴν Πενσυλβανίαν ὑπάρχει τοιαύτη ἔκλυσις μεθανίου ἐκ τῶν ἐδαφῶν, ὥστε γίνονται γεωτρήσεις καὶ χρησιμοποιεῖται ἀντὶ φωταερίου ὡς φυσικὸν ἀέριον. Ἔκλυσις φυσικοῦ ἀερίου ὑπάρχει καὶ ἐν Θεσσαλίᾳ. Καὶ τὸ ἀνθρακικὸν ὀξὺ ἐμφανίζεται συχνάκις ἐντὸς παντὸς εἴδους μεταλλείων, εἰς δὲ τὰ ἀνθρακωρυχεῖα ὄχι μόνον ὡς προϊὸν ὀξειδώσεως ἢ ὑπογείων πυρκαϊῶν, ἀλλ' ἐνίοτε καὶ ὡς ἔκλυσις, προκαλοῦν διὰ στιγμιαίας ἐκλύσεως ὅμοια ὡς τὰ ἄνω φαινόμενα. Εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα τῆς νοτίου Γαλλίας τοῦ διαμερίσματος τοῦ Gard συμβαίνουν πολλαὶ τοιαῦται ἐκλύσεις, ὧν μία ἡ τῆς 6 Ἰουλίου 1907 ἐξηκόντισε 4.000 τόννους γαιανθράκων· ἡ δέσμη ἔφθασε διὰ τῶν φρεάτων εἰς ὕψος 36 μέτρων, τὸ δὲ ἐκλυθὲν ἀνθρακικὸν ὀξὺ ἐπροκάλεσε τὴν ἀσφυξίαν τριῶν ἐργατῶν ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας καὶ ἐγένετο αἰσθητὸν εἰς ζώνην 1300 μέτρων ἀπὸ τοῦ φρέατος ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας. Ἡ ἔκλυσις συνέβη κατὰ τὴν ἀνάφλεξιν τῶν ὑπονόμων, ἥτις γίνεται εἰς τοιαῦτα ἀνθρακωρυχεῖα ὅταν ἐξέλθῃ ὅλον τὸ προσωπικόν.

Πολλαὶ ἐκρήξεις μεθανίου ἐφόνευσαν πάντας τοὺς ἐργαζομένους εἰς τὸ διαμέρισμα ἐργάτας. Ἡ ἀποτελεσματικὴ καταπολέμησις αὐτῶν ἠλάττωσε κάπως τοὺς κινδύνους. Στηρίζεται δ' αὕτη κατὰ πρῶτον εἰς ἐπιμελῆ καὶ ἐπιστημονικὸν ἀερισμὸν πάντων τῶν ἐν λειτουργίᾳ μερῶν τοῦ ἀνθρακω-

Digitized by Google

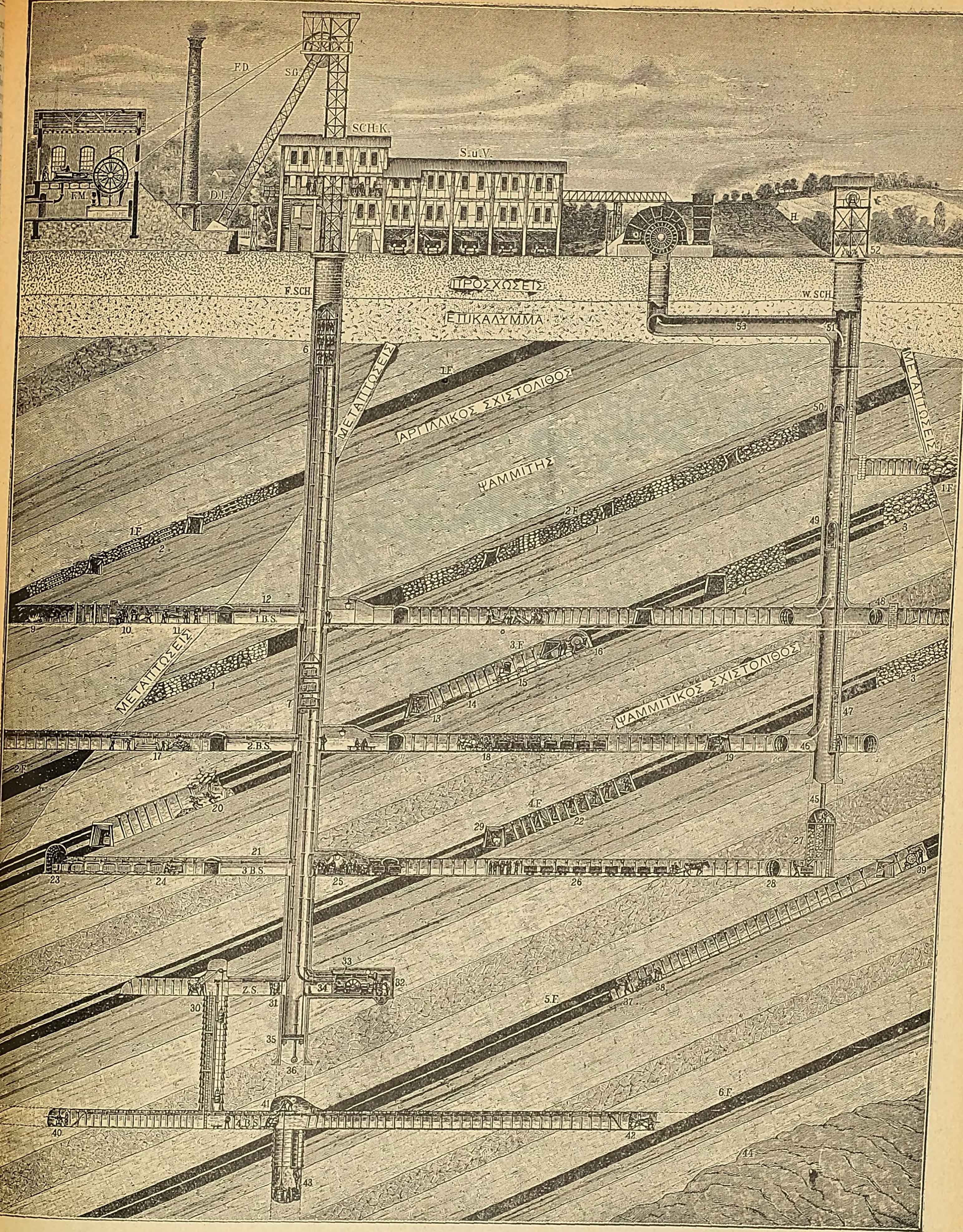


*Σχηματικὴ παράστασις μεταλλείου.*

(F M=μηχανὴ ἐξαγωγῆς, F.D=καλώδιον ἐξαγωγῆς, S.G=ἰκρίωμα τροχῶν μηχανῆς ἐξαγωγῆς, D.L=σωλὴν ἀτμαγωγός. SCH K=ὑπόστεγον φρέατος, S.u.V=διαλογὴ καὶ φόρτωσις, V=ἀνεμιστήρ, H=σωρὸς ἀπορριμμάτων, F.SCH=φρέαρ ἐξαγωγῆς, W.SCH=φρέαρ ἀερισμοῦ, WerW=μετάπτωσις, 1-6F=στρῶμα (φλέψ) γαιάνθραχος, 1-4B S=κάτω στοὰ πατώματος ἐξορύξεως, ZS=ἐνδιάμεσος στοὰ πατώματος ἐξορύξεως. 1=Δεύτερον στρῶμα ἐξορυσσόμενον μετὰ λιθογομώσεως διὰ τῆς μεθόδου τῶν προχωρούντων μετώπων· φαίνονται οἱ περὶ τὸ φρέαρ ἀφιέμενοι στῦλοι προστασίας. 2=Σωρὸς ξύλων ἐντὸς λιθογομώσεως τοῦ στρώματος ὑπ' ἀριθ. 1. 3=Λιθογόμωσις εἰς τὸ ἄνω μέρος μέχρι τοῦ στύλου προστασίας τοῦ φρέατος ἐξορυχθέντων μερῶν τῶν στρωμάτων 3 καὶ 4. 4=Ὁμοίως εἰς τὸ στρῶμα ὑπ' ἀριθ. 3. 5=Ἐπένδυσις στρογγύλου φρέατος ἐξαγωγῆς ἐκ τοιχοποιίας. 6=Τριώροφος κλωβὸς ἐξορύξεως, κινούμενος μεταξὺ συρματοσχοινίνων ὁδηγῶν, πλήρης ἐργατῶν κατερχομένων. 7=Ὁ ἕτερος κλωβός, πλήρης βαγονέτων, ἀνερχόμενος. 8=Μεταλλευταὶ ἀλλάσσοντες ξύλον ὑποστηρίξεως τεθραυσμένον. 9=Πυρκαϊὰ τμήματος. 10=Μεταλλευταὶ ἐκτελοῦντες φράγμα ἐκ χώματος πρὸς ἀποκλεισμὸν τῆς πυρκαϊᾶς. 11=Μεταλλευταὶ μεταφέροντες συνάδελφον παθόντα ἐκ τῶν ἀερίων τῆς πυρκαϊᾶς. 12=Σωλῆνες ἀερισμοῦ, προσαγωγῆς καθαροῦ ἀέρος. 13=Πρόοδος κεκλιμένου ἐπιπέδου τοῦ στρώματος ὑπ' ἀριθ. 3 καὶ στόμιον στοᾶς μεταφορᾶς κατὰ διεύθυνσιν. 14=Ἀντίβαρον κεκλιμένου ἐπιπέδου κινούμενον ἐπὶ γραμμῆς. 15=Φορεῖον κεκλιμένου ἐπιπέδου μετὰ φορτωμένου βαγονέτου. 16=Τροχαλία μετὰ τροχοπέδης τῆς κεφαλῆς τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου. 17=Ἀποθήκη ξύλων τοῦ 2ου πατώματος ἐξορύξεως. 18=Ἵππος ἕλκων συρμὸν φορτωμένων βαγονέτων ἐντὸς ἐγκαρσίας στοᾶς μεταφορᾶς τοῦ 2ου πατώματος ἐξορύξεως. 19=Κατὰ διεύθυνσιν κεντρικὴ στοὰ μεταφορᾶς τοῦ στρώματος ὑπ' ἀριθ. 4 μετὰ ἐνισχυμένης ξυλοδεσίας. 20=Ὀρύκται φεύγοντες πρὸ τῆς κατακρημνίσεως πετρωμάτων τῆς ὀροφῆς. 21=Ἀγωγὸς πεπιεσμένου ἀέρος. 22=Ὀρύκται ἐνεργοῦντες τὴν ἐξόρυξιν εἰς τὸ στρῶμα ὑπ' ἀριθ. 4, ἀνοίγοντες ὑπονόμους ἀνατινάξεως ἢ ἐργαζόμενοι διὰ σφηνῶν. 23=Κεντρικὴ κατὰ διεύθυνσιν στοὰ τοῦ στρώματος ὑπ' ἀριθ. 3 μεταφορᾶς μετὰ ὑποστηρίξεως ἐκ σιδηρῶν τόξων. 24=Ἠλεκτρικὴ ῥυμουλκὸς ἕλκουσα συρμὸν βαγονέτων ἄνθρακος. 25=Μεταλλευταὶ εἰς τὸν σταθμὸν φορτώσεως τοῦ 3ου πατώματος ἕτοιμοι πρὸς ἔξοδον (ἀλλαγή). 26=Ἵππος ἕλκων συρμὸν κενῶν βαγονέτων. 27=Ἀνόρυξις ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω πρὸς ἐκβάθυνσιν τοῦ φρέατος ἀερισμοῦ· κάτω, μεταφορεὺς φορτώνων πετρώματα ἐκσκαφῆς. 28=Στοὰ περὶ τὸ φρέαρ τοῦ 3ου πατώματος (ὅμοιαι εἰς 2ον καὶ 1ον πάτωμα). 29=Στοὰ μεταφορᾶς κατὰ διεύθυνσιν μετὰ πλαισίου ξυλοδεσίας (ὡς 4 καὶ 13). 30=Ἐργάται εἰς μάγγανον (βαροῦλκον) ἐξαγωγῆς, ἐξάγοντες κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν ἐκβαθύνσεως τυφλοῦ φρέατος σιδηροῦν κάδον πλήρη ὑλικῶν καὶ καταβιβάζοντες κενόν. 31=Κάδος πλήρης πετρωμάτων ἀχρήστων ἐπὶ ἐπιπέδου βαγονέτου (κοινῶς γαϊδούρας) πρὸς ἀποκομιδήν. 32=Ὑπόγειος μεγάλη ἀντλία κινουμένη ὑπὸ ἀτμομηχανῆς μετὰ σφονδύλων. 33=Σωλὴν καταθλίψεως πρὸς ἀνύψωσιν τοῦ ὕδατος. 34=Ἀγωγὸς ἀτμοῦ. 35=Σύστημα δι' οὗ τείνονται οἱ ἐκ συρματοσχοίνου ὁδηγοὶ τοῦ φρέατος ἐξορύξεως. 36=Δεξαμενὴ συγκεντρώσεως τῶν ὑδάτων μετὰ ἀπορροφητικοῦ σωλῆνος τῆς ἀντλίας. 37=Ὀρύκται ἀνορύσσοντες πρὸ τὰ κάτω στοὰν κεκλιμένην εἰς τὸ στρῶμα ὑπ' ἀριθ. 5. 38=Βοηθοὶ ὀρυκτοὶ φορτώνοντες βαγονέτον μὲ ἄνθρακα. 39=Βαροῦλκον λειτουργοῦν δι' ἠλεκτρισμοῦ. 40=Μηχανὴ διατρητική, κινουμένη διὰ πεπιεσμένου ἀέρος, στηριζομένη ἐπὶ ὀρθοστάτου εἰδικοῦ, λειτουργοῦσα πρὸς ἀνόρυξιν ἐντὸς τοῦ βράχου ἐγκαρσίας στοᾶς τοῦ 4ου πατώματος πρὸς συνάντησιν τῶν στρωμάτων 4 ἕως 1. 41=Ἐξαγχίστρωσις κάδου πλήρους, προερχομένου ἐξ ἐργασίας ἐκβαθύνσεως φρέατος. 42=Διατρητικὴ μηχανὴ ὡς 40 ἐπὶ τρίποδος πρὸς ἀνόρυξιν τῆς ἐγκαρσίας στοᾶς πρὸς τὸ στρῶμα ὑπ' ἀριθ. 6. 43=Μεταλλευταὶ ἐκβαθύνοντες τὸ φρέαρ ἐξαγωγῆς. 44=Στρώματα ἀρχαιότερα τοῦ λιθανθρακοφόρου ἄγονα. 45=Διάτρησις ἀερισμοῦ τῆς ἐργασίας 27. 46=Ῥεῦμα ἀπαγωγῆς ἀέρος μολυσμένου 2ου πατώματος· ὁ καθαρὸς ἀὴρ εἰσέρχεται διὰ τοῦ φρέατος ἐξαγωγῆς. 47=Τμῆμα κλιμάκων τοῦ φρέατος ἀερισμοῦ μετὰ ἐνδιαμέσων δαπέδων ἀναπαύσεως. 48=Φράγμα ἐκ τοιχοποιίας εἰς τὸ πρῶτον πάτωμα πρὸς ἀποκλεισμὸν τοῦ κακοῦ ἀέρος τῶν ἐξορυχθέντων τμημάτων τοῦ ὑπ' ἀριθ. 4 στρώματος. 49, 50=Στόμα ἀπαγωγῆς ἀέρος τῶν στρωμάτων 3 καὶ 2 εἰς τὸ φρέαρ ἀερισμοῦ. 51=Ῥεῦμα ἀέρος ἐκ τοῦ φρέατος ἀερισμοῦ πρὸς τὸν ἀνεμιστῆρα. 52=Στεγανὴ βαλβὶς καλύπτουσα τὸ φρέαρ ἀερισμοῦ, φορτωμένη μὲ βάρη. Ἄνωθι βαροῦλκον τοῦ φρέατος ἐν περιπτώσει ἀνάγκης. 53=Ἀγωγὸς ἀναρροφήσεως τοῦ ἀνεμιστῆρος, ἐκ τοιχοποιίας.)

Digitized by Google

ρυχείου, πάντοτε ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω, εἰς ἀποκλεισμὸν τῶν παλαιῶν ἔργων διὰ καλῶν λιθογομώσεων τοὐλάχιστον τῶν ὁρίων αὐτῶν, εἰς διαίρεσιν τοῦ ἀερισμοῦ ἐν παραλλήλῳ εἰς κυκλώματα κεχωρισμένα ὄχι μόνον δι' ἕκαστον διαμέρισμα ἀλλὰ καὶ τμῆμα ἐργοταξίων, εἰς ἐπίβλεψιν καὶ μέτρησιν τῆς ταχύτητος τοῦ ρεύματος ἀερισμοῦ, εἰς διαρκῆ ἐπίβλεψιν πρὸς ἀνίχνευσιν τοῦ μεθανίου διὰ τῆς κοινῆς ἀσφαλιστικῆς λυχνίας τῶν ἄνω σημείων τῶν ἐργοταξίων στοῶν ἐπιστροφῆς τοῦ ἀέρος ὑπὸ τῶν ἐπὶ κεφαλῆς καὶ τῶν προϊσταμένων συνεργείου, τῶν ἐπιστατῶν καὶ μηχανικῶν, εἰς μέτρησιν τῆς ἀναλογίας τοῦ μεθανίου διὰ μετρητικῶν λυχνιῶν καὶ μέτρησιν αὐτῆς εἰς τὸ στόμιον τοῦ ἀνεμιστῆρος ἀναρροφήσεως. Κατὰ δεύτερον λόγον εἰς τὴν ἀποκλειστικὴν χρῆσιν ἀσφαλιστικῶν λυχνιῶν. Καὶ τέλος εἰς τὴν χρῆσιν δι' ἀνατινάξεις ὑπονόμων μόνον ἐκρηκτικῶν ὑλῶν ἀσφαλείας (ἀντιγριζουτικῶν). Αἱ τοιαῦται ἐκρηκτικαὶ ὗλαι στηρίζονται ἐπὶ τῆς ἰδιότητος τοῦ μείγματος μεθανίου καὶ ἀέρος νὰ μὴ ἀναφλέγεται ὑπὸ φλογὸς ἀμέσως, ὅταν ἡ θερμοκρασία αὐτῆς εἶναι μᾶλλον χαμηλή, ἀλλὰ μετὰ μακροτέραν παραμονὴν ἐν ἐπαφῇ μετὰ τῆς φλογός. Ἡ χρῆσις τοῦ ἠλεκτρισμοῦ εἰς τοιαῦτα ἀνθρακωρυχεῖα διὰ κινητήριον δύναμιν ἐπιτρέπεται μόνον ἐν μέρει καὶ ἰδίως εἰς τὰς εἰσόδους ἀέρος, πάντως δὲ οἱ κινητῆρες, διακόπται κτλ. πρέπει νὰ φέρωσιν εἰδικὰ προστατευτικὰ καλύμματα διὰ τοὺς σχηματιζομένους ἠλεκτρικοὺς σπινθῆρας, ὧν ἡ θερμοκρασία εἶναι λίαν ὑψηλή.

Κατὰ τῶν φυσητήρων καὶ τῶν ἀποτόμων ἐκλύσεων μεθανίου καὶ ἀνθρακικοῦ ὀξέος γίνονται προκαταβολικῶς εἰς τὰ μέτωπα μικραὶ διατρήσεις καθέτως πρὸς αὐτὰ πρὸς ἀνίχνευσιν τῆς διαίτης τοῦ ἀερίου ἐντὸς τοῦ στρώματος, τὸ ὁποῖον ἄλλως τε πολλάκις καθίσταται σαθρὸν ἢ τρίζει πρὸ τῆς ἐκλύσεως. Εἰς στρώματα γνωστὰ ὡς ὑποκείμενα εἰς ἀποτόμους ἐκλύσεις, λαμβάνεται τὸ ριζικὸν καὶ ἀποτελεσματικὸν μέτρον τῆς ἐξορύξεως δι' ὑπονόμων ἀνατινασσομένων ἠλεκτρικῶς ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας μετὰ τὴν ἔξοδον τοῦ συνόλου τῶν ἐργατῶν. Ἑτέρα αἰτία σοβαρὰ ἀτυχημάτων εἶναι αἱ ἐκρήξεις κόνεως γαιανθράκων, ἥτις εἴς τινα ἀνθρακωρυχεῖα παρουσιάζεται ἐν ἀφθονίᾳ λόγῳ τῆς ποιότητος γαιανθράκων τινῶν. Οὗτοι τιθέμενοι ἐν αἰωρήσει δύνανται ὑπὸ ὡρισμένους ὅρους νὰ ἀναφλεγῶσιν ὑπὸ λυχνιῶν γυμνῆς φλογὸς ἢ ὑπὸ ὑπονόμων καὶ διὰ τοῦ σχηματιζομένου ρεύματος ἀέρος νὰ ἀνασηκώσωσι τὴν κόνιν τῶν στοῶν καὶ ἐργοταξίων καὶ νὰ προκαλέσωσι γενικὴν ἔκρηξιν, ἥτις καίει καὶ φονεύει ἀνατρέπουσα τὰ πάντα, ὡς τὸ μεθάνιον. Εἰς ἔκρηξιν κόνεως ὀφείλεται ἡ μεγίστη ἐκ τῶν ἀναφερομένων ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῶν μεταλλείων καταστροφὴ τῶν ἀνθρακωρυχείων τῆς Courrières ἐν τῷ διαμερίσματι Pas-de Calais τῆς βορείου Γαλλίας (10 Μαρτίου 1906), ἥτις ἐφόνευσε 1099 ἐργάτας, ἐκ τῶν 1664 εὑρισκομένων εἰς τὰ πληγέντα κέντρα ἐξορύξεως. Πρὸς καταπολέμησιν τῶν ἐκρήξεων τούτων ἐφαρμόζεται ἡ ἀρχὴ τῆς διαιρέσεως τοῦ ἀερισμοῦ, διὰ τῆς ἀφαιρέσεως τῆς κόνεως, πράγματος πολλάκις ἀνεφίκτου πρακτικῶς, διὰ καταβρέγματος πρὸ τῆς ἀνατινάξεως τῶν ὑπονόμων εἰς ἱκανὴν ἔκτασιν πρὸ αὐτῶν, ἢ καὶ διὰ τῆς ἀναμείξεως τῆς κόνεως γαιανθράκων δι' ἱκανῆς ἀναλογίας κόνεως ἀγόνων σχιστολίθων, οἵτινες συνοδεύουσι τὰ στρώματα γαιανθράκων καὶ διὰ τῆς χρήσεως ἐκρηκτικῶν ὑλῶν δεδοκιμασμένων εἰς τοὺς σταθμοὺς δοκιμασίας. Τὸ ρεῦμα ἀερισμοῦ ἐπὶ πλέον πρέπει νὰ μὴ εἶναι πολὺ ζωηρόν, διότι διευκολύνει τὴν διάδοσιν τῆς φλογὸς ἔξω τῶν λυχνιῶν ἀσφαλείας, ἀλλὰ καὶ τὴν αἰώρησιν τῆς κόνεως. Εἰς τὰ μεγάλα ἀνθρακοπαραγωγικὰ κράτη λειτουργοῦσιν ἐπιστημονικοὶ σταθμοὶ δοκιμασίας λυχνιῶν, ἐκρηκτικῶν ὑλῶν, συσκευῶν παντὸς εἴδους ἐντὸς στοῶν δοκιμασιῶν, ὧν ἡ ἀτμοσφαῖρα δύναται νὰ πληρωθῇ κατὰ βούλησιν δι' ἀερίων διαφόρου φύσεως καὶ ἀναλογίας. Διὰ τῶν λαμβανομένων μέτρων καὶ τῆς μορφώσεως πεπειραμένου ἐργατικοῦ προσωπικοῦ οἱ κίνδυνοι τῶν μεταλλείων μειοῦνται. Οὕτω ἡ ἐτησία ἀναλογία θανατηφόρων ἀτυχημάτων ἐπὶ 1000 ἐργατῶν ὑπογείως ἐργαζομένων διατηρεῖται ἀπὸ πολλῶν δεκαετηρίδων εἰς 1 ἕως 2 (Βέλγιον 0.95, Γαλλία 1.00, Ἀγγλία 1.24, Πρωσσία 1.80, Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι 2.50 λόγῳ χρησιμοποιήσεως ἐργατῶν ἀπείρων). Μεταξὺ τῶν αἰτιῶν θανατηφόρων ἀτυχημάτων ἀνθρακωρυχείων ἐπὶ 100 τοιούτων 40 % ὀφείλονται εἰς καταπτώσεις, 5 % μόνον εἰς μεθάνιον ἢ ἐκρήξεις κόνεως, 25 % εἰς πτώσεις ἐντὸς φρεάτων, 3 % εἰς ἐκρηκτικά, 20 % εἰς κυκλοφοριακὰ ἀτυχήματα. Ἐν Ἑλλάδι ἡ ἀναλογία ἐτησίων θανατηφόρων ἀτυχημάτων μεταλλείων ἐπὶ 1000 ἐργατῶν ἐπιφανείας καὶ ὑπογείων ἐργασιῶν εἶναι ἐπίσης χαμηλή, 0,50 τῷ 1929 κατὰ στατιστικὴν τοῦ ὑπουργείου Ἐθνικῆς Οἰκονομίας. Τὰ ἀτυχήματα προλαμβάνονται διὰ τῶν μέτρων ἀσφαλείας, ὅσον εἶναι δυνατόν, ἐὰν δὲ συμβῶσι, πρέπει νὰ ὑπάρχῃ ἐκ τῶν προτέρων πρόγραμμα μέτρων σωτηρίας μετὰ τῶν ἀπαιτουμένων ὑλικῶν, ἀναπνευστικῶν συσκευῶν κτλ. διὰ τὸ προσωπικὸν ἐπικουρίας. Εἰδικαὶ δὲ ὁμάδες ἐργατῶν ἐξασκοῦνται, ἵνα σχηματίζωσι προσωπικὸν ἐπικουρίας.

***Ἐγκαταστάσεις διαλογῆς, πλύσεως, ἐμπλουτισμοῦ καὶ ἐν γένει μηχανικῆς προπαρασκευῆς.*** Ἐκ τῶν ἐξαγομένων ὑλικῶν τῶν μεταλλείων τὰ μὲν εἶναι στεῖρα πετρώματα, ἅτινα δὲν ὑπάρχει χῶρος νὰ διατεθῶσιν εἰς λιθογομώσεις ὑπογείως καὶ ἀπορρίπτονται εἰς σωρούς, τὰ δὲ εἶναι χρήσιμα προϊόντα. Ταῦτα, ἄνθρακες ἢ μεταλλεύματα, ἔχουσι πολλάκις ἀνάγκην καθαρισμοῦ δι' ἐμπλουτισμοῦ ἢ μετασκευῆς πρὸς χρησιμοποίησιν ὑπὸ τοῦ ἐμπορίου ἢ καμίνευσιν ἐὰν πρόκειται περὶ μεταλλευμάτων. Ὁ ἁπλούτερος τρόπος *ἐμπλουτισμοῦ* εἶναι ἡ *διαλογή,* ἥτις εἰς τὸ πρῶτον στάδιον ἐφαρμόζεται ἤδη προχείρως καὶ εἰς τὰ ἐργοτάξια τῆς ἐξορύξεως. Ἡ διαλογή, γινομένη διὰ τῆς χειρός, εἶναι ἀποτελεσματικὴ προκειμένου περὶ τεμαχίων σχετικῶς μεγαλυτέρων, καὶ συμπληροῦται πολλάκις διὰ θραύσεως διὰ μικρᾶς σφύρας, ὥστε ν' ἀποχωρίζωνται τὰ στεῖρα μέρη. Πρὸς τοῦτο τὰ ὑλικά, προερχόμενα ἐξ ἀνατροπέων τῶν βαγονέτων, κατευθύνονται διὰ τῆς βαρύτητος εἰς ἀποθήκας εἰς τὸ ἄνω μέρος τοῦ κτηρίου ἐμπλουτισμοῦ καὶ ἐξ αὐτῶν πίπτουσιν ἐπὶ κοσκίνων ἐπιπέδων, μετὰ ἢ ἄνευ τιναγμῶν, ἢ περιστροφικῶς· καὶ τὰ μὲν μεγαλύτερα διέρχονται ἐπὶ ἀτερμόνων ταινιῶν πρὸ τῶν ἐργατριῶν διαλογῆς, αἵτινες διαχωρίζουν τὰ ἄγονα ἢ τὰ μεικτὰ τεμάχια, ἀπομακρύνουσαι αὐτὰ εἰς παρακειμένους ὑποδοχεῖς, τὸ δὲ ἀπομένον καθαρὸν προϊὸν μεταβαίνει αὐτομάτως εἰς τὰς ἀποθήκας. Τὰ μεικτὰ τεμάχια ἀποχωρίζονται ἐνίοτε διὰ τῆς σφύρας θραυόμενα καὶ εἶτα ὑποβάλλονται εἰς μηχανικὰς προπαρασκευὰς μετὰ τῶν λεπτοτέρων κατηγοριῶν. Ἡ μηχανικὴ προπαρασκευὴ στηρίζεται ἐπὶ διαδοχικῆς ταξινομήσεως τῶν ὑλικῶν διὰ κοσκινίσματος κατὰ μέγεθος: 1) κατὰ πυκνότητα, διὰ πλύσεως ἐντὸς πλυντηρίων· 2) διὰ χωρισμοῦ μαγνητικοῦ, τῇ βοηθείᾳ ἰσχυρῶν ἠλεκτρομαγνητῶν, ἐφαρμοζομένου εἴς τινα μεταλλεύματα σιδήρου· 3) ἐντὸς πλυντηρίων ἐπίσης, διὰ τῆς διαφορᾶς ἣν παρουσιάζουσιν ὑπὸ ἔποψιν ἐπιφανειακῶν προσφύσεων, ὡς ἐξαφρίσματα ὑδαρῶν διαλύσεων σαπωνοειδῶν οὐσιῶν (μέθοδος *ἐπιπλεύσεως*, ἐφαρμοζομένης ὅταν δὲν ἀρκῇ ἡ διαφορὰ πυκνότητος πρὸς ταξινόμησιν διὰ πλυντηρίων)· 4) εἴς τινας περιπτώσεις τέλος ἐφαρμόζεται ἡ ἐπήρεια ρεύματος ἀέρος ἀντὶ ὕδατος πρὸς διαχωρισμὸν τοῦ ὑλικοῦ, ἡ μέθοδος δὲ αὕτη ἐφηρμόσθη νεωστὶ εἰς τοὺς γαιάνθρακας.

Ἡ μεταλλοπλυσία εἶναι ἀρχαιοτάτη μέθοδος. Εἰς τὸ Λαύρειον σῴζονται παρὰ τὰ φρέατα αἱ δεξαμεναὶ τῶν μεταλλοπλυσίων, ὧν τὰ ἀπορρίμματα διαλογῆς καὶ πλύσεως ἐκαλοῦντο *ἐκβολάδες*. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀνεπτύχθη μεγάλως εἰς τὸ Χὰρτς τῆς Γερμανίας, ἤδη δὲ ἐν Ἀμερικῇ καὶ Γερμανίᾳ, καταστάσης τῆς κατεργασίας συνεχοῦς τῇ βοηθείᾳ τελειοποιημένων πλυντηρίων διὰ τὰ χονδρότερα ὑλικὰ μετὰ ἐμβόλου, εἰς ἃ ἀνακινεῖται δι' ἐμβολισμῶν τὸ ὕδωρ ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω καὶ οὕτω παρασύρονται ἀπὸ τοῦ ρέοντος ὕδατος τὰ ἐλαφρότερα ὀρυκτά, κατὰ δεύτερον λόγον τὰ μεικτὰ καὶ παραμένουσι τὰ βαρύτερα. Διὰ τὰ λεπτότερα ὑλικά, ἐν οἷς καὶ τὰ μεικτά, τὰ ὁποῖα ὑποβάλλονται εἰς νέαν θραῦσιν καὶ ταξινόμησιν κατὰ μέγεθος διὰ κοσκινίσματος, γίνεται χρῆσις ὁμοίων πλυντηρίων (δι' ἄμμους χονδρούς)· διὰ τὰς λεπτὰς ἄμμους, προερχομένας ἐξ ὁμοίας κατεργασίας, γίνεται χρῆσις τραπεζῶν σταθερῶν ἢ περιστροφικῶν, ἔνθα ρεῦμα ὕδατος παρασῦρον τὰς ἄμμους ταξινομεῖ αὐτὰς ὁμοίως. Τέλος τῶν λίαν λεπτῶν μορίων ἡ ταξινόμησις γίνεται δι' ἀνερχομένου ρεύματος ὕδατος ἐντὸς σειρᾶς αἰχμηρῶν κιβωτίων ἐν εἴδει ἀνεστραμμένων πυραμίδων (βλ. λ. *ἀμαλγάμωσις καὶ κυανίωσις*). Αἱ συσκευαὶ αὗται διαλογῆς καὶ πλύσεως, αἵτινες καθίστανται ἀρκετὰ πολύπλοκοι, ἀπαιτοῦσι τὴν κατασκευὴν μεγάλων κτηρίων πολυωρόφων, ἄφθονον ὕδωρ, δεξαμενὰς καθιζήσεως τῶν ὑδάτων, μέσα ἀπορρίψεως τῶν περιττῶν ὑλικῶν εἰς τοὺς σωροὺς καὶ τέλος ἀποθήκας διὰ τὴν ἐναποθήκευσιν καὶ φόρτωσιν ἐπὶ βαγονίων ἀπ' εὐθείας ἢ ἐπὶ ἀτμοπλοίων τῇ βοηθείᾳ βαγονέτων καὶ ἀποβαθρῶν ἢ εἰδικῶν φορτωτικῶν συσκευῶν. Εἴς τινας περιπτώσεις ἐπιβάλλεται καὶ ἡ συσσωμάτωσις τῶν ὑλικῶν μικρῶν διαστάσεων (τοῦ *ψιλοῦ* καλουμένου) εἰς πλακοῦντας ἢ πλίνθους. Τοῦτο παρουσιάζεται διὰ πλεῖστα μεταλλεύματα καὶ διὰ τὴν κόνιν γαιανθράκων. Διὰ τοῦτο ὑπάρχει εἰς πλεῖστα ὀρυχεῖα τμῆμα *πλινθοποιήσεως* (βλ. λ.).

***Ὑπηρεσία μεταλλείων.*** Διὰ τὴν ἀσφάλειαν καὶ τὴν τάξιν τῶν μεταλλείων, τὴν σωτηρίαν τοῦ ὑπογείου πλούτου αὐτῶν, ὡς καὶ τὴν διεξαγωγὴν τῶν διοικητικῶν πράξεων, αἵτινες ἀφορῶσι τὴν ἰδιοκτησίαν τῶν μεταλλείων, τὴν ἐκμίσθωσιν, τὴν ἔκπτωσιν, τὰς ἀπαλλοτριώσεις κτλ., ὑπάρχουσιν εἰς ἁπάσας τὰς χώρας ἴδια σώματα διοικητικῶν ὑπαλλήλων, ἀπαρτιζόμενα ἐκ τῶν μηχανικῶν, ἀρχιμηχανικῶν καὶ ἐπιθεωρητῶν τῶν μεταλλείων. Πρὸς τούτοις εἰς πολλὰς χώρας διὰ ζητήματα ἀσφαλείας τῶν ἐργατῶν ὑπάρχουσιν εἰς ἕκαστον κέντρον μεταλλευτικὸν αἱρετοὶ ἐντεταλμένοι μεταλλωρύχοι, ἐκλεγόμενοι ὑπὸ τῶν συναδέλφων των, ὧν ἡ γνώμη εἶναι συμβουλευτικὴ διὰ τοὺς μηχανικοὺς τῆς ὑπηρεσίας τῶν μεταλλείων.

***Ἡ κυριότης τῶν μεταλλείων.*** Εἰς τὴν ἀρχαίαν Ρώμην τὸ μεταλλεῖον ἀνῆκεν εἰς τὸν ἰδιοκτήτην τῆς γῆς, αἱ μεγάλαι ὅμως κατακτήσεις μετέβαλον σὺν τῷ χρόνῳ τὴν νομοθεσίαν καὶ ἐγεννήθη σύστημα παραχωρήσεων, ἰδίως εἰς μεμακρυσμένας χώρας, ὅπου δὲν ὑπῆρχεν ἰδιοκτήτης τῆς γῆς, ἐπὶ τῇ βάσει καταβολῆς μερίσματος καὶ φόρων εἰς τὸν δημόσιον θησαυρὸν (fiscus). Τὴν αὐτὴν λύσιν βλέπομεν ἐμφανισθεῖσαν ἐπὶ τῶν ἡμερῶν μας εἰς τὰς claims τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ τῶν Βρεττανικῶν ἀποικιῶν, αἵτινες κατὰ τὰ ἄλλα ἀκολουθοῦν τὴν αὐτὴν ἀρχὴν τῆς ἀναγνωρίσεως ὡς μόνου κυρίου τοῦ μεταλλείου τοῦ ἰδιοκτήτου τῆς ἐπιφανείας. Εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλλάδα ὑπερίσχυσεν ἡ ἀρχὴ τῆς ἰδιοκτησίας τῆς πολιτείας, οὕτω δὲ ἡ πολιτεία τῶν Ἀθηναίων ἐξεμίσθωνε τὰ ἰδιόκτητα αὐτῆς ἀργυρωρυχεῖα τοῦ Λαυρείου.

Ἐν γένει ἡ νομοθεσία τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἔθεσεν ὡς βάσιν πανταχοῦ τὴν ἐνίσχυσιν τῆς ἀτομικῆς πρωτοβουλίας διὰ τῆς παροχῆς ἀδειῶν ἐρευνῶν καὶ παραχωρήσεων, ἀλλ' ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ Κ' αἰῶνος, ὑπὸ τὴν πίεσιν τοῦ κρατικοῦ σοσιαλισμοῦ, ἡ νομοθεσία τείνει νὰ ἀφαιρέσῃ τὴν ἀπολαυὴν ἐκ τῶν ἰδιωτικῶν ἐπιχειρήσεων, μεταβιβάζουσα ἐν μέρει ἢ ἐν ὅλῳ αὐτὴν εἰς τὸ κράτος. Ἐν αὐτῇ τῇ Ἀγγλίᾳ ζητεῖται ἡ ἐθνικοποίησις τῶν μεταλλείων. Ὡς πρὸς τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν πολυτίμων μετάλλων (χρυσοῦ καὶ ἀργύρου) πλεῖσται νομοθεσίαι ἀπὸ πολλοῦ ἐπιφυλάσσουσι τὴν ἰδιοκτησίαν εἰς τὸ κράτος, ὡς παρ' ἡμῖν.

***Στατιστικὴ μεταλλείων.*** Αἱ δημοσιεύσεις στατιστικῶν περὶ τῆς παραγωγῆς τῶν μεταλλείων εἰς ποσὸν καὶ ἀξίαν, περὶ τοῦ ἀριθμοῦ καὶ τῆς ἀποδόσεως τῶν ἐργαζομένων, περὶ τῶν ἀτυχημάτων, περὶ τῶν ἀπασχολουμένων κεφαλαίων, περὶ τῆς ἐγκατεστημένης ἐνεργείας, εἶναι τακτικαὶ εἰς τὰς πλείστας χώρας, παρ' ἡμῖν, δὲ ἀπὸ τοῦ 1909 ἰδίως ἔλαβον ὁμοιόμορφον τύπον, δημοσιευόμεναι ἀνελλιπῶς κατ' ἔτος ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας, ὅπερ ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως αὐτοῦ ὑποκατέστησεν εἰς τὰ ζητήματα τῶν μεταλλείων τὰ ἁρμόδια τμήματα τῶν ὑπουργείων Ἐσωτερικῶν καὶ Οἰκονομικῶν. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν παγκόσμιον στατιστικὴν τὸ πληρέστερον τῶν ἐτησίων δημοσιευμάτων εἶναι τὸ ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ ἐκδιδόμενον «Mineral Industry».

Τῷ 1807 ἡ ἀξία τῆς παγκοσμίου μεταλλευτικῆς παραγωγῆς ἀνήρχετο εἰς ἓν δισεκατομμύριον χρυσῶν φράγκων, ἐνῷ σήμερον εἶναι 25 φορὰς τοὐλάχιστον μεγαλυτέρα. Τότε ἡ μεγίστη παραγωγὴ ἀνῆκε κατ' ἀξίαν εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικὴν (Περουβίαν, Χιλὴν κλπ.), παράγουσαν πολύτιμα ἰδίως μέταλλα ἀξίας 213 ἑκατομμυρίων φράγκων. Ἡ Μεγάλη Βρεττανία παρῆγε μεταλλεύματα ἀξίας 235 ἑκατομ., ὧν 150 ἀντεπροσώπευον ἀξίαν τῶν λιθανθράκων, ἡ Γαλλία μὲ τὸ Βέλγιον, τὴν Σάρρην καὶ τὴν Ρούρ, ἣν κατεῖχε τότε, 146 ἑκατομ., τὸ Μεξικὸν 136, ἡ Ρωσία 54, ἡ Αὐστρία 52, ἡ Σουηδία 37, ἡ Γερμανία 36, ἡ Βραζιλία 27, ἡ Ἱσπανία 13 καὶ αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι 10. Ἐπὶ τοῦ δισεκατομμυρίου τούτου ὁ σίδηρος καὶ ὁ χυτοσίδηρος ἀντεπροσώπευον ἀξίαν 300 ἑκατομμυρίων, ὁ ἄργυρος 200, ὁ γαιάνθραξ 130, ὁ χρυσὸς μόνον 60 (ἐνῷ σήμερον ἡ παραγωγὴ αὐτοῦ ἔχει 2 ½ δισεκατομ. ἀξίαν). Ἡ Ἀμερικὴ παρῆγε μόνον πολύτιμα μέταλλα καὶ ὀλίγον χαλκόν, ἡ δὲ Εὐρώπη ὅλον τὸν γαιάνθρακα καὶ τὰ πλεῖστα τῶν ἄλλων μεταλλευμάτων, ἀξίας 600 περίπου ἑκατομμυρίων.

Ἡ παγκόσμιος ἐτησία παραγωγὴ γαιανθράκων ἦτο τῷ 1860 137,5 ἑκατομμύρια τόννων, τῷ 1910 1141,6 ἑκατομ., τῷ δὲ 1927 1470, ἐξ ὧν 199 λιγνιτῶν.

*Παραγωγὴ γαιανθράκων χωρῶν τινων εἰς ἑκατομμύρια τόννων.*

| | 1860 | 19.0 | 1927 | |
|---|---|---|---|---|
| Μεγ. Βρεττανία | 83 | 268.5 | 255.3 | |
| Γερμανία καὶ Λουξεμβοῦργον. | 16.7 | 22ɟ 3 | 354.2 | (μετὰ τῶν λιγνιτῶν κατωτέρας ἀξίας) |
| Αὐστρουγγαρία. | 3.5 | 47.6 | | κατενεμήθη εἰς τὴν παραγωγὴν Πολωνίας, Οὐγγαρίας, Τσεχοσλοβακίας, Αὐστρίας, Νοτιοσλαυΐας κλπ. |
| Γαλλία........ | 8 3 | 38 5 | 52 4 | |
| Βέλγιον... .... | 9.6 | 23.8 | 27.6 | |
| Ρωσία Εὐρωπ... | 0 3 | 24 4 | 27.4 | |
| Ἱσπανία ....... | 0.4 | 4.1 | 6 5 | |
| Ὁλλανδία...... | 0 01 | 1.2 | 9.5 | |
| Σύνολ. Εὐρώπης | 120.3 | 631.6 | | |
| Ἡν. Πολ. Ἀμερ. | 15.2 | 455.0 | 53? | |
| Αὐστραλία ..... | — | 10.2 | 31 | |
| Ἰαπωνία....... | — | 15.5 | 33.4 | |
| Βρεττ. Ἰνδίαι.. | — | 12.4 | 22.4 | |
| Καναδᾶς....... | — | 11.6 | 12.3 | |
| Νοτ. Ἀφρική... | — | 3.7 | 12.5 | |
| Νατάλη........ | — | 1.9 | | |
| Χῶραι ἐκτὸς τῆς Εὐρώπης..... | 17 2 | 510 | | |
| Σύνολον... | 137.5 | 1141.6 | 1470 | |

Τὰ μεταλλεύματα σιδήρου τῷ 1807 ἐξησφάλιζον παραγωγὴν ἐν Ἀγγλίᾳ 250.000 τόννων σιδήρου, χυτοσιδήρου κτλ., ἐν Γαλλίᾳ 50.000, ἐν Σουηδίᾳ 75.000, ἐν Ρωσίᾳ 75.000, ἐν Αὐστρίᾳ 50.000 καὶ ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις 24.000, ἔναντι τῶν

Digitized by Google

60 καὶ πλέον ἑκατομμυρίων τόννων τῆς παραγωγῆς σιδήρου τῆς σήμερον. Ἡ παραγωγὴ χαλκοῦ ἀπὸ 19.000 τόννων τῷ 1807, ἦτο 59.000 τῷ 1860 καὶ 938.500 τῷ 1910, αὐξήσασα κατά τι ἔκτοτε. Ὁμοίως τοῦ μολύβδου ἦτο 221.600 τόννων τῷ 1860 καὶ 1.216.800 τῷ 1910, τοῦ ψευδαργύρου 100.000 τόννων τῷ 1860, 790.600 τῷ 1910, τοῦ ἀργιλλίου τῷ 1860 μηδέν, τῷ 1913 68.300 τόννων, τῷ 1922 112.000, τοῦ κασσιτέρου 12.450 τόννων τῷ 1860, 121.098 τῷ 1917, τῶν ἁλάτων τοῦ ραδίου, ἀνακαλυφθέντος μόλις πρὸ 30 ἐτῶν, ἡ παραγωγὴ ἐτησίως εἶναι ἤδη 200 γραμμαρίων.

Τῶν πολυτίμων μετάλλων ὁ κάτωθι πίναξ παρέχει στοιχεῖά τινα:

| | *Παραγωγὴ πολυτίμων μετάλλων εἰς χιλιόγραμμα* | |
|---|---|---|
| *Ἔτη* | *Χρυσὸς* | *Ἄργυρος* |
| 1520 | 5.800 | 47.000 |
| 1601 | 8.520 | 422.900 |
| 1701 | 12.820 | 355.600 |
| 1801 | 14 612 | 717.460 |
| 1860 | 201.750 | 904 990 |
| 1915 | 691.409 | 6.389.089 |

Ὁ ἀριθμὸς τῶν ἀπασχολουμένων ἐργατῶν αὐξάνει σὺν τῇ αὐξήσει τῆς παραγωγῆς, ἀλλ' ἐν γένει, παρὰ τὴν ἐν πολλοῖς ἐκβάθυνσιν τῶν μεταλλείων καὶ τὸν περιορισμὸν τῆς διαρκείας τῆς ἐργασίας, ἡ ἀπόδοσις τῶν ἐργαζομένων αὐξάνει, ὥστε ἡ αὔξησις τοῦ προσωπικοῦ εἶναι μικροτέρα τῆς αὐξήσεως τῆς παραγωγῆς. Οὕτως ἡ Ἀγγλία ἀπασχολεῖ 1.200.000 ἐργατῶν εἰς τὰ μεταλλεῖα αὐτῆς. Ἡ Γερμανία, ἥτις εἶχε 278.000 τῷ 1871, ἀπησχόλει κατὰ τὴν δεκαετίαν 1901—1910 κατὰ μέσον ὅρον 687.000 ἐργατῶν ἐτησίως καὶ ἤδη ὀλίγον περισσοτέρους. Ἡ Γαλλία, ἥτις, ἐκτὸς σημαντικῆς παραγωγῆς γαιανθράκων, ἔχει τὴν μεγαλυτέραν ἐν Εὐρώπῃ παραγωγὴν σιδηρομεταλλευμάτων, ἀπασχολεῖ ἄνω τῶν 200.000, ἡ Ἱσπανία ἄνω τῶν 90.000, ἡ Ἑλλὰς περὶ τοὺς 10.000, αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι ἀπησχόλουν τῷ 1920 1.087.000 ἐργατῶν, ἔναντι 964.000 τοῦ 1910. Ἡ ἀπόδοσις κατὰ ἐργάτην εἶναι σημαντικὸν στοιχεῖον τῆς παραγωγῆς τῶν μεταλλείων, μετρεῖται δὲ εἰς ποσὸν παραγωγῆς κατὰ τόννους ἐτησίως δι' ἕνα ἐργάτην. Ἐν Εὐρώπῃ ἡ ἀπόδοσις αὕτη κυμαίνεται ἀπὸ πολλῶν ἐτῶν εἰς τοὺς γαιάνθρακας εἰς 250 ἕως 350 τόννους, ἐν Ἀμερικῇ, ἔνθα τὰ κοιτάσματα γαιανθράκων εἶναι κανονικὰ καὶ μόνον τὰ εὐκόλου ἐκμεταλλεύσεως εἶναι πρὸς τὸ παρὸν ἐν λειτουργίᾳ, ἡ ἀπόδοσις διὰ τῆς χρήσεως μηχανῶν ὑποσκαφῆς (haveuses) εἶναι ὑπερτριπλασία πολλάκις. Καὶ ἐν Εὐρώπῃ διεδόθησαν μεγάλως αἱ μηχαναὶ διὰ τὴν ἐξόρυξιν τοῦ γαιάνθρακος, ἀλλ' αἱ μηχαναὶ ὑποσκαφῆς ἐφαρμόζονται ἐπιτυχῶς εἰς κανονικὰ κοιτάσματα μέσου πάχους, τὰ ὁποῖα εἶναι ὀλιγώτερα σχετικῶς ἐν Εὐρώπῃ, πλὴν τῆς Ἀγγλίας καί τινων τῆς Ρούρ. Διὰ τοῦτο ἐν Εὐρώπῃ διεδόθησαν μετὰ τὸν πόλεμον μεγάλως αἱ σκαφευτικαὶ ἀερόσφυραι, αἵτινες ἀντικαθιστῶσι τὴν ἐργασίαν τῆς σκαπάνης· εἰς πλείστας περιφερείας ἄνω τῶν 70 % τῆς παραγωγῆς ἐξορύσσονται διὰ μηχανῶν ὑποσκαφῆς ἢ σφυρῶν, ἐνῷ πρὸ εἰκοσαετίας ὁ ἀριθμὸς οὗτος ἦτο 7 ἕως 12 %. Γενικῶς ἡ ἀπόδοσις πολὺ ὀλίγον ηὔξησε, λόγῳ τοῦ περιορισμοῦ τῆς διαρκείας τῆς ἐργασίας καὶ πολλάκις, ὡς ἐν Ἀγγλίᾳ, διὰ τῆς τακτικῆς τῶν ἐργατικῶν ἑνώσεων (trade - unions), αἵτινες ἐμμένουσιν εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς ἑκουσίας μειώσεως τῆς παραγωγῆς, ἀντιθέτως πρὸς τὰς ἀρχὰς τῆς ἐπιστημονικῆς ὀργανώσεως τῆς ἐργασίας περὶ αὐξήσεως τῆς ἀποδόσεως ἐπὶ τῇ βάσει ηὐξημένης ἀμοιβῆς.

Ἄλλο χαρακτηριστικὸν φαινόμενον εἶναι ἡ συγκέντρωσις τῶν ἄλλοτε πολλῶν καὶ μεμονωμένων ἐπιχειρήσεων εἰς μεγαλυτέρας καὶ ὀλιγαριθμοτέρας. Οὕτως ἐν Γερμανίᾳ αἱ μεταλλευτικαὶ ἐπιχειρήσεις τῷ 1871 ἦσαν 3034 μὲ 278.000 ἐργατῶν, ἐνῷ τῷ 1910 ἦσαν 1888 μὲ 687.000 ἐργατῶν, ἤδη δὲ πολὺ ὀλιγώτεραι ἐπὶ τῇ βάσει τῆς οἰκονομικῆς ὀρθολογικῆς ὀργανώσεως (rationalisation).

Ὡς πρὸς τὰ ἀποθέματα χρησίμων ὀρυκτῶν, ὧν ἡ ἐξόρυξις κατέστη τόσον ζωηρὰ κατὰ τὸν ΙΘ´ καὶ τὸν σημερινὸν αἰῶνα, αἱ ἐκτενεῖς διεθνεῖς ἔρευναι τῶν γεωλογικῶν συνεδρίων καὶ πλεῖσται ἄλλαι ἀπέδειξαν ὅτι διὰ μὲν τοὺς γαιάνθρακας, μὲ τὰ σήμερον γνωστὰ κοιτάσματα καὶ τὴν παραγωγήν, τὰ ἀποθέματα ἐπαρκοῦσι διὰ περίοδον ἄνω τῶν δέκα αἰώνων, Ὁμοίως τὰ μεταλλεύματα τῶν πλείστων μετάλλων εἶναι ἀφθονώτατα, ἀρκεῖ δὲ νὰ ὑπάρξῃ ζήτησις μετάλλου τινός, ἵνα αὐξανομένης τῆς τιμῆς καταστῇ ἐκμεταλλεύσιμον μετάλλευμα πτωχότερον. Ὁ σίδηρος καὶ τὸ ἀργίλλιον ἀποτελοῦσι σπουδαῖον ποσοστὸν τοῦ γηΐνου φλοιοῦ. Τὸ μόνον ὀρυκτόν, οὗ τὰ γνωστὰ ἀποθέματα εἶναι περιωρισμένα σχετικῶς, ἐπαρκοῦντα δι' ὀλίγας δεκαετηρίδας, εἶναι τὸ πετρέλαιον, δι' ὃ γίνονται μεγάλαι προσπάθειαι παρασκευῆς αὐτοῦ ἐκ γαιανθράκων. Ἀντιθέτως, ἡ παραγωγὴ τῶν μεταλλείων παρουσιάζει, μετὰ τὰς περιόδους ζητήσεως, μεγάλας καὶ ἰσχυρὰς κρίσεις, γενικὰς ἢ εἰδικάς. Μεταξὺ τῶν κρίσεων σπουδαιόταται εἶναι διὰ τὴν ἐπήρειαν αὐτῶν ἐπὶ τοῦ νομίσματος αἱ τοῦ ἀργύρου κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΘ´ αἰῶνος καὶ σήμερον πάλιν. Αἱ γενικαὶ κρίσεις ἀκολουθοῦσι τὰς γενικὰς οἰκονομικὰς τοιαύτας. Ἀναφέρομεν τὰς σχετικῶς προσφάτους, τοῦ 1893, τοῦ 1901, τοῦ 1907 πολὺ ἰσχυρὰν καὶ παραταθεῖσαν ἐπὶ πολλὰ ἔτη, τὴν τοῦ 1922 καὶ τὴν ἔτι διαρκοῦσαν ἀπὸ τοῦ 1929, καθ' ἣν αἱ τιμαὶ μετάλλων τινῶν, ὡς ὁ χαλκός, ὁ μόλυβδος, ὁ ἄργυρος κτλ., ἔφθασαν εἰς τὸ κατώτατον ἀπὸ πεντηκονταετίας σημεῖον, ἰδίως λόγῳ τῆς ἐφαρμογῆς νέων μεθόδων πλύσεως δι' ἐπιπλεύσεως (flottation) πτωχῶν ἀχρήστων μέχρι τοῦδε ἀπορριμμάτων διαλογῆς, ὡς καὶ τελειοποιήσεως τῶν μεταλλουργικῶν μεθόδων. Αἱ τιμαὶ τῶν μετάλλων ὑπόκεινται εἰς αὐξομειώσεις λόγῳ διαφόρων αἰτίων. Ὁ ἄργυρος π. χ. ἐτιμᾶτο 223 φρ. τὸ χγρ. τῷ 1807 καὶ μέχρι πρό τινος περὶ τὰ 100 φρ., ὁ μόλυβδος 640 φρ. κατὰ τόννον, ἔναντι 500 ἕως 600 πρὸ τῆς σημερινῆς κρίσεως, ὁ χαλκὸς 4.000 φρ. κατὰ τόννον τῷ 1807, ἔναντι 1500 ἕως 2.500 πρὸ τῆς σημερινῆς κρίσεως, ὁ κασσίτερος 3.400, ἔναντι 4.500, ὁ ψευδάργυρος 900, ἔναντι 650, ὁ γαιάνθραξ 10, ἔναντι 12 ἕως 13 φρ. κατὰ τόννον πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (1914) καὶ ἕως 18 σήμερον ἐπιτοπίως, ὁ σίδηρος εἰς ῥάβδους 400 τῷ 1801, ἔναντι 170 πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Διάφορα χωρία τῶν ἀρχαίων συγγραφέων *Ἡροδότου, Διοδώρου Σικελιώτου, Στράβωνος, Παυσανίου, Πλινίου τοῦ Πρεσβυτέρου, Ξενοφῶντος.* — *Calbe*, Bergbuchlein (Augsburg 1505).—*Agricola*, De re metallica, libri XII (Βασιλεία 1530).—*Héron de Villefosse*, De la Richesse Minérale etc. (Παρίσιοι 1810).—*Combes*, Traité d'exploitation des Mines (Παρίσιοι 1844).—*Haton de la Goupillière*, Traité d'exploitation des Mines (3 τ., 4η ἔκδοσις 1928, Παρίσιοι).—*L. E. Gruner*, Cours d'exploitation des Mines (6 τ., Παρίσιοι 1921—1925).—*Τοῦ αὐτοῦ*, Notions d'exploitation des Mines (Παρίσιοι 1929).—*Heise*, Lehrbuch der Bergbaukunde (2 τ., 1923 Βερολῖνον).—*Treptow*, Gründzüge des Bergbaukunde (1925).

*Συγγράμματα σχετικὰ πρὸς τὰς μεταλλοφόρους κοίτας, τὴν ἔρευναν αὐτῶν καὶ τὰς γεωτρήσεις:* *Beck*, Lehre von der Erzlagerstatten 1909.—*Krusch, Beysehlag, Vogt*, Die Lagerslaetten der Nützbaren Mineralien und Gesteine (1912—1922).—*Launay, L. de*, Traité de métallogénie (3 τ., Παρίσιοι 1913).—*Κτενᾶ Κ.*, Στοιχεῖα ἀναλυτικῆς ὀρυκτολογίας καὶ ὀρυκτογνωσίας τῆς Ἑλλάδος (Ἀθῆναι, 1923).—*D. Lecomte - Denis*, La prospection des mines et leus mise en valeur (Παρίσιοι 1914).—*Colomer*, Recherches minières (Παρίσιοι 1923).—*K. Keilhack*, Lehrbuch der Praktischen Geologie (2 τ., 4η ἔκδ. Στουτγάρτη 1921).

*Γενικὰ συγγράμματα διὰ μὴ εἰδικοὺς καὶ ἱστορικαὶ ἐπισκοπήσεις:* *L. de Launay*, La Conquête Minérale (Παρίσιοι 1908, Βιβλιοθ. ἐπιστημ. φιλοσ. Le Bon). — *Rosssing*, Geschichte der Metalle (1901).—*B. Neumainn*, Die Metalle (1904).

*Μεταλλευτικὴ νομοθεσία:* *L. Aguillon*, Legislation des mines francaises et étrangères (2 τ. 1911, 1891, Παρίσιοι).—*Η. Γούναρη*. Μεταλλευτικὴ Νομοθεσία (Ἐθν. Τυπογραφεῖον 1917).—*Σ. Παπαδημητρίου*, Στοιχεῖα τοῦ Ἑλληνικοῦ μεταλλευτικοῦ δικαίου (Ἀθῆναι 1921).

Θ. ΧΑΡΙΤΑΚΗΣ

—*[Νομοθ.]* Τὸ εἰδικὸν νομοθετικὸν καθεστώς, ὑφ' ὃ διατελοῦσι τὰ *μεταλλεῖα*, δικαιολογεῖται ἐκ τῆς ἰδιαιτέρας σημασίας, ἣν κέκτηνται διὰ τὴν ἐθνικὴν οἰκονομίαν, ἥτις ἐπιβάλλει ὅπως ὁ ὑπόγειος πλοῦτος τῆς χώρας ἀφ' ἑνὸς μὲν μὴ μείνῃ ἀνεκμετάλλευτος, ἀφ' ἑτέρου δὲ προασπισθῇ ἐκ τῆς φθορᾶς, ἣν ἤθελεν ἐπιφέρει ἐκμετάλλευσις ἀδεξία, ἀμελὴς ἢ λίαν κερδοσκοπική. Ὅθεν ἡ περὶ μεταλλείων νομοθεσία ἀντικείμενον ἔχει τὴν ῥύθμισιν τοῦ ἰδιαιτέρου νομικοῦ καθεστῶτος τῆς ἐπὶ τῶν μεταλλείων ἰδιοκτησίας καὶ τῆς ἐπὶ τὴν ἐκμετάλλευσιν αὐτῶν ἀστυνομικῆς ἐξουσίας τοῦ κράτους. Τὸ ζήτημα τοῦ νομικοῦ καθεστῶτος τῆς ἐπὶ τῶν μεταλλείων ἰδιοκτησίας, ἀποτελούσης κατ' ἀρχὴν ἐξαίρεσιν τῆς τοῦ ῥωμαϊκοῦ δικαίου ἀρχῆς, καθ' ἣν ὁ τοῦ ἐδάφους κύριος εἶναι ὡσαύτως κύριος τοῦ τε ὑπερκειμένου ἀέρος καὶ τῶν ὑποχθονίων, ἔχει τύχει τεσσάρων διαφόρων λύσεων. Κατὰ τὸ πρῶτον σύστημα, ἰσχῦον ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἡνωμέναις Πολιτείαις, ἰσχῦσαν δὲ καὶ ἐν τῇ αὐτοκρατορικῇ Ῥωσίᾳ, τὸ μεταλλεῖον ἀποτελεῖ μὲν ἰδιοκτησίαν διακεκριμένην τῆς τοῦ ἐδάφους, συνενοῦται ὅμως πρὸς τὴν ἰδιοκτησίαν τῆς γῆς, δικαιώματι προσαυξήσεως, εἰς τρόπον ὥστε ὁ ἰδιοκτήτης ἑκάστου τμήματος γῆς καθίσταται κύριος καὶ τοῦ ὑποκειμένου τμήματος μεταλλείου. Τὸ δεύτερον σύστημα, ἐφαρμοζόμενον ἐν Γερμανίᾳ καὶ Σερβίᾳ, θεωρεῖ τὸ μεταλλεῖον ὡς πρᾶγμα ἄνευ κυρίου καὶ ἀνῆκον τῇ πολιτείᾳ, ὡς ἐκπροσώπῳ τοῦ συνόλου, ἥτις ἐκμεταλλεύεται τοῦτο αὐτοπροσώπως (en regie) ἢ διὰ παραχωρήσεως (concession). Κατὰ τὸ τρίτον σύστημα, ἰσχῦον ἐν Ἱσπανίᾳ καὶ Νοτίῳ Ἀμερικῇ, τὸ μεταλλεῖον οὔτε τῷ κυρίῳ τοῦ ἐδάφους ἀνῆκον, οὔτε τῇ πολιτείᾳ, περιέρχεται ὡς res nullius τῷ πρώτῳ καταλαβόντι. Τέλος, κατὰ τὸ τέταρτον, τὸ μεικτὸν καλούμενον σύστημα, πλησιάζον πρὸς τὸ δεύτερον, τὸ μεταλλεῖον οὐδενὶ ἀνήκει, οὐδὲ τῇ πολιτείᾳ, ἥτις ὅμως, ἀσκοῦσα ἔντονον ἐποπτείαν ἐπ' αὐτοῦ, παραχωρεῖ δικαίωμα ἐκμεταλλεύσεως, σκοποῦσα κυρίως νὰ ἀναδείξῃ τὸν κατάλληλον ἀνάδοχον τῆς ἐκμεταλλεύσεως, χάριν τοῦ γενικοῦ συμφέροντος. Παρ' ἡμῖν ἰσχύει ὁ διὰ τοῦ διατάγματος τῆς 28 Ὀκτωβρίου / 11 Νοεμβρίου 1929 κωδικοποιηθεὶς νόμος ΓΦΚΔ´ (1910) ἀντικαταστήσας τὸν προϊσχύσαντα ΧΗ τοῦ 1861 καὶ ἀκολουθῶν μετά τινων παραλλαγῶν τὸ τελευταῖον τῶν ἐκτεθέντων συστημάτων, ἀπομακρυνόμενος δὲ τῆς συνταγματικῆς προστασίας τῆς ἰδιοκτησίας, δυνάμει τῆς ἐν ἄρθρῳ 19 τοῦ Συντάγματος διατάξεως, καθ' ἣν «εἰδικοὶ νόμοι κανονίζουν τὰ τῆς ἰδιοκτησίας καὶ διαθέσεως τῶν μεταλλείων, ὀρυχείων κλπ.». Ἑρμηνευτικὰ βοηθήματα εἶναι ὁ πρωσσικὸς περὶ μεταλλείων νόμος τοῦ 1865, ἐξ οὗ κυρίως ἐλήφθη, καὶ ὁ γαλλικὸς τοῦ 1810, ἀποτελῶν τὴν βάσιν ὅλων σχεδὸν τῶν νεωτέρων περὶ μεταλλείων νομοθετημάτων. Κυριώτεραι ἀρχαὶ τοῦ νόμου ΓΦΚΔ´ εἶναι αἱ ἑξῆς: α´) Ἡ μεταλλοκτησία ἀποτελεῖ ἴδιον καὶ αὐθύπαρκτον πρᾶγμα, κεχωρισμένον τῆς ἰδιοκτησίας τοῦ ἐδάφους. β´) Ἡ πολιτεία, κατὰ τὴν ὀρθοτέραν γνώμην (Νομ. Συμβ. 61/1918), οὔτε δικαίωμα κυριότητος κέκτηται ἐπὶ τοῦ μεταλλείου, οὔτε δικαιοῦται νὰ μὴ παραχωρήσῃ εἰς οὐδένα τὴν ἐκμετάλλευσιν αὐτοῦ, ἀλλὰ τοὐναντίον, ὑποβληθείσης αἰτήσεως, ὑποχρεοῦται νὰ παραχωρήσῃ τὴν ἐκμετάλλευσιν, καὶ δὴ εἰς τὸν πρῶτον αἰτητήν. γ´) Ἡ πολιτεία ἔχει εὐρύτατα δικαιώματα ἐπιτηρήσεως, ἅτινα διατηρεῖ καὶ μετὰ τὴν ὁριστικὴν παραχώρησιν. Ὁ νόμος ἀπαριθμεῖ ἐν ἄρθρῳ 1 τὰ μεταλλεύματα, ἅτινα ὑπάγει ὑπὸ τὸ κράτος αὐτοῦ, χωρὶς νὰ ὁρίζῃ ἄλλως τὴν ἔννοιαν τοῦ μεταλλείου. Πρὸ πάσης παραχωρήσεως δικαιώματος ἐκμεταλλεύσεως, δέον νὰ ἐνεργηθῶσι μεταλλευτικαὶ ἔρευναι, κατόπιν ἀδείας τοῦ οἰκείου νομάρχου, καὶ ἐντὸς δύο ἢ κατὰ παρέκτασιν τριῶν ἐτῶν ἀπὸ τῆς χορηγήσεως τῆς ἀδείας ταύτης. Ἐκτὸς τῶν προθεσμιῶν τούτων, ὁ ἀδειοῦχος δικαιοῦται νὰ ζητήσῃ τὴν ὁριστικὴν παραχώρησιν, ἥτις ἐνεργεῖται δι' ἐκδόσεως διατάγματος, μεταγραφομένου ὑποχρεωτικῶς, ἐπὶ ποινῇ ἐκπτώσεως, ἐντὸς τριῶν μηνῶν ἀπὸ τῆς δημοσιεύσεως. Μεταβολὴ κυριότητος μεταλλείου συνεπείᾳ καθολικῆς διαδοχῆς γνωστοποιεῖται ὑποχρεωτικῶς τῷ ὑπουργῷ τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας ὑπὸ τοῦ ἀποκτῶντος, ἐντὸς ἓξ μηνῶν, μεταβίβασις δ' ἐν ζωῇ ἢ ἐκμίσθωσις δέον νὰ ἐγκριθῇ δι' ὑπουργικῆς ἀποφάσεως, ἐπὶ τῇ καταβολῇ τέλους ἴσου πρὸς τὸ $^{1}/_{10}$ τῆς τιμῆς πωλήσεως ἢ πρὸς 11 % ἐπὶ τοῦ μισθώματος. Ἰδιοκτήτης μεταλλείου ἀπρακτήσας ἐπὶ τέσσαρα ἔτη κηρύσσεται ἔκπτωτος διὰ διατάγματος, πᾶς δ' ἐκμεταλλευόμενος μεταλλεῖον ὀφείλει νὰ ὑποβάλλῃ κατ' ἔτος τῷ ἐπιθεωρητῇ μεταλλείων ἔκθεσιν περὶ τῶν ἐνεργουμένων ἐργασιῶν, τιμωρούμενος ἄλλως διὰ προστίμου. Ὁ ἰδιοκτήτης μεταλλείου καταβάλλει: α´) φόρον στρεμματικόν, καθοριζόμενον ὑπὸ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 6/17 Σεπτεμβρίου 1925, β´) φόρον καθαρᾶς προσόδου, κατὰ τὸν νόμον 1640, γ´) πρόσθετον φόρον ὑπὲρ τοῦ «Ταμείου μεταλλευτῶν», κατὰ τὸν νόμον 2173 καὶ δ´) φόρον ἢ δασμόν, ἐπιβαλλόμενον ὑπὸ τοῦ ἁρμοδίου δημοτικοῦ ἢ κοινοτικοῦ συμβουλίου, κατὰ τὸν κώδικα τῆς περὶ δήμων καὶ κοινοτήτων νομοθεσίας.

Μ. Δ. ΣΤΑΣΙΝΟΠΟΥΛΟΣ

**μεταλλειοφύλαξ,** —*ακος* (ὁ)· ὁ φύλαξ μεταλλείου.

**μετάλλευμα** (τό)· πᾶν ὀρυκτὸν περιέχον μέταλλον· || κατ' ἐπέκτασιν, πᾶν ὀρυκτὸν ἐκ τοῦ ὁποίου ἐξάγεται προϊὸν βιομηχανικῶς ἐκμεταλλεύσιμον, ὡς γύψος, θεῖον, ἀμίαντος κλπ.

—*[Ἐγκυκλ.]* Τοῦ ὅρου *μετάλλευμα* γίνεται συνήθως χρῆσις ἀπὸ οἰκονομικῆς μόνον ἐννοίας. Δὲν χαρακτηρίζονται δηλαδὴ ὡς *μεταλλεύματα* πάντα τὰ μεταλλοφόρα ὀρυκτά, ἀλλ' ἐκεῖνα μόνον, τῶν ὁποίων ἡ εἰς μέταλλα περιεκτικότης καλύπτει τὰς δαπάνας ἐξορύξεως, μεταφορᾶς καὶ κατεργασίας, ἀφήνουσα καὶ περιθώριον ἐμπορικοῦ κέρδους. Τοῦτο δ' ἐξαρτᾶται, κατὰ φυσικὸν λόγον, ὄχι μόνον ἐκ τῆς ἀναλογίας τῆς εἰς μέταλλον περιεκτικότητος τοῦ ὀρυκτοῦ, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς ἐμπορικῆς συγχρόνως ἀξίας τοῦ μετάλλου. Δι' ὃ καὶ χαρακτηρίζεται μὲν ὡς μετάλλευμα κάθε ὀρυκτὸν περιέχον χρυσὸν κατ' ἀναλογίαν 1 : 100.000, ἐνῷ διὰ νὰ ὀνομασθῇ μετάλλευμα ἓν ὀρυκτὸν σιδηροῦχον δέον ἡ εἰς σίδηρον περιεκτικότης του νὰ εἶναι ἀνωτέρα τοῦ 4 : 10.

Μεταλλεύματα λέγονται ἐπίσης καὶ τὰ ὑποπαράγωγα μιᾶς βιομηχανίας, ἐκ τῶν ὁποίων δυνάμεθα νὰ ἐξαγάγωμεν ἱκανοποιητικὰς ποσότητας μετάλλου τινὸς ἢ μεταλλοκράματος. Τοιαῦτα μεταλλεύματα εἶναι τὰ ἀπορρίμματα τῶν ἀρχαίων μεταλλουργικῶν ἐκμεταλλεύσεων ἢ ἐργασιῶν, ὡς ἐπὶ παραδείγματι αἱ «σκωρίαι» τοῦ Λαυρείου. — Ρ.

**μεταλλεύσιμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μεταλλευθῇ, ν' ἀποδώσῃ μετάλλευμα, ἐκμεταλλεύσιμος.

**μετάλλευσις,** —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταλλεύειν, ἐκμετάλλευσις.

**μεταλλευτὴς** (ὁ)· ὁ μεταλλεύων, ὁ περὶ τὴν μεταλλείαν ἀσχολούμενος· || καθόλου, ἐργάτης μεταλλείου.

— **«Μεταλλευτῶν *Ταμεῖον*».** Ἓν ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων ἑλληνικῶν ἱδρυμάτων κοινωνικῆς ἀσφαλίσεως. Ἡ ἀσφάλισις τῶν μεταλλευτῶν εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς νομοθεσίας, προηγήθη τῆς ἀσφαλίσεως τῶν λοιπῶν κατηγοριῶν μισθωτῶν, λόγῳ τῶν ἐπικινδύνων ὅρων ἐργασίας τῶν μεταλλωρύχων, οἱ ὁποῖοι ἐργαζόμενοι ὑπὸ δυσμενεστάτας συνθήκας εἰς τὰ ἔγκατα τῆς γῆς ὑπόκεινται εἰς ἰδιάζοντας καὶ ἀναποφεύκτους πολλάκις κινδύνους. Τὸ «Ταμεῖον Μεταλλευτῶν», τοῦ ὁποίου τὴν ἵδρυσιν εἶχεν ἤδη προβλέψει τὸ ἄρθρον 31 τοῦ νόμου ΧΗ´ τοῦ 1861

Digitized by Google

«περὶ μεταλλείων» συνεστήθη διὰ διατάγματος τοῦ 1882, ὀνομασθὲν «Ταμεῖον Περιθάλψεως». Κατ' ἀρχὰς ἡ πρόνοια αὐτοῦ ἀφεώρα τὰ θύματα βιαίου ἀτυχήματος. Ὀργανωθὲν συστηματικώτερον δια τοῦ νόμου ΒΩΜΑ' τοῦ 1901 μετωνομάσθη εἰς «Ταμεῖον Μεταλλευτῶν», ἀπὸ δὲ τοῦ 1920 διὰ τοῦ νόμου 2114 ἐξέτεινε τὴν πρόνοιαν αὐτοῦ καὶ εἰς τὰ θύματα ἐπαγγελματικῶν νόσων. Τέλος διὰ τοῦ διατάγματος τῆς 18 Μαρτίου 1931 «περὶ τροποποιήσεως τῆς συνθέσεως τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου τοῦ Ταμείου Μεταλλευτῶν καὶ τῆς ρυθμίσεως, τῆς ἐν γένει διαχειρίσεως καὶ διοικήσεως αὐτοῦ». Ἐκδοθέντος ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νόμου 4705 τοῦ 1930 ἐπεδιώχθη ἡ ἐπὶ νέων βάσεων ὀργάνωσις τοῦ ταμείου τούτου καὶ ἡ αὔξησις τῶν χορηγουμένων παροχῶν. Πόροι τοῦ ταμείου εἶναι: εἰδικὸν τέλος ἐπὶ τοῦ φόρου καθαρῶν κερδῶν ἐκμεταλλεύσεως τῶν μεταλλείων, λατομείων, ὀρυχείων καὶ μεταλλουργείων. Ὁ νόμος προβλέπει τὸ δυνατὸν τῆς μεταρρυθμίσεως τοῦ τρόπου εἰσφορᾶς τῶν ἐργοδοτῶν. Ὡσαύτως τὸ κράτος βαρύνεται μὲ μέγα μέρος τῶν δαπανῶν διοικήσεως τοῦ ταμείου. Ἠσφαλισμένοι εἰς τὸ ταμεῖον εἶναι τὸ προσωπικὸν τῶν μεταλλείων καὶ μεταλλουργείων, ὀρυχείων καὶ λατομείων. Τὸ ταμεῖον τοῦτο παρέχει συντάξεις ἐν περιπτώσει θανάτου συνεπείᾳ ἐργατικοῦ ἀτυχήματος ἢ ἀνικανότητος πρὸς ἐργασίαν ἐπερχομένης ἕνεκα ἐργατικοῦ ἀτυχήματος ἢ ὡρισμένων ἐπαγγελματικῶν νόσων (μολυβδίασις κλπ.), ἐφ' ὅσον ἡ ἀνικανότης αὕτη ἤθελε διαρκέσει πέραν τῶν τριῶν μηνῶν.

Αἱ προσδιοριζόμεναι συντάξεις βαρύνουσι μόνον κατὰ τὸ ἥμισυ τὸ ταμεῖον (τὸ ἕτερον ἥμισυ καταβάλλεται ὑπὸ τῆς ἐπιχειρήσεως εἰς ἣν ἔλαβε χώραν τὸ ἀτύχημα). Τὸ «Ταμεῖον Μεταλλευτῶν» ἀριθμεῖ σήμερον περὶ τοὺς χιλίους συνταξιούχους.

Ι. Λ. Ζ.

**μεταλλευτικός,**—*ή,*—*όν*· ὁ ἱκανός, ὁ ἐπιτήδειος εἰς τὸ μεταλλεύειν, εἰς τὸ ἀναζητεῖν ἐν τῇ γῇ μεταλλεῖα· || καθόλου, ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν ἐκμετάλλευσιν: «μεταλλευτικὴ ἑταιρεία»· || ***μεταλλευτικὴ*** (ἡ), ὡς οὐσ., ἡ τέχνη τοῦ μεταλλεύειν.

**μεταλλεύω**· ἀναζητῶ μεταλλεῖα, ἀνερευνῶ ἀνορύσσων τὴν γῆν πρὸς εὕρεσιν μεταλλευμάτων.

**Μεταλληνός, *Εὐστάθιος Ἰωάννου.*** Ἀρχιμανδρίτης τῆς ἐν Μάντσεστερ ἑλληνικῆς ἐκκλησίας τοῦ Εὐαγγελισμοῦ, γεννηθεὶς εἰς Κορακιάναν τῆς Κερκύρας τῷ 1844 καὶ ἀποθανὼν ἐν Μάντσεστερ τῷ 1903. Ἐδημοσίευσεν: «Ἡ ἐκκλησία τοῦ Ὑψηλοῦ Παντοκράτορος καὶ τῆς Κασσιώπης» (1890) «Ἀπάντησις τῆς Μεγάλης Ἐκκλησίας τῆς Κωνσταντινουπόλεως πρὸς τὴν παπικὴν ἐγκύκλιον περὶ Ἑνώσεως». Ε. Α. Δ.

**μεταλλία** (ἡ) (Metallia) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐχινοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἐχινωδῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *σπαλαγγιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ θαλάσσια ζῷα μὲ ὄστρακον μικρόν, ἀπαντῶντα κυρίως εἰς τὸν Ἰνδικὸν ὠκεανὸν καὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν. Δ. Ν. Π.

**μεταλλίκι** (τό). Παλαιὸν τουρκικὸν νόμισμα, ἀποτελούμενον ἀπὸ κρᾶμα χαλκοῦ καὶ ὀλίγου ἀργύρου, ἀνῆκον δὲ εἰς τὸ πρὸ τῆς νομισματικῆς μεταρρυθμίσεως (παραδοχὴ τῆς διπλῆς νομισματικῆς βάσεως, τοῦ χρυσοῦ καὶ τοῦ ἀργύρου) τοῦ 1844 τουρκικὸν νομισματικὸν σύστημα. Τοιαῦτα «μεταλλικὰ» νομίσματα ἦσαν τὸ *ἀλτιλίκι* (ἑξάγροσον), τὸ *μπεσλίκι* (πεντάγροσον) καὶ αἱ ὑποδιαιρέσεις των. Τῶν πρώτων, ἐχόντων περισσότερον ἄργυρον, ἡ ἀξία ἠλαττώθη μετὰ τὴν νέαν νομισματικὴν μεταρρύθμισιν τοῦ 1880 εἰς τὸ ἥμισυ (3 γρ. καὶ $1\frac{1}{2}$ γρ.), τῶν δὲ μπεσλικίων εἰς $2\frac{1}{2}$ καὶ $1\frac{1}{4}$, τῶν δὲ κυρίως «μεταλλικίων», τὰ ὁποῖα ἦσαν ὑποδιαιρέσεις τῶν μπεσλικίων, ἀπὸ 1, $\frac{1}{2}$ καὶ $\frac{1}{4}$ γρ. εἰς $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{4}$ καὶ $\frac{1}{8}$ γροσίου, διότι οἱ ἀργυραμοιβοὶ τὰ ἐξῆγον εἰς τὸ ἐξωτερικὸν εὑρίσκοντες ὄφελος. Ἡ ἐσωτερικὴ ἀξία τῶν ἀλτιλικίων, μπεσλικίων καὶ μεταλλικίων ἠλαττώθη σημαντικῶς μετὰ τὸν ἐκπεσμὸν τῆς τιμῆς τοῦ ἀργύρου, ἀναλογοῦσα πρὸς 240 γρ. τὴν λίραν διὰ τὰ μικρὰ μεταλλικά, ἐνῷ καὶ ἡ ἐσωτερικὴ ἀξία τοῦ ἀργυροῦ μετζιδιὲ κατῆλθε τότε εἰς 236. Λόγῳ ὅμως τῆς σπάνεως τῶν κερμάτων ἐν Τουρκίᾳ, τὰ μικρὰ μεταλλίκια ἦσαν περιζήτητα, πωλούμενα πρὸς 96—98 τὴν λίραν, διὸ καὶ πολλοὶ τὰ περισυνέλεγον ἐπιμελῶς, ἐντεινομένης οὕτω τῆς σπάνεως αὐτῶν.

Τῷ 1887 ἡ κυβέρνησις, ὅπως προλάβῃ νέον ἐκπεσμὸν τῆς τιμῆς τοῦ ἀργυροῦ μετζιδιέ, προκαλουμένου ἐκ τῆς ὑπάρξεως τῶν ἀλτιλικίων, ἀπέσυρεν ἐκ τῆς κυκλοφορίας ἀλτιλίκια 50 ἑκατομμυρίων γροσίων. Ἔκτοτε τὰ ἀλτιλίκια ἔγιναν σπανιώτατα, ἐξηκολούθουν ὅμως κυκλοφοροῦντα τὰ μπεσλίκια εἰς τὴν τιμὴν τῶν $2\frac{1}{2}$ γρ. καὶ αἱ ὑποδιαιρέσεις αὐτῶν, ἐξ ὧν ἀφθονώτερα ἦσαν τὰ κυρίως μεταλλίκια τοῦ $\frac{1}{4}$ γρ. (δέκα παράδων), δηλαδὴ αἱ δεκάραι, ἐνῷ αἱ πεντάραι βαθμιαίως ἐξηφανίζοντο. Τῷ 1900 ἐκόπησαν καὶ ἄλλα μεταλλίκια τῶν 10 καὶ 5 παράδων.

Τὰ *ἀλτιλίκια* εἶχον βάρος γρ. 12,30 (καὶ ἀναλόγως τὰ ἡμίση καὶ τέταρτα), τίτλον δὲ 0,440 περίπου. Τὰ *μπεσλίκια* βάρος γρ. 15.20 καὶ τίτλον ποικίλλοντα ἀπὸ 0.185 εἰς 0.225. Τὰ δὲ *μεταλλίκια* βάρος γρ. 2,85 αἱ εἰκοσάραι, γρ. 1,42 αἱ δεκάραι καὶ γρ. 0.70 αἱ πεντάραι, τίτλον δὲ 0,170 περίπου καὶ τῷ 1900 μόνον 0,100.

Τὰ μεταλλίκια ἔπαυσαν κυκλοφοροῦντα, ἀφ' ὅτου ἡ νεοτουρκικὴ κυβέρνησις εἰσήγαγε περὶ τὸ 1912 τὰ νικέλινα κέρματα. Ν. Μ.

**Μεταλλικὸ(ν)** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μεγάλης Βρύσεως (πρώην Ἀρμουτσῆ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 508. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 6 χιλμ. ἀπὸ τοῦ Κιλκὶς καὶ ἐσχηματίσθη ἐκ συνοικισμοῦ εἰς τὸ

*Ἄποψις τοῦ Μεταλλικοῦ.*

ἀγρόκτημα *Γιάννες* 147 οἰκογενειῶν προσφύγων ἐκ Καυκάσου. Ἔχει πηγὴν θαυμασίου μεταλλικοῦ ὕδατος, παραμένοντος ὅμως ἀνεκμεταλλεύτου. Ἐσχάτως ἱδρύθη παρ' αὐτὸ καὶ σιδηροδρομικὸς σταθμός. Δ. Ε. Μ.—Δ. Ν. Α.

**μεταλλικός,** —*ή,* —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μέταλλα, ὁ τῶν μετάλλων· || μεταφ.: «μεταλλικὴ φωνὴ» διαυγής, καθαρά, λεπτὴ ὡς ὁ ἦχος τῶν μετάλλων (χαλκοῦ, ἀργύρου, χρυσοῦ)· || «μεταλλικὴ λάμψις» ἡ ἰδιάζουσα στιλπνότης τῶν μετάλλων ὅταν στιλβωθοῦν· || «μεταλλικὰ ὕδατα» ὕδατα περιέχοντα ἐν διαλύσει μέταλλα· ὁμοίως: «μεταλλικαὶ πηγαί»· || «μεταλλικὴ κατάστασις» ἡ ἐντελὴς καθαρότης μετάλλου τινὸς ἀπηλλαγμένου παντὸς ξένου προσμείγματος· || «μεταλλικὴ δραχμὴ» ἡ εἰς χρυσὸν ὑπολογισμένη ὡς ὑγιὲς νόμισμα· || «μεταλλικὸν νόμισμα» τὸ εἰς χρυσὸν ἰδίᾳ ὑγιὲς νόμισμα, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ *χαρτονόμισμα*· || καὶ ***μεταλλικὸν*** (τό)· ὡς οὐσ.: «τὸ μεταλλικὸν τῆς τραπέζης» τὸ εἰς χρυσὸν ἀπόθεμα τῶν τραπεζῶν εἴτε εἰς νομίσματα εἴτε εἰς ράβδους.

—***μεταλλικὰ νομίσματα.*** Τὰ νομίσματα τὰ κατασκευαζόμενα ἐκ τοῦ μετάλλου, ὅπερ ἔχει ληφθῆ ὡς βάσις τοῦ νομισματικοῦ συστήματος. Ταῦτα δέον νὰ ἔχωσι τὴν αὐτὴν ἀξίαν, εἴτε ὡς ἐμπόρευμα, εἴτε ὡς νόμισμα. Ἡ ἐξοφλητικὴ ἱκανότης τούτων εἶναι ἀπεριόριστος. Τὰ ἐξ ἄλλου μετάλλου διαφόρου τοῦ ὡς βάσεως τοῦ νομισματικοῦ συστήματος χρησιμεύοντος εἶναι μεταλλικὰ κέρματα. Περὶ τῆς κατασκευῆς τῶν μεταλλικῶν νομισμάτων βλ. λ. *νόμισμα*. Τ. Κ.

—***μεταλλικὰ ὕδατα.*** Πηγαῖα ὕδατα διακρινόμενα ἐκ τῆς ἐπικρατήσεως ἐν αὐτοῖς ὡρισμένων τινῶν συστατικῶν, ἢ τῆς μεγάλης εἰς διαλελυμένα συστατικὰ περιεκτικότητος ἢ ὑψηλῆς ὑπὲρ τὴν μέσην θερμοκρασίαν τοῦ τόπου θερμοκρασίας, ὅτε καλοῦνται *θέρμαι*, ἢ τῆς ἰσχυρᾶς αὐτῶν ραδιενεργείας. Ὁ σχηματισμός των εἶναι ὡς ὁ τῶν συνήθων πηγῶν· ἡ μείζων περιεκτικότης αὐτῶν εἰς ὡρισμένα συστατικὰ προέρχεται ἐκ τοῦ ὅτι κυκλοφοροῦν διὰ μέσου γεωλογικῶν στρωμάτων περιεχόντων τοιαῦτα διαλυτὰ εἰς τὸ διερχόμενον δι' αὐτῶν ὕδωρ. Τὸ ποσὸν αὐτῶν αὐξάνει ἰδίᾳ ἂν τὸ ὕδωρ εἶναι ὑψηλῆς θερμοκρασίας σχετικῶς ἢ περιέχῃ μέγα ποσὸν ἀνθρακικοῦ ὀξέος, ὅτε καὶ πυριτικὰ πετρώματα προσβάλλονται οὐσιωδῶς. Ἡ θερμοκρασία αὐτῶν εἶναι ὑψηλή, ἀναλόγως τοῦ βάθους τῆς γῆς, εἰς τὸ ὁποῖον φθάνουν κατερχόμενα. Ἐκ τούτου φέρονται εἰς τὴν ἐπιφάνειαν διὰ μέσου ρωγμῶν φυσικῶν ἐντὸς τῆς γῆς, δυνάμει τῆς ὑδροστατικῆς πιέσεως, διατηροῦντα τὴν θερμοκρασίαν τοῦ βάθους τῆς γῆς, ἐν ᾧ ἔχουν εἰσχωρήσει, εἴτε καὶ διὰ πιέσεως ἀερίων, ἰδίως διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος, ἢ καὶ ὑδρατμῶν, ὡς συμβαίνει συνήθως εἰς ἡφαιστειογενεῖς τόπους, ὅπου συχνὰ ἐμφανίζονται θερμαὶ πηγαί, εἴτε καὶ σεισμογενεῖς, εἰς τοὺς ὁποίους συχνὰ συναντῶνται ρήγματα διευκολύνοντα τὴν διέξοδον αὐτῶν εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τῆς γῆς.

Τὰ μεταλλικὰ ὕδατα ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος χρησιμοποιοῦνται πρὸς ἰαματικοὺς σκοπούς, ἐξ οὗ καὶ *ἰαματικαὶ πηγαὶ* ἐκλήθησαν. Ἰδιαιτέρως ἐξαίρει τὴν σημασίαν αὐτῶν ὁ Ἱπποκράτης.

Κατὰ πολλοὺς τρόπους χρησιμοποιοῦνται τὰ μεταλλικὰ ὕδατα. Διὰ πιέσεως, διὰ καταιονήσεων, δι' εἰσπνοῶν, διὰ ψεκασμῶν, δι' ἀτμίσεως. Τὴν διὰ μεταλλικῶν ὑδάτων θεραπείαν πολλάκις συμπληροῦσι καὶ διὰ φυσικῶν παραγόντων, γυμναστικῆς, θερμότητος, φωτός, ἠλεκτρισμοῦ, μαλάξεως κλπ. Ἡ θεραπεία διαρκεῖ συνήθως ἐπὶ 3—4 ἑβδομάδας, καθ' ἃς πρέπει ν' ἀποφεύγεται ἡ κόπωσις, ὡς καὶ ἡ ψῦξις. Συνιστᾶται δὲ μετ' αὐτὴν μεταθεραπεία ἀναπαύσεως ἐπί τινα χρόνον. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν ἐνέργειαν τῶν ὑδάτων συμβάλλουν πολλοὶ παράγοντες. Τὰ περιεχόμενα ἅλατα κυρίως ἐνεργοῦν ὅταν χρησιμοποιοῦνται πρὸς πόσιν. Πλὴν τῶν ἁλάτων, καὶ ἡ θερμότης τοῦ ὕδατος καὶ ἡ ραδιενέργεια αὐτοῦ εἶναι σπουδαῖοι θεραπευτικοὶ συντελεσταί. Καὶ ἡ ἡσυχία, ὁ καθαρὸς ἀήρ, ἡ ἄνεσις καὶ ἀπομάκρυνσις ἀπὸ τῆς τύρβης τῆς καθημερινῆς ζωῆς, ἐπιπροσθέτως δὲ καὶ ἡ ὑποβολὴ συμπληροῦν τὴν θεραπευτικὴν τῶν ὑδάτων ἐνέργειαν.

*Κατηγορίαι πηγῶν.* Ἡ διαίρεσις τῶν μεταλλικῶν ὑδάτων εἰς διαφόρους κατηγορίας γίνεται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον κατὰ τρόπον αὐθαίρετον, οὔτε λαμβάνεται πάντοτε πρὸς χαρακτηρισμὸν αὐτῶν ὡς γνώμων τὸ εἶδος τοῦ ἅλατος τοῦ περιεχομένου εἰς τὴν μεγαλυτέραν ἀναλογίαν. Πολλάκις στοιχεῖα σπανιώτερον ἀπαντῶντα εἰς μεταλλικὰ ὕδατα, ἔχοντα ὅμως γνωστὴν φαρμακολογικὴν ἐπίδρασιν, καίτοι εἰς μικρὰν ποσότητα περιεχόμενα, προσδίδουν τὸν κύριον χαρακτῆρα εἰς τὸ ὕδωρ, ὡς σίδηρος, ἀρσενικόν, λίθιον κλπ. Πλειστάκις αἱ πηγαὶ εἶναι μεικταί, ὡς ἁλατοπηγαὶ - θειοῦχοι, ἀλκαλικαὶ - ἁλατοῦχοι, ὀξυθειικαὶ κλπ.

Τὰς πηγὰς χαρακτηρίζει ἰδίως τὸ ἐπικρατοῦν ἀνιὸν (ὀξέα). Κατὰ ταῦτα διακρίνομεν τρεῖς κατηγορίας: τὰς *ἀλκαλικάς*, ὅπου ἐπικρατεῖ τὸ ἀνιὸν ὑδρανθρακικὸν ($HCO_3$), τὰς *ἁλατοπηγάς*, ὅπου ἐπικρατεῖ τὸ ἀνιὸν χλώριον ($Cl'$), καὶ τὰς *πικράς*, ὅπου ἐπικρατεῖ τὸ ἀνιὸν τοῦ θειικοῦ ὀξέος ($SO_4''$). Αὗται ὑποδιαιροῦνται κατόπιν ἀναλόγως τῶν κατιόντων καὶ τῆς συνυπάρξεως πλειοτέρων ἀνιόντων εἰς ἀξίαν λόγου ποσότητα. Κατιόντα ἐπικρατοῦντα εἶναι συνήθως τὸ νάτριον, τὸ κάλιον, τὸ ἀσβέστιον, τὸ μαγνήσιον καὶ ὁ σίδηρος. Γενικώτερον παραδεδεγμένη εἶναι ἡ κατωτέρω διαίρεσις, ἣν ἀκολουθεῖ καὶ ἡ γερμανικὴ λουτρολογία:

1) *Ἁπλαῖ ψυχραὶ πηγαὶ (ἀκρατοπηγαί).* Ἡ θερμοκρασία των δὲν ὑπερβαίνει τοὺς $20^0$, εἶναι πτωχαὶ εἰς διοξείδιον ἄνθρακος καὶ διαλελυμένα συστατικά, ὀλιγώτερα τοῦ γραμμαρίου κατὰ λίτρον. Τοιαῦτα ὕδατα χρησιμοποιοῦνται ὡς ἐξαίρετα ἐπιτραπέζια, ὡς εἶναι τὸ ὕδωρ τοῦ Evian καὶ ἐκ τῶν ἑλληνικῶν τὸ τῆς Σαρίζης.

2) *Ἁπλαῖ θερμαὶ πηγαὶ (ἀκρατοθέρμαι* Wildbäder). Εἶναι ὅμοιαι τὴν σύστασιν μὲ τὰς προηγουμένας, ἀλλ' ὑψηλοτέρας θερμοκρασίας. Τοιαῦται γνωστότεραι πηγαὶ εἶναι ἐν Γερμανίᾳ αἱ τοῦ Badenweiler καὶ τοῦ Schlagenbad, ἡ τοῦ Gastein τῆς Αὐστρίας καὶ ἡ τῆς Ragaz τῆς Ἑλβετίας.

3) *Ἁπλαῖ ὀξυπηγαί.* Εἰς ταύτας ἐπικρατεῖ τὸ ἐλεύθερον διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος, περιεχόμενον εἰς ποσὸν ἄνω τοῦ 1 γραμμ. κατὰ λίτρον, ἐνῷ ὑπάρχει μικρά, κάτω τοῦ 1 γραμμ., ποσότης διαλελυμένων στερεῶν συστατικῶν. Χρησιμεύουν πρὸς πόσιν καὶ πρὸς λοῦσιν καὶ ὡς ἐπιτραπέζιον ὕδωρ. Τοιαῦται ὀνομασταὶ πηγαὶ εἶναι αἱ τοῦ Bad Brückenau ἐν Γερμανίᾳ, Lielwerda ἐν Βοημίᾳ.

4) *Ὀξυπηγαὶ ἀλκαλογεώδεις.* Περιέχουν ἐπίσης πολὺ ἐλεύθερον διοξείδιον ἄνθρακος καὶ πλέον τοῦ 1 γραμμ. διαλελυμένων ἁλάτων, μεταξὺ τῶν ὁποίων προέχουν τὰ ὑδρανθρακικὰ ἅλατα τοῦ ἀσβεστίου καὶ τοῦ μαγνησίου. Τοιαῦται ὀνομασταὶ εἶναι αἱ τοῦ Selters ἐν Γερμανίᾳ, Royat ἐν Γαλλίᾳ.

5) *Ἀλκαλικαὶ πηγαί.* Περιέχουν πλέον τοῦ 1 γραμμ. διαλελυμένων οὐσιῶν κατὰ λίτρον. Ἐπικρατοῦν τὰ ὑδρανθρακικὰ ἅλατα τοῦ νατρίου. Διὰ θερμάνσεως καθιζάνονται ἀνθρακικὸν ἀσβέστιον καὶ μαγνήσιον. Ὅταν περιέχουν πλέον τοῦ 1 γραμμ. διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος κατὰ λίτρον, καλοῦνται *ἀλκαλικαὶ-ὀξυανθρακικαί.* Ὑποδιαιροῦνται εἰς καθαυτὸ ἀλκαλικάς, χλωριούχους ἀλκαλικάς, ὀξυθειικὰς ἀλκαλικάς, γεωαλκαλικάς, καθόσον συνυπάρχουν εἰς ἀξίαν λόγου ποσότητα χλωριοῦχον νάτριον, θειικὰ ἅλατα, ἀσβέστιον καὶ μαγνήσιον ὀξυανθρακικόν, καὶ εἰς ἀλκαλικὰς ὀξυανθρακικάς. Εἶναι αἱ τοῦ Vichy, τοῦ Vals ἐν Γαλλίᾳ, τοῦ Giesshübler ἐν Βοημίᾳ ἀλκαλικαὶ ὀξυανθρακικαὶ καὶ χλωριοῦχοι αἱ τοῦ Ems, τοῦ Kissingen, τῆς Bourboule, ἀλκαλικαὶ ὀξυανθρακικαὶ καὶ ὀξυθειικαὶ αἱ τοῦ Bilin, ἐν Βοημίᾳ, ὀξυθειικαὶ καὶ χλωριοῦχοι αἱ τοῦ Karlsbad ἐν Βοημίᾳ, τοῦ Tarasp ἐν Ἑλβετίᾳ, γεωαλκαλικαὶ αἱ τοῦ Krondorf ἐν Βοημίᾳ, Apollinaris ἐν Γερμανίᾳ.

Digitized by Google

6) *Ἁλατοπηγαί.* Περιέχουν πλέον τοῦ γραμμαρίου κατὰ χλγρμ. διαλελυμένας οὐσίας, τὸ πλεῖστον χλωριοῦχον νάτριον. Αἱ περιέχουσαι μέγα ποσὸν χλωριούχου νατρίου ὑπὲρ τὰ 15 γρ. κατὰ χλγρμ. καλοῦνται *ἁλιπηγαί.* Καθ' ὅσον ὑπάρχει ἐλεύθερον ἀνθρακικὸν ὀξὺ ὑπὲρ τὸ 1 γρ. κατὰ λίτρον, καλοῦνται καὶ *ὀξυπηγαί,* ὅταν δὲ περιέχουν ἀνιόντα θειικοῦ ὀξέος εἰς ποσὸν σημαντικὸν *ὀξυθειικαί.* Καθαραὶ ἁλατοπηγαὶ εἶναι αἱ τοῦ Ischl, Reichenhall, Wiesbaden, ὀξυθειικαὶ συγχρόνως αἱ τοῦ Balarue, La Motte ἐν Γαλλίᾳ.

7) *Πικραὶ πηγαί.* Περιέχουν ἐπίσης ἄνω τοῦ 1 γραμ. διαλελυμένων σωμάτων. Ἡ παρουσία θειικῶν ἁλάτων προσδίδει ἰδιαιτέρας ἰδιότητας καὶ γεῦσιν χαρακτηριστικάς, ὥστε καὶ ὅταν δὲν ὑπάρχουν εἰς ἐξαιρετικὴν ἀναλογίαν, χαρακτηρίζονται αἱ πηγαὶ ὡς πικραί. Διακρίνονται καὶ αὗται εἰς ὑποδιαιρέσεις: πικραὶ πηγαὶ καὶ χλωριοῦχοι λ. χ., ὡς αἱ ἐν Baden τῆς Ἑλβετίας κτλ.

8) *Σιδηροῦχοι.* Αἱ περιέχουσαι ἄνω τοῦ 0,01 γρ. σιδήρου εἰς ἓν χλγρμ. Εἶναι συνήθως καὶ ὀξυανθρακικαὶ (Alexisbad) ἢ ὀξυανθρακικαὶ γεωαλκαλικαὶ (Marienbad) ἢ ἀλκαλικαί, ὡς τοῦ Franzesbad ἢ χλωριοῦχοι καὶ ὀξυανθρακικαὶ ἢ καὶ ὀξυθειικαί, ὡς τοῦ Pyrmont, ἢ ἁπλῶς ὀξυθειικαὶ χωρὶς νὰ εἶναι καὶ ὀξυανθρακικαί, ὡς ἐν Roncegno καὶ Levies τοῦ ἰταλικοῦ Τυρόλου.

9) *Θειοπηγαί.* Αὗται περιέχουν ὑδροθειοῦχα ἅλατα μετὰ ἢ ἄνευ ἐλευθέρου ὑδροθείου· ὅταν περιέχουν καὶ τοιοῦτον, καλοῦνται *ὑδροθειοῦχοι.* Θειοπηγαὶ ὀνομασταὶ εἶναι πλεῖσται ὅσαι, ὡς ἐν Luchon, Eaux Bonnes, Cauteret, Ischl, Baden (Βιέννης), Aachen.

***Ἑλληνικαὶ ἰαματικαὶ πηγαί.*** Τοιαῦται εἶναι γνωσταί τινες, ὡς αἱ τῆς Αἰδηψοῦ ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων. Ἐπειδὴ εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ ἡφαιστειογενεῖς τόποι ὑπάρχουν καὶ σεισμογενεῖς, ἡ Ἑλλὰς ἀφθονεῖ πολλῶν καὶ ποικίλης φύσεως ἰαματικῶν πηγῶν. Ἀναλύσεις τοιούτων ἐγένοντο παλαιότερον ὑπὸ πλείστων χημικῶν, ὡς τοῦ Λάνδερερ, τοῦ Χρηστομάνου καὶ ἰδιαιτέρως τοῦ Δαμβέργη κλπ. Συστηματικώτεραι ἔρευναι ἐγένοντο ἰδίως ὑπὸ τοῦ γεωλογικοῦ τμήματος τοῦ ὑπουργείου τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας, ὑπὸ τοῦ προϊσταμένου χημικοῦ Μ. Περτέση, συμφώνως πρὸς τὰς νεωτέρας ἀναλυτικὰς ἀντιλήψεις καὶ διὰ φυσικοχημικῶν προσέτι προσδιορισμῶν, ἀναλύσαντος μέχρι τοῦδε περὶ τὰς 30 πηγάς. Ἐν γένει ἡ χημικὴ ἔρευνα τῶν μεταλλικῶν ὑδάτων τῆς Ἑλλάδος καὶ εἰς ἔκτασιν καὶ εἰς ἐπιστημονικότητα οὐδαμῶς ὑστερεῖ, ὑστερεῖ ὅμως πολὺ ἡ ἐπιτόπιος θεραπευτικὴ μελέτη ὑπὸ εἰδικῶν ἰατρῶν, ἐπὶ σειρὰν μακρὰν ἐτῶν παρακολουθούντων τοὺς ἀσθενεῖς καὶ σημειούντων τ' ἀποτελέσματα ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ, δυναμένων δὲ νὰ δώσωσι τὰς ἐκ τῆς μελέτης ταύτης καὶ ἐπιτοπίου πείρας ἀναγκαίας ὁδηγίας εἰς τοὺς λουομένους, ὡς πρὸς τὴν χρῆσιν τῶν λουτρῶν, τὴν ποσότητα καὶ χρῆσιν τῶν πρὸς πόσιν ὑδάτων ἢ καὶ συμπληρούντων τὴν θεραπείαν καὶ διὰ φυσικῶν θεραπευτικῶν μέσων κλπ., οὕτως ὥστε αἱ ἀναμφηρίστου ἀιίστης ἰαματικῆς συνθέσεως καὶ κατὰ ποικίλων εἰδικῶν νόσων ἀποτελεσματικώταται μεταλλικαὶ πηγαὶ τῆς Ἑλλάδος νὰ εὑρίσκωνται διὰ τοὺς λουομένους ὑπὸ τὰς αὐτὰς εὐνοϊκὰς συνθήκας καὶ ν' ἀποδίδουν τὰ αὐτὰ εὐεργετικὰ ἀποτελέσματα, ἃς ἀνάλογοι εὐρωπαϊκαὶ πηγαί.

Ἐκ τῶν γνωστοτέρων ἑλληνικῶν ἰαματικῶν πηγῶν, αἱ τῶν Μεθάνων εἶναι θειοῦχοι ἁλιπηγαί, αἱ τῆς Αἰδηψοῦ θερμαὶ ἁλιπηγαί, αἱ τοῦ Λουτρακίου ἁλατοπηγαὶ ἀσθενοῦς ἀλκαλικότητος, τῆς Κυλλήνης ὑδροθειοῦχοι, τῆς Ὑπάτης θειοῦχοι ὀξυανθρακικαί, τοῦ Καϊάφα ὑδροθειοῦχοι χλωριονατριοῦχοι, τῆς Βουλιαγμένης θειοῦχοι-χλωριονατριοῦχοι, τῆς Κύθνου ἁλατοπηγαί, τοῦ Τσάγεζι σιδηροῦχοι-ὀξυανθρακικαί, τοῦ Σμοκόβου ἀλκαλικαὶ θειοπηγαί, τῶν Καμένων Βούρλων ἐντόνως ραδιενεργοί, τοῦ Λαγκαδᾶ ἀκρατοθέρμαι, τοῦ Σιδηροκάστρου ἀλκαλικαὶ-ὀξυανθρακικαί, ὁμοίως τῆς Νιγρίτης, τῶν Ἐλευθερῶν ὀξυανθρακικαὶ-χλωριονατριοῦχοι καὶ ἀλκαλογεώδεις, ἐκ τῶν τῆς Λέσβου, τῆς Θερμῆς ἁλιπηγαί, τοῦ Θ. Κουρτζῆ ἀλκαλικαὶ χλωριονατριοῦχοι, χλωριονατριοῦχοι ἐπίσης αἱ πηγαὶ Πολυχνίτου καὶ κόλπου Γέρας. Αἱ πηγαὶ Ξινοῦ νεροῦ (Ἐξὶ-σοῦ) Μακεδονίας ὀξυανθρακικαὶ ἀλκαλογεώδεις..

***Ραδιενέργεια.*** Ἡ καταφανὴς θεραπευτικὴ ἐνέργεια τῶν μεταλλικῶν πηγῶν ἀνέκαθεν ἔφερεν εἰς πολλοὺς τὴν ὑπόνοιαν ὅτι αὕτη δὲν ὀφείλεται ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν περιεκτικότητα αὐτῶν εἰς διάφορα ἅλατα καὶ τὴν θερ οκρασίαν, ἀλλὰ καὶ ἄλλους ἀγνώστους παράγοντας· ἰδίᾳ προκειμένου περὶ πηγῶν οὐδόλως θερμῶν καὶ πτωχῶν εἰς ἅλατα, τῶν ὁποίων οὐχ ἧττον τὴν ἰαματικὴν δρᾶσιν εἶχε βεβαιώσει μακρὰ πεῖρα. Τοιαῦται λ. χ. ἠσαν εἶναι αἱ περιώνυμοι τοῦ Gastein τῆς Αὐστρίας, περὶ τῶν ὁποίων τῷ 1792 ἤδη ὁ Niederhuber εἶχεν ἀποφανθῆ ὅτι τὰ θεραπευτικὰ αὐτῆς ἀποτελέσματα θὰ ὀφείλωνται εἰς ἄγνωστον λεπτὴν ὕλην, τῆς ὁποίας εἶναι φορεῖς, δυναμένην νὰ εἰσδύῃ ἐν τῷ ὀργανισμῷ. Ὄντως βραδύτερον μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τοῦ ραδίου κατεδείχθη ὅτι τὰ ὕδατα τοῦ Gastein εἶναι τὰ πλουσιώτερα εἰς ραδιενέργειαν πάντων τῶν μέχρι τότε ἐν χρήσει μεταλλικῶν πηγῶν. Ἡ παρατηρηθεῖσα μετέπειτα ἔντονος ἐπίδρασις τῆς ἀκτινεργίας ἐπὶ τῶν ὀργανικῶν ἱστῶν, ἐπὶ τῶν κυττάρων ἰδίως ζωηρᾶς ἀναπτύξεως, ὡς τῶν ἰνωμάτων καὶ καρκινωμάτων κλπ., ἐπέβαλε καὶ τὸν προσδιορισμὸν τῆς ραδιενεργείας τῶν μεταλλικῶν ὑδάτων, εἰς τὰ ὁποῖα εὑρέθησαν πάντοτε περιεχόμενα ἐν διαλύσει ἀκτινεργὰ ἀέρια ἄλλοτε ἐν ἐλαχίστῃ, ἄλλοτε ἐν μικρᾷ καὶ ἄλλοτε ἐν μεγάλῃ ἢ καὶ μεγίστῃ ποσότητι, οὕτως ὥστε πρὸς πλήρη ἀνάλυσιν σήμερον, παρὰ τὴν λοιπὴν ἔρευναν τῶν ἰαματικῶν πηγῶν, προσδιορίζεται καὶ ἡ ἀκτινεργία ἢ ραδιενέργεια αὐτῶν, ὡς καὶ ἡ περιεκτικότης εἰς ἀέρια ἄλλα πλὴν τῶν συνήθως προσδιοριζομένων, ἤτοι διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος καὶ ὑδροθείου.

Ἡ ραδιενέργεια τῶν ἰαματικῶν ὑδάτων ὀφείλεται καὶ αὕτη εἰς τὴν δίοδον τῶν ὑδάτων διὰ στρωμάτων γῆς περιεχόντων ραδιοῦχα ὀρυκτὰ καὶ πετρώματα. Ταῦτα κατὰ τὴν συνεχῆ ἀποσύνθεσιν τῶν ἀτόμων αὐτῶν ἐκπέμπουν ἀκτινεργὸν ἀέριον, τὸ ραδόνιον (radonium, émanation), εὐδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ καὶ μεταδίδον κατὰ τὴν περαιτέρω ἀποσύνθεσιν αὐτοῦ ραδιενεργοὺς ἰδιότητας.

Τὸ ραδόνιον τοῦτο δύναται διὰ προσφυσήσεως ἐντὸς τοῦ διαλύματος ἀέρος ἢ ἀναταράξεως νὰ ἐκδιωχθῇ τὸ πλεῖστον καὶ συλλεγῇ ἐντὸς ὡρισμένου χώρου, ἐπειδὴ δὲ εἶναι ἀκτινεργὸν καὶ ἐκκενοῖ ἠλεκτροσκόπιον, ἐκ τῆς ταχύτητος τῆς ἐκκενώσεως νὰ προσδιορισθῇ ἡ ποσότης αὐτοῦ. Ἡ ἐργασία αὕτη γίνεται διὰ τῆς παραπλεύρου συσκευῆς. Ἐντὸς τοῦ μεταλλίνου δοχείου Δ ρίπτομεν ὡρισμένην ποσότητα τοῦ ραδιούχου ὕδατος καὶ μετὰ τὴν πωμάτισιν τῆς φιάλης ἀναταράσσομεν ἰσχυρῶς. Τότε ὡρισμένον μέρος τοῦ ἀερίου, δυνάμενον νὰ προσδιορισθῇ ἐκ τῆς γνωστῆς διαλυτότητος τοῦ ραδονίου καὶ τοῦ νόμου τοῦ Henry εἰς τὸ ὕδωρ, διαχέεται εἰς τὸν θάλαμον καὶ τὸ ἐπίλοιπον παραμένει ἐν τῷ διαλύματι. Ἀφαιροῦμεν τότε τὸ πῶμα καὶ τὸ ἀντικαθιστῶμεν μὲ εὐαίσθητον ἠλεκτροσκόπιον, εἰς τὸ ὁποῖον ἔχομεν προσδιορίσει προηγουμένως τὸ ποσὸν τοῦ δυναμικοῦ, τὸ ὁποῖον ἀντιστοιχεῖ εἰς ἑκάστην ὑποδιαίρεσιν τῆς κλίμακος τοῦ ἠλεκτροσκοπίου κατὰ τὴν πτῶσιν τῶν φυλλαρίων αὐτοῦ. Τὸ ἐν τῷ θαλάμῳ Δ ραδιενεργὸν ἀέριον ἐξιονίζει τὸν ἀέρα, ὁ ἐξιονισμὸς αὐτὸς εἶναι ἀνάλογος τῆς ποσότητος αὐτοῦ, ἡ δὲ ταχύτης τῆς πτώσεως τοῦ ἠλεκτροσκοπίου ἀνάλογος τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἰόντων· ἑπομένως ἀπὸ τὴν ταχύτητα τῆς πτώσεως τοῦ δυναμικοῦ δι' ὑπολογισμοῦ εὑρίσκομεν τὴν ποσότητα τοῦ ἐκδιωχθέντος ἀερίου καὶ ἐκ ταύτης τὴν ἔντασιν τῆς ραδιενεργείας, τὴν ὁποίαν ἐκφράζομεν εἰς μονάδας Curie ἢ Mache. Μία μονὰς Curie ὁρίζεται ὡς τὸ ποσὸν τοῦ ραδονίου τὸ εὑρισκόμενον ἐν ἰσορροπίᾳ πρὸς 1 γραμμ. ραδίου καὶ ἀντιστοιχοῦν ἑπομένως εἰς τὸ ποσὸν αὐτό. Ἐννοεῖται ὅτι ποσὸν αὐτὸ εἶναι κολοσσιαῖον καὶ μεταχειριζόμεθα ὡς μονάδα τὸ χιλιοστὸν τοῦ ἑκατομμυριοστοῦ τούτου, ἤτοι ἓν χιλιομικροκυρῆ = $1.10^{-9}$, ὅπερ ἀντιστοιχεῖ πρὸς 2.97 Mache.

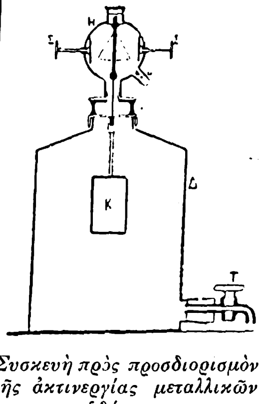

*Συσκευὴ πρὸς προσδιορισμὸν τῆς ἀκτινεργίας μεταλλικῶν ὑδάτων.*

Ἡ ραδιενέργεια τῶν ὑδάτων προέρχεται κατὰ κανόνα σχεδὸν ἐκ τοῦ ραδίου· ἂν προέρχεται ἐκ θορίου, ὅτε παράγεται τὸ ἀέριον θορόνιον, ἢ ἀκτινίου, ὅτε παράγεται τὸ ἀέριον ἀκτινόνιον, εἶναι εὔκολον νὰ καθορισθῇ διὰ δευτέρου καὶ τρίτου πειράματος ἐκ τῆς ταχύτητος μεθ' ἧς ἀποσυντίθενται τὰ ἀέρια αὐτὰ καὶ ἐν διαλύσει εὑρισκόμενα, διότι τὸ μὲν ραδόνιον ἀποσυντίθεται κατὰ τὸ ἥμισυ μετὰ πάροδον 3.85 ἡμερ., τὸ θορόνιον 54″ καὶ τὸ ἀκτινόνιον 2″—3″.

Ἐν Ἑλλάδι ἀνευρέθησαν ὑπὸ τοῦ Μ. Περτέση δύο ἐξόχως ραδιενεργοὶ πηγαὶ εἰς τὰ Καμένα Βοῦρλα, μεταξὺ Ἀταλάντης καὶ Λαμίας. Τῆς μιᾶς (δυτικὴ πηγὴ) ἡ ραδιενέργεια, εἰς διαφόρους ἡμέρας προσδιορισθεῖσα, κυμαίνεται μεταξὺ 175,7 καὶ 210 μονάδας Mache εἰς ἓν λίτρον, τῆς δὲ ἀνατολικῆς εἰς 21,6—25. Εἶναι ὅθεν ἡ δυτικὴ πηγὴ μία τῶν ἰσχυροτάτων γνωστῶν, μείζονος ἔτι ραδιενεργείας τῆς τῆς περιωνύμου τοῦ Gastein (155 Mache) καὶ τῆς ἐντονωτέρας τῶν γαλλικῶν, τῆς Bourboule (108 Mache). Εὑρέθησαν μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τοῦ ραδίου καὶ ἄλλαι ραδιοῦχοι πηγαὶ ἔτι ἰσχυρότεραι, ὡς ἐν Oberschlema τῆς Σαξωνίας, ὅπου ἀνευρέθησαν πηγαὶ 300—1.200 Mache, μία δὲ λίαν πτωχὴ εἰς ποσὸν ὕδατος, καὶ 5.500.

Ἐννοεῖται ὅτι ὡς ἐκ τῆς περιεκτικότητος εἰς ραδιενέργειαν τὸ ὕδωρ πρέπει νὰ διοχετεύεται διὰ σωλῆνος ἀπὸ τῆς πηγῆς μέχρι τῆς καταναλώσεως, ἄλλως χάνεται μέγα ποσὸν τῆς ραδιενεργείας αὐτοῦ. Ραδιενέργειαν πολλάκις σημαντικὴν ἐνέχει καὶ ἡ ἀποτιθεμένη ἀπό τινας πηγὰς ραδιοῦχος ἰλύς, πολλαχῶς ἐπίσης δι' ἰαματικοὺς σκοποὺς χρησιμοποιουμένη.

Κατασκευάζουν καὶ τεχνητῶς ραδιενεργὰ ὕδατα πρὸς πόσιν, ὡς καὶ σκευάσματα (Emanosalum, Radiogenum), διοχετεύοντες τὸ ἀπὸ ραδιούχων μεταλλευμάτων καὶ παρασκευασμάτων ἐκλυόμενον ραδόνιον διὰ ποσίμου ὕδατος. Ἡ ἔλλειψις ἐλέγχου πρὸς εὕρεσιν τῆς ραδιενεργείας τοιούτων ὑδάτων, τῶν ὁποίων ἡ εἰς ραδόνιον περιεκτικότης ἐλαττοῦται ἤδη εἰς 3,85 ἡμ. κατὰ τὸ ἥμισυ, ὡς καὶ τῆς ἀκριβοῦς γνώσεως εἰς ποίας εἰδικῶς περιπτώσεις καὶ εἰς πόσον ποσὸν καὶ περιεκτικότητα ἐνδείκνυται ἡ πόσις τοιούτων ὑδάτων, πρέπει νὰ καθιστῶσιν ἡμᾶς δυσπίστους εἰς τὰ τοιαῦτα σκευάσματα.

***Ἐνδείξεις θεραπευτικαί.*** Ἡ χημικὴ σύστασις τῶν ὑδάτων δὲν εἶναι πάντοτε ἀρκετὴ ἔνδειξις τῆς εἰδικῆς αὐτῶν ἐνεργείας πρὸς θεραπείαν ὡρισμένων νόσων. Καὶ ἄλλοι παράγοντες, ἡ θερμότης καὶ ἡ ραδιενέργεια καὶ αἱ ἐκ πολυετοῦς χρήσεως καὶ πείρας ἐνδείξεις, καθορίζουσι τὴν εἰδικὴν αὐτῶν χρῆσιν. Πλεῖστα ἄλλως ὕδατα μὲ πολλὰ διαλελυμένα συστατικὰ εἶναι μεικτὰ καὶ ἐνεργοῦν πολλαπλῶς. Συμβαίνει πολλάκις ὕδατα ἀνάλογου χημικῆς συστάσεως νὰ συνιστῶνται ὡς ἐκ τούτου εἰς λουτρὰ πρὸς θεραπείαν διαφόρων νόσων καὶ τοὐναντίον ὕδατα ἀρκετὰ διαφόρου συστάσεως διὰ τὴν αὐτὴν νόσον. Καλύτερον καθορίζει ἡ χημικὴ σύστασις τὴν κατάλληλον ἑκάστοτε χρῆσιν τῶν πρὸς πόσιν χρησιμοποιουμένων ὑδάτων. Οὕτω χρησιμοποιοῦνται ὡς καθαρτικὰ τὰ περιέχοντα θειικὸν νάτριον, ὡς τὰ περιώνυμα τοῦ Kaslsbad (0,24% θειικὸν νάτριον, 0,13% ὄξινον ἀνθρακικὸν νάτριον καὶ 0,1% χλωριοῦχον νάτριον), ἐκ τῶν ὁποίων λαμβάνονται δι' ἐξατμίσεως καὶ κρυσταλλώσεως τὰ στερεὰ ὑπολείμματα καὶ φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον. Ἐπίσης ὡς καθαρτικὰ τὰ περιέχοντα, πλὴν τοῦ θειικοῦ νατρίου, καὶ θειικὸν μαγνήσιον, ὅτε ὡς ἐκ τῆς γεύσεώς των ὀνομάζονται πικρά. Τοιαῦτα γνωστὰ εἶναι λ. χ. τὰ ἐν Ἱσπανίᾳ ὕδατα Carabana, περιέχοντα 10% θειικὸν νάτριον καὶ 0,3% θειικὸν μαγνήσιον· τὰ Hunyadi Janos ἐν Οὐγγαρίᾳ (2,3% θειικὸν νάτριον καὶ 2,4% θειικὸν μαγνήσιον), Sedlitz, Epsom τῆς Ἀγγλίας κλπ.

Τὰ ἀλκαλικὰ ὕδατα γενικῶς συνιστῶνται κατὰ τῶν διαταραχῶν τῆς πέψεως, οὐρικῆς λιθιάσεως, ἀρθριτισμοῦ ἐν γένει, ἀσθενειῶν πολλάκις τοῦ ἥπατος καὶ τῶν νεφρῶν κλ.

Τὰ ἀλκαλικὰ καὶ χλωριοῦχα (Ems) συνιστῶνται δι' εἰσπνοὰς εἰς χρονίους ξηροὺς κατάρρους τῶν ἀναπνευστικῶν, κατάρρους τοῦ στομάχου, ὡς καὶ γυναικολογικὰ νοσήματα. Ὕδατα τοιαῦτα περιέχοντα ἐλεύθερον ἀνθρακικὸν ὀξὺ συνιστῶνται διὰ νοσήματα τῆς καρδίας (Royat, Nanheim, Ὑπάτης). Ὕδατα θειοῦχα εἶναι τὰ παλαιότερον γνωστὰ καὶ χρησιμοποιούμενα εἰς λουτρὰ καὶ πρὸς πόσιν. Συνιστῶνται πρὸς θεραπείαν δερματικῶν νόσων, χρονίων κατάρρων τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων, χρονίων ρευματισμῶν τῶν ἄρθρων καὶ τῶν μυῶν, ἀρθρίτιδος, νευραλγιῶν κλπ.

Τὰ σιδηροῦχα καὶ ἀρσενικοῦχα συνιστῶνται κατὰ τῆς χλωρώσεως καὶ τῆς ἀναιμίας.

Ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἐνέργειαν τῶν λουτρῶν, ταῦτα ἐνεργοῦν καὶ διὰ τῆς θερμότητος καὶ διὰ τῶν περιεχομένων εἰς ἱκανὴν ποσότητα ἁλάτων. Καὶ ἡ ὑψηλὴ θερμοκρασία καὶ τὰ ἐν διαλύσει ἅλατα ἐπιφέρουν ἐρεθισμὸν ἐπὶ τοῦ δέρματος, ἐξ οὗ ἐπέρχεται κατ' ἀρχὰς στένωσις τῶν περιφερικῶν ἀγγείων καὶ ἀναιμία τοῦ δέρματος, καὶ εἶτα διεύρυνσις καὶ συνεπῶς ἀφθονωτέρα κυκλοφορία, καὶ ἐντονωτέρα ἀνταλλαγὴ τῆς ὕλης. Ἂν καὶ κατὰ πόσον ἕκαστον εἶδος ἅλατος ἔχῃ ἰδίαν ἐρεθιστικὴν ἐνέργειαν, δὲν εἶναι καθωρισμένον.

Ὅσον ἀφορᾷ τὴν θεραπευτικὴν ἐνέργειαν τῶν ραδιενεργῶν ὑδάτων, αὕτη εἶναι βεβαίως ἀναμφισβήτητος, δὲν ἔχει ὅμως ἀκόμη ἐπαρκῶς καθορισθῆ ἡ εἰδικὴ θεραπευτικὴ αὐτῶν ἱκανότης, οὐδὲ ἡ διὰ πόσεως πραγματικὴ ὠφέλεια. Ἡ πεῖρα εἶχεν ἤδη καταδείξει πρὸ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ ραδίου τὴν ἰαματικὴν ἐνέργειαν ὑδάτων, ἅτινα κατόπιν εὑρέθησαν ἰσχυρῶς ραδιενεργά, ὡς τῆς Bourboule ἐν Γαλλίᾳ καὶ τοῦ Gastein ἐν Γερμανίᾳ, τοῦ ὁποίου μάλιστα, καθὸ ἁπλῶς θερμῆς πηγῆς, ἡ ἰδιαιτέρα θεραπευτικὴ ἐνέργεια ἀποδοτέα ἀποκλειστικῶς σχεδὸν εἰς τὴν ἔντονον ραδιενέργειαν αὐτοῦ. Πειράματα ἐπίσης εἰδικὰ πόσεως ὑδάτων περιεχόντων εἰς μεγάλην ποσότητα ραδόνιον κατέδειξαν τὴν θεραπευτικὴν αὐτῶν ἐνέργειαν ἐπὶ οὐρικῆς ἀρθρίτιδος, ἀρθριτικῶν νευραλγιῶν καὶ μυϊκῶν ρευματισμῶν.

***Ἀνάλυσις μεταλλικῶν ὑδάτων.*** Πλὴν τῆς χημικῆς καθ' αὐτὸ ἀναλύσεως, προσδιορίζομεν καὶ φυσικάς τινας ἰδιότητας καὶ σταθερὰς αὐτῶν: 1) Τὴν θερμοκρασίαν εἰς βαθμοὺς Κελσίου δι' εὐαισθήτου καὶ ἀκριβοῦς θερμομέτρου. 2) Τὸ εἰδικὸν βάρος ἢ πυκνότητα εἰς 15° ὁμοίως διὰ πυκνομέτρου ἀκριβείας. 3) Τὸν βαθμὸν τῆς ἠλεκτρολυτικῆς διαστάσεως προσδιορίζοντες τὴν ἠλεκτρικὴν ἀγωγιμότητα διὰ τῆς μεθόδου τοῦ Kohlrausch. 4) Τὸν πηξιγόνον αὐτῶν βαθμόν. 5) Τὴν ραδιε-

Digitized by Google

| Ἀναλύσεις μεταλλικῶν ὑδάτων | Πηγαὶ Καϊάφα | | Πηγαὶ Λαγκαδᾶ (Μαρμάρινοι Λουτῆρες) | | Πηγοὶ Μεθάνων | | Ὕδωρ Λουτρακίου (κεντρικοῦ) | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Θερμοκρασία | 34°.6—35°.6 | | 39°.2 | | 34°.4 | | 31° 45 | |
| Εἰδικὸν βάρος εἰς 15°/4 | 1.0112 | | 0.99968 | | 1.0286 | | 1.0015 | |
| Ταπείνωσις σημείου πήξεως | 0.88 | | 0.025 | | 0.61 | | 0.125 | |
| Ἠλεκτρ. ἀγωγιμότης κ. 18 | 0.2207 | | 0.000783 | | 0.04986 | | 0.00351 | |
| Βαθ. ἠλεκτρ. διαστάσεως | 0.711 | | 0.811 | | 0 659 | | | |
| Ραδιενέργεια | 1.8 Mache | | 1.8 Mache | | 0.98 Mache | | 10.39 Mache | |
| Στερεὸν ὑπόλ. εἰς γρ. | 16 5946 | | 0.5913 | | 39 1552 | | 2.1562 | |
| Ἄζωτον διαλ. | 0.0102 | | 0.0106 | | 0.0039 | | | |
| Διοξείδιον ἄνθρ. ὑλικὸν | 0.2061 | | 0.2877 | | 1.5438 | | | |
| » » ἐλεύθερον γρ. | 4.634 | | 0.825 | | 21.163 | | 0.0268 | |
| Ὑδρόθειον » | 1.464 | | | | 0.846 | | | |
| *Κατιόντα* | | *εἰς χιλιοστοϊόντα* | | *εἰς χιλιοστοϊόντα* | | *εἰς χιλιοστοϊόντα* | | *εἰς χιλιοστοϊόντα* |
| Κάλιον γρ. | 0.2477 | 6.335 | 0 0ᶜ369 | 0.171 | 0 6905 | 17.659 | 0.00425 | 0.109 |
| Νάτριον » | 4.7990 | 208.652 | 0.1148 | 4.991 | 11.4204 | 96.517 | 0.52746 | 22.933 |
| Λίθιον » | 0 00015 | 0.0219 | 0 000082 | 0 0177 | 0.0011 | 0.158 | ἴχνη | |
| Ἀμμώνιον | 0 00284 | 0 157 | 0.000005 | 0 00011 | 0 0008 | 31.0459 | — | |
| Ἀσβέστιον | 0 702 | 35 038 | 0 0614 | 3.064 | 1.0083 | 25.163 | 0.1067 | 2.663 |
| Μαγνήσιον | 0.3214 | 13.215 | 0.0208 | 1.710 | 1.2578 | 517.19 | 0.08866 | 3 645 |
| Σίδηρος | 0.000224 | 0.004 | 0.000058 | 0.002 | 0.00011 | 10.002 | 0.000265 | 0.004 |
| Μαγγάνιον | 0.000113 | 0 002 | 0.00 021 | 0.00076 | 0 00080 | 40.0146 | ἴχνη | |
| Ἀργίλλιον | 0.00009 | 0.003 | 0 000007 | 0.00078 | 0.00002 | 40.0009 | 0.00133 | |
| *Ἀνιόντα* | | | | | | | | |
| Νιτρικὸν $NO_3$ | 0 00886 | 0.142 | 0.00205 | 0.033 | — | — | — | — |
| Χλώριον | 8.0996 | 228.415 | 0.02 3 | 0 572 | 21 148 | 596 396 | 1.01227 | 28 547 |
| Βρώμιον | 0.00864 | 0 108 | 0 00615 | 6.0002 | 0.053 | 0.663 | ἴχνη | — |
| Ἰώδιον | 0.000273 | 0 002 | 9.000006 | 0.00004 | 0 00023 | 0 0018 | ἴχνη | — |
| Θειικὸν $SO_4$ | 2.3015 | 23.959 | 0.1726 | 3 594 | 2.7387 | 28.510 | 0.15828 | 1.647 |
| Ὑδροφωσφορικὸν $HPO_4$ | 0.00006 | 0 0006 | 0.000008 | 0 00016 | 0.00192 | 0.002 | ἴχνη | |
| Θειοθειικὸν $S_2O_3$ | 0.00092 | 0.082 | — | — | 0.00074 | 0.0066 | — | |
| Ὑδροθειικὸν HS | 0.00013 | 0.004 | — | — | 0.0053 | 0.1603 | — | |
| Ὑδροανθρακικὸν $HCO_3$ | 0.003 | 0.049 | 0 3508 | 5.752 | 0.84925 | 13.922 | 0.2423 | 3.972 |
| *Ἴχνη* | *Στροντίου* | | *Στροντίου* | | *Νιτρ. ὀξέος στροντ.* | | *Νιτρ. ὀξ. ὀργαν. οὐσ.* | |
| Ἀπουσία | Cs Rb Ba Ti | | Cs Rb Ra Ti | | Cs Rb Ra Ti As | | CsRbNH$_4$SrBa | |
| Μοριακὰ | As νιτρώδους | | As νιτρώδους | | | | νιτρώδους ὀξ. | |
| Μεταπυριτικὸν ὀξὺ $H_2SiO_3$ | 6.0254 | | 0.446 | | 0.711 | | 0.147 | |
| Μεταβορικὸν | 0.00145 | | — | | 0.183 | | — | |
| *Ἅλατα ἐκ συνδυασμοῦ τῶν ἰόντων* | | | | | | | | |
| Νιτρικὸν κάλιον | 0.01445 | | 0.00334 | | — | | | |
| Χλωριοῦχον κάλιον | 0.4617 | | 0.0103 | | 1.3167 | | 1.2427 | |
| Χλωριοῦχον νάτριον | 12.190 | | 0 0249 | | 28.977 | | | |
| Βρωμιοῦχον » | 0.0111 | | 0.00002 | | 0 06824 | | | |
| Ἰωδιοῦχον » | 0 00032 | | 0 000007 | | 0 00027 | | | |
| Χλωριοῦχον λίθιον | 0.00093 | | 0.0005 | | 0.00672 | | | |
| » ἀμμώνιον | 0.00842 | | 0.000006 | | 0.00245 | | | |
| Θειικὸν νάτριον | — | | 0.2553 | | 0.00897 | | | |
| Ὑδροθειοῦχον νάτριον | 0.00022 | | | | 0.00104 | | | |
| Θειοθειικὸν νάτριον | 0 0013 | | | | 2.793 | | | |
| Χλωριοῦχον ἀσβέστιον | 0.7504 | | | | 0.00009 | | 0.2069 | |
| Θειικὸν ἀσβέστιον | 1.4645 | | | | 1.549 | | — | |
| Θειικὸν μαγνήσιον | 1.5885 | | | | 3.432 | | Χλ.μαγν.0 3472 | |
| Ὑδροανθρακικὸν μαγνήσιον | 0.003 | | | | 2.0161 | | | |
| » νάτριον | | | 0.0818 | | | | 0.1407 | |
| » ἀσβέστιον | | | 0.248 | | | | 0.1853 | |
| » μαγνήσιον | | | 0.125 | | | | Ὑδροανθ. σίδ. | |
| Ὑδρανθρακικὸς σίδηρος | 0.0007 | | 0.000185 | | 0.000353 | | 0.00084 | |
| Ὑδρανθρακικὸν μαγγάνιον | 0.00038 | | 0 000067 | | 0.0ı259 | | | |
| Ὑδροφωσφορικὸν ἀργίλλιον | 0.00007 | | 0 000009 | | 0.0000152 | | | |
| Θειικὸν ἀργίλλιον | 0.0005 | | 0.000035 | | | | 0.0084 | |
| Μεταπυρ. ὀξὺ | 0.0254 | | 0.0349 | | 0.0557 | | 0 0147 | |
| Μεταβορικὸν ὀξὺ | 0.00145 | | — | | 0.00806 | | | |

*Σημ.* Ἡ ἀνάλυσις τῶν πηγῶν Λουτρακίου ἐγένετο ὑπὸ Ἐμμ. Ἐμμανουήλ· ἡ τῶν λοιπῶν ὑπὸ Μ. Περτέση.

νέργειαν, καθ' ἣν μέθοδον ἀνωτέρω ἐξεθέσαμεν. Ἐπίσης ἐξετάζομεν καὶ τοὺς ὀργανοληπτικοὺς τοῦ ὕδατος χαρακτῆρας: διαύγειαν, ὀσμήν, γεῦσιν καὶ χρῶμα ἂν ἔχῃ. Εἰς πολλὰς περιστάσεις ἐνδείκνυται καὶ μικροβιολογικὴ ἐξέτασις. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν καθ' αὐτὸ χημικὴν ἀνάλυσιν, προσδιορίζομεν τὸ εἶδος καὶ τὸ ποσὸν τῶν περιεχομένων ἐν διαλύσει ἀερίων, τὰ ὄξινα (ἀνιόντα) καὶ τὰ μεταλλικὰ (κατιόντα) συστατικὰ τῶν διαλελυμένων ἁλάτων.

Ἡ ἔκθεσις τῶν ἀναλυτικῶν ἀποτελεσμάτων ἔδωσεν ἰδίως εἰς νεωτέρους χρόνους λαβὴν πρὸς πολλὰς συζητήσεις. Αἱ παλαιότεραι ἀναλύσεις, καίτοι κατ' αὐτὰς τὰ ὄξινα συστατικὰ καὶ τὰ μέταλλα ἓν ἕκαστον ἰδιαιτέρως προσδιωρίζοντο, ἀνέγραφον αὐτὰ οὐχ ἧττον ἐν συνδυασμῷ πρὸς ἅλατα. Διὰ τὸν τοιοῦτον συνδυασμὸν δὲν ὑπάρχει κανεὶς ἐπιστημονικὸς κανὼν ἀπόλυτος, ἐγίνετο δὲ ὑπὸ τῶν διαφόρων χημικῶν κατὰ τρόπον συμβατικὸν καὶ ὄχι ὑφ' ὅλων τὸν αὐτόν. Ἐκ τούτου ἦτο δυνατὸν μία καὶ ἡ αὐτὴ ἀνάλυσις νὰ παρουσιάσῃ τὸ ὕδωρ περιέχον τὰ αὐτὰ μὲν ποιοτικῶς καὶ ποσοτικῶς συστατικά, ἀλλ' ἐκ διαφόρων ποσοτικῶς ἢ καὶ ποιοτικῶς συνιστάμενα ἁλάτων.

Ἡ ὑπὸ τῆς ἐπιστήμης γενικῶς παραδεκτὴ γενομένη θεωρία τῆς ἠλεκτρολυτικῆς διαστάσεως κατέδειξεν ὅτι εἰς πολὺ μεγάλην ἀραίωσιν πάντα τὰ ἅλατα καὶ εἰς μετρίαν τὰ εὐδιαλυτώτερα εὑρίσκονται καθ' ὁλοκληρίαν ἐν ἠλεκτρολυτικῇ διαστάσει, ἤτοι ἕκαστον τούτων εἰς δύο ἰόντα, ἓν κατιὸν (τὸ μέταλλον) καὶ ἓν ἀνιὸν (τὴν ὀξύρριζαν ἢ τὸ ἀμέταλλον), λ. χ. τὸ χλωριοῦχον νάτριον εἰς Na˙ καὶ Cl′, τὸ ὄξινον ἀνθρακικὸν νάτριον εἰς Na˙ καὶ HCO′$_3$ κτλ. Ἑπομένως εἰκόνα πληρέστερον ἀνταποκρινομένην πρὸς τὴν πραγματικότητα καὶ ὁμοιόμορφον διὰ πάντα ἀναλυτὴν μᾶς δίδει ἡ ἔκθεσις τῶν ἀναλυτικῶν ἀποτελεσμάτων εἰς ἰόντα, ἥτις σήμερον εἶναι γενικῶς παραδεκτή. Ἐπειδὴ οὐχ ἧττον ὁ ἐθισμὸς πρὸς τὴν ἀναγραφὴν τῶν στερεῶν συστατικῶν τοῦ ὕδατος ὑπὸ μορφὴν ἁλάτων, ὡς εἶχε γίνει δι' ὅλα τὰ ἰαματικὰ ὕδατα, δυσχεραίνει πως, ἰδίᾳ τοὺς ἰατρούς, εἰς τὴν σύγκρισιν καὶ ἀντιπαραβολὴν τῶν συστατικῶν τῶν διαφόρων μεταλλικῶν ὑδάτων, ἐγένετο δεκτὸν ὅπως προστίθεται καὶ πίναξ τῆς ἐν συνδυασμῷ τῶν ἰόντων ἀναγραφῆς αὐτῶν καὶ ὡς ἁλάτων, κατὰ ὡρισμένους συμβατικοὺς κανόνας. Ἐννοεῖται ὅτι ὑπὸ μορφὴν ἰόντων ἀναγράφονται τὰ συστατικὰ ὅσα πρακτικῶς ὑφίστανται εἰς τὰ διαλύματα ἠλεκτρολυτικὴν διάστασιν. Τὰ λοιπὰ ἀναγράφονται ὑπὸ τὴν μοριακὴν των μορφήν, εἶναι δὲ ταῦτα τὸ ἐλεύθερον βορικὸν ($HBO_2$) καὶ πυριτικὸν ὀξὺ ($H_2\ Si\ O_3$) κλπ. καὶ τὰ διαλελυμένα ἀέρια, διαξείδιον ἄνθρακος, ὑδρόθειον, ἄζωτον, ὀξυγόνον κτλ. Ἡ ἑκατοστιαία σύστασις ἀναφέρεται ἐπὶ ἑνὸς λίτρου μεταλλικοῦ ὕδατος ἢ ἄλλοτε ἐπὶ ἑνὸς χιλιογράμμου. Ἡ ἀναγραφὴ τῶν ποσῶν, ὑπὸ τὰ ὁποῖα περιέχονται τὰ διάφορα ἰόντα δὲν ἀνταποκρίνεται καὶ πρὸς τὸν ἀριθμὸν τῶν περιεχομένων ἰόντων, καθ' ὅσον ἕκαστον ἰὸν ἔχει τὸ ἴδιον αὐτοῦ σχετικὸν βάρος καὶ διάφορον ἑτέρου ἰόντος. Λ. χ. ἂν ἐκφράσωμεν τὰ ἰόντα εἰς γραμμάρια, ἓν γραμμοϊὸν χλωρίου ζυγίζει 35.5 γραμμάρια καὶ ἓν γραμμοϊὸν τῆς ὀξυρρίζης τοῦ θειικοῦ ὀξέος 96. Ἐὰν ἑπομένως ἔχωμεν εἰς μεταλλικόν τι ὕδωρ λ. χ. ἐν διαλύσει 0,71 γραμμ. ἰόντος χλωρίου καὶ 0,96 ἀνιόντος τοῦ θειικοῦ ὀξέος, ἐνῷ φαίνεται ὅτι ἔχομεν ἰόντα θειικοῦ ὀξέος κατὰ τὸ τρίτον περισσότερα περίπου ἢ χλωρίου, τοὐναντίον ἔχομεν διπλάσια χλωρίου ἢ θειικοῦ ὀξέος. Διὰ τοῦτο ἀναγράφονται προσθέτως καὶ εἰς χιλιοστοϊόντα, ὁ ἀριθμὸς τῶν ὁποίων εὑρίσκεται διὰ διαιρέσεως τοῦ εὑρεθέντος βάρους διὰ τοῦ βάρους τοῦ ἰόντος ἐκπεφρασμένου εἰς γραμμάρια, τούτου δὲ λαμβάνεται τὸ χιλιοπλάσιον. Οὕτω λ. χ. ἓν λίτρον ὕδατος περιέχον 2,684 γραμμ. ὑδροανθρακικοῦ ἀνιόντος περιέχει $\frac{2,684}{61} \times 1000 = 44$ χιλιοστοϊόντα. Ἕκαστον χιλιοστοϊὸν ἀντιπροσωπεύει ἐντεῦθεν τὸ βάρος τοῦ ἰόντος ἀτομικὸν ἢ ἑνωτικόν, ἐκπεφρασμένον εἰς χιλιοστὰ τοῦ γραμμαρίου. Ἂν θέλωμεν νὰ ἔχωμεν καὶ τὴν δυναμικότητα, ἤτοι τὰ ἰόντα εἰς ἰσοδύναμα ἠλεκτρικὰ φορτία ἐκπεφρασμένα, πολλαπλασιάζομεν τὸν ἀριθμὸν τῶν χιλιοστοϊόντων ἐπὶ τὴν ἀτομικότητα, λαμβάνομεν δ' οὕτω τὰ ἰόντα εἰς χιλιοστοϊσοδύναμα. Οὕτω, ἂν ἔχωμεν εἰς ἓν λίτρον 30 χιλιοστοϊόντα μαγνησίου (διατομικοῦ) καὶ ἑξήκοντα χλωρίου (μονατομικοῦ), ἔχομεν 60 χιλιοστοϊσοδύναμα μαγνησίου καὶ 60 χιλιοστοϊσοδύναμα χλωρίου·

Παραθέτομεν ἀνωτέρω τ' ἀποτελέσματα ἀναλύσεων τεσσάρων ἑλληνικῶν πηγῶν διαφόρου τύπου, συμφώνως πρὸς τοὺς ἀνωτέρω κανόνας ἐκτεθειμένα.

***Τεχνητὰ μεταλλικὰ ὕδατα.*** Τεχνητῶν μεταλλικῶν ὑδάτων διακρίνομεν δύο εἴδη: 1) Ἀπομιμήσεις τοιούτων φυσικῶν ὑδάτων. 2) Συνθέσεις ὑδάτων περιεχόντων ἅλατα, ἀνθρακικὸν ὀξὺ ἢ καὶ ἄλλας οὐσίας, χωρὶς ταῦτα ν' ἀνταποκρίνωνται εἰς τὴν σύστασιν μεταλλικοῦ ὕδατος ὡρισμένης τινὸς πηγῆς.

Τὰ πρῶτα κατασκευάζονται πάντοτε δι' ἀπεσταγμένου ὕδατος, εἰς τὸ ὁποῖον διαλύονται τὰ κατάλληλα ἅλατα εἰς ἣν ἀναλογίαν εὑρίσκονται ἐν τῷ μεταλλικῷ ὕδατι, τὸ ὁποῖον ἀπομιμούμεθα. Τὰ ἐν διαλύσει ἅλατα πρέπει νὰ ἔχουν τὴν καθαρότητα τὴν ὁριζομένην ὑπὸ τῆς φαρμακοποιίας καὶ νὰ μὴ περιέχουν μόλυβδον, χαλκόν, ψευδάργυρον καὶ ἀρσενικόν. Τὸ στερεὸν ὑπόλειμμα ν' ἀνταποκρίνεται ποιοτικῶς καὶ ποσοτικῶς πρὸς τὸ ὕδωρ τῆς πηγῆς, τῆς ὁποίας εἶναι ἀπομιμήσεις. Ὅσον ἀφορᾷ τὰ δεύτερα, τὰ χρησιμοποιούμενα ἰδίᾳ πρὸς πόσιν, πρὸς παρασκευὴν των πρέπει νὰ χρησιμοποιῆται ἄριστον πόσιμον ὕδωρ, ἀνταποκρινόμενον πρὸς τοὺς διὰ τὰ πόσιμα ὕδατα ἀπαιτουμένους ὅρους.

Τοιαῦτα ὕδατα συνήθως εἶναι ὑπέρκορα εἰς διοξείδιον ἄνθρακος. Τοῦτο κατ' ἀρχὰς ἐφαρμόζεται ὑπὸ πίεσιν δύο ἀτμοσφαιρῶν, ὅπως ἐκδιώξῃ τὸν ἀέρα. Ἡ ἐργασία αὕτη ἀναλαμβάνεται καὶ δευτέραν φοράν, μεθ' ὃ κορεννύουν τὸ ὕδωρ ὑπὸ πίεσιν τεσσάρων ἀτμοσφαιρῶν.

Συνήθως εἰς τοιαῦτα ὕδατα τὰ περιεχόμενα εἰς τὸ πόσιμον ὕδωρ ἀνθρακικὸν ἀσβέστιον καὶ μαγνήσιον καὶ θειικὰ ἅλατα αὐτῶν τὰ μεταβάλλουν προηγουμένως διὰ τῶν γνωστῶν χημικῶν μεθόδων εἰς ὀξυανθρακικά. Τοιαῦτα εἶναι τὰ τεχνητὰ ἀεριοῦχα ὕδατα τῶν σιφώνων, τοῦ Selters ἢ σόδας.

Πλὴν τῶν ὑδάτων τούτων παρασκευάζονται καὶ ἡμιτεχνητὰ μεταλλικὰ ὕδατα· ἀπὸ μεταλλικὸν δηλαδὴ γνωστὸν ὕδωρ ἀφαιροῦν συστατικὰ ἀλλοιοῦντα τὴν γεῦσιν (σίδηρον, μαγγάνιον) καὶ κορεννύουν δι' ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Τῶν τεχνητῶν ποσίμων ὀξυανθρακικῶν μεταλλικῶν ὑδάτων ἐγεν-

Digitized by Google

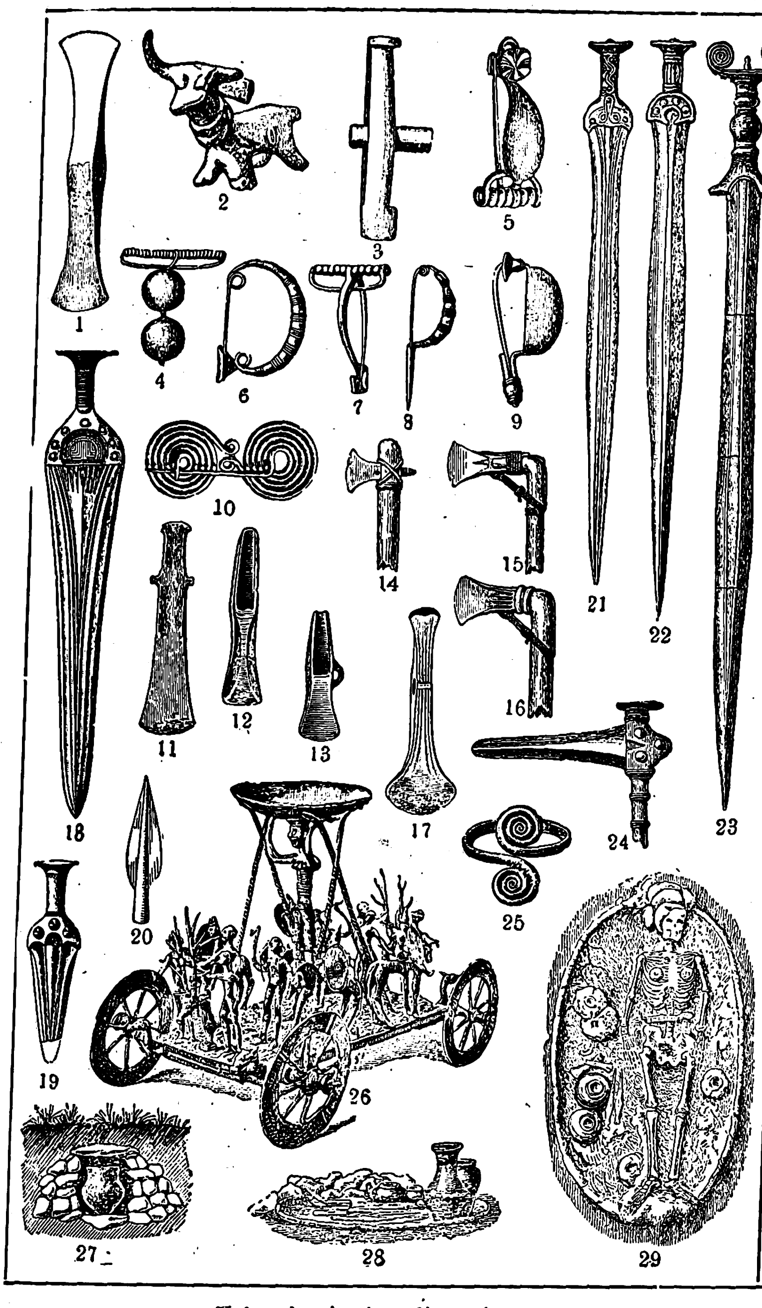

*Χαλκῆ ἐποχὴ μέχρι ἁλσταττίου.*

[1=ἀξίνη χαλκῆ· 2=εἰδώλιον χαλκοῦν· 3=πέλεκυς χαλκοῦς· 4—10=πόρπαι· 11—17=πελέκεις· 18—19=ἐγχειρίδια· 20=αἰχμὴ δόρατος· 21—24=ξίφη· 25=περιβραχιόνιον· 26=ἐπιτραπέζιον· 27=τάφος ἐν πίθῳ· 28=τάφος μετὰ καῦσιν· 29=τάφος μὲ σκελετόν.]

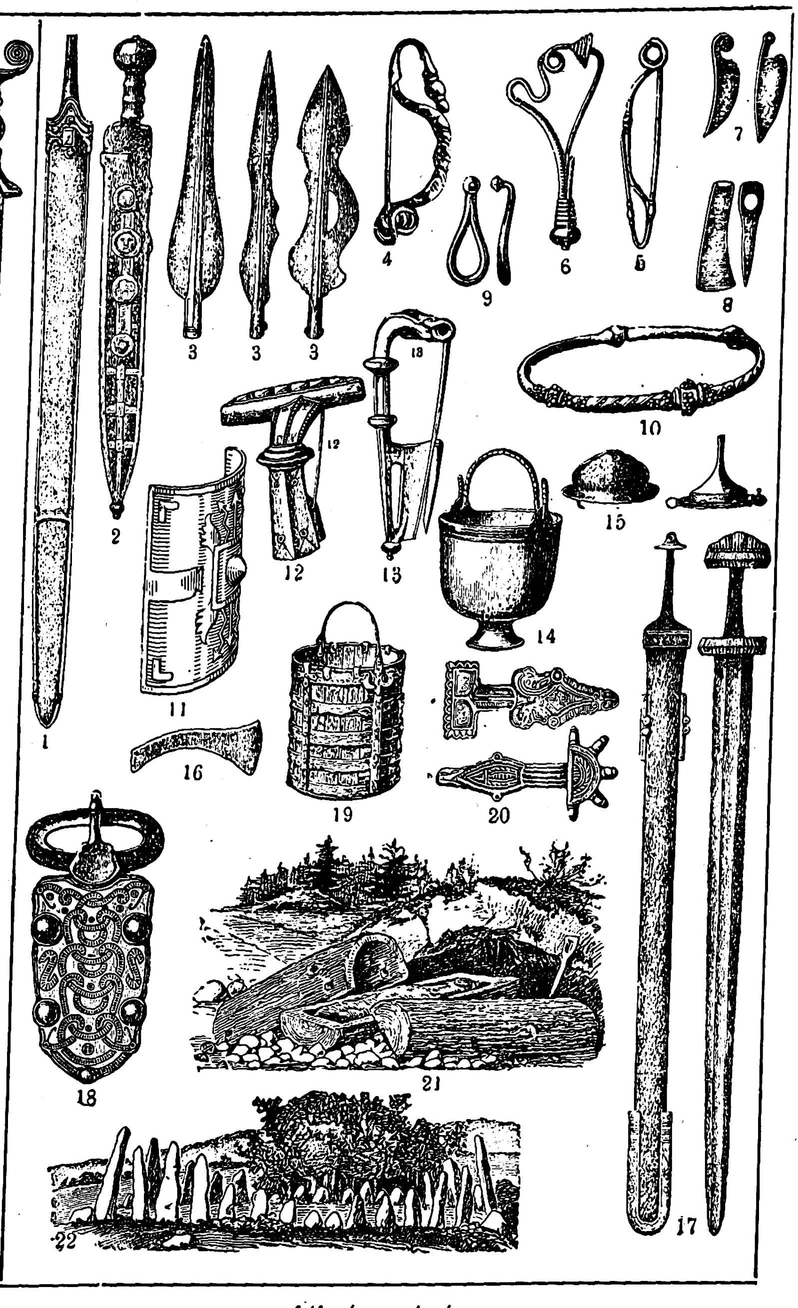

*Ἁλστάττιος-Λατένιος.*

(1, 2, 17=Ξίφη· 3=αἰχμαὶ δόρατος· 4—6 πόρπαι· 7=μαχαίρια· 8, 16=πελέ εις· 9=πόρπαι ζώνης· 10=περιβραχιόνιον· 11=ἀσπίς· 12—13=πόρπαι· 14=ἀγγεῖον· 15=παραρτήματα ἀσπίδος· 18=πόρπη ζώνης· 19=δοχεῖον· 20=πόρπαι· 21=ξύλινον φέρετρον· 22=πλοιοστάτης.

κεύθη πολὺ ἡ χρῆσις ἀφ' ἧς κατέστη εὐχερὴς ἡ εἰς τὸ ἐμπόριον διάδοσις τοῦ ὑγροῦ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος, ἤτοι χαλυβδίνων κυλίνδρων ὑπὸ μεγάλην πίεσιν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Deutsches Baederbuch (Leipzig 1907). Annuaire des eaux minérales de France (1913).— *Σπ. Δυντᾶ*, «Φαρμακολογία» (τόμ. Β. 1926).— *Μ. Περτέση* 'Αναλύσεις κτλ.

Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

—**μεταλλικὴ** ***ἐποχὴ*** *[Προϊστορ. 'Ανθρωπολογ.]*. Ἡ τελευταία περίοδος, εἰς ἣν διακρίνομεν τὴν ὅλην ἱστορίαν τῆς ζωῆς τοῦ ἀνθρώπου, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήκομεν καὶ ἡμεῖς σήμερον. Μετὰ τὴν *λιθικὴν* ἐποχὴν ἐγνώρισεν οὗτος τὰ μετάλλα, ἡ μεταλλικὴ ὅμως περίοδος δὲν ἤρξατο τυχὸν ἀποτόμως, ὅπως συμβατικῶς ὁρίζομεν ταύτην, ἀλλ' ἔσχε πρόδρομα στάδια χρησιμοποιήσεως τοῦ μετάλλου δευτερευόντως. Κατ' ἀρχὰς ὁ ἄνθρωπος εὑρισκόμενος ἔτι ἐν πλήρει νεολιθικῷ πολιτισμῷ, ἐγνώρισε καὶ ἐχρησιμοποίησε τὸν χρυσὸν καὶ τὸν χαλκόν, αὐτοφυεῖς, διὰ τῆς σφυρηλατήσεως μετὰ καὶ ἄνευ πυρός, διὰ τὴν παρασκευὴν κοσμημάτων. Εἶτα βαθμηδὸν ἐχρησιμοποίησε τὸν χαλκὸν ἐντατικώτερον εἰς κατασκευὴν μαχαιρῶν κλπ. Καὶ αὕτη εἶναι ἡ μεταβατικὴ οὕτως εἰπεῖν ἐποχὴ ἀπὸ τοῦ λίθου εἰς τὰ μέταλλα. Μόνον δὲ ὅταν ἐγνώρισεν ὁ ἄνθρωπος νὰ ὀρύσσῃ τὰ ὀρυκτά, νὰ ἐξάγῃ τὰ μέταλλα καὶ τήκῃ αὐτὰ καὶ τέλος τὰ μειγνύῃ τὰ μὲν μὲ τὰ δέ, βραδέως εἰσήχθη καὶ ἐγενικεύθη ἡ χρῆσις τῶν μετάλλων ἀπὸ τοῦ ἑνὸς λαοῦ εἰς τὸν ἄλλον, ἀντικαταστήσασα τελικῶς τὸν λίθον, τὸ ὀστοῦν, τὸ ξύλον. Πρῶτοι λαοὶ πραγματικῶς «μεταλλικοὶ» ἐνεφανίσθησαν ἐν 'Ανατολῇ, ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τῆς 'Ασίας. Οὗτοι ἐδίδαξαν διὰ τῆς ἐπικοινωνίας τοὺς λαοὺς τῆς Δύσεως νὰ χρησιμοποιήσωσι τὰς φυσικὰς πηγάς των. Ὁπωσδήποτε, διαιροῦσι τὴν ὅλην μεταλλικὴν ἐποχὴν εἰς μικροτέρας βαθμῖδας: Τὴν *λιθοχαλκῆν* περίοδον, τὴν *ὀρειχαλκίνην* ἐποχὴν καὶ τὴν *σιδηρᾶν* ἐποχὴν (βλ. τὰς λ.).

Ι. Γ. Κ.

— **μεταλλικὸν** ***δάπεδον***. Οὕτω καλεῖται γενικώτερον τὸ πρὸ τῶν πινάκων διανομῆς τῶν ἐργοστασίων παραγωγῆς τῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας δάπεδον, τὸ ὁποῖον πρὸς ἀσφάλειαν τῶν χειριζομένων τοὺς πίνακας δέον νὰ εἶναι κεκαλυμμένον ἢ διὰ μεταλλικοῦ στρώματος καλῶς προσγειωμένου ἢ διὰ μονωτικοῦ ὑλικοῦ μεγάλης μηχανικῆς καὶ μονωτικῆς ἱκανότητος.

Α. Π. Μ.

**μεταλλικότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μεταλλικοῦ: «ἡ μεταλλικότης τοῦ ὕδατος, — τῆς φωνῆς».

**μετάλλινος,** *—η, —ον*· ὁ ἐκ μετάλλου κατεσκευασμένος: «μετάλλινα σκεύη».

**μετάλλιον** (τό)· μικρὸν μέταλλον, σεσημασμένον τεμάχιον μετάλλου ἀναμνηστικὸν ἢ τιμητικόν, ὁποῖα τὰ παρεχόμενα εἰς στρατιωτικοὺς ἢ εἰς ἀνάμνησιν ἱστορικοῦ τινος γεγονότος.

— *['Εγκυκλ.]* Τὸ *μετάλλιον* (γαλλ. médaille, ἰταλ. medaglia, ἀγγλ. medal) εἶναι τεμάχιον μετάλλου, μετ' ἐγγλύφου ἢ ἀναγλύφου παραστάσεως καὶ ἐπιγραφῆς, γενικῶς στρογγύλον, ἐν εἴδει νομίσματος, κοπτόμενον εἰς ἀνάμνησιν ἀξιομνημονεύτου τινὸς ἐπισήμου ἢ ἱστορικοῦ ἢ μεγάλου γεγονότος ἢ πράξεως (πολέμου, νίκης, ἑορτασμοῦ ἑκατονταετηρίδος κλπ.), ἢ πρὸς τιμὴν διακεκριμένης προσωπικότητος, ἢ ὡς ἠθικὴ ἀμοιβὴ διὰ τὴν δρᾶσιν γενικῶς ἀτόμου τινός, ἰδίως διὰ τὴν ἐπίδειξιν θάρρους, αὐταπαρνήσεως, αὐτοθυσίας κλπ., ἢ ὡς τιμητικὴ ἔνδειξις δι' ἐπίδοσίν τινα εἰς ἀγῶνας, εἰς ἐκθέσεις, εἰς διαγωνισμοὺς κλπ. Εἴς τινας χώρας ἢ πόλεις καλεῖται οὕτω καὶ τὸ ἐκ μετάλλου ἢ ἄλλης οὐσίας πλακίδιον, ὅπερ φέρουν, συνήθως ἠριθμημένον, πάντες ὑποχρεωτικῶς ὅσοι ἐξασκοῦν ἐπάγγελμά τι ἐν δημοσίᾳ ὁδῷ. Παρ' ἡμῖν τὸ μετάλλιον τοῦτο καλεῖται συνήθως κοινῶς «ἀριθμός».

Τὸ μετάλλιον εἶναι σχεδὸν ὅμοιον πρὸς τὸ νόμισμα, διαφόρου μεγέθους, συνήθως μεγαλυτέρου τῶν νομισμάτων, μὲ τὰς ἐπὶ τῶν δύο προσόψεων ἐγγλύφους ἢ ἀναγλύφους ἐπιγραφὰς καὶ ἀναπαραστάσεις σχετιζομένας πρὸς τὸ πρόσωπον, εἰς τιμὴν τοῦ ὁποίου κόπτεται, ἢ πρὸς τὸ γεγονός, εἰς ἀνάμνησιν τοῦ ὁποίου καθιεροῦται. Τὸ μετάλλιον διακρίνεται ἀπὸ τοῦ παρασήμου, καθότι τὸ μὲν παράσημον ἀποτελεῖ γενικὴν τιμητικὴν διάκρισιν, καθιερωθεῖσαν πρὸς βράβευσιν πράξεων ἐκ τῶν προτέρων ὁρισθεισῶν, ἀλλ' αἵτινες μέλλουν νὰ λάβουν χώραν μετὰ τὴν τοιαύτην καθιέρωσιν· ἐνῷ τὸ μετάλλιον καθιεροῦται δι' εἰδικὰ γεγονότα ἢ εἰδικὰς πράξεις λαβούσας χώραν πρὸ τῆς καθιερώσεως αὐτοῦ. Τὸ μετάλλιον δὲν ἔχει νομισματικὴν κυκλοφοριακὴν ἀξίαν.

Τὰ μετάλλια προῆλθον ἀρχικῶς ἐκ τῶν νομισμάτων. Κατὰ τὴν ἀρχαιοτάτην ἐποχὴν οἱ Ἕλληνες, οἱ 'Ετροῦσκοι καὶ οἱ Ρωμαῖοι δὲν ἔκαμνον διάκρισιν μεταξὺ μεταλλίων καὶ νομισμάτων, τὰ ὁποῖα παρ' αὐτοῖς, πλὴν ἐλαχίστων ἐξαιρέσεων, συνεταυτίζοντο, διότι τὰ νομίσματά των ἐχρησίμευον συγχρόνως ὡς μέσα ἀνταλλαγῆς καὶ ὡς ἀναμνηστικὰ διαφόρων γεγονότων. 'Εν τούτοις ὑπάρχουν καὶ εἰς τὴν ἀρχαιότητα μετάλλιά τινα, τὰ ὁποῖα δὲν εἶναι νομίσματα. 'Εκ τούτων ἀναφέρομεν ἐνταῦθα τὰς κατωτέρω τρεῖς κατηγορίας:

1) Τὰ ἀρχαῖα θρησκευτικὰ καὶ ταλισμανικὰ μετάλλια. Τοιαῦτα εἶναι τὰ ἐν 'Εφέσῳ πωλούμενα εἰς τοὺς προσκυνητὰς τοῦ ναοῦ τῆς 'Αρτέμιδος μικρὰ μετάλλια ἐξ ὀρειχάλκου, φέροντα τὸ σύμβολον τῆς θεᾶς, ἢ ἔλαφον, περικυκλουμένην ὑπὸ ἀκαταλήπτου ἐπιγραφῆς καὶ τὰ ὁποῖα ἐθεωροῦντο ὅτι εἶχον μαγικὴν καὶ προφυλακτικὴν ἰδιότητα. Ἡ εἰκὼν τοῦ Μεγάλου 'Αλεξάνδρου, ἰδίως κατὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἐποχήν, ἐθεωρεῖτο ὅτι εἶχε τὴν αὐτὴν ἰδιότητα καὶ ἀνεπαρίστατο ἐπὶ μεταλλίων, τὰ ὁποῖα ἔφερον ἀνηρτημένα εἰς τὸν λαιμὸν ὡς φυλακτὰ κατὰ τῆς βασκανίας καὶ ὡς προφυλακτικὰ κατὰ πάσης κακοτυχίας. Τὰ ὡραιότερα δείγματα τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὰ περίφημα μετάλλια τοῦ θησαυροῦ τῆς Ταρσοῦ. Παρόμοια μετάλλια, μετὰ



Digitized by Google

1 καὶ 2. Βίκτ. Πιζάνο (1380—1451): Ὁ ἡγεμὼν Νοβέλλο Μαλατέστα (ὀπισθία (ὄψ ις (2): ὁ Μαλατέστα γονυκλινὴς πρὸ τοῦ Ἐσταυρωμένου). 3. Ματθ. ντεῒ Πάστι: ἀποθ. 1468): Σιγισμόνδος Π νδόλφος Μαλατέστα. 4. Σπεραντίο (1440—1528): Ὁ νομοδιδάσκαλος Αὐγουστῖνος Μπουονφραντσέσκο. 5. Βενεδ. ντὰ Μπαγιάνο (1442—1497): Φίλιππος Στρότσι. 6. Ἀλβ. Ντύρερ (;) (1471—1528): Γουλ. Πιρκχάϊμερ (1517). 7. Γ. Λαϋγκέμπε (1630—1683): Φρειδερῖκος Γουλιέλμος, ἐκλέκτωρ τοῦ Βρα δ εμβο ύ ργου. 8. Φρ. Χάγκενάουρ (α΄ ἥμισυ ΙΣΤ΄ αἰῶνος): Φιλ. Μελάγχθων. 9. Χὰνς Ντάουχερ (1485—1538): Φίλιππος, κόμις τοῦ Παλατινάτου (1527). 10. Ἰωάν. Χρ. Ρομάνο (;) (ἀποθ. 1512): Λουκρητία Βοργία. 11. Ἰωάν. Βαρὲν (1640—1672): Ὁ καρδινάλιος Ρισελιέ.

*Διάφοροι τύποι μεταλλίων.*

τῆς εἰκόνος τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ἐφέροντο ἀκόμη καὶ ἐπὶ τῆς χριστιανικῆς ἐποχῆς, τινὰ δὲ τούτων εἶχον, ὁμοῦ μετὰ τῆς εἰκόνος τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, καὶ διάφορα σύμβολα τοῦ Χριστιανισμοῦ.

2) Τὰ χριστιανικὰ θρησκευτικὰ μετάλλια. Ταῦτα ὁμοιάζουν πρὸς τὰ προηγούμενα καὶ εἶναι ὀρειχάλκινα καὶ μικρῶν διαστάσεων. Φέρουν ἐπ' αὐτῶν τὴν εἰκόνα τοῦ Χριστοῦ ἢ τῶν ἀποστόλων, τῶν ἀγγέλων, τοῦ Καλοῦ ποιμένος, τὴν θυσίαν τοῦ Ἀβραάμ, τὸ προσκύνημα τῶν μάγων. Ἐν τῷ «Βίῳ τῆς Ἁγίας Γενεβιέβης» ὁ ἅγιος Γερμανὸς τῆς Ὠξέρ, κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς μεροβιγγείου περιόδου, ἀναφέρει ὅτι καθ' ἣν στιγμὴν ἡ νεαρὰ ποιμενὶς προσφέρει ἑαυτὴν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς θρησκείας γονυκλινὴς πρὸ τοῦ ἐπισκόπου, οὗτος κρεμᾷ ἀπὸ τὸν λαιμόν της μετάλλιον φέρον τὸ σημεῖον τοῦ σταυροῦ, ἐξ οὗ καταφαίνεται ὅτι ἡ συνήθεια τῶν μεταλλίων, τὰ ὁποῖα χρησιμοποιοῦνται παρὰ τοῖς χριστιανικοῖς λαοῖς κατὰ τὴν βάπτισιν καὶ εἰς τινας μεγάλας ἑορτὰς καὶ προσκυνήματα ἱερῶν τόπων, ἀποτελεῖ παράδοσιν ἀναγομένην εἰς τοὺς πρώτους αἰῶνας τοῦ Χριστιανισμοῦ, κατά τινας δὲ καὶ εἰς ἐποχὴν πολὺ πρὸ τοῦ Χριστιανισμοῦ. Ἡ χρῆσις τῶν θρησκευτικῶν ἢ προφυλακτικῶν μεταλλίων ἀνεπτύχθη μεγάλως κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς χρόνους. Τοιαῦτα βυζαντινὰ μετάλλια διεσώθησαν πολλά, φέροντα τὸν βασιλέα Σολομῶντα ἔφιππον, διαπερῶντα διὰ τῆς λόγχης του τὸν δαίμονα τῆς ἀσθενείας· ἄλλα φέρουν λέοντας, σκορπίους, ὄφεις κτλ., περιστοιχίζοντας μέγαν ὀφθαλμόν, τὸν ἥλιον, τὴν σελήνην καὶ ἀστρολογικὰ σύμβολα· ἄλλα φέρουν τοὺς ἀρχαγγέλους Μιχαήλ, Γαβριήλ, Οὐριήλ, Ραφαήλ. Ὑπὸ τὸ ὄνομα «Σφραγὶς τοῦ Σολομῶντος», ὑπὸ τὸ ὁποῖον εἶναι γνωστὰ τὰ φυλακτὰ ταῦτα, ἡ χρῆσις περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἄραβας καὶ ἐξετάθη ἐν Ἀνατολῇ.

3) Ἄλλη κατηγορία ἀρχαίων μεταλλίων εἶναι τὰ καλούμενα «περικεχαραγμένα μετάλλια» (γαλλ. médailles contorniates). Τὸ ὄνομα τοῦτο ἐδόθη εἰς τὰ μετάλλια ταῦτα κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐκ τῆς ἐγγλύφου γραμμῆς, ἥτις περιβάλλει τὰς παραστάσεις των καὶ ἀπὸ τὰ δύο μέρη (ἰταλ. contorno). Τὰ μετάλλια ταῦτα, ὧν ἡ κατασκευὴ δὲν ἀνάγεται εἰς ἐποχὴν παλαιοτέραν τῆς τοῦ Κωνσταντίνου, φέρουν διαφόρους παραστάσεις, ὡς εἶναι ἡ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος, τοῦ Αὐγούστου, τοῦ Νέρωνος, τοῦ Τραϊανοῦ, τοῦ Κομμόδου, τοῦ Καρακάλλα, τοῦ Ὁμήρου, τοῦ Πυθαγόρα, τοῦ Εὐριπίδου, τοῦ Ὁρατίου, τοῦ Βιργιλίου, τοῦ Σαλλουστίου κτλ. Ἐπὶ τῆς ἑτέρας ὄψεως ὑπάρχουν διάφοροι σκηναὶ τῶν ἱπποδρόμων ἢ τῶν ἀμφιθεάτρων, ἀθληταί, σπαθοφόροι, ἅρματα, κυνηγετικαὶ σκηναί, ἄγρια θηρία, μουσικοὶ διαγωνισμοὶ κλπ. Πιστεύεται ὅτι τὰ μετάλλια ταῦτα ἐφέροντο ὑπὸ τῶν διαγωνιζομένων ὡς φυλακτὰ ἢ ἐδίδοντο εἰς τοὺς νικητὰς ὅπως δίδονται τὰ μετάλλια κατὰ τοὺς συγχρόνους ἀγῶνας.

Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους, κατὰ τοὺς ὁποίους, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἀρχαιότητα, τὰ νομίσματα δὲν ἔχουν, γενικῶς, ἀναμνηστικὴν σημασίαν, τὰ μετάλλια ἀποτελοῦν κατηγορίαν νομισματοειδῶν τεχνουργημάτων ἐντελῶς διακεκριμένων ἀπὸ τὰ νομίσματα. Τὰ ἀρχαιότερα μετάλλια, τὰ ἐπιλεγόμενα «καλλιτεχνικά», τῆς Ἀναγεννήσεως, ἀνάγονται μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος. Περιγραφὴ αὐτῶν εὑρίσκεται ἐν τῷ «Καταλόγῳ τῆς ἀπογραφῆς τῶν κοσμημάτων τοῦ δουκὸς τοῦ Μπερρύ», ἀδελφοῦ τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας Καρόλου Ε΄. Τοιαῦτα μετάλλια διεσώθησαν ἱκανά, φέροντα τὰ μὲν τὴν εἰκόνα τοῦ Κωνσταντίνου, τὰ δὲ τοῦ Ἡρακλείου, καὶ ἄλλα τοῦ Μάρκο Σέστο καὶ τοῦ Φραγκίσκου Νοβέλλο τῆς Καρράρας. Τὰ τελευταῖα ταῦτα μετάλλια κατεσκευάσθησαν ὑπὸ καλλιτεχνῶν ἐκ Παδούης. Βραδύτερον, κατὰ τὸν ΙΕ΄ αἰῶνα, ἐνεφανίσθησαν καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν, κυρίως ὅμως ἐν Τοσκάνῃ, διάφοροι καλλιτέχναι, οἵτινες ἀνεπαρίστανον ἐπὶ τῶν μεταλλίων ἐπὶ μὲν τῆς μιᾶς ὄψεως τὰς προσωπογραφίας ἐκ τοῦ φυσικοῦ ἐνδόξων ἀνδρῶν τῆς ἐποχῆς των, ἐπὶ δὲ τῆς ἑτέρας διαφόρους ἀναπαραστάσεις καὶ σκηνάς, κατ' ἀπομίμησιν τῆς ἀρχαιότητος. Τῷ 1439 ὁ Βίκτωρ Πινάνο, ὁ ἐπιλεγόμενος Πιζανέλλο, κατεσκεύασε τοιουτοτρόπως τὸ περίφημον καταστὰν μετάλλιον τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Παλαιολόγου, ὁ ὁποῖος εἶχε μεταβῆ εἰς τὴν σύνοδον τῆς Φλωρεντίας. Τοῦ Πιζανέλλο ὑπάρχουν πολλὰ μετάλλια, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τοῦ Ἀλφόνσου τῆς Ἀραγῶνος, τοῦ πάπα Μαρτίνου Ε΄, τοῦ Φραγκίσκου Γκονζάγκα, τοῦ Σιγισμόνδου Πανδόλφου Μαλατέστα, τῆς Ἰζόττας τοῦ Ρίμινι κτλ. Ἄλλοι κατασκευασταὶ μεταλλίων, σύγχρονοι τοῦ Πιζανέλλο, εἶναι ὁ Ματθαῖος ντὲ Πάστι τῆς Βερώνας καὶ ὁ Ἰωάννης Μπολντού, οἵτινες κατεσκεύασαν μετάλλια λίαν περιζήτητα σήμερον.

Κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος διεκρίθησαν ἐπίσης διὰ τὴν μεγάλην καλλιτεχνικὴν ἀξίαν τῶν μεταλλίων τὰ ὁποῖα κατεσκεύασαν οἱ Ἰωάννης Φραγκῖσκος τῆς Πάρμας, Ἀντώνιος ντέλλα Πολλαγιουόλο, Ἰωάννης Καβίνο, Ἀνδρέας ντέλλα Ρόμπια, Ἀμβρόσιος Φόππα, ὁ ἐπιλεγόμενος «Καραντόσσο», ὁ Παστορίνα, καὶ ἰδίως ὁ Σπεράνδιος τῆς Μαντούης. Πάντα τὰ μετάλλια ταῦτα ἐχύνοντο εἰς μήτρας ἐκ λεπτῆς ἄμμου καὶ κατόπιν ἐπιδιωρθώνοντο, μετὰ τὸ χύσιμον. Ὁ ἀριθμὸς τῶν Ἰταλῶν κατασκευαστῶν μεταλλίων κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ἀναγεννήσεως ὑπερβαίνει τοὺς διακοσίους, αἱ δὲ προσωπικότητες τῶν ὁποίων κατεσκεύασαν τὰς προσωπογραφίας ἀνέρχονται εἰς πολλὰς χιλιάδας. Ἐκ τῆς Ἰταλίας ἡ τέχνη τοῦ καλλιτεχνικοῦ μεταλλίου διεδόθη εἰς τὴν Γερμανίαν καὶ τὴν Γαλλίαν. Τὰ κυριώτερα κέντρα κατασκευῆς καλλιτεχνικῶν μεταλλίων ἐν Γερμανίᾳ κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα ἦσαν ἡ Νυρεμβέργη καὶ τὸ Ἄουγκσμπουργ, ὅπου διέπρεψαν ὁ Χὰνς Σβάρτς, ὁ Φρειδερῖκος Χάγκενάουερ, ὁ Ἀλβέρτος Ντύρερ, ὁ Πέτρος Φλέτνερ, ὁ Πέτρος Βίσερ, ὁ Ἐρρῖκος Ραΐτς, ὡς κατασκευασταὶ μεταλλίων ἐξ ὀρειχάλκου, ἐξ ξύλου, ἢ ἐπὶ λιθογραφικῆς πλακός. Ἡ τέχνη αὕτη διετηρήθη ἐν Γερμανίᾳ μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος, καίτοι εἶχεν ἤδη ἀρχίσει νὰ παρακμάζῃ ἀπὸ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος. Ἐν Γαλλίᾳ τὰ πρῶτα μετάλλια ἀνάγονται εἰς τὴν ἐκδίωξιν τῶν Ἄγγλων ἐκ τῆς γαλλικῆς γῆς, τῷ 1451. Εἰς ἀνάμνησιν τοῦ γεγονότος τούτου ὁ βασιλεὺς Κάρολος Ζ΄ διέταξε καὶ κατεσκευάσθησαν μεγάλα μετάλλια χρυσᾶ, μετ' ἀναλόγου ἐπιγραφῆς καὶ ἀπὸ τὰ δύο μέρη. Τὸ πρῶτον μετ' εἰκόνος γαλλικὸν μετάλλιον, κατ' ἀπομίμησιν τῶν ἰταλικῶν, ἦτο τὸ φέρον τὰς προσωπογραφίας τοῦ Καρόλου Η΄ καὶ τῆς Ἄννης τῆς Βρετάνης, ὅπερ ἐξετελέσθη ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου Λὲ Πὲρ ἐν Λυῶνι. Μεταξὺ τῶν ὀνομαστοτέρων γαλλικῶν μεταλλίων τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος εἶναι τὰ χρυσᾶ μετάλλια τὰ κατασκευασθέντα ἐπὶ τοῖς ἐγκαινίοις τῆς ἱδρύσεως τοῦ τάγματος τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, τὸ ἀναπαριστάνον τὴν εἰκόνα τοῦ Λουδοβίκου ΙΑ΄ ὑπὸ Φραγκίσκου Χαουράνα, τὸ φέρον τὴν εἰκόνα τοῦ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου καὶ τῆς Ἄννας τῆς Αὐστριακῆς, ὑπὸ Ἰωάννου Μαρέντε κ.τ.λ. Πάντα τὰ ἀνωτέρω μετάλλια εἶναι κατεσκευασμένα ἐκ χυτοῦ μετάλλου. Βραδύτερον, ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΒ΄, ἐνεφανίσθησαν τὰ πρῶτα ἐπίκρουστα μετάλλια. Τὸ ἀρχαιότερον τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὸ ἀναμνηστικὸν τῆς εἰσόδου τοῦ βασιλέως εἰς Τουρ τῷ 1498, ἔργον τοῦ Μιχαὴλ Κολόμπ. Κατόπιν ὁ Μπενβενούτο Τσελλίνι, ὁ Ματτέο ντὰλ Νασσάρο, ὁ Ἰάκωβος Πριμαβέρα, ὁ Μπενβενούτο Ριμέλλι, κληθέντες ἐξ Ἰταλίας, ὅπου διέπρεψαν καὶ ὡς κατασκευασταὶ ὡραιοτάτων μεταλλίων, εἰς Γαλλίαν ὑπὸ τοῦ Φραγκίσκου Α΄, κατεσκεύασαν ὡραῖα μετάλλια, ἀναπαριστάνοντα τὸν βασιλέα τοῦτον κα-

Digitized by Google

θὼς καὶ τὸν Ἐρρῖκον Β', τὴν Αἰκατερίνην τῶν Μεδίκων καὶ διαφόρους ἄλλας προσωπικότητας τῆς ἐποχῆς. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὡραῖα ἐπίσης μετάλλια κατεσκεύασαν ὁ Ζερμαὶν Πιλὸν καὶ ὁ ἐκ Λυῶνος Ἰάκωβος Γκωβαίν.

Ἐπὶ τῆς βασιλείας Ἐρρίκου Δ' καὶ Λουδοβίκου ΙΓ' διέπρεψεν ὁ Νικόλαος Μπριὸ καὶ ἰδίως ὁ Γουλιέλμος Ντυπρέ, ὁ μεγαλύτερος τῶν Γάλλων κατασκευαστῶν μεταλλίων. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ' ὁλόκληρος πλειὰς κατασκευαστῶν μεταλλίων ἀπηθανάτισαν ἐπὶ μεταλλίων διάφορα γεγονότα τῆς βασιλείας του. Μεταξὺ τούτων εἶναι ὁ Ἰωάννης, ὁ Κλαύδιος καὶ ὁ Φραγκῖσκος Βαρέν, ὁ Μωζέ, ὁ Θ. Μπερνάρ, ὁ Φραγκῖσκος Σαρόν, ὁ Κλεριόν, ὁ Ντυφοὺρ κτλ. Ἡ ἐν Παρισίοις Ἀκαδημία τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ μεταλλίων, ἥτις μετωνομάσθη σήμερον εἰς Ἀκαδημίαν τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ Καλῶν Τεχνῶν, εἶχε δημιουργηθῆ πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ παρέχῃ εἰς τοὺς καλλιτέχνας τὰς ἐπιγραφὰς καὶ τὰ θέματα πρὸς κατασκευὴν μεταλλίων. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα οἱ κυριώτεροι κατασκευασταὶ μεταλλίων ἦσαν οἱ Ραιττιέρ, οἱ Ντυβιβιέ, ὁ Σαὶν-Οὐρμπέν, ὁ Νινύ, ὁ ὁποῖος κατεσκεύασεν ὡραῖα μετάλλια ἐπὶ ξύλου καὶ ὀπτῆς γῆς. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν διεκρίθησαν ὡς κατασκευασταὶ μεταλλίων ὁ Αὐγουστῖνος Ντυπρὲ καὶ ὁ Παλλονά, ἀλλὰ τὰ μετάλλια τούτων εἶναι μετρίας τέχνης. Ἡ τέχνη τῆς κατασκευῆς μεταλλίων ἤρχισε νὰ ἀκμάζῃ ἐκ νέου ἐπὶ Ναπολέοντος Α'. Οἱ μεγαλύτεροι κατασκευασταὶ μεταλλίων τῆς ἐποχῆς ταύτης εἶναι ὁ Ντόζ, ὁ Ζεφφρουά, ὁ Ἀντριέ, ὁ Μπρενέ, ὁ Γκαιυρώ, ὁ Τρολιέ, καθὼς καὶ οἱ μετὰ τούτους Ντυμαρέ, Ντεπωλί, Ντεμπέφ, Γκαττώ, Μποβύ, Δαυῒδ ντ' Ανζέ, Μπὰρρ πατὴρ καὶ υἱός, Μπουαβέν, οἱ δύο Μπορρέλ, Μπουβέ, Οὐντινέ, Βιβιὲ κτλ. Ἐπίσης διέπρεψαν ἐν Λονδίνῳ ὁ Βάϋον (Wyon), ἐν Βερολίνῳ ὁ Σάντω καὶ ὁ Πὸς καὶ ἐν Βρυξέλλαις ὁ Βίνερ (Wiener). Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ὡδήγησαν εἰς νέαν ἀκμὴν τὴν χαρακτικὴν τῶν μεταλλίων οἱ Γάλλοι Σαπύ, Ντιπυύ, Μποττέ, Ντυμπουά, Βερνιέ, Βερνὸν καὶ κατόπιν ὁ Σαπλαίν, ὁ Ροτύ, ὁ Πατέ, ὁ Αὐστριακὸς Τάουτεγχάϋν, ὁ Ἰταλὸς Ἀουρέλιο Μιστροῦτσι κτλ. Οἱ τελευταῖοι οὗτοι καλλιτέχναι δὲν μεταχειρίζονται πλέον τὸν παλαιὸν τρόπον τῆς κατασκευῆς μεταλλίων, ἀλλὰ περιορίζονται εἰς τὴν δημιουργίαν ἀναγλύφων μεγάλων διαστάσεων, τὰ ὁποῖα κατόπιν διάφοροι πρακτικοὶ σμικρύνουν μηχανικῶς εἰς τὰς ἐπιθυμητὰς διαστάσεις. Διὰ τῆς μεθόδου ταύτης ἡ χαρακτικὴ τῶν μεταλλίων τείνει νὰ ἐξαφανισθῇ καὶ νὰ ἀντικατασταθῇ διὰ τῆς «γλυπτικῆς τῶν μεταλλίων», ἥτις ἐπεβλήθη λόγῳ τῆς ἐπιτυχεστέρας ἀποδόσεως τῶν ὑπὸ διαφόρων μεγάλων γλυπτῶν κατασκευαζομένων ἀναγλύφων προτύπων. Κατὰ τὴν σύγχρονον ἐποχὴν τὰ μετάλλια χρησιμοποιοῦνται εὐρύτατα καὶ διέπονται, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἀπονομήν, τὸν τρόπον καὶ τὰς περιπτώσεις, κατὰ τὰς ὁποίας φέρονται, ὑπὸ τῶν αὐτῶν μὲ τὰ παράσημα διατάξεων.

Μ. Δ. Β.

1. Γ. Σάντωβ (1764—1850) : Γκαῖτε.

2. Α. Σαρπαντιὲ (1856—1909): Πισσαρό.

3. Λ. Πὸσχ (1750—1831): Σάρνχορστ.

4. Οὐμβ. Πονφκὰρμ (1827—1903) : Ἰωσὴφ Ντωντέ.

5. Φρὶτς Χαιρνλάϊν (γενν. 1873): Φύτευσις ὀπωροφόρων.

6. Ἰ. Κ. Σαπλαὶν (1839—1909): Ἰούλιος Ντελωναί.

7. Ἀδ. φὸν Χίλντεμπραντ (1847—1921): Μπίσμαρκ.

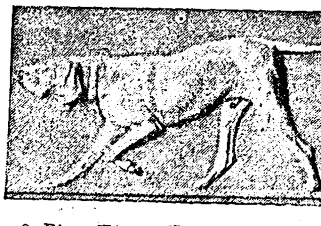

8. Βίκτ. Πέτερ : Ἰχνευτικὸς κύων.

9. Κ. Ἕνκε : Χίντεμπουργ.

10. Ἑρμ. Χὰν (γενν. 1868): Μὰξ Πέττενκόφερ.

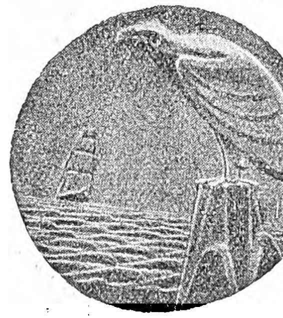

11. Ροδόλφ. Μπόσσελτ (γενν. 1871): Ἀετός.

12. Γεωργ. Βρμπα (γενν. 1872) : Γ. Γκράεφ.

13. Α. Μπόκκε (γενν. 1866) : Μετάλλιον ἀπονεμόμενον εἰς τοὺς ναυαγοσώστας.

14. Ἰ. Βάκκερλε (γενν. 1880): Διακριτικὸν μετάλλιον ἀπονεμόμενον ὑπὸ τοῦ προέδρου τῆς Γερμανικῆς Δημοκρατίας.

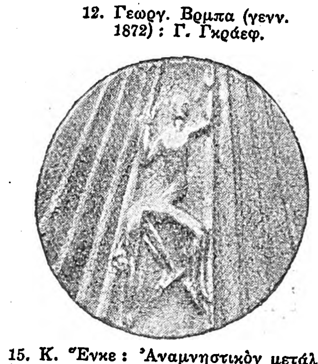

15. Κ. Ἕνκε : Ἀναμνηστικὸν μετάλλιον ἀπονεμηθὲν κατὰ τὰς ἑορτὰς τῆς δεκαετηρίδος τῶν πεσόντων ἐν τῷ Παγκοσμίῳ πολέμῳ.

*Διάφοροι τύποι μεταλλίων.*

**μεταλλισμὸς** (ὁ). Ὅρος δημιουργηθεὶς ὑπὸ τοῦ οἰκονομολόγου Γ.-Φ. Κνὰπ πρὸς δήλωσιν τῆς θεωρίας, ἡ ὁποία ταυτίζει τὸ χρῆμα πρὸς τὴν ὕλην, ἐξ ἧς τοῦτο συνίσταται, καὶ ἀποδίδει εἰς αὐτὸ τὴν ἀξίαν, ἣν ἀντιπροσωπεύει ἡ κατὰ κανόνα ἐκ μετάλλου ὕλη αὕτη (βλ. λ. *διμεταλλισμός*, *μονομεταλλισμός*, *νόμισμα* καὶ *χρῆμα*).

**μεταλλιστὴς** (ὁ)· ὁ ἀσπαζόμενος τὸ δόγμα τοῦ μεταλλισμοῦ, ὁ δεχόμενος τὴν θεωρίαν, καθ' ἣν τὸ μεταλλικὸν νόμισμα ἀντιπροσωπεύει τὴν ἀξίαν τοῦ μετάλλου ὡς ἐμπορεύματος.

**μεταλλίτης** (ὁ), θηλ. *μεταλλῖτις*, *—ιδος* (ἡ)· ὁ περιέχων μέταλλον: «μεταλλῖτις γῆ» μετάλλευμα ὡς ἐξάγεται ἐκ τοῦ ὀρυχείου, ἤτοι μεμειγμένον μετὰ ξένων οὐσιῶν καὶ ἰδίᾳ χώματος.

— **μεταλλῖτις** *γῆ [Πετρογρ.]*. Ὀνομάζονται οὕτω στρώματα προσχωματικά, τὰ ὁποῖα περιέχουν ἰδίως πολυτίμους λίθους ἢ μέταλλα. Τὰ στρώματα ταῦτα προέρχονται ἐξ ἀποσαθρώσεως ἄλλων πετρωμάτων, τὸ δὲ ὑλικὸν αὐτῶν ὑπὸ μορφὴν ἄμμου, ψηφίδων ἢ κροκαλῶν, ἀποτίθεται εἰς τὰς περιοχάς, ἔνθα ἐμφανίζονται, μεταφερόμενον ἐκεῖ κυρίως διὰ τῆς μεταφορικῆς ἐνεργείας τοῦ ὕδατος. Τὸ κύριον συστατικὸν τῶν στρωμάτων τῆς μεταλλίτιδος γῆς εἶναι ὁ χαλαζίας. Διότι τὸ ὀρυκτὸν τοῦτο εὑρίσκεται τὰ μέγιστα διαδεδομένον εἰς τὰ πλεῖστα τῶν πετρωμάτων, ἀφ' ἑτέρου δέ, λόγῳ τῆς σκληρότητος καὶ τῆς ἀνθεκτικότητός του εἰς χημικοὺς παράγοντας, παραμένει ἀναλλοίωτον κατὰ τὴν ἀποσάθρωσιν τοῦ μητρικοῦ πετρώματος καὶ τὴν μεταφορὰν αὐτοῦ εἰς τὸν τόπον τῆς ἀποθέσεως. Ἀλλ' ἡ μεταλλευτικὴ ἀξία αὐτῆς ἐξαρτᾶται ἀπὸ τὸν βαθμὸν ἐμπλουτισμοῦ εἰς πολύτιμα ὀρυκτά. Ὁ ἐμπλουτισμὸς οὗτος ὀφείλεται εἴτε εἰς τὴν μεγάλην σκληρότητα καὶ τὴν ἀνθεκτικότητα τῶν ὀρυκτῶν τούτων εἰς χημικὰς ἀλλοιώσεις (ἀδάμας, ρουβίνιον, τοπάζιον κ.ἄ.), εἴτε εἰς τὸ μέγα εἰδικὸν βάρος αὐτῶν (αὐτοφυὴς χρυσός, λευκόχρυσος). Ἐννοεῖται ὅτι ἐκτὸς αὐτῶν ὑπάρχουν καὶ ἄλλα ὀρυκτὰ μέσης σκληρότητος καὶ εἰδικοῦ βάρους, ὡς ὁ γρανάτης, ὁ τουρμαλίνης, τὸ ζιρκόνιον, ὁ μαγνητίτης, τὸ ρουτίλιον, ὁ κασσιτερίτης, ὁ σπινέλλιος κ. ἄ.

Γ. Β.

**μεταλλίτης** (ὁ) (Metallites) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ρυγχοφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κουρκουλιονιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Εὐρώπην. Οἱ μεταλλῖται εἶναι μικροῦ μεγέθους κάνθαροι μὲ σῶμα ᾠοειδές, ἐπίμηκες, κεραίας μακρὰς καὶ λεπτάς, ρύγχος προβοσκιδοειδές, πτέρυγας αἰχμηρὰς καὶ σκοτεινοὺς χρωματισμούς. Ἐνδιαιτῶνται ἐπὶ διαφόρων φυτῶν.

Δ. Ν. Π.

**μεταλλοβιομηχανία** (ἡ)· βιομηχανία ἀσχολουμένη μὲ τὴν ἐξαγωγὴν τῶν μετάλλων ἀπὸ τῶν ὀρυκτῶν ἢ μὲ τὴν περαιτέρω κατεργασίαν τούτων.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἡ γενικὴ ἔννοια τοῦ ὅρου *μεταλλοβιομηχανία* περιλαμβάνει ἐν ἑαυτῇ τὰς ἐπὶ μέρους ἐννοίας τῆς *μεταλλουργίας* καὶ τῆς *μεταλλοτεχνίας* (βλ. τὰς λ.). Ἐπεκράτησεν ἐν τούτοις νὰ ὀνομάζεται εἰδικώτερον *μεταλλοβιομηχανία* ἡ ἐξαγωγὴ καὶ περαιτέρω κατεργασία ὡρισμένων μόνον μετάλλων, δηλαδὴ τοῦ χαλκοῦ, μολύβδου, κασσιτέρου, ψευδαργύρου, ἀργιλλίου καὶ νικελίου, καθὼς καὶ τῶν κραμάτων αὐτῶν (ὡς τοῦ ὀρειχάλκου, λευκοῦ μετάλλου κλπ.). Ὅσον ἀφορᾷ τὰ λοιπὰ μέταλλα, ἡ μὲν κατεργασία τοῦ σιδήρου καὶ τῶν παραγώγων τούτου (χυτοσιδήρου καὶ χάλυβος) χαρακτηρίζεται διὰ τοῦ εἰδικοῦ ὅρου «σιδηροβιομηχανία» ἢ «βαρεῖα βιομηχανία», ἡ δὲ τοῦ χρυσοῦ, τοῦ ἀργύρου καὶ τῆς πλατίνης ὡς «βιομηχανία εὐγενῶν μετάλλων». Τῶν λοιπῶν μετάλλων ἡ κατεργασία, ὡς τοῦ μαγνησίου, οὐρανίου, χρωμίου, βαναδίου κλπ., ἀνάγεται κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν ««χημικὴν βιομηχανίαν».

—Ρ.

**μεταλλοβρωμίδια** (τὰ) *[Χημ.]*. Καλοῦνται οὕτω αἱ μετὰ τῶν διαφόρων μετάλλων ἑνώσεις τοῦ *βρωμίου*.

Σ. Γ.

Digitized by Google

**μεταλλογενετικός**, *—ή, —όν*· ὁ προκαλῶν ἢ ὑποβοηθῶν τὴν γένεσιν τῶν μετάλλων.

— *[Μεταλλειολ.]* Καλοῦνται *μεταλλογενετικοὶ παράγοντες* σώματά τινα, τῶν ὁποίων ὡρισμέναι ἰδιότητες συνετέλεσαν εἰς τὴν γένεσιν τῶν μεταλλοφόρων ὀρυκτῶν, ἢ εἰς τὴν μεταφορὰν καὶ συσσώρευσιν τῶν μετάλλων εἰς κοιτάσματα, ἀνευρισκόμενα ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς ἢ ὑπ' αὐτήν. Μεταλλογενετικὴ ὑπῆρξεν ἰδίως ἡ δρᾶσις τοῦ θείου, τοῦ ἀντιμονίου καὶ τοῦ ἀρσενικοῦ, λόγῳ τοῦ ὅτι αἱ μετὰ τῶν μετάλλων ἑνώσεις τῶν στοιχείων τούτων ἐξαχνοῦνται εὐκόλως ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς θερμότητος, δι' ὃ καὶ ἠδυνήθησαν ν' ἀνέλθουν κατὰ τὰς διαφόρους περιόδους τοῦ σχηματισμοῦ τοῦ γηΐνου φλοιοῦ ἀπὸ τῶν κατωτέρων αὐτοῦ στρωμάτων πρὸς τὰ ἀνώτερα. —Ρ.

**μεταλλογνωσία** (ἡ)· ὁ κλάδος τῆς μεταλλουργίας ὁ πραγματευόμενος περὶ τῆς φύσεως καὶ τῶν ἰδιοτήτων τῶν διαφόρων μετάλλων καὶ τῶν κραμάτων αὐτῶν.

**μεταλλογραφία** (ἡ)· ἡ ἐπιστήμη ἡ μελετῶσα διὰ πειραματικῆς ἐρεύνης τὰς ἰδιότητας τῶν μετάλλων καὶ τὰς μεταβολὰς ἃς ταῦτα ὑφίστανται διὰ τῶν διαφόρων κατεργασιῶν· || ἡ ἐπὶ μεταλλικῆς πλακὸς χάραξις εἰκόνων ἢ σχεδίων πρὸς ἐκτύπωσιν.

— *[Μεταλλουργ.]* Τὰ ἐνδιαφέροντα ἀπὸ ἐπιστημονικῆς καὶ τεχνικῆς ἀπόψεως γνωρίσματα τῶν μετάλλων καὶ τῶν κραμάτων αὐτῶν εἶναι κυρίως τὰ ἑξῆς: τὸ εἶδος τῆς χημικῆς των συστάσεως, ὁ βαθμὸς τῆς ὁμοιογενείας τοῦ ἱστοῦ, ἡ ἀντοχὴ καὶ ἡ ἐλαστικότης, καὶ τέλος αἱ θερμικαί, ἠλεκτρικαὶ καὶ μαγνητικαὶ αὐτῶν ἰδιότητες. Ἡ ἀκριβὴς γνῶσις τῶν ὡς ἄνω ἰδιοτήτων ἑνὸς μετάλλου ἢ ἑνὸς μεταλλοκράματος ἔχει κεφαλαιώδη σημασίαν διὰ τὴν πρέπουσαν χρησιμοποίησιν αὐτοῦ εἰς ἑκάστην τεχνικὴν περίπτωσιν. Διὰ τοῦτο δὲ καὶ αἱ κατὰ τοὺς τελευταίους ἰδίως χρόνους ἐπιτευχθεῖσαι μεγάλαι πρόοδοι ἐν τῇ μεταλλοτεχνίᾳ συμπίπτουσιν ἀκριβῶς μὲ τὴν προαγωγὴν τῆς *μεταλλογραφίας*, τῆς ἐπιστήμης δηλαδή, ἥτις ἔργον ἔχει τὴν μελέτην τῶν χημικῶν, μηχανικῶν καὶ φυσικῶν ἰδιοτήτων τῶν διαφόρων μετάλλων καὶ τῶν κραμάτων αὐτῶν.

Πρὸς ἔλεγχον τῶν ἰδιοτήτων τούτων τὰ μέταλλα ὑποβάλλονται εἰς ποικίλας δοκιμασίας, δι' ἃς χρησιμοποιοῦνται εἰδικὰ κατὰ τὸ πλεῖστον ὄργανα. Διὰ χημικῆς ἐν πρώτοις ἐρεύνης δύναται εὐχερῶς νὰ ἐξακριβωθῇ ἐκ τίνων συστατικῶν καὶ ὑπὸ ποίας αὐτῶν ἀναλογίας ἀποτελεῖται ἕκαστον μεταλλικὸν κρᾶμα. Ἡ ἀντοχὴ καὶ ἡ ἐλαστικότης ἐλέγχεται διὰ μηχανικῶν μέσων, δι' ὧν καθορίζονται τὰ ὅρια ἐφελκυσμοῦ, κάμψεως, στρέψεως, τομῆς, κρούσεως κλπ., μέχρι τῶν ὁποίων δύναται ν' ἀνθέξῃ ἀζημιώτως ἓν μεταλλουργικὸν προϊὸν ἢ μεταλλικὸν κατασκεύασμα, καθὼς ἐπίσης καὶ τὸ εἶδος καὶ ἡ ἔκτασις τῶν παραμορφώσεων, τὰς ὁποίας θὰ ὑποστῇ ἐκ τῶν καταπονήσεων τούτων πρὸ τῆς θραύσεως. Διὰ θερμικῶν τέλος δοκιμασιῶν καθορίζεται ὁ βαθμὸς τῆς διαστολῆς τοῦ μετάλλου καὶ ἡ θερμοκρασία τῆς πυρώσεως καὶ τῆς τήξεως αὐτοῦ, δι' ἠλεκτρικῶν δὲ πειραματισμῶν ἡ ἀγωγιμότης, ἡ ἠλεκτρική του ἀντίστασις, ἡ θερμοηλεκτρικότης, αἱ μαγνητικαί του ἰδιότητες κλπ. Καὶ τῶν ἀκτίνων Χ γίνεται ἐπίσης συνηθέστατα χρῆσις εἰς τὰς μεταλλογραφικὰς ἐρεύνας.

Πρὸς ἐξέτασιν ἐξ ἄλλου τοῦ ἱστοῦ τοῦ μετάλλου καὶ τῆς ὁμοιογενείας αὐτοῦ, λειαίνεται ἐν πρώτοις ἡ ἐπιφάνειά του καὶ ὑποβάλλεται κατόπιν ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν ἀραιῶν ὀξέων, μεθ' ὃ ἐξετάζεται εἴτε διὰ φακοῦ, εἴτε καὶ διὰ γυμνοῦ ὀφθαλμοῦ. Τὸ εἶδος τοῦτο τῆς ἁπλῆς ἐξετάσεως καλεῖται *μακρογραφία*, πρὸς ἀντιδιαστολὴν ἀπὸ τῆς *μικρογραφίας* ἢ ἄλλως *μικροσκοπικῆς μεταλλογραφίας*. Εἰς αὐτὴν ἡ παρατήρησις τῆς προσβληθείσης ὑπὸ τοῦ ὀξέος λείας μεταλλικῆς ἐπιφανείας γίνεται δι' εἰδικοῦ μικροσκοπίου, τὸ ὁποῖον δύναται νὰ συνδυασθῇ καὶ πρὸς φωτογραφικὴν μηχανήν. — Ρ.

— *[Γραφ. Τέχναι]* Βλ. λ. *χάραξις*.

**μεταλλογραφικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μεταλλογραφίαν, εἰς τὴν ἐπιστημονικὴν ἐξέτασιν τῶν μετάλλων.

— **μεταλλογραφικὸς *ἱστὸς*** *[Μεταλλ.]*· βλ. λ. *ἱστός*.

**μεταλλογράφος** (ὁ, ἡ)· ὁ ἀσχολούμενος εἰς τὴν μεταλλογραφίαν, εἰς τὴν ἐπιστημονικὴν ἐξέτασιν τοῦ μετάλλου..

**μεταλλοειδὴς** (ὁ, ἡ), —ὲς (τό)· ὁ ἔχων μορφὴν μετάλλου, ὁ ὅμοιος μὲ μέταλλον.

— **μεταλλοειδῆ**, ἢ ***ἀμέταλλα***. Τὰ μὴ μεταλλικὰ στοιχεῖα (ἀμέταλλα, βλ. λ. *μέταλλον*) ἔχουν ἰδιότητας γενικῶς διαστελλομένας τῶν τῶν μετάλλων καὶ ἀντιθέτους. Εἶναι τουτέστι κακοὶ ἀγωγοὶ τῆς θερμότητος καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ. Εἶναι στοιχεῖα ἠλεκτραρνητικά, ἀποτελοῦν δὲ εἰς τὰ διαλύματα τῶν ἁλάτων αὐτῶν, μόνα ἢ μετ' ὀξυγόνου, εἰς ῥίζας ἡνωμένα ἀνιόντα. Τὸ μόριον αὐτῶν ἀποτελεῖται συνήθως ἐκ δύο ἀτόμων, τινῶν καὶ ἐκ περισσοτέρων, ὡς τοῦ φωσφόρου καὶ τοῦ ἀρσενικοῦ. Τὸ μόριον οὐχ ἧττον τῶν μηδόλως πρὸς οὐδὲν στοιχεῖον ἐχόντων χημικὴν συγγένειαν, τῶν εὐγενῶν τουτέστι καλουμένων ἀερίων (ἀργόν, ἥλιον, κρυπτόν, νέον, ξένον), ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου ἀτόμου. Εἶναι ἐν συνόλῳ 18, τὰ ἑξῆς: ἄζωτον, ἄνθραξ, ἀντιμόνιον (ἐπαμφοτερίζον), ἀργόν, ἀρσενικόν, βόριον, βρώμιον, ἥλιον, θεῖον, ἰώδιον, κρυπτόν, νέον, ξένον, ὀξυγόνον, πυρίτιον, σελήνιον, τελλούριον, ὑδρογόνον, φθόριον, φωσφόρος, χλώριον. Κ. Ζ.

**μεταλλοειδικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μεταλλοειδῆ.

**μεταλλοθεραπεία** (ἡ) (métallothérapie) *[Ἰατρ.]*· Οὕτω καλεῖται ἡ θεραπεία νόσων τινῶν, καὶ ἰδιαίτατα τῶν νευροπαθειῶν, διὰ τῆς ἐπὶ τοῦ δέρματος ἐπιθέσεως διαφόρων μετάλλων ἢ διὰ τῆς ἀπὸ τοῦ στόματος λήψεως μεταλλικῶν κόνεων καὶ ἁλάτων μεταλλικῶν. Ὁ πρῶτος ἐπινοήσας τὴν μέθοδον τῆς μεταλλοθεραπείας φαίνεται ὅτι εἶναι ὁ Παρακέλσος· αὕτη ὅμως εἶχε παραμεληθῆ μέχρι τοῦ 1877, ὁπότε, διὰ τοῦ ἰατροῦ Burq, ὁ θεραπευτικὸς οὗτος τρόπος εἰσῆλθεν εἰς τὴν λογικὴν καὶ ἐπιστημονικὴν οὕτως εἰπεῖν ὁδὸν αὐτοῦ. Ἡ μέθοδος αὕτη συνίσταται εἰς τὴν ἐφαρμογὴν ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ σώματος μεταλλικῶν οὐσιῶν ὑπὸ μορφὴν μεταλλικῶν πλακῶν, περιβραχιονίων, δακτυλίων, φυλακτηρίων, ῥάβδων μεταλλικῶν κλπ., πρὸς ἴασιν δυναμικῶν κυρίως ἐνοχλήσεων, παραλύσεων κινητικῶν ἢ αἰσθητικῶν, νευραλγιῶν κλπ., ἐμφανιζομένων εἰς νευρικὰ καὶ νευροπαθῆ ἄτομα. Τὰ πρὸς τοῦτο χρησιμοποιούμενα μέταλλα εἶναι: ὁ σίδηρος, ὁ χρυσός, ὁ ἄργυρος, ὁ χαλκός, ὁ ὀρείχαλκος, ὁ ψευδάργυρος κλπ. Τὰ ἐκ τῆς μεθόδου ταύτης παρατηρούμενα βεβαιότερα φαινόμενα εἶναι: τῆς μεταβιβάσεως ἢ μεταφορᾶς, εἶτα τῆς ἐπαναφορᾶς τῆς ἀπολεσθείσης ἤδη, γενικῶς καὶ εἰδικῶς, αἰσθητικότητος καὶ τέλος σπανιώτερον τῆς λύσεως τῶν συσπάσεων. Πάντα τὰ ἄτομα δὲν εἶναι εὐαίσθητα εἰς τὰ αὐτὰ μέταλλα, οὐδ' ὑπάρχει ὡρισμένη τάξις παθήσεων ἐπηρεαζομένων ὑπὸ ὡρισμένων μετάλλων· δι' ὃ δέον νὰ ἐρευνηθῇ προηγουμένως ἡ εὐαισθησία τοῦ ἀτόμου πρὸς τὸ μέταλλον, δι' οὗ ἐπηρεάζεται τοῦτο. Ἐν τούτοις αἱ διὰ τῆς μεταλλοθεραπείας ἐπιτυγχανόμεναι ἐνέργειαι αὗται δὲν εἶναι οὐσιαστικῶς διάφοροι τῶν παραγομένων καὶ ὑπὸ ἄλλων παραγόντων, ἰδιαιτέρως δὲ ὑπὸ τοῦ μαγνήτου καὶ τῶν ἠλεκτρικῶν ῥευμάτων. Μ. Ν. ΚΑΪΓΡΗΣ

**μεταλλοκαθαριστὴς** (ὁ)· ὁ καθαριστὴς τῶν μετάλλων.

**μεταλλοκαρβίδια** (τὰ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *ἀκετυλενίου* μεταλλοπαράγωγα.

**μεταλλοκετύλαι** (αἱ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἑνώσεις μετὰ τρισθενοῦς ἀτόμου ἄνθρακος, λαμβανόμεναι δι' ἐπιδράσεως καλίου ἢ νατρίου ἐπὶ διαρυλοκετονῶν κατὰ τὸ σχῆμα

$$\begin{matrix}C_6H_5\\ C_6H_5\end{matrix}\!\!>C:O + K = \begin{matrix}C_6H_5\\ C_6H_5\end{matrix}\!\!>C<\begin{matrix}OK\\ \cdot\end{matrix}$$

Εἶναι δραστικαὶ καὶ ἔγχρωμοι, ὡς ὅλαι αἱ ἑνώσεις τοῦ τρισθενοῦς ἄνθρακος. Σ. Γ.

**μεταλλόκραμα** (τὸ), ἢ ἄλλως *μεταλλικὸν κρᾶμα*· μεῖγμα δύο ἢ πλειοτέρων μετάλλων.

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὰ *μεταλλοκράματα* εἶναι προϊόντα μεταλλικῆς ὄψεως, περιέχοντα κυρίως ἓν εἶδος μετάλλου, εἰς τὸ ὁποῖον ἔχουσι προσμειχθῆ, ὑπὸ μικροτέρας ἀναλογίας, ἄλλα σώματα. Τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος χρησιμοποιηθὲν μεταλλικὸν κρᾶμα ὑπῆρξεν ὁ ὀρείχαλκος, ἀποτελεσθεὶς ἀρχικῶς ἐκ μείγματος χαλκοῦ καὶ κασσιτέρου. Εἶναι δὲ ὁ ῥόλος τῶν μεταλλικῶν κραμάτων σπουδαιότατος ἐν τῇ βιομηχανίᾳ, διότι χάρις εἰς τὰς προσμείξεις ταύτας κατωρθώθη νὰ ἐπιτευχθῶσι χρήσιμοι ἰδιότητες, τὰς ὁποίας ἐν μικρᾷ μόνον κλίμακι κέκτηνται τὰ καθαρὰ μέταλλα. Οὕτως, ἐπὶ παραδείγματι, ἐνῷ τὸ ἀνθεκτικώτερον τῶν καθαρῶν μετάλλων, τὸ νικέλιον, παρουσιάζει ἀντοχὴν εἰς τὸν ἐφελκυσμὸν μὴ ὑπερβαίνουσαν τὰ 50 χιλγρ. κατὰ τετραγ. χιλστ., ἐπετεύχθη ἡ κατασκευὴ μεταλλοκραμάτων, τῶν ὁποίων ἡ ἰδία ἀντοχὴ φθάνει μέχρι τῶν 200 χιλγρ. Ὁ κοινὸς χάλυψ ἀποτελεῖ κρᾶμα σιδήρου καὶ ἄνθρακος, εἶναι κατὰ πολὺ ἀνθεκτικώτερος καὶ σκληρότερος τοῦ σιδήρου, διὰ προσθήκης δὲ νικελίου, πυριτίου, μαγγανίου, χρωμίου, βολφραμίου καὶ βαναδίου παρασκευάζονται σήμερον εἰδικοὶ χάλυβες παρουσιάζοντες μεγαλυτέραν ἔτι ἀντοχὴν θραύσεως χωρὶς μείωσιν τῆς σκληρότητός των.

Κατὰ γενικὸν κανόνα τὰ μεταλλοκράματα γίνονται διὰ συντήξεως τῶν ἀποτελούντων ταῦτα συστατικῶν, ἣν ἐπακολουθοῦσι διάφοροι εἰδικαὶ κατεργασίαι. Ὅταν ἓν ἐκ τῶν συστατικῶν τοῦ κράματος εἶναι ὑδράργυρος, τὸ μεταλλόκραμα καλεῖται εἰδικώτερον *ἀμάλγαμα* (βλ. λ. *κρᾶμα*). —Ρ.

**μεταλλομάστευσις** (τὸ) *[Μεταλλειολ.]*. Ἡ δοκιμαστικὴ ἔρευνα πρὸς ἀνεύρεσιν μεταλλοφόρων κοιτασμάτων, δι' ἐκσκαφῶν, γεωτρήσεων κτλ.

**μεταλλομιγὴς *λίθος*** *[Ὀρυκτολ.]*. Λίθος μεμειγμένος ἢ ἐμπεποτισμένος ὑπὸ μεταλλεύματος. Ὅταν ἡ πρόσμειξις ἢ ὁ ἐμποτισμὸς ὑπὸ τοῦ μεταλλεύματος ὑπερβαίνῃ ὡρισμένην ἀναλογίαν, ἀναλόγως τοῦ εἴδους τοῦ μεταλλεύματος, ὁ μεταλλομιγὴς λίθος ἀποτελεῖ πλέον ἐμπορεύσιμον μετάλλευμα. Γ. Β.

**μέταλλον** (τό)· σῶμα ὀρυκτόν, στερεὸν (πλὴν τοῦ ὑδραργύρου), ἔχον ἰδιάζουσαν λάμψιν ὅταν στιλβωθῇ καὶ χρησιμεῦον ὡς καλὸς ἀγωγὸς τῆς θερμότητος καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ· || παρ' ἀρχαίοις· ὀρυχεῖον, μεταλλεῖον· || παρὰ μεταγενεστέροις· τὸ ὀρυσσόμενον, οἷον χαλκός, λίθος κττ.

—*[Ἐγκυκλ.]* *Μέταλλον* ὠνόμασαν ἀρχικῶς οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες σῶμα στερεὸν αὐτογενὲς ἢ ἐξαγόμενον διὰ κατεργασίας μετ' ἄνθρακος τῇ συνδρομῇ τοῦ πυρὸς ἐξ ὀρυκτῶν, ἐν οἷς εὑρίσκεται μετ' ἄλλων (ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία) σωμάτων ἡνωμένον, χαρακτηριζόμενον ὑπὸ στερεότητος, μεγάλου εἰδικοῦ βάρους, λάμψεως καὶ πολλῶν χρηστῶν μηχανικῶν ἰδιοτήτων, ὡς ἀντοχῆς, εὐκατεργάστου κτλ. Εἰς τὰ γνωστὰ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις ὀλίγα μέταλλα διὰ τῆς προόδου τῆς χημείας προσετέθησαν ἀποκαλυφθέντα καὶ πλεῖστα ἄλλα ἀφθόνως ἢ σπανίως ἀπαντῶντα, πολλὰ τῶν ὁποίων εἶναι ἐλαφρότατα (ἀλκάλια κτλ.). Τὰ μέταλλα ἤδη ἀποτελοῦν τὰ πολυαριθμότερα τῶν χημικῶν στοιχείων, τὰ ὁποῖα, κατὰ παλαιὰν εἰ καὶ οὐχὶ αὐστηρῶς ἐπιστημονικὴν διαίρεσιν, διαιροῦνται εἰς *μέταλλα* καὶ *μεταλλοειδῆ* ἢ *ἀμέταλλα*.

Δὲν εἶναι ἐντελῶς ἐξηκριβωμένον ποῖον μέταλλον ἐγνώρισε τὸ πρῶτον ἡ ἀρχαιότης. Ἴσως μάλιστα εἰς διαφόρους τόπους ἦτο ἄλλο τὸ πρῶτον χρησιμοποιηθὲν μέταλλον. Πάντως τὰ πρῶτον γνωσθέντα ἦσαν τὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν φύσιν εἰς αὐτογενῆ κατάστασιν, ὁ χρυσὸς πρὸ παντὸς καὶ σπανιώτερον ὁ ἄργυρος, ὁ χαλκὸς καὶ ὁ σίδηρος, ἀπαντῶν ὡς μετεωρικὸς σίδηρος πολλάκις εἰς μεγάλους ὄγκους. Γενικώτερον θεωρεῖται ὡς τὸ ἀρχαιότερον γνωστὸν ἐν χρήσει μέταλλον ὁ χαλκός. Πάντως εὑρίσκετο παρὰ τοῖς ἀρχαιοτέροις εἰς εὐρυτέραν τῶν ἄλλων χρῆσιν, πρὸς κατασκευὴν ὅπλων καὶ ἐργαλείων μηχανικῶν. Εἶναι οὐχ ἧττον ἡ μεταλλουργικὴ ἐξαγωγὴ ἐκ τῶν μεταλλευμάτων αὐτοῦ δυσχερεστέρα τῆς τοῦ σιδήρου, καθ' ὅσον ἀπαιτεῖ ὑψηλοτέραν θερμοκρασίαν, ὑπὲρ τοὺς 1000 βαθμούς, ἐνῷ ὁ σίδηρος δύναται νὰ ληφθῇ καὶ εἰς θερμοκρασίαν 700 βαθμῶν εἰς πολτοπαγῆ μορφήν. Τὰ γνωστὰ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις μέταλλα εἶναι ὁ χρυσός, ὁ ἄργυρος, ὁ χαλκός, ὁ σίδηρος, ὁ μόλυβδος καὶ ὁ κασσίτερος. Καὶ τὸν ὑδράργυρον ἐγνώριζον οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες καὶ οἱ Ρωμαῖοι, δὲν ἐθεώρουν ὅμως αὐτόν, ὡς ἐκ τῆς ῥευστότητος, καθ' αὑτὸ μέταλλον. Οἱ ἀλχημισταὶ ἐθεώρουν αὐτὸν ὡς τὸν ἀντιπρόσωπον ἐν γένει τοῦ μεταλλικοῦ χαρακτῆρος, περιεχόμενον εἰς μεγαλυτέραν ἢ μικροτέραν ἀναλογίαν εἰς πᾶν μέταλλον, ὡς καὶ εἰς ἄλλα τινὰ σώματα. Βραδύτερον, ὅτε ἡ ἐμπορικὴ ἐπικοινωνία τῶν ἐθνῶν ἐγένετο πυκνοτέρα, ἐγνώσθησαν τὸ ἀρσενικόν, τὸ ἀντιμόνιον καὶ τὸ βισμούθιον, μετὰ δὲ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ὁ ψευδάργυρος, τὸ νικέλιον καὶ τὸ κοβάλτιον καὶ τέλος, κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, ἀνεκαλύφθησαν κατ' ἀρχὰς μὲν ὑπὸ τοῦ Davy τὰ ἐλαφρότερα καὶ δραστικώτερα τῶν μετάλλων, τὸ κάλιον, τὸ νάτριον, τὸ ἀσβέστιον, τὸ μαγνήσιον καὶ τὸ στρόντιον, βραδύτερον δὲ καὶ ἄλλα, ἐν συνόλῳ σήμερον 72, ἐξ ὧν πλὴν τῶν μνημονευθέντων σημαντικώτερα εἶναι τὸ ἀργίλλιον, βολφράμιον, λευκόχρυσος, μαγγάνιον, μολυβδαίνιον, οὐράνιον, παλλάδιον, ῥάδιον, χρώμιον, ὄσμιον.

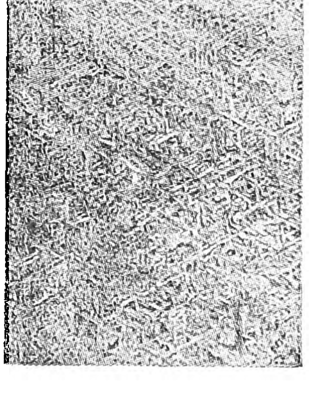

*Τομὴ λειανθέντος τεμαχίου μετεωρικοῦ σιδήρου.*

*Φυσικαὶ ἰδιότητες*. Τὰ μέταλλα εἶναι σώματα ἀδιαφανῆ, ὅταν δὲν εὑρίσκωνται εἰς ἐξαιρετικῶς λεπτὸν πάχος, ἐμφανίζουν ἰδιαιτέραν χαρακτηριστικὴν λάμψιν, τὴν καλουμένην μεταλλικήν, καὶ εἶναι καλοὶ ἀγωγοὶ τῆς θερμότητος καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ. Τὰ μᾶλλον εὐηλεκτραγωγὰ μέταλλα εἶναι, κατὰ σειράν, ὁ ἄργυρος, ὁ χαλκός, ὁ χρυσός, τὸ ἀργίλλιον, ὁ ψευδάργυρος, πολὺ ὀλιγώτερον τὸ νικέλιον, ὁ σίδηρος, ὁ χάλυψ, ὁ μόλυβδος, ὁ ὑδράργυρος. Ἡ θερμικὴ ἀγωγιμότης συμβαδίζει γενικῶς μὲ τὴν ἠλεκτρικήν.

Digitized by Google

*Μηχανικαὶ ἰδιότητες*. Ἡ σπουδαιοτέρα μηχανικὴ ἰδιότης τῶν μετάλλων εἶναι ἡ ἀνθεκτικότης, ἡ ἀντοχή, τουτέστι, κατὰ πιέσεως, καὶ τὸ ἐκτατόν, ἤτοι ἡ ἰδιότης τῆς ἐπιμηκύνσεως ὅταν ὑποβάλλωνται εἰς μηχανικὴν κατεργασίαν. Διακρίνομεν ἐκτατὸν κατ' ἐπιφάνειαν, τὸ ἐλατὸν δηλαδή, καὶ κατὰ μῆκος μόνον, τὸ ὅλκιμον. Ἐλατὰ ἰδίως εἶναι κατὰ σειρὰν ὁ χρυσός, ὁ ἄργυρος, τὸ ἀργίλλιον, ὁ χαλκός, ὁ κασσίτερος, ὁ λευκόχρυσος, ὁ μόλυβδος, ὁ ψευδάργυρος, ὁ σίδηρος, τὸ νικέλιον· ὅλκιμα ὁ χρυσός, ὁ ἄργυρος, ὁ λευκόχρυσος, τὸ ἀργίλλιον, ὁ σίδηρος, τὸ νικέλιον, ὁ χαλκός· ἀνθεκτικὰ τὸ νικέλιον, ὁ σίδηρος, ὁ χαλκός, ὁ λευκόχρυσος. Πολὺ ἀνθεκτικώτερα τούτων εἶναι ὡρισμένα κράματα σιδήρου μετὰ νικελίου, χρωμίου καὶ ἄλλων μετάλλων.

*Χημικαὶ ἰδιότητες*. Τὰ μέταλλα εἶναι γενικῶς στοιχεῖα ἠλεκτροθετικά. Τὰ ἠλεκτροθετικώτερα τούτων εἶναι τὰ ἀλκάλια καὶ μετὰ ταῦτα τὰ μέταλλα τῶν ἀλκαλικῶν γαιῶν, εἶτα τὸ ἀργίλλιον, ὁ ψευδάργυρος, ὁ σίδηρος, ὁ μόλυβδος. Μετὰ τοῦτο ἔρχεται κατὰ σειρὰν τὸ ἀμέταλλον ὑδρογόνον καὶ μετ' αὐτὸ ὁ χαλκός, ὁ ὑδράργυρος καὶ ὁ ἄργυρος καὶ τέλος ἥκιστα ἠλεκτροθετικὰ τὰ εὐγενῆ μέταλλα. Ὅσον ἠλεκτροθετικώτερον εἶναι τὸ μέταλλον, τόσον μεγαλυτέρα ἡ χημική του συγγένεια πρὸς τὰ ἠλεκτραρνητικά, εἰς τὴν πρώτην γραμμὴν τῶν ὁποίων εὑρίσκονται τὰ ἁλατογόνα στοιχεῖα, εἶτα τὸ ὀξυγόνον καὶ τὸ θεῖον, μετὰ τῶν ὁποίων συνήθως εὑρίσκονται ἐν τῇ φύσει ἡνωμένα.

Τῶν μετάλλων τὸ μόριον ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου ἀτόμου. Μετ' ὀξυγόνου τὰ ἠλεκτροθετικώτερα τῶν μετάλλων ἀποτελοῦν ὀξείδια διαλυόμενα ἐντὸς τοῦ ὕδατος καὶ σχηματίζοντα βάσεις. Ὑπὸ τῶν ὀξέων γενικῶς προσβάλλονται καὶ σχηματίζουν ἅλατα. Εἰς ταῦτα διαλυόμενα τὰ μέταλλα ἐμφανίζονται ὑπὸ μορφὴν κατιόντων, ἤτοι ἀτόμων αὐτοφυῶν πεφορτισμένων μὲ ἓν ἢ πλειότερα, ἀναλόγως τοῦ σθένους αὐτῶν, θετικὰ ἠλεκτρικὰ φορτία. Οὐχ ἧττον πολλὰ μέταλλα ἡνωμένα μετ' ὀξυγόνου ἀποτελοῦν ῥίζας ἐμφανιζομένας ὑπὸ μορφὴν ἀνιόντος, ὡς τὸ μαγγάνιον εἰς τὰ μαγγανικὰ καὶ ὑπερμαγγανικὰ ἅλατα, τὸ χρώμιον εἰς τὰ χρωμικὰ καὶ καθ' ἑξῆς. Τὰ μέταλλα ἔχουν τὴν ἰδιότητα νὰ ἑνοῦνται τηκόμενα μετ' ἄλλων μετάλλων ἐπίσης κατὰ ποικίλας ἀναλογίας, ἀσχέτους πρὸς τὰ ἀτομικὰ αὐτῶν βάρη καὶ ν' ἀποτελῶσι κράματα, τὰ ὁποῖα συνδυαζόμενα ὑπὸ διαφόρους ἀναλογίας ἐμφανίζουσιν ἰδιότητας φυσικὰς καὶ χημικὰς ἐν πολλοῖς διαφόρους τῶν συστατικῶν καὶ ἐξαιρετικῶς χρησίμους διὰ ποικίλας ἐφαρμογάς, οὕτως ὥστε σπανίως εἰς τὴν βιομηχανίαν χρησιμοποιοῦν τὰ μέταλλα ὑπὸ τὴν χημικῶς καθαρὰν αὐτῶν μορφήν. Τὰ ἀφθονώτερα τῶν ἐν τῇ γῇ μετάλλων εἶναι κατὰ σειρὰν τὸ ἀργίλλιον, ὁ σίδηρος, τὸ ἀσβέστιον, τὸ μαγνήσιον, τὸ νάτριον καὶ τὸ κάλιον.

Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

— [*Ὀρυκτολ.*] Ὅλα τὰ μέταλλα ἀπαντῶσιν ὡς ὀρυκτὰ εἰς τὴν φύσιν. Ἐν τούτοις ἐλάχιστα ἐξ αὐτῶν εὑρίσκονται εἰς κατάστασιν ἐλευθέραν ὡς στοιχεῖα αὐτοφυῆ. Ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον σχηματίζουν διαφόρους ἑνώσεις, ὡς τοιαῦται δὲ ἐμφανίζονται ἐπὶ τοῦ στερεοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς καὶ ὁσάκις πρόκειται περὶ βαρέος μετάλλου καλοῦνται *μεταλλεύματα*.

Τὰ μέταλλα, τὰ ὁποῖα ἀπαντῶσιν ὡς αὐτοφυῆ στοιχεῖα, χαρακτηρίζει μέγα εἰδικὸν βάρος καὶ λάμψις μεταλλική. Τοιαῦτα μὲν εἶναι κατὰ πρῶτον μὲν λόγον τὰ εὐγενῆ ἢ πολύτιμα μέταλλα, ἤτοι ὁ ἄργυρος, ὁ ὑδράργυρος, ὁ χρυσός, ὁ λευκόχρυσος, τὸ παλλάδιον, τὸ ἰρίδιον καὶ τὸ ὄσμιον, συνήθως μὲν ἁπλᾶ, ἐνίοτε ὅμως καὶ εἰς κράματα αὐτῶν, κατὰ δεύτερον δὲ λόγον τὰ κοινὰ μέταλλα, ἀλλ' ἐκ τούτων πάλιν μόνον ὁ μόλυβδος, ὁ ψευδάργυρος, ὁ χαλκὸς καὶ ὁ σίδηρος. Ὁ τελευταῖος εὑρίσκεται καὶ εἰς τοὺς μετεωρίτας, εἰς τοὺς ὁποίους ἐμφανίζεται συνήθως ὡς νικελιοῦχος σίδηρος. Ἀπὸ τὰς ὀρυκτὰς ἑνώσεις τῶν μετάλλων ἄλλαι μὲν ἐμφανίζονται μὲ θεῖον ὡς θειοῦχοι ἑνώσεις (γαληνίτης, σφαλερίτης, σιδηροπυρίτης, χαλκοπυρίτης), ἄλλαι μετ' ὀξυγόνου ὡς ὀξείδια ἢ ὑδροξείδια αὐτῶν (κασσιτερίτης, ῥουτίλιον, μαγνητίτης, αἱματίτης, λειμωνίτης, βουξίτης), ἄλλαι δὲ τέλος μὲ διάφορα ὀξέα ὡς ἀντίστοιχα ἅλατα, ἤτοι ἀνθρακικὰ (ἀσβεστίτης, μαγνησίτης, σμισθενίτης, ῥοδοχρωσίτης, κερουσίτης), θειικὰ (βαρύτης, ἀγγλεσίτης, ἐνζωμάτης), χρωμικὰ (κροκοΐτης), νιτρικὰ (νίτρον), φωσφορικὰ (ἀπατίτης, πυρομορφίτης), πυριτικά, ἅλατα τῶν ἁλογόνων ὀξέων (κεραργυρίτης, βρωμαργυρίτης, καρναλλίτης) κ. ἄ. Μεταξὺ τῶν ἀνωτέρω ἑνώσεων ἐμπορικὴν ἀξίαν διὰ τὴν ἐξαγωγὴν τοῦ ἀντιστοίχου μετάλλου ἔχουν κυρίως τὰ ὀξείδια, αἱ θειοῦχοι ἑνώσεις καὶ τὰ ἀνθρακικὰ ἅλατα. Χρήσιμαι ἀπὸ τῆς ἀπόψεως αὐτῆς εἶναι καὶ αἱ ἑνώσεις τῶν μετάλλων μεθ' ἁλογόνων στοιχείων, ἀλλ' αὐταὶ συνήθως εἶναι σπάνιαι, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου τὰ πολυάριθμα πυριτικὰ ἅλατα τῶν μετάλλων δὲν παρουσιάζουν σημασίαν. Προτοῦ ὑποβληθοῦν εἰς μεταλλουργικὴν ἐπεξεργασίαν αἱ θειοῦχοι ἑνώσεις τῶν μετάλλων καὶ τὰ ἀνθρακικὰ ἅλατα αὐτῶν μετατρέπονται προηγουμένως εἰς ὀξείδια διὰ φρύξεως. Ἡ ἐπεξεργασία τῶν ὀξειδίων πρὸς ἐξαγωγὴν τοῦ ἀντιστοίχου μετάλλου γίνεται εἰς εἰδικὰς καμίνους, ὡς μέσον δὲ ἀναγωγικὸν χρησιμοποιεῖται ὁ ἄνθραξ. Ἐν τούτοις ἡ ἀναγωγὴ δι' ἄνθρακος πολλῶν μεταλλικῶν ὀξειδίων εἰς τὴν συνήθη θερμοκρασίαν τῶν καμίνων εἶναι πολλάκις ἀνέφικτος (ὀξείδια τῶν ἀλκαλικῶν γαιῶν, τῆς ὁμάδος τοῦ χρωμίου κ. ἄ.). Ἕνεκα τούτου γίνεται χρῆσις ἠλεκτρικῶν καμίνων, διὰ τῶν ὁποίων ἐπιτυγχάνεται ὑψηλοτέρα θερμοκρασία. Ἀλλὰ καὶ ἡ μέθοδος αὕτη παρουσιάζει τὸ μειονέκτημα τοῦ σχηματισμοῦ ἀνθρακοενώσεων. Ὁ ἀσφαλέστερος τρόπος ἀποχωρισμοῦ τῶν μετάλλων ἐκ τῶν ὀξειδίων αὐτῶν εἶναι ὁ δι' ἠλεκτρολύσεως.

Γ. Β.

**— μέταλλα ἐλαφρά·** βλ. λ. *ἐλαφρὰ μέταλλα*.

**— μέταλλα εὐγενῆ·** βλ. λ. *εὐγενῆ μέταλλα*.

**—μέταλλα πολύτιμα** [*Ἐμπορ.*]. Καλοῦνται οὕτως εἰδικῶς δύο μέταλλα, ὁ χρυσὸς καὶ ὁ ἄργυρος. Τὰ πολύτιμα μέταλλα ἐξάγονται ἐκ διαφόρων χωρῶν μεμακρυσμένων τῆς Εὐρώπης, καθ' ὅσον τὰ μεταλλεῖα τὰ ὑπάρχοντα ἄλλοτε εἰς τὰς ἀρχαιοτέρου πολιτισμοῦ χώρας ἐξηντλήθησαν. Ὁ χρυσὸς καὶ ὁ ἄργυρος ἔρχονται σήμερον κυρίως ἐξ Αὐστραλίας, Καλιφορνίας, Ν. Ἀφρικῆς, Καναδᾶ καὶ Ν. Ἀμερικῆς. Εἰς τοὺς τόπους τῆς ἐξαγωγῆς ἡ τιμὴ αὐτῶν εἶναι πολὺ μεταβλητή, ἐξαρτωμένη ἐκ τῆς ποσότητος παραγωγῆς καὶ τῶν τοπικῶν ἐκεῖ συνθηκῶν. Ταῦτα ὅμως, φθάνοντα εἰς τὰς μεγάλας ἀγοράς, ἀποκτῶσι τιμὴν σχεδὸν σταθεράν, ὑποκειμένην ἐκ τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως εἰς μικράν τινα διακύμανσιν. Ἡ τιμὴ αὕτη δέον νὰ νοηθῇ ὡς τιμὴ τῶν μετάλλων ἐκπεφρασμένη εἰς μονάδας μεταλλικοῦ νομίσματος, καθ' ὅσον αἱ πραγματικαὶ διακυμάνσεις τῶν τιμῶν αὐτῶν ἀναφαίνονται εἰς τὴν αὔξησιν ἢ ἐλάττωσιν τῶν τιμῶν πάντων τῶν λοιπῶν ἐμπορευμάτων, ἐφ' ὅσον πᾶσαι αἱ λοιπαὶ συνθῆκαι τιμῆς τούτων μένουσιν αἱ αὐταί· π. χ. ὑπάρχει ὑποτίμησις τοῦ χρυσοῦ ἂν πᾶσαι αἱ λοιπαὶ πρῶται ὗλαι αὐξάνωσι κατὰ τὴν τιμήν.

Αἱ κυριώτεραι ἀγοραὶ πολυτίμων μετάλλων εἶναι ἡ Ν. Ὑόρκη, τὸ Λονδῖνον καὶ οἱ Παρίσιοι. Ὁ χρυσὸς στέλλεται εἰς ταύτας εἰς πλίνθους ἢ εἰς νομίσματα ἐντὸς στερεῶν ξυλίνων κιβωτίων περιδεδεμένων διὰ στεφανῶν ἐκ σιδηρῶν ἐλασμάτων, ἢ εἰς κόνιν ἐντὸς στερεῶν κιβωτίων ἐκ χυτοσιδήρου. Αἱ πλίνθοι εἶναι ἐσφραγισμέναι παρὰ τοῦ ἐργαστηρίου ἢ ὀρυχείου ἐξ οὗ προέρχονται καὶ συνοδεύονται παρὰ δελτίου χημικῆς ἀναλύσεως πιστοποιοῦντος τὸν τίτλον των. Ὁ ἄργυρος στέλλεται εἰς ῥάβδους σχήματος κολούρου πυραμίδος, ἢ πλίνθους σχήματος ὀρθογωνίου παραλληλεπιπέδου ἢ τομῆς τραπεζίου. Κατὰ τὴν ἄφιξίν των εἰς τὰς μεγάλας ἀγορὰς δοκιμάζονται ὡς πρὸς τὸν τίτλον καὶ ἀνάγονται εἰς ὡρισμένους τίτλους κατὰ τὰς συνηθείας τῶν ἀγορῶν.

Εἰς τὰ πλειότερα τῶν πεπολιτισμένων κρατῶν τὸ κράτος ἐλέγχει τὸν τίτλον τῶν παρὰ τῶν ἰδιωτῶν κατασκευαζομένων ἀντικειμένων ἐκ πολυτίμου μετάλλου πρὸς ἐξασφάλισιν τῶν ἰδιωτῶν ἀγοραστῶν ἐξ ἀπάτης. Οἱ κατασκευάζοντες ἀντικείμενα ἐκ πολυτίμου μετάλλου διὰ τὸ ἐμπόριον φέρουσι ταῦτα ὑποχρεωτικῶς εἰς εἰδικὴν ὑπηρεσίαν τοῦ κράτους, ἥτις ἀντὶ μικρᾶς ἀμο:βῆς ἐλέγχει τὸν τίτλον αὐτῶν καὶ σφραγίζει ταῦτα διὰ σφραγῖδος ἐνδεικνυούσης τοῦτον. Ἕκαστον κράτος ὁρίζει τοὺς τίτλους, εἰς οὓς δύναται ἓν ἀντικείμενον νὰ ᾖ κατεσκευασμένον. Συνήθεις παραδεδεγμένοι τίτλοι διὰ τὰ χρυσᾶ ἀντικείμενα (ἐν Ἀγγλίᾳ) εἶναι: 0,920=22,03 καράτια, 0,840=20,13 καρ., 0,750=18 καρ., 0,583=14 καρ. Ὁ τίτλος τῶν 14 καρατίων ἰσχύει διὰ τὰ ὡρολόγια. Διὰ δὲ τὰ ἀργυρᾶ 0,950, 0,925, 0,900, 0,800, καὶ 0,750.

Εἰς ἃ κράτη ὑπάρχει τοιοῦτος θεσμὸς ἐπιτρέπεται ἡ κατασκευὴ ἀντικειμένων εἰς οἱονδήποτε τίτλον, ἐκτὸς τῶν ἐκ τοῦ νόμου ὁριζομένων, πλὴν ταῦτα δέον νὰ φέρωσι τὴν σφραγῖδα τοῦ τίτλου των καὶ νὰ προσδιορίζωνται διὰ τὸ ἐξαγωγικὸν ἐμπόριον.

Ὁ ἔλεγχος καὶ καθορισμὸς τῶν τίτλων γίνεται δι' ἐπιστημονικῶν (χημικῶν) μεθόδων διὰ τὰ μεγάλα ἀντικείμενα, ὅτε ἡ ἐπιτρεπομένη ἀνοχὴ τοῦ τίτλου εἶναι ἕως 3‰ διὰ τὰ χρυσᾶ καὶ ἕως 5‰ διὰ τὰ ἀργυρᾶ, ἢ διὰ τῆς λυδίας λίθου διὰ τὰ μικρὰ ἀντικείμενα, ὅτε ἡ ἀνοχὴ τίτλου φθάνει ἕως 2%. Τὰ ἐκ κράματος πολυτίμων καὶ ἄλλων διαφόρων μετάλλων ἀντικείμενα φέρουσιν ὡς σφραγῖδα τὸ M D=métaux divers. Τὰ ἐκ πολυτίμων μετάλλων ἀντικείμενα, ἔχοντα ὡς ἐκ τοῦ προορισμοῦ των καὶ μηχανήματα ἐκ χάλυβος ἢ ἄλλου μετάλλου, ἐπισημαίνονται διὰ τῆς λέξεως Mécan.

Ἕκαστον νόμισμα ἔχει ἀξίαν τινὰ σταθερὰν εἰς τὸ ἄρτιον, ἐκπεφρασμένην εἰς μονάδας ἄλλου νομίσματος. Τὰ διάφορα νομισματοκοπεῖα ὅμως δὲν δέχονται τὰ ξένα νομίσματα, ἢ τὸν εἰς πλίνθους χρυσόν, εἰς τὴν εἰς τὸ ἄρτιον αὐτῶν ἀξίαν, ἀλλὰ εἰς τὴν τιμὴν διατιμήσεως τὴν ὑπ' αὐτῶν διδομένην καὶ εὑρισκομένην μετὰ τὴν ἀφαίρεσιν τῶν ἐξόδων νομισματοκοπῆς ἐκ τῆς εἰς τὸ ἄρτιον ἀξίας. Τοῦτο δέ, καθόσον τὸ νομισματοκοπεῖον, ἀγοράζον χρυσὸν καὶ πλίνθους ἢ ξένα νομίσματα, δέον νὰ ἀναχωνεύσῃ ταῦτα, νὰ τὰ ἀναγάγῃ εἰς τὸν νόμιμον τῆς χώρας τίτλον καὶ νὰ τὰ κόψῃ ἐκ νέου, πρᾶγμα ὅπερ ἀπαιτεῖ ἔξοδα. Ἐπίσης κατὰ τὸν καθορισμὸν τῆς διατιμήσεως τῶν ἀξιῶν ξένων νομισμάτων παρ' ἑκάστου νομισματοκοπείου λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν ὡς βάρος καθαροῦ πολυτίμου μετάλλου τὸ ἐν αὐτοῖς νόμιμον ἢ ἠλαττωμένον κατὰ τὴν ἀνοχήν. Οὕτω τὸ νομισματοκοπεῖον τῶν Παρισίων ἀγοράζει σήμερον 1 χιλιόγραμμον καθαροῦ χρυσοῦ εἰς τὴν τιμὴν διατιμήσεως, ἥτις εἶναι ἡ νόμιμος 16.963,52 φρ., ἠλαττωμένην κατὰ τὰ ἔξοδα νομισματοκοπῆς 44,44 φρ. Ἐν Λονδίνῳ ἡ τιμὴ διατιμήσεως εἶναι ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν νόμιμον, καθόσον δὲν κρατοῦνται ἔξοδα νομισματοκοπῆς, ἀλλὰ εἰς τὸν παρουσιάζοντα χρυσὸν διὰ νομισματοκοπὴν χορηγοῦνται τὰ ἀντίστοιχα νομίσματα μετὰ 15 ἡμέρας, συνεπῶς ὁ τῶν 15 ἡμερῶν τόκος ἀποτελεῖ τὰ ἔξοδα νομισματοκοπῆς.

Ὁ χρυσὸς καὶ ὁ ἄργυρος φέρονται εἰς τὴν ἀγορὰν ὡς ἐμπορεύματα, ὅπου δὲν ἔχουσιν οὔτε τὴν νόμιμον τιμήν, οὔτε τὴν τῆς διατιμήσεως, ἀλλὰ τιμὴν ἐμπορικήν, κυμαινομένην ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ ζητήσεως. Δέον νὰ παρατηρηθῇ ὅτι, καίτοι αἱ ἐμπορικαὶ συναλλαγαὶ ηὐξήθησαν καταπληκτικῶς, ἐν τούτοις ἡ ζήτησις τοῦ χρυσοῦ δὲν ηὐξήθη, καθόσον ἀντικαθίσταται ἡ χρῆσις αὐτοῦ ἐν ταῖς συναλλαγαῖς διὰ τῶν ἐπιταγῶν, συναλλαγματικῶν, συμψηφισμῶν κλπ. Αἱ διακυμάνσεις τῶν τιμῶν τῶν πολυτίμων μετάλλων, τῶν ἀπολαυόντων τοῦ δικαιώματος τῆς ἐλευθέρας νομισματοκοπῆς, εἶναι μικραί. Διότι, δοθέντος ὅτι τὰ κυρίως νομίσματα ἔχουσι τὴν αὐτὴν τιμήν, εἴτε ὡς ἐμπορεύματα, εἴτε ὡς νομίσματα, ἐν ᾗ περιπτώσει συμβῇ ἡ ἐν τῷ ἐμπορίῳ ἀξία νὰ εἶναι ἀνωτέρα τῆς τιμῆς διατιμήσεως, τότε αἱ ἐκδοτικαὶ τράπεζαι τήκουσι τὰ νομίσματα καὶ προσφέρουσι ταῦτα εἰς τὴν ἀγορὰν ὡς ἐμπόρευμα, ἢ ἡ βιομηχανία, ἀντὶ νὰ χρησιμοποιήσῃ πλίνθους, χρησιμοποιεῖ νομίσματα· προσφέρεται συνεπῶς οὕτω ἕτερον ποσὸν μετάλλων καὶ ἡ ἐμπορική των ἀξία, λόγῳ τῆς μεγάλης προσφορᾶς, πίπτει πρὸς τὴν νόμιμον· ἐν ᾗ δὲ περιπτώσει ἡ ἐμπορικὴ ἀξία εἶναι κατωτέρα τῆς διατιμήσεως, τότε οἱ ἰδιῶται φέρουσιν εἰς τὰ νομισματοκοπεῖα πολύτιμα μέταλλα εἰς πλίνθους πρὸς κοπὴν καὶ οὕτως ἐπέρχεται ζήτησις αὐτῶν καὶ ἐξίσωσις τῆς τιμῆς των πρὸς τὴν νόμιμον τοιαύτην.

Τὸ ἐμπόριον τῶν πολυτίμων μετάλλων ἐγίνετο πρὸ τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου ἐν Λονδίνῳ, Παρισίοις καὶ Ν. Ὑόρκῃ, δευτερευόντως δὲ ἐν Φραγκφούρτῃ, Βερολίνῳ, Ἀμβούργῳ, Ἀμστελλοδάμῳ. Κατὰ τὸν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον τὸ ἐμπόριον τούτων ἔπαυσε, καθ' ὅσον ἀφ' ἑνὸς μὲν εἰς πάντα σχεδὸν τὰ κράτη ἀπηγορεύθη ἡ ἐξαγωγὴ καὶ ἡ ἐλευθέρα κυκλοφορία πολυτίμων μετάλλων, ἀφ' ἑτέρου δὲ αἱ οἰκονομικαὶ δυσχέρειαι τῶν κρατῶν ἦσαν τοιαῦται, ὥστε νὰ μὴ κόπτωνται μεταλλικὰ νομίσματα. Ἤδη τὰ πολύτιμα μέταλλα διαπραγματεύονται εἰς Ν. Ὑόρκην καὶ Λονδῖνον. Αἱ συνήθειαι τῶν κυριωτέρων ἀγορῶν εἶναι: Εἰς τὸ χρηματιστηριακὸν δελτίον τοῦ Λονδίνου ἡ τιμὴ τοῦ χρυσοῦ ἀναγράφεται εἰς σελλίνια καὶ πέννας κατὰ οὐγγίαν troy τίτλου standard, ἤτοι 22 καρατίων ἢ 0,916 $^2/_3$, ἡ δὲ τοῦ ἀργύρου ὁμοίως, ἀλλ' ὁ τίτλος standard διὰ τοῦτον εἶναι 0,925, ἢ 11 oz 2 dwt. Τὸ βάρος τῶν πλίνθων χρυσοῦ καὶ ἀργύρου δίδεται εἰς οὐγγίας καὶ χιλιοστὰ ἢ δεκάκις χιλιοστὰ τῆς οὐγγίας. Ὁ τίτλος δίδεται εἰς δεκάκις χιλιοστὰ διὰ πλίνθους χρυσοῦ καὶ χιλιοστὰ διὰ πλίνθους ἀργύρου. Πολλάκις ὅμως δίδεται ὁ τίτλος τῶν ἀργυρῶν δι' ἀποτιμήματος εἰς dwt, τιθεμένων πρὸ τοῦ βάρους τῶν γραμμάτων B (Better)=ἀνώτερον, ἢ W (Worse)=κατώτερον, τοῦ τύπου Standard. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει, ἵνα εὕρωμεν τὸν πραγματικὸν τίτλον, δέον νὰ προσθέτωμεν ἢ ἀφαιρῶμεν ἐκ τῶν 222 dwt τοῦ τύπου Standard τὸ B ἢ W, π.χ.

Ἐὰν B=6, ὁ τίτλος ἔσται $\frac{228}{240}$, καὶ ἂν W=7, ὁ τίτλος ἔσται $\frac{215}{240}$.

Εἰς τὸ δελτίον τοῦ χρηματιστηρίου τῶν Παρισίων λαμβάνεται ὡς βάσις τῆς τιμῆς ἑνὸς χιλιογράμμου χρυσοῦ τίτλου 1,000 ἡ τιμὴ διατιμήσεως τοῦ νομισματοκοπείου φρ. χρ. 16,963,52 καὶ σημειοῦται τὸ ὑπερτίμημα ἢ ὑποτίμημα εἰς 0/00 ἐπὶ τῆς ἀξίας διατιμήσεως διὰ τὴν ἐμπορικὴν τιμήν. Διὰ τὸν ἄργυρον τὸ δελτίον δίδει τιμὴν εἰς χρ.φρ. δι' 1 χιλιόγραμμον καθαροῦ μετάλλου (1000/1000). Ἐν Βερολίνῳ δίδεται δελτίον μόνον διὰ τὰ νομίσματα, ἡ δὲ τιμὴ ἀναφέρεται εἰς ἓν νόμισμα διὰ ποσὸν μέχρι 50 νομισμάτων καὶ διὰ τὰ δολλάρια μέχρις 100. Ἐν Ν. Ὑόρκῃ τὸ δελτίον δίδει τιμὴν χρυσοῦ ἐπὶ τῇ βάσει τῆς τιμῆς 43 οὐγγιῶν troy τίτλου 0,900, διατιμωμένων 800 $, ἤ, ὅπερ τὸ αὐτό, ἐπὶ τῇ βάσει 1 οὐγγίας troy καθαροῦ χρυσοῦ ἀξίας 20,67183 $, σημειουμένου ἐν τῷ δελτίῳ τοῦ ἀποτιμήματος ἐπὶ πλέον ἢ ἐπὶ ἔλαττον εἰς ποσοστὸν ἐπὶ τοῖς %. Ἡ τιμὴ τοῦ ἀργύρου δίδεται εἰς cents κατὰ οὐγγίαν troy καθαροῦ ἀργύρου. Ἐν Ἀμστελλοδάμῳ τὸ δελτίον δίδει τὴν τιμὴν δι' 1 χιλιόγρ.

καθαροῦ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου καὶ τὰς τιμὰς τῶν νομισμάτων κατὰ νόμισμα. Ἡ Νεοϊρλανδικὴ Τράπεζα ἀγοράζει τὸν χρυσὸν εἰς τὴν τιμὴν τῶν 1643 φλωρίνων κατὰ χιλιόγρ. καθαροῦ χρυσοῦ καὶ δέχεται πλίνθους βάρους μικρότερον τῶν 13 χιλιογράμμων. Αἱ ἀγοραὶ Βομβάης καὶ Καλκούττας εἶναι σημαίνουσαι ἀγοραὶ τοῦ ἀργύρου. Μονὰς ἐν ταῖς διαπραγματεύσεσι τοῦ ἀργύρου εἶναι τὸ tola τίτλου 0,988 καὶ βάρους 3/8 τῆς οὐγγίας. Τὸ δελτίον δίδει τιμὴν ἀργύρου ἀνὰ 100 tola, ἤτοι ἀνὰ 37,5 οὐγγίας τίτλου 0,988. Τ. ΚΕΡΑΜΙΔΑΣ

— **μέταλλον κλαυδιανὸν** *[Μεταλλ.]*· βλ. λ. *κλαυδιανὸν* μέταλλον.

— **μετάλλων πολυτίμων τίτλος** *[Νομισμ.]*· βλ. λ. *κρᾶμα* καὶ *τίτλος*.

**Μέταλλον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀχλαδοχωρίου (πρώην Κρουσόβου) τῆς ἐπαρχίας Σιντικῆς τοῦ νομοῦ Σερρῶν. Κάτ. (1928) 216.

**μεταλλοξείδια** (τὰ) *[Χημ.]*. Καλοῦνται οὕτως αἱ ἑνώσεις τῶν μετάλλων μετ' ὀξυγόνου. Ἡ ἕνωσις τῶν μετάλλων μετ' ὀξυγόνου, καὶ *ὀξείδωσις* καλουμένη, ἐπιτελεῖται ἀμέσως ἢ ἐμμέσως καὶ δὴ εἴτε ἐν χαμηλῇ εἴτε ἐν ὑψηλῇ θερμοκρασίᾳ. Οὕτω λ. χ. τὸ κάλιον ἑνοῦται εἰς συνήθη θερμοκρασίαν, ὁ ὑδράργυρος εἰς τοὺς 300° περίπου κλπ. Ἡ ὀξείδωσις εἴς τινα μέταλλα γίνεται δι' ἁπλῆς ἐκθέσεως τούτων εἰς ξηρὸν ἀέρα, ἄλλων δι' ἀέρος περιέχοντος ὑδρατμοὺς καὶ ἀνθρακικὸν ὀξύ. Τὰ καλούμενα *εὐγενῆ* μέταλλα δὲν ἑνοῦνται ἀπ' εὐθείας μετὰ τοῦ ὀξυγόνου οὐδὲ εἰς ὑψηλὴν θερμοκρασίαν. Εἰς ταῦτα ὁ σχηματισμὸς τῶν ὀξειδίων γίνεται ἐμμέσως, ὡς λ. χ. εἰς τὸν χρυσόν, ὅστις μετατρέπεται πρῶτον εἰς χλωριοῦχον καὶ δι' ἐπιδράσεως ἐπ' αὐτοῦ ὀξειδίου τοῦ μαγνησίου λαμβάνεται τὸ ὀξείδιον. Πολὺ δραστικώτερον τοῦ ὀξυγόνου πρὸς σχηματισμὸν ὀξειδίων δρᾷ τὸ ὄζον, τὸ ὁποῖον ἑνοῦται μετὰ πλείστων μετάλλων ἤδη ἐν ψυχρῷ.

Ὀξείδια τῶν διαφόρων μετάλλων δύνανται περαιτέρω νὰ σχηματισθῶσι καὶ ἐμμέσως διὰ θερμάνσεως τῶν ἀντιστοίχων ὑδροξειδίων, ἀνθρακικῶν ἁλάτων, νιτρικῶν ἁλάτων, θειικῶν ἁλάτων κλπ. Εἰς τὴν φύσιν ἀπαντῶσιν ὑπὸ μορφὴν ὀρυκτῶν πλεῖστα μεταλλοξείδια, ὡς λ. χ. τοῦ σιδήρου, τοῦ μαγγανίου, τοῦ κασσιτέρου κλπ.

Τὰ μεταλλοξείδια εἶναι ὅλα σχεδὸν στερεὰ σώματα, ἔχουσι βασικὸν χαρακτῆρα σχηματίζοντα μεθ' ὕδατος ὑδροξείδια (βάσεις) καὶ παρέχουν μετ' ὀξέων ἅλατα.

Τὰ διάφορα μέταλλα σχηματίζουν μετ' ὀξυγόνου πλείονα ὀξείδια μὲ διάφορον ἀριθμὸν ἀτόμων ὀξυγόνου· οὕτω λ. χ. ὁ σίδηρος σχηματίζει τὸ

$FeO$, τὸ $Fe_2O_3$, τὸ $Fe_3O_4$ κλπ.

ἐξ αὐτῶν δὲ τὰ πτωχότερα εἰς ὀξυγόνον δύνανται διὰ περαιτέρω ὀξειδώσεως νὰ μετατραπῶσιν εἰς ἀνώτερα, τὸ ἀντίστροφον δὲ δύναται ἐπίσης νὰ ἐπιτελεσθῇ δι' ἀναγωγῆς. Ἀναλόγως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν μεθ' ἑνὸς ἀτόμου μετάλλου ἡνωμένων ἀτόμων ὀξυγόνου διακρίνονται εἰς *μονοξείδια*, *διοξείδια*, *τριοξείδια* κλπ. Ὅταν περιέχουν ὀλιγώτερον τοῦ ἀπαιτουμένου πρὸς κορεσμὸν τῶν μονάδων συγγενείας τοῦ μετάλλου ὀξυγόνον καλοῦνται *ὑποξείδια* καὶ ὅταν περιέχουσι πλειότερον καλοῦνται *ὑπεροξείδια* (πλείονα βλ. *σιδήρου ἑνώσεις*, *ἀργύρου ἑνώσεις* κλπ.). Σ. Γ.

**μεταλλόπλυσις** (ἡ)· ἡ ἐργασία, δι' ἧς ἐπιτυγχάνεται ὁ καθαρισμὸς τῶν μεταλλευμάτων δι' ὕδατος.

— *[Μεταλλειολ.]* Ὁ καθαρισμὸς τῶν μεταλλευμάτων ἀπὸ τῶν μετ' αὐτῶν μεμειγμένων ἀχρήστων ὑλῶν γίνεται ὡς ἀκολούθως: Τὸ μετάλλευμα λειοτριβεῖται πρῶτον, κατόπιν δὲ γίνεται διὰ κοσκίνων ὁ διαχωρισμὸς τῶν κόκκων κατὰ κατηγορίας μεγέθους. Μετὰ τοῦτο οἱ κόκκοι ἑκάστης κατηγορίας ῥίπτονται ἐντὸς ὕδατος, ἐπειδὴ δὲ οἱ εἰδικῶς βαρύτεροι κατέρχονται ἐν αὐτῷ ταχύτερον, ἐπιτυγχάνεται οὕτω νέα διαλογὴ αὐτῶν ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ εἰδικοῦ των βάρους. Ἡ τελικὴ ἐργασία τοῦ καθαρισμοῦ καὶ τῆς διαλογῆς γίνεται διὰ τοποθετήσεως τῶν κόκκων ἐπὶ κεκλιμένων ἐπιφανειῶν, ἐπὶ τῶν ὁποίων ῥέει λεπτὸν στρῶμα ὕδατος, παρασύρον τοὺς περισσότερον ὀγκώδεις. (Βλ. καὶ λ. *μεταλλεῖον*). —Ρ.

**μεταλλοποιήσιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μεταβληθῇ εἰς μέταλλον, ἐπὶ τῶν ὀρυκτῶν μεταβαλλομένων εἰς καθαρὸν μέταλλον.

**μεταλλοποίησις**, *—εως* (ἡ)· ἡ ἀποκατάστασις ὀρυκτοῦ εἰς καθαρὸν μέταλλον || ἡ γένεσις τῶν μετάλλων ἐν τῇ γῇ.

**μεταλλοργανικαὶ** *ἑνώσεις [Ὀργ. Χημ.]*. Καλοῦνται οὕτως αἱ ἑνώσεις τῶν μετάλλων μετ' ἀλκυλίων ἢ ἀρυλίων. Αἱ ἑνώσεις αὗται, ἀνακαλυφθεῖσαι τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Frankland, χρησιμοποιοῦνται εὐρύτατα διὰ συνθέσεις ὀργανικῶν ἑνώσεων πρὸς μεταφορὰν τῶν ἀλκυλίων ἢ ἀρυλίων λόγῳ τοῦ ἀσθενοῦς αὐτῶν δεσμοῦ πρὸς τὰ μέταλλα. Ἐκ τῶν μεταλλοργανικῶν ἑνώσεων χρησιμοποιοῦνται κυρίως αἱ ἑνώσεις τοῦ ψευδαργύρου, ὀλιγώτερον αἱ τοῦ ὑδραργύρου καὶ ἀπό τινων ἐτῶν χρησιμοποιοῦνται συχνότατα αἱ τοῦ μαγνησίου, λόγῳ τοῦ μεγάλου πλεονεκτήματος τὸ ὁποῖον κέκτηνται, τοῦ νὰ μὴ αὐταναφλέγωνται εἰς τὸν ἀέρα. Μεγίστην σημασίαν διὰ τὰς συνθέσεις ἔχουσιν αἱ τὸ πρῶτον ὑπὸ τῶν Barbier καὶ Grignard παρατηρηθεῖσαι ἑνώσεις τοῦ μαγνησίου, εἰς ἃς μόνον ἡ μία μονὰς συγγενείας αὐτοῦ εἶναι ἑνωμένη πρὸς ἀλκύλιον καὶ ἡ ἑτέρα δὲ πρὸς ἀλογονικὸν στοιχεῖον, αἱ καλούμεναι *ὀργανομαγνησιακαὶ ἑνώσεις* (πλείονα βλ. *ψευδαργύρου ὀργανικαὶ ἑνώσεις*, *ὑδραργύρου* — κλ.). Σ. Γ.

**Μέταλλος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Κάτω Μοισίας παρὰ τὸν Δούναβιν, ἀναφερόμενον ὑπὸ τοῦ Προκοπίου (Περὶ κτισμ. IV, 11), τὸ ὁποῖον ἐπεσκεύασεν ὁ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**μεταλλοσάπωνες** (οἱ). Ἅλατα τῶν ἀνωτέρων λιπαρῶν ὀξέων μετὰ διαφόρων μετάλλων ἐκτὸς τῶν τοῦ νατρίου καὶ καλίου, ἅτινα ἀποτελοῦν τοὺς κυρίως σάπωνας. Τὰ μετὰ μολύβδου ἅλατα τῶν λιπαρῶν ὀξέων ἀποτελοῦν τὰ καλούμενα *ἔμπλαστρα*. Οἱ μεταλλοσάπωνες παρασκευάζονται διὰ βρασμοῦ τῶν λιπαρῶν ὀξέων ἢ τῶν λιπῶν μετὰ τῶν μεταλλοξειδίων. Ἐπίσης δύνανται νὰ παρασκευασθῶσι καὶ διὰ μείξεως διαλυμάτων σάπωνος μετὰ διαλυμάτων μεταλλικῶν ἁλάτων, ὅτε ὁ σχηματιζόμενος μεταλλοσάπων καθιζάνει ὡς ἀδιάλυτος. Πολλοὶ τῶν μεταλλοσαπώνων εὐχρηστοῦν εἰς τὴν φαρμακευτικήν, ἄλλοι δὲ πάλιν χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν παρασκευὴν τῶν καλουμένων ξηραντικῶν (siccatifs). Κ. Γ. Μ.

**μεταλλοσκοπία** (ἡ)· ἡ μελέτη τῆς νευρικῆς ἐπιδράσεως, τῆς προκαλουμένης ἐκ τῆς ἐπαφῆς μετάλλων τινῶν ἐπὶ τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος.

— *[Ἐγκυκλ.]* Κατὰ τὴν πρώτην ἐποχὴν τῆς ἐφαρμογῆς τῆς *μεταλλοθεραπείας* (βλ. λ.), ἠρευνᾶτο διὰ τῆς *μεταλλοσκοπίας* ἡ βιοχημικὴ συγγένεια τοῦ ὀργανισμοῦ τῶν διαφόρων ἀτόμων πρὸς τὰ διάφορα μέταλλα. Ἐπὶ τῇ βάσει δὲ τῆς τοιαύτης ἐρεύνης καθωρίζετο τὸ εἶδος τοῦ μετάλλου, τὸ ὁποῖον θὰ εἶχε θεραπευτικὰς δι' ἕκαστον ἄτομον ἰδιότητας. —Ω.

**μεταλλοτεχνία** (ἡ)· ἡ τέχνη τῆς ἐπεξεργασίας τῶν μετάλλων καὶ τῶν μεταλλικῶν κραμάτων.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἐν τῇ ἐννοίᾳ τοῦ γενικοῦ ὅρου *μεταλλουργία* (βλ. λ.) περιλαμβάνονται συνήθως πάντα τὰ στάδια τῆς κατεργασίας, τὰ ἐπακολουθοῦντα τὴν ἐξόρυξιν τοῦ μεταλλεύματος, μέχρι τῆς διαμορφώσεως τοῦ μετάλλου εἰς τεμάχια ὡρισμένων σχημάτων καὶ διαστάσεων. Κατ' ἄλλην ἐν τούτοις διάκρισιν, διὰ τοῦ ὅρου *μεταλλουργία* νοοῦνται μόνον τὰ ἔργα τῆς προπαρασκευῆς, ἀποκαθάρσεως καὶ ἐκκαμινεύσεως τῶν μεταλλευμάτων, καλεῖται δὲ εἰδικώτερον *μεταλλοτεχνία* ἡ ἐφεξῆς κατεργασία τῶν ἀμόρφων μεταλλικῶν ὄγκων, χάρις εἰς τὴν ὁποίαν τὰ μέταλλα παραδίδονται ἕτοιμα πρὸς βιομηχανικὴν χρῆσιν, εἰς τεμάχια καθωρισμένης μορφῆς (πλάκας, ῥάβδους, φύλλα, σύρματα, σωλῆνας κλπ.). Ἐνίοτε τέλος ἡ ἔννοια τοῦ ὅρου *μεταλλοτεχνία* διευρύνεται ἐπὶ μᾶλλον, περιλαμβάνουσα ἐν ἑαυτῇ καὶ πᾶσαν τέχνην ἢ βιομηχανίαν ἀσχολουμένην μὲ τὴν κατασκευὴν μεταλλίνων εἰδῶν καὶ ἀντικειμένων.

Αἱ κυρίως εἰπεῖν μεταλλοτεχνικαὶ κατεργασίαι δύνανται νὰ διακριθῶσιν εἰς τὰς τρεῖς ἀκολούθους κατηγορίας:

*I) Κατεργασίαι θερμικαί.* Ἐκ τούτων κυριώτεραι εἶναι:

α') Ἡ *χύσις* τῶν μετάλλων εἰς τύπους (καλούπια), περὶ τῆς ὁποίας βλ. λ. *χυτήρια*.

β') Ἡ *ἀνόπτησις*. Κατ' αὐτὴν τὸ μέταλλον θερμαίνεται μέχρις ὡρισμένης ὑψηλῆς θερμοκρασίας, μεθ' ὃ ψύχεται βαθμιαίως. Διὰ τοῦ τρόπου δὲ τούτου ἀνακτᾷ τὰς ἀρχικὰς αὐτοῦ ἰδιότητας, τὰς ὁποίας εἶχε τυχὸν ἀπολέσει κατὰ τὸ στάδιον διαφόρων μηχανικῶν κατεργασιῶν.

γ') Ἡ *βαφή*, καθ' ἥν, μετὰ ὑψηλὴν τοῦ μετάλλου θέρμανσιν, ὑποβάλλεται τοῦτο εἰς ἀπότομον ψῦξιν. Διὰ τῆς βαφῆς ἐπιτυγχάνονται διάφορα, κατὰ τὰ διάφορα μέταλλα, ἀποτελέσματα (ὡς π. χ. ἡ ὑπερβολικὴ σκλήρυνσις, προκειμένου περὶ σιδήρου καὶ χάλυβος).

δ') Ἡ *ἐπαναφορά*, ἥτις ἀποτελεῖ ἀνόπτησιν βεβαμμένων μετάλλων, ἐπὶ τῷ σκοπῷ οὐχὶ νὰ ἐξαφανισθῇ ἡ βαφή, ἀλλὰ νὰ βελτιωθῶσιν ὡρισμέναι μηχανικαὶ ἰδιότητες τοῦ μετάλλου.

Εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν θερμικῶν κατεργασιῶν ἀνήκουσιν ἐπίσης αἱ δι' *ὀξυασετυλίνης* συγκολλήσεις καὶ διατμήσεις τῶν μετάλλων (βλ. λ. *αὐτογενὴς συγκόλλησις*).

*II) Κατεργασίαι μηχανικαί.* Αὗται συνίστανται εἰς τήν, ἐν ψυχρῷ ἢ ἐν θερμῷ, διαμόρφωσιν τῶν μετάλλων εἰς ὡρισμένου σχήματος καὶ διαστάσεων τεμάχια, εἴτε διὰ καταλλήλου συμπιέσεως τοῦ μεταλλίνου ὄγκου, εἴτε δι' ἀφαιρέσεως μέρους τῆς ὕλης αὐτοῦ.

Πρώτη ὁμὰς (κατεργασίαι καθ' ἃς δὲν γίνεται ἀφαίρεσις ὑλικοῦ):

α') *Ἁπλῆ συμπίεσις.* Δι' αὐτῆς, ἐκτελουμένης μέσῳ ἰσχυρῶν πιεστικῶν μηχανημάτων, ἐπιτυγχάνεται ὄχι μόνον ὡρισμένη διαμόρφωσις τοῦ μεταλλικοῦ τεμαχίου, ἀλλὰ καὶ αὔξησις συγχρόνως τῆς ὁμοιογενείας τοῦ μετάλλου διὰ συμπλησιάσεως τῶν μορίων του πρὸς ἄλληλα. Διὰ τὴν τοιαύτην κατεργασίαν τὸ μέταλλον τοποθετεῖται, ἐν ἡμιρρεύστῳ συνήθως καταστάσει, ἐντὸς τύπων, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐπενεργοῦσιν ὑδραυλικοὶ ἢ ἀτμοκίνητοι συμπιεσταί. Ἀλλὰ καὶ ἐν ψυχρῷ ἐπίσης ἐφαρμόζεται ἡ κατεργασία τῆς συμπιέσεως εἴς τινας περιπτώσεις (βλ. κατωτ. *ἐπιβολή*).

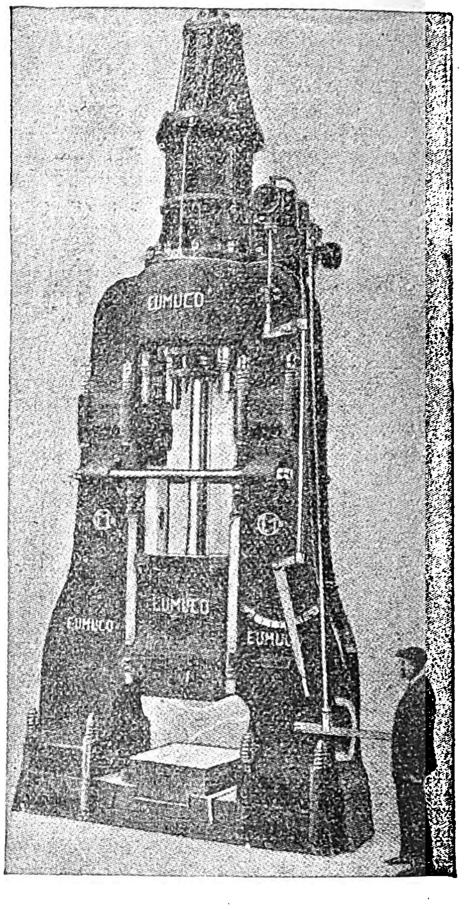

*Ἀτμόσφυρα 4 τόννων.*

β') *Σφυρηλάτησις*, γινομένη, εἴτε ἐν θερμῷ εἴτε ἐν ψυχρῷ, εἰς συχνὰς ἀλλεπαλλήλους κρούσεις. Δι' αὐτὴν χρησιμοποιοῦνται εἰς τὰς μεγάλας μεταλλοτεχνικὰς ἐγκαταστάσεις ἀτμόσφυραι, ὑδραυλικαὶ σφῦραι καὶ ἀερόσφυραι (λειτουργοῦσαι διὰ πεπιεσμένου ἀέρος). Διὰ τῆς σφυροκοπήσεως ἐπιτελεῖται ἰδίως ἡ ἐπέκτασις τοῦ μεταλλικοῦ τεμαχίου κατὰ μῆκος ἢ κατὰ πλάτος, ἐπὶ ζημίᾳ τῶν ἄλλων αὐτοῦ διαστάσεων, ἐπίσης δὲ ἡ εὐθυγράμμισις, ἡ ἐπιπέδωσις ἢ ἡ λέπτυνσις αὐτοῦ.

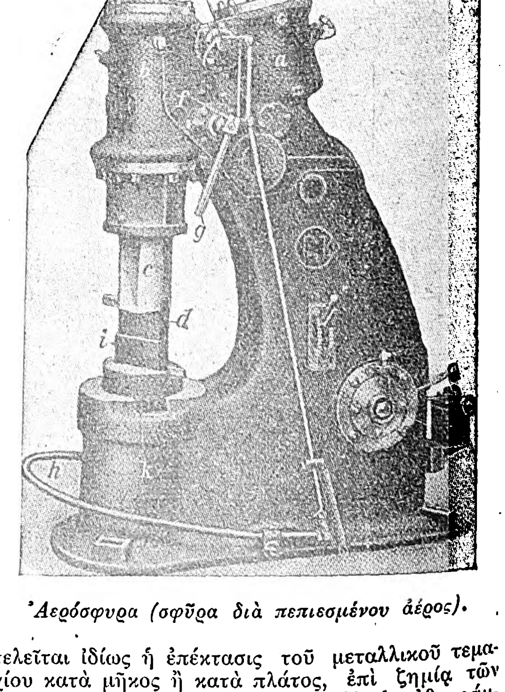


*Ἀερόσφυρα (σφῦρα διὰ πεπιεσμένου ἀέρος).*

γ') *Ἐπιβολή.* Ὀνομάζεται οὕτως ἡ ἐργασία, καθ' ἣν ἓν τεμάχιον μετάλλου ἐξαναγκάζεται νὰ προσλάβῃ τὸ σχῆμα ὡρισμένου κοίλου τύπου, διὰ τῶν ἑξῆς

Digitized by Google

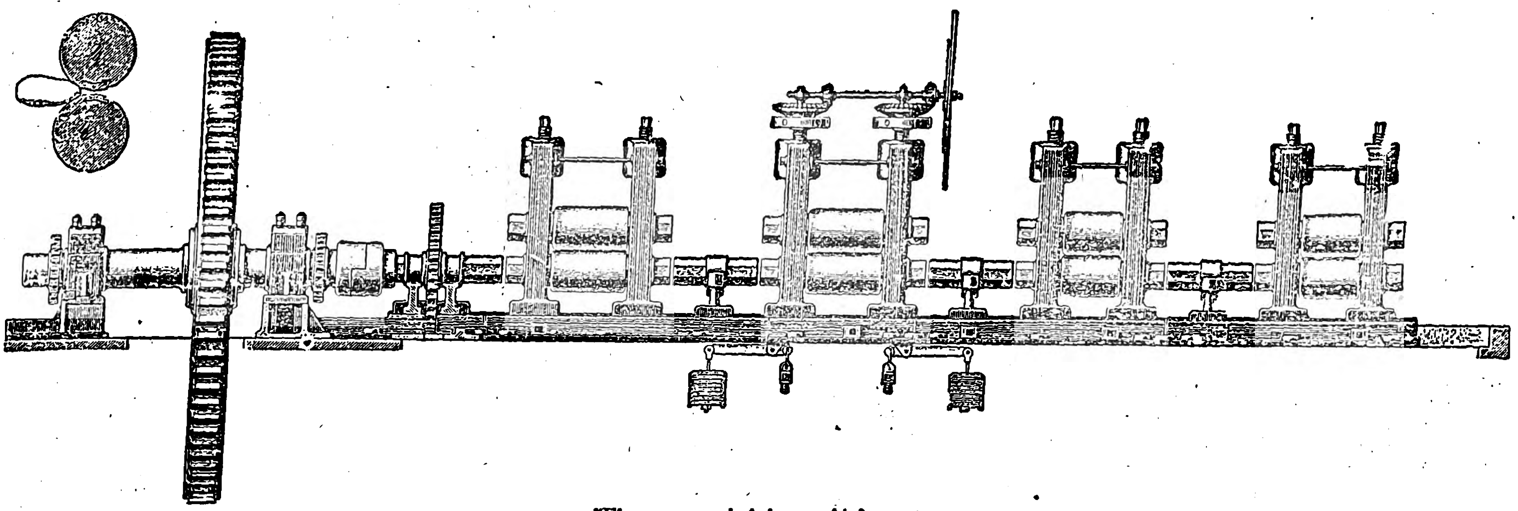

*Ἔλαστρον μετὰ λείων κυλίνδρων.*
[Ἄνω ἀριστερά, τομὴ δεικνύουσα τὸν τρόπον τῆς ἐπενεργείας τῶν κυλίνδρων τοῦ ἐλάστρου ἐπὶ τοῦ ἀμόρφου ἀρχικῶς μεταλλικοῦ τεμαχίου.]

μεθόδων: 1) Τῆς λεγομένης «συμπιεστικῆς ἐξογκώσεως», δι' ἧς ἐπιτυγχάνεται ἡ διόγκωσις ἑνὸς τμήματος τοῦ τεμαχίου διὰ τῆς συμπιέσεως τοῦ ὑπολοίπου μέρους αὐτοῦ· ἐκτελεῖται δὲ αὕτη, εἴτε ἐν ψυχρῷ εἴτε ἐν θερμῷ, ἢ δι' ἁπλῆς πιέσεως ἢ διὰ σφυροκοπήσεως. Συνήθως αἱ τοιαῦται ἐξογκώσεις γίνονται κατὰ προοδευτικὴν σειράν, μέχρις ἐπιτεύξεως τῆς τελικῆς μορφῆς. 2) Τῆς «συμπιεστικῆς διελάσεως», καθ' ἣν τὸ μέταλλον ἐξαναγκάζεται νὰ λάβῃ τὴν διατομὴν ὡρισμένου ἐργαλείου, ὅπερ ὀνομάζεται ἐμβόλαιον (mandrin). Πρὸς τοῦτο τὸ τεμάχιον, ἔχον ἀρχικὴν διατομὴν κατά τι μεγαλυτέραν ἀπὸ τὴν τοῦ ἐμβολαίου, διέρχεται διὰ τοῦ τελευταίου τούτου ὑπὸ τὴν ἐπενέργειαν ἰσχυρᾶς ὠθήσεως, εἴτε ἐν θερμῷ εἴτε καὶ ἐν ψυχρῷ. Ὅταν πρόκειται περὶ εὐτήκτου μετάλλου, ὡς ἐπὶ παραδείγματι περὶ σωλήνων ἐκ μολύβδου, ἡ ὡς ἄνω κατεργασία ἀντικαθίσταται δι' ἁπλῆς συμπιέσεως τοῦ μετάλλου, ἐν ρευστῇ ἢ πολτώδει καταστάσει, ἐντὸς δοχείου φέροντος κατάλληλον ὀπήν, διὰ τῆς ὁποίας ἐξαναγκάζεται νὰ ἐξέλθῃ, προσλαμβάνον τὴν διατομὴν αὐτῆς.

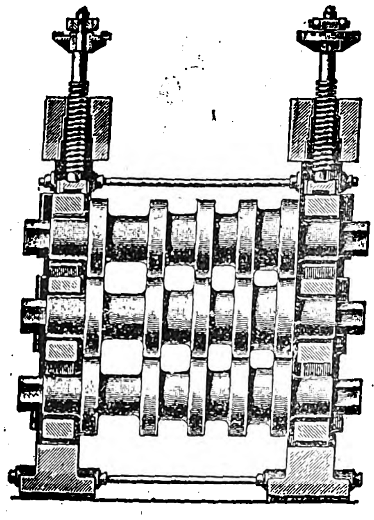

*Ἔλαστρον μετ' αὐλακωτῶν κυλίνδρων.*

δ') *Συμπιεστικὴ τύπωσις.* Αὕτη ἐκτελεῖται διὰ χρησιμοποιήσεως τύπου (μήτρας), ἀποτελουμένου εἴτε ἐξ ἑνός, εἴτε ἐκ δύο τεμαχίων. Ἡ τύπωσις γίνεται συνήθως δι' ἀτμοσφύρας, ἐπὶ ἐρυθροπυρωμένου μετάλλου, ἄλλοτε δὲ πάλιν διὰ συμπιεστοῦ. Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν (ἐπανειλημμέναι κρούσεις) τὰ τεχνικὰ ἀποτελέσματα εἶναι καλύτερα.

ε') *Κοίλανσις.* Δι' αὐτῆς ἐπιτυγχάνεται ἡ κατασκευὴ οἱουδήποτε κοίλου ἀντικειμένου ἐξ ἐπιπέδου μεταλλικοῦ δίσκου. Πρὸς τοῦτο ὁ δίσκος ὑποβάλλεται εἰς διαδοχικὰς συμπιέσεις ἐπὶ κοίλης μήτρας, δι' ἐμβόλου ἀντιστοίχου σχήματος. Αἱ διάμετροι τῶν ἐν διαδοχῇ χρησιμοποιουμένων μητρῶν καὶ ἐμβόλων βαίνουν ὁλονὲν σμικρυνόμεναι, προηγεῖται δι' ἑκάστης συμπιέσεως ἀναθέρμανσις τοῦ μετάλλου, πρὸς ἀποφυγὴν διαρρήξεως.

στ') *Ἔλασις.* Ὄγκος θερμοῦ μετάλλου, συμπιεζόμενος μεταξὺ δύο βαρέων κυλίνδρων περιστρεφομένων κατ' ἀντίθετον διεύθυνσιν, ἀναγκάζεται

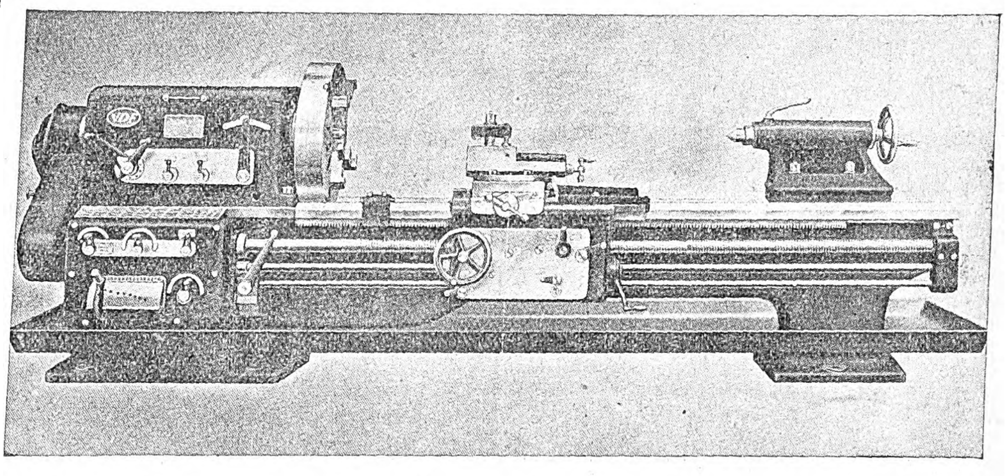

*Μηχανικὸς τόρνος.*

νὰ διέλθῃ διὰ μέσου τούτων, ἐπιμηκυνόμενος ἀφ' ἑνὸς καὶ λεπτυνόμενος ἀφ' ἑτέρου κατὰ τὸ πάχος του, ἀναλόγως πρὸς τὴν μεταξὺ τῶν κυλίνδρων ἀπόστασιν. Τὸ εἶδος τῆς κατεργασίας ταύτης, διὰ τῆς ὁποίας γίνεται ἡ διαμόρφωσις τῶν μετάλλων εἰς ἐλάσματα καὶ ῥάβδους, εἰσήχθη τὸ πρῶτον κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, ἀποτελεῖ δὲ σήμερον ἕνα τῶν σημαντικωτέρων μεταλλοτεχνικῶν κλάδων. Τὰ χρησιμοποιούμενα δι' αὐτὴν μηχανήματα (ἔλαστρα) εἶναι ποικίλων τύπων. Τῶν κοινῶν ἐλάστρων οἱ κύλινδροι εἶναι λεῖοι, ἡ δὲ μεταξύ των ἀπόστασις εἶναι μικροτέρα ἀπὸ τὸ πάχος τοῦ πρὸς ἔλασιν τεμαχίου. Διὰ τὴν κατασκευὴν τῶν λεπτῶν ἐλασμάτων τὸ μέταλλον διέρχεται διαδοχικῶς διὰ σειρᾶς ἐλάστρων, εἰς ἕκαστον τῶν ὁποίων ἡ μεταξὺ τῶν κυλίνδρων ἀπόστασις εἶναι μικροτέρα ἀπὸ τὴν τοῦ προηγουμένου. Εἰς ἄλλα ἔλαστρα οἱ κύλινδροι ἐφάπτονται μεταξύ των, φέρουσι δὲ κατὰ σειράν, ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἄκρου μέχρι τοῦ ἄλλου ἄκρου των, ἀντικειμένας αὐλακώσεις, τῶν ὁποίων αἱ διάμετροι βαίνουσι βαθμιαίως σμικρυνόμεναι. Τὸ μεταλλικὸν τεμάχιον διέρχεται διαδοχικῶς διὰ τῶν αὐλακώσεων τούτων, μέχρις ὅτου προσλάβῃ τὴν διατομὴν τῆς τελευταίας. Ἡ ταχύτης περιστροφῆς τῶν κυλίνδρων τῶν ἐλάστρων ποικίλλει ἀναλόγως τοῦ μεγέθους των, ἡ δὲ περιφερειακὴ αὐτῶν ταχύτης κυμαίνεται μεταξὺ 1,5 ἕως 2,5 μέτρων κατὰ δευτερόλεπτον.

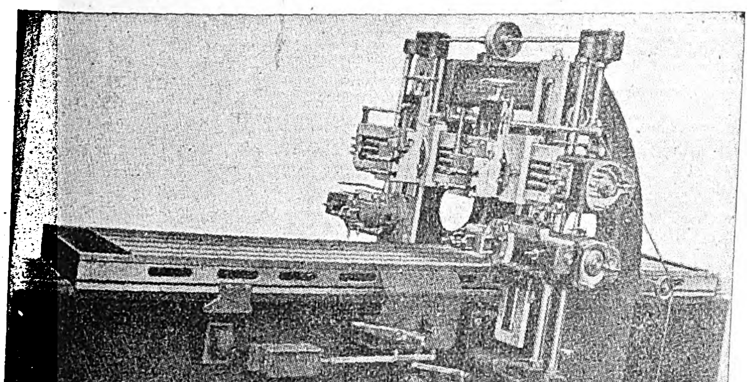

*Μεγάλη ῥυκανιστικὴ (πλανιστικὴ) μηχανή.*

ζ') *Ὁλκή.* Κατ' αὐτήν, μία μεταλλικὴ ῥάβδος ἀναγκάζεται, δι' ἕλξεως, νὰ διέλθῃ, ἐν ψυχρῷ, διὰ μέσου ὀπῆς μικροτέρας διαμέτρου, προσλαμβάνουσα οὕτω τὴν διατομὴν αὐτῆς. Ἡ κατεργασία αὕτη ἔχει ποικίλας ἐφαρμογάς. Χρησιμοποιεῖται ἐπὶ παραδείγματι διὰ τὴν κανονικωτέραν διαμόρφωσιν τῆς ἐπιφανείας τῶν μεγάλης διαμέτρου μεταλλικῶν ῥάβδων, καθὼς καὶ διὰ τὴν κατασκευὴν ῥάβδων μικρᾶς διαμέτρου (κάτω τῶν 5 χιλιοστῶν). Ἀλλ' ἀποκλειστικωτέρα ἐφαρμογή της γίνεται εἰς τὴν συρματοποιίαν. Τὰ διὰ τὴν τελευταίαν ταύτην χρησιμοποιούμενα μηχανήματα φέρουν σειρὰν ὀπῶν, μὲ σμικρυνομένας ὁλονὲν διαμέτρους, διὰ τῶν ὁποίων διέρχεται ἐν ψυχρῷ μεταλλικὴ ῥάβδος, ἔχουσα ἀρχικὴν διατομὴν 4—5 χιλιοστομέτρων. Διὰ τῆς ἀλλεπαλλήλου διόδου τῆς ῥάβδου διὰ τῶν ὀπῶν τοῦ ὀργάνου, ἡ διατομὴ αὐτῆς μειοῦται ὁλονέν, μὲ ἀντίστοιχον αὔξησιν τοῦ μήκους, οὕτω δὲ ἐξ ἀρχικῆς ῥάβδου, ἐπὶ παραδείγματι, πάχους 5 χιλιοστῶν καὶ μήκους 5 μέτρων, δύναται νὰ ληφθῇ σύρμα πάχους ½ χιλιοστοῦ καὶ μήκους 500 μέτρων. Δι' ὁλκῆς κατασκευάζονται ἐπίσης καὶ σωλῆνες ὡς ἑξῆς: Διαμορφοῦται

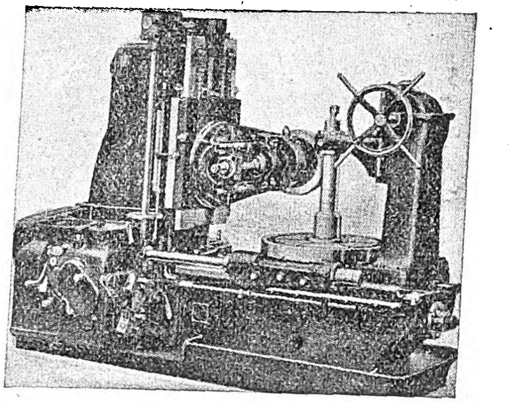

*Αὐτόματος ἐκγλυπτικὴ μηχανὴ (φραῖζα).*

πρῶτον, διὰ κοιλάνσεως, σωλὴν μικροῦ μήκους, κλειστὸς κατὰ τὸ ἓν ἄκρον του, ἔχων μεγάλην σχετικῶς ἐσωτερικὴν διάμετρον καὶ ἀρκετὸν πάχος. Ὁ σωλὴν οὗτος ὑποβάλλεται εἰς ὁλκήν, ὡς αἱ πλήρεις ῥάβδοι, διέρχεται δηλαδὴ δι' ὀπῆς περιβαλλούσης αὐτὸν ἐξωτερικῶς, ἐνῷ ταυτοχρόνως δι' ἐμβολαίου διαμορφώνεται ἡ ἐσωτερικὴ αὐτοῦ ἐπιφάνεια. Ἡ ἐργασία αὕτη ἐπαναλαμβάνεται δια-

Digitized by Google

δοχικῶς εἰς ὁλκοὺς μικροτέρων ὁλονὲν διαμέτρων, ἐνῷ ἐν τῷ μεταξὺ γίνεται ἀνόπτησις τοῦ μετάλλου διὰ τὴν ἐξαφάνισιν τῆς ἀποκτωμένης ἐκ τῆς κατεργασίας σκληρότητος.

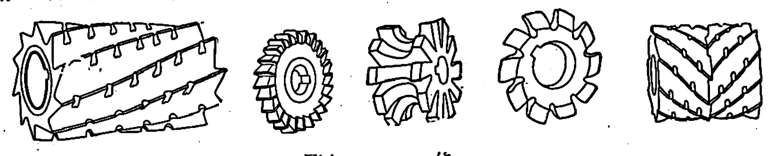

*Γλύφανα φραίζας.*

Δευτέρα ὁμὰς (κατεργασία δι' ἀφαιρέσεως ὑλικοῦ):

α') *Τόρνευσις ἢ ἐκγλυφή*. Εἰς τὴν τόρνευσιν τὸ τεμάχιον περιστρέφεται, ἀκινητεῖ δὲ τὸ ἐργαλεῖον. Ἀλλ' ἡ ἀφαίρεσις στρώματος τῆς ἐπιφανείας μεταλλικοῦ τινος τεμαχίου δύναται νὰ γίνῃ καὶ ἀντιστρόφως, ἀκινητοῦντος δηλαδὴ τούτου καὶ κινουμένου τοῦ ἐργαλείου, εἴτε εὐθυγράμμως, ὅπως εἰς τὰς ρυκανιστικὰς μηχανὰς (πλάνας), εἴτε καὶ περιστροφικῶς. Κατὰ τὴν τελευταίαν περίπτωσιν τὸ γλύφανον εἶναι κυλινδρικόν, μὲ κεκλιμένους ὀδόντας, ὥστε ἡ ἐνέργειά του νὰ βαίνῃ μεταβαλλομένη προοδευτικῶς. Διὰ τὴν διάνοιξιν τῆς ὀπῆς σωλήνων χρησιμοποιοῦνται εἰδικοῦ τύπου γλύφανα, οἱ λεγόμενοι «περικοπτῆρες», δι' ἄλλων δὲ ἐργαλείων, τῶν «κοχλιοτόμων», χαράσσεται ἡ ἑλικοειδὴς αὖλαξ τῶν κοχλιῶν καὶ τῶν περικοχλίων. Δι' ἐκγλυφὰς μικρᾶς ἐκτάσεως χρησιμοποιεῖται ἡ χειροκίνητος ἢ μηχανοκίνητος ρίνη (λίμα).

β') *Διάτμησις*. Αὕτη γίνεται εἴτε ἐν θερμῷ, εἴτε ἐν ψυχρῷ, διὰ τῶν ἑξῆς μέσων: 1) Δι' ἁπλῶν κοπτερῶν ἐργαλείων, τῶν καλουμένων ἐγκοπέων, πληττομένων διὰ σφύρας ἐπὶ τοῦ μετάλλου, στηριζομένου ἐπὶ ἄκμονος. 2) Διὰ ψαλίδων, χρησιμοποιουμένων ἰδίως διὰ τὴν κοπὴν τῶν ἐλασμάτων. Αἱ κοινότεραι τούτων ἀποτελοῦνται ἐκ μιᾶς λεπίδος σταθερᾶς, τῆς ὁποίας ἡ κόψις ἔχει διεύθυνσιν ὁριζοντίαν, καὶ μιᾶς κινητῆς, μὲ κόψιν κεκλιμένην. Ἄλλαι ἀποτελοῦνται ἀπὸ ἓν ἢ περισσότερα ζεύγη χαλυβδίνων δίσκων, τῶν ὁποίων αἱ κοπτεραὶ περι-

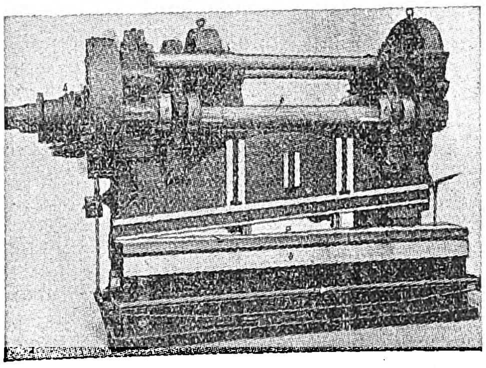

*Μηχανὴ ψαλὶς χονδρῶν ἐλασμάτων.*

φέρειαι διασταυροῦνται ἐλαφρῶς, περιστρέφονται δὲ κατ' ἀντίθετον φοράν. Ἡ περιστροφή των παρασύρει καὶ κόπτει εὐχερῶς τὰ ἐλάσματα εἰς λωρίδας. 3) Διὰ πριόνων, κινουμένων εἴτε κατ' εὐθύγραμμον παλινδρόμησιν εἴτε περιστροφικῶς. Οἱ τελευταῖοι ἀποτελοῦνται ἐκ κυκλικῶν δίσκων, τῶν

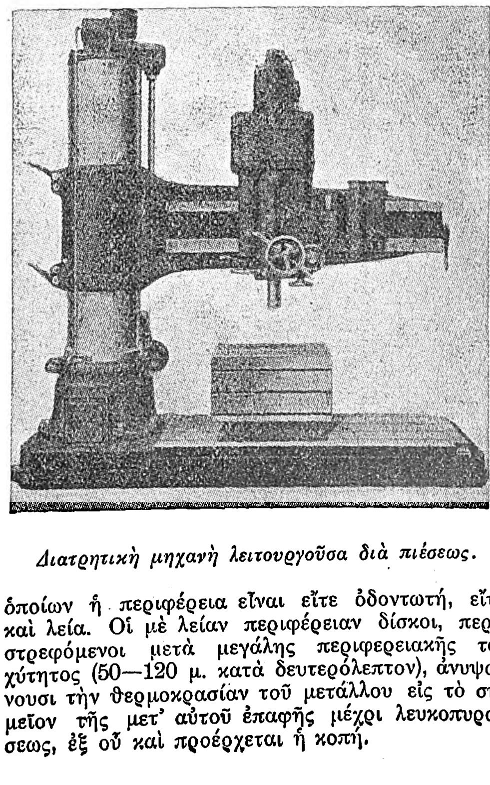

*Διατρητικὴ μηχανὴ λειτουργοῦσα διὰ πιέσεως.*

ὁποίων ἡ περιφέρεια εἶναι εἴτε ὀδοντωτή, εἴτε καὶ λεία. Οἱ μὲ λείαν περιφέρειαν δίσκοι, περιστρεφόμενοι μετὰ μεγάλης περιφερειακῆς ταχύτητος (50—120 μ. κατὰ δευτερόλεπτον), ἀνυψώνουσι τὴν θερμοκρασίαν τοῦ μετάλλου εἰς τὸ σημεῖον τῆς μετ' αὐτοῦ ἐπαφῆς μέχρι λευκοπυρώσεως, ἐξ οὗ καὶ προέρχεται ἡ κοπή.

γ') *Διάτρησις*. Ἐκ τῶν διατρητικῶν μηχανημάτων ἄλλα λειτουργοῦσι διὰ περιστροφῆς κοπτεροῦ ἐργαλείου, τὸ ὁποῖον πιεζόμενον ταυτοχρόνως ἐπὶ τοῦ μετάλλου διανοίγει βαθμηδὸν τὴν ὀπήν, ἄλλα δὲ διὰ πιέσεως. Εἰς τὰ τελευταῖα χρησιμοποιεῖται «στιγεὺς» (κοιν. ζουμπᾶς), πιεζόμενος ἐπὶ τοῦ μετάλλου, ἐν θερμῷ ἰδίως, εἴτε διὰ σφύρας εἴτε διὰ πιεστηρίου.

δ') *Τρόχισις*. Δι' αὐτῆς ἐπιτυγχάνεται ἡ ἐπισκευὴ παραμορφωμένων τεμαχίων, ὁ καθαρισμὸς τῆς ἐπιφανείας καὶ ἡ ἐν γένει ἀποπεράτωσις αὐτῶν. Ἐπίσης τὸ ἀκόνισμα τῶν κοπτερῶν ἐργαλείων. Οἱ τροχοὶ (μύλαι) κατασκευάζον-

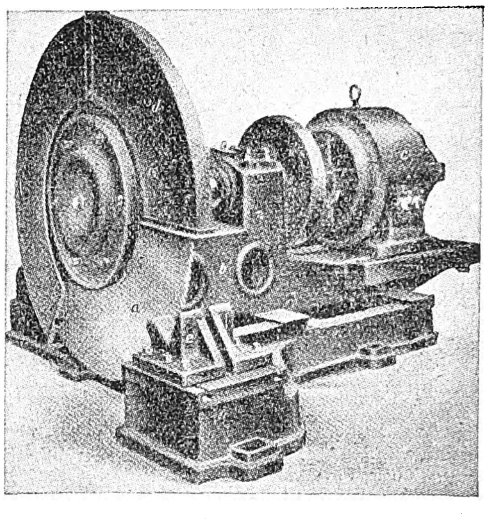

*Δισκοειδὴς πριονιστικὴ μηχανή.*

ται εἴτε ἐκ σμύριδος εἴτε ἐκ κορουνδίου, εἴτε καὶ ἐξ ἄλλων τεχνητῶν σκληροτάτων ὑλικῶν. Ἔχουν δὲ σχῆμα εἴτε κυλίνδρου εἴτε κολούρου κώνου. Ἡ διὰ τῆς τροχίσεως τελειωτικὴ ἐπεξεργασία ἔχει τὸ πλεονέκτημα ὅτι δι' αὐτῆς ἀφαιρεῖται ἐλάχιστον μόνον στρῶμα τῆς ἐπιφανείας τοῦ μετάλλου.

***III) Κατεργασίαι χημικαί.*** Ἐκ τούτων ἀναφέρομεν: α') τὴν *ἐναζώτωσιν*, διὰ τῆς ὁποίας ἐπιτυγχάνεται σκλήρυνσις τῆς ἐπιφανείας κατειργασμένων χαλυβδίνων τεμαχίων· β') τὴν καλουμένην *shérardisation*, καθ' ἣν τὸ ἐρυθροπυρωμένον μέταλλον ὑποβάλλεται ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν ἀτμῶν ψευδαργύρου· γ') τὴν ἐπιφανειακὴν *ἐναργιλλίωσιν* χαλυβδίνων τεμαχίων· καὶ δ') τὴν *parkerisation*, ἥτις συνίσταται εἰς τὴν ὑποβολὴν τοῦ σιδήρου ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν φωσφορικῶν ἁλάτων σιδήρου καὶ μαγγανίου. Τέλος τὰς *ἐπιμεταλλώσεις* διὰ ψευδαργύρου (γαλβάνισμα), διὰ νικελίου κλπ.

[Περὶ τῆς *ἐνανθρακώσεως* τοῦ σιδήρου καὶ τῆς *μαλακτικοποιήσεως* αὐτοῦ, ἐργασιῶν αἵτινες ἀνήκουσιν εἰς τὸν κύκλον τῆς κυρίως μεταλλουργίας, βλ. λ. *σίδηρος* καὶ *χυτήρια*.]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἠ. Π. Γούναρη*, «Μεταλλογνωσία καὶ μεταλλοτεχνία» (Ἀθῆναι 1930, ἔκδοσις «Πυρσοῦ»), ἔνθα καὶ ἀναλυτικὴ βιβλιογραφία ξένων συγγραμμάτων. —Ρ.

**μεταλλουργεῖον** (τό)· τὸ ἐργαστήριον ἔνθα ἀποκαθιστῶσι τὰ μεταλλεύματα εἰς καθαρὸν μέταλλον: «μεταλλουργεῖα Λαυρείου».

**μεταλλουργία** (ἡ)· ἡ ἐπιστήμη τῆς ἐξαγωγῆς τῶν μετάλλων ἐκ τῶν καταλλήλων ὀρυκτῶν, ἤτοι τοιούτων ὥστε ἡ ἐξαγωγὴ αὐτῶν νὰ εἶναι συμφέρουσα, ὅτε τὰ ὀρυκτὰ ταῦτα ὀνομάζονται εἰδικώτερον *μεταλλεύματα*.

— *[Ἱστορ.]* Τὰς ὀλίγας γνώσεις μας περὶ τῶν μεταλλουργικῶν μεθόδων τῶν ἀρχαίων ἀντλοῦμεν κυρίως ἀπὸ τὸν Διοσκορίδην, τὸν Στράβωνα, τὸν Πλίνιον, τὸν Διόδωρον τὸν Σικελιώτην κλ. Οἱ κατὰ πρῶτον διάσημοι μεταλλουργοὶ ἐφαρμόσαντες τὴν τέχνην των εἰς κατασκευὴν ἐργαλείων καὶ ὅπλων ἐλατρεύοντο βραδύτερον ὡς ἡμίθεοι. Τοιοῦτοι ἦσαν οἱ Δάκτυλοι, οἱ Κάβειροι, οἱ Κουρῆτες, οἱ Κορύβαντες καὶ οἱ Τελχῖνες. Οἱ Κάβειροι καὶ οἱ Δάκτυλοι ἦσαν Φρύγες. Τῶν δευτέρων, καλουμένων καὶ Χαλύβων, ἡ κοιτὶς κατὰ Πλίνιον ὑπῆρξεν ἡ Ἀλύβη τῆς Κολχίδος. Καὶ οἱ Κορύβαντες κατήγοντο ἐκ Φρυγίας, κατ' ἄλλους δὲ ἐκ Κύπρου. Οἱ Κουρῆτες ἦσαν κατ' ἄλλους Κρῆτες, κατ' ἄλλους Φρύγες· οἱ Τελχῖνες Κρῆτες ἐγκατασταθέντες βραδύτερον ἐν Κύπρῳ.

Ἡ μεταλλουργία προήχθη ἀρκούντως ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν Ρωμαίων. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Ρώμης, διὰ τῆς ἐπελθούσης ἐκβαρβαρώσεως ἐχάθησαν τὸ πλεῖστον αἱ κυριώτεραι μεταλλουργικαὶ γνώσεις καὶ μέθοδοι καὶ βραδύτερον μόνον διὰ τῆς συμβολῆς καὶ τῶν ἀλχημιστῶν κατὰ τὸν ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνα εἰσῆλθεν ἡ μεταλλουργία εἰς δεύτερον στάδιον προόδου. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα παρήχθη τὸ πρῶτον δι' ἀνυψώσεως τῶν καμίνων χυτοσίδηρος. Ἡ μεγάλη οὐχ ἧττον πρόοδος χρονολογεῖται μετὰ τὸ πρῶτον τέταρτον τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ὅτε ἡ ἀνάπτυξις τῆς χημείας καὶ βραδύτερον τῆς μηχανικῆς ἐπέφερον ταχέως ἀλλαγὴν τῶν μεθόδων καὶ ἐξαιρετικὴν πρόοδον. Νέαν ἐπίσης ἐποχὴν ἐσημείωσαν καὶ αἱ πρόοδοι τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, τὸν ὁποῖον ἐχρησιμοποίησαν διὰ τὴν ἐξαγωγὴν δυσαναγώγων μετάλλων, ὡς τῶν ἀλκαλίων, τοῦ ἀργιλλίου κλ.

Αἱ κυριώτεραι βελτιώσεις ὑπῆρξαν: α') Ἡ ὕψωσις καὶ μεγέθυνσις τῶν καμίνων. Οὕτως, ἐνῷ αἱ κάμινοι τῆς παραγωγῆς χυτοσιδήρου εἶχον ἡμερησίαν παραγωγὴν εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος 30 τόννων, τῷ 1870 ηὐξήθη αὕτη εἰς 100 καὶ σήμερον ἀνέρχεται εἰς 300 μέχρις 600 τόννων· β') Ἡ χρησιμοποίησις τῆς καύσεως ἀερίων εἴτε πρὸς προθέρμανσιν τοῦ προσφυσωμένου ἀέρος τῶν φυσητήρων, εἴτε πρὸς τήξεις. γ') Ἡ χρησιμοποίησις τοῦ ἠλεκτρισμοῦ πρὸς ἐπίτευξιν ὑψηλῆς θερμοκρασίας καὶ τήξεως τῶν μετάλλων ἢ καὶ ἠλεκτρολυτικοῦ αὐτῶν διαχωρισμοῦ. Τὰ βαρέα μέταλλα ἐξάγονται γενικῶς ἐντὸς ἡμιυψηλῶν—ὡς εἰς τὸν μόλυβδον—ὕψους 8—9 μέτρων φρεατοειδῶν καμίνων ἢ ὑψηλῶν 20—30 μ., ὡς εἰς τὸν σίδηρον, ἔνθα ἡ θερμότης ἐπιτυγχάνεται διὰ τῆς καύσεως τοῦ ἄνθρακος—σήμερον σχεδὸν πάντοτε κὼκ—εἰς ρεῦμα προθερμασμένου μέχρις 700 πολλάκις βαθμῶν ἀέρος. Ἡ προθέρμανσις αὕτη ἐπιτυγχάνεται διὰ τῆς συμπληρωτικῆς καύσεως αὐτῶν τούτων τῶν ἐκ τῆς καμίνου ἐξαγομένων ἀερίων. Ἡ ἀναγωγή, ἤτοι ἀποξείδωσις, τῶν ὑπὸ τὴν μορφὴν ὀξειδίων μεταλλευμάτων ἐπιτυγχάνεται κυρίως διὰ τοῦ κατὰ τὴν ἀτελῆ καῦσιν τῶν ἀνθράκων σχηματιζομένου μονοξειδίου τοῦ ἄνθρακος. Τῶν ξένων προσμείξεων ἀπαλλάσσονται διὰ τῶν καλουμένων συλλιπασμάτων, ἤτοι σωμάτων τοιαύτης συστάσεως, ὥστε μετὰ τῶν ξένων προσμείξεων νὰ ἀποτελεσθῇ εἰς τὴν ὑψηλὴν τῆς καμίνου θερμοκρασίαν πυριτικὸν ἅλας, εἶδος ὑάλου, εὔτηκτον, ἡ καλουμένη σκωρία. Οὕτω συρρέουν εἰς τὸν πυθμένα ἐν τετηκυίᾳ καταστάσει ἥ τε σκωρία καὶ τὸ μέταλλον, τὰ ὁποῖα διαχωρίζονται εὐκόλως ὡς ἐκ τῆς σημαντικῆς διαφορᾶς τοῦ εἰδικοῦ αὐτῶν βάρους, τοῦ μὲν μετάλλου λαμβανομένου ἐξ ὀπῆς εὐθὺς ἀμέσως τοῦ πυθμένος ὑπερκειμένης, τῆς δὲ σκωρίας ἐξ ὀπῆς ὑψηλότερον ὀλίγον κειμένης καὶ συχνότερον ἐκκενουμένης. Πλὴν τῆς ξηρᾶς λεγομένης ταύτης μεθόδου δι' ἐκκαμινεύσεως, μεταχειρίζονται ἐν τῇ μεταλλουργίᾳ καὶ τὴν ὑγρὰν ὁδόν. Αὕτη ἐφαρμόζεται κατὰ διαφόρους τρόπους: α') Δι' ἀμαλγαμώσεως, ἤτοι διαλύσεως τῶν ἐν αὐτογενεῖ καταστάσει εὑρισκομένων μετάλλων καὶ ἀποχωρισμοῦ εἶτα αὐτῶν δι' ἀποστάξεως τοῦ ὑδραργύρου. Αὕτη κυρίως ἐφαρμόζεται —σήμερον ὀλιγώτερον —εἰς τὸν χρυσόν. β') Διὰ διαλύσεως καὶ καθιζήσεως, ἤτοι διαλύσεως τοῦ περιεχομένου μετάλλου διὰ καταλλήλου μέσου, ὡς λ. χ. τοῦ χρυσοῦ διὰ κυανιούχου καλίου, ἐξ οὗ διαλύματος ἀπολαμβάνεται τὸ περιεχόμενον μέταλλον, εἴτε τῇ προσθήκῃ ἄλλου ἀγενοῦς, ἤτοι ὀλιγώτερον ἠλεκτροθετικοῦ μετάλλου, σιδήρου λ. χ., ὅτε καθιζάνει τὸ εὐγενέστερον μέταλλον, εἴτε καὶ δι' ἠλεκτρολύσεως.

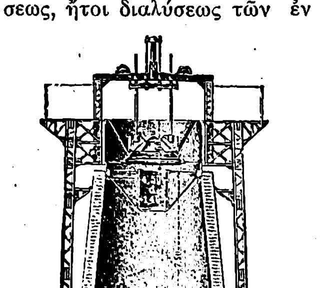

*Ὑψηλὴ κάμινος.*

Εἰς τὰς μεταλλουργικὰς πράξεις περιλαμβάνονται ὡσαύτως: α) Ἡ μηχανικὴ καὶ χημικὴ προπαρασκευὴ τῶν μεταλλευμάτων. Ἡ μηχανικὴ ἐπιτυγχάνεται εἴτε διὰ διαλογῆς, εἴτε διὰ μηχανημάτων στηριζομένων εἰς τὴν δι' ὕδατος ἔκπλυσιν τοῦ κονιοποιηθέντος μεταλλεύματος καὶ ἀποχωρισμὸν τῶν βαρυτέρων συντριμμάτων δυνάμει τοῦ μείζονον αὐτῶν εἰδικοῦ βάρους (βλ. λ. *μεταλλόπλυσις*). Χημικὴ προπαρασκευὴ συντελεῖται κυρίως διὰ τῆς φρύξεως, ἤτοι πυρώσεως τοῦ μεταλλεύματος εἰς ρεῦμα ἀέρος (ὀξειδωτικὴ φρῦξις) ἢ μετ' ἄνθρακος ἢ χλωριούχου νατρίου κτλ. Κατὰ τὴν ὀξειδωτικὴν φρῦξιν τὰ περιεχόμενα μέταλλα λαμβάνουν τελικῶς τὴν μορφὴν ὀξειδίου. Οὕτω, θειοῦχα μεταλλεύματα, ὡς ὁ γαληνίτης, ὁ σφαλερίτης, ὁ χαλκοπυρίτης, μεταβάλλονται εἰς ὀξείδια μολύβδου, ψευδαργύρου ἢ χαλκοῦ, τοῦ θείου ἀφιπταμένου ὡς θειώδους ὀξέος. β) Ἡ ἀποκάθαρσις τῶν μετάλλων, συντελουμένη κυρίως ἐπὶ τῶν ἀμέσων προϊόντων τῆς καμίνου, τὰ ὁποῖα σχεδὸν ποτὲ δὲν εἶναι ἀρκούντως καθαρά, ὥστε νὰ δοθῶ·

Digitized by Google

σιν ἀμέσως εἰς χρῆσιν, διὰ πυρώσεως καὶ καύσεως διὰ τοῦ ὀξυγόνου τοῦ ἀέρος ξένων εὐοξειδώτων σωμάτων. γ) Ἡ μεταλλοτεχνικὴ ἐπεξεργασία, ἥτις συνίσταται εἰς τὴν συμπίεσιν διὰ σφυροκρουσίας, τὴν ἔλασιν δι' ἐλάστρων, τὴν ὁλκὴν πρὸς μετατροπὴν εἰς σύρμα, τὴν χύσιν εἰς τύπους καὶ διαφόρους ἄλλας καθ' αὐτὸ μηχανικὰς ἐπεξεργασίας.

Ἡ παγκόσμιος παραγωγὴ μετάλλων εἶναι ἡ ἀκόλουθος: *Χυτὸς σίδηρος* τῷ 1800 825 χιλιάδες τόννους, τῷ 1900 40,4 ἑκατομ. τόννους, τῷ 1913 76.5 καὶ τῷ 1926 79, ἐξ ὧν 40 % αἱ Ἡνωμέναι πολιτεῖαι. *Χαλκὸς* τῷ 1913 1.005.900 τόννους, τῷ 1928 1.693.500, ἐξ ὧν 53.5 % αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι. *Μόλυβδος* τῷ 1913 1.187.000 τόννους, τῷ 1928 1.645.7, ἐξ ὧν 40.8 % αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι. *Χρυσὸς* τῷ 1500 6.000 χγρμ., τῷ 1700 11.000, τῷ 1850 125.000, τῷ 1900 390.000, τῷ 1913 690.000, τῷ 1926 593.000 ἀξίας 2.062.500 φρ., ἐξ ὧν τὸ Τράνσβαλ 39.3 %, αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι 19.1 %, ἡ Αὐστραλία 11.4 %, ἡ Ρωσία 5.1 %. *Ἄργυρος* τῷ 1855 1.000 τόννους ἀξίας 225 ἑκατ. φρ. χρ., τῷ 1913 7.000 τόννους ἀξίας 615 ἑκατ. φρ., τῷ 1926 7.781 ἀξίας 790 ἑκατ. φρ. Ἡ σχετικὴ ἀξία τῶν δύο μετάλλων μετεβλήθη ἐν τῷ μεταξὺ ὡς ἑξῆς: Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἄργυρος: χρυσὸς 1:11—12, τῷ 1801—1805 1:15.4, τῷ 1881—1885 1:20, τῷ 1912—1913 1:35—39, τῷ 1926 1:33.1. *Λευκόχρυσος* (πλατίνα), τῷ 1830 1750 χγρμ., τῷ 1902 7.300 χγρμ. (μέχρι τότε ἀποκλειστικῶς ἐκ Ρωσίας), τῷ 1913 8.340 χγρμ., τῷ 1925 4.140 χγρ. Ἡ ἀξία αὐτῆς ἦτο τῷ 1830 800—825 φρ. χρ. κατὰ χγρμ., τῷ 1913 5.500, τῷ 1922 16.500, τῷ 1925 14.000. *Ὑδράργυρος*, τῷ 1926 4.200 τόννους, ἐξ ὧν ἡ Ἰταλία 46.1 %, ἡ Ἰσπανία 40.5 %. Ἡ ἀξία τούτου ἦτο τῷ 1913 6.15 φρ. κατὰ χγρ., τῷ 1926 15 φρ. *Κασσίτερος*, τῷ 1928 185.100, ἐξ ὧν αἱ Μαλαϊκαὶ νῆσοι 33.7 %, αἱ Ὀλλανδικαὶ Ἰνδίαι 23.1 %, ἡ Βολιβία 22.5 %. *Ψευδάργυρος*, 1.413.500 τόννους, ἐξ ὧν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι 47.5 %. *Νικέλιον*, τῷ 1900 7.500 τόννους, τῷ 1913 30.600, τῷ 1926 34.600, ἐξ ὧν 87 % ὁ Καναδᾶς καὶ 12 % ἡ Ν. Καληδονία. *Ἀργίλλιον*, τῷ 1855 25 χγρ., τῷ 1900 7.743 τόννους, τῷ 1913 68.300 τόννους, τῷ 1928 227.600 τόννους, ἀξίας τῷ 1855 3.000 φρ. τὸ χγρ., τῷ 1900 2.50 φρ., τῷ 1928 3 φρ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Snabel*, Handbuch der Metallhüttenkunde (1914).—*Roessing*, Geschichte der Metallen (1901).—*Κ. Ζέγγελη*, Στοιχεῖα μεταλλουργίας (1902).—*Ἠλία Γούναρη*, Μεταλλοτεχνία καὶ μεταλλογνωσία (1930). Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

**μεταλλουργικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μεταλλουργίαν, ὁ τῆς μεταλλουργίας: «μεταλλουργικὴ βιομηχανία, — ἑταιρεία»· || **μεταλλουργική** (ἡ)· ὡς οὐσ., ἡ τέχνη τοῦ μεταλλουργοῦ.

**μεταλλουργὸς** (ὁ)· ὁ καταγινόμενος εἰς τὴν μεταλλουργίαν· || καθόλου, μεταλλευτής, βιομήχανος ἢ ἐπιστήμων τῆς μεταλλουργίας.

**μεταλλουργῶ** (*—έω*)· εἶμαι μεταλλουργός, ἀσχολοῦμαι εἰς τὴν ἀποκατάστασιν τῶν μεταλλευμάτων εἰς καθαρὸν μέταλλον.

**μεταλλοφάνεια** (ἡ)· τὸ νὰ φαίνεταί τι ἐξωτερικῶς ὡς μέταλλον, οἷον τὸ νὰ ἔχῃ μεταλλικὴν λάμψιν.

**μεταλλοφανὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ φαινόμενος ἐξωτερικῶς ὡς μέταλλον, οἷον ὁ ἔχων μεταλλικὴν λάμψιν: «μεταλλοφανῆ χρώματα».

**μεταλλοφοβία** (ἡ) *[Ψυχοπαθολ.]*. Καλεῖται οὕτος ὁ φόβος, ὑφ' οὗ καταλαμβάνονται ἄτομά τινα, ὅταν ἴδωσιν ἢ ἐγγίσωσι μέταλλα. Ἡ μεταλλοφοβία ὑπάγεται εἰς τοὺς ἰδεοληπτικοὺς φόβους, ὧν ἔχει ὅλους τοὺς χαρακτῆρας, παρατηρεῖται δέ, ὡς καὶ οἱ λοιποὶ τοιοῦτοι φόβοι, ἐπὶ ὑστερίας, ψυχασθενείας, λοιμωδῶν καὶ τοξικῶν καταστάσεων, μάλιστα δὲ τῆς ληθαργικῆς ἐγκεφαλίτιδος καὶ ἐπὶ κοπώσεως, ἰδίως δὲ χαρακτηρίζει τὰς ἐκφυλογενεῖς καλουμένας καταστάσεις. Ἡ θεραπεία εἶναι αἰτιολογική, συνδυαζομένη μετὰ προσπαθείας ἐγκαταστάσεως ἕξεως ἀντιθέτου. Π. ΖΗΣ

**μεταλλοφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ φέρων ἐν ἑαυτῷ μέταλλον, ὁ ἀνάμεικτος μετὰ μετάλλου.

**— μεταλλοφόρα κοιτάσματα** *[Μεταλλειολ.]*. Ὀνομάζονται οὕτως αἱ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς ἢ ὑπ' αὐτὴν συναντώμεναι συγκεντρώσεις ὀρυκτῶν, ἐκ τῶν ὁποίων εἶναι δυνατὴ καὶ συμφέρουσα ἡ ἐξαγωγὴ μετάλλων, ἢ ἄλλων βιομηχανικῶς ἐκμεταλλευσίμων προϊόντων, ὡς γύψου, ἀμιάντου κλπ. Ἐμφανίζονται δὲ τὰ μεταλλοφόρα κοιτάσματα ὑπὸ μορφὴν *μαζῶν, σωρῶν, στρωμάτων, φλεβῶν*, ἢ *ἐμποτισμάτων*, πληρούντων ρωγμὰς ἢ ἄλλας ἀνωμαλίας τοῦ γηΐνου φλοιοῦ. Αἱ περιφέρειαι, ἐν αἷς συναντῶνται πολλὰ κοιτάσματα ὁμοίου ἢ προσομοιάζοντος περιεχομένου, καλοῦνται *μεταλλοφόροι περιοχαί*.

Ὅσον ἀφορᾷ τὸ σχῆμα καὶ τὴν ἔκτασιν, διακρίνομεν εἰς ἕκαστον κοίτασμα: *πλευρὰς* (ἐπιφανείας δηλαδὴ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον κανονικάς, αἵτινες ἀποτελοῦσι τὰ ὅρια τῆς ἐκτάσεώς του), *πάχος* (τὸ μεταξὺ τῶν πλευρῶν διάστημα), *διεύθυνσιν* (τὴν ὁριζοντίαν κατεύθυνσιν τοῦ κοιτάσματος), καὶ *κλίσιν* (τὴν διάταξιν αὐτοῦ ὡς πρὸς τὴν κατακόρυφον). Ἐννοεῖται ὅτι κατὰ τὸ πλεῖστον ἡ ὅλη μορφὴ ἑνὸς κοιτάσματος δὲν εἶναι ὁμοιογενής, ἀλλὰ διακόπτεται συνήθως ἀπὸ ποικίλας παραλλαγὰς καὶ μεταπτώσεις.

Ἡ ἀρχικὴ προέλευσις τῶν μεταλλοφόρων κοιτασμάτων ἀνάγεται προφανῶς εἰς τὰ ἐκρηξιγενῆ πλουτώνεια μάγματα, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἦτο δυνατὸν νὰ σχηματισθῶσι ταῦτα κατὰ δύο ἰδίως τρόπους: α') δι' *ἀποχωρισμοῦ* τμήματός τινος τοῦ ἐν τετηκυίᾳ καταστάσει εὑρισκομένου μάγματος· καὶ β') διὰ τῆς λεγομένης *πνευματολύσεως*, καθ' ἣν τὰ ἀέρια καὶ οἱ ἀτμοὶ τοῦ τετηγμένου μάγματος μεταφέρουσιν (ὅπως καὶ εἰς τὰ ἡφαίστεια συμβαίνει σήμερον) μεταλλικὰς ἑνώσεις ἐν ἀερίῳ καταστάσει εἰς πλησιόχωρα γηΐνα στρώματα. Τρίτος τρόπος γενέσεως τῶν μεταλλοφόρων συσσωρεύσεων ὑπῆρξεν ἡ μετὰ τὴν στερεοποίησιν τῶν πυριγενῶν πετρωμάτων ἀπαγωγὴ τῶν μετάλλων ὑπὸ θερμῶν ὑδάτων, ἀνερχομένων ἐκ τῶν βαθυτέρων στρωμάτων τῆς γῆς πρὸς τὰ ἀνώτερα. Οἱ *μεταγενεῖς* ἐξ ἄλλου σχηματισμοὶ μεταλλοφόρων κοιτασμάτων ἐδημιουργήθησαν κυρίως ὑπὸ τῶν ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας κατερχομένων μετεωρικῶν ὑδάτων, ἅτινα διὰ τῆς ροῆς των ἀφ' ἑνὸς καὶ διὰ τῆς ἐπιδράσεως ἀφ' ἑτέρου τοῦ ἐν αὐτοῖς περιεχομένου ὀξυγόνου καὶ ἀνθρακικοῦ ὀξέος, προεκάλεσαν ὀξειδώσεις, ἐνυδρώσεις, διαλύσεις καὶ ἐγκατακρημνίσεις εἰς τὰ ἐφ' ὧν ἐπενήργουν στρώματα. Ἄλλοι δὲ πάλιν λόγοι σχηματισμοῦ μεταγενῶν κοιτασμάτων δέον ν' ἀναζητηθῶσιν εἰς τὴν διαβρωτικὴν ἐπίδρασιν τῶν ὑδάτων τῆς ἐπιφανείας καὶ τοῦ ἀέρος. Τέλος, αἱ ἐναποθέσεις μετάλλων εἰς θαλάσσας, λίμνας καὶ τέλματα εἶναι ἀποτέλεσμα χημικῶν καὶ βακτηριακῶν παραγόντων.

Λόγῳ τῆς μεγάλης ποικιλίας τῶν μορφῶν, ἃς ἐμφανίζουσι τὰ μεταλλοφόρα κοιτάσματα, τόσον ἐκ τῆς ἀρχικῆς αὐτῶν γενέσεως, ὅσον καὶ ἐκ τῶν ὑστερωτέρων γεωλογικῶν καὶ ἄλλων ἐπιδράσεων, δὲν εἶναι εὐχερὴς ἡ κατάταξις αὐτῶν εἰς τάξεις ὁμοιομόρφων ἀθροισμάτων. Ἐπεκράτησεν ἐν τούτοις νὰ διακρίνωνται ταῦτα εἰς τέσσαρας μεγάλας κατηγορίας, ὡς ἀκολούθως:

α') *Κοιτάσματα μαγματικά*, εἰς τὰ ὁποῖα ὑπάγονται ἀφ' ἑνὸς μὲν αἱ συσσωρεύσεις μεταλλευμάτων αἱ συναντώμεναι ἐντὸς τῶν πλουτωνείων μαγμάτων καὶ ἐκεῖναι ἀφ' ἑτέρου αἵτινες ἀπεχωρίσθησαν ἀπ' αὐτῶν κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς μεταβάσεως ἀπὸ τῆς τετηκυίας εἰς τὴν στερεὰν κατάστασιν. Μεταξὺ τῶν τελευταίων τούτων περιλαμβάνονται τὰ κοιτάσματα λευκοχρύσου, θειούχου νικελίου, χρωμίτου καὶ μαγνητικοῦ σιδήρου.

β') *Κοιτάσματα περιμαγματικά*. Ὀνομάζονται οὕτω τὰ κοιτάσματα τὰ σχηματισθέντα εἴτε δι' ἐκκρίσεως ἐκ θερμῶν μεταλλικῶν διαλυμάτων τοῦ μάγματος (ἅτινα συναντῶνται ὡς φλέβες ἐντὸς ρωγμῶν, ἢ ὡς ἐμποτισμοὶ ἐντὸς τῶν πετρωμάτων), εἴτε «ἐξ ἐπαφῆς», ἐξ ἐπιδράσεως δηλαδὴ τῆς πνευματολύσεως ἐπὶ πετρωμάτων εὐδιαλύτων. Εἰς τὴν τελευταίαν ταύτην κατηγορίαν ὑπάγονται, ἐπὶ παραδείγματι, τὰ κοιτάσματα τῆς σμύριδος τῆς Νάξου καὶ τοῦ σιδήρου τῆς Σερίφου.

γ') *Κοιτάσματα ἐξ ἐπιδράσεως θερμῶν ὑδάτων*. Ταῦτα συναντῶνται συνήθως ὑπὸ μορφὴν φλεβῶν, αἵτινες ἐσχηματίσθησαν ὑπὸ μετριωτέραν σχετικῶς θερμοκρασίαν ἐντὸς ρηγμάτων ἢ κοιλοτήτων τοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς (ὡς αἱ φλέβες ὀρυκτῶν περιεχόντων χρυσόν, ἄργυρον, χαλκόν, μόλυβδον, ψευδάργυρον κ.λ.π.)· ἄλλοτε δὲ πάλιν εἶναι κοιτάσματα «μετασωματικά», γεννηθέντα διὰ μετατροπῆς προελθούσης ἐξ ἐπαφῆς μετ' ἄλλων εὐδιαλύτων πετρωμάτων, ἰδίως ἀσβεστολίθου καὶ δολομίτου (οἷα, ἐπὶ παραδείγματι, τὰ κοιτάσματα σιδήρου, μαγγανίου κ.λ.π. ἐν Ἰσπανίᾳ, Σαρδηνίᾳ καὶ Βεστφαλίᾳ).

δ') *Κοιτάσματα ἰζηματογενῆ*. Αἱ συσσωρεύσεις τοῦ εἴδους τούτου ἐσχηματίσθησαν ἐκ τῆς ἀποσαθρώσεως ἄλλων κοιτασμάτων καὶ ἐκ τῆς ἐπιδράσεως τῶν ὑδάτων τῆς ἐπιφανείας. Καθ' αὐτὸ ἰζηματογενῆ κοιτάσματα εἶναι τὰ τοῦ σιδήρου τῆς Λωρραίνης, τοῦ χαλκοῦ τῆς Μάνσφιελδ κ. ἄ. Εἰς τὴν ἰδίαν ὅμως κατηγορίαν περιλαμβάνονται ἐπίσης καὶ αἱ μεταλλοφόροι ἄμμοι (χρυσοῦ, λευκοχρύσου καὶ κασσιτέρου) αἱ συναντώμεναι εἰς ὡρισμένους ποταμοὺς τῶν διαφόρων ἠπείρων, καθὼς καὶ αἱ κοῖται ἀδαμάντων τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Βραζιλίας. Ἰζηματογενῆ ἐξ ἄλλου εἶναι πολλὰ κοιτάσματα γαιανθράκων καὶ λιγνιτῶν.

Ἐκ τῶν κοιτασμάτων τῶν τριῶν πρώτων ἐκ τῶν ὡς ἀνωτέρω κατηγοριῶν πολλὰ ὑπέστησαν μετὰ τὴν ἀρχικήν των γένεσιν μεταθέσεις ἢ δευτερογενεῖς ἐπιδράσεις. Οὕτω, εἰς τὰ μαγματικὰ κοιτάσματα ἀνήκουσι τὰ τοῦ κοκκώδους χρωμιούχου λειμονίτου τῆς Βοιωτίας, τῆς Λοκρίδος καὶ τῆς Σκύρου, τὰ ὁποῖα ἀπετελοῦντο ἀρχικῶς ἐκ περιδοτίτου ὑποστάντος βραδύτερον ὀξείδωσιν, καθὼς ἐπίσης καὶ τὰ τοῦ λευκολίθου τῆς Εὐβοίας καὶ τῆς Χαλκιδικῆς. Μεταγενῆ ἐπίσης εἶναι τὰ περιμαγματικὰ κοιτάσματα τῶν σιδηροπυριτῶν τῆς Ἑρμιόνης. Καὶ εἰς τὰ ἰζηματογενῆ δὲ παρατηρεῖται συχνὰ ἐπιγενὴς ἐπίδρασις ἐκ τῶν ὑδάτων τῆς ἐπιφανείας, τὰ ὁποῖα φέροντα ἀνθρακικὸν ὀξὺ καὶ ὀξυγόνον ἐδημιούργησαν διὰ τῆς ἐπιδράσεως αὐτῶν ὠξειδωμένα ἢ ἀνθρακικὰ κοιτάσματα. Ἀνάλογος εἶναι ἡ παρατηρουμένη ἐν Λαυρείῳ μερικὴ ὀξείδωσις τῶν ἀρχικῶς θειούχων μετ' ἀσβεστολίθου μεταλλευμάτων. — Ρ.

**μεταλλοχημεία** (ἡ). Ὁ κλάδος τῆς χημείας ὁ μελετῶν γενικῶς τὰ μέταλλα καὶ τὰς φυσικὰς καὶ χημικὰς ἰδιότητας αὐτῶν.

**μεταλλοχημικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν χημείαν τῶν μετάλλων.

**μεταλλόχρους** (ὁ, ἡ), *—ουν* (τό)· ὁ ἔχων μεταλλικὴν χροιάν, μεταλλοφανής.

**μεταλλοχρωματιστὴς** (ὁ)· χρωματιστὴς μετάλλων διὰ τῆς ὀξειδώσεως ἢ δι' ἄλλων χημικῶν ἀντιδράσεων.

**μεταλλοχρωμία** (ἡ). Καλεῖται οὕτω ἡ διὰ χημικῶν, ἠλεκτροχημικῶν ἢ μηχανικῶν μέσων μεταβολὴ τοῦ χρώματος τῆς ἐπιφανείας τῶν μετάλλων. Χρησιμοποιεῖται εἴτε πρὸς ἐξευγένισιν, εἴτε πρὸς βελτίωσιν τῆς ὄψεως, εἴτε πρὸς προστασίαν ἀπὸ τῆς προσβολῆς ὑπὸ τῆς ἀτμοσφαίρας, εἴτε τέλος πρὸς ἐξαπάτησιν, δηλαδὴ πρὸς ἐμφάνισιν κατωτέρας ποιότητος μετάλλων ὡς ἀνωτέρας. Ἡ βαφὴ τῆς ἐπιφανείας τῶν μετάλλων γίνεται εἴτε δι' ἀπ' εὐθείας ἐπιδράσεως χημικῶν ὑλῶν, εἴτε δι' ἠλεκτροχημικῶν δράσεων, εἴτε διὰ μηχανικῆς ὁδοῦ: ἤτοι ἔχομεν τριῶν εἰδῶν μεταλλοχρωμίαν, τὴν *χημικήν*, τὴν *ἠλεκτροχημικὴν* καὶ τὴν *μηχανικήν*.

Διὰ τὴν μεταλλοχρωμίαν ἔχουν μεγίστην σημασίαν παρὰ τὴν σύστασιν τοῦ μετάλλου ἢ κράματος, καὶ αἱ φυσικαὶ ἰδιότητες αὐτοῦ. Ἡ ἐπιτέλεσις τῆς χημικῆς καὶ ἠλεκτροχημικῆς μεταλλοχρωμίας δύναται νὰ ἐπιτελεσθῇ κατὰ τοὺς κάτωθι τρόπους.

α') Ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ μετάλλου ἢ μεταλλοκράματος δύνανται ὑπὸ κατανάλωσιν τῆς ἰδίας ὕλης δι' ὡρισμένων χημικῶν ἢ ἠλεκτροχημικῶν ἐπιδράσεων νὰ σχηματισθῶσι νέαι στερεαὶ ἔγχρωμοι ὗλαι (ὀξείδια, σουλφίδια, ἅλατα). β') Αἱ ἔν τινι ὑγρῷ διὰ χημικῶν ἢ ἠλεκτροχημικῶν δράσεων σχηματιζόμεναι ὗλαι καθιζάνονται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ μετάλλου. Διὰ τὴν περίπτωσιν αὐτῶν χρειάζεται πάντοτε χημικὴ δρᾶσις. γ') Τῇ συμμετοχῇ τοῦ μετάλλου ἢ τῶν συστατικῶν τοῦ κράματος σχηματίζονται ἐν καταλλήλῳ διαλύματι (π. χ. δι' ἀναγωγῆς) προϊόντα τῆς ἀντιδράσεως, τὰ ὁποῖα ἀποτίθενται καταλλήλως ἐπὶ τοῦ μετάλλου ἢ τοῦ κράματος καὶ ἐνίοτε μεταβάλλονται ταῦτα περαιτέρω (π. χ. ὀξειδοῦνται). δ') Ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ μετάλλου σχηματίζονται λεπτὰ στρώματα ὀξειδίων, τὰ ὁποῖα εἶτα διὰ χημικῶν ἐπιδράσεων (π. χ. δι' ἁλάτων κοβαλτίου ἢ ψευδαργύρου ἢ δι' ὀργανικῶν χρωμάτων τῆς πίσσης) βάπτονται, προκαλοῦντα οὕτω τὸν σχηματισμὸν ἐγχρώμου ἐπιφανείας. Διὰ τὴν καλὴν ἐκτέλεσιν κατὰ τοὺς ἀνωτέρω τρόπους τῆς βαφῆς τῶν μετάλλων ἀπαιτοῦνται: α') Ἡ πλήρης γνῶσις τοῦ πρὸς βαφὴν μετάλλου ἢ κράματος, σχετικῶς πρὸς τὴν τυχὸν γενομένην προγενεστέρως μηχανικὴν ἢ διὰ θερμάνσεως κατεργασίαν καὶ τὴν ἀκριβῆ χημικὴν σύστασιν (π. χ. διὰ τὸν ὀρείχαλκον ἡ περιεκτικότης εἰς χαλκὸν κλπ.). β') Ἡ προπαρασκευὴ τῶν μεταλλίνων ἀντικειμένων (βλ. *γαλβανοστεγία*). γ') Ἡ κυρίως πρᾶξις τῆς βαφῆς καὶ ἡ γνῶσις αὐτῆς. δ') Ἡ κατάλληλος μετακατεργασία.

Ἡ μηχανικὴ μεταλλοχρωμία συνίσταται κυρίως εἰς τὴν ἐπικάλυψιν διὰ λεπτοῦ στρώματος κεχρωσμένων λακκῶν καὶ βερνικίων πάσης φύσεως. Εἰς ταύτην ἀνήκει καὶ ἡ παρασκευὴ τῶν ἐμαγιὲ κλπ. Πολλάκις συνδυάζεται ἡ χημικὴ πρὸς τὴν μηχανικὴν μεταλλοχρωμίαν καὶ αἱ διὰ χημικῆς ὁδοῦ λαμβανόμεναι χρώσεις συμπληροῦνται δι' ἐπικαλύψεως διὰ χρωματιστῶν λακκῶν καὶ βερνικίων. Σ. Γ.

**μεταλλώδης** (ὁ, ἡ), *—ες* (τό)· ὁ ἔχων μορφὴν μετάλλου, ὁ ὁμοιάζων μὲ μέταλλα, *μεταλλοειδὴς* (βλ. λ.).

**μεταλλωρυχεῖον** (τό)· ὁ τόπος ἔνθα γίνεται συστηματικὴ ἐξαγωγὴ μεταλλοφόρων ὀρυκτῶν, ἄλλως *μεταλλεῖον*.

**μεταμέλεια** (ἡ)· ἡ διάθεσις τοῦ μεταμελεῖσθαι, μετάνοια, μεταβολὴ γνώμης.

**— μεταμελείας *δικαίωμα*** (jus poenitendi) *[Νομ.]*. Κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ἐπὶ τῶν ἀνωνύμων συναλλαγμάτων ὁ προβὰς εἰς παροχὴν δὲν ὑπεχρεοῦτο νὰ ἐμμείνῃ εἰς τὸ συνάλλαγμα, ἀσκῶν τὴν ἀγωγὴν τῶν προγεγραμμένων συμφώνων (actio praescriptis verbis), ἵνα ἐπιτύχῃ τὴν ἀντιπαροχήν. Ἐδικαιοῦτο ἐκ παραλλήλου ν' ἀναζητήσῃ τὸ δοθὲν διὰ τῆς ἀπαιτήσεως τῆς μὴ ἐπακολουθησάσης αἰτίας (condictio causa data causa non secuta), βάσιν ἐχούσης εἴτε τὴν ἀδράνειαν τοῦ ὑποχρέου εἰς ἀντιπαροχήν, εἴτε τὸ ἐν λόγῳ δικαίωμα μεταμελείας τοῦ παρασχόντος πρὸ τῆς ἀντιπαροχῆς, καὶ δὴ ἐν περιπτώσει μὴ ὑπερημερίας τοῦ εἰς ταύτην ὑποχρέου. Τοῦ δικαιώματος τούτου ἡ ὕπαρξις



Digitized by Google

ἠμφεσβητήθη μεγάλως ἐκ μέρους τῶν ἑρμηνευτῶν. Ὁπωσδήποτε ἡ ἔρις στερεῖται σήμερον πρακτικῆς σημασίας, καθ' ὅσον ἐπὶ τῶν ἀμφοτεροβαρῶν συναλλαγμάτων δὲν χωρεῖ πλέον ἡ ἀπαίτησις τῆς μὴ ἐπακολουθησάσης αἰτίας, τοῦ παρασχόντος ἔχοντος τὸ δικαίωμα νὰ ζητήσῃ δι' ἀγωγῆς τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ συναλλάγματος ἢ τὸ διαφέρον, οὐχὶ ὅμως καὶ τὴν ἐκ μεταμελείας ἀνάθεσιν, πλὴν ἄν, ἐννοεῖται, τοῦτο συμφωνηθῇ. Θ. Ι. ΑΝΔΡΕΑΔΗΣ

**μεταμέλομαι**, καὶ *μεταμελοῦμαι* (—*έομαι*), ἀόρ. *μετεμελήθην*· μεταβάλλω γνώμην, μετανοῶ: «μετεμελήθη διὰ τὴν πρᾶξίν του, ἀλλ' ἦτο πλέον ἀργά».

**μεταμέρεια** (ἡ) (métamérie) [*Φυσιολ.*]. Ὅρος δι' οὗ ἐκσημαίνεται ἡ πρωταρχικὴ διαίρεσις τῆς νωτιαίας χορδῆς καὶ τῶν περιβαλλόντων ἱστῶν εἰς τμήματα ἢ μεταμερίας. Ἕκαστον τμῆμα κατέχει ἐν ἑαυτῷ τὸ σύνολον τῶν ἰδιοτήτων, τὰς ὁποίας κατέχει τὸ ὁριστικῶς τετελειωμένον ὄν. Ἡ διαίρεσις αὕτη δὲν παραμένει εἰς τὰ ἀνώτερα σπονδυλωτὰ ζῷα, παράγεται δὲ μετ' οὐ πολὺ νέα κατάτμησις τῆς νωτιαίας χορδῆς, ἥτις ἐπιφέρει τὸν σχηματισμὸν τῶν ὁριστικῶν σπονδύλων. *Μεταμέρεια δερματικὴ* καλεῖται ἡ διαίρεσις τῆς δερματικῆς ἐπιφανείας εἰς διαφόρους περιοχάς, τῶν ὁποίων ἑκάστη ἀνταποκρίνεται εἰς πρωταρχικὸν μυελικὸν τμῆμα ἢ νευροτόμον. Ἡ διαίρεσις αὕτη ἐπενοήθη πρὸς ἐξήγησιν τῆς κατανομῆς δερματικῶν τινων διαταραχῶν, ἤτοι ἀναισθησιῶν, ἐξανθημάτων (ὡς τοῦ ἕρπητος ζωστῆρος), αἵτινες σχετίζονται πρὸς νευρικὴν βλάβην, ἀλλὰ δὲν ἀνταποκρίνονται εἰς τὴν διάταξιν ἢ διευθέτησιν περιφερικοῦ τινος νεύρου. Μ. Ν. Κ.

— [*Χημ.*] Βλ. *ἰσομέρεια*.

**μεταμερεῖς** *ἑνώσεις*, ἢ *μεταμερῆ σώματα* [*Χημ.*]· βλ. *ἰσομέρεια*.

**μεταμερὴς** (ὁ) (métamère), ἢ *πρωτοσπόνδυλον*. Οὕτω καλεῖται ἐν τῇ ἐμβρυολογίᾳ τμῆμα προερχόμενον ἐκ τῆς πρωταρχικῆς διαιρέσεως τοῦ ἐμβρύου, ἢ μεταμέρεια. Μ. Ν. Κ.

**μεταμεσημβρινός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μετὰ μεσημβρίαν χρόνον: «μεταμεσημβρινὸν μάθημα, — γεῦμα»».

**μεταμινοκυανοῦν** (τὸ) [*Βιομ. Χημ.*]. Συνθετικὸν χρῶμα διὰ τὰ βαμβακερά. Σ. Γ.

**μεταμίσθωσις**,—εως (ἡ) [*Ἀστ. Δίκ.*]. *Μεταμίσθωσις* ἢ *ἀναμίσθωσις* καλεῖται ἡ μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ χρόνου τῆς μισθώσεως συνομολόγησις νέας τοιαύτης, χωρεῖ δὲ εἴτε ρητῶς εἴτε σιωπηρῶς. Ἡ σιωπηρὰ μεταμίσθωσις (relocatio tacita) ἐπέρχεται ὅταν, μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ συμπεφωνημένου χρόνου, ὁ μισθωτής, χωρὶς νὰ ὀχληθῇ ὑπὸ τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ἐξακολουθῇ παραμένων ἐν τῷ μισθίῳ. Εἰδικώτερον παρατηροῦμεν: α) Ἐπὶ τῆς σιωπηρᾶς μεταμισθώσεως ἰσχύουν οἱ ὅροι τῆς ἀρχικῆς μισθώσεως, ἐκτὸς τῶν τυχὸν ἐγγυήσεων τῶν τρίτων. β) Κατὰ τὴν κρατοῦσαν γνώμην ἐπὶ ἀστικῶν κτημάτων ἡ σιωπηρὰ μεταμίσθωσις διαρκεῖ ὅσον καὶ ἡ ἀρχικὴ μίσθωσις, ἐὰν αὕτη συνωμολογήθη ἐγγράφως, ἄλλως ὅσον χρόνον ἐξακολουθεῖ παραμένων ἐν τῷ μισθίῳ ὁ μισθωτής, τοῦ ἐκμισθωτοῦ δικαιουμένου ἀνὰ πᾶσαν στιγμὴν νὰ λύσῃ τὴν μίσθωσιν. Ἐπὶ ἀγροτικῶν κτημάτων ἡ σιωπηρὰ μεταμίσθωσις διαρκεῖ ἓν ἔτος (πρβλ. Π. 19, 2, 13 § ΙΙ καὶ Π. 19, 2, 14. Γερμ. Κῶδιξ § 568) γ) Διὰ τῆς ἀρχικῆς μισθώσεως δύνανται τὰ μέρη ν' ἀποκλείσωσι τὴν σιωπηρὰν μεταμίσθωσιν, τοιαῦται δὲ συμφωνίαι εἶναι συνήθεις εἰς τὰς μισθωτικὰς συμβάσεις (βλ. καὶ λ. *μίσθωσις*). Δ. Φ. Π.

**μεταμορφικός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μεταβολὴν τῆς μορφῆς.

— **μεταμορφικὸς χιτὼν** [*Γεωλ.*]. Ὁ τρίτος (κατὰ σειρὰν ἐκ τῆς ἐπιφανείας πρὸς τὸ κέντρον) ἐκ τῶν πέντε θερμοδυναμικῶν χιτώνων τῆς γῆς. Ἀντιστοιχεῖ εἰς τὴν στερεὰν λιθόσφαιραν μὲ τοὺς χιτῶνάς της (ἰζηματογενῆ καὶ γρανιτικόν) γνωστῶν συστατικῶν. Ὑποδιαιρεῖται εἰς *ἄνω* καὶ *κάτω μεταμορφικὸν χιτῶνα*. Γ. Κ. Γ.

**μεταμορφισμὸς** (ὁ) [*Γεωλ.*]· βλ. *μεταμόρφωσις* [*Γεωλ.*].

**μεταμορφοψία** (ἡ). Ὀνομάζεται οὕτως ἡ κατάστασις, καθ' ἣν τὸ σχῆμα τῶν ὁρωμένων ἀντικειμένων φαίνεται μεταμορφωμένον καὶ ἠλλοιωμένον. Τὸ φαινόμενον τοῦτο παρατηρεῖται κατὰ τὰς ἀλλοιώσεις τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος, κατὰ τὰς ἀποκολλήσεις τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς, εἰς τὸν κερατόκωνον καὶ εἰς μεγάλας διαθλαστικὰς ἀνωμαλίας τοῦ πυρῆνος τοῦ φακοῦ. Α. Γ.

**μεταμορφῶ** (—*όω*), κοιν. *μεταμορφώνω*, ἀόρ. *μετεμόρφωσα—μετεμορφώθην*· μεταβάλλω τὴν μορφήν, τὸ σχῆμα, κυριολεκτικῶς καὶ μεταφορικῶς.

**μεταμορφωσιγενῆ κοιτάσματα** (metamorphe Lagerstätten) [*Πετρογρ.*]. Ὀνομάζονται τὰ κοιτάσματα ἐκεῖνα, τὰ ὁποῖα ἐμφανίζονται εἰς μεταμορφωσιγενεῖς περιοχὰς ἐγγὺς πλουτωνείων σχηματισμῶν. Ἐπειδὴ τὸ αἴτιον, τὸ ὁποῖον προκαλεῖ τὴν μεταμόρφωσιν, καὶ κατ' ἀκολουθίαν τὸν σχηματισμὸν τῶν ἀντιστοίχων κοιτασμάτων, εἶναι οἱ πλουτώνειοι σχηματισμοί, πρὸς τοὺς ὁποίους αἱ μεταμορφωσιγενεῖς περιοχαὶ εὑρίσκονται εἰς ἐπαφήν, διὰ τοῦτο τὰ μεταμορφωσιγενῆ κοιτάσματα καλοῦνται καὶ *κοιτάσματα ἐπαφῆς*. Τοιουτοτρόπως ὑπὸ τὴν γενικὴν ὀνομασίαν τῶν μεταμορφωσιγενῶν κοιτασμάτων διακρίνομεν δύο κατηγορίας, τὰ *κοιτάσματα ἐπαφῆς* καὶ τὰ *κοιτάσματα μεταμορφωσιγενῆ ἐξ ἐπαφῆς*. Τὰ πρῶτα περιλαμβάνουν τὰ κοιτάσματα ἐκεῖνα, τὰ ὁποῖα ἐσχηματίσθησαν ἐντὸς τῆς μεταμορφωσιγενοῦς ζώνης μετασωματικῶς δι' ἐμπλουτισμοῦ μὲ ὑλικόν, τὸ ὁποῖον προῆλθεν ἐκ τοῦ μάγματος κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς μετασωματώσεως. Τὰ δεύτερα προϋπῆρχον τῆς ἐκρήξεως τοῦ μάγματος, ἁπλῶς δὲ ὑπέστησαν μεταμόρφωσιν, διότι εὑρέθησαν ἐντὸς τῆς μεταμορφωσιγενοῦς περιοχῆς, ἡ ὁποία ἀνήκει εἰς τὴν ζώνην ἐπαφῆς πρὸς τὸ μάγμα. Τὰ κοιτάσματα τοῦ μαγνητίτου καὶ αἱματίτου τῆς Σερίφου καὶ τῆς σμύριδος τῆς Νάξου ἀνήκουν εἰς τὴν πρώτην κατηγορίαν. Ἀντιθέτως, τὰ κοιτάσματα τοῦ μαγνητίτου τῆς Siegerland, τὰ ὁποῖα προῆλθον ἀπὸ ἐμφανίσεις σιδηρίτου συνεπείᾳ μεταμορφώσεως, ἀνήκουν εἰς τὴν δευτέραν κατηγορίαν. Γ. Β.

**μεταμορφώσιμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ δυνάμενος νὰ μεταμορφωθῇ.

**μεταμόρφωσις**, —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταμορφοῦν, μεταβολὴ τῆς μορφῆς, τοῦ σχήματος· || «ἡ ἑορτὴ τῆς Μεταμορφώσεως τοῦ Σωτῆρος».

— [*Δογμ.*] Ἡ *μεταμόρφωσις* τοῦ Χριστοῦ, ἣν διηγοῦνται ἡμῖν οἱ συνοπτικοὶ (*Ματθ.* 17, 1—13. *Μάρκ.* 9. 2—12. *Λουκ.* 9, 28—36) ἐγένετο μετὰ τὴν πρώτην πρόρρησιν τοῦ Χριστοῦ περὶ τοῦ αὐτοῦ πάθους «ἡμέρας ἓξ» (*Ματθ.* καὶ *Μᾶρκ.*) ἢ «ὡσεὶ ἡμέρας ὀκτὼ» κατὰ τὸν Λουκᾶν, «εἰς τὸ ὄρος» (*Λουκ.*) ἢ «ὄρος ὑψηλὸν» (*Ματθ.* καὶ *Μᾶρκ.*), ὅπερ κατὰ τὴν ἀρχαιοτάτην παράδοσιν (Ὠριγένης, Κύριλλος Ἱεροσολύμων, Ἱερώνυμος), τὴν ἐπικρατοῦσαν μέχρι τῆς σήμερον ἔν τε τῇ Ἀνατολικῇ καὶ Δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ, ἦτο τὸ ὄρος Θαβὼρ τῆς Γαλιλαίας. Ἡ γνώμη τινῶν τῶν νεωτέρων ὅτι ἡ μεταμόρφωσις ἐγένετο ἐπὶ τοῦ ὄρους Ἑρμών, τοῦ παρὰ τὴν Καισάρειαν τῶν Φιλίππων, δὲν φαίνεται ὀρθή, οὐ μόνον διότι ἀντίκειται εἰς τὴν ἀρχαίαν παράδοσιν, ἀλλὰ καὶ διότι δὲν στηρίζεται ἐπὶ ἰσχυρῶν ἐπιχειρημάτων. Ἐπὶ τοῦ ὄρους Θαβὼρ ἀνήγειρεν ἡ Ἁγία Ἑλένη, ἡ μήτηρ τοῦ μεγάλου Κωνσταντίνου, ναὸν τῆς μεταμορφώσεως τοῦ Κυρίου, οὕτινος τὰ ἐγκαίνια ἐτελέσθησαν τῇ 6 Αὐγούστου. Ἐκ τούτου, ὡς φαίνεται, ἐπεκράτησεν ὁ ἑορτασμὸς τῆς μεταμορφώσεως τοῦ Κυρίου, ὅστις πρὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἐτελεῖτο πρὸ τοῦ Πάσχα, κατὰ τὴν 6 Αὐγούστου. Ἡ διατριβὴ περὶ τοῦ χρόνου τῆς μεταμορφώσεως τοῦ Κυρίου, ἡ συγγραφεῖσα ὑπὸ τοῦ Δωροθέου Εὐελπίδου ἀρχιμανδρίτου Βατοπεδίου καὶ δημοσιευθεῖσα ἐν τέλει τοῦ Συναξαριστοῦ (ἔκδ. 1868 σ. 370—383) εἶναι ἀξία μελέτης, εἰ καὶ τὰ συμπεράσματα αὐτῆς δὲν εἶναι ἀσφαλῆ. Ἡ ἀπόδοσις τῆς ἑορτῆς τῆς Μεταμορφώσεως ἐτελεῖτο τῇ 13 Αὐγούστου καὶ τὰ προεόρτια τῇ 5 Αὐγούστου, προηγεῖτο δ' αὐτῆς, κατὰ τὸν Βαλσαμῶνα, νηστεία ἀπὸ 1—5 Αὐγούστου, τῆς μετὰ ταῦτα νηστείας (7—14 Αὐγούστου) θεωρουμένης ὡς νηστείας τῆς ἑορτῆς τῆς κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου, μέχρις οὗ ἐπεκράτησεν ἡ νηστεία τοῦ Αὐγούστου (1—14) νὰ θεωρῆται ὡς νηστεία τῆς ἑορτῆς τῆς κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου. Κατὰ τὴν ἑορτὴν τῆς Μεταμορφώσεως ηὐλογοῦντο ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ καὶ μάλιστα τῆς Παλαιστίνης αἱ ὑπὸ τῶν πιστῶν προσφερόμεναι σταφυλαί, αἵτινες κατὰ τὸν Βαλσαμῶνα (πρβλ. ἑρμ. εἰς τὸν 3 ἀποστ. κανόνα) ηὐλογοῦντο ἐν Κωνσταντινουπόλει ὑπὸ τοῦ πατριάρχου κατὰ τὴν 15 Αὐγούστου ἐν τῷ ναῷ τῶν Βλαχερνῶν. Καὶ ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ ἦτο ἀρχαιόθεν γνωστὴ ἡ ἑορτὴ τῆς μεταμορφώσεως τοῦ Κυρίου, ἐπεκράτησεν ὅμως κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα, ὅτε ὁ πάπας Κάλλιστος ὁ Γ' ἐξ εὐγνωμοσύνης διὰ τὴν παρὰ τὸ Βελιγράδιον ἧτταν τῶν Τούρκων (1456) διὰ βούλλας αὐτοῦ ἀπολυθείσης τῷ 1457 καθώρισεν ἐπισήμως τὸν ἑορτασμὸν αὐτῆς. Εἰς τὴν ἑορτὴν τῆς Μεταμορφώσεως ἔχομεν πολλοὺς λόγους, ὧν ἄξιοι ἰδίᾳ μνείας εἶναι οἱ λόγοι τοῦ Χρυσοστόμου, τοῦ Ἰωάννου τοῦ Δαμασκηνοῦ, τοῦ Ἀναστασίου τοῦ Σιναΐτου, τοῦ Ἀνδρέου Κρήτης, τοῦ Γρηγορίου τοῦ Παλαμᾶ καὶ τοῦ Ἐφραὶμ τοῦ Σύρου. Κ. Ι. Δ.

—[*Βιολ.*] Καλεῖται *μεταμόρφωσις* ἡ παρουσία αὐτοτελῶν ἐνδιαμέσων μορφῶν μεταξὺ τοῦ γονιμοποιηθέντος ᾠαρίου καὶ τοῦ τελείου ζῴου. Εἶναι γνωστόν, δηλαδή, ὅτι ἡ διάπλασις παντὸς ζῴου ἀρχίζει ἀπὸ ἓν κύτταρον, τὸ ὁποῖον εἶναι τὸ προϊὸν τῆς συντήξεως τοῦ ᾠοκυττάρου καὶ τοῦ σπερματοζωαρίου. Τὸ γονιμοποιηθὲν λοιπὸν τοῦτο ᾠοκύτταρον δίδει δι' ἀλλεπαλλήλων κυτταροτομιῶν τὸ ὑλικόν, διὰ τοῦ ὁποίου θὰ διαπλασθῇ ὁ νέος ὀργανισμός. Ἡ διάπλασις ὅμως αὕτη ἀπὸ τοῦ πρώτου κυττάρου μέχρι τοῦ τελείου ὀργανισμοῦ, εἰς ἄλλα μὲν εἴδη ζῴων εἶναι συνεχής, ὡς λ. χ. εἰς τὰ πτηνά, τὰ θηλαστικά, τὸν ἄνθρωπον κλπ. καὶ καλεῖται *ἄμεσος διάπλασις*· εἰς ἄλλα ὅμως εἴδη ζῴων παράγονται πρὸ τῆς τελειοποιήσεως τοῦ ὀργανισμοῦ ἀτελέστεροι ἐνδιάμεσοι μορφαὶ τούτου, αἱ ὁποῖαι ζοῦν ὡς αὐτοτελεῖς. Τοῦτο ἀποτελεῖ τὴν *ἔμμεσον διάπλασιν* ἢ *μεταμόρφωσιν*. Ταύτης τὰ κοινότερα καὶ ὡραιότερα παραδείγματα μᾶς παρέχουν τὰ ἔντομα μὲ τὰς μεταμορφώσεις των ἀπὸ τοῦ ᾠοῦ εἰς κάμπην, χρυσαλλίδα καὶ ψυχήν. Ἐπίσης ὁ βάτραχος, ὁ ὁποῖος ἀπὸ τοῦ ᾠοῦ μεταμορφοῦται εἰς γυρῖνον καὶ ἀπὸ τούτου εἰς τέλειον βάτραχον. Αἱ ἐνδιάμεσοι μορφαὶ συνεπῶς εἶναι διάφοροι εἰς τὰς διαφόρους ὑποδιαιρέσεις τοῦ ζωϊκοῦ βασιλείου καὶ περιγράφονται λεπτομερῶς δι' ἓν ἕκαστον εἶδος ζῴου. Καλοῦνται δὲ γενικῶς *νύμφαι* καὶ *προνύμφαι* (ὡς αἱ τῶν κωνώπων λ. χ.), ἄλλοτε δὲ φέρουν καὶ ἰδιαίτερα χαρακτηριστικὰ ὀνόματα. Οὕτω λ.χ. ὀνομάζεται *τροχόσφαιρα* ἐνδιάμεσος μορφὴ πολλῶν σκωλήκων, *ναύπλιος* πολλῶν μαλακοστράκων κλπ. Ὡς αἴτιον τῆς τοιαύτης ἐμμέσου διαπλάσεως θεωρεῖται ἡ ἔλλειψις θρεπτικῶν οὐσιῶν εἰς τὸ ᾠόν. Ὁ νέος ὀργανισμός οὕτω, μὴ ἔχων θρεπτικὰς οὐσίας καὶ μὴ διαπλασσόμενος ἐντὸς τοῦ μητρικοῦ σώματος, ἀναπληροῖ καὶ τὰ δύο ταῦτα διὰ τῶν ἐνδιαμέσων μορφῶν, αἱ ὁποῖαι ζοῦν καὶ τρέφονται αὐτοτελῶς. Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

— [*Ἠλεκτρ.*] Καλεῖται *μεταμόρφωσις* (transformation) ἡ μετατροπὴ ἠλεκτρικῆς τινος ἐνεργείας εἰς ἄλλην τοιαύτην διαφόρου φύσεως ἢ διαφόρων χαρακτηριστικῶν μεγεθῶν ἠλεκτρικῆς ἰσχύος, μετὰ ἢ ἄνευ μετατροπῆς τῆς φύσεως αὐτῆς. Οὕτως ἔχομεν μετατροπὴν τῆς ἐναλλασσομένης φύσεως τῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας εἰς συνεχῆ καὶ τἀνάπαλιν, ἢ μετατροπὴν τῶν χαρακτηριστικῶν μεγεθῶν τῆς ἰσχύος αὐτῆς, ἤτοι τῆς τάσεως καὶ ἐντάσεως διὰ τὸ συνεχὲς καὶ τὴν ἐνδεικνυμένην αὐτῶν τιμὴν καὶ τοῦ συνημιτόνου τῆς μεταξὺ αὐτῶν φασικῆς ἀποκλίσεως διὰ τὸ ἐναλλασσόμενον. Τὸ τελευταῖον τοῦτο δύναται νὰ πραγματοποιηθῇ μετὰ ἢ ἄνευ μετατροπῆς τῆς φύσεως αὐτῆς. Αἱ ἐν γένει μετατροπαὶ τῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας ἐπιτυγχάνονται διὰ τῶν ἠλεκτρικῶν *μετασχηματιστῶν* (βλ. λ.) καὶ δὴ ἄνευ σημαντικῶν ἀπωλειῶν, τοῦ βαθμοῦ ἀποδόσεως κυμαινομένου μεταξὺ 80 καὶ 98 %, ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῆς μετατροπῆς καὶ τῶν ὅρων ὑφ' οὓς αὕτη ἐκτελεῖται. Α. Π. Μ.

— [*Γεωλογ.*] *Μεταμόρφωσις* ἢ *μεταμορφισμὸς* (Metamorphose) καλεῖται τὸ σύνολον τῶν ἀλλοιώσεων, τὰς ὁποίας ὑφίστανται τὰ διάφορα πετρώματα, εἴτε ὑπὸ τῆς θερμότητος ἄλλων ἐκρηξιγενῶν ἢ πυριγενῶν πετρωμάτων, εἴτε ὑπὸ τῶν πιέσεων τῶν ἀναπτυσσομένων κατὰ τὰς ὀρεογενετικὰς καὶ ἠπειρογενετικὰς κινήσεις τοῦ στερεοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς. Ἡ μεταμόρφωσις (μεταβολὴ τοῦ ἱστοῦ ἢ καὶ τῆς ὀρυκτολογικῆς συστάσεως) τῶν πετρωμάτων, ἡ προκαλουμένη κυρίως ὑπὸ τῆς πιέσεως, ἡ ὁποία ἐξασκεῖται ἐπ' αὐτῶν κατὰ τὰς τεκτονικὰς διαταράξεις τοῦ στερεοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς, βοηθούντων καὶ ἄλλων τινῶν συμπαρομαρτούντων παραγόντων, καλεῖται *δυναμομεταμόρφωσις* (βλ. λ.).

Ἡ μεταμόρφωσις τῶν πετρωμάτων (φυσικαὶ καὶ χημικαὶ ἀλλοιώσεις), ἡ προκαλουμένη εἰς αὐτὰ κατὰ τὴν ἐντὸς αὐτῶν διείσδυσιν μαζῶν ἐκρηξιγενῶν πετρωμάτων διὰ τῆς ἐπιδράσεως τῆς θερμότητος τούτων ἢ τῶν ἐξ αὐτῶν ἐκλυομένων ἀερίων καὶ ἀτμῶν, καλεῖται *μεταμόρφωσις ἐπαφῆς* (Kontaktmetamorphose).

Τὰ φαινόμενα τῆς μεταμορφώσεως ἐπαφῆς, τὰ προκαλούμενα ὑπὸ τῶν πλουτωνείων πυριγενῶν πετρωμάτων, εἶναι συνήθως ἀρκούντως διαφορετικὰ τῶν φαινομένων μεταμορφώσεως ἐπαφῆς, τῶν προκαλουμένων ὑπὸ τῶν ἐκχύτων πυριγενῶν. Τὰ πλουτώνεια πετρώματα προκαλοῦν χημικὰς καὶ μοριακὰς ἀλλοιώσεις, ἐνῷ τὰ ἔκχυτα ἐπιφέρουν ὄπτησιν, τήξεις, ὑελοποιήσεις καὶ φρύξεις. Τούτου ἕνεκα ἡ ὑπὸ τῶν πρώτων προκαλουμένη μεταμόρφωσις καλεῖται *θερμική*, ἐνῷ ἡ ὑπὸ τῶν δευτέρων χαρακτηρίζεται ὡς *καυστική*. Διὰ τῆς καυστικῆς μεταμορφώσεως παρήχθη ὁ εἰς πολλὰς θέσεις τῆς Βοημίας καὶ Ἔσσης ἀπαντώμενος βασαλτικὸς ἴασπις, ἄργιλλος δηλαδὴ τριτογενής, ὑποστᾶσα τὴν καυστικὴν ἐπίδρασιν τῆς θερμότητος βασάλτου καὶ μεταμορφωθεῖσα εἰς φαιόν, κίτρινον ἢ ἐρυθρὸν προϊόν. Ὅπου ἐκρηξιγενῆ πετρώματα διασχίζουν ἢ ἐπικαλύπτουν κοιτάσματα ὀρυκτῶν ἀνθράκων, προκαλοῦν ἐπ' αὐτῶν μεταμόρφωσιν εἰς κώκ, ὡς π. χ. παρὰ τὸ Meissner τοῦ Kassel. Διὰ τῆς καυστικῆς μεταμορφώσεως ἐπίσης πολλὰ πετρώματα ὑφίστανται καυλοειδῆ-πρισματικὸν κατατεμαχισμόν, ὡς π.χ. ψαμμῖται τινες κλπ.

Διὰ τῆς μεταμορφώσεως ἐπαφῆς σιδηρομεταλλεύματα τινα μεταβάλλονται πολλαχοῦ εἰς μαγνητίτην, ἀσβεστολιθικὰ πετρώματα χάνουν τὸ σκοτεινόν των χρῶμα καὶ τὴν στρῶσίν των καὶ μεταβάλλονται εἰς λευκὰ σακχαροκοκκώδη μάρμαρα ἀσβεστολιθικά. Συνήθως κατὰ τὴν μεταμόρφωσιν ἐπαφῆς, τὴν ὁποίαν προκαλοῦν πλουτώνεια πετρώ-

Digitized by Google

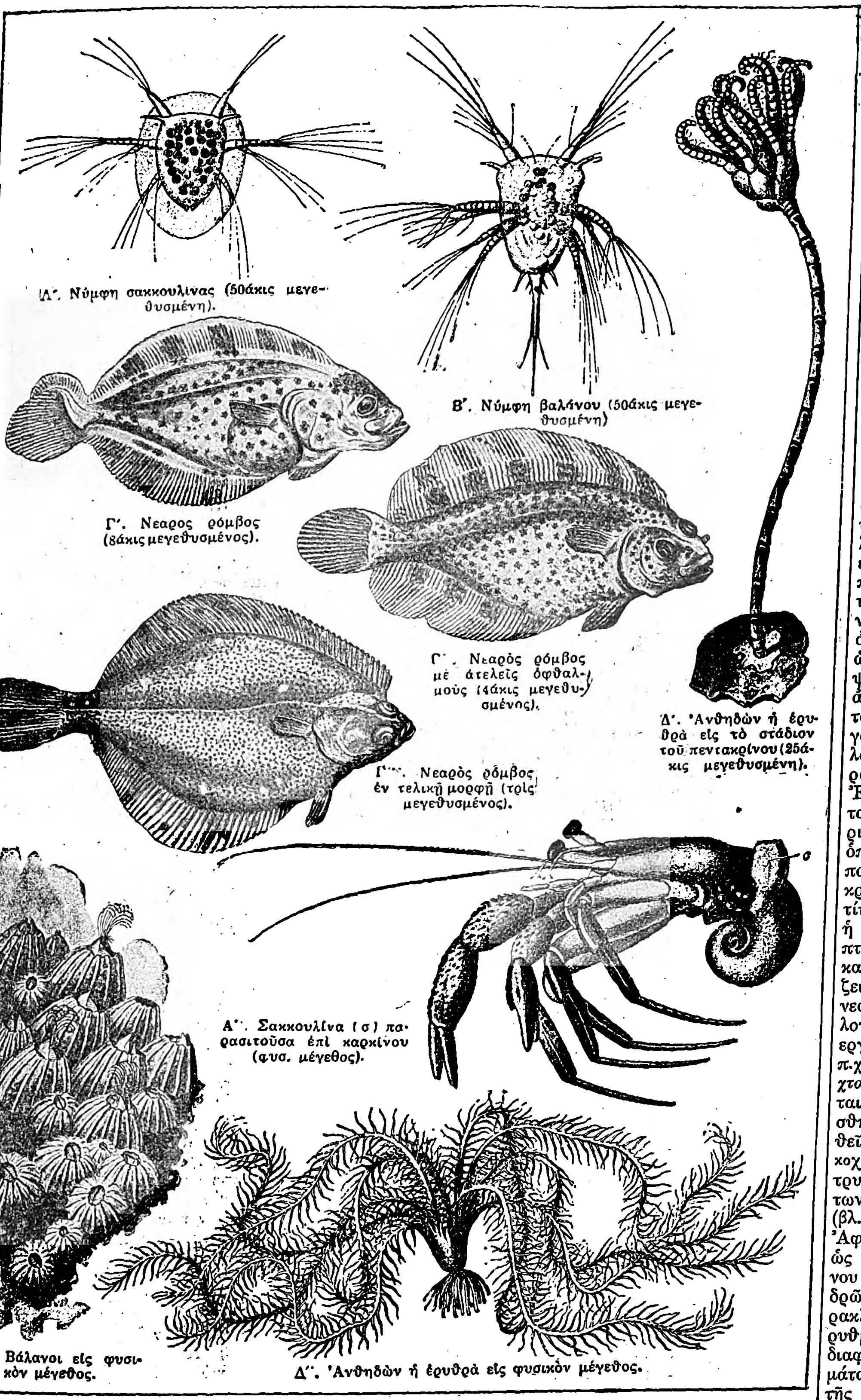


*Διάφοροι μεταμορφώσεις ζώων.*

ματα (γρανῖται κλπ.) λαμβάνει χώραν καὶ μοριακὴ μετατόπισις καὶ ἀλλοίωσις καὶ ὡς ἐκ τούτου σχηματισμὸς νέων τινῶν ὀρυκτῶν, πυριτικῶν ἁλάτων τοῦ ἀσβεστίου (ἐπίδοτον, γρανάτης κτλ.). Τὴν τοιαύτην μεταμόρφωσιν καλοῦσιν *ὑδροθερμικήν*. Δι' αὐτῆς ἀσβεστολιθικὰ πετρώματα μεταβάλλονται εἰς μάρμαρα, φέροντα γρανάτην, βολλαστονίτην, βεζουβιανὸν κτλ., ἐνῷ ἀσβεστολιθικοὶ σχιστόλιθοι μετατρέπονται εἰς ἀσβεστούχους κεραλίτας, σχιστολιθικὰ δὲ πετρώματα σκληρύνονται, χάνουν τὴν στρῶσίν των, ἀποκτῶσι κρυσταλλικὴν σύστασιν καὶ μετατρέπονται ἐνίοτε εἰς καρποειδεῖς—ἢ κομβώδεις—ἢ κηλιδώδεις—σχιστολίθους ἢ καὶ περαιτέρω εἰς σκληροὺς στιφροὺς κερατίτας. Ὅλαι αὗται αἱ μεταβολαὶ παρατηροῦνται παρὰ τὴν ἐπαφὴν μὲ τὸ πυριγενὲς πέτρωμα, ἐντὸς ζώνης, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον εὐρείας, περιβαλλούσης αὐτό, καὶ ἡ ὁποία καλεῖται *ἅλως ἐπαφῆς* (Kontakthof).

Ἰδιαιτέρα μορφὴ μεταμορφώσεως ἐπαφῆς εἶναι ἡ *μεταμόρφωσις ἐνέσεως*. Κατὰ ταύτην, πλουτώνεια πετρώματα, ἰδίᾳ γρανιτικά, διεισδύουσιν ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας ἐπαφῆς ὑπὸ μορφὴν πολυαρίθμων ἀποφυάδων εἰς τὸ γειτονικὸν πέτρωμα. Τὰ ὑγρὰ καὶ ἀέρια συστατικὰ τοῦ μάγματος διαποτίζουν εἰς τὰς περιστάσεις ταύτας τὸ γειτονικὸν πέτρωμα, τοῦ ὁποίου πολυάριθμα ῥηγματίδια καὶ κοιλώματα πληροῦνται μὲ πηγματικὰ καὶ ἀπλιτικὰ ἐκκρίματα. Τὰ ἐκκρίματα ταῦτα διεισδύουν ἐνίοτε μεταξὺ τῶν ἐπιφανειῶν στρώσεως τῶν σχιστολιθικῶν γειτονικῶν πετρωμάτων καὶ παράγονται τότε γνευσιοειδῆ πετρώματα (ταινιωτοὶ γνεύσιοι, ἀρτηρῖται). Κατὰ τὴν διείσδυσιν πυριγενοῦς τινος πετρώματος διὰ μέσου ἄλλου ἰζηματογενοῦς δὲν ὑφίσταται μεταμόρφωσιν μόνον τὸ ἰζηματογενὲς πέτρωμα. Τὸ στερεοποιούμενον πυριγενὲς πέτρωμα δύναται διὰ συντήξεως ἐντὸς αὐτοῦ τεμαχίων τοῦ γειτονικοῦ ἰζηματογενοῦς νὰ ὑποστῇ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἰσχυρὰς χημικὰς ἀλλοιώσεις καὶ νὰ μεταμορφωθῇ. Ἡ τοιαύτη μεταμόρφωσις καλεῖται *ἐνδογενὴς μεταμόρφωσις* ἢ *ἐνδομεταμόρφωσις*, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν *ἐξωγενῆ μεταμόρφωσιν* ἢ *ἐξωμεταμόρφωσιν*, τὴν ὁποίαν ὑφίστανται τὰ περιβάλλοντα τὸ πυριγενὲς ἰζηματογενῆ πετρώματα.

Ἐν στενῇ σχέσει πρὸς τὴν μεταμόρφωσιν ἐνέσεως εὑρίσκεται καὶ ἡ καλουμένη *πνευματολυτική*, κατὰ τὴν ὁποίαν γεννήτορες τῆς μεταμορφώσεως εἶναι διαλύματα καὶ ἀέρια (ὕδωρ, φθοριοῦχον πυρίτιον καὶ σίδηρος, βορικὸν ὀξύ, χλώριον κλπ.) ἐκ τοῦ μάγματος ἐκλυόμενα. Διὰ τῆς τοιαύτης μεταμορφώσεως πολλὰ νέα ὀρυκτά, ὡς τοπάζιον, φθορίτης, τουρμαλίνης, ἀξινίτης καὶ ἄλλα. Τὰ κοιτάσματα κασσιτερίτου τῆς Κορνουαλλίας, Μαλάκκας, Νοτίου Αὐστραλίας καὶ τῶν ἄλλων χωρῶν, τὰ κοιτάσματα αἱματίτου τῆς Ἔλβας, αἱ ἐμφανίσεις κρυολίθου τῆς Γροιλανδίας, αἱ τῆς σμύριδος τῆς Νάξου, αἱ ἐντὸς γρανουλίτου φλέβες γραφίτου τῆς νήσου Κεϋλάνης εἶναι σχηματισμοὶ προελθόντες ἐκ πνευματολυτικῆς μεταμορφώσεως. Εἰς τοιούτου εἴδους μεταμόρφωσιν ὀφείλονται ἐπίσης καὶ οἱ γραμματοποίκιλτοι γρανῖται καὶ οἱ πηγματῖται οἱ συχνὰ παρατηρούμενοι εἰς τὰ κράσπεδα μεγάλων ὄγκων γρανίτου.

Ἐκτὸς τῆς δυναμομεταμορφώσεως καὶ τῆς μεταμορφώσεως ἐπαφῆς, γεωλόγοι τινὲς διακρίνουν καὶ τὴν *τοπικὴν μεταμόρφωσιν* (Regionalmetamorphose). Κατ' αὐτὴν πετρώματα τῶν ἀνωτάτων τμημάτων τοῦ στερεοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς συνιζάνουν, συνεπείᾳ διαφόρων γεωλογικῶν φαινομένων (ἀπόθεσις ὑπεράνω αὐτῶν νεωτέρων πετρωμάτων, σχηματισμὸς γεωσυγκλίνων) καὶ μεταφέρονται εἰς βάθος κάτω τῆς γηΐνης ἐπιφανείας, ὅπου ἐπικρατεῖ ὑψηλὴ θερμοκρασία καὶ ὑψηλὴ πίεσις. Διὰ μεταμορφώσεως τοπικῆς παρήχθησαν ὅλα τὰ κρυσταλλοσχιστώδη πετρώματα (κρυσταλλοπαγεῖς σχιστόλιθοι). Ἡ τοπικὴ μεταμόρφωσις κατὰ τοὺς πλείστους γεωλόγους εἶναι ταυτόσημος τῇ δυναμομεταμορφώσει καὶ δέον νὰ θεωρῆται ὡς εἶδος αὐτῆς.

Γ. Κ. Γ.

— *[Λαογρ.]* Ἡ ἀντίληψις ὅτι ἕνεκα διαφόρων σοβαρῶν λόγων εἶναι δυνατὸν νὰ μεταμορφωθοῦν ἄνθρωποι, ζῷα ἢ καὶ ἄψυχα ἀκόμη ὄντα, δι' ὑπερφυσικῆς ἐπενεργείας εἰς ζῷα, φυτά, ἀστέρας, λίθους ἢ ὁ,τιδήποτε ἄλλο ἄψυχον ἀντικείμενον, εἶναι διαδεδομένη εἰς ὅλους τοὺς λαοὺς καὶ ἔχει παναρχαίαν προέλευσιν. Οἱ λαοί, διατηροῦντες πάντοτε πρωτογονικοὺς χαρακτῆρας, εἶναι προικισμένοι μὲ ἐξαιρετικὴν ἐμψυχωτικὴν φαντασίαν καὶ ἀντιλαμβάνονται τὸν περιβάλλοντα αὐτοὺς κόσμον ὡς ὅμοιον μὲ τὸν ἀνθρώπινον. Εἰς ταύτην τὴν ἐμψυχοῦσαν φαντασίαν καὶ εἰς τὴν ἐπίσης βαθύτατα ἀνθρωπίνην ἐπιθυμίαν τοῦ ἐξευρίσκειν τὴν αἰτίαν τῶν διαφόρων φαινομένων, ἥτις εἰς τοὺς πρωτογόνους λαοὺς ἐκδηλοῦται διὰ μυθοπλασιῶν, ὀφείλονται αἱ πολυπληθεῖς περὶ μεταμορφώσεων παραδόσεις, αἱ ὁποῖαι ὑπάρχουν εἰς ὅλους τοὺς λαούς. Ἐκ τῶν ἡμιαγρίων λαῶν πλουσιώτεροι εἰς τοιαύτας παραδόσεις εἶναι οἱ ἰθαγενεῖς λαοὶ τῆς Ἀμερικῆς, ἐκ δὲ τῶν ἱστορικῶν ὁ ἑλληνικὸς λαός, τοῦ ὁποίου τοὺς μύθους ἐπεξειργάσθησαν διάφοροι ποιηταὶ καὶ ἰδίᾳ ὁ Ὀβίδιος, ὅστις καὶ ἴδιον μακρότατον ποίημα περὶ αὐτῶν συνέγραψεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Μεταμορφώσεις». Παρὰ τῷ ἑλληνικῷ λαῷ ἡ δημιουργία τοιούτων μύθων δὲν ἔπαυσε μὲ τὴν πτῶσιν τοῦ ἀρχαίου κόσμου, ἀλλ' ἐξηκολούθησε καὶ κατὰ τοὺς μεταγενεστέρους χρόνους καὶ ἀκμάζει καὶ σήμερον ἀκόμη. Οἱ σχετικοὶ μῦθοι τοῦ νεοελληνικοῦ λαοῦ ἔχουν κατὰ τὸ πλεῖστον αἰτιολογικὸν χαρακτῆρα, ἐγεννήθησαν δὲ πάντοτε συνεργείᾳ καὶ τῆς ἐμψυχωτικῆς φαντασίας. Οὕτω π.χ. περὶ τῆς αἰγυπτιακῆς περιστερᾶς (κοιν. *δεκοχτούρα*), ἡ ἰδιόρρυθμος φωνὴ τῆς ὁποίας ἀκούεται παρὰ τοῦ ἑλληνικοῦ λαοῦ ὡς «δεκοχτώ», ἐπλάσθη ὁ μῦθος ὅτι ἦτο ὀρφανὴ κόρη, μεταμορφωθεῖσα ἐκ λύπης εἰς πτηνὸν καὶ κραυγάζουσα «δεκοχτώ», διότι κατηγορήθη ἀδίκως ὑπὸ τῆς μητρυιᾶς της ὅτι ἔφαγεν ἕνα ἐκ τῶν δεκαοκτὼ ἄρτων, τοὺς ὁποίους εἶχε κομίσει εἰς τὸν φοῦρνον (βλ. λ. *δεκοχτούρα*). Ἡ διπλῆ πάλιν ἐμφάνισις τῆς Ἀφροδίτης εἰς τὸ στερέωμα ὡς Ἑωσφόρου καὶ ὡς Ἑσπέρου ἐγέννησε τὸν μῦθον περὶ τοῦ Γιάννου καὶ τῆς Μάρως, οἱ ὁποῖοι ἀγαπώμενοι σφοδρῶς κατηστερίσθησαν ὑπὸ τοῦ θεοῦ κατόπιν παρακλήσεως (βλ. λ. *Γιάννος* καὶ *Μάρω*). Τὸ ἰδιόρρυθμον τέλος σχῆμα διαφόρων βράχων ἐγέννησε διαφόρους μύθους ἢ παραδόσεις περὶ μαρμαρωμάτων, παρεμφερεῖς πρὸς τὸν ἀρχαῖον μῦθον περὶ τῆς Νιόβης (βλ. λ. *μαρμαρώματα*).

Θ. Π.

— **μεταμορφώσεως παραλήρημα** *[Ψυχοπαθ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ ὑποχονδριακὸν ἢ γενικώτερον κιναισθητικὸν ἐκεῖνο παραλήρημα, καθ' ὃ ὁ ἀσθενὴς νομίζει ὅτι μετεμορφώθη ἡ ὅλη ἡ προσωπικότης αὐτοῦ ἢ μέρος τοῦ σώματος αὐτοῦ. Οὕτω νομίζει ὅτι μετεβλήθη εἰς κύνα, λύκον, διάβολον, γυναῖκα, ἂν εἶναι ἀνήρ, καὶ τἀνάπαλιν, εἰς θεόν, εἰς νᾶνον ἢ γίγαντα, εἰς κερασφόρον κ.τ.τ., ἢ ὅτι τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐγένετο βούτυρον, ἢ λίθος, ἢ ξύλον, ὅτι οἱ πόδες αὐτοῦ ἐγένοντο ὕαλοι κ.τ.τ. Τὸ παραλήρημα τοῦτο παρατηρεῖται ἐπὶ προϊούσης παραλύσεως, ἐπί τινων ἄλλων ἀνοιῶν, ἐπὶ ὑποχονδριακοῦ παραληρήματος, ὡς ἀπόληξις αὐτοῦ, ἢ ἰδίᾳ τοῦ παραληρήματος κατοχῆς. Ἐπὶ σχιζοφρενίας ἐπίσης παρατηροῦνται σποραδικαὶ ἢ καὶ πρὸς συστηματοποίησιν τείνουσαι ἰδέαι μεταμορφώσεως. Ἐπίσης παρατηρεῖται ἐπὶ θρησκευτικοῦ παραληρήματος, καὶ τέλος ὡς ἀπόληξις τῆς μελαγχολίας, διὰ διαμέσου ὑποχονδριακοῦ σταδίου, ἢ ἄνευ αὐτοῦ, ὡς καὶ σποραδικῶς μεταξὺ ἄλλων συμπτωμάτων μελαγχολίας.

Εἶναι βαρὺ τὴν πρόγνωσιν, ἰδίᾳ ὅταν συστηματοποιηθῇ, σημεῖον τοῦ ἀνιάτου τῆς νόσου. Ἐνίοτε παρατηρεῖται μάλιστα καὶ μεταβολὴ τῆς συμπεριφορᾶς τοῦ ἀρρώστου ἀνάλογος· οὕτως ὁ νομίζων ὅτι μετεβλήθη εἰς κύνα, δὲν ὁμιλεῖ, ἀλλὰ γαυγίζει, ἢ ὁ ἔχων πόδας ὑαλίνους, δὲν περιπατεῖ ἵνα μὴ τοὺς θραύσῃ κ.τ.τ. Τοῦτο δεικνύει ὅτι ἡ ἀντίδρα-

Digitized by Google

σις τοῦ ἀσθενοῦς εἶναι ἀνάλογος, παρατηρεῖται δὲ κυρίως ἐπὶ θρησκευτικοῦ τοιούτου παραληρήματος ἢ ὑποχονδριακοῦ, οὐχὶ δὲ ἐπὶ ἀνοιῶν. Δέον νὰ μὴ συγχέωνται αἱ παραληρητικαὶ αὗται ἰδέαι πρὸς τὰς ἀντιστοίχους *ἰδεοληψίας*, ὡς π. χ. τὰς ἰδεοληψίας τινῶν ὅτι ἔχουσι πόδας ὑαλίνους, ἢ ἐκ βουτύρου καὶ τὰ παρόμοια, εἰς ἃς ὅμως ὁ ἀσθενὴς ἔχει συνείδησιν τοῦ νοσηροῦ τῆς τοιαύτης ἰδέας. Ἐπίσης δέον νὰ διακρίνεται τοῦ *μεταβολικοῦ παραληρήματος*, ὡς καλοῦμεν τὸ παραλήρημα, τὸ ἀναφερόμενον εἰς τὴν μεταβολὴν τῶν περὶ τὸν πάσχοντα καὶ οὐχὶ εἰς μεταμόρφωσιν ἑαυτοῦ. Τ. Α. ΖΗΣ

**Μεταμόρφωσις** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κοζάνης τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 541.

—2) Χωρίον τῆς κοινότητος Εὐζώνων τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 551. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Τσιδεμλῆ*.

—3) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μεγάλου Ρεύματος (πρῴην Γκολέμα Ρέκα) τῆς ἐπαρχίας Ἠμαθίας τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 57. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Δροζίλοβον*. Δ. Ε. Μ.

—**Μεταμόρφωσις** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λόφος δυτικῶς τοῦ λιμένος Τηγάνι Σάμου (πλάτ. 37°41′ Β., μῆκ. 26°58′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1878: Port Tigani), ἐπιστεφόμενος ὑπὸ γραφικωτάτης μονῆς, χρησιμευούσης ὡς γνώρισμα εἰς τοὺς πλέοντας· εἰς τὸν εἰρημένον λιμένα ἢ τὸ στενὸν τῆς Μυκάλης. Σ.Ε.Λ.

**μεταμορφωτὴς** (ὁ) (fransformateur). Συνήθης ὀνομασία ἐν τῇ ἠλεκτροτεχνίᾳ τῶν *ἠλεκτρικῶν* (βλ. λ.) *μετασχηματισμῶν*.

—**μεταμορφωτὴς** (ὁ) (γαλλ. transformiste). Εἰδικὴ κατηγορία μίμων, οἵτινες κατέχουσι τὴν τέχνην νὰ ἀλλάζωσι ταχύτατα καὶ κατὰ τὸ δοκοῦν τὴν μορφήν των καὶ νὰ ἀπομιμῶνται ἐπιτυχῶς διαφόρους τύπους. Τοιοῦτοι μεταμορφωταὶ δύνανται νὰ παίζωσι πολλάκις μόνοι των εἰδικὰ θεατρικὰ ἔργα, ὑποδυόμενοι ἀλληλοδιαδόχως ὅλα τὰ πρόσωπα αὐτῶν, ἐναλλάσσοντες ταχύτατα τὴν μορφὴν καὶ τὸν τύπον τῆς φωνῆς των. Συνηθέστατα οἱ μεταμορφωταὶ εἶναι καὶ ἐγγαστρίμυθοι.

**μεταμορφωτικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐπιφέρων, ὁ προξενῶν μεταμόρφωσιν.

**μεταμόσχευσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ μεταφορὰ φυτικοῦ ὀφθαλμοῦ ἐπὶ βλαστοῦ συγγενοῦς φυτοῦ πρὸς ἀναπαραγωγήν, εἶδος ἐμβολιασμοῦ· || ἰατρ., μεταφορὰ τμήματος δέρματος ἢ ἄλλου ὀργάνου ἀπὸ ἑνὸς μέρους εἰς ἄλλο μέρος τοῦ σώματος πρὸς ἀναπλήρωσιν ἐξαιρεθέντος.

—*[Χειρουργ.] Μεταμόσχευσις* καλεῖται ἡ χειρουργικὴ ἐπέμβασις, δι' ἧς μεταφέρεται ζῶν ἱστὸς ἀπό τινος χώρας τοῦ σώματος εἰς ἑτέραν, πρὸς ἀντικατάστασιν τοιούτου, ἐλλείποντος (συγγενὴς διαμαρτία) ἢ καταστραφέντος. Τὸ μεταφερόμενον τμῆμα τοῦ ἱστοῦ καλεῖται *μεταμόσχευμα*, δύναται δὲ νὰ εἶναι δέρμα βλεννογόνον, ὀστοῦν, περιόστεον, χόνδρος, ὁλόκληρος ἄρθρωσις (βλ. λ. *ἀρθροπλαστική)*, ἀγγεῖον, λιπώδης ἱστός, τένοντες, περιτονίαι, ἢ τέλος ὁλόκληρα ὄργανα, π. χ. θυρεοειδεῖς ἀδένες, ᾠοθῆκαι, ὄρχεις, ἐπινεφρίδια κ.τ.τ.

Ἡ μεταμόσχευσις, ἀνήκουσα εἰς τὰς πλαστικὰς ἐγχειρήσεις, διαφέρει τούτων κατὰ τοῦτο, ὅτι εἰς τὰς τελευταίας γίνεται χρῆσις κρημνῶν μετὰ μίσχου, προσκαίρου ἢ διαρκοῦς, ἀφ' ἧς ἀπεχωρίσθησαν ἀρχικῆς χώρας. Καὶ ἐφ' ὅσον γίνεται χρῆσις μεταμοσχεύματος λαμβανομένου καὶ χρησιμοποιουμένου ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ ἀτόμου (ἀπὸ τοῦ βραχίονος π. χ. εἰς τὸ πρόσωπον) ἡ ἐγχείρησις καλεῖται *αὐτοπλαστική*· ὅταν γίνηται χρῆσις μοσχεύματος ἀπὸ ἑνὸς ἀνθρώπου εἰς ἄλλον ἡ ἐγχείρησις καλεῖται *ὁμοιοπλαστικὴ* (τὸ αὐτὸ εἶδος), ὅταν δὲ ἀπὸ ἑνὸς εἴδους εἰς ἕτερον (ἀπὸ ζῴου εἰς ἄνθρωπον) ἡ ἐγχείρησις καλεῖται *ἑτεροπλαστική*.

Τὰς περισσοτέρας ἐπιτυχίας μεταμοσχεύσεως παρέχουσιν αἱ αὐτοπλαστικαὶ ἐγχειρήσεις καὶ δὴ ὅταν πρόκειται περὶ μεταμοσχεύσεως δέρματος (μέθοδοι *Reverdin, Thiersch, Kraus)* ἢ βλεννογόνου, κατὰ δεύτερον λόγον αἱ ὁμοιοπλαστικαὶ καὶ κατὰ τρίτον λόγον αἱ ἑτεροπλαστικαί. Ι. Κ. Κ.

— *[Γεωργ.]* Βλ. λ. *ἐμβολιασμὸς* καὶ *μόσχευσις*.

— **μεταμόσχευσις καρδίας** *[Φυσιολ.]*· βλ. λ. *καρδίας μεταμόσχευσις*.

**μεταμοσχεύω**· ἐνεργῶ *μεταμόσχευσιν* (βλ. λ.).

**μεταμφιέζω** καὶ **μεταμφιέννυμι,** ἀόρ. *μετημφίεσα—μετημφιέσθην*, παθ. μετοχ. *μετημφιεσμένος*· μεταμορφώνω τινὰ διὰ τῆς ἀμφιέσεως, ἀλλάσσω ἀμφίεσιν, ἵνα μεταμορφωθῶ· || συνήθ. παθ. *μεταμφιέζομαι*· μασκαρεύομαι: «μετημφιέσθη εἰς ἱππότην,— εἰς χωρικόν»· || «μετημφιεσμένοι» οἱ κατὰ τὰς Ἀπόκρεω προσωπιδοφόροι καὶ ἄλλως μεταμορφωμένοι, «χορὸς μετημφιεσμένων».

**μεταμφίεσις,** *—εως* (ἡ)· μεταμόρφωσις δι' ἀμφιέσεως, ἀλλαγὴ ἀμφιέσεως πρὸς μεταμόρφωσιν.

— *[Θρησκ. - Λαογρ.]* Ἡ μεταβολὴ τῆς συνήθους ἀμφιέσεως καθ' ὡρισμένας περιστάσεις καὶ ἑορτὰς ἀποτελεῖ γενικὸν καὶ πανάρχαιον ἔθιμον, ἀπαντῶν εἴς τε τοὺς ἀρχαίους καὶ τοὺς νεωτέρους λαούς, ἀνεξαρτήτως τῆς πολιτιστικῆς βαθμῖδος, εἰς τὴν ὁποίαν εὑρίσκονται, καὶ ἔχων κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν ἐκδοχὴν μαγικὴν ἀφετηρίαν. Κατὰ τὴν ἐκδοχὴν ταύτην οἱ πρωτόγονοι λαοὶ πιστεύουν ὅτι ὁ ἐνδυόμενος δέρμα ζῴου ἢ προσωπεῖον δαίμονος ἢ τεθνεῶτος ἢ ἄλλου τινὸς πράγματος, ἐφ' ὅσον διαρκεῖ ἡ μεταμφίεσίς του ἐνσαρκώνει τὸ εἰκονιζόμενον καὶ κατέχει τὰς δεξιότητας ἢ δυνάμεις αὐτοῦ. Συναφὴς πρὸς τὴν ἐκδοχὴν ταύτην εἶναι καὶ ἡ πρωτόγονος ἀντίληψις ὅτι ἡ χρησιμοποίησις προσωπείου δύναται νὰ ἐκβιάσῃ τοὺς κακοὺς καὶ ἐπικινδύνους δαίμονας, ἢ νὰ ἐξαπατήσῃ τὰ θηράματα. Οἱαδήποτε καὶ ἂν εἶναι ἡ ἀρχικὴ αἰτία τοῦ ἐθίμου, τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι τοῦτο ἀποτελεῖ παναρχαίαν ἐπιβίωσιν καὶ ὅτι εἰς τοὺς θηρευτικοὺς λαοὺς διατηρεῖ τὸν μαγικόν του χαρακτῆρα, διότι συνοδεύεται ἀπὸ μαγικοὺς χορούς, σκοποῦντας τὴν ἐξασφάλισιν πλουσίου καὶ εὐκόλου θηράματος. Αἱ μεταμφιέσεις διεσώθησαν καὶ μέχρι σήμερον εἰς τοὺς περισσοτέρους λαοὺς καὶ τελοῦνται συνηθέστερον μὲν κατὰ τὰς Ἀπόκρεω, ἐνιαχοῦ ὅμως καὶ κατ' ἄλλας ἐπισήμους ἡμέρας, ὅπως κατὰ τὴν ἑορτὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ ἢ ἄλλοτε, ἀλλὰ δὲν διατηροῦν κανὲν ἴχνος τοῦ παλαιοῦ μαγικοῦ ἢ λατρευτικοῦ χαρακτῆρός των (βλ. λ. *Ἀπόκρεω* καὶ *καρναβάλια*).

**μετανάστευσις,** *—εως* (ἡ)· μετάβασις εἰς ἄλλην χώραν ὡς ἔποικος: «μετανάστευσις εἰς τὴν Ἀμερικήν».

—*[Ἐγκυκλ.] Μετανάστευσις* καλεῖται ἡ ἀποδημία μέρους τοῦ πληθυσμοῦ χώρας τινὸς χάριν διηνεκοῦς ἐγκαταστάσεως ἐν ξένῳ ἤδη συγκεκροτημένῳ κράτει ἢ προσωρινῆς ἐπιδιώξεως ἐπικερδεστέρας χρησιμοποιήσεως τῆς προσωπικῆς ἐργασίας. Τῆς ὑπὸ τὴν ἔννοιαν ταύτην μεταναστεύσεως δέον νὰ διακριθοῦν αἱ ἐσωτερικαὶ μετακινήσεις πληθυσμῶν, ὁ ἀποικισμὸς καὶ ἡ εἰσαγωγὴ δούλων.

Σπουδαῖαι διεθνεῖς μετακινήσεις πληθυσμῶν μεταναστευτικῆς φύσεως ἤρχισαν ἤδη παρατηρούμεναι ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Τὸ μεταναστευτικὸν ρεῦμα τῆς πρώτης περιόδου, ἐκ τῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν, τῆς Ἀγγλίας, Γερμανίας καὶ τῆς Σκανδιναυϊκῆς χερσονήσου κυρίως προερχόμενον, συνέκλινε κατὰ προτίμησιν πρὸς τὰς ἀγροτικὰς περιφερείας καὶ τὰ τότε τὸ πρῶτον ἀναπτυσσόμενα βιομηχανικὰ κέντρα τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, ὀλίγον δὲ ἀργότερον πρὸς τὰς περιφερείας τῆς ἐκεῖ ἀμέσως μετὰ ταῦτα ἐπακολουθησάσης κατασκευῆς τῶν μεγάλων συγκοινωνιακῶν ἔργων. Προϊόντα τοῦ χρόνου αἱ ἀναπτυσσόμεναι ἀνάγκαι τῶν ἀστικῶν καὶ βιομηχανικῶν κέντρων τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἀλλὰ καὶ τῶν κυρίως γεωργικῶν περιφερειῶν τῆς Αὐστραλίας, Ν. Ἀμερικῆς καὶ Ν. Ἀφρικῆς ἐδημιούργησαν περαιτέρω εὐκαιρίας πολλαπλῆς χρησιμοποιήσεως τῆς ἀγροτικῆς χειρωνακτικῆς καὶ ἐπαγγελματικῆς ἐργασίας καὶ προεκάλεσαν παρὰ τὴν ἐξακολουθοῦσαν μεταναστευτικὴν τάσιν ἐκ τῆς Δυτικῆς καὶ Κεντρικῆς Εὐρώπης νέας μεταναστεύσεις πληθυσμῶν ἐκ τῶν χωρῶν ἤδη κυρίως τῆς νοτίου καὶ ἀνατολικῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἄπω Ἀνατολῆς. Ἐκ παραλλήλου πρὸς τὴν φυγόκεντρον τάσιν τῆς μεταναστεύσεως ἐξ Εὐρώπης πρὸς τὰς ξένας ἠπείρους παρετηρήθη κατὰ τὰ μεταγενέστερα ἰδίως ἔτη καὶ ἐνδοευρωπαϊκὸν ρεῦμα μεταναστευτικῆς κινήσεως ἐξ ἀνατολῶν, ἰδίως ἐκ Πολωνίας, Ρωσίας, Γαλικίας καὶ κατά τι ποσοστὸν ἐκ νότου πρὸς τὰ βιομηχανικὰ καὶ ἀστικὰ κέντρα τῆς Δ. Γερμανίας, Β. Γαλλίας καὶ Ν. Ἀγγλίας (κεντρομόλος μετανάστευσις).

Οἱ ὠθοῦντες πρὸς τὸν ἐκπατρισμὸν λόγοι πηγάζουν εἴτε κυρίως ἐκ τοῦ φυσικοῦ καὶ κοινωνικοῦ περιβάλλοντος, ὡς π. χ. ἐκ τῆς ἀνίσου κατανομῆς τοῦ φυσικοῦ πλούτου καὶ τῆς ἀνίσου ὡς ἐκ τούτου ἀναπτύξεως τῶν ἐπωφελεστέρων κλάδων τῆς ἐθνικῆς παραγωγικότητος, μεγάλης ἐγγείου ἰδιοκτησίας, ὑπερπληθυσμοῦ, πολιτικῶν καταπιέσεων, ἀποστερήσεως δυνατότητος εὐρείας πνευματικῆς ἀναπτύξεως· εἴτε ὀφείλονται εἰς τὴν προσωπικὴν ἰδιοσυγκρασίαν, ὡς ποιά τις δόσις τυχοδιωκτικοῦ πνεύματος. Δύνανται δὲ τέλος νὰ εἶναι καὶ φύσεως ἐντελῶς ἰδιωτικῆς, οἷον ἀποτυχία ἀτομικῶν ἐπιχειρήσεων.

Ὡς πρὸς τὰς συνεπείας τῆς μεταναστεύσεως ὑπεστηρίχθησαν, διὰ πολλῶν ἑκατέρα ἐπιχειρημάτων, ἀμφότεραι ἥ τε εὐνοϊκὴ καὶ ἡ δυσμενὴς ἄποψις. Ἤδη ἐκ τῶν ὑστέρων (μετὰ τοὺς οὐσιωδεστάτους περιορισμοὺς τῆς διεθνοῦς μεταναστευτικῆς κινήσεως κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν περίοδον) κρινομένη ἡ ἐπίδρασις τῆς μεταναστεύσεως, δέον νὰ ἀναγνωρισθῇ ὡς λίαν ἐπωφελὴς διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς παγκοσμίου οἰκονομίας, ὡς διευκολύνασα τὴν πλήρη ἐκμετάλλευσιν τῆς οἰκουμενικῆς δυναμικότητος τῶν νέων ἠπείρων διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως παραγωγικῶν δυνάμεων, ἰδίως ἀνθρωπίνης ἐργασίας, πλεοναζουσῶν ἐν Εὐρώπῃ.

[Βλ. *Ι. Τουρνάκη*, Διεθνὴς μεταναστευτικὴ κίνησις καὶ μεταναστευτικὴ πολιτικὴ (1930).] Α. Α. Τ.

—*[Διεθν. Δίκ.]* Καλεῖται *μετανάστευσις* ἡ ἐγκατάληψις παρὰ τῶν κατοίκων πολιτείας τινὸς τῆς χώρας αὐτῆς καὶ ἡ ἐγκατάστασις αὐτῶν εἰς τὸ ἔδαφος ἑτέρου κράτους μὲ πρόθεσιν διαμονῆς ἐν αὐτῷ διαρκῶς. Ἡ μετανάστευσις προϋποθέτει τὴν κατόπιν ἐλευθέρας ἀποφάσεως ἐγκατάλειψιν τῆς χώρας των καὶ ἐγκατάστασιν εἰς ξένην τῶν κατοίκων δεδομένου κράτους, ἀσχέτως ἂν εἰς τὴν πρόθεσιν τῆς διαρκοῦς παραμονῆς δὲν ὑποκρύπτεται καὶ ἡ ἐλπὶς ἐπανόδου ποτὲ εἰς τὴν γενέτειραν. Καθ' ὅσον ἀφορᾷ τὸ τελευταῖον τοῦτο ζήτημα δὲν ἐπικρατεῖ ὁμοφωνία μεταξὺ τῶν συγγραφέων, τινῶν δεχομένων ὅτι πρόκειται περὶ μεταναστεύσεως μόνον, ὁσάκις ἀποκλείεται ἐντελῶς ἡ πρόθεσις τῆς ἐπανόδου. Ἐξ ἄλλου, παρά τινων νομοθεσιῶν ἀπῃτήθη, ὅπως ἐπὶ μεταναστεύσεως μεσολαβῇ μέχρι τῆς ἐνδεχομένης ἐπανόδου ἐν minimum χρόνου· οὕτω, κατὰ τὸν ἀπὸ 18 Φεβρουαρίου 1909 οὐγγρικὸν νόμον δὲν πρόκειται περὶ μεταναστεύσεως, ὅτε πολῖται τινὲς ἐγκαθίστανται εἰς ἄλλο εὐρωπαϊκὸν κράτος διὰ χρονικὸν διάστημα κατώτερον τοῦ ἔτους, ὅπως ἐνεργήσωσιν ἐν αὐτῷ ὡρισμένας πράξεις.

Ἡ μετανάστευσις διακρίνεται: εἰς *ἀτομικὴν* καὶ *συλλογικήν*, καθόσον μεμονωμένα ἄτομα ἢ πλῆθος κατοίκων ἐγκαταλείπωσι τὴν χώραν των καὶ ἐγκαθίστανται εἰς ἄλλην, εἰς *διαρκῆ* ἢ *προσωρινήν*, ὁσάκις ἐλλείπει ἡ πρόθεσις τῆς ἐπανόδου ἢ τὸ πολὺ εἶναι αὕτη ἀβεβαία καὶ χρονικῶς ἀκαθόριστος, ἢ ὁσάκις ἡ μετανάστευσις γίνεται δι' ὡρισμένον χρονικὸν διάστημα, εἴτε προσδιωρισμένον ἐκ τῶν προτέρων, εἴτε ἐξαρτώμενον ἐκ τοῦ χρόνου, ὃν θ' ἀπῄτει ἡ διευθέτησις ὡρισμένων ὑποθέσεων καὶ ὑφίσταται, ὡς ἐκ τούτου, πάντοτε ἡ πρόθεσις τῆς ἐπανόδου. Τὴν μετανάστευσιν διακρίνουσιν εἰσέτι εἰς *ὑπερπόντιον* καὶ *ἠπειρωτικήν*, ἀναλόγως ἂν αὕτη πραγματοποιῆται εἰς χώρας, μεθ' ὧν μόνον διὰ θαλάσσης θὰ ἦτο δυνατὴ ἡ ἐπικοινωνία, ἢ ἀντιθέτως εἰς ἄλλας, εἰς τὰς ὁποίας ἡ μεταβίβασις ἐπιτυγχάνεται διὰ ξηρᾶς, ὡς ἀνηκούσας εἰς τὴν αὐτὴν ἤπειρον. Ἡ μετανάστευσις δυνατὸν νὰ εἶναι *αὐτόματος*, ὡς προερχομένη ἐκ τῆς ἰδίας θελήσεως τοῦ μεταναστεύοντος, δυνατὸν ὅμως νὰ εἶναι καὶ *τεχνητὴ* (ἥτις ἐμφανίζεται συνηθέστατα ὡς συλλογική, ὁμαδική), ὡς ἐπὶ μισθώσεως ἐργασίας ἢ καὶ (παλαιότερον) στρατολογίας.

Διὰ τῆς μεταναστεύσεως, κατὰ τὴν γνώμην πλείστων συγγραφέων, δὲν ἐπέρχεται αὐτοδικαίως ἡ ἐναλλαγὴ τῆς ἐθνικότητος, οὐδ' ὑπάρχει πρὸς τούτοις ὑποχρεώσίς τις διὰ τοὺς μεταναστεύοντας. Εἰς τὰς πλείστας σχεδὸν συνομολογηθείσας περὶ μεταναστεύσεως συμβάσεις ὁρίζεται ὅτι οἱ μεταναστεύοντες ἐξακολουθοῦσι διατηροῦντες τὴν ἰθαγένειαν αὐτῶν, ἂν καὶ κατὰ τὰς νομοθεσίας διαφόρων κρατῶν (Δανίας, Αὐστροουγγαρίας, Ρωσίας), αἵτινες δύνανται νὰ χαρακτηρισθῶσι μᾶλλον ὡς ἐξαιρέσεις, ὁ μεταναστεύων θεωρεῖται ὡς στερηθεὶς τῆς ἰθαγενείας αὐτοῦ, συμφώνως ἄλλως τε πρὸς τὸ ἄρθρον 17 τοῦ γαλλικοῦ ἀστικοῦ κώδικος τοῦ 1804, τὸ ὁποῖον ὥριζεν ὅτι ἡ ἐγκατάστασις εἰς τὸ ἐξωτερικὸν χωρὶς πρόθεσιν ἐπανόδου συνεπιφέρει τὴν στέρησιν τῆς γαλλικῆς ἰθαγενείας. Αἱ συνέπειαι ὅμως τῆς νομοθεσίας τῶν κρατῶν τούτων ὑπῆρξαν πολλάκις τραγικαί· οὕτω, οἱ ἐν ἔτει 1877 καὶ 1878 ἐκ Σαρατὼφ μεταναστεύσαντες εἰς Βραζιλίαν Ρῶσοι ἠναγκάσθησαν μετ' οὐ πολύ, διαψευσθεισῶν τῶν ἐλπίδων των, νὰ ἐπανέλθωσιν εἰς Εὐρώπην, στερούμενοι παντὸς πόρου ζωῆς· ἀποβιβασθέντες ἄλλοι εἰς Ἀμβοῦργον καὶ ἄλλοι εἰς Ἀμβέρσαν ἐζήτησαν τὴν ἀρωγὴν τῆς ρωσικῆς κυβερνήσεως, ἥτις ἠρνήθη νὰ ἔλθῃ ἐπίκουρος εἰς αὐτούς, ἐπειδὴ δὲν ἐπρόκειτο πλέον περὶ Ρώσων πολιτῶν· τοὔτ' αὐτὸ ἐπανελήφθη ἐν ἔτει 1881 καὶ 1882 μὲ τοὺς ἐκ Ρωσίας εἰς Ἀμερικὴν καὶ Αὐστρίαν μεταναστεύσαντας Ἰουδαίους τὸ θρήσκευμα. Περὶ τῶν σχετικῶν διατάξεων τῆς συνθήκης τοῦ Νεϊγὺ βλ.λ. *Νεϊγὺ συνθήκη*.

Προκειμένου περὶ τῆς φύσεως τῆς μεταναστεύσεως, ἂν πρόκειται τουτέστι περὶ δικαιώματος τῶν πολιτῶν, οἵτινες ἐλευθέρως δύνανται νὰ κάμωσι χρῆσιν, ἢ ἀντιθέτως περὶ δικαιώματος, ἡ ἄσκησις τοῦ ὁποίου ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς συγκαταθέσεως τοῦ κράτους, τοῦ ὁποίου τυγχάνει ὑπήκοος ὁ μεταναστεύων, ὡς κρατοῦσα γνώμη δύναται νὰ θεωρηθῇ ἐκείνη, ἥτις δέχεται ὅτι ἡ πολιτεία δύναται ν' ἀπαγορεύσῃ εἰς τοὺς ὑπηκόους αὐτῆς εἰς ὡρισμένας περιπτώσεις τὴν μετανάστευσιν χάριν γενικωτέρων σκοπῶν. Ὑπὲρ τῆς γνώμης ταύτης συνηγοροῦσιν ἐκτὸς τοῦ Grotius καὶ τοῦ Vattel καὶ ὁ Klüber, ὁ Heïfter, ὁ Fiore, ὁ Rivier καὶ ἄλλοι. Πρὸς τὴν γνώμην ταύτην ὅμως ἀντιτίθενται ὁ Oppenheim καὶ ὁ Hershey, ὑποστηρίζοντες ὅτι ἡ μετανάστευσις ἀποτελεῖ φυσικὸν δικαίωμα τοῦ ἀτόμου καὶ δὲν ἐπιτρέπεται οὐδεὶς περιορισμὸς εἰς αὐτὸ ἐκ μέρους τοῦ κράτους, ἐνῷ ὁ Pradier-Fodéré, συμφωνῶν κατὰ βάσιν πρὸς αὐτούς, δέχεται ὅτι ἡ πολιτεία πρέπει νὰ ἔχῃ τὸ δικαίωμα ν' ἀνακαλῇ τοὺς μεταναστεύσαντας πρὸς ἐκπλήρωσιν ὡρισμένων ὑποχρεώσεων, τὰς ὁποίας ὑπέχουσιν οὗτοι ἔναντι αὐτῆς, ὡς ἡ στρατιωτικὴ ὑποχρέωσις κλπ. Ἐν τῇ πράξει, παρατηρεῖται ὅτι, ἐνῷ ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῆς ἀπολύτου ἐξουσίας τῆς πολιτείας ὁ μεταναστεύων ἄνευ ἀδείας τοῦ ἄρχοντας ἐτιμωρεῖτο δι' αὐστηροτάτων ποινῶν, ἐν Πρωσσίᾳ μάλιστα διὰ τῆς ποινῆς τοῦ θανάτου, ἀντιθέτως ἡ νομοθεσία

Digitized by Google

τῆς ἐποχῆς ἐκείνης εἰς τὰ αὐτὰ κράτη παρεῖχε πᾶσαν εὐκολίαν εἰς τοὺς θέλοντας νὰ μεταναστεύσωσιν εἰς αὐτὰ ἐξ ἄλλων πολιτειῶν. Ἐν Γαλλίᾳ, τὸ Σύνταγμα τοῦ 1791 ἀνεγνώρισεν εἰς πάντα πολίτην τὸ δικαίωμα νὰ κινῆται ἐλευθέρως, ἐπεξηγῶν δὲ ὁ σχετικὸς νόμος τῆς 18 Σεπτεμβρίου 1791 ὥρισεν ὅτι οὐδὲν ἐμπόδιον θὰ παρεμβληθῇ εἰς τὸν θέλοντα νὰ μεταναστεύσῃ. Ἔκτοτε, ἄρχεται νὰ διαδίδωνται ἐλευθεριώτεραι ἀντιλήψεις καθ' ὅσον ἀφορᾷ τὴν νομικὴν ρύθμισιν τῆς μεταναστεύσεως, ὡς καταφαίνεται ἀπὸ τοὺς ἑξῆς νόμους τῶν διαφόρων κρατῶν: Ἑλλάδος τῆς 17/30 Νοεμβρίου 1920, Γαλλίας τῆς 18 Ἰουλίου 1860, Γερμανίας τοῦ 1870, 1897, 1913, Ἰταλίας τῆς 17 Ἰουλίου 1910 καὶ τοῦ 1919, Ἀγγλίας τοῦ 1904, Γιουγκοσλαβίας 15-2-1922, Ἀργεντινῆς τοῦ 1876, τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τοῦ 1921 καὶ 1922. Ἀλλὰ καὶ εἰς τὰς ὑφισταμένας σχετικὰς συνθήκας τὰς συνομολογηθείσας μεταξὺ τῶν ἐνδιαφερομένων κρατῶν, ἡ μετανάστευσις ρυθμίζεται κατὰ τρόπον ἐξυπηρετικὸν διὰ τὸ ἄτομον, χωρὶς ὅμως νὰ θίγωνται ἢ παραβλέπωνται ὡρισμένα δικαιώματα τῆς πολιτείας.

Τὸ ζήτημα τῆς μεταναστεύσεως ἀπησχόλησε καὶ τὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Διεθνοῦς δικαίου κατὰ τὴν ἐν Κοπεγχάγῃ σύνοδον αὐτῆς τῆς 1 Σεπτεμβρίου 1897, ἥτις καὶ ἐψήφισε σχέδιον διεθνοῦς συμβάσεως, διὰ τοῦ ὁποίου διετυποῦτο ἡ ἀρχὴ τῆς ἐλευθέρας μεταναστεύσεως, μεμονωμένης ἢ ὁμαδικῆς, ἄνευ ἐξαιρέσεως ἐθνικότητος. Ἐπίσης μὲ τὸ ζήτημα τῆς μεταναστεύσεως ἠσχολήθη καὶ τὸ ἐν Μαδρίτῃ τῷ 1900 συνελθὸν ἱσπανοαμερικανικὸν συνέδριον, τὸ ὁποῖον καὶ διετύπωσε τὰς ἀποφάσεις αὐτοῦ εἰς σειρὰν ἄρθρων. Μὲ τὸ ζήτημα τέλος τῶν ἐκ Ρωσίας μεταναστευσάντων μετὰ τὴν ἐγκαθίδρυσιν τῆς δικτατορίας τοῦ προλεταριάτου ἠσχολήθη ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Weisel*, «Die Auswanderungsfrage» (1905). —*Schulte im Hofe*, «Auswanderung und Auswanderungspolitik» (1918). — *Gounard*, «L'émigration européenne au XIXe siécle» (1906).—*Jeancourt - Golignami*, «L'immigration en droit international» (1908).

Η. Γ. Κ.

— *[Νομ.]* Περὶ *μεταναστεύσεως* καὶ *ἀποδημίας* ἰσχύει ὁ νόμος 2475 τῆς 24 Ἰουλίου 1920. Κατὰ τὸν νόμον τοῦτον μετανάστης εἶναι ὁ ἐπιβάτης γ' θέσεως, ἢ ἄλλης θέσεως ἐξομοιουμένης πρὸς αὐτὴν ὑπὸ τῆς ὑπηρεσίας μεταναστεύσεως, ἀναχωρῶν ἐξ ἑλληνικοῦ λιμένος κατ' εὐθεῖαν ἢ ἐμμέσως διὰ ξένων λιμένων εἰς τὰς χώρας τῶν ἄλλων ἠπείρων πλὴν τῆς Εὐρώπης. Ἐξαιρεῖται ἐπίσης ἡ Μικρὰ Ἀσία καὶ τὰ βόρεια παράλια τῆς Ἀφρικῆς μέχρι τοῦ πορθμοῦ τοῦ Γιβραλτάρ. Ὁ εἰρημένος νόμος προνοεῖ περὶ ἀδείας πράκτορος μεταναστεύσεως χορηγουμένης ὑπὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐσωτερικῶν, περὶ ἐπιθεωρήσεως τῶν ἀτμοπλοίων τῶν προωρισμένων διὰ τὴν μεταφορὰν μεταναστῶν, περὶ δωρεὰν παλινοστήσεως ἀπόρων Ἑλλήνων καὶ περὶ ἐπαναφορᾶς τοῦ μετανάστου εἰς τὴν Ἑλλάδα ἐὰν δὲν γίνῃ δεκτὸς ἐν Ἀμερικῇ διὰ λόγους ἰσχύοντας πρὸ τῆς ἀναχωρήσεώς του ἐξ Ἑλλάδος, περὶ μὴ ἐκδόσεως εἰσιτηρίων εἰς τοὺς μὴ ἐφωδιασμένους διὰ διαβατηρίων· ἀπαγορεύει τὴν παρότρυνσιν πρὸς μετανάστευσιν, ἐπιβάλλει ἔγκρισιν τοῦ τιμολογίου τῶν ναύλων κλπ. Ἀπειλεῖ δὲ καὶ τὰς ἀκολούθους ποινάς: Φυλάκισις μέχρις ἓξ μηνῶν καὶ χρηματικὴ ποινὴ μέχρι 1000 δραχμῶν ἀπειλεῖται κατὰ τῶν μὴ πρακτόρων ἢ ἀντιπροσώπων, οἵτινες συντελοῦσι καθ' οἱονδήποτε τρόπον εἰς τὴν παρὰ τὰς διατάξεις τοῦ νόμου μετανάστευσιν ἑνὸς ἢ πλειόνων ἀτόμων. Οἱ πράκτορες μεταναστεύσεως ἢ ἀντιπρόσωποι καὶ οἱ ἰδιοκτῆται ἢ πράκτορες ἀτμοπλοίων οἱ παραβαίνοντες τὰς διατάξεις τῶν ἄρθρων 12—25 τοῦ νόμου τιμωροῦνται διὰ φυλακίσεως μέχρις 1 ἔτους καὶ χρηματικῆς ποινῆς μέχρι 2000 δρχ. Οἱ στερούμενοι ἀδείας πράκτορες μεταναστεύσεως ἢ μὴ νομίμως ἀνεγνωρισμένοι ἀντιπρόσωποι πρακτόρων ἢ μετὰ τὴν ἀνάκλησιν τῆς δοθείσης ἀδείας πωλοῦντες εἰσιτήρια εἰς μετανάστας τιμωροῦνται διὰ φυλακίσεως μέχρι 3 ἐτῶν καὶ χρηματικῆς ποινῆς μέχρι 12.000 δρχ. Διὰ τὴν ταχεῖαν ἐκδίκασιν τῶν ἀδικημάτων μεταναστεύσεως, ὁρίζεται ἐν ἄρθρῳ 34 εἰδικὴ διαδικασία, καθ' ἣν ὁ ἀδικούμενος δύναται νὰ καταγγείλῃ τὴν πρᾶξιν εἰς τὸν ἁρμόδιον ὑπάλληλον μεταναστεύσεως, ὅστις συντάσσει τὴν σχετικὴν ἔκθεσιν καὶ ἐξετάζει ἐνόρκως τὸν παθόντα καὶ ἕνα ἢ δύο μάρτυρας. Τὴν δικογραφίαν ὁ ὑπάλληλος ὑποβάλλει ἐντὸς 3 ἡμερῶν εἰς τὸν εἰσαγγελέα, ὅστις ἐντὸς 3 ἡμερῶν κοινοποιεῖ τὸ ἐγκλητήριον καὶ εἰσάγει τὴν ὑπόθεσιν πρὸς ἐκδίκασιν εἰς τὴν πρώτην τακτικὴν δικάσιμον τοῦ πλημμελειοδικείου, μετὰ πάροδον 3 ἡμερῶν ἀπὸ τῆς κοινοποιήσεως τοῦ ἐγκλητηρίου. Ἡ μήνυσις δύναται νὰ ὑποβληθῇ καὶ ἀπ' εὐθείας εἰς τὸν εἰσαγγελέα, ὅστις ἐξετάζει ἐνόρκως ἕνα ἢ δύο μάρτυρας, μεθ' ὃ εἰσάγει τὴν ὑπόθεσιν κατὰ τὰς ἀνωτέρω προθεσμίας. Ἡ ἄδεια καταδικασθέντος πράκτορος δύναται νὰ ἀνακληθῇ. Αἱ διατάξεις τῶν ἄρθρων 527 καὶ 528 τοῦ ποινικοῦ νόμου ἰσχύουν ἐφ' ὅσον δὲν κατηργήθησαν ἢ ἐτροποποιήθησαν διὰ τοῦ περὶ οὗ ὁ λόγος νόμου.

Χ. Ν. ΤΖΩΡΤΖΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Ζῳολ.] Μετανάστευσις* καλεῖται ἡ καθ' ὡρισμένας ἐποχὰς τοῦ ἔτους ὁμαδικὴ ἀναχώρησις ἔκ τινος τόπου ἢ καὶ ἡ ἐπάνοδος εἰς τὸν τόπον τοῦτον διαφόρων ζῴων. Ἡ μετανάστευσις παρατηρεῖται καὶ εἰς τοὺς ἰχθῦς καὶ ἰδίως εἰς τοὺς ἀμφιβιωτικοὺς τοιούτους, οἵτινες καθ' ὡρισμένας ἐποχὰς τοῦ ἔτους ἀνέρχονται ἐκ τῆς θαλάσσης εἰς τοὺς ποταμοὺς ἢ ἑτέρας ροὰς ὑδάτων ἐκβαλλούσας εἰς τὴν θάλασσαν. Κυριώτερος λόγος τῆς ὁμαδικῆς ταύτης μεταναστεύσεως εἶναι ὁ πολλαπλασιασμός. Κατὰ τὴν ἐποχὴν δηλαδὴ τῆς φοτοκίας συνέρχονται οἱ ἰχθύες εἰς ὡρισμένον μέρος καὶ ἐκεῖθεν κατὰ πυκνοτάτας ὁμάδας προχωροῦσι πρὸς τὰς ἐκβολὰς τῶν ὑδάτων. Κατὰ τὴν ὁμαδικὴν ταύτην μετακίνησιν προηγοῦνται τὰ ἄρρενα καὶ ἀκολουθοῦσι τὰ θήλεα. Μετὰ τὴν φοτοκίαν ἐπανέρχονται πάλιν ὁμαδικῶς εἰς τὴν θάλασσαν. Κατὰ τὰς μεταναστεύσεις ταύτας τῶν ἰχθύων γίνεται καὶ ἡ ἐντατικὴ ἁλιεία τούτων. Κυριώτεροι τῶν μεταναστευτικῶν ἰχθύων εἶναι ὁ *ἀτταγαῖος* (κοιν. σολωμός), ὁ *ἔγχελυς* (κοιν. χέλι), ἡ *λάμπραινα* κτλ. Περὶ τῆς μεταναστεύσως τῶν θηλαστικῶν καὶ τῶν πτηνῶν βλ. λ. *ἀποδημητικά*.

Δ. Ν. Π.

— **μετανάστευσις τῶν ἐθνῶν.** Καλεῖται οὕτως ἡ μεγάλη κίνησις τῶν γερμανικῶν ἰδίως καὶ ἄλλων τινῶν λαῶν πρὸς τὴν νότιον καὶ τὴν δυτικὴν Εὐρώπην, ἥτις παρεσκεύασε τὴν μετάβασιν ἀπὸ τῶν ἀρχαίων εἰς τοὺς μεσαιωνικοὺς χρόνους, καταρρίψασα μὲν τὴν ρωμαϊκὴν δυναστείαν, ἀλλοιώσασα δὲ ριζικῶς τὴν ὄψιν τῆς Εὐρώπης, ἔνθα ἐκ τῆς ἐπικρατήσεως νέων στοιχείων, ταυτοχρόνως δὲ καὶ νέων ἰδεῶν, ἐμορφώθησαν νέοι λαοί, νέαι γλῶσσαι, νέα βασίλεια καὶ νέα ἠθικὴ καὶ κοινωνικὴ ὑπόστασις. Ὡς ἀρχὴ τῆς μεταναστεύσεως θεωρεῖται συνήθως ἡ εἰσβολὴ τῶν Οὔννων εἰς τὴν Εὐρώπην τῷ 373 μ. Χ., ἀλλὰ καὶ πρότερον ἀκόμη αἱ μεταναστεύσεις τῶν κελτικῶν φυλῶν πρὸς τὰς παριστρίους χώρας, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Ἑλληνικὴν χερσόνησον καὶ τὴν Μ. Ἀσίαν, καὶ ἔτι μᾶλλον αἱ ἐπιδρομαὶ τῶν Κίμβρων καὶ Τευτόνων ὑπῆρξαν τὰ προοίμια τοῦ μέλλοντος κλονισμοῦ (βλ. πλείονα εἰς λ. *βάρβαροι*).

**μεταναστευτικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετανάστευσιν: «μεταναστευτικὸν ρεῦμα»· || ὁ μεταναστεύων: «μεταναστευτικὰ πτηνά,—θηλαστικά».

**μεταναστεύω,** *ἀόρ. μετενάστευσα·* γίνομαι μετανάστης, ζητῶ νέαν πατρίδα, ἀποικῶ εἰς ἄλλην χώραν: «πολλοὶ μετενάστευσαν εἰς Ἀμερικήν».

**μετανάστης** (ὁ)· ὁ ζητῶν νέαν πατρίδα, ἄποικος εἰς ἄλλην χώραν: «οἱ Ἕλληνες μετανάσται».

**Μετάνειρα** *[Μυθολ.]*. Σύζυγος τοῦ Κελεοῦ, βασιλέως τῆς Ἐλευσῖνος, μήτηρ τοῦ Τριπτολέμου καὶ Δημοφῶντος, φιλοξενήσασα τὴν Δήμητρα ὅτε αὕτη ἀνεζήτει τὴν θυγατέρα της Περσεφόνην (*Ἀπολλ.* Α, 31). Αἱ παραδόσεις ἀπέδιδον εἰς αὐτὴν τὴν ἵδρυσιν τῆς λατρείας τῆς Δήμητρος ἐν Ἐλευσῖνι.

Α. Θ. Σ.

**μετάνεφρος** (ὁ) *[Ἀνατομ.]*. Οὕτω καλεῖται ὁ ἐπὶ τοῦ τελείου ἀνθρώπου μόνιμος νεφρός, ὅστις εἶναι νεόπλαστον ὄργανον. Πρὸ αὐτοῦ ὑπῆρξαν δύο ἕτεροι νεφροί, ὁ *πρόνεφρος* (=πρωτογενὴς νεφρός) καὶ ὁ μετὰ τοῦτον βλαστήσας *μεσόνεφρος* (=δευτερογενὴς νεφρὸς ἢ Βολφιανὸν σῶμα), οἵτινες ἀμφότεροι ὑπέπεσαν ἀλληλοδιαδόχως εἰς ἀχρηστίαν. Ὁ μετάνεφρος πλάσσεται ἐν στενῇ συναφείᾳ μετὰ τοῦ μεσονέφρου, ὃν καὶ διαδέχεται.

Ι. Π.

**μετανιλικὸν *ὀξύ,*** ἢ ***μ-ἀμινοβενζολοσουλφονικὸν ὀξὺ*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Εἶναι σουλφονικὸν παράγωγον τῆς *ἀνιλίνης* τοῦ τύπου $H_2N.C_6H_4.SO_3H$. Λαμβάνεται διὰ σουλφονώσεως τοῦ νιτροβενζολίου καὶ ἀναγωγῆς τοῦ παραγομένου μ-νιτροβενζολοσουλφοξέος. Χρησιμοποιεῖται εἰς μεγάλα ποσὰ εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν συνθετικῶν χρωμάτων.

Σ. Γ.

— **μετανιλικὸν *ἐρυθρὸν*** ἢ ***μετανίλης ἐρυθρὸν*** *[Βιομ. Χημ.]*. Λίαν ἀνθεκτικὴ εἰς τὸ φῶς ὀξίνη ἀζωχρωστικὴ τοῦ ἐρίου καὶ τῆς μετάξης.

Σ. Γ.

— **μετανιλικὸν *κίτρινον,*** ἢ ***μετανίλης κίτρινον*** *[Βιομ. Χημ.]*. Συνθετικὸν χρῶμα, ἀνῆκον εἰς τὴν τάξιν τῶν ὀξίνων ἀζωχρωμάτων. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1882 ὑπὸ τοῦ Hepp καὶ παρασκευάζεται ἐκ μετανιλικοῦ ὀξέος καὶ διφαινυλαμίνης. Εἶναι εὐδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν ἀλκοόλην καὶ χρησιμεύει πρὸς βαφὴν τοῦ ἐρίου καὶ τοῦ χάρτου, ὡς καὶ πρὸς παρασκευὴν λακκοχλωμάτων (βλ. καὶ *βενζολαζωδιμεθυλανιλίνη*).

Σ. Γ.

**μετανοητὴς** (ὁ). Ἀπὸ τῆς ἐμφανίσεως τοῦ νοβατιανοῦ σχίσματος ὑπῆρχον ἐν τῇ Δύσει ἴδιοι ἱερεῖς, καλούμενοι *μετανοηταὶ* (poenitentiarii), οἵτινες εἰς τὸν διὰ βαρείας ἁμαρτίας μετανοοῦντα διέγραφον τὴν διάρκειαν καὶ τὸν τρόπον τῆς μετανοίας, ὡς καὶ τῆς ἐπιστροφῆς. *Μετανοηταὶ* καλοῦνται ἐπίσης ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ οἱ ἀνήκοντες εἰς διάφορα τάγματα μετανοίας, ὧν τὰ μέλη ὑποβαλλόμενα εἰς αὐστηρὰν μετάνοιαν φροντίζουσι περὶ τῶν εἰς βαρείας ἁμαρτίας πιπτόντων, ὅπως καθοδηγήσωσιν αὐτοὺς εἰς μετάνοιαν.

Κ. Ι. Δ.

**μετανοητικός,** *—ή, —όν·* ὁ εὐκόλως μετανοῶν, ὁ πρόθυμος εἰς τὸ μετανοεῖν.

**μετάνοια** (ἡ)· ἡ διάθεσις τοῦ μετανοεῖν, μεταμέλεια, ἀναγνώρισις τῶν ἑαυτοῦ σφαλμάτων: «ἐν τῷ Ἅδῃ οὐκ ἔστι μετάνοια», «δάκρυα μετανοίας»· || γονυκλισία δι' ἀμφοτέρων τῶν γονάτων καὶ κλίσις τῆς κεφαλῆς μέχρις ἐδάφους, συνήθως ἐνώπιον ἁγίων εἰκόνων πρὸς δήλωσιν συντριβῆς καὶ εἰλικρινοῦς μετανοίας: «τοῦ 'βαλε ὁ πνευματικὸς κάνονα νὰ κάμῃ σαράντα μετάνοιες».

— *[Δογμ.] Μετάνοια* εἶναι τὸ μυστήριον, ἐν ᾧ παρέχεται τῷ ἐξομολογουμένῳ τὰ ἁμαρτήματα αὐτοῦ καὶ εἰλικρινῶς δι' αὐτὰ μετανοοῦντι ὑπὸ τοῦ Θεοῦ διὰ τοῦ ἱερέως ἡ ἄφεσις τῶν μετὰ τὸ βάπτισμα ἁμαρτιῶν. Τὸ μυστήριον τοῦτο συνέστησεν ὁ Κύριος μετὰ τὴν ἀνάστασιν (*Ἰωαν.* 26, 21), προαναγγείλας αὐτὸ πρὸ τῆς ἀναστάσεως (*Ματθ.* 16, 19 καὶ 18, 17). Ἔκτοτε ἡ ἐκκλησία τοῦ Χριστοῦ στοιχοῦσα τῇ διδασκαλίᾳ αὐτοῦ τελεῖ τὸ μυστήριον τῆς μετανοίας, ὡς ἐκ τῆς ἱερᾶς παραδόσεως φαίνεται. Κατὰ ταῦτα ἀτόπως ἡ διαμαρτυρομένη Ἐκκλησία ἀπέρριψε τὸ μυστήριον τοῦτο, δεχομένη ὅτι ἡ ἄφεσις τῶν ἁμαρτιῶν ἐπέρχεται ἁπλῶς διὰ τῆς μετανοίας. Πρὸς ἐνέργειαν τοῦ μυστηρίου τούτου ἀπαιτεῖται ἡ ἐξομολόγησις τῶν ἁμαρτιῶν ἐνώπιον τοῦ ἱερέως, ἡ ἀληθὴς μετάνοια, ἤτοι ἡ συντριβὴ τῆς καρδίας διὰ τὰ πραχθέντα ἁμαρτήματα καὶ ἡ σταθερὰ ἀπόφασις πρὸς διόρθωσιν, καὶ ἡ ὑπὸ τοῦ ἱερέως ἀνάγνωσις τῆς συγχωρητικῆς εὐχῆς μετ' ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ ἐξομολογουμένου. Διὰ τοῦ μυστηρίου τούτου ἐπέρχεται ἡ τελεία καὶ πλήρης ἄφεσις τῶν ἁμαρτιῶν, καὶ αὐτῶν τῶν βαρυτάτων. Ἡ γνώμη τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας ὅτι πρὸς τελείαν ἐξάλειψιν τῆς ἁμαρτίας πρέπει νὰ ἐξαλειφθῇ ἡ ἐξ αὐτῶν προερχομένη ἐνοχὴ καὶ ποινή, καὶ ἡ μὲν ἐνοχὴ ἐξαλείφεται διὰ τοῦ μυστηρίου τῆς μετανοίας, ἡ δὲ ποινή, ἥτις εἶναι ἀναγκαία πρὸς ἱκανοποίησιν τῆς διὰ τῆς ἁμαρτίας προσβληθείσης δικαιοσύνης τοῦ Θεοῦ, διὰ τῶν ἀγαθῶν ἔργων τοῦ ἐξομολογηθέντος (Σύνοδ. Τριδέντου 1418), στηρίζεται ἐπὶ παρερμηνείας χωρίων τῆς ἁγίας Γραφῆς καὶ τῶν πατέρων τῆς Ἐκκλησίας καὶ μάλιστα τῆς χρήσεως καὶ τοῦ σκοποῦ τῶν ἐπιτιμίων ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἐκκλησίᾳ. Τὰ ἐπιτίμια εἶναι φάρμακα ἰαματικὰ καὶ σωφρονιστικά, ὡς δέχεται ἡ ἀνατολικὴ Ἐκκλησία, οὐχὶ δὲ τιμωρίαι πρὸς ἱκανοποίησιν τῆς θείας δικαιοσύνης.

Κ. Ι. Δ.

—***μετάνοια ἔμπρακτος*** *[Ποιν. Δίκ.]*. Ἡ *μετάνοια* ἐνταῦθα, πρὸς τὴν ἔννοιαν τῆς ἠθικῆς (τουτέστιν ὡς σημαίνουσα ἀποκλειστικῶς τύψιν συνειδήσεως διὰ τὸ πραχθέν, ὅπερ συμφώνως πρὸς τὰς προσταγὰς τῆς ἠθικῆς δὲν ὤφειλε νὰ συμβῇ), ἐνέχει καὶ τὸν ἐκ καθαρῶς ἐγωϊστικῶν αἰτίων ἐκπορευόμενον πόθον, ὅπως τὸ ἐπιβλαβὲς γεγονὸς καταστῇ εἰ δυνατὸν ἀγέννητον. Συνεπῶς εἶναι ἀδιάφορον ἐκ τίνος λόγου ὁ δράστης «μετενόησε» διὰ τὸ πραχθέν, ἀρκεῖ νὰ ἐξεδήλωσε τὴν μετάνοιαν αὐτοῦ «ἐμπράκτως». Περὶ ἐμπράκτου μετανοίας ἐν τῷ ποινικῷ δικαίῳ, ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τοῦ τε θετέου καὶ τοῦ θετοῦ δικαίου, δύναται νὰ γίνῃ λόγος ἐπί τε τῆς ἀποπείρας, καὶ δὴ τῆς ἀποπερατωθείσης τοιαύτης, καὶ ἐπὶ τῶν τετελεσμένων ἐγκλημάτων ἁπλῆς δράσεως. Ἡ πλέον διαδεδομένη διδασκαλία περὶ τοῦ λόγου, ὅστις ἀναγκάζει τὴν ἔνδικον τάξιν ὅπως λαμβάνῃ ὑπ' ὄψιν τὴν ἔμπρακτον μετάνοιαν τοῦ δράστου, εἶναι ὅτι ἀποσκοπεῖται ἡ παρεμπόδισις τῆς προσβολῆς τοῦ προστατευομένου ἐνδίκου ἀγαθοῦ, δημιουργουμένης ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ δράστου τῆς ἐλπίδος ὅτι διὰ τῆς «παραιτήσεως ἀπὸ τῆς ἐπιχειρήσεως» ἡ πρᾶξις αὐτοῦ θέλει κριθῇ ἐπιεικέστερον ἢ ὅτι θέλει παραμείνει καὶ ἐντελῶς ἀτιμώρητος. Ἐκλαμβάνεται δηλαδὴ συνήθως ἡ λόγῳ ἐμπράκτου μετανοίας ἀτιμωρησία ἢ ἐπιεικεστέρα τιμώρησις ὡς ἀνταμοιβὴ τῆς παρεχομένης ὑπὸ τῆς ἐνδίκου τάξεως εἰς τὸν δράστην, εἰς ἣν περίπτωσιν οὗτος, κατακινδυνεύσας τὸ προστατευόμενον ἔνδικον ἀγαθόν, ἀπέσχε τῆς προσβολῆς αὐτοῦ ἢ ἀπέτρεψεν αὐτήν. Τοῦτο δηλοῖ ὅτι ἡ σημασία τῆς ἐμπράκτου μετανοίας ἐν τῷ ποινικῷ δικαίῳ ἐκπορεύεται ἐξ ὑπολογισμῶν πολιτικῆς κατὰ τοῦ ἐγκλήματος. Ἡ θεωρία αὕτη ἐν τούτοις δὲν εἶναι εἰς θέσιν νὰ ἐξηγήσῃ τὴν ἀτιμωρησίαν εἰς ἃς περιπτώσεις ἡ ἔμπρακτος μετάνοια οὐδαμῶς ὑπηγορεύθη εἰς τὸν δράστην ὑπὸ τῆς σκέψεως τῆς ἀναμενομένης ἀνταμοιβῆς. Ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐγκληματούντων, οἵτινες γνωρίζουν ἀπὸ στήθους τὸν ποινικὸν νόμον, εἶναι περιωρισμένος, συνεπῶς καὶ ἡ ἐκ τῆς ἐμπράκτου μετανοίας ἀνταμοιβὴ παρὰ τοῖς πλείστοις ἐξ αὐτῶν δὲν ὑπολογίζεται συνήθως. Ἡ ἐν τῷ ποινικῷ δικαίῳ σημασία τῆς ἐμπράκτου μετανοίας ὀφείλεται μᾶλλον εἰς τὰ συναισθήματα τῆς ἐπιεικείας, ἅτινα γεννᾷ παρὰ τῷ λαῷ ὁ ἐμπράκτως μετανοῶν.

Ὁ τρόπος κατὰ τὸν ὁποῖον ἡ ἔμπρακτος μετάνοια λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν ἐν τοῖς διαφόροις ποινικοῖς νόμοις εἶναι διάφορος. Οἱ πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν οὐδεμίαν γενικὴν διάταξιν περὶ ἐμπράκτου μετανοίας περιέχουν, ἀλλὰ θεσπίζουν ταύτην μόνον ἐπὶ ὡρισμένων ἐγκλημάτων, εἴτε ὡς λόγον ἀτιμωρησίας, εἴτε ὡς λόγον ἁπλῆς μειώσεως τῆς ποινῆς. Οὕτω π. χ. κατὰ τὸν γερμανικὸν ποινικὸν κώδικα

Digitized by Google

(§ 158) ἡ ποινὴ τοῦ ψευδόρκου, ὅστις ἀνεκάλεσε τὴν ψευδῆ ἐξαγγελίαν μειοῦται μέχρι τοῦ τετάρτου· ὁ ἐμπρηστὴς ὅστις κατέσβεσε τὸ ὑπ' αὐτοῦ τεθὲν πῦρ πρὶν ἢ ἐπέλθῃ ζημία τις μένει ἀτιμώρητος (§ 310)· ὁ εἰς μονομαχίαν προκαλέσας ἢ τὴν πρόκλησιν ἀποδεχθεὶς μένει ἀτιμώρητος, ἂν τὰ μέρη παρῃτήθησαν τῆς μονομαχίας πρὸ τῆς ἐνάρξεως αὐτῆς (§ 204). Ὁ ἡμέτερος ποινικὸς νόμος περιέχει κατ' ἀρχὴν διατάξεις περὶ ἐμπράκτου μετανοίας ἐν τῷ γενικῷ μέρει. Ἔμπρακτον μετάνοιαν νοεῖ κυρίως ὁ ἡμέτερος ποινικὸς νόμος τὴν ἐν ἄρθροις 113 καὶ 114 ρυθμιζομένην. Ἀλλὰ περὶ ἐμπράκτου μετανοίας (taetige Rene) δύναται νὰ γίνῃ λόγος καὶ κατ' ἄλλας διατάξεις τοῦ ποινικοῦ νόμου. Καὶ πρῶτον ὁ τοιοῦτος χαρακτηρισμὸς προσήκει εἰς τὴν μετὰ τὴν ἀποπερατωθεῖσαν ἀπόπειραν «παραίτησιν ἀπὸ τῆς ἐπιχειρήσεως». Ὁ Κωστῆς καὶ ὁ Ἡλιόπουλος διδάσκουν ὅτι ὑπαναχώρησις ἐκ τῆς ἀποπερατωθείσης ἀποπείρας (Rücktritt vom beendigten Versuch) δὲν εἶναι δυνατὴ κατὰ τὸν ἡμέτερον νόμον. Τὴν διδασκαλίαν στηρίζουσιν ἐπὶ ἑρμηνείας τῆς ἐν τῷ ἄρθρῳ 51 τοῦ ποινικοῦ νόμου ἀπαντώσης ἐκφράσεως «παρῃτήθη τῆς ἐπιχειρήσεως». Ὑπὸ τῶν μνησθέντων συγγραφέων ὡς «ἐπιχείρησις» ἐκλαμβάνεται ἡ ἀπόπειρα, ἐνῷ ὑπὸ τοῦ νόμου ὡς «ἐπιχείρησις» νοεῖται ἡ συντέλεσις τοῦ ἐγκλήματος. Συνεπῶς ὁ κατὰ τοὺς ὅρους τοῦ ἄρθρου 51 καὶ μετὰ τὴν ἀποπερατωθεῖσαν ἀπόπειραν τῆς συντελέσεως τοῦ ἐγκλήματος παραιτηθείς, ὑπανεχώρησεν ἐκ τῆς ἀποπείρας μετανοήσας ἐμπράκτως, τουτέστιν ἀποτρέψας τὴν συντέλεσιν (τὴν ἐπέλευσιν τοῦ ἀποτελέσματος) διὰ θετικῆς ἐνεργείας. Ὁ Α πέμπει εἰς τὸν Β διὰ τοῦ ταχυδρομείου δέμα περιέχον ἐκρηκτικὰς ὕλας, αἵτινες πρόκειται νὰ ἐκραγοῦν καθ' ὃν χρόνον θὰ ἀνοίγηται τὸ δέμα. Ἀλλ' ὁ Α μεταγνοὺς εἰδοποιεῖ τὴν τελευταίαν στιγμὴν τὸν τὸ δέμα παραλαβόντα Β καὶ τοιουτοτρόπως ἀποτρέπεται τὸ ἀποτέλεσμα. Ἐὰν ἡ τελευταία αὕτη ἐνέργεια τοῦ Β ἐτελέσθη κατὰ τοὺς ὅρους τοῦ ἄρθρου 51, παρὰ τὴν διδασκαλίαν τοῦ Κωστῆ καὶ τοῦ Ἡλιοπούλου, ὁ Β παραμένει ἀτιμώρητος λόγῳ ὑπαναχωρήσεως ἐκ τῆς ἀποπείρας, ἥτις ἐνταῦθα εἶναι οὐσιαστικῶς ἔμπρακτος μετάνοια. Ὁ χαρακτηρισμὸς τῆς ἐμπράκτου μετανοίας προσήκει ἐπίσης εἰς περιπτώσεις τινὰς περιεχομένας ἐν ταῖς περὶ συμμετοχῆς διατάξεσι τοῦ ἡμετέρου ποινικοῦ νόμου. Τοιαῦται περιπτώσεις εἶναι αἱ ἐν τοῖς ἄρθροις 63,64,65,70,80 μνημονευόμεναι. Κυρίως ὅμως, ὡς ἐλέχθη καὶ ἀνωτέρω, ὡς ἔμπρακτος μετάνοια νοεῖται ἡ ἐν ἄρθροις 113 καὶ 114 τοῦ ποινικοῦ νόμου ρυθμιζομένη.

Τὸ ἄρθρον 113 ἔχει ὡς ἑξῆς: «Ὅστις εἰς ἀξιόποινόν τινα πρᾶξιν, πρὸς τελείωσιν τῆς ὁποίας ὁ νόμος δὲν ἀπαιτεῖ ὡρισμένον τι ἀποτέλεσμα, ἔφερε μὲν εἰς πέρας τὴν τελεσιουργὸν πρᾶξιν, ἀλλ' ἑκουσίως καὶ αὐθορμήτως καὶ πρὶν ἔτι τὸ δι' αὐτῆς σκοπούμενον ἀποτέλεσμα συμβῇ, ὡς καὶ πρὶν ὑποβληθῇ εἰς ἐξέτασιν περὶ αὐτῆς καθ' οἱονδήποτε τρόπον ἐνώπιόν τινος ἀρχῆς, τὴν κατέστησε διά τινος ἄλλης πράξεως πάντῃ ἄπρακτον, ἢ ἄλλως μὲ τρόπον ἀναμφισβήτητον ἐφανέρωσεν ὅτι ἀπέβαλε διόλου τὸν παράνομον σκοπόν, ὁ τοιοῦτος, ἐὰν ἐκ τῆς πράξεώς του δὲν ἐγεννήθη ἀκόμη καμμία βλάβη, εἶναι ἐξῃρημένος πάσης ποινῆς, ἐκτὸς τῶν διατεταγμένων ὡς πρὸς τὰ κακουργήματα, τὰ ὁποῖα προβλέπουσι τὰ ἄρθρα 123—128. Ὁ παρὼν ὁρισμὸς δὲν ἐφαρμόζεται μόλον τοῦτο εἰς τὴν ψευδορκίαν». Ἡ διάταξις αὕτη τοῦ ἡμετέρου ποινικοῦ νόμου ἐλήφθη ἐκ τῶν μεταγενεστέρων βαυαρικῶν νομοσχεδίων, τοῦ βαυαρικοῦ ποινικοῦ νόμου τοῦ 1813 μὴ περιέχοντος παρομοίαν διάταξιν, ἀφορᾷ δὲ τὰ λεγόμενα «τυπικὰ» ἐγκλήματα. Ὅροι τῆς κατὰ τὸ ἄρθρον τοῦτο λόγῳ ἐμπράκτου μετανοίας ἀτιμωρησίας εἶναι οἱ ἑξῆς: Ὁ τὴν τετελεσμένην πρᾶξιν διά τινος ἄλλης πράξεως πάντῃ ἄπρακτον καταστήσας πρέπει νὰ ἔπραξε τοῦτο: α) Ἑκουσίως καὶ αὐθορμήτως. Παραδείγματα ἑκουσίας μετανοίας προσφέρει αὐτὸς οὗτος ὁ ποινικὸς νόμος, ἐν ἄρθρῳ 51, τὴν τύψιν τοῦ συνειδότος, τὴν συμπάθειαν, τὸν φόβον τῆς ποινῆς. Ὡς ἀντίθεσιν πρὸς τὸ ἑκούσιον καὶ αὐθόρμητον μνημονεύει τὸ αὐτὸ ἄρθρον «τὰ ἐξωτερικὰ ἐμπόδια». Ἑκουσίως καὶ αὐθορμήτως μετανοεῖ π. χ. ὁ παραχαράκτης, ὅστις κατασκευάσας μὲ τὸν δόλον τοῦ ἐγκλήματος τῆς παραχαράξεως χρυσᾶ νομίσματα κατωτέρας ἐσωτερικῆς ἀξίας τῶν γνησίων, ἔτηξε καὶ πάλιν ταῦτα εἰς μὴ σεσημασμένον χρυσόν, διότι σταθμίσας τὰ ὠφελήματα καὶ τοὺς κινδύνους εὗρε τὰ ὠφελήματα ἐκ τῆς πράξεως αὐτοῦ δυσανάλογα πρὸς τὴν ἀπειλουμένην ποινήν. Τοὐναντίον, ἡ μετάνοια δὲν εἶναι ἑκουσία καὶ αὐθόρμητος, ὅταν ἡ τῆξις τῶν κατασκευασθέντων νομισμάτων ἐγένετο μετὰ τὴν ὑπὸ συνεργοῦ τινος καταγγελίαν τῆς παραχαράξεως, ἧς καταγγελίας ὁ δράστης ἔλαβε γνῶσιν. β) Ἡ μετάνοια νὰ ἐξεδηλώθη πρὶν ἢ ἔτι συμβῇ τὸ διὰ τῆς πράξεως σκοπούμενον ἀποτέλεσμα. Ὁ ὅρος οὗτος ἐλλείπει π. χ. ὅταν πλαστογράφος τις ἑκουσίως καὶ αὐθορμήτως εἰδοποιήσῃ τὸν ἐν τῇ ψευδεῖ συναλλαγματικῇ ὡς ἀποδέκτην φερόμενον, μετὰ τὴν εἰς τὸν συνεργὸν αὐτοῦ ἐν ἀγνοίᾳ τοῦ αὐτουργοῦ ὑπὸ τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀποδέκτου ἐξόφλησιν τῆς συναλλαγματικῆς. γ) Ἡ μετάνοια δέον νὰ ἐγίνετο πρὶν ἢ ὁ δράστης ὑποβληθῇ εἰς ἐξέτασιν περὶ τῆς πράξεως καθ' οἱονδήποτε τρόπον ἐνώπιόν τινος ἀρχῆς. Ὁ ὅρος οὗτος ἐξηγεῖται ἐκ τοῦ ἑτέρου ὅρου περὶ ἑκουσίου καὶ αὐθορμήτου τῆς μετανοίας.

Τὴν ἔμπρακτον μετάνοιαν δὲν δύνανται νὰ ἐπικαλεσθοῦν οἱ ἔνοχοι ἐσχάτης προδοσίας, συνωμοσίας καὶ ἐν γένει ἐγκλήματός τινος ἁπλῆς δράσεως, περιεχομένου ἐν τοῖς ἄρθροις 123—128 τοῦ ποινικοῦ νόμου. Ὁ λόγος τῆς ἐξαιρέσεως ταύτης ὀφείλεται εἰς τὴν ἐξόχως διακεκριμένην σοβαρότητα τῶν ἐγκλημάτων τούτων, στρεφομένων κατὰ τῆς ὑποστάσεως αὐτῆς ταύτης τῆς πολιτείας. Ἐπίσης ὁ περὶ ἐμπράκτου μετανοίας ὁρισμὸς δὲν ἐφαρμόζεται ἐπὶ ψευδορκίας. Τὸ ἄρθρον 114 τοῦ ποινικοῦ νόμου ἔχει ὡς ἑξῆς: «Εἰς ἀξιοποίνους πράξεις, πρὸς τελείωσιν τῶν ὁποίων ὁ νόμος ἀπαιτεῖ ὡρισμένον τι ἀποτέλεσμα, ἡ διὰ τὴν προξενηθεῖσαν βλάβην ἀποζημίωσις, τὴν ὁποίαν παρέχει ὁ πράξας ἑκουσίως καὶ αὐθορμήτως, καὶ πρὶν ἔτι ὑποβληθῇ εἰς ἐξέτασιν καθ' οἱονδήποτε τρόπον ἐνώπιόν τινος ἀρχῆς, δὲν ἀποκλείει τὸ ἀξιόποινον, πλὴν μόνον εἰς τὰς παρὰ τοῦ νόμου ὡρισμένας περιπτώσεις». Τὸ ἄρθρον τοῦτο ἀφορᾷ τὰ οὐσιαστικὰ ἐγκλήματα, ἐπὶ τῶν ὁποίων κατ' ἀρχὴν ἀποκλείει τὸ ἀτιμώρητον λόγῳ ἐμπράκτου μετανοίας. Ἔμπρακτος μετάνοια ἐπὶ τῶν οὐσιαστικῶν ἐγκλημάτων δὲν εἶναι δυνατή, ὁ ἀποκτείνας π. χ. δὲν δύναται νὰ ἐκδηλώσῃ ἐμπράκτως τὴν μεταμέλειάν του, ἀποδίδων εἰς τὸν θανατωθέντα τὴν ζωήν. Ἀλλὰ ἐπὶ τῶν κατὰ τῆς περιουσίας κατευθυνομένων ἐγκλημάτων εἶναι φανταστὴ ἔμπρακτος μετάνοια, γιγνομένη δι' ἐπανορθώσεως τῆς προξενηθείσης περιουσιακῆς βλάβης. Ταύτην τὴν ἔμπρακτον μετάνοιαν ἀποκλείει ὁ νόμος κατ' ἀρχήν, ἐξαιρῶν ὡρισμένας περιπτώσεις καὶ δὴ τὴν κλοπήν, τὴν ὑπεξαίρεσιν καὶ τὴν ἀπάτην. Κατὰ τὸ ἄρθρον 378 τοῦ ποινικοῦ νόμου, δὲν γίνεται ἀνάκρισις οὔτε καταγινώσκεται ποινὴ ἐπὶ κλοπῇ, ὅταν ὁ κλέψας πρὶν ἔτι ἐξετασθῇ ὁπωσδήποτε περὶ τῆς πράξεώς του παρὰ τῆς ἀρχῆς ἢ παρὰ τοῦ δικαστηρίου ἐνήργησεν ἄνευ παρανόμου βλάβης τρίτου τινὸς τὴν ἀπόδοσιν ἢ τὴν πλήρη ἀποκατάστασιν τοῦ ὑφαιρεθέντος πράγματος ἢ τὴν ἐντελῆ ἱκανοποίησιν τοῦ ζημιωθέντος. Ἐὰν ἡ ἀπόδοσις ἢ ἡ ἱκανοποίησις ἔγινεν ἐν μέρει μόνον, ὁ ὑφαιρέσας δὲν ἀπαλλάσσεται διὰ τοῦτο ἐντελῶς τῆς ποινῆς· καὶ καθ' ὅσον ὁ προσδιορισμὸς καὶ ἡ ἐπιμέτρησις αὐτῆς ἐξήρτηται ἐκ τῆς ἀξίας τοῦ κλαπέντος πράγματος, καταγιγνώσκεται τοσαύτη μόνον ποινή, ὅση ἀναλογεῖ κατὰ τὸν νόμον εἰς τὸ μετὰ τὴν ἀφαίρεσιν τοῦ ἐπιστραφέντος ὑπολειπόμενον. Ἡ διάταξις αὕτη διατηρεῖ μὲν τὸν ὅρον τῆς μὴ ἐξετάσεως ἐνώπιον τῆς ἀρχῆς, οὐχὶ ὅμως καὶ τὸν τοῦ ἑκουσίου καὶ αὐθορμήτου. Συνεπῶς ἐνταῦθα γεννᾶται τὸ ζήτημα ποία ἐξέτασις νοεῖται ὑπὸ τοῦ νόμου. Δεδομένου ὅτι ἀρχὴ δὲν εἶναι καὶ τὰ ὄργανα αὐτῆς, ἕπεται ὅτι, κατὰ τὴν ὀρθοτέραν δόξαν, ᾗ τινι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἀκολουθεῖ καὶ ἡ πρακτική, ὅτι ἡ ὑπὸ χωροφύλακος, ὑπαξιωματικοῦ ἢ ἀξιωματικοῦ τῆς χωροφυλακῆς γενομένη προεισαγωγικὴ ἐξέτασις οὐδαμῶς ἀποκλείει ἐνταῦθα τὴν ἔμπρακτον μετάνοιαν. Κατὰ τὰ ἄρθρα 393 καὶ 402 τοῦ ποινικοῦ νόμου ἡ διάταξις τοῦ ἄρθρου 378 ἔχει ἐφαρμογὴν καὶ ἐπὶ τῆς ὑπεξαιρέσεως καὶ τῆς ἀπάτης. Εἰδικαὶ διατάξεις περὶ ἐμπράκτου μετανοίας ἀπαντῶνται ἐπίσης καὶ εἰς ἕτερα ἄρθρα τοῦ ποινικοῦ νόμου. Οὕτω, κατὰ τὸ ἄρθρον 183, οἱ ἐπιτετραμμένοι τὴν ἐπαγρύπνησιν ἢ φύλαξιν ἀποδράντος φυλακισμένου, ἐὰν ἡ ἀπόδρασις ἐγένετο ἐξ ἀμελείας αὐτῶν μένουσιν ἀτιμώρητοι, ἐὰν διὰ τῆς προσπαθείας των συνελήφθη πάλιν ὁ ἀποδρὰς ἐντὸς 8 ἡμερῶν. Κατὰ τὸ ἄρθρον 291 ὁ ἐξ ἀμελείας φαρμακεύσας μένει ἐλεύθερος πάσης ποινῆς, ἐὰν εἴτε μόνος, ἢ ἐπικαλούμενος ταχέως τὴν βοήθειαν τῆς ἀρχῆς ἢ ἄλλου τινός, ἀποτρέψῃ ἢ ζητήσῃ νὰ ἀποτρέψῃ ἀμέσως τὴν βλάβην, ἥτις ἠδύνατο νὰ προέλθῃ ἐκ τῆς ἀπερισκέπτου φαρμακείας. Κατὰ δὲ τὸ ἄρθρον 418 ἐξαιρεῖται πάσης ποινῆς ὁ ἐξ ἀμελείας γινόμενος αἴτιος τοῦ ἐμπρησμοῦ, ἐὰν τὸ καταπαύσῃ ὁ ἴδιος ἢ διὰ τῆς ταχείας πρὸς τὴν ἀρχὴν ἀγγελίας του δώσῃ ἀφορμὴν πρὸς κατάπαυσιν ἢ ἀνακοπὴν τῆς διαδόσεως τοῦ πυρός. Τέλος ἐν ἄρθρῳ 115 ὁρίζει ὁ νόμος ὅτι πράξεις σύρουσαι μὲν εἰς ἑαυτὰς τὴν ποινὴν τοῦ θανάτου, τῶν δεσμῶν ἢ τῆς εἱρκτῆς, μένουσαι δὲ ἀτιμώρητοι ἕνεκα ἐμπράκτου μετανοίας (ἄρθρ. 113 καὶ 114) συνεπάγονται δυνάμει τοῦ νόμου τὴν ἰδιαιτέραν ἀστυνομικὴν ἐπιτήρησιν.

Κατὰ τὸ ἐδάφιον 5 τοῦ ἄρθρου 10 τοῦ νόμου 3286 τῆς 21/23 Φεβρουαρίου 1925, ἡ ἔμπρακτος μετάνοια ἐπὶ παντὸς κατὰ τῆς περιουσίας ἀδικήματος, τελεσθέντος μέχρι τῆς 23 Ἀπριλίου 1924, εἶχεν ἐπιτραπῆ εἰς πᾶσαν τῆς δίκης στάσιν καὶ τὸ ἀκροατήριον. Ὁ νόμος οὗτος ἐξεδόθη πρὸς διόρθωσιν ἀνακολουθιῶν καὶ δυσχερειῶν προκληθεισῶν ἐκ τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 23 Ἀπριλίου 1924 «Περὶ ἀμνηστείας, παραγραφῆς ποινῶν, παραγραφῆς ἀδικημάτων τινῶν κλπ.», ἀκυρώσας τὸν εἴς τινα φύλλα τῆς Ἐφημερίδος τῆς Κυβερνήσεως δημοσιευθέντα νόμον 3109, οὗτινος δὲν εἶχον κυρωθῆ ὑπὸ τοῦ προέδρου τῆς δημοκρατίας ὅλαι αἱ διατάξεις. Ἡ ἔμπρακτος μετάνοια εἶναι λόγος αἴρων τὸ ἀξιόποινον τῆς πράξεως. Οὕτω παρ' ἡμῖν. Εἰς ἄλλας νομοθεσίας εἶναι λόγος μειώσεως τῆς ποινῆς.

Τὸ ἑλληνικὸν σχέδιον (1924) δὲν περιέχει γενικὴν διάταξιν περὶ ἐμπράκτου μετανοίας. Ἐν τῇ αἰτιολογικῇ ἐκθέσει σελ. 192 ἀναπτύσσονται τὰ ἑξῆς: «Κατὰ τὴν κρατήσασαν γενικῶς ἐν τῇ ἐπιστήμῃ καὶ τῇ νομοθεσίᾳ γνώμην, ἡ θέσις τῶν περὶ ἐμπράκτου μετανοίας διατάξεων εἶναι ἐν τῷ εἰδικῷ μέρει, καθόσον μετὰ τὴν ἐξερεύνησιν τῆς ἐννοίας ἑνὸς ἑκάστου ἐγκλήματος δύναται νὰ γνωσθῇ ἂν ἡ ἀπὸ τῆς ποινῆς ἀπαλλαγὴ λόγῳ ἐμπράκτου μετανοίας συμβιβάζεται πρὸς τὴν φύσιν αὐτοῦ. Τὴν ἀρχὴν δὲ ταύτην ἀκολουθοῦντες ἐν τῷ εἰδικῷ μέρει, προσεθέσαμεν διατάξεις περὶ ἐμπράκτου μετανοίας ἐφ' ὧν ἐγκλημάτων ἐκρίναμεν ὅτι εἶναι παραδεκτὴ καὶ ἐκπληροῖ τὸν ἐπιδιωκόμενον σκοπόν».

[Πρβλ. *Κωστῆν* (1. 492 ἑπ.), *Ἡλιόπουλον* (407). — *Schoetensack,* Vergl. Darst. (II 433 ἑπ.).]

Χ. Ν. ΤΖΩΡΤΖΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μετανοίας *Οἶκος*** *[Βυζαντ.]*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο ἀναφέρονται δύο εὐαγεῖς οἶκοι ἐν Κωνσταντινουπόλει, χρησιμεύοντες ἐπὶ τῶν βυζαντινῶν χρόνων πρὸς περισυλλογὴν καὶ ἐξάγνισιν τῶν μεταμελουμένων φαυλοβίων γυναικῶν. Ὁ εἷς ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ Ἰουστινιανοῦ καὶ τῆς Θεοδώρας, ὅπου πρότερον ὑπῆρχεν ἡ μεγαλοπρεπὴς μονὴ τῆς Θεοτόκου, τῆς ἐπιλεγομένης *Μετανοίας*, μεταξὺ τῶν νῦν προαστείων Κούλελη καὶ Τσεγκέλ-κιοϊ. Ταύτην ἐξωραΐσαντες καὶ διὰ πλουσίων προσόδων πλουτίσαντες, κατέστησαν τοιοῦτον τὸν ἐν αὐτῇ βίον, «ὥστε μηδενὶ ἀναγκασθεῖσαι πρὸς τὰ τῆς σωφροσύνης ἐπιτηδεύματα τρόπῳ ὁτῳοῦν ἀποκνήσουσι» (*Προκ.* Περὶ Κτισμ. I, 9, 10). Τῆς μονῆς ταύτης λείψανον κατὰ πᾶσαν πιθανότητα εἶναι τὸ ἐν Τσεγκέλ-κιοϊ ἔν τινι ἀμπέλῳ τιμώμενον ἁγίασμα. Ὁ δὲ ἄλλος ἀνεκαινίσθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Κωνσταντίνου Θ' τοῦ Μονομάχου, περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΑ' αἰῶνος.

Α. Θ. Σ.

**μετάνοιωμα** (τό)· δημοτ., τὸ νὰ μετανοιώσῃ τις, μεταμέλεια, μετάνοια.

**μετανοιώνω,** ἀόρ. *μετάνοιωσα,* παθ. μετοχ. *μετανοιωμένος*· μετανοῶ, μεταμελοῦμαι: «μετάνοιωσα ποῦ ἔφυγα, ἔπρεπε νὰ μείνω ἀκόμη», «εἶμαι μετανοιωμένος γιὰ ὅσα εἶπα».

**μετανοῶ** (—*έω*), ἀόρ. *μετενόησα,* παθ. μετοχ. δημοτ. *μετανοημένος*· μεταβάλλω γνώμην, μεταμελοῦμαι, κοιν. *μετανοιώνω*: «θὰ μετανοήσῃς ἀργότερα δι' ὅσα τώρα κάμνεις», «εἶπε ὅτι θὰ τὸν τιμωρήσῃ, ἀλλὰ κατόπιν μετενόησε».

**μέταξα** (ἡ), κοιν. *μετάξι* (τό)· ὕλη κλωστικὴ καὶ ὑφαντική, ἐκκρινομένη ὑπὸ τῆς κάμπης τοῦ βόμβυκος τῆς μορέας (μεταξοσκώληκος)· || νῆμα κατεσκευασμένον ἐκ τῆς ὕλης ταύτης· || τεχνητὴ ὕλη προσομοιάζουσα πρὸς τὴν φυσικὴν μέταξαν.

[Ἡ λέξις ἐν τῇ ἑλληνικῇ γλώσσῃ ἀπαντᾷ τὸ πρῶτον ὡς *μάταξα* καὶ σημαίνει τὸ νῆμα τῆς στάθμης. Μὲ τὴν πραγματικήν της σημασίαν καὶ τύπον υἱοθετήθη κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους τῆς ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας· ἀπαντῶσιν ὅμως καὶ οἱ τύποι: *μέταξον* (τὸ) καὶ *μεταξὶς* (ἡ).] Β.Δ.Θ.

—[ΕΓΚΥΚΛ.] Ἡ μέταξα παράγεται ἐξ ἰξώδους τινὸς ὑγροῦ, τὸ ὁποῖον ἐκκρίνει, ὑπὸ μορφὴν λεπτοτάτων νημάτων, ἡ κάμπη ἰδίως τοῦ *βόμβυκος τῆς μορέας*, ἡ κοινῶς γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *μεταξοσκώληξ* (βλ. λ.). Τὰ νηματοειδῆ ἐκκρίματα ἐξέρχονται ἐκ δύο ταυτοχρόνως ὀπῶν, εὑρισκομένων ὑπὸ τὸ στόμα τῆς κάμπης, εἰς πάχος 0,003 ἕως 0,036 τοῦ χιλιοστομέτρου, συνενοῦνται δὲ κατὰ τὴν ἔξοδόν των εἰς ἑνιαῖον νῆμα, ξηραινόμενον ἀμέσως ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀτμοσφαίρας. Τὸ νῆμα τοῦτο χρησιμοποιεῖ ὁ μεταξοσκώληξ διὰ τὴν κατασκευὴν τοῦ βομβυκίου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ἐγκλείεται μέχρι τῆς μεταμορφώσεώς του εἰς χρυσαλλίδα καὶ ψυχήν. Εἰς ἕκαστον βομβύκιον τὸ μῆκος τοῦ νήματος ποικίλλει ἀπὸ 300 μέχρι 1500 μέτρων, ἡ δὲ ἀνθεκτικότης αὐτοῦ κυμαίνεται μεταξὺ 4 καὶ 15 γραμμαρίων. Τὸ χρῶμά του ποικίλλει ἀπὸ τοῦ ὑποπρασίνου μέχρι τοῦ κιτρίνου καὶ τοῦ λευκοῦ, οἱ σκώληκες ἐν τούτοις τῆς ἰδίας φυλῆς δίδουν ὁμοιόχρωμα περίπου βομβύκια. Ἔτι πλέον ἀνομοιόμορφον εἶναι τὸ πάχος τοῦ νήματος κατὰ τὰς διαφόρους θέσεις τοῦ μήκους αὐτοῦ, λόγῳ τοῦ τρόπου μὲ τὸν ὁποῖον ὁ σκώληξ τὸ περιελίσσει περὶ ἑαυτὸν κατὰ τὴν κατασκευὴν τοῦ βομβυκίου. Αἱ ἀνισότητες αὗται διορθοῦνται κατὰ τὴν κλῶσιν, καθ' ἣν συνενοῦνται ἐπὶ ταὐτὸ πολλὰ συγχρόνως φυσικὰ νήματα.

Παρεκτὸς τοῦ μεταξοσκώληκος τῆς μορέας, χρησιμοποιοῦνται καὶ ἄλλαι κάμπαι τοῦ γένους τῶν βομβυκιδῶν διὰ τὴν παραγωγὴν μετάξης, τῆς ὁποίας ὅμως ἡ ποιότης εἶναι κατὰ πολὺ ὑποδεεστέρα. Κυριώτερα μεταξὺ τούτων εἴδη εἶναι ὁ Attacus Yama-mai τῶν ἰαπωνικῶν δρυῶν, οὗτινος ἡ μέταξα δὲν διαφέρει κατὰ πολὺ τῆς προηγουμένης, οἱ ἐν Ἰνδίαις ζῶντες βόμβυκες Attacus cynthia, Attacus arrindia καὶ Bombyx mylitta, καθὼς καὶ ἄλλα τινὰ εἴδη συναντώμενα ἐν Ἀσίᾳ, Ἀφρικῇ καὶ Β. Ἀμερικῇ. Εἰς Μαδαγασκάρην ἐξ ἄλλου ἤρχισεν ἐπ' ἐσχάτων δοκιμαστικὴ χρησιμο-

Digitized by Google

ποίησις νέου τινὸς εἴδους μετάξης, προερχομένης ἀπὸ τὰ ἐκκρίματα μεγαλοσώμου ἀράχνης.

[Περὶ τῆς διατροφῆς τῶν μεταξοσκωλήκων βλ. λ. *σηροτροφία*, περὶ δὲ τῆς κατεργασίας καὶ χρησιμοποιήσεως τῆς μετάξης εἰς τὴν κλωστικὴν καὶ ὑφαντουργίαν, βλ. λ. *μεταξοβιομηχανία*.]

— [ΙΣΤΟΡ.] Βεβαιωμένον φαίνεται ὅτι ἡ μέταξα ἐχρησιμοποιήθη τὸ πρῶτον ἐν Κίνᾳ πρὸς ὕφανσιν εἰδῶν ἐνδυμασίας καὶ στολισμοῦ εἰς ἐποχὴν ἀπέχουσαν κατὰ 35—40 αἰῶνας ἀπὸ τῆς γεννήσεως τοῦ Χριστοῦ. Οἱ Κινέζοι συγγραφεῖς ἐν τούτοις ἀνάγουν τὴν χρησιμοποίησίν της εἰς πολὺ μεταγενεστέρους χρόνους. Κατ' αὐτοὺς ἡ Σὶ-Λὶνγκ-Λέ, σύζυγος τοῦ περιφήμου αὐτοκράτορος Χοὰνγκ-Τὶ ὑπῆρξεν ἡ ἀνακαλύψασα ἐν ἔτει 2602 τὴν τέχνην τῆς ἐκτροφῆς τοῦ μεταξοσκώληκος καὶ τῆς κατασκευῆς ὑφασμάτων διὰ τῶν νημάτων τοῦ βομβυκίου του. Ἔκτοτε ἀπεδόθη εἰς τὴν νέαν τέχνην ἱερὸς οὕτως εἰπεῖν χαρακτήρ. Ἡ μεταξουργία, ἐντοπισθεῖσα ἐπὶ διάρκειαν εἴκοσιν αἰώνων εἰς τὰς βορείας μόνον τῆς χώρας ἐπαρχίας καὶ μονοπωληθεῖσα εἰς ὄφελος τῆς αὐλῆς, ἠσκεῖτο ἐν ἄκρᾳ μυστικότητι, ἐπωπτεύετο δὲ προσωπικῶς ἀπὸ τὰς ἰδίας αὐτοκρατείρας, μυουμένας ἐπὶ τούτῳ ἀπὸ τῶν παιδικῶν των χρόνων εἰς ὅλας τὰς λεπτομερείας τῶν συναφῶν κατεργασιῶν. Σκληρόταται ποιναὶ ἴσχυον ἐναντίον ἐκείνων, οἵτινες ἤθελον ἀποπειραθῆ νὰ καταστήσουν γνωστὰς τὰς χρησιμοποιουμένας μεθόδους ἢ νὰ ἐξαγάγουν βομβύκια εἰς τὸ ἐξωτερικόν, μόνον δὲ τῶν κατειργασμένων νημάτων καὶ ὑφασμάτων ἐγίνετο ἐξαγωγὴ εἰς ἄλλας χώρας. Οἱ Κινέζοι αὐλικοὶ ἐμπορικοὶ πράκτορες ἐκόμιζον αὐτὰ εἰς τὰς ἀγορὰς τοῦ ἀνατολικοῦ Τουρκεστάν, ὁπόθεν ἤρχοντο νὰ τὰ προμηθευθοῦν οἱ μεγαλέμποροι τῆς Μεσογείου. Τὸ ἐμπόριον τῆς κινεζικῆς μετάξης διεξήγετο ἐπίσης, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἰσχύος τῶν Πάρθων, διὰ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ καὶ κατ' εὐθεῖαν ἀκόμη ἀπὸ τοῦ Σὲ-Τσουὰν πρὸς τὰς ἐκβολὰς τοῦ Γάγγου. Τὴν ἰδίαν ταύτην ἐποχὴν μία Κινέζα πριγκήπισσα ἀπεκάλυψεν εἰς τοὺς Ἰάπωνας, ἄγνωστον ἐκ ποίας ἀκριβῶς ἀφορμῆς, τὸ πολύτιμον μυστικόν, μία ἄλλη δέ, ἑξακόσια ἔτη βραδύτερον, μετέδωκεν αὐτὸ εἰς τοὺς Θιβετινούς. Ταῦτα κατὰ τὴν παράδοσιν· τὸ πιθανώτερον ἐν τούτοις εἶναι ὅτι ἡ μεταξοβιομηχανία εἰσήχθη εἰς Ἰαπωνίαν μόλις περὶ τὰ τέλη τοῦ Γ' μ.Χ. αἰῶνος ἀπὸ Κινέζους καὶ Κορεάτας μετανάστας καὶ ὅτι, ἀφ' ἧς ἐπεξετάθη αὕτη καὶ εἰς νοτίους τῆς Κίνας ἐπαρχίας (κατὰ τὸν Α' π. Χ. αἰῶνα), μετεδόθη, κατὰ φυσικὸν λόγον, εἰς τὸ μετ' αὐτῶν συνορεῦον Θιβέτ. Ἐκεῖθεν διεδόθη βαθμηδὸν εἰς τὴν Σογδιανήν, τὴν Βακτριανήν, τὸ Ἰρὰν καὶ κατὰ τοὺς ἐπομένους αἰῶνας εἰς τὴν Περσίαν.

Ἀπὸ ἀρχαιοτάτων ἐπίσης χρόνων ἡ μεταξουργία ἦτο γνωστὴ καὶ ἐν ταῖς Ἰνδίαις, ὅπου ὅμως, καθὼς φαίνεται, δὲν ἐπορίζοντο τὴν μέταξαν ἀπὸ ἐπὶ τούτῳ ἐκτρεφομένους μεταξοσκώληκας, ἀλλ' ἀπὸ τῆς κάμπης ἑνὸς εἴδους ἀγρίου βόμβυκος, ζῶντος ἐν ἀφθονίᾳ ἐπὶ τῶν ἰνδικῶν δένδρων.

Εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλλάδα ἡ μέταξα ἔγινε γνωστὴ μόλις κατὰ τὸν Δ' π. Χ. αἰῶνα. Ὁ Ἀριστοτέλης πρῶτος κάμνει λόγον περὶ εἴδους τινὸς ἀγρίου σκώληκος πιθανῶς, τοῦ Sphynx otus, ὅστις ἔζη ἐπὶ τῶν κυπαρίσσων, τῶν δρυῶν καὶ ἄλλων δένδρων τῆς νήσου Κῶ καὶ τοῦ ὁποίου τὰ ἐκκρίματα, ὑποβαλλόμενα εἰς κλῶσιν, ἐχρησίμευον διὰ τὴν κατασκευὴν ἐλαφρῶν καὶ διαφανῶν ὑφασμάτων. Πιθανὸν ἐξ ἄλλου εἶναι ὅτι ἀπὸ τῆς ἰδίας ἐκείνης ἐποχῆς οἱ Ἀνατολῖται ἔμποροι θὰ εἶχον ἀρχίσει νὰ εἰσάγουν εἰς τὴν Ἑλλάδα πραγματικὰ μεταξωτὰ ὑφάσματα, πάντως ὅμως ἡ χρῆσίς των θὰ ἦτο πολὺ περιωρισμένη λόγῳ τῆς ὑψηλῆς των τιμῆς. Εἰς τὴν Ρώμην ἀναφέρεται ὅτι ἐπὶ Ἰουλίου Καίσαρος (50 π. Χ.) ἐνεφανίσθησαν ἠθοποιοὶ φέροντες μεταξωτὰ ἐνδύματα, εἰσήχθησαν δὲ ταῦτα βραδύτερον καὶ εἰς τὸν στολισμὸν τῶν Ρωμαίων δεσποινῶν ἐπὶ αὐτοκράτορος Τιβερίου, ὅστις ἀπηγόρευσεν, ὅπως καὶ ὁ Τίτος βραδύτερον, τὴν χρῆσίν των εἰς τοὺς ἄνδρας.

Μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΣΤ' αἰῶνος τὰ μεταξωτὰ ὑφάσματα ἐξηκολούθησαν ν' ἀποτελοῦν διὰ τὰς εὐρωπαϊκὰς χώρας εἶδος σπανιώτατον καὶ πανάκριβον. Ἐπὶ Ἰουστινιανοῦ ὅμως (τῷ 555), δύο Πέρσαι μοναχοὶ ἐκόμισαν κρυφίως εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ἐντὸς κοίλων ῥάβδων, ᾠὰ μεταξοσκωλήκων, τὰ ὁποῖα ἀπετέλεσαν τὴν ἀπαρχὴν τῆς εἰσαγωγῆς τῆς σηροτροφίας εἰς τὴν Εὐρώπην. Αἱ μορέαι ἐφύοντο ἐν ἀφθονίᾳ εἰς διαφόρους περιφερείας τοῦ βυζαντινοῦ κράτους, ἐκ τούτου δὲ ἐδόθη εὐκαιρία ραγδαίας ἀναπτύξεως τῆς μεταξοσκωληκοτροφίας καὶ τῆς μεταξοϋφαντουργίας ἐν Βυζαντίῳ, ὅπου εὐθὺς ἀμέσως ἤρχισαν νὰ κατασκευάζουν «ὁλοσηρικὰ» ὑφάσματα (ἐκ καθαρᾶς μετάξης) καὶ «ὑποσηρικὰ» (ἐκ μετάξης καὶ βάμβακος).

Ἀπὸ τοῦ Η' αἰῶνος οἱ Ἄραβες, οἵτινες εἶχον διδαχθῆ τὴν νέαν ὑφαντουργίαν ἀπὸ τῶν Βυζαντινῶν, διέδωκαν αὐτὴν καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν τοῦ τεραστίου κράτους των, ἀπὸ τοῦ Καυκάσου μέχρι τῆς Ἱσπανίας καὶ τῶν Ἀφρικανικῶν παραλίων. Ἡ πρώτη δυτικὴ εὐρωπαϊκὴ χώρα, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἡ παραγωγὴ τῆς μετάξης ἐσημείωσε μεγάλην ἀκμήν, ὑπῆρξεν ἡ Ἀνδαλουσία. Τῷ 1130 ἡ σηροτροφία εἰσήχθη εἰς τὴν Σικελίαν, βραδύτερον δὲ εἰς τὴν Καλαβρίαν, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἐπεξετάθη ταχέως καθ' ὅλην τὴν ἰταλικὴν χερσόνησον, καθ' ὃν χρόνον ἀνεπτύσσοντο ἐπίσης ἐν αὐτῇ καὶ ἡ κλωστικὴ καὶ ἡ ὑφαντδυργία. Ἡ Λοῦκκα εἶχε κατὰ τὸ ἔτος 1242 σημαντικώτατον συνοικισμὸν ἐργατῶν φημισμένων διὰ τὴν εἰδικότητά των περὶ τὴν κλῶσιν καὶ ὕφανσιν τῆς μετάξης, οἵτινες ὅμως μετηνάστευσαν ἐκεῖθεν ἀπὸ τοῦ 1314 ἐξ αἰτίας τοῦ πρὸς τὴν Φλωρεντίαν πολέμου. Κατὰ τοὺς δύο ἀκολούθους αἰῶνας τὰ πρωτεῖα ἐν τῷ ἐμπορίῳ τῆς μετάξης περιῆλθον εἰς τὴν Γένουαν καὶ τὴν Βενετίαν. Εἰς τὴν Γαλλίαν ἡ σηροτροφία εἰσήχθη περὶ τὸ τέλος τῆς βασιλείας Λουδοβίκου τοῦ Ἁγίου, τὸ πρῶτον δ' ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ μορεόδενδρον εἶχε φυτευθῆ μόλις κατὰ τὸ ἔτος 1268. Ἀπὸ τῶν μέσων ὅμως τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἀνεπτύχθη καὶ ἐν αὐτῇ σημαντικῶς ἡ μεταξοβιομηχανία, χάρις ἰδίως εἰς πολυαρίθμους Ἰταλοὺς τεχνίτας, οἵτινες συνέρρευσαν ἐκεῖ φεύγοντες τὴν ἐν τῇ πατρίδι των δημιουργηθεῖσαν ἔκρυθμον κατάστασιν ἐκ τῶν πολέμων μεταξὺ τῶν διαφόρων ἰταλικῶν δημοκρατιῶν. Οὕτω, τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἡ Γαλλία ἐκράτει τὰ σκῆπτρα τῆς μεταξοβιομηχανίας ἐν Εὐρώπῃ, μὲ κέντρα τὴν Λυὼν καὶ τὸ Τούρ. Εἰς τὴν Γερμανίαν, ὅπου εἰσήχθη βραδύτερον, ἡ καλλιέργεια τοῦ μεταξοσκώληκος δὲν εὗρε πολλὴν εὐδοκίμησιν, ὅπως ἐπίσης καὶ εἰς τὰς πλείστας ἐκ τῶν ἄλλων εὐρωπαϊκῶν χωρῶν.

Κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας ἡ κατανομὴ τοῦ ἐμπορίου τῆς μετάξης ὑπέστη σημαντικὰς μεταπτροπάς. Ὁ κυριώτερος συντελεστὴς παραγωγῆς εἶναι σήμερον ἡ Ἰαπωνία καὶ οὐχὶ ἡ Κίνα, ὅπου χρησιμοποιοῦνται ἀκόμη αἱ ἴδιαι παλαιαὶ μέθοδοι· κυριώτερος δὲ συντελεστὴς καταναλώσεως εἶναι αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι καὶ οὐχὶ ὡς πρότερον ἡ Γαλλία. Ἐκ τῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν ἡ Ἰταλία ἔρχεται σήμερον πρώτη εἰς τὴν παραγωγὴν καὶ ἐξαγωγὴν ἀκατεργάστου μετάξης.

Αἱ στατιστικαὶ τῆς μέσης ἐτησίας παραγωγῆς καθ' ὅλον τὸν κόσμον δίδουν τοὺς κατωτέρω ἀριθμούς, εἰς τόννους:

| | *1871-1875* | *1891-1895* | *1901-1905* | *1921-1925* |
|---|---|---|---|---|
| Εὐρώπη........ | 3.676 | 5.518 | 5.312 | 4.853 |
| Ἐγγὺς Ἀνατολὴ | 676 | 1.107 | 2.002 | 750 |
| Ἄπω Ἀνατολὴ | 5.194 | 8.670 | 11.476 | 28.175 |
| | 9.516 | 15.295 | 18.790 | 33.778 |

Εἰς τὰ Βαλκάνια ἐπίσης παρατηρεῖται κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη προσπάθεια πρὸς ἀνάπτυξιν καὶ βελτίωσιν τῆς μεταξοπαραγωγῆς. Εἰδικῶς ἐν Ἑλλάδι παραγωγὴ χλωρῶν κουκουλίων κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἔχει ὡς ἀκολούθως, κατὰ συναφῆ πίνακα παρασχεθέντα ἡμῖν ὑπὸ τῆς διευθύνσεως τοῦ ἐν Ἀθήναις Σηροτροφικοῦ Ἐργαστηρίου:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Ἔτος | 1926 | χιλιόγραμμα | 2.648.716 |
| » | 1927 | » | 2.538.134 |
| » | 1928 | » | 2.604.882 |
| » | 1929 | » | 2.526.685 |
| » | 1930 | » | 1.883.930 |

Ἡ πτῶσις τῆς ἐν Ἑλλάδι παραγωγῆς κατὰ τὸ τελευταῖον ἔτος ἀποδίδεται εἰς δυσμενεῖς καιρικὰς συνθήκας. Γ. Ζ.

—[ΧΗΜ.] Ἀπὸ ἀπόψεως χημικῆς ἡ μέταξα ἀποτελεῖται κυρίως ἐξ ἀζωτούχων ὑλῶν καὶ δὴ κατὰ 50—60 % ἐκ φιβροΐνης (ἰνοΐνης) καὶ κατὰ 25 % περίπου ἐξ ἀλβουμίνης. Περαιτέρω περιέχει μικρὰς ποσότητας κηροῦ, ῥητίνης καὶ χρωστικῶν ὑλῶν. Ἡ ἀκατέργαστος μέταξα ἔχει ἐξωτερικῶς κομμιῶδες περίβλημα εἰς ποσότητα 20 % περίπου, συνιστάμενον ἐκ *μεταξοκόλλης* ἢ *σερικίνης*, ἥτις θεωρεῖται ὡς προϊὸν ὀξειδώσεως τῆς φιβροΐνης. Ἡ φιβροΐνη εἶναι πλουσία εἰς γλυκόκολλαν, τυροσίνην καὶ ἀλανίνην. Σ. Γ.

**— μέταξα τεχνητή.** Ὑφαντικαὶ ἶνες παρασκευαζόμεναι βιομηχανικῶς κατὰ διαφόρους μεθόδους ἐκ παραγώγων τῆς κυτταρίνης. Ἡ παρασκευὴ τῶν ἰνῶν τούτων γίνεται διὰ πιέσεως πυκνῶν διαλυμάτων κολλοδιοβάμβακος διὰ τυμπάνων ἐχόντων μικροτάτας ὀπάς. Αἱ οὕτω σχηματιζόμεναι ἶνες συλλέγονται ἐντὸς ὕδατος, σκληρύνονται καὶ ἀκολούθως ξηραίνονται. Ἐπειδὴ ὅμως αἱ τοιαῦται ἶνες εἶναι λίαν εὐανάφλεκτοι καὶ ἐκρηκτικαί, ὑποβάλλονται ἀκολούθως εἰς ἀπονίτρωσιν δι' ἐμβαπτίσεως ἐντὸς διαλύματος ὑδροθειικοῦ νατρίου ἢ ἀσβεστίου. Τέλος δὲ λευκαίνονται διὰ κατεργασίας δι' ὑποχλωριώδους νατρίου.

Περαιτέρω τεχνητὴ μέταξα δύναται νὰ παρασκευασθῇ ἐκ διαλυμάτων κυτταρίνης ἐν ἀμμωνιακῷ διαλύματι ὀξειδίου τοῦ χαλκοῦ ἢ ἐν ψευδαργυροχλωριδίῳ ἢ ἐν φωσφορικῷ ἢ θειικῷ ὀξεῖ. Ὁμοίως τεχνητὴ μέταξα δύναται νὰ παρασκευασθῇ ἐκ ξανθογονικῆς κυτταρίνης ἢ ἀκετυλοκυτταρίνης.

Πλὴν τῶν ἀνωτέρω εἰδῶν τῆς τεχνητῆς μετάξης, θεωρεῖται περαιτέρω ὡς τοιαύτη καὶ ἡ παραγομένη διὰ καταλλήλου μηχανικῆς ἢ χημικῆς κατεργασίας τῶν ἰνῶν τοῦ βάμβακος. Ἡ τοιαύτη κατεργασία ἐπιτελεῖται συνήθως διὰ καταλλήλων διαλυμάτων ἀλκαλίων, δι' ὧν ἐπιτυγχάνεται ἀρκοῦσα στιλπνότης τῶν ἰνῶν.

Τεχνητὴ μέταξα παρασκευάζεται σήμερον εἰς μεγάλα ποσά, χρησιμοποιουμένη πρὸς ὕφανσιν πλείστων ὅσων εἰδῶν.

Ἐν Ἑλλάδι ὑφίσταται λίαν συγχρονισμένη καὶ ἀνθοῦσα βιομηχανία παραγωγῆς τεχνητῆς μετάξης. Σ. Γ.

**Μετάξα** (Metaxa), ***Λουδοβῖκος.*** Ἰταλὸς ἰατρὸς καὶ φυσιοδίφης (1328—1842), Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ φιλοσοφίαν καὶ ἀφοῦ διετέλεσεν ἐπὶ χρονικόν τι διάστημα καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας, ἀφιερώθη κατόπιν ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας. Ἵδρυσεν ἐν Ρώμῃ τὸ «Ζωολογικὸν μουσεῖον» καὶ τὸ «Μουσεῖον συγκριτικῆς ἀνατομίας» καὶ ἐγένετο μέλος πολλῶν ἱστορικῶν καὶ ξένων ἀκαδημιῶν. Ἔγραψε: «Περὶ τῶν μεταδοτικῶν καὶ ἐπιζωοτικῶν ἀσθενειῶν τῶν κατοικιδίων ζώων» (1816), «Μονογραφία περὶ τῶν ὄφεων» (1823), «Ὁ ἄνθραξ» (1837) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μεταξάδα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 315. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Σαμπρίκι*. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Βεριστιὰ* (κάτ. 119) καὶ *Ποταμιὰ* (κάτ. 119). Δ. Ε. Μ.

**Μεταξάδες** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Πρασσιᾶς (Ζελενίστας) τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας. Κάτ. (1928) 107.

— 2) Κώμη τῆς ἐπαρχίας Διδυμοτείχου τοῦ νομοῦ Ἕβρου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ΝΑ. τοῦ Ὀρτὰ-Κιόϊ, παρὰ τὰ βουλγαρικὰ σύνορα, καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.485. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἀβδέλλα*, *Ἀλεποχώρι*, *Κόρυμβος* καὶ *Παλιούρι*, ὡς καὶ 85 σκηνίτας Σαρακατσαναίους, ἔχει δὲ κατ. (1928) 3.814. Χ. Δ.

**Μεταξάκης,** ***Μελέτιος***· βλ. λ. *Μελέτιος Β'*, πατριάρχης Ἀλεξανδρείας.

**μεταξάκι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μεσημβριάνθεμον τὸ στίλβον*.

**μεταξᾶς** (ὁ)· δημοτ., ὁ κατεργαζόμενος τὴν μέταξαν τεχνίτης, μεταξουργός· || ἔμπορος μετάξης.

**Μεταξᾶς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κοζάνης τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, ἕδρα ἰδίας κοινότητος. Κάτ. (1928) 877. Κεῖται εἰς τὰς κλιτῦς τοῦ λόφου *Δουβρά*, ἔχει κλῖμα ὑγιεινὸν καὶ ὑδρεύεται ἐκ πηγῆς. Ἔχει δασικὰς ἐκτάσεις ἐκ δρυῶν καὶ πρίνων, παράγει ὀλίγα δημητριακά, ἔχει δὲ καὶ κτηνοτροφίαν ἀξίαν λόγου. Μετὰ τῆς Κοζάνης συγκοινωνεῖ διὰ βατῆς ὁδοῦ (ὥρ. 5). Δ. Ε. Μ.

**Μεταξᾶς.** Ὄνομα οἰκογενείας ἀνηκούσης εἰς τὴν ἀριστοκρατίαν τῆς Κεφαλληνίας, προερχομένης δ' ἐκ Βυζαντίου. Ἀναφέρεται δὲ εἰς τὴν βυζαντινὴν ἱστορίαν ἀπὸ τοῦ 1081. Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ὁ ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης καταγόμενος *Μαρκαντώνιος Μεταξᾶς* κατέφυγεν εἰς Κρήτην καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν εἰς Κεφαλληνίαν ἐπὶ Λεονάρδου Β' τοῦ Τόκου, κατοικήσας παρὰ τὰ Φρατζᾶτα τῆς Λειβαθοῦς, ὅπου ὁ ἐκεῖ συνοικισμὸς ὠνομάσθη Μεταξᾶτα. Εἶτα ἡ οἰκογένεια διεκλαδώθη, καὶ ὁ μὲν ἐν Ζακύνθῳ κλάδος, καταγόμενος ἐκ Κεφαλληνίας, ἐνεγράφη εἰς τὴν Χρυσῆν βίβλον τῷ 1580, ὁ δ' ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1503, καὶ ὁ ἐν Κεφαλληνίᾳ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος ἔλαβε τὸ πρῶτον τῷ 1691, ἀπονεμηθέντα εἰς τὸν *Ἀναστάσιον Μεταξᾶν* ὑπὸ τοῦ δουκὸς Μοροζίνι. Τὸν τίτλον τοῦτον ἀνεγνώρισε τῷ 1841 ἡ ἰόνιος γερουσία συνεπείᾳ ἀναφορᾶς τοῦ Γεωργίου Μεταξᾶ, ἀπογόνου τοῦ Ἀγγέλου Μεταξᾶ, ἀδελφοῦ τοῦ μνησθέντος Ἀναστασίου. Ὁ κλάδος οὗτος εἶναι ὁ τῶν *Ἀντζουλακάτων*. Ἡ οἰκογένεια Μεταξᾶ ἀνέδειξε πλείστους διασήμους ἄνδρας ἐπὶ βενετοκρατίας καὶ εἰς τοὺς μετέπειτα χρόνους. Μεταξὺ τῶν πρώτων ἀναφέρονται οἱ: *Ἀνδρέας Μεταξᾶς*, ὅστις ἐπολέμησεν ἐν Κρήτῃ τῷ 1657 ἡγούμενος ἰδίου σώματος ἐκ 250 Κεφαλλήνων. *Δημήτριος*, ὅστις περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἐγένετο καθηγητὴς τῆς νομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ρώμης. *Θεμιστοκλῆς*, γεννηθεὶς ἐν Ρώμῃ τῷ 1813 καὶ γενόμενος καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας, ἀποθανὼν δ' ἐν Ροτσέτᾳ τῷ 1891 κτλ. Θ. Β.

**— Μεταξᾶς** ***Ἀναστάσιος.*** Ἕλλην πολεμιστής, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ (Κεφαλληνίας) τῷ 1648 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1714. Ἄγων σῶμα στρατοῦ, συγκροτηθέντος ἰδίαις δαπάναις, διέπρεψε κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Λευκάδος. Ὅτε ὁ Λιμπεράκης Γερακάρης ὑπηρετῶν τοὺς Τούρκους ἐπεχείρει νὰ ὑποτάξῃ τοὺς Ἕλληνας τῆς Στερεᾶς εἰς αὐτούς, ὁ Μεταξᾶς ἀπεστάλη μετὰ δισχιλίων ἀνδρῶν κατ' αὐτοῦ εἰς Ξηρόμερον καὶ ἀντεπεξῆλθεν ἐναντίον του, ἠδυνήθη δὲ νὰ παρακωλύσῃ τὰς τουρκικὰς ἐπικουρίας, ἐφ' ᾧ καὶ προήχθη εἰς συνταγματάρχην ὑπὸ τῆς βενετικῆς κυβερνήσεως. Διεκρίθη βραδύτερον εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Αὐλῶνος, τῆς Ναυπάκτου καὶ παρεφρούρησε τὸν κόλπον τῆς Πρεβέζης. Θ. Β.

**— Μεταξᾶς,** ***Ἀναστάσιος.*** Ἕλλην ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῇ 1863. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πολυτεχνείῳ τῆς Δρέσδης, ἐξεπόνησε τὸ σχέδιον τῆς ἀναμαρμαρώσεως τοῦ Παναθηναϊκοῦ σταδίου καὶ ἐξετέλεσε πλεῖστα ἀρχιτεκτονικὰ ἔργα, ἐν οἷς τὸ νοσοκομεῖον Συγγροῦ, τὸ μέγαρον τοῦ ὑπουργείου τῆς Συγκοινωνίας, τὸ Αἰγινήτειον νοσοκομεῖον,

Digitized by Google

τὸ τῶν παίδων, τὸ μέγαρον τῆς γαλλικῆς πρεσβείας, τὰ τῆς Λαϊκῆς καὶ Ἰονικῆς Τραπέζης καὶ πλεῖστα ἄλλα. Τῷ 1929 ἐξελέγη γερουσιαστής.

Θ. Β.

— **Μεταξᾶς, *Ἀνδρέας*.** Ἕλλην ἀγωνιστὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1790 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1860. Μυηθεὶς τῷ 1819 εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, ἀνέλαβε μετ' ἐνθουσιασμοῦ τὴν διάδοσιν τῶν ἰδεῶν αὐτῆς ἐν Κεφαλληνίᾳ, ἕνα δὲ μῆνα πρὸ τῆς ἐκρήξεως τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως παρεσκεύαζεν ἔνοπλον σῶμα, ὅπως μεταβῇ εἰς Πελοπόννησον. Ἐκραγείσης ταύτης ἐγκατέλειψε τὸν οἶκόν του καὶ ἔσπευσεν εἰς τὸν Ἀγῶνα, ἐπιβιβασθεὶς τὴν 9 Μαΐου 1821 εἰς τὸ πλοῖον τοῦ Πανᾶ Τσιμπούκη παρὰ τὸν ὅρμον τῆς Σκάλας. Ἀπεβιβάσθη εἰς Πελοπόννησον μετ' ἄλλων Ἑπτανησίων καὶ μετέβη εἰς τὴν πολιορκουμένην ἀκρόπολιν τοῦ Λάλα, ἣν οἱ πολιορκηταὶ ἐζήτουν νὰ καταλίπωσι, διότι οἱ Τουρκαλβανοὶ Λαλαῖοι ἐθεωροῦντο ὡς ἀκατάβλητοι. Ὁ Μεταξᾶς ἔπεισεν αὐτοὺς νὰ ἐξακολουθήσωσι τὴν πολιορκίαν, ἐπηκολούθησαν δὲ ἡρωϊκώταται μάχαι, καθ' ἃς διεκρίθη ὁ Μεταξᾶς, ἐν τέλει δὲ ἡ ἀκρόπολις ἔπεσε καὶ ἡ νίκη ἀπεδόθη εἰς αὐτὸν καὶ τοὺς Ἑπτανησίους μαχητάς. Πληροφορηθεὶς ὁ ἁρμοστὴς τῆς Ἑπτανήσου Μαΐτλανδ τὴν συμμετοχὴν τοῦ Μεταξᾶ εἰς τὸν ἑλληνικὸν ἀγῶνα, κατεδίκασεν αὐτὸν ὡς καὶ τοὺς λοιποὺς Ἑπτανησίους ἐπαναστάτας εἰς ἰσόβιον ἐξορίαν καὶ δήμευσιν τῶν ὑπαρχόντων των. Ἀδιαφορῶν πρὸς ταῦτα ὁ Ἀνδρέας Μεταξᾶς, μετέβη, μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Λάλα, εἰς Τριπολιτσᾶν, ἕδραν τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως, ἔκτοτε δ' ἄρχεται τὸ πολιτικὸν αὐτοῦ στάδιον. Τὴν 5 Μαΐου 1822 ἐξελέγη μέλος τῆς πελοποννησιακῆς γερουσίας, πολιτογραφηθεὶς δὲ τὴν 25 τοῦ αὐτοῦ μηνός, διωρίσθη κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ Δράμαλη εἰς Πελοπόννησον ὑπουργὸς τῆς Ἀστυνομίας.

Κατὰ τὸν χρόνον ἐκεῖνον, ὅτε ἐπεκρέματο ὁ κίνδυνος τῆς εἰσβολῆς τοῦ Δράμαλη, ἡ διάστασις μεταξὺ τῶν προὐχόντων τῆς Πελοποννήσου εἶχε φθάσει εἰς τοιοῦτον σημεῖον, ὥστε ἐθεωρεῖτο ἄφευκτος ἡ ἔκρηξις ἐμφυλίου πολέμου. Ἡ γερουσία ἀνέθεσε τότε εἰς τὸν Μεταξᾶν νὰ συμφιλιώσῃ τοὺς διαμαχομένους, οὗτος δὲ μεταβὰς εἰς Τριπολιτσᾶν κατώρθωσε νὰ πείσῃ αὐτούς, ὅπως ὑποταχθῶσιν εἰς τὴν θέλησιν τοῦ ἔθνους. Ὅτε συνῆλθον ἐν Βερώνῃ οἱ ἡγεμόνες τῆς Εὐρώπης, ὅπως συνεχίσωσι τὴν ἐν Λάϊβαχ συνδιάσκεψιν, κατὰ προτροπὴν τοῦ Καποδιστρίου ἀπεστάλη ἐπιτροπὴ ἀποτελουμένη ὑπὸ τοῦ Μεταξᾶ, τοῦ Γερμανοῦ Παλαιῶν Πατρῶν καὶ τοῦ Γεωργίου Μαυρομιχάλη, τὴν 29 Αὐγούστου 1822, ὅπως συνηγορήσῃ ὑπὲρ τῶν δικαίων τῆς Ἑλλάδος. Ἡ ἐπιτροπὴ αὕτη οὐδὲν ἄλλο κατώρθωσεν, εἰμὴ τὴν δήλωσιν τῆς οὐδετερότητος τῶν μοναρχῶν, ἥτις ὅμως ὑπῆρξε τὸ πρῶτον βῆμα τῆς διασπάσεως τῆς Ἱερᾶς Συμμαχίας. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Ἑλλάδα ἐξελέγη πληρεξούσιος τῆς ἐν Ἄργει ἐθνοσυνελεύσεως, εἶτα δὲ μέλος τοῦ Νομοτελεστικοῦ. Τῷ 1825 διωρίσθη στρατιωτικὸς καὶ πολιτικὸς διοικητὴς Κρήτης, δὲν ἐδέχθη ὅμως τὴν θέσιν ταύτην ἀποτραπεὶς ὑπὸ τοῦ Κολοκοτρώνη, μεθ' οὗ συνεννοήθη ὅπως προταθῇ ἡ ἐκλογὴ τοῦ Ἰωάννου Καποδιστρίου ὡς κυβερνήτου τῆς Ἑλλάδος, μετὰ τὴν ἔλευσιν δὲ τούτου ὁ Μεταξᾶς διωρίσθη μέλος τοῦ Γενικοῦ φροντιστηρίου. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ κυβερνήτου καὶ τὴν πρῶσιν τοῦ Αὐγουστίνου Καποδιστρίου, διετέλεσε μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως καὶ τῆς διοικητικῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις παρέδωκε τὴν ἐξουσίαν εἰς τὸν βασιλέα Ὄθωνα. Κατὰ τὴν σύλληψιν τοῦ Κολοκοτρώνη κατασταθεὶς ὕποπτος κατεδιώχθη ὡς μετέχων τοῦ ρωσικοῦ κόμματος, ἠναγκάσθη δὲ νὰ δραπετεύσῃ ἐκ Σύρου, ὅπου ἐκρατεῖτο, εἰς Μασσαλίαν, ἀνακληθεὶς μετὰ τὴν καταδίκην τοῦ Κολοκοτρώνη. Κατὰ τὸ ληφθὲν μέτρον ὑπὸ τῆς ἀντιβασιλείας, ὅπως ἀπομακρυνθῶσι τῶν Ἀθηνῶν οἱ πρωτεύοντες πολιτικοί, διωρίσθη καὶ ὁ Μεταξᾶς πρεσβευτὴς εἰς Ἱσπανίαν, ἀνακληθεὶς δὲ τῷ 1839 ἐγένετο σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ τῷ 1841 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Μαυροκορδάτου. Ἀπὸ τοῦ 1842 μετεῖχε τῆς Μυστικῆς Ἑταιρείας, ἥτις ἐπεδίωκε τὴν ἐπιβολὴν συνταγματικοῦ πολιτεύματος εἰς τὴν χώραν. Ἐκραγείσης τῆς ἐπαναστάσεως τῆς 3ης Σεπτεμβρίου 1843, ἀνέλαβε, κατὰ τὴν ἰδίαν ἐκείνην νύκτα, τὸν σχηματισμὸν κυβερνήσεως καὶ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Μετεκάλεσεν ἀμέσως τοὺς πολιτικοὺς ἀρχηγοὺς Κωλέττην καὶ Μαυροκορδᾶτον καὶ συνεκάλεσε τὴν Α' ἐν Ἀθήναις ἐθνοσυνέλευσιν, τὴν ψηφίσασαν τὸ Σύνταγμα.

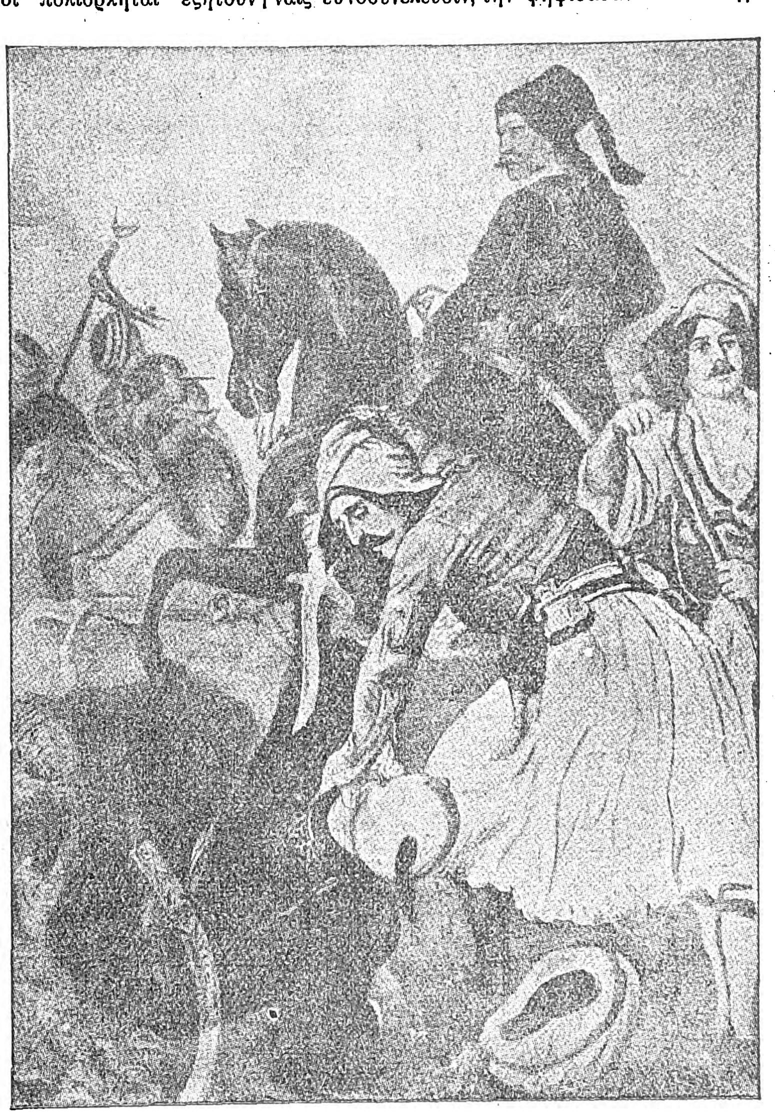

*Ἀνδρέας Μεταξᾶς.*

[Εἰκὼν τοῦ Hess ἀποκειμένη ἐν τῷ Μουσείῳ τῆς Ἱστορ. καὶ Ἐθνολ. Ἑταιρείας.]

Ἀφοῦ ἔφερεν εἰς πέρας τὴν ἀποστολήν του, παρῃτήθη τὴν 3 Ὀκτωβρίου 1844, καὶ τὴν 6 Αὐγούστου τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Οἰκονομικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Κωλέττη, ὅπερ διετήρησε μέχρι τοῦ 1845, παραιτηθεὶς διότι ἔβλεπεν ἀνειλικρίνειαν εἰς τὰς προθέσεις τοῦ βασιλέως Ὄθωνος. Τῷ 1850 ἀπενεμήθη εἰς αὐτὸν ὁ μεγαλόσταυρος τοῦ Σωτῆρος, προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον καὶ διωρίσθη πρεσβευτὴς εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἐκραγέντος τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου παρῃτήθη τῆς θέσεώς του ταύτης τὴν 10 Μαρτίου 1854. Γέρων ἤδη ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς. Ὁ Ἀνδρέας Μεταξᾶς πολλὰς παρασχὼν ὑπηρεσίας εἰς τὸ ἔθνος, θεωρεῖται ὡς δεξιώτατος διπλωμάτης, συντελέσας εἰς τὴν ἐπίλυσιν πλείστων περιπλόκων ζητημάτων μετὰ τῆς Πύλης ἀφορώντων τὸ ἐμπόριον, τὴν ναυτιλίαν, τὴν πνευματικὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἀλυτρώτου Ἑλληνισμοῦ, τὰ δικαιώματα τῆς Ἐκκλησίας κτλ. Ὡς ρήτωρ ἦτο βραχύλογος ἀλλ' οὐσιαστικός· ἤσκει μεγάλην ἐπιρροὴν διὰ τῆς πειθοῦς, κύριον δὲ γνώρισμα αὐτοῦ ἦτο ἡ ἄκρα φιλαλήθεια καὶ τὸ φιλελεύθερον τοῦ φρονήματος.

Θ. Β.

—**Μεταξᾶς, *Ἀνδρέας Σπυρ.*** Ἕλλην δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Λευκάδι τῷ 1873 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1925. Διετέλεσε πεντάκις ἀρθρογράφος, ἀρχισυντάκτης καὶ διευθυντὴς πολλῶν ἐφημερίδων ἀθηναϊκῶν καὶ ἐπαρχιακῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων «Πατρίς», «Ἐφημερίς», «Νέον Ἄστυ» «Ἑστία» κλπ. Ἐπίσης ἐξέδωκεν ἐν Πάτραις τὸν «Χρόνον» (1899) καὶ τὸν «Νέον Αἰῶνα» (1900—1908). Διετέλεσε πεντάκις πρόεδρος τῆς «Ἑνώσεως Συντακτῶν Ἀθηναϊκῶν Ἐφημερίδων» κατὰ τὰ ἔτη 1917, 1918, 1919, 1920 καὶ 1922.

— **Μεταξᾶς, *Ἰωάννης Παναγιώτου*.** Ἕλλην στρατιωτικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἰθάκῃ τῷ 1871. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τῶν Εὐελπίδων, ἐκ τῆς ὁποίας ἐξῆλθε μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀνθυπολοχαγοῦ τοῦ μηχανικοῦ (1885—1890). Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897 ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ σῶμα τοῦ μηχανικοῦ καὶ κατόπιν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ ἀρχηγείου τοῦ στρατοῦ Θεσσαλίας. Κατὰ τὰ ἔτη 1899—1903 συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν τῇ πολεμικῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1904 μετετέθη εἰς τὸ νεοσύστατον τότε σῶμα τῶν ἀξιωματικῶν τῶν γενικῶν ἐπιτελῶν ὡς ὑπολοχαγός, προαχθεὶς μετὰ τριετίαν εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ. Παρέμεινεν εἰς τὸ σῶμα τοῦτο μέχρι τοῦ 1909, ὁπότε, διαλυθέντος αὐτοῦ, ἐπανῆλθε πάλιν εἰς τὸ ὅπλον τοῦ μηχανικοῦ μὲ τὸν ἴδιον βαθμὸν ὡς διοικητὴς λόχου. Ἀπὸ τοῦ 1910 μέχρι τοῦ 1912 διετέλεσε πρῶτος ὑπασπιστὴς τοῦ ὑπουργείου τῶν Στρατιωτικῶν ἐπὶ ὑπουργίας Ἐλ. Βενιζέλου. Κατὰ τὰς παραμονὰς τῶν Βαλκανικῶν πολέμων τοῦ 1912 ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως ὡς στρατιωτικὸς πληρεξούσιος εἰς Σόφιαν, ὅπου διεπραγματεύθη καὶ ὑπέγραψε τὴν μετὰ τῆς Βουλγαρίας στρατιωτικὴν σύμβασιν, μεθ' ὅ, διελθὼν ἐκ Βελιγραδίου πρὸς λῆψιν ἐπαφῆς μὲ τὸ σερβικὸν στρατηγεῖον, ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἑλλάδα. Κατὰ τὸν πρῶτον Βαλκανικὸν πόλεμον τοῦ 1912—1913 μετέσχεν αὐτοῦ ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ γραφείου ἐπιχειρήσεων τοῦ γενικοῦ στρατηγείου, τὸν δὲ Δεκέμβριον τοῦ 1912 ἀπεστάλη εἰς τὸ Λονδῖνον ὡς στρατιωτικὸν μέλος τῆς ὑπὸ τὸν Ἐλ. Βενιζέλον καὶ Σ. Σκουλούδην ἑλληνικῆς ἀποστολῆς πρὸς διαπραγμάτευσιν τῆς εἰρήνης μετὰ τῆς Τουρκίας, ὁπόθεν ἐπέστρεψε κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 1913 εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ πολιορκοῦντος τὰ Ἰωάννινα ἑλληνικοῦ στρατοῦ. Τὸν Μάϊον τοῦ 1913 διεπραγματεύθη ὡς στρατιωτικὸς πληρεξούσιος τῆς Ἑλλάδος τὴν πρώτην μετὰ τῆς Σερβίας στρατιωτικὴν σύμβασιν, προαχθεὶς δὲ κατ' ἀρχαιότητα εἰς ταγματάρχην, ἔλαβε μέρος καὶ εἰς τὸν δεύτερον Βαλκανικὸν πόλεμον ὡς διευθυντὴς τοῦ γραφείου ἐπιχειρήσεων. Εὐθὺς μετὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους προήχθη εἰς ἀντισυνταγματάρχην κατ' ἀπόλυτον ἐκλογὴν καὶ ἐγένετο διευθυντὴς τῆς Αης διευθύνσεως τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, ἀναλαβὼν συγχρόνως καὶ τὴν ὀργάνωσιν καὶ διοίκησιν τοῦ νεοσυσταθέντος τότε σχολείου λοχαγῶν. Τῷ 1915 ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, παραιτηθεὶς μετά τινας μῆνας τῆς θέσεως ταύτης συνεπείᾳ διαφωνίας πρὸς τὴν κυβέρνησιν Βενιζέλου ἐπὶ τῆς συμμετοχῆς τῆς Ἑλλάδος εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τῶν Δαρδανελλίων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Ἐπανελθὼν εἰς τὸ γενικὸν ἐπιτελεῖον τῷ 1915, μετὰ τὴν κήρυξιν τῆς ἐπιστρατεύσεως, προήχθη τῷ 1916 εἰς συνταγματάρχην, ἀλλ' ἀπεμακρύνθη τῆς θέσεώς του τὸν Ἰούλιον τοῦ 1916. Τῷ 1917 ἐτέθη τῇ αἰτήσει του εἰς ἀποστρατείαν, μετὰ δὲ τὴν πρώτην παραίτησιν τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου, ἐκδοθεὶς παρὰ τῆς κυβερνήσεως Ἀλ. Ζαΐμη εἰς τοὺς Γάλλους, τῇ αἰτήσει των, μετήχθη ὑπὸ ἐπιτήρησιν, μετ' ἄλλων στρατιωτικῶν καὶ πολιτικῶν, εἰς τὴν Κορσικήν. Κατορθώσας κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1918 νὰ διαφύγῃ εἰς τὴν Σαρδηνίαν, παρέμεινεν εἰς τὴν Ἰταλίαν μέχρι τοῦ Νοεμβρίου τοῦ 1920, ὁπότε ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα. Ἐν τῷ μεταξὺ τῷ 1919 εἶχε καταδικασθῆ ἐν Ἀθήναις ἐρήμην εἰς θάνατον διὰ τὰ Νοεμβριανά. Ἀνακληθεὶς εἰς τὴν ἐνέργειαν δὲν ἐδέχθη νὰ παραμείνῃ καὶ ἀπεστρατεύθη τῇ αἰτήσει του, μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, τὸν Δεκέμβριον 1920.

Ὢν κεκηρυγμένος κατ' ἀρχὴν κατὰ τῆς μικρασιατικῆς ἐκστρατείας, διεφώνησε κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1921 καὶ πρὸς τὴν τότε ἑλληνικὴν κυβέρνησιν διὰ τὴν ὑπ' αὐτῆς συνέχισιν τῆς ἐκστρατείας ἐκείνης καὶ ἠκολούθησεν ἔκτοτε ἰδίαν πολιτικὴν πορείαν. Ἀναμειχθεὶς δὲ οὕτω εἰς τὴν πολιτικήν, ἵδρυσε τὸν Νοέμβριον τοῦ 1921 τὸ κόμμα τῶν *Ἐλευθεροφρόνων* (βλ. λ.), τοῦ ὁποίου ἐγένετο ἀρχηγός. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως Γούναρη, τῷ 1922, καὶ τὴν ἀνάθεσιν εἰς τὸν Ν. Στράτον τοῦ σχηματισμοῦ κυβερνήσεως, οὗτος προέτεινεν εἰς τὸν Μεταξᾶν, καίτοι μὴ ὄντα βουλευτήν, ὅπως συμμετάσχῃ τῆς κυβερνήσεως καὶ προσωπικῶς καὶ διὰ πολιτικῶν του φίλων. Ὁ Μεταξᾶς ὅμως ἠρνήθη, ἐφόσον καὶ ἡ νέα κυβέρνησις θὰ ἐπρόκειτο νὰ συνεχίσῃ τὴν μικρασιατικὴν ἐκστρατείαν. Κατ' Αὔγουστον τοῦ 1922, μετὰ τὴν παραίτησιν τῆς κυβερνήσεως Πρωτοπαπαδάκη, ἐπεδίωξε νὰ ἀναλάβῃ τὸν σχηματισμὸν κυβερνήσεως, πρὸς ὁριστικὴν ἐκκαθάρισιν τῆς, συνεπείᾳ τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς, προελθούσης καταστάσεως. Κατόπιν, μετὰ τὴν σύλληψιν τῶν τότε πολιτικῶν ἀρχηγῶν ὑπὸ τῆς Ἐπαναστάσεως 1922, ὁ Μεταξᾶς συνεκέντρωσεν ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν του ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν ἀντιπολίτευσιν καὶ ἀντετάχθη κατὰ τῶν ἐνεργειῶν αὐτῆς. Διεμαρτυρήθη ἐντόνως, προφορικῶς καὶ ἐγγράφως, διὰ τὴν δίκην τῶν Ἓξ καὶ προέτεινε, δι' ὑπομνήματος δημοσιευθέντος καὶ εἰς τὸν τύ-

Digitized by Google

πον, ὅπως, οἱονδήποτε καὶ ἂν ἦτο τὸ ἀποτέλεσμα τῆς δίκης ἐκείνης, δοθῇ εἰς τοὺς κατηγορουμένους τὸ δικαίωμα τῆς ἐκκλήσεως τῆς ἀποφάσεως τοῦ στρατοδικείου ἐνώπιον τῆς κατόπιν μελλούσης νὰ συγκληθῇ ἐθνοσυνελεύσεως. Ὁ Μεταξᾶς ἐσυνέχισε καὶ κατὰ τὸ 1923 τὴν κατὰ τῆς ἐπαναστατικῆς κυβερνήσεως πολεμικήν του, ὁπότε, ἐκραγέντος τοῦ ἀντεπαναστατικοῦ στρατιωτικοῦ κινήματος τῶν στρατηγῶν Λεοναρδοπούλου καὶ Γαργαλίδου, τὴν 23 Ὀκτωβρίου 1923, μετέσχεν αὐτοῦ πολιτικῶς. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ κινήματος κατέφυγεν εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Γαλλίαν. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς δημοκρατίας ὑπὸ τῆς Δ΄ Ἐθνοσυνελεύσεως καὶ τὴν προκήρυξιν τοῦ δημοψηφίσματος πρὸς ἔγκρισιν τῆς ἀποφάσεως τῆς ἐθνοσυνελεύσεως ὑπὸ τοῦ λαοῦ, ὁ Μεταξᾶς ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὸ δημοψήφισμα, ἀφοῦ πρῶτον ἐγένοντο δεκτοὶ οἱ παρ᾽ αὐτοῦ προταθέντες ὅροι: α΄) περὶ ἀμνηστεύσεως ὅλων τῶν πολιτικῶν, οἵτινες κατεδιώκοντο ὡς συμμετασχόντες εἰς τὸ ἀντεπανεστατικὸν κίνημα τοῦ Ὀκτωβρίου τοῦ 1923, καὶ β΄) περὶ παροχῆς χάριτος εἰς τοὺς καταδικασθέντας στρατιωτικοὺς διὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁ Μεταξᾶς εἶχεν ἀναγνωρισθῇ ὡς ὁ ἀρχηγὸς τῆς ἀντιδημοκρατικῆς κινήσεως. Ἀλλὰ μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν τῶν δημοκρατικῶν εἰς τὸ δημοψήφισμα, ἐδήλωσεν ὅτι θὰ ἐξακολουθήσῃ τοὺς πολιτικούς του ἀγῶνας ὑπὲρ τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ προγράμματος τοῦ κόμματος τῶν Ἐλευθεροφρόνων ἐντὸς τοῦ πλαισίου τοῦ νέου πολιτεύματος, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ὤθησε τοὺς ἀδιαλλάκτους βασιλόφρονας εἰς ἀποσχισμὸν ἀπ᾽ αὐτοῦ. Κατὰ τὰ ἔτη 1925 καὶ 1926 ὁ Μεταξᾶς ἀντετάχθη πρὸς τὴν δικτατορίαν Παγκάλου, συλληφθεὶς διὰ τοῦτο καὶ φυλακισθεὶς εἰς Ναύσταθμον, κατὰ τὰς ἐκλογὰς δὲ τοῦ 1926, κατελθὼν διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸν ἐκλογικὸν ἀγῶνα, ἐξελέγη βουλευτὴς Κεφαλληνίας καὶ ἔφερεν εἰς τὴν βουλὴν 54 ὀπαδούς. Τὴν 7 Νοεμβρίου 1926, συμβαλὼν εἰς τὸν σχηματισμὸν οἰκουμενικῆς κυβερνήσεως, μετέσχε ταύτης ὡς ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν Ἐλευθεροφρόνων, λαβὼν τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ἐπὶ τῆς Συγκοινωνίας ὑπουργείου, παρέμεινε δὲ καὶ εἰς τὰς ἀνασχηματισθείσας κυβερνήσεις εὐρέος καὶ μερικοῦ συνασπισμοῦ. Διὰ τὴν συμμετοχὴν αὐτοῦ εἰς τὸν σχηματισμὸν τῆς οἰκουμενικῆς κυβερνήσεως ἔθεσεν ὡς προκαταρκτικὸν ὅρον τὴν ἐπαναφορὰν τῶν διὰ πολιτικοὺς λόγους ἀποταχθέντων ἐκ τοῦ στρατοῦ ἱκανῶν ἀξιωματικῶν, ἥτις καὶ ἐπραγματοποιήθη. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὑπουργίας του, πλὴν ἄλλων, κατήρτισε καὶ ἐπέβαλε τὴν ἐπιψήφισιν τῶν νόμων τῆς ὁδοποιίας καὶ τῆς συμβάσεως τῆς ὁδοποιίας, δι᾽ ἧς προεβλέπετο διὰ πρώτην φορὰν ἡ εἰς μεγάλην κλίμακα ἐπέκτασις, συμπλήρωσις καὶ ἀναδιοργάνωσις τοῦ ὁδικοῦ δικτύου τῆς Ἑλλάδος. Ἐπίσης ἔθεσε τὰς βάσεις τῆς ἐπεκτάσεως καὶ κατασκευῆς τῶν μεγάλων ἀποξηραντικῶν καὶ ἀρδευτικῶν ἔργων τῆς Μακεδονίας καὶ Θεσσαλίας. Κατὰ τὰς διεξαχθείσας ἐκλογὰς τοῦ 1928 ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως Βενιζέλου, τῆς διαδεχθείσης τὴν κυβέρνησιν μερικοῦ συνασπισμοῦ, ὁ Μεταξᾶς ἀπέτυχε μεθ᾽ ὅλων, πλὴν ἑνός, τῶν φίλων του καὶ διὰ δηλώσεώς του εἰς τὸν τύπον ἀπεσύρθη τῆς ἐνεργοῦ πολιτικῆς. Ὁ Μεταξᾶς ἔγραψε διαφόρους μελέτας ἐπὶ στρατιωτικῶν ζητημάτων εἰς τὸ «Περιοδικὸν τῆς στρατιωτικῆς βιβλιοθήκης» (1906—1912) καὶ διάφορα ἄρθρα πολιτικά, στρατιωτικὰ κτλ. εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά. Ἔγραψεν ἐπίσης τὸ ἔργον «Ἡ ὑπηρεσία τοῦ μηχανικοῦ ἐν ἐκστρατείᾳ», ὅπερ ἐβράβευσε καὶ ἐξέδωσεν ἡ ὑπηρεσία τοῦ μηχανικοῦ τοῦ ὑπουργείου τῶν Στρατιωτικῶν (1898). Ν. Θ. Κ.—Μ. Δ. Β.

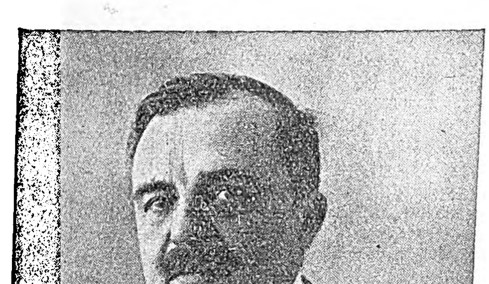

*Ἰωάννης Μεταξᾶς.*

—**Μεταξᾶς, *Κωνσταντῖνος*.** Ἕλλην ἀγωνιστὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1793 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1870. Ἐσπούδασε νομικὰ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Παταβίου καὶ ἤσκησεν ἐν Κεφαλληνίᾳ τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Μυηθεὶς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, ὅταν ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις, συνεννοηθεὶς μετὰ τοῦ μητροπολίτου Παλαιῶν Πατρῶν Γερμανοῦ, ὠργάνωσε τὴν ἐκστρατείαν τῶν Κεφαλλήνων εἰς Πελοπόννησον καὶ διεκρίθη κατὰ τὰν μάχας τοῦ Λάλα. Ἀποσταλεὶς ὑπὸ τῆς Πελοποννησιακῆς γερουσίας πρὸς ἀπόκρουσιν τοῦ Γιουσοὺφ πασᾶ, εἰσέβαλεν εἰς τὴν κώμην Πούσι καὶ κατέκαυσεν αὐτήν, ἀπωθήσας τοῦτον καὶ τοὺς Λαλαίους εἰς Πάτρας. Μετέσχεν εἶτα εἰς τὴν πολιορκίαν τῶν Πατρῶν καὶ εἰς τὰς μάχας τοῦ Γηροκομείου καὶ τοῦ Σαραβάλι. Εὑρισκόμενος εἰς Ἰθάκην, ὅπου εἶχε μεταβῆ πρὸς ἀνάρρωσιν, ἐπυροβολήθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, δι᾽ ὃ καὶ ἠναγκάσθη νὰ ἀπέλθῃ εἰς Μεσολόγγιον, ἐκεῖθεν δὲ εἰς Κόρινθον, ὅπου ἤδρευεν ἡ διοίκησις. Τῷ 1822 διωρίσθη ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης, προαχθεὶς ἅμα εἰς στρατηγόν. Ἐξελέγη τὸ ἑπόμενον ἔτος ὡς ἀντιπρόσωπος τῶν ὅπλων τῆς Πελοποννήσου τῆς ἐν Ἄστρει συνελεύσεως καὶ μετέσχε τῆς ἐπιτροπῆς πρὸς ἀναθεώρησιν τῶν ὀργανικῶν νόμων τῆς συνελεύσεως τῆς Ἐπιδαύρου. Ὀνομασθεὶς ἀρχηγὸς τῶν Κεφαλλήνων ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως, ἐξεστράτευσε κατὰ τῶν Πατρῶν. Τῷ 1823 ἀπεστάλη ὡς ἔπαρχος εἰς Μεσολόγγιον, ὅπου διήλλαξε τοὺς διῃρημένους ἀρχηγούς, καὶ ἀπεφασίσθη ἡ κατὰ τῶν Τούρκων ἐκστρατεία. Ἔσχε μετὰ τοῦ Βύρωνος πλείστας συνεντεύξεις περὶ τῶν ζητημάτων τοῦ Ἀγῶνος. Ἐπιστρέψας εἰς Πελοπόννησον ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τριακοσίων Κεφαλλήνων καὶ ἐπυρπόλησε τὴν Τριπολιτσᾶν, ὀλίγον πρὸ τῆς εἰσόδου εἰς αὐτὴν τοῦ Ἰμπραὴμ πασᾶ (1825), ἐπιστρέψας δὲ εἰς Ναύπλιον ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ Παλαμηδίου. Κατὰ τὸ 1827 ὁ στρατηγὸς Τσοῦρτς διώρισεν αὐτὸν πρόεδρον τοῦ ἐπιτελείου. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ Ἀγῶνος διωρίσθη ὑπὸ τοῦ κυβερνήτου ἁρμοστὴς τῶν Κυκλάδων, εἰργάσθη δὲ μεγάλως εἰς τὴν ὀργάνωσιν τῶν νήσων, ἵδρυσεν ἱκανὰ σχολεῖα καὶ ἐνεθάρρυνε τὸ ἐμπόριον. Ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν καὶ τῷ 1855 προήχθη εἰς συνταγματάρχην τῆς φάλαγγος, βαθμὸν ὃν δὲν ἐδέχθη, τῷ δὲ 1861 ἐγένετο γερουσιαστής. Μετὰ τὴν ἕνωσιν τῆς Ἑπτανήσου ἐγκατεστάθη εἰς Ἀργοστόλιον, ὅπου ἔγραψε τὰ «Ἀπομνημονεύματα τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως», δημοσιευθέντα μετὰ τὸν θάνατόν του καὶ μεταφρασθέντα εἰς τὴν Ἰταλικὴν καὶ Γαλλικήν. Θ. Β.

*Κωνσταντῖνος Μεταξᾶς.*

— **Μεταξᾶς, *Κωνσταντῖνος (Βοσπορίτης)*.** Ἕλλην βοτανικὸς καὶ λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Βαφεοχωρίῳ τοῦ Βοσπόρου τῷ 1858 καὶ ἀποθανὼν ἐν Γαλαζίῳ τῆς Ρουμανίας τῷ 1908. Ἐξέδωκε ποικίλας μελέτας, ἀσχοληθεὶς εἰδικῶς μὲ τὴν βοτανικήν, καὶ ἰδίᾳ μὲ τὴν χλωρίδα τῆς Μεσοποταμίας, ὅπου ἔζησεν ἐπὶ δεκαετίαν. Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἐπιστημονικῶν ἔργων του συμπεριλαμβάνεται καὶ τὸ εἰς τὴν Γαλλικὴν ἐκδοθὲν «La destruction des sauterelles en Irak Arabi», τὰ δὲ κυριώτερα φιλολογικά του ἔργα εἶναι: «*Σκηναὶ τῆς ἐρήμου*» (1899) καὶ «*Ὑπὸ τὴν σκιὰν τῶν φοινίκων*» (1904), ἅτινα ἐνεπνεύσθη ἐν Μεσοποταμίᾳ. Πλεῖσται φιλολογικαὶ καὶ ἐπιστημονικαὶ αὐτοῦ μελέται ἐδημοσιεύθησαν κατὰ καιροὺς εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ διαφόρους ἐφημερίδας.

— **Μεταξᾶς, *Μαρῖνος*.** Ἕλλην νομομαθής, πολιτικός, δημοσιογράφος καὶ ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1787 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1857. Ἐπὶ τῆς κατοχῆς τῶν Γάλλων διετέλεσε δικαστὴς καὶ γερουσιαστής, ἐπὶ δὲ τῆς Ἰονίου πολιτείας βουλευτής. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας. Ὁ γενικὸς διοικητὴς τῆς Ἑπτανήσου, στρατηγὸς Ντονζελό, ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν τὴν σύνταξιν τοῦ «Ἰονίου Μηνύτορος», τὸν ὁποῖον διηύθυνεν ἐπὶ διετίαν. Τῷ 1811 μετέσχε τῆς ἀποσταλείσης εἰς Παρισίους πρεσβείας, ὅπως συγχαρῇ τὸν Ναπολέοντα ἐπὶ τῇ ἐπετείῳ τῶν γενεθλίων αὐτοῦ, ὅτε συνέθεσε τὴν «ᾠδὴν πρὸς τὸν Ναπολέοντα». Ἔγραψε πλεῖστα ποιήματα καὶ μελέτας εἰς τὴν ἰταλικήν, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ κάλλιστα εἶναι «Odi italiane» καὶ «Sulla Feacia d'Omero». Θ. Β.

— **Μεταξᾶς, *Νικόδημος*.** Ἕλλην κληρικὸς καὶ λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Κεραμειαῖς τῆς Κεφαλληνίας τῷ 1585 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1646. Διδαχθεὶς ὑπὸ τοῦ θείου του ἐπισκόπου Κεφαλληνίας Νικοδήμου τὰ ἑλληνικὰ γράμματα, ἠσπάσθη τὴν μοναχικὴν πολιτείαν καὶ μετωνομάσθη *Νικόδημος*, *Νικόλαος* ἐν τοῖς κοσμικοῖς καλούμενος. Μεταβὰς εἰς Λονδῖνον τῷ 1620 παρὰ τῷ ἀδελφῷ του ἐμπορευομένῳ, συνέλαβε τὴν ἰδέαν ὅπως συστήσῃ εἰς τὴν πόλιν ταύτην ἑλληνικὸν τυπογραφεῖον καὶ ἐκδώσῃ χρήσιμα βιβλία διὰ τὸν ἑλληνικὸν λαόν. Διὰ τῆς συνδρομῆς τοῦ ἀδελφοῦ του συνέστησε μικρὸν τυπογραφεῖον, ἐξετύπωσε διάφορα συγγράμματα τῷ 1624, ἐν οἷς καὶ τὸ περὶ «Ἐπιστολικῶν τύπων» τοῦ Θεοφίλου Κορυδαλέως. Βλέπων ὅμως ὅτι ἐν Λονδίνῳ δὲν ἀπέβαινεν ὠφέλιμος εἰς τὸ ἔθνος, συνῆψεν ἀλληλογραφίαν μετὰ τοῦ πατριαρχεύοντος Κυρίλλου Λουκάρεως, ὅπως μεταφέρῃ τὸ τυπογραφεῖόν του εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἡ πρότασις ἐγένετο μετ᾽ ἐνθουσιασμοῦ δεκτή, καὶ ὁ Νικόδημος ἀγοράσας πλουσίαν βιβλιοθήκην καὶ τελειοποιήσας τὸ τυπογραφεῖόν του κατῆλθε τῷ 1627 εἰς Κωνσταντινούπολιν. Οὕτως ἱδρύθη τὸ πρῶτον ἐν Ἀνατολῇ τυπογραφεῖον, ἐξεδόθη δὲ καὶ τὸ πρῶτον εἰς τὴν Ἀνατολὴν βιβλίον, ὅπερ ἐπιγράφεται: «Τοῦ μακαριωτάτου καὶ σοφωτάτου πατρὸς ἡμῶν Πάπα καὶ Πατριάρχου Ἀλεξανδρείας, τανῦν δὲ οἰκουμενικοῦ πατριάρχου Κωνσταντινουπόλεως Κυρίλλου πραγματεία κατὰ Ἰουδαίων ἐν ἁπλῇ διαλέκτῳ πρὸς Γεώργιον τὸν Πάργαν. Ἐτυπώθη ἐν Κωνσταντινουπόλει δαπάνῃ καὶ ἐπιμελείᾳ τοῦ λογιωτάτου ἐν ἱερομονάχοις κυρίου Νικοδήμου Μεταξᾶ. Ἐν ἔτει ͵αχκζ΄».

Μετὰ τοῦτο ἐξέδωκε πέντε ἄλλα συγγράμματα ἐξελέγχοντα τὰς πλάνας τῶν παπιστῶν. Ταῦτα ἐξήγειρον τοὺς ἰησουΐτας, οἵτινες κατηγόρησαν αὐτὸν ὡς λουθηρανόν, εἶτα δὲ παρηνώχλουν αὐτὸν εἰς τὰς ὁδούς. Ὁ πρεσβευτὴς τῆς Ἀγγλίας, ὅπως προστατεύσῃ αὐτόν, ἐστέγασε τὸ τυπογραφεῖόν του εἰς τὴν πρεσβείαν, ἀλλ᾽ οἱ ἰησουῖται μεταβάντες εἰς τὸν διοικητὴν τοῦ Γαλατᾶ παρέστησαν αὐτὸν ὡς διοργανοῦντα ἐπανάστασιν, τὴν ὁποίαν δῆθεν ὑπέθαλπεν ὁ πρέσβυς τῆς Ἀγγλίας. Ὁ μέγας βεζύρης διέταξε τὴν σύλληψιν τοῦ Μεταξᾶ καὶ κατεσχέθησαν τὰ βιβλία του. Γενομένης ἐξετάσεως ἀπεδείχθησαν ψευδῆ τὰ καταγγελθέντα ὑπὸ τῶν ἰησουϊτῶν, ὁ δὲ μουφτῆς ἐξέδωκεν ἀπόφασιν, δι᾽ ἧς ἀπεφαίνετο ὅτι οὐδὲν ἐπιλήψιμον περιεῖχον τὰ κατασχεθέντα βιβλία. Ὁ μέγας βεζύρης ἀπεφυλάκισε τότε τὸν Μεταξᾶν καὶ τοῦ ἀπέδωκε τό τε τυπογραφεῖον καὶ τὴν βιβλιοθήκην, ταυτοχρόνως δὲ διέτασσε τὴν ἐξορίαν ἐσαεὶ τῶν ἰησουϊτῶν ἀπὸ τοῦ τουρκικοῦ κράτους. Ἡ Μεγάλη Ἐκκλησία προεχείρισε τὸν Μεταξᾶν εἰς ἀρχιεπίσκοπον Κεφαλληνίας καὶ Ζακύνθου. Παραλαβὼν οὗτος τὴν βιβλιοθήκην καὶ τὸ τυπογραφεῖόν του ἀπῆλθεν εἰς Κεφαλληνίαν. Ἀλλ᾽ οἱ ἄρχοντες τῆς Ζακύνθου ἐστράφησαν κατ᾽ αὐτοῦ καὶ διήγειρον τὸν λαὸν τῆς Ζακύνθου ἐναντίον του. Ὁ λαὸς ὅμως ὑπεδέχθη αὐτὸν ἐνθουσιωδῶς, ἔκτοτε δὲ χρονολογεῖται ὁ κατὰ τῶν ἀρχόντων δεινὸς ἀγὼν τῶν Ζακυνθίων. Μὴ ἀπελπισθέντες οὗτοι, κατεμήνυσαν εἰς τὴν βενετικὴν γερουσίαν τὸν Νικόδημον ὡς ἐκδίδοντα βιβλία κατὰ τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας. Ἀποδειχθείσης τῆς συκοφαντίας ἡ βενετικὴ γερουσία ἀπήλλαξεν αὐτὸν πάσης κατηγορίας. Μεταβὰς ὁ Νικόδημος εἰς Βενετίαν τῷ 1632 ἐξελέγη ἀρχιεπίσκοπος Φιλαδελφείας, παρῃτήθη δὲ τῷ 1635, τηρήσας μόνον τὸν θρόνον Κεφαλληνίας. Ὁ Μεταξᾶς ἦτο ἐκ τῶν προμάχων τῆς ὀρθοδοξίας, ἔνθερμος πατριώτης καὶ εὐφραδέστατος ῥήτωρ. Θ. Β.

— **Μεταξᾶς, *Νικόλαος*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ (1833—1903), προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων καὶ προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου. Φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου ἀρχικῶς, τοῦ συνταγματάρχου κατόπιν, διετέλεσε κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 1887—1893 διοικητὴς τοῦ μοναδικοῦ τότε συντάγματος μηχανικοῦ, μεθ᾽ ὃ διετέλεσεν ἐπὶ μικρόν τι χρονικὸν διάστημα διοικητὴς τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων. Ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν κατὰ τὴν πρώτην περίοδον τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου 1897, βραδύτερον δ᾽ ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν. Ν. Θ. Κ.

— **Μεταξᾶς, *Σπυρίδων*.** Ἕλλην διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1808 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1869 ἐν Πετρουπόλει. Ἐσπούδασεν ἐν Γενεύῃ καὶ συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Παρισίοις



Digitized by Google

καὶ Γερμανίᾳ. Διωρίσθη τῷ 1836 γραμματεὺς τῆς ἐν Ἱσπανίᾳ πρεσβείας, τῷ 1840 τμηματάρχης τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν, τῷ δὲ 1856 γραμματεὺς τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει πρεσβείας, ὅπως συνεργασθῇ μετὰ τοῦ πατρός του Ἀνδρέου Μεταξᾶ. Μετὰ τὴν ἕνωσιν τῆς Ἑπτανήσου ἐξελέγη πληρεξούσιος Κεφαλληνίας εἰς τὴν Β′ ἐν Ἀθήναις Συνέλευσιν καὶ τῷ 1867 διωρίσθη πρεσβευτὴς εἰς Πετρούπολιν, ὅπου κατώρθωσε νὰ λύσῃ τὸ ἐκκρεμοῦν ζήτημα τοῦ κληροδοτήματος τοῦ Βαρβάκη. Θ. Β.

—**Μεταξᾶς, *Σταῦρος*.** Ἕλλην ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1823 ἐν Κεφαλληνίᾳ καὶ ἀποθανὼν ἐν Μασσαλίᾳ τῷ 1899. Ἐδιδάχθη τὰ ἐγκύκλια μαθήματα ἐν Ἀθήναις καὶ ἐσπούδασεν ὀφθαλμολογίαν ἐν Παρισίοις. Κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν μετασχὼν τῆς κατὰ τῶν Ἄγγλων στάσεως κατεδιώχθη καὶ δραπετεύσας κατεδικάσθη ἐρήμην εἰς θάνατον. Ἐγκατασταθεὶς εἰς Μασσαλίαν διέπρεψεν ὡς ἐπιστήμων καὶ ἐξελέγη δημοτικὸς σύμβουλος τῆς πόλεως ταύτης, ἵδρυσε δὲ τὸ ἐν Μασσαλίᾳ γηροκομεῖον «La Charité». Διετέλεσε πρόεδρος τοῦ ἑλληνικοῦ συλλόγου τῆς πόλεως ταύτης καὶ συνέγραψεν ἰατρικὰς μελέτας μεγάλης ἀξίας. Θ. Β.

**Μεταξᾶτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 307. Κεῖται ἐπὶ λόφου, ἔχει κλῖμα ὑγιεινὸν καὶ ὑδρεύεται ἐκ φρεάτων. Καλλιεργεῖται κυρίως ἡ ἐλαία, ἡ ἄμπελος καὶ ἡ σταφιδάμπελος. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Καλλιγᾶτα* (κάτ. 266) καὶ *Κουρκουμελᾶτα* (κάτ. 133). Τὰ Μεταξᾶτα μετὰ τοῦ Ἀργοστολίου συγκοινωνοῦν δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ (χλτρ. 10). Εἰς τὸ χωρίον τοῦτο ὑπάρχει ἱστορικὴ μονὴ κτισθεῖσα τῷ 1512 ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου Νικοδήμου Μεταξᾶ πρὸς ἐνταφιασμὸν τῶν κατὰ καιροὺς μητροπολιτῶν Κεφαλληνίας. Ἐν αὐτῇ σῴζονται 7 κάραι ἄταφοι. Δ. Ε. Μ.

**μεταξένιος,** *—α, —ο·* δημοτ., ὁ κατεσκευασμένος ἀπὸ μετάξι, μετάξινος, μεταξωτός· || ὁ μεταξοειδής: «μαλλιὰ μεταξένια».

**μετάξι** (τό)· δημοτ., ἡ *μέταξα* (βλ. λ.)· || φρ. «βγάνω μετάξι» ἐξάγω μέταξαν ἐκ τῶν κουκουλίων, ἀναπηνίζω τὰ κουκούλια: «δὲν τὰ πουλῶ τὰ κουκούλια μου, θὰ τὰ βγάνω μετάξι νὰ τὸ φάνω».

*— **μετάξι τῆς ἀλεποῦς,—τῆς κουρούνας** [Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐπίθυμον*.

**μετάξινος,** *—η, —ον·* ὁ ἐκ μετάξης κατεσκευασμένος, μεταξωτός.

**μεταξίτης** (ὁ) (Metaxit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πολυπυριτικὸν ἅλας τοῦ μαγνησίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $H_4 Mg_3 Si_2 O_9$. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ ἰνώδους σερπεντίνου, διαφέρει ὅμως αὐτοῦ, διότι παρουσιάζεται ῥαβδοπαγὴς ἢ χονδροϊνώδης ἕως σχεδὸν στιφρός, αἱ δὲ ἶνες εἶναι σκληραὶ καὶ δὲν ὑπόκεινται εἰς κάμψιν. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Schwarzenberg τῆς Σιλεσίας, Reichenstein τῆς Σαξωνίας κ. ἄ. Γ. Β.

**μεταξοβάμβακο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Ἑτέρα κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *γομφόκαρπος ὁ φρυγανώδης*.

**μεταξοβιομηχανία** (ἡ)· ἡ βιομηχανία τῆς κατεργασίας τῆς μετάξης καὶ τῆς χρησιμοποιήσεως αὐτῆς ὡς ὕλης ὑφαντικῆς.

— [ΕΓΚΥΚΛΟΠ.] Ἡ *μεταξοβιομηχανία* περιλαμβάνει τρεῖς κυρίους κλάδους: α′) τὴν μεταξοκλωστικὴν ἢ μεταξουργίαν, β′) τὴν λεύκανσιν καὶ βαφὴν τῶν νημάτων καὶ γ′) τὴν ὕφανσιν αὐτῶν. Ἀλλὰ καὶ μόνη ἡ μεταξοκλωστικὴ ὀνομάζεται ἐνίοτε μεταξοβιομηχανία, ἄλλοτε δὲ πάλιν γίνεται χρῆσις τοῦ ὅρου *μεταξουργία* ἐν τῇ ἐννοίᾳ τῆς ὅλης μεταξοβιομηχανίας.

Α′) *Μεταξοκλωστική*. Τὰ βομβύκια (κουκούλια) τὰ προωρισμένα νὰ μετατραπῶσιν εἰς νήματα, κλιβανίζονται ἐν καιρῷ, ὑπὸ θερμοκρασίαν 80 περίπου βαθμῶν, τοῦτο δὲ ἵνα θανατωθῶσιν αἱ ἐν αὐτοῖς κάμπαι, πρὸ τοῦ μεταμορφωθῶσιν εἰς χρυσαλλίδας, ὁπότε, διατρυπῶσαι τὸ βομβύκιον διὰ νὰ ἐξέλθουν, καταστρέφουν τὴν ἑνότητα τῶν νημάτων αὐτοῦ. Γίνεται δὲ ἡ ἐκτύλιξις τοῦ μεταξίνου νήματος ἀπὸ τῶν βομβυκίων καὶ ἡ ἀναπήνισις αὐτοῦ κατὰ τὸν ἀκόλουθον τρόπον:

Τὰ βομβύκια ῥίπτονται ἐν ἀρχῇ εἰς εἰδικὴν ἐπὶ τούτῳ λεκάνην περιέχουσαν ὕδωρ θερμοκρασίας 90° καὶ ἀναδεύονται ἐντὸς αὐτῆς ἐπί τινα χρόνον. Τὸ θερμὸν ὕδωρ διαλύει τὴν μεταξόκολλαν ἥτις συνέχει πρὸς ἀλλήλους τοὺς γύρους τοῦ μεταξίνου νήματος (τῆς μεταξοϊνίνης). Μετὰ τοῦτο τὰ βομβύκια ἐντίθενται εἰς ἑτέραν λεκάνην, τῆς ὁποίας τὸ ὕδωρ διατηρεῖται εἰς θερμοκρασίαν 50°, καὶ ἀναδεύονται ἐκ νέου, ὁπότε τὰ ἄκρα τῶν νημάτων, ἐλευθερούμενα, ἀρχίζουν νὰ ἐπιπλέουν. Ἡ κλώστρια συνενώνει τότε πέντε, ἓξ ἢ καὶ περισσότερα νήματα, ἀναλόγως τοῦ πάχους τῆς κλωστῆς τὴν ὁποίαν πρόκειται νὰ σχηματίσῃ. Τὸ ἄκρον τοῦτο τῆς κλωστῆς, ἀφοῦ διαπερασθῇ διὰ δακτυλίου, ἔχοντος ὀπὴν ἀντίστοιχον πρὸς τὸ πάχος της, προσδένεται εἰς τὴν ἀνέμην, αὕτη δὲ περιστρεφομένη συνεχίζει αὐτομάτως τὴν ἐκτύλιξιν τῶν νημάτων τῶν βομβυκίων, ἀναπηνίζουσα ἅμα τὴν σχηματιζομένην κλωστήν.

Τὰ βομβύκια τὰ ὁποῖα εἶχον διατρυπηθῆ ὑπὸ τῶν ἐξερχομένων χρυσαλλίδων χρησιμοποιοῦνται κατ' ἄλλον τρόπον. Δὲν γίνεται δηλαδὴ εἰς αὐτὰ ἐκτύλιξις τοῦ νήματος, ἀλλ' ἀφοῦ ξηρανθῶσι καλῶς, ξαίνονται, ὅπως ὁ βάμβαξ καὶ τὸ ἔριον, καὶ κατόπιν κλωστοποιοῦνται διὰ περιστροφῆς (στριψίματος).

Β′) *Λεύκανσις καὶ βαφή*. Ὀνομάζεται «λεύκανσις» ἡ κατεργασία, διὰ τῆς ὁποίας ἡ κλωστὴ ἀπαλλάσσεται ἐξ ὁλοκλήρου ἀπὸ τὴν μεταξόκολλαν, τοῦθ' ὅπερ ἐπιτυγχάνεται διὰ πλύσεως τῆς μετάξης εἰς ζέουσαν ἀλκαλικὴν διάλυσιν. Ἐπειδὴ ὅμως ἀφαιρεῖται οὕτω ἱκανὸν μέρος τοῦ βάρους τῆς κλωστῆς, ἡ κατεργασία τῆς λευκάνσεως δὲν ἐκτελεῖται πλήρης, παρὰ μόνον ὅταν ἡ μέταξα προορίζεται δι' ὑφάσματα μεγάλης πολυτελείας· ἄλλοτε δὲ πάλιν παραλείπεται ἐντελῶς. Εἰς τὴν τελευταίαν περίπτωσιν ἡ μέταξα λέγεται ὠμὴ (soie écrue, setta cruta). Ἂν ἡ μεταξόκολλα ἔχει ἀφαιρεθῆ κατὰ μέρον μόνον, ἡ μέταξα ὀνομάζεται μαλακὴ (souple), ἂν δὲ ἐξ ὁλοκλήρου λέγεται ἑψημένη (cuite). Μετὰ τὴν λεύκανσιν ἀκολουθεῖ ἡ βαφὴ τῆς μετάξης, ἐπιτυγχανομένη διὰ διαφόρων τρόπων. Μετ' αὐτὴν δύναται νὰ προστεθῇ βάρος εἰς τὴν μέταξαν διὰ προσθήκης καταλλήλων, ὀργανικῶν ἢ ἀνοργάνων, οὐσιῶν.

Γ′) *Ὕφανσις*. Ἡ ὕφανσις τῆς μετάξης δὲν διαφέρει κατὰ βάσιν ἀπὸ τὴν διὰ τῶν βαμβακίνων καὶ μαλλίνων νημάτων (βλ. λ. *ὑφαντουργία*).

Ἐν Ἑλλάδι ἡ μεταξοβιομηχανία ἐμφανίζει ἀξιόλογον πρόοδον. Λειτουργοῦσιν ἤδη περὶ τὰ 20 ἐργοστάσια, ἐξ ὧν ἄλλα εἶναι μεταξουργεῖα μόνον (κλωστήρια), ἄλλα ὑφαντήρια καὶ ἄλλα γενικῆς μεταξοβιομηχανίας. Εἰς τὰς κλωστικὰς αὐτῶν ἐγκαταστάσεις γίνεται κατ' ἔτος κατεργασία 1.800.000 περίπου χιλιογράμμων βομβυκίων. —Ρ.

**μεταξογόνος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ παράγων μέταξαν, μεταξοποιός.

**μεταξοκλωστικὴ** (ἡ)· ἡ τέχνη τῆς κατασκευῆς μεταξίνων κλωστῶν, ἄλλως *μεταξουργία*.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *μεταξοβιομηχανία*.

**μεταξοειδὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μέταξαν.

**μεταξόνιον** (τό)· ἡ ἀπόστασις μεταξὺ τῶν ἀξόνων δύο ἀλληλοδιαδόχων κιόνων κιονοστοιχίας τινός· ἄλλως: *διάστυλον*.

**μεταξοπαραγωγὴ** (ἡ)· παραγωγὴ μετάξης: «ἡ ἐν Ἑλλάδι μεταξοπαραγωγή».

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *μέταξα καὶ σηροτροφία*.

**Μεταξόπουλος, *Παρθένιος*.** Λόγιος κληρικὸς τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος, ἐν τοῖς κοσμικοῖς καλούμενος *Παῦλος*. Διετέλεσεν ἀρχιμανδρίτης τῆς ἐν Τραπεζοῦντι μονῆς τοῦ Σουμελᾶ καὶ συνέγραψεν «Ἱστορίαν τῆς Τραπεζοῦντος καὶ τῶν βασιλέων αὐτῆς» ἀπὸ τοῦ 718 μέχρι τῆς ἁλώσεως αὐτῆς ὑπὸ τῶν Τούρκων. Ἐπίσης συνέγραψε: «Μεγαλυνάρια εἰς τοὺς ὁσίους Βαρνάβαν καὶ Σωφρόνιον» καὶ «Ἐπιγράμματα εἰς τὴν Θεοτόκον», ἐκδοθέντα τῇ ἐπιμελείᾳ του μετὰ τοῦ «Κτιτορικοῦ» τῆς μονῆς Σουμελᾶ τοῦ Νεοφύτου Καυσοκαλυβίτου ἐν Λειψίᾳ τῷ 1775. Ν. Α.

**μεταξοσκώληξ,** *—ηκος* (ὁ). Καλεῖται οὕτως ἡ κάμπη τοῦ βόμβυκος τῆς μορέας, ἀνήκουσα εἰς τὸ γένος βόμβυξ. Οἱ μεταξοσκώληκες ὑπάρχουν εἰς πολλὰ εἴδη, ἐν ἀγρίᾳ δὲ καταστάσει εἰς τὰ ἔνδον τῆς Ἀσίας ἀπαντῶσιν εἰς μεγάλον ἀριθμόν. Ὁ μεταξοσκώληξ ἀπὸ τῆς ἐκκολάψεως ἐκ τοῦ ᾠοῦ μέχρις τῆς τελείας αὐτοῦ ἀναπτύξεως εἰς κάμπην διανύει σχετικῶς μικρὰν ζωήν, ἤτοι 45—50 ἡμερῶν κατὰ λόγον τῆς θερμοκρασίας, οὐχὶ δὲ μεγαλυτέραν τῶν 80 ἡμερῶν μέχρι τῆς στιγμῆς καθ' ἣν ἡ ψυχή, ἐξελθοῦσα τοῦ βομβυκίου καὶ γονιμοποιηθεῖσα, θὰ ἀποθέσῃ τὰ ᾠά της. Ἡ ἐκκόλαψις τῶν ᾠῶν γίνεται διὰ φυσικῆς ἐπῳάσεως εἰς θερμοκρασίαν 22 βαθμῶν, ἢ διὰ τεχνητῆς δι' εἰδικῶν ἐκκολαπτηρίων περὶ τὰ μέσα Ἀπριλίου. Ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς ἐκκολάψεως ἡ ἐξελθοῦσα μικροτάτη καὶ πλήρης τριχῶν κάμπη διανύει τὴν πρώτην αὐτῆς ἡλικίαν, μέχρι δὲ τῆς τελείας ἀναπτύξεώς της ὑπολείπονται τέσσαρες ἔτι ἡλικίαι, αἱ ὁποῖαι χωρίζονται ἀλλήλων δι' ἰσαρίθμων ἀποδερματώσεων, ἑκάστη τῶν ὁποίων συντελεῖται κατὰ τὴν διάρκειαν εἰκοσιτετραώρου καὶ πλέον ἀπολύτου ἀκινησίας. Ἑκάστη ἡλικία, ἀναλόγως τῆς θερμοκρασίας, ἀριθμεῖ 6—8 ἡμέρας, πλὴν τῆς τελευταίας, ἥτις διαρκεῖ 10—12 ἡμέρας. Μετὰ τὴν ὀγδόην ἡμέραν τῆς πλήρους διαμορφώσεως καὶ ἀναπτύξεως, ἡ κάμπη, ἐξεταζομένη ἐξωτερικῶς, παρουσιάζει σχῆμα κυλινδρικὸν μήκους 0.08—0,09 μ., πάχους 0,04—0,05 μ. καὶ βάρους 4—5 γραμ., ἔχει δὲ χρῶμα, ἀναλόγως τῆς φυλῆς, ὑπόλευκον ἢ κίτρινον, καὶ εἶναι διῃρημένη εἰς 12 δακτυλίους ἢ ἄρθρα. Ἡ κεφαλή της, σφαιροειδής, εἶναι σκληρὰ καὶ σύνθετος, ἀποτελεῖται δὲ κυρίως ἐκ τῶν ὀφθαλμῶν, ἓξ τὸν ἀριθμόν, κειμένων πλαγίως, ἐκ κυλινδρικῶν τινων βοηθητικῶν ἀποφύσεων καὶ ἐκ τῶν ὀργάνων τοῦ στόματος, ἤτοι τῶν πριονωτῶν σιαγόνων, τῶν χειλέων καὶ τῆς προβοσκίδος. Οἱ τρεῖς πρῶτοι δακτύλιοι ἀπαρτίζουν τὸν θώρακα, κάτωθεν δὲ ἑκάστου τούτων ὑπάρχει ἀνὰ ἓν ζεῦγος ἀρθρωτῶν ποδῶν, οἱ ὁποῖοι χρησιμεύουν κυρίως εἰς τὴν λῆψιν καὶ συγκράτησιν τῆς τροφῆς. Ἀπὸ τοῦ ἕκτου ἕως τοῦ ἐννάτου, ὡς καὶ εἰς τὸν τελευταῖον δυκτύλιον, ὑπάρχουν κάτωθεν οἱ λεγόμενοι ψευδόποδες, πλατεῖς, μεμβρανώδεις, οἵτινες χρησιμεύουν διὰ τὴν ἑρπηστικὴν βάδισιν τῆς

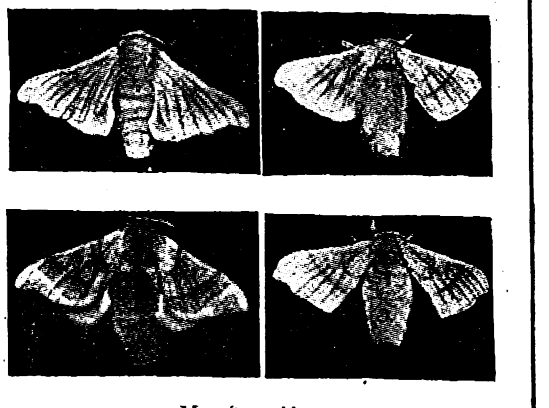

*Μεταξοσκώληκες.*
[1, 2=ὁ λευκὸς (ἄρρην καὶ θῆλυς)· 3, 4=ὁ φαιὸς (ἄρρην καὶ θῆλυς).]

κάμπης. Ἄνωθεν τοῦ ἑνδεκάτου δακτυλίου ὑπάρχει μικρά τις ἀγγιστροειδὴς ἔκφυσις, ἄλλως οὐρὰ καλουμένη. Ἑκατέρωθεν καὶ πρὸς τὸ κάτω μέρος τῶν πλευρῶν, ἐπὶ τοῦ πρώτου, καὶ ἀπὸ τοῦ τρίτου ἕως τοῦ ἑνδεκάτου δακτυλίου, ὑπάρχουν μικρότατοι ἐλλειψοειδεῖς μελανοὶ πόροι, στίγματα καλούμενοι, οἱ ὁποῖοι ἐσωτερικῶς συνέχονται μὲ τὰς τραχείας καὶ διὰ τῶν ὁποίων ἐπιτελεῖται ἡ ἀναπνευστικὴ λειτουργία. Εἰς τὴν ἐσωτερικὴν διάταξιν τῶν ὀργάνων τῆς κάμπης παρατηροῦμεν κυρίως πρῶτον τὸν κυλινδρικὸν πεπτικὸν σωλῆνα, ὅστις ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ στόματος καὶ καταλήγων εἰς τὸ ἄκρον τοῦ τελευταίου δακτυλίου καταλαμβάνει τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ ἐσωτερικοῦ χώρου. Οὗτος διαιρεῖται εἰς τρία κύρια μέρη, τὸν οἰσοφάγον, ὁ ὁποῖος ἄρχεται ἀπὸ τοῦ στόματος καὶ φθάνει μέχρι τοῦ τρίτου δακτυλίου, τὸν κύριον στόμαχον, φθάνοντα μέχρι τοῦ ἐνάτου δακτυλίου, ἀφ' οὗ σημείου ἄρχεται στενούμενος, καὶ τὸ ἔντερον, καταλῆγον εἰς τὸ ἄκρον, τὸ ὁποῖον σύγκειται ἐκ τριῶν σφαιροειδῶν τμημάτων, ἔνθα εἰς τὸ ἐσωτερικὸν συνάγονται τὰ πρὸς ἀποβολὴν περιττώματα. Δεύτερον, ὁμοίως ἐπὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ διακρίνομεν τοὺς μαλπιγγείους σωλῆνας, οἵτινες ἑλισσόμενοι ἀπολήγουσιν εἰς τὸ ἔντερον, ἐπιτελοῦντες τὴν λειτουργίαν τῶν νεφρῶν. Τρίτον, οἱ μεταξογόνοι ἀδένες, μακρότατοι σωλῆνες, εὑρίσκονται ἔνθεν τοῦ κάτω μέρους τοῦ πεπτικοῦ σωλῆνος, διὰ πολλῶν δὲ ἀναδιπλώσεων στενούμενοι, καταλήγουσιν ὁμοῦ εἰς τὴν προβοσκίδα, ἐξ ἧς ἐξέρχεται ἡ ἐντὸς αὐτῶν παρασκευασθεῖσα μέταξα. Ἕκαστος τούτων διαιρεῖται εἰς τρία μέρη, εἰς τὰ ὁποῖα ἰδιαιτέρας τυγχάνει ἐπεξεργασίας ἡ ὑπὸ παρασκευὴν μέταξα. Εἰς τὸ πρῶτον κυλινδρικὸν μέρος, τὸ ὁποῖον ἄρχεται ἀπὸ τοῦ ἐνάτου δακτυλίου, σχηματίζεται ἡ φιβροΐνη, ἥτις ἀποτελεῖ τὴν μέταξαν εἰς ὑγρὰν κατάστασιν· ἐκεῖθεν δὲ διερχομένη αὕτη εἰς τὸ μεσαῖον παχύτερον τμῆμα χρωματίζεται διὰ κολλώδους οὐσίας καὶ διὰ τοῦ τρίτου λεπτοτάτου σωληνίσκου φθάνουσα περιβάλλεται ὑπὸ ἐλαχίστου στρώματος γλοιώδους ὕλης. Ἡ μέταξα ἅμα τῇ ἐξόδῳ της διὰ τῆς προβοσκίδος, ἑτοίμη πλέον, στερεοποιεῖται πάραυτα, σύγκειται δὲ ἀπὸ δύο ἡνωμένας λεπτοτάτας ταινίας.

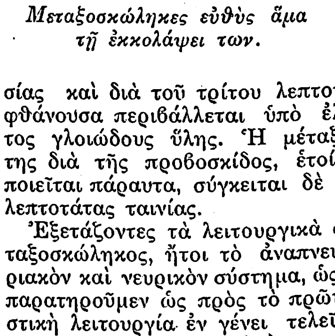

*Μεταξοσκώληκες εὐθὺς ἅμα τῇ ἐκκολάψει των.*

Ἐξετάζοντες τὰ λειτουργικὰ συστήματα τοῦ μεταξοσκώληκος, ἤτοι τὸ ἀναπνευστικόν, κυκλοφοριακὸν καὶ νευρικὸν σύστημα, ὡς καὶ τὰς αἰσθήσεις, παρατηροῦμεν ὡς πρὸς τὸ πρῶτον ὅτι ἡ ἀναπνευστικὴ λειτουργία ἐν γένει τελεῖται διὰ τῶν τραχειῶν, εἰς τὰς ὁποίας ὁ ἀτμοσφαιρικὸς ἀὴρ εἰσέρχεται διὰ τῶν γνωστῶν προαναφερθέντων δεκαοκτὼ στιγμάτων, ἅτινα κοινωνοῦσι μὲ τὰς τραχείας. Ἡ ἐκπνοὴ γίνεται οὐ μόνον διὰ τῶν στιγμάτων, ἀλλὰ καὶ δι' ὅλης τῆς ἐξωτερικῆς ἐπιφανείας τοῦ σώματος. Ἐπὶ τοῦ κυκλοφοριακοῦ συστήματος

Digitized by Google

μεγάλην σπουδαιότητα ἔχει τὸ ἐπινωτιαῖον ἀγγεῖον, ἐπέχον θέσιν καρδίας. Ἀποτελεῖται τοῦτο ἀπὸ σωλῆνα, ὅστις ἀπὸ τοῦ τελευταίου δακτυλίου ἐκκινῶν καὶ κατὰ μῆκος τῆς ῥάχεως πρὸς τὴν κεφαλὴν διήκων, καταλήγει εἰς λεπτότατον σωληνίσκον. Ὁλόκληρος οὗτος ὁ σωλὴν περιβάλλεται

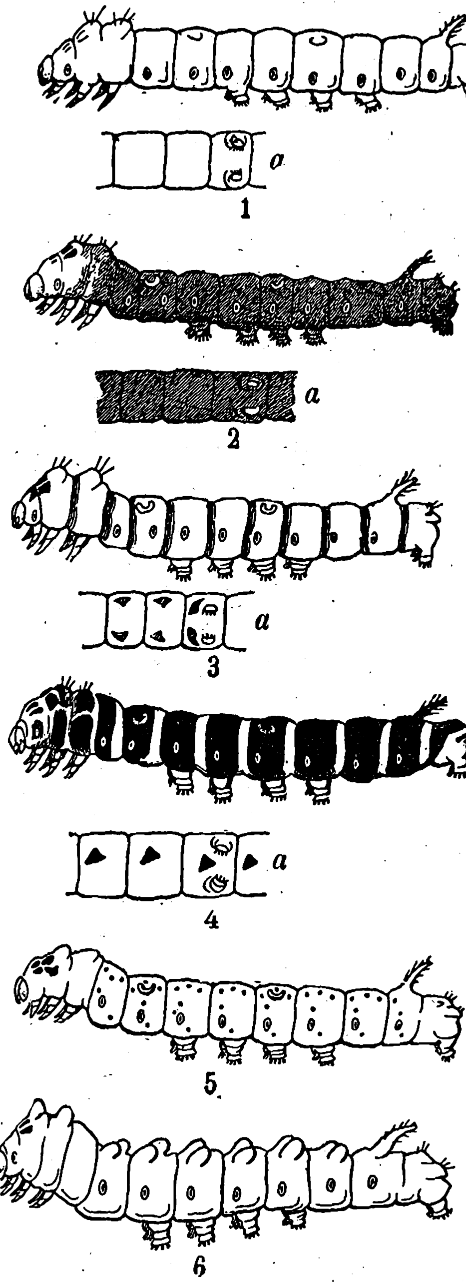


*Διάφοροι τύποι μεταξοσκώληκος.*

[1=Λευκὸς ἄνευ κηλίδων (ὁ συνήθης μεταξοσκώληξ) (α=κοιλιακὴ ἐπιφάνεια). 2=Μελανὸς (α=κοιλιακὴ ἐπιφάνεια φαιά). 3=Λευκὸς μετὰ μελανῶν γραμμώσεων (α=δύο κηλῖδες μελαναὶ τριγωνικαὶ κατὰ τὴν κοιλιακὴν ἐπιφάνειαν ἑκάστης ἀρθρώσεως). 4=Μελανὸς μετὰ λευκῶν ῥαβδώσεων (α=τριγωνικὴ κηλὶς μελανοῦ χρώματος κατὰ τὴν κοιλιακὴν ἐπιφάνειαν ἑκάστης ἀρθρώσεως). 5=Λευκὸς διάστικτος. 6=Ὁ κερατοειδής.]

διὰ μυϊκοῦ ἱστοῦ, πεπληρωμένος δὲ ἐξ αἵματος (ὑποκιτρίνου ὑγροῦ, τὸ ὁποῖον περιβρέχει τὰ ἐσωτερικὰ ὄργανα) συστέλλεται 45—50 φορὰς τὸ λεπτὸν καὶ ἐξαπολύει τὸ αἷμα εἰς τὴν κεφαλήν, ἐντεῦθεν δὲ εἰς τὰς ἐσωτερικὰς κοιλότητας τοῦ σώματος. Ἐκ τῆς ἐν γένει λειτουργίας τῶν ὀργάνων τοῦ σώματος τῆς κάμπης, ἡ δημιουργουμένη θερμοκρασία μόλις κατὰ 1° βαθμὸν εἶναι ἀνωτέρα τῆς ἀτμοσφαιρικῆς. Ἐξετάζοντες τὸ νευρικὸν σύ-

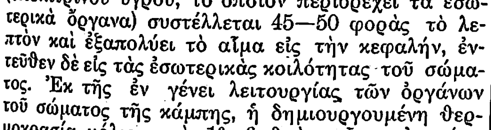

*Μεταμορφώσεις τοῦ μεταξοσκώληκος.*

[Α=Σκώληξ κατὰ τὴν γέννησίν του. Β=Πρώτη φάσις τῆς μεταμορφώσεως (1=πρό· 2=μετά). Γ=Δευτέρα φάσις (1=πρό· 2=μετά). Δ=Τρίτη φάσις (1=πρό· 2=μετά). Ε=Τετάρτη φάσις (1=πρό· 2=μετά). Ζ=Τέλειος μεταξοσκώληξ.]

στημα παρατηροῦμεν ὅτι τοῦτο ἀποτελεῖται κυρίως ἐκ τῶν γαγγλίων, ἐκ τῶν ὁποίων ἐκπορεύονται καὶ διακλαδίζονται πανταχόθεν λεπτότατα νεῦρα, ἅτινα εὑρισκόμενα εἰς ἄμεσον σχέσιν μετὰ τῶν μυῶν ἐπιτυγχάνουν τὴν κίνησιν τῶν ὀργάνων τοῦ σώματος. Τελευταῖον, ὡς πρὸς τὰς αἰσθήσεις τῆς ὁράσεως, ἀφῆς, ὀσφρήσεως ἀκοῆς, παρατηροῦμεν ὅτι αὗται εἶναι μᾶλλον ἀτελῶς ἀνεπτυγμέναι. Ἡ αἴσθησις τῆς γεύσεως, ἥτις ἑδράζεται ἐπὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῶν παρειῶν τοῦ στόματος, εἶναι ἡ πλέον ἀνεπτυγμένη, εὐκόλως δὲ ἡ κάμπη ἀντιλαμβάνεται τὴν τροφὴν τῶν μορεοφύλλων, ἐξ ὧν ἀποκλειστικῶς τρέφεται.

Ἡ πέμπτη ἡλικία τῆς κάμπης διαρκεῖ 10—12 ἡμέρας, κατὰ τὸ διάστημα τῶν ὁποίων ἀναπτύσσεται αὕτη τελείως. Μετὰ τὴν 8ην ἡμέραν παύει πλέον νὰ τρώγῃ, ἐκκαθαρίζεται ἐσωτερικῶς, καθίσταται ὀλίγον διαφανής, εἰς τοὺς μεταξογόνους αὐτῆς ἀδένας, οἱ ὁποῖοι μεγάλως ἐξογκοῦνται, παρασκευάζεται ἡ μέταξα, δεικνύει πλανητικὰς διαθέσεις, ὅτε καὶ λέγομεν πλέον ὅτι ἡ κάμπη ὡρίμασε. Τελευταῖον ἀποβάλλει ὑδαράν τινα ὀξεῖαν οὐσίαν, τὴν μόνην ὑγρὰν καθ' ὅλην της τὴν ζωὴν καὶ ἀναρριχᾶται ἐπὶ τῶν τοποθετουμένων κλαδίσκων (φρυγάνων). Ἐκεῖθεν ἄρχεται ἐκβάλλουσα τὰ πρῶτα μετάξινα νήματα καὶ μετ' οὐ πολὺ ἐπιδίδεται εἰς τὴν κατασκευὴν τοῦ βομβυκίου. Ἐκχύνει τὴν μέταξαν πέριξ τοῦ σώματός της καὶ ἀφοῦ ἐξαντλήσῃ ἅπασαν τὴν εἰς τοὺς μεταξωτοὺς αὐτῆς ἀδένας μέταξαν, ἐγκλείεται ἐντὸς τοῦ σχηματισθέντος ἤδη βομβυκίου. Ἐντὸς αὐτοῦ μεγάλως σμικρυνθεῖσα, μὲ τὸ δέρμα πλήρως ῥυτιδωθέν, προετοιμάζεται διὰ ῥιζικὴν μεταβολήν, ἥτις συντελεῖται μετὰ 3—4 ἡμέρας. Πρόκειται περὶ τῆς μεταμορφώσεως τῆς κάμπης εἰς χρυσαλλίδα κατόπιν νέας ἀποδερματώσεως. Εἰς τοιαύτην κατάστασιν, μὲ τὸ σῶμα ὁπωσδήποτε κοντὸν καὶ χονδρόν, παραμένει ἀκινητοῦσα ἀπολύτως, ἔνθα νέαι σοβαραὶ μεταβολαὶ γίνονται εἰς τὸ ἐσωτερικόν, προετοιμάζουσαι τὴν τελικὴν μεταμόρφωσιν. Αἱ μεταβολαὶ αὗται συνίστανται κυρίως εἰς τὴν σμίκρυνσιν τοῦ πεπτικοῦ σωλῆνος, εἰς τὸ σχηματισμὸν πλησίον τοῦ οἰσοφάγου τοῦ προλόβου. Οἱ μεταξογόνοι ἀδένες ἀτροφοῦν, τὸ ἀναπνευστικὸν σύστημα καθίσταται πολυπλοκώτερον, τὸ γεννητικὸν σύστημα ἀναπτύσσεται τελείως, παρὰ δὲ τῷ θήλει διαμορφοῦνται τὰ ᾠάρια, ἐξωτερικῶς σχηματίζονται αἱ πτέρυγες, αἱ κεραῖαι, οἱ πόδες καὶ τέλος διὰ τελευταίας ἀποδερματώσεως ἐμφανίζεται ἡ ψυχὴ (πεταλοῦδα), τέλειον πλέον ἔντομον, τὸ ὁποῖον ἐξέρχεται, μετὰ 24—28 ἡμέρας ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῆς κλαδώσεως, τὰς πρωϊνὰς ὥρας, ἐκ τοῦ βομβυκίου τῇ βοηθείᾳ τῶν ποδῶν, κόπτουσα τὰ μετάξινα νήματα διὰ δραστικοῦ ὑγροῦ, τὸ ὁποῖον περικλείεται ἐν τῷ προλόβῳ καὶ ἐκκρίνεται ἐκ τοῦ στόματος. Ἡ ψυχὴ ζῇ ἕως 12 ἡμέρας, κατὰ τὸ διάστημα δὲ τοῦτο συντελεῖται ἡ γενετήσιος ὁμιλία τῶν δύο φύλων, ὅτε, μετὰ τὴν γονιμοποίησιν, ἡ θῆλυς γεννᾷ 450 περίπου ᾠάρια. Ἡ ψυχὴ διαιρεῖται εἰς τὴν κεφαλήν, τὸν θώρακα καὶ τὴν κοιλίαν, ὁλόκληρον δὲ αὐτῆς τὸ σῶμα καὶ ἰδίως αἱ πτέρυγες καλύπτονται ὑπὸ λεπτοτάτων λεπίων. Ἡ κεφαλή, σχήματος ᾠοειδοῦς, εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς ὁποίας ἑδράζεται τὸ νευρικὸν σύστημα, φέρει κυρίως τοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ τὰς κεραίας. Οἱ ὀφθαλμοί, 2 τὸν ἀριθμόν, εἶναι σύνθετοι, ἀποτελούμενοι ἐκ πλέον τῶν 10.000 ἑδρῶν ἕκαστος, εὑρίσκονται δὲ τοποθετημένοι εἰς τὰ πλάγια. Αἱ κεραῖαι, αἱ ὁποῖαι εἶναι μεγαλύτεραι εἰς τὴν ἄρρενα, ἀποτελοῦνται ἀπὸ δύο ἀρθρωτὰ λεπτὰ εἰς σχῆμα τόξου πτερύγια, ἅτινα κεῖνται ὄπισθεν καὶ ὑπεράνω τῶν ὀφθαλμῶν, χρησιμεύουν δὲ ὡς ὄργανα τῆς ὀσφρήσεως. Ὁ θώραξ σύγκειται ἐκ τριῶν δακτυλίων, ἕκαστος τῶν ὁποίων φέρει ζεῦγος ἀρθρωτῶν ποδῶν, ἐπὶ τοῦ δευτέρου δὲ καὶ τρίτου δακτυλίου ὑπάρχει ἀνὰ ἓν ζεῦγος πτερῶν διαφόρου μεγέθους. Εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ θώρακος διακρίνομεν κυρίως τὸ ἐπινωτιαῖον ἀγγεῖον, τὸν οἰσοφάγον καὶ δέσμην νευρικῶν γαγγλίων. Ἡ κοιλία, ἥτις εἰς τὴν θήλειαν εἶναι μεγαλυτέρα πρὸ τῆς ᾠοτοκίας, ἀπαρτίζεται ἀπὸ ἐννέα δακτυλίους, ἐκ τῶν ὁποίων οἱ δύο τελευταῖοι εἶναι διάφοροι εἰς τὴν ἄρρενα. Εἰς τὸν ἔνατον δακτύλιον ὑπάρχουν δύο μικρὰ ἄγκιστρα πρὸς καλύτερον σύνδεσμον κατὰ τὴν ὀχείαν. Ἐφ' ἑκάστου δακτυλίου ἀπὸ τοῦ πρώτου ἕως τοῦ ἑβδόμου ὑπάρχει ζεῦγος στιγμάτων. Ἐντὸς τῆς κοιλίας ὁ πεπτικὸς σωλὴν ἔχει μεγάλως σμικρυνθῆ, ὁμοίως καὶ οἱ μεταξογόνοι ἀδένες ἔχουν καταστῆ σχεδὸν ἀφανεῖς. Ἀντιθέτως, τὰ γεννητικὰ ὄργανα καὶ ἐν γένει τὸ γεννητικὸν σύστημα ἔχουν τελειοποιηθῆ πλήρως. Ἡ ψυχὴ κατὰ τὸ διάστημα τῆς ὀλιγοημέρου ζωῆς της τρέφεται δι' αὐτοφαγίας, τουτέστιν ἐκ τῶν ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τοῦ σώματός της λιπωδῶν οὐσιῶν (βλ. καὶ λ. *σηροτροφία*). Α. Ι. Μ.

*Ψυχαὶ ἐξερχόμεναι τοῦ βομβυκίου.*

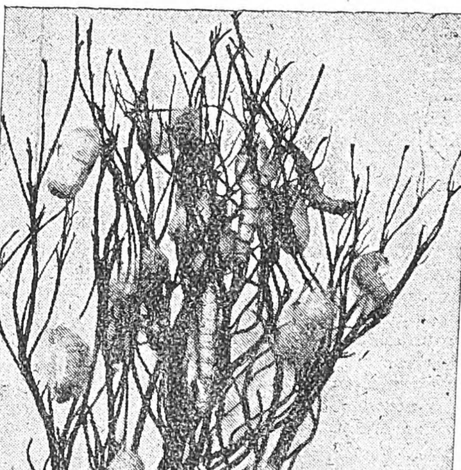

*Ἄνοδος μεταξοσκωλήκων ἐπὶ τῶν κλάδων πρὸς σχηματισμὸν τοῦ βομβυκίου.*

**μεταξόσπορος** (ὁ)· κοινὴ ὀνομασία τῶν ᾠῶν τοῦ μεταξοσκώληκος (βλ. λ. *μεταξοσκώληξ* καὶ *σηροτροφία*).

**Μεταξουργεῖον** *[Γεωγρ.]*. Συνοικία τῶν Ἀθηνῶν κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς πόλεως, ὁριζομένη μεταξὺ τῶν ὁδῶν Ἀγησιλάου, Σαλαμῖνος, Κωνσταντινουπόλεως — δι' ἧς διέρχονται καὶ αἱ σιδηροδρομικαὶ γραμμαὶ Σ.Π.Α.Π καὶ Σ. Ε. Κ. —, Λένορμαν, Κολοκυνθοῦς καὶ Πειραιῶς. Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἀπὸ τὰ παλαιά, τὰ μέχρι τοῦ 1875 ὑφιστάμενα—παρὰ τὴν σημερινὴν ὁδὸν Μεγάλου Ἀλεξάνδρου—ἐργοστάσια μεταξουργίας. Δ. Α. Λ.

**μεταξουργεῖον** (τό)· κλωστήριον μετάξης· || γενικώτερον, ἐργοστάσιον μεταξοβιομηχανίας.

**μεταξουργία** (ἡ)· ἡ τέχνη ἢ βιομηχανία τῆς ἐν γένει κατεργασίας τῆς μετάξης· || εἰδικώτερον, ἡ τέχνη ἢ βιομηχανία τῆς κατασκευῆς τῶν μεταξίνων νημάτων (ἄλλως *μεταξοκλωστική*).

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *μεταξοβιομηχανία*.

**μεταξουργὸς** (ὁ, ἡ)· ὁ κατεργαζόμενος τὴν μέταξαν τεχνίτης, μεταξᾶς.

**μεταξοΰφαντος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἐκ μετάξης ὑφασμένος, μεταξωτός: «μεταξοΰφαντα παραπετάσματα».

**μεταξοϋφαντουργία** (ἡ)· ἡ διὰ μεταξίνων κλωστῶν ὑφαντουργία.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *μεταξοβιομηχανία*.

**Μεταξοχώρι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Τερπύλου (πρῴην Κιουρκιοὺτ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 247. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Μουτούλοβον*.

**μεταξύ**· ἐπίρρ., ἐν τῷ μέσῳ, κοιν. *ἀνάμεσα*: «πολλὰ μεταξὺ πέλλει κύλικος καὶ χείλεος ἄκρου», «μεταξὺ διαλεγομένων ἡμῶν ἀφίκετο Σωκράτης»· || ἐν τῇ νεωτέρᾳ γλώσσῃ συντάσσεται μετ' ὀνομάτων ὡς πρόθεσις· || τοπικῶς: «μεταξὺ Ἀθηνῶν καὶ Πειραιῶς», «μεταξὺ Ἄνδρου καὶ Εὐβοίας»· φρ. «μεταξὺ δύο πυρῶν» ἢ «ἐν τῷ μέσῳ δύο πυρῶν» ὅταν τις βάλλεται ἐκ τῶν ἔμπροσθεν καὶ ἐκ τῶν ὄπισθεν, «εὑρίσκεται μεταξὺ συγγενῶν καὶ φίλων»· || φρ. «μεταξύ μας, — σας, — των, — τους» κατὰ μόνας, μόνοι, ἄνευ ἄλλων: «ἐκάμαμε τὸν γάμο μεταξύ μας, χωρὶς νὰ καλέσωμε ξένους», «μεταξύ τους μαλώνουν, μεταξύ τους τὰ φτιάνουν», «δὲν ἔχομε τίποτε μεταξύ μας» ἢ «οὐδὲν ζήτημα ὑπάρχει μεταξύ μας»· πρὸς δήλωσιν ἐχεμυθίας: «ὅσα εἴπαμε νὰ μένουν μεταξύ μας», «εἶπαν κάτι μεταξύ τους καὶ ἔφυγαν»· || χρονικῶς: «μεταξὺ τοῦ πρώτου καὶ τοῦ δευτέρου ἔτους τοῦ πολέμου», «μεταξὺ παιδικῆς καὶ ἐφηβικῆς ἡλικίας»· || «ἐν τῷ μεταξὺ» κατὰ παράλειψιν τῆς δο-

Digitized by Google

τικῆς: *χρόνῳ*: «ἂν ἐν τῷ μεταξὺ ἀποθάνῃ ὁ πατήρ, τί θὰ γίνουν τὰ παιδιά;», «ἐν τῷ μεταξὺ ποῦ ἐτρώγαμε, ἦρθε καὶ ὁ Γιάννης».

**μεταξυθήριον** (τὸ) (Metaxytherium) *[Παλαιοζωολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζώων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν ἁλικοριδῶν σειρήνων θηλαστικῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα ὡμοίαζον πολὺ πρὸς τὸ *ἁλιθήριον* (βλ. λ.), διαφέροντα αὐτοῦ κατὰ τὴν κατασκευὴν τῶν ὀδόντων. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς μειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Φλωρίδα. Συνώνυμον: *ἁλιάνασσα*. Γ. Κ. Γ.

**μεταξυσιάγονον** (τὸ) *[Ἀνθρωπολ.—Ζῳολογ.]*. Ζεῦγος ὀστῶν εὑρισκόμενον μεταξὺ τῶν δύο ὀστῶν τῆς ἄνω σιαγόνος τῶν σπονδυλωτῶν ζῴων τῶν ἀνωτέρων ζῳολογικῶν βαθμίδων. Εἰς τὰ θηλαστικὰ τὸ μεταξυσιάγονον φέρει τοὺς κοπτῆρας, εἰς ἄλλα δὲ ζῷα καὶ ἄλλους ἐκ τῶν πλευρικωτέρων ὀδόντων τῆς ἄνω σειρᾶς. Εἴς τινα ὅμως ἐκ τῶν θηλαστικῶν, ἐν οἷς καὶ εἰς τὸν ἄνθρωπον, τὰ ὀστᾶ ταῦτα εἶναι συμφυῆ μετὰ τῶν ὀστῶν τῆς ἄνω σιαγόνος. —Ω.

**μεταξώδης** (ὁ, ἡ), *—ες* (τό)˙ ὁ ὅμοιος μὲ μέταξαν, μεταξοειδής.

**Μεταξωτὸ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ΒΔ. πλευρᾶς τοῦ κόλπου τοῦ Ἀστακοῦ τῆς Ἀκαρνανίας (πλάτ. 38° 30′ 10″ Β., μῆκ. 21° 03′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 203: Santa Maura, Ithaca, Cephallonia), ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι ἀπὸ τοῦ Ἰονίου. Σ. Ε. Λ.

**μεταξωτὸν** (τό)˙ οὐδ. τοῦ ἐπιθ. *μεταξωτός*, ὡς οὐσ. μεταξωτὸν ὕφασμα: «ντυμένη ’ς τὰ μεταξωτά», «τρίζουν τὰ μεταξωτὰ ἀπάνω της», «ἔμπορος, — κατάστημα μεταξωτῶν».

**Μετάουρο** (Metauro) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰταλίας, διαρρέων τοὺς νομοὺς τοῦ Πέζαρο καὶ τοῦ Οὐρμπίνο καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν Ἀδριατικὴν θάλασσαν. Σχηματίζεται ἐκ τῶν δύο χειμάρρων *Μέτα* καὶ *Ἄουρο*, οἱ ὁποῖοι κατερχόμενοι ἐκ τῶν ἀνατολικῶν Ἀπεννίνων ἑνοῦνται παρὰ τὸ Μερκατέλλο. Ἔχει μῆκος 110 χλμ. Οἱ Γάλλοι, κατὰ τὴν κατάληψιν τῆς Ἰταλίας ὑπ’ αὐτῶν καὶ τὴν νέαν διοικητικὴν διαίρεσιν, εἶχον ὀνομάσει διὰ τοῦ ὀνόματος τοῦ ποταμοῦ τούτου ἕνα τῶν νομῶν τῆς χώρας, ὁ ὁποῖος περιλαμβάνει σήμερον τοὺς νομοὺς τοῦ Πέζαρο καὶ τοῦ Οὐρμπίνο καὶ μέρος τῆς Ἀγκῶνος. Εἶναι ὁ ἀρχαῖος *Μέταυρος*, παρὰ τὸν ὁποῖον οἱ Ρωμαῖοι κατενίκησαν τῷ 207 π. Χ. τὰ στρατεύματα τοῦ Ἀσδρούβα. Μ. Δ. Β.

**μεταξωτός**, *—ή, —όν*˙ ὁ ἐκ μετάξης κατεσκευασμένος ἢ ὑφασμένος: «μεταξωτὸ ὕφασμα, — μαντήλι, — φόρεμα».

**Μέταπα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀχυρὰ πόλις τῆς Αἰτωλίας, κειμένη ἐπὶ τῆς Τριχωνίδος λίμνης καὶ τῶν παρ’ αὐτῇ στενῶν, 60 σταδίους ΝΔ. τῆς πόλεως Θέρμου. Κατεστράφη κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ βασιλέως τῆς Μακεδονίας Φιλίππου τοῦ Ε′, διαρκοῦντος τοῦ Συμμαχικοῦ πολέμου (220—217 π.Χ.). Α. Θ. Σ.

**Μεταπὰν** (Metapan) *[Γεωγρ.]*. — 1) Λίμνη τῆς δημοκρατίας τοῦ Σαλβαντὸρ ἐν τῇ κεντρικῇ Ἀμερικῇ. Κεῖται ἐν τῷ νομῷ Σάντα Ἄνα καὶ εἶναι γραφικωτάτη, ἔχουσα ἐπιφάνειαν 38 τ. χλμ.

— 2) Πόλις τῆς δημοκρατίας τοῦ Σαλβαντὸρ ἐν τῷ νομῷ Σάντα Ἄνα. Κάτ. 20.995. Ἔχει εὐθύγραμμον ρυμοτομίαν, ὡραῖα κτήρια καὶ παράγει καφέν, σακχαροκάλαμον, σιτηρὰ καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα.

— Ἐπαρχία τῆς δημοκρατίας τοῦ Σαλβαντόρ, ἐν τῷ νομῷ Σάντα Ἄνα. Ἔχει πλούσια μεταλλεῖα ἀσβέστου, σιδήρου, χαλκοῦ, ὀρυχάλκου καὶ χρυσοῦ καὶ μεταλλικὰς θερμὰς καὶ ψυχρὰς πηγάς. Μ. Δ. Β.

**μεταπείθω**, ἀόρ. *μετέπεισα—μετεπείσθην*˙ κάμνω τινὰ νὰ μεταβάλῃ γνώμην: «εἶχεν ἀποφασίσει νὰ μὴ πολιτευθῇ, ἀλλὰ μετεπείσθη ὑπὸ τῶν φίλων του».

**μεταπηδῶ** (*—άω*), ἀόρ. *μετεπήδησα*˙ πηδῶν μεταβάλλω θέσιν˙ || συνήθως μεταφ., ἀλλάσσω γνώμην, ἀρχάς, ἀπαρνοῦμαι τὰς μέχρι τοῦδε ἀρχάς μου καὶ ἀσπάζομαι νέας: «μετεπήδησεν εἰς τὴν ἀντιπολίτευσιν, — εἰς τὸν κομμουνισμόν».

**μεταπιάνω**, ἀντὶ *ματαπιάνω*˙ δημοτ., πιάνω πάλιν, ἄλλως *ξαναπιάνω*: «ὡρκίστηκα νὰ μὴ ματαπιάσω χαρτιὰ ’ς τὰ χέρια μου».

**μεταπίνω**, ἀντὶ *ματαπίνω*˙ δημοτ., πίνω πάλιν, ἄλλως *ξαναπίνω*: «δὲ ματαπίνω κρασί».

**μεταπίπτω**, ἀόρ. *μετέπεσον*˙ μεταβάλλομαι οἱονεὶ πίπτων, συνήθ. ἐπὶ μεταβολῆς τῆς σημασίας τῶν λέξεων: «ἡ λέξις *μεγαλεῖον* μετέπεσεν εἰς χυδαϊσμόν»˙ || ναυτ. (περὶ τοῦ ἀνέμου), μεταβάλλω αἰφνιδίως καὶ βιαίως διεύθυνσιν (γαλ. sauter, ἀγγλ. to chop) (βλ. καὶ λ. *μετάπτωσις*).

**μετάπλασις**, *—εως* (ἡ)˙ ἡ πρᾶξις τοῦ μεταπλάσσειν, μετασχηματισμός.

— ***μετάπλασις τοῦ ἐδάφους*** (amendement). Αὕτη ἀποσκοπεῖ τὴν καλυτέρευσιν τῶν φυσικῶν, φυσιολογικῶν καὶ χημικῶν ἰδιοτήτων αὐτοῦ. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον χρησιμοποιοῦνται οὐσίαι, αἵτινες, καλούμεναι *μεταπλάσματα*, ἔχουσι προορισμὸν νὰ μεταβάλωσι τὰς φυσικὰς ἰδιότητας τοῦ ἐδάφους καὶ νὰ καταστήσωσιν ἰδίως ἀφομοιώσιμα ὑπὸ τῶν φυτῶν τὰ ἐνεχόμενα εἰς τὸ ἔδαφος λιπαντικὰ στοιχεῖα, τὰ ὁποῖα ὑπὸ κανονικὰς συνθήκας παραμένουσιν ἀχρησιμοποίητα. Ὡς μεταπλάσματα χρησιμοποιοῦσι συνήθως τὴν ἄμμον, τὴν ἄργιλλον καὶ τὴν ἄσβεστον ὑπὸ μορφὴν ἀνθρακικὴν ἢ καυστικήν. Ἡ ἄμμος συνιστᾶται διὰ τὰ ἀργιλλώδη βαρέα ἐδάφη, εἰς τὰ ὁποῖα ἡ διείσδυσις τοῦ ὕδατος καὶ ἀέρος λόγῳ τοῦ συμπαγοῦς αὐτῶν διεξάγεται ἀνεπαρκῶς. Ἡ ἄργιλλος ἀντιθέτως ἐπιδρᾷ εὐεργετικῶς ἐπὶ τῶν ἐλαφρῶν ἐδαφῶν καὶ κυρίως ἐπὶ τῶν ἀμμωδῶν.

Κατ’ ἀρχὴν τὰ ἀμμώδη καὶ ἀργιλλώδη μεταπλάσματα εἶναι ἀποτελεσματικά, ἀλλὰ παρουσιάζουσι τὸ ἐλάττωμα νὰ εἶναι πολὺ δαπανηρὰ ἐφ’ ὅσον δὲν εἶναι ἐφικτὴ διὰ βαθειῶν ἀρώσεων ἡ πρόσμειξις ἀντιθέτων στρωμάτων, λόγῳ τοῦ μεγέθους τῶν ποσοτήτων, αἵτινες ἀπαιτοῦνται πρὸς τοῦτο. Ἐφαρμογὴ τούτων γίνεται μόνον ἐν τῇ κηπουρικῇ καὶ ἀνθοκομίᾳ.

Ἡ χρησιμοποίησις τῆς ἀσβέστου ὡς μεταπλάσματος χρονολογεῖται ἀπὸ τῆς ἀρχαιοτάτης ἐποχῆς. Ὁ Πλίνιος ἀναφέρει ὅτι τὰ εὐεργετικὰ αὐτῆς ἀποτελέσματα ἦσαν γνωστὰ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων, Ρωμαίων καὶ Γαλατῶν. Ἡ ἐνέργεια αὐτῆς εἶναι δραστική, ἀντιθέτως πρὸς τὰ ἄλλα ὑπὸ μικρὸν ὄγκον. Ὁ ρόλος αὐτῆς εἶναι πολλαπλοῦς. Εἶναι κατ’ ἀρχὴν ἀπαραίτητος διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ φυτοῦ, ἀποτελοῦσα συστατικὸν γονιμότητος. Ἵνα θεωρηθῇ τὸ ἔδαφος προσοδοφόρον, εὔφορον, πρέπει νὰ περιέχει τοὐλάχιστον 5 % ἄσβεστον. Ὡς μετάπλασμα εἰς τὰ βαρέα ἐδάφη ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ θρομβώνῃ τὴν ἄργιλλον, ἥτις παύει νὰ εἶναι πλαστικὴ καὶ νὰ καθίσταται μὲ τὸ ὕδωρ συμπαγὴς καὶ ἀδιαπέραστος. Εἰς τὰ ἐλαφρὰ ἐδάφη, τὰ ἀμμώδη, παρουσίᾳ ὀργανικῶν οὐσιῶν ἡ ἄσβεστος συντελεῖ εἰς τὴν συγκράτησιν αὐτῶν διὰ τῆς παραγωγῆς χουμικοῦ ἀσβεστίου, τὸ ὁποῖον ἔχει συγκολλητικὰς ἰδιότητας. Ἐνεργεῖ ἐπίσης ἐπὶ τῶν τυρφωδῶν ἐδαφῶν καὶ τῶν ἀποκαλυπτομένων ἐξ ἀποξηράνσεως ἐδαφῶν διὰ τῆς ἐξουδετερώσεως τῶν ἐλευθέρων ὀξέων τῶν προερχομένων ἐκ τοῦ χούμου, ἤτοι τῶν ἀνθρακικῶν, ὀργανικῶν, χουμικῶν, νιτρώδους καὶ νιτρικοῦ ὀξέος, τὰ ὁποῖα καθιστῶσι τὸ ἔδαφος στεῖρον. Διευκολύνει δὲ τοιουτοτρόπως τὴν νιτροποίησιν. Ἡ ἄσβεστος εἶναι σπουδαῖος παράγων διασπάσεως τῶν ἁλατούχων λιπασμάτων. Τὸ θειικόν, ὑδροχλωρικὸν καὶ φωσφορικὸν ἀμμώνιον προσθήκῃ ἀσβέστου μετασχηματίζεται εἰς ἀνθρακικὴν ἀμμωνίαν, ἀπορροφουμένην ὑπὸ τοῦ χούμου καὶ τῶν κολλοειδῶν, καὶ εἰς ἀντιστοίχους ἀσβεστούχους ἑνώσεις. Παρουσίᾳ ἀσβέστου ἐμπλουτίζεται τὸ ἔδαφος διὰ σειρᾶς ἀντιδράσεων εἰς κάλιον. Σπουδαῖον μετάπλασμα ἐπίσης εἶναι ὁ χοῦμος ἢ μαυρόχωμα, τὸ προερχόμενον ἐκ τῆς ἀποσυνθέσεως τῶν ὀργανικῶν οὐσιῶν.

**μετάπλασμα** (τό)˙ βλ. λ. *μετάπλασις* τοῦ ἐδάφους.

**μεταπλασμὸς** (ὁ)˙ ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μεταπλάττειν*, ἡ λέξις συνήθως ὡς ὅρος γραμματικός: «οἱ τύποι *γυναικός*, *γυναικὶ* κλπ. ἐσχηματίσθησαν κατὰ μεταπλασμὸν τοῦ θέματος τῆς ὀνομαστικῆς».

—*[Γραμματ.]* Ἡ λέξις *μεταπλασμὸς* δηλοῖ (ὡς γραμματικὸς ὅρος) «μετάθεσιν καὶ μετασχηματισμὸν λήξεως λέξεως εἰς ἕτερον συγγενὲς τελικὸν» (κατὰ τὸν Εὐστάθιον), τουτέστι μεταβολὴν — ὡς νομίζεται — τῆς καταλήξεως διαφόρων ὀνοματικῶν τύπων, ὡς λ. χ. *ἀλκὶ* ἀντὶ *ἀλκῇ*, *ὑσμῖνι* ἀντὶ *ὑσμίνῃ*, *κλαδὶ* ἀντὶ *κλάδῳ* κ. οὗ. κ. Τὸ ἀληθὲς ὅμως εἶναι ὅτι οἱ τύποι οὗτοι δὲν προῆλθον ἐξ ἀλλαγῆς τῆς καταλήξεως (μεταπλασμοῦ), ἀλλ’ εἶναι τύποι ἐξ ἄλλης ὀνομαστικῆς, περιπεσούσης εἰς ἀχρηστίαν. —Ω.

**μεταπλαστὰ** (τὰ) *[Γραμματ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ ὀνόματα, τῶν ὁποίων τὸ θέμα δὲν εἶναι τὸ αὐτὸ εἰς ὅλους τοὺς τύπους των, ἀλλὰ μεταπλάσσεται, τουτέστι μεταβάλλεται, ποικίλλει κατὰ τὰς διαφόρους πτώσεις των, λ. χ. *γόνυ*, *δόρυ*, — *γόνατος*, *δόρα-τος*, *γόνα-τα*, *δόρα-τα* κλπ. Τὰ μεταπλαστὰ ὀνόματα διαιροῦνται: 1) εἰς μεταπλαστὰ μονόκλιτα, ἤτοι μεταπλαστὰ κλινόμενα κατὰ τὴν αὐτὴν κλίσιν εἰς ὅλας τὰς πτώσεις καὶ τοὺς ἀριθμούς των: *Ζεὺς* — *Διὶ* — *Δία* — *Ζεῦ*, *ἧπαρ* — *ἥπατος* — *ἥπατι*—*ἧπαρ*—*ἥπατα*—*ἡπάτων*—*ἥπασι*—*ἥπατα*, *κύων* —*κυνὸς*—*κυνὶ*—*κύνα*—*κύον*—*κύνες* κλπ. καὶ 2) εἰς μεταπλαστὰ ἑτερόκλιτα, ἤτοι μεταπλαστὰ τῶν ὁποίων τύποι τινὲς κλίνονται κατ’ ἄλλην κλίσιν: ὁ *πρεσβευτὴς* —τοῦ *πρεσβευτοῦ* —τῷ *πρεσβευτῇ* —τὸν *πρεσβευτὴν* —ὦ *πρεσβευτά*, ἀλλὰ πληθ. οἱ *πρέσβεις* —*εων* —*εσι* —*εις* (κατὰ τὴν γ′ κλίσιν), τὸ *πῦρ* —*ὸς* —*ί*, ἀλλὰ τὰ *πυρὰ* —*ῶν* —*οῖς* —*ὰ* κ. οὗ. κ. —Ω.

**μεταπλαστία** (ἡ). Οὕτω καλοῦμεν ἐν τῇ παθολογικῇ ἀνατομίᾳ τὴν ὑπὸ μεταβολὴν τῶν ποικίλων ὅρων (ἐξωτερικῶν καὶ ἐσωτερικῶν) τῆς ζωῆς καὶ λειτουργίας τῶν κυττάρων μετατροπὴν ἱστοῦ τινος τελείως ἐξειδικευθέντος εἰς ἕτερον ἱστὸν ἐπίσης ἐξειδικευμένον καὶ διαφέροντα ἐκείνου ὡς πρὸς τὴν μορφὴν καὶ λειτουργίαν. Τοὐναντίον τὴν κατὰ φύσιν μετατροπὴν ἀκόμη ἐν ἐξελίξει εὑρισκομένων ἐμβρυϊκῶν κυττάρων καὶ ἱστῶν εἰς ἑτεροειδῆ κύτταρα καὶ ἱστοὺς ὀνομάζομεν *διαφορισμὸν* (ἢ *διαφοροποίησιν*). Τὰς ἐξεργασίας ταύτας διέπει ὁ νόμος τῆς ἐξειδικεύσεως, καθ’ ὃν ἐν τῷ τελείως ἀνεπτυγμένῳ ἀτόμῳ ἐκ τῶν διαφοροποιηθέντων εἰδικῶν ἱστῶν (ἐπιθηλιακός, συνδετικός, μυϊκὸς κτλ.) γεννῶνται κατὰ τὴν φθορὰν αὐτῶν πάντοτε ὅμοιοι ἱστοί, ἤτοι πᾶς ἱστὸς δύναται νὰ μεταπέσῃ μόνον εἰς ἱστὸν ἔχοντα ὀντογονικῶς ἢ φυλογονικῶς συγγενῆ τὴν προέλευσιν, τουτέστι δυνάμενον νὰ μεταπλασθῇ.

Καθ’ ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὸν τρόπον τῆς ἐξελίξεως τῶν μεταπλαστικῶν ἐξεργασιῶν, διακρίνομεν δύο εἴδη μεταπλάσεως:

1) Τὴν *ἄμεσον* μεταπλαστίαν, καθ’ ἣν ἡ μετατροπὴ ἱστοῦ τινος εἰς ἄλλον γίγνεται διὰ βαθμιαίας μορφικῆς μεταβολῆς ἢ προσαρμογῆς αὐτῶν τούτων τῶν ὑπαρχόντων κυττάρων ἄνευ νεοσχηματισμοῦ, τουτέστιν ἄνευ πολλαπλασιασμοῦ τῶν κυτταρικῶν αὐτοῦ στοιχείων. Ὡς παραδείγματα ἀναφέρομεν τὴν κερατινοποίησιν ἢ ἐπιδερμιδοποίησιν τοῦ ἐπιθηλίου τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας, τοῦ στόματος, τοῦ οἰσοφάγου, τῆς νεφρικῆς πυέλου, τῶν οὐρητήρων κτλ. 2) Τὴν πολὺ συχνοτέραν *ἔμμεσον* μεταπλαστίαν ἢ ἑτεροπλαστίαν, καθ’ ἣν ὑπάρχουσι δύο στάδια ἐξελίξεως τοῦ μεταπλαστικοῦ φαινομένου. Καὶ κατὰ μὲν τὸ πρῶτον στάδιον σχηματίζεται ἐκ τοῦ ἐξειδικευθέντος ἱστοῦ διὰ πολλαπλασιασμοῦ μέρους τῶν κυττάρων αὐτοῦ νεόπλαστος ἱστὸς ἐμφανίζων οὐδετέραν ἀδιαφοροποίητον κατάστασιν. Κατὰ δὲ τὴν δευτέραν φάσιν τοῦ μεταπλαστικοῦ συμβάντος διαφοροποιεῖται ὁ νεόπλαστος οὗτος ἄωρος ἱστὸς (προσοπλαστία ἢ προϊοῦσα ἐξέλιξις) εἰς ἕτερον νέον εἶδος ἱστοῦ, διάφορον τοῦ ἀρχικοῦ ἐδάφους. Κατ’ αὐτὸν τὸν τρόπον ἐξελίσσεται λ. χ. ἡ μεταπλαστία τοῦ ἐπιθηλίου τῶν ἐνδοηπατικῶν χοληφόρων πόρων εἰς ἡπατικὰ κύτταρα μετὰ ἐκδήλου εἰδικῆς λειτουργίας, δηλαδὴ παραγωγῆς χολῆς. Θ. Σ.

**μεταπλαστικός**, *—ή, —όν*˙ ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μεταπλασμόν, ὁ σχηματισθεὶς διὰ μεταπλασμοῦ.—Ἐπιρρ. ***μεταπλαστικῶς***˙ διὰ μεταπλασμοῦ, κατὰ μεταπλασμόν.

**μεταπλαστός**, *—ή, —όν*˙ ὁ πάσχων μεταπλασμόν, συνήθως ὡς ὅρος γραμματικὸς (βλ. λ. *μεταπλαστά*).

**μεταπλάττω**, ἀόρ. *μετέπλασα—μετεπλάσθην*, παρακ. παθ. μετχ. *μεταπεπλασμένος*˙ πλάττων μεταβάλλω, μετασχηματίζω˙ || δημοτ., *ματαπλάσσω* ἢ *ματαπλάθω*˙ πλάττω ἐκ νέου, ἄλλως *ξαναπλάσσω*, *—πλάθω*.

**μεταποιήσιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)˙ ὁ δυνάμενος νὰ μεταποιηθῇ, νὰ μετασχηματισθῇ.

**μεταποίησις**, *—εως* (ἡ)˙ ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταποιεῖν, μετασκευή, μετασχηματισμός.

**μεταποιητός**, *—ή, —όν*˙ ὁ δυνάμενος νὰ μεταποιηθῇ, νὰ μετασχηματισθῇ.

**μεταποιῶ** (*—έω*), ἀόρ. *μετεποίησα—μετεποιήθην*˙ μετασκευάζω, μετασχηματίζω.

**μεταπολεμικός**, *—ή, —όν*˙ ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μετὰ τὸν πόλεμον χρόνον, ἀντίθ. *προπολεμικός*: «τὰ μεταπολεμικὰ προβλήματα τῆς κοινωνίας», «αἱ μεταπολεμικαὶ δυσχέρειαι».

**μεταπολίτευσις**, *—εως* (ἡ)˙ μεταβολὴ πολιτεύματος.

— «**Μεταπολίτευσις**». Πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Κερκύρᾳ, ἱδρυθεῖσα τῷ 1871 καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τοῦ 1873. Π. Ν. Π.

**Μεταποντῖνος** (ὁ). Ὁ κάτοικος τοῦ *Μεταποντίου* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μεταπόντιον** (Metapontum) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἑλληνικὴ πόλις τῆς Κάτω Ἰταλίας, κατὰ τὸν ΒΔ. μυχὸν τοῦ κόλπου τοῦ Τάραντος, μεταξὺ Θουρίων καὶ Κρότωνος, ἱδρυθεῖσα κατὰ τὴν παράδοσιν ὑπὸ τῶν περιπλανηθέντων ἐνταῦθα μετὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον Πυλίων τοῦ Νέστορος ἢ τοῦ Ἐπειοῦ, τοῦ κατασκευάσαντος τὸν Δούρειον Ἵππον. Τὸ παλαιὸν αὐτῆς ὄνομα ἦτο *Μέταβον*.

Κειμένη ἐπὶ πεδιάδος ἐκτάκτου εὐφορίας καὶ δαψιλέστατα ἀρδευομένης ὑπὸ τῶν ποταμῶν Βραδάνου καὶ Κασουέντου, ἦτο πλουσιωτάτη εἰς δημητριακοὺς καρπούς, δι’ ὃ καὶ ὁ εἰς Δελφοὺς ἀφιερωθεὶς θησαυρὸς τῶν Μεταποντίων παρίστανε χρυσοῦν θερισμὸν (*Παυσαν.* Ε′ 22, 5, ΣΤ′ 19, 11),

Digitized by Google

αἱ δὲ πρὸς μνήμην τῆς καταγωγῆς των πρὸς τοὺς Νηλείδας θυσίαι ἦσαν πλούσιαι. Καταστραφεῖσα ἐνωρὶς ὑπὸ τῶν Σαμνιτῶν, ἀπῳκίσθη κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Ζ΄ αἰῶνος ὑπὸ Ἀχαιῶν, ὑπὸ τὴν ὁδηγίαν τοῦ Λευκίππου, ἢ πιθανώτερον ὑπὸ Φωκιδέων τοῦ Παρνασσοῦ, ὑπὸ τὸν Δαύλιον, τύραννον τῆς Κρίσης. Μετὰ τοῦ Κρότωνος διετέλεσεν ἕδρα τῶν πυθαγορείων, ἐνταῦθα δὲ καταφυγὼν ὁ Πυθαγόρας ἀπέθανε τῷ 510 π. Χ. Καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Ρωμαίων περὶ τὰ 300 π. Χ., ἐκηρύχθη κατὰ τὸν δεύτερον Καρχηδονιακὸν πόλεμον ὑπὲρ τοῦ Ἀννίβα, ὑπὸ τοῦ ὁποίου κατείχετο κατὰ τὰ ἔτη 212—207 π. Χ. Ἐπὶ Στράβωνος ἦτο ἐν πλήρει παρακμῇ. Σήμερον εἶναι σιδηροδρομικὴ

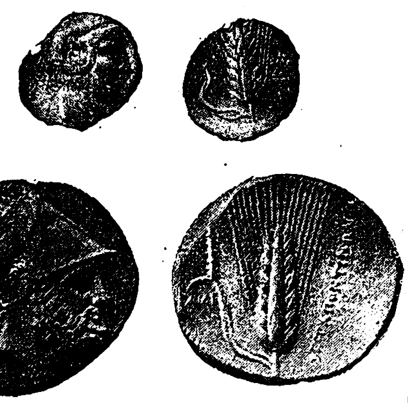

*Νομίσματα τοῦ Μεταποντίου.*

στάσις (Metaponto: πλάτ. 40° 21′ Β., μῆκ. 16° 48′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 198: Cape Polycastro to Santa Maria di Leuca) ἀσημάντου συνοικισμοῦ τοῦ νομοῦ Μπαζιλικάτα, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τάραντος - Ρηγίου.

Τοῦ Μεταποντίου σῴζονται νομίσματα διαφόρων τύπων, τῶν ὁποίων κυριώτερος εἶναι ὁ στάχυς, ἔμβλημα τῆς Δήμητρος. Τὰ ἀρχαιότερα αὐτῶν ἀνέρχονται μέχρι τοῦ 550—480 π. Χ., φέροντα δι' ἀρχαϊκῶν χαρακτήρων τὴν ἐπιγραφὴν ΜΕΤΑΠ καὶ προσομοιάζοντα τὰ νομίσματα τῶν ἀχαϊκῶν πόλεων. Τὰ νεώτερα αὐτῶν ἀνέρχονται μέχρι τοῦ 350—272 π. Χ. Σημαντικὰ ἐρείπια τῆς πόλεως σῴζονται παρὰ τὸ νῦν χωρίον Torre di Mare.

Σ. Ε. Λ.—Α. Θ. Σ.

**μεταπούλημα** (τό), ἀντὶ *ματαπούλημα*· δημοτ., ἡ ἐκ νέου πώλησις, ἄλλως *ξαναπούλημα*.

**μεταπράτης** (ὁ)· ὁ μεταπωλῶν ἐμπορεύματα, μεταπωλητής, ἰδίᾳ ὁ ἔμπορος ἐγχωρίων προϊόντων, τὰ ὁποῖα μεταπωλεῖ εἰς τοὺς ἐνεργοῦντας τὴν λειανικὴν πώλησιν.

**μεταπρωτεΐνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*. Περιληπτικὸν ὄνομα διὰ τὰ προϊόντα διασπάσεως τῶν πρωτεϊνῶν, ἅτινα λαμβάνονται εἴτε δι' ἐπιδράσεως ὀξέων *(ὀξυπρωτεῖναι)*, εἴτε δι' ἐπιδράσεως ἀλκαλίων *(ἀλκαλιπρωτεῖναι)*.

Σ. Γ.

**μετάπτωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταπίπτειν, ἡ μεταβολὴ καταστάσεως συνήθως ἐπὶ τὸ χεῖρον· || καθόλου, αἰφνιδία μεταβολή: «τὸ ἠθικόν του ὑφίσταται μεταπτώσεις· ἄλλοτε μὲν εἶναι αἰσιόδοξος, ἄλλοτε δὲ ἀπαισιόδοξος».

*—[Γλωσσολογ.]* Ὑπὸ τὸν ὅρον *μετάπτωσις* ἐννοοῦμεν τὰς πολλὰς καὶ ποικίλας κατὰ ποσὸν καὶ κατὰ ποιὸν μεταβολὰς τῶν φωνηέντων καὶ τῶν διφθόγγων, αἱ ὁποῖαι συνέβησαν εἰς χρόνους παλαιοτάτους, ἰαπετικοὺς εἴς τε τὰς ριζικὰς καὶ εἰς τὰς καταληκτικὰς συλλαβὰς τῶν λέξεων. Οὕτω λ. χ. τὸ θέμα *γεν—* παρουσιάζεται ὑπὸ ποικίλας μορφάς, τὰς ἑξῆς: ἐ-*γεν*-όμην, γέ-*γον*-α, γέ-*γα*-μεν, γί-*γν*-ομαι, ὁμό-*γν-ιος* κλπ. Τῆς μεταπτώσεως διακρίνομεν διάφορα εἴδη: 1) Τὴν *ποιοτικὴν* μετάπτωσιν, ἤτοι τὴν κατὰ τὸ ποιὸν ἀλλοίωσιν τοῦ φωνήεντος ἢ τῆς διφθόγγου λέξεώς τινος ἢ τύπου, λ. χ. *νέμ*-ω: *νομ*-ή, *νόμ*-ος, *φέρ*-ω: *φόρ*-ος, *φορ*-ά, σπεύδ-ω: *σπουδ*-ή, *λείπ*-ω: λέ-*λοιπ*-α, *ἀρήγ*-ω: *ἀρωγ*-ή, *ἀρωγ*-ός, *teg*-o: *tog*-a, *nec*-o: *noc*-eo κλπ. Ἡ μετάπτωσις αὕτη καλεῖται εἰδικώτερον *ἑτεροίωσις*. 2) Τὴν *ποσοτικὴν* μετάπτωσιν, ἤτοι τὴν κατὰ ποσόν, τὴν κατὰ χρόνον ἀλλοίωσιν τοῦ φωνήεντος ἢ τῆς διφθόγγου λέξεώς τινος. Ἡ ποσοτικὴ μετάπτωσις ἐμφανίζεται εἴτε ὡς ἔκτασις τοῦ ριζικοῦ ἢ καταληκτικοῦ φωνήεντος: *ἀνέρ*-α: *ἀνήρ*, *πατέρ*-α: *πατήρ*, *μέδ*-ων: *μήδ*-ομαι (ἥτις πάλιν διακρίνεται εἰς *ἐπαύξησιν* καὶ εἰς *ἐκτένειαν*, καθ' ὅσον παρατηρεῖται ἐν θεματικῇ ἢ ἐν καταληκτικῇ τινι συλλαβῇ: *στόμ*-α: *στωμ*-ύλος, *γόν*-υ: *γων*-ία, *ἡγεμόν*-α: *ἡγεμών*, *ἀέρ*-α: *ἀήρ*), εἴτε ὡς ἐξασθένωσις, ὡς βράχυνσις τοῦ θεματικοῦ ἢ καταληκτικοῦ φωνήεντος, λ. χ. *φημ-ί*: *φᾰμ-έν*, ἵ-*στη-μι*: ἵ-*στᾰ-μεν*, δί-*δω*-μι: δί-*δο*-μεν, τί-*θη*-μι: τί-*θε*-μεν. Ἡ ἐξασθένωσις αὕτη ριζικῆς ἢ καταληκτικῆς τινος συλλαβῆς δύναται νὰ προχωρήσῃ καὶ μέχρι πλήρους ἀποβολῆς τοῦ φωνήεντός της, λ. χ. ἐ-*γεν*-όμην: γί-*γν*-ομαι, *gen*-us, *gen*-ui: gi-*gn*-o, ἢ μέχρις ἀποβολῆς τοῦ ὑποτακτικοῦ στοιχείου διφθόγγου τινός, λ. χ. *φεύγ*-ω: *φυγ*-εῖν, *τεύχ*-ω: τε-*τυγ*-μένος, *λείπ*-ω: *λιπ*-εῖν, (F) *οἶδ*-α: (F) *ἴδ*-μεν, πέ-*ποιθ*-α: ἐ-πέ-*πιθ*-μεν κλπ. Ἀναλόγους μεταπτωτικὰς ποικιλίας παρατηροῦμεν καὶ εἰς τὰς ἄλλας ἰαπετικὰς γλώσσας, ὅπως λ. χ. εἰς τὴν Γερμανικήν, ὡς (ich) *weiss*: (wir) *wiss*-en, (ich) *kann*: (wir) *könn*-en, (ich) *mag*: (wir) *mög*-en, (ich) *bind*-e: *band*: ge-*bund*-en, *helf*-e: *half*: ge-*holf*-en, (ich) *schlag*-e: *schlug*: ge-*schlag*-en κλπ. Ἀντὶ τοῦ καθιερωθέντος ἤδη ὅρου μετάπτωσις ὁ Α. Σκιᾶς εἶχε μεταχειρισθῆ (εἰς τὴν διδακτικὴν Γραμματικήν του) τὸν ὅρον *κλιμακισμός*.

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Γεωλ.]* Καλεῖται *μετάπτωσις* (Verwerfang) ρῆγμα εἰς τὸν στερεὸν φλοιὸν τῆς γῆς, κατὰ μῆκος τοῦ ὁποίου ἓν ἐκ τῶν δύο διὰ τοῦ ρήγματος διαχωρισθέντων τεμαχῶν πετρωμάτων ἢ καὶ ἀμφότερα τὰ τεμάχη ὑπέστησαν καὶ μετακίνησίν τινα κατὰ τὴν κατακόρυφον (συνήθως καταβύθισιν) ἢ ἐνίοτε καὶ κατὰ τὴν ὁριζόντιον διεύθυνσιν. Τὰ ἑκατέρωθεν τοῦ ρήγματος μεταπτώσεώς τινος εὑρισκόμενα τεμάχη πετρωμάτων καλοῦνται *πτέρυγες τῆς μεταπτώσεως*. Ἀνεξαρτήτως τῆς μετακινήσεως, ἡ ὁποία ἐγένετο, ἡ εἰς τεκτονικῶς χαμηλοτέραν θέσιν κειμένη πτέρυξ καλεῖται *καταβυθισθεῖσα*, ἡ δ' ἄλλη *ἀνυψωθεῖσα* πτέρυξ. Εἰς μετάπτωσίν τινα δὲν εἶναι πάντοτε δυνατὸν νὰ προσδιορισθῇ, ἂν ἡ μετακίνησις τῶν πτερύγων ὀφείλεται εἰς συνίζησιν τῆς μιᾶς ἢ ἀνύψωσιν τῆς ἄλλης, ἢ εἰς σύγχρονον ἀνύψωσιν τῆς μιᾶς καὶ συνίζησιν τῆς ἑτέρας πτέρυγος. Πάντοτε ὅμως ἡ μετάπτωσις δύναται νὰ γεννηθῇ, ὡς ἐξάγεται ἐκ τῆς μορφῆς τὴν ὁποίαν παρουσιάζει, διὰ συνιζήσεως μιᾶς ἐκ τῶν δύο πτερύγων. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰς τεμαχοεπωθήσεις καὶ τὰς πτυχοεπωθήσεις (βλ. λ. *ἐπώθησις*), εἰς τὰς κανονικὰς μεταπτώσεις, ὑπεράνω τῆς λοξῆς ἐπιφανείας, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐγένετο ἡ μετακίνησις, κεῖται πάντοτε τὸ τεκτονικῶς βαθύτερον τέμαχος. Ἡ μετακίνησις τῶν πτερύγων γίνεται κατὰ μίαν ἐπιφάνειαν, ἡ ὁποία καλεῖται *ἐπιφάνεια μεταπτώσεως*. Ἂν ἡ ἐπιφάνεια αὕτη δὲν εἶναι κατακόρυφος, τότε διακρίνομεν εἰς αὐτὴν διεύθυνσιν, κλίσιν καὶ κατεύθυνσιν κλίσεως. Ἡ ἐπιφάνεια μεταπτώσεως δὲν εἶναι πάντοτε ἐπίπεδος καὶ δύναται νὰ ἀλλάσσῃ διεύθυνσιν. Μετάπτωσις ἔχουσα κατακόρυφον ἐπιφάνειαν μεταπτώσεως καλεῖται *κατακόρυφος*. *Κανονικὴ μετάπτωσις* καλεῖται ἡ ἔχουσα κεκλιμένην ἐπιφάνειαν μεταπτώσεως, ὁπότε ἡ ὑπεράνω τῆς ἐπιφανείας ταύτης κειμένη πτέρυξ καλεῖται *ὑπερκειμένη*, ἐνῷ ἡ ὑπ' αὐτὴν ὀνομάζεται *ὑποκειμένη*. Ἡ τομὴ μιᾶς τοιαύτης ἐπιφανείας μὲ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ ἐδάφους καλεῖται *μεταπτωσιγενὴς γραμμή*. Αὕτη ἔχει διεύθυνσιν, ἡ ὁποία δὲν εἶναι πάντοτε εὐθεῖα, δυναμένην νὰ μεταβάλλῃ κατεύθυνσιν. Κατὰ τὰς ἐπιφανείας μεταπτώσεως παρατηροῦνται ἐνίοτε ἐπὶ τῶν πετρωμάτων χαραγαὶ προστριβῆς, ταινίαι ὀλισθήσεως, λειανθεῖσαι ἐπιφάνειαι, κατοπτρικαὶ ἐπιφάνειαι κτλ. Ἐπίσης, ἐντὸς τοῦ ρήγματος τῆς μεταπτώσεως, τὸ ὁποῖον δύναται νὰ εἶναι ἀνοικτὸν ἢ κεκλεισμένον, συναντῶνται ἐνίοτε λατυποπαγῆ τριβῆς, τεμάχη πετρωμάτων κτλ. Αἱ μεταπτώσεις διήκουν ἢ κατακορύφως ἢ λοξῶς. Ἐπίσης δύνανται νὰ εἶναι παράλληλοι πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῶν στρωμάτων, ὅτε καλοῦνται *ἐπιμήκεις* μεταπτώσεις, ἢ λοξαὶ πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῶν στρωμάτων, ὅτε καλοῦνται *διαγώνιοι* ἢ *λοξαί*, ἢ τέλος διήκουν ἐγκαρσίως πρὸς αὐτήν, ὅτε καλοῦνται *ἐγκάρσιοι*. Κατὰ τὴν μετάπτωσιν ἡ μία πτέρυξ φέρεται εἰς θέσιν βαθυτέραν σχετικῶς πρὸς τὴν ἄλλην πτέρυγα. Ἡ λαβοῦσα χώραν μετακίνησις μετρεῖται διὰ δύο μεγεθῶν, τοῦ *ὕψους ἅλματος* (Sprunghöhe) καὶ τοῦ *εὔρους ἅλματος* (Sprungweite). Καὶ ὕψος μὲν ἅλματος

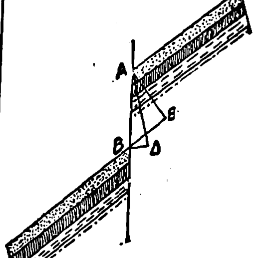


*Σχηματικὴ παράστασις κανονικῆς ἐπιμήκους μεταπτώσεως ἐν διατομῇ.*

[ΑΔ=κατακόρυφον ὕψος ἅλματος. ΑΒ=ἐπίπεδον ὕψος ἅλματος. ΑΕ = στρωματογραφικὸν ὕψος ἅλματος. ΒΔ=ὁριζόντιον εὖρος ἅλματος. ΒΕ=στρωματογραφικὸν εὖρος ἅλματος.]

μεταπτώσεώς τινος καλεῖται τὸ μῆκος, κατὰ τὸ ὁποῖον ἡ μία πτέρυξ εὑρίσκεται βαθύτερον τῆς ἄλλης. Τὸ ὕψος ἅλματος μετρεῖται κατὰ 3 διευθύνσεις καὶ διακρίνεται ὡς ἐπίπεδον ὕψος ἅλματος, ὡς κατακόρυφον καὶ ὡς στρωματογραφικόν. Εἰς τὰς κατακορύφους μεταπτώσεις ὁριζοντίων στρωμάτων καὶ τὰ τρία εἴδη τῶν ὑψῶν ἅλματος συμπίπτουν εἰς ἕν, εἰς τὰς κατακορύφους μεταπτώσεις κεκλιμένων στρωμάτων μόνον τὸ κατακόρυφον καὶ τὸ ἐπίπεδον συμπίπτουν εἰς ἕν, καὶ οὕτω καθεξῆς.

*Εὖρος ἅλματος* καλεῖται ἡ ἀπόστασις δύο ἰσοτίμων σημείων μετακινηθέντων, μετρουμένη κατὰ τὴν ὁριζόντιον.

Μεταπτώσεις γίνονται πολλάκις κατὰ μῆκος πολλῶν ρηγμάτων, τότε δ' ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς παράγεται *ζώνη ἐγκατακρημνίσεων*. Πολλαὶ μεταπτώσεις ἀποτελοῦν *δέσμην μεταπτώσεων*. Ὅταν πολλαὶ μεταπτώσεις διήκουν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον παραλλήλως ἀλλήλων καὶ ἑκάστης τούτων καταβυθίζεται ἡ πρὸς τὸ αὐτὸ μέρος τοῦ ὁρίζοντος πτέρυξ, οὕτως ὥστε τὰ τεμάχη νὰ καταβυθίζωνται κλιμακοειδῶς, τότε γεννᾶται ἡ *κλιμακωτὴ ἐγκατακρήμνισις*. Αὕτη δύναται νὰ εἶναι *μονόπλευρος*, ὅταν γίνεται κατὰ τὴν μίαν πλευρὰν ἑνὸς τεμάχους διατηρουμένου εἰς ὑψηλοτέραν θέσιν, ἢ *ἀμφίπλευρος*, ὅταν γίνεται καὶ κατὰ τὰς δύο πλευρὰς τοῦ εἰς ὑψηλοτέραν θέσιν παραμείναντος τεμάχους. Ἡ ὅλη περιοχὴ τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου παρέχει ὡραιότατον παράδειγμα ἀμφιπλεύρου κλιμακωτῆς ἐγκατακρημνίσεως, ἐνῷ αἱ βόρειαι ἀκταὶ τῆς Πελοποννήσου παρέχουν παράδειγμα μονοπλεύρου κλιμακωτῆς ἐγκατακρημνίσεως. Ὅταν εἰς δέσμην παραλλήλων μεταπτώσεων αἱ μετακινήσεις τῶν τεμαχῶν γίνωνται κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε ἓν τέμαχος κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐπίμηκες, μὲ κράσπεδα περίπου παράλληλα, ἀπομένει εἰς ὑψηλοτέραν θέσιν μεταξὺ δύο ἑκατέρωθέν του καταβυθισθέντων τεμαχῶν, τὸ ὑψηλότερον τοῦτο παραμεῖναν τέμαχος καλεῖται *ρηξιγενὴς προεξοχὴ* (Horst). Ὡς ρηξιγενὴς προεξοχὴ δύναται νὰ θεωρηθῇ τὸ κεντρικὸν ὑψηλότερον τμῆμα τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου, ὡς καὶ τὸ τμῆμα ξηρᾶς τὸ μεταξὺ Εὐβοϊκοῦ καὶ Κορινθιακοῦ κόλπου. Ἀντίθετος μορφὴ πρὸς τὴν ρηξιγενῆ προεξοχὴν εἶναι ἡ *ταφροειδὴς ἐγκατακρήμνισις*, ἡ ὁποία εἶναι τέμαχος καταβυθισθὲν μεταξὺ δύο κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον παραλλήλων μεταπτώσεων. Ταφροειδεῖς ἐγκατακρημνίσεις εἶναι λίαν συνήθεις εἰς τὴν Ἑλλάδα. Ὁ Κορινθιακὸς κόλπος ἀπὸ τοῦ Ρίου - Ἀντιρρίου μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ ὀφείλεται εἰς τοιαύτην ἐγκατακρήμνισιν, ἐπισυμβᾶσαν μεταξὺ δύο κυρίων παραλλήλων μεταπτώσεων. Ἐπίσης ὁ Εὐβοϊκὸς κόλπος ὀφείλεται εἰς ταφροειδῆ ἐγκατακρήμνισιν τοῦ μεταξὺ δύο παραλλήλων μεταπτώσεων τμήματος λιθοσφαίρας. Ὅταν πολλαὶ μεταπτώσεις ἔχουσι μορφὴν τοξοειδῆ καὶ εἶναι τοποθετημέναι συγκεντρικῶς, οὕτως ὥστε νὰ καταβυθισθῶσι τεμάχη μὲ ἐπιφάνειαν κυκλοειδῆ ἢ πολυγωνικήν, τότε παράγεται μία *λεβητοειδὴς ἐγκατακρήμνισις*. Εἰς τοιαύτας ἐγκατακρημνίσεις, γενομένας εἰς νεωτέρας γεωλογικὰς ἐποχὰς (κατὰ τὸ πλειστόκαινον), ὀφείλει ἡ Μεσόγειος θάλασσα τὴν σημερινὴν περιφέρειάν της καὶ ἔκτασιν. Κατ' ἀρχὰς διεσπάσθη ἡ περιοχή, ὅπου νῦν τὸ Αἰγαῖον πέλαγος, ὑπὸ δικτύου ρηγμάτων καὶ διαρρήξεων, συνεπείᾳ τῶν ὁποίων μέγιστα τμήματα τῆς ὅλης μεταξὺ Κρήτης, Κυκλάδων, Μ. Ἀσίας καὶ Πελοποννήσου μάζης ξηρᾶς κατεβυθίσθησαν εἰς τὰ βάθη. Ἐπίσης περαιτέρω πρὸς Α. καὶ Δ. κατεβυθίσθησαν ἀναλόγως μεγάλαι περιοχαὶ ἐκ τῶν ἀκτῶν τῆς μέχρι τότε στενῆς Μεσογείου θαλάσσης, κατὰ τόπους μάλιστα μέχρι 3000 μ., καὶ ἐδημιούργησαν τὰς σημερινὰς περιφερείας τῆς Μεσογείου θαλάσσης καὶ τῶν διαφόρων πελαγῶν. Ἡ Ρόδος, ἡ Κρήτη, αἱ Δαλματικαὶ νῆσοι, ἡ Μάλτα, ἡ Σικελία, ἡ Σαρδηνία καὶ ἡ Κορσικὴ εἶναι ρηξιγενεῖς προεξοχαί, ἀπομείνασαι ἐντὸς τῆς καταβυθισθείσης περιοχῆς, ἥτις καταλαμβάνεται σήμερον ὑπὸ τῆς Μεσογείου θαλάσσης. Σπάνιον εἶναι σύστημά τι ρηγμάτων νὰ συνοδεύηται καὶ ἀπὸ μίαν τοπικὴν ἔξαρσιν τοῦ ἐδάφους καὶ οὐχὶ καταβύθισιν. Τοῦτο προκύπτει ἐκ τοῦ ὅτι τὰ ἑκατέρωθεν καταβυθιζόμενα τμήματα ἐξασκοῦσι πλευρικὰς πιέσεις ἐπὶ τοῦ μεταξὺ αὐτῶν τμήματος, τὸ ὁποῖον καὶ ἀνυψοῦται. Παράδειγμα παρέχει ἡμῖν ἡ Πελοπόννησος, ἥτις ἔχει ὑποστῇ ἔξαρσιν. Ἡ Πελοπόννησος ἄλλως τε εἶναι καὶ μία ρηξιγενὴς προεξοχὴ ἀπομείνασα μεταξὺ τῶν μεταπτώσεων, παραλλήλως πρὸς τὰς ὁποίας συνέβησαν καταβυθίσεις τῶν τμημάτων, τῶν σχηματισάντων τὸ Αἰγαῖον καὶ τὸ Ἰόνιον πέλαγος.

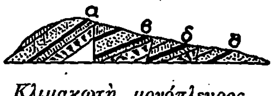


*Κλιμακωτὴ μονόπλευρος ἐγκατακρήμνισις.*

[α, β, δ, θ,=τὰ μετακινηθέντα τεμάχη.]

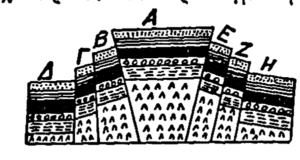


*Ἀμφίπλευρος κλιμακωτὴ ἐγκατακρήμνισις.*

[Α=ρηξιγενὴς προεξοχή. Β, Γ, Δ, Ε, Ζ, Η=τὰ μετακινηθέντα τεμάχη.]

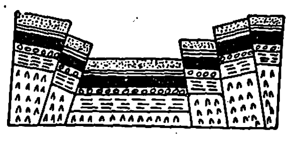

*Ταφροειδὴς ἐγκατακρήμνισις.*

Γ. Κ. ΓΕΩΡΓΑΛΑΣ

— *[Ναυτ. Μετεωρ.]* Διὰ τοῦ ὅρου *μετάπτωσις* νοεῖται ἡ αἰφνιδία καὶ βιαία μεταβολὴ τῆς διευθύνσεως τῆς κοίτης τοῦ ἀνέμου, καὶ μάλιστα διαρκούσης λαίλαπος. Αἱ συνηθέστεραι μεταπτώσεις γίνονται ἀπὸ νοτίου ἀνέμου, Εὔρου ἕως Λιβός, ἀποκαθισταμένου τελικῶς εἰς Σκίρωνα, τῆς φορᾶς τῶν διαδοχικῶν θέσεων τῆς διευθύνσεως τοῦ με-

Digitized by Google

ταπίπτοντος ἀνέμου, οὔσης δεξιοστρόφου, τοῦ δὲ φαινομένου συνοδευομένου ὑπὸ ὄμβρου, ἀστραπῶν καὶ βροντῶν (κοιν. *πρεβέντζα*). Τὸ ἀντίστροφον ὅμως δὲν ἀποτελεῖ κανόνα· διὸ ὅταν, πνέοντος ἀνέμου νοτίου, τὰς ἀστραπὰς καὶ τὰς βροντὰς δὲν ἀκολουθήσῃ μετάπτωσις, ὁ πνέων νότιος ἄνεμος στερεοῦται· ἐξ οὗ καὶ τὸ δημῶδες ναυτικόν: «ἄστραψε, βρόντησε, δὲν ἐβόρρισε, ποῦρα ὄστρια».

Σ. Ε. Λ.

— **μετάπτωσις τοῦ ἄξονος τοῦ βλήματος** *[Βλητ.]*. Τὸ ἐπίμηκες βλῆμα, μετὰ τὴν ἐκ τοῦ κοίλου ἔξοδόν του, ὤφειλεν, ἐφ' ὅσον οὐδεμία ἄλλη δύναμις ἐνήργει ἐναντίον τούτου, νὰ διατηρῇ τὸν ἄξονα κατὰ τὴν αὐτὴν πάντοτε διεύθυνσιν ἐν τῷ διαστήματι, καθ' ὃν χρόνον τὸ κέντρον βάρους αὐτοῦ διέγραφε τὴν καμπύλην τροχιάν. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ ἐφαπτομένη ταύτης, ἡ παριστῶσα τὴν διεύθυνσιν κινήσεως, ἄρχεται εὐθὺς ἀμέσως καταπίπτουσα, τὸ βλῆμα ταχέως εὑρίσκεται κινούμενον οὐχὶ μὲ τὴν κορυφὴν ἐντελῶς πρὸς τὰ ἐμπρός, ἀλλὰ μετὰ λοξότητός τινος, ἐξ οὗ καὶ ἡ ἀντίστασις τοῦ ἄκρου, ἥτις ἐν ἀρχῇ διηυθύνετο κατὰ τὸν ἄξονα, δρῶσα ὡς ἁπλῶς ἐπιβραδυντικὴ δύναμις, θὰ ἐνεργῇ ἤδη λοξῶς, ἔχουσα ὡς σημεῖον ἐφαρμογῆς τὸ *κέντρον ἀντιστάσεως* Ε, κείμενον, διὰ τὰ συνήθους ἐξωτερικῆς μορφῆς καὶ διανομῆς τῆς ὕλης ἐν χρήσει ἐπιμήκη, κυλινδροειδῆ βλήματα, μεταξὺ κέντρου βάρους καὶ κορυφῆς αὐτοῦ.

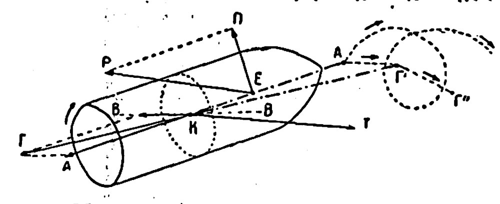


*Μετάπτωσις τοῦ ἄξονος τοῦ βλήματος.*

Ἡ δύναμις αὕτη, παριστανωμένη διὰ τῆς Ε Ρ καὶ εὑρισκομένη ἐπὶ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ ἄξονος Α Α′ καὶ τῆς ἐφαπτομένης ΚΙ, παρέχει δύο συνιστώσας, τὴν μὲν κατὰ τὸν ἄξονα, ὡς *κυρίως ἐπιβραδυντικήν*, τὴν δέ, καθέτως πρὸς ταύτην, ὡς *ἀνατρεπτικὴν* ΕΠ, ἥτις τείνει τὸ μὲν νὰ περιστρέψῃ τὸ βλῆμα περὶ τὸν διὰ τοῦ κέντρου βάρους ἐγκάρσιον ἄξονα ΒΚΒ′ *(ἀνατρεπτικὸν ζεῦγος)*, τὸ δὲ νὰ ἀνυψώσῃ αὐτὸ (ἐνέργεια ταύτης μεταφερομένης εἰς τὸ Κ), ἢ γενικῶς νὰ παρεκκλίνῃ, ὡς *παρεκκλιντικὴ δύναμις*. Λαμβανομένου ἤδη ὑπ' ὄψιν ὅτι τὸ βλῆμα κέκτηται ἀρχικῶς καὶ ἑτέραν ταχεῖαν περιστροφικὴν κίνησιν, ὡς ἐκ τῶν αὐλακίων τοῦ κοίλου, προκύπτει ἐκ τῆς συνθέσεως τῶν δύο τούτων περιστροφικῶν κινήσεων, γινομένης κατὰ τὸν συνήθη ἐν τῇ μηχανικῇ τρόπον, ἡ συνισταμένη περιστροφὴ περὶ νέον, τὸν *στιγμιαῖον ἄξονα* παριστροφῆς ΓΚΓ′, περὶ ὃν θὰ ἄρξηται περιστρεφόμενος ὁ *ἄξων σχήματος* τοῦ βλήματος ΑΑ′, διαγράφων κωνικήν τινα ἐπιφάνειαν.

Τὸ σύνηθες φαινόμενον τῆς κινήσεως τοῦ περιστρεφομένου στρόμβου, ἐφ' οὗ δι' ἐξωτερικῆς ἐνεργείας, διὰ κρούσεως π. χ. διὰ τοῦ δακτύλου, ἐπιζητεῖται ἡ ἀνατροπή, παρέχει πρακτικὸν παράδειγμα τῆς συνθέσεως τῶν δύο περιστροφῶν, ὡς εἰς τὸ *βλῆμα* (βλ. λ.). Ἐκ τῆς οὕτως ἐπερχομένης πρώτης ταύτης ἀποκλίσεως τοῦ ἄξονος τοῦ βλήματος καὶ καθ' ὅσον ἡ ἐφαπτομένη ἐξακολουθεῖ καταπίπτουσα, τὸ μὲν ἐπίπεδον ἄξονος—ἐφαπτομένης παύει νὰ εἶναι κατακόρυφον, τῆς παρεκκλιντικῆς δυνάμεως ἐνεργούσης συνεπῶς οὐχὶ πλέον πρὸς τὰ ἄνω, ἀλλὰ καὶ πλαγίως, τὸ δὲ μέγεθος ταύτης αὐξάνεται· κατὰ τὴν ἑπομένην ὅθεν χρονικὴν στιγμὴν θὰ σχηματισθῇ νέος στιγμιαῖος ἄξων, ὁ ΚΓ″, μᾶλλον πλαγίως καὶ συγχρόνως χαμηλότερον τῆς θέσεως τοῦ προηγουμένου.

Οὕτως, ἐνῷ τὸ βλῆμα θὰ ἐξακολουθῇ περιστρεφόμενον περὶ τὸν ἄξονα σχήματος αὐτοῦ, οὗτος θὰ περιστρέφεται, ὀλίγον ἀπομακρυνόμενος, περὶ ἕτερον ἄξονα, τὸν *στιγμιαῖον*, ὅστις πάλιν θὰ περιστρέφεται περὶ τὴν διαρκῶς καταπίπτουσαν ἐφαπτομένην τῆς τροχιᾶς, διαρκῶς ἀπομακρυνόμενος ταύτης. Ἐκ τῶν ἀντιστοίχων κινήσεων τοῦ ἄξονος τῆς γῆς ἡ μὲν πρώτη, ἥτις ἐκδηλοῦται ὡς μικρὰ ταλάντωσις, καλεῖται *λίκνισις* (βλ. λ.), ἡ δὲ δευτέρα *μετάπτωσις* τοῦ ἄξονος τοῦ βλήματος.

Πειραματικῶς καταδεικνυνται αἱ κινήσεις αὗται διὰ μικροῦ ὁμοιώματος βλήματος, ἐλευθέρως ἐξαρτωμένου διὰ διπλῆς ἐξαρτύσεως καὶ περιστρεφομένου ἐν τεχνητῷ ρεύματι ἀέρος (πείραμα Magnus τῷ 1852 καὶ ἄλλα μεταγενέστερα). Διὰ τοῦ ὑπολογισμοῦ, ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ταχύτητος περιστροφῆς καὶ βάρους τοῦ βλήματος, τῆς ἑκάστοτε τιμῆς τῆς ἀντιστάσεως ἀέρος καὶ τῆς καμπυλότητος τῆς τροχιᾶς, καθορίζεται ὅτι ἡ διαγραφομένη καμπύλη ὑπὸ τοῦ ἐμπροσθίου ἄκρου τοῦ στιγμιαίου ἄξονος περιστροφῆς προέρχεται ἐκ τῆς κυλινδήσεως σπειροειδοῦς τινος καμπύλης ἐπὶ κατακορύφου εὐθείας.

Ἀποτέλεσμα τῆς μεταπτώσεως εἶναι ὅτι τὸ βλῆμα κατὰ τὴν ἐπὶ τῆς τροχιᾶς διαδρομήν του προσπαθεῖ μὲν νὰ διατηρῇ τὴν κορυφήν του πάντοτε κατὰ τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως, τοῦθ' ὅπερ ἀποτελεῖ τὴν εὐστάθειαν τοῦ βλήματος ἐπὶ τῆς τροχιᾶς, ὑφίσταται ὅμως συγχρόνως μίαν συνεχῆ παρέκκλισιν, τὴν *παρεκτροπὴν* (βλ. λ.).

Παρατηρητέον ἐν τούτοις ὅτι ἡ εὐστάθεια ἐπὶ τῆς τροχιᾶς ἐπιτυγχάνεται μόνον ἐφ' ὅσον τὰ ἐπιδρῶντα, ὡς ἄνω, στοιχεῖα ἐπὶ τῆς μεταπτώσεως εὑρίσκονται ἐν καταλλήλῳ σχέσει, τοῦθ' ὅπερ ἐν τῇ πράξει δυσκόλως καὶ ἐν μέρει μόνον ἐπιτυγχάνεται, ἕνεκα ἀνυπερβλήτων τεχνικῶν λόγων. Οὕτω, εἰς τὰ τυφέκια καὶ δὴ τῶν 6,5 χιλ., ἕνεκα τοῦ μικροῦ σχετικῶς ἑλιγμοῦ αὐλακίων διὰ τὰ μεγαλύτερα βεληνεκῆ (ἄνω τῶν 1200 μ. περίπου), αἱ βολίδες πίπτουσιν ἐπὶ τοῦ στόχου λοξῶς ἢ καὶ διὰ τοῦ πλευροῦ· ἐπίσης εἰς τοὺς ὅλμους, ἕνεκα τῆς μεγάλης καμπυλότητος τῆς τροχιᾶς καὶ τῆς μικρᾶς περιστροφικῆς ταχύτητος τῶν βλημάτων, ταῦτα πίπτουσιν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, διὰ μεγάλας ὑψώσεις βολῆς, διὰ τοῦ πυθμενίου των. Κατ' ἀρχὴν ἡ ἔννοια περιστροφῆς διὰ τὴν λίκνισιν καὶ μετάπτωσιν, ὡς καὶ διὰ τὴν παρεκτροπήν, εἶναι ἡ τῆς μεταδιδομένης ὑπὸ τῶν αὐλακίων περιστροφῆς. Κ. ΔΙΓΕΝΗΣ

— **μετάπτωσις τῶν ἰσημεριῶν** (Précession des équinoxes). Καλεῖται οὕτω βραδεῖα καὶ συνεχὴς περιστροφικὴ κίνησις τῆς γραμμῆς τῶν ἰσημεριῶν καί, συνεπῶς, τῶν ἰσημερινῶν σημείων ἐπὶ τοῦ ἐπιπέδου τῆς ἐκλειπτικῆς, εἰς διάστημα 25.800 ἐτῶν. Ἁπλῆν εἰκόνα τῆς μεταπτώσεως παρέχει ἡ κατωτέρω εἰκὼν (σχ. 1). Ἡ ἐπιφάνεια τοῦ ὕδατος παριστᾷ τὸ ἐπίπεδον τῆς ἐκλειπτικῆς, ἡ δὲ κεκλιμένη πρὸς αὐτὸ στεφάνη τὸ ἐπίπεδον τοῦ ἰσημερινοῦ. Ἡ τομὴ τῶν δύο αὐτῶν ἐπιπέδων εἶναι ἡ γραμμὴ τῶν ἰσημεριῶν, δηλαδὴ ἡ γραμμὴ ἡ συνδέουσα τὸ ἐαρινὸν πρὸς τὸ φθινοπωρινὸν σημεῖον. Ὁ ἰσημερινὸς στρέφεται βραδέως, παρασύρων τὰ ἰσημερινὰ σημεῖα, ἅτινα ἀκολουθοῦν τὴν ὑπὸ τῶν βελῶν δεικνυομένην φοράν. Ἡ διεύθυνσις τῆς κινήσεως τῶν ἰσημερινῶν σημείων εἶναι ἐξ ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς, ὀνομάζεται δὲ ἐν τῇ ἀστρονομίᾳ ἀνάδρομος (ἀντίθετος πρὸς τὴν φορὰν τῆς γηΐνης περιστροφῆς). Ἡ πλήρης περιφορὰ τῶν ἐαρινῶν σημείων συμπληροῦται εἰς 25.800 ἔτη, ἤ, ὅπερ τὸ αὐτό, τὰ ἰσημερινὰ σημεῖα μετατίθενται ἐτησίως κατὰ 50″.2 πρὸς δυσμάς. Ἐάν, ἀντὶ τῶν ἐπιπέδων τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς ἐκλειπτικῆς, θεωρήσωμεν τοὺς ἀντιστοίχους ἄξονας καὶ τοὺς πόλους αὐτῶν καὶ δεχθῶμεν πρὸς στιγμὴν ὅτι ἡ γωνία μεταξὺ ἐκλειπτικῆς καὶ ἰσημερινοῦ (γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα λόξωσις τῆς ἐκλειπτικῆς) παραμένῃ σταθερά, βλέπομεν ὅτι ὁ ἄξων τοῦ ἰσημερινοῦ κινεῖται κωνικῶς περὶ τὸν ἄξονα τῆς ἐκλειπτικῆς, ἤ,

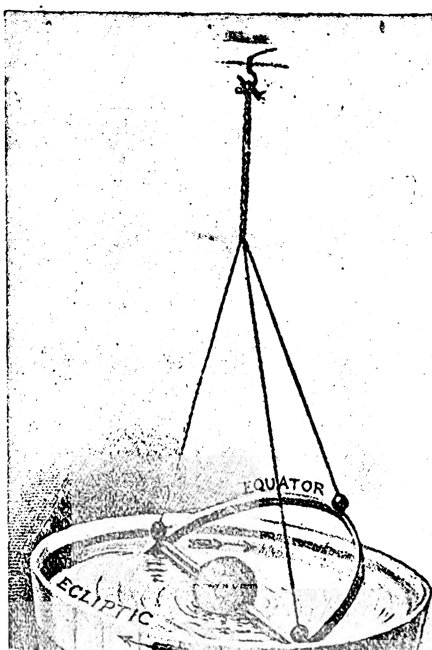


Σχ. 1.

ὅπερ τὸ αὐτό, ὁ βόρειος καὶ ὁ νότιος πόλος τοῦ οὐρανοῦ διαγράφουν ἐντὸς 25.800 ἐτῶν μικρὸν κύκλον περὶ τοὺς ἀντιστοίχους πόλους τῆς ἐκλειπτικῆς.

Ἡ μετάπτωσις τῶν ἰσημεριῶν ἀνεκαλύφθη τῷ 125 π. Χ. ὑπὸ τοῦ Ἱππάρχου, ἐκ τῆς διαφορᾶς τῆς διαρκείας μεταξὺ τοῦ ἀστρικοῦ καὶ τοῦ τροπικοῦ ἔτους (βλ. λ.). Ὁ Ἵππαρχος ἀνεῦρεν ὅτι ἡ διάρκεια τοῦ τροπικοῦ ἔτους, δηλαδὴ ὁ χρόνος ὅστις παρέρχεται μεταξὺ δύο διαδοχικῶν διαβάσεων τοῦ κέντρου τοῦ ἡλίου διὰ τοῦ αὐτοῦ ἰσημερινοῦ σημείου ἢ τῆς αὐτῆς τροπῆς (ἡλιοστασίου), προσδιοριζόμενος διὰ τοῦ ἀρχαίου γνώμονος, ἦτο βραχύτερος τοῦ χρόνου τοῦ παρερχομένου μεταξὺ δύο διαδοχικῶν ἐπανόδων τοῦ ἡλίου εἰς τὸν αὐτὸν ἀστερισμόν, δηλαδὴ τῆς διαρκείας τοῦ ἀστρικοῦ ἔτους (διὰ τὸν ὑπολογισμὸν τῆς διαρκείας τοῦ ἀστρικοῦ ἔτους, ὁ Ἵππαρχος καὶ οἱ σύγχρονοί του προσδιώριζον τὸν χρόνον τῶν ἡλιακῶν ἀνατολῶν καὶ δύσεων τῶν ἀστέρων, δηλαδὴ τὸν χρόνον, καθ' ὃν ὡρισμένοι ἀστερισμοὶ ἀνατέλλουν ἢ δύουν συγχρόνως μετὰ τοῦ Ἡλίου). Πράγματι, ἡ διάρκεια τοῦ ἀστρικοῦ ἔτους ἰσοῦται πρὸς 365.25636 μέσας ἡλιακὰς ἡμέρας, ἐνῷ ἡ τοῦ τροπικοῦ ἰσοῦται πρὸς 365.24219, ἤτοι τὸ ἀστρικὸν ἔτος εἶναι κατὰ 20 λ. 24 δ. μακρότερον τοῦ τροπικοῦ. Ἡ διαφορὰ αὕτη τῆς διαρκείας μεταξὺ τροπικοῦ καὶ ἀστρικοῦ ἔτους δύναται νὰ ἐξηγηθῇ διττῶς· ἢ ὅτι τὰ ἰσημερινὰ σημεῖα μεταπίπτουν, δηλαδὴ κινοῦνται βραδέως πρὸς Δ. καὶ συναντοῦν ἐτησίως τὸν ἥλιον ἐν τῇ ἐκ Δ. πρὸς Α. φαινομένῃ κινήσει του, ἐνωρίτερον, πρὶν ἢ οὗτος διαγράψῃ πλήρη τὸν κύκλον του ἐν τῷ οὐρανῷ· ἢ ὅτι πάντες οἱ ἀστέρες κινοῦνται βραδέως ἐκ Δ. πρὸς Α. (κατὰ τὴν ὀρθὴν φορὰν) περὶ τὸν ἄξονα τῆς ἐκλειπτικῆς.

Ὁ Ἵππαρχος, ὀπαδὸς τῆς ἀρχαίας γεωκεντρικῆς θεωρίας, καθ' ἣν ἡ Γῆ ἦτο ἀκίνητος εἰς τὸ κέντρον τοῦ κόσμου, δὲν ἠδυνήθη, ἴσως μόνον διὰ τὸν λόγον αὐτόν, νὰ ἑρμηνεύσῃ τὴν μετάπτωσιν. Ὄντως, ἐὰν δεχθῶμεν τὴν πρώτην περίπτωσιν ἐκ τῶν ἀνωτέρω, ἡ κίνησις τῆς γραμμῆς τῶν ἰσημεριῶν εἶναι ἀποτέλεσμα τῆς κινήσεως εἴτε τοῦ ἰσημερινοῦ, εἴτε τῆς ἐκλειπτικῆς, εἴτε ἀμφοτέρων. Παλαιαὶ παρατηρήσεις τῶν θέσεων τῶν ἀστέρων συγκριθεῖσαι πρὸς νεωτέρας, γενομένας ὑπὸ τοῦ Ἱππάρχου, ἔφερον εἰς φῶς ὅτι, ἐνῷ τὰ ἐκλειπτικὰ μήκη τῶν ἀστέρων μετεβάλλοντο συστηματικῶς, τὰ πλάτη αὐτῶν ἔμενον ἀμετάβλητα· ἐν ἄλλοις λόγοις ὑπεδείκνυον καθαρὰ ὅτι ἡ ἐκλειπτικὴ δὲν ἐκινεῖτο. Κατὰ συνέπειαν ἢ ὁ ἰσημερινὸς ἔδει νὰ κινῆται ἢ σύσσωμοι οἱ ἀστέρες παραλλήλως πρὸς τὸ ἐπίπεδον τῆς ἐκλειπτικῆς. Ὁ Ἵππαρχος, πιστεύων εἰς τὸ ἀκίνητον τῆς Γῆς καὶ τοῦ ἰσημερινοῦ της, ἐδέχθη ἐσφαλμένως τὸ δεύτερον. Δεκαπέντε αἰῶνας βραδύτερον, ὁ Κοπέρνικος (1473—1543) κατέρριψε τὴν παλαιὰν θεωρίαν τοῦ ἀκινήτου τῆς Γῆς καὶ ἐξήγησεν ἀκριβῶς τὸ φαινόμενον τῆς μεταπτώσεως ὡς ἀποτέλεσμα τῆς κωνικῆς κινήσεως τοῦ ἄξονος τοῦ ἰσημερινοῦ περὶ τὸν ἄξονα τῆς ἐκλειπτικῆς. Σημειωτέον ὅτι οὔτε ὁ Κοπέρνικος ἠδυνήθη νὰ εὕρῃ τὴν αἰτίαν τῆς τοιαύτης κινήσεως, τὸ δὲ ζήτημα παρέμεινεν ἄλυτον μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ Νεύτωνος (1643—1727), εἰς τὸν ὁποῖον ὀφείλεται ἡ ἐξήγησις τῶν αἰτίων καὶ ἡ μαθηματικὴ λύσις τοῦ προβλήματος.

***Αἴτια τῆς μεταπτώσεως.*** Ἡ διεύθυνσις τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς καὶ συνεπῶς ἡ θέσις τοῦ ἰσημερινοῦ δύναται νὰ μεταβληθῇ μόνον διὰ τῆς ἐπιδράσεως ἐξωτερικῶν δυνάμεων. Ἐξωτερικαὶ δυνάμεις ἄξιαι λόγου ἐπιδρῶσαι ἐπὶ τῆς Γῆς εἶναι αἱ ἑλκτικαὶ ἐνέργειαι τοῦ Ἡλίου καὶ τῆς Σελήνης καί, κατὰ δεύτερον λόγον, αἱ τῶν λοιπῶν πλανητῶν τοῦ ἡλιακοῦ συστήματος. Αἱ πρῶται ἔχουν ὡς ἀποτέλεσμα τὴν καλουμένην *σεληνο-ἡλιακὴν* μετάπτωσιν, αἱ δὲ δεύτεραι τὴν *πλανητικήν*.

*Σεληνο-ἡλιακὴ μετάπτωσις* (Précession luni-solaire). Ἐὰν ἀπὸ τοῦ σχήματος τῆς Γῆς ἀφαιρέσωμεν μίαν σφαῖραν ἀκτῖνος ἴσης πρὸς τὴν πολικὴν ἀκτῖνα τῆς Γῆς, θὰ ὑπολειφθῇ τὸ γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα ἰσημερινὸν ἐξόγκωμα. Ἡ ἑλκτικὴ ἐνέργεια τοῦ Ἡλίου καὶ τῆς Σελήνης τείνουν νὰ μεταβάλουν τὴν θέσιν τοῦ ἰσημερινοῦ ἐξογκώματος καὶ συνεπῶς τὴν θέσιν τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς. Ἡ ἐνέργεια τοῦ Ἡλίου τείνει νὰ ταυτίσῃ τὸν ἰσημερινὸν πρὸς τὴν ἐκλειπτικήν, ἡ δὲ τῆς σελήνης πρὸς τὸ ἐπίπεδον τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς, ὅπερ εἶναι κεκλιμένον μόνον κατὰ $5^o\ 9'$ πρὸς τὴν ἐκλειπτικήν. Ἡ περιστροφικὴ κίνησις τῆς Γῆς περὶ τὸν ἄξονά της ἀντιδρᾷ εἰς τὴν ταύτισιν ταύτην τῶν ἐπιπέδων, τὸ δὲ ἀποτέλεσμα τῆς ἐνεργείας πασῶν αὐτῶν τῶν δυνάμεων εἶναι μία βραδεῖα μεταπτωτικὴ κίνησις καθέτως πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς ἑλκούσης δυνάμεως. Ἐὰν ἡ Γῆ ἦτο τελεία σφαῖρα, ἢ ἐὰν τὰ ἐπίπεδα τῆς ἐκλειπτικῆς, τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς τροχιᾶς τῆς Σελήνης ἐταυτίζοντο, ἢ ἐὰν ἡ Γῆ δὲν περιεστρέφετο περὶ τὸν ἄξονά της, δὲν θὰ ὑπῆρχε μετάπτωσις. Τοὐναντίον, ἡ μεταπτωτικὴ κίνησις θὰ ἦτο ταχυτέρα, ἐὰν ἡ Γῆ περιεστρέφετο περὶ τὸν ἄξονά της βραδύτερον, ἐὰν αἱ μᾶζαι τῆς Σελήνης καὶ τοῦ Ἡλίου ἦσαν μεγαλύτεραι, ἐὰν τὰ δύο αὐτὰ ἄστρα ἦσαν πλησιέστερον πρὸς τὴν Γῆν καὶ ἡ λόξωσις τῆς ἐκλειπτικῆς ἦτο μεγαλυτέρα, μὴ ὑπερβαίνουσα ὅμως τὰς $45^o$. Ἡ ἐνέργεια τῶν παρελκτικῶν δυνάμεων τοῦ Ἡλίου καὶ τῆς Σελήνης ἐπὶ τοῦ ἰσημερινοῦ ἐξογκώματος τῆς Γῆς, αἵτινες προξενοῦν τὴν μετάπτωσιν, εἶναι ὁμοία πρὸς τὴν παλιρροιογόνον δύναμιν τῶν ἰδίων σωμάτων. Τὸ ἀποτέλεσμα τῶν δυνάμεων αὐτῶν (βλ. λ. *παλίρροια*) εἶναι «ἀνάλογον πρὸς τὴν μᾶζαν τοῦ παρέλκοντος

Digitized by Google

σώματος καὶ ἀντιστρόφως ἀνάλογον τοῦ κύβου τῆς ἀποστάσεώς του ἀπὸ τοῦ παρελκομένου». Κατὰ συνέπειαν, ἡ μεταπτωτικὴ ἐνέργεια τῆς Σελήνης μόνης, παρ' ὅλην τὴν μικράν της μᾶζαν, λόγῳ τοῦ ὅτι αὕτη εὑρίσκεται ἀσυγκρίτως πλησιέστερον τῆς Γῆς (384.000 χμ.) ἢ ὁ Ἥλιος (150.000.000 χμ.) εἶναι 2.4 φορὰς περίπου μείζων τῆς τοῦ Ἡλίου. Ἡ βραδύτης τῆς μεταπτωτικῆς κινήσεως ὀφείλεται εἰς τρεῖς παράγοντας: α′) εἰς τὴν μεγάλην ῥοπὴν περιστροφῆς τῆς Γῆς, β′) εἰς τὸ μικρὸν τῆς μάζης τοῦ ἰσημερινοῦ ἐξογκώματος ἐν συγκρίσει πρὸς τὴν μᾶζαν τῆς Γῆς, καὶ γ′) εἰς τὸ ἀσθενὲς τῆς δυνάμεως, ἥτις τείνει νὰ ταυτίσῃ τὸν ἰσημερινὸν πρὸς τὴν ἐκλειπτικήν. Ἡ κωνικὴ κίνησις τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς εἶναι ἐντελῶς ὁμοία πρὸς τὴν γνωστὴν κίνησιν τοῦ στρόμβου (σβούρας). Ἐφ' ὅσον ὁ ἄξων τοῦ στρόμβου μένει κατακόρυφος, οὗτος διατηρεῖ τὴν διεύθυνσίν του· ἐὰν ὅμως οὗτος, δι' οἱανδήποτε αἰτίαν, παρεκκλίνῃ τῆς κατακορύφου, ἡ βαρύτης ἐνεργοῦσα ἐπὶ τοῦ κέντρου βάρους, ὅπερ εὑρίσκεται ὑπεράνω τοῦ σημείου ἐπαφῆς μετὰ τοῦ ἐδάφους, τείνει νὰ τὸν καταρρίψῃ. Ἐν τούτοις ὅμως ὁ στρόμβος δὲν πίπτει, ἀλλ' ἐξακολουθεῖ στρεφόμενος περὶ τὸν ἄξονά του, ὅστις ὅμως λαμβάνει κωνικὴν κίνησιν περὶ τὴν κατακόρυφον, κατὰ τὴν φορὰν τῆς περιστροφῆς. Ἡ φορὰ τῆς κινήσεως τοῦ ἄξονος θὰ ἦτο ἀντίθετος τῆς περιστροφῆς, ἐὰν τὸ κέντρον βάρους τοῦ στρόμβου εὑρίσκετο κάτωθεν τοῦ σημείου ἐπαφῆς.

*Πλανητικὴ μετάπτωσις.* Αἱ παρέλξεις τῶν πλανητῶν ἐπὶ τῆς Γῆς τείνουν ν' ἀπομακρύνουν αὐτὴν ἀπὸ τοῦ ἐπιπέδου τῆς τροχιᾶς της (ἐκλειπτικῆς), ἤ, ὅπερ τὸ αὐτό, τείνουν νὰ μεταβάλουν τὴν θέσιν τῆς ἐκλειπτικῆς χωρὶς νὰ ἐπηρεάσουν τὴν θέσιν τοῦ γηΐνου ἰσημερινοῦ. Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν παρέλξεων αὐτῶν, τοῦ ἰσημερινοῦ μένοντος σταθεροῦ, ἡ ἐκλειπτικὴ κινεῖται μεταπτωτικῶς κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε ἡ γραμμὴ τῶν ἰσημεριῶν νὰ περιστρέφηται ἐπὶ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ ἰσημερινοῦ κατὰ τὴν ὀρθὴν φορὰν (ἐκ Δ. πρὸς Α.), δηλαδὴ καθ' ἣν φορὰν μετροῦνται αἱ ὀρθαὶ ἀναφοραὶ τῶν ἀστέρων κατὰ 0″.13 ἐτησίως. Ἡ κίνησις αὕτη τῆς ἐκλειπτικῆς ἔχει ὡς ἀποτέλεσμα μικρὰν ἐτησίαν ἐλάττωσιν τῶν ὀρθῶν ἀναφορῶν τῶν ἀστέρων, καλεῖται δὲ *πλανητικὴ μετάπτωσις*.

Πλὴν τῶν ὀρθῶν ἀναφορῶν, τὰ ἐκλειπτικὰ μήκη καὶ πλάτη τῶν ἀστέρων μεταβάλλονται, λόγῳ τῆς πλανητικῆς μεταπτώσεως, οὐχὶ ὅμως αἱ ἀποκλίσεις αὐτῶν.

Μεταβολὴ τῆς λοξώσεως τῆς ἐκλειπτικῆς. *Γενικὴ μετάπτωσις.* Αἱ παρελκτικαὶ δυνάμεις τῶν πλανητῶν προξενοῦν ἐπίσης μίαν μικρὰν μεταβολὴν τῆς λοξώσεως τῆς ἐκλειπτικῆς. Ἡ γωνία αὕτη ἐλαττοῦται συνεχῶς ἐπὶ τοῦ παρόντος κατὰ 0″.48 ἐτησίως. Ἡ ἐλάττωσις αὕτη θὰ ἐξακολουθήσῃ ἐπὶ 15.000 ἔτη περίπου, μετὰ τὴν πάροδον τῶν ὁποίων ἡ τιμὴ τῆς λοξώσεως θ' ἀρχίσῃ αὐξανομένη κ.ο.κ. Τὸ ἀποτέλεσμα τῆς μεταβολῆς τῆς γωνίας ταύτης ἐτησίως ἐπὶ τῶν συντεταγμένων τῶν ἄστρων, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν σεληνο-ηλιακὴν καὶ τὴν πλανητικὴν μετάπτωσιν, ἀποτελεῖ τὴν *«γενικὴν μετάπτωσιν»*.

***Ἀνωμαλίαι τῆς μεταπτώσεως.*** *Ἡλιακή, σεληνιακὴ καὶ μηνιαία κλόνισις.* Ἡ πορεία τῆς μεταπτώσεως δὲν εἶναι σταθερά, ἡ δὲ τιμὴ αὐτῆς μεταβάλλεται κατὰ τὸ διάστημα τοῦ ἔτους κατὰ ποσότητα μικρὰν μὲν ἀλλ' οὐχὶ ἀμελητέαν. Ἡ αἰτία τῶν ἀνωμαλιῶν τῆς μεταπτώσεως ὀφείλεται εἰς τὰ αὐτὰ ἄστρα (τὸν Ἥλιον καὶ τὴν Σελήνην), τὰ ὁποῖα προξενοῦν τὴν μετάπτωσιν.

Ἀνωμαλίαι ὀφειλόμεναι εἰς τὸν Ἥλιον. Λόγῳ τῆς ἐκκεντρικότητος τῆς γηΐνης τροχιᾶς, ἡ ἀπόστασις τοῦ Ἡλίου ἀπὸ τῆς Γῆς, καὶ συνεπῶς ἡ παρελκτική του ἐνέργεια, μεταβάλλεται κατὰ τὸ διάστημα τοῦ ἔτους, οὖσα μεγαλυτέρα εἰς τὸ περιήλιον καὶ μικροτέρα εἰς τὸ ἀφήλιον. Πλὴν τούτου, δὶς τοῦ ἔτους (κατὰ τὰς ἰσημερίας) ὁ Ἥλιος εὑρίσκεται ἐπὶ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ ἰσημερινοῦ, ὁπότε ἡ μεταπτωτική του ἐπίδρασις μηδενίζεται, δὶς δὲ τοῦ ἔτους (κατὰ τὰ ἡλιοστάσια) αὕτη λαμβάνει τὴν μεγίστην τιμήν της. Λόγῳ τῆς μεταβολῆς ταύτης, ἡ μεταπτωτικὴ κίνησις τοῦ ἰσημερινοῦ εἶναι ἀνισοταχής, ἡ δὲ γωνία τοῦ ἰσημερινοῦ πρὸς τὴν ἐκλειπτικὴν ὑπόκειται εἰς μικρὰν διπλῆν ἐτησίαν κύμανσιν, ἤ, ὅπερ τὸ αὐτό, ὁ ἄξων τῆς Γῆς ὑπόκειται εἰς μικρὰν ἐτησίαν λίκνισιν περὶ τὴν μέσην θέσιν του, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «ἡλιακὴ κλόνισις». Ἡ τιμὴ τῆς κλονίσεως ταύτης ἀνέρχεται εἰς 1″.2.

Ἀνωμαλίαι ὀφειλόμεναι εἰς τὴν Σελήνην. Ἡ μεταπτωτικὴ ἐπίδρασις τῆς Σελήνης μεταβάλλεται ὅπως καὶ ἡ τοῦ Ἡλίου διὰ τοὺς ἑξῆς κυρίως λόγους:

1) Ἕνεκα τῆς ἐκκεντρικότητος τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς ἡ ἀπόστασις τοῦ δορυφόρου ἡμῶν ἀπὸ τῆς Γῆς καί, συνεπῶς, ἡ μεταπτωτική του ἐπίδρασις ὑπόκειται εἰς μηνιαίαν μεταβολήν, οὖσα μεγίστη εἰς τὸ περίγειον καὶ ἐλαχίστη εἰς τὸ ἀπόγειον.

2) Δὶς τοῦ μηνός, ἡ Σελήνη διέρχεται διὰ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ ἰσημερινοῦ, ὁπότε ἡ μεταπτωτική της ἐπίδρασις μηδενίζεται· δὶς δὲ τοῦ μηνὸς αὕτη λαμβάνει τὴν μεγίστην τιμήν της.

3) Ἡ τροχιὰ τῆς Σελήνης σχηματίζει μετὰ τῆς ἐκλειπτικῆς γωνίαν $5^0\,9'$, οἱ δὲ σύνδεσμοι τῆς τροχιᾶς κινοῦνται συνεχῶς ἐπὶ τῆς ἐκλειπτικῆς κατὰ τὴν ἀνάδρομον φοράν, διαγράφοντες πλήρη κύκλον ἐντὸς 18 ²/₃ ἐτῶν.

Συνεπείᾳ τῆς κινήσεως ταύτης, ἡ γωνία τῆς τροχιᾶς τῆς σελήνης καὶ τοῦ ἰσημερινοῦ μεταβάλλεται μεταξὺ τῶν ὁρίων: $23^0\,27' + 5^0 9' = 28^0 36'$ (ὅταν ὁ ἀναβιβάζων σύνδεσμος τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς συμπίπτῃ πρὸς τὸ ἐαρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον) καὶ $23^0\,27' - 5^0\,9' = 18^0\,18'$ (ὅταν οὗτος συμπίπτῃ πρὸς τὸ φθινοπωρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον). Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν ἡ μεταπτωτικὴ ἐπίδρασις τῆς Σελήνης εἶναι περίπου διπλασία τῆς δευτέρας. Ὡς ἐκ τῆς μεταβολῆς ταύτης, ἡ γωνία τοῦ ἰσημερινοῦ πρὸς τὴν ἐκλειπτικὴν ὑπόκειται εἰς κύμανσιν ἔχουσαν περίοδον 18 ²/₃ ἔτη. Κυμαινομένου τοιουτοτρόπως τοῦ ἰσημερινοῦ, ὁ ἄξων αὐτοῦ, πλὴν τῆς κωνικῆς του κινήσεως περὶ τὸν ἄξονα τῆς ἐκλειπτικῆς, προερχομένης ἐκ τῆς μεταπτώσεως, λικνίζεται συγχρόνως περὶ τὴν μέσην θέσιν του, διαγράφων ἐν τῇ πραγματικότητι μίαν πτυχωτὴν κωνικὴν ἐπιφάνειαν.

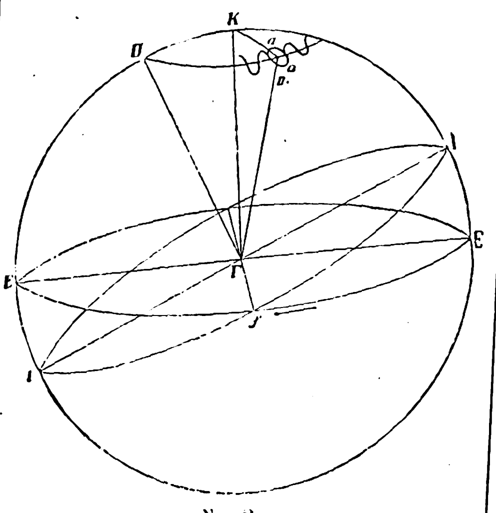


Σχ. 2.

Οἱ πόλοι τοῦ ἰσημερινοῦ, ἀντὶ νὰ διαγράφωσι μικροὺς κύκλους περὶ τοὺς ἀντιστοίχους πόλους τῆς ἐκλειπτικῆς, κινοῦνται ἐπὶ κυματοειδοῦς καμπύλης (σχ. 2).

Ἡ κίνησις αὕτη τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «σεληνιακὴ κλόνισις». Ἡ περίοδος μιᾶς πλήρους κυμάνσεως εἶναι, ὡς εἴδομεν, 18 ²/₃ ἔτη, ὁ δὲ ἀριθμὸς αὐτῶν ἐντὸς ἑνὸς πλήρους κύκλου τῆς μεταπτώσεως ἰσοῦται πρὸς 1400 περίπου (25.800 : 18 ²/₃). Συνεπείᾳ τῆς κλονίσεως, ἡ ταχύτης τῆς κινήσεως τῶν ἰσημερινῶν ὑπόκειται εἰς μεταβολὴν περιοδικήν, ἥτις καλεῖται συνήθως «ἐξίσωσις τοῦ ἰσημερινοῦ σημείου».

Ἐὰν θεωρήσωμεν μόνον τὴν σεληνιακὴν κλόνισιν, παραλείποντες τὴν μετάπτωσιν, εὑρίσκομεν ὅτι λόγῳ ταύτης ὁ πόλος τοῦ ἰσημερινοῦ θὰ διέγραφε περὶ τὴν μέσην θέσιν του μικρὰν ἔλλειψιν αα′, τῆς ὁποίας ὁ μέγας ἄξων, κείμενος ἐπὶ τοῦ ἐπιπέδου τοῦ διερχομένου διὰ τοῦ ἄξονος τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς ἐκλειπτικῆς (ΓΠ, καὶ ΓΚ), ἰσοῦται πρὸς 18″.5, ὁ δὲ μικρὸς ἄξων, παράλληλος πρὸς τὴν ἐκλειπτικήν, ἰσοῦται πρὸς 13″.74. Κατὰ τὸν Sir John Herschel: «Ἡ κλόνισις τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς εἶναι μία μικρὰ περιστροφικὴ κίνησις, ἥτις, ἐὰν ὑφίστατο μόνη (δηλαδὴ ἄνευ τῆς μεταπτώσεως), θὰ ἠνάγκαζε τοὺς πόλους νὰ διαγράφουν εἰς διάστημα 18 ²/₃ ἐτῶν, μεταξὺ τῶν ἀστέρων, μίαν μικρὰν ἔλλειψιν, ἧς ὁ μέγας ἄξων ἰσοῦται πρὸς 18″.5 καὶ διευθύνεται πρὸς τὸν πόλον τῆς ἐκλειπτικῆς, ὁ δὲ μικρός, 13″.74, εἶναι κάθετος ἐπὶ τὸν πρῶτον».

Τὸ ἥμισυ τῆς τιμῆς τοῦ μεγάλου ἄξονος τῆς ἐκλειπτικῆς ταύτης, 9″.25, καλεῖται «σταθερὰ ἢ συντελεστὴς τῆς κλονίσεως». Οὗτος, ὡς βλέπομεν, εἶναι περίπου ὀκταπλάσιος τοῦ συντελεστοῦ τῆς ἡλιακῆς κλονίσεως (1″.2). Μετάπτωσις καὶ κλόνισις, μολονότι ἐξετάζονται κεχωρισμένως, ἐν τῇ πραγματικότητι ὑφίστανται ἀλληλένδετοι, ὡς δύο παράγοντες τοῦ αὐτοῦ γενικοῦ φαινομένου.

Ἡ σεληνιακὴ κλόνισις ἀνεκαλύφθη τῷ 1748 ὑπὸ τοῦ James Bradley, ἐκ παρατηρήσεων τῶν θέσεων τῶν ἀστέρων. Ἡ ἐξήγησις τῶν αἰτίων τῆς κλονίσεως ὀφείλεται εἰς τὸν Γάλλον μαθηματικὸν d'Alembert (1749).

*Μηνιαία κλόνισις.* Τρίτον εἶδος κλονίσεως τοῦ ἄξονος τῆς Γῆς, ὅμοιον πρὸς τὴν ἡλιακὴν κλόνισιν καὶ ὀφειλόμενον εἰς τὴν μηνιαίαν μεταβολὴν τῆς ἀποκλίσεως τῆς σελήνης. Ἡ τιμὴ τῆς μηνιαίας κλονίσεως εἶναι ἐλαχίστη, μόλις ἀνερχομένη εἰς 0″.1.

***Συνέπειαι τῆς μεταπτώσεως καὶ τῆς κλονίσεως.*** *Μεταβολὴ τοῦ πολικοῦ ἀστέρος καὶ τῆς φαινομένης θέσεως τῶν ἀστερισμῶν.* Οἱ πόλοι τοῦ οὐρανοῦ ἀλλάσσουν θέσιν συνεπείᾳ τῆς μεταπτώσεως. Ἐπὶ τοῦ παρόντος, ὁ βόρειος πόλος εὑρίσκεται ἐγγύτατα τοῦ ἀστέρος α τῆς Μικρᾶς Ἄρκτου, ὅστις, διὰ τοῦτο, καλεῖται «πολικὸς ἀστήρ». Μετὰ πάροδον 6000 ἐτῶν περίπου ὁ πόλος θὰ ἔχῃ μετατοπισθῆ πλησίον τοῦ ἀστέρος α τοῦ Κηφέως, ὅστις τότε θὰ λάβῃ τὴν θέσιν τοῦ πολικοῦ ἀστέρος. Μετὰ 12000 ἔτη, πολικὸς ἀστὴρ θὰ εἶναι ὁ α τῆς Λύρας (Βέγας). Πρὸ 4000 ἐτῶν πολικὸς ἀστὴρ ἦτο ὁ α τοῦ Δράκοντος, πρὸ 14000 ἐτῶν δὲ πολικὸς ἀστὴρ τοῦ νοτίου ἡμισφαιρίου ἦτο ὁ α τῆς Ἀργοῦς (Κάνωβος). Τέλος, μετὰ 25.800 ἔτη, ὅτε ὁ κύκλος τῆς μεταπτώσεως συμπληροῦται, πολικὸς ἀστὴρ θὰ εἶναι πάλιν ὁ α τῆς Μικρᾶς Ἄρκτου.

Ἐπίσης, τὸ ἔκ τινος τόπου ὁρατὸν τμῆμα τοῦ οὐρανοῦ βραδέως μεταβάλλεται· νέοι ἀστερισμοὶ θὰ ἐμφανίζωνται, ἐνῷ γνωστοὶ ἀστερισμοὶ θὰ καθίστανται ἀφανεῖς, παύοντες ἀνερχόμενοι ὑπὲρ τὸν ὁρίζοντα αὐτοῦ. Ὁ λαμπρὸς ἀστερισμὸς Νότιος Σταυρὸς λ. χ. ἦτο ὁρατὸς ἐν Ἑλλάδι πρὸ 6000 ἐτῶν καὶ θὰ εἶναι ὁρατὸς πάλιν μετὰ πάροδον 20.000 ἐτῶν. Ὁ Σείριος (α τοῦ Μεγ. Κυνὸς) θὰ παύσῃ ἀνατέλλων εἰς τὸ γεωγραφικὸν πλάτος τῆς Ἑλλάδος, παραμένων κάτωθεν τοῦ ὁρίζοντος, μετὰ πάροδον 13000 ἐτῶν.

Μεταβολὴ τῶν ζῳδίων. Τὸ ἐαρινὸν σημεῖον καὶ μετ' αὐτοῦ τὰ δώδεκα ζῴδια τοῦ ζῳδιακοῦ κύκλου μετακινοῦνται λόγῳ τῆς μεταπτώσεως κατὰ 50″.2 ἐτησίως πρὸς Δ., ἐγκαταλείποντα βαθμηδὸν τοὺς οἰκείους ἀστερισμούς. Τὴν ἐποχήν, καθ' ἣν ὁ Ἵππαρχος ἐξετέλει τὰς παρατηρήσεις του ἐν Ῥόδῳ, δηλαδὴ πρὸ δισχιλίων καὶ πλέον ἐτῶν, τὸ ἐαρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον εὑρίσκετο εἰς τὸ δυτικὸν ἄκρον τοῦ ἀστερισμοῦ τοῦ Κριοῦ· κατὰ τὴν ἐαρινὴν ἰσημερίαν ὁ Ἥλιος εὑρίσκετο ἐντὸς τοῦ ἀστερισμοῦ τοῦ Κριοῦ. Κατὰ τὸ διάστημα αὐτὸ τῶν δύο χιλιετηρίδων τὸ ἐαρινὸν σημεῖον ἐκινήθη πρὸς Δ. κατά τι ἔλασσον τῶν 30° (δηλαδὴ περίπου κατὰ τὸ μῆκος ἑνὸς ζῳδίου), εἰσελθὸν εἰς τὸν ἀστεριμὸν τῶν Ἰχθύων. Τοιουτοτρόπως, σήμερον, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἐαρινῆς ἰσημερίας, ὁ Ἥλιος εὑρίσκεται πράγματι εἰς τὸν ἀστερισμὸν τῶν Ἰχθύων, εἰσέρχεται δὲ εἰς τὸν ἀστερισμὸν τοῦ Κριοῦ ἕνα μῆνα βραδύτερον. Ὁμοίως τὸ ζῴδιον τῶν Ἰχθύων εἰσῆλθεν ἐντὸς τοῦ ἀστερισμοῦ τοῦ Ὑδροχόου, τὸ τοῦ Ὑδροχόου εἰς τὸν Αἰγόκερων, τὸ τοῦ Αἰγόκερω εἰς τὸν Τοξότην κ.ο.κ.

Βαθμιαία μεταβολὴ τῶν ὡρῶν τοῦ ἔτους. Ἡ διάρκεια τῶν ὡρῶν τοῦ ἔτους ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς γωνίας τοῦ ἄξονος τῶν ἀψίδων (δηλαδὴ τοῦ μεγάλου ἄξονος τῆς τροχιᾶς τῆς Γῆς) μετὰ τῆς γραμμῆς τῶν ἰσημεριῶν. Ὁ ἄξων τῶν ἀψίδων, συνεπείᾳ πλανητικῶν παρέλξεων, στρέφεται κατὰ τὴν ὀρθὴν φορὰν (ἐκ Δ. πρὸς Α.) κατὰ 11″.77 ἐτησίως, ἡ δὲ γραμμὴ τῶν ἰσημεριῶν, λόγῳ τῆς μεταπτώσεως, ἀναδρομεῖ κατὰ 50″.2 ἐντὸς ἑνὸς ἔτους· ὅθεν ἡ γωνία αὐτῶν αὐξάνει ἐτησίως κατὰ 61″.97, ἤ, ὅπερ τὸ αὐτό, τὸ περιήλιον ἐκτελεῖ πλήρη κύκλον ἐπὶ τῆς ἐκλειπτικῆς ἐν σχέσει πρὸς τὸ ἐαρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον εἰς διάστημα 21.000 ἐτῶν.

Τῷ 3958 π. Χ. ὁ ἄξων τῶν ἀψίδων ἐταυτίζετο πρὸς τὴν γραμμὴν τῶν ἰσημεριῶν. Ἡ διάρκεια τοῦ θέρους ἦτο ἴση πρὸς τὴν τοῦ φθινοπώρου καὶ ἡ τοῦ χειμῶνος ἴση πρὸς τὴν τοῦ ἔαρος. Ἡ διάρκεια τοῦ θέρους καὶ φθινοπώρου ὁμοῦ ἦτο βραχυτέρα τῆς τοῦ χειμῶνος καὶ ἔαρος. Τῷ 1267 π. Χ. ἡ γραμμὴ τῶν ἰσημεριῶν ἦτο κάθετος ἐπὶ τοῦ ἄξονος τῶν ἀψίδων (δηλαδὴ ὁ ἄξων τῶν ἀψίδων ἐταυτίζετο πρὸς τὴν γραμμὴν τῶν τροπῶν). Τὸ ἔαρ ἦτο ἴσον πρὸς τὸ θέρος καὶ τὸ φθινόπωρον πρὸς τὸν χειμῶνα. Ἡ διάρκεια ἔαρος καὶ θέρους ὁμοῦ ἦτο μακροτέρα τῆς τοῦ φθινοπώρου καὶ χειμῶνος. Τῷ 6542 μ. Χ. τὸ περιήλιον θὰ ἔχῃ στραφῆ κατὰ 180° ἀπὸ τοῦ 3958 π. Χ. Τὸ θέρος τότε θὰ ἰσοῦται πάλιν πρὸς τὸ φθινόπωρον καὶ ὁ χειμὼν πρὸς τὸ ἔαρ, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι ἡ διάρκεια τοῦ φθινοπώρου καὶ θέρους θὰ εἶναι μείζων τῆς τοῦ χειμῶνος καὶ ἔαρος.

Ἐπὶ τοῦ παρόντος, ἡ διάρκεια τῶν 4 ἐποχῶν τοῦ ἔτους εἶναι:

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| Ἔαρ: | 92 ἡμ. | 21 ὥρ. | Φθινόπωρον: | 89 ἡμ. | 19 ὥρ. |
| Θέρος: | 93 | 14 | Χειμών: | 89 | 00 |
| Ἥλιος πρὸς Β. τοῦ Ἰσημερινοῦ | 186 ἡμ. | 11 ὥρ. | Ἥλιος πρὸς Ν. τοῦ Ἰσημερινοῦ. | 178 ἡμ. | 19 ὥρ. |

Ἦτοι ὁ Ἥλιος παραμένει 8 ἡμέρας περισσότερον εἰς τὸ Β. ἡμισφαίριον (διὰ περισσοτέρας λεπτομερείας ἐν σχέσει πρὸς τὰς διαφορὰς θερμοκρασίας μεταξὺ Β. καὶ Ν. ἡμισφαιρίου βλ. λ. *ὧραι τοῦ ἔτους*).

Περιοδικὴ ἀνωμαλία τῆς λοξώσεως τῆς ἐκλειπτικῆς. Μεταβολὴ τῆς ταχύτητος τῆς ἀναδρόμου κινήσεως τοῦ ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου. Ἀμφότερα εἶναι ἀποτέλεσμα τῆς κλονίσεως καὶ συνεπάγονται μεταβολὰς τῶν συντεταγμένων τῶν ἄστρων. Ἡ πρώτη ἀνωμαλία εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «κλόνισις τῆς λοξώσεως», ἡ δὲ δευτέρα «κλόνισις κατὰ ἐκλειπτικὸν μῆκος».

Μεταβολαὶ τῶν συντεταγμένων τῶν ἄστρων. Μέσαι, ἀληθεῖς καὶ φαινόμεναι θέσεις αὐτῶν (Mean, True, Apparent places). Ἡ βραδεῖα καὶ συνεχὴς κίνησις τῶν θεμελιωδῶν ἐπιπέδων τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς ἐκλειπτικῆς, καὶ μετ' αὐτῶν τῆς ἀρχῆς τῶν συντεταγμένων, γ, συνεπάγεται τὴν με-

Digitized by Google

ταβολὴν τῶν συντεταγμένων τῶν ἄστρων. Ὁ προσδιορισμὸς τῆς μεταβολῆς ταύτης ἀποτελεῖ ἓν τῶν ζωτικῶν προβλημάτων τῆς ἀστρονομίας θέσεως.

Ἡ κίνησις τῶν θεμελιωδῶν ἐπιπέδων δύναται νὰ διαιρεθῇ εἰς δύο κατηγορίας: α) Εἰς κίνησιν, ἥτις διὰ χρονικὰ διαστήματα λίαν μακρὰ δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ἀνάλογος τοῦ χρόνου· καὶ β) Εἰς κίνησιν περιοδικήν, ἥτις εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὸ ἡμίτονον ἢ τὸ συνημίτονον γωνίας ταχέως μεταβαλλομένης. Ἡ πρώτη κίνησις (αἰωνία) ἀποτελεῖ τὴν μετάπτωσιν, ἡ δὲ δευτέρα τὴν κλόνισιν. Μὲ ἄλλους λόγους, ἡ διόρθωσις τῶν συντεταγμένων τῶν ἄστρων ἀπὸ μιᾶς ἐποχῆς εἰς ἄλλην ἀποτελεῖται ἀπὸ ὅρους μεταβαλλομένους ἀναλόγως τοῦ χρόνου (μετάπτωσις) καὶ ἀπὸ ὅρους περιοδικοὺς (κλόνισις).

Ἄξιον ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι τὸ γεγονὸς ὅτι τὰ ἀποτελέσματα τῆς θεωρίας τῆς μεταπτώσεως καὶ τῆς κλονίσεως συμφωνοῦν πλήρως πρὸς τὰς παρατηρήσεις, ἡ δὲ σημασία τῆς συμφωνίας ταύτης εἶναι τοσούτῳ σπουδαιοτέρα, ἐὰν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ὅτι οἱ λογισμοὶ ἐξαρτῶνται: α') ἐκ τῶν διαστάσεων τῆς Γῆς, β') ἐκ τῆς πυκνότητος αὐτῆς, γ') ἐκ τῆς διανομῆς τῆς μάζης ἐν αὐτῇ, δ') ἐκ τῶν νόμων τῆς κινήσεως αὐτῆς, ε') τῆς ταχύτητος περιστροφῆς, στ') τῆς πλατύνσεως, ζ') τῶν ἀποστάσεων τοῦ Ἡλίου καὶ τῆς Σελήνης, η') τῶν φαινομένων κινήσεων αὐτῶν σχετικῶς πρὸς τὴν Γῆν καὶ θ') τοῦ νόμου τῆς παγκοσμίου ἕλξεως.

Πρὸς καθορισμὸν τῆς θέσεως τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς ἐκλειπτικῆς ἐν δεδομένῃ στιγμῇ, λαμβάνεται ὡς ἀφετηρία ἡ θέσις, ἣν τὰ ἐπίπεδα ταῦτα κατεῖχον εἰς ὡρισμένην ἐποχήν, ἐπὶ παραδείγματι κατὰ τὴν ἀρχὴν τοῦ ἔτους 1850. Τὰ οὕτω καθορισθέντα σταθερὰ ἐπίπεδα ὀνομάζονται: μέσος ἰσημερινὸς καὶ μέση ἐκλειπτικὴ (ἐπίσης μέσον ἐαρινὸν ἰσημερινὸν σημεῖον), κατὰ τὸ 1850.0 (ὡς ἀρχὴ τοῦ ἔτους ἐνταῦθα δὲν λαμβάνεται ἡ τοῦ ἡμερολογιακοῦ ἢ τροπικοῦ, ἀλλ' ἡ τοῦ πλαστοῦ ἔτους τοῦ Bessel—fictitious year—, δηλαδὴ ἡ στιγμὴ καθ' ἣν τὸ μέσον ἐκλειπτικὸν μῆκος τοῦ Ἡλίου ἰσοῦται πρὸς $280^0$).

Ἐὰν παραλείψωμεν τὴν κλόνισιν καὶ διορθώσωμεν τὰς θέσεις τῶν ἄνω ἐπιπέδων ἐκ μόνης τῆς μεταπτώσεως διὰ μίαν λ. χ. πεντηκονταετίαν, λαμβάνομεν τὸν μέσον ἰσημερινόν, μέσην ἐκλειπτικὴν καὶ μέσον γ κατὰ τὸ 1900.0. Ἐὰν ὅμως, πλὴν τῆς μεταπτώσεως, ἐπιφέρωμεν καὶ τὴν διόρθωσιν τῆς κλονίσεως, ἔχομεν τὸν ἀληθῆ ἰσημερινόν, ἀληθῆ ἐκλειπτικὴν καὶ ἀληθὲς γ, δηλαδὴ τὰς πραγματικὰς θέσεις τῶν ἐπιπέδων καὶ τῆς ἀρχῆς τῶν συντεταγμένων κατὰ τὴν ἄνω χρονολογίαν.

Κατ' ἀναλογίαν, αἱ συντεταγμέναι τῶν ἄστρων ὀνομάζονται ἀληθεῖς ἢ μέσαι, καθ' ὅσον αὗται ἀναφέρονται πρὸς τὰς ἀληθεῖς ἢ μέσας θέσεις τῶν θεμελιωδῶν ἐπιπέδων. Ὥστε βλέπομεν ὅτι ἡ μέση θέσις ἑνὸς ἀστέρος ἐπηρεάζεται μόνον ὑπὸ τῆς μεταπτώσεως (καὶ τῆς ἰδίας του κινήσεως)· προσθέτοντες εἰς τὴν μέσην θέσιν τὴν διόρθωσιν τῆς κλονίσεως, λαμβάνομεν τὴν ἀληθῆ θέσιν. Ἐὰν ἤδη εἰς τὴν ἀληθῆ θέσιν προσθέσωμεν καὶ τὴν μεταβολὴν τὴν ὀφειλομένην εἰς τὴν ἐτησίαν ἀποπλάνησιν (ἢ τὴν πλανητικὴν ἀποπλάνησιν, ἐὰν πρόκειται περὶ σώματος τοῦ ἡλιακοῦ συστήματος), λαμβάνομεν τὴν φαινομένην θέσιν τοῦ ἄστρου, δηλαδὴ τὴν θέσιν, εἰς ἣν παρατηροῦμεν τὸ ἄστρον ἐν δεδομένῃ στιγμῇ, μὴ λαμβανομένης ὑπ' ὄψιν τῆς διαθλάσεως.

***Σταθεραὶ ἢ συντελεσταὶ τῆς μεταπτώσεως καὶ τῆς κλονίσεως.*** α') *Μετάπτωσις.* Ἡ γεωμετρικὴ σημασία τῶν σταθερῶν τῆς μεταπτώσεως καταφαίνεται ἐν τῷ κατωτέρω σχ. 3.

$I_0, E_0, \gamma_0$: μέσος ἰσημερινός, ἐκλειπτικὴ καὶ ἐαρινὸν σημεῖον κατὰ τὴν ἐποχὴν $t_0$.

I, E, γ: κατὰ τὴν ἐποχὴν t.

M, N: ἀναβιβάζοντες σύνδεσμοι τῶν δύο ἰσημερινῶν καὶ ἐκλειπτικῶν ($t-t_0$=θετικόν).

Ἐὰν $t-t_0$=ἓν ἔτος:

$y=\gamma_0\gamma_1$=σεληνοηλιακὴ μετάπτωσις.

$\lambda=\gamma_1\gamma$=πλανητικὴ μετάπτωσις.

$p=\gamma N-\gamma_0 N=y$ συν. $\varepsilon_1$=γενικὴ μετάπτωσις κατ' ἐκλειπτικὸν μῆκος.

$m=\gamma M-\gamma_0 M$=γενικὴ μετάπτωσις κατ' ὀρθὴν ἀναφοράν.

$n=\gamma_0 M\gamma$=μετάπτωσις κατ' ἀπόκλισιν.

Αἱ τιμαὶ τῶν ἄνω σταθερῶν κατὰ τὸν Newcomb εἶναι αἱ ἀκόλουθοι (T=ἰουλιανοὶ αἰῶνες ἀπὸ τοῦ 1900.0· βλ. Nautical Almanac 1931).

$$y=50''.3708+0''.0050\ T$$
$$\lambda=0''.1248-0''.0118\ T$$
$$p=50''.2564+0''.0222\ T$$
$$m=3\delta.07234+0\delta.00186\ T$$
$$n=20''0468-0''.0085\ T$$

Λόξωσις $\varepsilon=23^0 27'\ 08''.26-46''.845\ T-0''.059\ T^2+$
$+0''.00181\ T^3$.

Ὡς ἐμφαίνεται ἐκ τῶν ἀνωτέρω τιμῶν, ἡ τιμὴ τῆς ἐτησίας μεταπτώσεως μεταβάλλεται βραδέως, ἡ δὲ μεταβολὴ αὕτη ἐν διαστήματι ἑνὸς αἰῶνος καλεῖται αἰωνία μεταβολὴ τῆς μεταπτώσεως (secular variation).

Αἱ μεταβολαὶ τῶν ὀρθῶν ἀναφορῶν (α) καὶ ἀποκλίσεων (δ) τῶν ἀστέρων συνεπείᾳ τῆς μεταπτώσεως μεταξὺ τῶν ἐποχῶν t καὶ $t_0$ ἐκφράζονται ὑπὸ τῶν τύπων:

$$\Delta\alpha=(m+n \text{ εφ. δ. ημ. α})\ (t-t_0)$$
$$\Delta\delta=n \text{ συν α. } (t-t_0)$$

Ἡ διόρθωσις τῶν ὀρθῶν ἀναφορῶν ἐκ τῆς μεταπτώσεως, ἔκ τινος ἐποχῆς $t_0$ εἰς ἄλλην t, μεταγενεστέραν, εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον θετικὴ (προσθετέα). Ἔχει τὴν μεγαλυτέραν τιμὴν της περὶ τοὺς Β. καὶ Ν. πόλους τοῦ οὐρανοῦ καὶ τὴν ἐλα-

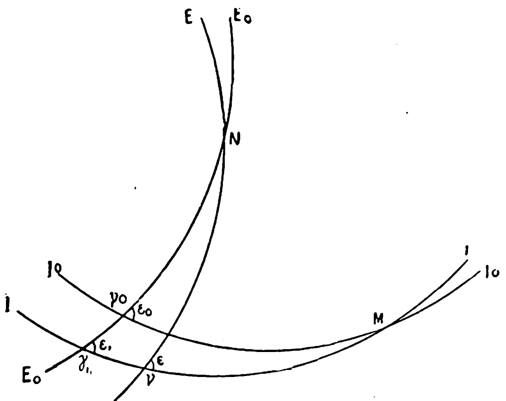


Σχ. 3.

χίστην περὶ τοὺς πόλους τῆς ἐκλειπτικῆς. Εἰς τὸ τμῆμα τοῦ οὐρανοῦ τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ τῶν πόλων τοῦ ἰσημερινοῦ καὶ τῆς ἐκλειπτικῆς, πέραν τῆς ἀποκλίσεως $\pm 67^0$, ἡ διόρθωσις εἶναι ἀρνητικὴ (ἀφαιρετέα).

Ἡ μετάπτωσις κατ' ἀπόκλισιν ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς ὀρθῆς ἀναφορᾶς καὶ ὡς πρὸς τὸ μέγεθος καὶ ὡς πρὸς τὸ σημεῖον. Ἡ διόρθωσις αὕτη, δι' ἀστέρας ἔχοντας ὀρθὴν ἀναφορὰν 6ω καὶ 18ω, εἶναι μηδέν. Δι' ἀστέρας ὀρθῆς ἀναφορᾶς 18ω—24ω καὶ 0ω—6ω εἶναι θετική. Δι' ἀστέρας ὀρθῆς ἀναφορᾶς 6ω—18ω εἶναι τοὐναντίον ἀρνητική.

β') *Κλόνισις.* Ἡ περιοδικὴ λίκνισις τοῦ πόλου τοῦ ἰσημερινοῦ (κλόνισις) συνίσταται εἰς 1) κλόνισιν τῆς λοξώσεως (Δε) καὶ 2) κλόνισιν τοῦ ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου κατ' ἐκλειπτικὸν μῆκος (Δλ). Αἱ τιμαὶ τῶν ποσοτήτων αὐτῶν εἶναι:

$$\begin{aligned}\Delta\varepsilon = &+9''.214 \text{ συν } \Omega\\ &-0''.090 \text{ συν } 2\Omega\\ &+0''.546 \text{ συν } 2L\\ &+0''.021 \text{ συν } (3L+78^0.7)\\ &-0''.009 \text{ συν } (L-78^0.7)\end{aligned}$$

$$\begin{aligned}\Delta\lambda = &-(17''.234+0''.017\ T) \text{ ημ } \Omega\\ &+0''.209 \text{ ημ } 2\Omega\\ &-1''.257 \text{ ημ } 2L\\ &-0''.049 \text{ ημ } (3L+78^0.7)\\ &+0''.110 \text{ ημ } (L+75^0.3)\end{aligned}$$

Ω=τὸ μῆκος τοῦ ἀναβιβάζοντος συνδέσμου τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς, μετρούμενον ἀπὸ τοῦ μέσου ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου.

L=τὸ μέσον μῆκος τοῦ Ἡλίου.

T=ἰουλιανοὶ αἰῶνες ἀπὸ τοῦ 1900.0

Ἡ ποσότης Δλ καλεῖται, ὡς εἴδομεν ἀνωτέρω, ἐξίσωσις τοῦ ἰσημερινοῦ σημείου.

Τύποι διὰ τὴν ἀναγωγὴν τῶν θέσεων τῶν ἀστέρων. Οἱ διάφοροι κατάλογοι τῶν ἀστέρων παρέχουν τὴν μέσην ὀρθὴν ἀναφορὰν καὶ ἀπόκλισιν διὰ τὴν ἀρχὴν ἑνὸς ὡρισμένου ἔτους, ὅπως λ. χ. οἱ κατάλογοι τῆς «Bonner Durchmusterung» διὰ τὸ 1855.0, οἱ τῆς «Astronomische Gesellschaft«, «Cape Photographic Durchmusterung» καὶ «Cordoba Durchmusterung» διὰ τὸ 1875.0. Διορθοῦντες τὰς μέσας ταύτας θέσεις κατὰ τὴν μετάπτωσιν καὶ τὴν κλόνισιν συμφώνως πρὸς τοὺς ἀνωτέρω πολυπλόκους τύπους, καθὼς ἐπίσης κατὰ τὴν ἐτησίαν ἀποπλάνησιν καὶ τὴν ἰδίαν κίνησιν, δυνάμεθα νὰ εὕρωμεν τὴν φαινομένην θέσιν δι' οἱανδήποτε στιγμήν. Ἡ μέθοδος ὅμως τῆς ἀπ' εὐθείας ἐφαρμογῆς τῶν ἀνωτέρω τύπων εἶναι πολὺ μακρὰ καὶ ἐπίπονος, ὑστεροῦσα ἀπὸ πρακτικῆς ἀπόψεως.

Ὁ Bessel, συνδυάζων καταλλήλως τοὺς ὅρους τῶν τύπων τῶν διαφόρων διορθώσεων, ἐπέτυχε νὰ ἁπλοποιήσῃ μεγάλως τὸ ζήτημα, καταλήξας εἰς τοὺς κάτωθι δύο τύπους, οἵτινες τυγχάνουν γενικῆς χρήσεως ἐν τῇ ἀστρονομίᾳ θέσεως.

1ος τύπος: α καὶ δ, μέση ὀρθὴ ἀναφορὰ καὶ ἀπόκλισις κατὰ τὴν ἀρχὴν τοῦ ἔτους. α' καὶ δ' φαινομένη ὀρθὴ ἀναφορὰ καὶ ἀπόκλισις ἐν δεδομένῃ στιγμῇ.

$$\alpha'=\alpha+\tau\mu+Aa+Bb+Cc+Dd+\frac{1}{15}E$$
$$\delta'=\delta+\tau\mu'+Aa'+Bb'+Cc'+Dd'$$

τμ, τμ'=ἰδία κίνησις (proper motion) κατὰ τὸν χρόνον τ.

Aa, Aa'=ὅροι τῆς μεταπτώσεως.

$Bb+\frac{1}{15}E$, Bb'=ὅροι τῆς κλονίσεως.

$\left.\begin{matrix}Cc+Dd\\ Cc'+Dd'\end{matrix}\right\}$=ὅροι τῆς ἐτησίας ἀποπλανήσεως κατὰ τὸν χρόνον τ.

Αἱ ποσότητες A, B, C, D, E, οὖσαι συναρτήσεις τοῦ χρόνου, καλοῦνται «ἀστρικοὶ ἀριθμοὶ τοῦ Bessel» (Bessel's Star-numbers), αἱ δὲ τιμαὶ αὐτῶν δίδονται εἰς τὰς διαφόρους ἀστρονομικὰς ἐφημερίδας.

Αἱ ποσότητες a, b, c, d καὶ a', b', c', d' καλοῦνται «ἀστρικαὶ σταθεραὶ τοῦ Bessel» (Bessel's Star-Constants) καὶ ὁρίζονται ἐκ τῶν ἐξισώσεων:

| | |
|---|---|
| $a=\frac{1}{15}m+\frac{1}{15}n$ ημα. εφδ | $a'=n.$ συνα |
| $b=\frac{1}{15}$ συνα. εφδ | $b'=-$ ημα |
| $c=\frac{1}{15}$ συνα. τεμδ | $e'=$ εφε. συνδ—ημα. ημδ |
| $d=\frac{1}{15}$ ημα. τεμδ | $d'=$ συνα. ημδ. |

Ὁ ἀνωτέρω τύπος ἀναγωγῆς συνιστᾶται εἰς περίπτωσιν, καθ' ἣν αἱ ἀστρικαὶ σταθεραὶ παρέχονται ὑπὸ τῶν ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων μεθ' ἱκανῆς ἀκριβείας ἢ ὅταν πρόκειται περὶ τοῦ ὑπολογισμοῦ τῶν φαινομένων θέσεων τοῦ αὐτοῦ ἀστέρος εἰς διαφόρους στιγμάς. Ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει προτιμᾶται ὁ ἑπόμενος τύπος τοῦ Bessel:

2ος τύπος:

$$\alpha'=\alpha+\tau\mu+f+\frac{1}{15}g.\text{ημ}(G+\alpha)\text{εφδ}+\frac{1}{15}h.\text{ημ}(H+\alpha)\text{τεμδ}$$
$$\delta'=\delta+\tau\mu'+g \text{ συν}(G+\alpha)+h.\text{συν}(H+\alpha).\text{ημδ}+i.\text{συνδ}.$$

ἔνθα:

| | |
|---|---|
| $f=\frac{1}{15}mA+\frac{1}{15}E$ | h. ημ H=C |
| g. ημ G=B | h. συνH=D |
| g.συν G=nA | i=C εφε |

Οἱ ὅροι οἱ περιέχοντες τοὺς παράγοντας f, g, G, ἀνήκουν εἰς τὴν μετάπτωσιν καὶ τὴν κλόνισιν, οἱ δὲ περιέχοντες τοὺς h, H καὶ i εἰς τὴν ἐτησίαν ἀποπλάνησιν. Οἱ παράγοντες οὗτοι εἶναι γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα «ἀνεξάρτητοι ἀστρικοὶ ἀριθμοί» (Independant Star-numbers) καὶ παρέχονται ὑπὸ τῶν ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Andoyer*, «Cours d' Astronomie». — *Ball*, «Spherical Astronomy». — *Bauschinger*, «Die Bahnbestimmung der Himmelskœrper».—*Campbell*, «Practical Astronomy».—*Chambers*, «Astronomy». — *Chauvenet*, «Spherical and Practical Astronomy».—*Doolittle*, «Practical Astronomy». —*Duncan*, «Astronomy».—*Moulton*, «Celestial Mechanics». —*Τοῦ αὐτοῦ*, «Introduction to Astronomy».—*Russel Dugan, Stewart*, «Astronomy».—*Stroobant*, «Astronomie Pratique».—*Todd*, «A New Astronomy».— *Webster*, «The Dynamics» of Particles and of Rigid, Elastic and Flouid Bodies»,—*Young*, «General Astronomy».

Ι. Σ. ΠΑΡΑΣΚΕΥΟΠΟΥΛΟΣ

**μεταπύργιον** (τό), ἢ καὶ ***μεσοπύργιον*** (courtine). Ἐκαλεῖτο οὕτω τὸ μεταξὺ δύο προμαχώνων ἢ πύργων ἐκτεινόμενον εὐθύγραμμον τμῆμα τοῦ περιβόλου τῶν παλαιοτέρων ὀχυρῶν. Εἰς τὴν προμαχωνικὴν χάραξιν, μὴ οὖσαν πλέον ἐν χρήσει, *μεταπύργιον* ἐκαλοῦντο τὰ εὐθύγραμμα τμήματα τοῦ περιβόλου, τὰ συνδέοντα τοὺς ἑκατέρωθεν προμαχῶνας. Τὰ μεταπύργια, παρέχοντα πρὸ αὐτῶν μετωπικὰ πυρά, ἀπετέλουν τὰς εἰσεχούσας γωνίας τῆς χαράξεως, ἐνῷ τὰς ἐξεχούσας ἀπετέλουν οἱ ἑκατέρωθεν τῶν μεταπυργίων προμαχῶνες.

*Μεταπύργιον.*

Ἔμπροσθεν τῶν μεταπυργίων ἐπεζητεῖτο πύκνωσις τῶν πυρῶν τῆς ἀμύνης καὶ διὰ τοῦτο πρὸ αὐτῶν κατεσκευάζοντο συνήθως ἄλλα συμπληρωματικὰ ἔργα, ἰδιαιτέρως δὲ μῆναι (demi-lunes). Τὸ μῆκος τοῦ μεταπυργίου δὲν ἔπρεπε νὰ ἦτο μικρότερον ἑνὸς ὁρίου, πέραν τοῦ ὁποίου θὰ ἐσχηματίζετο ἄβλητος ζώνη ἐν τῇ τάφρῳ, οὔτε πάλιν μεγαλύτερον τοῦ βεληνεκοῦς τῶν ὅπλων τῆς ἀντιστοίχου ἐποχῆς.

Ζ. Ν.

**μεταπυριτικὸν** ***ὀξὺ*** *['Ανόρ. Χημ.]*· βλ. *πυριτικὸν* ὀξύ.

**μεταπυροσταφυλικὰ** ***ἅλατα*** *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *πυροσταφυλικὸν* ὀξύ.

**μεταπώλησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ *μεταπωλεῖν*, ἡ ἐκ νέου πώλησις, ἡ ἐκ δευτέρας χειρὸς πώλησις.

**μεταπωλητὴς** (ὁ)· ὁ μεταπωλῶν, ὁ ἀγοράζων καὶ πωλῶν τὰ ἀγοραζόμενα ἐπὶ κέρδει.

**μεταπωλῶ** (*—έω*)· πωλῶ τὸ ἀγορασθέν, ἀγοράζω καὶ πωλῶ τὰ ἀγορασθέντα ἐπὶ κέρδει.

**Μεταρὶς** (Metaris Aestuarium) *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς Ν.Α. Βρεττανίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου. Εἶναι ὁ σημερινὸς κόλπος Wash, εἰς τὸν ὁποῖον ἐκβάλλουσιν οἱ ποταμοὶ Witham, Nen, ὁ μικρὸς καὶ μέγας Ouse καὶ ἄλλοι. Εἰς ἐξ αὐτῶν ἐκαλεῖτο κατὰ τὴν ἀρχαιότητα *Μέταρ*.

Α. Θ. Σ.

**μεταρρυθμίζω,** *ἀόρ. μετερρύθμισα—μετερρυθμίσθην, παθ. μετχ. μετερρυθμισμένος*· μεταβάλλω τὸν ρυθμόν, τὴν τάξιν, ἐν γένει, μεταβάλλω, μετασχηματίζω, μεταποιῶ, τροποποιῶ.

**μεταρρύθμισις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταρρυθμίζειν, μετασχηματισμός,

Digitized by Google

μεταβολή, τροποποίησις: «θρησκευτικὴ —, πολιτικὴ —, ἐκπαιδευτικὴ μεταρρύθμισις».

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἐκλήθη *μεταρρύθμισις* (Reformation) ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἡ κατὰ τοῦ παπισμοῦ καὶ τῆς μεσαιωνικῆς Ἐκκλησίας τῆς Δύσεως διευθυνομένη κίνησις τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἥτις ἐπήνεγκε σπουδαίαν μεταβολὴν εἰς τὰ ἐκκλησιαστικὰ κυρίως τῆς Κεντρικῆς καὶ Βορείου Εὐρώπης (βλ. λ. *διαμαρτύρησις*).

— **«Μεταρρυθμίσεις»**. Πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τὴν 7ην Δεκεμβρίου 1879 καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τοῦ 1881. — π.

— **«Μεταρρύθμισις»**. Τίτλος ἑλληνικῶν ἐφημερίδων: —1) Πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Πάτραις, ἱδρυθεῖσα τὴν 13ην Σεπτεμβρίου 1883. —2) Πολιτικὴ καὶ εἰδησεογραφικὴ ἐφημερὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἱδρυθεῖσα κατὰ Ἰούνιον τοῦ 1876. —3) Ἡμερησία ἐφημερὶς ἐν Ἀλεξανδρείᾳ τῆς Αἰγύπτου, ἱδρυθεῖσα τῷ 1886 καὶ ἐκδιδομένη ὑπὸ Ν. Ἰωάννου μέχρι τοῦ 1895. —4) Ἡμερησία πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Καΐρῳ, ἱδρυθεῖσα τῷ 1887 καὶ ἐκδιδομένη ὑπὸ Γ. Κ. Μακράκη μέχρι τοῦ 1900. —5) Ἑβδομαδιαία πολιτικὴ ἐφημερὶς ἐν Ναυπλίῳ, ἱδρυθεῖσα εἰς σχῆμα 4ον τῷ 1897. —6) Καθημερινὴ ριζοσπαστικὴ ἐφημερίς, ἱδρυθεῖσα τῷ 1904 ὑπὸ Δ. Φραγκούδη. Ἐξεδόθη μέχρι τοῦ 1905 καὶ εἶτα εἰς δευτέραν περίοδον ἀπὸ τοῦ 1921 μέχρι τοῦ 1923. Ἤσκησε ζωηρὰν ἀντιπολίτευσιν. — π.

— **«Μεταρρύθμισις *τοῦ Λαυρείου*»**. Ἑβδομαδιαία πολιτικὴ ἐφημερὶς ἀνεξαρτήτων ἀρχῶν, ἱδρυθεῖσα τῷ 1916 ἐν Λαυρείῳ ὑπὸ Ἀντ. Φίλκαρι. — π.

**μεταρρυθμιστὴς** (ὁ)· ὁ μεταρρυθμίζων, ὁ μετασχηματίζων, ὁ μεταβάλλων τι: «θρησκευτικὸς —, ἐκπαιδευτικὸς μεταρρυθμιστής».

—**μεταρρυθμισταὶ** (οἱ). *Μεταρρυθμισταὶ* (reformatores) καλοῦνται οἱ ἐπιδιώξαντες τὴν διόρθωσιν τῶν κακῶς ἐχόντων ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ διὰ τῆς μεταρρυθμίσεως αὐτῆς (reformatio), ἔπειτα δὲ καὶ οἱ ἀνήκοντες εἰς τὴν καλβινικὴν Ἐκκλησίαν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς λουθηρανούς. Τὸ ὄνομα religion prétendue reformée πρὸς χαρακτηρισμὸν τῶν καλβινιστῶν ἀνεφάνη τὸ πρῶτον ἐν Γαλλίᾳ (βλ. λ. *διαμαρτύρησις*). Κ. Ι. Δ.

—**μεταρρυθμισταὶ** (οἱ). Ἐκαλοῦντο οὕτως οἱ κατ' ἀρχάς, ἕνεκα τῶν ἐξασκουμένων διὰ τοῦ μαιτλανδείου Συντάγματος τοῦ 1817 αὐθαιρεσιῶν, ἀντιπολιτευόμενοι ἐν Ἑπτανήσῳ τὴν ἀγγλικὴν προστασίαν. Δι' ἀναφορᾶς σχεδιασθείσης ἐν Ζακύνθῳ καὶ ὑπογραφείσης τῷ 1821 καὶ διὰ διαφόρων ὑπομνημάτων πρὸς τὸν βασιλέα καὶ τὸ κοινοβούλιον τῆς Ἀγγλίας ἐζητοῦντο συνταγματικαὶ μεταρρυθμίσεις καὶ διοικητικαὶ βελτιώσεις, ἀλλ' ἡ προστασία, καταπολεμήσασα τὴν ἰδέαν τῆς μεταρρυθμίσεως, ἠναγκάσθη ἐν τέλει νὰ μεταβάλῃ, τῷ 1848, πολιτικὴν καὶ νὰ παραχωρήσῃ ἐλευθέρας ἐκλογὰς καὶ ἐλευθεροτυπίαν. Οἱ μεταρρυθμισταὶ κατὰ τὴν ι' βουλὴν ἐξηκολούθησαν πολεμούμενοι μεταξύ των μέχρι τῆς 3 Σεπτεμβρίου 1852, ὅτε καὶ μετωνομάσθησαν *φιλελεύθεροι*, ὄργανα δὲ αὐτῶν δημοσιογραφικὰ εἶχον τὴν «Πατρίδα» ἐν Κερκύρᾳ, τὴν «Ἕνωσιν» ἐν Κεφαλληνίᾳ καὶ τὸ «Μέλλον» ἐν Ζακύνθῳ. Λ. Χ. Ζ.

**μεταρρυθμιστικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μεταρρύθμισιν, ὁ ἐπιφέρων μεταρρύθμισιν: «μεταρρυθμιστικαὶ τάσεις, — προσπάθειαι». — Ἐπίρρ. *μεταρρυθμιστικῶς*.

**μεταρρυθμιστός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μεταρρυθμισθῇ.

**μεταρσιολεσχία** (ἡ). Ὅρος παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι, ταυτόσημος πρὸς τὸ *μετεωρολογία* καὶ *μετεωρολεσχία*, ἡ ἀσχολία περὶ τὴν μελέτην τῶν μεταρσίων. Θ. Θ. Φ.

**«Μεταρσιολογικὰ»** (τά). Ἔργον τοῦ Θεοφράστου, πραγματευόμενον περὶ μεταρσίων. Θ. Θ. Φ

**μετάρσιος,** *—α, —ον*· σηκωμένος ὑψηλά, αὐτὸς ποῦ στέκει 'ς τὸν ἀέρα, μετέωρος.

—*[Ἀρχ.]* Ὅρος ἐν χρήσει παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι, σημαίνων ὅ,τι καὶ τὸ *μετέωρος*. Ὁ Αἰσχύλος χρησιμοποιεῖ ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἔννοιαν τὸν ὅρον *μετάρσιος* διὰ τὰ ἀντικείμενα τὰ ἐγγύτερον τῆς γῆς εὑρισκόμενα. Ὁ Ἡρόδοτος χρησιμοποιεῖ ἀμφοτέρας τὰς λέξεις ἐκ παραλλήλου, ἐπίσης δὲ ὁ Σοφοκλῆς καὶ ὁ Εὐριπίδης. Ὡς πρὸς τὸν Ἀριστοτέλη, δὲν γνωρίζομεν μετὰ βεβαιότητος ἐὰν ἔκαμνε σαφῆ διάκρισιν μεταξὺ τῶν ὅρων *μετάρσιος* καὶ *μετέωρος*. Ὡρισμένην διαφορὰν μεταξὺ τῶν ὅρων μετέωρα καὶ μετάρσια ποιεῖται ὁ Ποσειδώνιος, ἀποδίδων εἰς ἐκεῖνα μὲν τὴν σημασίαν τῶν ἀστρικῶν ἢ τῶν πραγμάτων τοῦ αἰθέρος, εἰς ταῦτα δὲ τὴν σημασίαν τῶν ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων. Πρὸς τὸν ὁρισμὸν τοῦτον τοῦ Ποσειδωνίου συμφωνεῖ καὶ ὁ Σενέκας, ὅστις ἠκολούθησε τὰ ἴχνη τοῦ Ποσειδωνίου πρὸς διάκρισιν τῶν φυσικῶν φαινομένων. Θ. Θ. Φ.

**μεταρσιῶ** *(—όω)*· σηκώνω ὑψηλά, εἰς τὸν ἀέρα, μετεωρίζω· || μεταφρ. «μεταρσιοῦται τὸ πνεῦμα, — ὁ νοῦς, — ἡ ψυχή».

**μεταρσίωσις,** *—εως* (ἡ)· τὸ μεταρσιοῦσθαι, ἡ ἐξύψωσις: «ἡ μεταρσίωσις τοῦ νοῦ, — τῆς ψυχῆς, — τῆς σκέψεως».

**μεταρωτῶ** *(—άω)*, ἀντὶ *ματαρωτῶ*· δημοτ., ἐρωτῶ ἐκ νέου, ἄλλως *ξαναρωτῶ*.

**μετασακχαρίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μετασακχαρινικὸν ὀξύ*.

**μετασακχαρινικὸν** *ὀξὺ* *[Ὀργ. Χημ.]*. Πολυυδροξυλιωμένον μονοκαρβονικὸν ὀξὺ τοῦ τύπου $CH_2(OH).CH(OH).CH(OH).CH_2.CH(OH).COOH$ λαμβανόμενον ἐκ τοῦ γαλακτοσακχάρου δι' ἐπιδράσεως ὑδροξειδίου τοῦ ἀσβεστίου. Διὰ βρασμοῦ τοῦ ὑδατικοῦ διαλύματος αὐτοῦ λαμβάνεται ἡ ἀντίστοιχος λακτόνη, *μετασακχαρίνη*, ἥτις κρυσταλλοῦται καλῶς καὶ τήκεται εἰς 141—142°. Σ. Γ.

**μετασάλευμα** (τό)· μετακίνησις, ἀπομάκρυνσις.

**μετασαλεύω**· μετακινῶ βιαίως, ἀπομακρύνω.

**μετασκευάζω,** *ἀόρ. μετεσκεύασα-μετεσκευάσθην, παθ. μετχ. μετεσκευασμένος*· μεταποιῶ, μεταρρυθμίζω, μετατρέπω, μεταβάλλω.

**μετασκευὴ** (ἡ)· μεταποίησις, μεταρρύθμισις· καθόλου, μεταβολή.

**μεταστάθμευσις,** *—εως* (ἡ)· ἀλλαγὴ σταθμεύσεως, στάθμευσις ἐν ἄλλῳ τόπῳ.

**μετασταθμεύω**· σταθμεύω εἰς ἄλλον τόπον, ἀλλάσσω στάθμευσιν, κατάλυμα.

**Μεταστάσιος** (Metastasio καὶ ἀρχικῶς: Pietro Bonaventura Trapassi). Ἰταλὸς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Ρώμῃ ἐκ πατρὸς ὅστις εἶχεν ὑπηρετήσει εἰς τὸν παπικὸν στρατὸν καὶ ὁ ὁποῖος κατήγετο ἐξ Ἀσσίζης. Μυηθεὶς ἐνωρὶς εἰς τὰς κλασσικὰς σπουδὰς ὑπὸ τοῦ νομοδιδασκάλου Γραβίνη, ὅστις εἶχε θαυμάσει τὸ τάλαντον τοῦ ποιητικοῦ αὐτοσχεδιασμοῦ, τὸν ὁποῖον παρουσίαζεν ἑνδεκαετὴς ἀκόμη ὁ Μεταστάσιος, καὶ υἱοθετηθεὶς παρ' αὐτοῦ βραδύτερον, εὑρέθη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ θετοῦ πατρός του κληρονόμος μεγάλης περιουσίας. Δεκατετραετὴς συνέθεσε μίαν τραγῳδίαν (Giustino) καὶ τῷ 1717 ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην ποιητικήν του συλλογήν, περιέχουσαν ἐκτὸς τῆς τραγῳδίας εἰδύλλια ἐπικῆς καὶ μυθολογικῆς ἐμπνεύσεως.

*Πέτρος Μεταστάσιος.*

Περατώσας τὰς νομικάς του σπουδὰς ὑπηρέτησεν ὡς βοηθὸς δικηγόρου ἐν Νεαπόλει. Ἐξ ἀφορμῆς ἑνὸς πριγκιπικοῦ γάμου ἔγραψε κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην τὸν «Ἐνδυμίωνα» (σερενάταν) καὶ τῷ 1722 τοὺς «Κήπους τῶν Ἑσπερίδων» (καντάταν) παραγγελθεῖσαν εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ ἀντιβασιλέως καὶ τὴν ὁποίαν παρουσίασεν ἀνωνύμως εἰς τὸ κοινόν. Ἀλλ' ἡ διάσημος ἀοιδὸς Μαριάννα Βουλγαρέλλι —ἡ κοινῶς ἀποκαλουμένη Ρομανίνα— ἡ ὁποία ὑπεδύετο τὴν Ἀφροδίτην εἰς τοὺς «Κήπους τῶν Ἑσπερίδων» ἐφρόντισε νὰ τὸν ἀνακαλύψῃ καὶ συνεδέθη μετ' αὐτοῦ. Ἐκ τῆς ἀφορμῆς δὲ ταύτης συνεδέθη μὲ τοὺς καλλιτέχνας καὶ μουσικοὺς τῆς ἐποχῆς, ἐξεπαιδεύθη μουσικῶς, ἔκαμε τὴν δραματικήν του προπόνησιν καὶ ἔγραψε τὸ πρῶτόν του μελόδραμα «Ἡ ἐγκαταλειφθεῖσα Διδώ». Ὡς παρατηρεῖ ἡ κριτική, ὁ τόνος τοῦ μελοδράματος τούτου δὲν εἶναι ὁ τῆς τραγῳδίας, ἀλλὰ μᾶλλον ὁ τόνος τῆς αἰσθηματικῆς κωμῳδίας. Σήμερον μειδιῶμεν, «ἀλλὰ τὸ κοινὸν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης εὕρισκεν ἐν αὐτῷ συναισθήματα τόσον ἀληθῆ, τόσον φυσικά, τόσον εἰλικρινοῦς καὶ τόσον θερμῆς ἐκφράσεως, σκηνικοῦ ἐνστίκτου καὶ ἁρμονίας. Ἦτο μία ἀποκάλυψις». Συνέθεσεν ἔκτοτε ἓξ μελοδράματα, ἡ δὲ φήμη του ἔφθασε μέχρι Βιέννης, ὅπου βραδύτερον ὁ Μεταστάσιος ἔγινεν ἐπίσημος ποιητὴς Καρόλου τοῦ ΣΤ'. Ἀπὸ τοῦ 1730 μέχρι τοῦ 1740 ὁ Μεταστάσιος συνέθεσεν ἕνδεκα μελοδράματα, μεταξὺ ἄλλων τὸν «Δημοφῶντα», τὸν «Ἀχιλλέα εἰς Σκῦρον», τὸν «Θεμιστοκλέα» καὶ τὸν «Ἀττίλαν Ρηγοῦλον», ὅστις ἐδιδάχθη μόλις τῷ 1750, διότι ὁ αὐτοκράτωρ ἀπέθνῃσκε, καθ' ἣν στιγμὴν ἡτοιμάζετο τῷ 1740 ἡ ἀναβίβασις τοῦ ἔργου ἐπὶ τῆς σκηνῆς.

Ὁ τίτλος τοῦ Ἰταλοῦ Σοφοκλέους, ὁ ὁποῖος τοῦ ἐδόθη, εἶναι ὑπερβολικὸς — καὶ ἴσως ἐντελῶς ἀδικαιολόγητος, μολονότι ὑπό τινα ἔποψιν δύναται νὰ θεωρηθῇ πρόδρομος τοῦ Ἀλφιέρη. Ἐξέχει ὅμως ὁ Μεταστάσιος διὰ τὴν κομψότητα καὶ τὴν φυσικότητα, κάποιαν εὐγένειαν καὶ τρυφερότητα τοῦ μελῳδικοῦ στίχου του, αἱ ὁποῖαι τὸν κατέστησαν δημοφιλῆ. Πολλοὶ στίχοι του εἶναι εἰς τὴν μνήμην ὅλων τῶν ὁπωσδήποτε μορφωμένων Ἰταλῶν.

«Τέχνη συνθηματική, γράφει ἱστορικός τις τῆς ἰταλικῆς λογοτεχνίας, ἀλλὰ θελκτική. Γλῶσσα πτωχή, ἀλλὰ ὀρθοεπής, εὔκολος καὶ ἐκφραστική. Αἱ ἀδυναμίαι του συνάπτονται πρὸς τὰς ἀδυναμίας τῆς ἐποχῆς του. Εἶναι ὁπωσδήποτε ὁ μέγας καὶ περισσότερον ἀντιπροσωπευτικὸς τύπος μιᾶς περιόδου». Θὰ προσθέτομεν: καὶ εἷς τῶν παραγωγικωτέρων της ποιητῶν. Ἔγραψεν 63 λυρικὰς τραγῳδίας καὶ μελοδράματα (ἐννοοῦμεν λιμπρέττα), 12 ὀρατόρια, 48 καντάτας ἢ λυρικὰς σκηνάς, ἐλεγεῖα, εἰδύλλια, ᾀσμάτια, σονέττα. Ὑπῆρξεν ὁ κυριώτερος προμηθευτὴς κειμένων πρὸς μελοποίησιν διὰ τοὺς Ἰταλοὺς συνθέτας καὶ τὸν Γλούκ. Ἔγραψεν ἐπίσης παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ ἑλληνικοῦ θεάτρου καὶ ἀφῆκεν ἐκτενῆ ἀλληλογραφίαν. Ἐκδόσεις τοῦ Μεταστασίου ὑπάρχουν πλεῖσται. Μεταξὺ τῶν παλαιῶν προτιμῶνται αἱ τῆς Παδούης (1810) καὶ τοῦ Μιλάνου (1820). Ὀλίγους στίχους του μετέφρασεν ὁ Σολωμός, γυμναζόμενος εἰς τὴν ἑλληνικὴν στιχουργίαν. Καὶ ὁ Βηλαρᾶς φαίνεται ἐντρυφήσας εἰς τὴν ποίησιν τοῦ Μεταστασίου. Α. ΚΑΜΠΑΝΗΣ

**μετάστασις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μεθίστημι*, μετάβασις εἰς ἄλλην θέσιν, μετατόπισις: «ἡ μετάστασις τοῦ Δεῖνος εἰς τὸ ἀντίπαλον κόμμα»· || ἰατρ. «μετάστασις φλεγμονῆς, — ὄγκου, — ἀποστήματος» μεταφορὰ καὶ ἐμφάνισις φλεγμονῆς κλπ. ἐκ τῆς ἀρχικῆς των ἑστίας εἰς ἄλλο μέρος τοῦ σώματος· || «μετάστασις πολιτείας» μεταβολὴ πολιτεύματος, ἐγκατάστασις ἄλλου πολιτεύματος.

— *[Θεατρ.]* Ἡ κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ δράματος προσωρινὴ ἐκ τῆς ὀρχήστρας ἔξοδος τοῦ χοροῦ. «Καὶ ἡ μὲν εἴσοδος τοῦ χοροῦ πάροδος καλεῖται, ἡ δὲ κατὰ χρείαν ἔξοδος ὡς πάλιν εἰσιόντων μετάστασις» (*Πολυδ*. IV. 108). Ν. Ι. Λ.

—*[Μικροβ.]* *Μετάστασις* καλεῖται ἡ διὰ τοῦ λεμφικοῦ ἢ κυκλοφορικοῦ συστήματος μεταφορὰ μικροβίων ἀπὸ τοπικῆς τινος μολύνσεως εἰς μέρη τοῦ ὀργανισμοῦ μακρὰν ἀπέχοντα ταύτης. Τὰ μεταφερθέντα μικρόβια ἐγκαθιστάμενα καὶ πολλαπλασιαζόμενα προκαλοῦσιν ἐκεῖσε δευτεροπαθεῖς ἑστίας. Μεταστάσεις μικροβίων παρατηροῦνται ἰδίᾳ εἰς τὰς ἐκ πυογόνων μικροοργανισμῶν μολύνσεις, εἰς τὴν σύφιλιν, τὴν γονοκοκκικὴν οὐρηθρίτιδα, τὴν φυματίασιν, τὴν λέπραν, τὴν πανώλη, τὴν μᾶλιν, τὸν τῦφον κτλ. Ἐνίοτε τὰ μικρόβια μεταφερόμενα διὰ τοῦ κυκλοφορικοῦ συστήματος εἶναι δυνατὸν νὰ ἐγκατασταθῶσι καὶ ἐπὶ τῶν βαλβίδων τῆς καρδίας, ἀπὸ τούτων δὲ ἀποσπώμενα κατὰ μάζας νὰ εἰσέλθωσιν εἰς τὴν ἀρτηριακὴν κυκλοφορίαν καὶ νὰ παραγάγωσι μικροβιακὴν *ἐμβολὴν* (βλ. λ.).

Ὡς μετάστασις δύναται νὰ θεωρηθῇ καὶ ἡ διὰ τῆς εἰσπνοῆς εἰσχώρησις καὶ εἰς τὰς ἀεροφόρους ὁδοὺς καὶ τοὺς πνεύμονας μετεγκατάστασις μικροβίων, ὡς καὶ ἡ ἐν σαπροφυτικῇ καταστάσει εἰς τὴν ῥῖνα καὶ τὸ στόμα διακράτησις τοιούτων, ἀνακτώντων τὴν παθογόνον δύναμίν των μετὰ τὴν εἰς τὰ ἔντερα ἢ τοὺς πνεύμονας ἐγκατάστασιν αὐτῶν. Ἐπίσης μετάστασις καλεῖται καὶ ἡ μεταφορὰ ἀπό τινος μέρους τοῦ ὀργανισμοῦ εἰς ἄλλο διαφόρων ἁλάτων καὶ ἰδίᾳ τῆς ἀσβέστου (ἀσβεστοῦχος μετάστασις κατὰ Wirchow), ὡς καὶ ἡ μεταφορὰ διὰ τῶν λεμφικῶν ἢ κυκλοφορικῶν ὁδῶν κυττάρων διαφόρων ὄγκων (μετάστασις τῶν ὄγκων). Ν. Α. Μ.

—*[Παθολ.]* Κατὰ τὰς μεταστάσεις, τὰ διὰ τῆς λεμφικῆς ὁδοῦ ἀπαγόμενα σωμάτια μεταβαίνουσιν εἰς τοὺς τοπικοὺς λεμφαδένας, ὅπου καὶ ἐναποτίθενται. Ἐπὶ μεγάλης πληθώρας τοιούτων, ἰδίως προκειμένου περὶ ζώντων στοιχείων, παρατηροῦμεν διάβασιν αὐτῶν διὰ περισσοτέρων ὁμάδων λεμφαδένων. Διὰ τῆς μεσολαβήσεως τῶν μεγάλων λεμφαγγείων (π. χ. τοῦ θωρακικοῦ πόρου), τὰ ἀπαγόμενα σωμάτια καταλήγουσιν εἰς τὴν αἱματικὴν ὁδόν.

Τὰ μεταφερόμενα τεμαχίδια δύνανται νὰ εἶναι φυτικοὶ μικροοργανισμοὶ (κυρίως βακτηρίδια), ἢ καὶ ζωϊκὰ παράσιτα (τριχῆνες, ἔμβρυα τοῦ στρογγυλοειδοῦς τῶν ἐντέρων, ἔμβρυα τοῦ νηματοειδοῦς σκώληκος, κυστίκερκοι, ἑλογενῆ παράσιτα, τρυπανοσωμάτια, ἐχινόκοκκοι κτλ.). Οὕτως ἀνευρίσκομεν τὰς μεταστατικὰς ἑστίας πολλῶν ζωϊκῶν παρασίτων τοῦ ἐντερικοῦ σωλῆνος εἰς τοὺς μῦς, τὸν ἐγκέφαλον, τὰ νεῦρα, τὸν μυελὸν τῶν ὀστῶν. Μεγίστης σπουδαιότητος τυγχάνει ἡ μετάστασις κακοήθων νεοπλασμάτων, καθ' ἣν τὰ κυτταρικὰ στοιχεῖα αὐτῶν ποικιλοτρόπως ἐλευθερούμενα καὶ εἰσδυόμενα εἰς τὸ φλεβικὸν ἢ τὸ λεμφικὸν σύστημα, μεταφέρονται εἰς νέους τόπους, ἔνθα ἐξελίσσονται εἰς δευτεροπαθῆ νεοπλάσματα (μεταστατικοὺς κόμβους) ὅμοια πρὸς τὰ ἀρχικά. Συνήθως διὰ μὲν τῆς ὁδοῦ τῶν αἱμοφόρων ἀγγείων μεθίστανται τὰ σαρκώματα, διὰ δὲ τῶν λεμφοφόρων τὰ καρκινώματα. Λίαν σπανίως μεθίστανται καλοήθη ὥριμα νεοπλάσματα π. χ. χονδρώματα, ἀγγειώματα, ἁπλαῖ βρογχοκῆλαι.

Τέλος καὶ ἄβια στερεὰ τμημάτια (κόνις ἄνθρα-





Digitized by Google

κος, χρωστικὴ ἑλονοσίας) δυνατὸν νὰ μεθιστῶνται καθὼς καὶ εἰς διαλελυμένην κατάστασιν ἐν τῷ αἵματι κυκλοφορούμεναι οὐσίαι, αἵτινες κατόπιν ἐναποτίθενται ἐν ἀδιαλύτῳ καταστάσει εἰς διάφορα ὄργανα καὶ ἱστοὺς (π. χ. ἅλατα τοῦ ἀσβεστίου καὶ τοῦ ἀργύρου, χρωστικαὶ τῆς χολῆς, ἐρυθρὸν τοῦ τρυπανίου). Θ. Σ.

— *[Ρητορ.] Μετάστασις* καλεῖται τὸ σχῆμα, ὅταν ἀφ' ἑαυτῶν μεθιστῶμεν τὴν αἰτίαν ἐφ' ἕτερον ἔξω τοῦ πράγματος ὄντα, οἷον: «τοῦ γὰρ Φωκικοῦ συστάντος πολέμου, οὐ δι' ἐμέ· οὐ γὰρ ἔγωγε τότε ἐπολιτευόμην»· ἢ ἐπὶ τοὺς ἀκούοντας, οἷον: «ἐγὼ γὰρ τοῦ μὲν εἰπεῖν κύριος ἤμην, ὑμεῖς δὲ τοῦ ψηφίσασθαι τὰ ῥηθέντα»· ἢ τὸν ἀντίδικον καθιστῶμεν ὑπαίτιον δι' ὅσα αὐτὸς ἐγκαλεῖ ἡμᾶς, οἷον: «εἶτ' ὦ τί εἰπὼν σέ τις ὀρθῶς προσείποι; ἔστιν ὅπου σὺ παρὼν τηλικαύτην πρᾶξιν καὶ συμμαχίαν, ἡλίκην διεξῄεις, ὁρῶν ἀφαιρούμενόν με τῆς πόλεως ἠγανάκτησας;» (*Ἀλεξάνδρου* «Περὶ σχημάτων» κζ'). Ι. Φ. Δ.

**μεταστατικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετάστασιν, ὁ ἐκ μεταστάσεως προερχόμενος: «ὄγκος μεταστατικός».

— **μεταστατικὸν** ***ἀπόστημα.*** Τὸ ἀπόστημα, ὅπερ εἶναι κοιλότης πλήρης πύου σχηματισθεῖσα ἐκ τῆς καταστροφῆς καὶ τήξεως ἱστῶν συνεπείᾳ φλεγμονῆς τινος, καλεῖται *θερμὸν* μέν, ὅταν σχηματίζεται μᾶλλον ἢ ἧττον ταχέως, συνοδεύεται ὑπὸ ὑπεραιμίας καὶ ἀνυψώσεως τῆς θερμοκρασίας καὶ ἔχει ὡς αἴτιον εἴτε πυογόνους μικροργανισμούς, εἴτε χημικάς τινας οὐσίας (τερεβινθέλαιον, ἀδιάλυτα ἅλατα ὑδραργύρου, κινίνη κ.τ.τ.), *ψυχρὸν* δέ, ὅταν σχηματίζεται βραδέως, δὲν συνοδεύεται ὑπὸ ὁρατῆς τοὐλάχιστον ὑπεραιμίας καὶ προέρχεται εἴτε ἐξ ἀβληχροῦ ἐρεθισμοῦ ξένου τινὸς σώματος παραμένοντος ἀπὸ μακροῦ χρόνου εἴς τι μέρος τοῦ ὀργανισμοῦ, εἴτε ἐκ τήξεως τῆς τυροειδοῦς μάζης τῶν φυματίων εἰς τὴν φυματίωσιν.

Ἐὰν τὸ πύον τῶν ἀποστημάτων ὁδηγούμενον ὑπὸ τῆς βαρύτητος μετακινηθῇ εἰς μέρη μᾶλλον ἢ ἧττον ἀπομεμακρυσμένα μὲν τῆς ἀρχικῆς ἑστίας, συνδεόμενα ὅμως μετ' αὐτῆς δι' ἀμέσου ἀνατομικῆς συγκοινωνίας καὶ ἐγκατασταθῇ ἐκεῖσε, θὰ σχηματίσῃ ἐπὶ τῶν θερμῶν μὲν τὰ *ἀθροιστικὰ* λεγόμενα ἀποστήματα, ἐπὶ τῶν ψυχρῶν δὲ τὰ *καθεστικὰ* ἢ *μεταστατικά*. Ἐὰν ὅμως τὸ πύον ἀναφανῇ εἰς μέρη μὴ συγκοινωνοῦντα ἀνατομικῶς μετὰ τῆς ἀρχικῆς ἕδρας, θὰ σχηματίσῃ ἀποστήματα, τὰ ὁποῖα ἰδίᾳ καλοῦνται *μεταστατικά*. Τὰ ἀποστήματα ταῦτα προέρχονται οὐχὶ ἐκ μετακινήσεως τοῦ πύου, ἀλλ' ἐκ τῆς ἐγκαταστάσεως καὶ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν πυογόνων μικροβίων τῶν μεταφερθέντων ἐκ τῆς ἀρχικῆς ἑστίας διὰ τῆς λεμφικῆς ἢ κυκλοφορικῆς ὁδοῦ. Ν. Α. Μ.

**μεταστιβνίτης** (ὁ) (Metastibnit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν θειοῦχον ἀντιμόνιον $Sb_2S_3$. Ἀποτελεῖ τὴν ἄμορφον παραλλαγὴν τοῦ ἀντιμονίτου καὶ ἔχει χρῶμα ἐρυθρωπόν. Γ. Β.

**μεταστοιχείωσις,** *—εως* (ἡ)· μεταβολὴ εἰς ἕτερον στοιχεῖον, παραγωγὴ στοιχείου ἐξ ἄλλου.

— *[Χημ.]* Καλεῖται *μεταστοιχείωσις* ἡ μεταβολὴ ἑνὸς στοιχείου εἰς ἄλλο. Τὸ τοιοῦτον μετὰ τὰς ἐπὶ αἰῶνας ἀκάρπους προσπαθείας τῶν ἀλχημιστῶν, ὅπως μεταβάλουν τὰ ἀγενῆ μέταλλα εἰς εὐγενῆ (transmutatio metallorum) καὶ τὰς γνώσεις, ἃς ἀπεκόμισεν ἡ χημεία ἐκ τῶν ἀπειραρίθμων μεταγενεστέρων δοκιμασιῶν τῆς ὕλης ὑπὸ τῶν νεωτέρων χημικῶν, ἐθεωρεῖτο μέχρι τέλους τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἀδύνατον, καὶ τὸ ἀμετάβλητον τῆς στοιχειακῆς μορφῆς ἐθεωρεῖτο χημικὸν ἀξίωμα. Ἡ ἀνακάλυψις ὅμως καὶ περαιτέρω σπουδὴ τοῦ ῥαδίου καὶ λοιπῶν ἀκτινεργῶν στοιχείων κατέδειξεν ὅτι αὐτομάτως κατὰ τὴν ἐκδήλωσιν τῆς ἀκτινοβολίας τοῦ ῥαδίου, ἤτοι ἀδιαλείπτου ἐκπομπῆς ὑπὸ διαφόρους μορφὰς ἐξ αὐτῶν ποσῶν ἐνεργείας, συμβαίνουν μεταστοιχειώσεις, τουτέστι μεταβολαὶ συνεχεῖς τῶν ἀκτινεργῶν σωμάτων εἰς ἄλλα ἁπλούστερα καὶ τούτων πολλάκις εἰς ἄλλα μέχρι τῆς καταλήξεως εἰς ἄλλα μὴ ἀκτινεργὰ στοιχεῖα. Εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ ῥαδίου καὶ τῆς μελέτης τῶν περιεργοτάτων αὐτοῦ ἰδιοτήτων, ἀνεζητήθη ἡ πηγὴ τῆς κολοσσιαίας σχετικῶς πρὸς τὴν ἐλαχίστην τοῦ ῥαδίου ποσότητα ἐνεργείας, ἥτις ἐξ αὐτοῦ ἠκτινοβόλει καὶ οἱ Rutherford καὶ Soddy τῷ 1902 ἐξέφερον πρῶτοι τὴν τολμηρὰν ὑπόθεσιν ὅτι τὰ φαινόμενα ταῦτα ἐξεπήγαζον ἐκ τῆς μεταστοιχειώσεως τοῦ ῥαδίου, καθ' ἣν τὸ ἄτομον αὐτοῦ μειούμενον κατὰ τὴν μᾶζαν μετεβάλλετο εἰς ἁπλουστέρας μορφῆς ἄτομα, ἡ δὲ ἐλευθερουμένη ἐνέργεια ἐξεπήγαζεν ἐκ τῶν συστατικῶν τοῦ βαρέος ἀτόμου τοῦ ῥαδίου, ὧν ἐκφευγόντων οὕτως εἰπεῖν ἀπὸ τοῦ κελύφους τοῦ ἀτόμου, καθίσταντο ἐλεύθερα καὶ τὰ κολοσσιαῖα ἐκεῖνα ποσὰ ἐνεργείας, τὰ ὁποῖα συνεκράτουν τὰ ἁπλούστερα συστατικὰ ταῦτα ἐν τῷ ἀτόμῳ.

Ἡ γνώμη αὕτη ἐπεκυρώθη βραδύτερον διὰ ποιοτικῶν καὶ ποσοτικῶν πειραμάτων. Πληρέστατα ἤδη κατεδείχθη ἡ ἀκρίβεια τῆς ὑποθέσεως ταύτης τῷ 1903 διὰ τῶν πειραμάτων τῶν Ramsay καὶ Soddy. Οὗτοι ἐνέκλεισαν εἰς ὑάλινον σωλῆνα τὸ ἀέριον τὸ ἐκπεμπόμενον ἀπὸ τοῦ ῥαδίου, ἐβεβαιώθησαν δὲ ὅτι τούτου ἡ ποσότης διαρκῶς ἐλαττοῦται, ἄτομα δὲ νέου στοιχείου ἐμφανίζονται, τὰ τοῦ στοιχείου ἡλίου. Περαιτέρω ἀνεῦρον ὅτι τὸ ἐκπεμπόμενον ἀέριον εἶναι καὶ τοῦτο νέον στοιχεῖον ἀκτινεργόν, τὸ κληθὲν κατ' ἀρχὰς νιτόν, σήμερον δὲ ῥαδόνιον, ἔχον ἀτομικὸν βάρος κατὰ τέσσαρας μονάδας μικρότερον, δηλαδὴ ἴσον μὲ τὸ ἀτομικὸν βάρος τοῦ στοιχείου ἡλίου, ἑπομένως συμβαίνει ἡ μεταστοιχείωσις κατὰ τὴν χημικὴν ἐξίσωσιν: ῥάδιον=ῥαδόνιον+ἥλιον· ἀτομικὸν βάρος: 226=222+4. Τὸ ῥαδόνιον περαιτέρω μεταβάλλεται εἰς ἄλλο, κατὰ 4 μονάδας μικρότερον ἔχον ἀτομικὸν βάρος, ἀκτινεργὸν στοιχεῖον, τὸ ῥάδιον Α καὶ τὸ στοιχεῖον ἥλιον καὶ οὕτω καθ' ἑξῆς, μέχρις οὗ καταλήξῃ εἰς τὸ μὴ ἀκτινεργὸν στοιχεῖον μόλυβδον. Ἡ τοιαύτη μεταβολὴ εἶναι ἐντελῶς διάφορος τῶν χημικῶν ἀποσυνθέσεων, καθ' ὅσον αὗται ἐπηρεάζονται καὶ ἐντείνονται ὑπὸ τῆς θερμότητος καὶ ἄλλων φυσικοχημικῶν ὅρων, συμβαίνουν δὲ μεταξὺ μορίων, ἅτινα ἁπλουστεύονται. Τοὐναντίον ἡ μεταστοιχείωσις τῶν ἀκτινεργῶν στοιχείων ὑπὸ οὐδενὸς φυσικοχημικοῦ μέσου ἐπηρεάζεται, χωρεῖ δὲ ἐντὸς αὐτοῦ τοῦ ἀτόμου καὶ μετὰ ταχύτητος σταθερᾶς, ὡρισμένου δηλαδὴ ἀριθμοῦ ἀτόμων ἐκ τοῦ ὅλου ἀριθμοῦ, μεταβαλλομένου (μεταστοιχειουμένου) ἐν τῇ μονάδι τοῦ χρόνου. Ὁ προσδιορισμὸς ἀκριβῶς τῆς ταχύτητος τῆς μεταβολῆς ταύτης καὶ τὸ εἶδος τῶν ἐκπεμπομένων ἀκτινοβολιῶν χρησιμεύουν πρὸς χαρακτηρισμὸν ἑκάστου τῶν πλείστων ἔκτοτε ἀνακαλυφθέντων—περίπου 40—ἀκτινεργῶν στοιχείων. Ὡς πρὸς τὴν ταχύτητα τῆς μεταβολῆς ἐλήφθη ὡς χαρακτηριστικὸς ἑκάστου ἀκτινεργοῦ στοιχείου ὁ χρόνος, ὅστις ἀπαιτεῖται ἵνα τοῦτο μεταβληθῇ κατὰ τὸ ἥμισυ, ὅστις καὶ ἐκλήθη ἡμιπερίοδος τῆς ζωῆς τοῦ ἀτόμου. Οὕτω, ἡ ἡμιπερίοδος τῆς ζωῆς τοῦ ῥαδίου εἶναι 1.774 ἔτη, τοῦ ῥαδονίου 3,81 ἡμέραι, τοῦ οὐρανίου $4{,}67 \times 10^{19}$ ἔτη, τοῦ θορονίου 54 δευτερόλεπτα κτλ. Κατὰ τὴν μεταστοιχείωσιν ταύτην, ἀφ' ἑνὸς μὲν ἐκπέμπονται ἀκτῖνες α — ὁσάκις ἐκπέμπωνται τοιαῦται —, ἤτοι ἄτομα ἡλίου, φέροντα διπλοῦν φορτίον θετικῆς ἠλεκτρικῆς, μετὰ τὴν ἐξουδετέρωσιν τοῦ ὁποίου λαμβάνουν τὴν μορφὴν ἀτόμων τοῦ ἀερίου ἡλίου, καὶ ἀφ' ἑτέρου ἠλεκτρόνια, ἤτοι ἀκτῖνες β (ὁσάκις ἐκπέμπωνται), τουτέστι μονάδες ἀρνητικοῦ ἠλεκτρισμοῦ, ὡς καὶ δευτερογενεῖς ἀκτῖνες γ, ἀνάλογοι πρὸς τὰς ἀκτῖνας Röntgen.

Ἦτο ἑπόμενον κατόπιν τῶν νέων τούτων γεγονότων νὰ ἐπέλθῃ ἡ σκέψις εἰς τοὺς ἐπιστήμονας, ἂν δὲν θὰ ἦτο δυνατὸν ἡ φυσικῶς καὶ ἀθελήτως ἡμῶν χωροῦσα μεταστοιχείωσις αὕτη νὰ ἐπιτευχθῇ καὶ διὰ τῶν φυσικῶν καὶ χημικῶν δυνάμεων, τὰς ὁποίας διαθέτομεν. Ὁ ὑπολογισμὸς ὅμως μᾶς ἔδωσεν ἀριθμούς, οἵτινες καταδεικνύουν ὅτι τὰ ποσὰ τῆς ἐνεργείας, τὰ ὁποῖα συνέχουσι τὰ συστατικὰ τῶν ἀτόμων ἐν τῷ ἐσωτερικῷ αὐτῶν, εἶναι κολοσσιαῖα καὶ ὑπερβαίνουν τὴν ἐνέργειαν, τὴν ὁποίαν ἀπὸ τὰ χημικὰ καὶ φυσικὰ μέσα, ἅτινα διαθέτομεν σήμερον, θὰ ἠδυνάμεθα νὰ πορισθῶμεν. Τοῦτο ὅμως δὲν ἀπεθάρρυνε τὸν Rutherford, ὅστις μετεχειρίσθη αὐτὴν ταύτην τὴν ἐκπεμπομένην κατὰ τὴν ἀποσύνθεσιν τῶν ἀτόμων ἐνέργειαν, ἤτοι τὰς ἀκτῖνας α. Καὶ κατώρθωσεν ἤδη τὸν Ἰούνιον τοῦ 1919, προσβάλλων δι' αὐτῶν τὸ ἄζωτον, νὰ ἐκσπάσῃ ἐκ τούτου ἀριθμόν τινα ἀτόμων ὑδρογόνου. Τὰ πορίσματα ταῦτα ἐπεκυρώθησαν διὰ μεταγενεστέρων πειραμάτων ὑπό τε τοῦ ἰδίου καὶ ἄλλων.

Οἱ Marsden καὶ Lantsberry ἤδη τῷ 1915 ἐπέτυχον τὴν ἔκσπασιν ἀτόμων ὑδρογόνου δι' ἀναλόγου τρόπου ἐκ στερεῶν ὑδρογονούχων σωμάτων, παραφφίνης κτλ. Περαιτέρω ὁ Rutherford κατώρθωσε καὶ ἐξ ἄλλων στοιχείων νὰ ἐκσπάσῃ ἄτομα ὑδρογόνου, ὡς ἐκ τοῦ βορίου, τοῦ φθορίου, τοῦ νατρίου, τοῦ ἀργιλλίου, τοῦ φωσφόρου, πάντων μὲ ἀτομικὸν βάρος ἀριθμοῦ περιττοῦ, ἐνῷ δὲν ἐκσπῶνται τοιαῦτα ἐκ τοῦ ἄνθρακος, ὀξυγόνου, μαγνησίου, πυριτίου, θείου, χλωρίου, καλίου, ἀσβεστίου, χαλκοῦ, κασσιτέρου, χρυσοῦ καὶ τῶν ἀερίων μονοξειδίου καὶ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος, διοξειδίου τοῦ θείου κτλ.

Ἡ ἐπιτυχία αὕτη ἔφερεν ἐκ νέου ἐπὶ τάπητος τὸ δυνατὸν τῆς μεταβολῆς ἑνὸς μετάλλου εἰς ἕτερον καὶ ἐργασίαι πειραματικαὶ πολλαὶ ἐγένοντο, κυρίως πρὸς μεταστοιχείωσιν τοῦ ὑδραργύρου εἰς χρυσόν, καὶ τοῦτο διότι τὸ ἀτομικὸν βάρος τοῦ χρυσοῦ εἶναι περίπου κατὰ 4 μικρότερον τοῦ τοῦ ὑδραργύρου καὶ κατὰ τὰς περὶ ἐσωτερικῆς συστάσεως τῶν ἀτόμων ἐρεύνας ὁ πυρὴν τοῦ ἀτόμου τοῦ ὑδραργύρου περιέχει ἓν ἄτομον ἡλίου πλέον τοῦ τοῦ ἀτόμου τοῦ χρυσοῦ, οὕτως ὥστε, ἐὰν ἦτο δυνατὴ ἡ ἀπόσπασις ἑνὸς τοιούτου, θεωρητικῶς θὰ ἠδυνάμεθα ἀπὸ τὰ ἄτομα τοῦ ὑδραργύρου νὰ λάβωμεν ἄτομα χρυσοῦ.

Τῷ 1924 ὁ καθηγητὴς τοῦ ἐν Βερολίνῳ πολυτεχνείου Μίτε ἐξετάσας τὸ ἀπόθεμα τὸ ὁποῖον ἀπομένει εἰς λύχνους ἠλεκτρικοὺς δι' ὑδραργύρου, διὰ τῶν ὁποίων παράγονται αἱ ὑπεριώδεις ἀκτῖνες, μετὰ τὴν ἐπὶ πολὺ μακρὸν χρόνον λειτουργίαν αὐτῶν εὗρεν εἰς αὐτὸ ἴχνη χρυσοῦ. Ὁ ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ καθηγητὴς Sheldon ἐπανέλαβε τὸ αὐτὸ πείραμα, ἐπιμελῶς καθαρίσας χημικῶς τὸν ὑδράργυρον τοῦ λύχνου καὶ ἀφήσας αὐτὸν νὰ λειτουργήσῃ ἐπὶ 200 ὥρας, καὶ ἔλαβε θετικὰ ἐπίσης ἐξαγόμενα. Τῷ 1925 ὁ διαπρεπὴς Ἰάπων καθηγητὴς τῆς φυσικῆς Ναγκαόκα κατήρτισεν ἰδίαν συσκευήν, δι' ἧς ἠδυνήθη νὰ ἐφαρμόσῃ ἐξόχως ὑψηλῆς τάσεως ἠλεκτρικὸν ῥεῦμα, 200.000 βόλτ ἐπὶ ἑκάστου τετραγωνικοῦ ἑκατοστομέτρου ὑδραργύρου καὶ εὗρεν ἐπίσης ὅτι παρήχθησαν ἐξόχως ἐλάχιστα ἴχνη χρυσοῦ, εἰς τὸν ὁποῖον μετετράπη ὁ ὑδράργυρος. Τὰ πειράματα ἀμφοτέρων ἠθέλησε νὰ βεβαιώσῃ ὁ διάσημος χημικὸς Χάμπερ εἰς τὸ ἐν Ντάλεμ παρὰ τὸ Βερολῖνον ἄριστον ἰνστιτοῦτον. Ἀνέλυσε δὲ λεπτομερέστατα οὐ μόνον τὸν χρησιμοποιηθέντα καὶ κατόπιν ἐξαιρετικῶς ἀποκαθαρθέντα ὑδράργυρον καὶ λοιπὰς χημικὰς οὐσίας, ἃς ἐχρησιμοποίησεν, ἀλλὰ καὶ πᾶν ἄλλο σῶμα, σύρματα νικέλινα ἢ χάλκινα κτλ., ἅτινα ἀπετέλεσαν μέρος τῶν συσκευῶν, ἐκτελέσας τὰ πειράματά του ἐντὸς νεοχρωματισθέντος δωματίου κτλ. Ἐπανέλαβε τὰς ἀνωτέρω ἐκτεθείσας δύο μεθόδους, εἰργάσθη δὲ καὶ μὲ τρεῖς ἄλλας μεθόδους ἐντατικῆς προσβολῆς τοῦ ὑδραργύρου δι' ἐξόχως ὑψηλῆς τάσεως ἠλεκτρικῶν ἐκκενώσεων καὶ ἀπέληξε πάντοτε εἰς ἀρνητικὰ ἀποτελέσματα. Προσδιορίσας εἶτα τὸν ὑδράργυρον καὶ τὰ χημικὰ σώματα εἰς οἵαν καθαρότητα ἐλάμβανον αὐτὸν οἱ προηγούμενοι πειραματισταί, εὗρεν ὅτι οὗτος περιεῖχεν ἐλάχιστα ἴχνη χρυσοῦ εἰς ὅσον περίπου ποσὸν ἐλάμβανον αὐτὸν οἱ προηγούμενοι μετὰ τὸ πείραμα. Ἑπομένως τό γε νῦν ἡ ἀπόπειρα τῆς μεταστοιχειώσεως τοῦ ὑδραργύρου εἰς χρυσὸν πρέπει νὰ θεωρηθῇ ὡς ἀποτυχοῦσα. Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

**μεταστρατοπεδεύω**· μετακινῶ τὸ στρατόπεδον, στρατοπεδεύω εἰς ἄλλην θέσιν.

**μεταστρέφω,** *ἀόρ. μετέστρεψα—μετεστράφην*, παθ. μετχ. *μετεστραμμένος*· στρέφω πρὸς ἄλλην διεύθυνσιν, μεταβάλλω διεύθυνσιν: «τὸ φρόνημα τοῦ λαοῦ μετεστράφη»· || ναυτ. (κοιν. *ξαναπέρνω βόλτα*, γαλλ. révirer de bord, ἀγγλ. to put-about again), ἀστοχήσας εἰς ἐκτέλεσιν ἀναπρώρου ἀναστροφῆς, ἐπαναλαμβάνω τὸν χειρισμόν.

**μεταστροφεύς,** *—έως* (ὁ)· τὸ δι' οὗ γίνεται ἡ μεταστροφή, μεταγωγός.

**μεταστροφὴ** (ἡ)· στροφὴ πρὸς ἄλλην διεύθυνσιν, μεταβολή: «ἡ μεταστροφὴ τοῦ λαοῦ πρὸς τὸν κομμουνισμόν».

— *[Ναυτ.]* —1) Ἐπὶ ἱστιοδρομοῦντος πλοίου, ἡ ἐπανάληψις χειρισμοῦ πρὸς ἀναστροφὴν ἀνάπρωρα, κατόπιν προηγηθέντος ὁμοίου χειρισμοῦ, ἀλλ' ἀστοχήσαντος. —2) Ἐν στολοδρομίᾳ καὶ δὴ κατὰ γραμμὴν παραγωγῆς, ἀθρόα ἀλλαγὴ πλεύσεως κατὰ 180°, ὁπότε, εἰς τὰς τάξεις κατὰ γραμμὴν παραγωγῆς καὶ κατὰ γραμμὴν διοπτεύσεως, ὁ οὐραγὸς γίνεται πρωτόπλους καὶ ὁ πρωτόπλους οὐραγός. Σ. Ε. Λ.

**μεταστυρόλιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἄμορφος διαφανὴς μᾶζα, λαμβανομένη κατὰ τὴν ἐπὶ μακρὸν παραμονὴν τοῦ *στυρολίου* καὶ ἀποτελοῦσα προϊὸν πολυμερισμοῦ αὐτοῦ. Σ. Γ.

**μετασύγκρισις** (ἡ) (λατιν. Recorporatio) *[Ἱστ. Ἰατρ.]*. Μέθοδος, ἣν πρῶτος ὁ ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρὸς καὶ ὀπαδὸς τῆς μεθοδικῆς σχολῆς Θεσσαλὸς ἐφήρμοσεν ἐπὶ χρονίων νόσων, σκοποῦσα τὴν μεταλλαγὴν τῶν νοσηρῶς ἀλλοιωθέντων ἱστῶν τοῦ σώματος (τῆς *συγκρίσεως*, ὡς ἔλεγον) δι' ἐντόνου ἀντιδράσεως. Ὡς γνωστὸν ὁ Ἀσκληπιάδης ἐν μὲν τῇ συμμετρίᾳ τῶν πόρων τοῦ σώματος ἔθετε τὸ ὑγιαίνειν, ἐν δὲ τῇ ἀ(συμ)μετρίᾳ τούτων τὸ νοσεῖν, θεραπείαν ὑπολαμβάνων τὴν ἐπάνοδον τῶν πόρων εἰς τὴν ἀρχαίαν συμμετρίαν αὐτῶν. Κατὰ τὴν μετασύγκρισιν σπουδαιοτέρα φροντὶς τοῦ ἰατροῦ ἐπὶ χρονίων νόσων ἦτο ἀκριβῶς τὴν νοσηρὰν διασκευὴν τῶν πόρων (τῆς *πορoποιίας* κατ' Ἀσκληπιάδην) δι' ἰσχυρᾶς διασείσεως τῆς ὅλης ἐναλλαγῆς τῆς ὕλης νὰ μεταλλάξῃ, πρῶτον μὲν διὰ τονωτικῆς θεραπείας (circulus resumptivus) τῶν ἐκ τῆς χρονίας νόσου ἐξησθενημένων ἀτόμων διὰ χορηγήσεως βαθμηδὸν αὐξούσης τονωτικῆς τροφῆς, καταλλήλων ἀσκήσεων, μαλάξεων κτλ., εἶτα δὲ μετὰ τὴν τόνωσιν τοῦ ἀρρώστου διὰ τῆς κυρίως μετασυγκριτικῆς θεραπείας (cyclus metasyncriticus), διὰ μεταλλαγῆς δηλαδὴ τῆς διαίτης καὶ περιορισμοῦ τῶν τροφῶν, ἐπανειλημμένων ἐμέτων καὶ διαφόρων δριμέων φαρμάκων καὶ ἰσχυρῶν ἐρεθισμάτων, δυναμένων δι' ἐντόνου ἀντιδράσεως τὴν μετασύγκρισιν ταύτην τοῦ ὀργανισμοῦ νὰ ἐπιφέρωσι (*Γαλ.* Χ, 268. *Cael. Aurel.* Chron. I. 42). Τὰ ἰσχυρὰ ἐρεθίσματα ἐπετίθεντο ἐξωτερικῶς, τὰ δὲ δριμέα φάρμακα ἐχορηγοῦντο ἐσωτερικῶς, τῆς θεραπευτικῆς τούτων δυνάμεως ἐνισχυομένης διὰ καταλλήλων ἀσκήσεων, λουτρῶν κτλ. Πάντως διὰ τῆς ἐντόνου ταύτης ἀντιδράσεως ἐσκόπουν οἱ μεθοδικοὶ νὰ μεταλλάξωσι τοὺς κατὰ τὰς χρονίας νόσους ἀλλοιωθέντας ἱστοὺς καὶ ἐπαναφέρωσι τὰ ὄργανα εἰς τὴν προτέραν αὐτῶν ὑγιᾶ κατάστασιν,

Digitized by Google

ὡς καὶ νῦν ἐπιδιώκουσι δι' ἀναλόγων νεωτέρων τινῶν θεραπευτικῶν μεθόδων. ΑΡ. Π. Κ.

**μετασφαιρία** (ἡ) (Metasphaeria) [*Βοτ.*]. Γένος ἀσκομυκήτων τῆς οἰκογενείας τῶν *σφαιριιδῶν*, πλούσιον εἰς εἴδη, μὲ περιθήκια λεῖα, μεμβρανώδη, περιέχοντα ἀσκοὺς μὲ παραφύσεις, ἐν οἷς εὑρίσκονται ὑελώδη σπόρια πολυτετμημένα. Τὸ εἶδος μετασφαιρία diplodiella προκαλεῖ τὴν λευκὴν σῆψιν τῶν ῥαγῶν τῶν σταφυλῶν (rot blanc). Ὁ μύκης προσβάλλει εἴς τι σημεῖον τὸν βότρυν ἢ τὰς διακλαδώσεις του, συνήθως εἰς τὸ κατώτερον ἄκρον των καὶ προκαλεῖ τὴν ἀποξήρανσίν των κάτω τοῦ σημείου τῆς προσβολῆς. Αἱ ῥᾶγες λαμβάνουν χρῶμα καστανέρυθρον καὶ σήπονται, μετατρεπομένου τοῦ χρώματος εἰς ὠχρόν. Ἐπ' αὐτῶν ἐμφανίζονται κατόπιν πολυάριθμα λευκόφαια στίγματα. Ὁ μύκης ἀναπτύσσεται εἰς ὑγρὸν καὶ θερμὸν περιβάλλον. Ἐνδείκνυται προληπτικῶς ὁ ψεκασμὸς διὰ διαλύσεως 3 % ὑποθειώδους μαγνησίου. Ε. Τ. Ε.

**μετασχηματίζω**· μεταβάλλω τὸ σχῆμα, τὴν μορφήν, καθόλου, μεταβάλλω, μετατρέπω.

— **μετεσχηματισμένη** [*Παραστ. Γεωμ.*]. Καλεῖται οὕτω τὸ σχῆμα, τὸ ὁποῖον λαμβάνει καμπύλη κεχαραγμένη ἐπὶ ἀναπτυξίμου ἐπιφανείας, ὅταν ἡ τοιαύτη ἐπιφάνεια ἀποσχιζομένη κατά τινα τῶν γενετειρῶν της ἀναπτυχθῇ ἐπὶ ἐπιπέδου. Μετεσχηματισμέναι γνωστοῦ ἐκ τῶν προτέρων σχήματος εἶναι ἡ εὐθεία ἡ κάθετος ἐπὶ τῆς θέσεως τῶν γενετειρῶν ἐν τῷ ἀναπτύγματι κυλινδρικῆς ἐπιφανείας, καὶ καθ' ἣν μετασχηματίζεται ἡ ὀρθὴ τομὴ τῆς ἐπιφανείας, ἐπίσης δὲ τόξον περιφερείας καθ' ὃ μετασχηματίζεται ἡ κυκλικὴ βάσις κώνου ὀρθοῦ καὶ ὅπερ ἔχει ἀκτῖνα μὲν τὸ μῆκος Ρ τῆς γενετείρας τοῦ κώνου, ἄνοιγμα δέ, εἰς μοίρας, ἴσον πρὸς $360 . \frac{\varrho}{P}$, ἔνθα ϱ ἡ ἀκτὶς τῆς βάσεως. Αἱ μετεσχηματισμέναι ἐπιπέδων τομῶν κυλίνδρου κλειστοῦ εἶναι τῆς κατηγορίας τῶν ἡμιτονοειδῶν, παρουσιάζουσαι μέγιστον ἐλάχιστον καὶ σημεῖα καμπῆς, οἷα παρουσιάζουν καὶ ἔνιαι τῶν μετεσχηματισμένων τῶν κωνικῶν τομῶν. Ἔχει δὲ ἡ μετεσχηματισμένη τὰς ἀκολούθους ἰδιότητας: α) Τὸ μῆκός της εἶναι ἀπολύτως ἴσον πρὸς τὸ τῆς ἐν τῷ χώρῳ καμπύλης, ἧς τὸ μῆκος οἱουδήποτε τόξου μένει ἀμετάβλητον, τῆς καμπυλότητός του ὅμως οὔσης πάντοτε διαφόρου. β) Τὰ μήκη τῶν γενετειρῶν, ἀπὸ τῆς ἐν τῷ χώρῳ ὀρθῆς τομῆς μέχρι τῆς καμπύλης, διατηροῦνται τὰ αὐτὰ καὶ μετὰ τὴν ἀνάπτυξιν. γ) Ἡ γωνία, ἣν σχηματίζει ἡ ἐφαπτομένη τῇ ἐν τῷ χώρῳ καμπύλῃ μετὰ τῆς γενετείρας κατὰ τὸ σημεῖον τῆς ἐπαφῆς, διατηρεῖται ἀμετάβλητος καὶ μετὰ τὴν ἀνάπτυξιν. Ἡ αὐτὴ ἐφαπτομένη δὲν ἀπόλλυσι τὴν ἰδιότητά της ταύτην, ἐξακολουθοῦσα νὰ εἶναι ἐφαπτομένη καὶ εἰς τὴν μετεσχηματισμένην. Διὰ τῆς ἰδιότητος ταύτης καθίσταται προφανὲς ὅτι πᾶσα ἕλιξ ἐπὶ κυλινδρικῆς ἐπιφανείας χαραγμένη, ἔχει ὡς *μετεσχηματισμένην* εὐθεῖαν γραμμήν. Σ. Ε. Λ.

**μετασχηματισμὸς** (ὁ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετασχηματίζειν, μεταβολὴ τοῦ σχήματος, τῆς μορφῆς, μεταμόρφωσις, μετατροπή· || (ναυτ.) τὸ ἀποτέλεσμα τῆς *μετατάξεως* (βλ.λ.).

—[*Μαθημ.*] Καλεῖται *μετασχηματισμὸς* ἐν τῇ ἀλγέβρᾳ ἡ μετάβασις ἀπό τινος τύπου ἢ ἐξισώσεως εἰς ἕτερον διὰ γνωστῶν σχέσεων συνδεουσῶν τὰς παλαιὰς μεταβλητὰς μετὰ τῶν νέων. Ἐν τῇ ἐφαρμογῇ τῆς ἀλγέβρας εἰς τὴν γεωμετρίαν διὰ τῶν μετασχηματιμῶν τῶν τύπων κατορθοῦται καὶ ὁ μετασχηματισμὸς τῶν σχημάτων.

Οἱ μετασχηματισμοὶ διαδραματίζουσι σπουδαῖον μέρος εἰς τοὺς λογισμούς· πολλάκις δὲ δι' ἐπιτυχοῦς μετασχηματισμοῦ ἐπιλύονται δυσχερέστατα προβλήματα. Οἱ συνηθέστεροι τῶν μετασχηματισμῶν εἶναι οἱ λεγόμενοι *γραμμικοί*, ἐκεῖνοι δηλαδή, εἰς οὓς αἱ σχέσεις τῶν παλαιῶν μεταβλητῶν πρὸς τὰς νέας ἐκφράζονται δι' ἐξισώσεων πρώτου βαθμοῦ· π.χ. ἐὰν ἔχωμεν ἔν τινι τύπῳ δύο μεταβλητὰς x καὶ y, ὡς ἐν τῷ τύπῳ:

$$Ax^2 + 2Bxy + \Gamma y^2 \quad (1),$$

καὶ ἀντικαταστήσωμεν ἐν τούτῳ τὰς μεταβλητὰς x, y διὰ νέων x′, y′ διὰ τῶν σχέσεων

$$\begin{aligned} x &= \alpha x' + \beta y' \\ y &= \gamma x' + \delta y' \end{aligned} \quad (2)$$

ὁ μετασχηματισμὸς οὗτος λέγεται γραμμικός· διότι αἱ ἐξισώσεις τῆς ἀντικαταστάσεως εἶναι πρώτου βαθμοῦ. Ἡ *ὁρίζουσα* τοῦ συστήματος (2) λέγεται ὁρίζουσα τοῦ μετασχηματισμοῦ. Γραμμικοὶ εἶναι οἱ μετασχηματισμοὶ ἐν τῇ ἀναλυτικῇ γεωμετρίᾳ, δι' ὧν γίνεται ἡ ἀλλαγὴ τῶν συντεταγμένων τῶν γραμμῶν καὶ ἐπιφανειῶν. *Ἀναλλοίωτος* (Invariant) ἑνὸς γραμμικοῦ μετασχηματισμοῦ καλεῖται μία συνάρτησις τῶν συντελεστῶν τοῦ μετασχηματιζομένου τύπου, μορφῆς ἢ ἐξισώσεως, ἡ ὁποία δὲν ἀλλοιοῦται ἢ ἀλλοιοῦται ἀναλόγως διὰ τοῦ μετασχηματισμοῦ· π. χ. ἐὰν εἰς τὸν εἰρημένον τύπον

$$Ax^2 + 2Bxy + \Gamma y^2$$

κάμωμεν τὸν μετασχηματισμὸν (2), θὰ προκύψῃ ὁ μετεσχηματισμένος $A'x'^2 + 2B'x'y' + \Gamma y'^2$ ὅπου οἱ νέοι συντελεσταὶ A′, B′ καὶ Γ′ διάφοροι τῶν παλαιῶν· ἀλλὰ ἡ συνάρτησις αὐτῶν: $B'^2 - 4A\Gamma'$ εἶναι ἀνάλογος τῆς ὁμοίας συναρτήσεως τῶν παλαιῶν συντελεστῶν· δηλαδὴ εἶναι:

$$B'^2 - 4A'\Gamma' = M^2 (B^2 - 4A\Gamma)$$

ὅπου M εἶναι ἡ ὁρίζουσα τοῦ μετασχηματισμοῦ· Ἕνεκεν τῆς ἰδιότητος ταύτης ἡ συνάρτησις

$$B^2 - 4A\Gamma$$

τῶν συντελεστῶν τοῦ τύπου

$$Ax^2 + 2Bxy + \Gamma^2$$

λέγεται ἀναλλοίωτος.

Ἐὰν $M = 1$, δηλαδὴ ἐὰν ἡ ὁρίζουσα τοῦ μετασχηματισμοῦ εἶναι ἴση τῇ μονάδι, τότε ἡ νέα συνάρτησις τῶν συντελεστῶν εἶναι ἀκριβῶς ἡ ἰδία μὲ τὴν παλαιὰν καὶ τότε ἡ ἀναλλοίωτος λέγεται *ἀπόλυτος*. Παράδειγμα ἀπολύτου ἀναλλοιώτου ἔχομεν εἰς τὴν δευτεροβάθμιον ἐξίσωσιν:

$$x^2 + \beta x + \gamma.$$

Ἐὰν ἀντὶ τῆς x θέσωμεν $x = y + c$, θὰ προκύψῃ νέα δευτεροβάθμιος πρὸς y ἐξίσωσις

$$y^2 + \beta' y + \gamma'$$

ἔνθα οἱ νέοι συντελεσταὶ ἔχουν τὴν ἰδιότητα:

$$\beta'^2 - 4\alpha'\gamma' = \beta^2 - 4\alpha\gamma.$$

Ἡ συνάρτησις ἑπομένως $\beta - 4\alpha\gamma$ εἶναι ἀπόλυτος ἀναλλοίωτος τῆς δευτεροβαθμίου ἐξισώσεως ταύτης μὲ τὸν ῥηθέντα μετασχηματισμόν.

— [*Μαιευτ.*] Ὁ *μετασχηματισμὸς* ἀποτελεῖ χειρισμόν, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπιδιώκεται ἡ πρὸ τοῦ ἀνωτέρου στομίου τῆς πυέλου μεταγωγὴ τοῦ ἑτέρου τῶν δύο πόλων τοῦ ἐμβρύου. Ὁ μετασχηματισμὸς ἐκτελεῖται κατὰ τρεῖς διαφόρους μεθόδους, ἤτοι: 1) δι' ἐξωτερικῶν χειρισμῶν, καλούμενος *ἐξωτερικὸς* μετασχηματισμός, 2) δι' ἐσωτερικῶν χειρισμῶν, καλούμενος *ἐσωτερικός*, καὶ 3) δι' ἐξωτερικῶν καὶ ἐσωτερικῶν χειρισμῶν, καλούμενος *μεικτὸς* ἢ *ἀμφίχειρος* ἢ τοῦ *Broxton Hicks*.

*Ἐξωτερικὸς μετασχηματισμός*. Ἐκτελεῖται κατὰ κανόνα ἐπὶ τὴν κεφαλὴν καὶ σπανιώτατα ἐπὶ τὰ ἰσχία, ἐνδείκνυται δέ: α′) Ὁσάκις κατὰ τὸν τελευταῖον μῆνα τῆς κυήσεως τὸ ἔμβρυον ἔχει σχῆμα ἐγκάρσιον ἢ τείνει νὰ προβάλῃ διὰ τῶν ἰσχίων ἢ διὰ τοῦ μετώπου (μετασχηματισμὸς ἐπὶ τὴν κεφαλήν). β′) Ὁσάκις κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ τοκετοῦ καὶ πρὸ τῆς ῥήξεως τοῦ θυλακίου τὸ ἔμβρυον ἔχει σχῆμα ἐγκάρσιον (μετασχηματισμὸς ἐπὶ τὴν κεφαλήν). γ′) Ὁσάκις ἐπὶ στενώσεως τῆς πυέλου καὶ προκειμένου νὰ ἐκτελεσθῇ πρόωρος τοκετὸς προβάλλεται ἡ κεφαλὴ τοῦ ἐμβρύου (μετασχηματισμὸς ἐπὶ τὰ ἰσχία). Πρὸς ἐκτέλεσιν δὲ τοῦ ἐξωτερικοῦ μετασχηματισμοῦ ἀπαιτεῖται: α′) Τὸ θυλάκιον νὰ μὴ ἔχῃ διαρραγῇ, ἡ δὲ ποσότης τοῦ ἐναμνίου ὑγροῦ νὰ εἶναι μετρία. β′) Ἡ προβαλλομμένη μοῖρα τοῦ ἐμβρύου νὰ εἶναι εὐκίνητος ἄνωθεν τοῦ πυελικοῦ στομίου. γ′) Αἱ διαστάσεις τῆς πυέλου νὰ εἶναι κανονικαί. δ′) Αἱ διαστάσεις τῆς κεφαλῆς τοῦ ἐμβρύου νὰ εἶναι ἐπίσης κανονικαί. ε′) Αἱ συστολαὶ τῆς μήτρας νὰ εἶναι ἀσθενεῖς καὶ ἀραιαί. στ′) Τὰ κοιλιακὰ τοιχώματα τῆς γυναικὸς νὰ μὴ εἶναι πολὺ παχέα καὶ ἀνένδοτα. ζ′) Τὸ ἔμβρυον νὰ μὴ εἶναι οὔτε πολὺ μέγα οὔτε πολὺ μικρόν.

*Ἐσωτερικὸς μετασχηματισμός*. Ἐνδείκνυται: α′) Ἐπὶ σκοπῷ βελτιώσεως τοῦ σχήματος, τῆς προβολῆς καὶ τῆς θέσεως τοῦ ἐμβρύου, ἤτοι: 1) Ἐπὶ ἐγκαρσίου σχήματος, καθ' ὃ εἶναι γνωστὸν ὅτι ἄνευ τῆς μετατροπῆς αὐτοῦ εἰς κάθετον σχῆμα δὲν δύναται νὰ διέλθῃ τὸν πυελογεννητικὸν σωλῆνα ἢ εἰς ὅλως ἐξαιρετικὰς περιπτώσεις, καὶ τότε μετὰ μεγάλου κινδύνου τῆς μητρὸς καὶ θυσίας αὐτοῦ τοῦ ἐμβρύου. 2) Ἐπὶ μετωπικῆς ἢ προσωπικῆς προβολῆς μετὰ τοῦ πώγωνος πρὸς τὰ ὀπίσω ἐστραμμένου. β′) Ἐπὶ τῷ σκοπῷ ταχείας ἀποπερατώσεως τοῦ τοκετοῦ, ἤτοι: 1) Ἐπὶ ἐκλαμψίας. 2) Ἐπὶ αἱμορραγίας, ἀποτόκου προώρου ἀποκολλήσεως τοῦ πλακοῦντος. 3) Ἐπὶ προπτώσεως τῆς ὀμφαλίδος καὶ 4) Ἐπὶ μετρίας στενώσεως τῆς πυέλου. Πρὸς ἐκτέλεσιν τοῦ ἐσωτερικοῦ μετασχηματισμοῦ ἀπαιτεῖται: α′) Ὁ τράχηλος τῆς μήτρας νὰ εἶναι ἐξηλειμμένος, τὸ δὲ στόμιον αὐτῆς τελείως διεσταλμένον. β′) Τὸ κατώτερον τμῆμα τῆς μήτρας νὰ μὴ εἶναι λίαν τεταμένον, δηλαδὴ ὁ συστολικὸς δακτύλιος τοῦ Schroeder νὰ μὴ ὑπερβαίνῃ τοὺς τρεῖς περίπου δακτύλους ἄνωθεν τῆς ἡβικῆς συμφύσεως, διότι ἄλλως κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ μετασχηματισμοῦ θὰ ἐπέλθῃ ῥῆξις τῆς μήτρας. γ′) Τὸ προβαλλόμενον μέρος τοῦ ἐμβρύου νὰ εἶναι εὐκίνητον ἄνωθεν τῆς πυελικῆς εἰσόδου. δ′) Τὸ θυλάκιον νὰ μὴ εἶναι διερρηγμένον ἢ τοὐλάχιστον πρὸ μικροῦ, αἱ δὲ συστολαὶ τῆς μήτρας ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει νὰ εἶναι ἀσθενεῖς καὶ ἀραιαί. ε′) Ἡ πύελος νὰ μὴ εἶναι ὑπεράγαν ἐστενωμένη. στ′) Τὸ ἔμβρυον νὰ εἶναι οὐχὶ μικρότερον τῶν 28 ἑβδομάδων, διότι ἔμβρυον κάτω τῶν 28 ἑβδομάδων δύναται νὰ γεννηθῇ ἐν παντὶ σχήματι αὐτομάτως, ἑπομένως δὲν ἀπαιτεῖται μετασχηματισμός. Πρὸ τῆς ἐκτελέσεως δὲ τοῦ ἐσωτερικοῦ μετασχηματισμοῦ ἀπαιτεῖται: α′) Ἡ τίκτουσα νὰ τοποθετηθῇ ἐγκαρσίως τῆς κλίνης οὕτως, ὥστε τὰ ἰσχία αὐτῆς νὰ ἐξέχωσι τοῦ χείλους τῆς κλίνης, τὰ δὲ σκέλη νὰ εἶναι ἡμίκαμπτα καὶ διεστῶτα ἀπ' ἀλλήλων· β′) Τὰ ἐξωτερικὰ γεννητικὰ ὄργανα ν' ἀπολυμανθῶσι μετ' ἐκτάκτου ἐπιμελείας, ὁ δὲ κολεὸς νὰ διακλυσθῇ ἀφθόνως διὰ διαλύματος λυσόλης καὶ τέλος νὰ κενωθῇ ἡ οὐροδόχος κύστις. γ′) Ἡ τίκτουσα νὰ ὑποβληθῇ εἰς βαθεῖαν νάρκωσιν. Ὁ ἐσωτερικὸς μετασχηματισμὸς ἐκτελεῖται εἰς τρεῖς χρόνους:

1ος *χρόνος*. Εἰσαγωγὴ ἐντὸς τῆς μήτρας τῆς καταλλήλου χειρὸς—πόδες τοῦ ἐμβρύου δεξιᾷ τῆς τικτούσης—εἰσαγωγὴ δεξιᾶς χειρὸς καὶ ἀντιθέτως. Ἡ χεὶρ εἰσάγεται, ἀπαγομένων τῶν χειλέων τοῦ αἰδοίου διὰ τῆς ἑτέρας χειρός, κωνοειδῶς ἐντὸς τοῦ κολεοῦ, ἐκεῖθεν ἐντὸς τοῦ μητρικοῦ στομίου, χωρὶς νὰ ῥηχθῇ τὸ θυλάκιον, καὶ εἶτα μετὰ προσοχῆς δι' ἀνοικτῆς πλέον τῆς παλάμης ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος πρὸς συνάντησιν τῶν ποδῶν τοῦ ἐμβρύου, τῆς παλάμης τῆς χειρὸς φερομένης εἴτε κατὰ μῆκος τῆς προβαλλομένης μοίρας τοῦ ἐμβρύου, μέχρις οὗ οἱ δάκτυλοι συναντήσωσι τὰ ἰσχία αὐτοῦ, ὁπόθεν εὐχερῶς δύναται νὰ συλληφθῇ ὁ κατάλληλος ἄκρος πούς, εἴτε καὶ ἀπ' εὐθείας πρὸς ὃ μέρος κατευθύνονται οἱ πόδες τοῦ ἐμβρύου, ἐνῷ συγχρόνως διὰ τῆς ἑτέρας χειρός, τιθεμένης ἐπὶ τῆς μήτρας πρὸς ὃ μέρος κατευθύνονται οἱ πόδες τοῦ ἐμβρύου, πιέζονται οὗτοι κατὰ τὸ δυνατὸν πρὸς τὰ κάτω, ἵνα οὕτω διευκολυνθῇ ἡ ὑπὸ τῆς ἐσωτερικῆς χειρὸς συνάντησις καὶ σύλληψις τοῦ καταλλήλου ποδός.

2ος *Χρόνος*. *Σύλληψις τοῦ καταλλήλου ποδός*. Μετὰ τὴν εἰσαγωγὴν τῆς καταλλήλου χειρὸς ἐντὸς τῆς μήτρας μέχρι τῶν ποδῶν τοῦ ἐμβρύου, πρὸς εὐχερῆ καὶ ἀκίνδυνον ἐκτέλεσιν τῆς στροφῆς καὶ ἐξαγωγῆς τοῦ ἐμβρύου, ἀνάγκη νὰ συλλαμβάνηται καὶ καθελκύηται ὁ πούς, ὁ δυνάμενος εὐχερῶς καὶ ἄνευ πλήρους στροφῆς τοῦ ἐμβρύου νὰ καθελκυσθῇ πρὸς τὰ κάτω καὶ πρόσω ὑπὸ τὴν ἡβικὴν σύμφυσιν. Ἡ ἐκλογὴ δὲ τούτου ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς κατευθύνσεως τῆς ῥάχεως τοῦ ἐμβρύου, ἤτοι:

Ῥάχις πρὸς τὰ πρόσω ἐστραμμένη—σύλληψις ὀπισθίου ποδός.

Ῥάχις πρὸς τὰ ὀπίσω ἐστραμμένη—σύλληψις προσθίου ποδός.

3ος *χρόνος*. Μετὰ τὴν διὰ τῶν δακτύλων σύλληψιν τοῦ καταλλήλου ποδὸς ἕλκομεν αὐτὸν πρὸς τὰ κάτω καὶ ἔξω τοῦ αἰδοίου, ἐνῷ συγχρόνως διὰ τῆς ἄλλης χειρὸς ὠθοῦμεν ἔξωθεν διὰ τῶν κοιλιακῶν τοιχωμάτων τὴν κεφαλὴν τοῦ ἐμβρύου πρὸς τὰ ἄνω, ἵνα οὕτω τὸ ἔμβρυον στραφῇ, τῶν μὲν ἰσχίων αὐτοῦ προσαρμοζομένων ἐν τῇ πυελικῇ εἰσόδῳ, τῆς δὲ κεφαλῆς ἀνερχομένης εἰς τὸν πυθμένα τῆς μήτρας. Εὐθὺς δὲ ὡς τὸ γόνυ τοῦ καθελκυσθέντος ἔξω τῶν γεννητικῶν ὀργάνων ποδὸς ἀναφανῇ εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ κολεοῦ, ὁ μετασχηματισμὸς θεωρεῖται περατωθείς.

*Μεικτὸς ἢ ἀμφίχειρ μετασχηματισμός*. Οὗτος διαφέρει τοῦ ἐσωτερικοῦ ἐκ τοῦ ὅτι κατὰ τοῦτον ἡ κυρίως δρῶσα χεὶρ εἶναι ἡ ἐξωτερική, ἄνευ τῆς ὁποίας ἡ ἐκτέλεσις αὐτοῦ ἀποβαίνει ἀνέφικτος. Ὁ μεικτὸς μετασχηματισμὸς ἐνδείκνυται ἅμα τῷ τοκετῷ ἀρξαμένῳ ἢ πρὸ τῆς πλήρους διαστολῆς τοῦ μητρικοῦ στομίου: α′) ἐπὶ αἱμορραγίας ἀποτόκου προδρόμου πλακοῦντος, β′) ἐπὶ ἐγκαρσίου σχήματος μετὰ προώρου ῥήξεως τοῦ θυλακίου, γ′) ἐπὶ ἰνιακῆς προβολῆς μετὰ προπτώσεως τῆς ὀμφαλίδος καὶ δ′) ἐπὶ ἀμέσου κινδύνου τῆς μητρός. Τοῦ μεικτοῦ μετασχηματισμοῦ σπανίως σήμερον γίνεται χρῆσις, διότι καθ' ὅλας σχεδὸν τὰς περιπτώσεις, αἵτινες ἀπαιτοῦσι τὴν ἐκτέλεσιν αὐτοῦ, καταφεύγομεν εἰς τεχνητὴν διαστολὴν τοῦ τραχήλου καὶ εἶτα εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ ἐσωτερικοῦ μετασχηματισμοῦ. Πρὸς ἐκτέλεσιν τοῦ μεικτοῦ μετασχηματισμοῦ ἀπαιτεῖται: α′) τὸ μητρικὸν στόμιον νὰ ἐπιτρέπῃ τὴν ἐντὸς τῆς μήτρας εἰσαγωγὴν δύο τοὐλάχιστον δακτύλων, β′) τὸ ἔμβρυον νὰ εἶναι εὐκίνητον ἐντὸς τῆς μήτρας καὶ γ′) ἡ πύελος νὰ μὴ εἶναι ὑπεράγαν ἐστενωμένη. Πρὸς τοῦτο εἰσάγομεν ἐντὸς τοῦ κολεοῦ τὴν ἀντιστοιχοῦσαν χεῖρα πρὸς ὃ μέρος κατευθύνονται οἱ πόδες τοῦ ἐμβρύου, ἤτοι:

Πόδες δεξιὰ τῆς τικτούσης—εἰσαγωγὴ δεξιᾶς χειρός.
Πόδες ἀριστερὰ τῆς τικτούσης—εἰσαγωγὴ ἀριστερᾶς χειρός.

Εἶτα πάλιν φέρομεν ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος τοὺς δύο ἢ τρεῖς δακτύλους, ἀναλόγως τοῦ βαθμοῦ τῆς εὐρύτητος τοῦ μητρικοῦ στομίου, καὶ δι' αὐτῶν ὠθοῦμεν βαθμηδὸν τὴν προβαλλομένην μοῖραν τοῦ ἐμβρύου ἀντιθέτως τῆς θέσεως, ἐν ᾗ κεῖνται οἱ πόδες τοῦ ἐμβρύου, ἐνῷ συγχρόνως διὰ τῆς ἐξωτερικῆς χειρὸς ὠθοῦμεν τὰ ἰσχία πρὸς τὰ κάτω. Καθ' ὅσον δ' εἶτα ἡ κεφαλὴ ἀνυψοῦται, μεταφέρομεν τὴν ἐξωτερικὴν χεῖρα ἐκ τῶν ἰσχίων πρὸς τὴν ἀνυψουμένην κεφαλήν, ὠθοῦντες αὐτὴν ἔτι μᾶλλον πρὸς τὰ ἄνω. Ὅ τε ἐσωτερικὸς καὶ ὁ μεικτὸς μετασχηματισμὸς δὲν εἶναι πάντοτε εὐχερεῖς, ἀλλὰ παρουσιάζουσιν ἐνίοτε μεγάλας δυσχερείας, ἔστιν ὅτε δὲ ἡ ἐκτέλεσις αὐτῶν ἀποβαίνει καὶ ἀνέφικτος. Ἡ πρόγνωσις δὲν εἶναι πάντοτε εὐνοϊκὴ διά τε τὴν μητέρα καὶ τὸ ἔμβρυον. Καὶ διὰ μὲν τὴν μητέρα ὑφίσταται πάντοτε: α′) ὁ κίν-

Digitized by Google

δυνος τῆς μολύνσεως διὰ τῆς μεταφορᾶς παθογόνων μικροοργανισμῶν ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος ὑπὸ τῆς εἰσαγομένης χειρός, β') ὁ κίνδυνος τῶν ἐκτεταμένων τρώσεων καὶ ῥήξεων, ὅστις ἐξαρτᾶται πάντοτε ἐκ τῶν δυσχερειῶν, ἃς παρουσιάζει ἡ ἐκτέλεσις τοῦ μετασχηματισμοῦ, καὶ ἐκ τῆς ἐπιδεξιότητος ἢ μὴ τοῦ ἰατροῦ καὶ τῆς ὑπ' αὐτοῦ καλῆς ἢ κακῆς ἐκτιμήσεως τῶν ἐνδείξεων καὶ τῶν ὅρων τῆς ἐκτελέσεως τούτου. Ὅσον δ' ἀφορᾷ τὸ ἔμβρυον, ἡ πρόγνωσις τοῦ μετασχηματισμοῦ δὲν εἶναι εὔκολον νὰ ἐκτιμηθῇ, ἐν γένει δ' ὅμως αὕτη ἀποβαίνει βαρυτέρα ἐπὶ ἐκτελέσεως μετὰ τὸν μετασχηματισμὸν καὶ τοῦ ἐξελκυσμοῦ. Ὁ θάνατος τοῦ ἐμβρύου ἐπέρχεται ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ἐξ ἀσφυξίας. Πρὸς πρόληψιν τῶν ἐπιπλοκῶν τούτων, αἵτινες ἐπιβαρύνουσι τὴν πρόγνωσιν διὰ τὸ ἔμβρυον, ἐπιβάλλεται ἡ ἀποφυγὴ βιαίων καὶ πολλῶν ἐντὸς τῆς μήτρας μετακινήσεων τῆς χειρὸς καὶ ἡ παρακολούθησις μετὰ τὸν γενόμενον μετασχηματισμὸν τῆς καταστάσεως τῶν καρδιακῶν παλμῶν τοῦ ἐμβρύου, ἵνα ἐν ἀνάγκῃ ἐξαχθῇ τοῦτο διὰ τοῦ ἐξελκυσμοῦ (βλ. καὶ *Ν. Κ. Λούρου* «Μαιευτική», σελ. 800—817). Ν. Κ. Λ.

— *[Τακτ.] Μετασχηματισμὸς* καλεῖται ἡ μετάβασις ἀπὸ σχηματισμοῦ τινος εἰς ἕτερον μονάδος τινός, ἐν πυκνῇ πάντως τάξει διατελούσης. Μέχρι τῶν μέσων περίπου τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, οἱ μετασχηματισμοὶ εἶχον ὑψίστην σημασίαν, καθόσον ἐξετελοῦντο τοιοῦτοι ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης, καὶ πολλάκις ὑπ' αὐτὰ τὰ πυρὰ τοῦ ἐχθροῦ, ἵνα ληφθῇ ἡ κατάλληλος διάταξις πρὸς μάχην, συνεπῶς ἔπρεπε νὰ ἐκτελῶνται ταχέως καὶ κατὰ τρόπον, ὥστε νὰ μὴ ἐπέρχωνται ἐνδιάμεσοι σχηματισμοὶ ἀκατάλληλοι, δηλαδὴ δίδοντες λαβὴν εἰς μεγάλην τρωτότητα. Σήμερον οἱ μετασχηματισμοὶ οὐδεμίαν ἀπολύτως ἔχουσι μαχητικὴν σημασίαν, καθόσον οὐδέποτε ἐκτελοῦνται ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης. Ν. Θ. Κ.

**μετασχηματισταὶ** (οἱ) *[Ἠλεκτροτ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικοὶ* μετασχηματισταί.

**μετασχολικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μετὰ τὴν σχολικὴν ζωὴν χρόνον: «ὁ μετασχολικὸς βίος».

**μετασωμάτωσις,** *—εως* (ἡ) (Metasomatose) *[Ὀρυκτολ.]*. Καλεῖται ἡ ἀντικατάστασις τῆς στερεᾶς ὀρυκτολογικῆς ὕλης ἑνὸς οἱουδήποτε ὀρυκτοῦ δι' ἄλλης διαφόρου ὀρυκτολογικῆς συστάσεως. Ἡ ἀντικατάστασις αὕτη χωρεῖ βαθμιαίως δι' ἐναλλαγῆς μορίου πρὸς μόριον τῆς ἀρχικῆς ὀρυκτολογικῆς ὕλης ὑπὸ τῆς νέας, λαμβάνει δὲ χώραν ὅταν αὕτη ἔλθῃ εἰς ἐπαφὴν πρὸς τὴν ἀρχικὴν εἴτε ὑπὸ μορφὴν ὑδαροῦς διαλύσεως, εἴτε συνεπείᾳ πνευματολυτικῆς ἐπιδράσεως. Διὰ τῆς μετασωματώσεως ἀλλοιοῦται τελείως ὁ χημικὸς χαρακτὴρ τοῦ ἀρχικοῦ ὀρυκτοῦ. Ὁ ἀσβεστόλιθος π. χ. μεταπίπτει εἰς δολομίτην ἢ σιδηρίτην. πολλάκις δὲ καὶ εἰς πυριτικὰ ἅλατα, ὀξείδια μετάλλων καὶ θειούχους ἑνώσεις. Εἴς τινας περιπτώσεις τὸ νέον ὀρυκτὸν διατηρεῖ τὴν κρυσταλλογραφικὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἀρχικοῦ, ἐκ τοῦ ὁποίου προέκυψε διὰ μετασωματώσεως. Κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον σχηματίζονται αἱ *ψευδομορφώσεις*. Ἡ μετασωμάτωσις ἔχει μεγάλην σημασίαν εἰς τὴν γένεσιν ὡρισμένων μεταλλοφόρων κοιτασμάτων, τὰ ὁποῖα καλοῦνται κοιτάσματα ἐκ μεταπτώσεως ἢ ἀντικαταστάσεως. Γ. Β.

**μετασώτριον** (τό)· τὸ μεταξὺ τῶν σώτρων τροχοῦ ἁμάξης κενόν.

**μετάταξις,** *—εως* (ἡ)· ἡ μεταβολὴ τῆς τάξεως, ἡ ἐκ νέου κατάταξις, τακτοποίησις· || (ναυτ.) πᾶσα κίνησις στόλου κατὰ τοὺς κανόνας τῆς ναυτικῆς τακτικῆς, πρὸς ἀλλαγὴν τοῦ σχηματισμοῦ αὐτοῦ, λ. χ. ἐκ τῆς γραμμῆς παραγωγῆς εἰς γραμμὴν μετώπου κατὰ φυσικὴν τάξιν.

— *[Στρατ.] Μετάταξις* καλεῖται ἡ ἀπὸ ἑνὸς ὅπλου, ἢ ἀπὸ ἑνὸς σώματος εἰς ἕτερον μεταφορὰ ἀξιωματικοῦ· π. χ. ἐκ τοῦ ὅπλου τοῦ πεζικοῦ εἰς τὸ πυροβολικόν, ἢ εἰς τὸ σῶμα ἐπιμελητείας, κτλ. Ν. Θ. Κ.

**μεταταρσαλγία** (ἡ) (Métatarsalgie), ἢ ***νόσος τοῦ Μόρτον,*** ἢ ***ποὺς τοῦ Μόρτον.*** Οὕτω καθορίζεται πάθησις χαρακτηριζομένη ὑπὸ ἄλγους ἑδραζομένου εἰς τὴν προσθίαν χώραν τῶν μεταταρσίων ὀστῶν καὶ ἰδίως κατὰ τὴν μεταταρσιοφαλαγγιαίαν διάρθρωσιν τοῦ 4ου δακτύλου τῶν ποδῶν. Τὸ ἄλγος τοῦτο ἐμφανίζεται εἴτε ἀποτόμως κατ' ἀκολουθίαν τραυματισμοῦ, εἴτε βραδέως, ἕνεκα κοπώσεως, ἐκδηλούμενον ὑπὸ μορφὴν ἐντόνων παροξυσμῶν, οἵτινες ὑποδύονται σὺν τῷ χρόνῳ τὸν τύπον νευραλγιῶν ἢ μυϊκῶν συνολκῶν. Ἡ πάθησις παρατηρεῖται ἰδίως ἐπὶ τῶν γυναικῶν, αἵτινες φέρουσιν ὑψηλὰ τακούνια, κατόπιν παρατεταμένης πορείας ἢ πλήγματος, ἢ παραπατήματος, ἢ κατόπιν βλεννορροίας, ῥευματισμοῦ, ἀρθρίτιδος καὶ νευρασθενείας. Ἡ ἐπανειλημμένη κάμψις τῶν δακτύλων τοῦ ποδὸς καταπραΰνει τὰ ἄλγη τοῦ πάσχοντος, ὅστις ὀφείλει νὰ φέρῃ εὐρύχωρα ὑποδήματα μετὰ κυρτοῦ πέλματος. Ἐὰν δὲ τὰ ἄλγη ἐπιμένουσι παρατεινόμενα, συνιστᾶται ἡ χειρουργικὴ ἐπέμβασις πρὸς ἐκτομὴν τῶν κεφαλῶν τῶν μεταταρσίων ὀστῶν. Μ. Ν. Κ.

**μεταταρσικὸν** (τὸ) *[Ἀνθρωπολογ.]*. Ἀνθρωπομετρικὸν σημεῖον. Ἔχομεν δέ: τὸ *μεταταρσικὸν κνημιαῖον*, τὸ πλέον πρὸς τὰ ἔσω προβάλλον σημεῖον τῆς κεφαλῆς τοῦ 1ου μεταταρσίου καὶ τὸ *μεταταρσικὸν περονιαῖον*, τὸ ἀντίστοιχον σημεῖον τοῦ 5ου μεταταρσίου. Ι. Γ. Κ.

**μετατάρσιον** (τό)· τὸ μετὰ τὸν ταρσὸν μέρος τοῦ ἄκρου ποδός.

—*[Ἀνατομ.]* Καλεῖται *μετατάρσιον* ἡ μοῖρα τοῦ σκελετοῦ τοῦ ποδός, ἡ περιλαμβανομένη μεταξὺ τοῦ ταρσοῦ καὶ τῶν φαλάγγων τῶν δακτύλων. Ἀποτελεῖται δ' ἐκ 5 ἐπιμήκων ὀστῶν, τῶν *μεταταρσίων*, ἅτινα φέρονται παραλλήλως πρὸς τὸν ἐπιμήκη ἄξονα τοῦ ποδός, καταλείποντα μεταξὺ αὐτῶν τὰ *μεσόστεα διαστήματα*, πληρούμενα ὑπὸ τῶν μεσοστέων μυῶν· ὀνομάζονται δὲ 1ον, 2ον κλπ. ἀρχῆς γιγνομένης ἀπὸ τοῦ ἔσω χείλους τοῦ ποδός. Τὰ μετατάρσια ὀστᾶ διὰ μὲν τοῦ *ὀπισθίου ἄκρου* ἢ τῆς *βάσεως* αὐτῶν συντάσσονται μετὰ τῶν ὀστῶν τοῦ προσθίου στοίχου τοῦ ταρσοῦ, διὰ δὲ τοῦ προσθίου ἄκρου ἢ τῆς κεφαλῆς μετὰ τῆς πρώτης φάλαγγος τῶν δακτύλων. Ι. Π.

— *[Ζῳολ.]* Καλεῖται *μετατάρσιον* τὸ μεταξὺ τοῦ ταρσοῦ καὶ τῶν φαλάγγων εὑρισκόμενον τμῆμα τοῦ ποδὸς τῶν ζῴων. Εἰς τὰ ἔντομα καλεῖται ἡ πρώτη ἄρθρωσις τοῦ ποδὸς καὶ εἰς τὰς ἀράχνας ἡ ἕκτη ἄρθρωσις τῶν κινητικῶν ποδῶν. Δ. Ν. Π.

**μετατάρσιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μετὰ τὸν ταρσὸν τοῦ ἄκρου ποδὸς κείμενος: «μετατάρσια ὀστᾶ»· || *μετατάρσιον* (τό)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).

**μεταταρσιοφαλαγγικαὶ** ***διαρθρώσεις*** *[Ἀνατομ.]*. Διαρθρώσεις, καθ' ἃς τὰ μετατάρσια ὀστᾶ συντάσσονται πρὸς τὰς πρώτας φάλαγγας τῶν δακτύλων τοῦ ποδός. Αἱ ἀρθρικαὶ ἐπιφάνειαι ἑκάστης αὐτῶν σχηματίζονται ἔνθεν μὲν ὑπὸ τῆς κεφαλῆς τοῦ μεταταρσίου, ἔνθεν δὲ ὑπὸ τῆς γλήνης τῆς βάσεως τῆς 1ης φάλαγγος. Ὁ δ' ἀρθρικὸς θύλακος ἐνισχύεται ἐν τοῖς πλαγίοις ὑπὸ τῶν πλαγίων συνδέσμων. Κατὰ τὰς διαρθρώσεις ταύτας τελεῖται μόνον ῥαχιαία κάμψις. Ι. Π.

**μετατίθημι**· ἀρχ. ἀντὶ *μεταθέτω* (βλ. λ.).

**μετατοπίζω,** ἀόρ. *μετετόπισα—μετετοπίσθην*, παρακ. παθ. μετ. δημοτ. *μετατοπισμένος*· μεταθέτω εἰς ἄλλον τόπον, μετακινῶ.

**μετατόπισις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετατοπίζειν, μετακίνησις, μετάθεσις εἰς ἄλλον τόπον.

— **μετατοπίσεως** ***νόμος***. Ὁ νόμος οὗτος, περίφημος ἐν τῇ σπουδῇ τῆς *ἀκτινοβολίας*, διετυπώθη ὑπὸ τοῦ Wien καὶ δεικνύει ὅτι τὸ μέγιστον τῆς ἐκπεμπομένης ἐνεργείας ὑπὸ ἀκτινοβολοῦντος σώματος ἔχει μῆκος κύματος, ὅπερ εἶναι τόσῳ μικρότερον ὅσῳ ἡ θερμοκρασία τοῦ σώματος εἶναι μεγαλυτέρα. Κ. Π.

— **μετατόπισις** ***ἠλεκτρικὴ*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικὴ* μετατόπισις.

**μετατρέπω,** ἀόρ. *μετέτρεψα—μετετράπην*· μεταβάλλω, ἀλλάσσω: «μετέτρεψε τὸν οἶκόν του εἰς χαρτοπαικτεῖον».

**μετατροπεύς,** *—έως* (ὁ)· ὁ μετατρέπων, ὁ μεταβάλλων· || ὄργανον τῆς φυσικῆς: «μετατροπεὺς ἠλεκτρικῶν ῥευμάτων».

— **μετατροπεῖς** ***ἠλεκτρικοὶ*** *[Ἠλεκτρολ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικοὶ* μετασχηματισταί.

**μετατροπὴ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετατρέπειν, μεταβολή: «μετατροπὴ δανείου εἰς μακροπρόθεσμον», «μετατροπὴ φυλακίσεως εἰς χρηματικὴν ποινήν».

—**μετατροπὴ** (ἢ ***τροπὴ***) ***δανείων***. Αὕτη περιλαμβάνει δύο πράξεις μὴ ἐχούσας μεταξὺ ἀλλήλων σχέσιν τινά, ἐκτὸς τῆς ἀνταλλαγῆς ἑνὸς τίτλου πιστωτικοῦ δι' ἑτέρου τίτλου, εἰς ἣν ἀμφότεραι αἱ πράξεις καταλήγουσιν. Ἡ μετατροπὴ γίνεται δι' ἐκδόσεως νέου τίτλου, ὅστις (ὁ ὁριστικὸς) ὑπόκειται κατὰ τὴν ἔκδοσίν του εἰς τὸ ἀναλογικὸν τέλος τοῦ ἄρθρου 14 τοῦ κώδικος τοῦ χαρτοσήμου, ἀδιακρίτως ἐὰν ἐξεδόθη πρὸς ἀντικατάστασιν ἄλλου ἐξ οἱουδήποτε λόγου (*Οἰκονομίδου*, Ἑρμηνεία τῶν νόμων περὶ τελῶν χαρτ., ἔκδ. 1930, σελ. 144—145). Ἐξαίρεσις τοῦ κανόνος τούτου εἰσήχθη ἐσχάτως διὰ τοῦ νόμου περὶ ἀνωνύμων ἑταιρειῶν καὶ τραπεζῶν (ἄρθρ. 3 § 5), ἀπαλλάσσοντος τοῦ τέλους χαρτοσήμου τὰς μετοχὰς ἀνωνύμων ἑταιρειῶν, τὰς ἐκδιδομένας πρὸς ἀντικατάστασιν προηγουμένως ἐκδοθεισῶν κατὰ τὰς διατάξεις τοῦ αὐτοῦ ἄρθρου. Διὰ τῆς μετατροπῆς δυνατὸν νὰ παρέχωνται πλεονεκτήματα εἰς τὸν ὀφειλέτην· δυνατὸν ὅμως ἁπλῶς καὶ μόνον μέτοχος ἢ ὁμολογιοῦχος ἑταιρείας τινὸς ν' ἀνταλλάσσῃ ὀνομαστικὸν τίτλον δι' ἀνωνύμου τίτλου ἢ ἀντιθέτως. Τὸ πλεονέκτημα, τὸ ὁποῖον δύναταί τις ν' ἀποκτήσῃ, λαμβάνων νέον εἶδος τίτλου, ἀντὶ ἄλλου, δύναται νὰ ᾖ σημαντικόν, ὡς ἐκ τῶν ποικίλων διαφορῶν, ἃς αἱ δύο κατηγορίαι τίτλων δυνατὸν νὰ ἐμφανίζωσιν, οἷον ὡς πρὸς τὴν ἐξόφλησιν τοῦ κεφαλαίου, τὴν μεταβίβασιν τοῦ τίτλου, τὴν φορολογίαν κλπ.

Τὸ νομοθετικὸν διάταγμα τῆς 17 Ἰουλίου 1923 περὶ εἰδικῶν διατάξεων ἐπὶ ἀνωνύμων ἑταιρειῶν (ἄρθρ. 13—24) περιέλαβε διατάξεις «περὶ μεταβιβάσεως ὀνομαστικῶν μετοχῶν καὶ ὁμολογιῶν ὁμολογιακοῦ δανείου καὶ περὶ τροπῆς αὐτῶν εἰς ἀνωνύμους». Κατὰ τὸ ἄρθρον 18, ἡ τροπὴ ὀνομαστικῆς μετοχῆς εἰς ἀνώνυμον γίνεται διὰ δηλώσεως τοῦ ὀνομαστικοῦ μετόχου, ἐγγραφομένης ἐν τῷ βιβλίῳ ὀνομαστικῶν μετοχῶν, χρονολογουμένης καὶ ὑπογραφομένης ὑπὸ τοῦ μετόχου καὶ τοῦ ἐκπροσωποῦντος τὴν ἑταιρείαν. Κατὰ δὲ τὸ ἄρθρον 18, § 6, τοῦ νόμου 1308 τοῦ 1918 «περὶ ἐμπορικῶν χρηματιστηρίων», τὰ χρεόγραφα καθίστανται ἀντικείμενον χρηματικῆς συναλλαγῆς μόνον ὡς ἀνώνυμα· ἑπομένως, οἱ ὀνομαστικοὶ τίτλοι δέον προηγουμένως νὰ μετατραπῶσιν εἰς ἀνωνύμους, συμφώνως πρὸς τὰς περὶ τούτου διατάξεις τοῦ καταστατικοῦ τῆς ἀνωνύμου ἑταιρείας, ἵνα πωληθῶσι διὰ χρηματιστοῦ. Εἰδικώτερον, *μετατροπὴ δημοσίων δανείων* σημαίνει τὴν μεταμόρφωσιν δημοσίου χρέους εἰς ἄλλο διάφορον, εἴτε ὡς πρὸς τὸ χρεολύσιον, εἴτε ὡς πρὸς τὸ ποσοστὸν τοῦ τόκου. Ἡ μετατροπὴ αὕτη δυνατὸν νὰ γίνῃ κατὰ τρεῖς τρόπους: α') διὰ μονομεροῦς πράξεως, β') διὰ τῆς προσφορᾶς τῆς ἐξοφλήσεως τοῦ κεφαλαίου, καὶ γ') διὰ τῆς ἀμοιβαίας συναινέσεως. Ὁ πρῶτος τρόπος, ἐφ' ὅσον γίνεται διὰ νόμου μειοῦντος τὸν τόκον ἢ καὶ τὸ χρεολύσιον, ἀποτελεῖ μερικὴν πτώχευσιν, οἵα ἐγένετο ἐν Ἑλλάδι κατὰ Δεκέμβριον 1893. Ὁ δεύτερος τρόπος ἀποτελεῖ τὴν πραγματικὴν μετατροπὴν δανείων, τὴν λεγομένην «ἀναγκαστικήν», κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν τοῦ τρίτου τρόπου. Συνίσταται δ' αὕτη εἰς τὴν παρὰ τοῦ κράτους προσφορὰν νὰ ἐξοφλήσῃ εἰς τὸ ἄρτιον τοὺς ὁμολογιούχους ἢ πιστωτάς του, τοὺς τυχὸν μὴ ἀποδεχομένους τὴν μείωσιν τοῦ τόκου ἢ τοῦ χρεολυσίου. Οἱ ὁμολογιοῦχοι εἶναι ὑποχρεωμένοι νὰ ἐκλέξωσι μεταξὺ τῆς ἐλαττώσεως τοῦ τόκου καὶ τῆς εἰς τὸ ἄρτιον πληρωμῆς, μὴ δυνάμενοι νὰ διατηρήσωσι τοὺς παλαιοὺς τίτλους των. Ἡ νομιμότης τῆς μετατροπῆς ἐπὶ μακρὸν χρόνον ἠμφισβητεῖτο, ἀλλὰ σήμερον οὐδεμία ἀμφιβολία ὑπάρχει περὶ τοῦ θεμιτοῦ αὐτῆς, ἀπορρέοντος ἐκ τῶν περὶ ἐνοχῶν διατάξεων τοῦ ἐν Ἑλλάδι ἰσχύοντος ῥωμαϊκοῦ δικαίου, αἵτινες ῥητῶς καθιεροῦσι τὴν ἀρχὴν ὅτι ἡ προθεσμία ὑπὲρ τοῦ ὀφειλέτου τέτακται, ἐκτὸς ἐὰν ἐκ τῆς συμβάσεως προκύπτῃ ἐναντία συμφωνία. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἀρχῆς ταύτης καὶ τοῦ νόμου ͵ΒΥΞΑ' τοῦ 1897, κυρώσαντος σχετικὴν μετὰ τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης σύμβασιν (ἄρθρ.6) τοῦ κράτους, ἐγένετο ἡ τροπὴ τοῦ εἰς χρυσὸν λαχειοφόρου δανείου τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης τῆς Ἑλλάδος ἐν ἔτει 1899, δι' ἐλαττώσεως τοῦ τόκου ἀπὸ 4% εἰς 3% (*Βαλαωρίτου*, Ἱστορία τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης, τόμ. Α', σελ. 204). Ὁ τρίτος τρόπος λέγεται *προαιρετικὴ* μετατροπή, διότι ὁ ὁμολογιοῦχος εἶναι ἐλεύθερος νὰ μὴ τὴν ἀποδεχθῇ καὶ νὰ διατηρήσῃ τοὺς τίτλους του ἐπὶ τῷ αὐτῷ τόκῳ, ὡς πρότερον. Ἀλλ' ὁ τρόπος οὗτος εἶναι σπάνιος καὶ εἰς τὸν αὐτὸν ὁ ὁμολογιοῦχος συγκατατίθεται μόνον ἐάν, παρὰ τὴν ἐλάττωσιν τοῦ τόκου, γίνηται, ἀντιθέτως, αὔξησις τοῦ κεφαλαίου του. Πολυάριθμοι μετατροπαὶ ἐγένοντο κατὰ διαφόρους ἐποχὰς εἰς πολλὰ κράτη. Ἐν Γαλλίᾳ, ἀξιόλογος εἶναι ἡ γενομένη κατὰ τὴν 9 Ἰουλίου 1902 ὁλοκλήρου τοῦ παγίου χρέους εἰς ὁμοιόμορφον τύπον ἐπὶ τόκῳ 3%. Γενικῶς τὰ κράτη προσφεύγουσιν εἰς τὴν μετατροπήν, ὁσάκις ἡ οἰκονομικὴ κατάστασις τῆς χώρας καὶ οἱ ὅροι τῆς χρηματαγορᾶς ἐπιτρέπουσι πρόβλεψιν ὅτι, ἀπευθυνόμενοι πρὸς νέους δανειστάς, θὰ δυνηθῶσι νὰ ἐπιτύχωσιν ὅρους ἧττον ἐπαχθεῖς. Πᾶσα ὅμως μετατροπὴ προϋποθέτει ἀναγκαίως ὅτι ὁ μετατρεπτέος τίτλος τιμᾶται ἄνω τοῦ ἀρτίου, διότι τότε ὑπάρχει μείωσις τοῦ τόκου ἐπιτρέπουσα τὴν μετατροπήν.

Κατὰ τὸ 1931 ἐπεκράτησεν εἰς διάφορα κράτη ἡ πολιτικὴ τῆς μετατροπῆς τοῦ δημοσίου χρέους. Μετὰ τὸν Μέγαν πόλεμον ἐπηκολούθησε περίοδος ὑψωμοῦ τοῦ τόκου, παραταθεῖσα ἕνεκα τῶν μεταπολεμικῶν δυσχερειῶν καὶ τῆς νομισματικῆς ἀσταθείας. Μετὰ δὲ τὴν σταθεροποίησιν καὶ τὴν ἰσοσκέλισιν τῶν προϋπολογισμῶν ἐπῆλθε πτῶσις τοῦ τόκου, τῆς ὁποίας ἐπωφελήθησαν τὰ κράτη, ὅπως ἐπιδιώξωσι τὴν ἐλάττωσιν τοῦ βάρους τοῦ δημοσίου χρέους, καθὼς ἐπίσης ἀνώνυμοι ἑταιρεῖαι, δῆμοι καὶ ἄλλα νομικὰ πρόσωπα. Τὴν μετατροπὴν δὲ διηυκόλυνεν ἡ χρηματιστηριακὴ τιμὴ τῶν ὁμολογιῶν τῶν δανείων των ὑπὲρ τὸ ἄρτιον. Οἱ ὁμολογιοῦχοι τῶν δανείων τούτων σήμερον δυσκόλως δύνανται νὰ εὕρουν ἄλλας ὁμολογίας, ἐπίσης ἀσφαλεῖς, ἀποφερούσας δὲ τόκον ἀνώτερον ἐκείνου, τὸν ὁποῖον θ' ἀποφέρωσιν αἱ νέαι ὁμολογίαι, αἱ ἐκδοθησόμεναι ὑπὸ τοῦ κράτους, μετὰ τὴν τροπήν. Καὶ διὰ τοὺς λόγους τούτους προσδοκᾶται

Digitized by Google

ὅτι ἐλάχιστοι θὰ προτιμήσωσιν, ἀντὶ τῆς μετατροπῆς, τὴν ἐξόφλησιν τῶν ὁμολογιῶν τῶν τρεπομένων δανείων.

Ἐν τούτοις ὑπῆρξαν κράτη προτρέξαντα εἰς τὴν μετατροπήν, ἵνα προσπορισθῶσι κεφάλαια, τοῦτο δὲ λέγεται μετατροπὴ μετὰ τιμήματος ἐξαγορᾶς (avec soulte)· ἐπὶ παραδείγματι τὸ κράτος συγκατατίθεται ν' αὐξήσῃ τὸν τόκον καὶ εἰς ἀντάλλαγμα ζητεῖ νὰ καταβάλωσιν οἱ ὁμολογιοῦχοι τὸ ἀντιπροσωπεῦον τὴν αὔξησιν ταύτην κεφάλαιον.

[Περὶ μετατροπῆς δι' ἑνοποιήσεως μεγάλου μέρους τοῦ δημοσίου χρέους τῆς Ἑλλάδος βλ. *Λ. Κορομηλᾶ* Εἰσήγησιν προϋπολογισμοῦ τοῦ 1912 (Δελτίον Ὑπουργείου Οἰκονομικῶν 1912, σελ. 304)· ὁμοίως *Στ. Κωστοπούλου* Ἐπὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ τοῦ 1931—1932 («Ἐργασία» 14 Μαρτίου 1931), *Γ. Μαρῆ* Ἀγόρευσιν ἐπὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ 1931).] Γ. Ν. ΚΟΦΙΝΑΣ

— **μετατροπὴ *ποινῆς*** *[Νομ.]*. Διὰ τοῦ ὅρου τούτου δηλοῦται ἡ ἀντικατάστασις τῆς φυλακίσεως καὶ κρατήσεως διὰ χρηματικῆς ποινῆς καὶ προστίμου.

Περὶ τοῦ ζητήματος τούτου ἠσχολήθησαν ἅπαντα σχεδὸν τὰ διεθνῆ σωφρονιστικὰ συνέδρια καὶ δὴ τά: ἐν Λονδίνῳ (1872), Στοκχόλμῃ (1878), Ρώμῃ (1885), Πετρουπόλει (1893), Παρισίοις (1895), Βουδαπέστῃ (1905), Βάσιγκτων (1910) καὶ Λονδίνῳ (1925). Κατὰ τὸ τελευταῖον τοῦτο ἐλήφθη ἡ ἑξῆς σχετικὴ ἀπόφασις (τμ. 1—ζήτ. 2ον): «Εἶναι εὐκτέον ὅπως γίνῃ πᾶν τὸ δυνατόν, ἵνα αἱ βραχυπρόθεσμοι ποιναὶ κατὰ τῆς ἐλευθερίας ἀντικατασταθῶσι δι' ἄλλων. Συνιστῶνται ἰδίως τὰ ἑξῆς: Δέον νὰ τύχῃ εὐρείας ἐφαρμογῆς ὁ θεσμὸς τῆς ὑπὸ ὅρον ἀπολύσεως (probation). Δέον νὰ ἐπεκταθῇ ἡ ἐξουσία τοῦ δικαστηρίου, ὅπως, εἰς εἰδικὰς περιπτώσεις, ἀντὶ τῆς ποινῆς στερητικῆς τῆς ἐλευθερίας ἐπιβάλῃ χρηματικὴν ποινήν, ἡ δὲ ἀπότισις τῆς χρηματικῆς ποινῆς δέον νὰ κανονισθῇ οὕτως, ὥστε στερητικὴ τῆς ἐλευθερίας ποινὴ πρὸς ἀντικατάστασιν μὴ ἀποτιθείσης χρηματικῆς ποινῆς ν' ἀποφεύγηται, κατὰ τὸ δυνατόν».

Ἐπίσης κατὰ τῶν μικρῶν ποινῶν, ἀποστερητικῶν τῆς προσωπικῆς ἐλευθερίας, ἐκηρύχθησαν ποινικολόγοι, σωφρονισταὶ καὶ δικαστικοί, οἷοι οἱ E. Ferri, Bentham, Rycker, Pafuré καὶ L. Proal.

Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀνωτέρω ἐκτεθεισῶν ἀπόψεων, πλεῖστα τῶν κρατῶν (Ἀγγλία, Γερμανία, Κάτω Χῶραι, Σουηδία, Νορβηγία, Δανία, ἑλβετικά τινα καντόνια καὶ ἡ Ἀμερικὴ) καθιέρωσαν νομοθετικῶς τὴν ἀντικατάστασιν τῶν κατὰ τῆς προσωπικῆς ἐλευθερίας μικρῶν ποινῶν, τινὰ μὲν διὰ χρηματικῆς ποινῆς, ἄλλα δὲ διὰ προσωπικῆς ἐργασίας καὶ ἕτερα περιέλαβον σχετικὰς διατάξεις εἰς τὰ προσχέδια τῶν κωδίκων των.

Παρ' ἡμῖν καθιερώθη τὸ μέτρον τοῦτο τὸ πρῶτον διὰ τοῦ νόμου ΓΩΙ' τοῦ 1911. Ὑπὸ τούτου ἐπετρέπετο ἡ (κατ' αἴτησιν) μετατροπὴ τοῦ ἡμίσεος τῶν ποινῶν φυλακίσεως καὶ κρατήσεως, αἵτινες ὑπερέβαινον τὰς ἑπτὰ ἡμέρας, οὐχὶ δὲ καὶ τὸ ἓν ἔτος. Τὴν περὶ μετατροπῆς διάταξιν ἐξέδιδεν ὁ εἰσαγγελεὺς τῶν πλημμελειοδικῶν, ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ ὁποίου εὑρίσκετο τὸ ἐκδὸν τὴν ἀπόφασιν δικαστήριον, οἱονδήποτε καὶ ἂν ἦτο τοῦτο (δηλαδὴ εἴτε κοινὸν εἴτε στρατιωτικόν). Διὰ τὴν μετατροπὴν ὑπελογίζετο ἑκάστη ἡμέρα φυλακίσεως ἢ κρατήσεως πρὸς δέκα ἕως χιλίας δραχμὰς χρηματικῆς ποινῆς ἢ προστίμου. Ἂν ὅμως ὁ καταδικασθεὶς δὲν ἀπεδέχετο τὸν ὑπὸ τοῦ εἰσαγγελέως ἀποφασισθέντα κανονισμὸν τῆς μετατροπῆς, ἢ ἐὰν ἠρνεῖτο ὁ εἰσαγγελεὺς νὰ ἐκδώσῃ διάταξιν, ἡ περὶ τούτου ἀντίρρησις τοῦ καταδικασθέντος εἰσήγετο εἰς τὸ πλημμελειοδικεῖον, ὅπερ ἀπεφαίνετο ὁριστικῶς περὶ τῆς μετατροπῆς, μὴ ἐπιτρεπομένου κατὰ τῆς ἀποφάσεως ταύτης ἐνδίκου μέσου. Τῆς μετατροπῆς ἐξῃροῦντο αἱ ἐπὶ ζωοκλοπῇ, ζωοκτονίᾳ καὶ λαθρεμπορίᾳ ἐπιβληθεῖσαι ποιναί, ὡς καὶ αἱ κατ' ἐκείνων οἵτινες ὑπέστησαν προηγουμένως ποινὴν μετατραπεῖσαν εἰς χρηματικὴν ἢ πρόστιμον.

Ὁ ἀνωτέρω ΓΩΙ' νόμος κατηργήθη ὑπὸ τοῦ νόμου 3782 (ὡς ἐτροποποιήθη ὑπὸ τοῦ νόμου 4132) ἰσχύσαντος ἀπὸ 8 Φεβρουαρίου 1929. Διὰ τούτου ἀνετέθη ἡ μετατροπὴ εἰς τὸ δικαστήριον, ὅπερ ἐξέδοτο τὴν ἀπόφασιν, κατ' ἐξαίρεσιν δὲ εἰς τὸ πλημμελιοδικεῖον τοῦ τόπου, ἔνθα ἐκτίνει τὴν ποινήν του ὁ καταδικασθεὶς εἰς φυλάκισιν καὶ τὸ πταισματοδικεῖον τοῦ αὐτοῦ τόπου ἐπὶ ποινῆς κρατήσεως, ἐφ' ὅσον αἱ ποιναὶ ἐπεβλήθησαν ἀντιμωλίᾳ ἢ ἐρήμην ἀμετακλήτως πρὸ τῆς ἰσχύος τοῦ νόμου.

Τῆς κατὰ τὰ ἀνωτέρω μετατροπῆς ἐξαιροῦνται αἱ ποιναὶ αἵτινες ἐπεβλήθησαν: 1) Ἐπὶ ζωοκλοπῇ (ὄχι δὲ καὶ ἐπὶ ζωοκτονίᾳ) μετὰ τὴν ἰσχὺν τοῦ νόμου τούτου, ἀλλ' ἐφ' ὅσον ὑπερβαίνουσι τὰς τριάκοντα ἡμέρας. Ἐὰν ἡ ποινὴ ἐπεβλήθη ἐρήμην πρό, κατέστη ὅμως ἡ ἀπόφασις τελεσίδικος μετὰ τὴν ἰσχὺν τοῦ νόμου, ἐπιτρέπεται ἡ μετατροπή. 2) Παρ' οἱουδήποτε δικαστηρίου, κατ' ἐφαρμογὴν ποινικῆς διατάξεως τῆς στρατιωτικῆς καὶ ναυτικῆς ποινικῆς νομοθεσίας. 3) Ὑπὸ τοῦ μονομελοῦς πλημμελειοδικείου, κατ' ἐκείνου ὅστις κατέστη φυγόποινος ὁπωσδήποτε· καὶ 4) Ἐφ' οἱῳδήποτε ἑτέρῳ ἀδικήματι, αἱ ὑπερβαίνουσαι τὰς τριάκοντα ἡμέρας, ἐφόσον ὁ καταδικασθεὶς κατὰ τὸν χρόνον τῆς καταδίκης α') εἶχε τύχει μετατροπῆς, δυνάμει τοῦ νόμου τούτου ἐπὶ τριετίαν ἀπὸ τῆς μετατροπῆς· β') διετέλει ὑπὸ προσωρινὴν ἀπόλυσιν, δυνάμει οἱουδήποτε νόμου καὶ γ') διετέλει ἐν ἀναστολῇ ἐκτελέσεως τῆς ποινῆς.

Εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν ἐπεβλήθη κατὰ συγχώνευσιν ποινή, ἧς ἐπιτρέπεται ἡ μετατροπή, καὶ ἑτέρα δι' ἣν δὲν συγχωρεῖται, θὰ μετατραπῇ ἡ ἐκ τῆς συγχωνεύσεως προελθοῦσα, ἐφόσον διὰ τὴν βαρυτέραν χωρεῖ μετατροπὴ (ὅταν δηλαδὴ συγχωνεύωνται ποιναὶ ἐπιβληθεῖσαι ἐπὶ ζωοκλοπῇ ἢ ἀδικήματι προβλεπομένῳ ὑπὸ τῆς στρατ. ἢ ναυτ. ποιν. νομοθ. μετὰ τοιούτων ἐφ' οἱῳδήποτε ἑτέρῳ ἀδικήματι).

Ἡ μετατροπὴ ἐπιτρέπεται ἐπὶ ποινῆς φυλακίσεως καὶ κρατήσεως μὴ ὑπερβαινούσης τὸ ἓν ἔτος, χορηγεῖται δὲ πάντοτε κατ' αἴτησιν τοῦ καταδικασθέντος. Καὶ ἡ μὲν φυλάκισις μετατρέπεται εἰς χρηματικὴν ποινήν, ἡ δὲ κράτησις εἰς πρόστιμον. Ὑπολογίζεται δὲ ἑκάστη ἡμέρα, ἐπὶ μὲν φυλακίσεως πρὸς εἰκοσιπέντε μέχρι χιλίων, ἐπὶ δὲ κρατήσεως πρὸς δεκαπέντε μέχρι διακοσίων πεντήκοντα δραχμῶν. Κατὰ τὴν μετατροπὴν δέον νὰ λαμβάνωνται ὑπ' ὄψιν τά τε βάρη καὶ ἡ ἐν γένει οἰκογενειακὴ τοῦ καταδικασθέντος κατάστασις, ἡ ἱκανότης του πρὸς ἐργασίαν καὶ πρὸς πληρωμήν, τὸ ἡμερομίσθιόν του καὶ ἡ ποινική του κατάστασις, ἐπὶ γεωργῶν δὲ καὶ ἐν γένει ἐργαζομένων ἐπὶ ἡμερομισθίῳ τὸ δι' ἑκάστην ἡμέραν ὁρισθὲν ποσὸν δὲν πρέπει νὰ ὑπερβαίνῃ τὸ ἡμερομίσθιον τῆς τάξεώς των, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς καταδίκης.

Ὡς πρὸς τὴν μετατρεπτέαν ποινὴν ἐφαρμόζονται τὰ ἑξῆς:

Α') Ἐπὶ ποινῆς ἐπιβληθείσης ἀντιμωλίᾳ: 1) Μὴ ὑπερβαινούσης τὰς τριάκοντα ἡμέρας· αὕτη θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος, ὑποχρεωτικῶς, ἄνευ διατυπώσεώς τινος. 2) Ὑπερβαινούσης τὰς τριάκοντα, ἀλλ' ὄχι καὶ τὰς ἐνενήκοντα ἡμέρας· αὕτη δύναται νὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος (τοῦτο ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς κρίσεως τοῦ δικαστηρίου), ὑποχρεωτικῶς δὲ μετατρέπεται τὸ ἥμισυ. Διὰ νὰ χορηγηθῇ ὅμως ἐν προκειμένῳ μετατροπή, δέον νὰ προσαχθῶσι πιστοποιητικὰ περὶ τοῦ ὅτι ἀφ' ἑνὸς δὲν ἔχει μετατραπῇ ὑπὲρ τοῦ καταδικασθέντος ποινή τις ἐπὶ τριετίαν ἀπὸ τῆς μετατροπῆς, ἀφ' ἑτέρου δὲν διατελεῖ ὑπὸ προσωρινὴν ἀπόλυσιν, δυνάμει οἱουδήποτε νόμου, καὶ ἐκ τρίτου δὲν διατελεῖ ἐν ἀναστολῇ ἐκτελέσεως τῆς ποινῆς. 3) Ὑπερβαινούσης τὰς τριάκοντας ἡμέρας ἀλλ' ὄχι καὶ τὸ ἓν ἔτος· αὕτη μετατρέπεται ὑποχρεωτικῶς, μόνον κατὰ τὸ ἥμισυ, ἐφόσον προσαχθῶσι τὰ ἀνωτέρω πιστοποιητικά.

Β') Ἐπὶ ποινῆς ἐρήμην ἐπιβληθείσης: 1) Μὴ ὑπερβαινούσης τὰς τριάκοντα ἡμέρας· α') Ἐὰν ἐπεβλήθη ἀπὸ τῆς ἰσχύος τοῦ νόμου, θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος, ὑποχρεωτικῶς, ἐφόσον ἀσκηθῇ ἀνακοπὴ (ἀποκλειομένης τῆς δευτέρας) καὶ συζητηθῇ αὕτη ἀντιμωλίᾳ, ἄνευ ἑτέρας διατυπώσεως. β') Ἐὰν ἐπεβλήθη καὶ κατέστη τελεσίδικος πρὸ τῆς ἰσχύος τοῦ νόμου τούτου, θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος, ὑποχρεωτικῶς, χωρὶς ν' ἀσκηθῇ ἀνακοπή, ἄνευ ἑτέρας διατυπώσεως· καὶ γ') Ἐὰν ἐπεβλήθη πρὸ καὶ κατέστη ἡ ἀπόφασις τελεσίδικος μετὰ τὴν ἰσχὺν τοῦ νόμου, θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος, ὑποχρεωτικῶς, ἀφοῦ ἀσκηθῇ ἀνακοπὴ (ἀποκλειομένης τῆς δευτέρας) καὶ συζητηθῇ αὕτη ἀντιμωλίᾳ. 2) Ὑπερβαινούσης τὰς τριάκοντα, ἀλλ' ὄχι καὶ τὰς ἐνενήκοντα ἡμέρας: α') Ἐὰν ἐπεβλήθη ἀπὸ τῆς ἰσχύος τοῦ νόμου θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος δυνητικῶς καὶ κατὰ τὸ ἥμισυ ὑποχρεωτικῶς, ἐφόσον ἀφ' ἑνὸς ἀσκηθῇ ἀνακοπὴ (ἀποκλειομένης τῆς δευτέρας) καὶ συζητηθῇ αὕτη ἀντιμωλίᾳ καὶ ἀφ' ἑτέρου προσαχθῶσι τὰ ἀνωτέρω (Α—2) πιστοποιητικά. β') Ἐὰν ἐπεβλήθη καὶ κατέστη τελεσίδικος πρὸ τῆς ἰσχύος τοῦ νόμου, θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος δυνητικῶς καὶ κατὰ τὸ ἥμισυ ὑποχρεωτικῶς, ἔστω καὶ ἂν ἀφορᾷ ἀδίκημα ζῳοκλοπῆς, ἐφόσον προσαχθῶσι τὰ αὐτὰ πιστοποιητικά, χωρὶς ν' ἀσκηθῇ ἀνακοπή· καὶ γ') Ἐὰν ἐπεβλήθη πρό, ἡ ἀπόφασις ὅμως κατέστη τελεσίδικος μετὰ τὴν ἰσχὺν τοῦ νόμου, θὰ μετατραπῇ ὁλόκληρος δυνητικῶς καὶ κατὰ τὸ ἥμισυ ὑποχρεωτικῶς, καὶ ἂν ἔτι ἀφορᾷ ἀδίκημα ζῳοκλοπῆς, ἐφόσον ἀσκηθῇ ἀνακοπὴ (ἀποκλειομένης τῆς δευτέρας) καὶ συζητηθῇ αὕτη ἀντιμωλίᾳ, προσαχθῶσι δὲ καὶ τὰ ἀνωτέρω ἀναφερόμενα πιστοποιητικά. Καὶ 3) Ὑπερβαινούσης τὰς ἐνενήκοντα ἡμέρας, ἀλλ' ὄχι καὶ τὸ ἔτος: α') Ἐὰν ἐπεβλήθη πρὸ τοῦ νόμου καὶ ἡ ἀπόφασις κατέστη τελεσίδικος ὁποτεδήποτε, θὰ μετατραπῇ κατὰ τὸ ἥμισυ ὑποχρεωτικῶς (ἔστω καὶ ἂν ἀφορᾷ ἀδίκημα ζῳοκλοπῆς) χωρὶς ν' ἀσκηθῇ ἀνακοπή, ἐφόσον προσαχθῶσι τὰ ἀνωτέρω πιστοποιητικά· καὶ β') Ἐὰν ἐπεβλήθη μετὰ τὴν ἰσχὺν τοῦ νόμου θὰ μετατραπῇ κατὰ τὸ ἥμισυ, ὑποχρεωτικῶς, χωρὶς ν' ἀσκηθῇ ἀνακοπὴ (ἐξαιρουμένης τῆς ἐπὶ ζῳοκλοπῇ ἐπιβληθείσης), ἐφόσον προσαχθῶσι τὰ ἀνωτέρω πιστοποιητικά.

Καθ' ἁπάσας τὰς ἀνωτέρω περιπτώσεις μετατρέπεται ἡ ποινή, ἐφόσον δὲν ἐχορηγήθη ἀναστολὴ τῆς ἐκτελέσεώς της, εἴτε διότι δὲν ὑπεβλήθη σχετικὴ αἴτησις, εἴτε διότι ἀπερρίφθη ἡ ὑποβληθεῖσα.

Ἐκτὸς τῆς φυλακίσεως καὶ κρατήσεως μετατρέπεται εἰς χρηματικὴν (δυνητικῶς ὅμως) καὶ ἡ ποινὴ τοῦ ἐκτοπισμοῦ, ἀλλὰ μόνον ἐφόσον ἐπεβλήθη αὕτη εἰς ἀνήλικον, εἰς γυναῖκα, εἰς ἄνδρα ἡλικίας πέραν τῶν 65 ἐτῶν καὶ ἄλλης ἡλικίας ἄνδρα, ἀποδεδειγμένως ὅμως ἀσθενῆ. Διὰ τὴν μετατροπὴν τῆς ποινῆς τοῦ ἐκτοπισμοῦ ἀπαιτοῦνται μόνον αἱ ῥηθεῖσαι προϋποθέσεις καὶ δὲν τηροῦνται αἱ διατυπώσεις οὔτε ἐφαρμόζονται αἱ ἐξαιρέσεις, αἱ διὰ τὴν μετατροπὴν τῆς φυλακίσεως καὶ κρατήσεως.

Αἱ ποιναὶ ὧν διετάχθη ἡ μετατροπὴ ἐξακολουθοῦσιν ἐκτινόμεναι μέχρι τῆς εἰς τὸ δημόσιον ταμεῖον καταβολῆς τοῦ προσδιορισθέντος ποσοῦ χρηματικῆς ποινῆς ἢ προστίμου, τῆς ἀπαλλαγῆς ἀπὸ τῆς καταβολῆς αὐτοῦ ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ ἐπιτρεπομένης. Δύναται ὅμως ὁ καταδικασθεὶς νὰ καταβάλῃ ποσὸν ἀντιστοιχοῦν πρὸς ὀλιγωτέρας ἡμέρας ποινῆς, ὁπότε θὰ ἐκτίσῃ ἐκείνας, δι' ἃς δὲν κατέβαλε τὸ ἀναλογοῦν ποσόν.

Κατὰ τῆς διαταξάσης τὴν μετατροπὴν ἀποφάσεως δὲν ἐπιτρέπεται ἔφεσις. Αὕτη συγχωρεῖται μόνον εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν τὸ δικαστήριον ἀπέρριψε τὴν μετατροπὴν ἐπὶ ποινῆς ἄνω τῶν τριάκοντα καὶ μὴ ὑπερβαινούσης τὰς ἐνενήκοντα ἡμέρας. Ἐὰν κατὰ τῆς καταδικαστικῆς ἀποφάσεως ἀσκηθῇ ἔφεσις καὶ ἀθωωθῇ ὁ κατηγορούμενος ἢ μετριασθῇ ἡ ποινή, ἧς εἶχε διαταχθῆ ἡ μετατροπή, θὰ ἐπιστραφῇ αὐτῷ τὸ ποσόν, ὅπερ εἶχε καταβληθῆ διὰ τὴν μετατροπὴν ἢ τὸ ἀναλογοῦν πρὸς τὰς ἡμέρας καθ' ἃς ἐμετριάσθη ἡ ποινή.

Σ. Α. ΧΥΤΗΡΗΣ

**μετατροπία** (ἡ)· ἡ μεταβολὴ τοῦ τόνου ἐν τῇ ἐκτελέσει μουσικοῦ τεμαχίου.

— *[Μουσ.] Μετατροπία* (γαλ. modulation) καλεῖται ἡ μετάβασις ἀπὸ ἑνὸς τρόπου εἰς ἕτερον καὶ κατ' ἐπέκτασιν ἀπὸ ἑνὸς τόνου εἰς ἄλλον.

Ἡ μετατροπία ἐπιτυγχάνεται διὰ τῆς ἀντικαταστάσεως ὡρισμένων φυσικῶν φθόγγων μιᾶς κλίμακος δι' ἑτέρων ἠλλοιωμένων. Ἐὰν π. χ. εἰς τὴν κλίμακα τοῦ *ντο* μείζονος ἀντικαταστήσωμεν τὸ *φα* φυσικὸν διὰ *φα* διέσεως, ὑπάρχει μετατροπία ἢ μετάβασις εἰς τὸν τόνον τοῦ *σολ* μείζονος. Ἐὰν εἰς τὴν αὐτὴν κλίμακα ἀντικαταστήσωμεν τὸ *σολ* διὰ *σολ* διέσεως, ὑπάρχει μετατροπία εἰς τὸν τόνον τοῦ *λα* ἐλασ. Οἱ φθόγγοι οἱ προκαλοῦντες μετατροπίαν ὀνομάζονται *χαρακτηριστικοί*.

Ὑπάρχουσι μετατροπίαι *διαβατικαὶ* καὶ *μόνιμοι*. Αἱ πρῶται εἶναι βραχεῖαι ἀλλαγαὶ τόνου συνοδευόμεναι ἀπὸ ἐπάνοδον εἰς τὴν βασικὴν κλίμακα. Αἱ δεύτεραι προϋποθέτουν μεγάλην διάρκειαν καὶ ἀλλαγὴν ὁπλισμοῦ.

Αἱ καλύτεραι μετατροπίαι εἶναι αἱ μεταξὺ γειτονικῶν τόνων, δηλαδὴ μεταξὺ ἐκείνων οἵτινες διαφέρουσι κατὰ ἓν μόνον σημεῖον ἀλλοιώσεως. Αἱ μετατροπίαι αὗται καθορίζονται, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, διὰ τοῦ προσαγωγέως ἢ τῆς ὑποδεσποζούσης τοῦ τόνου πρὸς ὃν γίνεται ἡ μετατροπία π. χ.: Ἀπὸ τῆς κλίμακος τοῦ *ντο* μείζονος εἰς τὴν τοῦ *λα* ἐλάσσονος διὰ χαρακτηριστικοῦ φθόγγου τοῦ *σολ* ♯, ἑβδόμης βαθμῖδος, ἢ προσαγωγέως τοῦ *λα* ἐλάσ.

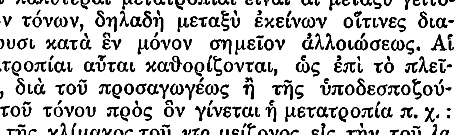

Ἀπὸ τῆς κλίμακος τοῦ *ντὸ* μείζονος εἰς τὴν τοῦ *λα* ἐλάσσονος διὰ χαρακτηριστικοῦ φθόγγου τοῦ *φα* ♯, ἑβδόμης βαθμῖδος τοῦ *σολ* μείζονος.

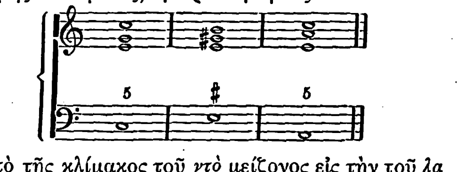

Ἀπὸ τῆς κλίμακος τοῦ *ντο* μείζονος εἰς τὴν τοῦ *φα* μείζονος διὰ χαρακτηριστικοῦ φθόγγου τοῦ *σι* ♭, τετάρτης βαθμίδος τοῦ *φα* μείζονος.

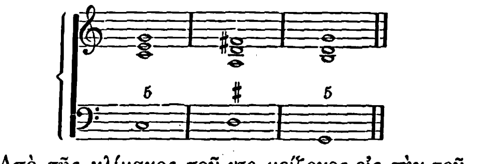

Ἐκ τοῦ ἐλάσσονος τρόπου πρὸς τὸν σχετικόν του μείζονα ἡ μετατροπία ἐπιτυγχάνεται διὰ τῆς παραλείψεως τοῦ τυχαίου σημείου ἀλλοιώσεως τοῦ προσαγωγέως καὶ τῆς ἀντικαταστάσεώς του ὑπὸ τοῦ φυσικοῦ φθόγγου. Π. χ. ἐκ τοῦ *λα* ἐλάσσονος εἰς τὸν τόνον τοῦ *ντο* μείζονος:

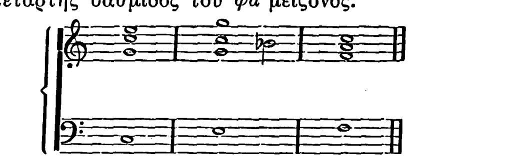

Ἡ συνηθεστέρα μεταξὺ γειτονικῶν τόνων μετατροπία εἶναι ἡ τῆς δεσποζούσης, καθότι λαμβά-

Digitized by Google

νουσα χώραν ἐπὶ τῆς πέμπτης βαθμῖδος τῆς κλίμακος εὑρίσκεται, συμφώνως πρὸς τοὺς ἀκουστικοὺς νόμους, πλησιέστερον πάσης ἄλλης πρὸς τὴν τονικήν.

Ἡ μετατροπία εἰς ἀπομεμακρυσμένους τόνους ἐπιτυγχάνεται: διὰ τῆς ἀλλαγῆς τρόπου, διὰ τοῦ διφορουμένου καὶ διὰ τοῦ ἐναρμονίου συστήματος. Ἡ μετατροπία δι' *ἀλλαγῆς τρόπου* συνίσταται εἰς τὴν μετάβασιν ἀπὸ τοῦ μείζονος τρόπου εἰς τὸν ἐλάσσονα, δι' ἁπλῆς βαρύνσεως τῆς τρίτης τῆς συγχορδίας καὶ ἐκ τοῦ ἐλάσσονος εἰς τὸν μείζονα διὰ τῆς ὀξύνσεως τῆς τρίτης, ἄνευ ἀλλαγῆς τῆς τονικῆς· π. χ.:

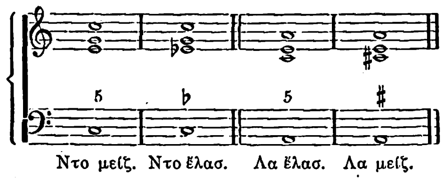


Ἡ μετατροπία διὰ τοῦ διφορουμένου συστήματος βασίζεται ἐπὶ τοῦ νόμου ὅτι μία καὶ ἡ αὐτὴ συγχορδία δύναται ν' ἀνήκῃ εἰς πλείονας κλίμακας. Κατὰ ταῦτα: ἡ συγχορδία τῆς πρώτης βαθμῖδος τοῦ *ντο* μείζονος εἶναι ταυτοχρόνως καὶ δεσπόζουσα τοῦ *φα* ἐλάσσονος· διὰ νὰ πραγματοποιήσωμεν συνεπῶς τὴν μετατροπίαν εἰς τὸν τόνον τοῦτον, δὲν ἔχομεν ἢ νὰ φαντασθῶμεν τὴν συγχορδίαν *ντο - μι - σολ* ὡς πέμπτην βαθμῖδα τοῦ *φα* ἐλασ. καὶ νὰ ἐπιτύχωμεν οὕτω μίαν μετάβασιν εἰς τόνον διαφέροντα κατὰ τέσσαρας ἀλλοιώσεις τοῦ βασικοῦ, π. χ.:

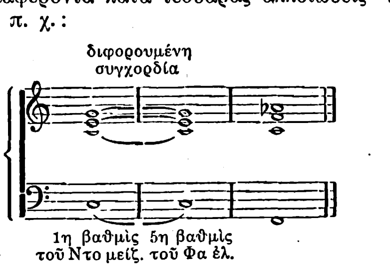


Ἡ μετατροπία διὰ τοῦ ἐναρμονίου συστήματος συνίσταται εἰς τὴν ἀντικατάστασιν ὡρισμένων φθόγγων τῆς συγχορδίας διὰ τὴν ἐναρμονίαν τοιούτων καὶ τὴν διὰ τοῦ τρόπου τούτου μετάβασιν εἰς λίαν ἀπομεμακρυσμένον τόνον· π. χ.:

**μετατυπικὸς** (ὁ) (metatypique). Οὕτω καθορίζεται ὄγκος σχηματιζόμενος ὑπὸ ἱστοῦ ἔχοντος τὸ ἀνάλογον αὐτοῦ ἐν τῇ οἰκονομίᾳ τοῦ ὀργανισμοῦ, ἀλλὰ μὴ ἀπαντῶν εἰς τὸ προσβεβλημένον μέρος *(μετατυπικὸς ὄγκος, μετατυπικὸν ἐπιθηλίωμα)*. Ἡ ἀνωμαλία αὕτη ἐξηγεῖται διὰ τῆς ἐμβρυογονίας. Μ. Ν. Κ.

**μετατυπῶ** *(—όω)*, κοιν. ***μετατυπώνω***· τυπώνω ἐκ νέου: «μετετυπώθη ἐκ τοῦ περιοδικοῦ τάδε»· || μεταγράφω, μεταβάλλω τὴν γραφήν: «τὸ ΟΙΟΥΩΝ μετετυπώθη εἰς τὸ ΟΚΥΩΝ».

**μετατύπωσις**, *—εως* (ἡ)· τύπωσις ἐκ νέου: «μετατύπωσις ἐκ τοῦ περιοδικοῦ τάδε»· || μεταγραφή, μεταβολὴ τῆς γραφῆς (βλ. *μετατυπῶ*).

—*[Νομ.]* Ἡ *μετατύπωσις* καὶ ἀπομίμησις ἔργων τέχνης καὶ νοῦ ἐρρυθμίζετο ὑπὸ τοῦ ἄρθρου 432 ποινικοῦ νόμου, ὅστις ὅμως κατηργήθη διὰ τοῦ νόμου 2387 τοῦ 1920 «περὶ τῆς πνευματικῆς ἰδιοκτησίας» (βλ. λ.), τροποποιηθέντος διὰ τοῦ νόμου 4301 τοῦ 1929. Κατὰ τὰς νῦν ἰσχυούσας διατάξεις, τὸ ἀποκλειστικὸν δικαίωμα τῆς ἐκδόσεως ἢ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν ἔργων των ἔχουν ἐφ' ὅρου ζωῆς πάντες οἱ συγγραφεῖς, μουσικοὶ συνθέται, ζωγράφοι, σχεδιογράφοι, γλύπται, τορνευταί, χαράκται, ὡς ἐπίσης καὶ τὸ δικαίωμα τῆς δημοσίας ἐκτελέσεως προκειμένου περὶ μουσικῶν θεατρικῶν ἔργων, μουσικῶν συνθέσεων, τεμαχίων ἢ ἀποσπασμάτων αὐτῶν, καὶ τῆς ἐκχωρήσεως τῶν δικαιωμάτων τούτων εἰς ἄλλους. Ὁ κατὰ παράβασιν τῶν διατάξεων τοῦ νόμου ἐκ δόλου ἐκδίδων ἢ πολλαπλασιάζων συγγραφὰς ἢ ἔργα τέχνης ἢ φωνογραφικοὺς δίσκους κλπ. τιμωρεῖται διὰ φυλακίσεως μέχρι 3 μηνῶν καὶ χρηματικῆς ποινῆς 1000 μέχρι 10.000 δρχ. Κατὰ δὲ τὸ ἄρθρον 433 ποινικοῦ νόμου αἱ ἀνωτέρω διατάξεις ἰσχύουν καὶ πρὸς χάριν ξένου, ὅταν μόνον τὸ κράτος ἐκεῖνο, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ ξένος ἀνήκει, ἐγγυᾶται τὴν αὐτὴν προστασίαν καὶ εἰς τὸν Ἕλληνα ὑπήκοον. Χ. Ν. ΤΖΩΡΤΖΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Ρητορ.]* Ἡ *μετατύπωσις* εἶναι «λέξις ἐνηλλαγμένα στοιχεῖα ἔχουσα, οἷον ὅταν ἡ ἀκρόπολις πόλις ἄκρα λέγηται» (*Τρύφωνος*, Περὶ τρόπων ιστ'). Ι. Φ. Δ.

**Μέταυρος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἑλληνικὴ πόλις τῆς ΝΔ. παραλίας τῆς Κάτω Ἰταλίας, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, ἱδρυθεῖσα ὑπὸ Ἀχαιῶν τῆς Ζάγκλης. Α. Θ. Σ.

— **Μέταυρος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Δύο μικροὶ ποταμοὶ τῆς Ἰταλίας. —1) Ποταμὸς ἐν τῇ Ὀμβρικῇ, ὅστις πηγάζων ἐκ τῶν Ἀπεννίνων ὀρέων, ἐκβάλλει παρὰ τὸ Ἱερὸν τῆς Τύχης (Fanum Fortunae), πλησίον τῆς σημερινῆς πόλεως Fano, ΒΔ. τῆς Ἀγκῶνος. Παρὰ τὰς ὄχθας αὐτοῦ νικηθεὶς ὑπὸ τῶν Ρωμαίων ὁ Ἀσδρούβας, ἐφονεύθη τῷ 207 π. Χ. Σήμερον καλεῖται *Μετάουρο*. —2) Ποτάμιον διαρρέον τὴν χώραν τοῦ Βρεττίου τῆς Μεγάλης Ἑλλάδος, ἐκβάλλον εἰς τὸ Τυρρηνικὸν πέλαγος, κατέναντι τῶν Λιπαραίων νήσων (*Στράβ.* ΣΤ', 256) ἐγγὺς τῆς πόλεως Μέσμας ἢ Μέδμας. Εἶναι τὸ σύγχρονον ποτάμιον *Μέζιμα* (Mesima, πλάτ. 38° 29' Β., μήκ. 14° 57' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1976: Cape Bonifati to Messina strait), ἐκβάλλον εἰς τὸν κόλπον τῆς Τζιόγιας. Α. Θ. Σ.—Σ. Ε. Λ.

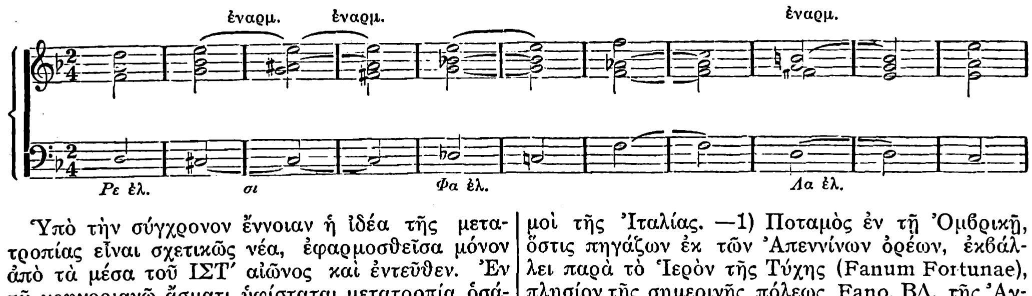


Ὑπὸ τὴν σύγχρονον ἔννοιαν ἡ ἰδέα τῆς μετατροπίας εἶναι σχετικῶς νέα, ἐφαρμοσθεῖσα μόνον ἀπὸ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ ἐντεῦθεν. Ἐν τῷ γρηγοριανῷ ᾄσματι ὑφίσταται μετατροπία, ὁσάκις χρησιμοποιοῦνται ὅλοι οἱ φθόγγοι ἑνὸς τρόπου, ἐνῷ ταυτοχρόνως δίδεται μεγαλυτέρα σημασία εἰς τοὺς οὐσιώδεις φθόγγους τοῦ τρόπου τούτου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Reber*, «Traité d' Harmonie».—*Dubois*, «Notes et études d'Harmonie».—*E. Richter*, «Ἐγχειρίδιον Ἁρμονίας», μετάφρασις *Φ. Οἰκονομίδου*.—*Riemann*, «Systematische Modulationslehre» (1887), «Katechismus der Harmonie und Modulationslehre».—*Max Reger*, «Beitraege zur Modulation» (1903). Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**μετατροφία** (ἡ)· ἀλλοίωσις τῆς θρέψεως, ἐλαττωματικὴ θρέψις (ἐκ τοῦ *μετὰ* καὶ *ἀτροφία*)· || τροποποίησις τῆς διατροφῆς (βλ. *μετατροφικὴ θεραπευτική*) πρὸς ὡρισμένον θεραπευτικὸν σκοπὸν (ἐκ τοῦ *μετὰ* καὶ *τροφή*) (ἡ λ. ἐσχηματίσθη τὸ πρῶτον ὡς γαλλ. *métatrophie*).

**μετατροφικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετατροφίαν, εἰς τὴν τροποποίησιν τῆς διατροφῆς: «μετατροφικὴ μέθοδος».

— **μετατροφικὴ *θεραπευτική***. Καλεῖται οὕτω μέθοδος θεραπευτική, συνισταμένη εἰς τὴν μεταβολὴν τῆς διατροφῆς καὶ εἰς τὴν θρέψιν καὶ εἰς τὴν ταυτόχρονον χορήγησιν φαρμακευτικῆς τινος οὐσίας· λ. χ. διὰ νὰ ἐπιτύχωμεν παρὰ τοῖς ἐπιληπτικοῖς ἀποτελεσματικωτέραν ἐνέργειαν τοῦ βρωμιούχου νατρίου, ἀφαιροῦμεν ἐκ τῆς διατροφῆς τὸ χλωριοῦχον νάτριον (ἅλας μαγειρικόν)· τότε ἡ ἀνάγκη τῶν ἀλκαλικῶν ἁλάτων ἀποβαίνει ἔντονος εἰς τὸν ὀργανισμόν, μικραὶ δὲ δόσεις βρωμιούχων ἐνεργοῦσιν ἐπὶ τῶν νευρικῶν στοιχείων μετὰ τῆς αὐτῆς ζωτικότητος καὶ ἐντάσεως, μεθ' ἧς καὶ δόσεις διπλάσιαι καὶ τριπλάσιαι χορηγούμεναι εἰς ἄτομα, εἰς τὰ ὁποῖα δὲν ἀπηγορεύθη ἡ χρῆσις ἅλατος. Μ. Ν. Κ.

**μετατρόχιον** (τό). Τὸ μεταξὺ δύο τροχῶν (ἢ τῶν δύο προσθίων, ἢ τῶν δύο ὀπισθίων) ὀχήματός τινος ἐνδιάμεσον διάστημα. Τὸ μετατρόχιον ἔχει μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς εὐσταθείας τοῦ ὀχήματος. Ν. Θ. Κ.

**μεταφαίνη** (ἡ) (Metaphen) *[Φαρμ. Χημ.]*. Ἕνωσις περιέχουσα ὑδράργυρον (60 %) ὀργανικῶς ἠνωμένον, ἀποτελοῦσα κόνιν ἀδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ, διαλυτὴν εἰς τὰ ἀραιὰ ἀλκάλια. Ἡ μεταφαίνη καὶ εἰς διαλύματα 1 : 200 δὲν πηγνύει τὸ λεύκωμα, οὔτε προσβάλλει τὰ μέταλλα. Τὰ διαλύματα τῆς μεταφαίνης χρησιμοποιοῦνται εἰς ἀπολυμάνσεις χειρουργικῶν ἐργαλείων καὶ ἀραιότερα τοιαῦτα εἰς πλύσεις κατὰ τῆς βλεννορροίας. Κ. Γ. Μ.

**μεταφαινυλενοκυανοῦν** (τὸ) *[Βιομ. Χημ.]*. Συνθετικὸν χρῶμα ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν βασικῶν ἀζινοχρωστικῶν. Παρασκευάζεται δι' ἐπιδράσεως ὑδροχλωρικῆς νιτρωδοδιμεθυλανιλίνης ἐπὶ διτολυλοφαινυλενοδιαμίνης. Βάπτει τὸν βάμβακα κατόπιν προστύψεως διὰ ταννίνης. Σ. Γ.

**μεταφέρνω**· ἀντὶ *μεταφέρω* (βλ. λ.).

**μεταφερτικὰ** (τά)· ἀντὶ *μεταφορικὰ* (βλ. λ.).

**μεταφερτός**, *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μεταφερθῇ, νὰ μετακομισθῇ· || ὁ ἐκ μεταφορᾶς προερχόμενος: «γῆ μεταφερτή».

**μεταφέρω**, ἀόρ. *μετήνεγκον — μετηνέχθην*, κοιν. *μετέφερα—μετεφέρθην*, παρακ. παθ. μετχ. *μεταφερμένος*· φέρω εἰς ἄλλο μέρος, μετακομίζω: «μεταφέρω τὰ ἐμπορεύματα ἀπὸ τῆς παραλίας εἰς τὴν ἀποθήκην», «τὸ κατάστημα μετεφέρθη εἰς τὴν ὁδὸν τάδε»· || μεταγράφω: «μεταφέρω ἐκ τοῦ ἡμερολογίου εἰς τὸ καθολικόν»· || μεταφράζω: «μεταφέρω ἐκ τοῦ ἀρχαίου εἰς τὸ νέον, — ἐκ τοῦ λατινικοῦ εἰς τὸ ἑλληνικόν».

**μεταφορὰ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταφέρειν, μετακόμισις, μετακίνησις: «ἡ μεταφορὰ τῶν ἐμπορευμάτων ἀπὸ τῆς ἀποθήκης εἰς τὸ κατάστημα»· || λογιστικῶς, «εἰς μεταφορὰν» φράσις παραγραφομένη ἀριστερὰ τοῦ ἀθροίσματος ἐν τῷ τέλει τῆς σελίδος, «ἐκ μεταφορᾶς» φράσις παραγραφομένη ἀριστερὰ τοῦ αὐτοῦ ἀθροίσματος εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς ἑπομένης σελίδος· || γραμμ., συνήθης καὶ κάλλιστος λεκτικὸς τρόπος, καθ' ὃν ἔννοιά τις παρίσταται εἰκονικῶς διὰ παραβολῆς ἢ παρομοιώσεως· π. χ. «δυσμαὶ βίου» ἀντὶ *γῆρας*, «χύθηκε ἀπάνω του» ἀντὶ *ὥρμησε*· ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὴν *κυριολεξίαν*.

— *[Ρητορ.]* Ἡ *μεταφορὰ* εἶναι σχῆμα λόγου, καθ' ὃ ἡ λέξις ἀπὸ τῆς κυρίας σημασίας μεταφέρεται εἰς ἄλλην ὁμοίαν καὶ ἀνάλογον τῆς πρώτης («τὸ γὰρ εὖ μεταφέρειν τὸ τὸ ὅμοιον θεωρεῖν ἐστιν» *Ἀριστοτ.* Ποιητ. 1459 a). Τὸ σχῆμα τοῦτο στηρίζεται κυρίως εἰς τὴν ὁμοιότητα, τὴν ὁποίαν δύο τινὰ ἀντικείμενα ἔχουσι πρὸς ἄλληλα, οἷον ἀλώπηξ καὶ πανοῦργος διὰ τὸ πονηρὸν ἦθος· ὅθεν συγγενεύει κατὰ πολὺ μὲ τὸ σχῆμα τὸ λεγόμενον *ὅμοιον* ἢ τὴν *εἰκόνα*: «ἔστι δὲ καὶ ἡ εἰκὼν μεταφορά· διαφέρει γὰρ μικρόν· ὅταν μὲν γὰρ εἴπῃ τὸν Ἀχιλλέα, ὡς δὲ λέων ἐπόρουσεν, εἰκών ἐστιν· ὅταν δέ, λέων ἐπόρουσε, μεταφορά· διὰ γὰρ τὸ ἄμφω ἀνδρείους εἶναι, προσηγόρευσε μετενέγκας λέοντα τὸν Ἀχιλλέα» (*Ἀριστοτ.* Ρητορ. Γ', 4). Ἡ μεταφορὰ λαμβάνει συνήθως σημασίαν εὐρυτάτην, σημαίνουσα ἐφαρμογὴν λέξεως κατὰ τροπικὴν ἔννοιαν, εἴτε ὁμοιότητα ἔχουσι πρὸς ἄλληλα δύο ἀντικείμενα, εἴτε ἄλλην τινὰ σχέσιν· ὅταν π. χ. λέγῃ τις τρίχες λευκαὶ ἀντὶ γῆρας, τοῦτο ὑπὸ πολλῶν θεωρεῖται μεταφορά, ἐνῷ εἶναι κυρίως *μετωνυμία*. Ὑπὸ εὐρυτάτην ἔννοιαν μεταχειρίζεται τὴν μεταφορὰν καὶ ὁ Ἀριστοτέλης, νοῶν διὰ ταύτης πᾶσαν τροπικὴν ἔννοιαν διδομένην εἰς λέξιν τινά· «μεταφορὰ δέ ἐστιν ὀνόματος ἀλλοτρίου ἐπιφορὰ ἢ ἀπὸ τοῦ γένους ἐπὶ εἶδος ἢ ἀπὸ τοῦ εἴδους ἐπὶ τὸ γένος ἢ ἀπὸ τοῦ εἴδους ἐπὶ εἶδος ἢ κατὰ τὸ ἀνάλογον. Λέγω δὲ ἀπὸ γένους μὲν ἐπὶ εἶδος, οἷον «νηῦς δέ μοι ἥδ' ἕστηκεν»· τὸ γὰρ ὁρμεῖν ἐστιν ἑστάναι τι· ἀπ' εἴδους δὲ ἐπὶ γένος, οἷον «ἦ δὴ μυρί' Ὀδυσσεὺς ἐσθλὰ ἔοργεν»· τὸ γὰρ μυρίον πολύ ἐστιν, ᾧ νῦν ἀντὶ τοῦ πολλὰ κέχρηται· ἀπ' εἴδους δὲ ἐπὶ εἶδος, οἷον «χαλκῷ ἀπὸ ψυχὴν ἀρύσας» καὶ «ταμὼν ἀτειρέϊ χαλκῷ»· ἐνταῦθα γὰρ τὸ μὲν ἀρύσαι ταμεῖν, τὸ δὲ ταμεῖν ἀρύσαι εἴρηκεν· ἄμφω γὰρ ἀφελεῖν τί ἐστιν. Τὸ δὲ ἀνάλογον λέγω, ὅταν ὁμοίως ἔχῃ τὸ δεύτερον πρὸς τὸ πρῶτον καὶ τὸ τέταρτον πρὸς τὸ τρίτον· ἐρεῖ γὰρ ἀντὶ τοῦ δευτέρου τὸ τέταρτον ἢ ἀντὶ τοῦ τετάρτου τὸ δεύτερον, καὶ ἐνίοτε προστιθέασιν ἀνθ' οὗ λέγει πρὸς ὅ ἐστι. Λέγω δὲ οἷον ὁμοίως ἔχει φιάλη πρὸς Διόνυσον καὶ ἀσπὶς πρὸς Ἄρη· ἐρεῖ τοίνυν τὴν φιάλην ἀσπίδα Διονύσου καὶ τὴν ἀσπίδα φιάλην Ἄρεως» (Ποιητικὴ 1457 b 7—22). Ἐκ τῶν τεσσάρων τούτων εἰδῶν τῆς μεταφορᾶς εὐδοκιμοῦσι μάλιστα αἱ κατ' ἀναλογίαν, «ὥσπερ Περικλῆς ἔφη τὴν νεότητα τὴν ἀπολομένην ἐν τῷ πολέμῳ οὕτως ἠφανίσθαι ἐκ τῆς πόλεως ὥσπερ εἴτις τὸ ἔαρ ἐκ τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐξέλοι» (Ρητορ. Γ, 10). Κατὰ τοὺς πλείστους τῶν ἀρχαίων τεχνογράφων αἱ μεταφοραὶ γίνονται τετραχῶς: ἀπὸ ἐμψύχων ἐπὶ ἔμψυχα (ὡς ὅταν λέγωμεν τὸν βασιλέα ποιμένα λαοῦ), ἀπὸ ἀψύχων ἐπὶ ἄψυχα (οἷον σπέρμα πυρὸς σῴζων, ὅπερ λαμβάνεται ἐπὶ σίτου καὶ τῶν ὁμοίων, ἅτινα εἶναι ἄψυχα), ἀπὸ ἐμψύχων ἐπὶ ἄψυχα (ἐὰν ὄρους ἀκρώρειαν κορυφὴν λέγωμεν ὄρους, διότι ἡ κορυφὴ λαμβάνεται κυρίως ἐπὶ ἀνθρώπου), ἀπὸ ἀψύχων ἐπὶ ἔμψυχα (οἷον ἐάν τις ἀδαμάντινον λέγῃ τὸν ἀνδρεῖον)· «ἔτι τῶν μεταφορῶν αἱ μὲν ἀπὸ πράξεως εἰς πρᾶξιν μεταφέρονται (ὡς τὸ ὑφαίνειν τὸ βουλεύεσθαι), αἱ δὲ ἀπὸ σώματος ἐπὶ σῶμα (ὡς τὸ Αἴας δὲ πρῶτος Τελαμώνιος ἕρκος Ἀχαιῶν)· ἔτι τῶν μεταφορῶν αἱ μὲν ἀντιστρέφουσιν, αἱ δὲ οὔ» *(Spengel* Rhet. Gr. III, 228).

Ἡ μεταφορὰ εἶναι δεῖγμα εὐφυΐας, διότι δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ διδαχθῇ τις αὐτὴν παρ' ἄλλου (*Ἀριστοτ.* Ποιητ. 1459 καὶ Ρητορ. Γ, 2), παρέχει δὲ ἡδονὴν καὶ μέγεθος εἰς τὸν λόγον. Διὰ τῶν μεταφορῶν λέγονταί τινα σαφέστερον, κυριώτερον καὶ ἀληθέστερον ἢ διὰ τῶν κυρίων λέξεων, ὡς τὸ ἔφριξε δὲ μάχη. Ὁ ποιητὴς τὴν ἐκ τῶν δοράτων ταραχὴν καὶ τὸν προξενούμενον ὑπὸ τούτων ἦχον συνεχῶς φρίσσουσαν μάχην προσηγόρευσεν· «οὐ γὰρ ἄν τις αὐτὸ μεταβαλὼν διὰ κυρίων οὔτ' ἀληθέστερον εἴποι οὔτε σαφέστερον» (*Δημητρίου* «Περὶ ἑρμηνείας» 82). Ἀλλὰ καὶ μικροπρέπειαν μᾶλλον ἢ μέγεθος ποιοῦσιν αἱ μεταφοραί, ὅταν γίνεται κακὴ χρῆσις αὐτῶν, ὡς τὸ ἀμφὶ δ' ἐσάλπιγξε μέγας οὐρανός, διότι δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ προσομοιάσῃ τις ὅλον τὸν οὐρανὸν πρὸς ἠχοῦσαν σάλπιγγα.

Τὴν μεταφορὰν μετεχειριζόμεθα κυρίως: α') πρὸς ἀναπλήρωσιν ἐλλειπούσης λέξεως, β') χάριν ἐμφάσεως ἢ σημασίας μείζονος δυνάμεως, γ') χάριν κόσμου, εὐφημίας ἢ εὐπρεπείας λόγου· ἰδιάζον δὲ ἀποτέλεσμα τοῦ σχήματος τούτου εἶναι νὰ δίδῃ φῶς καὶ δύναμιν εἰς τὴν περιγραφήν. Πρὸς τοῦτο ἀπαιτεῖται ἡ τήρησις κανόνων τινῶν, συνισταμένων ἐν τοῖς ἑξῆς: 1) Αἱ μεταφοραὶ πρέπει νὰ εἰ-

Digitized by Google

ναι κατάλληλοι καὶ ἁρμόζουσαι εἰς τὴν φύσιν τοῦ ὑποκειμένου· δὲν χρησιμοποιοῦνται δὲ αἱ αὐταὶ πάντοτε εἰς πάντα τὰ εἴδη τοῦ λόγου· οὕτω μεταφοραί τινες εἶναι συγχωρητέαι εἰς τὴν ποίησιν, μάλιστα δὲ καὶ ὡραῖαι, τὰς ὁποίας ἤθελεν εἶσθαι ὅλως ἀνάρμοστον καὶ ἄτοπον νὰ μεταχειριζώμεθα εἰς τὸν πεζὸν λόγον. Ἄλλαι πάλιν ἐπιτρέπονται μὲν καὶ ἐπιβάλλονται ἐν τῇ ρητορείᾳ, ἀλλ' οὐδεμίαν θέσιν ἔχουσιν εἰς τὰς φιλοσοφικὰς συνθέσεις. 2) Πρέπει νὰ προσέχωμεν νὰ μὴ μεταχειριζώμεθα πράγματα διεγείροντα εἰς τὸ πνεῦμα ἰδέας ἀηδεῖς, ταπεινάς, χυδαίας. 3) Ἡ ὁμοιότης, βάσις οὖσα τῆς μεταφορᾶς, πρέπει νὰ εἶναι καθαρά, προφανής, οὐχὶ δυσνόητος· ἡ παράβασις τοῦ κανόνος τούτου κάμνει τὰς βεβιασμένας μεταφοράς, αἵτινες ἀντὶ νὰ διασαφήσωσι τὴν ἔννοιαν περιπλέκουσιν αὐτήν. 4) Ἀπαραιτήτως πρέπει νὰ σῴζῃ ἀναλογίαν καὶ ὁμοιότητα τὸ μεταφερόμενον πρὸς τὸ εἰς ὃ μεταφέρεται, διότι ἄλλως ἡ μεταφορὰ καθίσταται ψυχρά, οἷον ἐὰν εἴπῃ τις τοὺς γῦπας ἐμψύχους τάφους. 5) Ἀποφυγὴ τῶν ὑπερβολῶν, οἷον στενάζει ἡ θάλασσα ὑπὸ τὸ πλοῖον. 6) Νὰ μὴ μεταχειριζώμεθα συγχρόνως δύο διαφόρους μεταφορὰς περὶ τοῦ αὐτοῦ ἀντικειμένου, οἷον ἔλαβον τὰ ὅπλα κατὰ τῆς θαλάσσης τῶν ταραχῶν. Ἡ μεικτὴ μεταφορά, μεταβαίνουσα ἀπὸ μιᾶς εἰς ἄλλην εἰκόνα, μειγνύει τὰ φύσει ἄμεικτα, ταράττει τὴν φαντασίαν καὶ εἶναι κακίστη ἀκολουθία. «Μάλιστα πάντων πρέπει νὰ προσέχῃς, ἀφ' ὁποιουδήποτε εἴδους μεταφορᾶς ἀρχίσῃς, μὲ τοῦτο νὰ τελειώνῃς» *(Κοϊντιλιανός)*. 7) Αἱ μεταφοραὶ δὲν πρέπει νὰ παρεκτείνωνται, διότι καταντῶμεν εἰς τὴν ἀλληγορίαν, ὁπότε ὁ μὲν λόγος καθίσταται σκοτεινός, ὁ δὲ ἀναγνώστης ψυχραίνεται. 8) «Πάντων δὲ καὶ τῶν ἄλλων ἡ συνήθεια καὶ μάλιστα μεταφορῶν διδάσκαλος· μικροῦ γὰρ σχεδὸν πάντα μεταφέρουσα λανθάνει διὰ τὸ ἀσφαλῶς μεταφέρειν, λευκήν τε φωνὴν λέγουσα καὶ ὀξὺν ἄνθρωπον καὶ τραχὺ ἦθος καὶ μακρὸν ῥήτορα καὶ τἆλλα, ὅσα οὕτω μεταφέρεται μουσικῶς, ὥστε ὅμοια δοκεῖν τοῖς κυρίοις» (*Δημητρίου* «Περὶ ἑρμηνείας» 86).

Ι. Φ. ΔΗΜΑΡΑΤΟΣ

— *[Πολ. Οἰκον.]* Ἐν τῇ πολιτικῇ οἰκονομίᾳ καλεῖται *μεταφορὰ* ἡ μετακίνησις ἀνθρώπων ἢ πραγμάτων καὶ ἡ γραπτὴ ἢ προφορικὴ ἐπικοινωνία ἀπὸ ἑνὸς τόπου εἰς ἄλλον. Ἡ μεταφορὰ ὑπῆρξεν ἀνέκαθεν σπουδαιότατος παράγων ἐν τῇ οἰκονομικῇ ζωῇ πάσης χώρας, ἡ πρόοδος τῆς ὁποίας βαίνει πάντοτε κατ' εὐθὺν λόγον πρὸς τὰς βελτιώσεις τῶν πάσης φύσεως μεταφορῶν, ἐξαρτωμένας ἀπὸ τὴν ἐξέλιξιν τῶν διὰ ταύτας χρησιμοποιουμένων μέσων· Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα τὰ μεταφορικὰ μέσα ἦσαν λίαν πρωτόγονα, τόσον τὰ διὰ ξηρᾶς, ὅπου ἐχρησιμοποιοῦντο ζῷά τινα, ὅσον καὶ τὰ διὰ τῶν ποταμῶν ἢ διὰ θαλάσσης, ὅπου ἐχρησιμοποιοῦντο τὰ πλοῖα. Τὰ ταχύτερον ἀναπτυχθέντα μεταφορικὰ μέσα κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἦσαν τὰ διὰ θαλάσσης καὶ διὰ τῶν ποταμῶν. Ἕνεκα τούτου πᾶσαι αἱ μεγάλαι πόλεις τῆς ἀρχαιότητος, ὅπως εἶναι ἡ Ἀλεξάνδρεια, ἡ Βαβυλών, ἡ Καρχηδών, ἡ Ρώμη, εἶχον κτισθῆ πλησίον εἰς ποταμοὺς ἢ εἰς τὴν θάλασσαν. Σὺν τῷ χρόνῳ ἀνεπτύχθησαν καὶ αἱ διὰ ξηρᾶς μεταφοραί, χάρις εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῶν μέσων τῆς συγκοινωνίας, ὁδῶν, γεφυρῶν κλπ., ἰδίως κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας κατὰ τὸν μεσαίωνα ἡ ἀνάπτυξις τῶν μέσων τῆς συγκοινωνίας περιεστάλη, τὰ δὲ ὑπάρχοντα τοιαῦτα σχεδὸν κατεστράφησαν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον συνέβαλεν εἰς τὸν περιορισμὸν τῶν μεταφορῶν καὶ τὴν παρατηρηθεῖσαν τότε στάσιν καὶ ὀπισθοδρόμησιν τῆς προόδου τῆς ἀνθρωπότητος. Βραδύτερον ἤρχισαν καὶ πάλιν νὰ ἀναπτύσσωνται, κατὰ δὲ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ἡ χρησιμοποίησις τοῦ σιδηροδρόμου καὶ τοῦ ἀτμοπλοίου ὡς μέσων συγκοινωνίας προσέδωκε τεραστίαν ὤθησιν εἰς τὰς μεταφοράς, αἵτινες ἔφθασαν εἰς μεγίστην ἀκμὴν κατὰ τὸν Κ' αἰῶνα, χάρις εἰς τὸ αὐτοκίνητον, τὸν ἠλεκτρισμὸν καὶ τὴν ἀεροπλοΐαν.

Ἡ μεταφορὰ εὑρίσκεται εἰς στενὴν σχέσιν πρὸς τὸ ἐμπόριον, τὸ ὁποῖον θεωρεῖται ὡς ἡ μήτηρ τῶν μεταφορῶν, αἵτινες μὲ τὴν σειράν των ἀποτελοῦν τὴν οὐσιώδη βάσιν τῆς ἀναπτύξεως αὐτοῦ, διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν προμηθεύει τὰς πρώτας ὕλας εἰς τὴν βιομηχανίαν, ἀφ' ἑτέρου δὲ θέτει ταύτας, μετὰ τὴν κατεργασίαν των, εἰς κυκλοφορίαν καὶ τὰς διανέμει εἰς τὰ κέντρα τῆς καταναλώσεως. Ἕνεκα τούτου αἱ μεταφοραὶ ἔχουν μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς βιομηχανίας. Αἱ συγκοινωνίαι διὰ τῶν ταχυδρομείων, τηλεφώνων, τηλεγράφων κ. τ. λ. ἀποτελοῦν εἶδος γραπτῆς ἢ προφορικῆς μεταφορᾶς, ἥτις προσφέρει μεγίστας ὑπηρεσίας εἰς τὸ ἐμπόριον. Ἡ ἀνάπτυξις τῶν μεταφορῶν ἐπηρεάζει μεγάλως τὰς τιμὰς τῶν προϊόντων. Διότι ὅσον περισσότερα εἶναι τὰ μέσα τῶν μεταφορῶν, τόσον μικροτέρα εἶναι ἡ τιμὴ αὐτῶν καὶ συνεπῶς ὀλιγώτερα τὰ ἐπιβαρύνοντα τὸ μεταφερόμενον ἐμπόρευμα ἔξοδα. Ἐπίσης ἡ ἐξουδετέρωσις τοῦ ἐμποδίου τῆς ἀποστάσεως προκαλεῖ τὴν εὐκολίαν τῆς συγκεντρώσεως πρώτων ὑλῶν καὶ τὴν συρροὴν πολλῶν προϊόντων ἐκ διαφόρων μερῶν εἰς τοὺς τόπους τῆς καταναλώσεως, πρᾶγμα ὅπερ ἔχει ὡς ἀποτέλεσμα τὴν βαθμιαίαν ἰσοπέδωσιν τῶν τιμῶν. Τελικὸν ἀποτέλεσμα τῆς ἀναπτύξεως τῶν μεταφορῶν εἶναι ἡ ἰσοπέδωσις καὶ σταθεροποίησις τῶν τιμῶν, καθὼς καὶ ἡ ἰσοπέδωσις τοῦ πλούτου τῆς γῆς, τοῦ εἰσοδήματος τοῦ κεφαλαίου καὶ τῶν ἡμερομισθίων.

Ἐπίσης ἡ ἀνάπτυξις τῶν μεταφορῶν διεθνοποιεῖ τὰς τιμὰς εἰς τὰς ἀγορὰς τῶν πρώτων ὑλῶν, διότι αὗται καθίστανται δυνατὸν νὰ ζητῶνται ἀπὸ ὅλα τὰ μέρη τοῦ κόσμου· καταργεῖ τὴν ἀνάγκην τοῦ παραγωγοῦ, ὅπως διατηρῇ μεγάλας παρακαταθήκας πρώτων ὑλῶν, διότι δύναται νὰ τὰς προμηθευθῇ εὐκόλως καὶ ταχέως· αὐξάνει τὴν κατανάλωσιν διὰ τῆς ἐλαττώσεως τῶν τιμῶν καὶ καθιστᾷ δύσκολον τὴν κερδοσκοπίαν καὶ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν ἐμπόρων.

Ἐν τῇ συγχρόνῳ ἐποχῇ αἱ μεταφοραὶ ἀποτελοῦν οὐσιώδη παράγοντα τοῦ δημοσίου καὶ οἰκονομικοῦ βίου πάσης χώρας, ἕνεκα δὲ τούτου ἔχουν ἐπισύρει πανταχοῦ ἐντεταμένην τὴν προσοχὴν ἀρχόντων καὶ ἀρχομένων πρὸς τελειοποίησιν τῶν τεχνικῶν στοιχείων, ἐπὶ τῶν ὁποίων βασίζονται· ταῦτα δὲ εἶναι ἡ ὁδός, τὸ ὄχημα καὶ ἡ κινητήριος δύναμις. Ἐν σχέσει πρὸς τὴν ὁδόν, διὰ τῆς ὁποίας γίνονται, αἱ μεταφοραὶ διαιροῦνται εἰς μεταφορὰς διὰ ξηρᾶς, εἰς ποταμίους, εἰς θαλασσίας καὶ εἰς ἐναερίους. Πρὸς ρύθμισιν τῶν διαφόρων εἰδῶν μεταφορῶν τὰ κράτη ἐθέσπισαν νόμους καὶ ὠργάνωσαν εἰδικὰς ὑπηρεσίας, αἵτινες εἰς πλεῖστα κράτη ἔχουν ἀναχθῆ εἰς ἰδιαίτερα ὑπουργεῖα Μεταφορῶν ἢ Συγκοινωνίας. Πρὸς ρύθμισιν ἐπίσης τῶν διεθνῶν μεταφορῶν, ἰδίως μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, καὶ ἀντιμετώπισιν τῆς συνεπείᾳ τούτου παρατηρηθείσης κρίσεως εἰς αὐτάς, ὠργανώθησαν ὑπὸ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν καὶ διεθνεῖς διασκέψεις. Ἐπίσης συνεστήθη ἐν Βέρνῃ «Κεντρικὸν γραφεῖον διεθνῶν μεταφορῶν» πρὸς τὸν σκοπὸν διατηρήσεως ἐπαφῆς μεταξὺ τῶν συμβληθέντων κρατῶν καὶ μελέτης τῶν ζητημάτων, τὰ ὁποῖα ἔχουν σχέσεις μὲ τὰς μεταφοράς. (Βλ. καὶ *συγκοινωνίαι, συγκοινωνιακὴ πολιτικὴ* καὶ τὰ συναφῆ ἐπὶ μέρους ἄρθρα. Εἰδικῶς διὰ τὰς ἐν Ἑλλάδι βλ. εἰς τὸ ἄρθρον *Ἑλλάς*.)

Μ. Δ. Β.

— *[Ἐμπορ. Δίκ.] Μεταφορὰ* εἶναι ἡ σύμβασις, διὰ τῆς ὁποίας ὁ μεταφορεὺς ἀναλαμβάνει νὰ φέρῃ εἰς πέρας ὡρισμένον ἀποτέλεσμα, τὴν μετακομιδὴν προσώπων ἢ πραγμάτων ἀπὸ ἑνὸς τόπου εἰς ἄλλον. Ἡ σύμβασις τῆς μεταφορᾶς εἶναι σύμβασις ἔργου· ὑπόσχεται δηλαδὴ ὁ μεταφορεὺς τὴν πραγματοποίησιν ὡρισμένου οἰκονομικοῦ ἀποτελέσματος. Ὁ μεταφορεὺς καλεῖται ὑπὸ τοῦ ἡμετέρου ἐμπορικοῦ νόμου *ἀγωγιάτης*. Αἱ περὶ συμβάσεως μεταφορᾶς σχετικαὶ διατάξεις τοῦ νόμου ἔχουν ὑπ' ὄψιν των τὴν κυριωτέραν περίπτωσιν, τὴν μεταφορὰν πραγμάτων. Μόνον προκειμένου περὶ θαλασσίας μεταφορᾶς προβλέπει ὁ ἐμπορικὸς νόμος καὶ ρυθμίζει δι' εἰδικῶν διατάξεων τὴν ναύλωσιν διὰ τὴν μεταφορὰν ἐπιβατῶν.

Ἡ μεταφορὰ διενεργεῖται διὰ γῆς ἢ τῶν καλουμένων ἐσωτερικῶν ὑδάτων (ποταμοί, λίμναι κτλ.) καὶ διὰ θαλάσσης. Ἡ τελευταία περίπτωσις ὑπάγεται εἰς τὰς περὶ θαλασσίας ἐμπορίας διατάξεις τοῦ δευτέρου βιβλίου τοῦ ἐμπορικοῦ νόμου καὶ καλεῖται εἰδικώτερον σύμβασις ναυλώσεως.

Τῆς συμβάσεως μεταφορᾶς μετέχουν κατὰ κανόνα τρία πρόσωπα. Ὁ *μεταφορεὺς* ἢ *ἀγωγιάτης* καλούμενος, ὁ ἀναλαμβάνων τὴν διὰ γῆς ἢ τῶν ἐσωτερικῶν ὑδάτων μετακομιδὴν προσώπων ἢ πραγμάτων· ὁ *ἀποστολεύς*, ὁ μετὰ τοῦ μεταφορέως συνάπτων τὴν σύμβασιν τῆς μεταφορᾶς, καὶ ὁ *παραλήπτης*, τὸ πρόσωπον δηλαδή, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ μεταφορεὺς ὀφείλει νὰ παραδώσῃ τὰ μεταφερόμενα πράγματα. Ἐννοεῖται ὅτι αἱ ἰδιότητες τοῦ ἀποστολέως καὶ παραλήπτου δυνατὸν νὰ συνυπάρχωσιν εἰς ἓν καὶ τὸ αὐτὸ πρόσωπον, οὕτως ὥστε οἱ συμβαλλόμενοι νὰ εἶναι μόνον δύο.

Πρὸς τὸν μεταφορέα δὲν πρέπει νὰ συγχέῃ τις τὸν *παραγγελιοδόχον* τῆς διὰ γῆς ἢ ὕδατος μεταφορᾶς, καθ' ὅσον ἐκεῖνος μὲν ἀναλαμβάνει ἀπ' εὐθείας, συμβαλλόμενος μετὰ τοῦ ἀποστολέως, τὴν ἐνέργειαν τῆς μεταφορᾶς, ἐνῷ ὁ τελευταῖος ἁπλῶς μεσολαβεῖ, συνάπτων ἰδίῳ ὀνόματι, ἀλλὰ διὰ λογαριασμὸν ἄλλου, μετὰ τοῦ ἀγωγιάτου τὴν σύμβασιν τῆς μεταφορᾶς. Οἱ παραγγελιοδόχοι μεταφορᾶς ἀποτελοῦν ἀλλαχοῦ σπουδαιότατον βοηθητικὸν τοῦ ἐμπορίου κλάδον, ἔχουν δὲ ἐν τῇ πράξει σχεδὸν παντελῶς παραμερίσει τὴν περίπτωσιν τῆς ἀπ' εὐθείας συνεννοήσεως ἀποστολέως καὶ μεταφορέως. Γνωρίζουν καλῶς τὰς συνθήκας, ὑφ' ἃς δύναται κατὰ τὸν καλύτερον καὶ οἰκονομικώτερον τρόπον νὰ γίνῃ μεταφορά, διὰ τῆς συγκεντρώσεως δὲ πολλῶν ἐμπορευμάτων διαφόρων ἀποστολέων, διὰ τὸν ἴδιον προορισμόν, πραγματοποιοῦν τὴν διαφορὰν μεταξὺ κομίστρων δι' ὁμαδικὰς φορτώσεις καὶ κομίστρων διὰ μικρὰς ἀποστολάς. Ἡ μεσολάβησίς των εἶναι σχεδὸν ἀπαραίτητος, ὁσάκις τὸ ἐμπόρευμα προώρισται νὰ μεταφορτωθῇ καθ' ὁδόν, παραδιδόμενον εἰς ἄλλον μεταφορέα.

Ἡ σύμβασις τῆς μεταφορᾶς εἶναι πρᾶξις ἐμπορικὴ διὰ τὸν μεταφορέα, οὐχὶ ὅμως καὶ διὰ τὸν μετ' αὐτοῦ συμβληθέντα ἀποστολέα, διὰ τὸν ὁποῖον αὕτη δυνατὸν νὰ μὴ εἶναι πρᾶξις ἐμπορική, ἀλλ' ἀστική. Ἡ σύμβασις τῆς μεταφορᾶς συνομολογεῖται ἀτύπως. Οὐχ ἧττον ὅμως ὁ νόμος προβλέπει τὴν σύνταξιν τοῦ ἀγωγιαστηρίου ἐγγράφου, ὁρίζει δὲ καὶ τὸ περιεχόμενον αὐτοῦ. Τὸ ἀγωγιαστήριον ὑπογράφεται ὑπὸ τοῦ ἀποστολέως καὶ εἶναι εἶδος ἐπιστολῆς ἀπευθυνομένης πρὸς τὸν παραλήπτην. Ἀντὶ ὅμως τοῦ ἀγωγιαστηρίου συνηθίζεται ἐν τῇ πράξει ἡ ἔκδοσις ἀποδείξεως ἐκ μέρους τοῦ μεταφορέως περὶ τῶν παραληφθέντων πρὸς μεταφορὰν ἐμπορευμάτων, ἡ ὁποία καλεῖται *φορτωτική*. Αὕτη ἐκδίδεται ὀνομαστική, εἰς διαταγὴν ἢ εἰς τὸν κομιστήν, ἐφαρμόζονται δὲ ἐπ' αὐτῆς ἀναλόγως αἱ σχετικαὶ περὶ φορτωτικῶν καὶ χρηματογράφων διατάξεις τοῦ νόμου.

Σύμβασις μεταφορᾶς ὑπάρχει καὶ ἐὰν τὰ πράγματα πρόκειται νὰ μετακομισθοῦν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει ἢ καὶ ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ὀρόφου εἰς τὸν ἕτερον τῆς αὐτῆς οἰκίας. Καὶ ἡ μεταφορὰ πραγμάτων ὑπὸ ἀχθοφόρου εἶναι σύμβασις μεταφορᾶς. Πάντως ὅμως νομικὴ προϋπόθεσις διὰ τὴν ὕπαρξιν συμβάσεως μεταφορᾶς, ὡς ἐξάγεται τοῦτο ἐκ τῶν διατάξεων τοῦ νόμου, εἶναι ἡ ἀνάληψις τῶν πραγμάτων ὑπὸ τοῦ μεταφορέως ἐν τῇ παραφυλακῇ του. Ὡς ἐκ τούτου εἶναι καὶ ὑπεύθυνος διὰ τὴν ἀπώλειαν ἢ βλάβην τῶν μετακομιστέων πραγμάτων, ἐκτὸς βεβαίως ἐὰν αὕτη ὀφείλεται εἰς ἀνωτέραν βίαν, ἴδιον τοῦ πράγματος ἐλάττωμα, ἢ εἰς πταῖσμα τοῦ ἀποστολέως ἢ παραλήπτου. Ἡ εὐθύνη τοῦ μεταφορέως ἄρχεται ἀπὸ τῆς ἀναδοχῆς τῶν πραγμάτων πρὸς μεταφοράν, καὶ λήγει διὰ τῆς παραδόσεως αὐτῶν εἰς τὸν παραλήπτην. Εἰς ἃς περιπτώσεις ὑπάρχει εὐθύνη τοῦ μεταφορέως, ὑποχρεοῦται οὗτος κατὰ τὰς γενικὰς ἀρχὰς περὶ διαφέροντος εἰς ἀποζημίωσιν τοῦ δικαιούχου.

Καίτοι ἡ σύμβασις τῆς μεταφορᾶς συνάπτεται μεταξὺ ἀποστολέως καὶ μεταφορέως, ἐν τούτοις ἐξ αὐτῆς ἀποκτᾷ δικαιώματα καὶ ὑποχρεώσεις συνάμα καὶ τρίτον πρόσωπον, ὁ παραλήπτης. Ἡ ἄρχουσα γνώμη δέχεται ὅτι ἐν προκειμένῳ συνάπτεται σύμβασις ὑπὲρ τρίτου, δηλαδὴ τοῦ παραλήπτου. Ἡ ἄποψις ὅμως αὕτη φαίνεται ὅτι δὲν εἶναι ἀπηλλαγμένη σοβαρῶν καὶ εὐλόγων ἀντιρρήσεων, κυρίως δὲ ὅτι ἐν προκειμένῳ ὁ παραλήπτης δὲν ἀποκτᾷ μόνον δικαιώματα, ἀλλὰ καὶ ὑποχρεώσεις.

Ὁ μεταφορεὺς δικαιοῦται εἰς τὴν πληρωμὴν τῶν συμπεφωνημένων κομίστρων, τοῦ ἀγωγίου, καθὼς λέγει ὁ ἐμπορικὸς νόμος. Τοῦτο πληρώνεται ἢ ὑπὸ τοῦ ἀποστολέως ἢ καὶ ὑπὸ τοῦ παραλήπτου κατὰ τὴν συμφωνίαν. Ὁ νόμος χορηγεῖ εἰς τὸν μεταφορέα προνόμιον ἐπὶ τῶν ἐμπορευμάτων, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν τὸ ἀντικείμενον τῆς μεταφορᾶς διὰ τὴν ἐξασφάλισιν τῆς ἀπαιτήσεώς του πρὸς πληρωμὴν τῶν κομίστρων ἢ ἄλλων τυχὸν ὑπ' αὐτοῦ πρὸς διατήρησιν τῶν ἐμπορευμάτων καταβληθέντων ἐξόδων. Θεσπίζει δὲ σύντομον παραγραφὴν πάσης ἀγωγῆς κατὰ τοῦ μεταφορέως, ὡς καὶ λόγον ἀπαραδέκτου αὐτῆς.

Ἡ διὰ τοῦ σιδηροδρόμου μεταφορὰ ρυθμίζεται πλὴν τῶν γενικῶν περὶ χερσαίας μεταφορᾶς διατάξεων τοῦ ἐμπορικοῦ νόμου, αἵτινες ἔχουσιν ἐπ' αὐτῆς ἐφαρμογήν, καὶ ὑπὸ εἰδικῶν νόμων καὶ διαταγμάτων. Ὁ λόγος δὲ κυρίως, διὰ τὸν ὁποῖον ἡ διὰ σιδηροδρόμου μεταφορὰ χρῄζει εἰδικῆς ρυθμίσεως, εἶναι ὅτι ὁ σιδηρόδρομος ὡς μεταφορεὺς ἀπολαύει μονοπωλίου de facto, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον καθιστᾷ ἀναγκαίαν τὴν ἐκ μέρους τῆς πολιτείας ἐπιβολὴν εἰς αὐτὸν ἀφ' ἑνὸς μὲν ὑποχρεώσεως μεταφορᾶς, δηλαδὴ ὑποχρεώσεως πρὸς σύναψιν συμβάσεως μεταφορᾶς μετὰ παντός, ὑπὸ ὡρισμένας προϋποθέσεις βεβαίως, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὡρισμένους ὅρους, ὑπὸ τοὺς ὁποίους δέον νὰ διενεργῆται ἡ σύμβασις τῆς μεταφορᾶς, κυρίως δὲ ἡ ἔγκρισις τῶν τιμολογίων.

Κ. Β. ΣΠΗΛΙΟΠΟΥΛΟΣ

—*[Στρατ.]* Αἱ *μεταφοραὶ* τῶν στρατευμάτων καὶ τῶν πάσης φύσεως ἀναγκαίων αὐτοῖς ὑλικῶν ἐν πολέμῳ, τόσον μεταξὺ τοῦ ἐσωτερικοῦ καὶ τοῦ θεάτρου τῶν ἐπιχειρήσεων, ὅσον καὶ μεταξὺ δύο σημείων ἐν τῇ στρατιωτικῇ ζώνῃ κειμένων, ἀποτελεῖ ἀντικείμενον ἰδιαιτέρας ὀργανώσεως, τῆς καλουμένης *ὑπηρεσίας μεταφορῶν*.

Αἱ ἐν εἰρήνῃ μεταφοραὶ τοῦ στρατοῦ ἐνεργοῦνται συνήθως κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον, καθ' ὃν καὶ αἱ τοῦ ἀστικοῦ πληθυσμοῦ, ἀλλ' ἐν πολέμῳ τὰ πράγματα διαφέρουσι, καθόσον τότε αἱ στρατιωτικαὶ ὑπηρεσίαι τῶν μεταφορῶν ἔχουσιν ἀποστολήν, ἀφ' ἑνὸς μὲν τὴν μεταφορὰν τῶν διὰ τὴν συγκρότησιν τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας καὶ διὰ τὰς ἀνάγκας τῶν ἐπιχειρήσεων ἀναγκαιούντων στρατευμάτων καὶ ὑλικοῦ, ὡς καὶ διὰ τὴν ἀποστράτευσιν αὐτοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ τὴν ἐξασφάλισιν τοῦ κανονικοῦ ἀνεφοδιασμοῦ τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας εἴς τε προσωπικὸν καὶ ὑλικὸν καὶ τέλος τὴν ἐπαναφορὰν εἰς ὡρισμένα σημεῖα τῶν ὑπὸ τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας πρὸς τὰ ὀπίσω διακομιζομένων προσωπικοῦ καὶ ὑλικοῦ (διακομιδαί).

Ἅμα τῇ ἐπιστρατεύσει τίθενται εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν αἱ ἐνδιαφέρουσαι αὐτὸν γραμμαὶ συγκοινωνιῶν, ὅστις μεταβιβάζει τὴν ἐξουσίαν του ταύτην εἰς τὸν ἀρχι-

Digitized by Google

στράτηγον, διὰ τὰ ἐνδιαφέροντα τὰς ἐπιχειρήσεις τμήματα τῶν γραμμῶν τούτων. Ὁ ἀρχιστράτηγος τηρεῖ ὑπὸ τὴν ἄμεσον αὐτοῦ ἐξουσίαν μέρος τῶν γραμμῶν συγκοινωνιῶν, μεταβιβάζει δὲ διὰ τὰς λοιπὰς τὴν σχετικὴν ἐξουσιοδότησιν πρὸς τοὺς διοικητὰς τῶν μεγάλων μονάδων.

***Εἴδη μεταφορῶν.*** Αἱ ἐν ἐκστρατείᾳ, στρατιωτικαὶ μεταφοραὶ διαιροῦνται: α΄) Εἰς τὰς μέχρι πέρατος τῆς στρατηγικῆς συγκεντρώσεως, β΄) εἰς τὰς μετὰ τὸ πέρας τῆς στρατηγικῆς συγκεντρώσεως. Κατὰ τὴν α΄ περίοδον ἀπαιτεῖται διὰ τὴν συγκέντρωσιν τοῦ στρατοῦ ἡ διαδοχική, ἀναλόγως τῆς φύσεως καὶ τῆς σειρᾶς ἐπείγοντος, ἐκτέλεσις ὡρισμένων μεταφορῶν ἐξ ἁπάσης τῆς χώρας πρὸς τὴν ὑπὸ τοῦ ἀρχιστρατήγου καθορισθεῖσαν ζώνην. Αἱ μεταφοραὶ τῆς περιόδου ταύτης τῆς συγκεντρώσεως δύνανται νὰ διαιρεθῶσιν εἰς: α΄) Μεταφορὰς προκαλύψεως, σκοπούσας τὴν ἐξασφάλισιν τῆς ὅσον τὸ δυνατὸν ταχυτέρας συγκεντρώσεως εἰς ὡρισμένα σημεῖα μονάδων, λαμβανομένων εἴτε ἐκ τῶν παραμεθορίων περιοχῶν εἴτε ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ. β΄) Μεταφορὰς ἐπιστρατεύσεως, δι᾽ ὧν ἐξασφαλίζεται ἡ μετακίνησις ἀτόμων, ἀποσπασμάτων, κτηνῶν καὶ ὑλικῶν διὰ τὴν εἰς τὰ κέντρα ἐπιστρατεύσεως ἐμπόλεμον συγκρότησιν τῶν στρατιωτικῶν μονάδων καὶ ὑπηρεσιῶν. γ΄) Μεταφορὰς συγκεντρώσεως, δι᾽ ὧν ἐπιτυγχάνεται ἡ μεταφορὰ ἀπὸ τῶν ἑδρῶν ἐπιστρατεύσεως τῶν ἐπιστρατευθεισῶν μεγάλων μονάδων εἰς τὴν ὡρισμένην ζώνην συγκεντρώσεως. δ΄) Μεταφορὰς ἀνεφοδιασμοῦ, ὑποδιαιρουμένας εἰς δύο κατηγορίας: τὰς ἐκτελουμένας κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν μεταφορῶν συγκεντρώσεως, ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν διὰ τὸν κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἀνεφοδιασμὸν τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ διὰ τὴν συγκρότησιν τῶν πρώτων ἀποθεμάτων καὶ τὰς ἐκτελουμένας κατ᾽ ἀρχὴν εὐθὺς ἅμα τῷ πέρατι τῶν μεταφορῶν συγκεντρώσεως καὶ πρὸ τῆς ἐνάρξεως τῶν ἐπιχειρήσεων, πρὸς ἀνεφοδιασμὸν τῶν διαφόρων ἀποθηκῶν καὶ κέντρων ἐφοδιασμοῦ. ε΄) Μεταφορὰς διακομιδῆς προσωπικοῦ καὶ ὑλικῶν.

Κατὰ τὴν β΄ περίοδον (τῶν ἐπιχειρήσεων) ἐνεργοῦνται μεταφοραὶ ἐπιβαλλόμεναι ὑπὸ τῶν ἀναγκῶν τῆς διεξαγωγῆς τῶν ἐπιχειρήσεων καὶ τῆς συντηρήσεως τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας, ἤτοι μεταφοραὶ ἀνεφοδιασμοῦ (τρόφιμα, πυρομαχικὰ κτλ.) καὶ τοιαῦται διακομιδῶν (τραυματίαι, ἀσθενεῖς, ἄχρηστον ὑλικὸν κτλ.), ὡς καὶ μεταφοραὶ στρατευμάτων διὰ τὰς ἀνάγκας τῶν ἐπιχειρήσεων, ἢ πρὸς ἀμοιβαίαν ἀντικατάστασιν. Τέλος, κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἀποστρατεύσεως, ἐκτελοῦνται μεταφοραὶ μονάδων πρὸς τὸ ἐσωτερικόν, ἢ μεμονωμένων ἀτόμων πρὸς τὰς ἑστίας των, ἢ μεταφοραὶ ὑλικοῦ.

***Μέσα ἐκτελέσεως τῶν στρατιωτικῶν μεταφορῶν.*** Ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης αἱ μεταφοραὶ διαιροῦνται εἰς *σιδηροδρομικάς, ὁδικάς, θαλασσίας, διὰ πλωτῶν ὁδῶν* καὶ *ἐναερίους*.

*Σιδηροδρομικαὶ μεταφοραί.* Ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ ἀποτελεῖ κατ᾽ ἀρχὴν ἓν τῶν μεγαλυτέρας ἀποδόσεως καὶ συχνάκις τὸ ταχύτερον μέσον μεταφορᾶς. Ἡ κανονικοῦ πλάτους σιδηροδρομικὴ γραμμὴ (1,44) ἀναλόγως τῶν τεχνικῶν συνθηκῶν, ὑφ᾽ ἃς κατεσκευάσθη, ἐπιτρέπει τὴν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον πυκνὴν κυκλοφορίαν συρμῶν, δυναμένων νὰ μεταφέρωσιν εἰς μακρὰς ἀποστάσεις μέσον ὠφέλιμον βάρος 300—400 τόννων μὲ μέσην ὡριαίαν ταχύτητα 20—25 χιλιομέτρων. Τὸ πῦρ τοῦ ἐχθροῦ μικρὰς μόνον βλάβας δύναται νὰ προξενήσῃ (ἐξαιρέσει τεχνικῶν τινων ἔργων καὶ ἄλλων εὐπαθῶν σημείων, ὡς μηχανοστάσια, ὑδραυλικαὶ ἐγκαταστάσεις κλπ.), αἱ δὲ ἐναέριοι ἐπιδρομαὶ τοῦ ἐχθροῦ δύνανται νὰ παρενοχλήσωσι καὶ δυσχεράνωσι τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ παραλύσωσι τελείως αὐτήν. Ἡ κατάλληλος στρατιωτικὴ ὀργάνωσις τοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου ἐπιτρέπει ἐν τῷ θεάτρῳ τῶν ἐπιχειρήσεων τὴν ὑπὸ τοὺς καλυτέρους ὅρους χρησιμοποίησιν τῶν γραμμῶν πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῶν ἀναγκῶν τοῦ στρατοῦ, δι᾽ ὃ καὶ ἡ κανονικοῦ πλάτους σιδηροδρομικὴ γραμμή, ὑπὸ καλὰς συνθήκας ἀποδόσεως, ἀποτελεῖ λαμπρὸν μέσον, οὗτινος ἡ ἐντατικὴ ἐκμετάλλευσις εἶναι ἀπαραίτητος, ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν ἵνα ἀχθῶσιν αἱ μεγάλαι μονάδες ἐγγὺς τῆς ζώνης τῆς χρησιμοποιήσεώς των, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ ἵνα ἐξασφαλισθῶσιν αἱ ἀπαραίτητοι πρὸς συντήρησίν των καὶ τὰς ἀνάγκας τοῦ ἀγῶνος μεταφοραί.

Ἡ μετρικὴ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ (πλάτους 0,75—1 μ.), λόγῳ τῆς μικρᾶς αὐτῆς ἀποδόσεως, περιοριζομένης τόσον ὑπὸ τοῦ μικροῦ ὠφελίμου φορτίου τοῦ δυναμένου νὰ μεταφερθῇ δι᾽ ἑνὸς συρμοῦ (50—100 τόννοι), ὅσον καὶ ὑπὸ τῆς μικρᾶς ἀποδόσεως εἰς ἀριθμὸν συρμῶν, ἀποτελεῖ βοηθητικὸν μέσον μεταφορῶν. Εἰς τὰ σημεῖα ἐπαφῆς τῶν διαφόρου πλάτους γραμμῶν ἀπαιτεῖται ἐκτέλεσις μεταφορτώσεων, ἥτις ἀπορροφεῖ σημαντικὸν προσωπικὸν καὶ χρόνον.

Ἡ στενὴ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ (πλάτους 0,60 μ.), λόγῳ τῆς λίαν περιωρισμένης ἀποδόσεώς της (μέσον ὠφέλιμον φορτίον ἑνὸς συρμοῦ: 30 τόννοι) εἶναι ἐντελῶς τοπικῆς σημασίας, χρησιμοποιουμένη κυρίως διὰ τὰς μεταφορὰς διανομῶν ὑλικοῦ καὶ ἐφοδίων καὶ ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὰ λοιπὰ σιδηροδρομικὰ δίκτυα καὶ τὰς ὁδικὰς συγκοινωνίας. Τὸ σχετικῶς εὐχερὲς τῆς κατασκευῆς της (δὲν ἀπαιτεῖ σοβαρὰ τεχνικὰ ἔργα) καθιστᾷ αὐτὴν κατ᾽ ἐξοχὴν γραμμὴν ἐκστρατείας, κατασκευαζομένην κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ἐπιχειρήσεων, εἴτε διὰ νὰ ἐξασφαλίσῃ προσωρινὴν συγκοινωνίαν καταστραφείσης ἄλλου πλάτους γραμμῆς, εἴτε διὰ νὰ συνδέσῃ φιλίαν γραμμὴν μετὰ καταληφθείσης ἐχθρικῆς τοιαύτης, εἴτε τέλος διὰ τὴν προέκτασιν ὑπαρχούσης κανονικοῦ πλάτους γραμμῆς. Ἡ ἐγκατάστασις τῶν στενῶν γραμμῶν ἀποφασίζεται ὑπὸ τοῦ ἀρχιστρατήγου ἢ τοῦ διοικητοῦ στρατιᾶς καὶ πραγματοποιεῖται διὰ τῶν διατιθεμένων ὑπ᾽ αὐτοῦ σιδηροδρομικῶν μονάδων.

Οἱ ἐναέριοι σιδηρόδρομοι χρησιμοποιοῦνται εἰς λίαν ἀνώμαλα ἐδάφη διὰ τὴν διευκόλυνσιν τοῦ ἀνεφοδιασμοῦ καὶ αὐτῶν ἔτι τῶν διακομιδῶν τῶν στρατευμάτων κατὰ τὴν στασιμότητα. Ἡ ἐγκατάστασίς των συνήθως εἶναι λίαν δυσχερὴς καὶ πολύπλοκος, ἡ δὲ ἀπόδοσις αὐτῶν ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ πάχους τοῦ κάλω, τῆς κινητηρίου δυνάμεως καὶ τῆς φύσεως τοῦ ἐδάφους. Ἐναέριος σιδηρόδρομος μήκους 8 χιλιομέτρων, μὲ ἀνοίγματα 400—500 μ. δύναται νὰ ἔχῃ ἀπόδοσιν 5 τόννων καθ᾽ ὥραν.

*Ὁδικαὶ μεταφοραί.* Αὗται ἐνεργοῦνται: α΄) δι᾽ αὐτοκινήτων β΄) διὰ κτηνῶν (ὀχήματα ἑλκόμενα ὑπὸ κτηνῶν, ἢ κτήνη φορτούμενα). Ὁδικὸν δίκτυον, ἐπαρκῶς ἀνεπτυγμένον, καὶ δὴ ὠργανωμένον καὶ κατάλληλον δι᾽ ἐντατικὴν κυκλοφορίαν βαρέων ὀχημάτων, ἐπιτρέπει τὴν ἐνίσχυσιν τῶν διὰ τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν ἐκτελουμένων μεταφορῶν ἐν περιπτώσει τοπικῆς ἢ παροδικῆς ἀνεπαρκείας τῶν γραμμῶν τούτων, ἀλλὰ καὶ ἐξυπηρετεῖ τὸν ἐν ἐκστρατείᾳ στρατόν, ἐκεῖ ὅπου δὲν ὑπάρχουσιν ἄλλου εἴδους συγκοινωνίαι. Αἱ ὁδοὶ συνεπῶς δύνανται, ἀναλόγως τῶν περιπτώσεων, νὰ αὐξήσωσιν ἢ καὶ νὰ παρατείνωσι τὰς σιδηροδρομικὰς γραμμάς, εἰσδύουσαι πανταχοῦ ὅπου ἐπιβάλλουσιν αἱ ἀνάγκαι τοῦ ἐν ἐκστρατείᾳ στρατοῦ. Ἀναλόγως τοῦ πλάτους καὶ τῆς ἀντοχῆς τῶν ὁδῶν, αὗται ἐπιτρέπουσι τὴν ἐπ᾽ αὐτῶν ἐκτέλεσιν μεταφορῶν δι᾽ αὐτοκινήτων ἢ ἑλκομένων ὑπὸ κτηνῶν ὀχημάτων ἢ φορτηγῶν κτηνῶν, ταυτοχρόνως ἢ κεχωρισμένως κατὰ μίαν ἢ ἀμφοτέρας τὰς κατευθύνσεις. Ἡ ἀπόδοσις τοῦ ὁδικοῦ δικτύου ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ εἴδους τῶν ὁδῶν, τῆς χαράξεώς των, τῆς διατάξεώς των, τῆς συντηρήσεώς των, τῶν τεχνικῶν ἔργων καὶ τῆς καλῆς ὀργανώσεως τῆς ἐπ᾽ αὐτῶν κυκλοφορίας. Κατ᾽ ἀντίθεσιν πρὸς τὸ σιδηροδρομικὸν δίκτυον, τὸ ὁδικὸν τοιοῦτον ἐπιδέχεται σχετικὴν ἀποκέντρωσιν κατὰ μεγάλας μονάδας, ἐπιβεβλημένην ἄλλως τε ὑπὸ τῆς ἀνάγκης τῆς ταχείας καὶ ἀπροσκόπτου ἐκτελέσεως τῶν ὁδικῶν μεταφορῶν, Ἡ ἀποκέντρωσις αὕτη δὲν εἶναι ἀπόλυτος, διότι ὁ ἀρχιστράτηγος τηρεῖ συνήθως ὑπὸ τὴν ἄμεσον δικαιοδοσίαν του (μέσῳ κυρίως τῆς μετόπισθεν) τὰς γενικοῦ ἐνδιαφέροντος ὁδικὰς ἀρτηρίας, ἔστω καὶ ἂν αὗται περιλαμβάνωνται εἰς τὴν περιοχὴν μεγάλης τινὸς μονάδος.

Ἡ δι᾽ αὐτοκινήτων μεταφορὰ ἀποτελεῖ μέσον εὔκαμπτον, ἀρκετὰ μεγάλης ἀποδόσεως (μέση ταχύτης 15 χιλιόμετρα καθ᾽ ὥραν) μικρᾶς τρωτότητος καὶ δυνάμενον νὰ προσαρμοσθῇ καὶ ἐξυπηρετήσῃ ταχέως πάσας τὰς παρουσιαζομένας ἀνάγκας καὶ ἑπομένως νὰ ἀντικαταστήσῃ κατὰ τὸ πλεῖστον τὰ λοιπὰ κύρια μέσα μεταφορῶν, ἐν περιπτώσει ἐλλείψεως, ἀνεπαρκείας ἢ διακοπῆς αὐτῶν. Ἡ χρησιμοποίησίς των ὅμως εἶναι πολυδάπανος, λόγῳ τῆς μεγάλης τιμῆς τοῦ ὑλικοῦ, τῆς ταχείας φθορᾶς του, τῆς ἀπαιτουμένης δαπάνης διὰ τὴν συντήρησίν του καὶ τοῦ σχετικῶς μικροῦ ὠφελίμου φορτίου, ὅπερ δύνανται νὰ μεταφέρωσιν ἢ ρυμουλκήσωσι· τέλος ἀπαιτεῖται σημαντικὸν εἰδικὸν προσωπικόν, ὡς καὶ ὁδοὶ κατάλληλοι διὰ τὴν κίνησίν των. Τὰ αὐτοκίνητα εἰς ἐξαιρετικὰς μόνον περιπτώσεις δύνανται νὰ ἐξασφαλίσωσι τὴν μεταφορὰν μαχίμων μονάδων μεθ᾽ ὅλου τοῦ ὑλικοῦ των μάχης. Τὰ ὑπὸ τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας χρησιμοποιούμενα αὐτοκίνητα εἶναι α΄) βαρέα, ὠφελίμου φορτίου 2, 3, 4 καὶ 5 τόννων β΄) ἐλαφρά, ἅτινα, ἀναλόγως τοῦ τύπου των, μεταφέρουσι 250 χιλιόγραμμα, 600 χιλιόγραμμα, 1 τόννον, 1 ½ τόννον. Ἔχουσιν ἀπόδοσιν κατὰ πολὺ κατωτέραν τῶν βαρέων, ἀλλὰ δύνανται νὰ χρησιμοποιηθῶσι πλεονεκτικῶς ἐπὶ προχείρων ὁδῶν μὲ μικρὰ τεχνικὰ ἔργα, ὡς καὶ πλειστάκις ἐπὶ στενῶν ὁδῶν. Ἐπὶ πλέον, κατόπιν εἰδικῆς διευθετήσεως, χρησιμοποιοῦνται ἐπωφελῶς διὰ τὰς διακομιδὰς τραυματιῶν καὶ ἀσθενῶν, γ΄) ἐπιβατικὰ αὐτοκίνητα δι᾽ ἀναγνωρίσεις. συνδέσμους κτλ. Ἓν αὐτοκίνητον, ἀναλόγως τοῦ τύπου του, δύναται νὰ μεταφέρῃ 12—22 ἄνδρας, 1—5 τόννους ὑλικοῦ, 3—5 ἵππους, 1 ἅρμα μάχης. Αἱ διὰ κτηνῶν (ὀχήματα ἑλκόμενα ὑπὸ κτηνῶν, φορτηγὰ κτήνη) μεταφοραὶ εἶναι λίαν εὔκαμπτοι καὶ μικρᾶς σχετικῶς τρωτότητος, ἀλλ᾽ ἀπαιτοῦσι πολυάριθμον προσωπικόν. Ἡ ἀπόδοσίς των εἶναι μικρά, λόγῳ τῆς βραδύτητος τῆς κινήσεως καὶ τῆς ταχείας κοπώσεως τῶν τε ἀνδρῶν καὶ κτηνῶν. Κανονικὴ χρησιμοποίησις τούτων δέον νὰ προβλέπεται μόνον διὰ μικρὰς μεταφορὰς ἢ λόγῳ τοῦ ἀδυνάτου τῆς χρησιμοποιήσεως ἑτέρου μείζονος ἀποδόσεως μέσου. Κυρίως χρησιμοποιοῦνται διὰ τὰς διανομὰς ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τῶν μεγάλων μονάδων καὶ ἐπὶ τῶν μετρίως συντηρουμένων ὁδῶν. Οἱ ἡμερήσιοι σταθμοὶ πορείας δὲν πρέπει νὰ ὑπερβαίνωσι τὰ 25—30 χιλιόμετρα, μὲ κανονικὴν ταχύτητα τὸ βάδην. Χρησιμοποίησις μεγάλης ταχύτητος θὰ ἐπέφερε ταχεῖαν ἀχρήστωσιν τῶν κτηνῶν.

*Θαλάσσιαι μεταφοραί.* Αὗται γίνονται ἀναλόγως τῶν περιστάσεων, εἴτε πρὸς σύνδεσιν θεάτρων ἐπιχειρήσεων χωριζομένων ἀπ᾽ ἀλλήλων ἢ ἀπὸ τῆς λοιπῆς χώρας διὰ τῆς θαλάσσης, ὁπότε ἀποτελοῦσι τὰς μοναδικὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν, εἴτε διὰ τὴν ἐνίσχυσιν τῶν ἐπὶ ἑνὸς θεάτρου ἐπιχειρήσεων μεταφορῶν, τῶν ἐκελουμένων δι᾽ ἄλλων μέσων συγκοινωνίας. Ἡ ἀπόδοσίς των ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ καὶ τῆς χωρητικότητος τῶν διατιθεμένων πλοίων, ὡς καὶ ἐκ τῆς ἀποδόσεως τῶν λιμένων ἀφετηρίας καὶ τέρματος, ὧν ἡ ἐκμετάλλευσις δέον νὰ ἐνεργῆται ἐν στενῷ συνδυασμῷ μὲ τὴν τῶν λοιπῶν μέσων συγκοινωνίας (σιδηρόδρομοι, ὁδοὶ) τῶν ἐξυπηρετούντων τοὺς λιμένας τούτους. Ὑπὸ καλὰς συνθήκας ἐκμεταλλεύσεως καὶ ἀσφαλείας ἀποτελοῦσιν ἰσχυρότατον μέσον μεταφορῶν, ἐξυπηρετοῦν μεγάλως καὶ ἀπὸ πάσης ἀπόψεως τὰς ἀνάγκας τῶν στρατευμάτων. Ἐννοεῖται ὅτι διὰ τὰς ἐντατικὰς διὰ θαλάσσης μεταφορὰς δέον, κατὰ τὸ δυνατόν, οἱ λιμένες ἐπιβιβάσεως καὶ ἀποβιβάσεως νὰ διαθέτωσιν ἐπαρκεῖς ἐγκαταστάσεις (κρηπιδώματα, προβλῆτας, ἀποθήκας) ὡς καὶ μέσα (φορτηγίδας, ρυμουλκά, γερανοὺς κτλ.), ἐπάρκειαν ὕδατος κτλ. Ὁμοίως νὰ ἐπιτρέπωσι τὴν φόρτωσιν καὶ ἐκφόρτωσιν ἀτμοπλοίων μεγάλου βυθίσματος καὶ μὲ οἱανδήποτε ἀτμοσφαιρικὴν κατάστασιν, νὰ συνδέωνται μετὰ τοῦ ἐσωτερικοῦ δι᾽ ἐπαρκοῦς δικτύου συγκοινωνιῶν καὶ νὰ παρουσιάζωσιν ἀσφάλειαν ἀπὸ τῶν κινδύνων ἐχθρικῆς προσβολῆς ἐναερίου ἢ δι᾽ ὑποβρυχίων. Τὰ χρησιμοποιούμενα πλοῖα, ἅτινα ἢ ναυλώνονται ἢ ἐπιτάσσονται, εἶναι α΄) ἐπιβατικά, παραλαμβάνοντα συνήθως μόνον προσωπικόν, β΄) μεικτά, παραλαμβάνοντα ἐπιβάτας, κτήνη καὶ ὑλικά, γ΄) φορτηγά, ἅτινα κυρίως χρησιμοποιοῦνται διὰ μεταφορὰς ὑλικοῦ. Διὰ τὰς μεταφορὰς ἀσθενῶν καὶ τραυματιῶν χρησιμοποιοῦνται κατάλληλα ἐμπορικὰ ἀτμόπλοια, ἁρμοδίως διασκευαζόμενα.

*Μεταφοραὶ διὰ πλωτῶν ὁδῶν.* Αἱ πλωταὶ ὁδοὶ (διώρυγες, πλωτοὶ ποταμοί), δύνανται, ὅταν ὑπάρχωσι, νὰ προσφέρωσι σημαντικὰς ὑπηρεσίας διὰ μεταφορὰς μεγάλου ὠφελίμου φορτίου, ἰδίως δὲ ὑλικῶν ὀγκωδῶν καὶ βαρέων.

*Ἐναέριοι μεταφοραί.* Αὗται, σήμερον τοὐλάχιστον, δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ὦσι συνήθους χρήσεως ἐν καιρῷ πολέμου· ἐν τούτοις δύναταί τις νὰ προβλέψῃ ὅτι, σὺν τῷ χρόνῳ, μὲ τὴν πρόοδον τῶν ἀεροπορικῶν μέσων, θὰ λάβωσιν αὗται μείζονα ἔκτασιν, διότι ἐν Εὐρώπῃ ἐπικρατεῖ σήμερον τοιαύτη τάσις. Ἀεροπλάνα δύνανται νὰ χρησιμοποιηθῶσι διὰ μεταφορὰς α΄) εἰδικῶν ἀποσπασμάτων, β΄) ἐπειγόντων ἐγγράφων καὶ ταχυδρομείου, γ΄) μικρῶν ποσοτήτων ἐφοδίων εἰς ἐμπλακέντα τμήματα, δ΄) τραυματιῶν. Ὅσον ἀφορᾷ τὰς δι᾽ ἀεροπλάνων μεταφοράς, δεδομένου ὅτι διὰ τὴν προσγείωσιν ἀεροπλοίου χρειάζονται εἰδικαὶ ἐγκαταστάσεις καὶ ἔδαφος ἐκ τῶν προτέρων ἀναγνωρισθὲν ὡς καὶ εἰδικὸν σχετικὸν προσωπικόν, ἡ χρησιμοποίησις τοῦ ἀεροπλοίου διὰ τὰς ἄνω μεταφοράς, μόνον εἰς ἀπολύτως ἐξαιρετικὰς περιπτώσεις δύναται νὰ λάβῃ χώραν.

***Σύνδυασμὸς χρησιμοποιήσεως τῶν διαφόρων μέσων μεταφορῶν.*** Πάντα τὰ διατιθέμενα μέσα μεταφορῶν δέον νὰ χρησιμοποιῶνται ἐν ἐκστρατείᾳ ἀλληλοσυμπληρούμενα, ἵνα οὕτω ἐπιτευχθῇ ἡ μεγίστη δυνατὴ ἐν τῷ συνόλῳ ἀπόδοσις αὐτῶν. Πρὸς τοῦτο ἐπιδιώκεται ἡ ἀποφυγὴ τῆς ἀκινητοποιήσεως πεφορτωμένων μεταφορικῶν μέσων, ὡς καὶ ἡ ὑπερπλήρωσις τῶν σταθμῶν μεταφορῶν. Τέλος ἀπαιτεῖται ἀπαραιτήτως ἡ ὀργάνωσις τῶν μεταφορῶν νὰ ᾖ τοιαύτη, ὥστε νὰ ἐξασφαλίζηται ἡ ἀπρόσκοπτος συνέχεια τοῦ ρεύματος τῶν μεταφορῶν διὰ τῆς ρυθμίσεως τῆς κυκλοφορίας καὶ τῆς ταχείας καὶ κανονικῆς ἐκτελέσεως τῶν φορτοεκφορτώσεων, ἀποφυγῆς δὲ τῆς ὑπερπληρώσεως καὶ συνεπῶς ἀχρηστώσεως τῶν ὁδῶν συγκοινωνίας.

***Σύγκρισις τῆς ἀποδόσεως τῶν διαφόρων μέσων μεταφορῶν.*** Ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ κανονικοῦ πλάτους, συρμοῦ 50 ὀχημάτων, μὲ μέσην ταχύτητα 20—25 χλμ. καθ᾽ ὥραν δύναται νὰ μεταφέρῃ 1 τάγμα ἢ 1 πυροβολαρχίαν (ὑλικὸν καὶ κτήνη) ἢ 300 τόννους ὑλικοῦ ἢ 200 κατακεκλιμένους ἀσθενεῖς ἢ τραυματίας (500 καθημένους). Ἡ μετρικὴ σιδηροδρομικὴ γραμμή, μέσης ὡριαίας ταχύτητος 20 χιλιομέτρων, μεταφέρει 450 ἄνδρας ἢ 80 ἵππους ἢ 50—80 τόννους ὑλικοῦ ἢ 80 κατακεκλιμένους ἄνδρας ἀσθενεῖς ἢ τραυματίας (150 καθημένους). Ἡ στενὴ σιδηροδρομικὴ γραμμή, μέσης ὡριαίας ταχύτητος 10 χλμ., μεταφέρει 30 τόν. ὑλικῶν. Μία μοῖρα τῶν 3 διμοιριῶν ἐλαφρῶν αὐτοκινήτων (15 ἐν ὅλῳ), μέσης ὡριαίας ταχύτητος 15 χλμ., μεταφέρει 450 ἄνδρας ἢ (κατόπιν ἀναλόγου διασκευῆς) 130 κτήνη ἢ 55 τόννους ὑλικοῦ. Ἡ ἀντίστοιχος μοῖρα βαρέων αὐτοκινήτων, μέσης ὡριαίας

Digitized by Google

ταχύτητος 10 χλμ. μεταφέρει 1.000 ἄνδρας ἢ 225 κτήνη ἢ 110 τόννους ὑλικοῦ. Μία διμοιρία ὑγειονομικῶν αὐτοκινήτων (15 αὐτοκίνητα) μεταφέρει 50 κατακεκλιμένους ἢ 160 καθημένους τραυματίας ἢ ἀσθενεῖς. Εἷς λόχος διτρόχων (180 δίτροχα) μεταφέρει 35 τόννους ὑλικοῦ, εἷς δὲ λόχος ἡμιονηγῶν (450 ἡμίονοι) ὁμοίως 35 τόννους. Εἷς στολίσκος 12 ἀεροπλάνων μεταφέρει 50 ἄνδρας ἢ 3 τόννους ὑλικῶν. Οἱ ἀριθμοὶ τῶν διὰ θαλάσσης ἢ πλωτῶν ὁδῶν μεταφορῶν εἶναι μεταβλητοὶ ἀναλόγως τῆς φύσεως τῶν μεταφορῶν, τῆς χωρητικότητος, τῆς διασκευῆς καὶ τῆς ταχύτητος τῶν πλοίων.

Ν. ΜΑΓΓΙΩΡΟΣ

— *[Λογιστ.] Μεταφορὰ* κατ' ἀρχὴν καλεῖται ἀντιγραφὴ κονδυλίων ἀφορώντων ποσὰ εἰς νόμισμα. Χρησιμοποιεῖται, ἑπομένως, ἡ ἔκφρασις αὕτη, ἰδίως: α) Ὁσάκις πρόκειται νὰ ἀντιγραφῶσι κονδύλια ἐξ ἑνὸς λογιστικοῦ βιβλίου εἰς ἄλλο, ὡς λ.χ. κατὰ τὴν σύνταξιν τοῦ Ἡμερολογίου, ὅπερ θὰ καταρτισθῇ διὰ μεταφορᾶς (ἀντιγραφῆς) τῶν ἐν τῷ Προχείρῳ Ἡμερολογίῳ ποσῶν. Ὡς ἐπίσης ὁ καταρτισμὸς τοῦ Καθολικοῦ, ὅστις ἀπαιτεῖ μεταφορὰν τῶν ποσῶν τοῦ Ἡμερολογίου, ταξινομουμένων ἐν τῷ Καθολικῷ κατὰ λογαριασμούς. β) Ὁσάκις, περαιωθέντος τοῦ φύλλου, ἐφ' οὗ κατεστρώθη λογαριασμός τις, οὗτος πρόκειται νὰ συνεχισθῇ εἰς ἄλλο φύλλον. Ἡ συνέχισις θὰ λάβῃ χώραν μεταφερομένων τῶν ἀθροισμάτων χρεώσεως καὶ πιστώσεως ἐπὶ κεφαλῆς τῶν οἰκείων στηλῶν τοῦ νέου φύλλου. γ) Ὁσάκις κονδύλιόν τι περιεχόμενον εἴς τινα λογαριασμόν, πρέπει δι' οἱονδήποτε λόγον νὰ ἀναγραφῇ εἰς ἄλλον. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ θὰ ἐνεργήσωμεν μεταφορὰν ἀπὸ τοῦ ἑνὸς λογαριασμοῦ εἰς τὸν ἕτερον. Ἐπειδὴ δὲ διαγραφαὶ ἀπαγορεύονται εἰς τὰ λογιστικὰ βιβλία, ἡ μεταφορὰ θὰ λάβῃ χώραν δι' ἀντιλογισμοῦ ἐν τῷ πρώτῳ λογαριασμῷ καὶ ἀναγραφῆς ἴσου ποσοῦ εἰς τὸ οἰκεῖον μέρος ἐν τῷ δευτέρῳ. Προκειμένου περὶ μεταφορᾶς ἀπὸ λογαριασμοῦ εἰς λογαριασμόν, σημειωτέον ὅτι αὕτη θὰ λάβῃ χώραν ἀπὸ τῆς χρεώσεως τοῦ ἑνὸς εἰς τὴν χρέωσιν τοῦ ἄλλου, ἢ ἀπὸ πιστώσεως εἰς πίστωσιν. Μεταφορὰ ἀπὸ χρεώσεως εἰς πίστωσιν καὶ τἀνάπαλιν εἶναι ἀδύνατος.

Σ. ΣΥΡΜΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Χρηματ.] Μεταφορὰ* καλεῖται ἡ ἀναβολὴ ἐκτελέσεως πράξεως ἐπὶ προθεσμίᾳ δι' ἐκτέλεσίν της κατὰ τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν. Πρὸς ἑρμηνείαν τοῦ ὅρου ἂς λάβωμεν τὸ ἑξῆς παράδειγμα: Ὁ Α δι' ἑνὸς χρηματιστοῦ Χ ἠγόρασε παρὰ τοῦ χρηματιστοῦ Ψ, ἀντιπροσωπεύοντος τὸν πωλητὴν Π, ἕνα τίτλον ἀντὶ δρχ. 500.

1. Ὁ πωλητὴς θέλει νὰ παραδώσῃ τὸν τίτλον καὶ νὰ παραλάβῃ τὰ χρήματα, ἀλλ' ὁ ἀγοραστὴς δὲν θέλει νὰ παραλάβῃ τὸν τίτλον οὔτε νὰ παραδώσῃ τὰ χρήματα, ἀλλὰ νὰ μεταφέρῃ τὴν πρᾶξιν. Τὴν πρόθεσίν του ταύτην ἀνακοινοῖ τῷ χρηματιστῇ του Χ. Ἔστω ὅτι ἡ τιμὴ τοῦ τίτλου τοῖς μετρητοῖς κατὰ τὴν ἐκκαθάρισιν εἶναι 450. Ὁ χρηματιστὴς ἐξευρίσκει τὸν Κ, διαθέτοντα κεφάλαια, καὶ λέγει αὐτῷ: Δανείσατέ μου δρ. 450 ἀπὸ σήμερον μέχρι τῆς ἑπομένης χρηματιστηριακῆς λήξεως, λάβετε ὡς ἐγγύησιν ἕνα τίτλον καὶ κατὰ τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν μοῦ ἐπιστρέφετε τὸν τίτλον καὶ σᾶς ἐπιστρέφω τὰς 450 δρ. πλέον, ἐπὶ παραδείγματι, δρ. 2 διὰ τὸν τόκον τῶν χρημάτων, ἅτινα διαθέτετε, ἢ δι' ἀμοιβὴν τῆς ὑπηρεσίας, ἣν μοῦ προσφέρετε. Οὕτως ὁ χρηματιστὴς ἐξευρίσκει δρ. 450, λαμβάνει καὶ παρὰ τοῦ Α ἑτέρας 50 καὶ παραδίδει τὰς 500 δρ. εἰς τὸν χρηματιστὴν Ψ, παρ' οὗ λαμβάνει τὸν τίτλον, ὃν παραδίδει εἰς τὸν Κ. Κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον ὁ πωλητὴς ἐξεκαθάρισε τὴν θέσιν του, ὁ δὲ ἀγοραστὴς μετεφέρθη παρὰ τοῦ Κ. Ὁ Κ οὕτως ἔχει ἓν ἀσφαλὲς εἰσόδημα ἐκ τῆς διαθέσεως τῶν κεφαλαίων του καὶ οὐδὲν διακινδυνεύει, καθ' ὅσον καὶ τὸν τίτλον ἔχει ὡς ἐγγύησιν καὶ ὁ χρηματιστὴς εἶναι ὑπεύθυνος διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἀντιστρόφου πράξεως κατὰ τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν. Κατὰ τὴν ὡς ἄνω μεταφοράν, ὁ Α λέγεται *μεταφερόμενος* καὶ ὁ *Κ μεταφέρων*. Ἡ τιμὴ 450, πρὸς ἣν ἔγινεν ἡ μεταφορά, εἶναι ἡ ἐν τῷ χρηματιστηρίῳ ὁριζομένη τιμὴ συμψηφισμοῦ, ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ὁποίας γίνονται πᾶσαι αἱ μεταφοραὶ τοῦ τίτλου τούτου κατὰ τὴν ἐκκαθάρισιν. Τὸ ποσόν, τὸ διδόμενον διὰ τὸν τόκον τῶν δανεισθέντων χρημάτων, καλεῖται *ποσοστὸν μεταφορᾶς* (report), κοινῶς δὲ *μεταφορικὸς τόκος*. Ἡ ὡς ἄνω μεταφορὰ δύναται νὰ νοηθῇ καὶ ὡς ἑξῆς: ὁ Κ. ἀγοράζει παρὰ τοῦ χρηματιστοῦ Α τοῖς μετρητοῖς ἕνα τίτλον καὶ πωλεῖ αὐτῷ συγχρόνως τὸν αὐτὸν τίτλον ἐπὶ προθεσμίᾳ, ἤτοι ὡς δύο σύγχρονοι πράξεις, ἀγορὰ τοῖς μετρητοῖς καὶ πώλησις ἐπὶ προθεσμίᾳ τοῦ αὐτοῦ χρηματιστηριακοῦ πράγματος, ἀλληλένδετοι καὶ πρὸς ἐπίτευξιν μιᾶς ἑνιαίας πράξεως γιγνόμεναι.

2) Ἂν ὑποτεθῇ ὅτι ὁ ἀγοραστὴς Α θέλει νὰ παραλάβῃ τὸν τίτλον, ἀλλ' ὁ πωλητὴς Π δὲν κατέχει τὸν τίτλον ἵνα τὸν παραδώσῃ, οὔτε προέβη εἰς τὴν ἀγορὰν τοῦ τίτλου, ἵνα κλείσῃ τὴν πρᾶξίν του, τότε ὁ Π θὰ ζητήσῃ παρὰ τοῦ χρηματιστοῦ Ψ ἵνα τὸν μεταφέρῃ. Ὁ Ψ θ' ἀπευθυνθῇ εἴς τινα Κ κάτοχον τοῦ τίτλου καὶ θὰ τοῦ εἴπῃ: Χορηγήσατέ μου ἕνα τίτλον καὶ λάβετε δρ. 450 (τὴν τιμὴν συμψηφισμοῦ) καὶ κατὰ τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν θὰ σᾶς ἐπιστρέψω τὸν τίτλον σας καὶ μοῦ ἐπιστρέφετε δρ. 448, ἤτοι τὰς 450 ἃς σᾶς ἔδωκα, μεῖον δρ. 2 διὰ τὴν ὑπηρεσίαν, ἣν μοῦ προσεφέρατε. Ἡ τιμὴ αὕτη τῶν δρ. 2 καλεῖται déport. Οὕτως ὁ χρηματιστὴς Ψ, λαμβάνων τὸν τίτλον παρὰ τοῦ Κ, θὰ τὸν παραδώσῃ εἰς τὸν χρηματιστὴν Χ, παρ' οὗ θὰ λάβῃ δρ. 500, ἐξ ὧν 450 θὰ δώσῃ τῷ Κ καὶ 50 τῷ Π. Ὁ Κ ἐπώλησεν ἐνταῦθα τοῖς μετρητοῖς εἰς τὴν τιμὴν τοῦ συμψηφισμοῦ ἕνα τίτλον καὶ τὸν ἠγόρασε συγχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ εἰς τὴν τιμὴν τοῦ συμψηφισμοῦ μεῖον τὸ déport. Ὡς ἐγγύησιν ὅτι τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν θὰ γίνῃ ἡ ἀντίστροφος πρᾶξις, ἔχει ἀφ' ἑνὸς τὰς 450 δραχμὰς καὶ ἀφ' ἑτέρου τὸν χρηματιστήν. Ὁ Κ εἶναι ὁ μεταφέρων καὶ ὁ Π ὁ μεταφερόμενος.

Ἐν τῇ πράξει ἡ μεταφορὰ νοεῖται γενικῶς ὡς δύο ταυτόχρονοι πράξεις, μία τοῖς μετρητοῖς ἐπὶ τῇ τιμῇ συμψηφισμοῦ καὶ ἑτέρα ἀντίθετος ἐπὶ προθεσμίᾳ ἐπὶ τῇ τιμῇ συμψηφισμοῦ, πλέον τὸ report ἢ μεῖον τὸ déport, μεταξὺ τῶν αὐτῶν συμβαλλομένων. Ὑπὸ τὴν τοιαύτην ἐκδοχήν, ἀφ' ἑνὸς μὲν διατυποῦται λογιστικῶς, ἀφ' ἑτέρου δὲ χρησιμοποιεῖται διὰ τοὺς ἑξῆς σκοπούς: 1) Οἱ ἀγορασταί, οἱ μὴ θέλοντες νὰ παραλάβωσι τὰ ἀγορασθέντα, ἐντέλλονται τὴν μεταφοράν, ἤτοι διὰ τοῦ χρηματιστοῦ των πωλοῦσι τὰ ἀγορασθέντα τοῖς μετρητοῖς, ἀγοράζοντες αὐτὰ ταυτοχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ, ἀναβάλλοντες οὕτω τὴν ἐκτέλεσιν τῆς πράξεως. 2) Οἱ πωληταί, οἱ μὴ θέλοντες νὰ παραδώσωσι τὰ πωληθέντα, ἐντέλλονται τὴν μεταφοράν, ἤτοι ἀγοράζουσι ταῦτα τοῖς μετρητοῖς καὶ τὰ πωλοῦσι ταυτοχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ, ἀναβάλλοντες οὕτω τὴν ἐκτέλεσιν τῆς πράξεως. 3) Οἱ ἔχοντες διαθέσιμα κεφάλαια καὶ ἐπιθυμοῦντες νὰ τοποθετήσωσι ταῦτα ἐπικερδῶς διὰ χρονικὸν διάστημα μιᾶς χρηματιστηριακῆς ἐκκαθαρίσεως, δίδουσι ταῦτα τῷ χρηματιστῇ των πρὸς μεταφοράν· ὁ χρηματιστὴς των ἀγοράζει τοῖς μετρητοῖς χρηματιστηριακὰ πράγματα μεταφερόμενα ἐπὶ report καὶ πωλεῖ ταῦτα συγχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ. 4) Οἱ διαθέτοντες τίτλους καὶ ἐπιθυμοῦντες ἢ νὰ προμηθευθῶσι ρευστὸν χρῆμα διὰ τὸ χρονικὸν διάστημα μιᾶς ἐκκαθαρίσεως, ἢ νὰ εἰσπράξωσιν ἐνοίκιόν τι, δίδουσι τούτους εἰς τὸν χρηματιστήν των πρὸς μεταφοράν, ἐφόσον μεταφέρονται ἐπὶ déport, οὗτος δὲ πωλεῖ τούτους τοῖς μετρητοῖς, καὶ τοὺς ἐπαναγοράζει συγχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ. 5) Πολλοὶ πραγματικοὶ ἀγορασταί, οἵτινες θέλουσι νὰ παραλάβωσι τὰ ἀγορασθέντα, δέχονται νὰ μεταφερθῶσιν, ἐφόσον τὸ déport εἶναι ἐπικερδές, ἤτοι ἐντέλλονται τῷ χρηματιστῇ των νὰ πωλήσωσι τὰ ἀγορασθέντα τοῖς μετρητοῖς καὶ νὰ ἐπαναγοράσωσι ταῦτα, ἐπὶ ἥσσονι τιμῇ, ἐπὶ προθεσμίᾳ. 6) Πολλοὶ πραγματικοὶ πωληταί, οἵτινες θέλουσι νὰ παραδώσωσι τὰ πωληθέντα, δέχονται νὰ μεταφερθῶσιν, ἐφόσον τὸ report εἶναι μέγα, ἤτοι ἐντέλλονται τῷ χρηματιστῇ των ν' ἀγοράσῃ τὰ πωληθέντα τοῖς μετρητοῖς καὶ νὰ πωλήσῃ ταῦτα ταυτοχρόνως ἐπὶ προθεσμίᾳ εἰς τιμὴν ἀνωτέραν. 7) Πολλαχοῦ ὑπάρχουσι τράπεζαι καὶ γραφεῖα ἐνεργοῦντα μεταφορὰς δι' ἴδιον λογαριασμὸν ἔναντι τῶν πελατῶν των, ἐπὶ report διὰ τοὺς ἔχοντας ἀνάγκην κεφαλαίων καὶ ἐπὶ déport διὰ τοὺς ἔχοντας ἀνάγκην τίτλων. Κρατεῖ συνήθεια ὅπως τὰ ἔξοδα μεταφορᾶς λογίζωνται ἁπλᾶ, καίτοι ἡ μεταφορὰ ἀναλύεται εἰς δύο πράξεις.

Μεταξὺ τῶν νομικῶν μεγάλη εἶναι ἡ συζήτησις περὶ τῆς φύσεως τῆς πράξεως τῆς μεταφορᾶς. Εἶναι δάνειον ἐπὶ ἐνεχύρῳ τίτλων; Εἶναι δύο πράξεις χωρισταί, μία ἀγορὰ καὶ μία πώλησις; Ἢ μία ἑνιαία; Ἐκ τῆς μιᾶς ἢ τῆς ἑτέρας ἐκδοχῆς, κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα τῆς ἐκκαθαρίσεως πολλὰ ζητήματα δύνανται νὰ γεννηθῶσιν. Οὕτως, ἐὰν ἡ μεταφορὰ εἶναι δάνειον ἐπὶ ἐνεχύρῳ, ὁ μεταφέρων οὐδαμῶς δικαιοῦται νὰ θίξῃ τοὺς τίτλους, δὲν δύναται νὰ εἰσπράξῃ τὰ λήγοντα τοκομερίδια ἢ μερίσματα, τὰ λαχεῖα, ἂν τίτλος τις ἔτυχε λαχείου, δὲν δύναται νὰ χρησιμοποιήσῃ τὰς μετοχὰς ἵνα παρασταθῇ εἰς συνελεύσεις ἑταιρειῶν. Ἐνῷ, ἂν θεωρηθῇ ὅτι ἡ μεταφορὰ εἶναι δύο πράξεις κεχωρισμέναι, τότε δύναται νὰ χρησιμοποιήσῃ τοὺς τίτλους κατὰ τὸ δοκοῦν, ὑπόχρεως μόνον ὢν νὰ παραδώσῃ κατὰ τὴν ἑπομένην ἐκκαθάρισιν ἴσον ἀριθμὸν τίτλων τῆς αὐτῆς κατηγορίας, οὐχὶ ὅμως καὶ τοὺς αὐτούς. Εἶναι γεγονὸς ὅτι αἱ δύο αὗται πράξεις, ἐν τῇ βουλήσει τῶν συμβαλλομένων, εἶναι μία, καθόσον οὔτε ἡ πρώτη θὰ ἐγίνετο ἄνευ τῆς δευτέρας, οὔτε ἡ δευτέρα ἄνευ τῆς πρώτης.

Ἐν Ἑλλάδι, κατὰ τὸν νόμον 3632, ἡ μεταφορὰ θεωρεῖται ὡς ἴδιος τύπος συμβάσεως καὶ ὁρίζεται αὐτὴ (ἄρθρ. 23) ὡς σύμβασις, δι' ἧς συνομολογεῖται ταυτοχρόνως ἀφ' ἑνὸς ἡ πώλησις χρηματιστηριακῶν πραγμάτων τοῖς μετρητοῖς ἐπὶ τῇ τιμῇ συμψηφισμοῦ καὶ ἀφ' ἑτέρου ἡ ἐπαναγορὰ ἐπὶ προθεσμίᾳ τῶν αὐτῶν πραγμάτων ἐπὶ ὁριζομένῃ ὑπὸ τῶν συμβαλλομένων τιμῇ. Ὁ μεταφέρων καθίσταται κύριος τῶν χρεογράφων, ἀλλ' ὑποχρεοῦται ἐνοχικῶς εἰς τὴν ἐκπλήρωσιν τῆς συμβάσεως τῆς μεταφορᾶς, εἰς τὴν ἀπόδοσιν τῷ μεταφερομένῳ τῶν ἐκ τῆς εἰς τὸ ἄρτιον ἢ μετὰ λαχνοῦ κληρώσεως κερδῶν τῶν μεταφερομένων χρεογράφων, καὶ τῶν μερισμάτων καὶ τοκομεριδίων, ἐκτὸς εἰδικῆς συμφωνίας περὶ τοῦ ἐναντίου μεταξὺ μεταφέροντος καὶ μεταφερομένου.

Ἐπιτρέπεται ἐν Ἑλλάδι εἰς τοὺς χρηματιστὰς νὰ ἐνεργῶσι μεταφορὰς δι' ἴδιον λογαριασμόν. Ἡ σύμβασις μεταφορᾶς εἶναι χρηματιστηριακὴ συναλλαγὴ καὶ ὡς τοιαύτη εἶναι ἔγκυρος, ἐφόσον συναφθῇ χρηματιστηριακῶς. Ἐν Ἀθήναις αἱ μεταφοραὶ ἐντὸς τοῦ χρηματιστηρίου γίνονται πρὸ μεσημβρίας τὴν πρώτην ἡμέραν τῆς ἐκκαθαρίσεως, ἤτοι τὴν 1ην καὶ 16ην ἑκάστου μηνός. Ἡ πρᾶξις μεταφορᾶς δὲν ὑπόκειται εἰς τέλος χαρτοσήμου ἐν Ἀθήναις. Τὰ μεσιτικὰ ἐν Ἀθήναις εἶναι τὰ 2/5 τῶν κεκανονισμένων διὰ τὰς πράξεις ἐπὶ τίτλων καὶ 0,50 ‰ ἐπὶ τοῦ συναλλάγματος καὶ πολυτίμων μετάλλων, λογίζονται δ' ὡς ἐπὶ ἁπλῆς πράξεως.

ΤΡ. ΚΕΡΑΜΙΔΑΣ

— *[Ἠλεκτρ.]* Καλοῦνται ἀριθμοὶ μεταφορᾶς αἱ ποσότητες, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων προσδιορίζεται ἡ ταχύτης, μεθ' ἧς κινοῦνται τὰ ἰόντα ἔν τινι ἠλεκτρολυτικῷ διαλύματι. Ἐξάγονται δὲ οἱ ἀριθμοὶ οὗτοι ἀπὸ τὴν μέτρησιν τῆς ποσότητος ἀφ' ἑνὸς τοῦ ἀποτεθέντος κατιόντος καὶ τῆς ἐλαττώσεως ἀφ' ἑτέρου τοῦ ἠλεκτρολύτου εἰς τὸ περὶ τὴν κάθοδον εὑρισκόμενον μέρος τοῦ διαλύματος.

— Ρ.

— *[Μουσ.]* Βλ. *μετάθεσις*.

— **μεταφορὰ τῆς βολῆς** *[Βλητ.]*. Ὁσάκις ὁ κύριος στόχος τυγχάνει ἀόρατος ἢ ἀπαιτεῖ αἰφνιδιαστικὴν ἔναρξιν δραστικῆς βολῆς, ἐκτελεῖται κανονιστικὴ βολὴ δι' ἑνὸς τῶν πυροβόλων τῆς πυροβολαρχίας, τοῦ ὁδηγοῦ, ἐπὶ βοηθητικοῦ τινος στόχου καὶ εἶτα ἐκτελεῖται ἡ *μεταφορὰ τῆς βολῆς*. Ἐκ τῶν ἀναγκαιούντων πρὸς τοῦτο στοιχείων, ἡ *γωνία μεταφορᾶς* καθορίζεται εἴτε δι' ἀπ' εὐθείας μετρήσεως, εἴτε ἐπὶ τοῦ χάρτου ἢ τῆς πινακίδος, εἴτε τέλος δι' ὑπολογισμοῦ, ἐπιφερομένων τῶν ἀναγκαιουσῶν διορθώσεων ἐκ τῆς παρεκτροπῆς, ἐκ τῆς ἐπενεργείας τοῦ ἀέρος καὶ ἐκ τῆς κλίσεως τῶν στροφαλίγγων. Ἡ νέα ὕψωσις διὰ τὴν μεταφοράν, κατὰ τὴν ἁπλουστέραν καὶ ἰδίως ἐν χρήσει μέθοδον, καθορίζεται ἐκ τῆς λαμβανομένης ἐκ τοῦ χάρτου ἢ πινακίδος ἀποστάσεως, διορθουμένης κατ' ἀναλογίαν τῆς παρατηρηθείσης διαφορᾶς μεταξὺ τοπογραφικῆς καὶ ληφθείσης ἐκ τῆς κανονιστικῆς βολῆς ἀποστάσεως τοῦ βοηθητικοῦ στόχου. Ἡ αὐτὴ μέθοδος μεταφορᾶς ἐφαρμόζεται καὶ κατὰ τὴν ὁπωσδήποτε παρουσιαζομένην ἀνάγκην ἀλλαγῆς στόχου.

Κ. ΔΙΓΕΝΗΣ

— **μεταφορὰ ἔργου** *[Μηχαν.]*· βλ. λ. *ἔργου μεταφορά*.

— **μεταφορὰ ἠλεκτρικὴ** *[Ἠλεκτρ.]*. Διὰ τοῦ ὅρου τούτου σημαίνεται ἄλλοτε μὲν ἡ μέσῳ ἀγωγῶν μεταφορὰ ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας (βλ. λ. *γραμμαί, διανομή*), ἄλλοτε δὲ αἱ δι' ἠλεκτροκινήτων ὀχημάτων μεταφοραὶ ἀντικειμένων ἢ ἐπιβατῶν (βλ. λ. *ἕλξις* καὶ *ἠλεκτροκίνησις*).

— **«Μεταφορῶν *Διεθνής*»**. Διεθνὴς συνδικαλιστικὴ ὀργάνωσις (βλ. λ. *Διεθνής*, τ. Θ', σ. 333γ').

**μεταφορεῖον** (τό)· τὸ δι' οὗ μεταφέρεταί τι.

**μεταφορεύς**, —*έως* (ὁ)· ὁ μεταφέρων, ὁ ἐνεργῶν τὴν μεταφοράν· || τὸ ὄργανον δι' οὗ γίνεται ἡ μεταφορά, μεταφορεῖον.

— *[Βοτ.]* Καλεῖται *μεταφορεὺς* τὸ εἰδικὸν ὄργανον πλείστων εἰδῶν ἀνθέων, ὅπερ χρησιμεύει διὰ τὴν μεταφορὰν τῆς γύρεως, ἥτις γίνεται ὑπὸ τῶν ἐντόμων.

Δ. Ν. Π.

— *[Μηχανολ.]* Καλεῖται *μεταφορεὺς* μηχάνημα χρησιμεῦον διὰ τὴν συνεχῆ μεταφορὰν οἱουδήποτε ὑλικοῦ ἐξ ἑνὸς μέρους εἰς ἄλλο. Ἀναλόγως τοῦ εἴδους τοῦ πρὸς μεταφορὰν ὑλικοῦ καὶ τῶν ἰδιαιτέρων συνθηκῶν τῆς μεταφορᾶς (ταχύτης, ἀπόστασις, ποσότητες πρὸς μεταφοράν), ὑπάρχουν πλεῖστα ὅσα εἴδη μεταφορέων, ἀντιστοιχοῦντα ἕκαστον εἰς ὡρισμένον τινὰ σκοπόν. Οὕτω π. χ. οἱ ἐντὸς τῶν μεγάλων ἐργοστασίων κατασκευῆς, διὰ τεμάχια μικροῦ μεγέθους, χρησιμοποιούμενοι μεταφορεῖς ἀποτελοῦνται ἀπὸ ἀτέρμονα ταινίαν ἐκ χονδροῦ ὑφάσματος ἢ δέρματος κ.τ.τ., ἥτις μετακινεῖται συνεχῶς ἐπὶ κυλινδρικῶν τροχαλιῶν, ἐκτελοῦσα πλήρη περιστροφικὴν κίνησιν, μεταδιδομένην εἰς αὐτὴν ὑπὸ μικροῦ ἠλεκτρικοῦ κινητῆρος. Τοιοῦτοι μεταφορεῖς ὀνομάζονται τρέχουσαι ταινίαι (γερμ. Laufband), ἡ δὲ ταχύτης αὐτῶν κανονίζεται οὕτως, ὥστε οἱ κατὰ μῆκος τοῦ μεταφορέως ἐργαζόμενοι ἐργάται νὰ ἔχωσιν ἐπαρκῆ χρόνον εἰς τὴν διάθεσίν των, ὅπως, λαμβάνοντες ἕκαστον τεμάχιον ἐκ τοῦ μεταφορέως, ἐκτελέσουν ἐπ' αὐτοῦ μικρὰς ἀπαιτουμένας ἐργασίας (ἄνοιγμα ὀπῶν, κοχλίωσις περικοχλίων κττ.) καὶ κατόπιν ἐναποθέσουν αὐτὸ ἐπὶ τοῦ μεταφορέως, ὅστις τὸ μεταφέρει εἰς τὸν ἑπόμενον ἐργάτην. Τὰ εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ μεταφορέως τιθέμενα ἐπ' αὐτοῦ ἡμιτελῆ τεμάχια καταλήγουν εἰς τὸ τέλος αὐτοῦ ἕτοιμα καὶ ὁδηγοῦνται πρὸς τὸ τμῆμα συσκευασίας ἢ τὴν ἀποθήκην ἢ πρὸς ἄλλην τρέχουσαν



Digitized by Google

ταινίαν, ἐφ' ἧς θὰ ἐκτελεσθῇ νέα σειρὰ κατεργασιῶν. Ἐὰν ὁ μεταφορεὺς χρησιμεύῃ μόνον διὰ τὴν μεταφοράν, καὶ ὄχι καὶ διὰ τὴν κατὰ μῆκος αὐτοῦ κατεργασίαν τοῦ μεταφερομένου ὑλικοῦ, τότε αὐξάνεται ἀναλόγως καὶ ἡ ταχύτης αὐτοῦ, διδομένης εἰς τὴν τροχιάν του μικρᾶς κλίσεως, ἐὰν ὑπάρχῃ διαφορὰ ὕψους μεταξὺ τῆς ἀρχῆς καὶ τοῦ τέλους του. Καὶ κάθετος ἀκόμη ἀνύψωσις ἢ καταβίβασις εἶναι δυνατή, τοῦ μεταφορέως μετασχηματιζομένου ἀναλόγως εἰς σιδηρᾶν ἀτέρμονα ἅλυσιν, ἥτις φέρει ἀπὸ διαστήματος εἰς διάστημα σκαφίδια ἢ ὁριζοντίας προεξοχάς, ὡς π. χ. τὸ κοινὸν μαγκανοπήγαδο. Κάθετος ἀνύψωσις κοκκώδους ὑλικοῦ (δημητριακῶν κττ.) γίνεται καὶ δι' ἄλλου εἴδους μεταφορέων, οἵτινες ὀνομάζονται *ἀναβατόρια* (elevator)· ἀποτελοῦνται ἀπὸ ἑλικοειδῆ ἐπιφάνειαν ἐξ ἐλασμάτων περιστρεφομένην ταχέως περὶ τὸν ἄξονά της καὶ συμπαρασύρουσαν οὕτω τὸ ὑλικὸν πρὸς τὰ ἄνω. Ἰδιαιτέρας σημασίας διὰ τὸν μηχανολόγον μηχανικὸν εἶναι οἱ μεταφορεῖς ἄνθρακος, οἱ ἐν χρήσει εἰς τὰ μεγάλα θερμικὰ ἐργοστάσια, πρὸς μεταφορὰν τοῦ ἄνθρακος ἐκ τῆς ἀποθήκης εἰς τὸ λεβητοστάσιον. Διὰ κατακόρυφον μεταφορὰν ἀποτελοῦνται καὶ αὐτοὶ ἀπὸ σιδηρᾶν ἅλυσιν, ἐπὶ τῆς ὁποίας εἶναι ἐστερεωμένα μικρὰ σκαφίδια, χωρητικότητος 15 ἕως 100 λιτρῶν, μετακινούμενα μὲ ταχύτητα 0,6 ἕως 1,2 μέτρων ἀνὰ δευτερόλεπτον· Ἡ ἰσχὺς τοιούτων μεταφορέων ποικίλλει ἀπὸ 10 ἕως 1000 τόννους ἄνθρακος ἀνὰ ὥραν. Προκειμένου περὶ ὁριζοντίας ἢ πλαγίας πρὸς τὰ ἄνω μεταφορᾶς χρησιμοποιοῦνται συνήθως ἀτέρμονες ταινίαι, εἰδικῶς διὰ τὸν σκοπὸν αὐτὸν κατασκευαζόμεναι καὶ συγκείμεναι ἀπὸ 3 ἕως 8 στρώσεις βαμβακεροῦ ὑφάσματος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἔχει συμπιεσθῇ ὑπὸ μεγάλην πίεσιν στρῶμα ἐκ balata ἢ ἐλαστικοῦ κόμμεως. Αἱ ταινίαι αὗται δύνανται νὰ χρησιμοποιηθοῦν μέχρι κλίσεως 25°, κυλίονται δὲ ἐπὶ ἐλευθέρως περιστρεφομένων τροχαλιῶν, διατεταγμένων οὕτως, ὥστε ἡ ταινία ν' ἀποκτᾷ κοίλην μορφήν, δι' ἀνυψώσεως τῶν ἄκρων αὐτῆς· τὸ τελευταῖον τοῦτο γίνεται διὰ λόγους μεγαλυτέρας χωρητικότητος. Ὁ ἄνθραξ ἐγκαταλείπει τὴν ταινίαν εἴτε εἰς τὸ ἀνώτατον ἄκρον αὐτῆς, ὁπότε πίπτει ἐλευθέρως, ἢ καὶ εἰς οἱονδήποτε ἄλλο σημεῖον τῆς διαδρομῆς, δι' εἰδικῆς συσκευῆς. Τὸ πλάτος τοιούτων ταινιῶν κυμαίνεται μεταξὺ 30 καὶ 120 ἑκατοστῶν, ἡ ταχύτης των μεταξὺ 1,5 καὶ 2,5 μέτρων ἀνὰ δευτερόλεπτον, ἡ δὲ ἰσχὺς δύναται νὰ φθάσῃ τοὺς 700 τόννους ἀνὰ ὥραν. Γ. Θ. Κ.

**μεταφορικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μεταφοράν, ὁ τῆς μεταφορᾶς: «μεταφορικὰ μέσα» τὰ δι' ὧν συντελεῖται ἡ μεταφορά· || *μεταφορικὰ* (τά)· ὡς οὐσ., τὰ ἔξοδα τῆς μεταφορᾶς, ἄλλως *κόμιστρα*· || *μεταφορικὸν* (τό)· τηλεγραφικὸν μηχάνημα· || γραμμ., ὁ διὰ μεταφορᾶς λεγόμενος, ἐκφραζόμενος, ἄλλως *τροπικός*: «μεταφορικὴ χρῆσις, —ἔννοια, — σημασία», ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὸ *κυριολεκτικὸς* ἢ *κύριος*.—Ἐπίρρ. **μεταφορικῶς.**

**— μεταφορικὴ *κίνησις*.** Ἡ κίνησις στερεοῦ σώματος, κατὰ τὴν ὁποίαν ὅλα τὰ σημεῖα τοῦ σώματος γράφουν ἴσους παραλλήλους δρόμους. Κατὰ τὴν κίνησιν ταύτην εἰς ἑκάστην στιγμὴν αἱ ταχύτητες ὅλων τῶν σημείων τοῦ σώματος εἶναι μεταξύ των ἴσαι.

**μεταφόρτωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐκ νέου φόρτωσις, ἡ φόρτωσις εἰς ἄλλο μεταφορικὸν μέσον.

— *[Ἐμπορ.] Μεταφόρτωσις* ὑπάρχει, ὅταν κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς συμβάσεως μεταφορᾶς τὰ ὑπὸ μετακόμισιν πράγματα μεταφορτώνονται ἀπὸ τοῦ ἀρχικοῦ εἰς ἕτερον μεταφορικὸν μέσον. Κυρίως τοῦ ὅρου γίνεται χρῆσις ἐν τῷ ναυτικῷ δικαίῳ προκειμένου περὶ τῆς μεταφορτώσεως ἀπὸ ἑνὸς πλησίου εἰς ἕτερον. Κατὰ κανόνα τὸ ἐμπόρευμα προώρισται νὰ φθάσῃ εἰς τὸν λιμένα προορισμοῦ διὰ τοῦ πλοίου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἀρχικῶς ἐφορτώθη. Ὁ δὲ πλοίαρχος δὲν ἔχει τὸ δικαίωμα τῆς μεταφορτώσεως, δεδομένου ὅτι τὸ πλοῖον ἀποτελεῖ στοιχεῖον οὐσιῶδες κατὰ τὴν κατάρτισιν τῆς συμβάσεως ναυλώσεως. Οὐχ ἧττον ὅμως τοῦ κανόνος ὑπάρχουν ἐξαιρέσεις. Συνήθως δι' εἰδικῆς ῥήτρας, τῆς καλουμένης *ῥήτρας μεταφορτώσεως*, συμφωνεῖται ἐν ταῖς φορτωτικαῖς τοιοῦτον δικαίωμα τοῦ μεταφορέως. Ἡ ῥήτρα αὕτη εἶναι συνηθεστάτη, ἀπαντᾷ δὲ κατὰ κανόνα εἰς τὰς φορτωτικὰς τῶν τακτικῶν ἀτμοπλοϊκῶν γραμμῶν. Ἀλλὰ καὶ αὐτὸς οὗτος ὁ ἐμπορικὸς νόμος, ἐν ἄρθρῳ 392, προβλέπει τὴν μεταφόρτωσιν τοῦ φορτίου, ἐὰν τὸ πλοῖον κατέστη ἀνίκανον πρὸς πλοῦν. Τέλος ἡ μεταφόρτωσις τῶν πρὸς μεταφορὰν ἀναληφθέντων πραγμάτων ἀποτελεῖ οὐσιώδη προϋπόθεσιν διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς συμβάσεως μεταφορᾶς, εἰς τὴν περίπτωσιν τῆς ἐκδόσεως κατ' εὐθεῖαν φορτωτικῆς. Κ. Β. Σ.

**μεταφουλμινουρικὸν *ὀξὺ*** *(ἰσονιτρωδοϊσοξαζολονοξίμη) [Ὀργ. Χημ.]*. Προϊὸν αὐτομάτου πολυμερισμοῦ τοῦ *κροτικοῦ ὀξέος*. Κρυσταλλοῦται μεθ' ὕδατος καὶ ὡς ἔνυδρον μὲν τήκεται εἰς 85°, ὡς ἄνυδρον δὲ ἐκρήγνυται εἰς 106°. Σ. Γ.

**μετάφραγμα** (τό). Ὁ μεταξὺ δύο καταστρωμάτων χῶρος τοῦ πυροβολείου. Εἰς τὰ παλαιότερα δίκροτα καὶ τρίκροτα τὸ ὕψος τῶν μεταφραγμάτων ἦτο τοσοῦτο μικρόν, ὥστε ἐξέλεγον ὑπηρέτας τῶν πυροβόλων μεταξὺ τῶν βραχυσώμων τοῦ πληρώματος. Σ. Ε. Λ.

— *[Ζῳολ.]* Καλεῖται οὕτω ἡ μεμβρᾶνα ἡ χωρίζουσα τὸν θώρακα τῶν ἐντόμων ἀπὸ τῆς κοιλίας.

**μεταφράζω,** *ἀόρ. μετέφρασα—μετεφράσθην·* μεταβάλλω τὴν φράσιν, μεταφέρω τὸν λόγον, ἔγγραφον ἢ προφορικόν, ἀπὸ γλώσσης ἢ ἰδιώματος εἰς ἄλλην γλῶσσαν ἢ ἰδίωμα, μεταγλωττίζω: «μεταφράζω ἐκ τοῦ ἀρχαίου εἰς τὸ νέον ἢ ἐκ τοῦ νέου εἰς τὸ ἀρχαῖον, — ἐκ τοῦ λατινικοῦ εἰς τὸ ἑλληνικὸν ἢ ἐκ τοῦ ἑλληνικοῦ εἰς τὸ λατινικὸν κτλ.».

**μετάφρασις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταφράζειν, μεταγλώττισις: «μετάφρασις ἐλευθέρα ἢ κατ' ἔννοιαν, — κατὰ λέξιν».

— *[Ἐγκυκλ.]* Σκοπὸς τῆς *μεταφράσεως* εἶναι ἡ ἀπόδοσις τῶν λέξεων καὶ τῶν φραστικῶν τύπων μιᾶς γλώσσης δι' ἀντιστοίχων λέξεων καὶ φραστικῶν τύπων ἄλλης. Ὅταν ὅμως ἐξετάσῃ κανεὶς ἐκ τοῦ πλησίον τὸ φαινομενικῶς τόσον ἁπλοῦν τοῦτο πρόβλημα, ἀντιλαμβάνεται τὰς σχεδὸν ἀνυπερβλήτους δυσκολίας, αἱ ὁποῖαι παρουσιάζονται διὰ τὴν ἐπιτυχῆ ἐκπλήρωσιν τοῦ σκοποῦ. Καὶ ἂν ἀκόμη ὑποτεθῇ ὅτι ἡ γλῶσσα, εἰς τὴν ὁποίαν γίνεται ἡ μετάφρασις, ἔχει λέξεις καὶ φραστικοὺς τρόπους ἀποδίδοντας μετὰ πλήρους ἀκριβείας τὰς λέξεις καὶ τοὺς φραστικοὺς τρόπους, οἱ ὁποῖοι χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν γλῶσσαν τοῦ πρωτοτύπου, χωρὶς τίποτε νὰ ἐξασθενίζῃ ἢ οὐδὲ κατ' ἐλάχιστον νὰ μεταβάλλωνται τὰ ἀποτελέσματα, τὸ χρῶμα τοῦ πρωτοτύπου καὶ αἱ λεπτότεραι ἀποχρώσεις του, καὶ πάλιν παραμένει σχεδὸν ἀναντapόδοτον κάτι τὸ ἀσύλληπτον καὶ ἐν τούτοις οὐσιῶδες, ἡ πνοή, δι' ἧς τὸ πνεῦμα τοῦ συγγραφέως διαθέει ὁλόκληρον τὸ ἔργον, ἡ πνοή, ἥτις δίδει εἰς τὸ ἔργον ζωήν, κίνησιν, ἀτομικότητα καὶ ἀποτελεῖ οὕτως εἰπεῖν τὸ ἀντίστοιχον τῆς ζωϊκῆς ἀρχῆς τῶν ὀργανικῶν ὄντων. Μία μετάφρασις, διὰ νὰ εἶναι τελεία ἀπόδοσις τοῦ πρωτοτύπου, πρέπει νὰ διαπνέεται ἀπὸ τὴν αὐτὴν πνοὴν καὶ εἰς ἴσον βαθμόν. Ἡ ἐκπλήρωσις τοῦ ὅρου τούτου, ἂν δὲν εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου ἀκατόρθωτος, γεννᾷ μεγίστας δυσκολίας. Ἂν εἰς τοῦτο προσθέσωμεν τὸ ἀκατόρθωτον τῆς διαρκοῦς ἐξευρέσεως τῶν ἰσοδυνάμων διὰ τοὺς φραστικοὺς τρόπους καὶ τὰς ἐκφράσεις τοῦ πρωτοτύπου, δεδομένου ὅτι αἱ διάφοροι γλῶσσαι παρουσιάζουσι διαφορὰς εἰς τὴν ἔκφρασιν τῶν συναισθημάτων, τῶν ἰδεῶν καὶ τῶν ἠθῶν καὶ εἰς αὐτὰ τὰ συναισθήματα, τὰς ἰδέας καὶ τὰ ἤθη, διαφορὰς προερχομένας ἐκ τῆς ποικιλίας τῶν αἰώνων, τῶν φυλῶν καὶ τοῦ φυσικοῦ περιβάλλοντος, θὰ ἐξηγήσωμεν τὸν λόγον, διὰ τὸν ὁποῖον εἶναι τόσον σπάνιαι αἱ καλαὶ μεταφράσεις.

Αἱ συνήθεις μεταφράσεις ἀποτελοῦν ψυχρὰν ἐν τῇ ἀκριβείᾳ φωτογραφίαν τοῦ πρωτοτύπου ἢ ὠχρὰν εἰκόνα, ὡς πρὸς τὸ χρῶμα, τὸ συναίσθημα τοῦ μεταφραζομένου, καὶ ταύτην εἰς βάρος τῆς φιλολογικῆς ἀκριβείας. Δύο συνήθως μεταφραστικαὶ σχολαὶ ὑπάρχουν. Κατὰ τὴν μίαν, μετάφρασις φιλολογικῶς ἀκριβὴς ὁμοιάζει μὲ τὴν ἀντίθετον ὄψιν χρωματιστοῦ ὑφάσματος, διατηροῦσαν τὰ περιγράμματα καὶ τὰ χρώματα μὲ πλήρη ἀντιστοιχίαν, ἀλλ' ὄχι μὲ τὴν ἔντασιν τῆς καλῆς ὄψεως. Σκοπὸς τῆς μεταφράσεως δὲν εἶναι ἡ ἀπόδοσις τοῦ γράμματος, ἀλλὰ τοῦ ὕφους, τοῦ χρώματος, τοῦ πνεύματος· τὸ γράμμα φονεύει, ἐνῷ τὸ πνεῦμα ζωοποιεῖ. Ἡ μετάφρασις εἶναι δημιουργία. Μετάφρασις κατὰ τὴν σχολὴν ταύτην εἶναι ἀνάστασις εἰς νέαν πατρίδα λογοτεχνίας κοιμωμένης, ἀπόδοσις νέας ζωῆς εἰς λόγον παρελθόντα. Ἀλλὰ διὰ τοῦ συστήματος τούτου γεννᾶται ὁ κίνδυνος νὰ δώσωμεν εἰς τοὺς ἀρχαίους ἢ ξενογλώσσους συγγραφεῖς κάτι ἀπὸ τὰ ἰδικά μας συναισθήματα, ἀπὸ τὰς ἰδικάς μας ἰδέας, ἀπὸ τὴν ἰδικήν μας ἀκόμη γλῶσσαν, διὰ νὰ τοὺς πλησιάσωμεν περισσότερον πρὸς ἡμᾶς. Κατὰ τὴν ἄλλην σχολήν, ὁ μεταφραστὴς οὐδὲν δικαίωμα ἔχει νὰ ὑποκαθιστᾷ μέρος τοῦ πρωτοτύπου διὰ τῆς ἰδικῆς του προσωπικότητος. Καθῆκον αὐτοῦ εἶναι ν' ἀποδίδῃ ὅσον τὸ δυνατὸν ἀκριβέστερον τὸ πρωτότυπον, εὑρίσκων τὰ ἰσοδύναμά του ἐν τῇ νέᾳ γλώσσῃ καὶ σεβόμενος μεθ' ἱεροῦ δέους τὸ πρωτότυπον. Ἄλλως ὑπόκειται εἰς τὸν κίνδυνον, ἀντὶ νὰ γίνῃ μεταφραστὴς (traduttore), νὰ μεταβληθῇ εἰς προδότην (traditore) τοῦ συγγραφέως, τὸν ὁποῖον μεταφράζει, κατὰ τὴν ἰταλικὴν παροιμίαν. Ὁπωσδήποτε ἡ ἐπικρατοῦσα περὶ τῶν μεταφράσεων γνώμη εἶναι μᾶλλον ἀρνητική. Κατὰ τὸν Μοντεσκιὲ «αἱ μεταφράσεις εἶναι ὡσὰν τὰ χάλκινα ἐκεῖνα νομίσματα, τὰ ὁποῖα ἔχουν ἴσην ἀξίαν μὲ ὡρισμένον βάρος χρυσοῦ καὶ τυγχάνουν μεγαλυτέρας χρήσεως παρὰ τῷ συναλλασσομένῳ λαῷ, ἀλλ' εἶναι πάντοτε κακῆς ποιότητος». Ἄλλοι παρωμοίασαν τοὺς μεταφραστὰς πρὸς κακοὺς ὑπηρέτας, οἱ ὁποῖοι προκειμένου νὰ διαβιβάσουν τι ἐκ μέρους τοῦ κυρίου των λέγουν τὰ ἀντίθετα ἐκείνων τὰ ὁποῖα παρηγγέλθησαν, ἢ πρὸς ὑπηρέτας οἱ ὁποῖοι θεωροῦν ἑαυτοὺς ἐξ ἴσου μεγάλους μὲ τοὺς κυρίους των, πρὸ πάντων ὅταν ὁ κύριός των εἶναι πολὺ παλαιός.

—*[Ρητορ.] Μετάφρασις* καλεῖται «ἡ ἐναλλαγὴ τῶν λέξεων κατὰ τὸ ποσὸν ἢ πλειόνων ἢ ἐλαττόνων μετὰ ῥητορικοῦ κάλλους γινομένη» *(Γεωργίου Χοιροβοσκοῦ* «Περὶ τρόπων» *ιδ')*. Ι. Φ. Δ.

**—μετάφρασις *τῆς ἁγίας Γραφῆς*.** Τὰ βιβλία τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης ἐγράφησαν εἰς ἑβραϊκὴν γλῶσσαν, ἐκτὸς ἐλαχίστων, γραφέντων εἰς τὴν ἀραμαϊκὴν ἢ τὴν ἑλληνικήν, τὰ δὲ τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὴν ἑλληνικήν, ἐκτὸς τοῦ Εὐαγγελίου τοῦ Ματθαίου, ὅπερ γραφὲν ἀρχικῶς εἰς τὴν ἑβραϊκὴν μετεφράσθη ἔπειτα ὑπὸ τοῦ ἰδίου τοῦ Ματθαίου, ἢ ἄλλου τινός, εἰς τὴν ἑλληνικήν. Τὰ βιβλία τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης ἐγράφησαν εἰς τὴν ἑβραϊκήν, διότι οἱ συγγραφεῖς αὐτῶν ἦσαν Ἑβραῖοι, ὡς καὶ οἱ πρὸς οὓς ἀπετείνοντο ταῦτα, τὰ δὲ τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὴν ἑλληνικήν, διότι οἱ συγγραφεῖς αὐτῶν ἐγνώριζον τὴν ἑλληνικήν, ὡς καὶ οἱ πρὸς οὓς ἀπετείνοντο ταῦτα. Ἀφοῦ ἡ χριστιανικὴ θρησκεία ἦτο θρησκεία προωρισμένη διὰ πάντας τοὺς ἀνθρώπους, τὰ βιβλία τῆς Καινῆς Διαθήκης ἔπρεπε νὰ γραφῶσιν εἰς γλῶσσαν, ἥτις τότε ἦτο πανταχοῦ διαδεδομένη, τὴν ἑλληνικήν. Αἱ γλῶσσαι εἶναι ἀνθρώπινα ἐπινοήματα καὶ ἑπομένως ἱεραὶ γλῶσσαι δὲν ὑπάρχουσιν.

Ἡ ἁγία Γραφή, μὴ ἐπενεργοῦσα μαγικῶς, πρέπει νὰ κατανοῆται καὶ μελετᾶται ὑπὸ τῶν πιστῶν. Διὰ τοῦτο ἤδη πρὸ Χριστοῦ μετεφράσθη ἡ Παλαιὰ Διαθήκη ἐκ τοῦ ἑβραϊκοῦ εἰς τὸ ἑλληνικὸν χάριν τῶν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ Ἰουδαίων, τῶν λησμονησάντων τὴν ἑβραϊκὴν γλῶσσαν καὶ γνωριζόντων μόνον τὴν ἑλληνικὴν (μετάφρασις τῶν Ἑβδομήκοντα), μετὰ Χριστὸν δὲ ἥ τε Παλαιὰ καὶ ἡ Καινὴ Διαθήκη εἰς πάσας σχεδὸν τὰς λαλουμένας γλώσσας καὶ πλείστας διαλέκτους. Τῶν μεταφράσεων τούτων ἄξιαι ἰδίας μνείας εἶναι ἡ τῶν Ἑβδομήκοντα, ἣν ἀναγνωρίζει ὡς ἐπίσημον αὐτῆς μετάφρασιν ἡ ἀνατολικὴ Ἐκκλησία, ἡ Βουλγάτα, ἣν ἀναγνωρίζει ἡ δυτικὴ Ἐκκλησία, καὶ ἡ τοῦ Λουθήρου, ἣν ἀναγνωρίζει ἡ λουθηρανὴ Ἐκκλησία. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι αὐθεντικὴ μετάφρασις δὲν ὑπάρχει, διότι αὐθεντικὸν εἶναι μόνον τὸ ἑβραϊκὸν κείμενον τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης καὶ τὸ ἑλληνικὸν τῆς Καινῆς Διαθήκης. Αἱ ἐκκλησίαι καὶ εἰς σύνοδον συνερχόμεναι δύνανται νὰ ἀναγνωρίσωσιν ἢ ἀπορρίψωσι μετάφρασίν τινα καὶ ἑπομένως νὰ ἐπιτρέψωσιν ἢ ἀπογορεύσωσι τὴν χρῆσιν αὐτῆς, δὲν δύνανται ὅμως νὰ ἀναγνωρίσωσι μετάφρασίν τινα ὡς αὐθεντικήν, διότι τὸ ἀλάθητον τῆς Ἐκκλησίας ἐπεκτείνεται μόνον εἰς τὸ δόγμα καὶ τὰ ἤθη, οὐχὶ δὲ καὶ εἰς τὴν γραμματικήν, τὸ συντακτικὸν καὶ τὸ λεξικόν. Ἡ μετάφρασις δύναται καὶ πρέπει νὰ διορθῶται ἐπὶ τῇ βάσει τῶν αὐθεντικῶν κειμένων, τοῦ ἑβραϊκοῦ καὶ τοῦ ἑλληνικοῦ, τῆς Παλαιᾶς καὶ τῆς Καινῆς Διαθήκης. Ἡ ἀνατολικὴ Ἐκκλησία ἐπέτρεψε τὴν μετάφρασιν τῆς ἁγίας Γραφῆς εἰς τὰς ὑπὸ τῶν ὀρθοδόξων ὁμιλουμένας γλώσσας, τοιαύτας δὲ μεταφράσεις ἔχουσι πᾶσαι αἱ ὀρθόδοξοι ἐκκλησίαι, οὐ μόνον διὰ τὴν κατ' ἰδίαν χρῆσιν, ἀλλὰ καὶ διὰ τὴν ἐπ' ἐκκλησίας ἀνάγνωσιν.

Ἐὰν τὸ Οἰκουμενικὸν πατριαρχεῖον κατέκρινε μεταφράσεις τινὰς τῆς ἁγίας Γραφῆς, εἰς τὴν ἁπλῆν ἑλληνικήν, τοῦτο ἔπραξεν οὐχὶ διότι κατ' ἀρχὴν ἐθεώρει ἀπηγορευμένην τὴν μετάφρασιν, ἀλλ' «ὡς γενομένας παρὰ τῶν Λουθηροκαλβίνων ψευδοδιδασκάλων ἢ παρ' ὁμοθρήσκων καὶ ὁμογενῶν, ὀπαδῶν δ' αὐτῶν...διὰ τοὺς δολίους αὐτῶν σκοποὺς» ἢ ὡς γενομένας μετ' ἐπιπολαιότητος καὶ μὴ ἀποδιδούσας ὀρθῶς τὸ πρωτότυπον. Κατὰ ταῦτα ἡ γνώμη, ἡ ὑπό τινων παρ' ἡμῖν ὑποστηριχθεῖσα ὅτι ἡ μετάφρασις τῆς ἁγίας Γραφῆς καὶ μάλιστα τῆς Καινῆς Διαθήκης ἀπαγορεύεται, διότι τὰ βιβλία αὐτῆς «δὲν δύνανται ἀκριβῶς καὶ ἐντελῶς νὰ μεταφράζωνται κατὰ λέξιν ἢ καὶ νὰ παραφράζωνται» δὲν εἶναι ὀρθή, οὐδὲ δύναται νὰ γίνῃ ἀποδεκτή, τοσούτῳ μᾶλλον, καθόσον στηρίζεται ἐπὶ τῆς κατὰ γράμμα θεοπνευστίας τῆς ἁγίας Γραφῆς, ἣν δὲν δέχεται ἡ ἡμετέρα Ἐκκλησία.

Καὶ ταῦτα μὲν γενικῶς περὶ τῆς μεταφράσεως τῆς ἁγίας Γραφῆς. Ἄλλως ὅμως ἔχει τὸ πρᾶγμα προκειμένου εἰδικῶς περὶ τῆς μεταφράσεως τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὴν ὁμιλουμένην ἑλληνικήν. Ἐφ' ὅσον αἱ δυσχέρειαι, αἱ ἐκ τῶν ἐννοιῶν τῆς Καινῆς Διαθήκης προερχόμεναι, δὲν παρακάμπτονται διὰ τῆς κατὰ λέξιν μεταφράσεως εἰς τὴν ὁμιλουμένην, ἡ μετάφρασις δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ πληροῖ τὴν δι' ἣν προβάλλεται ἀνάγκην. Ἐὰν ἀφ' ἑτέρου λάβῃ τις ὑπ' ὄψιν ὅτι ἐξ ὅλων τῶν χριστιανικῶν λαῶν μόνος ὁ ἑλληνικὸς ἔχει τὴν Καινὴν Διαθήκην ἐν τῇ πρωτοτύπῳ αὐτῆς γλώσσῃ, θὰ ἐννοήσῃ πόσον ὀρθῶς ἡ ἱερὰ σύνοδος τῆς Ἐκκλησίας τῆς Ἑλλάδος, εἰ καὶ ἐξ ἄλλης ἀπόψεως, καὶ τὸ ἑλληνικὸν Σύνταγμα ἀπηγόρευσαν τὴν μετάφρασιν καὶ μάλιστα τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὴν ὁμιλουμένην ἑλληνικήν. Κ. Ι. Δ.

**μετάφρασμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μεταφράζειν, τὸ εἰς μετάφρασιν διατυπωθέν: «κομψὸν μετάφρασμα».

Digitized by Google

**μεταφράστης** (ὁ), καὶ *μεταφραστής*· ὁ μεταφράζων ἢ μεταφράσας: «μεταφράστης κλασσικῶν συγγραφέων, — ἐφημερίδος».

**μεταφραστικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετάφρασιν, ὁ τῆς μεταφράσεως: «μεταφραστικὰ λάθη».—Ἐπίρρ. ***μεταφραστικῶς***.

**μεταφραστός**, *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μεταφρασθῇ.

**μετάφρενον** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*. Ἡ ἀνὰ μέσον τῶν δύο ὠμοπλατῶν χώρα. Ι. Π.

**«Μεταφυσικὰ»** (τά), ἢ ***«Μετὰ τὰ φυσικά»***. Σύγγραμμα τοῦ Ἀριστοτέλους, εἰς τὸ ὁποῖον πραγματεύεται περὶ τῶν πρώτων ἀρχῶν τῶν ὄντων (ἡ λ. δὲν ἀπαντᾷ παρ' Ἀριστοτέλει, ἀλλὰ βραδύτερον, προελθοῦσα ἐκ τῆς κατατάξεως τῶν συγγραμμάτων τοῦ Ἀριστοτέλους ἐν τῇ ἐκδόσει, τὴν ὁποίαν ἔκαμεν Ἀνδρόνικος ὁ Ρόδιος· δηλαδὴ ὠνομάσθησαν οὕτω, διότι κατετάχθησαν μετὰ τὰ «Φυσικά»). Β. Φ.

**μεταφυσικὴ** (ἡ) *[Φιλοσ.]*. Ὁ ὅρος *μεταφυσικὴ* ὀφείλει τὴν γένεσιν αὐτοῦ εἰς ὅλως τυχαῖον γεγονός, τουτέστιν εἰς τὴν ὑπὸ Ἀνδρονίκου τοῦ Ροδίου κατάταξιν τῶν περὶ πρώτης φιλοσοφίας πραγματειῶν τοῦ Ἀριστοτέλους μετὰ τὰ περὶ φυσικῆς συγγράμματα αὐτοῦ ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ἔργων τοῦ φιλοσόφου. Ἡ χρονικὴ τάξις μετεβλήθη ἔπειτα εἰς πραγματικήν, οὕτω δὲ βραδύτερον κατήντησεν ὁ ὅρος μεταφυσικὴ νὰ σημαίνῃ τὴν ἐπιστήμην, ἥτις χωρεῖ πέραν τῶν ὁρίων τῆς ἐμπειρίας, ἐν τῇ σημασίᾳ δὲ ταύτῃ ἀπαντῶμεν τὴν λέξιν ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος.

Ἡ φύσις τῆς μεταφυσικῆς καθίσταται σαφής, ἐὰν ὁρμηθῶμεν ἀπὸ τῶν ἐλατηρίων, ἅπερ κινοῦσι πρὸς αὐτήν. Εἰς τὸν ἄνθρωπον ἐνυπάρχει ἔμφυτος ἡ ῥοπὴ πρὸς γνῶσιν, ἀλλ' ἐπειδὴ αἱ γνώσεις ἡμῶν εἶναι κατ' ἀνάγκην ἐλλιπεῖς, ὁρμᾷ ὁ ἄνθρωπος ἐπὶ τὴν συμπλήρωσιν αὐτῶν διὰ τῆς ἑρμηνείας τῆς πραγματικότητος ἐν τῷ συνόλῳ τῶν φαινομένων αὐτῆς ἐκ μιᾶς ἑνιαίας πρωταρχικῆς αἰτίας, θέτων πρὸς τοῦτο ἀρχάς, αἵτινες ὁδηγοῦσι πέραν τοῦ ἐμπειρικοῦ κόσμου. Ἀλλ' ἡ πρὸς γνῶσιν ὁρμὴ ἀποτελεῖ μίαν τῶν πλευρῶν τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως· παρ' αὐτὴν ὑπάρχει ἡ βούλησις καὶ τὸ συναίσθημα, τὰ ὁποῖα ἄγουσιν εἰς ἄλλην τινὰ βίωσιν καὶ ἐμπειρίαν τῆς πραγματικότητος. Ὁ ψυχικὸς ἡμῶν βίος διασείεται πολὺ ἰσχυρότερον καὶ βαθύτερον διὰ βιωμάτων ἐκπηγαζόντων ἐκ τῶν φαινομένων τῆς ζωῆς καὶ τοῦ θανάτου, τῆς γενέσεως καὶ τοῦ ἀφανισμοῦ, τοῦ καλοῦ καὶ τοῦ κακοῦ, τῆς ἀναγκαιότητος καὶ τῆς ἐλευθερίας. Πάντα ταῦτα ἀσκοῦσιν ἰσχυρὰν πίεσιν ἐπὶ τῆς ψυχῆς καὶ ἀπαιτοῦσιν ἀπάντησιν ἱκανοποιοῦσαν ὄχι μόνον τὸν νοῦν, ἀλλὰ καὶ τὸ συναίσθημα καὶ τὸ θυμικὸν καθόλου. Οὕτως ὁ πόθος πρὸς ἀπολύτρωσιν, ἐν τῇ γενικωτάτῃ τῆς λέξεως σημασίᾳ, γεννᾷ τὴν μεταφυσικήν, ἥτις εἶναι τὸ μὲν κοσμοθεωρία ἐπὶ τῆς ἐπιστήμης στηριζομένη, τὸ δὲ βιοθεωρία ἀπορρέουσα ἐκ τῆς περὶ κόσμου θεωρίας. Δὲν εἶναι δὲ ἁπλοῦν ἄθροισμα γνώσεως, ὡς γίνεται φανερὸν ἐκ τῶν εἰρημένων, ἀλλ' ἑνότης δημιουργουμένη διὰ τῆς μορφοποιούσης δυνάμεως τοῦ συναισθήματος. Ὡς βασιζομένη δὲ ἐπὶ τοῦ συναισθήματος καὶ τῆς ἐξ αὐτοῦ βεβαιότητος ἐγείρει τὴν ἀξίωσιν περὶ ὑψηλοτέρας γνώσεως, τὴν ὁποίαν προσκτώμεθα τῇ βοηθείᾳ ὀργάνου εἰσδύοντος βαθύτερον εἰς τὴν φύσιν τῶν ὄντων ἐν συγκρίσει πρὸς τὸν ἀφαιροῦντα καὶ διακρίνοντα νοῦν. Τὸ ὄργανον τοῦτο εἶναι ἡ θεωρία (Πλάτων λ. χ., Ἕγελος, Σέλλινγκ,) ἢ ἡ ἐνόρασις, ἡ scientia intuitiva Νικολάου τοῦ Κουζανοῦ. Κατὰ ταῦτα ἡ μεταφυσικὴ κέκτηται κατ' ἀνάγκην ὑποκειμενικὸν χαρακτῆρα. Ἡ μεταφυσικὴ φέρει κατ' ἀρχὰς χαρακτῆρα θρησκευτικὸν ἢ θεολογικόν, κατὰ δὲ τοὺς πρώτους χρόνους τῆς μεταφυσικῆς τῶν διαφόρων λαῶν αἱ ἀρχαί, ἀφ' ὧν ὁρμᾶται, εἶναί τι τὸ θεῖον ἢ θεοειδές. Ἀλλὰ κατὰ τὴν περαιτέρω ἐξέλιξιν αὐτῆς ἐν τῇ Δύσει διακρίνεται ἀεὶ σαφέστερον τὸ ἔργον αὐτῆς ἀπὸ τοῦ τῆς θεολογίας καὶ γίνεται σὺν τῷ χρόνῳ κατὰ λόγον ἐπιστήμη, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἐξ ἀποκαλύψεως γνῶσιν, περὶ τὴν ὁποίαν ἀσχολεῖται ἡ θεολογία. Ἔργον δηλαδὴ αὐτῆς εἶναι πλέον ἡ ἀπάντησις εἰς τὸ πρόβλημα περὶ τῆς φύσεως τῶν ὄντων μόνον διὰ τοῦ λόγου καὶ μὲ μόνην πηγὴν τὴν εἰς τὸν ἀνθρώπινον νοῦν προσιτὴν γνῶσιν, ὡς καὶ τὰ ἐξ αὐτῆς δυνατὰ συμπεράσματα. Ἐπειδὴ δὲ ἀξιοῖ νὰ παράσχῃ γνῶσιν καθολικὴν καὶ τῶν ὅλων περιεκτικήν, εἶναι φανερὸν ὅτι ἡ κατάστασις καὶ αἱ ἀπαντήσεις αὐτῆς ἐξαρτῶνται ἰσχυρῶς ἐκ τῶν ἐν ἑκάστῃ ἐποχῇ ὑπαρχουσῶν γνώσεων. Ὅσῳ ὀλιγώτεραι αἱ γνώσεις αὗται, τόσῳ μείζων ἡ σπουδαιότης καὶ ἡ δύναμις τῆς μεταφυσικῆς. Οὕτω εἶναι ἡ μεταφυσικὴ αὐτὴ αὕτη ἡ ἐπιστήμη διὰ τοὺς Ἴωνας φυσιολόγους, ἐνῷ τοὐναντίον ἀπὸ τοῦ Πλάτωνος καὶ τοῦ Ἀριστοτέλους διακρίνονται τὰ προβλήματα τῆς μεταφυσικῆς ἀπὸ τῆς κυρίως ἐπιστήμης. Κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας συνδέεται στενῶς μετὰ τῆς θεολογίας, τῆς ὁποίας ἀποβαίνει θεραπαινίς, ἵνα μετὰ τὴν πρὸς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας σύνδεσιν αὐτῆς κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα κηρυχθῇ τέλος ὡς ἀποθανοῦσα ὑπὸ τοῦ Comte, ἅτε ἐκπροσωποῦσα ὑπερνικηθὲν στάδιον τῆς πνευματικῆς ἐξελίξεως τῆς ἀνθρωπότητος. Ἀλλ' ἐπειδὴ ἡ μεταφυσικὴ ἐκπηγάζει ἐκ βαθυτάτης ἀνάγκης τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς, ἐπειδὴ ὁ ἄνθρωπος εἶναι κατ' ἐξοχὴν μεταφυσικὸν ζῷον, κατὰ τὸν χαρακτηρισμὸν τοῦ Σοπεγχάουερ, ἀπεδείχθησαν προφητικοὶ οἱ λόγοι τοῦ Καντίου, ὅστις λέγει ὅτι, ὅπως εἶναι ἀδύνατον νὰ παύσῃ τις νὰ ἀναπνέῃ, ἐπειδὴ φοβεῖται ὅτι θὰ εἰσπνεύσῃ μεμολυσμένον ἀέρα, οὔτε ἀδύνατον καὶ νὰ παραιτηθῇ τὸ ἀνθρώπινον πνεῦμα τῶν μεταφυσικῶν προβλημάτων. Τὸ μεταφυσικὸν διαφέρον ἀναφαίνεται πάλιν λίαν ζωηρόν, διότι ὁ ἄνθρωπος δὲν εἶναι ἐπιστημονικὴ ἁπλῶς μηχανή. Ἡ διαφορὰ πρὸς τὴν παλαιοτέραν μεταφυσικὴν συνίσταται εἰς τοῦτο, ὅτι νῦν ἐνσυνειδήτως καὶ περισσότερον ἢ πρότερον θεωρεῖται ἐπιστήμη στηριζομένη ἐπὶ τῆς ἐπαγωγῆς, ἂν καὶ ἀκόμη καὶ κατὰ τὸ παρελθὸν ὑπῆρχε κατ' οὐσίαν ἐπαγωγὴ ἐν αὐτῇ (Φέχνερ, φὸν Χάρτμανν, Βούντ), καὶ ὅτι κατόπιν τῆς προόδου τῶν πνευματικῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς ἐμφανίσεως τῆς ἀξιολογικῆς φιλοσοφίας ἀπεμακρύνθη ἀπὸ τῆς κοσμοθεωρίας τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν καὶ ἐτράπη μᾶλλον πρὸς νέας ὁδούς, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ εἶναι μέχρι τῆς στιγμῆς πλέον ἁπλῶν ἀποπειρῶν. Τὰ προβλήματα τῆς μεταφυσικῆς ὑπήχθησαν κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα εἰς σταθερὸν σχῆμα περιλαμβάνον τέσσαρα μέρη, τὴν *ὀντολογίαν*, τὴν *κοσμολογίαν*, τὴν *ψυχολογίαν* καὶ τὴν *θεολογίαν*· ἐκ τούτων ἡ μὲν ψυχολογία περιελήφθη βραδύτερον εἰς τὴν ὀντολογίαν, ἡ δὲ θεολογία, τουτέστι τὰ περὶ φύσεως τοῦ Θεοῦ καὶ αἱ ἀποδείξεις περὶ τῆς ὑπάρξεως αὐτοῦ, ἀποτελεῖ σήμερον μέρος τῆς φιλοσοφίας τῆς θρησκείας. Οὕτω ἡ νεωτέρα μεταφυσικὴ ἀσχολεῖται περὶ δύο τινά, τὴν ὀντολογίαν καὶ τὴν κοσμολογίαν, ὁρμωμένη τὸ μὲν ἐξ ἀρχῶν τῆς γνώσεως (γνωσιολογία), τὸ δὲ ἐξ ἀρχῶν τῆς πραγματικότητος, τὸ δὲ ἐξ ἀμφοτέρων καὶ ὁριζομένη ὡς ἀπόπειρα κοσμοθεωρίας συγκεκροτημένης τῇ βοηθείᾳ ἐπιστημονικῶν μέσων, εἰ καὶ οὐχὶ ὁμοφώνως. Ἡ ὀντολογία ἀσχολεῖται περὶ τὸ πρόβλημα τῆς φύσεως τῶν φαινομένων, περὶ τὸ ὄντως ὄν, τὸ πρᾶγμα καθ' αὑτό, ὅπερ λ.χ. ὁ μὲν Σοπεγχάουερ ὁρίζει ὡς βούλησιν, ὁ δὲ Χάρτμανν ὡς τὸ ἀσυνείδητον. Ἐπειδὴ δὲ τὰ φαινόμενα ἐμφανίζονται τὰ μὲν ὡς σωματικά, τὰ δὲ ὡς ψυχικά, πειρᾶται νὰ ἑρμηνεύσῃ ἑκάτερα καὶ νὰ ἐξεύρῃ τὴν σχέσιν αὐτῶν πρὸς ἄλληλα. Κατὰ τὴν ἔρευναν τῆς φύσεως τῶν σωματικῶν φαινομένων καταντᾷ σὺν τῷ χρόνῳ ἡ ὀντολογία εἰς τὴν σύλληψιν τῆς ἰδέας τῆς οὐσίας, τὴν ὁποίαν ὅμως ἄλλοι ἄλλως ὁρίζουσιν. Ἐξ ἄλλου ἡ βαθμιαία διάγνωσις τῆς μεταξὺ σωματικῶν καὶ ψυχικῶν φαινομένων διαφορᾶς ὁδηγεῖ τὸ μὲν εἰς τὴν ἰδέαν ἀΰλου καὶ ἀφθάρτου ψυχῆς, τὸ δὲ εἰς τὸν καθορισμὸν τῶν μεταξὺ αὐτῆς καὶ τοῦ σώματος σχέσεων. Ἐνταῦθα προβάλλονται ποικίλαι θεωρίαι κατὰ τοὺς τελευταίους αἰῶνας, ὧν κυριώταται ἡ περὶ ἀλληλεπιδράσεως (Καρτέσιος), ἡ περὶ προδιατεταγμένης ἁρμονίας (Λεϊβνίτιος), ἡ περὶ ψυχοφυσικοῦ παραλληλισμοῦ (Φέχνερ). Ἐπειδὴ δὲ ἡ μεταφυσικὴ ῥέπει ἐκ φύσεως πρὸς ἑνότητα, πειρᾶται νὰ ἄρῃ τὴν μεταξὺ σωματικῶν καὶ ψυχικῶν φαινομένων ἀντίθεσιν, καταντῶσα ἢ εἰς ὑλισμόν, καθ' ὃν τὸ ψυχικὸν εἶναι ἐπιφαινόμενον ἁπλῶς τοῦ σωματικοῦ, ἢ εἰς πνευματοκρατίαν, ὁσάκις ὁρμᾶται ἀπὸ τῆς πεποιθήσεως περὶ τῆς ἀνωτέρας ἀξίας τοῦ ψυχικοῦ (πρβλ. λ. χ. Σοπεγχάουρ-βουλησιαρχία, Ἑγέλου-νοησιαρχία, Χάρτμανν-σύνθεσις ἐξ ἀμφοτέρων). Ἐν διαφορᾷ πρὸς τὴν ὀντολογίαν ἀφορμᾶται ἡ κοσμολογία ἀπὸ τῆς ὁμοειδείας τῶν φαινομένων τῆς πραγματικότητος, ὡς ἀπὸ βασικοῦ δεδομένου, καὶ πειρᾶται νὰ ἐξηγήσῃ ἐντεῦθεν τὴν μορφήν, τὴν ὑφὴν καὶ τὴν συνάφειαν τοῦ κόσμου. Αἱ ἐξηγήσεις αὐτῆς εἶναι γνωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *τελολογία* καὶ *μηχανοκρατία*. Τὸ ἀσυμβίβαστον αὐτῶν κινεῖ τὸν Κάντιον εἰς τὴν διάκρισιν δύο κόσμων, τοῦ κόσμου τῆς φύσεως καὶ τῆς ἀναγκαιότητος καὶ τοῦ κόσμου τῶν ἀξιῶν καὶ τῆς ἐλευθερίας. Ὡς πρὸς τὰ στοιχεῖα τέλος, ἐκ τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται ἡ τοῦ κόσμου σύνθεσις, οἱ μὲν κηρύττουσιν αὐτὰ πολλά, οἱ δὲ ῥέπουσι πρὸς ἑνότητα. Οὕτως ἔχομεν καὶ ἐνταῦθα νέαν ἀντίθεσιν, διότι κατὰ μὲν τὴν περὶ πολλότητος θεωρίαν ὁ κόσμος ἀποτελεῖται ἐκ πλήθους ποιοτικῶς διαφόρων στοιχείων, τὰ ὁποῖα, ὅταν περιορισθῶσιν εἰς δύο, ὁδηγοῦσιν εἰς τὴν δυαρχίαν, κατὰ δὲ τὴν περὶ ἑνότητος θεωρίαν, τὰ διάφορα στοιχεῖα εἶναι μέρη μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς οὐσίας, δυναμένου τοῦ κόσμου νὰ ἑρμηνευθῇ ἐκ μιᾶς μόνης πρωταρχικῆς ἀρχῆς. Μετὰ τῆς περὶ πολλότητος θεωρίας συνδέεται ἀναγκαίως ἡ ἀποδοχὴ διακοσμούσης ἀρχῆς, ἥτις συνδέει τὸ πλῆθος τῶν στοιχείων εἰς τὴν ἑνότητα τοῦ συστήματος. Ἰδιότυπος εἶναι ἡ περὶ πολλότητος θεωρία τοῦ Λεϊβνιτίου, δι' ἧς συνενώνει τὸ ἄπειρον πλῆθος τῶν ἀτομικῶν μονάδων εἰς ἑνότητα τῇ βοηθείᾳ τῆς προδιατεταγμένης ἁρμονίας. Ἡ δὲ ἑνιστικὴ θεωρία ἢ δέχεται τὴν μίαν πρωταρχικὴν ἀρχὴν ὡς ὑλικὴν (ὑλισμὸς) ἢ ὡς πνευματικήν. Ὡς τοιαύτην δέχεται τὴν οὐσίαν ὁ Σπινόζας, ἐνῷ ὁ Φίχτε, μεταβάλλων τὴν ἔννοιαν αὐτῆς, δέχεται αὐτὴν ὡς ἀπόλυτον Ἐγὼ καὶ ὁ Ἕγελος ὡς ἀπόλυτον λόγον.

Ἡ μεταφυσικὴ εἶναι ἐκτεθειμένη εἰς τὸν ἔλεγχον καὶ τὴν κριτικὴν κατὰ πάντας τοὺς αἰῶνας. Ὁ σκεπτικισμὸς ἀμφισβητεῖ τὰ πορίσματα αὐτῆς, προβάλλων ὅτι ἡ ἀξίωσις τῆς μεταφυσικῆς, καθ' ἣν ἡ φύσις τῶν ὄντων εἶναι προσιτὴ εἰς τὸν ἀνθρώπινον νοῦν, εἶναι ἀναπόδεικτος. Ἐπίσης ἡ ἐμπειριοκρατία καὶ ἡ θετικοφροσύνη καθόλου καταπολεμεῖ αὐτήν, ἰσχυριζομένη ὅτι ἡ ὑπερπήδησις τῶν ὁρίων τῆς ἐμπειρίας εἶναί τι ἀδύνατον (ἀγνωστικισμός). Τέλος ὁ Κάντιος ὑπέβαλε τὴν μέχρις αὐτοῦ μεταφυσικὴν εἰς δριμὺν ἔλεγχον, καταδείξας ὅτι ἡ μὲν ψυχολογία περιπίπτει εἰς παραλογισμούς, ἡ δὲ κοσμολογία γέμει ἀντιφάσεων καὶ ἀντινομιῶν, καὶ ἡ θεολογία τέλος στερεῖται ἀποδεικτικῆς δυνάμεως, Ἡ μεταφυσικὴ εἶναι κατ' αὐτὸν ἀδύνατος ὡς ἐπιστήμη, στερουμένη περιεχομένου, ἅτε τοῦ ἀνθρωπίνου νοῦ ἀδυνατοῦντος νὰ ὑπερπηδήσῃ τὰ ὅρια τῆς ἐμπειρίας. Παρὰ ταῦτα ἀναγνωρίζει τὴν ἀνάγκην τῆς μεταφυσικῆς, εἰς τὴν ὁποίαν ἐπαναφέρει διὰ τῆς κριτικῆς τοῦ πρακτικοῦ λόγου. Εἶναι γνωστὸν ὅτι ἡ πολεμικὴ τοῦ μεγάλου φιλοσόφου δὲν στρέφεται κατὰ τοῦ πράγματος, ἀλλὰ κατὰ τῆς μεθόδου. Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται ὅτι οἱ διάδοχοι αὐτοῦ ἐγένοντο ἱδρυταὶ μεγαλοπρεπῶν μεταφυσικῶν συστημάτων (Φίχτε, Σέλλινγκ, Ἕγελος, Ἕρβαρτος, Σοπεγχάουερ).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Dilthey*, Die Typen der Weltamchanung (1911).—*Heimsoeth*, Die sechs grossen Themen der abendländischen Metaphysik (1922).—*Τοῦ αὐτοῦ*, Metaphysik der Neuzeit (1927).—*Külpe*, Einleitung in die Philosophie (6η ἔκδ. 1913).

Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**μεταφυσικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μεταφυσικὰ ἢ εἰς τὴν μεταφυσικήν: «μεταφυσικὴ θεωρία», «μεταφυσικὰ προβλήματα»· || καθόλου, ὁ ἀναφερόμενος εἰς ζητήματα ὑπὲρ τὴν ἐμπειρίαν: «ἡ θρησκεία εἶναι ζήτημα μεταφυσικόν»· || *μεταφυσικὴ* (ἡ) (βλ. λ.), ἡ ἐπιστήμη ἡ πραγματευομένη περὶ τῶν πρώτων ἀρχῶν τῶν ὄντων, ἄλλως *πρώτη φιλοσοφία* (ἡ λ. *μεταφυσικὴ* (metaphysica) ἐπλάσθη ὑπὸ τῶν σχολαστικῶν φιλοσόφων ἐκ τοῦ ὅρου μετὰ τὰ φυσικὰ ἢ *μεταφυσικὰ* (βλ. λ.). Β. Φ.

**μεταφύτευμα** (τό)· *μεταφύτευσις* (βλ. λ.).

**μεταφύτευσις**, *—εως* (ἡ)· ἡ ἐκ νέου φύτευσις, ἐκρίζωσις καὶ ἐκ νέου φύτευσις εἰς ἄλλον τόπον.

— *[Γεωπον.]* Καλεῖται *μεταφύτευσις* ἡ ἐξαγωγὴ φυτοῦ τινος ἔκ τινος μέρους καὶ ἡ φύτευσις τούτου εἰς ἕτερον. Ἡ ἐξαγωγὴ αὕτη διενεργεῖται δι' εἰδικοῦ ὀργάνου, ὅπερ καλεῖται *μεταφυτευτής*. Κυρίως μεταφυτεύονται οἱ θάμνοι καὶ τὰ δενδρύλλια, διὰ νὰ φυτευθῶσιν εἰς ἕτερον μέρος καὶ εἰς ὡρισμένας ἀποστάσεις ἀπ' ἀλλήλων, ὥστε μελλοντικῶς νὰ ἔχωσιν ἀρκετὸν ἔδαφος πέριξ αὐτῶν, ὅπως λαμβάνωσιν ἐκ τούτου τὰς ἀναγκαιούσας θρεπτικὰς οὐσίας καὶ ἀρκετὴν ἀπόστασιν ἀπ' ἀλλήλων, ὅπως ἀναπνέωσι καὶ ἡλιοῦνται καλύτερον. Δ. Ν. Π.

— *[Ἰατρ.]* Βλ. λ. *μεταμόσχευσις*.

— *[Ὀδοντιατρ.]* *Μεταφύτευσις* (transplantation) ἐν τῇ ὀδοντιατρικῇ καλεῖται ἡ ἐμφύτευσις φυσικοῦ ὀδόντος εἰς φατνίον ἄλλου ὀδόντος. Ὁ οὕτω μεταφυτευόμενος ὀδοὺς δυνατὸν ν' ἀνήκῃ εἰς τὸ αὐτὸ πρόσωπον, μεταφυτευόμενος ἀπὸ τοῦ ἑνὸς μέρους τοῦ στόματος εἰς ἄλλο, ἢ εἰς ἕτερον ἄτομον, ἐξ οὗ προσφάτως ἐξαχθεὶς μεταφυτεύεται εἰς ἄλλο ἄτομον, ἢ τέλος δυνατὸν νὰ ᾖ παλαιὸς καὶ ἀπεξηραμμένος ὀδούς, ὅστις μεταφυτεύεται εἰς φατνίον, ἐκ τοῦ ὁποίου νεωστὶ ἐξήχθη ὀδούς. Ἡ μεταφύτευσις εἶναι διάφορος τῆς *ἀναφυτεύσεως* καὶ τῆς *ἐμφυτεύσεως*. Καὶ διὰ μὲν τοῦ ὅρου ἀναφύτευσις (réimplantation) σημαίνεται ἡ ἐμφύτευσις ὀδόντος τινὸς νεωστὶ ἐξαιρεθέντος ἔκ τινος ἀτόμου καὶ ἐπαναφύτευσις αὐτοῦ ἐντὸς τοῦ ἰδίου αὐτοῦ φατνίου, διὰ δὲ τοῦ ὅρου ἐμφύτευσις (implantation) σημαίνεται ἡ ἐπὶ τοῦ ὀστοῦ τῆς γνάθου διάνοιξις ὀπῆς, ἐν εἴδει φατνίου, ἱκανοῦ μήκους καὶ εὔρους, καὶ ἡ ἐντὸς αὐτῆς φύτευσις ὀδόντος ἢ ῥίζης καταλλήλου. Τόσον ἡ μεταφύτευσις, ὅσον καὶ ἡ ἀναφύτευσις καὶ ἡ ἐμφύτευσις εἶναι χειρουργικαὶ ἐπεμβάσεις χρῄζουσαι ἄκρας ἐπιμελείας καὶ προσοχῆς.

**μεταφυτευτὴς** (ὁ)· ὁ μεταφυτεύων.

—**μεταφυτευτὴς** (ὁ) *[Γεωπον.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ εἰδικὸν ὄργανον, ὅπερ χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν *με-*

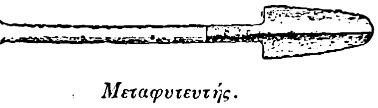

*Μεταφυτευτής.*

*ταφύτευσιν* (βλ. λ.). Τοῦτο συνίσταται ἐκ σιδηροῦ καὶ αἰχμηροῦ κατὰ τὴν περιφέρειάν του σιδηροῦ ἐλάσματος, ἐν εἴδει ἀβαθοῦς πτύου, ὅπερ προσαρμόζεται ἐπὶ ξυλίνης συνήθως λαβίδος. Δ. Ν. Π.

**μεταφυτευτός**, *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μεταφυτευθῇ.

**μεταφυτεύω**, *ἀόρ. μεταφύτευσα — μετεφυτεύθην*· ἐκριζώνω φυτὸν καὶ φυτεύω αὐτὸ εἰς ἄλλον τό-

Digitized by Google

πον, *ξαναφυτεύω*· || μεταφ., «ἡ μανία τῆς πολυτελείας μετεφυτεύθη ἐκ τῆς ἀλλοδαπῆς».

**μεταχαρὶς** (ἡ) (Metacharis) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων λεπιδοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶ *ῥοπαλοκέρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐρυκινιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 15 εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μεταχαρὶς ἡ ἐρυθρομελανὴ* (Metacharis erythromelas), ὡραιοτάτη ψυχὴ τῶν περὶ τὸν Ἀμαζόνειον ποταμὸν χωρῶν, ἥτις φέρει στιλπνὸν μελανέρυθρον χρῶμα κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ ἀργυροκυανοῦν κατὰ τὰ κάτω. Δ. Ν. Π.

**μεταχειρίζομαι,** *ἀόρ. μετεχειρίσθην*, παθ. μετχ. *μεταχειρισμένος*· ἔχω μετὰ χεῖρας, κάμνω χρῆσιν, χρησιμοποιῶ: «δὲν μεταχειρίζεται καλλυντικά», «μεταχειριζόμεθα πολλάκις ξένας λέξεις», «οὐδέποτε μετεχειρίσθη ἀνήθικα μέσα»· || φέρομαι πρός τινα οὕτως ἢ ἄλλως: «μεταχειρίζεται ἄσχημα τοὺς ὑπαλλήλους του», «δὲν μεταχειρίζονται ἔτσι τοὺς γέρους».

**μεταχείρισις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μεταχειρίζεσθαι, χρησιμοποίησις, χειρισμός· || τρόπος, συμπεριφορά: «δὲν ἦτο μεταχείρισις αὐτὴ ποῦ τοῦ ἔκαμες».

**μεταχειρισμένος,** *—η, —ον*· παθ. μετχ. τοῦ *μεταχειρίζομαι*· ὁ χρησιμοποιηθείς, ὁ μὴ καινουργής: «μεταχειρισμένα ἔπιπλα, — σκεύη, — ἐνδύματα, — βιβλία».

**μεταχλωράλη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Στερεὰ ἄμορφος μᾶζα, λαμβανομένη διὰ πολυμερισμοῦ τῆς *χλωράλης* διὰ παρουσίας μικρῶν ποσοτήτων θειικοῦ ὀξέος. Σ. Γ.

**μεταχλωρίτης** (ὁ) (Metachlorit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν τῆς ὁμάδος τῶν λεπτοχλωριτῶν. Ἀπαντᾷ κατὰ μικρὰ θραύσματα εἰς φυλλώδη ἕως ῥαβδοπαγῆ συσσωματώματα μὲ χρῶμα σκοτεινοπράσινον παρὰ τὸ Elbingerode, ἔχει δὲ σκληρότητα 2—3 καὶ εἰδικὸν βάρος 3,173. Γ. Β.

**Μετάχριον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Φρούριον τῆς Βοιωτίας, κείμενον μεταξὺ Ὀρχομενοῦ καὶ Κορωνείας. Α. Θ. Σ.

**μεταχρωμασία** (ἡ). Οὕτω καλοῦσιν ἐν τῇ ἱστολογικῇ τέχνῃ τὸ φαινόμενον, καθ' ὃ μία χημικῶς ἑνιαία χρωστικὴ προσδίδει εἰς διάφορα ἱστικὰ στοιχεῖα διάφορον ἀπόχρωσιν. Μόνον εἷς περιωρισμένος ἀριθμὸς χρωστικῶν ἔχει τὴν ἰδιότητα ταύτην καὶ μόνον εἰς ἕνα περιωρισμένον ἀριθμὸν ἱστικῶν στοιχείων γίνεται καταφανὴς ἡ ἀπόκλισις ἐκ τοῦ κανονικοῦ χρωματισμοῦ. Τὰς χρωστικὰς ταύτας ὠνόμασεν ὁ Ehrlich *μεταχρωματιστικάς*, τὰ δὲ ἱστικὰ στοιχεῖα *χρωμοτροπικά*. Οὕτω π. χ. οἱ πυρῆνες καὶ τὸ πρωτόπλασμα κανονικῶς χρωματίζονται διὰ τοῦ ἰωδίου κίτρινοι, ἐνῷ ἡ ἀμυλοειδὴς οὐσία καὶ τὰ κοκκία γλυκογόνου εἶναι χρωμοτροπικὰ ἔναντι τοῦ ἰωδίου ὡς προσλαμβάνοντα ἀπόχρωσιν καστανόχρουν· ἐπίσης τὰ κοκκία τοῦ ἀμύλου, ἅτινα δι' ἰωδίου χρωματίζονται κυανᾶ. Ὁ κατωτέρω πίναξ περιέχει τὰς κυριωτέρας μεταχρωμασίας τῶν κατ' ἐξοχὴν χρωμοτροπικῶν οὐσιῶν:

| *Χρωστικαὶ οὐσίαι* | *Κανονικὸς χρωματισμός* | *Μεταχρωμασίαι* | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | *Ἀμυλοειδεῖς οὐσίαι* | *Κοκκία σιτευτικῶν κυττάρων* | *Βλέννα* | *Θεμέλιος οὐσία τοῦ χόνδρου* |
| 1) Ἰῶδες τοῦ μεθυλίου (Methylviolett).... | κυανο-ἰώδης | ἐρυθρὰ | ἐρυθρὰ | ἐρυθρὰ | ἐρυθρὰ |
| 2) Θιονίνη .......................... | κυανο-ἰώδης | καθαρῶς κυανῆ | ἐρυθρα | ἐρυθρὰ | ἐρυθρὰ |
| 3) Ἀζούριον τοῦ μεθυλενίου .......... ... | κυανοῦς | ἰώδης | ἐρυθρα | ἐρυθρὰ | ἐρυθρα |
| 4) Ἰῶδες τοῦ κρεσυλίου (Kresylviolett RR) | ἰώδης | καθαρῶς κυανῆ | ἐρυθρα | ἐρυθρὰ | ἐρυθρὰ |

Πλὴν τῶν ἀνωτέρω μνημονευθεισῶν γνησίων μεταχρωμασιῶν, καθ' ἃς ἡ χρωστικὴ ἀποτελεῖ ἑνιαῖον χημικὸν σῶμα, ἔχομεν καὶ τὰς καλουμένας *ψευδομεταχρωμασίας*, αἵτινες ἐξηγοῦνται ἐκ τῆς μείξεως τῆς χρωστικῆς μετὰ δευτέρας χρωστικῆς. Οὕτω π. χ. τὸ φαινόμενον τῆς ἐρυθρᾶς χρώσεως τῆς ἀμυλοειδοῦς οὐσίας ὑπὸ τοῦ πρασίνου τοῦ ἰωδίου (Jodgrün) δέον νὰ ἐκληφθῇ ὡς ψευδομεταχρωσία, διότι βασίζεται ἐπὶ τῆς μείξεως τοῦ πρασίνου τοῦ ἰωδίου τοῦ ἐμπορίου μετὰ ἰώδους τοῦ μεθυλίου (Methylviolett). Θ. ΣΚΛΑΒΟΥΝΟΣ

**μεταχρωματίζω**· μεταβάλλω, ἀλλάσσω τὸ χρῶμα, δίδω ἄλλο χρῶμα.

**μετάχρωμος** (ὁ) (Metachromus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυτοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον 20 περίπου εἴδη ἰθαγενῆ τῆς κεντρικῆς καὶ μεσημβρινῆς Ἀμερικῆς. Οἱ μετάχρωμοι εἶναι κάνθαροι μικροῦ μεγέθους μὲ κίτρινον ἢ σκωριώδες χρῶμα καὶ μελανὰς ἢ κυανᾶς ἢ καὶ ὑποπρασίνους κηλῖδας ἐπὶ τῆς ῥαχιαίας ἐπιφανείας τοῦ σώματος. Δ. Ν. Π.

**μεταχύνω,** *ἀντὶ ματαχύνω*· δημοτ., χύνω ἐκ νέου· ἄλλως *ξαναχύνω*.

**μεταψυχικὴ** (ἡ). Καλεῖται οὕτω ἡ ἐπιστήμη ἡ ἀσχολουμένη περὶ ψυχικὰ φαινόμενα, τὰ ὁποῖα θεωροῦνται ὡς ὑποδηλοῦντα ψυχικὰς ἱκανότητας ἀτελῶς γνωστὰς μέχρι τοῦδε ἢ ἰδιότητας, τῶν ὁποίων ἡ ὕπαρξις ἀμφισβητεῖται. Τὸν ὅρον ὅμως μεταχειρίζονται καὶ πρὸς δήλωσιν τῆς ἐπιστήμης, ἡ ὁποία ἐρευνᾷ τὴν ψυχὴν καθ' ἑαυτὴν ἢ τὴν μεταφυσικὴν ἀρχὴν τῶν ψυχικῶν φαινομένων. Οὕτω καταντᾷ συνώνυμος ὁ ὅρος πρὸς τὴν μεταφυσικὴν ψυχολογίαν, δηλῶν τὴν ἐπιστήμην τὴν ἀσχολουμένην περὶ τοῦ πέρα τῶν ψυχικῶν φαινομένων ὑπάρχοντος. Ἡ μεταψυχικὴ ἔχει κατὰ ταῦτα στενὴν σχέσιν πρὸς τὴν *παραψυχολογίαν*, τουτέστι τὴν ἐπιστήμην, ἥτις ἐρευνᾷ ψυχολογικὰ φαινόμενα μὴ προσιτὰ εἰς τὴν συνήθη ψυχολογίαν καὶ ἀνήκοντα εἰς τὸν κύκλον τοῦ παθολογικοῦ κατὰ τὸ πλεῖστον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Richet*, Traité de métapsychique (β' ἐκδ. 1923). —*Mackenzie*, Metapsychica moderna (1923). —*Mattiesen*, Der jenseitige Mensch (1925).—*Driesch*, Grundprobleme der Psychologie (1926) (ἑλλ. μετάφρασις ὑπὸ *Σ. Καλλιάφα*). —*Oesterreich*, Grundbegriffe der Parapsychologie (1921). Ν. Λ.

**Μετδεσὶς-ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ταύρου (11843 ποδ.=3.500 μ.), ἀποτελοῦσα, ἀναγνωριζομένη ἀπὸ μακροτάτης ἀποστάσεως, γνώρισμα εἰς τοὺς ἐπέχοντας ἐκ νότου πρὸς τὰς περὶ τὸ ἀκρωτήριον Ἀναμοὺρ ἀκτὰς τῆς Καραμανίας (χάρτ. ἀγγλ. 2606 : Candia to Alexandretta). Σ. Ε. Λ.

**μετεγγύησις,** *—εως* (ἡ) *[Νομ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ἐγγύησις τῆς ἐγγυήσεως (βλ. λ. *ἐγγύησις*).

**μετεγκέφαλος** (ὁ)· βλ. *ἐγκέφαλος*.

**Μέτειβοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Σκυθικὸς λαὸς τῆς Ἀσιατικῆς Σαρματίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου καὶ κατοικῶν ὑπὲρ τὰ ὄρη τοῦ Κόρακος. Α. Θ. Σ.

**μετείκασμα *ὀπτικόν*,** ἢ ***διάρκεια ἐντυπώσεως*** *[Ὀπτικ.]*. Τὸ φαινόμενον, καθ' ὃ ἡ ἐντύπωσις, ἣν προκαλεῖ ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς φωτεινὸν φαινόμενον, δὲν ἐκλείπει ἀμέσως εὐθὺς ὡς ἐκλείψῃ καὶ ἡ προκαλέσασα αὐτὴν αἰτία, ἀλλὰ διαρκεῖ ἐπί τι εἰσέτι χρονικὸν διάστημα ὅπερ ἰσοῦται πρὸς $^1/_{10}$ τοῦ δευτερολέπτου. Ἕνεκα τοῦ ἀνωτέρω λόγου παρατηροῦμεν ὅτι ὅταν κρατοῦμεν τεμάχιον διαπύρου ἄνθρακος καὶ περιστρέφωμεν αὐτὸ ταχέως, τοῦτο φαίνεται ὡς συνεχὴς κυκλικὴ ζώνη. Ὁμοίως, ἐὰν ἀκτινωτὸς τροχὸς περιστρέφεται ταχέως, δὲν δυνάμεθα νὰ διακρίνωμεν τὰς ἀκτῖνας αὐτοῦ, ἀλλ' οὗτος φαίνεται εἰς ἡμᾶς ὡς δίσκος συνεχής. Ἐὰν ὅμως ἐν σκοτεινῷ θαλάμῳ φωτίζωμεν τὸν ἀνωτέρω δίσκον ἀκαριαίως, π. χ. δι' ἠλεκτρικοῦ σπινθῆρος, βλέπομεν τὸν τροχὸν ἀκίνητον καὶ ἐμφανίζοντα τὸ πραγματικὸν αὐτοῦ σχῆμα. Ἡ ὡς ἄνω κατὰ μέσον ὅρον διάρκεια τοῦ ὀπτικοῦ μετεικάσματος ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς εὐπαθείας τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς, ἐκ τοῦ χρώματος καὶ ἐκ τῆς ἐντάσεως τοῦ φωτός. Ἐπὶ τοῦ ὀπτικοῦ μετεικάσματος ἐρείδεται ἡ λειτουργία διαφόρων διατάξεων, μεταξὺ τῶν ὁποίων σπουδαιοτέρα εἶναι ὁ κινηματογράφος. Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

**Μέτειτα** (Metita) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας, κατὰ τὴν Ἀν. ἄκραν τῆς Καππαδοκίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Εὐφράτου ποταμοῦ, 32 μίλλια ΝΑ. τῆς Μελιτινῆς. Ἐπὶ τῶν ῥωμαϊκῶν χρόνων ἦτο ἕδρα φρουρᾶς. Α. Θ. Σ.

**μετεκπαίδευσις,** *—εως* (ἡ)· συμπληρωματικὴ εἰδικὴ ἐκπαίδευσις.

— *[Ἐκπαιδ.]* Ὁ θεσμὸς τῆς *μετεκπαιδεύσεως*, ἐφαρμοζόμενος εἰδικώτερον εἰς τοὺς λειτουργοὺς τῆς μέσης καὶ στοιχειώδους ἐκπαιδεύσεως, ἔχει ὡς σκοπὸν τὴν συμπλήρωσιν καὶ τὴν ἐπέκτασιν τῆς γενικῆς καὶ εἰδικῆς αὐτῆς μορφώσεως, ἰδίως ὅμως τὸν ἐπὶ τὸ συγχρονιστικώτερον προσανατολισμὸν αὐτῶν ἐν τῇ ἐξασκήσει τοῦ ἐπαγγέλματός των.

Ὁ θεσμὸς τῆς μετεκπαιδεύσεως ἐφαρμόζεται ὑπὸ διαφόρους μορφάς: λ.χ. ὑπὸ μορφὴν θερινῶν μαθημάτων, εἰς ὃ προσκαλούμενοι λαμβάνουσι μέρος οἱ ἐκπαιδευτικοὶ λειτουργοὶ κατὰ περιφερείας, ἢ καὶ ἐκπαιδευτικῶν συνεδρίων. Ἐπικρατεστέρα ὅμως μορφὴ τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ θεσμοῦ τούτου εἶναι ἡ φοίτησις ὡρισμένου ἀριθμοῦ λειτουργῶν καὶ ἐπὶ ὡρισμένον χρονικὸν διάστημα εἰς εἰδικὰ ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα, ἔνθα οὗτοι εἰσάγονται συστηματικώτερον εἰς τὴν θεωρίαν καὶ τὴν πρᾶξιν τῆς ἀγωγῆς, παραλλήλως δὲ καταρτίζονται ἐπὶ τὸ ἐπιστημονικώτερον εἰς τοὺς κλάδους ἐκείνους, τοὺς ὁποίους πρόκειται νὰ διδάξωσιν. Ἡ τελευταία αὕτη μορφὴ τῆς μετεκπαιδεύσεως, ἡ ἀποσκοποῦσα τὴν ἐπέκτασιν καὶ συμπλήρωσιν τόσον τῆς εἰδικῆς ἐπαγγελματικῆς μορφώσεως, ὅσον καὶ τῆς γενικῆς τοιαύτης, δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὡς *καθολική*, ἐν ἀντιδιαστολῇ πρὸς τὴν *εἰδικήν*, ἥτις ἀποβλέπει εἰς εἰδικωτέρους σκοπούς, ὡς λχ. ἡ παιδαγωγικὴ-ἐπαγγελματική, ἡ τεχνική, ἡ γεωργικὴ κτλ.

Παρ' ἡμῖν ἡ μετεκπαίδευσις ἐφαρμόζεται ὑπὸ τὰς ἑξῆς μορφάς: 1) Τὴν καθολικήν. α) Διὰ τοὺς λειτουργοὺς τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως ἐν τῷ διδασκαλείῳ τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως, ἱδρυθέντι τῷ 1910. «Σκοπὸς τοῦ ἱδρύματος τούτου εἶναι ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ συμπλήρωσις τῶν ἐπιστημονικῶν γνώσεων, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ θεωρητικὴ καὶ πρακτικὴ μόρφωσις τῶν ἐν ὑπηρεσίᾳ διατελούντων λειτουργῶν τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως». Ἡ ἐν αὐτῷ φοίτησις εἶναι μονοετής. Ἡ διὰ τοῦ νόμου 4372 τοῦ 1929 θεσπισθεῖσα διετὴς φοίτησις δὲν ἐφηρμόσθη εἰσέτι. Κατὰ τὸν αὐτὸν νόμον εἰς τὸ διδασκαλεῖον τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως δύνανται νὰ μετακαλῶνται πρὸς μετεκπαίδευσιν ἐπιστημονικὴν καὶ παιδαγωγικὴν καθηγηταὶ καὶ διδάσκαλοι τῆς γαλλικῆς γλώσσης. Ἐπίσης πρὸς τὸν διττὸν σκοπόν, ἤτοι τὴν παρασκευὴν καθηγητῶν διδασκαλείων καὶ τὴν βελτίωσιν τῶν ἀνωτέρων στελεχῶν τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως, ἐλειτούργησεν ἀπὸ τοῦ 1924 — 1926 ἡ παιδαγωγικὴ ἀκαδημία. β) Διὰ τοὺς λειτουργοὺς τῆς δημοτικῆς ἐκπαιδεύσεως, ἔχομεν μετεκπαίδευσιν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν θεσπισθεῖσαν ἀπὸ τοῦ 1922, ἀπὸ δὲ τοῦ 1929 καὶ διὰ τὸ πανεπιστήμιον Θεσσαλονίκης, μὴ ἐφαρμοσθεῖσαν ὅμως εἰσέτι. Ὁ ἀριθμὸς τῶν μετεκπαιδευομένων εἶναι διὰ μὲν τὸ πανεπιστήμιον Ἀθηνῶν 40, διὰ δὲ τὸ τῆς Θεσσαλονίκης 30. Ἡ φοίτησις εἶναι διετής, τὰ δὲ διδασκόμενα μαθήματα εἶναι: Σωματολογία τοῦ παιδός, ψυχολογία τοῦ παιδός, ψυχολογία ἀτομικῶν διαφορῶν παρὰ τοῖς παισί, γενικὴ ψυχολογία, γενικὴ παιδαγωγική, γενικὴ διδακτική, εἰδικὴ διδακτική, γενικὴ καὶ σχολικὴ ὑγιεινή, στοιχεῖα φυσικῆς πειραματικῆς, ἀνοργάνου χημείας, γεωλογίας καὶ ὀρυκτολογίας, ζῳολογία, βοτανική, ἐγκυκλοπαιδεία τῆς γεωπονίας, ἱστορία τοῦ ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ, ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης, νεοελληνικὴ λογοτεχνία, χειροτεχνία, ἰχνογραφία, εἰσαγωγὴ εἰς τὴν παιδομετρίαν καὶ τὴν στατιστικήν. Ἐπίσης τὴν ἐν τοῖς διδασκαλείοις τοῦ κράτους μετεκπαίδευσιν τῶν δημοδιδασκάλων τῆς γ' τάξεως (ἀπόφοιτοι τοῦ ὑποδιδασκαλείου Βελᾶς, ἀπόφοιτοι τῆς α' ἢ β' τάξεως τοῦ γυμνασίου), ἥτις ἐθεσπίσθη διὰ τὰ τρία μόνον σχολικὰ ἀπὸ τοῦ 1929—1932 ἔτη. Ἡ μετεκπαίδευσις αὕτη παρέχεται, κατόπιν ἐγκρίσεως τοῦ οἰκείου ὑπουργοῦ, εἰς τοὺς ἔχοντας πενταετῆ τοὐλάχιστον εὐδόκιμον ὑπηρεσίαν καὶ μὴ ὑπερβάντας τὸ 45 ἔτος τῆς ἡλικίας των. 2) Τὰς εἰδικὰς μετεκπαιδεύσεις. α) Τὴν τεχνικήν, ἀποσκοποῦσαν τὴν μόρφωσιν διδασκάλων τεχνικῶν μαθημάτων ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ 1923 — 1926 λειτουργήσαντι τεχνικῷ διδασκαλείῳ. β) Τὴν γεωργικήν, ἀποσκοποῦσαν τὴν μόρφωσιν διδασκάλων γεωπονικῶν μαθημάτων εἰς τὰ κυριακὰ γεωπονικὰ σχολεῖα. Ἡ μετεκπαίδευσις αὕτη γίνεται ἐν γεωργικῷ φροντιστηρίῳ ἱδρυομένῳ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἐν τῇ ἐν Ἀθήναις Ἀνωτάτῃ Γεωπονικῇ Σχολῇ ἢ καὶ ἐν ἄλλῃ ἰσοτίμῳ. Ἡ φοίτησις εἶναι μονοετής. Οἱ ἐπὶ διετίαν ὅμως ἐν τοῖς φροντιστηρίοις τούτοις μετεκπαιδευθέντες δύνανται, ἐλλείψει γεωπόνων, νὰ διορισθῶσι καὶ διευθυνταὶ τῶν κατωτέρων γεωπονικῶν σχολείων. Ἅπαντες οἱ ὡς ἄνω μετεπαιδευόμενοι θεωροῦνται ὡς τυγχάνοντες ἐκπαιδευτικῆς ἀδείας.

Εἰς τὰς εἰδικὰς μετεκπαιδεύσεις δύναται νὰ συγκαταλεχθῇ καὶ ἡ ἐν εὐρωπαϊκοῖς πανεπιστημίοις ἄνευ ἀποδοχῶν γενομένη διετὴς παιδαγωγικὴ μετεκπαίδευσις. Ι. Ι.

**Μετέλλινον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λουσιτανίας (βλ. λ. *Καικιλία*-Γεμέλλινον).

**Μέτελλος** (Metellus). Πληβεία οἰκογένεια τῆς Ῥώμης, ἀνήκουσα εἰς τὴν Καικιλίαν γενεάν. Ἀναφαίνεται ἤδη ἀπὸ τοῦ πρώτου Καρχηδονιακοῦ πολέμου, διεδραμάτισε δὲ περὶ τὰ τέλη τοῦ Β' αἰῶνος π. Χ. σπουδαιότατον πρόσωπον ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ὀλιγαρχικοῦ κόμματος. Τὰ σπουδαιότερα μέλη αὐτῆς ὑπῆρξαν τὰ ἑξῆς:

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος*. Τῷ 251 ἐχρημάτισεν ὕπατος καὶ ἐνίκησε τὸν Ἀσδρούβαν στρατηγὸν τῶν Καρχηδονίων εἰς τὴν Πάνορμον τῆς Σικελίας. Τῷ 247 ἐξελέγη ἐκ νέου ὕπατος, τῷ 243 μέγας ποντίφηξ καὶ τῷ 224 δικτάτωρ, ἀποθανὼν μετὰ τρία ἔτη.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος*. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Διεκρίθη διὰ πρώτην φορὰν κατὰ τὴν ἐκφώνησιν τοῦ ἐπικηδείου λόγου τοῦ πατρός του. Τῷ 216 ἐξελέγη ποντίφηξ, τῷ 209 πληβεῖος ἀγορανόμος, τῷ 208 ἐπιδίφριος ἀγορανόμος, τῷ 205 ὕπατος καὶ τῷ 204 δικτάτωρ. Ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Ἀννίβα.

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Μετὰ τὴν ἧτταν τῶν Καννῶν ἐπρότεινε

Digitized by Google

νὰ τοῦ ἐπιτραπῇ ἡ μετανάστευσις καὶ ἐξέπεσε τῆς κοινωνικῆς τάξεως εἰς ἣν ἀνῆκε, κατόπιν γνωματεύσεως τῶν τιμητῶν. Ἐχρημάτισε δήμαρχος.

*Μᾶρκος Καικίλιος Μέτελλος*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 208 ἐξελέγη πληβεῖος ἀγορανόμος, τῷ 206 ἀστυδίκης καὶ τῷ 205 πρέσβυς παρὰ τῷ Ἀττάλῳ. Ἐκόμισεν εἰς Ρώμην τὴν μέλαιναν λίθον, ἡ ὁποία ἐλατρεύετο ὡς Μήτηρ τῶν θεῶν.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Μακεδονικός*. Ὑπῆρξε στρατηγός, κατέλαβε τὴν Μακεδονίαν τῷ 148, νικήσας καὶ συλλαβὼν αἰχμάλωτον τὸν Ἀνδρίσκον, ἐπολέμησε κατὰ τῶν Ἀχαιῶν, ἐνίκησε τὸν Κριτόλαον εἰς τὴν Σκάρφειαν καὶ τοὺς Ἀρκάδας εἰς τὴν Χαιρώνειαν (147). Διὰ τὰ κατορθώματά του ταῦτα ἐτέλεσε θρίαμβον ἐν Ρώμῃ καὶ ἔλαβε τὴν τιμητικὴν προσωνυμίαν *Μακεδονικός*. Τῷ 143 ἐξελέγη ὕπατος, τὸ ἑπόμενον ἔτος διώκησε τὴν Ἱσπανίαν καὶ ἐπολέμησεν ἐπιτυχῶς τοὺς Κελτίβηρας καὶ τὸν Οὐϊρίαθον. Τῷ 131 ἐξελέγη τιμητὴς μετὰ τοῦ Κ. Πομπηΐου, ἐπρότεινε νὰ θεσπισθῇ ὑποχρεωτικὸς ὁ γάμος διὰ τοὺς ἐλευθέρους πολίτας, ἐνεπλάκη εἰς ἀγῶνα πρὸς τὸν δήμαρχον Ἀτίνιον Λαβέωνα καὶ κατεπολέμησε τὸν Σκιπίωνα τὸν Ἀφρικανὸν καὶ τοὺς Γράκχους. Ἐφημίζετο διὰ τὴν εὐγλωττίαν του καὶ· τὴν καλλιτεχνικήν του ἀνατροφὴν καὶ ἵδρυσε μίαν στοὰν καὶ δύο ναοὺς εἰς τὸν Δία καὶ τὴν Ἥραν. Ἀπέθανε τῷ 115. Οἱ ἀρχαῖοι τὸν ἀνέφερον ὡς παράδειγμα εὐτυχοῦς ἀνθρώπου. Εὐγενοῦς καταγωγῆς, πλήρης δόξης καὶ στρατιωτικῶν καὶ πολιτικῶν τιμῶν, ηὐτύχησε νὰ ἴδῃ τοὺς τέσσαρας υἱούς του προκόπτοντας καὶ καταλαμβάνοντας, ἐν ὅσῳ ἀκόμη ἔζη, τὰ ἀνώτατα ἀξιώματα τῆς πολιτείας.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Βαλεαρικός*. Πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 123 ἐξελέγη ὕπατος καὶ κατέκτησε τὰς Βαλεαρίδας νήσους, τελέσας θρίαμβον διὰ τοῦτο καὶ ἐπονομασθεὶς τιμητικῶς *Βαλεαρικός*. Τῷ 120 ἐγένετο τιμητής.

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος Διαδημᾶτος*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, ἐκλεγεὶς ὕπατος τῷ 117.

*Μᾶρκος Καικίλιος Μέτελλος*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 115 ἐξελέγη ὕπατος, τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος ἐνίκησε τοὺς Σαρδοὺς καὶ ἐτέλεσε θρίαμβον.

*Γάϊος Καικίλιος Μέτελλος Καπραρικός*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 113 ἐξελέγη ὕπατος. Ἐνίκησε τοὺς Θρᾷκας, ἐτέλεσε θρίαμβον καὶ τῷ 102 ἐγένετο τιμητὴς μετὰ τοῦ Μετέλλου τοῦ Νουμιδικοῦ.

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος Δαλμάτικός*. Υἱὸς τοῦ Κάλβου, ἐξελέγη ὕπατος τῷ 119, ὑπέταξε τὴν Δαλματίαν, ἐτέλεσε θρίαμβον, ἐχρημάτισε τιμητὴς κατὰ τὸ 115 καὶ διέγραψε 32 συγκλητικοὺς ἐκ τοῦ καταλόγου τῶν μελῶν. Ὑπῆρξεν ἐπίσης καὶ μέγας ποντίφηξ.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Νουμιδικός*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ὑπῆρξεν ὁ κυριώτερος ἀρχηγὸς τοῦ ὀλιγαρχικοῦ κόμματος. Ἦτο χαρακτῆρος ἀκεραίου, πεπροικισμένος μὲ ἀξιόλογα στρατιωτικὰ προσόντα, ἀλλ' αὐταρχικός. Τῷ 109 ἐξελέγη ὕπατος, ἔλαβεν ὡς ἐπαρχίαν τὴν Νουμιδίαν, ὅπου διεξήγαγε τὸν πόλεμον κατὰ τοῦ Ἰουγούρθα, τὸν ὁποῖον ἐνίκησε καὶ ἐσυνέχισε τὰς ἐπιχειρήσεις ὡς ἀνθύπατος. Τῷ 107 ἐτέλεσε θρίαμβον, τῷ 102 ἐξελέγη τιμητὴς μετὰ τοῦ ἐξαδέλφου του, τὸν ὁποῖον ἠμπόδισε νὰ διαγράψῃ τῆς συγκλήτου τὸν Γλαυκίαν καὶ τὸν Σατουρνῖνον. Ἐξορισθεὶς ὑπ' αὐτῶν, διότι δὲν ἐδέχθη νὰ ὁμολογήσῃ ὑπακοὴν εἰς τὸν ἀγροτικόν των νόμον τῷ 100, ἐπανῆλθε μετὰ τὴν δολοφονίαν των καὶ ἀπέθανε δηλητηριασθείς. Ὑπῆρξε προστάτης τοῦ ποιητοῦ Ἀρχία, οἱ δὲ λόγοι του ἐθαυμάζοντο καὶ κατὰ τοὺς μεταγενεστέρους χρόνους.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Νέπως*. Υἱὸς τοῦ Βαλεαρικοῦ, ὠνομάσθη *Νέπως* (ἔγγονος) διότι ἦτο ὁ πρεσβύτερος ἐκ τῶν ἐγγόνων τοῦ Μακεδονικοῦ. Ἐξελέγη ὕπατος τῷ 98 καὶ ἐψήφισε τὸν Καικίλιον Δίδιον νόμον.

*Καικιλία Μετέλλα*. Ἀδελφὴ τοῦ Νουμιδικοῦ, συζευχθεῖσα τὸν Λούκουλλον, πατέρα τοῦ νικητοῦ τοῦ Μιθριδάτου.

*Καικιλία Μετέλλα*. Ἀδελφὴ τοῦ Νέπωτος, συζευχθεῖσα τὸν Ἄπιον Κλαύδιον.

*Καικιλία Μετέλλα*. Ἀδελφὴ τοῦ Δαλματικοῦ, συζευχθεῖσα τὸν Σκάβρον καὶ κατόπιν τὸν δικτάτωρα Σύλλαν.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Πῖος*. Ὠνομάσθη *Πῖος* (εὐσεβὴς) διὰ τὸν ζῆλον, τὸν ὁποῖον ἔδειξε πρὸς ἐπαναφορὰν τοῦ πατρός του Νουμιδικοῦ ἀπὸ τῆς ἐξορίας (99). Στρατηγὸς τῷ 89, κατεπολέμησε τοὺς Ἰταλούς, ἐνίκησε τὸν Κ. Πομπαίδιον, ἀρχηγὸν τῶν Μάρσων, τῷ 88. Ὅταν κατὰ τὸ 87 ἀπεβιβάσθη εἰς τὴν Ἰταλίαν ὁ Μάριος, ὁ Πῖος ὡδήγησε τὸν στρατόν του εἰς τὸ Σάμνιον διὰ νὰ βοηθήσῃ τὴν σύγκλητον, ἀλλ' ἐγκαταλειφθεὶς ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν του κατέφυγεν εἰς Ἀφρικήν. Κατεπολεμήθη ὑπὸ τοῦ Κ. Φαβίου τῷ 84 καὶ διεπεραιώθη εἰς τὴν Λιγυρίαν. Συνεδέθη μὲ τὸν Σύλλαν ἀπὸ τῆς ἐπανόδου του, ἐνίκησε τὸν Καρίναν εἰς τὴν Ὀμβρικήν, κατόπιν τὰς ὀρδὰς τοῦ Κάρβωνος καὶ τέλος κατετρόπωσε παρὰ τὴν Φαβεντίαν τὸν Κάρβωνα καὶ τὸν Νορβανόν. Τῷ 80 ἐχρημάτισεν ὕπατος μετὰ τοῦ Σύλλα, τῷ 79 ἀνθύπατος ἐν Ἱσπανίᾳ, ὅπου ἔμεινεν ἐπὶ ὀκταετίαν πολεμῶν κατὰ τοῦ Σερτωρίου, ὅστις τὸν ἐνίκα ἐπανειλημμένως. Διετέλεσεν ἐπίσης μέγας ποντίφηξ καὶ ἀπέθανε τῷ 63.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Κέλερ*. Υἱὸς τοῦ Νέπωτος. Ὑπῆρξε ληγᾶτος τοῦ Πομπηΐου εἰς τὸν στρατὸν τῆς Ἀσίας, ἐνίκησε τὸν Ὀρόσην βασιλέα τῆς Ἀλβανίας, ἐξελέγη στρατηγὸς τῷ 63, καθ' ὃν χρόνον ὑπάτευεν ὁ Κικέρων, τὸν ὁποῖον ὑπεστήριζε, κατεπολέμησε τὸν Κατιλίναν, ἐπεφορτίσθη μὲ τὴν κατάληψιν τοῦ Πικήνου, ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς ἐντεῦθεν τῶν Ἄλπεων Γαλατίας μὲ τὸν τίτλον τοῦ ἀνθυπάτου τῷ 62, ἐξελέγη τῷ 60 ὕπατος, ἀντεπολιτεύθη τὸν Πομπήϊον, παρημπόδισε τὴν ψήφισιν τοῦ ἀγροτικοῦ νόμου τοῦ Σ. Φλαβίου, ἀντετάχθη κατὰ τοῦ ἀγροτικοῦ νόμου τοῦ Καίσαρος ἀνεπιτυχῶς (59) καὶ ἀπέθανε τῷ 59, δηλητηριασθείς, ἴσως, ὑπὸ τῆς συζύγου του Κλωδίας.

*Κόϊντος Μέτελλος Νέπως*. Ληγᾶτος τοῦ Πομπηΐου κατὰ τὸν ἐναντίον τῶν πειρατῶν καὶ ἐναντίον τῆς Ἀσίας πόλεμον (67—63). Ὡς πομπηϊανὸς ἐξελέγη τὸ 62 δήμαρχος, ἠγωνίσθη βιαίως κατὰ τοῦ Κικέρωνος, κατηγορήσας αὐτὸν ἐνώπιον τοῦ λαοῦ καὶ τῆς συγκλήτου ὅτι ὅλως παρανόμως ἐθανάτωσε τοὺς συνενόχους τοῦ Κατιλίνα, καὶ ἐπρότεινε μετὰ τοῦ Καίσαρος τὴν ἐξ Ἀσίας ἀνάκλησιν τοῦ Πομπηΐου πρὸς ἀποκατάστασιν τῆς διασαλευθείσης τάξεως. Ἀλλ' ἡ πρότασις δὲν ἐγένετο δεκτὴ καὶ ὁ Νέπως ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ παρὰ τῷ Πομπηΐῳ. Ἐπανελθὼν εἰς Ρώμην μετ' αὐτοῦ τῷ 60, ἐξελέγη στρατηγὸς καὶ εἰσήγαγε νόμον καταργοῦντα ἐν Ἰταλίᾳ τὸν ἐπὶ τῶν δημητριακῶν φόρον. Τῷ 57 ἐξελέγη ὕπατος, συνεφιλιώθη μετὰ τοῦ Κικέρωνος διὰ νὰ καταπολεμήσῃ τὸν Κλώδιον, ἐπιτυχὼν τὴν ἐκ τῆς ἐξορίας ἀνάκλησιν τοῦ Κικέρωνος. Τῷ 56 ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς Ἱσπανίας, ἐπολέμησε πρὸς τοὺς Βακκαίους καὶ νικηθεὶς κατ' ἀρχάς, κατέλαβεν εἶτα τὴν Κλουνίαν τῷ 55.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Πῖος Σκιπίων*. Υἱὸς τοῦ Π. Κορνηλίου Σκιπίωνος Νασικᾶ, υἱοθετηθεὶς ὑπὸ τοῦ Μετέλλου Πίου. Τῷ 59 ἐξελέγη δήμαρχος καὶ κατόπιν ἐξέθεσεν ὑποψηφιότητα δι' ὑπατείαν, ὑποστηριχθεὶς ὑπὸ τοῦ Κλωδίου κατὰ τοῦ Μίλωνος τῷ 53. Ἡ δολοφονία τοῦ Κλωδίου ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὴν ἐκλογὴν τοῦ Πομπηΐου ὡς μόνου ὑπάτου, ὅστις συνεζεύχθη τὴν Κορνηλίαν, θυγατέρα τοῦ Μετέλλου-Σκιπίωνος, ὃν ἐπροτίμησεν ὡς συνάρχοντά του (52). Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πλέον ἀμειλίκτων ἐχθρῶν τοῦ Καίσαρος καὶ ἐπρότεινεν εἰς τὴν σύγκλητον νὰ διατάξῃ τὸν Καίσαρα ὅπως διαλύσῃ τὸν στρατόν του, εἰδ' ἄλλως νὰ τὸν κηρύξῃ ἐχθρὸν τῆς πατρίδος. Ἀναλαβὼν τὴν διοίκησιν τῆς Συρίας, ἐφρόντισε νὰ προσεταιρισθῇ τὸν Πομπήιον, ὅστις ἐπιέζετο ἐν Θεσσαλίᾳ ὑπὸ τοῦ Καλβίνου. Μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Καλβίνου παρὰ τὸ Δυρράχιον, ὁ Μέτελλος κατέλαβε τὴν Λάρισαν καὶ ἡνώθη μετὰ τοῦ Πομπηΐου. Κατὰ τὴν μάχην τῶν Φαρσάλων διηύθυνε τὸ κέντρον τοῦ στρατοῦ τοῦ Πομπηΐου καὶ μετὰ τὴν ἧτταν τούτου κατέφυγεν εἰς Κέρκυραν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ἀφρικήν, ὅπου, παρὰ τὰς ἀντιρρήσεις τοῦ Κάτωνος, ἐγένετο διοικητής. Ἐν συνεννοήσει μετὰ τοῦ Ἰούβα, βασιλέως τῆς Νουμιδίας, ἠθέλησε νὰ καταστρέψῃ τὴν Ὑτίκην καὶ ἐλεηλάτησε τὴν χώραν. Καταδιωχθεὶς ὑπὸ τοῦ στόλου τοῦ Καίσαρος καὶ κινδυνεύων νὰ συλληφθῇ ηὐτοκτόνησεν.

*Κόϊντος Καικίλιος Μέτελλος Κρητικός*. Ὕπατος κατὰ τὸ 69, ἐπεφορτίσθη μὲ τὸν ἐναντίον τῆς Κρήτης πόλεμον καὶ ἐχρειάσθη δύο ἔτη διὰ νὰ καθυποτάξῃ τὴν νῆσον, τῆς ὁποίας ἡ ἀντίστασις ἐνισχύετο ὑπὸ τοῦ Πομπηΐου. Τῷ 62 ἐτέλεσε θρίαμβον διὰ τὸ κατόρθωμά του καὶ ἔλαβε τὴν τιμητικὴν προσωνυμίαν *Κρητικός*.

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος*. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Στρατηγὸς τῷ 71, διεδέχθη τὸν Οὐέρρην εἰς τὴν διοίκησιν τῆς Σικελίας, ὅπου ἀποκατέστησε τὴν τάξιν, ἀλλ' ἐπεχείρησε μετὰ τῶν ἀδελφῶν του Κοΐντου καὶ Μάρκου (στρατηγοῦ τῷ 69) νὰ σώσῃ τὸν Οὐέρρην. Τῷ 68 ἐξελέγη ὕπατος.

*Λούκιος Καικίλιος Μέτελλος Κρητικός*. Πιθανῶς υἱὸς τοῦ προηγουμένου Λουκίου Ὑπῆρξε δήμαρχος τῷ 49 καὶ ἀντεπολιτεύθη ἐρρωμένως τὸν Καίσαρα. Ταυτίζεται πρὸς τὸν Μέτελλον, ὅστις ἐπολέμησεν εἰς τὸ Ἄκτιον κατὰ τοῦ Ὀκταβίου καὶ ἠμνηστεύθη τῇ μεσιτείᾳ τοῦ υἱοῦ του, ὅστις εἶχε πολεμήσει παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ νικητοῦ. Ὁ τελευταῖος γνωστὸς *Μέτελλος* εἶναι εἷς *Κόϊντος Κρητικός*, ὕπατος κατὰ τὸ 7 π. Χ. Θ. Π.

**μετεμψυχῶ** (*—όω*)· μεταβιβάζω τὴν ψυχὴν ἀπὸ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο· || συνήθ. παθ., *μετεμψυχοῦμαι*· μεταβιβάζεται ἡ ψυχή μου εἰς ἄλλο σῶμα, ἄλλως *μετενσωματοῦμαι*.

**μετεμψύχωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ μετάβασις τῆς ψυχῆς ἀπὸ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο, ἄλλως *μετενσωμάτωσις*.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἡ πίστις καθ' ἣν ἡ ψυχὴ τοῦ ἀνθρώπου δύναται νὰ εἰσέλθῃ πάλιν μετὰ θάνατον (νὰ *μετεμψυχωθῇ*) εἰς νέον σῶμα, εἴτε ἀνθρώπου, εἴτε ζῴου, ἀκόμη δὲ καὶ φυτοῦ, διανύσασα καὶ πρὸ τῆς παρούσης ζωῆς διάφορα στάδια καὶ προσλαβοῦσα ποικίλας μορφάς, οὔτε ἐν τῇ θρησκείᾳ οὔτε ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ ἔσχε τὸ κατ' ἀρχὰς τὴν γέννησιν αὐτῆς, ἀλλ' ἐξεπήγασεν ἐκ δημωδῶν παραστάσεων τῶν πρωτογενῶν ἀνθρώπων. Κατὰ ταύτας ἡ ψυχὴ τοῦ ἀνθρώπου εἶναι ὂν ἐντελῶς ἀνεξάρτητον τοῦ σώματος, ὅπερ δύναται νὰ ἐγκαταλείπῃ αὐτὸ κατὰ βούλησιν, ἰδίᾳ κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὕπνου. Τοιαύτην ψυχὴν κέκτηνται καὶ τὰ ζῷα καὶ τὰ φυτά, ἅπερ ὁμιλοῦσι καὶ σκέπτονται, ὡς διδάσκουσιν οἱ μῦθοι, καὶ πρὸς τὰ ὁποῖα εἶναι συγγενὴς ὁ ἄνθρωπος. Ἐπιζῇ δὲ ἡ πίστις αὕτη καὶ εἰς τοὺς ἔπειτα χρόνους καὶ χρησιμοποιεῖται ὑπό τε τῆς θρησκείας καὶ τῆς φιλοσοφίας, μάλιστα ἐν Ἑλλάδι καὶ Ἰνδίαις, συνδεομένη πρὸς τὴν περὶ ἀνταποδόσεως διδασκαλίαν. Οὕτω ἀπαντῶμεν αὐτὴν οὐ μόνον παρὰ τοῖς κατὰ φύσιν ζῶσι λαοῖς, ἀλλὰ καὶ παρ' Αἰγυπτίοις, ἐν ταῖς Οὐπανισάδαις, ἐν τῷ Βουδισμῷ, παρὰ τοῖς ὀρφικοῖς, παρὰ τοῖς πυθαγορείοις, παρὰ Πλάτωνι καὶ παρὰ τῷ Ἐμπεδοκλεῖ, ὅστις ἐδίδασκε, κατὰ Διογένη τὸν· Λαέρτιον, «καὶ τὴν ψυχὴν παντοῖα εἴδη ζῴων καὶ φυτῶν ἐνδύεσθαι· φησὶ γοῦν ἤδη γάρ ποτ' ἐγὼ γενόμην κοῦρός τε κόρη τε θάμνος τ' οἰωνός τε καὶ ἔξαλος ἔλλοπος ἰχθύς». Ἐκ τῶν νεωτέρων δέχονται αὐτὴν καὶ ἄλλοι καὶ ὁ Χέρδερ. Ἡ θρησκευτικὴ σημασία αὐτῆς ἔγκειται εἰς τοῦτο, ὅτι ἐθεωρήθη ὡς γινομένη δι' ἁμαρτήματα θρησκευτικὰ καὶ ἠθικὰ καὶ ὅτι κατ' ἀκολουθίαν εἶναι εἶδός τι καθάρσεως καὶ ἀπολυτρώσεως. Ἀφ' ἑνὸς μὲν θεωρεῖται ἡ ἐπὶ γῆς εὐτυχία ἢ δυστυχία ὡς ἀμοιβὴ ἢ ὡς ποινὴ διὰ τὰς ἐν προτέρῳ τινὶ βίῳ πράξεις, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ πίστις εἰς τὴν μετεμψύχωσιν καθίσταται ἀναγκαία προϋπόθεσις τῆς περὶ ἀπολυτρώσεως ἐπαγγελίας, ὡς συμβαίνει ἐν τῷ Βουδισμῷ, ἀλλὰ καὶ παρὰ τοῖς πυθαγορείοις καὶ τοῖς ὀρφικοῖς (βλ. καὶ λ. *μετενσάρκωσις*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Rohde*, Psyche (5η ἔκδ. 1910).—*Fechner*, Über die Seelenfrage (1861).—*Bertholet*, Seelenwanderung (1904).—*Herder*, Palingenesie (1797). Ν. Λ.

**μετενδύω**· ἐνδύω τινὰ μὲ ἄλλο φόρεμα, διαφορετικόν· || *μετενδύομαι*· φορῶ ἀλλοῖον ἔνδυμα.

**μετενθρονισμὸς** (ὁ) *[Κανον. Δικ.]*· βλ. λ. *μετάθεσις* ἐπισκόπων.

**Μετενιὲ** (Méténier), ***Ὀσκάρ.*** Γάλλος μυθιστοριογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1859—1913). Ὑπῆρξεν ἀστυνομικὸς ὑπάλληλος, οὕτω δὲ κατώρθωσε νὰ μελετήσῃ τὰ ἔθιμα τῶν διαφόρων κακοποιῶν στοιχείων τῆς μεγαλοπόλεως, ἅτινα κατόπιν περιέγραψεν ἀριστοτεχνικῶς εἰς τὰ καθαρῶς ρεαλιστικά του ἔργα. Κατ' ἀρχὰς ἐνεφανίσθη μὲ διάφορα διηγήματα («La Chair», Βρυξέλλαι 1885), γεγραμμένα κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς διάλεκτον argot. Ἐξηκολούθησε γράφων τοιούτου εἴδους ἠθογραφικὰ διηγήματα καὶ μυθιστορήματα, καταδιωχθεὶς μάλιστα διὰ τὸ ἔργον του «Madame la Boule» (1892) ἐπὶ προσβολῇ κατὰ τῶν δημοσίων ἠθῶν. Ἐπίσης ἔγραψε θεατρικὰ ἔργα, μόνος ἢ ἐν συνεργασίᾳ, ἐπὶ τοιούτων πάντοτε θεμάτων. Ἡ μεγαλυτέρα θεατρική του ἐπιτυχία εἶναι τὸ μονόπρακτον ἔργον του «Mademoiselle Fifi» (1896), κατὰ τὸ ὁμώνυμον διήγημα τοῦ Μωπασάν. Τῷ 1897 ἵδρυσε τὸ θέατρον «Grand-Guignol», τὸ ὁποῖον καὶ διηύθυνε μέχρι τοῦ 1899. Ι. Ο.

**μετενσαρκῶ** (*—όω*)· κάμνω νὰ μεταβῇ ἡ ψυχὴ εἰς ἄλλην σάρκα, μετενσωματῶ, μετεμψυχῶ.

**μετενσάρκωσις,** *—εως* (ἡ)· μετενσωμάτωσις, μετεμψύχωσις.

— *[Ἀποκρυφ.]* Καλεῖται *μετενσάρκωσις* ἢ *παλιγγενεσία* ἡ διδασκαλία περὶ πορείας τῶν ἀνθρωπίνων ψυχῶν διὰ μέσου σειρᾶς ὑλικῶν καὶ ἐξελικτικῶς βαινουσῶν ὑπάρξεων. Κατὰ τὴν ἀπόκρυφον διδασκαλίαν, μετενσάρκωσις εἶναι ἡ ἐπάνοδος τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος εἰς φυσικὸν πεδίον ἑνὸς πλανήτου, ἐν συνεχείᾳ μιᾶς ἢ περισσοτέρων ὑλικῶν ὑποστάσεων. Κατὰ τὴν περὶ μετενσαρκώσεως θεωρίαν, πᾶσα ἀνθρωπίνη ὀντότης εἶναι ζῶν πνεῦμα, μέρος τοῦ Ὑπερτάτου Ὄντος, καθ' ὃν δὲ τρόπον οἱ σπινθῆρες ἀναδίδονται ἐκ τοῦ πυρός, οὕτω καὶ ὁ ἄνθρωπος-πνεῦμα ἀπορρέει ἐκ τοῦ θείου πνεύματος καὶ διὰ σειρᾶς ὑλικῶν ὑπάρξεων κτᾶται τὴν ἐκ τῆς πείρας γνῶσιν, βαθμηδὸν δὲ ἀναπτύσσει τὰς λανθανούσας ἐν ἑαυτῷ θείας δυνάμεις καὶ ἰδιότητας, διὰ νὰ ἐξιχθῇ μέχρι τῆς βαθμῖδος τοῦ τελείου ἀνθρώπου.

Εἰς τὴν σύγχρονον θεοσοφίαν, ἐμπνευσθεῖσαν ἀπὸ παρεμφερεῖς διδασκαλίας τῆς ἰνδικῆς κοσμοθεωρίας καὶ ὀντολογίας, ἡ περὶ μετενσαρκώσεως θεωρία προϋποθέτει τὴν ὕπαρξιν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ μιᾶς ἀμεταβλήτου μετενσαρκούσης ἀρχῆς, τοῦ ἐγώ, πρὸς ὃ συνδέεται ἡ μεταβαλλομένη προσωπικότης, ἡ ὁποία εἶναι τὸ μέσον τῆς ἐξελίξεως τοῦ ἐγώ. Αἱ πνευματικαὶ ἰδιότητες, αἱ ἀποκτηθεῖσαι εἰς προηγουμένας ὑπάρξεις ἐπανέρχονται ὡς ἔμφυτοι εἰς τὴν ἑπομένην ὕπαρξιν καὶ οὕτω βαθμηδὸν ὁ κατωτέρας ὀντότητος ἄνθρωπος, δι' ἐξελικτικῆς πο-

Digitized by Google

ρείας, καθίσταται πνευματικῶς ἀνώτερος, διὰ νὰ ἐξιχθῇ μέχρι τοῦ ὑπερανθρώπου. Τὸ θεῖον ὑφίσταται ἐν λανθανούσῃ δυναμικότητι εἰς πάντα ἄνθρωπον, ὡς τὸ φυτὸν ἐντὸς τοῦ σπέρματος, πᾶσαι δὲ αἱ διαφοραί, ἠθικαὶ καὶ πνευματικαί, αἱ ὁποῖαι χωρίζουν τὰ ἀνθρώπινα ἐγὼ ἐξηγοῦνται ἐκ τῆς μακροτέρας ἢ βραχυτέρας σειρᾶς τῶν προηγουμένων ὑπάρξεών των. Κατὰ ταῦτα ἡ μεγαλοφυΐα δὲν εἶναι παρὰ οἱ ὥριμοι καρποὶ μακροτάτης σειρᾶς ἀνθρωπίνων βίων, καθ' οὓς τὸ μεγαλοφυὲς ὂν ἔχει συλλέξει καὶ συγκεντρώσει ἐν ἑαυτῷ ὅλους τοὺς καρποὺς τῆς πείρας τῶν προγενεστέρων ὑπάρξεων. Ἡ ἀνάμνησις τῶν προγενεστέρων ὑπάρξεων ἡμῶν, ἡ ὁποία τυγχάνει ἐναποθηκευμένη ἔξω τοῦ κύκλου τῆς φυσικῆς μας συνειδήσεως καὶ ἐντὸς τοῦ ἀμεταβλήτου ἐγώ, ἐπανέρχεται μόνον εἰς ὡρισμένα ἄτομα, κεκτημένα τὴν δύναμιν τῆς ἐνοράσεως, ἥτις δύναται νὰ ἀναπτυχθῇ διὰ μακρᾶς προπονήσεως καὶ ἀφυπνίσεως ψυχικῶν τινων ἰδιοτήτων.

Ἡ περὶ μετενσαρκώσεως θεωρία ὑπῆρξεν ἀπὸ ἀρχαιοτάτων χρόνων εὐρύτατα διαδεδομένη εἰς τοὺς Ἰνδούς, τοὺς Αἰγυπτίους καὶ τοὺς Ἕλληνας. Εὑρίσκομεν ταύτην εἰς τὰς διδασκαλίας τοῦ Πυθαγόρου, τῶν ὀρφικῶν τοῦ Ἐμπεδοκλέους, τοῦ Πλάτωνος, τῶν νεοπλατωνικῶν καὶ νεοπυθαγορείων, τῶν γνωστικῶν, εἰς τὴν θρησκείαν τῶν Δρυΐδῶν ἐν Γαλατίᾳ, καθὼς καὶ εἰς τὴν μεταφυσικὴν Καβάλλαν (θεωρία περὶ ἀπορροῆς). Ἐπίσης εἰς τὰ νεώτερα φιλοσοφικὰ συστήματα τοῦ Παρακέλσου, τοῦ θεοσόφου Ἰακώβου Μπαῖμε, τοῦ Λεϊβνιτίου καὶ τοῦ Γκαῖτε. Τὴν ἀνευρίσκομεν ἀκόμη καὶ εἰς αὐτὸν τὸν Σοπενχάουερ, ὅστις λέγει ὅτι εἶναι «ἀπίστευτος φρεναπάτη ἡ πίστις, καθ' ἣν ὁ ἄνθρωπος ἐδημιουργήθη ἐκ τοῦ μηδενὸς καὶ ἡ σημερινή του γέννησις εἶναι ἡ πρώτη ἀρχή του ἐν τῇ ζωῇ».

Παράλληλος πρὸς τὴν περὶ μετενσαρκώσεως θεωρίαν ὑπῆρξε παρ' Αἰγυπτίοις ἡ περὶ *μετεμψυχώσεως* (βλ. λ.). διδασκαλία, καθ' ἣν ἡ ἀνθρωπίνη ψυχὴ δύναται μετὰ θάνατον νὰ εἰσέλθῃ καὶ εἰς σώματα ζῴων πρὸς κάθαρσιν καὶ ἀπολύτρωσιν, διαφέρουσα κατὰ τοῦτο ἀπὸ τὴν μετενσάρκωσιν, ἥτις προϋποθέτει τὴν μεταβίβασιν τοῦ ἐγὼ εἰς ἀνθρωπίνας μόνον ὑπάρξεις, θεωρουμένας ὡς μᾶλλον ἐξειλιγμένας ὀντότητας. Η. Π. Γ.

**μετενσωματῶ** (*—όω*)· μεταβιβάζω ἀπὸ τοῦ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο, μετεμψυχῶ: «ἡ ψυχὴ μετενσωματοῦται».

**μετενσωμάτωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐξ ἑνὸς σώματος εἰς ἄλλο μετάβασις, μετεμψύχωσις: «ἡ μετενσωμάτωσις τῆς ψυχῆς».

**μετεξέτασις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐκ νέου ἐξέτασις, ἐπανεξέτασις.

**μετεξεταστέος,** *—α, —ον*· ὁ ἐκ νέου ἐξεταστέος, ἐπανεξεταστέος: «οἱ μετεξεταστέοι μαθηταὶ» οἱ κατὰ Σεπτέμβριον ἐπανεξεταζόμενοι εἴτε συμπληρωματικῶς εἴτε ἐξ ὁλοκλήρου.

—*[Ἐκπ.] Μετεξεταστέοι* καλοῦνται οἱ μαθηταί, οἵτινες ἀποτυγχάνοντες μερικῶς εἰς τὰς ἐξετάσεις παραπέμπονται εἰς νέαν ἐξέτασιν ἐπὶ τῶν μαθημάτων, εἰς ἃ ὑστέρησαν κατὰ τὰς προαγωγικὰς ἢ ἀπολυτηρίους ἐξετάσεις. Διὰ νὰ κριθῇ μετεξεταστέος εἷς μαθητὴς πρέπει ἡ ἀποτυχία του νὰ περιορίζεται εἰς μαθήματα οὐχὶ πλείονα τῶν τριῶν, ἐξ ὧν πρωτεύοντα δὲν πρέπει νὰ εἶναι πλείονα τοῦ ἑνός. Ὁ οὕτω μετεξεταστέος κληθεὶς πρέπει νὰ προσέλθῃ εἰς ἀνεξέτασιν εἰς τὸ αὐτό, εἰς ὃ καὶ ἐφοίτησε σχολεῖον, ἐξαιρέσει ἐλαχίστων περιπτώσεων, πάντως ἐντὸς τοῦ Σεπτεμβρίου τοῦ ἐπομένου ἢ τῶν δύο μεθεπομένων σχολικῶν ἐτῶν, ἄλλως ἀπόλλυσι τὸ πρὸς ἐξέτασιν δικαίωμά του. Γ. ΜΠΣ

**μετέπειτα**· ἐπίρρ., ὕστερον, ὑστερώτερα, βραδύτερον, ἰσχυρότερον τοῦ *ἔπειτα*: «ἐν τοῖς μετέπειτα χρόνοις» καὶ ἁπλῶς «ἐν τοῖς μετέπειτα»· || «οἱ μετέπειτα» ἐννοουμένου τοῦ *ζήσαντες* ἢ *ἀκμάσαντες*: «παρὰ τοῖς μετέπειτα» παρὰ τοῖς μεταγενεστέροις.

**μετερίζι** (τό)· πρόχωμα, ὀχύρωμα (λ. τουρκ.).

**μετέρχομαι,** ἀόρ. *μετῆλθον*· ἀσκῶ ἐπάγγελμα, ἐπαγγέλλομαι: «μετέρχεται τὴν ἰατρικήν, — τὸ ἐμπόριον» ἢ «μετέρχομαι τὸν ἰατρόν, — τὸν ἔμπορον, — τὸν δικηγόρον κτλ.»· || μεταχειρίζομαι, χρησιμοποιῶ: «μετῆλθε πᾶν μέσον, διὰ νὰ ἐπιτύχῃ τὸν σκοπόν του».

**Μετεσελῆ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Λαρίσης, ἤδη καλούμενον *Μελισσοχώρι* (βλ. λ.).

**μετέχω,** ἀόρ. *μετέσχον*· ἔχω μέρος, μεταλαμβάνω, κοινωνῶ τινος, εἶμαι μέτοχος: «μετέχω ἐκδρομῆς, — συμποσίου, — ἑταιρείας, — τῆς ἑορτῆς, — τῶν κερδῶν καὶ ζημιῶν».

**Μετέωρα** *[Γεωγρ.]*. Ὁμὰς ὑψηλῶν καὶ ἀποκρήμνων βράχων κατὰ τὴν ἔξοδον τοῦ Πηνειοῦ παρὰ τὴν Καλαμπάκαν. Οἱ βράχοι οὗτοι (μέσον ὕψος ἀπὸ τῆς κοιλάδος 300 μ.) οὐδόλως ἀναφέρονται κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, ἀπὸ τοῦ ΙΑ΄ ὅμως μ. Χ. αἰῶνος καὶ ἐφεξῆς ἀποβαίνουσι κέντρον μοναχικὸν σπουδαιότατον. Ἤδη πρὸ τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος, ἄγνωστον ὅμως ἀπὸ ποίων ἀκριβῶς χρόνων, οἱ βράχοι τῶν Μετεώρων ἐχρησίμευσαν ὡς ἀσκητήρια μοναχῶν κατοικούντων ἐντὸς σπηλαίων ἢ κελλίων. Οἱ ἐν αὐτοῖς ἀσκούμενοι μοναχοὶ συνήρχοντο ἅπαξ τῆς ἑβδομάδος εἰς ναὸν (τὸ καλούμενον Κυριακὸν) πρὸς τέλεσιν τῆς θείας λειτουργίας. Ὡς Κυριακὸν ἐχρησίμευεν ὁ μικρὸς ναΐσκος τῆς Δούπιανης, πλησίον τοῦ σημερινοῦ χωρίου Καστρακίου, ὅστις σὺν τῷ χρόνῳ ἀπέβη μικρὰ μονή. Οὕτω οἱ ἐν τοῖς σπηλαίοις καὶ τοῖς κελλίοις ἀναχωρηταὶ ἀπετέλεσαν σκήτην μικράν, δηλαδὴ μοναχικὴν πολιτείαν, ἥτις ἔφερε τὸ ὄνομα Σκήτη Σταγῶν, ἐκ τῆς πλησίον αὐτῆς κειμένης πόλεως τῶν Σταγῶν, τῆς σημερινῆς δηλαδὴ Καλαμπάκας. Ἡ ὀργάνωσις τῆς Σκήτεως τῶν Σταγῶν φαίνεται ὅτι ἀρχίζει κατὰ τὸν ΙΒ΄ πιθανῶς αἰῶνα. Ἡ σκήτη τῶν Σταγῶν κατ' ἀρχὰς ἐξηρτᾶτο ἀπὸ τὴν ἐπισκοπὴν Σταγῶν, ἀπὸ τῶν ἀρχῶν ὅμως τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος, χάρις εἰς προνόμια δοθέντα εἰς αὐτὴν ὑπὸ τῶν Σέρβων ἡγεμόνων, οἵτινες κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους ἦσαν κύριοι τῆς Θεσσαλίας, ἀποβαίνει ἀνεξάρτητος, διοικουμένη ὑπὸ τοῦ πρώτου τῆς Σκήτεως, διαμένοντος εἰς τὴν μονὴν τῆς Δούπιανης. Ἀπὸ τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος ἄρχεται ἡ δευτέρα, ἡ καὶ λαμπροτέρα, περίοδος τῆς μοναχικῆς ταύτης πολιτείας, ἀφ' ἑνὸς μὲν διὰ τῆς ἐλεύσεως ἐν Μετεώροις τοῦ ἁγίου Ἀθανασίου τοῦ Μετεωρίτου καὶ ἀφ' ἑτέρου διὰ τῆς δραστηριότητος τοῦ πρώτου τῆς σκήτεως ἱερομονάχου Νείλου. Καὶ ὁ μὲν Ἀθανάσιος μετὰ τοῦ φίλου αὐτοῦ Βαρλαὰμ ἐγκαθίστανται ἐπὶ τῶν βράχων τῶν εὑρισκομένων ὑπεράνω τῆς Δούπιανης, ὁ δὲ Νεῖλος ἱδρύει κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος τέσσαρας ναούς, περὶ τοὺς ὁποίους ἀργότερον πήγνυνται μονύδρια. Μεταξὺ αὐτῶν εἶναι καὶ τὸ διασῳζόμενον εἰσέτι τῆς Ὑπαπαντῆς. Κατὰ τοὺς ἰδίους περίπου χρόνους Σέρβος πιθανῶς ἡγεμονίδης, ὁ Ἀντώνιος Καντακουζηνός, ἱδρύει ἐν ἔτει 1367 τὴν μονὴν Ἁγίου Στεφάνου, ὀλίγον δὲ ἀργότερον ὁ Ἰωάσαφ Παλαιολόγος κτίζει τὸν ναὸν τῆς μονῆς Μεταμορφώσεως. Ἡ ἀκμὴ τοῦ μοναχικοῦ τούτου κέντρου τῶν Μετεώρων ἐξακολουθεῖ καὶ κατὰ τὸν ΙΕ΄ καὶ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα, κατὰ τοὺς ὁποίους πολυάριθμοι κτίζονται μοναί, ὧν τὴν ἄνθησιν οὐδόλως παραβλάπτει ἡ ὑπὸ τῶν Τούρκων καθυπόταξις τῆς Θεσσαλίας, τελευτῶντος τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος. Ἡ μόνη ἐπελθοῦσα μεταβολὴ εἶναι ἡ ἐν ἔτει 1490 κατάργησις τοῦ πρώτου τῆς Σκήτεως καὶ ἡ ὑπαγωγὴ ὅλων τῶν μονῶν ὑπὸ τὴν μονὴν Μεταμορφώσεως, τὴν κυρίως καλουμένην *Μετεώρου*. Ἀπὸ τοῦ ΙΖ΄ ὅμως αἰῶνος ἀρχίζει ἡ παρακμὴ τῶν μονῶν τῶν Μετεώρων, τῶν ὁποίων σὺν τῷ χρόνῳ ὁ ἀριθμὸς ἐλαττοῦται. Ἤδη ἐκτὸς τῶν ἐρειπίων πολλῶν ἄλλων, εἰς τὰς ὁποίας ἡ ἀνάβασις δὲν εἶναι πλέον δυνατή, διασῴζονται ἓξ μοναί, ὧν αἱ τέσσαρες ἐν ἐνεργείᾳ, ἤτοι: 1) Μεταμορφώσεως, 2) Βαρλαάμ, 3) Ἁγίας Τριάδος, 4) Ἁγίου Στεφάνου, καὶ δύο ἠρειπωμέναι, ἡ τοῦ Ρούπανη καὶ ἡ τῆς Ὑπαπαντῆς.

*Μονὴ Μεταμορφώσεως*. Ἡ μεγαλυτέρα καὶ σπουδαιοτέρα μονὴ αὕτη τῶν Μετεώρων ἱδρύθη μεσοῦντος τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος ὑπὸ τοῦ ἁγ. Ἀθανασίου τοῦ Μετεωρίτου. Τὸ καθολικὸν αὐτῆς ἀνεγερθὲν κατ' ἀρχὰς μικρὸν ὑπὸ τοῦ ἁγ. Ἀθανασίου δι' ἐξόδων Σέρβου τινὸς μεγιστᾶνος, ἀνεκαινίσθη κατὰ τὸ ἔτος 1388 ὑπὸ τοῦ μοναχοῦ Ἰωάσαφ, ὅστις κατὰ κόσμον ἐκαλεῖτο Ἰωάννης Οὔρεσις Παλαιολόγος καὶ ἦτο ἔγγονος τοῦ κράλη τῆς Σερβίας Στεφάνου Δουσάν. Τέλος ἐν ἔτει 1544 ἀνηγέρθη τὸ Μέγα καθολικόν, εἰς τὸ ὁποῖον ἡ παλαιὰ ἐκκλησία, ἡ ὑπὸ τοῦ Ἰωάσαφ ἐν ἔτει 1388 ἀνεγερθεῖσα, χρησιμεύει ὡς ἱερόν. Τὸ παλαιὸν καθολικὸν εἶναι κομψότατος ναΐσκος μετὰ τρούλλου, κοσμούμενος ἐσωτερικῶς διὰ τοιχογραφιῶν ἐπισκευασθεισῶν τῷ 1483. Τὸ μέγα καθολικὸν εἶναι εὐρύχωρος ναὸς μετὰ τρούλλου καὶ ἀψίδων ἐπὶ τῆς βορείας καὶ νοτίας πλευρᾶς (χορῶν), ἐκτισμένος κατὰ τὸν ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἐπικρατοῦντα ἀρχιτεκτονικὸν τύπον. Ἐσωτερικῶς ὁ ναὸς κοσμεῖται ὑπὸ ἀξιολογωτάτων τοιχογραφιῶν, γενομένων τῷ 1552. Πλὴν τοῦ καθολικοῦ καὶ δύο παρ' αὐτὸ παρεκκλησίων ἀξία πολλοῦ λόγου διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικὴν αὐτῆς μορφὴν εἶναι καὶ ἡ τράπεζα (ἑστιατόριον) τῆς μονῆς, ἀνεγερθεῖσα τῷ 1557, ὡς καὶ τὸ ἠρειπωμένον σήμερον νοσοκομεῖον, κτισθὲν τῷ 1572. Εἰς τὸ πλούσιον σκευοφυλάκιον τῆς μονῆς φυλάσσονται πλεῖστα πολύτιμα κειμήλια καὶ εἰκόνες, μεταξὺ τῶν ὁποίων τρεῖς εἶναι ἐξαιρέτου τέχνης ἔργα τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος. Ἐπίσης ἡ βιβλιοθήκη τῆς μονῆς περιλαμβάνει πλὴν μεγάλου ἀριθμοῦ ἐντύπων βιβλίων, ὧν πολλὰ σπανιώταται παλαιαὶ ἐκδόσεις, καὶ 610 χειρογράφους κώδικας.

*Μονὴ Βαρλαάμ*. Ἡ μονὴ αὕτη, τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι τῶν *Ἁγ. Πάντων*, εὑρίσκεται ἐπὶ βράχου πλησίον τῆς μονῆς Μεταμορφώσεως. Τὸ ὄνομα ἔλαβεν ἔκ τινος μοναχοῦ Βαρλαάμ, συγχρόνου τοῦ ἁγ. Ἀθανασίου, ἀνεγείραντος ἐπὶ τοῦ βράχου τούτου μικρὰν μονήν, ἥτις κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα ἔκειτο ἐν ἐρειπίοις. Τῷ 1511 οἱ ἀδελφοὶ Νεκτάριος καὶ Θεοφάνης ἐκ τῆς ἐν Ἰωαννίνοις οἰκογενείας τῶν Ἀψαράδων ἀνήγειραν ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς παλαιᾶς μονῆς τοῦ Βαρλαὰμ νέαν τοιαύτην, ἥτις εἶναι ἡ μέχρι σήμερον διασῳζομένη. Τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς ἀνεγερθὲν τῷ 1542 εἶναι κομψὸς ναὸς μετὰ τρούλλου καὶ χορῶν κατὰ τὸ ἁγιορειτικὸν σύστημα. Τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ μὲν κυρίως ναοῦ φέρει ἀξιολογωτάτας τοιχογραφίας τοῦ 1548, ὁ δὲ νάρθηξ ἐκοσμήθη τῷ 1566 ὑπὸ τοῦ Φράγκου Κατελλάνου μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ ἱερέως Γεωργίου. Πλὴν τοῦ καθολικοῦ ἐν τῇ μονῇ ὑπάρχει καὶ τὸ μικρὸν παρεκκλήσιον τῶν *Τριῶν Ἱεραρχῶν*, ἀνεγερθὲν τῷ 1627 καὶ κοσμηθὲν διὰ καλῶν τοιχογραφιῶν τῷ 1637. Ἀξία λόγου διὰ τὸ σχῆμα αὐτῆς εἶναι καὶ ἡ ἑστία τῆς μονῆς. Τὸ σκευοφυλάκιον περιέχει ἀξιόλογά τινα κειμήλια, ἐν δὲ τῇ βιβλιοθήκῃ αὐτῆς φυλάσσονται 269 κώδικες.

*Μονὴ Ἁγίας Τριάδος*. Αὕτη κατὰ παράδοσιν ἀνηγέρθη κατὰ τὸν ΙΕ΄ αἰῶνα, ἄγνωστος δὲ εἶναι ὁ κτίτωρ αὐτῆς. Τὸ καθολικὸν ἀνεγερθὲν τῷ 1476 εἶναι μικρὸς ναΐσκος τρουλλωτός, φέρων ἐξωτερικῶς εἰς τὴν ἁψῖδα πλουσίαν διὰ κεράμων διακόσμησιν. Πλὴν τοῦ καθολικοῦ ὑπάρχει καὶ μικρὸν παρεκκλήσιον τοῦ *Προδρόμου*, λαξευμένον ἐν τῷ βράχῳ καὶ φέρον ἀξίας πολλοῦ λόγου τοιχογραφίας κατασκευασθείσας τῷ 1682.

*Μονὴ Ἁγίου Στεφάνου*. Ἡ μονὴ αὕτη, κειμένη εἰς τὸ νοτιώτερον ἄκρον τοῦ συγκροτήματος τῶν Μετεώρων, εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ τῆς θέσεως, ἐφ' ἧς ἤδη ἀπὸ τοῦ ΙΒ΄ αἰῶνος ὑπῆρχε μικρὸν πιθανῶς ἀσκητήριον μοναχῶν. Πότε ἀκριβῶς ἐκτίσθη ἡ μέχρις ἡμῶν διασωθεῖσα μονὴ δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστόν. Πάντως αὕτη ἀναφέρεται ἤδη ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος. Κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους σπουδαίως, φαίνεται, συνετέλεσεν εἰς τὴν ἀνάδειξιν τῆς μονῆς καὶ ὁ Ἀντώνιος Καντακουζηνός, θεωρούμενος ὑπό τινων ὡς σερβικῆς καταγωγῆς, καὶ περὶ τοῦ ὁποίου οὐδὲν ἀκριβῶς εἶναι γνωστόν. Τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς *(Ἅγ. Χαράλαμπος)*, εὐρύχωρος ναὸς μετὰ τρούλλων. ἀνηγέρθη τῷ 1798. Πολὺ μεγαλυτέραν σπουδαιότητα ἔχει τὸ μικρὸν παρεκκλήσιον τοῦ Ἁγ. Στεφάνου, ἕνεκα τῶν ἐν αὐτῷ διασῳζομένων πολυτίμων τοιχογραφιῶν, αἵτινες δύνανται ν' ἀναχθῶσιν εἰς τὰ τέλη τοῦ ΙΔ΄ ἢ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος. Ἡ μονὴ ἔχει ἀρκούντως πλούσιον σκευοφυλάκιον καὶ βιβλιοθήκην περιέχουσαν περὶ τοὺς 103 κώδικας.

*Μονὴ Ρουσάνη*. Ἡ ἐπ' ὀνόματι τῆς *Μεταμορφώσεως* τιμωμένη μικρὰ αὕτη μονὴ ἱδρύθη τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα ὑπὸ τῶν ἐξ Ἰωαννίνων ἀδελφῶν ἱερομονάχων Μαξίμου καὶ Ἰωάσαφ. Τὸ καθολικὸν αὐτῆς ἀνηγέρθη τῷ 1545 καὶ εἶναι ναὸς μετὰ τρούλλου καὶ χορῶν τύπου ἁγιορειτικοῦ. Ἐσωτερικῶς κοσμεῖται ὑπὸ ἀξιολογωτάτων τοιχογραφιῶν, γενομένων τῷ 1561.

*Μονὴ Ὑπαπαντῆς*. Ὁ ναὸς αὐτῆς εἶναι εἷς τῶν τεσσάρων, οὓς ἀνήγειρεν ὁ πρῶτος τῆς Σκήτεως Σταγῶν Νεῖλος. Κατὰ τὴν διασωθεῖσαν ἐπιγραφήν, οὗτος ἐκτίσθη καὶ ἐζωγραφήθη τῷ 1366, ἀφιερωθεὶς εἰς τὸ ὄνομα τῆς *Ἀναλήψεως*. Αἱ τοιχογραφίαι τοῦ ναΐσκου τούτου, σπουδαιόταται διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς ζωγραφικῆς τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος, ἐπεσκευάσθησαν ἐν μέρει τῷ 1765.

Περὶ τῶν ἄλλων μονῶν, ὧν τὰ ἐρείπια διακρίνονται ἐπὶ τῶν ὑψηλῶν βράχων τῶν Μετεώρων, οὐδεὶς δύναται νὰ γίνῃ λόγος, καθόσον ἡ εἰς αὐτὰς ἄνοδος εἶναι νῦν ἀδύνατος. Α. ΞΥΓΓΟΠΟΥΛΟΣ

**μετεωρίζω**· κρατῶ τινα μετέωρον, σηκώνω ὑψηλά, ὥστε νὰ μὴ ἐγγίζῃ κάτω: «μετεωρίζω τὸν πόδα»· || ὁδηγῶ εἰς τὸ ἀνοικτὸν πέλαγος· || παθ. *μετεωρίζομαι*· πλέω εἰς τὸ ἀνοικτὸν πέλαγος.

**μετεωρικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μετέωρα, ὁ τῶν μετεώρων: «μετεωρικὰ φαινόμενα», ἄλλως *ἀτμοσφαιρικὰ φαινόμενα* «μετεωρικοὶ λίθοι», ἄλλως *ἀερόλιθοι*.

—**μετεωρικὰ** ***σμήνη*** *[Ἀστρον.]*. Σμήνη μετεώρων, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦσιν ὑπολείμματα ἢ τμήματα διαλυομένων κομητῶν, καὶ τὰ ὁποῖα, κινούμενα ἐπὶ ἰδίων τροχιῶν περὶ τὸν Ἥλιον συναντᾷ ἡ Γῆ κατὰ τὴν μεταβατικὴν κίνησιν αὐτῆς ἐν τῷ διαστήματι. Ἀποτέλεσμα τῶν τοιούτων συναντήσεων εἶναι αἱ λεγόμεναι βροχαὶ διαττόντων ἢ μετεωρικαὶ βροχαὶ (βλ. *διάττοντες*). Ὡς συνάγεται ἐκ τῶν τοιούτων βροχῶν, τὰ μετεωρικὰ σμήνη κινοῦνται ἐπὶ ἐλλειπτικῶν τροχιῶν, αἵτινες περιβάλλουσι τὸν Ἥλιον δίκην δακτυλίου, ὅστις καλεῖται μετεωρικὸς δακτύλιος. Αἱ βροχαὶ διαττόντων συμβαίνουσιν ὅταν ἡ Γῆ φθάσῃ εἰς σημεῖον, καθ' ὃ ἡ τροχιά της τέμνεται μετὰ τοῦ μετεωρικοῦ δακτυλίου, ἤτοι κατὰ τὴν αὐτὴν περίπου ἐποχὴν τοῦ ἔτους ἢ καὶ κατὰ χρονικὰ διαστήματα μικροτέρας περιόδου. Προφανῶς ἡ βροχὴ θὰ εἶναι ραγδαία, ἐὰν ἡ πυκνότης τοῦ μετεωρικοῦ δακτυλίου κατὰ τὸ ἐν αὐτῷ περιλαμβανόμενον τμῆμα τῆς γηΐνης τροχιᾶς εἶναι μεγάλη, ἐὰν δὲ ἡ διανομὴ τῶν μετεώρων εἶναι ὁμαλὴ καθ' ἅπαν τὸ μῆκος τοῦ μετεωρικοῦ δακτυλίου, αἱ περιοδικαὶ βροχαὶ διαττόντων θὰ εἶναι ἑκάστοτε τῆς αὐτῆς ἐντάσεως.

Τὸ πάχος τῶν μετεωρικῶν δακτυλίων φαίνεται ὅτι εἶναι μεῖζον τῆς διαμέτρου τῆς Γῆς, διότι πολλαὶ βροχαὶ διαττόντων οὐ μόνον διαρκοῦσιν ἐπὶ ἡμέρας, ἀλλὰ καὶ εἶναι ὁραταὶ ἐκ διαφόρων

Digitized by Google

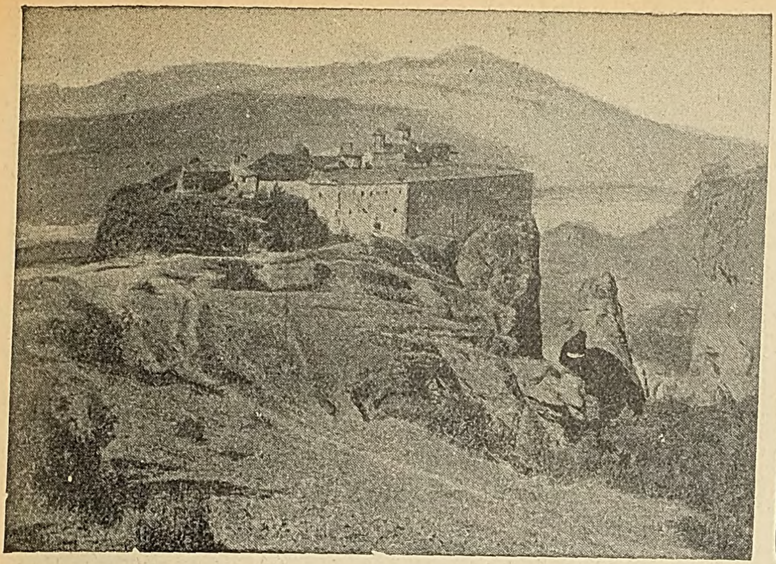

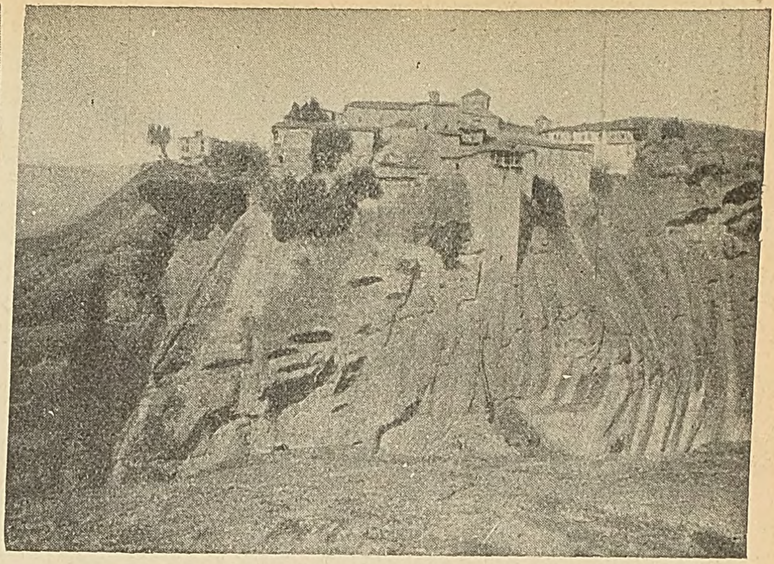

1) Ἡ ἐν Μετεώροις μονὴ τοῦ Ἁγίου Στεφάνου. 2) Ἡ μονὴ τῆς Μεταμορφώσεως.

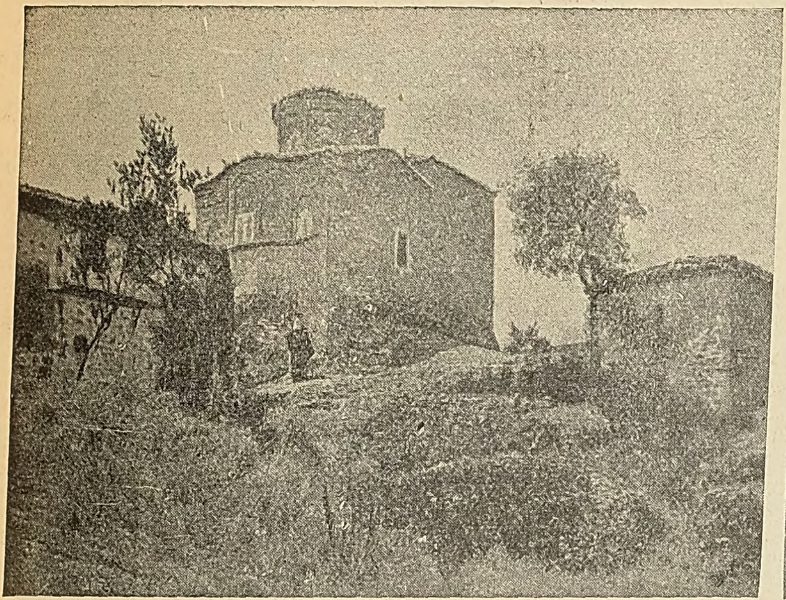

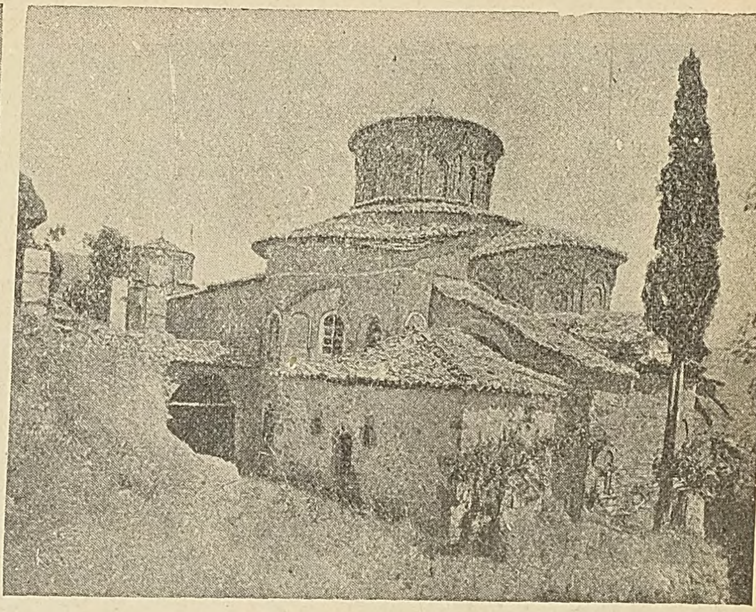

1) Τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς τῆς Ἁγίας Τριάδος. 2) Τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς τῆς Μεταμορφώσεως.

Γενικὴ ἄποψις τῶν Μετεώρων (παρὰ τὴν Καλαμπάκαν τῆς Θεσσαλίας).

Digitized by Google

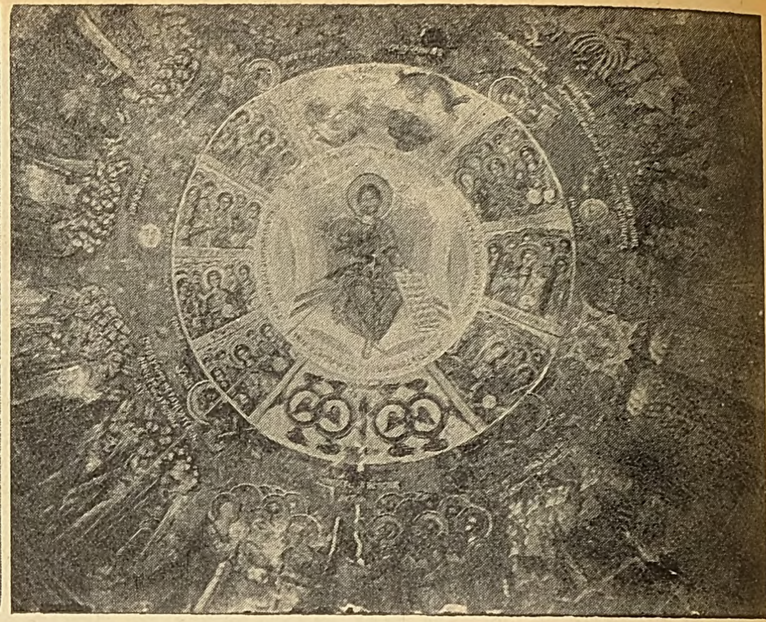

1) Τοιχογραφία ἐκ τοῦ νεωτέρου καθολικοῦ τῆς μονῆς τῆς Μεταμορφώσεως. 2) Τοιχογραφία ἐκ τοῦ νάρθηκος τῆς μονῆς Ρουσάνη.

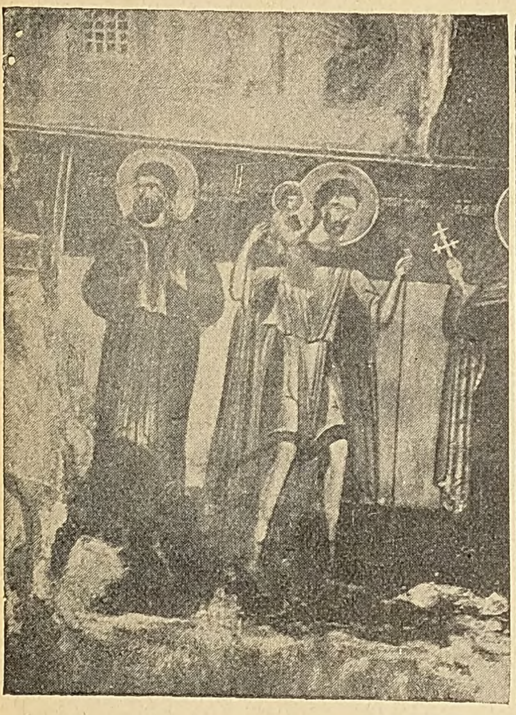

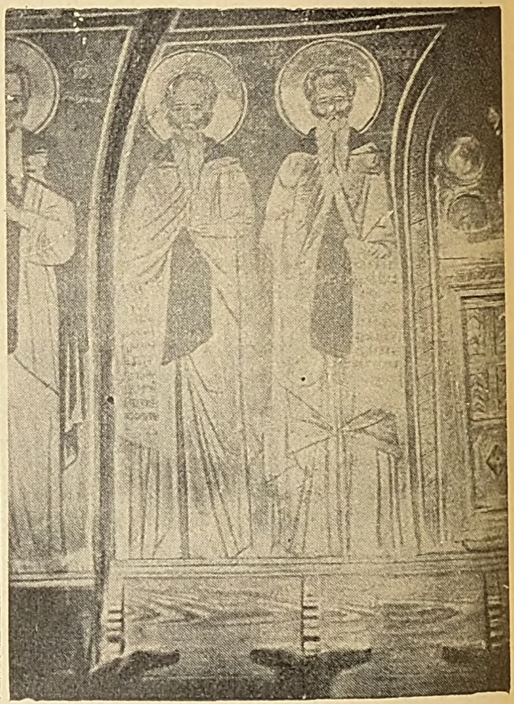

1) Τοιχογραφία ἐν τῷ παρεκκλησίῳ τοῦ Ἁγίου Στεφάνου τῆς ὁμωνύμου μονῆς. 2) Τοιχογραφία ἐν τῷ κυρίως ναῷ τῆς μονῆς Βαρλαάμ. 3) Τοιχογραφία ἐκ τοῦ νάρθηκος τῆς αὐτῆς μονῆς.

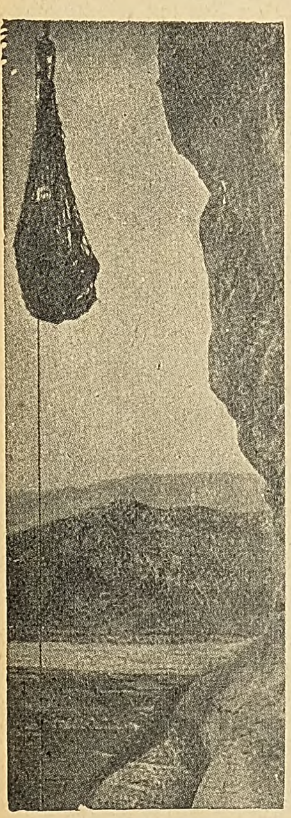

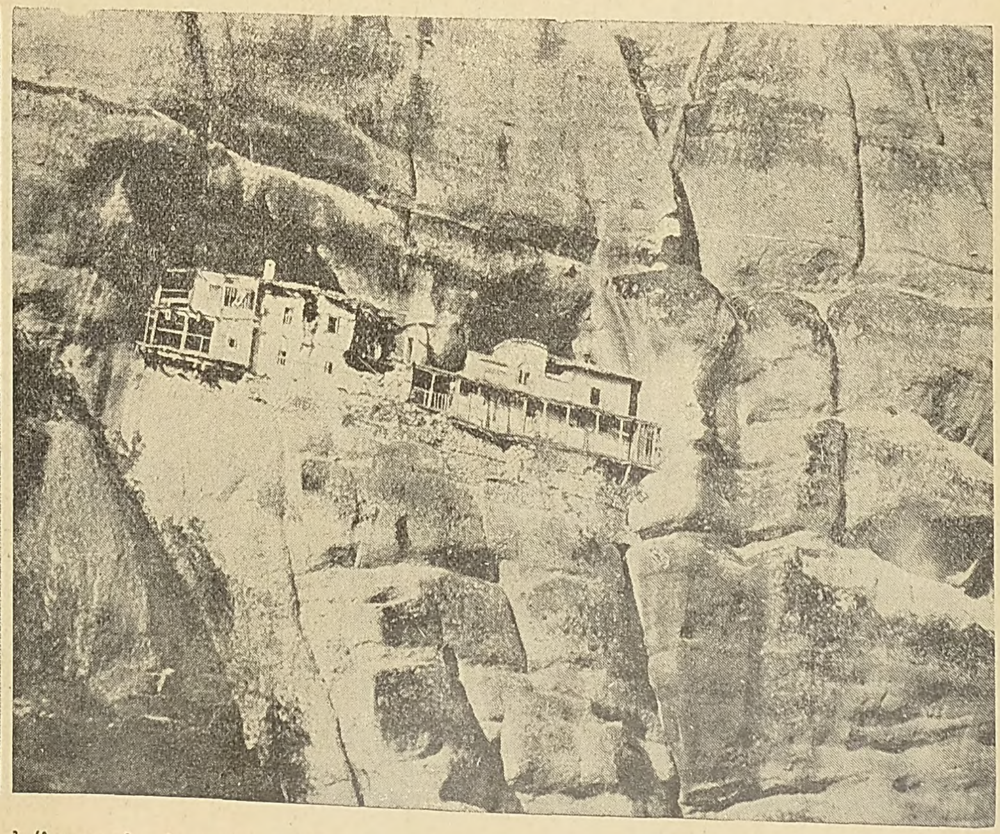

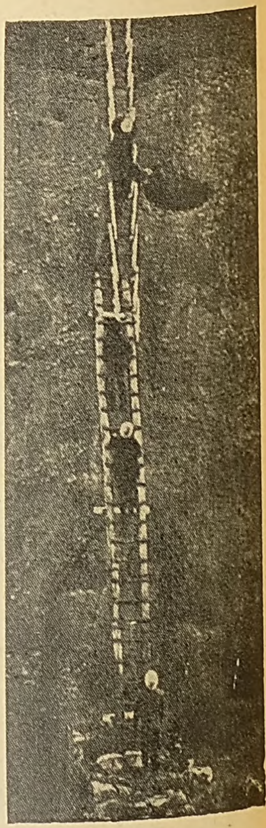

1) Ἡ διὰ δικτύων ἀνέλκυσις εἰς τὰς μονὰς τῶν Μετεώρων. 2) Ἄποψις τῆς μονῆς τῆς Ὑπαπαντῆς. 3) Μία τῶν κλιμάκων τῶν μονῶν.

Digitized by Google

σημείων τῆς ἐπιφανείας τῆς Γῆς, πολλάκις λίαν μεμακρυσμένων ἀλλήλων. σ. π.

— **μετεωρικαὶ** *βροχαὶ [᾿Αστρον.].* Βροχαὶ διαττόντων (βλ. *διάττοντες*).

—**μετεωρικὴ** *θεωρία [᾿Αστρον.].* Θεωρία προταθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἀστρονόμου Μάγιερ πρὸς ἐξήγησιν τῆς συντηρήσεως τῆς θερμότητος τοῦ Ἡλίου διὰ τῆς παραδοχῆς τῆς πτώσεως ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ σημαντικοῦ ἀριθμοῦ μετεώρων.

Ὡς συνάγεται ἐξ ὑπολογισμῶν, διὰ νὰ διατηρηθῇ ἀμείωτος ἡ ἡλιακὴ ἀκτινοβολία, τὸ ποσὸν τῆς μετεωρικῆς ὕλης, ἥτις προσπίπτει ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ Ἡλίου ἐντὸς ἔτους, ὤφειλε νὰ ἰσοῦται πρὸς τὸ ἑκατοστὸν περίπου τῆς μάζης τῆς Γῆς, ἡ δὲ ταχύτης προσπτώσεως νὰ ἀνήρχετο εἰς 600 χμ. περίπου κατὰ δευτερόλεπτον.

Ἡ θεωρία αὕτη ἀπεδείχθη ἀστήρικτος διότι: α΄) Ἂν ὑπῆρχε τοιαύτη ἀφθονία μετεωρικῆς ὕλης, καὶ ἡ Γῆ ἔπρεπε νὰ δέχεται καθ᾿ ἑκάστην 50 περίπου τόννους ἐφ᾿ ἑκάστου τετραγωνικοῦ μιλλίου, ἐνῷ εἰς τὴν πραγματικότητα τὸ ποσὸν τοῦτο δὲν ὑπερβαίνει πιθανῶς τὸν ἕνα τόννον, κατανεμόμενον ἐφ᾿ ὁλοκλήρου τῆς γηΐνης ἐπιφανείας. β΄) Ἐὰν ἐπὶ τοῦ Ἡλίου προσέπιπτε τοσαύτη ποσότης μετεώρων, πολὺ περισσότερα ἐξ αὐτῶν ἔδει νὰ περιστρέφωνται περὶ τὸ ἄστρον τῆς ἡμέρας, ὁπότε θὰ ἐπήρχοντο ἀνωμαλίαι εἰς τὰς κινήσεις τῶν πλανητῶν, ὁποῖαι δὲν παρατηροῦνται. γ΄) Ἐκ τῆς τοιαύτης συνεχοῦς πτώσεως μετεώρων θὰ ἐπήρχετο αὔξησις τῆς μάζης τοῦ Ἡλίου κατὰ τὸ ἓν εἰκοσάκις ἑκατομμυριοστὸν αὐτῆς ἐτησίως καὶ συνεπῶς θὰ ἐπηκολούθει σταθερὰ ἐπιτάχυνσις τῆς κινήσεως τῶν πλανητῶν περὶ τὸν Ἥλιον, ἡ ὁποία, καὶ ἂν κατά τινας παρατηρεῖται, δὲν δύναται πιθανῶς ν᾿ ἀποδοθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν ἐπὶ τοῦ Ἡλίου πτῶσιν μετεώρων.

Κατὰ τὰ γενικῶς ἤδη παραδεδεγμένα, ἡ πτῶσις μετεωρικῆς ὕλης ἐπὶ τοῦ Ἡλίου δυνατὸν νὰ συντηρήσῃ τὸ ἑκατοστὸν μόνον, οὐχὶ ὅμως τὸ σύνολον τῆς ἡλιακῆς θερμότητος.

Δι᾿ ἀναλόγου ὑποθέσεως πτώσεως μετεωριτῶν ἐπὶ τῆς Σελήνης, καθ᾿ ὃν χρόνον ἡ ἐπιφάνεια αὐτῆς ἦτο εἰσέτι εὔπλαστος, ἐξηγοῦσι τινὲς τὸν σχηματισμὸν τῶν ἐπ᾿ αὐτῆς παρατηρουμένων ἀνωμαλιῶν, ἤτοι κρατήρων, περιφράκτων πεδιάδων κτλ. Ἡ σπουδαιοτάτη ἀντίρρησις κατὰ τῆς θεωρίας ταύτης συνίσταται εἰς τὸ δυσχερὲς τῆς ἐξηγήσεως πῶς τοιαύτη βροχὴ μετεωριτῶν ἐπέπεσε κατὰ τῆς Σελήνης, ἀντὶ νὰ πέσῃ ἐπὶ τῆς Γῆς, εὑρισκομένης εἰς σχετικῶς μικρὰν ἀπόστασιν καὶ ἀσκούσης μείζονα ἕλξιν λόγῳ τῆς ὡς πρὸς τὴν Σελήνην ὑπεροχῆς τῆς μάζης αὐτῆς. σ. π.

— **μετεωρικὴ** *ὕλη [᾿Αστρον.].* Ἡ ὕλη ἐξ ἧς συνίστανται τὰ μετέωρα. σ. π.

— **μετεωρικὸς** *δακτύλιος [᾿Αστρον.]·* βλ. *διάττοντες καὶ μετεωρικὰ σμήνη.*

— **μετεωρικὸς** *Ἥλιος [᾿Αστρον.].* Ὠνομάσθη οὕτως ὑπὸ τοῦ Σκιαπαρέλλι τὸ σημεῖον τῆς ἐκλειπτικῆς, πρὸς τὸ ὁποῖον ἑκάστοτε διευθύνεται ἡ Γῆ κατὰ τὴν ἐτησίαν περὶ τὸν Ἥλιον περιφορὰν αὐτῆς, καὶ ἀπὸ τὸ ὁποῖον φαίνεται προερχόμενος ὁ μεγαλύτερος ἀριθμὸς διαττόντων.

Ἐπειδὴ ἡ διεύθυνσις τῆς ταχύτητος τῆς Γῆς ἐν ἑκάστῳ σημείῳ τῆς τροχιᾶς αὐτῆς εἶναι κάθετος ἐπὶ τὴν ἐπιβατικὴν ἀκτῖνα τὴν συνδέουσαν τὴν Γῆν μετὰ τοῦ Ἡλίου, ὁ μετεωρικὸς Ἥλιος θὰ κεῖται πάντοτε 90° δυτικώτερον τοῦ πραγματικοῦ Ἡλίου, ἤτοι θὰ ἕπεται τοῦ τελευταίου τούτου, κινουμένου ἐπὶ τῆς ἐκλειπτικῆς κατὰ τὴν ὀρθὴν φοράν, κατὰ τρεῖς μῆνας. Συνεπῶς, ὅταν ὁ Ἥλιος θὰ ἔχῃ φθάσει εἰς τὴν θερινὴν τροπήν, ὁ μετεωρικὸς Ἥλιος θὰ διέρχεται διὰ τοῦ ἐαρινοῦ σημείου καὶ θὰ παραμένῃ ἐν τῷ βορείῳ ἡμισφαιρίῳ κατὰ τὸ θέρος καὶ τὸ φθινόπωρον, ἐνῷ κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ τὸ ἔαρ θὰ εὑρίσκεται ἐν τῷ νοτίῳ ἡμισφαιρίῳ.

Εἶναι προφανὲς ὅτι, ἐὰν ἡ ἐν τῷ διαστήματι διανομὴ τῶν μετεώρων ὑποτεθῇ ὁμαλή, ἡ Γῆ ἐν τῇ διαγραφῇ τῆς τροχιᾶς της θὰ συναντᾷ περισσότερα μετέωρα πρὸς τὸ μέρος, πρὸς ὃ διευθύνεται, παρὰ ἐξ ἐκείνου, ἐξ οὗ προέρχεται. Προσέτι, ἐπειδὴ ἐκ τῶν διαττόντων βλέπομεν μόνον ἐκείνους, οἱ ὁποῖοι ἐμφανίζονται ἐν τῷ ἄνωθεν τοῦ ὁρίζοντος ἡμισφαιρίῳ, ὁ ἀριθμὸς τῶν διαττόντων θὰ ὑπόκειται εἰς μεταβολὴν ἐξαρτωμένην ἐκ τῆς θέσεως, τὴν ὁποίαν διαρκοῦντος τοῦ ἔτους ἔχει ὁ μετεωρικὸς Ἥλιος ἐν σχέσει πρὸς τὸν ὁρίζοντα, ἤτοι θὰ ἔχωμεν περισσοτέρους διάττοντας κατὰ τὸ θέρος καὶ τὸ φθινόπωρον, ὁπότε ἡ ζενιθία ἀπόστασις τοῦ μετεωρικοῦ Ἡλίου εἶναι μείζων, παρὰ κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ τὸ ἔαρ.

Πλὴν τῆς ἐτησίας μεταβολῆς τοῦ ἀριθμοῦ τῶν διαττόντων ἔχομεν καὶ ἡμερησίαν, ὀφειλομένην εἰς τὸ ὅτι ὁ μετεωρικὸς Ἥλιος, ὡς ἀπέχων τοῦ πραγματικοῦ κατὰ 90° πρὸς δυσμάς, ἀνατέλλει ἐνωρίτερον αὐτοῦ κατὰ 6ω περίπου, μεσουρανεῖ δὲ περὶ τὴν 6ω τῆς πρωΐας, ὁπότε ἔδει νὰ παρατηρῆται ὁ μέγιστος ἀριθμὸς διαττόντων. Ἐν τούτοις, λόγῳ πιθανῶς τοῦ λυκαυγοῦς, ὁ μέγιστος ἀριθμὸς διαττόντων παρατηρεῖται μεταξὺ 2ω καὶ 4ω πρωΐνῆς. Τέλος τὸ γεγονὸς ὅτι ὁ μετεωρικὸς Ἥλιος καθ᾿ ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς νυκτὸς εὑρίσκεται σχεδὸν πάντοτε πρὸς ἀνατολὰς τοῦ μεσημβρινοῦ ἑκάστου τόπου ἐξηγεῖ διατὶ ὁ ἀριθμὸς τῶν παρατηρουμένων διαττόντων εἶναι μείζων πρὸς ἀνατολὰς ἢ πρὸς δυσμάς, ἤτοι τὴν λεγομένην ἀζιμουθιακὴν μεταβολὴν τοῦ πλήθους τῶν διαττόντων.

Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

—**μετεωρικὸς** *σίδηρος* (Meteoritisches Eisen) *[᾿Ορυκτολ.].* Ὁ σίδηρος τῶν μετεωριτῶν. Ἀπαντᾷ αὐτοτελὴς ὡς σιδηρομετεωρίτης (Eisenmeteorit) εἰς συμπαγεῖς ἢ πορώδεις μάζας, ἢ ἀποτελεῖ συστατικὸν τῶν λιθομετεωριτῶν (Steinmeteorite). Περιέχει συγχρόνως καὶ νικέλιον εἰς ἀναλογίαν μέχρις 20 %, τοῦτο ὅμως δὲν κατανέμεται ὁμοιομόρφως ἐντὸς τῆς μάζης αὐτοῦ, ἀλλὰ διατάσσεται κατὰ ἐλάσματα. Διὰ τοῦτο ἀναλόγως τῆς διαφόρου περιεκτικότητος εἰς νικέλιον τῶν ἐλασμάτων τούτων καὶ τῆς μεταξὺ αὐτῶν θεμελιώδους οὐσίας ὁ μετεωρικὸς σίδηρος διακρίνεται εἰς *καμακίτην* (Kamacit), πτωχὸν εἰς νικέλιον, *ταινίτην* (Tänit), πλούσιον εἰς νικέλιον, καὶ *πλεσσίτην* (Plessit), τὴν μεταξὺ τῶν ἐλασμάτων θεμελιώδη οὐσίαν.

Ὁ μετεωρικὸς σίδηρος περιέχει ἐκτὸς τοῦ νικελίου καὶ κοβάλτιον, χρώμιον, πυρίτιον, θεῖον, ὑδρογόνον, ἰδίως δὲ ἄνθρακα ὑπὸ μορφὴν γραφίτου, σπανίως ἀδάμαντος, προσέτι δὲ καὶ εἰς ἕνωσιν μετὰ τοῦ σιδήρου, ἡ ὁποία ὀνομάζεται *κοχενίτης* (Cohenit) $Fe_8C$, ἀκόμη δὲ καὶ φωσφόρον. Μὲ τὴν χρονολογίαν τῆς πτώσεως αὐτοῦ ὡς μετεωρίτου εἶναι σπανίως γνωστός, ὡς εἶναι ὁ μετεωρικὸς σίδηρος τοῦ Braunau ἐν Βοημίᾳ (1845) καὶ τῆς Hraschina παρὰ τὴν Agram (1751). Συνήθως ἀπαντᾷ εἰς ἐμφανίσεις, αἱ ὁποῖαι ἀνεγνωρίσθησαν ὡς μετεωρικαὶ ἐκ τῶν χαρακτηριστικῶν των γνωρισμάτων, τοιαῦται δὲ εἶναι αἱ ἐμφανίσεις παρὰ τὸν ποταμὸν Bemdego ἐν Βραζιλίᾳ, τῆς Olumba ἐν Περοῦ, τῆς Sierra Madre ἐν Μεξικῷ κ.ἄ. Γ. Β.

**Μετεώριον** *[᾿Αρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, κειμένη πλησίον τοῦ Νυμφαίου (Νὶφ) ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Ἕρμου παρὰ τὴν Σμύρνην. Ἐνταῦθα εὑρισκόμενος Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος ἔμαθε τὴν ἀνάκτησιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἀπὸ τῶν Λατίνων τῷ 1261. Ὑπὸ τοῦ Ramsay ταυτίζεται πρὸς τὸ σημερινὸν φρούριον *Γαρδὰκ-Καλεσί*, πρὸς Β. τῶν Θυατείρων (Ἄκ-Χισσάρ). Α. Θ. Σ.

**μετεώρισις,** *—εως* (ἡ)· τὸ νὰ εὑρίσκεταί τι εἰς μετέωρον κατάστασιν, ἄλλως *μετεωρισμός.*

— *[Ψυχοφ.] Μετεώρισις* (γαλλ. lévitation) καλεῖται ἡ ἀπὸ τοῦ ἐδάφους ἀνύψωσις αὐτοῦ τούτου τοῦ σώματος τοῦ *μεσάζοντος*, χωρὶς τὴν βοήθειαν ἐμφανοῦς τινος, μυϊκῆς ἢ μηχανικῆς, ἐνεργείας. Φαινόμενα μετεωρίσεως μνημονεύονται πολλὰ εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν ἁγίων. Ὑπό τινων, μάλιστα, ἐθεωρήθησαν ὡς τοιαῦτα καὶ αὐτὴ ἡ Ἀνάληψις τοῦ Ἰησοῦ καὶ τὸ ἐπὶ τῶν κυμάτων βάδισμα Αὐτοῦ. Ὅσον ἀφορᾷ τὰς πειραματικῶς γενομένας μετεωρίσεις, αὗται ἀμφισβητοῦνται ὑπὸ τῶν περισσοτέρων συγγραφέων, διότι δὲν ἐθεωρήθησαν ἐπιστημονικῶς ἐπαρκεῖς οἱ ὅροι καὶ οἱ ἔλεγχοι, ὑφ᾿ οὓς τὰ φαινόμενα ταῦτα ἔλαβον χώραν. Διὰ τὴν ἐξήγησιν τοῦ φαινομένου βλ. λ. *τηλεκινησία.*

Ν. Γ. ΜΑΥΡΗΣ

**μετεωρισμὸς** (ὁ)· συνώνυμον τοῦ *μετεώρισις.*

— *[᾿Ιατρ.] Μετεωρισμὸς* καλεῖται ἡ διόγκωσις τῆς κοιλίας ἡ προερχομένη ἐκ συσσωρεύσεως ἀερίων ἐν τοῖς ἐντέροις. Κατ᾿ αὐτὸν ἡ κοιλία ἐμφανίζεται τεταμένη, ἐμπεφυσημένη, παρέχουσα κατὰ τὴν ἐπίκρουσιν ἦχον ὡς ἀπὸ τυμπάνου (τυμπανικὸς ἦχος). Ὁ μετεωρισμὸς τῆς κοιλίας δυνατὸν νὰ ἀναπτυχθῇ: α΄) Ὅταν λαμβάνωνται τροφαί, αἵτινες κατὰ τὴν κατεργασίαν τῆς πέψεως ἀναπτύσσουσιν ἀέρια ὑπερβολικά. β΄) Ἐπὶ στομαχικῶν παθήσεων καὶ δὴ τῶν δυσπεψιῶν ἐν γένει καὶ ἐπὶ ὀξέων ἢ χρονίων νοσημάτων τῶν ἐντέρων ἐν γένει. γ΄) Κατὰ τὴν διαδρομὴν τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ καὶ δὴ εἰς τὴν δευτέραν ἑβδομάδα τῆς νόσου· ἀλλὰ καὶ εἰς τοὺς παρατυφοειδεῖς πυρετοὺς ὑπάρχει μετεωρισμός, ἐλαφρότερος ὅμως. δ΄) Ἐφ᾿ οἱασδήποτε ἀφορμῆς παρακωλυούσης τὴν διὰ τῶν ἐντερικῶν ἑλίκων κυκλοφορίαν, οἷον ἐπὶ εἰλεοῦ, ἐπὶ ἐντερικῆς περισφίγξεως, ἐντερικῆς ἐμφράξεως, γωνιώσεως τοῦ ἐντέρου κλπ. ε΄) Ἐπὶ περιτονίτιδος ὀξείας καὶ χρονίας. Ἡ θεραπευτικὴ τῆς τοιαύτης καταστάσεως εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὸ προκαλέσαν τὸν μετεωρισμὸν αἴτιον. Μ. Ν. Κ.

**μετεωρίτης** (ὁ), ἢ *μετεωρόλιθος* (ὁ)· λίθος, πίπτων ἐκ τοῦ οὐρανίου διαστήματος εἰς τὴν γῆν, οὐρανόλιθος, ἀερόλιθος.

— *[᾿Εγκυκλ.]* Βλ. λ. *ἀερόλιθος.*

**μετεωρογραφία** (ἡ)· ἡ περιγραφὴ τῶν μετεώρων, τῶν ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων.

**μετεωρογραφικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετεωρογραφίαν.

**μετεωρογράφος** (ὁ)· Ὄργανον αὐτογραφικόν, ἐφ᾿ οὗ γίνεται σύγχρονος ἀναγραφὴ τῶν μεταβολῶν 3 — 4 μετεωρολογικῶν στοιχείων. Τὸ εἶδος τοῦτο τῶν αὐτογραφικῶν μετεωρολογικῶν ὀργάνων ἢ μετεωρογράφων δὲν προορίζεται διὰ τὰς ἀνάγκας τῆς τρεχούσης ὑπηρεσίας τῶν συνήθων μετεωρολογικῶν σταθμῶν. Οἱ μετεωρογράφοι εἶναι τὰ μόνα ὄργανα, ἅτινα χρησιμοποιοῦνται ὑπὸ τῆς ἀερολογίας διὰ τὴν ἔρευναν τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας, ὡς ἐκ τοῦ μικροῦ βάρους αὐτῶν, λόγῳ τοῦ ὅτι κατασκευάζονται ἐξ ἀργιλλίου. Φέρουσι διάφορα ὀνόματα ἀναλόγως τῶν στοιχείων, ἅτινα ἀναγράφουσι, διακρινόμενοι εἰς *βαροθερμογράφους, βαροθερμοϋγρογράφους* (βλ. τὰς λ.) κλπ., οἵτινες εἶναι συνδυασμοί, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον πολύπλοκοι, μεμονωμένων μετεωρολογικῶν αὐτογραφικῶν ὀργάνων. Εἰς ὡρισμένας περιπτώσεις τυγχάνει ἀπαραίτητον εἰς τὰς ἐνδείξεις, ἃς δεικνύουσιν οἱ ἀνωτέρω μετεωρογράφοι, νὰ προστεθῶσι καὶ πληροφορίαι περὶ τῆς ταχύτητος τῶν ἀτμοσφαιρικῶν ρευμάτων, ὁπότε προσαρμόζεται εἰς τὸν ἀνωτέρω μετεωρογράφον καὶ ὁ ἀνεμομετρικὸς μύλος καὶ οὕτω σχηματίζεται ὁ μετεωρογράφος, ὅστις ἀκριβέστερον καλεῖται *βαροθερμοϋγροανεμογράφος* (βλ. λ.). Οἱ βαροθερμογράφοι, οἵτινες χρησιμοποιοῦνται καὶ εἰς τοὺς μονίμους σταθμούς, προσφέρουσι μεγάλας ὑπηρεσίας, διότι αἱ ἐνδείξεις αὐτῶν συμπληροῦσιν ἀλλήλας καὶ ἡ παρατήρησίς των ἐπιτρέπει νὰ προΐδωμεν σχεδὸν ἀσφαλῶς τὴν προσέγγισιν τῶν καταιγίδων, τῶν κυκλώνων καὶ γενικῶς πασῶν τῶν διαταράξεων, ὧν ἕδρα εἶναι ἡ ἀτμοσφαῖρα. Οἱ βαροθερμογράφοι οἱ χρησιμοποιούμενοι ὑπὸ τῆς ἀερολογίας εἶναι περίπου τῆς ἰδίας κατασκευῆς, εἶναι δηλαδὴ δύο ὄργανα ἡνωμένα εἰς ἕν, κατεσκευάσθησαν ὅμως ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀεροστατικῶν πειραμάτων. Ἐπειδὴ αἱ ἐνδείξεις τοῦ ὀργάνου καταγράφονται ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ κυλίνδρου, αἱ παρατηρήσεις ἐκτελοῦνται συγχρόνως. Τὸ βαρόμετρον δύναται νὰ ἀναγράψῃ ὕψος μέχρι 5000 μ. καὶ τὸ θερμόμετρον θερμοκρασίας ποικιλλούσας μεταξὺ —85° καὶ 40° Κελσίου. Οἱ κυρίως μετεωρογράφοι ἢ βαροθερμοϋγρογράφοι χρησιμοποιοῦνται σήμερον λόγῳ τῆς ἐλαφρότητος αὐτῶν καὶ ὑπὸ τῶν μετεωροσκοπείων, ὑπὸ διαφόρων ἐπιστημονικῶν ἀποστολῶν, ὡς καὶ ὑπό τινων βιομηχανιῶν (καπνοβιομηχανίας κλπ.).

Ὁ ὡρολογιακὸς αὐτῶν κύλινδρος δύναται νὰ ἐκτελῇ μίαν ὁλόκληρον στροφὴν ἐντὸς 26, 13, 8, 4 ἢ 2 ὡρῶν. Πολλάκις εἰς τὰ ὄργανα ταῦτα, ἵνα αἱ ἐνδείξεις τῆς θερμοκρασίας εἶναι ἀκριβεῖς καὶ ἄνευ λαθῶν ὀφειλομένων εἰς τὴν ἀκτινοβολίαν,

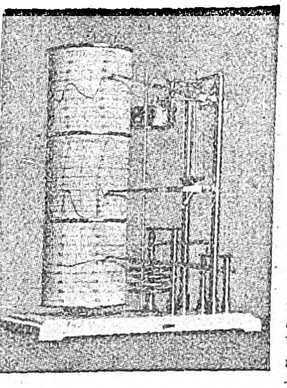

*Κλασσικὸς τύπος μετεωρογράφου (βαροθερμοϋγρογράφου).*
[Διαστάσεις: μῆκος 275 χλστμ., ὕψος 325, πλάτος 140.]

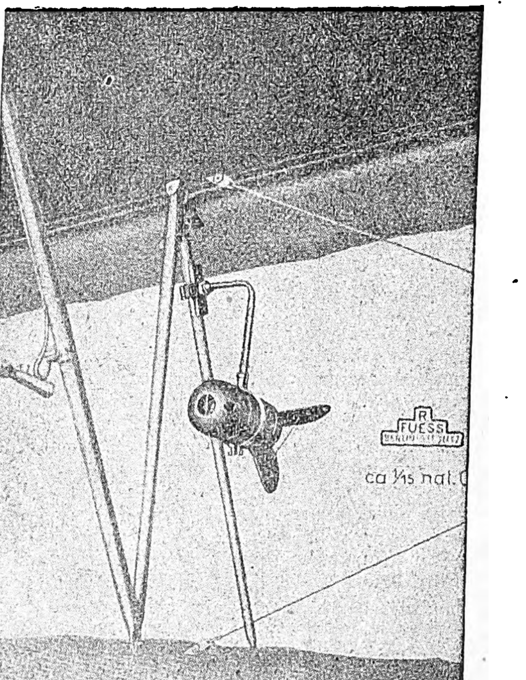


*᾿Αεροπορικὸς μετεωρογράφος ἐν λειτουργίᾳ ἐπὶ ἀεροπλάνου.*



Digitized by Google

ἐφοδιάζονται ὑπὸ συστήματος ἀερισμοῦ λειτουργοῦντος καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς παρατηρήσεως, εἶναι δὲ γενικῶς προφυλαγμένα ἀπὸ τῆς ἐπιδράσεως τῆς ἡλιακῆς ἀκτινοβολίας. Τὰ ἀνωτέρω ὄργανα χρησιμοποιοῦνται εὐρέως τοποθετοῦνται ἀκόμη καὶ εἰς λουτροπόλεις, κήπους, ἀεροδρόμια, πεδία βολῆς κτλ., ἀντικαθιστῶντα οὕτως εἰπεῖν τὰ *μετεωρολογικὰ στέγαστρα* ἢ τοὺς λεγομένους *κλωβούς*. Προκειμένου νὰ ἐγκατασταθῶσιν ἐν ὑπαίθρῳ τοποθετοῦνται ἐπὶ σιδηρᾶς στήλης ἢ ἐντὸς εἰδικοῦ οἰκίσκου. Ἡ χρῆσις τῶν ὀργάνων αὐτῶν ἐπεξετάθη ἐσχάτως καὶ ἐν τῇ ἀεροπλοΐᾳ, ἥτις χρησιμοποιεῖ τοὺς καλουμένους *ἀεροπορικοὺς μετεωρογράφους*, οἵτινες εἶναι εἰδικῶς κατεσκευασμένοι διὰ τὰς συνθήκας, ὑπὸ τὰς ὁποίας θὰ λειτουργήσωσι, λόγῳ τῆς ταχείας ἀνοδικῆς καὶ καθοδικῆς κινήσεως τοῦ ἀεροπλάνου ἐντὸς τῶν στρωμάτων τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ τῶν συνεπείᾳ τῶν κινήσεων τούτων προκυπτόντων σφαλμάτων. Θ. Θ. Φ.

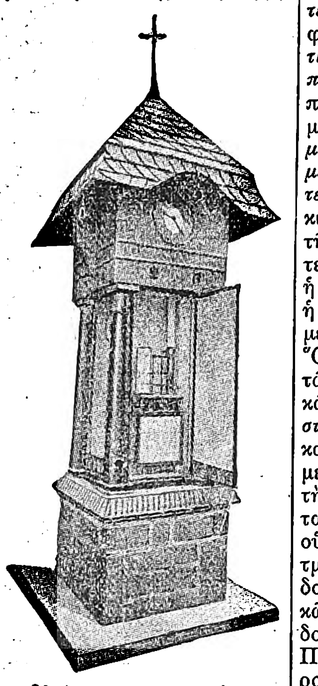

*Οἰκίσκος μετεωρογράφου δι' ἀερισμοῦ.*

**μετεωρολέσχης** (ὁ)· ἀρχ., ὁ φλυαρῶν περὶ οὐρανίων πραγμάτων, περὶ μετεώρων.

**μετεωρόλιθος** (ὁ)· βλ. *ἀερόλιθος*.

**μετεωρολογία** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ἡ ἐπιστήμη τῆς σπουδῆς τῶν φαινομένων, ἅτινα λαμβάνουσι χώραν ἐντὸς τῆς ἀτμοσφαίρας. Ἡ μετεωρολογία ἀποτελεῖ κλάδον τῆς *γεωφυσικῆς*. Τὰ φαινόμενα τῆς ἀτμοσφαίρας, ἥτις περιβάλλει τὴν γῆν καὶ ἐκτείνεται μέχρι τοῦ ἀνωτάτου ἐκείνου ὕψους, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἄρχεται τὸ ἐνδιάμεσον διάστημα τῶν πλανητῶν, δύνανται νὰ μελετηθῶσιν ἢ μεμονωμένως ἢ συλλογικῶς· ὁ τελευταῖος οὗτος τρόπος μελέτης σχετίζεται μὲ τὴν στατιστικὴν καὶ τὰς γενικὰς μέσας συνθήκας ἢ τιμάς, μὲ τὰς ὁποίας ἀσχολεῖται εἰδικῶς ἡ *κλιματολογία*. Τὸν ὅρον μετεωρολογία ἐχρησιμοποίησεν ἐν τοῖς ἀρχαίοις χρόνοις ὁ Πλάτων (Φαῖδρος 270 Α) μὲ τὴν ἔννοιαν τῆς ἐρεύνης τῶν μετεώρων. Βραδύτερον ὁ Ἀριστοτέλης διὰ τοῦ ἔργου αὐτοῦ «Μετεωρολογικά», εἰς τὰ ὁποῖα ὁμιλεῖ περὶ τοῦ ἀέρος, τῶν ὑδάτων καὶ τῶν σεισμῶν, ἔδωσεν εἰς τὸν ὅρον τὴν σημερινὴν αὐτοῦ ἔννοιαν.

Αἱ μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις τῶν Χαλδαίων ἦσαν φαινομενικῆς φύσεως ἐντελῶς συλλεκτικῆς καὶ ἀνεφέροντο ἰδιαιτέρως εἰς τὰ ὀπτικὰ φαινόμενα καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν ἅλω. Οὗτοι διέκρινον σαφῶς τὴν μικρὰν ἅλω τῶν 22° δαμέτρου ἀπὸ τὴν μεγάλην τοιαύτην τῶν 45°. Ἐπίσης ἐπέστησαν πολὺ τὴν προσοχὴν αὐτῶν εἰς τὰ νέφη, τὸν ἄνεμον, τὰς θυέλλας καὶ ἀστραπάς. Οἱ Βαβυλώνιοι ἐχρησιμοποίουν ἀνεμολόγιον ὀκτὼ ρόμβων καὶ προσδιώριζον τὰ τέσσαρα κύρια σημεῖα τοῦ ὁρίζοντος κατὰ τὴν τάξιν Νότος, Βορρᾶς, Ἀνατολή, Δύσις. Πρῶτοι οἱ Ἕλληνες ἐξετέλεσαν κανονικὰς μετεωρολογικὰς παρατηρήσεις, τὰς ὁποίας κατέγραφον εἰς πινακίδας καλουμένας παραπήγματα. Συντρίμματα ἑνὸς τοιούτου παραπήγματος, ἀνευρεθέντα πρὸ ἐτῶν ἐν Μιλήτῳ, ἀπόκεινται ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ.

Ἡ ἐξέλιξις καὶ ἡ πρόοδος τῆς μετεωρολογίας συμπίπτει μὲ τὴν ἀνάπτυξιν ἐν γένει τῆς φυσικῆς καὶ τῆς χημείας. Μεταξὺ τῶν πρώτων συστηματικῶν ἡμερησίων παρατηρήσεων ἀναφέρονται αἱ τοῦ Γουλιέλμου Merle, ἐφημερίου τοῦ Driby τῆς Ἀγγλίας, κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ἐτῶν 1331—1338, αἵτινες φυλάσσονται ἤδη εἰς τὸ ἀρχεῖον τοῦ κολλεγίου Merton τῆς Ὀξφόρδης· αὗται ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ George G. Symons τῷ 1891. Κατὰ τὸ 1653 ὁ Φερδινάνδος Β' τῆς Τοσκάνης ὠργάνωσε τοπικὸν δίκτυον μετεωρολογικῶν σταθμῶν καὶ ἡμερησίων μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων, αἵτινες ἐπεξετάθησαν καὶ πέραν τῆς βορείου Ἰταλίας.

Ἡ μετεωρολογία στρέφεται περὶ τὴν μελέτην τῶν πλείστων ζητημάτων τῆς ἀτμοσφαίρας, περὶ τὴν σπουδὴν καὶ τὴν περιγραφὴν τῶν ὀργάνων ἅτινα χρησιμοποιεῖ κατὰ τὴν ἔρευνάν της καὶ εἶτα περὶ τὰς ἐφαρμογὰς τῶν θεωρητικῶν αὐτῆς συμπερασμάτων πρὸς ἐξήγησιν προβλημάτων τῆς φυσικῆς γεωγραφίας, τῆς γεωργίας, τῆς ὑγιεινῆς, τῆς ναυτιλίας, τῆς ἀεροπορίας κτλ. Διακρίνεται ὅθεν ἡ μετεωρολογία εἰς πλείστους ἄλλους κλάδους. Οὕτω ἡ *γενικὴ μετεωρολογία* δύναται νὰ διαιρεθῇ: εἰς τὴν *φυσικὴν μετεωρολογίαν* ἢ *περιγραφικὴν* ἥτις ἐξετάζουσα τὰ διάφορα μετεωρολογικὰ στοιχεῖα καλεῖται καὶ *συγκριτικὴ μετεωρολογία*, κλάδος τῆς ὁποίας εἶναι ἡ *πρακτικὴ μετεωρολογία*, ἐρευνῶσα θεωρητικῶς καὶ πρακτικῶς τὰ ὑπὸ τῆς μετεωρολογίας χρησιμοποιούμενα μετεωρολογικὰ ὄργανα· εἰς τὴν *συνοπτικὴν μετεωρολογίαν*, ἧς κλάδον ἀποτελεῖ ἡ *προγνωστικὴ μετεωρολογία*, κατ' ἄλλους δὲ καὶ ἡ *δυναμικὴ μετεωρολογία*, ἥτις ἀσχολεῖται μὲ τὰ φαινόμενα τῶν κινήσεων ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ καὶ τὰ συμπεράσματα τῆς ὁποίας ἐφαρμόζονται ἐν τῇ προγνωστικῇ μετεωρολογίᾳ. Ἕτερος σπουδαῖος κλάδος αὐτῆς εἶναι ἡ *ἰατρικὴ μετεωρολογία*, ἡ *γεωργική*, ἡ *δικαστική*, ἡ *διοικητική*, ἡ *ἀνταρκτική*, ἡ *ἀερολογία*, ἀσχολουμένη μὲ τὴν ἔρευναν τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας. Ὅταν ἡ μετεωρολογία ἐρευνᾷ τὴν μέσην πορείαν τῶν φαινομένων τῆς καιρικότητος, καλεῖται εἰδικῶς *κλιματολογία* ἤ, κατά τινας *στατική*, ἡ *στατιστικὴ μετεωρολογία*, ἐξετάζουσα οὕτω τὰς μέσας καταστάσεις τῆς ἀτμοσφαίρας εἰς τὰ διάφορα σημεῖα τῆς Γῆς καὶ ἰδίᾳ τὰς σχέσεις αὐτῶν πρὸς τὴν ὀργανικὴν ζωήν· οὕτω ἡ κλιματολογία καλεῖται καὶ *γεωγραφικὴ μετεωρολογία*, διότι ἀποτελεῖ, οὕτως εἰπεῖν, τὸ πρακτικὸν καὶ γεωγραφικὸν τμῆμα τῆς μετεωρολογίας καὶ στηρίζει τὴν πρόοδον αὐτῆς ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐπὶ τῶν στατιστικῶν μεθόδων, ἐνῷ ἡ γενικὴ μετεωρολογία, ὡς κλάδος τῆς φυσικῆς, ἐφαρμόζει τὰς φυσικὰς μεθόδους. Πάντως τὰ ὅρια πάντων τῶν κλάδων τῆς μετεωρολογίας δὲν εἶναι σαφῆ καὶ ἀπηκριβωμένα, ἀλλ' ἀλληλένδετα μεταξύ των, ὥστε εἷς κλάδος ἀποτελεῖ συνέχειαν τοῦ ἄλλου. Σπουδαῖος κλάδος τῆς μετεωρολογίας εἶναι ἡ *θεωρητικὴ μετεωρολογία*, εἰς ἣν ὑπάγεται ἡ *ὀπτικὴ μετεωρολογία* ἢ *μετεωρολογικὴ ὀπτική*, ἥτις μελετᾷ τὰ ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ παρατηρούμενα ὀπτικὰ φαινόμενα τῶν ἅλω, τῆς ἴριδος κ.τ.λ., καὶ ὁ *ἀτμοσφαιρικὸς ἠλεκτρισμός*. Ἡ ἀνάπτυξις τῆς ἀεροπορίας ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς τὴν δημιουργίαν τῆς *ἀεροναυτικῆς* ἢ *ἀεροπορικῆς μετεωρολογίας*, ἥτις χρησιμοποιεῖ διὰ τοὺς σκοποὺς αὐτῆς τὰ συμπεράσματα τῆς γενικῆς μετεωρολογίας· σπουδαιότατος κλάδος αὐτῆς εἶναι ἡ *προγνωστικὴ ἀεροπορικὴ μετεωρολογία*, ἥτις μελετᾷ τὴν πρόγνωσιν τοῦ καιροῦ ἀπὸ ἀεροπορικῆς ἀπόψεως. Ἡ ταχεῖα ἐξέλιξις τῆς ἀεροπορικῆς μετεωρολογίας ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὴν δημιουργίαν κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη νέου κλάδου αὐτῆς, τῆς *ἀεροναυτικῆς* ἢ *ἀεροπορικῆς κλιματολογίας*, ἥτις ἀσχολεῖται μὲ τὴν μέσην πορείαν τῶν φαινομένων τοῦ καιροῦ καὶ τὰς μέσας καταστάσεις τῆς ἀτμοσφαίρας εἰς τὰς διαφόρους κλιματικὰς περιοχάς. Ἄλλοι κλάδοι τῆς μετεωρολογίας εἶναι ἡ *στρατιωτικὴ μετεωρολογία*, ἡ *ναυτικὴ* καὶ ἡ *ἀστρομετεωρολογία* ἢ *κοσμικὴ μετεωρολογία*, ἥτις ἐξετάζει κατὰ τὸ δυνατὸν τὰς φανταστικὰς σχέσεις μεταξὺ τῆς γηΐνης ἀτμοσφαίρας καὶ τοῦ ἐνδιαμέσου πλανητικοῦ διαστήματος ἢ τῶν οὐρανίων σωμάτων, καὶ ἐν γένει τὰς ἐπιδράσεις τῶν διαφόρων ἀστρονομικῶν φαινομένων καὶ κινήσεων τῶν οὐρανίων σωμάτων ἐπὶ τῆς καιρικότητος τῆς γηΐνης ἀτμοσφαίρας.

Κατὰ τὸ τελευταῖον ἥμισυ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος αἱ μετεωρολογικαὶ ἔρευναι ὑπήχθησαν βαθμιαίως ὑπὸ τὸν ἔλεγχον μεγάλων κρατικῶν ὀργανισμῶν. Τοῦτο ἦτο συνέπεια τῆς ἀνακαλύψεως καὶ διαδόσεως τοῦ ἠλεκτρικοῦ τηλεγράφου καὶ τῶν ὠκεανίων τηλεγραφικῶν καλωδίων, δι' ὧν ἐπετεύχθη ἡ σύνταξις καὶ χάραξις τῶν ἡμερησίων χαρτῶν καιροῦ διὰ μεγάλα τμήματα τῆς γῆς καὶ ἡ ἔκδοσις προγνώσεων ἐπὶ τοῦ καιροῦ καὶ τῶν θυελλῶν μίαν ἢ δύο ἡμέρας πρότερον. Ἡ ἀνάπτυξις τοῦ ἀσυρμάτου τηλεγράφου ἀπὸ τοῦ 1900 κατέστησε μάλιστα δυνατὴν τὴν ἀνταλλαγὴν τηλεγραφημάτων περὶ τοῦ καιροῦ ὑπὸ τῶν ἐν πλῷ πλοίων, τὴν χάραξιν ὑπ' αὐτῶν τῶν καιρικῶν χαρτῶν καὶ τὴν μελέτην συνεπῶς τῆς καιρικῆς καταστάσεως τῆς περιοχῆς ἐντὸς τῆς ὁποίας εὑρίσκονται. Τὸ ἓν μετὰ τὸ ἄλλο τὰ πεπολιτισμένα κράτη ἵδρυσαν εἴτε γραφεῖον καιροῦ ἢ μετεωρολογικὴν ὑπηρεσίαν ἢ ὑδρογραφικὴν καὶ ναυτικὴν μετεωρολογικὴν ὑπηρεσίαν ἢ ἐν ἐργαστήριον διὰ τὰς ἐναερίους ἐρεύνας ἀναλόγως τῶν εἰδικῶν ἀναγκῶν των. Τὰ ἀνωτέρω κρατικὰ γραφεῖα ἀσχολοῦνται συνήθως μὲ τὴν κλιματολογίαν καὶ τὴν θεωρητικὴν μετεωρολογίαν ἐν συνδυασμῷ μὲ τὸ ἡμερήσιον αὐτῶν πρακτικὸν ἔργον τῆς τηλεγραφίας, τῆς προγνώσεως καὶ τῆς δημοσιεύσεως τῶν χαρτῶν καὶ τῶν παρατηρήσεων. Σημαντικὴν πρόοδον ἐσημείωσεν ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ ἡ ἐπιτευχθεῖσα διεθνὴς συνεννόησις τῶν ἐπισήμων μετεωρολογικῶν ὑπηρεσιῶν διὰ τῆς συγκλήσεως τοῦ πρώτου «Διεθνοῦς Μετεωρολογικοῦ Συνεδρίου», ὅπερ συνῆλθε τῷ 1853 ἐν Βρυξέλλαις, τοῦ δευτέρου ἐν Βιέννῃ τῷ 1873 κ. τ. λ. Σπουδαῖον ὄφελος προῆλθεν καὶ ἀπὸ τὴν συσταθεῖσαν «Διεθνῆ Μετεωρολογικὴν Ἐπιτροπήν», ἥτις ἐξετάζει τὰ γενικοῦ ἐνδιαφέροντος ζητήματα, τὴν ὀργάνωσιν συστηματικῆς ἐρεύνης τῶν πολικῶν περιοχῶν, τὴν συστηματικὴν ἔρευναν τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας, τὴν διεθνῆ συνεργασίαν καὶ σύνδεσιν μετὰ τῶν μετεωρολογικῶν ὑπηρεσιῶν τῆς Ἀμερικῆς κ. τ. λ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Louis Cotte*, Traité de Météorologie (Παρίσιοι 1774).— *Τοῦ αὐτοῦ*, Mémoires sur la Météorologie (1788).—*Ludwig Kämtz*, Lehrbuch der Meteorologie (Halle 1836).—*Sir John Herschel*, Meteorology (Λονδῖνον 1840).—*E. E. F. W. Schmid*, Grundriss der Meteorologie (Λειψία 1862).—*Ferrel*, Recent Advances in Meteorology (Washington 1885). —*Julius Hann*, Handbuch der Klimatologie.—*Τοῦ αὐτοῦ*, Lehrbuch der Meteorologie.—*J. E. Wocikoff*, Klima der Erde (1885) καὶ Meteorologie.—*Sir W. N. Shaw*, Forecasting Weather.— *Τοῦ αὐτοῦ*, The Air and its Ways (1823) καὶ Manual of Meteorology.—*W. Köppen*, Die Klimate der Erde. — *Willis L. Moore*, Descriptive Meteorology (1811). — *C. J. Plave*, The Structure of the Atmosphera in Clear Weather (1812).—*V. Bjerknes*, Dynamische Meteorologie und Hydrographie.—*H. N. Dickson*, Climate and Weather (1812).— *Dr Alfred Wegener*, Thermodynamik der Atmosphäre (1811). — *Andey Angstrom*, A Study of the Radiation of the Atmosphere. — *W. J. Humphreys*, Physics of the Air.— *F. N. Exner*, Dynamische Meteorologie.—*R. G. K. Lempfert*, Meteorology (1920). — *L. J. Richardson*, Forecasting the Weather by Numerical Computation (1921).—*Sir John Moore*, Meteorology, practical and Applied.—*E. Delcabre*, Lexique Météorologique.—*Barthlomew*, Atlas of Meteorology (1900).—*C, E. P. Brooks*, Climate through the Ages (1826).—*Geo Aubourne Clarke*, Clouds (1820).—*F. Albrecht - H. Voigts - A. Paech*, Grundzüge der Meteorologie.—*Albert Defant*, Wetter und Wettervorhersage (1926).—*R. Süring*, Leitfaden der Meteorologie.—*Walter Georgii*, Elugmeteorologie (1827). — *Börnstein - Brückmann*, Leitfaden der Wetter Kund.— *Paul Holdeflein*, Agrarmeteorologie (1930).—*Fritz Fischli*, Aeronautische Meteorologie (1824).—*Willis Ray Gregg*, Aeronautical Meteorelogy (1825).—*F. Linke*, Aeronautische Meteorologie (1911). —*J. M. Pernter - F. M. Exner*, Meteorologische Optik. —*J. W. Smith*, Agricultural Meteorology (1820).—*R. Klein*, Meteorologie agricole.— *J. Sanson*, La prévision du Temps en agriculture. — *J. Rouch*, Des methodes de Prévision du Temps. —*A. Angot*, Traité élémentaire de Météorologie. — *G. Guilbert*, La Prévision de Temps. — *A. Baldit*, Études élémentaires de Météorologie Pratique.—*C. Karsner*, Gerichtliche und Verwaltungs Meteorologie.

*Μετεωρολογικὰ περιοδικά*: «Bulletin of the American Meteorological Society», «Meteorological Magazine», «Meteorologische Zeitschrift», «Monthly Weather Review», «Quarterly Journal of the Royal Meteorological Society», «Météorologie» τῆς Société Météorologique de France.

Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

— *[Λαογρ.]* Ἡ μακρὰ πεῖρα τῶν λαῶν ἐπὶ τῆς ἐναλλαγῆς καὶ τῆς ποικιλίας τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων ἤγαγεν αὐτοὺς εἰς ὡρισμένας γενικεύσεις, αἱ ὁποῖαι διετυπώθησαν εἰς σχετικὰ γνωμικὰ καὶ παροιμίας. Ἡ χρησιμότης τῶν γενικεύσεων τούτων καθίσταται ἰδιαιτέρως αἰσθητή, ἂν λάβῃ τις ὑπ' ὄψιν τὴν στενὴν σχέσιν, εἰς ἣν διατελοῦν αἱ μετεωρολογικαὶ μεταβολαὶ πρὸς τὰς γεωργικὰς ἐργασίας καὶ τὸ ἀποτέλεσμα αὐτῶν, αἱ ὁποῖαι ἀπασχολοῦν τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ λαοῦ. Εὐνόητον τυγχάνει ὅτι αἱ παροιμίαι καὶ τὰ σχετικὰ γνωμικὰ ἀποτελοῦν συστηματοποιημένην πεῖραν τοῦ σχετικῶς στενοῦ περιβάλλοντος, εἰς ὃ ζῇ εἷς μονίμως ἐγκατεστημένος λαός, διὰ τοῦτο δὲ δὲν δύνανται νὰ ἔχουν γενικωτέραν σημασίαν.

Αἱ μετεωρολογικαὶ γνώσεις τοῦ ἑλληνικοῦ λαοῦ εἶναι ἢ στενῶς τοπικαὶ ἢ καὶ εὐρύτερον ἑλληνικαί, ἀφορῶσαι εἰς τὰς συνθήκας ὁλοκλήρου τῆς Ἑλλάδος, καὶ ἢ ἔχουν προγνωστικὸν χαρακτῆρα ἢ ἁπλῶς διαπιστώνουν τὰς μετεωρολογικὰς συνθήκας, αἱ ὁποῖαι ἐπικρατοῦν περίπου κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχὰς καὶ τὴν σχέσιν αὐτῶν πρὸς τὴν ἀποτελεσματικότητα τῶν γεωργικῶν ἐργασιῶν. Ἡ ἐπιστημονικὴ ἐπαλήθευσις τῶν γνώσεων τούτων ἄλλοτε εἶναι ἐφικτὴ καὶ ἄλλοτε ἀνέφικτος, ἀναλόγως τῆς διατυπώσεώς των, τῆς προελεύσεώς των καὶ τῆς ἀκριβείας καὶ σταθερότητος τῶν περιόδων, εἰς ἃς ἀναφέρονται. Ἐμπειρικοῦ τελείως χαρακτῆρος, δὲν δεικνύουσι τὰς πραγματικὰς αἰτίας τῶν φαινομένων, εἰς ἃ ἀναφέρονται, ἀλλ' εἰκονίζουσι μόνον τὴν διαδοχὴν αὐτῶν καὶ τὴν σχέσιν ἐμπειρικῆς αἰτίας καὶ ἀποτελέσματος. Γνωμικὰ μετεωρολογικὰ συναντῶμεν εἰς τὴν ἱστορίαν πάντων τῶν λαῶν. Ἐν Ἑλλάδι π. χ. ὁ λαὸς ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος ἔχει σημεῖά τινα ἐπὶ τῶν ὀρέων, ἐνδεικτικὰ τῆς βροχῆς· οἱ Ἀθηναῖοι ἠτένιζον πρὸς τὸν Ὑμηττόν, αἱ περὶ τὸν Σαρωνικὸν χῶραι ἀπέβλεπον πρὸς τὴν κορυφὴν τῆς Αἰγίνης, ἐφ' ἧς ἵστατο τὸ ἱερὸν τοῦ Διὸς Ἑλλανίου, οἱ Θεσσαλοὶ εἶχον τὸν προφήτην τοῦ καιροῦ ὡς καὶ ἱερὸν τοῦ Ὀμβρίου Διὸς ἐπὶ τοῦ Πηλίου· οἱ δὲ Μακεδόνες ἐπὶ τοῦ Ἄθω καὶ τοῦ Ὀλύμπου καὶ οὕτω καθεξῆς. Ἐκ τῶν μετεωρολογικῶν γνωμικῶν, ἐκεῖνα τὰ ὁποῖα ἔχουσι πραγματικὴν σημασίαν δύνανται νὰ βοηθήσωσι μεγάλως εἰς τὴν τοπικὴν πρόγνωσιν τοῦ καιροῦ· ἐκ τούτων τὰ μᾶλλον ἐν χρήσει καὶ γενικῆς σημασίας εἶναι τὰ ἑξῆς: λεπτοὶ θύσανοι (νέφη λεπτά, λευκά, διαφανῆ) ἐκ λεπτοτάτων νημάτων ἀποτελούμενοι, σχεδὸν στάσιμοι, εἶναι σημεῖον ὡραίου καιροῦ. Θύσανοι ὑπὸ μορφὴν στρωμάτων φερόντων οὐλὰς ἔχοντες ταχεῖαν κίνησιν δεικνύουν τὴν προσέγγισιν κακοκαιρίας. Οὐρανὸς κεκαλυμμένος ὑπὸ θυσανοσωρειτῶν (cirro-cumulus) ἢ τῶν νεφῶν, τὰ ὁποῖα κοινῶς καλοῦνται «πρόβατα», σημαίνει συνήθως ἐν τῇ νοτίῳ Εὐρώπῃ κακοκαιρίαν. Ἡ ἐμφάνισις πέπλου ἐπὶ τοῦ οὐρανοῦ ἐκ θυσανοστρωμάτων κινουμένων κατὰ διεύθυνσιν λίαν διάφορον τῆς τοῦ κατωτέρου ἀνέμου, δεικνύει τὴν προσέγγισιν ὑφέσεως ἢ κακοκαιρίας. Ὑψηλὰ νέφη, τρέχοντα κατὰ διεύθυνσιν ἀντίθετον τῆς τοῦ κατωτέρου ἀνέμου, δεικνύουν μεταβολὴν τοῦ ἀνέμου. Μικρὰ νέφη αὐξάνοντα σημαίνουν βροχήν· μεγάλα νέφη ἐλαττούμενα δεικνύουν βελτίωσιν τοῦ καιροῦ. Νέφη συσσωρευόμενα ἐπὶ τῶν κλιτύων τῶν ὀρέων προαγγέλλουσι βροχήν. Τὰ νέφη, τὰ ὁποῖα σχηματίζονται ἢ ἀναρριχῶνται ἐπὶ τῶν ὀρέων, ἐὰν

Digitized by Google

διατηρῶνται, αὐξάνουν ἢ κατέρχωνται, προαγγέλλουσι βροχήν· ἐὰν δέ, τοὐναντίον, διαλύωνται ἢ ἀνέρχωνται εἶναι σημεῖον καλοῦ καιροῦ. Ἄνεμοι ἀντιθέτων ἰδιοτήτων (ὡς οἱ βόρειοι καὶ οἱ νότιοι ἐν Ἑλλάδι), διαδεχόμενοι ἀλλήλους, φέρουσι συχνάκις βροχήν. Ὁ βόρειος ψυχρὸς ἄνεμος φθάνων εἰς τόπον, τοῦ ὁποίου ἡ ἀτμοσφαῖρα εἶναι κατάφορτος ἐξ ἀτμῶν, συνεπείᾳ τοῦ θερμοῦ καὶ ὑγροῦ νοτίου ἀνέμου, ὅστις προηγήθη τούτου, προξενεῖ συμπύκνωσιν αὐτῶν καὶ βροχήν· ὁμοίως ὁ θερμὸς καὶ ὑγρὸς νότιος ἄνεμος, φθάνων εἰς ἀτμοσφαῖραν ψυχράν, ὡς ἐκ τῆς πνοῆς βορείου ἀνέμου, φέρει βροχήν. Ἐὰν τὰ νέφη κατὰ τὴν ἀνατολὴν τοῦ Ἡλίου διαλύωνται ἢ ἀπομακρύνωνται πρὸς δυσμάς, καθ' ὅσον ὁ Ἥλιος ὑψοῦται ἄνωθεν τοῦ ὁρίζοντος, προαγγέλλουν ὡραίαν ἡμέραν. Ἥλιος λαμπρός, κατὰ τὴν ἀνατολήν του, σημαίνει ὡραίαν ἡμέραν. Τοὐναντίον Ἥλιος λευκὸς καὶ ἀλαμπὴς σημαίνει βροχὴν καὶ σκοτεινὸν καιρόν. Ἐντεῦθεν καὶ ἡ κοινὴ παροιμία «ἄσπρος Ἥλιος, μαύρ' ἡμέρα». Ὁ Ἥλιος φαίνεται τότε διὰ μέσου ἀτμοσφαίρας φερούσης πολλοὺς ὑδρατμούς. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον καὶ Σελήνη ἀμυδρὰ ἢ μὲ κεραίας ἀμβλείας καὶ μὴ εὐκρινεῖς σημαίνει βροχήν. Ὅταν ὁ Ἥλιος «καίῃ» πολύ, ἤτοι προξενῇ θερμοκρασίαν λίαν αἰσθητήν, πνιγηράν, σημαίνει βροχήν. Ἡ περιβάλλουσα τὸ σῶμα ἡμῶν ἀτμοσφαῖρα εἶναι τότε κατάφορτος ἐξ ὑδρατμῶν· ἀφ' ἑτέρου δὲ καὶ ὡς ἐκ τῆς ἐντεῦθεν ἀδιαφανείας αὐτῆς εἶναι καὶ μᾶλλον ἐπιδεκτικὴ θερμάνσεως. Οὐρανὸς ἐρυθροῦ χρώματος, πρὸ τῆς ἀνατολῆς τοῦ Ἡλίου, ὅπερ ἐκλείπει εὐθὺς ὡς ἀνατείλῃ οὗτος, εἶναι σημεῖον βροχῆς. Ἡ ἐρυθρὰ αὕτη χροιὰ ἀποδίδεται εἰς τοὺς ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ πολλοὺς ὑδρατμούς, ὧν ἡ πρὸς παραγωγὴν αὐτῆς ἐνέργεια ἐλαττοῦται ἀνατέλλοντος τοῦ Ἡλίου, συνεπείᾳ τῆς θερμάνσεως τοῦ ἀέρος. Ἥλιος δύων ἐπὶ οὐρανοῦ ἀνοικτοῦ πορτοκαλλόχρου καὶ ἄνευ νεφῶν, σημαίνει ὡραῖον καιρόν· ἐὰν ὁ οὐρανὸς εἶναι ἐρυθρός σημαίνει ἄνεμον. Οὐρανὸς ῥοδόχρους κατὰ τὴν δύσιν τοῦ Ἡλίου, εἴτε αἴθριος, εἴτε νεφελώδης εἶναι, σημαίνει ὡραῖον καιρόν. Ὅταν δὲ τὸ χρῶμα αὐτοῦ εἶναι σκοτεινόν, θολόν, προαγγέλλει ἄνεμον καὶ βροχήν· τὸ βαθὺ ἐρυθρὸν χρῶμα σημαίνει ὁμοίως βροχὴν καὶ ἄνεμον. Οὐρανὸς λαμπροῦ κιτρίνου χρώματος κατὰ τὴν δύσιν τοῦ Ἡλίου, σημαίνει ἄνεμον· ἀμυδροῦ δὲ κιτρίνου χρώματος δεικνύει βροχήν. Δύσις Ἡλίου ὄπισθεν παχέων νεφῶν, μετὰ ἀνατολικοῦ ὁρίζοντος χαλκόχρου, σημαίνει βροχήν. Οὐρανὸς ἐρυθρὸς ἢ κίτρινος τὴν πρωΐαν, σημαίνει ἄνεμον καὶ καιρὸν κακὸν καὶ βροχήν. Οὐρανὸς ὑπόλευκος, ἀλευρώδης, ὡς λέγουν συνήθως, φέρει πολλοὺς ὑδρατμοὺς καὶ δεικνύει πιθανότητα βροχῆς. Ὁ οὐρανὸς εἶναι τόσον μᾶλλον κυανόχρους, ὅσον ὁ ἀὴρ περιέχει ὀλιγωτέρους ἀτμούς, ἐπὶ τῶν ὀρέων μάλιστα κλίνει πρὸς τὸ ἰῶδες χρῶμα. Ἡ διαφάνεια τοῦ ἀέρος μειοῦται πολὺ ἐνίοτε ἐπὶ τῶν ἀνέμων, οἵτινες μεταφέρουσι μεγάλην ποσότητα κονιορτοῦ, συνεπείᾳ τοῦ ὁποίου ὁ ἀὴρ φαίνεται ἐρυθρόχρους. Ἐν γένει ὅμως ἡ διαύγεια τοῦ ἀέρος δὲν ἀλλοιοῦται πάντοτε κατὰ τὴν προσέγγισιν τῆς βροχῆς· ἐνίοτε μάλιστα ἡ ἔκτακτος διαύγεια τῆς ἀτμοσφαίρας, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας μεμακρυσμένα σώματα φαίνονται πλησίον πρὸς ἡμᾶς, εἶναι πρόδρομος βροχῆς. Οὕτως ἡ ἔλλειψις διαυγείας τοῦ ἀέρος ὡς καὶ ἡ ὑπερβολὴ αὐτῆς θεωροῦνται ὡς προάγγελοι βροχῆς. Ἅλως πέριξ τῆς Σελήνης μερικῶς κεκαλυμμένης σημαίνει βροχήν. Ὡς γνωστὸν ἡ ἅλως ὀφείλεται εἰς τὴν ἀνάκλασιν τοῦ φωτὸς ἐντὸς τῶν παγοκρυστάλλων τῶν θυσανοστρωμάτων, ἅτινα εἶναι νέφη προηγούμενα συνήθως τῆς κακοκαιρίας. Οὕτως ἅλως μετ' ἀνέμου καὶ βαρομέτρου κατερχομένου εἶναι σημεῖον σχεδὸν βέβαιον ὅτι φθάνει ὕφεσις (κακοκαιρία). Ἅλως ἄνευ ἀνέμου καὶ μετὰ βαρομέτρου στασίμου σημαίνει μόνον βροχήν. Λευκὰ νέφη καὶ οὐρανὸς βαθέος κυανοῦ χρώματος εἰς τὰ μεταξὺ αὐτῶν χάσματα δεικνύουσιν ὅτι αἱ μὲν ἀποτελοῦσαι αὐτὰ ὑδροσταγόνες εἶναι μικραί, ὁ δὲ περιβάλλων αὐτὰ ἀὴρ ξηρός, ὅθεν ὑφίσταται διπλοῦς λόγος ὅπως μὴ ἀναμένωμεν βροχήν. Φαιὰ νέφη καὶ οὐρανὸς θολὸς καὶ ἄχρους μεταξὺ αὐτῶν δεικνύει μεγάλας ὑδροσταγόνας καὶ ὑγρὸν ἀέρα καὶ συνεπῶς πιθανὴν βροχήν. Μεγάλα στέμματα περὶ τὴν Σελήνην καὶ τὸν Ἥλιον δεικνύουσιν ὅτι αἱ ἀποτελοῦσαι τὰ νέφη ὑδροσταγόνες εἶναι μικραὶ καὶ συνεπῶς ὅτι ἡ βροχὴ δὲν εἶναι πιθανή· μικρὰ στέμματα δεικνύουσι, τοὐναντίον, ὅτι αἱ ὑδροσταγόνες εἶναι μεγάλαι καὶ ἡ βροχὴ ἑπομένως πιθανή. Αὐξανομένου τοῦ μεγέθους τῶν ὑδροσταγόνων τῶν νεφῶν, τὰ στέμματα σμικρύνονται, ἐξατμιζομένων δὲ τῶν ὑδροσταγόνων τὰ στέμματα εὐρύνονται· ἡ πρώτη περίπτωσις προμηνύει βροχήν, ἡ δὲ δευτέρα, τοὐναντίον, τὴν διάλυσιν τῶν νεφῶν. Ἥλιος ἀκτινοβολῶν περὶ τὴν δύσιν του, διὰ μέσου τῶν χασμάτων τῶν νεφῶν, λέγεται ὅτι ἔχει «πόδια» καὶ θεωρεῖται κοινῶς ὡς προάγγελος ἀνέμου καὶ κακοκαιρίας. Μικρὰ καὶ ὁμαλὴ ταινία νέφους, ὀλίγον ὑπὲρ τὸν ὁρίζοντα αἰωρουμένη, ἥτις καλεῖται κοινῶς «φρύδι», θεωρεῖται, πνέοντος σφοδροῦ ἀνέμου, ἔνδειξις ὅτι οὗτος θέλει ἐξακολουθήσει. «Φρύδι» καλεῖται προσέτι καὶ τὸ πρὸς τὰς ἀκρωρείας ἢ τὸν ὁρίζοντα μετὰ θύελλαν ἀναφαινόμενον κυανόχρουν τοῦ οὐρανοῦ τμῆμα, ὅπερ θεωρεῖται κοινῶς ὡς προάγγελος νηνεμίας. Ἀλλὰ «φρύδι» καλοῦσιν οἱ ναυτικοὶ ἡμῶν καὶ τὸ εἰς τὰς ἐσχατιὰς τοῦ θαλασσίου ὁρίζοντος, συνεπείᾳ τῆς πρώτης πνοῆς ἀνέμου, φαινόμενον κυανοῦν τεμάχιον τῆς θαλάσσης καὶ ὅπερ δεικνύει βεβαίως τὴν προσέγγισιν τοῦ ἀνέμου. Τὸν χειμῶνα, μετὰ ὡραῖον καιρόν, ὅταν οἱ τοῖχοι καὶ οἱ λίθοι ὑγραίνωνται ἢ «ἱδρώνουν», ὡς λέγουν συνήθως, αἱ δὲ κορυφαὶ τῶν λόφων περιβάλλωνται ὑπὸ νεφῶν, ἡ βροχὴ προσεγγίζει. Αἰθρία νὺξ μετ' ἀφθόνου δρόσου εἶναι συνήθως σημεῖον ὡραίου καιροῦ καὶ ἐπὶ μακρόν. Ἡ δρόσος παράγεται κυρίως, ὅταν ὁ ἀὴρ εἶναι ἤρεμος καὶ πολὺ διαφανής, τοῦθ' ὅπερ δεικνύει ὅτι τὰ ὑψηλὰ στρώματα τῆς ἀτμοσφαίρας εἶναι ξηρά. Ὅταν οἱ ἀστέρες στίλβωσι ζωηρῶς, εἶναι σημεῖον προσεγγίσεως κακοκαιρίας· ἡ στίλβη τῶν ἀστέρων εἶναι ἀσθενής, ὅταν ὁ καιρὸς εἶναι καλός. Ὅταν τὸ φῶς τῶν ἀστέρων χάνῃ τὴν ζωηρότητά του, εἶναι σημεῖον βροχῆς. Νέφη ἀκίνητα πρὸς τὸ μέρος τοῦ ὁρίζοντος, ὁπόθεν πνέει ὁ ἄνεμος, δεικνύουσι τὴν ἐξακολούθησιν αὐτοῦ· θεωροῦνται, τοὐναντίον, ὡς προαγγέλλοντα τὸ τέλος αὐτοῦ, ὅταν φαίνωνται πρὸς τὸ ἀντίθετον μέρος. Νέφη φθάνοντα διὰ μιᾶς καὶ διὰ διαφόρων ἀνέμων δεικνύουν τὴν προσέγγισιν καταιγίδος. Ὁμίχλη διαλυομένη ἐντελῶς σημαίνει βελτίωσιν τοῦ καιροῦ, δεικνύει ὅτι αἱ ὑδροσταγόνες αὐτῆς δὲν διατηροῦνται, ἀλλ' ἐξατμίζονται ἐντὸς τοῦ ἀέρος. Ἐὰν αἱ ὁμίχλαι ἀνανεοῦνται ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας συνεχῶς, παραχωροῦσι τὴν θέσιν των εἰς νέφη, ἅτινα ὅταν ἀνέρχωνται ἡ βροχὴ εἶναι πιθανή. Ὅταν τὰ θαλάσσια πτηνά, ἐγκαταλείποντα ἀπὸ πρωΐας τοὺς βράχους τῶν ἀκτῶν, ἵπτανται μακρὰν εἰς τὸ πέλαγος, εἶναι σημεῖον καλοῦ καιροῦ ἢ μετρίου ἀνέμου, ἐὰν δὲ τοὐναντίον μένωσι πλησίον τῶν ἀκτῶν ἢ ἵπτανται πρὸς τὴν ξηράν, εἶναι σημεῖον κακοκαιρίας. Ἡ πτῆσις τῶν χελιδόνων παρὰ τὸ ἔδαφος προαναγγέλλει τὴν βροχήν. Προσεγγιζούσης βροχῆς αἱ δυσοσμίαι γίνονται μᾶλλον αἰσθηταὶ καὶ πλέον δυσάρεστοι, πρὸς τούτοις αἱ γαλαῖ νίπτονται, τὰ πτηνὰ καθαρίζουσι τὰ πτερά των, αἱ μυῖαι κεντῶσιν ὀξύτερον, αἱ ὄρνιθες ξέονται καὶ καλύπτονται διὰ κονιορτοῦ, τὰ ὑδρόβια πτηνὰ κτυπῶσι τὰ πτερά των καὶ λούονται, οἱ ἰχθύες πηδῶσιν ἐκτὸς τοῦ ὕδατος κλπ. Οἱ ἀσθενεῖς οἱ λίαν νευροπαθεῖς, καὶ μάλιστα οἱ ρευματικοί, αἰσθανόμενοι πόνους ἢ ἀδιαθεσίας, προβλέπουν πολλάκις τὴν προσέγγισιν τῆς καταιγίδος ἢ τῆς βροχῆς. Ὅταν κατὰ τὴν ἄνοιξιν ἡ Σελήνη ἔχῃ χρῶμα πυρρόξανθον, οἱ παγετοὶ εἶναι πιθανοὶ κατὰ τὴν νύκτα. Προγνωστικὸν ἐπίσης σκοπὸν ἔχει καὶ ἡ ὑπὸ τοῦ λαοῦ γενομένη παρατήρησις τῆς καταστάσεως τῆς ἀτμοσφαίρας κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τοῦ Αὐγούστου, περὶ ἧς πιστεύεται ὅτι προσημαίνει τὴν ἀτμοσφαιρικὴν κατάστασιν τῶν μηνῶν ὁλοκλήρου τοῦ ἔτους (βλ. λ. *μερομήνια*).

Ἐκτὸς τῶν προγνωστικῶν ἐπὶ τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων, ἔχομεν παρὰ τῷ λαῷ καὶ ἄλλας γνώσεις, ἀναφερομένας εἰς τὴν κατὰ προσέγγισιν ἀτμοσφαιρικὴν κατάστασιν κατὰ τοὺς διαφόρους μῆνας τοῦ ἔτους, καὶ τὴν σχέσιν αὐτῆς πρὸς τὰς ἐκτελεστέας γεωργικὰς ἐργασίας, διατυπουμένας δὲ ὑπὸ μορφὴν παροιμιῶν. (Τ' ἅϊ Νικολοβάρβαρα κάνει νερὰ καὶ χιόνια.—Γύρω - γύρω τοῦ Χριστοῦ ἡ κορφὴ τοῦ χειμωνιοῦ.— Ὁ Φλεβάρης κι' ἂν φλεβίζῃ τοῦ καλοκαιριοῦ μυρίζει.—Τὸ Μάρτη τὸ πρωῒ πηλὰ καὶ τὸ βράδυ χώματα.—Ἂν κάμῃ ὁ Μάρτης δυὸ νερὰ κι' ὁ Ἀπρίλης ἄλλο ἕνα, χαρὰ σ' ἐκεῖνον τὸ ζευγᾶ ποῦ ἔχει πολλὰ σπαρμένα.—Μάης ἄβροχος, χρονιὰ εὐτυχισμένη.—Τζίτζικας ἐλάλησε, πάρτε τὰ δρεπάνια σας. —Αὔγουστος ἄβροχος, μοῦστος ἄμετρος. — Ἅϊ Δημητράκη, μικρὸ καλοκαιράκι, κλπ.). Θ. Θ. Φ.

**— μετεωρολογία γεωργική.** Ὁ σπουδαιότερος κλάδος τῆς μετεωρολογίας, ὅστις μελετᾷ αὐτὴν ἀπὸ γεωργικῆς ἀπόψεως. Ἐρευνᾷ μετεωρολογικῶς τὸν φυτικὸν καὶ ζωϊκὸν κόσμον τῆς γῆς, τὴν διανομὴν τῆς ἐσοδείας, παρακολουθεῖ τὰς ἀγροτικὰς ἐργασίας, αἵτινες ἐπηρεάζονται ὑπὸ τοῦ κλίματος, μελετᾷ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ καιροῦ ἐπὶ τῆς ἀναπτύξεως τῶν ἐσοδειῶν, ὡς καὶ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ κλίματος καὶ τοῦ καιροῦ ἐπὶ τῆς ζωῆς καὶ δράσεως τῶν ἐντόμων, παρακολουθεῖ τὴν ἀνάπτυξιν τῶν φυτικῶν ἀσθενειῶν, τὴν προφύλαξιν ἀπ' αὐτῶν τῆς ἐσοδείας καὶ τὴν ἐπίδρασιν τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων ἐπὶ τῶν ζῴων. Κλάδος σπουδαιότατος τῆς γεωργικῆς μετεωρολογίας εἶναι ἡ *γεωργικὴ κλιματολογία*, ἥτις ἀσχολεῖται εἰδικῶς μὲ τὰς σχέσεις τοῦ κλίματος καὶ τῆς φυτικῆς βλαστήσεως. Ἡ μελέτη τῶν ἐπιδράσεων τῶν μετεωρολογικῶν συνθηκῶν ἐπὶ τῆς γεωργίας διαιρεῖται εἰς τέσσαρα κυρίως μέρη:

α') *Ἔδαφος*. Αἱ μετεωρολογικαὶ συνθῆκαι ἐπιδρῶσιν εὐρέως ἐπὶ τοῦ σχηματισμοῦ τῶν ἐδαφῶν. Τὸ κλῖμα καὶ ὁ καιρὸς ἐπιδρῶσιν ἐπὶ τῆς χημικῆς καὶ τῆς μηχανικῆς συνθέσεως τῶν ἐδαφῶν, ἐπὶ τῶν ὀργανισμῶν οὓς περιέχουσιν, ἐπὶ τῆς ἱκανότητος τῆς συγκρατήσεως ὑπ' αὐτῶν τῆς θερμότητος καὶ τῆς ὑγρασίας, ἐπὶ τῶν θρεπτικῶν οὐσιῶν τῶν φυτῶν κτλ. Ὁ καιρὸς ἐπιδρᾷ ἐπὶ τῆς ἀντιστάσεως τοῦ ἐδάφους κατὰ τὴν καλλιέργειαν καὶ ἐπὶ τῶν θεριστικῶν ἐργασιῶν.

β') *Συγκομιδή*. Ἀσχέτως πρὸς τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἐδαφῶν ἐπὶ τῶν ἐσοδειῶν, ἡ ἐπίδρασις τοῦ καιροῦ ἐπὶ τῶν ἀγρῶν τῆς συγκομιδῆς ἄρχεται σχεδὸν δύο ἔτη προτοῦ οὗτοι θερισθῶσιν. Ἡ ποιότης τῆς χρησιμοποιουμένης σπορᾶς διὰ μίαν ἐσοδείαν καθορίζεται ὑπὸ τοῦ καιροῦ τοῦ ἔτους κατὰ τὸ ὁποῖον παρήχθη.

γ') *Ζῷα*. Ὁ καιρὸς ἐπιδρᾷ ἐπὶ τῶν ζῴων εἴτε ἀμέσως εἴτε ἐμμέσως καὶ διὰ τῆς συγκομιδῆς, ἥτις εἶναι τροφὴ αὐτῶν, καὶ τῶν ἐδαφῶν ἅτινα καταλαμβάνονται καὶ ἀπασχολοῦνται ὑπὸ τῶν ζῴων. Ὁ καιρὸς ἐπιδρᾷ ἐπὶ τῆς ὑγείας, τῆς ἀναπτύξεως καὶ γονιμότητος τῶν ζῴων, ἐπὶ τῆς διανομῆς αὐτῶν, ἐπὶ τῆς παραγωγῆς καὶ τῆς ποιότητος τῶν ζωϊκῶν προϊόντων, ἐπὶ τῆς ἀποθηκεύσεως, συσκευασίας καὶ τῆς μεταφορᾶς αὐτῶν κτλ.

δ') *Λοιμοὶ καὶ ἀσθένειαι τῶν ἐσοδειῶν καὶ τῶν ζῴων*. Ὁ καιρὸς βαθύτατα ἐπιδρᾷ ἐπὶ τῶν ἐπιβλαβῶν ἐντόμων καὶ τῶν ὑπ' αὐτῶν προξενουμένων ἀσθενειῶν, ἐπὶ τοῦ ἀριθμοῦ καὶ τῆς δράσεως αὐτῶν κτλ.

Ὡς πρὸς τὸν τρόπον χρησιμοποιήσεως ἐν τῇ πρακτικῇ γεωργίᾳ τῶν μετεωρολογικῶν πληροφοριῶν καὶ τῶν συμπερασμάτων τῆς γεωργικῆς μετεωρολογικῆς ἐρεύνης, δέον νὰ ἀκολουθῆται συστηματικῶς ὁ ἑπόμενος τρόπος ἐργασίας: 1) Χρησιμοποίησις τῶν προγνώσεων τοῦ καιροῦ κατὰ τὸ πρόγραμμα τῶν γεωργικῶν ἐνασχολήσεων, δηλαδὴ ρύθμισις τῶν ἀπασχολήσεων τοῦ ἐργάτου εἰς τὰς ἐσωτερικὰς καὶ ἐξωτερικὰς ἐργασίας, κατὰ τὸ πρόγραμμα τῆς ἀροτριώσεως, σπορᾶς, θερισμοῦ κτλ. 2) Χρησιμοποίσις τῶν κλιματικῶν στοιχείων κατὰ τὸ πρόγραμμα ὁλοκλήρου τῆς ἀγροτικῆς οἰκονομίας, δηλαδὴ ἀναλόγως τῆς καλλιεργείας καὶ τῆς βοσκῆς, τῶν ποικιλιῶν τῆς συγκομιδῆς, τοῦ ἀριθμοῦ καὶ τῆς διαχειρίσεως τοῦ ζωϊκοῦ ὑλικοῦ, τῶν μηχανῶν, τοῦ ἐργατικοῦ προσωπικοῦ κτλ. 3) Χρησιμοποίησις τῶν κλιματικῶν στοιχείων εἰς εἰδικὰ γεωργικὰ μηχανικὰ προβλήματα, ὅπως εἶναι π. χ. ἡ χρησιμοποίησις τῆς δυνάμεως τοῦ ἀνέμου καὶ τοῦ ὕδατος, ἡ συλλογὴ ὑδάτων κτλ. 4) Χρησιμοποίησις τῶν συμπερασμάτων τῆς ἐρεύνης ἐπὶ τοῦ καιροῦ τῆς πρηγουμένης ἐσοδείας ἐν σχέσει πρὸς τὰς τρεχούσας μετεωρολογικὰς παρατηρήσεις, πρὸς τὸν σκοπὸν προβλέψεως τῶν ἐσοδειῶν. 5) Χρησιμοποίησις προφυλακτήρων ἢ προφυλακτικῶν μέσων καὶ ἄλλων σχετικῶν μεθόδων ἔναντι τῶν ἐπιζημίων καιρικῶν καταστάσεων.

Αἱ μέθοδοι ἃς χρησιμοποιεῖ ἡ γεωργικὴ μετεωρολογικὴ ἔρευνα εἶναι αἱ ἑξῆς: 1) Ἐργαστηριακαὶ μελέται ἐπὶ διαφόρων φυτῶν καὶ ζῴων ὑπὸ τελείως ἐκ τῶν προτέρων καθωρισμένας συνθήκας, περὶ τῆς ἐπιδράσεως ἐπ' αὐτῶν τῶν διαφόρων συνθηκῶν τῆς θερμοκρασίας, τῆς ὑγρασίας, τοῦ φωτὸς κτλ. ἐν συνδυασμῷ μὲ διάφορα ἐδάφη καὶ διαφόρους συνθήκας θρέψεως. 2) Μελέται καλλιεργείας εἰς δοχεῖα, εἰς ἃ οἱ συντελεσταί, ἐκτὸς τοῦ καιροῦ, εἶναι καθωρισμένοι, καὶ διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως στατιστικῶν μεθόδων ἐπαλήθευσις τῆς ἐπιδράσεως τῶν διαφόρων μετεωρολογικῶν συντελεστῶν. 3) Μελέται ἐπὶ τοῦ πεδίου, ἐν τῷ ὁποίῳ γίνονται μετρήσεις τῆς ἀναπτύξεως τῆς συγκομιδῆς καὶ ἐσοδείας, καὶ τῆς δυνάμεως τῆς προσβολῆς τῶν ἀσθενειῶν, καὶ ἀφ' ἑτέρου παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν μετεωρολογικῶν συντελεστῶν. Ἐπίσης ἀνάλογοι μελέται ἐπὶ τῶν ζῴων διὰ παρατηρήσεων ἐπὶ τῆς ὑγείας αὐτῶν, τῆς γονιμότητος κτλ. 4) Στατιστικαὶ μελέται, εἰς ἃς συσχετίζονται παρατηρήσεις συγκομιδῆς, ἐσοδειῶν καὶ καιροῦ ἐκ μακρᾶς σειρᾶς ἐτῶν. Θ. Θ. Φ.

**—μετεωρολογία δυναμική.** Καλεῖται οὕτως ὁ κλάδος τῆς γενικῆς μετεωρολογίας, ὅστις ἀσχολεῖται μὲ τὴν μελέτην τῶν κινήσεων, αἵτινες παράγονται ἐντὸς τῆς ἀτμοσφαίρας ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν δυνάμεων τὰς ὁποίας ὑφίσταται αὕτη (βαρύτητος, πιέσεων). Ἡ ἀνάπτυξις τῆς δυναμικῆς μετεωρολογίας περιλαμβάνει δύο περιόδους ἢ φάσεις: τὴν *περιγραφικήν*, κατὰ τὴν ὁποίαν συνελέγοντο παρατηρήσεις πολυάριθμοι καὶ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἀκριβεῖς ἐκ τῶν ἀτμοσφαιρικῶν κινήσεων, καὶ τὴν *συνθετικήν*, κατὰ τὴν ὁποίαν διετυπώθησαν τῇ βοηθείᾳ τῶν παρατηρήσεων τούτων συναφῆ συστήματα θεωριῶν. Ἡ σπουδὴ τῶν φαινομένων ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς δὲν συνεπληρώθη εἰς πάντα τὰ τμήματα αὐτῆς, καὶ ἡ ἡλιακὴ ἐνέργεια, ἥτις ἀποτελεῖ μίαν τῶν κυριωτέρων δυνάμεων, αἵτινες μελετῶνται ἐν τῇ δυναμικῇ μετεωρολογίᾳ, εἶναι σχεδὸν ἄγνωστος εἰσέτι. Ἡ σύνταξις τῶν μετεωρολογικῶν χαρτῶν, ἡ ἀνταλλαγὴ τῶν δελτίων, ἡ προσθήκη ἀπὸ τοῦ 1863 τῶν εἰδικῶν προειδοποιήσεων ἐπὶ τῶν θυελλῶν, ἡ δημοσίευσις τοῦ «Ἄτλαντος τῶν γενικῶν κινήσεων ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ» (1865), περιλαμβάνοντος καὶ τὸν Ἀτλαντικόν, ἡ μελέτη τῶν τοπικῶν καταιγίδων κτλ., ἀποτελοῦσι τὰς ἀρχὰς καὶ βάσεις τῆς συγχρόνου δυναμικῆς μετεωρολογίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Hugo Hildebrand-Hildebrandsson* καὶ *Leon. Teisserene de Bort*, «Les Bases de la météorologie dyna-

Digitized by Google

mique» (Paris 1898—1907).—*Cleveland Able*, Mechanics of the Earth's Atmosphere (1891—1909).—*Felix Exner*, Dynamische Meteorologie (1925). Θ. Θ. Φ.

— **μετεωρολογία *ἰατρικὴ*** (météorologie médicale). Καλεῖται οὕτω κλάδος τῆς μετεωρολογίας, ὅστις προσπαθεῖ νὰ ἐξακριβώσῃ τὰς σχέσεις, αἵτινες ὑφίστανται μεταξὺ τοῦ ἀνθρωπίνου ὀργανισμοῦ καὶ τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ καιροῦ ἐπὶ τῆς ὑγείας καὶ τοῦ χαρακτῆρος ἐν γένει τῶν ἀνθρώπων ἐγένετο ἀντιληπτὴ ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων. Πρῶτος ὁ Ἱπποκράτης διὰ τοῦ ἔργου αὐτοῦ «Περὶ ἀέρων, ὑδάτων καὶ τόπων» καὶ μετ' αὐτὸν ὁ Ἀριστοτέλης ἐμελέτησαν τὴν ἐπίδρασιν τοῦ φυσικοῦ περιβάλλοντος ἐπὶ τοῦ ἀνθρώπου. Ἐν τοῖς μετέπειτα χρόνοις διαπρεπεῖς Ἕλληνες καὶ Ρωμαῖοι ἰατρικοὶ συγγραφεῖς ἀπέδωσαν σημασίαν εἰς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ κλίματος καὶ τῆς διαίτης ἐν γένει ἐπὶ τοῦ ἀνθρωπίνου ὀργανισμοῦ ἀπὸ ἀπόψεως ὑγείας καὶ ἀσθενειῶν. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ὁ William Heberden ἀνεκοίνωσε τῷ 1797 εἰς τὴν «Βασιλικὴν ἑταιρείαν τοῦ Λονδίνου» τὴν «Περὶ ἐπιδράσεως τοῦ ψύχους ἐπὶ τῆς ὑγείας τῶν κατοίκων τοῦ Λονδίνου» ἐργασίαν του, εἰς τὴν ὁποίαν ἀπέδειξεν ὅτι μία διαφορὰ 20 βαθμῶν Φάρενχάιτ μεταξὺ τῶν μέσων θερμοκρασιῶν ἐν Λονδίνῳ κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 1795 καὶ τὸν ἴδιον μῆνα τοῦ 1796—τοῦ πρώτου θεωρηθέντος ὡς ἐξαιρετικῶς ψυχροῦ μηνὸς καὶ τοῦ δευτέρου ὡς ἠπίου—προεκάλεσε διαφορὰν 1352 θανάτων συμβάντων ἐπὶ πλέον κατὰ τὸν Ἰανουάριον 1795. Ἐξ ὅλων τῶν μετεωρολογικῶν στοιχείων φαίνεται ὅτι ἀσκοῦσι σαφῆ ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν ἀσθενειῶν ἡ *θερμοκρασία*, ἡ *βροχὴ* καὶ ἡ *ὑγρασία*.

*Θερμοκρασία*. Ἡ κανονικὴ θερμοκρασία τοῦ ὑγιοῦς ἀτόμου ποικίλλει μεταξὺ 36°.5 καὶ 37°.5, παρουσιάζουσα ἀναλόγως τῆς ὥρας τῆς ἡμέρας ἕνα ἐλάχιστον μεταξὺ τῆς 4ης καὶ 6ης πρωϊνῆς καὶ ἓν μέγιστον μεταξὺ 5ης καὶ 7ης ἑσπερινῆς. Ἡ θερμοκρασία τὴν ὁποίαν αἰσθάνεται εὐχαρίστως ὁ ἄνθρωπος εἶναι τὸ φυσιολογικὸν μηδέν, δηλαδὴ τὸ μηδὲν τῆς κλίμακος τῶν αἰσθήσεών μας, τὸ ὁποῖον ἀντιστοιχεῖ εἰς θερμοκρασίαν μεταξὺ 31°—33° τῆς ἐπιφανείας τοῦ γυμνοῦ δέρματος ἢ 34° μέχρι 36° τοῦ κεκαλυμμένου δέρματος. Ἐὰν ἡ θερμοκρασία μεταβληθῇ κατὰ 2°—3°, αἰσθάνεται τὸ σῶμα τὴν ἐντύπωσιν τοῦ θερμοῦ ἢ τοῦ ψυχροῦ. Ἡ ποσότης τῆς θερμότητος, ἥτις παρέχεται ὑφ' ἑνὸς ἀνθρώπου ἐν ἀναπαύσει εὑρισκομένου, ἀνέρχεται εἰς 2200 θερμίδας ἀνὰ εἰκοσιτετράωρον. Ἐὰν μεταβληθῇ ἡ θερμοκρασία τοῦ περιβάλλοντος, μεταβάλλεται ἀναλόγως καὶ ἡ ποσότης τῶν θερμίδων. Ἓν γυμνὸν ἄτομον, εὑρισκόμενον ἐντὸς ρεύματος ἀέρος θερμοκρασίας 0° πενταπλασιάζει τὴν ἔκλυσιν τῆς θερμότητος αὐτοῦ.

*Ὑγρασία*. Ὁ ἄνθρωπος ἀποβάλλει κανονικῶς διὰ τοῦ δέρματος αὐτοῦ ἐντὸς 24 ὡρῶν 1 λίτρον ὕδατος, τὸ ὁποῖον ἐξατμίζεται κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐκκρίσεως. Εἶναι δυνατὸν νὰ ἀνθίσταται καὶ νὰ ὑποφέρῃ περισσότερον τὰς μεταβολὰς τῆς θερμοκρασίας, ὅταν ὁ ἀὴρ εἶναι ξηρὸς παρὰ ὅταν εἶναι ὑγρός, διότι ἡ ὑγρὰ θερμότης προκαλεῖ τὴν ἐξάτμισιν τοῦ ἱδρῶτος καὶ τὸ ὑγρὸν ψῦχος αὐξάνει τὰς ἀπωλείας τῆς θερμότητος τοῦ σώματος δι' ἀκτινοβολίας καὶ ἀγωγιμότητος· καὶ εἰς τὰς δύο περιπτώσεις ὁ ἄνθρωπος αἰσθάνεται μίαν ἐπίδρασιν καταθλιπτικήν. Ἀτμοσφαῖρα ψυχρὰ καὶ ὑγρὰ ἔχει βλαβερὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ὑγείας, διότι συντελεῖ εἰς τὴν ἀνάπτυξιν διαφόρων ἀσθενειῶν, ὅπως εἶναι αἱ τοῦ λάρυγγος, αἱ νευραλγίαι, αἱ βρογχίτιδες, αἱ κυνάγχαι, ἰδιαιτέρως δὲ ὑποφέρουσιν οἱ ρευματικοί. Ἀτμοσφαῖρα θερμὴ καὶ ὑγρὰ ἐλαττώνει τὴν ὄρεξιν, τὰς πεπτικὰς λειτουργίας καὶ τὸ νευρικὸν σύστημα καὶ καθιστᾷ τὸν ἄνθρωπον εὐπρόσβλητον ἀπὸ τοὺς μικροργανισμούς, οἵτινες εὐγοοῦνται ὑπὸ τῆς τοιαύτης ἀτμοσφαίρας.

*Ἄνεμος*. Ὁ ἄνεμος ἀνανεώνει τὸ στρῶμα ἀέρος, ὅπερ εὑρίσκεται εἰς ἐπαφὴν μετὰ τοῦ σώματός τοῦ ἀνθρώπου. Ὁ ξηρὸς ἄνεμος αὐξάνει τὴν ἐξάτμισιν τοῦ ἱδρῶτος, ζωηρεύει τὴν κυκλοφορίαν τοῦ αἵματος καὶ εἶναι ὠφέλιμος εἰς τὰ ἰσχυρὰ ἄτομα· τοὐναντίον ἰσχυρὸς καὶ ψυχρὸς ἄνεμος εἶναι ἐπιβλαβὴς εἰς τὰ εὐαίσθητα πρόσωπα. Ἐὰν ὁ ἄνεμος εἶναι ὑγρὸς καὶ θερμός, προκαλεῖ τὴν ἐφίδρωσιν τοῦ δέρματος.

*Φῶς*. Τὸ φῶς αὐξάνει τὴν δύναμιν ἣν ἔχουσι τὰ ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια νὰ προσλαμβάνωσι τὸ ὀξυγόνον τοῦ ἀέρος, ἐξ ὧν καὶ τὸ ροδόχρουν καὶ ἡ ἀντοχὴ τῶν ἀτόμων, ἅτινα ζῶσιν εἰς τὸν ἐλεύθερον ἀέρα. Ἡ ἐργασία εἰς μέρη κακῶς ἢ ἐλλιπῶς φωτιζόμενα ἢ διὰ τεχνητοῦ φωτός, προκαλεῖ ἐλάττωσιν τῆς αἱμογλοβίνης τοῦ αἵματος καὶ προξενεῖ ἀναιμίαν. Εἰς τὰς ἐξοχάς, τὴν θάλασσαν, τὰ ὄρη, τὸ φῶς εἶναι ἰσχυρότερον παρὰ ἐντὸς τῶν πόλεων. Εἰς τὰ σανατόρια τῶν ὀρέων δύναται νὰ φθάσῃ λόγῳ τῆς ξηρότητος τοῦ ἀέρος ἡ θερμοκρασία ὑπὸ τὸν Ἥλιον μέχρι 30°—35°, ἐνῷ ὑπὸ σκιὰν ἡ θερμοκρασία εἶναι κατωτέρα τοῦ μηδενός.

*Ἡλιόλουτρα*. Ἡ θεραπεία διὰ τοῦ Ἡλίου βασίζεται εἰς τὸν τρόπον τῆς ἐπιδράσεως τῶν διαφόρων ἀκτινοβολιῶν τοῦ ἡλιακοῦ φάσματος (βλ. λ. *ἡλιοθεραπεία*).

*Ἡλίασις*. Ὁ ἄνθρωπος δύναται νὰ προσβληθῇ ὑπὸ *ἡλιάσεως* (βλ. λ.) ἀκόμη καὶ ἐν τῇ σκιᾷ, ἄνευ τῆς ἀμέσου ἐπιδράσεως τῶν ἡλιακῶν ἀκτίνων, ἀλλ' ἁπλῶς ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς θερμότητος τοῦ περιβάλλοντος, ἧς ἡ ἐνέργεια αὐξάνεται λόγῳ τῆς μεγάλης ὑγρασίας.

*Ψῦχος*. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ ψύχους δύναται νὰ εἶναι ἐξ ἴσου ἐπικίνδυνος διὰ τὸν ἄνθρωπον ὅπως καὶ ἡ θερμότης, διότι προκαλεῖ μεταξὺ ἄλλων ἐγκεφαλικὰς συμφορήσεις, ἰδίᾳ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς πέψεως.

*Ὁμίχλη*. Πρέπει νὰ ἀποφεύγῃ τις νὰ ὁμιλῇ ὑπὸ τὴν ὁμίχλην ὅταν ἔχῃ προσβληθῇ ὑπὸ καταρροῆς. Εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην δέον νὰ ἀναπνέῃ ἀποκλειστικῶς διὰ τῆς ρινός.

*Καταιγίδες*. Ἡ ὑψηλὴ τάσις τῶν ἀποτόμων μεταβολῶν τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ ἠλεκτρισμοῦ ἀσκεῖ μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν ἀτόμων, τῶν ὁποίων πάσχει τὸ νευρικὸν σύστημα.

*Ἐπιδημίαι*. Ἡ διάδοσις τῶν ἐπιδημιῶν δύναται νὰ εὐνοηθῇ ἢ μὴ ὑπὸ τῶν ἀτμοσφαιρικῶν συνθηκῶν. Ἀπὸ θεραπευτικῆς ἀπόψεως ἡ χρησιμοποίησις τῶν μετεωρολογικῶν στοιχείων καὶ ἐν γένει τῶν ἀτμοσφαιρικῶν ὅρων κατέστη λίαν δραστικὴ ἐναντίον ἀσθενειῶν τινων καὶ πολλάκις ἡ μόνη ἐνδεδειγμένη (βλ. καὶ λ. *μετεωροπαθολογία*). Θ. Θ. Φ.

**μετεωρολογικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος ἢ ἀνήκων εἰς τὴν μετεωρολογίαν.

— **«Μετεωρολογικὰ»** (τά). Τίτλος συγγράμματος τοῦ *Ἀριστοτέλους* (βλ. λ. τ. Ε΄ σ. 514 α κἑ.) ἀποτελουμένου ἐκ τεσσάρων βιβλίων. Εἰς τοῦτο ὁ συγγραφεὺς ἐξετάζει διεξοδικῶς τὰ φαινόμενα τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ συνοψίζει τὰς γνώμας τῆς ἐποχῆς του.

— **μετεωρολογικὰ ὄργανα.** Καλοῦνται οὕτω διάφοροι συσκευαὶ φυσικῆς, αἵτινες χρησιμοποιοῦνται ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ καὶ κλιματολογίᾳ διὰ τὴν μέτρησιν, παρακολούθησιν καὶ ἐξακρίβωσιν ἑνὸς μετεωρολογικοῦ στοιχείου ἢ φαινομένου. Τὰ ὄργανα ταῦτα δύνανται νὰ διαιρεθῶσιν εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας, εἰς ὄργανα *ἀμέσου παρατηρήσεως* καὶ εἰς ὄργανα *αὐτογραφικὰ* ἢ *αὐτόγραφα*. Τὰ πρῶτα ἀπαιτοῦσι τὴν παρουσίαν τοῦ παρατηρητοῦ, ὅστις θὰ λάβῃ τὰ ἀναγνώσματα αὐτῶν, εἴτε κατὰ τὰς κεκανονισμένας ὥρας τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων, εἴτε καὶ ἐκτάκτως. Τὰ δεύτερα, καταλλήλως ρυθμιζόμενα, παρέχουσιν αὐτομάτως διὰ μιᾶς καμπύλης τὰς τιμὰς τοῦ μετεωρολογικοῦ στοιχείου συνεχῶς ὡς καὶ τὴν πορείαν καὶ τὰς μεταβολὰς αὐτοῦ εἰς ἑκάστην στιγμήν. Αἱ ἐνδείξεις ὅμως τῶν αὐτογραφικῶν ὀργάνων δὲν εἶναι ἀκριβεῖς ὅσον τῶν τῆς ἀμέσου παρατηρήσεως ὀργάνων· διὰ τοῦτο τυγχάνει ἀπαραίτητος ἡ διόρθωσις τῶν ἐνδείξεων τούτων ὡς πρὸς ἐκείνας τῶν ὀργάνων τῆς ἀμέσου παρατηρήσεως, αἵτινες λαμβάνονται συγχρόνως, καὶ ἡ ρύθμισις τῶν αὐτογραφικῶν ὀργάνων τακτικῶς.

Δι' ἕκαστον μετεωρολογικὸν στοιχεῖον (ἐκτὸς τῆς νεφώσεως) ὑπάρχει σήμερον, παρὰ τὸ ὄργανον τῆς ἀμέσου παρατηρήσεως, καὶ τὸ ἀντίστοιχον αὐτογραφικὸν τοιοῦτον. Οὕτω τὰ ὄργανα πρὸς μέτρησιν τῆς ἀτμοσφαιρικῆς πιέσεως καλοῦνται *βαρόμετρα* καὶ τὰ αὐτογραφικὰ αὐτῶν *βαρογράφος*, τῆς θερμοκρασίας: *θερμόμετρα* καὶ *θερμογράφοι*, τῆς ὑγρασίας: *ὑγρόμετρα, ὑγρογράφοι, ψυχρόμετρα* καὶ *ψυχρογράφοι*, τῆς βροχῆς: *βροχόμετρα* καὶ *βροχογράφοι*, τοῦ ἀνέμου: *ἀνεμόμετρα, ἀνεμογράφοι* καὶ *ἀνεμοδεῖκται*, τῆς ἡλιοφανείας: *ἡλιογράφος*, πρὸς μέτρησιν τῆς κινήσεως τῶν νεφῶν: *νεφοσκόπια* (τὰ ἀντίστοιχα αὐτογραφικὰ δὲν ἐπραγματοποιήθησαν εἰσέτι)· διὰ τὴν μέτρησιν τῆς ἡλιακῆς ἀκτινοβολίας: *πυρηλιόμετρα, ἀκτινόμετρα πυρανόμετρα, πυρογεώμετρα* μετὰ τῶν ἀντιστοίχων αὐτογραφικῶν ὀργάνων, *πυρηλιογράφων* κτλ.

Τὰ θεμελιώδη χαρακτηριστικὰ ἑνὸς καλοῦ μετεωρολογικοῦ ὀργάνου εἶναι τὰ ἑξῆς κατὰ τὴν σειρὰν τῆς σημασίας αὐτῶν: ἀκρίβεια· σταθερότης· ἁπλότης ἀρχῆς· εὐχέρεια λήψεως ἀναγνωσμάτων καὶ χειρισμοῦ· στερεότης κατασκευῆς· μικρὰ δαπάνη συντηρήσεως αὐτῶν· μικρὰ τιμὴ ἀξίας τοῦ ὀργάνου.

Γενικῶς τὰ μετεωρολογικὰ ὄργανα εἶναι ἁπλᾶ τὴν κατασκευήν, μὴ ὁμοιάζοντα πρὸς ἐκεῖνα τῶν ἐργαστηρίων καὶ τοῦτο λόγῳ τῶν συνθηκῶν ὑφ' ἃς θὰ λειτουργήσωσιν. Ἡ ἁπλότης αὐτὴ δέον νὰ ἐπεκτείνεται καὶ εἰς τὰ αὐτογραφικὰ ὄργανα, ἅτινα ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω χαρακτηριστικῶν τῶν ὀργάνων ἀμέσου παρατηρήσεως δέον νὰ κέκτηνται ἐπὶ πλέον: ἐλαχίστην τριβὴν μεταξὺ τῶν κινητῶν μερῶν καὶ σύστημα ἐπαρκοῦς ἐλέγχου (πλείονα βλ. λ. *αὐτογραφικά*). Θ. Θ. Φ.

— **μετεωρολογικὰ *στοιχεῖα*.** Καλοῦνται οὕτως ἐν τῇ μετεωρολογικῇ ἐπιστήμῃ τὰ διάφορα συστατικὰ ἢ οἱ διάφοροι μεμονωμένοι παράγοντες ἢ συντελεσταὶ τῶν ἀτμοσφαιρικῶν καὶ λοιπῶν φυσικῶν φαινομένων, ἅτινα συνιστῶσιν ἑκάστοτε τὴν κατάστασιν τῆς ἀτμοσφαίρας. Τὰ μετεωρολογικὰ στοιχεῖα εἶναι ἡ θερμοκρασία καὶ ἡ ὑγρασία τοῦ ἀέρος, ἡ ἀτμοσφαιρικὴ πίεσις, ὁ ἄνεμος, τὰ νέφη, ἡ βροχή, ἡ χιών, ἡ δρόσος ἡ πάχνη κτλ., ἅτινα ἀποτελοῦν τὸ ἀντικείμενον τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων, κατὰ τὰς ὁποίας ἐξακριβοῦνται ταῦτα ποιοτικῶς καὶ ποσοτικῶς διὰ τῆς μετρήσεως τῆς τιμῆς αὐτῶν τῇ βοηθείᾳ τῶν *μετεωρολογικῶν ὀργάνων*. Ὅταν μελετῶνται αἱ ἀριθμητικαὶ τιμαὶ τῶν στοιχείων καὶ ἐπακολουθεῖ ὁ προσδιορισμός, δι' ἕνα τόπον, τῆς συνήθους καταστάσεως τῶν μετεωρολογικῶν στοιχείων, ὡς καὶ τῶν ἡμερησίων καὶ μηνιαίων κανονικῶν μεταβολῶν αὐτῶν, τότε τὰ μετεωρολογικὰ στοιχεῖα καλοῦνται εἰδικώτερον *κλιματικὰ στοιχεῖα*, διότι μᾶς δίδουσιν εἰκόνα τοῦ κλίματος τοῦ τόπου. Ἐὰν προσπαθήσῃ τις νὰ διακρίνῃ τὰ κλιματικὰ στοιχεῖα ἀπὸ ἀπόψεως τῆς σπουδαιότητος ἥτις ἀπαιτεῖται διὰ τὸν χαρακτηρισμὸν κλίματός τινος, θὰ ἀντιληφθῇ τὴν διαφορὰν ἥτις ὑπάρχει μεταξὺ τῆς μετεωρολογικῆς καὶ τῆς κλιματολογικῆς οὕτως εἰπεῖν παρατηρήσεως τῶν ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων. Ἀπὸ μετεωρολογικῆς ἀπόψεως δέον νὰ ἀποδίδῃ τις μεγαλυτέραν σημασίαν εἰς ἐκεῖνα τὰ ἀτμοσφαιρικὰ φαινόμενα ἐκ τῶν ὁποίων ἐξαρτᾶται ἕνας μέγας ἀριθμὸς ἄλλων ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων, ἅτινα συνεπῶς δέον νὰ θεωρῶνται ὡς πρωτεύοντα φαινόμενα, ἐπὶ τῶν ὁποίων πλεῖστα ἄλλα θὰ στηριχθῶσιν, ἐνῷ, ἀπὸ κλιματολογικῆς ἀπόψεως, δέον νὰ τίθηνται εἰς πρωτεύουσαν θέσιν ἐκεῖνα τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων, ἅτινα ἐπιδρῶσι τὰ μέγιστα ἐπὶ τῆς ὀργανικῆς ζωῆς. Θ. Θ. Φ.

—**μετεωρολογικαὶ *παρατηρήσεις*.** Καλοῦνται οὕτως ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ αἱ ἐκτιμήσεις, εἴτε προσωπικῶς, εἴτε δι' εἰδικῶν ὀργάνων, τῶν διαφόρων *μετεωρολογικῶν στοιχείων*. Αἱ παρατηρήσεις μᾶς δίδουσιν ἀφ' ἑνὸς μὲν τὴν ἀτμοσφαιρικὴν κατάστασιν ἐν δεδομένῃ στιγμῇ καὶ ἀφ' ἑτέρου τὸ κλῖμα ἑνὸς τόπου. Αἱ μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις ἐκτελοῦνται καὶ εἶναι ἔργον τῶν *μετεωρολογικῶν σταθμῶν* (βλ. λ.), διαιροῦνται δὲ εἰς *τακτικὰς* (Beobactungstermine) καὶ *ἐκτάκτους*. Αἱ ὧραι τῶν τακτικῶν παρατηρήσεων τῶν διαφόρων μετεωρολογικῶν σταθμῶν καθωρίσθησαν κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τοῦ συνεδρίου τῶν μετεωρολόγων συνελθόντος ἐν Βιέννῃ τῷ 1873. Τὸ συνέδριον τοῦτο καθώρισε διαφόρους συνδυασμοὺς παρατηρήσεων κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἡμέρας, εἰς τρόπον ὥστε ὁ μέσος ὅρος τῶν τιμῶν ἑνὸς στοιχείου (ἐλήφθη μάλιστα κατ' ἀρχὴν ὡς βάσις ἡ θερμοκρασία ἀέρος), ὅστις θὰ ἐξάγηται ἐκ τῶν μεμονωμένων μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων νὰ πλησιάζῃ ὅσον τὸ δυνατὸν περισσότερον πρὸς ἐκεῖνον, τὸν ἀληθῆ καλούμενον, ὅστις θὰ ἐλαμβάνετο ἐξ 24ωριαίων παρατηρήσεων εἴτε ἀμέσων εἴτε αὐτογραφικῶν, ἢ νὰ πλησιάζῃ πρὸς τὸν μέσον ὅρον τῶν δύο ἄκρων τοῦ μετεωρολογικοῦ στοιχείου, αἵτινες παρετηρήθησαν κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ 24ώρου. Κατόπιν μελετῶν ὑπεδείχθησαν οἱ κάτωθι συνδυασμοὶ ὡρῶν ἐκτελέσεως παρατηρήσεων, ὅταν αὗται γίνωνται τρὶς τῆς ἡμέρας:

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 6 π. μ. | 6 π. μ. | 6 π. μ. | 7 π. μ. | 7 π. μ. |
| 2 μ. μ. | 2 μ. μ. | 2 μ. μ. | 2 μ. μ. | 1 μ. μ. |
| 10 μ. μ. | 9 μ. μ. | 8 μ. μ. | 9 μ. μ. | 9 μ. μ. |

Ἐν Ἑλλάδι πάντες οἱ σταθμοὶ τοῦ Ἐθνικοῦ ἀστεροσκοπείου ἐκτελοῦσι τρεῖς τακτικὰς παρατηρήσεις καθ' ἑκάστην, τὴν 8 ὥρ. π. μ., τὴν 2 μ. μ. καὶ τὴν 8 μ. μ. εἰς χρόνον ἀνατολικῆς Εὐρώπης. Μέχρι τῆς 1ης Ἰανουαρίου 1930 εἰς ἅπαντας τοὺς σταθμοὺς ἀπὸ τῆς ἀρχικῆς ἱδρύσεως αὐτῶν ἡ ἑσπερινὴ παρατήρησις ἐξετελεῖτο τὴν 9 π. μ.· κατόπιν ὅμως ἀποφάσεως τοῦ συνεδρίου τῆς Κοπεγχάγης τῷ 1929 ἀπεφασίσθη ἡ μεταβολὴ τῆς ὥρας τῆς ἑσπερινῆς παρατηρήσεως. Ἡ ἐκτέλεσις ἑκάστης μετεωρολογικῆς παρατηρήσεως ἀρχίζει 10′ τὸ πολὺ πρὸ τῆς ὡρισμένης ὥρας παρατηρήσεως καὶ λήγει κατ' αὐτήν, ἡ δὲ παρατήρησις στοιχείου οὗτινος ἡ μεταβολὴ εἶναι ταχεῖα ἀφήνεται νὰ ἐκτελῆται τελευταία.

Αἱ παρατηρήσεις ἐγγράφονται ὑπὸ τοῦ παρατηρητοῦ τοῦ μετεωρολογικοῦ σταθμοῦ ἀμέσως ἅμα τῇ παρατηρήσει εἰς τὸ *πρόχειρον τετράδιον*, εἶτα δὲ μεταγράφονται εἰς τὸ *βιβλίον παρατηρήσεων* διωρθωμέναι ἐκ τῶν σφαλμάτων ὀργάνων καὶ ἀνηγμέναι διὰ τῶν ἀναγκαίων λογισμῶν καὶ πινάκων. Εἰς τὸ βιβλίον τοῦτο ἀναγράφονται καὶ ἄλλαι ἐνδείξεις: μῆκος καὶ πλάτος τοῦ σταθμοῦ, ὕψος αὐτοῦ ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης κτλ. Αἱ παρατηρήσεις ἑκάστου μηνὸς μεταφέρονται εἰς τὰ *μηνιαῖα φύλλα μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων* μετὰ τῶν μέσων ὅρων ἢ τῶν ὁλικῶν ποσῶν αὐτῶν. Συμπλήρωμα τοῦ βιβλίου παρατηρήσεων εἶναι τὸ *μετεωρολογικὸν ἡμερολόγιον* (βλ. λ.).

Μετὰ τὴν ἐκτέλεσιν, ὑπολογισμὸν καὶ καταγραφὴν τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων εἰς τὰ ἀνωτέρω βιβλία, ἀποστέλλονται αὗται ὑφ' ὅλων τῶν παρατηρητῶν τῶν μετεωρολογικῶν σταθμῶν περὶ τὴν κεντρικὴν μετεωρολογικὴν ὑπηρεσίαν· παρ' ἡμῖν συγκεντροῦνται αὗται ὑπὸ τοῦ Ἐθνικοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν. Ἐπειδὴ καθ' ἑκάστην παρατηρήσιμον ὥραν ἐκτελοῦνται πληθώρα παρατηρήσεων, αἵτινες θ' ἀπετέλουν μακροσκελῆ τηλεγραφήματα, διὰ τοῦτο αὗται μετασχηματίζονται εἰς ὁμάδας πολυψηφίων ἀριθμῶν, αἵτινες ἀποτελοῦσι τὰ καλούμενα μετεωρολογικὰ τηλεγραφήματα. Ταῦτα συντάσσονται καὶ ἑρμηνεύονται ἐπὶ τῇ βά-

Digitized by Google

σει τῶν καλουμένων μετεωρολογικῶν κωδίκων, οὓς καθώρισαν τὰ μετεωρολογικὰ συνέδρια. Διὰ τῶν κωδίκων τούτων, οἵτινες εἶναι διεθνεῖς καὶ ἔχουσι γίνει δεκτοὶ ὑφ' ὅλων τῶν κρατῶν, δυνάμεθα νὰ ἑρμηνεύσωμεν οἱονδήποτε μετεωρολογικὸν τηλεγράφημα, ἀνευρίσκοντες ἐκ τοῦ διεθνοῦς καταλόγου τὸ ὄνομα τοῦ σταθμοῦ, εἰς ὃν ἀναφέρεται τὸ τηλεγράφημα ἐκ τοῦ χαρακτηριστικοῦ ἀριθμοῦ, ὅστις εἶναι ἐν ἀρχῇ τοῦ τηλεγραφήματος καὶ ὡρισμένος δι' ἕκαστον σταθμὸν (π. χ. αἱ Ἀθῆναι εἰς τὴν διεθνῆ μετεωρολογικὴν τηλεγραφικὴν ἀνταπόκρισιν σημειοῦνται ἐντὸς τῶν κωδίκων διὰ τοῦ ἀριθμοῦ 730).

Αἱ παρατηρήσεις τῶν σταθμῶν μιᾶς χώρας συγκεντρούμεναι ὑπὸ τῆς κεντρικῆς ὑπηρεσίας αὐτῆς μετ' ἐκείνων τῶν ξένων κρατῶν, ἃς λαμβάνει αὕτη διὰ τοῦ ἀσυρμάτου, καταγράφονται εἰς χάρτας, ἡ μελέτη τῶν ὁποίων χρησιμεύει διὰ τὴν πρόγνωσιν τοῦ καιροῦ.

Πλὴν τῶν τακτικῶν παρατηρήσεων ἑκάστης ἡμέρας, τυγχάνει σπουδαία καὶ ἡ ἔκτακτος μετεωρολογικὴ παρατήρησις τῶν διαφόρων ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων, ἅτινα συμβαίνουσιν ἐκτὸς τῶν τακτικῶν ὡρῶν, οἷα λ.χ. εἶναι τὸ ποσὸν τῆς βροχῆς, τῆς χιόνος, τῆς χαλάζης, τῆς δρόσου καὶ τῆς πάχνης, αἱ ἐποχαὶ τῆς βλαστήσεως, τῆς ἀνθήσεως καὶ τῶν λοιπῶν φαινομένων τῆς ζωῆς τῶν φυτῶν, αἱ ἐποχαὶ τῆς διαβάσεως καὶ τῶν λοιπῶν φάσεων τοῦ βίου τῶν ζῴων καὶ πλεῖστα ἄλλα φαινόμενα, ἔχοντα σχέσιν κυρίως πρὸς τὰς ἀτμοσφαιρικὰς μεταβολάς.

Αἱ ἔκτακτοι μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις προσφέρουσι μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἐπιστήμην, ἀπαιτοῦσι δὲ μεγάλην προσοχήν, διότι ὁ μετεωρολόγος δὲν εἶναι κύριος τοῦ φαινομένου, ὅπερ ὀφείλει νὰ παρατηρήσῃ, ἀλλ' ἁπλοῦς θεατὴς αὐτοῦ, ἀγνοεῖ δὲ ποῦ καὶ πότε θὰ συμβῇ τοῦτο.

Αἱ ἔκτακτοι μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις καταγράφονται καὶ αὗται ἐν τῷ βιβλίῳ παρατηρήσεων τοῦ σταθμοῦ, ἔνθα ὑπάρχει εἰδικὴ στήλη ὑπὸ τὸν τίτλον: «διάφορα φαινόμενα καὶ σημειώσεις».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Δ. Αἰγινήτου*, «Πρακτικὴ Μετεωρολογία». — *A. Angot*, «Instructions Météorologiques».—Meteorological office : The Observer's Handbook.

Θ. Θ. Φ.

— **«Μετεωρολογικὴ *στοιχείωσις*».** Ἓν ἐκ τῶν τριῶν ἔργων (οἱ τίτλοι τῶν λοιπῶν «Φυσικὸς λόγος» καὶ «Περὶ μετεώρων») τοῦ Ποσειδωνίου, ἐξ ὧν ἀποδεικνύεται ὅτι διέκρινεν οὗτος τὰ μετάρσια τῶν μετεώρων παρέχων καὶ ὁρισμὸν ἑκάστου ἐξ αὐτῶν (βλ. λ. *μετάρσια)*. Θ. Θ. Φ.

— **μετεωρολογικοὶ *ἄτλαντες*.** Συλλογαὶ χαρτῶν, ἐγχρώμων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἔχουσι χαραχθῆ καμπύλαι παριστῶσαι τὴν διανομὴν τῶν διαφόρων κλιματικῶν ἢ μετεωρολογικῶν στοιχείων. Ἑπομένως οἱ ἄτλαντες οὗτοι μᾶς παρέχουσιν ἀμέσως μίαν κατὰ προσέγγισιν τιμὴν οἱουδήποτε κλιματικοῦ στοιχείου, ἐξαγομένην ἐκ τῆς σχετικῆς καμπύλης *(ἰσοθέρμου, ἰσοβαροῦς, ἰσονεφοῦς, ἰσοβρόχου* κτλ.) καὶ τοῦτο δι' ἕκαστον μῆνα καὶ δι' ὁλόκληρον ἔτος καὶ συγχρόνως μᾶς δίδουσι μίαν περιληπτικὴν ἰδέαν τῆς διανομῆς τῶν διαφόρων στοιχείων κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν διαφόρων μηνῶν εἰς τμῆμά τι τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς ἢ εἰς ὁλόκληρον τὴν ἐπιφάνειαν αὐτῆς.

Ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ ἐλάχιστοι εἶναι οἱ ἔγχρωμοι μετεωρολογικοὶ ἄτλαντες· μεταξὺ τῶν γενικῶν ἀναφέρομεν τὸν τοῦ Hann («Atlas der Meteorologie» 1887), ὅστις περιέχει τὰς ἐτησίας ἰσοθέρμους, ἰσοβαρεῖς κτλ., ὡς καὶ τῶν μηνῶν Ἰανουαρίου καὶ Ἰουλίου δι' ὁλόκληρον τὴν Εὐρώπην καὶ ἀποτελεῖ ἓν τμῆμα τοῦ γνωστοῦ ἄτλαντος τοῦ Berghaus, καὶ τὸν σπουδαιότερον «Ἄτλαντα τοῦ Βαρθολομαίου» οὗτινος ὁ 3ος τόμος ἀποτελεῖ τὸν περίφημον μετεωρολογικὸν ἄτλαντα τῶν Βαρθολομαίου καὶ Herbertson *(J. G. Bartholomew-A. J. Herbertson:* Atlas of Meteorology). Θεωρεῖται ἓν ἐκ τῶν καλλιτεχνικωτέρων δημιουργημάτων τῶν ἀγγλικῶν γραφικῶν τεχνῶν· ἀποτελεῖται δὲ ἐξ 104 μετεωρολογικῶν ἐγχρώμων χαρτῶν. Ἐξεδόθη τῷ 1899 ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν τῆς ἀγγλικῆς Γεωγραφικῆς ἑταιρείας καὶ τοῦ γεωγραφικοῦ ἰνστιτούτου τοῦ Ἐδιμβούργου καὶ θεωρεῖται ἓν ἐκ τῶν πολυτιμοτέρων βοηθημάτων ἀκόμη καὶ σήμερον παντὸς περὶ τὴν μετεωρολογίαν καὶ κλιματολογίαν ἀσχολουμένου. Οἱ χάρται αὐτοὶ διαιροῦνται εἰς δύο ὁμάδας, εἰς χάρτας κλιματικοὺς καὶ εἰς χάρτας καιροῦ ἢ μετεωρολογικούς. Οἱ κλιματικοὶ χάρται ἀποτελοῦσι τὴν βάσιν διὰ τὴν μελέτην τῆς κλιματολογίας τῆς γῆς, ἀναφέρονται δὲ εἰς τὴν θερμοκρασίαν, πίεσιν, ἀνέμους, νέφωσιν, ἡλιοφάνειαν, βροχὴν καὶ δεικνύουν τὴν μηνιαίαν καὶ ἐτησίαν διανομὴν τῶν στοιχείων τοῦ κλίματος, ἀφ' ἑνὸς δι' ὁλόκληρον τὸν κόσμον γενικῶς, καὶ ἀφ' ἑτέρου κατὰ μεγάλην κλίμακα διὰ τὰς διαφόρους χώρας, δι' ἃς ὑπάρχουσι πολυάριθμοι καὶ ἀκριβεῖς παρατηρήσεις. Οἱ χάρται καιροῦ ἢ μετεωρολογικοὶ ὁμοῦ μετὰ τῶν ἐποχικῶν καὶ ἐκείνων τῶν θυελλῶν παρέχουσι τὰς μετεωρολογικὰς συνθήκας ἄνωθεν ὡρισμένων περιοχῶν καὶ εἰς ὡρισμένας περιόδους καὶ παρέχουσιν ὅλους τοὺς πλέον χαρακτηριστικοὺς τύπους καιροῦ. Τοὺς χάρτας τοῦ ἄτλαντος τούτου συνοδεύει λεπτομερὲς κείμενον πρὸς ἐπεξήγησιν τοῦ τρόπου τῆς συντάξεως αὐτῶν, ἀναπτύσσεται ἐπίσης ἐν αὐτοῖς κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον λεπτομερῶς ἡ αἰτία καὶ τὰ ἀποτελέσματα μερικῶν φαινομένων, εὑρίσκει τις δὲ ἐν τῷ ἄτλαντι τούτῳ: τὴν διανομὴν τῶν διαφόρων μετεωρολογικῶν σταθμῶν ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς Γῆς, κατάλογον τῶν μετεωρολογικῶν ὑπηρεσιῶν, μετὰ τῶν σταθμῶν αὐτῶν καὶ δημοσιεύσεων, βιβλιογραφίαν τῶν μέχρι τῆς ἐκδόσεως τοῦ ἄτλαντος μετεωρολογικῶν δημοσιευμάτων καὶ τέλος μετεωρολογικὸν γλωσσάριον. Εἰς τὴν σύνταξιν καὶ τὴν ἔκδοσιν τοῦ ἄτλαντος τοῦ Βαρθολομαίου ἔλαβον μέρος οἱ μεγαλύτεροι μετεωρολόγοι, ὅπως ὁ Hann, ὁ Van Belber, Köppen, Angot, Moore, Elliot, Synons καὶ ἄλλοι. Ἐφάμιλλος τοῦ ἀνωτέρω ἄτλαντος θεωρεῖται ὁ ἐκδοθεὶς τῷ 1930 ὑπὸ τῆς ἰαπωνικῆς μετεωρολογικῆς ὑπηρεσίας μετεωρολογικὸς ἄτλας ὅλων τῶν μετεωρολογικῶν καὶ κλιματικῶν στοιχείων τῆς Ἰαπωνίας. Ἐπίσης καὶ ὁ ἄτλας τῆς μετεωρολογικῆς ὑπηρεσίας τῆς Αἰγύπτου καὶ ἄλλοι μικροτέρας σημασίας. Θ. Θ. Φ.

— **μετεωρολογικοὶ *πίνακες*.** Πίνακες εὐρύτατα ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ χρησιμοποιούμενοι πρὸς ἀναγωγὴν τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων. Οὕτω χρησιμοποιοῦνται πίνακες πρὸς εὕρεσιν τῆς σχετικῆς ὑγρασίας, τῶν μεγίστων τάσεων τῶν ὑδρατμῶν, τῆς ἀναγωγῆς τῶν βαρομετρικῶν παρατηρήσεων εἰς τὴν θερμοκρασίαν τοῦ μηδενὸς καὶ εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης, μετατροπῆς βαθμῶν Κελσίου καὶ Φαρενάϊτ καὶ Ρεωμύρου καὶ τἀνάπαλιν, πίνακες βαρομετρικῶν ὑψομετρήσεων κτλ. Πάντες οἱ ἀνωτέρω ἀποτελοῦσιν ἀποσπάσματα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτενῆ τῶν *διεθνῶν μετεωρολογικῶν πινάκων*. Τὸ διεθνὲς μετεωρολογικὸν συνέδριον, ὅπερ συνῆλθεν ἐν Ῥώμῃ τῷ 1879, ὑπῆρξε τὸ πρῶτον ὅπερ ἔρριψε τὴν ἰδέαν ὅπως ἡ συσταθεῖσα τότε μετεωρολογικὴ ἐπιτροπὴ ἀναλάβῃ τὴν πρωτοβουλίαν τῆς δημοσιεύσεως διεθνῶν μετεωρολογικῶν πινάκων (Tables météorologiques internationales), οἵτινες νὰ ἐπιτρέπουσι τὴν χρησιμοποίησιν ὁμοιομόρφου μεθόδου διὰ τὴν ἀναγωγὴν τῶν παρατηρήσεων. Ἡ ἐπιτροπὴ κατὰ τὴν συνέλευσίν της ἐν Βέρνῃ, τῷ 1880, ἐμελέτησε σχέδιον πινάκων, ὅπερ ὑπεβλήθη εἶτα εἰς τὸ συνέδριον τῆς Κοπεγχάγης, τῷ 1882, καὶ συνεζητήθη κατ' αὐτό, ὅπως καὶ ἐν Παρισίοις τῷ 1885, μεθ' ὃ ἐδόθη ἡ ὁριστικὴ ἐντολὴ τοῦ καταρτισμοῦ τοῦ ὁριστικοῦ σχεδίου ἐπὶ τῇ βάσει ὡρισμένων ἀρχῶν.

Εἰς τὴν ἐργασίαν ταύτην ἔλαβον μέρος διάφοροι διάσημοι μετεωρολόγοι καὶ τὸ ὅλον ἔργον ἐπερατώθη ἐντὸς δύο ἐτῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1890 ἐτέθησαν εἰς κυκλοφορίαν οἱ διεθνεῖς πίνακες.

Οἱ διεθνεῖς μετεωρολογικοὶ πίνακες ἐν τούτοις περιέχουσι σπουδαίαν ἔλλειψιν ὅσον ἀφορᾷ τοὺς ψυχρομετρικοὺς πίνακας, καὶ τοῦτο λόγῳ τῆς μὴ συμφωνίας τότε ὡς πρὸς τὴν ἐκλογὴν τοῦ καταλλήλου ἰσχύοντος μαθηματικοῦ τύπου. Θ. Θ. Φ.

— **μετεωρολογικοὶ *σταθμοί*.** Τὰ εἰς διαφόρους τόπους ἐγκατεστημένα παρατηρητήρια, κύριον ἔργον τῶν ὁποίων εἶναι ἡ διὰ τῶν καταλλήλων εἰδικῶν ὀργάνων παρατήρησις καὶ ἐκτίμησις, μετὰ πάσης δυνατῆς ἀκριβείας, τῶν *μετεωρολογικῶν στοιχείων*, ὡς καὶ τῶν λοιπῶν φυσικῶν φαινομένων, ἅτινα ἐξαρτῶνται ἐκ τῆς ἐν γένει ἀτμοσφαιρικῆς καταστάσεως. Οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ πρώτιστον σκοπὸν ἔχουσι τὴν μελέτην τοῦ κλίματος τοῦ τόπου.

Οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ κατὰ προτίμησιν πρέπει νὰ ἱδρύωνται ἐν τῇ ἐξοχῇ, ὅσον ἔνεστι μακρὰν τῶν πόλεων, ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως, ἐν τῷ μέσῳ ἀνοικτοῦ πανταχόθεν ὁρίζοντος. Ἡ καταλληλοτέρα τοποθεσία εἶναι ἐπὶ τῆς κορυφῆς λόφου μετὰ κλιτύων μὴ ἀποτόμων, ἀλλ' ἠρέμα κατερχομένων, ἢ ἐπὶ ἀνοικτῆς πεδιάδος, μακρὰν τῶν λιμνῶν, τῶν ποταμῶν καὶ τῶν τελμάτων. Ὅταν δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ τοποθετηθῶσι μακρὰν τῶν πόλεων, πρέπει νὰ ἐκλέγηται θέσις, ἐξ ἧς ἡ πόλις φαίνεται κατὰ τὴν διεύθυνσιν τοῦ σπανιώτερον πνέοντος ἐν τῷ τόπῳ ἀνέμου. Καὶ ἐν τοιαύτῃ ὅμως περιπτώσει, ἡ γειτνίασις τῆς πόλεως ἐπιδρᾷ ἐπιβλαβῶς ἐπὶ τῆς ἀκριβείας τῶν παρατηρήσεων· ὅθεν εἶναι ἀπαραίτητον νὰ γίνωνται ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν σύγχρονοι παρατηρήσεις, εἰς διαφόρους ὥρας καὶ ὑπὸ διαφόρους ἀτμοσφαιρικοὺς ὅρους, ἐν τῷ σταθμῷ καὶ τοῖς περιχώροις, πρὸς ἐξακρίβωσιν τῶν ἐντεῦθεν προκυπτόντων σφαλμάτων. Κακαὶ θέσεις πρὸς τοποθέτησιν μετεωρολογικοῦ σταθμοῦ εἶναι αἱ στεναὶ κοιλάδες καὶ τὰ ἄκρα τῶν ὀροπεδίων· αἱ εἰς τοιούτους σταθμοὺς γινόμεναι παρατηρήσεις ἔχουσι μᾶλλον τοπικὴν σημασίαν.

Οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοί, ἀναλόγως τῶν ὀργάνων ἅτινα ἔχουσι καὶ τοῦ σκοποῦ αὐτῶν, διαιροῦνται εἰς διαφόρους τάξεις. Ἡ ταξινόμησις αὐτῶν ἐγένετο κατόπιν ἀποφάσεως τοῦ διεθνοῦς συνεδρίου τῶν μετεωρολόγων, ὅπερ συνῆλθεν ἐν Βιέννῃ τῷ 1873, ὡς ἀκολούθως:

1) *Μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ Α΄ τάξεως* ἢ *Μετεωροσκοπεῖα* (First Order Stations, Meteorological Observatories), εἰς τοὺς ὁποίους ὑπάρχουσιν αὐτογραφικά. Ἐπίσης δὲ καὶ τὰ ἑξῆς ὄργανα: μετεωρολογικὸν στέγαστρον ἢ κλωβός, ἓν ὑδραργυρικὸν βαρόμετρον, ἓν ψυχρόμετρον, ἓν μεγιστοβάθμιον θερμόμετρον, ἓν ἐλαχιστοβάθμιον θερμόμετρον, ἓν συμπυκνωτικὸν ὑγρόμετρον, ἓν βροχόμετρον, εἷς ἀνεμοδείκτης, ἓν ἀνεμόμετρον, ἓν ἀκτινόμετρον, εἷς ἡλιογράφος, ἓν ἀτμιδόμετρον, ἓν ὁρατόμετρον, ἓν σφενδονοειδὲς θερμόμετρον, μία σειρὰ θερμομέτρων πρὸς σπουδὴν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ἐδάφους εἰς διάφορα βάθη, ἓν θερμόμετρον τῶν πηγῶν, μία σειρὰ αὐτογραφικῶν ὀργάνων, μία σειρὰ μαγνητικῶν ὀργάνων, ἓν ἀτμοσφαιρικὸν ἠλεκτρόμετρον, ὡς ἐπίσης καὶ ὄργανα ἀτμοσφαιροβολίσεων διὰ τὴν ἔρευναν τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας, παρηλιόμετρα καὶ ἐν γένει ὄργανα μετρήσεως τῆς ἡλιακῆς ἀκτινοβολίας κτλ.

Ἐν Ἑλλάδι μόνον εἷς τοιοῦτος σταθμὸς λειτουργεῖ, ὁ ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ Ἀθηνῶν, καλούμενος «Μετεωροσκοπεῖον Ἀθηνῶν», ἀποτελεῖ δὲ μίαν ἐκ τῶν τριῶν ὑπηρεσιῶν τοῦ μετεωρολογικοῦ τμήματος τοῦ ἀστεροσκοπείου.

2) *Μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ Β΄ τάξεως*, ἢ *Πρότυποι κλιματολογικοὶ σταθμοὶ* (Normal Climatological Stations). Οὗτοι στεροῦνται κυρίως αὐτογραφικῶν ὀργάνων, ὡς καί τινων ἄλλων, ἀπαραιτήτως ὅμως λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς ἓν ὑδραργυρικὸν βαρόμετρον, κλωβός, διάφορα θερμόμετρα πρὸς σπουδὴν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ἀέρος καὶ εἴς τινας ἐξ αὐτῶν καὶ θερμόμετρα ἐδάφους, ἓν ψυχρόμετρον, ἓν βροχόμετρον καὶ εἴς τινας ἐξ αὐτῶν ἀνεμοδείκτης καὶ ἀνεμόμετρον καὶ σπανίως ἡλιογράφος· εἰς τοὺς σταθμοὺς τούτους τοὐλάχιστον δὶς τῆς ἡμέρας ἐκτελοῦνται μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις, ἐνῷ εἰς τοὺς α΄ τάξεως ὡριαῖαι τοιαῦται ἢ τοὐλάχιστον τρὶς τῆς ἡμέρας.

3) *Μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ Γ΄ τάξεως*, ἢ *Βοηθητικοὶ κλιματολογικοὶ σταθμοὶ* (Third order Stations, Auxiliary Climatological Stations) ἤ, ὡς καλοῦνται παρ' ἡμῖν, *θερμοβροχομετρικοὶ σταθμοί*. Οὗτοι στεροῦνται πλείστων ὀργάνων, ἔχουσιν ὅμως μετεωρολογικὸν στέγασμα, ψυχρόμετρον, ἀκροβάθμια θερμόμετρα καὶ ἓν βροχόμετρον. Οἱ σταθμοὶ οὗτοι χρησιμεύουσιν ἰδίως πρὸς σπουδὴν τοῦ τοπικοῦ κλίματος. Πλὴν ὅμως τῶν διὰ τῶν ἀνωτέρω ὀργάνων παρατηρήσεων, δύνανται νὰ παρατηρῶσιν ἄνευ ὀργάνων τὴν διεύθυνσιν καὶ τὴν δύναμιν τοῦ ἀνέμου, τὴν κατάστασιν τοῦ οὐρανοῦ, τὰς καταιγίδας, τὰ φαινόμενα τῆς βλαστήσεως κτλ. Αἱ παρατηρήσεις δηλαδὴ εἰς αὐτοὺς γίνονται ὅπως καὶ εἰς τοὺς προτύπους κλιματολογικοὺς ἢ β΄ τάξεως σταθμούς, ἀλλ' ἧττον πλήρεις, καὶ ἐκτελοῦνται ἅπαξ τῆς ἡμέρας ἢ γίνονται εἰς ἄλλας ἐκτὸς τῶν κανονικῶν ὡρῶν.

4) *Βροχομετρικοὶ σταθμοί*. Οὗτοι ἔχουσι μοναδικὸν ὄργανον τὸ βροχόμετρον· δύνανται ὅμως νὰ παρατηρῶσιν ἄνευ ὀργάνων καὶ τὴν κατάστασιν τοῦ οὐρανοῦ, τὰς καταιγίδας, τὴν διεύθυνσιν καὶ τὴν δύναμιν τοῦ ἀνέμου, τὴν βλάστησιν κτλ.

5) *Σταθμοὶ ἄνευ ὀργάνων*, ἐν οἷς γίνονται παρατηρήσεις ἰδίᾳ ἐπὶ τῶν καταιγίδων καὶ τῆς βλαστήσεως καὶ πολλάκις καὶ ἄλλαι ἐπὶ τῆς προσωπικῆς ἐκτιμήσεως στηριζόμεναι, ὅπως εἶναι ἡ διεύθυνσις καὶ ἡ δύναμις ἀνέμου, ἡ νέφωσις κλπ.

Τὸ μετεωρολογικὸν δίκτυον τῶν σταθμῶν τῆς ἐπισήμου μετεωρολογικῆς ὑπηρεσίας ἐν Ἑλλάδι, ἥτις εἶναι σήμερον τὸ μετεωρολογικὸν τμῆμα τοῦ Ἐθνικοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν, περιλαμβάνει, ἐκτὸς τοῦ μετεωροσκοπείου Ἀθηνῶν, καὶ σταθμοὺς δευτέρας, τρίτης καὶ τετάρτης τάξεως:

Σταθμοὶ δευτέρας τάξεως λειτουργοῦσιν ἐν Ἀλεξανδρουπόλει, Ἄνδρῳ, Ἀνωγείοις (Κρήτης), Ἀργοστολίῳ, Ἄρτῃ, Βόλῳ, Ζακύνθῳ, Ἡρακλείῳ, (Κρήτης), Θεσσαλονίκῃ, Θήρᾳ, Ἰωαννίνοις, Καβάλλᾳ, Καλάμαις, Κερκύρᾳ, Κοίλοις (Κοζάνης), Κυθήροις, Κυπαρισσίᾳ, Λαμίᾳ, Λαρίσῃ, Λήμνῳ (Κάστρον), Μεσολογγίῳ, Μήλῳ, Μυτιλήνῃ, Νάξῳ, Ναυπλίῳ, Πάτραις, Πειραιεῖ, Σάμῳ Σκύρῳ, Σπάρτῃ, Σύρῳ, Τρικκάλοις, Τριπόλει, Χαλκίδι, Χανίοις.

Σταθμοὶ τρίτης τάξεως λειτουργοῦν ἐν Αἰγίῳ, Βυτίνῃ, Δίβρῃ, Δράμᾳ, Θάσῳ, Ἱεράπετρᾳ, Λεβαδείᾳ, Νέᾳ Ὀρεστιάδι, Πύργῳ, Πρεβέζῃ, Σέρραις, Φλωρίνῃ.

Σταθμοὶ τετάρτης τάξεως λειτουργοῦν ἐν Ἀγρινίῳ, Ἁλμυρῷ, Ἀμφίσσῃ, Ἄνω Ἀγόριανῃ, Βερροίᾳ, Γυθείῳ, Δημητσάνῃ, Διδυμοτείχῳ, Δομοκῷ, Ἐδέσσῃ, Θήβαις, Ἰκαρίᾳ, Ἱστιαίᾳ, Καλαμπάκᾳ, Καρδίτσῃ, Καρπενησίῳ, Καρύστῳ, Καστορίᾳ, Κατερίνῃ, Κεραμιδίῳ, Κιλκίς, Κομοτινῇ, Κονίτσῃ, Κορίνθῳ, Κύμῃ, Λεωνιδίῳ, Λιδωρικίῳ, Λευκάδι, Μεγαλοπόλει, Μετσόβῳ, Ν. Μουδανιοῖς, Ναυπάκτῳ, Ξάνθῃ, Πολυγύρῳ, Σερβίοις, Σητείᾳ (Κρήτης), Σκοπέλῳ, Τσαριτσαίνῃ.

Ἐκ τῶν σταθμῶν δευτέρας τάξεως, οἱ τῆς Χίου, τοῦ Ἡρακλείου, τῶν Χανίων καὶ τῆς Ζακύνθου ἔχουσιν ἐφοδιασθῆ καὶ δι' ἑνὸς βαρογράφου διὰ τὴν παρατήρησιν τῆς βαρομετρικῆς τάσεως.

Οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ προσφέρουσι τὰς ὑπηρεσίας των εἰς τὴν γενικὴν ἐπιστήμην τῆς μετεωρολογίας καὶ τοὺς κλάδους αὐτῆς, καὶ τὴν γεωργίαν καὶ τὴν ναυτιλίαν, ἀπὸ τῆς ἐποχῆς δὲ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου κατέστησαν καὶ ἀπαραίτητος ὑπηρεσία τοῦ στρατεύματος καὶ τῆς ἀεροπλοΐας, ἅτινα ἐν καιρῷ πολέμου ἐξυπηρετοῦνται, ἐκτὸς ὑπὸ τῶν ἀνωτέρω σταθμῶν, οἵτινες καλοῦν-

Digitized by Google

ται καὶ *μόνιμοι μετεωρολογικοὶ σταθμοί*, καὶ ὑπὸ τῶν καλουμένων *φορητῶν* τοιούτων. Οἱ στρατιωτικοὶ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ παρέχουσι κατὰ τὸν πόλεμον πληροφορίας ἐπὶ τῆς γενικῆς καταστάσεως τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ μετεωρολογικὰς προειδοποιήσεις, αἵτινες ἐνδιαφέρουσι τὴν στρατιωτικὴν διοίκησιν καὶ τὴν ἀεροπλοΐαν. Ἡ ὑπηρεσία τῶν μετεωρολογικῶν σταθμῶν τῆς στρατιωτικῆς ζώνης, ὧν τὸ προσωπικὸν ἀποτελεῖται ἀπὸ ἀξιωματικούς, περιλαμβάνει διὰ τὰς γενικὰς ἀνάγκας τῆς διοικήσεως καὶ τῶν διαφόρων ὅπλων: *κυρίους σταθμούς*, ὧν ἕκαστος περιλαμβάνει ἕνα *σταθμὸν προειδοποιήσεως*, καὶ ἓν τμῆμα *ἠχητικῶν ἀτμοσφαιροβολίσεων* (Sondages par le Son). Οἱ κύριοι οὗτοι σταθμοὶ ἀποτελοῦσι μέρη ὀργανικὰ τῶν εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ἀρχιστρατήγου γενικῶν ἐφεδρειῶν. Διὰ τὰς κυρίας ἀνάγκας τῆς ἀεροπλοΐας περιλαμβάνουσιν ἕνα *σταθμὸν προειδοποιήσεων* κατὰ ἀεροπλοΐαν στρατιᾶς καὶ ἕνα *μετεωρολογικὸν σταθμὸν* (ἢ *ἀερολογικὸν* ἢ *ἀνεμολογικὸν σταθμόν*, εἰς ὃν ἐκτελοῦνται ἀτμοσφαιροβολίσεις διὰ θεοδολίχου) κατὰ μοῖραν ἢ συγκρότημα. Διὰ τὰς κυρίας ἀνάγκας τοῦ πυροβολικοῦ καὶ τοῦ πεζικοῦ ἕνα *μετεωρολογικὸν σταθμὸν (ἀνεμολογικόν, ἀτμοσφαιροβολίσεων)* κατὰ μεραρχίαν.

Οἱ *κύριοι μετεωρολογικοὶ σταθμοί*, οἵτινες ἀντιστοιχοῦσιν εἰς τοὺς α′ ἢ β′ τάξεως τῶν πολιτικῶν ὑπηρεσιῶν, ἔχουσιν ὡς ἀποστολὴν τὴν συγκέντρωσιν καὶ μετάδοσιν τῶν μετεωρολογικῶν παρατηρήσεων, αἵτινες ἐνδιαφέρουσι τὰ τμήματα τῆς ζώνης ἐνεργείας των, ὅπως εἶναι ἡ πρόγνωσις τοῦ καιροῦ, αἱ προειδοποιήσεις ἀελλῶν (grains) καὶ τὰ μετεωρολογικὰ στοιχεῖα τῆς στιγμῆς.

Οἱ *σταθμοὶ προειδοποιήσεων* εἶναι ἰδιαιτέρως ἐπιφορτισμένοι μὲ τὴν ἐκτέλεσιν προγνώσεων μικρᾶς διαρκείας (τὸ πολὺ 6 ὡρῶν) πρὸς εἰδικὴν χρῆσιν τῶν μονάδων, παρ' αἷς εἰσὶ προσκεκολλημένοι.

Οἱ στρατιωτικοὶ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ ἀποτελοῦσι τμήματα σχετικῶς ἐλαφρά, δυνάμενα νὰ μετακινοῦνται καὶ νὰ ἐγκαθίστανται ταχέως· ἐξ ἄλλου εἶναι προωρισμένοι νὰ ἀκολουθῶσι πιστῶς τὰς κινήσεις τῶν σχηματισμῶν ὑφ' ὧν χρησιμοποιοῦνται. Ἡ πρόγνωσις τοῦ καιροῦ, ἥτις ἐκδίδεται ὑπὸ τῆς κεντρικῆς ὑπηρεσίας τοῦ κράτους, παρ' ἡμῖν σήμερον ὑπὸ τοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν, μεταβιβάζεται ἐν καιρῷ πολέμου, ὡς καὶ ἐν καιρῷ εἰρήνης, διὰ τοῦ ἀσυρμάτου, τηλεφωνικῶς καὶ τηλεγραφικῶς, λαμβανομένη δὲ ἰδίως ὑπὸ τῶν κυρίων στρατιωτικῶν μετεωρολογικῶν σταθμῶν συμπληροῦται ἢ καὶ τροποποιεῖται κατόπιν, ἀναλόγως τῶν τοπικῶν συνθηκῶν, καὶ γνωστοποιεῖται πρὸς τὰ ἐπιτελεῖα καὶ τοὺς σχηματισμοὺς οὓς ἐξυπηρετοῦσιν, οἵτινες καὶ συντάσσουν δελτίον προγνώσεως, ὅπερ κοινοποιοῦσιν εἰς τὰς διαφόρους μονάδας.

Αἱ παρατηρήσεις τῶν *ἀερολογικῶν σταθμῶν* διαβιβάζονται ταχέως καὶ χρησιμοποιοῦνται ὑπὸ τῶν ἐντὸς ἀκτῖνος 50 περίπου χιλιομέτρων εὑρισκομένων μονάδων πυροβολικοῦ καὶ ἀεροπλοΐας. Σχηματισμοί τινες ἀεροπλοΐας, οἵτινες δυνατὸν νὰ εὑρίσκωνται λίαν μακρὰν τῶν κυρίων σταθμῶν, ἐφοδιάζονται κυρίως διὰ *σταθμῶν προειδοποιήσεων* ἢ *ἀερολογικῶν σταθμῶν*, αἱ δὲ μονάδες πυροβολικοῦ, αἵτινες βάλλουσι βεληνεκὲς κατώτερον τῶν 1.500 μέτρων, καὶ αἱ μονάδες πεζικοῦ, αἵτινες ἐκτελοῦσιν ἔμμεσον βολὴν πολυβόλων, χρησιμοποιοῦσι συνήθως τὰς παρατηρήσεις τῶν σταθμῶν μεραρχίας πεζικοῦ, τῶν εὑρισκομένων ἐγγύτερον τῶν κυρίων σταθμῶν.

Παρ' ἡμῖν δὲν ἤρξατο λειτουργοῦσα ὠργανωμένη στρατιωτικὴ μετεωρολογικὴ ὑπηρεσία, μονάδες ὅμως τινὲς πυροβολικοῦ καὶ τῆς ἀεροπλοΐας κέκτηνται μεμονωμένα τινὰ μετεωρολογικὰ ὄργανα, ἰδίᾳ ἀτμοσφαιροβολίσεων, ἅτινα θ' ἀποτελέσωσι τὴν βάσιν τῶν ἱδρυθησομένων στρατιωτικῶν μετεωρολογικῶν σταθμῶν ἐν Ἑλλάδι. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου ἐλειτούργησαν στρατιωτικοὶ ἀερολογικοὶ σταθμοὶ ὑπὸ τῶν συμμάχων ἐν Μακεδονίᾳ καὶ Θράκῃ καὶ ὑπὸ τῆς ἀεροπλοΐας ἐν τῷ ἀεροδρομίῳ Γουδὶ καὶ ἐν τῇ ἀεροπορικῇ σχολῇ Σέδες, πλήρης δὲ ἀερολογικὸς καὶ μετεωρολογικὸς σταθμὸς ἐν Καζαμὶρ τῆς Σμύρνης κατὰ τὴν μικρασιατικὴν ἐκστρατείαν (βλ. καὶ λ. *μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Δ. Αἰγινήτου*, «Πρακτικὴ Μετεωρολογία». —*A. Baldit*, «Météorologie Pratique». Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

—**μετεωρολογικὸν *ἀερόστατον*.** Ἀερόστατα διαφόρων μεγεθῶν, ἅτινα χρησιμοποιοῦνται κατὰ τὴν ἔρευναν τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας (βλ. λ. *ἀερολογία*).

—**μετεωρολογικὸν *δελτίον*·** βλ. λ. *δελτίον [Μετεωρολ.]*.

—**μετεωρολογικὸν *ἡμερολόγιον*.** Ἓν ἐκ τῶν ἀπαραιτήτων βιβλίων ἑκάστου μετεωρολογικοῦ σταθμοῦ (βλ. καὶ λ. *μετεωρολογικαὶ παρατηρήσεις*), ἐν τῷ ὁποίῳ ἀναγράφεται καθ' ἑκάστην κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτενὴς περιγραφὴ τοῦ καιροῦ τῆς ἡμέρας ἐν τῷ τόπῳ τῶν παρατηρήσεων. Ἐν αὐτῷ ἀναγράφονται καὶ πάντα τὰ μετεωρολογικὰ φαινόμενα, ἅτινα δὲν ἀνευρίσκονται εἰς τὸ βιβλίον τῶν παρατηρήσεων, ὡς μὴ γενόμενα κατὰ μίαν τῶν παρατηρησίμων ὡρῶν τῆς ἡμέρας. Τὸ βιβλίον τοῦτο, ἐκ τοῦ ὁποίου πολλάκις ἐξάγονται σπουδαῖα ἐπιστημονικὰ συμπεράσματα ἐπὶ τῆς μετεωρολογίας καὶ κλιματολογίας τοῦ τόπου, ἀποβαίνει ἀρίστη συμβολὴ εἰς τὴν ἐξέλιξιν τῆς γενικῆς μετεωρολογικῆς ἐπιστήμης. Ἐν Ἑλλάδι τοιαῦτα μετεωρολογικὰ ἡμερολόγια τηροῦνται μόνον ἐν τῷ μετεωροσκοπείῳ Ἀθηνῶν. Μετεωρολογικὸν ἡμερολόγιον τηρεῖται ἐν γένει καὶ ὑπὸ παντὸς ταξιδεύοντος πλοίου ἐμπορικοῦ εἴτε πολεμικοῦ. Θ. Θ. Φ.

—**μετεωρολογικὸν *στέγαστρον*,** ἢ ***μετεωρολογικὸς κλωβὸς*** *[Μετεωρολ.]*. Συσκευὴ ἥτις χρησιμεύει νὰ προφυλάσσῃ τὰ πρὸς μέτρησιν τῆς θερμοκρασίας καὶ ὑγρασίας τοῦ ἀέρος ἐργαλεῖα ἀπὸ τῆς ἐνεργείας τῆς ἀκτινοβολίας καὶ ἀπὸ πάσης ἄλλης ἀμέσου ἐπιδράσεως, ὅπως εἶναι ἡ βροχή, ἡ χιών, ὁ ἄνεμος κτλ.

Πολυάριθμοι εἶναι αἱ ποικιλίαι τῶν στεγάστρων (abris météorologiques, Hütte, screen), ἅτινα ἔχουσιν ἐπινοηθῆ μέχρι σήμερον. Οἱ ἐν χρήσει τύποι διαφέρουσιν ἐκ τοῦ τρόπου κατασκευῆς, ἐκ τῶν διαστάσεων αὐτῶν καὶ τῆς ἐγκαταστάσεώς των, ὡς καὶ ἀναλόγως τῆς χώρας ἐν ᾗ χρησιμοποιοῦνται· δύνανται ὅμως νὰ διαιρεθῶσι γενικῶς εἰς *ἠπειρωτικὰ* καὶ *τροπικά*. Εἰς τοὺς μετεωρολογικοὺς σταθμοὺς τῶν διαφόρων χωρῶν ἐν χρήσει εἶναι κυρίως ἀφ' ἑνὸς ὁ γαλλικὸς τύπος στεγάστρων (abris français) καὶ ἀφ' ἑτέρου ὁ ἀγγλικὸς ἢ *στέγαστρον τοῦ Stevenson* (Stevenson screen).

Ἐν Ἑλλάδι, ἔνθα συχνάκις ἔχομεν ἰσχυρὰς θυέλλας καὶ ὁ ἥλιος λάμπει πολύ, ἐγένετο δεκτὸς ὁ ἀγγλικὸς τύπος στεγάστρων, ὅστις καλεῖται παρ' ἡμῖν *κιγκλιδωτὸς κλωβὸς* ἢ ἁπλῶς *κλωβὸς* καὶ εἶναι ἐγκατεστημένος εἰς ἅπαντας τοὺς α′, β′ καὶ γ′ τάξεως μετεωρολογικοὺς σταθμοὺς τοῦ Ἐθνικοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν. Ἡ τοποθέτησις τῶν θερμομέτρων πρὸς εὕρεσιν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ἀέρος ἀπαιτεῖ εἰδικὰς προφυλάξεις, ἄνευ τῶν ὁποίων αἱ παρατηρήσεις οὐδεμίαν ἔχουσιν ἀξίαν. Πρὸς προσδιορισμὸν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ἀέρος ὁ πρῶτος ὅρος, ὅστις δέον νὰ πληροῦται, εἶναι προφανῶς ἐκεῖνος, καθ' ὃν ὁ ἀὴρ ἐπιδρᾷ ἐλευθέρως καὶ ἐξ ὅλων τῶν πλευρῶν ἐπὶ τῶν θερμομέτρων, καὶ δύναται νὰ κυκλοφορῇ πέριξ αὐτῶν χωρὶς ἡ θερμοκρασία αὐτοῦ νὰ ὑφίσταται τροποποιήσεις. Ἡ τοποθέτησις τῶν ὀργάνων εἰς οὐδεμίαν περίπτωσιν γίνεται πλησίον οἰκίας ἢ παραθύρου ἢ ἐπὶ τοῦ τοίχου, ἀλλ' εἰς τὸν ἐλεύθερον ἀέρα καὶ εἰς χῶρον λίαν ἀναπεπταμένον. Πρὸς ἀποφυγὴν τῆς ἀκτινοβολίας τοῦ ἐδάφους, τὰ θερμόμετρα δέον νὰ ὦσιν ἀνηρτημένα ὅσον τὸ δυνατὸν ἄνωθεν χλοεροῦ ἐδάφους καὶ εἰς ὕψος τοὐλάχιστον 1.60 μ.· ἐξ ἄλλου διὰ τοῦτο τοποθετοῦνται ὑποκάτω τοῦ καταλλήλου στεγάστρου. Ἄλλοτε ἐτοποθέτουν τὰ θερμόμετρα ἐντὸς ἑνὸς εἴδους σκοπιᾶς, προσηρμοσμένης ἐπὶ τοῦ τοίχου τῆς οἰκίας βλέποντος πρὸς βορρᾶν καὶ ἔμπροσθεν παραθύρου (εἰκ. 1), εἰς τρόπον ὥστε τὰ ἀναγνώσματα ἠδύναντο νὰ ληφθῶσιν ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς οἰκίας. Αἱ παρατηρήσεις αἱ γενόμεναι ὑπ' αὐτὰς τὰς συνθήκας οὐδεμίαν ἔχουσι μετεωρολογικὴν ἀξίαν, διότι ἡ γειτνίασις τῆς οἰκίας τροποποιεῖ

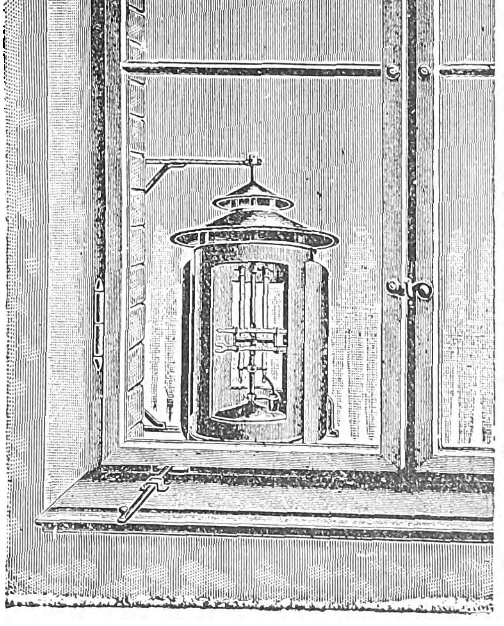

Εἰκ. 1. *Μετεωρολογικὸν στέγαστρον τοποθετημένον ἐπὶ παραθύρου οἰκίας.*

τὴν θερμοκρασίαν τοῦ ἀέρος καὶ ἐπιβραδύνει τὰς μεταβολὰς αὐτῆς.

*Γαλλικὸς τύπος μετεωρολογικῶν στεγάστρων* (abri français). Εἶναι ὁ ὑπὸ τῶν Ch. Sainte-Claire, Deville καὶ Renou προταθείς, γνωστὸς καὶ ὡς *στέγαστρον τοῦ Montsouris*, ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἀστεροσκοπείου, εἰς τὸ ὁποῖον τὸ πρῶτον ἐχρησιμοποιήθη. Τὰ γαλλικὰ στέγαστρα (εἰκ. 2) ἀποτελοῦνται ἐκ διπλῆς ξυλίνης στέγης κεκαλυμμένης διὰ ψευδαργύρου· τὸ στήριγμα αὐτῶν ἀποτελεῖται ἐκ 4 στύλων ἴσων ἀνὰ δύο καὶ ἐμπηγνυομένων ἐντὸς τοῦ ἐδάφους, ἀποτελούντων δὲ τὰς κορυφὰς ἑνὸς τετραγωνικοῦ μέτρου, οὗτινος αἱ πλευ-

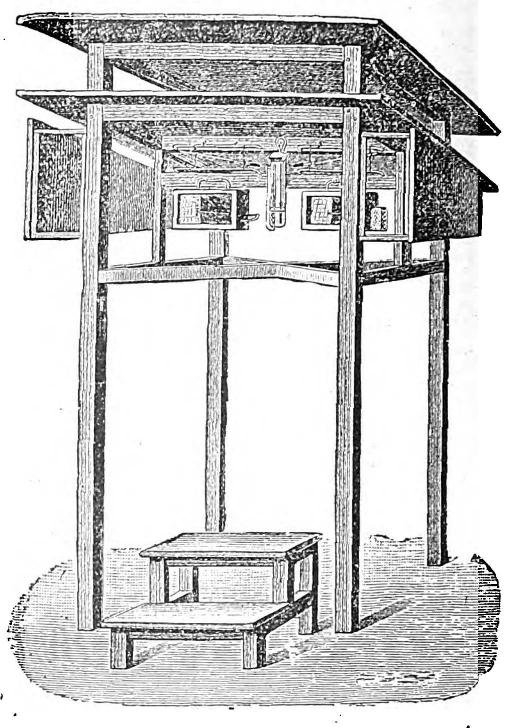

Εἰκ. 2. *Μετεωρολογικὸν στέγαστρον γαλλικοῦ τύπου, ἢ στέγαστρον τοῦ Montsouris.*

ραὶ εἶναι κάθετοι ἐπὶ τοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ τόπου. Οἱ δύο μεγαλύτεροι στῦλοι εὑρίσκονται ἐπὶ τῆς βορείας πλευρᾶς τοῦ τετραγώνου, εἰς τρόπον ὥστε ἡ κλίσις τῶν στεγῶν νὰ διευθύνεται ἀπὸ βορρᾶ πρὸς νότον. Ἐὰν τὸ τετράγωνον εἶναι πλευρᾶς ἑνὸς μέτρου, ἡ διαφορὰ μεταξὺ τῶν μεγάλων στύλων ἀπὸ τῶν μικρῶν ὀφείλει νὰ εἶναι 0.40 μέτρ. Τὸ ἐλάχιστον ὕψος τῶν πρώτων εἶναι ἴσον πρὸς 2.60 μ., τὸ δὲ τμῆμα καθ' ὃ ὑστεροῦσιν οἱ ἄλλοι εἶναι κεχωσμένον ἐντὸς τοῦ ἐδάφους. Ἡ ἀπόστασις τῶν δύο στεγῶν εἶναι τοὐλάχιστον 0.15 μέχρι 0.20 τοῦ μέτρου. Τέλος, εἰς τὸ μέσον τοῦ στεγάστρου, ἀμέσως ὑπὸ τὴν κατωτέραν στέγην, τοποθετοῦνται ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς δύο ὁριζόντιοι ἐκ ξύλου δοκοὶ πάχους 0.06 μ., ἀπὸ τῶν ὁποίων κρέμανται τὰ ὄργανα.

Τὸ στέγαστρον κατασκευάζεται συνήθως ἐκ ξύλου καὶ κἄποτε ἐκ σιδήρου, χρωματίζεται φαιὸν ἢ πράσινον, πρέπει δὲ νὰ εἶναι ὅσον τὸ δυνατὸν ἐλαφρόν, ἵνα μὴ ἀσκῇ ἐπίδρασίν τινα ἐπὶ τῶν θερμομέτρων καὶ ἀρκετὰ στερεόν, ἵνα ἀντέχῃ εἰς τὰς ὠθήσεις τῶν ἀνέμων. Εἰς τὰς χώρας ἔνθα αἱ θύελλαι εἶναι συχναὶ καὶ βίαιαι στερεοῦνται ταῦτα καταλλήλως. Ἐπειδὴ τὰ θερμόμετρα δυνατὸν νὰ προσβληθῶσιν ὑπὸ τοῦ ἡλίου τὴν πρωΐαν ἢ τὴν ἑσπέραν, προφυλάσσονται ταῦτα ὑπὸ δενδρυλλίων τοποθετημένων εἰς ἀπόστασίν τινα πρὸς δυσμὰς καὶ ἀνατολάς, ἢ ὡς δεικνύεται ἐν τῇ εἰκ. 2 τοποθετοῦνται ἐπὶ τῶν πλευρῶν τοῦ στεγάστρου καὶ πρὸς τὰ ἔξω μικρὰ ξύλινα παραπετάσματα, ἅτινα δὲν πρέπει νὰ εὑρίσκωνται χαμηλότερον τῶν θερμομέτρων. Ἀπὸ τῶν παραπετασμάτων αὐτῶν ἀφαιρεῖται τὸ πρὸς τὴν ἀντίθετον πλευρὰν τοῦ ἡλίου εὑρισκόμενον. Εἰς τὸ μέσον τοῦ στεγάστρου ἀναρτῶνται τὸ ξηρὸν καὶ ὑγρὸν θερμόμετρον (ἅτινα ἀποτελοῦσι τὸ ψυχρόμετρον). Τὰ ἀκροβάθμια θερμόμετρα (μεγιστοβάθμιον καὶ ἐλαχιστοβάθμιον) τοποθετοῦνται μεταξὺ τῶν δύο ξυλίνων δοκῶν ἑκατέρωθεν τοῦ ψυχρομέτρου, εἰς τρόπον ὥστε τὰ θερμόμετρα νὰ εἶναι τελείως ἐλεύθερα καὶ ἐπὶ χωριστῶν ξυλίνων θηκῶν. Ὑπὸ τὸ στέγαστρον εἶναι δυνατὸν ν' ἀναρτηθῶσιν ὁριζοντίως καὶ εἷς θερμογράφος καὶ εἷς ὑγρογράφος.

*Ἀγγλικὸς τύπος μετεωρολογικῶν στεγάστρων.* Ὁ ἀγγλικὸς τύπος στεγάστρων ἢ *κιγκλιδωτὸς κλωβὸς* (εἰκ. 3) ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς μεγάλου ξυλίνου κυτίου, τοῦ ὁποίου ἑκάστη πλευρά, ὡς καὶ ἡ βάσις, ἀποτελεῖται ἐκ διπλῶν ξυλίνων κιγκλίδων ἀντιθέτου φορᾶς καὶ σχηματιζουσῶν γωνίαν 90° περίπου. Τὸ ὅλον σύστημα εἶναι προσηρμοσμένον ἐπὶ ξυλίνης βάσεως, ἧς τὰ ἄκρα ἐμπήγνυνται ἐντὸς τοῦ ἐδάφους. Τὰ διάφορα τεμάχια τοῦ στεγάστρου ἀποτελοῦνται συνήθως ἐξ ξύλου κιτρίνης πεύκης. Αἱ διπλαῖ κιγκλίδες πρέπει ν' ἀπέχωσιν ἀπ' ἀλλήλων τόσον, ὥστε ν' ἀφήνωσιν ἐλευθέραν τὴν ἐν τῷ κλωβῷ κυκλοφορίαν τοῦ ἀέρος καὶ νὰ ἐμποδίζωσι συγχρόνως τὰς ὑπὸ τῶν ἐκτὸς τοῦ κλωβοῦ σωμάτων ἐκπεμπομένας ἀκτῖνας νὰ εἰσδύωσιν ἐν αὐτῷ καὶ προσβάλλωσι τὰ θερμόμετρα. Αἱ διαστάσεις τοῦ στεγάστρου ποικίλλουν (εἰκ. 4 καὶ 5). Ὅταν τοῦτο εἶναι κύβος, ἑκάστη πλευρὰ εἶναι 1.10 μέτρ.

Digitized by Google

Ὁ σκελετὸς τοῦ στεγάστρου ἀποτελεῖται ἐκ 4 στύλων γωνιωδῶν, τετραγωνικῆς τομῆς πλευρᾶς περίπου 3—5 ἑκ., καὶ συνδεομένων ὁριζοντίως ἄνω καὶ κάτω διὰ δοκῶν· Ὅταν οἱ κλωβοὶ εἶναι προωρισμένοι καὶ δι' αὐτογραφικὰ καὶ ἀμέσου παρατηρήσεως ὄργανα, τότε οἱ γωνιώδεις στῦλοι ἀποτε-

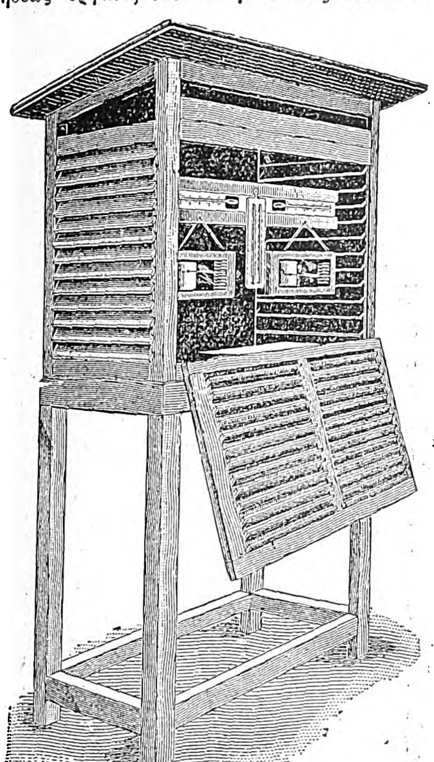

Εἰκ. 3. *Μετεωρολογικὸν στέγαστρον ἀγγλικοῦ τύπου ἢ στέγαστρον τοῦ Stevenson.*

λοῦσιν ἓν ὀρθογώνιον, οὗτινος αἱ διαστάσεις ἔχουσι πλάτος (βορεία καὶ νοτία ὄψις) 100 ἑκ., βάθος (ὄψις ἀνατολικὴ καὶ δυτικὴ) 40 ἑκ.· ἄλλως τὸ πλάτος τοῦ ὀρθογωνίου ἐλαττοῦται μέχρις 60 ἑκ. Οἱ δύο ἐμπρόσθιοι στῦλοι (βορεία ὄψις) ἔχουσιν ὕψος 70 ἑκ. καὶ οἱ δύο ὀπίσθιοι (νοτία ὄψις) 65 ἑκ., ἀνεξαρτήτως τῶν ποδῶν, οἵτινες βαστάζουσι τὸ σύνολον. Ἡ ὀροφὴ τῶν στεγάστρων διαφέρει ἀπὸ στεγάστρου εἰς στέγαστρον. Εἰς τὰ ἔχοντα σχῆμα κύβου ἀποτελεῖται ἐκ λεπτῶν συνεχῶν σανίδων, ἄνωθεν δὲ εἰς ἀπόστασιν 0.10 μ. ὑπάρχει ξυλίνη πυραμιδοειδὴς στέγη, στηριζομένη ἐπὶ ἁπλοῦ καὶ λίαν ἀραιοῦ κιγκλιδώματος, οὕτως ὥστε ὁ ἀὴρ νὰ κυκλοφορῇ ἐλευθέρως μεταξὺ τῶν δύο τούτων καλυμμάτων διὰ τῶν κιγκλίδων. Ὁ κλωβὸς χρωματίζεται ἐσωτερικῶς μὲν μέλας, ἐξωτερικῶς δὲ λευκός. Ὁ πρὸς βορρᾶν τοῖχος αὐτοῦ συνήθως ἐκ δύο ἀνοιγομένων φύλλων ἀποτελούμενος (ὅταν ἔχῃ σχῆμα κύβου) ἢ ἐξ ἑνὸς τοιούτου, χρησιμεύει ὡς θυρίς, ἐξ ἧς ὁ παρατηρητὴς ἐκτελεῖ τὰς ἐπὶ τῶν ἐν αὐτῷ ὀργάνων παρατηρήσεις. Ὁ κλωβὸς καὶ ἐν γένει τὰ στέγαστρα πρέπει νὰ στηρίζωνται ἐπὶ τοῦ ἐδάφους διὰ τεσσάρων ξυλίνων ποδῶν, μήκους περίπου 2 μ., οἵτινες εἰσέρχονται ἐν αὐτῷ εἰς βάθος 0.50 μ., γενικῶς δὲ οἱ πόδες τῆς βάσεως νὰ ἔχωσι τοιοῦτον ὕψος ὥστε τὰ δοχεῖα τῶν θερμομέτρων καὶ τῶν ψυχρομέτρων νὰ εὑρίσκωνται εἰς ὕψος τοὐλάχιστον 1.30 μ. ἀπὸ τοῦ ἐδάφους. Ὁ ἀνωτέρω ἀγγλικὸς τύπος υτεγάστρων συνιστᾶται ἰδιαιτέρως εἰς τὰς χώρας, ἔνθα πνέουσιν ἰσχυροὶ ἄνεμοι, ἢ ἐκεῖ ὅπου αἱ τοπικαὶ συνθῆκαι δὲν θὰ ἐπέτρεπον διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως τῶν γαλλικῶν στεγάστρων νὰ ἐλαττώσωμεν ἀρκετὰ τὰς ἐπὶ τῶν θερμομέτρων ἀκτινοβολίας.

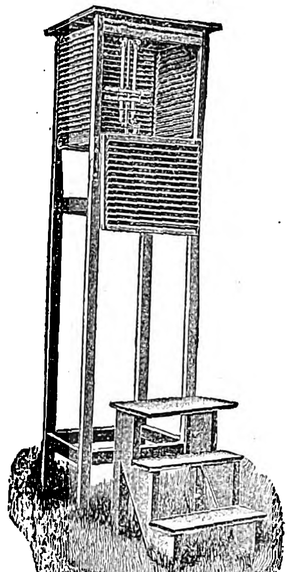

Εἰκ. 4. *Ἀγγλικὸν στέγαστρον.*
[Ἐσωτερικαὶ διαστάσεις 64×52×46 ἑκ.]

*Ἁπλᾶ στέγαστρα.* Οἱ σταθμοὶ δ', πολλάκις δὲ καὶ γ' τάξεως, συχνὰ ἐφοδιάζονται δι' ἄλλου τύπου στεγάστρων (εἰκ. 6), ἐφ' ὅσον οὗτοι κέκτηνται μόνον ἀκροβάθμια θερμόμετρα, μεγιστοβάθμιον δηλαδὴ καὶ ἐλαχιστοβάθμιον. Τὰ δύο ταῦτα θερμόμετρα τοποθετοῦνται συνήθως ἐφ' ἑνὸς ὀρειχαλκίνου πλαισίου, ὅπερ καλύπτεται δι' ὀροφῆς ἐκ φελλοῦ καὶ προφυλάσσεται ὑπὸ δευτέρας τοιαύτης ἐκ βερνικωμένου ψευδαργύρου. Ἡ μία τῶν πλευρῶν τῆς στέγης, ἥτις στρέφεται πρὸς βορρᾶν, εἶναι κινητή, εἰς τρόπον ὥστε νὰ εἶναι δυνατὴ ἡ ἀφαίρεσις αὐτῆς κατὰ τὴν ἀνάγνωσιν τῶν θερμομέτρων. Ὁλόκληρον τὸ στέγαστρον προσαρμόζεται ἐπὶ στύλου ὕψους 1.80—2 μέτρων. Ἵνα μὴ αἱ ἡλιακαὶ ἀκτῖνες προσπίπτωσιν ἀμέσως ἐπὶ τοῦ στεγάστρου, τοποθετεῖται συνήθως πρὸς νότον τοῦ στεγάστρου, καὶ εἰς ἀπόστασιν 0.50 μ. κεκλιμένη μεγάλη σανίς, ἥτις ἀποτελεῖ ἓν εἶδος στέγης. Τὸ στέγαστρον τοῦτο εἶναι δυνατὸν νὰ τοποθετηθῇ ἀκόμη πρὸς βορρᾶν μεμονωμένου τινὸς δένδρου, οὗτινος τὸ φύλλωμα, χωρὶς νὰ ἐμποδίζῃ τὴν ἐλευθέραν κυκλοφορίαν τοῦ ἀέρος, νὰ δύναται νὰ προφυλάσσῃ τὸ στέγαστρον. Τὰ θερμόμετρα ὑπὸ τὸ στέγαστρον τοποθετοῦνται ἐπὶ τοῦ μεταλλικοῦ πλαισίου ὀλίγον κεκλιμένα, ὁλόκληρον δὲ τὸ στέγαστρον κινεῖται περὶ ὁριζόντιον ἄξονα ἐν σχέσει πρὸς τὸ σύστημα ἐξαρτήσεως, ὅπερ τὸ στηρίζει ἐπὶ τοῦ στύλου. Ἄλλος τύπος τοιούτου στεγάστρου εἶναι ὁ τοῦ *Koeppen* (εἰκ. 7).

***Μετεωρολογικὰ στέγαστρα τῶν τροπικῶν χωρῶν.*** Εἰς τὰς πλησίον τοῦ Ἰσημερινοῦ χώρας, εἰς ἃς ὁ ἥλιος διέρχεται κατὰ τὴν μεσημβρίαν, ὁτὲ μὲν βορείως, ὁτὲ δὲ νοτίως τοῦ ζενίθ, ὁ τύπος στεγάστρων τοῦ Montsouris δὲν πληροῖ τὰς σχετικὰς συνθήκας, διότι κατὰ τὴν διάρκειαν ἑνὸς τμήματος τοῦ ἔτους ὁ ἥλιος εὑρίσκεται πρὸς τὴν ὑψηλοτέραν πλευρὰν τοῦ στεγάστρου καὶ προσβάλλει ἀπ' εὐθείας τὰ θερμόμετρα· ἐξ ἄλλου, ὁ ἀγγλικὸς τύπος στεγάστρων τοῦ Stevenson δύναται νὰ δώσῃ λίαν ὑψηλὰς θερμοκρασίας κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἡμέρας εἰς τὰς περιοχάς, εἰς ἃς παρατηρεῖται μεγάλη ἡλιοφάνεια καὶ ἄνεμος ἀσθενής. Εἰς τὰς περιπτώσεις ταύτας χρησιμοποιοῦνται στέγαστρα ἀποτελούμενα ἐκ δύο κυλινδρικῶν στεγῶν μὲ ὁριζόντιον ἄξονα, ὑπὸ μορφὴν μεγάλων ὑδρορροῶν ἀντεστραμμένων, ὧν ἡ καμπυλότης στρέφεται πρὸς τὸν οὐρανόν. Ἡ ἐσωτερικὴ στέγη εἶναι ἡμικύλινδρος ἀνοικτὸς πρὸς τὰ κάτω καὶ οὗτινος ὁ ἄξων εἶναι ὁριζόντιος καὶ προσηνατολισμένος ἀπὸ βορρᾶ πρὸς νότον. Ὁ κύλινδρος οὗτος ἔχει ἀκτῖνα 1 μέτρου καὶ μῆκος 0.60 μ. Ἄνωθεν τοποθετεῖται ὁμοκεντρικῶς δεύτερος ἡμικύλινδρος, ἀκτῖνος 1.30 ἢ 1.40 μ. καὶ μήκους τουλάχιστον 1.40 μ., εἰς τρόπον ὥστε νὰ προφυλάσσηται ὁ πρῶτος ἀπὸ βορρᾶ καὶ νότου κατὰ 0.20 μ. ἢ καὶ περισσότερον. Εἰς τὸ μέσον τοῦ κατωτέρου κυλίνδρου τοποθετεῖται ἐγκαρσίως (ἀπὸ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς) ὁριζόντιος πῆχυς, εἰς ὕψος κατάλληλον εἰς τρόπον, ὥστε τὰ δοχεῖα τῶν ἀνηρτημένων θερμομέτρων νὰ φθάνωσι μέχρι τοῦ ἐπιπέδου τοῦ κατωτέρου κρασπέδου τῶν δύο κυλίνδρων. Ὁλόκληρον τὸ στέγαστρον ὑποβαστάζεται ὑπὸ τεσσάρων στύλων, οὕτως ὥστε τὰ θερμόμετρα ν' ἀπέχωσιν ἀπὸ τοῦ ἐδάφους 1.60 μ. Αἱ δύο κυλινδρικαὶ στέγαι δύνανται νὰ κατασκευασθῶσιν ἐξ ὑφάσματος ἀληλιμμένου διὰ πίσσης, διὰ τὸν ἀερισμὸν δὲ τοποθετοῦνται συνήθως ἐπὶ τῶν στεγῶν τούτων εἷς ἢ δύο μικροὶ σωλῆνες ὕψους 0.08—0.10 μ., κεκαλυμμένοι πρὸς τὰ ἄνω, πρὸς ἀποφυγὴν εἰσόδου τῶν ὑδάτων τῆς βροχῆς ἐντὸς τοῦ στεγάστρου.

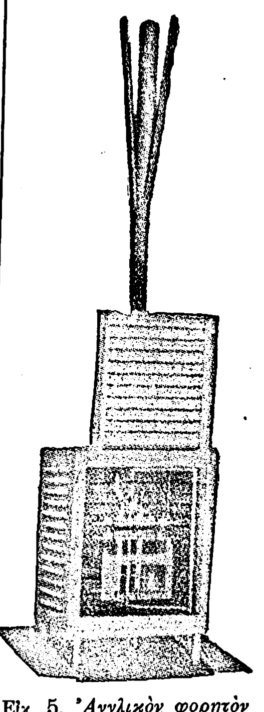

Εἰκ. 5. *Ἀγγλικὸν φορητὸν στέγαστρον μικροῦ τύπου, χρησιμοποιούμενον εἰς τὸν στρατόν.*
[Ἐσωτερ. διαστ. 36×36×40 ἑκ.]

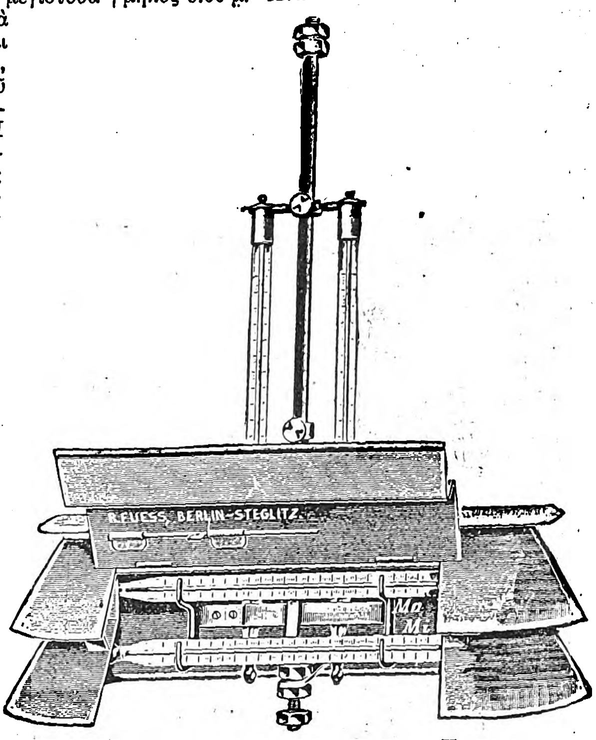


Εἰκ. 7. *Μετεωρολογικὸν στέγαστρον τοῦ Καΐππεν.*

Οἱοσδήποτε καὶ ἂν εἶναι ὁ τρόπος τῆς κατασκευῆς ἑνὸς μετεωρολογικοῦ στεγάστρου ἢ κλωβοῦ, δέον πρὸς ἐξέλεγξιν τῆς κατασκευῆς τῆς τοποθετήσεως αὐτοῦ, τῆς διαφορᾶς τῆς θερμοκρασίας ἐν τῇ ἐξοχῇ καὶ ἐν τῷ σταθμῷ (ὅταν οὗτος εὑρίσκηται πλησίον ἢ ἐντὸς τῆς πόλεως), τῆς ψύξεως τοῦ θερμομέτρου συνεπείᾳ ἐκπομπῆς ὑπ' αὐτοῦ ἀκτινοβόλου θερμότητος καὶ ἐν γένει τῶν ἐνδείξεων τῶν θερμομέτρων τοῦ στεγάστρου, νὰ μεταχειριζώμεθα τὸ σφενδονοειδὲς θερμόμετρον (Thermomètre fronde), προβαίνοντες εἰς τὸν ἔλεγχον τοῦτον ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν καὶ ἰδίᾳ κατὰ τὰς θερμὰς ὡς καὶ τὰς ἡμέρας νηνεμίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Δ. Αἰγινήτου*, «Πρ. Μετεωρολογία».— *A. Angot*, «Instructions Météorologiques». Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

— **μετεωρολογικοὶ *χαρταετοί*·** βλ. λ. *ἀερολογία*.

— **μετεωρολογικὸς *κλωβός*·** τὸ *μετεωρολογικὸν στέγαστρον* (βλ. λ.).

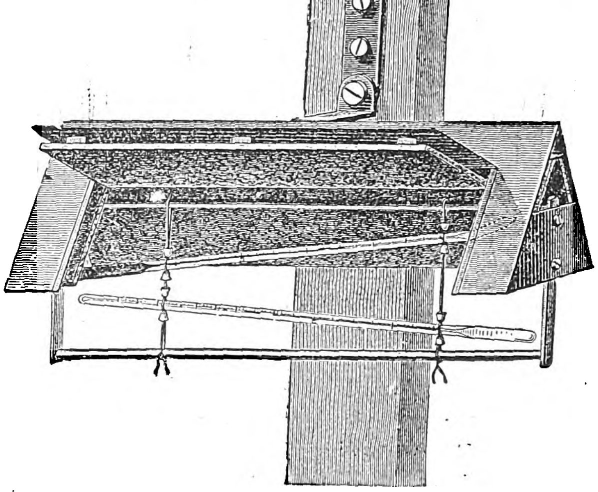

Εἰκ. 6. *Ἁπλοῦν μετεωρολογικὸν στέγαστρον διὰ μικροὺς σταθμούς.*

**μετεωρολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ περὶ τὰ μετέωρα καὶ τὰ ἀτμοσφαιρικὰ φαινόμενα ἀσχολούμενος.

**μετεωρολογῶ** (*—έω*)· ὁμιλῶ, πραγματεύομαι περὶ τῶν μετεώρων· || μεταφ., λέγω πράγματα ἀκατανόητα, φλυαρῶ.

**μετέωρον** (τό)· οὐράνιον σῶμα, τὸ ἐν τῷ διαστήματι εὑρισκόμενον ἢ πῖπτον· || πᾶν φαινόμενον ἀτμοσφαιρικόν, οἷον τὰ *ὑδατώδη μετέωρα*, ὡς ὁμίχλη, νέφη, βροχή, χιών, χάλαζα, δρόσος κτλ., τὰ *ἠλεκτρικὰ μετέωρα*, ὡς ἀστραπή, κεραυνός, σέλας, τὰ *φωτεινὰ μετέωρα*, ὡς τὸ οὐράνιον τόξον κ. ἄ.

Ὁ ὅρος *μετέωρα* ἀπεδίδετο γενικῶς ὑπὸ τῶν ἀρχαίων εἰς τὰ ἐντὸς τῆς ἀτμοσφαίρας παρατηρούμενα φαινόμενα, ἐνῷ σήμερον διὰ τῆς λέξεως ταύτης ἐννοοῦμεν φαινόμενα ἀστρονομικῆς φύσεως. Ἡ λέξις αὕτη σήμερον ἀπαντᾶται ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ ἐν συνθέσει εἰς τὸν ὅρον *ὑδρομετέωρα*, ὅστις σημαίνει τὸ σύνολον τῶν ἀτμοσφαιρικῶν φαινομένων, ἅτινα ὀφείλουσι τὸν σχηματισμόν των εἰς τοὺς ὑδρατμοὺς καὶ ἔχουσιν ὡς βάσιν αὐτούς.

Digitized by Google

— *['Αστρον.]* Καλοῦνται *μετέωρα* σκοτεινὰ σώματα προερχόμενα ἐκ τοῦ ἀχανοῦς, τὰ ὁποῖα συναντᾷ ἡ Γῆ κατὰ τὴν διαγραφὴν τῆς περὶ τὸν Ἥλιον τροχιᾶς αὐτῆς καὶ τὰ ὁποῖα ἑλκυόμενα ὑπὸ τοῦ ἡμετέρου πλανήτου εἰσέρχονται ἐντὸς τῆς ἀτμοσφαίρας αὐτοῦ μετὰ μεγάλης ταχύτητος, ὑπερθερμαινόμενα δὲ συνεπείᾳ τῆς τριβῆς των μετὰ τοῦ ἀέρος ἀναφλέγονται καὶ ἀναλάμπουσι. Τὰ τοιαῦτα σώματα, ἀναλόγως τῶν διαστάσεων αὐτῶν, καλοῦνται *διᾴττοντες* (βλ. λ.), ἐὰν πρόκειται περὶ κοκκίων κοσμικῆς ὕλης, ἥτις ἐξατμίζεται ὀλίγον μετὰ τὴν ἀνάφλεξιν αὐτῆς, ἢ *βολίδες* (βλ. λ.), ἐὰν πρόκειται περὶ εὐμεγέθων ὄγκων, ὧν ἡ πτῶσις συνοδεύεται οὐ μόνον ὑπὸ ζωηρᾶς λάμψεως, ἀλλὰ πολλάκις δι' ἐκρήξεως καὶ ἰσχυροῦ κρότου. Ἐὰν μετὰ τὴν πτῶσιν βολίδος ἀνευρεθῇ τὸ στερεὸν σῶμα, τὸ ὁποῖον ὑπελείφθη ἐκ τῆς ὅλης ἐξελίξεως τοῦ φαινομένου, τὸ σῶμα τοῦτο καλεῖται *μετεωρίτης*, ἢ *οὐρανόλιθος*, ἢ κοινῶς *ἀερόλιθος*. Σ. Π.

**μετεωροπαθολογία** (ἡ). Κλάδος ἰατρικός, ἐξετάζων τὰς ἐπὶ τῆς ὑγείας τοῦ ἀνθρώπου βλαβερὰς ἐπιδράσεις τῶν μετεωρολογικῶν φαινομένων καὶ τῶν ἐκ τοῦ διαστήματος ἀκτινοβολιῶν.

Ἀνέκαθεν ὁ ἄνθρωπος ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν τῆς θερμότητος καὶ τοῦ ψύχους, τῆς ὑγρασίας καὶ τῆς ξηρότητος, τῶν ἀνέμων καὶ τῶν καταιγίδων, ὡς μαρτυρεῖ αὐτὴ ἡ ἱπποκράτειος συγγραφὴ «Περὶ ἀνέμων, ὑδάτων καὶ τόπων». Κατὰ δὲ τοὺς μεσαιωνικοὺς χρόνους, οἱ διάφοροι παρατηρηταί, πρεσβεύοντες ἔτι τὰς δοξασίας τῶν ἀρχαίων Χαλδαίων, Αἰγυπτίων, Ἑλλήνων καὶ Ρωμαίων, προσέθετον καὶ τὴν ἀστρικὴν ἐπίδρασιν, ἣν ὑπέθετον, ὅτι ἐπεμβαίνει εἰς τὴν διαρρύθμισιν τῶν ἀνθρωπίνων τυχῶν. Αἱ ἀστρολογικαὶ αὗται δοξασίαι ἐπεκράτησαν μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Μόλις δ' ἐσχάτως ἐρευνηταί τινες κατηύθυναν τὰς ἐργασίας των πρὸς τὰς σχέσεις, τὰς μεταξὺ τῶν ποικίλων ἐκ τοῦ διαστήματος ἀκτινοβολιῶν καὶ τινων παθήσεων, δημιουργήσαντες μετὰ τῆς νέας ἐπιστημονικῆς θεωρίας καὶ τὸν νέον ἐπιστημονικὸν ὅρον τῆς μετεωροπαθολογίας.

Θεωρητικῶς εἶναι δύσχερὲς νὰ διακρίνῃ τις ποῖαι τῶν παθολογικῶν ἐπιδράσεων ὀφείλονται εἰς τὰς ἀτμοσφαιρικὰς μεταβολὰς καὶ ποῖαι εἰς τὴν ἐπέμβασιν τῶν ἐκ τοῦ ἡλίου ἢ τοῦ βάθους τοῦ οὐρανοῦ προερχομένων ἀκτινοβολιῶν, δεδομένου ὅτι αἱ μεταβολαὶ τῶν ἐποχῶν, αἱ θύελλαι, οἱ κυκλῶνες, τὰ κύματα ψύχους ἢ θερμότητος κλπ. προέρχονται ἐκ τῶν μεταβολῶν τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν ἀκτινοβολιῶν, ἃς ἡ γῆ δέχεται ἐκ τοῦ περὶ αὐτὴν κόσμου. Πρὸς εὐχερεστέραν ὅμως μελέτην τῶν φαινομένων τῆς ὅλως νέας ταύτης ἐπιστήμης, ἡ διάκρισις γίνεται εἰς παθολογικὰς ἐπιδράσεις φύσεως κατὰ τὸ φαινόμενον ἀτμοσφαιρικῆς καὶ ἐπιδράσεις κοσμικῆς κατὰ τὸ φαινόμενον προελεύσεως.

*Φαινόμενα ἀτμοσφαιρικά.* Ταῦτα καθίστανται αἰσθητὰ ὑπὸ πάντων τῶν ὀργανισμῶν καὶ ἰδίᾳ ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου, ἀναλόγως βεβαίως τῆς ἀναπτύξεως τοῦ νευρικοῦ αὐτοῦ συστήματος. Πάντες γνωρίζομεν πόσον ἐπιδροῦν ἡ βαρομετρικὴ πίεσις, ὁ ὑγρομετρικὸς βαθμός, ἡ ἠλεκτρικὴ τάσις κλπ. ἐπὶ τῆς γαλῆς, τοῦ κυνός, τοῦ ἵππου, τῶν ἐντόμων, ἐπί τινων ἀσθενικῶν παιδίων κλπ., ὥστε ἔκ τινων σχετικῶν ἐπ' αὐτῶν ἐμπειρικῶν παρατηρήσεων νὰ συμπεραίνουν οἱ χωρικοὶ καὶ νὰ προβλέπουν τὰς καιρικὰς μεταβολὰς ἀσφαλῶς πολλάκις. Ὁ καθηγητὴς Mouriquand τῆς Λυῶν καὶ οἱ μαθηταί του περιέγραψαν τῷ 1923 τὸ λεγόμενον «σύνδρομον τοῦ ἀνέμου τῆς Μεσημβρίας», καθ' ὅ, ὅταν ἐν τῇ περὶ τὴν Λυῶν χώρᾳ ἐπικρατοῦν οἱ ξηροὶ καὶ σχετικῶς θερμοὶ ἄνεμοι τοῦ νότου, παρατηροῦνται ἐπὶ τῶν ἐξησθενημένων βρεφῶν ἐπιτάχυνσις τῆς ἀναπνοῆς, ξηρασία τῆς γλώσσης, ἐλάττωσις τοῦ βάρους, ὕψωσις μεγάλη τοῦ πυρετοῦ (40° καὶ πλέον) κλπ. Μόλις οἱ ἄνεμοι οὗτοι καταπαύσουν, παρέρχονται αὐθωρεὶ καὶ τὰ φαινόμενα ταῦτα. Οἱ ἐνήλικοι ἐμφανίζονται ἧττον εὐαίσθητοι εἰς τοὺς ἀνέμους τούτους, προσβαλλόμενοι μόνον συνήθως ὑπὸ καρηβαρίας καί τινος φυσικῆς καὶ διανοητικῆς καταθλίψεως. Παρόμοιά τινα φαινόμενα παρετηρήθησαν καὶ εἰς τὰς Ἄλπεις, ἀνάλογα πρὸς τὸ ὕψος, εἰς ὃ εὑρίσκεται ὁ πάσχων. Ἀλλαχοῦ ἐπὶ τῶν νοτίων ἀνέμων ἐσημειώθησαν καὶ αἱμοπτυσίαι παρά τισι φυματικοῖς. Τὸ κλῖμα τῆς Ταγγέρης ἀφ' ἑτέρου ἀπὸ τοῦ Μαΐου μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου παρετηρήθη, ὅτι ἐπιφέρει εἰς τὰ νευρικὰ ἄτομα κεφαλαλγίας, ἀϋπνίας, ἄγχος, ἔτι δὲ καὶ αἱμοπτυσίας, ἀκόμη καὶ εἰς ὑγιεῖς φαινομενικῶς ὀργανισμούς. Παρομοίας ἐπιδράσεις ἐμελέτησεν ἐπὶ εἰκοσαετίαν καὶ ὁ Russell ἐκ τῆς ὁμίχλης. Οἱ Bundessen καὶ Falk (ἐν Σικάγῳ) ἐκ στατιστικῶν (1916—1926) συνεπέραναν, ὅτι ἐπὶ ἀποτόμου ψύχους αὐξάνεται ἀνωμάλως ἡ θνησιμότης ἐκ τῶν καρδιακῶν, ἀγγειακῶν καὶ νεφρικῶν παθήσεων.

*Κοσμικαὶ ἀκτινοβολίαι.* Ἐνῷ ἡ βλαβερὰ ἐπίδρασις ἀτμοσφαιρικῶν τινων μεταβολῶν ἦτο ἐμπειρικῶς γνωστὴ ἀπὸ πολλοῦ, δὲν δύναται νὰ λεχθῇ τὸ αὐτὸ καὶ διὰ τὰς κοσμικὰς ἀκτινοβολίας, ὧν ἡ ἀνακάλυψις εἶναι πρόσφατος ἀπόκτησις. Ὁ αἰθήρ, ἡ ἀστάθμητος, ἐλαστικὴ καὶ δονουμένη αὕτη ὕλη, ἡ διεισδυομένη εἰς πάντα τὰ σώματα, εἶναι ἡ μοναδικὴ πηγὴ τῶν φυσικῶν, τῶν χημικῶν καὶ τῶν βιολογικῶν φαινομένων. Ἠλεκτρομαγνητικαί τινες δ' ἀκτινοβολίαι παρέχουν τὴν ἐνέργειαν, ἣν χρησιμοποιεῖ ἡ ὕλη, ἵνα ὀργανωθῇ. Εἰς πάντας τοὺς ζῶντας ὀργανισμοὺς αἱ ἀκτινοβολίαι αὗται εἶναι ἀπαραίτητοι διὰ τὴν ἄσκησιν τῶν φυσιολογικῶν αὐτῶν λειτουργιῶν, ἀλλ' ὑφ' ὡρισμένας συνθήκας· καθόσον, ἂν αἱ ἀκτινοβολίαι αὗται ὑπερβῶσιν ἢ δὲν προσεγγίσουν ὅριόν τι, καθίστανται βλαβεραί. Εἶναι γνωσταὶ ἄλλως τε αἱ βλάβαι, ἃς προκαλοῦν γνωσταὶ καὶ ἐν τῇ σημερινῇ θεραπευτικῇ ἀκτινοβολίαι (ἀκτῖνες Ραῖντγκεν, ἀκτῖνες ραδίου, ἀκτῖνες ὑπεριώδεις καὶ ὑπέρυθροι κλπ.), ὅταν ἡ δόσις αὐτῶν ὑπερβῇ ὡρισμένον μέτρον. Ὁ ἄνθρωπος εἶναι ἔτι πλέον ἐκτεθειμένος εἰς βλάβας, ὅταν δέχηται ἐκ τοῦ διαστήματος διαφόρους ἀκτινοβολίας, ὅλως ἀνυπόπτως, αἵτινες δὲν ἀποτελοῦσι πάντοτε κανονικὸν παράγοντα ἰσορροπίας ἐν τῷ ὀργανισμῷ του καὶ αἵτινες, ὡς ἐκ τούτου ἀκριβῶς, δύνανται νὰ ἐπενέγκουν ἐπ' αὐτοῦ παθολογικὰ ἀποτελέσματα. Ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης αἱ ἔρευναι τῶν G. Sardou καὶ M. Faure (1923) ἀπεδείχθησαν αἱ μᾶλλον ἐνδιαφέρουσαι. Οὗτοι παρετήρησαν, ὅτι εἰς ὡρισμένας στιγμὰς πολλοὶ (50 %) τῶν ἀρρώστων αὐτῶν, τῶν χρονίως πασχόντων (καρδιονεφρικῶν, ἡπατικῶν, ἀρθριτικῶν, φυματικῶν, νευροπαθῶν κλπ.), ἐνεφάνιζον παρόξυνσιν καὶ ἐπιβάρυνσιν τῆς καταστάσεώς των, ἀσχέτως πρὸς πᾶσαν βαρομετρικήν, θερμομετρικήν, ὑγρομετρικὴν κλπ. μεταβολήν, καθόσον αἱ ἐκδηλώσεις αὗται ἐνεφανίζοντο ἄλλοτε μὲν πρὸ τῶν μετεωρολογικῶν μεταβολῶν, ἄλλοτε δὲ κατ' αὐτὰς καὶ ἄλλοτε μετ' αὐτάς. Τὴν ἐξήγησιν τῶν φαινομένων οἱ ἐρευνηταὶ οὗτοι ἀπέδωκαν εἰς τὰς μαγνητικὰς καταιγίδας, τὰς ὀφειλομένας εἰς τὴν δίοδον μεγάλων κηλίδων διὰ τοῦ κεντρικοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ ἡλίου. Κατὰ δὲ τὸν Lakhovsky, τὸν μελετήσαντα τὴν ἐπὶ τῶν ἀρρώστων ἐπίδρασιν τῶν κοσμικῶν ἀκτίνων, ἵνα ἡ ζωὴ εἶναι δυνατή, δέον νὰ ὑφίσταται δυναμικὴ ἰσορροπία μεταξὺ τῆς συλλαμβανομένης καὶ τῆς ἀποδιδομένης ἐνεργείας, δεδομένου, ὅτι καὶ ἡ ζῶσα ὕπαρξις ἐκπέμπει μέρος τῶν ἀκτινοβολιῶν, ἃς δέχεται. Ἡ διαταραχὴ τῆς ἰσορροπίας ἐπιφέρει τὴν νόσον καὶ τὸν θάνατον. Ὁ καρκίνος θὰ ἠδύνατο νὰ θεωρηθῇ ὡς παράδειγμα τῆς τοιαύτης διαταραχῆς τῆς ἰσορροπίας, ἐξ ἧς ὁ ἐπιθηλιακὸς ἱστὸς ἐπαναστατεῖ. Ἀκτινοβολίαι τινὲς ἐκ τοῦ διαστήματος εἶναι τόσον διαπεραστικαί, ὥστε μόλις πλὰξ μολύβδου πάχους 4 μέτρων ἢ θαλάσσιον ὕδωρ 50 μέτρων βάθους θὰ ἠδύναντο νὰ τὰς συγκρατήσουν. Αἱ ἀκτινοβολίαι αὗται δὲν εἶναι βλαβεραὶ ἢ κινδυνώδεις διὰ τοὺς ὀργανισμούς, ὅταν ἀπορροφοῦνται ὑπὸ τοῦ ἐδάφους (ἐδάφους ἀμμώδους, γύψου κλπ.), ἀποβαίνουν δὲ βλαβεραί, ὅταν ἀντανακλῶνται (ἔδαφος ἀργιλλῶδες κλπ.). Εἰς ἐδάφη ἑλώδη ἢ ὑγρὰ παρετηρήθη αὔξησις κρουσμάτων καρκίνου. Πάντως δὲν δύναται νὰ θεωρηθῇ ἀπολύτως ἀκριβὴς ἡ θεωρία τοῦ Lakhovsky. Μᾶλλον ἀξιοπαρατήρητοι εἶναι αἱ ἔρευναι τοῦ Woringer τοῦ Στρασβούργου, ὅστις παρετήρησεν ὅτι κατὰ τὴν ἄνοιξιν καὶ τὸ φθινόπωρον παθογόνα τινὰ μικρόβια ἀποκτοῦν μείζονα τοξικότητα. Τὸ τοιοῦτον ἀπέδωκεν οὗτος εἰς τὴν ἐλάττωσιν τῆς ἀντιστάσεως τοῦ ὀργανισμοῦ ἐκ τῶν μετεωρολογικῶν καὶ κοσμικῶν ἐπιδράσεων.

Σ. Γ. ΣΠΕΡΑΝΤΣΑΣ

**μετέωρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ εὑρισκόμενος εἰς τὸ διάστημα, ὁ οὐδαμοῦ στηριζόμενος, ὁ αἰωρούμενος· || μεταφ., ὁ μὴ εὑρισκόμενος ἐν σταθερᾷ τινι καταστάσει, ὁ ταλαντευόμενος, ἐκκρεμής, ὁ οἱονεὶ ἐν ἀναμονῇ εὑρισκόμενος: «εἶμαι ἀκόμη μετέωρος, διότι δὲν κατώρθωσα νὰ λάβω σαφῆ ἀπάντησιν» || ἀναποφάσιστος: «μένει μετέωρος τόσον καιρὸν καὶ δὲν λαμβάνει μίαν ἀπόφασιν» || *μετέωρον* (τό)· ὡ σουσ. (βλ. λ.).

**μετεωροσκοπεῖον** (τό)· ὁ τόπος ἢ τὸ ἵδρυμα, ὁπόθεν ἐξετάζονται τὰ μετέωρα διὰ καταλλήλων ὀργάνων.

— *[Μετεωρολ.] Μετεωροσκοπεῖα* καλοῦνται συνήθως οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ α' τάξεως, εἰς τοὺς ὁποίους λειτουργοῦσι διάφορα μετεωρολογικὰ ὄργανα καὶ ἰδίᾳ σειρὰ αὐτογραφικῶν τοιούτων. Ὑπὸ τῶν μετεωροσκοπείων συντάσσονται οἱ χάρται τοῦ καιροῦ, ἐκδίδεται ἡ πρόγνωσις αὐτοῦ, δημοσιεύονται τὰ διάφορα μετεωρολογικὰ δελτία, ἡμερήσια καὶ μηνιαῖα, ὡς ἐπίσης καὶ τὰ χρονικὰ (annales) καὶ ἐν γένει διευθύνονται ἐπιστημονικῶς καὶ διοικητικῶς οἱ μετεωρολογικοὶ σταθμοὶ τῆς χώρας. Παρ' ἡμῖν λειτουργεῖ μετεωροσκοπεῖον ἐντὸς τοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν, ἀποτελοῦν τμῆμα τῆς μετεωρολογικῆς ὑπηρεσίας αὐτοῦ. Θ. Θ. Φ.

**μετεωροσκόπησις,** *—εως* (ἡ)· τὸ μετεωροσκοπεῖν, ἡ παρατήρησις, ἡ ἐξέτασις τῶν μετεώρων.

**μετεωροσκοπία** (ἡ)· ἡ τέχνη, ἡ ἐπιστήμη τοῦ μετεωροσκοπεῖν, ἡ μετεωροσκοπική.

**μετεωροσκοπικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετεωροσκοπίαν: «μετεωροσκοπικαὶ παρατηρήσεις».

**μετεωροσκόπιον** (τό). Μετεωροσκόπιον ἀποτελοῦν τὰ ἐπὶ διαφόρων πινάκων προσηρμοσμένα ἁπλᾶ ἢ σύνθετα μετεωρολογικὰ ὄργανα, δι' ὧν λαμβάνομεν γνῶσιν χονδροειδῶς τῶν τιμῶν μερικῶν ἐκ τῶν μετεωρολογικῶν στοιχείων, ὅπως π. χ. τῆς θερμοκρασίας, τῆς ὑγρασίας καὶ τῆς πιέσεως, ἢ καὶ προγιγνώσκομεν τὸν καιρὸν ἐν τῷ τόπῳ τῆς παρατηρήσεως. Τὰ μετεωροσκόπια τίθενται ἐν ὑπαίθρῳ ἐντὸς κήπων, λέγονται δὲ καὶ *καιροσκόπια* (Wetterwarte) ἢ *καιρικοὶ τηλέγραφοι* (Wettertelegraph). Συνήθως τὰ μετεωροσκόπια ἔχουν προσηρμοσμένον θερμόμετρον διὰ τὰς θερμοκρασίας

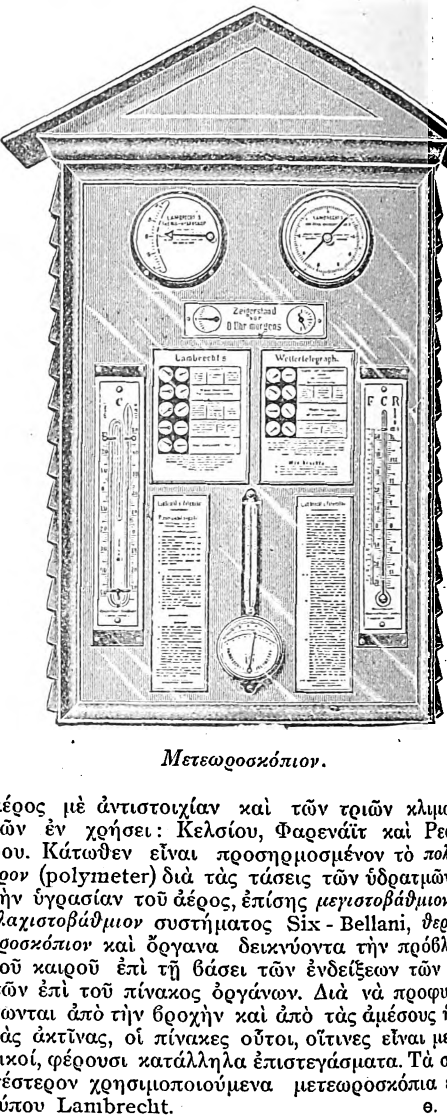

*Μετεωροσκόπιον.*

ἀέρος μὲ ἀντιστοιχίαν καὶ τῶν τριῶν κλιμάκων τῶν ἐν χρήσει: Κελσίου, Φαρενάιτ καὶ Ρεωμύρου. Κάτωθεν εἶναι προσηρμοσμένον τὸ *πολύμετρον* (polymeter) διὰ τὰς τάσεις τῶν ὑδρατμῶν καὶ τὴν ὑγρασίαν τοῦ ἀέρος, ἐπίσης *μεγιστοβάθμιον* καὶ *ἐλαχιστοβάθμιον* συστήματος Six - Bellani, *θερμοϋγροσκόπιον* καὶ ὄργανα δεικνύοντα τὴν πρόβλεψιν τοῦ καιροῦ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἐνδείξεων τῶν λοιπῶν ἐπὶ τοῦ πίνακος ὀργάνων. Διὰ νὰ προφυλάσσωνται ἀπὸ τὴν βροχὴν καὶ ἀπὸ τὰς ἀμέσους ἡλιακὰς ἀκτῖνας, οἱ πίνακες οὗτοι, οἵτινες εἶναι μεταλλικοί, φέρουσι κατάλληλα ἐπιστεγάσματα. Τὰ συνηθέστερον χρησιμοποιούμενα μετεωροσκόπια εἶναι τύπου Lambrecht. Θ. Θ. Φ.

**μετεωροσκόπος** (ὁ, ἡ)· ὁ παρατηρῶν, ὁ ἐξετάζων τὰ μετέωρα.

**Μὲτζ** (Metz) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μέτς*.

**μετζαβόλτα** (ἡ)· δημωδ. ναυτ., ὁ ἡμίδεσμος· || τὸ ἡμιστρόφιον· || ἡ ἐμπλοκὴ τῶν ἀγκυραίων ἁλύσεων ἀποσαλεύοντος πλοίου καθ' ἡμίσειαν στροφήν.

**μετζαλοῦνα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ἡ κατὰ τοὺς ὠκεανοπόρους μας τῆς ἱστιοφόρου ναυτιλίας ὀνομασία τοῦ ὑψηλοτέρου ἱστίου τοῦ μεγάλου ἱστοῦ καὶ τοῦ πλοίου (γαλλ. mi-lune, ἀγγλ. half-moon). Ἐξεπετανύετο εἰς τοὺς ὑπερδρόμωνας μόνον ἐπὶ τοῦ μεγάλου ἱστοῦ καὶ ὑπεράνω τοῦ μεγάλου ἐπισιταρίου, εἰς οὗ τὴν κεραίαν καὶ ἐποδοῦτο. Εἰς τοὺς συγχρόνους ὑπερδρόμωνας ἔχει τοῦτο καταργηθῆ. Ἀντίστοιχος ἐπίσημος ὀνομασία δὲν τῷ εἶχε δοθῆ. Σ. Ε. Λ.

**Μετζαλοῦνα** (Mezzaluna) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Ἰταλίας ἐπὶ τοῦ Ἀδριατικοῦ παρὰ τὸν Ἀγκῶνα (πλάτ. 43° 33' Β., μῆκ. 13° 37' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 200: Ortona to river Pô), ἀκρώρεια τοῦ ὄρους Κονέρο (Conero). Σ. Ε. Λ.

**μετζάνα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἱστοῦ τοῦ *ἐπιδρόμου* (βλ. λ.).

**Μετζανόττι** (Mezzanotti), ***Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς ἰατρὸς καὶ φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Περουγίᾳ τῆς Ἰταλίας τῷ 1783. Παρῄτησε τὴν ἐπιστήμην του ἐκ ζήλου πρὸς τὰ γράμματα καὶ ἐπεδόθη εἰς μελέτας τῆς ἑλληνικῆς, λατινικῆς καὶ ἰταλικῆς φιλολογίας, διορισθείς, τῷ 1807, καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρητορικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς πατρίδος του. Ἠρέσκετο εἰς τὴν μουσικὴν καὶ ἀπέλαυε πολλῆς ὑπολήψεως διαφόρων παπῶν καὶ σοφῶν. Ἔγραψε πρωτότυπα ἔργα, ἔμμετρα καὶ πεζά, καὶ ἐφιλοτέχνησε πολλὰς μεταφράσεις, ἐν αἷς τὰς «Ὠδὰς» τοῦ Πινδάρου καὶ ἄλλων Ἑλλήνων κλασσικῶν, τῷ δὲ 1832 ἐδημοσίευσεν ἐν Πίζῃ «Fasti della Grecia nel XIX secolo», λυρικὸν ᾆσμα, τὸ

Digitized by Google

ὁποῖον ἀφιέρωσεν εἰς τὸν βασιλέα τῆς Ἑλλάδος Ὄθωνα. Διεκρίθη ὡς εἰς ἄκρον φιλέλλην. Λ.Χ.Ζ.

**μετζαρόλι** (τὸ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἡμιώριον*.

**μετζελλὲς** (ὁ) (τουρκ.) *[Νομ.]*. Συλλογὴ νομικῶν διατάξεων, τῶν ὁποίων τὸ σύνολον ἀποτελεῖ τὸν παλαιὸν τουρκικὸν ἀστικὸν κώδικα.

Ὁ μετζελλὲς ἐκωδικοποιήθη χάρις εἰς τὰς ἐργασίας ἐπιτροπῆς Τούρκων νομομαθῶν ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ Ἀχμὲτ Δζεβδὲτ πασᾶ, ὑπουργοῦ τῆς Δικαιοσύνης. Ὁ κῶδιξ οὗτος (1869) διαιρεῖται (ἐκτὸς τοῦ προοιμίου, περιέχοντος γενικάς τινας διατάξεις) εἰς 16 βιβλία καὶ ἀριθμεῖ 1851 ἄρθρα ἐν συνόλῳ. Τὸ κείμενον αὐτοῦ ἐδημοσιεύθη εἰς ἑλληνικὴν μετάφρασιν ἐν τῷ πρώτῳ τόμῳ τῶν «Ὀθωμανικῶν κωδίκων» τοῦ Δ. Νικολαΐδου, εἰς γαλλικὴν δὲ μετάφρασιν ὡς παράρτημα εἰς τὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Législation Ottomane» συλλογὴν τοῦ Ἕλληνος Ἀριστάρχη βέη (1881) καὶ κατόπιν ἐν τῇ συλλογῇ τοῦ Ἄγγλου George Young «Corps de droit Ottoman» (τόμ. ΣΤ', σ. 169—446).

Σήμερον ὁ *μετζελλὲς* περιέπεσεν εἰς ἀχρηστίαν, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ νέου τουρκικοῦ ἀστικοῦ κώδικος, ὅστις εἶναι μετάφρασις τοῦ ἑλβετικοῦ. Ν.Μ.

**Μετζενζὲ** (Metzinger), ***Λέων-Φρειδερῖκος-Ροβέρτος.*** Γάλλος στρατιωτικός, προερχόμενος ἐκ τῆς σχολῆς τοῦ Σαὶν-Σὺρ (1842—1914). Μετέσχε τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου (1870), διαφυγὼν δὲ τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ Σεντάν, ἔλαβε μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τῶν Παρισίων καὶ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Κομμούνας. Ἀκολούθως διεκρίθη εἰς διαφόρους, ἀνὰ τὰς γαλλικὰς ἀποικίας, ἐκστρατείας καὶ μάλιστα ἐν Ἄπω Ἀνατολῇ, Μαδαγασκάρῃ, Ἀλγερίᾳ κλπ. Τῷ 1891 προήχθη εἰς στρατηγόν, τῷ δὲ 1902 ἐγένετο μέλος τοῦ ἀνωτάτου πολεμικοῦ συμβουλίου. Ἐδημοσίευσεν εἰς τὴν «Ἠχὼ τῶν Παρισίων» πλείστας μελέτας. Χ. Δ.

**Μετζέρντα** (Medjerda ἢ Mejerda) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Τύνιδος, ὁ ἀρχαῖος *Βαγράδας* (βλ.λ.).

**μετζερώρα** (ἡ) (ἰδιωματ. ἐκ τοῦ ἰταλ. mezza ora =ἡμιώριον)· λέξις ἀπαντῶσα ἐν Μάνῃ εἰς τὴν γητευτικὴν φράσιν: «ἕνα γιάτι ὥρα (ἓν σημεῖον τῆς ὥρας, ἓν λεπτὸν) μήτε τρίτη μετζερώρα» καὶ σημαίνουσα ἐν τῇ φράσει ταύτῃ ἓν λεπτόν, οὔτε μίαν στιγμήν, ἀμέσως. Γ. Δ. Μ.

**μετζιντιὲ** (τό)· τουρκικὸν νόμισμα( βλ. *μετζίτι*).

—**Μετζιντιέ.** Παράσημον τουρκικόν, ἱδρυθὲν ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ-Μετζὶτ καὶ διατηρηθὲν μέχρι τοῦ 1923, ἤτοι μέχρι τῆς καταργήσεως τοῦ σουλτανάτου. Εἶχε πέντε τάξεις, ὧν ἡ ἀνωτέρα εἶχε μεγάλην ταινίαν χρώματος ἐρυθροῦ μετὰ πρασίνων παρυφῶν. Ἡ πλὰξ εἶχε σχῆμα ἀστέρος μὲ ἓξ συμπλέγματα ἀκτίνων, ἐν τῷ μέσῳ τῶν ὁποίων ὑπῆρχε τὸ σουλτανικὸν μονόγραμμα (τουγρᾶς) μὲ τὸ ὄνομα Μετζίτ. Ν. Μ.

—**«Μετζιντιέ».** Τουρκικὸν εὔδρομον, ναυπηγηθὲν ἐν Γενούῃ ὑπὸ τοῦ Ansaldo (1903), ἐκτοπίσματος 3830 τόννων, μήκους 140 μ., πλάτους 14,5 καὶ βυθίσματος 17 ποδῶν. Δύο μηχαναὶ τριπλῆς ἐκτονώσεως, 16 λέβητες Niclausse, 12.500 ἵπποι ἐνδεικτικοί, ταχύτης 22 μιλλ. Πυροβολικόν: 2 τῶν 150 χιλιοστῶν, 8 τῶν 120, 6 τῶν 47, 2 τορπιλλοβλητικοὶ σωλῆνες τῶν 45. Θωρηκτὸν κατάστρωμα 100 χιλιοστῶν. Τὴν 8 Ὀκτωβρίου 1912 συμμετέσχε τῶν κατὰ τῶν βουλγαρικῶν παραλίων τοῦ Εὐξείνου πόντου ἐπιχειρήσεων, κατὰ δὲ τὴν ναυμαχίαν τῆς Ἕλλης ἡγεῖτο τῶν τουρκικῶν τορπιλλικῶν. Τὴν 9 Δεκεμβρίου 1912 μετὰ τοῦ «Μπὲρτ Σατβὲτ» καὶ τεσσάρων ἀντιτορπιλλικῶν περιήγαγε παρὰ τὴν Τένεδον τὸ ἑλληνικὸν ἀντιτορπιλλικὸν «Ἀσπὶς» εἰς δυσχερῆ πως θέσιν, ἀπὸ τὴν ὁποίαν ἀπηλλάγη διὰ τολμηροῦ ὅσον καὶ ἐπικινδύνου χειρισμοῦ τοῦ κυβερνήτου της, ἐνῷ τὸ «Μετζιντιὲ» παραπλέον τὰ Μαυρειὰ ὅπως εἰσπλεύσῃ ἐτορπιλλίσθη, ἀνεπιτυχῶς ὅμως, ὑπὸ τοῦ ἐκεῖ ἐλλοχεύοντος ἐν καταδύσει «Δελφῖνος». Τὴν παραμονὴν τῆς ναυμαχίας τῆς Λήμνου διεδρόμησε καθ' ὅλην σχεδὸν τὴν νύκτα ἀπὸ Κοὺμ Καλὲ ἕως Μαυρειά, ἐπέβαινε δὲ αὐτοῦ ὁ ἀρχηγὸς τοῦ τουρκικοῦ στόλου Ταχὴρ, ἐξελθὼν τῶν Στενῶν ὅπως ἀναγνωρίσῃ αὐτοπροσώπως τὰς κινήσεις τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου, πράγματι δὲ μόλις ἐπανεισέπλευσε τὸ «Μετζιντιὲ» διέταξεν οὗτος τοῦ στόλου του τὸν ἔκπλουν. Σ. Ε. Λ.

**Μετζιντιὲ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Δοβρουτσᾷ, εἰς ἀπόστασιν 33 χλμ. ΒΔ. τῆς Κωνστάντζας. Ἱδρύθη μετὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον (1854—1856) ὑπὸ Τατάρων προσφύγων ἐκ Κριμαίας. Εἶχε κατ' ἀρχὰς ἱκανὸν πληθυσμόν, ἀνελθόντα μετὰ τὴν κατασκευὴν τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς εἰς 25.000. Κατόπιν ὅμως ὁ ἀριθμὸς τῶν κατοίκων κατῆλθε, συνεπείᾳ τῆς ἑλονοσίας, μέχρι 3.000. Μετὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1877 ἡ πόλις προσηρτήθη εἰς τὴν Ρουμανίαν. Ν. Μ.

— **Μετζιντιὲ** *[Γεωγρ.]*. Ὑποδιοίκησις τῆς Τουρκίας, ὑπαγομένη εἰς τὸν σημερινὸν νομὸν Κὶρ-Σεχίρ. Κάτ. 20.114. Ἔχει πλουσίας βοσκὰς καὶ τρέφει πρόβατα, αἶγας (τιφτίκι) καὶ καμήλους. Ν. Μ.

**μετζίτι** (τό), ἢ *μετζιντιέ.* Νόμισμα τουρκικὸν κοπὲν ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ Μετζὶτ (1839—1861). Τὸ ἀργυροῦν μετζίτι ἰσοῦτο πρὸς 20 γρόσια (φρ. χρ. 4.45). Ἤδη κυκλοφοροῦσι χάρτινα τοιαῦτα. Ἡ εἰς τὸ ἄρτιον θεωρητικὴ ἰσοτιμία εἶναι: 1 μετζίτι=67,75 δραχμαί.

Μετζίτι ἐκαλεῖτο ἐπίσης καὶ ἡ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ σουλτάνου κυκλοφορήσασα χρυσῆ τουρκικὴ λίρα (*μετζιντιὲ-ἀλτινί*). Τ. Κ.

**Μετζιτιὲ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Κεφαλόβρυσον* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Πωγωνίου.

**Μετζὶτ-Μαχαλᾶ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιοτέρα ὀνομασία τοῦ συνοικισμοῦ *Διχάλα* (βλ. λ.). τῆς ἐπαρχίας Κομοτηνῆς.

**Μετζὶτ-Ὀζοῦ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Τσορούμ, 45 χλμ. ΝΔ. τῆς Ἀμασείας. Κάτ. 2185. Ἄλλοτε εἶχε καὶ 400 Ἕλληνας, προσφυγόντας συνεπείᾳ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν εἰς Ἑλλάδα, καὶ 800 Ἀρμενίους, σφαγέντας ἢ ἐξαφανισθέντας.

Ἡ ὁμώνυμος ὑποδιοίκησις ἔχει 36.752 κατοίκους. Ἄλλοτε εἶχε καὶ 920 Ἕλληνας καὶ 2.570 Ἀρμενίους. Ν. Μ.

**μέτζο**· δημοτ. ἐπίρρ. μόνον εἰς τὴν φρ. «μέτζο τράγειο - μέτζο πρόβειο» προκειμένου περὶ χαρακτηριστικοῦ πράγματος μετρίου· π. χ. «τί ἄνθρωπος εἶναι ὁ τάδε;—μέτζο τράγειο - μέτζο πρόβειο», ἄλλως «οὔτε κλαίει, οὔτε γελάει» ἢ «ἔτσι κι' ἔτσι» (ἐκ τοῦ ἰταλ. mezzo=ἥμισυ).

**Μέτζο** *[ Γεωγρ. ]*. Ἀκρωτήριον τῆς Ἑρμιονίδος θαλάσσης (πλάτ. 37° 12' 40'' Β., μῆκ. 23° 11' 05'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spezzia and Dhokos island), ἢ ΝΑ. τῆς νήσου Σπετσοπούλα ἐσχατιά. Σ. Ε. Λ.

— **Μέτζο** (Mezzo channel) *[Γεωγρ.]*. Ἀδριατικὸς δίαυλος (πλάτ. 44° 00' Β., μῆκ. 15° 15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2774: Gulf of Quarnero), σχηματιζόμενος δυτικῶς τῶν νήσων Μορτὲρ καὶ Πασμὰν καὶ ἀνατολικῶς τῶν Γκρόσσα καὶ Ἰνκορρονάτα. Σ. Ε. Λ.

**μετζοκάμαρο** (τὸ) *[ Ναυτ. ]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸ *μεσόξυλον* (βλ.λ.).

**μετζοκάρτο** (τό)· τὸ *ἡμιρρόμβιον* (βλ. λ.).

**μετζοσοπράνο** *[ Μουσ. ]*· βλ. *μεσόφωνος*.

**μετζοτονελάδα** (τὸ) *[ Ναυτ. ]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τὸ *ἡμικόριον* (βλ. λ.).

**Μὲτζ - οὺτ - ντοβλέ.** Ὄγδοος ἡγεμὼν τῆς ἐν τμήματι τῆς Περσίας κατὰ τὸν Ι' καὶ ΙΑ' μ. Χ. αἰῶνα ἡγεμονευσάσης δυναστείας τῶν Βουϊδῶν (Ἄλι - Μπουγέ). Περιπλακεὶς εἰς πολέμους ἡττήθη καὶ συνελήφθη αἰχμάλωτος ὑπὸ τοῦ Γαζνεβίδου σουλτάνου Μαχμοὺτ παρὰ τὴν πόλιν Ράϊ τοῦ Χορασσὰν τῷ 1030. Ὁ διάσημος Ἄραψ ἰατροφιλόσοφος Ἀβικέννας ὑπῆρξεν ὑπουργὸς τοῦ Μὲτζ - οὺτ - ντοβλέ. Ν. Μ.

**Μετζοφάντι** (Mezzofanti), ***Ἰωσήφ.*** Περίφημος Ἰταλὸς πολύγλωσσος καὶ καρδινάλιος (1771—1849). Εἰσῆλθεν εἰς τὴν ἱερατικὴν σχολὴν εἰς ἡλικίαν ἑπτὰ ἐτῶν καὶ ἔδειξεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ἐκπληκτικὴν εὐκολίαν εἰς τὴν ἐκμάθησιν τῶν ξένων γλωσσῶν. Τῷ 1794 ἐχειροτονήθη ἱερεὺς καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀραβικῆς γλώσσης, Τῷ 1804 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς καὶ τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς γενετείρας του πόλεως Βολωνίας. Τῷ 1830 ἀπεστάλη πρὸς τὸν πάπαν, ὅπως προσφέρῃ τὴν ὑποταγὴν τῆς Βολωνίας μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἐκεῖ ἐκραγείσης ἐπαναστάσεως. Ὁ πάπας Γρηγόριος ΙΣΤ', θαυμάσας τὴν πολυγλωσσίαν καὶ τὴν πολυμάθειάν του, ἐκράτησεν αὐτὸν εἰς Ρώμην, ὅπου τὸν διώρισε βιβλιοθηκάριον τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Βατικανοῦ. Τῷ 1838 ὠνόμασεν αὐτὸν καρδινάλιον. Εἶχεν ἀποκτήσει πανευρωπαϊκὴν φήμην καὶ ὡμίλει τελείως 29 γλώσσας, δυνάμενος νὰ κατανοῇ ἑτέρας 60. Ἡ εὐχέρεια τῆς πολυγλωσσίας του ὀφείλεται εἰς τὴν ἰσχυροτάτην μνήμην, δι' ἧς ἦτο προικισμένος καὶ εἰς τὴν ἰδιαιτέραν διάπλασιν τῶν φωνητικῶν του ὀργάνων, δι' ὧν κατώρθωνε νὰ ἀρθρώνῃ τοὺς πλέον διαφόρους φθόγγους. Ἦτο ἐπίσης προικισμένος δι' ἐξαιρετικῶν αἰσθημάτων φιλανθρωπίας, ἕνεκα τῶν ὁποίων εἶχεν ἀποκληθῇ un santo vivente (= ζωντανὸς ἅγιος). Παρὰ τὴν πολυγλωσσίαν καὶ πολυμάθειάν του, οὐδὲν ἐπιστημονικὸν ἔργον ἔγραψε, τὰ δὲ μόνα γνωστά του ἔργα εἶναι: «Ἐγκώμιον τοῦ καθηγητοῦ Μανουὲλ Ντὰ Πόντε» (1819), Ἱσπανοῦ ἰησουΐτου διδασκάλου του, καὶ ἕτερον «Ἐγκώμιον τοῦ Ταμπρόνι». Μ. Δ. Β.

**Μὲτζτ-ὲτ-Ντὶν** ***Μπουρί.*** Νεώτερος ἀδελφὸς καὶ συμπολεμιστὴς τοῦ Σαλαδδίνου. Ἐπληγώθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Χαλεπίου καὶ ἀπέθανε μετὰ ἓν ἔτος (1161). Ν. Μ.

**μετημφιεσμένος,** *—η, —ον*· παθ. μετχ. τοῦ *μεταμφιέζω (μεταμφιέννυμι)*, μεταβεβλημένος, μεταμορφωμένος διὰ τῆς ἀμφιέσεως: «μετημφιεσμένος εἰς ἱερέα, — εἰς ἀξιωματικόν»· || ἄλλως *μασκαρεμένος* (τὶς ἀποκριές): «χορὸς μετημφιεσμένων».

**Μέτιζος** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Μακεδονίας, τὸ ὁποῖον ἀνεκαίνισεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μέτιος** (Metius), ***Ἀδριανός.*** Ὁλλανδὸς σοφὸς (1571—1635). Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν ἐν ἀρχῇ καὶ τὴν ἰατρικὴν κατόπιν, ἀλλ' ἐγκατέλειψεν ἀμφοτέρας τὰς ἐπιστήμας ταύτας, διὰ ν' ἀκολουθήσῃ μαθήματα ἀστρονομίας καὶ μαθηματικῶν πλησίον τοῦ μεγάλου Τύχωνος Μπράχε, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξε μετέπειτα πολύτιμος συνεργάτης. Ἀπὸ τοῦ 1598 μέχρι τοῦ θανάτου του κατεῖχε τὴν ἕδραν τῶν μαθηματικῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Franeker, ἐπεδόθη δὲ ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀστρονομίαν, εἰς τὴν ὁποίαν καὶ ἀναφέρονται τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του: «Universae astronomiae institutio» (Franeker, 1865), «Problemata astronomica» (Λούγδουνον 1625), «Calendarium perpetuum» (Ρόττερνταμ 1627), περιληφθέντα κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὸ βραδύτερον ἐκδοθὲν ὑπ' αὐτοῦ σύγγραμμα «Opera astronomica» («Ἄμστερνταμ, 1633). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης «Praxis nova geometrica»(Franeker, 1623) κ.ἄ. —Ω.

— **Μέτιος** (Metius), ***Ἰάκωβος.*** Ὁλλανδὸς ὀπτικός, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, ἀποθανὼν μεταξὺ τοῦ 1624 καὶ 1631. Περὶ αὐτοῦ λέγεται ὅτι ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος ἐπινοήσας ἀστρονομικὴν διόπτραν, ἀνάλογον πρὸς τὸ βραδύτερον ἐφευρεθὲν τηλεσκόπιον. Ἐπὶ τῆς ἀνακαλύψεώς του ταύτης οὐδὲν ἠθέλησε ν' ἀνακοινώσῃ ὁ Μέτιος, φαίνεται ὅμως ὅτι ἐκ τῶν περὶ αὐτὴν γενομένων συζητήσεων ἐνεπνεύσθη ὁ Γαλιλαῖος τὴν κατασκευὴν τοῦ ἰδικοῦ του τηλεσκοπίου. —Ω.

— **Μέτιος** ***Σουφφέτιος*** (Metius Suffetius). Δικτάτωρ τῆς Ἄλβας κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Τύλλου Ὀστιλίου, τρίτου βασιλέως τῆς Ρώμης, ἀποθανόντος τῷ 663 π. Χ. Εἶχε πολεμήσει ἐναντίον τῶν Ρωμαίων, ἐγένετο ὅμως κατόπιν σύμμαχος αὐτῶν, μετὰ τὰς μάχας τῶν Ὁρατίων καὶ Κουριατίων. Βραδύτερον τοὺς ἐπρόδωκε, δι' ὃ καὶ ὁ Τύλλος, ἐκδικούμενος, διέταξε νὰ θανατωθῇ μὲν ὁ Μέτιος κατὰ τρόπον ἄγριον, ἡ δὲ χώρα του νὰ καταστραφῇ ὁλόκληρος ἀπ' ἄκρου εἰς ἄκρον. —Ω.

**Μέτκαφ** (Metcalf), ***Γουΐλλαρτ-Λερόϋ.*** Ἀμερικανὸς καλλιτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1878. Ἐσπούδασεν ἐν Βοστώνῃ καὶ Παρισίοις καὶ διεκρίθη εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοπίων. Μ. Ι. Θ.

— **Μέτκαφ** (Metcalfe), ***Κάρολος - Θεόφιλος.*** Ἄγγλος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Καλκούτᾳ τῶν Ἰνδιῶν τῷ 1785. Ἐκπαιδευθεὶς ἐν Ἀγγλίᾳ εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Ἦτον, διωρίσθη εἰς ἡλικίαν 19 ἐτῶν πολιτικὸς σύμβουλος τοῦ στρατηγοῦ Λέϊκ καὶ κατόπιν εἰς διαφόρους ἄλλας ὑπηρεσίας, τῷ δὲ 1835 ἐγένετο γενικὸς διοικητὴς τῶν Ἰνδιῶν. Τῷ 1839 διωρίσθη διοικητὴς τῆς Ζαμάϊκας καὶ τῷ 1842 γενικὸς διοικητὴς τοῦ Καναδᾶ. Ἀπέθανε τῷ 1846. Μ. Ι. Θ.

**μετοικεσία** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μετοικεῖν, τὸ νὰ μεταβαίνῃ τις ὡς μέτοικος εἰς ἄλλον τόπον, μετανάστευσις· || «μετοικεσία Βαβυλῶνος» ὁ μετοικισμὸς τῶν Ἰουδαίων εἰς Βαβυλῶνα ὡς αἰχμαλωσία· || μεταφ., ἡ ὁμαδικὴ μετοίκησις ἢ ἔξοδος.

**μετοίκησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μετοικεῖν, ἡ μετάβασις εἰς ἄλλον τόπον πρὸς κατοίκησιν, μετοικισμός.

**μετοικίζω**· κάμνω τινὰ νὰ ἀλλάξῃ κατοικίαν, ἐγκαθιστῶ τινα εἰς ἄλλον τόπον, μεταφέρω κατοίκους ἀπὸ τοῦ ἑνὸς τόπου εἰς ἄλλον.

**μετοίκιον** (τὸ) *[ 'Αρχ.]*. Οὕτως ἐκαλεῖτο ὁ εἰδικὸς φόρος, τὸν ὁποῖον ἐπλήρωνον ἐν Ἀττικῇ οἱ *μέτοικοι* (βλ.λ.). Ὁ φόρος οὗτος ἐπεῖχε θέσιν ἐτησίου κεφαλικοῦ φόρου, καὶ συνεποσοῦτο εἰς 12 δραχμὰς διὰ τοὺς ἄνδρας καὶ 6 διὰ τὰς γυναῖκας, τοὺς ἄνευ ἀνδρὸς ἢ ἐνηλίκου υἱοῦ. Τὸ μετοίκιον ἄρα ἦτο ὁ χαρακτηριστικὸς φόρος, διὰ τοῦ ὁποίου διεκρίνοντο οἱ μέτοικοι, καθόσον οἱ γνήσιοι Ἀθηναῖοι πολῖται ἐπλήρωνον μόνον φόρον ἐπὶ τῆς περιουσίας. Τὸ μετοίκοιον δὲν εἰσεπράττετο ἀπ' εὐθείας ὑπὸ τῆς πολιτείας, ὡς ἀπέδειξεν ὁ Thumsers, ἀλλὰ παρὰ τῶν τελωνῶν. Ὁ ἀρνούμενος νὰ πληρώσῃ τὸν κεφαλικὸν τοῦτον φόρον μέτοικος ἔχανε τὴν ἐλευθερίαν του. Πρὸς τοῦτο προσήγετο οὗτος διὰ τῶν τελωνῶν πρὸ τοῦ δικαστηρίου τῶν πολιτῶν καὶ ἐδικάζετο κατὰ τὴν διαδικασίαν τὴν λεγομένην ἀπαγωγήν, ἤτοι ἐπ' αὐτοφώρῳ. Οἱ μὴ ἔχοντες νὰ πληρώσωσι τὸ μετοίκιον μέτοικοι ἐπωλοῦντο ὡς δοῦλοι. Ἐξῃροῦντο τοῦ μετοικίου εὐνοούμενοί τινες μέτοικοι καὶ οἱ ἐκ τῶν ξένων διαμένοντες ἐν Ἀθήναις ἕνεκα ἐμπορικῶν των ἐργασιῶν. Κατά τι διασωθὲν ψήφισμα, τῆς ἀτελείας ταύτης ἔχαιρον καὶ ὅλοι οἱ ἐκ Σιδῶνος ἔμποροι, οἵτινες, ὡς ἐκ τῶν ἐμπορικῶν των ὑποθέσεων, ἐγκαθίσταντο ἐν Ἀθήναις. Β. Δ. Θ.



Digitized by Google

**μέτοικος** (ὁ)· ὁ εἰς ἄλλον τόπον μετοικισθείς, ὁ ἐξ ἑνὸς τόπου εἰς ἄλλον τόπον ἐγκατασταθείς· || ἐν τῇ ἀρχ. Ἑλλάδι *μέτοικοι* ἐκαλοῦντο οἱ ἔν τινι πόλει μονίμως ἐγκατεστημένοι ξένοι.

—*[Ἀρχ.]* Οἱ *μέτοικοι* ἦσαν τάξις τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς κοινωνίας, ἀποτελουμένη ἐκ ξένων διαμενόντων μονίμως ἐν ἑλληνικῇ πόλει. Ἡ διαφορὰ μεταξὺ τῶν μετοίκων καὶ τῶν κυρίως πολιτῶν ἐνέκειτο ἐν τούτῳ: ὅτι οἱ μέτοικοι δὲν εἶχον τὸ δικαίωμα νὰ γίνωσι κάτοχοι ἀκινήτου περιουσίας, ὑπεχρεοῦντο δὲ νὰ ἔχωσι καὶ ὡς προστάτην των πολίτην τινά. Ἡ τάξις τῶν μετοίκων, κατὰ διαβάθμισιν, εὑρίσκετο μεταξὺ τῆς ἀνωτέρας τάξεως τῶν πολιτῶν καὶ τῆς κατωτέρας τοιαύτης, τῶν ἀπελευθέρων. Ὁ χαρακτηριστικὸς φόρος τὸν ὁποῖον ἐπλήρωνον οἱ μέτοικοι ἦτο τὸ λεγόμενον *μετοίκιον* (βλ. λ.). Κατὰ τοὺς ἄλλους φόρους, οἱ μέτοικοι ἐπλήρωνον ὅ,τι καὶ οἱ κυρίως πολῖται, ἀλλὰ κατ' ἀναλογίαν, φαίνεται, πρὸς τὸν βαθμὸν τῆς τάξεώς των. Οὕτω, κατὰ Δημοσθένη, οἱ μέτοικοι ἐπλήρωνον μόνον τὸ 1/6 τοῦ φόρου τῆς εἰσφορᾶς. Ὅσον ἀφορᾷ τὰς στρατιωτικὰς ὑποχρεώσεις, φαίνεται ὅτι ἡ τάξις αὕτη ἦτο ἀποκεκλεισμένη τῆς ἐφηβείας, ἐλάμβανεν οὐχ ἧττον μέρος εἰς τὰ δημόσια γυμνάσια. Ἐν καιρῷ πολέμου οἱ μέτοικοι ὑπηρέτουν τὴν θετὴν πατρίδα ὡς ὁπλῖται, ὁπλιζόμενοι ὅμως δι' ἰδίων ἐξόδων. Ἐκ τῶν διαφόρων ἀρχαίων πηγῶν συμπεραίνεται ὅτι οἱ μέτοικοι τῆς Ἀττικῆς, ὁσάκις ἐλάμβανον μέρος εἰς πόλεμον, ἐσχημάτιζον στρατὸν ἀποκλειστικῶς πρὸς ἄμυναν τῆς Ἀττικῆς χώρας, ὄντες καὶ οὗτοι ἐγγεγραμμένοι, ὅπως καὶ οἱ πολῖται, εἰς τοὺς ληξιαρχικοὺς καταλόγους ἑκάστου δήμου. Εἰς τοὺς μετοίκους ἀπηγορεύετο ὅμως νὰ λαμβάνωσι μέρος εἰς τὸ ἱππικόν, τὸ ὁποῖον ἦτο προνόμιον καὶ οἱονεὶ διακριτικὸν σημεῖον τῆς ἀριστοκρατικῆς τάξεως τῶν Ἀθηναίων εὐπατριδῶν. Τοὐναντίον, οὐδὲν ἐμπόδιον ὑπῆρχε διὰ τὴν στρατολογίαν τῶν μετοίκων εἰς τὸν στόλον. Κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον οἱ μέτοικοι ναῦται διεδραμάτισαν σπουδαῖον πρόσωπον. Ἀπέναντι τῶν ὑποχρεώσεων καὶ τῶν ἐκδουλεύσεων τούτων ὁ ἀθηναϊκὸς νόμος ἀνεγνώριζε καὶ ἐπροστάτευε τὴν οἰκογένειαν καὶ τὴν περιουσίαν τῶν μετοίκων ὡς τὴν τῶν πολιτῶν. Αἱ δίκαι τῶν μετοίκων αἱ σχετικαὶ μὲ τὴν γραφὴν τοῦ ἀποστασίου διεξήγοντο εἰδικῶς πρὸ τοῦ πολεμάρχου· αἱ ἐμπορικῆς ὅμως ὑποθέσεως δίκαι καὶ τὰ κακουργήματα ἐδικάζοντο πρὸ τῶν ἀρχόντων, ὡς ἐγίνετο καὶ μὲ τοὺς πολίτας. Εἰς τοὺς μετοίκους, ἐὰν δὲν ἦσαν ἑλληνικῆς καταγωγῆς, ἐξησφαλίζετο ἐπίσης καὶ ἡ ἐλευθέρα ἐκπλήρωσις τῶν θρησκευτικῶν των καθηκόντων, ἐπιτρεπομένης ἀνεγέρσεως ἑτεροδόξου ναοῦ. Πλεῖστοι τοιοῦτοι ναοὶ ἑτεροδόξων μετοίκων ἐξ Αἰγύπτου, Συρίας καὶ Μικρασίας ὑπῆρχον καὶ ἐν Ἀθήναις καὶ ἐν Πειραιεῖ. Ἐννοεῖται ὅτι τὸ ἑτερόδοξον τῶν μετοίκων δὲν συνεπήγετο ἀποκλεισμὸν αὐτῶν ἐκ τῶν διαφόρων ἑλληνικῶν ἑορτῶν. Οἱ μέτοικοι ἐλάμβανον ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς ἑλληνικὰς ἑορτάς, οὐχὶ ὅμως καὶ εἰς τὰς θυσίας αὐτῶν. Παρὰ τὰ δικαιώματα ταῦτα οἱ μέτοικοι ἀπεκλείοντο βεβαίως τοῦ δικαιώματος νὰ λαμβάνωσι πολιτικὴν ἐξουσίαν, ἢ ὁπωσδήποτε δημοσίαν θέσιν. Ἐλάμβανον ὅμως προνομιακῶς τὸ δικαίωμα νὰ γίνωνται διαιτηταί, δημόσιοι ἰατροί, ἀκόμη δὲ καὶ κήρυκες τῶν συνελεύσεων καὶ τοῦ λαοῦ. Εἰς τοὺς μετοίκους τοὺς ἐξαιρετικῶς δράσαντας ὑπὲρ τῆς πόλεως ἀπενέμοντο πολλάκις αἱ τιμητικαὶ διακρίσεις νὰ ἔχωσι τὸ δικαίωμα τῆς ἀποκτήσεως ἀκινήτου περιουσίας, γῆν καὶ οἰκίαν καὶ νὰ χαίρωσιν ἀτελείας, μερικῆς ἢ ὁλικῆς, τῶν φόρων, οἵτινες ἐβάρυνον τοὺς μετοίκους. Ἡ ὑπάτη ὅμως τιμὴ ἦτο ἡ ἀναγόρευσις αὐτῶν εἰς πολίτας, συνεπείᾳ ἀξιοσημειώτου βεβαίως συνδρομῆς καὶ κατορθώματος αὐτῶν ὑπὲρ τῆς πατρίδος. Κατὰ ταῦτα οἱ μέτοικοι δὲν διέφερον τῶν ἄλλων κυρίως πολιτῶν, ἀπολαύοντες μετ' αὐτῶν ὡς ἐλεύθεροι πολῖται τῆς ζωῆς τῆς πόλεως καὶ ἔχοντες ἐξησφαλισμένην καὶ τὴν ἐλευθερίαν τοῦ λόγου, τὴν ἰσηγορίαν, ὅπως ἀποκαλεῖ ταύτην ὁ Ἀριστοφάνης. Κατὰ τὸν Λυσίαν, ὅ,τι ἀπήτουν οἱ κυρίως πολῖται ἀπὸ τοὺς μετοίκους ἦτο νὰ εἶναι κόσμιοι. Ἐν Ἀθήναις, ἡ τάξις τῶν μετοίκων, κατὰ τὸ πλεῖστον ἑλληνικῆς καταγωγῆς, ἦτο διεσκορπισμένη εἰς ἕνα καὶ τριάκοντα δήμους, ἐξ ὧν ὁ δῆμος τῆς Ἀλωπεκῆς εἶχε τοὺς περισσοτέρους. Οἱ μέτοικοι μετήρχοντο συνήθως βιοποριστικὰ ἐπαγγέλματα, ἀλλ' οἱ πλεῖστοι τούτων ἦσαν ἔμποροι καὶ τραπεζῖται. Β. Δ. Θ.

**μέτοικος** (ὁ) (Metoecus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυτοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ῥιπιφοριδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη, ὧν ἐν Εὐρώπῃ ἀπαντᾷ ἓν μόνον, ὁ *μέτοικος ὁ παράδοξος* (Metoecus paradoxus). Οὗτος εἶναι κάνθαρος, οὗ τὸ μῆκος δὲν ὑπερβαίνει τὰ 8 χιλιοστόμετρα, μὲ σῶμα ἐπίμηκες, ἰχθυοειδές, κεφαλὴν πεπλατυσμένην καὶ μικρὰς κεραίας ἀποληγούσας εἰς φυλλοειδεῖς, ἀποφύσεις, θώρακα σχεδὸν τριγωνικόν, κοιλίαν ἐπιμήκη, ἀπολήγουσαν εἰς ἀπόφυσιν παρομοίαν πρὸς τὴν οὐρὰν ἰχθύος, πόδας λεπτοὺς καὶ ἐπιμηκεστάτους, ὧν τὸ πρῶτον ζεῦγος βραχύτερον τῶν λοιπῶν, καὶ πάντας ἀπολήγοντας εἰς ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις. Ὁ χρωματισμός των εἶναι κατὰ τὸ ἄνω μέρος τῆς κεφαλῆς μελανός, χρυσόφαιος κατὰ τὰς πτέρυγας καὶ κυανομελανὸς κατὰ τὰ κάτω μέρη τοῦ σώματος. Τὰ ᾠά της ἐναποθέτει ἡ θήλεια εἰς τὰς φωλεὰς τῶν σφηκῶν καὶ ἐπὶ τῶν προνυμφῶν τούτων. Δ. Ν. Π.

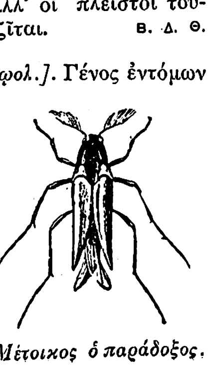

*Μέτοικος ὁ παράδοξος.*

**μετοικῶ** (*—έω*), ἀόρ. *μετῴκησα*· μεταβάλλω, ἀλλάσσω κατοικίαν, κατοικῶ εἰς ἄλλον τόπον, ἀλλάσσω τόπον διαμονῆς: «μετῴκησεν ἐξ Ἀθηνῶν εἰς Φάληρον».

**μετόλιον** (τὸ) (Metol) *[Φωτογρ.]*. Εἶναι τὸ μεθ' ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος ἅλας τῆς μονομεθυλοπαραμινομετακρεσόλης. Τὸ σκεύασμα τοῦτο χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν φωτογραφικὴν ὡς ἐμφανιστής, εἴτε μόνον, εἴτε ἐν συνδυασμῷ μετὰ τῆς ὑδροκινόνης. Τὸ διὰ μετολίου μόνον παρασκευαζόμενον ἐμφανιστικὸν διάλυμα ἔχει τὴν ἀκόλουθον σύστασιν: α') ὕδατος 1000 κ. ἑ., μετολίου 15 γρ., κρυσταλλικοῦ θειώδους νατρίου 150 γρ. (ἡ προσθήκη τούτου γίνεται μετὰ τὴν πλήρη διάλυσιν τοῦ μετολίου)· β') ὕδατος 2000 κ. ἑ., κρυσταλλικοῦ ἀνθρακικοῦ νατρίου 150 γρ. Κατὰ τὴν χρῆσιν μείγνυνται ἴσα ποσὰ τῶν ἐμφανιστικῶν διαλυμάτων α καὶ β. Ὁ ἐμφανιστὴς οὗτος παρουσιάζει τὴν εἰκόνα ταχέως καὶ κατ' ἀρχὰς ἀσθενῆ καὶ φαιάν, ἐνδυναμουμένην ὅμως εἶτα. Τὸ διὰ μετολίου ἐμφανιστικὸν διάλυμα γίνεται δραστικώτερον, ἐὰν τὸ ἀνθρακικὸν νάτριον ἀντικατασταθῇ δι' ἀνθρακικοῦ καλίου. Ὁ διὰ μετολίου-ὑδροκινόνης ἐμφανιστὴς εἶναι ἰσχυρὸς καὶ δρᾷ ταχέως. Ἡ σύνθεσις τοῦ ἐμφανιστικοῦ διαλύματος εἶναι ἡ ἀκόλουθος: α') ὕδατος 500 κ. ἑ., μετολίου 1 γρ., κρυσταλλικοῦ θειώδους νατρίου 50 γρ., ὑδροκινόνης 5 γρ.· β') ὕδατος 500 κ. ἑ., ἀνθρακικοῦ καλίου 50 γρ. Κατὰ τὴν χρῆσιν μείγνυνται ὁμοίως ἴσα ποσὰ τῶν α καὶ β. Κ.Γ.Μ.

**μετονομάζω**, ἀόρ. *μετωνόμασα—μετωνομάσθην*, παρακ. παθ. μετχ. *μετωνομασμένος*· μεταβάλλω, ἀλλάσσω τὸ ὄνομα: «μετωνομάσθη ἡ ὁδός, — ἡ πλατεῖα, — ἡ πόλις».

**μετονομασία** (ἡ)· μεταβολή, ἀλλαγὴ τοῦ ὀνόματος: «μετονομασία τῶν ὁδῶν, τῶν πλατειῶν».

—*[Ἐγκυκλ. Γεωγρ.]* Διὰ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 17/21 Σεπτεμβρίου τοῦ 1926 ἱδρύθησαν εἰς τὰς ἕδρας τῶν νομαρχιῶν ἐπιτροπαὶ ἀποτελούμεναι ἐξ ἁρμοδίων προσώπων (καθηγητῶν, ἐφόρων ἀρχαιοτήτων, ἄλλων δημοσίων ὑπαλλήλων καὶ καταλλήλων ἐντοπίων προσώπων) ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ νομάρχου, αἱ ὁποῖαι σκοπὸν ἔχουσι τὴν μετονομασίαν τῶν ξενοφώνων ἢ κακοήχων ὀνομάτων συνοικισμῶν, πόλεων καὶ κωμῶν τῆς Ἑλλάδος. Ἡ ἐπιτροπὴ συντάσσει πίνακα τῶν μετονομαζομένων συνοικισμῶν, πόλεων καὶ κωμῶν καὶ ὑποβάλλει αὐτόν, μετὰ ἐκθέσεως περιλαμβανούσης τὸν δικαιολογητικὸν λόγον τοῦ νέου ὀνόματος, εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν, τὸ ὁποῖον, κατόπιν συμφώνου γνωμοδοτήσεως τῆς ἀπὸ τοῦ 1915 λειτουργούσης δυνάμει νόμου «Ἐπιτροπείας Τοπωνυμιῶν» (συγκροτεῖται αὕτη ὑπὸ καθηγητῶν τοῦ πανεπιστημίου καὶ ἄλλων εἰδικῶν ἀνωτέρων δημοσίων ὑπαλλήλων), προκαλεῖ τὸ διάταγμα τῆς μετονομασίας. Τὸ ἀνωτέρω ἱδρυτικὸν διάταγμα ἐπεκυρώθη διὰ νεωτέρου διατάγματος τῆς 13 Νοεμβρίου 1927 καὶ τέλος διὰ τοῦ νόμου 4096 τοῦ 1929. Τὸ διάταγμα ὁρίζει ἐπίσης τὸν τρόπον, καθ' ὃν καθιεροῦται ἐπισήμως ἡ νέα μετονομασία, ὁρίζον καὶ διαφόρους κυρώσεις ἐναντίον τῶν παραβατῶν. Αἱ ἐπιτροπαὶ μετονομασιῶν λειτουργοῦσι μέχρι σήμερον, προβᾶσαι εἰς ἀθρόας μετονομασίας συνοικισμῶν, πόλεων καὶ κωμῶν, ἐν Μακεδονίᾳ κυρίως καὶ Ἠπείρῳ, ὡς καὶ ἐν Θράκῃ καὶ Θεσσαλίᾳ, ὀλιγωτέρας δ' εἰς τὴν λοιπὴν Ἑλλάδα καὶ τὰς νήσους, ὅπου σπανιώτερον ἀπαντῶσι ξενόγλωσσα καὶ κακόηχα τοπωνύμια. Τὰ νεώτερα ὀνόματα ἐλήφθησαν κυρίως ἐξ ἀρχαίων πόλεων κειμένων ἐγγὺς τῶν μετονομασθέντων χωρίων, ἢ δι' ἀναλόγου μεταφράσεως εἰς τὴν ἑλληνικὴν τῶν τουρκογλώσσων ἢ σλαυογλώσσων ὀνομάτων (Δερὲ Μαχαλὲ = Ποταμοχώρι, Κιουλελὶ = Πυργωτὸν κλπ.). Ἐπίσης διὰ τοῦ ἀνωτέρω διατάγματος ἐπιτρέπεται νὰ μετονομάζωνται καὶ ὁλόκληροι ἐπαρχίαι, νομοὶ καὶ γενικαὶ διοικήσεις τοῦ κράτους, κατόπιν γνωμοδοτήσεως τῆς «Ἐπιτροπείας Τοπωνυμιῶν». Χ. Δ.

**μετόπη** (ἡ)· ἀρχιτεκτονικὸν τμῆμα τοῦ ἀρχαίου ναοῦ, δωρικοῦ ῥυθμοῦ, μέρος τοῦ διαζώματος μεταξὺ τῶν τριγλύφων: «μετόπαι μετὰ παραστάσεων, —ἄνευ παραστάσεων», «μετόπαι πήλιναι».

—*[Ἀρχιτεκτ.]* *Μετόπαι* καλοῦνται ἐν τῇ ἀρχαίᾳ ἀρχιτεκτονικῇ αἱ τετραγωνικαὶ ἔγγλυπτοι πλάκες, αἵτινες μεταξὺ δύο τριγλύφων καὶ μετ' αὐτῶν ἀποτελοῦσι τὴν διακοσμητικὴν ταινίαν, ἥτις εὑρίσκεται μεταξὺ τοῦ ἐπιστυλίου καὶ τοῦ γείσου τοῦ δωρικοῦ ναοῦ, καὶ ἥτις καλεῖται διάζωμα. Κατὰ Βιτρούβιον, ὁ ὅρος μετόπη παράγεται ἐκ τοῦ *μετὰ* καὶ *ὀπή*, εἶναι δὲ λίαν δηλωτικὸς τῆς ἐκ τῆς ξυλοδομίας ἀναπτύξεως τοῦ δωρικοῦ ῥυθμοῦ, ὡς ἐξηγῶν σαφέστατα ὅτι ἡ μετόπη ἀρχικῶς ἦτο ἡ πλάξ, ἢ ὁ λίθος, ὅστις ἐπλήρου τὸ κενόν, τὸ ὁποῖον ἐσχηματίζετο ἐπὶ τοῦ τοίχου μεταξὺ δύο δοκῶν τῆς ὀροφῆς. Πρὸς ἀπόκρυψιν τοῦ ἄκρου τῶν τοιούτων δοκῶν ἐκάρφωνον ἐπ' αὐτοῦ ἐρραβδωμένην σανίδα ἐν σχήματι τριγλύφου, ἐπαλείφοντες αὐτὴν διὰ κυανοῦ κηροῦ, τὸ μεταξὺ δὲ τῶν τριγλύφων κενὸν ἐπλήρουν διὰ πλακῶν. Ἡ μετόπη εἶναι, ὅπως καὶ τὸ τρίγλυφον, τὸ χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τοῦ δωρικοῦ ῥυθμοῦ, ἐξαιρετικῶς δέ, ὅπως ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἐμπεδοκλέους ἐν Σελινοῦντι τῆς Σικελίας, ἐχρησιμοποιήθη καὶ ἐν ναοῖς ἰωνικοῦ ῥυθμοῦ. Καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἡ μετόπη, ὡς πλὰξ πρὸς κάλυψιν τοῦ διακένου, ἦτο ἁπλῆ ἢ ἐβάφετο δι' ἐρυθροῦ χρώματος διὰ τὴν ἀντίθεσιν πρὸς τὸ κυανοῦν τῶν τριγλύφων, ἢ καὶ ἔφερεν ἐγχρώμους παραστάσεις ἢ κοσμήματα. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως καὶ μὲ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς γλυπτικῆς καὶ ἡ ἁπλῆ αὕτη πλὰξ ἐκοσμεῖτο διὰ γλυπτῶν παραστάσεων καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἐγλύφοντο οὕτω μόνον αἱ μετόπαι αἱ ὑπεράνω τῆς θύρας, ἀργότερον ὅμως καὶ ὅλαι αἱ μετόπαι τοῦ ἐμπροσθίου καὶ ὀπισθίου διαζώματος τοῦ ναοῦ. Ἐξαίρεσιν ἀποτελοῦσιν αἱ μετόπαι τοῦ Παρθενῶνος, αἵτινες εἶναι ἀνάγλυπτοι καθ' ὅλον τὸ πτέρωμα τοῦ ναοῦ. Ἀρχαιότεροι ναοὶ δωρικοῦ ῥυθμοῦ μὲ ἀναγλύπτους τὰς μετόπας αὐτῶν εἶναι οἱ ναοὶ τῆς Σελινοῦντος ἐν Σικελίᾳ καὶ μάλιστα ὁ ναὸς τοῦ πρώτου τετάρτου τῆς ΣΤ' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος. Αἱ μετόπαι τοῦ ναοῦ τούτου παριστῶσι τὸν Ἡρακλέα καταβάλλοντα τοὺς κλέπτας Κέρκωπας καὶ φονεύοντα τὴν Μέδουσαν τῇ βοηθείᾳ τῆς Ἀθηνᾶς. Ἐν Ἑλλάδι ὀνομαστοὶ διὰ τὸν γλυπτικὸν διάκοσμον τῶν μετοπῶν των ναοὶ ἦσαν ὁ ἐν Ὀλυμπίᾳ ναὸς τοῦ Ὀλυμπίου λεγομένου Διός, τοῦ ὁποίου αἱ μετόπαι παρίστων ἐν ἐξαισίοις ἀναγλύπτοις τοὺς δώδεκα ἄθλους τοῦ Ἡρακλέους καὶ οἱ ἐν Ἀθήναις ναοὶ τοῦ Παρθενῶνος καὶ τοῦ λεγομένου Θησείου. Αἱ μετόπαι τοῦ Παρθενῶνος, 92 τὸν ἀριθμὸν καθ' ὅλον τὸ πτέρωμα πέριξ, παρίστων τὴν μάχην τῶν θεῶν ἐναντίον τῶν Γιγάντων, τὴν μάχην τῶν Κενταύρων καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ ἀλληγορικῶς τὴν νίκην τῶν Ἑλλήνων ἐναντίων τῶν βαρβάρων. Αἱ μετόπαι τοῦ λεγομένου Θησείου ἢ ναοῦ τοῦ Ἡφαίστου εἰκονίζουσι τοὺς ἄθλους τοῦ Ἡρακλέους καὶ τοῦ Θησέως, τὴν μάχην τῶν Κενταύρων καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ τὴν προσπάθειαν τοῦ Θησέως ἐναντίον τῶν υἱῶν τοῦ Πάλλαντος περὶ τὴν κατοχὴν τῆς Ἀττικῆς. Ἐν Μικρασίᾳ, ναὸς μὲ ἀναγλύπτους μετόπας εἶναι ὁ μοναδικὸς ἐκεῖ δωρικὸς ναὸς τῆς Ἄσσου. Β. Δ. Θ

**μετόπισθεν**· ἀρχ. ἐπίρρ. ἐκ τῶν ὄπισθεν, ὀπίσω || μετὰ ταῦτα, κατόπιν, ἀκολούθως· || νεωτ., ὡς οὐσ. *τὰ μετόπισθεν*, αἱ παρακολουθοῦσαι ἐν καιρῷ πολέμου τὸ κυρίως στράτευμα ὑπηρεσίαι, αἱ ὁποῖαι σκοποῦν τὸν ἀνεφοδιασμὸν αὐτοῦ εἴτε εἰς πολεμικὸν ὑλικὸν εἴτε εἰς ζωοτροφίας: «ἡ ὑπηρεσία τῶν μετόπισθεν».

—*[Στρατ.]* Κατὰ τὴν βασικὴν ἀρχὴν ὁ ἐν ἐκστρατείᾳ στρατὸς δὲν δύναται νὰ εἶναι ἀπομεμονωμένος ἀπὸ τὸ ἐσωτερικὸν τῆς χώρας. Εἰς τὸ παρελθόν, ὁπότε αἱ ἀνάγκαι ἑνὸς στρατοῦ ἦσαν πολὺ περιωρισμέναι ἐν συγκρίσει μὲ τὰς σημερινάς, οἱ στρατοί, ὡς πρὸς τὰ τρόφιμα τοὐλάχιστον, ἠναγκάζοντο νὰ ἀρκῶνται εἰς τὰ ἐπὶ τόπου εὑρισκόμενα τοιαῦτα, καίτοι ἦτο πάντοτε ἀναγκαῖον νὰ ἀποστέλλωνται αὐτοῖς ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ ἐνισχύσεις εἰς ἄνδρας, πρὸς κάλυψιν τῶν ἀπωλειῶν κτλ. Ἡ τελειοποίησις τοῦ ὁπλισμοῦ καὶ τῶν ἐν γένει μηχανημάτων ἐπέβαλον εἰς τοὺς νεωτέρους στρατοὺς τὴν ἀνάγκην νὰ προστρέχωσι κατὰ μέγιστον μέρος εἰς τὸς πηγὰς τῆς χώρας, παρ' ὧν ἐξασφαλίζεται ἡ συντήρησις τοῦ στρατοῦ διὰ τῶν ἀποστελλομένων ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ ἐφοδίων καὶ ὑλικῶν, ὡς καὶ ἀνδρῶν. Ἀλλ' ἡ ἀποστολὴ αὕτη, ὡς ἄλλωστε καὶ αἱ πρὸς τὰ ὀπίσω ἐκκενώσεις ἀχρήστων ὑλικῶν, τραυματιῶν, ἀσθενῶν κτλ. ἀπῄτησε τὴν ὕπαρξιν ὁδῶν συγκοινωνιῶν.

Καὶ μέχρι μὲν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος αἱ κύριαι γραμμαὶ συγκοινωνίας ἦσαν αἱ ὁδικαὶ (καὶ αἱ θαλάσσιαι, ὅπου ἠδύναντο νὰ χρησιμοποιηθῶσιν), ἐφ' ὧν ἐκυκλοφόρουν ἐφοδιοπομπαὶ κτηνῶν μικρᾶς ταχύτητος καὶ ἀποδόσεως καὶ μὴ δυνάμεναι νὰ ἐπιμηκύνωσι τὰς συγκοινωνίας ἐπὶ μακρόν. Δι' ὃ καὶ ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος οἱ στρατοὶ ἦσαν ὑποχρεωμένοι νὰ ἱδρύωσι πλησίον τοῦ θεάτρου τῶν ἐπιχειρήσεων τὰς λεγομένας τότε *βάσεις ἀνεφοδιασμοῦ*, ὅπου καὶ συνεσωρεύοντο ἀνάλογα ἀποθέματα. Ἀλλ' ὅταν στρατός τις ἀπεμακρύνετο τῆς βάσεως ἀνεφοδιασμοῦ του, εἰς ἀπόστασιν τοιαύτην ὥστε αἱ γραμμαὶ συγκοινωνιῶν νὰ ἐπιμηκύνωνται ὑπερβολικά, ὑπεχρεοῦτο νὰ μετατοπίζῃ πρὸς τὰ πρόσω τὴν βάσιν ἀνεφοδιασμοῦ, καὶ τοῦτο δὲν ἦτο πάντοτε εὐχερές. Ἡ κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ἐμφάνισις τοῦ σιδηροδρόμου διηυκόλυνε κατὰ πολὺ τὴν λύσιν τοῦ προβλήματος, χάρις εἰς τὴν χρησιμοποίησιν τοῦ μέσου τούτου, ὅπερ, ταχὺ καὶ μεγάλης συγχρόνως

Digitized by Google

χωρητικότητος, ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τήν, τρόπον τινά, μετατροπὴν ὁλοκλήρου τῆς χώρας εἰς βάσιν ἀνεφοδιασμοῦ.

Ἡ κατὰ τὸν παρόντα αἰῶνα καὶ τοὺς τελευταίους πολέμους ἐντατικὴ χρησιμοποίησις τῶν αὐτοκινήτων διηυκόλυνεν ἔτι περισσότερον τὴν λύσιν τοῦ προβλήματος, χωρὶς ἄλλωστε καὶ νὰ ἀχρηστωθῇ ὁ σιδηρόδρομος, ὅστις παραμένει πάντοτε τὸ κυριώτερον μέσον μεταφορᾶς. Διὰ τὴν χρησιμοποίησιν τῶν γραμμῶν ἐν γένει συγκοινωνίας τοῦ ἐσωτερικοῦ πρὸς τὸν στρατὸν ἐκστρατείας, ὡς καὶ τὴν ἐξασφάλισιν τῆς ἐπαφῆς μεταξὺ τούτου καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ἐκρίθη ἀναγκαία ἡ δημιουργία ἑνιαίας ὑπηρεσίας καλουμένης *μετόπισθεν* (παρ' ἡμῖν μέχρι τοῦ 1912 ἐκαλεῖτο *ὑπηρεσία τῶν νώτων*).

Ἡ ἐν γένει ὀργάνωσις τῆς ὑπηρεσίας μετόπισθεν (ἥτις νῦν παρ' ἡμῖν καλεῖται *διοίκησις μετόπισθεν*), διαφαινομένη πως εἰς τὰς ναπολεοντείους ἐκστρατείας, ἐφηρμόσθη εἰς ὅλους τοὺς μεγάλους στρατοὺς τῆς Εὐρώπης ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, ἰδίως ἐκ μέρους τῶν Γερμανῶν κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870· κατὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἡ ὑπηρεσία μετόπισθεν ἐλειτούργησεν εἰς ὅλους τοὺς ἐμπολέμους στρατοὺς κατὰ τὸν αὐτόν, ὡς κατωτέρω ἐκτίθεται, τρόπον, μὲ μικρὰς καὶ ἐπουσιώδεις παραλλαγάς.

*Σημερινὴ ὀργάνωσις*. Ἅμα τῇ κηρύξει τῆς ἐπιστρατεύσεως, ὁ ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν καθορίζει τὰ ὅρια, ἅτινα διαχωρίζουσι τὸ ὑπὸ τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ ἀρχιστρατήγου μέρος τῆς χώρας, ὅπερ λαμβάνει τὸ ὄνομα *στρατιωτικὴ ζώνη* ἢ *ζώνη ἐπιχειρήσεων*, ἀπὸ τοῦ ὑπὸ τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ ὑπουργοῦ παραμένοντος ὑπολοίπου, καλουμένου *ζώνη τοῦ ἐσωτερικοῦ*. Ἡ ζώνη τῶν ἐπιχειρήσεων διαιρεῖται ὑπὸ τοῦ ἀρχιστρατήγου εἰς *ζώνην τῶν πρόσω*, ἀνήκουσαν εἰς τὰς μεγάλας μονάδας τοῦ στρατοῦ, καὶ τὴν ζώνην τῶν *μετόπισθεν*, ἥτις ἐξαρτᾶται ἀπὸ τὸν ἀρχιστράτηγον, καθορίζοντα ἑκάστοτε τὰ ὅρια αὐτῆς μετὰ τῆς ζώνης τῶν πρόσω. Ἐὰν ὑπάρχωσι πλείονες τῆς μιᾶς στρατιαί, ὑπαγόμεναι ὑπὸ τὸν ἀρχιστράτηγον, δύναται νὰ ὁρισθῇ ἰδία ζώνη μετόπισθεν δι' ἑκάστην ἢ καὶ διά τινας μόνον τῶν στρατιῶν, ἀναλόγως τῶν εἰδικῶν ἢ συγκοινωνιακῶν συνθηκῶν, ἐξαρτωμένη τότε ἀπὸ τὸν διοικητὴν στρατιᾶς.

Ἡ ζώνη μετόπισθεν διοικεῖται ὑπὸ τοῦ διοικητοῦ τῆς μετόπισθεν, ὑπαγομένου ὑπὸ τὰς ἀμέσους διαταγὰς τοῦ ἀρχιστρατήγου (ἤ, ἂν ὑπάρχῃ ἰδία ζώνη μετόπισθεν δι' ἑκάστην στρατιάν, ὑπὸ τὰς τοῦ διοικητοῦ τῆς στρατιᾶς).

Αἱ κύριαι ἐργασίαι τῆς διοικήσεως μετόπισθεν εἶναι αἱ ἑξῆς: 1) Ἡ ἐξασφάλισις τῆς ἐπαφῆς μεταξὺ τοῦ στρατοῦ ἐκστρατείας καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ἰδίᾳ διὰ τὴν ἐνέργειαν τοῦ ἀνεφοδιασμοῦ, τῶν διακομιδῶν καὶ τῶν μεταφορῶν. 2) Ἡ τελεία λειτουργία ὅλων τῶν ὑπηρεσιῶν, αἱ ὁποῖαι ὑπάγονται εἰς τὴν μετόπισθεν (κέντρα, μεταφοραί). 3) Ἡ ἐξάσκησις τῆς στρατιωτικῆς διοικήσεως καὶ ἡ μέριμνα διὰ τὴν τάξιν καὶ ἀσφάλειαν τῆς ζώνης μετόπισθεν. 4) Ἡ ἐκμετάλλευσις τῶν ἐπιτοπίων πόρων αὐτῆς. 5) Ἡ ὑπηρεσία σταθμεύσεως, δηλαδὴ ἡ διαμονή, συντήρησις κτλ. τῶν τμημάτων ἢ τῶν μεμονωμένων ἀνδρῶν τῶν διερχομένων διὰ τῆς ζώνης τῶν μετόπισθεν. 6) Ἡ διοίκησις τῶν ὑπὸ τὴν μετόπισθεν στρατευμάτων. 7) Ἡ πολεμικὴ διοίκησις τῶν καταλαμβανομένων ἐχθρικῶν ἐδαφῶν ἢ τῶν ἐθνικῶν τοιούτων, ἐξ ὧν ἀπεσύρθη ὁ ἐχθρὸς καὶ μέχρι τῆς ἐγκαταστάσεως τῶν οἰκείων πολιτικῶν ἀρχῶν. 8) Ἡ ἐξασφάλισις τῆς ἀστυνομίας ὡς καὶ ἡ ἐξυγίανσις τῶν πεδίων τῶν μαχῶν καὶ ἡ περισυλλογὴ τῶν ἐγκαταλειπομένων ὑλικῶν.

Ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ διοικητοῦ τῶν μετόπισθεν ὑφίστανται τὸ ἐπιτελεῖον αὐτοῦ, αἱ ὑπηρεσίαι τῶν διαβιβάσεων, τῆς στρατονομίας, τῆς στρατιωτικῆς δικαιοσύνης, τῆς ἀσφαλείας, τοῦ τύπου καὶ τῆς ἐκκαθαρίσεως ἐξόδων. Ὁμοίως, ἐκ τῶν ὑπηρεσιῶν ἀνεφοδιασμοῦ καὶ συντηρήσεως τοῦ ἀρχιστρατήγου ἢ τοῦ διοικητοῦ στρατιᾶς, αἱ ὑπηρεσίαι πυροβολικοῦ, μηχανικοῦ, ἐπιμελητείας, ὑγειονομικοῦ, ἀεροπλοΐας, κτηνιατρικοῦ, ἱππωνειῶν, ταχυδρομικὴ καὶ ταμειακή. Παρὰ τῷ ἀρχιστρατήγῳ παραμένουσιν, ὅσον ἀφορᾷ τὰς ἀνωτέρω ὑπηρεσίας, ὡς τεχνικοὶ σύμβουλοι αὐτοῦ, οἱ διοικηταὶ πυροβολικοῦ, μηχανικοῦ, ἱππικοῦ καὶ ἀεροπλοΐας καὶ οἱ ἀρχηγοὶ τῶν λοιπῶν ὑπηρεσιῶν. Ὑπὸ τὸν διοικητὴν τῶν μετόπισθεν ὑπάγονται ὁμοίως ἡ ὑπηρεσία αἰχμαλώτων, ὡς καὶ αἱ ὑπηρεσίαι μεταφορῶν τοῦ ἀρχιστρατήγου, ἤτοι ἡ διεύθυνσις *μεταφορῶν* (βλ. λ.) περιλαμβάνουσα τὴν τῶν σιδηροδρόμων, τὴν τῶν θαλασσίων μεταφορῶν τὴν τῶν ὁδικῶν) καὶ ἡ ὑπηρεσία συντηρήσεως αὐτοκινήτων. Τέλος, ὑπὸ τὴν διοίκησιν μετόπισθεν ὑπάγονται τὰ στρατεύματα μετόπισθεν, ἤτοι τοιαῦτα ἀσφαλείας, ἐργατῶν, διαφόρων εἰδικοτήτων, ἔμπεδα κ.τ.λ., ὡς καὶ τὰ ἐν τῇ ζώνῃ αὐτῆς λειτουργοῦντα γενικὰ κέντρα ἐφοδιασμοῦ, κέντρα ἐφοδιασμοῦ καὶ νοσηλευτικαὶ ἐγκαταστάσεις, ἤτοι ἰατρεῖα σταθμῶν, νοσοκομεῖα, ἀναρρωτήρια, σανατόρια κτλ. (βλ. καὶ λ. *ἀνεφοδιασμός, βάσις*). Ν. Μ.

**μετοπωρικός**, *—ή, —όν*· ὁ κατὰ τὸ μετόπωρον ἢ φθινόπωρον συμβαίνων, φθινοπωρινός.

— **μετοπωρινὸν** ***σημεῖον*** *['Αστρον.]*· βλ. *φθινοπωρινὸν* ἰσημερινὸν σημεῖον.

**Μετουχλῆ** (οἱ). Μουσουλμανικὴ αἵρεσις ἀποκλίνουσα πρὸς τὸ σιιτικὸν δόγμα. Οἱ ὀπαδοὶ αὐτῆς θεωροῦσιν ἀνώτερον προφήτην τὸν Ἀλῆ, γαμβρὸν τοῦ Μωάμεθ, καὶ θεωροῦνται ἀπόγονοι τῶν Κούρδων καὶ τῶν Περσῶν, οἵτινες μετηνάστευσαν εἰς Συρίαν ἐπὶ Σαλαδδίνου. Ἀριθμοῦνται εἰς 50.000 περίπου καὶ κατοικοῦσι κατὰ μέγα μέρος ἐν Συρίᾳ, εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Βηρυττοῦ. Διακρίνονται κυρίως διὰ τὸ κατὰ τῶν Χριστιανῶν καὶ τῶν ξένων ἐν γένει μῖσός των. Ν. Μ.

**Μέτουλλον** (Metullum) *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἰλλυρίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἰαπόδων, τῶν ὁποίων ἦτο πρωτεύουσα, κειμένη παρὰ τὰ μεθόρια τῆς Παννονίας, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κολάπιος (νῦν Κούλπα), πρὸς Δ. τῆς Σισκίας (νῦν Sissek). Καταληφθεῖσα ὑπὸ τοῦ Αὐγούστου τῷ 34 π. Χ. μετὰ πείσμονα ἀντίστασιν τῶν κατοίκων αὐτῆς, κατεστράφη πυρποληθεῖσα, μὴ ἀναλαβοῦσα ἔκτοτε (*Δίων. Κασ.* XLIX, 35). Σήμερον ταυτίζεται πρὸς τὴν πόλιν Möttling τῆς Νοτιοσλαβίας. Α. Θ. Σ.

**μετουσία** (ἡ)· τὸ *μετεῖναί* τινος, τὸ μετέχειν, μετοχή, μετάληψις: «μετουσία ἑορτῆς».

**μετουσιαστικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἐμφαίνων μετουσίαν ἢ μετοχήν· μόνον ὡς γραμματικὸς ὅρος (βλ. κατωτ.).

— *[Γραμματ.]* Καλοῦνται *μετουσιαστικὰ* τὰ παράγωγα ἐπίθετα τὰ δηλοῦντα τὴν (οὐσίαν, ἤτοι) τὴν ὕλην, ἐκ τῆς ὁποίας κατεσκευάσθησαν τὰ ὑπ' αὐτῶν προσδιοριζόμενα οὐσιαστικά. Αἱ παραγωγικαὶ καταλήξεις τῶν μετουσιαστικῶν εἶναι ἡ *-ινος* (*λίθ-ινος, πλίνθ-ινος, ξύλ-ινος, χάλκ-ινος, κρίθ-ινος* κλπ.) καὶ *-εος-οῦς* (*ἀργύρεος-ἀργυροῦς-ρᾶ-ροῦν, χρύσεος-χρυσοῦς-ῆ-οῦν, ἐρεοῦς* = ὁ ἐξ ἐρέας κατεσκευασμένος, *μάλλινος* κλπ.), παρ' ἡμῖν δὲ καὶ *-ένιος* (*μαλαματένιος, χωματένιος* κλπ.) καὶ ἄλλα. Τὰ μετουσιαστικὰ ὡς ἐκ τῆς ἐννοίας των στεροῦνται παραθετικῶν. —Ω.

**μετουσιῶ** (*—όω*)· μεταβάλλω τὴν οὐσίαν τινός, τὴν φυσικὴν ὑπόστασιν· || παθ. *μετουσιοῦμαι*: «μετουσιοῦται ὁ ἄρτος καὶ ὁ οἶνος εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Χριστοῦ».

**μετουσίωσις**, *—εως* (ἡ)· ἡ μεταβολὴ τῆς οὐσίας πράγματός τινος, τῆς φυσικῆς ὑποστάσεώς του· || ἐκκλησ. «ἡ μετουσίωσις τοῦ ἄρτου καὶ τοῦ οἴνου εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Χριστοῦ».

— *[Δογμ.]* Ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος ἤρξατο ἐν μόνῃ τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ νὰ καλῆται ἡ ἐν τῇ εὐχαριστίᾳ μεταβολὴ τοῦ ἄρτου καὶ τοῦ οἴνου *μετουσίωσις* (transubstatiatio), πρώτου ποιησαμένου χρῆσιν τοῦ ὅρου τούτου πιθανῶς τοῦ Hildebert von Tours. Τὸν ὅρον τοῦτον μετεχειρίσθη ἡ δυτικὴ Ἐκκλησία πρὸς παράστασιν ἰδίας θεωρίας ἐν αὐτῇ ἀναπτυχθείσης καὶ προσπαθούσης νὰ ἐξηγήσῃ τὸν τρόπον τῆς μεταβολῆς τοῦ ἄρτου καὶ οἴνου εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Κυρίου. Κατὰ τὴν θεωρίαν ταύτην τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, τὴν στηριζομένην ἐπὶ τῆς ἀρχαίας φιλοσοφίας, τῆς διακρινούσης, ὡς γνωστόν, ἐν τοῖς οὖσιν, οὐσίαν καὶ συμβεβηκότα, μετὰ τὴν εὐλογίαν τῶν τιμίων δώρων παύει ὑπάρχουσα ἡ οὐσία τούτων, μεταβαλλομένη εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Χριστοῦ, μένουσιν ὅμως τὰ συμβεβηκότα τοῦ ἄρτου καὶ οἴνου, ἅτινα οὕτως ὑποπίπτουσιν εἰς τὰς αἰσθήσεις ἡμῶν. Τὴν θεωρίαν ταύτην τῆς μετουσιώσεως ἀνέπτυξαν καὶ ἄλλοι τῶν δυτικῶν θεολόγων, μάλιστα δὲ ὁ Θωμᾶς ὁ Ἀκινᾶτος, ἔκτοτε δ' ἤρξατο γενικῶς ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ ἐπικρατοῦσα, μέχρι οὗ ἡ σύνοδος τοῦ Τριδέντου ἀνύψωσεν αὐτὴν εἰς δόγμα. Ἀπὸ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος γίνεται χρῆσις τοῦ ὅρου *μετουσίωσις* καὶ ἐν τῇ ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ, πρώτου ποιησαμένου αὐτοῦ χρῆσιν τοῦ Γενναδίου Σχολαρίου († 1460), ἀλλ' οὐχὶ πρὸς δήλωσιν τῆς θεωρίας τῆς μετουσιώσεως τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, ἀλλ' ἁπλῶς ὡς ταυτοσήμου πρὸς τὸν ὅρον *μεταβολή*. Ἐνῷ λοιπὸν ἡ δυτικὴ Ἐκκλησία μεταχειρίζεται τὸν ὅρον μετουσίωσις πρὸς παράστασιν ἰδίας θεωρίας περὶ τοῦ τρόπου τῆς μεταβολῆς τοῦ ἄρτου καὶ οἴνου εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Κυρίου, ἡ ἀνατολικὴ Ἐκκλησία μεταχειρίζεται αὐτὸν ὡς ταυτόσημον πρὸς τὸν ὅρον μεταβολή, ἐξακολουθοῦσα νὰ πιστεύῃ, ὡς ἡ ἀρχαία Ἐκκλησία, ὅτι ὁ τρόπος τῆς μεταβολῆς εἶναι ἀκατανόητος εἰς τὸν ἀνθρώπινον νοῦν. Κ. Ι. Δ.

— *[Χημ.]* *Μετουσίωσις* ἢ *ἀκαθαρτοποίησις* ἢ *παρατροπὴ* καλεῖται ἡ ἀλλοίωσις, εἰς ἣν ὑποβάλλονται φορολογήσιμά τινα εἴδη πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ καταστῶσιν ἀκατάλληλα δι' ὡρισμένους μόνον σκοπούς, ἐνῷ εἶναι κατάλληλα δι' ἄλλους, ὁπότε καὶ ἀπαλλάσσονται μερικῶς ἢ ὁλικῶς τῆς φορολογίας. Οὕτω λ. χ. ἔχομεν τὴν μετουσίωσιν τοῦ οἰνοπνεύματος, δι' ἧς τοῦτο καθίσταται ἀκατάλληλον διὰ παρασκευὴν ποτῶν, ἐνῷ εἶναι κατάλληλον διὰ φωτιστικοὺς ἢ ἄλλους βιομηχανικοὺς σκοπούς. Τὸ εἶδος τῶν πρὸς μετουσίωσιν προστιθεμένων ὑλῶν εἶναι διάφορον ἀναλόγως τοῦ εἴδους τοῦ προϊόντος καὶ τοῦ ἐπιδιωκομένου σκοποῦ. Αἱ πρὸς μετουσίωσιν προστιθέμεναι ὗλαι πρέπει νὰ εἶναι τοιαῦται, ὥστε νὰ εἶναι λίαν δύσκολος ἡ ἀπομάκρυνσίς των καὶ ἀφ' ἑτέρου νὰ μὴ δυσχεραίνεται ἡ χρησιμοποίησις τοῦ προϊόντος διὰ τοὺς σκοποὺς δι' οὓς ἀπαλλάσσεται τοῦτο τῆς φορολογίας. Σ. Γ.

**μετοχάρης** (ὁ)· ἰδιωμ. Κρήτ., ὁ κατοικῶν εἰς μετόχιον μοναχός, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν ἐν τῷ καθολικῷ διαμένοντα· || κατ' ἐπέκτασιν, ὁ χωρικὸς ὁ κατοικῶν καὶ καλλιεργῶν μετόχιον μονῆς ἢ καὶ μικρὸν συνοικισμὸν ἢ καὶ ἁπλῆν ἀγροτικὴν οἰκίαν. Ι. Δ. Μ.

**μετοχέτευσις**, *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετοχετεύειν, ἡ δι' ὀχετοῦ μεταφορὰ ὑγροῦ κτλ.: «μετοχέτευσις ποταμίου ὕδατος διὰ τάφρων, σωλήνων κτλ.».

**μετοχετεύω**, ἀόρ. *μετωχέτευσα—μετωχετεύθην*· μεταφέρω δι' ὀχετοῦ, κάμνω νὰ ρεύσῃ εἰς ἄλλον τόπον, εἰς ἀγγεῖον, ἄλλως *διοχετεύω*: «τὸ ὕδωρ τοῦ ποταμοῦ μετοχετεύεται εἰς τὴν πεδιάδα διὰ τάφρων καὶ διωρύγων».

**μετοχὴ** (ἡ)· τὸ μετέχειν τινός, μεσουσία, μετάληψις, ἄλλως *συμμετοχή*: «τὰ μετοχῆς σημαντικὰ ρήματα»· || χρηματικὸν ποσὸν ὡς μονὰς συμμετοχῆς εἰς ἑταιρείαν, τράπεζαν ἢ ἄλλην χρηματιστικὴν ἐπιχείρησιν: «μετοχὴ Ἐθνικῆς τραπέζης,—Χημικῶν προϊόντων,—Ἐθνικῆς ἀτμοπλοΐας κττ.»· || ὁ ἔγγραφος τίτλος τῆς μετοχῆς: «μοῦ ἔπεσε μιὰ μετοχὴ καὶ τὴν ἔχασα»· || γραμμ., μέρος τοῦ λόγου ὡς μετέχον κλίσεως ὀνόματος καὶ διαθέσεως ρήματος (βλ. κατ.).

—*[Γλωσσολογ.]* Καλοῦμεν *μετοχὴν* (λατ. participium) τὸ μέρος τοῦ λόγου, τὸ ὁποῖον μετέχει τῆς φύσεως καὶ τῶν ἰδιοτήτων καὶ τοῦ ἐπιθέτου καὶ τοῦ ρήματος. Τὸ διφυὲς τοῦτο τῆς μετοχῆς προῆλθεν ἐκ τοῦ ὅτι τὸ ἐπίθετον—ἱκανὸν νὰ δηλοῖ οὐχὶ μόνον μόνιμον καὶ διαρκῆ, ἀλλὰ καὶ πρόσκαιρον, περιωρισμένην χρονικῶς ἰδιότητα—ἠδυνήθη νὰ προσεγγίσῃ ὀλίγον κατ' ὀλίγον καὶ νὰ προσαρμοσθῇ πρὸς τὸ ρῆμα, οὕτω δὲ νὰ καταστῇ βαθμηδὸν τέλειον *ρηματικὸν ἐπίθετον*. Ἀλλ' ἡ ἐξέλιξις αὕτη τῆς μετοχῆς δὲν ἐχώρησεν ὁμοίως εἰς ὅλας τὰς ἰαπετικὰς (ἤ, ἄλλως, ἰνδοευρωπαϊκὰς καλουμένας) γλώσσας, οὐδὲ εἰς ὅλας τὰς τάξεις τῶν ρηματικῶν ἐπιθέτων. Οὕτω λ. χ. τὰ εἰς —tos ἰαπετικὰ ἐπίθετα, εἰς μὲν τὴν ἀρχαίαν Ἰνδικὴν καὶ τὴν Λατινικὴν ἐξειλίχθησαν εἰς πλήρεις μετοχάς, ἀλλ' εἰς τὴν Ἑλληνικὴν παρέμειναν ἐπίθετα—ὅπως καὶ τὰ εἰς *—τέος, —τέα, —τέον—*: ἰνδ. tatas (ἐκ τοῦ *tatos)—λατ. tentus—ἑλλ. *τατὸς* (τοῦ ρήματος *τείνω*) κ.οὕ.κ. Ἡ ἐπιθετικὴ φύσις τῆς μετοχῆς εἶναι καταφανὴς οὐχὶ μόνον εἰς τὴν κλίσιν της, τὴν ὁμοίαν πρὸς τὴν τῶν ἐπιθέτων, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν χρῆσίν της ὡς ἐπιθετικοῦ διορισμοῦ (συμφωνοῦντος πρὸς τὸ προσδιοριζόμενον ὑπ' αὐτῆς ὄνομα κατὰ γένος, ἀριθμὸν καὶ πτῶσιν), ἔτι δὲ εἰς τὴν χρῆσίν της ὡς κατηγορουμένου κλ., ἡ δὲ ρηματικὴ φύσις της καταφαίνεται εἰς τὴν ὑπ' αὐτῆς δήλωσιν τοῦ χρόνου *(λύων—λύσων—λύσας* κλ.), εἰς τὴν σύνταξίν της μετ' ἀντικειμένου («οἱ πρότερον πορθοῦντες τὴν Βοιωτίαν». «ὡς ὕδωρ πίνων» κ.λ.), εἰς τὴν παρὰ τοῖς ἀρχαίοις σύνθεσίν της (ἀκριβῶς ὅπως καὶ τὸ ρῆμα) μόνον σχεδὸν μετὰ προθέσεων (κατὰ τὸ praeceptum aureum Scaligeri), εἰς τὴν ὑπ' αὐτῆς δήλωσιν ποικίλων σχέσεων πρὸς τὴν κυρίαν πρότασιν, ἐκείνων αἵτινες δηλοῦνται καὶ διὰ τῶν δευτερευουσῶν προτάσεων κ.οὕ.κ.

*Σχηματισμὸς τῶν μετοχῶν*. Τὴν εὐρυτέραν καὶ πληρεστέραν ἀνάπτυξίν της ἔλαβεν ἡ μετοχὴ εἰς τὴν ἑλληνικὴν γλῶσσαν. Τοῦτο γίνεται φανερόν, ἂν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ὅτι ἐν αὐτῇ διακρίνεται μετοχὴ ὅλων σχεδὸν τῶν χρόνων καὶ ὅλων τῶν διαθέσεων: *παιδεύων—ουσα—ον, παιδευόμενος—η—ον, παιδεύσων—σουσα—σον, παιδευσόμενος—η—ον, παιδευθησόμενος—η—ον, πεπαιδευσόμενος—η—ον, παιδεύσας—σασα—σαν, παιδευσάμενος—η—ον, παιδευθεὶς—εῖσα—έν, πεπαιδευκὼς—υῖα—ός, πεπαιδευμένος—η—ον* κλ., εἰς ἄλλας ὅμως γλώσσας δὲν συνέβη τὸ ἴδιον, δι' ὃ καὶ οἱ μετοχικοί των τύποι εἶναι ὀλιγώτεροι (πρβλ. λ. χ. εἰς τὴν Λατινικήν: amans διὰ τὰ τρία γένη, amaturus—a—um, amatus—a—um, amandus—a—um (τὸ ὁποῖον λαμβάνεται ὡς μετοχὴ τοῦ παθητ. μέλλοντος) καὶ πλέον οὔ). Εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλληνικὴν διεκ[illegible] μετοχαί: 1) μετ' ἐπιθήματος *—ντ—*: *λύων—οντος* (λύουσα—λῦον), *λύσων—λύσοντος* (λύσουσα—λῦσον), *λύσας—αντος* (λύσασα—λῦσαν), *λυθεὶς—έντος* (λυθεῖσα—έν), *τιμῶν—ῶντος* (—ῶσα—ῶν), *πωλῶν—οῦντος* (—οῦσα—οῦν), *γνοὺς—γνόντος* (γνοῦσα—γνόν), *ἁλοὺς—όντος* (ἁλοῦσα—ἁλὸν) κ. λ.· 2) μετ' ἐπιθήματος *—μενο—* (λυόμενος, λυσόμενος, λυσάμενος, λελυμένος, λελυσόμενος) καὶ 3) μετ' ἐπιθήματος *—οτ—*: *λελυκὼς—ότος, πεπαιδευκὼς—ότος* κ. λ. Εἰς τὴν νέαν ἑλληνικὴν ἡ ποικιλία αὕτη τῶν μετοχῶν περιωρίσθη κατὰ πολύ, οὕτω δὲ παρ' ἡμῖν εὐχρηστοῦν ἤδη μόνον μετοχαὶ εἰς *—οντας* καὶ *—ῶντας*: *παίζοντας* (ἄνευ δηλώσεως ἀριθμοῦ, γένους καὶ πτώσεως), *τρώγοντας*=τρώγων—ουσα—ον, —οντες—ουσαι—οντα κλ., *ἀγαπῶντας, ξεχνῶντας* κλ. καὶ με-

Digitized by Google

τοχαὶ εἰς —*μενος* (—ούμενος, άμενος, —μένος): *τρεχούμενος* (τρεχούμενοι λογαριασμοὶ) ἢ *τρεχάμενος* (τρεχάμενα νερά), *χαρούμενος* καὶ *χαιράμενος*, *γραμμένος*, *πλυμένος*, *πεσμένος*, *πιασμένος* κλπ. Αἱ μετοχαὶ εἰς —*οντας*,— *ῶντας* ἀπαντοῦν εἴς τινας νεοελληνικὰς διαλέκτους ἄνευ τοῦ ληκτικοῦ —*ς* (δηλαδὴ ὡς —*οντα*, —*ῶντα*, ὅπως καὶ εἰς τὴν μεσαιωνικὴν ἑλληνικήν): *πίνοντα*, *σκάβοντα* κλπ.=πίνοντας, σκάβοντας κ. οὗ. κ. Εἶναι ἄξιον παρατηρήσεως ὅτι (ὅπως εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν ὡρισμέναι μετοχαὶ προσεγγίσασαι περισσότερον πρὸς τὰ ἐπίθετα ἐσχημάτιζον καὶ παραθετικά: ἐρρωμένος — ἐρρωμενέστερος—ἐρρωμενέστατος, κεχαρισμένος—κεχαρισμενώτατα κλπ., οὕτω καὶ) εἴς τινας διαλέκτους τῆς νέας Ἑλληνικῆς σχηματίζονται παραθετικὰ ἐνίων μετοχῶν, ἐπιθετικώτερον λαμβανομένων: *γινουμινώτιρους*=γινωμενώτερος, μᾶλλον γινωμένος, δηλαδὴ ὡριμώτερος, *στινουχουριμινώτιρους*=στενοχωρεμενώτερος (ἐν Αἰτωλίᾳ) κ. οὗ. κ. Ἐκ τῶν εἰς —*μένος* νεοελληνικῶν μετοχῶν ἄλλαι μὲν ἐσχηματίσθησαν ἐκ τοῦ παρακειμένου: *δαρμένος*, *σπαρμένος*, *γραμμένος* κλπ., ἄλλαι ἐκ τοῦ παθητικοῦ ἀορίστου (ἐκάην) *καημένος*, (ἀνεπάην —ηκα) *ἀναπαημένος* κλπ., ἄλλαι ἐκ τοῦ ἐνεργητικοῦ ἀορίστου (νὰ εἰπῶ) *εἰπωμένος*, (νὰ πιῶ) *πιωμένος*, (νὰ κάμω) *καμωμένος*, (νὰ φάγω) *φαγωμένος* κ. οὗ. κ., ἄλλαι ἐξ ἐνεστωτικῶν θεμάτων: κερδαίνω—*κερδαιμένος*, πηγαίνω—*πηγαιμένος*, πετυχαίνω—*πετυχαιμένος* κ.οὗ.κ.

*Χρῆσις τῆς μετοχῆς*. Ἡ μετοχὴ ἀπαντᾷ ἄλλοτε μὲν ὡς ἐπιθετικὴ μετοχή, ἄλλοτε ἐπέχει θέσιν κατηγορουμένου («ἦν αὕτη ἡ στρατηγία οὐδὲν ἄλλο δυναμένη»), συνηθέστερον δὲ ἐπέχει θέσιν δευτερευούσης προτάσεως, ὁπότε καὶ διακρίνεται εἰς *αἰτιολογικήν*, *τελικήν*, *τροπικήν*, *χρονικήν*, *ἐναντιωματικὴν* καὶ *ὑποθετικὴν* μετοχήν. Εἰς τὴν νέαν Ἑλληνικὴν συχνότερον ἀπαντοῦν αἱ χρονικαὶ καὶ τροπικαί, τῶν ἄλλων ὅμως μετοχῶν ἡ χρῆσις περιωρίσθη κατὰ πολύ. Ἀξία ἰδίου λόγου εἶναι ἡ λεγομένη *ἀπόλυτος μετοχή*, ἤτοι ἡ κατὰ γενικὴν ἐκφερομένη ἐπὶ ἑτεροπροσωπίας («θεοῦ διδόντος οὐδὲν ἰσχύει φθόνος» κλ.), πρὸς τὴν ὁποίαν ἀντιστοιχεῖ ἡ παρὰ τοῖς Λατίνοις ἀφαιρετικὴ ἀπόλυτος (omnibus rebus relictis κλ., natura docente κλ., vere ineunte κλπ.). Ἐν τῇ Ἑλληνικῇ ἐπὶ ἀπροσώπων ῥημάτων ἡ ἀπόλυτος μετοχὴ τίθεται κατ' αἰτιατικὴν (μετὰ ἢ ἄνευ τοῦ *ὡς*, *ὥσπερ*): «κατακείμεθα ὥσπερ ἐξὸν ἡσυχίαν ἄγειν» κ.ο.κ.

[Πρβλ. *Γ. Χατζιδάκι* ἐν «Πρακτικοῖς» τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν τόμ. Γ΄ (1928), τεῦχ. 7 καὶ 8 σελ. 634 κ. ἑξ.] Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Λογιστ.] Μετοχὴ* καλεῖται τίτλος κινητῆς ἀξίας, ἀποτελῶν τὸ ἀποδεικτικὸν συμμετοχῆς εἰς τὸ κεφάλαιον καὶ τὰ κέρδη ἀνωνύμου ἑταιρείας. Δύναται νὰ εἶναι ὀνομαστικός, εἰς τὸν κομιστὴν ἢ εἰς διαταγήν. Ὁ μᾶλλον διαδεδομένος τύπος εἶναι εἰς τὸν κομιστήν. Ὀνομαστικοὶ τοιοῦτοι τίτλοι εἶναι συνήθως τῶν μεγάλων πιστωτικῶν ἱδρυμάτων, ὡς παρ' ἡμῖν τῆς Τραπέζης τῆς Ἑλλάδος, σκοποῦν δὲ τὴν ἀποφυγὴν τῆς ἐπ' αὐτῶν κερδοσκοπίας, λόγῳ τῶν δυσχερειῶν τῆς μεταβιβάσεως ἀπὸ χειρὸς εἰς χεῖρα. Μετοχαὶ εἰς διαταγὴν ἐκδίδονται σπανιώτατα καὶ μεταβιβάζονται δι' ὀπισθογραφήσεως.

Ἡ μετοχὴ δίδει εἰς τὸν κάτοχον: 1) δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὸ ἐνεργητικὸν τῆς ἑταιρείας ἐν περιπτώσει διαλύσεως αὐτῆς, 2) δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὰ κέρδη. Εἰς τὸ κύριον σῶμα μιᾶς μετοχῆς εἶναι πάντοτε προσηρτημένος ὡρισμένος ἀριθμὸς διατρήτων μικρῶν ἀποδεικτικῶν κερδῶν, ἅτινα ἀναλογοῦν ἕκαστον εἰς ὡρισμένην χρονικὴν περίοδον, ἔτος ἢ ἑξαμηνίαν, καὶ ἀποκόπτονται ἀνὰ πᾶσαν εἴσπραξιν τοῦ καθορισθέντος κέρδους (μερίσματος), δι' ὃ καὶ καλοῦνται *μερισματαποδείξεις*.

Ὑπάρχουσι πλείονα εἴδη μετοχῶν. *Προνομιοῦχοι* καλοῦνται αἱ δίδουσαι εἰς τὸν κάτοχον προνομιακὴν θέσιν ἔν τε τῇ κατανομῇ τῶν κερδῶν καὶ τῇ διανομῇ τοῦ κεφαλαίου, ἐν περιπτώσει διαλύσεως τῆς ἑταιρείας. *Ἐπικαρπίας* καλοῦνται αἱ παρεχόμεναι εἰς τοὺς μετόχους ἀντὶ τῶν ἀποσβεννυμένων διὰ κληρώσεως τοιούτων, ὁσάκις προεβλέφθη τοιοῦτόν τι ἐν τῷ καταστατικῷ. Αἱ μετοχαί, μέσα ἀνταλλαγῆς μιᾶς περιουσιακῆς συμμετοχῆς, κινητοποιοῦντα τὸν ἐμπορικὸν καὶ βιομηχανικὸν πλοῦτον ἑνὸς τόπου, ἀπετέλεσαν σὺν τῷ χρόνῳ ἰδιαίτερον παράγοντα οἰκονομικῆς ζωῆς, ἐκδηλουμένης εἰς τὰ χρηματιστήρια, εἰς τὴν πυρετώδη σημερινὴν κίνησιν τῶν ὁποίων παίζουν σπουδαιότατον ῥόλον.

Α. Λ.

— *[Ἐμπορ. Δίκ.] Μετοχὴ* καλεῖται τὸ σύνολον τῶν ἑταιρικῶν δικαιωμάτων ἑταίρου ἀνωνύμου ἑταιρείας, ὡς καὶ ὁ ἐνσωματῶν τὰ δικαιώματα ταῦτα τίτλος. Ἀπὸ οὐσιαστικῆς ἀπόψεως μετοχὴ εἶναι ἓν τῶν ἰσοτίμων μεριδίων, εἰς τὰ ὁποῖα εἶναι διῃρημένον τὸ μετοχικὸν κεφάλαιον ἀνωνύμου ἑταιρείας, διὰ τῆς ἀποκτήσεως τοῦ ὁποίου καὶ μόνον κτᾶται ἡ ἰδιότης τοῦ συνεταίρου ἀνωνύμου ἑταιρείας. Τὸ σύνολον τῶν δικαιωμάτων καὶ τῶν ὑποχρεώσεων, τὰ ὁποῖα γεννῶνται ἐκ τῆς ἰδιότητος τοῦ συνεταίρου, εἶναι ἀρρήκτως συνδεδεμένα μὲ τὴν ἀπόκτησιν ἑνὸς τῶν ἰσοτίμων μεριδίων, εἰς ἃ διαιρεῖται τὸ μετοχικὸν κεφάλαιον. Δὲν ἀποτελεῖ ὅμως προϋπόθεσιν τῆς ἰδιότητος τοῦ ἑταίρου ἀνωνύμου ἑταιρείας ἡ ὕπαρξις ἐγγράφου, δηλαδὴ τῆς μετοχῆς, διότι τὸ δικαίωμα τοῦτο ἀποδεικνύεται διὰ τοῦ βιβλίου τῆς ἑταιρείας, ἐν ᾧ τηρεῖται ὁ κατάλογος τῶν ὀνομαστικῶν μετόχων. Ἀντιθέτως ὅμως, ἐὰν αἱ ἐκδοθεῖσαι μετοχαὶ εἶναι ἀνώνυμοι, ἡ ἰδιότης τοῦ συνεταίρου ἀνωνύμου ἑταιρείας ἐνυπάρχει παρὰ τῷ ἑκάστοτε κατόχῳ τοῦ ἀνωνύμου τίτλου. Περὶ τῆς ὑποδιαιρέσεως τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου εἰς ἰσότιμα μερίδια ὁρίζει τὸ καταστατικὸν καὶ ὁ νόμος.

Μετοχὴ σημαίνει ὅμως καὶ τὸ ἑταιρικὸν δικαίωμα τοῦ μετόχου ἀνωνύμου ἑταιρείας. Τὸ δικαίωμα τοῦτο περιλαμβάνει: α) δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὴν διανομὴν τῶν ἑταιρικῶν κερδῶν εἰς τὸ τέλος ἑκάστης ἑταιρικῆς χρήσεως, ὡς καὶ συμμετοχῆς εἰς τὸ προϊὸν τῆς ἐκκαθαρίσεως τῆς ἑταιρικῆς περιουσίας ἐν περιπτώσει διαλύσεως τῆς ἑταιρείας καὶ β) δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὴν διοίκησιν καὶ διαχείρισιν τῶν ἑταιρικῶν πραγμάτων. Τὸ τελευταῖον τοῦτο δικαίωμα ἐκδηλοῦται καὶ πραγματοποιεῖται διὰ τοῦ παρεχομένου εἰς τὸν μέτοχον δικαιώματος ψήφου κατὰ τὰς γενικὰς συνελεύσεις. Τέλος μετοχὴ λέγεται καὶ ὁ ἔγγραφος τίτλος ὁ ἐνσαρκώνων τὰ δικαιώματα τοῦ μετόχου.

Αἱ μετοχαὶ ἀνωνύμου ἑταιρείας εἶναι δυνατὸν νὰ ἐκδοθῶσιν εἴτε ὀνομαστικαὶ εἴτε ἀνώνυμοι, ὑπό τινας δὲ προϋποθέσεις καὶ εἰς διαταγήν. Ἡ διάκρισις αὕτη ἔχει σημασίαν κυρίως ὡς πρὸς τὸν τρόπον τῆς μεταβιβάσεως τῆς μετοχῆς. Ἡ ὀνομαστικὴ μετοχὴ μεταβιβάζεται διὰ τῆς ἐγγραφῆς τῆς περὶ μεταβιβάσεως τοῦ τίτλου δηλώσεως τοῦ ἐκποιοῦντος ἐν τῷ βιβλίῳ μητρῴου, τὸ ὁποῖον τηρεῖται ὑπὸ τῆς ἑταιρείας. Ἡ ἀνώνυμος μετοχὴ μεταβιβάζεται διὰ τῆς παραδόσεως τοῦ τίτλου, καὶ ἡ εἰς διαταγὴν ἐκδεδομένη μετοχὴ δι' ὀπισθογραφήσεως.

Ἡ τροπὴ ἀνωνύμου μετοχικοῦ τίτλου εἰς ὀνομαστικὸν ἢ καὶ ἀντιστρόφως εἶναι δυνατή, τὸ δὲ νομοθετικὸν διάταγμα τοῦ 1923 περὶ εἰδικῶν διατάξεων ἐπὶ ἀνωνύμων ἑταιρειῶν ῥυθμίζει τὰ τῆς τοιαύτης μετατροπῆς. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι τοιαύτη μετατροπὴ ἀποκλείεται ἢ μᾶλλον ὑπόκειται εἰς περιορισμούς, ὁσάκις, πρᾶγμα δυνατόν, τὸ καταστατικὸν περιορίζει τὴν ἐλευθέραν μεταβίβασιν τῶν ὀνομαστικῶν μετοχῶν (Vinkulierung der Aktien, vinkulierce Namensaktien) ἐκ λόγων ἑταιρικῆς πολιτικῆς.

Ὑπάρχουν διάφορα εἴδη μετοχῶν: αἱ *προνομιοῦχοι μετοχαὶ* (actions de préférence, Vorzugsaktien) ἐκδιδόμεναι κατ' ἐξοχήν, ὁσάκις ἐπιδιώκεται ἡ προσέλκυσις νέων μετόχων πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου καὶ αἱ ὁποῖαι συνίστανται εἰς τὴν παροχὴν προνομίου ἀπολήψεως ὡρισμένου πρώτου μερίσματος πρὸ τῶν κοινῶν μετόχων καὶ εἰς τὴν προνομιακὴν ἱκανοποίησιν τοῦ δικαιούχου τούτων ἐκ τῆς ἑταιρικῆς περιουσίας μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς ἑταιρείας· αἱ *μετοχαὶ ἐπικαρπίας* (actions de jouissance, Genusscheine), αἱ ὁποῖαι παρέχουν εἰς τοὺς δικαιούχους αὐτῶν δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὰ κέρδη τῆς ἑταιρείας, ὡς καὶ εἰς τὴν διανομὴν τῆς ἑταιρικῆς περιουσίας μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς ἑταιρείας. Αὗται ἐκδίδονται ὁσάκις τὸ καταστατικὸν προβλέπει τὴν κατ' ἔτος διὰ κληρώσεως ἀπόσβεσιν μέρους τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου καὶ δίδονται εἰς τοὺς κατόχους τῶν κληρουμένων μετοχῶν, οἵτινες ἐξακολουθοῦν νὰ εἶναι συνεταῖροι.

Ἕτερα εἴδη μετοχῶν εἶναι οἱ *κυρίως* ἢ *κοινοὶ ἱδρυτικοὶ τίτλοι*, ἐκδιδόμενοι ὑπὲρ τῶν ἱδρυτῶν ἀνωνύμου ἑταιρείας εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν διὰ τὴν σύστασιν τῆς ἑταιρείας καταβληθεισῶν ἐνεργειῶν αὐτῶν, παρέχοντες μόνον δικαίωμα ἀπολήψεως ὡρισμένου ποσοστοῦ ἐκ τῶν καθαρῶν κερδῶν, οὐχὶ δὲ καὶ συμμετοχῆς εἰς τὴν διοίκησιν καὶ διαχείρισιν τῆς ἑταιρείας, καὶ οἱ κακῶς, ἐφ' ὅσον ἡ ἔκδοσις αὐτῶν ἐπιτρέπεται καὶ διαρκούσης τῆς λειτουργίας τῆς ἑταιρείας, ὑπὸ τοῦ νόμου ἐπίσης ἀποκαλούμενοι *ἱδρυτικοὶ τίτλοι*, οἱ ὁποῖοι ἐν τῇ πρακτικῇ, πρὸς διάκρισιν τῶν προηγουμένων, καλοῦνται *ἐξαιρετικοὶ ἱδρυτικοὶ τίτλοι*. Οἱ τελευταῖοι οὗτοι ἐκδίδονται εἰς ἀντάλλαγμα εἰσφορῶν εἰς εἶδος, δὲν εἶναι ὅμως κατὰ κυριολεξίαν μετοχαί, διότι ἡ ἀποτίμησις τῆς εἰς εἶδος εἰσφορᾶς δὲν προώρισται νὰ αὐξήσῃ τὴν ὀνομαστικὴν ἀξίαν τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου, παρέχουν δὲ εἰς τὸν δικαιοῦχον αὐτῶν μόνον δικαίωμα συμμετοχῆς κατὰ ὡρισμένον μέρος εἰς τὰ ἑταιρικὰ κέρδη. *Μετοχαὶ βιομηχανίας* (actions industrielles) παρέχουσαι ὅλα τὰ δικαιώματα τοῦ μετόχου εἰς πρόσωπα συνεισφέροντα εἰς τὴν ἑταιρείαν μόνον τὴν ἰδιάζουσαν ἐμπειρίαν των καὶ τέχνην ἢ τὴν φήμην των, στοιχεῖα ἐν γένει μὴ ἐπιδεχόμενα ἀποτίμησιν εἰς χρῆμα, ὡς καὶ *μετοχαὶ ἀμοιβῆς*, παρέχουσαι ὅλα τὰ δικαιώματα τοῦ μετόχου εἰς ἱδρυτὰς ἢ καὶ εἰς ἄλλα πρόσωπα εἰς ἀνταμοιβὴν ἐνεργειῶν των διὰ τὴν ἵδρυσιν τῆς ἑταιρείας, δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἐκδοθῶσι κατὰ τὸ παρ' ἡμῖν ἰσχῦον δίκαιον.

Κατὰ κανόνα ἑκάστη μετοχὴ παρέχει εἰς τὸν δικαιοῦχον αὐτῆς δικαίωμα ψήφου κατὰ τὰς γενικὰς συνελεύσεις. Εἶναι δυνατὸν ὅμως ἐν τῷ καταστατικῷ νὰ ὁρίζεται ἀριθμὸς μετοχῶν ἀνώτερος τῆς μιᾶς δι' ἑκάστην ψῆφον. Ὁ ἀριθμὸς ὅμως οὗτος δὲν δύναται νὰ ὑπερβαίνῃ καὶ ὡρισμένον ποσὸν καθοριζόμενον ὑπὸ τοῦ νόμου καὶ ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὴν ὀνομαστικὴν ἀξίαν τοῦ ἀπαιτουμένου δι' ἑκάστην ψῆφον ἀριθμοῦ μετοχῶν. Ἀλλαχοῦ ἐξεδόθησαν, κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη, μετοχαὶ παρέχουσαι εἰς τοὺς δικαιούχους αὐτῶν πολλαπλοῦν δικαίωμα ψήφου. Τοῦ μέτρου τούτου ἐγένετο χρῆσις πρὸς προστασίαν τῶν ἐπιχειρήσεων ἀπὸ τοῦ κινδύνου τῆς περιελεύσεως αὐτῶν εἰς χεῖρας ἀλλοδαπῶν. Ἐν τούτοις, ἡ προσφυγὴ εἰς τὸ μέτρον τοῦτο ἀπεδείχθη οὐχὶ ἀκίνδυνος, ἰδίως λόγῳ τῆς δυνατότητος εὐκόλων καταχρήσεων τῶν διοικούντων εἰς βάρος τῶν λοιπῶν μετόχων.

Οἱ πρὸς πιστοποίησιν τοῦ ἑταιρικοῦ δικαιώματος συνεταίρου ἀνωνύμου ἑταιρείας ἐκδιδόμενοι τίτλοι ἐν περιπτώσει τμηματικῆς καταβολῆς τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου καὶ μετὰ τὴν πρώτην τμηματικὴν καταβολήν, ὀνομάζονται *προσωρινοὶ τίτλοι* (Interimscheine), ἐκδίδονται ὀνομαστικοὶ καὶ κατ' οὐδὲν οὐσιαστικῶς διαφέρουσι τῶν ὀνομαστικῶν μετοχῶν. Τοὐναντίον θεμελιώδης εἶναι ἡ διαφορὰ τῆς μετοχῆς ἀπὸ τὴν *ὁμολογίαν* ἢ *ὁμολογιακὸν τίτλον*.

Κ. Β. Σ.

**μετόχι** (τό)· βλ. *μετόχιον*.

**Μετόχι, *Ἔξω*** — *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λευκωσίας καὶ τῷ διαμερίσματι Κυθρέας. Κάτ. 6.000, Ἕλληνες ὀρθόδοξοι. Α. Κ. Α.

—**Μετόχι, *Κάτω***—*[Γεωγρ.]*. Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λασιθίου Κρήτης. Κάτ. 234 (1928). Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ *Γεροντομουρί*. Ε. Γ.

**Μετόχια** *[Γεωγρ.]*. —1) *Ἀναχούρδου (Ἀναχουρδομέτοχα)*. Χωρίον τῆς κοινότητος Πρινὲ τῆς ἐπαρχίας Μυλοποτάμου τοῦ νομοῦ Ῥεθύμνης Κρήτης μὲ 288 κατοίκους καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. —2) *Καμαριώτου*. Χωρίον ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα τῆς αὐτῆς ἐπαρχίας, μὲ 212 κατοίκους καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. —3) *Κάμπου*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀγγελιανῶν, τῆς αὐτῆς ἐπαρχίας, εὔφορον εἰς ἔλαιον, χαρούπια καὶ δημητριακά, μὲ 372 κατοίκους καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. —4) *Μεσακά*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος καὶ ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασιθίου Κρήτης μὲ 12 κατοίκους. — 5—6) *Μπουγάδα καὶ Στειακοῦ*. Συνοικισμοὶ τοῦ δήμου Ἡρακλείου Κρήτης, ὁ μὲν πρῶτος μὲ 21, ὁ δὲ δεύτερος μὲ 4 κατοίκους. —7) *Φραντζεσκιανά*. Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ῥεθύμνης. Κάτ. 281 (1928). Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ χωρίον *Κάτω-Βαρσαμόνερο*.

Ε. Γ.

**μετοχιάριος** (ὁ)· μοναχὸς ἐπιστάτης μοναστηριακοῦ μετοχίου.

**μετοχικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰς μετοχάς, ὁ ἐκ μετοχῶν ἀποτελούμενος: «μετοχικὴ ἑταιρεία», «κεφάλαιον μετοχικόν»· || γραμμ. «μετοχικὸς προσδιορισμός» ὁ διὰ μετοχῆς ἐκφερόμενος.—Ἐπίρρ. *μετοχικῶς*.

—**μετοχικὰ *ταμεῖα***. Καλοῦνται οὕτω νομικὰ πρόσωπα δημοσίου δικαίου, ἱδρυμένα διὰ νόμου, εἰς τὰ ὁποῖα μετέχουσι τὰ ὑπὸ τοῦ καταστατικοῦ των ἢ ὑπὸ τοῦ νόμου προβλεπόμενα πρόσωπα (π. χ. πολιτικοὶ ὑπάλληλοι τοῦ κράτους κλπ.), τὰ ὁποῖα, ὑπὸ τὴν ἰδιότητα τοῦ μετόχου, καταβάλλουσιν ἐφ' ὡρισμένον χρόνον εἰς τὸ οἰκεῖον ταμεῖον ποσοστὸν τῆς μισθοδοσίας των, πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ λάβωσι σύνταξιν ἢ περίθαλψιν παρὰ τοῦ ταμείου, κατὰ τοὺς ὅρους τοῦ νόμου ἢ τοῦ καταστατικοῦ. Τὰ ταμεῖα ταῦτα ἐνισχύονται προσέτι διὰ τῶν ὑπὸ τοῦ νόμου προβλεπομένων σταθερῶν ἐσόδων ἢ πόρων αὐτῶν, ὡς ἐκ τοῦ γενικωτέρου σκοποῦ ὃν ἐξυπηρετοῦσι, καὶ διατελοῦσιν ὑπὸ τὴν ἐποπτείαν τοῦ κράτους. Εἰδικώτερον τὰ ταμεῖα ταῦτα ἔχουσιν ὡς ἑξῆς:

***Μετοχικὸν ταμεῖον τῶν πολιτικῶν ὑπαλλήλων***. Ὑπὸ τὸν τίτλον τοῦτον ἱδρύθη ἐν Ἀθήναις τὴν 12 Ὀκτωβρίου 1867, ὡς ἰδιωτικὸν ταμεῖον ἀλληλοβοηθείας, τῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ τότε προέδρου τοῦ ἐλεγκτικοῦ συνεδρίου Δ. Ν. Λεβίδη καὶ πεντηκοντάδος τῶν ἐν Ἀθήναις πολιτικῶν ὑπαλλήλων, οἵτινες ὑπέγραψαν τὸ διὰ τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος τῆς 24 Ὀκτωβρίου 1867 συνταχθὲν καταστατικόν του. Ἔκτοτε ὁ Δ. Ν. Λεβίδης διετέλεσε πρόεδρος τοῦ ταμείου μέχρι τοῦ θανάτου του (1893), ὅτε τὸν διεδέχθη, ἐκλεγεὶς ὑπὸ τῆς συνελεύσεως τῶν μετόχων, ὁ Π. Ι. Παπαναστασίου, τοῦτον δὲ διεδέχθη ὁ Ἐπ. Μαυρομμάτης, κατόπιν τῆς ἐκλογῆς τοῦ 1905. Διὰ τῶν νόμων ΑϠΙΕ΄ τοῦ 1891 καὶ ΒϠΠΗ΄ τοῦ 1903 ἐγένοντο ἀπόπειραι ἐφαρμογῆς τῆς εἰς τὸ ταμεῖον ὑποχρεωτικῆς συμμετοχῆς τῶν πολιτικῶν ὑπαλλήλων, ἀξιοσημείωτος δὲ εἶναι ἡ ὑπὲρ αὐτοῦ ληφθεῖσα διὰ τοῦ νόμου ΓΧΔ΄ (3604) τοῦ 1910 πρόνοια, σκοποῦσα τὴν ἐνίσχυσιν τῶν πόρων του. Διὰ δὲ τοῦ νόμου 1636 τοῦ 1919 τὸ μετοχικὸν ταμεῖον κατεστάθη «εἰδικὸν ταμεῖον τοῦ κράτους», ἔχον ἰδίαν νομικὴν προσωπικότητα καὶ ὑπαγόμενον εἰς τὴν ἁρμοδιότητα τοῦ

Digitized by Google

ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν. Εἰς αὐτὸ μετεβιβάσθη ἡ περιουσία τοῦ πρότερον, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἀρχικοῦ του καταστατικοῦ, τροποποιηθέντος κατὰ διαφόρους ἐποχάς, λειτουργοῦντος μετοχικοῦ ταμείου, ἡ δὲ διοίκησίς του ἀνετέθη εἰς πολυμελὲς συμβούλιον, ἀπαρτιζόμενον ἐξ ἀνωτέρων πολιτικῶν ὑπαλλήλων διοριζομένων συμφώνως τῷ νόμῳ. Ἀλλὰ μᾶλλον σημαντικὴ ὑπῆρξεν ἡ ὑπὲρ τοῦ μετοχικοῦ ταμείου ληφθεῖσα πρόνοια διὰ τῶν νομοθετικῶν διαταγμάτων τῆς 12 Φεβρουαρίου 1923, τῆς 14 Ἀπριλίου 1923, τῆς 31 Μαΐου 1923 καὶ τῆς 17 Αὐγούστου 1925, συμπληρωθέντων καὶ διὰ νεωτέρων νόμων, ὧν τελευταῖος εἶναι ὁ νόμος 4139 τοῦ 1929. Κατὰ ταῦτα, ἡ εἰς τὸ μετοχικὸν ταμεῖον συμμετοχὴ κατεστάθη ἀπὸ 1 Ἀπριλίου 1923 ὑποχρεωτικὴ δι' ἅπαντας ἀνεξαιρέτως τοὺς ἐν ὑπηρεσίᾳ τακτικοὺς καὶ ἐκτάκτους δημοσίους ὑπαλλήλους καὶ ὑπηρέτας, ὡς καὶ διὰ τοὺς ἐπὶ μηνιαίῳ μισθῷ ἢ μηνιαίᾳ ἀποζημιώσει ἐργάτας τῆς ἁρμοδιότητος τῶν πολιτικῶν ὑπουργείων καὶ τῆς βουλῆς (ἄρθρ. 1 § 1, Ν. Δ. 12 Φεβρ. 1923). Ἐξαίρεσις τῆς ὑποχρεωτικῆς συμμετοχῆς ἐγένετο μόνον διὰ τοὺς ἰσοβίους δικαστάς, τοὺς ἐμμίσθους δικαστικοὺς παρέδρους καί τινας ἄλλας κατηγορίας ὑπαλλήλων, οἵτινες ὅμως δύνανται νὰ ἐγγραφῶσι προαιρετικῶς ἀποφάσει τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου. Βραδύτερον δέ, συσταθέντος τοῦ ταμείου νομικῶν, διὰ τοῦ νόμου 4448 τοῦ 1929, ἄρθρον 4, καθωρίσθη ὅτι ὡρισμέναι κατηγορίαι δικαστικῶν ὑπαλλήλων καί τινες ἄλλοι τῶν πολιτικῶν ὑπαλλήλων, διοριζόμενοι ἀπὸ τῆς 1 Ὀκτωβρίου 1929 καὶ ἐφεξῆς, δὲν δικαιοῦνται οὐδὲ ὑποχρεοῦνται νὰ μετέχωσι τοῦ μετοχικοῦ ταμείου. Προορισμὸς αὐτοῦ εἶναι ἡ κατ' ἀναλογίαν τοῦ ποσοῦ τῶν καταθέσεων τῶν μετόχων χορήγησις μερίσματος εἰς αὐτοὺς καὶ τὰς οἰκογενείας αὐτῶν, κατὰ τοὺς ὅρους τοῦ καταστατικοῦ τοῦ ταμείου. Ὁ τελευταῖος ἀπολογισμὸς τοῦ μετοχικοῦ ταμείου τῆς χρήσεως 1929—1930 (Ἐφ. Κυβ., σελ. 2013 τοῦ παραρ. τοῦ 1930, ἀρ. 291) ἐμφανίζει ἀνθηρὰν τὴν οἰκονομικήν του κατάστασιν καὶ ἱκανοποιητικὴν τὴν ἐκπλήρωσιν τοῦ προορισμοῦ του.

***Ναυτικὸν ἀπομαχικὸν ταμεῖον.*** Ἱδρύθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1861 ὡς δημόσιον ἵδρυμα, πρὸς περίθαλψιν τῶν ἀπομάχων Ἑλλήνων ἐργατῶν θαλάσσης καὶ τῶν οἰκογενειῶν αὐτῶν. Διὰ νεωτέρων νόμων ἀναδιωργανώθη καὶ διέπεται ὑπὸ τοῦ νόμου 2873 τῆς 24 Νοεμβρίου 1922, κωδικοποιήσαντος τὴν περὶ αὐτοῦ νομοθεσίαν καὶ τοῦ περὶ ἐκτελέσεώς του διατάγματος τῆς 28 Ἀπριλίου 1923. Ἐπηκολούθησαν καὶ μεταγενέστερα νομοθετήματα τροποποιοῦντα καὶ συμπληροῦντα τὰς διατάξεις τοῦ κώδικος τοῦ ταμείου.

***Μετοχικὸν ταμεῖον τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ.*** Ὠνομάσθησαν ὑπὸ τὴν κοινὴν ταύτην ἐπωνυμίαν διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 8 Αὐγούστου 1923 τὰ διὰ τοῦ νόμου ΤΟΕ΄ τοῦ 1856 καὶ ΦΑ΄ τοῦ 1874 συσταθέντα ταμεῖα τῶν ἀποστράτων ἀξιωματικῶν τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ καὶ τῶν χηρῶν καὶ ὀρφανῶν αὐτῶν. Αἱ περιουσίαι τῶν δύο τούτων ταμείων ἀπὸ 1 Ἰανουαρίου 1924 συγχωνευθεῖσαι ἀπετέλεσαν τὴν περιουσίαν τοῦ *Μ. Τ. Π. Ν.* Διὰ δὲ τοῦ προεδρικοῦ διατάγματος 28 Δεκεμβρίου 1927 ἐκωδικοποιήθησαν εἰς ἑνιαῖον κείμενον νόμου ὑπ' ἀριθ. 2740 πᾶσαι αἱ συναφεῖς διατάξεις. Πόροι τοῦ ταμείου εἶναι ἡ κατὰ μῆνα εἰσφορὰ πάντων τῶν ἐνεργῶν, διαθεσίμων καὶ ἀργῶν ἀξιωματικῶν τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἐπιβαλλομένη καὶ εἰσπραττομένη διὰ κρατήσεως ἐκ τῶν μισθῶν των, καθὼς καὶ οἱ λοιποὶ ὑπὸ τοῦ νόμου ὁριζόμενοι πόροι. Σκοπὸς δὲ τοῦ ταμείου εἶναι ἡ παροχὴ μερίσματος εἰς τοὺς ἀξιωματικούς, ὑπαξιωματικοὺς καὶ μονίμους ναύτας τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἐφόσον δικαιοῦνται συντάξεως ἐκ τοῦ δημοσίου ταμείου, καθὼς ἐπίσης καὶ εἰς τὰς χηρευούσας οἰκογενείας αὐτῶν. Τὸ ταμεῖον, λειτουργοῦν ὡς νομικὸν πρόσωπον δημοσίου δικαίου, διοικεῖται παρὰ διοικητικοῦ συμβουλίου διοριζομένου κατὰ τὸν νόμον, ὑπάρχει δὲ παρ' αὐτῷ καὶ ὑπουργικὸς ἐπίτροπος, ἐπίσης διοριζόμενος. Τὸ μέρισμα εἶναι χρηματικὸν ποσόν, καταβαλλόμενον κατὰ μῆνα, ἀπονέμεται δέ, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν διατάξεων τοῦ νόμου, δι' ἀποφάσεως τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου καὶ δὲν ἐπιτρέπεται ἡ ἐκχώρησις ἢ κατάσχεσίς του, ἐκτὸς τοῦ ἑνὸς τετάρτου δι' ὀφειλὰς πρὸς τὸ δημόσιον ἢ διὰ διατροφὴν συζύγου, κατιόντων ἢ ἀνιόντων. Ἡ περιουσία τοῦ Μ. Τ. Π. Ν. δὲν ὑπόκειται εἰς κατάσχεσιν. Εἰδικὴ παραγραφὴ δύο ἐτῶν καθωρίσθη διὰ τὰς κατὰ τοῦ ταμείου ἀπαιτήσεις (ν. 2740, ἄρθρ. 37). Οἱ μέτοχοι τοῦ ναυτικοῦ ἀπομαχικοῦ ταμείου (βλ. ἀνωτ.) διέπονται ἀπὸ τὰς περὶ αὐτοῦ διατάξεις, διακρινομένας τῶν περὶ τοῦ Μ. Τ. Π. Ν. Νεώτατος δὲ περὶ αὐτοῦ εἶναι ὁ νόμος 4507 τῆς 5 Ἀπριλίου 1930 (ἑρμηνευτικός).

Γ. Ν. ΚΟΦΙΝΑΣ

***Μετοχικὸν ταμεῖον στρατοῦ.*** Ἵδρυμα σκοποῦν κυρίως τὴν οἰκονομικὴν ἀρωγὴν τῶν ἀποστρατευομένων ἀξιωματικῶν καὶ μονίμων ὁπλιτῶν τοῦ στρατοῦ τῆς ξηρᾶς καὶ τῆς χωροφυλακῆς, ὡς καὶ τῶν ἀπορφανιζομένων οἰκογενειῶν αὐτῶν. Ἀρχικῶς, τῷ 1853, συνεστήθη τὸ «Ταμεῖον τῶν χηρῶν καὶ ὀρφανῶν τῶν ἀξιωματικῶν τῆς γραμμῆς, τῆς ὀροφυλακῆς καὶ τῆς χωροφυλακῆς», ὅπερ τῷ 1861 μετωνομάσθη εἰς «Ταμεῖον τῶν χηρῶν καὶ ὀρφανῶν τῶν ἀξιωματικῶν τοῦ μονίμου στρατοῦ καὶ τῆς ἐφεδρείας». Ἀφ' ἑτέρου, τῷ 1861 ἱδρύθη τὸ «Ταμεῖον τῶν ἀποστράτων ἀξιωματικῶν τοῦ μονίμου στρατοῦ καὶ τῆς ἐφεδρείας», διὰ δὲ τὰς οἰκογενείας τῶν ἀποστρατευομένων μονίμων ὁπλιτῶν συνεστήθη τρίτον ταμεῖον. Ἡ συγχώνευσις τῶν τριῶν τούτων ταμείων ἐπραγματοποιήθη τῷ 1867, ἱδρυθέντος ἑνιαίου ταμείου: τοῦ *«Μετοχικοῦ ταμείου τοῦ κατὰ γῆν στρατοῦ»*. Ἡ εἰς τοὺς ἀποστράτους ἀξιωματικοὺς καὶ μονίμους ὁπλίτας, ὡς καὶ εἰς τὰς ὀρφανικὰς οἰκογενείας αὐτῶν παρεχομένη χρηματικὴ ἐνίσχυσις εἶναι: 1) Τὸ μέρισμα, ἤτοι τὸ ποσόν, ὅπερ δικαιοῦται ἕκαστος μερισματοῦχος μηνιαίως, ἀναλόγως τῶν καθαρῶν ἐτησίων ἐσόδων τοῦ ταμείου καὶ τοῦ βαθμοῦ τοῦ μερισματούχου. 2) Προικίσεις, ἤτοι ποσὰ καταβαλλόμενα ἐφ' ἅπαξ εἰς τὰς εἰς πρῶτον γάμον ἐρχομένας θυγατέρας τῶν μετόχων ἀξιωματικῶν καὶ μονίμων ὁπλιτῶν. Αἱ προῖκες καθορίζονται ἐκ τοῦ μερίσματος καὶ εἶναι ἴσαι πρὸς τὸ ποσὸν 24 μηνῶν μερισμάτων τοῦ βαθμοῦ τοῦ πατρὸς τῆς νυμφευομένης. Κατ' ἐξαίρεσιν αἱ θυγατέρες πεσόντων ἐν πολέμῳ λαμβάνουσι 36 μηνῶν μερίσματα. 3) Δάνεια ἐπὶ τόκῳ εἰς τοὺς ἀποστράτους ἀξιωματικοὺς καὶ ὁπλίτας, ἀναλόγως τοῦ μερίσματος καὶ τῆς συντάξεως, ἅπερ λαμβάνουσι καὶ ἅτινα ἐξοφλοῦνται τοκοχρεωλυτικῶς. Ὁμοίως χορηγοῦνται δάνεια εἰς τοὺς ἐν ἐνεργείᾳ ἀξιωματικούς, ἐξοφλούμενα τοκοχρεωλυτικῶς.

Τὸ ταμεῖον ἔχει ἰδίους πόρους, δυναμένους νὰ διαιρεθῶσιν εἰς τρεῖς κατηγορίας: 1) Τοὺς ἐκ διαφόρων ὑποχρεωτικῶν κρατήσεων εἰς βάρος τῶν ἀποδοχῶν τῶν ἐν ἐνεργείᾳ ἀξιωματικῶν καὶ ὁπλιτῶν. 2) Τοὺς ἐκ τῆς ἀμέσου ἢ ἐμμέσου χορηγίας ἐκ μέρους τοῦ δημοσίου. 3) Τοὺς ἐκ τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῆς κινητῆς ἢ ἀκινήτου περιουσίας αὐτοῦ τοιούτους (βλ. λ. *Ἑλλὰς [Στρατός]*).

Ν. Μ.

***Ταμεῖον προνοίας δημοσίων ὑπαλλήλων.*** Ἱδρύθη διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 30 Ἰουνίου 1926 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 12 Ἰουλ. 1926), ἐν Ἀθήναις, πρὸς τὸν σκοπὸν τῆς παροχῆς ἐφ' ἅπαξ χρηματικοῦ βοηθήματος εἰς τοὺς ἐκ τῆς δημοσίας ὑπηρεσίας ἀποχωροῦντας ἢ ἀπολυομένους δημοσίους ὑπαλλήλους. Ἀποτελεῖ νομικὸν πρόσωπον δημοσίου δικαίου, ὑπαγόμενον εἰς τὸ ὑπουργεῖον Ἐθνικῆς Οἰκονομίας, καὶ διοικεῖται ὑπὸ τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου ἐξ ἀνωτέρων ὑπαλλήλων.

***Ταμεῖον συντάξεως νομικῶν.*** Ἱδρύθη διὰ τοῦ νόμου 4448 τῆς 10 Σεπτεμβρίου 1929 (Ἐφημ. Κυβ. τῆς 14 τοῦ αὐτοῦ) ἐν Ἀθήναις καὶ ἀποτελεῖ ἴδιον πρόσωπον δημοσίου δικαίου, πρὸς παροχὴν συντάξεων εἰς τοὺς μετόχους αὐτοῦ. Ὁ νόμος οὗτος συνεπληρώθη διὰ τοῦ νόμου 4685 τοῦ 1930 καὶ τῶν περὶ ἐκτελέσεως τοῦ διατάγματος τῆς 3 Ἰουλίου, 7 Αὐγούστου καὶ 15 Δεκεμβρίου 1930. Κατόπιν τοῦ νόμου τούτου δὲν ἰσχύουσιν αἱ περὶ ταμείου συντάξεων καὶ ἀσφαλείας τῶν δικηγόρων διατάξεις τῶν ἄρθρ. 228—335 τοῦ κώδικος περὶ δικηγόρων τῆς 5 Μαΐου 1926.

***Ἄλλα μετοχικὰ ταμεῖα.*** Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω μετοχικῶν ταμείων ὑπάρχουσι καὶ ἄλλα μετοχικὰ ἢ ἀλληλοβοηθείας ἢ ἀσφαλίσεων ταμεῖα, δημιουργηθέντα δυνάμει εἰδικῶν νόμων ἢ ἐπὶ τῇ βάσει γενικοῦ νόμου. Τοιαῦτα δὲ εἶναι:

α΄) Τὸ «Ταμεῖον μεταλλευτῶν», ἱδρυθὲν τὸ πρῶτον διὰ τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος τῆς 21 Μαΐου 1882 καὶ ἀναδιοργανωθὲν διὰ τοῦ νόμου ͵ΒΩΜΑ΄ τῆς 21 Φεβρουαρίου 1901 (Ἐφ. Κυβ. 72 τοῦ 1901, σελ. 325) πρὸς τὸν σκοπὸν ἀποζημιώσεως, συντάξεως καὶ περιθάλψεως τῶν ἐν τοῖς μεταλλείοις καὶ μεταλλουργείοις ἐργατῶν καὶ ὑπαλλήλων τῶν ἐν τῇ ἐκτελέσει τῆς ἐργασίας ἢ ἐξ ἀφορμῆς τῆς ἐργασίας ὑποστάντων δυστύχημα ἐκ βιαίου συμβάντος κλπ. Διὰ τοῦ νόμου 4705 τοῦ 1930 ἐκωδικοποιήθη ἡ νομοθεσία περὶ ταμείου μεταλλευτῶν.

β΄) Τὸ «Ταμεῖον συντάξεων τοῦ προσωπικοῦ τῆς Ἑταιρείας τῶν σιδηροδρόμων Πειραιῶς-Ἀθηνῶν-Πελοποννήσου», τὸ ὁποῖον σπουδαίως ἐνίσχυσεν ὁ νόμος ͵ΓΣΚ΄ τῆς 13 Ἰουνίου 1927 (ἄρθρ. 2—7).

γ΄) Τὸ «Ταμεῖον ἀσφαλείας καπνεργατῶν», συσταθὲν διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 29 Ὀκτωβρίου 1927, κυρωθέντος διὰ τοῦ νόμου 3460 τοῦ 1928.

δ΄) «Ταμεῖα ὑποχρεωτικῆς ἀσφαλείας ἐργατῶν καὶ ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων» συνιστῶνται ὑποχρεωτικῶς, κατὰ τὰς διατάξεις τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος τῆς 8 Δεκεμβρίου 1923 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 21 τοῦ αὐτοῦ) τοῦ κωδικοποιήσαντος τὰς διατάξεις τοῦ νόμου 2868 καὶ τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος τῆς 19 Νοεμβρίου 1923, παρὰ πάσης ἐπιχειρήσεως ἢ ἐργασίας, διὰ τὴν περίπτωσιν τῆς ἀσθενείας ἐν τῇ ἐργασίᾳ, τοῦ θανάτου, τοῦ γήρατος καὶ ἐν γένει τῆς ἀνικανότητος πρὸς ἐργασίαν παντὸς προσώπου μὴ αὐτοτελῶς ἐργαζομένου ἐν βιομηχανίᾳ καὶ ἐμπορικῇ ἐπιχειρήσει ἢ ἐργασίᾳ. Συμφώνως πρὸς τὰς διατάξεις ταύτας, αἱ ἐπιχειρήσεις αὗται (ἀνώνυμοι ἑταιρεῖαι κλπ.) συντάσσουσι τὰ καταστατικὰ τῶν παρ' ἑκάστῃ αὐτῶν ἱδρυομένων ταμείων τοῦ προσωπικοῦ των, τὰ ὁποῖα, ὑποβαλλόμενα εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας καὶ ἐγκρινόμενα παρ' αὐτοῦ, δημοσιεύονται διὰ τῆς Ἐφημερίδος τῆς Κυβερνήσεως.

ε΄) «Ταμεῖα προνοίας μυλεργατῶν καὶ ἀρτεργατῶν» ἐλήφθη ἰδιαιτέρα πρόνοια νὰ ἱδρυθῶσι διὰ τοῦ νόμου 4104 τῆς 9 Μαρτίου 1929 (Ἐφ. Κυβ. 15 τοῦ αὐτοῦ) δι' ἰδίου νόμου ὑπὲρ τοῦ μονίμου προσωπικοῦ τῶν ἀλευρομύλων.

στ΄) «Ταμεῖον προνοίας ἐφημεριδοπωλῶν» συνεστάθη ἐν Ἀθήναις ὡς νομικὸν πρόσωπον δημοσίου δικαίου διὰ τοῦ νόμου 4424 τῆς 26 Αὐγούστου 1929 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 31 τοῦ αὐτοῦ).

ζ΄) «Ταμεῖον συντάξεως ἠθοποιῶν, μουσικῶν καὶ τεχνιτῶν θεάτρου» συνεστάθη διὰ τοῦ ἀπὸ 20 Νοεμβρίου 1925 νομοθετικοῦ διατάγματος, κυρωθέντος διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 13 Νοεμβρίου 1927. Ὁ νόμος 3563 τῆς 7 Ἰουνίου 1928 ἐκύρωσε καὶ συνεπλήρωσε τὰς διατάξεις ταύτας.

η΄) «Ταμεῖον προνοίας τῶν ἀξιωματικῶν τοῦ ἐμπορικοῦ ναυτικοῦ» ἱδρύθη διὰ τοῦ νόμου 4561 τῆς 24 Ἀπριλίου 1930 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 25 τοῦ αὐτοῦ).

θ΄) «Ταμεῖον προνοίας τῶν κατωτέρων πληρωμάτων τοῦ ἐμπορικοῦ ναυτικοῦ» (ἐργατῶν θαλάσσης) ἱδρύθη διὰ τοῦ νόμου 4675 τῆς 8 Μαΐου 1930 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 12 Μαΐου 1930).

ι΄) «Ταμεῖον ἀσφαλίσεως τοῦ ὀρθοδόξου ἐφημεριακοῦ κλήρου τῆς Ἑλλάδος» ἱδρύθη ἐν Ἀθήναις διὰ τοῦ νόμου 4606 τῆς 30 Ἀπριλίου 1930 (Ἐφ. Κυβ. τῆς 2 Μαΐου 1930) ἐν Ἀθήναις.

Ὁσημέραι γενικεύεται τὸ σύστημα τῆς συστάσεως ταμείων οἷα τὰ ἀνωτέρω, μελετᾶται δὲ ἡ σύστασις καὶ ἑτέρων ταμείων, ἰατρῶν, ἐμπόρων κλπ. Ἐξ ἄλλου, μελετᾶται καὶ ἡ συγχώνευσις πλείστων ἐκ τῶν ταμείων τούτων εἰς τὰς συσταθησομένας γενικωτέρου χαρακτῆρος «κοινωνικὰς ἀσφαλίσεις» καὶ εἰς ἑνιαῖον δι' αὐτὰς ἵδρυμα.

Γ. Ν. ΚΟΦΙΝΑΣ

—**μετοχικὴ** ***ἑταιρεία*** *[Ἐμπορ. Δίκ.]*· βλ.λ. *ἑταιρεία* (ΙΑ΄ σ. 668 γ).

**μετόχιον** (τό)· κτῆμα μοναστηριακὸν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτεταμένον, μακρὰν τῆς μονῆς κείμενον, διοικούμενον δὲ ὑπὸ μοναχοῦ ἢ μοναχῶν ἀποστελλομένων ὑπὸ τῆς μονῆς εἰς ἣν ὑπάγεται.

—*[Κανον. Δίκ.]* *Μετόχια* καλοῦνται τὰ εἰς μοναστήρια ἀνήκοντα, ἐκτὸς δὲ τῆς περιοχῆς αὐτῶν κείμενα κτήματα, μετὰ τοῦ ἐν αὐτοῖς ὑπάρχοντος ναοῦ. Τὴν διοίκησιν τῶν μετοχίων ἔχει τὸ μοναστηριακὸν συμβούλιον τῆς μονῆς, εἰς ἣν ταῦτα ὑπάγονται. Τὸ μοναστηριακὸν συμβούλιον πρὸς τὴν ἐπιστασίαν τῶν μετοχίων, ἂν μάλιστα ταῦτα κεῖνται μακρὰν τοῦ μοναστηρίου, δύναται νὰ διορίζῃ κατάλληλον μοναχόν, μετοχιάριον καλούμενον. Ὁ τοιοῦτος μετοχιάριος ἐκτελεῖ τὰς διαταγὰς τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου, οὗ τυγχάνει ἐντολοδόχος. Ἔχει δὲ τὸν ἐν τῷ μετοχίῳ ναὸν ὡς ἴδιον εὐκτήριον, ὡς ἔχουσι τοῦτον καὶ ἄλλοι ὑπὸ τοῦ μοναστηρίου εἰς τὸ μετόχιον ἀποστελλόμενοι μοναχοί. Ὁ μετοχιάριος, ἱερομόναχος ὤν, ἵνα ἱερουργῇ δεῖται τῆς προτέρας ἐγγράφου ἀδείας τοῦ ἀρχιερέως, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ ὁποίου κεῖται τὸ μετόχιον. Ὁ μετοχιάριος οὐδὲν δύναται ν' ἀποθησαυρίζῃ ἐκ τῶν προϊόντων τοῦ μετοχίου, καθ' ὅσον ταῦτα ἀνήκουσι τῷ διορίσαντι αὐτὸν μοναστηρίῳ.

Περὶ τῆς καταστάσεως οἰκονόμων τῶν ἁγιορειτικῶν μετοχίων ἀποφαίνεται ἡ σύναξις, κατὰ τὸ ἄρθρον 90 τοῦ κανονισμοῦ τοῦ Ἁγίου Ὄρους. Κατὰ τὸ ἄρθρον 21 τοῦ ἀπὸ Μαΐου 1930 νόμου ἀρ. 4684 αἱ ὀλιγωτέρους τῶν τριῶν μοναχῶν ἔχουσαι μοναὶ συγχωνεύονται πρὸς ἄλλας τῆς ἰδίας μητροπόλεως μονάς, ἐχούσας μεγαλύτερον ἀριθμὸν μοναχῶν. Ἡ συγχωνευομένη μονὴ ἀποβάλλει τὴν νομικὴν αὐτῆς προσωπικότητα, καθισταμένη μετόχιον τῆς μεθ' ἧς συνεχωνεύθη μονῆς, εἰς ἣν περιέρχεται αὐτοδικαίως ἡ περιουσία αὐτῆς καὶ ἧς καθίστανται μέλη αὐτοδικαίως οἱ μοναχοὶ καὶ οἱ δόκιμοι τῆς συγχωνευομένης μονῆς.

Τὰ κατὰ τὴν διοίκησιν τοῦ μετοχίου καὶ λειτουργίαν τοῦ ναοῦ αὐτοῦ ὁρίζονται ἑκάστοτε ὑπὸ τοῦ οἰκείου ἀρχιερέως.

Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**Μετοχίτης,** ***Ἀλέξιος.*** Στρατηγὸς Βυζαντινός. Διορισθεὶς διοικητὴς Θεσσαλονίκης τῷ 1348, ὅτε ἐμαίνετο ἐκεῖ ἡ ἀναρχία καὶ ἡ δρᾶσις τῶν Ζηλωτῶν, προῆλθεν ἀμέσως εἰς συνεννόησιν μετὰ τῶν ἠθικῶν στοιχείων, τῆς ἐργατικῆς ἰδίᾳ τάξεως, καὶ ἐντὸς ὀλίγου κατώρθωσε νὰ ἐπαναφέρῃ τὴν τάξιν ἐν τῇ πόλει. Οἱ ἐν Θεσσαλονίκῃ Ζηλωταὶ ἐνισχυθέντες χρηματικῶς ὑπὸ τοῦ Στεφάνου Ντουσὰν ἡτοιμάζοντο νὰ στασιάσωσιν ἅμα τῇ ἐμφανίσει τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ, ἵνα διευκολύνωσι τὴν ὑπὸ τούτου ἅλωσιν τῆς πόλεως, ἀλλ' ὁ Μετοχίτης καταδιώξας δραστηρίως αὐτοὺς ἐπέτυχεν ἐγκαίρως τὴν ἐξόντωσίν των, ὥστε, ὅταν κατέφθασε πρὸ τῆς Θεσσαλονίκης ὁ Ντουσὰν καὶ ἐπολιόρκησεν αὐτήν, οἱ Ζηλωταὶ ἦσαν πλέον ἀνίκανοι νὰ πραγματοποιήσωσι τοὺς προδοτικοὺς αὐτῶν σκοπούς. Καὶ ὁ Μετοχίτης ἠδυνήθη νὰ ὑπερασπισθῇ ἀνενόχλητος τὴν πόλιν καὶ νὰ παράσχῃ τὸν ἀπαιτούμενον χρόνον εἰς τὸν αὐτοκράτορα Ἰωάννην ΣΤ΄ Καντακουζηνὸν νὰ συγκεντρώσῃ τὰς δυνάμεις του καὶ νὰ σώσῃ ὁριστικῶς τὴν Θεσσαλονίκην ἐκ τῆς σερβικῆς κατακτήσεως (1349—1350) (βλ. καὶ λ. *Ζηλωταί*).

Ν. ΚΛΣ

Digitized by Google

— **Μετοχίτης, *Γεώργιος*.** Διάκονος τῆς μεγάλης Ἐκκλησίας, ἀκμάσας κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Φίλος τῆς ἐκκλησιαστικῆς μετὰ τῶν Δυτικῶν ἑνώσεως ὑπερεμάχησεν αὐτῆς, γράψας κατὰ τῶν ἀντιπάλων αὐτῆς. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διεσώθησαν ἐκτὸς ἀποσπασμάτων τῶν περὶ τῆς ἐκπορεύσεως τοῦ ἁγίου Πνεύματος λόγων αὐτοῦ ἀντίρρησις τῶν τριῶν κεφαλαίων τοῦ Μαξίμου Πλανούδη καὶ τῆς κατὰ Λατίνων πραγματείας τοῦ Μανουὴλ Μοσχοπούλου (*Migne* Π. Ἑ. 141, σ. 1275 ἑ.). Κατά τινα συζήτησιν μεταξὺ τοῦ Ἰωάννου Βέκκου, φίλου τῆς ἑνώσεως, καὶ τοῦ Γρηγορίου Κυπρίου, ἐχθροῦ αὐτῆς, ὑπεστήριξε τὸν πρῶτον, ὅστις ἐξῆλθε νικητής, ὡς ἀναφέρει ὁ ἱστορικὸς Γεώργιος Παχυμέρης. Ἐπιτάφιος τοῦ Νικηφόρου Γρηγορᾶ εἰς τὸν Γεώργιον Μετοχίτην σῴζεται ἀνέκδοτος ἐν κώδικι ἑλληνικῷ παρισινῷ 1407 (φ. 1—11). Κ. Ι. Δ.

— **Μετοχίτης, *Θεόδωρος*.** Μέγας λογοθέτης (πρωθυπουργὸς) τοῦ Βυζαντίου, ἐπὶ τῆς βασιλείας Ἀνδρονίκου Β' Παλαιολόγου (1282—1328), υἱὸς τοῦ *Γεωργίου Μετοχίτου*. Ἦτο ἀνὴρ λόγιος, ὥστε ὁ μαθητὴς αὐτοῦ Νικηφόρος Γρηγορᾶς ἀποκαλεῖ αὐτὸν «ἔμψυχον βιβλιοθήκην». Ὁ πρὸς τὴν φιλολογίαν ὅμως ἔρως αὐτοῦ τὸν ἔκαμε νὰ παραμελήσῃ τελείως τὰς ὑποθέσεις τοῦ κράτους. Καθ' ὃν χρόνον οἱ Τοῦρκοι ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἠπείλουν τὰς ἐκεῖ βυζαντινὰς κτήσεις καὶ κατελάμβανον τὴν Προῦσαν, οἱ δὲ Σέρβοι καὶ οἱ Βούλγαροι ἀναφανδὸν ἐνήργουν νὰ κατακτήσωσι τὰς εὐρωπαϊκὰς ἐπαρχίας, ἀφ' ἑτέρου δὲ οἱ περὶ τὸν Ἀνδρόνικον Παλαιολόγον ἐνήργουν ἀδιαλείπτως συνωμοσίας καὶ στάσεις πρὸς κατάληψιν τῆς ἀρχῆς, ὁ Μετοχίτης ἐνησχολεῖτο εἰς τὴν μελέτην τῶν Ἑλλήνων συγγραφέων καὶ εἰς τὰς φιλολογικὰς συζητήσεις μετὰ τῶν λογίων μοναχῶν. Ἐκ τῶν προσφιλῶν του τούτων ἀσχολιῶν δὲν ἠθέλησε ν' ἀποσπασθῇ οὔτε ὅταν ὁ στασιάσας Ἀνδρόνικος Παλαιολόγος ἔφθασε μετὰ τῶν ὀπαδῶν του τὴν νύκτα τῆς 24 Μαΐου 1328 πρὸ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἵνα ἐκθρονίσῃ τὸν Ἀνδρόνικον Β'.

Κατὰ τὴν κρισιμωτάτην ἐκείνην στιγμὴν κληθεὶς ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος νὰ λάβῃ τὰ ἐνδεικνυόμενα πρὸς ἄμυναν τῆς πόλεως μέτρα, καθησύχασε διὰ λόγων αὐτὸν καὶ ἀπεσύρθη πάλιν εἰς τὸ διαμέρισμά του ἵνα συνεχίσῃ τὰς μελέτας του. Μετά τινας ὥρας οἱ στασιασταὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν πόλιν καὶ ἐξεθρόνισαν τὸν Ἀνδρόνικον Β', συγχρόνως δ' ἐλαφυραγώγησαν τὴν οἰκίαν τοῦ Μετοχίτου καὶ ἐξώρισαν αὐτὸν εἰς Διδυμότειχον. Ἀπέθανε τῷ 1332 εἰς τὴν μονὴν τῆς Χώρας, ὅπου ἀπεσύρθη καὶ ἐγένετο μοναχὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Θεόληπτος*. Ἔγραψε πολλά, μεταξὺ τῶν ὁποίων προέχει τό: «Ὑπομνηματισμοὶ καὶ σημειώσεις γνωμικαί». Ἐκ δὲ τῶν 18 ῥητορικῶν ἔργων σῴζονται μόνον ὁ «Νικαεὺς» καὶ ὁ «Πρεσβευτικός». Τὰ δὲ φιλοσοφικὰ καὶ ἀστρονομικὰ ἔργα του δὲν ἐγνώσθησαν οὐδ' ἐκρίθησαν εἰσέτι. Ἔγραψε δὲ καὶ «εἴκοσιν ἑξαμετρικὰ ποιήματα» (στίχ. 9188). Αἱ ἐπιστολαί του παρέχουσιν ἡμῖν πλείστας περὶ τῶν συγχρόνων πραγμάτων εἰδήσεις, ἄλλοθεν ἀγνώστους.

[Βλ. *Σ. Π. Λάμπρου*, «Νέος ἑλληνομνήμων» τόμ. Δ', Ζ', ΙΑ', ΙΓ' ΙΔ' καὶ ΙΗ'.] Ν. ΚΛΣ—Τ. Ε. Ε.

**μετόχλιστρον** (τὸ) *[Πυροβολ.]. Μετόχλιστρον* (triquebale) ἐκαλεῖτο κατὰ τὰς παλαιὰς ἐποχὰς βαρὺ ἱππήλατον φορτηγὸν ὄχημα, χρησιμοποιούμενον διὰ τὰς μεταφορὰς πυροβόλων καὶ ἐν γένει βαρέων ὑλικῶν τοῦ πυροβολικοῦ. Ν. Θ. Κ.

**μέτοχος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μετέχων τινός, ὁ λαμβάνων μέρος εἴς τι: «μέτοχοι τῆς κακοδαιμονίας τοῦ τόπου», «μέτοχος χαρᾶς, — λύπης».

— *[Ἐμπορ. Δίκ.] Μέτοχος* καλεῖται ὁ συνεταῖρος ἀνωνύμου ἑταιρείας, ὁ ἀποκτήσας ἓν τῶν ἰσοτίμων μεριδίων εἰς ἃ εἶναι διῃρημένον τὸ μετοχικὸν κεφάλαιον τῆς ἑταιρείας. Ἐὰν αἱ ἐκδοθεῖσαι μετοχαὶ εἶναι ἀνώνυμοι, μέτοχος εἶναι ὁ ἑκάστοτε δικαιοῦχος ἀνωνύμου μετοχῆς, ἡ δὲ ἰδιότης τοῦ μετόχου μεταβιβάζεται σὺν τῇ μεταβιβάσει τοῦ τίτλου. Ὁ ἀριθμὸς τῶν μετόχων ἀνωνύμου ἑταιρείας δὲν εἶναι ὡρισμένος, οὐδὲ δύναται κατὰ κανόνα νὰ ὁρισθῇ ἐκ τῶν προτέρων. Ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ μεγέθους τοῦ μετοχικοῦ κεφαλαίου ἀφ' ἑνός, τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἰσοτίμων μεριδίων εἰς ἃ τοῦτο εἶναι διῃρημένον, καὶ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν προσώπων εἰς ἃ εἶναι κατανεμημέναι αἱ μετοχαί. Μέτοχος ἀνωνύμου ἑταιρείας δύναται νὰ εἶναι εἴτε φυσικὸν εἴτε νομικὸν πρόσωπον. Τὸ δικαίωμα τοῦ μετόχου συνίσταται ἀφ' ἑνὸς εἰς συμμετοχὴν εἰς τὴν διανομὴν τῶν κερδῶν καὶ τοῦ προϊόντος τῆς ἐκκαθαρίσεως τῆς ἑταιρικῆς περιουσίας ἐν περιπτώσει διαλύσεως τῆς ἑταιρείας καὶ εἰς συμμετοχὴν ἀφ' ἑτέρου ἐν τῇ διοικήσει καὶ διαχειρίσει τῆς ἑταιρείας. Τὸ τελευταῖον τοῦτο δικαίωμα πραγματοποιεῖται διὰ τοῦ παρεχομένου εἰς αὐτὸν κατὰ τὰς γενικὰς συνελεύσεις δικαιώματος ψήφου. Τὰ καθ' ἕκαστον δικαιώματα τοῦ μετόχου καθορίζονται ἐν τῷ νόμῳ καὶ τῷ καταστατικῷ τῆς ἑταιρείας.

Ἡ εὐθύνη τοῦ μετόχου ἀνωνύμου ἑταιρείας εἶναι περιωρισμένη καὶ δὲν ἐκτείνεται πέραν τῆς ἑταιρικῆς του εἰσφορᾶς, τοῦ καταβληθέντος δηλαδὴ διὰ τὴν ἀπόκτησιν τῆς μετοχῆς ποσοῦ. Κ. Β. Σ.

— **«Μέτοχος».** Περιοδικὸν ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθὲν τὴν 11 Ὀκτωβρίου 1908 ὑπὸ Στ. Φούντη εἰς σχῆμα 4ον καὶ ἐκδοθὲν μέχρι τοῦ 1917. —Π.

**Μετρὰ** (Métra), ***Ἰούλιος - Ὀλιβιέ***. Γάλλος συνθέτης χορῶν (1830—1889). Υἱὸς κωμικοῦ ἠθοποιοῦ, ἠκολούθησε κατ' ἀρχὰς τὸ ἐπάγγελμα τοῦ πατρός του, κατόπιν ὅμως ἐπεδόθη μετὰ πάθους εἰς τὴν μουσικήν. Πρῶτον βραβεῖον τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων, ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς διευθυντὴς ὀρχήστρας, ἐνῷ ταυτοχρόνως ἐγίνετο γνωστὸς καὶ ὡς συνθέτης ἐλαφρῶν ἔργων. Ἐκ τούτων τὸ «Βὰλς τῶν ῥόδων» ἐγένετο παγκοσμίως γνωστόν. Ἔγραψεν ἐπίσης πλείστας μαζούρκας, πόλκας, καντρίλλιες, 18 ὀπερέττας, πλεῖστα μπαλέττα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ εἰς τρεῖς πράξεις «Γυέντα», παιχθὲν τὸ 1879 εἰς τὸ Μελόδραμα τῶν Παρισίων. Γ. Σ.

**Μέτραι** *[Γεωγρ.]*. Βυζαντινὸν ὄνομα τῆς ἐν τῇ Α. Θράκῃ καὶ παρὰ τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Κωνσταντινουπόλεως — Ἀδριανουπόλεως κώμης *Τσατάλτζα* (βλ. λ.). Εἶναι πιθανῶς ἡ ὑπὸ τοῦ Προκοπίου (τ. Γ', σελ 320) ἀναφερομένη κώμη *Ἐπισκοπεῖα*, τὴν ὁποίαν ὁ Ἰουστινιανὸς εἶχε περιτειχίσει δι' ἰδιορρύθμου τείχους. Εἰς τὰ πρακτικὰ τῆς ἐν Νικαίᾳ Ζ' Οἰκουμενικῆς συνόδου (787) ὑπογράφεται τὸ πρῶτον ὁ ἐπίσκοπος Μετρῶν ὡς ἐπίσκοπος *Μέτρων*, ἀναφέρεται δὲ ἀκολούθως ὡς 23ος ἐκ τῶν 24 ὑποτελῶν τοῦ μητροπολίτου Ἡρακλείας καὶ ὡς 15ος μεταξὺ τῶν 17 τῆς αὐτῆς μητροπόλεως (τάξις Λέοντος τοῦ Σοφοῦ). Αἱ Μέτραι κατελήφθησαν τῷ 1371 ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Α', λόγῳ δὲ τῆς ἐρημώσεως τῆς χώρας ὀλίγα ἔτη πρὸ τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἡ ἐπισκοπὴ Μετρῶν προσηρτήθη εἰς τὴν ἀρχιεπισκοπὴν Κωνσταντινουπόλεως. Μεταξὺ ὅμως τοῦ 1466—1490 ἀνασυνεστήθη, ὡς φαίνεται ἐκ γράμματος τοῦ Βησσαρίωνος. Ἡ ἐπισκοπὴ Μετρῶν ἦτο χωριστὴ τῆς τῶν Ἀθύρων. Τὸ πρῶτον ἀναφέρεται κοινὸς ἐπίσκοπος Μετρῶν καὶ Ἀθύρων ὡς τρίτος μεταξὺ τῶν ἐπισκόπων Ἡρακλείας τῷ 1715 εἰς τὸ συνταγμάτιον Χρυσοστόμου Ἱεροσολύμων. Τῷ 1909 ἡ ἐπισκοπὴ Μετρῶν καὶ Ἀθύρων, ἀπεχωρίσθη τῆς μητροπόλεως Ἡρακλείας καὶ προήχθη εἰς μητρόπολιν. Χ. Δ.—Ε. Σ. Σ.

**Μετρέας.** Ἀρχαῖος ποιητὴς ἐκ Πιτάνης τῆς Αἰολίδος (βλ. λ. *Μάτρων*).

**μέτρημα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετρεῖν, ὁ καθορισμὸς ποσοῦ συνεχοῦς εἰς μονάδας, καταμέτρησις· || οἱουδήποτε ποσοῦ ὁ καθορισμός, ἀρίθμησις, ἀπαρίθμησις: «μέτρημα ὑφάσματος, —χρημάτων, — ποιμνίου, — οἰκοπέδου κ.τ.τ.», «ἔγινε λάθος 'ς τὸ μέτρημα».

**μετρημένος,** *—η, —ον·* δημοτ., παθ. μετχ. τοῦ *μετρῶ*, ὁ διὰ τοῦ μέτρου καθωρισμένος, ἠριθμημένος: παροιμ. «ὁ λύκος ἀπὸ τὰ μετρημένα τρώει» || μεταφ., ὁ μετρῶν τὰ πράγματα, προσεκτικός, συνετός, φρόνιμος: «μετρημένος ἄνθρωπος», «μετρημένο κορίτσι», «αὐτὸς εἶναι μετρημένος καὶ δὲν πέφτει ἔξω».

**μετρημὸς** (ὁ)· δημοτ., μέτρησις, ἀπαρίθμησις, ἄλλως *μέτρημα*: «τὸ κοπάδι του μετρημὸ δὲν ἔχει» εἶναι ἀμέτρητον, πολυάριθμον.

**μέτρησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μετρεῖν, ὁ καθορισμὸς συνεχοῦς ἢ καὶ διακεκριμένου ποσοῦ δι' ὡρισμένης μονάδος, ἀπαρίθμησις, ἄλλως *μέτρημα*: «μέτρησις τοῦ παρεχομένου ὕδατος, — τοῦ ἠλεκτρικοῦ ῥεύματος», «μέτρησις οἰκοπέδου, — ποιμνίου».

— *[Ἐγκυκλ.]* Ὀνομάζομεν *μέτρησιν* τὴν ἐργασίαν δι' ἧς καθορίζομεν, εἴτε δι' ἐμπραγμάτου συγκρίσεως, εἴτε διὰ τοῦ λογισμοῦ, τὸ μέγεθος ἢ τὴν ποσότητα πράγματός τινος ἢ πολλῶν πραγμάτων, χρησιμοποιοῦντες ὡς βάσιν ὡρισμένον μέγεθος ἢ ποσόν. Τὸ διὰ τὴν σύγκρισιν ταύτην χρησιμοποιούμενον βασικὸν μέγεθος ἢ ποσὸν καλεῖται συνήθως *μονάς*. Ἔχοντες, ἐπὶ παραδείγματι, ἓν τεμάχιον μετάλλου, καθορίζομεν τὸ βάρος του δι' ἐμπραγμάτου συγκρίσεως αὐτοῦ, μέσῳ τοῦ ζυγοῦ, πρὸς μίαν μονάδα βάρους (τὸ χιλιόγραμμον, ἢ τὴν ὀκᾶν κ.λ.π.), εὑρίσκοντες οὕτω ποσάκις τὸ βάρος τοῦ μετάλλου περιλαμβάνει τὸ βάρος τῆς μονάδος ἡ δὲ προκύπτουσα οὕτω ποσότης εἶναι τὸ ἀποτέλεσμα τῆς μετρήσεως. Ἀλλὰ καὶ διὰ τοῦ λογισμοῦ μόνον ἐκτελοῦμεν ἐπίσης μετρήσεις, ὅπως, ἐπὶ παραδείγματι, ἂν ἔχωμεν μίαν ὡρισμένην ποσότητα Π ὁμοειδῶν πραγμάτων καὶ θέλωμεν νὰ εὕρωμεν πόσας δεκάδας (ἢ ἑκατοντάδας, δωδεκάδας κ.λ.π.) αὕτη ἀποτελεῖ. Τὸ ἀποτέλεσμα τῆς μετρήσεως ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ εἶναι τὸ πηλίκον τῆς διαιρέσεως τῆς ποσότητος Π διὰ τοῦ 10 (ἢ τοῦ 100, τοῦ 12 κ.λ.π.).

Αἱ μονάδες αἵτινες χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν μέτρησιν καλοῦνται ἐν γένει *μέτρα* (βλ. λ.), εἰδικώτερον δὲ αἱ διὰ τὴν μέτρησιν τοῦ βάρους χρησιμοποιούμεναι καλοῦνται *σταθμά*. —Ρ.

— **μετρήσεις *γεωδαιτικαί*.** Αἱ μετρήσεις ἐν γένει, αἱ γινόμεναι διὰ τὸν προσδιορισμὸν τοῦ μεγέθους καὶ τῆς μορφῆς τμήματός τινος τῆς γηΐνης ἐπιφανείας.

Αἱ μετρήσεις ὡς κύριον σκοπὸν ἔχουσι τὴν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους λῆψιν ἁπάντων τῶν ἀπαραιτήτων στοιχείων, τῶν χρησίμων διὰ τοὺς κατόπιν ὑπολογισμοὺς καὶ τὴν ἀποτύπωσιν ἢ σχεδίασιν τοῦ ὑπ' ὄψιν τμήματος τοῦ ἐδάφους.

Αἱ μετρήσεις ἀνάγονται εἰς μετρήσεις μηκῶν, εἰς μετρήσεις γωνιῶν ὁριζοντίων ἢ κατακορύφων καὶ εἰς μετρήσεις ὑψομετρικῶν διαφορῶν. Ἐπειδὴ κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν μετρήσεων ἐπισυμβαίνουσι συνήθως σφάλματα ὀφειλόμενα εἰς διάφορα αἴτια (βλ. λ. *γεωδαισία—σφάλματα*), γίνονται συνήθως δύο μετρήσεις, ἐνίοτε δὲ καὶ περισσότεραι, ὁπότε ὡς ἀποτέλεσμα τῶν μετρήσεων λαμβάνομεν τὸν μέσον ὅρον τῶν γενομένων μετρήσεων. Πάντως, κατὰ τὰς μετρήσεις τῶν αὐτῶν μεγεθῶν, δὲν πρέπει νὰ παρατηροῦνται μεγάλαι διαφοραί. Ἐν τῇ γεωδαισίᾳ ὁρίζονται αἱ ἀνεκταὶ διαφοραὶ μεταξὺ τῶν διαφόρων μετρήσεων, ἀναλόγως τῆς κατηγορίας αὐτῶν. Διακρίνομεν τρεῖς κατηγορίας μετρήσεων: τὰς *μετρήσεις ἀκριβείας*, τὰς *μετρήσεις μέσης ἀκριβείας* καὶ τὰς *μετρήσεις μικρᾶς ἀκριβείας*. Ἀναλόγως τοῦ σκοποῦ καὶ τῆς ἀξίας τῆς μετρήσεως χρησιμοποιοῦνται καὶ διάφοροι τρόποι μετρήσεων.

Πρὸ πάσης ἐνάρξεως μετρήσεων θὰ γίνῃ ὁ προσδιορισμὸς καὶ ἡ σήμανσις τῶν χαρακτηριστικῶν καὶ εἰδικῶν σημείων τῆς πρὸς ἀποτύπωσιν ἐπιφανείας. Ἵνα κατόπιν, κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν μετρήσεων, τὰ διάφορα σημεῖα εἶναι ὁρατὰ ἐκ τοῦ μακρόθεν, γίνεται *ἐπισήμανσις* (βλ. *σήμανσις*) αὐτῶν, χρησιμοποιουμένων *βελονῶν, ἀκοντίων* ἐμπηγνυομένων εἰς τὸ ἔδαφος ἢ στηριζομένων ἐπὶ τριποδίσκων, *στόχων* ἠριθμημένων ἢ *τριγωνομετρικῶν σημάτων*, ἐνίοτε φωτεινῶν διὰ μετρήσεις ἐν ὥρᾳ νυκτός, ἀναλόγως τῆς φύσεως, τῆς σημασίας καὶ τοῦ σκοποῦ τῶν μετρήσεων.

Ὡς μονάδες μετρήσεων χρησιμοποιοῦνται ἐν τῇ γεωδαισίᾳ παρ' ἡμῖν τὰ διεθνῶς παραδεδεγμένα μέτρα, τῶν μηκῶν μὲν τὸ μέτρον μετὰ τῶν ὑποδιαιρέσεων καὶ πολλαπλασίων αὐτοῦ, τῶν γωνιῶν δὲ ὁ βαθμὸς ἢ ἡ μοῖρα μετὰ τῶν ὑποδιαιρέσεών των.

***Μέτρησις μηκῶν.*** *Βοηθητικὰ ὄργανα μετρήσεως μηκῶν*. Τὰ συνήθως χρησιμοποιούμενα ὄργανα μετρήσεως μηκῶν εἶναι τὰ κάτωθι, ὅπου προτάσσονται τὰ παρέχοντα μείζονα ἀκρίβειαν.

Κανόνες. Εἶναι οὗτοι ῥάβδοι ἀτρακτοειδεῖς, ξύλινοι, ἢ σπανιώτερον διὰ μετρήσεις ἀκριβείας μετάλλινοι, μήκους 3, 4 καὶ συνήθως 5 μέτρων, διατομῆς τετραγωνικῆς, ὀρθογωνικῆς, κυκλικῆς, ἐλλειπτικῆς, ὀκτωειδοῦς ἢ ἁπλοῦ Τ. Οἱ κανόνες τῶν δύο τελευταίων μορφῶν εἶναι οἱ πλέον εὔχρηστοι, ὡς ἀνθεκτικώτεροι καὶ ἐλαφρότεροι. Τὰ ἄκρα τῶν κανόνων διαμορφοῦνται ποικιλοτρόπως καὶ ὁπλίζονται διὰ σιδηρῶν πεδίλων πρὸς προφύλαξιν ἀπὸ τῆς φθορᾶς. Οἱ κανόνες βάπτονται δι' ἐλαιοχρώματος ἵνα προφυλάσσωνται ἀπὸ τῆς ὑγρασίας καὶ μὴ ὑφίστανται οὐσιώδεις ἐπιδράσεις ὑπὸ τῶν καιρικῶν μεταβολῶν. Ἀνὰ κάθε μέτρον γίνεται ἀλλαγὴ χρώματος· τὰ μέτρα ἢ τὰ ἥμισυ μέτρα σημειοῦνται διὰ διπλῶν ἥλων, τὰ δέκατα δὲ δι' ἁπλῶν ἥλων· κλάσματα τοῦ δεκάτου μετροῦνται μὲ ὑποδεκάμετρον, ἐνίοτε δὲ καὶ κατ' ἐκτίμησιν. Ἀπαραιτήτως πρὸ τῶν μετρήσεων δέον νὰ γίνεται ἔλεγχος τοῦ μήκους τῶν κανόνων, διότι οὗτοι ὑφιστάμενοι μικρὰς μεταβολὰς ὑπὸ τῶν καιρικῶν συνθηκῶν προξενοῦσι σοβαρὰ σφάλματα, λόγῳ τῆς ἐπαναλήψεως καὶ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ αὐτῶν. Εἴς τινας κανόνας δύναται νὰ γίνῃ διόρθωσις μικρομεταβολῶν τοῦ μήκους αὐτῶν, διὰ κοχλιωτοῦ συστήματος κατὰ τὸ ἄκρον αὐτῶν.

Μεταλλικὰ νήματα. Ταῦτα, χρησιμοποιούμενα σπανίως, κατασκευάζονται ἐκ νικελίου, τελευταίως δὲ καὶ ἀπὸ τὸ μέταλλον invar, τὸ ὁποῖον ἐπιτρέπει πολὺ μεγάλην ἀκρίβειαν, λόγῳ τοῦ ἀδιαστάλτου αὐτοῦ. Ἔχουσι ταῦτα συνήθως μῆκος 10 μ., ἐνίοτε ὅμως καὶ μεγαλύτερον, καὶ χρησιμοποιοῦνται πάντοτε ὑπὸ μίαν τάσιν, περίπου 10 χιλιογράμ.

Μετροταινίαι. Αἱ ἐν τῇ γεωδαισίᾳ χρησιμοποιούμεναι μετροταινίαι εἶναι ταινίαι χαλύβδινοι, πλάτους περίπου 1,5 ἑκ., πάχους ὅσον τὸ δυνατὸν μικροτέρου καὶ μήκους 5—10—20—25—30—50—100 μέτρων. Προτιμῶνται αἱ ἐπιμηκέστεραι, διότι δι' αὐτῶν συντομεύεται ἡ ἐργασία καὶ ἀποφεύγεται ὁ πολλαπλασιασμὸς τῶν σφαλμάτων. Ἀνὰ κάθε 20 ἑκ. τῆς μετροταινίας ὑπάρχουν κυκλικοὶ μικροὶ ὀρειχάλκινοι δίσκοι, ἀνὰ κάθε 10 ἑκ. δὲ μικραὶ ὀπαί. Τὰ μέτρα σημειοῦνται δι' ἀριθμῶν, τῆς ἀριθμήσεως βαινούσης ἀντιθέτως ἐπὶ ἑκάστης τῶν ὄψεων. Τὰ ἄκρα τῆς μετροταινίας εἶναι ἀρθρωτά, ἡ δὲ ἀρχή της φέρει αὔλακα διὰ νὰ προσαρμόζωνται αἱ βελόναι, δι' ὧν ἐπισημαίνονται τὰ σημεῖα. Ἐπειδὴ καὶ αἱ μετροταινίαι ὑπόκεινται εἰς μεταβολάς, δέον πρὸ τῆς ἐκτελέσεως μετρήσεων νὰ γίνεται ἔλεγχος αὐτῶν.

Ἁλύσεις· βλ. λ. *ἄλυσις* (μετρικὴ—) (τ. Δ', σ. 96 γ).

*Μέθοδοι μετρήσεως μηκῶν*. Διὰ μήκη μικρότερα τῶν 1000—1500 μέτρων καὶ δι' ὕψη μικρότερα τῶν 300 μ., δύναται ἡ ἀπόστασις δύο σημείων νὰ μετρηθῇ εἰς οἱανδήποτε θέσιν ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῶν θαλασσῶν (βλ. *γεωδαισία-προβάλλουσαι*, τ. Η', σ. 279 α'). Πρὸ τῆς μετρήσεως τῆς ἀποστάσεως τῶν δύο σημείων δέον νὰ γίνῃ καθορισμὸς τῆς εὐθυγραμμίας αὐτῶν, δηλαδὴ τῆς τομῆς τοῦ διὰ

Digitized by Google

τῶν ὑπ' ὄψιν σημείων διερχομένου κατακορύφου ἐπιπέδου μετὰ τοῦ ἐδάφους. Ἡ χάραξις τῶν εὐθυγραμμιῶν γίνεται τῇ βοηθείᾳ ἀκοντίων, εἴτε δι' ἁπλῶν σκοπεύσεων, εἴτε διὰ χρήσεως ὀρθογώνων.

Αἱ διὰ τὴν μέτρησιν μηκῶν συνήθως χρησιμοποιούμεναι μέθοδοι εἶναι αἱ κάτωθι:

1) Ἡ τῆς ἐπιθέσεως τῶν κανόνων ἢ τῆς μετροταινίας ἐπὶ τοῦ ἐδάφους. Αὕτη εἶναι ἡ κοινῶς χρησιμοποιουμένη μέθοδος μετρήσεως, ἐφαρμοζομένη ἐπὶ ὁμαλῶν καὶ ὁριζοντίων ἐδαφῶν. Ἐὰν ἡ μέτρησις γίνεται διὰ κανόνων, χρησιμοποιοῦνται δύο τοιοῦτοι, τοποθετούμενοι ἐναλλὰξ ὁ εἷς μετὰ τὸν ἄλλον. Φροντίζομεν ἑκάστοτε ὅπως ἐφάπτωνται τελείως τὰ ἄκρα τῶν δύο κανόνων καὶ πρὸς τοῦτο τοποθετοῦμεν καθέτως πρὸς ἀλλήλας τὰς ἀκμὰς τῶν σφηνοειδῶν ἄκρων αὐτῶν.

2) Ἡ τῆς ἐπιθέσεως ἐπὶ τοῦ ἐδάφους καὶ τῆς μετρήσεως τῶν γωνιακῶν κλίσεων τῶν κανόνων ἢ τῆς μετροταινίας. Ἡ μέθοδος αὕτη χρησιμοποιεῖται ἐπὶ κεκλιμένων ἐδαφῶν. Κατὰ τὴν μέθοδον ταύτην μετροῦμεν τὸ μῆκος ἐπὶ τοῦ κεκλιμένου ἐδάφους καὶ συγχρόνως μετροῦμεν καὶ τὴν γωνίαν κλίσεως τῶν κανόνων ἢ τῆς μετροταινίας ὡς πρὸς τὴν ὁριζοντίαν, διὰ τῶν κλισιμέτρων ἢ κλισιγωνιομέτρων.

3) Ἡ κλιμακηδὸν μέτρησις, ἐφαρμοζομένη καὶ αὕτη ἐπὶ κεκλιμένων ἐδαφῶν. Κατὰ ταύτην κάμνομεν μετρήσεις μόνον μηκῶν, ἀλλ' εἶναι αὕτη λίαν ἐπίπονος. Κατὰ τὴν μέθοδον ταύτην κρατοῦμεν τὸν κανόνα ἢ τὴν μετροταινίαν (ὁλόκληρον διὰ μικρὰς κλίσεις ἢ τμῆμα αὐτῆς διὰ μεγάλας κλίσεις) περίπου ὁριζοντίως μὲ τὸ ἓν ἄκρον ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, καὶ κατόπιν προβάλλομεν διὰ τῆς λιναίης τὸ ἕτερον ἄκρον ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, ὅπου εὑρίσκομεν τὸ σημεῖον, εἰς ὃ πρέπει νὰ τοποθετηθῇ τὸ ἄκρον τοῦ ἑτέρου κανόνος, διὰ νὰ συνεχισθῇ ἡ μέτρησις κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον.

4) Ἡ μέθοδος τῶν διακένων. Εἶναι αὕτη εὐχερεστέρα καὶ ἀκριβεστέρα τῶν δύο προηγουμένων, ἂν καὶ προερχομένη διὰ συνδυασμοῦ αὐτῶν. Κατὰ ταύτην, ὁ πρῶτος κανὼν τίθεται ἐπὶ τοῦ κεκλιμένου ἐδάφους μὲ τὸ ἓν ἄκρον εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς εὐθυγραμμίας, ἐνῷ τῶν ἄλλων τὰ ἄκρα τίθενται ὄχι εἰς ἐπαφὴν μετὰ τοῦ προηγουμένου, ἀλλὰ εἰς τὸ σημεῖον ὅπου θὰ προεβάλλετο τὸ πέρας τοῦ προηγουμένου κανόνος, ἂν οὗτος ἐτίθετο ὁριζόντιος. Μένει οὕτω μεταξὺ δύο διαδοχικῶν κανόνων ἓν διάστημα, καλούμενον διάκενον. Ὁ προσδιορισμὸς τῶν διακένων εἶναι εὔκολος, δι' ὃ καὶ ἡ μέθοδος εἶναι εὐχερεστέρα. Ἡ χρῆσις μετροταινίας κατὰ τὴν μέθοδον ταύτην παρέχει ἀνακριβείας.

5) Ὀπτικαὶ μέθοδοι. Κατὰ ταύτας ἡ μέτρησις τῶν μηκῶν γίνεται ὀπτικῶς, χρησιμοποιουμένων τῶν διαφόρων *διαστημομέτρων* καὶ *τηλεμέτρων*. Συνήθως ἅπαντα τὰ ἐν τῇ γεωδαισίᾳ χρησιμοποιούμενα ὄργανα, τὰ ἔχοντα τηλεσκόπιον ὡς σκοπευτικὴν διάταξιν, φέρουσιν εἰς τὸ ἐπίπεδον τοῦ σταυρονήματος καὶ δύο ἄλλα νήματα, τὰ σταδιομετρικὰ νήματα, διὰ τῶν ὁποίων εἶναι δυνατὴ ἡ κατὰ μείζονα ἢ ἐλάσσονα ἀκρίβειαν μέτρησις μηκῶν. Διὰ προχείρους ἀποτυπώσεις γίνονται μετρήσεις μηκῶν καὶ διὰ τοῦ *βηματομέτρου*.

*Σφάλματα κατὰ τὴν μέτρησιν μηκῶν*. Ταῦτα προέρχονται εἴτε ἐκ τῆς ἐλλείψεως εὐθυγραμμίσεως τῶν κανόνων ἢ τῶν μετροταινιῶν, εἴτε ἐκ τῆς μὴ ἀκριβοῦς ὁριζοντιώσεως αὐτῶν, εἴτε ἐκ τῆς κάμψεώς των, εἴτε ἐκ μεταβολῶν τῶν μηκῶν αὐτῶν λόγῳ τῆς ὑγρασίας καὶ τῆς θερμοκρασίας, εἴτε τέλος ἐκ τῆς μὴ ἐπακριβοῦς ἐπαφῆς τῶν ἄκρων τῶν κανόνων ἢ μετροταινιῶν.

Ἀναλόγως τοῦ χρησιμοποιουμένου μέσου μετρήσεως, ἔχομεν μείζονα ἢ ἐλάσσονα ἀκρίβειαν. Τὴν μεγαλυτέραν ἀκρίβειαν ἐπιτυγχάνομεν διὰ τῶν κανόνων, τὴν μικροτέραν δὲ διὰ τῶν ἁλύσεων. Ὁ βαθμὸς ἀκριβείας τῶν μετρήσεων ἐξαρτᾶται ἀπὸ τὰς εὑρισκομένας διαφορὰς αὐτῶν, αἵτινες δὲν πρέπει νὰ ὑπερβαίνωσι τὰ ὑπὸ ὡρισμένων τύπων διδόμενα ἀνεκτὰ ὅρια.

***Μέτρησις γωνιῶν***. Ἡ μέτρησις γωνιῶν ἐπιτυγχάνεται τῇ βοηθείᾳ κύκλου, ὑποδιῃρημένου εἰς μοίρας ἢ βαθμούς, καὶ μιᾶς σκοπευτικῆς διατάξεως οἱασδήποτε. Ὁ κύκλος τίθεται ὁριζόντιος ἂν πρόκειται περὶ μετρήσεως ὁριζοντίων γωνιῶν, κατακόρυφος δὲ ἂν πρόκειται περὶ μετρήσεως κατακορύφων γωνιῶν. Ἡ σκοπευτικὴ διάταξις κινεῖται (ἂν εἶναι κινητή) ἐπὶ ἐπιπέδου καθέτου ἐπὶ τὸ ἐπίπεδον τοῦ διῃρημένου κύκλου καὶ διερχομένου συνήθως διὰ τοῦ κέντρου αὐτοῦ. Ἂν τὸ ἐπίπεδον τῆς σκοπευτικῆς γραμμῆς δὲν διέρχεται διὰ τοῦ κέντρου τοῦ διῃρημένου κύκλου, θὰ ἔχωμεν ἔκκεντρον τὴν σκοπευτικὴν διάταξιν.

Ὄργανα μετρήσεως γωνιῶν ὑπάρχουσι ποικίλα· ἄλλα χρησιμεύουν διὰ τὴν μέτρησιν ὁριζοντίων γωνιῶν, ἄλλα διὰ τὴν μέτρησιν κατακορύφων γωνιῶν καὶ ἄλλα εἶναι μεικτά. Ἄλλα εἶναι πολυσύνθετα, ἀναλόγως τῆς ζητουμένης ἀπὸ ταῦτα ἀκριβείας καὶ εὐκολιῶν τοῦ χειρισμοῦ αὐτῶν. Ἡ μέτρησις γωνιῶν γίνεται διὰ νὰ σχετισθῶσι πρὸς ἄλληλα σημεῖα μὴ κείμενα ἐπὶ μιᾶς εὐθυγραμμίας συνήθως. Ἐνίοτε, ὅταν ἡ ἀποτύπωσις τοῦ ὑπ' ὄψιν τμήματος τοῦ ἐδάφους γίνεται ἐπὶ τόπου, τῇ βοηθείᾳ τῆς *μετροτραπέζης*, δυνάμεθα, τῇ βοηθείᾳ μιᾶς σκοπευτικῆς διατάξεως μόνον, ν' ἀποτυπώσωμεν διάφορα σημεῖα, κείμενα εἰς διαφόρους θέσεις, χωρὶς νὰ μετρῶμεν τὰς μεταξὺ αὐτῶν καὶ τῆς στάσεως ἡμῶν ὑπαρχούσας γωνίας. Ἵνα γίνῃ ἡ μέτρησις τῆς μεταξὺ δύο σημείων ὁριζοντίας γωνίας, τῆς γωνίας δηλαδὴ τῆς ἀντιστοιχούσης εἰς τὴν δίεδρον γωνίαν, ἣν σχηματίζουν τὰ διὰ τοῦ κέντρου τοῦ διῃρημένου κύκλου καὶ τῶν σκοπευομένων σημείων διερχόμενα κατακόρυφα ἐπίπεδα, δέον νὰ γίνῃ πρῶτον μὲν στερέωσις τοῦ διῃρημένου κύκλου, ὁριζοντιωθέντος προηγουμένως, καὶ κατόπιν σκόπευσις τῶν προσδιοριστέων σημείων διὰ τῆς σκοπευτικῆς διατάξεως καὶ ἀνάγνωσις τῶν ἀντιστοίχων ἀναγνώσεων ἐν τῷ διῃρημένῳ καὶ ἠριθμημένῳ κύκλῳ. Ἡ διαφορὰ τῶν δύο ἀναγνώσεων μᾶς δίδει τὴν ζητουμένην γωνίαν. Διὰ νὰ γίνῃ κατορθωτὴ ἡ ἀποτύπωσις τῶν διαφόρων σημείων ἐπὶ τοῦ σχεδίου, δέον μεταξὺ τῶν διαφόρων σκοπεύσεων ἐπὶ τόπου νὰ περιλάβωμεν καὶ τὴν σκόπευσιν ἑνὸς γνωστοῦ σημείου, πρὸς τὴν ὁποίαν θὰ σχετίσωμεν κατόπιν τὰς σκοπεύσεις τῶν λοιπῶν. Ἡ ἐργασία αὕτη ἀποτελεῖ τὸν καλούμενον προσανατολισμὸν τοῦ ὀργάνου. Συνήθως ὁ προσανατολισμὸς τοῦ ὀργάνου γίνεται διὰ στροφῆς τοῦ διῃρημένου κύκλου, εἰς τρόπον ὥστε διὰ σκόπευσιν πρὸς τὸν βορρᾶν νὰ ἔχωμεν ἀνάγνωσιν μηδέν. Ὁ τοιοῦτος προσανατολισμὸς γίνεται τῇ βοηθείᾳ πυξίδος, δὲν εἶναι ὅμως πολὺ ἀκριβής.

Κατὰ τὴν μέτρησιν τῶν κατακορύφων γωνιῶν μεταξὺ δύο σημείων, τοποθετεῖται ὁ διῃρημένος κύκλος κατακόρυφος καὶ οὕτως ὥστε διὰ σκόπευσιν ὁριζοντίαν νὰ ἔχωμεν εἴτε ἀνάγνωσιν 0, εἴτε 90° ἢ 100β, ὁπότε τὸ 0 τοῦ διῃρημένου κύκλου εὑρίσκεται εἰς τὸ ζενὶθ τοῦ σημείου τῆς στάσεως. Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν παρίσταται ἀνάγκη διακρίσεως θετικῶν καὶ ἀρνητικῶν κατακορύφων γωνιῶν, ἐφ' ὅσον τὸ σκοπευόμενον σημεῖον κεῖται ὑψηλότερον ἢ χαμηλότερον τοῦ ὁρίζοντος τοῦ ὀργάνου. Εἰς τὴν δευτέραν περίπτωσιν, ἥτις εἶναι καὶ ἡ συνηθεστέρα, τὸ τοιοῦτον ἀποφεύγεται καὶ δὲν δύναται νὰ συμβῇ οὐδεμία σύγχυσις. Ἐὰν αἱ κατακόρυφοι γωνίαι μετροῦνται κατὰ τὴν πρώτην μέθοδον, λέγομεν ὅτι πρόκειται περὶ γωνιῶν κλίσεως ἢ περὶ ὑψομετρικῶν γωνιῶν. Ἐὰν αἱ γωνίαι μετροῦνται κατὰ τὴν δευτέραν μέθοδον, τὰς καλοῦμεν ζενιθίας ἀποστάσεις.

*Ὄργανα μετρήσεως γωνιῶν*. Εἶναι ταῦτα ἀπειράριθμα καὶ ποικιλόμορφα. Ἀναφέρομεν τὴν *διόπτραν τοῦ Ἥρωνος*, τὸν *ἀστρολάβον*, τὸν *ἑξᾶντα*, τὸν *θεοδόλιχον*, τὸ *παντόμετρον*, τὸ *γραφόμετρον*, τὴν *πυξίδα*, τὸ *κλισίμετρον* ἢ τὸ *κλισιγωνιόμετρον* καὶ τὸ *ταχύμετρον*.

*Σφάλματα μετρήσεων γωνιῶν*. Προέρχονται ταῦτα ἀπὸ διάφορα αἴτια (βλ. λ. *γεωδαισία—σφάλματα*, τ. Η', σ. 282 γ'). Ἄλλα ὀφείλονται εἰς βλάβας τοῦ ὀργάνου, ἄλλα εἰς ἀτελείας αὐτοῦ καὶ ἄλλα εἰς ἄλλα αἴτια. Ἡ γεωδαισία διδάσκει τρόπους διορθώσεως τῶν βλαβῶν τῶν ὀργάνων, τρόπους δηλαδὴ ἐπιτεύξεως τῶν συνθηκῶν, τὰς ὁποίας δέον νὰ πληροῖ ἕκαστον ὄργανον διὰ νὰ δίδῃ ἀκριβεῖς μετρήσεις. Σφάλματα ἐξ ἀτελειῶν τῶν ὀργάνων ἐξουδετεροῦνται διὰ διπλῶν ἀναγνώσεων ἐπὶ τῶν διῃρημένων κύκλων, ἐνίοτε δὲ καὶ διὰ διπλῶν σκοπεύσεων. Ἐκτίμησις τμημάτων τῶν διαιρέσεων τῶν διῃρημένων γίνεται συνήθως τῇ βοηθείᾳ κυκλικῶν *βερνιέρων* (πλεῖονα βλ. εἰς λ. *τριγωνισμοί*).

***Μέτρησις ὑψομετρικῶν διαφορῶν***. Ἐπιτυγχάνεται αὕτη διὰ διαφόρων μέσων, εἴτε δι' ἀμέσου μετρήσεως αὐτῶν, εἴτε διὰ μετρήσεως τῶν κατακορύφων γωνιῶν μεταξὺ τῶν δύο σημείων, καὶ δι' ὑπολογισμοῦ τῆς ὑψομετρικῆς διαφορᾶς, κατόπιν, διὰ τῶν μεθόδων τῆς τριγωνομετρίας, γνωστῆς οὔσης τῆς ἀποστάσεως τῶν σημείων ἀπὸ τῆς στάσεως. Ἡ ἄμεσος μέτρησις ὑψομετρικῶν διαφορῶν γίνεται εἴτε τῇ βοηθείᾳ κανόνων καὶ ἀεροστάθμης ἢ κλισιογωνιομέτρου, διὰ μεθόδου ἀναλόγου πρὸς τὴν κλιμακηδὸν μέτρησιν μηκῶν, εἴτε κυρίως διὰ τοῦ χωροβάτου (λεπτομερείας βλ. εἰς λ. *χωροστάθμησις*).

***Ἐκτέλεσις μετρήσεων πρὸς ὁριζοντίαν ἀποτύπωσιν γηπέδων***. Ὑπάρχουσι τρεῖς μέθοδοι πρὸς ἐκτέλεσιν τῆς ἐργασίας ταύτης, αἱ ἑξῆς:

1) *Ἡ μέθοδος τῶν γεωμετρικῶν κατασκευῶν*. Αὕτη συνίσταται εἰς τὴν ἀνάλυσιν τοῦ πρὸς ἀποτύπωσιν τμήματος εἰς τρίγωνα κατὰ παράθεσιν. Διὰ μετρήσεως τῶν πλευρῶν τῶν τριγώνων δύναται νὰ σχεδιασθῇ ὑπὸ σμίκρυνσιν ὁλόκληρον τὸ γήπεδον.

2) Ἡ *μέθοδος τῶν ὀρθογωνίων συντεταγμένων*. Εἶναι αὕτη ἡ πλέον ἐν χρήσει, ὡς παρέχουσα σπουδαῖα πλεονεκτήματα. Κατὰ ταύτην ἐπὶ τοῦ πρὸς μέτρησιν γηπέδου ἐγκαθιστῶμεν μίαν εὐθυγραμμίαν, τὴν ὁποίαν χρησιμοποιοῦμεν ὡς ἄξονα τῶν τετμημένων, εἶτα δὲ μὲ τὸ ὀρθογώνιον ὁρίζομεν τοὺς πόδας τῶν καθέτων ἐπὶ τὴν εὐθυγραμμίαν ἐκ τῶν διαφόρων σημείων καὶ μετροῦμεν κατόπιν τὰς τετμημένας καὶ τεταγμένας τῶν ἀποτυπουμένων σημείων. Ἡ μέθοδος αὕτη τῶν συντεταγμένων εἶναι πολὺ παλαιά. Ὁ Ἥρων ἀναφέρει ὅτι τὸ ὄρυγμα τοῦ Εὐπαλίνου ἐν Σάμῳ (παρὰ τὸ Τηγάνι), ἡ κατασκευὴ δηλαδὴ τῆς σήραγγος ἑνὸς ὑδραγωγείου, ἐγένετο τῇ βοηθείᾳ τῶν ὀρθογωνίων συντεταγμένων (Ἀλεξανδρινὴ ἐποχή).

3) *Ἡ μέθοδος τῶν πολικῶν συντεταγμένων*. Αὕτη, μὴ χρησιμοποιουμένη συνήθως, συνίσταται εἰς τὴν μέτρησιν τῶν ὁριζοντίων γωνιῶν τῶν πρὸς ἀποτύπωσιν σημείων ὡς πρὸς μίαν τελείως καθωρισμένην κατεύθυνσιν καὶ τὴν σύγχρονον μέτρησιν τῶν ἀποστάσεων τῶν αὐτῶν σημείων ἀπὸ τὴν στάσιν τοῦ ὀργάνου.

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω τριῶν μεθόδων, ἀκριβεστέρα εἶναι ἡ πρώτη καὶ ὀλιγώτερον ἀκριβὴς ἡ τελευταία. Οἱαδήποτε καὶ ἂν εἶναι ἡ χρησιμοποιηθεῖσα μέθοδος, ὑπάρχουσι τρόποι ἐλέγχου τῆς ἀκριβείας τῶν μετρήσεων καὶ διορθώσεως τῶν ἀποτελεσμάτων αὐτῶν. Κατὰ τὴν μέθοδον τῶν συντεταγμένων, ἡ εὐθυγραμμία ἥτις ἐχαράχθη καλεῖται ἄξων ἢ γραμμὴ τῆς ἀποτυπώσεως. Ἂν τὸ μῆκος τῶν καθέτων εἶναι μεγαλύτερον τῶν 15 μ., χαράσσομεν καὶ ἄλλους ἄξονας. Προκειμένου περὶ ἑνὸς ἄξονος, λαμβάνεται οὗτος κατὰ τὴν μεγαλυτέραν διάστασιν τοῦ γηπέδου καὶ διερχόμενος διὰ δύο σταθερῶν σημείων. Ὅταν ἔχωμεν περισσοτέρους, τοὺς ἐκλέγομεν οὕτως, ὥστε νὰ ὁρίζεται τελείως ἡ θέσις αὐτῶν. Τοὺς χαράσσομεν εἴτε παραλλήλους, εἴτε σχηματίζοντας τρίγωνα. Ὅταν αἱ γραμμαὶ ἀποτυπώσεως εἶναι πολλαί, λέγομεν ὅτι συνιστῶσι πολυγωνομετρικὸν δίκτυον· ὅταν αὗται συνιστῶσι γραμμὴν τεθλασμένην, τότε λέγομεν ὅτι πρόκειται περὶ πολυγωνομετρικῆς ὁδεύσεως κλειστῆς ἢ ἀνοικτῆς, ἀναλόγως τοῦ ἂν ἡ ὅδευσις ἀποτελῇ κλειστὸν πολύγωνον ἢ ἁπλῆν τεθλασμένην γραμμήν·

Αἱ ἀνωτέρω περιγραφεῖσαι μέθοδοι χρησιμοποιοῦνται προκειμένου περὶ μικρῶν ἐκτάσεων. Ἂν ἡ πρὸς ἀποτύπωσιν ἐπιφάνεια εἶναι πολὺ μεγάλη, τότε γίνεται ἐγκατάστασις ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας ἑνὸς τριγωνομετρικοῦ δικτύου, τὸ ὁποῖον καθορίζεται ἐπακριβῶς διὰ τῆς μετρήσεως μιᾶς πλευρᾶς καλουμένης βάσεως καὶ ἁπασῶν τῶν γωνιῶν τοῦ δικτύου. Σχετικῶς βλ. εἰς λ. *τριγωνισμοί*. Ἐνταῦθα θὰ ἀναφέρωμεν τὰς μεθόδους μετρήσεως γωνιῶν διὰ τοῦ θεοδολίχου, τὸ ὁποῖον εἶναι τὸ κατ' ἀρχὴν χρησιμοποιούμενον ὄργανον ἐν τῇ γεωδαισίᾳ, προκειμένου περὶ γωνιομετρήσεων ἀκριβείας.

***Μέτρησις ὁριζοντίων γωνιῶν διὰ τοῦ θεοδολίχου***. Γίνεται αὕτη ἐπὶ τῇ βάσει τῶν κάτωθι τεσσάρων μεθόδων:

1) Διὰ τῆς *ἁπλῆς μεθόδου*, ἥτις χρησιμοποιεῖται προκειμένου περὶ μιᾶς ἢ ὀλιγαρίθμων μεμονωμένων γωνιῶν. Κατὰ ταύτην, ἀφοῦ γίνῃ τοποθέτησις καὶ τακτοποίησις τοῦ ὀργάνου (στήριξις τοῦ τρίποδος, κέντρωσις τοῦ πινακίου, ὁριζοντίωσις τοῦ διῃρημένου δίσκου ἢ κατακορύφωσις τοῦ πρωτεύοντος ἄξονος) γίνεται σκόπευσις τοῦ ἀριστεροῦ σημείου κατόπιν τοῦ ἑτέρου καὶ ὁρίζεται οὕτω ἡ ζητουμένη γωνία διὰ τῆς διαφορᾶς τῶν ἀναγνώσεων.

2) Διὰ τῆς *περιοδικῆς μεθόδου* ἢ τῆς *μεθόδου τῶν διευθύνσεων*, ἥτις ἐφαρμόζεται ὅταν πρόκειται περὶ μετρήσεως πολλῶν γωνιῶν ἐκ τοῦ αὐτοῦ σημείου. Εἶναι ἡ μέθοδος αὕτη ἡ αὐτὴ μὲ τὴν προηγουμένην, ἰσχύουσα διὰ περισσοτέρας γωνίας, ἐξαγομένας διὰ διαδοχικῶν σκοπεύσεων.

3) Διὰ τῆς *ἐπαναληπτικῆς μεθόδου*, ἥτις συνίσταται εἰς τὴν κατ' ἐπανάληψιν μέτρησιν τῶν γωνιῶν, πρὸς ἐπίτευξιν μεγάλης ἀκριβείας. Γίνεται μόνον δι' ἐπαναληπτικοῦ θεοδολίχου.

4) Διὰ τῆς *μεθόδου κατὰ τομεῖς*, καθ' ἣν σκοπεύονται διαδοχικῶς ὅλα τὰ ἀπομεμακρυσμένα πρῶτον σημεῖα, διὰ τῆς περιοδικῆς μεθόδου, εἶτα δὲ τὰ ἐγγύτερον κείμενα. Ἡ μέθοδος αὕτη εἶναι ἡ πλέον χρησιμοποιουμένη.

Ἡ ἀκρίβεια τῶν διὰ τῶν διαφόρων μεθόδων γινομένων σκοπεύσεων ἐξαρτᾶται ἀπὸ τὴν μεγέθυνσιν τοῦ τηλεσκοπίου, τὴν ἀκρίβειαν ἀναγνώσεων ἐπὶ τοῦ διῃρημένου κύκλου, τὴν ἀκρίβειαν τῶν ἐπισημάνσεων, ἀπὸ σφάλμα ἐκ πλημμελοῦς κεντρώσεως, ἐξ ὀργανικῶν σφαλμάτων τοῦ χρησιμοποιουμένου θεοδολίχου καὶ κυρίως ἐκ τῆς στρέψεως τοῦ θεοδολίχου, ὁπότε μεταβαλλομένης τῆς θέσεως τῆς ἀρχικῆς ἀναγνώσεως, μεταβάλλεται καὶ ἡ γωνία.

***Ὁριζοντία ἀποτύπωσις διὰ τῆς μετροτραπέζης***. Ἡ μετροτράπεζα εἶναι ὄργανον γωνιομετρικὸν πρὸς γραφικὴν κατασκευὴν ὁριζοντίων γωνιῶν καὶ ἀποτελεῖται ἐκ πλακὸς ὁριζοντιουμένης τῇ βοηθείᾳ ἀεροστάθμης καὶ κεντρουμένης διὰ τῆς λιναίης καὶ τῆς περόνης ὑπὲρ τὸ σημεῖον, ἀπὸ τὸ ὁποῖον θέλομεν νὰ χαράξωμεν τὰς γωνίας. Πρὶν ἀρχίσῃ ἡ χάραξις θὰ γίνῃ προσανατολισμὸς τῆς πλακός. Ἡ κέντρωσις καὶ ὁ προσανατολισμὸς ἐπιτυγχάνονται διὰ διαδοχικῶν δοκιμῶν. Διὰ τὴν χάραξιν τῶν γωνιῶν ἔχομεν ἀνάγκην ἑνὸς κανόνος, τοῦ κανόνος τῆς μετροτραπέζης, ἢ τοῦ ἐπιτραπεζίου κανόνος ὁ ὁποῖος εἶναι μία σκοπευτικὴ διάταξις μετὰ κανό.ος.

Ἡ μετροτράπεζα χρησιμοποιεῖται πρὸς ἐκτέλεσιν γραφικῶν ἀποτυπώσεων, ἔχει ὅμως παραγκωνισθῇ σήμερον λόγῳ πολλῶν μειονεκτημάτων, παραμένει δὲ ἐν χρήσει μόνον προκειμένου περὶ ἀποτυπώσεων ὑπὸ πολὺ μικρὰς κλίμακας 1 : 20000 καὶ κάτω.

***Κατακόρυφοι ἀποτυπώσεις***· βλ. *ὑψομετρία*.

Digitized by Google

Περὶ τῶν ὀργάνων καὶ μεθόδων πρὸς ταυτόχρονον καταρτισμὸν ὁριζοντίας καὶ κατακορύφου ἀποτυπώσεως βλ. λ. *τοπογραφία*.

Περὶ τῶν μεθόδων ὑπολογισμοῦ πρὸς ἐκτέλεσιν ἐπὶ χάρτου τῶν ἀποτυπώσεων καὶ καταρτισμοῦ τῶν σχεδίων βλ. *ὑπολογισμοὶ [Γεωδ.]* καὶ *σχεδιάσεις [Γεωδ.]*. Α. Α. ΚΑΖΑΚΟΣ

— **μετρήσεις *ἠλεκτρικαὶ*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικαὶ* μετρήσεις.

— **μέτρησις *ἀπόλυτος*.** Μέτρησις, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ τιμὴ τοῦ πρὸς μέτρησιν μεγέθους, ἐξάγεται ἐκ μαθηματικοῦ τινος τύπου ἐκφράζοντος φυσικὴν σχέσιν τοῦ μεγέθους τούτου πρὸς ἄλλα γνωστὰ ἢ μετρηθέντα μεγέθη. Λ. χ. ἡ μέτρησις τῆς ἠλεκτρικῆς ἀντιστάσεως διὰ μετρήσεως τάσεως καὶ ἐντάσεως εἶναι *ἀπόλυτος μέτρησις* ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν μέτρησιν ἠλεκτρικῆς ἀντιστάσεως ἐπὶ τῆς γεφύρας τοῦ Wheatstone, ἥτις εἶναι *μέτρησις συγκριτική*. Γ. Θ. Κ.

**μετρητὰ** (τά)· χρήματα, περιουσία ἐκ νομισμάτων ἀποτελουμένη, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὴν κτηματικὴν περιουσίαν ἢ πρὸς ἀπαιτήσεις καὶ χρεόγραφα· || φρ. «τοῖς μετρητοῖς» ἀντὶ χρημάτων ἀμέσως καταβαλλομένων: «πωλῶ —, ἀγοράζω τοῖς μετρητοῖς» κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ «— ἐπὶ πιστώσει» ἢ καὶ «— ἐπ' ἀνταλλαγῇ»· || μεταφ. «τὰ παίρνει τοῖς μετρητοῖς» ἀφελῶς, εὐπίστως: «τοῦ εἶπα ἕνα ἀστεῖο καὶ τὸ πῆρε τοῖς μετρητοῖς».

— **μετρητοῖς,** ***πληρωμὴ τοῖς*** —. Τρόπος πωλήσεως ἢ ἀγορᾶς, συνιστάμενος εἰς τὴν ἀνταλλαγὴν ἐμπορεύματος ἔναντι μετρήματος τοῦ συμφωνηθέντος τιμήματος, τὸ ὁποῖον καταβάλλεται παρὰ τοῦ ἀγοραστοῦ εἰς τὸν πωλητὴν κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς πράξεως, πρὸς ὁλοσχερῆ ἐξόφλησιν τῆς γενομένης ἀγοραπωλησίας. Εἰς τὰς ἐμπορικὰς συναλλαγὰς διακρίνομεν δύο εἰδῶν πληρωμὰς τοῖς μετρητοῖς: α') Τὴν *ἄμεσον* καταβολὴν τοῖς μετρητοῖς (comptant compté) ἐν χρήσει μόνον εἰς τὸ λιανικὸν ἐμπόριον· καὶ β') Τὴν ἁπλῆν ἐξόφλησιν τοῖς μετρητοῖς (comptaut simple), συνισταμένην εἰς τὴν πληρωμὴν ἐπὶ τῇ προσαγωγῇ τοῦ σχετικοῦ τιμολογίου ἢ τοῦ ἀντιγράφου τοῦ τρεχουμένου λογαριασμοῦ, εἰς τὸ τέλος τοῦ μηνός, καθ' ὃν ἐγένετο ἡ παράδοσις τοῦ ἐμπορεύματος, πολλάκις δὲ καὶ τοῦ ἑπομένου. Ὁ τελευταῖος οὗτος τρόπος εἶναι ἐν χρήσει εἰς τὰς μεταξὺ ἐμπόρων συναλλαγάς, καθότι οὕτως ἀποφεύγονται αἱ μεγάλαι μετακινήσεις ρευστῶν. Ὁ ἀγοραστής, ὅστις πληρώνει ἀμέσως τοῖς μετρητοῖς, τυγχάνει πολλάκις ὡρισμένης ἐκπτώσεως ἐπὶ τῆς τιμῆς τῆς ἀγορᾶς, κυμαινομένης ἀναλόγως τῶν ἐθίμων τῆς ἀγορᾶς καὶ τῶν ἰδιαιτέρων συμφωνιῶν μεταξὺ ἀγοραστοῦ καὶ πωλητοῦ.

Εἰς τὸ χρηματιστήριον ἀξιῶν ὁ ὅρος *πράξεις τοῖς μετρητοῖς*, ἀντιδιαστελλόμενος πρὸς τὰς ἐπὶ προθεσμίᾳ πράξεις, σημαίνει, θεωρητικῶς, τὴν ἀγοραπωλησίαν χρεογράφων ἔναντι ἀμέσου μεταβολῆς τοῦ τιμήματός των. Ἐν τῇ πράξει τὸ ἀντίτιμον τῶν πωληθεισῶν ἀξιῶν μετρεῖται εἰς τὸν πωλητὴν τὴν μεθεπομένην τῆς πράξεως, ἐὰν αὗται εἶχον παραδοθῇ παρὰ τοῦ πωλητοῦ προκαταβολικῶς, ἢ τὴν μεθεπομένην τῆς παραδόσεως, ἐὰν αἱ ἀξίαι παρεδόθησαν μετὰ τὴν πώλησιν. Κατὰ τὴν ἀγορὰν τοῖς μετρητοῖς οἱ τίτλοι παραδίδονται εἰς τὸν ἀγοραστὴν ἐντὸς τοῦ μετὰ τὴν πρᾶξιν πρώτου δεκαπενθημέρου. Αἱ προθεσμίαι αὗται αὐξάνουν, ὁσάκις πρόκειται περὶ ἀγοραπωλησιῶν ὀνομαστικῶν τίτλων. Τὸ ἐπίσημον χρηματιστηριακὸν δελτίον δίδει χωριστὰς τιμὰς διὰ τὰς πράξεις τοῖς μετρητοῖς. Η. Π. Γ.

**μετρητὴς** (ὁ)· ὁ ἔχων ὡς ἔργον τὸ μετρεῖν, ὁ μετρῶν· || ὀνομασία διαφόρων ὀργάνων, διὰ τῶν ὁποίων γίνεται μέτρησίς τις.

—*['Αρχ.] Μετρητὴς* (ἢ *σύμβολον* ἢ *μέτρων τρόπος*) ἐκαλεῖτο, γενικῶς, τὸ ἀρχέτυπον οἱουδήποτε μέτρου ἢ σταθμίου, ἀρχέτυπον, τὸ ὁποῖον ἐφυλάσσετο συνήθως ἐν ναῷ καὶ διὰ τοῦ ὁποίου εἰδικοὶ ὑπάλληλοι, οἱ καλούμενοι *μετρονόμοι*, ἐξήλεγχον τὰ ἐν χρήσει ὑπὸ τοῦ ἐμπορίου μέτρα καὶ σταθμά. Ἐν Ἀθήναις οἱ μετρηταὶ οὗτοι, δώδεκα τὸν ἀριθμὸν καὶ χάλκινοι, ἐφυλάσσοντο ἐν τῷ ναϊδίῳ τοῦ ἥρωος στεφανηφόρου παρὰ τὸ νομισματοκοπεῖον, καὶ ἐκαλοῦντο «τὰ στάθμια τὰ ἐν τῷ ἀργυροκοπείῳ». Πρὸς διευκόλυνσιν ὅμως τοῦ κοινοῦ, ἀντίτυπα τούτων ἦσαν κατατεθειμένα καὶ ἐν τῇ Σκιάδι τῶν Ἀθηνῶν καὶ ἐν Πειραιεῖ καὶ ἐν Ἐλευσῖνι. Τοιοῦτοι μετρηταὶ εὑρέθησαν πολλοί. Φέρουσιν ὀνόματα ἀγορανόμων καὶ μετρονόμων καὶ εἶναι ἀφιερωμένοι εἰς τοὺς θεούς. Χαρακτηριστικὸς μετρητὴς εἶναι ὁ χάλκινος μετρητὴς τῆς Ἡρακλείας τῆς Βιθυνίας, ὅστις φέρει τὴν ἑξῆς ἐπιγραφήν: «Θεοῖς σεβαστοῖς καὶ τῷ δάμῳ, ἀγορανομούντων Π. Κλωδίου Ρούφου καὶ Τερτίου Βεκιλίου».

Εἰδικῶς, μετρητὴς ἐκαλεῖτο τὸ κύριον μέτρον τῶν ὑγρῶν κατὰ τὸ ἀττικὸν σύστημα τῶν μέτρων καὶ σταθμῶν, τὸ ὁποῖον ἵδρυσεν ὁ Σόλων, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀριστοτέλης. Ὁ μετρητὴς οὗτος ὑποδιῃρεῖτο εἰς δώδεκα χόας, ἕκαστος δὲ χοῦς εἰς δώδεκα κοτύλους. Ἄρα ὁ μὲν χοῦς ἦτο τὸ δωδέκατον τοῦ μετρητοῦ, ἡ δὲ κοτύλη τὸ ἑκατοστὸν τεσσαρακοστὸν τέταρτον αὐτοῦ. Ὑποδιαίρεσις τοῦ μὲν χοὸς ἦτο ὁ ἡμίχους, ἤτοι τὸ $^1/_{24}$ τοῦ μετρητοῦ, τῆς δὲ κοτύλης τὸ ἡμικοτύλιον, ἤτοι $^1/_{288}$. Κατὰ τὸν Dörpfeld ὁ μετρητὴς εἶχε βάρος 38,70 λιτρῶν. Ἀργότερον, κατὰ τὸν Γ' π. Χ. αἰῶνα, ὁ μετρητὴς εἶχε βάρος 39,30 λιτρῶν καὶ ὡς νέαν ὑποδιαίρεσιν τὴν ἡμίναν. Β. Δ. Θ.

—*[Μηχανολ.] Μετρηταὶ* καλοῦνται καταγραφικὰ ὄργανα πρὸς μέτρησιν γενικῶς, εἰδικώτερον πρὸς μέτρησιν παραγομένων ἢ καταναλισκομένων ἢ καὶ ἁπλῶς μεταβιβαζομένων ποσοτήτων ἀερίων, ὑγρῶν, ἠλεκτρισμοῦ κτλ. (διὰ τοὺς μετρητάς, οἵτινες χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν μέτρησιν ὑγρῶν (κυρίως ὕδατος) βλ. λ. *ὑδρόμετρον*). Ἡ διὰ μετρητῶν καταμέτρησις ποσοτήτων ἀερίων γίνεται δι' ὑδραυλικῆς ὁδοῦ: τὸ πρὸς μέτρησιν ἀέριον (κυρίως φωταέριον, ἐλαφρότερον τοῦ ὕδατος) διαβιβάζεται εἰς τὸ κάτω μέρος δοχείου περιέχοντος ὕδωρ καὶ διὰ τῆς ἀνώσεως αὐτοῦ προκαλεῖ τὴν περιστροφὴν τροχοῦ εὑρισκομένου ἐντὸς τοῦ ὕδατος καὶ φέροντος πτερύγια. Διὰ καταλλήλου διατάξεως κατορθοῦται νὰ εἶναι ὁ ἀριθμὸς περιστροφῶν τοῦ τροχοῦ ἀνάλογος πρὸς τὸν ὄγκον τοῦ διὰ τοῦ μετρητοῦ διελθόντος ἀερίου. Αἱ περιστροφαὶ τοῦ τροχοῦ μεταδίδονται διὰ συστήματος ὀδοντωτῶν τροχίσκων εἰς ὡρολογιακὸν μηχανισμόν, ὅστις βαθμολογεῖται ἀπ' εὐθείας εἰς κυβικὰ μέτρα. Προκειμένου περὶ ἠλεκτρικῶν μετρητῶν (ἢ ἄλλως *ἠλεκτρικῶν γνωμόνων*), διακρίνομεν τὰς ἑξῆς διαφόρους κατηγορίας:

1) *Γνώμονες ἀμπερομετρικοὶ* συνεχοῦς ρεύματος, ἀναγράφοντες τὸ ποσὸν ἠλεκτρισμοῦ, ὅπερ διῆλθε διὰ τοῦ γνώμονος, καὶ ἐπομένως βαθμολογημένοι εἰς ἀμπερώρια, ἐνίοτε καὶ εἰς ὡριαῖα βάττ, ἢ ὡριαῖα κιλοβάττ, ὑπὸ τὴν προϋπόθεσιν σταθερᾶς γνωστῆς τάσεως. 2) *Γνώμονες βαττομετρικοὶ* συνεχοῦς ρεύματος, ἀναγράφοντες τὴν ἠλεκτρικὴν ἐνέργειαν, ἥτις διῆλθε διὰ τοῦ γνώμονος, βαθμολογημένοι εἰς ὡριαῖα βάττ, ἢ ὡριαῖα κιλοβάττ. 3) *Γνώμονες βαττομετρικοὶ* ἐναλλασσομένου ρεύματος, ἀναγράφοντες τὴν ἐνεργὸν ἠλεκτρικὴν ἐνέργειαν, ἥτις διῆλθε διὰ τοῦ γνώμονος. 4) *Γνώμονες ἀέργων βάττ* ἐναλλασσομένου ρεύματος, ἀναγράφοντες τὸν ἀριθμὸν τῶν ἀέργων βάττ, ἅτινα διῆλθον διὰ τοῦ γνώμονος.

Σπανιώτερον καὶ εἰς εἰδικὰς περιπτώσεις συναντῶνται καὶ ἄλλα εἴδη μετρητῶν, ὡς π. χ. *γνώμονες-βαττόμετρα* (ἢ *καταγραφικοὶ μεγίστου*), ἀναγράφοντες ἐκτὸς τῆς συνολικῶς καταναλωθείσης ἐνεργείας καὶ τὴν μέσην τιμὴν τῆς ἰσχύος ἀνὰ ὡρισμένα χρονικὰ διαστήματα (συνήθως ἡμίωρα), *γνώμονες διπλοῦ τιμολογίου, γνώμονες πολυφασικοί, γνώμονες συνεχοῦς ρεύματος μὲ περισσοτέρους τῶν δύο ἀγωγοὺς* (π. χ. 2×110) κ. ο. κ. Ἡ ἐν γένει λειτουργία τῶν ἠλεκτρικῶν γνωμόνων στηρίζεται ἐπὶ τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν φαινομένων, ἀποτελοῦν δὲ ἐν γένει οἱ γνώμονες μικρογραφίας ἠλεκτρικῶν κινητήρων, μὲ μικρὰς παραλλαγάς. Ἐν Γερμανίᾳ ὑπάρχουν ἀκόμη ἐν χρήσει καὶ *ἠλεκτρολυτικοὶ γνώμονες*, κατάλληλοι μόνον διὰ συνεχὲς ρεῦμα καὶ στηριζόμενοι ἐπὶ τῶν ἠλεκτρολυτικῶν ἀποτελεσμάτων τοῦ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος. Γ. Θ. Κ.

— *['Αθλητ.]* Καλοῦνται *μετρηταὶ* οἱ ὁριζόμενοι κατὰ τοὺς ἀγῶνας εἰς δρόμους ἀπαιτοῦντας περισσοτέρας τῆς μιᾶς στροφῆς τοῦ στίβου, διὰ νὰ σημειώνουν ἀκριβῶς ἑκάστην στροφὴν ἀθλητοῦ καὶ νὰ εἰδοποιοῦν εἰς τὴν τελευταίαν τὸν πρῶτον ἀθλητὴν διὰ κωδωνοκρουσίας ἢ οἱουδήποτε ἄλλου μέσου. Εἰς τὰς βολὰς καὶ τὰ ἅλματα μήκους καὶ ὕψους, χρέη μετρητῶν ἐκτελοῦν οἱ κριταί, οἵτινες μετροῦν καὶ καταγράφουν πᾶσαν προσπάθειαν τῶν μετεχόντων ἀθλητῶν. Ἡ κρίσις των διὰ τὴν ἐπίδοσιν ἑκάστου ἀγωνίσματος εἶναι ἀνέκκλητος καὶ ἀποκλείει πᾶσαν διαμαρτυρίαν, συμφώνως πρὸς τὰς διατάξεις τῶν διεθνῶν κανονισμῶν ἀθλητισμοῦ στίβου.

**μετρητικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἁρμόδιος, ὁ ἱκανὸς πρὸς μέτρησιν· || ***μετρητικὴ*** (ἡ)· ὡς οὐσ., ἡ τέχνη τοῦ μετρεῖν.

**μετρητός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μετρηθῇ, ὁ ἐπιδεχόμενος μέτρησιν· || *μετρητὰ* (τά)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).

**μετριάζω**· καθιστῶ τι μέτριον, ὀλιγώτερον ὀξύ: «μετριάζω τὴν λύπην, —τὴν χαράν, —τὸ κακὸν κτλ.», «ἐμετριάσθη ὁ πυρετός, — ὁ καύσων, — τὸ ψῦχος, — ὁ ἄνεμος».

**μετρίασις,** *—εως* (ἡ)· ὁ καὶ *μετριασμὸς* (βλ. λ.).

**μετριασμὸς** (ὁ), ἢ ***μετρίασμα*** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μετριάζειν, ἡ ἐλάττωσις τῆς ὀξύτητος, τῆς ἐντάσεως, ἐλάφρυνσις, καταπράϋνσις: «ὁ μετριασμὸς τοῦ ψύχους, — τοῦ καύσωνος, — τῆς λύπης, — τῆς χαρᾶς».

— **μετριασμὸς *τῆς ποινῆς*** *[Νομ.]*. Ὁ ὑποβιβασμὸς τῆς ποινῆς ὑπὸ τὸ ἐλάχιστον αὐτῆς ὅριον. Κατὰ γενικὸν κανόνα (ἄρθρ. 108 Π. Ν.) ἡ ποινὴ δέον νὰ ἐπιβάλληται ἐντὸς τῶν ὑπὸ τοῦ νόμου τασσομένων ὁρίων, δὲν ἐπιτρέπεται δὲ ἡ μεταβολὴ τοῦ εἴδους αὐτῆς οὔτε ἡ ὑπέρβασις ἢ ὁ ὑποβιβασμὸς ὑπὸ τὸ ἐλάχιστον ὅριον. Ὑπάρχουσιν ὅμως περιπτώσεις, καθ' ἃς ἐπιτρέπεται ὁ ὑπὸ τὸ ἐλάχιστον ὅριον ὑποβιβασμὸς τῆς ποινῆς. Τοῦτο λαμβάνει χώραν εἴτε ἕνεκεν ἀτομικῶν λόγων (λ. χ. ἡλικίας—νεαρᾶς ἢ γεροντικῆς—, μέθης, παροδικῆς μανίας κτλ., ἄρθρ. 84 καὶ 87 Π. Ν.), εἴτε ἕνεκα τοῦ βαθμοῦ τῆς ἐνεργείας (ἀπόπειρα, συνέργεια), εἴτε ἕνεκεν ἰδιαιτέρων περιστατικῶν, προκυψάντων κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν (λ. χ. εἰς τὰς περιπτώσεις τοῦ ἐρεθισμοῦ τοῦ δράστου ἐπὶ ἀναιρέσεως καὶ ἀπρομελετήτων τραυμάτων, ἄρθρ. 293 παράγρ. 3 καὶ 309 παράγρ. 1 Π. Ν.). Σ. Α. Χ.

**μετριαστὴς** (ὁ)· ὁ μετριάζων, ὁ καθιστῶν τι μέτριον, ὀλιγώτερον ὀξύ.

**μετριαστικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐπιφέρων, ὁ προξενῶν μετρίασιν, ἐλαφρυντικός.

**μετριεγκεφαλία** (ἡ)· βλ. λ. *μετριοκεφαλία*.

**μετρικὴ** (ἡ) Ἡ μετρικὴ ὡς τέχνη ἀποτελεῖται ἀπὸ τὸ σύνολον τῶν νόμων, τοὺς ὁποίους ἀκολουθεῖ ὁ ποιητὴς συνειδητῶς ἢ καὶ ἀσυνειδήτως κατὰ τὴν κατασκευὴν τῶν στίχων. Ὡς ἐπιστήμη ἡ μετρικὴ ἐρευνᾷ τοὺς νόμους αὐτούς, ἀδιαφοροῦσα τελείως διὰ τὴν ἀξίαν ἢ μὴ τῶν ὑπὸ ἐξέτασιν ποιητικῶν ἔργων σχετικὰ μὲ τὸ περιεχόμενόν των, τὸ ὕφος, ἄλλα ἐξωτερικὰ τῆς ποιητικῆς μορφῆς γνωρίσματα κτλ., ζητήματα, μὲ τὰ ὁποῖα ἀσχολοῦνται οἱ λοιποὶ κλάδοι τῆς ποιητικῆς ἐπιστήμης.

***Ἀρχαία ἑλληνικὴ μετρική.*** Ἡ ἀρχαία ἑλληνικὴ μετρικὴ τέχνη βάσιν τῆς ρυθμοποιίας της δὲν ἔλαβε τὸν τονισμόν, ὅπως συμβαίνει εἰς τὴν βυζαντινὴν καὶ τὴν νεοελληνικήν, ἀλλὰ τὴν προσῳδίαν· ἐπομένως ὁ ρυθμὸς προκαλεῖται ἀπὸ τὴν κανονικὴν ἐναλλαγὴν ὄχι τονουμένων καὶ ἀτόνων συλλαβῶν, ἀλλὰ μακρῶν καὶ βραχειῶν. Ἡ σχέσις τῶν προσῳδιακῶς διαφερουσῶν συλλαβῶν πρὸς ἀλλήλας καθορίζει τὴν μορφὴν ἑκάστης ἀρχαίας μετρικῆς ἑνότητος:

*Ἄνδρα μοι ἔννεπε, Μοῦσα, πολύτροπον, ὃς μάλα πολλὰ*
—◡ ◡ —◡ ◡—◡ ◡—◡◡ —◡◡ ——

(δακτυλικὸν ἑξάμετρον)

*Ἐσλὰ γὰρ θεοῦ δίδοντος αὐτὸς οὐκ ἐδέξατο*
—◡—◡—◡—◡ | —◡—◡—◡—

(τροχαϊκὸν τετράμετρον)

*Ἀκούεις βοάν, ἀκούεις τέκνων;*
◡——◡— | ◡̄——◡—

(δόχμιοι) κτλ.

Εἰς τὴν προσῳδιακὴν μετρικὴν οὐδόλως λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν ὁ τόνος τῶν λέξεων καὶ τῆς φράσεως. Ἐφ' ὅσον μακραὶ καὶ τονούμεναι, βραχεῖαι καὶ ἄτονοι συλλαβαὶ δὲν συνέπιπτον, ἡ ρυθμοποιία ἔπρεπε κατ' ἀνάγκην νὰ στηριχθῇ ἐπὶ τοῦ ἑνὸς μόνον ἐκ τῶν δύο, εἴτε ἐπὶ τοῦ τονισμοῦ ἢ ἐπὶ τῆς προσῳδίας. Ἕνας ἀπὸ τοὺς κυριωτέρους λόγους, διὰ τοὺς ὁποίους προετιμήθη ἡ προσῳδία, εἶναι ὅτι ὁ τονισμὸς τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς γλώσσης δὲν ἦτο δυναμικός, ἀλλὰ μουσικός, ἐπομένως αἱ συλλαβαὶ δὲν διεκρίνοντο μεταξύ των τόσον ὡς πρὸς τὴν ἔντασιν. Πάντως κατὰ τὴν ἀπαγγελίαν τῶν ποιητικῶν ἔργων καὶ τὸ ᾆσμα θὰ ἐξῄροντο κατά τινα τρόπον καὶ αἱ τονούμεναι συλλαβαί, πῶς ἀκριβῶς, ἄγνωστον.

Εἶναι ἀπολύτως ἀδύνατον ν' ἀποκτήσωμεν σαφῆ παράστασιν τοῦ τρόπου, κατὰ τὸν ὁποῖον ἤχουν οἱ ἀρχαῖοι στίχοι, ἐφ' ὅσον, ὡς γνωστόν, αἱ σημεριναὶ γλῶσσαι καθ' ὅλου ἀκολουθοῦν τελείως διαφορετικοὺς νόμους τονισμοῦ, γεγονὸς τὸ ὁποῖον, ὅπως εἶναι φυσικόν, δυσκολεύει τὴν ἔρευναν τῆς ἀρχαίας μετρικῆς.

*Ἱστορία τῶν ἀρχαίων μετρικῶν μορφῶν καὶ ρυθμῶν.* Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς ἄλλας ἐκδηλώσεις τῶν ἀρχαίων, γλῶσσαν, θρησκείαν, παραδόσεις κτλ., τὰς ὁποίας δυνάμεθα μὲ τὴν βοήθειαν διαφόρων μεθόδων ἀκολουθοῦντες ἀντίθετον πρὸς τὴν φυσικὴν ἐξέλιξίν των φορὰν νὰ παρακολουθήσωμεν μέχρι παλαιοτάτων χρόνων, συχνὰ καὶ προϊστορικῶν ἀκόμη, εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν μετρικὴν ὁ τρόπος, κατὰ τὸν ὁποῖον ἐσχηματίσθησαν αἱ διάφοροι μετρικαὶ μορφαὶ καὶ οἱ ρυθμοί, καὶ ὅταν ἀκόμη ταῦτα ἀνακύπτουν διὰ πρώτην φορὰν εἰς ὑστερωτέρους χρόνους, εἶναι πρόβλημα ἄλυτον. Αἱ σχετικαὶ προσπάθειαι, διὰ νὰ κερδίσωμεν κάτι ἀπὸ τὴν προϊστορίαν τῶν μέτρων, δὲν ὑπερβαίνουν τὸ στάδιον τῆς ἁπλῆς πιθανολογίας, συχνὰ δὲ οὐδ' αὐτὸ κατορθώνουν νὰ φθάσουν. Ἡ καταγωγὴ τῶν δοχμίων, οἱ ὁποῖοι ἀνακύπτουν ἐξαφνικὰ μόλις τὸν Ε' π. Χ. αἰῶνα εἰς τὴν τραγῳδίαν, εἶναι ἐξ ἴσου ἀδύνατος νὰ εὑρεθῇ, ὅσον καὶ ὁ τρόπος τοῦ ἀπαρτισμοῦ τοῦ δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου, τελειωθέντος εἰς χρόνους προομηρικούς. Καὶ οἱ δόχμιοι τῆς ἀττικῆς τραγῳδίας καὶ τὸ ἑξάμετρον τοῦ Ὁμήρου παρουσιάζονται ἀπὸ τῆς πρώτης ἐμφανίσεώς των τελείως διαμορφωμένα· κατὰ πόσον προηγήθησαν ἄλλα στάδια ἐξελίξεως καὶ ποῖα, μένει αἴνιγμα. Τὸ πρόβλημα περιπλέκεται καὶ διὰ τὸν λόγον, ὅτι

Digitized by Google

ὡρισμένα, πολλὰ ἢ ὀλίγα, στοιχεῖα τῆς κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους τελείως ἀναπτυχθείσης μετρικῆς των οἱ Ἕλληνες δυνατὸν νὰ παρέλαβον ἀπὸ τὴν πρὸ αὐτῶν εἰς τὴν Ἑλλάδα κατοικοῦσαν φυλήν, εἰς τὴν ὁποίαν τόσα καὶ ὡς πρὸς τὰς ἄλλας ἐκδηλώσεις τοῦ βίου, θρησκείαν κλπ. ὀφείλουν. Πάντως ἂν εἶναι ἀδύνατος ἡ παρακολούθησις τῆς προϊστορίας τῶν μετρικῶν ἑνοτήτων (μέτρων, κώλων, στίχων) καὶ ρυθμῶν, τὸ πλῆθος καὶ ἡ ποικιλία τῶν σωθέντων ποιητικῶν ἔργων μᾶς ἐπιτρέπει νὰ παρακολουθήσωμεν ὁπωσδήποτε ἄνετα τὴν ἱστορίαν των, ἀπὸ τοῦ Ὁμήρου μέχρι τῶν χρόνων, κατὰ τοὺς ὁποίους μετὰ τὴν σύμπτωσιν μακρῶν καὶ βραχέων φωνηέντων καὶ τὴν ὑπερίσχυσιν τοῦ δυναμικοῦ τόνου ὑπὲρ τὸν μουσικόν, τὴν ἀρχαίαν μετρικὴν διαδέχεται ἡ βυζαντινή.

Τὸ δακτυλικὸν ἑξάμετρον:

— ⏔ — ⏔ — ⏔ — ⏔ — ⏔ — —

ἀνακύπτει εἰς τὸ παλαιότερον δι' ἡμᾶς ποιητικὸν κείμενον, τὰ ὁμηρικὰ ἔπη (Η' αἰών):

*Μῆνιν ἄειδε, θεά, Πηληϊάδεω Ἀχιλῆος*

καὶ ὕστερα χρησιμοποιεῖται πρὸς ποικίλους σκοποὺς κατὰ τοὺς πρώτους αἰῶνας τῆς ἀκμῆς τοῦ ἑλληνικοῦ πνεύματος εἰς ἐποχήν, κατὰ τὴν ὁποίαν πεζὸς γραπτὸς λόγος δὲν εἶχεν ἀκόμη διαμορφωθῆ. Πλὴν τῶν ποιητῶν, ποὺ ἐξακολουθοῦν νὰ καλλιεργοῦν τὸ ἡρωϊκὸν ἔπος, καὶ τοῦ Ἡσιόδου (τέλος Η' αἰῶνος), εἰς τοῦ ὁποίου τὴν ποίησιν διακρίνει κανεὶς εὔκολα, πόσας δυσκολίας τοῦ παρεῖχεν ὁ ἀκατάλληλος δι' ὅ,τι ἤθελε νὰ ἐκφράσῃ στίχος, χρησιμοποιοῦν τὸν ἑξάμετρον καὶ οἱ φιλόσοφοι Ξενοφάνης, Παρμενίδης (ΣΤ' αἰών) κλπ., διὰ νὰ διατυπώσουν τὰ διανοήματά των:

*Εἷς θεὸς ἔν τε θεοῖσι καὶ ἀνθρώποισι μέγιστος,*
*οὔτι δέμας θνητοῖσιν ὁμοίιος οὐδὲ νόημα* (*Ξενοφάν.* 19 D.)

Ἀπὸ τοῦ Ζ' αἰῶνος καὶ ἐφεξῆς πιστοποιοῦμεν τὴν χρῆσιν τοῦ ἐλεγειακοῦ διστίχου

— ⏔ — ⏔ — ⏔ — ⏔ — ⏔ — —
— ⏔ — ⏔ — | — ∪∪ — ∪∪ —

εἰς τὸν Καλλῖνον, τὸν Τυρταῖον, τὸν Ἀρχίλοχον, τὸν Ξενοφάνη, τὸν Σόλωνα, τὸν Μίμνερμον καὶ τοὺς λοιποὺς ἐλεγειοποιούς:

*Μέχρις τεῦ κατάκεισθε; κότ' ἄλκιμον ἕξετε θυμόν,*
*ὦ νέοι; οὐδ' αἰδεῖσθ' ἀμφιπερικτίονας* (*Καλλῖν.* 1 D.).

Καὶ τὸ ἰαμβικὸν τρίμετρον

⏒ — ∪ — ⏒ — ∪ — ⏒ — ∪ —

ἀνακύπτει διὰ πρώτην φορὰν τὸν Ζ' αἰῶνα εἰς τὸν «Μαργίτην»:

*φίλην ἔχων ἐν χερσὶν εὔφθογγον λύραν* (1 All.).

Τὸν αὐτὸν περίπου χρόνον τὸ χρησιμοποιεῖ ὁ Ἀρχίλοχος καὶ ὕστερα οἱ ἄλλοι ἰαμβογράφοι, Σιμωνίδης, Σόλων κλπ. Ὁ Ἀρχίλοχος πλὴν τοῦ ἐλεγειακοῦ διστίχου καὶ τοῦ ἰαμβικοῦ τριμέτρου, τὰ ὁποῖα πλάττει ὑπὸ μίαν ἐντεχνοτάτην μορφήν, πρότυπον εἰς τοῦτο τῶν Ἀλεξανδρινῶν ποιητῶν, παρουσιάζει διὰ πρώτην φορὰν τὸ τροχαϊκὸν τετράμετρον:

*Θυμέ, θύμ', ἀμηχάνοισι κήδεσιν κυκώμενε* (67 D.)
— ∪ — ⏒ — ∪ — ⏒ | — ∪ — ⏒ — ∪ —,

τὸ ὁποῖον ὕστερα καὶ οἱ ἄλλοι ἰαμβογράφοι χρησιμοποιοῦν, καὶ πλὴν ἄλλων μίαν σειρὰν ποικίλων διστίχων καὶ ἀσυναρτήτων δικώλων, τουτέστι στίχων ἐκ δύο κώλων ἀπαρτιζομένων, τὰ ὁποῖα χωρίζονται μεταξύ των διὰ διαιρέσεως:

*Ἐρέω τιν' ὑμῖν αἶνον, ὦ Κηρυκίδη,*
*ἀχνυμένη κεφαλὴ* (81 D.)

(ἰαμβικὸν τρίμετρον, — ∪∪ — ∪∪ —)

*Ἐρασμονίδη Χαρίλαε, χρῆμά τοι γελοῖον* (107 D.)
⏒ — ∪∪ — ∪∪ — ∪ | — ∪ — ∪ — ∪
—

*Τοῖος γὰρ φιλότητος ἔρως ὑπὸ καρδίην ἐλυσθεὶς*
*πολλὴν κατ' ἀχλὺν ὀμμάτων ἔχευεν* (112 D.)
— ⏔ — ⏔ — ⏔ — ∪∪ — ∪ — ∪ — —
⏒ — ∪ — ⏒ — ∪ — ∪ — —

(δακτυλικὸν δίμετρον, ἰθυφαλλικός, ἰαμβικὸν τρίμετρον καταληκτικόν).

Εἰς τοῦ Ἀλκμᾶνος τ' ἀποσπάσματα συναντῶμεν στροφὰς πολυπλοκώτερον συντεθειμένας, πάντως ἐξ ἀσυναρτήτων, ἑπομένως σαφῶς διακρινομένων μελῶν:

*Ἔστι τις σιῶν τίσις.* — ∪ — ⏒ — ∪ — }
*Ὁ δ' ὄλβιος, ὅστις εὔφρων* ⏒ — ∪∪ — ∪ — — }
*ἁμέραν διαπλέκει*
*ἄκλαυτος. Ἐγὼν δ' ἀείδω* »
*Ἀγιδῶς τὸ φῶς· ὁρῶ*
*F' ὥτ' ἄλιον, ὅνπερ ἇμιν* »
*Ἀγιδὼ μαρτύρεται*
*φαίνην. Ἐμὲ δ' οὔτ' ἐπαινῆν* »
*οὔτε μωμήσθαι νιν ἁ κλεννὰ χοραγὸς* τροχ. τρίμετρον

*οὐδ' ἀμῶς ἐῇ· δοκεῖ γὰρ ἦμεν αὐτὰ* » »

*ἐκπρεπὴς τώς, ὥσπερ αἴ τις* » δίμετρον
*ἐν βοτοῖς στάσειεν ἵππον* » »
*παγόν, ἀεθλοφόρον, καναχάποδα* — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ —

*τῶν ὑποπετριδίων ὀνείρων*
(1 D.), — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ —
—

Εἰς τὸν Ἀλκμᾶνα ἀπαντοῦν καὶ μέτρα ἰαμβικά, κρητικά, ἰωνικὰ κτλ.:

*περισσόν· αἰ γὰρ Ἀπόλλων ὁ Λύκηος* (30 D.)
∪ — ∪ — | ∪ ∪ — — | ∪∪ — —

(ἰαμβικόν, ἰωνικόν, ἰωνικόν).

*Ἀφροδίτα μὲν οὐκ ἔστι, μάργος δ' Ἔρως οἷα παῖς παίσδει*
— ∪ — — ∪ — — ∪ — — ∪ — — ∪ — — —

(κρητικά, 36 D).

Καὶ ὁ Ἴβυκος παρουσιάζει συνθετωτέρας στροφάς. Ὁ Στησίχορος σχηματίζει πλῆθος δακτυλικῶν σειρῶν:

*Ἀέλιος δ' Ὑπεριονίδας δέπας ἐσκατέβαινε*
*χρύσεον, ὄφρα δι' Ὠκεανοῖο περάσας...* (6 D.).

Εἰς τοὺς Λεσβίους ποιητάς, τὸν Ἀλκαῖον καὶ τὴν Σαπφώ, παρουσιάζονται, ἄγνωστον ἂν καὶ πρὸ αὐτῶν ὑφιστάμεναι, αἱ αἰολικαὶ στροφαὶ εἰς ποικίλον συνδυασμὸν διαφόρων μετρικῶν μορφῶν, σχηματιζομένων ὑπὸ ἰδιαιτέρους ρυθμικοὺς κανόνας (σαπφικοῦ ἑνδεκασυλλάβου, δεκατετρασυλλάβου, δεκαεξασυλλάβου, ἀλκαϊκοῦ δεκασυλλάβου, ἑνδεκασυλλάβου, γλυκωνείου, φαλαικείου, ἀσκληπιαδείου κτλ.):

*Ποικιλόθρον' ἀθάνατ' Ἀφρόδιτα,* — ∪ — ⏒ — ∪∪ — ∪ — —
*Παῖ Δίος δολόπλοκε, λίσσομαί σε,* » »
*μή μ' ἄσαισι μηδ' ὀνίαισι δάμνα,* » »
*πότνια, θῦμον* (*Σαπφ.* 1 D.). — ∪∪ — —

(Σαπφικὴ στροφή: 3 σαπφικοὶ ἑνδεκασύλλαβοι, ἀδώνειος).

*Πόλλα καὶ τόδ' ἔειπέ μοι.*
*ὤμ' ὡς δεῖνα πεπόνθαμεν,*
*Ψάπφ'· ἦ μάν σ' ἀέκοισ' ἀπυλιμπάνω* (*Σαπφ.* 96 D.)
— ∪ — ∪∪ — ∪ — *γλυκώνειος*
— ∪ — ∪∪ — ∪ — »
⏔ — ∪∪ — ∪∪ — ∪ — *(ἀνώνυμος)*

*Ἀσυννέτημι τῶν ἀνέμων στάσιν·* ∪ — ∪ — ∪ — ∪∪ — ∪ —
— —

*τὸ μὲν γὰρ ἔνθεν κῦμα κυλίνδεται,* » »
*τὸ δ' ἔνθεν· ἄμμες δ' ὂν τὸ μέσσον* ∪ — ∪ — ∪ — ∪ — —
— —

*νᾶϊ φορήμεθα σὺν μελαίνᾳ* (*Ἀλκ.* 30 D)
— ∪∪ — ∪∪ — ∪ — —

(Ἀλκαϊκὴ στροφή: 2 ἀλκαϊκοὶ ἑνδεκασύλλαβοι, ἀλκαϊκὸς ἐννεασύλλαβος, ἀλκαϊκὸς δεκασύλλαβος).

*Χαλάσσομεν δὲ τᾶς θυμοβόρω λύας*
*ἐμφύλω τε μάχας, τάν τις Ὀλυμπίων*
*ἔνωρσε δᾶμον μὲν εἰς αὐάταν ἄγων,*
*Φιττάκω δὲ δίδοις κῦδος ἐπήρατον* (*Ἀλκ.* 43 D).

*δὶς* { ⏒ — ∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪ —
—
— ∪ — ∪∪ — — ∪∪ — ∪ — }

(Ἰαμβικὸν μέτρον, γλυκώνειον-ἀσκληπιάδειον)

Νεώτερος τῶν δύο μεγάλων Λεσβίων ποιητῶν ὁ Ἀνακρέων χρησιμοποιεῖ καὶ αὐτὸς αἰολικοὺς ρυθμοὺς καὶ εἰς τὰ ἰωνικά του ἀναμειγνύει ἀνακλώμενα:

*ἔραμαι δέ τοι συνηβᾶν· χαρίεν γὰρ ἦθος ἴσχεις* (29 D.).
∪∪ — ∪ — ∪ — — | ∪∪ — ∪ — ∪ — —

Ὁ Ἱππῶναξ (ΣΤ' αἰών) εἰσάγει τοὺς χωλιάμβους:

*Ἀκούσατ' Ἱππώνακτος· οὐ γὰρ ἀλλ' ἥκω* (1 D.).
⏒ — ∪ — ⏒ — ∪ — ∪ — — —

Ἂν οἱ πρὸ ὀλίγων ἐτῶν εἰς τὴν Ἐπίδαυρον ἐπὶ λίθου ἀναγνωσθέντες πρὸ ὀλίγου ἐκδοθέντες στίχοι εἰς τὴν Μεγάλην μητέρα τῶν θεῶν ἀνήκουν πράγματι εἰς τὴν Τελέσιλλαν, ὅπως ὑπετέθη, θὰ δυνηθῶμεν καλύτερον νὰ κατατοπισθῶμεν εἰς τὴν μετρικὴν τῆς γυναικείας, λαϊκώτερον χαρακτῆρα ἐχούσης ἀρχαϊκῆς ποιήσεως, τῆς ὁποίας δείγματα εἴχαμεν ἕως τώρα μόνον ἀπὸ τὴν ποίησιν τῆς Κορίννης:

*Τὰν δ' ἴαν Μήας ἀγαθὸς* — ∪ — — — ∪∪ —
*πῆς Ἑρμᾶς· οὕτω γὰρ Ἔρως* — — — — — ∪∪ —
*κὴ Κούπρις πιθέταν, τιὼς* — ∪ — ∪∪ — ∪ —
*ἐν δόμως βάντας κρουφάδαν* — ∪ — — — ∪∪ —
*κώρας ἐννί' ἑλέσθη* (*Κόριννα.* 5 D.) — — — ∪∪ — —

(2 χοριαμβικὰ δίμετρα, γλυκώνειον, χοριαμβικὸν δίμετρον, φερεκράτειον).

Ἡ χορικὴ ποίησις, καλλιεργουμένη εἰς τὴν κυρίως Ἑλλάδα, παρουσιάζει τὸν ΣΤ' καὶ τὸν Ε' αἰῶνα ἐντεχνοτάτην σύνθεσιν στροφῶν (Σιμωνίδης, Πίνδαρος, Βακχυλίδης). Μεταξὺ ἄλλων ρυθμῶν χρησιμοποιεῖ συχνότατα τοὺς δακτυλεπιτρίτους τελείως διαμορφωμένους, τῶν ὁποίων τὰ σπέρματα, ὅπως πιστεύεται, εὑρίσκονται ἤδη εἰς τὸν Ἀλκμᾶνα καὶ τὸν Ἀρχίλοχον:

*Χρῆν μὲν κατὰ καιρὸν ἐρώτων δρέπεσθαι.*
*θυμέ, σὺν ἁλικίᾳ·*
*τὰς δὲ Θεοξένου ἀκτῖνας πρὸς ὄσσων*
*μαρμαρυζοίσας δρακεὶς*
*ὃς μὴ πόθῳ κυμαίνεται, ἐξ ἀδάμαν-*
*τος ἢ σιδάρου κεχάλκευται μέλαιναν καρδίαν*
(*Πίνδ.* ἀπ. 123)

— — ∪∪ — ∪∪ — — ∪ — —
— ∪∪ — ∪∪ —
— ∪∪ — ∪∪ — — — ∪ — —
— ∪ — — — ∪ —
— — ∪ — — — ∪∪ — ∪∪ —
∪ — ∪ — — ∪ — — — ∪ — ∪ — ∪ —

Πολὺ μεγαλυτέρα ποικιλία ἐπικρατεῖ εἰς τὴν τραγῳδίαν τοῦ Ε' αἰῶνος. Τὰ διαλογικὰ μέρη χρησιμοποιοῦν τὸ ἰαμβικὸν τρίμερον καὶ σπανιώτερα τὸ τροχαϊκὸν τετράμετρον, τὸ ὁποῖον κατὰ τὴν μαρτυρίαν τοῦ Ἀριστοτέλους εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν ἦτο τὸ ἀποκλειστικὸν μέτρον τῆς τραγῳδίας. Εἰς τὰ χορικὰ συναντῶμεν πλῆθος ρυθμῶν καὶ μέτρων, δακτυλικῶν, αἰολικῶν, δακτυλεπιτρίτων, ἰαμβικῶν, τροχαϊκῶν, ἰωνικῶν κλπ. Ἐπίσης διὰ πρώτην φορὰν παρουσιάζονται δόχμιοι:

*Ἀντιτύπᾳ δ' ἐπὶ γᾷ πέσε τανταλωθεὶς*
*πυρφόρος, ὃς τότε μαινομένᾳ ξὺν ὁρμᾷ*
*βακχεύων ἐπέπνει*
*ριπαῖς ἐχθίστων ἀνέμων.*
*Εἶχε δ' ἄλλᾳ τὰ μέν,*
*ἄλλα δ' ἐπ' ἄλλοις ἐπενώμα στυφελίζων μέγας Ἄ-*
*ρης δεξιόσειρος* (*Σοφ.* Ἀντιγ. 134—140).

— ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪ — — πραξίλλειον
— ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪ — — »
— — — ∪∪ — Maecenas
— — — ⏒ — ∪∪ — χοριαμβικὸν δίμετρον
— ∪ — — ∪ — 2 κρητικοί
— ∪∪ — — ∪∪ — — ∪∪ — — ∪∪ — 4 χορίαμβοι
— — ∪∪ — — Reizianum

*Κλύει τις ἢ οὐδεὶς ἀρκέσει; τί μέλλετε;*
*γυναῖκες ὤλεσάν με,*
*γυναῖκες αἰχμαλωτίδες·*
*δεινὰ πεπόνθαμεν*
*οἴμοι ἐμᾶς λώβας·*
*Ποῖ τράπωμαι; ποῖ πορευθῶ;*

∪ — ∪ — ∪ — ∪ — ∪ — ∪ — ἰαμβικὸν τρίμετρον
∪ — ∪ — ∪ — — ἴαμβος, βακχεῖος
∪ — ∪ — ∪ — ∪ — 2 ἴαμβοι
— ∪∪ — ∪ — δόχμιος
— ∪∪ — — — δόχμιος
— ∪ — — — ∪ — — 2 τροχαῖοι

(*Εὐρ.* Ἑκάβ. 1094—1099)

Ὁ Εὐριπίδης εἰς προχωρημένην ἡλικίαν ἐπηρεάζεται ἀπὸ τὸν νεώτερον διθύραμβον καὶ τὴν κιθαρῳδίαν ὡς πρὸς τὴν χρῆσιν τῶν ἀπολελυμένων, τουτέστι στερουμένων ἀντιστροφικῆς ἀντιστοιχίας ᾀσμάτων, τὰ ὁποῖα ψάλλουν κατὰ προτίμησιν οἱ ὑποκριταί, ὄχι ὁ χορός, ἐνῷ συγχρόνως ἀλλοῦ ὁ τραγικὸς ἐπιστρέφει εἰς παλαιοὺς λαϊκωτέρους ρυθμούς:

*Μάκαρες οἳ μετρίας θεοῦ* ∪∪∪ — ∪∪ — ∪ —
*μετά τε σωφροσύνας μετέ-* ∪∪∪ — ∪∪ — ∪ —
*σχον λέκτρων Ἀφροδίτας,* — — — ∪∪ — —
*γαλανείᾳ χρησάμενοι* ∪ — — — — ∪∪ —
*μανιάδων οἴστρων, ὅθι δὴ* ∪∪∪ — — — ∪∪ —
*δίδυμ' Ἔρως ὁ χρυσοκόμας* ∪∪∪ — ∪ — ∪∪ —
*τόξ' ἐντείνεται χαρίτων,* — — — ∪ — ∪∪ —
*τὸ μὲν ἐπ' εὐαίωνι πότμῳ,* ∪∪∪ — — — ∪∪ —
*τὸ δ' ἐπὶ συγχύσει βιοτᾶς.* ∪∪∪ — ∪ — ∪∪ —
(*Εὐρ.* Ἰφ. Αὐλ. 543—551).

(2 γλυκώνεια, φερεκράτειον, 6 χοριαμβικὰ δίμετρα).

Ἡ παλαιὰ κωμῳδία ἐπίσης παρουσιάζει ἀρκετὰ μεγάλην ποικιλίαν μέτρων, μεταξὺ ἄλλων παιωνικὰ ἄφθονα, τροχαϊκά, ἀναπαιστικά, τελεσίλλεια, ἰωνικὰ κτλ.:

*Εἶδες ὦ εἶδες ὦ* — ∪ — — ∪ —
*πᾶσα πόλι, τὸν φρόνιμον* — ∪∪∪ — ∪∪∪
*ἄνδρα, τὸν ὑπέρσοφον,* — ∪∪∪ — ∪ —
*οἷ' ἔχει σπεισάμενος* — ∪ — — ∪∪∪
*ἐμπορικὰ χρήματα διεμπολᾶν,* — ∪∪∪ — ∪∪∪ — ∪ —
*ὧν τὰ μὲν ἐν οἰκίᾳ* — ∪∪∪ — ∪ —
*χρήσιμα, τὰ δ' αὖ πρέπει* — ∪∪∪ — ∪ —
*χλιαρὰ κατεσθίειν.* — ∪∪∪ — ∪ —
(*Ἀριστοφ.* Ἀχαρν. 971—977).

(Κρητικὰ - παιωνικά).

*Ὦ Δῆμε, καλήν γ' ἔχεις* ∪ — ∪∪ — ∪ — τελεσίλλειον
—

*ἀρχήν, ὅτε πάντες ἄν-* »
*θρωποι δεδίασί σ' ὥσ-* »
*περ ἄνδρα τύραννον.* ∪ — ∪∪ — — Reizianum.
*Ἀλλ' εὐπαράγωγος εἶ,* τελεσίλλειον
*θωπευόμενός τε χαί-* »
*ρεις κἀξαπατώμενος,* »
*πρὸς τόν τε λέγοντ' ἀεὶ* »
*κέχηνας· ὁ νοῦς δέ σου* »
*παρὼν ἀποδημεῖ* Reizianum
(*Ἀριστοφ.* Ἱππ. 1111—20).

Εἰς τὴν κωμῳδίαν ἐξ ἄλλου παρατηρεῖται συχνὰ ἔλλειψις ἀκριβοῦς ἀντιστοιχίας μεταξὺ στροφῆς καὶ ἀντιστροφῆς εἰς ἀντιστροφικὰ ᾄσματα, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον φαίνεται, ὅτι συνέβη καὶ εἰς τὴν χορικὴν καὶ δραματικὴν ποίησιν, πάντως κατ' ἐξαίρεσιν, ὅσον καὶ ἂν προσεπάθησαν ἄλλοι μὲν μετρικοὶ νὰ πολλαπλασιάσουν τὰς περιπτώσεις, ἄλλοι δὲ νὰ ἀρνηθοῦν τελείως μίαν τοιαύτην ἐλευθερίαν. Οἱ νεώτεροι διθυραμβοποιοὶ καὶ κιθαρῳδοὶ (Φιλόξενος, Τιμόθεος) ἀπορρίπτουν τελείως τὴν ἀντιστροφικὴν διάρθρωσιν τῶν ᾀσμάτων (στροφή, ἀντιστροφὴ κλπ.) καὶ γράφουν ἀπολελυμένα, εἰς τὰ ὁποῖα δὲν παρατηρεῖται πουθενὰ ἐπανάληψις τῶν αὐτῶν περιόδων ἐν σχέσει ἀντιστροφικῇ («εἰκῇ γέγραπται καὶ ἄνευ μέτρου ὡρισμένου»). Καὶ ἡ μελῳδία θὰ ἦτο διαρκῶς νέα εἰς τὰ διάφορα μέρη τοῦ ἔργου:

*Λῦσον, χρυσοπλόκαμε θεὰ*
*Μᾶτερ, ἱκνοῦμαι,*
*ἐμὸν ἐμὸν αἰῶνα δυσέκ-*
*φευκτον, ἐπεί με*
*αὐτίκα λαιμοτόμῳ τις ἀποίσεται*
*ἐνθάδε μήστορι σιδάρῳ...*

— — — ∪∪∪∪∪ — γλυκώνειον
— ∪∪ — — ἀδώνειον
∪∪∪∪ — — — ∪∪ — χοριαμβικὸν δίμετρον
— ∪∪ — — ἀδώνειον
— ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪ — ∪∪∪ — —
δάκτυλοι, δακτυλ. μέτρ. βακχεῖος
(*Τιμοθ.* Πέρσαι 138—143)

Ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ Δ' αἰῶνος ἀρχίζει ἡ παρακμή. Ὁ χορὸς ἐξαφανίζεται ἀπὸ τὴν τραγῳδίαν καὶ τὴν κωμῳδίαν, ἑπομένως καὶ ἡ ποικιλία εἰς τὰ μέτρα. Τὴν ἀλεξανδρινὴν ἐποχὴν δημιουρ-



Digitized by Google

γεῖται ὁ συρμὸς νὰ χρησιμοποιοῦνται διάφοροι κυρίως λυρικοὶ στίχοι καὶ μέλη παλαιῶν λυρικῶν στροφῶν· διὰ τῆς κατὰ στίχον ἐπαναλήψεως τούτων σχηματίζονται ὁλόκληρα ποιήματα ὄχι πλέον διὰ νὰ ψαλοῦν, ἀλλὰ διὰ ν' ἀπαγγελθοῦν ἢ καὶ διὰ ν' ἀναγνωσθοῦν ἁπλῶς. Οὕτως ἔχομεν πλὴν τοῦ ἑξαμέτρου, τοῦ ἐλεγειακοῦ διστίχου καὶ τοῦ χωλιάμβου, κατὰ τρόπον ἐντεχνότατον σχηματιζομένων, τὸ φαλαίκειον (⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑ — ⏑ — —), τὸ ἀσκληπιάδειον (⏑⏑ — ⏑⏑ — — ⏑⏑ — ⏑ —), τὸ ἀρχεβούλειον (⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑ — —), τὸ σιμμιακὸν (——— ⏑⏑ —— ⏑⏑ —— ⏑⏑ — ⏑ ——), τὸ κυρηναϊκὸν (⏑⏑ — ⏑⏑ — ⏑ — ⏑ —) κλπ. Βαθμιαίως καὶ αὐτὴ ἡ ποικιλία ἐκλείπει. Οἱ μελίαμβοι τοῦ Κερκίδα καὶ μερικὰ ἄλλα ποιήματα, ὅπως τὸ ἐπὶ παπύρου πρὸ ἐτῶν ἀναγνωσθὲν «Παράπονο τῆς κόρης», εἰς τὸ ὁποῖον κατὰ παράδοξον τρόπον ἀνακύπτουν οἱ τραγικοὶ δόχμιοι, εἶναι αἱ τελευταῖαι προσπάθειαι πολυμετρίας:

*Ρεῖα γὰρ ἔστι θεῷ — πᾶν ἐκτελέσσαι*
*χρῆμ', ἐπὶ νοῦν ὅ κ' ἴῃ — ἢ τὸν ῥυποκιβδοτόκωνα*
*καὶ τεθνακοχαλκίδαν — ἢ τὸν παλινεκχυμενίταν*
*τῶν κτεάνων ὄλεθρον — τοῦτον κενῶσαι*
(*Κερκίδ.* 1 D)

—⏑⏑—⏑⏑— ——⏑—— ἡμιεπές, ἰαμβικὸν πενθημιμερὲς
—⏑⏑—⏑⏑— ——⏑⏑—⏑⏑—— ἡμιεπές, παροιμιακὸν
—⏑—⏑—⏑— ——⏑⏑—⏑⏑—— ληκύθιον, παροιμιακὸν
—⏑⏑—⏑⏑— —⏑⏑— — ἡμιεπές, ἀδώνειον

Ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἀδριανοῦ ἔχομεν τὰ ποιήματα τοῦ Μεσομήδους μὲ ἰδιάζοντας ρυθμικοὺς νόμους:

*Εἷς ὕμνος ἀνά τε γᾶν* — — —⏑ ⏑⏑⏑—
*ἀνά τε ναῦς ἁλιπόρους* — ⏑⏑⏑— ⏑⏑⏑—
*ᾄδεται πολυτρόποις* — —⏑— ⏑⏑⏑—
*ἓν τέλος ἐν ὀργίοις,* — — ⏑⏑⏑ —⏑—
*ἃ βαθύκερως Ἶσις,* — — ⏑⏑⏑ ——⏑
*ἅ τ' ἔαρος, ἅ τε θέρεος* — — ⏑⏑⏑ —⏑⏑⏑
*ἅ τε χείματος ἄγει* — —⏑— ⏑⏑⏑—
*νεογόνους ἡνίας.* — ⏑⏑⏑— —⏑—

(εἶδος παιώνων).

Ἀκολουθεῖ εἰς τοὺς ἑπομένους αἰῶνας ἡ βαθεῖα μεταβολὴ τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης: ἡ ἀρχαία προσῳδία χάνεται, ὁ δυναμικὸς τονισμὸς ὑπερισχύει τοῦ μουσικοῦ. Ἡ προσπάθεια τῶν Βυζαντινῶν νὰ διατηρήσουν τὴν ἀρχαίαν προσῳδιακὴν μετρικήν, ἐνῷ συγχρόνως μέχρις ἑνὸς σημείου εἶναι ἀναγκασμένοι νὰ λάβουν ὑπ' ὄψιν καὶ τὸν τόνον, κυρίως εἰς τὸ τέλος τοῦ στίχου, ὅσον τεχνικὴ καὶ ἂν εἶναι, ὅπως τοῦ Νόννου (Ε' αἰών) καὶ τῆς σχολῆς του, ὅσον καὶ ἂν διαρκῇ—μέχρι τοῦ ΙΕ' αἰῶνος μ. Χ.—εἶναι καταδικασμένη εἰς ἀποτυχίαν, ἐφ' ὅσον στηρίζεται εἰς προϋποθέσεις, αἱ ὁποῖαι ἀπὸ πολλοῦ εἶχαν ἐκλείψει ἀπὸ τὴν ὁμιλουμένην γλῶσσαν.

*Ἱστορία τῆς μετρικῆς ἐπιστήμης.* Ὅ,τι μᾶς διεσώθη ἀπὸ τοὺς ἀρχαίους μετρικοὺς δὲν ἔχει μεγάλην ἀξίαν. Ἡ ἀνακάλυψις τῶν νόμων τῶν διεπόντων τὰ ἀρχαῖα μέτρα εἶναι κατόρθωμα τῶν νεωτέρων· οἱ ἀρχαῖοι μετρικοὶ περιορίζονται εἰς μίαν τελείως ἐξωτερικὴν περιγραφὴν τοῦ σχήματος καὶ εἰς ἐσφαλμένας θεωρίας περὶ τοῦ τρόπου τοῦ σχηματισμοῦ τῶν διαφόρων στίχων. Ἡ μόνη σχεδὸν ὠφέλεια, ποὺ μᾶς παρέχουν οἱ παλαιοὶ μετρικοί, εἶναι πρῶτον, ὅτι διέσωσαν ἀρκετὰ ἀποσπάσματα διαφόρων ποιητῶν, καὶ δεύτερον ὅτι μᾶς παρέδωσαν πλουσίαν ὁρολογίαν, τὴν ὁποίαν ἐξακολουθοῦμεν οἱ νεώτεροι νὰ χρησιμοποιοῦμεν κατὰ τὸ πλεῖστον, καὶ ὅταν ἀκόμη πρόκειται περὶ ὀνομασιῶν ἀτυχῶν ἢ καὶ ἀνοήτων (πεντάμετρον, ληκύθιον). Τοῦ περιπατητικοῦ, μουσικοῦ καὶ ρυθμικοῦ *Ἀριστοξένου* (Δ' αἰών) ἡ συμβολὴ εἰς τὴν μετρικὴν δὲν πιστεύεται σήμερον, ὅτι ὑπῆρξε πολὺ σημαντική, ὅπως ἀρχικῶς ὑπετέθη. Ὁ ἐπίσης περιπατητικὸς *Ποντικὸς Ἡρακλείδης*, ἂν μὴ ἐπενόησε πρῶτος, τοὐλάχιστον ὑπεστήριξε τὴν θεωρίαν, κατὰ τὴν ὁποίαν ὅλα τὰ εἴδη τῶν μέτρων παράγονται διὰ προσθαφαιρέσεως συλλαβῶν καὶ ἀναλόγων μέσων ἀπὸ τὸ δακτυλικὸν ἑξάμετρον καὶ τὸ ἰαμβικὸν τρίμετρον, τὰ ὁποῖα δύνανται νὰ θεωρηθοῦν ὡς εἷς μόνον στίχος, θείας καταγωγῆς, ἐπινοηθεὶς ἀπὸ τὸν Ἀπόλλωνα. Τὴν θεωρίαν αὐτὴν (Derivations-theorie) ἀκολουθεῖ ὁ ἀνώνυμος μετρικὸς τῆς Ὀξυρύγχου, ὁ *Κ. Βάσσος*, ὁ *Οὐάρρων* καὶ ἄλλοι Ρωμαῖοι μετρικοί. Δευτέρα θεωρία, σχετικῶς εἰς νεωτέρους χρόνους ἀνακύπτουσα, ἴσως ὅμως παλαιοτέρα, δέχεται ὀκτὼ ἢ ἐννέα πρωτότυπα μέτρα, ἐκ τῶν ὁποίων παράγει διὰ διαφόρων βεβιασμένων μέσων πάντα τὰ λοιπά. Ὡς πρωτότυπα μέτρα ἐθεωρήθησαν τὰ ἑξῆς: τὸ ἰαμβικόν, τὸ τροχαϊκόν, τὸ δακτυλικόν, τὸ ἀναπαιστικόν, τὸ χοριαμβικόν, τὸ ἀντισπαστικόν, τὸ ἰωνικὸν ἀπὸ μείζονος, τὸ ἰωνικὸν ἀπ' ἐλάσσονος καὶ τὸ παιωνικόν. Ὀπαδοὶ τῆς ἀντιλήψεως αὐτῆς ὑπῆρξαν ὁ *Φιλόξενος*, ὁ *Ἡλιόδωρος*, ὁ *Ἡφαιστίων* καὶ ἄλλοι. Τὸ ἔργον τοῦ Ἡφαιστίωνος (Β' αἰὼν μ. Χ.), κάθε ἄλλο παρὰ πρωτοτύπους ἰδέας περιλαμβάνον, διεσώθη εἰς μίαν ὑπ' αὐτοῦ τοῦ συγγραφέως συνταχθεῖσαν μικρὰν περίληψιν, παρέμεινε δὲ καθ' ὅλον τὸν βυζαντινὸν μεσαίωνα ὡς τὸ μᾶλλον ἐν χρήσει μετρικὸν ἐγχειρίδιον. Ἀναπόδεικτος εἶναι ἡ πρὸ ὀλίγου ἐξενεχθεῖσα γνώμη τοῦ A. Koerte, ὅτι αἱ περὶ τοῦ τρόπου τοῦ σχηματισμοῦ τῶν ἀρχαίων μετρικῶν μορφῶν γνῶμαι τοῦ Ἡφαιστίωνος εἶναι κατὰ μέγα μέρος ὀρθαί. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐρευνῶνται κατ' ἀρχὰς τὰ κατὰ στίχον ἐπαναλαμβανόμενα μέτρα (ἀνάπαιστοι, ἰαμβικὸν τρίμετρον, τροχαϊκὸν τετράμετρον) ἀπὸ Ἄγγλους κυρίως, τὸν Bentley, τὸν Porson κ. ἄ., ἔπειτα τὸ ἐνδιαφέρον διὰ τὰς μετρικὰς ἐρεύνας μεταφέρεται εἰς τὴν Γερμανίαν. Περὶ τὸ 1800 ὁ G. Hermann διεμόρφωσε τὸ πρῶτον νεώτερον μετρικὸν σύστημα ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς συγχρόνου φιλοσοφίας. Σημαντικὴν συμβολὴν παρέχει ὁ A. Boeckh κυρίως εἰς τὴν διάκρισιν τῶν περιόδων. Τὸ σύστημα τῶν Westphal καὶ Rossbach, τὸ ὁποῖον κατὰ μέγα μέρος ἠκολούθησε καὶ ὁ ἡμέτερος Σεμιτέλος εἰς τὴν «Μετρικήν» του, μετὰ μίαν βραχεῖαν περίοδον δόξης, ἐγκατελείφθη ἀπὸ ὅλους, καθ' ὅσον ἐπρόκειτο περὶ μιᾶς ἐκ τῶν προτέρων διαμορφωμένης, ἀπὸ τὴν σύγχρονον μουσικὴν ἐπηρεασμένης θεωρίας, ἄλλωστε καὶ ἐπὶ παρεξηγήσεως ἀρχαίων ὅρων (λογαοιδικά, κυκλικοὶ δάκτυλοι) στηριζομένης. Ὡς ἀποτυχημέναι πρέπει νὰ χαρακτηρισθοῦν καὶ αἱ προσπάθειαι τοῦ H. Usener, νὰ ἀνασυνθέσῃ τὸν παλαιότατον στίχον, τὸν ὁποῖον θὰ ἐχρησιμοποίουν οἱ ἰνδοευρωπαϊκοὶ λαοί, προτοῦ διασπασθοῦν. Ἐξ ἄλλου ἡ συγκριτικὴ μετρικὴ καθόλου δὲν κατώρθωσε μέχρι τοῦδε πολλὰ ἀσφαλῆ· ἁπλῶς ἐπιστοποίησε μερικὰς ὁμοιότητας, π. χ. μεταξὺ τοῦ ἰνδικοῦ στίχου çloka καὶ τῶν ἑλληνικῶν αἰολικῶν ρυθμῶν κλπ.

Σήμερον ἰσχύουν τρία μετρικὰ συστήματα, ὅλα γερμανικά. Τὸ σύστημα τοῦ U. v. Wilamowitz ζητεῖ κυρίως νὰ παρακολουθήσῃ τὴν ἐξέλιξιν τῶν διαφόρων ρυθμῶν καὶ μέτρων ἀπὸ τῆς πρώτης εἰς ἡμᾶς γνωστῆς ἐμφανίσεώς των μέχρι τοῦ ἐξαφανισμοῦ, συγχρόνως νὰ εὕρῃ εἰ δυνατὸν καὶ τὸν τρόπον τοῦ σχηματισμοῦ των. Ἡ σημασία τῶν ἐρευνῶν τοῦ Wilamowitz ὑπῆρξε διὰ τὴν πρόοδον τῆς μετρικῆς ἐπιστήμης ἐξαιρετική. Πρῶτος αὐτὸς εἰς τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐτόνισε τὴν ἀνάγκην, ὅπως παραμερίζοντες κάθε ἀρχαίαν καὶ νέαν ἐκ τῶν προτέρων σχηματισθεῖσαν θεωρίαν, καταφύγωμεν εἰς αὐτοὺς τοὺς ἀρχαίους σωθέντας στίχους, ἀπὸ τὴν μελέτην τῶν ὁποίων ἐμπειρικῶς νὰ συναγάγωμεν τοὺς μετρικοὺς νόμους. Ἐν τοσούτῳ δὲν κατώρθωσε νὰ σχηματίσῃ ἑνιαῖον σύστημα ἄνευ κενῶν καὶ ἐνίοτε ἐστηρίχθη ἐπὶ ἀναποδείκτων ὑποθέσεων. Παραλλήλως τοῦ Otto Schroeder ἡ ἐργασία ἐσημείωσε σταθμὸν εἰς τὴν μετρικὴν ἐπιστήμην διὰ τῆς ἐκδόσεως καὶ ἀναλύσεως τῶν ᾀσμάτων (χορικῶν, μονῳδιῶν κλπ.) τῶν τραγῳδιῶν ποὺ ἐσώθησαν, τῶν κωμῳδιῶν τοῦ Ἀριστοφάνους καὶ τῶν λυρικῶν τοῦ Ὁρατίου, καὶ τῆς συγγραφῆς σειρᾶς μετρικῶν μονογραφιῶν καὶ βιβλίων. Καὶ εἰς τοῦ Schroeder τὸ σύστημα ἐξετάζεται κυρίως ὁ τρόπος τοῦ σχηματισμοῦ τῶν διαφόρων μετρικῶν μορφῶν καὶ πάλιν ὅμως χωρὶς νὰ ἐπιτυγχάνωνται ἀσφαλῆ συμπεράσματα. Ἐξ ἄλλου ἀκολουθῶν μερικῶν παλαιοτέρων του τὰ ἴχνη ὁ μετρικὸς αὐτὸς διεμόρφωσε τὴν ὑπὸ τῶν ἄλλων φιλολόγων ἀμφισβητηθεῖσαν θεωρίαν, κατὰ τὴν ὁποίαν κάθε ἀρχαία σύνθεσις ᾀδομένων στίχων, στροφὴ εἴτε περίοδος, διαιρεῖται ἐσωτερικῶς εἰς δύο περιόδους ἴσον ἀριθμὸν θέσεων ἐχούσας, εἰς αὐτὰς δὲ προστίθεται συχνὰ προῳδικῶς (βαα), μεσῳδικῶς (αβα) ἢ ἐπῳδικῶς (ααβ) καὶ τρίτη περίοδος πάντοτε διάφορος κατὰ τὸν ἀριθμὸν τῶν θέσεων, ἐνίοτε δὲ καὶ κατὰ τὸν ρυθμὸν κλπ. Ἀπέναντι τῶν συστημάτων αὐτῶν, περιλαμβανόντων καὶ μερικὰς ἐπισφαλεῖς θεωρίας καὶ ἀναποδείκτους αἰσθητικὰς κρίσεις, ἐζήτησεν ὁ P. Maas εἰς τὴν «Μετρικήν» του νὰ δώσῃ περιγραφὴν τῶν μετρικῶν μορφῶν καὶ νὰ πιστοποιήσῃ τοὺς διέποντας αὐτὰς νόμους ἁπλῶς, παραιτούμενος κατ' ἀρχὴν πάσης κρίσεως καὶ προσπαθείας πρὸς ἐξήγησιν τοῦ τρόπου τοῦ ἀπαρτισμοῦ τῶν διαφόρων μέτρων, τῶν λόγων τῆς δημιουργίας τῶν νόμων κτλ.

*Ἦθος τῶν ρυθμῶν.* Ἡ κατὰ τὰ 1929 ἐκ νέου ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου G. Thomson διατυπωθεῖσα γνώμη, ὅτι εἰς κάθε ρυθμὸν ἐνυπάρχει ἐκ φύσεως ὡρισμένον ἦθος, δὲν εἶναι ἀληθής. Ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει θὰ ἔπρεπε νὰ πιστοποιηθῇ μία κοινότης ἤθους εἰς τὸ ἥμισυ τῶν ποιημάτων π.χ. τοῦ Πινδάρου, τὰ ὁποῖα χρησιμοποιοῦν δακτυλεπιτρίτους, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ ἄλλο ἥμισυ, ὅπου κυριαρχοῦν ἄλλοι ρυθμοί. Ὀρθοτέρα εἶναι ἡ ἀντίληψις τοῦ P. Maas, ὅτι ἡ παλαιοτέρα ποίησις, ἐν μέρει μέχρι τοῦ Ε' αἰῶνος ἀκόμη, χρησιμοποιεῖ τοὺς διαφόρους ρυθμοὺς καὶ τὰ μέτρα ἀδιακρίτως περιεχομένου, βαθμιαίως ὅμως κλασσικὰ λόγῳ τῆς καθ' ὅλου ποιητικῆς των ἀξίας πρότυπα ἐπιβάλλουν εἰς τὰ διάφορα εἴδη τῆς ποιήσεως, εἰς τὰ ὁποῖα ἀνήκουν, τὴν χρῆσιν ὅπως ὡρισμένης γλώσσης, οὕτω καὶ ὡρισμένων μέτρων, τὰ ὁποῖα κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἀποκτοῦν ἐκ τῶν ὑστέρων καὶ ἦθος ὡρισμένον. Ἀμφίβολον μόνον εἶναι, ἂν πρέπῃ νὰ δεχθῶμεν, ὅτι ὅλα ἀνεξαιρέτως τὰ μέτρα ὀφείλουν τὸ ἦθός των εἰς τὸ περιεχόμενον τῶν ποιήσεων, αἱ ὁποῖαι τὰ ἐχρησιμοποίησαν κάποτε, ἀκόμη καὶ τὰ δακτυλικά, τῶν ὁποίων τὴν σεμνότητα τονίζει ὁ Ἀριστοτέλης, ὅτι δηλαδὴ ἀπέβησαν τοιαῦτα μόνον ἐπειδὴ ὑπῆρξαν τὸ σκεῦος, τὸ ὁποῖον περιέλαβε τὴν καθ' ἑαυτὴν σεμνὴν ἐπικὴν ποίησιν.

*Τρόπος ἀπαγγελίας ἀρχαίων στίχων.* Μὲ τὸν τρόπον, μὲ τὸν ὁποῖον ἀπαγγέλλομεν σήμερον οἱ Ἕλληνες τοὺς ἀρχαίους στίχους ἀκολουθοῦντες τὴν νεοελληνικὴν προφοράν, καταστρέφομεν τελείως τὸν ρυθμόν, μάλιστα εἰς συνθετώτερα κάπως μέτρα. Καὶ τὰ ἁπλούστερα ὅμως ἀποβαίνουν ἄρρυθμα, ἐφ' ὅσον μακρὰ καὶ βραχέα ἔχουν καταντήσει ἰσόχρονα. Οὕτως εἰς τὸν ἑξάμετρον ἡ δευτέρα συλλαβὴ τοῦ σπονδείου διαρκεῖ ὄχι ὅσον χρόνον ἀμφότεραι αἱ βραχεῖαι τοῦ δακτύλου, ἀλλ' ὅσον ἡ μία μόνον:

*Ἢ Αἴας ἢ Ἰδομενεὺς ἢ δῖος Ἀχιλλεὺς*
⏑´⏑⏑´⏑⏑´⏑⏑⏑´⏑⏑´⏑⏑⏑´⏑

Διὰ τὸν λόγον αὐτὸν ἡ μελέτη τῆς μετρικῆς μὴ ὑποστηριζομένη ὑπὸ τῆς ἀπαγγελίας, ἀλλὰ καταστᾶσα ἁπλῆ παιδιὰ σχημάτων ἐπὶ τοῦ χάρτου, παρημελήθη τελείως. Εἶναι λοιπὸν ἀνάγκη κατὰ τὴν ἀπαγγελίαν ἀρχαίων στίχων νὰ κάμωμεν χρῆσιν τεχνητῆς ἀπαγγελίας, κατὰ τὴν ὁποίαν νὰ διακρίνωμεν τὰ μακρὰ τῶν βραχέων, ἴσως καὶ νὰ προφέρωμεν τὰς παλαιὰς διφθόγγους πράγματι διφθογγικῶς, ἐνῷ συγχρόνως ἕνας δευτερεύων τόνος ν' ἀκούεται ἐπὶ τῶν τονουμένων συλλαβῶν τῶν λέξεων, ὥστε νὰ γίνωνται αὗται σαφεῖς· διότι μὲ τὸν σημερινὸν τρόπον ἀπαγγελίας εἶναι ἀδύνατον νὰ διακρίνωμεν τὰς λέξεις:

*ἄζομε νοίΔιος υἷον ἑκήβολον Ἄπολ λώνα*
*(ἀζόμενοι Διὸς υἱὸν ἑκηβόλον Ἀπόλλωνα).*

*Ἐκδόσεις τῶν ἀρχαίων μετρικῶν.* Δάμωνος ἀποσπάσματα (Ε' αἰὼν) ὑπὸ U. v. Wilamowitz, «Griech. Verskunst«» (63—66). Ἀριστόξενος καὶ λοιποὶ ρυθμικοὶ ὑπὸ R. Westphal (1883—1893). Ὅτι ὁ ὑπ' ἀριθ. 9 πάπυρος τῆς Ὀξυρύγχου περιέχει ἀποσπάσματα τῶν «Ρυθμικῶν Στοιχείων» τοῦ Ἀριστοξένου ἀμφισβητεῖ ὁ Wilamowitz (ἔνθ. ἀν. 67). Ἀνώνυμος μετρικὸς τῆς Ὀξυρύγχου (Ὀξ. πάπ. 220) καὶ Ἡφαιστίων ὑπὸ M. Cornsbruch (1904).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *U. v. Wilamowitz*, Griech. Verskunst (1921). —*Otto Schroeder*, Grundriss, der griech. Versgeschichte (1930). Κρίσις τῶν θεωριῶν τοῦ *Schroeder*, ὑπὸ *P. Maas* ἐν «Philol. Wochenschrift» (1910) καὶ *J. Kakridis* ἐν «Gnomon» (1930) καὶ «Deutsche Literaturzeitung» (1931). —*P. Maas*, Griech. Metrik[8] (1930) ἐν *Gercke-Norden*, «Einleitung in die Altertumswissenschaft». Κρίσιν τῶν θεωριῶν τοῦ *Thomson*, Greek lyrik metre (1929). ὑπὸ *J. Kakridis* ἐν «Deutsche Literaturzeitung» (1929) καὶ *Kalinka* ἐν «Philol. Wochenschrift» (1930), τῶν τοῦ *A. Keorte*, Neuere Forschungen zur griech. Metrik (1929) ὑπὸ *J. Kakridis*, ἐν «Gnomon» (1931). Εἰσαγωγὴν εἰς τὴν μετρικὴν θεωρίαν τοῦ Wilamowitz *κυρίως ἐπιχειρεῖ ὁ K. Rupprecht*, Einführung in die griech. Metrik (1924), εἰδικῶς δὲ εἰς τὴν μετρικὴν ὁρολογίαν ὁ *O. Schroeder*, Nomenclator metricus (1929).

Ι. Θ. ΚΑΚΡΙΔΗΣ

***Λατινικὴ μετρική.*** Ὅπως εἰς τὴν ἑλληνικήν, οὕτω καὶ εἰς τὴν λατινικὴν ποίησιν, τὴν βάσιν τῆς στιχοποιίας ἀποτελεῖ ἡ διάκρισις μεταξὺ μακρῶν καὶ βραχειῶν συλλαβῶν. Ἡ ἀπαγγελία μακρᾶς συλλαβῆς διήρκει διπλάσιον χρόνον ἀπὸ τοῦ χρόνου ἀπαγγελίας βραχείας συλλαβῆς: «Longam esse duorum temporum, brevem unius etiam pueri sciunt (*Quintil.* 9, 4, 47). Εἰς τὴν λέξιν π. χ. Tityre ἡ πρώτη συλλαβή, ἡ ὁποία εἶναι μακρά, διαρκεῖ μόνη της τόσον ὅσον αἱ δύο ἄλλαι ὁμοῦ, αἱ ὁποῖαι εἶναι βραχεῖαι. *Χρόνος* (tempus) καλεῖται ἡ διάρκεια τῆς κανονικῆς ἀπαγγελίας μιᾶς βραχείας συλλαβῆς· ἡ μακρὰ συλλαβὴ ἀπετελεῖτο ἑπομένως ἐκ δύο χρόνων. Ἐπειδὴ οἱ στίχοι κατ' ἀρχὰς ᾔδοντο, ὑπῆρχον κατὰ διαστήματα, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον καθωρισμένα, συλλαβαί, αἱ ὁποῖαι ἐπροφέροντο ἰσχυρότερον τῶν ἄλλων. Ἡ μεγαλυτέρα αὕτη ἔντασις ἐκαλεῖτο *ictus* (ἰσχυρὸς χρόνος) ὑπὸ τῶν Λατίνων, ὑπὸ δὲ τῶν Ἑλλήνων *θέσις* (στιγμή, καθ' ἣν οἱ χορευταὶ ἔθετον τὸν πόδα ἐπὶ τῆς γῆς). Εἰς τὴν θέσιν ἀντετίθετο ἡ *ἄρσις* (ἀσθενὴς χρόνος), στιγμή, καθ' ἣν ἤρετο ὁ πούς. Τὰς λέξεις *thesis* καὶ *arsis* ἐχρησιμοποίησαν καὶ οἱ Λατῖνοι ἀλλὰ μὲ ἀντίθετον σημασίαν: arsis, ἰσχυρὸς χρόνος (στιγμή, καθ' ἣν ἡ ράβδος τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς ὀρχήστρας ὑψοῦτο) καὶ thesis, ἀσθενὴς χρόνος (στιγμή, καθ' ἣν ἐταπεινοῦτο). Ἡ διαδοχὴ μακρῶν καὶ βραχειῶν συλλαβῶν, ἰσχυρῶν καὶ ἀσθενῶν χρόνων, ἀποτελεῖ τὸν *ρυθμόν*. Ρυθμὸς κατὰ τὸν Ἀριστόξενον εἶναι «χρόνων τάξις ἀφωρισμένη», κατὰ δὲ τὸν Κοϊντιλιανὸν «rythmi, id est numeri, spatio temporum constant» (9, 4, 46). *Πούς* καλεῖται κάθε ὁμὰς συλλαβῶν, περιλαμβάνουσα ἕνα ictus (θέσιν). Σπουδαιότεροι πόδες εἶναι οἱ ἑξῆς: δίχρονοι: *πυρρίχιος* ⏑⏑, τρίχρονοι: *τρίβραχυς* ⏑⏑⏑, *τροχαῖος* (ἢ *χορεῖος*) —⏑, *ἴαμβος* ⏑—, τετράχρονοι: *προκελευσματικὸς* ⏑⏑⏑⏑, *δάκτυλος* —⏑⏑, *ἀνάπαιστος* ⏑⏑—, *σπονδεῖος* ——, πεντάχρονοι: *παίων α'* —⏑⏑⏑, *παίων β'* ⏑—⏑⏑, *παίων γ'* ⏑⏑—⏑, *παίων δ'* ⏑⏑⏑—, *κρητικὸς* (ἢ *ἀμφίμακρος*) —⏑—, *βακχεῖος* ⏑——, *ἀντιβάκχειος* ——⏑, ἑξάχρονοι: *ἰωνικὸς ἀπ' ἐλάσσονος* ⏑⏑——, *ἰωνικὸς ἀπὸ μείζονος* ——⏑⏑, *μολοσσὸς* ———, σπανιώτεροι καὶ σύνθετοι πόδες: *ἐπίτριτος α'* ⏑———, *ἐπίτριτος β'* —⏑——, *ἐπίτριτος γ'* ——⏑—, *ἐπίτριτος δ'* ———⏑, *δόχμιος* (*ἴαμβος καὶ κρητικὸς*) ⏑——⏑—, *χορίαμβος* (*χορεῖος καὶ ἴαμβος*) —⏑⏑—, *διίαμβος* (δύο ἴαμβοι) ⏑—⏑—, *διτροχαῖος* ἢ *διχορεῖος* (δύο τροχαῖοι)

Digitized by Google

—⏑—⏑, *ἀντίσπαστος (ἴαμβος καὶ τροχαῖος)* ⏑——⏑.

Λατινικὴ προσῳδία. Εἰς τὴν λατινικὴν γλῶσσαν μακρὰ εἶναι : αἱ δίφθογγοι : caēdo, āudio, τὰ ἐκ διφθόγγων προερχόμενα φωνήεντα : occīdo (ἐκ τοῦ ob-cāedo), τὰ φωνήεντα τὰ προερχόμενα ἐκ κράσεως : cōgo (ἐκ τοῦ co-ago). Βραχέα εἶναι κάθε φωνῆεν ἀκολουθούμενον ἀμέσως ὑπὸ ἄλλου φωνήεντος (vocalis ante vocalem brevitur) : prĭor. Ἐξαιροῦνται τὸ fīo καὶ ὅλοι οἱ τύποι τοῦ ῥήματος τούτου, οἱ μὴ ἔχοντες r : fīam, fīas (ἀλλά : fiĕri), ἡ γενικὴ καὶ ἡ δοτικὴ τῆς ε΄ κλίσεως ὅταν πρὸ τοῦ e ὑπάρχῃ φωνῆεν : diēi (ἀλλὰ fidĕi), ἡ γενικὴ καὶ ἡ κλητικὴ τῶν εἰς —aius καὶ—eius λέξεων : Gāi, Pompēi, ἡ γενικὴ εἰς —ius (συνήθως : unīus, σπανίως : unĭus).

Τὰ μονοσύλλαβα τὰ λήγοντα εἰς φωνῆεν εἶναι μακρά : tū, quī, πλὴν τῶν ἐγκλιτικῶν : quĕ, nĕ, vĕ. Αἱ λήγουσαι εἰς l, m, r, d, t εἶναι βραχεῖαι : animăl, dominŭm, patĕr, illŭd, amăt. Αἱ λήγουσαι εἰς as, es, os εἶναι μακραί : rosās, diēs, dominōs, (πλὴν λέξεών τινων τῆς γ΄ κλίσεως εἰς τὴν ἑνικὴν ὀνομαστικὴν καὶ κλητικήν : anăs, milĕs, compŏs). Αἱ λήγουσαι εἰς —is εἶναι βραχεῖαι : ovĭs (πλὴν τῶν πτώσεων τοῦ πληθυντικοῦ : rosīs dominīs, λέξεών τινων τῆς γ΄ κλίσεως εἰς τὴν ἑνικὴν ὀνομαστικήν : Samnīs, —itis, τοῦ β΄ προσώπου τοῦ ἐνεστῶτος τῆς ὑποτακτικῆς : sīs, velīs). Αἱ λήγουσαι εἰς a εἶναι βραχεῖαι : rosā (πλὴν τῆς ἀφαιρετικῆς τῆς α΄ κλίσεως : ros, τῆς προστακτικῆς τῆς α΄ συζυγίας : amā, τῶν ἀριθμητικῶν : trigintā, λέξεών τινων ἀκλίτων : praetereā). Αἱ λήγουσαι εἰς e εἶναι βραχεῖαι : furĕ (πλὴν τῆς ἀφαιρετικῆς τῆς ε΄ κλίσεως : diē, τῆς προστακτικῆς τῆς β΄ συζυγίας : monē, τῶν ἐπιρρημάτων, τὰ ὁποῖα παράγονται ἐκ δευτεροκλίτων ἐπιθέτων : doctē (ἀλλά : benĕ, malĕ). Αἱ λήγουσαι εἰς o εἶναι μακραί : dominō (πλὴν δισυλλάβων τινῶν egō, duō, ἄλλων τὰ ὁποῖα ἔγιναν δίχρονα : leō ἢ leŏ, καί, μετὰ τὸν Βιργίλιον, ὅλων τῶν τελικῶν o, ἐκτὸς τῆς δοτικῆς—ἀφαιρετικῆς τῆς β΄ κλίσεως (dominō), τὰ ὁποῖα ἀπέβησαν δίχρονα : audiō ἢ audiŏ, virgō ἢ virgŏ). Αἱ λήγουσαι εἰς i, u εἶναι μακραί : furī, manū. Αἱ λήγουσαι εἰς us εἶναι βραχεῖαι : dominŭs (πλὴν τῆς γενικῆς τοῦ ἑνικοῦ καὶ τῆς ὀνομαστικῆς—αἰτιατικῆς τοῦ πληθυντικοῦ τῆς δ΄ κλίσεως : manūs (ἀλλὰ manŭs : ὀνομαστικὴ κλητικὴ ἑνικοῦ) καί τινων ὀνομάτων τῆς γ΄ κλίσεως : virtūs). Ταῦτα περὶ τῆς ποσότητος τῆς ληγούσης.

Ἡ παραλήγουσα εἶναι μακρὰ εἰς τὴν γενικὴν πληθυντικὴν εἰς —arum,—orum,—erum : rosārum, dominōrum, diērum καὶ εἰς τὴν ἀρχαϊκὴν γενικὴν εἰς —ai : rosāi, καὶ τὰς εἰς—ebus δοτικὰς —ἀφαιρετικάς : diēbus, βραχεῖα δὲ εἰς τὰς εἰς—ibus,—ubus δοτικὰς—ἀφαιρετικάς : avĭbus, arcŭbus. Εἰς τὰς ἀντωνυμίας, ἡ ποσότης τῶν γενικῶν εἰς —ius ποικίλλει. Γενικῶς τὸ i εἶναι μακρόν : illīus, πλὴν τοῦ alterĭus. Εἰς τὰ ῥήματα : τὸ a τοῦ θέματος τῆς α΄ συζυγίας εἶναι μακρόν : amāre, amāmus, amābo, πλὴν τοῦ ῥήματος dare : dămus. Μακρὸν ἐπίσης εἶναι τὸ e τῆς β΄ καὶ τὸ i τῆς δ΄ συζυγίας : monēmus, audīvi. Τὸ e ἢ τὸ i τῆς γ΄ συζυγίας εἶναι βραχύ : lĕgere, legĭmus : Τὸ ἐπίθημα ba τοῦ παρατατικοῦ εἶναι μακρόν. legebāmus. Ἐπίσης τὸ a ὅταν προηγῆται αὐτοῦ r εἰς τοὺς εἰς—ramus,—ratis τύπους : erāmus, erātis, amaverāmus, amaverātis. Εἰς τὸν παρακείμενον τὸ i εἶναι βραχύ : legĭmus, audivĭmus : τὸ e τοῦ—erunt,—ere εἶναι μακρόν ; amavērunt, amavēre. Τὸ o εἶναι μακρὸν εἰς τὴν κατάληξιν —tōte : legitōte. Τὸ e ὅταν ἕπεται r εἰς τοὺς εἰς —eram, —erim,—ero χρόνους εἶναι βραχύ : legĕram, legĕrim, legĕro. Τὸ e καὶ τὸ a τῆς ὑποτακτικῆς εἶναι μακρά : amēmus, moneāmus. Ἐπίσης τὸ i τοῦ ἐνεστῶτος τῆς ὑποτακτικῆς εἶναι μακρόν : velīmus, sīmus. Κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Κικέρωνος εἶναι μακρὸν καὶ εἰς τὸν ἀόριστον τῆς ὑποτακτικῆς : legerīmus, legerītis. Βραδύτερον ἀποβαίνει βραχύ. Τὸ u τῆς μετοχῆς τοῦ μέλλοντος εἰς —turus εἶναι μακρόν : amatūrus. Τὸ e τοῦ —eris, —ere εἶναι μακρὸν εἰς τὸν παθητικὸν μέλλοντα : legēris, legēre.

Παρὰ Πλαύτῳ καὶ Τερεντίῳ : εἰς τὰς ἰαμβικὰς λέξεις (τὰς ἀποτελουμένας ἐκ μιᾶς βραχείας καὶ μιᾶς μακρᾶς συλλαβῆς), ἡ δευτέρα συλλαβὴ βραχύνεται : deŏs ἀντὶ deōs· εἰς τὰς τρισυλλάβους, τῶν ὁποίων ἡ πρώτη εἶναι βραχεῖα καὶ ἡ δευτέρα μακρά, αὕτη δύναται νὰ βραχυνθῇ : vŏlŭptas ἀντὶ vŏlūptas· μία μονοσύλλαβος ἢ ἡ πρώτη συλλαβὴ μιᾶς λέξεως δύναται νὰ βραχυνθῇ, ὅταν προηγῆται βραχὺ μονοσύλλαβον ἢ δισύλλαβος λέξις, ἧς ἡ δευτέρα συλλαβὴ ἐκθλίβεται καὶ ἡ πρώτη εἶναι βραχεῖα : quĭd ĕst ἀντὶ quĭd ēst, pĕr ŏppressionem ἀντὶ pĕr ōppressionem, ĭt (a) ŭt dixi ἀντὶ ĭt (a) ūt dixi.

Μέτρα, κῶλα, στίχοι, συστήματα, στροφαί. *Μέτρον* (metrum) καλεῖται ὁμὰς συλλαβῶν περιλαμβάνουσα δύο ἰσχυροὺς χρόνους ἀνίσου ἐντάσεως. Οὕτω ἕκαστον μέτρον περιλαμβάνει δύο πόδας· τὸ ἰαμβικὸν μέτρον ἀποτελεῖται ἀπὸ δύο ἰάμβους, τὸ τροχαϊκὸν ἀπὸ δύο τροχαίους, τὸ ἀναπαιστικὸν ἀπὸ δύο ἀναπαίστους κλπ., ἐξ οὗ καὶ ἰαμβικόν, τροχαϊκὸν κλπ. Τετράμετρον καλεῖται τὸ περιλαμβάνον ὀκτὼ ἰάμβους, τροχαίους κλπ. οἱ στίχοι δηλαδὴ οὗτοι μετροῦνται «κατὰ διποδίαν». Ἐξαίρεσιν ἀποτελοῦν οἱ δακτυλικοὶ στίχοι, οἱ ὁποῖοι μετροῦνται «κατὰ μονοποδίαν», διότι εἰς αὐτοὺς τὸ μέτρον ἰσοδυναμεῖ πρὸς 1 πόδα. Εἰς τὴν δραματικὴν ποίησιν τῶν Ρωμαίων ἡ διάκρισις αὕτη δὲν εἶναι ἐν χρήσει· ἡ μέτρησις γίνεται ἁπλῶς κατὰ πόδας. *Κῶλον* (membrum) καλεῖται ὁμὰς ποδῶν καθοριζομένη ὑπὸ σταθερᾶς τομῆς ἢ ὑπὸ τῆς συμμετρίας μετὰ τῶν ὁμοίων ὁμάδων. Τὸ δακτυλικὸν ἑξάμετρον ἀποτελεῖται ἐκ δύο κώλων, χωριζομένων ὑπὸ τομῆς. *Στίχος* (versus) καλεῖται ἄθροισμα ποδῶν, μέτρων, κώλων, τῶν ὁποίων ἡ τελευταία συλλαβὴ εἶναι ἀδιάφορος καὶ ἐπιτρέπει τὴν χασμωδίαν μετὰ τοῦ ἑπομένου ἀρκτικοῦ φωνήεντος. Συνήθως δὲν ἔχει πλείονας τῶν 30 χρόνων. *Σύστημα* (systema) καλεῖται ἄθροισμα ἀκαθορίστου ἀριθμοῦ κώλων· ὁμοιάζει πρὸς μέγαν στίχον, διότι δὲν ὑπάρχει χασμωδία μεταξὺ τῶν κώλων καὶ μόνον ἡ τελευταία συλλαβὴ τοῦ συστήματος εἶναι ἀδιάφορος. *Στροφὴ* καλεῖται σειρὰ διαφόρων στίχων ἐπαναλαμβανομένων κατὰ τὴν αὐτὴν τάξιν. Ὅταν οἱ στίχοι εἶναι ὅμοιοι δὲν ἀποτελοῦσι στροφήν.

Τομή. *Τομὴ* (caesura) καλεῖται ἡ διακοπὴ τῆς συνεχείας τῆς ἀπαγγελίας μεταξὺ διαφόρων τμημάτων τοῦ αὐτοῦ στίχου. Ἡ τομὴ συμπίπτει ἐν γένει μὲ τὸ τέλος μιᾶς λέξεως καὶ σπανίως μὲ τὸ τέλος καὶ ποδὸς ταυτοχρόνως. Συνήθως τὴν τομὴν ὥριζον ἄλλοτε ὡς συλλαβὴν περατοῦσαν μίαν λέξιν καὶ ἀρχίζουσαν ἕνα πόδα. Τομῶν ὑπάρχουσι πολλὰ εἴδη. *Ἄρρην* λέγεται ἡ τομή, ὅταν γίνεται μετὰ μακρὰν συλλαβήν, *θήλεια* δὲ ὅταν μετὰ βραχεῖαν. Ἐπίσης *τριημιμερὴς* καλεῖται, ὅταν συμβαίνῃ μετὰ τρία ἡμιπόδια, ἤτοι εἰς τὸν β΄ πόδα· *πενθημιμερής*, ὅταν συμβαίνῃ μετὰ πέντε ἡμιπόδια, ἤτοι εἰς τὸν γ΄ πόδα· καὶ *ἑφθημιμερής*, ὅταν συμβαίνῃ μετὰ ἑπτὰ ἡμιπόδια, ἤτοι εἰς τὸν δ΄ πόδα. Ἡ θέσις τῆς τομῆς ποικίλλει· συνήθως ὅμως αὕτη γίνεται περὶ τὸ μέσον τοῦ στίχου, τοῦ ὁποίου οὕτω τὰ δύο τμήματα ἀντιζυγίζονται. *Ἀτελὴς* καλεῖται ἡ τομὴ ἡ συμβαίνουσα μετὰ λέξιν, τῆς ὁποίας ἡ λήγουσα ἐκθλίβεται :

Oblitus meor(um) | obliviscendus et illis
(*Horat.* Epist, 1, 11, 9)

ἢ ἡ γινομένη διὰ τμήσεως μετὰ μόρια εἰς συνθέτους λέξεις (caesura in compositum)

Taurus, et incertam ex | cussit cervice securim
(*Virgil.* Aen. 2, 224)

ἢ πρὸ ἐγκλιτικοῦ :

Haud mora conversis | que fugax aufertur habenis
(*Virgil.* Aen. 11, 713).

Κατόπιν μονοσυλλάβων τομαὶ γίνονται μετὰ τὰ sum, me, te, se, hic, haec, hoc, μετὰ προθέσεις, συμπλεκτικοὺς συνδέσμους καί τινας λέξεις :

Quae nunc sunt | in honore vocabula si volet usus
(*Horat.* Ars p. 71)

Ille autem: Neque te | Phaebi cortina fefellit
(*Virgil.* Aen. 6, 347)

Sed nunc non erat his | locus. Et fortasse cupressum
(*Horat.* Ars p. 19)

Velle videmur et in | mediis conatibus aegri
(*Virgil.* Aen. 12, 910)

Is genus indocile ac | dispersum montibus altis
(*Virgil.* Aen. 8, 321)

Et cum frigida mors | anima seduxerit artus
(*Virgil.* Aen. 4, 385)

Συνίζησις, διαίρεσις, ἔκθλιψις, χασμωδία, ἔκτασις. *Συνίζησις* ἢ *συναίρεσις* καλεῖται ἡ συνεκφορὰ δύο συλλαβῶν ὡς μιᾶς :

Ferreique Eumenidum thalami et discordia demens
(*Virgil.* Aen. 6,280)

καὶ ἡ μετατροπὴ τῶν φωνηέντων i ἢ u εἰς σύμφωνα, δηλαδὴ ἡ ὑπ' αὐτῶν ἀπόκτησις ἰδιοτήτων συμφώνου, διὰ τὴν προσῳδίαν :

Cedunt de caelo ter quattuo r corpora sancta
— —
(*Enn.* Ann. 93)

Custodes suffere valent; labat a riet e crebro
— ⏑ ⏑
(*Virgil.* Aen. 2,492)

*Διαίρεσις* καλεῖται ὁ λογισμὸς μιᾶς συλλαβῆς ὡς δύο. Συνήθως εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην δὲν πρόκειται περὶ πραγματικῆς δημιουργίας νέας συλλαβῆς, ἀλλὰ περὶ ἀναβιώσεως παλαιοτέρου τύπου :

Aular(um) et silu ae metu
⏑
(*Horat.* Od. 1,23.4)

*Ἔκθλιψις* καλεῖται ἡ ἐν τῇ προφορᾷ συνένωσις τελικοῦ φωνήεντος ἢ ληγούσης εἰς —m μετὰ τοῦ ἀρκτικοῦ φωνήεντος τῆς ἀκολούθου λέξεως. Τὸ τελικὸν τοῦτο φωνῆεν ἢ ἡ λήγουσα εἰς —m, καίτοι γράφονται, δὲν ὑπολογίζονται εἰς τὸν στίχον : atque ego (τρεῖς συλλαβαί).

*Χασμωδία* συμβαίνει, ὅταν φωνῆεν (μακρὸν ἢ βραχὺ) δὲν ἔχῃ ἐκθλιβῆ πρὸ τοῦ ἀρκτικοῦ φωνήεντος τῆς ἑπομένης λέξεως καὶ ὑπολογίζεται ἐν τῷ μέτρῳ. Ἡ χασμωδία εἰς τοὺς Λατίνους εὑρίσκεται παρὰ τοῖς ἀρχαίοις ποιηταῖς, ἀλλὰ δὲν ἐπιτρέπεται κατὰ τὴν κλασσικὴν ἐποχήν, πλὴν ἐξαιρέσεών τινων :

Ὅταν μονοσύλλαβόν τι βραχύνεται πρὸ βραχέος ἀρκτικοῦ φωνήεντος :

Credimus ? an qu i a mant ipsi sibi somnia fingunt ?
⏑ ⏑
(*Virgil.* Bucol. 8,108)

Τὰ ἐπιφωνήματα o, a δύνανται πάντοτε νὰ σχηματίζουν χασμωδίαν, παραμένοντα μακρὰ ἢ βραχυνόμενα :

O et de Lati a, o et de gente Sabina
— — —
(*Ovid.* Metam. 14,832)

Te Coryd o n, o A lexi ; trahit sua quemque voluptas
— ⏑ ⏑
(*Virgil.* Bucol. 2,65)

*Ἔκτασις*. Παρὰ Λατίνοις εἰς τὸ ἐσωτερικὸν μιᾶς λέξεως βραχὺ φωνῆεν ἀκολουθούμενον ὑπὸ δύο συμφώνων, ὧν τὸ δεύτερον εἶναι l, r, δύναται νὰ ἐκταθῇ ἢ νὰ παραμείνῃ βραχύ :

Natum ante ora p a tris, p a trem qui obtruncat ad aras
⏑ —
(*Virgil.* Aen. 2,663)

Ἔκτασις ἐπίσης κατὰ κανόνα συμβαίνει καὶ εἰς τὴν τελευταίαν συλλαβὴν λέξεως ληγούσης εἰς σύμφωνον, ὅταν ἡ ἑπομένη ἄρχεται ἐπίσης ἐκ συμφώνου : sūb tegmine. Ὅταν δύο σύμφωνα εἶναι ἀρκτικὰ λέξεως, τότε τὸ τελικὸν φωνῆεν τῆς προηγουμένης λέξεως δὲν ἐκτείνεται :

Ingenti sonuerunt omni a plausu
⏑
(*Virgil.* Aen. 5.506)

Μέχρι τῶν χρόνων τοῦ Κικέρωνος τὸ τελικὸν s δὲν ἀπετέλει μετὰ τοῦ ἀρκτικοῦ συμφώνου τῆς ἑπομένης λέξεως θέσιν :

Tum lateral i s dolor, certissim u s nunti u s mortis
⏑ ⏑ ⏑
(*Lucil.* 1314)

Σατούρνιος στίχος. Οἱ Λατῖνοι δὲν ἐδημιούργησαν πρωτότυπα μέτρα. Ἤρχισαν ν' ἀσχολοῦνται μὲ τὴν ποίησιν, ὅταν πλέον ὁ ἑλληνικὸς κόσμος εἶχεν εἰσέλθει εἰς τὴν ὁδὸν τῆς καταπτώσεως, καὶ παρέλαβον παρ' αὐτοῦ ὅλας τὰς μετρικὰς μορφὰς ἑτοίμους, προσαρμόσαντες ταύτας εἰς τὴν γλῶσσάν των. Τὸ μόνον μέτρον, τὸ ὁποῖον εἶναι γνησίως λατινικόν, εἶναι τὸ μέτρον τοῦ *σατουρνίου στίχου* (versus saturnius). Ὁ σατούρνιος στίχος ἀποτελεῖ τὴν ἀρχαιοτέραν μορφὴν στίχου, ἡ ὁποία ἐχρησιμοποιήθη ἐν Ρώμῃ καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὰ «vaticinia», δηλαδὴ τοὺς χρησμοὺς τῶν μάντεων, εἰς ἀποσπάσματα τῆς γνωμικῆς ποιήσεως τοῦ Appius Claudius Caecus, τιμητοῦ κατὰ τὸ 312, εἰς ἐπικὰ ἀποσπάσματα τῆς μεταφράσεως τῆς «*Ὀδυσσείας*» ὑπὸ τοῦ Λιβίου Ἀνδρονίκου, τοῦ «Bellum Poenicum», τοῦ Naevius, εἰς λειτουργικοὺς ὕμνους, εἰς ἐπιτύμβια κλπ. Ἀλλ' ἡ ὑφὴ τοῦ στίχου τούτου ἀγνοεῖται καὶ ἀπὸ μακροῦ χρόνου συζητοῦν, ἂν ἐβασίζετο ἐπὶ τῆς προσῳδιακῆς ἢ τῆς τονικῆς ῥυθμοποιίας. Φαίνεται ὅτι ὡς κατ' ἐξοχὴν λαϊκὸς στίχος ὁ σατούρνιος, ἐστερεῖτο αὐστηρῶν κανόνων καὶ ὅτι πιθανωτέρα εἶναι εἰς αὐτὸν ἡ ἐπίδρασις τοῦ τόνου ἢ τῆς ποσότητος. Κλασσικὸς τύπος τοῦ σατουρνίου στίχου εἶναι ὁ ἀκόλουθος :

Dabunt malum Metelli | Naevio poetae,

ὅστις ὑπό τινων θεωρεῖται συγκείμενος ἐξ ἰάμβων χωριζομένων εἰς δύο κῶλα

⏑—⏑—⏑—— —⏑—⏑——

Ἑξάμετρον δακτυλικόν. Ὅπως ὅλα τὰ μέτρα, οὕτω καὶ τὸ δακτυλικὸν ἑξάμετρον παρέλαβον οἱ Λατῖνοι παρὰ τῶν Ἑλλήνων. Ὁ πρῶτος Λατῖνος, ὅστις ἐχρησιμοποίησε τὸ ἑξάμετρον, εἶναι ὁ Ἔννιος. Οὗτος ἔδωσεν εἰς αὐτὸ ὅλην τὴν ἁδρότητα καὶ τὴν δύναμιν τοῦ ῥωμαϊκοῦ χαρακτῆρος καὶ τῆς ῥωμαϊκῆς γλώσσης. Τὸ λατινικὸν ἑξάμετρον εἶναι παρ' αὐτῷ συχνάκις βαρύ, ἀλλὰ σχεδὸν πάντοτε πλῆρες ἐνεργείας. Ἡ μετάφρασις τοῦ Ἀράτου ὑπὸ τοῦ Κικέρωνος ἔχει μεγάλην σημασίαν διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ ἑξαμέτρου. Ἂν καὶ εἶναι προγενεστέρα τοῦ «De rerum natura» τοῦ Λουκρητίου, βλέπει κανεὶς εἰς αὐτὴν ἐφαρμοζομένους κανόνας, τοὺς ὁποίους δὲν ἐπρόσεξε βραδύτερον ὁ Λουκρήτιος, ἀλλὰ τοὺς ἐφήρμοσεν ὁ Βιργίλιος. Ὁ Λουκρήτιος ἀποτελεῖ τὴν μετάβασιν ἀπὸ τοῦ Ἐννίου εἰς τὸν Βιργίλιον. Ὁ Βιργίλιος ἦτο ἐν Ρώμῃ ὁ κατ' ἐξοχὴν ποιητής· ὁ στίχος του διακρίνεται διὰ τὴν ἐκφραστικωτάτην ἁρμονίαν του καὶ τὴν ἄπειρον γλυκύτητά του, ἀλλὰ δὲν ἐπέτυχεν ἐν τούτοις νὰ προσεγγίσῃ τὴν δροσερότητα καὶ τὴν γονιμότητα τοῦ Ὁμήρου, οὔτε ἀπὸ στενῆς μετρικῆς ἀπόψεως. Ὁ Ὀβίδιος εἶναι ἀκριβέστερος, φροντίζει περισσότερον ν' ἀποφεύγῃ τὰς ἀνειμένας μορφάς, ἀλλ' ἀπὸ ἔποψιν ἐκφραστικῆς δυνάμεως τοῦ ῥυθμοῦ ὑποδεέστερος. Ὁ Ὁράτιος προέρχεται ἐκ τοῦ Λουκιλίου· τὸ ἑξάμετρόν του εἶναι τεθραυσμένον καὶ μιμεῖται τὸ ὕφος τῆς συνδιαλέξεως. Βραδύτερον, μὲ τὸν Λουκανὸν ἀρχίζει νὰ γίνεται μονότονος ὁ τόσον ἰσχυρὸς καὶ ὡραῖος οὗτος στίχος. Διατηρεῖ ἐν τούτοις τὴν δύναμίν του παρὰ Πέρσῃ, Ἰουβενάλῃ καὶ ἐπιζῇ καθ' ὅλον τὸν μεσαίωνα μετὰ τοῦ Βιργιλίου, τὸν ὁποῖον φροντίζουν νὰ μιμηθοῦν.

Εἰς τὸ δακτυλικὸν ἑξάμετρον τῶν Λατίνων μία ἐκ τῶν συνηθεστέρων τομῶν εἶναι ἡ ἄρρην πενθημιμερής :

Hectorei socii | Trojae quos sorte suprema
(*Virgil.* Aen. 5,190)

Digitized by Google

ἡ ὁποία ἀνέχεται ἐνίοτε καὶ τὴν χασμωδίαν:

Ter sunt conati imponere Pelio Ossam.
(*Virgil.* Georg. 1, 281)

Συνηθεστάτη ἐπίσης εἶναι καὶ ἡ ἑφθημιμερής, ἀλλὰ συνοδευομένη ὑπὸ δευτερευούσης τριημιμεροῦς ἢ τροχαϊκῆς πενθημιμεροῦς:

Non omnes | arbusta | juvant ‖ humilesque myricae
(*Virgil.* Bucol. 4, 2)

Ἐνίοτε ἀπαντᾷ καὶ ἡ θήλεια πενθημιμερής:

Labitur et labetur | in omne volubilis aevum
(*Horat.* Epist. 1, 2, 43)

παρὰ Βιργιλίῳ ἅπαξ μόνον:

Spargens humida mella | soporiferumque papaver
(*Virgil.* Aen. 4, 486)

συνηθέστερον δὲ ὡς ὑποβοηθητικὴ τῆς ἑφθημιμεροῦς:

Infandum | regina | jubes ‖ renovare dolorem
(*Virgil.* Aen. 2, 3)

Ἡ τριημιμερὴς εἶναι πάντοτε δευτερεύουσα καὶ τονίζει ἐνίοτε τὴν ἔκτασιν:

Pectoribu s | inhians spirantia consulit exta
(*Virgil.* Aen. 4, 64)

ἢ τὴν χασμωδίαν:

Si pere o | hominum manibus periisse juvabit
(*Virgil.* Aen. 3, 606)

Ἡ βουκολικὴ τομὴ (μετὰ τὸν πέμπτον πόδα) εἶναι πάντοτε δευτερεύουσα:

Dic mihi, Damaeta, cujum pecus? | an Meliboei?
(*Virgil.* Bucol. 3, 1)

ἀπαντᾷ δὲ 260 φορὰς εἰς τὰς «Σατίρας» καὶ 200 εἰς τὰς «Ἐπιστολὰς» τοῦ Ὁρατίου. Εἶναι σπανία παρὰ Ὀβιδίῳ, Στατίῳ καὶ Μαρτιαλίῳ. Ὁ Βιργίλιος τὴν χρησιμοποιεῖ συχνὰ εἰς τὰ «Βουκολικά» του (55 φοράς), ἀλλὰ σπανίως εἰς τὴν «Αἰνειάδα». Πλὴν ἐλαχίστων ἐξαιρέσεων, ὁ ποὺς ὅστις προηγεῖται τῆς βουκολικῆς τομῆς πρέπει νὰ εἶναι δάκτυλος.

Ὁ συνηθέστερος τύπος δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου παρὰ Λατίνοις εἶναι ἐκεῖνος, ὅστις εἰς τοὺς τέσσαρας πρώτους πόδας ἔχει ἕνα δάκτυλον καὶ τρεῖς σπονδείους. Στίχος ἀποτελούμενος ἐξ ὁλοκλήρου ἀπὸ δακτύλους εἶναι σπάνιος:

Quadrupedante putrem sonitu quatit ungula campum
(*Virgil.* Aen. 8, 596)

Sed fugit interea, fugit irreparabile tempus
(*Virgil.* Georg. 3, 284)

Σπονδειάζοντες στίχοι, δηλαδὴ ἔχοντες σπονδεῖον εἰς τὸν πέμπτον πόδα, ἀπαντοῦν παρὰ Λατίνοις. Οἱ τοιοῦτοι στίχοι ἔχουν τὸν τέταρτον πόδα δάκτυλον κατὰ κανόνα καὶ λήγουν εἰς τετρασύλλαβον λέξιν:

Cara deum soboles, magnum Jovis incrementum
—⏑⏑—⏑⏑————⏑⏑————⏑
(*Virgil.* Bucol. 4, 49)

Στίχοι ἀποτελούμενοι ἐξ ὁλοκλήρου ὑπὸ σπονδείων, ἀπαντοῦν παρ' Ἐννίῳ, οὐδέποτε ὅμως παρὰ Βιργιλίῳ:

Cives Romani tunc facti sunt Campani
(*Enn.* Ann. 169)

Εἰς τὸ λατινικὸν ἑξάμετρον σπανίως ἀπαντᾷ ἔκθλιψις εἰς τοὺς δύο τελευταίους πόδας ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Κικέρωνος καὶ ἐντεῦθεν. Συνήθως ὁ στίχος λήγει διὰ δισυλλάβου ἢ τρισυλλάβου λέξεως: tegmine fagi, rura manebunt, σπανιώτατα τετρασυλλάβου: Phyllodoceque (*Virg.* Georg. 4, 336) ἢ μονοσυλλάβου: Procumbit humi bos (*Virg.* Aen. 5, 481).

Παρὰ Βιργιλίῳ ἀπαντᾷ σπανίως καὶ τὸ λεγόμενον ὑπέρμετρον ἑξάμετρον, τὸ ὁποῖον φαίνεται νὰ ἔχῃ μίαν συλλαβὴν περισσοτέραν. Αὕτη (συνήθως τὸ que) ἐκθλίβεται πρὸ τοῦ ἀρκτικοῦ φωνήεντος τοῦ ἐπομένου στίχου:

Ignari hominumque locorumque
Erramus.
(*Virgil.* Aen 1, 332)

Πεντάμετρον καὶ ἄλλοι δακτυλικοὶ στίχοι. Τὸ ἐπικρατέστερον πόδισμα τοῦ πενταμέτρου εἶναι τὸ ἑξῆς:

—⏕—⏕— | —⏑⏑—⏑⏑—

ἀπαντῶν οὐ μόνον παρὰ τῷ Κοϊντιλιανῷ, ἀλλ' ἤδη ἀπὸ τοῦ Δ' π. Χ. αἰῶνος παρὰ τῷ Ἑρμησιάνακτι. Εἰς τὸ πεντάμετρον ἡ τομὴ εἶναι πάντοτε πενθημιμερής, ἀποφεύγεται ἡ ἔκθλιψις καὶ ἐκτείνεται ἡ προηγουμένη συλλαβή:

Aut pudor ingenuus | aut reticendus amor
(*Propert.* 2, 24, 4).

Ἔκθλιψις εἰς τὸ τέλος τοῦ πρώτου κώλου ἀπαντᾷ σπανίως παρὰ Κατούλλῳ, οὐδέποτε παρ' Ὀβιδίῳ καὶ Τιβούλλῳ καὶ δὶς μόνον παρὰ Προπερτίῳ. Ὁ Ὀβίδιος ἀποφεύγει τὴν ἔκθλιψιν μακρᾶς συλλαβῆς εἰς τὸ δεύτερον κῶλον. Οἱ τύποι jocost, meost ἀντὶ joco est, meo est, δὲν ἀποτελοῦν ἐξαίρεσιν τοῦ κανόνος τούτου, διότι st ἀντὶ est ἀπαντᾷ συχνάκις. Ἡ τελευταία συλλαβὴ τοῦ στίχου εἶναι γενικῶς μακρὰ ἢ τοὐλάχιστον λήγει εἰς σύμφωνον.

Μερικοὶ Λατῖνοι ποιηταὶ ἀποφεύγουν νὰ περαίνουν τὸν στίχον διὰ τρισυλλάβου λέξεως.

Τὸ πεντάμετρον οὐδέποτε σχεδὸν χρησιμοποιεῖται μόνον. Ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τοποθετεῖται κατόπιν ἑξαμέτρου, ἀποτελοῦν μετ' αὐτοῦ *δίστιχον* (ἐλεγειακόν):

Donec eris felix, multos numerabis amicos.
Tempora si fuerint nubila, solus eris
(*Ovid.* Trist. 1, 9, 5)

Τὸ δίστιχον πρέπει ν' ἀποτελῇ ὡλοκληρωμένην ἔννοιαν, καὶ διὰ τοῦτο σπανίως ἀπαντῶμεν συμπλοκὴν ἑνὸς διστίχου πρὸς ἕτερον. Τὸ ἑξάμετρον, ὅπερ ἀκολουθεῖται ὑπὸ πενταμέτρου, εἶναι σπανιώτερον σπονδειακὸν ἢ τὸ ἀπαντῶν μόνον.

Ἄλλοι δακτυλικοὶ στίχοι χρησιμοποιούμενοι ὑπὸ τῶν Λατίνων εἶναι ἡ *δακτυλικὴ καταληκτικὴ τετραποδία* (ἢ *τετράμετρον*):

Cras ingens iterabimus aequor (*Horat.* Od. 1, 7, 32)

Εἰς τὴν καταληκτικὴν τετραποδίαν ὁ προτελευταῖος στίχος εἶναι πάντοτε δάκτυλος. Ἅπαξ μόνον παρὰ Ὁρατίῳ ἀπαντᾷ σπονδεῖος εἰς τὸν τρίτον πόδα:

Mensorem cohibent Archyta (*Horat.* Od. 1. 28, 2)

Ὁ στίχος οὗτος συνδυάζεται μετὰ τοῦ ἑξαμέτρου καὶ σχηματίζει τὸ *ἀλκμάνειον μέτρον* (alcmanium metrum):

Mecum saepe viri, nunc vino pellite curas,
Cras ingens iterabimus aequor
(*Horat.* Od. 1,7, 31).

Ἡ *καταληκτικὴ τριποδία* συνδυάζεται ἐπίσης μετὰ τοῦ ἑξαμέτρου καὶ σχηματίζει τὸ *πρῶτον ἀρχιλόχειον μέτρον*:

Diffugere nives, redeunt jam gramina campis
Arboribusque comae
(*Horat.* Od. 1, 4, 1)

Δακτυλικὴ τετραποδία ἠνωμένη μετὰ καθαρᾶς τροχαϊκῆς τριποδίας σχηματίζει τὸ *μέγα ἀρχιλόχειον*:

—⏑⏑—⏑⏑—⏑⏑—⏑⏑ | —⏑—⏑—⏑

Solvitur acris hiems grata vice | veris et Favoni
(*Horat.* Od. 1. 4, 1)

μέγα δὲ ἀρχιλόχειον συνοδευόμενον ὑπὸ ἰαμβικοῦ τριμέτρου καταληκτικοῦ σχηματίζει τὸ *τέταρτον ἀρχιλόχειον* μέτρον:

Solvitur acris hiems grata vice | veris et Favoni
Trahuntque siccas machinae carinas
(*Horat.* Od. 1,4,1)

Δακτυλικὴ καταληκτικὴ τριποδία, ἠνωμένη μετὰ ἰαμβικοῦ διμέτρου, ἀποτελεῖ τὸν *ἐλεγίαμβον*:

—⏑⏑—⏑⏑—⏓—⏑—⏓—⏑—

Scribere versiculos | amore percussum gravi
(*Horat.* Epod. 11,2)

Ἐλεγίαμβος μετὰ ἰαμβικοῦ τριμέτρου σχηματίζει τὸ *τρίτον ἀρχιλόχειον μέτρον*:

Petti, nihil me, sicut antea, juvat
Scribere versiculos | amore percussum gravi
(*Horat.* Epod. 11,2)

Ἀντίθετος τοῦ ἐλεγιάμβου εἶναι ὁ *ἰαμβέλεγος*· τὸ ἰαμβικὸν δίμετρον προηγεῖται τῆς δακτυλικῆς καταληκτικῆς τριποδίας:

⏓—⏑—⏓—⏑— | —⏑⏑—⏑⏑—

Nivesque deducunt Jovem | nunc mare, nunc siluae
(*Horat.* Epod. 13,2)

Μετὰ τοῦ δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου προηγουμένου, σχηματίζει τὸ *δεύτερον ἀρχιλόχειον μέτρον*:

Horrida tempestas caelum contraxit et imbres
Nivesque deducunt Jovem | nunc mare, nunc siluae
(*Horat.* Epod. 13, 1).

Ἀναπαιστικοὶ στίχοι. Παρὰ Λατίνοις τὸ *ἀναπαιστικὸν τετράμετρον, ἀκατάληκτον* μὲν ἀπαντᾷ εἰς τὸν Πλαῦτον, *καταληκτικὸν* δὲ (septenarius versus, ἑπτάπους) εἰς τὸν Πλαῦτον καὶ τὸν Ἔννιον, μὲ τομὴν πάντοτε μετὰ τὸν δ' πόδα. Ἀντικαταστάσεις τῶν ἀναπαίστων διὰ δακτύλων, σπονδείων καὶ σπανιώτατα προκελευσματικῶν συμβαίνουν εἰς ὅλας τὰς θέσεις:

—⏑⏑|—⏑⏑|—⏑⏑|—⏑⏑‖—⏑⏑|—⏑⏑|—⏑⏑ ⏑
⏑⏑—|⏑⏑—|⏑⏑—|⏑⏑—‖⏑⏑—|⏑⏑—|⏑⏑—|—

Enim cognovi nunc fecisti | modo ex proclivo planum
(*Plaut.* Mil. 1018).

Παρὰ Σενέκᾳ χρησιμοποιεῖται καὶ ἡ *ἀναπαιστικὴ διποδία* (μονόμετρον) (δύο ἀνάπαιστοι ⏑⏑— ⏑⏑—, ἢ δύο σπονδεῖοι —— ——, ἢ δύο δάκτυλοι —⏑⏑ —⏑⏑, ἢ ἀνάπαιστος καὶ σπονδεῖος ⏑⏑— —— ἢ σπονδεῖος καὶ ἀνάπαιστος —— ⏑⏑— ἢ δάκτυλος καὶ σπονδεῖος —⏑⏑ —— ἢ δάκτυλος καὶ ἀνάπαιστος —⏑⏑ ⏑⏑—), καὶ χρησιμεύει ὡς κατακλεὶς τῶν χορικῶν ᾀσμάτων:

| | |
|---|---|
| Deflete virum | Una tantum |
| Quo non alius | Part(e) audita, |
| Potuit citius | Saep(e) et neutra |
| Discere causas | (*Senec.* Apocol. 12). |

Τροχαϊκοὶ στίχοι. Τροχαϊκοὺς στίχους ἐκ τῶν Λατίνων χρησιμοποιοῦν συνήθως ὁ Πλαῦτος, ὁ Τερέντιος καὶ ὁ Ὁράτιος.

Οἱ δύο πρῶτοι χρησιμοποιοῦν τὸ *καταληκτικὸν* (septenarius versus) *τροχαϊκὸν τετράμετρον*:

—⏑—⏑—⏑—⏑ | —⏑—⏑—⏓,

εἰς τὸ ὁποῖον γίνονται πανταχοῦ ἀντικαταστάσεις διὰ τριβράχεων, σπονδείων, δακτύλων καὶ ἀναπαίστων, πλὴν τοῦ πρώτου ποδός:

Perge, nox, ut occepisti | gere patri morem meo
(*Plaut.* Amphit. 276)

Ἡ τομὴ γίνεται μετὰ τὸν δ' πόδα. Ὁ Ὁράτιος χρησιμοποιεῖ τὸ καθαρὸν *τροχαϊκὸν καταληκτικὸν δίμετρον* (ἄνευ ἀντικαταστάσεων δηλαδή):

—⏑—⏑—⏓,

τὸ ὁποῖον μετὰ ἰαμβικοῦ καταληκτικοῦ τριμέτρου σχηματίζει τὸ *ἱππωνάκτειον μέτρον*:

Non ebur nequ(e) aureum
Mea renidet in domo lacunar (*Horat.* Od. 2,18.1).

Ἰαμβικοὶ στίχοι. *Ἰαμβικὸν ἀκατάληκτον τετράμετρον* εἶναι σύνηθες εἰς τὴν λατινικὴν τραγῳδίαν καὶ κωμῳδίαν ὑπὸ δύο διαφόρους μορφάς: α) ὡς ἄθροισμα δύο κώλων διμέτρων μὲ ἀδιάφορον τὴν τελευταίαν συλλαβὴν ἑκάστου, τομὴν μετὰ τὸ τέλος τοῦ πρώτου, ἀνοχὴν χασμωδίας καὶ μὲ καθαροὺς (ἀναντικαταστάτους) τὸν δ' καὶ η' πόδας.

Nunc perg(am) er(i) imperi(um) exsequi | et me domum capessere]
(*Plaut.* Amphit. 262).

β) μὲ τομὴν κατὰ τὴν ἐνάτην ἡμιποδίαν, ἄνευ χασμωδίας μεταξὺ τῶν κώλων οὔτε ἀδιαφόρου συλλαβῆς εἰς τὸ τέλος τοῦ δ' ποδὸς καὶ μὲ καθαρὸν τὸν η' μόνον πόδα:

Nemp(e) erg(o) aperte vis que restant | me loqui? Sane quidem]
(*Terent.* Andr. 195)

*Ἰαμβικὸν καταληκτικὸν τετράμετρον* (septenarius versus) εἶναι ἐπίσης σύνηθες εἰς τὴν λατινικὴν τραγῳδίαν καὶ κωμῳδίαν ὑπὸ δύο μορφάς: α) μὲ τομὴν καὶ χασμωδίαν μετὰ τὸν δ' πόδα καὶ ἀδιάφορον τὴν τελευταίαν συλλαβὴν τοῦ δ' ποδός, ὅστις εἶναι καθαρός:

Truculentis oculis, commoda | statura, tristi fronte
(*Plaut.* Asinar. 401)

β) μὲ τομὴν κατόπιν τῆς ἐνάτης ἡμιποδίας, ἄνευ χασμωδίας καὶ ἀδιαφόρου συλλαβῆς μετὰ τὸν δ' πόδα, μὲ καθαρὸν τὸν ζ' πόδα:

Tortis superciliis contr acta | fronte fraud ul entum
(*Plaut.* Rud. 318)

Τὸ καθαρὸν *ἰαμβικὸν τρίμετρον* (senarius versus, ἑξαποδία) μὲ τὴν μορφήν:

⏑—⏑—⏑—⏑—⏑—⏑—

μόνον, ἀπαντᾷ παρὰ Κατούλλῳ:

Phaselus ille quem videtis, hospites
Ait fuisse navium celerrimus (*Catul.* 4,1)

Παρ' Ὁρατίῳ, τὸ καθαρὸν ἰαμβικὸν τρίμετρον, μετὰ δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου σχηματίζει τὸ *δεύτερον πυθιαμβικὸν μέτρον*:

Altera jam teritur bellis civilibus aetas,
Suis et ipsa Roma viribus ruit
(*Horat.* Epod. 16,1).

Ἀλλὰ συνήθως ὁ Ὁράτιος χρησιμοποιεῖ ἰαμβικὸν τρίμετρον μὴ καθαρόν, ἀντικαταστάσεις τῶν ποδῶν τοῦ ὁποίου γίνονται εἰς ὅλας τὰς θέσεις ὑπὸ τριβράχεων, σπονδείων, ἀναπαίστων, δακτύλων. Ἡ τομὴ εἶναι συνηθέστερον πενθημιμερής, σπανιώτερον ἑφθημιμερής. Ἀπαντᾷ καὶ μόνον:

Tamj(am) efficaci do manus scientiae
Supplex et oro regna per Proserpinae
(*Horat.* Epod. 17,1)

καὶ μετὰ ἰαμβικοῦ διμέτρου (*ἐπῳδικὸν μέτρον*):

Ibis liburnis inter alta navium
Amice propugnacula (*Horat.* Epod. 1,1)

καὶ μετὰ ἐλεγιάμβου (*τρίτον ἀρχιλόχειον μέτρον*):

Petti, nihil me, sicut antea, juvat
Scribere versiculos, amore percussum gravi
(*Horat.* Epod. 11,1)

Οἱ κωμικοὶ καὶ ὁ Φαῖδρος χρησιμοποιοῦν ἀκόμη ἐλευθεριώτερον ἰαμβικὸν τρίμετρον, εἰς τὸ ὁποῖον ἔχει θέσιν καὶ ὁ τρίβραχυς καὶ ὁ σπονδεῖος καὶ ὁ ἀνάπαιστος καὶ ὁ δάκτυλος καὶ ὁ προκελευσματικός, πλὴν τοῦ τελευταίου ποδός:

Atqu(e) ego quoqu(e) etiam qui Jovis sum filius
(*Plaut.* Amphit. 30)

Ὁ *σκάζων* ἢ *χωλίαμβος* (ἰαμβικὸν τρίμετρον, τοῦ ὁποίου ὁ τελευταῖος πούς εἶναι σπονδεῖος), ἀπαντᾷ παρὰ Λαιβίῳ, Οὐάρρωνι, Κατούλλῳ, Μαρτιαλίῳ, Πέρσῃ κλπ.

Hom(o) est venustus et dicax et urbanus
Idemque longe plurimos facit versus
(*Catul.* 22 2).

Τὸ ἰαμβικὸν καταληκτικὸν τρίμετρον οὐδέποτε ἀπαντᾷ παρὰ κωμικοῖς. Χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τοῦ Ὁρατίου μὲ τὴν μορφήν:

⏓—⏑—⏓ | —⏑—⏑—⏓

καὶ μετὰ μὲν τοῦ μεγάλου ἀρχιλοχείου (δακτυλικὸν τετράμετρον ἀκολουθούμενον ὑπὸ τροχαϊκῆς τριποδίας) σχηματίζει τὸ *τέταρτον ἀρχιλόχειον μέτρον*:

Solvitur acris hiems grata vice veris et Favoni
Trahuntque siccas machinae carinas
(*Horat.* Od. 1.4,1).

Digitized by Google

μετὰ δὲ τροχαϊκοῦ καταληκτικοῦ διμέτρου σχηματίζει τὸ *ἱππωνάκτειον μέτρον :*

Non ebur, neque aureum
Mea renidet in domo lacunar
(*Horat.* Od. 2, 18, 1).

Τὸ *ἰαμβικὸν ἀκατάληκτον δίμετρον* ἀπαντᾷ παρ' Ὁρατίῳ α') μετὰ ἰαμβικοῦ τριμέτρου *(ἐπῳδικὸν μέτρον) :*

Ibis liburnis inter alta navium
Amice, propugnacula
(*Horat.* Epod. 1, 1)

β') μετὰ δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου *(πρῶτος πυθιαμβικός) :*

Nox erat et caelo fulgebat luna sereno
Inter minora sidera.
(*Horat.* Épod. 15, 1).

Οἱ λεγόμενοι λογαοιδικοὶ στίχοι. Συνήθως καλοῦσι *λογαοιδικὸν* τὸν στίχον ἐκεῖνον, εἰς τὸν ὁποῖον ἀπαντῶσιν ἀναμεμειγμένοι δάκτυλοι (—⏑⏑) καὶ τροχαῖοι (—⏑). Περὶ τὸ πόδισμα τῶν στίχων τούτων ὑπάρχει μεγάλη ἀμφισβήτησις μεταξὺ τῶν σημερινῶν μετρικῶν. Ἐνταῦθα ἀκολουθοῦμεν τὴν ἁπλουστέραν ἄποψιν καὶ τὴν συμφωνοτέραν πρὸς τὴν ἐκ πρώτης ὄψεως εἰκόνα, τὴν ὁποίαν παρουσιάζουν οἱ στίχοι οὗτοι.

Οἱ λογαοιδικοὶ στίχοι δύνανται νὰ διαιρεθοῦν εἰς δύο κατηγορίας: τοὺς *ἁπλοῦς* (ἕνα μόνον δάκτυλον περιέχοντας) : ἀδώνειον, ἀριστοφάνειον, φερεκράτειον, γλυκώνειον, φαλαίκειον, σαπφικόν, ἀλκαϊκόν, καὶ τοὺς *συνθέτους* (περιέχοντας πλείονας τοῦ ἑνὸς δακτύλους) : ἐλάσσονα ἀσκληπιάδειον, μείζονα ἀσκληπιάδειον, μείζονα σαπφικόν.

*Λογαοιδικὰ ἁπλᾶ : Ἀδώνειον* ἐξ ἑνὸς δακτύλου καὶ ἑνὸς τροχαίου :

—⏑⏑—⏓

Terruit urbem
(*Horat.* Od. 1, 2, 4).

Χρησιμεύει ὡς τελευταῖος στίχος τῆς σαπφικῆς στροφῆς :

Jam satis terris nivis atque dirae
Grandinis misit Pater, et rubente
Dextera sacras jaculatus arces
Terruit urbem
(*Horat.* Od. 1. 2, 1)

*Ἀριστοφάνειον :* ἐξ ἑνὸς ἀδωνείου καὶ ἑνὸς τροχαίου :

—⏑⏑—⏑—⏓

Lydia, dic per omnes
(*Horat.* Od. 1. 8, 1)

Μετὰ τοῦ μεγάλου σαπφικοῦ ἀποτελεῖ τὸ *δεύτερον σαπφικὸν μέτρον :*

Lydia, dic per omnes
Te deos oro, Sybarim cur properes amando
Perdere
(*Horat.* Od. 1. 8, 1)

*Φερεκράτειον :* ἐξ ἑνὸς ἀδωνείου, οὗ προηγεῖται σπονδεῖος :

———⏑⏑—⏓

Quamvis pontica pinus
(*Horat.* Od. 1, 14, 11)

Χρησιμοποιεῖται εἰς μίαν ἐκ τῶν ἀσκληπιαδείων στροφῶν (δύο ἀσκληπιάδειοι, εἷς φερεκράτειος, εἷς γλυκώνειος) :

O navis referent in mare te novi
Fluctus! O quid agis ? fortiter occupa
Portum. Nonne vides ut
Nudum remigio latus
(*Horat.* Od. 1, 14, 1)

*Γλυκώνειον :* ἐξ ἑνὸς σπονδείου, ἑνὸς δακτύλου καὶ δύο τροχαίων, ὧν ὁ εἷς καταληκτικός :

⏑
———⏑⏑—⏑—

Sic te diva potens Cypri
(*Horat.* Od. 1, 3, 1)

Ἔχει συνήθως τριημιμερῆ τομὴν ἄρρενα, σπανιώτερον δὲ τροχαϊκὴν καὶ χρησιμοποιεῖται εἰς τρεῖς ἀσκληπιαδείους στροφάς : εἷς γλυκώνειος καὶ εἷς ἐλάσσων ἀσκληπιάδειος (*Horat.* Od. 1, 3, 1), τρεῖς ἀσκληπιάδειοι καὶ εἷς γλυκώνειος (*Horat.* Od. 1, 6, 1), δύο ἀσκληπιάδειοι, εἷς φερεκράτειος καὶ εἷς γλυκώνειος (*Horat.* Od. 1, 14, 1).

*Φαλαίκειον :* ἐκ σπονδείου (ἢ τροχαίου ἢ ἰάμβου), δακτύλου καὶ τριῶν τροχαίων :

——
⏑——⏑⏑—⏑—⏑—⏓
—⏑

Χρησιμοποιεῖται συνήθως ὑπὸ τοῦ Κατούλλου, οὐδέποτε δὲ ὑπὸ τοῦ Ὁρατίου :

Qui domo lepidum | novum libellum
Arida modo | pumic(e) expolitum.
(*Catul.* 1, 1).

*Σαπφικὸν* ἑνδεκασύλλαβον (ἢ *ἔλασσον σαπφικόν*) : ἐκ δακτύλου, τοῦ ὁποίου προηγοῦνται καὶ ἕπονται ἀνὰ δύο τροχαῖοι :

—⏑—⏓—⏑⏑—⏑—⏓

Jam satis terris nivis atque dirae
(*Horat.* Od. 1, 2, 1)

Τρεῖς τοιοῦτοι στίχοι μεθ' ἑνὸς ἀδωνείου ἀποτελοῦσι τὴν *σαπφικὴν στροφὴν* (*Horat.* Od. 1, 2, 1—4), ἡ ὁποία χρησιμοποιεῖται πολὺ ὑπὸ τοῦ Ὁρατίου (26 ᾠδαί).

*Ἀλκαϊκὸν* ἑνδεκασύλλαβον : εἶναι ὡσὰν σαπφικόν, τοῦ ὁποίου ἡ τελευταία συλλαβὴ μετεφέρθη εἰς τὴν ἀρχήν :

σαπφικόν : —⏑—⏓—⏑⏑—⏑—⏓

⏑
ἀλκαϊκόν : ⏓—⏑—⏑—⏑⏑—⏑—

Vides ut alta stet nive candidum
(*Horat.* Od. 1, 9, 1)

Δύο ἀλκαϊκὰ ἑνδεκασύλλαβα, μεθ' ἑνὸς ἀλκαϊκοῦ ἐννεασυλλάβου καὶ ἑνὸς ἀλκαϊκοῦ δεκασυλλάβου, ἀποτελοῦν τὴν *ἀλκαϊκὴν στροφὴν* (*Horat.* Od. 1, 9, 1—4), ἡ ὁποία χρησιμοποιεῖται ἐπίσης πολὺ ὑπὸ τοῦ Ὁρατίου (37 ᾠδαί).

*Λογαοιδικὰ σύνθετα : Ἀσκληπιάδειον ἔλασσον :* ἐκ σπονδείου, δακτύλου, μακρᾶς συλλαβῆς, δακτύλου, τροχαίου καὶ μακρᾶς ἢ βραχείας συλλαβῆς (καταληκτικοῦ τροχαίου) :

⏑
———⏑⏑——⏑⏑—⏑—

Maecenas atavis | edite regibus
(*Horat.* Od. 1, 1, 1)

Χρησιμοποιεῖται ἢ μόνος (*Horat.* Od. 1, 1, 1) ἢ μετὰ γλυκωνείου (*Horat.* Od. 1, 3, 1—2) ἢ τρεῖς τοιοῦτοι μεθ' ἑνὸς γλυκωνείου (*Horat.* Od. 1, 6, 1) ἢ δύο τοιοῦτοι μεθ' ἑνὸς φερεκρατείου καὶ ἑνὸς γλυκωνείου (*Horat.* Od. 1, 14, 1).

*Ἀσκληπιάδειον μεῖζον :* Ἰσοδυναμεῖ πρὸς ἀσκληπιάδειον ἔλασσον, μεταξὺ τῶν δύο κώλων τοῦ ὁποίου παρενεβλήθη ἓν καταληκτικὸν ἀδώνειον :

⏑
———⏑⏑— | —⏑⏑— | —⏑⏑—⏑

Mordaces aliter | diffugiunt | sollicitudines
(*Horat.* Od. 1, 18, 4).

Ἡ τομὴ γίνεται πρὸ καὶ μετὰ τὸν καταληκτικὸν ἀδώνειον, χωρίζουσα οὕτω τὰ στοιχεῖα, ἐκ τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται ὁ στίχος.

*Σαπφικὸν μεῖζον:* Εἶναι ἑνδεκασύλλαβον σαπφικόν, εἰς τὸ ὁποῖον παρεμβάλλεται ἓν καταληκτικὸν ἀδώνειον :

—⏑——+—⏑⏑—+—⏑⏑—⏑—⏓

Αἱ τομαὶ δὲν συμπίπτουν πρὸς τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ τέλος τοῦ ἀδωνείου, ἀλλ' εἶναι μία πενθημιμερὴς καὶ μία ἑφθημιμερής :

Te deos oro Sybarin | cur properes amando
(*Horat.* Od. 1, 8. 2)

Χρησιποποιεῖται ὑπὸ τοῦ Ὁρατίου, προηγουμένου ἑνὸς ἀριστοφανείου (*Horat.* Od. 1, 8, 1—2).

*Ἀλκαϊκὸν ἐννεασύλλαβον* καὶ *ἀλκαϊκὸν δεκασύλλαβον*. Τὸ πρῶτον εἶναι τροχαϊκὸν δίμετρον τοῦ ὁποίου προηγεῖται ἀνάκρουσις :

⏑—⏑—⏓—⏑—⏓
—

Silvae laborantes | geluque (*Horat.* Od. 1, 9, 3)

Τὸ δεύτερον ἀποτελεῖται ἐκ δύο δακτύλων καὶ δύο τροχαίων :

—⏑⏑—⏑⏑—⏑—⏓

Flumina constiterint acuto (*Horat.* Od. 1, 9, 4).

Τὸ ἀλκαϊκὸν ἐννεασύλλαβον καὶ τὸ δεκασύλλαβον χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν *ἀλκαϊκὴν στροφὴν* (δύο ἀλκαϊκοὶ ἑνδεκασύλλαβοι, εἷς ἀλκαϊκὸς ἐννεασύλλαβος καὶ εἷς δεκασύλλαβος. *Horat.* Od, 1, 9, 1—4).

Ἀπαγγελία τῶν λατινικῶν στίχων. Ὡς πρὸς τὸν τρόπον, καθ' ὃν ἀπηγγέλλοντο οἱ λατινικοὶ στίχοι, ὑπάρχει ἡ αὐτὴ διαφωνία καὶ ἀβεβαιότης μεταξὺ τῶν μετρικῶν, οἵα καὶ προκειμένου περὶ τῶν ἑλληνικῶν. Ὁ Κοϊντιλιανὸς (1, 8, 2) λέγει ἀορίστως ὅτι ἀναγινώσκοντες τοὺς στίχους οὔτε πρέπει νὰ ᾄδωμεν, ἀλλ' οὔτε καὶ νὰ τοὺς ἀπαγγέλλωμεν ὡς πεζά. Ὁ Κικέρων εἶναι κάπως ἀκριβέστερος : ἐπαινεῖ τὸν Φίλωνα τὸν Λαρισαῖον, διότι ὄχι μόνον παρενέβαλλε στίχους εἰς τὰ μαθήματα τῆς φιλοσοφίας ὅπως καὶ ὁ στωϊκὸς Διονύσιος, ἀλλὰ καὶ διότι καθίστα κατὰ τὴν ἀνάγνωσίν των καταληπτὸν τὸν ρυθμόν των : «Philo proprium numerum .... adjungebat» (Tuscul. disp. 2, 11, 16), Ἴσως ἡ καλὴ ἀπαγγελία νὰ συνίστατο εἰς τὴν αἰσθητοποίησιν τοῦ μετρικοῦ τόνου καὶ ὄχι τοῦ φυσικοῦ τόνου τῶν λέξεων, ἢ μᾶλλον εἰς τὸν συνδυασμὸν τοῦ φυσικοῦ ρυθμοῦ τῆς φράσεως μετὰ τοῦ μετρικοῦ ρυθμοῦ αὐτῆς. Εἰς τὸ λατινικὸν ἑξάμετρον ὁ ἰσχυρὸς χρόνος (ictus) συμπίπτει πρὸς τὸν φυσικὸν τόνον εἰς τοὺς δύο τελευταίους πόδας, καὶ τοῦτο βεβαίως καθίστα αἰσθητότερον τὸν ρυθμὸν τοῦ στίχου. Ἐπίσης ἱκανὴν ὑπηρεσίαν εἰς τὴν μελῳδικότητα τῆς ἀπαγγελίας προσέφερον καὶ αἱ τομαί, αἱ ὁποῖαι συνωδεύοντο ὑπὸ ἐλαφρᾶς παύσεως, καὶ συνεδυάζοντο καταλλήλως μετὰ τῶν παύσεων, τὰς ὁποίας ὑπηγόρευεν ἡ ἔννοια τῶν ἐν τῷ στίχῳ περιλαμβανομένων λέξεων.

Ὁ τρόπος τοῦ ἀναγνώσκειν τὰ ποιήματα μετεβλήθη σὺν τῇ παρόδῳ τοῦ χρόνου. Τῆς διακρίσεως μακρῶν καὶ βραχειῶν συλλαβῶν ἀποσβεννυμένης ὀλίγον κατ' ὀλίγον, ἡ προσῳδιακὴ ἀπαγγελία ἀπέβη ἐξ ὁλοκλήρου τεχνητὴ καὶ ἀπετέλεσεν ἀσχολίαν τῶν λογίων μόνον, οἱ ὁποῖοι ὅμως δὲν κατώρθωσαν νὰ διασώσουν τὴν παράδοσιν.

Λατῖνοι μετρικοί. Οἱ πρῶτοι Λατῖνοι ποιηταί, ὅπως ὁ *Ἔννιος*, ἦσαν ταυτοχρόνως καὶ γραμματικοὶ καὶ ἠσχολήθησαν ἑπομένως καὶ μὲ τὴν μετρικήν. Ἐπίσης ὁ *Λουκίλιος* ἐπραγματεύθη περὶ μέτρων εἰς τὸ IX βιβλίον τῶν «Σατιρῶν» του, ὁ *Οὐάρρων* εἰς τὸ IV βιβλίον τοῦ «De sermone latino» καὶ εἰς τὸ «De lingua latina». Ὁ *Κικέρων* (πρὸ πάντων εἰς τὸν «Orator») καὶ ὁ *Κοϊντιλιανὸς* (9, 4, 45—147) δίδουν πολυτίμους πληροφορίας, ὁ *Καίσιος Βάσσος*, κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Νέρωνος, συνέγραψεν ἰδιαίτερον βιβλίον περὶ μετρικῆς, ὁ *Ἰούβας* (Γ' αἰὼν ἢ τέλη τοῦ Β') συνέθεσε σχετικὸν «Ἐγχειρίδιον» εἰς ὀκτὼ τοὐλάχιστον βιβλία. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω ἔργων μόνον ἀποσπάσματα σῴζονται. Κατέχομεν ἐξ ἄλλου τὰ ἀκόλουθα ἔργα : τοῦ *Τερεντιανοῦ Μαύρου* (περὶ τὸν Γ' αἰῶνα) : «De litteris, de syllabis, de metris libri tres», τοῦ *Γ. Μαρίνου Βικτωρίνου* (Δ' αἰών) : «Ars grammatica de orthographia et de metrica ratione» καὶ τοῦ *Διομήδους* (Δ' αἰὼν) τὸ Γ' βιβλίον τῆς «Ars grammatica» αὐτοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *F. Plessis*, Métrique grecque et latine (Paris 1889).— *L. Havet* καὶ *L. Duvau*, Cours élémentaire de métrique grecque et latine (στ' ἐκδ. 1924).—*W. Christ*, Metrik der Griechen und Romer (β' ἐκδ. Leipzig 1879).— *H. Gleditsch*, Metrik (ἐν *Iw. Müller*, Handbuch, II, 3) (Munich 1901 μὲ πληρεστάτην βιβλιογραφίαν).— *E. Bickel*, Antike Metrik ἐν *A. Gercke* καὶ *E. Norden*, Einleitung in die Altertumswissenschaft I, β' ἐκδ. (Leipzig 1912).— *L. Vernier*. Petit traité de métrique grecque et latine (Paris 1894).— *W. R. Hardie*, Res metrica (Oxford 1920).— *J. v. Bainvel*, Métrique latine (Paris 1893).— *L. Quicherat*, Traité de versificatiou latine.— *L. Müller*, De re metrica poetarum Latinorum (β' ἐκδ. St Petersbourg — Leipzig 1894).— *P. Grumbach - A. Waltz*, Prosodie et métrique latines.— *H. Bornecque*, Précis de prosodie et de métrique latines (Paris 1900). — *G. Schiappoli*, Metrica e prosodia latina (β' ἐκδ. Turino 1911). — *W. M. Lindsay*, Éarly latin verse (Oxford 1922).

Θ. Π.

***Νεοελληνικὴ (βυζαντινὴ καὶ νεωτέρα) μετρική.*** *1. Ἱστορικά.* Ἓν τῶν σπουδαιοτέρων φαινομένων κατὰ τὴν ἐξέλιξιν τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης, προωρισμένον νὰ ἐπιδράσῃ καὶ ἐπὶ τῆς διαμορφώσεως τῆς μετρικῆς, εἶναι ἀναμφιβόλως ἡ ἀπώλεια τῆς προσῳδίας, ἡ ἐξίσωσις δηλαδὴ τῶν μακρῶν καὶ βραχέων φωνηέντων. Ὁ χρόνος τῆς μεταβολῆς ταύτης δὲν εἶναι ἀκριβῶς καθωρισμένος, οὔτε ἐπετελέσθη αὕτη διὰ μιᾶς καὶ εἰς ὅλας τὰς χώρας, εἰς τὰς ὁποίας ὡμιλεῖτο ἡ ἑλληνικὴ γλῶσσα, συγχρόνως· ἀσφαλὲς ὅμως εἶναι ὅτι ἤδη τῷ 200 μ. Χ. δὲν ἐγίνετο διάκρισις εἰς τὴν ποσότητα τῶν φωνηέντων. Ἑπόμενον ἦτο ἡ τοιαύτη μεταβολὴ νὰ ἐπιδράσῃ ριζικῶς ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς μετρικῆς, ἥτις ἐστερεῖτο οὕτω τῆς βάσεώς της. Ἀντὶ τῆς προσῳδίας ὡς θεμέλιον τῆς νέας μετρικῆς ἐτίθετο ἤδη ὁ τόνος.

Ὁ τρόπος, κατὰ τὸν ὁποῖον ἐπετελέσθη ἡ μεταβολὴ αὕτη, δὲν ἐγένετο εἰσέτι γνωστὸς ὑπὸ τῆς ἐπιστήμης. Εἰς τοῦτο δὲ συντελεῖ καὶ τὸ γεγονὸς ὅτι ἀρχαΐζοντες οἱ Βυζαντινοὶ δὲν ἐχρησιμοποίησαν εἰμὴ πολὺ ἀργὰ τὸν τόνον εἰς τὴν στιχουργίαν των, ἐξακολουθοῦντες νὰ στιχουργοῦν συμφώνως πρὸς τοὺς νεκροὺς πλέον κανόνας τῆς προσῳδίας. Ἀλλὰ καὶ οἱ προσῳδιακοὶ οὗτοι στίχοι εἶναι ἐπηρεασμένοι, ἐν ἀρχῇ ἴσως ἀσυναισθήτως, ἔπειτα ὅμως ἀσφαλῶς συνειδητῶς, ἐκ τῆς τονικῆς ποιήσεως. Ἤδη εἰς τοὺς χωλιάμβους τοῦ Βαβρίου (Β' μ. Χ. αἰὼν) παρατηρεῖται ὅτι παρὰ τὴν προσῳδίαν λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν καὶ ἡ θέσις τῶν τόνων· τοῦτο ὅμως γίνεται ἰδίως φανερὸν εἰς τοὺς ἑξαμέτρους τοῦ Νόννου (Ε' μ. Χ. αἰών).

Τὰ συνηθέστερα προσῳδιακὰ μέτρα τῶν Βυζαντινῶν ἦσαν ὁ δακτυλικὸς ἑξάμετρος (ἐν συνδυασμῷ μετὰ τοῦ πενταμέτρου εἰς τὰ ἐλεγειακὰ δίστιχα) καὶ ὁ ἀνακρεόντειος δίμετρος καὶ τρίμετρος. Τὸ μέτρον ὅμως, τὸ ὁποῖον ὑπερίσχυσε καὶ ἐπεσκίασε τὰ λοιπά, ἰδίως κατὰ τοὺς ὑστερωτέρους χρόνους, εἶναι ὁ ἰαμβικὸς τρίμετρος. Ὁ τρίμετρος τῶν Βυζαντινῶν διαφέρει τοῦ ἀττικοῦ κατὰ πολλὰ καὶ ἰδίως εἰς τὸ ὅτι ἀναγινωσκόμενος τονικῶς δὲν στερεῖται ρυθμοῦ. Ἐν τῇ μακρᾷ βυζαντινῇ περιόδῳ δὲν ἔμεινεν ἄνευ ἐξελίξεως, διάφορος δ' εἶναι ἡ τεχνικὴ αὐτοῦ εἰς τὰ ποιήματα τοῦ Γεωργίου Πισίδου τὸν Ζ' αἰῶνα καὶ εἰς τὰ τοῦ Μανουὴλ Φιλῆ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ', τοῦ θεωρουμένου ὡς ἀναμορφωτοῦ καὶ ρυθμιστοῦ τῆς μορφῆς τοῦ στίχου τούτου. Γεγονὸς ὅμως εἶναι ὅτι δύο κανόνες τηροῦνται καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς ἐξελίξεως αὐτοῦ : α') ὁ στίχος ἔχει πάντοτε δώδεκα συλλαβὰς καὶ β') ἡ προτελευταία εἶναι πάντοτε τονισμένη. Ὁ πρῶτος κανὼν εἶναι ἄνευ ἐξαιρέσεως, οὐχὶ ὅμως καὶ ὁ δεύτερος. Κανονικῶς ἐπίσης ἔχει ὁ στίχος πενθημιμερῆ ἢ ἑφθημιμερῆ τομήν, καὶ δή : κατὰ τὴν πενθημιμερῆ τὸ πρῶτον ἡμιστίχιον εἶναι ὀξύτονον, κατὰ δὲ τὴν ἑφθημιμερῆ προπαροξύτονον (καὶ οἱ κανόνες αὐτοὶ παρουσιάζουν πολλὰς ἐξαιρέσεις). Ἔχομεν δηλαδὴ τὸ σχῆμα (ἐν τῷ προκειμένῳ ἄρθρῳ : ⏑ σημαίνει πάντοτε ἄτονον συλλαβὴν καὶ — τὴν τονουμένην) :

⏑—⏑⏑— | ⏑⏑—⏑⏑—⏑ ἢ
⏑⏑—⏑—⏑⏑ | ⏑⏓⏑—⏑

π. χ.

χθὲς κόκκον ἰδὼν | καὶ λαβὼν τοῖς δακτύλοις
τὴν φαιδρὰν ὠχρότητα | τῆς ἀσαρκίας.

Οἱ στίχοι ὅμως οὗτοι, κατὰ τὴν ἀρχαίαν προσῳδίαν, εἶναι κανονικοὶ ἰαμβικοὶ τρίμετροι.

Παραλλήλως πρὸς τοὺς προσῳδιακοὺς στίχους καὶ ἰδίως τὸν ἰαμβικὸν τρίμετρον, ἀρχίζουν, ἀπὸ

Digitized by Google

τοῦ Ι΄ αἰῶνος, νὰ ἐμφανίζωνται εἰς τὴν βυζαντιακὴν γραμματείαν οἱ καθολοκληρίαν ἐπὶ τῶν τόνων βασιζόμενοι στίχοι, οὕς, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς ἄλλους καὶ ἴσως οὐχὶ ἄνευ τινὸς περιφρονήσεως, ἐκάλουν οἱ λόγιοι *πολιτικούς*, καὶ ἰδίως ὁ σπουδαιότερος τούτων ὁ *δεκαπεντασύλλαβος* (βλ. λ. καὶ λ. *πολιτικός*). Εἰς δεκαπεντασύλλαβον εἶναι συντεταγμένα ἅπαντα σχεδὸν τὰ βυζαντινὰ ποιήματα τὰ ἐπὶ τοῦ τόνου στηριζόμενα, εἴτε δημοτικὰ εἶναι ταῦτα, εἴτε δημιουργήματα λογίων. Εἶναι ὅμως ἀσφαλὲς ὅτι ὁ δεκαπεντασύλλαβος, εἴτε ἄλλοι τονικοὶ στίχοι, ἦσαν ζῶντες παρὰ τῷ λαῷ πολὺ πρὸ τοῦ Ι΄ αἰῶνος, ἴσως ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῆς βυζαντινῆς ἐποχῆς. Ἀλλὰ καὶ πλὴν τοῦ δεκαπενταςυλλάβου διεσώθησαν καὶ ἄλλα εἴδη τονικῶν βυζαντινῶν στίχων, ἰδίως ᾀσμάτια λαϊκὰ σκωπτικὰ (τροχαϊκὰ καὶ ἰαμβικά), ἀλλὰ καὶ ἔργα λογίων.

Μεταξὺ τῶν προσῳδιακῶν καὶ τῶν τονικῶν βυζαντινῶν στίχων κατέχει ἰδίαν θέσιν ἡ ἰδιόρρυθμος *ρυθμικὴ* ἐκκλησιαστικὴ ποίησις. Ἐπὶ μακρὸν ἐθεωρεῖτο ὅτι δὲν διέφερεν αὕτη τοῦ πεζοῦ λόγου, ὕστερον δὲ ἀνεζητήθησαν ἐν αὐτῇ ἴχνη ἀρχαίας μετρικῆς. Εἰς τὸ ἐξησκημένον ὅμως οὖς καθίσταται ἀμέσως φανερὸν ὅτι στηρίζεται ἐπὶ τοῦ τόνου, χωρὶς νὰ λαμβάνῃ ὑπ' ὄψιν τὴν προσῳδίαν, ἀλλὰ καὶ χωρὶς ν' ἀκολουθῇ τὰς γενικὰς ἀρχὰς καὶ τοὺς κανόνας τῶν λοιπῶν ἐπὶ ποδῶν στηριζομένων τονικῶν στίχων. Ἔστω ὡς παράδειγμα:

Ἡ ζωὴ ἐν τάφῳ
κατετέθης, Χριστέ,
καὶ ἀγγέλων στρατιαὶ ἐξεπλήττοντο
συγκατάβασιν δοξάζουσαι τὴν σήν.

Χαρακτηριστικὸν διὰ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μετρικὴν εἶναι ὅτι, ὅπως εἰς τὰ ἀρχαῖα στροφικὰ ποιήματα, ἡ θέσις τῶν τόνων εἰς τὰς ἑπομένας στροφὰς εἶναι ἀκριβῶς ἡ αὐτή.

Ἡ ἅλωσις τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπέφερε μεταβολὴν εἰς τὰ μετρικὰ ταῦτα συστήματα. Ὁ ἰδιότυπος ἰαμβικὸς τρίμετρος ἔπαυσε πλέον καλλιεργούμενος, τὰ δὲ πολυάριθμα προσῳδιακὰ ποιήματα τῶν λογίων τῆς Ἀναγεννήσεως, συντεταγμένα σχεδὸν κατὰ κανόνα εἰς δακτυλικοὺς ἑξαμέτρους (καὶ πενταμέτρους), ἔχουν ἀλλοῖον ἢ τὰ βυζαντινὰ χαρακτῆρα. Ἀποκλειστικῶς πλέον εἰς τὴν νέαν ποίησιν ἐγίνετο χρῆσις τονικῶν στίχων, καὶ ἰδίως τοῦ δεκαπεντασυλλάβου, κατισχύσαντος διὰ τῆς ἀκμῆς τῆς κρητικῆς λογοτεχνίας καὶ τῶν δημοτικῶν ᾀσμάτων. Πλὴν ὀλίγων ἐξαιρέσεων, οὗτος ἦτο ὁ κατ' ἐξοχὴν στίχος τῆς νεοελληνικῆς ποιήσεως μέχρι τῶν νεωτέρων χρόνων (τέλη ΙΗ΄, ἀρχαὶ ΙΘ΄ αἰῶνος), ὁπότε νέα εἰσάγονται μέτρα ἀφ' ἑνὸς ὑπὸ τῶν Φαναριωτῶν ποιητῶν καὶ ἀφ' ἑτέρου ὑπὸ τῶν Ἑπτανησίων, καὶ ἰδίως τοῦ Σολωμοῦ, κατ' ἀπομίμησιν ἰταλικῶν. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν ἐπλούτισε τὴν στιχουργίαν μὲ νέαν ποικιλίαν ρυθμῶν ἡ ἐφευρετικότης καὶ ἡ ἰδιοφυΐα τῶν ποιητῶν μας.

2. *Μορφολογία*. Ἡ νεοελληνικὴ μετρικὴ (συμπεριλαμβάνομεν ὑπὸ τὸν ὅρον τοῦτον καὶ τὴν τονικὴν βυζαντινὴν) στηρίζεται ἐπὶ τοῦ τόνου, τοῦ τόνου δὲ ἡ ρυθμικὴ κατὰ ὡρισμένα διαστήματα ἐπανάληψις δημιουργεῖ τὸν στίχον. Τὴν θεμελιώδη μετρικὴν μονάδα, διὰ τῆς ἐπαναλήψεως τῆς ὁποίας σχηματίζεται ὁ στίχος, ἀποτελοῦν καὶ ἐν τῇ νέᾳ, ὡς καὶ ἐν τῇ ἀρχαίᾳ μετρικῇ, οἱ *πόδες*. Ἕκαστοςποὺς ἀποτελεῖται ἐκ τοῦ συνδυασμοῦ μιᾶς τονουμένης συλλαβῆς καὶ μιᾶς ἢ δύο ἀτόνων, τῆς τονουμένης συλλαβῆς ἀποτελούσης τὴν *θέσιν*, τῶν δὲ ἀτόνων τὴν *ἄρσιν*. Ἡ νέα μετρικὴ δὲν δέχεται τὴν ποικιλίαν τῶν ποδῶν τῆς ἀρχαίας, δύναται δὲ νὰ στιχουργήσῃ ἐπὶ τῇ βάσει πέντε μόνον ποδῶν: τοῦ *ἰάμβου*, τοῦ *τροχαίου*, τοῦ *ἀναπαίστου*, τοῦ *δακτύλου* καὶ τοῦ *ἀμφιβράχεος*. Οἱ πόδες οὗτοι τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς οὐδεμίαν σχέσιν, πραγματικὴν ἢ γενετικήν, ἔχουν πρὸς τοὺς ὁμωνύμους τῆς ἀρχαίας, τὰ δὲ ὀνόματα εἶναι ἁπλῶς συμβατικά.

Ὁ *ἴαμβος* ἀποτελεῖται ἐκ μιᾶς ἀτόνου καὶ μιᾶς τονουμένης συλλαβῆς: ∪—. Πόδα ἰαμβικὸν ἀποτελοῦσιν αἱ λέξεις: χαρά, παιδί, καλά. Διὰ τῆς ἐπαναλήψεως τοῦ ποδὸς αὐτοῦ σχηματίζονται οἱ ἰαμβικοὶ στίχοι, οἷον:

βαρεῖ δεξιά, βαρεῖ ζερβιὰ (Δημοτ.)
∪—, ∪—, ∪—, ∪—
Καὶ τώρα μαῦρος μέσα στὴ νυχτιὰ (Πορφύρας)
∪—, ∪—, ∪—, ∪—, ∪—

Ὁ *τροχαῖος* σχηματίζεται ἐκ μιᾶς τονουμένης καὶ μιᾶς ἀτόνου συλλαβῆς: —∪. Αἱ λέξεις: ἔχω, τρέμω, ὅ,τι ἀποτελοῦν πόδας τροχαϊκούς. Τροχαϊκοὶ εἶναι οἱ στίχοι:

μπρὲ χρυσό μου ταίρι (Δημοτ.)
—∪, —∪, —∪
τὄνα χτύπα τἄλλο χέρι (Σολωμός)
—∪, —∪, —∪, —∪

Ὁ *ἀνάπαιστος* ἀποτελεῖται ἐκ δύο ἀτόνων καὶ μιᾶς τονουμένης συλλαβῆς: ∪∪—. Πόδες ἀναπαιστικοί: εὐγενής, καρτερῶ, ὁ γαμπρός. Στίχοι ἀναπαιστικοί:

τὰ ξανθά σου μαλλιὰ (Δημοτ.)
∪∪—, ∪∪—
καὶ στὴν κόμη στεφάνι φορεῖ (Σολωμός)
∪∪—, ∪∪—, ∪∪—

Ὁ *δάκτυλος* σχηματίζεται ἐκ μιᾶς τονουμένης καὶ δύο ἀτόνων συλλαβῶν: —∪∪. Πόδες δακτυλικοί: ἔφτασα, πάλαιμα, ὅλοι μας. Στίχοι δακτυλικοί:

σπᾶρτε το, σύρτε το
—∪∪, —∪∪
ξέρω μιὰ λύρ' ἀκριβώτατη
—∪∪, —∪∪, —∪∪

Ὁ *ἀμφίβραχυς* τέλος ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν συλλαβῶν, ὧν ἡ μεσαία εἶναι ἡ τονουμένη: ∪—∪. Πόδες ἀμφιβραχικοί: πεθαίνω, κρεβάτι, ἡ μάνα. Στίχοι ἀμφιβραχικοί:

λουλούδι στὸ βράχο
∪—∪, ∪—∪
ἡ δόξα δεξιὰ συντροφεύει
∪—∪, ∪—∪, ∪—∪

Δεδομένου ὅτι ἡ νεοελληνικὴ μετρική, βασιζομένη ἐπὶ τοῦ τόνου, δὲν δέχεται τὰς ἐν τῇ ἀρχαίᾳ μετρικῇ ἐπιτρεπομένας ἀναλύσεις τῶν μακρῶν εἰς περισσοτέρας βραχείας κ.ο.κ., ὁ ἀριθμὸς τῶν συλλαβῶν ἑκάστου ποδὸς εἶναι ἀκριβῶς καθωρισμένος, δυνάμεθα δὲ νὰ διαιρέσωμεν τοὺς πόδας τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς εἰς δύο κατηγορίας: τοὺς δισυλλάβους (ἴαμβος, τροχαῖος) καὶ τοὺς τρισυλλάβους (ἀνάπαιστος, δάκτυλος, ἀμφίβραχυς)· ἡ διαίρεσις αὕτη μᾶς εἶναι χρήσιμος, διότι ἑκάστη κατηγορία ἀκολουθεῖ ἰδιαιτέρους κανόνας ἐν τῇ στιχουργίᾳ.

Διὰ τὸν αὐτὸν ὡς ἀνωτέρω λόγον καὶ ἑκάστου στίχου αἱ συλλαβαὶ εἶναι ἀκριβῶς καθωρισμέναι, μὴ δυνάμεναι ν' αὐξήσουν ἢ νὰ ἐλαττωθοῦν, ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ δὲ τῶν συλλαβῶν (καὶ οὐχὶ ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν μέτρων ἢ τῶν ποδῶν, ὡς ἐν τῇ ἀρχαίᾳ) λαμβάνει ἕκαστος νεοελληνικὸς στίχος τὴν δευτέραν αὐτοῦ (συλλαβικὴν) ὀνομασίαν: ἰαμβικὸς ὀκτασύλλαβος, τροχαϊκὸς δωδεκασύλλαβος κ. ο. κ.

*Γενικαὶ ἀρχαί*. Φαινόμενον κατ' ἐξοχὴν χαρακτηριστικὸν τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς καὶ πανταχοῦ ἐκδηλούμενον εἶναι ἡ *συνίζησις*, ἤτοι ἡ ἐν τῷ στίχῳ προφορὰ δύο φωνηέντων (κάποτε καὶ τριῶν), ἀνηκόντων εἰς δύο λέξεις, εἰς ἕνα χρόνον: ἡ αὐ-γή τί ἔ-χεις. Παράλληλον πρὸς τὴν συνίζησιν εἶναι τὸ γραμματικὸν φαινόμενον τῶν *διφθόγγων* τῆς νεοελληνικῆς γλώσσης, εἰς τὸ ὁποῖον δὲν δίδεται συνήθως ἡ δέουσα προσοχή. Ἔχει δηλαδὴ ἡ νεοελληνικὴ γλῶσσα διφθόγγους, ἤτοι δύο φθόγγους συνεκφωνουμένους εἰς ἕνα χρόνον: άι, έι, όι κλπ. (πετάει, κλαίει, μοι-ρο-λόι, ἀι-τός, λεϊ-μό-νι, ὀι-μέ). Καταχρηστικῶς ἐπίσης κατατάσσεται ἐν τοῖς διφθόγγοις ὁ συνδυασμὸς τοῦ ἡμιφώνου j μετὰ φωνήεντος (παι-διά, νιός, πιέ). Συνίζησις καὶ δίφθογγοι δίδουσιν εἰς τὸν στίχον ποικιλίαν, ἧς ἄλλως στερεῖται:

Κόρη ὅταν ἐφιλιώμαστε νύχτά ἦταν, ποιὸς μᾶς εἶδε; (Δημ.)
Πές μου, Ἀνδρεῖε, τί μελετοῦνε
οἱ γενναῖοι σου στοχασμοί (Σολωμός).

Τὴν συνίζησιν, παρουσιαζομένην συχνότατα εἰς τὰ δημοτικὰ τραγούδια, ἀνέπτυξε συμφώνως πρὸς τὸ πνεῦμα τῆς γλώσσης ἡ εἰς τὴν δημοτικὴν γλῶσσαν γεγραμμένη ποίησις, τῆς καθαρευούσης ἀπαγορευούσης ρητῶς καὶ θεωρούσης ὡς ξενισμὸν τὴν χρῆσιν αὐτῆς, ἐπιτρεπούσης δὲ μόνον τὴν *ἔκθλιψιν*.

Ὁ μετρῶν νεοελληνικὸν στίχον, πλὴν τοῦ συνηθεστάτου τούτου φαινομένου τῆς συνιζήσεως, ὀφείλει νὰ ἔχῃ ὑπ' ὄψιν του ὅτι ὁ μετρικὸς τόνος διαφέρει τοῦ γραμματικοῦ, μόνον δὲ ἐπὶ τοῦ πρώτου στηρίζεται ἡ στιχουργία. Δὲν πρέπει δηλαδὴ νὰ πλανᾶται ἐκ τοῦ γραφομένου τόνου, ὅστις συχνάκις δὲν προφέρεται (ὡς π.χ. οἱ τόνοι τῶν ἄρθρων, μορίων κτλ.), ἀλλὰ νὰ δίδῃ προσοχὴν μόνον εἰς τὸν ἀκουόμενον. Ὁ στίχος λ.χ.:

ἀπὸ τὴν περηφάνεια του κι' ἀπὸ τὴ λεβεντιά του

ἔχει μόνον δύο μετρικοὺς τόνους, τῶν τόνων τοῦ ἄρθρου καὶ τῆς προθέσεως μὴ ἀκουομένων κατὰ τὴν ἐκφώνησιν τοῦ στίχου καὶ συνεπῶς μὴ ὑπολογιζομένων.

Εἰς τ' ἀνωτέρω παραδείγματα κατεβλήθη φροντίς, ὅπως οἱ στίχοι ἀποτελοῦνται ἐξ ἀκεραίου ἀριθμοῦ ποδῶν. Συχνότατα ὅμως τὸ τέλος τοῦ στίχου δὲν συμπίπτει μὲ τὸ τέλος τοῦ ποδός:

Στρατιώτης καὶ τεχνίτης τὸ κοντάρι (Παλαμᾶς)
∪—, ∪—, ∪—, ∪—, ∪—, ∪
Στῶν Ψαρῶν τὴν ὁλόμαυρη ράχη (Σολωμός)
∪∪—, ∪∪—, ∪∪—, ∪

Εἰς τοὺς ἀνωτέρω στίχους μετὰ τὸ τέλος τοῦ τελευταίου ποδὸς ἀκολουθεῖ ἄτονος συλλαβή, ἥτις ἀποτελεῖ διὰ τὸν πρῶτον (ἰαμβικὸν) τὸ ἥμισυ, διὰ δὲ τὸν δεύτερον (ἀναπαιστικὸν) τὸ τρίτον ἑνὸς ποδός. Εἰς τοὺς τρισυλλάβους πόδας δυνατὸν μετὰ τὸν τελευταῖον πόδα ν' ἀκολουθοῦν δύο συλλαβαί:

Ξύπνα, δροσιὰ τῆς αὐγῆς, καὶ φεγγάρι (Παλαμᾶς)
—∪∪, —∪∪, —∪∪, —∪

Ἐκ τῆς θέσεως τοῦ τόνου εἰς τὸ τέλος τοῦ στίχου, οὗτος διακρίνεται εἰς *ὀξύτονον*, *παροξύτονον* καὶ *προπαροξύτονον*.

Στὸ ρημοκλῆσι τοῦ Δηροῦ (Δημοτ.)
Τὰ τραγούδια μου τἄλεγες ὅλα (Σολωμός)
Γιαννιώτικα, Σμυρνιώτικα, Πολίτικα (Παλαμᾶς)

Συνηθέστεροι εἶναι οἱ παροξύτονοι.

Ἡ νεοελληνικὴ γλῶσσα ἀποτελεῖται κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ πολυσυλλάβων λέξεων· ἔχει ἑπομένως πολὺ περισσοτέρας συλλαβὰς ἀτόνους ἢ τονουμένας. Λόγῳ τοῦ χαρακτῆρός της τούτου ἡ κανονικὴ ἀνὰ δύο συλλαβὰς ἐπανάληψις τοῦ τόνου ἀποβαίνει ἀδύνατος, σπανιώτατοι δ' εἶναι οἱ στίχοι οἱ τονίζοντες (μετρικῶς) ἁπάσας τὰς ἀρτίας των (ἰαμβικοὶ) ἢ τὰς περιττὰς (τροχαϊκοὶ) συλλαβάς. Τοὐναντίον, συχνότατα τὴν θέσιν μιᾶς τονουμένης συλλαβῆς καταλαμβάνει μία ἄτονος. Οὕτως ὁ ἰαμβικὸς ὀκτασύλλαβος σπανίως ἔχει τὴν μορφήν:

βαριὰ βροντοῦν, πικρὰ βαροῦν,

ἐνῷ συχνόταται εἶναι αἱ ἀκόλουθοι μορφαί:

στὸ ρημοκλῆσι τοῦ Δηροῦ
δυνάμωσε τοὺς Χριστιανοὺς κ. ἄ.

Εἰς τὸν πρῶτον στίχον τονίζονται (μετρικῶς) μόνον ἡ 4η καὶ ἡ 8η συλλαβή, μένουν δ' ἄτονοι ἡ 2α καὶ ἡ 6η, ἐνῷ εἰς τὸν δεύτερον στίχον τονίζονται μόνον ἡ 2α καὶ ἡ 8η, μενουσῶν ἀτόνων τῆς 4ης καὶ τῆς 6ης.

Ἡ πρώτη στροφὴ τοῦ ποιήματος εἰς τὸν «Μπάϊρον» τοῦ Σολωμοῦ:

Λευθεριά, γιὰ λίγο πάψε
νὰ χτυπᾶς μὲ τὸ σπαθί.
Τώρα σίμωσε καὶ κλάψε
εἰς τοῦ Μπάϊρον τὸ κορμὶ

ἀποτελουμένη ἐκ τροχαϊκῶν ὀκτασυλλάβων ἔχει τὴν ἀκόλουθον μορφήν:

∪∪—∪—∪—∪
∪∪—∪∪∪—
—∪—∪∪∪—∪
∪∪—∪∪∪—

Ἐκ τῶν παραδειγμάτων τούτων γίνεται φανερὸν ποίαν ποικιλίαν ρυθμοῦ προσλαμβάνει κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἡ νεοελληνικὴ στιχουργία, ποικιλίαν ἥτις γίνεται ἔτι πλουσιωτέρα εἰς στίχους περισσοτέρων συλλαβῶν. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ἀποτελεῖ ἕνα τῶν θεμελιωδῶν νόμων τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς: τὸν νόμον τῆς ἐναλλαγῆς τῶν τονουμένων συλλαβῶν δι' ἀτόνων.

Εἰς τὴν ποικιλίαν τοῦ ρυθμοῦ συμβάλλει προσέτι καὶ δεύτερον φαινόμενον, τὸ ὁποῖον ἐκ πρώτης ὄψεως φαίνεται ὅτι ἀποτελεῖ παρέκκλισιν ἀπὸ τῆς βάσεως τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς, οἵα ἐτέθη ἀνωτέρω. Συχνὰ δηλαδὴ συμβαίνει ἰαμβικοὶ στίχοι νὰ δέχωνται τόνους καὶ εἰς περιττὰς συλλαβάς, ὅπως καὶ τροχαϊκοὶ εἰς ἀρτίας. Εἰς τὸ ἀκόλουθον λ. χ. ἐξ ἰαμβικῶν στίχων ἐπίγραμμα τοῦ Α. Πάλλη:

Ἤσουν τῶν σπλάχνων μου ἡ χαρὰ
ὀχτὼ καὶ δέκα χρόνια·
μιὰ μόνη μ' ἔθλιψες φορά,
ὅμως μὲ θλίψη αἰώνια

εἰς τὸν 1ον καὶ τὸν 4ον στίχον τονίζεται μὲ μετρικὸν τόνον ἡ πρώτη συλλαβὴ (εἰς τὸν 3ον στίχον ὁ τόνος τῆς πρώτης συλλαβῆς ἐξουδετεροῦται λόγῳ τοῦ ἰσχυροῦ τόνου τῆς δευτέρας), ἐνῷ κανονικῶς αὕτη ἔπρεπε νὰ ἦτο ἄτονος, νὰ τονίζεται δὲ ἡ δευτέρα (∪—). Οἱ δημοτικοὶ (ἰαμβικοὶ δεκαπεντασύλλαβοι) στίχοι:

Κάθε καμπάνα καὶ παπᾶς, κάθε παπᾶς καὶ διάκος.
Φύσα βοριά, φύσα θρακιά, γιὰ ν' ἀγριέψῃ ἡ λίμνη.

ὁ μὲν πρῶτος τονίζει τὴν 1ην καὶ 9ην συλλαβήν, ὁ δὲ δεύτερος τὴν 1ην καὶ 5ην· τονίζονται δηλαδὴ περιτταὶ συλλαβαὶ εἰς στίχους καθαρῶς ἰαμβικούς. Ἀνάλογον φαινόμενον συμβαίνει καὶ εἰς τροχαϊκοὺς στίχους (π. χ. εἰς τὸν δημοτικόν:

Ἔλαμψ' ὁ γιαλός, λάμψαν τὰ περιγιάλια

τονίζοντα τὴν 6ην συλλαβήν).

Εἶναι φανερὸν ὅμως καὶ μόνον ἐκ τῶν ἀνωτέρω παραδειγμάτων ὅτι δὲν ἐπέρχεται ἀλλοίωσις εἰς τὸν ἰαμβικὸν ἢ τροχαϊκὸν ρυθμὸν τοῦ στίχου, ὑπάρχοντος ἰσχυροῦ τόνου εἰς τὴν ἑπομένην ἀρτίαν (διὰ τὸν ἴαμβον) ἢ περιττὴν (διὰ τὸν τροχαῖον) συλλαβήν. Τὸ φαινόμενον ἄλλωστε τοῦτο, ἀποτελοῦν τὸν δεύτερον θεμελιώδη νόμον τῆς νεοελληνικῆς μετρικῆς, ὑπόκειται εἰς περιορισμούς.

Οἱ δύο οὗτοι ἀνωτέρω ἐκτεθέντες νόμοι ἰσχύουσι μόνον διὰ τοὺς δισυλλάβους πόδας (ἴαμβον καὶ τροχαῖον)· διὰ τοὺς τρισυλλάβους τοὐναντίον ἀπαραίτητον εἶναι ὅπως οὐδεμία τονουμένη συλλαβὴ ἀντικαθίσταται δι' ἀτόνου· τὸ πρᾶγμα εἶναι εὔλογον, διότι ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ἀπὸ τοῦ ἑνὸς τόνου μέχρι τοῦ ἑτέρου θὰ ἐμεσολάβουν πέντε ὁλόκληροι ἄτονοι συλλαβαί· ἐκτὸς τούτου, εἰς τοὺς τρισυλλάβους πόδας ὁ ρυθμὸς εἶναι περισσότερον αὐστηρός. Οὐχ ἧττον εἶναι δυναταὶ μικραὶ παρεκκλίσεις: τῶν δακτυλικῶν στίχων πολλάκις ἡ πρώτη συλλαβὴ εἶναι ἄτονος:

. . . . Ὁ Ἀπρίλης κι' ὁ Μάης
μ' ὅλα τὰ ρόδα καὶ μ' ὅλη τὴ χλόρη
σὲ καρτεροῦν, κ' οἱ χειμῶνες οἱ γέροι
σὲ καρτεροῦν ἡλιοστόλιστοι, ξύπνα
(Παλαμᾶς).

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω στίχων ὁ 3ος καὶ ὁ 4ος ἔχουν τὴν πρώτην αὐτῶν συλλαβὴν ἄτονον (μετρικῶς). Ἀλλ' ἡ ποικιλία εἰς τοὺς τρισυλλάβους πόδας ἐξασφαλίζεται καὶ διὰ τῶν δευτερευόντων

Digitized by Google

-τόνων. Οἱ δύο στίχοι ἐκ τῆς πρώτης στροφῆς τῆς «Φαρμακωμένης» τοῦ Σολωμοῦ

Τὰ τραγούδια μου τἄλεγες ὅλα
◡◡—◡◡—◡◡—◡
τοῦτο μόνο δὲ θέλει τἀκούσῃς
◡′◡—◡◡—◡◡—◡

διαφέρουν κατὰ τὸν ρυθμόν, τοῦ δευτέρου δεχομένου ἐλαφρὸν τόνον ἐπὶ τῆς πρώτης συλλαβῆς. Ἀλλὰ καὶ ἑτέρας παρεκκλίσεις ἐπιτρέπουν εἰς ἑαυτοὺς πολλοὶ στιχουργοί, οὐχὶ ὅμως πάντοτε ἄνευ βλάβης τοῦ ρυθμοῦ.

*Στίχοι καὶ στροφαί.* Συμφώνως πρὸς τὰς ἐκτεθείσας γενικὰς ἀρχὰς σχηματίζονται οἱ νεοελληνικοὶ στίχοι, διαιρούμενοι εἰς πέντε μεγάλας κατηγορίας ἀντιστοιχούσας πρὸς τοὺς πέντε μετρικοὺς πόδας, καὶ ὑποδιαιρούμενοι εἶτα ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἀριθμοῦ τῶν συλλαβῶν των.

Σημειωτέον ὅτι οἱ πολυσύλλαβοι στίχοι, τοὐλάχιστον οἱ περισσότεροι ἐξ αὐτῶν, παρουσιάζουσι τομήν· ὀνομάζεται δὲ τομὴ τὸ σταθερὸν κατόπιν ὡρισμένης συλλαβῆς χώρισμα τοῦ στίχου, τὸ ὁποῖον πρέπει νὰ συμπίπτῃ πάντοτε μὲ τέλος λέξεως. Οἱ δημοτικοὶ στίχοι, π. χ.

Τοῦτο τὸ καλοκαίρι | καὶ τὴν ἄνοιξη
ἄσπρα χαρτιὰ μᾶς γράφουν | μαῦρα γράμματα

(ἰαμβικοὶ δωδεκασύλλαβοι) ἔχουν σταθερὰν τομὴν μετὰ τὴν 7ην συλλαβήν.

Ἐκ τῶν ἰαμβικῶν στίχων συνηθέστεροι εἶναι εἰς μὲν τὰ δημοτικὰ τραγούδια ὁ ἀνωτέρω δωδεκασύλλαβος καὶ ὁ δεκαπεντασύλλαβος, εἰς δὲ τὴν ἔντεχνον ποίησιν καὶ ὁ ἑνδεκασύλλαβος. Ἐκ τῶν τροχαϊκῶν ἡ δημώδης ποίησις ἀρέσκεται εἴς τινας λίαν ρυθμικοὺς μικροὺς καὶ εἰς τὸν δωδεκασύλλαβον μὲ τομὴν μετὰ τὴν 5ην συλλαβήν. Σπανιώτερος εἶναι ὁ σχηματισμὸς δημοτικῶν τραγουδιῶν μὲ τρισυλλάβους πόδας, οἵτινες καὶ γενικῶς εἰς τὴν ἔντεχνον ποίησιν δὲν εἶναι τόσον συνήθεις· συνηθέστερος φαίνεται νὰ εἶναι ὁ ἀμφίβραχυς καὶ πλέον ἀσυνήθης ὁ δάκτυλος. Ἐκ τῶν ἀναπαιστικῶν συνηθέστερος εἶναι ὁ δεκασύλλαβος τοῦ ἐπιγράμματος τῶν Ψαρῶν τοῦ Σολωμοῦ. Ἐκ τῶν δακτυλικῶν μνημονευτέα ἡ παρὰ τῶν καθαρευόντων (Ἀ. Ρ. Ραγκαβῆς), ἀλλὰ καὶ τῶν δημοτικιστῶν (Κ. Θεοτόκης) ποιητῶν ἐπιχειρηθεῖσα μίμησις τοῦ ἀρχαίου δακτυλικοῦ ἑξαμέτρου (δεκαεπτασύλλαβος). (Εἰδικῶς δι' ἕκαστον στίχον βλ. τὰ οἰκεῖα ἄρθρα: *δεκαπεντασύλλαβος, δεκασύλλαβος* κτλ.)

Οἱ στίχοι δὲν ἀποτελοῦνται πάντοτε διὰ τῆς κανονικῆς ἐπαναλήψεως ἑνὸς ποδός. Ὁ στίχος λ. χ.

ἕνα μικρὸ καράβι μαζώνει τὰ πανιὰ
◡′—◡—◡—◡ | ◡—◡—◡—

ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν καὶ ἡμίσεος ἰαμβικῶν ποδῶν καὶ ἑτέρων τριῶν ἰαμβικῶν. Κανονικῶς ὅμως δὲν πρόκειται περὶ ἑνός, ἀλλὰ περὶ δύο στίχων, ὧν ὁ πρῶτος παροξύτονος, ὁ δὲ δεύτερος ὀξύτονος. Οἱ ἐκ συνδυασμοῦ δύο στίχων ἀποτελούμενοι ὀνομάζονται *νόθοι στίχοι*. Νόθος στίχος εἶναι καὶ ὁ ἀκόλουθος τοῦ Παλαμᾶ, ἀποτελούμενος ἐκ τριῶν πεντασυλλάβων.

Βοσκοὶ στὴ μάντρα | τῆς πολιτείας | οἱ λύκοι, οἱ λύκοι!

Νόθοι στίχοι σχηματίζονται καὶ διὰ συνδυασμοῦ δύο ἀνομοίων στίχων:

ὅλα τὰ πουλάκια | ζυγὰ ζυγὰ
—◡—◡—◡ | ◡—◡—

Τὸν στίχον ὅμως τοῦτον πολλοὶ δὲν παραδέχονται ὡς ἕνα.

Διὰ ν' ἀποτελεσθῇ ἓν ποίημα, οἱ διάφοροι στίχοι συνδυάζονται κατὰ διάφορα συστήματα. Τὸ παλαιότερον καὶ ἄλλοτε συνηθέστερον εἶναι ἡ ἄνευ συνδυασμοῦ τινος παράθεσις τῶν στίχων (βυζαντινὰ μυθιστορήματα, δημοτικὰ ᾄσματα, ἰδίως τῆς ἠπειρωτικῆς Ἑλλάδος), ἢ ὁ συνδυασμὸς αὐτῶν ἀνὰ δύο διὰ τῆς ὁμοιοκαταληξίας (Ἐρωτόκριτος, κρητικὸν θέατρον, δημοτικὰ νήσων). Ἐν τῇ νεωτέρᾳ λυρικῇ ποιήσει συνηθέστερος εἶναι ὁ συνδυασμὸς εἰς μικρὰς ἑνότητας ἐξ ὡρισμένου ἀριθμοῦ στίχων, καλουμένας *στροφάς*. Συχνὴ εἶναι ἡ ἐκ τεσσάρων στίχων στροφή, καλουμένη *τετράστιχον*, ἀλλὰ καὶ πεντάστιχα καὶ ἑξάστιχα καὶ ὀκτάστιχα δὲν εἶναι ἀσυνήθη. Εἰς τὴν δημώδη ποίησιν συνήθης εἶναι ἡ μορφὴ τοῦ διστίχου. Ἐκ τῶν ἐντέχνων καὶ δὴ ξενικῶν εἰδῶν στροφῶν μνημονευτέαι: τὸ δαντικὸν τρίστιχον (terzina), ἡ ὀκτάβα καὶ τὸ δεκατετράστιχον σονέττον.

Βάσις διὰ τὸν σχηματισμὸν τῶν παντοειδῶν στροφῶν ὑπόκειται πάντοτε ἡ ὁμοιοκαταληξία (ρίμα), παρέχουσα διὰ διαφόρων συνδυασμῶν ποικιλίαν (βλ. λ. *ὁμοιοκαταληξία*).

***Μετρικὴ ξένων εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν.*** Πλησιεστέρα πρὸς τὴν νεοελληνικὴν θεωρεῖται ἡ *ἰταλικὴ* στιχουργική, ἀποτέλεσμα δὲ τῆς ὁμοιότητος ταύτης εἶναι καὶ ἡ εἰσαγωγὴ εἰς τὴν νεοελληνικὴν ποίησιν διαφόρων μέτρων ἐπὶ τῇ βάσει τῶν παρεμφερῶν ἰταλικῶν. Ἡ ἰταλικὴ μετρικὴ στηρίζεται καὶ αὐτὴ εἰς πόδας, διακρίνει δὲ δύο κύρια συστήματα, τὸ ἰαμβο-τροχαϊκὸν καὶ τὸ ἀναπαιστοδακτυλικόν, ἐπιτρέπει ὅμως πολλὰς ἐλευθερίας περὶ τὸν τόνον, οὕτως ὥστε πολλοὶ νὰ θεωροῦν ὅτι ἔχει περισσοτέραν σχέσιν πρὸς τὴν γαλλικὴν μετρικήν, τὴν μὴ διακρίνουσαν πόδας. Συνηθέστερον μέτρον αὐτῆς εἶναι ὁ ἑνδεκασύλλαβος:

Nel mezzo del cammin di nostra vita

λαμβάνων πλείστας μορφάς. Ἄλλα συνήθη μέτρα εἶναι ὁ ἰαμβικὸς πεντασύλλαβος, ὁ ἀναπαιστικὸς δεκασύλλαβος κ. ἄ., εἰσαχθέντες καὶ εἰς τὴν ἡμετέραν ποίησιν ὑπὸ τῶν Ἑπτανησίων καὶ κυρίως τοῦ Σολωμοῦ. Πλὴν τῆς ἐπὶ τῶν ποδῶν ταύτης στηριζομένης στιχουργίας, πολλοὶ ποιηταὶ τῆς Ἀναγεννήσεως, ἐν τῇ προσπαθείᾳ των ὅπως μιμηθῶσι τὰ ἀρχαῖα μέτρα, εἰσήγαγον νέον σύστημα, ὀνομασθὲν ὑπὸ τοῦ ἐν τοῖς νεωτέροις χρόνοις ἀναγαγόντος αὐτὸ εἰς περιωπὴν ποιητοῦ Carducci *βαρβαρικὸν* (poesia barbara). Εἶναι τοῦτο μίμησις τοῦ ρυθμοῦ τῶν ἀρχαίων, ἰδίως τῶν λατινικῶν στίχων, ὅταν ὅμως οὗτοι ἀναγινώσκωνται τονικῶς. Ὁ ἀλκαϊκὸς δηλαδὴ στίχος τοῦ Ὁρατίου

O matre pulchra filia pulchrior

ἀναγινωσκόμενος τονικῶς δίδει τὸ ἀκόλουθον σχῆμα:

◡—◡—◡ | —◡◡—◡◡

τὸ ὁποῖον μιμεῖται ὁ ἰταλικός:

scuoto la cetra | pregio d'Apolline.

Τὸ σύστημα ὅμως τοῦτο δὲν ηὐδοκίμησε.

Πρὸς τὴν ἰταλικὴν ὁμοιάζει καὶ ἡ *ἱσπανικὴ* στιχουργική. Ὡς κύριον μέτρον μεταχειρίζεται τὸν τροχαϊκὸν ὀκτασύλλαβον, ὃν χρησιμοποιεῖ καὶ εἰς ἐκτενῆ ἀκόμη ἐπικὰ ποιήματα· τοῦτον ἐμιμήθησαν καὶ Γερμανοὶ ποιηταὶ (Grillparzer ἐν τῇ «Ahnfrau»).

Τοὺς πόδας ἀγνοεῖ ἡ *γαλλικὴ* μετρική. Ὁ χαρακτὴρ τῆς γλώσσης, ἰδιαιτέρως δὲ ὁ τόνος, ὅστις δὲν εἶναι τόσον ἔντονος καὶ ἐμφανὴς ὡς εἰς ἄλλας γλώσσας καὶ πρὸ πάντων τὴν νέαν ἑλληνικήν, καθιστᾷ τὴν ὕπαρξιν τῶν ποδῶν ἀδύνατον. Συνήθως ὑπολογίζουν ἑκάστην συλλαβὴν ὡς ἰδιαίτερον πόδα καὶ ὀνομάζουν π. χ. τὸν δωδεκασύλλαβον στίχον δώδεκα ποδῶν, τοῦτο ὅμως ἀποδεικνύει ἔτι ἐναργέστερον τὴν ἔλλειψιν τῶν ποδῶν. Στηρίζεται ὅθεν ἡ γαλλικὴ μετρικὴ ἐπὶ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν συλλαβῶν ἑκάστου στίχου, γίνεται δὲ αἰσθητὸς εἰς τὸ οὖς ὁ χωρισμὸς τῶν στίχων τῇ βοηθείᾳ τῆς ὁμοιοκαταληξίας, ἥτις διὰ τὸν λόγον τοῦτον ἀποτελεῖ βασικὸν διὰ τὴν στιχουργίαν στοιχεῖον, τοῦ ὁποίου δὲν δύναται ἄνευ βλάβης τοῦ ρυθμοῦ νὰ στερηθῇ.

Ὡς παράδειγμα ἔστωσαν οἱ ἀκόλουθοι ὀκτασύλλαβοι στίχοι (τοῦ Th. Gautier):

Je veille, unique sentinelle
de ce grand palais dévasté,
dans la solitude éternelle
en face de l'immensité.

Οἱ γαλλικοὶ στίχοι λαμβάνουσι τὴν ὀνομασίαν των ἀπὸ τὸν ἀριθμὸν τῶν συλλαβῶν των (ὀκτασύλλαβοι, δωδεκασύλλαβοι), μὴ ὑπολογιζομένης τῆς ἀφώνου (muette) τελευταίας. Οἱ στίχοι μετ' ἀφώνου συλλαβῆς (ὡς ὁ 1ος καὶ 3ος τῆς ἀνωτέρω στροφῆς) ὀνομάζονται *θηλυκοί*, οἱ λοιποὶ *ἀρσενικοί*, ἐναλλάσσονται δὲ κατὰ κανόνα, εἴτε κατὰ ζεύγη, εἴτε συμπεπλεγμένοι (aabb, abab) κατὰ τὸν σχηματισμὸν τῶν ποιημάτων. Ἡ γαλλικὴ στιχουργικὴ σχηματίζει στίχους κυρίως μέχρι δώδεκα συλλαβῶν· σπάνιοι ὅμως εἶναι οἱ ἐξ 9 ἢ 11 ἀποτελούμενοι. Συνηθέστατος καὶ εἰς μέγιστον βαθμὸν διαδεδομένος εἶναι ὁ δωδεκασύλλαβος, ὁ καλούμενος *ἀλεξανδρινὸς* (alexandrin), εἴτε διότι μετεχειρίσθη αὐτὸν ὁ Alexandre de Bernay, εἴτε, πιθανώτερον, διότι εἰς τοιούτους στίχους ἐγράφη τὸν ΙΒ′ αἰῶνα τὸ περίφημον «Roman d' 'Alexandre» τοῦ Lambert li Cors. Διαιρεῖται οὗτος διὰ σταθερᾶς τομῆς μετὰ τὴν 6ην συλλαβὴν εἰς δύο ἡμιστίχια ἐξ ἓξ συλλαβῶν, δύναται δὲ νὰ εἶναι θηλυκὸς ἢ ἀρσενικός:

Ainsi, toujours poussés | vers de nouveaux rivages,
dans la nuit éternelle emportés sans retour
(*Λαμαρτῖνος*).

Οἱ νεώτεροι ποιηταί, ἀπὸ τοῦ Οὐγκὼ ἰδίως, συνέβαλον πολὺ εἰς τὴν ποικιλίαν τοῦ στίχου τούτου καὶ τὴν ἄρσιν τῆς ὁμολογουμένης μονοτονίας του, κυρίως διὰ τῆς καταργήσεως τῆς σταθερᾶς τομῆς:

J'ai disloqué | ce grand niais | d' alexandrin
(*Hugo*).

Ἀντιθέτως πρὸς τὴν γαλλικήν, ἡ *γερμανικὴ* στιχουργία στηρίζεται ἐπὶ μετρικῶν ποδῶν καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πέντε ἀκριβῶς ποδῶν, οἵτινες ὑπάρχουν καὶ ἐν τῇ νεοελληνικῇ μετρικῇ. Ἀλλὰ διὰ τὸν χαρακτῆρα τῆς γλώσσης, ἐχούσης μικρὰς λέξεις καὶ πολλοὺς τόνους, σπανίως αἱ θέσεις καταλαμβάνονται ὑπὸ ἀτόνων συλλαβῶν. Παράδειγμα οἱ ἀκόλουθοι ἰαμβικοὶ ἑνδεκασύλλαβοι ἐκ τοῦ «Faust» τοῦ Goethe:

Ihr naht euch wieder, schwankende Gestalten,
die früh sich einst dem trüben Blick gezeigt.

Χαρακτηριστικὴ ἐν τῇ γερμανικῇ μετρικῇ εἶναι ἡ χρῆσις τοῦ σπονδείου, εὐνοουμένη ὑπὸ τοῦ χαρακτῆρος τῆς γλώσσης, ἐπιτρεπούσης τὴν παραπλεύρως συνύπαρξιν δύο τονουμένων συλλαβῶν. Ἐκτὸς τούτου ἡ γερμανικὴ γλῶσσα κάμνει διάκρισιν μακρῶν καὶ βραχειῶν συλλαβῶν, οὕτω δὲ εἶναι δυνατὴ ἄνευ ἀλλοιώσεως τοῦ ρυθμοῦ ἡ ἀντικατάστασις ἑνὸς ἐκ τριῶν βραχειῶν συλλαβῶν ἀποτελουμένου δακτύλου (◡′◡◡) δι' ἑνὸς δισυλλάβου ἐκ μιᾶς μακρᾶς καὶ μιᾶς βραχείας συμβατικοῦ σπονδείου (◡′ — ἢ —′◡).

Hab' ich den Markt und die Strassen doch *nie so* einsam gesehen!
Ist doch die Stadt wie ge*kehrt*! *wie ausge*storben! Nicht funfzig
(*Goethe*)

—◡◡, —◡◡, —◡ | ◡, ——, —◡◡, —◡
—◡◡, —◡◡, — | —, ——, —◡◡, —◡

Κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἠδυνήθη ἡ γερμανικὴ γλῶσσα, μόνη ἐκ τῶν νεωτέρων εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν μετὰ τῆς ἀγγλικῆς, νὰ μιμηθῇ τὸν ἀρχαῖον ἑξάμετρον καὶ νὰ ποιήσῃ ὁλόκληρα ἔπη εἰς τοιοῦτο μέτρον (*Goethe*: «Hermann und Dorothea»). Ἐκ τῶν ἄλλων μέτρων ἀσυνήθης εἶναι ὁ ἀνάπαιστος, συνηθέστερος δ' ὁ ἴαμβος καὶ ὁ τροχαῖος, ἐκ τῶν ὁποίων σχηματίζονται πλεῖστοι, μικροὶ κατὰ τὸ πλεῖστον, στίχοι. Συνήθης εἶναι ἐπίσης ὁ ἰαμβικὸς ἑνδεκασύλλαβος, εἰσαχθεὶς κατὰ μίμησιν οὐχὶ ἀπ' εὐθείας τοῦ ἰταλικοῦ ἀλλὰ τοῦ ἀγγλικοῦ τοῦ Σαίξπηρ.

Οἱ ἐπὶ τῶν ποδῶν στηριζόμενοι στίχοι εἰσήχθησαν εἰς τὴν γερμανικὴν μετρικὴν ὑπὸ τοῦ Μαρτίνου Opitz (ΙΖ′ αἰών). Τὸ σύστημα τοῦτο ἐπολέμησαν οἱ ποιηταὶ τῆς ἀκμῆς (τέλος ΙΗ′ αἰῶνος), ἐπαναφέραντες ἐν ἰσχύϊ τὸ κρατοῦν ἐν τῇ μεσογερμανικῇ περιόδῳ· συμφώνως πρὸς τοῦτο ἀξίαν διὰ τὸν στίχον ἔχουν μόνον αἱ θέσεις, περὶ αὐτὰς δὲ συγκεντρώνονται αἱ ἄλογοι ἄρσεις, ὁ ἀριθμὸς τῶν συλλαβῶν τῶν ὁποίων εἶναι ἀδιάφορος. Οἱ ἀκόλουθοι στίχοι τοῦ Heine:

Du schönes Fischermädchen,
treibe den Kahn ans Land:
komm zu mir und setze dich nieder,
wir kosen Hand in Hand

βασίζονται ἐπὶ τριῶν θέσεων (—), περὶ τὰς ὁποίας συναθροίζονται, κατὰ τὸ δοκοῦν, αἱ ἄτονοι συλλαβαί:

◡— ◡— ◡— ◡
— ◡◡— ◡—
◡◡— ◡— ◡◡— ◡
◡— ◡— ◡—

Ἐπίσης καὶ οἱ πρῶτοι στίχοι τοῦ «Faust».

Habe nun, ach, Philosophie,
Juristerei und Medizin,
und leider! auch Theologie
durchaus studiert, mit heissem Bemühn

στηρίζονται ἐπὶ τεσσάρων θέσεων. Οἱ τρεῖς πρῶτοι ἔχουν τὸ σχῆμα

◡′—◡—◡—◡—

ἐνῷ ὁ 4ος:

◡′—◡—◡—◡◡—

Τὸ μετρικὸν τοῦτο σύστημα, καλούμενον, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸ μιμούμενον τὴν ἀρχαίαν καὶ τὰς ξένας μετρικὰς ἕτερον, *γερμανικὸν* μετρικὸν σύστημα (deutsches Versmass), χρησιμοποιεῖται ἐξ ἴσου συχνὰ ἐν τῇ γερμανικῇ στιχουργίᾳ.

Μεγάλην ὁμοιότητα πρὸς τὴν γερμανικὴν δεικνύει ἡ *ἀγγλικὴ* μετρική. Σχηματίζει καὶ αὐτὴ στίχους ἐξ ἰαμβικῶν, τροχαϊκῶν καὶ ἀναπαιστικῶν, σπανιώτερον δὲ ἐκ δακτυλικῶν καὶ ἀμφιβραχικῶν ποδῶν, ποιεῖται δὲ καὶ χρῆσιν τοῦ σπονδείου:

Not a drum *was heard*, not a funeral note
◡◡—,——.◡◡—,◡◡—

Τὸ συνηθέστερον μέτρον, ἰδίως εἰς τὰ δράματα, εἶναι ὁ ἰαμβικὸς ἑνδεκασύλλαβος, οὗ ποιεῖται ἀποκλειστικὴν σχεδὸν χρῆσιν ὁ Σαίξπηρ:

Two households both alike in dignity,
in fair Verona, where we lay our scene,
from ancient grudge break to new mutiny
where civil blood makes civil hands unclean.
(*Ρωμαῖος καὶ Ἰουλιέττα*)

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Συστηματικὰ ἔργα νεοελληνικῆς μετρικῆς: *Ἀθ. Χριστοπούλου* (1811, [2]1842), *Μεγδάνου* (1819), *Λασκαράτου* (1865). *Ἀποστολοπούλου* (=Τυρταίου, 1891), *Βουτιερίδη* (1929), *Σουμελίδη* (1929), *Σταύρου* (1930). Πρβλ. *Δώραν Μοάτσου* εἰς περιοδικὸν «Ἀναγέννηση» Β′ (1928) σ. 204 καὶ *Λ. Πολίτην* εἰς «Ἑλληνικὰ Γράμματα» Ε′ (1929) σ. 225 κέ., καὶ εἰς «Byzant.-neugr. Jahrbrücher» Η′ (1931) σ. 196 κ.ἑ. — Ἐκ τῶν λοιπῶν γενικῶν βιβλίων τῶν ὁμιλούντων καὶ περὶ νεοελληνικῆς μετρικῆς βλ. κυρίως: *Σεμιτέλου*, Ἑλληνικὴ μετρικὴ (1891), [*Κ. Ἀσωπίου*], Τὰ Σούτσεια (1853) καὶ *Ἀ. Ρ. Ραγκαβῆ* κυρίως ἐν Ε′ τόμῳ «Ἁπάντων». Περὶ νεοελληνικῆς μετρικῆς εἰδικώτεραι μελέται καὶ βιβλιοκρισίαι καθαπτόμεναι γενικωτέρων ζητημάτων ἐδημοσιεύθησαν πολλαὶ (1927—1931 ἰδίως) ὑπὸ τῶν *Γ. Σπαταλᾶ*, *L. Roussel*, *Θ. Σταύρου*, *Δ. Ζακυθηνοῦ* κ. ἄ. εἰς τὰ περιοδικὰ «Παρθενών», «Νέα Ἑστία», «Ἑλληνικὰ Γράμματα», «Libre», «Λόγος», «Νουμᾶς».— Σημειωτέον ὅτι ἐγεννήθη ἐσχάτως ἔρις περὶ τῆς βάσεως τῆς στιχουργίας καὶ τῆς ὑπάρξεως ποδῶν καὶ αἱ τελευταῖαι προσπάθειαι συστηματοποιήσεως διαφέρουν ἀπ' ἀλλήλων. Ἐν τῷ ἄρθρῳ κατεβλήθη φροντὶς νὰ διατυπωθῇ σύστημα μετρικῆς κατὰ τρόπον ἁπλοῦν καὶ συμφωνοῦντα πρὸς τὴν μᾶλλον παραδεδεγμένην θεωρίαν.

Λ. Ν. Π.

**μετρικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μέτρα, ὁ τῶν μέτρων: «μετρικὸν σύστημα» ἡ κλῖμαξ τῶν μονάδων, καθ' ἃς καταμετρεῖται ὁ ὄγκος, τὸ βάρος, ἡ ἔκτασις· ‖ *μετρικὸς* (ὁ)· ὡς οὐσ., ὁ περὶ τὰ μέτρα τῆς ποιήσεως ἀσχολούμενος: «ὁ Ἀριστόξενος ὑπῆρξεν ὁ ἀρχαιότερος μετρικός»· ‖ *μετρικὴ* (ἡ)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).—Ἐπίρρ. ***μετρικῶς.***

**—μετρικὰ ἄτακτα** *[Μετρικ.]*. Καλοῦνται οὕτω ποιήματα, τὰ ὁποῖα σύγκεινται ἐκ διαφόρων μέ-

Digitized by Google

τρων, ἄνευ ὡρισμένης ἀντιστοιχίας καὶ διαιρέσεως εἰς συστήματα. Τοιοῦτον ποίημα εἶναι καὶ ὁ ἐσφαλμένως εἰς τὸν Ὅμηρον ἀποδιδόμενος «Μαργίτης», ὅπου ἐγκαταμείγνυνται ἀτάκτως δακτυλικὰ ἑξάμετρα καὶ ἰαμβικὰ τρίμετρα.

— **μετρικὰ συστήματα.** *Μετρικὸν σύστημα* καλεῖται σύστημα μονάδων συνδεομένων μεταξὺ των διὰ τῶν ἰδίων ἐξισώσεων, διὰ τῶν ὁποίων συνδέονται καὶ τὰ ἀντίστοιχα φυσικὰ μεγέθη. Π. χ., μονὰς τοῦ μήκους λαμβάνεται τὸ μέτρον, μονὰς τοῦ χρόνου λαμβάνεται τὸ δευτερόλεπτον, τὸ δὲ μέγεθος τῆς ταχύτητος εὑρίσκεται διὰ διαιρέσεως τοῦ μεγέθους τοῦ μήκους διὰ τοῦ μεγέθους τοῦ χρόνου· ἐπομένως εἰς τὸ μετρικὸν σύστημα θὰ ληφθῇ ὡς μονὰς τῆς ταχύτητος τὸ πηλίκον τῆς διαιρέσεως τῆς μονάδος τοῦ μήκους διὰ τῆς μονάδος τοῦ χρόνου, ἤτοι μονὰς τῆς ταχύτητος θὰ εἶναι τὸ μέτρον ἀνὰ δευτερόλεπτον ἢ $\frac{m}{sec}$. Τὴν μέθοδον ταύτην τοῦ καθορισμοῦ τῶν μονάδων ἐξ ἄλλων τοιούτων, διὰ σχέσεων ἐκφραζουσῶν φυσικοὺς νόμους, μέθοδον ἁπλοποιοῦσαν κατὰ πολὺ τοὺς διαφόρους μαθηματικοὺς τύπους ἀπὸ ἀπόψεως ἀριθμητικοῦ συντελεστοῦ, ἐχρησιμοποίησε τὸ πρῶτον ἡ κατὰ τὸ 1791 ὑπὸ τῆς γαλλικῆς ἐθνοσυνελεύσεως συσταθεῖσα ἐπιτροπὴ πρὸς δημιουργίαν νέου συστήματος μέτρων καὶ σταθμῶν. Βραδύτερον (1832—1846) οἱ Γερμανοὶ φυσικοὶ Gauss καὶ Weber μετεχειρίσθησαν τὴν αὐτὴν μέθοδον πρὸς καθορισμὸν μετρικοῦ συστήματος ἠλεκτρικῶν καὶ μαγνητικῶν μονάδων, καὶ τοιουτοτρόπως ἐτέθησαν εἰς ἀχρηστίαν, εἰς ὅλα τὰ πεδία τῆς φυσικῆς καὶ τῶν τεχνικῶν ἐπιστημῶν, τὰ παλαιότερα συστήματα μονάδων, εἰς τὰ ὁποῖα δι' ἕκαστον φυσικὸν μέγεθος ἐχρησιμοποιεῖτο αὐθαιρέτως ὁριζομένη μονάς, μὴ εὑρισκομένη σχεδὸν ποτὲ εἰς ἁπλῆν σχέσιν μὲ τὰς μονάδας ἄλλων συγγενῶν φυσικῶν μεγεθῶν.

Ἐννοεῖται ὅτι καὶ εἰς τὰ νέα αὐτὰ μετρικὰ συστήματα παρέστη ἀνάγκη αὐθαιρέτου καθορισμοῦ μερικῶν βασικῶν μονάδων, ἐκ τῶν ὁποίων ἐξάγονται αἱ λοιπαί. Ἡ ἐκλογὴ τῶν φυσικῶν μεγεθῶν, τῶν ὁποίων αἱ μονάδες λαμβάνονται ὡς βασικαί, ἡ ἐκλογὴ δηλαδὴ τῶν βασικῶν μεγεθῶν, εἶναι, φυσικῷ τῷ λόγῳ, καὶ αὐτὴ αὐθαίρετος, καὶ διάφορος εἰς τὰ διάφορα μετρικὰ συστήματα. Ἀναλόγως τῶν μεγεθῶν, τὰ ὁποῖα λαμβάνονται ὡς βασικά, διακρίνομεν:

1) Τὸ *φυσικὸν μετρικὸν σύστημα*, χρησιμοποιηθὲν τὸ πρῶτον ὑπὸ τῆς φυσικῆς καὶ λαμβάνον ὡς βασικὰ μεγέθη τὰ μεγέθη *μῆκος* (l), *μᾶζα* (m) καὶ *χρόνος* (t).

2) Τὸ *τεχνικὸν μετρικὸν σύστημα*, χρησιμοποιούμενον κυρίως ὑπὸ τῶν τεχνικῶν ἐπιστημῶν καὶ λαμβάνον ὡς βασικὰ μεγέθη τὰ μεγέθη *μῆκος* (l), *δύναμις* (f) καὶ *χρόνος* (t).

3) Τὸ *ἠλεκτρικὸν πρακτικὸν σύστημα*, χρησιμοποιούμενον εἰς τὴν ἠλεκτροτεχνίαν, καὶ λαμβάνον ὡς βασικὰ μεγέθη τὰ ἠλεκτρικὰ μεγέθη *διαφορὰν τάσεως* (v), *ἔντασιν ρεύματος* (j), καὶ τὸν *χρόνον* (t).

Εἰς ἕκαστον ἐκ τῶν τριῶν χαρακτηρισθέντων μετρικῶν συστημάτων ὑπάγονται περισσότερα ὑποσυστήματα μονάδων, διαφέροντα μεταξὺ των ὄχι πλέον κατὰ τὰ βασικὰ μεγέθη (ἐφ' ὅσον ἀνήκουν εἰς τὸ αὐτὸ μετρικὸν σύστημα ἔχουν προφανῶς τὰ αὐτὰ βασικὰ μεγέθη), ἀλλὰ κατὰ τὰς βασικὰς μονάδας, ἤτοι τὰς μονάδας, εἰς ἃς τὸ ὑπ' ὄψιν ὑποσύστημα μετρεῖ τὰ βασικὰ μεγέθη. Οὕτω π. χ. τὸ σύστημα *ἑκατοστόμετρον-γραμμάριον μάζης-δευτερόλεπτον* καὶ τὸ σύστημα *μέτρον-χιλιόγραμμον μάζης-δευτερόλεπτον* εἶναι ὑποσυστήματα μονάδων ἀνήκοντα ἀμφότερα εἰς τὸ φυσικὸν μετρικὸν σύστημα, ἐφ' ὅσον ἀμφοτέρων αἱ βασικαὶ μονάδες εἶναι μονάδες μήκους, μάζης καὶ χρόνου.

***Διαστάσεις τῶν φυσικῶν μεγεθῶν.*** Τὰ βασικὰ μεγέθη ὅλων τῶν μετρικῶν συστημάτων εἶναι τρία τὸν ἀριθμόν. Τοῦτο σημαίνει ὅτι οἱονδήποτε φυσικὸν μέγεθος δύναται νὰ ἐκφρασθῇ συναρτήσει τριῶν ἀνεξαρτήτων βασικῶν μεγεθῶν (τοῦ κανόνος τούτου ἐξαιροῦνται μόνον ὡρισμένα ἠλεκτρικὰ καὶ μαγνητικὰ μεγέθη, περὶ τῶν ὁποίων θὰ γίνῃ λόγος κατωτέρω). Οὕτω π. χ. ἡ ταχύτης εὑρίσκεται διὰ διαιρέσεως μήκους διὰ χρόνου, ἡ ἐπιτάχυνσις διὰ διαιρέσεως ταχύτητος διὰ χρόνου, καὶ ἑπομένως διὰ διαιρέσεως μήκους διὰ χρόνου εἰς τὸ τετράγωνον, ἡ ἐπιφάνεια διὰ πολλαπλασιασμοῦ μήκους ἐπὶ μήκους κ.ο.κ. Ἐν γένει οἱονδήποτε μέγεθος M ἐκφράζεται συναρτήσει τῶν τριῶν βασικῶν μεγεθῶν $\mu_1$, $\mu_2$ καὶ $\mu_3$ διὰ τῆς ἐξισώσεως

$$M=(\mu_1)^{\alpha} \, . \, (\mu_2)^{\beta} \, . \, (\mu_3)^{\gamma} \, .$$

Οἱ ἀριθμοὶ α, β καὶ γ ὀνομάζονται *διαστάσεις* τοῦ μεγέθους M εἰς τὸ μετρικὸν σύστημα $\mu_1\mu_2\mu_3$, δύνανται δὲ οἱ ἀριθμοὶ α, β καὶ γ νὰ εἶναι ἀκέραιοι ἢ κλασματικοί, θετικοὶ ἢ ἀρνητικοί. Τὸ αὐτὸ φυσικὸν μέγεθος ἔχει προφανῶς διαφόρους διαστάσεις εἰς τὰ διάφορα μετρικὰ συστήματα. Αἱ συνηθέστερον χρησιμοποιούμεναι διαστάσεις εἶναι αἱ τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος, ἤτοι αἱ διαστάσεις ὡς πρὸς τὰ μεγέθη μῆκος (l), μᾶζα (m) καὶ χρόνος (t). Οὕτω π. χ. ἡ ταχύτης v ἔχει διαστάσεις εἰς τὸ φυσικὸν μετρικὸν σύστημα [1,0,—1], ἐπειδὴ εἶναι

$$v=\frac{1}{t}=l^{1}.\ t^{-1}=l^{1}.\ m^{0}.\ t^{1}.$$

Ἡ ἐπιτάχυνσις ἔχει διαστάσεις [1, 0,—2], ἡ δύναμις f [1, 1,—2], ἡ ἐνέργεια [2, 1,—2] κ.ο.κ.

***Τὸ φυσικὸν μετρικὸν σύστημα.*** Τὸ κυριώτερον ἐν χρήσει ὑποσύστημα τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος, εἶναι τὸ λεγόμενον *ἀπόλυτον μετρικὸν σύστημα* ἢ *C.G.S. σύστημα*, τὸ ὁποῖον λαμβάνει ὡς βασικὰς μονάδας τὴν μονάδα ἑκατοστόμετρον (cm) διὰ τὸ μῆκος, τὴν μονάδα γραμμάριον μάζης (gr) διὰ τὴν μᾶζαν, καὶ τὴν μονάδα δευτερόλεπτον (sec) διὰ τὸν χρόνον. Ἐκ τούτων τὸ ἑκατοστόμετρον ὁρίζεται ὡς τὸ $\frac{1}{4.000.000.000}$ τοῦ διὰ τοῦ ἐν Παρισίοις ἀστεροσκοπείου διερχομένου γηΐνου μεσημβρινοῦ, ἤ, ἀκριβέστερον, ὡς τὸ ἑκατοστὸν τοῦ ἐν τῷ διεθνεῖ μετρολογικῷ γραφείῳ τῶν Σεβρῶν φυλασσομένου προτύπου μέτρου (mètre-étalon). Τὸ γραμμάριον μάζης ὁρίζεται ὡς ἡ μᾶζα ἑνὸς κυβικοῦ ἑκατοστομέτρου ὕδατος, θερμοκρασίας 4° Κελσίου. Τὸ δὲ δευτερόλεπτον ὁρίζεται ὡς τὸ $\frac{1}{86400}$ τῆς μέσης ἡλιακῆς ἡμέρας. Μονὰς ἐπιφανείας (διαστάσεις 2,0,0) εἰς τὸ ὑποσύστημα CGS εἶναι τὸ τετραγωνικὸν ἑκατοστόμετρον ($cm^2$), ἐπιφάνεια ἴση πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν τετραγώνου ἔχοντος πλευρὰν μήκους ἑνὸς ἑκατοστομέτρου. Μονὰς ὄγκου (διαστάσεις 3,0,0) εἶναι τὸ κυβικὸν ἑκατοστόμετρον ($cm^3$), ὄγκος ἴσος πρὸς τὸν ὄγκον κύβου ἔχοντος πλευρὰν μήκους ἑνὸς ἑκατοστομέτρου. Μονὰς ταχύτητος (διαστάσεις 1,0,—1) τὸ πηλίκον $\frac{cm}{sec}$. μονὰς ἐπιταχύνσεως (διαστάσεις 1,0,—2) τὸ πηλίκον $\frac{cm}{sec^2}$. Μονὰς δυνάμεως (διαστάσεις 1, 1,—2) εἶναι ἡ παράστασις $\frac{cm.gr}{sec^2}$, ὀνομαζομένη καὶ δύνη (dyne). Μονὰς ἐνεργείας (διαστάσεις 2, 1,—2) ἡ παράστασις $\frac{cm^2.gr}{sec^2}$, ὀνομαζομένη καὶ ἔργιον (erg). Μονὰς ἰσχύος (διαστάσεις 2,1,—3) ἡ παράστασις $\frac{cm^2.gr}{sec^3}$ (βλ. καὶ λ. *μονάς*).

*Ἠλεκτρικὰ συστήματα CGS.* Ἡ ἐπέκτασις τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος εἰς τὴν περιοχὴν τῶν ἠλεκτρικῶν καὶ μαγνητικῶν φαινομένων δύναται νὰ γίνῃ κατὰ δύο διαφόρους τρόπους, ἢ ἠλεκτροστατικῶς ἢ ἠλεκτρομαγνητικῶς. Τοῦτο συμβαίνει, διότι τὰ ἠλεκτρικὰ μεγέθη δὲν δύνανται νὰ ἐκφρασθῶσιν ὡς συναρτήσεις μόνον τῶν τριῶν βασικῶν μεγεθῶν· εἰσέρχονται εἰς τὰς διαστάσεις των, ὡς τέταρτα βασικὰ μεγέθη, ἡ διηλεκτρικὴ σταθερὰ ε ἀφ' ἑνός, καὶ ἀφ' ἑτέρου ἡ μαγνητικὴ διαπερατότης μ, ἀμφότερα φυσικὰ μεγέθη, τῶν ὁποίων ἡ σχέσις πρὸς τὰ βασικὰ (μηχανικὰ) μεγέθη, l, m, t (ἢ καὶ l, f, t), μόνον αὐθαιρέτως δύναται νὰ προσδιορισθῇ. Εἰς τὸ ἠλεκτροστατικὸν σύστημα CGS τίθενται αὐθαιρέτως αἱ διαστάσεις τῆς διηλεκτρικῆς σταθερᾶς ε ὡς ἴσαι ὅλαι πρὸς τὸ μηδὲν [0,0,0], ὁπότε προκύπτουν διὰ τὰ λοιπὰ ἠλεκτρικὰ μεγέθη αἱ ἑξῆς διαστάσεις καὶ μονάδες: διὰ τὴν ποσότητα ἠλεκρισμοῦ $\left(\text{διαστάσεις}\ \frac{3}{2}, \frac{1}{2}, -1\right)$ ἡ μονὰς ἠλεκτροστατικὴ μονὰς ἠλεκτρικοῦ φορτίου, ἴση πρὸς ἠλεκτρικὸν φορτίον, τὸ ὁποῖον τιθέμενον εἰς ἀπόστασιν 1 cm ἀπὸ ἴσου τοῦ ἠλεκρικοῦ φορτίου ἐξασκεῖ ἐπ' αὐτοῦ δύναμιν ἴσην πρὸς μίαν δύνην. Διὰ τὸ ἠλεκτρικὸν δυναμικὸν $\left(\text{διαστάσεις}\ \frac{1}{2}, \frac{1}{2}, -1\right)$, ἡ μονὰς ἠλεκτροστατικὴ μονὰς δυναμικοῦ, ἴση πρὸς τὸ δυναμικὸν σημείου ἀπέχοντος 1 cm ἀπὸ ἠλεκτρικοῦ φορτίου, ὑπὸ τὰς προϋποθέσεις τοῦ νόμου τοῦ Coulomb· ἡ αὐτὴ μονὰς χρησιμεύει καὶ διὰ τὸ ὁμοδιάστατον πρὸς τὸ ἠλεκτρικὸν δυναμικὸν μέγεθος τῆς ἠλεκτρεγερτικῆς δυνάμεως. Διὰ τὸ μέγεθος τῆς ἠλεκτρικῆς χωρητικότητος (διαστάσεις 1, 0, 0) ἡ μονὰς cm, ἴση πρὸς τὴν χωρητικότητα συστήματος, τὸ ὁποῖον, φορτιζόμενον μὲ ἠλεκτρικὸν φορτίον ἴσον πρὸς τὴν ἠλεκτροστατικὴν μονάδα τοῦ ἠλεκτρικοῦ φορτίου, ἀποκτᾷ δυναμικὸν ἴσον πρὸς τὴν ἠλεκτροστατικὴν μονάδα τοῦ δυναμικοῦ. Διὰ τὰ ἄλλα ἠλεκτρικὰ μεγέθη δὲν ὑπάρχουν ἐν χρήσει ἠλεκτροστατικαὶ μονάδες· αἱ σχετικαὶ διαστάσεις ἀναγράφονται κατωτέρω εἰς πίνακα.

Εἰς τὸ ἠλεκτρομαγνητικὸν σύστημα CGS τίθενται αὐθαιρέτως αἱ διαστάσεις τῆς μαγνητικῆς διαπερατότητος μ ὡς ἴσαι ὅλαι πρὸς τὸ μηδὲν (0, 0, 0), ὁπότε προκύπτουν διὰ τὰ λοιπὰ ἠλεκτρικὰ καὶ μαγνητικὰ μεγέθη αἱ ἑξῆς διαστάσεις καὶ μονάδες: διὰ τὸ μαγνητικὸν φορτίον $\left(\text{διαστάσεις}\ \frac{3}{2}, \frac{1}{2}, -1\right)$ ἡ μονὰς μαγνητοστατικὴ μονὰς μαγνητικοῦ φορτίου, ἴση πρὸς μαγνητικὸν φορτίον τὸ ὁποῖον, τιθέμενον εἰς ἀπόστασιν 1 cm ἀπὸ ἴσου τοῦ μαγνητικοῦ φορτίου, ἐξασκεῖ ἐπ' αὐτοῦ δύναμιν ἴσην πρὸς μίαν δύνην. Διὰ τὴν ἔντασιν τοῦ μαγνητικοῦ πεδίου $\left(\text{διαστάσεις}\ -\frac{1}{2}, \frac{1}{2}, -1\right)$ ἡ μονὰς Gauss, ἴση πρὸς τὴν ἔντασιν μαγνητικοῦ πεδίου, προκαλουμένου ὑπὸ μαγνητικοῦ φορτίου ἴσου πρὸς τὴν μαγνητοστατικὴν μονάδα, εἰς ἀπόστασιν 1 cm ἀπ' αὐτοῦ. Διὰ τὴν ἔντασιν τοῦ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος $\left(\text{διαστάσεις}\ \frac{1}{2}, \frac{1}{2}, -1\right)$ ἡ μονὰς Weber (ἢ ἠλεκτρομαγνητικὴ μονὰς ἐντάσεως), ἴση πρὸς τὴν ἔντασιν, ὑφ' ἧς διαρρεόμενον τόξον κύκλου ἀκτῖνος 1 cm καὶ μήκους ἐπίσης 1 cm, προκαλεῖ εἰς τὸ κέντρον τοῦ κύκλου μαγνητικὸν πεδίον ἐντάσεως 1 Gauss. Διὰ τὴν ποσότητα ἠλεκτρισμοῦ ἡ μονὰς ἠλεκτρομαγνητικὴ μονὰς ἠλεκτρικοῦ φορτίου ἴση πρὸς τὸ ὑπὸ ἐντάσεως 1 Weber ἐντὸς 1 δευτερολέπτου μεταφερόμενον ἠλεκτρικὸν φορτίον. Περισσότερα περὶ τῶν μονάδων τοῦ ἠλεκτρομαγνητικοῦ CGS συστήματος βλέπε εἰς τὸν κατωτέρω πίνακα.

***Τὸ τεχνικὸν μετρικὸν σύστημα.*** Τὸ κυριώτερον ἐν χρήσει ὑποσύστημα τοῦ τεχνικοῦ μετρικοῦ συστήματος εἶναι τὸ ὑποσύστημα ἑκατοστόμετρον (cm) — χιλιόγραμμον δυνάμεως (kg) — δευτερόλεπτον (sec). Τὸ μέγεθος τῆς μάζης εἰς τὸ τεχνικὸν σύστημα ἔχει διαστάσεις —1, 1, 2, καὶ εἰς τὸ ὑποσύστημα cm —kg — sec ἔχει μονάδα τὸ $\frac{kg.\,sec^2}{cm}$. Μονὰς ταχύτητος (διαστάσεις 1, 0, — 1) εἶναι τὸ

*Πίναξ διαστάσεων καὶ μονάδων τοῦ συστήμανος CGS.*

| *Φυσικὸν μέγεθος* | *Διαστάσεις καὶ μονὰς αὐτοῦ εἰς τὸ ὑποσύστημα CGS τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος* | *Μία μονὰς CGS εἶναι ἴση πρὸς* |
|---|---|---|
| Γεωμετρικὴ γωνία | $cm^0\ gr^0\ sec^0$ | — |
| Μῆκος | $cm^1\ gr^0\ sec^0$ | 1 cm |
| Ἐπιφάνεια | $cm^2\ gr^0\ sec^0$ | 1 $cm^2$ |
| Ὄγκος | $cm^3\ gr^0\ sec^0$ | 1 $cm^3$ |
| Μᾶζα | $cm^0\ gr^1\ sec^0$ | 1 gr |
| Πυκνότης, εἰδικὴ μᾶζα | $cm^{-3}\ gr^1\ sec^0$ | — |
| Χρόνος | $cm^0\ gr^0\ sec^1$ | 1 sec |
| Ταχύτης γραμμικὴ | $cm^1\ gr^0\ sec^{-1}$ | — |
| » γωνιακὴ | $cm^0\ gr^0\ sec^{-1}$ | — |
| Ἐπιτάχυνσις γραμμικὴ | $cm^1\ gr^0\ sec^{-2}$ | — |
| » γωνιακὴ | $cm^0\ gr^0\ sec^{-2}$ | — |
| Δύναμις | $cm^1\ gr^1\ sec^{-2}$ | 1 δύνη $=\frac{1}{981000}$ kg |
| Ροπὴ στρέψεως | $cm^2\ gr^1\ sec^{-2}$ | — |
| Πίεσις | $cm^{-1}\ gr^1\ sec^{-2}$ | 1 βάριον |
| Ροπὴ ἀδρανειας | $cm^2\ gr^1\ sec^0$ | — |
| Ἐνέργεια, ἔργον, ποσὸν θερμότητος | $cm^2\ gr^1\ sec^{-2}$ | 1 ἔργιον$=10^{-7}$ joules$=2{,}39.10^{-8}$ cal |
| Ἰσχὺς | $cm^2\ gr^1\ sec^{-3}$ | $10^{-7}$ watt |

*Ἠλεκτροστατικὸν σύστημα CGS.*

| *Φυσικὸν μέγεθος* | *Διαστάσεις καὶ μονὰς αὐτοῦ εἰς τὸ ὑποσύστημα CGS τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος* | *Μία μονὰς CGS εἶναι ἴση πρὸς* |
|---|---|---|
| Ποσότης ἠλεκτρισμοῦ | $cm^{3/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | $\frac{1}{3}.10^{-9}$ Coul. |
| Δυναμικόν, Τάσις, Η. Ε. Δύναμις | $cm^{1/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | 300 Volt |
| Χωρητικότης | $cm^1\ gr^0\ sec^0$ | $\frac{1}{9}.10^{-11}$ Far. |
| Συντελεστὴς ἐπαγωγ. | $cm^{-1}\ gr^0\ sec^2$ | 9. $10^{11}$ Henry |
| Ἠλεκτρικὴ σταθερὰ | $cm^0\ gr^0\ sec^0$ | — |
| Μαγνητ. διαπερατότης | $cm^{-2}\ gr^0\ sec^2$ | — |
| Ἔντασις ἠλεκτρικοῦ ρεύματος | $cm^{3/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-2}$ | $\frac{1}{3}.10^{-9}$ ἀμπὲρ |
| Ἠλεκτρ. ἀντίστασις | $cm^{-1}\ gr^0\ sec^1$ | 9. $1{,}^{11}$ ohm |

Digitized by Google

*Ἠλεκτρομαγνητικὸν σύστημα CGS*

| *Φυσικὸν μέγεθος* | *Διαστάσεις καὶ μονας αὐτοῦ εἰς τὸ ὑποσύστημα CGS τοῦ φυσικοῦ μετρικοῦ συστήματος* | *Μία μονὰς CGS εἶναι ἴση πρὸς* |
|---|---|---|
| Μαγνητικὸν φορτίον. | $cm^{3/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | — |
| » δυναμικὸν | $cm^{1/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | — |
| Ἔντασις μαγνητικοῦ πεδίου ........... | $cm^{-1/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | 1 Gauss |
| Μαγνητικὴ διαπερατ. | $cm^{0}\ gr^{0}\ sec^{0}$ | — |
| Διηλεκτρικὴ σταθερά. | $cm^{-2}\ gr^{0}\ sec^{2}$ | — |
| Ἔντασις ἠλεκτ. ρεύμ. | $cm^{1/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-1}$ | 10 ἀμπὲρ |
| Ποσότης ἠλεκτρισμοῦ | $cm^{1/2}\ gr^{1/2}\ sec^{0}$ | 10 Coulomb |
| Δυναμικόν, τάσις, Η. Ε. Δύναμις ....... | $cm^{3/2}\ gr^{1/2}\ sec^{-2}$ | $10^{-8}$ Volt |
| Χωρητικότης......... | $cm^{-1}\ gr^{0}\ sec^{2}$ | $10^{9}$ Farad |
| Ἠλεκτρικὴ ἀντίστασ. | $cm^{1}\ gr^{0}\ sec^{-1}$ | $10^{-9}$ Ohm |
| Συντελεστὴς ἐπαγωγ. | $cm^{1}\ gr^{0}\ sec^{0}$ | $10^{-9}$ Heury |

$\frac{cm}{sec}$ καὶ μονὰς ἐπιταχύνσεως (διαστάσεις 1, 0, —2) τὸ $\frac{cm}{sec^2}$. Μονὰς ἐνεργείας (διαστάσεις 1, 1, 0) εἶναι τὸ kg.cm καὶ μονὰς ἰσχύος (διαστάσεις 1, 1, — 1) τὸ $\frac{kg.\,cm}{sec}$. Ἀντὶ τῶν τελευταίων τούτων μονάδων χρησιμοποιοῦνται ἐν τούτοις περισσότερον διάφορα πολλαπλάσια αὐτῶν.

***Τὸ ἠλεκτρικὸν πρακτικὸν σύστημα.*** Τὸ μόνον ἐν χρήσει ὑποσύστημα τοῦ ἠλεκτρικοῦ πρακτικοῦ συστήματος εἶναι τὸ σύστημα βὸλτ-ἀμπὲρ-δευτερόλεπτον. Ἐν τῷ ὑποσυστήματι τούτῳ ὁρίζεται τὸ βὸλτ ὡς τάσις ἴση πρὸς τὸ $\frac{1}{1{,}0183}$ τῆς ἠλεκτρεγερτικῆς δυνάμεως τοῦ προτύπου στοιχείου Weston, μετρουμένης εἰς θερμοκρασίαν 20° Κελσίου· τὸ ἀμπὲρ ὡς ἡ ἔντασις ἥτις, διαρρέουσα ἠλεκτρολυτικὴν διάλυσιν ἀργύρου, καταρρίπτει 1,11800 χιλιοστόγραμμα ἀργύρου ἀνὰ δευτερόλεπτον, καὶ τὸ δευτερόλεπτον ὡς τὸ $\frac{1}{86400}$ τῆς μέσης ἡλιακῆς ἡμέρας. Διὰ τὰ λοιπὰ ἠλεκτρικὰ μεγέθη προκύπτουν αἱ ἑξῆς διαστάσεις καὶ μονάδες: διὰ τὴν ἠλεκτρικὴν ἀντίστασιν (διαστάσεις $V^1$, $J^{-1}$, $t^0$), ἡ μονὰς ohm ἴση πρὸς τὴν ἀντίστασιν ἀγωγοῦ, ὅστις εὑρισκόμενος ὑπὸ τάσιν ἑνὸς βὸλτ διαρρέεται ὑπὸ ἐντάσεως ἑνὸς ἀμπὲρ $\left(1\ ohm = \frac{1\ βόλτ}{1\ ἀμπέρ}\right)$· διὰ τὴν ἰσχὺν (διαστάσεις $V^1$, $J^1$, $t^0$) ἡ μονὰς βάττ, ἴση πρὸς τὴν ἰσχὺν τὴν καταναλισκομένην ἐντὸς ἀγωγοῦ εὑρισκομένου ὑπὸ τάσιν ἑνὸς βὸλτ καὶ διαρρεομένου ὑπὸ ἐντάσεως ἑνὸς ἀμπὲρ (1 βάττ = 1 βὸλτ . 1 ἀμπέρ)· διὰ τὸ ἠλεκτρικὸν φορτίον (διαστάσεις $V^0$, $J^1$, $t^1$) ἡ μονὰς Coulomb, ἴση πρὸς τὸ ἠλεκτρικὸν φορτίον, ὅπερ μεταβιβάζεται ὑπὸ ἐντάσεως ἑνὸς ἀμπὲρ ἐντὸς ἑνὸς δευτερολέπτου (1 Coulomb = 1 ἀμπὲρ . 1 sec)· διὰ τὴν χωρητικότητα (διαστάσεις $V^{-1}$, $J^1$, $t^1$) ἡ μονὰς Farad, ἴση πρὸς τὴν χωρητικότητα πυκνωτοῦ, ὅστις φορτιζόμενος μὲ φορτίον ἑνὸς Coulomb ἀποκτᾷ διαφορὰν δυναμικοῦ ἑνὸς βὸλτ $\left(1\ Farad = \frac{1\ Coulomb}{1\ βόλτ}\right)$· καὶ διὰ τὸν συντελεστὴν ἐπαγωγῆς (διαστάσεις $V^1$, $J^{-1}$, $t^1$) ἡ μονὰς Henry, ἴση πρὸς τὸν συντελεστὴν αὐτεπαγωγῆς ἀγωγοῦ, ὁ ὁποῖος, αὐξομειουμένης τῆς διαρρεούσης αὐτὸν ἐντάσεως κατὰ ἓν ἀμπὲρ εἰς τὸ δευτερόλεπτον, παράγει ἠλεκτρεγερτικὴν δύναμιν ἴσην πρὸς 1 βὸλτ $\left(1\ Henry = \frac{1\ βολτ\,.\,1\ sec}{1\ ἀμπέρ}\right)$.

Γ. Θ. ΚΑΚΡΙΔΗΣ

—**μετρικὴ *διασκέλισις*** *[Μετρ.]*· βλ.λ. *διασκέλισμα.*

— **μετρικὸν *δεκαδικὸν σύστημα*** · βλ. *μέτρον.*

**μετριοθήριον** (τὸ) (Metriotherium) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *διχοβουνιδῶν βουνοσελενοδοντίων ὁπληφόρων θηλαστικῶν*. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῶν φωσφοριτῶν τοῦ Quercy. Συνώνυμα: *δειλοθήριον, σπανιοθήριον.* Γ. Κ. Γ.

**μετριοκεφαλία** (ἡ). Μέση ἀνάπτυξις τῆς κεφαλῆς ὡς πρὸς τὴν χωρητικότητα τῆς κρανιακῆς κάψης. Ἡ μετριοκεφαλία περιορίζεται μεταξὺ 1300—1450 κ.ἑ.μ. Τὴν βαθμῖδα ταύτην περίπου καλοῦσιν ἐπίσης *μεσοκεφαλίαν,* ἀλλ' ὁ ὅρος οὗτος φέρει σύγχυσιν πρὸς τὴν διαίρεσιν μήκους—πλάτους τῆς κεφαλῆς (δολιχο—, μεσο—, βραχυκεφαλία) ἢ *μετριεκγεφαλίαν*. Ἡ μετριοκεφαλία περιλαμβάνει τὸ συνηθέστερον πλάτος ποικιλίας τοῦ κρανίου μεταξὺ τῶν διαφόρων φυλῶν. Ἐπὶ τῆς γυναικὸς διαφέρουν τὰ ὅρια ταύτης κατὰ 150 κ.ἑ.μ. περίπου ἐπὶ ἔλαττον. Ι. Γ. Κ.

**μετριοκρανία** (ἡ). Ἀκριβέστερος ὅρος, ἀντὶ τοῦ ὅρου *μετριοκεφαλία* (βλ. λ.), ὅταν ἔχωμεν πρὸς μελέτην κρανίον καὶ οὐχὶ κεφαλὴν μετὰ τῶν μαλακῶν μορίων. Ι. Γ. Κ.

**μετριομετωπία** (ἡ). Ἡ μέση μορφὴ τοῦ μετώπου, ἐκ τοῦ δείκτου πλάτους μετώπου—πλάτους κρανίου, ἔχομεν: *στενομετωπίαν, μετριομετωπίαν* (66.0—68.9, δείκτης μετωποβρεγματικὸς) καὶ *εὐρυμετωπίαν*. Ὅσον πλέον βραχυκέφαλον τὸ κρανίον, τόσον χαμηλότερος ὁ δείκτης, δηλαδὴ στενομέτωπον τὸ ἄτομον, καὶ τοὐναντίον. Ι. Γ. Κ.

**μέτριον** *[Λογικ.]*. Μνημονικὸς τύπος τοῦ τρίτου τρόπου τοῦ δευτέρου σχήματος τοῦ κατηγορικοῦ συλλογισμοῦ. Εἰς τὸν τρόπον τοῦτον (Ε,Ι,Ο) ἡ μείζων πρότασις εἶναι καθόλου ἀποφατική, ἡ ἐλάσσων μερικὴ καταφατικὴ καὶ τὸ συμπέρασμα μερικὸν ἀποφατικόν: Κ ε Μ, Υ ι Μ, Υ ο Κ. Παράδειγμα:

Οὐδεὶς φιλότιμός ἐστι φυγόπονος.
Τινὲς εὐκατάστατοι εἰσὶ φυγόπονοι.
Τινὲς ἄρα εὐκατάστατοι οὐκ εἰσὶ φιλότιμοι. Θ. Π.

**μετριοπάθεια** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μετριοπαθοῦς, ἡ μετριότης, ὁ περιορισμὸς τοῦ πάθους, τῶν ἀξιώσεων, τῶν ἀπαιτήσεων, μετριοφροσύνη: «κατὰ τὴν συζήτησιν ἔδειξεν ἐπαινετὴν μετριοπάθειαν».

**μετριοπαθὴς** (ὁ, ἡ), *—ἐς* (τό)· ὁ μέτριος εἰς τὰ πάθη του, ὁ μὴ φθάνων εἰς ἀκρότητας, ἐπιεικής, εὐδιάλλακτος: «αἱ ἀξιώσεις του εἶναι μετριοπαθεῖς», «μετριοπαθὴς πολιτευόμενος».—Ἐπίρρ. ***μετριοπαθῶς.***

**μετριορρυγχίδαι** (οἱ) (Metriorhynchidae) *[Παλαιοζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *κροκοδειλίων ἑρπετῶν*. Οἱ μετριορρυγχίδαι ἦσαν κροκόδειλοι μὲ δέρμα γυμνόν, ἄνευ ὀστεϊκῶν πλακῶν, εἰς μέγαν βαθμὸν προσηρμοσμένοι εἰς τὴν ἐν ὕδατι ζωήν. Τὰ ἐμπρόσθια ἄκρα των, ἀτροφικά, δεικνύουν καλῶς ὅτι εἶναι πόδες πρὸς βάδισιν μεταβληθέντες εἰς νηκτικὰ ὄργανα. Τὸ ὀπίσθιον, πρὸς τὰ κάτω κεκαμμένον τμῆμα τῆς οὐρᾶς των εὑρίσκετο εἰς σύνδεσμον μὲ κατακόρυφον μικρότερον οὐραῖον πτερύγιον. Οἱ μετριορρυγχίδαι εἶχον ἰσχυρὰν κεφαλήν, καταλήγουσαν εἰς ῥύγχος μετρίως μακρὸν καὶ εὐρὺ πρὸς τὰ ὀπίσω. Τὰ ὀπίσθια ἄκρα των ἦσαν μεγάλοι κωπηλατικοὶ πόδες. Τὰ κυριώτερα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *μετριόρρυγχος,* ὁ *δακόσαυρος,* ὁ *γεώσαυρος* καὶ ὁ *νευστόσαυρος*. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἰουρασίου καὶ τῆς παλαιοκρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ ἐν Εὐρώπῃ καὶ Παταγονίᾳ. Συνώνυμον: *θαλασσοζούχια.* Γ. Κ. Γ.

**μετριόρρυγχος** (ὁ) (Metriorhynchus) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ἀπολιθωμένων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μετριορρυγχιδῶν κροκοδειλίων* ἑρπετῶν. Οἱ μετριόρρυγχοι εἶχον ῥύγχος συμπεπιεσμένον, βαθμηδὸν στενούμενον, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μακρόν. Πολυάριθμα εἴδη εὑρέθησαν ἀπολιθωμένα ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἀνωτέρας δογγερίου καὶ τῆς κατωτέρας καὶ μέσης μαλμίου ὑποδιαπλάσεως τῆς ἰουρασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς τὴν Βόρειον Γαλλίαν καὶ Ἀγγλίαν ὡς καὶ ἐντὸς ἰουρασίων στρωμάτων τῆς Παταγονίας. Γ. Κ. Γ.

**μέτριος,** *—α, —ον·* ὁ ἔχων τὸ μέτρον, ὁ μεταξὺ δύο ἄκρων, ὁ οὔτε μέγας οὔτε μικρός, ὁ μὴ ὑπερβολικός: «μέτριος καύσων», «εἶναι μέτριος εἰς τὸ ἀνάυτημα, —εἰς τὸ πάχος, —εἰς τὴν ἱκανότητα», «πωλεῖ εἰς τιμὰς μετρίας», «γυνὴ μετρίας καλλονῆς»· ‖ ἐπὶ ποιότητος, κατώτερος τοῦ καλοῦ, ἐλλιπής: «μέτριος ἐπιστήμων, — μαθητής».—Ἐπίρρ. ***μετρίως.***

—*[Μετεωρολογ.]* Βαθμὶς τῶν διαφόρων ἐν χρήσει ἀνεμομετρικῶν κλιμάκων. Εἰς τὴν διεθνῆ ἀνεμομετρικὴν κλίμακα τοῦ Beaufort, *ἄνεμος μέτριος* χαρακτηρίζεται ὑπὸ τῆς ἐνδείξεως 4, ἥτις ἀντιστοιχεῖ εἰς ταχύτητα ἀνέμου 5,3 μέχρι 7,4 μέτρων ἀνὰ πᾶν δευτερόλεπτον. Θ. Θ. Φ.

— **μετρίως** (ἰταλ. moderato) *[Μουσ.]*. Μουσικὸς ὅρος σημαίνων ἀγωγὴν οὔτε πολὺ βραδεῖαν οὔτε πολὺ γοργήν. Εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον συντομογραφία τοῦ *μετρίως γοργὰ* (allegro moderato).

**μετριόσιτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μετρίως σιτούμενος, ὀλιγοφάγος.

**μετριότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μετρίου, τὸ νά εἶναί τις μέτριος, συνήθως ἀντὶ τοῦ *μέτριος*: «ὡς ἐπιστήμων εἶναι μετριότης».

— *[Ρητορ.]* Ἡ *μετριότης* εἶναι μία τῶν ἀρετῶν (ποιοτήτων) τοῦ ῥήτορος. Πηγάζει δ' αὕτη ἐκ τῆς μετριοφροσύνης, τῆς συστολῆς, τῆς κοσμιότητος καὶ τῆς εὐπρεπείας ἐν γένει, ἣν ὁ ῥήτωρ τηρεῖ ἐνώπιον τοῦ ἀκροατηρίου ὡς πρὸς τὸ σχῆμα τῆς περιβολῆς, τὴν στάσιν τοῦ σώματος, τὸ βλέμμα, τὰς κινήσεις τῆς κεφαλῆς καὶ τῶν χειρῶν, τὸν τόνον τῆς φωνῆς, καὶ πρὸ πάντων ὡς πρὸς τὰς ἐκφράσεις καὶ τοὺς ἄλλους τρόπους, διότι πάντα ταῦτα εἶναι συστατικὰ καὶ παραίτια τῆς εὐνοίας τῶν ἀκροατῶν. Ἡ μετριότης, ὡς μέσος ὅρος ἀρετῆς, ἵσταται ἐν μέσῳ δύο κακιῶν, τῆς ἀλαζονείας καὶ τῆς δουλοφροσύνης· ἡ μὲν εἶναι μισητή, ἡ δὲ ἐξευτελιστικὴ καὶ καταφρονητέα, ἀμφότεραι δὲ πρέπει ν' ἀποφεύγωνται· «ἔχειν δεῖ τὸν ἀληθῆ ῥήτορα μὴ ταπεινὸν φρόνημα καὶ ἀγεννές, δῆλον δὲ μηδένα γίνεσθαι ῥήτορα» ἐδόξαζον οἱ ἀρχαῖοι· ὁ δὲ Ἀριστοτέλης συνίστα: «φυλάττου δὲ καὶ τὰς αἰσχρὰς πράξεις μὴ αἰσχροῖς ὀνόμασι λέγειν, ἵνα μὴ διαβάλῃς τὸ ἦθος, ἀλλὰ τὰ τοιαῦτα αἰνιγματωδῶς ἑρμηνεύειν, καὶ ἑτέρων πραγμάτων ὀνόμασι χρώμενος, δηλοῦν τὸ πρᾶγμα» (Ρητορ. πρὸς Ἀλέξ. λε'). Ἀναγκαζόμενος δέ τις νὰ ὁμιλήσῃ περὶ τοῦ ἑαυτοῦ του, ὀφείλει πάντως νὰ δικαιολογήσῃ τὴν ἀνάγκην ταύτην, καὶ ἀποφεύγων τὴν περιαυτολογίαν νὰ εἴπῃ μετριοφρόνως ὅσα πρέπει· οὕτως ὁ Δημοσθένης, ἠναγκασμένος πρὸς ἀπολογίαν του νὰ ὁμιλήσῃ ὑπὲρ ἑαυτοῦ, αἰτιᾶται μὲν τὸν αἴτιον τούτου Αἰσχίνην, μετριώτατα δὲ διεξέρχεται τὰ καθ' ἑαυτὸν (Περὶ τοῦ στεφ. § β). Ι. Φ. Δ.

**μετριοφρονῶ** (*—έω*)· εἶμαι μετριόφρων, δὲν σκέπτομαι ἀλαζονικῶς.

**μετριοφροσύνη** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μετριόφρονος, ἡ μετριότης περὶ τὰς ἀξιώσεις ἢ ἀπαιτήσεις, μετριοπάθεια: «ἡ μετριοφροσύνη εἶναι κάλλιστον κόσμημα».

—*[Ἠθικολ.]* Συστολὴ καὶ ἐγκράτεια εἰς τὸν τρόπον, καθ' ὃν σκεπτόμεθα καὶ ὁμιλοῦμεν περὶ τοῦ ἑαυτοῦ μας. Κατὰ τὸν Λαβρυγιὲρ ἡ μετριοφροσύνη εἶναι διὰ τὴν ἀξίαν, ὅ,τι αἱ σκιαὶ διὰ τὸν ζωγραφικὸν πίνακα· τὴν ἐξαίρει καὶ τὴν ἐνισχύει. Κατὰ τὸν Boiste δὲν ὑπάρχει ἀληθὴς μετριοφροσύνη ἢ εἰς τοὺς ἀξιολόγους ἄνδρας καὶ εἰς τὰς μεγαλοθύμους ψυχάς. Κατὰ τὸν Ρουσσὼ ἡ μετριοφροσύνη εἶναι ἡ ἀκριβοδικαία μετριοπάθεια τοῦ πνεύματος καὶ τῆς ψυχῆς. Ἡ ἀφέλεια συνίσταται εἰς τὸ νὰ φανερώνωμεν ὅ,τι εἴμεθα, ἐνῷ ἡ μετριοφροσύνη εἰς τὸ ν' ἀποκρύπτωμεν τὰ προτερήματά μας. Διότι ἡ μετριοφροσύνη φοβεῖται μήπως παρατηρηθῇ καὶ δὲν διαμφισβητεῖ ἀπὸ κανένα τὰ πλεονεκτήματα τῆς καλλονῆς, τοῦ πνεύματος, τῶν προτερημάτων κλπ. Ἡ ἐπίπλαστος μετριοφροσύνη εἶναι ἐλάττωμα τόσῳ μᾶλλον ἀπεχθές, ὅσῳ ἀποτελεῖ παγίδα διὰ τὴν ἐμπιστοσύνην μας ὑπὸ τὴν φαινομενικὴν ἀφέλειαν. Κατὰ τὸν Ρουσσώ, ἡ ἄκρα μετριοφροσύνη ἐνέχει κινδύνους καθὼς καὶ ἡ ὑπεροψία. Κατὰ τὸν πρίγκιπα de Ligne ἡ μετριοφροσύνη δὲν εἶναι πολλάκις ἢ ὑποκρισία, τὴν ὁποίαν χρησιμοποιοῦμεν διὰ ν' αὐταπατώμεθα. Κατὰ τὸν Τσέστερφηλδ, ἡ μετριοφροσύνη εἶναι διὰ τὴν ἀρετὴν ὅ,τι ὁ πέπλος διὰ τὴν καλλονήν. Ὁ Ζήνων ὥρισε τὴν μετριοφροσύνην ἐπιστήμην τῆς κοσμίας κινήσεως. Τ. Δ.

**μετριόφρων,** *—ονος* (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μέτρια περὶ ἑαυτοῦ φρονῶν, ὁ ἁπλοῦς τὸ ἦθος, ὁ μὴ ἐπιδεικνυόμενος, ἀντίθ. *ἀλαζών, ὑπερόπτης*: «μετριόφρων ἐπιστήμων,—ἰατρός», «εἶναι τόσον μετριόφρων, ὥστε ἀγνοεῖ τὴν ἱκανότητά του». — Ἐπίρρ. ***μετριοφρόνως.***

**μετρογραφία** (ἡ)· περιγραφή, πραγματεία περὶ μέτρων καὶ σταθμῶν.

**μετροκάμπη** (ἡ) (Metrocampe) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων λεπιδοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *εὐμονιδῶν,* περιλαμβάνον μεγάλας ψυχὰς ἀπαντώσας εἰς τὰς χώρας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μετροκήριον** (τό). Μονὰς φωτισμοῦ, ἴση πρὸς τὸν φωτισμὸν τὸν ὁποῖον παράγει φωτεινὴ πηγὴ ἐντάσεως ἑνὸς κηρίου ἐπὶ ἐπιφανείας ἀπεχούσης 1 μέτρον ἀπὸ τῆς πηγῆς καὶ φωτιζομένης καθέτως ὑπ' αὐτῆς. Τὸ μετροκήριον καλεῖται διεθνῶς καὶ Lux (λοὺξ). Ἀντιστοίχως δὲ πρὸς τὰ διάφορα εἴδη τῶν κηρίων ἔχομεν καὶ διάφορα εἴδη Lux. Εἰς τὸ κηρίον Hefner ἀντιστοιχεῖ τὸ μετροκήριον Hefner (Hefner—Lux), εἰς τὸ κηρίον Standard (ἴσον πρὸς 1,11 κηρία Hefner), ἀντιστοιχεῖ τὸ μετροκήριον Standard (Standard-Lux) κ. ο. κ. (βλ. καὶ λ. *φωτομετρία καὶ φωτομετρικαὶ* μονάδες). Γ. Θ. Κ.

**μετρολογία** (ἡ). Ἡ ἐπιστήμη ἡ ἐρευνῶσα τὰ διάφορα μέτρα καὶ σταθμά, διαφόρων χωρῶν καὶ ἐποχῶν. Εἰς τὴν φυσικὴν καλεῖται μετρολογία τὸ τμῆμα αὐτῆς τὸ πραγματευόμενον τὰ διάφορα μετρικὰ συστήματα, τὰς προτύπους μονάδας, τὰς μεθόδους μετρήσεως κ.τ.λ. Γ. Θ. Κ.

**μετρολογικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετρολογίαν: «μετρολογικαὶ παρατηρήσεις».

**μετρολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ περὶ τὰ μέτρα καὶ τὰ σταθμὰ ἀσχολούμενος.

—*[Ἀρχ.]* Πολλοὶ τῶν ἀρχαίων μετρολόγων συνέγραψαν περὶ ἀρχαίων μέτρων καὶ σταθμῶν. Ἐκ τούτων οἱ σπουδαιότεροι ἦσαν: Ὁ *Ἥρων* ὁ ἐξ Ἀλεξανδρείας, ἀκμάσας κατὰ τὰ τέλη τοῦ Β' π. Χ. αἰῶνος καὶ συγγράψας πίνακας περὶ μέτρων μήκους καὶ ἐπιφανείας, ὡς καὶ μέτρων χωρητικότητος τῶν ῥωμαϊκῶν ἐπαρχιῶν τῆς Αἰγύπτου, ὁ ἐξ Ἀλεξανδρείας ἐπίσης *Δίδυμος,* συγγράψας τὸ ἔργον «Μέτρα μαρμάρων καὶ παντοίων ξύλων», ὁ *Δαρδάνιος,* ἀκμάσας ἐπὶ Κωνσταντίνου τοῦ Μεγάλου ἢ ὀλίγον ἀργότερον καὶ συγγράψας «Περὶ στα-



Digitized by Google

θμῶν», ὁ *Διόδωρος* τῶν ἀρχῶν τοῦ Ε' μ. Χ., αἰῶνος, γράψας περὶ σταθμῶν καὶ μάλιστα περὶ τοῦ ἀργυροῦ ἀττικοῦ ταλάντου καὶ τῶν ὑποδιαιρέσεων αὐτοῦ ἐν σχέσει πρὸς τὸ σόλδιον, ὁ ἀνώνυμος συγγραφεὺς τοῦ ἔργου «Περὶ μέτρων καὶ σταθμῶν καὶ τῶν δηλούντων αὐτὰ σημάτων», ὁ Ἰούλιος ὁ Ἀφρικανός, ὅστις ἔγραψε τὸ ἔργον «Κεστοί», ὁ Ἐπιφάνιος, ὁ ἐπίσκοπος Κωνσταντίας Κύπρου, ὅστις ἔγραψε περὶ μέτρων καὶ σταθμῶν ἐμπεριστατωμένην μελέτην περὶ μέτρων χωρητικότητος καὶ ἰδίως περὶ τῶν ἑβραϊκῶν τοιούτων, ὁ *Εὐσέβιος*, ἐπίσκοπος τῆς Καισαρείας ἐν Παλαιστίνῃ, ὁ *Γαληνὸς* κ. ἄ. Ἐκ τῶν νεωτέρων μετρολόγων, οἱ ὁποῖοι ἠσχολήθησαν περὶ τῆς ἀρχαίας μετρολογίας εἶναι ὁ Böckh, ὁ Hussey, ὁ Mommsen ἀλλὰ διασημότερος ὅλων ὁ Fr. Hultch, ὁ συγγραφεὺς τοῦ κλασσικοῦ ἔργου «Griechische und römische Metrologie». Ἐκ τῶν ἡμετέρων μετρολόγος εἶναι ὁ Παπαδόπουλος ὁ Κεραμεύς. Β. Δ. Θ.

**μετρομανής** (ὁ, ἡ), —ές (τό)· ὁ περὶ τὰ μέτρα τῆς ποιήσεως ἐμμανής, ὁ μέχρι μανίας ἀγαπῶν νὰ στιχουργῇ.

**μετρομανία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μετρομανοῦς, ἡ μανία τοῦ στιχουργεῖν.

**μέτρον** (τό)· τὸ δι' οὗ μετρεῖταί τι, ὡρισμένη τις μονὰς πρὸς ἣν συγκρίνεται μῆκος, ποσὸν ἢ ἔκτασις: «μέτρα μήκους, —ἐπιφανείας, —ὄγκου, —χωρητικότητος»· ‖ κατ' ἐξοχήν, μονὰς μήκους, τὸ γαλλικὸν μέτρον, ἡ βασικὴ μονὰς τοῦ δεκαδικοῦ μετρικοῦ συστήματος· ‖ μεταφ., ὁ τρόπος, ἡ βάσις μὲ τὴν ὁποίαν κρίνεταί τι: «μὲ ποῖον μέτρον θὰ κρίνωμεν τὴν ἀξίαν τοῦ ἀνθρώπου; μὲ τὸ μέτρον τῆς ἠθικῆς», πρβλ. «ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε, ἀντιμετρηθήσεται ὑμῖν» (*Ματθ.* 7, 2)· ‖ τρόπος ἐνεργείας, ἰδίᾳ μέσον προφυλακτικόν: «μέτρα προφυλακτικά,—ἀσφαλείας,—ἀμύνης», «λάβε τὰ μέτρα σου»· ‖ φρ. «ἐν τῷ μέτρῳ τῶν δυνάμεών του» ὅσον δύναται· ‖ τὸ ὀρθὸν μέτρον, τὸ μέσον μεταξὺ πολλοῦ καὶ ὀλίγου, μεγάλου καὶ μικροῦ: «πᾶν μέτρον ἄριστον», «εἶναι ὑπὲρ τὸ μέτρον ἐπιεικής, —αὐστηρός»· ὁμοίως: «ἐν μέτρῳ», «κατὰ μέτρον», «ἄνευ μέτρου».

Δημοτ. *μέτρο* ἢ *μέτρος* (τό)· μέτρημα, ἀρίθμησις: «ἔκαμα λάθος 'ς τὸ μέτρος»· ‖ ὡρισμένη ποσότης: «'ς τὰ καματερὰ δὲν τήνε δίνουνε τὴν τροφὴ μὲ τὸ μέτρο, τ' ἀφίνουν καὶ τρῶνε ὅσο θέλουν»· ‖ φρ. «παίρνω μέτρα» μετρῶ τὰς διαστάσεις, κάμνω τὰς ἀναγκαίας μετρήσεις διὰ νὰ κατασκευάσω τι: «πηγαίνω 'ς τὸ ράφτη, — 'ς τὸν τσαγγάρη νὰ μοῦ πάρῃ μέτρα».

Ἐν συνθέσει ὡς δεύτερον συνθετικὸν σημαίνει τὸ ὄργανον δι' οὗ μετρεῖταί τι: *βαρόμετρον, θερμόμετρον, μανόμετρον, χρονόμετρον* κτλ.· ‖ ὅταν δὲ ὡς πρῶτον συνθετικὸν χρησιμεύῃ ἀριθμητικόν, τότε σημαίνει πολλαπλάσια ἢ ὑποπολλαπλάσια τοῦ ἀριθμητικοῦ: *δεκάμετρον, ὑποδεκάμετρον, χιλιόμετρον* κτλ.

—[*Ἐγκυκλ.*] Τὸ πρῶτον βῆμα τοῦ ἀνθρώπου πρὸς δημιουργίαν *μετρικοῦ συστήματος* ὑπῆρξε προφανῶς ὁ προσδιορισμὸς τῆς μονάδος τοῦ μήκους, φυσικὸν δὲ ἦτο πρὸς τὸν σκοπὸν αὐτὸν νὰ λάβῃ ὑπ' ὄψιν τὸ ἀνθρώπινον σῶμα καὶ τὰ διάφορα μέρη αὐτοῦ. Τὰ προχειρότερα στοιχεῖα, τὰ ὁποῖα ἔθεσεν ἡ φύσις εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ἀνθρώπου διὰ νὰ ἐκτιμήσῃ τὸ μῆκος ἢ πλάτος ἑνὸς ἀντικειμένου ἦσαν ὁ δάκτυλος, ἡ ἄκρα χείρ, ὁ βραχίων, οἱ δύο βραχίονες τεταμένοι, ὁ πούς, ἡ ἀπόστασις τῶν δύο ποδῶν κατὰ τὸ βάδισμα. Τὰ στοιχεῖα ταῦτα ἀπετέλεσαν εἰς ὅλους τοὺς ἀρχαίους πολιτισμοὺς τὴν βάσιν τοῦ μετρικοῦ συστήματος, πλὴν ἐκείνων τῶν *μέτρων*, τὰ ὁποῖα διὰ τὸ ὑπερμέγεθες αὐτῶν δὲν εἶναι μετρητὰ διὰ τῶν μερῶν τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος. Τὰ τελευταῖα ταῦτα μέτρα, τὰ μεγαλύτερα μέτρα μήκους ἰδίως, εὑρίσκομεν ὅτι κατὰ τοὺς ἀρχαιοτάτους χρόνους δὲν παρήχθησαν τεχνικῶς ἐκ τῶν μικροτέρων, ἀλλ' ἐλήφθησαν ἐξ ἀποστάσεων ἀπαντωμένων εἰς τὴν φύσιν καὶ τὴν συνήθη ζωήν. Οὕτω λ. χ. ὁ Ὅμηρος καταμετρεῖ ἀποστάσεις διὰ τῆς βολῆς λίθου, δίσκου, δόρατος, καὶ διὰ τῆς ἔτι μᾶλλον ἀορίστου περιγραφῆς «τόσον ἀπὸ πτόλιος ὅσον τε γέγωνε βοήσας». Αἱ μακρότεραι ἀποστάσεις ἐμετροῦντο διὰ χρόνου ὡς «ἡμέρας ὁδόν», τὸ ὁποῖον σύστημα, ὡς γνωστόν, εἶναι κοινῶς ἐν χρήσει ἀκόμη καὶ σήμερον. Ἄλλος τρόπος προσδιορισμοῦ ἀποστάσεως ἦτο παρ' ἀρχαίοις ὁ διὰ παραβολῆς πρὸς ἄλλην καλῶς γνωστήν, ὡς τοιαύτη δὲ βάσις ὁδοιπορικῶν μέτρων ἐχρησιμοποιεῖτο ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων τὸ στάδιον, ἤτοι τὸ μῆκος τοῦ Ὀλυμπικοῦ σταδίου (600 πόδες).

Ἡ γνῶσις ἡμῶν τῆς ἀρχαίας μετρολογίας—εἰς τὴν ὁποίαν πλὴν τῶν μέτρων περιλαμβάνονται καὶ τὰ *σταθμὰ*—ἐστηρίζετο κατ' ἀρχὰς σχεδὸν ἀποκλειστικῶς εἰς τὰς σχετικὰς πληροφορίας τῶν ἀρχαίων συγγραφέων, ἐκ τῶν ὁποίων, λαμβανομένης ἰδίως ὑπ' ὄψιν τῆς μεγάλης ποικιλίας τῶν ἐν χρήσει μέτρων κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, δὲν ἠδύνατό τις νὰ φθάσῃ εἰς ἀσφαλῆ συμπεράσματα. Τὰ μειονεκτήματα ταῦτα εἶναι καταφανῆ εἰς τὸ περισπούδαστον κατὰ τὰ ἄλλα ἔργον περὶ τῆς ἀρχαίας μετρολογίας τοῦ μεγάλου Γερμανοῦ σοφοῦ Boeckh, γραφὲν πρὸ ἑνὸς περίπου αἰῶνος. Μολονότι ὅμως ἡ σχετικὴ ἔρευνα προήχθη ἔκτοτε λίαν σημαντικῶς, ἀποκτήσασα θετικωτέρας βάσεις διὰ τῆς μελέτης μεγάλης πληθύος δειγμάτων ἀρχαίων μέτρων καὶ σταθμῶν, ἀνακαλυφθέντων κυρίως ἐν Αἰγύπτῳ, ἐν τούτοις πολλὰ σημεῖα τοῦ ζητήματος τούτου παραμένουν ἀκόμη ἀσαφῆ καὶ ἀμφίβολα καὶ διὰ νὰ κατορθωθῇ νὰ καθορισθοῦν ἀκριβῶς εἶναι ἀνάγκη περαιτέρω ἐργασίας ἐπὶ τῶν μνημείων.

Πλὴν τῶν μέτρων *μήκους* ἢ *γραμμικῶν* μέτρων, ἔχομεν καὶ μέτρα *ἐπιφανείας* καὶ μέτρα *χωρητικότητος* ἢ *ὄγκου*, ἐφ' ὅτον ἡ βάσις ἀπὸ ἁπλῆς εὐθείας γραμμῆς μετατρέπεται εἰς τετράγωνον ἢ κύβον. Τὰ γνωστὰ δὲ εἰς ἡμᾶς μέτρα τῶν τριῶν αὐτῶν εἰδῶν παρὰ τοῖς διαφόροις ἱστορικοῖς λαοῖς τῆς ἀρχαιότητος ἦσαν κατὰ σειρὰν τὰ ἑξῆς:

*Αἰγύπτιοι*. Ἡ μονὰς τῶν γραμμικῶν μέτρων τῶν ἀρχαίων Αἰγυπτίων ἦτο ὁ *πῆχυς (μέχ)*, τοῦ ὁποίου ὁ μέσος ὅρος ἐπὶ τῇ βάσει πολλῶν περισωθέντων δειγμάτων, ἀνηκόντων εἰς διαφόρους ἐποχάς, δύναται νὰ προσδιορισθῇ εἰς 0,525 μ. Ὁ πῆχυς αὐτὸς ἦτο ὁ λεγόμενος *βασιλικὸς πῆχυς*, ὑποδιαιρούμενος εἰς 7 *παλαιστὰς (σέπ)* καὶ 28 *δακτύλους (ζεβό)*. Πλὴν αὐτῶν ὅμως ὑπῆρχον ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἄλλοι πήχεις μὲ ἄλλας ὑποδιαιρέσεις, ὡς καταφαίνεται ἐκ τοῦ κατωτέρω πίνακος:

*Ἀρχαῖος πῆχυς, βασιλικὸς* ἢ *ἱερός*, ὑποδιαιρούμενος εἰς 2 *πόδας (ζερέτ)*, 7 *παλαιστὰς* ἢ *παλάμας* καὶ 28 *δακτύλους*, 0,525 μ.

*Πῆχυς φιλεταιρικὸς* (ἀποδιδόμενος εἰς τὸν Φιλέταιρον τῆς Περγάμου), διαιρούμενος εἰς 2 *σπιθαμάς*, 6 *παλάμας* 24 *δακτύλους*, 0,525 μ.

*Βραχὺς ἀρχαῖος πῆχυς*, ὁ *κοινὸς* (κατὰ μίαν παλάμην μικρότερος τοῦ βασιλικοῦ), διαιρούμενος εἰς 6 παλάμας καὶ 24 δακτύλους, 0,450 μ.

*Ποὺς φιλεταιρικὸς* = $^{2}/_{3}$ τοῦ φιλεταιρικοῦ πήχεως, διαιρούμενος εἰς 4 παλάμας καὶ 16 δακτύλους, 0,350 μ.

*Ἀρχαῖος αἰγυπτιακὸς ποὺς* = $^{2}/_{3}$ τοῦ κοινοῦ πήχεως, διαιρούμενος εἰς 4 παλάμας καὶ 16 δακτύλους, 0,300 μ.

*Ιιοὺς* ἢ *ζερὲτ αἰγυπτιακὸς* = $^{1}/_{2}$ τοῦ βασιλικοῦ πήχεως, διαιρούμενος εἰς 14 δακτύλους, 0.262 μ.

*Σπιθαμὴ φιλεταιρικὴ* τοῦ αὐτοῦ μήκους μὲ τὸν ζερέτ, ἀλλὰ διαιρουμένη εἰς 3 παλάμας καὶ 12 δακτύλους, 0,262 μ.

*Σπιθαμὴ κοινή*, διαιρουμένη εἰς 3 παλάμας καὶ 12 δακτύλους, 0.262 μ.

*Παλάμη φιλεταιρική*, διαιρουμένη εἰς 4 δακτύλους, 0.087 μ.

*Ἀρχαία παλάμη αἰγυπτιακή*, διαιρουμένη εἰς 4 δακτύλους, 0,075 μ.

*Δάκτυλος φιλεταιρικός*, 0.0218 μ.

*Ἀρχαῖος δάκτυλος αἰγυπτιακός*, 0.0187 μ.

Τὰ μέτρα ἐπιφανείας ἐξ ὅσων γνωρίζομεν ἦσαν τὰ τετράγωνα τῶν μέτρων μήκους. Τὰ μέτρα ὄγκου, ὅπως τὰ τῆς ἐπιφανείας, ἐξαρτῶνται ἐκ τῶν γραμμικῶν, τῶν ὁποίων εἶναι οἱ κύβοι, ὅπως φαίνεται ἐκ τοῦ κατωτέρω πίνακος, ἔνθα σημειοῦνται εἰς γαλλικὰ λίτρα:

*Κυβικὸς βασιλικὸς πῆχυς* = 21,922 κυβικοὶ δάκτυλοι, 144 λίτ. 704.

*Τάμα* $^{1}/_{2}$ τοῦ κυβικοῦ βασιλικοῦ πήχεως, 72 λίτραι 352.

*Μεγάλη ἀρτάβη* $^{1}/_{4}$ τοῦ κυβικοῦ βασιλικοῦ πήχεως, 36 λίτ. 176.

*Ἄπετ κυβικὸς ζερέτ*, 18 λίτ. 088.

*Τένα* ἢ *μεγάλη ἴν* $^{1}/_{2}$ τοῦ ἄπετ, 9 λίτ. 044.

*Ἴν ἱερὸν* $^{1}/_{4}$ τοῦ ἄπετ, 4 λίτ. 522.

Τὸ $^{1}/_{10}$ τοῦ ἱεροῦ ἴν, 0. λίτ. 452.

*Μικρὸν ἴν*, ἢ *κυβικὴ παλάμη*, 0 λίτ. 422.

$^{1}/_{2}$ τοῦ μικροῦ ἴν, ἢ $^{1}/_{2}$ κυβικῆς παλάμης, 0, λίτραι 211.

*Ἴβν* ἢ $^{1}/_{4}$ τοῦ μικροῦ ἴν, 0 λίτ. 105.

*Κυβικὸς δάκτυλος*, 0 λίτ. 0.0065.

*Χαλδαῖοι καὶ Ἀσσύριοι*. Ὅπως οἱ πλεῖστοι τῶν πρωτογόνων λαῶν, οὕτω καὶ οἱ Χαλδαῖοι, οἱ ὁποῖοι προήγαγον τὴν ἔρευναν τῶν μαθηματικῶν ἐπιστημῶν, ἤρχισαν νὰ μετροῦν διὰ τῶν δακτύλων· τὰ δάκτυλα τῶν δύο χειρῶν ἀπετέλεσαν τὴν δεκάδα, κατ' αὐτὸν δὲ τὸν ἁπλοῦν καὶ φυσικὸν τρόπον ἐγένετο ἡ ἐφεύρεσις τοῦ δεκαδικοῦ συστήματος. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ δεκὰς δὲν διαιρεῖται ἐπακριβῶς οὔτε εἰς τρία οὔτε εἰς τέσσαρα μέρη, ἐφεῦρον ἐπίσης καὶ τὴν δωδεκάδα, τὴν ὁποίαν οἱ σοφοὶ Χαλδαῖοι ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὸ δεκαδικὸν σύστημα ἔλαβον ὡς βάσιν τοῦ ἀριθμητικοῦ των συστήματος, ὅπως γνωρίζομεν ἐκ τῶν τριῶν βαθμῶν αὐτοῦ, τῶν ὁποίων τὰ ὀνόματα διεσώθησαν ἑλληνιστί, ἤτοι τῶν δύο δωδεκαδικῶν, *σώσσου*=60 καὶ *σάρου*=60×60 καὶ τοῦ δεκαδικοῦ *νήρου*=10 σῶσσοι=600.

Ὁλόκληρον τὸ μετρικὸν σύστημα τῆς Νινευΐ καὶ τῆς Βαβυλῶνος στηρίζεται ἐπὶ τῆς αὐτῆς τυπικῆς γραμμικῆς μονάδος, τῆς *σπιθαμῆς*, ἡ ὁποία εἶχε μῆκος 270 χιλιοστομέτρων. Αἱ δὲ κυριώτεραι ὑποδιαιρέσεις καθὼς καὶ τὰ κυριώτερα πολλαπλάσια αὐτῆς ἦσαν:

*Γραμμὴ* ($^{1}/_{12}$ τοῦ μεγάλου δακτύλου), 0.002 μ.

*Σούσσι* (=2 γραμμαί, $^{1}/_{60}$ τῆς σπιθαμ.), 0.004 μ.

*Δάκτυλος* (=5 σούσσι, $^{1}/_{12}$ τῆς σπιθαμ.), 0.022 μ.

*Μέγας δάκτυλος* (=6 σούσσι, $^{1}/_{12}$ τοῦ ποδός), 0.027 μ.

*Παλαιστὴ* ($^{1}/_{3}$ τῆς σπιθαμῆς, $^{1}/_{6}$ τοῦ πήχεως), 0.090 μ.

*Σάλουμ* ($^{1}/_{2}$ τῆς σπιθαμῆς, $^{1}/_{4}$ τοῦ πήχ.), 0.135 μ.

*Σπιθαμὴ* (=10 μεγάλοι δάκτυλοι, $^{1}/_{2}$ τοῦ πήχεως), 0,270 μ.

*Ποὺς* (=12 μεγάλοι δάκτυλοι), 0.324 μ.

*Πῆχυς* (=20 μεγάλοι δάκτυλοι, $^{1}/_{60}$ τοῦ πλέθρου), 0.540 μ.

*Βῆμα ἁπλοῦν* ($^{1}/_{4}$ τοῦ καλάμου), 0.810 μ.

*Βῆμα διπλοῦν* ($^{1}/_{2}$ τοῦ καλάμου), 1. 62 μ.

*Κάλαμος* (=6 πήχ. ἢ 10 πόδ. ἢ 12 σπιθαμ.), 3.24 μ.

*Ἡμίπλεθρον* ($^{1}/_{12}$ τοῦ σταδίου), 16.20 μ.

*Πλέθρον* (=100 πόδες ἢ 60 πήχεις), 32.40 μ.

*Στάδιον* ἢ *ἀμμὰτ-γαγὰρ* (=600 πόδες), 194.40 μ.

*Παρασάγγης* ἢ *σάρος βημάτων* (=30 στάδια), 5.822 μ.

Τὰ τετράγωνα τῶν γραμμικῶν μέτρων ἦσαν φυσικὰ τὰ μέτρα τῆς ἐπιφανείας, τὰ δὲ τετράγωνα τοῦ καλάμου, τοῦ πλέθρου καὶ τοῦ σταδίου ἦσαν τὰ χωρομετρικὰ μέτρα. Ὁ τετραγωνικὸς ποὺς εἶχεν 105 τετρ. χιλιοστὰ τοῦ μέτρου. Καὶ τὰ μέτρα ὄγκου τῶν Χαλδαίων καὶ Ἀσσυρίων ἐστηρίζοντο ἐπὶ τῶν μέτρων μήκους. Ἐκ τῶν ἐπιγραφῶν γνωρίζομεν τὰ ἑξῆς:

*Λόγ*, 0. λίτ 546.

*Κάβ*, 2 λίτ. 187.

*Σὲ* (ἀντίστοιχον πρὸς τὸ *ἶν* τῶν Ἑβραίων), 6 λίτ. 56.

*Κὰ* (λεγόμενον *βὰθ* διὰ τὰ ὑγρά, *ἔφα* διὰ τὰ στερεά), 30 λίτ. 36.

*Ἰμὲρ* (ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ ἑβραϊκὸν *χομὲρ* ἢ *κόρ*), 393 λίτ. 83.

*Πέρσαι*. Κανὼν ἐκ μέλανος μαρμάρου εὑρεθεὶς εἰς τὰ ἐρείπια τῆς Περσεπόλεως καὶ φέρων τὸ ὄνομα Δαρείου τοῦ Ὑστάσπους, προφανῶς δεῖγμα πήχεως, ἐν συνδυασμῷ μετ' ἄλλων δεδομένων, ἐπέτρεψε νὰ καθορισθῇ τὸ μῆκος τοῦ περσικοῦ πήχεως εἰς 0,545 μ. καὶ τοῦ περσικοῦ ποδὸς εἰς 0,320 μ. Ἐκ τῶν Ἑλλήνων δὲ συγγραφέων γνωρίζομεν ἐξ ἄλλου ὅτι ἡ μεγάλη ὁδομετρικὴ μονὰς τῶν Περσῶν, ὁ *παρασάγγης*, ἦτο ἴσος πρὸς 4.725 μ. ἢ 30 ἑλληνικὰ στάδια.

*Ἑβραῖοι*. Τὸ μετρικὸν σύστημα τῶν Ἑβραίων παρήχθη ἐκ τοῦ χαλδαιοασσυριακοῦ. Τὰ κυριώτερα μέτρα μήκους αὐτῶν συμφώνως πρὸς τὴν ἱερὰν Γραφὴν εἶναι:

*Δάκτυλος (ἐτσβά)*, 0.0218 μ.

*Παλαιστὴ (τεφὰχ)* =4 δάκτυλοι, 0.0875 μ.

*Σπιθαμὴ (ζερὲτ)* =12 δάκτυλοι, 0.262 μ.

*Πῆχυς (ἀμμὰ)* =24 δάκτυλοι, 0.525 μ.

*Κάλαμος (κανὲ)* =144 δάκτυλοι, 3.150 μ.

Τὸ κυριώτερον μέτρον ἐπιφανείας ἦτο τὸ *τσεμὰδ* (= στρέμμα), ἴσον πρὸς ἔκτασιν ἀγροῦ, τὴν ὁποίαν ζεῦγος βοῶν ἠδύνατο νὰ ὀργώσῃ εἰς μίαν ἡμέραν. Τὰ μέτρα χωρητικότητος, τὰ αὐτὰ διὰ τὸ στερεὰ καὶ τὰ ὑγρά, ἦσαν τὰ ἑξῆς:

*Λὸγ* = $^{1}/_{72}$ τοῦ ἐφά, 0 λίτ. 544.

*Κὰβ* = $^{1}/_{18}$ τοῦ ἐφά, 2 λίτ. 16.

*Γομὸρ* ἢ *γομὲρ* = $^{1}/_{10}$ τοῦ ἐφά, 3 λίτ. 88.

*Ἶν* = $^{1}/_{6}$ τοῦ ἐφά, 6 λίτ. 49.

*Σεὰ* = $^{1}/_{3}$ τοῦ ἐφά, 12 λίτ. 99.

*Ἐφὰ* ἢ *βὰθ* = $^{1}/_{10}$ τοῦ χομέρ, 38 λίτ. 88.

*Χομὲρ* ἢ *κὸρ* = 10 ἐφὰ ἢ 720 λόγ, 388 λίτ. 80.

*Φοίνικες*. Ὅπως οἱ Ἑβραῖοι, οἵ τε Φοίνικες καὶ οἱ Ἀραμαϊκοὶ πληθυσμοὶ τῆς Συρίας παρέλαβον τὰς βάσεις τοῦ μετρικοῦ των συστήματος ἐκ τῶν Χαλδαίων καὶ Βαβυλωνίων. Ὡς μέτρα χωρητικότητος αὐτῶν ἀναφέρονται ὁ *κόρος* = 393 λίτ. 83 καὶ ὁ *σάτων*, ὁ ὁποῖος εἶναι $^{1}/_{30}$ τοῦ κόρου = 13 λίτ. 131.

*Ἕλληνες*. Παρ' Ἕλλησιν, ὅπως καὶ παρὰ τοῖς ἀνατολικοῖς λαοῖς, τὰ μικρὰ γραμμικὰ μέτρα εἶχον ὡς βάσιν τὰς ἀναλογίας τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος, τῶν ὁποίων τὰ ὀνόματα ἔφερον. Οὕτω κατὰ τὸν Πολυδεύκην (Β 157, 158): «Τῶν δὲ μέτρων ἔστι μέν τι καὶ δάκτυλος, δοχμὴ δὲ συγκλεισθέντες οἱ τέτταρες δάκτυλοι καὶ δακτυλοδοχμαί· τὸ δ' αὐτὸ καὶ παλαιστὴ θηλυκῶς καὶ παλαιστὴς ἀρρενικῶς, καὶ δῶρον, καὶ ἐκκαιδεκάδωρον τὰ ἐκκαιδεκαπάλαιστρα, τὸ δὲ ἀπὸ καρποῦ ἕως ἄκρων δακτύλων, ἡ πᾶσα χείρ, ὀρθόδωρον, εἰ δὲ τοῖς δακτύλοις ἀποτείνας ἀπὸ τοῦ μεγάλου πρὸς τὸν μικρότατον μετροῖς, σπιθαμὴ τὸ μέτρον· εἰ δὲ τὸν μέγαν δάκτυλον τῷ λιχανῷ ἀντιτείνας, τὸ μέτρον λιχάς· ἀπὸ δὲ ὠλεκράνου πρὸς τὸν μέσον δάκτυλον ἄκρον τὸ διάστημα, πῆχυς· εἰ δὲ συγκάμψειας τοὺς δακτύλους, ἀπ' ἀγκῶνος ἐπ' αὐτοῖς, πυγὼν τὸ μέτρον, εἰ δὲ συγκλείσειας, πυγμή· εἰ δ' ἄμφω τὰς χεῖρας ἐκτείνειας, ὡς καὶ τὸ στέρνον αὐτοῖς συμμετρεῖν, ὀργυιὰ καλεῖται τὸ μέτρον». Ἡ κυρία μονὰς τοῦ ἑλληνικοῦ μετρικοῦ συστήματος ἦτο ὁ *πούς*, πρὸς προσδιορισμὸν δὲ αὐτοῦ ἐλήφθη ὡς βάσις, ἀπὸ τοῦ πρώτου ἀσχοληθέντος μὲ τὴν καταμέτρησιν τοῦ Παρθενῶνος Penrose, τὸ μῆκος τοῦ ναοῦ αὐτοῦ, τοῦ καλουμένου ὑπὸ τῶν ἀρχαίων καὶ *Ἑκατομπέδου* ἀντὶ *Ἑκατομπόδου*—παρὰ τὸ ἀναφερόμενον ὑπὸ τοῦ Ἁρποκρατίωνος ὅτι δῆθεν «ὁ Παρθενὼν ὑπό τινων Ἑκατόμπεδος ἐκαλεῖτο διὰ κάλλος καὶ εὐρυθμίαν οὐ διὰ μέγεθος». Ἀναλόγως δὲ τοῦ σημείου, εἰς τὸ ὁποῖον

Digitized by Google

γίνεται ἡ καταμέτρησις, τὸ μέτρον τοῦ ἑλληνικοῦ ποδὸς εἶναι 0,3083 μ. ἢ 2970 μ., ὅπως ὑποστηρίζει ὁ Fauré («Rev. Archéologique» II, σ. 117)· ἡ διαφορὰ ὅμως δύναται νὰ εἶναι ἀκόμη μεγαλυτέρα. Ἦτο δὲ ὁ ἑλληνικὸς πούς, ὅπως διὰ τῶν σχετικῶν ἐρευνῶν του ἀπέδειξεν ὁ Δαϊρπφελδ, ἴσος πρός τε τὸν ρωμαϊκὸν καὶ τὸν ἰταλικὸν πόδα. Τὰ διάφορα μέτρα μήκους τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων ἀπὸ τοῦ μικροτάτου μέχρι τοῦ μεγίστου ἦσαν τὰ ἑξῆς:

*Δάκτυλος* = $^1/_{16}$ τοῦ ποδός, 0,0193 μ.
*Κόνδυλος* (φάλαγξ τοῦ μέσου τῶν δακτύλων) = 2 δάκτυλοι, 0.0385 μ.
*Παλαιστὴ* (παλάμη) = 4 δάκτυλοι, 0.0771 μ.
*Λιχάς*, $^1/_2$ τοῦ ποδὸς = 8 δάκτυλοι, 0.1541 μ.
*Ὀρθόδωρον* = 11 δάκτυλοι, 0,2120 μ.
*Σπιθαμὴ* = 12 δάκτυλοι, 0,2312 μ.
*Πούς* = 16 δάκτυλοι, 0,3083 μ.
*Πυγμὴ* = 18 δάκτυλοι, 0,3468 μ.
*Πυγὼν* = 20 δάκτυλοι, 0,3854 μ.
*Πῆχυς* = 1$^1/_2$ πόδες ἢ 24 δάκτυλοι, 0,4624 μ.
*Βῆμα ἁπλοῦν*=2$^1/_2$ πόδες ἢ 40 δάκτυλοι, 0,7707 μ.
*Βῆμα διπλοῦν*=5 πόδες ἢ 80 δάκτυλοι, 1,5410 μ.
*Ὀργυιὰ* = 6 πόδες ἢ 96 δάκτυλοι, 1,85 μ.
*Ἄκαινα* = 10 πόδες (κάλαμος), 3,083 μ.
*Πλέθρον* = 100 πόδες, 30,83 μ.
*Στάδιον ἀττικὸν* = 600 πόδες, 184,98 μ.
*Στάδιον ὀλυμπικὸν* = 600 πόδες ὀλυμπικοὶ πρὸς 0,3205 μ., 192,27 μ.
*Στάδιον ὁδοιπορικὸν* = 600 πόδες πρὸς 0,2625 μ., 157,50 μ.
*Δίαυλος* = διπλοῦν στάδιον, 369,96 μ.
*Ἱππικὸν* = 4 στάδια, 739,92 μ.
*Δόλιχος* (μέγα διάστημα δρόμου) = 12 στάδια, 2.219,76 μ.
*Παρασάγγης περσικὸς* = 30 ὁδοιπ. στάδια, 4.725 μ.
*Σχοῖνος αἰγυπτιακὸς*=40 ὁδοιπ. στάδια, 6.300 μ.

Τὰ μέτρα ἐπιφανείας, τὰ τετράγωνα τῶν γραμμικῶν, εἶχον παρ' Ἕλλησιν ὡς βάσιν τὸ τετραγωνικὸν πλέθρον, ἑκάστη πλευρὰ τοῦ ὁποίου ἦτο ἴση πρὸς 30,83 μ. Ἄλλα μέτρα ἦσαν ἡ *ἄρουρα* = $^1/_4$ τοῦ πλέθρου καὶ ὁ *ἕκτος* = $^1/_6$ τοῦ πλέθρου.

Μέτρων ὄγκου δὲν ὑπῆρχεν ἑνιαῖον σύστημα εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλλάδα. Ἐπικρατοῦν ὅμως ἦτο τὸ σύστημα τῶν Ἀθηνῶν, διαδοθὲν μέχρι Σικελίας καὶ Ἰταλίας, καὶ τὸ ὁποῖον παραθέτομεν ἐνταῦθα. Τυπικὸν μέτρον διὰ τὰ ὑγρὰ ἦτο ὁ *μετρητής*, ἰσοδύναμος πρὸς 39 λίτ. 395, διὰ δὲ τὰ ὑγρὰ ὁ *μέδιμνος*, ἰσοδύναμος πρὸς 52 λίτ. 527.

*Ὑγρὰ*

*Μετρητὴς* = 12 χόες ἢ 864 κύαθοι, 39 λίτ. 395.
*Χοῦς* = 16 ξέσται, 3 λίτ. 283.
*Ξέστης* = 2 κοτύλαι, 0 λίτ. 547.
*Κοτύλη* = 2 ἡμικοτύλια, 0 λίτ. 274.
*Ἡμικοτύλιον* = 2 ὀξύβαφα, 0 λίτ. 137.
*Ὀξύβαφον* = 1 $^1/_2$ κύαθοι, 0 λίτ. 068.
*Κύαθος*, 0 λίτ. 046.

*Στερεὰ*

*Μέδιμνος* = 6 ἑκτεῖς, 52 λίτ. 527.
*Ἑκτεὺς* = 8 χοίνικες, 8 λίτ. 754.
*Ἡμίεκτον* = 4 χοίνικες, 4 λίτ. 377.
*Χοῖνιξ* = 2 ξέσται, 1 λίτ. 094.
*Ξέστης* = 2 κοτύλαι, λίτ. 0, 547.
*Κοτύλη*, λίτ. 0, 274.
*Κύαθος*, λίτ. 0,0456.

**Ρωμαῖοι.** Οἱ ἀρχαιότατοι πληθυσμοὶ τῆς Ἰταλίας, ὅπως οἱ Ἕλληνες καὶ οἱ λαοὶ τῆς Ἀνατολῆς, ἐδανείσθησαν τὰ ὀνόματα καὶ τὰς διαστάσεις τῶν μέτρων αὐτῶν ἀπὸ τὴν φύσιν. Αἱ σχετικαὶ ἔρευναι τοῦ Δαϊρπφελδ κατέληξαν εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι ὁ πούς, ἡ τυπικὴ μονὰς ὁλοκλήρου τοῦ ρωμαϊκοῦ μετρικοῦ συστήματος, ἰσοδυναμεῖ πρὸς 0.273 μ., ἐπὶ τῇ βάσει δὲ τοῦ ποδὸς τούτου καθωρίσθησαν αἱ διαστάσεις τοῦ ναοῦ τοῦ Καπιτωλίου Διὸς ἐπὶ Ταρκινίου τοῦ Ὑπερηφάνου.

*Μέτρα μήκους*

*Digitus* (δάκτυλος), 0.0185 μ.
*Palmus* (παλαιστής), 0.0739 μ.
*Pes* (πούς), 0.2957 μ.
*Palmipes* (πούς καὶ παλάμη), 0.3697 μ.
*Cubitus* ἢ *ulna* (πῆχυς), 0.4436 μ.
*Gradus* (βῆμα ἁπλοῦν) = 2 $^1/_2$ πόδες, 0.7390 μ.
*Passus* (βῆμα διπλοῦν ἢ ρωμαϊκὸν) = 5 πόδες, 1.4790 μ.
*Decampeda* ἢ *pretica* (κάλαμος) = 10 πόδες, 2.957 μ.
*Actus* (μέτρον ἀγροῦ) = 120 πόδες, 35.489 μ.
*Stadium* (στάδιον)=125 διπλᾶ βήματα, 184.84 μ.
*Millia* (1000 ρωμαϊκὰ βήματα, μίλλιον) ἴσον περίπου πρὸς 8 στάδια ἑλληνικά, 1478.70 μ.

*Μέτρα ἐπιφανείας.* Ἡ μονὰς τῶν μέτρων ἐπιφανείας ἦτο παρὰ Ρωμαίοις ὁ *τετραγωνικὸς πούς*, τοῦ ὁποίου ἡ ἐπιφάνεια ἦτο 0.087438 τετρ. μ. Ἡ μονὰς τῶν χωρομετρικῶν μέτρων ἦτο ἐνίοτε ὁ *τετραγωνικὸς κάλαμος* ἢ συχνότερον τὸ *ρωμαϊκὸν πλέθρον*, ὀρθογώνιον μήκους 240 ποδῶν καὶ πλάτους 120. Ὁ πλήρης πίναξ τῶν πολλαπλασίων τοῦ τετραγωνικοῦ ποδὸς ἔχει ὡς ἑξῆς:

*Pes quadratus* (τετραγωνικὸς πούς).
*Scripuleum*=100 τετρ. πόδες.
*Actus minimus* (μικρότατος)= 480 τετρ. πόδες
*Clinia*=3.600 τετρ. πόδες.
*Actus quatratus* (τετράγωνος) = 14.400 τετρ. πόδες.
*Jugerum* (πλέθρον)=28 τετρ. πόδες.
*Heredium* (κλῆρος)=57.600 τετρ. πόδες.
*Casturia*=5.760.000 τετρ. πόδες.
*Sabtus*=23.040.000 τετρ. πόδες.

*Μέτρα χωρητικότητος.* Τὰ μέτρα ταῦτα οἱ Ρωμαῖοι—διὰ τὰ ὑγρὰ καθὼς καὶ διὰ τὰ στερεὰ—ἐδανείσθησαν κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπὸ τοὺς Ἕλληνας, Ἔχουν δὲ τὰ μέτρα τῶν ὑγρῶν τὴν αὐτὴν χωρητικότητα μὲ τὰ τῶν στερεῶν, καὶ ἂν ὑπάρχῃ μεταξύ των διαφορά, αὕτη ἔγκειται εἰς τὸ ὄνομα καὶ τὸ σχῆμα. Μετρικὴ μονὰς ἦτο ὁ *κυβικὸς πούς* (quadrantal) κυρίως διὰ τὰ ὑγρά, ὅστις ἐλέγετο καὶ amphora, ἐκ τοῦ ἀγγείου σχήματος ἀμφορέως, τὸ ὁποῖον ἔχει χωρητικότητα ἑνὸς κυβικοῦ ποδός. Διὰ δὲ τὰ στερεὰ μονὰς ἦτο ὁ *μόδιος*, ἴσος μὲ τὸ $^1/_8$ τοῦ κυβικοῦ ποδός.

*Μέτρα διὰ τὰ ὑγρὰ*

*Culeus* (κολεὸς) βυτίον = 20 ἀμφορεῖς, 525 λίτ. 271.
*Amphora* ἢ *Cadus* (κυβικὸς πούς), 26 λίτ. 263.
*Urna* $^1/_2$ τοῦ ἀμφορέως, 13 λίτ. 132.
*Congius* (= χοῦς, $^1/_8$ τοῦ ἀμφορέως), 3 λίτ. 283.
*Semicongius* (ἡμικόγγιον), 1 λίτ. 642.
*Sextarius* (=ξέστης, $^1/_{48}$ τοῦ ἀμφορέως), 0 λίτ. 547.
*Hemina* (= κοτύλη, $^1/_2$ τοῦ ξέστου), 0 λίτ. 274.
*Quartarius* ($^1/_4$ τοῦ ξέστου), 0 λίτ. 137.
*Acetabulum* (=ὀξύβαφον $^1/_{384}$ τοῦ ἀμφορέως), 0 λίτ. 068.
*Kyathus* (κύαθος, $^1/_{12}$ τοῦ ξέστου), 0 λίτ. 046.
*Ligula* ($^1/_2$ τοῦ κυάθου), 0 λίτ. 023.
*Cochlear* ($^1/_4$ τοῦ κυάθου), 0 λίτ. 011.

*Μέτρα διὰ τὰ στερεὰ*

*Decemmodium* (= 10 μόδιοι), 87 λίτ. 54.
*Trimodium* (=3 μόδιοι)=1 ἀμφορεύς, 26 λ. 263.
*Modius* (μόδιος) = 16 ξέσται, 8 λίτ. 754.
*Semodius* ($^1/_2$ μοδίου), 4 λίτ. 377.

Τὰ μικρότερα μέτρα εἶναι τὰ αὐτὰ μετὰ τῶν ὑγρῶν ἀπὸ τοῦ sextarius καὶ πέραν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Boeckh*, Metrologische Untersuchungen über Gewichte, Münzfusse und Masse des Alterthums (1838). —*Fr. Hultsch*, Griech. und romische Metrologie (1882). —*B. Black*, Massen und Messen (1913).— —*G. Viederband* Forschungen zur Metrologie d. Alterthums Abh. Sachs. Ak., 34,3 (1917). —*R. Meissner*, Babylonien und Assyrich I (1920) σ. 357 ἑφ. —*Blind*, Mass=Munz =und Gewichtswesen (1923). —*Petrie*, Ancient Weights and Measures etc. (1926). Κ. ΓΕΡΟΓΙΑΝΝΗΣ

σκευάσθη ἐν πρότυπον μέτρον τὸ ὁποῖον ἐφυλάσσετο ἐν Παρισίοις. Ὁ Bessel ἔδειξε βραδύτερον ὅτι ἡ σχέσις αὕτη δὲν εἶναι ἐντελῶς ἀκριβής, διότι ὁ γήϊνος μεσημβρινὸς ἔχει μῆκος 40.003.424 προτύπων μέτρων, ἀντὶ 40.000.000, ὡς θὰ ἔπρεπεν ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁρισμοῦ τοῦ μέτρου. Ἀντὶ δέ, κατόπιν τούτου, νὰ μεταβληθῇ τὸ μῆκος τοῦ προτύπου μέτρου, τοῦ ὁποίου εἶχον κατασκευασθῆ καὶ διανεμηθῆ ἐν τῷ μεταξὺ πολλὰ ἀντίτυπα, προετιμήθη ἡ ἀνταλλαγὴ τοῦ ὁρισμοῦ τοῦ μέτρου· οὕτω σήμερον ὁρίζεται τὸ μέτρον ὡς «μῆκος ἴσον πρὸς τὸ μῆκος τοῦ ἐν Παρισίοις φυλασσομένου διεθνοῦς προτύπου μέτρου», τοῦ μήκους τοῦ γηΐνου μεσημβρινοῦ εὑρεθέντος κατὰ νεωτάτας γεωδαιτικὰς μετρήσεις ἴσου πρὸς 40.009.152 πρότυπα μέτρα. Τὸ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ μέτρου καθοριζόμενον μετρικὸν δεκαδικὸν σύστημα, τὸ ὁποῖον περιγράφεται κατωτέρω, εἰσήχθη εἰς τὴν Γαλλίαν διὰ τῶν νόμων τῆς 7 Ἀπριλίου 1795 καὶ τῆς 25 Ἰουνίου 1800, εἰς τὴν Γερμανίαν τὴν 1 Ἰανουαρίου 1872, εἰς τὴν Ἰταλίαν τῷ 1831, εἰς τὴν Ὁλλανδίαν καὶ τὸ Βέλγιον τῷ 1821, εἰς τὴν Ἑλλάδα τῷ 1836, εἰς τὴν Ἱσπανίαν τῷ 1859, εἰς τὴν Αὐστροουγγαρίαν τῷ 1876, εἰς τὴν Λεττονίαν τῷ 1924 καὶ εἰς τὴν Ρωσίαν τῷ 1927. Ἡ χρῆσίς του εἶναι σήμερον (θεωρητικῶς) ὑποχρεωτικὴ εἰς ὅλον σχεδὸν τὸν πεπολιτισμένον κόσμον, ἐκτὸς τῆς Ἀγγλίας, τῆς Ἀμερικῆς καὶ τῶν ἀποικιῶν των.

*Τὸ μετρικὸν δεκαδικὸν σύστημα.* Τὸ σύστημα τοῦτο χρησιμοποιεῖ ὡς μονάδας μήκους τὸ μέτρον, τὰ δεκαδικὰ πολλαπλάσια καὶ τὰ δεκαδικὰ υποπολλαπλάσια αὐτοῦ. Ἑκάστη μονὰς ἔχει ἴδιον ὄνομα ἐμφαῖνον τὴν σχέσιν αὐτῆς πρὸς τὸ ἀκέραιον μέτρον· ἐπίσης ἑκάστη μονὰς ἔχει ἰδιαίτερον σύμβολον συνεχομμένης παραστάσεως. Ὡς μονάδας ἐπιφανείας χρησιμοποιεῖ τὸ μετρικὸν δεκαδικὸν σύστημα, τὰς ἐπιφανείας αἵτινες προκύπτουν διὰ τετραγωνίσεως τῶν ἁπλῶν μονάδων μήκους, ἤτοι ἐπιφανείας ἴσας πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν τετραγώνων ἐχόντων ὡς πλευρὰν τὴν ἀντίστοιχον μονάδα μήκους. Ὡς μονάδας ὄγκου χρησιμοποιεῖ τὸ μετρικὸν δεκαδικὸν σύστημα, τοὺς ὄγκους οἵτινες προκύπτουν διὰ κυβίσεως τῶν ἁπλῶν μονάδων μήκους, ἤτοι ὄγκους ἴσους πρὸς τὸν ὄγκον κύβων ἐχόντων ὡς πλευρὰν τὴν ἀντίστοιχον μονάδα μήκους.

*Πίναξ δεκαδικοῦ μετρικοῦ συστήματος.*

| *Μονάδες μήκους* | | | *Μονάδες ἐπιφανείας* | | | *Μονάδες ὄγκου* | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *Ὀνομασία μονάδος* | *Διεθνὴς συμβολικὴ παράστασις* | *Ἴση πρὸς* m | *Ὀνομασία μονάδος* | *Διεθνὴς συμβολικὴ παράστασις* | *Ἴση πρὸς* $m^2$ | *Ὀνομασία μονάδος* | *Διεθνὴς συμβολικὴ παράστασις* | *Ἴση πρὸς* $m^3$ |
| Μέτρον Mètre | m | 1 | Τετραγωνικὸν μετρον Mètre carré | $m^2$ | 1 | Κυβικὸν μέτρον Mètre cub | $m^3$ | 1 |
| Γιγάμετρον Gigamètre | Gm | $10^9$ | Τ. Γιγάμετρον Gigamètre c. | $Gm^2$ | $10^{18}$ | Κ. Γιγάμετρον Gigamètre cb. | $Gm^3$ | $10^{27}$ |
| Μεγάμετρον Mégamètre | Mm | $10^6$ | Τ. Μεγάμετρον Mégamètre c. | $Mm^2$ | $10^{12}$ | Κ. Μεγάμετρον Mégamètre cb. | $Mm^3$ | $10^{18}$ |
| Χιλιόμετρον Kilomètre | Km | $10^3$ | Τ. Χιλιόμετρον Kilomètre | $Km^2$ | $10^6$ | Κ. Χιλιόμετρον Kilomètre cb. | $Km^2$ | $10^9$ |
| Ἑκατόμετρον Hectomètre | Hm | $10^2$ | Τ. Ἑκατόμετ. ἢ ἑκτάριον Hectomètre c. ἢ hectar | $Hm^2$ | $10^4$ | Κ. Ἑκατόμετρον Hectomètre cb. | $Hm^3$ | $10^6$ |
| Δεκάμετρον Décamètre | Dm | 10 | Τ. Δεκάμετρον ἢ ἄριον Décamètre c. ἢ ar | $Dm^2$ | $10^2$ | Κ. Δεκάμετρον Décamètre cb. | $Dm^3$ | $10^3$ |
| Δεκατόμετρον Décimètre | dm | $10^{-1}$ | Τ. Δεκατόμετρον Décimètre c. | $dm^2$ | $10^{-2}$ | Κ. Δεκατόμετρον ἢ λίτρον Décimètre ἢ litre | $dm^3$ | $10^{-3}$ |
| Ἑκατοστόμετρον Centimètre | cm | $10^{-2}$ | Τ. Ἑκατοστόμετρον Centimètre c. | $cm^2$ | $10^{-4}$ | Κ. Ἑκατοστόμετρον Centimètre cb. | $cm^3$ | $10^{-6}$ |
| Χιλιοστόμετρον Milimètre | mm | $10^{-3}$ | Τ. Χιλιοστόμετρον Millimètre c. | $mm^2$ | $10^{-6}$ | Κ. Χιλιοστόμετρον Millimètre cb. | $mm^3$ | $10^{-9}$ |
| Μικρόμετρον ἢ μικρὸν Micromètre ἢ micron | μm | $10^{-6}$ | Τ. Μικρόμετ. ἢ Τ.μικρὸν Micromèt.c. ἢ micron c. | $\mu m^2$ | $10^{-12}$ | Κ. Μικρόμετρ. ἢ Κ. μικρὸν Micromèt.cb. ἢ micron cb. | $\mu m^3$ | $10^{-18}$ |
| Νανόμετρον Nanomètre | vm | $10^{-9}$ | Τ. Νανόμετρον Nanomètre c. | $vm^2$ | $10^{-18}$ | Κ. Νανόμετρον Nanomètre cb. | $vm^3$ | $10^{-27}$ |

**Νεώτεροι χρόνοι.** Μέχρι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος τὰ μέτρα τῶν διαφόρων χωρῶν κατέστησαν μὲν ὀλιγώτερον ἀόριστα, διετήρησαν ὅμως καθαρῶς τοπικὸν χαρακτῆρα. Ἡ διεθνοποίησις αὐτῶν ἐπεχειρήθη κατὰ πρῶτον διὰ τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ *μετρικοῦ δεκαδικοῦ συστήματος*. Ὁ ἀστρονόμος G. Mouton ἐπρότεινε τῷ 1670 τὸν καθορισμὸν προτύπου μέτρου, εὑρισκομένου εἰς ἁπλῆν σχέσιν πρὸς κυρίαν τινὰ διάστασιν τῆς γηΐνης σφαίρας, τὸ ὁποῖον νὰ χρησιμεύῃ ὡς διεθνὲς μέτρον. Μετὰ 120 ἔτη (1790) ἡ ἰδέα τοῦ Mouton εἶχεν ὡριμάσει τόσον, ὥστε ἡ γαλλικὴ ἐθνοσυνέλευσις συνεκρότησεν ἐπιτροπὴν ἐκ τῶν Borde, Lagrange, Laplace, Monge καὶ Condorcet, ἥτις ἐξέλεξεν ὡς μονάδα μήκους τὸ τεσσαρακοντάκις ἑκατομμυριοστὸν μέρος τοῦ γηΐνου μεσημβρινοῦ, ὀνομάσασα αὐτὸ *μέτρον*. Ἡ σχέσις τοῦ οὕτω ὁρισθέντος μέτρου πρὸς τὰς μέχρι τότε γνωστὰς μονάδας μήκους (κυρίως τὴν γαλλικὴν ὀργυιάν), εὑρέθη διὰ μετρήσεως τόξου τοῦ γηΐνου μεσημβρινοῦ, ἀρξαμένης τῷ 1792 ὑπὸ τῶν Méchain καὶ Delambre καὶ περατωθείσης τῷ 1808 ὑπὸ τῶν Arago καὶ Biot, εὑρέθη δὲ τὸ ὡς ἀνωτέρω ὁρισθὲν μέτρον ἴσον πρὸς 0,5130740 ὀργυιάς. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς σχέσεως ταύτης κατε-

Περὶ τῶν συμβολικῶν παραστάσεων ὡς καὶ τῶν προθεμάτων δεκα-, δεκατο-, ἑκατο-, ἑκατοστο- κτλ. βλέπε γενικώτερον εἰς τὴν λέξιν *μονάς*.

*Μέτρα μήκους, ἐπιφανείας καὶ ὄγκου, μὴ ἀνήκοντα εἰς τὸ μετρικὸν σύστημα.* *Ἀγγλία* (μετὰ τῶν ἀποικιῶν της) καὶ *Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι*: 1 γυάρδα (yard)=0.9134 m=3 πόδες (foot)=3×12 δάκτυλοι (inch, ἴντσα). 1 ὀργυιά (fathom)=2 yards= 1.829 m. 1 pole (vod)=5,5 yards=5.029 m. 1 statute mile=8 furlongs=5.280 πόδες=1.609, 3 m. 1 sea-mile (ναυτικὸν μίλλιον)=6.080 πόδες=1.853 m. 1 acre=4046,7 m², 1 hide of land=100 acres= 40,467 ἑκτάρια. 1 gallon=4,5435 λίτρα, 1 Winchester Gallon=3,7852 λίτρα. 1 barrel=2 Kilderkins=4 Firkins=163,56 λίτρα. 1 quarter=8 bushels=32 peaks = 64 gallons=256 quarts=512 Pints=290,781 λίτρα. 1 chain = 100 links=20,12 m. 1 tun=2 pipes( butts)=4 hogsheads=252 gallons=1145 λίτρα. 1 rood=1,0117 m². 1 league (λεῦγα)=5569 m. *Γερμανία*: 1 γερμανικὸν μίλλιον =7500 m., 1 γεωγραφικὸν μίλλιον=7420 m., 1 θαλάσσιον μίλλιον=1852 m. 1 Fadeu=1,829 m., 1 Kabel=0,22 m. 1 Neuscheffel=50 λίτρα. 1 Rute =10 Fuss (πόδες)=300 cm., 1 Mass=10 Becher= 1,5 λίτρον (Baden). 1 Rute=10 Fuss=333,33 cm (Βαυαρία Α. τοῦ Ρήνου). 1 Rute=10 Fuss=291,86 cm, 1 Masskanne=2 Seidel=1,07 λίτρα (Βαυαρία Δ. τοῦ Ρήνου). 1 Rute=16 Fuss=456,58 cm., 1 Steuerquartier = 0,9368 λίτρα (Braunschweig).

Digitized by Google

1 Rute=16 Fuss=462,961 cm., 1 Quart=4 Mengelen =0,8054 λίτρα (Βρέμη). 1 Feldrute=12,5 Fuss= 355,77 cm, 1 Eichmass=4 Schoppen=1,7926 λίτρα (Φραγκφούρτη). 1 Geestrute=16 Fuss=458,514 cm, 1 Quartier=2 Noesel =0,9057 λίτρα (Ἀμβοῦργον). 1 Rute=16 Fuss=467,352 cm. 1 Quartier=2 Noesel=0,9735 λίτρα (Ἀννόβερον). 1 Klafter=10 Fuss =250 cm. 1 Mass=4 Schoppen=2 λίτρα (Hessen). 1 Rute=16 Fuss=460,19 cm. 1 Quartier= 4 Ort=0,9094 λίτρα (Luebeck). 1 neue Rute=18 Fuss = 532,582 cm., 1 Quartier = 0,8897 λίτρα (Oldenburg. 1 Rute=12 Fuss=376,624 cm, 1 Quart=1,145 λίτρα (Πρωσσία). 1 Rute=16 Fuss =453,104 cm, 1 Dresdener Kanne=0, 9356 λίτρα (Σαξωνία). 1 Rute=10 Fuss=286,49 cm., 1 Schenkmass=4 Schoppen = 1,67 λίτρα (Wuerttemberg). 1 Tonne (χωρητικότης πλοίων) =2,12 $m^3$. 1 Oxhoft =2,2 ἑκατόλιτρα. *Γαλλία :* 1 Perche=18 pieds (πόδες) = 584,711 cm, 1 pinte = 2,9313 λίτρα. 1 παρισινὸς πούς = 0,324839 m. *Αὐστρία :* 1 Fuss (πούς) = 12 Zoll (δάκτυλοι) = 144 Linien (γραμμαὶ) = 0,316081 m., 1 Elle (πῆχυς)=0,777558 m., 1 Klafter=1,8965 m. 1 Meile (μίλλιον)= 7589.5 m., 1 Joch = 0.57546 ἑκτάρια. 1 Schachtrute = 100 κυβικοὶ πόδες = 3.1579 $m^3$. 1 Mass=1.415 λίτρα. 1 Eimer = 40 Mass=56 589 λίτρα. 1 Metze=16 Massel=61.487 λίτρα. 1 Mut= 30 Metzen=480 Massel = 3840 Becher = 18.446 ἑκατόλιτρα. 1 βιενναῖον μίλλιον=1834 m., 1 ναυτικὸν μίλλιον=1852 m., 1 οὑγγρικὸν μίλλιον =8356 m., 1 βοημικὸν μίλλιον=6910 m., 1 βιενναῖος πούς (Wiener Fuss)=0,347m., 1 βοημικὸς πούς=0,296 m. *Ρωσία :* 1 πούς = 1 ἀγγλικὸς πούς = 0,3048 m., 1 Arschin=4 Tschetwert=16 Wercchok=0,7112 m., 1 Werst (βέρστ) = 3500 πόδες=500 Saschehn= 1066,78 m., 1 Saschehn=3 Arschine=7 πόδες = 48 Werschok=2,134 m., 1 μίλλιον=7 Werst=7467 m., 1 Dessetine = 2400 τετραγωνικὰ Saschehn = 10925 $m^2$., 1 Wedro=10 Kruschka=12,299 λίτρα. 1 Tschetwerik=26,2376 λίτρα. 1 Tsetwert=2 Osmini=4 Pajok=8 Tschetwerik=32 Tschetwerka = 62 Garnez=209,9 λίτρα. *Σουηδία καὶ Νορβηγία :* 1 fot (πούς) = 12 δάκτυλοι = 0,2969 m., 1 Famn=3 Alnar (πήχεις) = 6 fot=1,78 m., 1 μίλλιον = 6000 Famnar = 36000 fot = 10688 m., 1 Stang=10 fot=2.969 m., 1 Ahm=1,5703 ἑκατόλιτρα. *Ἱσπανία :* 1 βασιλικὴ λεῦγα = 6965,875 m., 1 νέα λεῦγα=5572,7 m., 1 κοινὴ λεῦγα=5555,55 m., 1 ναυτικὸν μίλλιον=6365 m., 1 κοινὸν μίλλιον = 1000 βήματα=1388,88 m. 1 Estadel=11 πόδες = 3,11 m., 1 Cana = 1,786 m., 1 βῆμα = 5 πόδες =1,388 m., 1 vare = 3 πόδες = 0,835 m., 1 πούς =0,278 m., 1 Fanega=6439.574 $m^2$., 1 Aranzada = 4471,926 $m^2$, 1 cantara = 0,061 $m^3$., 1 Menor = 0,125 $m^3$, 1 Estado = 2 vare = 1,67 m. *Ἰταλία :* 1 Canna grossa= 12 Palmi= 2,98914 m, 1 Amola = 4 Quarti = 0,8833 λίτρα (Γένουα). 1 Canna = 12 Palmi = 2,6455 m. 1 Caraffa = 3 Bicchieri = 0,7271 λίτρα (Νεάπολις). 1 Pertica = 12 Piedi = 6,16519 m., 1 Pinta= 4 Quartini = 1,3696 λίτρα (Πεδεμόντιον). 1 Canna = 8 Palmi = 2,0648 m., 1 Quartuccio=4 Bicchieri=0,8597 λίτρα (Σικελία). 1 Canna = 5 Braccii =2,91825 m., 1 Boccale= 4 Quartucci = 1,1396 λίτρα (Τοσκάνα). 1 Cavezzo= 6 Piedi = 2,08641 m. 1 Quartuccio = 4 Gotti = 0,6707 λίτρα (Βενετία). *Ὁλλανδία :* 1 παλαιὰ λεῦγα 5848 m., 1 νέα λεῦγα=5556 m., 1 κοινὴ λεῦγα = 5051 m., 1 ὁλλανδικὸν μίλλιον =5857 m., 1 ναυτικὸν μίλλιον = 5556 m., 1 πούς =0,283 m. (Ἄμστερνταμ). 1 Roede = 13 Voet = 3,6807 m., 1 Stoop = 4 Pintjes = 2,4254 λίτρα. *Πορτογαλία:* 1 Legoa (λεῦγα) = 6173 m., 1 ναυτικὴ λεῦγα = 5556 m., 1 Estadio = 258,28 m., 1 Braca = 10 Palmos = 2,1859 m = 2 Vares. 1 Geira = 5,827 $m^2$. 1 Canada = 4 Quartilhos = 1,395 λίτρα. *Ἑλβετία :* 1 μίλλιον = 8368 m., 1 λεῦγα = 4800 m., 1 πῆχυς = 0,6 m. (Ζυρίχη) = 1,143 m. (Γενεύη)= 1,110 m. (Neufchâtel) =0,540 m. (Βέρνη), 1 πούς = 0,488 m. (Γενεύη) = 0,314 m. (Lucerne) = 0,304 m. (Ζυρίχη) = 0,293 m. (Βέρνη καὶ Neufchâtel) = 0,300 m. (Λωζάννη). Νέος ἑλβετικὸς πῆχυς =0,6 m., νέος ἑλβετικὸς πούς = 0,3 m. *Πολωνία :* 1 Prent= 7,5 Lokci =4,32 m., 1 πῆχυς = 0,5846 m. 1 Kwarta = 4 Kwaterek = 1 λίτρον. *Βέλγιον :* 1 μετρικὴ λεῦγα = 5000 m, 1 μετρικὸν μίλλιον = 1000 m., 1 φλανδρικὴ λεῦγα =6277 m., 1 βραβανδικὴ λεῦγα =5521 m., 1 Perche = 20 πόδες = 5515 m. *Δανία :* 1 μίλλιον = 7532 m., 1 πῆχυς = 0,6277 m., 1 πούς (fed) =0,31376 m., 1 Rode=10 πόδες=31,376 m., 1 Pot= 0,9661 λίτρα, 1 Faon= 2,22 $m^3$, 1 Tonder= 340,139 $m^3$. *Νοτιοσλαβία:* 1 Arschin=0,6858 m. *Ἑλλάς:* 1 τεκτονικὸς πῆχυς=0.75m., 1 ἐμπορικὸς πῆχυς 0.68 m., 1 μπότσα (χωρητικότητος ὑγρῶν)=2.6827 λίτρα. *Τουρκία :* 1 Adim (ἢ Arschin)=2 Kadem= 1 m., 1 Pintar=4.5116 λίτρα, 1 Ayatsch=5334 m., 1 μίλλιον=1670 m., 1 ναυτικὸν μίλλιον=1479 m. *Βουλγαρία :* 1 Arschin=0,67 m. *Ἀραβία :* 1 Kovid =0,48 m. *Ἀβησσυνία :* 1 πῆχυς=0,69 m., 1 Ardeb =0,011 $m^3$., 1 Kuba=0,001 $m^3$. *Αἴγυπτος :* 1 Kassab=3,85 m., 1 πῆχυς hendasch=0,64 m., 1 πῆχυς mekias=0,54 m., 1 Fedan=5929 $m^2$, 1 Ardeb= 0,271 $m^3$ (Ἀλεξάνδρεια). 1 Ardeb=0,179 $m^3$ (Κάϊρον). *Κίνα :* 1 λὶ=575,3 m., 1 Foeng=3,65 m., 1 King ἢ Fu=2533 $m^2$., 1 Sei=0,122 $m^2$. 1 Pu=5 Tschih=1,23674 m. 1 Tsching=4 Ho=1,031 λίτρα. *Ἰαπωνία :* 1 Ken (ἢ Ma)=6 Shaku=1,818 m., 1 Schoo=10 Ngoo=1,8039 λίτρα. *Βραζιλία :* 1 Braca=10 Palmos=2,2 m., 1 Quartilho=4 Martelinhos=0,7031 λίτρα. *Ἀργεντινή :* 1 Braza (ἢ Estado)=6 πόδες=1,732 m., 1 Medio=8 Octavos =1,1875 λίτρα. *Ἀγγλικαὶ Ἰνδίαι :* 1 Goess=0,91438 m. *Ὁλλανδικαὶ Ἰνδίαι :* 1 Roede=3,76736 m., 1 Kan=1,515 λίτρα. *Περσία :* 1 Zer i Schah=16 Gereh=1,04 m., 1 Scenica=1,3115 λίτρα. *Χιλή :* 1 Estadal=4 Varas=3,344 m., 1 Cuartillo=2,02 λίτρα. *Κολομβία :* 1 Vara granatina=0,8 m. *Μεξικόν :* 1 Toesa (ἢ Estado)=6 πόδες=1,676 m., 1 Azumbre=4 Cuartillos=2,0166 λίτρα. *Περουβία :* 1 Toesa (ἢ Braza)=6 πόδες=1,6949 m. *Οὐρουγουάη :* 1 Vara=3 πόδες=0,859 m., 1 Frasco=4 Cuartas=3,29 λίτρα.

Ἐν τοῖς ἀνωτέρω δὲν περιελήφθησαν μονάδες ἐπιφανείας καὶ ὄγκου προκύπτουσαι διὰ τετραγωνισμοῦ ἢ κυβισμοῦ τῶν ἀναφερομένων μονάδων μήκους. Ὅλαι δὲ αἱ ἀνωτέρω μονάδες—ἐκτὸς τῶν ἀγγλικῶν—τείνουν ταχέως νὰ τεθοῦν εἰς τελείαν ἀχρηστίαν, διὰ τῆς ὁσημέραι προοδευούσης εἰσαγωγῆς τοῦ μετρικοῦ δεκαδικοῦ συστήματος. Περὶ τῶν σταθμῶν τῶν διαφόρων χωρῶν βλ. λ. *σταθμά*.

Γ. Θ. ΚΑΚΡΙΔΗΣ

—*[Μαθημ.]* Ἡ ἀπόλυτος τιμὴ τῶν πραγματικῶν ἀριθμῶν καλεῖται *μέτρον* αὐτῶν, εἶναι δὲ τῶν μὲν θετικῶν μέτρον αὐτὸς οὗτος ὁ θετικός, τῶν δὲ ἀρνητικῶν ὁ ἀντίθετος αὐτῶν θετικός. Τῶν μιγάδων ἀριθμῶν μέτρον εἶναι ἡ τετραγωνικὴ ρίζα τοῦ ἀθροίσματος τῶν τετραγώνων τῶν συντελεστῶν τῆς πραγματικῆς καὶ φανταστικῆς μονάδος. Σύμβολον τοῦ μέτρου εἶναι δύο γραμμαὶ μικραὶ κάθετοι περικλείουσαι τὸν ἀριθμόν, οὗτινος θέλομεν νὰ συμβολίσωμεν τὸ μέτρον:

$|\alpha|$ σημαίνει μέτρον τοῦ α

Παραδείγματα μέτρων ἀριθμῶν:

$|7| = 7$ δηλαδὴ τὸ μέτρον τοῦ 7 εἶναι ὁ 7

$|-5| = 5$ » » » » (—5) » » 5

$$|4+3i| = \sqrt{4^2+3^2} = \sqrt{16 \cdot 9} = \sqrt{25} = 5$$

Τὰ μέτρα ἀριθμῶν ὡς πρὸς τὴν πρόσθεσιν καὶ τὸν πολλαπλασιασμὸν ἔχουσι τὰς ἑξῆς ἰδιότητας: 1) Τὸ μέτρον ἀθροίσματος εἶναι μικρότερον ἢ ἴσον πρὸς ἄθροισμα τῶν μέτρων, δηλαδὴ εἶναι:

$$|\alpha+\beta+\gamma| \leq |\alpha| + |\beta| + |\gamma|.$$

2) Τὸ μέτρον τοῦ γινομένου ἰσοῦται πρὸς τὸ γινόμενον τῶν μέτρων:

$$|\alpha\beta\gamma| = |\alpha| \times |\beta| \times |\gamma|$$

*Μέτρον* (module) ἐν τῇ ἀνωτέρᾳ ἀριθμητικῇ λέγεται θετικὸς ἀκέραιος ἀριθμὸς (ρητὸς) ὡς πρὸς δύο ἀκεραίους ρητοὺς (θετικοὺς ἢ ἀρνητικοὺς) Α, Β ἐὰν διαιρῇ τὴν διαφορὰν Α—Β. Ν. Ε. Γ.

—*[Ἀρχ. Μετρ.]* Ὁ ὅρος *μέτρον* εἶναι πολυσήμαντος εἰς τοὺς ἀρχαίους μετρικούς. Τοῦ Λογγίνου τὰ προλεγόμενα εἰς τὸ τοῦ Ἡφαιστίωνος ἐγχειρίδιον ἀναφέρουν τὰ ἑξῆς: «Μέτρον καλοῦμεν (α) πᾶν τὸ μὴ πεζόν, ὡς ὅταν εἴπω τὰ μὲν Πλάτωνος πεζά, τὰ δὲ Ὁμήρου μέτρα. Μέτρον καλεῖται (β) καὶ εἶδος ἕκαστον, ὡς ὅταν εἴπω μέτρον ἰωνικὸν καὶ μέτρον ἰαμβικὸν καὶ μέτρον τροχαϊκόν. Μέτρον καλεῖται (γ) καὶ στίχος ἕκαστος, ὡς ὅταν εἴπω· ἡ πρώτη Ὁμήρου ῥαψῳδία μέτρα ἔχει ἑξακόσια <καὶ δέκα>... Ἔτι τοίνυν μέτρον καλοῦμεν (δ) τὴν συζυγίαν, τουτέστι τὴν διποδίαν, ὡς ὅταν τὸ ἰαμβικὸν τὸ ἀπὸ ἓξ ποδῶν συγκείμενον τρίμετρον καλῶμεν. <Μέτρον καλοῦμεν (ε) καὶ τὸν πόδα....> Μέτρον καλοῦμεν (στ) καὶ τὸν χρόνον, ὃν τινες τῶν ῥυθμικῶν σημεῖον προσαγορεύουσιν...». Εἰς τὴν τελευταίαν περίπτωσιν ἐννοεῖται ὁ πρῶτος χρόνος, ὁ ἔχων τὸ μέγεθος μιᾶς βραχείας συλλαβῆς. Ἐξ ἄλλου εἰς τοὺς Λατίνους τοὐλάχιστον μετιρκοὺς ὁ ὅρος μέτρον χρησιμοποιεῖται πρὸς δήλωσιν (ζ) καὶ μετρικῆς ἑνότητος μεγαλυτέρας τῆς διποδίας (ἀνωτέρω σημασία δ') καὶ μικροτέρας τοῦ στίχου (ἀνωτέρω σημασία γ'), ἄλλως *κῶλον* καλουμένης.

Ἡ σημερινὴ μετρικὴ ἐπιστήμη *μέτρον* ὀνομάζει κατ' ἐξοχὴν τὴν μικροτέραν δυνατὴν μετρικὴν ἑνότητα, ἐκ τῆς ἐπαναλήψεως τῆς ὁποίας σχηματίζονται οἱ διάφοροι στίχοι, ὅ,τι δηλαδὴ οἱ ἀρχαῖοι ἐκάλουν ἐν μέρει *πόδα*, ἐν μέρει *διποδίαν* ἢ *βάσιν* ἢ *συζυγίαν* (ἀνωτέρω σημασίαι ἀρχαῖαι δ' καὶ ε'): ⏑⏑—— καὶ ——⏑⏑ ἰωνικὸν μέτρον, —⏑— κρητικόν, ⏑—— βακχειακόν, —⏑⏑— χοριαμβικόν. Ἐξ ἄλλου ⏓—⏑— ἰαμβικὸν μέτρον, —⏑—⏓ τροχαϊκόν, ⏓⏓—⏓⏓— ἀναπαιστικόν. Ἁπλοῦς ἰαμβικούς, τροχαϊκούς, ἀναπαιστικοὺς πόδας (⏑—, —⏑, ⏑⏑—) δὲν δέχεται ἡ νεωτέρα μετρικὴ ἐπιστήμη. Διὰ τὰ δακτυλικὰ ἀμφισβητεῖται ἂν τὸ μέτρον ἀποτελεῖται πάντοτε ἀπὸ μίαν διποδίαν (—⏓⏓—⏓⏓) ἢ καὶ ἀπὸ ἕνα πόδα ἐνίοτε (—⏑⏑· πρβλ. τὸν ὅρον *ἑξάμετρον* προκειμένου περὶ ἓξ ποδῶν, τριῶν διποδιῶν).

Ἐκ τῶν ἄλλων ἀρχαίων χρήσεων τοῦ ὅρου μέτρον συνηθίζεται σήμερον καὶ ἡ δευτέρα: μέτρα ἀναπαιστικά, δακτυλικὰ κλπ.

Οἱ ἀρχαῖοι μετρικοὶ διέκρινον κατὰ κανόνα τὸ μέτρον τοῦ ῥυθμοῦ: τοῦ ῥυθμοῦ αἴσθημα μπορεῖ νὰ γεννήσῃ οἱοσδήποτε κατὰ κανονικὰ διαστήματα ἐπαναλαμβανόμενος ἦχος, ἐνῷ τοῦ μέτρου ἀπαραίτητος ὑλικὴ βάσις εἶναι αἱ λέξεις. Ἔπειτα τὸ μέτρον ἀποτελεῖ μέρος μόνον τοῦ ῥυθμοῦ· ὁ αὐτὸς ῥυθμὸς μπορεῖ νὰ ἐξακολουθῇ εἰς ἕνα ποίημα ἐπὶ μακρόν, ἐνῷ τὸ μέτρον εἶναι σαφῶς πεπερασμένον. Ἐξ ἄλλου μέτρον χωρὶς ῥυθμὸν δὲν μπορεῖ νὰ ὑπάρξῃ, ῥυθμὸς ὅμως μὴ δυνάμενος νὰ διαιρεθῇ εἰς μέτρα, ναὶ (π. χ. οἱ αἰολικοὶ ῥυθμοί).

Τὰ μέτρα, ὡς μεγαλύτεραι μετρικαὶ ἑνότητες (στίχοι) λαμβανόμενα διακρίνονται ὑπὸ τῶν ἀρχαίων κατὰ τὴν ἀπόθεσιν, τουτέστι τὸ τέλος αὐτῶν, 1) εἰς *ἀκατάληκτα* («ὅσα τὸν τελευταῖον πόδα ὁλόκληρον ἔχει»):

Μῶσ' ἄγε Καλλιόπα θύγατερ Διός
— ⏑⏑ —⏑⏑ | — ⏑⏑— ⏑⏑

2) *Καταληκτικὰ* («ὅσα μεμειωμένον ἔχει τὸν τελευταῖον πόδα»):

Χαίροισα νύμφα, χαιρέτω δ' ὁ γάμβρος
— — ⏑ — | — — ⏑ — | ⏑ — —

3) *Βραχυκατάληκτα* («ὅσα ἀπὸ διποδίας ἐπὶ τέλους ὅλῳ ποδὶ μεμείωται»):

ἄγ' αὔτ' ἐς οἶκον τὸν Κλεησίππω
⏑ — ⏑ — | — — ⏑— | ——

4) *Ὑπερκατάληκτα* («ὅσα πρὸς τῷ τελείῳ προσέλαβε μέρος ποδός»):

ἄδ' Ἄρτεμις, ὦ κόραι
— —⏑⏑ — | ⏑—

Ἡ τελευταία τάξις τῶν ὑπερκαταλήκτων ἐσφαλμένως ἐδημιουργήθη ὑπὸ τῶν παλαιῶν μετρικῶν, ἀδυνατούντων νὰ κατανοήσωσι τοὺς νόμους τῆς ἀρχαίας μετρικῆς τέχνης καὶ περιοριζομένων εἰς ἁπλῆν ἐξωτερικὴν ἀνάλυσιν τοῦ σχήματος. Ὡς πρὸς τὴν σύνταξιν διακρίνουν οἱ ἀρχαῖοι τὰ μέτρα α') εἰς *καθαρὰ* ἢ *μονοειδῆ*, τὰ ὁποῖα σχηματίζονται ἀπὸ τὴν ἐπανάληψιν τῶν ἰδίων μικρῶν μετρικῶν ἑνοτήτων, καὶ β') εἰς *ἐπισύνθετα* ἢ *μεικτά*, τὰ ὁποῖα παρουσιάζονται ὡς ἐκ διαφόρων ποδῶν συγκείμενα. (Περὶ τῶν διαφόρων εἰδῶν τῶν μέτρων ὡς τῶν *ἀκαταλήκτων, δακτυλικῶν, εὐπολιδείων, ἰαμβικῶν, καταληκτικῶν* κλπ. βλέπε τὰς οἰκείας λέξεις.)

Ι. Θ. Κ.

—*[Μουσ.]* *Μέτρον* (λατ. mensura, γαλλ. mésure, γερμ. Takt) ἐν τῇ μουσικῇ καλεῖται ἕκαστον τμῆμα περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο *διαστολῶν* καὶ χωρίζον ἓν μουσικὸν τεμάχιον εἰς μικρότερα μέρη, ἴσης χρονικῆς διαρκείας. Παλαιότερον τὸ μέτρον ὑπεδείκνυε τὰς μεταξὺ τῶν διαφόρων φθογγοσήμων σχέσεις διαρκείας.

Οἱ ἀρχαῖοι ἠγνόουν τὸ μέτρον ὑπὸ τὴν σύγχρονον σημασίαν· παρ' αὐτοῖς ὁ μουσικὸς ῥυθμὸς συνεδέετο ἀναποσπάστως μὲ τὸν τῆς ποιήσεως. Τὸ αὐτὸ δὲ δύναται νὰ λεχθῇ διὰ τὴν πρώτην λειτουργικὴν μουσικὴν καὶ τὸ γρηγοριανὸν ᾆσμα. Φαίνεται ὅτι οἱ ῥαψῳδοὶ ἐγνώρισαν τὴν διμερῆ ὑποδιαίρεσιν· αἱ περισωθεῖσαι ὅμως μελῳδίαι δὲν μᾶς διδάσκουν ἀσφαλῶς τὸν τρόπον τῆς ἐκτελέσεως αὐτῶν. Πρῶτος ὁ Φρανκὸν τῆς Κολωνίας, κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα, ἔγραψε τὸ ἐγχειρίδιόν του: «Ἐμμέτρου σημειογραφίας». Κατὰ τὸν αἰῶνα τοῦτον ὡς καὶ κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα ΙΓ', ἐπεκράτησεν ἀπολύτως τὸ τριμερὲς μέτρον, ἐνῷ τὸ διμερὲς ὑφίστατο μόνον ἐν τῇ θεωρίᾳ. Τὰ ἀρχαιότερα σημεῖα ῥυθμικῆς ὑποδιαιρέσεως ἦσαν τὰ ἑξῆς:

⊙ Τέλειος χρόνος, Tempus perfectum
( ⊟ = 3 ◇)

( Ἀτελὴς χρόνος, Tempus imperfectum
( ⊟ = 2 ◇)

Τὸ τριμερὲς μέτρον ἐθεωρεῖτο τέλειον, διότι δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ ὑποδιαιρεθῇ ὡς τὸ διμερές· ἦτο ἡ κυρία ῥυθμικὴ ὑποδιαίρεσις ὡς λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἐκ τῆς ἁγίας Τριάδος. Ὁ αὐτὸς φθόγγος, διατηρῶν τὸ σχῆμά του, ἦτο δυνατὸν νὰ ὑποδιαιρεθῇ εἰς τρεῖς ἢ δύο χρόνους· τὸ μακρὸν αἴφνης ἀντεστοίχει καὶ πρὸς τρεῖς καὶ πρὸς δύο· διὰ τὴν διαίρεσιν εἰς τελείους χρόνους (τριμερῆ) ἔπρεπε νὰ τεθῇ εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ διαγράμματος τὸ σημεῖον: ⊙ Ἐὰν ἀντιθέτως ἐπεθύμουν τὸ τεμάχιον νὰ ἐκτελεσθῇ εἰς διμερῆ ἀτελῆ χρόνον, ἤρκει νὰ τεθῇ εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ διαγράμματος ἓν ἡμικύκλιον (. Ἡ ἀνακάλυψις τῶν σημείων τούτων ἀποδίδεται εἰς τὸν Φίλιππον τοῦ Βιτρὺ (de Vitry). Ἀλλὰ καὶ ἀναλόγως τῆς θέσεως ὁ φθόγγος ἤλλασσεν ἀξίαν. Τὸ βραχύ: ■, μεταξὺ δύο μακρῶν, προσέθετεν ἕνα τέλειον χρόνον (τριμερῆ) εἰς τὸ ἐπακολουθοῦν μακρόν, ἐνῷ μετέβαλλεν εἰς ἀτελῆ χρόνον τὸ προηγούμενον μακρόν. Δηλαδὴ 𝆷 ■ 𝆷 = 𝅗𝅥 ♩ 𝅗𝅥. Τρία βραχέα μεταξὺ δύο μακρῶν: 𝆷 ■ ■ ■ 𝆷 διετήρουν τὴν ἀξίαν των, ἰσοδυναμοῦντα πρός: 𝅗𝅥. ♩ ♩ ♩ 𝅗𝅥. κ.τ.λ.

Τὰ σημεῖα διαρκείας κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα εἶχον λάβει τὴν ἑξῆς μορφήν:

Μέγιστον, ἢ διπλοῦν ὁλόκληρον (Maxima)
Μακρὸν (Longa)
Βραχὺ (Brevis)
Ἡμίβραχυ (Semibrevis)
Ἐλάχιστον (Minima)
Ἡμιελάχιστον (Semiminima)
Χρῶμα (Croma ἢ fusa)
Ἡμίχρωμα (Semicroma ἢ semifusa)

Ἡ ἀξία τοῦ βραχέος περὶ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην

Digitized by Google

ἀντεστοίχει σχεδὸν πρὸς τὴν τοῦ σημερινοῦ ἡμίσεος: 𝅗𝅥 ἢ πρὸς τὸ μακρὸν τοῦ ΙΒ′ καὶ ΙΓ′ αἰῶνος καὶ ἀντεπροσώπευεν ἓν μέτρον. Ὁ τέλειος χρόνος, μεταγραφόμενος συμφώνως μὲ τὴν σύγχρονον ρυθμικήν, θὰ μᾶς ἔδιδεν ἓν μέτρον $3/4$ καὶ ὁ ἀτελὴς χρόνος τὸ μέτρον τῶν $2/4$. Κατὰ τὸν αὐτὸν αἰῶνα ὁ παρεστιγμένος κύκλος ⊙, εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ διαγράμματος, ἰσοδυναμεῖ πρὸς $9/8$ τῆς συγχρόνου μουσικῆς· τὸ παρεστιγμένον ἡμικύκλιον ☾· ἰσοῦται πρὸς $6/8$, ὁ κύκλος ἄνευ στιγμῆς ○$=3/4$ καὶ τὸ ἡμικύκλιον ἄνευ στιγμῆς ἰσοδυναμεῖ πρὸς $2/4$. Τὰ σημεῖα ταῦτα διατεμνόμενα ἐπιπροσθέτως διὰ μιᾶς καθέτου γραμμῆς ηὔξανον τὴν γοργότητά των ἐπὶ τὸ διπλοῦν. Ἡ διατέμνουσα γραμμὴ ἔχει μείνει ἐν χρήσει ἐν τῇ συγχρόνῳ ρυθμικῇ ὡς 𝄵 καὶ σημαίνει ὅτι τὰ τέσσαρα τέταρτα 𝄴 μεταβάλλονται εἰς $2/2$ (alla breve).

Ὑπὸ τὴν σύγχρονον σημασίαν μέτρον εἶναι ἡ ὑποδιαίρεσις ἑνὸς τεμαχίου εἰς μικρότερα ἴσα μέρη. Ἡ ὑποδιαίρεσις αὕτη γίνεται διὰ μικρῶν καθέτων γραμμῶν διατεμνουσῶν τὸ πεντάγραμμον καὶ ὀνομαζομένων διαστολῶν. Αἱ ἀξίαι αἱ περιεχόμεναι ἐντὸς ἑνὸς μέτρου δύνανται νὰ ὦσι διάφοροι· τὸ ἄθροισμα ὅμως αὐτῶν ὀφείλει νὰ ἰσοῦται πρὸς τὴν μετρικὴν ὑπόδειξιν τὴν ἐμφαινομένην διὰ τοῦ κλασματικοῦ ἀριθμοῦ τοῦ τοποθετουμένου εὐθὺς ἀμέσως μετὰ τὸν γνώμονα. Ἐὰν ὁ ἀριθμὸς οὗτος εἶναι αἴφνης $2/4$, ἕκαστον μέτρον δύναται νὰ περιέχῃ ἓν ἥμισυ, ἢ δύο τέταρτα, ἢ ἓν τέταρτον καὶ δύο ὄγδοα, ἓν τέταρτον καὶ τέσσαρα δέκατα ἕκτα, ἀναλόγους παύσεις, οὐχὶ ὅμως $3/4$ ἢ $4/4$ κ.τ.λ. Τὰ μέτρα, ἐξ ἄλλου, ὑποδιαιροῦνται εἰς χρόνους ἢ μέρη, δηλαδὴ μικρότερα τμήματα, ἴσης ἀξίας καὶ διαρκείας. Τὸ ἐν τῇ ἀρχῇ τοῦ τεμαχίου κλάσμα ὑποδεικνύει διὰ μὲν τοῦ ἀριθμητοῦ του πόσα μέρη ἢ χρόνους περιέχει ἓν μέτρον, διὰ δὲ τοῦ παρονομαστοῦ του τὴν ἀξίαν ἑκάστου μέρους. Ἀναλόγως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν μερῶν ὑπάρχουσι πλεῖστα εἴδη μέτρων· δύο ὅμως ἐξ αὐτῶν πρέπει νὰ θεωρηθῶσιν ὡς βασικά, τὰ ἁπλᾶ διμερῆ καὶ τὰ τριμερῆ, τῶν λοιπῶν ὄντων συνθέτων. Καὶ ἁπλᾶ μὲν διμερῆ εἶνε τὰ διαιρούμενα διὰ τοῦ δύο· ἁπλᾶ δὲ τριμερῆ τὰ ἀποτελούμενα ἀπὸ παρεστιγμένον φθόγγον καὶ διαιρούμενα διὰ τοῦ τρία. Σύνθετα εἶναι ἐκεῖνα, τῶν ὁποίων ἕκαστον μέρος ἢ χρόνος ἀποτελεῖται ἀπὸ παρεστιγμένην μονάδα διαιρουμένην διὰ τοῦ τρία. Πολλοὶ θεωροῦν καὶ τὸ τετραμερὲς μέτρον ὡς σύνθετον, καθὸ προερχόμενον ἐκ τῆς συνενώσεως δύο διμερῶν.

*Πίναξ μέτρων.*

Μέτρα σύνθετα.

| Ἀριθμητ. ὑπόδειξις | Σύνολ. μέτρου | Ἀξία ἑκ. μέρους |
|---|---|---|
| **Διμερῆ.** | | |
| $\frac{6}{2}$ | 𝅜. | 𝅝. |
| $\frac{6}{4}$ | 𝅝 | 𝅗𝅥. |
| $\frac{6}{8}$ | 𝅗𝅥. | ♩. |
| $\frac{6}{16}$ | ♩. | ♪. |
| **Τριμερῆ.** | | |
| $\frac{9}{2}$ | 𝅜. 𝅝. | 𝅝. |
| $\frac{9}{4}$ | 𝅝. 𝅗𝅥. | 𝅗𝅥. |
| $\frac{9}{8}$ | 𝅗𝅥. ♩. | ♩. |
| $\frac{9}{16}$ | ♩. ♪. | ♪. |
| **Τετραμερῆ.** | | |
| $\frac{12}{2}$ | 𝅜 𝅜 | 𝅝. |
| $\frac{12}{4}$ | 𝅜. | 𝅗𝅥. |
| $\frac{12}{8}$ | 𝅝. | ♩. |
| $\frac{12}{16}$ | 𝅗𝅥 | ♪. |

Μέτρα διμερῆ.

| Ἀριθμητ. ὑπόδειξις | Σύνολ. μέτρου | Ἀξία ἑκ. μέρους |
|---|---|---|
| $\frac{2}{1}$ | 𝅝𝅝 | 𝅝 |
| $\frac{2}{2}$ | 𝅝 | 𝅗𝅥 |
| $\frac{2}{4}$ | 𝅗𝅥 | ♩ |
| $\frac{2}{8}$ | ♩ | ♪ |
| **Μέτρα τριμερῆ.** | | |
| $\frac{3}{1}$ | 𝅝𝅝𝅝 | 𝅝 |
| $\frac{3}{2}$ | 𝅝. | 𝅗𝅥 |
| $\frac{3}{4}$ | 𝅗𝅥. | ♩ |
| $\frac{3}{8}$ | ♩. | ♪ |
| **Μέτρα τετραμερῆ.** | | |
| $\frac{4}{1}$ | 𝅝𝅝𝅝𝅝 | 𝅝 |
| $\frac{4}{2}$ | 𝅝𝅝 | 𝅗𝅥 |
| $\frac{4}{4}$ | 𝅝 | ♩ |
| $\frac{4}{8}$ | 𝅗𝅥 | ♪ |

Ὁ ρυθμὸς τῶν $4/4$ σημειοῦται συνήθως ὡς 𝄴, κατὰ δεύτερον λόγον ὡς $4/4$ καὶ σπανίως ὡς 4. Τῶν $2/2$ καὶ ὡς 𝄵, ὁ δὲ τῶν $3/4$ ἐνίοτε καὶ ἁπλῶς ὡς 3. Ἐκτὸς τῶν κανονικῶν τούτων μέτρων ὑπάρχουσι καὶ τὰ ἀκανόνιστα $5/4$, $\frac{7}{4}$ ἢ $\frac{7}{8}$ κτλ. Τὰ μέτρα ταῦτα προέρχονται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τῆς συνενώσεως δύο ἑτερογενῶν ρυθμῶν: Τὸ $5/4$ αἴφνης προῆλθεν ἐκ τῆς συνενώσεως ἑνὸς μέτρου $3/4$ καὶ ἑνὸς $2/4$ ἢ καὶ τὸ ἀντίθετον· τὸ $7/4$ ἐξ ἑνὸς μέτρου $4/4$ καὶ ἑνὸς $3/4$ κ.ο.κ.

Πίναξ ἀκανονίστων μέτρων:

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Πενταμερῆ: | $\frac{5}{1}$, | $\frac{5}{2}$, | $\frac{5}{4}$, | $\frac{5}{8}$ |
| Ἑπταμερῆ: | $\frac{7}{1}$, | $\frac{7}{2}$, | $\frac{7}{4}$, | $\frac{7}{8}$ |
| Ἐννεαμερῆ: | $\frac{9}{1}$, | $\frac{9}{2}$, | $\frac{9}{4}$, | $\frac{9}{8}$ |

Τὸ ἐννεαμερὲς ἀκανόνιστον μέτρον οὐδεμίαν σχέσιν ἔχει πρὸς τὸ κανονικὸν τοιοῦτον, καθὸ προερχόμενον ἐκ τῆς συνενώσεως τῶν μέτρων:

♩ ♩ ♩ ♩ + ♩ ♩ ♩ + ♩ ♩

Ἐν τῇ δημώδει ἑλληνικῇ μουσικῇ τὰ ἀκανόνιστα μέτρα εἶναι συνήθους χρήσεως. Παράδειγμα τὰ πενταμερῆ ($\frac{5}{8}$) τραγούδια τῆς Κύπρου: «Τὸ τραγοῦδι τῆς σούστας», «Ὁ Μὰς ἢ Κλήδωνας», χοροί τινες τῆς Ἠπείρου, γαμήλια τῆς Πελοποννήσου κτλ. Συνηθέστεροι ἔτι εἶναι ἑπταμερεῖς ($\frac{7}{8}$) χοροὶ τῆς ὅλης Ἑλλάδος: καλαματιανός, συρτὸς κτλ., οἱ ἐννεαμερεῖς ($9/8$) χοροὶ τῆς Κύπρου καὶ τοῦ Πόντου (μέτρα $3/4+3/8=9/8$) κτλ.

Τὰ μέρη ἑνὸς μέτρου, ἀναλόγως τῆς θέσεως ἣν κατέχουσιν ἐν αὐτῷ, τονίζονται περισσότερον ἢ ὀλιγώτερον. Ἐξ οὗ καὶ ἡ διαίρεσις ἑνὸς μέτρου εἰς μέρη ἰσχυρὰ καὶ ἀσθενῆ. Τὸ πρῶτον μέρος εἶναι κατὰ κανόνα τὸ ἰσχυρότερον, τὰ ἄλλα ὀλιγώτερον ἰσχυρὰ ἢ ἀσθενῆ.

Εἰς μέτρον διμερὲς ἢ ἑξαμερές, τὸ πρῶτον εἶναι ἰσχυρὸν καὶ τὸ δεύτερον ἀσθενές. Εἰς μέτρον τριμερὲς ἢ ἐννεαμερές, τὸ πρῶτον ἰσχυρὸν καὶ τὰ δύο ἄλλα ἀσθενῆ. Εἰς μέτρον τετραμερὲς ἢ δωδεκαμερές, τὸ πρῶτον ἰσχυρόν, τὸ δεύτερον ἀσθενές, τὸν τρίτον κατὰ τὸ ἥμισυ ἰσχυρόν, τὸ τέταρτον ἀσθενές.

Ἐν τῇ μουσικῇ ἀναγνώσει ἢ τῇ διευθύνσει ὀρχήστρας, χορῳδίας κτλ., ἡ διαίρεσις τῶν μέτρων εἰς μέρη (κοιν. μέτρημα) γίνεται δι' ὡρισμένων κανονικῶν καὶ ἰσοχρόνων κινήσεων τῆς χειρός, ὧν μίαν ἰδέαν δίδει ἡ ἑπομένη ἀναπαράστασις.

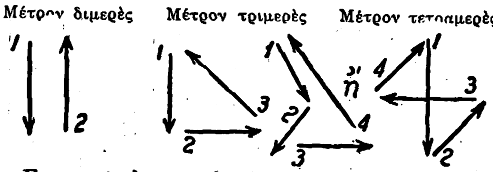


Ἐν γοργῇ ἀγωγῇ τὰ σύνθετα μέτρα: $6/8$, $9/8$ καὶ $12/8$ ἀκολουθοῦν τὴν διαίρεσιν: τὸ πρῶτον τῶν $\frac{2}{4}$, τὸ δεύτερον τῶν $3/4$ καὶ τὸ τρίτον τῶν $\frac{4}{4}$. Ἐν βραδείᾳ ὅμως ἀγωγῇ ἑκάστη κίνησις ὑποδιαιρεῖται εἰς μικρότερα μέρη, ὡς ἑξῆς:

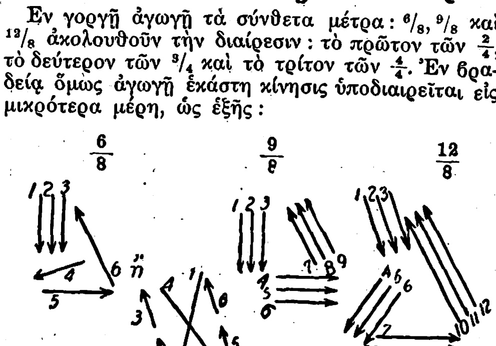


Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**—μέτρα ἀσυνάρτητα** (λατ. inconnexa) [*Μετρικ.*]. Ὁρισμὸς τοῦ μετρικοῦ τούτου ὅρου διεσώθη ἐν τῷ «Ἐγχειριδίῳ περὶ μέτρων καὶ περὶ ποιήματος» τοῦ Ἡφαιστίωνος (κεφ. 15): «Γίνεται, λέγει, ἀσυνάρτητα ὁπόταν δύο κῶλα μὴ δυνάμενα ἀλλήλοις συναρτηθῆναι μηδὲ ἕνωσιν ἔχειν ἀντὶ ἑνὸς μόνου παραλαμβάνηται στίχου». Λόγῳ ὅμως τῆς ἀσαφείας του προεκλήθησαν πολλαὶ συζητήσεις ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Bentley. Οὗτος ὑπεστήριξεν ὅτι ἀσυνάρτητα μέτρα εἶναι τὰ ἐπιδεχόμενα ἐν τῷ μέσῳ τοῦ στίχου καὶ εἰς τὸ τέλος τοῦ κώλου ἀδιάφορον συλλαβὴν καὶ χασμῳδίαν, μολονότι ἐκ τῶν ὑπὸ τοῦ Ἡφαιστίωνος ἐπιφερομένων παραδειγμάτων ἀσυναρτήτων μέτρων ἓν μόνον συμφωνεῖ πρὸς τὴν θεωρίαν ταύτην. Μετ' αὐτὸν ὁ Westphal μελετήσας τὰ παραδείγματα τοῦ Ἡφαιστίωνος συνήγαγε τὸ συμπέρασμα ὅτι ἀσυνάρτητα μέτρα ἔλεγεν ὁ Ἡφαιστίων, οὐχὶ τὰ ἔχοντα χασμῳδίαν καὶ ἀδιάφορον συλλαβὴν ἐν τῷ μέσῳ, ἀλλὰ τὰ ἔχοντα προκατάληξιν, τὰ προκαταληκτικά. Ἀλλὰ καὶ ὁ ὁρισμὸς οὗτος δὲν φαίνεται ν' ἀνταποκρίνεται πρὸς τὴν ἀλήθειαν, διότι δὲν περιλαμβάνει ὁλόκληρον τὸ λογικὸν βάθος τῆς ἐννοίας. Σήμερον ὁμιλοῦντες περὶ ἀσυναρτήτων μέτρων ἐννοοῦμεν τρία κυρίως εἴδη στίχων:

1) Ἐκείνους, ἐν οἷς τὰ ὑπάρχοντα δύο κῶλα σύγκεινται ἐξ ἀνομοίων ἀκαταλήκτων μέτρων. Οὕτως ὁ στίχος:

οὐκέθ' ὁμῶς θάλλεις ἁπαλὸς χρόα | κάρφεται γὰρ ἤδη
—́◡◡—́◡◡—́◡◡—́◡◡ | —́◡—́◡—́◡

ὅστις ἀποτελεῖται ἐκ τεσσάρων πλήρων δακτύλων καὶ τριῶν πλήρων τροχαίων, εἶναι ἀσυνάρτητος.

2) Ἐκείνους, ἐν οἷς τὰ ὑπάρχοντα δύο κῶλα σύγκεινται ἐξ ἀνομοίων καταληκτικῶν μέτρων. Οὕτως ὁ στίχος:

πρῶτον μὲν εὔβου | λον θέμιν οὐρανίαν
——́◡—́— | —́◡◡—́◡◡—́

ὅστις σύγκειται ἐξ ἑνὸς ἰαμβικοῦ καταληκτικοῦ καὶ ἑνὸς δακτυλικοῦ καταληκτικοῦ κώλου εἶναι ἀσυνάρτητος.

3) Ἐκείνους, ἐν οἷς τὰ ὑπάρχοντα δύο κῶλα σύγκεινται ἐξ ὁμοίων μέν, ἀλλὰ καταληκτικῶν μέτρων. Εἰς τὴν τρίτην ταύτην κατηγορίαν ὑπάγονται πάντα τὰ ἐλεγειακὰ πεντάμετρα, ὡς π. χ.:

παῖς ἅτε, τῶν δ' ἐτέων | ἡ δεκὰς οὐκ ὀλίγη
—́◡◡—́◡◡—́ | —́◡◡—́◡◡—́

Αἱ τρεῖς αὗται κατηγορίαι ἀσυναρτήτων μέτρων εἶναι αἱ βασικαί. Μὲ βάσιν ταύτας καὶ συνδυασμὸν ποικίλων μέτρων καὶ διαφόρου πληρότητος ποδῶν γίνονται καὶ ἄλλα σχήματα ἀσυναρτήτων μέτρων. Ἀσυνάρτητα μέτρα πρῶτος μετεχειρίσθη ὁ Ἀρχίλοχος.

Θ. Π.

**— μέτρα προσωρινὰ** [*Νομ.*]· βλ. λ. *προσωρινὰ μέτρα.*

**— μέτρα συντηρητικὰ** [*Νομ.*]· βλ. λ. *συντηρητικὰ μέτρα.*

**— «Μέτρον»** (Metron). Διεθνὴς ἐπιθεώρησις στατιστικῆς καὶ γενικῶν πληροφοριῶν, ἐκδιδομένη ἰταλιστὶ ἐν Φερράρᾳ εἰς σχῆμα 8ον ἀπὸ τοῦ 1920 ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Κορράντο Τζίνι. Π. Ν. Π.

**— μέτρον δυναμικὸν** [*Μετεωρολ.*]. Οὕτω καλεῖται ἡ προταθεῖσα ὑπὸ τοῦ V. Bjerknes μονάς, ἵνα χρησιμεύσῃ διὰ τὴν κατακόρυφον συντεταγμένην καὶ ἵνα ἐκφράσῃ τὸ ὕψος ἑνὸς σημείου ἄνωθεν τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Ἡ χρησιμοποίησις τῆς μονάδος ταύτης ὑπὸ τῆς δυναμικῆς μετεωρολογίας ἤγαγεν εἰς ὡρισμένας ἁπλοποιήσεις τῶν τύπων αὐτῆς. Τὸ *δυναμικόν*, ὅπερ ἀντιστοιχεῖ εἰς ὡρισμένον ὕψος, εἶναι εἷς ἀριθμὸς περίπου δεκάκις μεγαλύτερος τοῦ ὕψους τούτου (ἀκριβῶς 9,8 φοράς), διὰ τὸ εὔχρηστον δὲ τῶν λογισμῶν ὑπάρχει τρόπος νὰ λάβωμεν διὰ τὸ δυναμικὸν μίαν μονάδα δεκάκις μεγαλυτέραν, τὴν καλουμένην *μέτρον δυναμικόν*. Οὕτως εἰς τὸ πλάτος τῶν 45° τὸ δυναμικὸν μέτρον ὁρίζεται ἐκ τοῦ ὅρου ὅτι 9807 μέτρα δυναμικὰ ἀντιστοιχοῦσιν εἰς 10.000 μέτρα καὶ ἓν μέτρον δυναμικὸν ἀντιστοιχεῖ εἰς 1,02 μέτρα ἢ 102 ἑκ. Ἡ μονὰς αὕτη καὶ ὁ ὁρισμὸς αὐτῆς ἀποπλανῶσι κατ' ἀρχάς, διότι δὲν εἶναι οὔτε μονὰς μήκους οὔτε σταθερὰ μονάς, πρέπει δὲ νὰ καθορίζηται εἰς ἕκαστον πλάτος· ὡδήγησεν ὅμως εἰς διαφόρους ἁπλουστεύσεις, ὅπως π. χ. εἰς τοὺς ὑπολογισμοὺς τοῦ ὕψους τῆς ὁμογενοῦς ἀτμοσφαίρας. Ἐπίσης γίνεται χρῆσις τῆς μονάδος ταύτης κατὰ τὰς δημοσιεύσεις τῶν μετρήσεων διὰ τῶν ἀτμοσφαιροβολίσεων, αἵτινες συμφώνως πρὸς τὴν 8ην ἀπόφασιν τοῦ «Διεθνοῦς συνεδρίου τῶν διευθυντῶν τῶν μετεωρολογικῶν ὑπηρεσιῶν», ὅπερ συνῆλθεν ἐν Κοπεγχάγῃ τῷ 1929, πρέπει νὰ περιέχωσιν ὡς συντεταγμένας τὸ γεωγραφικὸν μῆκος, τὸ γεωγραφικὸν πλάτος καὶ τὸ γεωδυναμικὸν (geopotential) εἰς δυναμικὰ μέτρα ἄνωθεν τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης, ὡς ἐπίσης καὶ τὴν κάθετον θερμοβαθμίδα (ἐλάττωσιν), εἰς ἀκεραίους καὶ δέκατα τοῦ βαθμοῦ ἀνὰ 100 δυναμικὰ μέτρα.

Ἡ μονὰς αὕτη ὁρίζεται ἐπιστημονικώτερον ὡς ἑξῆς: Ἡ διαφορὰ γεωδυναμικοῦ μεταξὺ δύο σημείων A καὶ B εἶναι 1 μονὰς C.G.S. ὅταν τὸ ἔργον, ὅπερ ἀπαιτεῖται διὰ νὰ ὑπερνικήσῃ τὴν βαρύτητα καὶ νὰ μεταφερθῇ 1 g ἀπὸ τοῦ σημείου A μέχρι B, ἀνέλθῃ εἰς 1 Erg. Ἡ πρακτικὴ μονὰς τοῦ γεωδυναμικοῦ εἶναι 105 C.G.S. μονάδες καὶ καλεῖται «leo». Ἡ κατακόρυφος ἀπόστασις μεταξὺ δύο στρωμάτων γεωδυναμικοῦ, ἅτινα διαφέρουσι κατὰ ἕνα leo, ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς τιμῆς τῆς ἐπιταχύνσεως τῆς βαρύτητος ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Ἐὰν καλέσωμεν υ τὴν διαφορὰν ὕψους εἰς ἑκατοστόμετρα μεταξὺ τῶν δύο στρωμάτων γεωδυναμικοῦ, ἅτινα διαφέρουσι κατὰ ν leo εἰς ἕνα τόπον μὲ ἐπιτάχυνσιν βαρύτητος g, τότε τὸ καταναλισκόμενον ἔργον διὰ τὴν κίνησιν μιᾶς μάζης μ

ἰσοῦται $\nu . 10^5 . \mu = \mu . g . \upsilon . erg.$

$$\text{ἤτοι } \upsilon = \frac{10^5 . \nu . \mu}{\mu . g} = 10 \; \frac{5 \; \nu}{g} \text{ ἑκ.}$$

δηλαδὴ ἡ κατακόρυφος ἀπόστασις δύο στρωμάτων ἀτμοσφαίρας διαφερόντων κατὰ 1 leo ἰσοῦται πρὸς $10^5/g$ ἑκ. καὶ ἐὰν $g = 981$ ἑκ. (δέκ.) τότε ἡ ἀπόστασις γίνεται $\frac{105}{g81} = 102$ ἑκ.

Θ.Θ.Φ.

**—μέτρον ἐλαστικότητος.** Σταθερὰ τῶν διαφόρων ὑλικῶν, δηλοῦσα πόσα χιλιόγραμμα εἶναι ἀναγκαῖα, ὅπως, ἐνεργοῦντα ὡς δύναμις ἑλκυσμοῦ, ἐπιφέρουν διπλασιασμὸν τοῦ μήκους σύρματος διατομῆς 1 τετραγωνικοῦ ἑκατοστοῦ ἐκ τοῦ ὑπ' ὄψιν ὑλικοῦ, ὅλως ἀνεξαρτήτως τοῦ ἐὰν τὸ ὑλικὸν δύναται νὰ ἐπιμηκυνθῇ τόσον πολύ, χωρὶς νὰ ὑποστῇ μονίμους παραμορφώσεις. Τὸ ἀντίστροφον τοῦ μέτρου ἐλαστικότητος ὀνομάζεται *συντελεστὴς ἐλαστικότητος* καὶ δηλοῖ κατὰ τί ποσοστὸν τοῦ ἀρχικοῦ του μήκους ἐπιμηκύνεται σύρμα ἐκ τοῦ ὑπ' ὄψιν ὑλικοῦ, διατομῆς ἑνὸς τετραγωνικοῦ ἑκατοστοῦ, ὅταν ἐφαρμόζηται ἐπ' αὐτοῦ δύναμις ἑλκυσμοῦ ἴση πρὸς ἓν χιλιόγραμμον. Τὸ μέτρον ἐλαστικότητος παρίσταται διεθνῶς διὰ τοῦ E, ὁπότε ἡ ἐπιμήκυνσις Dl ράβδου διατομῆς F καὶ μήκους l, ὅταν ἐφαρμόζηται ἐπ' αὐτῆς δύναμις ἑλκυσμοῦ ἴση πρὸς P χιλιόγραμμα, δίδεται ὑπὸ τοῦ τύπου

$$Dl = \frac{P . l}{E . F}$$

ὅπου E τὸ μέτρον ἐλαστικότητος τοῦ ὑλικοῦ, ἐξ οὗ ἡ ράβδος.

Ὁ κατωτέρω πίναξ δίδει τὰ μέτρα ἐλαστικότη-

Digitized by Google

τος μερικῶν ὑλικῶν, εἰς χιλιόγραμμα ἀνὰ τετραγωνικὸν ἑκατοστόν:

| | | |
|---|---|---|
| Συγκολλητὸς σίδηρος, παραλλήλως πρὸς τὰς ἴνας | E=2.000.000 | $\frac{kg}{cm^2}$ |
| Ρευστοπαγὴς σίδηρος ............... | 2.150.000 | |
| » χάλυψ ............... | 2.200.000 | |
| Χάλυψ ἐλατηρίων ........... .... | 2.200.000 | |
| Χυτοχάλυψ ......................... | 2.150.000 | |
| Χυτοσίδηρος ......................... | 1.050.000 | ἕως 750.000 |
| Χαλκὸς .......... ...... περίπου | 1.150.000 | |
| Ὀρείχαλκος .............. » | 800.000 | |
| Ἀλουμίνιον .............. » | 700.000 | |
| Μόλυβδος ................ » | 50.000 | |
| Ὕαλος ........ ....... » | 700.000 | |
| Ξύλ. πεύκ. (ὑγρ. 13⁰/₀) παραλλ. » | 90.000 | |
| » δρυὸς ( » » ) πρὸς τὰς » | 108.000 | |
| » ὀξυᾶς ( » 10⁰/₀) ἴνας » | 180.000 | |

Εἰς πολλὰ ἐκ τῶν ἀνωτέρω ὑλικῶν τὸ μέτρον ἐλαστικότητος ἐξαρτᾶται, ἐκτὸς ἄλλων, καὶ ἐκ τῆς θερμοκρασίας. Γ. Θ. Κ.

—**μέτρον ποινῆς** *[Ποιν. Δίκ.]*. Καλεῖται οὕτως ὁ κατὰ τοὺς ὅρους τοῦ ἄρθρου 108 τῆς ποινικῆς νομοθεσίας καθορισμὸς τῆς ποινῆς. Κατ' αὐτοὺς ἡ ποινὴ πρέπει νὰ ἐπιβάλληται ἐντὸς τῶν ὑπὸ τοῦ νόμου τασσομένων ὁρίων, ἀναλόγως τῆς φύσεως τῆς πράξεως καὶ τοῦ χαρακτῆρος τοῦ δράστου, λαμβανομένων ὑπ' ὄψει τῶν ἐλαφρυντικῶν καὶ ἐπιβαρυντικῶν περιπτώσεων. Σ. Α. Χ.

— **μέτρου σύμβασις**· βλ. *μετρονομικὰ* γραφεῖα.

**μετρονομικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετρονομίαν, ὁ τῆς μετρονομίας.

— **μετρονομικὰ γραφεῖα.** Κρατικὰ ἱδρύματα προωρισμένα διὰ τὴν φύλαξιν τῶν προτύπων μέτρων καὶ σταθμῶν (étalons), τὴν ῥύθμισιν καὶ τὸν ἔλεγχον τῶν ἐν γένει χρησιμοποιουμένων μέτρων καὶ σταθμῶν ἐν σχέσει πρὸς τὰ πρότυπα τοιαῦτα, καὶ τέλος διὰ τὸν διακανονισμὸν παντὸς ζητήματος ἀφορῶντος τὰ μέτρα καὶ σταθμά. Ἡ κατὰ τὸ ἔτος 1875 ἐν Παρισίοις συνελθοῦσα «διεθνὴς συνδιάσκεψις τοῦ μέτρου» ἀπεφάσισε τὴν ἵδρυσιν «διεθνοῦς μετρονομικοῦ γραφείου» ἐν Παρισίοις, τὸ ὁποῖον ἐπιτηρεῖ τὰ ἐν αὐτῷ φυλασσόμενα διεθνῆ πρότυπα τοῦ μέτρου καὶ τοῦ χιλιογράμμου, καὶ κατασκευάζει ἐπὶ τῇ βάσει αὐτῶν τὰ διάφορα ἐθνικὰ πρότυπα, ἅτινα διανέμει εἰς τὰ μετέχοντα τῆς σχετικῆς συμβάσεως κράτη. Τὰ ἐθνικὰ πρότυπα κατασκευάζονται ἀπὸ κρᾶμα πλατίνης καὶ ἰριδίου (εἰς ἀναλογίαν 9 : 1)· τὸ ἐν τῷ διεθνεῖ γραφείῳ ἐν Παρισίοις φυλασσόμενον διεθνὲς πρότυπον μέτρον εἶναι ἐκ πλανίνης καὶ κατεσκευάσθη ὑπὸ τοῦ Lenoir. Τὰ κατὰ τόπους ἐθνικὰ μετρονομικὰ γραφεῖα καθορίζουν τὸ ἀνεκτὸν σφάλμα τῶν ἐθνικῶν προτύπων ἐν σχέσει πρὸς τὸ διεθνὲς πρότυπον, καθ' ὅσον τελεία συμφωνία πρὸς αὐτὸ εἶναι διὰ λόγους τεχνικοὺς ἀνέφικτος. Οὕτω τὸ διὰ τὴν πρωσσικὴν κυβέρνησιν τῷ 1863 κατασκευασθὲν πρότυπον μέτρον εὑρέθη κατὰ 309 ἑκατοντάκις ἑκατομμυριοστὰ μεγαλύτερον τοῦ διεθνοῦς προτύπου. Τὰ ἐθνικὰ μετρονομικὰ γραφεῖα φροντίζουν διὰ τὴν συμφωνίαν τῶν ἐν τῷ κράτει αὐτῶν χρησιμοποιουμένων μέτρων πρὸς τὰ ἐθνικὰ πρότυπα. Γ. Θ. Κ.

**μετρονόμος** (ὁ) *[Ἀρχ.]*. Κατὰ τὸν Ἀριστοτέλη, *μετρονόμοι* ἐκαλοῦντο εἰδικοί τινες Ἀθηναῖοι ἄρχοντες, οἵτινες ἦσαν ἐντεταλμένοι νὰ φυλάττωσι τοὺς *μετρητὰς* (βλ. λ.) καὶ νὰ ἐλέγχωσι διὰ τούτων τὰ ἐν χρήσει ὑπὸ τοῦ ἐμπορίου μέτρα καὶ σταθμά, δι' ὧν κατεμετροῦντο αἱ ἐμπορικαὶ συναλλαγαί. Κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Ἀριστοτέλους, οἱ μετρονόμοι τῆς ἀθηναϊκῆς πολιτείας ἦσαν δέκα, ἐκλεγόμενοι διὰ κλήρου, πέντε ἐξ Ἀθηνῶν καὶ πέντε ἐκ Πειραιῶς. Οἱ βοηθοὶ τῶν μετρονόμων ὠνομάζοντο, κατὰ τὸν Ἁρποκρατίωνα, *προμετρηταί*. Β. Δ. Θ.

**μετρονόμος** (ὁ) (γαλλ. métronome) *[Μηχαν. Μουσ.]*. Ὄργανον σχήματος πυραμιδοειδοῦς, περιέχον ἐκκρεμὲς μετὰ κινητοῦ βάρους. Τὸ ἐκκρεμὲς τοῦτο τίθεται εἰς κίνησιν δυνάμει ἐσωτερικοῦ μηχανισμοῦ ὡρολογίου, παράγον ταυτοχρόνως ξηρὸν ἦχον. Ὄπισθεν τοῦ ἐκκρεμοῦς ὑπάρχει κλῖμαξ ὑποδεικνύουσα τοὺς κτύπους, οἵτινες γίνονται κατὰ λεπτόν, ἀναλόγως τῆς θέσεως, εἰς ἣν εἶναι τοποθετημένον τὸ κινητὸν βάρος. Ἐφ' ὅσον τοῦτο εὑρίσκεται εἰς τὴν βάσιν τοῦ ἐκκρεμοῦς, οἱ κτύποι εἶναι ταχύτεροι, ἐφ' ὅσον ὅμως μετακινεῖται πρὸς τὰ ἄνω, οἱ κτύποι ἐπιβραδύνονται.

*Μετρονόμος.*

Ἵνα ὑποδείξῃ τὴν ἀγωγήν, ἣν ἐπιθυμεῖ ὁ συνθέτης, ἐν τῇ ἀρχῇ τοῦ τεμαχίου, σημειοῖ ἕνα οἱονδήποτε φθόγγον, ἥμισυ, τέταρτον, ὄγδοον κτλ. καὶ παρ' αὐτὸν τὸν ἀριθμὸν τοῦ μετρονόμου· π. χ. 𝅗𝅥=80, ὅπερ δηλοῖ ὅτι τὸ ἥμισυ ἰσοῦται πρὸς 80. Ὁ ἐκτελεστὴς μετακινεῖ τὸ βάρος κατὰ μῆκος τοῦ ἐκκρεμοῦς, μέχρι τοῦ ἀριθμοῦ 80. Ὁ μεταξὺ τῶν δύο κτύπων διαρρέων χρόνος θέλει δώσει τὴν ἀκριβῆ διάρκειαν τοῦ ἡμίσεος. Εἰς μέτρον τριμερές, ἐὰν ὁ μετρονόμος ὑποδεικνύῃ 𝅘𝅥=100, τοῦτο σημαίνει ὅτι ἑκάστη ταλάντωσις τοῦ ἐκκρεμοῦς ἰσοδυναμεῖ πρὸς ἓν τέταρτον καὶ ὅτι κατὰ συνέπειαν ἀπαιτοῦνται τρεῖς ταλαντώσεις κατὰ μέτρον κ.κ.ἑ.

Ἡ χρῆσις τοῦ μετρονόμου εἶναι τοσούτῳ μᾶλλον ἀπαραίτητος, καθ' ὅσον αἱ ὑποδείξεις τῆς ἀγωγῆς, ἀλλέγκρο, λάργκο, πρέστο κτλ., εἶναι σχετικῆς μόνον ἀκριβείας· ἔτι δὲ πλέον ἑκάστη ἀγωγὴ εἶναι δυνατὸν πολλάκις νὰ παρουσιασθῇ μὲ διαφόρους μετρονομικὰς ὑποδείξεις· οὕτω δύναται νὰ εὑρεθῇ ἀλλέγκρο μὲ 𝅘𝅥=96, 𝅘𝅥=100, 𝅘𝅥=108 κτλ., ἢ ἀντάντε μὲ 𝅗𝅥=48, ἢ 𝅗𝅥=50 κτλ. Ὑπάρχουσι τέλος διάφοροι ἀγωγαὶ παρουσιαζόμεναι μὲ τὴν αὐτὴν μετρονομικὴν ὑπόδειξιν· π. χ. 𝅘𝅥=63: μόλτο μαεστόζο, ἀνταντίνο γκρατσιόζο ἢ ἀλλεγκρέττο μόλτο μοντεράτο.

Ὁ Παῦλος Ρουνιὸν λαμβάνων ὑπ' ὄψει τὴν κατὰ προσέγγισιν σημασίαν τῶν ὅρων τῆς ἀγωγῆς καὶ τὴν ἀδυναμίαν τῆς ὑπαγωγῆς αὐτῶν εἰς σταθερὰς μετρονομικὰς ὑποδείξεις, κατήρτισε πίνακα περιλαμβάνοντα τοὺς ἀριθμοὺς τοῦ μετρονόμου, ἐν ἀντιστοιχίᾳ πρὸς τοὺς κυριωτέρους ὅρους τῆς ἀγωγῆς. Διὰ τὰ μέτρα $\frac{2}{4}$, $\frac{3}{4}$ καὶ $\frac{4}{4}$ ἕκαστον τέταρτον ἀντιστοιχεῖ πρὸς μίαν ταλάντωσιν τοῦ ἐκκρεμοῦς· διὰ τὰ $\frac{6}{8}$, $\frac{9}{8}$ καὶ $\frac{12}{8}$ ὡς μονὰς λαμβάνεται τὸ τέταρτον παρεστιγμένον· διὰ τὰ $\frac{2}{8}$, $\frac{3}{8}$ καὶ $\frac{4}{8}$ ὡς μονὰς λαμβάνεται τὸ ὄγδοον· τέλος διὰ τὰ $\frac{2}{2}$, $\frac{3}{2}$ καὶ $\frac{4}{2}$ τὸ ἥμισυ ἀντιστοιχεῖ πρὸς μίαν μονάδα.

| | |
|---|---|
| 40 | 42 |
| 44 | 46 |
| 48 | 50 |
| 52 | 54 |
| 56 | 58 |
| 60 | 63 |
| 66 | 69 |
| 72 | 76 |
| 80 | 84 |
| 88 | 92 |
| 96 | 100 |
| 104 | 108 |
| 112 | 116 |
| 120 | 126 |
| 132 | 138 |
| 144 | 152 |
| 160 | 168 |
| 176 | 184 |
| 192 | 200 |
| 208 | |

*Κλῖμαξ τοῦ μετρονόμου μετὰ τῶν ὑποδιαιρέσεων αὐτῆς.*

| *Βραδεῖαι ἀγωγαὶ* | *Μέτριαι ἀγωγαὶ* | *Γοργαὶ ἀγωγαὶ* |
|---|---|---|
| Ἀπὸ 40 ἕως 60 | Ἀπὸ 69 ἕως 76 (ἢ 80) | Ἀπὸ 120 ἕως 144 (ἢ 152) |
| Λαργκίσσιμο<br>Γκράβε<br>Λάργκο<br>Λέντο μόλτο | Ἀνταντίνο | Ἀλλέγκρο |
| Ἀπὸ 50 ἕως 56 (ἢ 58) | Ἀπὸ 84 ἕως 104 (ἢ 108) | Ἀπὸ 152—176 |
| Λέντο<br>Λαργκέττο<br>Ἀντάτζιο | Ἀλλεγκρέττο | Ἀλλέγκρο μόλτο<br>Ἀλλέγκρο ἀσσάϊ<br>Πρέστο<br>Βιβάτσε<br>Βίβο |
| Ἀπὸ 56 (ἢ 58 ἕως 69) | Ἀπὸ 104 ἕως 120 | Ἀπὸ 176 ἕως 208 |
| Ἀντάντε | Ἀλλέγκρομοντερᾶτο<br>Ἀλλέγκρο νὸν τρόπο | Ἀλλεγκρίσσιμο<br>Πρεστίσσιμο<br>Βιβατσίσσιμο |

Περὶ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος πρὸς ἀκριβῆ καθορισμὸν τῆς ἀγωγῆς ἐν τῇ μουσικῇ ἐγίνετο χρῆσις τοῦ *χρονομέτρου* τοῦ Λουλιέ, ὅπερ εἶχεν ἐπίσης ἐκκρεμὲς καὶ βαθμοὺς ταχύτητος ἀπὸ τὸ 1 — 72. Τὸ *ἠχόμετρον* τοῦ φυσικομαθηματικοῦ Σωβέρ, περὶ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος, ἀπετελεῖτο ἀπὸ ἓν εἶδος κλίμακος, διὰ τῆς ὁποίας καθωρίζετο ἐπακριβῶς ἡ διάρκεια τῶν χρόνων καὶ τῶν μέτρων. Τὸ *χρονόμετρον* τοῦ Ἀφφιλὰρ ἐχρησιμοποίει ἐπίσης ἐκκρεμές· παρεμφερῆ εἶναι τὰ μηχανήματα τῶν Ὅμς - Ἐμπραί, τοῦ Χάρισσον, τὸ *ῥυθμόμετρον* τοῦ Ντυκλὸ (περὶ τὸ 1782), τὸ *χρονόμετρον* τοῦ Πελλετιέ, τὸ *πληξιχρονόμετρον* τῶν ἀδελφῶν Ρενωντὲν (τέλη τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος), τὸ *μουσικὸν χρονόμετρον* τοῦ Ἄβελ Μπούργια, τῶν Βάϊσκε, Σταϊκελ, Φένκ, Τιεμὲ κλπ.

Ὁ σήμερον ἐν χρήσει μετρονόμος εἶναι ὁ τοῦ Μαΐλτσελ, ὅστις ἐδανείσθη τὴν ἰδέαν παρὰ τοῦ Ὁλλανδοῦ μηχανικοῦ Βίνκελ, εἰς ὃν ὀφείλεται ἡ ἀρχὴ τῆς μεταθέσεως τοῦ κέντρου τῆς βαρύτητος ἐπὶ τοῦ ἐκκρεμοῦς. Ὁ μετρονόμος οὗτος ὑποβληθεὶς τῷ 1816 εἰς τὸ ἰνστιτοῦτον τῶν Παρισίων ἐγένετο ἀποδεκτὸς καὶ ἐπεκράτησε μεταξὺ τοῦ μουσικοῦ κόσμου. Γ. Σ.

**μετροταινία** (ἡ). Ὄργανον πρὸς μέτρησιν διαφόρων ἐπὶ τοῦ ἐδάφους ἀποστάσεων. Δύναται νὰ ἦ ἐκ μετάλλου ἢ ἐξ ὑφάσματος.

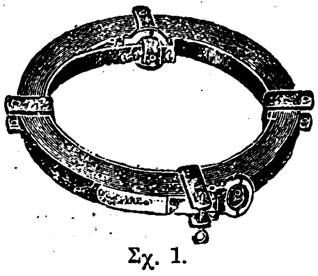

Σχ. 1.

Ἡ *μεταλλικὴ μετροταινία* (σχ. 1) εἶναι χαλυβδίνη, συνήθους πλάτους 0.015, μήκους 10 μ., 20 μ., 25 μ. καὶ πάχους περίπου ¼ τοῦ χιλιοστοῦ, διῃρημένη εἰς μέτρα, ὑποδεκάμετρα καί τινες εἰς ἑκατοστὰ καὶ χιλιοστὰ τοῦ μέτρου. Ἐν τῷ ἐμπορίῳ εὑρίσκει τις ποικιλίαν μεταλλικῶν μετροταινιῶν, ὧν τινες καταλήγουσι κατ' ἀμφότερα τὰ ἄκρα εἰς λαβὰς καὶ περιτυλίσσονται εἰς ἄτρακτον ξυλίνην ἢ μεταλλικὴν τοιαύτην, ἄλλαι δὲ πέριξ ἄξονος περιστρεφομένου διὰ καταλλήλου στροφάλου (σχ. 2). Ἡ μεταλλικὴ μετροταινία χρησιμοποιεῖται πρὸς μέτρησιν μηκῶν μετὰ μεγάλης ἀκριβείας, εἴτε ἐπὶ ὁριζοντίου ἐδάφους εἴτε ἐπὶ κεκλιμένου.

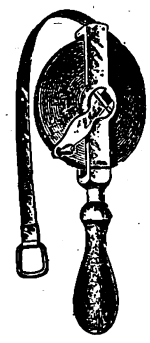

Σχ. 2.

Ἀκρίβεια μετρήσεων. Ἐπὶ ἐδάφους μέσων κλίσεων εἶναι 1:1500 διὰ μετρήσεις κατὰ τὴν κλίσιν, καὶ 1:1000—1:1500 διὰ μετρήσεις κατὰ τὴν κλίσιν, ἀλλὰ τῆς μετροταινίας ἑκάστοτε ὁριζοντιουμένης.

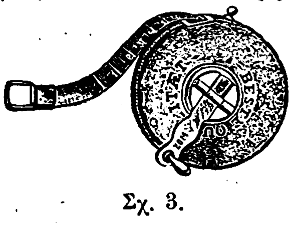

Σχ. 3.

Ἡ *ἐξ ὑφάσματος μετροταινία* εἶναι λινὴ καὶ ἔχει τὰς αὐτὰς διαστάσεις τῆς μεταλλικῆς ταινίας· ἔνιαι τούτων φέρουσιν ἀριθμόν τινα λεπτοτάτων συρμάτων πρὸς περιορισμὸν τῆς μεταβολῆς τοῦ μήκους της. Ἡ ὅλη ταινία περιελίσσεται περὶ ἄξονα, ὅστις περιστρέφεται διὰ καταλλήλου στροφάλου καὶ ἐγκλείεται εἰς κατάλληλον κυτίον (σχ. 3). Ν. Π.

**μετροτράπεζα** (ἡ). Ὄργανον γωνιογραφικόν, ἀποτελούμενον: α′) Ἐκ πινακίδος ξυλίνης, μικρῶν διαστάσεων συνήθως, ἵνα εὐκόλως μεταφέρωνται, ἐφ' ἧς ἐπικολλᾶται ὁ χάρτης σχεδιάσεως. β′) Ἐκ τρίποδος, οὗτινος οἱ πόδες διὰ καταλλήλων κοχλιῶν συνδέονται διὰ τοῦ ἄνω αὐτῶν ἄκρου μετὰ τριγωνικῆς κεφαλῆς ΑΒΓ (σχ. 1). Ἡ πινακὶς συνδέεται μετὰ τοῦ τρίποδος διὰ τοῦ κοχλίου Κ, ὅστις διέρχεται διὰ τοῦ κέντρου τῆς βάσεως ΑΒΓ. Διακρίνουσι τὰς μετροτραπέζας εἰς *ἐλαφράς*, ὡς ἡ περιγραφεῖσα ἀνωτέρω, καὶ εἰς *βαρείας* ἢ *ἀκριβείας* (σχ. 2). Αἱ δεύτεραι ἐπιτρέπουσι νὰ δίδωνται εἰς τὸ ἐπίπεδον τῆς πινακίδος, ἄνευ τῆς μετακινήσεως τῶν ποδῶν τοῦ τρίποδος, ὡς γίνεται εἰς τὰς πρώτας, ἀλλὰ διὰ τῶν κοχλιῶν ὁριζοντιώσεως, μικρομετρικαὶ κινή-

Σχ. 1.

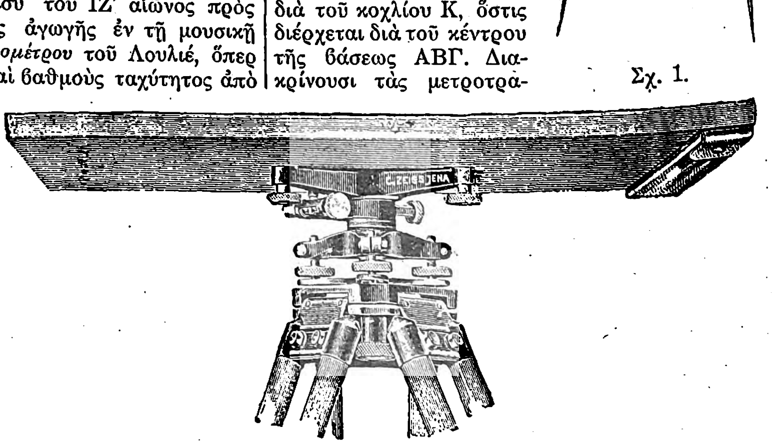

Σχ. 2.

Digitized by Google

σεις καθ' ὕψος καὶ κατὰ διεύθυνσιν δι' εἰδικοῦ μικρομετρικοῦ κοχλίου. Ν. Π.

**μετροφωνία** (ἡ) *[Βυζ. Μουσ.]*. Ἐκαλεῖτο οὕτως ἐν τῷ ἀρχαίῳ στενογραφικῷ συστήματι τῆς βυζαντινῆς μουσικῆς, ἡ ἐκτέλεσις ᾄσματός τινος διὰ μόνων τῶν φωνητικῶν χαρακτήρων, χωρὶς νὰ λαμβάνωνται ὑπ' ὄψιν τὰ ἄφωνα σημάδια καὶ αἱ λοιπαὶ ὑποστάσεις, δηλαδὴ καθ' ὃν τρόπον γίνεται σήμερον παρ' ἡμῖν ἡ *παραλλαγή*. Ν. Α. Χ.

**μετροφωτογραφία** (ἡ), ἢ ***φωτογραμμομετρία*** *[Φωτογρ.]*. Ἐκλήθη οὕτως ἡ ἐκτέλεσις μετρήσεων τῇ βοηθείᾳ φωτογραφημάτων. Ὁ Laussedat πρῶτος ἔσχε τὴν ἰδέαν νὰ ἐφαρμόσῃ τὴν φωτογραφικὴν τέχνην εἰς τὴν κατασκευὴν σχεδίων. Ἐτελειοποίησε δὲ τὴν μέθοδον τῶν διατομῶν τὴν ὑποδειχθεῖσαν ὑπὸ τῶν Beautemps-Beaupré καὶ Leblanc, ἀρχικῶς μὲν σχεδιάζων τῇ βοηθείᾳ τοῦ φωτεινοῦ θαλάμου, εἶτα δὲ χρησιμοποιῶν τὰς φωτογραφικὰς εἰκόνας. Ἡ μετροφωτογραφία βασίζεται ἐπὶ τοῦ γεγονότος ὅτι φωτογράφημά τι ἀποτελεῖ τὴν ἀκριβῆ κωνικὴν προοπτικὴν τῆς ἀναπαριστωμένης ἐν αὐτῷ ἀπόψεως. Ὅταν ἔχωμεν τὴν προοπτικὴν ἀντικειμένου τινός, δυνάμεθα νὰ ἐπιτύχωμεν ἐξ αὐτῆς εἴτε τὴν ὀπτικὴν ἀπόδοσιν τούτου (ὡς συμβαίνει αὐτομάτως διὰ κάθε παρατηρητὴν εἰκόνος τινός), εἴτε ἀκριβῆ γεωμετρικὴν ἀπόδοσιν, ἥτις ἐπιτρέπει τὴν λύσιν ὡρισμένων προβλημάτων, ἐνδιαφέρουσαν τοὺς ἀρχιτέκτονας κατὰ τὴν μελέτην τῶν μνημείων, τοὺς μηχανικοὺς καὶ ἀξιωματικοὺς εἰς τὴν κατασκευὴν σχεδίων κλπ. Αἱ πρῶται δοκιμαὶ τοῦ Laussedat ἐγένοντο τῷ 1844, μόλις δὲ τῷ 1852 πρὸς σχεδίασιν τῶν λαμβανομένων εἰκόνων ἤρχισαν νὰ χρησιμοποιῶνται τὰ φωτογραφικὰ δοκίμια. Ἀκολούθως κατενοήθη ὅτι τὸ σύνηθες φωτογραφικὸν ὑλικὸν εἶναι ἀνεπαρκὲς εἰς τὴν μετὰ μεγάλης ἀκριβείας γεωμετρικὴν ἀπόδοσιν τῶν διαγραμμάτων, εἰσήχθη δὲ πρὸς τοῦτο τῷ 1859 ὁ ὑπὸ τοῦ Brunner κατασκευασθεὶς φωτοθεοδόλιχος. Ἡ μέθοδος Laussedat συνίσταται εἰς τὴν μέτρησιν βάσεώς τινος, εἰς τὰ δύο ἄκρα τῆς ὁποίας φωτογραφίζονται αἱ ἀπόψεις ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ γηπέδου. Ἡ μετροφωτογραφία ἀρχιτεκτονικῶν μνημείων ἢ ἔργων τέχνης δὲν παρουσιάζει δυσκολίαν τινά, ἀρκεῖ νὰ εἶναι γνωστὴ ἡ ἑστιακὴ ἀπόστασις τοῦ ἀντικειμενικοῦ τῆς φωτογραφικῆς συσκευῆς, ἥτις ἐχρησιμοποιήθη κατὰ τὴν φωτογράφησιν, ὡς καὶ ἡ γραμμὴ τοῦ ὁρίζοντος τῆς εἰκόνος ταύτης. Δὲν ἀπομένει εἶτα ἢ νὰ διατάξωμεν καταλλήλως τὴν εἰκόνα ἐπὶ φύλλου χάρτου σχεδιάσεως, ἐφ' οὗ ἐκτελεῖται ἡ ὁριζοντία προβολή, ἡ ἀπόδοσις δὲ τοῦ ἐπιπέδου καὶ τῶν καταφανῶν ὄψεων τοῦ κτηρίου ἀνάγεται εἰς τὸ ἀντίστροφον πρόβλημα τῆς προοπτικῆς. Ἡ μετροφωτογραφία τῶν τοπίων ἡ σκοποῦσα τὴν κατασκευὴν τοπογραφικῶν σχεδίων καὶ τὴν χωροστάθμισιν εἶναι μᾶλλον πολύπλοκος, λόγῳ τῶν ἀνωμαλιῶν τοῦ ἐδάφους καὶ τῶν ἀκανονίστων μορφῶν, αἵτινες παρουσιάζονται. Τὴν μετροφωτογραφίαν ὁ Bertillon εἰσήγαγεν εἰς τὰς ἀνθρωπομετρικὰς μετρήσεις, εἰς τὴν ἀκριβῆ ἀπόδοσιν τῶν ἐσωτερικῶν κλπ. Κ. Γ. Μ.

**μετρῶ** (*—έω*), κοιν. *μετράω*· καταμετρῶ, ἐξευρίσκω τὸ μέγεθος, τὴν ἔκτασιν ἢ τὸ ποσὸν διὰ τοῦ μέτρου: «μετρῶ τὸ μῆκος, —τὸ πλάτος, —τὸ ὕψος, —τὸ ἐμβαδόν, —τὴν χωρητικότητα, —τὸν ὄγκον κττ.»· || ἀριθμῶ, ἀπαριθμῶ: «μετρῶ τὸ πλῆθος, — τοὺς κατοίκους, —τὸν στρατόν, —τὰ χρήματα», «μετρηθέντες εὑρέθησαν δεκακισχίλιοι»· || φρ. «μετρῶ δέκα, ἑκατόν, χιλίας κλπ. δραχμὰς» δίδω εἴς τινα δέκα, ἑκατὸν κλπ. δραχμάς: «μετρήσατε εἰς τὸν κομιστὴν τοῦ παρόντος πεντακοσίας δραχμὰς διὰ λογαριασμόν μου»· || παροιμ. «πέντε μέτρα κι' ἕνα κόβε» κυρίως μὲν προκειμένου περὶ κοπῆς καὶ ραφῆς ἐνδύματος, μεταφορικῶς ἐπὶ πάσης ἐνεργείας, ὅτι πρὸ τῆς ἐκτελέσεως ὀφείλει τις νὰ σκέπτεται ὡρίμως· || καθόλου, σκέπτομαι ἐμβριθῶς, λογαριάζω καλῶς: «δὲ μετρᾷ τὰ λόγια του, λέει ὅ,τι τοῦ 'ρθῃ»· || παραβάλλω, συγκρίνω: «μέτρησέ τα νὰ ἰδῇς ποιὸ εἶναι μεγαλύτερο», «μετρηθῆτε νὰ ἰδοῦμε ποιὸς εἶναι πιὸ ψηλός»· || παθ. μετχ. *μετρημένος* (βλ. λ.).

**Μὲτς** (Metz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λωρραίνης, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Μοζέλλα. Κεῖται ἐπὶ τῆς συμβολῆς τοῦ ποταμοῦ Σέϊγ καὶ Μοζέλλα καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σααρμπρύκεν—Παρισίων, 160 χλμ. ΒΔ. τοῦ Στρασβούργου. Ἔχει 52.000 κατ. Ἡ πόλις διαρρέεται ὑπὸ τοῦ Μοζέλλα διὰ πολλῶν βραχιόνων, ἔχει πολλὰς ἀξιολόγους οἰκοδομάς, ἐν αἷς τὸν καθεδρικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Στεφάνου (ΙΓ'—ΙΣΤ' αἰῶνος), τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Βικεντίου, βιβλιοθήκην (περιλαμβάνουσαν 100.000 τόμ. καὶ 1420 χειρόγραφα), δύο μουσεῖα, ἄσυλον κωφαλάλων κλπ. Ἔχει καὶ βιομηχανίαν συντετηρημένων ὀπωρῶν κλπ.

Τὸ Μὲτς εἶναι τὸ *Διουδοῦρον* (τὸ τῶν Ρωμαίων Divodorum) τῶν Μεδιοματρίκων, ἐκαλεῖτο δὲ ἐκ τούτου καὶ *Μεδιομάτρικα*. Ὁ Καῖσαρ ἀναφέρει αὐτὴν ὡς μίαν τῶν ἀρχαιοτάτων καὶ σημαντικωτάτων πόλεων τῆς Γαλατίας. Οἱ Ρωμαῖοι ἀναγνωρίσαντες τὴν στρατηγικήν της σημασίαν ὠχύρωσαν τὴν πόλιν ταύτην καὶ κατεσκεύασαν ὑδραγωγεῖον, τοῦ ὁποίου σῴζονται ἔτι σήμερον λείψανα. Ἐπὶ Ρωμαίων αὐτοκρατόρων ἡ πόλις συνεδέθη διὰ στρατιωτικῶν ὁδῶν μετὰ τῆς Τούλ, Λάγκρ, Λυῶνος, Στρασβούργου, Ρήμων, Τρεβήρων καὶ Βερντέν. Κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα ἱδρύθη ἐν Μὲτς ἐπισκοπή, ὑπαγομένη εἰς τὴν ἀρχιεπισκοπὴν Τρεβήρων. Κατὰ τὸν Ε' δὲ αἰῶνα ἡ πόλις ἐλεηλατήθη ὑπὸ τῶν Οὔννων τοῦ Ἀττίλα καὶ εἶτα περιῆλθεν εἰς τοὺς Φράγκους καὶ ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς Αὐστρασίας. Κατὰ τὴν ἐν ἔτει 843 διανομὴν τοῦ βασιλείου τῶν Καρολίγγων, τὸ Μὲτς ἔλαχεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα Λοθάριον τὸν Α'. Ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἐκηρύχθη ἐλευθέρα πόλις καὶ ἀπέκτησε μεγάλην ἐμπορικὴν ἀκμήν. Τῷ 1648 παρεχωρήθη διὰ τῆς εἰρήνης τῆς Βετσφαλίας εἰς τὴν Γαλλίαν, εἰς ἣν παρέμεινε μέχρι τοῦ Αὐγούστου 1870, ὅτε ἔπεσεν εἰς χεῖρας τῶν Γερμανῶν καὶ ὁριστικῶς παρεχωρήθη διὰ τῆς συνθήκης τῆς Φραγκφούρτης τὸν Μάϊον 1871 εἰς τὴν Γερμανίαν. Μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον τὸ Μὲτς περιῆλθεν ἐκ νέου εἰς τὴν Γαλλίαν.

Ἐν Μὲτς συνεκλήθησαν κατὰ διαφόρους περιστάσεις ἐκκλησιαστικαὶ σύνοδοι (τῷ 550, 590, 752, 835, 859, 863, 869, 888), μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ἡ συγκληθεῖσα τῷ 859 πρὸς συμφιλίωσιν τοῦ Καρόλου τοῦ Φαλακροῦ καὶ τοῦ ἀνεψιοῦ του Λοθαρίου μετὰ τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Γερμανικοῦ καὶ ἡ ἐν ἔτει 863 σύνοδος ἐπισκόπων ἐγκρίνασα τὸ διαζύγιον τοῦ Λουθαρίου. Γ. Ι. Β.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ *Μὲτς* ἦτο κατὰ τὸ 1870 ἰσχυρὸν φρούριον, ἀποτελοῦν ὀχυρὰν περιοχήν, λόγῳ τῆς περὶ αὐτὸ κατασκευῆς ἰσχυροτάτων περιφράκτων ὀχυρῶν διατεθειμένων εἰς ἀκτινοειδῆ περὶ αὐτὸ ἀπόστασιν περὶ τὰ 4—5 χιλιόμετρα. Μετὰ τὴν μάχην τοῦ Σαὶν Πριβὰ τῆς 18ης Αὐγούστου 1870, ὁ κατὰ ταύτην ἡττηθεὶς γαλλικὸς στρατὸς ὑπεχώρησε πρὸς τὸ Μὲτς (βλ. λ. *Γαλλογερμανικὸς πόλεμος 1870*) καὶ τοιουτοτρόπως ἀπὸ τῆς 19ης Αὐγούστου ἡ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μπαζαὶν γαλλικὴ στρατιὰ ἐκ τῶν 2ου, 3ου, 4ου, 6ου σωμάτων στρατοῦ καὶ τῆς φρουρᾶς (ἐν ὅλῳ περὶ τὰς 150.000 ἄνδρες) συνεκεντρώθη περὶ τὸ Μὲτς, καθ' ἣν διάταξιν ἐμφαίνεται εἰς τὸ σχῆμα. Τὸ γερ-

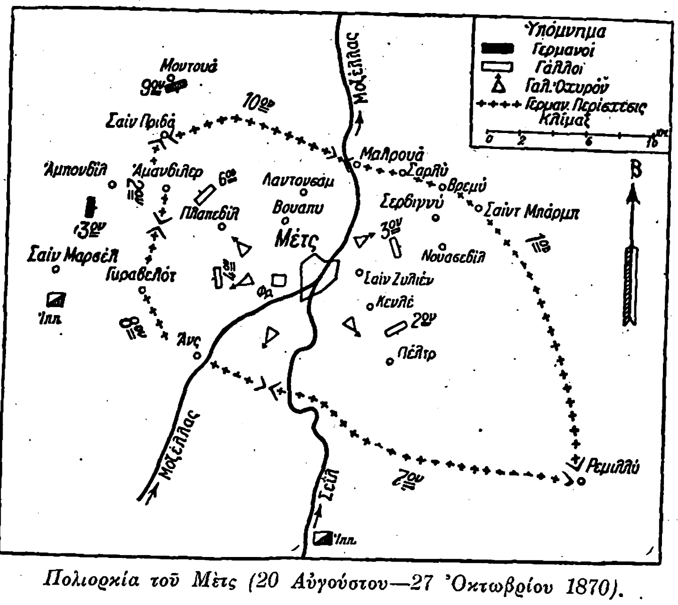


*Πολιορκία τοῦ Μὲτς (20 Αὐγούστου—27 Ὀκτωβρίου 1870).*

μανικὸν ἀρχιστρατηγεῖον συνεκρότησε τότε στρατιὰν ἐκ τῶν 1ου, 2ου, 3ου, 7ου, 8ου, 9ου, 10ου σωμάτων στρατοῦ καὶ δύο μεραρχιῶν ἱππικοῦ (ἐν ὅλῳ περὶ τὰς 180.000 ἄνδρες), ὑπὸ τὸν πρίγκιπα Φρειδερῖκον Κάρολον, ἀποκληθεῖσαν «στρατιὰν τῆς πολιορκίας», ἥτις ἐσχημάτισεν εὐθὺς ἀμέσως πρώτην περίσχεσιν περὶ τὸ Μὲτς, ἔχουσαν περιφερειακὴν ἀνάπτυξιν 45 περίπου χιλιομέτρων (βλ. σχ.). Θεωρεῖται βέβαιον ὅτι, ἂν ὁ Μπαζαὶν ἤθελεν ἐνεργήσει δραστηρίως ἐντὸς τοῦ τελευταίου δεκαπμέρου τοῦ Αὐγούστου, θὰ διέσπα τὴν περίσχεσιν ταύτην, ἀλλὰ παρέμεινεν ἐν τελείᾳ ἀδρανείᾳ, ἀφήσας τοιουτοτρόπως τοὺς Γερμανοὺς ἐν πλήρει ἐλευθερίᾳ τοῦ νὰ περισφίγγωσιν ὁλονὲν περισσότερον τὴν περίσχεσιν. Αἱ ὑπ' αὐτοῦ ἐκτελεσθεῖσαι ἐπιχειρήσεις πρὸς Νουασεβὶλ τὴν 28ην Αὐγούστου καὶ 1ην Σεπτεμβρίου, πρὸς Λαντονσὰμ τὴν 26ην Σεπτεμβρίου καὶ 2αν καὶ 7ην Ὀκτωβρίου, πρὸς Πὲλτρ τὴν 27ην Σεπτεμβρίου κλπ., ἦσαν εἰκονικαί, ἀποβλέπουσαι μόνον εἰς ἐπίταξιν καὶ εἰσφορὰν τροφίμων καὶ νομῆς, μολονότι διεξήχθησαν μετ' ἐξαιρετικῆς ὁρμητικότητος καὶ ἀνδρείας ἐκ μέρους τῶν Γάλλων. Ὡς ἦτο φυσικὴ συνέπεια, τὰ τρόφιμα ἤρχισαν ἐλαττούμενα, μέχρις οὗ, περὶ τὸ τέλος Ὀκτωβρίου, εἶχον ἐκλείψει ἐντελῶς. Εὑρεθεὶς τότε ὁ Μπαζαὶν ὑπὸ τοιαύτην κατάστασιν, ἠναγκάσθη νὰ συνθηκολογήσῃ τὴν 27ην Ὀκτωβρίου 1870, παραδίδων τὸ φρούριον τοῦ Μὲτς, 150.000 ἄνδρας αἰχμαλώτους, 53 σημαίας, 1.400 πυροβόλα καὶ 200.000 τυφέκια. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

—**Μὲτς** *[Γεωγρ.]*. Τοποθεσία τῶν Ἀθηνῶν ἐν τῇ συνοικίᾳ τοῦ Ἀρδηττοῦ. Κεῖται παρὰ τοὺς ΒΔ. πρόποδας τοῦ λόφου τοῦ Ἀρδηττοῦ, ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Ἰλισοῦ ἔναντι τοῦ κήπου τοῦ Ζαππείου. Χ. Δ.

**Μέτσαϋς** (Metsys). Οἰκογένεια Φλαμανδῶν ζωγράφων (βλ. λ. *Μάσσαϋς*).

**Μέτσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἠμαθίας, ἤδη καλούμενον *Μέση* (βλ. λ.).

**Μέτσνερ** (Metzner), ***Φραγκῖσκος***. Γερμανὸς γλύπτης (1870—1919). Εἰργάσθη ἀκαταπονήτως εἰς τὴν ἐκτέλεσιν μεγίστων ἔργων, ἐν οἷς κατ' ἀρχὰς μὲν ἐξεδήλωσε φυσιοκρατικὰς ροπάς, βραδύτερον δὲ ἰσχυρῶς προσωπικὴν διακοσμητικὴν τεχνοτροπίαν. Μεταξὺ τῶν ἀρίστων δημιουργιῶν του μνημονεύομεν ἐνταῦθα τὸ μνημεῖον τοῦ Μότσαρτ ἐν Πράγᾳ (1904), τὸ μνημεῖον τοῦ Λέσσινγκ ἐν Βιέννῃ (1905) καὶ τὸ μνημεῖον τῆς Μάχης τῶν Ἐθνῶν ἐν Λειψίᾳ (1912). Ι. Μ. Π.

**Μετσνικὼφ** (Metchnikoff ou Metchnikov), ***Ἠλίας***. Ἐπιφανὴς Ρῶσος ζῳολόγος καὶ βιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἰβάνοβνα τοῦ Χαρκόβου τῷ 1845 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1916. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ πανεπιστήμιον Χαρκόβου, εἶτα δὲ μετέβη πρὸς συνέχειαν τῶν σπουδῶν του εἰς Γερμανίαν, μεθ' ὃ ἐπεχείρησεν ἐξερευνητικὰ ταξίδια εἰς Μαδέραν, Τενερίφην καὶ εἰς τὰς στέππας τοῦ Βόλγα. Τῷ 1870 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ζῳολογίας καὶ συγκριτικῆς ἀνατομικῆς ἐν Ὀδησσῷ. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐνδιέτριψεν εἰς ἐργασίας ἀνθρωπολογικὰς καὶ ἰδίως ζῳολογικάς, ἀναφερομένας εἰς τὴν ἐμβρυογένεσιν τῶν σπονδυλωτῶν. Τοιαύτας ἀναφέρομεν τὰς ἐπὶ τῶν νημερτῶν σκωλήκων καὶ τῶν ἐχινοδέρμων, τῶν ἐντόμων (1866—1869), τῶν σιφωνοφόρων καὶ τῶν μεδουσῶν (1870), τῶν μυριαπόδων (1871), τῶν ὀστρακοδέρμων καὶ σπόγγων. Τῷ 1882 μετέβη εἰς Μεσσήνην, ἐπιδοθεὶς εἰς μικροβιολογικὰς ἐρεύνας καὶ εἰς τὴν σπουδὴν τῆς παθολογοανατομίας. Τῷ 1888 ἐγένετο ὑποδιευθυντὴς τοῦ ἐργαστηρίου ἐρευνῶν τοῦ ἰνστιτούτου Pasteur. Ἀναφέρομεν τὴν λαμπρὰν αὐτοῦ περὶ φαγοκυττώσεως θεωρίαν, δι' ἧς ἐξήγει τὴν ὑπὸ τῶν λευκοκυττάρων ἄμυναν τοῦ ὀργανισμοῦ, καὶ τὴν ἀνοσίαν, «L'immunité dans les maladies infectieuses» (1901), «Études sur l'immunité. Sur la destruction extracellulaire des bactéries», ἥτις καὶ ἀπετέλεσε τὸ κύριον αὐτοῦ ἔργον. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Über die Beziehung der Phagocyten zu Milzbrandbacillen» (1884), ἢ «Leçons sur la pathologie comparée de l'inflammation» (1892), «État actuel de nos connaissances sur l'inflammation» (1897) κλ. Ἀργότερον ἐπεδόθη εἰς εἰδικὰς σπουδὰς τῶν βακτηριδίων τῶν μολυνόντων τὸν πεπτικὸν σωλῆνα τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῆς αἰτιολογικῆς δράσεώς των κατὰ τὰς ἐντερικὰς νόσους καὶ ἐπεζήτησε πρὸς τὴν ὑγείαν καὶ μακροβιότητα τοῦ ἀνθρώπου τὴν καταπολέμησιν τούτων διὰ διαφόρων γαλακτικῶν φυραμάτων τῆς λακτεόλης, λακτοβακκιλίνης, τοῦ πεπηγότος ὀξυγάλακτος (γιαούρτι) κλ. Τῷ 1908 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς ἰατρικῆς. Τῷ 1912 ἐξελέγη ξένος ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν. Βιογραφίαν αὐτοῦ ἔγραψεν ἡ σύζυγός του Ὄλγα Μετσνικώφ. Ο. Ρ.

*Ἠλίας Μετσνικώφ.*

**Μέτσοβον**, ἢ *Μέσσοβον* (ἐκ τοῦ σλαβ. *μέτσκα*= ἄρκτος καὶ *ὄβο*=χωρίον· *Ἀρκουδοχώρι*) *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Ἠπείρου, ἀριθμοῦσα 2.156 κατοίκους κατὰ τὸν χειμῶνα, διπλασίους δὲ περίπου κατὰ τοὺς θερινοὺς μῆνας, λόγῳ τῆς συγκεντρώσεως πολλῶν παραθεριστῶν, Μετσοβιτῶν καὶ ξένων. Κεῖται ἐπὶ τῶν κλιτύων τοῦ ὄρους Κιτίου καὶ εἰς ὕψος 1.116 μέτρων ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης, ὡς ἐκ τοῦ ὁποίου καίρου δὲ σημείου, εἰς ὃ εὑρίσκεται, ἀποτελεῖ τὸν κόμβον τῶν συγκοινωνιῶν Ἠπείρου—Θεσσαλίας—Μακεδονίας. Τὸ Μέτσοβον ἀποτελεῖ ἰδίαν κοινότητα, μὴ περιλαμβάνουσαν ἄλλο χωρίον, εἶναι ἕδρα ὑποδιοικήσεως χωροφυλακῆς, κινητοῦ εἰρηνοδικείου, δασονομείου, ἐκκλησιαστικῶς δὲ ὑπήχθη τελευταίως εἰς τὰ Γρεβενά, τῆς τέως μητροπόλεως Μετσόβου καταργηθείσης μετὰ τὸν θάνα-

Digitized by Google

τον τοῦ πρώτου καὶ τελευταίου μητροπολίτου Τιμοθέου. Ἔχει μεικτὸν ἑξατάξιον δημοτικὸν σχολεῖον, νηπιαγωγεῖον καὶ ἡμιγυμνάσιον. Ἐν Μετσόβῳ ἑδρεύει ἡ Ἀβερώφειος ἐπιτροπή, ἥτις διαχειρίζεται τὸ Ἀβερώφειον κληροδότημα, καὶ ἡ ἐφορευτικὴ ἐπιτροπή, ἥτις διαχειρίζεται τὰ κληροδοτήματα τῶν λοιπῶν εὐεργετῶν. Λειτουργεῖ ἐν Μετσόβῳ Ἀβερώφειον φαρμακεῖον, χορηγοῦν δωρεὰν φάρμακα εἰς ἅπαντας τοὺς κατοίκους τοῦ Μετσόβου καὶ τῶν χωρίων Ἀνηλίου, Βουτονοσίου καὶ Μηλιᾶς. Ὡσαύτως δύο ἰατροὶ κοινοτικοὶ παρέχουν δωρεὰν τὴν συνδρομήν των εἰς τοὺς ἀσθενεῖς. Ὑπάρχει ἐν Μετσόβῳ γηροκομεῖον τοῦ Τριαντ. Τσομάγκα, τοῦ ὁποίου ἡ λειτουργία ἔπαυσεν ἀπὸ τῆς ἐκρήξεως τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου, διότι τὸ εἰς ρωσικὰς τραπέζας τοποθετημένον κληροδότημα ἔπαυσεν ἀποστελλόμενον εἰς τὴν ἐφορευτικὴν ἐπιτροπήν· ὑπάρχει ἐπίσης καὶ τὸ Τούλειον ὀρφανοτροφεῖον. Ὑπὸ τῶν κατοίκων τοῦ Μετσόβου καὶ τῶν περιχώρων Ἀνηλίου, Μηλιᾶς καὶ Βουτονοσίου ὁμιλεῖται ἡ κουτσοβλαχικὴ γλῶσσα. Τὸ γλωσσικὸν τοῦτο ἰδίωμα ἠθέλησε νὰ ἐκμεταλλευθῇ ἡ ρουμανικὴ προπαγάνδα ἐπὶ τουρκοκρατίας καὶ ἵδρυσε σχολεῖα ἐν Μετσόβῳ· ἀπέστειλεν ἐπίσης καὶ ἰατρὸν διὰ νὰ παράσχῃ δωρεὰν τὰς ὑπηρεσίας του εἰς τοὺς κατοίκους· πλὴν οἵ τε διδάσκαλοι καὶ οἱ ἰατροὶ ἠναγκάσθησαν νὰ φύγωσιν ἐκεῖθεν, διότι οἱ Μετσοβῖται διετήρησαν ἑλληνικώτατον τὸ ἐθνικόν των φρόνημα. Λόγῳ τοῦ ἀγόνου ἐδάφους τῆς Ἠπείρου ἐν γένει καὶ τοῦ Μετσόβου τὰ τέκνα ἀναγκάζονται ἀπὸ πολλῶν ἐτῶν νὰ ταξιδεύωσιν εἰς τὴν ξένην, ἰδίᾳ εἰς Ρουμανίαν, Κωνσταντινούπολιν καὶ Αἴγυπτον. Πλεῖσται ἐπίσης οἰκογένειαι εἶναι μονίμως ἐγκατεστημέναι ἐν Ἰωαννίνοις, Τρικκάλοις καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος. Ὁ μόνιμος πληθυσμὸς τοῦ Μετσόβου σύγκειται ἀπὸ κτηνοτρόφους, διαφόρους τεχνίτας καὶ ἐπιστήμονας. Τὸ Μέτσοβον ἐξάγει διάφορα εἴδη ξυλείας, ἰδίᾳ σαμαροξυλείαν καὶ βαρελοξυλείαν ἐπεξειργασμένην, καὶ διάφορα εἴδη τυροκομίας, ὀλίγα δὲ εἴδη ἐγχωρίου ὑφαντουργίας. Ἐν Μετσόβῳ ὑπάρχουσι δέκα τρεῖς ἐν ὅλῳ ἐκκλησίαι καὶ ἐξωκκλήσια, ἐξ ὧν αἱ περισσότεραι ἐκτίσθησαν δαπάνῃ τοῦ μεγάλου εὐεργέτου Γεωργίου Ἀβέρωφ. Ἰδιαιτέρως διακρίνεται ὁ μητροπολιτικὸς ναὸς τῆς Ἁγίας Παρασκευῆς διὰ τὸν πλοῦτον τῶν ἱερῶν σκευῶν, ἁγίων εἰκόνων καὶ σκαλιστῶν, τέμπλου, δεσποτικοῦ καὶ δύο ἀμβώνων, μεγάλης ἀξίας, καὶ κατὰ δεύτερον λόγον ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Γεωργίου, κείμενος ἐντὸς τοῦ γραφικωτάτου Ἀβερωφείου κήπου. Βορειότερον τούτου εὑρίσκεται τὸ Ἀβερώφειον νεκροταφεῖον καὶ ἡ γραφικὴ τοποθεσία Γκούρα, μὲ τὴν ὁμώνυμον πηγήν της. Μετὰ τῶν Ἰωαννίνων, εἰς τὰ ὁποῖα ὑπάγεται διοικητικῶς, τῆς Καλαμπάκας, ὅθεν ἐπισιτίζεται, καὶ τῶν Γρεβενῶν συνδέεται δι' ἡμιονικῶν δρόμων.

—[Ἱστορ.] Κατ' ἀρχὰς τὸ Μέτσοβον ἀπετέλει μικρὸν συνοικισμὸν ποιμένων· ἀργότερον ὅμως, καὶ δὴ ἐπὶ σουλτάνου Ἀχμὲτ Δ΄, ὁ πληθυσμός του ηὐξήθη σημαντικῶς ἐκ τῶν προσδραμόντων ἐκεῖσε περιοίκων, χάρις εἰς τὰ ἐξαιρετικὰ προνόμια, τὰ ὁποῖα ὁ ἐν λόγῳ σουλτᾶνος ἐχορήγησεν εἰς τὸν Μετσοβίτην Κυριάκον Φλόκαν, διὰ τὴν φιλοξενίαν, ἣν παρέσχεν οὗτος εἰς τὸν λόγῳ συκοφαντίας κρυπτόμενον μέγαν βεζύρην του, μετὰ τὴν ἀπόδειξιν τῆς ἀθωότητός του.

Κατὰ τὰ προνόμια ταῦτα, ἅπασα ἡ ἔκτασις ἡ περιλαμβανομένη μεταξὺ τῶν χωρίων Δρεβεδίστας, Χρυσοβίτσας, Γκριμπινίκ, Περιβόλι, Κρανιᾶς καὶ Μπουροβίκου καὶ ἔχουσα ὅρια: Σαράντα ἐκκλησίας, Μεγάλην Πέτραν, Βούργιαννην, Μάνδραν Χόντζα, Μόκον, Ἁγίαν Παρασκευὴν (ὅριον Κουτσούφλιανης), Βάλεα ντὶ Κόρνο, ἐν τῇ ὁποίᾳ περιέχονται τώρα τὸ Μέτσοβον (Ἀνήλιον καὶ Προσήλιον), Μαλακάσι, Βουτονόσι, Μηλιὰ καὶ Κουτσούφλιανη: α) Ἐγένετο τιμάριον τῶν ἱερῶν πόλεων Μέκκας καὶ Μεδίνης, ἀποτίουσα ἐτησίως, λόγῳ ὑποτελείας, 800 γρόσια καὶ ἕτερα 800 ἄσπρα εἰς τὸν διοριζόμενον μποσταντζῆν, ὑπάλληλον Ὀθωμανόν, ἐπιτηροῦντα τὴν διατήρησιν τῶν προνομίων τούτων, καὶ 585 τόπια ἀστάρι μαύρου εἰς τὸν γενιτσάραγαν. β΄) Ἐντὸς τῆς ἐκτάσεως ταύτης οἱοσδήποτε καὶ δι' οἱανδήποτε αἰτίαν καταφεύγων εὕρισκεν ἄσυλον, μηδέποτε καταδιωκόμενος. γ΄) Ἐν τῇ ἐκτάσει ταύτῃ, ὡς ἱερᾷ, οὐδεὶς ἔμενε στρατιώτης Τοῦρκος, οἱοσδήποτε δὲ διερχόμενος διὰ ταύτης καὶ φθάνων εἰς τὰ σύνορα ὤφειλε νὰ καθαρίζῃ καὶ τὴν κόνιν τῶν ὑποδημάτων του. δ΄) Ἡ διατήρησις καὶ φύλαξις τῶν στενῶν τούτων διαβάσεων ἀνετίθετο εἰς τοὺς κατοίκους τῆς ἐκτάσεως ταύτης. ε΄) Ἡ ἐκκλησία δὲν ἐξηρτᾶτο οὔτε ἐκ Τρικκάλων, οὔτε ἐξ Ἰωαννίνων, ἀλλὰ διῳκεῖτο ἀπ' εὐθείας ὑπὸ τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχείου δι' ἐξάρχου, ἐκλεγομένου μὲν ὑπὸ τῶν ἐφόρων ἐκ τῶν ἱερέων τοῦ Μετσόβου, ἐπικυρουμένου δὲ ὑπὸ τῶν πατριαρχείων. στ΄) Ὑπήγετο διοικητικῶς μὲν εἰς τὴν διοίκησιν Εὐβοίας, δικαστικῶς δὲ εἰς τὴν Λεβάδειαν. Διὰ τῶν ἐν λόγῳ προνομίων ἡ περιφέρεια Μετσόβου κατέστη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης (1659) ἀληθὴς δημοκρατία ἐν μέσῃ Ἠπείρῳ, Θεσσαλίᾳ καὶ Μακεδονίᾳ. Τὰ χορηγηθέντα προνόμια, ἀνανεούμενα ὑπὸ τῶν ἑκάστοτε σουλτάνων, διετηρήθησαν μέχρι τῆς ἀποστασίας τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, ὁ ὁποῖος, ἔχων ἀνάγκην τῶν μοναδικῶν διόδων τοῦ Μετσόβου πρὸς τὴν Θεσσαλίαν καὶ Μακεδονίαν, προσήρτησε καὶ τὴν ἄνω περιοχὴν εἰς τὴν δικαιοδοσίαν του, καταργήσας ἅπαντα τὰ προνόμια, πλὴν τῆς ἱερᾶς ἐξαρχίας. Ὑπὸ τὸ καθεστὼς τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τὸ Μέτσοβον ὑπέστη τὰ πάνδεινα ἀπὸ τὰ διερχόμενα ἐκεῖθεν στρατεύματα καὶ τοὺς ἐπιβληθέντας ἀγρίους φόρους, πλήν, χάρις εἰς τὴν ἐργατικότητα καὶ δραστηριότητα τῶν τέκνων του, πολλὰ τῶν ὁποίων ἐπλούτησαν εἰς τὴν ξένην, ἐσημείωσε μεγάλην ἀκμὴν καὶ ζωτικότητα. Σχολεῖα μεγαλοπρεπῆ, ἐκκλησίαι πλούσιαι, ἱδρύματα φιλανθρωπικὰ καὶ βιβλιοθήκη μὲ 4.000 τόμους ἀνηγέρθησαν εἰς τὴν μικρὰν αὐτὴν γωνίαν τῆς Ἠπείρου. Κατὰ τὸ 1854 ὅμως τὸ Μέτσοβον ἐπέπρωτο νὰ ὑποστῇ τὴν μεγαλυτέραν καταστροφήν, ἐξ αἰτίας τοῦ ἀτυχοῦς ἐπαναστατικοῦ κινήματος τοῦ ὁπλαρχηγοῦ Γρίβα, ἐναντίον τοῦ ὁποίου ἐστάλη ἐξ Ἰωαννίνων ὁ Ἀβδῆ πασᾶς. Ὁ ὁπλαρχηγὸς οὗτος, φορολογήσας ἀγρίως τοὺς Μετσοβίτας μετὰ μικρὰν καὶ ἀναξίαν λόγου ἀντίστασιν, ἐτράπη μὲ τὰ παλληκάρια του πρὸς τὰ ὄρος Ζυγὸν διὰ νυκτός, ἐνῷ τὸ Μέτσοβον παρεδίδετο εἰς τὸ πῦρ καὶ τὸ ξίφος τοῦ Τούρκου. Ἡ καταστροφὴ θὰ ἦτο πλήρης, ἂν δὲν ἐμεσολάβει ἐγκαίρως ἐν Ἰωαννίνοις ὁ ἐκεῖ διαμένων τιτλοῦχος τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ Μετσοβίτης Νικόλαος Τσανάκας, τῇ ἐνεργείᾳ τοῦ ὁποίου ἐδόθη συγχώρησις εἰς τοὺς Μετσοβίτας καὶ ἀνεκλήθη ὁ σταλεὶς στρατὸς καὶ τὰ ἄτακτα ἀλβανικὰ στίφη.

Μετὰ περιπετειώδη ἔκτοτε βίον, ἕνεκα τῆς καταστρεπτικῆς διαμάχης τῶν κομματικῶν φατριῶν, τὸ Μέτσοβον ἀπηλευθερώθη τοῦ τουρκικοῦ ζυγοῦ τὴν 31ην Ὀκτωβρίου τοῦ 1912 ὑπὸ ἀνταρτικῶν σωμάτων Κρητῶν, ὑπὸ τοὺς ὁπλαρχηγοὺς Κλειδῆν, Μακρῆν καὶ Κριάρην, τῇ βοηθείᾳ στρατιωτικοῦ ἀποσπάσματος ὑπὸ τὸν ἀντισυνταγματάρχην τοῦ πυροβολικοῦ Μῆτσαν. Ἐκινδύνευσεν ὅμως τὸ Μέτσοβον νὰ ἀνακαταληφθῇ ἀργότερον ἀπὸ τὸν Μπεκὴρ ἀγᾶν, ἐκστρατεύσαντα ἐξ Ἰωαννίνων μὲ δύο στρατιωτικὰς φάλαγγας μέσῳ δύο διόδων κατὰ τοῦ Μετσόβου· χάρις ὅμως εἰς τὴν γενναιότητα τῶν ἀνταρτικῶν σωμάτων ἀπεκρούσθη μετὰ μεγάλων ἀπωλειῶν. Κατὰ τὴν τελευταίαν μάχην τοῦ Ἀϊλιᾶ ἐφονεύθη καὶ ὁ ὁπλαρχηγὸς Κλειδῆς. Ἐν τῷ μεταξὺ ἀφίχθη εἰς τὸ Μέτσοβον ὁ φιλέλλην Ἰταλὸς Ριτσιώτης Γαριβάλδης μετὰ τοῦ υἱοῦ του καὶ τῶν δύο θυγατέρων του, καὶ ὁ Ρώμας μετὰ σώματος ἐρυθροχιτώνων, ἀγωνισθέντων ἀργότερον μὲ ἀπαράμιλλον ἡρωϊσμὸν εἰς τὸν ἱστορικὸν Δρίσκον, ὅπου ἔπεσαν ἡρωϊκῶς μαχόμενοι ὁ ὁπλαρχηγὸς Μακρῆς καὶ ὁ ποιητὴς Λ. Μαβίλλης. Τὸν Ἰούνιον τοῦ 1917 τὸ Μέτσοβον κατελήφθη ἀπὸ τὰ εἰσβαλόντα εἰς τὴν Ἤπειρον ἰταλικὰ στρατεύματα, ἐξεκενώθη ὅμως ὑπ' αὐτῶν μετὰ τρίμηνον διάστημα. Οἱ Μετσοβῖται ἀνέκαθεν διεκρίθησαν διὰ τὸν μέγαν πατριωτισμόν των, εὐεργετήσαντες ὄχι μόνον τὴν μικρὰν των γενέτειραν, ἀλλὰ καὶ τὴν πρωτεύουσαν τοῦ ἑλληνικοῦ κράτους, τὴν πόλιν τῶν Ἀθηνῶν, κοσμήσαντες αὐτὴν μὲ περίβλεπτα καὶ ἀθάνατα ἔργα, οἷα τὸ Μετσόβιον Πολυτεχνεῖον, ἔργον τῶν Τοσίτσα, Στουρνάρα καὶ Ἀβέρωφ, τὸ Ἐφηβεῖον, ἡ σχολὴ τῶν Εὐελπίδων, οἱ πρὸ τῶν προπυλαίων τοῦ πανεπιστημίου ἀνδριάντες τοῦ Ρήγα Φεραίου καὶ τοῦ πατριάρχου Γρηγορίου τοῦ Ε΄ καὶ τὸ μεγαλοπρεπὲς στάδιον, ἅπαντα δαπάνῃ τοῦ Ἀβέρωφ, εἰς ὃν ὀφείλεται καὶ τὸ ὁμώνυμον θωρηκτόν. Καὶ ἡ ἐν Λαρίσῃ γεωργικὴ σχολὴ εἶναι ἔργον τοῦ Μετσοβίτου Ἀβέρωφ, καὶ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ καλλιμάρμαροι σχολαί—γυμνάσιον καὶ παρθεναγωγεῖον—εἶναι ἔργα τοῦ Ἀβέρωφ καὶ τοῦ Τοσίτσα, οἵτινες, διατελέσαντες πρόεδροι τῆς ἐκεῖ ἑλληνικῆς κοινότητος, πλείστας ὅσας δωρεὰς ἔκαμαν εἰς αὐτήν. Παραθέτομεν τὰ ὀνόματα τῶν εὐεργετῶν Μετσόβου:

Κυριάκος Φλόκας, Γεώργιος Παλτέκης, Μιχαὴλ Χάτος, Ἀδελφοὶ Ξυδιά, Μιχαὴλ Τέρωφ, Κων. Φουργίγκας, Κ. Σταμέρογλους, Τρ. Τσομάγκας, Θ. Τούλης, Στέργιος Μπότσαρης, Ἑλένη Φαρδῆ, ἀδελφοὶ Γ. Κουκουμπάνη, Μαρία Βλάχου, Ἀνδρέας Φαρδῆς, Σοφία Γκρός, Λούκας, Τοσίτσας, Στουρνάρας καὶ Γεώργιος Ἀβέρωφ, ὁ μέγας τοῦ ἔθνους εὐεργέτης.

Τὸ Μέτσοβον, πατρὶς μεγάλων ἐθνικῶν εὐεργετῶν, ὑπῆρξε καὶ γενέτειρα μαρτύρων τῆς πίστεως, μεγάλων τοῦ γένους διδασκάλων καὶ μεγάλων πατριωτῶν. Μετσοβίτης ὑπῆρξεν ὁ νεομάρτυς Νικόλαος, τὸ γένος Μπασδάνη καὶ Τσάββα, μαρτυρήσας κατὰ τὸ 1617 ἐν Τρικκάλοις τῆς Θεσσαλίας, ὅπου προσέφερεν ἑαυτὸν ὁλοκαύτωμα εἰς ἀναφθεῖσαν πυράν, διότι δὲν ἐδέχθη νὰ ἀλλάξῃ τὴν πίστιν τοῦ Χριστοῦ μὲ τὰ πρόσκαιρα πλούτη καὶ ἀγαθὰ ποὺ τοῦ ὑπέσχοντο οἱ Ὀθωμανοί. Μέγας τοῦ γένους διδάσκαλος, ὁ Νικόλαος Ζαρτζούλης, ἐγεννήθη ἐν Μετσόβῳ, διδάξας δ' ἐπί τινα ἔτη εἰς τὸ ἐν Μετσόβῳ ἑλληνικὸν σχολεῖον, τὸ ὁποῖον ἱδρύθη δι' εὐεργετήματος τοῦ Μετσοβίτου Στεργίου Στάνου κατὰ τὸ 1759, μετέβη ἀργότερον εἰς Ἑσπερίαν καὶ κατὰ τὸ 1764 διεδέχθη τὸν Εὐγένιον Βούλγαρην εἰς τὴν περιώνυμον Ἀθωνιάδα σχολήν, ὅπου ἐνέπνευσε τὸν ἅγιον Κοσμᾶν, διὰ νὰ γίνῃ ὁ διαπρύσιος κῆρυξ τῆς πίστεως καὶ προφήτης τῆς ἀναστάσεως τοῦ ἔθνους. Ἕτερος σπουδαῖος διδάσκαλος, ὁ Τσαπέκος, ἐγεννήθη ἐν Μετσόβῳ, διδάξας τὰ ἑλληνικὰ γράμματα κατ' ἀρχὰς ἐν Μετσόβῳ, ἀργότερον δ' ἐν Μελενοίκῳ, Σέρραις καὶ Φιλιππουπόλει. Σοφοὶ διδάσκαλοι ἐπίσης φέρονται οἱ Μετσοβῖται Σταραμπάμπας καὶ Βαρίκας. Μετσοβίτης ὑπῆρξεν ὁ Δημήτριος Ὕπατρος, ὑπασπιστὴς τοῦ Ἀλεξάνδρου Ὑψηλάντου, περιελθὼν κατ' ἐντολήν του τὴν Συρίαν, Κύπρον καὶ Αἴγυπτον, ὅπου ἐμύησεν εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας τὸν Μετσοβίτην Θεόδωρον Τοσίτσαν, πρεσβύτερον ἀδελφὸν τοῦ ἐθνικοῦ εὐεργέτου Μιχαὴλ Τοσίτσα. Κατὰ τὸ 1810 ὁ ἴδιος Ὕπατρος ἔφερε προκήρυξιν τοῦ Ὑψηλάντου εἰς τοὺς ὁπλαρχηγοὺς τοῦ Ὀλύμπου· πλὴν σπεύδων νὰ συνεννοηθῇ μετὰ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ ἐπροδόθη ἀπὸ Ἕλληνας δυστυχῶς καὶ ἐφονεύθη εἰς Νιάουσαν. Καὶ οἱ πρόκριτοι τοῦ Μετσόβου Ἰωάννης Γκαδέλος καὶ Ἀπόστολος Χατζῆς ὑπῆρξαν σπουδαῖα μέλη τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, συλληφθέντες ὅμως ὑπὸ τοῦ Χουρσὶτ πασᾶ ἐθανατώθησαν εἰς τὰς φυλακάς, εἰς τὰς ὁποίας ἐνεκλείσθησαν. Ἐπίσης οἱ νεανίαι Δημ. Τζῆμας καὶ Ἰωάννης Τσάπος, ἀπόφοιτοι τῆς ἐν Ἰωαννίνοις σχολῆς Ψαλλίδα, ὡς μέλη τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας ἀπηγχονίσθησαν ἐν Λαρίσῃ κατὰ διαταγὴν τοῦ ἰδίου Χουρσὶτ πασᾶ, ἐπανειλημμένως διελθόντος ἐκ Μετσόβου. Ἕτερος ἐπίλεκτος Μετσοβίτης, ὁ Δημήτριος Ζαμάνης, πανίσχυρος ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ σουλτάνου, ἄρχων καὶ παχάλνικος, προμηθευτὴς τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ καὶ τῶν ἀνακτόρων, ὑπῆρξεν ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων μελῶν τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, ἀπῆλθε δ' ἐκ Κωνσταντινουπόλεως εἰς Βλαχίαν κατὰ τὸ 1818, συναποκομίζων ὅλον τὸν πλοῦτον τὸν ὁποῖον διέθεσεν ὑπὲρ τοῦ ἔργου τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας. Β. Κ. ΣΚΑΦΙΔΑΣ

—[Στρατ. Ἱστορ.] Ἡ διάβασις τοῦ Μετσόβου διέρχεται δι' αὐχένος τῆς ὀροσειρᾶς τῆς Πίνδου, ἔχοντος ὑψόμετρον 1100 μέτρα, εἶναι δὲ μεγάλης σημασίας, καθ' ὅσον εἰς τὴν δασώδη καὶ ὀρεινὴν ταύτην περιοχὴν ἀποτελεῖ κόμβον ὀρεινῶν ἡμιονικῶν ὁδεύσεων. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912, ἐπειδὴ ἡ ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων κατοχὴ τῆς διαβάσεως τοῦ Μετσόβου ἦτο ἀπαραίτητος διὰ τὰς κατόπιν κατὰ τῶν Ἰωαννίνων ἐπιχειρήσεις, ἐπεζητήθη ἡ κατάληψις αὐτῆς εὐθὺς ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ Ὀκτωβρίου, διὰ τῆς ἀποστολῆς ἐκ Θεσσαλίας στρατευμάτων (ἐθνοφρουρῶν, πεζοναυτῶν, ἐθελοντῶν Κρητῶν καὶ πυροβολαρχίας ὀρειβατικῆς), ἀκολουθησάντων τὴν ὁδὸν ἐκ Καλαμπάκας καὶ καταλαβόντων τὴν ἐν λόγῳ διάβασιν τὴν 31ην Ὀκτωβρίου 1912. Ἐπηκολούθησαν τότε καθ' ὅλον τὸ πρῶτον δεκαήμερον τοῦ Νοεμβρίου, προσπάθειαι τῶν Τούρκων πρὸς ἀνακατάληψιν τοῦ Μετσόβου, ἀλλ' ἄκαρποι. Ἔκτοτε, ἐξετελέσθησαν, καθ' ὅλον τὸ μέχρι Φεβρουαρίου 1913 χρονικὸν διάστημα, τοπικοὶ ἀγῶνες ἀτάκτου πολέμου, μέχρις οὗ, ἐπικειμένων τῶν πρὸς ἅλωσιν τῶν Ἰωαννίνων ἐπιχειρήσεων, ἀπεστάλη εἰς Μέτσοβον τακτικὸν στράτευμα, ἐξ ἑνὸς συντάγματος πεζικοῦ καὶ μιᾶς ταχυβόλου ὀρειβατικῆς πυροβολαρχίας, ὅπερ μετὰ τῶν ἐκεῖ στρατευμάτων ἀπετέλεσε ταξιαρχίαν προχωρήσασαν πρὸς δυσμὰς καὶ καταλαβοῦσαν τὸν Δρίσκον τὴν 20ὴν Φεβρουαρίου, μεθ' ὃ συνετελέσασαν εἰς τὸν πλήρη ἐξ ἀνατολῶν ἀποκλεισμὸν τῶν Ἰωαννίνων. Ν. Θ. Κ.

— **Μετσόβου ἐπαρχία** [*Γεωγρ.*]. Ἐπαρχία τῆς Ἠπείρου περὶ τὸ Μέτσοβον, ἀποτελουμένη ἐπὶ τουρκοκρατίας ἐκ τῶν χωρίων *Μετσόβου, Ἀνηλίου, Βουτονοσίου, Ἀνθοχωρίου (Δερβεντίστας), Μηλιᾶς, Κουτσούφλιανης* καὶ *Μαλακασίου*, κειμένων ἐπὶ τοῦ κόμβου τῶν ὀροσειρῶν τῆς Πίνδου καὶ τοῦ Ζυγοῦ. Τὰ δύο τελευταῖα τώρα ὑπάγονται εἰς τὸν νομὸν Τρικκάλων. Ἀπὸ τοῦ 1659 ἡ περιοχὴ αὕτη ἀπετέλει αὐτόνομον ἐπαρχίαν, δυνάμει προνομίων, τὰ ὁποῖα, δοθέντα ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Δ΄, κατηργήθησαν ὑπὸ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ. Ἐκκλησιαστικῶς ἀπετέλει ἐξαρχίαν ὑπαγομένην ἀπ' εὐθείας εἰς τὸ πατριαρχεῖον Κωνσταντινουπόλεως. Τὴν αὐτοτέλειαν ἡ ἐπαρχία Μετσόβου διετήρει καὶ μετὰ τὸν Ἀλῆ πασᾶν, διαμένοντος ἐν Μετσόβῳ ἐπάρχου (καϊμακάμη) μετὰ τῶν συναφῶν ὑπηρεσιῶν. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν ἔμεινεν ἐπὶ καιρὸν ἡ ἐπαρχία αὕτη, σήμερον ὅμως δὲν ὑφίσταται, ὑπαγομένη διοικητικῶς εἰς τὰ Ἰωάννινα. Ἡ ἐπαρχία εἶναι δασώδης καὶ ἄγονος. Οἱ κάτοικοί της ζῶν ἐκ τῆς κτηνοτροφίας ἰδίως ὡς καὶ τοῦ ἐπαγγέλματος τοῦ ξυλουργοῦ. Ἔχει 4.684 κατοίκους. Χ. Ι. Σ.

**Μετσοῦ** (Metsu), ***Γαβριήλ***. Ὀλλανδὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Λεύντε περὶ τὸ 1630 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀμστερνταμ τῷ 1667. Ὑπῆξεν υἱὸς μετρίου ζωγράφου, τοῦ *Ἰακώβου Μετσοῦ*, ὅστις ἀπέθανε τῷ 1633, φαίνεται δ' ὅτι ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Γεράρδῳ Ντὸβ ἐν Λεύντε. Καταλιπὼν τὴν πόλιν ταύτην ἐγκατεστάθη εἰς τὸ Ἄμστερνταμ, ὅπου διήγαγε τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του. Ἦτο μέλος τῆς ὀνομαστῆς καλλιτεχνικῆς ὁμάδος τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ, ὑπέστη δ' ἀλληλοδιαδόχως τὴν ἐπί-

Digitized by Google

δρασιν τῆς τεχνοτροπίας τοῦ Φράντς Χάλς, τοῦ Ρέμπραντ καὶ μάλιστα τοῦ Τέρμπουργκ. Ὑπῆρξε παραγωγικώτατος. Ἐξεπόνησε προσωπογραφίας καὶ ἀλληγορικὰς συνθέσεις, διέπρεψεν ὅμως εἰς σκηνὰς τοῦ καθημερινοῦ βίου καὶ ἐσωτερικά, τασσόμενος ἐν τούτοις μεταξὺ τῶν μᾶλλον τιμωμένων παλαιῶν Ὁλλανδῶν διδασκάλων. Δὲν ἦτο μόνον ἡ λεπτότης τῆς ἐκφράσεως τὸ κυριώτατον χαρακτηριστικὸν τοῦ καλλιτέχνου τούτου· παρ' αὐτὴν ἡ λαμπρὰ χρῆσις τοῦ φωτὸς καὶ τοῦ χρώματος, τὸ βάθος τῆς συλλήψεως, ἡ ἐξαίρετος αἴσθησις τοῦ ἰδιαιτέρου ὕφους ἑκάστης σκηνῆς, ἡ θαυμαστὴ διάταξις τῶν λεπτομερειῶν ἀναβιβάζουν τὰ μικρά, κοινὰ καὶ συνήθη ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἐπεισόδιά, ἄτινα ἐξεμεταλλεύθη, εἰς τὴν περιωπὴν ἀληθῶς ἀνεκτιμήτων ἔργων. Τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου κατέχει δύο ἀπὸ τοὺς θαυμασιωτέρους πίνακας τοῦ Μετσού, τὴν «Λαχαναγοράν» καὶ τὸν «Στρατιωτικὸν ὑποδεχόμενον νεαρὰν κυρίαν». Ἐκ τῶν λοιπῶν πινάκων του μνημονεύομεν ἐνταῦθα τοὺς ἀκολούθους: «Νεᾶνις γράφουσα», «Προσωπογραφία κυνηγοῦ» (Μουσεῖον Χάγης), «Κυρία μετὰ τῆς θυγατρός της καὶ ἑνὸς ἱππέως» (Λένινγκραντ), «Τὸ πρόγευμα», «Γέρος πότης» (Ἄμστερνταμ), «Ἔμποροι πουλερικῶν» (Δρέσδη), «Ἰατρὸς σφυγμομετρῶν» (Βερολῖνον), «Νεᾶνις γράφουσα ἐπιστολὴν» (Βιέννη) κλπ. Ι. Μ. Π.

*Γαβριὴλ Μετσού: Ὁ ναύαρχος Τόμπ.*

**Μέττερνιχ** (Metternich). Παλαιὰ γερμανικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν ἐκ Ρηνανίας. Κατήγετο ἐκ κλάδου τῶν χωροδεσποτῶν τοῦ Ἔμμεριχ, οἵτινες μετωνομάσθησαν ἐκ τοῦ παρὰ τὸ Οὔσκιρχεν (ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ Κόμπλεντζ) ὁμωνύμου χωρίου Μέττερνιχ. Ἐκ τῶν δώδεκα κλάδων τῆς οἰκογενείας Μέττερνιχ οἱ ἕνδεκα πρεσβύτεροι ἐξέλιπον, ἐπέζησε δὲ ὁ νεώτερος κλάδος. Ὁ κατὰ τὸ 1635 ἡγέτης τοῦ κλάδου τούτου *Λοθάριος* ἐγένετο, διὰ τῆς προσκτήσεως τῶν βαρωνιῶν Βίννεμπουργκ καὶ Μπαϊλστάϊν, βαρῶνος *Μέττερνιχ - Βίννεμπουργκ*. Τῷ 1679 ὁ ἡγέτης τοῦ κλάδου *Φίλιππος Ἔμμεριχ - Μέττερνιχ* (ἀποθανὼν τῷ 1698) ὠνομάσθη κόμης. Ὅταν ὅμως, βραδύτερον, ὅτε ἡ ἀριστερὰ ὄχθη τοῦ Ρήνου περιῆλθεν εἰς τὴν Γαλλίαν, κατελύθησαν αἱ γερμανικαὶ φεουδαρχίαι ἐπὶ τῶν περιφερειῶν ἐκείνων, ἡ οἰκογένεια Μέττερνιχ εἰς ἀποζημίωσιν, διὰ τὴν ἀπώλειαν τῶν κτήσεών της, ἔλαβε τῷ 1803 τὸ σουηβικὸν αὐτοκρατορικὸν ἀβδαεῖον Ὄχσενχάουζεν. Τὸ ἀββαεῖον τοῦτο μετὰ τῶν κτήσεών του ἀνεκηρύχθη πριγκιπᾶτον καὶ οἱ κάτοχοι συνεπῶς αὐτοῦ Μέττερνιχ ἔλαβον τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος. Ὁ τίτλος οὗτος ἐκηρύχθη τῷ 1813 ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Αὐστρίας κληρονομικός.

Οἱ διασημότεροι τῶν Μέττερνιχ εἶναι οἱ ἑξῆς:

—*Φραγκῖσκος-Γεώργιος-Κάρολος* (1746—1818). Διετέλεσεν ἀντιπρόσωπος τοῦ ἐκλέκτορος Τρεβήρων ἐν Βιέννῃ (1768), ἐγκατασταθεὶς δὲ μετὰ ταῦτα ἐν τῇ αὐστριακῇ πρωτευούσῃ ἐγένετο βραδύτερον διοικητὴς τῶν ὑπὸ τὴν Αὐστρίαν Κάτω Χωρῶν (1791—1794) καὶ πρῶτος αὐτοκρατορικὸς ἀπεσταλμένος ἐν τῷ συνεδρίῳ Ράστατ τῆς εἰρήνης (1797—1799). Τῷ 1810 ἀνεπλήρωσε τὸν υἱόν του ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Αὐστρίας. Γ. Ι. Β.

—*Κλήμης (Λοθάριος-Βεγκέσλαος-Νεπομουκένας), πρίγκιψ* **Μέττερνιχ**. Ἐκ τῶν διασημοτέρων πολιτικῶν καὶ διπλωματῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος καὶ ἀρχικαγκελλάριος τῆς Αὐστρίας. Ἦτο υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1773. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἐνυμφεύθη τῷ 1795 τὴν Ἐλεονώραν, ἐγγόνην τοῦ πρίγκιπος Β. Κάουνιτς (1711—1794), καγκελλαρίου τῆς ἐπικρατείας καὶ δεινοῦ διπλωμάτου, καὶ ἐπεδόθη καὶ αὐτὸς εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον. Ἀποσταλεὶς εἰς πλείστας διπλωματικὰς ὑπηρεσίας, ἐξετέλεσε ταύτας μετ' ἰδιαζούσης ἐπιτυχίας οὕτως, ὥστε ταχέως ἐφείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ αὐτοκράτορος, ὅστις τῷ 1806 ἀπέστειλεν αὐτὸν πρεσβευτὴν εἰς Παρισίους παρὰ τῷ Ναπολέοντι. Ἐπὶ τριετίαν χρηματίσας ἐν τῇ θέσει ταύτῃ, ἐκλήθη εἰς Βιέννην καὶ διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, θέσιν ἣν κατεῖχε μέχρι τοῦ 1848, ὅτε, ζητήσας νὰ καταπνίξῃ τὸ φιλελεύθερον πνεῦμα τῆς ἐποχῆς, ὅτε ὅλοι σχεδὸν οἱ λαοὶ τῆς Ἑσπερίας Εὐρώπης ἐπανεστάτησαν, καὶ μὴ κατορθώσας τοῦτο ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ. Ἐπὶ τεσσαράκοντα ἔτη διεῖπε τὰς τύχας οὐ μόνον τῆς Αὐστρίας, ἀλλὰ καὶ ὁλοκλήρου τῆς εὐρωπαϊκῆς πολιτικῆς. Ἐν Παρισίοις ὑπηρετῶν διέγνω ὅτι ἡ ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος ἡττηθεῖσα τῷ 1806 Αὐστρία ἔπρεπε νὰ διάκειται φιλίως πρὸς τὴν Γαλλίαν, καὶ ἐκ τῆς ἀρχῆς ταύτης ὁρμώμενος προέτεινεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα Φραγκῖσκον νὰ συνάψῃ συνοικέσιον τῆς Μαρίας Λουΐζης μετὰ τοῦ Ναπολέοντος Α', τῷ 1810. Θελήσας νὰ παρέμβῃ πρὸς συμφιλίωσιν τῶν συμμάχων μετὰ τοῦ Ναπολέοντος πρὸς κατάπαυσιν τῶν Ναπολεοντείων πολέμων ἀπέτυχεν. Ἡ Αὐστρία συμμαχήσασα τότε μετὰ τῆς Ἀγγλίας, Πρωσσίας, Ρωσίας καὶ Σουηδίας, συμμετέσχε τῆς λεγομένης μάχης τῶν ἐθνῶν ἐν Λειψίᾳ (16 — 19 Ὀκτωβρίου 1813), ἀποτέλεσμα τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ἡ τελεία ἐκμηδένισις τῆς ἐπὶ τῶν γερμανικῶν χωρῶν κυριαρχίας τοῦ Ναπολέοντος καὶ ἡ ἐξύψωσις τῆς Αὐστρίας, ἧς ὁ καγκελλάριος Μέττερνιχ ἐμφανίζεται νῦν ὡς πρωτεύων παράγων εἰς τὴν ἐπικειμένην συνέλευσιν πρὸς ἐπίλυσιν τῶν μετὰ τὴν μάχην τῆς Λειψίας προκυψάντων πολιτικῶν ζητημάτων.

*Κλήμης Μέττερνιχ.*

Αὐτός, ὡς ἐκπρόσωπος τῶν συμμάχων, ὑπέγραψε τὴν συνθήκην τῶν Παρισίων τὴν 30 Μαΐου 1814 καὶ αὐτός, εἶτα, κατὰ τὸ συνέδριον τῆς Βιέννης, ἔπαιξε τὸ σπουδαιότερον πρόσωπον κατὰ τῶν ἀξιώσεων τῆς Πρωσσίας καὶ κατὰ τοῦ Ταλλεϋράνδου καὶ Ἰωάννου Καποδιστρίου, ὑπερασπιζομένων τὰ γαλλικὰ δίκαια (1815). Ἐπὶ τῶν δύο τούτων συνθηκῶν βασιζόμενος μετὰ ταῦτα ὁ Μέττερνιχ ἐσφυρηλάτησε τὴν λεγομένην Ἱερὰν συμμαχίαν, δι' ἧς ἀπεξενοῦντο οἱ λαοὶ τοῦ δικαιώματος τοῦ ρυθμίζειν τὴν ἰδίαν τύχην. Πρὸς τοῦτο συνεκάλεσε τὰ συνέδρια τοῦ Κάρλσμπαντ (1819), τοῦ Τρόππαου (1820) καὶ τῆς Λάϊβαχ (1821), ὅτε ἠγγέλλεται καὶ ἡ ἔκρηξις τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως, καὶ εἶτα τῆς Βερώνης (1822). Ἡ ἐπανάστασις τῆς Ἑλλάδος ἤχησε κακῶς εἰς τὰ ὦτά του, διότι ἀνέτρεπε τὸ ἐγγυηθὲν ὑπὸ τῶν συνεδρίων καθεστώς, καὶ διὰ τοῦτο βλέπομεν αὐτὸν γράφοντα πρὸς τὸν τσάρον Ἀλέξανδρον: «Τὸ ἑλληνικὸν κίνημα δὲν ὑπεκινήθη πρὸς ὄφελος τοῦ γένους του... εἶναι δαυλὸς διχονοίας ριπτόμενος μεταξὺ Αὐστρίας καὶ Ρωσίας». Ἐνῷ δὲ ὁ ἀγὼν ἐπροχώρει καὶ ἀπὸ τοῦ 1824 ὁ Γεώργιος Κάνιγγ ἐπρότεινεν εἰς τὴν Ρωσίαν καὶ εἶτα εἰς τὴν Γαλλίαν ἐπέμβασιν ὑπὲρ τῶν Ἑλλήνων, ὁ Μέττερνιχ λυσσωδῶς ἐπολέμησε τὰς ἑλληνικὰς ἀξιώσεις, ἵνα μὴ ἀπολεσθῇ διὰ τὴν Αὐστρίαν ἡ Βαλκανικὴ χερσόνησος, εἰς ἣν εἶχε τὰς βλέψεις του τὸ περὶ διαμελισμοῦ τῆς Τουρκίας σχέδιον τοῦ στρατάρχου Λάχυ. Βλέπων ὅμως ὅτι οἱ Ἕλληνες ἠγωνίζοντο γενναίως ἐγνωσιμάχησε καὶ ἐπρότεινεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν τῷ 1828 τὴν ἵδρυσιν τελείου ἀνεξαρτήτου ἑλληνικοῦ κράτους, τοῦθ' ὅπερ ἠρνήθησαν ἥ τε Ἀγγλία καὶ ἡ Γαλλία, ὡς ἀντιτιθέμενον εἰς τὰς κατ' Ἰούλιον τοῦ 1827 ἀποφάσεις των· ὁ δὲ τσάρος Νικόλαος Α' ἀπεριφράστως ἐδήλου τὸ μῖσος καὶ τὴν ἀπέχθειάν του πρὸς τοὺς Ἕλληνας. Ἡ ἐν Ναυαρίνῳ ὅμως ναυμαχία καὶ ὁ ἐκραγεὶς τῷ 1828 Ρωσσοτουρκικὸς πόλεμος, ὁ λήξας διὰ τῆς ἐν Ἀδριανουπόλει συνθήκης (2/14 Σεπτεμβρίου 1829) ἐπέφερον τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς Ἑλλάδος. Τὸ πρᾶγμα κατέπληξε τὸν Μέττερνιχ, ἀλλ' οὐδαμῶς ἠδυνήθη νὰ ἀντιπράξῃ πρὸς τὰς τρεῖς Δυνάμεις, καὶ τῷ 1839 ἔλεγε πρὸς τὸν κόμητα Πρόκες φὸν Ὄστεν: «Ἐσχημάτισα τὸ σχέδιόν μου· ἡ Κωνσταντινούπολις μόνον ἑλληνικὴ δέον νὰ γίνῃ καὶ αἱ μεταξὺ αὐτῆς καὶ Ἑλλάδος χῶραι πᾶσαι, ὅπου ἐπικρατεῖ ἡ ἑλληνικὴ γλῶσσα. Αἱ Ἀθῆναι πρέπει νὰ μεταφερθῶσιν εἰς Κωνσταντινούπολιν». Πλείστας δ' ὅσας συμβουλὰς παρέσχεν εἰς τὸν Ὄθωνα, λέγων: «νὰ ἀσκῇ συνετὴν πολιτικήν, ἀποφεύγων τὰ ἄκρα». Αἱ ἐπαναστάσεις τοῦ 1830 καὶ 1848 ἐμείωσαν τὴν προτέραν ἐπιρροὴν τοῦ Μέττερνιχ, καὶ κατὰ Μάρτιον 1848 παραιτηθεὶς ἀπῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν, ὁπόθεν ἐπανακάμψας τῷ 1851 ἰδιώτευε μέχρι τοῦ θανάτου του (1859). Τὰ ἀπομνημονεύματά του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του εἰς 8 τόμους. Τ. Ε. Ε.

— *Ριχάρδος-Κλήμης-Λοθάριος*. Αὐστριακὸς διπλωμάτης (1829—1895). Ἦτο ὁ πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ ἀρχικαγκελλαρίου Μέττερνιχ (ἐκ τοῦ δευτέρου του γάμου). Διετέλεσεν ἀκόλουθος πρεσβείας ἐν Παρισίοις καὶ Λονδίνῳ, γραμματεὺς ἐν Παρισίοις (1855), ἀπεσταλμένος ἐν Σαξωνίᾳ (1856) καὶ εἶτα πρεσβευτὴς ἐν Παρισίοις (1859—1871). Γ. Ι. Β.

**Μέττμαν** (Mettmann) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Ρήνου καὶ τῷ διαμερίσματι τοῦ Ντύσσελντορφ. Κάτ. περὶ τὰς 12.500. Εἶναι πόλις βιομηχανική, παράγουσα ἰδίως μετάλλινα εἴδη (κλεῖθρα, πλάστιγγας, χαλύβδινα ἐλατήρια, ἐργαλεῖα) κλπ. Παρὰ τὸ Μέττμαν κεῖνται τὰ λατομεῖα Νεάντερταλ, εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ ὁποίου ἀνευρέθησαν λείψανα προϊστορικῆς ἐποχῆς. Γ. Ι. Β.

**μετωάριον** (τὸ) (Métoarion). Τὸ ὑπόλειμμα ἢ τὰ ἴχνη τοῦ Γραφειανοῦ κυστιδίου μετὰ τὴν ρῆξιν αὐτοῦ καὶ τὴν πτῶσιν τοῦ ᾠαρίου. Ὅταν μετὰ τὴν ᾠοτοκίαν ἐπακολουθήσῃ γονιμοποίησις, τὸ μετωάριον εἶναι κατὰ πολὺ μεγαλύτερον καὶ μεγαλυτέρας ἀντοχῆς ἢ ἐν περιπτώσει καθ' ἣν δὲν ἐγένετο γονιμοποίησις. Μ. Ν. Κ.

**Μέτων**, ὁ ***Πανσανίου***. Μηχανικὸς καὶ ἀστρονόμος Ἀθηναῖος (Λευκονοεύς), ἀκμάσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Ε' αἰῶνος π. Χ. Περὶ τοῦ χρόνου τῆς γεννήσεως αὐτοῦ οὐδὲν εἶνε γνωστόν· ὁ C. Redlich (Der Astronom Meton, 1854), δέχεται ὅτι ὁ Μέτων ἐγεννήθη πρὸ τοῦ 460 π. Χ., καθ' ἡμᾶς μεταξὺ τῶν ἐτῶν 482 καὶ 472 π. Χ. (βλ. Πρακτικὰ Ἀκ. Ἀθ., Μάϊος 1931) ἄγνωστον δὲ πότε ἀκριβῶς ἀπεβίωσε, πάντως ὅμως μετὰ τὸ 414 π. Χ., διότι ἀνευρίσκομεν αὐτὸν μειοψηφήσαντα, μετὰ τοῦ Νικίου καὶ τοῦ Σωκράτους, ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ τοῦ δήμου κατὰ τῆς εἰς Σικελίαν ἐκστρατείας (*Πλουτ.*, Νικίας, Ἀλκιβιάδης). Ὁ Μέτων ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Ἀριστοφάνους («Ὄρνιθες») ὡς γεωμέτρης μηχανικός, ὑπὸ δὲ τοῦ Φρυνίχου («Μενότροπος») ὡς ὑδραυλικὸς - μηχανικός, «ὁ τὰς κρήνας ἄγων». Εἰς δὲ τὸν σχολιαστὴν τοῦ Ἀριστοφάνους γράφει ὅτι ὁ Μέτων «ἴσως ἐν τῷ Κολωνῷ κρήνην κατεσκευάσατο». Ὁ Μέτων, ἀσφαλῶς, θὰ εἶχε λάβει τὸ ἀξίωμα τοῦ ἐπιθεωρητοῦ τῶν κρηνῶν (πρβλ. *Ἀριστοτέλ.* Ἀθην. Πολιτ.), τὸ ὁποῖον, λαμβανομένης ὑπ' ὄψει τῆς κατατρυχούσης τὰς Ἀθήνας λειψυδρίας, φαίνεται ὅτι ἦτο μέγα.

Ὁ Μέτων κατέστη περιώνυμος ὡς ἀστρονόμος διὰ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ ὁμωνύμου *κύκλου* ἢ *ἐνιαυτοῦ* (βλ. κατωτ.), τοῦ ἄλλως καλουμένου καὶ *ἐννεακαιδεκαετηρίδος*, τὸν ὁποῖον ἐξήγαγεν ἐκ τῶν ἰδίων του παρατηρήσεων ὡς καὶ ἐκ τῶν τοῦ διδασκάλου του, τοῦ ἀστρονόμου Φαείνου, ἐπὶ τῶν τροπῶν τοῦ Ἡλίου (*Θεοφράστ.* Περὶ σημείων ὑδάτων κλπ.). Κ. Μ.

— **Μέτωνος** ***κύκλος***. Τὸ ἔτος τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων ἦτο σεληνιακόν. Κατὰ τὸν Γέμινον, ἅπαντες οἱ Ἕλληνες, ἕνεκα ἑορταστικῶν λόγων, προσεπάθουν νὰ συμφωνῶσι τὸ μὲν ἔτος πρὸς τὴν φαινομένην κίνησιν τοῦ Ἡλίου, τοὺς δὲ μῆνας καὶ τὰς ἡμέρας αὐτῶν πρὸς τὰς φάσεις τῆς σελήνης. Πρὸς τοῦτο φαίνεται ὅτι κατ' ἀρχὰς ἐχρησιμοποίησαν τὴν περίοδον τῆς διετηρίδος, τοῦ ἔτους συγκειμένου ἐναλλὰξ ἐκ 12 καὶ 13 μηνῶν, τινῶν μὲν ἐξ αὐτῶν πλήρων (ἐκ 30 ἡμερῶν), τινῶν δὲ κοίλων (ἐξ 29 ἡμερῶν).

Ταχέως ὅμως κατανοήσαντες τὸ ἐσφαλμένον τῆς περιόδου ταύτης, ἀντικατέστησαν αὐτὴν διὰ τῆς ὀκταετηρίδος. Ἐν ταύτῃ οἱ μῆνες ἦσαν ἐναλλὰξ πλήρεις καὶ κοῖλοι, ἐκ δὲ τῶν ὀκτὼ αὐτῆς ἐτῶν τὰ πέντε (κοινὰ) συνέκειντο ἐκ δώδεκα μηνῶν, τὰ δὲ λοιπὰ τρία (ἐμβόλιμα) ἐκ δέκα τριῶν μηνῶν. Ἀλλὰ τὸ σύνολον τῶν ὀκτὼ τροπικῶν ἐτῶν ἀποτελεῖται περίπου ἐκ 2922 ἡμερῶν, ἐνῷ 99 συνοδικοὶ μῆνες σύγκεινται περίπου ἐκ 2923 $^{1}/_{2}$ ἡμερῶν. Ὥστε ἐντὸς 16 ἐτῶν οἱ μῆνες ἀπομακρύνονται τῶν φάσεων τῆς σελήνης κατὰ τρεῖς ἡμέρας. Πρὸς ἀποφυγὴν τούτου οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες προσέθετον κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς διπλῆς ὀκταετηρίδος, δηλαδὴ δέκα ἓξ ἐτῶν, τρεῖς ἡμέρας, παρεμβάλλοντες αὐτὰς ἀνὰ μίαν εἰς κοίλους μῆνας κατὰ τὰ κοινὰ ἔτη, οἱ ὁποῖοι ἀπέβαινον τοιουτοτρόπως πλήρεις. Εἶχον ἐπομένως ἔτη ἐκ 354, 355 καὶ 384 ἡμερῶν. Ἀλλ' ἐκ τῆς παρεμβολῆς ταύτης τῶν τριῶν ἡμερῶν προκύπτει ὀπισθοδρόμησις τῆς ἀρχῆς τοῦ ἔτους, ἐντὸς 20 ὀκταετηρίδων, τουτέστιν 160 ἐτῶν, ἀνέρχεται εἰς ἕνα πλήρη μῆνα. Τοῦτο δέ, ὡς φαίνεται, συνέβη ἐν Ἀθήναις μεταξὺ τοῦ 430 καὶ τοῦ 423 π. Χ., ὅτε καὶ ὑφῃρέθη εἷς μήν, τουτέστιν ἡ τελευταία αὐτῆς ὀκταετηρὶς ἀπετελέσθη ἀπὸ ἓξ κοινὰ ἔτη καὶ δύο ἐμβόλιμα, ὅπως ἐπανέλθῃ ἡ ἀρχὴ τοῦ ἔτους εἰς τὴν πρώτην νέαν σελήνην μετὰ τὰς θερινὰς τροπάς.

Πρὸς ὁριστικὴν διόρθωσιν τοῦ σφάλματος τούτου τοῦ ἡμερολογίου ὁ Μέτων, ὡς εἴπομεν ἀνωτέρω, ἀνεκάλυψε τὴν πληρεστέραν περίοδον τῆς ἐννεακαιδεκαετηρίδος, ἥτις ἀπετελεῖτο ἐκ 12 ἐτῶν



Digitized by Google

κοινῶν καὶ 7 ἐμβολίμων. Ταύτην δὲ ἐδημοσίευσεν ὑπὸ μορφὴν παραπήγματος, δηλαδὴ πίνακος ἐπὶ τοίχου-στήλης, παρέχοντος τὴν ἔναρξιν ἑκάστου ἔτους τῆς ἐννεακαιδεκαετηρίδος, ὡς καὶ ἑκάστου μηνὸς ἐν αὐτῇ, τὰς τροπὰς τοῦ ἡλίου καὶ τὰς ἰσημερίας, τὰς ἡμερομηνίας τῶν ἐπιτολῶν καὶ τῶν δύσεων ὡρισμένων ἀπλανῶν ἀστέρων ἐχόντων σπουδαιότητά τινα διὰ τὸν τότε βίον καὶ ἰδίως διὰ τὴν γεωργίαν καὶ τὴν ναυτιλίαν, τέλος μετεωρολογικὰς προγνώσεις.

Ἀρχὴν τοῦ κύκλου του ἔλαβεν ὁ Μέτων τὸ θερινὸν ἡλιοστάσιον τοῦ ἔτους 432 π. Χ., ἐπὶ Ἀψεύδους ἄρχοντος, ἤτοι τὴν 27ην Ἰουνίου (ἂν τοῦτο ὑπολογισθῇ κατὰ τὸ Ἰουλιανὸν ἡμερολόγιον). Τὸ παράπηγμα δὲ τοῦτο, τὸ ἄλλως καὶ ἡλιοτρόπιον ὀνομαζόμενον ὑπὸ τοῦ Φιλοχόρου, ἐξέθηκεν ὁ Μέτων ἐπὶ τοίχου ἐν τῇ Πνυκί, ὅπου συνήρχετο ἡ ἐκκλησία τοῦ δήμου, πιθανῶς δὲ ἐξέθηκεν ἐπίσης ἕτερον ὅμοιον ἐν Κολωνῷ.

Κατὰ τὸν Ch. Ruelle (ἐν *Darenberg et Saglio*, Dictionnaire des Antiquités, λ. Calendarium, Παράπηγμα) «τὸ παράπηγμα τοῦ Μέτωνος συχνὰ ἀποδίδεται εἰς τὸν Εὐκτήμονα, τὸν συνεργάτην καὶ τὸν συγγραφέα τῶν πλείστων παρατηρήσεων, τὰς ὁποίας ὁ Μέτων ἐχρησιμοποίησε». Τὸ τελευταῖον ὅμως τοῦτο οὐδαμόθεν ἐξάγεται. Καθ' ἡμᾶς τὸν Μέτωνα ἐμιμήθη βραδύτερον ὁ σύγχρονος αὐτοῦ ἀστρονόμος Εὐκτήμων, ἐκθέσας ὡσαύτως παράπηγμα, τὸ ὁποῖον φαίνεται ὅτι ἐπεκράτησε, διότι ὑπῆρξεν ἐπιτυχέστερον ὡς πρὸς τὰς μετεωρολογικὰς προγνώσεις, δι' ὃ βραδύτερον φέρεται ἐσφαλμένως τὸ ὄνομα τοῦ Εὐκτήμονος ὡς συνεργάτου τοῦ Μέτωνος εἰς τὴν ἀνακάλυψιν τῆς ἐννεακαιδεκαετηρίδος, ὑπὸ δὲ τοῦ Γεμίνου (Α' αἰὼν π. Χ.) ἀποσιωπᾶται τὸ ὄνομα τοῦ Μέτωνος, ἀναφερομένων μόνον τοῦ Εὐκτήμονος καὶ τοῦ Φιλίππου.

Ἡ ἐννεακαιδεκαετηρὶς ἐκαλεῖτο καὶ *Μέτωνος ἐνιαυτὸς* (Σχολ. εἰς τὰς Ὄρνιθας «τοῦτον ἐστὶν ὁ ἐνιαυτὸς ὁ λεγόμενος Μέτωνος». Πρβ. καὶ Paroemiogr. Gr. 672), τινὲς δὲ ἐκάλουν αὐτὴν καὶ *μέγαν ἐνιαυτὸν* (*Πλουτάρχ.* Τὰ ἀρέσκοντα τοῖς φιλοσόφοις). Κατὰ δὲ τὸν Παροιμιογράφον, οἱ ἀρχαῖοι σκώπτοντες τοὺς ἀναβάλλοντας ἐπὶ μακρόν, ἔλεγον: «ἀναβάλλεσθαι εἰς τὸν Μέτωνος ἐνιαυτόν». Ἀλλ' ἐκ τοῦ τμήματος παραπήγματος εὑρεθέντος ἐν Μιλήτῳ, τοῦ ἔτους 110/9 π. Χ. (*H. Diels*, Πρακτικὰ Πρωσσ. Ἀκαδημ., 1904) συνάγεται ὅτι τὰ παραπήγματα ἐγράφοντο ἐπὶ πολλοὺς αἰῶνας κατὰ τὸν ἐνιαυτὸν τοῦ Μέτωνος, ὡς ἀρχῆς λαμβανομένης πάντοτε τῆς 13ης τοῦ Σκιροφοριῶνος τοῦ ἄρχοντος Ἀψεύδους, δηλαδὴ τῆς 27ης Ἰουνίου τοῦ 432 π. Χρ. Ἑκάστη 19)ρὶς τοῦ Μέτωνος, κατὰ τὸν Γέμινον, διῃρεῖτο εἰς 110 ἴσας περιόδους, ἑκάστην ἐξ 63 ἡμερῶν, ἐπερίσσευον δὲ 10 ἡμέραι πρὸς συμπλήρωσιν αὐτῆς. Ἐλογίζοντο λοιπὸν συνεχῶς 63 ἡμέραι, ἡ δὲ 64η ἐξῃρεῖτο τοῦ ἡμερολογίου (ἐξαιρέσιμος ἡμέρα), μέχρις ἐξαντλήσεως τῶν 110 περιόδων, μεθ' ὃ προσετίθεντο αἱ ὑπόλοιποι 10 ἡμέραι.

Ὁ Μέτων ὑπελόγιζε τὸ τροπικὸν ἔτος πρὸς $365\,{}^5/_{19}$ ἡμ. ἐνῷ ἦτο γνωστὸν ἀπὸ τοὺς Αἰγυπτίους ὅτι τὸ ἔτος ἔπρεπε νὰ ληφθῇ ἴσον πρὸς $365\,{}^1/_4$ ἡμ., δηλαδὴ βραχύτερον κατὰ $^1/_{76}$ τῆς ἡμέρας. Ὅθεν ἐντὸς τεσσάρων ἐνιαυτῶν τοῦ Μέτωνος, τουτέστιν ἐντὸς 76 ἐτῶν, ἐλογίζετο ἐπὶ πλέον μία ἡμέρα. Πρὸς διόρθωσιν τοῦ σφάλματος τούτου ὁ ἀστρονόμος Κάλιππος ἀντικατέστησε (τῷ 330 π. Χ.) τὸν ἐνιαυτὸν τοῦ Μέτωνος δι' ἑτέρας περιόδου, τῆς ἑκκαιεβδομηκονταετηρίδος, ἐν τῇ ὁποίᾳ διετηρήθη ἡ αὐτὴ τάξις τῶν ἐμβολίμων ἐτῶν.

Τὸ ζήτημα ἐὰν ὁ κύκλος τοῦ Μέτωνος ἐφηρμόσθη καὶ ἀπὸ πότε εἰς τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον τῶν Ἀθηναίων καὶ βραδύτερον τῶν λοιπῶν Ἑλλήνων, δὲν ἐλύθη ἀκόμη ἱκανοποιητικῶς. Κατὰ τὸν Boeckh οἱ Ἀθηναῖοι, μετὰ τὴν ῥηθεῖσαν ὑφαίρεσιν τοῦ μηνός, ἐξηκολούθησαν τὸν λογισμὸν τοῦ πολιτικοῦ χρόνου κατὰ ὀκταετηρίδας, ἴσως δὲ εἰσήγαγον τὴν ἐννεακαιδεκαετηρίδα εἰς τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον ἀπὸ τοῦ 411 π. Χ., ἀνευρίσκεται δὲ ἐν ἐφαρμογῇ αὕτη τῷ 330 π. Χ. Οἱ Pétau καὶ Halma ἐφρόνουν ὅτι ἡ περίοδος αὕτη οὐδέποτε εἰσήχθη εἰς τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον. Κατὰ τὸν Mommsen αὕτη ἐφηρμόσθη, ληφθείσης ἀρχῆς ἀπὸ τοῦ ἔτους 433 π. Χ., κατ' ἄλλους, εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ 432/431 π. Χ., καθ' ἡμᾶς δὲ αὕτη ἤρχισεν ἐφαρμοζομένη ἐν Ἀθήναις εὐθὺς ὡς ἔληξεν ἡ ὀκταετηρὶς 430/429—423/422 π. Χ., καθ' ἣν εἶχεν ἀφαιρεθῇ ὁ πλεονάζων μήν, τουτέστιν ἀπὸ τοῦ ἔτους 422/1 π. Χ. (πρβ. *Κ. Μαλτέζου*, Τὸ ἀρχαῖον ἀττικὸν ἡμερολόγιον καὶ ἡ ἐφαρμογὴ τῆς ἐννεακαιδεκαετηρίδος ἐν Ἀθήναις. Ἀρχ. Ἐφ. 1907 καὶ 1908), ἀλλὰ κατὰ τοὺς χρόνους τῶν Διαδόχων καὶ τοὺς ῥωμαϊκοὺς παρατηροῦνται ἀνωμαλίαι κατὰ τὴν πολιτικὴν ἐφαρμογὴν αὐτῆς. Ἐὰν δὲ ὁ κύκλος τοῦ Μέτωνος εἶχεν ἐφαρμοσθῇ εἰς τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον καὶ ἄλλων ἑλληνικῶν πόλεων, τυγχάνει ἄγνωστον, δύναται ὅμως νὰ θεωρηθῇ ὡς πιθανόν. Τὸ βέβαιον ὅμως εἶναι ὅτι τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον διέφερε τότε κατὰ τὰς πόλεις, τῶν ἐνιαυτῶν καὶ τῶν μηνῶν ἀρχομένων διαφόρως, ὡς ἐξάγεται ἐκ τῶν ἱστορικῶν πηγῶν καὶ τῶν ἐπιγραφῶν (πρβ. καὶ *Γέμινον*).

Εἴδομεν ὅτι ἐκ τῶν 19 ἐτῶν τοῦ κύκλου τὰ 12 εἶναι κοινὰ καὶ τὰ 7 ἐμβόλιμα. Ἐφ' ὅσον δ' ἀγνοεῖται ἐπακριβῶς ἡ ἔναρξις τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ κύκλου εἰς τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον τῶν Ἀθηναίων, ἀβεβαία τυγχάνει καὶ ἡ σειρὰ τῶν ἐμβολίμων ἐτῶν ἐν τῇ περιόδῳ. Καὶ ἐὰν μὲν δεχθῶμεν ὡς ἀρχὴν αὐτῆς διὰ τὸ πολιτικὸν ἡμερολόγιον τῶν Ἀθηναίων τὴν ἀρχὴν τοῦ ἔτους 432/431 π. Χ., ἡ σειρὰ τῶν ἐμβολίμων ἦτο 2, 5, 8, 10, 13, 16 καὶ 18· ἐὰν ὅμως δεχθῶμεν αὐτὴν συμπίπτουσαν μετὰ τῆς ἀρχῆς τοῦ 422/421 π. Χ., καθ' ἡμᾶς, ἡ σειρὰ τῶν ἐμβολίμων ἦτο 3, 6, 8, 11, 14, 17 καὶ 19.

Ὁ κύκλος τοῦ Μέτωνος καλεῖται ὑπὸ τῶν νεωτέρων ἀστρονόμων καὶ *κύκλος τῆς σελήνης*, διότι ἀρκεῖ νὰ παρατηρηθῶσιν αἱ χρονολογίαι τῶν πανσελήνων καὶ τῶν συνόδων ἐπὶ 19 ἔτη, ὅπως προλέγωνται αἱ συζυγίαι αὗται ἐν τῷ μέλλοντι. Ὅτε δὲ ἡ ἐν Νικαίᾳ Οἰκουμενικὴ σύνοδος ἔλαβεν ὡς ἡμέραν τῆς ἐαρινῆς ἰσημερίας τὴν 21ην Μαρτίου, ἀνέθεσεν εἰς τὸν πατριάρχην Ἀλεξανδρείας, ὅπου ὑπῆρχον οἱ ἄριστοι τῶν ἀστρονόμων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὅπως οὗτος ὁρίζῃ τὴν ἡμέραν τοῦ Πάσχα δι' ὅλας τὰς ἑλληνικὰς ἐκκλησίας. Ἀλλ' ἐν Ἀλεξανδρείᾳ ἐγίνετο χρῆσις τοῦ κύκλου τοῦ Μέτωνος διὰ τὸν προσδιορισμὸν τῶν πανσελήνων τοῦ μέλλοντος, διὸ ἐχρησιμοποίησαν διὰ τὸν προσδιορισμὸν τοῦ Πάσχα τὴν σεληνιακὴν ταύτην περίοδον. Εἰς τὴν τάξιν τὴν ὁποίαν ἕκαστον ἔτος κατέχει ἐν τῷ σεληνιακῷ κύκλῳ ἀπεδόθη ἀνέκαθεν μεγάλη σπουδαιότης, διότι ἡ τάξις αὕτη δεικνύει ἐὰν τὸ ἔτος τοῦτο σύγκειται ἐκ 12 ἢ 13 σεληνιακῶν μηνῶν καὶ δεικνύει πῶς αἱ νέαι σελῆναι καὶ αἱ μέσαι πανσέληνοι κατανέμονται κατ' αὐτό. Εἴτε δὲ ἕνεκα τῆς σπουδαιότητος, εἴτε μᾶλλον διότι ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ὁ ἀριθμὸς ὁ παριστῶν τὴν τάξιν ταύτην ἀνεγράφετο διὰ χρυσῆς μελάνης, ὁ ἀριθμὸς οὗτος καλεῖται χρυσοῦς ἀριθμός. Ἐπειδὴ δὲ τὸ πρῶτον ἔτος π. Χ. ἐθεωρεῖτο ὅτι ἤρχιζε νέα ἐννεακαιδεκαετηρίς, πρὸς εὕρεσιν τοῦ χρυσοῦ ἀριθμοῦ ἔτους τινὸς μ. Χ., αὐξάνομεν τὸν ἀριθμὸν τοῦ ἔτους κατὰ μονάδα καὶ διαιροῦμεν τὸ ἄθροισμα διὰ τοῦ 19, τὸ δὲ ὑπόλοιπον εἶναι ὁ ζητούμενος· λ. χ. ὁ χρυσοῦς ἀριθμὸς τοῦ ἔτους 1931 εἶναι ὁ 13. Ὁ κύκλος διὰ τὸ Πάσχα ἔχει ἐμβόλιμα τὰ ἔτη 3, 5, 8, 11, 14, 16 καὶ 19, ἑπομένως ἡ τάξις τῶν ἐμβολίμων αὐτοῦ δὲν συμπίπτει πρὸς τὴν τῶν ἀρχαίων Ἀθηναίων, ἐκτὸς ἐὰν δεχθῶμεν ὡς ἔναρξιν ἐν Ἀθήναις τοῦ κύκλου ἐν τῷ πολιτικῷ ἡμερολογίῳ τὸ ἔτος 419)8 π. Χ. (βλ. *Κ. Μαλτέζου* ῥηθεῖσαν μελέτην).

Ὁ κύκλος τοῦ Μέτωνος ἐφηρμόσθη ἀπὸ τοῦ 330 μ. Χ. εἰς τὸ ἰσχῦον ἡμερολόγιον τῶν Ἑβραίων, εἰς ὃ τὰ ἐμβόλιμα ἔτη εἶναι, καθ' ἡμᾶς, ἀκριβῶς τὰ ἔτη τῆς πολιτικῆς ἐννεακαιδεκαετηρίδος τῶν ἀρχαίων Ἀθηναίων, ἤτοι τὰ 3, 6, 8, 11, 14, 17 καὶ 19. Ἀλλ' ὁ κύκλος οὗτος ἐχρησιμοποιεῖτο ὑπὸ τῶν Ἑβραίων καὶ πρότερον, ἀλλὰ διαφόρως πως καὶ κατὰ διάφορον τάξιν τῶν ἐμβολίμων, πρὸ ἢ συγχρόνως τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ Μέτωνος, ὡς ἐξάγεται ἔκ τινος ἀραμαϊκοῦ παπύρου χρονολογουμένου ἀπὸ τοῦ Ε' αἰῶνος π. Χ. (*Forbes*, History of Astronomy 1909). Ὑπὸ πολλῶν δὲ ἀσσυριολόγων θεωρεῖται ὅτι τὸν σεληνιακὸν τοῦτον κύκλον ἐγνώριζον οἱ Χαλδαῖοι, καὶ ὅτι ἐκ τῆς Βαβυλῶνος εἰσήχθη οὗτος εἰς τὴν Ἰουδαίαν. Πάντως ὅμως ὁ κύκλος τῆς σελήνης, ὡς ἐγνώσθη καὶ ἐφηρμόσθη τόσον ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἑλλάδι ὅσον καὶ ἐν τῇ χριστιανικῇ Ἐκκλησίᾳ, ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ Μέτωνος. Κ. ΜΑΛΤΕΖΟΣ

**μετωνυμία** (ἡ)· θέσις ὀνόματος ἀντὶ ἄλλου ὀνόματος, λεκτικὸς τρόπος, καθ' ὃν γίνεται χρῆσις λέξεως πρὸς εἰκονικὴν παράστασιν τῆς ἐκφραζομένης ἐννοίας: «πύλαι τῆς Πελοποννήσου» ἀντὶ «εἴσοδος τῆς Πελοποννήσου», «ἡ Αἴγινα εἶναι λήμη τοῦ Πειραιῶς», «ἡ Πελοπόννησος ὑπῆρξεν ἡ ἀκρόπολις τῆς ἑλληνικῆς ἐλευθερίας» ‖ μετωνυμία εἶναι καὶ ἡ χρῆσις τοῦ ὀνόματος τοῦ ποιητοῦ ἀντὶ τοῦ ποιήματος: «Ὅμηρος» ἀντὶ «ὁμηρικὰ ἔπη», «Πλάτων» ἀντὶ «πλατωνικοὶ διάλογοι»· ὁμοίως «Διόνυσος» ἀντὶ «οἶνος», «Ἥφαιστος» ἀντὶ «πῦρ», «Ποσειδῶν» ἀντὶ «θάλασσα» ‖ μετωνυμία γενικώτερον εἶναι καὶ ἡ *ὑπαλλαγὴ* (βλ. λ.).

**μετωνυμικός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μετωνυμίαν, ὁ τῆς μετωνυμίας: «μετωνυμικὴ χρῆσις» ἢ κατὰ μετωνυμίαν χρῆσις λέξεως. — Ἐπίρρ. **μετωνυμικῶς**.

**μετώπη** (ἡ)· βλ. *μετόπη*.

**Μετώπη** *[Μυθολ.]*. —1) Θυγάτηρ τοῦ ποταμοῦ Λάδωνος καὶ σύζυγος τοῦ Ἀσωποῦ, ἐξ οὗ ἐγέννησε δύο υἱούς, τὸν Ἰσμηνὸν καὶ τὸν Πελάγοντα, καὶ 20 θυγατέρας, ἐκ τῶν ὁποίων τὴν Αἴγιναν ἥρπασεν ὁ Ζεύς.

—2) Σύζυγος τοῦ Σαγγαρίου καὶ κατά τινας μήτηρ τῆς Ἑκάβης, δευτέρας συζύγου τοῦ Πριάμου. Α. Θ. Σ.

**Μετώπη** *[Γεωγρ.]*. Νησὶς τοῦ Σαρωνικοῦ, χθαμαλή, ἐπιμήκης (1 μίλλ. Δ.ΝΔ. πρὸς Α.ΒΑ.) καὶ στενή, μεταξὺ Ἀγκιστρίου καὶ Αἰγίνης (πλάτ. 37°43' 15'' Β., μήκ. 23°23' 00'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1517: Aegina and Methana). Ἑνώνουσά ποτε τὸ ἀκρωτήριον Ἅγιος Γεώργιος τοῦ Ἀγκιστρίου πρὸς τὸ Ἀώνη ἢ Παλιόπυργο; τῆς Αἰγίνης, ἐγένετο νῆσος λόγῳ καθιζήσεων, σχηματισθέντων ἀβαθοῦς πόρου (*Πόρος Ἀγκιστρίου*) πρὸς ΝΔ., ἐπικινδύνων ἀβαθῶν ὀλόγυρά της καὶ δὴ πρὸς ΒΑ. κατὰ τὴν πορείαν τῶν πλοίων καὶ βαθέος διαύλου (*Μετώπης δίαυλος*) πρὸς τὴν Αἴγιναν. Ὀνομάζεται παρά τινων *Πλατειά*, συνηθέστερον δὲ τὸ *Μετώπι*. Εἶναι κατάφυτος ἐξ ἀμπελώνων καὶ ἀνήκει εἰς τὴν ἐν Αἰγίνῃ μονὴν τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου.

—**Μετώπης δίαυλος** *[Γεωγρ.]*. Τὸ μεταξὺ Αἰγίνης καὶ Μετώπης ἀμφίγειον, τὸ γενικῶς ὑπὸ τῶν ἀτμοπλοίων τῆς ἀκτοπλοΐας Πειραιῶς—Ναυπλίου ἀκολουθούμενον. Ἔχον δυτικῶς τὰ ἀβαθῆ τῆς Μετώπης καὶ ἀνατολικῶς τὰ τῆς Ἀώνης, εἶναι ἐπικινδυνωδέστατον εἰς τοὺς μὴ γνωρίζοντας τοὺς κανόνας τοῦ διάπλου του, δηλαδή: ἡ ΒΑ. ἄκρα τῆς νησῖδος Ὑψηλὴ ἐν εὐθυγραμμίᾳ πρὸς τὴν κορυφὴν τῆς Γερανείας (ἀντιστ. ἀληθ. 322° καὶ ἀκρωτήριον Ἅγιος Σώζων τῆς Πέρδικας τῆς Αἰγίνης μόλις διανοιγόμενον ΒΑ. τῆς ἄκρας τῆς νήσου Μονῆς αἱ εὐθυγραμμίαι αὗται ὁδηγοῦν ἐν ἀσφαλείᾳ διὰ μέσου τῶν ἀβαθῶν ἐν ἡμέρᾳ, τὴν δὲ νύκτα ἀκολουθουμένου τοῦ ἐρυθροῦ τομέως τοῦ φάρου Μονῆς, οὗ ἡ ἐξαφάνισις τοῦ φωτὸς σημαίνει ἐπικίνδυνον πλεῦσιν πρὸς τὰ ἀβαθῆ τῆς Μετώπης, ἡ δὲ μεταβολὴ τοῦ φωτὸς εἰς πράσινον, τὸ αὐτὸ πρὸς τὰ ἀβαθῆ τῆς Αἰγίνης. Σ. Ε. Λ.

**μετωπηδόν**· ἐπίρρ., κατὰ μέτωπον: «ἔφοδος μετωπηδόν».

**μετωπικός**, —ά, —όν. Ὁ τὸ μέτωπον κατέχων ἢ ὁ ἐν συναφείᾳ πρὸς τὸ μέτωπον ἢ πρὸς τὸ μετωπιαῖον ὀστοῦν ὤν, ἢ ὁ ἐν τῇ περιοχῇ αὐτοῦ κείμενος. Ι. Π.

—**μετωπιαία ἀρτηρία** *[Ἀνατομ.]*. Κλάδος τελικὸς (ἀνιὼν ἀκρεμὼν) τῆς ὀφθαλμικῆς ἀρτηρίας, ὅστις ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμικοῦ κόγχου φέρεται εἰς τὸ μέτωπον καὶ διανέμεται εἰς τὸ δέρμα καὶ τοὺς μῦς αὐτοῦ. Ι. Π.

—**μετωπιαῖαι κυψέλαι** *[Ἀνατομ.]*. Αἱ εἰς τελείας κυψέλας συμπληρούμεναι ἡμικυψέλαι τοῦ λαβυρίνθου τοῦ ἠθμοειδοῦς ὀστοῦ (τοῦ κρανίου) ὑπὸ τοῦ ἔσω χείλους τῆς κογχικῆς μοίρας τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ. Ι. Π.

—**μετωπιαῖοι κόλποι** *[Ἀνατομ.]*. Κοιλότητες δύο, κείμεναι ἐν τῷ κάτω μέρει τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ, ἀντιστοιχοῦσαι δ' ἔξωθεν εἰς ὃ μέρος συμβάλλονται αἱ τρεῖς μοῖραι τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ. Ι. Π.

—**μετωπιαῖον νεῦρον** *[Ἀνατομ.]*. Ὁ παχύτερος τῶν τριῶν κλάδων τοῦ ὀφθαλμικοῦ νεύρου, ὅστις εἰσδυόμενος εἰς τὸν ὀφθαλμικὸν κόγχον φέρεται πρὸς τὰ πρόσω καὶ ἐν τῷ μέσῳ αὐτοῦ ἀποσχίζεται εἰς τρεῖς δευτερεύοντας κλάδους, τὸ *ὑπερκόγχιον νεῦρον*, διακλαδιζόμενον εἰς τὴν ἐπικράνιον ἀπονεύρωσιν, τὸ *ὑπερτροχίλιον*, νευροῦν τὸ ἄνω βλέφαρον, τὴν ῥίζαν τῆς ῥινὸς καὶ τὸ δέρμα τοῦ μεσοφρύου, καὶ τὸν *μετωπιαῖον κλάδον*. Ι. Π.

—**μετωπιαῖον ὀστοῦν** *[Ἀνατομ.]*. Ὀστοῦν πλατύ, μονοφυές, κείμενον ἐπὶ τοῦ προσθίου μέρους τοῦ κρανίου, ἐμφανίζον: τὴν *μετωπιαίαν μοῖραν*, ἀποτελοῦσαν τὸ πρόσθιον μέρος τοῦ θόλου τοῦ κρανίου, τὰς *κογχικὰς μοίρας*, ἀποτελούσας τὰς ὀροφὰς τῶν ὀφθαλμικῶν κογχῶν, καὶ τὴν *ῥινικήν*, ἀνὰ μέσον τῶν κογχικῶν.

*Μετωπιαία μοῖρα*. Τὸ ὀπίσθιον χεῖλος αὐτῆς σχηματίζει μετὰ τοῦ βρεγματικοῦ ὀστοῦ τὴν *στεφανιαίαν ῥαφήν*, τὸ δὲ πρόσθιον, *ὑπερκογχικὸν* καλούμενον, ἀπολήγει ἑκατέρωθεν εἰς τὰς ἔξω τὴν *ζυγωματικὴν ἀπόφυσιν*. Ἐκ τῶν δύο δ' ἐπιφανειῶν αὐτῆς ἡ μὲν ἔξω (ἐξωκράνιος) ἐμφανίζει πρὸς τὰ κάτω τὰ *ὑπερόφρυα τόξα*, ὧν ἀνὰ μέσον τὸ *μεσόφρυον* καὶ ἄνωθεν τοὺς *μετωπιαίους ὄγκους*. Ἡ δ' ἔσω (ἐνδοκράνιος) ἐπιφάνεια ἀντιστοιχεῖ εἰς τοὺς μετωπιαίους λοβοὺς τοῦ ἐγκεφάλου καὶ ἔχει ἐγκεφαλικὰ ἐντυπώματα καὶ ζυγώματα καὶ αὔλακας ἀγγειακάς, ἐν δὲ τῇ μέσῃ γραμμῇ τὴν *ὀβελιαίαν αὔλακα*, ἧς ἑκατέρωθεν τὰ *παχχιόνεια βοθρία*, ἀντιστοιχοῦντα εἰς τὰ ὁμώνυμα σωμάτια.

*Κογχικαὶ μοῖραι*. Αὗται, ἀποτελούμεναι ἐκ λεπτῶν ὀστείνων πετάλων, ὁριζοντίως κειμένων, χωρίζονται ἀπ' ἀλλήλων διὰ τῆς ἠθμοειδοῦς ἐντομῆς καὶ τὸ μὲν πρόσθιον χεῖλος αὐτῶν, τοξοειδὲς ὄν, ἀντιστοιχεῖ εἰς τὸ *ὑπερκόγχιον χεῖλος*, τὸ δ' ἔξω συντάσσεται μετὰ τῆς κογχικῆς ἀποφύσεως τοῦ ζυγωματικοῦ καὶ τῆς μείζονος καὶ ἐλάσσονος πτέρυγος τοῦ σφηνοειδοῦς ὀστοῦ, τὸ δὲ ἔσω μετὰ τοῦ τετρημένου πετάλου τοῦ ἠθμοειδοῦς. Ἡ ἄνω ἐπιφάνεια συνέχεται μετὰ τῆς ἔσω (ἐνδοκρανίου) ἐπιφανείας τῆς μετωπιαίας μοίρας καὶ φέρει ἐγκεφαλικὰ ἐντυπώματα καὶ ἐπάρματα ἐκ τοῦ μετωπιαίου λοβοῦ τοῦ ἐγκεφάλου· ἡ δὲ κάτω, ὑπόκοιλος οὖσα, βλέπει πρὸς τὸν κόγχον καὶ ἐμφανίζει πρὸς μὲν τὰ ἔξω τὸν *δακρυϊκὸν βόθρον*, πρὸς δὲ τὰ ἔσω τὸν *τροχιλιακὸν βόθρον*.

*Ῥινικὴ μοῖρα*. Αὕτη πρὸς τὰ κάτω προέχει εἰς τὴν *ῥινικὴν ἄκανθαν*, συντασσομένη ἔμπροσθεν

Digitized by Google

μὲν πρὸς τὰ ρινικὰ ὀστᾶ, ὄπισθεν δὲ πρὸς τὸ κάθετον πέταλον τοῦ ἠθμοειδοῦς. Ι. Π.

— **μετωπιαῖος λοβὸς** *[Ἀνατομ.]*. Εἷς ἐκ τῶν τεσσάρων λοβῶν ἑκατέρου ἡμισφαιρίου τοῦ ἐγκεφάλου, ὁ πρόσθιος, ὁ εἰς τὴν ἔσω ἐπιφάνειαν τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ προσκείμενος. Ι. Π.

— **μετωπιαῖος μῦς** *[Ἀνατομ.]*. Ἑκάτερος μετωπιαῖος μῦς, τετράπλευρος ὤν, ἐκφύεται ἐκ τοῦ δέρματος τῆς ὀφρύος καὶ τοῦ μεσοφρύου καὶ φερόμενος πρὸς τὰ ἄνω καταφύεται εἰς τὸ πρόσθιον χεῖλος τῆς ἐπικρανίου ἀπονευρώσεως, ἥτις παριστᾷ πλατὺν τένοντα, κοινὸν μετὰ τοῦ ἰνιακοῦ μυός. Ι. Π.

**μετωπικός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸ μέτωπον, ὁ τοῦ μετώπου: «μετωπικὸν ὀστοῦν», «ἄρθρωσις μετωπική».

— **μετωπικὰ πυρὰ** *[Τακτ.]*. Τὰ πυρὰ τὰ ἐκπεμπόμενα καθέτως περίπου πρὸς τὴν ἐχθρικὴν γραμμὴν μετώπου. Ν. Θ. Κ.

— **μετωπικὴ ἐπίθεσις** *[Στρατηγ.-Τακτ.]*· βλ. λ. *ἐπίθεσις*.

**μετωπικότης**, —ητος (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μετωπικοῦ: «νόμος τῆς μετωπικότητος» (βλ. κατ.).

— **μετωπικότητος νόμος**. Οὕτω καλεῖται ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς τέχνης ὁ πανάρχαιος ἐκεῖνος τῆς πλαστικῆς κανών, κατὰ τὸν ὁποῖον τὰ ἀγάλματα κατεσκευάζοντο μὲ αὐστηρὰν κατὰ μέτωπον παράστασιν, χωρὶς παρέκκλισιν πρὸς τὰ δεξιὰ ἢ ἀριστερά, καὶ μὲ τελείαν συμμετρίαν τῶν δύο πλευρῶν τοῦ σώματος, ἤτοι μὲ ἴσην διατομὴν τοῦ βάρους τοῦ σώματος ἐπὶ τῶν δύο ποδῶν. Τὰ κατὰ τὸν κανόνα τοῦτον ποιηθέντα ἀρχαῖα ἀγάλματα εἶναι αὐστηρῶς μετωπικά, ἀποφεύγουσι δηλαδὴ οἱανδήποτε στροφὴν τοῦ κορμοῦ καὶ τοῦ τραχήλου πρὸς τὰ πλάγια καὶ παρουσιάζουσι τὸ πρόσωπον, τὸ στῆθος καὶ τὸ ὑπόλοιπον σῶμα κατὰ μέτωπον, οὕτως ὥστε, διχοτομούμενα μὲ μίαν εὐθεῖαν ἐπιφάνειαν, δίδουσι δύο τελείως συμμετρικὰ ἡμίση. Ὁ νόμος οὗτος εἶναι τὸ χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τῶν ἀγαλμάτων τῆς τέχνης τῆς Αἰγύπτου, Χαλδαίας, Ἀσσυρίας καὶ ὅλων τῶν λαῶν τῆς Ἀσίας μέχρι τῆς κατακτήσεως τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου καὶ τῆς Ἑλλάδος καὶ Ἰταλίας μέχρι τοῦ 500 π. Χ. Κατὰ τὸν Δανὸν Julius Lange, ὅστις πρῶτος παρετήρησε καὶ καθώρισε τὰ κατὰ τὸν νόμον τοῦτον, οἱαδήποτε καὶ ἂν εἶναι ἡ παράστασις τοῦ ἀγάλματος (ὀρθίου ἢ κλίνοντος ἐμπρὸς ἢ ὀπίσω, ἢ καθημένου ἐπὶ ἕδρας ἢ κατὰ γῆς, ἢ ἐπὶ ἵππου, ἢ γονατιστοῦ, ἢ ἐξηπλωμένου μὲ τὴν ῥάχιν, ἢ τὴν κοιλίαν κτλ.) τὸ τέμνον ἐπίπεδον, τὸ ὁποῖον νοητῶς διερχόμενον διὰ τῆς κορυφῆς τῆς κεφαλῆς, τῆς ρινός, τῆς σπονδυλικῆς στήλης, τοῦ στέρνου, τοῦ ὀμφαλοῦ καὶ τῶν γεννητικῶν ὀργάνων, διχοτομεῖ τὸ σῶμα εἰς δύο συμμετρικὰ ἡμίση, μένει ἀμετάβλητον. Τὸ σῶμα δύναται νὰ κλίνῃ πρὸς τὰ ἐμπρὸς ἢ πρὸς τὰ ὀπίσω, ἀλλ' οὐδεμία προέρχεται ἐκ τούτου κάμψις ἢ πλαγία κλίσις εἴτε εἰς τὸν λαιμόν, εἴτε εἰς τὸ ὑπογάστριον. Τὸ ἄγαλμα δυνατὸν νὰ προβάλλῃ τὸν ἕνα πόδα περισσότερον τοῦ ἄλλου, νὰ γονατίζῃ μὲ τὸ ἕνα γόνυ κατὰ γῆς καὶ νὰ ἔχῃ τὸ ἄλλο ἀνυψωμένον, ἀλλ' ἡ τοιαύτη στάσις τῶν κνημῶν οὐδόλως μεταβάλλει τὴν κατεύθυνσιν τοῦ κορμοῦ καὶ τῆς κεφαλῆς. Τὸ τέμνον ἐπίπεδον μένει πάντοτε ἀμετάβλητον. Χιλιάδες εἶναι τὰ ἀγάλματα καὶ τὰ ἀγαλμάτια τῆς αἰγυπτιακῆς τέχνης, τὰ ὁποῖα εἶναι πεποιημένα ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νόμου τούτου τῆς μετωπικότητος. Ἐπηρεασθεῖσα ἐκ τῆς αἰγυπτιακῆς ταύτης τέχνης καὶ ἡ ἑλληνικὴ πλαστικὴ ἐφαρμόζει κατ' ἀρχὰς τὸν νόμον τοῦτον αὐστηρῶς, ὡς ἀποδεικνύουσι τὰ μαρμάρινα εἰδώλια τοῦ λεγομένου αἰγαίου πολιτισμοῦ καὶ κατόπιν οἱ δύο ἀρχαϊκῆς ἐποχῆς τύποι ἀγαλμάτων, μὲ τοὺς ὁποίους ἀρχίζει ἡ ἀληθὴς ἑλληνικὴ πλαστική, ἤτοι ὁ τοῦ καθημένου ἐπὶ ἕδρας ἀγάλματος καὶ ὁ λεγόμενος ἀρχαϊκὸς Ἀπόλλων. Εἰς τὸν νόμον τῆς μετωπικότητος ὑπάγονται καὶ οἱ δευτερεύοντες τύποι τῶν ξοάνων, ἤτοι τῶν ἀγαλμάτων τῶν θεῶν, ὡς καὶ οἱ τύποι τῶν ἀγαλμάτων τῶν ἀφιερωτῶν, οἵτινες παρίστανται προσφέροντες εἰς τὸν Θεὸν διὰ τῆς μιᾶς χειρὸς προσφορὰν ἢ ἀνάθημα, ἐνῷ διὰ τῆς ἑτέρας ἀνυψοῦσι τὸ κράσπεδον τοῦ μακροῦ κυματιστοῦ χιτῶνος. Μὲ τὸν νόμον τοῦτον εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον κατεσκευασμέναι καὶ αἱ κόραι τῆς Ἀκροπόλεως. Ἐν Ἑλλάδι, οὐχ ἧττον, παρατηρεῖται εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς παρέκκλισις ἀπὸ τοῦ κανόνος τούτου, ἰδίως εἰς τὰ μικρῶν διαστάσεων πλαστικὰ ἔργα, ἥτις κατακτᾷ ἔδαφος ἀπὸ τοῦ ΣΤ' π. Χ. αἰῶνος. Ἡ ἐμπνευσμένη ἑλληνικὴ τέχνη, τολμήσασα νὰ ἐξεικονίσῃ τὰς πλέον ζωηρὰς κινήσεις τῶν θεῶν καὶ τῶν ἡρώων τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας καὶ τῆς ἀλκίμου ζωῆς τῶν γυμναζομένων Ἑλλήνων, ἀπετίναξε τὸν τυραννικὸν τοῦτον νόμον τῆς μετωπικότητος. Τὸ ἀρχαιότερον ἄγαλμα τῆς τοιαύτης προσπαθείας εἶναι τὸ ἐν Ὀλυμπίᾳ εὑρεθὲν χάλκινον ἀγαλμάτιον τοῦ Κεραυνίου Διός. Ἡ κεφαλὴ εἶναι ἐστραμμένη πρὸς τὸν ἐχθρόν, τὸν ὁποῖον ἀπειλεῖ διὰ τοῦ κεραυνοῦ. Ἐν τῷ ἀγάλματι τούτῳ τὸ τέμνον ἐπίπεδον, διερχόμενον διὰ τοῦ στήθους μὲ τὴν κατὰ μέτωπον παράστασιν, φθάνει εἰς τὸ ἰνίον, μὴ χωρίζον, οὕτω, τὸ πρόσωπον εἰς δύο ἴσα μέρη. Ἡ ἑλληνικὴ τέχνη ὑπερεπήδησε τὸ ἐμπόδιον, πρὸ τοῦ ὁποίου ἐσταμάτησεν ἡ τέχνη τῶν παρὰ τὸν Νεῖλον καὶ τὸν Εὐφράτην λαῶν.

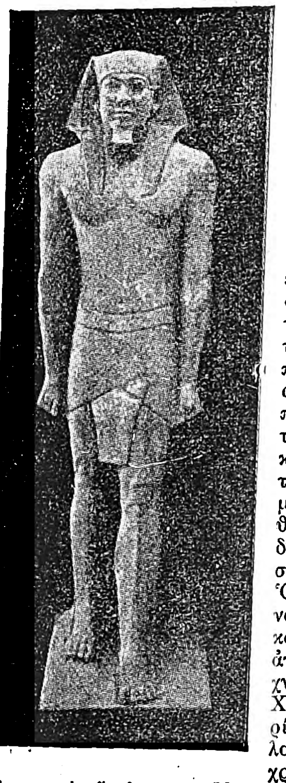

*Αἰγυπτιακὸν ἄγαλμα τοῦ Μυκερίνου, εὑρεθὲν ἐν Μέμφιδι τῆς Αἰγύπτου.*
[Μουσεῖον Νέας Ὑόρκης.]

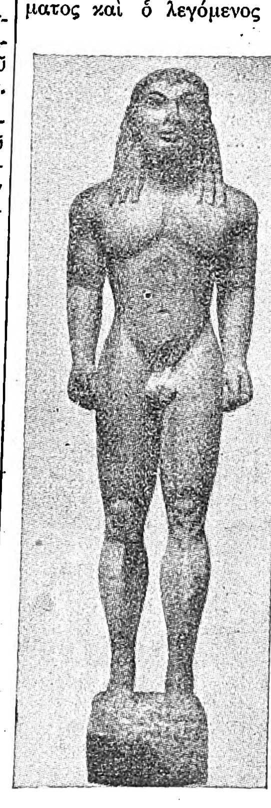

*Μαρμάρινον ἀρχαϊκὸν ἄγαλμα τοῦ ΣΤ' π. Χ. αἰῶνος, ποιηθὲν ὑπὸ Πολυμήδους τοῦ Ἀργείου.*
[Μουσεῖον Δελφῶν.]

*Χάλκινον ἀγαλμάτιον Κεραυνίου Διός, εὑρεθὲν ἐν Ὀλυμπίᾳ.*
[Ἐθνικὸν Ἀρχαιολογικὸν Μουσεῖον Ἀθηνῶν.]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Julius Lange*, Darstellung des Menschen in der älteren Griechischen Kunst.—*Lechat*, Une loi de la statuaire primitive. La loi sur la frontalité, ἐν Revue des universités du Midi (I, 1895 σελ. 1—23). Β. Δ. Θ.

**μετώπιον** (τὸ) *[Ἀνθρωπολ.]*. Ἀνθρωπομετρικὸν σημεῖον συμβατικόν. Εὑρίσκεται κατὰ τὸ σημεῖον διασταυρώσεως μιᾶς ἐνωτικῆς τῶν δύο μετωπικῶν ὄγκων γραμμῆς καὶ τοῦ μέσου ὀβελιαίου ἐπιπέδου. Χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν λῆψιν τοῦ μήκους τοῦ κρανίου, ὅταν δὲν ἔχωμεν τὸ σταθερώτερον ὑπερινίον. Ἐπίσης διὰ τὴν λῆψιν τῆς μετωπικῆς γωνίας κάμψεως. Ι. Γ. Κ.

— *μετώπιον ὀστοῦν*. Ὀνομάζομεν οὕτω τὸ ὑπὸ τῶν ξένων «os metopicum» καλούμενον σπάνιον ὀστάριον, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τοῦ *μετωπικοῦ* ἢ *μετωπιαίου ὀστοῦ* (os frontale). Πρόκειται περὶ ὀσταρίου κεχωρισμένου ἀπὸ τῶν πέριξ, ἐμφανιζομένου δὲ σπανιώτατα κατὰ τὸ μέσον τῆς μεσομετωπικῆς ῥαφῆς (βλ. *μετωπισμός*). Ι. Γ. Κ.

**μετώπιος** (ὁ) (Metopius) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τρυπανοφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἰχνευμονιδῶν*, περιλαμβάνον ἰχνεύμονας μικροῦ μεγέθους ἀπαντῶντας πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Εἴδη τινὰ ζῶσι παρασιτικῶς ἐπὶ ἑτέρων ἐντόμων. Δ. Ν. Π.

**μετωπισμὸς** (ὁ) *[Ἀνθρωπολ.]*. Καλεῖται ἡ διφυὴς ἐμφάνισις τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ καὶ παρὰ τῷ τετελειωμένῳ ἀνθρώπῳ. Ἡ διατήρησις δηλαδὴ πέραν τῆς ἐμβρυϊκῆς ἡλικίας καὶ τὸ πολὺ πέραν τοῦ 2ου ἔτους τῆς φυσιολογικῶς συγκλειούσης *(μεσο)μετωπικῆς ῥαφῆς*, μεταξὺ τῶν ἐκ δύο πυρήνων ὀστεώσεως σχηματιζομένων ἡμιμορίων τοῦ μετωπιαίου, ἀποτελεῖ ἀνώμαλον τύπον τῶν κρανίων (*σταυρωτὰ κρανία*). Καὶ ἐμφανίζεται μὲν ἡ διατήρησις τῆς μετωπικῆς ῥαφῆς ἐπὶ παθολογικῶς καὶ πρωΐμως ὑπὲρ τὰ φυσιολογικὰ ὅρια διογκωθέντων κρανίων συνεπείᾳ ὑδροκεφαλίας, ἢ ἐπὶ ῥαχιτικῶν ἀτόμων *(παθολογικὸς μετωπισμός)*, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ ὅλως φυσιολογικῶν κρανίων, ἕνεκα λόγων μὴ διευκρινηθέντων ἀκόμη τελείως *(φυσιολογικὸς μετωπισμός)*. Συνήθως εὑρίσκομεν ἐπὶ φυσιολογικῶν κρανίων ὑπολείμματα τῆς ῥαφῆς κατὰ τὸ μεσόφρυον, ἄλλοτε εἰς ἄλλην ἔκτασιν, ὑπὸ ποικίλας μορφάς, πολυπλόκους ἐνίοτε, ὡς «*ὑπερρινικὸν τρίγωνον*». Σπανιώτερον ἐμφανίζεται ὁ *ἀληθὴς μετωπισμός*, ἡ ῥαφὴ δηλαδὴ ἀπὸ τοῦ βρέγματος μέχρι τοῦ μεσοφρύου.

Ὁ μετωπισμὸς ἐμφανίζει καὶ ποικιλίας. Ἄλλοτε μὲν ἡ ῥαφὴ συναντᾷ τὴν ὀβελιαίαν ἀκριβῶς (caput cruciatum), ἄλλοτε δὲ παρεκκλίνει δεξιὰ ἢ ἀριστερά. Ἡ πρώτη εἶναι σπανιωτέρα τῶν ἄλλων. Ἐπὶ ἑλληνικῶν κρανίων ἔχομεν 22,41% σταυρωτῶν κρανίων (Κούμαρης). Ἐκ τῶν παρεκκλίσεων συχνοτάτη εἶναι ἡ πρὸς τὰ δεξιά. Εἰς τὰς πλείστας τῶν περιπτώσεων μετωπισμοῦ παρατηροῦνται καὶ ἄλλαι σχετικαὶ ἀνωμαλίαι τοῦ κρανίου, ἐμφάνισις πλειόνων ἢ συνήθως βορμιανῶν ὀσταρίων κλπ. Πλὴν ὅμως τῆς διατηρήσεως τῆς μετωπικῆς ῥαφῆς παρατηρεῖται, ἔτι σπανιώτερον, διατήρησις καὶ ἐπὶ τοῦ ἐνήλικος τῆς ἐπὶ τοῦ ἐμβρύου παρατηρουμένης, κατὰ τὸ μέσον τοῦ κάτω τριτημορίου τῆς ῥαφῆς, *μεσομετωπικῆς πηγῆς* ἢ καὶ μόνον ἀστεροειδῶν ὑπολειμμάτων της, δίκην κακώσεως, ἢ τέλος καὶ ἰδίου ἐμβολίμου ὀσταρίου, κεχωρισμένου κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, ἐν αὐτῇ τῇ πηγῇ, καλουμένου *μετωπίου ὀστοῦ* (βλ. λ.), καὶ ἄλλου, τοῦ *βρεγματίου*, ἐν τῇ μετωπικῇ πηγῇ. Τέλος, ἀντὶ ῥαφῆς, ἔχομεν ἐνίοτε τροπιδοειδὲς ἔπαρμα (*ὀβελιαῖος ὄγκος τοῦ μετωπικοῦ*).

Ἡ αἰτιολογία τῆς διατηρήσεως ἐπὶ φυσιολογικῶν, ὡς ἐμφανίζονται, κρανίων διφυοῦς τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ τοῦ ἀνθρώπου, δὲν εἶναι σαφής. Ἐκ τῆς συχνοτέρας ὅμως ἐμφανίσεως τοῦ μετωπισμοῦ μεταξὺ τῶν μᾶλλον προηγμένων εἰς τὸν πολιτισμὸν φυλῶν, ἐκ τῆς μείζονος (κατά τινας) συχνότητος αὐτοῦ ἐπὶ τῶν βραχυκεφάλων καὶ ἀσφαλῶς ἐπὶ τῶν εὐρυμετώπων (79% κατὰ Κούμαρην), τῆς σπανιότητος ἐπὶ τῶν γυναικῶν, τῆς ἀπουσίας μετωπισμοῦ ἐπὶ νανοκεφάλων καὶ ἀνόων, τῆς ἐμφανίσεως διφυοῦς μετωπιαίου ὀστοῦ ἐπὶ κατωτέρων ζῴων, ἐφ' ὧν ἔχομεν μεγάλην ἀνάπτυξιν τῶν ὀσφρητικῶν λοβῶν τοῦ ἐγκεφάλου, ἐκ τῆς ἐμφανίσεως τοῦ μετωπισμοῦ, ὡς ἀνωμαλίας μόνον, καὶ ἐπὶ τῶν πιθήκων καὶ ἀνθρωποειδῶν πιθήκων κλπ., συνάγεται ὅτι ἡ μὴ σύγκλεισις τῆς ῥαφῆς ὀφείλεται εἰς τὴν ἐσωτερικὴν πίεσιν, ἥτις εἶναι ηὐξημένη καὶ δὴ εἰς τὴν ἀνάπτυξιν ἐπὶ τοῦ ἀνθρώπου τῶν μετωπικῶν λοβῶν τοῦ ἐγκεφάλου, ἐξ ἧς προέρχεται καὶ ἡ ἀνάπτυξις τῶν διαμέτρων πλάτους κυρίως τοῦ μετωπικοῦ, καὶ ἡ παρεμπόδισις προσεγγίσεως. Παριστᾷ ἑπομένως ὁ μετωπισμὸς οὐχὶ ἀταβιστικὸν φαινόμενον, σχετικὸν πρὸς τὸν μετωπισμὸν κατωτέρων θηλαστικῶν, ἀλλὰ προοδευτικόν, συνεπείᾳ νέου παράγοντος, τῆς ἀναπτύξεως τοῦ μετωπικοῦ ἐγκεφάλου ἐπὶ τῶν πρωτευόντων. Τὸ κρανίον καθίσταται μικρὸν διὰ τὸν προορισμόν του (Ledouble).

Φυλετικῶς εὑρίσκομεν ὁπωσδήποτε διαφοράς, ὡς πρὸς τὴν ἐμφάνισιν τοῦ μετωπισμοῦ. Συχνότερον ἀπαντᾷ ἐπὶ τῶν προηγμένων λαῶν, τῶν Εὐρωπαίων (μέχρι καὶ 12%) καὶ τῶν ἀποίκων Ἀμερικανῶν κλπ., εἶτα τῶν Μογγόλων (5% περίπου) τῶν κατωτέρων, Παπούων, Μαλαίων, Ἀμερικανοϊνδῶν, Νέγρων κλπ. (μέχρι καὶ 0%). Ἐπὶ τῶν ἑλληνικῶν κρανίων (συμπεριλαμβανομένων τῶν ἀρχαίων ἐποχῶν) παρατηρεῖται μετωπισμὸς 10,4%. Ἰδιαιτέρως σημειοῦμεν τὴν σχετικὴν σπάνιν ἐπὶ τῶν προϊστορικῶν ἑλληνικῶν κρανίων (Κούμαρης οὐδὲν ἐπὶ 40 περίπου, Fürst τρὶς ἐπὶ 30 περίπου). Ι. Γ. Κ.

**μετωπομαντεία**· βλ. *μετωποσκοπία*.

Digitized by Google

**μέτωπον** (τό)· τὸ ὑπεράνω τῶν ὀφρύων μέρος τοῦ προσώπου: «μέτωπον εὐρύ, —στενόν, —ρυτιδωμένον»· || φρ. «ἔχει τὸ μέτωπόν του λευκόν, — ἀκηλίδωτον» ἐπὶ ἐντίμου καὶ ἀνεπιλήπτου ἀνθρώπου· καὶ τοὐναντίον: «φέρει ἐπὶ τοῦ μετώπου του τὸ στίγμα τῆς προδοσίας, — τῆς κακουργίας»· || μεταφ., ἡ πρόσοψις οἰκοδομήματος, ἄλλως *πρόσωπον*· || ἡ γραμμὴ στρατιωτικῆς παρατάξεως ἀπὸ τοῦ ἑνὸς κέρατος μέχρι τοῦ ἄλλου· || ὁ τόπος, αἱ θέσεις τὰς ὁποίας κατέχει τις ἐν ἐμπολέμῳ καταστάσει: «ὁ στρατὸς μεταβαίνει εἰς τὸ μέτωπον»· || στρατ. καὶ γυμναστ. παράγγελμα: «μέτωπον δεξιά, — ἀριστερά», τὸ ὁποῖον ἐκτελεῖται διὰ στροφῆς πρὸς τὰ δεξιά, πρὸς τὰ ἀριστερά.

— *[᾽Ανατομ.] Μέτωπον* καλεῖται τὸ μέρος τοῦ προσώπου τὸ ἐκτεινόμενον ἀπὸ τῆς προσθίας περιοχῆς τοῦ τριχωτοῦ τῆς κεφαλῆς μέχρι τῶν ὀφρύων καὶ ἀπὸ τοῦ ἑνὸς κροτάφου μέχρι τοῦ ἄλλου. Ι.Π.

— *[Στρατηγ.—Τακτ.] Μέτωπον* καλεῖται ἡ κατὰ πλάτος κατεχομένη ἔκτασις ὑπὸ στρατεύματός τινος, ἐν οἱαδήποτε καταστάσει εὑρισκομένου, εἴτε ἐν τῇ σφαίρᾳ τῆς στρατηγικῆς εἴτε τῆς τακτικῆς, λογιζομένη εἰς ἀριθμὸν μέτρων. Αὐτονόητον καθίσταται ὅτι τὸ μέτωπον στρατεύματός τινος δὲν εἶναι ἄλλο τι εἰμὴ τὸ ἄθροισμα τῶν μετώπων τῶν ἀποτελουσῶν τὸ στράτευμα τοῦτο μονάδων, σὺν τοῖς μεταξὺ αὐτῶν διακένοις· ὡς ἐκ τούτου, ἐκεῖνο ὅπερ χρήζει ἐξετάσεως εἶναι τὸ μέτωπον ἑκάστης μονάδος. Τοῦτο δὲν εἶναι πάντοτε τὸ αὐτό, διότι ἐξαρτᾶται κατὰ πρῶτον λόγον ἐκ τῆς λαμβανομένης διατάξεως καὶ τοῦ σχηματισμοῦ, καὶ κατὰ δεύτερον λόγον ἐκ τοῦ ἐδάφους· π.χ. ἐφ᾽ ὅσον μονάς τις ἔχει πλείονας ὑποδεεστέρας τοιαύτας ἐν πρώτῃ γραμμῇ, εἶναι φυσικὸν τὸ πλάτος αὐτῆς νὰ εἶναι μέγα, ἐνῷ, τοὐναντίον, ἐφ᾽ ὅσον ἡ ἰδία μονὰς ἔχει τὰς ὑποδεεστέρας μονάδας τεταγμένας κατὰ βάθος, τὸ πλάτος εἶναι πολὺ μικρότερον, ὡς ἐπίσης μικρά τις μονὰς ἐν παρατάξει ἔχει μεγαλύτερον πλάτος τῆς ἐν φάλαγγι.

*Σταθμεύσεις καὶ πορεῖαι.* Προκειμένου περὶ τῶν σταθμεύσεων καὶ τῶν μακρὰν τοῦ ἐχθροῦ πορειῶν (ἐκτὸς τοῦ τακτικοῦ πεδίου) ὁ καθορισμὸς τοῦ μετώπου κανονίζεται ἀποκλειστικῶς καὶ μόνον ἐκ τοῦ ἀπαιτουμένου χώρου πρὸς ἄνετον στάθμευσιν καὶ πορείαν ἢ ἐπαρκῆ διατροφὴν ἐκ τῶν ἐπιτοπίων πόρων· συνεπῶς τὸ μέτωπον μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς μονάδος δυνατὸν νὰ κυμαίνηται ἐντὸς ὁρίων ἀφισταμένων κατὰ πολύ· π.χ. μεραρχία τις δυνατὸν νὰ ἔχῃ μέτωπον κυμαινόμενον ἀπὸ 5 μέχρι 10 ἕως 15 χιλιομέτρων, ὑπὸ τὸν ἀπαραίτητον ὅρον τῆς ὁλονὲν σμικρύνσεώς του ἐφ᾽ ὅσον ἡ μεραρχία πλησιάζει νὰ εἰσέλθῃ ἐντὸς τοῦ τακτικοῦ πεδίου. Εἰς τὰς περιπτώσεις ὅμως ταύτας ἡ ὑφ᾽ ἑκάστης μονάδος καταλαμβανομένη ἐδαφικὴ ἔκτασις δὲν καλεῖται *μέτωπον, ἀλλὰ ζώνη σταθμεύσεως,* ἢ *πορείας,* ἢ *ἐκμεταλλεύσεως* (βλ. λ. *ζώνη*).

*Μάχη.* Προκειμένου περὶ μάχης ἐν τῇ σφαίρᾳ τῆς τακτικῆς, ἡ καταλαμβανομένη κατὰ πλάτος ἔκτασις καλεῖται εἰδικῶς *μέτωπον.* Τοῦτο πρέπει νὰ εἶναι ἐκτάσεως ἀναλόγου, εἰς τρόπον ὥστε νὰ δύναται ἡ μονὰς νὰ ἐκτελῇ τὴν ἀποστολήν της. Ὡς ἐκ τούτου, τὸ μαχητικὸν μέτωπον καθορίζεται κατὰ πρῶτον ἐκ τῆς ἀποστολῆς τῆς σχετικῆς μονάδος (ἑλιγμὸς ἢ δευτερεύουσα ἐπίθεσις), καὶ κατὰ δεύτερον λόγον ἐκ τοῦ ἐδάφους, λαμβανομένου ὑπ᾽ ὄψιν ὅτι, ἐφ᾽ ὅσον τὸ ἔδαφος εἶναι μᾶλλον ἀναπεπταμένον, ἐπὶ τοσοῦτον τὸ πλάτος δυνατὸν νὰ εἶναι μεῖζον, ἐφ᾽ ὅσον δὲ εἶναι διακεκομμένον, ὀρεινὸν καὶ δύσκολον, ἐπὶ τοσοῦτον τὸ πλάτος πρέπει νὰ εἶναι ἔλασσον, διότι τὰ διάκενα πρέπει νὰ εἶναι πολὺ μικρά, καθ᾽ ὅσον ἡ πλαγιοφύλαξίς των δυσκολεύεται μεγάλως· τὰ διάκενα κανονίζονται κατὰ τρόπον, ὥστε νὰ ὑπάρχῃ πάντοτε συνέχεια πυρὸς καὶ ἐντὸς αὐτῶν, ἂν μὴ διὰ πυρὸς πεζικοῦ, πάντως ὅμως διὰ πυρὸς πυροβολικοῦ ἢ ἀεροπλοΐας (βλ. λ. *πυρά*). Κατὰ τὰς παλαιὰς ἐποχάς, διάκενα ἐν τοῖς μαχητικοῖς μετώποις δὲν ὑπῆρχον (ἐποχὴ *γραμμικῆς τακτικῆς* τοῦ Φρειδερίκου)· ἐν τοῖς μετέπειτα χρόνοις (ἐποχὴ τῆς *καθέτου τακτικῆς* τοῦ Ναπολέοντος) τὰ διάκενα ἦσαν πολὺ μικρὰ λόγῳ τοῦ μικροῦ βεληνεκοῦς τοῦ τότε ὁπλισμοῦ· ἀπὸ τῆς εἰσαγωγῆς ὅμως τῆς νεωτέρας γραμμικῆς τακτικῆς (τῆς *ἀκροβολιστικῆς* τοῦ 1866 καὶ 1870) τὰ διάκενα ἤρχισαν εὐρυνόμενα, λόγῳ τῆς ἐπελθούσης αὐξήσεως τοῦ βεληνικοῦς τοῦ τότε νέου ὁπλισμοῦ (αὐλακωτοῦ καὶ ὀπισθογεμοῦς). Ὡς ἀνωτέρω ἐλέχθη, τὸ μαχητικὸν μέτωπον μονάδος τινὸς κανονίζεται, κατὰ πρῶτον λόγον, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νὰ δύναται ἡ μονὰς αὕτη νὰ ἐκπληροῖ τὴν ἀποστολήν της.

Πρὸς τοῦτο πρέπει ἑκάστη μικρὰ μονὰς νὰ παρέχῃ τ᾽ ἀπαιτούμενα πυρά, δηλαδὴ ἡ γραμμὴ πυρὸς (ἄλυσις ἀκροβολιστῶν) τῶν παλαιοτέρων ἐποχῶν νὰ εἶχεν ἀρκετὴν πυκνότητα, ὡς ἀνωτέρου ὁρίου πυκνότητος θεωρουμένου περὶ τὸ 1885 τοῦ τῶν δύο ἀκροβολιστῶν κατὰ τρέχον μέτρον τῆς ἁλύσεως, ἀπὸ τοῦ 1904 καὶ ἐντεῦθεν τοῦ ἑνὸς ἀκροβολιστοῦ κατὰ δύο ἢ τρία τρέχοντα μέτρα τῆς ἁλύσεως· τὸ σημερινὸν κλιμάκιον πυρὸς πρέπει νὰ ἔχῃ συνήθως πυκνότητα ἑνὸς αὐτομάτου ὅπλου ἀνὰ 50 μέτρα μετώπου (τὸ αὐτόματον ὅπλον εἶναι ὁ βασικὸς ὁπλισμὸς τοῦ συγχρόνου πεζικοῦ), ὑπὸ τὸν ἀπαραίτητον ὅμως ὅρον νὰ καθίσταται δυνατὴ ἡ βολὴ διὰ διασταυρωτῶν πυρῶν ὁλοκλήρου τοῦ μεταξὺ δύο παραπλεύρων αὐτομάτων ὅπλων διαστήματος, εἰς τρόπον ὥστε νὰ παρέχηται πλήρης ἡ συνέχεια πυρός, πρὸς δὲ νὰ θεῶνται ἀμοιβαίως τὰ παράπλευρα αὐτόματα ὅπλα· ἐκ τῶν ἀπαιτήσεων τούτων προκύπτει ὅτι ἡ πυκνότης τῶν αὐτομάτων ὅπλων δυνατὸν νὰ εἶναι μείζων ἢ ἐλάσσων (Ἑλλ. καν. πεζ. 1924 § 220. Γαλλ. καν. πεζ. 1929 § 507). Σαφῶς καταφαίνεται ὅτι, ἐφ᾽ ὅσον τὸ μέτωπον ἑκάστης μονάδος εἶναι μικρότερον, ἐπὶ τοσοῦτον τὸ βάθος αὐτῆς εἶναι μεῖζον καὶ συνεπῶς ἐπιτυγχάνεται καλύτερον ἡ *κλιμάκωσις* καὶ ἡ καλυτέρα ἐφαρμογὴ τῆς ἀρχῆς τῆς *οἰκονομίας* τῶν δυνάμεων (βλ. λ.)· ἐφ᾽ ὅσον δ᾽ εἶναι μεῖζον, ἐπὶ τοσοῦτον μειοῦται ἡ κλιμάκωσις, ἑπομένως δυσχεραίνεται ἡ τήρησις τῆς ἀρχῆς τῆς οἰκονομίας τῶν δυνάμεων, μέχρι τοῦ σημείου ὥστε, ἐὰν τὸ μέτωπον εἶναι πολὺ μέγα, ὥστε διὰ τὴν ὀργάνωσιν τοῦ δικτύου πυρὸς ν᾽ ἀπαιτῆται ἡ χρησιμοποίησις ἁπάντων τῶν αὐτομάτων ὅπλων τῆς μονάδος, τότε οὐδ᾽ ἐπ᾽ ἐλάχιστον δύναται νὰ ἐκτελεσθῇ κλιμάκωσις οὐδ᾽ ἐφαρμογὴ τῆς ἀρχῆς τῆς οἰκονομίας τῶν δυνάμεων. Ἕνεκα τῶν λόγων τούτων, εἰς ἑκάστην μονάδα ἀναλογεῖ ὡρισμένον ὅριον μαχητικοῦ μετώπου, μὴ δυνάμενον νὰ ὑπερβληθῇ ἄνευ δυσαρέστων συνεπειῶν. Τὰ δι᾽ ἑκάστην μονάδα μαχητικὰ μέτωπα εἶναι περίπου τὰ ἑξῆς: τοῦ λόχου περὶ τὰ 250—300 μέτρα (δύο διμοιρίαι εἰς κλιμάκιον πυρός, συνεπῶς 6 αὐτόματα ὅπλα $\times 50 = 300$ μέτρα), τοῦ τάγματος περὶ τὰ 700—900 μέτρα, συντάγματος πεζικοῦ περὶ τὰ 1400—1500 μέτρα, μεραρχίας περὶ τὰ 3—4 χιλιόμετρα, σώματος στρατοῦ περὶ τὰ 8—10 χιλιόμετρα. Οἴκοθεν νοεῖται ὅτι ἐφ᾽ ὅσον πρόκειται περὶ δράσεως ἐναντίον ἰσχυρῶς ὠργανωμένων ἐχθρικῶν τοποθεσιῶν, τὰ ὅρια ταῦτα πρέπει νὰ ἐλαττῶνται, ἐνῷ προκειμένου περὶ ἀγῶνος ἐπὶ ἀνοικτοῦ πεδίου δυνατὸν ν᾽ αὐξάνωνται κατά τι, ἰδίως ὅταν τὸ ἔδαφος εἶναι ὁμαλὸν καὶ ἀναπεπταμένον. Προκειμένου περὶ πεζῇ ἱππικοῦ, τ᾽ ἀναλογοῦντα εἰς ἑκάστην μονάδα μέτωπα λογιστέα: τῆς μὲν ἐπιλαρχίας πρὸς λόχον πεζικοῦ, τοῦ συντάγματος ἱππικοῦ πρὸς τάγμα, τῆς δὲ ταξιαρχίας ἱππικοῦ πρὸς σύνταγμα πεζικοῦ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπῆρξαν περιστάσεις, καθ᾽ ἃς ἐδόθησαν μέτωπα ἐξαιρετικῶς μικρά, π. χ. εἰς ὁλόκληρον στρατιὰν μέτωπον 20 χιλιομέτρων, ὡς εἶχεν εἰς τὴν μάχην τοῦ ποταμοῦ Λὺ (9 Ἀπριλίου 1918) ἡ 6η γερμανικὴ στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ φὸν Κουάστ (Quast)· εἰς σῶμα στρατοῦ μέτωπον 5 χιλιομέτρων, ὡς εἶχεν εἰς τὴν μάχην τοῦ χωρίου Μεσσὶν (7 Ἰουνίου 1918) ἕκαστον σῶμα στρατοῦ τῆς 2ας ἀγγλικῆς στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Πλῶμερ· εἰς μεραρχίαν μέτωπον 1200 μόνον μέτρων, ὡς εἶχεν εἰς τὴν μάχην τοῦ ποταμοῦ Μὰτς (9 Ἰουνίου 1918) ἑκάστη μεραρχία τῆς 18ης γερμανικῆς στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ φὸν Hutier, κτλ. Τὰ περιστατικὰ ὅμως ταῦτα δὲν πρέπει νὰ λαμβάνωνται ὡς γνώμων, ἰδίως ὑπὸ τῶν μικρῶν στρατῶν, ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν διότι αἱ ἀμυντικαὶ ὀργανώσεις τοῦ πολέμου ἐκείνου ἦσαν πρωτοφανεῖς, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ διότι ὑπῆρχεν ἀριθμητικὴ ἐπάρκεια μαχητῶν, ἡ ὁποία εἶναι ἀμφίβολον ἂν θὰ παρουσιασθῇ ἐν μελλοντικοῖς πολέμοις, ἰδίως μεταξὺ μικρῶν κρατῶν· διὰ τούτου ὅμως δὲν ἐννοοῦμεν ὅτι πρέπει νὰ γίνεται μετάπτωσις εἰς τὸ ἀντίθετον ἄκρον, δηλαδὴ τῆς ὑπερμέτρου ἀναπτύξεως τῶν μετώπων, ὡς π. χ. συνέβη παρ᾽ ἡμῖν κατὰ τὴν Μικρασιατικὴν ἐκστρατείαν (1919—1922), καθ᾽ ἣν τὰ μέτωπα τῶν διαφόρων μονάδων ὑπερέβαινον πᾶν λογικὸν ὅριον, εἰς τρόπον ὥστε παρέστη ἀνάγκη προσφυγῆς εἰς ἰδίας πρωτοτύπους μεθόδους, αἵτινες ἀλλαχοῦ μὲν ἀπέληξαν ἐπιτυχῶς, ἀλλαχοῦ δὲ ἀπέτυχον. Πρέπει δὲ νὰ ληφθῇ σοβαρῶς ὑπ᾽ ὄψει ὅτι τὰ ἐδάφη τῆς Βαλκανικῆς καὶ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας εἶναι πολὺ δύσκολα, καὶ συνεπῶς τὸ ζήτημα τῶν ἀπυροβλήτων χώρων (ἀδυναμία συνεχείας πυρὸς ἐν περιπτώσει λίαν ἐκτεταμένων μετώπων) εἶναι ὑψίστης σημασίας.

Σχετικῶς πρὸς τὸ ζήτημα τῆς ἐκτάσεως τοῦ μετώπου, δὲν πρέπει νὰ γίνεται σύγχυσις μεταξὺ τοῦ πλάτους τοῦ θεάτρου πολέμου ἢ τοῦ τακτικοῦ πεδίου, ἐφ᾽ οὗ διεξάγονται αἱ στρατηγικαὶ ἢ τακτικαὶ ἐπιχειρήσεις, καὶ τοῦ ὑπὸ τῶν διαφόρων μονάδων καταλαμβανομένου μετώπου· λέγομεν δὲ τοῦτο, διότι κρατεῖ παρά τισιν ἡ πεπλανημένη ἀντίληψις ὅτι πρέπει ὁπωσδήποτε νὰ καταλαμβάνεται ὁλόκληρον τὸ πλάτος τοῦ θεάτρου ἢ τοῦ πεδίου, ἔστω καὶ μὲ πλήρη διακοπὴν τῆς συνεχείας τοῦ πυρός. Ὁσάκις πρόκειται περὶ ἀγῶνος διαφαινομένου ὡς μακροχρονίου καὶ ἐπιμόνου, ὡς συμβαίνει κατὰ τὴν δρᾶσιν ἐναντίον θέσεων ἰσχυρῶς ὠργανωμένων (ἀλλεπαλλήλων διαδοχικῶν τοποθεσιῶν), πρέπει νὰ λαμβάνηται σοβαρῶς ὑπ᾽ ὄψιν καὶ ἡ *ἀντοχὴ* (βλ. λ.) ἑκάστης μονάδος. Προκειμένου λοιπὸν περὶ δράσεως ἐμμόνου καὶ παρατεταμένης, ἐπιβάλλεται μικρὸν μέτωπον, προκειμένου δὲ περὶ δράσεως ἀποτόμου καὶ ἰσχυρᾶς ἀλλὰ μικρᾶς διαρκείας δυνατὸν τὸ μέτωπον νὰ εἶναι μεῖζον. Ἡ λῆψις μικροῦ ἢ μεγάλου μαχητικοῦ μετώπου ἀπόκειται εἰς τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ διοικητοῦ τῆς ἀνωτέρας μονάδος, ὅστις ὀφείλει νὰ κρίνῃ καὶ καθορίσῃ τὸ καταληπτέον ὑφ᾽ ἑκάστης ὑποδεεστέρας μονάδος μέτωπον, τοῦ διοικητοῦ αὐτῆς ὀφείλοντος νὰ λάβῃ τὰς καταλλήλους διατάξεις ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁρισθέντος αὐτῷ μετώπου.

*Γραμμὴ μετώπου.* Ἐπειδὴ διὰ τοῦ ὅρου *μέτωπον* νοεῖται τὸ πλάτος τῆς κατεχομένης ἐκτάσεως, διὰ τοῦτο, πρὸς ἀκριβῆ καθορισμὸν τῶν θέσεων τῶν μᾶλλον προκεχωρημένων στρατευμάτων, εἴτε ἐν στάσει, εἴτε ἐν κινήσει, γίνεται χρῆσις τοῦ ὅρου *γραμμὴ μετώπου*· ἐν τῇ συνήθει ὅμως ἐκφράσει ἢ ἐν λόγῳ ἔννοια ἀποδίδεται συνήθως διὰ τοῦ ἁπλοῦ ὅρου μέτωπον (βλ. λ. *γραμμή*).

*Μέτωπον ἐπιχειρήσεων.* Διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (1914 — 1918), ἐχρησιμοποιήθη ἀστόχως ὁ ὅρος *μέτωπον* προκειμένου περὶ καθορισμοῦ τοῦ ἐδαφικοῦ χώρου, ἐφ᾽ οὗ διεξάγονται αἱ ἐπιχειρήσεις ἐν τῇ σφαίρᾳ τῆς στρατηγικῆς. Ἐχρησιμοποιήθη δὲ τότε ὁ ὅρος οὗτος, διότι, λόγῳ τῆς ἐπὶ τριετίαν στασιμότητος, αἱ ἐπιχειρήσεις δὲν διεξήγοντο ἐπὶ μεγάλου βάθους, ὡς συμβαίνει προκειμένου περὶ ἀγῶνος ἐπὶ ἀνοικτοῦ πεδίου, ἀλλ᾽ ἐπὶ μεγάλου μήκους τοῦ κατεχομένου ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων σταθεροποιημένου μετώπου. Καὶ ὑπὸ τὴν ἔποψιν ταύτην, ἴσως ὁ ὅρος οὗτος νὰ μὴ εἶναι ἀκατάλληλος. Ἀλλ᾽ ἐνῷ τὸ εἶδος τοῦτο τοῦ πολέμου πᾶν ἄλλο εἶναι ἢ τὸ σύνηθες, ἐν τούτοις ὁ ὅρος μέτωπον ἐπεκράτησεν ἔκτοτε νὰ χρησιμοποιῆται καὶ ἐν τῇ ἐκφράσει τοῦ χώρου, ἐφ᾽ οὗ ἐκτυλίσσονται αἱ ἐπὶ ἀνοικτοῦ πεδίου ἐπιχειρήσεις. Ἐπειδὴ ὅμως διὰ τοῦ ὅρου τούτου ὑπονοεῖται μόνον τὸ πλάτος ἐδαφικῆς ἐκτάσεως, οὐχὶ δὲ καὶ τὸ βάθος αὐτῆς, ἐπιβάλλεται, πρὸς δήλωσιν ἀμφοτέρων τῶν ἐννοιῶν, νὰ ἐξακολουθήσωσι χρησιμοποιούμενοι οἱ ὅροι τῆς προπολεμικῆς στρατιωτικῆς φρασιολογίας, *θέατρον πολέμου, θέατρον ἐπιχειρήσεων, ζώνη ἐπιχειρήσεων.* Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— *[᾽Οχυρωτ.]*· βλ. λ. *προμαχωνικὸν* καὶ *πολυγωνικόν.*

— *[Μετεωρολ.]* Ὁ ὅρος *μέτωπον* εἰσήχθη ὑπὸ τοῦ Bjerknes, κατὰ τὴν διατύπωσιν τῆς θεωρίας αὐτοῦ περὶ τοῦ σχηματισμοῦ τῶν *κυκλώνων*, ὁρίζεται δὲ ὡς ἡ γραμμή, καθ᾽ ἣν τέμνει ἡ ἐπιφάνεια ἀσυνεχείας τὴν γηΐνην ἐπιφάνειαν. Τὸ μέτωπον καλεῖται *ψυχρὸν ἢ θερμόν*, καθ᾽ ὅσον χωρίζει τὸν ψυχρὸν ἀέρα ἀπὸ τὸν θερμὸν καὶ τἀνάπαλιν. Ἐπίσης ὁ ὅρος μέτωπον (front) ἐχρησιμοποιήθη καὶ ὑπὸ τῶν Γάλλων μετεωρολόγων κατὰ τὴν διατύπωσιν τῆς μεθόδου αὐτῶν περὶ τῆς προγνώσεως τοῦ καιροῦ διὰ τῶν καλουμένων *νεφικῶν συστημάτων.* Τὸ μέτωπον τῶν νεφικῶν συστημάτων ἀντιστοιχεῖ ἐν γένει εἰς τὴν ἀρχὴν μιᾶς ἀσυνεχείας τοῦ *θερμοῦ μετώπου.* Θ. Θ. Φ.

**μετωποπαγὴς** (ὁ, ἡ),—*ὲς* (τό). Οὕτω καλεῖται τερατογονικὴ διάπλασις ἀναγομένη εἰς τὴν τάξιν τῶν διπλῶν τεράτων καὶ τὴν οἰκογένειαν τῶν εὐσομφαλίων. Χαρακτηρίζονται δ᾽ οἱ μετωποπαγεῖς ἐκ τῆς ἑνώσεως δύο ἐμβρύων διὰ τοῦ κεφαλικοῦ ἄκρου: μέτωπον πρὸς μέτωπον καὶ κορυφὴ πρὸς κορυφὴν τῆς κεφαλῆς. Ἀμφότερα τὰ τέρατα ἔχουσι τὸν καθόλου σχηματισμὸν γενικῶς φυσιολογικόν, ἐξαιρέσει μόνον τοῦ μέρους τῆς ἑνώσεως αὐτῶν· κατ᾽ ἀκολουθίαν εἰς τὰς τοιαύτας περιπτώσεις ἀμφότερα τὰ ἐπίπεδα (αἱ ἐπιφάνειαι) τοῦ ἐμβρύου, πρόσθιον καὶ ὀπίσθιον, ἀντιστοιχοῦσι πρὸς ἄλληλα. Μ. Ν. Κ.

**μετωπορρινικὴ** *ῥαφὴ [᾽Ανατομ.].* Ῥαφὴ ἀποτελουμένη ἐκ τῆς συντάξεως τοῦ ἄνω παχέος καὶ ὀδοντωτοῦ χείλους τοῦ ῥινικοῦ ὀστοῦ μετὰ τῆς ῥινικῆς μοίρας τοῦ μετωπιαίου. Ι. Π.

**Μέτωπος.** Πυθαγόρειος φιλόσοφος ἐκ Μεταποντίου, συγγραφεὺς ἔργου «Περὶ ἀρετῆς», τοῦ ὁποίου ἀποσπάσματά τινα παρεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Στοβαίου. Ὁ Ἰάμβλιχος ἐπίσης ἀναφέρει μεταξὺ τῶν πυθαγορείων φιλοσόφων καὶ *Μέτωπόν* τινα ἐκ Συβάρεως, ὅστις κατὰ πᾶσαν πιθανότητα εἶναι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν ἀνωτέρω. Ν. Α.

**μετωποσκοπία,** ἢ *μετωπομαντεία [᾽Εγκυκλ.].* Καλεῖται οὕτω ἡ τέχνη τοῦ γινώσκειν τὸν χαρακτῆρα ἀτόμου τινὸς ἐκ τῆς ἐν γένει ἐκφράσεως τοῦ προσώπου του καὶ ἰδίᾳ ἐκ τῶν γραμμῶν καὶ ῥυτίδων τοῦ μετώπου. Περὶ μετωποσκοπίας συνέγραψεν ὁ Cardanus ὁλόκληρον βιβλίον μὲ ἐπεξηγηματικὰς εἰκόνας, εἰς τὸ ὁποῖον βλέπει τις ἀναμειγνυομένας δεισιδαιμονίας μὲ ἀστρολογικὰς ἀντιλήψεις. Κατ᾽ αὐτόν, τὸ μέτωπον εἶναι τὸ πλέον ἐνδιαφέρον καὶ τὸ πλέον χαρακτηριστικὸν τμῆμα τοῦ προσώπου. Εἷς καλὸς φυσιογνωμιστὴς δύναται ἐκ μόνου τούτου νὰ μαντεύσῃ καὶ τὰς μᾶλλον λεπτομερειακὰς ἀποχρώσεις τοῦ χαρακτῆρος ἀτόμου τινός. Γενικῶς μέτωπον πολὺ ὑψηλὸν μετὰ μακροῦ προσώπου καὶ αἰχμηροῦ πώγωνος, προδίδει χαμηλὴν διανοητικότητα. Μέτωπον ὀστεῶδες δεικνύει φύσιν φιλέριδα, σαρκῶδες φύσιν ἀγροῖκον, τετράγωνον, πλατύ, μὲ βλέμμα ἐλεύθερον, ἀλλ᾽ ὄχι ἀναιδές, δεικνύει θάρρος καὶ σωφροσύνην. Μέτωπον στρογγύλον, προεξέχον πρὸς τὰ ἄνω καὶ πῖπτον καθέτως ἐπὶ τῶν ὀφθαλμῶν, δεικνύει κρίσιν, μνήμην, ζωηρότητα καὶ φλέγμα. Οἱ καχύποπτοι καὶ κατωτέρας διανοητικότητος ἄνθρωποι ἔχουν πλαγίας καὶ παραλλήλους ῥυτίδας. Ὅταν αἱ ῥυτί-

Digitized by Google

δες εἶναι εὐθεῖαι, ἀβαθεῖς καὶ κανονικαὶ δεικνύουν κρίσιν, σωφροσύνην, σύνεσιν καὶ ἀκεραιότητα χαρακτῆρος. Μέτωπον, τὸ ὁποῖον εἶναι πλῆρες ρυτίδων εἰς τὸ ἄνω μέρος καὶ στερεῖται τοιούτων ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὸ κάτω, ἀποτελεῖ ἀσφαλῆ σφραγῖδα ἠλιθιότητος. Αἱ ρυτίδες δὲν παράγονται σὺν τῇ παρόδῳ τῆς ἡλικίας, ἀλλ' ὑφίστανται, πρὸ τῆς ἐμφανίσεώς των, εἰς τὴν κατασκευὴν τοῦ μετώπου, ἐκδηλοῦνται δὲ ἐνίοτε καὶ εἰς τὴν νεαρωτέραν ἡλικίαν εἰς περίπτωσιν δυσφορίας, ὀργῆς, μόχθου κλπ. Εὐνόητον τυγχάνει ὅτι ἡ ἀπόπειρα τόσον ἀκριβοῦς καθορισμοῦ τῶν ἰδιοτήτων, τὰς ὁποίας προδίδει ἡ τοιαύτη ἢ τοιαύτη διαμόρφωσις τοῦ μετώπου εἶναι καταδικασμένη εἰς ἀποτυχίαν. Γενικῶς εἶναι παραδεδεγμένον ὅτι εὐρὺ καὶ ὑψηλὸν μέτωπον δεικνύει συνήθως εὐφυΐαν, ἐνῷ ἀντιθέτως στενὸν καὶ χαμηλὸν κατωτέραν διανοητικότητα. —Ω.

**μετωποσκόπος** (ὁ, ἡ)· ὁ ἀπὸ τῆς ἐξετάσεως τοῦ μετώπου συμπεραίνων περὶ τοῦ χαρακτῆρος τοῦ ἀνθρώπου.

**Μετώπων *Λαύρα*.** Μονὴ ἐν Παλαιστίνῃ, κτισθεῖσα τὸν Ε' αἰῶνα ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν *Μαρίνου* καὶ *Λουκᾶ*. Οἱ δύο ἀδελφοί, ἀφοῦ μετὰ τοῦ *Θεοκτίστου* ἐγκατέλιπον τὴν Λαύραν τοῦ Φαράν, ἠκολούθησαν τὸν μέγαν *Εὐθύμιον* εἰς τὸ νέον αὐτοῦ ἡσυχαστήριον καὶ ἐκεῖ ἐγυμνάσθησαν ἐν τῇ μοναχικῇ πολιτείᾳ. Ἡ Λαύρα τῶν Μετώπων καλεῖται καὶ ἡ τοῦ *Φωτεινοῦ*. Τὰ Μέτωπα ταυτίζονται μετὰ τῆς μικρᾶς κώμης *Οὖμ Τούμπα*, κειμένης ἐν τῇ ὁδῷ τῇ ἀγούσῃ ἐξ Ἱερουσαλὴμ εἰς Βηθλεέμ, παρὰ τὸ μωαμεθανικὸν χωρίον Σουχπάχερ. Τὸ ὄνομα Λουκᾶς ἀναφαίνεται ἐν τοῖς ἐρειπίοις *Χίρπετ Πιὰρ Λοῦκα* καὶ τὸ τοῦ Φωτεινοῦ ἐν τῷ *Χίρπετ Φωτεινέ*. † Ι. ΤΙΜΟΘΕΟΣ

**μετωρίζομαι**· ἰδιωματ., ἀστειεύομαι, χωρατεύω.

**μέτωρο** (τό)· ἰδιωματ., ἀστειότης χωρατό.

**Μεὺζ** (Meuse) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μόσας*.

**Μεὺλ** (Méhul), *Στέφανος-Νικόλαος.* Διάσημος Γάλλος συνθέτης (1763—1817). Ἀπὸ μικροτάτης ἡλικίας ἔδειξε μεγάλην κλίσιν εἰς τὴν μουσικήν, δεκαεξαετὴς δ' ἐγκατασταθεὶς ἐν Παρισίοις ἐπροξένησεν ἐντύπωσιν εἰς τὸν Γκλούκ, ὅστις παρώτρυνεν αὐτὸν νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν δραματικὴν μουσικήν. Ἡ πρώτη σύνθεσίς του ἦτο ἱερὰ ᾠδὴ ἐπὶ στίχων τοῦ Ρουσσώ, ἥτις ἐγένετο εὐμενέστατα δεκτὴ εἰς θρησκευτικὴν συναυλίαν διευθυνομένην ὑπὸ τοῦ Γκοσέκ. Κατόπιν γράφει τὰ πρῶτα του σκηνικὰ δοκίμια: «Ψυχή», «Ἀνακρέων»», «Λαῦσος καὶ Λυδία», καὶ τὸ μελόδραμα «Ἀλόνσος καὶ Κόρα», ἐκτελεσθὲν μετὰ ἑξαετίαν (1791). Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως εἶχεν ἀναβιβάσει (1790) ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ «Κωμικοῦ μελοδράματος» τὸ μελόδραμα «Εὐφροσύνη καὶ Κοραδῖνος», τοῦ ὁποίου ἡ ἐπιτυχία ὑπῆρξε σημαντική. Μετὰ διετίαν ἐθριάμβευσε διὰ τοῦ λυρικοῦ δράματος «Στρατονίκη». Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ὁ Μεὺλ συνέτεινεν ὅσον ὀλίγοι εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων (1794), οὗτινος ἐχρημάτισεν εἷς τῶν τεσσάρων ἐπιθεωρητῶν. Ταυτοχρόνως ἔγραφε τὸ περίφημον «Τραγούδι τῆς ἀναχωρήσεως», τὸ ἐπικληθὲν «Ἡ δευτέρα Μασσαλιῶτις». Εἶναι τὸ καλύτερον ἐκ τῶν ἄλλων ἐπαναστατικῶν του ὕμνων, οἵτινες εἶναι: «Τὸ τραγούδι τῆς νίκης», «Τὸ τραγούδι τῆς ἐπανόδου», «Τὸ τραγούδι τοῦ Ρολάνδου» κτλ. Τὴν ἐπανάστασιν ἐπίσης ἀνυμνοῦν μία εἰσαγωγή, ἓξ χορῳδίαι διὰ τὴν τραγῳδίαν «Τιμολέων», τὰ μελοδράματα «Ντόρια ἢ ἡ καταλυθεῖσα τυραννία», «Ἡ γέφυρα τοῦ Λουτί» κτλ. Ἑλκυόμενος ἀπὸ τὸ θέατρον ὁ Μεὺλ δίδει συνεχῶς εἰς αὐτό: «Τὸ σπήλαιον» (1795), λυρικὸν δρᾶμα, «Ὁ νεαρὸς Ἐρρῖκος» (1797), κωμικὸν μελόδραμα, «Ἀριουτάν» (1798), λυρικὸν δρᾶμα περιέχον μίαν περίφημον ἄριαν, τὰ μελοδράματα «Ἐπίκουρος» (1800), «Μία τρέλλα», «Ὁ ὑποτιθέμενος θησαυρὸς» (1802), «Ἰωάννα» (1802), «Ἑλένη», μπαλέττα τινὰ κτλ. Τὸ καλύτερον ἔργον τῆς περιόδου ταύτης εἶναι τὸ κωμικὸν μελόδραμα «Ἱρατὸ» (1801), διὰ τοῦ ὁποίου ὁ συνθέτης ἀνανεοῖ τὸ ὕφος του. Τὸ ἀριστούργημα ὅμως τοῦ Μεὺλ εἶναι τὸ θρησκευτικὸν μελόδραμα «Ἰωσήφ» (1807), τὸ ὁποῖον παρουσιάζει παντελῆ ἔλλειψιν γυναικείου ρόλου. Ἡ ἐπιτυχία του δὲν ὑπῆρξε ἄμεσος· ἀντιθέτως ἡ ψυχρὰ ὑποδοχὴ ἧς ἔτυχε συνέτεινεν εἰς τὸ νὰ ἐπαυξήσῃ τὴν μελαγχολίαν τοῦ συνθέτου, ὅστις ἐφεξῆς ἔφθινεν. Εἰς οὐδὲν ἄλλο ἔργον του ὁ Μεὺλ ἔδωκε τοσαῦτα δείγματα δραματικῆς ἀληθείας, μέτρου καὶ σκηνικῆς οἰκονομίας. Ὁ Βέμπερ κρίνων τὸ ἔργον κατέταξεν αὐτὸ μεταξὺ τῶν πρώτων τοῦ γαλλικοῦ μουσικοῦ δραματολογίου.

Εἰς τὴν τελευταίαν περίοδον τῆς παραγωγῆς τοῦ Μεὺλ ἀνήκουσι τὰ μελοδράματα καὶ τὰ μπαλέττα: «Οἱ δύο τυφλοὶ τοῦ Τολέδου» (1806) μὲ τὴν περίφημον εἰσαγωγήν, «Οὐσάλ», «Γκαμπιὲλ ντ' Ἐστρέ», «Ὁ πρίγκιψ τροβαδοῦρος» (1813), «Ἡ περιπετειώδης ἡμέρα» (1816), «Περσεὺς καὶ Ἀνδρομέδα» (μπαλλέττο, 1810), «Αἱ Ἀμαζόνες», «Βαλεντίνη τοῦ Μιλάνου», παιχθὲν πέντε ἔτη μετὰ τὸν θάνατόν του κ. ἄ. Ἡ ἀποτυχία τῶν ἀνωτέρω ἔργων καὶ ἰδίως τοῦ «Ἰωσήφ», ὡς καὶ οἱ θρίαμβοι τοῦ Σποντίνι, ἐπηύξανον συνεχῶς τὴν μελαγχολίαν τοῦ Μεὺλ, ὅστις ἐν τέλει ἀπεβίωσεν ἐκ φυματιώσεως. Ἡ κηδεία του ὑπῆρξε μεγαλοπρεπὴς καὶ ἡ συρροὴ τοῦ πλήθους ἀφάνταστος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Vieillard*, Méhul (1859).—*A. Pougin*, Méhul (1889 καὶ 1893). Γ. Σ.

**Μεϋνὲ** (Meynet), *ὄζοι τοῦ—*. Οὕτω καλοῦνται ἐν τῇ νοσολογίᾳ μικροὶ ὄγκοι ὑποδερμάτιοι, σφαιρικοὶ ἢ ᾠοειδεῖς, εὐκίνητοι ὑπὸ τὸ δέρμα διὰ τῆς ψηλαφήσεως, μεγέθους ποικίλλοντος ἀπὸ κόκκου φακῆς μέχρι λεπτοκαρύου, ἀπαντῶντες κυρίως εἰς τὴν περιοχὴν τῶν πασχουσῶν ἀρθρώσεων εἰς τὸν ὀξὺν ρευματισμὸν τῶν ἄρθρων. Οἱ μικροὶ οὗτοι ὄζοι ἀποτελοῦνται ὑπὸ συνδετικοῦ ἱστοῦ ἐν καταστάσει ἐντόνου ὑπερπλαστίας. Ἡ ἐμφάνισις αὐτῶν ὑποδεικνύει βαρεῖαν τὴν πρόγνωσιν τῆς παθήσεως. Ἀνεκαλύφθησαν δὲ καὶ περιεγράφησαν τὸ πρῶτον τῷ 1876 ὑπὸ τοῦ Γάλλου ἰατροῦ Meynet. Μ. Ν. Κ.

**Μέϋνελ** (Meynell), ***Ἀλίκη-Χριστιάνα.*** Ἀγγλὶς ποιήτρια (1849—1922). Ἦτο σύζυγος τοῦ Ἄγγλου συγγραφέως καὶ δημοσιογράφου *Γουΐλφριντ Μέϋνελ* καὶ ἐδημοσίευσε πολλὰς ποιητικὰς συλλογάς, κριτικὰ σημειώματα καὶ πεζὰ ἔργα, εἰς ἰδιαιτέρους τόμους, εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ὧν ἦτο τακτικὴ συνεργάτις. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων της εἶναι: «Πρόλογοι» (1875), ποιητικὴ συλλογὴ ἐπανεκδοθεῖσα τῷ 1893 καὶ τῷ 1923 ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιήματα» διὰ τῆς προσθήκης καὶ ἄλλων ποιημάτων, «Ὁ ρυθμὸς τῆς ζωῆς» (1893), «Τὸ χρῶμα τῆς ζωῆς» (1896), «Κριτικὰ δοκίμια» (1914), «Τζὼν Ράσκιν» (1900), κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μέϋνερτ** (Meynert), ***Θεόδωρος.*** Αὐστριακὸς ψυχίατρος καὶ ἀνατόμος (1833—1892). Διετέλεσεν ὑφηγητὴς καὶ ἐπιμελητὴς τοῦ ἐν Βιέννῃ ψυχιατρικοῦ ἰνστιτούτου (1866, 1870), διευθυντὴς τῆς ψυχιατρικῆς κλινικῆς καὶ καθηγητὴς τῆς ψυχιατρικῆς καὶ νευρολογίας. Ἡ ἀξία τοῦ ἐπιστημονικοῦ του ἔργου ἔγκειται εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἔρευναν τῶν ἀνατομικῶν καὶ φυσιολογικῶν σχέσεων ἐν τῷ ἐγκεφάλῳ. Ἔγραψε: «Phychiatrie, Klinik der Erkrankungen des Vorderhirns» (1884) κ. ἄ. Ο. Ρ.

**Μέϋτενς** (Meytens), ***Μαρτῖνος βὰν—.*** Ὁλλανδὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Στοκχόλμῃ τῷ 1695 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βιέννῃ τῷ 1770. Ἐπεσκέφθη πολλὰς χώρας τῆς Εὐρώπης, διέμεινεν ὅμως κατὰ τὸ πλεῖστον ἐν Βιέννῃ, ἔνθα ἐγένετο αὐλικὸς ζωγράφος, βραδύτερον δὲ ἀνέλαβε καὶ τὴν διεύθυνσιν τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Διεκρίθη ὡς προσωπογράφος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του προσωπογραφιῶν τάσσονται αἱ τοῦ Καρόλου ΣΤ' τῆς Σουηδίας, Λουδοβίκου τοῦ ΙΕ', Πέτρου τοῦ Μεγάλου, Μαρίας Θηρεσίας, Φραγκίσκου τοῦ Α', Ἰωσὴφ τοῦ Β' κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

**Μεφερκί,** ἢ ***Μερφεκὶ*** *[Γεωγρ.]*. Βυζαντινὸν ὄνομα τῆς ἀκμαζούσης κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀρχαίας πόλεως τῆς Μεγάλης Ἀρμενίας *Μαϊφέρακτα* (βλ. λ.). Σήμερον ὀνομάζεται *Μεγιαφερκὶν* καὶ ὑπάγεται εἰς τὸ βιλαέτιον Διαρβεκίρης. Κεῖται πρὸς ΒΔ. τῆς ὁμωνύμου πρωτευούσης τοῦ βιλαετίου καὶ συγκοινωνεῖ μετ' αὐτῆς. Χ. Δ.

**Μεφιστοφελῆς.** Ὄνομα τοῦ διαβόλου, γνωστὸν ἐκ τοῦ «Φάουστ» τοῦ Γκαῖτε. Τὸ ὑποχθόνιον τοῦτο πρόσωπον ἀπαντᾶται τὸ πρῶτον εἰς τοὺς παλαιοὺς γερμανικοὺς θρύλους, ὡς σύντροφος τοῦ δόκτορος Φάουστ ὑπὸ τὸ ὄνομα Mefostofiles. Ἡ σημερινὴ μορφὴ τοῦ ὀνόματος Μεφιστοφελῆς ὀφείλεται εἰς τὸν Γκαῖτε, ὅστις οὕτως ὀνομάζει τὸν διάβολον εἰς τὸν «Φάουστ». Ἡ πιθανωτέρα ἐτυμολογία τῆς λέξεως εἶναι ἡ παράγουσα τοῦτο ἐκ τοῦ *Μεγιστοφιλ*, ἤτοι Μέγιστος Ὀφιήλ. *Ὀφιήλ*, ἐκ τοῦ ἑλληνικοῦ ὄφις, ἦτο τὸ ἐπώνυμον τοῦ Ἑρμοῦ τοῦ Τρισμεγίστου, ὅστις, ὡς διδάξας εἰς τοὺς ἀνθρώπους τὴν μαγείαν, κατετάσσετο εἰς τὴν φιλολογίαν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος μεταξὺ τῶν χθονίων πνευμάτων. Συνεπῶς κατὰ τὴν ἐτυμολογίαν ταύτην ὁ Μεφιστοφελῆς συνταυτίζεται πρὸς τὸν Ἑρμῆν τὸν Τρισμέγιστον. Μεταξὺ τῶν ἄλλων, ἧττον πιθανῶν ἐτυμολογιῶν, εἶναι καὶ ἡ παράγουσα τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ «*μὴ φῶς φιλῶν*», ἤτοι ὁ ἐχθρὸς τοῦ φωτός.

Τὴν μορφὴν τοῦ Μεφιστοφελοῦς ἐν τῇ λογοτεχνίᾳ ἀπηθανάτισεν ἡ δημιουργικὴ πνοὴ καὶ ἡ πλαστικὴ μοῦσα τοῦ Γκαῖτε, ἥτις κατέστησε ταύτην τὸ πρωταγωνιστοῦν πρόσωπον εἰς τὸν «Φάουστ». Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο ὁ Μεφιστοφελῆς ἀναπαρίσταται οὐχὶ ὑπὸ τὴν κλασσικὴν μορφὴν τοῦ δαίμονος μὲ τὴν εἰδεχθῆ καὶ ἀποτροπιαστικὴν ἐμφάνισιν, ἀλλ' ὡς ἡ προσωποποίησις ἀνθρώπου μοχθηροῦ, τοῦ ὁποίου κάθε λέξις φέρει τὴν σφραγῖδα χαιρεκάκου εἰρωνείας καὶ σαρκασμοῦ, ὅστις δὲν φείδεται οὐδ' αὐτῆς τῆς δημιουργίας καὶ τοῦ σύμπαντος, τὸ ὁποῖον θεωρεῖ ὡς ἓν κακογραμμένον βιβλίον, ὅπερ καλεῖται ὁ ἴδιος ὁ διάβολος νὰ κρίνῃ. Ὁ Μεφιστοφελῆς τοῦ Γκαῖτε δὲν εἶναι ἡ μεταφυσικὴ μορφὴ τοῦ διαβόλου τοῦ Μίλτωνος καὶ τοῦ ἑωσφόρου τοῦ Βύρωνος, ἀλλά, κατὰ τὴν χαρακτηριστικὴν φράσιν τῆς ντὲ Σταέλ, ἐκπροσωπεῖ τὸν πεπολιτισμένον διάβολον, ὁ ὁποῖος χειρίζεται μὲ καταχθονίαν δεξιοτεχνίαν τὴν κατ' ἐπίφασιν φιλοπαίγμονα ἐκείνην εἰρωνείαν, ἡ ὁποία συνδυάζεται μὲ ἀβυσσαλέαν μοχθηρίαν. Ἡ τολμηρὰ του εὐθυμία διασκεδάζει, ἀλλ' εἰς τὸ βάθος αὐτῆς διαφαίνεται πάντοτε τὸ καταχθόνιον τῶν διαβολικῶν του λογισμῶν. Η. Π. Γ.

— **«Μεφιστοφελῆς»** (Mefistofele). Μελόδραμα εἰς τέσσαρας πράξεις, μετὰ προλόγου καὶ ἐπιλόγου (ποίησις καὶ μουσικὴ *Ἀρρίγκο Μπόϊτο*), ἀναβιβασθὲν τὸ πρῶτον ἀπὸ σκηνῆς ἐν Μιλάνῳ τῷ 1868. Τὸ ἔργον βασίζεται ἐπὶ τοῦ «Φάουστ» τοῦ Γκαῖτε, εἰς ὃν ὁ συνθέτης προσθέτει ἕνα φανταστικὸν πρόλογον εἰς τὸν οὐρανόν. Ὁ ἐπίλογος ἔχει ληφθῆ ἐκ τοῦ δευτέρου «Φάουστ». Ὁ «Μεφιστοφελῆς» ἀπέτυχεν ἀρχικῶς· εἶτα ὑποστὰς πλείστας τροποποιήσεις ἐπαίχθη ἐκ νέου ἐν Βολωνίᾳ καὶ κατώρθωσε νὰ σταθῇ, ἐπιβληθεὶς ὀλίγον κατόπιν ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν ὁλόκληρον. Τὸ ἔργον τοῦ Μπόϊτο φέρει φανερὰν ἐπίδρασιν βαγνερείου τεχνοτροπίας, ἀναμείκτου μετὰ ἰταλικῆς μελῳδικότητος. Γ. Σ.

**μεφιστοφελικός,**—*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν Μεφιστοφελῆ, ὁ ὡς ὁ Μεφιστοφελῆς ἐμπεφορημένος μὲ μυκτηριστικὴν τοῦ παντὸς διάθεσιν, δολοπλόκον μισανθρωπίαν, ἐκφαυλιστικὴν ἐπιρροήν: «μεφιστοφελικὰ τεχνάσματα».

**μεφιστοφελισμὸς** (ὁ)· ὁ κατὰ τὸν Μεφιστοφελῆ τρόπος, ἡ μετὰ πανουργίας καὶ σατανικότητος συμπεριφορά || ὁ ἡδονισμὸς ἐν τῇ ἐπιδιώξει τοῦ κακοῦ διὰ τὸ κακόν.

**μεφιτίζω**· ἀναδίδω δυσώδη ὀσμήν, πληρῶ τὴν ἀτμόσφαιραν δυσωδῶν ἀναθυμιάσεων (μεταγραφὴ τοῦ γαλλ. *méphitiser*, ὅπερ ἐκ τοῦ λατιν. *mephitis* =λοιμώδης ἀναθυμίασις).

**μεφιτικός,**—*ή*,—*όν*· ὁ ἔχων ὀσμὴν δυσάρεστον ἢ ἐπιβλαβῆ: «μεφιτικὸν ἀέριον», «ἀναθυμιάσεις μεφιτικαί», ὁποῖαι αἱ τῶν ἀποχωρητηρίων.

**μεφῖτις** (ἡ) (Mephites) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἁρπακτικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μουστελλιδῶν*, περιλαμβάνον ζῷα μικροῦ σχετικῶς μεγέθους, ὧν τὸ μῆκος δὲν ὑπερβαίνει τὰ 40 ἑκατοστόμετρα. Τὸ σῶμά των εἶναι ρωμαλέον, ἡ κεφαλὴ τριγωνική, ἀπολήγουσα εἰς ὀξὺ ρύγχος, τὰ ὦτα μικρὰ καὶ ἠνωρθωμένα, οἱ πόδες βραχεῖς καὶ χονδροὶ καὶ ἡ οὐρὰ παχυτάτη καὶ εἰς αἰχμηρὸν ἄκρον ἀπολήγουσα. Ἴδιον χαρακτηριστικὸν εἶναι ἡ δυσώδης ὀσμή, ἣν ἀναδίδουσι, προερχομένη ἐξ ἰδίων ἐκκριτικῶν ἀδένων, οἵτινες διανοίγονται κατὰ τὸν πρωκτόν. Εἶναι δασόβια ζῷα ἐνδιαιτώμενα κατὰ προτίμησιν εἰς τὰς θαμνώδεις ἐκτάσεις. Κατὰ τὴν ἡμέραν παραμένουσι κεκρυμμένα εἰς ὀπὰς δένδρων, βράχων ἢ τῆς γῆς, ἃς ὀρύσσουσι διὰ τοῦ ὀξέος ρύγχους των· κατὰ τὴν νύκτα ἐξέρχονται πρὸς ἀναζήτησιν τῆς λείας των, ἥτις ἀποτελεῖται ἐκ σκωλήκων, ἐντόμων, μικρῶν ἑρπετῶν, πτηνῶν καὶ θηλαστικῶν. Ἀξιολογώτερα εἴδη εἶναι τὰ ἑξῆς:

Μεφῖτις.

*Μεφῖτις ἡ πνιγηρὰ* (Mephites suffocans). Φθάνει εἰς μῆκος 40 ἑκατοστομέτρων καὶ φέρει πυκνὸν καὶ μακρὸν τρίχωμα μελανοφαίου χρώματος μετὰ λευκῶν, ἀκανονίστων λωρίδων ἐπὶ τῆς ράχεως καὶ τῆς οὐρᾶς. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς ἐρημικὰς δασώδεις ἐκτάσεις τῆς νοτίου Ἀμερικῆς καὶ ἰδίως εἰς τὴν Βραζιλίαν.

*Μεφῖτις ἡ ποικιλόχρους* (Mephites variegatus). Τὸ μῆκος της φθάνει τὰ 38 ἑκατοστόμετρα καὶ ὁ γενικὸς χρωματισμὸς τοῦ σώματός της εἶναι στιλπνῶς μελανὸς μὲ λευκὴν ταινίαν διήκουσαν ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ὀφθαλμοῦ μέχρι τοῦ ἑτέρου καὶ ἀπολήγουσαν εἰς τὸ ὄπισθεν τμῆμα τοῦ σώματος μέχρι τῆς ὠμοπλάτης, ὅποθεν χωριζομένη εἰς δύο λωρίδας φθάνει μέχρι τοῦ ἄκρου τῆς οὐρᾶς, ὅπου καὶ συνενοῦται εἰς μίαν μόνον λωρίδα. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν νότιον Ἀμερικὴν καὶ κυρίως εἰς τὴν Ἀργεντινήν. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζῳολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μεφιτίδων* εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν τῇ Βορείῳ Ἀμερικῇ. Γ. Κ. Γ.

**μεφιτισμὸς** (ὁ) (méphitisme). Ἀποκρουστικὴ ὀσμή, ὀφειλομένη κυρίως εἰς διεφθαρμένον ἀέρα πεπληρωμένον ὑπὸ ἀερίων ἀπνεύστων καὶ ὑπὸ ἑτέρων στοιχείων δυναμένων νὰ ἀσκήσωσιν ἐπὶ τοῦ ζωϊκοῦ ὀργανισμοῦ ἐνέργειαν ἄμεσον, βλαβερὰν καὶ ὀλεθρίαν. Μ. Ν. Κ.

**Μεχάλα,** ἢ ***Μελχὸλ*** *[Βιβλ.]*. Ἡ νεωτέρα ἐκ τῶν δύο θυγατέρων τοῦ Σαοὺλ καὶ σύζυγος τοῦ Δαυΐδ. Ὁ Σαοὺλ εἶχεν ὑποσχεθῆ εἰς τὸν μέλλοντα νὰ νικήσῃ τὸν Γολιὰθ τὴν πρωτότοκον θυγατέρα του· ὅτε ὅμως ὁ νεαρὸς Δαυΐδ ἐπέτυχε τοῦτο, ὁ βασιλεὺς δὲν ἐκράτησε τὸν λόγον του, ὑπεσχέθη

Digitized by Google

ὅμως εἰς τὸν Δαυῒδ τὴν Μεχάλα, τὴν ὁποίαν οὗτος ἠγάπα, ἀλλ' ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ φονεύσῃ 100 Φιλισταίους. Ὁ Δαυῒδ ἐφόνευσε διακοσίους καὶ ἐνυμφεύθη αὐτὴν εἰς ἡλικίαν εἴκοσι περίπου ἐτῶν. Ἡ Μεχάλα ἔσωσε βραδύτερον τὸν Δαυῒδ διωκόμενον ὑπὸ τοῦ Σαούλ, κατὰ τὸν χρόνον δὲ τῆς φυγῆς του ὁ πατήρ της πρὸς τιμωρίαν ἐνύμφευσεν αὐτὴν μετὰ τοῦ Φαλτί. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Σαούλ, ὁ Δαυῒδ ἀπέστειλε τὸν στρατηγὸν Ἀβεννήρ, ὁ ὁποῖος ὡδήγησε τὴν Μεχάλα πρὸς αὐτόν. Χ. Δ.

**Μεχάλλετ-ἐλ-Κόμπρα,** ἢ ***Μεχαλλὲ-ἐλ-Κεμπὶρ*** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Αἰγύπτου ΒΑ. τῆς Τούντας εἰς τὸ μέσον τοῦ Δέλτα τοῦ Νείλου. Κάτ. 35.000. Ἔχει ἐκκοκκιστικὰς βαμβακομηχανάς, ὑφαντήρια καὶ ἐνδιαφέρουσαν ἀρχιτεκτονικῶς συναγωγήν. Γ. Λ. Α.

**Μεχαμπάτ.** Προφήτης τῶν ἀρχαίων Περσῶν, ἱδρύσας τὴν ἀστρολατρικὴν θρησκείαν, ἣν ἐπεξέτεινε βραδύτερον ὁ Δζεμσὶτ καὶ ἠλλοίωσε μετὰ τοῦτον ὁ Ζωροάστρης. Λέγεται ὅτι ὑπῆρξε καὶ ἀρχαία δυναστεία τῶν *Μεχαμπαντιὰν (Μεχαβατιδῶν)*, προηγηθεῖσα τῆς τῶν Πισδαδιάν. Εἰς τὸν Μεχαμπὰτ ἀποδίδεται καὶ βίβλος «οὐρανόπεμπτος» θεωρηθεῖσα πλαστή. Ν. Μ.

**Μεχάντια** (Mehadia) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ρουμανίας ἐν Βανάτῳ, ἀνήκουσα μέχρι τοῦ 1921 εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Κεῖται ἐντὸς αὐχένος τῶν Τρανσυλβανικῶν Ἄλπεων παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Τσέρνα καὶ Μπιέλα, 24 χλμ. πρὸς Β. τῆς Ὀρσοβας, μεθ' ἧς συνδέεται διὰ σιδηροδρόμου. Εἰς Μεχάντια σῴζονται τὰ ἐρείπια τῆς ρωμαϊκῆς πόλεως Ad media, τὰ δὲ λουτρά της ἦσαν ἔκπαλαι γνωστὰ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Thermae Herculis* (=Θέρμαι τοῦ Ἡρακλέους). Κάτ. 2.153. Χ. Δ.

—*[Λουτρολ.]* Ἡ λουτροπεριοχὴ τῆς *Μεχάντια* περιλαμβάνει μέγαν ἀριθμὸν θερμῶν πηγῶν θερμοκρασίας 41—56.6°. Αἱ πηγαὶ αὗται ἀνήκουν εἰς τὰς ὑδροθειοχλωριονατριούχους πηγὰς καὶ περιέχουν, ἐκτὸς τῆς πηγῆς τοῦ *Ἡρακλέους*, ὅλαι ὁμοῦ 40 κ. ἑκσμ. ὑδροθείου, 0,075—0,079 γρ. θειούχου νατρίου, 1,266—3,817 γρ. χλωριούχου νατρίου καὶ μέχρι 2.769 γρ. χλωριούχου ἀσβεστίου. Ἡ πηγὴ *Λουδοβίκου* περιέχει ἐπίσης ὀλίγον βρωμιοῦχον καὶ ἰωδιοῦχον νάτριον. Αἱ μεγαλυτέρας μεταλλικότητος πηγαὶ εἶναι αἱ τοῦ *Φραγκίσκου* καὶ *Φερδινάνδου*. Αἱ πηγαὶ αὗται περιέχουν εἰς ἓν λίτρον ὕδατος 3,817 γρ., καὶ 2,949 γρ. χλωριούχου νατρίου, 2,765 καὶ 2,284 γρ. χλωριούχου ἀσβεστίου, 0,0047 καὶ 0,0041 γρ. ὑποθειώδους νατρίου, 0,107 καὶ 0,063 γρ. ὑδροθειούχου νατρίου, ὡς καὶ 0,066 γρ. θειούχου νατρίου. Τὰ ὕδατα τῶν πηγῶν τῆς Μεχάντια ἐνδείκνυνται ὅπου καὶ τὰ τῶν ὑδροθειοχλωριονατριούχων πηγῶν. Κ. Γ. Μ.

**Μεχάρχι** *[Γεωγρ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Μεγάρχη* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ἄρτης.

**Μεχδῆ.** Ἕτερος τύπος τοῦ *Μαχδῆ* (βλ. λ.).

**μεχέγκι** (τὸ) (ἐκ τοῦ τουρκ. *μεχέγκ*)· ἀσημόπετρα πέτρα πρὸς δοκιμὴν τοῦ χρυσοῦ καὶ τῶν πολυτίμων μετάλλων.

**Μεχελὶν** (Mechelin), ***Λεοπόλδος***. Φινλανδὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1839—1914). Πρῴην διοικητικὸς ὑπάλληλος, ἐγένετο ἀλληλοδιαδόχως διευθυντὴς τῆς ἑνώσεως τῶν φινλανδικῶν τραπεζῶν, μέλος τῆς Διαίτης (1872), καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Ἔλσιγκφορς καὶ βραδύτερον ἀρχηγὸς τοῦ φιλελευθέρου κόμματος (1880), γερουσιαστὴς καὶ ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν (1882). Τῷ 1903 ἀντιδράσας κατὰ τῆς τότε κηρυχθείσης δικτατορίας, ἐξωρίσθη καὶ ἐπανῆλθε τῷ 1905, μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν τῶν συνταγματικῶν ἐλευθεριῶν, ὅτε καὶ ἐγένετο πρωθυπουργός. Ἔγραψε: «Τὸ δημόσιον δίκαιον τοῦ μεγάλου πριγκιπάτου τῆς Φινλανδίας» (1889) καὶ τὸ κλασσικὸν ἱστορικὸν ἔργον «Ἡ Φινλανδία κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα» (β' ἔκδ. 1899), μεταφρασθὲν εἰς πολλὰς γλώσσας. Θ. Κ.

**Μεχέντι** *[Γεωγρ.]*. Βυζαντινὸν φρούριον κατὰ τὴν δυτικὴν ὄχθην τοῦ Νείλου, 2 χλμ. νοτίως τῶν ἐρειπίων τοῦ ναοῦ τῆς Μαχαρράκα (ἀρχ. Ἱερᾶς Συκαμίνου). Ὑψοῦται ἐπὶ τραπεζοειδοῦς βουνοῦ καὶ σύγκειται ἐκ τειχῶν παχέων καὶ πύργων ἰσχυρῶν. Αἱ οἰκίαι τοῦ φρουρίου, ἐκ πλίνθων καὶ πετρῶν, εἶναι θολωταὶ καὶ καλῶς διατηρημέναι. Γ.Λ.Α.

**Μεχεντία,** ἢ ***Μεχντία*** (Mehedia ἢ Mehdia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τύνιδος (βλ. λ. *Μαχεντία*).

**Μεχιτάρ,** ***Πέτρος***. Ὁ ἱδρυτὴς τοῦ μοναχικοῦ τάγματος τῶν *Μεχιταριστῶν* (βλ. λ.).

**μεχιταρισταὶ** (οἱ). Τὸ ὄνομα τοῦτο φέρουν οἱ ὀπαδοὶ τοῦ Ἀρμενίου *Μεχιτὰρ* (=παρήγορος), ὅστις ἐκ Σεβαστείας ὁρμώμενος, μετὰ βίον περιπετειώδη, προσειλκύσθη ὑπὸ τῶν ἰησουϊτῶν εἰς τὸν παπισμόν. Τῷ 1700 ἵδρυσεν ἐν Κωνσταντινουπόλει σχολὴν προσηλυτιστικὴν διὰ τοὺς Ἀρμενίους. Καταδιωχθεὶς ἐνταῦθα ὑπὸ τοῦ γρηγοριανοῦ πατριάρχου Ἀβεδίκ, κατέφυγεν εἰς τὴν ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν κατεχομένην Μεθώνην, ὅπου ἵδρυσε τὸ μοναστήριον καὶ τὸν μοναχικὸν σύνδεσμον τῶν *μεχιταριστῶν*, κυρωθέντα τῷ 1711 ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος τοῦ ΙΑ'. Μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Τούρκων καταστροφὴν τῆς Μεθώνης (1715), ὁ Μεχιτὰρ μετὰ τῶν ὀπαδῶν αὐτοῦ ἐγκατεστάθη εἰς τὴν ἐν Βενετίᾳ νῆσον τοῦ Ἁγίου Λαζάρου, ὅθεν ἔλαβον καὶ τὸ ὄνομα τῶν *λαζαριστῶν* (βλ. λ.). Ἐκτὸς τοῦ προσηλυτισμοῦ ὁ Μεχιτὰρ κύριον σκοπὸν εἶχε τὴν ἀναγέννησιν καὶ τὸν ἐκπολιτισμὸν τῶν Ἀρμενίων. Πρὸς τοῦτο εἰργάσθη μετὰ πολλοῦ τοῦ ζήλου, γράψας γραμματικὴν καὶ λεξικὸν τῆς ἀρμενικῆς, μεταφράσας τὴν Γραφὴν καὶ ἄλλα συγγράμματα καὶ συστήσας τυπογραφεῖον. Τὸ ἔργον τοῦ Μεχιτάρ, ἀποθανόντος τῷ 1749, ἐξηκολούθησαν μετὰ ζήλου οἱ μεχιταρισταί, οἵτινες ἐκτὸς τῆς ἐκδόσεως διαφόρων κλασσικῶν καὶ ἄλλων συγγραφέων ἐπεδόθησαν καὶ εἰς τὴν ἐκμάθησιν ξένων γλωσσῶν. Ἐπὶ πλέον ἵδρυσαν πολλαχοῦ μοναστήρια καὶ σχολεῖα, ὡς ἐν Κωνσταντινουπόλει, Τραπεζοῦντι, Θεοδοσίᾳ, Συμφερουπόλει, Κριμαίᾳ, Καυκάσῳ καὶ Περσίᾳ. Ἕνεκα ἔριδος μεταξύ των, πολλοὶ τῶν μεχιταριστῶν ἵδρυσαν τῷ 1811 ἐν Βιέννῃ τὸ «Κολλέγιον τῶν μεχιταριστῶν» μετὰ τυπογραφείου καὶ βιβλιοπωλείου, οὗτινος παράρτημα ὑπάρχει ἐν Μονάχῳ. Κατὰ χιλιάδας ἀριθμοῦνται τὰ συγγράμματα, τὰ ὁποῖα ἐξέδωκαν οἱ μεχιταρισταὶ καὶ διέδωσαν μεταξὺ τῶν Ἀρμενίων, σπουδαιοτάτη δ' εἶναι ἡ ἐν τῷ Ἁγίῳ Λαζάρῳ βιβλιοθήκη αὐτῶν, πλουσία εἰς πολύτιμα βιβλία καὶ χειρόγραφα. Τῷ 1806 ὁ σύνδεσμος τῶν μεχιταριστῶν μετωνομάσθη εἰς Ἀκαδημίαν. [*Φ. Βαφείδου*, Ἐκκλ. Ἱστορ. τ. Γ'.] † Η. Φ. Β.

**μεχκεμὲς** (ὁ), ἢ *μαχκεμές*· δικαστήριον (λ. τουρκ.).

**μέχλεμπι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κέρασος ὁ μικρόκαρπος*.

**Μεχλεσσὸς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεσόγειος πόλις τῆς Κολχίδος, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Ε' 9, 5), ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος. Α. Θ. Σ.

**Μεχμέτ.** Τουρκικὸς τύπος τοῦ ἀραβικοῦ *Μωχάμμετ* (οὕτω προφέρουσιν οἱ Τοῦρκοι μόνον τὸν ἱδρυτὴν τῆς μωαμεθανικῆς θρησκείας), τὸ ὁποῖον μετεγράφη ὑπὸ τῶν ἡμετέρων εἰς *Μωάμεθ* (βλ. λ.). Ἡ λέξις σημαίνει τὸν ἄξιον ἐπαίνου καὶ ἐξυμνήσεως. Ἐκ τῶν Βυζαντινῶν ἱστορικῶν ὁ Χαλκοκονδύλης γράφει ὁ *Μαχουμέτης* (γενικὴ τοῦ Μαχουμετέως), ὁ Δούκας *Μαχουμέτ*, ὁ δὲ Φραντζῆς *Μεεμέτης*, ὅπερ πλησιέστερον πρὸς τὴν κοινὴν τουρκικὴν προφορὰν *Μεεμέτ*. Ν. Μ.

ΣΟΥΛΤΑΝΟΙ

—**Μεχμὲτ Α',** ὁ ἐπιλεγόμενος ***Τσελεμπῆ*** ἢ ***Γκιουρεστζῆ*** (παλαιστὴς) ἢ ***Κιριστζῆ*** (τοξότης). Πέμπτος χρονολογικῶς Ὀσμανίδης σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, ὁ πρῶτος ἀναγνωρισθεὶς μὲ τὸν τίτλον σουλτᾶνος (σουλτὰν-ὶ-Ρούμ, ἤτοι σουλτᾶνος Ρωμιός, ὡς βασιλεύων εἰς τὰς χώρας τῶν Ρωμαίων) καὶ ἔξω τῆς Τουρκίας, ἐνῷ οἱ προκάτοχοί του ὠνομάζοντο ἁπλῶς *ἐμὶρ* (ἀρχηγός, ἀμηρᾶς). Ἐγεννήθη τῷ 1379, ἦτο δὲ ὁ νεώτερος τῶν υἱῶν τοῦ σουλτάνου Βαγιαζὶτ τοῦ Α'. Μετασχὼν ὑπὸ τὸν πατέρα του τῆς μάχης τῆς Ἀγκύρας (1402) κατὰ τοῦ στρατοῦ τοῦ Ταμερλάνου, κατώρθωσε κατὰ τὴν ἄτακτον φυγὴν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ νὰ διασωθῇ εἰς Ἀμάσειαν μετημφιεσμένος, ἐνῷ ὁ σουλτᾶνος συνελαμβάνετο αἰχμάλωτος. Ἐν Ἀμασείᾳ κατώρθωσε νὰ ἀντιστῇ ἐναντίον τῶν Τατάρων, μετὰ δὲ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Ταμερλάνου ἀνεκήρυξεν ἑαυτὸν σουλτᾶνον ὡς καὶ ἄλλοι τρεῖς ἐκ τῶν ἓξ υἱῶν τοῦ Βαγιαζίτ, ὁ Ἰσᾶ, ὁ Μουσᾶ καὶ ὁ Σουλεϊμάν. Νικήσας ἐπανειλημμένως τὸν ἐν Προύσῃ ἀνακηρυχθέντα Ἰσᾶ, εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν ταύτην. Ἐπελθόντος ὅμως τοῦ Σουλεϊμάν, ὅστις, συμμαχήσας μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος Μανουὴλ Β' τοῦ Παλαιολόγου, εἶχεν ἀνακηρυχθῆ σουλτᾶνος ἐν Ἀδριανουπόλει, ἔφυγεν εἰς Τοκὰτ καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ἀμάσειαν. Ἐπηκολούθησαν μεταξὺ τοῦ Σουλεϊμάν, Μουσᾶ καὶ Μεχμὲτ τόσον εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς ὅσον καὶ εἰς τὰς ἀσιατικὰς ἐπαρχίας δεκαετεῖς πόλεμοι, καθ' οὓς ἐπεκράτησεν ἐπὶ τέλους ὁ Μεχμέτ, ἔχων καὶ μυστικὴν συνεννόησιν μετὰ τῶν ἐν Βυζαντίῳ, ἐνῷ ὁ μὲν Σουλεϊμὰν ἐδολοφονήθη ὑφ' ἑνὸς τοξότου τῆς ἰδίας του ἀκολουθίας, ὁ δὲ Μουσᾶ, ἐγκαταλειφθεὶς ὑπὸ τῶν στρατηγῶν, συνελήφθη αἰχμάλωτος καὶ ἐστραγγαλίσθη κατὰ διαταγὴν τοῦ ἀδελφοῦ του (1413).

Ὑπολειφθεὶς μόνος ἡγεμὼν ὁ Μεχμὲτ εἰργάσθη πρὸς ἀποκατάστασιν τῆς ἑνότητος καὶ ἐνίσχυσιν τοῦ τουρκικοῦ κράτους, κλονισθέντος ἐκ θεμελίων ἕνεκα τῆς ἐπιδρομῆς τοῦ Ταμερλάνου καὶ τῶν ἑνδεκαετῶν ἐμφυλίων σπαραγμῶν. Εὑρισκόμενος ἀκόμη ἐν Ἀδριανουπόλει (1413) ἐδέχθη πρεσβείαν τοῦ Μανουήλ, ἥτις συγχαρεῖσα αὐτὸν διὰ τὴν νίκην του ἐζήτησε τὴν τήρησιν τῆς ὑποσχέσεώς του, καθ' ἣν θ' ἀπεδιδεν εἰς τὸ βυζαντινὸν κράτος τὰς τέως ἐπαρχίας του, τὰς ὁποίας εἶχεν ἄλλως τε ἀποδώσει καὶ ὁ Σουλεϊμάν. Ὁ Μεχμὲτ δὲν ἠρνήθη. Ἀφῆκεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα οὐχὶ μόνον τὴν Θεσσαλίαν καὶ τὴν Πελοπόννησον ἀλλὰ καὶ τὰς ὀχυρὰς πόλεις τοῦ Εὐξείνου. Ἀποστείλας δὲ πλούσια δῶρα εἰς τὸν Μανουὴλ διεμήνυσεν εἰς αὐτὸν ὅτι θὰ ἐνθυμῆται πάντοτε ὅτι χάρις εἰς τὴν βοήθειάν του ἀνέκτησε τὸ κράτος τοῦ πατρός του, θὰ τιμᾷ αὐτὸν ὡς πατέρα καὶ θὰ ὑπακούῃ εἰς τὰς διαταγάς του. Ὁ Μεχμὲτ ἐτήρησε τὴν ὑπόσχεσιν ταύτην, ὡς δὲ λέγει καὶ ὁ Χαλκοκονδύλης (σελ. 98) «Ἕλλησι μέντοι φιλία ἦν αὐτῷ διὰ τέλους». Ὁ Μανουήλ, ἀντὶ νὰ ἐπωφεληθῇ τῆς ἐλεεινῆς καταστάσεως τοῦ τουρκικοῦ κράτους, ἐδέχθη τὰς ὑποσχέσεις καὶ παραχωρήσεις τοῦ Μεχμὲτ καὶ ἐλθὼν εἰς Πελοπόννησον ὠχύρωσε τὸν Ἰσθμόν, κτίσας ἰσχυρὸν τεῖχος.

Ἐν Ἀδριανουπόλει ὁ Μεχμὲτ ἐδέχθη καὶ ἄλλας πρεσβείας, ὡς τῶν ἡγεμόνων τῆς Βλαχίας καὶ Βουλγαρίας, τοῦ δουκὸς Τόκκου τῶν Ἰωαννίνων, τοῦ δεσπότου τῆς Σπάρτης, τοῦ δουκὸς τῆς Ἀχαΐας καὶ κυρίως τοῦ κράλη τῆς Σερβίας Στεφάνου, ὅστις εἶχε παράσχει εἰς αὐτὸν στρατιωτικὴν βοήθειαν κατὰ τοὺς ἐναντίον τῶν ἀδελφῶν του πολέμους. Εἰς ἀμοιβὴν ὁ Μεχμὲτ παρεχώρησεν εἰς αὐτὸν μέρος τῶν τέως σερβικῶν ἐδαφῶν. Μόνον εἰς Βλαχίαν εἰσέβαλεν ὁ τουρκικὸς στρατός, διότι ὁ βοεβόδας Μύρτσεα εἶχε συμπράξει μετὰ τοῦ Μουσᾶ.

Ἐξασφαλισθεὶς οὕτως ἐν Εὐρώπῃ ὁ Μεχμέτ, ἐστράφη πρὸς τὴν Ἀσίαν, ὅπου οἱ σατράπαι τῶν λειψάνων τοῦ τέως σελτζουκικοῦ τουρκικοῦ κράτους εἶχον ἐγείρει πάλιν κεφαλὴν κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ Ταμερλάνου. Ἐνίκησε καὶ συνέλαβεν αἰχμάλωτον τὸν Δζουνεΐτ, ὅστις ἐδυνάστευεν εἰς τὴν περὶ τὴν Σμύρνην χώραν, καὶ κατόπιν ἐξηνάγκασεν εἰς ὑποταγὴν τὸν Καραμάνογλου, δυνάστην τῆς Καραμανίας, ὅστις ὅμως ἀθετήσας τὰς ὑποσχέσεις ἐφονεύθη πολιορκῶν τὴν Ἀττάλειαν. Τέλος ὑπέταξε καὶ τὸν σατράπην τοῦ Κερμιάν.

Ἤρχισε κατόπιν πόλεμον κατὰ τῆς Βενετίας, ἥτις ἀντεποιεῖτο τότε τὴν ἀπόλυτον ἐπικράτησιν ἐν τῷ Αἰγαίῳ. Εὐθὺς μετὰ τὴν ἀνάρρησιν τοῦ Μεχμὲτ ἡ δημοκρατία ἀνενέωσε τὰς παλαιὰς μετὰ τῶν Τούρκων συνθήκας της, ἀποστείλασα εἰς Ἀδριανούπολιν τὸν Φραγκῖσκον Φόσκαρι, συγχρόνως ὅμως παρεσκευάζετο διὰ τὴν περίπτωσιν τῆς ἀθετήσεως αὐτῶν, διότι διεδίδοντο φῆμαι ὅτι ὁ σουλτᾶνος ἑτοιμάζει ἐν Καλλιπόλει στόλον, ὅπως ἐπιτεθῇ κατὰ τῶν δύο κυριωτέρων ἑνετικῶν κτήσεων, τῆς Εὐβοίας καὶ τῆς Κρήτης. Καὶ πράγματι, μετ' ὀλίγον ὁ Μεχμέτ, ὀργισθεὶς ἐκ τῆς θρασύτητος τοῦ δουκὸς τῆς Νάξου Ἰακώβου Κρίσπου ἢ κατ' ἄλλους τοῦ ἄρχοντος τῆς Ἄνδρου Πέτρου Ζένου, παρεσκεύασεν ἐν Καλλιπόλει στόλον 112 πλοίων, ὅστις ἐπετέθη κατὰ τῆς Ἄνδρου, Πάρου, Μήλου καὶ ἄλλων νήσων, ἀπὸ τὰς ὁποίας ἀπήγαγε πολλοὺς αἰχμαλώτους, ἐνῷ συγχρόνως ἐφώρμα καὶ κατὰ τῶν βενετικῶν κτήσεων. Ἡ Βενετία, μὴ ἀνεχομένη τὴν αὔξουσαν δύναμιν τῶν Ὀθωμανῶν καὶ ὅπως προστατεύσῃ τοὺς ὑποτελεῖς αὐτῆς ἄρχοντας τῶν νήσων, τὰς ὁποίας ἐθεώρει προπύργια τῆς δυνάμεώς της ἐν τῷ Αἰγαίῳ, ἀπέστειλε τὸ ἔαρ τοῦ 1416 δέκα γαλέρας ὑπὸ τὸν Πέτρον Λορεδᾶνον, ὅτις εἶχε διακριθῆ ἤδη εἰς τοὺς κατὰ τῶν Γενουηνσίων πολέμους. Ἡ Ἑνετία δὲν ἤθελεν ἀκόμη ν' ἀρχίσῃ τὰς ἐχθροπραξίας. Ἀλλὰ τουρκικὸς στόλος ὑπὸ τὸν Τσάλη βέην ἐπετέθη ἐκ Καλλιπόλεως ἐναντίον συνοδείας 30 ἑνετικῶν ἐμπορικῶν πλοίων κατευθυνομένων εἰς τοὺς λιμένας τοῦ Εὐξείνου. Συνεπείᾳ τούτου ὁ ἑνετικὸς στόλος ἐνισχυθεὶς διὰ 15 πλοίων ἔπλευσε πρὸς τὴν Καλλίπολιν φέρων καὶ πρεσβείαν ὑπὸ τοὺς προβεδιτόρους Ἀνδρέαν Φώσκολον καὶ Δελφῖνον Βενιέρον, ὅπως ζητήσωσιν ἱκανοποίησιν διὰ τὴν εἰς τὴν σημαίαν τῆς γαληνοτάτης δημοκρατίας προσγενομένην προσβολήν. Ὁ ἑνετικὸς στόλος ἐκκινήσας ἐκ Ναυπλίου καὶ Χαλκίδος ἔφθασε πρὸ τῆς Καλλιπόλεως τὴν 27ην Μαΐου 1416. Ἐπὶ τῆς ξηρᾶς ἦτο παρατεταγμένος πολὺς τουρκικὸς στρατός, ὅστις ἤρχισε νὰ τοξεύῃ διὰ δηλητηριασμένων βελῶν. Τὴν ἐπιοῦσαν 30 τουρκικὰ πλοῖα ἐπετέθησαν ἐναντίον δύο βενετικῶν γαλερῶν, αἱ ὁποῖαι ἐπεχείρησαν νὰ εἰσέλθωσιν εἰς τὸν λιμένα. Ὁ Λορεδᾶνος προσείλκυσε τότε ὁλόκληρον τὸν τουρκικὸν στόλον εἰς τὴν ἀνοικτὴν θάλασσαν, ὅπως ναυμαχήσῃ, ἀλλ' οἱ Τοῦρκοι ἐτράπησαν εἰς φυγήν. Δοθεισῶν δὲ ἑκατέρωθεν διαβεβαιώσεων ὅτι ἐπρόκειτο περὶ παρεξηγήσεως, ὁ Λορεδᾶνος ἐνεφανίσθη τὴν ἐπιοῦσαν (29 Μαΐου) πρὸ τοῦ λιμένος τῆς Καλλιπόλεως ὅπως ὑδρευθῇ. Ἐπειδὴ ὅμως οἱ Τοῦρκοι ἐπετέθησαν καὶ πάλιν, ὁ Λορεδᾶνος, προσελκύσας τὸν τουρκικὸν στόλον εἰς τὴν ἀνοικτὴν θάλασσαν, ἀντεπετέθη. Ἡ ναυμαχία διήρκεσε πεισματώδης ὁλόκληρον τὴν ἡμέραν, ἐπὶ τέλους δὲ μετὰ κρατερὰν ἀντίστασιν τῶν Τούρκων ἐνίκησαν οἱ Βενετοί, κυριεύσαντες καὶ ἓξ μεγάλας γαλέρας καὶ ἄλλα μικρότερα τουρκικὰ πλοῖα. Ἡ ναυαρχὶς ἐκυριεύθη ὑπὸ τοῦ Λορεδάνου, ἡ δὲ κεφαλὴ τοῦ Τσάλη βέη ἐστήθη ὡς τρόπαιον ἐπὶ λόγχης εἰς τὴν πρῷραν τῆς γαλέρας του. Κατὰ τὴν ναυμαχίαν ταύτην ἔγινε χρῆσις καὶ τηλεβόλων. Τὰ πληρώματα τοῦ τουρκικοῦ στόλου, ἀποτελούμενα ἐκ Γενουηνσίων, Καταλάνων, Σικελῶν, Προβηγκιανῶν καὶ Κρητῶν, ἐφονεύθησαν κατὰ μέγα μέρος, οἱ δὲ αἰχμάλωτοι ἐκρεμάσθησαν ὅλοι ἐπὶ τῶν ἱστῶν, ὅπως τρομο-

Digitized by Google

κρατούμενοι οὕτως οἱ Χριστιανοὶ παύσωσι νὰ ὑπηρετῶσιν εἰς τὸν τουρκικὸν στόλον. Εὐθὺς μετὰ τὴν νίκην ὁ Λορεδᾶνος ἔρριψε βολάς τινας κατὰ τῆς πόλεως, ἐπειδὴ ὅμως οὐδεὶς ἐνεφανίσθη, ἀπεσύρθη εἰς Τένεδον, ἀφοῦ ἔγραψεν εἰς τὸν Τοῦρκον φρούραρχον Καλλιπόλεως, ὅπως διαμαρτυρηθῇ διὰ τὴν παρασπονδίαν του. Κατόπιν ἐπέστρεψε πάλιν εἰς Καλλίπολιν, ὅπως ἀναμείνῃ ἀπάντησιν τοῦ σουλτάνου, ἂν θὰ δεχθῇ τοὺς Ἑνετοὺς πρέσβεις. Ὁ σουλτᾶνος ὅμως, ἂν καὶ κατεστράφη ὅλος ὁ στόλος του πλὴν μιᾶς γαλέρας καὶ τινων ἄλλων μικρῶν πλοίων, ἠρνεῖτο ἐπιμόνως καὶ μόλις τὸν Ἰούλιον τοὺς ἐδέχθη καὶ ὑπέγραψε συνθήκην εἰρήνης ἐπωφελῆ διὰ τὰ δύο μέρη. Τὸ κατόπιν ἔτος (1417) ἀπεστάλη εἰς Βενετίαν πρεσβεία τοῦ σουλτάνου, ἡ πρώτη τουρκικὴ εἰς τὸ ἐξωτερικὸν πρεσβεία, γενομένη δεκτὴ μετὰ μεγάλων τιμῶν. Οὕτως ἔληξεν ὁ πρῶτος πόλεμος μεταξὺ Τουρκίας καὶ Βενετίας, ἀνυψώσας τὸ ναυτικὸν γόητρον τῆς τελευταίας ταύτης.

Εἰρηνεύσας μετὰ τῆς Βενετίας ὁ Μεχμὲτ ἐστράφη πρὸς Β., ὅπως τιμωρήσῃ τὸν βοεβόδαν τῆς Βλαχίας Μύρτσεα. Οὗτος κατέφυγεν εἰς τὸν βασιλέα τῆς Οὐγγαρίας Σιγισμόνδον, ὅστις ἔδωκεν εἰς αὐτὸν ἓν μικρὸν στρατιωτικὸν σῶμα πρὸς βοήθειαν. Οἱ Τοῦρκοι ὅμως ἐνίκησαν, καὶ ὁ Μύρτσεα ἠναγκάσθη νὰ ἐμφανισθῇ αὐτοπροσώπως εἰς τὸ στρατόπεδον τοῦ σουλτάνου καὶ ζητήσῃ συγγνώμην, ἥτις καὶ ἐδόθη ἔναντι ἐτησίου φόρου. Πρὸς ἐξασφάλισιν τῶν ἐντεῦθεν τοῦ Δουνάβεως κτήσεών του ὁ Μεχμὲτ ἔκτισε τότε ἀπέναντι τοῦ Ρουστσουκίου φρούριον, τὸ ὁποῖον ὠνομάσθη τουρκιστὶ Γὲρ-Κιοκιοῦ (ρίζα τῆς γῆς), παραφθαρὲν βαθμιαίως εἰς Γιούργεβον καὶ Δζούρτζοβα, ἐνῷ συγχρόνως ἀνήγειρεν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ τὰ φρούρια τῆς Ἰσάκτσας καὶ τοῦ Γενίκαλε. Ἐκ Βλαχίας ὁ Μεχμὲτ ἐστράφη πρὸς τὴν Οὐγγαρίαν, ὅπως ζητήσῃ λόγον ἀπὸ τοῦ βασιλέως διὰ τὴν εἰς τὸν Μύρτσεα παρασχεθεῖσαν βοήθειαν. Ἀλλ' εἰς Τούρνου-Σεβερῖνο προσῆλθε πρεσβεία τοῦ Σιγισμόνδου, ὅπως ζητήσῃ εἰρήνην, τὴν ὁποίαν καὶ ἐπέτυχεν. Ἐν τούτοις ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐπροχώρησε τότε δι' Οὐγγαρίας μέχρι Στυρίας καὶ Βοσνίας, καταστρέψας πολλὰς πόλεις καὶ φρούρια. Ἀντεπελθὼν ὅμως ἐναντίον τῶν Τούρκων ὁ ἐκ Μακεδονίας καταγόμενος Οὖγγρος στρατηγὸς Πέλερφυ κατετρόπωσεν αὐτούς, ἐνῷ ἄλλος τουρκικὸς στρατὸς 20.000 ἀνδρῶν κατεστρέφετο παρὰ τὸ Ράτκερσμπουργ ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, εἰς τὰ σημερινὰ αὐστροσερβικὰ σύνορα.

Ἐπηκολούθησαν πόλεμοι τοῦ Μεχμὲτ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ κατὰ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Κασταμονῆς Ἰσφενδιὰρ-ὀγλοῦ καὶ ἄλλων Τουρκομάνων ἡγεμονίσκων, ὡς καὶ πολεμικαὶ ἐπιχειρήσεις ἐπὶ τῶν ἀσιατικῶν παραλίων τῆς Προποντίδος, καθ' ἃς οἱ Τοῦρκοι κατέλαβον τὰς ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν κατὰ τὴν σουλτανικὴν μεσοβασιλείαν καταληφθείσας πόλεις καὶ κώμας Λίβυσσαν (Γιέμπιζε), Χαρταλιμὴν καὶ Παντείχιον, τῶν ὁποίων οἱ κάτοικοι ἔφυγον εἰς Κωνσταντινούπολιν.

Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν τὸ τουρκικὸν κράτος διέτρεξε σοβαρὸν κίνδυνον ἐκ τοῦ κινήματος κάποιου Μπορεκλουτζὲ Μουσταφᾶ, ὅστις συνέλαβε τὸ σχέδιον ν' ἀνατρέψῃ τὴν δυναστείαν τοῦ Ὀσμὰν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ Χριστιανῶν. Συγκροτήσας οὗτος στρατὸν ἐκ 3.000 δερβισῶν, ἐνίκησεν ἐπανειλημμένως τοὺς στρατοὺς τοῦ Μεχμέτ. Ἀλλ' ἐπὶ τέλους, νικηθείς, συνελήφθη ζῶν καὶ ἐσταυρώθη (1418), πλεῖστοι δ' ἐκ τῶν ὀπαδῶν του ἐθανατώθησαν. Ἀμέσως κατόπιν ὁ Μεχμὲτ κατέστειλεν ἄλλο ἐπαναστατικὸν κίνημα, ὑποκινηθὲν ὑπὸ κάποιου Μουσταφᾶ, ὅστις ἰσχυρίσθη ὅτι εἶναι ὁ κατὰ τὴν μάχην τῆς Ἀγκύρας ἐξαφανισθεὶς ὁμώνυμος υἱὸς τοῦ σουλτάνου Βαγιαζίτ. Διωκόμενος μετὰ τῶν ὀλίγων ὀπαδῶν του ὁ ψευδο-Μουσταφᾶς οὗτος, κατέφυγεν εἰς Θεσσαλονίκην. Ἐμφανισθέντος ὅμως πρὸ τῆς πόλεως τοῦ Μεχμὲτ ἐπὶ κεφαλῆς πολλοῦ στρατοῦ καὶ ζητήσαντος ἀποκλειστικῶς τὴν ἔκδοσιν τῶν φυγάδων, ὁ φρούραρχος Δημήτριος Λάσκαρις Λεοντάριος ἐζήτησεν ὁδηγίας ἐκ Κωνσταντινουπόλεως. Ὁ δὲ αὐτοκράτωρ Μανουήλ, εἰς τὸν ὁποῖον ἔγραψε καὶ ὁ Μεχμέτ, ἀπήντησεν ὅτι τὸ παραδίδειν φυγάδας ζητήσαντας προστασίαν εἶναι πρᾶξις τυραννική, ἀλλ' ὅτι, ἀφοῦ ὁ σουλτᾶνος ἐδήλωσεν ἄλλοτε ὅτι τὸν θεωρεῖ πατέρα του, θὰ ἐκπληρώσῃ τὰ πατρικά του καθήκοντα καὶ θὰ κρατήσῃ τὸν Μουσταφᾶν καὶ τὸν συναρχηγόν του Τζουνεῒτ φυλακισμένους μέχρι τοῦ θανάτου των. Οἱ φυγάδες ἐνεκλείσθησαν τότε εἰς Λῆμνον, καὶ ὁ Μεχμὲτ ἐδέχθη διὰ συνθήκης νὰ πληρώνῃ εἰς τὸν αὐτοκράτορα 300.000 ἄσπρα διὰ τὴν διατροφήν των.

Ἐπιστρέφων ἐξ Εὐρώπης εἰς Ἀσίαν ὁ Μεχμὲτ διῆλθε διὰ Κωνσταντινουπόλεως, ὅπου ἔγινε δεκτὸς μετὰ πολλῶν τιμῶν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος. Οἱ ὀλίγοι ἐκ τῶν αὐλικῶν, οἵτινες ἐγνώριζον ἐν τῇ πρωτευούσῃ τὴν ἐπίσκεψιν ταύτην τοῦ σουλτάνου, συνεβούλευσαν τὸν αὐτοκράτορα νὰ συλλάβῃ αὐτόν. Ἀλλ' ὁ Μανουὴλ δὲν ἠθέλησε νὰ διαπράξῃ τοιαύτην προδοσίαν. Ὁ Μεχμὲτ μετ' ὀλίγον ἀπέθανεν. Εἶχεν ἐπανέλθει ἐξ Ἀσίας εἰς Ἀδριανούπολιν καὶ ἐπρόκειτο νὰ δεχθῇ ἔκτακτον ἀπεσταλμένον τοῦ αὐτοκράτορος, τὸν Δημήτριον Λεοντάριον, ὅτε εὑρισκόμενος εἰς κυνήγιον καὶ θελήσας ν' ἀκοντίσῃ ἀγριόχοιρον ἐμφανισθέντα αἰφνιδίως ἔπαθεν ἐξ αἱμορραγίας, ἐπαναληφθείσης τὴν ἐπιοῦσαν καὶ μετ' ὀλίγον ἀπέθανεν ἐν Ἀδριανουπόλει (1421). Ὁ θάνατός του ἐτηρήθη μυστικὸς ἐπὶ 40 ἡμέρας, διότι ὑπῆρχε φόβος ταραχῶν μέχρι τῆς ἀφίξεως εἰς Προῦσαν τοῦ διαδόχου Μουράτ, εἰδοποιηθέντος ἐγκαίρως. Ἐδέησε δὲ νὰ δεικνύεται ἐξ ἑνὸς παραθύρου τοῦ σαραγίου τὸ τεταριχευμένον πτῶμα τοῦ σουλτάνου εἰς τὸν στρατόν, ἐνῷ ἔμπιστος ὑπηρέτης ἐκίνει τὰς χεῖρας καὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ νεκροῦ, δῆθεν χαιρετῶντος.

Ὁ Μεχμὲτ ὁ Α' θεωρεῖται ὡς εἷς ἐκ τῶν ἱκανωτέρων ἡγεμόνων τῆς Τουρκίας, διότι μετὰ τὴν ἐκ τῆς ἐπιδρομῆς τοῦ Ταμερλάνου καταστροφὴν καὶ κατόπιν ἐνδεκαετῶν ἐμφυλίων σπαραγμῶν κατώρθωσε νὰ ἀποκαταστήσῃ πάλιν τὴν ἑνότητα τοῦ τουρκικοῦ κράτους καὶ νὰ τὸ ἐνισχύσῃ. Ἦτο ὡραῖος τὴν μορφὴν καὶ φίλαθλος, ἀσκηθεὶς ἐπιμελῶς κατὰ τὴν νεότητά του, εἰς τοῦτο δὲ ὀφείλεται καὶ τὸ παρωνύμιόν του «Γκιουρεστζῆ-τσελεμπῆ» (γκιουρεστζῆ = παλαιστής). Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μεχμὲτ Β', ὁ *Πορθητής*.** Σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας (βλ. *Μωάμεθ ὁ Β'*).

— **Μεχμὲτ Γ'**, ὁ ἐπιλεγόμενος ***Γαζῆ*** (νικητὴς) καὶ ***πορθητὴς τοῦ Ἔγκερ*** (τῆς Οὐγγαρίας). Δέκατος τρίτος Ὀσμανίδης σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, υἱὸς καὶ διάδοχος Μουρὰτ τοῦ Γ' ἐκ τῆς Βάφφω σουλτάνας. Ἐγεννήθη τῷ 1566 ἐν τῇ πόλει τῶν Σάρδεων, διατελέσας δὲ διοικητὴς Μαγνησίας ἀνῆλθε τὸν θρόνον κατὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του τῷ 1595 καὶ ἐβασίλευσεν ὀκτὼ ἔτη, ἀποθανὼν τῷ 1603.

Κατὰ τὴν ἀνάρρησιν αὐτοῦ ὁ τουρκικὸς στρατὸς ὑφίστατο ἥττας ἐν Οὐγγαρίᾳ, συγχρόνως δὲ ἤρχισαν αἱ κατόπιν τόσον συχναὶ ἐπαναστάσεις τῶν γενιτσάρων. Ὁ σουλτᾶνος ἐπείσθη ὑπὸ τοῦ βεζύρου Σινὰν πασᾶ νὰ τεθῇ ὁ ἴδιος ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στρατοῦ. Ὁ Μεχμὲτ ἐνεφανίσθη εἰς τὸ μέτωπον ἐν Οὐγγαρίᾳ, εὐθὺς δὲ κατόπιν οἱ Τοῦρκοι ἐνίκησαν ἐπανειλημμένως τοὺς Αὐστριακούς, κυριεύσαντες τὸ Ἔρλαου καὶ τὸ Κέρεστες (Ὀκτώβριος 1596). Ἀλλὰ δὲν ἐπωφελήθησαν ἐκ τῶν νικῶν, διότι τὰ ἀσιατικὰ στρατεύματα, μὴ ἀνεχόμενα τὴν μεγάλην αὐστηρότητα τοῦ νέου μεγάλου βεζύρου Τσικάλα πασᾶ, ἐλιποτάκτουν κατὰ χιλιάδας, ἐνῷ καὶ ὁ σουλτᾶνος, μὴ ἔχων πολλὴν ὄρεξιν νὰ μείνῃ εἰς τὸ θέατρον τοῦ πολέμου, ἐπέστρεψεν εἰς Κωνσταντινούπολιν. Τῷ 1598, ἐπαναληφθείσης τῆς ἐκστρατείας, οἱ Τοῦρκοι ἐνικήθησαν, μόλις κατορθώσαντες νὰ κρατήσωσι τὴν Βουδαπέστην. Τῷ 1600 ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐκυρίευσε τὴν ὀχυρὰν Κάνισα. Μετὰ ἓν ἔτος ἐνίκησαν πάλιν τοὺς Αὐστριακοὺς ὑπὸ τὸν ἀρχιδοῦκα Φερδινάνδον, ἐπιχειρήσαντας ν' ἀνακτήσωσι τὴν πόλιν ταύτην.

Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ λιποτάκται τοῦ στρατοῦ προὐκάλουν συνεχεῖς ταραχὰς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ὅπου τὰ δυσηρεστημένα στοιχεῖα συγκεντρωθέντα περὶ αὐτοὺς καὶ περὶ τὸν αἱρεσιάρχην Δζελαλῆ ἐπεδίδοντο εἰς λεηλασίας. Ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐπανεστάτησαν οἱ σπαχῆδες, ἐνῷ εἰς τὰ ἀνατολικὰ σύνορα ὁ σὰχ-ἀμπᾶς τῆς Περσίας ἐπεζήτησε νὰ ἐπωφεληθῇ ἐκ τῶν ἐσωτερικῶν ταραχῶν τῆς Τουρκίας τῷ 1603. Ἐν μέσῳ τῆς κρίσεως ταύτης ὁ Μεχμὲτ ὁ Γ' ἀπέθανε τῷ 1603. Ἡ βασιλεία αὐτοῦ, τὴν ὁποίαν ἤρχισε διατάξας τὸν φόνον 19 ἀδελφῶν του καὶ 12 ἐγγύων ὀδαλισκῶν τοῦ πατρός του, θεωρεῖται ὡς ἡ ἔναρξις τῆς παρακμῆς τῆς Τουρκίας. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ Δ'**, ὁ ἐπιλεγόμενος ***Γαζῆ*** καὶ ***Ἀβτζῆ*** (κυνηγός). Δέκατος ἔνατος Ὀσμανίδης σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, γεννηθεὶς τῷ 1642, ἀνελθὼν τὸν θρόνον τῷ 1648, ἐκθρονισθεὶς τῷ 1687 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1692. Κατὰ τὴν παιδικήν του ἡλικίαν μέχρι τῆς ἐνηλικιώσεώς του διηύθυνεν ἀντιβασιλεία, ἀποτελουμένη ἐκ τῆς μητρός του καὶ δώδεκα πασάδων ὑπὸ τὸν μέγαν βεζύρην. Κατὰ τοὺς μετέπειτα χρόνους ὁ Μεχμὲτ Κιοπρουλῆς, γενόμενος μέγας βεζύρης, ἐπεχείρησε καὶ ἐπέτυχεν ἐν μέρει τὴν ἀνόρθωσιν τοῦ καταρρέοντος τουρκικοῦ κράτους. Ὁ στόλος ἀνέκτησε τὴν Λῆμνον, τὴν ὁποίαν εἶχον καταλάβει οἱ Βενετοί, ἐνῷ μέγας στρατὸς ὑπὸ τὸν βεζύρην Καρὰ Μουσταφᾶ πασᾶν, προελάσας δι' Οὐγγαρίας ἔφθασε μέχρι Βιέννης, τὴν ὁποίαν ἐπολιόρκησε, σωθεῖσαν χάρις εἰς τὴν ἔγκαιρον ἐπέμβασιν τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας Ἰωάννου Σοβιέσκι (1683). Ἐπὶ τῆς βασιλείας Μεχμὲτ τοῦ Δ', ἐξακολουθοῦντος τοῦ κατὰ τῆς Βενετίας πολέμου, κατεκτήθη ὁλόκληρος ἡ Κρήτη, ἁλωθέντος καὶ τοῦ Ἡρακλείου, τοῦ ὁποίου ἡ πολιορκία εἶχε διαρκέσει ἐπὶ ἔτη. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς βασιλείας του ἤρχισαν πάλιν κινήματα τῶν γενιτσάρων, οἵτινες τῷ 1687 ἐξεθρόνισαν αὐτόν, ἀναβιβάσαντες εἰς τὸν θρόνον τὸν ἀδελφόν του Σουλεϊμὰν τὸν Β'. Ν. Μ.

— **Μεχμέτ.** Ὄνομα ἡγεμόνων τῆς Αἰγύπτου (βλ. *Μωχάμμετ*).

— **Μεχμέτ.** Σουλτᾶνος τοῦ ἐν Γάζνᾳ (Ἀφγανιστὰν) κράτους τῶν Γαζνεβιδῶν, δεύτερος ἡγεμὼν τῆς δυναστείας τοῦ Σεμποὺκ-Τεκίν, υἱὸς τοῦ διασήμου Μαχμοὺτ τοῦ Γαζνεβίδου. Ἀνελθὼν τὸν θρόνον τῷ 1031 ἐβασίλευσε τέσσαρα ἔτη, μεθ' ὅ, ἐκθρονισθεὶς καὶ φυλακισθεὶς ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Μεσούτ, ἀποκατεστάθη πάλιν μετὰ ἐννέα ἔτη, ἀλλὰ μετὰ ἓν ἔτος ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του. Ν.Μ.

— **Μεχμέτ.** Ὄνομα δύο Σελτζούκων σουλτάνων τῆς Περσίας καὶ εἰδικῶς τοῦ Ε', υἱοῦ τοῦ Μαλὲκ-Σάχ, ἐπεκτείναντος τὸ κράτος του μέχρι τοῦ Ἰνδοστὰν (1005—1041), καὶ τοῦ ΙΑ' τῆς δυναστείας τῶν Σελτζουκιδῶν, ἐγγόνου τοῦ προηγουμένου (1142—1149). Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ Α', *Γελὰντ Ἐντ Νταυλὰχ βὲ Γεμὰλ Ἐλ Μιλλάχ*.** Σουλτᾶνος τῆς Δυτικῆς Περσίας καὶ αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1007—1042). Ἦτο διοικητὴς τῶν Γουργκάν, ὁ δὲ πατήρ του Μαχμοὺτ ἢ Μεχμὲτ (ὁ ἱδρυτὴς τῆς δυναστείας τῶν Γιασνεβιδῶν) ὑπέδειξεν αὐτὸν ὡς διάδοχόν του τῷ 1030. Ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ *Μασοὺντ Α'* ἠρνήθη νὰ ἀναγνωρίσῃ τὸν Μεχμὲτ Α' ὡς βασιλέα, ἐπαναστάτησε κατ' αὐτοῦ, τὸν συνέλαβεν αἰχμάλωτον καὶ ἀνεκηρύχθη αὐτὸς βασιλεύς. Βραδύτερον ὅμως τὰ στρατεύματα ἐπαναστάτησαν κατὰ τοῦ Μασοὺντ καὶ ἀνεκήρυξαν αὐτοκράτορα ἐκ νέου τὸν Μεχμὲτ Α'. Μετά τινα καιρὸν ὅμως οἱ υἱοὶ τοῦ Μασοὺντ ἐδολοφόνησαν τὸν Μεχμὲτ Α'. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ Β', *Ἀμποὺλ Μονταφφὲρ Σιρζὰντ Σεοὺμπ Ἐν Ντὶν Ἀλ Χουρί*.** Σουλτᾶνος τῆς Περσίας καὶ αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1150—1206). Ἦτο υἱὸς τοῦ Σὰμ ἐλ Χουρὶ καὶ ἀδελφὸς τοῦ Γκαϊὰτ ἐντ Ντίν, αὐτοκράτορος τῶν Ἰνδιῶν, ὁ ὁποῖος παρέλαβεν αὐτὸν ὡς συγκυβερνήτην τῷ 1171. Τῷ 1186 ἐστέφθη αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν ἐν Λαχόρῃ. Τῷ 1192 κατενίκησε πολλοὺς ραγιᾶ τῶν Ἰνδιῶν, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του Γκαϊὰτ τῷ 1203 ἀνεκηρύχθη καὶ βασιλεὺς τῆς Περσίας. Ἐπειδὴ ὁ υἱὸς τοῦ Γκαϊὰτ ἐπεχείρησε νὰ διεκδικήσῃ τὸν θρόνον, ἐφυλάκισεν αὐτόν. Κατόπιν ἐπεχείρησε νὰ καθυποτάξῃ τοὺς Γιαρισμιανούς, οἱ ὁποῖοι ὅμως συνέλαβον αὐτὸν αἰχμάλωτον καὶ τὸν ἠνάγκασαν νὰ παραχωρήσῃ εἰς αὐτοὺς φρούριά τινα εἰς ἀντάλλαγμα τῆς ἐλευθερίας του. Διεξήγαγε καὶ ἄλλους ἀγῶνας κατὰ διαφόρων ἐπαναστατῶν καὶ ἡτοιμάζετο νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τοῦ Τζιστάν, ἀλλ' ἐδολοφονήθη ὁδεύων πρὸς τὴν Τζάσνα, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Ἰνδοῦ. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ αὐτοκράτορος τούτου χρονολογεῖται καὶ ἡ μεγάλη ἐπίδρασις τοῦ Ἰσλαμισμοῦ εἰς τὰς Ἰνδίας. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ Γ'.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1300—1352). Ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ἐν Δελχὶ τῷ 1325, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του Γκαϊὰτ ἐντ ντὶν Τοχλούκ. Ἐπεχείρησε νὰ καθυποτάξῃ τὴν Κίναν, ἀλλ' ἡττήθη ἐπανειλημμένως, ἀπολέσας ἐπαρχίας τινάς. Ἐπειδὴ μετέφερε τὴν ἕδραν του εἰς τὸ Νταυταμπάντ, αἱ ἐπαρχίαι τοῦ Βορρᾶ ἐξεδήλωσαν μεγάλην δυσαρέσκειαν καὶ ἠπείλησαν ἐμπορικὸν ἀποκλεισμὸν κατὰ τῆς νέας πρωτευούσης. Ἕνεκα τούτου ὁ Μεχμὲτ Γ' ἠναγκάσθη νὰ παραμένῃ ἐκ περιτροπῆς ἐν Νταυταμπὰτ καὶ ἐν Δελχί. Ἀπέθανεν ἐν ἐκστρατείᾳ πρὸς καθυπόταξιν τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν αἵτινες ἐπανεστάτησαν. Μ.Δ.Β.

— **Μεχμὲτ ὁ Δ'.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1360—1394). Ἀνῆκεν εἰς τὴν δυναστείαν τῶν Τολοὺκ καὶ ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1386 κατόπιν τῆς παραιτήσεως τοῦ πατρός του Φιροὺζ Γ'. Ἕνεκα τῆς κακῆς διοικήσεώς του ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸν θρόνον ὑπὲρ τοῦ ἀδελφοῦ του Τολοὺκ Β', ἀλλὰ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἀμπουμπέκρ, διαδόχου τοῦ Τολοὺκ Β', ὁ Μεχμὲτ Δ' κατέλαβεν ἐκ νέου τὴν ἀρχὴν καὶ κατώρθωσε νὰ καταστείλῃ τοὺς ἐμφυλίους πολέμους, οἱ ὁποῖοι κατεσπάρασσον κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην τὴν αὐτοκρατορίαν. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ Ε'.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1403—1443). Ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1434, διαδεχθεὶς τὸν θεῖόν του Μουμπαρὲκ Β'. Ἐπὶ τῶν ἡμερῶν του πλεῖσται ἐπαρχίαι ἐπανεστάτησαν καὶ τὸν ἠνάγκασαν νὰ ὑποσχεθῇ τὴν ἀποστολὴν τοῦ μεγάλου βεζύρου του ὡς διοικητοῦ αὐτῶν καὶ τὴν ἐφαρμογὴν διαφόρων μεταρρυθμίσεων. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ μέγας βεζύρης ἐπεχείρησε νὰ τὸν δολοφονήσῃ πρὸς κατάληψιν τῆς ἀρχῆς, ὁ Μεχμὲτ κατεδίκασεν αὐτὸν εἰς θάνατον. Ὁ Μεχμὲτ οὗτος ἦτο ἀνεψιὸς τοῦ Φιζέρ, ἱδρυτοῦ τῆς δυναστείας τῶν Σααντάκ. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ ΣΤ'.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (βλ. *Μπαμπέρ*).

— **Μεχμὲτ ὁ Ζ'.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1508—1556). Διεδέχθη τὸν πατέρα του Μεχμὲτ ΣΤ' τῷ 1530. Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας εἶχε καταταχθῇ εἰς τὸν στρατόν, λαβὼν μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ πατρός του εἰς τὸ Ἰνδοστὰν καὶ διακριθεὶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Πανιπάτ, κατὰ τὴν ὁποίαν διοικῶν τὴν δεξιὰν πτέρυγα κατενίκησε τοὺς Ἀφγάνας. Ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον περιεπλάκη εἰς πολέμους ἐναντίον διαφόρων ἡγεμόνων καὶ κατενίκησε τὸν βασιλέα τοῦ Γκουτζερὰτ καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῆς Βεγγάλης, ἀλλ' ἡττήθη ὑπὸ τοῦ διοικητοῦ τοῦ Μπεχὰρ καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ

Digitized by Google

εἰς τὴν Λαχόρην, ὁπόθεν ὅμως ἐξεδιώχθη ὑπὸ τῶν δύο ἀδελφῶν του, ἀπαιτητῶν τοῦ θρόνου. Μετὰ περιπετειώδη καὶ πλάνητα βίον κατώρθωσε, τῇ βοηθείᾳ περσικῶν στρατευμάτων, νὰ καταλάβῃ τὴν Καβούλην καὶ νὰ ἐκστρατεύσῃ κατόπιν κατὰ τοῦ Ἀφγᾶνος αὐτοκράτορος τῆς Δελχὶ καὶ νὰ εἰσέλθῃ θριαμβευτικῶς εἰς τὴν πόλιν ταύτην, ἀνακαταλαβὼν βραδύτερον καὶ μέγα μέρος τοῦ Ἰνδοστάν. Ἠγάπα τὰς ἐπιστήμας καὶ τὰ γράμματα καὶ ἐθεωρεῖτο ἐκ τῶν καλυτέρων ἀστρονόμων καὶ γεωγράφων τῆς ἐποχῆς του. Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ ποιήματα καὶ μελέτην περὶ τῆς φύσεως τῶν στοιχείων. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ Η΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1520—1551). Συνέβαλεν εἰς τὴν ἄνοδον εἰς τὸν θρόνον τῶν Ἰνδιῶν τῆς Ἀφγανικῆς δυναστείας, ἀλλὰ βραδύτερον συνωμοτήσας κατὰ τοῦ δευτέρου ἡγεμόνος τῆς δυναστείας ταύτης καὶ γυναικαδέλφου του Σελὶμ κατεδικάσθη εἰς θάνατον, σωθεὶς τῇ επεμβάσει τῆς ἀδελφῆς του. Τῷ 1549, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Σελίμ, ὡρίσθη κηδεμὼν τοῦ μικροῦ βασιλέως Φιρούζ Δ΄, ὃν ὅμως ἐδολοφόνησεν, ἵνα ἀνακηρυχθῇ αὐτὸς αὐτοκράτωρ. Διέπραξε πολλὰς σκληρότητας καὶ ἐν τέλει ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ γυναικαδέλφου του Ἰμπραΐμ καὶ Ἰσκανδέρ, οἵτινες τὸν διεδέχθησαν εἰς τὸν θρόνον. Μ. Δ. Β.

—**Μεχμὲτ ὁ Θ΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Ἄκμπαρ*).

— **Μεχμὲτ ὁ Ι΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν, ἀποθανὼν τῷ 1697. Ἦτο υἱὸς τοῦ αὐτοκράτορος Ἄκμπαρ, τὸν ὁποῖον διεδέχθη τῷ 1605. Ἀσθενοῦς χαρακτῆρος, ὑπέκυπτε καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς βασιλείας του εἰς τὰς ὀρέξεις τῆς εὐνοουμένης του Νουρ-Γιαχάν, ὀνομαστῆς διὰ τὴν ὡραιότητα καὶ τὴν εὐφυΐαν της. Ἠγωνίσθη κατὰ τῶν ἐπαναστατησάντων δύο υἱῶν του καὶ τοῦ στρατηγοῦ Μοχαμπὰν-Χάν, τοὺς ὁποίους κατέταξεν. Ἐπροστάτευσε τὰς τέχνας καὶ τὰ γράμματα, γράψας καὶ «Ἀπομνημονεύματα». Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ ΙΑ΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1592—1666). Τῷ 1622 ἐπαναστατήσας κατὰ τοῦ πατρός του Γιαχανγκὶρ καὶ ἀνακηρυχθεὶς βασιλεύς, κατενικήθη ὑπὸ τῶν στρατευμάτων αὐτοῦ ἐπανειλημμένως. Τῷ 1528, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὸν θρόνον καὶ νὰ παραμείνῃ μόνος βασιλεύς, ἀφοῦ πρῶτον ἐξωλόθρευσε τοὺς δύο ἀδελφούς του, οἵτινες διεξεδίκουν τὴν ἀρχήν. Ἐπειδὴ ὅμως εἶχεν ὁρίσει ὡς διάδοχον τὸν πρωτότοκον υἱόν του, οἱ δύο ἄλλοι υἱοί του, ἐπαναστατήσαντες συνέλαβον τὸν πατέρα των καὶ τὸν ἐνέκλεισαν ἐπὶ δεκαετίαν ἐν Ἄγκρᾳ, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ὁ Μεχμὲτ ΙΑ΄ ἀνῆκεν εἰς τὴν δυναστείαν τῶν Μεγάλων Μογγόλων καὶ ἐπροίκισε τὸ Δελχὶ μὲ διάφορα κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ ἀνάκτορον τῆς εὐνοουμένης του σουλτάνας καὶ ὡραῖον ὁμώνυμον αὐτῷ τέμενος. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ ΙΒ΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1642—1712). Ἦτο υἱὸς τοῦ Ἀουρένγκ-Ζεΰμπ, τὸν ὁποῖον διεδέχθη, παραχωρήσας εἰς τοὺς ἀδελφούς του Ἀαζὲμ καὶ Μεχμὲτ-Καμπούκς ἐπαρχίας τινάς, οἵτινες ὅμως, παρὰ τὰς παραχωρήσεις ταύτας, ἐπαναστάτησαν καὶ ἀνεκήρυξαν ἑαυτοὺς αὐτοκράτορας. Ὁ Μεχμὲτ ΙΒ΄ κατώρθωσε νὰ κατανικήσῃ ἀμφοτέρους. Κατέβαλεν ἐπίσης καὶ πολλοὺς ἄλλους ἡγεμόνας ἐπαναστατήσαντας κατ' αὐτοῦ καὶ διεκρίθη διὰ τὸ συμβιβαστικὸν τοῦ χαρακτῆρός του, χάρις εἰς τὸν ὁποῖον ἠδυνήθη νὰ κυβερνήσῃ ἀνενόχλητος τὸ ὑπόλοιπον τῆς ζωῆς του. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ΙΓ΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1685—1718). Ἦτο υἱὸς τοῦ Ἀτζὲμ-Χάν, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου ἐγένετο αὐτοκράτωρ τῷ 1713, διορίσας διοικητὰς τῆς Βεγγάλης τοὺς δύο ἀδελφοὺς του Ἀμπνταλλὰχ καὶ Χασὰν Ἀλῆ, οἵτινες ἐκυβέρνησαν αὐτὴν τυραννικώτατα, φονεύσαντες 30 φυλάρχους, οἱ ὁποῖοι ἐτόλμησαν νὰ διαμαρτυρηθοῦν διὰ τὰς καταπιέσεις των. Ἀλλ' ὅταν ὁ Μεχμὲτ ΙΓ΄ ἐπεχείρησε νὰ ἀπαλλαγῇ τούτων, οἱ ἀδελφοί του τὸν συνέλαβον καὶ ἀφοῦ ἐξώρυξαν τοὺς ὀφθαλμούς του τὸν ἐδηλητηρίασαν. Ὁ αὐτοκράτωρ οὗτος εἶχε παραχωρήσει εἰς τὴν Ἀγγλικὴν Ἑταιρείαν τῶν Ἰνδιῶν τὸ προνόμιον τῆς ἐλευθεροκοινωνίας ἐν Ἰνδίαις, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐν αὐταῖς ἀγγλικὴν διείσδυσιν. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ ὁ ΙΔ΄.** Αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν (1700 1748). Ἀνυψώθη εἰς τὸν θρόνον ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν τοῦ Μεχμὲτ ΙΓ΄ Ἀμπνταλλὰχ καὶ Χασὰν Ἀλῆ, οἵτινες ἐκυβέρνων κατ' οὐσίαν τὴν χώραν, μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ ἀδελφοῦ των. Μετὰ τὴν στερέωσίν του ὅμως εἰς τὸν θρόνον, μὴ ἀνεχόμενος τὴν κηδεμονίαν τῶν δύο ἀδελφῶν, ἐδολοφόνησεν αὐτοὺς καὶ παρέδωκε τὴν διακυβέρνησιν τῆς χώρας εἰς τὸν εὐνοούμενόν του Ντορβὰν Χάν, ἐνῷ αὐτὸς παρεδόθη εἰς τὴν ζωὴν τῶν ἡδονῶν τῶν χαρεμίων του. Ἐν τῷ μεταξὺ εἰσέβαλεν εἰς τὰς Ἰνδίας τῷ 1739 ὁ περίφημος σάχης τῆς Περσίας Ναντὶρ-Χάν, ὁ ὁποῖος εἰσῆλθεν εἰς τὴν Δελχί, τὴν ὁποίαν ἐλεηλάτησεν, ἀποκομίσας ἀμυθήτους θησαυρούς, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὸν περίφημον ἀδάμαντα Κοχινούρ. Ὁ Μεχμὲτ ΙΔ΄ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς λεηλασίας τῆς Δελχὶ ὑπὸ τοῦ Ναντὶρ-Χὰν παρέμεινεν ἐντὸς τῶν ἀνακτόρων του, ἐν τῷ μέσῳ τῶν χαρεμίων, μὴ προβαλὼν ἀντίστασιν, ἕνεκα δὲ τούτου δὲν ἠνοχλήθη ὑπὸ τοῦ Ναντὶρ Χάν, τοῦ ὁποίου μάλιστα ὁ υἱὸς ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα τοῦ Μεχμὲτ ΙΔ΄. Μετὰ τὴν εἰσβολὴν ταύτην, καθ' ἣν ἐφονεύθη ὁ Ντορβὰν-Χάν, ὁ Ναντὶρ-Χὰν ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Περσίαν, ἐνῷ αἱ ἐπαρχίαι τοῦ Νότου ἐκήρυξαν τὴν ἀνεξαρτησίαν των. Ὁ Μεχμὲτ μετὰ πολλοὺς ἀγῶνας κατώρθωσε νὰ ἀνακτήσῃ τὰς ἐπαναστατησάσας ἐπαρχίας καὶ νὰ βασιλεύσῃ ἐπί τινα ἔτη ἀνενόχλητος. Τῷ 1747 ὁ Ναντὶρ-Χὰν ἐπὶ κεφαλῆς ἰσχυροτάτων δυνάμεων ἐπεχείρησε νὰ εἰσβάλῃ ἐκ νέου εἰς τὰς Ἰνδίας, κληθεὶς ὑπὸ τῶν ἐπαναστατησάντων φυλάρχων, ἀλλ' ἡττήθη ἐν Πεντζὰμπ ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Μεχμὲτ ΙΔ΄, ὁ ὁποῖος κατώρθωσε νὰ ἀπωθήσῃ τοὺς Πέρσας ἐκεῖθεν τοῦ Ἀφγανιστάν. Μ. Δ. Β.

— **Μεχμὲτ** ***Ἐμίν.*** Ἀββασίδης χαλίφης (βλ. λ. *Ἐμίν*, Μεχμέτ).

ΑΛΛΑ ΙΣΤΟΡΙΚΑ ΠΡΟΣΩΠΑ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ἀϊβάζ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μαχμοὺτ τοῦ Α΄. Κατήγετο ἐκ Γιαγοδίνας τῆς Σερβίας καὶ ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς ὑπηρέτης (ἀϊβάζης), διακριθεὶς δὲ κατόπιν εἰς τὸν στρατὸν ὑπερήσπισε τὸ Βιδδίνιον κατὰ τὸν ἐναντίον τῆς Αὐστρίας καὶ Ρωσίας πόλεμον καὶ γενόμενος κατόπιν βεζύρης ἐνίκησε τοὺς Αὐστριακοὺς παρὰ τὴν Κρότσκαν καὶ ἐπεχείρησε νὰ πολιορκήσῃ τὸ Βελιγράδιον. Ὑπογράψας κατόπιν τὴν εἰρήνην τοῦ Βελιγραδίου τῆς 18 Σεπτεμβρίου 1739, διὰ τῆς ὁποίας παρεχωρεῖτο εἰς τὴν Τουρκίαν καὶ τὸ Βελιγράδιον, ἐπανῆλθε μετὰ τιμῶν εἰς Κωνσταντινούπολιν. Παυθεὶς μετὰ ἓν ἔτος διωρίσθη διοικητὴς Δζέδδας τῆς Ἀραβίας καὶ κατόπιν διαδοχικῶς Χανίων, Εὐβοίας, Βοσνίας καὶ Ναυπάκτου, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1742. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Ἀλῆ*** *πασᾶς*. Τοῦρκος στρατηγὸς (1827—1878). Γόνος γαλλικῆς οἰκογενείας ἐκ τῶν καλβινιστῶν τῶν καταφυγόντων εἰς Γερμανίαν κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα. Ἐγεννήθη τῷ 1827 ἐν Μαγδεμβούργῳ τῆς Γερμανίας, ἐκαλεῖτο Adolphe Detroit καὶ νεώτατος ἐπεδόθη εἰς τὸ ναυτικὸν στάδιον, ταξιδεύων δὲ εἰς Κωνσταντινούπολιν τῷ 1844 ἀπέδρασεν, ἄγνωστον διατί, ἐκ τοῦ πλοίου του καὶ τυχὼν τῆς προστασίας τοῦ μέγα ἰσχύοντος Ἀλῆ πασᾶ ἐξισλαμίσθη, καὶ εἰσαχθεὶς εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν ἐξῆλθεν εἰς τὸν τουρκικὸν στρατὸν ὡς ἀνθυπολοχαγὸς τῷ 1853. Τὸ ἑπιὸν ἔτος (1854) συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Κριμαίας καὶ διακριθεὶς κατ' αὐτὴν προήχθη τάχιστα εἰς ἀνώτερον ἀξιωματικόν. Τῷ 1862 συμμετέσχεν, ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ Ὀμὲρ-πασᾶ (ἀρνησιθρήσκου καὶ τούτου, ἐκ Κροατίας), εἰς τὴν ἐκστρατείαν κατὰ τῶν ἐπαναστατησάντων Μαυροβουνίων, καθ' ἣν προήχθη εἰς ἀνώτερον βαθμὸν καὶ τέλος τῷ 1865 ἐγένετο στρατηγός.

Ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐν Κρήτῃ ἐπαναστάσεως τοῦ 1866, ἀπεστάλη ἐκεῖ ὑπὸ τὸν Μουσταφᾶ Ναϊλῆ πασᾶν (29 Αὐγούστου 1866), συμμετέσχεν εἰς τὰ κατὰ τῶν Σφακίων καὶ τοῦ Θερίσου ἐπιχειρήσεις τοῦ Νοεμβρίου—Δεκεμβρίου 1866, εἶτα εἰς τὰς ἐναντίον τοῦ Σελίνου καὶ Ὁμαλοῦ (Ἰανουάριος 1867), μετὰ τὴν ἐπιτυχῆ ἔκβασιν τῶν ὁποίων ἐξεδιώχθη ἀγρίως τὰς ἀπωλείας τοῦ στρατοῦ του, ἀπαγχονίζων ἀδιακρίτως πάντα συλλαμβανόμενον Χριστιανόν.

Ἐπανελθὼν εἰς τὴν ἐπαρχίαν τοῦ Ἀποκορώνου (κατὰ Φεβρουάριον 1867) συμμετέσχε τῆς ἐναντίον τῶν Σφακίων ἐκστρατείας τοῦ Ὀμὲρ πασᾶ (Ἀπρίλιος 1867), καθ' ἣν ἀπεπειράθη νὰ ἐκβιάσῃ τὴν ἐξ Ἀποκορώνου δίοδον (Λαγγὸν τοῦ Κατρέ), ἀλλ' ἀποκρουσθεὶς ὑπὸ τῶν περὶ τὴν Κραπίαν Ἑλλήνων, κατεδιώχθη μέχρι Βρυσῶν καὶ ἔκτοτε παρέμεινε μετὰ τοῦ ὑπ' αὐτοῦ σώματος ἐν Ἀποκορώνῳ, μαχόμενος ἀδιαλείπτως πρὸς τοὺς ἐκεῖ ἐπαναστάτας μέχρι τοῦ Ἰουνίου 1867, ὅτε συμμετέσχεν ὑπὸ τὸν Ὀμὲρ πασᾶν εἰς τὴν νέαν κατὰ τῶν Σφακίων ἐκστρατείαν, καθ' ἣν ἐπιτυχὼν νὰ ἐκβιάσῃ τὴν φάραγγα τοῦ Κατρὲ ἀνῆλθεν εἰς Ἄσκυφον καὶ συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν μέχρις Ἀνωπόλεως καὶ Ἀραδαίνης εἴσδυσιν τῶν ἐξ Α. καὶ Ν. προερχομένων ἄλλων τουρκικῶν φαλάγγων.

Μετὰ τὴν ἐν ἀθλίᾳ καταστάσει ὑποχώρησιν τῶν Τούρκων ἐκ Σφακίων (Αὔγουστος 1867) εἰς Χανιά, ὁ Μεχμὲτ ἐγκατεστάθη πάλιν μετὰ τοῦ σώματός του ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀποκορώνου καί, στρατοπαιδεύων ἐν Βρύσαις, ἐμάχετο συνεχῶς κατὰ τῶν προσβαλλόντων αὐτὸν μέχρι τοῦ ἔαρος 1868. Ἐκεῖθεν ἀπεπειράθη νὰ βοηθήσῃ τὴν κατὰ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Ὁμαλοῦ καὶ τῆς ἐπαρχίας Σελίνου ἐπιχείρησιν τῶν Τούρκων, ἀλλ' ἐπὶ βραχὺ μόνον, διότι ἐπανῆλθε πάλιν εἰς Ἀποκόρωνον, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τέλους τῆς ἐπαναστάσεως (Ἰανουάριος 1869), ὅτε ἀπῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν.

Τῷ 1875 προήχθη εἰς μουσίρην (στρατάρχην) καὶ ἀπεστάλη κατὰ τῶν ἐπαναστατῶν τῆς Βοσνίας, τῷ δὲ 1877, κηρυχθέντος τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου, διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τῶν ἐν Βουλγαρίᾳ τουρκικῶν στρατευμάτων καὶ ἐν ἀρχῇ μὲν ἐνίκησε τοὺς Ρώσους, ἀλλ' ἐν τέλει ἡττηθείς, ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ Σουλεϊμὰν πασᾶ.

Μετὰ τὸ πέρας τῶν ἐχθροπραξιῶν διεξήγαγε τὰς περὶ ἀνακωχῆς διαπραγματεύσεις καὶ εἶτα συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐν τῷ Βερολινείῳ συνεδρίῳ (Ἰούνιος 1878) τουρκικὴν ἀντιπροσωπείαν, μεθ' ὅ, ἀποσταλεὶς εἰς Ἀλβανίαν ἵνα ἐξαναγκάσῃ τοὺς Ἀλβανοὺς νὰ ὑποκύψωσιν εἰς τὴν ἀπόφασιν τῶν Δυνάμεων περὶ παραχωρήσεως τοῦ Δουλσίνου εἰς τὸ Μαυροβούνιον, ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς ἀλβανικῆς ἀντιστάσεως Ἀλῆ πασᾶ τῆς Γκουσίνας. Ν. ΚΛΣ

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Γεγέν.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μαχμοὺτ τοῦ Α΄. Κατήγετο ἐξ Ἀτταλείας, ἐπωνομάσθη δὲ *Γεγὲν* (ἀνεψιός), διότι ἦτο ἀνεψιὸς τοῦ ἐκ τῶν μεγιστάνων Γκιοὺλ Γιουσοὺφ ἐφέντη. Ἀναβιβασθεὶς εἰς τὸ πρωθυπουργικὸν ἀξίωμα τῷ 1737 διὰ τῆς ἐπιρροῆς τοῦ διοικοῦντος τὸ κράτος ἀρχιευνούχου, ἐξεστράτευσε κατὰ τῶν Αὐστριακῶν διὰ Σερβίας καὶ ἔφθασε μέχρι τοῦ Δουνάβεως, ὅπου ἐκυρίευσε τὴν Ὄρσοβαν. Ἐπανελθὼν εἰς Κωνσταντινούπολιν, τῷ 1838, ἐπαύθη διότι δὲν ἦτο διαλλακτικὸς κατὰ τὰς περὶ εἰρήνης διαπραγματεύσεις καὶ ἐξωρίσθη εἰς Χίον. Ἀνακληθεὶς κατόπιν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν, διετέλεσε διοικητὴς Ἡρακλείου, Εὐβοίας, Σμύρνης κ.ἄ. Τῷ 1745 διορισθεὶς ἀρχιστράτηγος εἰς τὸν κατὰ τῆς Περσίας πόλεμον, ἀπέθανεν ἐκ λύπης μετὰ τὴν παρὰ τὸ Ἐριβὰν ἧτταν τῶν Τούρκων. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Γκιουρτζῆ*** (Γεωργιανός). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μουσταφᾶ τοῦ Α΄. Διωρίσθη βαλῆς Αἰγύπτου ἀπὸ ὀδάμπασης τοῦ σουλτανικοῦ σαραγίου, κατόπιν δὲ βαλῆς Βοσνίας καὶ φρούραρχος Βελιγραδίου. Τῷ 1651 διωρίσθη μέγας βεζύρης. Ἐπαύθη μετὰ ἓν ἔτος. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Γκιουρτζῆ*** (Γεωργιανός). Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μεχμὲτ τοῦ Δ΄. Διωρίσθη πρωθυπουργὸς τῷ 1657 καὶ παυθεὶς μετὰ 8 μῆνας ἐφυλακίσθη εἰς τὸ Ἑπταπύργιον καὶ κατόπιν ἐξωρίσθη ὡς διοικητὴς εἰς Τέμεσβαρ τῆς Οὐγγαρίας, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Δζανοὺμ Χότζας.*** Ἀρχιναύαρχος τῆς Τουρκίας (βλ. *Δζανοὺμ-Χότζα*).

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Δζερράχ*** (χειρουργός). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, πρωθυπουργεύσας ἐπὶ δεκάμηνον τῷ 1598. Ἐπωνομάσθη δζερράχ, διότι διατελῶν κουρεὺς εἰς τὰ ἀνάκτορα ἐξετέλεσε τὴν περιτομὴν τοῦ διαδόχου (Μεχμὲτ τοῦ Γ΄). Ἐπαύθη διὰ τὴν ἐν Οὐγγαρίᾳ ἀποτυχίαν τοῦ ἀρχιστρατήγου Σατιρτζῆ Μεχμὲτ πασᾶ. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ἐλμὰς*** (Ἀδάμας). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μουσταφᾶ Β΄. Κατήγετο ἐκ Σινώπης. Διορισθεὶς πρωθυπουργὸς τῷ 1695 ἠκολούθησε τὸν σουλτᾶνον εἰς δύο ἐπιτυχεῖς ἐκστρατείας κατὰ τῆς Αὐστρίας. Εἰς τρίτην ὅμως ἐκστρατείαν ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἡττήθη κατὰ κράτος τῷ 1697 ὑπὸ τοῦ διασήμου πρίγκιπος Εὐγενίου τῆς Σαβοΐας παρὰ τὴν Ζέντα τῆς Οὐγγαρίας, ὅπου ἔπεσε καὶ ὁ Ἐλμὰς Μεχμὲτ μὲ 30.000 ἄλλους Τούρκους, φονευθέντας ἢ πληγωθέντας. Μεταξὺ τῶν τροπαίων τῆς μάχης (423 σημαιῶν κλ.) ἦτο καὶ ἡ εἰς χεῖρας τοῦ μεγάλου βεζύρου σφραγὶς τοῦ κράτους, σῳζομένη ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Βιέννης. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Ἐμίν.*** Τοῦρκος ποιητὴς (βλ. λ. *Ἐμίν*, Μεχμέτ).

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ἰτζέτ.*** Βεζύρης (βλ. *Ἰζζὲτ* Μεχμὲτ πασᾶς).

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Καϊσεριελῆ*** (Καισαρεύς) ἢ ***Νισαντζῆ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Γ΄. Υἱὸς ἐμπόρου ἐξ Αἰγύπτου. Πρωθυπουργὸς διωρίσθη τῷ 1718, διαρκοῦντος τοῦ κατὰ τῆς Αὐστρίας πολέμου. Παυθεὶς μετὰ 9 μῆνας ὡς μὴ ἱκανὸς νὰ διεξαγάγῃ τὰς περὶ εἰρήνης διαπραγματεύσεις, διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ ἐν Ἄρτῃ τῆς Ἠπείρου στρατοῦ καὶ κατόπιν φρούραρχος Ἡρακλείου Κρήτης καὶ ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ Αἰγύπτου. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Καλαφάτ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Ἀβδοὺλ Χαμὶτ τοῦ Α΄. Ἦτο Βούλγαρος ἐξωμότης, διεκρίθη δὲ εἰς τὸ σῶμα τῶν γενιτσάρων, τοῦ ὁποίου ἔγινε καὶ ἀρχηγὸς καὶ κατόπιν ἀμέσως πρωθυπουργὸς τῷ 1778. Παυθεὶς μετὰ ἓν ἔτος ἐξωρίσθη εἰς Τένεδον καὶ ἐκεῖθεν εἰς Καλλίπολιν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ν. Μ.

—**Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Καραμανὶ*** ἢ ***Νισαντζῆ.*** Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μεχμὲτ τοῦ Πορθητοῦ, καταγόμενος ἐκ τῆς οἰκογενείας τοῦ ἱδρυτοῦ τοῦ τάγματος τῶν Μεβλεβήδων Δζελαλεδδὶν Ρουμῆ. Ἐπωνομάσθη Νισαντζῆς, διότι διετέλεσεν ἐπὶ πολὺ νισαντζῆς (σφραγιδοφύλαξ), διακριθεὶς διὰ τὸ ὕφος τῶν ἐγγράφων του. Αὐτὸς εἶναι ὁ ὀργανώσας τὸ σῶμα τῶν οὐλεμάδων (ἱερονομοδιδασκάλων), γενόμενος βεζύρης τῷ 1478. Μετὰ τρία ἔτη, ἀποθανόντος τοῦ σουλτάνου ἐν Γκέπζε τῆς Βι-

Digitized by Google

θυνίας, οἱ γενίτσαροι ἐξηγέρθησαν καὶ ἐφόνευσαν τὸν βεζύρην τοῦτον, διότι ἀπέκρυψε τὸν θάνατον τοῦ ἡγεμόνος του, ὅπως ὑποστηρίξῃ τὴν ὑποψηφιότητα τοῦ πρίγκιπος Δζέμ. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Κιοπρουλῆ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Κιοπρουλῆ* Μεχμὲτ πασᾶς).

—**Μεχμὲτ** *πασᾶς ὁ* ***Λαλᾶ*** (=παιδαγωγός). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, χρηματίσας παιδαγωγὸς τοῦ σουλτάνου Μεχμὲτ τοῦ Γ΄. Ἦτο υἱὸς ἑνὸς ζαΐμη (στρατιωτικοῦ τιμαριούχου) ἐκ Μαγνησίας, ἤρχισε δὲ τὸ στάδιόν του ὡς τσαούσης τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων. Κατὰ τὴν ἀνάρρησιν Μεχμὲτ τοῦ Γ΄ (1580) προήχθη εἰς τὸν βαθμὸν βεζύρου, τῷ δὲ 1595 διωρίσθη μέγας βεζύρης, ἀλλ᾽ ἀπέθανε μετὰ τρεῖς ἡμέρας. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Λαλᾶ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, πρωθυπουργεύσας ἐπὶ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Α΄. Ἦτο Βόσνιος τὴν καταγωγήν, ἀνατραφεὶς εἰς τὰ σουλτανικὰ ἀνάκτορα καὶ ἀρχίσας τὸ στάδιόν του ὡς μιραχόρης (σταβλάρχης). Διακριθεὶς κατόπιν ὡς ἀξιωματικὸς τῶν γενιτσάρων, διωρίσθη διοικητὴς τῶν φρουρῶν τῶν πρὸς τὴν Οὐγγαρίων συνόρων τῆς Τουρκίας καὶ τῷ 1604 μέγας βεζύρης. Ὡς τοιοῦτος ἡγηθεὶς τοῦ στρατοῦ ἐκυρίευσεν εἰς δύο ἐκστρατείας πολλὰς ὀχυρὰς πόλεις τῆς Οὐγγαρίας. Ἀπέθανε τῷ 1606, καθ᾽ ἣν στιγμὴν ἦτο ἕτοιμος νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τῆς Περσίας, παθὼν ἐξ ἀποπληξίας ἢ δηλητηριασθείς. Ν.Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Μελέκ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Σελὶμ τοῦ Γ΄. Κατήγετο ἐκ Βοσνίας, συνώδευσε δὲ τὸν πατέρα, ὄντα ἀρχιναύαρχον, εἰς διαφόρους ἐκστρατείας, γενόμενος κατόπιν καὶ ὁ ἴδιος τρὶς καπετὰν πασᾶς καὶ γαμβρὸς τοῦ σουλτάνου. Τῷ 1778 διετέλεσε διοικητὴς Πελοποννήσου καὶ κατόπιν Εὐβοίας καὶ Κρήτης. Τῷ 1792 διωρίσθη μέγας βεζύρης. Ἐπαύθη τῷ 1795. Ἐπὶ τῆς βεζυρείας του ἡ Τουρκία κληθεῖσα νὰ συμμετάσχῃ τῆς ἐναντίον τῆς γαλλικῆς δημοκρατίας συμμαχίας τῆς Αὐστρίας, Πρωσσίας καὶ Ρωσίας ἠρνήθη, δεχθεῖσα ἀπεναντίας τοὺς πρέσβεις τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως, διότι ὁ σουλτᾶνος Σελὶμ ἦτο ὀπαδὸς τῶν φιλελευθέρων θεσμῶν. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Μπαλτατζῆς*** ἢ ***Τεμπερντάρ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Ἀχμὲτ τοῦ Γ΄. Ἦτο Ἀνατολίτης, ἐξ Ὀσμαντζὶκ τῆς Κασταμονῆς, προήχθη δὲ ταχέως ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τοῦ σουλτανικοῦ σαραγίου, διότι εἶχεν ὡραίαν μορφὴν καὶ φωνήν, γενόμενος μπαλτατζῆς τοῦ σουλτάνου, μιραχόρης (σταβλάρχης) καὶ καπετὰν πασᾶς. Τῷ 1704 διωρίσθη μέγας βεζύρης. Παυθεὶς μετὰ δέκα ἓξ μῆνας διωρίσθη ἐκ νέου τῷ 1710, ὅτε καὶ ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στρατοῦ εἰς τὸν κατὰ τῆς Ρωσίας πόλεμον. Ὁ ρωσικὸς στρατὸς ὑπὸ τὸν τσάρον Πέτρον τὸν Μέγαν ἡττήθη τότε παρὰ τὸν Προῦθον καὶ εὑρέθη στενῶς πολιορκημένος, θὰ συνελαμβάνετο δὲ ἀσφαλῶς ὁ τσάρος αἰχμάλωτος, ἂν μὴ ὁ Μπαλτατζῆς Μεχμὲτ πασᾶς ἐδελεάζετο διὰ δώρων ὑπὸ τῆς τσαρίνας Αἰκατερίνης, ἐμφανισθείσης εἰς τὸ τουρκικὸν στρατόπεδον. Καὶ ἦτο μὲν ἡ τότε συναφθεῖσα εἰρήνη εὐνοϊκωτάτη διὰ τὴν Τουρκίαν, ἀλλ᾽ ὁ Μπαλτατζῆς, καταγγελθεὶς διὰ τὴν δωροδοκίαν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν του, ἀγομένων ὑπὸ τοῦ εἰς Τουρκίαν καταφυγόντος βασιλέως τῆς Σουηδίας Καρόλου τοῦ ΙΒ΄ καὶ ὑπὸ τοῦ χάνη τῆς Κριμαίας, ἐπαύθη τῷ 1711 καὶ ἐξωρίσθη εἰς Λῆμνον, ἐκεῖθεν δὲ εἰς Μυτιλήνην, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1712. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *μπὲν* - ***Μουσᾶ.*** Εἷς τῶν τριῶν ἀδελφῶν Μπὲν - Μουσᾶ, διασήμων Ἀράβων μαθηματικῶν, οἵτινες μετέφρασαν εἰς τὴν ἀραβικὴν τὰ συγγράμματα τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων μαθηματικῶν. Ἀπέθανε τῷ 873 μ. Χ. Τὸ περὶ ἀλγέβρας σύγγραμμά του μετεφράσθη εἰς τὴν ἀγγλικὴν καὶ ἐξεδόθη τῷ 1831. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Μποϊνοῦ - ἐγρῆ*** (Στραβολαίμης). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μεχμὲτ τοῦ Δ΄. Διακριθεὶς εἰς τοὺς κατὰ τῶν Περσῶν πολέμους ἔλαβε 40 πληγάς, ὡς ἐκ τούτου δέ, παραμορφωθέντος τοῦ λαιμοῦ του, ἐπωνομάσθη Μποϊνοῦ - ἐγρῆ ἢ Μποϊνοῦ - γιαραλῆ (πληγωμένος εἰς τὸν λαιμόν). Προαχθεὶς ταχέως διωρίσθη τῷ 1656 μέγας βεζύρης. Ἐπαύθη μετὰ δύο μῆνας, μὴ δυνηθεὶς νὰ σώσῃ τὴν Λῆμνον, Τένεδον καὶ Σαμοθράκην, καταληφθείσας ὑπὸ τῶν Βενετῶν ναυαρχοῦντος τοῦ Λαζάρου Μοτσενίγου, ὅστις, ἐνίκησε τὸν τουρκικὸν στόλον. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ὀκιοὺζ*** (βόδι) ἢ ***Δαμάτ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, πρωθυπουργεύσας δὶς ἐπὶ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Α΄ καὶ Ὀσμὰν τοῦ Β΄. Ἐγεννήθη ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐκ πατρὸς πεταλωτοῦ βοῶν (ἐξ οὗ καὶ τὸ παρωνύμιόν του Ὀκιούζ), προσληφθεὶς δὲ εἰς τὰ ἀνάκτορα ἔγινε σιλιχτάρης (ξιφοφόρος), κατόπιν δὲ γενικὸς διοικητὴς Αἰγύπτου, ὅπου ἀποκατέστησε τὴν τάξιν σφάξας χιλιάδας τινὰς γενιτσάρων (κούλ), ἐξ οὗ καὶ ὠνομάσθη ἐν Αἰγύπτῳ κοὺλ-κιρὰν (κουλοσπάστης). Γενόμενος κατόπιν γαμβρὸς τοῦ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Α΄ διωρίσθη καπετὰν πασᾶς καὶ τῷ 1614 πρωθυπουργός. Ἐπαύθη κατὰ τὴν δευτέραν πρωθυπουργίαν του τῷ 1617 ὡς ἀποτυχὼν εἰς τὸν κατὰ τῆς Περσίας πόλεμον. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***(Καρᾶ Μεχμὲτ Τοπτσῆ - μπασῆς).*** Καπετὰν πασᾶς (ἀρχιναύαρχος) τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μαχμοὺτ τοῦ Β΄. Κατήγετο ἐξ Ἀντιοχείας, ἀνῆκε δὲ εἰς τὴν ἡμιμουσουλμανικὴν φυλὴν τῶν Νουσεϊρῆ. Κατὰ τοὺς πρώτους μῆνας τῆς Ἑλληνικῆς ἐπαναστάσεως, διατελῶν τοπτσῆ-μπασῆς, ἤτοι ἀρχηγὸς τοῦ πυροβολικοῦ, διεκρίθη ὡς λαβὼν μέτρα, χάρις εἰς τὰ ὁποῖα ἐπιστεύθη ὅτι ἐσώθη ὁ ἐν Κωνσταντινουπόλει τοπχανὲς (τὸ ἀρχηγεῖον καὶ τὰ ἐργοστάσια τοῦ πυροβολικοῦ) ἀπὸ πάσης ἀποπείρας. Εἰς ἀμοιβὴν διωρίσθη καπετὰν πασᾶς εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Καρᾶ - Ἀλῆ - Νασοὺχ-ζαδέ, φονευθέντος κατὰ τὴν πυρπόλησιν τοῦ τουρκικοῦ στόλου ὑπὸ τοῦ Κανάρη ἐν Χίῳ (1822). Διετάχθη τότε νὰ πλεύσῃ ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στόλου εἰς Πελοπόννησον, ἀλλὰ μὴ κατορθώσας τοῦτο ἐπαύθη μετὰ πέντε μῆνας καὶ διωρίσθη φρούραρχος Λήμνου καὶ κατόπιν διοικητὴς Ἀγκύρας, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ν. Μ.

—**Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Πιρὶ*** (γνωστὸς καὶ ὡς ***Πιρὶ πασᾶς***). Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Σελὶμ τοῦ Α΄ καὶ Σουλεϋμὰν τοῦ Νομοθέτου. Κατήγετο ἐκ Καισαρείας τῆς ἐν τῇ Καππαδοκίᾳ. Διωρίσθη βεζύρης τῷ 1517 καὶ ἐπαύθη τῷ 1523. Διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Βελιγραδίου καὶ κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Ρόδου. Ἐξ αὐτοῦ ὠνομάσθη μία συνοικία τῶν ἐπὶ τοῦ Κερατίου κόλπου προαστείων τοῦ Πέραν.

Περὶ τοῦ βεζύρου τούτου ἀναφέρεται εἰς χρονικόν τι τῆς Βενετίας ὅτι τῷ 1522 ὁ σουλτᾶνος Σουλεϋμὰν ἐρεθισθεὶς ὑπό τινος ἀστρολόγου Ἑβραίου κατὰ τῶν Χριστιανῶν «συμβούλιον ἐποίησε μετὰ τῶν πρωτοσυμβούλων του, ἵνα κόψῃ τοὺς Χριστιανούς.... ὁ δὲ Πιρὶ πασᾶς ἔκοψεν αὐτὸν τῆς αὐτῆς ἀθέσμου καὶ ἀδίκου ὁρμῆς». Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Ραγὴπ*** *πασᾶς*. Μέγας βεζύρης (βλ. *Ραγὴπ* πασᾶς).

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ραμῆ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, διακριθεὶς καὶ ὡς ποιητής, ὡς ἐκ τούτου δὲ γενόμενος γαμβρὸς τοῦ σουλτάνου. Τῷ 1696 διετέλεσε «Ρεῒς - ἐλ - κιουττὰπ» (ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν) καὶ τῷ 1703 μέγας βεζύρης. Ἀπέθανεν ἐξόριστος ἐν Ρόδῳ τῷ 1709. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Ρεσὴτ*** *πασᾶς ὁ* ***Κιουταχῆς.*** Στρατηγὸς καὶ μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Κιουταχῆς* Μεχμὲτ Ρεσὴτ πασᾶς).

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Ροὺμ*** (Ρωμιός). Ἕλλην ἀρνησίθρησκος ἀνελθὼν ἐπὶ Μεχμὲτ τοῦ πορθητοῦ εἰς τὸ βεζυρικὸν ἀξίωμα τῷ 1457, παυθέντος τοῦ Μαχμοὺτ πασᾶ ἕνεκα τῆς κατὰ τοῦ ἡγεμόνος Καραμάνογλου ἀποτυχίας. Νικηθεὶς ὅμως καὶ ὁ ἴδιος μετὰ δέκα τρία ἔτη, ἐπαύθη τῷ 1470 καὶ ἀπέθανε τὸ αὐτὸ ἔτος. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Ρουσδῆ*** *πασᾶς, ὁ ἐπονομασθεὶς* ***Μουτερτζὶμ*** (μεταφραστής). Τοῦρκος πολιτικὸς καὶ στρατιωτικὸς τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Κατήγετο ἐξ Ἀγιαντὸν (Ἁγίου Ἀντωνίου) τῆς Σινώπης, ἐσπούδασε δὲ ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ τότε ἀνοργανουμένου τουρκικοῦ στρατοῦ (1829). Μετέφρασε διάφορα γαλλικὰ στρατιωτικὰ συγγράμματα, ὡς ἐκ τούτου δὲ ἐπωνομάσθη ἔκτοτε Μουτερτζὶμ καὶ εἰργάσθη κατόπιν διὰ τὸν ὀργανισμὸν τῆς ἐφεδρείας τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ. Τῷ 1851 πρῶτον καὶ δὶς κατόπιν διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, τῷ δὲ 1859 διωρίσθη μέγας βεζύρης, διατελέσας κατόπιν τρίς, τὴν τελευταίαν φορὰν ἐπὶ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Ε΄ καὶ κατὰ τοὺς πρώτους μῆνας τῆς βασιλείας Ἀβδοὺλ Χαμὶτ τοῦ Β΄. Ἀπέθανε τῷ 1881 ἐν Μαγνησίᾳ. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Σαΐτ*** *πασᾶς*. Μέγας Βεζύρης τῆς Τουρκίας, υἱὸς τοῦ Μεχμὲτ Τσελεμπῆ. Διατελέσας πρέσβυς ἐν Παρισίοις καὶ Στοκχόλμῃ, διωρίσθη πρωθυπουργὸς τῷ 1755, ἀλλ᾽ ἐπαύθη μετὰ ἓξ μῆνας (1756). Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται κυρίως ἡ εἰσαγωγὴ τῆς τυπογραφίας ἐν Τουρκίᾳ. Ἔγραψε καὶ ἓν σύγγραμμα περὶ ἰατρικῆς. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σιλιχτὰρ*** (ξιφοφόρος). Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνων Ἀχμὲτ τοῦ Γ΄ καὶ Μαχμοὺτ τοῦ Α΄. Διαδεχθεὶς τῷ 1730 τὸν Ἰμπραχὶμ πασᾶν, ἀνατραπέντα ὑπὸ τῆς γενιτσαρικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ἀλβανοῦ Πατρώνα - Χαλίλ, ἦτο ἁπλοῦν ὄργανον τούτου. Ἔπαυσε τὸν ἡγεμόνα τῆς Μολδαυΐας Γρηγόριον Γκίκαν καὶ διώρισεν ἀντ᾽ αὐτοῦ τὸν Ἕλληνα κρεοπώλην Ἰαννάκην, ὅστις ἐπρομήθευε κρέας εἰς τὸν Πατρώνα, ὅταν ἦτο ἁπλοῦς γενίτσαρος. Κατασταλείσης τῆς γενιτσαρικῆς ἐπαναστάσεως ἐξωρίσθη τὸ αὐτὸ ἔτος εἰς Χαλέπιον. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σιλιχτὰρ*** ἢ ***Ἐσ-σεΐτ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μαχμοὺτ τοῦ Α΄. Κατήγετο ἐκ Διδυμοτείχου. Διωρίσθη βεζύρης τῷ 1735. Ἐμπλακεὶς ὅμως εἰς πολέμους κατὰ τῆς Περσίας καὶ κατὰ τῆς Ρωσίας ἐπαύθη μετὰ εἴκοσι μῆνας ὡς ἀνίκανος περὶ τὰ στρατιωτικὰ καὶ ἐξωρίσθη εἰς Χαλκίδα τῆς Εὐβοίας, κατόπιν δὲ διωρίσθη διοικητὴς Χανίων, Βελιγραδίου καὶ Ναυπάκτου. Ἀπέθανεν ἐν Μέκκᾳ. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σιλιχτάρ.*** Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μουσταφᾶ τοῦ Γ΄, προαχθεὶς ὡς τοιοῦτος τῷ 1755 ἀπὸ ἁπλοῦς μπαλτατζῆς καὶ μουεζζίνης (κράχτης) τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων ἀρχικῶς. Μετὰ δύο ὅμως μόλις μῆνας ἐπαύθη καὶ ἀπεκεφαλίσθη ὡς ἀμελής, ψεύστης καὶ καταχραστής.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σιλιχτάρ.*** Καταγόμενος ἐκ Νίγδης τῆς Καππαδοκίας, εἰσῆλθεν εἰς τὰ σουλτανικὰ ἀνάκτορα τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατ᾽ ἀρχὰς ὡς παραμάγειρος· μαθὼν δὲ γράμματα ἔγινε γραφεὺς καὶ ἰδιαίτερος γραμματεὺς τοῦ Ἀβδοὺλ Χαμίτ, ὅταν ἦτο διάδοχος. Γενομένου δὲ τούτου σουλτάνου ἐκλήθη τῷ 1779 εἰς τὸ πρωθυπουργικὸν ἀξίωμα. Ἀπέθανε τῷ 1781. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σοκολλοῦ.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας, πρωθυπουργεύσας ἐπὶ 15 ἔτη ὑπὸ Σουλεϋμὰν τὸν Νομοθέτην καὶ Σελὶμ τὸν Β΄. Ἦτο Σέρβος τὸ γένος, γεννηθεὶς ἐν τῇ ἐν Βοσνίᾳ ὀχυρᾷ πόλει Σόκολ. Παῖς ἀκόμη ἀχθεὶς εἰς τὰ σουλτανικὰ ἀνάκτορα ὑπηρέτησεν ὡς καπουτζῆ-μπασῆς καὶ κατόπιν ἔγινεν ἀρχιναύαρχος, διαδεχθεὶς τῷ 1546 τὸν διάσημον Βαρβαρόσσαν. Διακριθεὶς δὲ κατόπιν κατὰ τὴν ἅλωσιν τοῦ ἐν Οὐγγαρίᾳ Τεμεσβὰρ ἐπροβιβάσθη εἰς τὸν βαθμὸν βεζύρου, ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα τοῦ σουλτάνου Σελὶμ καὶ τῷ 1564 διωρίσθη μέγας βεζύρης. Συνώδευσε τὸν Σουλεϋμὰν εἰς τὴν ἐν Οὐγγαρίᾳ ἐκστρατείαν, καθ᾽ ἣν ὁ σουλτᾶνος οὗτος ἀπέθανε πολιορκῶν τὸ φρούριον τοῦ Σιγκετβάρ. Τὸν θάνατον τούτου ἀπέκρυψεν ὁ βεζύρης μέχρι τῆς ἀφίξεως τοῦ Σελίμ, ὅστις τὸν διετήρησεν εἰς τὸ πρωθυπουργικὸν ἀξίωμα, ἔχων ἀπεριόριστον πρὸς αὐτὸν ἐμπιστοσύνην. Τὸ ἀξίωμα τοῦτο διετήρησεν ὁ Μεχμὲτ Σοκόλοβιτς καὶ ἐπὶ Μουρὰτ τοῦ Γ΄. Ἐδολοφονήθη τῷ 1579, ἀφήσας τὴν μνήμην ἀνδρὸς ἱκανοῦ, τιμίου καὶ φίλου τῶν γραμμάτων. Ἀναφέρεται περὶ αὐτοῦ ὅτι ἐπεχείρησε νὰ ἑνώσῃ διὰ διώρυγος τὸν ποταμὸν Δὼν μετὰ τοῦ Βόλγα. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***σουλτὰν-ζαδὲς*** (υἱὸς σουλτάνας). Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Ἰμπραχίμ. Ἦτο ἀπόγονος τοῦ διασήμου ναυάρχου Σινὰν πασᾶ Τσικάλα. Ἀφοῦ διεκρίθη εἰς διαφόρους ἐκστρατείας, διωρίσθη βεζύρης τῷ 1644, ἐνῷ διήρκει ἡ κατὰ τῆς Κρήτης ἐκστρατεία. Παυθεὶς μετὰ ἓν ἔτος ἀπεστάλη ὡς σερδάρης (ἀρχιστράτηγος) εἰς Κρήτην. Ἐκεῖ ὅμως ἀσθενήσας ἀπέθανε τῷ 1647.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Σοφοῦ*** (εὐλαβής). Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μεχμὲτ τοῦ Δ΄. Ἦτο ἀξιωματικὸς τοῦ σώματος τῶν σπαχήδων καὶ κατόπιν γενιτσὰρ-ἀγᾶς. Κληθεὶς γέρων πλέον εἰς τὸ πρωθυπουργικὸν ἀξίωμα, τῷ 1649, ἐπαύθη μετὰ ἕνδεκα μῆνας. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Τεριακῆ*** (θεριακλῆς). Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ Μαχμοὺτ τοῦ Α΄. Υἱὸς δερβίσου Βεκτασίτου, δερβίσης καὶ ὁ ἴδιος κατ᾽ ἀρχάς, προήχθη κατόπιν ἀπὸ γραφέως τοῦ στρατοῦ βαθμιαίως εἰς κεχαγιᾶ-μπέην καὶ μετὰ 45 ἡμέρας διωρίσθη βεζύρης τῷ 1746, ἀλλ᾽ ἐπαύθη μετὰ 85 ἡμέρας, τῷ 1847, διὰ τὸ ἀσυμβίβαστον τοῦ χαρακτῆρός του καὶ ἐπὶ τέλους ἐξωρίσθη εἰς Ρέθυμνον, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1751. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** *πασᾶς* ***Τσερκὲς*** (Κιρκάσιος), ἢ ***Δερβίς.*** Βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Δ΄. Ἀφοῦ διετέλεσε σιλιχτάρης (ξιφοφόρος) τοῦ σουλτάνου καὶ βαλῆς Συρίας, διωρίσθη βεζύρης τῷ 1653. Ἀπέθανε μετὰ ἓν ἔτος. Ἦτο Κιρκάσιος τὴν πατρίδα, ἔφερε δὲ μύστακας κατερχομένους μέχρι τῆς ὀσφύος του. Ν. Μ.

— **Μεχμὲτ** ***Φουάτ, Κιοπρουλοῦ-ζαδὲ—.*** Τοῦρκος λογογράφος (βλ. λ. *Κιοπρουλοῦ*-ζαδὲ Μεχμὲτ Φουάτ).

**Μεχομία** *[Γεωγρ.]·* βλ. *Μαχομία.*

**μέχρι,** καὶ πρὸ φων. ***μέχρις·*** ἐπίρρημ. δηλοῦν τὸ σημεῖον, ἕως οὗ φθάνει ἐνέργειά τις τοπικῶς ἢ χρονικῶς, ἢ τὸ ἀνώτατον ἢ ἐλάχιστον ὅριον, εἰς ὃ ἐξικνεῖταί τι, ἕως, ὡς: «μέχρι τῆς θαλάσσης», «μέχρι τῆς Δευτέρας», «μέχρι θανάτου», «μέχρι τοῦ θέρους θὰ ἔχω ἀπαλλαγῆ τῶν δυσκολιῶν», «ἡ Ἑλλὰς ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ Αἰγαίου μέχρι τοῦ Ἰονίου πελάγους»· || μετ᾽ ἐπιρρ. «μέχρις ἐδῶ πᾶμε καλά», «μέχρι τότε δὲν εἶχεν ἀκουσθῆ τίποτε»· || μετ᾽ ἀριθμητ. (κατὰ προσέγγισιν) «ἀπὸ τὴν Ἀθήνα ὣς τὸ Χαλάνδρι θὰ εἶναι μέχρι δεκαπέντε χιλιόμετρα»· || δημωδ. μετ᾽ αἰτ. «θὰ πάω μέχρι τὸ τέρμα», «μέχρι τὸ χειμῶνα θὰ ὑποφέρω».

**Μεχρικὸς** *[Γεωγρ.].* Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Κέχρος* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Σαπῶν.

**μεώτιος ὑποβαθμὶς** *[Γεωλογ.]·* βλ. λ. *μαιώτιος* ὑποβαθμίς.

**Μζαβῖται** (οἱ). Βερβερικὴ φυλὴ (βλ. *Μοζαβῖται*).



Digitized by Google

**μή,** καὶ ***μὴν*** πρὸ φωνήεντος καὶ τῶν ψιλῶν κ π τ (ξ ψ)· ἀρνητικὸν ἢ ἀποφατικὸν μόριον· ἐν ἀνεξαρτήτῳ λόγῳ πρὸς δήλωσιν ἀπαγορεύσεως: «μὴ φύγῃς», «μὴν εἰπῇς τίποτε», «μὴ μὲ κοιτάζῃς ἄγρια», «μὴν πειράξῃς τὸ παιδί»· || πρὸς δήλωσιν εὐχῆς ἢ κατάρας: «μὴν εἶχε ξημερώσει», «μὴν εἶχε σώσει νά'ρθῃ», «νὰ μὴν εἶχα γεννηθῇ», «καλὴν ἡμέρα νὰ μὴν ἴδῃ», «ὁ θεὸς νὰ μὴν τὸ δώσῃ», «νὰ μὴν ξημερωθῶ, ἂν σοῦ λέω ψέματα»· || φρ. «μὴ γένοιτο», ἢ «ὃ μὴ γένοιτο»· «ἂν τύχῃ κι' ἀρρωστήσῃ, ὃ μὴ γένοιτο, ποιὸς θὰ τὸν κοιτάξῃ;»· || ἐν ἐξηρτημένῳ λόγῳ μετὰ τελικῶν προτάσεων: «σὲ παρακαλῶ νὰ μὴ μ' ἐνοχλῇς», «τὸν προέτρεψε νὰ μὴ φύγῃ», «διὰ νὰ μὴ φύγῃς», «διὰ νὰ μὴν εἰπῇς τίποτε»· || ὡς εἰσαγωγικὸν πλαγίας ἐρωτήσεως μὲ τὰ ρήματα ἐρωτήσεως, φόβου ἢ φροντίδος σημαντικά: «ρώτησε μὴν ἦρθε ὁ Γιάννης», «κοίταξε μὴ σοῦ φύγῃ τὸ πουλλί», «ἔχε τὸ νοῦ σου μὴ γκρεμισθῇς», «πρόσεξε μὴν εἰπῇς κανέναν ἄσχημο λόγο», «φοβοῦμαι μὴν πάθῃ τίποτε ὁ μικρός»· || κατὰ παράλειψιν τοῦ ρήματος, ἐξ οὗ ἐξαρτᾶται: «μὴ σὲ ἴδῃ κανεὶς καὶ τότε ποῦ θὰ κρυφτῇς», «μὴ σὲ πιάσω καὶ νὰ ἴδῃς τί θὰ πάθῃς» ἐννοουμένου τοῦ *πρόσεξε, κοίταξε κτλ.*· || *εἰμὴ* μετὰ ἄρνησιν σημαίνει *ἐκτός, πλήν*· «οὐδεὶς ἀναμάρτητος, εἰμὴ εἷς, ὁ θεός», «οὐδεὶς ἐγνώριζέ τι, εἰμὴ μόνον ἡ σύζυγός του», «δὲν θὰ παραμείνω εἰς Ἀθήνας, εἰμὴ δέκα ἡμέρας»· || *εἰ δὲ μὴ* ἢ ὑφὲν *εἰδεμὴ* ἄνευ ρήματος σημαίνει *ἄλλως, ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει*: «ἐὰν μὲν ἔλθω ἕως τὸ μεσημέρι, ἔχει καλῶς, εἰδεμή, μὴν περιμένῃς πλέον», «ὀφείλεις νὰ ὑπακούῃς εἰς τὰς διαταγάς μου, εἰδεμή, φύγε»· || ἁπλῶς *μὴ* ἄνευ ρήματος, ὅταν ἐντόνως ἀπαγορεύωμεν ἢ ἀποτρέπωμέν τινα ἀπὸ πράξεως: *μή! μή!* || μετὰ ἐπιθέτων καὶ μετοχῶν πρὸς δήλωσιν τῆς ἀντιθέτου ἐννοίας: «ὁ μὴ δίκαιος», «τὰ μὴ καλὰ ἔργα», «αἱ μὴ ἀναγκαῖαι δαπάναι», «ὁ μὴ ἐννοῶν», «ὁ μὴ πιστεύων», «οἱ μὴ πολιτευθέντες καλῶς», «ὁ μὴ πωληθεὶς καπνός», «οἱ μὴ εἰσπραχθέντες φόροι», «θέλοντας καὶ μὴ θέλοντας».

**μηγάρι,** καὶ συνήθ. ***μηγάρις*** καὶ ***μήγαρις***, δημοτ.· μήπως, μόνον ἐπὶ ἐρωτηματικῆς ἀπαντήσεως: ᾀσμ. «μήγαρις εἶμαι χρυσοχὸς νὰ φτιάχνω δαχτυλίδια;», «μήγαρις τὸν εἶδα καὶ καθόλου;» (ἐκ τοῦ *μὴ γάρ*).

**Μήγερι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Ἄρτης, ἤδη καλούμενον *Τετράκωμιον* (βλ. λ.).

**Μῆγκερ** (Meagher), ***Θωμᾶς-Φράνσις.*** Ἰρλανδὸς πολιτικὸς καὶ στρατιωτικός. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Δουβλίνῳ καὶ ἀναμειχθεὶς ἐνωρὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐγένετο τῷ 1845 μέλος τῆς πολιτικῆς ὁμάδος τῶν «Νέων Ἰρλανδῶν», τῷ δὲ 1847 ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς «Ἰρλανδικῆς Ὁμοσπονδίας». Τῷ 1848 συνελήφθη δι' ἐπαναστατικὰς ἐνεργείας, ἀλλ' ἀφέθη ἐλεύθερος. Τὸ ἐπόμενον ἔτος ἐγένετο μέλος τοῦ πενταμελοῦς «πολεμικοῦ διευθυντηρίου» καὶ ἐπεχείρησε τὴν κήρυξιν ἐπαναστάσεως. Συλληφθεὶς μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ κινήματος κατεδικάσθη εἰς θάνατον, ἀλλ' ἡ ποινή του ἐμετριάσθη κατόπιν εἰς ἰσόβια δεσμά. Τῷ 1852 κατορθώσας νὰ δραπετεύσῃ κατέφυγεν εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην καὶ περιώδευσε τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Β. Ἀμερικῆς, δίδων διαλέξεις ὑπὲρ τῆς ἰρλανδικῆς ἀνεξαρτησίας. Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα καὶ ἐξέδωκε δύο ἐφημερίδας. Κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1861—1862 ἐγένετο ἀρχηγὸς ἐθελοντικοῦ λόχου ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ καὶ ἐπολέμησεν εἰς τὴν μάχην τοῦ Μποὺλ-Ρών. Κατόπιν ὠργάνωσε τὴν ἰρλανδικὴν ταξιαρχίαν καὶ ἐγένετο συνταγματάρχης τοῦ πρώτου αὐτῆς συντάγματος. Κατόπιν ἐγένετο ὑποστράτηγος καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τῆς Ὑόρκταουν καὶ εἰς διαφόρους ἄλλας μάχας. Μετὰ τὸν πόλεμον διωρίσθη γραμματεὺς καὶ κατόπιν διοικητὴς τῆς περιφερείας Μοντάνα. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων «Λόγοι περὶ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἰρλανδίας» (1852). Μ. Δ. Β.

**Μὴδ** (Meath ἢ Midhe) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς Ἰρλανδίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Λάνστερ, κειμένη μεταξὺ τῆς Ἰρλανδικῆς θαλάσσης καὶ τῶν κομιτειῶν τοῦ Δουβλίνου, τοῦ Κέλντεϊρ, Κίνγκς, Οὐέστμωδ, Κάβαν καὶ Λούθ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 2338 τ. χλμ. καὶ 62.969 κατ. Πρωτεύουσα αὐτῆς ἦτο ἡ Τρίμ. Εἶναι χώρα εὔφορος, μᾶλλον πεδινὴ καὶ παράγει κυρίως γεωργικὰ προϊόντα καὶ μάλλινα καὶ λινὰ ὑφάσματα. Μ. Δ. Β.

**Μήδα** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Φύλαντος, βασιλέως τῶν ἐν Θεσσαλίᾳ Δρυόπων, μήτηρ τοῦ Ἀντιόχου ἐκ τοῦ Ἡρακλέους. Α. Θ. Σ.

**Μηδάβα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Παλαιστίνης ἐν Περαίᾳ πρὸς Α. τῆς Ἀσφαλτίτιδος λίμνης (Νεκρᾶς θαλάσσης) ΝΑ. τοῦ ὄρους Πίσγα, ἀναφερομένη ἀπὸ τῶν βιβλικῶν ἤδη χρόνων. Ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Ὑρκανοῦ, κατεχομένη ὑπὸ τῶν Μωαβιτῶν, κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων. Σήμερον καλεῖται *Μααδάβα* καὶ *Μαδηβᾶ* (βλ. λ.), ὅπου σῴζονται σημαντικὰ ἐρείπια αὐτῆς, ἐν οἷς καὶ μωσαϊκὸν τοῦ ΣΤ' μ. Χ. αἰῶνος, παριστῶν τὸν χάρτην τῆς Παλαιστίνης. Α. Θ. Σ.

**μηδαμινός,** *—ή, —όν*· ὁ μηδενός, ὁ μηδεμιᾶς τιμῆς ἄξιος, κοιν· *τιποτένιος*: «φιλονικοῦν διὰ μηδαμινὰ πράγματα».

**μηδαμινότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μηδαμινοῦ, τὸ νὰ εἶναί τι ἄνευ ἀξίας.

**μηδαμοῦ**· ἐπίρρ., ἐν μηδενὶ τόπῳ ἢ εἰς μηδένα τόπον, οὐδαμοῦ (ἡ χρῆσις καθὰ καὶ τοῦ *μή*).

**μηδαμῶς**· ἐπίρρ., μηδενὶ τρόπῳ, κατ' οὐδένα τρόπον (ἡ χρῆσις καθὰ καὶ τοῦ *μή*).

**μηδέ**· ἀρνητικὸν μόριον ἢ σύνδεσμος *(μὴ+δέ)*· συνδέει δύο ἀρνητικὰς προτάσεις κατὰ τὸ σχῆμα (σπανιώτερον) *μὴ—μηδὲ* καὶ (συνηθέστερον) *μηδὲ—μηδέ*: «μὴ λέγῃς, μηδὲ νὰ διανοῆσαι τοιαῦτα», «μηδὲ νὰ τὸ εἰπῇς μηδὲ νὰ τὸ σκεφθῇς», «μηδὲ νὰ σὲ ἴδω μηδὲ νὰ σ' ἀκούσω»· || καθ' ἑαυτὸ ὡς ἐπιδοτικόν: «μηδὲ νὰ τὸ φαντασθῇς» (ἐν τῇ λαλουμένῃ ἀντὶ τοῦ *μηδὲ* γίνεται χρῆσις κατὰ πάσας τὰς περιπτώσεις τοῦ *μήτε* (βλ. λ.).

**Μήδεια** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Αἰήτου, βασιλέως τῆς Κολχίδος, ἀδελφὴ τῆς Χαλκιόπης καὶ τοῦ Ἀψύρτου, ἀνεψιὰ δὲ τῆς Κίρκης. Ἐν τῇ ἑλληνικῇ λογοτεχνίᾳ ἡ Μήδεια ἀναφέρεται τὸ πρῶτον ἐν τῇ «Θεογονίᾳ» τοῦ Ἡσιόδου ὡς ἀπαχθεῖσα ὑπὸ τοῦ Ἰάσωνος κατὰ τὴν Ἀργοναυτικὴν ἐκστρατείαν, τὴν ἀφήγησιν ὅμως τῆς ἀπαγωγῆς ἀναπτύσσουσι συστηματικώτερον ὁ Πίνδαρος καὶ μάλιστα ὁ Ἀπολλώνιος Ρόδιος. Κατὰ τὸν τελευταῖον, ἡ Μήδεια, τρωθεῖσα ὑπὸ σφοδροῦ ἔρωτος πρὸς τὸν Ἰάσονα, παρακούει τὸν πατέρα της καὶ ἐπὶ τῷ ὅρκῳ τοῦ ἐραστοῦ της ὅτι θὰ λάβῃ αὐτὴν σύζυγον καὶ θὰ τὴν παραλάβῃ εἰς Ἑλλάδα, βοηθεῖ αὐτὸν εἰς τοὺς παρατόλμους ἄθλους, τοὺς ὁποίους ἀνέλαβε. Καὶ πρῶτον μὲν προμηθεύει εἰς τὸν Ἰάσονα τὸ φάρμακον, μὲ τὸ ὁποῖον ἀλείψας οὗτος ἑαυτὸν καὶ τὰ ὅπλα του, κατέστη ἄτρωτος εἰς τὸ πῦρ καὶ τὸν σίδηρον, διὰ ν' ἀντιμετωπίσῃ καὶ ἐξημερώσῃ τοὺς θείους ταύρους. Ἔπειτα δὲ τὸν συμβουλεύει πῶς ν' ἀντιμετωπίσῃ τὸν δράκοντα, ὅστις ἐφύλαττε τὸ χρυσοῦν δέρας, καὶ ν' ἀποκοιμήσῃ τὸ τέρας διὰ σκευασίας, τὴν ὁποίαν αὐτὴ κατεσκεύασε. Μετὰ τὴν κατάκτησιν τοῦ χρυσοῦ δέρατος, οἱ ἐρασταὶ ἀπέπλευσαν ἐκ Κολχίδος ἐπὶ τοῦ πλοίου Ἀργώ, πρὸς ἐπιβράδυνσιν δὲ τῆς καταδιώξεως αὐτῶν ὑπὸ τοῦ πατρός της Αἰήτου, ἔσπειρε καθ' ὁδὸν τὰ μέλη τοῦ ἀδελφοῦ της Ἀψύρτου, τὸν ὁποῖον ἡ Μήδεια ἢ ἔπνιξεν ἢ ἐδηλητηρίασεν. Οἱ γάμοι τῆς Μηδείας μετὰ τοῦ Ἰάσονος ἔγιναν κατὰ τὸν Ἀντίμαχον μὲν καί τινας ἄλλους σχολιαστὰς ἐν Κολχίδι, κατὰ τοὺς πλείστους ὅμως συγγραφεῖς ἐν Κερκύρᾳ, ἔνθα μάλιστα ἐτελοῦντο θυσίαι ἐν τῷ ναῷ τοῦ Νομίου Ἀπόλλωνος, εἰς ἀνάμνησιν τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ Μήδεια ἵδρυσεν ἐκεῖ τοὺς βωμοὺς τῶν Νυμφῶν καὶ τῶν Νηρηΐδων διὰ τοὺς αἰσίους γάμους της. Ἐκ τῆς ἑνώσεως ταύτης ἐγεννήθησαν πολλὰ τέκνα, τῶν ὁποίων τὰ ὀνόματα διαφέρουσι κατὰ κείμενα καὶ χώρας. Τὸ ζεῦγος ζῶσιν εὐτυχεῖς ἐν Ἰωλκῷ, ὅπου ἐβασίλευεν ὁ Πελίας, εἰς τὸν ὁποῖον ὁ Ἰάσων παρέδωκε τὸ χρυσόμαλλον δέρας. Ἀλλὰ διὰ νὰ καταλάβωσι τὸν θρόνον ἢ νὰ ἐκδικηθῶσι τὸν Πελίαν, ὅστις, κατὰ τὴν ἀπουσίαν τοῦ Ἰάσονος, ἐξηνάγκασεν εἰς αὐτοκτονίαν τοὺς γονεῖς αὐτοῦ, ἐξηφάνισε δὲ καὶ τὸν νεώτερον ἀδελφόν του Πρόμαχον, ἡ Μήδεια ὑπόσχεται εἰς τὰς θυγατέρας τοῦ Πελίου νὰ καταστήσῃ διὰ τῆς μαγικῆς της τέχνης τὸν πατέρα των νέον καὶ πάλιν, μεταβαλοῦσα δὲ πρὸ τῶν ἐκπλήκτων θυγατέρων τοῦ Πελίου εἰς ἀρνίον σφαγμένον κριόν, τοῦ ὁποίου τὰ μέλη ἔβρασεν ἐντὸς λέβητος, ἔπεισε ταύτας νὰ διαμελίσωσι τὸ σῶμα τοῦ πατρός των. Μετὰ τὸ ἔγκλημα ὅμως ἡ Μήδεια δὲν προέφερε τοὺς μαγικοὺς ὅρκους καὶ οὕτω ὁ Πελίας ἐσφάγη ὑπὸ τῶν ἰδίων του θυγατέρων. Συνεπείᾳ τῆς πράξεώς της ταύτης ἡ Μήδεια καὶ ὁ Ἰάσων ἐκδιώκονται ἐκ τῆς Ἰωλκοῦ ὑπὸ τοῦ υἱοῦ τοῦ Πελίου Ἀκάστου. Ὁ μῦθος οὗτος ἀπετέλεσε τὸ θέμα τῶν δύο τραγῳδιῶν τοῦ Σοφοκλέους («Πελίας») καὶ μιᾶς τοῦ Εὐριπίδου («Πελιάδες»).

Τὸ ζεῦγος ἐγκατεστάθη τότε ἐν Κορίνθῳ, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀπολλόδωρος. Ἡ Μήδεια ἐλατρεύετο ἐν Κορίνθῳ ὡς θεότης, ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἐφύρα*, κατὰ τὸν Θεόπομπον δέ, αὐτὴ ἵδρυσε τὴν λατρείαν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐν Κορίνθῳ, ὑπῆρξε δὲ καὶ ἱέρεια τῆς Ἀκραίας Ἥρας, τῆς ὁποίας ἵδρυσε ναὸν οὐχὶ μακρὰν τῆς Κορίνθου, ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου, ὅστις κλείει τὸν κόλπον τοῦ Λεχαίου, ἀπέναντι τῆς Συκυῶνος. Τὴν Μήδειαν ἠράσθη καὶ ὁ Ζεύς, ἀλλ' αὕτη ἀπεποιήθη, φοβουμένη τὴν Ἥραν, ἥτις συγκινηθεῖσα διὰ τοῦτο ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὴν νὰ γίνῃ ἱέρειά της. Οἱ Κορίνθιοι ὅμως ἐκ μίσους πρὸς τὴν παρείσακτον ταύτην ξένην ἐλιθοβόλησαν τὰ τέκνα αὐτῆς μένοντα ἐν τῷ ἱερῷ. Καὶ τότε ἐπῆλθε λιμός, ὅστις κατέπαυσε κατόπιν ἱδρύσεως λατρείας τῶν παίδων τῆς Μηδείας κατὰ τὸν χρησμόν. Κατὰ τὴν λατρείαν ταύτην δέκα τέσσαρα τέκνα, ἑπτὰ ἄρρενα καὶ ἑπτὰ θήλεα, τῶν καλυτέρων καὶ ἀριστοκρατικωτέρων οἰκογενειῶν τῆς Κορίνθου, παρέμεινον ἓν ἔτος ἐν τῷ ἱερῷ ᾄδοντα μυστικιστικὰ ᾄσματα, ἔχοντα δὲ κεκαρμένην τὴν κόμην ἐν χρῷ καὶ ἐνδεδυμένα μέλαιναν ἐσθῆτα. Κατ' ἄλλην ὅμως ἔκδοσιν, ὁ θάνατος τῶν τέκνων τῆς Μηδείας ὑπὸ τῶν Κορινθίων προὐκλήθη ἐκ τοῦ ὅτι ἡ Μήδεια ἢ ἔθεσε πῦρ εἰς τὸ βασιλικὸν ἀνάκτορον τοῦ βασιλέως τῆς Κορίνθου Κρέοντος, ἢ ἐδηλητηρίασε τὴν μνηστὴν τοῦ Ἰάσονος Γλαύκην ἢ Κρέουσαν, διότι ὁ Ἰάσων ἐγκατέλειψεν αὐτήν. Ὁ Εὐριπίδης ὅμως ἐν τῇ ὁμωνύμῳ τραγῳδίᾳ ἄλλως λύει τὸ δρᾶμα. Ἡ Μήδεια σφάζει τὰ τέκνα της διὰ τῶν ἰδίων της χειρῶν, διὰ νὰ ἐκδικηθῇ τὸν ἄπιστον Ἰάσονα. Ἡ Μήδεια τότε φεύγει εἰς Ἀθήνας πρὸς τὸν βασιλέα Αἰγέα, ἤ, κατ' ἄλλην ἔκδοσιν, εἰς Θήβας. Ἐν Ἀθήναις ἡ Μήδεια διαπράττει καὶ ἄλλα ἐγκλήματα, ἐπιχειρήσασα νὰ θανατώσῃ τὸν υἱὸν τοῦ Αἰγέως Θησέα διὰ χειρὸς τοῦ πατρός του. Ἐξ Ἀθηνῶν ἡ Μήδεια φεύγει εἰς Ἔφυραν τῆς Ἤλιδος ἢ εἰς Ἀσίαν. Ἐκεῖ ἐκδιώκει

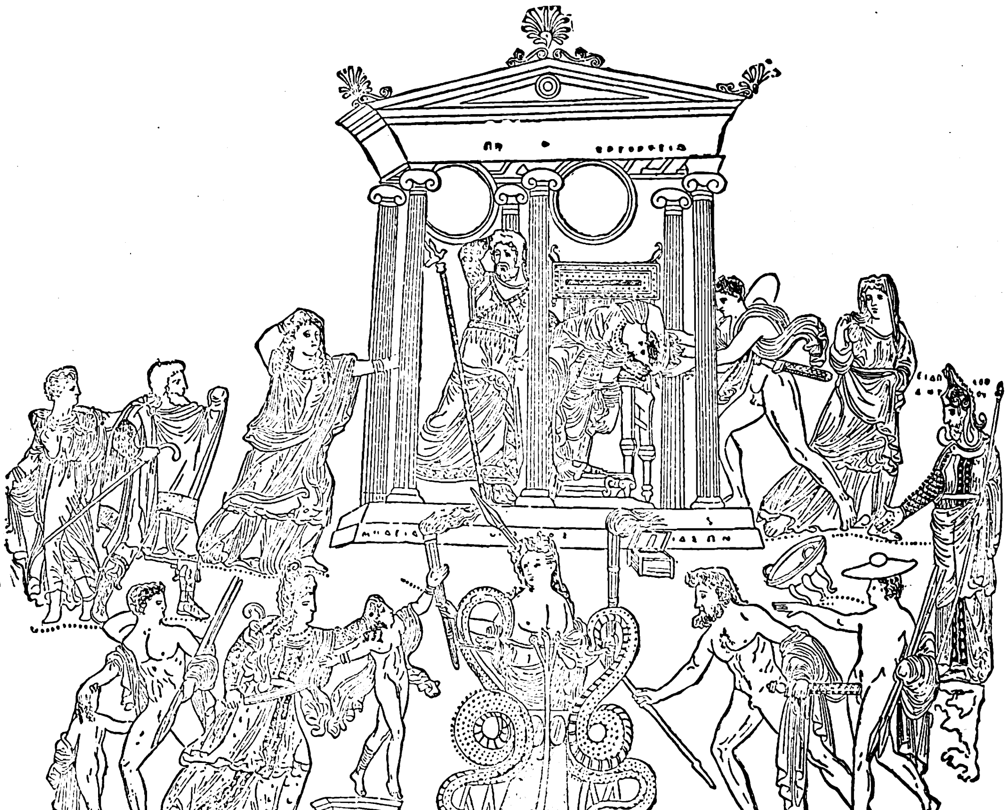

*Θάνατος τῆς Γλαύκης καὶ σφαγὴ τῶν τέκνων τῆς Μηδείας ὑπ' αὐτῆς.*

[Ἀγγεῖον μουσείου Μονάχου.]

Digitized by Google

ἐκ Κολχίδος τὸν σφετεριστὴν τοῦ πατρικοῦ της θρόνου Φέρην καὶ ἐπαναφέρει εἰς τὸν θρόνον τῆς Κολχίδος τὸν πατέρα της Αἰήτην. Τέλος, μετὰ τὸν

*Ἡ Μήδεια φονεύουσα τὰ τέκνα της.*
[Πίναξ τοῦ Εὐγ. Ντελακρουὰ ἐν τῷ Μουσείῳ τῆς Λίλλης.]

θάνατον τῆς Μηδείας, ἡ ποίησις ἀναγορεύει αὐτὴν σύζυγον τοῦ Ἀχιλλέως ἐν τῇ νήσῳ Λεύκῃ. Ἐν Ρώμῃ ἐταυτίζετο μὲ τὴν Bona Dea καὶ Angita.

Ἡ Μήδεια ἐν τῇ τέχνῃ παρίσταται φέρουσα τὴν μακρὰν ἀσιατικὴν ἐσθῆτα καὶ τὸ φρύγιον κάλυμμα τῆς κεφαλῆς, πολλαὶ ὅμως πλαστικαὶ παραστάσεις παριστῶσιν αὐτὴν μὲ τὸν ἑλληνικὸν χιτῶνα. Σύμβολον αὐτῆς εἶναι τετράγωνον κιβώτιον φαρμάκων, τὸ ὁποῖον κρατεῖ εἰς τὴν χεῖρα, ἢ ἐγχειρίδιον ἢ κλῶνος δάφνης. Τὸ δρᾶμα τῆς Κορίνθου ὑπῆρξε τὸ ἀγαπητὸν θέμα τῶν ἀγγειογράφων. Ὡραίαν παράστασιν αὐτοῦ φέρει τὸ λεγόμενον ἀγγεῖον τοῦ Canosa ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Μονάχου. Τὸ δρᾶμα τῆς Κορίνθου φέρουσιν ἐπίσης καὶ πολλαὶ ἀνάγλυπτοι σαρκοφάγοι ἐν Ρώμῃ, Βερολίνῳ, Παρισίοις κτλ. Β. Δ. Θ.

**Μήδεια** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Κιρκλὰρ-ἐλί, ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς παραλίας τοῦ Εὐξείνου, εἰς τὴν ἐκβολὴν τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Καζὰν-δερέ, εἰς ἀπόστασιν 75 χλμ. ΝΑ. τῶν Σαράντα Ἐκκλησιῶν καὶ 120 χλμ. ΒΔ. τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Κάτ. 5.000 περίπου. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν (1923) ἠρίθμει 1.500 κατοίκους, κατὰ τὸ πλεῖστον Ἕλληνας. Εἶναι λιμὴν ἐξαγωγῆς ξυλανθράκων τῆς Στράντζας. Ν.Μ.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ *Μηδεία* συνῳκίσθη ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας *Σαλμυδησσοῦ*, κατὰ τὸν πρῶτον ἢ δεύτερον μ. Χ. αἰῶνα, πιθανῶς ἐκ τῶν καταστραφεισῶν ὑπὸ τῶν ἐπιδρομῶν τῶν Γότθων γειτονικῶν πόλεων. Ὑπὸ τοῦ Ἡρωδιανοῦ ὀνομάζεται *Κύταια*, πιθανῶς ἔκ τινος παραδόσεως περὶ τῆς ἐνταῦθα ἀποβιβάσεως τῆς Μηδείας, τὴν ὁποίαν «Κυταΐδα προσαγορεύουσιν».

Ἕνεκα τῆς ὀχυρωτάτης αὐτῆς θέσεως, ἀπέβη ἐπὶ τῶν βυζαντινῶν χρόνων ἡ ἀκμαιοτέρα καὶ πλουσιωτέρα πόλις τῶν παραλίων τοῦ Εὐξείνου Πόντου. Ἐπὶ τοῦ αὐτοκράτορος Φιλιππικοῦ ἡ Μήδεια καὶ τὰ πέριξ ὑπέστησαν φοβερὰν λεηλασίαν τῷ 711 μ. Χ. Ἐπίσης ἐπὶ Κρούμμου τῷ 813. Ἐπὶ τῶν Σταυροφοριῶν κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γενουηνσίων, οἵτινες οὐ μόνον ἐπεσκεύασαν τὰ κατεστραμμένα αὐτῆς τείχη, ἀλλὰ καὶ πελωρίους πύργους ἔκτισαν ἑκατέρωθεν τοῦ λιμένος αὐτῆς.

Καταληφθεῖσα ὑπὸ Ἰωάννου τοῦ Καντακουζηνοῦ, παρέμεινεν ὑπὸ τὸ Βυζάντιον μέχρι τῆς ὑπὸ τῶν Τούρκων κατακτήσεως αὐτῆς ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Καρατζᾶ-βέη, ὀλίγους μῆνας πρὸ τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ Μωάμεθ τοῦ Πορθητοῦ, ὅστις τὸ πλεῖστον τῶν κατοίκων αὐτῆς μετέφερεν εἰς Κωνσταντινούπολιν.

Κατὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1828—1929 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ρώσων. Κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους, ὅταν διὰ τῆς συνδιασκέψεως τοῦ Λονδίνου (17 Μαΐου 1913) ἡ Τουρκία παρεχώρει εἰς τὴν Βουλγαρίαν τὸ Β. ἥμισυ τῆς Ἀν. Θρᾴκης, ἡ γραμμὴ Αἴνου—Μηδείας θ' ἀπετέλει τὸ ὅριον τῶν δύο τούτων κρατῶν. Δὲν ἐφηρμόσθη ὅμως, διότι ἡ Τουρκία, ἐπωφελουμένη τὸν Ἑλληνοβουλγαρικὸν πόλεμον, κατέλαβε τὴν Ἀδριανούπολιν, οὕτω δὲ ἡ Μηδεία παρέμεινεν εἰς τὴν Τουρκίαν. Ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς κατοχῆς τῆς Ἀν. Θρᾴκης ὑπήγετο εἰς τὴν ὑποδιοίκησιν Βιζύης τοῦ νομοῦ Σαράντα Ἐκκλησιῶν. Ὑπὸ ἐκκλησιαστικὴν ἔποψιν ἦτο ἕδρα ἐπισκόπου ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Ἡρακλείας, βραδύτερον δὲ ἕδρα μητροπόλεως, διατηρήσασα ταύτην μέχρι τοῦ 1623, ὁπότε ἡνώθη μετὰ τῆς Σωζουπόλεως. Ὀλίγον μετὰ ταῦτα ἡνώθη μετὰ τῆς ἐπαρχίας Βιζύης, διατελοῦσα οὕτω μέχρι τῶν τελευταίων ἐτῶν, τοῦ μητροπολίτου αὐτῆς φέροντος τὸν τίτλον τοῦ ὑπερτίμου καὶ ἐξάρχου Μαύρης Θαλάσσης.

[*Σαββα Λακίδου*, Ἱστορία τῆς ἐπαρχίας Βιζύης καὶ Μηδείας, 1899.] Α. Θ. Σ.

**Μήδειος** *[Μυθολ.]*· βλ. *Μῆδος*.

**μηδείς,** *μηδεμία, μηδέν*· μηδὲ εἷς, μήτε ἕνας, κανείς: «μηδεὶς νομίσῃ»· ἡ χρῆσις τῆς λέξεως εἶναι ἀρχαϊσμός· συνήθως ἐπὶ τῶν ἐκ τῆς ἀρχαίας εἰλημμένων φράσεων: «μηδεὶς ἀγεωμέτρητος εἰσίτω» (τῶν πυθαγορείων), «μηδένα πρὸ τοῦ τέλους μακάριζε» (τοῦ Σόλωνος πρὸς τὸν Κροῖσον), «μηδενὶ συμφορὰν ὀνειδίσῃς» (τοῦ Ἰσοκράτους)· ‖ *μηδὲν* (τό)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).

**μηδέν,** *—ενὸς* (τό)· ἡ ἔννοια τοῦ μὴ ὑπάρχοντος, ἀπουσία τοῦ ὄντος, ἀνυπαρξία, κοιν. *τίποτε*, ἄλλως *μηδενικόν*: «ὁ Α συγκρινόμενος πρὸς τὸν Β εἶναι μηδέν», «ὁ Θεὸς ἐποίησε τὸν κόσμον ἐκ τοῦ μηδενός», «ἐκ τοῦ μηδενὸς ἀνεδείχθη μέγας»· ‖ τὸ ἀριθμητικὸν σύμβολον 0, ἐπειδὴ καθ' ἑαυτὸ γραφόμενον δηλοῖ ἀνυπαρξίαν: φρ. «μηδὲν εἰς τὸ πηλίκον» ὅταν πρόκειται νὰ δηλωθῇ ὅτι οὐδὲν κέρδος ἀπεκομίσθη· ‖ ἐπὶ βαθμολογίας, ἄρνησις πάσης ἱκανότητος ἢ ἀρετῆς: «ὁ καθηγητής τοῦ ἔβαλε μηδέν»· ‖ τὸ σημεῖον ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἄρχεται οἱαδήποτε βαθμολογία ἢ διαίρεσις· οἷον τοῦ θερμομέτρου, ἡ θερμοκρασία καθ' ἣν ἄρχεται πηγνύμενον τὸ ὕδωρ· ὁμοίως ἐπὶ τῶν μοιρῶν τοῦ κύκλου ἑκάτερον πέρας τῆς διαμέτρου· ‖ φρ. «τὸ ἀποτέλεσμα ἦτο μηδὲν» ἢ «μηδὲν ἀποτέλεσμα» ὅτι αἱ προσπάθειαι οὐδὲν ἀπέδωσαν.

—*[Μαθημ.] Μηδὲν* εἶναι ἀριθμὸς ἀκέραιος ἄρτιος καὶ διαιρετὸς δι' ὅλων τῶν ἀκεραίων ἀριθμῶν. Παρίσταται διὰ τοῦ συμβόλου 0 (βλ. λ. *μηδενικόν*). Καίτοι ἡ λέξις δηλοῖ ἔννοιαν τελείας ἀνυπαρξίας, οἱ μαθηματικοὶ ἤχθησαν εἰς τὸ νὰ καταστήσωσι τὸ μηδὲν ἴδιον ἀντικείμενον, ἀριθμὸν (ὡς οἱ λοιποὶ φυσικοὶ ἀριθμοί, π. χ. 35), ἐκ τῆς προόδου τῶν ἀριθμητικῶν πράξεων, εἰς ἃς τὸ μηδὲν δύναται νὰ ἐκληφθῇ ὡς ἀριθμός. Συνέδεσαν δὲ τὸν ἀριθμὸν τοῦτον πρὸς τοὺς λοιποὺς φυσικοὺς διὰ τοῦ ἑξῆς, κατὰ τοὺς κανόνας τῆς κλασσικῆς λογικῆς, ὁρισμοῦ: «μηδὲν καλεῖται ἡ διαφορὰ δύο ἴσων ἀριθμῶν (φυσικῶν)»· δηλαδή: $A - A = 0$

Ὁρισθέντος οὕτω τοῦ μηδενός, δηλαδὴ εἰσαχθέντος τοῦ νέου τούτου μέλους εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν, προέβησαν περαιτέρω εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῶν ἰδιοτήτων αὐτοῦ, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁρισμοῦ. Ὡς πρώτη ἰδιότης αὐτοῦ εὑρίσκεται ὅτι τὸ 0 εἶναι διαφορὰ δύο ἴσων ἀριθμῶν οὐχὶ μόνον φυσικῶν (π. χ. 7—7) ἀλλ' οἱωνδήποτε, εἰς συστήματα ἀριθμῶν περιέχοντα, ἐκτὸς τῶν φυσικῶν, κλασματικούς, ἀσυμμέτρους, ἀρνητικούς, φανταστικοὺς δύο ἢ περισσοτέρων διαστάσεων, ἰδεώδεις κλπ.

Ἐξαίρεσιν τῆς ἰδιότητος ταύτης παρουσιάζουσιν οἱ ὑπὸ τῶν Cantor, Sierpinski καὶ λοιπῶν φιλοσόφων μαθηματικῶν τεθέντες ὑπερπεπερασμένοι ἀριθμοὶ (nombres transfinis), παριστανόμενοι διὰ τοῦ ἑλληνικοῦ ω καὶ τοῦ ἑβραϊκοῦ ἄλεφ· ἡ διαφορὰ εἰς τούτους ω — ω δὲν εἶναι πάντοτε μηδέν, ἀλλ' οἱοσδήποτε ἀριθμὸς καὶ ἄπειρος ἀκόμη.

Ὡς πρὸς τὴν πρόσθεσιν καὶ ἀφαίρεσιν, τὸ 0 ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ μὴ μεταβάλλῃ τὸν ἕτερον προσθετέον ἢ μειωτέον. Ἡ ἰδιότης αὐτὴ ἐκφράζεται διὰ τῶν ἰσοτήτων $\alpha + 0 = \alpha$ καὶ $\alpha - 0 = \alpha$, οἱουδήποτε ὄντος τοῦ ἀριθμοῦ α. Ἐὰν τὸ 0 ληφθῇ ὡς μειωτέος, δίδει τὴν γένεσιν τῶν ἀρνητικῶν ἀριθμῶν:

$$0 - \alpha = -\alpha$$

Ὡς πρὸς τὸν πολλαπλασιασμόν, τὸ μηδὲν ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ μηδενίζῃ οἱονδήποτε γινόμενον, εἰς τὸ ὁποῖον εἶναι παράγων· τοῦτο ἐκφράζεται διὰ τῆς ἰσότητος: $\alpha \times \beta \times \gamma \times \ldots 0 \times \ldots = 0$ οἱωνδήποτε ὄντων τῶν α, β, γ ... ἀριθμῶν, πεπερασμένων ὅμως.

Ἄλλη ἄποψις τῆς ἰδιότητος ταύτης, σπουδαιοτάτη διὰ τὴν ἄλγεβραν, εἶναι ἡ ἑξῆς πρότασις: Γινόμενον παραγόντων τότε μόνον γίνεται μηδέν, ὅταν εἷς τοὐλάχιστον παράγων μηδενισθῇ. Βάσει τῆς ἰδιότητος ταύτης ἐπιλύονται αἱ ἐξισώσεις.

Σημειωτέον ὅμως ὅτι ἐν τῇ ἀλγέβρᾳ ἔχουσιν ἐπινοηθῆ φανταστικοὶ ἀριθμοί, μὲ διαφόρους μονάδας μὴ συνδεομένας διὰ τῶν τεσσάρων θεμελιωδῶν πράξεων, «μηδενίζοντες» καλούμενοι, οἵτινες μηδενίζουσι γινόμενον, καίτοι τοῦτο δὲν ἔχει παράγοντά τινα 0. Ἀλλ' οἱ ἀριθμοὶ οὗτοι, θεωρητικὴν μόνον ἀξίαν ἔχοντες καὶ ἐλαχίστας ἐφαρμογάς, δὲν εἶναι ἐν χρήσει εἰς τοὺς ἀλγεβρικοὺς λογισμούς.

Τὸ 0 διαιρούμενον δι' οἱουδήποτε ἀριθμοῦ δίδει πηλίκον 0 καὶ ὑπόλοιπον 0. Ἕνεκα τοῦ ὑπολοίπου τούτου λέγομεν ὅτι τὸ 0 εἶναι διαιρετὸν διὰ παντὸς ἀριθμοῦ (ἑπομένως καὶ ἄρτιον). Τὸ 0 ὑψούμενον εἰς οἱανδήποτε δύναμιν δίδει 0· ἤτοι εἶναι $0^{\alpha} = 0$, ἐὰν α δὲν εἶναι 0, ἀλλὰ πεπερασμένος. Πᾶς ἀριθμὸς πεπερασμένος, ὑψούμενος εἰς δύναμιν ἐκθέτην ἔχουσαν τὸ 0, δίδει τὴν μονάδα 1. Ἤτοι εἶναι $\alpha^0 = 1$.

Ὅσον ἀφορᾷ διὰ τὴν δύναμιν $0^0$, αὕτη εἶναι «ἀόριστος μορφή». Πλὴν τῆς ἀοριστίας ταύτης ὑπάρχει καὶ ἡ ἀδυναμία τῆς διὰ τοῦ 0 διαιρέσεως. Ἡ διὰ τοῦ 0 διαίρεσις (δηλαδὴ τὸ μηδὲν νὰ εἶναι διαιρέτης ἢ παρονομαστὴς κλάσματος) ἀπαγορεύεται ἀπολύτως· διότι γινομένη φέρει ἀνωμαλίας εἰς τοὺς λογισμούς, ἄγουσα εἰς ἀντιφατικὰ ἐξαγόμενα. Πολλὰ δὲ μαθηματικὰ «παίγνια» ἄγοντα εἰς ἀντιφατικὰ συμπεράσματα (π. χ. 1=2) στηρίζονται εἰς τὴν διαίρεσιν ταύτην. Διὰ τοῦτο οἱ μαθηματικοὶ ἐκτελοῦντες πράξεις ἐπὶ ἀγνώστων ἢ ἀορίστων ἀριθμῶν (συμβολιζομένων διὰ γραμμάτων α, β, χ κλπ.) προσέχουσι πάντοτε, ἵνα ὁ διαιρέτης εἶναι διάφορος τοῦ μηδενός.

Ὡς πρὸς τὸ μέγεθος, τὸ 0 θεωρεῖται ὁ μικρότερος πάντων τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν καὶ τῶν μερῶν αὐτῶν (συμμέτρων ἢ μή). Ἡ ἄλγεβρα ὅμως, ἐπεκτείνουσα τὰς πράξεις της, ἐθέσπισε καὶ τοὺς ἀρνητικοὺς ἀριθμούς, οὓς ὥρισεν ὡς μικροτέρους τοῦ μηδενός, δοῦσα τὸν ἑξῆς ὁρισμόν: θετικὸς ἀριθμὸς λέγεται ὁ μεγαλύτερος τοῦ 0, ἀρνητικὸς δὲ ὁ μικρότερος αὐτοῦ.

Ὡς πρὸς τὴν ὀντότητα τοῦ 0 παρατηρητέον ὅτι ἐν τῇ μαθηματικῇ ἐπιστήμῃ τὸ 0 θεωρεῖται σταθερὰ ποσότης, ἡ ἐλαχίστη (minimum) κατ' «ἀπόλυτον τιμὴν» πάντων τῶν ἀριθμῶν. Καὶ ναὶ μὲν οἱ ἀρνητικοὶ θεωροῦνται μικρότεροι τοῦ μηδενός· ἀλλὰ τοῦτο εἶναι συμβατικὸν διὰ τὰς πράξεις· π. χ. ἐὰν παρασταθῇ διὰ τοῦ 0 σημεῖόν τι Σ τῆς εὐθείας ΑΒ, λαμβανόμενον ὡς ἀφετηρία, τὰ μὲν

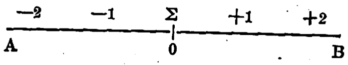


δεξιὰ αὐτοῦ σημεῖα παρίστανται διὰ θετικῶν ἀριθμῶν. τὰ δὲ ἀριστερὰ δι ἀρνητικῶν· ὁμοίως ἐπὶ τῆς μετρήσεως τοῦ χρόνου μεταχειριζόμεθα ἀρνητικοὺς ἀριθμούς. Παρὰ τοῖς χριστιανικοῖς λαοῖς ὡς ἀφετηρία τῶν χρονολογιῶν τῆς ἱστορίας λαμβάνεται τὸ ἔτος τῆς γεννήσεως τοῦ Χριστοῦ, καὶ τὰ μὲν ἔτη τὰ πρὸ ταύτης σημειοῦνται δι' ἀρνητικῶν ἀριθμῶν, τὰ δὲ μεταγενέστερα διὰ θετικῶν· ὁμοίως εἰς τὴν θερμοκρασίαν ἔχομεν θετικοὺς καὶ ἀρνητικοὺς ἀριθμοὺς (ἄνω τοῦ $0^0$ καὶ κάτω τούτου). Κατ' ἀπόλυτον τιμὴν ὅμως καὶ οἱ ἀρνητικοὶ ἀριθμοὶ εἶναι μεγαλύτεροι τοῦ 0. Καλεῖται δ' ἀπόλυτος τιμὴ ἀρνητικοῦ ἀριθμοῦ ὁ ἀντίθετος αὐτοῦ θετικὸς (π. χ. τοῦ —7 ἀπόλυτος τιμὴ εἶναι τὸ 7). Ἐν τῇ φυσικῇ πρὸς μέτρησιν τῶν θερμοκρασιῶν, ὡς 0 λαμβάνεται ἡ θερμοκρασία τοῦ τηκομένου πάγου. Ἐκτὸς τοῦ συμβατικοῦ τούτου μηδενὸς οἱ φυσικοὶ παραδέχονται τὴν ὕπαρξιν ἀπολύτου μηδενός, εἶναι δὲ τοῦτο διὰ πάντα τὰ ἀέρια ἡ θερμοκρασία—273 περίπου· εἰς τὸ ψῦχος τοῦτο θεωροῦνται τὰ μόρια τῶν ἀερίων (τὰ ὁποῖα ἄλλως εἶναι εὐκινητότατα) ὅτι ἀδρανοῦσι τελείως καὶ ὅτι οὐδεμία ὑπάρχει πράγματι θερμότης.

Ἐκτὸς τῆς ἐλαχίστης ταύτης σταθερᾶς τιμῆς τοῦ 0, ἐν τῇ μαθηματικῇ θεωροῦνται καὶ ἄλλαι ποσότητες, μεταβληταὶ ὅμως, ὑπεράγαν μικραί, «ἀπειροστὰ» λεγόμεναι, αἵτινες καταλέγονται εἰς διαφόρους τάξεις. Ἡ διαφορὰ τῆς ἀντιλήψεως τῶν ἐννοιῶν μεταξὺ τοῦ μηδενὸς καὶ τῶν ἀπειροστῶν ἔγκειται εἰς τὸ ὅτι ταῦτα μὲν νοοῦνται μεταβλητά, ἐκεῖνο δὲ σταθερόν. Εἰς τοὺς λογισμούς, ὅπου εἶναι δυνατὸν νὰ παραλειφθῶσι τὰ ἀπειροστά, λέγομεν τὴν τοιαύτην πρᾶξιν τῆς παραλείψεώς των «μετάβασιν εἰς τὸ ὅριον»· ἡ τοιαύτη πρᾶξις κατὰ τὸν Poincaré εἶναι λειτουργία τῆς νοήσεως, τελείως διάφορος τῆς συνήθους λογικῆς. Ἐφαρμογὴ τῆς διαφορᾶς τῶν ἀντιλήψεων τῶν ἐννοιῶν τοῦ μηδενὸς καὶ τοῦ ἀπείρως μικροῦ (ἀπειροστοῦ) εἶναι ἡ ἑξῆς: Ἐὰν εἰς μίαν ἀλγεβρικὴν παράστασιν ὑπάρχῃ δεδομένον ὅτι τὸ ἐξαγόμενον τῶν πράξεων πρέπει νὰ εἶναι σταθερόν, ἀφ' ἑτέρου διά τινος εἱρμοῦ σκέψεων ἀποδεικνύεται ὅτι τὸ αὐτὸ ἐξαγόμενον γίνεται ὁσονδήποτε μικρόν, συνάγεται

Digitized by Google

τὸ συμπέρασμα ὅτι ἡ ἀλγεβρικὴ αὕτη παράστασις εἶναι ἴση τῷ μηδενί.

Ἀξιοσημείωτον εἶναι ὅτι ἐνῷ εἰς τὰς ἀπολύτους τιμὰς τῶν ἀριθμῶν ὑπάρχει «ἐλάχιστον» (ὡς ἐδέχθη τὸ μηδὲν ἡ μαθηματική), δὲν ὑπάρχει «μέγιστον», παρ' ὅλην τὴν εἰσαγωγὴν τῶν ὑπερπεπερασμένων ἀριθμῶν, περὶ ὧν ἐν ἀρχῇ ἐγένετο λόγος. Ἐν τῇ ἀλγέβρᾳ τῆς λογικῆς (Couturat) ὡς ἀντίστοιχον («συμπλήρωμα») τοῦ «ἐλαχίστου» 0 θέτουσι «μέγιστον» τὸ «σύμπαν» (Le Tout), συμβολιζόμενον διὰ τῆς μονάδος 1 καὶ ἐκ τῆς θέσεως ταύτης συνάγουσι τὰ περαιτέρω συμπεράσματα τῆς ἐπιστήμης ταύτης. Ἐὰν τοιαύτη θέσις ἐν τῇ καθαρᾷ μαθηματικῇ ἐπιστήμῃ εἶναι δυνατή, εἶναι ζήτημα τὸ ὁποῖον δὲν ἐλύθη εἰσέτι ὑπὸ τῶν καταγινομένων εἰς τὴν θεωρίαν τῶν συνόλων φιλοσόφων μαθηματικῶν. Τὸ σύμβολον δὲ ∞, δι' οὗ παριστῶσι τὸ ἄπειρον, δὲν εἶναι σταθερὰ ἔννοια ὡς ἡ τοῦ μηδενός. Τὰ σύμβολα δὲ τῶν ὑπερπεπερασμένων ἀριθμῶν ω, ἄλεφ, ἔχουσι μὲν σταθερὰν ἔννοιαν (ἂν καὶ πληθὺς ἀξιολόγων μαθηματικῶν διστάζουσι νὰ καταλέξωσι ταῦτα εἰς τοὺς σταθεροὺς ἀριθμούς), ἀλλ' ἐξ αὐτῶν δὲν προκύπτει τὸ «μέγιστον». Τέλος τὸ μηδὲν εἶναι δεκτὸν ὡς αὐτοτελὴς ἔννοια καὶ εἰς τὴν θεωρίαν τῶν συνόλων, ἔνθα δέχονται τὴν ἔννοιαν τοῦ συνόλου μὲ μηδὲν στοιχεῖον (ensemble vide). Ν. Γ.

— *[Φιλοσοφ.] Μηδὲν* λέγεται ἢ ἐν ἀπολύτῳ ἢ ἐν σχετικῇ ἐννοίᾳ. Ἐν ἀπολύτῳ ἐννοίᾳ ἐκφράζει τὴν ἄρνησιν τοῦ εἶναι *καθόλου*· ἐν σχετικῇ δὲ τὴν ἄρνησιν ὡρισμένων νοητῶν ἀντικειμένων ἢ γνωρισμάτων. Τὸ πρῶτον εἶναι ἀπρόσιτον εἰς τὴν ἀντίληψιν ἡμῶν· ὅ,τι γνωρίζομεν εἶναι μόνον τὸ μηδὲν ἐν ὡρισμένῃ ἀναφορᾷ, μόνον τὸ μηδὲν ὡς ἔλλειψις. Τὸ ἀπόλυτον μηδὲν εἶναι ἡ ἄρσις πάσης πραγματικότητος· οὔτε δύναται νὰ γεννηθῇ τι ἐξ αὐτοῦ, οὔτε πάλιν νὰ μεταβληθῇ τι εἰς μηδέν. Ν. Λ.

— *[Ἀποκρυφ.]* Κατὰ τὰς ἀποκρύφους κοσμογονικὰς θεωρίας τὸ μηδέν, ὑπὸ τοῦ Ἡσιόδου (Θεογ. 116) ἀποκαλούμενον χάος, τὸ ὁποῖον ἐν τῇ ἀπολύτῳ αὐτοῦ μεταφυσικῇ ἐννοίᾳ δὲν ἐκφράζει εἰμὴ τὴν ἄρνησιν τοῦ εἶναι, συνταυτίζεται μὲ τὸ ἓν καὶ τὸ πᾶν τῆς ἑρμητικῆς διδασκαλίας, συνεργαζόμενον δὲ ἀπαύστως μετὰ τῆς τάξεως ἀποτελεῖ τὴν ἀρχικὴν τῶν πάντων αἰτίαν, παρ' ἧς ἀπαύστως δημιουργοῦνται οἱ κόσμοι. Τὴν ἀέναον ταύτην συνεργασίαν τοῦ μηδενὸς μετὰ τῆς τάξεως οἱ ἀρχαῖοι μυσταγωγοὶ συνεβόλιζον διὰ τοῦ οὐροβόρου ὄφεως, ἐμβλήματος τοῦ κόσμου καὶ τοῦ ἑνιαίου τῆς ὕλης, τοῦ ὁποίου κέντρον μὲν εἶναι ἡ τάξις, περιφέρεια δὲ τὸ μηδὲν ἢ τὸ χάος. Η. Π. Γ.

— *[Ἀστρον.] Μηδὲν* καλεῖται ἡ ἀφετηρία ἢ ἀρχὴ μετρήσεως ἐπὶ ἠριθμημένων κανόνων, γωνιομετρικῶν κύκλων, τυμπάνων μικρομετρικῶν κοχλιῶν κτλ. Ἐπὶ τῶν βερνιέρων ἡ διαίρεσις αὐτῶν ἀριθμεῖται διὰ μηδενός, ἤ, ὡς συνήθως λέγομεν, τὸ μηδὲν τοῦ βερνιέρου ἐκτελεῖ χρέη δείκτου ἢ ὑποδιαστολῆς, διότι ἡ θέσις αὐτοῦ χωρίζει τὸ ἀκέραιον μέρος τοῦ ἀναγνώσματος, ὅπερ λαμβάνομεν ἐπὶ τοῦ κανόνος ἢ τῆς ἄντυγος, ἀπὸ τοῦ κλασματικοῦ, ὅπερ ἀναγινώσκομεν ἐπὶ τοῦ βερνιέρου, προσέχοντες ποία ἐκ τῶν μετὰ τὸ μηδὲν διαιρέσεων αὐτοῦ συμπίπτει μετά τινος ἀντιστοίχου διαιρέσεως τῆς κλίμακος ἢ τῆς ἄντυγος. Τὸ μηδὲν ἐπίσης λαμβάνεται ὡς ἀφετηρία ἐν τῇ μετρήσει διαφόρων συντεταγμένων· οὕτω λ. χ. τὰ ὕψη μετροῦνται ἀπὸ μηδενός, ἤτοι ἀπὸ τοῦ ὁρίζοντος μέχρις 90°, ἤτοι τοῦ ζενίθ· καὶ ἀντιστρόφως, ἡ ζενιθία ἀπόστασις τοῦ κατακορύφου σημείου εἶναι μηδέν. Ὁμοίως ἡ ἀπόκλισις ὅλων τῶν σημείων τοῦ οὐρανίου ἰσημερινοῦ ἰσοῦται τῷ μηδενί, πάντες δὲ οἱ τόποι, οἱ ὁποῖοι κεῖνται ἐπὶ τοῦ γηΐνου ἰσημερινοῦ, ἔχουσι γεωγραφικὸν πλάτος μηδέν. Ἀζιμούθιον μηδὲν ἔχει διὰ μὲν τοὺς ἀστρονόμους τὸ νότιον σημεῖον τοῦ ὁρίζοντος, διὰ δὲ τοὺς ναυτικοὺς τὸ βόρειον. Ἀστὴρ μεσουρανῶν ἄνω ἔχει ὡριαίαν γωνίαν μηδέν, πᾶς δὲ κείμενος ἐπὶ τῆς ἐκλειπτικῆς ἔχει πλάτος μηδέν. Ἀμφότεραι αἱ ἐκλειπτικαὶ συντεταγμέναι τοῦ ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου γ εἶναι ἴσαι τῷ μηδενί. Ἡ ὀρθὴ ἀναφορὰ τοῦ σημείου τούτου εἶναι μηδὲν κ.ο.κ. Σ. Π.

— *[Μουσ.]* Τὸ σημεῖον 0 εὑρισκόμενον εἰς μέρος ἐγχόρδου ὀργάνου σημαίνει ὅτι ὁ φθόγγος, ἐφ' οὗ εἶναι τοποθετημένον τὸ σημεῖον τοῦτο, πρέπει νὰ ἐκτελῆται μὲ ἀνοικτὴν χορδήν. Γ. Σ.

— **«Μηδέν»**. Πολιτικὴ καὶ σατιρικὴ ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα κατὰ Ἰούλιον τοῦ 1882. —Π.

— ***«μηδὲν ἄγαν»***. Ἀπόφθεγμα, τὸ ὁποῖον ἦτο ἐπιγεγραμμένον ἐν τῷ ἐν Δελφοῖς ναῷ τοῦ Ἀπόλλωνος, ὡς τὸ «γνῶθι σαὐτὸν» κλπ. Ἀποδίδεται εἰς τὸν Χείλωνα τὸν Λακεδαιμόνιον, σημαίνει δὲ ὅτι ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ ἀρετὴ εὑρίσκονται πάντοτε μεταξὺ ὑπερβολῶν. Ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ ἀριστοτέλειον ἀπόφθεγμα, καθ' ὃ ἡ ἀρετὴ κεῖται ἐν τῷ μέσῳ (λατ. in medio virtus). Ἡ ὑπερβολὴ εἰς οἱονδήποτε τομέα τῆς πράξεως εἶναι ἀποφευκτέα κατὰ τὸ ἀπόφθεγμα τοῦτο.

**μηδενίζω**· κάμνω τινὰ νὰ καταντήσῃ εἰς τὸ μηδέν, ἐκμηδενίζω, ἀφανίζω.

**μηδενικὸν** (τό)· τὸ ἀριθμητικὸν σύμβολον 0, μηδέν: «ἕκαστον μηδενικὸν προστιθέμενον δεξιὰ τοῦ ἀκεραίου ἀριθμοῦ πολλαπλασιάζει αὐτὸν ἐπὶ δέκα»· || μεταφ., χαρακτηριστικὸν τοῦ μηδεμίαν ἀξίαν ἔχοντος: «αὐτὸς δὲν ἀξίζει τίποτε, εἶναι ἕνα μηδενικό»· || τρία μηδενικὰ (000), τὸ οἱονεὶ μὴ ἠριθμημένον δωμάτιον ἐν ξενοδοχείοις, τὸ ἀποχωρητήριον.

— *[Μαθημ.]* Τὸ *μηδενικὸν* ὡς ψηφίον ἀριθμητικὸν κατὰ τὴν ἀραβικὴν γραφὴν τῶν ἀριθμῶν παρίσταται διὰ τοῦ συμβόλου 0 καὶ ἀποτελεῖ μετὰ τῶν ἄλλων ἐννέα σημαντικῶν τοὺς δέκα χαρακτῆρας, δι' ὧν γράφονται κατὰ τὸ δεκαδικὸν σύστημα οἱ ἀριθμοί. Ἡ παράθεσις τοῦ μηδενικοῦ εἰς τὰ σημαντικὰ ψηφία ἑνὸς ἀριθμοῦ, σημαίνουσα τὴν ἔλλειψιν μονάδος τινὸς (δεκάδος, ἑκατοντάδος κλπ.), γίνεται, ἵνα τηρήσῃ τὴν τάξιν τῶν μονάδων τῶν ἄλλων ψηφίων. Ἡ προσθήκη εἰς τὴν γραφὴν τοῦ ἀριθμοῦ μηδενικοῦ τινος μεταξὺ τῶν σημαντικῶν ψηφίων αὐτοῦ συμβολίζει μεγαλύτερον ἀριθμόν. Π. χ. ἐὰν εἰς τὴν γραφὴν τοῦ ἀριθμοῦ 2352 παρεντεθῇ μεταξὺ τῶν ψηφίων αὐτοῦ μηδενικόν, ὁ παριστώμενος διὰ τῶν συμβόλων 20352 ἢ 23052 κλπ· ἀριθμὸς εἶναι μεγαλύτερος.

Ἡ προσθήκη ὅμως τοῦ μηδενικοῦ εἰς τὴν ἀρχὴν τῶν ἀκεραίων ἀριθμῶν (δηλαδὴ ὅταν ἀριστερὰ τοῦ μηδενικοῦ δὲν ὑπάρχῃ σημαντικὸν ψηφίον) ἢ εἰς τὸ τέλος δεκαδικοῦ οὐδεμίαν ἐπιφέρει ἀλλοίωσιν εἰς τὸν συμβολισμὸν τοῦ γεγραμμένου ἀριθμοῦ· π. χ. 037=37 καὶ 0,52=0,520. Ν. Γ.

**μηδένισις**, *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μηδενίζω, ἐκμηδένισις.

**μηδενισμὸς** (ὁ) (nihilismus) *[Φιλοσ.]* Μηδενισμὸς καθόλου καλεῖται ἡ ἄρνησις πάσης θεωρητικῆς ἢ πρακτικῆς ἀξίας. Συνήθως διακρίνουσι τρία εἴδη μηδενισμοῦ: τὸν *γνωσιολογικόν*, ἰσοδυναμοῦντα πρὸς τὸν ἀπόλυτον σκεπτικισμόν, καθ' ὃν εἶναι ἀδύνατος ἡ γνῶσις τῆς ἀληθείας, τὸν *ἠθικόν*, καθ' ὃν εἶναι ἀπορριπτέοι ὅλοι οἱ ἐν πράξει ἰσχύοντες κανόνες ἠθικῆς, καὶ τὸν *πολιτικόν*, καθ' ὃν πρέπει νὰ καταργηθῇ κάθε πολιτικὸς καταναγκασμὸς καὶ κάθε πολιτικὴ ἐξουσία, ν' ἀφεθῇ δὲ τὸ ἄτομον μόνον ἐν τῇ διαχειρίσει τῶν τυχῶν του. Ὁ ὅρος nihilismns (ἐκ τοῦ λατ. nihil =μηδὲν) ἀπαντᾷ ἤδη παρὰ τῷ Αὐγουστίνῳ, ὅστις καλεῖ μηδενιστὰς τοὺς μὴ πιστεύοντας.

— *[Κοινων.]* Διὰ τοῦ ὅρου τούτου, ὁ ὁποῖος ἔγινε γνωστὸς ἀφ' ὅτου ἐχρησιμοποιήθη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Ἰ. Τουργκένιεφ εἰς τὸ μυθιστόρημά του «Πατὴρ καὶ υἱός», δηλοῦται μία ἐκ τῶν φάσεων τοῦ φιλελευθέρου καὶ ἐπαναστατικοῦ κινήματος ἐν τῇ τσαρικῇ Ρωσίᾳ. Μηδενισμὸς εἶναι πρωτίστως τὸ κήρυγμα τοῦ πλέον ἀπολύτου ἀτομικισμοῦ, ὁ ἀγὼν ὑπὲρ τῆς ἀνθρωπίνης ἀξιοπρεπείας καὶ ἀξίας, ἐναντίον κάθε καταναγκασμοῦ, θρησκευτικοῦ, κυβερνητικοῦ, ἠθικοῦ. Ὁ μηδενισμὸς ὡς πνευματικὸν καὶ κοινωνικὸν κίνημα ἔσχε διάφορα στάδια ἐξελίξεως, ἀπὸ τῆς εἰρηνικῆς διακηρύξεως τῶν ἀνθρωπίνων δικαίων μέχρι τῆς εὐγλώττου τρομοκρατικῆς δράσεως. Μὲ τὴν ἀνάρρησιν εἰς τὸν ρωσικὸν θρόνον τοῦ τσάρου Ἀλεξάνδρου τοῦ Β' μετὰ μακρὰν περίοδον ἀσφυκτικῆς ἀπολυταρχίας, ἡ ὁποία ἐβάρυνεν ἐπὶ τῶν πνευμάτων, τὰ καλλιεργημένα στρώματα τῆς κοινωνίας (εὐγενεῖς, δημόσιοι ὑπάλληλοι, στρατιωτικοί, ἔμποροι κλπ.), ὅλοι ἐκεῖνοι οἱ ὁποῖοι ἀπετέλουν τὴν διανόησιν (ἰντελλιγκέντσια) ἐπίστευσαν ὅτι ἠνοίγετο πρὸ αὐτῶν μία νέα ἐλπιδοφόρος περίοδος. Ὁ νέος αὐτοκράτωρ ἀνήρχετο εἰς τὸν θρόνον μὲ τὴν ἐπιθυμίαν, τὴν ὁποίαν ἐθεώρουν σοβαράν, νὰ μεταρρυθμίσῃ τὰς βαρβάρους συνθήκας ζωῆς τοῦ λαοῦ του. Εἶχεν οὗτος ὑποσχεθῆ τὴν χειραφέτησιν τῶν δουλοπαροίκων, ἡ ὁποία θ' ἀπετέλει ἀπαρχὴν νέας ζωῆς διὰ τὴν Ρωσίαν. Ἐπὶ τοῦ αὐταρχικοῦ Νικολάου ὁ φιλελευθερισμὸς εἶχεν εὕρει καταφύγιον εἰς τὴν φιλολογίαν· ἀλλ' ἐπὶ τοῦ υἱοῦ του ἡ σκέψις ἤρχιζε νὰ καθίσταται ἐξ ὁλοκλήρου ἐλευθέρα καὶ νὰ μὴ φοβῆται τὴν λογοκρισίαν, οὔτε νὰ καταφεύγῃ εἰς προφυλάξεις καὶ ἐπιφυλάξεις, διὰ τὸν φόβον τῆς ἀστυνομίας. Τότε ἐνεφανίσθη ἔξοχος πλειὰς συγγραφέων καὶ διανοητῶν, ὅπως ὁ *Τσερνιτσέφσκι*, ὁ μέγας οἰκονομολόγος, ὑπομνηματιστὴς τοῦ Κ. Μὰρξ καὶ τοῦ Προυντών, ὁ *Ντομπρολιούμπωφ*, ὁ μεγαλοφυὴς κριτικός, ὁ *Π. Λάβρωφ*, συγγραφεὺς τῶν «Ἱστορικῶν ἐπιστολῶν» καὶ ἀξιολόγων ἐπιστημονικῶν ἔργων, ὁ *Π. Κροπότκιν*, σοφὸς γεωγράφος, συνεργάτης βραδύτερον τοῦ Ἐ. Ρεκλύς, καὶ ἄλλοι πολλοί, οἱ ὁποῖοι εἶχον ἐπιδοθῆ μετὰ θέρμης εἰς τὴν μόρφωσιν τοῦ λαοῦ καὶ τὴν διάδοσιν φιλελευθέρων ἰδεῶν. Τὸ πρῶτον τοῦτο στάδιον τοῦ μηδενισμοῦ χαρακτηρίζει προσπάθεια ἀποτινάξεως τοῦ θρησκευτικοῦ ζυγοῦ, πάλη τοῦ ἀτόμου κατὰ τῆς τυραννίας τῆς οἰκογενείας, τῆς ἐξουσίας, τῶν κοινωνικῶν τύπων καὶ κάθε συμβατικοῦ. Εἶναι, λέγει ὁ Στεπνιάκ, «ἡ ἄρνησις ἐν ὀνόματι τῆς ἀτομικῆς ἐλευθερίας ὅλων τῶν κυρώσεων, αἱ ὁποῖαι ἐπιβάλλονται εἰς τὸ ἄτομον. Ὁ μηδενισμὸς ὑπῆρξεν ἰσχυρὰ καὶ ἀμείλικτος ἀντίδρασις οὐ μόνον κατὰ τοῦ πολιτικοῦ δεσποτισμοῦ, ἀλλὰ καὶ κατὰ τοῦ ἠθικοῦ δεσποτισμοῦ, ὁ ὁποῖος πιέζει τὴν ἐσωτερικήν, ἰδιωτικὴν ζωὴν τοῦ ἀτόμου». Ἡ προπαγάνδα ἐστράφη κατ' ἀρχὰς ἐναντίον τῆς θρησκείας, ἀπὸ τῆς ὁποίας εἶχον ἤδη κατὰ τὸ ἥμισυ ἐλευθερωθῆ οἱ μορφωμένοι Ρῶσοι. Μετὰ τὴν θρησκείαν, ἐπετέθησαν κατὰ τῆς οἰκογενείας, ἡ ὁποία ἀπηλλάγη καὶ αὐτὴ μὲ τὴν σειράν της κάθε δεσποτισμοῦ καὶ ἀνεγνώρισε τὸ δικαίωμα τοῦ ἔρωτος.

Μετὰ τὸ 1870 ὁ μηδενισμὸς εἰσῆλθεν εἰς νέαν φάσιν. Ἐγκαταλείψας τὴν καθαρῶς φιλολογικήν του ἐμφάνισιν, ἀπεδύθη εἰς τὸν πρακτικὸν ἀγῶνα. Αἱ μεταρρυθμίσεις τοῦ Ἀλεξάνδρου τοῦ Β' δὲν ἔλυσαν τὸ κοινωνικὸν ζήτημα. Πολλοὶ χωρικοί, ἀπαλλαγέντες τοῦ αὐθέντου των, ἐνέπεσαν εἰς τοὺς ὄνυχας τοῦ τοκογλύφου, τελείως ἐξηθλιωμένοι καὶ χωρὶς τὴν ἐλπίδα ν' ἀποκτήσουν ποτὲ τὴν γωνίαν γῆς, τὴν ὁποίαν τοῖς ἀνεγνώριζεν ὀνομαστικῶς ὁ νόμος. Ὁ τσάρος, ἀνήσυχος ἐκ τοῦ ἀναρχικοῦ κινήματος, ἠρνήθη νὰ ὁλοκληρώσῃ τὰς φιλελευθέρας μεταρρυθμίσεις, τὰς ὁποίας εἰς στιγμὴν γενναιοδωρίας εἶχεν ὑποσχεθῆ, καὶ ἤρχισε νὰ καταφεύγῃ εἰς τὴν ἀστυνομικὴν βίαν. Ἀπὸ τοῦ 1863 ἡ ἐξέγερσις τῆς Πολωνίας ἀπετέλεσε τὸ σύνθημα, περὶ τὸ ὁποῖον ἐγίνετο ἡ ἰδεολογικὴ διαφοροποίησις τῶν Ρώσων, ἥτις ἔδωσε νέαν μορφὴν εἰς τὸν μηδενισμόν. Τὸ κοινωνικὸν πρόβλημα τῆς ἀπελευθερώσεως τῶν ἐργατῶν, τῶν ἐργαζομένων, τοῦ λαοῦ, ὁ ὁποῖος ὑποφέρει καὶ πεινᾷ, ἐνῷ οἱ προνομιοῦχοι ζοῦν πλουσιοπαρόχως ἀπὸ τὸ προϊὸν τῶν μόχθων του, τὸ πρόβλημα τοῦτο, τὸ ὁποῖον ἡ ἀποτυχία τῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ 1861 καθίστα ἀπὸ ἡμέρας εἰς ἡμέραν ἐπιτακτικώτερον, μετέτρεψε τὸν μηδενισμὸν ἀπὸ θεωρητικοῦ εἰς πρακτικόν. Οἱ μηδενισταί, κατὰ μεγίστην πλειοψηφίαν τέκνα τῆς ἀστικῆς τάξεως, διεσκορπίσθησαν εἰς ὁλόκληρον τὴν χώραν, προσπαθοῦντες νὰ συναναμειχθῶσι μετὰ τοῦ λαοῦ τῶν πόλεων καὶ τῆς ὑπαίθρου, νὰ ζήσουν τὴν ζωήν του, νὰ γνωρίσουν τὰς ἀνάγκας του καὶ νὰ τοῦ ἐμβάλουν τὴν πίστιν εἰς τὴν ἀνάγκην τῆς ἐπαναστάσεως. Ἐγίνοντο τεχνῖται, καλλιεργηταί, κτηνοτρόφοι οἱ ἄνδρες, αἱ δὲ γυναῖκες ἰατροί, διδασκάλισσαι, μαῖαι κλπ. Διεσκορπίζοντο εἰς μίαν περιφέρειαν καὶ διὰ βιβλίων, συγκεντρώσεων, διαλέξεων, συνομιλιῶν, προσεπάθουν νὰ διαφωτίσουν τὸν λαόν. Ταυτοχρόνως εἰς τὸ ἐξωτερικὸν οἱ ἑκούσιοι ἢ ἀκούσιοι ἐξόριστοι μετεῖχον ἐνεργῶς τῆς πάλης κατὰ τῆς ἀπολυταρχίας. Ἐν Ζυρίχῃ, ὅπου ἐσπούδαζον πολλαὶ νεαραὶ Ρωσίδες, εἶχε δημιουργηθῆ ἐπαναστατικὴ συνωμοτικὴ ἑστία. Ὅταν ὁ τσάρος δι' ἑνὸς οὐκαζίου διέταξε τὰς φοιτητρίας νὰ ἐπανέλθουν εἰς Ρωσίαν, αὗται ὑπήκουσαν, ἀλλὰ δὲν ἔμειναν ἀδρανεῖς. Εἰργάσθησαν ποικιλοτρόπως διὰ τὴν ἐν τῇ πατρίδι των διάδοσιν τῶν ἐπαναστατικῶν ἰδεῶν, τὰς ὁποίας εἶχον μορφώσει καὶ σφυρηλατήσει ἐν τῇ ξένῃ. Ἐντὸς τῶν σπλάγχνων τοῦ τσαρισμοῦ ἐγίνετο ἡ μεγαλυτέρα ὑπονομευτικὴ ἐργασία, τὴν ὁποίαν εἶχε γνωρίσει ἕως τότε ἡ Ρωσία. Νέοι καὶ γέροντες, ἄνθρωποι ἀσχημάτιστοι ἀκόμη καὶ μέλη τῆς κοινωνίας μὲ ἀρίστην θέσιν, ἐγίνοντο ἔνθερμοι ὀπαδοὶ τῶν ἐπαναστατικῶν ἰδεῶν. Ὁ τσαρισμὸς ἐπαράπαιε ἀπὸ τὸν τρόμον του, πλήττων δεξιὰ καὶ ἀριστερὰ καὶ δημιουργῶν μίαν κατάστασιν ἀφόρητον. Ἐντὸς ὀλίγου οἱ μηδενισταὶ μετεβλήθησαν ἀπὸ δραστηρίους κήρυκας τοῦ φιλελευθερισμοῦ εἰς ἀμειλίκτους δημίους τοῦ τσαρισμοῦ.

Ὁ μηδενισμὸς εἰσήρχετο οὕτω εἰς τὴν τρίτην φάσιν του, τὴν τρομοκρατικήν. Ὅσῳ ηὔξανεν ἡ τσαρικὴ καταπίεσις καὶ ἀπεστέλλοντο οἱ ὕποπτοι καθ' ὁμάδας εἰς Σιβηρίαν ἢ ἀπηγχονίζοντο ἄνευ δίκης, τόσον σκληρότερος καθίστατο καὶ ὁ μηδενισμός. Τὰ πλήγματά του κατηύθυνε πρωτίστως ἐναντίον τῶν ἐκτελεστικῶν ὀργάνων τοῦ τσαρισμοῦ: κυβερνητῶν, ἀστυνομικῶν, δικαστῶν, οἱ ὁποῖοι τὸν κατεδίωκον. Βραδύτερον, προβαίνοντες ἀπὸ ἀντιποίνων εἰς ἀντίποινα, οἱ μηδενισταὶ κατέληξαν εἰς τὴν ἀπόφασιν ὅτι ἔπρεπε νὰ κτυπηθῇ ἡ ρίζα τοῦ κακοῦ καὶ ὁ ἐνσαρκῶν τὸν ἀφόρητον ἀπολυταρχισμόν, καὶ κατεδίκασαν τὸν τσάρον Ἀλέξανδρον Β' εἰς θάνατον. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1878 ἐν Πετρουπόλει εἰσήχθησαν εἰς δίκην 193 μηδενισταί, ἐξ ὧν οἱ 73 ηὐτοκτόνησαν ἢ παρεφρόνησαν. Εἰς ἀπάντησιν οἱ μηδενισταὶ ἐδολοφόνησαν 10 ἀστυνομικούς. Εἷς φοιτητής, ὁ Μπογκολούμπωφ, ἐμαστιγώθη, ἐπειδὴ δὲν ἐχαιρέτησε τὸν διευθυντὴν τῆς ἀστυνομίας Τρέπωφ· εἰς ἀπάντησιν ἡ Βέρα Ζασσοῦλιτς (5 Φεβρουαρίου 1878) ἐπλήγωσε βαρέως διὰ περιστρόφου τὸν Τρέπωφ. Δικασθεῖσα ἠθῳώθη. Τὸν Αὔγουστον τοῦ 1878 ἐτυφεκίσθη ὁ σοσιαλιστὴς Κερβάλσκυ ἐν Ὀδησσῷ· ὀλίγας ἡμέρας κατόπιν οἱ μηδενισταὶ ἐδολοφόνησαν τὸν ἀρχηγὸν τῆς χωροφυλακῆς Μεζεντζέφ. Τῷ 1879 ἐδολοφόνησαν ἐν Χαρκόβ τὸν κυβερνήτην πρίγκιπα Ἀλέξιον Κροπότκιν. Τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ Βαλεριανὸς Ὀσσίνσκυ, εἷς ἐκ τῶν δραστηριωτέρων μηδενιστῶν, ἀπηγχονίσθη ἐν Κιέβῳ μετὰ δύο ἄλλων συντρόφων του.

Ἐπὶ τρία ἔτη ὁλόκληρος ἡ Ρωσία εἶχε μεταβληθῆ εἰς θέατρον δολοφονιῶν καὶ ἐκτελέσεων. Διὰ μιᾶς διακηρύξεως τῆς 26 Αὐγούστου τοῦ 1879 ἡ ἐκτελεστικὴ ἐπιτροπὴ τῶν μηδενιστῶν κατεδίκασε τὸν τσάρον Ἀλέξανδρον Β' εἰς θάνατον. Κατὰ τὴν στιγμὴν ταύτην, ὁπότε παρίστατο ἀνάγκη συντονισμοῦ τῶν ἐπαναστατικῶν ἐνεργειῶν, συνεκρο-

Digitized by Google

τήθη συνέδριον μυστικὸν τῶν ἐπαναστατῶν, εἰς τὸ ὁποῖον ἐξεδηλώθησαν δύο τάσεις: μία τῶν συγκεντρωτικῶν, ἡ ὁποία ἀπετέλεσε τὴν ὁμάδα «Ναροντνάγια Βόλια» (Λαϊκὴ θέλησις) καὶ μία τῶν ὁμοσπονδιστῶν, ἡ ὁποία ἀπετέλεσε τὴν ὁμάδα «Τσέρνυϊ Περεντέλ» (Μαύρη διανομή). Ὄργανον τῶν μηδενιστῶν ἦτο «Ὁ ἀγγελιαφόρος τῆς λαϊκῆς θελήσεως», ὁ ὁποῖος ἐξεδίδετο ἐν Γενεύῃ καὶ ἐκυκλοφόρει λαθραίως ἐν Ρωσίᾳ. Ἐναντίον τοῦ τσάρου οἱ μηδενισταὶ ἔκαμαν τρεῖς ἀποπείρας. Κατὰ τὴν πρώτην, τὸ μηχάνημα, τὸ ὁποῖον εἶχε τοποθετηθῆ ὑπὸ τὰς σιδηροτροχιὰς τοῦ συρμοῦ, ὅστις θὰ ἔφερε τὸν αὐτοκράτορα, δὲν ἐξερράγη· κατὰ τὴν δευτέραν ἡ ἔκρηξις ἔγινεν, ἀλλ' ὁ τσάρος δὲν ἦτο ἐντὸς τοῦ συρμοῦ καὶ τὴν τρίτην ἐντελῶς τυχαίως ὁ τσάρος δὲν ἐνεφανίσθη εἰς τὴν τραπεζαρίαν τοῦ χειμερινοῦ ἀνακτόρου, ἡ ὁποία ἀνετινάχθη ὑπὸ τοῦ Κολτούριν (17 Φεβρουαρίου 1880). Ἡ ψυχὴ τῶν δύο πρώτων ἀποπειρῶν ἦτο μία γυνή, ἡ Σοφία Περοφσκάγια, βοηθουμένη ὑπὸ τοῦ Χιράγιεφ καὶ τοῦ Χάρτμαν. Τέλος, τὴν 1 Μαρτίου τοῦ 1881, ὁ τσάρος Ἀλέξανδρος Β' ἐπλήγη θανασίμως πλησίον τῆς διώρυγος τῆς Ἁγίας Αἰκατερίνης ὑπὸ τῶν βομβῶν τοῦ Ρυσσακὼφ καὶ τοῦ Γκριμεβίτσκυ. Ἐπηκολούθησαν θανατώσεις πολλῶν μηδενιστῶν.

Μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ Ἀλεξάνδρου τοῦ Β', ἡ ἐκτελεστικὴ ἐπιτροπὴ τῶν μηδενιστῶν ἀπηύθυνεν εἰς τὸν νέον τσάρον μανιφέστον, προτείνουσα ἐκεχειρίαν. Οἱ δραστηριώτεροι ἐκ τῶν μηδενιστῶν εἶχον ἀπολεσθῆ εἰς τὸν ἄπελπιν ἀγῶνα καὶ καθίστατο ἔκδηλον πλέον τὸ ἀτελεσφόρητον τῶν ἀτομικῶν ἀποπειρῶν. Ἡ ὀργάνωσις τῶν «ντβόρνικ», ἡ ὁποία ἐπώπτευε τὰς οἰκίας τῶν μεγάλων πόλεων, προσέφερεν ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἀστυνομίαν καὶ κατώρθωσε νὰ εἰσαγάγῃ μυστικοὺς ἀστυνόμους καὶ ἐντὸς τῶν κόλπων τῆς «Ναροντνάγια Βέλια» ἢ νὰ διαφθείρῃ μηδενιστὰς καὶ νὰ τοὺς μεταβάλῃ εἰς ὄργανα τῆς τσαρικῆς ἀστυνομίας. Σὺν τῷ χρόνῳ τὸ μηδενιστικὸν κίνημα ἤρχισε νὰ ἐκφυλίζεται καὶ μετά τινας τελευταίας τρομοκρατικὰς ἀναλαμπὰς ἔσβησε, διὰ νὰ τὸ διαδεχθῇ τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τοῦ ἐπιστημονικοῦ μαρξικοῦ σοσιαλισμοῦ, τὸ ὁποῖον ὑπὸ τὴν μπολσεβικικήν του μορφὴν ὡδήγησε τοὺς Ρώσους ἀγρότας καὶ ἐργάτας εἰς τὴν ὁδὸν τῆς ὁλοσχεροῦς ἀνατροπῆς τοῦ τσαρικοῦ καθεστῶτος κατὰ τὸ 1917.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Stepniak*, La Russie souterraine.—*Karlowitsch*, Die Entwickelung der russischen Nihilismus (γ' ἔκδ. Berlin 1880).—*Oldenberg*, Der russische Nihilismus (Leipzig 1888).—*Golowin*, Der russsische Nihilismus (Leipzig 1880).—*Thun*, Geschichte der revolutionären Bewegungen in Russland (Leipzig 1883).—*E. Bauer*, Aus den Jagen der Nihilistengefahr (London 1897).— *Nacht*, Die revolutionäre Bewegung in Russland (Berlin 1902).

Θ. Π.

**μηδενιστής,** *—ίστρια·* ὁ ὀπαδὸς τοῦ φιλοσοφικοῦ ἢ τοῦ πολιτικοῦ *μηδενισμοῦ* (βλ. λ.).

**μηδενιστικός,** *—ή, —όν·* ἀναφερόμενος εἰς τὸν μηδενιστήν, ὁ τοῦ μηδενιστοῦ: «μηδενιστικὴ ἀπόπειρα κατὰ τοῦ τσάρου».

**μηδέποτε·** ἐπίρρ., εἰς μηδεμίαν περίστασιν, οὐδέποτε, ποτέ: «μηδέποτε εἴπῃς τι» ποτὲ νὰ μὴν εἰπῇς τίποτε.

**Μηδεσικάστη** *[Μυθολ.]*. Μία τῶν νόθων θυγατέρων τοῦ Πριάμου, σύζυγος τοῦ Ἰμβρίου, φονευθέντος ὑπὸ τοῦ Τεύκρου κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον (Ἰλιάδ. Ν. 173). Α. Θ. Σ.

**μηδέτερος,** *—α, —ον·* μήτε ὁ ἕνας μήτε ὁ ἄλλος, οὐδέτερος.

**Μηδία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεγάλη χώρα τῆς Ἀσίας, ΝΔ. τῆς Κασπίας Θαλάσσης, ὁριζομένη πρὸς Β. ὑπὸ τῆς Ἀρμενίας, πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Ἀσσυρίας, πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Σουσιανῆς, Περσίας καὶ Καραμανίας, καὶ πρὸς Α. ὑπὸ τῆς Παρθίας καὶ Ὑρκανίας. Ἐκτεινομένη μεταξὺ 32° καὶ 40° βορείου πλάτους, κατέχει ἔκτασιν μεγαλυτέραν τῆς Ἰσπανίας καὶ ἀντιστοιχεῖ περίπου πρὸς τὸ σημερινὸν Ἰρὰκ-Ἀτζεμὶ, ἐπαρχίαν τῆς Περσίας. Ὑπὸ τῶν ἀρχαίων Περσῶν ἐκαλεῖτο *Μαδά*, ὑπὸ δὲ τῶν Ἀσσυρίων καὶ Ἑβραίων *Μαδάϊ*, ὀνομασθεῖσα οὕτω, κατὰ τὴν ἱερὰν Γραφήν, ἀπὸ τῶν ἀπογόνων τοῦ Μαδάϊ, τρίτου υἱοῦ τοῦ Ἰάφεθ (Γεν. 10, 2)· κατὰ τὸν Στράβωνα δὲ ἀπὸ τοῦ Μήδου, υἱοῦ τῆς Μηδείας καὶ τοῦ Ἰάσονος (XI, 525).

Ἡ χώρα εἶναι ὀρεινή, διασχιζομένη ὑπὸ τῶν διαφόρων διακλαδώσεων τοῦ Ταύρου. Πρὸς Δ. ἐκτείνονται τὰ Κάσπια ὄρη (νῦν ὀροσειρὰ Κασμπέκ, ὕψους 5.043 μέτρων), πρὸς Ν. ὁ Χοάτρας (ὄρη τοῦ Κουρδιστάν), ἀνατολικῶς αὐτοῦ τὸ ὄρος Ζάγρον, χωρίζον κατὰ τὴν ἀρχαιότητα τὴν Ἀσσυρίαν ἀπὸ τῆς Μηδίας, καὶ ὁ Παραχοάθρας (ὄρη τοῦ Κουρδιστὰν καὶ Λουριστάν). Κατὰ τὰ ΒΔ. αὐτῆς ἐκτείνεται τὸ Ἰασώνειον ὄρος (νῦν Δεμαβάντ), χωρίζον τὴν Ὑρκανίαν ἀπὸ τῆς Μηδίας. Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Καμβύσου (νῦν Γιορί), Κύρου (Κούρα) καὶ Ἀμάρδου (Κιζὶλ-Οὐζέν), πρὸς Δ. δέ, κατὰ τὴν Ματιανὴν λεγομένην χώραν, ἐξαπλοῦται ἡ μεγάλη ἁλμυρὰ λίμνη Ματιανὴ (νῦν Οὐρμία). Ἐν γένει ἡ χώρα εἶναι εὔφορος καὶ καρποφόρος, ἐθεωρεῖτο δὲ ὡς ἡ πρώτη καλλιεργηθεῖσα χώρα τῆς Ἀσίας. Τὰ ΒΔ. αὐτῆς παράγουσι μέλι, οἶνον, σῦκα, ἑσπεριδοειδῆ, ἰδίως δὲ τὰ ἐπώνυμα αὐτῆς μηδικὰ μῆλα (κοιν. κίτρα), τὰ δὲ Ν., ἐρημικὰ καὶ ἀμμώδη, εἶναι κατάλληλα δι' ἱπποτροφίαν, ἐκτρέφοντα τοὺς ὀνομαστοὺς ἵππους τῶν Νισαίων πεδίων (*Ἡροδ.* III, 106).

—*[Ἱστορ.]* Τὰ πρῶτα ἔτη τῆς ἱστορίας τῆς χώρας εἶναι σκοτεινά. Καὶ αὐτὸ δὲ τὸ ὄνομα *Μηδία* καὶ *Μῆδοι* φαίνεται ὅτι δὲν εἶναι Ἀρίας καταγωγῆς, καθ' ὅσον εἰς τὰς σφηνοειδεῖς ἐπιγραφὰς ἡ λέξις «Μάδα», σημαίνει χώραν. Κατὰ τὴν Γ' π. Χ. χιλιετηρίδα φαίνεται ὅτι ἐγκατεστάθησαν ἐν αὐτῇ. Ἄριοι λαοὶ προερχόμενοι ἐκ Βακτρίας καὶ Σογδιανῆς, οἵτινες, καθυποτάξαντες τοὺς αὐτόχθονας, ἀπετέλεσαν τὴν κρατοῦσαν ἀριστοκρατίαν. Οὕτως ὁ πυρὴν τοῦ λαοῦ τούτου ὑπῆρξεν, ὅπως καὶ σήμερον, τουρανικῆς καταγωγῆς, ἡ δὲ ἀριστοκρατία τῶν Ἀρίων ὡμίλει γλῶσσαν ὁμοίαν πρὸς τὴν ἀρχαίαν Περσικήν, ἐνῷ ἡ τῶν ἰθαγενῶν ἦτο ἡ Μηδική, ἥτις εἰς τὰς σῳζομένας ἐπιγραφὰς τῶν Περσῶν βασιλέων κατέχει τὴν δευτέραν θέσιν.

Οἱ Μῆδοι κατ' ἀρχὰς ἦσαν λαὸς ἰσχυρὸς καὶ φιλοπόλεμος, σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως ἐξεθηλύνθησαν καὶ ὑπεδουλώθησαν ὑπὸ τῶν Ἀσσυρίων, ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ μυθικοῦ Νίνου καὶ τῆς Σεμιράμιδος, περὶ τὸ 2.182 π. Χ. Μετὰ ζυγὸν πολλῶν αἰώνων ἀπηλευθέρωσεν αὐτούς, κατὰ τὸν Κτησίαν (*Διόδ. Σικελ.* II, 24, 32), ὁ Ἀρβάκης, στρατηγὸς τοῦ Σαρδαναπάλου, περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Θ' π. Χ. αἰῶνος, λαβὼν τὸν τίτλον τοῦ βασιλέως. Μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐπεκράτησεν ἀναρχία, μέχρις οὗ, κατὰ τὸν Ἡρόδοτον (I, 73, 96), ἀποκατεστάθη ἡ βασιλεία διὰ τοῦ Δηϊόκου (710—657 π. Χ.), ὅστις κατώρθωσε ν' ἀποτινάξῃ τὸν ἀσσυριακὸν ζυγόν. Τοῦτον διεδέχθη ὁ Φραόρτης (657—635 π. Χ.), ὅστις καθυπέταξε τοὺς Πέρσας καὶ ἔπεσε μαχόμενος κατὰ τῶν Ἀσσυρίων. Κατόπιν ὁ υἱός του Κυαξάρης ὁ Α' (935—595 π. Χ.), ὁ πολεμικώτερος τῶν Μήδων βασιλέων, ὅστις ἐκυρίευσε τὴν πρωτεύουσαν τῶν Ἀσσυρίων Νινευΐ, ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Ἀλυάττου βασιλέως τῶν Λυδῶν καὶ ἀπέκρουσε μεγάλην ἐπιδρομὴν τῶν Σκυθῶν. Ἐπὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ τὸ μηδικὸν κράτος ἐπεξετάθη ἀπὸ τοῦ Ἅλυος πρὸς Δ. μέχρι τοῦ Κωφῆνος (νῦν Καβοὺλ) πρὸς Α. Τοῦτον διεδέχθη ὁ υἱός του Ἀστυάγης (595—560 π. Χ.), ἐπὶ τοῦ ὁποίου κατελύθη τὸ μηδικὸν κράτος ὑπὸ τοῦ ἐγγόνου του Κύρου τοῦ πρεσβυτέρου, τοῦ ἱδρυτοῦ τοῦ περσικοῦ κράτους. Ἑνωθέντες μετὰ τῶν Περσῶν συνετέλεσαν εἰς τὴν καθόλου ἀνάπτυξιν αὐτῶν, μεταδώσαντες εἰς αὐτοὺς τὰ ἤθη, τὰ ἔθιμα καὶ τὸ θρήσκευμά των, οὕτως ὥστε τὰ ὀνόματα Μῆδοι καὶ Πέρσαι ἐθεωροῦντο ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ὡς συνώνυμα. Ἐπὶ Καμβύσου (529—522 π. Χ.) ἀπεπειράθησαν ν' ἀποτινάξωσι τὸν περσικὸν ζυγόν, ἀλλ' ἡ σφαγὴ τῶν Μάγων καὶ ἡ ἐπὶ τοῦ θρόνου ἀνάρρησις Δαρείου τοῦ Ὑστάσπους (521—485 π. Χ.) συνετέλεσεν εἰς τὴν τελείαν ὑποταγήν των, ἔκτοτε δὲ ἡ Μηδία ἠκολούθησε τὰς τύχας τῆς Περσίας.

Μετὰ τὴν κατάλυσιν τοῦ περσικοῦ κράτους ὑπὸ τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου, τῷ 330 π. Χ., ἡ Μηδία διῃρέθη εἰς δύο τμήματα. Τὴν *Μεγάλην* ἢ *Κυρίως Μηδίαν* πρὸς Ν. μὲ πρωτεύουσαν τὰ Ἐκβάτανα, καὶ τὴν *Ἀτροπατηνὴν Μηδίαν* (νῦν Ἀζερμπαϊτζὰν) πρὸς τὰ Β.Δ., κληθεῖσαν οὕτως ἀπὸ τοῦ Ἀτροπάτου, Πέρσου σατράπου αὐτῆς, μὲ πρωτεύουσαν τὰ Γάζακα. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου ἐκληρώθη εἰς τὸν στρατηγόν του Πίθωνα, ἀλλὰ μετὰ μικρὸν ἡρπάγη ὑπὸ τοῦ Ἀντιγόνου, μετ' αὐτὸν δὲ περιῆλθε, τῷ 312 π. Χ., εἰς Σέλευκον Α' τὸν Νικάτορα καὶ τοὺς διαδόχους αὐτοῦ.

Ὑπὸ τοὺς Ἕλληνας ἡγεμόνας οἱ Μῆδοι, ἐπωφελούμενοι τῶν διχονοιῶν αὐτῶν, ἐπανεστάτησαν, οὕτω δέ, περὶ τὸ 162 π. Χ., ἔσχον βασιλέα τὸν Τίμαρχον, εὐνοούμενον τοῦ Ἀντιόχου καὶ ὑπὸ τῶν Ρωμαίων ὑποστηριζόμενον. Ὀλίγον μετὰ ταῦτα, τῷ 152 π. Χ., ἐπὶ Δημητρίου Α' τοῦ Σωτῆρος, περιῆλθεν εἰς τὸν Ἀρσακίδην Μιθριδάτην Α', βασιλέα τῶν Πάρθων, ὑπὸ τοὺς ὁποίους παρέμεινεν ἔκτοτε, ἀποτελέσασα μέρος τοῦ δευτέρου περσικοῦ βασιλείου, μὲ πρωτεύουσαν τὰς Ράγας, τὴν μετὰ ταῦτα ὀνομασθεῖσαν Εὔρωπον καὶ Ἀρσακίαν. Περὶ τὸ 36 π. Χ. ἔσχον ἐπί τινα καιρὸν καὶ ἴδιον βασιλέα, τὸν Ἀρτάβασδον, κατὰ τοῦ ὁποίου ἐπολέμησεν ὁ Ἀντώνιος, φονευθέντα τῷ 31 π. Χ. κατὰ διαταγὴν τῆς Κλεοπάτρας. Ἔκτοτε τὸ ὄνομα Μῆδοι καὶ Μηδία ἐξέλιπον ἐκ τῆς ἱστορίας, φέροντα μόνον ἱστορικὰς ἀναμνήσεις τοῦ παρελθόντος αὐτῆς μεγαλείου, ὑπὸ δὲ τῶν Λατίνων ποιητῶν ἐχρησιμοποιοῦντο πρὸς δήλωσιν γενικῶς τῶν λαῶν τῆς Ἀσίας πρὸς Ἀν. τοῦ Τίγρητος, ἰδιαιτέρως δὲ τῶν Πάρθων.

***Γλῶσσα. Θρησκεία.*** Γλῶσσα αὐτῶν προγονικὴ ἦτο ἡ Ζενδική, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐγράφη ἡ Ζενδ-Ἀβέστα, ἤτοι ἡ ἱερὰ Βίβλος τῶν ἀρχαίων Μήδων καὶ Περσῶν, περιλαμβάνουσα τὴν θρησκείαν καὶ τοὺς νόμους τοῦ Ζωροάστρου (Zarathustra). Γνωσθεῖσα ἐν Εὐρώπῃ κατὰ τὸν Ζ' καὶ Ι' αἰῶνα, ἀποτελεῖ πολυτιμότατον γλωσσικὸν μνημεῖον, ἰδίως δὲ τὸ περιλαμβάνον τοὺς «Γκάτας», ἤτοι τοὺς «Ὕμνους», 17 τὸν ἀριθμόν, τῶν ὁποίων τινὲς τοὐλάχιστον ἐποιήθησαν ὑπὸ τοῦ ἰδίου Ζωροάστρου. Οἱ ἱερεῖς τῆς λατρείας τοῦ Ζωροάστρου ἐκαλοῦντο Μάγοι, τοιοῦτος δέ τις θεωρεῖται καὶ ὁ Ὡρομάσδης, πατὴρ τοῦ Ζωροάστρου, τοῦ θεμελιωτοῦ τῆς θρησκείας αὐτῶν, ζήσας κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην 300 περίπου ἔτη πρὸ τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου. Τὸ ὅλον θρήσκευμα ἦτο κτισματολατρεία, καταλήγουσα εἰς δύο ὑπερτάτας δυνάμεις, τὸν Ὡρομάσδην (φῶς, ἀγαθόν, δίκαιον) καὶ τὸν Ἀρειμὰν (σκότος, κακόν, ἄδικον), διατελούσας εἰς διενεκῆ πρὸς ἀλλήλας πόλεμον, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐξέρχεται νικητὴς ὁ Ὡρομάσδης, βασιλεύσας τοῦ κόσμου. Πλὴν τῶν δύο τούτων θεοτήτων ἐλάτρευον τὸν Ἥλιον, τοὺς ἀστέρας, τὴν Σελήνην κ.τ.λ., δι' ὃ καὶ ἡ ἀστρολατρεία καὶ πυρολατρεία ἦσαν αἱ κυριώτεραι λατρεῖαι τῶν Μήδων καὶ Περσῶν, οἵτινες ἀκριβῶς διὰ τοῦτο προώδευσαν εἰς τὴν ἀστρονομίαν καὶ τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας, ὡς καὶ τὴν ἄλλην ἐν γένει σοφίαν.

Ἴχνη τῆς λατρείας ταύτης καὶ τῆς ζενδικῆς γλώσσης, ἱκανῶς σαφῆ, σῴζονται παρὰ τοῖς Γουέβροις, λαῷ τῆς ὀρεινῆς Περσίας, ὧν ὁ ἀριθμὸς ἀνέρχεται εἰς 30.000 περίπου, οἵτινες, μολονότι ὑπετάγησαν ὑπὸ τῶν Ἀράβων κατὰ τὸν Ζ' αἰῶνα, παρέμειναν πιστοὶ εἰς τὴν θρησκείαν τοῦ Ζωροάστρου, τῶν λοιπῶν ἀσπασθέντων τὸν Μωαμεθανισμόν. Α. Θ. Σ.

— **Μηδία** (Media) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Δ. Δακίας (Dacia Apulensis), ἐπὶ τῆς ἀπὸ Τιέρνας (νῦν Ὄρσοβα) εἰς Ζαρμιζεγέθουσαν ἀγούσης ὁδοῦ, ἀντιστοιχοῦσα πρὸς τὴν νῦν Méhadia ἐν Τρανσυλβανίᾳ. Α. Θ. Σ.

— **Μηδίας τεῖχος,** ἢ ***Μηδικὸν τεῖχος*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μακρὸν τεῖχος ἐν Μηδίᾳ, κατασκευασθὲν ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ναβουχοδονόσορος τοῦ Β' (606—562 π. Χ.), πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς Βαβυλῶνος ἀπὸ τῶν Μηδικῶν ἐπιδρομῶν. Ἐξετείνετο ἀπὸ τοῦ Εὐφράτου μέχρι τοῦ Τίγρητος καὶ ἐχώριζε τὴν Μεσοποταμίαν ἀπὸ τῆς Βαβυλωνίας. Κατὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ Ξενοφῶντος (Κύρ. Ἀναβ. II, 4, 12) περιεβάλλετο ὑπὸ βαθείας τάφρου πλήρους ὕδατος, καὶ εἶχε μῆκος περίπου 20 παρασαγγῶν, εὖρος 20 ποδῶν καὶ ὕψος 100 ποδῶν, ἦτο δὲ κατεσκευασμένον ἐκ πλίνθων ὀπτῶν συνηρμοσμένων δι' ἀσφάλτου. Τὴν κατασκευὴν τούτου ὁ Στράβων (XVI, 737) ἀποδίδει εἰς τὴν Σεμιράμιδα. Λείψανα τῶν τειχῶν τούτων ἀνεκαλύφθησαν τῷ 1837 ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου Λύντς. Α. Θ. Σ.

**μηδίζω·** φρονῶ τὰ τῶν Μήδων, ἀκολουθῶ τοὺς Μήδους: «οἱ μηδίσαντες ἐκ τῶν Ἑλλήνων».

**μηδικὴ** (ἡ) (Medicago) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐλλοβοκάρπων,* περιλαμβάνον πόας καὶ δενδρύλλια ἀπαντῶντα εἰς τὰς ψυχρὰς καὶ εὐκράτους χώρας τῆς Εὐρώπης, τῆς Ἀσίας καὶ εἰς τὴν βόρειον Ἀμερικήν. Τὸ γένος περιλαμβάνει περὶ τὰ 40 εἴδη, ἐτήσια ἢ πολυετῆ, ὧν τινα εἶναι νομευτικά. Ἐκ τῶν εἰδῶν τούτων τὰ 25 περίπου ἀπαντῶσιν ἐν Εὐρώπῃ καὶ παρ' ἡμῖν, τούτων δ' ἀξιολογώτερα καὶ συνηθέστερον ἀπαντῶντα ἢ καλλιεργούμενα εἶναι τὰ ἑξῆς:

*Μηδικὴ ἡ δενδρώδης* (Medicago arborea). Εἶναι θάμνος, οὗ τὸ ὕψος ἐνίοτε φθάνει τὰ 2 μέτρα καὶ ἀπαντᾷ κυρίως εἰς τὰς παρὰ τὴν Μεσόγειον χώρας καὶ παρ' ἡμῖν ἐν Ἀττικῇ καὶ ἰδίᾳ παρὰ τὸν Λυκαβηττόν. Τὸ εἶδος τοῦτο πολλάκις καλλιεργεῖται ὡς κοσμητικὸν λόγῳ τῶν πολλῶν καὶ χρυσοκιτρίνου χρώματος ἀνθέων του. Ἐνιαχοῦ τὰ φύλλα τούτου χρησιμοποιοῦνται ὡς κτηνοτροφικὸν προϊόν. Εἰς τὸ εἶδος τοῦτο τῆς μηδικῆς ἀναφέρεται καὶ τὸ φυτὸν *κύτισσος* ἢ *κύτισος* τοῦ Διοσκορίδου, ὅστις κατὰ τὸν αὐτὸν συγγραφέα ἐφύετο παρὰ τοὺς μελισσῶνας καὶ ἐθεωρεῖτο ὡς εἶδος *μελιγόνου*. Ὁ Βιργίλιος ἀναφέρει τὸν κύτισον ὡς θρεπτικωτάτην τροφὴν διὰ τὰ πρόβατα. Ὁ Πλίνιος ἀναφέρει ὅτι τὸ φυτὸν τοῦτο εὑρέθη κατὰ πρῶτον εἰς τὴν Κύθνον καὶ ἐκεῖθεν διεδόθη εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἑλλάδα καὶ ἐξ αὐτῆς εἰς τὴν Ἰταλίαν (*Πλιν.*, Φυσ. Ἱστορ. 73, 47). Ὁ Κολουμέλλας λέγει ὅτι τὸ φυτὸν τοῦτο ἦτο γνωστὸν πολλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος ὑπὸ τὰ ὀνόματα *ζέα, καρνικὴ* καὶ *τρυφερὰ* καὶ προτρέπει νὰ καλλιεργῆται ἐντατικῶς, διότι ἀποτελεῖ ἐν χλωρᾷ ἢ ξηρᾷ καταστάσει χρησιμωτάτην τροφὴν διὰ τὰ κατοικίδια ζῷα (πρόβατα, βοῦς, αἶγας), καὶ πτηνὰ (κυρίως ὄρνιθας), ὡς καὶ διὰ τὰς μελίσσας. Ἡ καλλιέργεια τοῦ φυτοῦ τούτου εἶναι εὐχερής, διότι δύναται νὰ βλαστάνῃ καὶ νὰ ἀναπτύσσηται εἰς παντοειδῆ ἐδάφη καὶ εἰς τὰ ἀγονώτερα ἔτι καὶ δὲν προσβάλλεται ὑπὸ τῶν ἀτμοσφαιρικῶν μεταβολῶν. Καὶ σήμερον οἱ καλλιεργηταὶ προτιμῶσι τὸ εἶδος τοῦτο πάντων τῶν λοιπῶν, πρὸ πάντων ὅταν τὸ εἰς τὴν κατοχήν των ἔδαφος εἶναι ἄγονον.

*Μηδικὴ ἡ δρεπανοειδὴς* (Medicago falcata). Εἶναι πόα πολυετής, κοινοτάτη τόσον ἐν Εὐρώπῃ ὅσον καὶ παρ' ἡμῖν. Φύεται καὶ ἀναπτύσσεται εἰς ἀγόνους τόπους καὶ ἀντέχει εἰς τὴν ξηρασίαν. Καλλιεργεῖται πολλαχοῦ ὡς κτηνοτροφικὸν καὶ ἐνιαχοῦ καὶ ὡς κοσμητικόν.

*Μηδικὴ ἡ ἥμερος* (Medicago sativa). Εἶναι πόα

Digitized by Google

πολυετής, γνωστοτάτη καὶ παρ᾽ ἡμῖν ὑπὸ τὸ ὄνομα τριφύλλι ἥμερο καὶ γαλάζιο τριφύλλι καὶ εἶναι ἡ *μηδικὴ πόα* τῶν ἀρχαίων, δηλαδὴ τὸ κατ᾽ ἐξοχὴν *τριφύλλιον*. Κατὰ τὸν Κοραῆν ὠνομάσθη μηδική, διότι ἦλθεν ἀπὸ τὴν Μηδίαν (Ἄτακτα, Δ, 617). Ἡ μηδικὴ εἰσήχθη εἰς τὴν Ἑλλάδα ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Μηδικῶν πολέμων (Ε´ π. Χ. αἰῶνος), ἔκτοτε δὲ καλλιεργεῖται καὶ διεδόθη σὺν τῷ χρόνῳ καὶ εἰς τὰς λοιπὰς παραμεσογειακὰς χώρας. Ὁ Κάτων οὐδὲν ἀναφέρει περὶ τοῦ φυτοῦ τούτου. Φαίνεται ὅτι ἡ μηδικὴ εἰσήχθη εἰς τὴν Ἰταλίαν μόλις κατὰ τὸν Α´ ἢ τὸν Β´ μ. Χ. αἰῶνα.

*Μηδικὴ ἡ ἥμερος.*

Ἡ μηδικὴ ἡ ἥμερος, ὡς ἄριστον κτηνοτροφικὸν φυτόν, καλλιεργεῖται σήμερον ἐντατικῶς πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης. Ἐν Γαλλίᾳ μόνον καλλιεργοῦνται τοῦ φυτοῦ τούτου περὶ τὰ 800.000 ἐκτάρια γῆς. Εὐδοκιμεῖ τόσον εἰς ψυχρὰς ὅσον καὶ εἰς εὐκράτους καὶ θερμὰς ἔτι χώρας καὶ εἰς παντὸς εἴδους, ἀπὸ ἀπόψεως συστατικῶν, γαίας, ἰδίως ὅμως ἀργιλλοασβεστολιθικῆς συστάσεως καὶ ὑγρὰς ἢ συχνὰ ἀρδευομένας. Ἀντέχει ἐπὶ πολὺ εἰς τὴν ξηρασίαν λόγῳ τῶν μακρῶν ριζῶν της. Συνήθως σπείρουσι ταύτην εἰς ἀγόνους ἀγρούς, διότι καθιστᾷ τούτους γονίμους. Καλῶς περιποιουμένη θερίζεται 7—8 φορὰς τὸ ἔτος. Εἰς κλίματα εὔκρατα ἡ μηδικὴ σπείρεται κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ φθινοπώρου ἢ τῆς ἀνοίξεως καὶ εὐθὺς μετὰ τοὺς παγετούς. Εἰς πολλοὺς τόπους σπείρεται κατὰ τὴν ἄνοιξιν εἰς ἀγρὸν σίτου. Ὁ πρὸς σπορὰν μηδικῆς προοριζόμενος ἀγρὸς ὀργώνεται βαθέως καὶ μίαν ἢ δύο φοράς. Διὰ σπορὰν ἑνὸς στρέμματος ἀρκοῦσι περὶ τὰ 600 δράμια σπόρου μηδικῆς κεκαθαρμένου ἀπὸ τοῦ περικαρπίου του. Ἕκαστον στρέμμα μηδικῆς, εἰς ὃ ἀνεμείχθησαν 10—15 ὀκάδες μείγματος κατ᾽ ἴσα μέρη γύψου καὶ τέφρας ξυλανθράκων, ἐὰν ἀρδεύεται καλῶς καὶ βοτανίζεται ἅπαξ τοῦ ἔτους, δύναται νὰ διατηρηθῇ ἐν ἀκμαίᾳ καταστάσει ἐπὶ 15 σχεδὸν ἔτη καὶ νὰ ἀποδώσῃ κατ᾽ ἔτος περὶ τὰς 1500—1800 ὀκάδας ξηροῦ χόρτου, δηλαδὴ περὶ τὰς 6.000 ὀκ. χλωροῦ χόρτου.

Ἡ μηδικὴ ἡ ἥμερος καλλιεργεῖται ὑπὸ πλείστας διαφοράς, ὧν γνωστότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: *μηδικὴ ἡ ἥμερος ἡ στρογγυλόφυλλος* (Medicago sativa rotundifolia) καὶ *μηδικὴ ἡ ἥμερος ἡ ρωσικὴ* (Medicago sativa russa).

Τὸ εἶδος τοῦτο προσβάλλεται ὑπὸ πλείστων παρασιτικῶν φυτῶν, ἅτινα πολλὰς ζημίας ἐνίοτε ἐπιφέρουσιν εἰς αὐτήν. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἶναι: τὸ φυτὸν *ριζοκτόνος ἡ ἰόχρους* (Rizoctonia violacea) καὶ τὸ *ἐπίθυμον τὸ κοινὸν* (Cuscuta vulgaris). Τὸ πρῶτον εἶδος προσβάλλει τὰς ρίζας καὶ ἀποξηραίνει ταύτας. Ἡ νόσος ἅμα τῇ ἐκδηλώσει της καθιστᾷ ὠχροκιτρίνους καὶ καχεκτικοὺς τοὺς βλαστοὺς τῆς μηδικῆς, ὀφείλεται δὲ εἰς τὴν μεγάλην ὑγρασίαν τοῦ ἐδάφους, δι᾽ ὃ καὶ ἅμα τῇ ἐμφανίσει τῆς νόσου δέον ἀμέσως νὰ παύωνται αἱ ἀρδεύσεις καὶ νὰ ἐκριζῶνται τὰ προσβληθέντα φυτά. Εἰς ἀμφοτέρας τὰς νόσους ἐνδείκνυται πλὴν τῆς ἐκριζώσεως τῶν προσβληθέντων φυτῶν καὶ ἡ καῦσις ἐντὸς τοῦ ἀγροῦ ποσότητός τινος ξηρῶν χόρτων καὶ ἐπίπασις διὰ τῆς κόνεως ὁλοκλήρου τοῦ ἀγροῦ.

*Μηδικὴ ἡ λυκίσκη* (Medicago lupulina). Εἶναι πόα διετὴς ἢ πολυετὴς καὶ ἀπαντᾷ εἰς πάσας σχεδὸν τὰς παρὰ τὴν Μεσόγειον χώρας ὡς καὶ παρ᾽ ἡμῖν. Καλλιεργεῖται πολλαχοῦ ὡς κτηνοτροφικόν.

*Μηδικὴ ἡ παράλιος* (Medicago maritima). Πολυετὴς πόα ἐνιαχοῦ νομευτική, ἀπαντῶσα πολλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος καὶ γνωστὴ ἐν Ζακύνθῳ ὑπὸ τὸ ὄνομα ἁρμυρήθρα τοῦ πελάγου, ὀνομασθεῖσα οὕτω ὡς φυομένη εἰς παραθαλάσσια καὶ ὑφάλμυρα ἐδάφη. Ἐνιαχοῦ καλλιεργεῖται καὶ πρὸς κόσμον.

*Μηδικὴ ἡ στικτὴ* (Medicago maculata). Εἶναι ἐτησία πόα νομευτική, φυομένη κυρίως εἰς λειμῶνας.

Δ. Ν. Π.

**μηδικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μήδους, ὁ τῶν Μήδων: «μηδικὸς πόλεμος» ἄλλως «περσικὸς πόλεμος» || ***μηδικὰ*** (τά)· ὡς οὐσ., ἡ περίοδος τῶν περσικῶν πολέμων, ἄλλως *μηδικοὶ χρόνοι*: «πρὸ τῶν μηδικῶν», «μετὰ τὰ μηδικά».

**—Μηδικοὶ** ***πόλεμοι.*** Οὕτω καλοῦνται, ἀνακριβῶς ἴσως, ἀντὶ *Περσικοί*, ἐν τῇ ἱστορίᾳ οἱ μεταξὺ Περσῶν καὶ Ἑλλήνων διεξαχθέντες πόλεμοι, κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ Ε´ π. Χ. αἰῶνος, καθ᾽ οὓς διὰ τῶν θριαμβευτικῶν νικῶν τῶν Ἑλλήνων ἐδοξάσθη τὸ ἑλληνικὸν ὄνομα, ἀπηλλάγη δὲ ἡ Εὐρώπη ἀπὸ τῆς βαρβαρικῆς ἐπιδρομῆς καὶ ἐξησφαλίσθη ἡ ἀκμὴ καὶ διάρκεια τοῦ ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ, πρὸς ὄφελος ὁλοκλήρου τῆς ἀνθρωπότητος.

Τὸ περσικὸν κράτος, ἐπεκταθὲν διὰ τῶν νικῶν τοῦ Κύρου, Καμβύσου καὶ Δαρείου πρὸς Ἀν. μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ καὶ τῶν Ἠμωδῶν ὀρέων (Ἀν. Ἱμαλάϊα), πρὸς Δ. μέχρι τῆς Μεγάλης Σύρτεως, πρὸς Β. μέχρι τοῦ Καυκάσου καὶ τοῦ Ἰαξάρτου καὶ πρὸς Ν. μέχρι τῆς Ἀραβίας, Αἰθιοπίας καὶ Νουβίας, ἐπεζήτησε τὴν ἐπέκτασιν αὐτοῦ καὶ πρὸς τὴν Εὐρώπην. Πρὸς τοῦτο δὲ δὲν ἔλειψαν αἱ ἀφορμαί. Ὁ Δαρεῖος ἔχων ὑποτεταγμένας ἢ ὑπὸ τὴν προστασίαν του τὸ πλεῖστον τῶν ἐν Μ. Ἀσίᾳ ἑλληνικῶν ἀποικιῶν, προτρεπόμενος ἀφ᾽ ἑνὸς ὑπὸ τοῦ πρὸς αὐτὸν καταφυγόντος ἐξορίστου Πεισιστρατίδου Ἱππίου, ἐκδίκησιν πνέοντος κατὰ τῶν Ἀθηναίων, ἐπιθυμῶν δ᾽ ἀφ᾽ ἑτέρου νὰ τιμωρήσῃ τοὺς Ἀθηναίους καὶ Ἐρετριεῖς διὰ τὴν ὑπ᾽ αὐτῶν ἀποσταλεῖσαν βοήθειαν εἰς τοὺς ὑπὸ τὸν Ἀρισταγόραν ἐπαναστατήσαντας Ἴωνας, ἀπεφάσισε τὴν κατὰ τῆς Ἑλλάδος ἐκστρατείαν. Δι᾽ ὅ, μετὰ τὴν κατάπνιξιν τῆς ἀποστασίας τῶν Ἰώνων, ἀπέστειλε τῷ 495 π. Χ. τὸν γαμβρόν του Μαρδόνιον μετ᾽ ἰσχυρᾶς δυνάμεως πεζικοῦ καὶ στόλου. Καὶ τὸ μὲν πεζικόν, διαπεραιωθὲν εἰς τὴν Θρᾴκην, ἐβάδιζε κατὰ τῆς Μακεδονίας, ὁ στόλος ὅμως κατεστράφη ἕνεκα σφοδρᾶς τρικυμίας παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Ἄθων, ἐνθαρρυθέντες δ᾽ ὡς ἐκ τούτου οἱ Θρᾷκες ἐπέπεσαν νύκτωρ κατὰ τῶν Περσῶν, ὧν πολλοὺς ἐφόνευσαν, ἐτραυμάτισαν δὲ καὶ αὐτὸν τὸν Μαρδόνιον. Τότε ὁ Μαρδόνιος ἀπεφάσισε νὰ ἐπιστρέψῃ μετὰ τῶν ὑπολειφθεισῶν δυνάμεων, ἀφοῦ προηγουμένως ὑπεδούλωσε τοὺς Μακεδόνας καὶ τοὺς κατοίκους τῶν παραλίων τῆς Θρᾴκης μέχρι τῆς Θεσσαλίας. Συνάμα δὲ ἔπεμψε κήρυκας εἰς τὰς πόλεις τῆς κυρίως Ἑλλάδος, ὅπως ζητήσουν γῆν καὶ ὕδωρ ὡς σημεῖον ὑποταγῆς. Καὶ ἄλλαι μὲν τῶν νήσων καὶ πολλαὶ τῶν ἠπειρωτικῶν πόλεων παρεχώρησαν τὰ ζητηθέντα, ἐν Ἀθήναις ὅμως καὶ Σπάρτῃ ἐφόνευσαν τοὺς κήρυκας.

Ἡ ἀποτυχία αὕτη τοῦ Μαρδονίου δὲν ἀπεθάρρυνε τὸν Δαρεῖον, ὅστις παρεσκευάζετο πρὸς ἐπανάληψιν τοῦ πολέμου. Ἡ δευτέρα δὲ αὕτη ἐκστρατεία ἀνετέθη τῷ 490 π. Χ. εἰς τοὺς στρατηγοὺς Δᾶτιν καὶ Ἀρταφέρνην, οἵτινες ἀποπλεύσαντες ἐκ Κιλικίας μετὰ 600 τριήρεων διηυθύνοντο κατὰ τῆς Ἑλλάδος, οὐχὶ διὰ τῆς αὐτῆς ὁδοῦ, φοβούμενοι τὸ πάθημα τοῦ Μαρδονίου, ἀλλὰ διὰ τῶν Κυκλάδων νήσων, ὧν πολλὰς ἐκυρίευσαν. Παραλαβόντες δὲ ἐξ αὐτῶν στρατὸν καὶ παῖδας ὁμήρους, διηυθύνθησαν πρῶτον εἰς τὴν Κάρυστον τῆς Εὐβοίας καὶ ἔπειτα εἰς τὴν Ἐρέτριαν, τὴν ὁποίαν κυριεύσαντες διὰ προδοσίας, μετὰ ἑξαήμερον πολιορκίαν, κατηρήμωσαν. Γενόμενοι κύριοι τῆς Εὐβοίας, εἰσέβαλον διὰ τοῦ Εὐρίπου εἰς τὴν Ἀττικὴν καὶ ἐστρατοπέδευσαν ἐν Μαραθῶνι, καθοδηγούμενοι ὑπὸ τοῦ ἐξορίστου Ἱππίου. Δέκα χιλιάδες Ἀθηναίων καὶ χίλιοι Πλαταιεῖς, ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Μιλτιάδου, ἐπολέμησαν γενναιότατα κατὰ τῶν Περσῶν, νικήσαντες αὐτοὺς κατὰ κράτος τῇ 29 Σεπτεμβρίου 490 π. Χ. Οἱ Πέρσαι τραπέντες εἰς φυγὴν ἐπεβιβάσθησαν τῶν πλοίων καὶ παρακάμψαντες τὸ Σούνιον ἡτοιμάζοντο ν᾽ ἀποβιβασθῶσιν εἰς Ἀττικήν, ὁπότε εὑρεθέντες πρὸ τῶν νικητῶν τοῦ Μαραθῶνος ἠναγκάσθησαν νὰ ἐπιστρέψωσιν εἰς Ἀσίαν.

Ἡ νίκη τοῦ Μαραθῶνος ἔσωσε τὴν Ἑλλάδα καὶ παρέμεινεν ἐσαεὶ τὸ ἐπιφανέστατον καύχημα τῶν Ἀθηναίων, οἵτινες ἀπαλλαγέντες τῶν Περσῶν κατώρθωσαν ὑπὸ τὸν Μιλτιάδην νὰ ἀνακτήσωσι τὸ πλεῖστον τῶν Κυκλάδων νήσων, πλὴν τῆς Πάρου, τὴν ὁποίαν οὗτος μετὰ πολιορκίαν 26 ἡμερῶν ἠναγκάσθη νὰ καταλίπῃ ἐπιστρέψας εἰς Φάληρον. Ὁ Δαρεῖος ὅμως δὲν ἀπηλπίσθη καὶ παρεσκευάζετο αὐτοπροσώπως νὰ ἐκδικηθῇ τοὺς Ἕλληνας, ἀλλ᾽ ἀπέθανε τῷ 485 π. Χ., χωρὶς νὰ δυνηθῇ νὰ ἐκπληρώσῃ τὸ ὄνειρόν του. Τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ σχεδίου του ἀνέλαβε νὰ ἐκπληρώσῃ ὁ υἱὸς καὶ διάδοχός του Ξέρξης, ὅστις συμπληρώσας τὰ τῆς ἐκστρατείας ἐπῆλθε κατὰ τῆς Ἑλλάδος μετὰ πολυαρίθμου στρατοῦ καὶ στόλου. Ὁ Ἡρόδοτος ἀναβιβάζει τὰς κατὰ ξηρὰν αὐτοῦ δυνάμεις εἰς 1.700.000 ἀνδρῶν, τὰς δὲ κατὰ θάλασσαν εἰς 1.207 τριήρεις, ὧν ἑκάστη εἶχε πλήρωμα 200 ἀνδρῶν. Διαβὰς λοιπὸν τὸν Ἑλλήσποντον διὰ γεφυρῶν, διεπεραιώθη εἰς τὴν Θρᾴκην καὶ ἐκεῖθεν διὰ τῆς Μακεδονίας ἐβάδιζε κατὰ τῆς Ἑλλάδος. Οἱ Ἕλληνες, ἐν τῷ μεταξύ, συνῆλθον ἐν Κορίνθῳ ἵνα συσκεφθῶσι περὶ τῆς κοινῆς ἀμύνης τῆς χώρας. Ὅταν δὲ ἦλθεν ἡ εἴδησις ὅτι ὁ στρατὸς τοῦ Ξέρξου εὑρίσκεται ἐν Πιερίᾳ, ὁ μὲν ἑλληνικὸς στρατὸς ἐξεκίνησε πρὸς συνάντησιν τῶν Περσῶν, ὁ δὲ στόλος, ἀποτελούμενος ἐκ 240 τριήρεων, ἐξ ὧν 127 ἀθηναϊκαί, ὑπὸ τὸν Λακεδαιμόνιον ναύαρχον Εὐρυβιάδην, τῶν Ἀθηναίων ὑποχωρησάντων εἰς τὴν ἀξίωσιν ταύτην τῶν Σπαρτιατῶν, ἔπλευσεν εἰς τὰ βόρεια τῆς Εὐβοίας καὶ ἔφθασε παρὰ τὸ Ἀρτεμίσιον, ὅπως παρεμποδίσῃ τὴν ἀποβίβασιν τῶν Περσῶν εἰς τὰ νῶτα τῶν ἐν Θερμοπύλαις ἀμυνομένων. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ ναύαρχος τοῦ περσικοῦ στόλου Ἀχαιμένης, ἀδελφὸς τοῦ Ξέρξου, εἶχεν ἐντολὴν νὰ εἰσπλεύσῃ εἰς τὸν Παγασιτικὸν κόλπον. Ἀτύχημά τι τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου, καθ᾽ ὃ συνελήφθησαν δύο ἑλληνικαὶ τριήρεις ὑπὸ τῶν περιπολούντων Φοινίκων, ἐνέβαλεν εἰς φόβον τοὺς Ἕλληνας, οἵτινες ἀπὸ τοῦ Ἀρτεμισίου προσωρμίσθησαν εἰς τὰ στενὰ τῆς Εὐβοίας. Ἕνεκα ὅμως τρικυμίας, ἥτις ἐπέφερε μεγάλας ζημίας εἰς τὸν περσικὸν στόλον παρὰ τὸ ἀκρωτήριον τῆς Σηπιάδος, ἀναθαρρήσαντες οἱ Ἕλληνες ἐπανῆλθον εἰς τὸ Ἀρτεμίσιον, ἔνθα ᾐχμαλώτισαν 15 ἐχθρικὰ πλοῖα. Τότε ἐξεπέμφθησαν κατ᾽ αὐτῶν 200 πλοῖα, ἵνα περιπλέοντα τὴν Εὔβοιαν παρεμποδίσωσι τὴν διαφυγὴν τοῦ ἐν Ἀρτεμισίῳ ἑλληνικοῦ στόλου πρὸς τὸν Εὐβοϊκὸν κόλπον. Γενομένης ὅμως ναυμαχίας ὁ ἑλληνικὸς στόλος κατέστρεψε 30 πλοῖα περσικά. Οἱ Πέρσαι ἐξηκολούθησαν τὸν ἀγῶνα καὶ ἐπέφερον οὐχὶ μικρὰς ζημίας εἰς τοὺς Ἕλληνας, ἀλλ᾽ ἐπελθούσης τῆς νυκτὸς ἀπεχώρησαν οἱ μὲν Πέρσαι εἰς τὰς Ἀφέτας (νῦν Τρίκερι), οἱ δὲ Ἕλληνες εἰς τὸ Ἀρτεμίσιον. Κατὰ τὴν νύκτα, καταιγὶς ἐπελθοῦσα ἐπέφερε μεγάλας ζημίας εἰς τοὺς ἐν Ἀφέταις Πέρσας, ἐνῷ ὁ ἑλληνικὸς στόλος εὑρίσκετο ἐν ἀσφαλείᾳ παρὰ τὸ Ἀρτεμίσιον, συνάμα δὲ τρικυμία κατέστρεψε 200 περσικὰ πλοῖα περιπλέοντα τὴν Εὔβοιαν.

Καθ᾽ ὃν χρόνον συνέβαινον ταῦτα, συμμαχικὸς στρατός, ὑπὸ τὸν Λεωνίδαν, βασιλέα τῆς Σπάρτης, ἐφύλασσε τὰ στενὰ τῶν Θερμοπυλῶν. Περικυκλωθεὶς ὅμως ὁ Λεωνίδας ὑπὸ τοῦ περσικοῦ στρατοῦ, ὑπερβάντος τὸ ὄρος διὰ προδοσίας τοῦ Ἐφιάλτου, καὶ διαβλέπων ἄφευκτον τὸν κίνδυνον, ἀπέπεμψε τοὺς ἄλλους Ἕλληνας καὶ μείνας μετὰ 300 Σπαρτιατῶν, 700 Θεσπιέων καὶ 400 Θηβαίων ἠγωνίσθη γενναιότατα κατὰ ὑπεραρίθμων ἐχθρῶν τὴν περίφημον ἐν Θερμοπύλαις μάχην ἀρχομένου τοῦ Ἰουλίου 480 π. Χ., καθ᾽ ἣν ἔπεσαν πάντες.

Μετὰ τὴν πτῶσιν τῶν Θερμοπυλῶν, μέγα μέρος τῆς ἠπειρωτικῆς Ἑλλάδος εὑρίσκετο εἰς τὴν διάθεσιν τῶν Περσῶν, ὁ δὲ Ξέρξης κατελθὼν μετὰ πεζικοῦ εἰς τὴν Ἀττικὴν κατέλαβε τὰς Ἀθήνας, ἄνευ σχεδὸν κατοίκων καὶ κατεστραμμένας, διότι οἱ Ἀθηναῖοι ἐξασφαλίσαντες ἀλλαχοῦ τὰ γυναικόπαιδα ἐπεβιβάσθησαν κατὰ προτροπὴν τοῦ Θεμιστοκλέους εἰς τὰ πλοῖα, ἔχοντος τὴν γνώμην ὅτι μόνον εἰς ταῦτα ἠδύναντο νὰ ἐλπίζωσιν.

Ὁ ἑλληνικὸς στόλος, ἀποτελούμενος ἐκ 378 τριήρων καὶ 7 πεντηκοντόρων, ἔπλεε πρὸς τὴν Τροιζῆνα ὑπὸ τὸν Εὐρυβιάδην, προτιμῶντα τὸν ἰσθμὸν τῆς Κορίνθου, παρὰ τὰ στενὰ τῆς Σαλαμῖνος. Μετὰ πολλὰς τέλος θυελλώδεις συζητήσεις καὶ τὴν ἐπιμονὴν τοῦ Θεμιστοκλέους, ὑπερίσχυσεν ἡ σωτήριος γνώμη αὐτοῦ, καὶ οἱ Ἕλληνες ἠναγκάσθησαν νὰ ναυμαχήσωσιν εἰς τὰ στενὰ τῆς Σαλαμῖνος, ὅπου κατήγαγον τὴν περιφανῆ ἐν τῇ ἱστορίᾳ νίκην τῆς 23 Ἰουλίου 480 π. Χ. Ὁ Ξέρξης τότε πρὸ τῶν δυσχερειῶν τοῦ ἐπικειμένου χειμῶνος καὶ τοῦ φόβου μήπως οἱ Ἕλληνες πλεύσαντες διαλύσωσι τὰς γεφύρας τοῦ Ἑλλησπόντου, ἐπέσπευσε τὴν ἐξ Ἑλλάδος ἀναχώρησίν του, καταλιπὼν τὸν Μαρδόνιον ἐπὶ κεφαλῆς 300.000 ἀνδρῶν. Οὗτος, διαχειμάσας ἐν Θεσσαλίᾳ, εἰσέβαλεν ἐκ νέου εἰς τὴν Στερεὰν Ἑλλάδα τὸ ἐπόμενον ἔαρ. Ἀλλ᾽ ἡ ἐν Πλαταιαῖς μάχη τῇ 25ῃ Σεπτεμβρίου 479, καθ᾽ ἣν ὁ Παυσανίας καὶ ὁ Ἀριστείδης κατενίκησαν τὸν στρατὸν τοῦ Μαρδονίου, ἐματαίωσε πᾶσαν ἐλπίδα τῶν βαρβάρων. Τὴν αὐτὴν ἡμέραν ὁ συμμαχικὸς στόλος ἀποτελούμενος ἐξ 110 πλοίων, ὑπὸ τὸν Ξάνθιππον καὶ Λεωτυχίδην, κατετρόπωσαν παρὰ τὴν Μυκάλην τὰ τελευταῖα λείψανα τοῦ μεγάλου ἐκείνου περσικοῦ στόλου. Μετὰ τὰς νίκας ταύτας ἀπηλευθερώθησαν αἱ ἑλληνικαὶ χῶραι καὶ αἱ νῆσοι, ὁ Ἑλλήσποντος ἐκυριεύθη καὶ ἡ Θρακικὴ χερσόνησος ἐγένετο κτῆμα τῶν Ἀθηναίων. Ἀπὸ τότε οἱ Ἕλληνες ἔλαβον στάσιν ἐπιθετικὴν κατὰ τῶν Περσῶν. Καὶ ὁ μὲν Παυσανίας τῷ 477 π. Χ., ἐπὶ κεφαλῆς μικροῦ στόλου ἐξ Ἀθηναίων καὶ Σπαρτιατῶν, κατέλαβε τὸν Βόσπορον καὶ τὸ Βυζάντιον, ὁ δὲ Κίμων ἐθριάμβευσε διὰ τῶν ἐπιτυχιῶν του, ἰδίως δέ, παρὰ τὸν Εὐρυμέδοντα ποταμὸν ἐν Παμφυλίᾳ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας τῷ 469 π. Χ. κατὰ ξηρὰν καὶ κατὰ θάλασσαν, θέσας τέρμα εἰς τοὺς περσικοὺς πολέμους. Ἔκτοτε ἡ ἑλληνικὴ ἰσχὺς περιεφέρετο ἐλευθέρα ἀνὰ τὸ Αἰγαῖον καὶ τὰ παράλια αὐτοῦ, ἀναδειχθεῖσα ὑπερτέρα τοῦ περσικοῦ κολοσσοῦ, παρ᾽ ὅλας τὰς καταστροφάς, ἃς ὑπέστη (βλ. καὶ λ. *Θερμοπύλαι, Μαραθῶνος μάχη, Ἀρτεμίσιον, Πλαταιῶν μάχη* κλ.).

Α. Θ. ΣΑΜΟΘΡΑΚΗΣ

**— μηδικὸν** ***σίλφιον*** *[Χημ.]*. Κομμεορρητίνη ἀποτελουμένη ἐκ τοῦ ἀπεξηραμμένου ὀποῦ τῶν ριζῶν *νάρθηκος τοῦ κρομμυώδους* τῆς Περσίας καὶ *νάρθηκος τοῦ σκοροδόσμου*. Εἰς τὸ ἐμπόριον ἔρχεται εἰς πλακοῦντας ἢ κόκκους. Ἔχει γεῦσιν δριμεῖαν καὶ πικρὰν καὶ ἔντονον ὀσμὴν σκορόδου. Περιέχει 60 % περίπου ἐστέρος τοῦ φερουλικοῦ ὀξέος μετά τινος ρητινοταννόλης, ἥτις δι᾽ ὀξέων ἢ ἀλκαλίων παρέχει ρεσορκίνην, 25 % περίπου κόμμι, 6,5 % αἰθέριον ἔλαιον καὶ μικρὰς ποσότητας ἐλευθέρου φερουλικοῦ ὀξέος, βανιλλίνης καί τινος ρητινοταννόλης. Χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν θεραπευτικήν. Σ. Γ.

*—[Φαρμακογν.]* Ἡ δρόγη τοῦ *μηδικοῦ σιλφίου* διακρίνεται εἰς τὸ ἐμπόριον εἰς τρεῖς μεγάλας κατηγορίας: 1) Τὸ εἰς δάκρυα μηδικὸν σίλφιον, χρώματος κιτρινοφαίου. 2) τὸ εἰς μάζας προϊὸν (Assa

Digitized by Google

foetida in massis). Τὸ εἶδος τοῦτο ἀποτελεῖ καὶ τὸ φαρμακευτικὸν προϊόν. Εἶναι δὲ βαθυτέρου χρώματος καὶ ἰσχυροτέρας ὀσμῆς καὶ μᾶλλον ἀκάθαρτον τοῦ πρώτου· καὶ 3) Τὸ χαρακτηριζόμενον ὡς πετραῖον προϊὸν (Assa foetida petraea), ἥσσονος ποιότητος, προσμεμειγμένον μετὰ πολλοῦ χώματος. Τὸ φαρμακευτικὸν μηδικὸν σίλφιον παρουσιάζει θραῦσμα κογχοειδές, εἶναι ὑποδιαφανὲς λευκωπὸν ἢ κιτρινόλευκον, εἰς τὸν ἀέρα καθιστάμενον τέλος ἐρυθρόφαιον. Συνήθεις νοθεῖαι τῆς δρόγης εἶναι ἡ διὰ προσθήκης ρητινῶν τῶν κωνοφόρων, ἄμμου, λίθων κλπ. Τὸ αἰθέριον ἔλαιον τοῦ μηδικοῦ σιλφίου εἶναι ὑγρὸν κιτρινωπόν, πτητικόν, εἰδικῆς ὀσμῆς ἀρωματικῆς σκοροδώδους, ἀναλόγου δὲ γεύσεως. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 0,975—0,990 καὶ εἶναι ἀριστεροστρόφον. Τὸ μηδικὸν σίλφιον δρᾷ κατὰ τῶν σκωλήκων τοῦ ἥπατος καὶ τῶν βρόγχων. Εἰς μεγάλας δόσεις προκαλεῖ ναυτίας, ἐμέτους, κωλικούς, διάρροιαν, γαστροεντερίτιδα, φλόγωσιν τῶν βλεννομεμβρανῶν τοῦ στομάχου, τῶν ἐντέρων, τῆς οὐρήθρας. Εἰς μικρὰς δόσεις δρᾷ διεγερτικῶς ἐπὶ τῶν βλεννογόνων τῶν πεπτικῶν βρογχικῶν καὶ τοῦ σιέλου. Ἐκ τοῦ ὀργανισμοῦ ἀποβάλλεται τὸ ἀπορροφηθὲν φάρμακον διὰ τοῦ ἱδρῶτος, τοῦ σιέλου, τῶν οὔρων, ὡς καὶ διὰ τῶν ἀναπνευστικῶν ὁδῶν. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν ἀναγράφεται ὡς φάρμακον ἀντισπασμωδικόν, διεγερτικὸν τοῦ στομάχου, σκωληκοκτόνον καὶ ἐμμηναγωγόν. κ. γ. μ.

— **Μηδικὸν τεῖχος**· βλ. λ. *Μηδίας τεῖχος*.

**Μήδιος.** Λαρισαῖος, υἱὸς τοῦ Ὀξυθεμίδου. Ἦτο ἐκ τῶν ἐμπίστων τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου καὶ τὰ μάλιστα ἀγαπητός, ἰδίᾳ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἡφαιστίωνος. Εἰς τὸν οἶκον τούτου συνεποσίασε τελευταῖον ὁ Μ. Ἀλέξανδρος, ἡ εὐθὺς δὲ μετὰ τὸν κῶμον παρατηρηθεῖσα ἀδιαθεσία τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου καὶ ὁ μετ᾽ ὀλίγον ἐπισυμβὰς θάνατος αὐτοῦ ἔδωσαν ἀφορμὴν ὑπονοιῶν ἐναντίον τοῦ Μηδία καὶ τοῦ φίλου του Ἰόλα, οἰνοχόου τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου, ὡς δηλητηριαστῶν αὐτοῦ. Βραδύτερον ὁ Μήδιος ἐμφανίζεται ὡς διακεκριμένος ναύαρχος τοῦ Ἀντιγόνου. Ἀναφέρεται δὲ ὑπὸ τοῦ Στράβωνος καὶ ὡς συγγραφεὺς ἀρχαιολογικοῦ ἔργου μετ᾽ ἐθνολογικῶν συγκρίσεων. μ. σ. μ.

— **Μήδιος.** Ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρός, μαθητὴς τοῦ Χρυσίππου καὶ γαμβρὸς τοῦ Ἀριστοτέλους (*Ἀθήν.* V, κ. 53), ἀδελφὸς δὲ τῆς Κρητοξένης, μητρὸς τοῦ Ἐρασιστράτου. αρ. π. κ.

**μηδισμὸς** (ὁ)· τὸ μηδίζειν, τὸ ὑπηρετεῖν εἰς τὰ συμφέροντα τῶν Μήδων: «οἱ κατηγορηθέντες ἐπὶ μηδισμῷ».

**Μήδοκος,** ἢ ***Μήτοκος.*** Βασιλεὺς τῶν Ὀδρυσῶν τῆς Θράκης, καλούμενος καὶ Ἀμάδοκος ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ἱστορικῶν, περὶ τὰ 400 π. Χ. Ὑπὸ τοῦ Ξενοφῶντος (Ἑλλην. IV, 8, 26) ἀναφέρεται ὡς σύμμαχος τοῦ Σεύθου καὶ τῶν Ἀθηναίων κατὰ τὰ ἔτη 392 — 390 π. Χ. κατὰ τοῦ Λακεδαιμονίου Τελευτίου, ἀδελφοῦ τοῦ Ἀγησιλάου, βασιλέως τῆς Σπάρτης, ὅστις ἐπὶ κεφαλῆς στόλου παρηνώχλει τοὺς Ἀθηναίους. Σῴζονται ἀργυρᾶ νομίσματα αὐτοῦ. α. θ. σ.

**μηδόλως**· ἐπίρρ., κατ᾽ οὐδένα τρόπον, οὐδαμῶς· || οὐδ᾽ ἐλάχιστον, οὐδόλως.

**Μῆδος** (ὁ)· ὁ κάτοικος τῆς Μηδίας, ὁ ἐκ Μηδίας καταγόμενος· || ***Μῆδοι*** (οἱ)· ἀντὶ τοῦ *Πέρσαι* (βλ. καὶ λ. *Μηδία* [*Ἱστορ.*]).

**Μῆδος,** ἢ ***Μήδειος*** [*Μυθολ.*]. Υἱὸς τῆς Μηδείας καὶ τοῦ Αἰγέως, βασιλέως τῶν Ἀθηνῶν, ἢ τοῦ Ἰάσονος. Κατά τινα μυθικὴν παράδοσιν, ἔφυγε μετὰ τῆς μητρός του εἰς τὴν Ἀσίαν καὶ κατέκτησε πολλὰς χώρας, δοὺς τὸ ὄνομά του εἰς μίαν ἐξ αὐτῶν, τὴν *Μηδίαν*, ἀπέθανε δὲ πολεμῶν κατὰ τῶν Ἰνδῶν. Κατ᾽ ἄλλην παράδοσιν ἦλθεν εἰς τὴν Κολχίδα, ὅπου ἐξεθρόνισε τὸν σφετεριστὴν τοῦ θρόνου τοῦ πάππου του Αἰήτου, Πέρσην, καὶ ἀποκατέστησεν αὐτὸν εἰς τὴν βασιλείαν τῆς Κολχίδος. Ἄλλαι μυθικαὶ παραδόσεις θεωροῦν αὐτὸν υἱὸν τῆς Μηδείας καὶ Ἀσιανοῦ τινος βασιλέως, παρὰ τῷ ὁποίῳ κατέφυγεν αὕτη ἐλθοῦσα ἐκ τῆς Ἑλλάδος, καὶ τὸν ὁποῖον ἀποθανόντα διεδέχθη εἰς τὸν θρόνον. ν. α.

**Μηδοσάδης.** Πρέσβυς τοῦ βασιλέως τῆς Θράκης Σεύθου τοῦ Α΄, ἀποσταλεὶς πρὸς τὸν Ξενοφῶντα, ἐπιστρέφοντα ἐκ τῆς Μ. Ἀσίας, ὅπως διαπραγματευθῇ μετ᾽ αὐτοῦ τὰ κατὰ τὴν ἐν Θρᾴκῃ διαμονὴν τῶν στρατιωτῶν του (Κύρ. Ἀναβ. VII, 1, 5). α. θ. σ.

**Μηδυζεὺς** [*Μυθολ.*]. Ἀρχαία θρακικὴ θεότης, γνωστὴ ἔκ τινος ἐπιγραφῆς τοῦ 70 περίπου μ. Χ., ἀνευρεθείσης παρὰ τὴν Φιλιππούπολιν. α. θ. σ.

**Μήδων.** Ἀρχαῖος βασιλεὺς τοῦ Ἄργους ἐκ τοῦ γένους τῶν Ἡρακλειδῶν, υἱὸς τοῦ Κείσου καὶ ἔγγονος τοῦ Τημένου. Ἀπὸ τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἡ βασιλικὴ ἐξουσία περιωρίσθη καὶ ἐξησθένησεν, ἐξηκολούθησεν ὅμως νὰ παραμένῃ εἰς τὰς χεῖρας σειρᾶς βασιλέων ἐκ τοῦ γένους τῶν Ἡρακλειδῶν. ν. α.

**Μηζεύς.** Ἀρχαῖον θρακικὸν ὄνομα, γνωστὸν ἐξ ἐπιγραφῆς τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, τὸ ὁποῖον ὁ Millingen σχετίζει μὲ τὴν θρακικὴν θεότητα *Μηδυζεύς*. α. θ. σ.

**Μήζηδες** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς κοινότητος Καλλιανοῦ τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 129.

**Μήθυμνα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς νήσου Λέσβου, κειμένη παρὰ τὴν θέσιν, ἣν κατέχει ἡ σημερινὴ *Μήθυμνα* ἢ *Μόλυβος*. Ἡ ἱστορία αὐτῆς εἶναι στενότατα συνδεδεμένη μετὰ τῆς ἱστορίας τῆς ὅλης νήσου (βλ. λ. *Μυτιλήνη*). δ. ν. π.

— **Μήθυμνα,** ἢ ***Μίθυμνα,*** ἢ ***Μέθυμνα*** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις, τὴν ὁποίαν πολλοὶ περιηγηταί, ἀκολουθοῦντες τὸν Πάσλεϋ, τοποθετοῦν παρὰ τὰ Νοπήγια Κισάμου τῆς Κρήτης. Ἡ ὕπαρξις αὐτῆς ὅμως εὐλόγως ἀμφισβητεῖται, διότι οὔτε εἰς ἐπιγραφὰς κρητικὰς ἀναφέρεται, οὔτε εἰς καταλόγους κρητικῶν πόλεων, ἡ δὲ ὕπαρξίς της στηρίζεται μόνον εἰς ἓν χωρίον τοῦ Αἰλιανοῦ (περὶ ζῴων Ι 4, 20), τὸ ὁποῖον διωρθώθη ἀπὸ *Μιθύμνης* εἰς *Ριθύμνης*. ν. ε. π.

— **Μήθυμνα,** ἢ ***Μόλυβος*** [*Γεωγρ.*]. Κωμόπολις τῆς νήσου Λέσβου, κατέχουσα τὴν ΒΑ. ἄκραν τῆς νήσου, ἔναντι τοῦ ἀκρωτηρίου Μπαμπᾶς τῆς Μικρασίας. Κάτ. (1928) 1.405. Κεῖται ἀμφιθεατρικῶς ἐπὶ βραχώδους λόφου παρὰ τὴν ἀρχαίαν πόλιν, ἐκτεινομένη μέχρι τῆς θαλάσσης, συνδέεται δὲ μετὰ τῆς πρωτευούσης τῆς νήσου διʼ ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ (61 χλμ.) καὶ θαλασσίως διὰ τῆς πρὸς Λῆμνον καὶ Καβάλλαν ἀτμοπλοϊκῆς γραμμῆς. Παράγει σιτηρὰ (95.000 χλγρ.), ἔλαιον (100.000 χλγρ.), σῦκα ξηρὰ (30.000 χλγρ.), πεπονοειδῆ (30.000 χλγρ.), λαχανικὰ (95.000 χλγρ.), ὀλίγον καπνὸν κτλ. Προσέτι ἔχει μικρὰν κτηνοτροφίαν (3.500 αἰγοπρόβατα) καὶ βιομηχανίαν κατεργασίας δερμάτων, ναυπηγίαν κτλ. Τὸ νεώτερον ὄνομα αὐτῆς, ἀναφαινόμενον περὶ τὸν ΙΕ΄ αἰῶνα, πιθανῶς ὀφείλεται εἰς τὸν αὐτόθι ἀπαντῶντα βάσαλτον, τὸ παλαιὸν δὲ παρέμεινεν μόνον ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ καὶ πολιτείᾳ. Ἦτο ἕδρα ἐπισκοπῆς ἀπὸ τοῦ Ε΄ αἰῶνος μέχρι τῶν χρόνων τῆς τουρκοκρατίας, ὅτε αὕτη μετεφέρθη εἰς Καλλονήν, διετήρησεν ὅμως τὸν παλαιὸν τίτλον «Μηθύμνης» ἐπίσης ἦτο ἕδρα ὁμωνύμου καζᾶ καὶ μία τῶν ἐπισημοτέρων τῆς νήσου πόλεων. Σήμερον εἶναι ἕδρα ἀγροτικοῦ διαμερίσματος καὶ γεωργικῆς ἐπιμελητείας, δασονομείου, περιλαμβάνοντος καὶ τὰς νήσους Λῆμνον καὶ Ἅγιον Εὐστράτιον (ἔκτασις 1622 τετρ. χλμ., δάση 14,5 τετρ. χλμ.), ὑποτελωνείου, οἰκονομικῆς ἐφορείας, ταμείου, ταχυδρομικοῦ καὶ τηλεγραφικοῦ γραφείου (εἰσπράξεις ἔτησ. 98.000 δρχ.), εἰρηνοδικείου, ὑποδιοικήσεως χωροφυλακῆς τῆς ἐπαρχίας Μηθύμνης καὶ ἕδρα κοινότητος περιλαμβανούσης τὸ χωρίον *Βαφειός* (κάτ. 251). Ἔχει συνεταιρισμούς, γεωργικὸν - πιστωτικὸν καὶ γεωργοκτηνοτροφικόν, σύνδεσμον κληρούχων προσφύγων (1927: κλῆροι 173) κτλ. (βλ. καὶ λ. *Μυτιλήνη* (νῆσος)). π. ν. π.

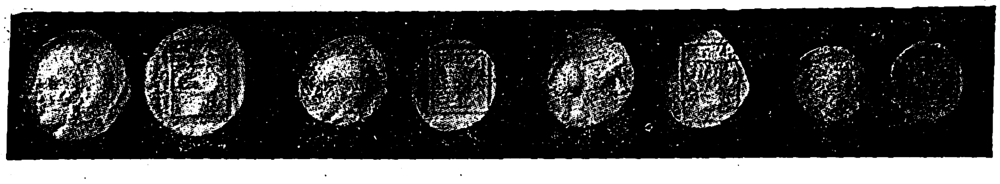

*Νομίσματα Μηθύμνης.*

— **Μηθύμνης ἐπαρχία** [*Γεωγρ.*]. Μία τῶν τεσσάρων ἐπαρχιῶν τοῦ νομοῦ Λέσβου, κατέχουσα τὸ ΒΔ. τμῆμα τῆς νήσου Λέσβου, τὸ κείμενον Δ. τοῦ κόλπου τῆς Καλλονῆς καὶ Β. τοῦ πευκοδάσους Τσαμλίκι. Κάτ. (1928) 41.569, κατανεμόμενοι εἰς 28 κοινότητας, περιλαμβανούσας τὰ ἀκόλουθα 39 χωρία καὶ συνοικισμούς: *Ἁγία Παρασκευή, Ἄγρα, Ἀνεμώτια, Ἀποθῆκα, Ἄργενος, Βατοῦσα, Βαφειός, Γέλια, Δάφια, Ἐρεσσός, Ἐρεσσοῦ Σκάλα, Καλλονή, Κεράμι, Κεραμιοῦ Σκάλα, Κλωμηδάδος, Λαφιῶνα, Λειμῶνος μονή, Μεσότοπος, Μόλυβος* ἢ *Μήθυμνα, Παπιανά, Παράκοιλα, Πέτρα, Λετρί, Ρεῦμα, Σίγρι, Σκαλοχώρι* ἢ *Τσουκαλοχώρι, Σκούταρο, Σουμούρια, Στύψη, Συκαμιά, Συκαμιᾶς Σκάλα, Τελώνια* ἢ *Ἄντισσα, Τζίθρα, Τσουμαΐλη, Ὑψηλομέτωπο, Ὑψηλοῦ μονή, Φίλια, Φτεροῦντα, Χάλικας, Χύδηρα* (βλ. καὶ λ. *Μυτιλήνη* (νῆσος)). Τὴν αὐτὴν περίπου περιοχὴν κατεῖχεν ὁ ἐπὶ τουρκοκρατίας καζᾶς τοῦ *Μολύβου*. π. ν. π.

— **Μηθύμνης κόλπωσις** [*Γεωγρ.*]. Κόλπωσις κατὰ τὴν ΒΔ. πλευρὰν τῆς Λέσβου διανοιγομένη, ΝΔ. τοῦ ἀκρωτηρίου *Μόλυβος* καὶ ΒΔ. τοῦ ἀκρωτηρίου *Κεχράδα* (πλάτ. 39°18΄ 45΄΄ Β., μηκ. 26°06΄ 40΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ., ἐν ᾧ ἀνώνυμον τοῦτο, 1685: Mityleni island and gulf of Adramyti). Ὑπὸ τῶν ναυτικῶν ὀνομάζεται καὶ *Μολύβου κόρφος*. σ. ε. λ.

**Μηθώνη** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις παράλιος ἐν τῷ Παγασιτικῷ κόλπῳ, ἀποτελέσασα μετὰ τῆς *Θαυμακίας*, τῆς *Μελιβοίας* καὶ τῆς *Ὀλιζῶνος* τὴν τετράπολιν τοῦ Φιλοκτήτου, ἥτις παρέσχεν εἰς τὴν ἐπὶ Τροίαν στρατείαν ἑπτὰ ναῦς (Ἰλιάδ. Β, 715). Ταυτίζεται πρὸς τὸν σύγχρονον ὅρμον *Γαντζέου* (πλάτ. 39°19΄ ½ Β., μηκ. 23°08΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1556: Gulf of Volo and the Oreos and Talanta channel) πλησίον τῶν Καλῶν Νερῶν. σ. ε. λ.

**Μηκ** (Meek), ***Φήλντινγκ-Μπράντφορντ.*** Ἀμερικανὸς γεωλόγος καὶ παλαιοντολόγος (1817—1876). Κατὰ τὴν νεαρὰν του ἡλικίαν εἶχεν ἐπιδοθῆ εἰς τὸ ἐμπόριον, ἐνῷ συγχρόνως κατεγίνετο καὶ εἰς γεωλογικὰς καὶ παλαιοντολογικὰς μελέτας. Ἐγκαταλείψας κατόπιν τὸ ἐμπόριον προσελήφθη εἰς τὴν γεωλογικὴν ὑπηρεσίαν τῆς πολιτείας Ἄϊοβα τῷ 1848, βραδύτερον δὲ ἐγένετο βοηθὸς τοῦ διασήμου γεωλόγου Τζαίημς Χὰλ ἐν Ἄλμπανυ. Τῷ 1852 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν γεωλογικὴν καὶ παλαιοντολογικὴν ἐξερεύνησιν τῆς πολιτείας Ντακότα, τῷ δὲ 1858 προσελήφθη ἐν Βασιγκτῶνι εἰς τὴν γεωλογικὴν καὶ γεωγραφικὴν ὑπηρεσίαν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ὅπου διεκρίθη διὰ τὰς ἐπιστημονικάς του ἐργασίας καὶ ἀπέκτησε μεγάλην φήμην ὡς παλαιοντολόγος. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων ἄλλων ἔργων συνέταξε μετὰ τοῦ Γκὰμπ δύο τόμους «Περὶ τῆς παλαιοντολογίας τῆς Καλιφορνίας» (1839—1878). Συνέγραψεν ἐπίσης τὸ ἔργον «Περὶ τῆς γεωλογικῆς συνθέσεως τῆς περιφερείας τοῦ Μισσουρῆ» (1876). μ. δ. β.

**μηκελία** (ἡ) (Meckelia) [*Ζῳολ.*]. Γένος σκωλήκων πλατελμίνθων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *νημερτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *λινεϊδῶν*, περιλαμβάνον ὑδροβίους σκώληκας ἀρκετοῦ μεγέθους καὶ εἰς διαφόρους θαλάσσας ἐνδιαιτωμένους. δ. ν. π.

**μηκέτι**· ἐπίρρ., ὄχι πλέον (ἀποκλείεται ἡ ἐν τῷ μέλλοντι διάθεσις): «πορεύου καὶ μηκέτι ἁμάρτανε» (Ἰωάνν. 8, 11).

**Μηκιστεὺς** [*Μυθολ.*]. —1) Υἱὸς τοῦ Ταλαοῦ, βασιλέως τοῦ Ἄργους, καὶ τῆς Λυσιμάχης, ἀδελφὸς τοῦ Ἀδράστου καὶ πατὴρ τοῦ ὁμηρικοῦ ἥρωος Εὐρυάλου. Ἀναφέρεται ὡς εἷς τῶν ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας (*Ἀπολλ.* III, 6, 3), ὑπὸ δὲ τοῦ Ὁμήρου ὡς μετασχὼν ἐν Θήβαις τῶν πρὸς τιμὴν τοῦ ἀποθανόντος Οἰδίποδος ἀγώνων (Ἰλιάδ. Ψ, 680).

—2) Υἱὸς τοῦ Ἐχίου, ἑταῖρος τοῦ Τεύκρου, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Πολυδάμαντος (Ἰλιάδ. Ο, 339).

—3) Εἷς τῶν 50 υἱῶν τοῦ Λυκάονος, βασιλέως τῆς Ἀρκαδίας, κεραυνωθεὶς μετὰ τῶν ἀδελφῶν του ὑπὸ τοῦ Διός, πλὴν τοῦ μικροτέρου Νυκτίμου, ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ ὁποίου ἐγένετο ὁ κατακλυσμὸς τοῦ Δευκαλίωνος (*Ἀπολλ.* III, 8, 1).

—4) Εἷς τῶν ἐκ Δουλιχίου 57 μνηστήρων τῆς Πηνελόπης, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως (*Ἀπολλ.* Ἐπιτ. VII, 27).

—5) Πατὴρ τοῦ Ὀδίου καὶ Ἐπιστρόφου, οἵτινες ἐπὶ κεφαλῆς τῶν Ἀλιζώνων ἦλθον ἐπίκουροι τοῦ Πριάμου (*Ἀπολλ.* Ἐπιτ. III, 35). α. θ. σ.

**Μηκιστιάδης.** Πατρωνυμικόν· ὁ Εὐρύαλος, υἱὸς τοῦ βασιλέως τοῦ Ἄργους Μηκιστέως. α. θ. σ.

**μήκιστος,** —η, —ον· ὑπερθ. τοῦ *μακρός*, μακρότατος.

— **μήκιστος μῦς** [*Ἀνατομ.*]. Οὗτος ἀνήκων εἰς τοὺς μακροὺς ραχιαίους μῦς, ἐκτείνεται ἀπὸ τῆς ἱερᾶς χώρας μέχρι τῆς ἀποφύσεως τοῦ κρανίου, ἐμφανίζων τρεῖς μοίρας, αἵτινες καλοῦνται *μήκιστος νωτιαῖος, μήκιστος αὐχενικὸς* καὶ *μήκιστος κεφαλικός*. Ἐκτείνει τὸν κορμὸν πρὸς τὰ ὀπίσω καὶ κάμπτει αὐτὸν πρὸς τὰ πλάγια. Νευροῦται δ᾽ ὑπὸ τῶν ὀπισθίων κλάδων τῶν νωτιαίων νεύρων. ι. π.

**μηκόδοντον** (τὸ) (Mecodontum) [*Ζῳολ.*]. Γένος ἀμφιβίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κερκοφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σαλαμανδριδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰς σαλαμάνδρας, αἵτινες κατὰ τὴν νεαρὰν αὐτῶν ἡλικίαν ἀναπνέουσι διὰ βραγχίων καὶ πνευμόνων καὶ κατὰ τὴν ὥριμον μόνον διὰ πνευμόνων. Τὸ γένος περιλαμβάνει 20 περίπου εἴδη ἀπαντῶντα εἰς τὴν Εὐρώπην, τὴν Ἀφρικὴν καὶ τὴν Ἀμερικὴν καὶ ἐνδιαιτώμενα εἰς ὑγροὺς καὶ σκιεροὺς τόπους. δ. ν. π.

**μηκόνημα** (τὸ) (Meconema) [*Ζῳολ.*]. Γένος ἐντόμων ὀρθοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πηδητικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *λοκουστιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ ἔντομα μὲ σῶμα λεπτὸν καὶ ἐπίμηκες, κεφαλὴν μικρὰν καὶ ἀπεστρογγυλωμένην, κεραίας τριπλασίας περίπου τοῦ μήκους τοῦ σώματος

Digitized by Google

τος, πόδας λεπτοὺς καὶ ἐπιμήκεις καὶ πτέρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ ἡμιδιαφανεῖς. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τρεφόμενα ἐκ διαφόρων μικροτέρων ἐντόμων. Δ. Ν. Π.

**μῆκος,**—*ους* (τό)· μία τῶν τριῶν διαστάσεων τῶν στερεῶν σωμάτων, κοιν. *μάκρος*: «ράβδος μήκους δύο μέτρων», «τὸ μῆκος τῆς ὁδοῦ, —τῆς τάφρου, —τῆς διώρυγος»· || φρ. «κατὰ μῆκος τῆς ἀκτῆς, — τοῦ ποταμοῦ»· || ἐπὶ χρόνου, ἡ διάρκεια: «τὸ μῆκος τῆς χειμερινῆς νυκτὸς ἀπέραντον»· || μεταφ. «τὸ μῆκος τοῦ λόγου, — τῆς συγγραφῆς, —τοῦ ποιήματος»· || «γεωγραφικόν—, ἀστρονομικὸν μῆκος» (βλ. κατωτ.).

— *[Μαθημ.] Μῆκος* γραμμῆς τινος (εὐθείας ἢ μή) καλεῖται ὁ ἀριθμός (πραγματικός, σύμμετρος ἢ μή), ὅστις παριστᾷ τὴν γραμμήν, ὅταν ληφθῇ ὡς μονὰς ἑτέρα γραμμή. Πᾶσαι αἱ γραμμαὶ πεπερασμέναι ἔχουσι μῆκος, τουτέστιν ὑπάρχει πάντοτε ἀριθμός τις δι' οἱανδήποτε δοθεῖσαν γραμμήν, ὅστις νὰ παριστᾷ ταύτην, ὅταν ὁρισθῇ εὐθεῖά τις ὡς μέτρον. Ἡ πρότασις αὕτη στηρίζεται ἀφ' ἑνὸς εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ Ἀρχιμήδους, καθ' ὃ «πᾶσα εὐθεῖα πολλαπλασιαζομένη γίνεται μεγαλυτέρα οἱασδήποτε ἄλλης εὐθείας» καὶ ἀφ' ἑτέρου εἰς τὴν κατασκευὴν τῶν ἀσυμμέτρων ἀριθμῶν. Ν. Γ.

— **μῆκος** ***ἀστέρος*** *[Ἀστρον.]*. Ἡ ἑτέρα τῶν ἐκλειπτικῶν συντεταγμένων, ἡ ὁποία παρίσταται συνήθως διὰ *λ* καὶ δηλοῖ τὴν δίεδρον γωνίαν, τὴν περιλαμβανομένην μεταξὺ τοῦ ἐκλειπτικοῦ κολούρου καὶ τοῦ κύκλου πλάτους ἀστέρος τινὸς (βλ. *ἐκλειπτικαὶ* συντεταγμέναι). Σ. Π.

— **μῆκος** ***γεωγραφικὸν*** *[Ἀστρον.]*. Ἡ ἑτέρα τῶν *γεωγραφικῶν* συντεταγμένων (βλ. λ.) σημείου τινὸς (τόπου) τῆς ἐπιφανείας τῆς ὑδρογείου. Ὁρίζεται δὲ αὕτη ὡς γωνία μετροῦσα τὴν δίεδρον, ἣν σχηματίζει ὁ μεσημβρινὸς τοῦ θεωρουμένου τόπου πρὸς τὸν πρῶτον μεσημβρινόν· δηλαδή, ὡς τὸ εἰς μοίρας, πρῶτα καὶ δεύτερα λεπτὰ ἐκπεφρασμένον τόξον, ὅπερ ἀποτέμνουσιν ἐπὶ τοῦ ἰσημερινοῦ οἱ προμνησθέντες μεσημβρινοί. Ὀφείλεται δὲ ἡ τοιαύτη τῆς συντεταγμένης ὀνομασία εἰς τὴν συνήθη ἀντίληψιν, καθ' ἣν ἡ μείζων τῶν διαστάσεων ἀντικειμένου τινος καλεῖται «μῆκος» καὶ ἡ ἐλάσσων «πλάτος», ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν ἀντίληψιν τῶν ἀρχαίων, καθ' ἣν ἡ γῆ ἦτο μείζων τὴν διάστασιν κατὰ τὴν διεύθυνσιν Α. Δ., καθ' ἣν μετροῦνται τὰ μήκη καὶ ἐλάσσων κατὰ τὴν διεύθυνσιν Β. Ν., καθ' ἣν λογίζονται τὰ πλάτη. Τοῦ πρώτου δὲ μεσημβρινοῦ πάντοτε κατὰ συνθήκην ὁρισθέντος, τὰ μήκη ἐλογίζοντο κατὰ τὴν ἀρχαιότητα καὶ τὸν μεσαίωνα, εἴτε ἀπὸ Ρόδου *(Ἵππαρχος)*, εἴτε ἀπὸ νήσου Μακάρων *(Πτολεμαῖος* καὶ Ἄραβες*)*, εἴτε ἀπὸ Κόρβο νήσου Καναρίων *(Μερκάτωρ)*, εἴτε ἀπὸ νήσου Σὰντ Ἰάγο *(Χούδιους)*. Ἡ πρώτη σκέψις πρὸς καθορισμὸν ἑνιαίας ἀφετηρίας διὰ τὴν μέτρησιν τῶν μηκῶν ὀφείλεται εἰς τὸν Λουδοβῖκον ΙΓ', συγκαλέσαντα πρὸς τοῦτο (1634) ἐν Παρισίοις συμβούλιον γεωγράφων καὶ μαθηματικῶν, ἀποφανθὲν ὑπὲρ τῆς καθιερώσεως, διὰ τοὺς γαλλικοὺς τοὐλάχιστον χάρτας, ὡς πρώτου μεσημβρινοῦ, τοῦ τῆς Φέρρου τῶν Καναρίων (17° 39′ 46″ Δ. ἀπὸ Γρήνουϊτς). πράγματι δὲ ὁ μεσημβρινὸς οὗτος ἦτο γενικῆς χρήσεως μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος διὰ τοὺς συνήθεις γεωγραφικοὺς χάρτας. Τὰ ναυτικὰ ὅμως κράτη δὲν εὕρισκον, καὶ δικαίως, ποσῶς πρακτικὴν τὴν τοιαύτην ἀφετηρίαν μετρήσεως, καὶ ἕκαστον τούτων ἐκανόνιζε τὰ μήκη ἐπὶ τῶν χαρτῶν του, ἀπὸ ἰδίου ἕκαστον πρώτου μεσημβρινοῦ, ὧν μεσημβρινῶν τὰ συσχετικὰ μήκη ὁρίζονται ὑπὸ τοῦ *«Γραφείου* τῶν Μηκῶν» (βλ. Connaissance de Temps 1904: Tables de Positions Géographiques des principaux lieux du globe) ὡς ἀκολούθως: Γαλλία: μεσημβρινὸς ἀστεροσκοπείου *Παρισίων* (μῆκ. 0° 00′ 00″), Ἀγγλία: μεσημβρινὸς ἀστεροσκοπείου *Γρήνουϊτς* (μῆκ.. 2° 20′ 14″, 4 Δ. Παρισίων=0 ω. 0, 9λ. 20 δ λ., 9)· Ρωσία: μεσημβρινὸς ἀστεροσκοπείου *Πουλκόβας* (μῆκ. 27° 59′ 25″ Ἀν. Παρισίων=1 ω. 51 λ. 57 δ λ., 7)· Ἱσπανία: ὁ τοῦ *Σὰν Φερνάνδο* (μῆκ. 8° 32′ 35″ Δ. Παρισίων =0 ω. 34 λ. 10 δ λ., 3)· Πορτογαλία: ὁ τῆς *Λισσαβῶνος* (μῆκ. 11° 28′ 39″ Δ. Παρισίων=0 ω. 45 λ. 54 δ λ., 6), Σουηδία καὶ Νορβηγία: ὁ τῆς *Στοκχόλμης* (μῆκ. 14° 44′ 04″ Ἀν. Παρισίων=1 ω. 02 λ. 53 δ λ.), Αὐστροουγγαρία: ὁ τῆς *Πόλας* (μῆκ. 11° 30′ 27″ Ἀν. Παρισίων=0ω. 46 λ. 02 δ λ., 2).

Ἡ δυσκολία χρήσεως ναυτικῶν χαρτῶν ξένου κράτους, ὑπὸ ναυτικῶν ἐθισμένων εἰς χάρτας ἔχοντας μήκη μετρούμενα ἀπὸ τοῦ πρώτου μεσημβρινοῦ τοῦ κράτους των, ἦτο πρόδηλος καὶ νέα τάσις ἐξεδηλώθη πρὸς διεθνοποίησιν ἑνιαίου μεσημβρινοῦ ὡς πρώτου· καὶ ἀφοῦ ἐπὶ ἔτι προσέκρουε τὸ ζήτημα εἰς τὰς φιλοδοξίας τῶν μεγάλων ναυτικῶν κρατῶν, καὶ ἀφοῦ πρὸς ἄρσιν τῶν ἐμποδίων τούτου ἐγένετο λόγος καὶ περὶ τοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ Παρθενῶνος καὶ περὶ τοῦ μεσημβρινοῦ τῆς Ἱερουσαλήμ, ἐλύθη τέλος (1912) διὰ τῆς παραδοχῆς διεθνῶς ὡς ἀφετηρίας μετρήσεως τῶν μηκῶν τοῦ μεσημβρινοῦ τοῦ *Γρήνουϊτς*. Ὁ Πτολεμαῖος, ὅστις πρῶτος ἐσυστηματοποίησε τὸν διὰ τῶν συντεταγμένων καθορισμὸν πλείστων σημείων τῆς Γῆς, παρουσιάζει σφαλερὰ μήκη καὶ δὴ σφάλμα ὁλονὲν αὔξων, ἐφ' ὅσον ὁ τόπος εἶναι ἀνατολικώτερος. Αἰτία τούτου ἦτο ἡ δόξα τοῦ Πτολεμαίου, καθ' ἣν ἡ ἀκτὶς τῆς γῆς ἦτο πολὺ μικροτέρα ἐκείνης, ἣν εὗρεν ὁ Ἐρατοσθένης, καὶ τῆς πραγματικῆς συνεπῶς, ὁπότε ἡ ἀναγωγὴ τῶν διαφόρων ἀποστάσεων τῶν τόπων εἰς μοίρας ἰσημερινοῦ παρεῖχε τόξον μεγαλύτερον (*Δ. Αἰγινήτου* Ἀνακοιν. τῆς Ἀκαδ. Ἀθηνῶν, Ἀπρίλιος 1931) διὰ τὸ μῆκος ἑκάστου τόπου. Τοὺς χάρτας τοῦ Πτολεμαίου μελετῶν ὁ Χριστόφορος Κολόμβος ὑπελόγισε μόνον εἰς 90° τὴν διαφορὰν μήκους μεταξὺ Πορτογαλίας καὶ Ἰαπωνίας, ἐσκέφθη δὲ ὅτι θὰ τῷ ἔφθανον 5 ἑβδομάδες διὰ νὰ φθάσῃ ἀπὸ Πορτογαλίας εἰς Κίναν πλέων πρὸς δυσμάς, ἀντὶ τοῦ περίπλου τῆς Ἀφρικῆς. Ἀποταθεὶς δὲ εἰς τὸν ἐν Φλωρεντίᾳ σοφὸν Τοσκανέλλι, ἔλαβε παρ' αὐτοῦ οὐ μόνον ἐνθάρρυνσιν, ἀλλὰ καὶ χάρτην ἰδίας του κατασκευῆς (ἀναπαρασταθέντα ὑπὸ τοῦ Βιβιὲν ντὲ Σαὶν Μαρτέν. Βλ. *W. Rosier* Géogr. Génér., Λωζάννη, ἔκδ. Payot 1911. II, 3) διὰ τὸν Ἀτλαντικόν, βασιζόμενον εἰς τὰ ἐσφαλμένα μήκη τοῦ Πτολεμαίου. Ἐὰν ὁ Κολόμβος ἐγνώριζεν ὅτι ἡ διαφορὰ μήκους Πορτογαλίας — Ἰαπωνίας δὲν ἦτο 90° ὡς ἐνόμιζεν, ἀλλὰ 200° περίπου, οἵα πραγματικῶς εἶναι, ἴσως νὰ μὴ ἀνελάμβανε τὸ τολμηρόν του ἐξερευνητικὸν ἐγχείρημα.

Τὰ μήκη διακρίνονται εἰς ἀνατολικὰ καὶ εἰς δυτικά, λογιζόμενα ἀπὸ 0°—180° ἢ ἀπὸ 0 ὥρ.—12 ὥρ. Ἀν. ἢ Δυτ. τοῦ πρώτου μεσημβρινοῦ. Ἔχει δὲ μεγίστην σπουδαιότητα ἀπὸ ἀπόψεως συγχρόνων ὡρῶν, ὡς ἀλλαχοῦ ἐξηγεῖται (βλ. *ἄτρακτος* ὡρικὴ καὶ *διαφορὰ [Ναυτ.]* διαφορὰ μήκους).

Τό γεωγραφικὸν μῆκος τόπου τινὸς ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς Γῆς δύναται νὰ προσδιορισθῇ κατὰ διαφόρους μεθόδους, αἵτινες πᾶσαι στηρίζονται ἐπὶ τῆς ἀρχῆς, καθ' ἣν ἡ διαφορὰ τῶν γεωγραφικῶν μηκῶν δύο σημείων ἰσοῦται πρὸς τὴν διαφορὰν τῶν τοπικῶν ἀστρικῶν χρόνων τῶν σημείων τούτων. Σημειωτέον ὅτι, ἐπειδὴ ὁ χρόνος ὁρίζεται πάντοτε ὡς ὡριαία γωνία, ἡ διαφορὰ τῶν μηκῶν ἰσοῦται πρὸς τὴν διαφορὰν τῶν ὡρῶν τῶν δύο τόπων καθ' οἱονδήποτε εἶδος χρόνου.

Στηριζόμενοι ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ταύτης οἱ ἀρχαῖοι ἀστρονόμοι προσδιώριζον τὰ μήκη διαφόρων σημείων τῆς Γῆς, σημειοῦντες τὰς τοπικὰς ὥρας, καθ' ἃς ἐκ τῶν σημείων τούτων ἦσαν ταυτοχρόνως ὁρατὰ διάφορα φαινόμενα, ὡς λ. χ. ἡ ἀρχὴ ἢ τὸ τέλος ἐκλείψεων κτλ. Μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τῆς πυρίτιδος ἐχρησιμοποιήθη πρὸς προσδιορισμὸν τῆς διαφορᾶς τῶν μηκῶν δύο τόπων ἡ ταυτόχρονος ἐξ αὐτῶν παρατήρησις τῆς στιγμῆς, καθ' ἣν συνέβαινε τεχνητὴ ἔκρηξις ἢ ἐδίδετο φωτεινόν τι σῆμα κτλ.

Ἀντὶ τῶν μεθόδων τούτων καὶ ἄλλων ἀναλόγου ἀκριβείας ἐπενοήθησαν βραδύτερον ἄλλαι τελειότεραι, αἱ ἑξῆς:

α') Ἡ διὰ τῶν σεληνιακῶν μεσουρανήσεων. Κατ' αὐτὴν παρατηροῦμεν τὴν Σελήνην κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς μεσουρανήσεως αὐτῆς, ὁπότε ἡ παράλλαξις αὐτῆς οὐδόλως ἐπιδρᾷ ἐπὶ τῆς ὀρθῆς ἀναφορᾶς της. Ἐπειδὴ δὲ αἱ ἀστρονομικαὶ ἐφημερίδες παρέχουσι τὸν εἰς ἑκάστην παρατηρηθεῖσαν θέσιν τῆς Σελήνης ἐπὶ τοῦ οὐρανοῦ ἀντιστοιχοῦντα χρόνον τοῦ πρώτου μεσημβρινοῦ, συγκρίνοντες τὸν χρόνον τοῦτον πρὸς τὸν τοπικὸν χρόνον τῆς παρατηρήσεως, ἔχομεν τὸ ζητούμενον μῆκος τοῦ τόπου.

β') Ἡ διὰ τοῦ τηλεγράφου. Αὕτη συνίσταται εἰς τὴν μεταξὺ δύο σταθμῶν συνδεδεμένων τηλεγραφικῶς μεταβίβασιν ὡρισμένων σημάτων, ὡς λ. χ. τῶν κτύπων ἐκκρεμοῦς. Ἡ διαφορὰ τῆς ὥρας, καθ' ἣν τὰ σήματα ταῦτα ἐξεπέμφθησαν ἐκ τοῦ ἑνὸς σταθμοῦ καὶ τῆς ὥρας καθ' ἣν ταῦτα ἐλήφθησαν ἐν τῷ ἑτέρῳ, ὑποτιθεμένου ὅτι ἡ μεταβίβασις τῶν τηλεγραφικῶν σημάτων γίνεται ἀκαριαίως, παρέχει τὴν διαφορὰν τῶν μηκῶν τῶν δύο σταθμῶν.

γ') Ἡ διὰ μεταφορᾶς χρονομέτρων, ἡ ὁποία χρησιμοποιεῖται κυρίως ὑπὸ τῶν ναυτικῶν. Οὗτοι ἀναχωροῦντες ἔκ τινος λιμένος παραλαμβάνουσι μεθ' ἑαυτῶν δύο ἢ τρία χρονόμετρα, δεικνύοντα τὸν χρόνον τοῦ πρώτου μεσημβρινοῦ. Κατὰ τὸν πλοῦν, ὁσάκις θέλουσι νὰ προσδιορίσωσι τὸ μῆκος τοῦ στίγματος, παρατηροῦσι διὰ τοῦ ἑξᾶντος τὸν Ἥλιον, ὅταν οὗτος εὑρίσκεται ἐπὶ τοῦ πρώτου κατακορύφου, ὁπότε ἡ ἐπὶ τοῦ προσδιορισμοῦ τῆς ὡριαίας γωνίας αὐτοῦ ἐπίδρασις τοῦ σφάλματος ἐν τῷ προσδιορισμῷ τοῦ πλάτους τοῦ στίγματος εἶναι ἐλαχίστη καὶ εὑρίσκουσιν οὕτω τὸν τοπικὸν χρόνον, τοῦ ὁποίου ἡ διαφορὰ πρὸς τὴν ἔνδειξιν τῶν χρονομέτρων κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς παρατηρήσεως τοῦ Ἡλίου παρέχει τὸ ζητούμενον μῆκος.

δ') Ἡ διὰ τοῦ ἀσυρμάτου. Αὕτη συνίσταται εἰς τὴν ἐξ οἱουδήποτε σημείου τῆς Γῆς ταυτόχρονον λῆψιν εἰδικῶν ὡριαίων σημάτων, ἐκπεμπομένων καθ' ὡρισμένας ὥρας τοῦ ἡμερονυκτίου ὑπὸ τῶν ἐντεταλμένων τὴν ὑπηρεσίαν ταύτην εἰδικῶν σταθμῶν ἀσυρμάτου. Προσδιορίζοντες τὴν τοπικὴν ὥραν λήψεως τῶν σημάτων τούτων ἐν ἑκάστῳ τόπῳ τῆς Γῆς καὶ συγκρίνοντες αὐτὴν πρὸς τὴν ὥραν τῆς ἀρχῆς ἢ τοῦ τέλους τῆς ἐκπομπῆς τῶν σημάτων, ἐκπεφρασμένην εἰς τοπικὸν χρόνον τοῦ πομποῦ, εὑρίσκομεν τὰς ζητουμένας διαφορὰς μηκῶν. Ἡ μέθοδος αὕτη, ἧς ἡ ἐφαρμογὴ ἀποτελεῖ πραγματοποίησιν προτάσεως ὑποβληθείσης ὑπὸ τοῦ Δ. Αἰγινήτου εἰς τὸ ἐν Γενεύῃ συνελθὸν τῷ 1908 διεθνὲς γεωγραφικὸν συνέδριον, ἂν καὶ ἐφάμιλλος εἰς ἀκρίβειαν πρὸς τὴν μέθοδον διὰ τοῦ τηλεγράφου, ὑπερτερεῖ αὐτῆς ὡς πρὸς τὸ εὐχερὲς τῆς χρήσεως καὶ τὴν τελείαν ἀνεξαρτησίαν τῶν παρατηρητῶν ἀπ' ἀλλήλων. Σ. Ε. ΛΥΚΟΥΔΗΣ—Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

—**μῆκος** ***κύματος***· βλ. ***κῦμα*** καὶ *κυματοειδὴς κίνησις*.

— **μήκους** ***διαφορά***· βλ. λ. *διαφορὰ [Ναυτ.]* (διαφορὰ μήκους).

— **Μηκῶν,** ***Γραφεῖον*** (Bureau des Longitudes).— Γαλλικὴ ἐπιστημονικὴ ὀργάνωσις, ἑδρεύουσα ἐν Παρισίοις καὶ προορισμὸν ἔχουσα νὰ προάγῃ καὶ νὰ εὐχεραίνῃ τὴν ἐφαρμογὴν τῶν ἀστρονομικῶν ἐπιστημῶν εἰς τὴν γεωγραφίαν, τὴν ναυτιλίαν, τὴν γεωφυσικὴν κλπ. Τὸ γραφεῖον ἱδρύθη τῷ 1795 δι' ἀποφάσεως τῆς γαλλικῆς ἐθνοσυνελεύσεως, συνεκροτήθη δὲ τότε ἀπὸ ἐπιστήμονας ἐξαιρετικοῦ κύρους καὶ παγκοσμίου φήμης, οἷοι οἱ μαθηματικοὶ Lagrange καὶ Laplace, οἱ ἀστρονόμοι Lalande, Cassini καὶ Delambre, οἱ θαλασσοπόροι Borda καὶ Bougainville, ὁ γεωγράφος Buache κ. ἄ. Ἀρχικῶς εἶχον συγχωνευθῇ ἐν αὐτῷ τὸ ἀστεροσκοπεῖον τῶν Παρισίων καὶ τὸ τῆς παλαιᾶς στρατιωτικῆς σχολῆς, ὑπήχθησαν δὲ ὑπὸ τὴν ἀπόλυτον δικαιοδοσίαν του πάντα τὰ λοιπὰ γαλλικὰ ἀστεροσκοπεῖα. Ἀπὸ τοῦ 1854 ὅμως, ὁπότε ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ ἀστεροσκοπείου τῶν Παρισίων ὁ Le Verrier, τὸ ἵδρυμα τοῦτο ἀπεχωρίσθη ἀπὸ τοῦ Γραφείου Μηκῶν, οὗτινος ἡ δρᾶσις καὶ ἡ σημασία ἤρχισαν ἔκτοτε νὰ περιορίζωνται. Ἤδη, δυνάμει τοῦ ἀπὸ τοῦ 1874 ἰσχύοντος ὀργανισμοῦ, τὸ ἔργον του ἔγκειται ἰδίως εἰς τὴν σύνταξιν καὶ ἔκδοσιν τῶν ἑξῆς δημοσιευμάτων:

1) «Connaissance du temps», ἀστρονομικαὶ δηλαδὴ ἐφημερίδες, γενικῆς ἐπιστημονικῆς καὶ πρακτικῆς χρησιμότητος. Τὸ περιεχόμενον αὐτῶν δημοσιεύεται καὶ εἰς συνοπτικὴν ἔκδοσιν («Ephémérides Nautiques», μετονομασθεῖσαν ἀπὸ τοῦ 1919 εἰς «Extrait de la Conaissance du temps») πρὸς χρῆσιν εἰδικῶς τῶν σχολῶν ὑδρογραφίας, τῶν ναυτιλλομένων καὶ τῶν μετεωρολόγων.

2) «Annuaire du Bureau des Longitudes», ἐτησία ἔκδοσις περιέχουσα ἀστρονομικοὺς πίνακας, παρατηρήσεις καὶ ἄλλα στοιχεῖα, χρήσιμα εἰς τὴν Γεωγραφίαν, Μετεωρολογίαν, Φυσικήν, Χημείαν, Μετρολογίαν, Στατιστικὴν κλπ.

3) «Χρονικά» (Annales du Bureau des Longitudes»), ὅπου δημοσιεύονται ἐπιστημονικαὶ μελέται καὶ ἐργασίαι τῶν μελῶν τοῦ Γραφείου καὶ ἄλλων διαπρεπῶν ἐπιστημόνων.

Ἡ παροῦσα συγκρότησις τοῦ Γραφείου Μηκῶν ἔχει ὡς ἀκολούθως: 13 τακτικὰ μέλη, ἐξ ὧν 3 ἐκ τῆς γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν, 5 διευθυνταὶ γαλλικῶν ἀστεροσκοπείων, 1 γεωγράφος, 3 ἀνώτατοι ἀξιωματικοὶ τοῦ ναυτικοῦ καὶ 1 τῆς ξηρᾶς. Ἐπὶ πλέον δὲ 3 πρόσεδρα μέλη καὶ 24 ἔκτακτα, ἐξ ὧν 12 τοὐλάχιστον ἐπιστήμονες ξένων χωρῶν. —Ρ.

**μηκόστηθος** (ὁ) (Mecostethus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων ὀρθοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πηδητικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀκριδιδῶν*, περιλαμβάνον ἀκρίδας μικροῦ μεγέθους μὲ σῶμα ἐπίμηκες, κεφαλὴν ἀρκετὰ ἀνεπτυγμένην, κεραίας λεπτὰς καὶ βραχείας, πόδας ἐπιμήκεις καὶ πολυακανθωτοὺς καὶ πτέρυγας ἀνεπτυγμένας, πολυνευρωτὰς καὶ ἡμιδιαφανεῖς. Γνωστὰ ἐλάχιστα εἴδη, ἀπαντῶντα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**Μηκύβερνα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Χαλκιδικῆς χερσονήσου, ἐν τῷ μυχῷ τοῦ Τορωναίου κόλπου, ὅστις ἀπ' αὐτῆς ἐκαλεῖτο καὶ *Μηκυβερναῖος*. Ἀπεῖχε τῆς Ὀλύνθου περὶ τοὺς 20 σταδίους καὶ ἦτο ἐπίνειον αὐτῆς. Παραμείνασα ἐλευθέρα μέχρι τῶν Περσικῶν πολέμων, ἠναγκάσθη νὰ ἀναγνωρίσῃ τὸν περσικὸν ζυγόν, παραχωρήσασα στρατὸν καὶ πλοῖα κατὰ τὴν διάβασιν τοῦ στόλου τοῦ Ξέρξου τῷ 481 π. Χ. (*Ἡροδ.* VII, 122). Μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τῶν Περσῶν ἐξ Εὐρώπης, ἐγένετο φόρου ὑποτελὴς εἰς τοὺς Ἀθηναίους. Ἀργότερον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ὀλυνθίων, ὑπὸ τοὺς ὁποίους παρέμεινε μέχρι τοῦ 349 π. Χ., ὁπότε κατελήφθη μετὰ τῆς Τορώνης ὑπὸ Φιλίππου τοῦ Μακεδόνος. Καταστραφεῖσα ὑπ' αὐτοῦ μετ' ἄλλων 32 πόλεων, δὲν ἀναφέρεται ἔκτοτε ὑπὸ τῶν ἀρχαίων συγγραφέων. Ὑπῆρξε πατρὶς τοῦ ἱστορικοῦ Ἡγησίππου.

Ἡ τοποθεσία τοῦ πολίσματος ἀνεγνωρίσθη μεταξὺ Μυριοφύτου καὶ Ἁγίου Μάμα (Κασσάνδρας), ὅπου τὸ μέγα ἀγρόκτημα Μιχαὴλ καὶ ὁ ὕφορμος Μόλοβος (πλάτ. 39°22′30″ Β., μῆκ. 26°10′30″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1085: Gulf of Kassandra to Negrepont). Α. Θ. Σ.—Σ. Ε. Λ.

**μήκυνσις,** —*εως* (ἡ)· ἡ κατὰ μῆκος ἐπέκτασις, ἐπιμήκυνσις, κοιν. *μάκρεμα*.

**μηκύνω,** ἀόρ. *ἐμήκυνα*· καθιστῶ τι μακρόν, μακρότερον, ἐπιμηκύνω: «μηκύνω τὸν λόγον,—τὴν προθεσμίαν».

Digitized by Google

— *[Ρητορ.]* Κατὰ τοὺς ἀρχαίους τεχνογράφους ὁ ἐπιθυμῶν *νὰ μηκύνῃ* τὸν λόγον αὐτοῦ ὀφείλει «μερίζειν τὸ πρᾶγμα καὶ ἐν ἑκάστῳ μέρει τὰ ἐνόντα οἷά τέ ἐστι τὴν φύσιν διδάσκειν, καὶ τὴν χρῆσιν καὶ ἰδίᾳ καὶ κοινῇ καὶ τὰς προφάσεις αὐτῶν ἐκδιηγεῖσθαι· ἂν δὲ καὶ μακρότερον θελήσωμεν τὸν λόγον ποιεῖν, δεῖ πολλοῖς ὀνόμασι περὶ ἑκάστου χρῆσθαι. Χρὴ δὲ καὶ παρὰ μέρος ἕκαστον τοῦ λόγου παλιλλογεῖν καὶ τὴν παλιλλογίαν σύντομον ποιεῖσθαι, ἐν δὲ τῇ τελευτῇ τοῦ λόγου ταῦτα, περὶ ὧν καθ' ἓν ἕκαστον εἴρηκας, ἀθρόα συντιθέναι, καὶ περὶ ὅλων τῶν πραγμάτων λέγειν· τοῦτον μὲν οὖν τὸν τρόπον μῆκος ἕξουσιν οἱ λόγοι» (*Ἀναξιμένους* «Τέχνη ῥητορική» 22). Ι. Φ. Δ.

**μηκῶμαι** (*—άομαι*)· ἐπὶ τῆς φωνῆς τῶν προβάτων καὶ τῶν αἰγῶν ἰδίᾳ, φωνάζω μέ-μέ-ε-ε, βελάζω, πρβλ. *μυκῶμαι*.

**μήκων** (ἡ) (Papaver) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μηκωνοειδῶν*. Οἱ μήκωνες εἶναι ἐτήσια ἢ πολυετῆ φυτά, ἅτινα ἐκκρίνουσι λευκὸν ἢ γαλακτώδη ὀπόν. Τὰ φύλλα των εἶναι ἐναλλασσόμενα, ποικίλως διαμορφωμένα κατὰ τὴν περιφέρειάν των. Τὰ ἄνθη των εἶναι μεγάλα, μονήρη καὶ φέρουσι μακρὸν μίσχον· ἔχουν κάλυκα ἐκ δύο σεπάλων ἀποτελούμενον. Οἱ στήμονες εἶναι ὑπόγυνοι, πολυπληθέστατοι, μὲ ὑπομελανοὺς ἀνθῆρας. Ἡ ᾠοθήκη εἶναι ἐλευθέρα, σφαιροειδής, ᾠοειδὴς ἢ κωνική, στηριζομένη ἐπὶ δισκοειδοῦς πλατύσματος, ἐφ' οὗ ὑπάρχουσι πλείονα στίγματα κυκλικῶς διατεταγμένα. Ὁ καρπὸς εἶναι κάψα ἀπεστρογγυλωμένη, ᾠοειδὴς ἢ κωνική, μονόχωρος, φέρουσα ψευδῆ διαφράγματα, περιέχουσα πολυαριθμότατα σπέρματα φαιοῦ, μελανοῦ ἢ ἐρυθρομελανοῦ χρώματος καὶ μικροτάτου μεγέθους. Τὸ γένος περιλαμβάνει πλεῖστα εἴδη πανταχοῦ τῆς γῆς ἀπαντῶντα. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ἡ *μήκων ἡ ῥοιάς* (Papaver rhoeas), κοινῶς *παπαροῦνα*, *κουτσουνάδα* εἰς τὴν Κρήτην, *πετεινὸς* ἢ *κουτσοπετεινὸς* εἰς τὴν Κύπρον καὶ *λαλὲς* εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Ὁ Διοσκορίδης λέγει ὅτι ὠνομάσθη ῥοιὰς «διὰ τὸ ταχέως τὸ ἄνθος ἀποβάλλειν». Τὸ αὐτὸ ὄνομα μεταχειρίζεται διὰ τὸ φυτὸν τοῦτο καὶ ὁ Θεόφραστος λέγων: «Μάλιστα ἐν ταῖς κριθαῖς φύεται.... χιχωρίῳ τῷ ἀγρίῳ ὁμοιάζει, διὸ καὶ ἐσθίεται» (Φυσ. Ἱστ. 13, 4). Καὶ σήμερον ἔτι τὰ νεαρὰ φυτὰ πολλαχοῦ λαχανεύονται. Τὸ εἶδος τοῦτο εἶναι ἐτήσιον, πρωϊμόβλαστον καὶ κοινότατον πανταχοῦ καὶ παρ' ἡμῖν· καθίσταται ὀχληρὸν ζιζάνιον εἰς τοὺς καλλιεργησίμους ἀγροὺς καὶ ἰδίως τῶν δημητριακῶν, καταστρέφον πολλάκις τὰ νεαρὰ φυτὰ λόγῳ τῆς ταχείας ἀναπτύξεώς του. Ἐπίσης τρωγόμενον ὑπὸ τῶν κτηνῶν προκαλεῖ στομαχικὰς διαταραχὰς λόγῳ τῆς *ῥοιαδίνης*, τῆς ἀλκαλοειδοῦς δηλαδὴ οὐσίας ἣν ἐνέχει. Τὸ εἶδος τοῦτο καλλιεργεῖται ὑπὸ πλείστας ποικιλίας, διακρινομένας ἐκ τῶν πολυχρώμων καὶ ποικιλοσχήμων ἀνθέων των. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἶναι ἡ *μήκων ἡ ῥοιὰς ἡ ὑπνοφόρος* (Papaver rhoeas somniferum), κοινῶς *ἀφιόνι*, *ὕπνος* ἢ *ὕπνο*. Εἶναι φυτὸν ἐτήσιον, κοσμητικόν, φαρμακευτικόν, ἐλαιοφόρον καὶ βιομηχανήσιμον. Ἀπαντᾷ αὐτοφυὲς πολλαχοῦ τῆς Ἀνατολῆς καὶ παρ' ἡμῖν. Ἡ ποικιλία αὐτὴ ἀναφέρεται καὶ ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου (Ἰλ. Θ, 306), τοῦ Θεοφράστου (Φυσ. Ἱστ. 9, 8, 2), τοῦ Πausανίου (Ε', 20, 5), παρέχοντος τὴν πληροφορίαν ὅτι ἐχρησίμευσεν ὡς πρότυπον εἰς τὴν γλυπτικὴν τῶν ἀνθέων. Σήμερον καλλιεργεῖται ἐντατικῶς εἰς πλείστας χώρας τῆς Εὐρώπης, τὴν Ἀμερικήν, τὴν Αὐστραλίαν, τὴν Αἴγυπτον, τὴν Μικρὰν Ἀσίαν, τὴν Περσίαν, τὰς ἀνατολικὰς Ἰνδίας καὶ τὴν Κίναν, διὰ τὴν ἐξ αὐτοῦ λῆψιν τῆς ναρκωτικῆς καὶ φαρμακευτικῆς οὐσίας, τῆς γνωστῆς ὑπὸ τὰ ὀνόματα *ὄπιον, ὀπὸς μήκωνος, μηκώνιον* καὶ *ἀφιόνι*. Ἡ μήκων ἡ ῥοιὰς ἡ ὑπνοφόρος καλλιεργεῖται ὑπὸ δύο διαφοράς, τὴν *λευκόσπερμον* (Papaver rhoeas somniferum leucosperma) καὶ τὴν *μελανόσπερμον* (Papaver rhoeas somniferum melanosperma). Δ.Ν.Π.

Μήκων ἡ ῥοιάς.

Μήκων ἡ ῥοιὰς ἡ ὑπνοφόρος.
[Ἀριστερά: λευκόσπερμος, δεξιά: μελανόσπερμος.]

**— μήκωνος ἀλκαλοειδῆ** *[Χημ.]*. Ὁ ἀπεξηραμμένος ὀπὸς μήκωνος τῆς ὑπνοφόρου ἀποτελεῖ τὸ *ὄπιον* (βλ. λ.), τὸ ὁποῖον περιέχει περὶ τὰ 20 περίπου ἀλκαλοειδῆ, τὸ ποσὸν τῶν ὁποίων κυμαίνεται ἀναλόγως τῆς προελεύσεως αὐτοῦ. Εἰς σχετικῶς μεγαλυτέραν ποσότητα ἀνευρέθησαν ἡ *ναρκωτίνη*, ἡ *λαυδανοσίνη*, ἡ *μορφίνη*, ἡ *κωδεΐνη*, ἡ *παπαβερίνη* καὶ ἡ *θηβαΐνη*. Τὰ ἄλλα ἀνευρέθησαν εἰς πολὺ μικρὰς ποσότητας. Σ. Γ.

**— μήκωνος ἔλαιον**· βλ. λ. *μηκωνέλαιον*.

**— μήκωνος τῆς ῥοιάδος ἄνθη** (Flores papaveris rhoeadis) *[Φαρμακογ.]*. Προέρχονται ἐκ τοῦ φυτοῦ *μήκων ἡ ῥοιάς*, ὅπερ εἶναι ἰθαγενὲς τῆς Ἀνατολῆς καὶ κοινότατον παρ' ἡμῖν *(παπαροῦνα)*. Ἐκ τῶν ἀνθέων συλλέγονται τὰ πέταλα, ἅτινα εἶναι βαθέος ἐρυθροῦ χρώματος καὶ περὶ τὴν βάσιν φέρουν κηλῖδα μέλαιναν. Μετὰ τὴν ξήρανσίν των τὰ ἄνθη γίνονται ἀμαυρῶς ἐρυθρά. Τὰ νωπὰ ἄνθη ἔχουν ὀσμὴν ναρκώδη, τὰ δὲ ξηρὰ εἶναι ἄοσμα. Ἡ γεῦσις τῶν ἀνθέων εἶναι βλεννώδης καὶ ὑπόπικρος. Συστατικὰ τῆς δρόγης εἶναι: γλυκόζη, ῥοιαδικὸν ὀξύ, γλίσχρασμα, γλυκοζίτης τις, ἡ ῥοιαδίνη, ἀπαντώμενα καὶ εἰς τὰ σέπαλα. Ἐρευνηταί τινες παραδέχονται ὅτι τὰ ἄνθη μήκωνος τῆς ῥοιάδος περιέχουν μορφίνην καὶ μηκωνικὸν ὀξύ. Ἡ δρόγη ἀναγράφεται ὑπὸ τῆς λαϊκῆς θεραπευτικῆς ὡς ἔγχυμα ἢ ἀφέψημα μετ' ἄλλων βλεννωδῶν φαρμάκων ὡς πραϋντικὸν εἰς βῆχας καὶ βρογχίτιδας. Εἰς τὴν φαρμακοτεχνίαν χρησιμεύουν τὰ ἄνθη πρὸς παρασκευὴν τοῦ σιροπίου τῆς ῥοιάδος (Sirupus rhoeadis) καὶ πρὸς χρωματισμὸν τῶν ὀδοντοπλυμάτων κλπ. Εἰς μεγάλας δόσεις προκαλεῖ ἡ δρόγη ναυτίας, ἐμέτους καὶ ἧττον ἔκδηλον πυρετικὴν διέγερσιν. Κ. Γ. Μ.

**— μήκωνος σπέρματα** (Sem. papaveris) *[Φαρμακογ.]*. Εἶναι τὰ ἐκ τοῦ φυτοῦ *μήκωνος τῆς ῥοιάδος* προερχόμενα σπέρματα. Ταῦτα συλλέγονται κατὰ τὴν πλήρη ὡρίμανσιν, μετὰ δὲ τὴν ξήρανσιν αὐτῶν φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὸ ὄνομα *λευκὰ σπέρματα*, ὅταν προέρχωνται ἐκ τῆς παραλλαγῆς τῆς *λευκῆς μήκωνος* (P. somniferum var. album) ἢ ὡς *μελανὰ σπέρματα*, ὅταν προέρχωνται ἐκ τῆς παραλλαγῆς τῆς *μελαίνης μήκωνος* (P. somnif. var. nigrum). Ἐμπορικῶς τὰ σπέρματα τῆς μήκωνος διακρίνονται καὶ ἀναλόγως τοῦ τόπου τῆς προελεύσεως αὐτῶν (γαλλικά, γερμανικά, τουρκικά, ὀλλανδικὰ κλπ.). Εἶναι λευκόφαια ἢ μελανὰ ἢ ἀκόμη καὶ τεφρὰ ἢ τεφροκίτρινα, ἔχουν σχῆμα φωειδὲς ἢ νεφροειδές, γεῦσιν δὲ ὑπόγλυκον καὶ λιπαρόν. Συστατικὰ τῶν σπερμάτων εἶναι 47—55% λιπαρὸν ἔλαιον, γλίσχρασμα, 5—6% κελλουλόζη, πηκτόζας, φύραμά τι (ἡ ἐμουλσίνη) καὶ λιπάσεις. Τὰ σπέρματα τῆς μήκωνος χρησιμεύουν ἐν Εὐρώπῃ εἰς τὴν παρασκευὴν γαλακτωμάτων ὡς παρ' ἡμῖν τὰ γλυκέα ἀμύγδαλα. Τὰ γαλακτώματα ταῦτα ἀποτελοῦν φάρμακον μαλακτικόν, καταπραϋντικὸν καὶ ἐλαφρὸν κατὰ τῶν κατάρρων τῆς κύστεως καὶ τῶν ἐπιμόνων δυσκοιλιοτήτων, ἔχουν ὅμως γεῦσιν ἀηδῆ. Κ. Γ. Μ.

**μηκωνέλαιον** (τὸ) *[Χημ.]*. Τὸ δι' ἐκθλίψεως τῶν σπερμάτων *μήκωνος τῆς ὑπνοφόρου* (Papaver somniferum) λαμβανόμενον λιπαρὸν ἔλαιον. Ὅταν ἡ ἔκθλιψις γίνεται ἐν ψυχρῷ, ἡ ἀπόδοσις τῶν σπερμάτων φθάνει περίπου τὰ 40%, ἐνῷ ὅταν γίνεται ἐν θερμῷ, ἡ ἀπόδοσις εἶναι πολὺ μεγαλυτέρα (60% περίπου), ἀλλὰ χειροτερεύει ἡ ποιότης. Ἀνήκει εἰς τὴν τάξιν τῶν ξηραινομένων ἐλαίων, κέκτηται δὲ εἰδικὸν βάρος 0,920—0,935, στερεοποιεῖται εἰς —18° ἕως —20° καὶ ἔχει ἀριθμὸν ἰωδίου 130—140. Εἶναι λεπτόρρυτον ἔλαιον, ἀνοικτοκιτρίνου χρώματος καὶ εὐχαρίστου ὀσμῆς καὶ γεύσεως, εὐδιάλυτον εἰς τὸν αἰθέρα καὶ τὴν θερμὴν ἀλκοόλην καὶ δυσδιάλυτον εἰς ψυχρὰν τοιαύτην. Πρὸς λεύκανσιν ἀναμειγνύεται μεθ' ἁλατούχου ὕδατος καὶ ἐκτίθεται εἰς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἀμέσου ἡλιακοῦ φωτός, πρὸς καλὴν δὲ διατήρησιν πρέπει νὰ φυλάσσεται εἰς ψυχροὺς χώρους καὶ ἐντὸς πλήρων καλῶς κλειομένων φιαλῶν. Χρησιμοποιεῖται δι' ἐδωδίμους σκοπούς, εἰς τὴν σαπωνοποιίαν, εἰς τὴν ζωγραφικήν, ὡς καὶ διὰ παρασκευὴν ἰατρικῶν γαλακτωμάτων. Σ. Γ.

**Μηκώνη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαιότατον ὄνομα τῆς πόλεως *Σικυῶνος* παρὰ Στράβωνι (Η' 382), πιθανῶς ἐκ τοῦ ὅτι «ἐνταῦθα πρῶτον εὗρε τὸν τῆς μήκωνος καρπὸν ἡ Δημήτηρ». Α. Θ. Σ.

**μηκωνιδίνη** (ἡ) (Mekonidin) *[Φαρμακογ.]*. Ἀλκαλοειδὲς τῆς συνθέσεως: $C_{21}H_{23}NO_4$, περιεχόμενον εἰς τὸ ὄπιον, ἐξ οὗ ἀπεχωρίσθη τῷ 1870 ὑπὸ τοῦ O. Hesse. Κόνις λευκή, κρυσταλλική, τηκομένη εἰς 58°, ἀλκαλικῆς ἀντιδράσεως, διαλυτὴ εἰς τὴν ἀλκοόλην, ἀκετόνην, βενζόλιον καὶ χλωροφόρμιον. Κ. Γ. Μ.

**μηκωνικὸν** *ὀξὺ* *[Χημ.]*. Εἶναι παράγωγον τῆς *πυρόνης* τοῦ τύπου:

καίτοι ἀποδίδεται εἰς αὐτὸ καὶ ἡ ἄκυκλος σύνταξις

$$HOOC.C(OH)_2.CH_2.CO.CH(OH).C(OH)_2.COOH.$$

Ἀπαντᾷ εἰς τὸ ὄπιον, εἶναι σῶμα κρυσταλλικὸν κρυσταλλούμενον μεθ' ἑνὸς ἢ τριῶν μορίων ὕδατος καὶ εἶναι ἰσχυρότατον ὀξύ, ὡς τὸ θειικὸν ὀξὺ περίπου. Σ. Γ.

**μηκωνίνη** (ἡ) *[Χημ.]*. Ἀλκαλοειδὲς ἀνευρεθὲν εἰς τὸ ὄπιον καὶ ὕδραστιν τὴν καναδικήν. Χαρακτηρίζεται χημικῶς ὡς φθαλίδιον τοῦ *μηκωνικοῦ ὀξέος* καὶ ἔχει τὸν τύπον:

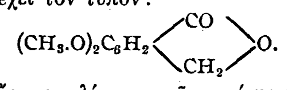

Ἄχροοι, ἄοσμοι, λίαν πικρᾶς γεύσεως κρύσταλλοι, τηκόμενοι εἰς 101°. Εἶναι δυσδιάλυτοι εἰς τὸ ὕδωρ καὶ εὐδιάλυτοι εἰς τὸν αἰθέρα, τὸ χλωροφόρμιον, τὴν ἀλκοόλην καὶ τὰ ἀλκάλια. Τὸ διάλυμα αὐτῆς ἐν θειικῷ ὀξεῖ εἶναι ἄχρουν, κατὰ τὴν θέρμανσιν ὅμως χρώννυται ἐρυθρόν. Σ. Γ.

**μηκώνιον** (τό). Οὐσία ἄοσμος, χροιᾶς βαθυπρασίνου, συστάσεως πολτώδους καὶ κατά τι ἰξώδους, πληροῦσα τὸ ἀπευθυσμένον καὶ τὸ κατώτερον μέρος τοῦ παχέος ἐντέρου τοῦ ἐμβρύου. Ἡ γένεσις αὐτοῦ ὀφείλεται εἰς τὴν λειτουργίαν τοῦ ἥπατος τοῦ ἐμβρύου καὶ περιέχει χολικὰ ὀξέα, χολοστεαρίνην, κύτταρα ἐπιδερμίδος, χνοῦν καὶ ἐπιθήλια ἐντερικά. Ἐν ὁμαλῇ μὲν καταστάσει οὐδέποτε ἐπέρχεται κένωσις τοῦ μηκωνίου ἐν τῷ ἐναμνίῳ ὑγρῷ· ἐπερχομένης ὅμως ἀσφυξίας τοῦ ἐμβρύου, δι' οἱονδήποτε λόγον, εἴτε κατὰ τὴν κύησιν εἴτε κατὰ τὸν τοκετόν, συχνότατα ἕνεκα τῆς ἐπιγιγνομένης μεγάλης περισταλτικῆς κινήσεως τῶν ἐντέρων τοῦ ἐμβρύου, τὸ μηκώνιον ἐκκενοῦται ἐν τῷ ἐναμνίῳ ὑγρῷ. Τὸ νεογνὸν κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τῆς γεννήσεώς του ἐξάγει βαθμηδὸν καὶ αὐτομάτως τὸ ἐν τῷ ἀπευθυσμένῳ περιεχόμενον μηκώνιον. Κ. ΛΟΥΡΟΣ

**μηκωνίτης** (ὁ) *[Ἀρχ.]*. Ἄγνωστος πολύτιμος λίθος, ἀναφερόμενος μόνον ὑπὸ τοῦ Πλινίου. Β. Δ. Θ.

**μηκωνοειδῆ** (τά) (Papaveraceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα πόας ἐτησίας, διετεῖς ἢ πολυετεῖς καί τινας θάμνους. Ἐκ τῶν πολλῶν γενῶν τῆς οἰκογενείας ταύτης τινὰ εἶναι ζιζάνια, ἕτερα λαχανευόμενα, ἄλλα κοσμητικὰ καὶ ἄλλα φαρμακευτικά. Ἀξιολογώτερα γένη εἶναι τὰ ἑξῆς: *ἀργεμώνη* (Agremone), *γλαύκιον* (Glaucium), *ἐσχόλζια* (Eschcholzia), *μήκων* (Papaver), *μηκώνοψις* (Meconopsis), *ὑπήκοον* (Hypecoum) καὶ *χελιδόνιον* (Chelidonium). Δ. Ν. Π.

**μηκωνοειδὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μήκωνα.

**μηκώνοψις** (ἡ) (Meconopsis) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μηκωνοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἐτησίας, διετεῖς ἢ πολυετεῖς, ἰθαγενεῖς τῶν περὶ τὰ Ἱμαλάϊα χωρῶν. Ἐκ τῶν 10 γνωστῶν εἰδῶν τοῦ γένους κυριώτερα εἶναι: *Μηκώνοψις ἡ καμβρική* (Meconopsis cambrica), ἥτις ἀπαντᾷ καὶ ὡς αὐτοφυὴς εἰς τὰς χώρας τῆς δυτικῆς Εὐρώπης καὶ καλλιεργεῖται πρὸς κόσμον διὰ τὰ ὡραῖα κυανᾶ ἄνθη της. *Μηκώνοψις ἡ οὐαλλίχειος* (Meconopsis Wallichii), ἰθαγενὴς τῶν Ἱμαλαΐων καὶ πολυετὲς φυτόν. Δ. Ν. Π.

**Μήλα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Μεσσηνίας, κείμενον πρὸς Δ. τῆς πεδιάδος τῆς Στενυκλάρου καὶ βορείως τῆς Ἰθώμης. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον, κατοίκους 387 καὶ εἶναι ἕδρα κοινότητος (489 κατ.) περιλαμβανούσης καὶ τὸ χωρίον *Κάστρο* καὶ ὑπαγομένης εἰς τὴν ἐπαρχίαν Μεσσήνης τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Πλησίον τοῦ Κάστρου καὶ ἐπὶ κορυφῆς λόφου, ἥτις δι' ἐπιχώσεων ἔχει καταστῆ ὁμαλή, κεῖται τὸ ἐνετικὸν κάστρον Μήλα, διατηρούμενον ἐν καλῇ σχετικῶς καταστάσει. Πρὸς Δ. τῆς Μήλας ὑψοῦται τὸ χαμηλὸν ὄρος Ραμοβούνι, ἔνθα ἐγεννήθη ὁ Θεόδωρος Κολοκοτρώνης. Ι. Σ. Σ.

**μηλαδέρφι** (τό)· ὁ ἑτεροθαλὴς ἀδελφός· ἄλλως *ζηλαδέρφι* (κατὰ παρετυμολογίαν ἐκ τοῦ *ἀλληλαδέρφι*).

**μηλαδέρφι** (τὸ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία εἴδους ἁρπακτικοῦ πτηνοῦ ἐκ τῆς οἰκογενείας τῶν ἀετῶν, τοῦ *ἀετοῦ τοῦ Μπονέλλι* (Aquila Bonelli) ὁ ὁποῖος καθ' ὅλον τὸ ἔτος ἀπαντᾷ κατ' ἐξοχὴν ἐν Ἑλλάδι καὶ Σαρδηνίᾳ, σπανιώτατα δ' ἐν Σικε-



Digitized by Google

λίᾳ καὶ τῇ δυτικῇ Γαλλίᾳ, φωλεοποιεῖ εἰς βραχώδεις φάραγγας καὶ τίκτει δύο ᾠά. Φ. Δ. Γ.

**Μηλάκι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος *Ἀλιβερίου* τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 41.

**μηλαμίνη** (ἡ) *[Ὀργ.Χημ.]*· βλ. *κυανουραμίδιον*.

**Μηλαρία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις Ἱσπανίας τῆς Βαιτικῆς. Ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν *Μελλαρίαν* τοῦ Στράβωνος, Σ. Ε. Λ.

**Μηλάτες** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μακρυνιῶν τοῦ νομοῦ Ἄρτης. Κάτ. (1928) 198.

— **Μηλατῶν** *μονὴ* *[Γεωγρ.]*. Μονὴ ἐπ' ὀνόματι τῆς γεννήσεως τῆς Θεοτόκου τιμωμένη, κειμένη δὲ εἰς τὸ τμῆμα Ραδοβυζίου τοῦ νομοῦ Ἄρτης παρὰ τὸ χωρίον Μηλάτες, πεντάωρον ἀπέχον τῆς Ἄρτης. Ὁ χρόνος τῆς κτίσεως εἶναι ἄγνωστος· ἀνεκαινίσθη ὅμως κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἄλλοτε ἡ μονὴ αὕτη ἤκμαζε καὶ εἶχε σπουδαίαν βιβλιοθήκην. Χ. Ι. Σ.

**Μήλατος** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μίλατος*.

**μηλαφάνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀστράγαλος ὁ κυλλήνιος*.

**μηλέα** (ἡ) (Malus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μηλεοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους καὶ δένδρα φυλλοβόλα, ἰθαγενῆ τῶν χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου, καί τινα τῶν ὀρεινῶν χωρῶν τῶν ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν. Ἐκ τῶν 12 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερον πάντων καὶ ἐκτενέστερον καλλιεργούμενον τόσον ἐν Εὐρώπῃ ὅσον καὶ παρ' ἡμῖν, εἶναι ἡ *μηλέα ἡ κοινὴ* (Malus communis), ἥτις ἀπαντᾷ καὶ αὐτοφυὴς εἰς πλείστας χώρας τῆς Εὐρώπης ὡς καὶ παρ' ἡμῖν, ὅπου εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *μηλιὰ* καὶ καλλιεργεῖται ὑπὸ πλείστας ποικιλίας, τὰς ὁποίας τινὲς ἀναβιβάζουσιν εἰς 800 περίπου. Κυριώτερα γνωρίσματα τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὰ ἑξῆς: Ἀνάστημα κυμαινόμενον μεταξὺ 4—8 καὶ σπανιώτατα 10 μέτρων, κορμὸς κυλινδρικός, συνήθως λεῖος καὶ πρασινόφαιος μετά τινων φαιομελανῶν στιγμάτων, φύλλα ἀνεπτυγμένα, ᾠοειδῆ, ἐπιμήκη, πολυοδοντωτὰ κατὰ τὴν περιφέρειάν των καὶ ὑπὸ πυκνοῦ χνοῦ καλυπτόμενα κατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῶν ἐπιφάνειαν, ἄνθη ὑπέρυθρα, εὔοσμα, μεγάλα καὶ κατὰ κορύμβους διατεταγμένα καὶ καρ-

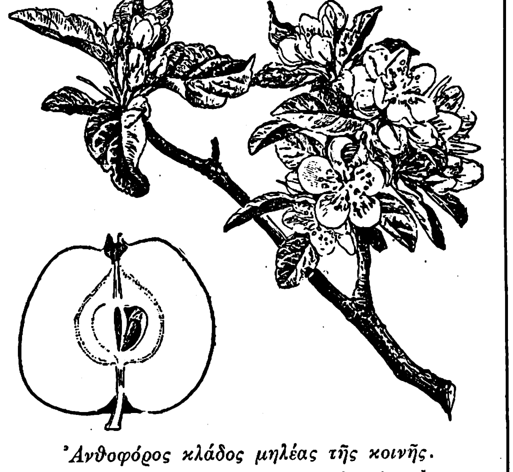

*Ἀνθοφόρος κλάδος μηλέας τῆς κοινῆς.*
[Α=Τομὴ καρποῦ δεικνύουσα τὸ σπέρμα.]

πὸς ἀπεστρογγυλωμένος καὶ πεπλατυσμένος κατὰ τὴν ρίζαν του, περικλείων ἀρκετὰ φαιοϋπέρυθρα καὶ ἀποστίλβοντα σπέρματα.

Εὐδοκιμεῖ εἰς εὐκράτους χώρας, ἀλλ' ἐπιτυχῶς ἀναπτύσσεται καὶ εἰς μετρίως ψυχρὰ καὶ ὑγρὰ κλίματα. Ἀναπτύσσεται τόσον εἰς τὰς πεδιάδας, εἰς τὰς κλιτῦς τῶν ὀρέων, ὅσον καὶ εἰς ὀρεινὰ μέρη καὶ καλλιεργεῖται εἰς ὕψος 1.500 περίπου μέτρων ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Παρ' ἡμῖν εὐδοκιμεῖ κυρίως εἰς τὸ Πήλιον, τὴν Εὔβοιαν, εἰς τὰ πέριξ τῆς Τριπόλεως, τὴν Ἤπειρον καὶ τὴν Μακεδονίαν.

Καταλληλότερον ἔδαφος διὰ τὴν εὐδοκίμησιν τῆς μηλέας εἶναι τὸ ἀργιλλῶδες ἢ τὸ ἀργιλλοαμμῶδες, ὅπερ περιέχει καὶ ἀρκετὴν ποσότητα ἀσβέστου. Ἐλαχίστη ποσότης ὑγρασίας εἶναι ἀπαραίτητος. Ὁ πολλαπλασιασμός της κατορθοῦται δι' ἐμβολιασμοῦ ἢ παραφυάδων ἢ καὶ σπορᾶς. Προτιμᾶται ὁ διὰ σπορᾶς καὶ ἐμβολιασμοῦ πολλαπλασιασμός, διότι τὰ ἐκ τούτων προερχόμενα δένδρα εἶναι μακροβιώτερα. Ὁ πολλαπλασιασμὸς ἢ ἡ φύτευσις τῆς μηλέας ἄρχεται ἀπὸ τοῦ φθινοπώρου καὶ διαρκεῖ μέχρι τοῦ ἔαρος. Μεταξὺ τῶν δένδρων δέον νὰ τηρῆται ἀπόστασις κυμαινομένη ἀπὸ 4—8 μέτρων ἀναλόγως τοῦ μεγέθους τῶν δένδρων.

Τὰς διαφόρους ποικιλίας τῆς μηλέας διακρίνομεν εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας: εἰς τὰς μηλέας, ὧν ὁ καρπὸς χρησιμοποιεῖται πρὸς βρῶσιν, καὶ εἰς τὰς μηλέας ὧν ὁ καρπὸς χρησιμοποιεῖται πρὸς παρασκευὴν μηλίτου οἴνου.

*Πίναξ δεικνύων τὰς διαφόρους ποικιλίας τῶν παρεχόντων ἐδωδίμους καρποὺς μηλεῶν (γλυκομηλιές).*

| *Ὄνομα ποικιλίας* | *Σχῆμα κορμοῦ* | *Ἐποχὴ ἀνθήσεως* | *Ἐποχὴ ὡριμάνσεως* | *Παραγωγή* | *Ποιότης καρποῦ* |
|---|---|---|---|---|---|
| 1) Ἀστρακὰν ἐρυθρά. | Πυραμιδοειδής. | Μέση ἐποχή. | Τέλη Ἰουλίου. | Μεγίστη. | Ἀρκετὰ ὀγκώδης, πρασινοκίτρινος, μὲ λευκήν, ἀρωματικήν, γλυκεῖαν καὶ ἐλαφρῶς ὑπόξυνον καὶ εὔχυμον σάρκα. |
| 2] Καλβὶλ λευκή. | Πυραμιδοειδής. | Πρώϊμος. | Ἀπὸ Δεκεμβρίου μέχρι Ἀπριλίου. | Μεγίστη. | Ὀγκώδης, εὐρὺς κατὰ τὴν ρίζαν του, ἀποστενούμενος κατὰ τὴν κορυφήν του, μὲ σάρκα εὔχυμον, λευκοκίτρινον καὶ γλυκεῖαν. Εἶναι ὁ μᾶλλον περιζήτητος. |
| 3) Ρενέττη τοῦ Καναδᾶ. | Πυραμιδοειδής. | Μέση ἐποχή. | Ἀπὸ Δεκεμβρίου μέχρι Μαρτίου. | Ἀκανόνιστος. | Ὀγκώδης, κωνικός, μὲ λείαν ἐπιδερμίδα κιτρινοχρυσίζουσαν, μὲ σάρκα ὑποκιτρίνην, εὔχυμον καὶ ἐλαφρῶς ἀρωματικήν. ἀρίστης ποιότητος. |
| 4) Βασιλικὴ ἐρυθρά. | Πυραμιδοειδής. | Πρώϊμος. | Ὀκτώβριος - τέλη Ἰανουαρίου. | Μεγάλη. | Ὀγκώδης, πεπλατυσμένος κατὰ τὴν ρίζαν του, φαιοκαστανὸς μὲ σάρκα λεπτήν, εὔχυμον καὶ ἐλαφρῶς ἀρωματική. Καλλίστης ποιότητος. |
| 5) Κιτρινανθής. | Ποικίλου σχήματος. | Μᾶλλον καθυστερημένη. | Ἀπὸ τοῦ Δεκεμβρίου μέχρι τοῦ Φεβρουαρίου. | Καλή. | Ἀρκετὰ μεγάλος, ἀνοικτῶς κιτρίνου χρώματος, σὰρξ εὔχυμος, τρυφερά, γλυκοϋπόξυνος. Καλλίστη ποιότης. |
| 6) Βασιλικὴ Ρενέττη. | Εὐθυτενής. | Μᾶλλον καθυστερημένη. | Ἀπὸ τοῦ Ὀκτωβρίου μέχρι τοῦ Μαρτίου. | Καλή. | Ἀρκετὰ μεγάλος, πρασινοϋποκίτρινος, σὰρξ κιτρινόλευκος, γλυκυτάτη, ἀρωματικὴ καὶ εὔχυμος. Πρώτης ποιότητος. |
| 7) Ρενέττη τοῦ Κασσέλ. | Ἡμιευθυτενής. | Μᾶλλον καθυστερημένη. | Ἀπὸ τοῦ Δεκεμβρίου μέχρι τοῦ Μαΐου. | Πολὺ καλή. | Μέτριος, κανονικοῦ σχήματος, χρυσοκιτρίνου χρώματος, σὰρξ κροκώδης, εὔχυμος, γλυκεῖα καὶ ἐλαφρῶς ὑπόξυνος, ἀρωματική. Πρώτης ποιότητος. |
| 8) Ρενέττη ἐπίξανθος. | Ἡμιευθυτενής. | Μᾶλλον καθυστερημένη. | Ἀπὸ τοῦ Δεκεμβρίου μέχρι τοῦ Μαρτίου. | Μεγίστη. | Μέτριος, ἐλαφρῶς χνοώδης, πρασινοκιτρίνου χρώματος, σὰρξ εὔχυμος, τρυφερά, κροκώδης, γλυκεῖα. Πρώτης ποιότητος. |
| 9) Ρενέττη χρυσόχρους. | Εὐθυτενής. | Μέση ἐποχή. | Ἀπὸ Δεκεμβρίου μέχρι Μαρτίου | Καλή. | Μέτριος, ἐπίξανθος, σὰρξ μᾶλλον λεπτή, ὑπογλυκίζουσα, εὔχυμος. Καλῆς ποιότητος. |
| 10) Ρενέττη τοῦ χειμῶνος. | Εὐθυτενής. | Μᾶλλον καθυστερημένη. | Ἀπὸ τοῦ Ἰανουαρίου μέχρι τοῦ Ἀπριλίου. | Μεγίστη. | Μέτριος, φαιοπρασίνου χρώματος, σὰρξ συμπαγής, λεπτή, γλυκυτάτη. Πρώτης ποιότητος. |

Ἐκ τῶν εἰς τὸν ἀνωτέρω πίνακα περιλαμβανομένων ποικιλιῶν αἱ ὑπ' ἀριθ. 1, 2 καὶ 3 εὐδοκιμοῦσι περισσότερον τῶν λοιπῶν καὶ παρ' ἡμῖν καὶ πολλαχοῦ καλλιεργοῦνται. Ἐκ τῶν λοιπῶν ἰθαγενῶν τῆς Ἑλλάδος ποικιλιῶν γνωστότεραι εἶναι αἱ ὑπὸ τὰ κοινὰ ὀνόματα *ἀφρομηλιά*, *κικεϊμηλιά*, *λαδομηλιά*, *μαρκεϊκομηλιὰ* καὶ *φηρικιά*. Ἡ τελευταία ἰδίως εἶναι γνωστὴ ἐκ τῶν καρπῶν της, οἵτινες εἶναι γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *φηρίκια μῆλα* καὶ οἵτινες ἔχουν σχῆμα κυλινδρικόν, ἐπίμηκες μὲ λεπτὴν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐπιδερμίδα, χρῶμα κιτρινοπράσινον καὶ σάρκα εὔχυμον καὶ γλυκεῖαν. Καλλιεργεῖται κυρίος εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Πηλίου καὶ ὡριμάζει ἀπὸ τοῦ Ὀκτωβρίου μέχρι τοῦ Ἰανουαρίου.

*Ἀσθένειαι τῆς μηλέας.* Ἐκ τῶν πολλῶν ἀσθενειῶν, αἵτινες προσβάλλουσι τὴν μηλέαν, γνωστότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: Ἡ *σῆψις*. Αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν παρουσίαν μικρομύκητός τινος, ὅστις κυρίως προσβάλλει τὸν καρπόν, ὁπότε τὸ σαρκῶδες τμῆμα τοῦ καρποῦ γίνεται φαιὸν καὶ εἶτα ὁ χρωματισμὸς οὗτος ἐπεκτείνεται ἐφ' ὁλοκλήρου τοῦ καρποῦ, τὸν ὁποῖον καὶ καταστρέφει. Τὸ *φουσικλάδιον* (κοιν. *βοῦλα τῆς μηλιᾶς*). Αὕτη ὀφείλεται εἰς μικροσκοπικὸν μύκητα, ὅστις προσβάλλει τοὺς νεαροὺς βλαστοὺς καὶ φύλλα τοῦ δένδρου καὶ προξενεῖ ἐπ' αὐτῶν μικρὰς κηλῖδας κιτρίνου χρώματος· αὗται βραδύτερον παράγουσι μικροσκοπικὰ σπόρια, ἅτινα μεταφερόμενα ὑπὸ τῶν ἐντόμων κυρίως προσβάλλουν πολλάκις ὁλοκλήρους τὰς μηλεοφυτείας καὶ ἐπιφέρουν με-

*Πίναξ δεικνύων τὰς κυριωτέρας ποικιλίας ἐκ τῶν παρεχουσῶν καταλλήλους πρὸς παρασκευὴν μηλίτου οἴνου καρποὺς (ξυνομηλιές).*

| *Ὄνομα* | *Σχῆμα κορμοῦ* | *Ἐποχὴ ἀνθήσεως* | *Ἐποχὴ ὡριμάνσεως* | *Παραγωγή* | *Ποιότης καρποῦ* |
|---|---|---|---|---|---|
| Πικρά. | Ποικίλον. | Τέλη Ἀπριλίου. | 2α ἐποχή. | Πολὺ καλή. | Μέτριος, πλατύτατος κατὰ τὴν ρίζαν, πρασινοϋποκίτρινος, εὐχυμώτατος, γλυκὺς καὶ ἀμυδρῶς ὑπόπικρος. |
| Ἀντουανέττα. | Ὠοειδής. | Ἀρχὰς Μαΐου. | 2α ἐποχή. | Καλή. | Ἀκανόνιστος, μέτριος, κιτρινοπράσινος πρὸς τὸν πυρρόν· σὰρξ εὔχυμος καὶ γλυκεῖα, ἀρωματώδης. |
| Μπινὲ χρυσόχρους. | Σφαιρικός. | Τέλη Μαΐου. | 3η ἐποχή. | Καλή. | Μέτριος. κίτρινος, σὰρξ εὔχυμος καὶ γλυκυτάτη. |
| Μπινὲ ἐρυθρά. | Σφαιρικός. | Τέλη Ἀπριλίου. | 2α ἐποχή. | Πολὺ καλή. | Μέτριος, ὑποκίτρινος· σὰρξ πλουσία, γεῦσις γλυκύπικρος, ἀρωματώδης. |
| Γλυκύπικρος. | Εὐθυτενής. | Τέλη Μαΐου. | 1η ἐποχή. | Καλή. | Μέτριος, κίτρινος· σὰρξ εὔχυμος, ἀρωματική, ἐλαφρῶς ὑπέρυθρος καὶ γλυκυπικρίζουσα. |
| Γλυκεῖα νορμανδική. | Πυραμιδοειδής. | Μέσα Ἰουνίου. | 2α ἐποχή. | Καλή. | Μέτριος, ἐρυθρός· σὰρξ ἀρωματικὴ καὶ γλυκεῖα. |
| Ἐρυθρά. | Σφαιρικός. | Τέλη Μαΐου. | 2α ἐποχή. | Πολὺ καλή. | Μεγάλος, ἐρυθρός· σὰρξ εὔχυμος, ἀρωματικὴ καὶ γλυκύπικρος. |
| Μαραμπού. | Ποικίλον. | Μέσα Μαΐου. | 3η ἐποχή. | Μεγάλη. | Πεπλατυσμένος κατὰ τὴν ρίζαν του, κιτρινοϋποπράσινος· σὰρξ εὔχυμος καὶ γλυκυτάτη. |

Digitized by Google

γάλας καταστροφὰς εἰς τοὺς καλλιεργητάς. Τὸ *ὠΐδιον*, Μικρομύκης, ὅστις προσβάλλει τὰ φύλλα καὶ τοὺς καρπούς. Ἐκ τῶν ζωϊκῶν παρασίτων τῶν προσβαλλόντων τὴν μηλέαν γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: Τὸ *σχιζόνευρον τῆς μηλέας* (κοιν. *αἱματόψειρα*). Τὸ ἔντομον τοῦτο ἀπομυζᾷ τοὺς χυμοὺς ἐκ τοῦ κορμοῦ καὶ τῶν κλάδων τοῦ δένδρου· σπανιώτερον προσβάλλει καὶ τὰς ῥίζας. Ὁ *ὑπονομευτής*. Οὗτος ἐναποθέτει τὰ ᾠά του ἐπὶ τῶν κλάδων τοῦ δένδρου. Αἱ κάμπαι του, αἵτινες ζοῦν κεκρυμμέναι κατὰ τὸν χειμῶνα, κατὰ τὸ ἔαρ ἄρχονται διατρυπῶσαι τὰ φύλλα καὶ καταβροχθίζουν τοὺς παρεγχυματικοὺς ἱστοὺς τούτων. Ὡς ἀποτελεσματικώτερα μέτρα καταπολεμήσεως ἀπὸ τῶν φυτικῶν ἀσθενειῶν ἐνδείκνυνται: ὁ ψεκασμὸς διὰ βορδιγαλείου πολτοῦ, μὲ διάλυσιν 1—2% θειικοῦ χαλκοῦ διὰ τὴν *σῆψιν*, ὁ ψεκασμὸς διὰ διαλύσεως θειικοῦ σιδήρου κατὰ 25% διὰ τὸν *φουσικλάδιον* καὶ ὁ ψεκασμὸς διὰ θειασβέστου διὰ τὸ *ὠΐδιον*. Διὰ τὴν καταπολέμησιν τῶν ζωϊκῶν παρασίτων ἐνδείκνυται ἡ κλάδευσις κατὰ τὸν χειμῶνα τῶν δευτερευόντων κλάδων, προστριβὴ τῶν προσβληθέντων μερῶν δι' ὑφάσματος ἐμβεβαπτισμένου εἰς πετρέλαιον, εἶτα ἐπίχρισις διὰ λευκοῦ κοινοῦ ἐλαιοχρώματος. Ἂν τὸ δένδρον εἶναι ὑψηλὸν καὶ καθίσταται ἀδύνατος ἡ ἀνωτέρω ἐπέμβασις, τότε γίνονται ψεκασμοὶ διὰ τοῦ ἑξῆς μείγματος: 5 ὀκάδες ὕδατος, 200 δράμια φωτιστικοῦ οἰνοπνεύματος καὶ 100 δράμια πρασίνου σάπωνος. Ταῦτα διὰ τὴν καταπολέμησιν τοῦ *σχιζονεύρου*. Διὰ τὴν καταπολέμησιν τοῦ *ὑπονομευτοῦ* γίνονται ψεκασμοὶ διὰ τοῦ ἑξῆς μείγματος: ὕδωρ 100 ὀκάδες, πετρέλαιον 2½ ὀκάδες, μέλας σάπων 2 ὀκάδες, καὶ 1 ὀκᾶ ἀνθρακικὴ σόδα.

—[*Ἱστορ.*] Ἡ καλλιέργεια τῆς *μηλέας* ἦτο γνωστὴ ἀπὸ τῶν προϊστορικῶν χρόνων. Ὁ Ὅμηρος ἀναφέρει πολλαχοῦ τὴν μηλέαν (*Ὀμ.* Ὀδύσ. η 115, ω 340). Ὁ Θεόφραστος ἀναφέρει πλείστας ποικιλίας τοῦ δένδρου τούτου (*ἀγρία, γλυκεῖα, δίφορος, ἐαρινή, ὀψίβλαστος, πρωΐβλαστος* κτλ). Ὁ Ἀθήναιος ἀναφέρει τὰς ποικιλίας: *ἠρινή, λακωγλυκέα, σιδουντία, φαβλία* κτλ., τοὺς δὲ καρποὺς τῶν διαφόρων ποικιλιῶν τῆς μηλέας ὀνομάζει *γλυκεῖς, δελφικούς, θερινούς, μοδιανούς, ὀξεῖς, ὀρβικουλάτους, φθινοπωρινούς, σητανίους* κτλ.

Αἱ φυτεῖαι τῶν μηλεῶν, ὡς καὶ σήμερον, ἐκαλοῦντο ὑπὸ τῶν ἀρχαίων *μηλῶνες* ἢ *μηλεῶνες* προστάτριαι δὲ τῶν φυτειῶν τούτων ἐθεωροῦντο αἱ *Μηλιάδες* ἢ *Ἐπιμηλίδες νύμφαι*. Ἡ καλλιέργεια τῶν δένδρων τούτων φαίνεται ὅτι ἦτο συστηματικὴ κατὰ τὴν ἀρχαιότητα καὶ κυρίως ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀθήναιος: «κάλλιστα μῆλα εὑρὼν ὁ Ἀλέξανδρος περὶ τὴν Βαβυλωνίαν χώραν, τούτων τε πληρώσας τὰ σκάφη μηλομαχίαν ἀπὸ τῶν νεῶν ἐποιήσατο, ὡς τὴν θέαν ἡδίστην γενέσθαι» (*Ἀθην.* Ζ, 277). Ὅπως δὲ καὶ σήμερον, οὕτω καὶ κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, ἐκ μήλων κατεσκευάζετο ὁ γνωστὸς *μηλίτης οἶνος* (*Πλουτάρχ.* 2,648, *Στράβ.* 11,526). Ὁ Διοσκορίδης ἀναφέρει ὅτι τὸ *μήλινον ἔλαιον*, τὸ *ὑδρόμηλον* καὶ τὸ *μηλόμελι* δὲν κατεσκευάζοντο ἐκ τῶν καρπῶν τῆς μηλέας, δηλαδὴ ἐκ τῶν μήλων, ἀλλ' ἐκ τῶν καρπῶν τῆς κυδωνέας, ἤτοι ἐκ *μήλων κυδωνίων* (κοιν. *κυδωνιῶν*), ὡς ἐπίσης ἐκ τῶν ἰδίων καρπῶν κατεσκευάζοντο καὶ τὸ *μήλινον μύρον*, τὸ *ῥοδόμηλον* καὶ ὁ *μηλοπλακοῦς*.

Ἡ καλλιέργεια τῆς μηλέας ἦτο ἐπίσης λίαν διαδεδομένη καὶ παρὰ τοῖς Ῥωμαίοις, οἵτινες ἐλάτρευον καὶ τὴν προστάτιδά της θεὰν *Πομόνην* (Pomona) καὶ ἦγον τὰ *Πομονάλια* ἢ *Πωμωνάλια*, ἑορτὴν καθ' ἣν προσεφέροντο εἰς τὴν θεὰν μῆλα καὶ ἕτεραι ὀπῶραι. Καὶ οἱ Ῥωμαῖοι ἐγνώριζον πλείστας ποικιλίας μηλέας. Ὁ Πλίνιος ἀναφέρει 25, ὧν αἱ περισσότεραι ἔφερον τὴν ὀνομασίαν τῶν πρώτων καλλιεργησάντων ταύτας, ἕτεραι ἔφερον τὰ ὀνόματα τοῦ τόπου τῆς προελεύσεώς των καὶ τέλος ἄλλαι ἐδανείζοντο τὸ ὄνομά των ἐκ τοῦ σχήματος τοῦ καρποῦ των ἢ τῶν φυλλαρίων, ἅτινα ἀναφαίνονται παρὰ τὸν καρπὸν των κτλ. Δ. Ν. Π.

**Μηλέα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Οἰτύλου τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 341. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Φαγριάνικα*. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Γαρμπελέα* (κάτ. 82), *Κάτω Χώρα* (κάτ. 192) καὶ *Ξανθιάνικα* (κάτ. 241). Δ. Ε. Μ.

—**Μηλέα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μετσόβου τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 704. Κεῖται εἰς τὰς ὑπωρείας τῆς Πίνδου, ἔχει κλίμα ὑγιεινὸν καὶ ὑδρεύεται ἐκ πηγῶν. Περιζώννυται ἀπὸ δάση ἐκτεταμένα ἐκ πεύκης, ἐλάτης καὶ ὀξυᾶς. Ἔχει σοβαρὰν κτηνοτροφίαν (αἰγοπρόβατα 5.500). Μετὰ τοῦ Μετσόβου συνδέεται διὰ βατῆς ὁδοῦ (ὥρ. 5) Δ. Ε. Μ.

**Μηλέαι** [*Γεωγρ.*]. Κωμόπολις κειμένη πρὸς τὴν ΝΔ. πλευρὰν τοῦ κατωτέρου ὁρίου τοῦ Πηλίου ὄρους καὶ βλέπουσα πρὸς τὸν Παγασητικὸν κόλπον. Ἡ κωμόπολις αὕτη ἀρχικῶς (ἴσως κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος) ἀπετελεῖτο ἀπὸ μικρὸν συνοικισμὸν πέριξ παλαιοῦ μοναστηρίου, διότι σχεδὸν ὅλα τὰ σημερινὰ χωρία τοῦ Πηλίου ἐκτίσθησαν πλησίον τῶν ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος ὑπαρχόντων μοναστηρίων, ὑπὸ προσφύγων καταφυγόντων ἐν τῷ Πηλίῳ ἐξ Εὐβοίας, πεδινῆς Θεσσαλίας καὶ ἀλλαχόθεν. Τὸ ὄνομα Μηλέαι ἐδόθη, διότι διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὴν περιοχὴν αὐτὴν ἐφυτεύθησαν ἄλλοθεν κομισθέντα τὰ ὁμώνυμα ὀπωροφόρα δένδρα, τὰ ὁποῖα τόσον πολὺ διεδόθησαν καὶ ἐκαλλιεργήθησαν ἔκτοτε εἰς ὅλην τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν τοῦ Πηλίου. Σήμερον ὅμως ἡ κτηματικὴ περιοχὴ τῶν Μηλεῶν εἶναι κατάφυτος ἀπὸ ἐλαιῶνας. Ἐπίνειον τῶν Μηλεῶν εἶναι τὰ *Καλὰ Νερά*. Ἀπὸ τοῦ τοῦ 1745 ἡ κωμόπολις εἶχε σχολεῖον τῶν κοινῶν γραμμάτων καὶ ἀργότερον, τῇ πρωτοβουλίᾳ τῶν δύο ὀνομαστῶν λογίων Ἀνθίμου Γαζῆ καὶ Γρηγορίου Κωνσταντᾶ, ἀπέκτησε καὶ ἀνωτέραν σχολὴν (1816) τὴν γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Μηλιώτικη σχολή» καθὼς καὶ σπουδαιοτάτην βιβλιοθήκην. Ὁ Ἄνθιμος Γαζῆς μάλιστα ἐσχεδίαζε νὰ ἱδρύσῃ εἰς τὴν γενέτειράν του ἀκαδημίαν, ἤτοι ἀνώτερον γυμνάσιον, ἀλλὰ δὲν ἐδόθη ἡ πρὸς τοῦτο ἄδεια ὑπὸ τοῦ σουλτάνου. Ἡ «Μηλιώτικη σχολή» ἦτο παράρτημα τῆς «Φιλομούσου Ἑταιρείας». Κατὰ τὴν πρὸ τῆς Ἐπαναστάσεως ἐποχὴν τῆς τουρκοκρατίας οἱ *Μηλιές* (οὕτω προφέρονται καὶ ὀνομάζονται ὑπὸ τῶν κατοίκων καὶ ἄλλων Πηλιορειτῶν) μετ' ἄλλων χωρίων ἐλέγοντο *Χάσια*. Καθ' ὅλην δὲ τὴν ἐποχὴν τῆς τουρκοκρατίας ἐπεκράτει, ὅπως εἰς ὅλα τὰ χωρία τῆς Θεσσαλικῆς Μαγνησίας, πλήρης αὐτοδιοίκησις. Κατὰ τὸ 1821,

*Πλατεῖα τῶν Μηλεῶν (Πηλίου).*

ὁ Ἄνθιμος Γαζῆς διεδραμάτισε σπουδαῖον ῥόλον, καθὼς καὶ ὁ ἐκ Μηλεῶν καταγόμενος Ἰωάννης Δήμου. Ἕδρα τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας διὰ τὴν νότιον Μακεδονίαν, Θεσσαλίαν καὶ Βόρειον Στερεὰν Ἑλλάδα ἦσαν αἱ Μηλέαι. Δι' αὐτὸ ἡ ἔναρξις τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Πηλίου (7/19 Μαΐου 1821) ἐγένετο ἀπὸ τὶς Μηλιές. Αἱ Μηλέαι ἦσαν τὸ μυστικὸν ὀργανωτικὸν κέντρον τῆς ἐπαναστάσεως διὰ Θεσσαλίαν καὶ νότιον Μακεδονίαν. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ἐθνικῆς ἐξεγέρσεως τῶν Μαγνήτων (Πηλιορειτῶν), αἱ Μηλέαι, ὡς καὶ τὰ ἄλλα χωρία, ἐπανῆλθον εἰς τὸ πρότερον διοικητικὸν καθεστώς. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων, Ἀνθ. Γαζῆ καὶ Γρηγ. Κωνσταντᾶ, αἱ Μηλέαι εἶναι πατρὶς καὶ τοῦ Δανιὴλ Φιλιππίδου, ὀνομαστοῦ διὰ τὴν ἐθνικὴν του κατάρτισιν κατὰ τὴν πρὸ τοῦ 1821 κυρίως περίοδον.

Ὁ πληθυσμὸς τῶν Μηλεῶν σήμερον ἀνέρχεται εἰς 3.000 κατοίκους περίπου. Συγκοινωνεῖ μὲ τὸν Βόλον ἀπὸ τοῦ 1903 διὰ σιδηροδρόμου (ἐπέκτασις τοῦ Θεσσαλικοῦ). Τὰ κυριώτερα εἰσοδήματα τοῦ χωρίου τούτου εἶναι τὸ ἔλαιον καὶ αἱ ἐλαῖαι (καρπός) καὶ ὀλίγοι δημητριακοὶ καρποί, παραγόμενοι εἰς τὰς μικρὰς παραλίους πεδιάδας τῶν Μηλεῶν Μπούφα καὶ Ζερβόχια, τὰς ὁποίας διαρρέουσιν ὁμώνυμοι μικροὶ ποταμίσκοι. Πλησίον τῆς κτηματικῆς περιοχῆς τῶν Μηλεῶν ὑπάρχουν ἐρείπια ἀρχαϊκῆς καὶ βυζαντινῆς ἐποχῆς, εὑρέθησαν δὲ κατὰ καιροὺς καὶ διάφοροι προτομαὶ καὶ πλάκες μετ' ἐπιγραφῶν ἀρχαίων. Εἰς μίαν δ' ἐξ αὐτῶν, εὑρεθεῖσαν ἐν τῇ παρὰ τὴν θέσιν Μπούφα Παλιοκκλησιά, ἡ ἐπιγραφὴ ὁμιλεῖ περὶ πωλήσεως τῶν δορῶν τῶν ἱερείων ἐνώπιον τῶν ἀρχόντων, παρόντος καὶ τοῦ ἱερέως τοῦ Ἀκραίου Διός. Ἐκ τῆς ἐπιγραφῆς ταύτης καὶ ἐξ ἄλλων ἰδίας ἐποχῆς, εἰκάζεται ὅτι ὁ ἱερεὺς τοῦ ἱεροῦ τοῦ ὑπάρξαντός ποτε παρὰ τὴν θέσιν ταύτην ἐξήσκει ἐποπτείαν ἐφ' ὅλων τῶν πόλεων τῆς Μαγνησίας. Αἱ Μηλέαι συνορεύουσι μὲ τὰ χωρία Βυζίτσα καὶ Πιναχάτες. Ἀπό τινων ἐτῶν εἰς τὰς Μηλέας ὑπάρχει καὶ ἀγροκήπιον. Κατὰ τὴν παλαιὰν διοικητικὴν διαίρεσιν, αἱ Μηλέαι ἦσαν πρωτεύουσα ὁμωνύμου δήμου. Γ. Κ. ΚΟΡ.

— **Μηλέαι** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἱστιαίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ.(1928) 399. Κεῖται εἰς τὰ ΒΑ. τῆς Εὐβοίας ἐπὶ ὀροπεδίου, ἔχει κλίμα ὑγιεινὸν καὶ ὑδρεύεται ἐκ πηγῶν καὶ φρεάτων. Περιζώννυται ὑπὸ δασῶν ἐκ πεύκης, πλατάνου καὶ κομάρου καὶ ἄλλων θάμνων. Παράγει δημητριακά. Ἔχει μονοτάξιον δημοτικὸν σχολεῖον (μαθ. 50). Δ. Ε. Μ.

—**Μηλέαι** (κοιν. *Μηλιές*) [*Γεωγρ.*]. Μεσόγειος συνοικισμὸς τῆς νήσου Λέσβου, ἐν τῇ κοινότητι Πλαγιᾶς τῆς ἐπαρχίας Πλωμαρίου. Κάτ. (1928) 78. Κεῖται βορείως τοῦ Τριγώνου, μεθ' οὗ ἄλλοτε ἀπετέλει κοινότητα, ἀπέχει δὲ ἀπὸ Μυτιλήνης 28 χιλιόμετρα. Π. Ν. Π.

**μηλεϊναλδεϋδοξύ** (τὸ) [*Ὀργ. Χημ.*]. Ἀκόρεστον ἀλδεϋδοξὺ τοῦ τύπου: HOC.CH : CH.COOH, λαμβανόμενον διὰ προσεκτικῆς ἐπιδράσεως ἀλκοολικοῦ διαλύματος βρωμίου ἐπὶ πυροβλεννικοῦ ὀξέος. Δεικνύει σαφῆ ἀλδεϋδικὸν χαρακτῆρα καὶ τήκεται εἰς 55°. Σ. Γ.

**μηλεϊνικὸν ὀξύ**, ἢ *μηλεϊκὸν ὀξὺ* [*Ὀργ. Χημ.*]. Καλεῖται οὕτως ἡ μία ἐκ τῶν δύο στερεοϊσομερῶν μορφῶν τοῦ *αἰθυλενοδικαρβονικοῦ ὀξέος* - (1, 2), ὅπερ ἔχει τὸν τύπον HOOC. CH : CH. COOH. Αἱ δύο στερεοϊσομερεῖς μορφαὶ ἔχουσι τοὺς τύπους:

| | | |
|---|---|---|
| HOOC—C—H<br>‖<br>H—C—COOH | καὶ | H—C—COOH<br>‖<br>H—C—COOH |
| φουμαρικὸν ὀξὺ | | μηλεϊνικὸν ὀξύ |

Εἰς τὸ μηλεϊνικὸν ὀξὺ ἀποδίδεται ὁ δεύτερος τύπος, διότι μόνον τοῦτο σχηματίζει ἐσωτερικὸν ἀνυδρίτην καὶ ἐπίσης τὴν ἄποψιν αὐτὴν ἐνισχύει καὶ τὸ γεγονὸς ὅτι δύναται τοῦτο νὰ παρασκευασθῇ δι' ὀξειδώσεως τῆς βενζοκινόνης. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸ ἰσομερὲς αὐτῷ *φουμαρικὸν ὀξύ*, ὅπερ ἀνευρέθη ἀρκούντως διαδεδομένον ἐν τῇ φύσει, τὸ μηλεϊνικὸν ὀξὺ οὐδέποτε παρετηρήθη. Σχηματίζεται ὁμοῦ μετὰ τοῦ φουμαρικοῦ κατὰ τὴν διὰ θερμάνσεως ἀφυδάτωσιν τοῦ *μηλικοῦ ὀξέος* (ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα). Κρυσταλλοῦται εἰς ῥομβικὰ πρίσματα, εἶναι λίαν εὐδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ, τήκεται εἰς 130°—130°,5 καὶ ἄρχεται βράζον εἰς 160°, ὁπότε διασπᾶται εἰς ὕδωρ καὶ *μηλεϊνικὸν ἀνυδρίτην*

H—C—CO\
‖ >O, ὅστις
H—C—CO/

τήκεται εἰς 53° καὶ βράζει εἰς 202°. Ὁ ἀνυδρίτης οὗτος διαλυόμενος εἰς τὸ ὕδωρ μετατρέπεται πάλιν εἰς *μηλεϊνικὸν ὀξύ*. Σ. Γ.

**μηλεϊνιμίδιον** (τὸ) [*Ὀργ. Χημ.*]. Ὀργανικὴ ἕνωσις τοῦ τύπου

CH—CO\
‖ >NH
CH—CO/

λαμβανομένη δι' ὀξειδώσεως τοῦ *πυρρολίου*. Λευκὸν κρυσταλλικὸν σῶμα, τηκόμενον εἰς 93°. Σ. Γ.

**μήλειος,—α,—ον**· ὁ τῆς μηλέας: «μήλειον ξύλον».

**μηλειὸς** (ὁ) [*Βοτ.*]. Ἑτέρα κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἰξία ἡ λευκή*.

**μηλείτης** (ὁ) [*Ὀργ. Χημ.*]. Καλεῖται οὕτω ἡ λακτόνη τοῦ *γ-ὀξυκροτωνικοῦ* ὀξέος

$(HO)_2$ (OH). CH : CH. COOH

ὅπερ δὲν εἶναι γνωστὸν εἰς ἐλευθέραν κατάστασιν. Ἐκλήθη οὕτω διότι θεωρητικῶς δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς προϊὸν ἀναγωγῆς τοῦ μηλεϊνικοῦ ἀνυδρίτου. Εἶναι εὐδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ, ἀνάγει ἀμμωνιακὸν διάλυμα νιτρικοῦ ἀργύρου πρὸς κάτοπτρον, τήκεται εἰς 4° καὶ βράζει ὑπὸ πίεσιν 13 χιλστμ. εἰς 95°. Σ. Γ.

**Μήλεον** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Νουμιδίᾳ, ἡ ἄλλως καλουμένη *Μιλεύη* ἢ *Μίλεον* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**μηλέος** (ὁ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λώρανθος ὁ εὐρωπαϊκός*.

**Μήλεσι** (τὸ) [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς Β. Ἀττικῆς, κείμενον κατὰ τὴν μεταξὺ Δεκελείας καὶ Ὠρωποῦ ὁδὸν καὶ ἔχον 231 κατοίκους. Ἀνήκει εἰς τὴν κοινότητα Μαρκοπούλου Ὠρωπίων τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Ι. Σ. Σ.

**Μηλέσκος Νικόλαος Σπαθάριος** (*Μολδαβολάκων*). Ἐγεννήθη τῷ 1625 ἐν Μολδαβίᾳ καὶ ἐσπούδασεν ἐν Κωνσταντινουπόλει ὑπὸ τὸν Βλάσιον Γαβριὴλ τὴν ἑλληνικὴν καὶ λατινικήν, φιλοσοφικὰ καὶ θεολογίαν, καὶ κατόπιν εἰς Ἰταλίαν ἀπελθὼν διέτριψε περὶ τὰ φυσικὰ καὶ μαθηματικά. Εἰς

Digitized by Google

Μολδαβίαν ἐπιστρέψας οὕτω καλῶς μορφωμένος προσελήφθη ἐπὶ τοῦ ἡγεμόνος Στεφάνου Γεωργίου τῷ 1653 ὡς γραμματεύς. Ἐκείνου ἀποθανόντος τῷ 1657, προσεκολλήθη τῷ διαδόχῳ Γεωργίῳ Γκίκᾳ καὶ μετ' αὐτὸν τῷ Στεφανίτσῃ, ὅστις ἀπέστειλεν αὐτὸν ἀντιπρόσωπον εἰς Σουηδίαν, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1667, ὅτε ἐπανελθὼν εἰς Μολδαβίαν, ἤδη κατατεταγμένος εἰς τὴν τάξιν τῶν βογιάρων, ἔλαβε τὸ ὄνομα Μηλέσκος ἐκ τοῦ κτήματός του Μηλέστι. Ὁ ἡγεμὼν Δούκας ἐξετίμα αὐτὸν ἰδιαζόντως, ἀλλ' ἐκείνου πεσόντος τῷ 1669 ἐξωρίσθη εἰς Μόσχαν τῷ 1672. Ἐπιτήδειος διπλωμάτης ὤν, ηὐνοήθη ὑπὸ τοῦ τσάρου Ἀλεξίου Μιχαήλοβιτς καὶ ἀπεστάλη τῷ 1675 μετὰ συνοδείας εἰς Κίναν διὰ Σιβηρίας πρὸς μελέτην. Ἐπὶ μακρὸν περιηγηθεὶς ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Μόσχαν τῷ 1678 καὶ συνέγραψε τὰ κατὰ τὴν περιήγησίν του, διαταχθεὶς συγχρόνως νὰ καταρτίσῃ σχέδιον ἀκαδημίας ἑλληνο-λατινο-σλαβονικῆς, προσκολληθεὶς καὶ ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐξωτερικῶν ὡς διερμηνεὺς τῶν πρέσβεων. Πάσας ταύτας τὰς ὑψηλὰς λειτουργίας ἐπετέλεσε μετὰ μεγίστης εὐφυΐας καὶ λεπτότητος διπλωματικῆς. Συγγράφων δὲ (καὶ ἔγραψεν ὑπὲρ τὰ 20 ἔργα) ἀπέθανε τῷ 1714, καταλιπὼν τέκνα καὶ ἐγγόνους. Τῶν δ' ἔργων αὐτοῦ—ὧν κυριώτερα ἡ εἰς τὸ ρουμουνικὸν μετάφρασις τῆς ἱερᾶς Βίβλου, τὸ ἐγχειρίδιον καὶ ἡ περὶ Σιβηρίας καὶ Κίνας περιγραφή—ἄλλα μὲν ἐτυπώθησαν, ἄλλα δὲ κεῖνται ἐν χειρογράφοις ἐν διαφόροις βιβλιοθήκαις. Τ. Ε. Ε.

**μηλεών, —ῶνος** (ὁ)· τόπος κατάφυτος μηλεῶν.

**μήλη** (ἡ). Καλεῖται οὕτω στειλεὸς λεπτός, μεταλλικός, ἐξ ἀργύρου ἢ χάλυβος, μήκους 0,10—0,12 μ. ἢ καὶ πλέον, οὗ τὸ μὲν πρόσθιον ἄκρον εἶναι στρογγύλον, τὸ δ' ὀπίσθιον καταλήγει εἰς ὠτίον

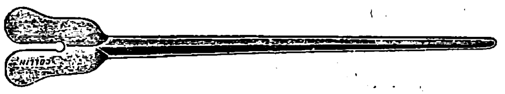

*Μήλη αὐλακωτή.*

χρησιμεῦον πρὸς λαβήν (*μήλη ὠτιοφόρος*). Ἡ μήλη ἢ εἶναι στρογγύλη καθ' ὅλον τὸ μῆκος αὐτῆς, ἢ φέρει αὔλακα εὐρεῖαν, ἐν ᾗ εὐκόλως δύναται νὰ κινῆται τὸ μαχαιρίδιον (*αὐλακομήλη*). Ἡ ἁπλῆ μήλη

*Διπλῆ μήλη τοῦ Bowman.*

χρησιμεύει πρὸς ἐξέτασιν τῶν συριγγωδῶν πόρων, πρὸς καθορισμὸν τοῦ βάθους αὐτῶν, πρὸς βεβαίωσιν ὑπάρξεως ἀλλοτρίων σωμάτων εἰς διάφορα τραύματα, ἢ ἀπολυμάτων ὀστοῦ, ἐπὶ ὀστεομυελιτί-

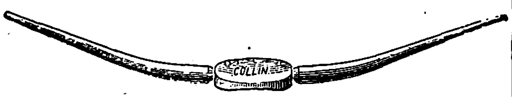

*Μήλη τοῦ Weber.*

δων κ. τ. τ. Τῆς αὐλακωτῆς μήλης γίνεται χρῆσις ἰδίως ἐπὶ τῶν συριγγίων, ἵνα, εἰσωθουμένης ταύτης ἐν αὐτοῖς, φέρηται ἡ ράχις τοῦ μαχαιρίου ἐπὶ τῆς αὔλακος καὶ προφυλάσσωνται οὕτω ἀπὸ τῆς τρώ-

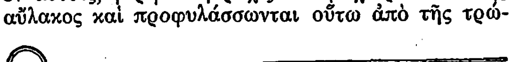

*Μήλη τοῦ Anel.*

σεως οἱ παρακείμενοι ἢ ὑποκείμενοι ἱστοί. Ἐν τῇ ὀφθαλμολογίᾳ διὰ τοὺς δακρυϊκοὺς πόρους γίνεται χρῆσις τῶν μηλῶν τῶν Bowman, Weber καὶ Anel. Ι. Κ. Κ.

**Μήλης.** Οὗτος, ἄγνωστον πότε ἀκμάσας, μετήρχετο τὸν ὑμνῳδὸν τῶν μαρτύρων τῆς Ἐκκλησίας· διὰ τοῦτο καὶ αὕτη τὸν τιμᾷ τῇ 8 Μαΐου.

**Μήλια,** ἢ ***Μύλια*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Θεσπρωτίας τῆς ἀρχαίας Ἠπείρου, κειμένη κατά τινας εἰς τὰ περὶ τὸ σημερινὸν χωρίον Βελτσίστα, ἀπέχον 22 χλμ. ΒΔ. τῶν Ἰωαννίνων, εὑρισκόμενα ἐρείπια. Ὁ Ἀραβαντινὸς τοποθετεῖ ταύτην εἰς τὰ παρὰ τὸ χωρίον τῆς ἐπαρχίας τῆς Παραμυθιᾶς *Βέλιανη* κείμενα ἐρείπια. Χ. Ι. Σ.

**μηλιά** (ἡ). Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μηλέα*.

**Μηλιά** *[Γεωγρ.].* —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἀλμωπίας (πρώην Ἐνωτίας) τοῦ νομοῦ Πέλλης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 668. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Καρλάτ*. Παράγει σιτηρά, βάμβακα, σήσαμον, ρόβην καὶ ὄσπρια. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ χωρίον *Ριζοχώρι* (πρότερον *Ρούζινο*).

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωρίδος τοῦ νομοῦ Φθιωτιδοφωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 413.

—3) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Περδικακίου (πρώην Σακαρετσίου) τῆς ἐπαρχίας Βάλτου τοῦ νομοῦ Αἰτωλοακαρνανίας. Κάτ. (1828) 71.

—4) Χωρίον τῆς κοινότητος Στεφάνου (πρώην Γόλιανης) τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλοακαρνανίας. Κάτ. (1928) 117.

—5) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καταφύτου (πρώην Κόττορι) τῆς ἐπαρχίας Καλαμπάκας τοῦ νομοῦ Τρικκάλων. Κάτ. (1928) 50.

—6) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πιερίας (πρώην Κατερίνη) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 612. Κεῖται ἐπὶ τῶν Α. κλιτύων τοῦ Πιέρου. Ὑψηλότερον (ὑψόμ. 1020 μ.) κεῖται ἡ *Ἄνω Μηλιά*, ἀποτελοῦσα θέρετρον τῶν κατοίκων Κατερίνης καὶ Θεσσαλονίκης. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Καρυαί, Σκοτεινὰ* (πρώην *Μόρνα)* καὶ *Φτέρη*. Ἡ κοινότης ἔχει ἰδιόκτητον δάσος 50.000 στρεμμάτων. Μετὰ τῆς Κατερίνης συγκοινωνεῖ δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ (χλμ. 18).

—7) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 242.

—8) Χωρίον τῆς κοινότητος Κυπρίνου τῆς ἐπαρχίας Ὀρεστιάδος τοῦ νομοῦ Ἕβρου. Κάτ. (1928) 427. Δ. Ε. Μ.

— **Μηλιὰ *Μικρὴ*** *[Γεωγρ.]·* βλ. λ. *Μικρὴ* Μηλιά.

**Μηλιάδης, *Γιάννης*.** Ἕλλην ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1895. Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν καὶ τῷ 1925 διωρίσθη ἔφορος ἀρχαιοτήτων τῆς Βορειοδυτικῆς Ἑλλάδος καὶ Κερκύρας. Διενήργησεν ἀνασκαφὰς ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ ἀρχαίου Ἀγρινίου καὶ εἰς ἄλλας ἀρχαιολογικὰς τοποθεσίας τῆς περιφερείας, ἵδρυσε μουσεῖον ἐν τοῖς ἀνακτόροις τῆς πόλεως Κερκύρας καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐκεῖ ἐπίσης συσταθέντος Σινικοϊαπωνικοῦ μουσείου. Ἐδημοσίευσε διαφόρους ἀρχαιολογικὰς καὶ φιλολογικὰς μελέτας ἐν περιοδικοῖς καὶ ἐξέδωκε τὸ μεσαιωνικὸν ἐπύλλιον «Βέλθανδρος καὶ Χρυσάντζα» (Ἀθῆναι 1925) μετὰ εἰσαγωγῆς καὶ «Ὁδηγὸν τῶν Δελφῶν». Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Β. Δ. Θ.

**Μηλιακὸς κόλπος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Ἡ κατὰ Θουκυδίδην (Γ, 96) ὀνομασία τοῦ *Μαλιακοῦ* κόλπου (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μηλιανὰ** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ νομοῦ Ἄρτης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 552. Ἔχει δάση ἐκ δρυὸς καὶ ἐλάτης καὶ παράγει σιτηρά. Δ. Ε. Μ

**Μηλιαρᾶδες** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πεδιάδας τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 359. Εἰς τὰς παλαιοτέρας ἀπογραφὰς φέρεται *Μηλιαράδω*. Ε. Γ.

**Μηλιαράκης, *Ἀντώνιος*.** Ἱστορικὸς καὶ γεωγράφος, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις (1841—1905). Διήκουσε μαθήματα νομικῆς ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ, τῷ δὲ 1862 διωρίσθη στενογράφος τῆς Ἐθνικῆς Συνελεύσεως καὶ παρέμεινε τοιοῦτος καὶ εἰς τὰς κατόπιν βουλάς. Ἐν τῷ μεταξὺ κατεγίνετο εἰς γεωγραφικὰς καὶ ἱστορικὰς μελέτας, συνεπείᾳ τῶν ὁποίων τῷ 1879 προσελήφθη ὡς ἀκόλουθος τῆς τριμελοῦς ἐπιτροπῆς, ἥτις ἐστάλη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως εἰς Πρέβεζαν πρὸς καθορισμὸν τῶν συνόρων τῶν νέων ἐπαρχιῶν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν ἀντιπροσώπων τῆς Ὑψηλῆς Πύλης. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων ἱδρυτῶν τῆς ἐν ἔτει 1881 συσταθείσης «Ἱστορικῆς καὶ Ἐθνολογικῆς Ἑταιρείας τῆς Ἑλλάδος», τῆς ὁποίας διετέλεσεν ἰσόβιος γενικὸς γραμματεύς. Διὰ τῆς ἀκαμάτου φιλοπονίας καὶ τοῦ ἐρευνητικοῦ του πνεύματος ἔγραψε πλῆθος γεωγραφικῶν καὶ ἱστορικῶν ἔργων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Κυκλαδικά» (1874), «Ὀλίγαι λέξεις περὶ τῆς καταγωγῆς τοῦ Σκενδέρμπεη» (1876), «Ὁδοιπορικὰ Μακεδονίας, Ἠπείρου καὶ Θεσσαλίας κατὰ τὸν E. Isambert» (1878), «Ὑπομνήματα περιγραφικὰ τῶν Κυκλάδων νήσων» (1880), «Ἀμοργὸς» (1884), «Ὁδηγὸς τῶν ἁπλῶν τοπογραφικῶν περιγραφῶν» (1886 καὶ 1901), «Γεωγραφία πολιτικὴ νέα καὶ ἀρχαία τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας» (1886), «Μελέτη περὶ τῆς θέσεως τοῦ Ἰονίου Πελάγους» (1888), «Νεοελληνικὴ γεωγραφικὴ φιλολογία, ἤτοι κατάλογος τῶν ἀπὸ τοῦ 1800—1889 γεωγραφηθέντων ὑπὸ Ἑλλήνων», «Γεωγραφία πολιτικὴ νέα καὶ ἀρχαία τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας» (1890), «Ἱστορία τοῦ βασιλείου τῆς Νικαίας καὶ τοῦ δεσποτάτου τῆς Ἠπείρου» (1898), «Κίμωλος» (1902), «Βασίλειος Διγενὴς Ἀκρίτας», «Δανιὴλ Φιλιππίδης καὶ ἡ Γεωγραφία αὐτοῦ» (1885), «Ζακύνθου γεωγραφικὸν διάγραμμα» (1893), «Περὶ τῶν Ἐλγινείων μαρμάρων» (1888), «Περὶ φεσίου» (1893), «Νησιογραφικὰ κατὰ τὴν γεωγραφίαν τοῦ Ἄραβος Ἐδριζῖ», «Ἰωάννης καὶ Θεοδόσιος Ζυγομαλᾶς», «Μητροφάνης Κριτόπουλος», «Περὶ τοῦ Κεφαλλῆνος ζωγράφου καὶ ἀρχιτέκτονος Γερασίμου Πιτσαμάνου», «Ἡ ἁρπαγὴ τοῦ ἀγάλματος τῆς Ἀφροδίτης τῆς Μήλου» καὶ πολλὰς ἄλλας μελέτας δημοσιευθείσας ἐν διαφόροις περιοδικοῖς καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν «Ἑστίαν», τὴν «Ἐπετηρίδα τοῦ Παρνασσοῦ», τὸ «Δελτίον τῆς Ἱστορικῆς καὶ Ἐθνολογικῆς Ἑταιρείας», τὴν «Ἁρμονίαν», τὴν «Διεθνῆ Ἐφημερίδα τῆς Νομισματικῆς Ἀρχαιολογίας» κτλ. Πολλὰ τῶν συγγραμμάτων του ἐβραβεύθησαν ὑπὸ τοῦ ἐν Παρισίοις «Συλλόγου πρὸς ἐνθάρρυνσιν τῶν Ἑλληνικῶν Σπουδῶν». Ὁ Μηλιαράκης ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἑλλάδα ἐν τῷ γεωγραφικῷ συνεδρίῳ τῆς Βενετίας. Δ. Π. ΠΑΣΧΑΛΗΣ

— **Μηλιαράκης, *Σπυρίδων*.** Βοτανικὸς καὶ ζωολόγος, νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις (1852—1919).

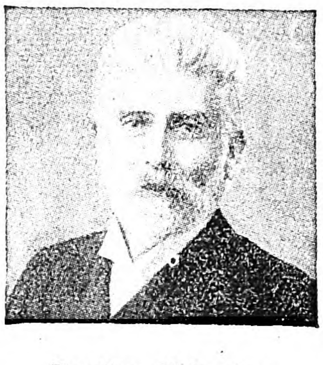

*Σπυρίδων Μηλιαράκης.*

Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ καὶ τυχὼν διπλώματος τῷ 1876 ἐξήσκησεν ἐπὶ βραχὺ τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ ἐν Σκοπίοις τῆς Μακεδονίας. Διὰ τὴν ἐξαιρετικὴν ροπήν του πρὸς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας, εἰς ἃς καὶ τὰ πρῶτά του δημοσιεύματα ἀναφέρονται, ἀπεστάλη τῷ 1881 ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως εἰς Γερμανίαν πρὸς σπουδὴν αὐτῶν καὶ εἰδικῶς τῆς βοτανικῆς. Τῷ 1884 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βυρτσβούργου, κατὰ τὸ αὐτὸ δὲ ἔτος κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα διωρίσθη ἐπιμελητὴς τοῦ Βοτανικοῦ μουσείου τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου καὶ κατόπιν καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἱστορίας ἐν τῷ Πρακτικῷ λυκείῳ. Τῷ 1892 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ, παραμείνας τοιοῦτος μέχρι τοῦ 1918. Συνέγραψε καὶ ἐδημοσίευσεν ἀρκετὰς ἐπιστημονικὰς πραγματείας καὶ διδακτικὰ συγγράμματα, ἐν οἷς: «Μελετήματα ἐκ τῆς φυσικῆς ἱστορίας» (1876), «Βοτανικὰ μελετήματα» (1882), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν βοτανικήν» (1882), «Περὶ ἀφομοιώσεως τῶν φυτῶν» (1885), «Περὶ πρωτοπλάσματος» (1893), «Τὰ βακτήρια καὶ σχιζοφύκη» (1896), «Ἐγχειρίδιον βοτανικῆς πρὸς χρῆσιν τῶν φοιτητῶν» (1903 καὶ 1908), «Die verkieselung lebender Elementarorgane bei den Pflanzen» (1887), «Beiträge zur Kentnisse der Algenvegetation von Griechenland. Die Meeres-Algen der Insel Sciathos» (1887), «Tylogonus Agavae. Ein Beitrag zur Kentnisse der niederen endophytischen Pilze» (1888), «Περὶ ἐπιδράσεως τοῦ κλίματος ἐπὶ τοῦ ἀνθρώπου» (μετ. ἐκ τοῦ γερμ.), «Βιογραφία τοῦ Καρόλου Δάρβιν». Ἐπίσης ἐξέδωκε τὸν «Βιολογικὸν Ἐρανιστὴν» (1917). Δ. Α. Δ.

**Μηλιαρᾶς, *Ἐμμανουήλ*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός. Συμμετέσχε τῆς Κρητικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1866—1869, διακριθεὶς εἰς πάσας τὰς ἀνὰ τὴν ἀνατολικὴν Κρήτην ἐπιχειρήσεις. Ν. ΚΛΣ

**Μηλιαρίσι** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀρκαλοχωρίου τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 78. Ε. Γ.

**Μήλιας, *Σπυρίδων*.** Κληρικὸς καὶ ἱεροκῆρυξ, γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ. Λόγῳ τῆς παιδείας αὐτοῦ, τὸ οἰκουμενικὸν πατριαρχεῖον ἀνέδειξεν αὐτὸν τοποτηρητὴν τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Φιλαδελφείας ἐν Βενετίᾳ, ὅπου ὑπηρέτησεν ὡς ἐφημέριος τῷ 1759 καὶ 1760. Ἐνταῦθα ἐπεστάτησε καὶ εἰς τὴν ἐκτύπωσιν «Μηναίων» τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἀκολουθίας (1768), τῷ 1758 ἐπεμελήθη τῆς ἐκ νέου ἐκδόσεως τῆς «Ἱεροκοσμικῆς ἱστορίας» τοῦ Νεκταρίου, τῷ 1773 ἐξέδωκε τὰς «Διδαχὰς» αὐτοῦ, τῷ δὲ 1785 τὸ καὶ σήμερον ἔτι χρησιμώτατον «Ἐπιστολάριον». Τὸ διαιωνίζον ὅμως τὴν μνήμην αὐτοῦ ἔργον εἶναι ἡ «Νέα καὶ δαψιλεστάτη συλλογὴ» τῶν πρακτικῶν τῶν Οἰκουμενικῶν κυρίως συνόδων, ἐκδοθεῖσα τῷ 1761 καὶ 1762 εἰς δύο τόμους ἐν Βενετίᾳ, καίτοι ἐπιγράφει τόπον τῆς ἐκδόσεως τοὺς Παρισίους. Μ. Ι. Γ.

**μηλίγγι** (τό)· συνήθ. πληθ. *μηλίγγια* (τά)· δημοτ., οἱ μήνιγγες: «ἔχω πόνους 'ς τὰ μηλίγγια», «τὸν χτύπησε 'ς τὰ μηλίγγια».

**Μηλιγγοὶ** (οἱ) *(Μελίγγοι, Μιλένζοι, Μιλτζᾶνοι, Μηλίγγοι* καὶ *Μιληγγοί).* Φῦλον σλαβομιγές, ἐγκατασταθὲν κατὰ τοὺς μέσους χρόνους μετὰ τῶν *Ἐζεριτῶν*, ἐν Ταϋγέτῳ ἰδίως. Σχεδὸν ἀνεξάρτητοι καὶ εἰδωλολάτραι, ὑπετάγησαν καὶ ἐξεχριστιανίσθησαν κατὰ τὸν Θ΄ αἰῶνα ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ τῆς Πελοποννήσου Θεοκτίστου Βρυεννίου. Ὅτε οἱ Φράγκοι ἡγεμόνες τοῦ Μορέως ἐπεχείρησαν νὰ ἀνακτήσωσι κάστρα κυριευθέντα ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, ὁ Μιχαὴλ ὁ Παλαιολόγος (1262—1278) ἐκάλεσε τοὺς Μηλιγγοὺς εἰς βοήθειαν (βλ. λ. *Ἐζερῖται*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Π. Γ. Ζερλέντη,* Μηλιγγοὶ καὶ Ἐζερῖται Σλάβοι ἐν Πελοποννήσῳ (Ἑρμούπολις 1922).—*Σ. Π. Λάμπρου,* «Νέος Ἑλληνομνήμων» (τόμ. Γ΄, σ. 200 καὶ ΚΑ΄, σ. 215).—*W. von Regel,* Analecta Byzantino-Russica (Petropoli 1891, σ. 65 καὶ ἑξ.). Τ. Ε. Ε.

Digitized by Google

**μηλιγγόνι**, ἡ *μελιγγόνι* (τό)· δημώδης ὀνομασία, ἐν Μεσσηνίᾳ, Κρήτῃ καὶ ἀλλαχοῦ, τοῦ μύρμηκος.

**Μηλιὲς** *[Γεωγρ.]*. Δύο χωρία τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἀποτελοῦντα ἰδίας κοινότητας. Τὸ πρῶτον κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Ὀλυμπίας, ½ ὥραν πρὸς Β. τῆς Δούκας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 357. Τὸ δεύτερον κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Πηνείων, 2 ὥρας πρὸς Β. τῆς Ἐφύρας (Δελήμπαλι), ὀνομαζόμενον πρότερον *Μπούρδανον*. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 584. Χ. Δ.

**Μηλιεὺς** *κόλπος [Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ καθ' Ἡρόδοτον (Δ' 33) καὶ Πολύβιον (Θ, μα, 11) ὀνομασία τοῦ *Μαλιακοῦ κόλπου*. Σ. Ε. Λ.

**Μηλίκοβον** (Melicobus) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἀνεξαρτήτου Γερμανίας, ἐκτεινόμενον μεταξὺ τῶν ποταμῶν Βισούργιος καὶ Ἄλβεως. Εἶναι τὸ σημερινὸν *Χάρτς* (Harz) μεταξὺ Ἀννοβέρου καὶ Βρουνσβίκης, ὕψους 1.140 μέτρων. Α. Θ. Σ.

**μηλικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται τὸ *μονυδροξυλιωμένον ἠλεκτρικὸν ὀξὺ* τοῦ τύπου:

HOOC. CH(OH). $CH_2$.COOH.

Λόγῳ τῆς παρουσίας ἑνὸς ἀσυμμέτρου ἀτόμου ἄνθρακος ἔχομεν δύο ὀπτικῶς ἐνεργοὺς μορφάς, τὴν d- καὶ τὴν l-, καὶ μίαν ἀνενεργὸν δι' ἐξωμοιωρακῆς ἀντισταθμίσεως. Καὶ αἱ τρεῖς μορφαὶ εἶναι γνωσταί, ἐξ αὐτῶν ὅμως ἐν τῇ φύσει ἀπαντᾷ μόνον τὸ *ἀριστεροστρόφον μηλικὸν ὀξύ*, ὅπερ καὶ ἁπλῶς *μηλικὸν ὀξὺ* καλεῖται. Τοῦτο ἀνευρέθη τὸ πρῶτον τῷ 1775 ὑπὸ τοῦ Scheele εἰς τὰ ἄωρα μῆλα καὶ τοὺς καρποὺς τοῦ φραγκοσταφύλου, περαιτέρω δὲ ἀπαντᾷ ἀφθονώτατα διαδεδομένον εἰς τὸ φυτικὸν βασίλειον, εἴτε ὡς ἐλεύθερον, εἴτε ὑπὸ τὴν μορφὴν ἁλάτων (μετὰ καλίου, ἀσβεστίου, μαγνησίου), ἢ ἄλλων πολυπλοκωτέρων ἑνώσεων μετ' ἄλλων ὀργανικῶν σωμάτων. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ γλεῦκος τῶν σταφυλῶν, ἐλαττούμενον βαθμηδὸν κατὰ τὴν ἀλκοολικὴν ζύμωσιν λόγῳ μετατροπῆς αὐτοῦ εἰς γαλακτικὸν ὀξύ. Εἶναι ἄχρουν καὶ ἄοσμον κρυσταλλικὸν σῶμα, γεύσεως ὑφαλμύρου, διαλυτὸν εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν ἀλκοόλην, δυσδιάλυτον εἰς τὸν αἰθέρα καὶ ἀδιάλυτον εἰς τὸ χλωροφόρμιον. Τήκεται εἰς 100° καὶ εἰς ἀραιὰ ὑδατικὰ διαλύματα στρέφει πρὸς τὰ ἀριστερά· ἐφ' ὅσον ὅμως αὐξάνεται ἡ πυκνότης, καθίσταται *ἀνενεργὸν* καὶ τέλος δεξιοστρόφον. Δι' ἀναγωγῆς δι' ὑδροϊωδίου παρέχει ἠλεκτρικὸν ὀξὺ καὶ διὰ θερμάνσεως μετατρέπεται εἰς φουμαρικὸν ὀξὺ ἢ μηλεϊνικὸν ἀνυδρίτην. Τὸ μετὰ σιδήρου ἅλας τοῦ μηλικοῦ ὀξέος χρησιμοποιεῖται ὡς φάρμακον κατὰ τῆς ἀναιμίας. Τὸ δεξιοστρόφον, ὡς καὶ τὸ ἀνενεργὸν μηλικὸν ὀξύ, παρεσκευάσθη μόνον συνθετικῶς. Τὸ μηλικὸν ὀξὺ σχηματίζει ἅλατα, ὧν χαρακτηριστικὰ εἶναι τὰ ὄξινα, ὡς λ. χ. τὸ ὄξινον μηλικὸν ἀμμώνιον, τὸ ὄξινον μηλικὸν ἀσβέστιον. Ἐπίσης σχηματίζει ἐστέρας, ἀμίδια κλπ. Σ. Γ.

**Μηλίνα** *[Γεωγρ.]*. Παράλιον ἐν τῷ Παγασιτικῷ χωρίον τῆς κοινότητος Λαύκου τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 663. Ὁ ὁμώνυμος ὅρμος, κείμενος κατὰ τὸν ΝΑ. μυχὸν τοῦ Παγασιτικοῦ κόλπου (πλάτ. 39° 10' 30'' Β., μήκ. 23° 14' 30'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1556: Gulf of Volo with Oreos and Talanta channel), ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸν λιμένα Βαθυδὶ καὶ κατέναντι τοῦ ἀκρωτηρίου Κάπρι, χρησιμεύει ὡς ἐπίνειον τῆς κοινότητος Λαύκου. Σ. Ε. Λ.

**μήλιναι ἀλοιφαὶ** (pomata, pommades) *[Φαρμακοτεχν.]*. Ἐκαλοῦντο οὕτω παλαιότερον αἱ ἀλοιφαὶ αἱ λαμβανόμεναι διὰ μείξεως φαρμάκων μετὰ λιπαρῶν σωμάτων καὶ εἰς τὰς ὁποίας ὡς ἀπαραίτητον συστατικὸν θεωρεῖται καὶ ὁ ὀπὸς τῶν μήλων. Κ. Γ. Μ.

**μηλιόρα** (ἡ)· δημοτ., προσηγορία προβάτου θήλεος, ἡλικίας ἑνὸς ἔτους ἢ πρώτης ἐγκυμοσύνης, ἄλλως *πρωτόγεννη*.

**μηλιόρι** (τό)· πρόβατον ἡλικίας ἑνὸς ἔτους, ἄλλως *μηλιόρα*.

**Μήλιος,** *Σπῦρος*. Ἀγωνιστὴς καὶ στρατηγὸς (1800—1880), γεννηθεὶς ἐν Χιμάρᾳ τῆς Ἠπείρου. Συμμετέσχεν ὡς πενταχοσίαρχος κατὰ τὸν Ἀγῶνα καὶ ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας μάχας καὶ μάλιστα κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου, ὅπου ἐπολέμησεν ὡς εἷς τῶν κυριωτέρων σωματαρχῶν. Κατόπιν ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν χιλιαρχίας, ἐπὶ Καποδιστρίου, μετέσχε δὲ εἰς τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις τῶν τελευταίων ἐτῶν τοῦ Ἀγῶνος καὶ διεκρίθη διὰ τὴν γενναιότητα καὶ τὴν πρωτοβουλίαν του. Ἐπὶ κεφαλῆς Χιμαριωτῶν πάντοτε καὶ πρόθυμος νὰ σπεύδῃ παντοῦ ὅπου ἐκαλεῖτο, εἶχε καταστῇ ἐκ τῶν ἀναγκαιοτέρων παραγόντων τῆς τάξεως κατὰ τοὺς διαφόρους ἐμφυλίους, τοὺς προκαλουμένους ἀπὸ τὴν ἀπείθειαν τῶν ἀρχηγῶν τῶν ἀτάκτων σωμάτων. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ Ἀγῶνος κατετάχθη εἰς τὸν τακτικὸν στρατόν, προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. Διετέλεσε διοικητὴς τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων, ἀρχηγὸς τῆς χωροφυλακῆς, ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α' καὶ ἐπανειλημμένως ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1876. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μήλιος,** *Σπῦρος*· βλ. *Σπυρομήλιος*.

**μηλιὸς** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἰξία ἡ λευκή*.

**Μήλιου** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Πάφου. Κάτ. 150. Α. Κ. Α.

**μηλίτης** (*οἶνος*). Ὁ σπουδαιότερος τῶν ἐξ ὀπωρῶν παραγομένων οἴνων. Παρασκευάζεται εἰς πολλὰς χώρας τῆς Εὐρώπης, ὡς ἐν Γαλλίᾳ, Γερμανίᾳ, Ἑλβετίᾳ, Ἀγγλίᾳ κλπ., καίτοι εἰς τὰς πλείστας ἐξ αὐτῶν ὑπάρχει ἀφθονία οἴνου ἐκ σταφυλῶν, ἀποτελεῖ δὲ εὐθηνότερον εἶδος οἴνου. Παράγεται δι' ἁπλῆς ζυμώσεως τοῦ δι' ἐκθλίψεως τῶν μήλων λαμβανομένου ὀποῦ, πρὸς ῥύθμισιν δὲ τῆς περιεκτικότητος τοῦ ὀποῦ τούτου προστίθεται ἢ ὕδωρ ἢ σάκχαρις. Διὰ τὴν παραγωγὴν καλοῦ μηλίτου ἐνδείκνυται ἡ μετ' ἐμπειρίας ἀνάμειξις διαφόρων ποικιλιῶν μήλων, ἀναλόγως δὲ τοῦ εἴδους τούτων κυμαίνεται ἡ ἐξ 100 χιλιογράμμων μήλων ἀπόδοσις μεταξὺ 70 καὶ 120 λίτρων γλεύκους. Ἡ εἰς οἰνόπνευμα περιεκτικότης τοῦ μηλίτου κυμαίνεται μεταξὺ εὐρυτάτων ὁρίων, ἀναλόγως τῶν τοπικῶν συνηθειῶν καὶ τῶν ἐπιθυμιῶν τῶν καταναλωτῶν. Σ. Γ.

**Μηλίτσα** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 496. —2) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμπελοκήπων τῆς ἐπαρχίας Καστορίας τοῦ νομοῦ Φλωρίνης. Κάτ. (1928) 303. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Σλήμιστα*. Δ. Ε. Μ.

**Μηλιωκὸ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Περδικίου τῆς ἐπαρχίας Ἰκαρίας τοῦ νομοῦ Σάμου. Κάτ. (1928) 40. Δ. Ε. Μ.

**Μηλιώνας** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λαιμοῦ (πρώην Ράμπη) τῆς ἐπαρχίας Φλωρίνης τῆς ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. (1928) 161. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Μέδοβον*. Δ. Ε. Μ.

**Μηλιώτη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 282. Δ. Ε. Μ.

**Μηλιώτης,** *Κωνσταντῖνος*. Ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ (1860—1925), προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων καὶ προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πολεμικῆς τέχνης παρὰ τῷ στρατιωτικῷ σχολείῳ ὑπαξιωματικῶν, κατὰ δὲ τὴν ἐποχὴν 1907—1910 πρόεδρος τῆς ἐν Γαλλίᾳ ἀποσταλείσης ἐπιτροπῆς διὰ τὴν κατασκευὴν ἑλληνικῶν ταχυβόλων πυροβόλων Σνάιντερ. Ν. Θ. Κ.

— **Μηλιώτης** *Κομνηνός, Κωνσταντῖνος*. Ἀξιωματικὸς τοῦ ἱππικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1854. Προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατεύματος, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. Ὡς νέος ἀξιωματικὸς παρηκολούθησε τὴν ἐκπαίδευσιν τῆς γαλλικῆς ἱππευτικῆς σχολῆς τοῦ Σωμύρ, μετὰ δὲ τὴν εἰς Ἑλλάδα ἐπάνοδόν του ὑπηρέτησεν ἐπὶ μακρὸν ὡς γυμναστὴς παρὰ τῇ ἱππευτικῇ σχολῇ. Τυγχάνει ὁπλομάχος ἄριστος. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἰλάρχου, ὑπηρέτησεν ὡς ὑπασπιστὴς ἐν ἀρχῇ συντάγματος ἱππικοῦ, κατόπιν δὲ τοῦ διοικητοῦ ἱππικοῦ τοῦ στρατοῦ Θεσσαλίας. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος προσληφθεὶς ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ στρατοῦ διαδόχου Κωνσταντίνου, βραδύτερον δ' ὑπηρέτησε παρὰ τοῖς ἀνακτόροις ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α'. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, διετέλεσε διοικητὴς τῆς 6ης μεραρχίας καὶ συμμετέσχε τῶν ἐν Μακεδονίᾳ ἐπιχειρήσεων καὶ τῶν ἐν Ἠπείρῳ πρὸς ἅλωσιν τῶν Ἰωαννίνων. Τῷ 1916, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, ἔλαβε μέρος εἰς τὸ κίνημα τῆς Θεσσαλονίκης, προαχθεὶς εἰς ἀντιστράτηγον καὶ γενόμενος ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν τῆς ἐκεῖ προσωρινῆς κυβερνήσεως. Τὸ θέρος τοῦ 1917 ἐτοποθετήθη διοικητὴς τοῦ ἐν Πάτραις 2ου σώματος στρατοῦ, ἀφοῦ δὲ κατόπιν διῴκησε τὸ σῶμα τοῦτο κατὰ τὰς ἐν Μακεδονίᾳ ἐπιχειρήσεις, ἀπεστάλη τὸ τέλος τοῦ 1919 εἰς Μικρὰν Ἀσίαν, ἔνθα ὑπηρέτησεν ἐπ' ὀλίγον χρόνον ὡς διοικητὴς τῆς ἐκεῖ στρατιᾶς. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1920. Ν. Θ. Κ.

— **Μηλιώτης,** *Λεωνίδας*. Στρατιωτικὸς ἰατρὸς ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων, γεννηθεὶς τῷ 1826 ἐν Κερκύρᾳ καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1904. Ἀποφοιτήσας τῆς ἰατρικῆς σχολῆς τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου, κατετάχθη ἐν τῷ ὑγειονομικῷ σώματι τοῦ στρατοῦ, κατόπιν δέ, ὑπίατρος ὤν, συνεπλήρωσε τὰς ἰατρικὰς αὐτοῦ σπουδὰς ἐν Παρισίοις. Διετέλεσεν ἰατρὸς στρατιωτικῶν μονάδων, διευθυντὴς στρατιωτικῶν νοσοκομείων, μέλος καὶ πρόεδρος τῆς ἀνωτάτης ὑγειονομικῆς ἐπιτροπῆς, γενικὸς ἐπιθεωρητὴς καὶ διευθυντὴς τοῦ ὑγειονομικοῦ τμήματος τοῦ ὑπουργείου τῶν Στρατιωτικῶν. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1896, προαχθεὶς εἰς ἀνώτερον γενικὸν ἀρχίατρον. Ι. Π.

**Μηλόβιος.** Εἷς τῶν ἐν Ἀθήναις τριάκοντα τυράννων, τῷ 404 π. Χ. Α. Θ. Σ.

**μηλοβολία** (ἡ)· ἡ βολὴ μήλων· ἡ διὰ ῥιψίματος μήλων ἐκδήλωσις ἐρωτικοῦ συναισθήματος (βλ. λ. *μῆλον [Λαογρ.]*).

**Μηλόβοσις** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Ὠκεανοῦ καὶ τῆς Τηθύος, μία τῶν συντρόφων τῆς Περσεφόνης. Α. Θ. Σ.

**μηλογενὴς** (ὁ) (Melogenes) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων γαστεροπόδων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *προσθιοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *βουκκινιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ θαλάσσια ζῷα μὲ περιελικτὸν ὄστρακον ἀπιοειδές. Ἀπαντῶσιν εἰς πλείστας θαλάσσας τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μηλοέλατο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πεύκη ἡ λαρικοειδής*.

**μηλόη** (ἡ) (Meloë) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μηλοϊδῶν*, περιλαμβάνον εὐμεγέθεις κανθάρους μὲ σῶμα ὑποκυλινδρικόν, θώρακα ἀπεστρογγυλωμένον, κεφαλὴν εὐμεγέθη καὶ πεπλατυσμένην ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω, κεραίας πολυαρθρωτὰς καὶ μετρίου μεγέθους καὶ πόδας πολυακανθωτοὺς καὶ ἰσχυρούς. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μηλοΐδαι** (οἱ) (Meloidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἑτερομερῶν*, περιλαμβάνουσα κανθάρους μεγάλου μεγέθους μὲ εὐρεῖαν καὶ πεπιεσμένην κεφαλήν, διογκωμένον θώρακα, ὀγκώδη κοιλίαν, εὐρύτατα ἔλυτρα καὶ σκοτεινοὺς χρωματισμούς. Ἴδιον γνώρισμα τῶν ἐντόμων τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι ἡ ἐκροὴ ὑγροῦ τινος ἐκ τῶν ἀρθρώσεων τῶν ποδῶν, ὅπερ προκαλεῖ ἐξελκώσεις ἐπὶ τοῦ δέρματος. Διὰ τοῦτο συχνάκις χρησιμοποιεῖται καὶ εἰς τὴν παρασκευὴν ἐκδορίων. Ἐκ τῶν πολυπληθῶν γενῶν γνωστότερον εἶναι ἡ *μηλόη* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μηλόκακτος** (ὁ) (Melocactus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *κακτοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας μὲ καυλὸν σαρκώδη καὶ μεγάλα φύλλα καλυπτόμενα ὑπὸ λεπτῶν ἀκανθωδῶν ἀποφύσεων. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς, ὧν τινα καλλιεργοῦνται εἰς πολλὰ θερμοκήπια τῆς Εὐρώπης ὡς κοσμητικά. Δ. Ν. Π.

**μηλόκεδρος** (ὁ), ἡ *μηλόκεδρο* (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄρκευθος ἡ κάκοσμος*.

—*[Ναυπηγ.]* Οἱ κλάδοι τοῦ *μηλοκέδρου* ἐμβαπτιζόμενοι εἰς κεδρίαν καὶ νάφθην χρησιμοποιοῦνται κατὰ προτίμησιν ἀναπτόμενοι διὰ τὰς ἐπικαύσεις τῶν γαστρῶν καὶ τῶν ὑφάλων ἐν γένει τῶν ξυλίνων πλοίων. Σ. Ε. Λ.

**μηλοκρινίδαι** (οἱ), ἡ *μηλοκρινοειδῆ* (τὰ) (Melocrinidae) *[Παλαιοζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *καμεράτων κρινοειδῶν πελματοζῴων* ἐχινοδέρμων. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον βάσιν μονοκυκλικὴν καὶ βραχίονας μὲ πολυάριθμα παρακλάδια. Τὰ κυριώτερα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *πατελλιόκρινος*, ὁ *γλυπτόκρινος*, ὁ *στηλιδιόκρινος*, ὁ *μηλόκρινος*, ὁ *σκυφόκρινος* κ. ἄ. Λείψανά των ἀπολιθωμένα συναντῶνται ἐντὸς στρωμάτων τῆς σιλουρίου καὶ δεβονίου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζῳϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μηλόκρινος** (ὁ) (Melocrinus Goldf.) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μηλοκρινιδῶν καμεράτων κρινοειδῶν πελματοζῴων* ἐχινοδέρμων. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον κάλυκα ἀπιοειδῆ ἢ πεπονοειδῆ. Τὸ κάλυμμα τοῦ κάλυκος ἔφερεν ἕδραν ὑποκεντρικὴν ἢ ἐκκεντρικὴν ἢ καὶ ἑδρικὸν σωλῆνα. Οἱ βραχίονες ἦσαν 10 (5×2), κατὰ ζεύγη πλησίον ἀλλήλων καὶ συμπεφυκότες μὲ τὰς πλευρὰς των. Ὁ μίσχος ἦτο στρογγύλος ἢ ἐλλειπτικός, τὰ ἄρθρα χθαμαλά, ὁ δὲ κεντρικὸς ὀχετὸς στρογγύλος. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς σιλουρίου καὶ τῆς δεβονίου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζῳϊκοῦ εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Βόρειον Ἀμερικήν. Ποικιλία τοῦ μηλοκρίνου εἶναι ὁ *κτενόκρινος*. Συνώνυμα: *ἀστρόκρινος, κλωνόκρινος, τουρμπινόκρινος, καστανόκρινος, κυτόκρινος*. Γ. Κ. Γ.

**μηλολόνθη** (ἡ) (Melolontha) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 12 εἴδη, ἐκ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μηλολόνθη ἡ κοινὴ* (Melolontha vulgaris). Αὕτη ἀπαντᾷ ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Ἀσίαν καὶ φέρει τὰ ἑξῆς γνωρίσματα: μῆκος 20—27 χιλιοστομέτρων, κεφαλὴν

Digitized by Google

ἀρκετὰ εὐμεγέθη μὲ ὀφθαλμοὺς προέχοντας, κεραίας βραχείας ἐκ δέκα ἀρθρώσεων ἀποτελουμένας καὶ εἰς φυλλοειδεῖς ἀποφύσεις ἀποληγούσας, προθώρακα ἀνεπτυγμένον κοιλίαν ἐπιμήκη καὶ εὐρῶστον, πτέρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ πόδας μετρίου μεγέθους καὶ ἰσχυρούς, εἰς ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις ἀπολήγοντας. Ὁ γενικὸς χρωματισμὸς τοῦ σώματος εἶναι μελανός, αἱ κεραῖαι, τὰ ἔλυτρα καὶ οἱ πόδες ἐπίξανθοι μὲ ὑποφαίους τρίχας. Ἀπαντᾷ εἰς ὁλόκληρον τὴν Εὐρώπην καὶ εἶναι ἐπιβλαβέστατον ἔντομον λόγῳ τῶν μεγάλων καταστροφῶν, ἃς προξενοῦσιν αἱ νύμφαι ἐπὶ τῶν διαφόρων φυτῶν καὶ ἰδίως τῶν δημητριακῶν καρπῶν, ἀποκόπτουσαι τὰς ῥίζας τούτων. Τὰ τέλεια ἔντομα κατατρώγουσι τὰ φύλλα τῶν δένδρων καὶ ἰδίως τῶν δρυῶν, τῶν ἐλάτων καὶ τῶν πλατάνων. Οἱ ἄρρενες διακρίνονται τῶν θηλειῶν, διότι αἱ κεραῖαι των κατὰ τὸ ἄκρον φέρουσι πολυπληθεστέρας φυλλοειδεῖς ἀποφύσεις. Κατὰ τὴν ὀχείαν ὁ ἄρρην ἐπιβαίνει τῆς θηλείας κρατῶν ταύτην στερεῶς διὰ τῶν ὀπισθίων ποδῶν του. Τὸ γεννητικόν του ὄργανον φέρει ἀκάνθας, αἵτινες ἐμβυθιζόμεναι εἰς τὸ γεννητικὸν ὄργανον τῆς θηλείας δυσκόλως ἀποσπῶνται. Ἡ ὀχεία εἶναι μακρᾶς διαρκείας, διότι παρατείνεται ἀπὸ 10—24 ὡρῶν. Μετὰ τὴν ὀχείαν ὁ ἄρρην ἐγκαταλείπει τὴν θήλειαν, ἥτις ἐπὶ μικρὸν χρονικὸν διάστημα κυλίεται ἐπὶ τοῦ ἐδάφους διὰ τῆς ῥάχεως· εἶτα ἐκσκάπτει τὸ ἔδαφος, ἐναποθέτει τὰ ᾠά της καὶ ἀμέσως ἀποθνήσκει ἐκ τοῦ καμάτου τῆς ὀχείας. Τὰ ᾠά, 20—30 τὸν ἀριθμόν, ἐναποτίθενται εἰς βάθος 10—12 ἑκατοστομέτρων ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τοῦ ἐδάφους. Μετὰ ἕνα μῆνα ἐκκολάπτονται ἐκ τῶν ᾠῶν αἱ προνύμφαι μὲ κεφαλὴν σκληράν, κερατοειδῆ καὶ ἰσχυροτάτας σιαγόνας. Αἱ προνύμφαι αὗται ἔχουσι χρῶμα ὑπόλευκον καὶ εἶναι κοινῶς γνωσταὶ ὑπὸ τὰ ὀνόματα *ἄσπρα σκουλήκια, κριθαροσκούληκα*, κτλ. Ζῶσι κατ' ἀποικίας κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἐκκολάψεώς των καὶ διεισδύουσι βαθέως εἰς τὴν γῆν κατὰ τὸν χειμῶνα. Μετὰ τρία ἔτη λαμβάνουσι τὴν τελειωτικὴν αὐτῶν μορφήν, ὁπότε καὶ μεταμορφοῦνται εἰς νύμφας ἐντὸς τῶν φωλεῶν βομβυκίων, ἅτινα κατασκευάζουσι. Μετὰ πάροδον 8—10 ἡμερῶν λαμβάνουσι τὴν μορφὴν τελείου ἐντόμου, ὁπότε καὶ καταφεύγουσιν ἐπὶ τῶν φύλλων τῶν δένδρων, παραμένοντα ἀκίνητα κατὰ τὴν ἡμέραν καὶ κατατρώγοντα αὐτὰ κατὰ τὴν νύκτα. Δ. Ν. Π.

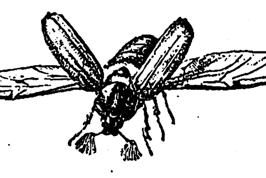

*Μηλολόνθη ἡ κοινή.*

*Μηλολόνθη ἡ κοινή (νύμφη).*

*Μηλολόνθη ἡ κοινή (προνύμφη).*

**μῆλον** (τό)· ὁ καρπὸς τῆς μηλέας: «μῆλο ἀφράτο, —στυφό», «σὰν τὸ μῆλο κοκκινίζει τὸ μάγουλό της» ‖ τὰ ἐξέχοντα τῶν παρειῶν, «μῆλα τοῦ προσώπου».

—*[Λαογρ.]* Ὁ καρπὸς τῆς μηλέας ἦτο ἀνέκαθεν ἐρωτικὸν σύμβολον. Ὁ ἀρχαῖος μῦθος περὶ τοῦ μήλου τῆς ἔριδος καὶ τῆς κρίσεως τοῦ Πάριδος καὶ ὁ κάπως παρηλλαγμένος μῦθος τοῦ ἀγῶνος περὶ μνηστείας τοῦ Ἱππομένους καὶ τῆς Ἀταλάντης μαρτυροῦν τὸ γεγονὸς τοῦτο. Τὸ ἔθος τῆς ἐκδηλώσεως τοῦ ἔρωτος διὰ μηλοβολίας εἶναι κοινὸν εἰς πολλοὺς ἀρχαίους καὶ νεωτέρους λαούς. Συχνότατα γίνεται μνεία τούτου εἰς ἀρχαίους Ἕλληνας καὶ Ῥωμαίους συγγραφεῖς καὶ εἰς μνημεῖα τῆς ἀρχαίας τέχνης, ἀναφερομένης πολλάκις ἀποστολῆς μήλων ὡς δώρου εἰς ἐρωμένην ἢ ὡς μήνυμα ἔρωτος. Τὸ ἔθος τῆς διὰ μηλοβολίας ἐκδηλώσεως ἔρωτος ὑπεμφαίνεται καὶ εἰς ἰρλανδικὰς παραδόσεις, παρατηρεῖται δὲ καὶ εἰς ἰθαγενεῖς τῆς Ταϊτης τῆς Πολυνησίας. Γνωστοτάτη εἶναι καὶ ἡ περὶ τῆς ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου Θεοφίλου ἐκλογῆς συζύγου παράδοσις.

Παρὰ τῷ σημερινῷ ἑλληνικῷ λαῷ διετηρήθησαν πολλὰ μαρτύρια τῆς συνηθείας ταύτης, εἴτε ζῶντα ἐν ἐθίμοις, εἴτε ὡς ἀνάμνησις εἰς τὰ μνημεῖα τοῦ λόγου. Τὸ μῆλον ὡς μήνυμα ἔρωτος ἀναφέρεται εἰς δημοτικὰ ᾄσματα. Μῆλα ἀποστέλλονται εἰς τὴν ἐρωμένην, ἐνίοτε ἀποδεδηγμένα, ὅπως καὶ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις. Σπουδαίαν θέσιν κατέχει τὸ μῆλον καὶ εἰς τὰ γαμήλια ἔθιμα. Ἡ νύμφη παρομοιάζεται μὲ μηλιὰν ἢ μὲ μῆλον, εἰς ᾄσματα δὲ ἀναφέρεται ἀποστολὴ μήλων πρὸς αἴτησιν εἰς γάμον ἢ δωρεὰ μήλου εἰς ἔνδειξιν ὑποσχέσεως γάμου. Ἐνιαχοῦ ὑποδέχονται τὸν μνηστῆρα εἰς τὴν κατοικίαν τῆς νύμφης διὰ μηλοβολίας ἢ ἀνθοβολίας. Καὶ ὁ γαμβρός, ὅταν μεταβαίνῃ εἰς τὴν οἰκίαν τῆς νύμφης διὰ νὰ τὴν πάρῃ μὲ τὸ συμπεθεριό, ῥίπτει μῆλον. Ἡ νύμφη βάλλει διὰ μήλου, ἐφ' οὗ εἶναι ἐμπεπαρμένα νομίσματα, μίαν τῶν παρισταμένων παρθένων, ἡ ὁποία δέχεται ὡς εὐοίωνον τὸ βλῆμα. Ὅταν θὰ ἐμβῇ εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ γαμβροῦ ἡ νύμφη, πατεῖ ἓν μῆλον ἢ ἓν κυδώνιον, τὸ ὁποῖον θέτουν εἰς τὸ κατώφλιον.

Ὅμοια ἔθιμα ὑπάρχουν καὶ παρ' ἄλλοις λαοῖς. Πολλαχοῦ τῆς Ἰταλίας οἱ μνηστῆρες ὡς δῶρα προσφέρουσι μῆλα. Παρὰ Ῥωμούνοις κατὰ τὴν διαπραγμάτευσιν συνοικεσίου ὁ νέος προσφέρει εἰς τὴν νέαν μῆλον μὲ ἀργυρᾶ νομίσματα. Ἂν τὸ δεχθῇ ἡ νέα, ὁ ἀρραβὼν θεωρεῖται συντετελεσμένος. Ἐν Σερβίᾳ ὁ μνηστὴρ προσφέρει εἰς τὴν μνηστὴν μῆλον ὡς ἐχέγγυον ἀγάπης. Ἐν Βοσνίᾳ τὸ μῆλον δίδεται ὡς ἀρραβών. Ἐν Βουλγαρίᾳ τὸ μῆλον εἶναι τὸ κατ' ἐξοχὴν δῶρον τῆς ἀγάπης· ἡ νύμφη δίδει ἢ ῥίπτει μῆλον εἰς τὸν γαμβρόν. Ὁ γαμβρὸς ἐπίσης εἰς ὅλους ὅσοι τὸν κερνοῦν δίδει μῆλον ἔχον ἐμπεπαρμένον νόμισμα· οἱ δὲ συμπέθεροι κομίζουν εἰς τὸν γαμβρὸν παρὰ τῆς νύμφης ἕνα κλῶνον μὲ μῆλα· καὶ εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ φλάμπουρου τοῦ γάμου ἐμπήγουν χρυσωμένον μῆλον. Ἐν Γεωργίᾳ κατὰ τοὺς ἀρραβῶνας ὁ μελλόνυμφος προσέφερεν εἰς τὴν μνηστήν του τὸν δακτύλιον τοῦ ἀρραβῶνος καὶ μῆλον χρυσωμένον. Παρὰ πολλαῖς τουρκικαῖς φυλαῖς δίδεται ὑπὸ τοῦ μελλονύμφου εἰς τὴν μνηστὴν μῆλον εἰς ἔνδειξιν προτιμήσεως. Ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Περσίᾳ τέλος ὁ γαμβρὸς εἰσήρχετο εἰς τὸν θάλαμον προφαγὼν μῆλον.

Τῆς ἐκλογῆς συζύγου διὰ μηλοβολίας ἀπηχήσεις ἔχομεν εἰς δημώδη παραμύθια. Εἴς τινα ἑλληνικὰ ἡ βασιλοποῦλα ἐκλέγει τὸν μέλλοντα σύζυγόν της βάλλουσα διὰ μήλου τὸν προτιμώμενον ἐκ πλήθους μνηστήρων, εἰς ἄλλα δὲ ὁ ἀνὴρ ἐκλέγει διὰ τοῦ αὐτοῦ τρόπου τὴν γυναῖκα. Συναφὴς πρὸς τὴν συμβολικὴν ἔννοιαν τοῦ μήλου εἶναι καὶ ἡ χρῆσις τοῦ μήλου εἰς μαγγανείας καὶ φίλτρα. Εἰς τὸ δημοτικὸν ᾆσμα τῆς Διογέννητης τρία μῆλα διδόμενα παρὰ μαγίσσης εἶναι ἰσχυρότατον φίλτρον· Καὶ τὰ μαγικὰ βιβλία περιέχουσιν ὁδηγίας πρὸς κατασκευὴν φίλτρων δι' ἐπιγραφῆς μαγικῶν χαρακτήρων ἐπὶ μήλων. [Πρβλ. *Ν. Γ. Πολίτου*, «Λαογραφ. Σύμμεικτα» τ. Β, σ. 26 κ. ἑξ.] —Ω.

—**μῆλον τοῦ Ἀδὰμ** *[Ἀνατομ.]*. Ἐπιμήκης ἀκρολοφία ἢ γωνία ἔμπροσθεν τοῦ λαιμοῦ κατὰ τὴν μέσην γραμμήν, σχηματιζομένη ὑπὸ τοῦ θυρεοειδοῦς χόνδρου, ψηλαφητὴ δὲ καὶ ὁρατὴ οὖσα ἔξωθεν. Ι. Π.

—**μῆλον τοῦ παραδείσου** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μοῦσα ἡ κοινή*.

—**μῆλον παρειᾶς** *[Ἀνατομ.]*. Τὸ κυρτότερον καὶ προπετέστερον μέρος τῆς παρειᾶς, ὅπερ διακρίνεται διὰ τὴν ἐρυθρότητα αὐτοῦ. Ι. Π.

—**μῆλον τὸ περσικὸν** (τὸ) *[Βοτ.]*. Ἐκαλεῖτο ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ὁ καρπὸς τῆς *ῥοδακινέας* (βλ. λ.), καλούμενος παρά τινων καὶ *δωράκινον*.

—**μήλου ἄρωμα τεχνητόν**. Τὸ διὰ διαφόρους τεχνικοὺς σκοποὺς χρησιμοποιούμενον τεχνητὸν ἄρωμα μήλων παρασκευάζεται ἐκ τῶν ἑξῆς συστατικῶν: νιτρώδης αἰθυλεστὴρ 50 γραμμάρια, ὀξικὸς αἰθυλεστὴρ 50, ἰσοβαλεριανικὸς ἀμυλεστὴρ 100, γλυκερίνη 40, ἀλδεΰδη 7,5, χλωροφόρμιον 7,5, ἀλκοόλη καθαρὰ 95° 745. Σ. Γ.

**μηλοναμίδιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μηλονικὸν ὀξύ*.

**μηλονικὴ διαλδεΰδη** *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μηλονικὸν ὀξύ*.

**μηλονικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]*. Δικαρβονικὸν ὀξὺ τοῦ τύπου $HOOC.CH_2.COOH$, κληθὲν οὕτω ὡς δυνάμενον νὰ ληφθῇ δι' ὀξειδώσεως διὰ χρωμικοῦ καλίου τοῦ μηλικοῦ ὀξέος. Ἀνευρέθη εἰς τὸν χυμὸν τῶν τεύτλων ὑπὸ τὴν μορφὴν τοῦ μετ' ἀσβεστίου ἅλατος αὐτοῦ. Ἐπίσης παράγεται κατὰ τὴν δι' ὑπερμαγγανικοῦ καλίου ὀξείδωσιν τοῦ ἀμερικανικοῦ κολοφωνίου καὶ τοῦ κερκίτου. Συνθετικῶς παρασκευάζεται ἐκ τοῦ ὀξικοῦ ὀξέος δι' ἐνδιαμέσου σχηματισμοῦ κυανοξικοῦ ὀξέος καὶ περαιτέρω σαπωνοποιήσεως τούτου

$$CH_3\,COOH \rightarrow CH_2\,Cl.\,COOH \rightarrow CH_2\,(CN).\,COOH \rightarrow HOOC.CH_2.COOH.$$

Ἀποτελεῖ στερεὸν κρυσταλλικὸν σῶμα, εὐδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν ἀλκοόλην, τηκόμενον εἰς 134°. Διὰ θερμάνσεως εἰς 140—150° διασπᾶται εἰς ὀξικὸν ὀξὺ καὶ διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος.

Τὸ μηλονικὸν ὀξὺ περιέχει μεταξὺ τῶν δύο καρβοξυλίων ἓν μεθυλένιον, τὰ δύο δὲ ὑδρογόνα τῆς μεθυλενικῆς αὐτῆς ὁμάδος εἶναι λίαν ἐνεργά, δυνάμενα νὰ ἀντικατασταθοῦν δι' ἀλκυλίων, δι' ἐνδιαμέσου σχηματισμοῦ τῶν μετὰ νατρίου παραγώγων. Μεγαλυτέραν εὐκινησίαν ἔχουσι τὰ ὑδρογόνα αὐτά, ὅταν ἀντὶ τοῦ ἁπλοῦ μηλονικοῦ ὀξέος χρησιμοποιηθῇ ὁ διαιθυλεστὴρ αὐτοῦ. Οὕτω ὁ *μηλονικὸς διαιθυλεστὴρ* ἔχει εὐρεῖαν χρῆσιν εἰς τὴν συνθετικὴν ὀργανικὴν χημείαν. Ὁ μηλονικὸς διαιθυλεστὴρ $CH_2\,(CO.\,OC_2\,H_5)_2$ εἶναι ἄχρουν ὑγρὸν δυσδιάλυτον ἐν ὕδατι, βράζον εἰς 191°.

Τὸ μηλονικὸν ὀξὺ σχηματίζει διάφορα παράγωγα, ὡς ἅλατα, ἐστέρας κλπ., ἐξ ὧν τὰ σπουδαιότερα ἀναφέρομεν κατωτέρω. Τὴν δισθενῆ ῥίζαν $—CO.\,CH_2.\,CO—$ καλοῦμεν, διὰ τὴν ὀνομασίαν τῶν διαφόρων παραγώγων, *μηλονύλιον*. Τὸ *μηλονυλοχλωρίδιον* $CH_2(CO.\,Cl)_2$ εἶναι ἄχρουν ὑγρόν, λαμβανόμενον δι' ἐπιδράσεως θειονυλοχλωριδίου ἐπὶ μηλονικοῦ ὀξέος.

Τὸ *μηλονικὸν νιτρίλιον* $NC.\,CH_2.\,CN$ ἀποτελεῖ λευκὴν κρυσταλλικὴν μᾶζαν ὀσμῆς ἀκεταμιδίου, τηκομένην εἰς 29° καὶ βράζουσαν εἰς 220°. Εἶναι δηλητηριῶδες.

Τὸ *μηλοναμίδιον* $CH_2\,(CO.NH_2)_2$, σῶμα στερεὸν τηκόμενον εἰς 170°. Παρέχει τὴν ἀντίδρασιν τῆς διουρίας.

Τὸ *μηλονικὸν διυδραζίδιον* $CH_2(CO.\,NH.\,NH_2)_2$, σῶμα στερεὸν τηκόμενον εἰς 154°.

Ἡ *μηλονικὴ διαλδεΰδη* $HOC.CH_2.COH$ εἶναι σῶμα γνωστὸν μόνον ἐν διαλύσει. Σ. Γ.

**μηλονουρικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τῆς οὐρίας μετὰ μηλονικοῦ ὀξέος τοῦ τύπου:

$$HOOC.\,CH_2.\,CO.NH.\,CO.NH_2$$

Εἶναι γνωστὸν ὑπὸ τὴν μορφὴν τοῦ φορμυλικοῦ αὐτοῦ παραγώγου

$$HOOC.\,CH_2.\,CO.\,NH.\,CO.\,NH.\,CHO$$

ὅπερ τήκεται εἰς 189—199°. Σ. Γ.

**μηλονύλιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μηλονικὸν ὀξύ*.

**μηλονυλουρία** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *βαρβιτουρικὸν ὀξύ*.

**μηλονυλοχλωρίδιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μηλονικὸν ὀξύ*.

**μηλοπεπόνι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐνιαχοῦ τῆς Ἑλλάδος τοῦ φυτοῦ *πέπων ὁ κοινός*.

**μηλοππηονιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μανδραγόρας ὁ φαρμακευτικός*.

**μηλοπούρναρο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐλαιόπρινος ὁ αἰχμηρόφυλλος*.

**μηλορροδακινιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία πολλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος τοῦ φυτοῦ *ῥοδακινέα ἡ κοινή*.

**Μῆλος** *[Μυθολ.]*. Πρόσωπον τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μυθολογίας. Δήλιος νέος ἐλθὼν εἰς Κύπρον πρὸς τὸ βασιλέα αὐτῆς Κινύραν, ὁ ὁποῖος κατέστησεν αὐτὸν σύντροφον τοῦ υἱοῦ του Ἀδώνιδος. Οἱ δύο νέοι συνεδέθησαν διὰ στενῆς φιλίας, κατόπιν δὲ καὶ διὰ συγγενείας, διότι ὁ Μῆλος ἔλαβεν ὡς σύζυγον τὴν συγγενῆ τοῦ Ἀδώνιδος Πελίαν. Αὕτη ἐγέννησεν υἱόν, ὁ ὁποῖος ἔλαβε τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς καὶ ἀφιερώθη εἰς τὴν Ἀφροδίτην. Ὅτε ὁ Μῆλος πατὴρ ἔμαθε τὸν θάνατον τοῦ Ἀδώνιδος, ἀπηγχονίσθη ἐκ λύπης ἔκ τινος δένδρου, τὸ ὁποῖον ὠνομάσθη μῆλος (μηλέα). Τοῦτον ἠκολούθησε καὶ ἡ Πελία. Ἡ Ἀφροδίτη μετεμόρφωσε τὸν μὲν Μῆλον εἰς καρπὸν μηλέας, τὴν δὲ Πελίαν εἰς περιστερὰν (πέλειαν). Τὸν υἱὸν Μῆλον, τὸν τελευταῖον ἐπιζήσαντα ἀπόγονον τοῦ Κύπρου, τὸν ἔστειλε μὲ συνοδείαν εἰς Δῆλον. Οὗτος εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τῆς πόλεως καὶ τῆς νήσου Μήλου καὶ ὁ πρῶτος διδάξας τὴν κουρὰν τῶν αἰγοπροβάτων (=μήλην) καὶ τὴν ἐκ τοῦ ἐρίου τῶν κατασκευὴν τῶν μαλλίνων ἐνδυμάτων. Μ. Σ. Μ.

**Μῆλος.** Νῆσος τοῦ Αἰγαίου, ἀνήκουσα εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν Κυκλάδων, τοῦ ὁποίου καταλαμβάνει τὸ ΝΔ. ἄκρον. Ἡ θέσις αὐτῆς καθορίζεται μεταξὺ τῶν παραλλήλων 36° 38′ 35″—36° 46′ 15″ Β. πλάτους καὶ τῶν μεσημβρινῶν 24°19′30″—24°33′10″ Α. μήκους Γκρήνουιτς (ἀγγλ. ὑδρογραφικὸς χάρτης 2051: Milo, Antimilo, Kimolo and Polino islands, ὑποτυπωθεὶς τῷ 1849 ὑπὸ τοῦ Thomas Graves καὶ τοῦ λόρδου John Browne ἀπὸ τοῦ ὑδρογραφικοῦ H. M. S. «Volage»). Ἀποτελεῖ μετὰ τῶν νήσων Σίφνου, Κιμώλου, Φολεγάνδρου καὶ Σικίνου καὶ τῶν περὶ αὐτὰς νησίδων (Πολυαίγου, Ἐρημομήλου κλπ.) ὁμώνυμον αὐτῇ ἐπαρχίαν, ὑπαγομένην εἰς τὸν νομὸν Κυκλάδων. Ἔχει ἔκτασιν 160 περίπου τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1928) 4.941 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον κώμην.

—*[Γεωλογ.]* Εἰς τὴν γεωλογικὴν κατασκευὴν τῆς νήσου λαμβάνουν μέρος τὰ ἀκόλουθα πετρώματα:

1) Ἀρχαῖοι κρυσταλλοπαγεῖς σχιστόλιθοι, σποραδικῶς ἐμφανιζόμενοι καὶ συνιστάμενοι ἐξ ἐντόνως μεταμορφωμένων πετρωμάτων (ἀργιλλικῶν σχιστολίθων, χονδροκρυσταλλικῶν μαρμάρων, σερικιτικῶν σχιστολίθων, μουσκοβιτικῶν γνευσίων κτλ.). Ἐμφανίσεις τούτων παρουσιάζονται εἰς τὸ Λουλό, Πρασονήσι, ὑφάλους Κτένια καὶ ἀλλαχοῦ. Τὰ πετρώματα ταῦτα εἶναι πρὸ μεσοζωϊκά, ἐπικαλύπτονται δ' ὑπὸ καλύμματος λατυποπαγοῦς, καὶ κροκαλοπαγοῦς, τῶν ὁποίων τὰ ὑλικὰ προέρχονται ἐκ τῶν κρυσταλλοπαγῶν σχιστολίθων.

2) Ἀσβεστόλιθοι, μαργώδεις ἀσβεστόλιθοι, μάργαι καὶ ἄργιλλοι τῆς κρητιδικῆς-ἠωκαίνου διαπλάσεως. Τὰ πετρώματα ταῦτα παρουσιάζονται εἰς τὸ

Digitized by Google

νότιον τμῆμα τοῦ Χαλάκα, ΝΑ. τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους Ἠλίας. Ἐντὸς τῶν συμπαγῶν ἀσβεστολίθων τοῦ Δαμιανοῦ (ἀνατολ. τῆς κορυφῆς Ἠλίας) ὡς καὶ τοὺς κιτρινωποὺς ἀσβεστολίθους τοῦ προβούνου Προβατᾶς εὑρέθησαν ἀπολιθώματα (τῶν γενῶν *ὄστρεα*, *χλαμύς*, *χάμα*, *τελλίνα*, *ἄρκη*, *σπόνδυλος*, *κάρδιον* κτλ).

3) Ἡφαιστειογενῆ πετρώματα τῆς ἀνωτέρας πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ, συνιστάμενα ἐκ παχέων ἀποθεμάτων κισηρωδῶν τόφφων, ἐν μέρει μετ᾽ ἀσβεστολιθικῶν ἐνστρώσεων, ἐκ λιπαριτικῶν, δακιτῶν καὶ ἀνδεσιτῶν. Οἱ τόφφοι σχηματίζουν λευκὸν κάλυμμα πάχους μείζονος τῶν 200 μ. Ἐκ τῶν πετρωμάτων τούτων συνίσταται τὸ μέγιστον τμῆμα τῆς νήσου. Ἐντὸς τῶν τόφφων ἀνευρέθησαν πολλαχοῦ ἀπολιθώματα ἐλασματοβραγχίων, σκαφοπόδων, βραγχιοπόδων, ἐχινοδέρμων καὶ βαλάνων, ἀποτελούντων ἐνίοτε ὁλοκλήρους μπάγκους. Τὰ ἡφαιστειογενῆ πετρώματα ἀνεξεβλήθησαν ὑπὸ τῶν ἡφαιστείων κέντρων τῆς νήσου κατὰ τρεῖς περιόδους. Κατὰ τὴν πρώτην ἀνεξεχύθησαν οἱ λιπαρῖται καὶ οἱ ὄξινοι δακῖται (Ἀδάμας-Κάστρο), κατὰ τὴν δευτέραν οἱ δακῖται καὶ ὄξινοι ἀνδεσῖται (Ἀδάμας - Κάστρο, βόρειος Χάλακας, Τριοβασάλο)· ἐπηκολούθησε κατόπιν σχετικὴ περίοδος ἠρεμίας καὶ κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν τρίτην περίοδον ἀνεξεχύθησαν οἱ ἀνδεσῖται (Κίμωλος, ΝΔ. γωνία τῆς Μήλου κλπ.). Οἱ ἡφαιστειογενεῖς τόφφοι καὶ αἱ κισήρεις ὑπέστησαν κατόπιν ἀλλοιώσεις συνεπείᾳ ὑδροθερμικῶν καὶ πνευματολυτικῶν φαινομένων καὶ μετεβλήθησαν εἰς λεπτὴν χαλαζιακὴν ἄμμον. Μετὰ τὴν πλειοκαινικὴν περίοδον τῆς ἡφαιστείου ἐνεργείας ἐπηκολούθησαν ἔντονοι διαρρήξεις καὶ μεταπτώσεις τῶν διαχωρισθέντων τεμαχῶν, αἱ ὁποῖαι ἠλλοίωσαν τὴν τοπογραφίαν τῆς νήσου.

4) Μᾶζαι κορημάτων σχηματισθεῖσαι κατὰ τὴν πλειστόκαινον περίοδον τοῦ καινοζωικοῦ μετ᾽ ἐνεισδύσεων ἡφαιστειογενῶν πετρωμάτων (δακιτῶν-ἀνδεσιτῶν). Αἱ μᾶζαι αὗται τῶν κορημάτων συναντῶνται εἰς διαφόρους θέσεις τῆς νήσου, ἰδίᾳ εἰς τὸ ΝΔ. τμῆμα αὐτῆς. Αἱ κροκάλαι συνίστανται ἐκ κρυσταλλοσχιστωδῶν πετρωμάτων καὶ ἀσβεστολίθων τῆς κρητιδικῆς διαπλάσεως. Ἰδιαιτέρως παχεῖαι μᾶζαι εὑρίσκονται εἰς τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν τῆς ταφροειδοῦς ἐγκατακρημνίσεως τῆς Παλαιοχώρας.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐσχηματίσθη καὶ ὁ ἡφαίστειος θόλος Κάστρο, ὁ ὁποῖος κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἀνεξῆλθεν ὡς συμπαγὴς μᾶζα, καθ᾽ ὅμοιον τρόπον μὲ τὴν ἀνδεσιτικὴν βελόνην τοῦ Πελὲ (βλ. *ἡφαίστειον*).

5) Ἀσβεστόλιθοι γλυκέων ὑδάτων, θαλασσογενεῖς ἀσβεστόλιθοι, παράκτια λατυποπαγῆ καὶ ἡφαιστειογενεῖς λιπαρῖται μετὰ τῶν σποδῶν των, πετρώματα σχηματισθέντα κατὰ τὴν ὁλόκαινον περίοδον. Ταῦτα εἶναι σποραδικῶς διανεμημένα ἐπὶ τῆς νήσου, ἰδίᾳ εἰς τὸ βόρειον καὶ ἀνατολικὸν τμῆμα αὐτῆς. Ἐντὸς αὐτῶν εὑρέθησαν καὶ ἀπολιθώματα. Ἐκ τῆς ἐμφανίσεως τῶν ἡφαιστειογενῶν λιπαριτῶν καταφαίνεται ὅτι καὶ κατὰ τὴν ὁλόκαινον περίοδον (προϊστορικὴν ἐποχὴν) ἡ ἡφαιστεία ἐνέργεια ἔδρασεν ἐν Μήλῳ. Ἐσχηματίσθησαν τὰ δύο ἡφαίστεια ὁ Τράχυλας πρὸς Β καὶ ἡ Φυριπλάκα εἰς τὰ νότια, τὰ ὁποῖα εἶναι δύο ὡραῖοι κῶνοι ἐκ σποδοῦ, ἔχοντες ἡμισεληνοειδῆ μορφὴν καὶ ἀνοικτοὶ πρὸς ΒΔ—Δ.

*Γεωτεκτονικῶς* ἐξεταζομένη ἡ νῆσος Μῆλος ἀποτελεῖ μίαν τεμαχωτὴν χώραν. Τὰ τεμάχη, χωριζόμενα διὰ ρηγμάτων, ἔχουν ὑποστῆ πολλὰς μεταπτώσεις Αἱ μετακινήσεις τῶν τεμαχῶν ἐξηκολούθησαν μέχρι χρόνων ἀρκετὰ προσφάτων. Αἱ νέαι τεκτονικαὶ γραμμαὶ τῆς νήσου συχνὰ συνοδεύονται ὑπὸ ἀτμίδων, ἐκ τῶν ὁποίων τινὲς λειτουργοῦσιν ἀκόμη. Αἱ ἀτμίδες παρὰ τὸν Κάλαμον συνίστανται κατὰ μέγιστον μέρος ἐξ ὑδρατμῶν καὶ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος καὶ ἔχουν θερμοκρασίαν 100° Κ. περίπου. Συναντῶνται ἐπίσης ἐκεῖ καὶ ἐπανθήματα θείου, θειικῶν ἁλάτων καὶ στυπτηρίας, προϊόντων ἐπιδράσεως τῶν ἀερίων τῶν ἀτμίδων ἐπὶ τῶν πετρωμάτων. Ὁμοίως θερμαὶ καὶ ἔντονοι ἐμφανίζονται αἱ ἀτμίδες παρὰ τὸν Ἀδάμαντα. Αἱ ἐπὶ τοῦ Χάλακα εἶναι ἀκόμη ἀρκετὰ ἐνεργοί. Αἱ λοιπαὶ ἀτμίδες τῆς νήσου εἶναι ὅλαι πολὺ ἀσθενέστεραι καὶ μόλις ἔχουν θερμοκρασίαν ἄνω τῶν 50° Κ. Εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ κρατῆρος τοῦ ἡφαιστείου κώνου τῆς Φυριπλάκας λειτουργεῖ ἀκόμη πολὺ ἀσθενής, ὑδρατμοὺς ἀνεκβάλλουσα ἀτμίς, ἡ ὁποία εἶναι αἱ τελευταῖαι ἐκπνοαὶ τῆς ἡφαιστείου ζωῆς τοῦ βουνοῦ τούτου. Εἰς τὸν Προβατᾶν λειτουργεῖ καὶ μία ἀτμοθέρμη.

Προϊόντα τῆς ἡφαιστείου ἐνεργείας καὶ τῆς μεταηφαιστειακῆς λειτουργίας ἀτμίδων εἶναι τὰ διάφορα μεταλλεύματα καὶ χρήσιμα ὀρυκτὰ καὶ πετρώματα, τὰ συναντώμενα ἐπὶ τῆς νήσου. Τοιαῦτα εἶναι: α΄) Ὁ ἀργυροῦχος βαρίτης. β΄) Οἱ ἀργυροῦχοι τόφφοι. γ΄) Φλέβες μεταλλευμάτων μολύβδου. δ΄) Φλέβες μεταλλευμάτων μαγγανίου, τῶν ὁποίων ἡ παραγωγὴ εἶχεν ὡς ἑξῆς κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη: τῷ 1925 3,583 τόνν. (32,8% μαγγάνιον)· τῷ 1926 4.853 τόνν. (32,8% μαγγάνιον)· τῷ 1927 6.695 τόνν. (26—32% μαγγάνιον). ε΄) Γύψος. στ΄) Θειομεταλλεύματα, τῶν ὁποίων ἡ ἐξαγωγὴ εἶχεν ὡς ἑξῆς κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη: τῷ 1925 1.050 τόνν., τῷ 1926 2.444 τόνν., τῷ 1927 2.432 τόνν., τῷ 1928 304 τόνν., τῷ 1928 1.771 τόνν. (περιεκτικότης εἰς θεῖον 30—50%). ζ΄) Πορσελλανοειδὴς γῆ, τῆς ὁποίας ἐκμετάλλευσις ἐγένετο κατὰ καιρούς. η΄) Στυπτηρία. θ΄) Μυλόπετραι, τῶν ὁποίων ἡ παραγωγὴ εἶχεν ὡς ἑξῆς κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη: τῷ 1925 3.850 τεμάχια, τῷ 1926 7.884 τεμ., τῷ 1927 4.472 τεμ., τῷ 1928 5.330 τεμ., τῷ 1929 1.893 τεμ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *K. Ehrenburg*, «Die inselgruppe Milos» (1889).—*A. Philippson*, «Beiträge zur Kenntniss der griechischen Inselwelt» (Petermans Mit. Erg.-Heft. Nr. 134 1901).—*R. A. Sonder*, «Zur Geologie und Petrographie der Inselgruppe von Milos» (Zeits. f. Vulkanologie, τόμ. VIII τεῦχ. 4, σελ. 181—237, μετὰ γεωλογικοῦ χάρτου). Γ. Κ. Γ.

—*[Φυσικ. Γεωγρ.]*. Ἡ νῆσος *Μῆλος*, σχήματος πεταλοειδοῦς, ἀποτελεῖται ἐκ δύο κορμῶν, τοῦ Α. καὶ τοῦ Δ., οἱ ὁποῖοι συνενούμενοι πρὸς Ν. δι᾽ ἰσθμοῦ πλάτους ἑνὸς μιλλίου, περικλείουσι μεταξὺ αὐτῶν εὐρὺν κολπίζοντα λιμένα, φερώνυμον τῇ νήσῳ, ἔχοντα εἴσδυσιν 5 μιλλ. καὶ στόμιον πλάτους ἑνὸς μιλλ., ἀνοιγόμενον πρὸς τὰ Β. ΒΔ. αὐτοῦ. Ὁ λιμὴν οὗτος εἶναι ἐκ τῶν μεγαλυτέρων φυσικῶν λιμένων τοῦ κόσμου, λόγῳ δὲ τῆς θέσεώς του ἔχει (ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος ἔτι) μεγάλην στρατηγικὴν σπουδαιότητα. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐχρησιμοποιήθη ὑπὸ τῶν συμμάχων ὡς ναυτικὴ βάσις τῶν Γάλλων. Ἀπὸ ἀπόψεως ἐπίσης ἐμπορικῆς ναυτιλίας ὁ λιμὴν τῆς Μήλου ἔχει μεγάλην σπουδαιότητα, χρησιμεύει δὲ ὡς καταφύγιον εἰς τὰ ἐν καιρῷ τρικυμίας πλέοντα ἀνὰ τὸ Μυρτῷον πέλαγος ἀτμόπλοια καὶ μάλιστα τῶν γραμμῶν Κρήτης-Πειραιῶς. Τὸ ἀνάπτυγμα τῆς ἀκτογραμμῆς τῆς Μήλου εἶναι 46 περίπου μιλλίων, τὸ δὲ μέγιστον μῆκος αὐτῆς ἀπὸ τῆς ΝΔ. ἐσχατιᾶς (ἀκρ. Ψάλις ἢ Ψαλὶ) μέχρι τῆς ΒΑ. (κάβο Μανώλης) φθάνει τὰ 12 ¼ μίλλ.

***Ἀκτογραφία*** (βλ. λ. *Αἰγαῖον*, τ. Β΄, σ. 404 γ΄.).

***Φάροι καὶ φανοί.*** Ὁ ναυτικὸς φωτισμὸς τῆς νήσου ἀποτελεῖται ἐκ τοῦ φανοῦ τοῦ ἀγκυροβολίου *Ἀδάμαντος* (ἱδρύθη τῷ 1892: φῶς πράσινον σταθερὸν 5 μιλλ.), λειτουργοῦντος ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Βομβάρδα (πλάτ. 36°43΄05″ Β., μῆκ. 24° 26΄35″ Ἀν.), ἐκ τοῦ φάρου προσγειώσεως, ἱδρυθέντος (1892) ἐπὶ τῆς νησῖδος *Ἀκραδιά*, ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸ στόμιον τοῦ λιμένος (ἐρυθρὸν σταθερὸν 10 μιλλ.), καὶ ἐκ τοῦ αὐτομάτου φάρου «Ἄγκα» τῆς νησῖδος *Παξιμάδι* (ἱδρύθη τῷ 1914: ζεῦγος ἐκλάμψεων λευκῶν 15 μιλλ.), σωτηρίου διὰ τὰ ἀπὸ Ἡρακλείου τῆς Κρήτης πρὸς Πειραιᾶ ἢ τἀνάπαλιν παραπλέοντα τὴν Μῆλον πλοῖα. Σ. Ε. Λ.

***Μορφολογία τοῦ ἐδάφους.*** Τὸ ἔδαφος τῆς Μήλου εἶναι ὀρεινόν, καλυπτόμενον ὑπὸ δύο ὀρεινῶν συστημάτων, ὑψουμένων εἰς τοὺς δύο προμνησθέντας κορμοὺς τῆς νήσου. Ἐκ τούτων τὸ μὲν δυτικόν, ὅπερ εἶναι τραχὺ καὶ ἄγονον, ὀνομάζεται ὀροσειρὰ τοῦ *Χάλακος*, ἧς ὑψηλοτέρα κορυφή, ὡς καὶ ὁλοκλήρου τῆς νήσου, εἶναι ὁ *Προφήτης Ἠλίας* (773 μ.), ὑψούμενος ἄνωθεν τοῦ ΝΔ. μυχοῦ τοῦ λιμένος τῆς Μήλου. Πρὸς ΒΔ. καὶ ἐγγὺς τοῦ Προφήτου Ἠλία κεῖται δευτέρα κορυφὴ *Μικροβούνι*. Ἄλλα τοπωνύμια τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης εἶναι ἡ *Φραγκοβίγλα*, ἡ *Πλατυρράχη*, τὰ *Πλακωτά*, ὁ *Φάβας* κλπ. Ὁ ἀνατολικὸς κορμὸς καλύπτεται ὑπὸ χθαμαλῶν καὶ εὐφόρων βουνῶν, ἐν συνεχεῖ ἁλύσει διατεταγμένων καὶ καταπιπτόντων ἠρέμως πρὸς τὴν πλευρὰν τοῦ λιμένος, παρὰ τὸν Α. μυχὸν τοῦ ὁποίου σχηματίζονται δύο μικραὶ πεδιάδες, χωριζόμεναι ἀπ᾽ ἀλλήλων διὰ τοῦ μικροῦ βουνοῦ *Γερακόπετρα* (172 μ.). Τὸ πρὸς τὴν θάλασσαν τμῆμα τῆς νοτιωτέρας ἐκ τῶν πεδιάδων τούτων, ἡ ὁποία εἶναι καὶ μεγαλυτέρα, καταλαμβάνουσιν αἱ ἁλυκαὶ τῆς νήσου. Μικροί τινες χείμαρροι κατερχόμενοι πρὸς τὸν λιμένα ἀποτελοῦσι τὰ μόνα ρέοντα ὕδατα τῆς νήσου. Σπουδαιότεροι τούτων εἶναι ὁ *Κάβουρας*, πηγάζων ἐκ τοῦ ὄρους Προφήτης Ἠλίας, καὶ ἡ *Λαγκάδα*, διασχίζουσα τὴν πεδιάδα καὶ τὰς ἁλυκάς. Χ. Δ.

***Μεταλλικὰ ὕδατα.*** Εἰς τὴν νῆσον ἀπαντῶσι πλεῖσται θερμομεταλλικαὶ πηγαί, ἐπὶ τῆς ἀκτῆς τῆς ἐσωτερικῆς περιφερείας, εἰς θέσεις κειμένας ἐπὶ τῶν ἐξωτερικῶν ἀκτῶν, ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τῆς νήσου καὶ ἐντὸς τῆς θαλάσσης. Ἐκτὸς τῶν μεταλλικῶν πηγῶν, εἰς πολλὰ μέρη ὑπάρχουν καὶ ἀεριοπηγαί, ἐξ ὧν ἀναδίδεται ὑδρόθειον, διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος, διοξείδιον τοῦ θείου καὶ ὑδρατμοί. Ἐκτὸς ἀρκετῶν ἄλλων μικροτέρων, αἱ κυριώτεραι τῶν μεταλλικῶν πηγῶν τῆς νήσου εἶναι: ἡ πηγὴ *Ἀδάμαντος*, ἡ πηγὴ *Ἁλυκῆς*, ἡ πηγὴ *Ριβαρίου*, ἡ πηγὴ παρὰ τὴν θέσιν «Κόκκινος Κάβος» καὶ ἡ πηγὴ *Ζεστά*. Ἐπίσης τὸ φρέαρ Δαμουλάκη παρέχει ὀξυανθρακικὸν ὕδωρ καὶ τὸ φρέαρ τοῦ Μανώλη Μακρινοῦ θερμὸν ὕδωρ, τὸ ὁποῖον παλαιότερον ἐχρησιμοποιεῖτο πρὸς λοῦσιν. Αἱ κυριώτεραι, ἀπὸ ἀπόψεως ἐκμεταλλεύσεως, ἐξ ὅλων τῶν μεταλλικῶν πηγῶν τῆς Μήλου εἶναι ἡ πηγὴ Ἀδάμαντος καὶ ἡ πηγὴ Ἁλυκῆς. Ἡ πρώτη παρέχει ὕδωρ θερμοκρασίας 39° Κ, εἶναι χλωριονατριοῦχος καὶ κάθε λίτρον ὕδατος αὐτῆς περιέχει περὶ τὰ 7,87 γραμμάρια στερεῶν οὐσιῶν καὶ 1,2 γραμμ. ἐλευθέρου ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Ἐπικρατοῦντα ἅλατα εἶναι: τὸ χλωριοῦχον νάτριον (4,9 γρ.), τὸ χλωριοῦχον ἀσβέστιον, τὸ χλωριοῦχον κάλιον, τὸ θειικὸν ἀσβέστιον, τὸ ὑδροανθρακικὸν μαγνήσιον καὶ τὸ ὑδροανθρακικὸν ἀσβέστιον. Τὰ λουτρὰ Ἁλυκῆς περιέχουν περὶ τὰ 25.7 γρ. στερεῶν συστατικῶν ἀνὰ λίτρον ὕδατος καὶ ἐπικρατοῦντα συστατικὰ τὸ χλωριοῦχον νάτριον, διάφορα ἄλλα χλωριοῦχα ἅλατα, θειικὸν ἀσβέστιον, θειικὸν μαγνήσιον, ὑδροανθρακικὸν μαγνήσιον κλπ. Τὰ μεταλλικὰ ὕδατα τῆς Μήλου ἐνδείκνυνται κατὰ ρευματικῶν παθήσεων, ἰσχιαλγιῶν, ὀσφυαλγιῶν, ἐπὶ ραχιτισμοῦ, λυμφατισμοῦ, ἀδενοπαθείας, ἐπὶ γυναικολογικῶν παθήσεων κλπ. Κ. Γ. Μ.

—*[Πολιτ. καὶ Οἰκονομ. Γεωγρ.]* Ἡ νῆσος Μῆλος εἶναι κυρίως κατῳκημένη κατὰ τὸ ΒΑ. αὐτῆς τμῆμα, ὅπου εἶναι συγκεντρωμένοι ἐγγὺς τῆς παραλίας τοῦ λιμένος οἱ κυριώτεροι συνοικισμοί. Ὡς ἐπίνειον χρησιμεύει τὸ ἀγκυροβόλιον *Ἀδάμας*, πρὸς Β. δ᾽ αὐτοῦ κεῖνται ἡ πρωτεύουσα τῆς νήσου καὶ τῆς ἐπαρχίας κώμη *Μῆλος* (κοιν. *Πλάκα*) καὶ τὰ χωρία *Τριοβάσαλος* καὶ *Τρυπητή*, μετὰ τῶν παρ᾽ αὐτὰ μικροτέρων συνοικισμῶν. Ἄλλοτε τὰ χωρία ταῦτα ἀπετέλουν 2 τέως δήμους (*Ἀδάμαντος*, περιλαμβάνοντα τὸ ὁμώνυμον χωρίον, καὶ *Μήλου*, εἰς ὃν ὑπήγοντο πάντα τὰ λοιπά), νῦν δὲ συνεκροτήθησαν εἰς 5 κοινότητας (*Ἀδάμαντος*, *Μήλου*, *Πέρα Τριοβασάλου*, *Τριοβασάλου* καὶ *Τρυπητῆς*). Αἱ ἐν τῇ νήσῳ δημόσιαι ἀρχαὶ εἶναι: ἐν Μήλῳ (Πλάκᾳ) ὑποδιοίκησις χωροφυλακῆς, εἰρηνοδικεῖον, οἰκονομικὴ ἐφορεία (γ΄ τάξεως), ταμεῖον (γ΄ τάξεως) καὶ ἐν Ἀδάμαντι ὑπολιμεναρχεῖον. Δημόσια ἐκ-

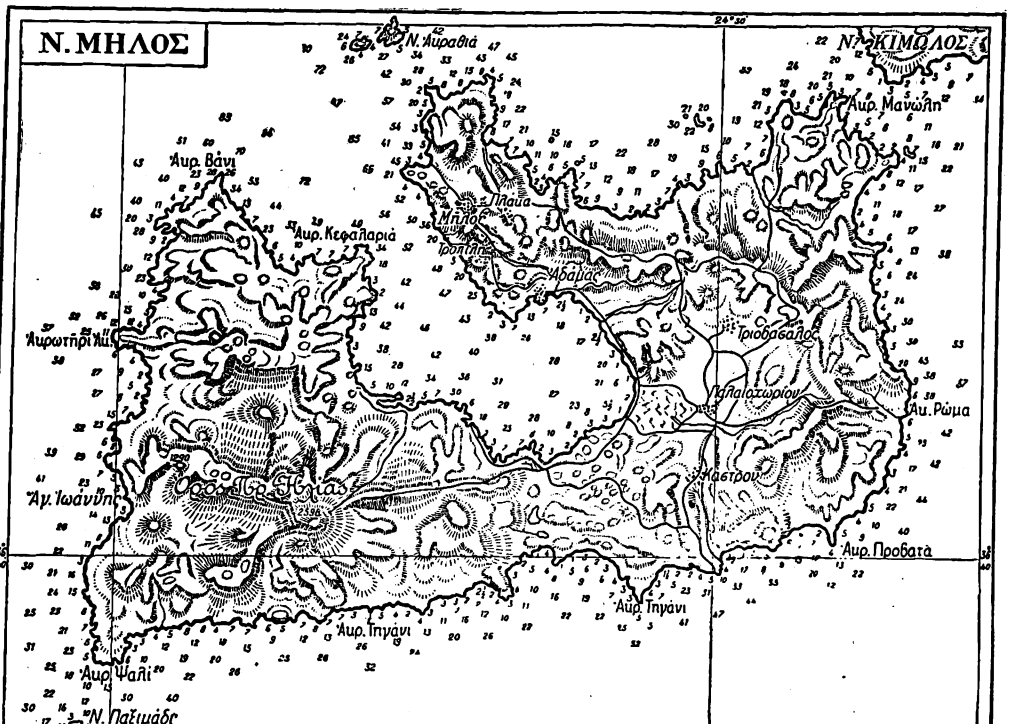


Digitized by Google

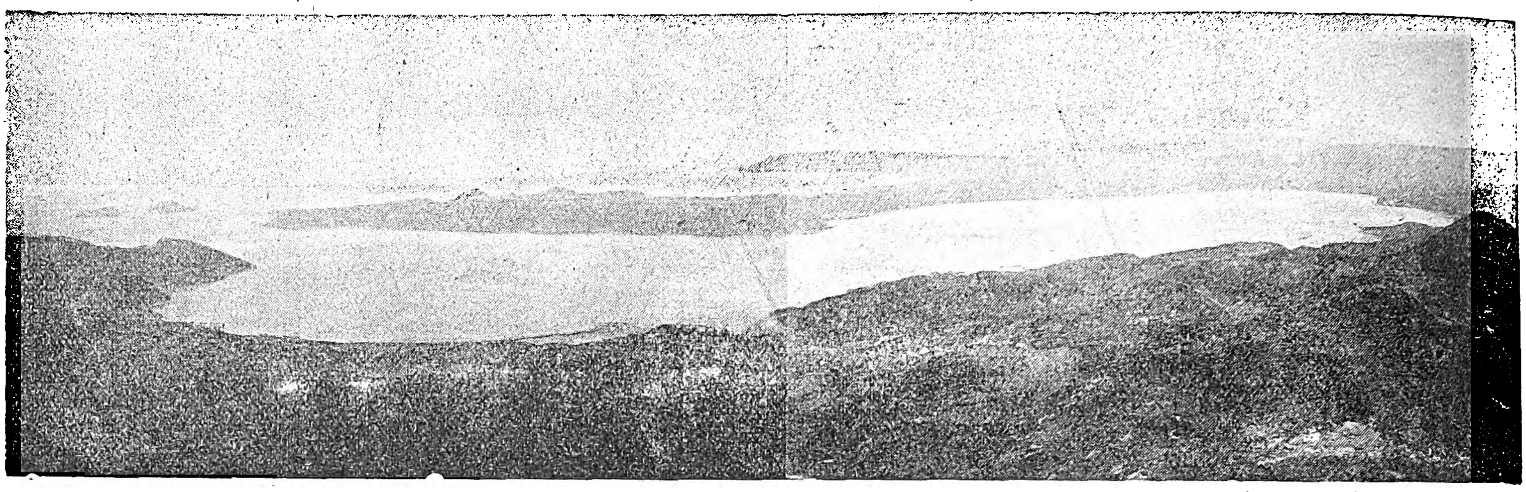

*Μῆλος: Γενικὴ ἄποψις τοῦ λιμένος τῆς νήσου ἀπὸ τοῦ ὄρους Προφήτης Ἠλίας.*

παιδευτήρια λειτουργοῦσιν, ἓν ἡμιγυμνάσιον (Μῆλος) καὶ δημοτικὰ σχολεῖα εἰς Μῆλον, Τριοβάσαλον, Τρυπητὴν καὶ Ἀδάμαντα.

Οἱ κάτοικοι τῆς Μήλου εἶναι κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος γεωργοὶ καὶ ποιμένες, ὀλιγώτεροι δὲ ἀσχολοῦνται εἰς τὴν ναυτιλίαν καὶ τὴν ἁλιείαν. Τὸ ἔδαφος τῆς νήσου παράγει εἰς μικρὰν μὲν ποσότητα ἀλλ' εἰς ἐκλεκτὴν ποιότητα πάντα τὰ εἴδη τῶν ἑλληνικῶν προϊόντων (σιτηρά, ἔλαιον, ἑσπεριδοειδῆ, σῦκα, βάμβακα, κηπαῖα κλπ.). Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ κατὰ θέρος καλλιεργούμενα κηπαῖα καὶ μάλιστα οἱ ὑδροπέπονες, οἱ πέπονες κλπ. Ἐπίσης ὑπάρχει μικρὰ ἁλιευτικὴ καὶ κυνηγετικὴ κίνησις, ἀπασχολουμένη μὲ τὴν ἐγχώριον ἀποκλειστικῶς κατανάλωσιν. Ἡ κτηνοτροφία ἀπασχολεῖται μὲ τὴν διατροφὴν μικρῶν μόνον ζῴων, προβάτων καὶ αἰγῶν, ἐκ τοῦ γάλακτος τῶν ὁποίων παρασκευάζονται ἐκλεκτῆς ποιότητος τυροκομικὰ προϊόντα (μυζῆθραι, βούτυρον, τυρὸς κλπ.). Ἡ ἔλλειψις τακτικῶν καὶ εὐθηνῶν συγκοινωνιῶν ἀφ' ἑνὸς καὶ ἡ μικρὰ ποσότης τῶν παραγομένων γεωργικῶν καὶ κτηνοτροφικῶν προϊόντων καθιστῶσιν ἀσήμαντον τὴν ἐμπορικὴν κίνησιν τῆς νήσου εἰς τὸ κεφάλαιον τῆς ἐξαγωγῆς. Εἰς τὸν λιμένα τῆς Μήλου προσεγγίζουσι δὶς τῆς ἑβδομάδος καὶ συχνότερον κατὰ τὸ θέρος τὰ ἀτμόπλοια τῆς ἀκτοπλοΐας τὰ διεξάγοντα τὴν συγκοινωνίαν τῶν Κυκλάδων (ἀπόστασις ἀπὸ Πειραιῶς κατ' εὐθεῖαν 90 μιλλ.) Αἱ ἐντὸς τῆς νήσου συγκοινωνίαι ἐξυπηρετοῦνται δι' ἡμιονικῶν ὁδῶν καὶ διὰ μικρῶν ἱστιοφόρων καὶ λέμβων. Ἐπὶ τῆς νήσου ὑπάρχει ἰσχυρότατος κρατικὸς σταθμὸς ἀσυρμάτου καὶ τηλεφωνικὴ συγκοινωνία μεταξὺ Μήλου—Ἀδάμαντος, Μήλου—Κιμώλου καὶ Ἀδάμαντος—Κιμώλου.

Κυριώτερος πλουτολογικὸς παράγων τῆς Μήλου εἶναι ὁ ἐκ τῶν προϊόντων τοῦ ὑπεδάφους, τὸ ὁποῖον ἐγκλείει πλεῖστα μεταλλεύματα καὶ πλουτοφόρα πετρώματα, ἐλάχιστα ὅμως ἐκμεταλλευόμενα μέχρι σήμερον. Εἰς τὸ Α. τμῆμα τῆς νήσου ὀρύσσεται παρὰ τὴν θέσιν Φιρλίγγο θεῖον (μέση ἐτησία παραγωγὴ 2.000 τόν.), πωρώδης χαλαζίτης (κοιν. μυλόπετρα, ἐτησ. παραγωγ. 4.000 τεμάχια), στυπτηρία κλπ. Εἰς τὸ Δ. τμῆμα ἐξάγεται μαγγάνιον (4000 τόνν.), πωλούμενον εἰς τὸ ἐξωτερικόν, γαληνίτης, μετάλλευμα ψευδαργύρου (τσίγγου) ὑπὸ μορφὴν θειοῦχον, μικρὰ ποσότης χαλκοῦ παρὰ τὴν θέσιν Φουρκοβούνι, ὅπου ὑπάρχουσιν ἴχνη παλαιᾶς ἐργασίας ἐκμεταλλεύσεως ἐγκαταλελειμμένης. Ἐξάγεται ἐπίσης παρὰ τὴν Ν. ἀκτὴν τοῦ λιμένος γύψος καθαρὸς ἐκμεταλλευόμενος ὑπὸ τοῦ κράτους καὶ παρὰ τὴν θέσιν Προβατᾶς ὀρυχεῖα καολίνης τῆς ἑταιρείας χημικῶν λιπασμάτων. Ἐσχάτως ἐσημειώθη σοβαρὰ κίνησις διὰ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν πλουσίων μεταλλευμάτων ἀργυρούχου βαρύτου (πρβλ. *D. C. Paléologue*, «Étude sur la valeur industrielle de minerais complexes argentifères et de la barytine du groupe des îles de Milos, Kimolos et Polivos», 1931). Ἐπίσης σπουδαῖον προϊὸν τῆς νήσου εἶναι τὸ εἰς ἀξιόλογον ποσότητα παραγόμενον ἅλας, εἰς τὰς παρὰ τὸν Α. μυχὸν τοῦ λιμένος ἁλυκάς. Τέλος τὰ ἰαματικὰ ὕδατα (βλ. κατωτ.) παραμένουσιν ἀκόμη σχεδὸν ἀνεκμετάλλευτα. Χ. Δ.

*Γυναικεῖαι ἐνδυμασίαι τῆς Μήλου κατὰ Tournefort.*

—[*Ἱστορ.*] Οἱ πρῶτοι κάτοικοι τῆς *Μήλου* ἦσαν πιθανώτατα Φοίνικες, μεθ' οὓς τὴν νῆσον κατῴκισαν Δωριεῖς καὶ Μινύαι ἐκ Λακωνίας ἐλθόντες, διὸ καὶ ἐπὶ τῶν ἱστορικῶν χρόνων ἡ Μῆλος ἐθεωρεῖτο νῆσος δωρική. Τὸ ὄνομα ἔλαβεν ἐκ τοῦ ἥρωος *Μήλου*, ἴσως δὲ καὶ ἐκ τοῦ σχήματος αὐτῆς στρογγύλου ὡς μήλου, ὅπερ καὶ ἀπεικονίζετο ἐπὶ τῶν νομισμάτων της. Ἐκαλεῖτο δὲ τὸ πάλαι καὶ *Βυβλίς*, *Γοργίς*, *Μέλαδα*, *Μιμαλλίς*, *Μεμβλὶς* καὶ *Ἄκυτος*, ὡς ἐκ τῆς γεωγραφικῆς δ' αὐτῆς θέσεως ἐλέγετο καὶ *Ζεφυρία*. Ἡ νῆσος διετήρησεν ἔκπαλαι ἀναλλοίωτον τὸ ὄνομα αὐτῆς, ὑπὸ τῶν Τούρκων δὲ μόνον ἐλέγετο *Δεϊρμὴν ἀδασῆ* (=νῆσος τῶν μύλων), ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἐξ αὐτῆς ἐξαγομένων μυλολίθων. Ὁ Πλίνιος λέγει ὅτι ἡ Μῆλος εἶναι ἡ στρογγυλωτέρα ὅλων τῶν νήσων. Κατὰ τὸν Θεόφραστον, ἐν Μήλῳ, ἕνεκα τῆς θερμότητος τοῦ ἐδάφους της, ὁ σῖτος ὡρίμαζεν ἐντὸς 30—40 ἡμερῶν ἀπὸ τῆς σπορᾶς. Ὁ δὲ Στράβων θεωρεῖ τὴν Μῆλον ἀξιολογωτέραν τῶν πλησίον νήσων Κιμώλου, Ἀνάφης, Θήρας καὶ Σίφνου. Ἐπὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων ἐφημίζοντο τὰ ὀρυκτὰ αὐτῆς τὰ χρήσιμα εἰς τὴν ἰατρικήν. Οὕτω ὁ Πλίνιος ἀναφέρει τὴν στυπτηρίαν τῆς Μήλου, δύο εἰδῶν οὖσαν, στερεὰν καὶ ὑγράν, καὶ θεωρουμένην ὡς ἓν τῶν δραστικωτάτων ἰατρικῶν. Ἀρίστης ποιότητος ἦτο καὶ τὸ ἐξορυττόμενον θεῖον, ὡς καὶ τὸ ἐκ μηλίας τινὸς γῆς κατασκευαζόμενον ἐν τῇ νήσῳ λευκὸν χρῶμα, τὸ «μήλινον» καλούμενον, χρήσιμον εἰς τὴν ζωγραφικήν· ὀνομαστὴ δ' ἦτο καὶ ἡ κίσηρις αὐτῆς, τὴν ὁποίαν μετεχειρίζοντο πρὸς λείανσιν τῶν δερμάτων. Αἱ ἔριφοι τῆς Μήλου ἦσαν περιζήτητοι, οἱ δὲ Μήλιοι ἀλέκτορες, τοὺς ὁποίους ἐχρησιμοποίουν οἱ Ρωμαῖοι πρὸς τὰς ἀλεκτρυονομαχίας, ἦσαν περιώνυμοι καὶ σχεδὸν ἐφάμιλλοι πρὸς τοὺς τῆς Ρόδου καὶ τῆς Τανάγρας. Οἱ Μήλιοι ἐδυσφημοῦντο τὸ πάλαι ὡς ἀσεβεῖς ἐκ τοῦ περιβοήτου ἐπὶ ἀθεΐᾳ Διαγόρου, Μηλίου τὴν καταγωγήν.

Οἱ Μήλιοι ὑπῆρξαν ἐκ τῶν ὀλίγων, οἵτινες δὲν ἔδωσαν γῆν καὶ ὕδωρ εἰς τοὺς Πέρσας. Ἔλαβον μέρος εἰς τὴν ἐν Σαλαμῖνι ναυμαχίαν (480 π. Χ.), ἀλλὰ τῷ 416, ἐπειδὴ ἡ νῆσος, κατοικουμένη ὑπὸ Δωριέων, συνεπάθει πρὸς τὴν Σπάρτην, οἱ Ἀθηναῖοι μετὰ μακρὰν πολιορκίαν ἐξεπόρθησαν τὴν πόλιν τῆς Μήλου καὶ κατέσφαξαν ἡβηδὸν πάντας τοὺς ἄρρενας κατοίκους της, ἐξανδραποδίσαντες τὰ παιδία καὶ τὰς γυναῖκας, ἐγκαταστήσαντες δ' εἰς τὴν νῆσον Ἀθηναίους κληρούχους. Λείψανά τινα τῶν κατοίκων ἐπανήχθησαν ἐκ νέου εἰς τὴν πατρίδα των ὑπὸ τοῦ Λυσάνδρου μετὰ τὴν πτῶσιν τῶν Ἀθηνῶν. Ἡ παροιμιώδης ρῆσις «λιμῷ Μηλίῳ» προῆλθεν ἐκ τῶν ταλαιπωριῶν, τὰς ὁποίας ὑπέστησαν ὑπὸ λιμοῦ οἱ Μήλιοι, πολιορκούμενοι ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων. Ἡ Μῆλος ἀναγράφεται ὡς καταβάλλουσα δεκαπέντε τάλαντα, ταῦτα δὲ φαίνεται ὅτι κατέβαλλεν οὐχὶ ὡς τακτικὴν φορολογίαν ἀνάλογον πρὸς τοὺς πόρους τῆς νήσου, ἀλλ' οἱονεὶ ὡς διηνεκῆ ἀποζημίωσιν, τὴν ὁποίαν οἱ Ἀθηναῖοι ἐπέβαλον κατὰ τῆς δωρικῆς νήσου.

Ἡ Μῆλος ἠκολούθησε κατόπιν τὴν κοινὴν τύχην τῶν ἄλλων Κυκλάδων ὑπὸ τοὺς Μακεδόνας καὶ κατόπιν τοὺς Ρωμαίους. Ἐπὶ Βυζαντινῶν ὑπήγετο τὸ πρῶτον μὲν (395—565 μ.Χ.) εἰς τὴν Ἐπαρχίαν τῶν Νήσων, εἶτα δ' ἀπετέλεσε μέρος τοῦ θέματος τοῦ Αἰγαίου Πελάγους, οὗτινος πρωτεύουσα ἦτο ἡ Σάμος. Τῷ 1207 κατελήφθη ἀπὸ τὸν Μᾶρκον Σανοῦδον, ὅστις καὶ ἥνωσε τὴν νῆσον μὲ τὸ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθὲν δουκᾶτον τῆς Νάξου. Ὁ Ἰωάννης Σανοῦδος, ἕκτος δοὺξ τοῦ Αἰγαίου Πελάγους, παρεχώρησε τὴν Μῆλον εἰς τὸν ἀδελφόν του Μᾶρκον, ὅστις ἐπροίκισε τὴν νῆσον εἰς τὴν κόρην του Φιορέντσαν, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν Φραγκῖσκον Κρίσπον. Οὗτος παρασύρας εἰς δολοφονικὴν ἐνέδραν ἐν Νάξῳ τὸν δοῦκα Νικόλαον Δάλλε-Κάρτσερι, κατέλαβε τὸ δουκᾶτον, εἰς ὃ προσήρτησε καὶ τὴν Μῆλον, ἀναγορευθεὶς δέκατος δοὺξ τοῦ Ἀρχιπελάγους. Ἡ νῆσος ὑπέστη τὴν ἐπιδρομὴν τοῦ Τούρκου πειρατοῦ Καραδόντη, ὅστις ἐλεηλάτησε τὸ κάστρον, κατέστρεψε πάσας τὰς οἰκοδομὰς τῆς νήσου καὶ ἀπήγαγεν 160 αἰχμαλώτους. Ἐν τέλει ὁ Χαϊρεδδὶν Βαρβαρόσσας ὑπέταξε τὴν Μῆλον τῷ 1537 μετὰ τῶν ἄλλων Κυκλάδων εἰς τοὺς Τούρκους, καταλύσας διὰ παντὸς τὴν φραγκικὴν κυριαρχίαν. Τῷ 1677 ὁ Ἕλλην πειρατὴς Ἰωάννης Κάψης ἐδέσποσεν ὁλοκλήρου τῆς νήσου καὶ ἀνεκήρυξεν ἑαυτὸν βασιλέα τῆς Μήλου· μετὰ τριετῆ ὅμως βασιλείαν συλληφθεὶς δολίως ὑπὸ τῶν Τούρκων μετεφέρθη εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖ ἀπηγχονίσθη (τῷ 1680).

Τοῦρκοι μονίμως οὐδέποτε ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν Μῆλον· αὕτη ὅμως καὶ ὅτε ἀκόμη ἀνῆκεν εἰς τὸν δοῦκα τῆς Νάξου ἦτο ὑπόφορος εἰς αὐτούς. Ἐπὶ τουρκοκρατίας οἱ κάτοικοι τῆς Μήλου, οἱ ὁποῖοι, ἐξαιρουμένων ὀλιγίστων Φράγκων, ἦσαν ὅλοι Ἕλληνες, διῳκοῦντο ὑπὸ τριῶν προεστώτων, οἵτινες ἐξελέγοντο καθ' ἕκαστον ἔτος ὑπὸ τῶν κατοίκων καὶ ἐλέγοντο ἐπίτροποι, καὶ ὑπὸ ἑνὸς βοεβόδα, ὅστις ἦτο ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον Ἕλλην, εἰσπράττων τὸ χαράτσιον, ἀλλὰ μὴ διαφέρων Τούρκου κατά τε τὴν σκληρότητα καὶ ἁρπακτικότητα. Ὑπῆρχε δὲ καὶ εἷς καδῆς, ὁ ὁποῖος ὅμως δὲν διέμενε μονίμως εἰς τὴν νῆσον. Ἡ νῆσος ἀπέτινεν εἰς τοὺς Τούρκους 7.000 γρόσια, ἅτινα τῷ 1700 περιωρίσθησαν εἰς 5.000.

Ὑπῆρξε δ' ἡ Μῆλος τὸ ὁρμητήριον πάντων τῶν λυμαινομένων τὴν Μεσόγειον πειρατῶν καὶ ἰδίως τῶν Γάλλων. Ἐκ τούτων πολλοὶ ἦσαν ὀνομαστοὶ εὐπατρίδαι, οἱ ὁποῖοι μετέφερον εἰς τὸν εὐρὺν καὶ ἀσφαλῆ λιμένα τῆς Μήλου τὰ λάφυρά των καὶ ἐκεῖ διενέμοντο αὐτά, λαμβανόντων καὶ τῶν ἐντοπίων τὸ μερίδιόν των· δι' ὃ καὶ ἡ Μῆλος ἐθεωρεῖτο τότε ἡ μεγάλη ἀγορὰ τοῦ Αἰγαίου, διὰ τὰ συσσωρευμένα ἐν αὐτῇ ἐμπορεύματα τῶν πειρατῶν, πωλούμενα εἰς εὐτελεστάτας τιμάς.

Ἡ Μῆλος μετέσχε καὶ τοῦ ὑπὲρ ἐθνικῆς ἀνεξαρτησίας Ἀγῶνος τοῦ 1821, τὸν Δεκέμβριον δὲ τοῦ 1822 ὁ ἐκ τῶν ἁρμοστῶν τῶν νήσων Κ. Μεταξᾶς, μεταβὰς εἰς Μῆλον, εἰς τὸν λιμένα τῆς ὁποίας εὗρε τὸν Γάλλον ναύαρχον δὲ Ρινὺ μετὰ μοίρας στόλου, διωργάνωσε τὴν διοίκησιν τῆς νή-

Digitized by Google

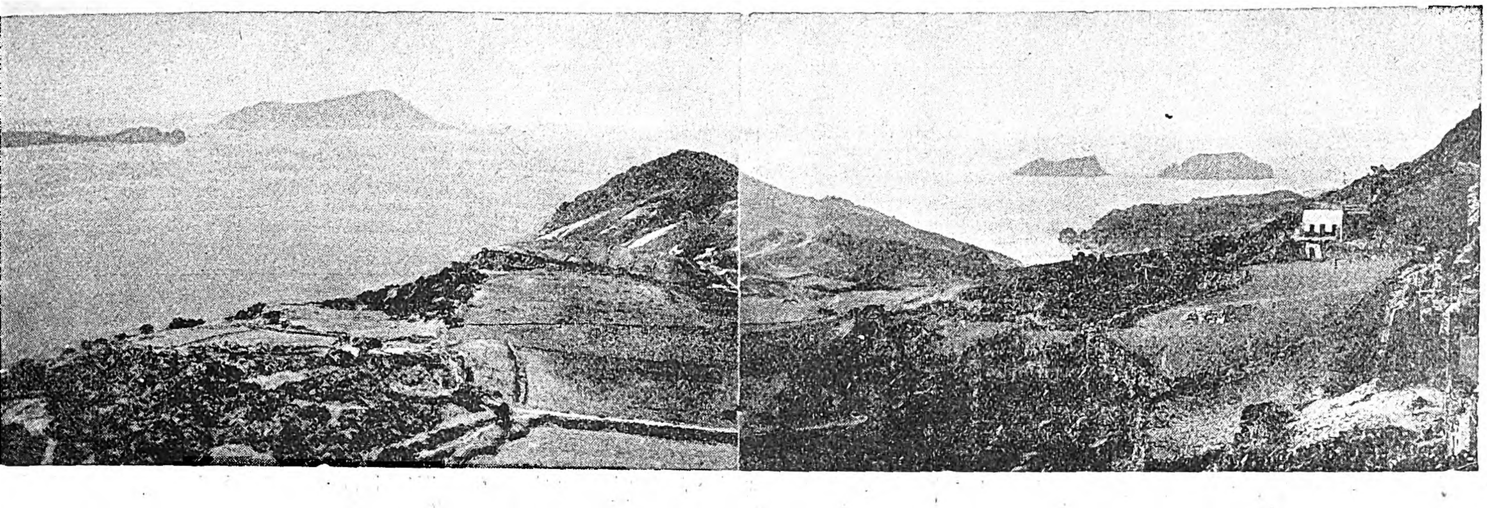

*Μῆλος: Ἡ εἴσοδος τοῦ λιμένος τῆς νήσου.*

σου καὶ ἐκανόνισε τὰ τῆς καταβολῆς ὑπὸ τῶν κατοίκων τοῦ φόρου τῆς δεκάτης.

Ἐν Μήλῳ ὁ Χριστιανισμὸς εἰσήχθη ἐνωρίτατα, ἐὰν κρίνωμεν ἐκ τῶν ἐν αὐτῇ εὑρεθέντων ἀρχαιοτάτων χριστιανικῶν μνημείων καὶ δὴ τῶν περιφήμων κατακομβῶν. Ὡς ἐπισκοπὴ ἡ Μῆλος ἐπὶ Βυζαντινῶν διετέλει ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Ρόδου, πρῶτος δ' ἐν ἔτει 680 ἀναφερόμενος ἐπίσκοπος αὐτῆς ἦν ὁ Εὐτύχιος. Καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς φραγκοκρατίας τὸν ἐπισκοπικὸν τῆς Μήλου θρόνον κατεῖχε Φράγκος ἱεράρχης· ἀλλ' ἐπελθόντων τῶν Τούρκων, τῷ 1537, ἡ Μεγάλη Ἐκκλησία, ἀνασυστήσασα τὴν μητρόπολιν Παροναξίας, ἔδωκεν εἰς ταύτην τὴν Μῆλον ἐξαρχικῶς. Τῷ 1601 προήχθη εἰς ἀρχιεπισκοπήν, ὑφ' ἣν ὑπήχθη καὶ ἡ Κίμωλος. Τῷ 1797, ἐπὶ πατριάρχου Γρηγορίου τοῦ Ε΄ αἱ ἀρχιεπισκοπαὶ Μήλου καὶ Σίφνου ἡνώθησαν καὶ ἀπετέλεσαν τὴν ὁμώνυμον αὐτῶν μητρόπολιν, ἥτις παρέμεινεν ὡς τοιαύτη μέχρι τοῦ 1833, ὅτε ἡ μὲν Μῆλος, ἀποσπασθεῖσα ταύτης, ὑπεβιβάσθη εἰς ἐπισκοπήν, ἡ δὲ Σίφνος ἀπετέλεσε μέρος τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Κυκλάδων. Τῷ 1706 ὁ πατριάρχης Γαβριὴλ ὁ Γ΄ διὰ σιγιλλιώδους ἀποφάσεως αὐτοῦ κατέστησε σταυροπηγιακὴν τὴν πρὸ μικροῦ συσταθεῖσαν ἐν Μήλῳ μονὴν τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου, τὸ δὲ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Γεωργίου Καπούλη ἐγένετο πατριαρχικὸν σταυροπήγιον διὰ γράμματος τοῦ πατριάρχου Ἱερεμίου (1724). Ἐκ τῶν παλαιῶν ἐπισκόπων τῆς Μήλου ὁ Παρθένιος φέρεται ὑπογεγραμμένος ἐν συνοδικῷ τόμῳ τῷ 1611 Νεοφύτου τοῦ Β΄, ὁ Γερμανὸς ἐν σιγιλλίῳ τοῦ 1623 τοῦ πατριάρχου Ἀνθίμου Β΄, ὁ δὲ Στέφανος Γατελοῦζος, Λατῖνος ἀρχιεπίσκοπος Μήλου, τὸν ὁποῖον δὲν ἀναφέρει ὁ Lequien, μνημονεύεται ἐν ἐγγράφῳ τοῦ 1563.

Ὑπῆρχον δ' ἐν Μήλῳ ἐπὶ τουρκοκρατίας δύο ἐπίσκοποι, ὁ μὲν Ἕλλην, ὁ δὲ Λατῖνος. Οἱ Δυτικοὶ ἔζων πολὺ στενοχωρημένοι, στερούμενοι τῶν πρὸς συντήρησιν. Διὰ νὰ κτισθῇ ἡ εἰς τὸ κάστρον τῆς Μήλου ἐκκλησία τῶν καπουκίνων, ἐχορηγήθησαν χίλια σκοῦδα ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας, τὸ δ' ἐπίλοιπον τῆς δαπάνης συνεπληρώθη ὑπὸ τῶν πειρατῶν.

Μήλιοι ἦσαν ὁ περιώνυμος ζωγράφος Ἀντώνιος Βασιλάκης, ὁ ἐπικαλούμενος Ἀλιένσε, καὶ ὁ ἐκ τῶν διακεκριμένων λογίων Γεώργιος Τρόμβος, οὗτινος περισώθησαν ἄξια λόγου ἐπιγράμματα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἰωσὴφ Χατζιδάκη*, «Ἡ ἱστορία τῆς Μήλου» (1927). - *Δ. Π. Πασχάλη*, «Ὁ βασιλεὺς τῆς Μήλου. Σελίδες ἀπὸ τὰς τουρκοκρατουμένας Κυκλάδας 1677—1680», (1926).—*Μ. Ἰ. Γεδεών*, «Ἀνατολικοὶ καὶ Δυτικοὶ ἐν Μήλῳ τῷ 1628» («Ἐκκλ. Ἀλήθεια», τ. Θ΄, σ. 175). Δ. Π. Π.

— [*Ἀρχαιολ.*] ***Ἀνασκαφαὶ — Νομίσματα***. Αἱ ἀνασκαφαί, αἵτινες ἐνηργήθησαν ἐν Μήλῳ καὶ ἐν τῇ θέσει Φυλακωπῇ ἀπὸ τοῦ 1896 μέχρι τοῦ 1899 ὑπὸ τῆς ἐν Ἀθήναις Ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς Σχολῆς διὰ τῶν διευθυντῶν C. Smith καὶ D. Hogarth, ἀπεκάλυψαν ἐν τῇ τοποθεσίᾳ «στὸν Καπνόν» προϊστορικὴν θαλασσίαν πόλιν, ἥτις κατῳκεῖτο καθ' ἅπασαν τὴν ἐποχὴν τοῦ χαλκοῦ, ἤτοι ἀπὸ τοῦ πρώτου ἡμίσεος τῆς Γ΄ μέχρι τοῦ τέλους τῆς Α΄ π. Χ. χιλιετηρίδος. Ἡ πόλις αὕτη ἠγείρετο ἐπὶ λοφίσκου. Ἡ θάλασσα ὅμως, σὺν τῷ χρόνῳ, εἰσεχώρησε πρὸς τὴν ξηρὰν καὶ οὕτω μέγα μέρος τῆς πόλεως παρεσύρθη ὑπὸ τῶν κυμάτων. Κατὰ τοὺς βασίμους ὑπολογισμοὺς τοῦ Atkinson, ἡ προϊστορικὴ αὕτη πόλις εἶχε πλάτος περὶ τὰ 220 μέτρα ἀπ' ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς, περιεβάλλετο δὲ ὑπὸ ὀχυροῦ τείχους, τὸ ὁποῖον σῴζεται ἑνιαχοῦ μέχρις ὕψους 4 μέτρων. Ἔξω τοῦ τείχους, καὶ εἰς ἀπόστασιν $2^1/_2$ μέτρων ἀπ' αὐτοῦ, ὑπῆρχε καὶ δεύτερον λεπτότερον τεῖχος, οἱονεὶ ὡς προαμυντικὴ γραμμή. Τὰ λείψανα τῶν κτισμάτων τῆς πόλεως ἀνήκουσιν εἰς τρεῖς διακεκριμένας ἐποχάς, ἀπὸ τῆς ἀρχαιοτάτης κυκλαδικῆς μέχρι τέλους τῆς μυκηναϊκῆς. Τὰ ἐρείπια τοῦ ἑνὸς στρώματος, κεῖνται ἀμέσως ἐπὶ τῶν ἐρειπίων οἰκημάτων τοῦ ὑποκειμένου στρώματος, πολλάκις ὅμως οἱ τοῖχοι τῶν ὑπερκειμένων κτισμάτων εἶναι τεθεμελιωμένοι ἐπὶ τοῦ σῳζομένου μέρους τῶν τοίχων τῶν ὑποκειμένων κτισμάτων. Ἐκ τῆς διατάξεως ταύτης τῶν τριῶν στρωμάτων προκύπτει τὸ συμπέρασμα ὅτι ὁ βίος ἐν τῇ προϊστορικῇ ταύτῃ πόλει ἦτο συνεχής.

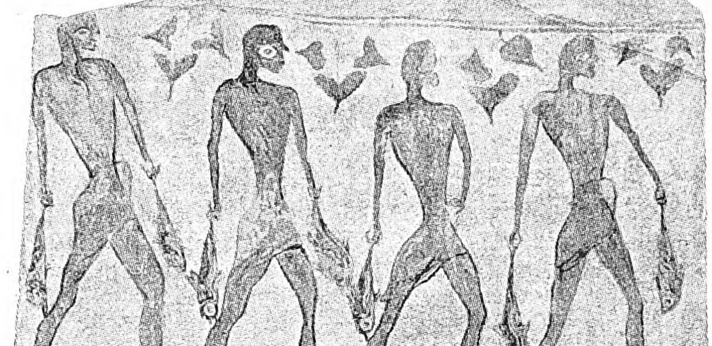

*Προϊστορικὸς λυχνοστάτης τῆς Μήλου, φέρων γραπτὴν παράστασιν ἁλιέων κρατούντων ἰχθῦς.*

[Ἐθν. Ἀρχαιολ. Μουσεῖον.]

Τὰ κτίσματα τῶν τελευταίων δύο περιόδων ἦσαν ἐκτισμένα κατὰ κανονικὸν καὶ συστηματικὸν σχέδιον. Αἱ ὁδοὶ τῆς τελευταίας περιόδου, ἤτοι τῆς μυκηναϊκῆς ἐποχῆς, διασταυροῦσιν ἀλλήλας κατὰ ὀρθίας γωνίας καὶ ἔχουσι πλάτος 1.40 μέτρων. Αἱ ὁδοὶ τῆς δευτέρας περιόδου δὲν εἶναι πλέον εὐδιάκριτοι, ἐκ δὲ τῆς πρώτης περιόδου μόνον ὀλίγα μεμονωμένα κτίσματα διεσώθησαν. Αἱ οἰκίαι τῆς προϊστορικῆς ταύτης καὶ μακροβίου πόλεως δὲν ἦσαν συνεσωρευμέναι ἡ μία πλησίον τῆς ἄλλης, ὅπως εἰς ἄλλους προϊστορικοὺς συνοικισμούς, ἀλλ' εἶχον ὅλαι ἀνοικτὰς αὐλὰς καὶ ἴσως χαμηλοὺς περιβόλους, οἵτινες ἐχώριζον αὐτὰς ἀπὸ τῆς στενῆς ὁδοῦ. Αἱ οἰκίαι τῶν δύο τελευταίων περιόδων φαίνεται ὅτι εἶχον ἀπὸ δύο ἕως τέσσαρα δωμάτια. Πιθανώτατον εἶναι ὅτι πολλαὶ τῶν οἰκιῶν ἦσαν διώροφοι, ἄλλαι δὲ εἶχον καὶ ὑπόγεια δωμάτια ὡς ἀποθήκας τροφίμων. Ἐκτὸς τοῦ μεγάλου τείχους, τὸ ὁποῖον προκαλεῖ τὸν θαυμασμόν, ἐκ τῶν ἀποκαλυφθέντων μνημείων τῆς πόλεως ταύτης ἀξιοσημείωτον εἶναι καὶ τὸ ἀνάκτορον τῆς μυκηναϊκῆς περιόδου. Αἱ μέθοδοι τῆς τοιχοδομίας δὲν διαφέρουσι τῶν ἐν ἄλλαις προϊστορικαῖς πόλεσι χρησιμοποιηθεισῶν. Σπουδαιότατον εὕρημα τοιχογραφίας εἶναι τὸ ἐν τῷ Ἐθνικῷ Ἀρχαιολογικῷ Μουσείῳ ἀποκείμενον μέγα τεμάχιον τοιχογραφίας, ἐφ' ἧς παρίστανται πετῶντες ἰχθύες (χελιδονόψαρα), ἐζωγραφημένοι μὲ κυανοῦν, κίτρινον καὶ μέλαν χρῶμα ἐπὶ λευκοφαίου ἐδάφους. Ἡ τοιχογραφία αὕτη ὁμοιάζει πολὺ πρὸς ζωγραφίας τῆς Κνωσοῦ, ἴσως δὲ εἶναι ἔργον Κρητὸς τεχνίτου. Προέρχεται ἐκ τῆς πόλεως τῆς δευτέρας περιόδου καὶ ἐπιβεβαιώνει τὸ καὶ ἐξ ἄλλων ἐνδείξεων συμπέρασμα, ὅτι ἡ προϊστορικὴ Μῆλος ἔφθασε τὸν ὕψιστον βαθμὸν εὐδαιμονίας κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην. Ἐκτὸς τῶν τοιχογραφιῶν, σπουδαιότατα εὑρήματα τῶν ἀνασκαφῶν τῆς Φυλακωπῆς εἶναι καὶ τὰ πήλινα ἀγγεῖα, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦσι πλήρη σειρὰν ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων κυκλαδικῶν μέχρι τῶν τελευταίων μυκηναϊκῶν ἀγγείων. Ἐν Φυλακωπῇ τὸ πρῶτον στρῶμα παρουσίασε δείγματα τῆς πρωτογόνου, ἀχρωματίστου κεραμεικῆς. Τὰ κεραμεικὰ προϊόντα τῆς πρώτης περιόδου εἶναι μὲν καὶ ταῦτα χειροποίητα μὲ ἐγχάρακτον τὴν διακόσμησιν, ἀλλ' ἡ ἐργασία εἶναι πλέον ἐπιμεμελημένη, ἀρχίζει δὲ καὶ ἡ χρωματιστὴ διακόσμησις ὁτὲ μὲν στιλπνή, ὁτὲ δὲ ἀμαυρά. Ἐν τῇ δευτέρᾳ πόλει τὰ ἀγγεῖα γίνονται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον διὰ τροχοῦ, ἐξαφανιζομένης τῆς ἐγχαράκτου διακοσμήσεως καὶ ἐπικρατούσης εἰς εὐρυτάτην κλίμακα τῆς χρωματιστῆς τοιαύτης μὲ νατουραλιστικὰ θέματα, ὡς φυτά, ζῷα, ἔτι δὲ καὶ ἀνθρώπους. Ὡραῖα δείγματα τῆς ἐποχῆς ταύτης ἀπόκεινται ἐν τῇ προϊστορικῇ αἰθούσῃ τοῦ Ἐθνολογικοῦ Ἀρχαιολογικοῦ Μουσείου. Ἐκ τούτων σπουδαιότατον εὕρημα εἶναι τεμάχιον ἀγγείου, πιθανῶς λυχνοστάτου, πέριξ τοῦ ὁποίου παρίστανται 4 ἁλιεῖς κρατοῦντες ἕκαστος ἰχθὺν ἐν τῇ χειρί. Αἱ μορφαὶ εἶναι ἐζωγραφημέναι διὰ μέλανος καὶ ἐρυθροῦ χρώματος ἐπὶ λευκοῦ ἐδάφους, τὸ ἔργον δὲ ἀνήκει εἰς τὴν πρώϊμον μυκηναϊκὴν σχολήν. Ἡ τρίτη πόλις ἐξηκολούθει ἐπί τινα χρόνον νὰ παράγῃ ἀγγειοπλαστικὰ εἴδη τῆς δευτέρας περιόδου, ἀλλ' ἤδη πολλὰ κεραμεικὰ εἴδη τοῦ μυκηναϊκοῦ ρυθμοῦ ἤρχισαν εἰσαγόμενα εἰς τὴν νῆσον. Ἡ σπουδαιότης τῆς νήσου ἤρχισε προφανῶς νὰ παρακμάζῃ κατὰ τὴν περίοδον ταύτην, ἴσως ὡς ἐκ τῆς ἐλαττώσεως τῆς ζητήσεως πλέον τοῦ ὀψιανοῦ ἐγχωρίου λίθου, ἐξ οὗ κατεσκευάζοντο κατὰ τοὺς προϊστορικοὺς ἐκείνους χρόνους ὀξέα ἐργαλεῖα. Κατὰ ταῦτα, ἡ Μῆλος ὑπῆρξε κατὰ τοὺς προϊστορικοὺς χρόνους σπουδαιότατον κέντρον τοῦ κυκλαδικοῦ πολιτισμοῦ καὶ μία τῶν σημαντικωτάτων εἰς πολιτισμὸν πόλεων τῆς προϊστορικῆς ἐν γένει Ἑλλάδος.

Ἡ προϊστορικὴ αὕτη μεγάλη πόλις ἐξηφανίσθη, φαίνεται, κατὰ τοὺς χρόνους τῆς λεγομένης δωρικῆς μεταναστεύσεως, ὑποστᾶσα καὶ αὕτη τὴν κοινὴν τύχην τῶν μεγάλων προϊστορικῶν πόλεων τῆς Κρήτης καὶ τῆς Πελοποννήσου.

Κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς τούτους χρόνους ἡ κυρί-



Digitized by Google

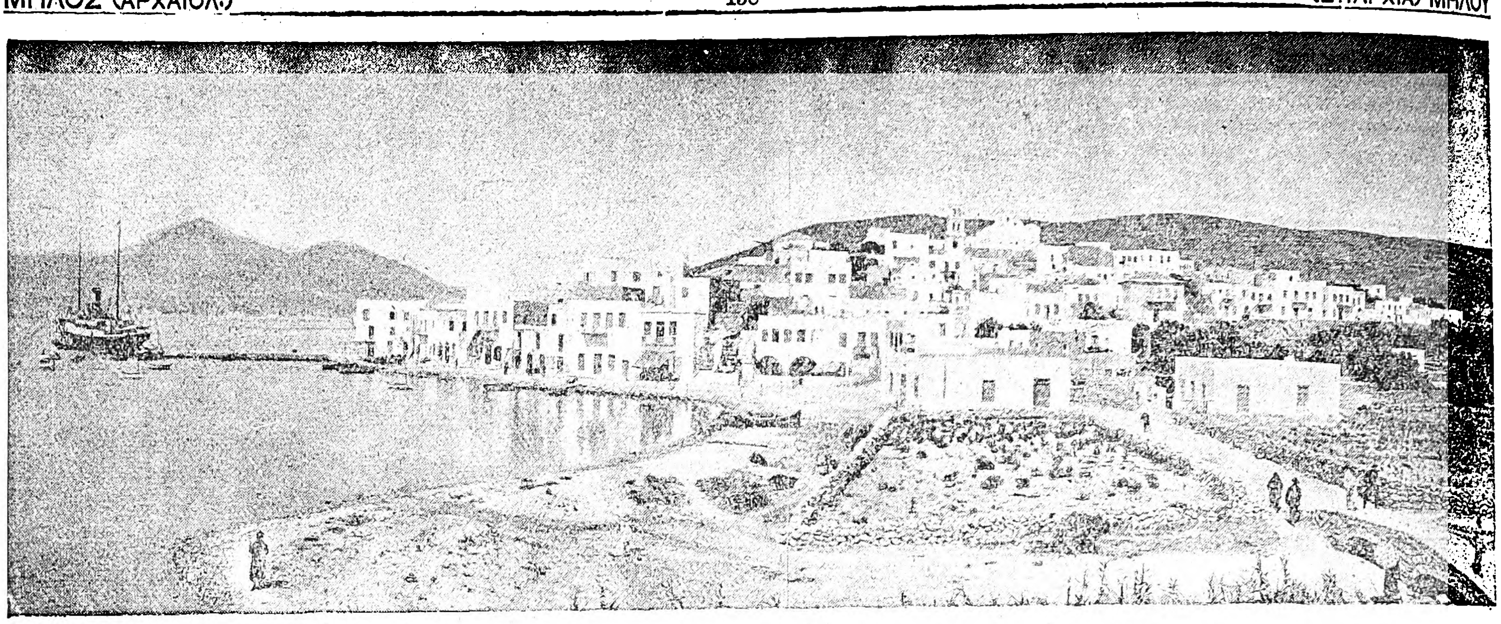

*Μῆλος : Γενικὴ ἄποψις τῆς κωμοπόλεως Ἀδάμας.*

πόλις ἐν τῇ νήσῳ ἐκαλεῖτο *Μῆλος*, ἐγειρομένη εἰς τὸ βάθος τοῦ κόλπου. Ἡ πόλις αὕτη φαίνεται ὅτι ἦτο πολὺ μικρά, διότι ὁ Θουκυδίδης ὀνομάζει αὐτὴν χωρίον. Τὰ ἐρείπια τοῦ ἱστορικοῦ τούτου χωρίου εὑρίσκονται μεταξὺ τοῦ Κάστρου, τῆς σημερινῆς πρωτευούσης τῆς Μήλου, καὶ τῆς βορείας ἀκτῆς τοῦ λιμένος. Ἡ πόλις περιεβάλλετο ὑπὸ τείχους, τοῦ ὁποίου σῴζονται ὀλίγα λείψανα πολυγωνικῆς τοιχοδομίας καὶ ἄλλα κανονικῆς τοιχοδομίας μὲ στρογγύλους πύργους. Ἡ δυτικὴ πλευρὰ τοῦ τείχους μάλιστα διατηρεῖται καλύτερον, κατερχομένη τοῦ λόφου ἀπὸ κορυφῆς μέχρι θαλάσσης. Κατὰ τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν τὸ τεῖχος ἠκολούθει τὴν γραμμὴν τῶν βράχων, τῆς γραμμῆς ὅμως ταύτης ὀλίγα θεμέλια διεσώθησαν κατὰ διαφόρους θέσεις. Ἐντὸς τοῦ περιβόλου τούτου ἐγείρεται λοφίσκος, ἐφ' οὗ εἶναι ᾠκοδομημένον μικρὸν μοναστήριον. Ὁ λοφίσκος οὗτος ἐχρησίμευε κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους ὡς ἀκρόπολις τῆς Μήλου, ἐπ' αὐτοῦ δὲ ἀνευρέθησαν διάφορα ἀρχιτεκτονικὰ μέλη. Κατὰ τὴν νοτιοανατολικὴν πλευρὰν τοῦ λόφου ἦτο τὸ θέατρον ἢ τὸ ᾠδεῖον, τοῦ ὁποίου σῴζονται ὀλίγαι ἡμικυκλικαὶ θέσεις τῆς ἀνωτάτης σειρᾶς, λελαξευμέναι ἐντὸς τοῦ βράχου. Ὀλίγα βήματα ἀνατολικώτερον τοῦ κτίσματος τούτου εὑρίσκονται τὰ ἐρείπια τοῦ ἱεροῦ τοῦ Διονύσου. Περὶ τὰ ἑκατὸν βήματα ΝΔ. τούτου ἔκειτο τὸ μέγα θέατρον, τὸ ὁποῖον ἐκαθαρίσθη κατὰ τὸ 1836 ὑπὸ τοῦ τότε διαδόχου τῆς Βαυαρίας. Τὸ θέατρον, τοῦ ὁποίου σῴζονται αἱ ἐννέα κατώτεραι σειραὶ τῶν ἑδωλίων ἐκ λευκοῦ μαρμάρου, ἐξετείνετο πρὸς τὸν λόφον καὶ κατεσκευάσθη, ὡς δεικνύει ὁ ἀρχιτεκτονικὸς αὐτοῦ χαρακτήρ, κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους. Πρὸς ἀνατολὰς τῆς ἀρχαίας ταύτης πόλεως καὶ παρὰ τὸ χωρίον Τρυπητὴ ὁ λόφος εἶναι τετρυπημένος ὑπὸ παμπόλλων ἑλληνορρωμαϊκῶν τάφων, λελαξευμένων ἐντὸς βράχων, ἐξ ὧν ἦλθον εἰς φῶς πλεῖστα ὅσα ἔργα τέχνης, ὡς ἔγχρωμα ἀγγεῖα, χρυσᾶ κοσμήματα, ὅπλα καὶ οἰκιακὰ σκεύη παντὸς εἴδους. Ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ εὑρίσκονται καὶ αἱ περίφημοι χριστιανικαὶ κατακόμβαι. Ἡ ἀρχαία πόλις Μῆλος οὐδέποτε ἀνεσκάφη συστηματικῶς. Ἐκ τυχαίων ὅμως ἀνασκαφῶν ἦλθον εἰς φῶς σπουδαῖα καλλιτεχνικὰ ἔργα, ὡς εἶναι ἡ περίφημος Ἀφροδίτη τῆς Μήλου, τὸ θαυμάσιον ἄγαλμα, τὸ ὁποῖον κοσμεῖ νῦν τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου τῶν Παρισίων καὶ τὸ ὁποῖον εὑρέθη παρὰ τὸ θέατρον τῷ 1820. Σπουδαῖον ἐπίσης εὕρημα ἐκ Μήλου εἶναι καὶ τὸ κολοσσικὸν ἄγαλμα τοῦ Ποσειδῶνος, τὸ ὁποῖον κοσμεῖ τὸ Ἐθνικὸν Ἀρχαιολογικὸν Μουσεῖον. Τὸ ἄγαλμα τοῦτο, ὕψους 2,45 μ., εὑρέθη τῷ 1877 ἐν Μήλῳ καὶ κατὰ τὴν θέσιν Κλῆμα, κάτωθεν τοῦ ἀμφιθεάτρου, παριστᾷ δὲ τὸν θεὸν τῆς θαλάσσης κρατοῦντα τὴν τρίαιναν (ἐξαφανισθεῖσαν) καὶ ἔχοντα παρ' αὐτῷ τὸν δελφῖνα. Ἀλλὰ καὶ τῆς ἀγγειογραφικῆς τέχνης τῆς Μήλου κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους ὑπάρχουσι πολλὰ δείγματα ἀπὸ τῆς γεωμετρικῆς περιόδου καὶ ἐντεῦθεν, φανερώνοντα ὅτι ἡ τέχνη αὕτη μεγάλως προώδευσεν ἐν τῇ νήσῳ καὶ ἤκμασε καὶ κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους. Τὸ κυρίως χαρακτηρίζον τὰ ἀγγεῖα τῆς Μήλου εἶναι ὅτι ταῦτα εἶναι μεγαλόσχημα καὶ ἔχουσιν ὑπόλευκον τὸ ἔδαφος, ἐφ' οὗ αἱ μορφαὶ εἶναι γεγραμμέναι μὲ ἀνοικτὸν μέλαν χρῶμα μὲ ἐπίθεσιν πολλάκις ἐρυθροφαίου χρώματος πρὸς ἔξαρσιν τῶν ἀνδρικῶν μορφῶν, μὲ κιτρινίζον δὲ λευκὸν πρὸς διάκρισιν τῶν γυναικείων τοιούτων. Πολλὰ ἀγγεῖα τῆς Μήλου εὑρίσκονται εἰς διάφορα μουσεῖα τῆς Εὐρώπης, τὰ περισσότερα ὅμως εὑρίσκονται ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Μυκόνου, ὀλίγα δὲ καὶ ἐν τῷ Ἐθνικῷ Ἀρχαιολογικῷ Μουσείῳ. Ὡραῖον δεῖγμα τῆς τεχνικῆς ταύτης εἶναι τὸ ὑπ' ἀρ. 708 μηλιακὸν ἀγγεῖον τοῦ Ἐθνικοῦ Μουσείου, τὸ ὁποῖον φέρει τὴν παράστασιν τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ κιθαρῳδοῦ. Ὡραιότατον ἐπίσης ἀγγεῖον προερχόμενον ἐκ Μήλου εἶναι καὶ ὁ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λούβρου τῶν Παρισίων ἀποκείμενος μεγαλοπρεπὴς ἀμφορεύς, ἐφ' οὗ παρίσταται ἡ γιγαντομαχία.

*Ἀργολικὸς γεωμετρικὸς κρατὴρ ἐκ Μήλου.*
[Ἐθν. Ἀρχαιολ. Μουσεῖον.]

Ἡ Μῆλος εἶναι μία ἐκ τῶν ἑπτὰ νήσων τοῦ Αἰγαίου, τῶν ὁποίων σῴζονται ἀργυρᾶ νομίσματα τῆς ἀρχαϊκῆς περιόδου. Τὰ νομίσματα ταῦτα ἀπὸ τοῦ 500 π. Χ. εἶναι κεκομμένα κατὰ τὸν φοινικικὸν σταθμικὸν σύστημα καὶ φέρουσιν ἐπὶ μὲν τοῦ ἐμπροσθοτύπου μῆλον, ἐπὶ τοῦ ὀπισθοτύπου δὲ ἔγκοιλον τετράγωνον, κεκοσμημένον μὲ τρεῖς δακτυλίους. Μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Λυσάνδρου ἐκ νέου συνοικισιν τῆς Μήλου ἐκόπησαν καὶ πάλιν ἀργυρᾶ νομίσματα, ἀλλὰ τὴν φορὰν ταύτην ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ροδιακοῦ σταθμικοῦ συστήματος. Τὰ νομίσματα ταῦτα, ἀπὸ τοῦ 400—300 π. Χ., ἔχουσι τὸ μῆλον καὶ κάνθαρον ἢ τοξότην.

*Ἀγγειογραφία μονομαχίας ὁπλιτῶν ἐπὶ μηλιακοῦ ἀμφορέως.*

Ἀπὸ τοῦ 300—200 π. Χ. τὰ νομίσματα φέρουσι τὴν κεφαλὴν τῆς Ἀθηνᾶς μὲ κορινθιακὸν κράνος καὶ τὸν Ἀπόλλωνα μὲ μακρὸν χιτῶνα, πέριξ δὲ τὸ ὄνομα Μαλίων καὶ τὸ ὄνομα τοῦ ἄρχοντος. Κατὰ τοὺς αὐτοκρατορικοὺς χρόνους, ἀπὸ τοῦ 200 π. Χ. καὶ ἐντεῦθεν, τὰ μηλιακὰ νομίσματα φέρουσιν ἐμπρὸς μὲν τὰς λέξεις, Βουλὴ ἢ Δῆμος ἢ Τύχη μετὰ κεφαλῆς τοῦ Δήμου καὶ προτομῆς Παλλάδος, ὀπίσω δὲ γλαῦκα μετὰ στεφάνου καὶ πέριξ τὴν λέξιν Μαλίων.

*Μηλιακὸς ἀμφορεὺς μετ' ἀνατολιζόντων θεμάτων.*
[Ἐθν. Ἀρχαιολ. Μουσεῖον.]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Excavations at Phylakopi in Melos conducted by the British School at Athens. — *Π. Καββαδία*, «Προϊστορικὴ Ἀρχαιολογία». — *P. Ducati*, «Ceramica Greca».— *Head*, Historia Numorum: a manual of Greek numismatics».

Β. Δ. ΘΕΟΦΑΝΕΙΔΗΣ

— *[Γλωσ.]* Ἡ διάλεκτος τῶν ἀρχαίων Μηλίων ἀνῆκεν εἰς τὴν ὁμάδα τῶν δωρικῶν διαλέκτων. Κατὰ τὴν παρὰ τῷ Ἡροδότῳ (8,48) ἀναφερομένην παράδοσιν, οἱ ἀρχαῖοι Μήλιοι ἦσαν «γένος ἀπὸ Λακεδαίμονος»· ἀλλ' οὔτε ἡ διάλεκτος τούτων οὔτε τὸ ἀλφάβητόν των (ἓν ἐκ τῶν ἀρχαϊκωτέρων ἀλφαβήτων τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος) ἀποδεικνύουν ἰδιαιτέραν τινὰ συγγένειαν τῶν Μηλίων πρὸς τοὺς Λακεδαιμονίους. Ἡ περὶ ἧς ὁ λόγος διάλεκτος εἶναι γνωστὴ ἐκ μόνων τῶν ἀνευρεθεισῶν μέχρι τοῦδε ἐπιγραφῶν, αἱ ὁποῖαι ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Blass (παρὰ Collitz, 4871—4939) καὶ ὑπὸ τοῦ Hiller von Gärtringen (ἐν IG.XII, 3 κ. ἄ.). Εἰς τὰς ἀρχαιοτέρας ἐκ τούτων ἀντὶ τῶν γραμμάτων *Φ*, *Χ* καὶ *Ξ* ἐχρησιμοποιήθησαν τὰ *ΠΗ*, *ΚΗ* καὶ *ΚΣ*: ἀμενπhές, ἐπευκhόμενος, δέκσαι κ. λ. (=ἀμεμφές, ἐπευχόμενος, δέξαι) κ. οὕ. κ., εἰς δὲ τὰς νεωτέρας ἐξ αὐτῶν εἶναι καταφανὴς ἡ ὁσημέραι μεγαλυτέρα ἐπίδρασις τῆς Κοινῆς ἐπὶ τῆς μηλιακῆς διαλέκτου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Thumb.*, «Handbuch der griechischen Dialekte», (Heidelberg 1909, σελ. 134 κ.ἑξ.).—*Fr. Bechtel*, «Die griechischen Dialekte» (II. Berlin 1923 σελ. 559).

Γ. Π. Α.

— **Μῆλος** *[Γεωγρ.]*. Κώμη πρωτεύουσα τῆς νήσου καὶ τῆς ἐπαρχίας Μήλου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται κάτωθεν λοφίσκου ὕψους 280 μ., δεσπόζοντος τῆς περιοχῆς, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐγείρεται τὸ παλαιὸν φραγκικὸν φρούριον τῆς Μήλου, ἐξ οὗ καὶ Κάστρον καλεῖται οὗτος. Ἀπέχει ἐλάχιστα τῆς Α. παραλίας τοῦ λιμένος τῆς Μήλου (ἀριστερὰ τῷ εἰσπλέοντι), καὶ ἔχει ὡς ἐπίνειον τὸν πρὸς Ν. καὶ εἰς ἀπόστασιν μιᾶς ὥρας κείμενον Ἀδάμαντα, μεθ' οὗ συνδέεται διὰ βατῆς ὁδοῦ. Ἀπέχει ἀπὸ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας πόλεως Μήλου ἡμίσειαν περίπου ὥραν πρὸς Β. Περὶ αὐτὴν συγκεντροῦνται τὰ ἀξιολογώτερα τῆς νήσου χωρία καὶ συνοικισμοί, ἡ Τρυπητὴ πρὸς Ν., αἱ Πλάκες καὶ ὁ Τριοβάσαλος πρὸς Α. καὶ ὁ Ἀδάμας πρὸς Ν. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον γεωργοὶ καὶ κτηνοτρόφοι, τὰ δὲ κύρια προϊόντα της εἶναι τὰ ὄσπρια καὶ τὰ κηπαῖα, ἰδίως δὲ οἱ πέπονες καὶ οἱ ὑδροπέπονες. Ἔχει ἡμιγυμνάσιον, εἰρηνοδικεῖον, ὑποδιοίκησιν χωροφυλακῆς, οἰκονομικὴν ἐφορείαν (γ' τάξεως), ταμεῖον (γ' τάξεως), ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐπίσης ὑπάρχει ἐγκατάστασις ἰσχυροῦ σταθμοῦ ἀσυρμάτου.

Ἡ κώμη ὀνομάζεται κοινῶς *Πλάκα* ἢ *Κάστρον τῆς Μήλου*. Κάτ. (1928) 788. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὰ χωρία *Πλάκες* καὶ *Φιροπόταμος*, ὡς καὶ τὸν ἐπὶ τοῦ Κάστρου συνοικισμόν. Ἡ Μῆλοι ἦτο ἄλλοτε πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Μήλου, περιλαμβάνοντος τὰς σημερινὰς κοινότητας Μήλου, Τριοβασάλου, Πέρα Τριοβασάλου καὶ Τρυπητῆς, δηλαδὴ πάντα τὰ χωρία τῆς νήσου ἐκτὸς τοῦ Ἀδάμαντος.

Χ. Δ.

— **«Μῆλος»**. Ἑβδομαδιαία ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1924. Ἐξεδίδετο μέχρι τοῦ 1929.—Π.

— **Μήλου, *Ἀφροδίτη τῆς*** — βλ. λ. *Ἀφροδίτη*.

— **Μήλου *ἐπαρχία*** *[Γεωγρ.]*. Μία ἐκ τῶν ἑπτὰ ἐπαρχιῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὸν νομὸν Κυκλάδων, καταλαμβάνουσα τὰς ἐν τῷ ΝΔ. τμήματι τοῦ συμπλέγματος νήσους, *Μῆλον*, *Κίμωλον*, *Σίφνον*, *Φολέγανδρον* καὶ *Σίκινον*, τὰς νησῖδας *Πολύαιγον* καὶ *Ἀντίμηλον* καὶ τοὺς περὶ αὐτὰς σκοπέλους καὶ ὑφάλους. Ἔχει κατ. (1928) 11.912 καὶ πρωτεύουσαν τὴν κώμην *Μῆλον* (*Πλάκαν*). Ὑποδιῃρεῖτο ἄλλοτε εἰς 6 τέως δήμους (Ἀδάμαντος,

Digitized by Google

Κιμώλου, Μήλου, Σικίνου, Σίφνου καὶ Φολεγάνδρου), νῦν δ' εἰς 11 κοινότητας (*Ἀδάμαντος, Ἄνω Μεριᾶς, Ἀπολλωνίας, Ἀρτεμῶνος, Κιμώλου, Μήλου, Σικίνου, Πέρα Τριοβασάλου, Τριοβασάλου, Τρυπητῆς* καὶ *Φολεγάνδρου*), περιλαμβανούσης 41 κώμας, χωρία καὶ συνοικισμούς. Χ. Δ.

**Μῆλος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις παράλιος κατὰ τὰς Ἡρακλέους στήλας, ἀναφερομένη ὑπὸ Στεφάνου τοῦ Βυζαντίου (166, 23). Ταυτότης ἄγνωστος. Σ. Ε. Λ.

**μηλοσφακιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐλελίσφακος ὁ μηλοφόρος*.

**μηλοφάγος** (ὁ) (Melophagus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυκέρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἱπποβοσκιδῶν*, περιλαμβάνον μικρότατα ἔντομα παρασιτικῶς ζῶντα ἐπὶ διαφόρων ζῴων καὶ κυρίως τῶν κοιλοκέρων. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μηλοφάγος ὁ τοῦ προβάτου* (Melophagus ovinus). Οὗτος ἔχει μῆκος 5 χιλιοστομέτρων καὶ μορφὴν ἀραχνοειδῆ, χρῶμα δὲ φαιὸν μετὰ μικροτάτων λεπτῶν κηλίδων. Ζῇ ἐπὶ τῶν προβάτων παρασιτικῶς καὶ ἀπομυζᾷ τὸ αἷμά των. Δ. Ν. Π.

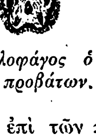

*Μηλοφάγος ὁ τῶν προβάτων.*

**μηλοφασκιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐλελίφασκος*.

**μηλοφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)˙ ὁ φέρων, ὁ κομίζων μῆλα˙ ‖ ὁ παράγων μῆλα: «μηλοφόρος χώρα».

—*[Ἀρχ.] Μηλοφόροι* ἐκαλοῦντο, καθ' Ἡσύχιον, οἱ ἀποτελοῦντες τὴν σωματοφυλακὴν τοῦ Πέρσου βασιλέως ἐπίλεκτοι ἱππεῖς, ἀριστίνδην ἐκλεγόμενοι ἐκ τοῦ τάγματος τῶν ἀθανάτων, τὸ ὁποῖον ἀπετελεῖτο ἐκ δέκα χιλιάδων ἱππέων. Οἱ μηλοφόροι οὗτοι, χίλιοι τὸν ἀριθμόν, ἐκαλοῦντο οὕτω, διότι τὰ δόρατα, τὰ ὁποῖα ἔφερον, καὶ τὰ ὁποῖα ἐκαλοῦντο στύρακες, εἶχον κατὰ τὸ κάτω ἄκρον, ὡς κομβία, μῆλα χρυσᾶ. Κατὰ τὸν Ἀθήναιον, οἱ μηλοφόροι οὗτοι, διάγοντες τρυφηλὸν βίον, κατήντησαν ὑπόδειγμα ἀνανδρίας. Β. Δ. Θ.

**μηλόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὑοσύαμος ὁ κοινός*.

**μήλωσις τῆς μήτρας**. Καλεῖται οὕτως ἡ εἰσβίβασις ἐντὸς τῆς μήτρας εἰδικῆς μήλης, βαθμολογημένης, *μητρομήλης* καλουμένης, πρὸς καθορισμὸν τοῦ βάθους τοῦ πυθμένος ταύτης. Ι. Κ. Κ.

**μηλωτὴ** (ἡ)˙ δορὰ προβάτου, κοιν. *προβιά*˙ ‖ κατ' ἐκέκτασιν πᾶσα δορὰ ζῴου˙ ‖ ἐπενδύτης κατεσκευασμένος ἐκ τριχωτῆς δορᾶς (ἰδίως προβάτου).

—*[Ἐγκυκλ.]* βλ. *σισύρα*.

**μὴ μὲ λησμόνει** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μυοσωτὶς ἡ κοινή*.

**Μήμινοι** (οἱ) (Memini) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Ναρβωνικῆς Γαλλίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. II, 10, 8), καὶ κατοικῶν τὴν πρὸς Α. τοῦ Ροδανοῦ ποταμοῦ καὶ πρὸς Ν. τῶν Οὐοκοντίων (Vocontii) χώραν, ἀντιστοιχοῦσαν περίπου πρὸς τὸν νῦν νομὸν τοῦ Vaucluse. Πρωτεύουσα αὐτῶν ἦτο ἡ Carpentoracte, ἡ νῦν Carpentras, 24 χλμ. ΒΑ. τῆς Aviguon. Α. Θ. Σ.

**μή μου ἅπτου** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μιμόζα ἡ αἰσχυντηλή*.

**μήν**, *—μηνὸς* (ὁ)˙ κοιν. *ὁ μῆνας*: «τὸ ἔτος διαιρεῖται εἰς δώδεκα μῆνας», «ἔρχεται κάθε μῆνα», «ἅπαξ τοῦ μηνός», «ὁ τρέχων μήν», «ἀρχομένου —, μεσοῦντος —, λήγοντος μηνός»˙ ‖ φρ. «μῆνας μπαίνει μῆνας βγαίνει» ἐπὶ μισθοδοτουμένων κατὰ μῆνα καὶ οἱονεὶ πάντοτε εὐπορούντων˙ ‖ φρ. «τὸ μῆνα ποῦ δὲν ἔχει Σάββατο» οὐδέποτε: «πότε θὰ μὲ πληρώσῃς;— τὸ μῆνα ποῦ δὲν ἔχει Σάββατο».

—*[Ἐγκυκλ.]* Καλεῖται *μὴν* τὸ χρονικὸν διάστημα, εἰς τὸ ὁποῖον ἡ σελήνη διαγράφει τὴν τροχιάν της, πραγματοποιοῦσα μίαν περιφορὰν περὶ τὴν γῆν. Ὁ μὴν ἀποτελεῖ τὴν πρώτην βασικὴν μονάδα μετρήσεως τοῦ χρόνου. Ἅπαντες οἱ ἀρχαῖοι λαοὶ τὸν χρόνον ἐμέτρουν εἰς *ἡμέρας, ἑβδομάδας, μῆνας* καὶ *ἔτη*, λαμβάνοντες ὡς βάσιν τὸν μῆνα (ἀπὸ νουμηνίας εἰς νουμηνίαν), δι' ὅλας τὰς μεγαλυτέρας τῆς ἡμέρας διαιρέσεις. Ἡ διαίρεσις αὕτη ἐκράτησε μέχρι τοῦ 45 π. Χ., ὅτε, λόγῳ τῶν πολλῶν ἀνωμαλιῶν, αἵτινες ἐπῆλθον εἰς τὸ ἡμερολόγιον, ὁ Σωσιγένης, ἐντολῇ τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος, κατήρτισε τὸ λεγόμενον *Ἰουλιανὸν ἡμερολόγιον*, καθορίσας τὸν μῆνα ὡς τὸ δωδέκατον τοῦ ἔτους. Ἡ διαίρεσις αὕτη ἰσχύει μέχρι σήμερον (βλ. καὶ λ. *ἡμερολόγιον*). —Ω.

Εἰς τὴν ἀστρονομίαν διακρίνονται διάφορα εἴδη μηνῶν, ἐξαρτωμένου ἑκάστου ἐκ τοῦ τρόπου τῆς μετρήσεως:

1) *Μὴν ἀστρικός*. Καλεῖται οὕτω τὸ χρονικὸν διάστημα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο διαδοχικῶν συνόδων τῆς Σελήνης μετὰ τοῦ αὐτοῦ ἀπλανοῦς ἀστέρος, ὡς αὗται φαίνονται εἰς παρατηρητὴν εὑρισκόμενον εἰς τὸ κέντρον τῆς Γῆς. Ἡ διάρκεια τοῦ ἀστρικοῦ μηνὸς ἀνέρχεται κατὰ μέσον ὅρον εἰς 27 ἡμ., 7 ὥρ. 43 λ., 11 δ., 47 ἢ 27 ἡμ., 32166, μεταβάλλεται δὲ κατὰ 7 ὥρας περίπου λόγῳ κυρίως τῶν παρέλξεων. Ἡ μέση κίνησις τῆς Σελήνης ἐντὸς μιᾶς ἡμέρας τοῦ ἀστρικοῦ σεληνιακοῦ μηνὸς ἰσοῦται πρὸς $13^0$ 11′ ($360^0$/27 ἡμ., 32166.

2) *Σεληνιακὸς ἢ συνοδικὸς μήν*. Καλεῖται οὕτω τὸ χρονικὸν διάστημα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο διαδοχικῶν συνόδων ἢ ἀντιθέσεων τοῦ Ἡλίου καὶ τῆς Σελήνης, ἤτοι ἀπὸ Νέας Σελήνης εἰς Νέαν Σελήνην, ἢ ἀπὸ μιᾶς Πανσελήνου μέχρι τῆς ἀμέσως ἑπομένης. Ἡ διάρκεια αὐτοῦ ἀνέρχεται κατὰ μέσον ὅρον εἰς 29 ἡμ., 12ὥρ., 44λ., 2δ.,78 ἢ 29 ἡμ., 53059, μεταβαλλομένη κατὰ 13 ὥρας περίπου λόγῳ τῆς ἐκκεντρότητος τῶν τροχιῶν τῆς Γῆς καὶ κυρίως τῆς Σελήνης.

Ἐκ τῆς διαρκείας τοῦ συνοδικοῦ μηνός, ἥτις προσδιορίζεται διὰ τῆς παρατηρήσεως τῆς Σελήνης, εὑρίσκεται ἡ διάρκεια τοῦ *ἀστρικοῦ μηνός*, ὅστις εἶναι κατὰ 2 ἡμέρας περίπου βραχύτερος τοῦ συνοδικοῦ λόγῳ τῆς φαινομένης κινήσεως τοῦ Ἡλίου. Ἡ διάρκεια τοῦ ἀστρικοῦ μηνὸς παρέχεται ὑπὸ τῆς λεγομένης ἐξισώσεως τῆς συνοδικῆς κινήσεως $1/M - 1/E = 1/S$, ἔνθα M παριστᾷ τὴν διάρκειαν τοῦ ἀστρικοῦ μηνός, E τὴν διάρκειαν τοῦ ἀστρικοῦ ἔτους καὶ S τὴν διάρκειαν τοῦ συνοδικοῦ μηνός. Κατὰ τὴν ἐξίσωσιν ταύτην τὸ ποσὸν $1/S$, καθ' ὃ ἡ Σελήνη προτρέχει πρὸς ἀνατολὰς τοῦ Ἡλίου ἐντὸς μιᾶς ἡμέρας, ἰσοῦται πρὸς τὴν διαφορὰν τῆς φαινομένης ἡμερησίας κινήσεως τοῦ Ἡλίου $1/E$ καὶ τῆς ἐντὸς μιᾶς ἡμέρας κινήσεως τῆς Σελήνης $1/M$, ἥτις καθ' ἑκάστην μετατίθεται κατὰ $12^0 2$ ($360^0 \times 1/S$) πρὸς ἀνατολὰς τοῦ Ἡλίου.

Εἰς τὰ σεληνιακὰ ἡμερολόγια τὸ ἔτος σύγκειται ἀπὸ 12 συνοδικοὺς μῆνας, οἵτινες, ὡς μὴ ἀποτελούμενοι ἀπὸ ἀκέραιον ἀριθμὸν ἡμερῶν, ἄλλοτε διαρκοῦσιν 29 καὶ ἄλλοτε 30 ἡμέρας (βλ. *ἔτος* καὶ *ἡμερολόγιον*).

3) *Μὴν ἡλιακός*, ἢ *ἡμερολογιακός*. Χρονικὸν διάστημα ἴσον πρὸς τὸ ἓν δωδέκατον τοῦ τροπικοῦ ἔτους. Ἡ μέση διάρκεια αὐτοῦ ἰσοῦται πρὸς 30 ἡμ., 10 ὥρ., 29 λ., 3 δ.,8 (βλ. *ἡμερολόγιον*).

4) *Μὴν συνδεσμικός*, ἢ *δρακόντειος*. Τὸ χρονικὸν διάστημα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο διαδοχικῶν ἀποκαταστάσεων τῆς Σελήνης εἰς τὸν αὐτὸν σύνδεσμον τῆς τροχιᾶς αὐτῆς. Ὁ μὴν οὗτος ἰσοῦται πρὸς 27ἡμ., 5ὥρ., 5λ., 35δ.,8 ἢ 27ἡμ. 21222, ἤτοι εἶναι βραχύτερος τοῦ ἀστρικοῦ λόγῳ τῆς ἀναδρόμου κινήσεως τῶν συνδέσμων τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς. Ὁ δρακόντειος μὴν ἔχει μεγάλην σπουδαιότητα ἐν τῇ θεωρίᾳ τῶν ἐκλείψεων, ὠνομάσθη δὲ οὕτως ἐκ τοῦ Δράκοντος, ἄρχοντος τῶν Ἀθηνῶν, ὅστις προσδιώρισεν αὐτόν.

5) *Μὴν τροπικός*. Τὸ χρονικὸν διάστημα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο διαδοχικῶν συνόδων τῆς Σελήνης μετὰ τοῦ ἐαρινοῦ ἰσημερινοῦ σημείου. Ἡ διάρκεια αὐτοῦ ἀνέρχεται εἰς 27ἡμ., 7ὥ., 43λ., 4δ.,7.

6) *Μῆνες ἐκλειπτικοί*. Οἱ μῆνες οἱ ἀνήκοντες εἰς τὰς δύο ἀντιθέτους ὥρας τοῦ ἔτους, καθ' ἃς συμβαίνουσιν αἱ ἐκλείψεις, ἤτοι, καθ' ἃς ὁ Ἥλιος διέρχεται διὰ τῶν συνδέσμων τῆς σεληνιακῆς τροχιᾶς (βλ. *ἔκλειψις*).

7) *Μὴν ἀνωμαλιακός*. Τὸ χρονικὸν διάστημα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο διαδοχικῶν διαβάσεων τῆς Σελήνης διὰ τοῦ περιγείου αὐτῆς. Ἡ διάρκεια αὐτοῦ ἀνέρχεται εἰς 27ἡμ., 13ὥ., 18λ., 33δ. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

—*[Λαογρ.]* Ὁ ἑλληνικὸς λαὸς ἐκτὸς τῶν ἐν τῷ ρωμαϊκῷ ἡμερολογίῳ ἐπισήμων ὀνομάτων τῶν δώδεκα μηνῶν τοῦ ἔτους, δίδει ἐπίσης εἰς αὐτοὺς διαφόρους ἄλλας κατὰ τόπους ὀνομασίας, λαμβανομένας ἄλλοτε μὲν ἐκ τῶν μετεωρολογικῶν συνθηκῶν τῶν ἐπικρατουσῶν καθ' ἕνα ἕκαστον ἐξ αὐτῶν (*Κρυαρίτης* ὁ Ἰανουάριος, *Βροχάρης* ὁ Νοέμβριος κλπ.), ἄλλοτε ἐκ τῶν διαφόρων γεωργικῶν ἐργασιῶν (*Ἁλωνάρης* ἢ *Ἁλωνιστὴς* ἢ *Χορτοκόπος* ὁ Ἰούλιος, *Θεριστὴς* ὁ Ἰούνιος, *Σποράρης* ὁ Σεπτέμβριος κτλ.), ἄλλοτε ἐκ τῆς βλαστήσεως καὶ τῶν κυριωτέρων προϊόντων (*Τριανταφυλλᾶς* ὁ Ἀπρίλιος, *Πράσινος* ὁ Μάϊος, *Συκολόγος* ὁ Αὔγουστος κλπ.), ἄλλοτε ἐκ τῶν κυριωτέρων ἑορτῶν (*Ἁϊγιωργιάτης* ὁ Ἀπρίλιος, *Σταυριώτης* ὁ Σεπτέμβριος κλπ.) καὶ ἄλλοτε ἐξ ἄλλων ποικίλων λόγων, π.χ. λόγῳ τῆς μικρᾶς διαρκείας του ὁ Φεβρουάριος καλεῖται *Κουτσὸς* καὶ *Κουτσοφλέβαρος*, ἐνῷ ὁ Ἰανουάριος ὀνομάζεται *Τρανὸς* ἢ *Μεγάλος μῆνας*. Ἡ εἰς μῆνας διαίρεσις τοῦ ἔτους δὲν εἶναι ἡ μόνη γνωστὴ παρὰ τῷ λαῷ, ὁ ὁποῖος διακρίνει ἐπίσης τὰς τέσσαρας ἐποχὰς (ἄνοιξιν, θέρος, φθινόπωρον καὶ χειμῶνα) καὶ ἄλλας ἐξ ἄλλων λόγων (καιρικῶν συνθηκῶν, γεωργικῶν ἐργασιῶν κλπ.) προκυπτούσας ὑποδιαιρέσεις. —Ω.

—**μὴν ἐμβόλιμος** *[Ἀστρον.]*. Μήν, ὅστις παρενεβάλλετο μεταξὺ τῆς 23ης καὶ τῆς 24ης Φεβρουαρίου ἀνὰ διετίαν πρὸς ἀποτροπὴν ἀσυμφωνίας τοῦ ἡμερολογίου πρὸς τὰς ὥρας τοῦ ἔτους.

Τὸ ὑπὸ τοῦ Νουμᾶ θεσπισθὲν ἐν Ρώμῃ ἡμερολόγιον ἐπὶ τῇ βάσει τῆς κινήσεως τῆς Σελήνης περιελάμβανε 355 ἡμέρας καὶ διῃρεῖτο εἰς 12 μῆνας ἀνίσου διαρκείας. Τὸ πολιτικὸν τοῦτο ἔτος ἦτο πολὺ βραχύτερον τοῦ τροπικοῦ καὶ ἐντεῦθεν οἱ ἡμερολογιακοὶ μῆνες ἔπαυσαν μετὰ καιρὸν νὰ ἀντιστοιχῶσι πρὸς τὰς αὐτὰς πάντοτε ὥρας τοῦ ἔτους. Ὁ πρὸς διόρθωσιν τῆς τοιαύτης ἀνωμαλίας ἐπινοηθεὶς ἐμβόλιμος μὴν ἦτο ἀρχικῶς διαρκείας 22 ἡμερῶν, βραδύτερον ὅμως λόγῳ ἄλλων ἀνωμαλιῶν ἀπεφασίσθη ὅπως ἡ διάρκεια αὐτοῦ ὁρίζεται ὑπὸ τῶν ἀρχιερέων ἀναλόγως τῶν ἑκάστοτε ἡμερολογιακῶν ἀναγκῶν. Ἐν τούτοις ἦλθεν ἐποχή, καθ' ἣν οἱ ἀρχιερεῖς καταχρώμενοι τὸ δικαίωμα αὐτῶν προὐκάλεσαν τοιαύτην ἀταξίαν, ὥστε ὁ Ἰούλιος Καῖσαρ τῷ 45 π. Χ. εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην μεταρρυθμίσεως τοῦ ἡμερολογίου ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὑποδείξεων τοῦ ἐξ Ἀλεξανδρείας ἀστρονόμου Σωσιγένους, ὅστις ὡς βάσιν ἔλαβε τὴν κίνησιν τοῦ Ἡλίου καὶ κατήρτισε τὸ ἔκτοτε *ἰουλιανόν*, ἢ σήμερον *παλαιόν*, καλούμενον *ἡμερολόγιον* (βλ. λ. *ἡμερολόγιον* καὶ λ. *ἔτος*). Σ. Π.

**Μὴν** *[Μυθολ.]*. Σεληνιακὸς θεὸς τῆς Φρυγίας, δεύτερος μετὰ τὸν ὕπατον θεὸν Βαγαῖον.

**Μηνᾶ νῆσοι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ζεῦγος νήσων τῆς Αἰθιοπίας τῆς ὑπὸ Αἴγυπτον (*Πτολεμ.* Δ, ζ, 40) ἐν τῇ ἱππάλῳ θαλάσσῃ, νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου τῶν Ἀρωμάτων. Ἡ ταυτότης της ἀνεξακρίβωτος, οὐδεμιᾶς νήσου ἀπαντώσης εἰς $2^0$ $^1/_2$ βορ. πλάτους, ὅπερ τῇ δίδει ὁ Πτολεμαῖος. Σ. Ε. Λ.

**μηναῖον** (τό). Καλοῦνται *μηναῖα* τὰ λειτουργικὰ ἐκεῖνα βιβλία, ἅτινα περιέχουσι τοὺς κατὰ τὰς ἑορτὰς τῶν ἁγίων καὶ τὰς ἀκινήτους δεσποτικὰς ἢ θεομητορικὰς ἑορτὰς ψαλλομένους ὕμνους καὶ κανόνας, τοὺς ἄλλως καὶ ἀκολουθίας τῶν ἁγίων ἀποκληθέντας. Κατανεμηθεῖσαι αἱ ἀκολουθίαι αὗται κατὰ τοὺς δώδεκα μῆνας, καθ' ἃς ψάλλονται ἡμερομηνίας, ἀπετέλεσαν τὰ δώδεκα μηναῖα, ἐν οἷς περιελήφθησαν καὶ σύντομοι ἀφηγήσεις τοῦ βίου ἢ τοῦ μαρτυρίου ἑνὸς ἑκάστου τῶν ἁγίων, τὰς ὁποίας ἀπεκάλεσαν *συναξάρια*.

Τὰ μηναῖα δὲν ἐμπεριέχουσι τὰς ἀκολουθίας τῶν κινητῶν δεσποτικῶν ἑορτῶν, αἵτινες περιλαμβάνονται ἐν τῷ *τριῳδίῳ* καὶ *πεντηκοσταρίῳ*, οὔτε τὰς τῶν τοῦ ἑβδομαδιαίου κύκλου, εἰς τὰς ὁποίας ἀναφέρεται ἡ *παρακλητική*. Διὰ τοῦτο δὲ καὶ τὰ ἐν τοῖς μηναίοις μαρτυρικὰ ἢ ἰδιόμελα καὶ τὰ ὑπὸ τὴν ἐπιγραφὴν «τοῦ ἁγίου» ἢ «τοῦ ὁσίου» κλπ. τροπάρια ψάλλονται συνδεδυασμένως μετὰ τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡμέραν ὡρισμένων ἐκ τῆς παρακλητικῆς ἢ τοῦ τριῳδίου ἢ τοῦ πεντηκοσταρίου ὕμνων καὶ κανόνων, μόνον δὲ κατὰ τὰς παρεμπιπτούσας δεσποτικὰς (Χριστουγέννων, Θεοφανίων, Ὑπαπαντῆς, Μεταμορφώσεως), ἢ θεομητορικὰς (Εὐαγγελισμοῦ, Εἰσοδίων, Κοιμήσεως κλπ.) καθίσταται τὸ μηναῖον κυριαρχοῦν ἐν τῇ ὑμνολογίᾳ βιβλίον.

Τὰ μηναῖα καλοῦνται μεταγενεστέρως καὶ *μηνολόγια*. Τὸ μηνολόγιον ὅμως εἶναι βιβλίον πολλῷ ἀρχαιότερον τοῦ μηναίου καὶ ἐταυτίζετο πρὸς τὸ ὑπὸ τῆς ρωμαϊκῆς Ἐκκλησίας ἀποκληθὲν *μαρτυρολόγιον*, τὸ ὁποῖον περιεῖχε τὴν ἐξιστόρησιν τοῦ βίου τῶν ἁγίων καὶ μαρτύρων. Ἡ κατάρτισις τοιούτου τινὸς βιβλίου ἐθεωρήθη πρωϊμώτατα χρήσιμος, διότι παλαιόθεν εἶχε κρατήσει ἡ συνήθεια ν' ἀναγινώσκωνται δημοσίᾳ αἱ πράξεις καὶ ὁ βίος τῶν ἑορταζομένων ἁγίων, τῆς ἐν Καρθαγένῃ συνόδου τοῦ 397 ὁρισάσης ἐν τῷ 47ῳ κανόνι αὐτῆς ν' ἀναγινώσκωνται τὰ παθήματα τῶν μαρτύρων, ὅταν αἱ ἐπέτειοι αὐτῶν ἑορτάζωνται. Μετέπειτα τὸ μηνολόγιον ἐπεξετάθη καὶ ἐτακτοποιήθη, ταξιθετηθέντων τῶν βίων τῶν ἁγίων κατὰ τὰς ἡμερομηνίας τοῦ ἑορτασμοῦ αὐτῶν, καθ' ὅσον δ' ἐν τῷ μεταξὺ ἀνεπτύσσετο ἡ ἐκκλησιαστικὴ ὑμνολογία, φυσικὸν ἦτο οἱ ὑπὸ τῶν διαφόρων ὑμνογράφων συντασσόμενοι εἰς τὰς διαφόρους ἑορτὰς κανόνες καὶ ὕμνοι νὰ ἐπισυνάπτωνται εἰς τὸ μηνολόγιον, ἀφοῦ καὶ οὗτοι κατὰ τὴν αὐτὴν θὰ ἐψάλλοντο ἡμέραν, καθ' ἣν θὰ ἀνεγινώσκετο καὶ τοῦ ἑορταζομένου ἁγίου τὸ συναξάριον. Οὕτω φαίνεται ὅτι προῆλθον τὰ μηναῖα, ἅτινα πιθανώτατα διὰ τὸν λόγον τοῦτον ἐταυτίσθησαν μεταγενεστέρως πρὸς τὸ μηνολόγιον.

Ἐκ τῶν μηναίων προῆλθε καὶ τὸ λεγόμενον *ἀνθολόγιον*, βιβλίον περιέχον τὰ οὐσιωδέστερα ἐκ τῶν μηναίων καὶ περιλαμβάνον εἰς ἕνα ἢ δύο τόμους ἅπασαν τὴν ἀκολουθίαν τῶν δώδεκα μηνῶν.

Ἡ ἐκτύπωσις τῶν μηναίων ἐγένετο τὸ πρῶτον κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἐν Βενετίᾳ καὶ ἐκεῖ ἐξηκολούθησεν ἡ κατὰ διαφόρους καιροὺς ἐπανειλημμένη ἀνατύπωσις αὐτῶν, ἕως οὗ ἀπὸ τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἐσημειώθησαν ἐκδόσεις καὶ ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἐν Ἀθήναις. Π. Ν. ΤΡΕΜΠΕΛΑΣ

**Μηναῖος**. Μάρτυς ἀκμάσας ἐπὶ Διοκλητιανοῦ τῷ 300 μ. Χ. Μετήρχετο τὸν τέκτονα, ἀλλὰ μετὰ τῶν σὺν αὐτῷ μαρτυρησάντων γεωργῶν, προέβησαν, ὡς ἐκ τοῦ πρὸς τὸν Χριστὸν ζήλου εἰς καθαίρεσιν τοῦ ναοῦ τῆς Ἀφροδίτης. Συλληφθέντες ἅπαντες ὑπὸ τοῦ τοπάρχου

Digitized by Google

τῆς Παμφυλίας καὶ προκληθέντες ν' ἀρνηθῶσι τὸν Χριστὸν καὶ μὴ ἐνδώσαντες, ἐβασανίσθησαν πολυειδῶς καὶ τέλος ξίφει ἐφονεύθησαν. Ἡ Ἐκκλησία γεραίρει τὴν μνήμην των τῇ 1 Αὐγούστου καὶ τῇ 29 Ὀκτωβρίου.

**μηναλλάγια** (τά)· ἰδιωματ., τὰ ἄλλως *μερομήνια* (βλ. λ.).

**μῆνας** (ὁ)· δημοτ. τύπος τοῦ *μήν* (βλ. λ.).

**Μηνᾶς.** —1) Ὁ πρῶτος ἱστορικὸς βασιλεὺς τῆς Αἰγύπτου (βλ. λ. *Μενές*). —2) Δοῦλος τοῦ Γν. Πομπηίου, ἀπελευθερωθεὶς ὑπ' αὐτοῦ καὶ γενόμενος ὑπασπιστὴς τοῦ υἱοῦ του Σέξτου Πομπηίου τῷ 40 π. Χ. Ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ Σέξτου ἐκυρίευσε τὴν Σαρδηνίαν ἐν ὀνόματι αὐτοῦ καὶ κατόπιν ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς ναυτικῆς δυνάμεως ἀποσταλείσης ἐναντίον τοῦ Ὀκταβίου καὶ Ἀντωνίου. Κατὰ τὴν ἀποστολὴν ταύτην ἐλεηλάτησε τὰ παράλια τῆς Ἐτρουρίας, ἐπειδὴ δὲ ἐν τῷ μεταξὺ ἡ Σαρδηνία κατελήφθη ἀπὸ τὸν ἀπελεύθερον τοῦ Ὀκταβίου Ἕλενον, πλεύσας ἐκ νέου ἀνέκτησεν αὐτήν, ἀπέδωκε δὲ ἄνευ λύτρων τοὺς συλληφθέντας ἐν αὐτῇ αἰχμαλώτους. Αἱ μηχανορραφίαι του μετὰ τοῦ Ὀκταβίου διήγειραν τὴν δυσπιστίαν τοῦ κυρίου του καὶ ἐκλήθη ὑπ' αὐτοῦ εἰς ἀπολογίαν. Ὁ Μηνᾶς τότε ἐθανάτωσε τοὺς ἀπεσταλμένους τοῦ κυρίου του καὶ παρέδωκε τὴν Σαρδηνίαν μετὰ τῆς φρουρᾶς καὶ τοῦ στόλου εἰς τὸν Ὀκτάβιον (38 π. Χ.). Τεθεὶς εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Ὀκταβίου ὡς πρέσβυς καὶ ὑποναύαρχος τοῦ στόλου, ὑπηρέτησεν αὐτὸν πιστῶς, ἀλλὰ τῷ 36 π. Χ. ἐπανῆλθεν εἰς τὸν πρῶτον κύριόν του καὶ ἐπροξένησε μεγάλας καταστροφὰς εἰς τοὺς στόλους τῶν ἀντιπάλων του. Τέλος κατέφυγε πάλιν εἰς τὸν Ὀκτάβιον, ἀλλ' εἰς οὐδένα πλέον ἐνέπνεεν ἐμπιστοσύνην. Συνοδεύσας αὐτὸν εἰς τὴν κατὰ τῆς Παννονίας ἐκστρατείαν ἐφονεύθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Σισκίας τῷ 35 π. Χ. Ν. Α.

— **Μηνᾶς.** Εἷς ἐκ τῶν ὀκτὼ ζωγράφων, οἱ ὁποῖοι ἐκόσμησαν διὰ τετρακοσίων ἐγχρώμων μικρογραφιῶν, ἀπεικονιζουσῶν ἰδίᾳ εὐαγγελικὰς σκηνάς, σκηνὰς μαρτυρίων ἢ ἁγίους προσευχομένους, τὸ ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Βατικανοῦ ἀποκείμενον ὀνομαστὸν «Μηνολόγιον», ὅπερ ἐγράφη χάριν τοῦ αὐτοκράτορος Βασιλείου τοῦ Β' (976—1025). Ἕκαστος τῶν ζωγράφων τούτων ἀνέγραψε τὸ ὄνομά του ἐφ' ἑκάστου ἔργου του, φαίνεται δ' ὅτι δὲν ὑπῆρξεν ὁ Μηνᾶς ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων μεταξὺ τῶν ὀκτώ. Αἱ μικρογραφίαι τοῦ «Μηνολογίου» τούτου ἐξεδόθησαν πᾶσαι μέν, ἀλλ' ἀτέχνως ἀναπαριστανόμεναι ἐν τῇ ὑπὸ τοῦ καρδιναλίου Ἀλβάνη ἐν Οὐρβίνῳ τῷ 1727 γενομένῃ ἐκδόσει, κατ' ἐκλογὴν δὲ μετὰ ταῦτα ὑπὸ τοῦ Seroux d'Ajincourt, τοῦ Labarte, τοῦ Kondanow καὶ τοῦ Schlumberger (βλ. καὶ *Σ. Λάμπρου*, «Νέος Ἑλληνομνήμων», τ. Ε' 1908, σελ. 271 κ. ἑφ.). Ι. Μ. Π.

— **Μηνᾶς,** πατριάρχης ***Κωνσταντινουπόλεως.*** Καταγόμενος ἐξ Ἀλεξανδρείας διεκρίνετο ἐν Κωνσταντινουπόλει ὡς προϊστάμενος τοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει φιλανθρωπικοῦ οἴκου τοῦ Σαμψών. Ὅτε ὁ Ἰουστινιανὸς κατεβίβασεν ἐκ τοῦ πατριαρχικοῦ θρόνου τὸν μονοφυσίτην Ἄνθιμον, ἀνύψωσε τὸν Μηνᾶν, ὅστις τῷ 536 συγκροτήσας τὴν ἐνδημοῦσαν σύνοδον κατεδίκασε τοὺς μονοφυσίτας καὶ τοὺς προασπιστάς αὐτῶν. Ὁ Μηνᾶς συνεκρότησεν ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἑτέραν σύνοδον τῷ 543, ἥτις ἀνεθεμάτισε τὸν Ὠριγένη, περιεπλάκη δὲ καὶ εἰς τὴν περὶ τριῶν κεφαλαίων ἔριδα, τὴν ὁποίαν προεκάλεσεν ἡ αὐτοκράτειρα Θεοδώρα μετὰ τῆς ἐν τῇ πόλει μονοφυσιτικῆς φατρίας. Ὅτε ὁ Ἰουστινιανός, τῷ 553, πρὸς λύσιν τοῦ ζητήματος συνεκρότησε τὴν ΣΤ' Οἰκουμενικὴν σύνοδον, ὁ Μηνᾶς εἶχεν ἤδη ἀποθάνει, διεδέχθη δ' αὐτὸν ὁ καθολικὸς (προϊστάμενος) τῶν ἐν Ἀμασείᾳ μοναχῶν Εὐτύχιος. † Η. Φ. Β

— **Μηνᾶς,** ***μάρτυς.*** Ἤκμασεν ἐπὶ Μαξιμίνου τῷ 235 καὶ ἦτο Ἀθηναῖος λόγιος καὶ εὐγλωττότατος· διὰ τοῦτο ἀπεστάλη εἰς Ἀλεξάνδρειαν πρὸς κατευνασμὸν τῶν ἐκεῖ ἐγερθεισῶν πολιτικῶν καὶ θρησκευτικῶν ταραχῶν. Καὶ τὰ μὲν πολιτικὰ τῶν κατοίκων πάθη διέλυσεν, ὡς πρὸς τὰς θρησκευτικὰς ὅμως διαμάχας ἐφάνη ἤπιος καὶ συνέστησεν αὐτοῖς ἐμμονὴν ἐν τῇ πίστει τοῦ Χριστοῦ. Τοῦτο εἰς γνῶσιν τοῦ Μαξιμίνου περιελθὸν ἔπεισεν αὐτὸν νὰ καταδιώξῃ τὸν Μηνᾶν, ἐὰν δὲν ἀπόσχῃ τῆς εἰς Χριστὸν πίστεως καὶ ἀπέστειλε πρὸς τοῦτο τὸν ἔπαρχον Ἑρμογένην, ὅστις ποικιλοτρόπως βασανίσας αὐτὸν καὶ μὴ κατορθώσας νὰ πείσῃ προσῆλθε καὶ αὐτὸς εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ προεχειρίσθη ἀρχιερεύς. Ὁ Μαξιμῖνος προσεκάλεσεν αὐτοὺς καὶ παντοιοτρόπως ἐβασάνισεν, ἀλλ' οὐδὲν ἐπέτυχε. Τοὐναντίον μάλιστα, ὁ Εὔγραφος, ὁ τοῦ Μηνᾶ γραφεύς, προσῆλθεν εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ συνεμαρτύρησε τῷ Μηνᾷ καὶ τῷ Ἑρμογένει τῇ 10 Δεκεμβρίου, ὅτε ἑορτάζεται ἡ μνήμη αὐτῶν. Ὁ Μηνᾶς ὠνομάσθη καλλικέλαδος, ὡς ψάλτων τῆς γλώσσης αὐτοῦ ἀποκοπείσης.

— **Μηνᾶς,** ***μάρτυς.*** Αἰγύπτιος Χριστιανός, πιθανῶς ἐκ τῆς πόλεως Νικίου, ὅστις ὑπηρέτει ἐν Φρυγίᾳ ὡς στρατιώτης εἰς τὸ τάγμα τῶν Ρουτιλλιανῶν ἱππέων καὶ ἐμαρτύρησε τῷ 269 ἐπὶ Διοκλητιανοῦ. Οἱ ὁμόδοξοι συστρατιῶταί του συνέλεξαν τὰ ἱερὰ του λείψανα καὶ ἐκτελοῦντες ὑστάτην του ἐπιθυμίαν νὰ ταφῇ ἐν Αἰγύπτῳ παρέλαβον μεθ' ἑαυτῶν ταῦτα ὅταν μετετέθησαν εἰς Κυρηναϊκήν. Ἐκεῖθεν εὐκαιρήσαντες τὰ μετέφεραν ἐπὶ καμήλου εἰς Αἴγυπτον. Φθάσαντες παρὰ τὴν λίμνην Μαρεώτιδα παρά τινα πλουσίαν πηγήν, παρετήρησαν ὅτι ἡ κάμηλος ἡ φέρουσα τὰ λείψανα τοῦ μάρτυρος ἐπέμενεν ἀνένδοτος νὰ μείνῃ ἐκεῖ. Ἔθαψαν λοιπὸν τὸ σκῆνος εἰς τὸν τόπον. Ἀμέσως διεδόθη μεταξὺ τῶν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ Χριστιανῶν ὅτι ἡ πηγὴ κατέστη ἰαματικὴ θαυματουργὸς καὶ ἡ συρροὴ τῶν πιστῶν κατέστη μεγίστη. Ἐκτίσθη ἐκκλησία ἐπὶ τοῦ τάφου. Βραδύτερον ὁ αὐτοκράτωρ Ἀρκάδιος (400) ἔκτισε μεγάλην βασιλικὴν πρὸς Α. τῆς ἀρχικῆς. Κατὰ τὸν Ε' καὶ ΣΤ' αἰῶνα ἡ φήμη τοῦ θαυματουργοῦ προσκυνήματος κατέστη παγκόσμιος, διαδοθεῖσα εἰς τὴν Δαλματίαν, τὸ Μαρόκκον καὶ εἰς ὅλην τὴν Μεσόγειον. Ὁ ἅγιος Μηνᾶς ἔγινε καὶ ὁ πολιοῦχος τῆς Κρήτης, τιμᾶται δὲ εἰς μνήμην του ὁ καθεδρικὸς ναὸς Ἡρακλείου. Μία ἐμπορικὴ συντεχνία ἀλεξανδρινὴ ἔκτισε ναὸν τοῦ Ἁγίου Μηνᾶ εἰς τὴν Ρώμην ἐπὶ πάπα Πελαγίου (589). Περὶ τὸν τάφον του ἐκτίσθησαν μαρμάρινα μοναστήρια, ξενῶνες, νοσοκομεῖα, νεκροταφεῖον, πολλαὶ βασιλικαί, ὅταν δὲ ὁ ἀρχαιολόγος Σεβ. Κάουφμαν ἐνήργησεν ἀνασκαφὰς εἰς τὸν τόπον, ἔφερεν εἰς φῶς τεράστιον ποσὸν μαρμάρων ἐγγλύφων. Εἰς ὅλα σχεδὸν τὰ μουσεῖα τῆς Εὐρώπης ὑπάρχουν πήλινα φιαλίδια πεπλατυσμένα, διότι ἐφέροντο ἐπὶ τοῦ στήθους ὡς περίαπτα, περιέχοντα ὕδωρ ἢ ἔλαιον τοῦ Ἁγίου Μηνᾶ. Ἐπ' αὐτῶν συχνότατα ἀπαντᾷ ὁ νεαρὸς ἅγιος ὄρθιος ἢ ἔφιππος καὶ εἰς τοὺς πόδας του δύο κάμηλοι καὶ ἡ ἐπιγραφὴ «τοῦ ἁγίου Μηνᾶ εὐλογία». Ἐντεῦθεν τὰ περίαπτα ταῦτα ὠνομάσθησαν «εὐλογίαι». Γ. Λ. Α.

— **Μηνᾶς.** Αἰγύπτιος νοτάριος. Διετέλεσεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν Χριστοδώρου, οἰκονόμου τοῦ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ ναοῦ τῶν Ἁγίων Ἀναργύρων Κύρου καὶ Ἰωάννου. Φαίνεται ὅτι ἤκμασε κατὰ τὴν ΣΤ' αἰῶνα. Μ. Ι. Γ.

**Μηνετάτα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἐπανωχωρίου τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 83.

**μήνη** (ἡ)· ἡ σελήνη, ἰδίως κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας, ὅτε ἔχει σχῆμα δρεπανοειδές· || τὸ δρεπανοειδὲς σχῆμα· || λευκὸν σημεῖον, λευκὴ βοῦλλα ἐπὶ τοῦ μετώπου τοῦ ἵππου.

— *[Ὀχυρωτ.] Μήνη* (demi-lune) ἐκαλεῖτο ἐν τῇ παλαιοτέρᾳ ὀχυρωτικῇ συμπληρωματικὸν ἔργον τῆς προμαχωνικῆς χαράξεως, περιβαλλόμενον παρὰ τῆς κεκαλυμμένης ὁδεύσεως καὶ ἐγκαθιστάμενον ἔμπροσθεν τοῦ *μεταπυργίου* (βλ.λ.), ἀποκληθὲν δὲ οὕτω διότι ἐν ἀρχῇ εἰς τὸ ἔργον τοῦτο ἐδίδετο σχῆμα μηνοειδές. Αἱ πρὸ τῆς μήνης τάφροι ἐπλαγιοβάλλοντο ἀπὸ τῶν μετώπων τῶν προμαχώνων. Σκοπὸς τῆς μήνης ἦτο ἡ παροχὴ πλαγιοφυλακτικῶν πυρῶν πρὸ τῶν μετώπων καὶ τῶν ἐξεχουσῶν γωνιῶν τῶν ἑκατέρωθεν προμαχώνων. Ἡ μήνη ἦτο ἔργον χαμηλότερον κατά τι τοῦ μεταπυργίου, οὕτως ὥστε ἀφ' ἑνὸς μὲν νὰ μὴ ἐμποδίζῃ τὴν ἐξ αὐτοῦ θέαν, ἀφ' ἑτέρου δὲ νὰ δεσπόζηται ἀπὸ τὰ πυρὰ του. Εἶχε σχῆμα σφηνὸς καὶ συνίστατο συνήθως ἐκ δύο μετώπων μήκους 110—120 μέτρων.

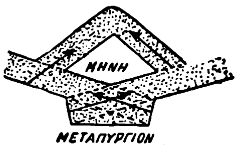


*Μήνη.*

**μηνιαῖος,** —α, —ον· ὁ διαρκῶν ἕνα μῆνα: «μηνιαῖα ἄδεια ἀπουσίας»· || ὁ ἀναφερόμενος εἰς ἕνα μῆνα, ὁ τοῦ μηνός: «μηνιαῖος μισθός», «δόσεις μηνιαῖαι» || «μηνιαῖον περιοδικὸν» τὸ κατὰ μῆνα ἐκδιδόμενον· || *μηνιαῖον* (τό)· ὡς οὐσ., κατὰ παράλειψιν τοῦ *μίσθωμα*, τὸ ἐνοίκιον ἑνὸς μηνός, κοιν. *μηνιάτικο*: «μοῦ ὀφείλει δύο μηνιάτια».—Ἐπίρρ. ***μηνιαίως***· κατὰ μῆνα: «λαμβάνει χιλίας δραχμὰς μηνιαίως».

— **«Μηνιαία *Ἐπιθεώρησις*».** Περιοδικὸν ἐν Βαθεῖ Σάμου, ἱδρυθὲν τῷ 1923 καὶ ἐκδοθὲν ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν Γιάννη Βούλη μέχρι τοῦ 1925. —Π.

— **«Μηνιαία *Ἐπιθεώρησις Πολιτικὴ καὶ Κοινοβουλευτική*».** Περιοδικὸν ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθὲν τὴν 15 Μαρτίου 1916 ὑπὸ Γ. Καφαντάρη. Διακοπὲν συντόμως ἐξεδόθη ἀπὸ Ἰουλίου 1924 μέχρι τοῦ ἑπομένου ἔτους. —Π.

— **«Μηνιαία *Οἰκονομικὴ καὶ Κοινωνικὴ Ἐπιθεώρησις τῆς Ἑλλάδος*».** Περιοδικὸν ἐν Ἀθήναις ἱδρυθὲν τῷ 1924 ὑπὸ Κ. Κοτρόζου, ἀσχολούμενον δὲ ἰδίως μὲ τὴν δημοσιονομίαν, ἐθνικὴν οἰκονομίαν, κοινωνιολογίαν κλπ. —Π.

**Μηνιάτης, *Γεώργιος.*** Ὀνομαστὸς Ἕλλην ζωγράφος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἐγεννήθη ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1823, ἐσπούδασε δ' ἐν Ρώμῃ καὶ διήγαγε τὸν βίον ἐν Ἰταλίᾳ, ἀποθανὼν τῷ 1895. Διεκρίθη ὡς σχεδιαστὴς καὶ ὡς ζωγράφος θρησκευτικῶν καὶ ἱστορικῶν θεμάτων. Διετέλεσεν ἀνταποκριτὴς σχεδιαστὴς ἐν Ἰταλίᾳ τῶν «Εἰκονογραφημένων Νέων» τοῦ Λονδίνου καὶ δρῶν μέλος τοῦ ἐν Φλωρεντίᾳ διεθνοῦς συνεδρίου στατιστικῆς. Σύζυγός του ὑπῆρξεν ἡ λογία *Μαργαρίτα Ἀλβάνα-Μηνιάτη.* Ι. Μ. Π.

— **Μηνιάτης, *Ἠλίας.*** Μέγας Ἕλλην κληρικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Ληξουρίῳ τῆς Κεφαλληνίας τῷ 1669 ἐκ πατρὸς Φραγκίσκου πρωτοπαπᾶ καὶ μητρὸς Μορεζίας καὶ ἀποθανὼν τὴν 1ην Αὐγούστου 1714, ἐν ἡλικίᾳ 45 ἐτῶν. Ἐκ παιδικῆς ἡλικίας κατέδειξε τὰ ἔκτακτα διανοητικὰ χαρίσματα, δι' ὧν εἶχε προικισθῆ ἐκ φύσεως, καὶ δεκαετὴς μόλις ἐστάλη εἰς Βενετίαν (1679) καὶ διὰ ψήφου τῶν ἀρχόντων (ρεφορματόρων) εἰσήχθη ὡς τρόφιμος καὶ μαθητὴς εἰς τὸ Φλαγγινιανὸν φροντιστήριον, ὅπου ἐδιδάσκοντο τὴν ἑλληνικήν, λατινικὴν καὶ ἰταλικὴν γλῶσσαν. Ἐν τῇ σχολῇ ταύτῃ διεκρίθη τόσον, ὥστε μόλις ἀπεφοίτησε διωρίσθη καθηγητὴς τῶν ἑλληνικῶν μαθημάτων καὶ ἐδίδαξεν ἐπὶ τριετίαν ἐπιτυχέστατα. Ταυτοχρόνως κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐκήρυττε τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου καὶ ἐχειροτονήθη διάκονος.

Φημισθεὶς ἐπὶ εὐγλωττίᾳ καὶ μαθήσει προσεκλήθη ὑπὸ τῶν συμπολιτῶν του εἰς τὴν Κεφαλληνίαν, ὅπως διδάξῃ ἐν αὐτῇ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα καὶ τὴν φιλοσοφίαν, παρέμεινε δὲ αὐτόθι ἐπὶ ἑπτὰ ἔτη, καθ' ἃ ἐκήρυττε συγχρόνως καὶ ἐπ' ἐκκλησίαις. Κατόπιν προσκληθεὶς ἐπίσης ὑπὸ τῶν προυχόντων μετέβη εἰς Ζάκυνθον. Μετὰ τετραετῆ ὅμως διαμονὴν ἐν Ζακύνθῳ προσεκλήθη εἰς Κέρκυραν ὑπὸ τοῦ Ἀντωνίου Μολίνου, Βενετοῦ στρατηγοῦ καὶ τοποτηρητοῦ τῆς Κερκύρας, διὰ ν' ἀναλάβῃ τὴν διαπαιδαγώγησιν τῶν δύο ἀνεψιῶν του. Ὁ Μολῖνος τόσον ἠγάπησε καὶ ἐξετίμησε τὸν Μηνιάτην, ὥστε, ὅταν ἀνεκλήθη τῷ 1698, παρέλαβεν αὐτὸν μεθ' ἑαυτοῦ εἰς Βενετίαν, ὅπου ἡ ἑλληνικὴ παροικία προσέφερεν αὐτῷ διὰ δευτέραν φορὰν τὴν θέσιν καθηγητοῦ ἐν τῷ Φλαγγινιανῷ φροντιστηρίῳ. Ἀλλ' εἰς τὴν θέσιν ταύτην μόνον ἐπὶ ἓν ἔτος ἔμεινε, διότι προσελήφθη σύμβουλος εἰς Κωνσταντινούπολιν ὑπὸ τοῦ ἐκεῖ ἀποσταλέντος ὡς πρέσβεως τῆς Βενετίας Λαυρεντίου Σοράντζου. Ἐκεῖ ἡ ρητορικὴ καὶ ἡ πολιτικὴ ἱκανότης τοῦ Μηνιάτη εὑροῦσαι εὐρὺ στάδιον, ἀνεδείχθησαν ἔτι μᾶλλον, αἱ δὲ διδαχαί του ἐθαυμάσθησαν. Ὅταν βραδύτερον ὁ πρίγκιψ τῆς Μολδαβίας Δημήτριος ὁ Καντεμίρ, εἰς μίαν κρίσιμον στιγμήν, ἠθέλησε νὰ στείλῃ πρεσβείαν πρὸς τὸν αὐτοκράτορα Λεοπόλδον τῆς Αὐστρίας, ἀνέθεσε τὴν λεπτοτάτην καὶ δύσκολον ταύτην ἀποστολὴν εἰς τὸν Μηνιάτην, ὅστις ἐδικαίωσε τὰς προσδοκίας του καὶ ἐγένετο δεκτὸς μετ' ἐξαιρέτων τιμῶν.

Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῆς ἀποστολῆς προσεκλήθη πάλιν εἰς Κωνσταντινούπολιν ὑπὸ τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριάρχου Γαβριὴλ καὶ ἐξελέγη διδάσκαλος τῆς πατριαρχικῆς σχολῆς καὶ ἱεροκήρυξ τῆς Μεγάλης Ἐκκλησίας. Εἰς τὴν τιμητικὴν ταύτην θέσιν παρέμεινεν ἐπὶ ἑξαετίαν, κατόπιν δὲ παραιτηθεὶς μετέβη εἰς Κεφαλληνίαν καὶ Κέρκυραν. Ἐν Κερκύρᾳ εὑρισκόμενος προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ Ἀγγέλου Ἔμου, διοικητοῦ τῆς Πελοποννήσου, ὅπως διορισθῇ ἐπίσκοπος Χριστιανουπόλεως, ἀλλὰ δὲν ἐδέχθη. Ἐπὶ τοῦ κατόπιν διοικητοῦ Φ. Γριμάνη ἐδέχθη τὴν θέσιν τοῦ ἱεροκήρυκος Ἄργους καὶ Ναυπλίου καὶ ἐπὶ τοῦ κατόπιν Μάρκου Λορεδάνου προεχειρίσθη ἀρχιεπίσκοπος Κερνίκης καὶ Καλαβρύτων, τῷ 1711. Φλεγόμενος ὅμως ὑπὸ τοῦ πόθου ν' ἀναδειχθῇ καθ' ὅλα ἄξιος τοῦ νέου αὐτοῦ ἀξιώματος καὶ ὑποβληθεὶς εἰς κόπους καὶ ἀγῶνας ὑπερμέτρους, ἀπέθανε μετ' ὀλίγα ἔτη ἐν Παλαιαῖς Πάτραις τὴν 1 Αὐγούστου 1714. Μεταφερθεὶς ὑπὸ τοῦ πατρός του εἰς Κεφαλληνίαν ἐτάφη εἰς τὸν ἐν Ληξουρίῳ ναὸν τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου.

Ὁ Ἠλίας Μηνιάτης, κατὰ τοὺς χαρακτηρισμοὺς τοῦ ἰδίου του πατρός, ὅστις συνέταξε τὴν βιογραφίαν του: «ἦτο φαιδρὸς καὶ χαρίεις εἰς τὸ πρόσωπον, τὸ ὁποῖον ἐφανέρωνε καὶ ἔξωθεν τὴν ὀξύτητα τοῦ νοός του, τὸ πρᾷον καὶ ἄδολον τῆς καρδίας του καὶ τὸ κόσμιον τῶν ἠθῶν του. Ἦτο θεοσεβέστατος, εὐπροσήγορος εἰς τὰς συναναστροφάς, εἰλικρινέστατος εἰς τὴν φιλίαν, πεπλουτισμένος μὲ ἀληθινὴν εὐσέβειαν καὶ χριστιανικὴν ἀγάπην· καὶ ἀγκαλὰ ἦτον ἐκ φύσεως εὔγλωττος, ἡ σπουδὴ ὅμως τῆς φιλοσοφίας, θεολογίας καὶ μαθηματικῆς, τὸν ἐκατάστησαν τέλειον ρήτορα καὶ ἄκρον διδάσκαλον». Ὁ Μηνιάτης θεωρεῖται εἷς τῶν ἐπιφανεστέρων ἀνδρῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἐκ τῶν μᾶλλον διακριθέντων κληρικῶν, ἐκ τῶν πρώτων μορφωτῶν τῆς νεοελληνικῆς γλώσσης, ἐκ τῶν σπανίων καὶ εὐφραδεστέρων ρητόρων τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας. Αἱ κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχὰς τοῦ βίου του, ἰδίως δὲ αἱ ὡς ἱεροκήρυκος καὶ ὡς ἐπισκόπου ἐν Πελοποννήσῳ ἀπὸ τοῦ ἄμβωνος ὁμιλίαι του εἶναι ἀληθῆ ὑποδείγματα δυνάμεως λόγου, ζωηρότητος φαντασίας, χάριτος καὶ πειθοῦς. Μαθητὴς τοῦ περιφήμου κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος Κρητὸς διδασκάλου καὶ συγγραφέως τῆς «Ρητορικῆς» Φραγκίσκου Σκούφου, συνετέλεσεν ὅσον ὀλίγοι εἰς τὴν κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην διάπλασιν τῆς ἐθνικῆς γλώσσης ἐπὶ τῆς εὐρείας βάσεως τῆς συγχωνεύσεως τῶν ὑπὸ τῆς παραδόσεως κληροδοτηθέντων εἰς τὸ ἔθνος γλωσσικῶν στοιχείων μετὰ τῶν ζώντων σήμερον καὶ ἐκ τοῦ λαοῦ προερχομένων

Digitized by Google

παρήγαγε δὲ ἔργα, τῶν ὁποίων σήμερον εἴπερ ποτὲ καὶ ἄλλοτε δύναται νὰ ἐκτιμηθῇ ἡ ἀξία καὶ ἡ σημασία. Ἐκτὸς τῶν ὁμιλιῶν αὐτοῦ, αἵτινες ὑπὸ τὸν τίτλον «Διδαχαὶ» ἐτυπώθησαν τὸ πρῶτον ἐν Βενετίᾳ τῷ 1717, ἔκτοτε δ' ἐπανειλημμένως ἐπανεξεδόθησαν καὶ ἐχρησίμευσαν ἐπὶ μακρὸν ὡς ἓν ἐκ τῶν προσφιλεστέρων ἀναγνωσμάτων τοῦ ἔθνους, συνέγραψε καὶ τὸ θεολογικὸν σύγγραμμα: «Πέτρα σκανδάλου, ἤτοι διασάφησις τῆς ἀρχῆς καὶ αἰτίας τοῦ σχίσματος τῶν δύο Ἐκκλησιῶν, ἀνατολικῆς καὶ δυτικῆς κτλ.», ὅπερ ἐξεδόθη τὸ πρῶτον ἐν Λειψίᾳ τῷ 1718· Ὁ Μηνιάτης ἐδίδαξε καὶ ἰταλιστὶ μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. † Π.

— **Μηνιάτη *Ἀλβάνα, Μαργαρίτα - Ματθίλδη.*** Ἑλληνὶς συγγραφεὺς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, σύζυγος τοῦ Γεωργίου Μηνιάτη (βλ. λ. *Ἀλβάνα* Μηνιάτη).

**μηνιάτικο** (τό)· δημοτ., τὸ μίσθωμα, τὸ ἐνοίκιον ἑνὸς μηνός: «χρωστῶ δυὸ μηνιάτικα»· || καθόλου, ὁ μισθὸς τὸν ὁποῖον λαμβάνει τις κατὰ μῆνα: «τὸ μηνιάτικο δὲ μᾶς φθάνει νὰ περάσωμε ὅλον τὸ μῆνα».

**μηνιγγικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀνήκων ἢ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μήνιγγας.

—**μηνιγγικαὶ *ἀρτηρίαι*** *[Ἀνατομ.]*. Αὗται προέρχονται κυρίως: 1) ἐκ τῆς μέσης μηνιγγικῆς ἀρτηρίας, κλάδου τῆς ἔσω γναθιαίας ἀρτηρίας· ἐπικουρικῶς δὲ 2) ἐκ τῆς προσθίας μηνιγγικῆς ἀρτηρίας, κλάδου τῆς προσθίας ἠθμοειδοῦς· 3) ἐκ τῆς ὀπισθίας μηνιγγικῆς ἀρτηρίας, κλάδου τῆς ἀνιούσης φαρυγγικῆς· 4 καὶ 5) ἐκ τοῦ μηνιγγικοῦ κλάδου τῆς ἰνιακῆς καὶ τοῦ τῆς σπονδυλικῆς ἀρτηρίας. Ι. Π.

— **μηνιγγικαὶ *αὔλακες*** *[Ἀνατομ.]*. Αὔλακες ἐπὶ τῆς ἔσω ἐπιφανείας τῆς κροταφικῆς χώρας τοῦ κρανίου, ὧν αἱ πρόσθιαι ὁρμῶνται ἐκ κοινοῦ στελέχους, ὑποδεχομένου τὸν πρόσθιον κλάδον τῆς μηνιγγικῆς ἀρτηρίας. Ι. Π.

—**μηνιγγικὴ *αἱμορραγία*.** Διακρίνεται εἰς τὴν *αἱμορραγικὴν παχυμηνιγγίτιδα* καὶ τὴν *διάχυτον μηνιγγικὴν αἱμορραγίαν*. Ἡ πρώτη συνίσταται εἰς τὸν σχηματισμὸν μεμβρανῶν μετὰ νεοπλάστων ἀγγείων, ἅτινα βραδύτερον ῥήγνυνται καὶ σχηματίζονται περίγραπτοι αἱμορραγίαι ἐντὸς τῶν μεμβρανῶν. Κλινικῶς ἐκδηλοῦται διὰ πόνων ἐντετοπισμένων ἢ καταλαμβανόντων καὶ ὅλον τὸ κρανίον, συνεχῶν καὶ προϊούσης ἐντάσεως. Παρατηρεῖται κυρίως ἐπὶ ἀλκοολικῶν (ἐξ οἰνοπνεύματος παχυμηνιγγικὴ αἱμορραγία). Ἡ δὲ ἐλευθέρα αἱμορραγία, γινομένη, εἰς ἄλλας μὲν περιπτώσεις ἐν τῇ παχείᾳ, εἰς ἄλλας δ' ἐν τῇ λεπτῇ μήνιγγι, ἐκδηλοῦται κλινικῶς διὰ τῶν φαινομένων ἀποπληξίας, μετὰ συσπάσεων καὶ δυσκαμψίας, πρωϊμώτατα ἐπερχομένων. Ὀφείλονται δ' αἱ αἱμορραγίαι αὗται ἐν γένει εἰς οἰνοπνευμάτωσιν, συφίλιδα, διαφόρους ἐγκεφαλίτιδας, προϊοῦσαν παράλυσιν, ἐγκεφαλικὰς ψυχικὰς παθήσεις κτт. Ἡ πρόγνωσις εἶναι βαρεῖα, ἰδίᾳ ἐν τῇ ἐλευθέρᾳ αἱμορραγίᾳ. Τ. Α. Ζ.

**μηνιγγιτιδόκοκκος** (ὁ) (diplococcus tracellularis meningitidis) *[Μικροβιολ.]*. Μικρόβιον τοῦ εἴδους τῶν *κόκκων* (βλ. λ.), καφεοειδὲς τὸ σχῆμα καὶ διατεταγμένον κατὰ δυάδας, ἐνίοτε δὲ καὶ κατὰ τετράδας, ἀνακαλυφθὲν τῷ 1866 ὑπὸ τοῦ Βαϊχζελμπάουμ.

—*[Ὀφθαλμολ.]* Βλ. *μηνιγγῖτις*.

**μηνιγγιτικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μηνιγγίτιδα.

—**μηνιγγιτικαὶ *γραμμαί*.** Καλοῦνται οὕτως αἱ ἐρυθραὶ γραμμαί, αἵτινες ἐμφανίζονται ἐν τῇ κοιλίᾳ ἰδίᾳ, μετὰ χάραξιν ἐπ' αὐτῆς διὰ τοῦ ὄνυχος, καὶ αἵτινες παραμένουσιν ἐπί τινα λεπτά. Ὀφείλονται εἰς πάρεσιν τῶν ἀγγείων καὶ ἐθεωρήθησαν ἐν ἀρχῇ ὡς εἰδικὸν σημεῖον τῶν μηνιγγιτίδων, ἀλλὰ βραδύτερον κατεδείχθη ὅτι παρατηροῦνται ἐπὶ πλείστων παθήσεων, εἰς ἃς ἔχομεν τοιαύτην πάρεσιν, ἐκτὸς πάσης προσβολῆς τῶν μηνίγγων. Τ.Α.Ζ.

**μηνιγγῖτις**, *—ιδος* (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ φλεγμονὴ τῶν μηνίγγων. Καὶ ἂν μὲν πρόκειται περὶ φλεγμονῆς τῶν μηνίγγων τοῦ ἐγκεφάλου, λέγομεν ὅτι ἔχομεν *ἐγκεφαλικὴν μηνιγγίτιδα*, ἂν δὲ περὶ τῶν μηνίγγων τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ἔχομεν *νωτιαίαν μηνιγγίτιδα*, ἂν τέλος περὶ ἀμφοτέρων, *ἐγκεφαλονωτιαίαν* τοιαύτην. Ἀναλόγως δὲ τῆς ἐξελίξεως, αἱ μηνιγγίτιδες διακρίνονται εἰς *ὀξείας, ὑποξείας* καὶ *χρονίας*. Φλεγμονὴν τοιαύτην τῶν μηνίγγων δύνανται νὰ προκαλέσωσι πλεῖστα μικρόβια, ἀναλόγως τῶν ὁποίων ὀνομάζομεν καὶ τὴν μηνιγγίτιδα. Ὑπάρχει ὅμως καὶ μικρόβιον προκαλοῦν εἰδικῶς τὴν καλουμένην *ὀξεῖαν ἐπιδημικὴν ἐγκεφαλονωτιαίαν μηνιγγίτιδα*, ὁ καλούμενος διπλόκοκκος τοῦ Weichselbaum. Αὕτη εἶναι ἡ κατ' ἐξοχὴν ἐπιδημικὴ μηνιγγῖτις, ἐκδηλοῦται δέ, ὡς καὶ πᾶσα ἄλλη μηνιγγῖτις, δι' ἀποτόμου εἰσβολῆς ῥίγους καὶ εἶτα πυρετοῦ, ἐμέτων, κεφαλαλγίας ἐντόνου, πόνων κατὰ τὰς ἀρθρώσεις, τὰ νεφρὰ καὶ ἀλλαχοῦ, μεθ' ἃ ἀκολουθεῖ ἡ περίοδος τῆς ἐγκαταστάσεως τῶν συσπάσεων, μετὰ ὀπισθοτόνου (σύσπασις τῶν αὐχενικῶν μυῶν, δι' ὃ ἡ κεφαλὴ κάμπτεται πρὸς τὰ ὀπίσω), ἐνῷ τὸ ὅλον σῶμα διατηρεῖται εἰς τὴν θέσιν τοῦ λύκου (κεκαμμένα σκέλη καὶ κορμὸς κεκαμμένος μετὰ ἐκτάσεως τῆς κεφαλῆς), οὐχὶ δὲ σπανίως ἐπέρχονται σπασμοί. Ἀντικειμενικῶς ὁ ἰατρὸς ἀνευρίσκει τὰ σημεῖα Kernig, Brudzinski κτт. Παρατηρεῖται καὶ σύσπασις τῶν μασητήρων, ὡς καὶ ἐπὶ τετάνου. Ὁ σφυγμὸς εἶναι βραδύς, ἡ ἀναπνοὴ ἐμφανίζει διαταραχάς, ὑπάρχει δυσκοιλιότης ἔντονος. Ἡ ὀσφυονωτιαία παρακέντησις δεικνύει ὑγρὸν θολερὸν μέχρι πυώδους, μεστὸν πολυμορφοπυρήνων κυττάρων (εἰς πάσας τὰς ὀξείας μηνιγγίτιδας). Διάρκεια συνήθως 1—3 ἑβδομάδας. Ὑπάρχει καὶ ἡ κεραυνοβόλος μορφή, ἥτις ἐπιφέρει τὸν θάνατον εἰς 1—7 ἡμέρας, ὅτε εἰς τοὺς μήνιγγας εὑρίσκομεν μόνον ὑπεραιμίαν καὶ οὐδὲν ἄλλο. Ἀπολήγει ἢ εἰς θάνατον, ἢ καλῶς, ἢ εἰς ὑπολείμματα: παραλύσεις, ψυχικὰς διαταραχάς, κώφωσιν κτт. Ἀπὸ τῆς ἀνευρέσεως τοῦ εἰδικοῦ ὀροῦ ἡ ἐπιδημικὴ μηνιγγῖτις ἐκ μηνιγγιτιδοκόκκου τοῦ Beichselbaum ἰᾶται εἰς πλείστας περιπτώσεις δι' ἐνδορραχιαίων ἐνέσεων τοιούτου ὀροῦ. Εἰς τὰς ἄλλας οἱ ὀροὶ δὲν δίδουν ἀποτελέσματα, ἡ δὲ λοιπὴ θεραπεία εἶναι συμπτωματική. Εἰς τὴν νεκροψίαν παρατηρεῖται σύμφυσις τῶν μηνίγγων καὶ ἐξίδρωμα πυῶδες, ἰδίᾳ κατὰ τὴν κορυφήν. Μικροσκοπικῶς διήθησις.

Ἐκτὸς τῶν ὀξειῶν μηνιγγιτίδων ἔχομεν τὴν *φυματιώδη*, ὑποξεῖαν τὴν ἐξέλιξιν μηνιγγίτιδα. Αὕτη διαρκεῖ 2—4 ἑβδομάδας. Ἐκδηλοῦται διὰ τῶν ἰδίων γενικῶν φαινομένων, ἀλλ' ἐμφανίζει ἐντόπισιν βασικὴν καὶ ὑγρὸν διαυγὲς εἰς τὴν παρακέντησιν μετὰ λεμφοκυττάρων. Ὁ θάνατος εἶναι ἡ ἀναγκαία ἔκβασις αὐτῆς, μολονότι ὑπάρχουσι καί τινες περιπτώσεις μηνιγγιτίδων μετὰ ὑγροῦ διαυγοῦς ἰαθεῖσαι (ὀρώδεις μηνιγγίτιδες κτλ.). Ἐπὶ πλέον ἔχομεν καὶ τῆς συφίλιδος τῶν μηνίγγων μορφὰς τυπικὰς μηνιγγιτικὰς ὑπαρχούσας. Διακρίνονται διὰ τὸ διαυγὲς ὑγρόν, τὴν Wassermann ἐν αὐτῷ θετικὴν μετὰ λεμφοκκυτώσεως καὶ λευκωματώσεως. Ἰᾶται διὰ τῆς εἰδικῆς θεραπείας, ἡ δ' ἐξέλιξις αὐτῆς εἶναι μᾶλλον ὑποξεῖα. Χρόνιαι τέλος μηνιγγίτιδες εἶναι πλεῖσται: ἡ διάχυτος μηνιγγοεγκεφαλῖτις, αἱ δευτεροπαθεῖς εἰς ὄγκους ἢ καθ' ἑστίας ἀλλοιώσεις τοῦ ἐγκεφάλου, ἡ χρονία μηνιγγῖτις τῶν ἀλκοολικῶν, ἡ σύφιλις τῶν μηνίγγων.

Αἱ νωτιαῖαι μηνιγγίτιδες περιλαμβάνουσι τὴν νωτιαίαν λεπτομηνιγγίτιδα, τὴν ὀξεῖαν καὶ τὴν χρονίαν, τὴν παχυμηνιγγίτιδα τὴν ὑπερτροφικήν, τὴν συφιλιδικὴν μηνιγγίτιδα καὶ ἄλλας, αἵτινες συνήθως εἶναι ἢ γίνονται μηνιγγομυελίτιδες. Εἰς ταύτας κατέχει εἰδικὴν θέσιν καὶ δέον νὰ προστεθῇ ἡ περίγραπτος ὀρώδης νωτιαία μηνιγγῖτις. Αὗται εἶναι ἀγαθώτεραι τὴν ἔκβασιν, ἰδίᾳ ἀπὸ ἀπόψεως τῆς ζωῆς, καὶ μόνον ἀπὸ ἀπόψεως ὑπολειμμάτων ἐκ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ ἐνέχουσι κακὴν πρόγνωσιν, πάντως οὐχὶ ὡς αἱ γενικαὶ μηνιγγίτιδες. Τ. Α. ΖΗΣ

—*[Ὀφθαλμολ.]* Κατὰ τὴν πορείαν τῆς *ἐγκεφαλονωτιαίας μηνιγγίτιδος* καὶ δὴ κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τῆς διαδρομῆς τῆς νόσου, σπανιώτατα δὲ προτοῦ ἀναφανῶσι σαφῆ μηνιγγιτικὰ συμπτώματα, ὁ ὀφθαλμὸς προσβάλλεται κατὰ τοὺς διαφόρους αὐτοῦ χιτῶνας. Ὁ μηνιγγόκοκκος, κυκλοφορῶν διὰ τοῦ ἀγγειακοῦ συστήματος, ἐγκαθίσταται εἰς τὸν ἀμφιβληστροειδῆ, τὸν χοριοειδῆ, τὸ ἀκτινωτὸν σῶμα, τὴν ἴριδα καὶ προκαλεῖ τὴν λεγομένην *μεταστατικὴν ὀφθαλμίαν* (ἀμφιβληστρο - χοριο - ὑαλίτιδα μετὰ ἢ ἄνευ ἰριδοκυκλίτιδος ἢ ἁπλῆν ἰριδοκυκλίτιδα). Ἡ πάθησις, ὁτὲ μὲν μονόπλευρος, ὁτὲ δ' ἀμφίπλευρος, ἐκδηλοῦται μὲ χύμωσιν ἐξόφθαλμον, στεφανιαίαν ἢ γενικὴν ἕνωσιν τοῦ ἐπισκλήρου, κιτρινωπὴν θόλωσιν τοῦ ὑαλοειδοῦς καὶ πόνους κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον σοβαρούς. Ὅταν ὑπάρχωσι συμφύσεις τῆς ἴριδος, ὑπόπυον καὶ ὑαλῖτις, ὁ βυθὸς δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἐξετασθῇ. Συνήθως ἡ ὅρασις χάνεται καὶ ὁ βολβὸς ἀτροφεῖ. Ὅταν ὑπάρχῃ κυκλῖτις, ἐνδεχόμενον νὰ παρατηρηθῇ καὶ διάμεσος κερατῖτις, ὁμοιάζουσα πρὸς τὴν συφιλιδικὴν τοιαύτην. Κατὰ τὴν διαδρομὴν τῆς μηνιγγίτιδος, ἐκτὸς τῆς μεταστατικῆς ὀφθαλμίας, οἱ χιτῶνες τοῦ ὀφθαλμοῦ καὶ δὴ αἱ θῆκαι τοῦ ὀπτικοῦ νεύρου, ἡ θηλὴ καὶ ὁ ἀμφιβληστροειδής, εἶναι δυνατὸν νὰ παρουσιάσουν νευρίτιδα, θηλίτιδα καὶ ἀμφιβληστροειδίτιδα, ὀφειλομένας οὐχὶ πλέον εἰς μικροβιακὴν μετάστασιν, ἀλλ' εἰς ἐπέκτασιν τῆς φλεγμονώδους καταστάσεως τῶν μηνίγγων διὰ μέσου τοῦ περιβλήματος τοῦ ὀπτικοῦ νεύρου. Ἐν τέλει κατὰ τὴν μηνιγγίτιδα ταύτην παρατηροῦνται καὶ παραλύσεις τῶν ἐσωτερικῶν καὶ ἐξωτερικῶν μυῶν τοῦ ὀφθαλμοῦ, ἐπιπεφυκίτιδες ὀφειλόμεναι εἰς αὐτὸν τοῦτον τὸν μηνιγγόκοκκον καὶ κερατίτιδες ἐκ λαγοφθάλμου, συνεπείᾳ βλεφαρικῆς ἀτονίας. Α. ΓΑΒΡΙΗΛΙΔΗΣ

—*[Κτηνιατρ.]* Ἡ *μηνιγγῖτις* εἰς τὰ ζῷα, ὅπως καὶ εἰς τὸν ἄνθρωπον, εἶναι νόσημα προκαλούμενον ἐκ τῆς φλεγμονῆς τῶν μηνίγγων. Ἡ φλεγμονὴ αὕτη ἔχει συνήθως τὴν ἕδραν της εἰς τὴν ἀραχνοειδῆ καὶ τὴν χοριοειδῆ μήνιγγα (*λεπτομηνιγγῖτις*), εἶναι φυματικῆς ἐνίοτε φύσεως, ὀφείλεται εἰς διαφόρους μικροργανισμοὺς (πνευμονοκόκκους, σταφυλοκόκκους, στρεπτοκόκκους, κολοβακίλλους κλπ.), ἢ ἐπακολουθεῖ τὰς πνευμονικὰς παθήσεις. τὴν ὀξεῖαν ἐνδοκαρδίτιδα, τὸ ἐρυσίπελας, τὰς τυφοειδεῖς παθήσεις, τὰ ἐγκεφαλικὰ τραύματα. Εἰς ὅλας τὰς ἀνωτέρω περιπτώσεις τὴν ἀσθένειαν ἐπιβοηθοῦν πολὺ τὰ διάφορα τραύματα τῆς κεφαλῆς, αἱ ἡλιακαὶ ἀκτῖνες κλπ. Τὸ νόσημα ἀναφαίνεται ἐνίοτε ἀποτόμως. Διακρίνονται δὲ τότε δύο στάδια, τὸ *τῆς ὑπερδιεγέρσεως* (ἀνησυχία, πυρετός, πόνοι κατὰ τὴν κεφαλήν, συσπάσεις τῶν μυῶν τοῦ αὐχένος, ὀπισθότονον, παραφροσύνη) καὶ *τὸ τῆς καταπτώσεως* (ὑπνηλία, ὑποθερμία, γενικὴ ἀναισθησία, παράλυσις), φαινόμενα τὰ ὁποῖα ἐπιτεινόμενα ἐπιφέρουν τὸν θάνατον. Διακρίνομεν τὴν *ἐγκεφαλικὴν μηνιγγίτιδα* καὶ τὴν *ἐγκεφαλονωτιαίαν*, ὅταν προσβάλλωνται συγχρόνως αἱ μήνιγγες τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Ἡ τελευταία αὕτη προσβάλλει ὅλα τὰ ζῷα, τοὺς ἵππους, τὰς ἀγελάδας, τὰ πρόβατα, τοὺς κύνας καὶ σπανίως τὰς γαλᾶς. Λεπτομερέστερον ἐξεταζόμενον τὸ νόσημα τοῦτο δύναται νὰ καθορισθῇ ὡς *λεπτομηνιγγῖτις*, ὅταν ἡ φλεγμονὴ ἑδράζῃ ἐπὶ τῆς ἀραχνοειδοῦς καὶ τῆς χοριοειδοῦς μήνιγγος, καὶ *παχυμηνιγγῖτις*, ὅταν ἡ ἕδρα τῆς φλεγμονῆς εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς σκληρᾶς μήνιγγος. Ἡ ἐγκεφαλονωτιαία μηνιγγῖτις εἰς τὰ ζῷα παρουσιάζεται σποραδικῶς καὶ ἐπιζωοτικῶς. Ἡ φλεγμονὴ τῶν μηνίγγων καὶ κατὰ συνέπειαν ἡ μηνιγγῖτις ὀφείλεται ἐν τούτοις εἰς ψύξεις, καθόσον παρατηρεῖται συνήθως εἰς ρευματικὰς παθήσεις. Ἀλλὰ καὶ διάφοροι αἱμορραγίαι, παράσιτά τινα (κυστίκερκοι κλπ.) ὡς καὶ ἐγκεφαλικὰ οἰδήματα δυνατὸν νὰ γίνουν αἰτία ἀναπτύξεως τῆς μηνιγγίτιδος. Κυριώτερα συμπτώματα τῆς ἐγκεφαλονωτιαίας μηνιγγίτιδος εἶναι ὁ πυρετός, φαινόμενα γαστροεντερικά, ἴκτερος, κωλικοί, φωτοφοβία, ὑπερευαισθησία, συσπάσεις τῶν μυῶν τῆς κεφαλῆς, τοῦ αὐχένος καὶ τῶν ἄκρων, ὀπισθότονον, ἐνίοτε συμπτώματα παραφροσύνης καὶ λύσσης ἀκόμη ἢ καὶ κατάπτωσις τοῦ νευρικοῦ συστήματος. Ἡ διάρκεια τῆς νόσου εἶναι ὁτὲ μὲν βραχυτάτη (ὀξυτάτη, ἀποπληκτική), ὁτὲ δὲ ὀξεῖα, διαρκοῦσα ὀκτὼ περίπου ἡμέρας, καὶ ἄλλοτε βραδεῖα—παραλυτική. Ἡ πρόγνωσις τῆς μηνιγγίτιδος εἶται σοβαρά, καθ' ὅσον εἶναι νόσος βαρεῖα, ἐπιφέρουσα τὸν θάνατον εἰς μεγάλην ἀναλογίαν σχετικῶς πρὸς τὰ κρούσματα.

Ὡς θεραπεία κατὰ τῆς μηνιγγίτιδος τῶν ζῴων συνιστᾶται ἡ συμπτωματική, ἤτοι φάρμακα ἀντιπυρετικά, ἀντισηπτικὰ τοῦ γαστροεντερικοῦ σωλῆνος καὶ διάφορα ἀντισπασμωδικά. Ἀπαραίτητος πρέπει νὰ εἶναι ὁ χωρισμὸς τῶν ἀσθενῶν ζῴων ἀπὸ τὰ ὑγιῆ καὶ ἡ τελεία ἀπολύμανσις τῶν στάβλων. Συνιστῶνται ἐπίσης ἡ ἀφαίμαξις καὶ ἡ ὑδροθεραπεία, ἰδίως ὑπὸ μορφὴν θερμῶν ἐπιθεμάτων, δι' ὧν ἐπιτυγχάνεται ἡ κατάπαυσις τῆς ἀνησυχίας καὶ τῶν πόνων, μὲ προσθήκην ψυχρῶν περιχύσεων ἐπὶ τῆς κεφαλῆς καὶ κατὰ μῆκος τῆς σπονδυλικῆς στήλης. Δ. Π.

**μηνιγγιτισμὸς** (ὁ), ἢ ***ψευδομηνιγγῖτις*.** Καλοῦνται οὕτως ἐλαφρὰ καὶ παροδικὰ φαινόμενα μηνιγγικά, παρατηρούμενα κατὰ τὴν διαδρομὴν ὀξειῶν νόσων ἐμπυρέτων, π. χ. ἑλονοσίας, καὶ συνιστάμενα εἰς μυϊκὰς συσπάσεις καὶ δυσκαμψίας (ὀπισθότονος), κεφαλαλγίας, δυσκοιλιότητα, ἔτι δὲ καὶ βραδυσφυγμίας, φαινόμενα δηλαδὴ δίδοντα ἐντύπωσιν μηνιγγίτιδος, ὅταν μάλιστα καὶ ἀντικειμενικῶς ἀνευρίσκωνται τὰ σημεῖα Kernig, Brudzinski. Διαρκοῦσι συνήθως 24 — 48 ὥρας μεθ' ἃς παρέρχονται. Τὸ ἐγκεφαλονωτιαῖον ὑγρὸν εὕρηται διαυγὲς καὶ φυσιολογικόν. Ἡ ἐξέλιξις καὶ ἰδίᾳ τὸ ἐγκεφαλονωτιαῖον ὑγρόν, εἶναι ὁ γνώμων τῆς τοιαύτης διαφορήσεως. Ἡ πρόγνωσις τῆς καταστάσεως πάντοτε καλή. Τ. Α. Ζ.

**μηνιγγοεγκεφαλῖτις** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ἡ φλεγμονὴ τῶν τε μηνίγγων καὶ τοῦ φλοιοῦ τοῦ ἐγκεφάλου ὁμοῦ. Κλινικῶς, ἡ συνύπαρξις μηνιγγικῶν καὶ ἐγκεφαλικῶν φαινομένων ἐκδηλοῖ τὴν μηνιγγοεγκεφαλίτιδα. Τ. Α. Ζ.

**μηνιγγοκήλη** (ἡ) *[Ὀφθαλμολ.]*. Καλεῖται ἡ δίκην κήλης προσεκβολὴ τῶν μηνίγγων ἐντὸς τῆς κόγχης. Ἡ πάθησις εἶναι συγγενής, ὀφείλεται δὲ εἰς δ αμαρτίαν τοῦ ἠθμοειδοῦς καὶ τοῦ μετωπιαίου ὀστοῦ, μεταξὺ τῶν ὁποίων σχηματίζεται τρῆμα, διὰ τοῦ ὁποίου προβάλλουν αἱ μήνιγγες. Συνήθως ἡ μηνιγγοκήλη προβάλλει κατὰ τὸ ἄνω καὶ ἔσω τμῆμα τῆς κόγχης ὑπὸ μορφὴν ὄγκου ἀμίσχου (σπανιώτατα ἐμμίσχου), μεγέθους ἐρεβίνθου μέχρις ᾠοῦ καὶ σχήματος ἡμισφαιρικοῦ. Ὁ ὄγκος, κείμενος ὑπὸ τὸ δέρμα, εἶναι κανονικὸς καὶ ἀνώδυνος τῇ πιέσει, οὐχ ἧττον ὅμως ἡ ἐπ' αὐτοῦ πίεσις δυνατὸν νὰ ἐπιφέρῃ ἐγκεφαλικὴν ζάλην. Μεταξὺ περιεχομένου τῆς μηνιγγοκήλης καὶ ἐγκεφάλου ὑπάρχει συγκοινωνία, εἰς τρόπον ὥστε ἡ ἐπὶ τῆς κήλης ἐξωτερικὴ πίεσις ἐλαττώνει τὸν ὄγκον αὐτῆς. Τὰ τοιχώματα τῆς μηνιγγοκήλης ἀποτελοῦνται ἀπὸ τὴν σκληρὰν μήνιγγα καὶ ἀπὸ τὰ ὑπόλοιπα τῶν δύο ἄλλων μηνίγγων, τὸ περιεχόμενον δ' αὐτῆς

Digitized by Google

ἀπὸ ἐγκεφαλικὸν ὑγρόν, σπανίως δὲ καὶ ἀπὸ ἐγκεφαλικὴν οὐσίαν.

Ἡ διάγνωσις εἶναι εὔκολος καὶ δὴ ὅταν ὁ ὄγκος εἶναι συγγενὴς συμμετρικὸς καὶ διὰ τῆς ψηλαφήσεως ἀντιλαμβανόμεθα ὅτι τὰ χείλη τοῦ τρήματος εἶναι ἀνώμαλα. Τέλος, δυνάμεθα νὰ προστρέξωμεν καὶ εἰς τὴν ὀσφυονωτιαίαν παρακέντησιν, καὶ καθ' ἣν ὥραν τὸ ἐγκεφαλονωτιαῖον ὑγρὸν ἐκρέει ἐκ τῆς βελόνης, πιέζοντες ἐπὶ τῆς κήλης βλέπομεν τὸν ὄγκον αὐτῆς ἐλαττούμενον κατὰ πολύ. Διὰ τοῦ τρόπου τούτου ἀποφεύγομεν τὴν παρακέντησιν αὐτῆς ταύτης τῆς κήλης, ἥτις ὅμως ἐπιβάλλεται, ὅταν δὲν ὑπάρχῃ συγκοινωνία μεταξὺ τῆς κήλης καὶ τοῦ ἐγκεφάλου. Τὸ ἐκ τῆς παρακεντήσεως ἀπορροφηθὲν ὑγρὸν ἐξετάζεται χημικῶς καὶ μικροσκοπικῶς. Θεραπευτικῶς ἐπέμβασις ἢ ἀποχὴ πάσης ἐγχειρητικῆς θεραπείας, ἀναλόγως τῶν περιπτώσεων. Α. Γ.

**μηνιγγομυελῖτις** (ἡ). Καλεῖται ἡ συνύπαρξις φλεγμονῆς τῶν νωτιαίων μηνίγγων μετὰ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Κλινικῶς ἐκδηλοῦται διὰ πόνων ῥιζιτικῆς διανομῆς καὶ φαινομένων ἀπὸ τῶν προσθίων ῥιζῶν (χαλαρᾶς παραλύσεως), ὡς καὶ τῶν χωρῶν, ἃς ἐν τῷ μυελῷ προσέβαλεν ἡ νόσος (σπασμωδικὰ φαινόμενα, ἂν προσέβαλε τὰ πυραμιδικὰ δεμάτια κ. οὕ. κ.). Ὀφείλεται δὲ κυρίως εἰς συφίλιδα, οἰνοπνευμάτωσιν καὶ ἄλλας αἰτιολογίας. Εἰς τὸ ἐγκεφαλονωτιαῖον ὑγρὸν ἀνευρίσκομεν ὑπερλεμφοκύττωσιν, ὡς ἐκ τῆς προσβολῆς τῶν μηνίγγων, καὶ ὑπερλευκωμάτωσιν καὶ Wassermann θετικήν, ἂν εἶναι συφιλιδικῆς ἀρχῆς. Ἡ πρόγνωσις ἀγαθὴ ἐν τῇ τελευταίᾳ ταύτῃ περιπτώσει, ἄλλως ἐπιφυλακτική. Ἡ θεραπεία αἰτιολογικὴ ἅμα καὶ συμπτωματολογική. Τ. Α. Ζ.

**μῆνιγξ,** *—ιγγος* (ἡ) *['Ανατομ.]*. Ἕκαστος τῶν τριῶν χιτώνων, οἵτινες περιβάλλουσι τὸν ἐγκέφαλον καὶ τὸν νωτιαῖον μυελόν. Αἱ μήνιγγες ἐκ τῶν ἔξω πρὸς τὰ ἔσω ἀριθμούμεναι εἶναι ἡ *σκληρά*, ἡ *ἀραχνοειδὴς* (βλ. λ.) καὶ ἡ *χοριοειδής*.

Ἡ *σκληρὰ μῆνιγξ* τοῦ *ἐγκεφάλου*, ἀποτελοῦσα ἐπαγῆ ἐκ στερροῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ ὑμένα, ἀπαρτίζεται ἐκ δύο στιβάδων ἢ πετάλων, δι' ὧν ὁδεύουσιν οἱ φλεβώδεις κόλποι καὶ ὧν τὸ μὲν ἔξω πέταλον προσφύεται στερρῶς τῇ ἔσω ἐπιφανείᾳ τοῦ κρανίου, ἀποτελοῦν τὸ ἔσωθεν περιόστεον αὐτοῦ (ἐνδοκράνιον) καὶ περιέχον τὰς μηνιγγικὰς ἀρτηρίας, τὸ δ' ἔσω, ὑπὸ ἐνδοθηλίου ἐπαλειφόμενον, ἐκπέμπει πεταλοειδεῖς προσεκβολὰς (ἐνδιπλώσεις), εἰσδυομένας ἀνὰ μέσον τῶν μειζόνων τμημάτων τοῦ ἐγκεφάλου, ἤτοι: α') τὴν δρεπανοειδῆ προσεκβολὴν ἢ τὸ δρέπανον τοῦ ἐγκεφάλου ἀνὰ μέσον τῶν ἡμισφαιρίων τοῦ ἐγκεφάλου· β') τὸ σκηνίδιον τῆς παρεγκεφαλίδος, χωρίζον δίκην διαφράγματος τοὺς ἰνιακοὺς λοβοὺς τοῦ ἐγκεφάλου ἀπὸ τῆς παρεγκεφαλίδος· γ') τὸ δρέπανον τῆς παρεγκεφαλίδος, παριστῶν συνέχειαν τοῦ δρεπάνου τοῦ ἐγκεφάλου, εἰσδυόμενον ἀνὰ μέσον τῶν ἡμισφαιρίων τῆς παρεγκεφαλίδος· δ') τὸ διάφραγμα τοῦ μυξαδένος, φερόμενον ὁριζοντίως ὕπερθεν τοῦ ἐφιππίου, ἔχον δ' ἐν τῷ μέσῳ τρῆμα, δι' οὗ διέρχεται ἡ χοάνη.

Ἡ δὲ τοῦ *νωτιαίου μυελοῦ* σκληρὰ μῆνιγξ, συνέχεια οὖσα τῆς τοῦ ἐγκεφάλου, ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ ἰνιακοῦ τρήματος μέχρι τοῦ 2ου ἱεροῦ σπονδύλου, τελευτῶσα δίκην κορυφῆς κώνου, περικλείουσα δὲ καὶ τὴν ἵππουριν μετὰ τοῦ τελικοῦ νηματίου. Καὶ ἡ μὲν ἔξω ἐπιφάνεια αὐτῆς χωρίζεται ἀπὸ τοῦ περιοστέου διὰ τοῦ *ἐπισκληριδίου χώρου*, πληρουμένου ὑπὸ συνδετικοῦ ἱστοῦ, λίπους καὶ φλεβωδῶν πλεγμάτων· ἡ δ' ἔσω ὑπαλείφεται ὑπὸ ἐνδοθηλίου, χωρίζεται δὲ ἀπὸ τῆς ὑποκειμένης ἀραχνοειδοῦς μήνιγγος διὰ τοῦ *ὑποσκληριδίου χώρου* καὶ ἐν τοῖς πλαγίοις διατιτραίνεται ὑπὸ διφυῶν τρημάτων, δι' ὧν διέρχονται αἱ ῥίζαι τῶν νεύρων καὶ ὧν μεταξὺ προσφύονται τὰ ὀδοντώματα τοῦ ὀδοντωτοῦ συνδέσμου.

Ἡ *χοριοειδὴς μῆνιγξ* τοῦ ἐγκεφάλου, λεπτὴ οὖσα καὶ ἐκ μιᾶς μόνον στιβάδος συνισταμένη, περιβάλλει ἀμέσως τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ ἐγκεφάλου, καταδυομένη καὶ εἰς τὰς αὔλακας καὶ τὰ ἐκτυπώματα, εἰσδυομένη δὲ εἰς τὰς μεγάλας σχισμὰς τοῦ ἐγκεφάλου σχηματίζει τὰ *χοριοειδῆ ἱστία*, ἐν οἷς ἁπλοῦνται τὰ χοριοειδῆ τῶν κοιλιῶν πλέγματα, τὰ ἐκκρίνοντα τὸ ἐγκεφαλονωτιαῖον ὑγρόν.

Ἡ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ χοριοειδὴς μῆνιγξ, παριστῶσα τὸν ἀγγειοφόρον χιτῶνα αὐτοῦ, ἀποτελεῖται ἐκ δύο πετάλων ἢ στιβάδων, τῆς *ἐπιπολῆς*, συναπτομένης μετὰ τῆς ἀραχνοειδοῦς, καὶ τῆς ἐν τῷ βάθει (=ἰδίως χοριοειδής), ἥτις χωρίζεται ἀπὸ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ διὰ σχισμώδους ἀραιώματος, τοῦ *ὑποχοριοειδοῦς χώρου*, καὶ ἐκπέμπει ἀντιστοίχως τῇ προσθίᾳ μέσῃ αὔλακι μέχρι τοῦ πυθμένος ταύτης πτυχήν, τὸ πρόσθιον μέσον διάφραγμα τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Ι. Π.

**Μῆνιγξ** *['Αρχ. Γεωγρ.]*· βλ. *Λωτοφαγῖτις νῆσος*.

**μηνιδρωτία** (ἡ) (menhidrose). Οὕτω καθορίζεται διαταραχή τις περὶ τὴν ἔκκρισιν τοῦ ἱδρῶτος, χαρακτηριζομένη ὑπὸ ὑπεραφθονίας τῆς ἐκκρίσεως ταύτης, ἐκδηλουμένης κυρίως εἰς τὰς ἐπιμηνίους περιόδους τῆς γυναικός. Ἡ μηνιδρωτία θεωρεῖται ὑπό τινων συγγραφέων πραγματικῆς συμπληρωματικῆς ἐμμηνορρυσίας. Μ. Ν. Κ.

**Μηνιεὺς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Σβορωνάτων τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 255. Δ. Ε. Μ.

**Μηνίνα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Νεοχωρίου τῆς ἐπαρχίας Παραμυθίας τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτ. (1928) 98. Δ. Ε. Μ.

**Μήνιος** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Πελοποννήσου ἐν Ἠλείᾳ, τοῦ ὁποίου, ὡς ἀναφέρει ὁ Παυσανίας (Ε, 1, 10), παρωχέτευσεν ὁ Ἡρακλῆς τὰ ὕδατα πρὸς τὴν κόπρον τοῦ Αὐγείου. Α. Θ. Σ.

**μῆνις,** *—ιος* (ἡ)· ὀργή, θυμός: «ἐκίνησε —, ἐπέσυρε τὴν μῆνιν τοῦ πατρός του».

**μηνισκῖτις,** *—ιδος* (ἡ) (méniscite). Ὅρος γενικὸς ἀποδιδόμενος εἰς πάσας τὰς παθολογικὰς καταστάσεις τῶν ἐνδοαρθρικῶν μηνίσκων, ἤτοι τῆς χρονίας ὑπεξαρθρήσεως, τῆς χρονίας ἀρθρίτιδος, τῶν τραυματικῶν βλαβῶν κλπ. Μ. Ν. Κ.

**μηνισκοπηξία** (ἡ) (meniscopexie). Οὕτω καλεῖται ἡ συρραφὴ τῶν τεμαχίων ἀρθρικοῦ μηνίσκου, κατόπιν ἐπιγενομένου τραυματισμοῦ. Μ. Ν. Κ.

**μηνίσκος** (ὁ)· μικρὰ μήνη, σχῆμα ὅμοιον πρὸς μήνην, δρεπανοειδές, οἷον τὰ εἰσαγωγικὰ σημεῖα « »· || σκέπασμα ἀνδριάντος πρὸς ἀποφυγὴν τῶν ἀπὸ τῶν πτηνῶν ἀκαθαρσιῶν· || περιτραχήλιον κόσμημα, περιδέραιον.

— *[Μαθημ.]* Καλεῖται *μηνίσκος* σχῆμα γεωμετρικὸν ἐπίπεδον, περιλαμβανόμενον μεταξὺ δύο κυκλικῶν τόξων, ὧν τὸ ἓν ἡμιπεριφέρεια. Ἔλαβε τὸ

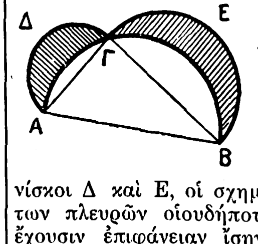


ὄνομα τοῦτο ἐκ τοῦ σχήματος τῆς Σελήνης (μήνης), ὅταν δὲν εἶναι πανσέληνος. Περὶ τῶν μηνίσκων ὑπάρχει τὸ περίφημον θεώρημα τοῦ Ἱπποκράτους τοῦ Χίου (450 π. Χ.), καθ' ὃ οἱ δύο μηνίσκοι Δ καὶ Ε, οἱ σχηματιζόμενοι ἐπὶ τῶν καθέτων πλευρῶν οἱουδήποτε ὀρθογωνίου τριγώνου, ἔχουσιν ἐπιφάνειαν ἴσην πρὸς τὸ τρίγωνον, δηλαδὴ τὸ ἄθροισμα τῶν ἐπιφανειῶν Δ+Ε εἶναι ἴσον πρὸς τὸ ΑΒΓ. Οἱ μηνίσκοι οὗτοι κατασκευάζονται γεωμετρικῶς ὡς ἑξῆς: μὲ διάμετρον τὴν πλευρὰν ΑΓ γράφομεν τὴν ἡμιπεριφέρειαν ΑΔΓ, μὲ διάμετρον τὴν ἑτέραν κάθετον πλευρὰν ΓΒ γράφομεν τὴν ἄλλην ἡμιπεριφέρειαν ΓΕΒ καὶ τέλος μὲ διάμετρον τὴν ὑποτείνουσαν τοῦ τριγώνου, τὴν ΑΒ, γράφομεν τρίτην ἡμιπεριφέρειαν, τὴν ΑΓΒ. Ἡ τελευταία αὕτη σχηματίζει μετὰ τῶν ἄλλων δύο τοὺς μηνίσκους, ὡς φαίνεται ἐν τῷ σχήματι. Τὸ θεώρημα τοῦ Ἱπποκράτους εἶναι θαυμαστόν· διότι εὑρέθη τὸ πρῶτον καμπυλόγραμμον χωρίον, τὸ ὁποῖον ἐτετραγωνίσθη τῇ βοηθείᾳ τοῦ κανόνος καὶ τοῦ διαβήτου. Μεταγενεστέρως ἔχουσιν εὑρεθῆ καὶ πλεῖστα ἄλλα· μόνον ὁ κύκλος δὲν τετραγωνίζεται μὲ τὸν κανόνα καὶ τὸν διαβήτην. Ν. Γ.

— *['Αρχ.]* Ἐκαλεῖτο *μηνίσκος* (lunatum) ἐν τῇ ναυτικῇ τακτικῇ τῶν Ῥωμαίων ὁ σχηματισμός, καθ' ὃν τὰ πλοῖα τοῦ στόλου ἔπλεον εἰς μηνοειδῆ παράταξιν στρέφουσαν τὰ κοῖλα πρὸς τὸν ἐχθρὸν ἐν περιπτώσει διώξεώς του ἢ τὰ κυρτὰ ἐν περιπτώσει φυγῆς πρὸ αὐτοῦ. Σ. Ε. Λ.

— *['Οχυρωτ.]* Ἐκαλεῖτο γενικῶς *μηνίσκος* ἐν τῇ παλαιοτέρᾳ ὀχυρωτικῇ προκεχωρημένον ἔργον ἐξωτερικῶς τοῦ περιβόλου καὶ τῆς κεκαλυμμένης ὁδεύσεως, τοῦ ὁποίου αἱ προσβάσεις ἐβάλλοντο διὰ τῶν πυρῶν τοῦ κυρίου ἔργου. Τὸ ἔργον τοῦτο συνήθως συνίστατο ἐκ δύο μετώπων μήκους 35—60 μέτρων, τεμνομένων κατὰ λίαν ἀμβλεῖαν γωνίαν, καὶ ἐκ δύο ἑκατέρωθεν πλευρῶν μήκους 15—40 μέτρων σχηματιζουσῶν μετὰ τῶν μετώπων γωνίας καλουμένας *ἀκρωμίδας* (angles d'épaule). Ἡ λέξις μηνίσκος εἶναι ἡ ὀρθὴ μετάφρασις τοῦ γαλλικοῦ ὅρου lunette, ἐσφαλμένως μεταφρασθέντος ὑπὸ τῶν παλαιῶν Ἑλλήνων ἀξιωματικῶν διὰ τῆς λέξεως *διόπτρα*. Ζ. Ν.

— *[Κτηνιάτρ.]* Βλ. λ. *ἐνδονυχῖτις*.

— **μηνίσκοι *βαλβίδων*** *['Ανατομ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ δύο ἡμιμόρια ἢ αἱ δύο ἐπιχείλιοι μοῖραι, αἱ μεταξὺ τοῦ ἀραντιείου φύματος καὶ τῶν δύο ἄκρων τῶν μηνοειδῶν βαλβίδων τῆς ἀορτῆς καὶ τῆς πνευμονικῆς ἀρτηρίας ἐκτεινόμεναι. Ι. Π.

— **μηνίσκοι *διάρθριοι*** *['Ανατομ.]*· βλ. λ. *διάρθριοι* χόνδροι ἢ μηνίσκοι.

— **μηνίσκος *ἄνω γνάθου*** *['Ανατομ.]*. Τὸ πρόσθιον ἀνεστραμμένον χεῖλος τοῦ στομίου τοῦ ἰγμορείου ἄντρου (τῆς ἄνω γνάθου), τὸ σχηματίζον τὸ ἔσω τοίχωμα τοῦ δακρυϊκοῦ πόρου. Ι. Π.

— **μηνίσκος *λοξὸς*** *['Ανατομ.]*. Ἡ ἔσω (πρὸς τὴν ὠλένην) μοῖρα τῆς ἐπὶ τῆς κεφαλῆς τῆς κερκίδος γλήνης ἀποπλατυνομένη ἀποτελεῖ κεκλιμένην μηνοειδῆ ἐπιφάνειαν, ἥτις καλεῖται *μηνίσκος λοξὸς τῆς κεφαλῆς τῆς κερκίδος*. Ι. Π.

— **μηνίσκος *ὄνυχος*** *['Ανατομ.]*. Τὸ ἐπὶ τοῦ ἀντίχειρος ἰδίως, ἐνίοτε δὲ καὶ ἐπὶ ἄλλων δακτύλων, προέχον μέρος τοῦ ῥιζωνυχίου, παριστῶν ὑπόλευκον μηνοειδῆ ζώνην. Ι. Π.

**μηνισκοσπερμοειδῆ** (τά), ἢ *μηνισπερμίδαι* (αἱ) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα θάμνους ἀναρριχωμένους ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον. Ἐκ τῶν κυριωτέρων γενῶν, ὧν τινα χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν φαρμακευτικὴν καί τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον, γνωστότερα εἶναι: *κισσάμπελος* (Cissampelus), *κοκκίσκος* (Cocciscus), *κοσκίνιον* (Coscinium) καὶ *μηνίσπερμον* (Minispermum) (βλ. λ.) Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοφυτολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μηνισκοσπερμοειδῶν* εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς κρητιδικῆς τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς τὴν Βόρειον Ἀμερικήν, Γροιλανδίαν, Βοημίαν, Γαλλίαν, Νέαν νότιον Οὐαλλίαν. Γ. Κ. Γ.

**μηνισπερμίνη** (ἡ) *[Χημ.]*. Ἀλκαλοειδὲς ἀνευρεθὲν εἰς τοὺς καρποὺς *ἀναμίρτης τῆς κοκκίου*, ἥτις ἀνήκει εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μηνισκοσπερμοειδῶν*. Ἄχρουν, ἄοσμον καὶ ἄγευστον κρυσταλλικὸν σῶμα, διαλυτὸν εἰς τὴν ἀλκοόλην καὶ τὸν αἰθέρα καὶ ἀδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ. Σ. Γ.

**μηνίσπερμον** (τὸ) (Minispermum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μηνισκοσπερμοειδῶν* ἢ *μηνισπερμιδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἰθαγενεῖς τῶν εὐκράτων καὶ τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι τὸ *μηνίσπερμον*

*Μηνίσπερμον.*
[Κλάδος ἀνθοφόρος καὶ καρποί.]

*τὸ καναδικὸν* (Minispermum canadense), ἀναρριχητικὸς θάμνος, φυλλοβόλος, εὐδοκιμῶν εἰς ὑγρὰ καὶ σκιώδη μέρη καὶ καλλιεργούμενος πρὸς κόσμον. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μηνισπέρμου* εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν Γαλλίᾳ. Γ. Κ. Γ.

**μηνίω**· ὀργίζομαι κατά τινος, μνησικακῶ: «μηνίων κατ' αὐτοῦ ὤμοσεν ἐκδίκησιν»· || φρ. «μηνίων Ἀχιλλεὺς» ἐπὶ ὀργισθέντος καὶ ἐπιδιώκοντος ἐκδίκησιν.

**Μηνόδοτος**. Σάμιος ἱστορικός, ἀγνώστου ἐποχῆς, συγγραφεὺς δύο ἔργων περὶ τῆς ἱστορίας τῆς πατρίδος αὐτοῦ. Κατὰ τὸν Ἀθήναιον, τὸ ἓν τῶν ἔργων ἔφερε τὸν τίτλον «Τῶν κατὰ Σάμον ἐνδόξων ἀνδρῶν ἀναγραφὴ» καὶ περιεῖχε τὴν βιογραφίαν τῶν ἐνδοξοτέρων ἀνδρῶν τῆς Σάμου, τὸ δὲ ἄλλο ἐτιτλοφορεῖτο «Περὶ τῶν κατὰ τὸ ἱερὸν τῆς Σαμίας Ἥρας» καὶ περιέγραφε τὰ μνημεῖα καὶ τὰς ἑορτὰς τοῦ ἐν Σάμῳ Ἡραίου. Ἀμφότερα τὰ πολύτιμα ταῦτα διὰ τὴν ἐν γένει ἱστορίαν τῆς νήσου Σάμου συγγράμματα τοῦ Μηνοδότου ἀπωλέσθησαν. Β. Δ. Θ.

— **Μηνόδοτος**. Ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρὸς ἐκ Νικομηδείας, φανατικὸς ὀπαδὸς τῆς ἐμπειρικῆς σχολῆς καὶ ἀντίπαλος τοῦ Ἀσκληπιάδου, ζήσας κατὰ τὴν Α΄ μ. Χ. ἑκατονταετηρίδα. Κατὰ τῶν γνωμῶν τούτου ἀντεπεξῆλθεν ὁ Γαληνὸς δι' 11 βιβλίων αὐτοῦ πρὸς Σεβῆρον, δυστυχῶς ἀπολεσθέντων, ὑπὸ δὲ τὸ ὄνομα «Γαληνοῦ παραφραστοῦ τοῦ Μηνοδότου» ὑπελείφθη ἡμῖν «Προτρεπτικὸς λόγος ἐπὶ τέχνας» (*Γαληνοῦ*, «Ἐλάσσ. ἔργα» Α, 103), οὗ τὸ τὴν ἰατρικὴν ἀφορῶν μέρος ἀπωλέσθη.

Ὁ Μηνόδοτος ἠσχολήθη καὶ μὲ τὴν φιλοσοφίαν, ἦτο δὲ μαθητὴς Ἀντιόχου τοῦ Λαοδικέως καὶ διδάσκαλος Ἡροδότου τοῦ ἐκ Ταρσοῦ. Ἐδίδασκε, μεταξὺ ἄλλων, ὅτι δὲν πρέπει νὰ ἀρκούμεθα εἰς τὴν ἁπλῆν παρατήρησιν, ἀλλὰ νὰ συμπληρῶμεν αὐτὴν διὰ τοῦ πειράματος καὶ προσέτι νὰ μὴ ὑπολογίζωμεν μόνον τὰς εὐνοϊκὰς περιπτώσεις. Ἐπίσης ἠσχολήθη μὲ τὰ προβλήματα τῆς ἐπαγωγικῆς μεθόδου. Τὰ συγγράμματά του διέκρινε διαύγεια καὶ δύναμις οὐχὶ συνήθης. ΑΡ. Π. Κ.—Ν. Α.

— **Μηνοδώρα**. Μάρτυς ἐκ Βιθυνίας τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Ἐπὶ τοῦ Ἀργαθωνίου ὄρους κεῖται ἡ λουτρόπολις Πύθια, γνωστὴ ἤδη ἀπὸ τῶν χρόνων τῶν Ἀργοναυτῶν. Ἐνταῦθα ἔζων κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Δ΄ αἰῶνος αἱ τρεῖς ἀδελφαὶ *Μηνοδώρα*, *Μητροδώρα* καὶ *Νυμφοδώρα*, αἵτινες τὴν πίστιν τοῦ Χριστοῦ ἀσπασθεῖσαι μετήρχοντο ἔργα φιλανθρωπίας. Ἀντιπρόσωπος τοῦ τοπάρχου Φρόντωνος ἐκάλεσεν αὐτὰς ν' ἀπαρνηθῶσι τὸν Χριστόν, ἐπειδὴ δὲ ἠρνήθησαν ὑπερηφάνως, διέταξε νὰ γυμνώσωσι τὴν Μηνοδώραν καὶ νὰ βασανίσωσι πρὸς ἐκφοβισμὸν καὶ τῶν δύο ἄλλων ἀδελφῶν, ἀλλ' οὔτε

Digitized by Google

ἡ Μηνοδώρα ἐνέδωκεν εἰς τὰς φρικιαστικὰς βασάνους, οὔτε αἱ ἀδελφαί της ἐδειλίασαν, ἀλλὰ καὶ αἱ τρεῖς ἐμμείνασαι σταθεραὶ ἐν τῇ πίστει ἐμαρτύρησαν τῇ 10 Νοεμβρίου, ὅτε ἡ Ἐκκλησία ἑορτάζει τὴν μνήμην αὐτῶν. Πρὸς τιμὴν των ἱδρύθη ναὸς ἐν τῷ πλησιοχώρῳ τῶν Πυθίων χωρίῳ Ἁρμουτλῆ, οὗτινος λείψανα σῴζονται μέχρι σήμερον, καὶ μονὴ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἔνδον τῆς πύλης τοῦ Ρωμανοῦ, ἀνακαλυφθεῖσα ὑπὸ τοῦ Ἀλ. Πασπάτη· εἶναι τὸ νῦν *Μοναστὴρ Μεσιζητί*. Τ. Ε. Ε.

**Μηνόδωρος.** Ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρός, ἐκ τῶν Ἐρασιστρατείων, φίλος καὶ συνεργάτης τοῦ Ἱκεσίου, ἐν τῇ ἱδρυθείσῃ ὑπ' αὐτοῦ Ἐρασιστρατείῳ σχολῇ (*Ἀθήν.* Δειπνοσ. Β, κεφ. 53). ΑΡ. Π. Κ.

— **Μηνόδωρος.** Ἀπελεύθερος τοῦ Πομπηΐου (βλ. *Μηνᾶς*).

**μηνοειδής** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μήνην, ὁ ἔχων σχῆμα ἡμισελήνου, δρεπανοειδής: «μηνοειδὴς παράταξις».

— **μηνοειδεῖς βαλβῖδες** [*Ἀνατομ.*]. Αἱ βαλβῖδες αὗται εἶναι δύο: αἱ *μηνοειδεῖς βαλβῖδες τῆς ἀορτῆς* καὶ αἱ *μηνοειδεῖς βαλβῖδες τῆς πνευμονικῆς ἀρτηρίας*, ἐμπεριεχόμεναι αἱ μὲν πρῶται ἐν τῇ ἀριστερᾷ, αἱ δεύτεραι ἐν τῇ δεξιᾷ κοιλίᾳ τῆς καρδίας, κατὰ τὴν βάσιν αὐτῆς. Ἀποτελοῦνται δ' ἑκατέρα ἐκ τριῶν πτυχῶν τοῦ ἐνδοκαρδίου, προσπεφυκυιῶν κυκλῳ κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς ἀορτῆς καὶ τῆς πνευμονικῆς ἀρτηρίας (βλ. λ. *καρδία*). Ι. Π.

— **μηνοειδεῖς, ἢ βαλσάλβειοι κόλποι** [*Ἀνατομ.*]· βλ. *κόλποι μηνοειδεῖς ἢ βαλσάλβειοι*.

— **μηνοειδὲς γάγγλιον** [*Ἀνατομ.*]. Γάγγλιον τοῦ τριδύμου νεύρου, κατασκηνοῦν ἐν τῇ ὑπὸ τῶν δύο πετάλων τῆς σκληρᾶς μήνιγγος σχηματιζομένῃ μηνοειδεῖ κοιλότητι (μεκκελείῳ) κατὰ τὴν κορυφὴν τοῦ λιθοειδοῦς ὀστοῦ, παρεμφερὲς τὴν ὑφὴν πρὸς νωτιαῖον γάγγλιον. Πεπλατυσμένον ὄν, στρέφει τὸ μὲν κοῖλον αὐτοῦ πρὸς τὰ ὀπίσω καὶ ἄνω, τὸ δὲ κυρτὸν πρὸς τὰ πρόσω καὶ κάτω, καὶ κοινωνεῖ ἐπὶ τὰ ἐντὸς πρὸς τὴν ἔσω καρωτίδα. Ἐκ τοῦ κυρτοῦ δὲ χείλους αὐτοῦ ἐκπορεύονται τρεῖς παχεῖς κλάδοι, ἤτοι ὁ 1ος ἢ ὀφθαλμικός, ὁ 2ος ἢ ἄνω γναθικὸς καὶ ὁ 3ος ἢ κάτω γναθικός, ὧν οἱ δύο πρῶτοι εἶναι ἀμιγεῖς αἰσθητικοί, ὁ δὲ τρίτος μεικτός. Ι. Π.

— **μηνοειδῆ γάγγλια** [*Ἀνατομ.*]· βλ. *ἡλιακὰ γάγγλια*.

— **μηνοειδῆ λόβια** [*Ἀνατομ.*]. Ἀπαντῶσιν ἐν τῇ παρεγκεφαλίδι, δύο ἐπὶ τῆς ἄνω ἐπιφανείας αὐτῆς καὶ δύο ἐπὶ τῆς κάτω. Ι. Π.

— **μηνοειδὴς πτυχὴ βλεφάρων** [*Ἀνατομ.*]. Πτυχὴ μικρά, καθέτως φερομένη ἐπὶ τὰ ἐντὸς τῆς ἐγκανθίδος. Ὑπόκοιλος οὖσα πρὸς τὰ ἐκτός, εἶναι ἀνεπτυγμένη καὶ εὐκίνητος ἐπὶ τῶν πτηνῶν, παριστῶσα ὑπόλειμμα τρίτου βλεφάρου. Ι. Π.

— **μηνοειδὴς πυρὴν τοῦ Flechsig** [*Ἀνατομ.*]. Εἷς ἐκ τῶν δύο κοιλιακῶν πυρήνων τοῦ ὀπτικοῦ θαλάμου, ὁ *τοξοειδής*, παριστῶν μετὰ τοῦ ἑτέρου κοιλιακοῦ πυρῆνος, τοῦ *κεντρικοῦ*, τὴν κοιλιακὴν μοῖραν τῶν ῥαχιαίων πυρήνων. Ι. Π.

**Μηνόκριτος.** Ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρὸς ἐκ Σάμου, ἴσως υἱὸς τοῦ Μητροδώρου. Ἔτυχε τιμητικοῦ ψηφίσματος, διότι προσέφερε τὰς ὑπηρεσίας αὐτοῦ ἀμισθὶ ἐπὶ κατασχόντος τὴν νῆσον Κάρπαθον λοιμοῦ (Revue archéolog. 1863, σελ. 469). ΑΡ. Π. Κ.

**μηνολόγιον** (τό)· κατάλογος τῶν μηνῶν· τὸ ἄλλως *μηναῖον* (βλ. λ.).

— **μηνολόγιον Βασιλειανόν**· βλ. λ. *ἑορτολόγιον*.

**μηνοξενία** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ἡ παρεκκλίνουσα τοῦ κανονικοῦ ἢ παραπληρωματικὴ ἐμμηνορρησία· ἤτοι πρόκειται περὶ αἱμορραγιῶν ἐπερχομένων κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς κανονικῆς ἐμμήνου ῥύσεως, ἐκδηλουμένων ὅμως εἰς ἄλλο τι ὄργανον πλὴν τῆς μήτρας. Μ. Ν. Κ.

**μηνοπαυσία** (ἡ), ἢ *ἐμμηνοπαυσία*· βλ. *ἐμμηνοληξία*.

**μηνόπωμα** (τὸ) (Menopoma) [*Ζωολ.*]. Γένος ἀμφιβίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κρυπτοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σαλαμανδριδῶν*, περιλαμβάνον μεγάλας σαλαμάνδρας ζώσας ἐντὸς τῶν παραποτάμων τοῦ Μισσισιπῆ. Τὰ ζῷα ταῦτα ὅταν εἶναι ἐνήλικα παρουσιάζουσιν ἑκατέρωθεν τοῦ λαιμοῦ βραγχιακὸν τρῆμα, ὅπερ ἐπικοινωνεῖ μετὰ τῶν ἐσωτερικῶν βραγχιακῶν τόξων. Γνωστότερον εἶδος εἶναι τὸ *μηνόπωμα ὁ ἀλλιγάτωρ* (Menopoma alligator), ὅστις ἔχει μῆκος περὶ τὰ 60 ἑκατοστόμετρα καὶ πολλάκις παραμένει ἐπ' ἀρκετὸν χρονικὸν διάστημα ἐκτὸς τοῦ ὕδατος. Τρέφεται ἐξ ἰχθύων, καρκίνων καὶ διαφόρων ὑδροβίων ζῴων. Δ. Ν. Π.

**μηνορραγία** (ἡ)· βλ. *ἐμμηνορραγία*.

**μηνορραγικὸς πυρετός.** Πάθησις χαρακτηριζομένη ὑπὸ πυρετοῦ καὶ ἐντερικῶν φαινομένων ὑπομιμνησκόντων τὴν ἔναρξιν τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ, ἐπερχομένη εἰς τὰς πλημμελῶς ἐμμηνορροούσας νεαρὰς γυναῖκας καὶ τερματιζομένη ἀποτόμως διὰ τῆς ἐμφανίσεως τῶν καταμηνίων. Μ. Ν. Κ.

**μηνορραιμία** (ἡ). Οὕτω καθορίζεται ἡ ἐν τῷ αἵματι ἐπίσχεσις τῶν τοξικῶν προϊόντων, ἅτινα φυσιολογικῶς δέον νὰ ἀπεκβάλλωνται διὰ τῶν καταμηνίων. Μ. Ν. Κ.

**μηνόρροια** (ἡ)· βλ. *ἐμμηνορρυσία*.

**Μηνόσγαδα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἀνεξαρτήτου Γερμανίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Β' 11, 14). Ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος. Α. Θ. Σ.

**Μηνόσκα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἱσπανίας τῆς Ταρρακωνησίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Οὐαρδούλων (*Πτολεμ.* Β, στ, 9). Εἶναι ἡ σύγχρονος Ἅγιος Σεβαστιανὸς (πλάτ. 41°54' Β., μῆκ. 3°12' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1804: San Sebastian to Cette). Σ.Ε.Λ.

**μηνουρίδαι** (οἱ) (Menuridae) [*Ζωολ.*]. Οἰκογένεια πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κεκρακτῶν*, περιλαμβάνουσα ἀρκετοῦ μεγέθους πτηνά, ἀπαντῶντα εἰς τὴν Αὐστραλίαν. Ἐνδιαιτῶνται κατὰ προτίμησιν εἰς σκιερὰ δάση καὶ τρέφονται ἐξ ἐντόμων καὶ σκωλήκων, οὓς ἀνακαλύπτουσιν ἐντὸς τῆς γῆς σκάπτοντες διὰ τῶν μεγάλων ὀνύχων τῶν δακτύλων των. Ὁ γενικὸς χρωματισμὸς τοῦ πτερώματός των εἶναι φαιοελαιώδης, μεταβαλλόμενος εἰς πυρρὸν ἐπὶ τοῦ λαιμοῦ καὶ εἰς τὰς κυρίας πτέρυγας, καὶ φαιοτεφρὸς κατὰ τὸ στῆθος καὶ τὴν κοιλίαν. Ἡ οὐρὰ σχηματίζει λύραν, ἐξ οὗ καὶ ἡ κοινὴ ὀνομασία τῶν πτηνῶν τούτων εἶναι *λύραι*. Τοιαύτην οὐρὰν μόνον τὰ ἄρρενα ἔχουσι. Τὰ πτερὰ τῆς οὐρᾶς εἶναι 16, ἐξ ὧν τὰ δύο ἐξωτερικὰ κάμπτονται ἐν σχήματι S, τὰ δύο μεσαῖα κατὰ τὴν ῥίζαν των εἶναι εὐθέα, εἶτα κάμπτονται πρὸς τὰ ἔξω καὶ κατὰ τὸ τρίτον τοῦ ὁλικοῦ μήκους των, τέλος τὰ 12 ὑπόλοιπα συνάπτονται μεταξὺ των καὶ ἀποτελοῦσιν ἁρμονικὸν σύνολον. Τὰ μεσαῖα πτερὰ εἶναι παρόμοια πρὸς τοὺς λεπτοὺς κλαδίσκους τῆς πτερίδος. Διὰ τὴν μετακίνησίν των μεταχειρίζονται συνηθέστερον τοὺς ταχυτάτους πόδας των. Ἡ φωνή των εἶναι ἀρκετὰ μελῳδική. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων γενῶν τῆς οἰκογενείας γνωστότερον εἶναι ὁ *μήνουρος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μήνουρος** (ὁ) (Menurus) [*Ζωολ.*]. Γένος πτηνῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μηνουριδῶν*, περιλαμβάνον εὐμεγέθη πτηνὰ ἰθαγενῆ τῆς Αὐστραλίας. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων εἰδῶν τοῦ γένους ἀξιολογώτερον εἶναι ὁ *μήνουρος ἡ λύρα* (Menurus lyra), κοινῶς *λύρα*· τὸ ἄρρεν ἔχει μῆκος μετὰ τῆς οὐρᾶς περὶ τὰ 120 ἑκατοστόμετρα, τὸ δὲ θῆλυ περὶ τὰ 30, διότι δὲν φέρει ῥιπιδοειδῆ οὐράν. Ὁ μήνουρος ἔχει χρῶμα πρασινοελαιώδες μὲ φαιὰς ἀποχρώσεις κατὰ τὴν ῥάχιν καὶ εἶναι πυρρὸς κατὰ τὴν κεφαλὴν καὶ τὸν λαιμόν. Εἶναι πτηνὸν δειλότατον, τρεφόμενον ἐκ διαφόρων ἐντόμων καὶ σκωλήκων, καὶ ἐνδιαιτώμενον εἰς σκιεροὺς καὶ ἐρημικοὺς τόπους. Τὴν φωλεάν του κατασκευάζει εἰς μικρὸν ἀπὸ τοῦ ἐδάφους ὕψος, ἡ δὲ θήλεια γεννᾷ 3—5 ᾠὰ ἐπιμήκη, ὑποπρασίνου χρώματος μὲ φαιομελανὰς κηλῖδας. Λόγῳ τοῦ μεγάλου κυνηγίου, τὸ ὁποῖον διενεργεῖται εἰς τὰ πτηνὰ ταῦτα, χάριν τοῦ θαυμαστοῦ πτερώματός των, ἀρχίζουν ὀλίγον κατ' ὀλίγον νὰ ἐκλείπωσιν. Δ. Ν. Π.

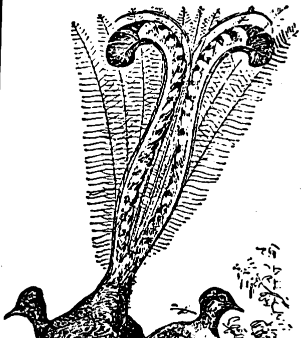


*Μήνουρος ἡ λύρα.*
[α=ἄρρεν, β=θῆλυ].

**Μηνοφάνης.** Ναύαρχος τοῦ Μιθριδάτου (βλ. *Μητροφάνης*).

**Μηνόφαντος.** Ἕλλην γλύπτης τῶν ῥωμαϊκῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων, περιώνυμος ὡς καλὸς ἀντιγραφεὺς πρωτοτύπων ἔργων. Τοῦ γλύπτου τούτου σῴζεται ἄγαλμα τῆς Ἀφροδίτης, εὑρεθὲν τῷ 1760 παρὰ τὸν Ἅγιον Γρηγόριον ἐν Ῥώμῃ καὶ ἀποκείμενον νῦν ἐν τῷ μουσείῳ τῶν Θερμῶν τῆς πόλεως ταύτης. Κατὰ τὴν ἐπιγραφήν, ἣν φέρει ἡ βάσις, ἐφ' ἧς πατεῖ ἡ Ἀφροδίτη, τὸ ἄγαλμα τοῦτο ἐξετέλεσεν ὁ Μηνόφαντος, ἀντιγράψας τὸ ἐν τῇ Ἀλεξανδρείᾳ Τρωάδι ἄγαλμα τῆς Ἀφροδίτης· τὸ ἀληθὲς ὅμως εἶναι ὅτι τὸ ἄγαλμα τοῦτο τοῦ Μηνοφάντου εἶναι παραπεποιημένη ἀντιγραφὴ τῆς Ἀφροδίτης τοῦ Καπιτωλίου. Ἡ ἀριστερὰ χεὶρ καλύπτει τὸ στῆθος, ὅπως καὶ ἡ τῆς Ἀφροδίτης τοῦ Καπιτωλίου, ἡ δὲ δεξιὰ ἀνασύρει τὸ καταπῖπτον ἔνδυμα πρὸ τῶν γονάτων. Ὡς φανερώνει ἡ γενικὴ μορφὴ καὶ τεχνοτροπία αὐτοῦ, τὸ ἔργον ἐποιήθη περὶ τὰ 300 π. Χ. Β. Δ. Θ.

**Μηντ** (Meade), ***Γεώργιος-Γόρδων.*** Ἀμερικανὸς στρατιωτικὸς (1815—1872). Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν ἐναντίον τοῦ Μεξικοῦ πόλεμον τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, κατὰ δὲ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον τῆς πατρίδος του προήχθη εἰς στρατηγόν, μετέσχε πολλῶν μαχῶν καὶ διεκρίθη ὡς εἷς τῶν ἱκανωτέρων καὶ ἐπιστημονικώτερον κατηρτισμένων Ἀμερικανῶν ἀξιωματικῶν. Κατόπιν διωρίσθη διοικητὴς τῶν στρατευμάτων τοῦ Ἀτλαντικοῦ. Ἀνδριάντες του ἱδρύθησαν εἰς τὴν Φιλαδέλφειαν καὶ τὸ Γκέττυσμπου. Μ. Ι. Θ.

**Μήντβιλλ** (Meadville) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Βορείου Ἀμερικῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Πενσυλβανίας. Κάτ. 16.595. Εἶναι ἐμπορικὸν κέντρον γεωργικῶν προϊόντων. Μ. Ι. Θ.

**μηνυανθὲς** (ὁ) (Menyanthes) [*Βοτ.*]. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *γεντιανοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς ὑδροβίους, ὧν τὸ ῥίζωμα ἕρπει ἐπὶ τοῦ πυθμένος τῶν ὑδάτων καὶ φέρει ἐνιαυσίους ἐναερίους κλάδους. Τὰ φύλλα της εἶναι ἐναλλασσόμενα καὶ τὰ ἄνθη της κατὰ βότρυς διατεταγμένα. Γνωστότερον εἶδος εἶναι τὸ *μηνυανθὲς τὸ ὑδρόβιον* (Menyanthes aquaticum), οὗ τὰ φύλλα ἐνέχουσι πικράν τινα οὐσίαν, τὴν *μηνυανθίνην* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

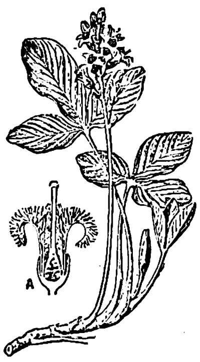


*Μηνυανθές.*
[Α = τομὴ ἄνθους.]

— [*Παλαιοφυτολ.*] Λείψανα ἀπολιθωμένα *μηνυανθοῦς*, οὐχὶ τελείως καθωρισμένα, εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὰς ἀρκτικὰς χώρας καὶ τὴν Ἑλβετίαν. Ἐντὸς στρωμάτων ὅμως τῆς τεταρτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εὑρέθησαν σπέρματα μηνυανθῶν ἐν Ἀγγλίᾳ, Γαλλίᾳ, Ἑλβετίᾳ καὶ Γερμανίᾳ. Γ. Κ. Γ.

— **μηνυανθοῦς ἢ τριφύλλου τοῦ ἰνώδους πόα** (Herba seu folia Trifolii fibrini) [*Φαρμακογν.*]. Τὸ παράγον τὴν δρόγην φυτὸν ἀνθεῖ ἀπὸ Μαΐου μέχρις Ἰουνίου. Τὰ φύλλα, μετὰ τὴν συλλογήν, ἥτις γίνεται κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνθήσεως, ἀπαλλάσσονται τῶν βλαστῶν καὶ ξηραίνονται. Χλωρὰ τὰ φύλλα εἶναι παχέα, πλήρη χυμοῦ καὶ ἄνοσμα. Συστατικὰ τῆς δρόγης εἶναι ἡ μηνυανθίνη, ῥητινώδεις καὶ πεκτινικαὶ οὐσίαι, ἰμβερτίνη καὶ σακχαρόζη. Ἡ δρόγη ἀναγράφεται εἰς τὴν λαϊκὴν θεραπευτικὴν εἰς ἐγχύματα, ὡς φάρμακον τονωτικόν, ὡς καθαρτικὸν τοῦ αἵματος, ὡς εἰδικὸν κατὰ τῆς ἀμηνορροίας καὶ ἐνίοτε ὡς ἐμμηναγωγόν. Εἰς μεγάλας δόσεις ἡ δρόγη προκαλεῖ ἐμέτους καὶ γαστροεντερικὰς διαταράξεις. Εἰς τὴν φαρμακοτεχνίαν χρησιμεύει εἰς τὴν παρασκευὴν τῶν: Extractum Trifolii fibrini καὶ Extractum Menyanthis fluidum. Κ. Γ. Μ.

**μηνυανθίνη** (ἡ) (Menyanthin) [*Φαρμακολ.*]. Γλυκοζίτης ἀπαντῶν εἰς τὸ φυτὸν *μηνυανθές*, ἀποκρινόμενον δὲ εἰς τὴν σύνθεσιν: $C_{30}H_{40}O_{14}$. Κιτρίνη ἄμορφος κόνις γεύσεως πικρᾶς, οὐδετέρας ἀντιδράσεως, λίαν διαλυτὴ εἰς τὸ ζέον ὕδωρ. Ὑδρολυομένη ἡ μηνυανθίνη σχάζεται εἰς μενυανθόλην καὶ γλυκόζην. Κ. Γ. Μ.

**μηνυανθόλη** (ἡ) [*Χημ.*]. Αἰθέριον ἔλαιον ἐξαγόμενον ἐκ τῶν φύλλων μηνυανθοῦς τοῦ τριφύλλου. Ἔχει τὸν τύπον $C_8H_8O$ καὶ ἀποτελεῖ ἄχρουν ἐλαιῶδες ὑγρὸν ὀσμῆς εὐχαρίστου πικραμυγδάλων. Σ. Γ.

**μήνυσις,**—*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μηνύειν, καταγγελία ἀξιοποίνου πράξεως πρὸς ἀνακριτικήν τινα ἀρχήν, καταμήνυσις: «ἐπέδωκε πρὸς τὸν εἰσαγγελέα μήνυσιν ἐπὶ ἐξυβρίσει».

— [*Ποιν. Δίκ.*] Ἀποκαλεῖται *μήνυσις* ἡ πρὸς τὸν εἰσαγγελέα τῶν πλημμελειοδικῶν ἢ τοὺς ἀνακριτικοὺς ὑπαλλήλους γενομένη ἀνακοίνωσις περὶ τῆς διαπράξεως ἀξιοποίνου πράξεως, διὰ τὴν δίωξιν τῆς ὁποίας δὲν εἶναι ἀναγκαία σχετικὴ τοῦ παθόντος αἴτησις. Καὶ αἱ μὲν ἀρχαὶ (πολιτικαὶ καὶ στρατιωτικαὶ) ὑποχρεοῦνται ν' ἀνακοινῶσιν «ἀμελλητὶ» εἰς τὸν εἰσαγγελέα πᾶν τὸ ὁπωσδήποτε περιελθὸν αὐταῖς ἐν σχέσει πρὸς τὴν διάπραξιν πλημμελήματος ἢ κακουργήματος καὶ τοῦ δράστου αὐτῶν, ἐπιφυλασσομένων ἄλλως ποινικῶς ἢ πειθαρχικῶς, κατὰ τὰ ἐν ἄρθροις 487 καὶ 488 τοῦ ποινικοῦ νόμου. Οἱ δὲ ἰδιῶται (ἐξαιρουμένων τῶν ἐν ἄρθρῳ 130 ποινικοῦ νόμου στενῶν συγγενῶν τοῦ δράστου) ὑποχρεοῦνται εἰς τοῦτο, ἐπὶ τῇ ἐν ἄρθρῳ 130 ποινικοῦ νόμου ποινῇ, μόνον διὰ τὰ περιελθόντα εἰς γνῶσιν αὐτῶν κακουργήματα ἐσχάτης προδοσίας,

Digitized by Google

τὰ προβλεπόμενα ὑπὸ τῶν ἄρθρων 123—128 ποινικοῦ νόμου. Ἡ τοιαύτη ἀνακοίνωσις δύναται νὰ γίνῃ ἐγγράφως ἢ προφορικῶς. Ἂν ἐγένετο ἐγγράφως, δὲν ἀπαιτεῖται διὰ τὸ ἔγκυρον αὐτῆς οὐδεμία διατύπωσις, ἂν δὲ προφορικῶς, συντάσσεται περὶ αὐτῆς ἔκθεσις ἢ λαμβάνεται ἡ κατάθεσις τοῦ μηνυτοῦ. Διὰ δὲ τὰς τυχὸν γενομένας προφορικῶς προσθήκας, ἐπὶ ἐγγράφως γενομένης τοιαύτης, ἢ συντάσσεται ἐπ' αὐτῆς ἔκθεσις ἐγχειρήσεως καὶ ἀναγράφονται ἐν αὐτῇ αἱ προσθῆκαι, ἢ λαμβάνεται ἡ κατάθεσις τοῦ μηνυτοῦ. Ἐὰν ἡ μήνυσις δὲν ἐδόθη εἰς τὸν εἰσαγγελέα ἀλλ' εἰς ἀνακριτικὸν ὑπάλληλον, ὑποβάλλεται εἰς τὸν πρῶτον.

Ἡ ὑπὸ τοῦ παθόντος (ἢ τοῦ νομίμου ἀντιπροσώπου του) ὑποβαλλομένη καταγγελία περὶ ἀδικήματος, διὰ τὴν δίωξιν τοῦ ὁποίου ἀπαιτεῖται σχετικὴ τοῦ παθόντος αἴτησις, ἀποκαλεῖται εἰδικώτερον *ἔγκλησις*. Διὰ τὸ ἔγκυρον αὐτῆς ἀπαιτεῖται ἀφ' ἑνὸς ἐπικόλλησις διδράχμου τέλους χαρτοσήμου καὶ ἀφ' ἑτέρου σύνταξις ἐκθέσεως ἐγχειρήσεώς της. Ἐὰν ὅμως προφορικῶς ἐζητήθη ἡ ποινικὴ καταδίωξις, ἐπιβάλλεται ἡ σύνταξις σχετικῆς ἐκθέσεως (περιεχούσης καὶ τὴν πρὸς δίωξιν αἴτησιν) καὶ ἐπικόλλησις τοῦ διδράχμου τέλους. Τὰ μόνον κατ' ἔγκλησιν διωκόμενα ἀδικήματα εἶναι περιωρισμένα. Σ. Α. Χ.

**μηνυτεύγω·** ἰδιωμ. Κρήτ., παραγγέλλω, διαμηνῶ, στέλλω μήνυμα. Ι. Δ. Μ.

**μηνυτὴς** (ὁ)· ὁ μηνύων, ὁ καταγγείλας πρᾶξιν κολάσιμον, καταμηνυτής.

—*[Ποιν. Δίκ.] Μηνυτὴς* καλεῖται ὁ καταγγείλας ἀξιόποινον πρᾶξιν, διὰ τὴν δίωξιν τῆς ὁποίας δὲν ἀπαιτεῖται αἴτησις τοῦ παθόντος (βλ. καὶ λ. *μήνυσις)*. Ὁ δὲ αἰτούμενος τὴν καταδίωξιν ἐπὶ ἀδικήματος διωκομένου μόνον κατ' ἔγκλησιν καλεῖται *ἐγκαλῶν*. Σ. Α. Χ.

**Μηνυτὴς** *[Γεωγρ]*. Χωρίον ὑπαγόμενον εἰς τὴν κοινότητα Κράσι τῆς ἐπαρχίας Πεδιάδος τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 94. Ε. Γ.

**μηνύτωρ,** *—ορος* (ὁ)· ὁ μηνύων, ὁ γνωστοποιῶν τι, μηνυτής.

**«Μηνύτωρ».** Τίτλος ἐφημερίδων καὶ περιοδικῶν.—1) Ἐφημερὶς πολιτικὴ καὶ δικαστικὴ ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 1872. Ἀργότερον διακοπεῖσα, ἐξεδόθη εἰς δευτέραν περίοδον ἀπὸ τοῦ 1875.—2) Ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τὴν 11ην Μαΐου 1877.—3) Ἐφημερὶς εἰδησεογραφική, ἀγγελιῶν καὶ καταχωρήσεων, ἱδρυθεῖσα ἐν Ἀθήναις κατὰ Δεκέμβριον τοῦ 1882. Ἐξεδίδετο μέχρι τοῦ 1895. —Π.

—**«Μηνύτωρ *τῶν Ἀθηνῶν*».**—1) Ἡμερησία καθημερινὴ ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1877 εἰς σχῆμα 4ον.—2) Ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τὴν 2αν Ἰανουαρίου 1914 εἰς σχῆμα 4ον ὑπὸ Χ. Βασιλακάκη. —Π.

—**«Μηνύτωρ *τοῦ Αἵμου*».** Ἑλληνικὴ δισεβδομαδιαία ἔκδοσις ἐν Φιλιππουπόλει τῆς Βουλγαρίας, ἱδρυθεῖσα τῷ 1895 εἰς σχῆμα 2ον ὑπὸ Γ. Ο. Σκανάβη. —Π.

— **«Μηνύτωρ *Ἀνατολικός*»** (Le Moniteur Oriental ἢ The Oriental advertiser). Γαλλόφωνος καὶ ἀγγλόφωνος ἑλληνικὴ ἐφημερὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἱδρυθεῖσα τῷ 1883 καὶ ἐκδιδομένη μέχρι τοῦ 1913 ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Δ. Α. Βέλλη. —Π.

— **«Μηνύτωρ *τῆς Γάνδης*»** (Moniteur de Gand). Γαλλικὴ ἐφημερὶς ἐν Γάνδῃ, ἐπίσημον ὄργανον τῆς κυβερνήσεως τοῦ Λουδοβίκου ΙΗ' κατὰ τὰς περιφήμους Ἑκατὸν Ἡμέρας. Ἱδρύθη τὴν 14 Ἀπριλίου 1815 ὑπὸ τοῦ Μπερτὲν καὶ διεκόπη τὴν 21 Ἰουνίου τοῦ ἰδίου ἔτους. Ἔφερεν εἴς τινα φύλλα τοὺς τίτλους «Παγκόσμιος Μηνύτωρ» (Moniteur Universel) ἢ «Παγκόσμιος Ἐφημερὶς» (Journal Universel), συνεργάται δὲ αὐτῆς ὑπῆρξαν οἱ ὑπουργοὶ Λαλλὺ-Τολλεντάλ, Μπεγκό, Σατωμπριάν, Ζωκοὺρ κ. ἄ. Π. Ν. Π.

—**«Μηνύτωρ *Ἑλληνικός*»** (Moniteur grec). Τίτλος τριῶν γαλλοφώνων ἑλληνικῶν ἐφημερίδων.—1) Ἐφημερὶς ἐν Ναυπλίῳ, ἱδρυθεῖσα εἰς σχῆμα 2ον τὴν 9/21 Ἰουλίου 1832 καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τῆς 13/25 Ἰανουαρίου τοῦ ἑπομένου ἔτους. Ἦτο ἡμιεπίσημος ἑβδομαδιαία ἔκδοσις, συντασσομένη ὑπὸ Κ. Δ. Σχινᾶ καὶ ἐκτυπουμένη εἰς τὸ γαλλικὸν ἐθνικὸν τυπογραφεῖον. Ἡ ἐτησία συνδρομὴ τῆς ἦτο «ἓξ γερὰ γρόσια», εἶναι δὲ ἄκρως ἐνδιαφέρουσα λόγῳ τοῦ «ἐπισήμου δελτίου» (partie officielle) καὶ τῶν λοιπῶν πληροφοριῶν τῆς.—2) Ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἐκδιδομένη τρὶς τοῦ μηνὸς ἀπὸ τοῦ 1844. Ἐξεδόθησαν ἐν ὅλῳ 119 φύλλα αὐτῆς εἰς σχῆμα 2ον μέχρι τοῦ 1848. Ἐξετυποῦτο τετρασέλιδος εἰς τὸ Ἐθνικὸν τυπογραφεῖον, συνετάσσετο ὑπὸ τοῦ A. Bertrand, ἦτο δὲ ἡμιεπίσημος, ἔχουσα ἀντιπροσώπους της εἰς τὸ ἐξωτερικὸν τοὺς διπλωματικοὺς πράκτορας τῆς Ἑλλάδος. Ἐνδιαφέρουσα καὶ ἰδιαιτέρως καταχωρίζομένη ἐν αὐτῇ πρακτικὴ ἐπιθεωρήσις τοῦ ἑλληνικοῦ τύπου.—3) Ἑβδομαδιαία ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τὴν 4ην Δεκεμβρίου 1855 εἰς σχῆμα 2ον καὶ διευθυνομένη διαδοχικῶς ὑπὸ Ἀντ. Πεσούλη καὶ Μαρίνου Βρεττοῦ. Ἐξεδίδετο μέχρι τοῦ 1857 εἰς τὸ βασιλικὸν τυπογραφεῖον ὡς ἡμιεπίσημον ὄργανον, περιέχει δὲ περιφήμους στατιστικὰς πληροφορίας καὶ ἄλλας εἰδήσεις. —Π.

— **«Μηνύτωρ *τοῦ Ἐμπορίου καὶ τῆς Βιομηχανίας*»** (Moniteur officiel du Commerce et de l' Industrie). Γαλλικὴ ἑβδομαδιαία ἐπιθεώρησις, ἐκδιδομένη ὑπὸ τοῦ Ἐθνικοῦ γραφείου ἐμπορίου καὶ βιομηχανίας. Δημοσιεύει ἐπισήμους πληροφορίας καὶ στατιστικάς, καθὼς καὶ ἄλλας ἐμπορικὰς εἰδήσεις, χρησίμους ἰδίως εἰς τοὺς ἀσχολουμένους μὲ τὸ εἰσαγωγικὸν ἐν Γαλλίᾳ ἐμπόριον, καθὼς ἐπίσης καὶ εἰς τοὺς ξένους ἐμπόρους τοὺς ἐνδιαφερομένους διὰ προμηθείας ἐκ γαλλικῶν ἀγορῶν. —Ω.

**μηνύω,** *ἀόρ. ἐμήνυσα—ἐμηνύθην*· ἀναφέρω, γνωστοποιῶ τι (βλ. *μηνῶ*)· || καταγγέλλω πρᾶξιν κολάσιμον πρὸς τὰς ἀνακριτικὰς ἀρχάς, καταμηνύω: «ἐμηνύθη ὑπὸ τοῦ ἀστυφύλακος ἐπὶ παραβάσει τῆς διατιμήσεως»· || ὁ *μηνυόμενος*· ὁ κατηγορούμενος ὡς ὑπαίτιος.

**μηνῶ,** καὶ *μηνάω, ἀόρ. ἐ)μήνυσα*· δημοτ. κάμνω γνωστόν, ἀγγέλλω, εἰδοποιῶ: «σοῦ μήνυσα μὲ τὸν ὑπάλληλόν μου» (ἐκ τοῦ ἀορ. *ἐμήνυσα* τοῦ *μηνύω* ἐσχηματίσθη ὁ ἐνεστὼς *μηνῶ*, κατὰ τὸ σχῆμα *ἐτίμησα —τιμῶ*).

**Μηνωΐδης, *Μηνᾶς*.** Κατήγετο ἐκ Βερροίας, ὡς ἐλέγετο, μᾶλλον δὲ ἐκ Βοδενῶν τῆς Μακεδονίας. Διδάξας ἐπί τινα ἔτη ἐνταῦθα, μετέβη εἶτα εἰς Παρισίους, ὅπου διωρίσθη διερμηνεὺς εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Ἐτιμᾶτο ὑπὸ τῶν Γάλλων ἑλληνιστῶν, ἦτο δὲ ἀφωσιωμένος εἰς τὸν κυβερνήτην Καποδίστριαν. Εἰς τὸν ἐπιστημονικὸν κόσμον ἐγνώσθη διὰ τῆς ἀνευρέσεως τῶν Μύθων τοῦ Βαβρίου ἐν Ἁγίῳ Ὄρει. Τῷ 1857 ἐξέδωκεν ἐν Παρισίοις τὸ Σχολαρίου σύγγραμμα «Περὶ Πλήθωνος ἀποριῶν». Ψευδωνύμως *(Ἰωακώβου ἱερομονάχου)* ἔγραψε καὶ ἐξέδωκε τῷ 1852 ἐν Κωνσταντινουπόλει τὸ «Φαρμακίδου Ἀντίδοτον». Μ. Ι. Γ.

**μῆον** (τὸ) (Meum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σκιαδανθῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς ἁπαντώσας εἰς τὴν Εὐρώπην. Γνωστότερον εἶδος εἶναι τὸ *μῆον τὸ ἀθαμάντιον* (Meum athamanticum), ἥτις εἶναι πόα πολυετής, ἔχουσα ἀρωματικὴν ῥίζαν. Ἀναφέρεται καὶ ὑπὸ τοῦ Διοσκορίδου. Δ. Ν. Π.

**μήποτε·** ἐπίρρ., οὐδέποτε, μήπως ποτὲ (ἡ χρῆσις τῆς λ. καθὰ καὶ τοῦ *μή*· σπανιωτάτη καὶ ἀρχαΐζουσα).

**μήπω·** ἐπίρρ., ὄχι ἀκόμη (ἀποκλείει τὸ παρελθόν): «μήπω μ' ἐρώτα» μὴ μ' ἐρωτᾷς ἀκόμη, περίμενε ἀργότερα.

**μήπως·** ἐπίρρ., εἰσάγει εὐθείας ἐρωτήσεις, ὅταν ὁ ἐρωτῶν ὑποπτευθῇ ἢ φοβῆται ὅτι συνέβη τι: «μήπως ἀπέθανε;» «μήπως σκέπτεσαι νὰ φύγῃς;» || καθόλου, ὅταν συμβαίνῃ τὸ ἐναντίον τοῦ ἐρωτωμένου: «μήπως θέλετε νὰ σᾶς ὑπηρετῶ ἀμισθί;» «μήπως εἶναι δυνατὸν νὰ προΐδωμεν τὰ μέλλοντα;» «μήπως πταίω ἐγὼ διὰ τὴν ἰδικήν σου ἀσυνεσίαν;» || εἰσάγει πλαγίας ἐρωτήσεις μετὰ τὰ φόβου ἢ φροντίδος σημαντικὰ ῥήματα: «φοβοῦμαι μήπως μοῦ συμβῇ τίποτε κακόν», «φρόντισε νὰ μάθῃς μήπως εἶναι ἄρρωστος», «κοίταξε μήπως ἔρχεται» || εἰσάγει εὐθεῖαν ἀποφατικὴν ἢ καταφατικὴν ἐρώτησιν πρὸς ἔκφρασιν ἐντόνου καταφάσεως ἢ ἀποφάσεως: «μήπως ἀκούει κανένα;» κανένα δὲν ἀκούει, «μήπως θέλει νὰ ἐργασθῇ;» δὲν θέλει νὰ ἐργασθῇ, «μήπως δὲν εἶναι ἱκανός;» εἶναι ἱκανός.

**μηραλγία** (ἡ) (méralgie), ἢ *νόσος τοῦ Μπέρνχαρντ*. Οὕτω καθορίζεται πάθησις, χαρακτηριζομένη ὑπὸ πόνων καὶ διαταραχῶν ποικίλων τῆς ὑποκειμενικῆς καὶ ἀντικειμενικῆς αἰσθητικότητος, ἐκδηλουμένη κυρίως εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ μηριαιοδερματικοῦ νεύρου. Ἡ φύσις τῆς νόσου δὲν εἶναι εἰσέτι καλῶς ἐγνωσμένη· φαίνεται δ' ὅτι αὕτη ἀποτελεῖ συνδρομὴν ὑποδεικνύουσαν κατάστασιν παθήσεως τοῦ νεύρου καὶ ἐπερχομένην κατ' ἀκολουθίαν γενικῆς τινος νόσου (οἷον διαβήτου, τυφοειδοῦς πυρετοῦ κ. ἄ.) ἢ νευρικῆς παθήσεως (οἷον νωτιάδος φθίσεως, γενικῆς παραλύσεως, κλπ.) ἢ τέλος εἶναι ἐπακόλουθος ἁπλῆς τοπικῆς διαταραχῆς, λ. χ. παραλύσεως μυός τινος, ὀρθίας στάσεως παρατεταμένης, κλπ. Ἡ πάθησις καλεῖται καὶ *παραισθησικὴ μηραλγία* (méralgie paresthésique). Μ. Ν. Κ.

**Μήραλι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Φαρῶν καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 250. Χ. Δ.

**μηριαῖος,** *—α, —ον*· ὁ τῶν μηρῶν, ὁ ἀνήκων εἰς τοὺς μηρούς: «μηριαῖα ὀστᾶ».

— **μηριαία *ἀρτηρία*** *[Ἀνατομ.]*. Συνέχεια οὖσα τ... ...ω λαγονίου ἀρτηρίας, ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ μέσου τοῦ βουβωνικοῦ ἢ πουπαρτείου συνδέσμου μέχρι τοῦ μεταξὺ τοῦ μέσου καὶ κάτω τριτημορίου τοῦ μηριαίου ὀστοῦ ὁρίου, ἔνθα διὰ τοῦ τρήματος τῶν προσαγωγῶν μυῶν, κειμένου περὶ τοὺς 4 ἐγκαρσίους δακτύλους ὑπεράνω τοῦ ἔσω κονδύλου τοῦ μηροῦ, μεταβαίνει εἰς τὴν ἰγνυϊκὴν ἀρτηρίαν. Διατρέχει δὲ κατὰ τὴν διεύθυνσιν γραμμῆς ἀγομένης ἀπὸ τοῦ μέσου τοῦ βουβωνικοῦ συνδέσμου μέχρι τοῦ ἔσω κονδύλου τοῦ μηριαίου ὀστοῦ, συνοδευομένη ὑπὸ τῆς μηριαίας φλεβὸς ἐντὸς κοινοῦ ἐλύτρου. Ἐκ τῶν κλάδων τῆς μηριαίας ἀρτηρίας ὁ ἐπισημότερος πάντων, ὁ κυρίως ἀγγειῶν τὸν μηρόν, εἶναι ἡ *ἐν τῷ βάθει μηριαία ἀρτηρία*, ἐκφυομένη 3—4 ἑκ. κατωτέρω τοῦ βουβωνικοῦ συνδέσμου, οἱ δὲ λοιποί, λεπτοὶ ὄντες, ἐκφυόμενοι ὕπερθεν αὐτῆς, διανέμονται εἰς τὴν ὑποβουβωνικήν, τὴν αἰδοιικὴν καὶ τὴν ὑπογάστριον χώραν. Ι. Π.

— **μηριαία *φλέψ*** *[Ἀνατομ.]*. Αὕτη ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ τρήματος τῶν προσαγωγῶν μυῶν (περὶ τὰ 8 ἑκ. ἄνωθεν τοῦ ἔσω κονδύλου τοῦ μηροῦ) μέχρι τοῦ βουβωνικοῦ συνδέσμου, συνοδεύουσα τὴν ὁμώνυμον ἀρτηρίαν. Φέρει 4—5 ζεύγη βαλβίδων, οἱ δὲ κλάδοι αὐτῆς διαιροῦνται εἰς ὑποδορίους καὶ εἰς τοὺς ἐν τῷ βάθει. Ι. Π.

— **μηριαῖον *διάφραγμα*** *[Ἀνατομ.]*. Λεπτὸς ὑμήν, ἁπλούμενος ὕπερθεν τοῦ μηριαίου δακτυλίου, πρὸς τὴν κοιλίαν, συνέχεια ὢν τῆς ἐνδοκοιλιακῆς περιτονίας. Ι. Π.

—**μηριαῖον *δρέπανον*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *δρέπανον*.

— **μηριαῖον *νεῦρον*** *[Ἀνατομ.]*. Τοῦτο, παχύτατον ὂν πάντων τῶν νεύρων τοῦ ὀσφυϊκοῦ πλέγματος, ἐκφύεται διὰ τριῶν ῥιζῶν, ἀποτελουσῶν τὴν ὀπισθιαιτέραν μοῖραν τοῦ πλέγματος· φέρεται ἐπὶ τὰ κάτω μέχρι τοῦ βουβωνικοῦ συνδέσμου, ὑφ' ὃν εἶτα διεξερχόμενον ἐπὶ τὰ ἐκτὸς τοῦ λαγονοκτενικοῦ συνδέσμου καὶ παρὰ τὴν ἔσω πλευρὰν τοῦ λαγονοψοΐτου μυὸς εἰσδύεται εἰς τὸν μηρόν, ἔνθα ἀποσχίζεται ἀμέσως εἰς δύο δέσμας κλάδων, τὴν *ἐπιπολῆς* (αἰσθητικὴν) καὶ τὴν *ἐν τῷ βάθει* (κινητικήν). Καὶ ἡ μὲν ἐπιπολῆς νευροῖ τὸ δέρμα τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ μηροῦ, ἡ δ' ἐν τῷ βάθει τοὺς προσθίους μηριαίους, τὸν ψοΐτην καὶ τὸν κτενίτην μῦν καὶ τὸ δέρμα τῆς ἔσω πλευρᾶς τῆς κνήμης. Κλάδοι δ' αὐτῆς μετὰ τὴν ὑπὸ τὸν βουβωνικὸν σύνδεσμον δίοδον εἶναι: οἱ πρόσθιοι μηροδερμικοί, οἱ μυϊκοὶ καὶ τὸ μεῖζον σαφηνὲς νεῦρον, ὅπερ παριστᾷ τὴν συνέχειαν τοῦ μηριαίου νεύρου. Ι. Π.

— **μηριαῖον *ὀστοῦν*** *[Ἀνατομ.]*. Τὸ μακρότατον καὶ ἰσχυρότατον πάντων τῶν ὀστῶν τοῦ σκελετοῦ, ὀστοῦν αὐλοειδές, ἔχον δύο ἄκρα καὶ σῶμα τρίγωνον πρισματικόν. Καὶ τὸν μὲν *ἄνω ἄκρον* φέρει τὴν πρὸς τὴν κοτύλην τοῦ ἀνωνύμου ὀστοῦ συντασσομένην κεφαλήν, ἀποτελοῦσαν τὰ $^2/_3$ σφαίρας, ὑπὸ ταύτην δὲ τὸν ἀνατομικὸν αὐχένα καὶ ὑπὸ τοῦτον ἑκατέρωθεν δύο ὀγκώματα, τοὺς τροχαντῆρας, ὧν ὁ μὲν ἐπὶ τὰ ἔξω μείζων, ὁ δ' ἐπὶ τὰ ἔσω ἐλάσσων, καὶ κάτωθεν τῶν τροχαντήρων τὸν χειρουργικὸν αὐχένα. Τὸ δὲ *κάτω ἄκρον*, παχὺ ὂν καὶ τετράπλευρον, ἀποτελεῖται ὑπὸ δύο ὑποστρογγύλων κονδύλων, τοῦ ἔσω καὶ τοῦ ἔξω, φερόντων περικεχονδρωμένας ἀρθρικὰς ἐπιφανείας, συντασσομένας πρόσθεν μὲν πρὸς τὴν σύστοιχον ἀρθρικὴν ἐπιφάνειαν τῆς ἐπιγονατίδος, κάτωθεν δὲ πρὸς τὴν σύστοιχον γλήνην τῆς κνήμης. Τῶν κονδύλων τὰ μὲν ὀπίσθια μέρη ἀποκλίνουσιν ἀπ' ἀλλήλων, χωριζόμενα διὰ τοῦ μεσοκονδυλίου βόθρου, τὰ δὲ πρόσθια συνέχονται εἰς κοινὴν περικεχονδρωμένην ἐπιφάνειαν τροχιλιοειδῆ, τὴν μηριαίαν τροχιλίαν, ἀντιστοιχοῦσαν εἰς τὴν ἐπιγονατίδα. Τὸ δὲ *σῶμα* εἶναι ἀξιοσημείωτον διὰ τὸ ὀπίσθιον χεῖλος, ὅπερ, τραχὺ καὶ ἀνώμαλον ὄν, ὀνομάζεται τραχεῖα γραμμή· αὕτη ἀποτελεῖται ἐκ δύο χειλέων, ἅτινα κατὰ μὲν τὸ μέσον τοῦ ὀστοῦ κεῖνται ἐγγύτατα ἀλλήλων, πρὸς δὲ τὰ κάτω ἀποκλίνουσι καὶ ἀπολήγουσιν ἑκάτερον εἰς τὸν σύστοιχον κόνδυλον, περιλαμβάνοντα μεταξὺ αὐτῶν τὴν τρίγωνον ἰγνυϊκὴν ἐπιφάνειαν· πρὸς δὲ τὰ ἄνω ἡ τραχεῖα γραμμὴ διῄρηται εἰς τρία σκέλη, ὧν τὸ *ἔξω*, τραχύτατον ὄν, ἀναβαίνει εἰς τὸν μείζονα τροχαντῆρα, ὀνομαζόμενον γλουτιαία γραμμή, χρησιμεύουσα πρὸς πρόσφυσιν τοῦ μεγάλου γλουτιαίου μυός, τὸ δ' *ἔσω σκέλος* ἀνακάμπτει περὶ τὸν ἐλάσσονα τροχαντῆρα, μεταβαῖνον εἰς τὴν προσθίαν μεσοτροχαντήριον γραμμήν· τὸ δὲ *μέσον*, καλούμενον καὶ κτενιαία γραμμή, διήκει εἰς τὸν ἐλάσσονα τροχαντῆρα καὶ χρησιμεύει πρὸς πρόσφυσιν τοῦ κτενίτου μυός. Ι. Π.

— **μηριαῖον *τόξον*** *[Ἀνατομ.]*. Καλεῖται καὶ *βουβωνικὴ* καὶ *πουπάρτειος* καὶ *φαλλόπειος σύνδεσμος*. Τενοντώδης σύνδεσμος, διήκων ἀπὸ τῆς προσθίας ἄνω λαγονίου ἀκάνθης ἐπὶ τὸ ἡβικὸν φῦμα (βλ. *βουβωνικὸς* σύνδεσμος). Ι. Π.

— **μηριαῖον ἢ *σκαρπαῖον τρίγωνον*** *[Ἀνατομ.]*. Καλεῖται καὶ *κάτω βουβωνικὴ* ἢ *μηροβουβωνικὴ χώρα*. Τρίγωνος χώρα ἐπὶ τῆς ἀνωτάτης μοίρας τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ μηροῦ, ἔχουσα τὴν μὲν βάσιν αὐτῆς πρὸς τὰ ἄνω, τὴν δὲ κορυφὴν πρὸς τὰ κάτω, περὶ τὰ 15 ἑκ. ἀπὸ τῆς βάσεως. Καὶ ἡ

Digitized by Google

μὲν βάσις τοῦ τριγώνου σχηματίζεται ὑπὸ τοῦ βουβωνικοῦ ἢ πουπαρτείου συνδέσμου, ἡ δ' ἔξω πλευρὰ ὑπὸ τοῦ ραπτικοῦ μυός, ἡ δ' ἔσω ὑπὸ τοῦ μακροῦ προσαγωγοῦ, τὸ δ' ἔδαφος ὑπὸ τοῦ λαγονοψοΐτου καὶ τοῦ κτενίτου μυός. Ἐν τῷ μηριαίῳ τριγώνῳ πορεύονται τὰ μηριαῖα ἀγγεῖα, ἡ ἀρτηρία ἐπὶ τὰ ἐκτὸς καὶ ἡ φλὲψ ἐπὶ τὰ ἐντός, περιλαμβανόμενα μεταξὺ δύο πετάλων τῆς μηριαίας περιτονίας. Ι. Π.

**—μηριαῖος δακτύλιος** *['Ανατομ.]*. Ὀπὴ ὑποστρόγγυλος, κειμένη ὑπὸ τὸν βουβωνικὸν ἢ πουπάρτειον σύνδεσμον ἐν τῷ ἀγγειακῷ βόθρῳ (βλ. *βουβωνικὸς σύνδεσμος* καὶ *δακτύλιος μηριαῖος*). Ι. Π.

**—μηριαῖος δικέφαλος μῦς** *['Ανατομ.]*. Οὗτος καταλεγόμενος εἰς τοὺς ὀπισθίους μῦς τοῦ μηροῦ, ἐκφύεται διὰ δύο κεφαλῶν, τῆς *μακρᾶς* (= ἰσχιακῆς) καὶ τῆς *βραχείας* (= μηριαίας), αἵτινες ἑνούμεναι κατὰ τὸ κάτω τριτημόριον τοῦ μηροῦ μεταβαίνουσιν εἰς κοινὸν τένοντα, καταφυόμενον εἰς τὴν κεφαλὴν τῆς περόνης. Κάμπτει τὴν κνήμην, στρέφων ἅμα αὐτὴν πρὸς τὰ ἔξω. Ι. Π.

**—μηριαῖος πόρος** *['Ανατομ.]*. Πόρος τρίγωνος, πυραμοειδής, βραχὺς περὶ τὰ 3 ἑκ., κείμενος ὑπὸ τὸν βουβωνικὸν σύνδεσμον. Ἔχει δύο στόμια, τὸ ἄνω ἢ κοιλιακόν, στενότερον, καὶ τὸ κάτω ἢ ὑποδερμάτιον ἢ μηριαῖον, εὐρύτερον· ἄρχεται δὲ ἀπὸ τοῦ μηριαίου δακτυλίου καὶ τελευτᾷ εἰς τὸν φοειδῆ βόθρον, ὅστις ἀποτελῶν τὴν βάσιν ἢ τὸν πυθμένα τοῦ μηριαίου πόρου, κεῖται ἐν ᾧ μέρει ἡ μείζων (ἔσω) σαφηνὴς φλὲψ συμβάλλεται μετὰ τῆς μηριαίας. Ι. Π.

**μηρικός, —ή, —όν·** ὁ τοῦ μηροῦ, ὁ ἀνήκων εἰς τοὺς μηρούς: «μηρικὴ ἀρτηρία».

**μηρίον** (τὸ) *['Αρχ.]*. Τὸ ἐκ μηροῦ εἰδωλοθύτου ζῴου μερίδιον, τὸ ὁποῖον ἐκαίετο ἐπὶ τοῦ βωμοῦ κατὰ τὴν ἱεροτελεστίαν τῆς θυσίας. Τὸ θρησκευτικὸν τοῦτο ἔθος τοῦ καίειν τοὺς μηροὺς τῶν ζῴων εἶναι πανάρχαιον. Καθ' Ὅμηρον, τὸ μερίδιον τοῦτο ἀπετελεῖτο εἴτε ἐξ αὐτῶν τούτων τῶν μηρῶν τοῦ ζῴου, εἴτε ἐκ τῶν ὀστῶν τῶν μηρῶν μὲ ὀλίγην ἐπ' αὐτῶν σάρκα. Τὰ ὀστᾶ ταῦτα τοποθετούμενα μεταξὺ δύο στρωμάτων λίπους, ἐφ' ὧν ἐρρίπτοντο καί τινα τεμάχια κρέατος ἀπὸ διαφόρων μελῶν τοῦ εἰδωλοθύτου, ἀπετέλουν τὴν μερίδα τοῦ λατρευομένου θεοῦ καὶ ἐκαίοντο ἐπὶ τοῦ βωμοῦ αὐτοῦ. Κατὰ τοὺς κλασσικοὺς χρόνους μηρία τοῦ εἰδωλοθύτου ἐκαίοντο ἰδίως ἐπὶ τοῦ βωμοῦ τῆς Εἰρήνης. Τὸ *μηρίον* ἢ τὰ *μηρία*, ὅπως καὶ πᾶν ἄλλο μέρος τοῦ εἰδωλοθύτου, ἠλείφοντο δι' ἐλαίου ἢ οἴνου τῶν σπονδῶν ἢ καὶ ἀρωμάτων πρὸς ταχυτέραν μὲν καὶ τελειοτέραν καῦσιν αὐτῶν, πρὸς διασκέδασιν δὲ τῆς βαρείας ὀσμῆς τῶν καιομένων κρεάτων. Β. Δ. Θ.

**Μηριόνης** *[Μυθολ.]*. Ὁμηρικὸς ἥρως ἐκ Γόρτυνος Κρήτης, ὁδηγήσας μετὰ τοῦ Ἰδομενέως εἰς Τροίαν τὸν ἐξ 80 νεῶν κρητικὸν στόλον κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον. Μνημονεύεται πολλαχοῦ τῆς Ἰλιάδος εὐφήμως. Εἶναι σύντροφος τοῦ Ἰδομενέως, συνετός, ἐμπειροπόλεμος, ταχύπους, τοξότης ἄριστος. Διεκρίθη κατὰ τὴν μάχην παρὰ τὸν νεκρὸν τοῦ Πατρόκλου, τὸν ὁποῖον σῴζει μετὰ τοῦ Μενελάου, καὶ κατὰ τοὺς ἀγῶνας πρὸς τιμὴν τούτου, ὅτε λαμβάνει πολλὰ βραβεῖα. Δέχεται νὰ μονομαχήσῃ πρὸς τὸν Ἕκτορα. Ἐπαινεῖται ἰδιαιτέρως ὑπὸ τοῦ Ἀγαμέμνονος. Ὁ Αἰνείας ἀποκαλεῖ αὐτὸν σκωπτικῶς ὀρχηστήν, διότι δι' ἐπιτηδείας στροφῆς ἐξέφυγε τὸ ἀκόντιον τούτου. Ἐπανελθὼν εἰς Κρήτην ἐτιμᾶτο ὡς ἥρως μετὰ τοῦ Ἰδομενέως διὰ θυσιῶν, ἐπεκαλοῦντο δὲ τὴν βοήθειαν αὐτῶν ἐν τοῖς πολέμοις.

Κατὰ μεταγενεστέρους μύθους ἐπλανήθη κατὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον εἰς Σικελίαν, εἰς τὸ κτίσμα Κρητῶν Ἐγγύϊον, ὅπου ἀνέκειτο, εἰς τὸ κρητικὸν ἱερόν, Ματέρας, κράνος μὲ ἐπιγραφὴν Μηριόνου (*Πλούταρχ.* Μάρκελλος XX, 8). Εἰς τοὺς πίνακας τῶν ἀρχαίων βασιλέων τῆς Κρήτης φέρεται ΙΖ'. Ε. Γ.

**μηριόνης** (ὁ) (Meriones) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τρωκτικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυϊδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους μῦς μὲ σῶμα εὔρωστον, κεφαλὴν ἀρκετὰ ὀγκώδη, ρύγχος μᾶλλον βραχὺ καὶ ἀμβλύ, ὦτα μικρὰ καὶ ἠνωρθωμένα καὶ οὐρὰν κυλινδρικὴν καὶ ἐπιμηκεστάτην. Γνωστὰ ἐλάχιστα εἴδη, πάντα νυκτόβια καὶ φυτοφάγα. Ἀπαντῶσιν εἰς τὴν βορειοδυτικὴν Εὐρώπην. Δ. Ν. Π.

**μηροδερματικὸν νεῦρον ὀπίσθιον** *['Ανατομ.]*. Ἐκφύεται ἐκ τοῦ ἱεροῦ πλέγματος, ἐξέρχεται τῆς πυέλου διὰ τοῦ μείζονος ἰσχιακοῦ τρήματος καὶ φέρεται ἐπὶ τὰ κάτω μέχρις ἐγγὺς τῆς ἰγνύας, ἔνθα διατιτραῖνον τὴν μηριαίαν περιτονίαν γίνεται ὑποδόριον καὶ ἀποσχίζεται εἰς τελικὰ κλωνία, διήκοντα εἰς τὸ δέρμα τῆς ἰγνύας καὶ τῆς ἀνωτάτης μοίρας τῆς γαστροκνημίας. Κλάδοι δ' αὐτοῦ εἶναι τὰ κάτω δερματικὰ νεῦρα τοῦ γλουτοῦ, οἱ περινεϊκοὶ κλάδοι καὶ οἱ ὀπίσθιοι μηροδερματικοί. Ι. Π.

**μηροκήλη** (ἡ) *['Ιατρ.]*. Ἡ διὰ τοῦ μηριαίου δακτυλίου πρόπτωσις σπλάγχνων τῆς κοιλίας ἐν τῷ μηριαίῳ πόρῳ. Ὅταν ἡ ἐνδοκοιλιακὴ πίεσις αὐξηθῇ δι' οἱονδήποτε λόγον (ἄρσις βάρους, πήδημα, βήξ, δυσκοιλιότης), πιεζόμενον τὸ εἰς τὸν μηριαῖον πόρον ἀντιστοιχοῦν περιτόναιον, προωθεῖται πρὸς τὰ πρόσω καὶ κάτω, συμπαρασῦρον τὸν ἐκεῖ ὑπάρχοντα χαλαρὸν συνδετικὸν ἱστόν. Ἐὰν ἡ πίεσις ἐξακολουθήσῃ αὐξανομένη, τὸ ἀπωθούμενον περιτόναιον σχηματίζει σωληνοειδὲς κόλπωμα, ὅπερ κατέρχεται κατὰ μῆκος τῆς μηριαίας φλεβὸς μέχρι τοῦ φοειδοῦς βοθρίου. Ἐνταῦθα ἢ προωθεῖ τὴν ἀμέσως ὑπερκειμένην ἠθμοειδῆ περιτονίαν, ἢ βαθμιαίως διευρύνει τρῆμά τι ταύτης, διέρχεται τοῦτο καὶ φέρεται ἀμέσως ὑπὸ τὸ δέρμα, ὅπου παρουσιάζεται ὑπὸ μορφὴν ὄγκου στρογγύλου, μεγέθους λεπτοκαρύου ἢ καὶ μεγαλυτέρου. Ὡς ἐκ τοῦ τρόπου τῆς γενέσεως τῆς μηροκήλης καθίσταται δῆλον ὅτι αὐτὴ εἶναι κατὰ κανόνα ἐπίκτητος, διακρίνουσι δὲ ταύτης τρεῖς βαθμούς: 1) Ὅταν ὁ κηλικὸς σάκκος εὑρίσκεται ἐν τῷ μηριαίῳ πόρῳ (ἡ διάγνωσις δυσκολωτάτη). 2) Ὅταν ὁ κηλικὸς σάκκος διατρυπῶν τὴν ἠθμοειδῆ περιτονίαν εὑρίσκεται ὑπὸ τὸ δέρμα· καὶ 3) Ὅταν ὁ κηλικὸς σάκκος μεγεθυνόμενος εἰσέτι λαμβάνῃ λοξὴν κατεύθυνσιν πρὸς τὴν εἰλεακὴν ἄκανθαν.

Ἡ μηροκήλη παρουσιάζεται κατὰ τὴν ἔσω ἐπιφάνειαν τοῦ ριζομηρίου, κάτωθεν τοῦ πουπαρτείου συνδέσμου πρὸς τὰ ἔσω τῆς μηριαίας ἀρτηρίας, ὑπὸ μορφὴν ὄγκου σφαιρικοῦ, μεγέθους συνήθως καστάνου, μαλθακοῦ, ἐλαστικοῦ τὴν σύστασιν, ἀνατασσομένου τῇ ἐλαφρᾷ πιέσει (ἐπὶ ἁπλῆς μηροκήλης), τῇ δὲ ἐπικρούσει παρέχοντος ἦχον ἀνάλογον τῇ συστάσει τοῦ περιεχομένου. Τοῦτο εἶναι συνήθως ἐπίπλουν, ἢ ἔντερον, λόγῳ δὲ τῆς στενότητος τῶν στομίων ὑπόκειται εἰς συχνοτέρας περισφίγξεις ἢ αἱ λοιπαὶ κῆλαι, ἡ διάταξις δὲ αὐτὴ ἐπεξηγεῖ καὶ τὴν συχνότητα τῆς ἀναπτύξεως γαγγραίνης. Ἡ μηροκήλη ἀπαντᾷ συχνότερον παρὰ γυναιξὶ καὶ δὴ μετὰ τὸ 20ὸν ἔτος, δύναται νὰ συγχυσθῇ πρὸς βουβωνοκήλην, κιρσοὺς τῆς ἔσω σαφηνοῦς, ἀθροιστικὰ ἀποστήματα, ἢ καὶ βουβῶνας. Ι. Κ. Κ.

**Μῆρος** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Φρυγίᾳ, κειμένη ΝΑ. τοῦ Κοτυαίου (Κιουτάχειας). Κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους (Συνέκδ. 677, 13), ὡς μία τῶν 23 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Φρυγίας τῆς Σαλουταρίας, εἰς δὲ τὰ ἐκκλησιαστικὰ χρονικὰ ὡς ἕδρα ἐπισκόπου, ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Συννάδων. Σήμερον τὴν θέσιν αὐτοῦ ἐπέχει τὸ χωρίον *Γκεριὸς-Κιοϊ*. Α. Θ. Σ.

**μηρὸς** (ὁ)· τὸ ἄνω σαρκῶδες μέρος τοῦ ἀνθρωπίνου σκέλους ἢ τοῦ ὀπισθίου ποδὸς τῶν ζῴων, κοιν. *μερὶ* ἢ *μηρί*: «μικρὸς παχύς, — ἰσχνός».

—*['Ανατομ.] Μηρὸς* καλεῖται τὸ ἄνω τμῆμα τῶν κάτω ἄκρων τοῦ σώματος, τὸ ἀπὸ τῆς βουβωνικῆς καμπῆς μέχρι δύο ἐγκαρσίων δακτύλων ὑπεράνω τῆς ἐπιγονατίδος ἐκτεινόμενον.

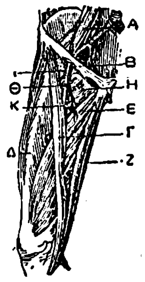


*Μηρός.*

[Α=Ψοΐτης μῦς.—Β=Μηριαῖον τόξον.—Γ=Ραπτικὸς μῦς.—Δ=Τρικέφαλος μηριαῖος μῦς.—Ε=Μέσος ἀπαγωγός.—Ζ=Ἔσω πλατύς.—Η=Κτενίτης.—Θ=Μηριαία ἀρτηρία μετὰ τοῦ μηριαίου νεύρου Ι, ἐπὶ τὰ ἐκτός, καὶ τῆς μηριαίας φλεβός Κ, ἐπὶ τὰ ἐντός.]

Ὁ σκελετὸς αὐτοῦ ἀποτελεῖται ὑπὸ τοῦ *μηριαίου ὀστοῦ* (βλ. λ.). Τοῦτο δὲ περιβάλλεται ὑπὸ τῶν ἁπαλῶν μορίων, ἅτινα ἐκ τῆς περιφερείας πρὸς τὸ κέντρον εἶναι: α') τὸ *δέρμα*· β') ὁ *ὑποδερμάτιος συνδετικὸς ἱστός*, ἐν ᾧ διήκει ἀνερχομένη ἡ μείζων ἢ ἔσω σαφηνὴς φλέψ· γ') ἡ *μηριαία περιτονία*, ἥτις σχηματίζει περὶ τοὺς μῦς τοῦ μηροῦ ἰσχυρὸν περίβλημα καὶ ἐκπέμπει κατὰ μῆκος τῆς ἔσω καὶ ἔξω πλευρᾶς τοῦ ὀστοῦ ἀνὰ ἓν ἐπίμηκες πέταλον, τὸ ἔσω καὶ τὸ ἔξω *μεσομύϊον διάφραγμα*· καὶ δ') οἱ *μύες*. Ἐπὶ τῆς προσθίας ἀνωτέρας ἐπιφανείας τοῦ μηροῦ κεῖται τὸ μηροβουβωνικὸν ἢ σκαρπαῖον τρίγωνον. Ἡ δὲ μηριαία ἀρτηρία διατρέχει εὐθὺ τὴν προσθιοεσωτερικὴν ἐπιφάνειαν, ἀρχομένη ἀπὸ τοῦ μέσου τοῦ πουπαρτείου συνδέσμου, διελαύνουσα ἀπὸ τῆς βάσεως πρὸς τὴν κορυφὴν τὸ σκαρπαῖον τρίγωνον καὶ τελευτῶσα τέσσαρας ἐγκαρσίους δακτύλους ὑπεράνω τοῦ ἔσω κονδύλου τοῦ μηροῦ, ὁπόθεν ἡ συνέχεια αὐτῆς καλεῖται *ἰγνυϊκὴ ἀρτηρία*. Ἡ δὲ μηριαία φλὲψ διήκει μετὰ τῆς ὁμωνύμου ἀρτηρίας ἐν ἀρχῇ μὲν ἔσωθεν ταύτης, πρὸς τὰ κάτω δ' ἀποβαίνουσα μᾶλλον ὀπισθία. Ἡ μηριαία δ' ἀρτηρία καὶ φλὲψ εἶναι ἐκ τῶν σημαντικωτάτων ἀγγείων ἕνεκα τοῦ εὔρους αὐτῶν. Ι. Π.

**Μηρός, ἢ Μηρὸν** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Δασῶδες ὄρος τῆς Κεντρικῆς Ἀσίας, ἐκτεινόμενον κατὰ τὴν διασταύρωσιν τοῦ Ἰνδικοῦ Ἰμάου (νῦν Καρακορὰν καὶ Δ. Ἱμαλάϊα) καὶ τοῦ Παροπαμίσου (νῦν Ἰνδοκούχου), ἀφιερωμένον εἰς τὸν Διόνυσον καὶ λαβὸν τὸ ὄνομα ὑπ' αὐτοῦ τοῦ θεοῦ, «ὅτι δὴ κατὰ τὸν μῦθον ἐν μηρῷ τῷ τοῦ Διὸς ηὐξήθη» (*Ἀρρ.* Ἀναβ. V, 1, 6). Ἦτο κατάφυτον ἐκ κισσοῦ καὶ δάφνης, εἰς τοὺς πρόποδας δὲ αὐτοῦ ἔκειτο ἡ πόλις Νύσα, ἡ Νάγαρα τοῦ Πτολεμαίου (νῦν Djellalabad), κτισθεῖσα, ὡς ἐπιστεύετο, ὑπ' αὐτοῦ τοῦ Διονύσου, τὴν ὁποίαν διὰ τοῦτο ἐσεβάσθη ὁ Μέγας Ἀλέξανδρος. Α. Θ. Σ.

**Μηροὺτ** (Meerout) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τῶν Ἰνδιῶν, συνορεύουσα πρὸς τὸν Γάγγην καὶ τὰ Ἱμαλάϊα. Κύρια προϊόντα αὐτῆς εἶναι δημητριακὰ καὶ σακχαροκάλαμον. Ἔχει ἔκτασιν 11.194 τετρ. μιλλίων καὶ πληθυσμὸν 5.809.000 κατ. Ἡ ὁμώνυμος *πόλις* κεῖται ΒΑ. τοῦ Δελχί. Ἔχει 76.000 κατ. καὶ εἶναι ἕδρα στρατιωτικοῦ σώματος. Ἐκτίσθη τῷ 1019 μ. Χ. καὶ κατεστράφη ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου. Κατὰ τὴν ἰνδικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1857 ἡ ἀγγλικὴ φρουρὰ ἀντέστη νικηφόρως κατὰ τῶν Ἰνδῶν ἐπαναστατῶν. Π. Γ. Λ.

**μηρυκάζω·** ἀναμασῶ τὴν τροφήν, μασῶ διὰ δευτέραν φορὰν τὴν μασηθεῖσαν τροφὴν ἐπαναφέρων αὐτὴν εἰς τὸ στόμα, ἀναχαράζω, ἐπὶ χορτοφάγων τινῶν ζῴων, τῶν καλουμένων *μηρυκαστικῶν* (βλ. λ.)· ‖ μεταφ. ἐπαναλαμβάνω στερεοτύπως τὰ ὑπ' ἄλλου ρηθέντα ἢ καὶ τὰ ὑπ' ἐμοῦ αὐτοῦ.

**μηρυκαστικός, —ή, —όν·** ὁ μηρυκάζων, ὁ ἀναμασῶν τὴν ὑπὸ τοῦ ἰδίου μασηθεῖσαν τροφήν: «μηρυκαστικὰ ζῷα».

**—μηρυκαστικὰ** (τὰ) (Ruminantia) *[Ζωολ.]*. Ἄθροισμα ζῴων θηλαστικῶν ἐκ τῶν *ἀρτιοδακτύλων* (βλ. λ.).

**μηρυκῶμαι, —(άομαι)·** ἄλλος τύπος τοῦ *μηρυκάζω* (βλ. λ.).

**μήρυμα** (τὸ) (κοιν. *κόρκωμα*, γαλλ. la pièce de filin, ἀγγλ. the coil of rope) *[Ναυτ.]*. Ἡ εἰδικὴ συσκευασία εἰς σπείρωμα, σχοινίου μήκους 50 ἕως 200 ὀργ., ἀναλόγως τοῦ εἴδους του καὶ τοῦ πάχους του, μήπω δὲ χρησιμοποιηθέντος. Σ. Ε. Λ.

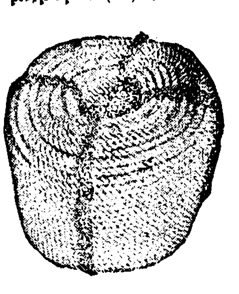

*Μήρυμα σχοινίου τῶν 3 δακτύλων περιφερείας μήκους 200 ὀργυιῶν.*

**Μήρυσι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Μάραθος* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μησᾶ.** Ἕτερος τύπος τοῦ ὀνόματος τοῦ βασιλέως τῶν Μωαβιτῶν *Μεσᾶ* (βλ. λ.).

**Μήστρα, ἢ Μήτρα** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Θεσσαλικοῦ ἥρωος Ἐρυσίχθονος, ὅστις καταδικασθεὶς δι' ἀσέβειαν ὑπὸ τῆς Δήμητρος εἰς ἀκόρεστον βουλιμίαν, ἀφοῦ κατέφαγε τὴν περιουσίαν του, ἐπώλησε τέλος καὶ αὐτὴν τὴν θυγατέρα του. Ἀλλ' ὁ Ποσειδῶν, ὅστις ἠγάπα αὐτήν, τῆς ἐχάρισε τὴν δύναμιν νὰ μεταμορφοῦται εἰς διάφορα ζῷα, ἵνα ἀποφεύγῃ τὴν δουλείαν, οὕτω δὲ ἡ Μήστρα ἐπανήρχετο εἰς τὸν πατρικὸν οἶκον διὰ νὰ πωληθῇ τὴν ἐπομένην. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός της, ὅστις τέλος κατέφαγε καὶ αὐτὰ τὰ ἴδια του μέλη, ἔλαβεν αὐτὴν σύζυγον ὁ Ποσειδῶν, ὅστις τὴν ἐγέννησεν ἐξ αὐτῆς τὸν Ὤγυγον. Φέρεται καὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα Μήτρα, διατηρηθὲν ἐν τῇ παροιμίᾳ τῶν ἀρχαίων «εὐμεταβλητότερος Μήτρας», πρὸς δήλωσιν ἀσταθοῦς χαρακτῆρος. Α. Θ. Σ.

**Μήστωρ** *[Μυθολ.]*. —1) Υἱὸς τοῦ Περσέως καὶ τῆς Ἀνδρομέδας, σύζυγος τῆς Λυσιδίκης, θυγατρὸς τοῦ Πέλοπος, πατὴρ τῆς Ἱπποθόης.

—2) Εἷς τῶν νόθων υἱῶν τοῦ Πριάμου, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀχιλλέως.

—3) Εἷς τῶν ἐξ υἱῶν τοῦ Πτερελάου, φονευθεὶς μετὰ τῶν ἀδελφῶν του, πολεμῶν κατὰ τοῦ Ἀμφιτρύωνος.

—4) Υἱὸς τοῦ Ποσειδῶνος καὶ τῆς Κλειτοῦς. Α. Θ. Σ.

**Μήτα** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Ὁπλῆτος, πρώτη σύζυγος τοῦ Αἰγέως βασιλέως τῶν Ἀθηνῶν, μὴ ἀποκτήσασα τέκνα ἐξ αὐτοῦ. Α. Θ. Σ.

**Μητακάτα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Τρωϊνάτων τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 80. Χ. Δ.

**μητᾶτον** (τὸ) *[Βυζαντ.]*. Ἐλέγετο ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν (ἐκ τοῦ λατιν. metatum) πᾶν κατάλυμα χρησιμεῦον διὰ τὴν ἐν ταῖς πόλεσιν ἢ χωρίοις προσωρινὴν διαμονὴν τῶν ξένων ἐν γένει, τουτέστι τῶν ταξιδευόντων ὑπαλλήλων τοῦ κράτους, πολιτικῶν καὶ στρατιωτικῶν, καὶ τῶν δι' οἱονδήποτε λόγον ταξιδευόντων ἐν γένει ἐπισήμων ἢ ἰδιωτῶν. Ἡ λέξις διατηρεῖται νῦν ὡς τοπωνύμιον εἴς τινας τῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου. Μόνον ἐν Κρήτῃ παραμένει μὲ τὴν ἀρχικὴν αὐτῆς σημασίαν. Ἐκεῖ κα-



Digitized by Google

λοῦνται «μητᾶτα» τὰ θερινὰ καταλύματα τῶν ποιμένων ἐπὶ τῶν ὑψηλῶν ὀρέων. Ν. ΚΛΣ

**Μητᾶτον** *Παλαιὸν [Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τοῦ νομοῦ Λασηθίου (βλ. *Παλαιομητᾶτον*). Χ. Δ.

**μητατωρίκιον** (τὸ) *[Λειτουργ.]*. Μέρος τοῦ ἱεροῦ Βήματος, περιλαμβάνον, εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν καὶ ἐπὶ μεγάλων ναῶν, ὁλόκληρον αἴθουσαν, ἢ καὶ ἀποτελοῦν ἴδιον πολλάκις κτήριον, ἐπὶ μικροτέρων δὲ ναῶν, καὶ ἰδίως σήμερον, περιλαμβάνον τὴν δεξιὰν τοῦ ἱεροῦ Βήματος κόγχην, ἀντίστοιχον πρὸς τὴν ἱερὰν Πρόθεσιν. Ἐχρησίμευε πρὸς ἐναπόθεσιν τῶν κατὰ τὴν θείαν λειτουργίαν χρησίμων ἱερῶν σκευῶν καὶ ἀμφίων καὶ τοῦ διὰ τὴν θείαν Εὐχαριστίαν ἀναγκαιοῦντος ἄρτου καὶ οἴνου. Ἡ σχετικὴ φροντὶς ἦτο ἀνατεθειμένη εἰς τοὺς διακόνους, δι' ὃ καὶ *διακονικὸν* ἐκαλεῖτο, ὡς ἐκ τούτου δὲ ἐκοσμεῖτο συνηθέστατα δι' εἰκόνων μαρτύρων, ὡς τοῦ πρωτομάρτυρος Στεφάνου, τοῦ Λαυρεντίου καὶ ἄλλων, οἵτινες ἐχρημάτισαν διάκονοι. Ἐπίσης ἐκαλεῖτο καὶ *κειμηλιαρχεῖον* καὶ *μινσαβώριον*. —Ω.

**Μητάφης,** *Γεώργιος*. Ἀγωνιστὴς ἐξ Αἴνου τῆς Θράκης, φονευθεὶς μετὰ τοῦ Ἰωάννου Νοταρᾶ, ἐν τῇ μάχῃ τῶν Ἀθηνῶν τῷ 1827 κατὰ τοῦ Μεχμὲτ Κιουταχῆ πασᾶ. Α. Θ. Σ.

**μήτε·** ἀρνητ. μόριον ἢ σύνδεσμος *(μὴ+τέ)*· συνδέει δύο ἀρνητικὰς προτάσεις κατὰ τὸ σχῆμα *μήτε —μήτε*: «μήτε βλέπω μήτε ἀκούω», «μήτε ἐγὼ θὰ πάω μήτε σύ»· || καθ' ἑαυτὸν ἐπιδοτικῶς ἀντὶ τοῦ *μηδέ*: «μήτε νὰ σ' ἀκούσω δὲ θέλω», «μήτε μιὰ πεντάρα δὲ θέλω ἀπὸ τὰ χέρια σου».

**μητέρα** (ἡ)· δημοτικὸς τύπος τοῦ *μήτηρ*.

**μητέρα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *τεύκριον τὸ πόλιον*.

**Μητέρα** *[Γεωγρ.]*. Ἡ μείζων νησὶς ἐν τῇ ὑπεραποκέντρῳ συστάδι τοῦ νοτίου Αἰγαίου *Τρία Νησιὰ* (πλάτ. 36°17′ Β., μῆκ. 26°45′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 872: Kalimno to Rhodos), τῶν ἄλλων δύο οὐσῶν πολὺ μικροτέρων της. Ἀνώνυμος ἐν τῷ ἀγγλικῷ χάρτῃ. Σ. Ε. Λ.

**μήτηρ,** *—μητρὸς* (ἡ), κοιν. *μητέρα*· καθόλου ἡ τεκοῦσα, ἡ γεννήσασα, κοιν. *μάννα*: «ἡ πρώτη παίδευσις τῶν τέκνων παρέχεται ὑπὸ τῆς μητρός», «μήτηρ φιλόστοργος»· || μεταφ., ἡ χώρα εἰς ἣν ἀνήκει τις: «ἡ Σκῦρος ἀλκίμων ἀνδρῶν μήτηρ ἔφυ»· || προσηγορία τῆς γῆς: «ἡ μήτηρ γῆ», «ἀπεδόθη (ὁ ἀποθανὼν) εἰς τὴν μητέρα γῆν», «—εἰς τοὺς κόλπους τῆς μητρὸς γῆς»· || καθόλου, ἡ πρώτη ἀρχή, ἡ δημιουργός, ἡ παραγωγός: «ἡ γεωργία τῶν ἄλλων τεχνῶν μήτηρ καὶ τροφὸς εἶναι», «ἡ ἀργία εἶναι μήτηρ πάσης κακίας»· || «Μήτηρ τοῦ Θεοῦ» ἡ Παναγία.

— **Μήτηρ** *[Ἀρχ.]*. Ἐπίκλησις εἰς διαφόρους θεὰς λατρευομένας ἰδίως διὰ τὴν γονιμότητα τῆς γῆς καὶ τὴν μητρότητα τῶν γυναικῶν. Τοιαύτη θεὰ ἦτο ἡ ἐν Ἤλιδι λατρευομένη Ἀθηνᾶ Μήτηρ, ὡς ἀναφέρει ὁ Παυσανίας. Ἐν Ἀττικῇ μὲ τὴν ἐπίκλησιν *μήτηρ* ἐλατρεύετο ἡ Δημήτηρ καὶ ἡ Γαῖα καὶ ἐν διαφόροις χώραις τῆς Ἀνατολῆς ἡ Κυβέλη. Ἀλλ' ἡ κατ' ἐξοχὴν μήτηρ ἦτο ἡ καλουμένη μήτηρ θεῶν, ἥτις εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ Κυβέλη τῶν ἀνατολικῶν λαῶν, ἐπονομασθεῖσα ἐν ταῖς ἑλληνικαῖς χώραις Μήτηρ θεῶν ἢ καὶ Μήτηρ μεγάλη. Αὕτη ἐλατρεύετο ὡς θεὰ τῆς γονιμότητος, ἐπονομαζομένη δὲ ἰδιαιτέρως καὶ ἀναλόγως τοῦ μέρους ἔνθα ὑπῆρχεν ἱερὸν αὐτῆς, Μήτηρ Δινδυμήνη, Μήτηρ Σιπυλίνη, Μήτηρ Ἰδαία, Μήτηρ Πλακιανή, Μήτηρ Πεσσινουντίων κλπ. Ἐν Ρώμῃ ὡς θεὰ τῆς μητρότητος καὶ συνάμα τοῦ φωτὸς ἐλατρεύετο ἡ Mater Matuta, ἥτις ἦτο ἡ Ἥρα Luciana, ἡ προστάτρια τῶν τοκετῶν. Τῆς Mater Matuta ὑπῆρχεν ἐν Ρώμῃ ἱερὸν εἰς τὸ Forum boarium, ἔνθα διεξήγοντο αἱ σχετικαὶ ἑορταὶ αἱ καλούμεναι Matralia, τὰς ὁποίας ἑώρταζον αἱ Ρωμαῖαι δέσποιναι πρὸς τιμὴν τῆς προστάτιδος αὐτῶν θεᾶς. Β. Δ. Θ.

— **Μήτηρ** *θεῶν [Μυθολ.]*. Ἐπωνυμία, ἐν Φρυγίᾳ καὶ Ἴδῃ τῆς Τροίας, τῆς θεᾶς *Κυβέλης* (βλ.λ.).

— **μήτηρ** *ὄνυχος [Ἀνατομ.]*. Τὸ ὀπίσθιον χεῖλος τοῦ ὄνυχος ἢ ριζωνύχιον, τὸ ἐμπεπαρμένον ἐντὸς βαθείας αὔλακος· ἐκλήθη δ' οὕτω, διότι ἐκ τῆς αὔλακος ταύτης αὐξάνεται καὶ ἀναγεννᾶται ὁ τέλειος ὄνυξ. Ι. Π.

**Μητιάδουσα** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Εὐπαλάμου, σύζυγος Κέκροπος τοῦ Β′ βασιλέως τῶν Ἀθηνῶν, μήτηρ τοῦ Πανδίονος. Α. Θ. Σ.

**Μητιονίδαι** *[Μυθολ.]*. Οἱ υἱοὶ τοῦ Μητίωνος, υἱοῦ τοῦ Ἐρεχθέως βασιλέως τῶν Ἀθηνῶν καὶ τῆς Πραξιθέας, οἵτινες ἐκθρονίσαντες ἀπὸ τῶν Ἀθηνῶν τὸν Πανδίονα ἐξεβλήθησαν κατόπιν ὑπὸ τῶν υἱῶν αὐτοῦ, τῶν Πανδιονιδῶν. Α. Θ. Σ.

**Μητίοχος.** Υἱὸς τοῦ Ἀθηναίου στρατηγοῦ Μιλτιάδου, γεννηθεὶς ἐξ ἄλλης καὶ οὐχὶ ἐκ τῆς θυγατρὸς τοῦ Ὀλόρου. Συλληφθεὶς ὑπὸ τοῦ φοινικικοῦ στόλου κατὰ τὴν εἰς Ἀθήνας φυγὴν τοῦ πατρός του ἐκ τῆς Θρακικῆς χερσονήσου, τῆς ὁποίας ἦτο ἡγεμών, ὡδηγήθη πρὸς τὸν Δαρεῖον, ὅστις ὄχι μόνον δὲν ἐκακοποίησεν αὐτόν, ἀλλ' ἐπλήρωσε διὰ πολλῶν ἡγεμονικῶν δώρων, νυμφεύσας μάλιστα αὐτὸν μετὰ Περσίδος γυναικός. Α. Θ. Σ.

**Μῆτις** *[Μυθολ.]*. Προσωποποίησις τῆς φρονήσεως, θυγάτηρ τοῦ Ὠκεανοῦ καὶ τῆς Τυθύος, ἡ πρώτη σύζυγος τοῦ Διός, ἡ «πλεῖστα θεῶν τε ἰδυῖα ἠδὲ θνητῶν ἀνθρώπων» (*Ἡσιόδ.* Θεογ. 887). Κατὰ παράκλησιν αὐτοῦ ἔδωκεν εἰς τὸν Κρόνον ἐμετικὸν φάρμακον, ἐξαναγκάσασα αὐτὸν νὰ ἐξεμέσῃ τὰ ὑπ' αὐτοῦ καταποθέντα τέκνα. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ Οὐρανὸς καὶ ἡ Γῆ προεῖπον εἰς τὸν Δία ὅτι τὸ πρῶτον ἐξ αὐτῆς τέκνον θὰ εἶναι θυγάτηρ, ἔπειτα δὲ υἱός, ὅστις θὰ ἐξεθρόνιζεν αὐτόν, ὁ Ζεὺς κατέπιεν αὐτὴν κυοφοροῦσαν τὴν Ἀθηνᾶν, ἥτις ἀργότερον ἐγεννήθη ἐκ τῆς κεφαλῆς του. Α. Θ. Σ.

— **Μῆτις** *[Μυθολ.]*. Ὄνομα ἀρχαίας θρακικῆς θεότητος, γνωστὸν ἐξ ἐπιγραφῆς τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, τῆς ὁποίας ἡ λατρεία φαίνεται ὅτι ἦτο λίαν διαδεδομένη ἐν Θρᾴκῃ. Α. Θ. Σ.

**Μήτιχος** (κατ' ἄλλους ***Μητίοχος***). Ἀρχαῖος ρήτωρ καὶ ἀρχιτέκτων, σύγχρονος τοῦ Περικλέους καὶ στενὸς φίλος του. Κατὰ τὸ ὑπ' αὐτοῦ ἐκπονηθὲν σχέδιον καὶ τῇ ἐπιβλέψει του ἱδρύθη ἐν Ἀθήναις μέγα δικαστικὸν μέγαρον κληθὲν Μητίχειον ἢ τὸ Μητίχου, εἰς τὸ ὁποῖον ἐδίκαζον οἱ ἡλιασταί. Ν. Α.

**Μητίων** *[Μυθολ.]*. Ἀττικὸς ἥρως, υἱὸς τοῦ Ἐρεχθέως καὶ τῆς Πραξιθέας, σύζυγος της Ἀλκίππης, τοῦ ὁποίου οἱ υἱοὶ καὶ ἀπόγονοι ἐκλήθησαν *Μητιονίδαι* (βλ. λ.). Κατ' ἄλλην παράδοσιν φέρεται ὡς πατὴρ τοῦ Εὐπαλάμου καὶ πάππος τοῦ Δαιδάλου, ἢ πατὴρ τοῦ Σικυῶνος, τοῦ μυθικοῦ ἱδρυτοῦ τῆς ὁμωνύμου ἐν Πελοποννήσῳ πόλεως. Α. Θ. Σ.

**Μήτοκος.** Βασιλεὺς τῶν Ὀδρυσῶν τῆς Θρᾴκης, καλούμενος καὶ *Ἀμάδοκος* ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ἱστορικῶν (βλ. λ. *Μήδοκος*). Α. Θ. Σ.

**μήτρα** (ἡ)· τὸ μέρος τοῦ σώματος παντὸς θήλεος θηλαστικοῦ, ἐν ᾧ συλλαμβάνεται καὶ κυοφορεῖται τὸ ἔμβρυον· || μεταφ., πᾶν ὄργανον δι' οὗ ἐκτυποῦταί τι, κοιν. *καλούπι, φόρμα*.

— *[Ἰατρ.]* Ἡ *μήτρα* εἶναι ὄργανον μυῶδες καὶ κοῖλον, κείμενον ἐντὸς τῆς μικρᾶς λεκάνης, μεταξὺ οὐροδόχου κύστεως καὶ ὀρθοῦ ἐντέρου. Χρησιμεύει εἰς ὑποδοχὴν τοῦ γονιμοποιηθέντος ᾠαρίου καὶ ἀνάπτυξιν τοῦ ἐμβρύου μέχρις ὡριμότητος αὐτοῦ, ὅτε διὰ τῶν συστολῶν αὐτῆς ἀποβάλλεται ταύτης. Ἔχει σχῆμα ἀπιοειδὲς καὶ ἀποτελεῖται ἐκ δύο μερῶν, ἐκ τοῦ *σώματος* καὶ ἐκ τοῦ *τραχήλου*.

***Σῶμα μήτρας.*** Εἶναι τριγωνικὸν καὶ φέρει δύο ἐπιφανείας, προσθίαν καὶ ὀπισθίαν, δύο χείλη, δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, καὶ δύο ἄκρα, ἄνω καὶ κάτω, μίαν δὲ κοιλότητα. Ἡ προσθία ἐπιφάνεια εἶναι κατά τι κυρτή, καλύπτεται ὑπὸ τοῦ περιτοναίου, τὸ ὁποῖον ἐκεῖθεν φέρεται εἰς τὴν ὀπισθίαν ἐπιφάνειαν τῆς οὐροδόχου κύστεως, σχηματίζον μεταξὺ τῶν δύο τούτων ὀργάνων κόλπωμα, καλούμενον *μητροκυστικόν*. Ἡ ὀπισθία ἐπιφάνεια εἶναι κυριωτέρα τῆς προσθίας, καλύπτεται ὁλόκληρας ὑπὸ τοῦ περιτοναίου, φερομένου πρὸς τὸ ὀρθὸν ἔντερον καὶ σχηματίζοντος μεταξὺ τῶν δύο τούτων ὀργάνων ἕτερον κόλπωμα, καλούμενον *ὀρθομητρικόν*. Τὸ ἄνω ἄκρον ἀποτελεῖ τὸν *πυθμένα* τῆς μήτρας, ὅστις φέρει ἑκατέρωθεν τῶν χειλέων αὐτοῦ γωνίαν, ἐφ' ἧς ὑπάρχει στενὸν στόμιον, δι' οὗ ἡ μητρικὴ κοιλότης συγκοινωνεῖ μετὰ τῶν ἑκατέρωθεν τῶν γωνιῶν τούτων ὑπαρχόντων ᾠαγωγῶν. Τὸ κάτω ἄκρον τοῦ σώματος τῆς μήτρας συνέχεται μετὰ τοῦ τραχήλου αὐτῆς δι' ἑνὸς ἰσθμοῦ. Ἡ κοιλότης τοῦ σώματος τῆς μήτρας εἶναι τριγωνικὴ καὶ ἔχει τρεῖς γωνίας, αἵτινες φέρουσιν ἀνὰ ἓν στενὸν στόμιον, ἤτοι αἱ δύο ἄνω τὰ ᾠαγωγικὰ στόμια, δι' ὧν αὕτη συγκοινωνεῖ μετὰ τῶν ᾠαγωγῶν, ἡ δὲ κάτω τὸ στόμιον, δι' οὗ αὕτη συγκοινωνεῖ μετὰ τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος καὶ καλεῖται ἐσωτερικὸν στόμιον τοῦ τραχήλου.

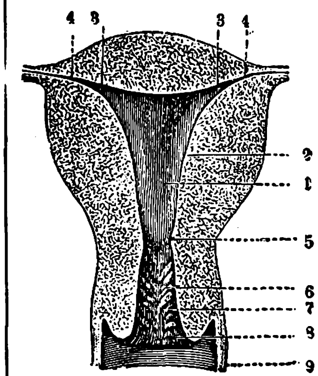


*Κατὰ μέτωπον τομὴ μήτρας εἰκοσιεξαετοῦς πολυτόκου γυναικός.*

[1=κοιλότης σώματος μήτρας, 2=ἀριστερὸν χεῖλος κοιλότητος, 3=ἄνω χεῖλος κοιλότητος, 4,4=πλάγιαι γωνίαι, συνεχεῖς πρὸς τοὺς ᾠαγωγούς, 5=ἔσω στόμιον κοιλότητος μήτρας, 6=κοιλότης αὐχένος, 7=φοινικοειδεῖς πτυχαὶ ὀπισθίου τοιχώματος, 8=ὀπίσθιον τοίχωμα ἔξω στομίου μήτρας, 9=ἄνω ἄκρον κολεοῦ.]

***Τράχηλος μήτρας.*** Ἔχει σχῆμα κυλινδρικὸν καὶ ἐν τῷ μέσῳ κατά τι διωγκωμένον, πέριξ δ' αὐτοῦ προσφύεται ὁ *κολεός*, διαιρῶν τοῦτον εἰς δύο μοίρας, εἰς τὴν ὕπερθεν τοῦ κολεοῦ καὶ ἐντὸς τῆς κοιλίας εὑρισκομένην, ἥτις καλεῖται *ὑπερκολπική*, καὶ εἰς τὴν ἐντὸς τοῦ κολεοῦ, ἥτις καλεῖται *ἐνδοκολπική*. Ἡ ὑπερκολπικὴ μοῖρα τοῦ τραχήλου εὑρίσκεται εἰς σχέσιν ἔμπροσθεν μὲν μετὰ τῆς οὐροδόχου κύστεως, μεθ' ἧς ἑνοῦται διὰ χαλαροῦ κυτταρώδους ἱστοῦ, ὄπισθεν δὲ μετὰ τοῦ ὀρθοῦ ἐντέρου καὶ πλαγίως μετὰ τῶν χειλέων τοῦ πλατέος συνδέσμου καὶ τῶν μητριαίων ἀγγείων. Κατὰ τὴν ἕνωσιν αὐτοῦ μετὰ τοῦ σώματος τῆς μήτρας φέρει στόμιον, καλούμενον ἐσωτερικὸν στόμιον τοῦ τραχήλου. Ἡ ἐνδοκολπικὴ μοῖρα τοῦ τραχήλου ἔχει σχῆμα κώνου καὶ φέρει στόμιον, παρὰ ταῖς μὴ τεκούσαις κυκλοτερές, παρὰ δὲ ταῖς τεκούσαις ἀνώμαλον, ὅπερ καλεῖται ἐξωτερικὸν στόμιον τοῦ τραχήλου, δι' οὗ συγκοινωνεῖ ἡ μητρικὴ κοιλότης μετὰ τοῦ κολεοῦ. Ἡ κοιλότης τοῦ τραχήλου ἔχει σχῆμα ἀτρακτοειδὲς καὶ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας αὐτῆς φέρει γραμμοειδῆ ἐξοχήν, ἀποτελουμένην ἐκ μυϊκῶν δεματίων, ἐπ' αὐτῆς δὲ προσπίπτουσιν ἐκ τῶν πλαγίων τῆς ἐπιφανείας λοξαὶ προεξοχαί, αἵτινες ἐν συνόλῳ σχηματίζουσιν εἶδος δένδρου, καλουμένου *δένδρου τῆς ζωῆς*.

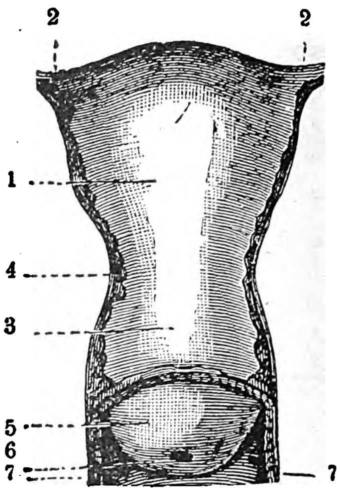


*Προσθία ἐπιφάνεια μήτρας εἰκοσιδιετοῦς παρθένου.*

[1=σῶμα μήτρας, 2,2=ἄνω γωνίαι μήτρας, ἐξ ὧν ἐξορμῶνται οἱ ᾠαγωγοί, 3=τράχηλος μήτρας, 4=ἰσθμός, 5=ἐνδοκολεϊκὴ μοῖρα τραχήλου, 6=ἔξω στόμιον μήτρας, 7,7=κολεός.]

***Σύστασις τῆς μήτρας.*** Ἡ μήτρα συνίσταται ἐκ τριῶν χιτώνων, ἑνὸς ἐξωτερικοῦ, καλουμένου *ὀρογόνου*, ἑνὸς μέσου καλουμένου *μυϊκοῦ* καὶ ἑνὸς ἔσω καλουμένου *βλεννογόνου*. Ὁ ἐξωτερικὸς ἢ ὀρογόνος χιτὼν εἶναι αὐτὸ τοῦτο τὸ περιτόναιον, ὅπερ διαδοχικῶς καλύπτει τὴν προσθίαν, τὴν ὀπισθίαν ἐπιφάνειαν καὶ τὸν πυθμένα αὐτῆς. Καὶ εἰς μὲν τὸν πυθμένα συμφύεται στενότατα μετὰ τοῦ ἔσωθεν αὐτοῦ μυϊκοῦ χιτῶνος, χαλαρώτερον δὲ πρὸς τὰ πλάγια τοῦ σώματος καὶ τὸν τράχηλον. Ὁ μυϊκὸς χιτὼν ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν στρωμάτων μυϊκῶν ἰνῶν, ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ, συνισταμένου ἐξ ἐπιμήκων καὶ κυκλοτερῶν ἰνῶν, ἐκ τοῦ μέσου, τοῦ καὶ παχυτέρου, συνισταμένου ἐκ συμπλεκομένων καὶ πολυειδῶς ἀναστομουμένων πρὸς ἀλλήλας μυϊκῶν ἰνῶν, αἵτινες κατὰ τὸν ἰσθμὸν τῆς μήτρας, κατὰ τὸ ἐσωτερικὸν περίπου στόμιον τοῦ τραχήλου, σχηματίζουσιν εἶδος δακτυλίου κανονικοῦ. Ὁ βλεννογόνος ὑμὴν καλύπτει ἅπασαν τὴν ἐσωτερικὴν ἐπιφάνειαν τοῦ τε σώματος καὶ τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας. Καὶ τὸ καλύπτον μὲν τὴν ἐσωτερικὴν ἐπιφάνειαν τοῦ σώματος μέρος αὐτοῦ εἶναι ροδόχρουν καὶ λεῖον, παρουσιάζει ὅμως βαθύσματα χωνοειδῆ, προερχόμενα ἐκ τῶν στομίων τῶν ἀδενίσκων αὐτοῦ, καὶ συμφύεται στερεῶς μετὰ τοῦ ὄπισθεν αὐτοῦ μυϊκοῦ χιτῶνος, ἔχει πάχος 1—2 χιλ. καὶ σύγκειται ἐκ δύο στρωμάτων, ἑνὸς ἐσωτερικοῦ περιέχοντος ἀδένας καὶ ἑνὸς ἐξωτερικοῦ, πρὸς τὴν κοιλότητα τῆς μήτρας βλέποντος, ἀποτελουμένου ἐξ ἐπιμήκων πρισματικῶν κυττάρων· καλεῖται δὲ *ἐπιθήλιον*. Ὁ βλεννογόνος τοῦ τραχήλου εἶναι ὠχρότερος, λεπτότερος τοῦ τοῦ σώματος, ἀλλ' ἔχει μείζονα ἀντίστασιν ἐκείνου καὶ φέρει ἐξοχὰς δενδροειδεῖς.

***Σύνδεσμοι τῆς μήτρας.*** Ἡ μήτρα στηρίζεται εἰς τὴν θέσιν της δι' ἓξ συνδέσμων: διὰ δύο, ἀποτελουμένων ἐκ τοῦ περιβάλλοντος τὸ πρόσθιον καὶ τὸ ὀπίσθιον τοίχωμα τῆς μήτρας περιτοναίου, οἵτινες καλοῦνται *πλατεῖς* σύνδεσμοι· διὰ δύο, ἐκφυομένων ἑκατέρωθεν τοῦ πυθμένος τῆς μήτρας, ὀλίγον πρόσθεν καὶ κάτω τῶν ᾠαγωγικῶν στομίων τῆς μήτρας, καλουμένων *στρογγύλων* συνδέσμων, οἵτινες φέρονται ἀπὸ τῆς μήτρας μεταξὺ τῶν πετάλων τοῦ πλατέος συνδέσμου πρὸς τὸ πλάγιον καὶ τὸ πρόσθιον τοίχωμα τῆς κοιλίας, ἐκεῖθεν δὲ εἰς τὸν βουβωνικὸν πόρον, καταλήγοντες εἰς τὰ μεγάλα χείλη τοῦ αἰδοίου· καὶ διὰ δύο ἑτέρων συνδέσμων, καλουμένων *ἱερομητρικῶν*, οἵτινες ἀποτελοῦνται, ὅπως καὶ οἱ πλατεῖς σύνδεσμοι, ὑπὸ δύο φύλλων τοῦ περιτοναίου.

***Θέσις τῆς μήτρας.*** Ὁ πυθμὴν αὐτῆς δὲν ὑπερέχει τῆς μικρᾶς λεκάνης καὶ ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ ὕψος τοῦ 4ου ἱεροῦ σπονδύλου. Ἡ ἐνδοκολπικὴ μοῖρα τοῦ τραχήλου φέρεται λοξῶς ἐπὶ τὰ ὀπίσω καὶ κάτω πρὸς τὸ ἱερὸν ὀστοῦν. Ἡ μήτρα εἶναι

Digitized by Google

εὐκίνητος, ὑφισταμένη παρατοπίσεις ἐκ τῆς πληρότητος ἢ κενότητος τῶν παρακειμένων ὀργάνων, ἰδίως τῆς οὐροδόχου κύστεως καὶ τοῦ ὀρθοῦ ἐντέρου, οὕτως ὥστε εὑρίσκεται εἰς σταθερὰν ἀνισορροπίαν.

***Διάπλασις τῆς μήτρας.*** Τὸ γεννητικὸν σύστημα τῆς γυναικὸς διαπλάσσεται ἔκ τινων πόρων, καλουμένων *μυλλερείων*, οἵτινες κατὰ μὲν τὸ ἄνω αὐτῶν μέρος παραμένουσι κεχωρισμένοι, ἀποτελοῦντες τὴν καταβολὴν τῶν ᾠαγωγῶν, κατὰ δὲ τὸ κάτω αὐτῶν μέρος συγχωνεύονται, ἀποτελοῦντες τὴν μήτραν καὶ τὸν κολεόν.

***Διαμαρτίαι περὶ τὴν διάπλασιν τῆς μήτρας.*** Ὅταν κατὰ τὸν χρόνον τῆς διαπλάσεως τῆς μήτρας ἐπέλθουν παθολογικαὶ διαταραχαί, ὄργανα, τὰ ὁποῖα ἔμελλον νὰ συγχωνευθῶσι πρὸς ἄλληλα, παραμένουσι κεχωρισμένα, ἢ ἄλλα, ἅτινα ἔμελλον νὰ καταστῶσι κοῖλα, παραμένουσι πεφραγμένα. Οὕτως ἐκ τῆς μὴ συγχωνεύσεως τῶν δύο μυλλερείων πόρων προκύπτουσι διάφοροι διαμαρτίαι περὶ τὴν διάπλασιν τῆς μήτρας. Ἕκαστος τῶν πόρων τούτων δύναται, ἀναπτυσσόμενος κεχωρισμένως, ν' ἀποτελέσῃ ἀνὰ ἕνα κολεόν, ἀνὰ μίαν μήτραν μετὰ τοῦ τραχήλου, ὡς καὶ ἀνὰ ἕνα ᾠαγωγόν, καλεῖται δὲ ἡ ἀνωμαλία αὕτη *δίδελφυς* ἢ *διφυὴς* μήτρα, ἥτις σπανιώτατα ἀπαντᾷ εἰς ἔνηβον γυναῖκα· συνήθως ἀπαντᾷ αὕτη εἰς ἀτελῶς ἀναπτυσσόμενα ἔμβρυα. Ἄλλοτε, ὁσάκις ὁ εἷς τῶν μυλλερείων πόρων ὑπολείπεται κατὰ τὴν ἀνάπτυξιν, ἀποτελεῖ μήτραν ὑποτυπώδη, ἐνῷ ὁ ἕτερος, ἀναπτυσσόμενος φυσιολογικῶς, ἀποτελεῖ τελείαν μήτραν. Καθ' ἃς δὲ περιπτώσεις ἡ ἀνάπτυξις τοῦ ἑτέρου τῶν μυλλερείων πόρων ἀνασταλῇ τελείως, σχηματίζεται ἡ καλουμένη *μονόκερως* μήτρα. Ὅταν δὲ τὰ σώματα τῆς μήτρας παραμένουσι κεχωρισμένα, τότε καλεῖται *δίκερως* μήτρα καὶ ὅταν οἱ τράχηλοι τῆς δικέρωτος μήτρας συγχωνεύωνται εἰς ἕνα, ἀποτελεῖται ἡ καλουμένη *δίκερως μονοτράχηλος* μήτρα. Εἰς ἄλλας περιπτώσεις ἥ τε μητρικὴ καὶ τραχηλικὴ κοιλότης χωρίζονται διὰ διαφράγματος καὶ οὕτω ἀποτελεῖται ἡ καλουμένη *δίαυλος* μήτρα· ὅταν τὸ διάφραγμα χωρίζῃ μόνον τὴν κοιλότητα τοῦ σώματος τῆς μήτρας καλεῖται *δίαυλος μονοτράχηλος* μήτρα, ὅταν δὲ χωρίζῃ μόνον τὴν τραχηλικὴν κοιλότητα, καλεῖται *διτράχηλος*.

***Παραλλαγαὶ τῆς θέσεως τῆς μήτρας.*** Μεταξὺ αὐτῶν περιλαμβάνονται: α) Αἱ *κλίσεις* τῆς μήτρας, ὅταν τὸ σῶμα αὐτῆς εἶναι ἐστραμμένον πρὸς τοὺς διαφόρους ἄξονας τῆς μήτρας, ἤτοι ὅταν τὸ σῶμα εὑρίσκεται μετατοπισμένον πρὸς τὰ ὀπίσω, πρὸς τὰ δεξιὰ ἢ ἀριστερά. β) Ἡ *στροφὴ* τῆς μήτρας, ὅταν τὸ σῶμα αὐτῆς στρέφεται πρὸς τὰ δεξιὰ ἢ ἀριστερά. γ) Αἱ *μετατοπίσεις* τῆς μήτρας, ὅταν τὸ σῶμα αὐτῆς μετὰ τοῦ τραχήλου κεῖται ὄπισθεν (*ὀπισθία*), ἢ ἔμπροσθεν (*προσθία*) ἢ εἰς τὸ ἕτερον τῶν πλαγίων τῆς λεκάνης (*πλαγία*), ἢ ὑψηλὰ ἐντὸς τῆς λεκάνης (*ὑψηλή*)· ὅταν αὕτη πίπτῃ μέχρι τοῦ αἰδοίου, καλεῖται *πρόπτωσις μερική*, ἐξερχομένη δὲ τοῦ αἰδοίου καλεῖται *ὁλικὴ πρόπτωσις*. δ) Αἱ *κάμψεις* τῆς μήτρας, ὅταν τὸ σῶμα αὐτῆς κάμπτεται πρὸς τὸν τράχηλον. Διακρίνονται δὲ ἡ *ὀπισθία*, ὅταν ἡ ὑπὸ τοῦ σώματος καὶ τοῦ τραχήλου σχηματιζομένη γωνία βλέπῃ πρὸς τὰ ὀπίσω, ἡ *προσθία*, ὅταν αὕτη βλέπῃ πρὸς τὰ πρόσω, καὶ ἡ *δεξιὰ* ἢ *ἀριστερά*, ὅταν βλέπῃ πρὸς τὰ δεξιὰ ἢ ἀριστερά. ε) Ἡ *ἐπιμήκυνσις* τῆς μήτρας, ὅταν αὕτη ἕνεκα πτώσεως ἢ ἕλξεως αὐξάνῃ τὸ μῆκος. στ) Ἡ *ἐκστροφὴ* τῆς μήτρας, καθ' ἣν ὁ πυθμὴν αὐτῆς εἰσδύεται ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος, οὕτως ὥστε ἡ ἐσωτερικὴ ἐπιφάνεια αὐτῆς καθίσταται ἐξωτερικὴ καὶ τἀνάπαλιν. Αἱ μεταλλαγαὶ αὗται τῆς θέσεως τῆς μήτρας ὀφείλονται συνήθως εἰς χαλάρωσιν τῶν συνδέσμων τῆς μήτρας ἢ τῶν τοιχωμάτων τοῦ κολεοῦ, εἰς φλεγμονὰς τῆς μήτρας ἢ τῶν ἐξαρτημάτων αὐτῆς, εἰς ὄγκους τῆς μήτρας καὶ εἰς ἐπεμβάσεις γενομένας ἐπ' αὐτῆς. Προκαλοῦσι δ' αὗται συχνάκις ἄλλοτε ἄλλης σοβαρότητος ἐνοχλήσεις καὶ ἐπιπλοκάς, ὡς πόνους κατὰ τὴν ὀσφὺν καὶ τὸ ὑπογάστριον, βάρος, λευκόρροιαν, δυσμηνόρροιαν, ἀνώμαλον ἔμμηνον ρύσιν, στείρωσιν, διαφόρους νευρικὰς ἐκδηλώσεις καὶ ἐπὶ κυήσεως συχνάκις ἔκτρωσιν.

***Φλεγμοναὶ τῆς μήτρας.*** Αἱ φλεγμοναὶ τῆς μήτρας διαιροῦνται εἰς φλεγμονὰς τοῦ σώματος, δηλονότι τοῦ μυομητρίου καλουμένας *μητρίτιδας* καὶ εἰς φλεγμονὰς τοῦ ἐνδομητρίου, δηλονότι τοῦ βλεννογόνου ὑμένος, καλουμένας *ἐνδομητρίτιδας*. Αὗται ὀφείλονται εἰς τὴν εἴσδυσιν ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς καὶ μητρικῆς κοιλότητος παθογόνων μικροργανισμῶν καὶ ἰδίως τῶν γονοκόκκων, τῶν στρεπτοκόκκων, τῶν σταφυλοκόκκων καὶ σπανιώτερον τῶν βακτηριδίων τῆς φυματιάσεως, τῆς διφθερίτιδος καὶ τῶν κολοβακτηριδίων. Καὶ οἱ μὲν γονόκοκκοι μεταδίδονται ἀπ' εὐθείας διὰ τῆς συνουσίας καὶ προσβάλλουσιν εὐχερέστατα τὸν βλεννογόνον ὑμένα, χωρὶς νὰ ὑπάρχῃ τρῶσίς τις αὐτοῦ· συνηθέστερον ὅμως προσβάλλουσι πρῶτον τὴν οὐρήθραν καὶ μετὰ ταῦτα τὸν βλεννογόνον ὑμένα τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας, ἐγκαθιστάμενοι ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ καὶ πολλαπλασιαζόμενοι. Ἐκ τῶν ἐκκρίσεων δὲ τοῦ πάσχοντος βλεννογόνου σχηματίζονται περὶ τὸ στόμιον τοῦ τραχήλου ἑλκώσεις. Συνήθως ἡ ἐκ τοῦ γονοκόκκου λοίμωξις ἐντοπίζεται εἰς τὸν βλεννογόνον τοῦ τραχήλου καὶ σπανιώτατα δύναται νὰ ἐπεκταθῇ καὶ εἰς τὸν βλεννογόνον ὑμένα τοῦ σώματος τῆς μήτρας, ὁπόθεν ἡ λοίμωξις ἐπεκτείνεται καὶ εἰς τὰ ἐξαρτήματα αὐτῆς. Αἱ δ' ἐκ τῶν στρεπτοκόκκων καὶ σταφυλοκόκκων λοιμώξεις καὶ φλεγμοναὶ τῆς μήτρας ἐπέρχονται συνήθως κατὰ τὸν τοκετὸν καὶ τὴν λοχείαν καὶ συνηθέστερον ἀκόμη κατὰ τὰς ἐκτρώσεις καὶ δὴ τὰς ἐγκληματικὰς τοιαύτας, καθ' ὅσον πρὸς ἐγκατάστασιν αὐτῶν ἀπαιτεῖται τραυματικὴ ἐπιφάνεια. Ἐπίσης δύνανται νὰ προκαλέσωσι φλεγμονὴν τοῦ ἐνδομητρίου καὶ αἱ εἰς τὸν ὀργανισμὸν ἀναπτύξεις τοξικῶν οὐσιῶν, ὡς καὶ αἱ μηχανικαὶ βλάβαι τοῦ βλεννογόνου, ὡς λ. χ. ξένα σώματα εἰσαγόμενα εἰς τὴν τραχηλικὴν κοιλότητα ἐπὶ τῷ σκοπῷ εἴτε ἐκτρώσεως, εἴτε καὶ θεραπείας ἢ καὶ πρὸς πρόληψιν τῆς κυήσεως.

*Μητρῖτις.* Αὕτη εἶναι φλεγμονὴ τοῦ μυομητρίου κατ' ἐπέκτασιν τῆς φλεγμονῆς τοῦ ἐνδομητρίου, ἀποτόκου, ὡς ἐλέχθη, λοιμώξεως· ἀναλόγως τῆς πορείας καὶ τῶν συμπτωμάτων διαιρεῖται εἰς *ὀξεῖαν* καὶ εἰς *χρονίαν* μητρίτιδα. Κατ' αὐτὴν τὸ σῶμα τῆς μήτρας εἶναι διωγκωμένον καὶ ὑπεραιμικὸν ἐξ ὑπερτροφίας τοῦ παρεγχύματος αὐτοῦ. Ὅταν δὲ οἱ παθογόνοι μικροργανισμοὶ εἰσδύσωσι μεταξὺ τῶν μυϊκῶν δεσμίδων τοῦ σώματος τῆς μήτρας, σχηματίζονται ἀποστήματα ἐντὸς τῶν τοιχωμάτων τῆς μήτρας, διὰ δὲ τῆς περαιτέρω εἰσδύσεως αὐτῆς σχηματίζονται καὶ παραμητρικὰ ἀποστήματα καὶ γενικὴ τοῦ σώματος λοίμωξις.

*Ἐνδομητρῖτις.* Αὕτη εἶναι φλεγμονὴ τοῦ βλεννογόνου τῆς μήτρας, ἀπότοκος μολύνσεως. Ὁ οὕτω δὲ πάσχων βλεννογόνος καλύπτεται ὑπὸ πύου, περιέχοντος ἀφθόνους παθογόνους μικροργανισμούς, οἵτινες εἰσδύονται βαθμηδὸν μεταξὺ τῶν μυϊκῶν δεσμίδων τοῦ σώματος, προκαλοῦντες τὴν μητρίτιδα. Ἀναλόγως δὲ τῶν ἀλλοιώσεων, ἃς ὑφίσταται ὁ πάσχων βλεννογόνος, διακρίνονται αἱ ἑξῆς μορφαί: ἡ *ὑπερτροφική*, ἥτις ἱστολογικῶς χαρακτηρίζεται διὰ τῆς κατ' ὄγκον καὶ μῆκος αὐξήσεως τῶν ἀδένων, ἡ *κυστική*, χαρακτηριζομένη διὰ τῆς κυστικῆς ἐκφυλίσεως τῶν ἀδένων τοῦ βλεννογόνου, ἡ *διάμεσος*, χαρακτηριζομένη ἱστολογικῶς διὰ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν κυτταρικῶν στοιχείων, καὶ ἡ *ὑπερπλαστική*, ἥτις ἀπαντᾷ συνήθως κατὰ τὴν κλιμακτηρικὴν ἡλικίαν. Αὕτη ἄλλοτε ἀπεδίδετο εἰς φλεγμονήν, ὡς καὶ αἱ λοιπαὶ μορφαί, σήμερον ὅμως ἀπεδείχθη ὅτι δὲν πρόκειται περὶ φλεγμονώδους ἐνδομητρίτιδος μολυσματικῆς φύσεως, ἀλλὰ περὶ λειτουργικῆς ὑπερπλασίας τοῦ βλεννογόνου, ἀποτόκου τῆς ἐπ' αὐτὸν ἐπιδράσεως τῆς ἀνωμάλου ᾠοθηκικῆς λειτουργίας.

*Συμπτώματα.* Τὰ συμπτώματα τῆς μητρίτιδος καὶ ἐνδομητρίτιδος εἶναι ποικίλα, ἤτοι ἄφθονος ἔκκρισις (λευκόρροια), ἄλγος κατὰ τὴν ὀσφὺν καὶ τὸ ὑπογάστριον, δυσμηνόρροια καὶ ἀνωμαλίαι τῆς ἐμμήνου ρύσεως, μηνο-μητρορραγίαι, στείρωσις καὶ ποικίλαι ἐνοχλήσεις ἄλλοτε ἄλλης ἐντάσεως ἐκ τῆς οὐροδόχου κύστεως, ἐκ τοῦ ἀπευθυσμένου, ἐκ τοῦ πεπτικοῦ καὶ τοῦ νευρικοῦ συστήματος.

*Θεραπεία.* Ἐπὶ ὀξείας καταστάσεως ἐπιβάλλεται ἡ κατάκλισις τῆς πασχούσης, ἡ ἐπίθεσις ἐπὶ τοῦ ὑπογαστρίου κύστεως πάγου καὶ ἡ ἀποφυγὴ πάσης τοπικῆς θεραπείας, καὶ αὐτῆς ἀκόμη τῆς δι' ἐργαλείων ἢ διὰ τῶν δακτύλων ἐξετάσεως. Διότι πᾶσα τοιαύτη τοπικὴ ἐπέμβασις εἰς τὸ ὀξὺ στάδιον τῆς νόσου δύναται νὰ ἐπιφέρῃ ἐπέκτασιν τῆς λοιμώξεως εἰς τὰ παρακείμενα ὄργανα καὶ εἰς αὐτὸ τὸ περιτόναιον καὶ ν' ἀναπτυχθῇ περιτονῖτις. Μετὰ τὴν ἐντελῆ πάροδον τοῦ ὀξέος σταδίου τῆς νόσου ἡ θεραπεία εἶναι ἀνάλογος τῶν συμπτωμάτων καὶ ἐπιτυγχάνεται εἴτε διὰ τῆς διαθερμίας εἴτε καὶ ἐν ἀνάγκῃ δι' ἐγχειρήσεως.

***Νεοπλάσματα τῆς μήτρας.*** Ταῦτα διακρίνονται εἰς *καλοήθη* καὶ εἰς *κακοήθη*. Καὶ εἰς μὲν τὰ καλοήθη περιλαμβάνονται τὰ *ἰνομυώματα* (μυώματα—ἰνώματα), εἰς δὲ τὰ κακοήθη τὰ *καρκινώματα*, τὰ *σαρκώματα* καὶ τὸ *χοριοεπιθηλίωμα*.

*Ἰνομυώματα τῆς μήτρας.* Ταῦτα ἀποτελοῦσι νεοπλασματικοὺς τοῦ παρεγχύματος τῆς μήτρας καὶ συνηθέστερον τοῦ σώματος αὐτῆς ὄγκους, ἄλλοτε ἄλλου μεγέθους καὶ σχήματος. Συνίστανται δὲ ἐκ τῶν αὐτῶν ἱστολογικῶν στοιχείων, ἐξ ὧν καὶ τὸ παρέγχυμα τῆς μήτρας, ἐκ λείων δηλαδὴ μυϊκῶν ἰνῶν καὶ διαμέσου συνδετικοῦ ἱστοῦ, καὶ σχηματίζουσι κατὰ τὴν γένεσιν αὐτῶν περιγεγραμμένας ἑστίας, αἵτινες διακρίνονται τοῦ πέριξ παρεγχύματος ἐκ τῆς διογκώσεως τῶν μυϊκῶν κυττάρων. Ἀναλόγως τῆς θέσεως, ἐν ᾗ ταῦτα ἀναπτύσσονται, διαιροῦνται: α') Εἰς *ὑπορογόνια*, ὅταν ταῦτα προέχουσιν ἐπὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ τοιχώματος τῆς μήτρας ὑπὸ τὸν ὀρογόνον ὑμένα, συναπτόμενα ἀμέσως μετ' αὐτοῦ ἢ καὶ διὰ μίσχου. β') Εἰς *ἐνδοτοιχικά*, ὅταν ἀναπτύσσωνται ἐντὸς αὐτοῦ τοῦ μυϊκοῦ χιτῶνος τῆς μήτρας, οὐδόλως προέχοντα εἰς τὸ ἐξωτερικὸν τοίχωμα αὐτῆς ἢ εἰς τὴν κοιλότητα τῆς μήτρας. γ') Εἰς *ὑποβλεννογόνια*, ὅταν ταῦτα προσβάλλωνται εἰς τὸ κοῖλον τῆς μήτρας, προωθοῦντα τὸν βλεννογόνον ὑμένα. δ') Εἰς *ἐνδοσυνδεσμικά*, ὅταν ἀναπτύσσωνται ἐπὶ τοῦ πλαγίου χείλους τῆς μήτρας καὶ μεταξὺ τῶν πετάλων τοῦ πλατέος συνδέσμου. Τὰ δ' ἐπὶ τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας ἀναπτυσσόμενα διαιροῦνται εἰς *ὑπερκολπικά*, ὅταν ἀναπτύσσωνται εἰς τὸ ἀνώτερον ἥμισυ τοῦ τραχήλου, τὸ ἐντὸς τῆς κοιλίας, καὶ εἰς *ἐνδοκολπικά*, ὅταν ἀναπτύσσωνται εἰς τὸ ἐντὸς τοῦ κόλπου τμῆμα τοῦ τραχήλου. Τὰ αἴτια τῆς ἀναπτύξεως τῶν ἰνομυωμάτων εἶναι ἄγνωστα. Τὰ συμπτώματα εἶναι ἀνάλογα τοῦ μεγέθους καὶ τῆς θέσεως, ἐν ᾗ ταῦτα ἀναπτύσσονται. Τὰ συνηθέστερα τῶν συμπτωμάτων εἶναι αἱ μηνο-μητρορραγίαι, οἱ ἐκ πιέσεως πόνοι καὶ ποικίλα ἄλλα ἐνοχλήματα ἐκ τῆς οὐροδόχου κύστεως καὶ τοῦ ἀπευθυσμένου. Κατὰ τὴν ἐξέλιξίν των τὰ συμπτώματα προκαλοῦν ποικίλας ἐπιπλοκάς. Αἱ σοβαρώτεραι παρατηροῦνται, ὅταν συνυπάρχῃ κύησις, καθ' ἥν, ἕνεκα τῆς κατ' ὄγκον αὐξήσεως αὐτῶν καὶ τῆς παραλλαγῆς τῆς θέσεως τῆς μήτρας, συνηθέστατα παρατηροῦνται ἀνώμαλα σχήματα τοῦ ἐμβρύου, ὅπως ἐπίσης καὶ ἀνώμαλος πρόσφυσις τοῦ πλακοῦντος καὶ ἀνάπτυξις αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ κατωτέρου τμήματος τῆς μήτρας (προδρομικὸς πλακοῦς). Κατὰ τὸν τοκετὸν δὲ συχνάκις ἡ δίοδος τοῦ ἐμβρύου διὰ τῆς πυέλου καὶ ἔξοδος αὐτοῦ ἐκ τῶν γεννητικῶν ὀργάνων ἀποβαίνει ἀνέφικτος. Μετὰ τὴν ἔξοδον τοῦ ἐμβρύου ἐπέρχονται συχνάκις αἱμορραγίαι ἕνεκεν ἀτελοῦς ἀποκολλήσεως τοῦ πλακοῦντος ἢ ἐπισχέσεως τμημάτων αὐτοῦ καὶ τῶν ὑμένων. Ἄλλοτε ἀπαντῶσι καὶ φλεγμονώδεις παθήσεις τῶν ἐξαρτημάτων τῆς μήτρας καὶ συμφύσεις μετὰ τῶν παρακειμένων ὀργάνων. Ἐπὶ ὑπορογονίων τοιούτων μισχωτῶν ἐνίοτε ἐπέρχεται περιστροφὴ τοῦ μίσχου καὶ κατ' ἀκολουθίαν ἄλγος ἰσχυρὸν κατὰ τὸ ὑπογάστριον καὶ ἀνάπτυξις περιτονίτιδος. Ἐπίσης σοβαρὰ ἐπιπλοκὴ εἶναι καὶ ἡ ἐπερχομένη ἐνίοτε *νεκροβίωσις* τοῦ ἰνομυώματος, ἥτις συνηθέστερον ἀπαντᾷ εἰς ἐνδοτοιχικὰ τοιαῦτα μετὰ τὸν τοκετὸν ἢ τὴν ἔκτρωσιν. Πλὴν τῶν ἐπιπλοκῶν τούτων ἀπαντῶσιν ἐνίοτε καὶ *ἐκφυλίσεις* τῶν ἰνομυωμάτων, ὡς ἡ *ἰνώδης*, ἡ *τιτανώδης*, ἡ *μυξωματώδης*, ἡ *λιπώδης*, ἡ *ἀμυλοειδής*, ἡ *ὑαλοειδής*, ἡ *τελαγγειεκτασιακὴ* καὶ ἡ *σαρκωματώδης* ἐκφύλισις. Ἡ θεραπεία τῶν ἰνομυωμάτων διέπεται σήμερον ὑπὸ τῆς ἀκτινοθεραπείας καὶ τῆς χειρουργικῆς ἐπεμβάσεως. Ἡ ἀκτινοθεραπεία ἐνδείκνυται μόνον ἐπὶ ἰνομυωμάτων τῆς μήτρας μεγέθους οὐχὶ μείζονος πυγμῆς, τὰ ὁποῖα προκαλοῦν μηνο-μητρορραγίας, οὐχὶ δὲ καὶ πόνους ἢ ἄλλα ἐκ πιέσεως σοβαρὰ ἐνοχλήματα, ἀλλὰ καὶ τότε μόνον ἐπὶ γυναικῶν ἡλικίας ἄνω τῶν 40 ἐτῶν. Διότι διὰ τῆς ἀκτινοθεραπείας ἐπιδιώκεται ἡ ἐπίσχεσις τῶν αἱμορραγιῶν διὰ τῆς καταστροφῆς τῆς ᾠοθηκικῆς λειτουργίας, ἥτις εἶναι ἀπαραίτητος διὰ τὴν γυναῖκα μέχρι τῆς κλιμακτηρικῆς ἡλικίας. Ἐπὶ πασῶν τῶν λοιπῶν περιπτώσεων ἐπιβάλλεται ἡ δι' ἐγχειρήσεως ἐξαίρεσις τῶν ἰνομυωμάτων ἢ καὶ ὁλοκλήρου τῆς μήτρας, ἀναλόγως πάλιν τῆς ἡλικίας τῆς γυναικός· ἐπὶ γυναικῶν λ. χ. κάτω τῶν 40 ἐτῶν ἐνδείκνυται ἡ ἐξαίρεσις μόνον τῶν ἰνομυωμάτων διὰ τῆς ἐκπυρηνίσεως αὐτῶν, οὐχὶ δὲ καὶ τῆς μήτρας, ἐνῷ ἐπὶ γυναικῶν ἄνω τῶν 40 ἐτῶν ἡ ὁμαλὴ ἐξαίρεσις τῆς μήτρας καὶ κατὰ προτίμησιν διὰ λαπαροτομίας.

*Καρκινώματα τῆς μήτρας.* Τὰ κακοήθη ταῦτα νεοπλάσματα τῆς μήτρας προέρχονται ἐκ τοῦ ἐπιθηλίου τοῦ βλεννογόνου αὐτῆς καὶ διαιροῦνται εἰς καρκινώματα τοῦ τραχήλου καὶ εἰς καρκινώματα τοῦ σώματος τῆς μήτρας. Καὶ τὰ μὲν τοῦ τραχήλου ἀπαντῶσι συνηθέστερον εἰς τὰς πολυτόκους, τὰ δὲ τοῦ σώματος εἰς τὰς ἀτόκους γυναῖκας. Τὰ καρκινώματα ἀπὸ παθολογοανατομικῆς ἀπόψεως διαιροῦνται εἰς *στρωτὰ* μετὰ πλακώδους ἐπιθηλίου, καὶ εἰς *ἀδενοειδῆ* μετὰ κυλινδρικοῦ ἐπιθηλίου· τὰ πρῶτα ἀπαντῶσι συνήθως ἐπὶ τοῦ τραχήλου, τὰ δὲ δεύτερα ἐπὶ τοῦ σώματος τῆς μήτρας. Καὶ τὰ μὲν μετ' ἀφθόνων κυττάρων καὶ ἐλλείψεως συνεκτικοῦ ἱστοῦ καλοῦνται *μυελώδη*, τὰ δὲ μετ' ἀφθόνου συνεκτικοῦ ἱστοῦ καλοῦνται *σκῖροι*. Τὰ καρκινώματα τοῦ τραχήλου ἐπὶ νεαρῶν γυναικῶν εἶναι μαλθακά, μυελώδη καὶ κακοηθέστατα. Τὰ καρκινώματα ἔχουσι διάφορον μορφήν, ἤτοι ὁτὲ μὲν *θηλωματώδη*, δίκην ἀνθοκράμβης, ὁτὲ δὲ *ἑλκώδη*, καλούμενα διὰ τοῦτο καὶ *φαγεδαινικοὶ* καρκίνοι, οἵτινες ἀπαντῶσι συνήθως εἰς τὰς προβεβηκυίας ἡλικίας γυναῖκας, εἰς σπανιωτέρας δὲ περιπτώσεις ἔχουσι μορφὴν ὀζώδη. Ὁ καρκίνος ἐπεκτείνεται ταχέως διὰ τῆς συνεχείας τῶν ἱστῶν εἰς σημεῖα μικρᾶς ἀντιστάσεως, εἰς τὰ διάκενα λ. χ. τοῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ, εἰς τὰς θήκας τῶν ἀγγείων καὶ εἰς τὰς λεμφικὰς σχισμάς. Ἡ ἐπέκτασις δ' αὐτοῦ γίνεται καθ' ὅλας τὰς διευθύνσεις. Τὰ συνηθέστερον ἐπεκτεινόμενα εἶναι τὰ καρκινώματα τοῦ τραχήλου, διότι κατὰ τὴν θέσιν ταύτην τὸ λεμφικὸν σύστημα εἶναι λίαν ἀνεπτυγμένον καὶ εὐχερῶς δι' αὐτοῦ ἐπεκτείνεται εἰς τὸ τοίχωμα τοῦ σώματος τῆς μήτρας μέχρι τοῦ πυθμένος αὐτῆς, εἰς τὸ παραμήτριον, εἰς τὸ μυϊκὸν τοίχωμα τῆς οὐροδόχου κύστεως καὶ τοῦ ἀπευθυσμένου καὶ βαθμηδὸν εἰς ὅλα τὰ ὄργανα τῆς πυέλου.

Ὁ καρκίνος ἐν ἀρχῇ τῆς ἀναπτύξεώς του δὲν παρουσιάζει συμπτώματα ἄξια λόγου καὶ δι' αὐτὸ ἡ διάγνωσίς του δὲν ἐπιτυγχάνεται ἐγκαίρως. Ἀλλὰ καὶ αὐτὰ τὰ πρῶτα συμπτώματα, ἤτοι αἱ ἄτακτοι

Digitized by Google

αἱμορραγίαι, παραβλέπονται κατὰ κανόνα παρὰ τῶν γυναικῶν καὶ οὕτως αὗται προσέρχονται εἰς ἰατρικὴν ἐξέτασιν καθ' ἣν ἐποχὴν εἶναι καταδικασμέναι εἰς τὸν θάνατον. Τὰ τοῦ προκεχωρημένου καρκίνου συμπτώματα συνίστανται εἰς ἀτάκτους ἢ συνεχεῖς αἱμορραγίας μετὰ πόνων καὶ κακοσμίας τῶν ἐκκρίσεων τοῦ κολεοῦ καὶ καχεξίας τῆς γυναικός. Πᾶσα ἀνώμαλος ἔμμηνος ῥύσις καὶ ἄφθονος ἔκκρισις τοῦ κολεοῦ πρέπει νὰ ἐμβάλῃ τὴν γυναῖκα εἰς ὑπονοίας καρκίνου, ὀφείλει δὲ αὕτη νὰ ὑποβληθῇ ἐγκαίρως εἰς εἰδικὴν ἐξέτασιν παρὰ γυναικολόγου ἰατροῦ. Διότι ὁ καρκίνος τῆς μήτρας σήμερον ἰᾶται τελείως, μόνον ὅταν ἡ διάγνωσις γίνῃ κατὰ τὸ ἀρχικὸν στάδιον τῆς ἀναπτύξεώς του καὶ ἐξαιρεθῇ ἐγκαίρως ὁλόκληρος ἡ μήτρα καὶ κατὰ ταῦτα ὑποβληθῇ ἡ πάσχουσα εἰς τὴν δέουσαν ἀκτινοθεραπείαν.

*Χοριοεπιθηλίωμα ἢ κακόηθες συγκυτίωμα τῆς μήτρας.* Τὸ νεόπλασμα τοῦτο ἀποτελεῖ κακοήθη ὄγκον μαλθακόν, κυανέρυθρον, προκαλοῦντα ἀφθόνους αἱμορραγίας. Ἀπαντᾷ ὅμως σπανιώτατα καὶ ἰδίως μετὰ τοκετὸν ἢ ἔκτρωσιν καὶ συνηθέστερον μετ' ἀνάπτυξιν βοτρυοειδοῦς μύλης. Ἡ ἀνάπτυξις αὐτοῦ εἶναι ταχεῖα καὶ πληροῖ συνήθως ὁλόκληρον τὴν κοιλότητα τῆς μήτρας, εἰσδύεται δὲ καὶ ἐντὸς τοῦ μητρικοῦ τοιχώματος διαβιβρώσκον αὐτό· ἐνίοτε διατρυπᾷ τὴν μήτραν εἰσερχόμενον ἐντὸς τῆς περιτοναϊκῆς κοιλότητος καὶ ἄλλοτε καὶ ἐντὸς τῶν φαγωγῶν, ὁπότε ἀκολουθεῖ ὁ θάνατος ἐκ περιτονίτιδος. Τὸ χοριοεπιθηλίωμα συνίσταται ἐκ κυττάρων, ἀποτελούντων ἀκανονίστους σωροὺς καὶ προερχομένων ἐκ τοῦ ἐπιθηλιακοῦ περιβλήματος τῶν λαχνῶν. Τὰ κύτταρα δὲ τοῦ νεοπλάσματος τούτου εἰσχωροῦσιν εἰς τὰ τοιχώματα τῶν ἀγγείων καὶ καταστρέφουσι ταῦτα, προκαλοῦντα οὕτως ἀφθόνους αἱμορραγίας. Τὰ συμπτώματα τούτου συνίστανται εἰς ἀκανονίστους, ἀφθόνους κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον αἱμορραγίας, ὧν ἡ ἐπίσχεσις δι' οὐδενὸς θεραπευτικοῦ μέσου ἐπιτυγχάνεται. Ὑπονοίας μεγάλας ὑπάρξεως τούτων παρέχουν αἱ μετὰ τὴν λοχείαν καὶ ἰδίως μετὰ προηγηθεῖσαν βοτρυοειδῆ μύλην ἐπερχόμεναι αἱμορραγίαι. Ἡ πρόγνωσις εἶναι βαρεῖα, διότι κατὰ κανόνα ἐπέρχεται ὁ θάνατος, ἐν τούτοις ἐξαρτᾶται καὶ ἐκ τῆς ἐγκαίρου ἢ μὴ διαγνώσεως καὶ ἐξαιρέσεως τῆς μήτρας, μετὰ τῶν ἐξαρτημάτων αὐτῆς.

*Σαρκώματα.* Εἶναι ὄγκοι κακοήθεις, σαρκώδεις, εὐμεγέθεις, στρογγύλοι, ἡβωτοί, περιβαλλόμενοι καὶ ὑπὸ ἰνώδους θήκης. Συνίστανται ἐκ κυτταρικοῦ παρεγχύματος καὶ ἐλαχίστου διαμέσου οὐσίας, ἀναπτύσσονται ταχέως εἰσδυόμενοι εἰς τὰ παρακείμενα ὄργανα καὶ σχηματίζουσι πολλαπλᾶς μεταστάσεις. Ἀναπτύσσονται συνηθέστερον εἰς τὸ σῶμα τῆς μήτρας καὶ σπανιώτερον εἰς τὸν βλεννογόνον αὐτῆς. Καὶ τὰ μὲν τοῦ σώματος τῆς μήτρας προέρχονται εἴτε ἐκ τοῦ φυσιολογικοῦ μυϊκοῦ τμήματος αὐτῆς, εἴτε καὶ ἐξ ὑφισταμένων ἰνομυωμάτων *(σαρκομυώματα)* καὶ παρίστανται συνήθως μὲν στρογγύλα καὶ περιγεγραμμένα, σπανιώτερον δὲ διάχυτα, καταλαμβάνοντα ὁλόκληρον τὸ σῶμα τῆς μήτρας. Συνηθέστερον ὅμως ἐξελίσσονται ταῦτα ὑποβλεννογονίως καὶ σπανιώτερον ἐνδοτοιχικῶς καὶ ὑπορογονίως. Ἀναλόγως δὲ τοῦ τύπου τῶν κυττάρων, ἐξ ὧν ταῦτα συνίστανται, διακρίνομεν τὰ *μυοκυτταρικὰ* καὶ τὰ *ἀτρακτοειδῆ* σαρκώματα. Ἐνίοτε δ' ἐμφανίζονται καὶ ὡς *καρκινοσαρκώματα*, δηλαδὴ ἐν συνδυασμῷ σάρκωμα καὶ καρκίνωμα. Τὰ δὲ τοῦ βλεννογόνου ὑμένος τῆς μήτρας ἀποτελοῦνται ἐκ μικροστρογγύλων καὶ πολυμόρφων κυττάρων καὶ προέρχονται ἐκ τοῦ βλεννογόνου ὑμένος τοῦ τε σώματος καὶ τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας, παρίστανται δὲ συνήθως περιγεγραμμένα δίκην μεμαλακυσμένων πολυπόδων ἢ διάχυτα, οὕτως ὥστε ὁ βλεννογόνος ὑμὴν παρίσταται ἀνώμαλος καὶ ἡβώδης. Τὰ συμπτώματα τῶν σαρκωμάτων δὲν διαφέρουσι τῶν τῶν ἰνομυωμάτων (αἱμορραγίαι, ἄφθονος λευκόρροια καὶ πόνοι), ἐπομένως ἡ μεταξὺ τούτων διαφορικὴ διάγνωσις εἶναι δυσχερὴς καὶ ἐπιτυγχάνεται μόνον ἱστολογικῶς. Τὸ μόνον χαρακτηριστικὸν τῶν σαρκωμάτων εἶναι ἐν σχέσει πρὸς τὰ ἰνομυώματα ἡ ταχεῖα αὐτῶν ἀνάπτυξις καὶ ἡ ἀπίσχνανσις καὶ καχεξία τῆς πασχούσης. Ἡ πρόγνωσις εἶναι κακίστη, διότι κατὰ κανόνα ἐπέρχεται ὁ θάνατος εἴτε ἐκ διαπυήσεως καὶ ἀποσυνθέσεως τοῦ ὄγκου, εἴτε ἐκ σηψαιμίας ἢ καὶ ἐκ μεταστάσεων εἰς ἄλλα ὄργανα. Ἡ κατάλληλος κατὰ τῶν σαρκωμάτων θεραπεία ἀμφισβητεῖται· τινὲς χειρύσσονται ὑπὲρ τῆς ἐξαιρέσεως αὐτῶν, ἄλλοι ὑπὲρ τῆς δι' ἀκτίνων θεραπείας καὶ ἄλλοι διὰ τοῦ ῥαδίου. Ἐν τούτοις, ἐφόσον ὁ ὄγκος εἶναι ἐξαιρέσιμος, ἐπιβάλλεται ἡ ἐξαίρεσις αὐτοῦ, ἄλλως ἡ ἀκτινοθεραπεία.
Κ. ΛΟΥΡΟΣ

—*[Τεχν.]* Καλεῖται *μήτρα* ἢ *ἐκκολαπτικὸς τύπος* (κοιν. *καλούπι*) εἶδος *ἐπιβολέως* (βλ. λ.), ἐργαλείου ἐκ σκληροῦ μετάλλου φέροντος κοίλην ἢ κυρτὴν ἀποτύπωσιν τοῦ σχήματος, τὸ ὁποῖον θέλομεν νὰ δώσωμεν εἰς τεμάχιον μετάλλου πεπυρακτωμένον ἢ ψυχρόν, κτυπῶντες ἢ πιέζοντες ἐπ' αὐτοῦ τὸ ἐργαλεῖον. Χρησιμοποιεῖται ἐπίσης διὰ κοπὴν νομισμάτων, μεταλλίων, ὡς καὶ διὰ κατεργασίαν ἄλλων οὐσιῶν ἐκτὸς τῶν μετάλλων (βλ. λ. *ἐπιβολή*). Ὁ ὅρος μήτρα χρησιμοποιεῖται καὶ διὰ μεταλλίνους τύπους χυτηρίου, ὡς π. χ. εἰς τὴν τυπογραφίαν, ὅπου χρησιμοποιοῦνται χαλύβδινοι μῆτραι διὰ τὴν κατασκευὴν στοιχείων τυπογραφικῶν, ὡς καὶ διὰ τὴν στερεοτυπίαν, ὅπου μήτραν θετικὴν ἀποτελεῖ ἡ στοιχειοθετημένη πλὰξ ἐκ συνήθων στοιχείων· ἐκ ταύτης σχηματίζεται ἀρνητικὴ ἐν εἰσοχῇ μήτρα ἐκ χαρτονίου, ἐξ ἧς χύνεται ἡ πλὰξ στερεοτυπίας. Ὁμοίως διὰ τὰς φωτογραφικὰς πλάκας κατασκευάζεται ἐκ τῆς πρωτοτύπου πλακὸς θετικὴ μήτρα καὶ εἶτα ἀρνητικὴ μήτρα διὰ τὴν ἐκτύπωσιν, διὰ πιέσεων, πλακῶν ὁμοίων πρὸς τὴν πρωτότυπον εἰς οἱονδήποτε ἀριθμόν.
Θ. Χ.

—**μήτρα δίαυλος** ἢ **διθάλαμος** *[Ἀνατομ.]*. Μήτρα δύσμορφος, ἥτις ἐξωτερικῶς μὲν ἐμφανίζεται ἑνιαία καὶ ὡς ἔχουσα τὸ κατὰ φύσιν σχῆμα, ἐσωτερικῶς δὲ διῄρηται διὰ διαφράγματος εἰς δύο κοιλότητας.
Ι. Π.

—**μήτρα δίδελφυς** ἢ **διφυής** *[Ἀνατομ.]*. Ἀνωμαλία τῆς διαπλάσεως τῆς μήτρας, καθ' ἣν οἱ δύο μυλλέρειοι πόροι, ἐξ ὧν γεννᾶται ἡ μήτρα, δὲν συγχωνεύονται, ἀλλ' ἑκάτερος διαπλάσσεται ἀνεξάρτητος εἰς μήτραν· ἀπαντᾷ δὲ μονίμως αὕτη παρὰ τοῖς μαρσιποφόροις.
Ι. Π.

—**μήτρα δίκερως** ἢ **δίκρους** *[Ἀνατομ.]*. Ἀνωμαλία τῆς διαπλάσεως, καθ' ἣν ἡ μήτρα χωρίζεται πρὸς τὰ ἄνω εἰς δύο μέρη ἢ κέρατα.
Ι. Π.

**Μήτρα** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ θεσσαλικοῦ ἥρωος Ἐρυσίχθονος, καλουμένη καὶ *Μήστρα* (βλ. λ.).
Α. Θ. Σ.

**Μητραγάθης**, ἢ **Μητρογάθης**. Γενναῖος Πέρσης στρατηγός, συνεκστρατεύσας μετὰ τοῦ Ξέρξου κατὰ τῆς Ἑλλάδος ὡς ἀρχηγὸς τῶν Λυδῶν (*Αἰσχ. Πέρσ.* 43).
Α. Θ. Σ.

**μητραγύρται** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λέξις σύνθετος ἐκ τοῦ *μήτηρ* καὶ *ἀγύρτης*, σημαίνουσα τοὺς ἱερεῖς τῆς Μητρὸς τῶν Θεῶν, τῆς θεᾶς Κυβέλης, οἵτινες ἐξήσκουν τὸ ἱερατικὸν αὐτῶν ἐπάγγελμα περιφερόμενοι ἀνὰ τὴν χώραν, ἐπαιτοῦντες ἐν ὀνόματι τῆς θεᾶς καὶ λαμβάνοντες, ἀπέναντι θρησκευτικῶν ἀφορισμῶν, τοὺς ὁποίους ἀπήγγελλον εἰς τοὺς πιστοὺς πρὸς ἄφεσιν τῶν ἁμαρτιῶν των, ἐνδύματα καὶ τρόφιμα, τὰ ὁποῖα ἐφόρτωνον ἐπὶ ὄνου. Ἐν Ἀθήναις καὶ Ῥώμῃ οἱ μητραγύρται προὐκάλουν τὸν χλευασμὸν καὶ τὴν περιφρόνησιν τῶν κατοίκων διὰ τὴν ἀθλίαν αὐτῶν ἐμφάνισιν καὶ τὸ ἀναξιοπρεπὲς τοῦ ἐπαγγέλματος.
Β. Δ. Θ.

**μητράδελφος** (ὁ), θηλ. *μητραδέλφη*· ὁ ἀδελφός, ἡ ἀδελφὴ τῆς μητρός, ὁ πρὸς μητρὸς θεῖος ἢ θεία.

**μητραλγία** (ἡ). Πόνοι κατὰ τὸ ὑπογάστριον καὶ τὴν ὀσφύν, προερχόμενοι ἐκ ποικίλων παθήσεων τῆς μήτρας, ἐκ μητρίτιδος, ἐνδομητρίτιδος ἢ καὶ συστολῶν τῆς μήτρας κατὰ τὴν ἔμμηνον ῥύσιν (δυσμηνόρροια).
Κ. Λ.

**μητραλοίας** (ὁ)· ὁ φονεὺς τῆς μητρός, μητροκτόνος.

**Μητρέας.** Ἀρχαῖος ποιητὴς ἐξ Αἰολίδος (βλ. λ. *Μάτρων*).

**μητρεγχύτης** (ὁ). Καθετὴρ μετάλλινος διπλοῦ ῥεύματος, χρησιμοποιούμενος δι' ἐνδομητρίους διακλυσμούς, ἰδίως μετὰ τὸν τοκετὸν ἢ κατὰ τὴν λοχείαν πρὸς διοχέτευσιν ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοι-

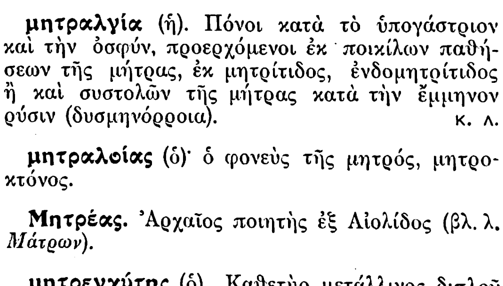

*Μητρεγχύτης τοῦ Doleris.*

λότητος θερμοῦ ὕδατος ἀπεστειρωμένου ἢ διαλύματος ἀντισηπτικοῦ διὰ θεραπευτικὸν σκοπόν. Ἄλλοτε ἐγίνετο μεγάλη χρῆσις τῶν τοιούτων διὰ τοῦ μητρεγχύτου διακλυσμῶν, σήμερον ὅμως σπανίως καταφεύγομεν εἰς τούτους.
Κ. Λ.

**μητρέμφραξις** (ἡ). Ἀπόφραξις τοῦ στομίου τῆς μήτρας, ὀφειλομένη εἴτε εἰς διαμαρτίαν περὶ τὴν διάπλασιν, εἴτε εἰς φλεγμονήν, εἴτε εἰς συγκόλλησιν τῶν χειλέων τοῦ ἐξωτερικοῦ μητρικοῦ στομίου, ἀποτόκου θεραπευτικῶν ἐπεμβάσεων. Κατὰ ταύτην ἐπέρχεται συσσώρευσις τοῦ κατὰ πᾶσαν ἔμμηνον ῥύσιν αἵματος ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος καὶ σχηματίζεται ἡ λεγομένη *αἱματομήτρα*, ὅπως ἐπίσης παρακωλύεται καὶ ἡ ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος εἴσδυσις τῶν κατὰ τὴν συνουσίαν σπερματοζωαρίων καὶ ἐπακολουθεῖ ἡ στείρωσις. Ἄλλοτε ὅμως ἡ τοιαύτη ἀπόφραξις τοῦ μητρικοῦ στομίου γίνεται μετὰ τὴν σύλληψιν, κατὰ τὰς πρώτας ἑβδομάδας τῆς κυήσεως, ἕνεκα φλεγμονῆς, καὶ καλεῖται *σύμφυσις* τῶν χειλέων τοῦ μητρικοῦ στομίου, ἥτις παρέχει μεγάλας πολλάκις κατὰ τὸν τοκετὸν ἀνωμαλίας, ἰδίως τὴν μὴ κανονικὴν διαστολὴν τοῦ μητρικοῦ στομίου καὶ τὴν ὑπερδιάτασιν τοῦ κατωτέρου τμήματος τῆς μήτρας, ἕνεκα τῆς ὁποίας δύναται νὰ ἐπέλθῃ ῥῆξις τῆς μήτρας. Κατὰ τὰς περιπτώσεις ταύτας ἐπιβάλλεται ἡ ἀναίμακτος ἢ δι' ἐγχειρήσεως διάνοιξις τοῦ μητρικοῦ στομίου.
Κ. Λ.

**μητριαῖον** *ὄγκωμα* *[Ἀνατομ.]*. Ἀκρολοφία ἐγκαρσία ὄπισθεν τοῦ αὐχένος τῆς μήτρας παρὰ τὸν ἰσθμὸν αὐτῆς, σχηματιζομένη ἐκ τῆς συνηνωμένης καταφύσεως τῶν δύο εὐθυμητρικῶν (ἱερομητρικῶν) συνδέσμων.
Ι. Π.

**μητριαρχία** (ἡ) (ἢ ***μητρικὸν δίκαιον*** καὶ ***γυναικοκρατία***). Καλεῖται οὕτω τὸ κοινωνικὸν ἐκεῖνο σύστημα, κατὰ τὸ ὁποῖον ἡ γυνὴ ὑπερέχει εἴς τε τὴν οἰκογένειαν καὶ τὴν πολιτείαν, καὶ ὡς ἐκ τούτου ἡ καταγωγὴ καὶ κληρονομία προβαίνει κατὰ μητρικὴν γραμμὴν καὶ ἡ διοίκησις τῶν κοινῶν ἀνήκει εἰς τὰς γυναῖκας.

Μητριαρχικὴ κοινωνικὴ ὀργάνωσις ἀπαντᾷ εἰς τὴν πρωτόγονον ἱστορίαν τοῦ ἀνθρώπου, εἰς τὰ πρῶτα βήματα τοῦ πολιτισμοῦ, ὁπότε ὁ γάμος δὲν ἦτο κοινωνικὸς θεσμὸς καὶ ἑπομένως οὐδὲ ἡ οἰκογένεια εἶχε τὴν σημερινὴν αὐτῆς μορφήν. Ἡ γυνὴ ἀνῆκε τότε εἰς ὁλόκληρον ἴσως τὴν φυλὴν καὶ εἰς τὸν κατὰ φύσιν ἐκεῖνον βίον καὶ τὴν ἐλευθέραν μεῖξιν τῶν φύλων μόνον ἡ μητρότης ἦτο ἀσφαλής. Ὁ ἀνὴρ οὐδὲν καθῆκον εἶχεν ἀπέναντι τῶν γεννωμένων, τὰ ὁποῖα μόνον τὴν μητέρα ἐγνώριζον καὶ μόνον εἰς αὐτὴν ἀνῆκον.

Ἡ τοιαύτη μορφὴ κοινωνικῆς ὀργανώσεως ἐμελετήθη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Ἑλβετοῦ κοινωνιολόγου Bachofen. Οὗτος, στηριχθεὶς κυρίως εἰς τοὺς ἀρχαίους συγγραφεῖς καὶ τὴν μυθολογίαν, ἀνέπτυξε τὴν περὶ μητρικοῦ δικαίου θεωρίαν του. Κατὰ ταύτην εἰς τὰ πρωτόγονα γένη, τῶν ὁποίων χαρακτηριστικὸν ἦτο ἡ πολυανδρία, μία γυνὴ εἶναι ἡ γενάρχης μὲ σχετικὴν ὑπεροχὴν καὶ κυριαρχικὴν θέσιν. Εὐθὺς ὡς διὰ τῆς γενέσεως τῆς ἰδιοκτησίας ἐδημιουργήθη τὸ κληρονομικὸν δικαίωμα, περιωρίσθη τοῦτο μόνον ἐπὶ τῆς μητρικῆς γραμμῆς, καθόσον ἡ πατρότης οὐδέποτε ἠδύνατο νὰ πιστοποιηθῇ μετὰ βεβαιότητος. Ἡ γένεσις αὕτη τοῦ μητρικοῦ δικαίου ὀφείλεται κατὰ τὸν Bachofen εἰς ἰδιαιτέραν τινὰ διάθεσιν τῆς ψυχῆς τῶν ἀνθρώπων. Ἡ ἀνθρωπότης πρὶν ἢ φθάσῃ εἰς τὸ πατρικὸν δίκαιον διῆλθε διὰ τῆς μητριαρχικῆς ὀργανώσεως καὶ συνεπῶς αὕτη δέον νὰ θεωρηθῇ ὡς μία βαθμὶς τῆς ἐξελίξεως τῆς ἀνθρωπότητος. Ἡ πτῶσις τῆς κυριαρχίας τῆς γυναικὸς ὀφείλεται ἐπίσης εἰς τὴν μεταβολὴν τῆς ψυχικῆς διαθέσεως τοῦ ἀνθρώπου, συμπίπτει δὲ πρὸς τὴν ἀνὰ ζεύγη λεγομένην οἰκογένειαν, ἡ ὁποία προσδιώρισε σαφέστερον τὴν ἔννοιαν τοῦ γάμου διὰ τοῦ αὐστηροῦ ἀποκλεισμοῦ τῆς πολυανδρίας. Ἡ ἀνὰ ζεύγη αὕτη οἰκογένεια ἐπετέλεσε πολλά, ἀλλὰ δὲν κατώρθωσε συντόμως νὰ ἐξαλείψῃ ὁλοσχερῶς τὰς ἐπιδράσεις τοῦ ἀρχικοῦ γενετικοῦ κομμουνισμοῦ, αἵτινες μόνον σὺν τῷ χρόνῳ ἐξηλείφθησαν.

Τὸν Bachofen, πλὴν ἄλλων, ἠκολούθησε καὶ συνεπλήρωσεν ὁ Ἀμερικανὸς κοινωνιολόγος Morgan. Τὰ συμπεράσματα τῶν δύο τούτων ἀνδρῶν προσέβαλον καὶ ἐπολέμησαν ὁ C. Starcke καὶ ὁ E. Westermarck, ὑποστηρίξαντες ὅτι ἡ ἀνθρωπότης δὲν ἔφθασε διὰ τῆς ἐξελίξεως ἐκ τῆς ἀρχικῆς ἐλευθέρας μείξεως τῶν φύλων καὶ τοῦ κατὰ φύσιν βίου εἰς τὴν μονογαμίαν, ἀλλ' ὅτι καὶ εἰς τὰς πρωτογόνους ὁρδὰς ἐπεκράτει ἐνστικτός τις προτίμησις πρὸς μονογαμικοὺς συζυγικοὺς τύπους. Τοῦ Westermarck μάλιστα εἶναι φανερὰ ἡ προσπάθεια, ὅπως κατασκευάσῃ ἓν θεμελιῶδες μονογαμικὸν ἔνστικτον τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως.

Ἀμφότεραι αὗται αἱ θεωρητικαὶ ἀκρότητες (Bachofen-Mestermarck) ἀπεκρούσθησαν ὑπὸ πολλῶν (Mommsen, Nundt, E. Rode, Usener, Deniker, Ἐλευθερόπουλος, Stein κ. ἄ.), ἐπεκράτησε δὲ ἡ θεωρία ὅτι εἴς τινας μὲν πρωτογόνους λαοὺς ἀνεπτύχθη τὸ μητρικὸν δίκαιον καὶ εἶτα διὰ τῆς ἐξελίξεως ἐγεννήθη τὸ πατρικόν, εἰς ἄλλους δὲ εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς, προετιμήθησαν ἐξ ἐνστίκτου οἱ μονογαμικοὶ τύποι καὶ συνεπῶς ἐπεκράτησε τὸ πατρικὸν δίκαιον.

Βραδύτερον ἠγέρθη νέον ζήτημα, ἂν δηλαδὴ ἡ ψυχικὴ διάθεσις τοῦ ἀνθρώπου γεννᾷ τοῦτο ἢ ἐκεῖνο τὸ κοινωνικὸν σύστημα, ἢ αἱ φυσικαὶ συνθῆκαι καὶ δὴ τὰ οἰκονομικὰ αἴτια. Τὸ ζήτημα τοῦτο ἀνεκίνησεν ὁ F. Engels, ὁ μετὰ τοῦ K. Marx δημιουργὸς τῆς θεωρίας τοῦ ἱστορικοῦ ὑλισμοῦ, ὅστις εἰς τὸ ἔργον του: «Καταγωγὴ τῆς οἰκογενείας, τῆς ἰδιοκτησίας καὶ τοῦ κράτους», ἐξηγεῖ τὴν μητριαρχικὴν ὀργάνωσιν ὡς ὀφειλομένην εἰς ὡρισμένα οἰκονομικὰ αἴτια. Καὶ ἐφ' ὅσον μὲν ὑπῆρχον ταῦτα, ἐξηκολούθει καὶ τὸ μητρικὸν δίκαιον, ὅταν δ' ἐξέλιπον, ὡς συνέβη εἰς τὰς φυλὰς τῶν κυνηγῶν μετὰ τὴν ἐφεύρεσιν τῶν διαφόρων πρωτογόνων ὅπλων, ἀνετράπη τὸ κοινωνικὸν τοῦτο σύστημα.

Τὴν θεωρίαν ταύτην τοῦ F. Engels ἐπεκύρωσαν νεώτεραι ἔρευναι. Ἰδίως ἡ σχολὴ τῶν ἐθνολόγων τῆς Βιέννης (G. Schmidt καὶ G. Koppers) ὑπεστήριξε τὴν θεωρίαν ταύτην ἐμμέσως διὰ τῆς θεω-

Digitized by Google

ρίας αὐτῆς περὶ τῶν κύκλων τοῦ πολιτισμοῦ. Κατὰ ταύτην ἡ προϊστορία τῆς ἀνθρωπότητος ὡρμήθη ἐκ τριῶν διαφόρων πρὸς ἀλλήλους κύκλων πολιτισμοῦ, τῶν ὁποίων οἱ χαρακτῆρες ἀπετέλεσαν ὁρμητήρια καὶ οὐχὶ διαδοχικῶς ἀναπτυχθείσας βαθμίδας ἐξελίξεως. Κατὰ τὴν σχολὴν τῆς Βιέννης, τὸ μητρικὸν δίκαιον μένει σταθερώτερον εἰς τὸν κύκλον τῶν γεωργῶν, καὶ τοῦτο ἴσως διότι εἰς τὸν γεωργικὸν βίον ἡ γυνὴ ἦτο σπουδαῖος παράγων τῆς ἐργασίας. Τὴν μητριαρχικὴν ὀργάνωσιν, ὡς οἰκονομικὸν σύστημα, ἦλθον ἐσχάτως νὰ καταπολεμήσουν νεώτεροι ἑρμηνευταὶ τοῦ Bachofen, δεχόμενοι τὸ μητρικὸν δίκαιον ὡς θρησκευτικὸν φαινόμενον. Ἰδίως ὁ Paul Honigsheim προσπαθεῖ νὰ ἐμφανίσῃ τὸ μητρικὸν δίκαιον ὡς εἰδικὴν θρησκευτικὴν διάθεσιν, τείνουσαν μάλιστα πρὸς τὴν μαγείαν. Παρὰ τὰς προσπαθείας τοῦ Honigsheim, τὰ αἴτια τοῦ μητρικοῦ δικαίου πρέπει νὰ εἶναι ὡρισμέναι βιοτικαὶ συνθῆκαι. Αὗται, ἰδίως εἰς ἀγροτικοὺς καὶ γεωργικοὺς πληθυσμούς, εἶναι δυνατὸν νὰ γεννήσουν τὸ μητρικὸν δίκαιον, οὐ μόνον εἰς τὴν πρωτόγονον ἐποχὴν ἀλλὰ καὶ εἰς πᾶσαν χρονικὴν περίοδον. Ἐπιβίωσιν ἴσως τοῦ παλαιοῦ τούτου κοινωνικοῦ συστήματος ἀποτελεῖ ἡ εἴς τινας χώρας (καὶ παρ' ἡμῖν πλεισταχοῦ) ἀπαντῶσα συνήθεια τοῦ λαμβάνειν τὸ ἐπίθετον ὄχι τοῦ πατρός, ἀλλὰ τῆς μητρός. Ν. Ι. Ζ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. J. Bachofen*, Mutterrecht und Urreligion (Leipzig 1927). —*F. Engels*, Der ursprung der Familie des Privateigentums und des Staats (ἐκδ. 23η Berlin 1928 καὶ ἑλλην. μετάφρ. ὑπὸ *Ἰ. Σιδέρη* ἐν «Κομμουνιστικῇ Ἐπιθεωρήσει» τόμ. Α' (1921). —*R. H. Lowie*, Primitive Society (1921). —*W. H. R. Rivers*, Social Organisations (1924). *W. Schmidt* u. *W. Koppers*, Der Mensch aller Zeiten τόμ. Γ' μέρ. α': Gesellschaft und Wirtschaft der Wölker. —*P. Honigsheim* Sociologische Fragestellungen in der gegenwärtigen prähistorischen und ethnologischen Literatur (ἐν «Kölner Vierteljahrshefte für Sociologie» 7 Jahrg. τεῦχ. 3 καὶ 4, 1928). —*H. Muklestein*, Die geburt des Abendlandes. —*Baumann*, Vaterrecht und Mutterrecht in Africa (ἐν «Zeitschrift für Ethonologie» 1928 τ. 58). —*M. Briffault*, The Mothers (1927). —*J. F. Melennan*, Partriarchal Theory (London 1885). —*Westermarck*. History of Human Marriage (1894). —*A. Giraud-Teulon*, La mère chez certains peuples de l'antiquité (Paris 1867). *Τοῦ αὐτοῦ*, Les Origines du mariage et de la famille (Genève-Paris 1884). —*L. H. Morgan*, Systems of Consanguinity and Affinity of Human Family (ἐν «Smithsonian Contributions to Knowledge» τόμ. 17 Washington 1871). —*C. N. Starcke*, The Primitive Family (London 1889). —*A. Μπέμπελ*, Γυνὴ καὶ κοινωνισμὸς (ἑλλ. μετ. Ἀθῆναι 1920).

**μητρικὰ** (τά)· τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὴν μήτραν νοσήματα, ἐνοχλήσεις ἢ παθήσεις τῆς μήτρας: «ὑποφέρει ἀπὸ μητρικά».

**Μητρικὸν** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Παγουρίων τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 140. Χ. Δ.

**μητρικός**, *—ή, —όν* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μητέρα, ὁ τῆς μητρός: «μητρικὴ στοργή, —ἀγάπη, —αὐτοθυσία» ‖ «μητρικὴ περιουσία» ἡ εἰς τὴν μητέρα ἀνήκουσα περιουσία, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὴν πατρικήν» ‖ «μητρικὴ γλῶσσα», ἡ γλῶσσα τὴν ὁποίαν μανθάνει τις φυσικῶς παρὰ τῆς μητρός του: «ποία εἶναι ἡ μητρική σου γλῶσσα;» «ὁμιλεῖ τὴν ἀγγλικὴν εὐχερῶς ὡς μητρικήν του γλῶσσαν». — Ἐπίρρ. *μητρικῶς*.

**—μητρικὸν δίκαιον**· βλ. λ. *μητριαρχία*.

**μητρικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μήτραν, ὁ τῆς μήτρας: «μητρικὴ συμφόρησις», «νοσήματα μητρικὰ» ἢ ἁπλῶς «*μητρικὰ*» (βλ. λ.).

**—μητρικὸν ἕλκος**. Τοιοῦτον ἕλκος ἀπαντᾷ ἐπὶ τοῦ στομίου τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας εἴτε *φλεγμονῶδες*, εἴτε *ἀφροδίσιον*, εἴτε *καρκινῶδες* εἶναι. Καὶ τὰ μὲν φλεγμονώδη ἕλκη προέρχονται ἐκ τῶν βλεννογόνων θυλακίων τοῦ τραχήλου, ἅτινα φλεγμαινόμενα διαπυΐσκονται καὶ εἶτα ῥήγνυνται, καταλείποντα μικρὰς θυλακοειδεῖς ἐξογκώσεις. Τὰ ἀφροδίσια προέρχονται ἐκ γονοκοκκικῆς μολύνσεως καὶ καλοῦνται *μαλακὰ* ἕλκη ἢ καὶ ἐκ συφιλιδικῆς μολύνσεως, καλούμενα *σκληρά*. Τὰ δὲ καρκινώδη παρίστανται ὡς μικρὰ ἐγκαύματα μᾶλλον ἢ ἧττον σκληρὰ καὶ προέχοντα, προκαλοῦσι δὲ ἔκκρισιν κάκοσμον καὶ εὐκόλως αἱμορραγοῦσιν αὐτομάτως ἢ καὶ τῇ ἁπλῇ αὐτῶν θίξει. Κ. Λ.

**μητρῖτις**, *—ιδος* (ἡ) *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *μήτρα*.

**Μήτροβιτς** (σλαβ. *Σρέμσκα Μητρόβιτσα*) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας, ὑπαγομένη πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Κεῖται ΒΔ. τοῦ Βελιγραδίου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς, καὶ ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Σαύου. Κάτ. 12.000. Εἶναι τὸ *Σύρμιον* τῶν Ρωμαίων, τὸ ὁποῖον διὰ τῆς εἰς αὐτὸ μεταφορᾶς τῶν λειψάνων τοῦ Ἁγίου Δημητρίου μετωνομάσθη ὑπὸ τῶν Σλάβων εἰς *Δημητρόβιτσαν* καὶ κατόπιν, διὰ τῆς συγκοπῆς τῆς πρώτης συλλαβῆς, εἰς *Μητρόβιτσαν*. Κατὰ τὰ τέλη τοῦ μεσαίωνος ἡ πόλις ἤκμαζεν ἐμπορικῶς, μέχρις ὅτου περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν Τούρκων, οἵτινες ἐλεηλάτησαν ἐπανειλημμένως αὐτήν, καταστρέψαντες πάντα τὰ ἀρχαῖα κτήρια της (1396 καὶ 1521). Ἤρχισε πάλιν ἀναλαμβάνουσα ἀπὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Γ. Ι. Β.

**Μητροβίτσα** *(Κόζοφσκα—) [Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Σίτνιτσα καὶ Ἴμπαρ. Κάτ. 8.000 ἀσχολούμενοι εἰς τὴν ὑλοτομίαν. Εἶναι νέα πόλις, ἧς ἡ κτίσις ἤρχισεν ἀπὸ τῆς ἐποχῆς, καθ' ἣν κατεσκευάσθη ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Θεσσαλονίκης—Σκοπίων, τῆς ὁποίας ἦτο ὁ ἀκραῖος σταθμός. Ἡ γραμμὴ αὕτη ἐπρόκειτο νὰ συνδεθῇ μετὰ τῶν αὐστριακῶν σιδηροδρόμων. Ἀλλὰ κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ Κ' αἰῶνος τὸ ὑπὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Αὐστροουγγαρίας κόμητος Αἰρένταλ ἐξαγγελθὲν σχέδιον τῆς ἑνωτικῆς γραμμῆς Οὔβατς—Μητροβίτσης προὐκάλεσε ζωηρὰν ἀντίστασιν ἐκ μέρους τῆς Ρωσίας καὶ τῆς συμμάχου αὐτῆς Γαλλίας, ὑποστηριζουσῶν τὴν Σερβίαν. Ὡς ἀντίρροπον ἐρρίφθη τὸ σχέδιον τοῦ σιδηροδρόμου Δουνάβεως-Ἀδριατικῆς. Ἐπελθόντων ὅμως κατόπιν τοῦ Βαλκανικοῦ καὶ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἀμφότερα τὰ σχέδια ἐματαιώθησαν, καταστάντα ἀνωφελῆ μετὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ γιουγκοσλαβικοῦ κράτους. Ν. Μ.

**μητροδιαστολεύς**, *— έως* (ὁ). Ὄργανον, δι' οὗ διενεργεῖται ἡ διαστολὴ τοῦ μητρικοῦ στομίου. Τοιοῦτοι μητροδιαστολεῖς ὑπάρχουσι διάφοροι, ὧν γίνεται χρῆσις ἀναλόγως τῶν περιπτώσεων. Οὕτω, προκειμένου νὰ ἐκτελεσθῇ ἀπόξεσις ἢ ἄλλη τις ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος ἐπέμβασις, ἡ πρὸ ταύτης διαστολὴ τοῦ μητρικοῦ στομίου εἶναι ἀπαραίτητος καὶ ἐκτελεῖται συνήθως διὰ τῶν λεγομένων *κηρίων* τοῦ Hégar, ἅτινα εἶναι μετάλλινοι στειλεοὶ ἐπινικελωμένοι μήκους 10—14 ἑκτ. ἄνευ τῆς χειρολαβῆς. Τὸ πάχος αὐτῶν ἄρχεται ἀπὸ 2—25 χιλ., τὸ δὲ ἄκρον αὐτῶν εἶναι λεπτότερον. Πρὸς διαστολὴν τοῦ μητρικοῦ στομίου διὰ τῶν κηρίων τοῦ Hégar, ἀφοῦ πρῶτον ἀπολυμανθῶσι τὰ γεννητικὰ ὄργανα καὶ τὰ κηρία, συλλαμβάνομεν τὸν τράχηλον διὰ δύο μητρολαβίδων, ἕλκομεν αὐτὸν πρὸς τὰ ἔξω ἠπίως καὶ εἶτα εὐοδιάζομεν τὰ κηρία τὸ ἓν μετὰ τὸ ἄλλο, ἀρχόμενοι ἀπὸ τὸ λεπτότερον, καὶ κατὰ διαλείμματα, ἀναλόγως τῆς διασταλτικότητος τῆς μήτρας. Πλὴν τῶν κηρίων τοῦ Hégar πολλοὶ χρησιμοποιοῦν διὰ τὸν αὐτὸν σκοπὸν καὶ τὴν ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος εἰσαγωγὴν οὐσιῶν ἐξοιδαινομένων, αἵτινες καλοῦνται *λαμινάριαι*. Αὗται ἔχουσι σχῆμα ῥαβδίου βραχέος, εἶναι δὲ μᾶλλον σκληραί. Τὸ ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος εἰσαγόμενον ἄκρον αὐτῶν εἶναι ὀξύ, τὸ δ' ἐκτὸς ταύτης παραμένον εἶναι παχύτερον, φέρει δ' ὀπὴν δι' ἧς προσδένεται ῥάμμα. Αἱ λαμινάριαι αὗται φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον ἀπεστειρωμέναι, εἰς διάφορα πάχη, ἐντὸς ὑαλίνων σωληναρίων. Ἡ λαμινάρια ἔχει τὴν ἰδιότητα εἰσαγομένη ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος νὰ διογκοῦται βαθμιαίως, διαποτιζομένη ὑπὸ τῶν ἐκκρίσεων τῆς μήτρας καὶ οὕτως ἐπιφέρει τὴν διαστολὴν τοῦ τραχήλου. Εἰσάγεται δ' αὕτη ἐντὸς τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος καὶ ἐντὸς τῆς κοιλότητος τοῦ σώματος τῆς μήτρας, συλλαμβανομένη, ὡς ἐκ τοῦ μικροῦ μήκους αὐτῆς, διὰ λαβίδος. Μετὰ τὴν τοποθέτησιν ταύτης ἐπιπωματίζομεν τὸν κολεὸν πρὸς παρακώλυσιν τῆς πρὸς τὰ ἔξω ἐξωθήσεως αὐτῆς. Μετὰ 24 ὅμως ὥρας ἐξάγομεν τὴν λαμινάριαν, ἕλκοντες αὐτὴν ἀπὸ τοῦ ῥάμματος. Πρὸς διαστολὴν ὅμως τοῦ μητρικοῦ στομίου κατὰ τὸν τοκετόν, ὁσάκις ὑφίσταται ἀνάγκη ἐπισπεύσεως τοῦ τοκετοῦ ἢ διακοπῆς τῆς κυήσεως κατὰ τοὺς τελευταίους μῆνας αὐτῆς, γίνεται χρῆσις τῆς *ἀδιαστάλτου κύστεως*, συνισταμένης ἐκ λεπτοῦ μεταξίνου ἱστοῦ περιβαλλομένου ἔξωθεν καὶ ἔσωθεν δι' ἐλαστικοῦ κόμμεως καὶ συνδεομένης διὰ μεταλλίνου σωλῆνος, φέροντος εἰς τὸ ἄκρον στρόφιγγα. Πρὸς ἐκτέλεσιν δὲ τῆς διαστολῆς τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας διὰ τῆς κύστεως ταύτης, ἐνδιπλοῦμεν αὐτήν, ἀφοῦ προηγουμένως βρασθῇ, κατὰ μῆκος εἰς πολλὰς πτυχάς, ὥστε νὰ καταστῇ αὕτη ὅσον οἷόν τε λεπτοτέρα, μεθ' ὃ συλλαμβάνομεν αὐτὴν μεταξὺ τῶν σκελῶν ἐμβρυουλκοειδοῦς λαβίδος καὶ φέρομεν διὰ τῆς τραχηλικῆς κοιλότητος εἰς τὰ ἐντὸς τῆς μητρικῆς κοιλότητος. Μετὰ ταῦτα ἐφαρμόζομεν ἐπὶ τοῦ ἄκρου τοῦ μεταλλίνου σωλῆνος τὸ ἄκρον τοῦ ἐλαστικοῦ σωλῆνος τοῦ καταιονητῆρος, περιέχοντος 300—500 κ. ὑφ. ἀπεστειρωμένου ὕδατος καὶ εἶτα ἐξάγοντες τὴν λαβίδα ἐκ τῆς μήτρας διανοίγομεν τὴν στρόφιγγα τοῦ σωλῆνος τῆς κύστεως, ἥτις πληρουμένη ὕδατος διατείνεται τελείως, διαστελλομένου οὕτως ἐντὸς 4—6 περίπου ὡρῶν τοῦ τραχήλου μέχρι τῆς πλήρους διαστολῆς τοῦ στομίου. Ὁσάκις ὅμως κατὰ τὸν τοκετὸν παρίσταται ἀνάγκη ταχείας διαστολῆς τοῦ μητρικοῦ στομίου, γίνεται χρῆσις ὑπό τινων καὶ τῶν μεταλλίνων διαστολέων τοῦ Bossi καὶ τοῦ Frommer. Καὶ ὁ μὲν μητροδιαστολεὺς τοῦ Bossi συνίσταται ἐκ 4 σκελῶν, στηριζομένων διὰ κοχλιῶν ἐπὶ πλαισίου στερεοῦ ἐλάσματος καὶ διασταυρουμένων πρὸς ἄλληλα, οὕτως ὥστε κεκλεισμένος νὰ ἀπολήγῃ εἰς κῶνον. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς δ' ἑκάστου σκέλους προσαρμόζονται καὶ ἀνὰ μία καλύπτρα μεταλλίνη, καταλήγουσα εἰς κυρτὰ πρὸς τὰ ἔξω ἄκρα καὶ φέρουσα ἐπὶ τῶν ἐξωτερικῶν αὐτῆς ἐπιφανειῶν αὔλακας. Ἐπὶ τοῦ ἑτέρου ἄκρου τοῦ ἐλάσματος ὑπάρχει στρόφιγξ, ἥτις πρὸς τὰ δεξιὰ στρεφομένη διανοίγει τὰ σκέλη ἀπ' ἀλλήλων. Ἐπὶ δὲ τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ κατωτέρου ἄκρου τοῦ ἐλάσματος ὑπάρχει μικρὸς δείκτης δεικνύων κατὰ τὴν διάνοιξιν τῶν σκελῶν τὸ ἀπὸ 1—11 ὑφ. μέγεθος τοῦ διαστελλομένου τραχήλου, ὅπερ ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὴν πλήρη διαστολὴν τοῦ μητρικοῦ στομίου. Ὁ διαστολεὺς τοῦ Frommer διαφέρει τοῦ προηγουμένου ἐκ τοῦ ὅτι ἀντὶ 4 σκελῶν φέρει 8 τοιαῦτα. Οἱ μετάλλινοι οὗτοι μητροδιαστολεῖς χρησιμοποιοῦνται μόνον κατὰ τὸν τοκετὸν ἐπὶ περιπτώσεων καθ' ἃς ἀπαιτεῖται ἡ ταχεῖα διαστολὴ τοῦ μητρικοῦ στομίου πρὸς ταχεῖαν ἀποπεράτωσιν τοῦ τοκετοῦ. Κ. ΛΟΥΡΟΣ

**Μητροδώρα, ἁγία**· βλ. λ. *Μηνοδώρα*.

**Μητρόδωρος.**—1) Ὁ *Χῖος*. Ἕλλην φιλόσοφος, ζήσας μεταξὺ τοῦ 420 καὶ 337 π. Χ. καὶ μνημονευόμενος ὑπὸ Διογένους τοῦ Λαερτίου ἐν τῇ βιογραφίᾳ τοῦ Πύρρωνος (βιβλ. ΙΧ). Ὑπῆρξε μαθητὴς κατ' ἄλλους μὲν τοῦ Δημοκρίτου, κατ' ἄλλους δὲ Νέσσου τοῦ Χίου καὶ τοῦ Ἀναξάρχου ἐν Ἀβδήροις. Ὑπῆρξε πρόδρομος τῆς μεγάλης σχολῆς τῶν σκεπτικῶν, τὴν ὁποίαν ἵδρυσεν ἀργότερον ὁ Πύρρων. Ἐδίδασκεν ὅτι ἡ γνῶσις τῆς ἀληθείας εἶναι ἀδύνατος, ὤθει δὲ εἰς τὸ ἔπακρον τὰς ἀρχὰς τοῦ σκεπτικισμοῦ, ἰσχυριζόμενος ὅτι ὄχι μόνον οὐδὲν ἐγνώριζεν, ἀλλὰ καὶ ὅτι δὲν ἐγνώριζε ἂν ἐγνώριζέ τι ἢ ὄχι. Ἔγραψε καὶ βιβλίον «Περὶ φύσεως», τὸ ὁποῖον ἐξετιμᾶτο πολὺ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων, ἀλλὰ δὲν ἐσώθη. Ἀναφέρεται ὅτι ἦτο καὶ ἰατρὸς καὶ ὅτι ἐδίδαξε τὴν ἰατρικήν.

*Μητρόδωρος ὁ Λαμψακηνός.*
[Ἐκ μαρμαρίνου διπλοῦ ἑρμοῦ τοῦ Ἐπικούρου καὶ Μητροδώρου (Μουσεῖον Ναπολέοντος). Θεωρεῖται ὡς μνημεῖον τῶν «Εἰκάδων», καθ' ἃς ἐτιμῶντο οἱ δύο φιλόσοφοι.]

—2) Ὁ *Λαμψακηνός*. Φιλόσοφος, εἷς ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων μαθητῶν τοῦ Ἐπικούρου καὶ χαρακτηριζόμενος ὑπὸ τοῦ Κικέρωνος ὡς δεύτερος Ἐπίκουρος. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 330 καὶ ἀπέθανε τῷ 277 π. Χ., ἑπτὰ ἔτη πρὸ τοῦ Ἐπικούρου, ὑπῆρξε δὲ τόσον προσφιλὴς φίλος τοῦ διδασκάλου του, ὥστε οὗτος ἐμερίμνησεν ἐν τῇ διαθήκῃ του περὶ τῆς ἀνατροφῆς καὶ ἀποκαταστάσεως τῶν τέκνων αὐτοῦ. Μαρτύριον τῆς φιλίας των ταύτης εἶναι πέντε συγγράμματα τοῦ Ἐπικούρου, φέροντα τὸν τίτλον «Μητρόδωρος» καὶ ἕτερον ὑπὸ τὸν τίτλον «Εὐρύλοχος», ἐπίσης εἰς τὸν Μητρόδωρον ἀφιερωθὲν ὑπὸ τοῦ διδασκάλου του. Ὑπὸ Διογένους τοῦ Λαερτίου μνημονεύονται ὡς ἔργα τοῦ Μητροδώρου τὰ ἑξῆς: «Πρὸς ἰατρούς», «Περὶ αἰσθήσεων», «Πρὸς Τιμοκράτη», «Περὶ μεγαλοψυχίας», «Περὶ Ἐπικούρου ἀρρωστίας», «Πρὸς τοὺς διαλεκτικούς», «Πρὸς τοὺς σοφιστὰς» (ἐννέα λόγοι), «Περὶ τῆς ἐπὶ σοφίαν πορείας», «Περὶ τῆς μεταβολῆς», «Περὶ πλούτου», «Πρὸς Δημόκριτον», «Περὶ εὐγενείας». Εἰς τὰ ἔργα ταῦτα, ἅτινα ἀπωλέσθησαν, πλὴν τινων ἀποσπασμάτων ἀπαντώντων παρὰ Πλουτάρχῳ, Κλήμεντι τῷ Ἀλεξανδρεῖ καὶ Σενέκᾳ, ἠκολούθει πιστῶς τὰς ἀρχὰς τοῦ Ἐπικούρου καὶ σκοπὸν τῆς φιλοσοφίας ἐθεώρει τὴν διὰ τῆς γαλήνης τῆς ψυχῆς εὐδαιμονίαν τοῦ ἀνθρώπου.

—3) Ἕτερος φιλόσοφος ἐκ Λαμψάκου, μαθητὴς τοῦ Ἀναξάρχου, ὁ πρῶτος ὅστις ἐπεχείρησε νὰ δώσῃ εἰς τοὺς ὁμηρικοὺς μύθους ἠθικὴν ἀλληγορικὴν ἔννοιαν. Ν. Α.

**— Μητρόδωρος.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται οἱ ἑξῆς ἰατροί: —1) Ὁ *Κῷος*, ἀδελφὸς τοῦ Ἐπιχάρμου τοῦ Κῴου, πυθαγόρειος. —2) Μαθητὴς τοῦ Χρυσίππου καὶ διδάσκαλος τοῦ Ἐρασιστράτου. —3) Ὀπαδὸς τοῦ Ἀσκληπιάδου, ὅστις οὐδεμίαν διδασκαλίαν παρεδέχετο ἀνωτέραν τῆς τοῦ διδασκάλου αὐτοῦ. Τὸ βοτανικὸν αὐτοῦ ἔργον ἐκοσμεῖτο ὑπὸ ἐγχρώμων εἰκόνων φυτῶν. ΑΡ. Π. Κ.

**μητροκαμψία** (ἡ)· βλ. *μήτρα*.

**μητροκάτοχος λαβίς**. Λαβίς, ἀγκιστροειδὴς κατὰ τὸ ἄκρον, δι' ἧς συλλαμβάνονται τὰ χείλη τοῦ μητρικοῦ στομίου πρὸς συγκράτησιν τῆς μήτρας κατὰ πᾶσαν ἐπ' αὐτῆς ἐπέμβασιν.

**μητροκήλη** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Ἡ ἐντὸς τοῦ βουβωνικοῦ σάκκου εἰσχώρησις τῆς μήτρας, εἴτε ἀπὸ τῆς ἐμβρυϊκῆς ἔτι ἡλικίας, εἴτε καὶ βραδύτερον, ἢ καὶ εἰς σπανίας τινὰς περιπτώσεις κατὰ τὰς πρώτας ἑβδομάδας τῆς κυήσεως, ὁπότε καλεῖται *κήλη τῆς ἐγκύμονος μήτρας*. Ἡ ἐντὸς τοῦ βουβωνικοῦ σάκκου εἰσχωρήσασα ἐγκύμων μήτρα φθάνει ἐνίοτε καὶ μέχρι πέρατος τῆς κυήσεως, ἄλλοτε δ' ὅμως ἐπέρχεται ἔκτρωσις ἢ πρόωρος τοκετὸς ἢ περί-

Digitized by Google

σφιγξις. Ἡ διάγνωσις τῆς μητροκήλης δὲν εἶναι εὔκολος, ἅτε συγχεομένης ταύτης πρὸς τὴν βουβωνοκήλην. Κατὰ ταύτην συνιστᾶται ἡ ἀνάταξις τῆς μητροκήλης ἢ ἐὰν πρόκειται περὶ ἐγκύμονος μήτρας ἡ τεχνητὴ ἔκτρωσις ἢ ἐπὶ προκεχωρημένης κυήσεως μετὰ ζῶντος ἐμβρύου ἡ καισαρικὴ τομή. Κ. Λ.

**Μητροκλῆς.** Κυνικὸς φιλόσοφος, σύγχρονος Στίλπωνος τοῦ Μεγαρέως, περὶ τὸ 300 π. Χ., ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πλουτάρχου. Α. Θ. Σ.

**μητροκτησία** (ἡ)· ἡ ἀπὸ τῆς μητρὸς κτῆσις, κτήματα κληρονομηθέντα ἐκ τῆς μητρός.

**μητροκτονία** (ἡ)· ἡ πρᾶξις τοῦ μητροκτόνου, ὁ φόνος τῆς μητρός.

**μητροκτόνος** (ὁ, ἡ)· ὁ κτείνας, ὁ φονεύσας τὴν μητέρα: «ὁ μητροκτόνος Ὀρέστης».

**μητροκωμία** (ἡ). Ἕνωσις κοινοτήτων ἐλευθέρων χωρικῶν. Ἡ *μητροκωμία* εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς γεωργικῆς οἰκονομίας σημαίνει τὴν ὁμάδα τῶν χωρίων, τὰ ὁποῖα εἴτε δὲν περιήχθησαν εἰς χεῖρας μεγάλων γαιοκτημόνων, εἴτε περιῆλθον μὲν εἰς αὐτούς, ἀλλὰ διὰ διαφόρους ἱστορικοὺς καὶ οἰκονομικοὺς λόγους κατέστησαν καὶ πάλιν ἐλεύθερα. Ὡς θεσμὸς ἐν τῇ ἱστορικῇ ἐξελίξει τῆς τοπικῆς αὐτοδιοικήσεως σημαίνει τὴν ὑπερκοινοτικὴν αὐτοδιοίκησιν, ἀνώτερον τουτέστι βαθμὸν αὐτοδιοικήσεως, ἡ ἄσκησις τῆς ὁποίας ὅμως, ὡς πρὸς τὰ χωρικὰ ὅρια, δὲν ὑπερέβαινε τὰ ὅρια περίπου τοῦ παρὰ τῇ νεωτέρᾳ Ἑλλάδι δήμου ὡς διεμόρφωσε τοῦτον ἡ πρὸ τοῦ νόμου ΔΝΖ΄ δημοτικὴ νομοθεσία.

Ἡ μητροκωμία διῳκεῖτο ὑπὸ ἰδίων ἀρχόντων, τῶν ὁποίων ἡ ὀνομασία ποικίλλει ἀναλόγως τῶν ἐποχῶν καθ' ἃς συναντῶμεν αὐτὴν δρῶσαν. Οὕτως ὁ ἀρχηγὸς μητροκωμίας τινὸς τῆς Συρίας τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων ἐκαλεῖτο στρατηγὸς (ἐν τῇ μητροκωμίᾳ τοῦ Τράχωνος). Ὁ ἀρχηγὸς μητροκωμίας τινὸς τῆς Ἠπείρου τῶν τουρκικῶν χρόνων ἐκαλεῖτο γενικὸς προεστὼς (ἐν τῇ μητροκωμίᾳ τοῦ Ζαγορίου). Οἱ ἄρχοντες τῶν μητροκωμιῶν, τῶν ὁποίων αἱ περισσότεραι ἦσαν «ἄσυλοι» καὶ «αὐτόνομοι», ἀπετέλουν τὴν βουλὴν τῆς μητροκωμίας, ἐξελέγοντο δὲ ἐξ ἑκάστης κώμης ἐκ τῶν «πρωτοκωμητῶν» ὡς ἐκαλοῦντο οἱ πρῶτοι πολῖται ἑκάστης κώμης παραλλήλως πρὸς τοὺς «πρωτοπολίτας», οἵτινες ἦσαν οἱ πρῶτοι ἑκάστης πόλεως.

Καθὼς δὲ ὑπὲρ τὸ «κοινὸν» τῆς πόλεως συναντῶμεν τὸ «ἐπαρχιακὸν κοινόν», οὕτω καὶ ὑπὲρ τὸ «κοινὸν τῆς κώμης» πλεῖσται ἐπιγραφαὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων καὶ ἔγγραφα τῆς ἐποχῆς τῆς νεωτέρας Ἑλλάδος διέσωσαν ἡμῖν πληροφορίας περὶ τῆς ὑπάρξεως τοῦ «κοινοῦ τῆς μητροκωμίας».

Ἡ ἐσωτερικὴ διοίκησις τῶν μητροκωμιῶν ποικίλλει ἀναλόγως τῶν ἐποχῶν, τῶν ἐθνῶν καὶ τῶν ἐπιδράσεων, τὰς ὁποίας ἤσκησαν τὰ ἔθνη πρὸς ἄλληλα ὡς πρὸς θεσμούς τινας δικαίου. Οὕτω μνημονευτέα ἐνταῦθα κατ' ἐξοχὴν ἡ σλαβικὴ ἐπιρροὴ ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως ἑλληνικῶν τινων μητροκωμιῶν.

Αἱ μητροκωμίαι τῶν χρόνων τῆς τουρκοκρατίας καλοῦνται *κεφαλοχώρια*, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὰ *τσιφλίκια*. Σπουδαίως δὲ συνέβαλον αὗται εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἀναγέννησιν λόγῳ τῶν εὐνοϊκῶν οἰκονομικῶν ὅρων, ὑφ' οὓς οἱ κάτοικοι αὐτῶν διεβίουν. Αἱ πλέον γνωσταὶ μεταξὺ αὐτῶν εἶναι ἡ μητροκωμία τοῦ Πηλίου, τῶν Ζαγοροχωριτῶν, τῶν Βλαχοχωριτῶν τῆς Ἠπείρου καὶ ἡ μητροκωμία τῆς Χίου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Κ. Δ. Τριανταφυλλοπούλου*, «Βυζαντινὸν Δίκαιον» (ἀνατύπωσις ἐκ τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας» τ. Ζ΄, λ. *Βυζάντιον—δίκαιον*). — *Ἀρ. Βρέκοσι*, «Ἡ συνθήκη τοῦ 1800 καὶ τὰ προνόμια τῶν ἠπειρωτικῶν πόλεων Πρεβέζης, Πάργας, Βονίτσης καὶ Βουθρωτοῦ» (εἰς «Ἠπειρωτικὰ Χρονικὰ» 1928). — *Τοῦ αὐτοῦ*, «Αἱ ἑλληνικαὶ κοινότητες τῶν ἐλευθέρων χωρικῶν» (εἰς Ἐπιθ. Τοπικῆς αὐτοδιοικήσεως, 1930). ΑΡ. ΒΡΕΚΟΣΙΣ

**μητρομανὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ἐπὶ τοῦ θήλεος, ἡ πάσχουσα ἐκ μητρομανίας, ἡ ἀκορέστως ἐπιθυμοῦσα νὰ συνουσιάζεται, ἡ ἀκρατὴς πρὸς τὰ ἀφροδίσια.

**μητρομανία** (ἡ)· πάθος τοῦ θήλεος, μανία οἱονεὶ ἐκ τῆς μήτρας προερχομένη, ἡ ἀκόρεστος ἐπιθυμία πρὸς συνουσίαν, ἡ ἀκρασία πρὸς τὰ ἀφροδίσια, ἄλλως *νυμφομανία* (βλ. λ.).

**Μητρομάρας,** ἢ ***Μήτρο - Μάρας.*** Ὁπλαρχηγὸς τῶν πρὸ τῆς ἐπαναστάσεως χρόνων, καταγόμενος ἐκ τοῦ Μενιδίου ἢ τῶν Δερβενοχωρίων. Ἔδρασε κυρίως κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ὀρλώφ, ὁπότε, ἐπὶ κεφαλῆς σώματος ἐπαναστατῶν, οἱ ὁποῖοι εἶναι γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα «λεμπέσηδες», ὕψωσεν εἰς Σαλαμῖνα (1771) τὴν ρωσικὴν σημαίαν καὶ διενήργει ἐπιδρομὰς ἐν Ἀττικῇ εἰς τὰ περίχωρα τῶν Ἀθηνῶν (βλ. *Ἀθῆναι* τ. Β΄, σ. 115 β΄ καὶ ἑπ.). Μετὰ τὸν θάνατόν του (1772) τὸ σῶμα τῶν λεμπέσηδων διελύθη βιαίως. Χ. Δ.

**μητρομήλη** (ἡ). Στειλεὸς μετάλλινος μήκους 30 περίπου ἐκ., τοῦ ὁποίου τὸ μὲν ἄνω ἄκρον ἀπολήγει εἰς κομβίον πάχους 3 χλστ., τὸ δὲ κάτω εἰς χειρολαβήν, πρὸς τὸ ἄνω δὲ μέρος εἶναι βεβαθμολογημένος, δεικνύων δι' ἀριθμῶν τὸ μῆκος τῆς μητρικῆς κοιλότητος. Εἶναι εὔκαμπτος, δυνάμενος νὰ προσλάβῃ ἀναλόγως τῆς ἀνάγκης διάφορον κυρτότητα. Εἰς ἀπόστασιν 7 ἐκ. ἀπὸ τῆς κορυφῆς αὐτοῦ φέρει ἐλαφρὰν διόγκωσιν παριστῶσαν τὸ φυσιολογικὸν μῆκος τῆς μητρικῆς κοιλότητος. Χρησιμοποιεῖται δ' αὕτη πρὸς καθορισμὸν τοῦ μήκους τῆς μητρικῆς κοιλότητος, τῆς θέσεως ἐν γένει τῆς μήτρας καὶ τοῦ εὔρους τοῦ τε ἐξωτερικοῦ καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ μητρικοῦ στομίου. Τῆς μητρομήλης ἡ χρῆσις πρέπει ν' ἀποφεύγηται. Μόνον δὲ μετὰ πλήρη ἀπολύμανσιν τῶν ἐσωτερικῶν γεννητικῶν ὀργάνων καὶ ὁσάκις πρόκειται νὰ γίνῃ ἐπέμβασις ἐν τῇ κοιλότητι τῆς μήτρας δικαιολογεῖται ἡ χρῆσις αὐτῆς.

**μητρόξυλον** (τὸ) (Metroxylum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *φοινικοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἰθαγενῆ τῆς Μαλαισίας, Νέας Γουϊνέας καὶ τῶν Φιγίων νήσων. Ἐκ τῶν 6 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερον εἶναι τὸ *μητρόξυλον τὸ ρούμφειον* (Metroxylum Rumphii). Ἐκ τῆς ἐντεριώνης τοῦ κορμοῦ του λαμβάνεται ἀμυλώδης οὐσία, γνωστὴ εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν *σάγος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μητροπάρθενος** (ἡ)· ἡ παρθένος ἅμα καὶ μήτηρ, προσηγορία τῆς Θεοτόκου: «μητροπάρθενος Κόρη».

**μητροπεριτονῖτις** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Μολυσματικὴ φλεγμονὴ τῆς μήτρας, καθ' ἣν συμμετέχει καὶ τὸ περικαλύπτον αὐτὴν περιτόναιον. Τὰ προκαλοῦντα δὲ τὴν λοίμωξιν ταύτην συνήθως εἶναι ὁ γονόκοκκος καὶ οἱ στρεπτόκοκκοι. Τὰ συμπτώματα αὐτῆς συνίστανται εἰς ἄλγος ἰσχυρὸν κατὰ τὸ ὑπογάστριον καὶ ἰδίως ἅμα τῇ ψηλαφήσει αὐτοῦ, ρῖγος, ὑψηλὸς πυρετός, σφυγμὸς συχνός. Κατὰ ταύτης συνιστᾶται ἀπόλυτος ἐν τῇ κλίνῃ ἀκινησία, ἐπίθεσις κύστεως πάγου ἐπὶ τοῦ ὑπογαστρίου καὶ ναρκωτικά.

**μητρόπολις,** —*εως* (ἡ)· ἡ μήτηρ πόλις, ἡ ἐκπέμπουσα ἀποικίαν πόλις ἢ χώρα: «τὰ Μέγαρα ἦσαν ἡ μητρόπολις τοῦ Βυζαντίου» ‖ ἐν γένει, οὕτω καλεῖται οἱονδήποτε νεώτερον κράτος ἐν σχέσει πρὸς τὰς ἀποικίας του, οἷον ἡ Ἀγγλία, ἡ Γαλλία, ἡ Ὁλλανδία κτλ.· ‖ συνεκδ., ἡ πρωτεύουσα πόλις χώρας τινός· ‖ ἡ ἕδρα καὶ ἡ κατοικία τοῦ μητροπολίτου· ‖ ὁ ναὸς ἔνθα λειτουργεῖ ὁ μητροπολίτης ἢ ὁ ἐπίσκοπος, ὁ καθεδρικὸς καὶ ἐν γένει ὁ πρωτεύων ἢ ἐπισημότερος ναὸς πόλεώς τινος, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τοὺς συνοικιακοὺς ἢ δευτερεύοντας ναούς.

— *[Κανον. Δίκ.] Μητροπόλεις* καλοῦνται αἱ πολιτικῶς καὶ ἐκκλησιαστικῶς ἐξέχουσαι πόλεις τῆς ἐπαρχίας, ἐν αἷς ἑδρεύει ὁ τῆς ἐπαρχίας μητροπολίτης. Παρ' ἡμῖν διὰ τοῦ ἀπὸ 31 Δεκεμβρίου 1923 καταστατικοῦ νόμου τῆς ἱερᾶς συνόδου ἐν ἄρθρῳ 16 ὡρίσθησαν αἱ μητροπόλεις καὶ αἱ ἕδραι αὐτῶν. Διὰ δὲ τοῦ νόμου 3615 τῆς 10 Ἰανουαρίου 1928 ἐν ἄρθρῳ 2 διαιροῦνται αἱ μητροπόλεις τῶν νέων τοῦ κράτους χωρῶν εἰς *μονίμους* καὶ *προσωρινάς*. Περὶ τῶν προσωρινῶν δ' ὁρίζει ὅτι αὗται χηρεύουσαι συγχωνεύονται πρὸς τὰς ἐξ ὧν ἀπεσπάσθησαν μονίμους (βλ. καὶ λ. *ἐπισκοπή*, *Κρητικὸν καταστατικόν*, *Κυπριακὸν καταστατικὸν* καὶ *μητροπολῖται*). Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**Μητρόπολις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄνομα διαφόρων πόλεων τῆς ἀρχαιότητος:

— 1) Ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, κειμένη κατὰ τὰ Ν. τῆς Φρυγίας μεταξὺ Ἀπαμείας καὶ Συννάδων. Κατὰ τὸν ΣΤ΄ αἰῶνα ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους (Συνεκδ. 677, 12) ὡς μία τῶν 23 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Φρυγίας τῆς Σαλουταρίας. Σῴζονται αὐτῆς νομίσματα, τὰ δ' ἐρείπια αὐτῆς παρὰ τὸ χωρίον Τσάλ-Ὀβά.

— 2) Ἐν Λυδίᾳ, δεξιὰ τοῦ Καΰστρου ποταμοῦ, μεταξὺ Ἐφέσου καὶ Σμύρνης, περίφημος διὰ τὸν οἶνον αὐτῆς (*Στράβ.* XIV, 637). Ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους ἀναφέρεται ὡς μία τῶν 24 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Πισιδίας, κατὰ δὲ τὸν μεσαίωνα ὡς ἕδρα ἐπισκόπου ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Ἐφέσου. Σῴζονται αὐτῆς νομίσματα τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων ἀπὸ τοῦ Νέρωνος μέχρι τοῦ Γαλλιηνοῦ, τὰ δ' ἐρείπια αὐτῆς 7 χλμ. ΝΔ. τῆς νῦν κωμοπόλεως Τουρμπαλί.

— 3) Ἐν Ἀκαρνανίᾳ, οὐ μακρὰν τοῦ Ἀχελῴου ποταμοῦ, ἀποικία Κορινθίων. Καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Αἰτωλῶν, κατεστράφη ὑπὸ Φιλίππου Ε΄ τοῦ Μακεδόνος τῷ 219 π.Χ. Σῴζονται αὐτῆς κορινθιακοὶ στατῆρες τῶν ἐτῶν 350—250 π.Χ. Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐπέχει τὸ νῦν χωρίον *Ἀετὸς* τῆς ἐπαρχίας Βονίτσης.

— 4) Ἐν Ἱστιαιώτιδι τῆς Θεσσαλίας, παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ Πίνδου καὶ τὸν Πηνειὸν ποταμόν, μεταξὺ Γόμφων καὶ Φαρσάλων. Ἐνταῦθα ἐλατρεύετο ἡ Ἀφροδίτη ἡ Καστνία, εἰς τὴν ὁποίαν ἔθυον χοίρους (*Στράβ.* IX, 438). Κατὰ τὸ 198 π. Χ. κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Φλαμινίνου. Τὰ τείχη αὐτῆς μετὰ τῶν γειτονικῶν πόλεων Γόμφων καὶ Τρίκκης, [illegible]ύνῳ καταπεπονηκότα, εὐπετῶς τε ἁλωτὰ ὄντα [illegible]ισεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους ἀναφέρεται ὡς μία τῶν 17 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Θεσσαλίας, φέρουσα κατὰ τὸν μεσαίωνα τὸ ὄνομα *Νέαι Πάτραι*. Σῴζονται αὐτῆς νομίσματα τῶν ἐτῶν 400—344 καὶ 300—200 π.Χ. Εἶναι τὸ σημερινὸν χωρίον *Μητρόπολις*, πρῴην *Παλαιόκαστρον* καλούμενον, ΝΔ. τῆς Καρδίτσης, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς.

— 5) Ἐν τῇ εὐρωπαϊκῇ Σαρματίᾳ, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. III, 5, 14), κειμένη πιθανῶς, κατὰ τὸν Müller, μεταξὺ Τσερνικὼφ καὶ Κιέβου, ἢ καὶ ἐπ' αὐτοῦ τοῦ Κιέβου. Α. Θ. Σ.

— **Μητρόπολις** *[Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται $1\ ^1/_2$ ὥραν πρὸς ΝΔ. τῆς Καρδίτσης, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ζαπερδᾶ καὶ παρὰ τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας Μητροπόλεως, ἐξ ἧς ἔλαβε τελευταίως τὸ ὄνομα (ἐκαλεῖτο πρότερον *Παλαιόκαστρον*). Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.188. Χ. Δ.

— **Μητρόπολις** *[Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς κοινότητος Ἁγίων Δέκα τῆς ἐπαρχίας Καινούργιου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 327. Κεῖται ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας Γόρτυνος, ἐκκλησιαστικῆς μητροπόλεως τῆς Κρήτης ἐπὶ τῶν βυζαντινῶν χρόνων, ὅθεν τὸ ὄνομα. Διατηροῦνται ἐρείπια τοῦ ναοῦ τοῦ προστάτου τῆς νήσου Ἁγίου Τίτου, εἰς τὰ ὁποῖα, ἐπισκευασθέντα, τελεῖται ἐτησία πανήγυρις. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**μητροπολίτης** (ὁ)· ὁ ἐπίσκοπος μητροπόλεως, ὁ ἐν τῇ πρωτευούσῃ τοῦ τόπου ἑδρεύων ἐπίσκοπος· οὕτω μέχρι πρό τινος ἐκαλεῖτο μητροπολίτης ὁ ἐπίσκοπος Ἀθηνῶν, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τοὺς ἐπισκόπους τῶν ἐπαρχιῶν· ἤδη οἱ μὲν ἐπίσκοποι τῶν ἐπαρχιῶν καλοῦνται *μητροπολῖται*, ὁ δὲ ἐπίσκοπος Ἀθηνῶν *ἀρχιεπίσκοπος*.

— *[Κανον. Δίκ.]* Καλοῦνται *μητροπολῖται* ἐπίσκοποι ἀποτελοῦντες τὴν μέσην βαθμίδα μεταξὺ ἁπλῶν ἐπισκόπων καὶ πατριαρχῶν. Οἱ μητροπολῖται ἀπαντῶσιν ἤδη κατὰ τὸν Δ΄ αἰῶνα, ἔχουσι δὲ τὰ ἑξῆς δικαιώματα καὶ καθήκοντα: 1) Νὰ ἑδρεύωσιν ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς μητροπόλεως. 2) Νὰ ἀναγνωρίζωνται ὡς ἐκκλησιαστικαὶ κεφαλαὶ καὶ κυριάρχαι τῆς ἐπαρχίας ὑπὸ τῶν ὑποκειμένων αὐτοῖς ἐπισκόπων, οἵτινες ὀφείλουσι νὰ εὐπειθῶσι τοῖς μητροπολίταις καὶ οὐδὲν νὰ πράττωσιν ἐκτὸς τῶν ἐν ταῖς ἑαυτῶν παροικίαις αὐτοῖς προσηκόντων δικαίων ἄνευ τῆς γνώμης τοῦ μητροπολίτου νομίμως καὶ κανονικῶς ἐνεργοῦντος. 3) Νὰ μνημονεύεται κατὰ τὰς ἱεροτελεστίας τὸ ὄνομα αὐτῶν ὑπὸ τῶν ὑπ' αὐτοὺς ἐπισκόπων. 4) Νὰ λαμβάνωσι τὰ εἰθισμένα ἐτήσια ὡς καὶ τὰ φιλότιμα καὶ πᾶν ἄλλο σύνηθες δικαίωμα. 5) Νὰ εὐπειθῶσι τῇ ἐκκλησιαστικῇ ἀρχῇ εἰς ἣν ὑπάγονται (πατριαρχικῇ συνόδῳ) καὶ νὰ μὴ καινοτομῶσι μηδ' εἰς τὰ διοικητικὰ ἄνευ ἀδείας αὐτῆς. Οὕτω χρῄζουσι τοιαύτης ἀδείας λ. χ. πρός τε τὴν διαίρεσιν τῶν μετὰ τῆς μητροπόλεως αὐτῶν ἡνωμένων ἐπισκοπῶν καὶ ὡς πρὸς τὴν ἕνωσιν ἐπισκοπῆς ὑποκειμένης αὐτοῖς μεθ' ἑτέρας. 6) Νὰ μνημονεύωσι τοῦ ὀνόματος τοῦ πατριάρχου εἰς ὃν ὑπάγονται, ἱερουργοῦντες ἔν τε τῇ ἑαυτῶν μητροπόλει καὶ ἐν ἐνορίᾳ τῶν ὑπ' αὐτοὺς ἐπισκόπων. 7) Νὰ μεριμνῶσι περὶ τῆς ἀπαραμειώτου διαφυλάξεως τῶν δικαιωμάτων τῆς μητροπόλεως, νὰ ποιοῦνται δὲ τὰ προσήκοντα ἐν περιπτώσει προσβολῆς αὐτῶν, νὰ στέργωσι δ' εἰς μείωσιν τῶν δικαιωμάτων τῆς μητροπόλεως, μόνον ἂν ταύτην ἀποφήνηται ἀναγκαίαν ἡ προϊσταμένη ἐκκλησιαστικὴ ἀρχή. 8) Νὰ μὴ πράττωσί τι ἄνευ γνώμης τῶν τῆς ἐπαρχίας ἐπισκόπων, οὓς ὀφείλουσιν οὐδὲν ἧττον νὰ προσκαλῶσι πρὸς συγκρότησιν τῆς ἐπαρχιακῆς συνόδου, ἧς ὁρίζουσι τὸν τόπον τῆς συγκροτήσεως καὶ προεδρεύουσιν. 9) Ἐν περιπτώσει χηρείας τινὸς τῶν τῆς ἐπαρχίας ἐπισκοπικῶν θρόνων νὰ μεριμνῶσι περὶ τῆς πληρώσεως αὐτοῦ, ποιούμενοι τὰ πρὸς τοῦτο προσήκοντα. 10) Νὰ ἐξετάζωσι τὴν ὑπὸ τοῦ προχειρισθησομένου ἐπισκόπου κατὰ βάθος «ἐρευνητικῶς καὶ οὐ παροδευτικῶς» γνῶσιν τῆς ἁγίας Γραφῆς καὶ τῶν ἱερῶν κανόνων. 11) Νὰ κυρῶσι τὴν ἐκλογὴν ἑνὸς τῶν ὑπὸ τῆς ἐπαρχιακῆς συνόδου ψηφισθέντων πρὸς πλήρωσιν ἐπισκοπῆς τῆς ἐπαρχίας χηρευούσης ἢ δι' ἀποσπάσεως ἀφ' ἑτέρας ἐπισκοπῆς ἱδρυθείσης. 12) Μετὰ δύο ἑτέρων ἐπισκόπων ἢ τοὐλάχιστον μεθ' ἑνὸς νὰ χειροτονῶσι τὸν ψηφισθέντα καὶ ἐγκριθέντα ἐπίσκοπον. 13) Νὰ δέχωνται τὰς κατὰ τῶν τῆς ἐπαρχίας ἐπισκόπων κατηγορίας καὶ ὑποβάλλωσιν αὐτὰς πρὸς ἐκδίκασιν τῇ ἐπαρχιακῇ συνόδῳ. 14) Νὰ ἐπισκέπτωνται τὰς ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ αὐτῶν ἐπισκοπάς. 15) Νὰ δίδωσιν ἄδειαν ἀπουσίας εἰς τοὺς θέλοντας ν' ἀπέλθωσι τῆς ἐπαρχίας αὐτῶν ἐπισκόπους. 16) Ὀλιγωροῦντος ἐπισκόπου τινὸς τῆς ἐπαρχίας τὴν κατάστασιν οἰκονόμου ἐν αὐτῇ, νὰ ποιῶνται οὗτοι ταύτην. 17) Νὰ μεριμνῶσι περὶ ἐκτελέσεως τῶν ὑπὸ τοῦ διαθέτου ὑπὲρ λυτρώσεως αἰχμαλώτων ἢ διατροφὴν πενήτων ὡρισμένα. 18) Νὰ ἔχωσιν ἰδίαν σφραγῖδα. 19) Νὰ προσαγορεύωνται διὰ τοῦ τοῦ ἀξιώματος τίτλου. Καὶ ἄλλα τινὰ προνόμια. Παρ' ἡμῖν τῷ 1920 ἐδόθη εἰς πάντας τοὺς ἐπισκόπους ὁ τίτλος τοῦ μητροπολίτου, ἀλλ' ἀ-

Digitized by Google

νευ πραγματικῆς μητροπολιτικῆς δικαιοδοσίας. Οὐχὶ ψιλὸν τίτλον μητροπολίτου ἔχει παρ' ἡμῖν μόνον ὁ μητροπολίτης Κρήτης, ὅστις ἔχει καὶ τὰ ἑξῆς δικαιώματα: α') Ὀνόματι τῆς ἐπαρχιακῆς συνόδου Κρήτης νὰ ἀναφέρηται τῇ κυβερνήσει καὶ νὰ αἰτῆται τὴν ἀντικατάστασιν τοῦ κυβερνητικοῦ παρὰ τῇ ἱερᾷ συνόδῳ ἐπιτρόπου, ἄνευ αἰτίας ἀρνηθέντος ὑπογραφὴν ἢ παράστασιν. β') Νὰ ἀναλαμβάνῃ προσωρινῶς τὴν διοίκησιν τῆς χηρευσάσης ἐπισκοπῆς μέχρις ἐκλογῆς τοῦ νέου ἐπισκόπου. γ') Νὰ γνωρίζῃ τῇ πρὸς τοῦτο συγκαλουμένῃ ἐπαρχιακῇ συνόδῳ τὴν διὰ χρόνιον σωματικὸν ἢ διανοητικὸν νόσημα ἀνικανότητα τοῦ ἐπισκόπου πρὸς τέλεσιν τῶν ποιμαντορικῶν αὐτοῦ καθηκόντων. δ') Νὰ αἰτῆται παρὰ τοῦ ἁρμοδίου ὑπουργοῦ καὶ δι' αὐτοῦ παρὰ τῶν λοιπῶν ἀρχῶν τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἀποφάσεων τῆς ἐπαρχιακῆς συνόδου, δι' ἧς ἐπεβλήθησαν ὑπ' αὐτῆς κανονικαὶ ποιναὶ εἰς κληρικούς. ε') Βασίμου ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου κριθείσης τῆς κατὰ κληρικοῦ κατηγορίας διὰ παράπτωμα ἐκκλησιαστικὸν καθαίρεσιν ἐπαγόμενον, νὰ προσκαλῇ ἐντὸς μηνὸς τὸ πολὺ τὸν ἐπίσκοπον τοῦ κατηγορουμένου κληρικοῦ καὶ ἕνα τῶν λοιπῶν ἐπισκόπων καὶ νὰ δικάζῃ μετ' αὐτῶν τὸν κατηγορούμενον, προσκληθέντα πρότερον εἰς ἀπολογίαν· ἀβασίμου δ' ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου κριθείσης τῆς κατηγορίας, νὰ ὑποβάλλῃ τῇ πρώτῃ συγκληθησομένῃ συνόδῳ τὴν ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου πεμφθεῖσαν αὐτῷ δικογραφίαν, ἵνα αὕτη ἀποφαίνηται ὁριστικῶς (βλ. λ. *ἐπισκοπή*, *ἐπίσκοπος*, *Κρητικὸν Καταστατικόν*, *μητρόπολις*). Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**Μητροπολιτιανὸς** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς ῥέων παρὰ τὴν Μητρόπολιν τῆς Κρήτης, ὁ *Ληθαῖος* τῶν ἀρχαίων. Σήμερον καλεῖται *Γέρω-ποταμός*. Ε. Γ.

**μητροπολιτικός**, *—ή, —όν*· ὁ τῆς μητροπόλεως, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ *ἀποικιακός*: «μητροπολιτικὸς στρατός»· || ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μητροπολίτην, ὁ τοῦ μητροπολίτου: «μητροπολιτικὸς ναός» ὁ καθεδρικός.

— **μητροπολιτικὴ *σύνοδος*** *[Κανον. Δικ.]*· βλ. λ. *σύνοδοι*.

— **μητροπολιτικὸν *συμβούλιον*** *[Ἐκκλησ. Δίκ.]*. Μητροπολιτικὸν συμβούλιον παρ' ἡμῖν ὑπάρχει ἐν ἑκάστῃ μητροπόλει, ἀποτελεῖται δὲ ἐκ τοῦ μητροπολίτου ὡς προέδρου, ἑνὸς πρωτοδίκου ὁριζομένου ὑπὸ τοῦ προέδρου τῶν πρωτοδικῶν ἢ τοῦ εἰρηνοδίκου, ἂν ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς μητροπόλεως μὴ ὑπάρχῃ πρωτοδικεῖον, τοῦ εἰρηνοδίκου, τοῦ οἰκονομικοῦ ἐφόρου, ἑνὸς ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς μητροπόλεως ἐφημερίου, παρὰ τῶν ἐν αὐτῇ ἐφημερίων ἐκλεγομένου, καὶ ἑνὸς ἐνοριακοῦ ἐπιτρόπου, ὑπὸ τῶν ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς μητροπόλεως ἐνοριακῶν ἐπιτροπειῶν ἐκλεγομένου. Τὸν μητροπολίτην ἀπόντα ἢ ἄλλως κωλυόμενον ἀναπληροῖ ὁ κανονικὸς αὐτοῦ ἀναπληρωτής, τὸν δ' εἰρηνοδίκην ὁ νόμιμος αὐτοῦ ἀναπληρωτής, τὸν δ' ἔφορον ὁ ταμίας. Τὸ μητροπολιτικὸν συμβούλιον τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Ἀθηνῶν κατ' ἐξαίρεσιν ἀποτελεῖται: ἐκ τοῦ ἀρχιεπισκόπου Ἀθηνῶν ὡς προέδρου, ἑνὸς ἐφέτου ἐκ τῶν ἐν Ἀθήναις, ὁριζομένου μετὰ τοῦ ἀναπληρωτοῦ αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου τῆς Δικαιοσύνης, ἑνὸς συμβούλου τοῦ Ἐλεγκτικοῦ Συνεδρίου καὶ ἑνὸς νομικοῦ συμβούλου, ὁριζομένων μετὰ τῶν ἀναπληρωτῶν αὐτῶν ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν, καὶ ἑνὸς ἐνοριακοῦ ἐπιτρόπου, ἐκλεγομένου μετὰ τοῦ ἀναπληρωτοῦ αὐτοῦ διὰ μίαν τριετίαν ὑπὸ τῶν ἐνοριακῶν ἐπιτροπειῶν Ἀθηνῶν καὶ Πειραιῶς. Ἐν ἀπαρτίᾳ εἶναι τὸ μητροπολιτικὸν συμβούλιον παρόντων τοὐλάχιστον τριῶν μελῶν, ἐξ ὧν ἀνάγκη νὰ ᾖ πάντως ὁ μητροπολίτης ἢ ὁ κανονικὸς αὐτοῦ ἀναπληρωτής, ἀποφασίζει δὲ κατὰ πλειοψηφίαν τῶν παρόντων μελῶν. Εἷς τῶν ἐφημερίων ἑκάστου ναοῦ, οὗ συζητεῖται ὁ προϋπολογισμός, δικαιοῦται νὰ παραστῇ κατὰ τὴν σχετικὴν συνεδρίασιν τῶν μητροπολιτικῶν συμβουλίων καὶ νὰ ἀκουσθῇ παρ' αὐτῶν. Ὁ ἐπίτροπος μέλος τοῦ μητροπολιτικοῦ συμβουλίου δὲν ψηφίζει ὁσάκις συζητεῖται ἐν αὐτῷ ὑπόθεσις τοῦ ναοῦ, οὗ τυγχάνει ἐπίτροπος, οὐδὲ παρίσταται κατὰ τὴν λῆψιν τῆς ἀποφάσεως. Γραμματέα ἔχει τὸ συμβούλιον τὸν τῆς μητροπόλεως καὶ συνεδριάζει ἐν τῷ μητροπολιτικῷ μεγάρῳ, κυριώτερα δὲ καθήκοντα ἔχει τὰ ἑξῆς: 1) Διοικεῖ τοὺς μητροπολιτικοὺς ναούς, τοὺς μὴ ὄντας ἐνοριακούς. 2) Ἀσκεῖ τὴν ἀρχαιότερον ὑπὸ τῶν νομαρχῶν καὶ τοῦ ὑπουργείου ἢ τοῦ γενικοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ταμείου ἀσκουμένην ἐξουσίαν ἐπὶ τῆς διοικήσεως καὶ διαχειρίσεως ναῶν μὴ ὑπαγομένων εἴς τινα τῶν κατηγοριῶν, περὶ ὧν προβλέπει ὁ νόμος περὶ ἐνοριακῶν ναῶν. 3) Διορίζει τὰς ἐνοριακὰς ἐπιτροπείας τῶν εἰς τὸ μητροπολιτικὸν συμβούλιον ὑπαγομένων ναῶν. 4) Συντάττει κανονισμὸν ὁρίζοντα τὰ ἐκ τῶν βαπτίσεων, γάμων, κηδειῶν καὶ μνημοσύνων δικαιώματα, ἐκδιδόμενον δ' ὑπὸ τοῦ μητροπολίτου. 5) Ἐγκρίνει: Α') Τὸν παρὰ τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας συνταχθέντα κατάλογον τῆς εἰς φορολογικὰς τάξεις κατατάξεως τῶν ἐνοριτῶν, ἤ, ἐν διαφωνίᾳ πρὸς τὴν ἐνοριακὴν ἐπιτροπείαν, παραπέμπει τὸν κατάλογον μετὰ τῶν ἐνστάσεων καὶ τῶν ἐπ' αὐτῶν καὶ τοῦ καταλόγου παρατηρήσεων τῷ ἁρμοδίῳ εἰρηνοδίκῃ. Β') Μετὰ γνώμην τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας τὴν ἀπὸ τοῦ ἀξιώματος ἔκπτωσιν ἐνοριακοῦ ἐπιτρόπου, ὅστις ἀπεδήμησεν ἢ μετῴκησεν εἰς ἄλλην μακρὰν κειμένην ἐνορίαν, ὥστε νὰ παρακωλύηται ἡ ἄσκησις τῶν καθηκόντων αὐτοῦ. Γ') Τὸν ὑπὸ τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας συνταχθέντα ἐτήσιον τοῦ ἐνοριακοῦ ναοῦ προϋπολογισμὸν (ὃν δύναται καὶ νὰ τροποποιήσῃ), ὡς καὶ τὸν ἀπολογισμόν, ἡ ἐφ' οὗ ἀπόφασις, καταλογιστικὴ οὖσα, δύναται ὑπὸ τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας νὰ ἐκκληθῇ πρὸ τοῦ Ἐλεγκτικοῦ Συνεδρίου. Δ') Τὰ πρακτικὰ τῆς δημοπρασίας ἐκτελέσεως ἔργων καὶ ἐκμισθώσεως ἀκινήτων τοῦ ναοῦ. Ε') Τὰς ἀποφάσεις τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας τὰς ἀφορώσας: α) εἰς δαπάνην μείζονα τῶν πεντακισχιλίων δραχμῶν, μὴ ἀναγραφομένην δ' ἐν τῷ προϋπολογισμῷ, ὡς καὶ εἰς πρᾶξιν ἧς τὸ ἀντίτιμον εἶναι ἀνώτερον τοῦ ποσοῦ τούτου. β) Εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ ναοῦ ἀγορὰν καὶ πώλησιν κινητῶν καὶ ἀκινήτων· γ') εἰς τὴν σύστασιν πραγματικοῦ δικαιώματος ἐπὶ ἀκινήτου τοῦ ναοῦ· δ') εἰς συνομολόγησιν δανείου καὶ τοὺς ὅρους αὐτοῦ· ε') εἰς δωρεὰς ὑπερβαινούσας τὸ ποσὸν τῶν 2 % τῶν ἐτησίων ἐσόδων τοῦ ναοῦ· στ') εἰς ἀνέγερσιν ναοῦ ἢ ἐπισκευήν, διακόσμησιν καὶ συντήρησιν τοῦ ὑπάρχοντος· ζ') εἰς ἀσφάλειαν τοῦ ναοῦ καὶ τῶν ἀκινήτων αὐτοῦ· η') εἰς διορισμὸν εἰδικοῦ εἰσπράκτορος πρὸς εἴσπραξιν τῶν ἐσόδων τοῦ ναοῦ· θ') εἰς ἔγερσιν ἀγωγῆς, ἐνδίκου μέσου, ἄσκησιν ἢ παραίτησιν, κατάργησιν δίκης, συμβιβασμὸν ἐξώδικον ἢ δικαστικόν· ι') εἰς διορισμὸν πληρεξουσίου. 6) Γνωμοδοτεῖ πρὸς τὴν ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου τῶν Θρησκευμάτων ἔγκρισιν τῶν ἀποφάσεων τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας τῶν ἀφορωσῶν: Α') Εἰς δωρεὰν ἀκινήτων, ἢ κατὰ δωρεὰν σύστασιν πραγματικοῦ ἐπὶ ἀκινήτου δικαιώματος, ἢ παραίτησιν ἀπὸ ὑφισταμένου τοιούτου. Β') Εἰς ἀποδοχὴν ἢ ἀποποίησιν δωρεᾶς ὑπὸ ὅρον, κληρονομίας καὶ κληροδοσίας. Γ') Περὶ τῆς ἀνάγκης τῆς ἐκτελέσεως ἔργων. 8) Ἀκυροῖ πᾶσαν πρᾶξιν τῆς ἐνοριακῆς ἐπιτροπείας, ἣν θὰ ἔκρινεν οὐχὶ σκόπιμον, ἢ ἀπᾴδουσαν τῷ νόμῳ, ὅτε κρίνει οὐ μόνον ἐξ ἰδίας πρωτοβουλίας, ἀλλὰ καὶ κατ' ἀκολουθίαν προσφυγῆς τρίτου. Κατὰ τῶν ἀκυρωτικῶν ἀποφάσεων τοῦ μητροπολιτικοῦ συμβουλίου διὰ λόγους νομιμότητος ἐπιτρέπεται προσφυγὴ πρὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Θρησκευμάτων. 9) Ἀναγράφει ἀνάλογον πίστωσιν ἐν τοῖς προϋπολογισμοῖς τῶν ἐνοριακῶν ναῶν, πρὸς τὴν κατὰ συνεδρίαν νόμιμον ἀποζημίωσιν τῶν μελῶν αὐτοῦ (τοῦ μητροπολιτικοῦ συμβουλίου). 10) Ἐπιβάλλει μετὰ προτέραν πειθαρχικὴν δίωξιν, δι' ἀποφάσεως χρῃζούσης κυρώσεως τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Θρησκευμάτων, πρόστιμον μέχρι τοῦ πενταπλασίου τῷ πέρα τῶν νενομισμένων εἰσπράξαντι, ἄνευ ἰδιοτελείας, δικαιώματα ἐκ βαπτίσεων, γάμων, κηδειῶν καὶ μνημοσύνων.

[Βλ. τὸν ἀπὸ 17 Δεκεμβρίου 1923 νόμον περὶ ἐνοριακῶν ναῶν καὶ τὸν ἀπὸ 22 Ἀπριλίου 1930 νόμον ἀριθ. 4567.—*Κ. Μ. Ράλλη*, Ἐγχειρίδιον Ἐκκλησιαστικοῦ δικαίου τεῦχ. Α' 1927, σελ. 223 καὶ ἑπ.] Κ. Μ. Ρ.

**μητρόπονος** (ὁ)· ὁ πόνος τῆς μήτρας.

**Μητρόπουλος.** Ὄνομα ἀγωνιστῶν. —1) ***Γεώργιος Μήτρου***, ἐκ Ζατούνης. Ἐπολέμησεν ὑπὸ τὸν Σταϊκόπουλον. —2) ***Νικόλαος***, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, πολεμήσας ὑπὸ τὸν Πλαπούταν.

—**Μητρόπουλος, *Δημήτριος*.** Ἕλλην μουσικοσυνθέτης, διευθυντὴς ὀρχήστρας καὶ δεξιοτέχνης τοῦ κλειδοκυμβάλου, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1896. Μαθητὴς τοῦ Ὠδείου Ἀθηνῶν, τῶν τάξεων ἁρμονίας καὶ ἀντιστίξεως (Ἀρ. Μαρσὶκ) καὶ τοῦ κλειδοκυμβάλου (Βασσενχόβεν), ἀπεφοίτησε τῷ 1918, τυχὼν χρυσοῦ μεταλλίου εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον. Ἔδωκε δείγματα συνθετικοῦ ταλέντου ἤδη ἀπὸ τῶν μαθητικῶν του χρόνων, διὰ τοῦ συμφωνικοῦ ποιήματος «Ταφή» (1916). Τῷ 1920 ἀνεβίβασεν ἐν Ἀθήναις τὸ μελόδραμά του «Βεατρίκη», γραφὲν ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ κειμένου τοῦ Μαίτερλιγκ, ὀλίγον δὲ κατόπιν ἀνεχώρησε διὰ Βρυξέλλας, ἔνθα ἐπὶ ἓν ἔτος παρηκολούθησε μαθήματα συνθέσεως παρὰ τῷ Ζιλσόν. Ἀπὸ τοῦ 1921—1924 ἐφοίτησεν ἐν τῇ Μουσικῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Βερολίνου, ἐν τῇ τάξει συνθέσεως τοῦ Μπουζόνι, ἐνῷ ταυτοχρόνως ἐξετέλει χρέη προπονητοῦ τῆς χορῳδίας καὶ τρίτου διευθυντοῦ ὀρχήστρας ἐν τῷ κρατικῷ μελοδράματι τῆς πόλεως ταύτης. Κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς ὀρχήστρας τοῦ Ἑλληνικοῦ Ὠδείου (1924—1925), εἶτα τὴν τοῦ Συλλόγου Συναυλιῶν (1925—1927) καὶ ἀπὸ τοῦ 1927 ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὀρχήστρας τοῦ Ὠδείου Ἀθηνῶν, ἣν καὶ ἔκτοτε διευθύνει. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω μνημονευθέντων ἔργων, ὁ Μητρόπουλος ἔγραψε: Μίαν σονάταν διὰ βιολίον καὶ κλειδοκύμβαλον, ὡς καὶ ἄλλα ἔργα μουσικῆς δωματίου, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, πλεῖστα τραγούδια, ἐν οἷς τὴν «Κασσιανὴν» ἐπὶ στίχων τοῦ Παλαμᾶ, τὸ «Κοντσέρτο γκρόσσο» δι' ὀρχήστραν (1929) κτλ. Διεσκεύασεν ἐπίσης δι' ὀρχήστραν τὴν «Φαντασίαν καὶ Φούγκαν» εἰς σολ ἔλασσον, ὡς καὶ τὸ «Πρελούντιο καὶ Φούγκαν» εἰς σι ἔλασσον δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον τοῦ Μπάχ. Τῷ 1930 διηύθυνε τὴν ὀρχήστραν τῆς φιλαρμονικῆς τοῦ Βερολίνου. Γ. Σ.

— **Μητρόπουλος *Ἱερόθεος***, ἀρχιεπίσκοπος ***Πατρῶν***. Ἐγεννήθη ἐν Τρεστενοῖς (νῦν Μελισσόπετρα) τῆς Γορτυνίας, νεαρώτατος δὲ μετέβη εἰς τὴν μονὴν τοῦ Μεγάλου Σπηλαίου, ἔνθα ὡς δόκιμος καὶ μοναχὸς παρέμεινε παρὰ τῷ Ἰγνατίῳ Λαμπροπούλῳ, μορφωθεὶς ὑπ' αὐτοῦ καὶ παιδαγωγηθεὶς εἰς εὐσέβειαν. Ἐλθὼν εἰς Ἀθήνας ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ῥιζαρείῳ καὶ ἐν τῇ θεολογικῇ τοῦ πανεπιστημίου σχολῇ. Φοιτητὴς ἔτι ὢν ἐκήρυττεν ἐν τοῖς ναοῖς τῶν Ἀθηνῶν καὶ Πειραιῶς, διωρίσθη δὲ ἔκτακτος ἱεροκῆρυξ ἐν Ναυπακτίᾳ. Προσκολληθεὶς ὅμως εἰς τὸν Ἀπ. Μακράκην καὶ ἐνστερνισθεὶς τὰς περὶ θρησκευτικῆς ἀνορθώσεως ἀρχὰς αὐτοῦ, συνειργάσθη μετ' αὐτοῦ ἐπὶ ἱκανὰ ἔτη, ὡς διευθυντὴς τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθείσης Σχολῆς τοῦ Λόγου καὶ τοῦ ἑβδομαδιαίου περιοδικοῦ «Εἰρήνη». Συνεργάται αὐτοῦ ἦσαν καὶ ἄλλοι διαπρεπεῖς κληρικοί, ὡς ὁ Ἠλίας Βλαχόπουλος, ὁ Εὐσέβιος Ματθόπουλος καὶ λαϊκοί, ὡς ὁ Κωνσταντῖνος Διαλησμᾶς καὶ ἄλλοι. Οἱ κληρικοὶ συνεργάται τοῦ Μακράκη κατεδικάσθησαν ὑπὸ τῆς ἱερᾶς συνόδου εἰς ἐξορίαν, ἀλλὰ τῷ 1882 μετανοήσαντες ἐδημοσίευσαν ἐν τῷ «Αἰῶνι» λίβελλον πίστεως καὶ γενόμενοι δεκτοὶ ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας ἀφωσιώθησαν ἔκτοτε εἰς τὴν ὑπηρεσίαν αὐτῆς. Ὁ Μητρόπουλος διωρίσθη ἱεροκῆρυξ Ἀκαρνανίας τὸ πρῶτον, ὕστερον δὲ Ἀττικῆς, ἐδημοσίευσε δὲ σειρὰν ὁμιλιῶν ἐπὶ τῶν εὐαγγελικῶν περικοπῶν. Τῷ 1892 ἐχειροτονήθη ἀρχιεπίσκοπος Πατρῶν καὶ Ἠλείας, μεγάλως διαπρέψας καὶ ἐν τῇ ὑψηλῇ ταύτῃ θέσει. Ἐστρατολόγησεν ἱκανοὺς κληρικοὺς καὶ πνευματικούς, ὡς τὸν Ἠλίαν Βλαχάκην, τὸν Εὐσέβιον Ματθόπουλον, τὸν Γαβριὴλ Παπανικολάου, τὸν Εὐγένιον Οἰκονόμου, τὸν Πολύκαρπον Συναδινὸν καὶ ἄλλους, δι' ὧν παρήγαγε σοβαρὰν πνευματικὴν κίνησιν ἐν Πάτραις. Ἵδρυσε τὸν θρησκευτικὸν σύλλογον «Ἀπόστολος Ἀνδρέας» καὶ περιοδικὸν τὴν «Ὀρθοδοξίαν», ὡσαύτως δὲ καὶ λαϊκὰς σχολάς. Πολλάκις χρηματίσας μέλος τῆς ἱερᾶς συνόδου, εἶχεν ἀποκτήσει μέγα κῦρος ἐν τοῖς ἐκκλησιαστικοῖς πράγμασιν. Ἀπέθανε τῷ 1903 συνοδικὸς ὤν. (Βλ. «Ἀνάπλασιν» τοῦ 1903.) † Χ.

**μητρορραγία** (ἡ). Αἱ ἐκτὸς τῆς ἐμμήνου ῥύσεως ἐπερχόμεναι ἐκ τῆς μήτρας αἱμορραγίαι. Αἱ μητρορραγίαι ὀφείλονται εἰς πολλὰ καὶ ποικίλα αἴτια, εἰς ἐνδομητρίτιδα, εἰς μητρίτιδα, εἰς πολύποδα τῆς μήτρας, εἰς ὄγκους καλοήθεις ἢ κακοήθεις τῆς μήτρας. Ἰδίως παρατηροῦνται τοιαῦται αἱμορραγίαι κατὰ τὴν κλιμακτηρικὴν ἡλικίαν, αἵτινες ὅμως δύνανται νὰ ὀφείλωνται καὶ εἰς κακοήθη ἐπεξεργασίαν τῆς μήτρας. Ἡ θεραπεία εἶναι ἀνάλογος τῆς προκαλούσης τὴν αἱμορραγίαν αἰτίας. Κ. Λ.

**μητροσίδηρος** (ὁ) (Metrosideros) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρτοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ καὶ δένδρα ἀειθαλῆ, ἀπαντῶντα εἰς τὴν Νέαν Ζηλανδίαν καὶ πλείστας νήσους τοῦ Εἰρηνικοῦ ὠκεανοῦ. Ἐκ τῶν 20 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μητροσίδηρος ὁ γναφαλώδης* (Metrosideros tomentosus), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Νέας Ζηλανδίας, καλλιεργούμενον καὶ πολλαχοῦ τῆς δυτικῆς Εὐρώπης. *Μητροσίδηρος ὁ ἰσχυρὸς* (Metrosideros robustus), ἰθαγενὴς θάμνος τῆς Νέας Ζηλανδίας, καὶ *μητροσίδηρος ὁ πολύμορφος* (Metrosideros polymorpha), δένδρον ἰθαγενὲς τῶν νήσων τοῦ Εἰρηνικοῦ, ἀειθαλές, δασικὸν καὶ κοσμητικόν, καλλιεργούμενον πρὸς κόσμον καὶ εἰς πολλὰς χώρας τῆς δυτικῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μητροσκόπησις**, *—εως* (ἡ). Ἡ ἐξ εἰδικῶν ἐργαλείων (κολποδιαστολέων) διαστολὴ τοῦ κολεοῦ καὶ ἐπισκόπησις τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας.

**μητροσκόπιον** (τό). Ἐργαλεῖον εἰσαγόμενον ἐντὸς τοῦ κολεοῦ, δι' οὗ ἐπισκοπεῖται ἡ κατάστασις τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας καὶ δύναται νὰ γίνῃ πᾶσα ἐπ' αὐτῆς ἐπέμβασις. Ὑπάρχουσι διάφορα εἴδη μητροσκοπίων: α') Τὰ *κυλινδρικά*, ἐξ ὑάλου ἢ πορσελλάνης· ταῦτα ἀποτελοῦσι κυλινδρικοὺς σωλῆνας διαφόρων μεγεθῶν καὶ ἐφαρμόζονται ἐντὸς τοῦ κολεοῦ ἀναλόγως τοῦ εὔρους αὐτοῦ. Ἡ χρῆσις ὅμως αὐτῶν εἶναι λίαν περιωρισμένη καὶ σχεδὸν ἔχουσι σήμερον ἐγκαταλειφθῆ. β') Τὰ *δισκελῆ*, ἀποτελούμενα ἐκ μετάλλου καὶ δυνάμενα εὐχερῶς νὰ ἀποστειρωθῶσι. Τούτων ὑπάρχουσι πολλὰ εἴδη, τὸ μᾶλλον ὅμως ἐν χρήσει πρὸς ἐπισκόπησιν τοῦ τραχήλου, ὡς καὶ πρὸς θεραπευτικὸν σκοπὸν ἢ ἐκτελέσεις μικρῶν ἐπεμβάσεων ἐπὶ τῆς μήτρας, εἶναι τὸ μητροσκόπιον τοῦ Cusco. γ') Τὰ *μονοσκελῆ*, ὧν πολλὰ ἐπίσης εἴδη ὑπάρχουσιν, ἀλλ' ὅμως τὸ μᾶλλον ἐν χρήσει εἶναι τὸ τοῦ Sims, ἀποτελούμενον ἐκ μέσης μοίρας εὐθείας καὶ δύο ἄκρων κεκαμμένων εἰς στρογγύλην γωνίαν. Τὰ δύο ταῦτα ἄκρα εἶναι ἐσχηματισμένα εἰς αὔλακας, λήγούσας εἰς τυφλὸν πέρας, καὶ ὁμοιάζουσι πρὸς ἥμισυ ῥάμφους νήσσης. Τὰ μονοσκελῆ ταῦτα μητροσκόπια χρησιμοποιοῦνται ἰδίως πρὸς πλήρη διαστολὴν τῆς

Digitized by Google

κοιλότητος τοῦ κολεοῦ, ἵνα εὐχερῶς ἐνεργῇ τις πᾶσαν ἐντὸς τῆς μήτρας χειρουργικὴν ἐπέμβασιν. κ. λ.

**μητρότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μήτηρ, ἡ ἰδιότης τῆς μητρός: «τὸ συναίσθημα τῆς μητρότητος».

— *[Ἐγκυκλ.]* Τοῦ ὅρου *μητρότης* γίνεται χρῆσις εἰς τὴν κοινωνικὴν πολιτικὴν ὑπὸ δύο σημασίας. Ὑπὸ εὐρυτέραν, ὁπότε σημαίνει τὴν συγγενικὴν σχέσιν γυναικὸς πρὸς τὸ τέκνον αὐτῆς, καὶ στενοτέραν, ὁπότε σημαίνει τὴν φυσιολογικὴν κατάστασιν τῆς γυναικὸς λόγῳ γεννήσεως τέκνου. Ὑπὸ τὴν δευτέραν ταύτην σημασίαν, ὑπὸ τὴν ὁποίαν ἐξετάζεται ἐνταῦθα, περιλαμβάνει τρεῖς εἰδικωτέρας καταστάσεις: τῆς ἐγκυμοσύνης, τῆς λοχείας καὶ τοῦ θηλάσματος.

Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς καταστάσεως ταύτης, τῆς ἐκπληρώσεως τῆς θεμελιώδους φυσικῆς λειτουργίας τῆς γυναικός, ἀφ' ἑνὸς μὲν μειοῦται ἡ ἱκανότης αὐτῆς πρὸς ἐργασίαν καὶ ἀφ' ἑτέρου παρίσταται ἀνάγκη λήψεως ἰδιαιτέρων φροντίδων διὰ τὴν ἐπίτοκον καὶ τὸ νεογνόν, αἱ ὁποῖαι συνεπάγονται δαπάνας. Εἰς παλαιοτέρας ἐποχάς, κατὰ τὰς ὁποίας ὁ κύκλος δράσεως τῆς γυναικὸς περιωρίζετο ἐντὸς οἰκογενείας ἀποτελούσης χωριστὴν αὐτάρκη παραγωγικὴν κοινότητα, τὰ βάρη τῆς μητρότητος ἔφερεν ἡ οἰκογένεια κατὰ τὸ μέτρον τῶν οἰκονομικῶν της μέσων καὶ τῶν ἑκάστοτε γνώσεων. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ὅμως τῆς ἀλλαγῆς μεθόδων παραγωγῆς διὰ τῆς κεφαλαιοκρατικῆς ὀργανώσεως τῆς οἰκονομικῆς ζωῆς καὶ τῆς ἐμφανίσεως τῶν μηχανῶν καὶ τῶν μεγάλων ἐργοστασίων, μὲ τὴν ἀλλαγὴν ὅρων βιοπορισμοῦ, ἡ φροντὶς διὰ τὴν γυναῖκα μητέρα κατέστη προβληματικὴ διὰ τὰς ἀπορωτέρας τάξεις. Καὶ ἂν μὲν ἡ σύζυγος πορίζεται τὰ πρὸς τὸ ζῆν διὰ προσωπικῆς ἐργασίας, μένει χωρὶς πόρους εἰς περίοδον, κατὰ τὴν ὁποίαν ἔχει ἀνάγκην ἐκτάκτων ἐξόδων. Ἀλλα καὶ κατὰ τὴν περίπτωσιν, καθ' ἣν συντηρεῖται ἐκ τοῦ ἡμερομισθίου τοῦ συζύγου, ἀπασχολουμένη συνήθως μὲ τὸν οἶκον καὶ τὰ τέκνα, σπανίως ὁ οἰκογενειακὸς προϋπολογισμὸς δύναται νὰ ἀνταποκριθῇ εἰς τὰς ἐκτάκτους δαπάνας τῆς καταστάσεως μητρότητος καὶ οὕτω τὰ παρεχόμενα μέσα εἶναι ἀνεπαρκῆ. Εἰς ἀμφοτέρας τὰς περιπτώσεις ἡ σύζυγος εἶναι συνήθως ὑποχρεωμένη νὰ κοπιάζῃ ὑπὲρ τὰς δυνάμεις της, εἰς περίοδον κατὰ τὴν ὁποίαν ἐπιβάλλεται ἀνάπαυσις, φθείρουσα οὕτω τὴν ὑγείαν της εἰς βάρος καὶ τῆς ὑγείας τοῦ τέκνου. Πολὺ δυσχερεστέρα ἦτο ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἡ θέσις τῆς ἐξ ἐλευθέρας ἑνώσεως μητρός, ἥτις πολλάκις ἠπειλεῖτο μὲ ἀπώλειαν (π. χ. ὡς ὑπηρέτρια) καὶ τῆς θέσεως καὶ τῆς κατοικίας ἀκόμη, στερουμένη καὶ τόπου νὰ γεννήσῃ καὶ μέσων, καθ' ἣν στιγμὴν ἔπρεπε νὰ φροντίζῃ διὰ δύο ἢ καὶ περισσοτέρους κἄποτε ἀνθρώπους. Αἱ δυσχερεῖς συνθῆκαι ὑπὸ τὰς ὁποίας εὑρίσκοντο αἱ μητέρες εἶχον ἄμεσον ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ὑγείας καὶ τῆς ζωῆς τῶν βρεφῶν, συνετέλουν δὲ σπουδαίως εἰς τὴν μεγάλην θνησιμότητα τῆς βρεφικῆς ἡλικίας. Ἐπειδὴ ἡ κατάστασις αὕτη, λόγῳ τῆς ἐκτάσεως, ἐλάμβανε μορφὴν δημοσίου κινδύνου, ταχέως ἤρχισεν ἀναγνωριζομένη ἡ ἀνάγκη παροχῆς βοηθείας καὶ περιθάλψεως εἰς τὴν μητέρα καὶ τὸ βρέφος, κατ' ἀρχὰς μὲν ἀπὸ τὴν ὠργανωμένην ἰδιωτικὴν πρωτοβουλίαν, κατόπιν δὲ ἀποτελεσματικώτερον ἀπὸ τὸ κράτος. Τὸ σύνολον δὲ τῶν μέτρων δημοσίας καὶ ἰδιωτικῆς πρωτοβουλίας πρὸς παροχὴν βοηθείας εἰς τὴν γυναῖκα κατὰ τὴν ἐκ νομίμου γάμου ἢ ἐλευθέρας ἑνώσεως περίοδον ἀποκτήσεως τέκνου, ὀνομάζεται «προστασία τῆς μητρότητος». Ἐκ τῶν μέτρων τούτων, λόγῳ τῆς στενοτάτης σχέσεως μητρὸς καὶ βρέφους, ἄλλα μὲν ἀφοροῦν προσωπικῶς τὴν μητέρα, καὶ ταῦτα ἐξετάζονται ἐνταῦθα, ἄλλα δὲ τὸ βρέφος.

Τὰ μέτρα προστασίας τῆς μητρότητος συνίστανται, εἰδικώτερον, εἰς τὴν ἀπαγόρευσιν ἀπασχολήσεως τῶν ἐργαζομένων γυναικῶν ἐπὶ χρονικόν τι διάστημα πρὸ καὶ μετὰ τὸν τοκετόν, εἰς ἐξασφάλισιν ἀναλήψεως ἐργασίας μετὰ τὴν ἀναγκαίαν διακοπὴν αὐτῆς λόγῳ τοῦ τοκετοῦ, εἰς τὴν ἀντικατάστασιν τοῦ ἐλλείποντος ἡμερομισθίου διὰ χρηματικοῦ ἐπιδόματος ἐπὶ ὡρισμένον χρόνον πρὸ καὶ μετὰ τὸν τοκετόν, εἰς τὴν δωρεὰν παροχὴν ἀφ' ἑνὸς φροντίδων μαίας καὶ ἰατροῦ καὶ ἀφ' ἑτέρου φαρμακευτικῆς καὶ νοσοκομειακῆς περιθάλψεως, τέλος εἰς τὴν χορήγησιν βοηθημάτων θηλάσματος.

Κατ' ἀρχὰς ἡ προστασία αὕτη παρείχετο ἐλλειπὴς καὶ ἀσυστηματοποίητος ἀπὸ ἰδιωτικὰς ὀργανώσεις. Ἡ κρατικὴ προστασία ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον κυρίως δι' ἀπαγορευτικῶν διατάξεων, διὰ τῆς ἀπαγορεύσεως δηλαδὴ τῆς ἀπασχολήσεως τῶν ἐπιτόκων καὶ λεχῶν ἐργατριῶν καὶ τῆς ἀπαγορεύσεως ἀπολύσεως τῶν ἐργαζομένων γυναικῶν κατὰ τὴν λόγῳ τοκετοῦ διακοπὴν τῆς ἐργασίας.

Κατὰ τὰς δύο τελευταίας δεκαετηρίδας ἐσημειώθη μεγάλη πρόοδος ἐπὶ τοῦ θέματος καὶ ἐθεσπίσθησαν εἰς ὅλα τὰ πεπολιτισμένα κράτη διατάξεις ὁρίζουσαι θετικῶς παροχὰς εἰς εἶδος καὶ εἰς χρῆμα, εἴτε ἀπ' εὐθείας ἀπὸ τὸ κράτος, εἴτε ἀπὸ ὀργανισμοὺς κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων. εἴτε ἀπὸ τὸν ἐκ μὴ νομίμου ἑνώσεως πατέρα, μολονότι ἡ τελευταία αὕτη περίπτωσις παρουσιάζει συνήθως δυσκολίας εἰς τὴν ἀπόδειξιν τῆς πατρότητος. Ἐκδήλωσιν τῆς προόδου ταύτης ἀποτελεῖ τὸ ὑπὸ τῆς πρώτης Διεθνοῦς Συνδιασκέψεως τῆς Ἐργασίας (Βάσιγκτων 1919) ψηφισθὲν σχέδιον συμβάσεως περὶ ἐργασίας τῶν γυναικῶν πρὸ καὶ μετὰ τὸν τοκετόν. Τὸ σχέδιον τοῦτο, ἀφοῦ καθορίζει τὰς βιομηχανικὰς καὶ ἐμπορικὰς ἐργασίας, ὡς καὶ τὰ πρόσωπα, τὰ ὁποῖα ὑπάγονται εἰς τὰς διατάξεις του, περιλαμβανούσας πᾶσαν μητέρα ἀνεξαρτήτως νομιμότητος ἢ μὴ τῆς ἑνώσεως ταύτης, ὁρίζει ἐν ἄρθρῳ 3 τὰ ἑξῆς: «Εἰς ὅλας τὰς βιομηχανικὰς ἢ ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις, δημοσίας ἢ ἰδιωτικάς, ἢ εἰς τὰ παραρτήματα αὐτῶν, ἐξαιρουμένων τῶν καταστημάτων, ἐν οἷς ἀπασχολοῦνται μόνον τὰ μέλη μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς οἰκογενείας, ἡ γυνή: α') Δὲν ἐπιτρέπεται νὰ ἐργάζεται ἐπὶ χρονικὸν διάστημα ἓξ ἑβδομάδων μετὰ τὸν τοκετόν. β') Δικαιοῦται νὰ διακόψῃ τὴν ἐργασίαν κατόπιν προσαγωγῆς ἰατρικοῦ πιστοποιητικοῦ ἐμφαίνοντος ὅτι ὁ τοκετὸς πιθανῶς θὰ λάβῃ χώραν ἐντὸς ἓξ ἑβδομάδων. γ') Δικαιοῦται νὰ λαμβάνῃ καθ' ὅλον τὸ χρονικὸν διάστημα τῆς κατὰ τὰς ὡς ἄνω παραγράφους α' καὶ β' ὁριζομένης διακοπῆς ἐργασίας ἀποζημίωσιν, ἐπαρκοῦσαν πρὸς διατροφὴν αὐτῆς καὶ τοῦ τέκνου της, πληροῦσαν τοὺς ὅρους τῆς ὑγιεινῆς. Ἡ ἀποζημίωσις αὕτη, τῆς ὁποίας τὸ ποσὸν θέλει καθορισθῇ ὑπὸ τῆς ἁρμοδίας ἀρχῆς ἑκάστης χώρας, θὰ καταβάλληται ὑπὸ τοῦ δημοσίου ἢ θὰ χορηγῆται ὑπὸ εἰδικοῦ ἀσφαλιστικοῦ ταμείου. Δικαιοῦται ἐπίσης εἰς δωρεὰν περίθαλψιν παρ' ἰατροῦ ἢ μαίας. Πλάνη τοῦ ἰατροῦ ἢ τῆς μαίας ὡς πρὸς τὸν προσδιορισμὸν τῆς ἡμέρας τοῦ τοκετοῦ οὐδαμῶς ἀναιρεῖ τὸ δικαίωμα τῆς γυναικὸς ὅπως λάβῃ τὴν ἀποζημίωσιν, εἰς ἣν δικαιοῦται ἀπὸ τῆς ἡμερομηνίας τοῦ ἰατρικοῦ πιστοποιητικοῦ μέχρι τῆς τοῦ τοκετοῦ. δ') Ἐν πάσῃ περιπτώσει ἡ γυνή, ἐὰν θηλάζῃ τὸ τέκνον της, ἔχει τὸ δικαίωμα νὰ τῇ παρέχωνται δύο διακοπαὶ πρὸς ἀνάπαυσιν, ἡμισείας ὥρας ἑκάστη, διὰ τὸν θηλασμόν». Τὸ ἄρθρον 4 τῆς συμβάσεως ἀπαγορεύει τὴν ἀπὸ μέρους τοῦ ἐργοδότου καταγγελίαν τῆς συμβάσεως ἐργασίας κατὰ τὴν λόγῳ τοκετοῦ διακοπὴν τῆς ἐργασίας.

Ἡ τρίτη Διεθνὴς Συνδιάσκεψις τῆς Ἐργασίας (Γενεύη 1921) ἀπεφάσισε νὰ γίνῃ «σύστασις» εἰς τὰ μετέχοντα κράτη, ὅπως λάβουν καὶ διὰ τὰς ἐργάτιδας τὰς ἀπασχολουμένας εἰς γεωργικὰς ἐργασίας «ἀνάλογα» μέτρα πρὸς τὰ ἀποφασισθέντα διὰ τὰς ἐργαζομένας εἰς τὴν βιομηχανίαν καὶ τὸ ἐμπόριον κατὰ τὴν πρώτην συνδιάσκεψιν τῆς Βασιγκτῶνος.

Ἐν Ἑλλάδι ὠργανωμένη ἐμφάνισις τῆς προστασίας τῆς μητρότητος, ἀναγομένη εἰς τὴν ἰδιωτικὴν πρωτοβουλίαν, εἶναι ἡ λαμπρὰ δρᾶσις τοῦ Πατριωτικοῦ Ἱδρύματος, ἄλλων τινῶν γυναικείων ὀργανώσεων εὐποιίας, ὡς καὶ ἀλληλοβοηθητικῶν τινων σωματείων τάξεών τινων ἐργαζομένων. Νομοθετικὴ διάταξις εἶναι ἡ τοῦ νόμου ΔΚΘ' τοῦ 1912, ὁρίζοντος ἐν ἄρθρῳ 13: «Εἰς τὰς ἐν τῷ ἄρθρῳ 1 ἀναφερομένας ἐπιχειρήσεις καὶ ἐργασίας δὲν ἐπιτρέπεται νὰ χρησιμοποιῶνται ἐργάτιδες ἐπὶ ὀκτὼ ἐν ὅλῳ ἑβδομάδας πρὸ τοῦ τοκετοῦ καὶ μετ' αὐτόν, οὐδὲ πρὸ τῆς παρελεύσεως τεσσάρων ἑβδομάδων μετὰ τὸν τοκετόν. Κατὰ τὸν χρόνον τοῦτον αἱ ἐργάτιδες θεωροῦνται ἐν ἀδείᾳ διατελοῦσαι καὶ δὲν ἐπιτρέπεται ἡ ὁριστικὴ ἀντικατάστασίς των». Ἕτερον σοβαρὸν νομοθετικὸν μέτρον εἶναι ἡ διὰ τοῦ νόμου 2274 τοῦ 1920 γενομένη ἐπικύρωσις τῆς προαναφερθείσης διεθνοῦς συμβάσεως της συνδιασκέψεως τῆς Βασιγκτῶνος. Ἄλλαι διατάξεις νόμων εἶναι, ἡ παρέχουσα δικαίωμα εἰς πᾶσαν διδασκάλισσαν ἢ καθηγήτριαν τριμήνου κανονικῆς ἀδείας μετὰ πλήρων ἀποδοχῶν, πρὸ καὶ μετὰ τὸν τοκετόν, ὡς καὶ ἡ διάταξις καθ' ἣν «οὐδεμία γυνὴ δύναται νὰ ἐξασκήσῃ τὸ ἐπάγγελμα τῆς τροφοῦ, ἐὰν μὴ τὸ παρ' αὐτῆς γαλουχούμενον τέκνον της συνεπλήρωσεν ἡλικίαν τεσσάρων μηνῶν ἢ ἀπεβίωσεν». Τέλος, λεπτομερὴς ῥύθμισις τῆς προστασίας μητρότητος ἔχει γίνει παρὰ τῶν κανονισμῶν διαφόρων ὀργανώσεων κοινωνικῆς προνοίας, ὡς τῶν ταμείων προνοίας μυλεργατῶν καὶ ἀρτεργατῶν καὶ κυρίως τοῦ σοβαρωτέρου ἐν Ἑλλάδι ὀργανισμοῦ κοινωνικῆς ἀσφαλίσεως, τοῦ Ταμείου Ἀσφαλίσεως Καπνεργατῶν. π. μ.

**μητροτομία**· βλ. *ὑστερεκτομία.*

**μητροτραχηλῖτις** (ἡ) *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *μήτρα.*

**Μητρούσης,** ***Ἄνω*** — καὶ ***Κάτω*** — *[Γεωγρ.]*. Δύο γεωργικὰ χωρία τῆς κοινότητος Σκοτούσης (Πρόσνικ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Σερρῶν. Κεῖνται πρὸς Δ τῶν Σερρῶν καὶ ἐγγὺς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς καὶ ἔχουσι ταχυδρομικὰ γραφεῖα καὶ δημοτικὰ σχολεῖα. Παλαιότερον ὠνομάζοντο *Χομόνδος, Ἄνω* — καὶ *Κάτω* —. Κάτ. (1928) Ἄνω Μητρούση 1.167 καὶ Κάτω 533. χ. Δ.

**Μητροφάνης,** ἢ ***Μηνοφάνης.*** Ναύαρχος τοῦ Μιθριδάτου ΣΤ', ἀποσταλεὶς ὑπ' αὐτοῦ μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Ἀγχελάου πρὸς κατάληψιν τῆς Ἑλλάδος, μὲ σχέδιον ὥστε ὁ μὲν Ἀρχέλαος νὰ καταλάβῃ τὰς νήσους καὶ τὸν Πειραιᾶ καὶ εἶτα νὰ βαδίσῃ πρὸς τὰς βορειοτέρας ἑλληνικὰς χώρας, ὁ δὲ Μητροφάνης νὰ βαδίσῃ ἀπὸ τῆς Θεσσαλίας πρὸς Ν. καὶ νὰ ἑνωθῇ μετ' αὐτοῦ. Ἀφοῦ ἀπέτυχεν ὁ Μητροφάνης εἰς τὴν κατὰ τῆς Θεσσαλίας ἐκστρατείαν του, περιπλεύσας (88—87 π. Χ.) τὰς Κυκλάδας, ἐπέπεσε κατὰ τῆς Δήλου, ἥτις ἀπετέλει τότε μέγα ρωμαϊκὸν κέντρον, καὶ τὴν ὁποίαν ἐφρούρει ὁ Ρωμαῖος στρατηγὸς Ὀρόβιος, κατέλαβεν αὐτήν, ἐφόνευσε τοὺς ἐν αὐτῇ Ρωμαίους, ἐλῄστευσε τὰ χρήματα καὶ τὰ ἀναθήματα τῆς πόλεως καὶ ἐξηνδραπόδισε τὰς γυναῖκας καὶ τὰ παιδία. Ἀλλὰ ἐνῷ ἀνήγετο εἰς τὸ πέλαγος, ἐπέπεσαν κατ' αὐτοῦ οἱ περισωθέντες ἐκ τῶν ἐμπόρων καὶ κατεναυμάχησαν αὐτόν. Ν. Α.

**Μητροφάνης** (*ὁ Κριτόπουλος*), πατριάρχης ***Ἀλεξανδρείας.*** Κατήγετο ἐκ διακεκριμένης οἰκογενείας, ἐγεννήθη δ' ἐν Βερροίᾳ τῷ 1589. Δωδεκαετῆ ἐτίμησεν αὐτὸν ὁ μητροπολίτης Βερροίας διὰ τοῦ ἀξιώματος τοῦ πρωτοαποστολαρίου. Ἔφηβος μετέβη εἰς Ἅγιον Ὄρος, ἤδη χειροτονημένος διάκονος. Ἐκεῖ τῷ 1615 ἐγνώρισεν αὐτὸν Κύριλλος ὁ Λούκαρις καὶ ἐκτιμήσας αὐτὸν τὸν παρέλαβεν εἰς Ἀλεξάνδρειαν, ὅπου ἐξελέγη πατριάρχης. Μετ' ὀλίγον ὁ ἀρχιεπίσκοπος Κανταβριγίας Γεώργιος Ἄμποτ, ἐντολῇ τοῦ βασιλέως Ἰακώβου Α', ἐζήτησε παρὰ τοῦ Λουκάρεως νεαρὸν Ἕλληνα κληρικὸν ὅπως σπουδάσῃ ἐν Ἀγγλίᾳ, καὶ ὁ Λούκαρις ἔστειλε τὸν Μητροφάνη, ὃν ὁ Ἄμποτ ἐγκατέστησεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ὀξωνίας. Θανόντος τῷ 1621 τοῦ Κωνσταντινουπόλεως Τιμοθέου, ἐξελέγη ὁ Λούκαρις, ὅστις ὠνόμασε τὸν Μητροφάνη «μέγαν ἀρχιμανδρίτην τοῦ Οἰκουμενικοῦ θρόνου». Φαίνεται ὅτι ὁ Λούκαρις, κατὰ τὴν δευτέραν του πατριαρχείαν ἐν Κωνσταντινουπόλει, θέλων ν' ἀγωνισθῇ κατὰ τῶν ἰησουϊτῶν ἐκάλεσε συναγωνιστὴν τὸν Μητροφάνη καὶ ὅτι οὗτος ἀνεχώρησεν εἰς Ὁλλανδίαν, ὅπως φθάσῃ διὰ ξηρᾶς εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ὁ Ἄμποτ γράφει ἐπὶ τῇ ἀναχωρήσει πρὸς τὸν Ἄγγλον ἐν Κωσταντινουπόλει πρεσβευτὴν Rowe δριμυτάτας κατηγορίας ἐναντίον τοῦ Μητροφάνους, ὃν κατηγορεῖ ἐπὶ ἀχαριστίᾳ τερατώδει, ἀναφέρων ὅτι τυχὼν ἀκροάσεως παρὰ τῷ βασιλεῖ ἔτυχε τόσον θερμῆς δεξιώσεως, ὥστε προὐκάλεσε τὴν ἀπονομὴν τίτλων εὐγενείας εἰς διαφόρους, ἀφ' ὧν ἐχρηματίσθη. Ὁ Κ. Δυοβουνιώνης ἐν σχετικῇ μελέτῃ του ἀποδεικνύει ὅτι ὁ Ἄμποτ ἔγινε θῦμα τοῦ μέγα ἐν Λονδίνῳ ἰσχύοντος Ἱσπανοῦ πρέσβεως Γόνδομαρ, φανατικοῦ ὀργάνου τῆς Ἁγίας Ἕδρας. Ἐξ Ὁλλανδίας ὁ Μητροφάνης περιῆλθεν ὅλην τὴν Γερμανίαν καὶ Ἑλβετίαν, ὅπου ἐγνώρισε καὶ συνεδέθη μετὰ τῶν ἐπιφανεστέρων θεολόγων, γερουσιαστῶν, ἡγεμόνων, τιμηθεὶς ὡς σοφὸς ἀνήρ, ἐκφωνήσας λόγους ἐπὶ ἑλληνικῶν καὶ ὀρθοδόξων θεμάτων εἰς ἀκαδημίας καὶ πανεπιστήμια, συγγράψας περισπούδαστα μελετήματα καὶ λαβὼν δῶρα πλούσια εἰς βιβλία ἰδίως, ἅτινα προώρισε διὰ τὸν Λούκαριν. Ἐν Τυβίγγῃ καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Γερμανίας ἠγωνίσθησαν νὰ κρατήσουν αὐτὸν μονίμως. Ἰδίως ἀπέλαυσε τῆς εὐνοίας τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βυρτεμβέργης Φρειδερίκου, μετὰ πολλῶν δὲ ἐπιφανῶν Γερμανῶν συνεζήτησε τὸ δυνατὸν τῆς ἑνώσεως προτεσταντῶν καὶ ὀρθοδόξων. Φθάσας εἰς Βενετίαν (1627) ἠναγκάσθη νὰ παραμείνῃ ἐκεῖ ἐπὶ μακρόν, διότι ἐξαντλήσας τὰ χρήματά του ἐδίδασκεν ἐπὶ μισθῷ εἰς τὴν ἐκεῖ ἑλληνικὴν σχολήν. Ἐκεῖ ἐξετύπωσε τὴν ὁμολογίαν του. Ἡ γερουσία δὲν ἐπέτρεψε τὴν ἐκτύπωσιν καί τινων συγγραμμάτων τοῦ Λουκάρεως. Ἐν Βενετίᾳ ἔμεινε μέχρι τέλους τοῦ 1630, μεθ' ὃ εὑρέθη εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖθεν ἀπῆρεν εἰς Ἀλεξάνδρειαν, ὅπου διὰ τῶν βιβλίων του ἵδρυσε μίαν τῶν πλουσιωτέρων βιβλιοθηκῶν τῶν χρόνων του. Τῷ 1633 προήχθη ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Ἀλεξανδρείας Γερασίμου εἰς μητροπολίτην «Μέμφεως καὶ Αἰγύπτου». Ἀποθανόντος τῷ 1636 τοῦ Γερασίμου ἐξελέγη τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ Μητροφάνης, προσλαβὼν ἐπίτροπον τὸν Μελέτιον. Τῷ 1638 εὑρίσκετο εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἄγνωστον ὅμως ἂν παρέστη μάρτυς τῆς συλλήψεως καὶ θανατώσεως τοῦ εὐεργέτου του Λουκάρεως, οὗ τὸν ἀναθεματισμὸν ὑπέγραψε καὶ αὐτός, ὑποκύψας εἰς τὴν βίαν τοῦ Κυρίλλου Κονταρῆ, ὀργάνου τῶν ἰησουϊτῶν, διαδεχθέντος τὸν Λούκαριν. Ὁ Ἱεροσολύμων Θεοφάνης γράφων εἰς τὸν τσάρον Μιχαὴλ ἀναφέρει ὅτι ὁ Κονταρῆς ἠπείλησεν αὐτοὺς διὰ τῆς τουρκικῆς ἀρχῆς ἂν μὴ συνελειτούργουν μετ' αὐτοῦ. Ὁ Μητροφάνης ἀπέθανε τὸ ἑπόμενον ἔτος (1639) ἐν Βλαχίᾳ. Ἔγραψε δέ: 1) «Ὁμολογίαν τῆς Ἀν. Ἐκκλησίας» (λατινιστί, 1625) κατὰ παράκλησιν τῶν ἐκεῖ καθηγητῶν. Τὸ αὐτόγραφον σῴζεται εἰς τὴν βιβλιοθήκην τῆς Wolfenbüttel ὑπ' ἀριθ. 946 καὶ ἐδημοσιεύθη τῷ 1661 καὶ τῷ 1850. 2) «Περὶ προφορᾶς τοῦ γράμματος Δ καὶ Θ». Ἐγράφη ἐν Ἀλτδόρφῃ τῷ 1625 κατ' αἴτησιν τοῦ ἀνατολιστοῦ Δανιὴλ Schwencier, ὅστις τὴν ἐξέδωκεν ἐν Νυρεμβέργῃ τῷ 1626, μετ' αὐτὸν δὲ ὁ Β. Γεωργιάδης ἐν «Ἐκκλησιαστικῇ Ἀληθείᾳ» 1884. 3) «Ἀπάντησιν εἰς ἐλλογιμώτατον ἄνδρα ζητήσαντα περὶ τοῦ ἀποστολικοῦ ῥητοῦ Γαλατ. Ε' κλπ.». Μετεφράσθη ὑπὸ Μελχ. Ριντδέρου εἰς τὴν λατινικήν. Ἐγράφη τῷ 1625 καὶ ἐξε-

Digitized by Google

δόθη ἐν Νυρεμβέργῃ τῷ 1626. 4)Λόγος πανηγυρικὸς καὶ δογματικὸς εἰς τὴν Γέννησιν τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ. Ἀπηγγέλθη εἰς τὴν Ἀλφορτικὴν τῶν Νωρικῶν Ἀκαδημίαν. Μετεφράσθη εἰς τὴν λατινικὴν ὑπὸ Γεωργίου Κουεκκίου καὶ ἐξεδόθη τῷ 1626. 5) «Περί τινων λειτουργικῶν λέξεων» (1637 ἐν Νυρεμβέργῃ καὶ εἰς ἄλλας ἐκδόσεις). 6) «Γραμματικὴν ἁπλοελληνικήν». Ἐγράφη ἐν Στρασβούργῳ, ὅταν ὁ Κριτόπουλος ἐπεξειργάσθη τὸ κείμενον τοῦ γραικοβαρβάρου γλωσσαρίου τοῦ Meursii, ἐκδοθὲν τῷ 1641. Σῴζεται εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ἀννοβέρου ὑπ' ἀριθ. 537. 7) «Ἔκθεσιν σύντομον περὶ μετανοίας καὶ ἐξομολογήσεως». Ἐγράφη ἐν Καΐρῳ καὶ ἀπόκειται εἰς τὴν Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην τῆς Ἑλλάδος ὑπ' ἀριθ. 1020. Ἐξεδόθη ὑπὸ Κ. Δυοβουνιώτου. 8) «Μετάφρασιν τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὸ ἁπλοελληνικόν». Τὴν ἀναφέρει ὁ ἴδιος εἰς τὸ γλωσσάριον τοῦ Meursii (ἐν λ. γάδαρος). 9) «Ἀντιπανοπλίαν». Εἶναι ἀντιρρητικὴ εἰς τὴν «Πανοπλίαν» τοῦ λατινόφρονος Νεοφύτου Ροδινοῦ, γραφεῖσαν ἐν Ρώμῃ τῷ 1630. 10) «Ὁδοιπορικόν». Δὲν σῴζεται. 11) Ὁμιλίας. 12) Ἐπιστολάς. Τὴν σπουδαιοτέραν τούτων ἐξέδωκεν ὁ Κ. Δυοβουνιώτης, ἄλλας δ' ἐξέδωκεν ὁ Σπ. Λάμπρος. Εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ἀμβούργου σῴζονται 75. 13) Ὁ Γ. Μαζαράκης ἀποδίδει εἰς τὸν Κριτόπουλον καί τινα χειρόγραφα ἑλληνικὰ καὶ λατινικὰ περὶ λογικῆς, ἀποκείμενα εἰς τὴν πατριαρχικὴν βιβλιοθήκην τοῦ Καΐρου, ἅτινα ὁ Β. Γεωργιάδης καὶ ὁ Κ. Δυοβουνιώτης δὲν θεωροῦν ἔργα τοῦ Μητροφάνους.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ditelmair*, «De Metrophane Critopulo hujus Academiae quodam cive» (Altdortii 1769).—*Ἀνδρονίκου Δημητρακοπούλου*, «Δοκίμιον περὶ τοῦ βίου καὶ τῶν συγγραμμάτων Μητροφάνους τοῦ Κριτοπούλου, πατριάρχου Ἀλεξανδρείας» (Λειψία 1870).—*Γερασ. Μαζαράκη*, «Μητροφάνης ὁ Κριτόπουλος κατὰ τοὺς κώδικας τοῦ πατριαρχείου Ἀλεξανδρείας καὶ ἄλλας πηγάς» (Κάϊρον 1884).—*Μ. Ρενιέρη*, «Μητροφάνης Κριτόπουλος καὶ οἱ ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἀγγλίᾳ φίλοι αὐτοῦ (1617—1628)» (Ἀθῆναι 1893).—*Legrand* (ἐν Bibl. Hell. t. V).—*Β. Γεωργιάδου*, (ἐν «Ἐκκλ. Ἀλήθεια» 1883, 1884. 1886).—*Χρυσοστ. Παπαδοπούλου*, (ἐν «Ἐκκλ. Φάρῳ» 1910).—Ἀλλ' ἡ ἀρίστη μονογραφία εἶναι ἡ τοῦ *Κ. Δυοβουνιώτου*, «Μητροφάνης Κριτόπουλος» (Ἀθῆναι 1915).

Γ. Λ. Α.

— **Μητροφάνης,** ἐπίσκοπος ***Ἄνδρου.*** Ὁ τελευταῖος ἐπίσκοπος Ἄνδρου καὶ Κέας, μεθ' ὃν ἡ ἐπισκοπὴ συνεχωνεύθη μὲ τὴν τῆς Σύρου. Κατήγετο ἐξ Ἀκράτας, διατελῶν δ' ἱεροκήρυξ Ἀθηνῶν ἐχειροτονήθη ἐπίσκοπος Ἄνδρου καὶ Κέας τὴν 26 Ἰουνίου 1855, παραμείνας ὡς τοιοῦτος μέχρι τῆς 18 Μαρτίου 1889, ὅτε ἀπεβίωσεν. Ὁ Μητροφάνης ἐκοσμεῖτο ὑπὸ παιδείας ἀμφιλαφοῦς, σωφροσύνης καὶ ἁγνείας. Συνέγραψε μελέτην «Περὶ προσόντων τῶν ἐπισκόπων ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἱερῶν Γραφῶν καὶ τῶν ἀποστολικῶν καὶ συνοδικῶν κανόνων», τὴν δὲ πλουσίαν βιβλιοθήκην του ἀφιέρωσεν ὑπὲρ τῆς ἐν Αἰγιαλείᾳ μονῆς τῶν Ταξιαρχῶν, ἥτις ἦτο ἡ μονὴ τῆς μετανοίας του (*Δ. Π. Πασχάλη*, Ἱστορία Ἄνδρου, τ. Β', σ. 359—361).

Δ. Π. Π.

— **Μητροφάνης,** ἐπίσκοπος ***Ἀριστείας.*** Ἐν Λέρῳ γεννηθεὶς καὶ διδαχθείς, ὑπηρέτησε παρὰ τῷ Μελετίῳ Ἡρακλείας καὶ προϊστάμενος ὢν τῆς ἐκκλησίας Ἁγίου Νικολάου ἐν Τζιβαλίῳ, προήχθη εἰς ἐπίσκοπον τιτουλάριον Ἀριστείας, χειροτονηθεὶς τῷ 1817 καὶ μείνας ἀρχιερατικὸς προϊστάμενος ἐκεῖ μέχρι τοῦ 1837, ὅτε ἀπέθανε. Κατέλιπεν ἀρκετὸν χρηματικὸν ποσὸν ὑπὲρ συντηρήσεως τῆς ἐν Λέρῳ σχολῆς.

Μ. Ι. Γ.

—**Μητροφάνης,** πατριάρχης ***Κωνσταντινουπόλεως.*** Ὄνομα τριῶν οἰκουμενικῶν πατριαρχῶν.—1) Ὁ Α', ὅστις ὑπῆρξε καὶ πρῶτος τῆς Κωνσταντινουπόλεως πατριάρχης (315—325). Οὗτος ὑπῆρξεν υἱὸς τοῦ Δομετίου καὶ ἐξάδελφος τοῦ αὐτοκράτορος Πρόβου, ὁ δὲ Κωνσταντῖνος ὁ Μέγας ἐπὶ τῆς πατριαρχείας του ἵδρυσε τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ συνεκάλεσε τὴν ἐν Νικαίᾳ Α' οἰκουμενικὴν κατὰ τοῦ Ἀρείου σύνοδον. Ἡ Ἐκκλησία γεραίρει τὴν μνήμην του τῇ 4 Ἰουνίου.

—2) Ὁ Β', ἐκ τῆς μητροπόλεως Κυζίκου προαχθείς, ὡς δεξάμενος τὸν ἐν Φλωρεντίᾳ ἑνωτικὸν ὅρον, ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Παλαιολόγου (1440—1443), ἐφ' ᾧ καί τινες τῶν πρωτοθρόνων μητροπολιτῶν δὲν συνελειτούργουν αὐτῷ, ἡ δὲ ἐν Ἱεροσολύμοις συνελθοῦσα σύνοδος τῶν πατριαρχῶν Ἀλεξανδρείας, Ἀντιοχείας καὶ Ἱεροσολύμων καί τινων μητροπολιτῶν καθῄρεσεν αὐτὸν τῷ 1443, Μητροφάνον ἀποκαλέσασα. Αὐτὸς ὅμως, ζητῶν νὰ πείσῃ τὸν αὐτοκράτορα νὰ ἐφαρμόσῃ τὸν ἑνωτικὸν ὅρον (5—6 Ἰουλίου 1439), ἀπέθανε τῇ 1 Αὐγούστου 1443, καταλιπὼν μνήμην οὐχὶ ἀγαθήν.

—3) Ὁ Γ', ἐγεννήθη ἐν Πικριδίοις (Χάσκιοϊ) τοῦ Κερατίου Κόλπου καὶ κατήγετο ἐκ Βουλγάρων. Μετὰ τὰ πρῶτα γράμματα ἐκάρη μοναχὸς ἐν Ἁγίῳ Ὄρει καὶ εἰς ἀρχιμανδρίτην προχειρισθεὶς ἀπῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Ἱερεμίου τοῦ Α' διωρίσθη ἐφημέριος τῆς γενετείρας του καὶ εἶτα τοῦ πατριαρχικοῦ ναοῦ, ἐπὶ τοῦ πατριάρχου Διονυσίου Β' (1545—1555) προήχθη εἰς μητροπολίτην Καισαρείας καὶ ἀπεστάλη εἰς Κέρκυραν, Βενετίαν καὶ Ρώμην πρὸς ἐξέτασιν τῶν κατὰ τοὺς δυτικοὺς καὶ τοὺς ὁλονὲν προαγομένους διαμαρτυρομένους, περὶ ὧν ἐνδιεφέρετο τὸ πατριαρχεῖον. Ἐπανελθών, τῇ ἐνεργείᾳ τῶν ἰσχυρῶν Καντακουζηνῶν, ἐξελέγη πατριάρχης (1565—1572) καὶ αὖθις (1579—1580), ὅτε καὶ ἀπέθανε τῇ 9 Αὐγούστου, συντελέσας εἰς ἵδρυσιν βιβλιοθηκῶν καὶ ὑποστηρίξας τὴν παιδείαν, ὡς ὁ Ἱερεμίας ὁ Β' ὁ Τρανός.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Μ. Ἰ. Γεδεών*, Πατριαρχικοὶ Πίνακες, Κωνσταντινούπολις 1830, σ. 104 ἑξ., 465 ἑξ., σ. 515 ἑξ.—Ν. Ἑλληνομνήμων τόμ. Α', σ. 43, 107, Δ' 91, 195, Ζ' 401.

Τ. Ε. Ε.

— **Μητροφάνης,** ἀρχιεπίσκοπος ***Προικοννήσου.*** Διατελέσας τοιοῦτος ἀπὸ τοῦ 1677 μέχρι τοῦ 1698, εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς ἐκκλησιαστικῆς ταύτης παροικίας ὡς ἀληθὴς ἀρχιερεύς, καίπερ ἀμαθέστατος. Τῷ 1681 ἐξώδευσεν εἰς οἰκοδομὴν ἀποθήκης προσοδοφόρου καὶ τῶν ἄνωθεν αὐτῆς κελλίων τοῦ ἀρχιερατικοῦ οἴκου. Τῷ 1698, βλέπων ἐγγίζοντα τὸν θάνατον, ἐξησφάλισε τὰ κτήματα τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Προικοννήσου, μεταγράψας εἰκονικῶς εἰς ὄνομα θεοσεβῶν Ἑλλήνων, ὧν καὶ τὰ τέκνα θὰ διεφύλαττον τὰ ἐπ' αὐτῶν δίκαια τῆς (ἐν Αὐλωνίᾳ) κοινότητος.

Μ. Ι. Γ.

— **Μητροφάνης *ὁ Σικελός.*** Μοναχὸς ἀσκούμενος μετὰ τὸ μέσον τοῦ Θ' αἰῶνος ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἢ εἰς τὰ πέριξ αὐτῆς. Ἐφημίζετο ἡ ἀρετὴ αὐτοῦ, καὶ οἱ ὑπὲρ εὐσεβείας ἀγῶνες, ὡς ὁ Φώτιος μαρτυρεῖ.

Μ. Ι. Γ.

— **Μητροφάνης,** ἐπίσκοπος ***Σμύρνης.*** Περὶ αὐτοῦ ὀλίγα τινὰ γινώσκομεν, φαίνεται δὲ ὅτι ἐγεννήθη ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἐγένετο εἷς τῶν φανατικωτέρων ἐχθρῶν τοῦ Φωτίου ἐν τῇ κατ' αὐτοῦ συνόδῳ τοῦ 864, ἐκφωνήσας σφοδρὸν κατ' αὐτοῦ λόγον. Κατόπιν, ἐξορισθεὶς μετὰ τῶν λοιπῶν ἐχθρῶν τοῦ Φωτίου καὶ μὴ παραστὰς ἐν τῇ μεγάλῃ ὑπὲρ αὐτοῦ συγκροτηθείσῃ συνόδῳ τοῦ 874, καθῃρέθη. Ὁ Μητροφάνης ἔγραψε τὴν πρὸς πατρίκιον Μανουὴλ ἐπιστολήν, λόγοι δέ τινες κατὰ παυλικιανῶν καὶ ἑρμηνεῖαι θεωροῦνται ὡς μὴ γνήσιαι.

† Η. Φ. Β.

— **Μητροφάνης *ὁ ὑμνῳδός.*** Ἤκμασεν ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ τὸν Θ' αἰῶνα, ὅτε ἀνεφάνησαν οἱ ἐκ τῆς μονῆς τοῦ Στουδίου διάσημοι ἐκκλησιαστικοὶ ὑμνογράφοι. Ἐποίησε κανόνας πεντηκοσταρίου, τριαδικοὺς κανόνας τοῦ πεντηκοσταρίου καὶ τῆς ὀκταήχου.

Τ. Ε. Ε.

— **Μητροφάνους *ναός.*** Ναὸς ἐν Κωνσταντινουπόλει, κτισθεὶς κατά τινα παράδοσιν ὑπὸ τοῦ Μεγάλου Κωνσταντίνου εὐθὺς μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ τῷ 325 μ. Χ. καὶ ἀνακαινισθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἰουστινιανοῦ κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα. Ἐν αὐτῷ ἐσῴζοντο τὰ λείψανα τοῦ ἱεροῦ ἀνδρός. Ἔκειτο δὲ παρὰ τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Ἀκακίου ἐν Ἑπτασκάλῳ, πιθανῶς δὲ ἔξω τοῦ Κοντοσκαλίου.

Α. Θ. Σ.

**μητροφονία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μητροφόνου, μητροκτονία.

**μητρυιά** (ἡ)· ἡ δευτέρα σύζυγος ἐν σχέσει πρὸς τὰ τέκνα τῆς πρώτης συζύγου: «*ἡ μητρυιὰ ποτὲ δὲν εἶναι μητέρα*» || μεταφ., σκληρὰ μήτηρ, βάναυσος: «*μητέρα εἶσαι σὺ ἢ μητρυιά;*» || «*ἡ πατρὶς δὲν πρέπει νὰ εἶναι δι' ἄλλους μὲν μήτηρ, δι' ἄλλους δὲ μητρυιά*».

**Μητρυιά** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἐγκουρῶν τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 321.

Χ. Δ.

**μητρυιός** (ὁ)· ὁ δεύτερος σύζυγος ἐν σχέσει πρὸς τὰ τέκνα τοῦ πρώτου συζύγου, ἄλλως *πατρυιός* (ἐκ τοῦ θηλ. *μητρυιά*).

**μητρῳακὸν** *μέτρον [Μετρ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ *γαλλιαμβικοῦ* μέτρου (βλ. λ.) ἐκ τῆς χρήσεως αὐτοῦ εἰς ᾄσματα ἀφιερωμένα εἰς τὴν μητέρα τῶν θεῶν Κυβέλην.

**μητρωνυμικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐκ τῆς μητρὸς ὀνομαζόμενος, ὁ ἐκ τοῦ ὀνόματος τῆς μητρὸς παρωνυμούμενος: «Ἀπόλλων Λητοΐδης» ὁ υἱὸς τῆς Λητοῦς.—Ἐπίρρ. ***μητρωνυμικῶς.***

**μητρῷον** (τό)· παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἀθηναίοις, τὸ ἱερόν, ὁ ναὸς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν Κυβέλης, ἔνθα κατετίθεντο τὰ δημόσια γράμματα καὶ οἱ νόμοι || ἐντεῦθεν συνεκδοχικῶς, ἐπίσημος κατάλογος: «*μητρῷον ἀρρένων*» κατάλογος εἰς τὸν ὁποῖον καταγράφονται οἱ ἄρρενες Ἕλληνες πολῖται: «*μητρῷον ἀξιωματικῶν,—ὁπλιτῶν,—ἀγωνιστῶν κλπ.*».

— *[Ἀρχ.]* Ἀρχικῶς ἡ λέξις *μητρῷον* ἐσήμαινε τὸ ἱερὸν τῆς μητρὸς τῶν θεῶν, τῆς θεᾶς Κυβέλης, ἱερόν, τὸ ὁποῖον ἤγειραν οἱ Ἀθηναῖοι, ἴσως μετὰ τοὺς Περσικοὺς πολέμους, ὁπότε φαίνεται εἰσαχθεῖσα καὶ εἰς Ἀθήνας ἡ λατρεία τῆς φρυγικῆς ταύτης θεότητος. Τὸ μητρῷον τῶν Ἀθηνῶν ἠγείρετο ἐν τῷ κέντρῳ τῆς πόλεως, ἤτοι πλησίον τοῦ βουλευτηρίου τῶν πεντακοσίων καὶ ἀπέναντι τῆς ἀγορᾶς, ἔνθα ἵσταντο τὰ ἀγάλματα τοῦ Ἁρμοδίου καὶ Ἀριστογείτονος. Κατὰ τὴν παράδοσιν, τὸν ναὸν τοῦτον ἔκτισαν οἱ Ἀθηναῖοι κατ' ἀνάγκην, διότι, ἐλθόντος ἄλλοτε εἰς Ἀθήνας μητραγύρτου τινὸς πρὸς διάδοσιν τῶν μυστηρίων τῆς Κυβέλης εἰς τὰς γυναῖκας καὶ φονευθέντος ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων, οἵτινες ἐκρήμνισαν αὐτὸν εἰς βάραθρον, ἐπῆλθε φοβερὸς λιμὸς εἰς τὴν πόλιν. Κατὰ χρησμὸν τῶν Δελφῶν καὶ πρὸς ἐξευμένισιν τῆς μητρὸς τῶν θεῶν, οἱ Ἀθηναῖοι ἤγειραν τὸν ὡς ἄνω ναόν, ἀφιερώσαντες μάλιστα ἐν αὐτῷ ἄγαλμα τῆς θεᾶς, ἔργον τοῦ Φειδίου καὶ τοῦ μαθητοῦ του Ἀγορακρίτου, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀρριανός. Τὸ μητρῷον τοῦτο ἠνοίγετο δὶς τοῦ ἔτους, ἐν αὐτῷ δὲ ἐφυλάσσοντο τὰ ἐπίσημα ἔγγραφα τῆς ἀθηναϊκῆς πολιτείας. Ἐκ τοῦ γεγονότος τούτου, καὶ κατ' ἐπέκτασιν, ἡ λέξις μητρῷον κατέληξε νὰ σημαίνῃ τὸ ἀρχειοφυλάκιον. Μητρῷον ὑπῆρχε καὶ ἐν Ὀλυμπίᾳ καὶ εὑρίσκετο κάτωθεν τῶν θησαυρῶν. Ἦτο δωρικοῦ ῥυθμοῦ καὶ διαστάσεων 20×10 μ.

Β. Δ. Θ.

— *[Δημογρ.]* Καλεῖται *μητρῷον* ὁ ὑπὸ ἑκάστου δήμου ἢ κοινότητος τηρούμενος γενικὸς κατάλογος τῶν δημοτῶν. Συμφώνως τῷ ἄρθρῳ 136 τοῦ νόμου ΔΝΖ' (ἤδη ἄρθρον 133 τοῦ κώδικος τῆς περὶ δήμων καὶ κοινοτήτων νομοθεσίας) κατηρτίσθησαν ἅμα τῇ ἐγκαταστάσει τῶν νέων δημοτικῶν καὶ κοινοτικῶν ἀρχῶν τὰ γενικὰ μητρῷα τῶν δημοτῶν, ἀμφοτέρων τῶν φύλων, καταστάντα ὁριστικὰ κατὰ τὴν διαδικασίαν τῶν ἄρθρων 133—138 τοῦ ὡς ἄνω κώδικος, ἐκτυπωθέντα δὲ εἰς τέσσαρα ἀντίτυπα, ὧν τὸ μὲν ἐτηρήθη εἰς τὰ ἀρχεῖα τῆς οἰκείας νομαρχίας, τὸ ἕτερον παρὰ τῇ δημοτικῇ ἢ κοινοτικῇ ἀρχῇ, τὸ τρίτον παρὰ τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τὸ τέταρτον εἰς τὰ ἀρχεῖα τοῦ οἰκείου πρωτοδικείου. Στοιχεῖα διὰ τὴν σύνταξιν τῶν γενικῶν τούτων μητρῴων ὑπῆρξαν τὰ ὑφιστάμενα δημολόγια, αἱ ληξιαρχικαὶ πράξεις, τὰ βιβλία τῶν ἱερέων καὶ πᾶσα ἄλλη, ὡς λέγει ὁ νόμος, σχετικὴ πληροφορία.

Κατ' ἔτος, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ληξιαρχικῶν πράξεων καὶ τῶν βιβλίων τῶν ἱερέων, καταρτίζεται ὑπὸ τοῦ δημοτικοῦ ἢ κοινοτικοῦ συμβουλίου τὸ ἐτήσιον γενικὸν μητρῷον τῶν δημοτῶν ἀμφοτέρων τῶν φύλων, εἰς ὃ περιλαμβάνονται καὶ οἱ ἐγκαταστάσεις ἀποκτήσαντες τὸ δικαίωμα τοῦ δημότου ἢ ἄλλως ζητήσαντες τὴν ἐγγραφήν των. Τὸ οὕτω καταρτισθὲν μητρῷον ἐκτίθεται εἰς τὸ κατάστημα τῶν συνεδριάσεων τοῦ συμβουλίου ἐπὶ δεκαπέντε ἡμέρας, ἀπὸ τῆς παρόδου τῶν ὁποίων ἐπιτρέπονται ἐντὸς ὀκτὼ ἡμερῶν ἐνστάσεις περὶ διαγραφῆς ἐγγραφέντων ἢ ἐγγραφῆς παραλειφθέντων ἢ διορθώσεως ἡλικίας, ἐκδικαζόμεναι ἐντὸς 40 ἡμερῶν ὑπὸ ἐπιτροπῆς ἐκ τοῦ εἰρηνοδίκου, τοῦ προέδρου τοῦ συμβουλίου καὶ τοῦ πλειοψηφοῦντος συμβούλου. Κατὰ τῶν περὶ ἀρρένων ἀποφάσεων τῆς ἐπιτροπῆς ταύτης χωρεῖ προσφυγὴ ἐνώπιον τοῦ πρωτοδικείου, οὗτινος ἡ ἀπόφασις εἶναι ἀμετάκλητος.

Ἐκτὸς τῶν ὡς ἄνω μητρῴων, συντάσσονται καὶ εἰδικὰ μητρῷα ἀρρένων, ἐτήσια καὶ δεκαετῆ, συμφώνως πρὸς τὸν νόμον 3338 «Περὶ στρατολογίας τοῦ κατὰ γῆν στρατοῦ».

Μ. Δ. ΣΤΑΣΙΝΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Στρατ.]* Μητρῷα ὑπάρχουσι πολλὰ ἐν τῷ στρατῷ.

Α') *Μητρῷον στρατολογικόν.* Τηρεῖται ὑπὸ τῶν κατὰ τόπους στρατολογικῶν γραφείων καὶ ἐγγράφονται ἐν αὐτῷ τὰ ὀνόματα τῶν στρατευσίμων τῆς σχετικῆς περιφερείας, κατὰ κλάσιν καὶ στρατολογικὸν διαμέρισμα.

Β') *Μητρῷον ἀνδρῶν.* Τηρεῖται παρὰ τοῦ συντάγματος καὶ τοῦ λόχου, ἴλης ἢ πυροβολαρχίας, ἐγγράφονται δ' ἐν αὐτῷ τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν τῆς δυνάμεως.

Γ') *Μητρῷον κτηνῶν.* Τηρεῖται παρὰ τοῦ συντάγματος τῶν μὴ ἐφίππων ὅπλων, καὶ ὑπὸ τῆς πυροβολαρχίας ἢ τῆς ἴλης, ἐγγράφονται δ' ἐν αὐτῷ οἱ ἀριθμοὶ τῶν κτηνῶν τῆς δυνάμεώς των, οἱ ἀριθμοὶ τῶν χαρακτηριστικῶν ἑκάστου κτήνους, τοῦ ἔτους προμηθείας του καὶ τοῦ τόπου προελεύσεώς του.

Δ') *Μητρῷον πυροβόλου.* Δι' ἓν ἕκαστον πυροβόλον συντάσσεται ὑπὸ τῆς σχετικῆς πυροβολαρχίας ἴδιον μητρῷον (ἢ βιβλιάριον), ἐν τῷ ὁποίῳ ἐγγράφεται ὁ ἀριθμὸς τῶν ὑπὸ τοῦ σχετικοῦ πυροβόλου βαλλομένων ἑκάστοτε βολῶν, μετὰ τῆς ἐποχῆς καθ' ἣν αὗται ἐβλήθησαν (π. χ. ἀσκήσεις πυρὸς τῆς τάδε ἐποχῆς, πολεμικαὶ βολαὶ τάδε μάχης κτλ.), πρὸς δὲ ἅπασαι αἱ τυχὸν παρουσιαζόμεναι βλάβαι εἰς τὸ πυροβόλον (π. χ. διάβρωσις, ἐξόγκωσις, κτύπημα ἐξ ἐχθρικῆς βολῆς κτλ.), αἱ ἐπισκευαί του καὶ αἱ κατὰ πάντα ἔλεγχον παρατηρήσεις διὰ τὸ πυροβόλον τοῦτο.

Ε') *Μητρῷον πολυβόλου.* Δι' ἓν ἕκαστον πολυβόλον συντάσσεται ὑπὸ τοῦ σχετικοῦ λόχου ἴδιον μητρῷον (βιβλιάριον), ἐν τῷ ὁποίῳ ἐγγράφονται πάνθ' ὅσα καὶ περὶ τοῦ πυροβόλου.

ΣΤ') *Μητρῷον αὐτοκινήτου.* Δι' ἓν ἕκαστον αὐτοκίνητον συντάσσεται ὑπὸ τῆς σχετικῆς μονάδος ἴδιον μητρῷον (βιβλιάριον), εἰς ὃ ἐγγράφονται ὁ ἀριθμὸς τῶν ἑκάστοτε διανυομένων χιλιομέτρων καθ' ἡμερομηνίας, αἱ τυχὸν βλάβαι καὶ αἱ ἐπισκευαί αὐτοῦ.

Ν. Θ. Κ.

— **μητρῷον** ***ἀγωνιστῶν*** *[Ἱστορ.]*. Τὸ ὄνομα τοῦτο ἐδόθη εἰς τὰ ἀπὸ τῶν χρόνων τῆς ἀνεξαρτησίας



Digitized by Google

μέχρι σήμερον συλλεγέντα ὑπὸ ἐπιτροπῶν καὶ ταξινομηθέντα στοιχεῖα περὶ τῶν διαφόρων (στρατιωτικῶν, ναυτικῶν ἢ πολιτικῶν) ἀγωνιστῶν τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως τοῦ 1821. Τὸ ζήτημα τοῦτο εἶχεν ἤδη ἀνακινηθῆ ἀπὸ τῶν χρόνων τοῦ Καποδιστρίου, ὁπότε ἤρχισαν λειτουργοῦσαι αἱ πρῶται ἐπιτροπαί, αἱ ὁποῖαι σκοπὸν εἶχον τὴν ἐκτίμησιν, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὑποβαλλομένων ὑπὸ τῶν ἐνδιαφερομένων πιστοποιητικῶν καὶ ἄλλων στοιχείων, τῆς εἰς τὸν ἀγῶνα συμβολῆς ἑνὸς ἑκάστου ἐκ τῶν ἀγωνιστῶν καὶ τὸν καθορισμὸν ἀναλόγων ἠθικῶν καὶ ὑλικῶν ἀμοιβῶν (βλ. λ. *ἀγὼν* καὶ *ἀγωνισταί*). Εἰς τοὺς ὑπὸ τῶν ἐπιτροπῶν τούτων καταρτισθέντας πίνακας ἐδόθη τὸ ὄνομα *μητρῷα τῶν ἀγωνιστῶν*. Ἡ τῷ 1833 λειτουργήσασα πρώτη ἐπιτροπὴ κατήρτισε τοιαῦτα μητρῷα, τῶν ὁποίων ἡ τύχη ἀγνοεῖται. Τῆς δευτέρας ἐπιτροπῆς, συσταθείσης τῷ 1846, εἶναι ἄγνωστοι αἱ ἐργασίαι, τῆς δὲ τρίτης, συσταθείσης τῷ 1865, ἡ ἐργασία σῴζεται, φυλασσομένη εἰς τὸ τμῆμα χειρογράφων τῆς Βαλλιανείου Ἐθνικῆς Βιβλιοθήκης. Εἰς τὰ τελευταῖα ταῦτα μητρῷα εἶναι ἐγγεγραμμένοι 25.000 περίπου ἀγωνισταί, κατανεμημένοι εἰς τρεῖς κατηγορίας, εἰς πολεμιστὰς τῆς ξηρᾶς, ναυτικοὺς καὶ πολιτικούς. Ἐπίσης οἱ στρατιωτικοὶ ὑποδιῃρέθησαν, ἀναλόγως τῶν ὑφ' ἑκάστου προσφερθεισῶν ὑπηρεσιῶν, εἰς ἀξιωματικούς, ὑπαξιωματικοὺς καὶ ὁπλίτας. Τὰ διὰ τὴν σύνταξιν τῶν μητρῴων χρησιμοποιηθέντα ἔγγραφα, τὰ ὁποῖα ὑπεβλήθησαν ὑπὸ τῶν ἐνδιαφερομένων, ταξινομηθέντα ἀλφαβητικῶς ἀπετέλεσαν τὸ *ἀρχεῖον τῶν ἀγωνιστῶν*, φυλασσόμενον ἐπίσης ἐν τῇ Ἐθνικῇ Βιβλιοθήκῃ. Τὰ εἰς τὸ τελευταῖον τοῦτο ἀρχεῖον ἔγγραφα, ὡς ἐκ τῶν ἐν αὐτῷ βεβαιώσεων καὶ πιστοποιητικῶν τῶν διαφόρων ἀρχηγῶν τῶν ἀγώνων (ὁπλαρχηγῶν, ναυάρχων κλπ.), εἰς τὰς ὁποίας ἐξιστοροῦνται πολλάκις διάφορα ἐπεισόδια τοῦ Ἀγῶνος, ἀποτελοῦν χρήσιμον συμβολὴν εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Ἐπαναστάσεως. Χ. Δ.

— **μητρῷον ἐμπορικὸν** *[Νομικ.]*. Εἰδικὸν ἐπίσημον κατ στιχον, διὰ τοῦ ὁποίου περιέρχονται εἰς τὴν δημοσιότητα ὡρισμένα ἀπὸ νομικῆς ἀπόψεως σημαίνοντα περιστατικὰ τῆς ἐμπορικῆς ἐπιχειρήσεως. Ὁ θεσμὸς τοῦ ἐμπορικοῦ μητρῴου δὲν εἶναι νέος. Ἐμφανίζεται ἤδη εἰς τὰς ρωμανικὰς χώρας, ἰδίως ἐν Ἰταλίᾳ, ὑπὸ τὴν μορφὴν καταλόγων, εἰς ἄλλους μὲν τῶν ὁποίων κατεγράφοντο τὰ μέλη τῶν ἐμπορικῶν ὀργανώσεων, εἰς ἄλλους δὲ οἱ ὑπάλληλοι αὐτῶν. Βραδύτερον, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, τηροῦνται καὶ ὑπὸ τῶν συμβολαιογράφων ἑκάστης ἐμπορικῆς ὀργανώσεως ἰδιαίτερα ἑταιρικὰ μητρῷα, σκοπὸς τῶν ὁποίων ἦτο νὰ καταστήσουν γνωστοὺς τοὺς μετέχοντας ἐμπορικῶν ἑταιρειῶν, καὶ ἑπομένως εὐθυνομένους διὰ τὰ χρέη αὐτῶν. Εἰς τὴν Γερμανίαν καὶ Ἑλβετίαν, κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἤρχισε νὰ ἐξαπλοῦται ἡ χρῆσις τῶν ἐμπορικῶν μητρῴων, καὶ εἰς ἄλλας μὲν πόλεις ὑπὸ τὴν ἀτελεστέραν μορφὴν ἑταιρικῶν καταλόγων παρεχόντων πληροφορίας περὶ τῶν ἀνηκόντων εἰς τὰς διαφόρους ἑταιρείας προσώπων, ἀλλαχοῦ δὲ ὑπὸ τελειοτέραν, ὡς κατάλογοι πλήρεις, περιέχοντες τὰς ἐμπορικὰς ἐπωνυμίας καὶ τῶν καθ' ἕκαστον ἐμπόρων.

Σήμερον ὁ θεσμὸς τοῦ ἐμπορικοῦ μητρῴου εἶναι εὐρύτατα διαδεδομένος, εἰσήχθη δὲ διὰ νεωτέρου νόμου τοῦ 1919, ὑπὸ ἀτελῆ ὅμως μορφήν, καὶ ἐν Γαλλίᾳ. Μεγαλυτέραν ὅμως σπουδαιότητα, ἀπὸ νομικῆς ἀπόψεως, κέκτηται ὁ θεσμὸς οὗτος ἐν Γερμανίᾳ, ὅπου ἡ ἐν τῷ ἐμπορικῷ μητρῴῳ ἐγγραφὴ πολλάκις χρησιμεύει πρὸς ἀπόκτησιν τῆς ἰδιότητος τοῦ ἐμπόρου, ἡ δὲ ἐγγραφὴ τῆς ἐμπορικῆς ἐπωνυμίας ἐξασφαλίζει εἰς αὐτὴν τὴν ἀποκλειστικότητα καὶ τὸ δυνατὸν τῆς μεταβιβάσεώς της. Ἡ τήρησις τῶν ἐμπορικῶν μητρῴων καὶ αἱ ἐν αὐταῖς ἐγγραφαὶ γίνονται ὑπὸ τῆς πρὸς τοῦτο ἐντεταλμένης δικαστικῆς ἀρχῆς. Διὰ νὰ εἶναι δὲ τὸ μητρῷον πάντοτε ἐνήμερον καὶ πλῆρες, ὁ νόμος ἐξαναγκάζει τὴν ἐγγραφὴν τῶν περιστατικῶν ἐκείνων, τῶν ὁποίων κρίνει ἀναγκαίαν τὴν δημοσιότητα. Δεδομένου δὲ ὅτι ἑκάστη ἐγγραφὴ προϋποθέτει ἔλεγχον τῆς τηρούσης τὸ μητρῷον δικαστικῆς ἀρχῆς, δημιουργεῖται τεκμήριον περὶ τῆς νομιμότητός της, κατ' ἀνάγκην δὲ πλέον καὶ περὶ τῆς ἀληθείας αὐτῆς. Παρ' ἡμῖν δὲν ἰσχύει ὁ θεσμὸς τοῦ ἐμπορικοῦ μητρῴου. Ἡ ἔλλειψίς του ὅμως ἀναπληροῦται μερικῶς ὑπὸ ὡρισμένων διατάξεων τοῦ νόμου 184 τοῦ 1914 περὶ ἐμπορικῶν καὶ βιομηχανικῶν ἐπιμελητηρίων. Διὰ τῶν διατάξεων τούτων ἐπιτυγχάνεται κυρίως ἡ διάκρισις τῶν ἐμπορικῶν ἐπωνυμιῶν καὶ ἡ μεταβίβασις αὐτῶν. Ἐξ ἄλλου ὅμως ἡ ἐν τῷ πρωτοκόλλῳ τῶν ἐπιμελητηρίων ἐγγραφὴ δὲν σημαίνει ἀπόκτησιν τῆς ἐμπορικῆς ἰδιότητος. Δημιουργεῖται ὅμως δι' αὐτῆς τεκμήριον ὅτι ὁ ἐγγεγραμμένος εἶναι ἔμπορος. Ἡ μεγαλυτέρα ἔλλειψις ὅμως συνίσταται εἰς τὸ ὅτι ὁ νόμος οὐδεμίαν κύρωσιν περιέχει καὶ οὐδόλως προβλέπει περὶ τῆς ἐξασφαλίσεως τῆς ἀκριβείας τῶν ἐν τῷ πρωτοκόλλῳ καταχωριζομένων περιστατικῶν. Ἡ δημοσιότης τῶν ἐν τῷ πρωτοκόλλῳ ἐγγραφῶν ρυθμίζεται ὑπὸ τῶν ἄρθρων 54 καὶ 59 τοῦ νόμου, τὰ ὁποῖα ἐπιτρέπουν, τῇ ἀδείᾳ τοῦ προέδρου τοῦ ἐπιμελητηρίου, εἰς πάντα ἐνδιαφερόμενον νὰ ἐξετάσῃ τὸ περιεχόμενον αὐτῶν. Κ. Β. Σ.

—**μητρῷον ποινικὸν** *[Ποιν. Νόμ.]*. Τὸ *ποινικὸν μητρῷον* ἀποτελεῖται ἐκ δελτίων, περιεχόντων ἅπαντα τὰ στοιχεῖα ἀφ' ἑνὸς τῆς ταυτότητος καὶ ἀφ' ἑτέρου τῆς ποινικῆς καταστάσεως (ἤτοι ἀριθμὸς καὶ χρονολογία τῆς ἀποφάσεως, τὸ ἐκδὸν αὐτὴν δικαστήριον, τὸ ἀδίκημα ἐφ' ᾧ κατεδικάσθη καὶ τὴν ποινὴν) τῶν καταδικασθέντων τελεσιδίκως: ἀπὸ 2 Ἰανουαρίου 1898 μέχρις 28 Φεβρουαρίου 1908, ὑπὸ τῶν δικαστηρίων τῶν συνέδρων, στρατοδικείων καὶ ναυτοδικείων, ἀπὸ δὲ 28 Φεβρουαρίου 1908 καὶ ἐφεξῆς ἐπί: α') κακουργήματι καὶ πλημμελήματι ὑπὸ οἱουδήποτε ποινικοῦ δικαστηρίου: 1) ἑλληνικοῦ καὶ 2) ἀλλοδαποῦ, οὗτινος ἡ ἀπόφασις ἀνακοινοῦται τῇ ἑλληνικῇ κυβερνήσει δυνάμει συμβάσεως καὶ β') πταίσματι κλοπῆς, ὑπεξαιρέσεως καὶ ἀπάτης. Ἡ τυχὸν χορηγηθεῖσα χάρις, ἀναστολὴ ἐκτελέσεως τῆς ποινῆς καὶ ἡ μετατροπὴ ταύτης ἐγγράφονται εἰς τὸ δελτίον.

Τὸ ποινικὸν μητρῷον τηρεῖται: α') παρὰ τοῦ ὑπουργείου Δικαιοσύνης, διὰ τοὺς γεννηθέντας εἰς τὴν ἀλλοδαπὴν καὶ ἐκείνους ὧν ἀγνοεῖται ὁ τόπος τῆς γεννήσεως, καὶ β') παρὰ τοῦ γραμματέως ἑκάστου πρωτοδικείου (διὰ δὲ τὰ πρωτοδικεῖα Ἀθηνῶν, Πειραιῶς καὶ Θεσσαλονίκης παρ' εἰδικοῦ τούτων τμήματος) διὰ τοὺς γεννηθέντας ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ πρωτοδικείου (Β. Δ. 28/2/1908 «Περὶ ποινικοῦ μητρῴου» καὶ νόμ. 1273). Τῶν μέχρι 17 Φεβρουαρίου 1921 συνταχθέντων τοιούτων δελτίων, ἐπὶ τῇ βάσει ἀποφάσεων, δι' ὧν ἐπεβλήθη χρηματικὴ ποινὴ μόνον μέχρι τριακοσίων δραχμῶν, διετάχθη ἡ καταστροφή, δι' ἄρθρ. 21 τοῦ ἀπὸ 17/2/1926 Ν. Δ. «Περὶ ἀμνηστείας κλπ.». Ἐὰν ἀναιρεθῇ ἢ ὁπωσδήποτε νομίμως ἐξαφανισθῇ (λ. χ. μετ' ἐκπρόθεσμον ἀνακοπὴν ἢ ἔφεσιν) ἡ ἀπόφασις, τῇ βάσει τῆς ὁποίας συνετάγη τοιοῦτον δελτίον, τοῦτο καταστρέφεται, κατὰ μείζονα δὲ λόγον ἐν περιπτώσει καθ' ἣν ἀμνηστευθῇ τὸ ἀδίκημα, ἐξαιρετικῶς μόνον διατηρουμένων τῶν συνταγέντων δι' ἀδικήματα ἀμνηστευθέντα διὰ τοῦ ἀπὸ 17/2/1926 Ν. Δ. «Περὶ ἀμνηστείας κλπ».

Ἀπαγορεύεται πᾶσα ἀνακοίνωσις καὶ παροχὴ ἀντιγράφου τῶν δελτίων, καὶ μόνον χορηγοῦνται εἰς: α') ἀνακριτικοὺς ὑπαλλήλους καὶ ἀνακριτάς, ἐπιτρόπους καὶ εἰσηγητὰς τῶν στρατιωτικῶν δικαστηρίων καὶ ἐπισυνάπτονται εἰς τὰς δικογραφίας· ἐὰν μάλιστα δὲν ἐπισυναφθῇ, δύναται ν' ἀναβληθῇ ἡ ἐκδίκασις τῆς ὑποθέσεως (νόμ. 3995)· β') πᾶσαν ἄλλην δημοσίαν ἀρχήν, εἰς ἣν ἀναγκαιοῖ ὑπηρεσιακῶς, διὰ τὸν ὅν ἀφορᾷ ὑπάλληλόν της, ἀλλὰ μόνον κατ' ἔγκρισιν τοῦ προϊσταμένου ταύτης ὑπουργείου· γ') πάντα χρησιμοποιήσοντα αὐτὸ ὡς μέσον ὑπερασπίσεως εἰς ποινικὴν ὑπόθεσιν, ἀλλὰ μόνον μετ' ἔγκρισιν τοῦ οἰκείου εἰσαγγελέως πλημμελειοδικῶν· καὶ δ') ἐκεῖνον ὅν ἀφορᾷ τοῦτο. Σ. Α. Χ.

**Μητρῷον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου, μεταξὺ Ἡρακλείας (Μπεντὲρ Ἐρεκλῆ) καὶ Ποσειδίου (Ὀκεῖνα), μετονομασθεὶς ὑπὸ τῶν Ρωμαίων εἰς *Αὐλίαν* (*Ἀνων*. Περίπλ. Εὐξείν. 12). Εἶναι νῦν ἀνώνυμος ὅρμος, περίπου εἰς πλάτ. 41°20' Β., μῆκ. 30°31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2238: Bosporus to Kerempeh). Σ. Ε. Λ.

**μητρῷος,** —*α*, —*ον*· ὁ ἀπὸ τῆς μητρὸς κληρονομηθεὶς (διάφορον τοῦ *μητρικός*), πρβλ. *πατρῷος*: «μητρῷα οἰκία, —περιουσία»· ‖ ὁ τῆς μητρὸς τῶν θεῶν Κυβέλης· ‖ *μητρῷον* (τό)· ὡς οὐσ. (βλ. λ.).

— **Μητρῷοι θεοὶ** *[Ἀρχ.]*. Οὕτως ἐκαλοῦντο, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, ἐκ τῶν ἐφεστίων θεῶν ἐκεῖνοι, τῶν ὁποίων τὰ εἰδώλια ἢ ἀγαλμάτια συναπεκόμιζε μεθ' ἑαυτῆς ἡ νεαρὰ σύζυγος, ἐγκαταλείπουσα τὸν πατρικὸν οἶκον καὶ ἐγκαθισταμένη πλέον μονίμως ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ συζύγου αὐτῆς. Οἱ θεοί, ἄρα, οὗτοι μετὰ τῶν θεῶν, τὰ εἰδώλια τῶν ὁποίων ὑπῆρχον ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ συζύγου, καὶ οἱ ὁποῖοι ἐκαλοῦντο, ἀντιθέτως, *πατρῷοι θεοί*, συναπετέλουν τοὺς ἐφεστίους θεοὺς τῆς οἰκογενείας. Τὸ ἔθος ὅμως τοῦτο φαίνεται ὅτι ἐπεκράτησε μόνον ἐν Ἀθήναις καὶ μάλιστα ἀπὸ τοῦ Δ' π.Χ. αἰῶνος καὶ ἐντεῦθεν, διότι, κατὰ τὸν Fustel de Coulanges, ὅστις ἐξήτασεν ἐπισταμένως τὴν θέσιν τῆς γυναικὸς ἐν τῇ ἀρχαίᾳ ἑλληνικῇ θρησκείᾳ, «ἡ Ἑλληνίς, ἀποβᾶσα σύζυγος ἔχανε τὴν ἐλπίδα τοῦ νὰ μένῃ πιστὴ εἰς τὸν θεὸν τῆς παιδικῆς ἡλικίας της, ἐτίμα δὲ τὸν θεὸν τοῦ νέου της συζύγου· καὶ τοῦτο, διότι ἐν τῇ θρησκείᾳ ταύτῃ ἐπεκράτει ἡ ἀρχή, καθ' ἣν τὸ αὐτὸ ἄτομον δὲν ἠδύνατο νὰ ἐπικαλῆται οὔτε δύο ἑστίας, οὔτε δύο γενεαλογίας προγόνων καὶ συνεπῶς δὲν ἠδύνατο νὰ ἀνήκῃ οὔτε εἰς δύο οἰκογενείας, οὐδὲ νὰ ἔχῃ δύο ἐφεστίας θρησκείας». Κατὰ ταῦτα, ἡ σύζυγος ἀνῆκεν ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν οἰκογένειαν καὶ εἰς τὴν θρησκείαν τοῦ ἑαυτῆς συζύγου. Σὺν τῇ ἀναπτύξει ὅμως τῆς κοινωνίας ἐπῆλθε μοιραίως χαλαρότης τοῦ θρησκευτικοῦ τούτου νόμου, ἐπιτραπέντος, κατὰ τὸν Δ' π. Χ. αἰῶνα ἴσως, νὰ λατρεύῃ καὶ ἡ σύζυγος τοὺς προγονικοὺς αὐτῆς θεούς. Τοῦτο συνάγεται ἐκ τῆς μαρτυρίας τοῦ Ξενοφῶντος, ἀναφέροντος ὅτι μετὰ τὴν αἰσίαν ἔκβασιν τῆς μάχης τοῦ Θρασυβούλου κατὰ τῶν τριάκοντα τυράννων, ὁ Κλεόκριτος, ὁ κῆρυξ τῶν μυστῶν, ἐκήρυξε τὴν συνδιαλλαγὴν μεταξὺ τῶν Ἀθηναίων ἐν ὀνόματι τῶν μητρῴων καὶ τῶν πατρῴων θεῶν, ἤτοι ἐν ὀνόματι τῶν δεσμῶν τῆς συγγενείας, τοῦ γάμου, τῆς φιλίας. Β. Δ. Θ.

—**Μητρῷος μὴν** *[Ἀρχ.]*. Ὁ τρίτος μὴν τοῦ ἡμερολογίου τῶν ἀρχαίων Βιθυνῶν. Κατὰ τὸ ὑπόμνημα τοῦ Πτολεμαίου, ὁ μὴν οὗτος πρέπει νὰ ἦτο τὸ μηνιαῖον χρονικὸν διάστημα ἀπὸ 23 Νοεμβρίου ἕως 23 Δεκεμβρίου. Β. Δ. Θ.

**Μητσάκης,** ***Δημοσθένης***. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς ἐκ Νέου Καρλοβασίου τῆς Σάμου. Διωρίσθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ ὑπηρέτησεν ἀπὸ τοῦ 1882—1893 εἰς διάφορα προξενεῖα καὶ πρεσβείας. Τῷ 1882 ἀπεστάλη ἐκ Καΐρου ἔκτακτος ἀπεσταλμένος πρὸς τὸν Ἰωάννην Β' τῆς Ἀβησσυνίας καὶ παρεσκεύασε μετὰ τοῦ Ν. Παρίση, ἰδιαιτέρου ἰατροῦ τοῦ Ἰωάννου Β', τὴν ἐξαιρετικὴν θέσιν, ἣν μέχρι τοῦδε ἔχουν οἱ Ἕλληνες ἐν Ἀβησσυνίᾳ. Τῷ 1884, τῇ παρακλήσει τῆς Ἀγγλίας, πολεμούσης πρὸς τὸν Μάγδην ἢ Μαχδὴν τοῦ Σουδὰν καὶ περιελθούσης εἰς μεγάλας δυσχερείας, ἀπεστάλη καὶ πάλιν πρὸς τὸν Ἰωάννην Β' καὶ ἔπεισεν αὐτὸν νὰ συμπολεμήσῃ μετὰ τῶν Ἄγγλων κατὰ τοῦ Μάγδου. Ὄντως ὑπεγράφη συνθήκη μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τῶν Ἄγγλων· τὸν δὲ Μητσάκην εὐγνωμονοῦσα ἡ Βικτωρία τῆς Ἀγγλίας ἐτίμησε διὰ παρασήμων. Ν. Ζ. Ζ.

— **Μητσάκης,** ***Μιχαήλ***. Ἕλλην λογογράφος, γεννηθεὶς ἐν Μεγάροις τῷ 1868 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1916. Ἐσπούδασε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα εἰς τὸ γυμνάσιον Σπάρτης, εἶτα δ' ἐνεγράφη εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν. Ἀλλ' ἡ κλίσις του ἦτο ἡ λογοτεχνία· διὸ καταλιπὼν τὴν νομικὴν ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰ γράμματα καὶ εἰς τὴν δημοσιογραφίαν. Νεανίας ἔτι συνειργάσθη εἰς τὴν σατιρικὴν ἐφημερίδα «Ἀσμοδαῖον» τοῦ Θεμ. Ἀννίνου. Ὅταν τοῦτον ἀντικατέστησεν ἡ ἑτέρα γελοιογραφικὴ ἐφημερὶς τοῦ Ἀννίνου «Ἄστυ», ὁ Μητσάκης ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων συνεργατῶν του, δημοσιεύων σατιρικὰ ἄρθρα ὑπὸ τὰ ψευδώνυμα *Κράτης* καὶ *Κόθορνος*. Ἐπί τινα χρόνον συνειργάσθη εἰς τὴν «Ἐφημερίδα» τοῦ Δημητρίου Κορομηλᾶ, γράφων κυρίως χρονογραφήματα, ἐντυπώσεις ἐκ ταξιδίων καὶ κριτικὰς μελέτας, εἰς τὰς ὁποίας

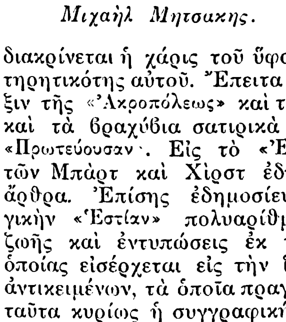

*Μιχαὴλ Μητσακης.*

διακρίνεται ἡ χάρις τοῦ ὕφους καὶ ἡ βαθεῖα παρατηρητικότης αὐτοῦ. Ἔπειτα μετέσχεν εἰς τὴν σύνταξιν τῆς «Ἀκροπόλεως» καὶ τοῦ «Χρόνου», ἐξέδωκε δὲ καὶ τὰ βραχύβια σατιρικὰ φύλλα, «Θόρυβον» καὶ «Πρωτεύουσαν». Εἰς τὸ «Ἐγκυκλοπαιδικὸν λεξικὸν» τῶν Μπάρτ καὶ Χίρστ ἐδημοσίευσε πολυάριθμα ἄρθρα. Ἐπίσης ἐδημοσίευσεν εἰς τὴν φιλολογικὴν «Ἑστίαν» πολυαρίθμους εἰκόνας ἐκ τῆς ζωῆς καὶ ἐντυπώσεις ἐκ τῆς Κερκύρας, εἰς τὰς ὁποίας εἰσέρχεται εἰς τὴν ἱστορικὴν ἔρευναν τῶν ἀντικειμένων, τὰ ὁποῖα πραγματεύεται. Εἰς τὰ ἔργα ταῦτα κυρίως ἡ συγγραφική του δύναμις εἶναι μεγάλη καὶ ἡ παραστικότης του σπανία. Καίτοι δὲ συχνάκις ἡ ποιητική του φαντασία ὑψοῦται εἰς εὐγενέστερα στρώματα, πάντοτε ὅμως διατηρεῖ σύνδεσμον πρὸς τὴν πραγματικότητα. Ἐκ τῶν ὡραιοτέρων εἰκόνων του εἶναι τὸ «Παράπονον τοῦ μαρμάρου», γραφὲν καὶ εἰς καθαρεύουσαν καὶ εἰς δημοτικήν, καὶ τὸ «Φιλί», ἀναφερόμενον εἰς τὸν ἡρωϊκὸν θάνατον τοῦ Παπαφλέσσα.

Ὁ Μητσάκης ἀνήκει εἰς τὴν γενεὰν τῶν λογοτεχνῶν, οἵτινες ἀπὸ τῆς τελευταίας εἰκοσιπενταετίας τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἔδωσαν νέαν τροπὴν εἰς τὴν ἑλληνικὴν λογοτεχνίαν, τὴν συνέδεσαν πρὸς τὰς παγκοσμίους ἰδέας καὶ περιέλαβον εἰς αὐτὴν ὅλα τὰ ζητήματα, ἅτινα ἀπησχόλουν τὴν ἑλληνικὴν κοινωνίαν. Δυστυχῶς τὸ φιλολογικὸν στάδιον τοῦ Μητσάκη ὑπῆρξε βραχύ. Καταληφθεὶς ὑπὸ ψυχικῆς νόσου ἔπαυσεν ἀσχολούμενος εἰς τὴν τέχνην ἀπὸ τοῦ 1896. Τὰ λογοτεχνικά του ἔργα, διεσπαρμένα εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, συνελέγησαν μετὰ τὸν θάνατόν του καὶ ἐδημοσιεύθησαν εἰς τρεῖς τόμους. Θ. Β.

**Μήτσας,** ***Ἀντώνιος***. Ἐγεννήθη ἐν Κρανιδίῳ τῷ 1831 ἐξ οἰκογενείας διακριθείσης κατὰ τὸν ἀγῶνα τῷ 1821 Καταταχθεὶς νεώτατος εἰς τὸν στρατόν, προήχθη ταχέως εἰς ἀξιωματικὸν καὶ τὸν Ἰούνιον 1867, σχηματίσας ἰσχυρὸν σῶμα ἐθελοντῶν, κατῆλθεν εἰς τὴν ἐπαναστατημένην Κρήτην καὶ συμμετασχὼν εἰς πλείστας μάχας ἐν τοῖς νομοῖς Ἡρακλείου καὶ Λασηθίου διεκρίθη διὰ τὴν στρατιω-

Digitized by Google

κὴν αὐτοῦ δεξιότητα καὶ τὴν ἀνδρείαν του. Τὸν Ἰανουάριον 1868 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον κατῆλθε πάλιν εἰς τὸν ἀγῶνα, διακριθεὶς καὶ πάλιν εἰς πλείστας μάχας ἀνὰ τὰς ἐπαρχίας Μαλεβυζίου, Μυλοποτάμου, Ἀμαρίου, Ἁγίου Βασιλείου καὶ Σφακίων μέχρι τῆς ὑστάτης πνοῆς τοῦ μακροῦ ἐκείνου ἀγῶνος, ἤτοι μέχρις Ἰανουαρίου 1869. Διεκρίθη ὡσαύτως ὡς ἀρχηγὸς ἰσχυροῦ σώματος κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Θεσσαλίας (μάχη Πλατάνου, Ἀγυιᾶς καὶ Μακρυνίτσης, Ἰανουαρίου—Μαρτίου 1878). Ἐξελέγη κατ' ἐπανάληψιν βουλευτὴς Ἑρμιονίδος. Ἀπεστρατεύθη κατ' Αὔγουστον 1893 φέρων τὸν βαθμὸν ἀντισυνταγματάρχου καὶ ἀπεβίωσεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1897. Ν. ΚΛΣ

**Μητσιαλιάτικα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μαγαζειῶν τῆς ἐπαρχίας Παξῶν τοῦ νομοῦ Κερκύρας. Κάτ. (1928) 52. Χ. Δ.

**Μητσόπουλος,** ***Ἡρακλῆς***. Φυσικός, γεννηθεὶς ἐν Πάτραις τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1892. Ἐσπούδασεν ὡς ὑπότροφος τοῦ Καποδιστρίου εἰς τὸ ἐν Αἰγίνῃ κεντρικὸν σχολεῖον καὶ κατόπιν, θερμῇ συστάσει τοῦ διδασκάλου τοῦ γένους Γεωργίου Γενναδίου, ἀπεστάλη εἰς Γερμανίαν ὡς ὑπότροφος τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως πρὸς σπουδὴν τῆς φιλοσοφίας καθόλου καὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν ειδικῶς. Μετὰ ἑπταετεῖς ἐνδελεχεῖς σπουδὰς ὁ Μητσόπουλος ἐπανελθὼν εἰς Ἑλλάδα (1844) διωρίσθη τῷ 1845 ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς φυσιογραφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν. Τῷ 1847 προήχθη εἰς τακτικὸν καθηγητὴν καὶ ἐδίδαξεν ἐπὶ 47 ὅλα ἔτη ζῳολογίαν, ὀρυκτολογίαν καὶ γεωλογίαν. Ἐδίδαξεν ὡσαύτως εἰς τὴν Ριζάρειον σχολὴν καὶ τὸ Ἀρσάκειον ψυχολογίαν, λογικὴν καὶ φυσικήν. Τετράκις ἐχρημάτισε κοσμήτωρ, ἐπὶ ἐννέα ἀκαδημεικὰς περιόδους συγκλητικὸς καὶ πρύτανις τῷ 1864—1865. Γνώστης κράτιστος τυγχάνων τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης, εἰσήγαγε πληθὺν νέων ἐπιστημονικῶν ὅρων εἰς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας. Ἐξέδωκε: «Περὶ τοῦ ποιοῦ τῶν οὐρανίων σωμάτων καὶ ἰδίως τοῦ Ἡλίου» (πρυτανικὸς λόγος, 1864), «Περὶ τῶν σεισμῶν Αἰγίου καὶ Κεφαλληνίας» (μετ. ἐκ τῆς γερμ. 1867), «Ἐμπειρικὴ ψυχολογία» (1887). Ἀλλὰ τὸ ἄριστον τῶν ἔργων τοῦ Μητσοπούλου εἶναι τὸ ἐν τῷ ἄνω ὀρόφῳ τῆς βορείας πλευρᾶς τοῦ κεντρικοῦ κτηρίου τοῦ πανεπιστημίου ἐγκαθιδρυμένον «Ζωολογικὸν Μουσεῖον», οὗτινος παρέμεινε μέχρι τέλους τοῦ βίου του διευθυντής.

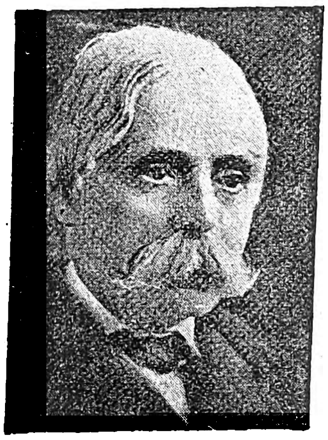

*Ἡρακλῆς Μητσόπουλος.*

— **Μητσόπουλος,** ***Κωνσταντῖνος***. Φυσιοδίφης, γεννηθεὶς ἐν Πάτραις τῷ 1844 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1911. Διδαχθεὶς τὰ ἐγκύκλια μαθήματα ἐν τῇ πατρίδι του ἐνεγράφη τῷ 1862 εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου πρὸς σπουδὴν τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν. Ἀναγορευθεὶς τῷ 1868 διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας, ἀπεστάλη κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος ὑπὸ τοῦ πανεπιστημίου εἰς Φρειβούργην τῆς Γερμανίας, ὅπου ἐπὶ ἑξαετίαν ἐσπούδασε θεωρητικῶς καὶ πρακτικῶς γεωλογίαν, ὀρυκτολογίαν, φυσικήν, χημείαν καὶ πυροχημείαν, μεταλλευτικήν, μεταλλουργίαν, γεωδαισίαν, μηχανουργίαν καὶ μεταλλευτικὸν δίκαιον. Ἐπανελθὼν εἰς Ἑλλάδα διωρίσθη τῷ 1875 ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, ἀναλαβὼν ειδικῶς τὴν διδασκαλίαν τῆς γεωλογίας καὶ ὀρυκτολογίας τὰ μαθήματα ταῦτα ἐδίδαξε καὶ ἐν τῷ Μετσοβίῳ Πολυτεχνείῳ. Τῷ 1880 προήχθη εἰς τακτικὸν καθηγητὴν τῶν αὐτῶν μαθημάτων, διδάξας μέχρι τοῦ 1910, ὅτε ἀπηλλάγη τῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ ὑπηρεσίας, περιορισθεὶς εἰς τὴν θέσιν τοῦ διευθυντοῦ τοῦ Πολυτεχνείου. Ἐχρημάτισε κοσμήτωρ, συγκλητικὸς καὶ πρύτανις (1900—1901), ὅτε οἱ μαθηταί του, ἐπὶ τῇ συμπληρώσει εἰκοσιπενταετίας ἀπὸ τοῦ διορισμοῦ του ὡς καθηγητοῦ, διωργάνωσαν ἐπιστημονικὴν ἑορτήν, ἧς μετέσχον ἐπισήμως ἡ κυβέρνησις καὶ πάντες οἱ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ καθηγηταί. Ὁ Κωνσταντῖνος Μητσόπουλος διεκρίθη καὶ ὡς ἐπιστήμων, καὶ ὡς διδάσκαλος, καὶ ὡς συγγραφεύς. Ἐδημοσίευσε πλῆθος ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν, ὧν σπουδαιότεραι εἶναι: «Περὶ γαληνίτου» (1875), «Περὶ θείου τῆς Σικελίας» (1878), «Περὶ παραφίνης καὶ πετρελαίου» (1878), «Studien über die chemische Beschaffenheit des zu Mycänä entdeckten Antiquitäten» (1878), «Περὶ μεταλλουργείων, μεταλλείων, ὀρυχείων καὶ λατομείων» (1887), «Berg-Hutteu und Salinenwesen von Griecheland in der National-Ausstellung von Athen» (1888), «Περὶ Ἡλίου» (1890), «Περὶ θρέψεως» (1890)» «Γεωλογικὴ διαμόρφωσις τοῦ ἑλληνικοῦ ἐδάφους» (1890), «Ἐξ πραγματεῖαι περὶ τῶν γενομένων ἐν Ἑλλάδι σεισμῶν 1889 — 1899» ἐν τῷ γερμανικῷ περιοδικῷ Petermanns Mitteillungen», «Die Eruption der Pechquellen von Keri in Zante» (αὐτ. 1896), «Φυσικὴ γεωγραφία Θράκης» (1897), «Τὰ πότιμα ὕδατα τῶν Ἀθηνῶν» (1899), «Γεωλογικὴ ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς χώρας» (1901), «Τὸ πλουτολογικὸν μέλλον τῆς Ἑλλάδος» (1905), «Ἡφαιστειοχημικαὶ ἔρευναι Albert Brun» (1909), «Διάττοντες ἀστέρες καὶ μετεωρῖται» (1910), «Στοιχεῖα ὀρυκτολογίας» (τόμ. 1—2, 1893 — 1894), «Στοιχεῖα γεωλογίας» (τόμ. 1—2, 1893—1894), «Ὀρυκτογνωστικὸς ὁδηγός, ἤτοι πίνακες ὀρυκτογνωστικοὶ» (1896). Ἐπίσης ἐξέδωκε δίτομον «Ἐγκυκλοπαιδικὸν λεξικὸν πρακτικῶν γνώσεων» (1896) καὶ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ν. Γερμανοῦ καὶ Στ. Βάλβη ἐπὶ τριετίαν (1890 — 1892) τὸ περιοδικὸν «Προμηθεὺς» πρὸς διάδοσιν τῶν φυσικῶν καὶ ἐφηρμοσμένων ἐπιστημῶν.

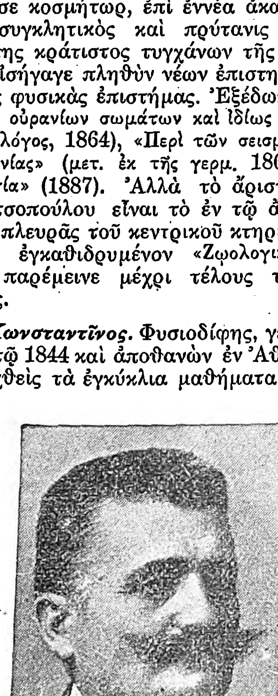

*Κωνσταντῖνος Μητσόπουλος.*

— **Μητσόπουλος,** ***Μάξιμος***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1897 ἐν Ἀθήναις. Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας εἰς τὸ Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον καὶ κατόπιν συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του εἰδικῶς περὶ τὴν γεωλογίαν καὶ παλαιοντολογίαν ἐν Βερολίνῳ καὶ Μονάχῳ (1922—1928), ἔνθα ἀνηγορεύθη διδάκτωρ. Ἔγραψε: «Der Oberlias in der Umgebung des Comersees» (1929), «Beiträge zur Cephalopodenfauua des oberen Lias der Alta Brianza» (1931), «Ἡ ἀνάπτυξις τοῦ ἀνωτέρου μειοκαίνου εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν» (1931).

— **Μητσόπουλος,** ***Χρῖστος***. Πολιτευτής, υἱὸς τοῦ Ἡρακλέους Μητσοπούλου, γεννηθεὶς τῷ 1870. Σπουδάσας νομικὰ καὶ πολιτικὰς ἐπιστήμας ἐν Ἀθήναις καὶ Παρισίοις, εἰσῆλθεν ἐνωρὶς εἰς τὸν διπλωματικὸν κλάδον, ὑπηρετήσας ἐν Παρισίοις, Κωνσταντινουπόλει, Ρουμανίᾳ καὶ Αἰγύπτῳ. Ἐχρημάτισεν ἐπιτετραμμένος ἐν Ρώμῃ, βουλευτὴς Ἀττικῆς (1916) καὶ πληρεξούσιος Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας (1920—1922) ἐν τῇ Γ' ἐθνοσυνελεύσει. Δ. Α. Δ.

**Μητσοτάκης,** ***Κωνσταντῖνος***. Κρὴς πολιτευτὴς (1845—1898), γεννηθεὶς ἐν Μονεμβασίᾳ Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς ἐκ γονέων προσφύγων ἐκ Κρήτης. Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του ἐν τῇ νομικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, κατῆλθε τῷ 1876 εἰς Κρήτην, ἔνθα λόγῳ τῆς ἀναμείξεώς του εἰς τὴν ἐπαναστατικὴν κίνησιν, τὴν προκληθεῖσαν ἐκ τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου, συνελήφθη ἐν Χανίοις καὶ ἀπεστάλη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἔνθα ἐφυλακίσθη. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του συνεπείᾳ ἐξεγέρσεως τῶν κατοίκων τοῦ διαμερίσματος Χανίων ἐπανῆλθεν εἰς Κρήτην, ἔνθα ἵδρυσε τοῦ τὸ κόμμα τῶν «Φιλελευθέρων».

*Κωνσταντῖνος Μητσοτάκης.*

Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν διαπραγματευθέντων τὴν σύμβασιν τῆς Χαλέπας, ἔκτοτε δὲ ἐξελέγετο πάντοτε πληρεξούσιος ἢ βουλευτὴς διὰ μεγάλης πλειοψηφίας. Διετέλεσε καὶ πρόεδρος τῆς κρητικῆς βουλῆς τῷ 1896. Μ. Γ. Δ.

— **Μητσοτάκη** ***Κυριάκου, Βικτωρίνη***. Ἑλληνὶς θεατρικὴ συγγραφεὺς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεῖσα ἐξ ἐγκρίτου φαναριωτικῆς οἰκογενείας ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1889, ἐκπαιδευθεῖσα δ' ἐν τῷ αὐτόθι λυκείῳ τῶν Dames de Sion καὶ μετέπειτα ἐν ἀγγλικῷ οἰκοτροφείῳ Νυμφευθεῖσα ἐγκατεστάθη ἐν Χανίοις τῆς Κρήτης, ἔνθα καὶ διαμένει ἔκτοτε. Εἰς τοὺς θεατρικοὺς διαγωνισμοὺς (Καλοκαιρίνειον, Σαββίδειον, Σταθάτειον καὶ τοῦ περιοδικοῦ «Νέα Ἑστία») ἐβραβεύθησαν ἢ ἐπηνέθησαν διάφορα ἔργα της, ἐν οἷς: «Ἡ Σκλάβα» (1928) μονόπρακτον, «Τὰ Στοιχήματα» (1930) καὶ οἱ «Δεσμοὶ» (1931) τρίπρακτα. Τὰ θεατρικά της ἔργα διαπνέει ἀνθρωπιστικὸς φεμινισμός. Ἐξέδωκεν ἐπίσης καὶ τὸ μυθιστόρημα «Οἱ Ἀδύναμοι» (1931), ἔργον ἠθογραφίας τοῦ κρητικοῦ λαοῦ, ἀξιοσημείωτον καὶ ἀπὸ περιγραφικῆς ἀπόψεως. Πλὴν τούτου ἐδημοσίευσε διηγήματα εἰς περιοδικά, ἐν οἷς καὶ εἰς τὸ τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας» (1926). ΤΕΛΛΟΣ ΑΓΡΑΣ

**μηχανέλαιον** (τό). Ἔλαιον χρησιμοποιούμενον εἰς τὰς μηχανὰς ὡς καύσιμος ὕλη, κυριώτατα ὅμως ὡς λιπαντικὸν μέσον (βλ. λ. *λιπαντικὰ ἔλαια*).

**«Μὴ χάνεσαι»**. Σατιρικὴ τρισεβδομαδιαία καὶ κατόπιν ἡμερησία ἐφημερὶς ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1880 ὑπὸ Βλ. Γαβριηλίδου. Σὺν τῷ χρόνῳ προσλαβοῦσα μᾶλλον σοβαρὸν πολιτικὸν χαρακτῆρα, διεκόπη τὴν 22αν Ὀκτωβρίου 1883, διὰ νὰ ἐκδοθῇ ἐν συνεχείᾳ αὐτῆς ἡ *«Ἀκρόπολις»* (βλ. λ.). Π.Ν.Π.

**μηχάνευμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μηχανεύεσθαι, τέχνασμα, πονήρευμα.

**μηχανεύομαι,** ἀόρ. ***ἐμηχανεύθην***· ἐπινοῶ, ἐφευρίσκω τρόπον πονηρόν, τεχνῶμαι, πονηρεύομαι: «τὰ πάντα μηχανεύεται διὰ νὰ ἐπιτύχῃ τὸν σκοπόν του».

**μηχανή** (ἡ) πᾶν μέσον διὰ τοῦ ὁποίου χρησιμοποιεῖται ἡ δύναμις τοῦ ἀνθρώπου ἀποτελεσματικώτερον, οἷον ὁ μοχλός, ὁ σφὴν κττ.' || καθόλου, πᾶς μηχανισμὸς διὰ τοῦ ὁποίου μικρὰ σχετικῶς δύναμις παράγει μέγα ἔργον' || δημοτ., κατ' ἐξοχήν, ἡ ραπτικὴ μηχανή: «ἀγόρασα μιὰ μηχανὴ τοῦ ποδαριοῦ,—τοῦ χεριοῦ»' || μεταφ., ἐπὶ ἀνθρώπου ἐνεργοῦντος καθ' ὑπόδειξιν ἢ ἐπιταγὴν ἄνευ αὐτενεργείας τινός' || ἀρχ., τρόπος, μέσον, μέθοδος: «πάσῃ τέχνῃ καὶ μηχανῇ»' || ἐργαλεῖον, ὄργανον πολεμικόν: «πολιορκητικὴ μηχανή»' || μηχανικὸν μέσον τοῦ θεάτρου, διὰ τοῦ ὁποίου ἐνεφανίζοντο μετέωροι θεοὶ ἢ ἥρωες καὶ ἐπήρχετο δι' αὐτῶν λύσις τοῦ δράματος' ὅθεν ἡ φρ. «ἀπὸ μηχανῆς θεὸς» ἀπρόοπτον γεγονὸς διευκολῦνον τὴν ἀπαλλαγὴν ἐκ δυσχερειῶν.

— *[Φυσ.]* Μηχανὴ ἐν τῇ φυσικῇ καλεῖται ἡ συσκευή, ἥτις χρησιμεύει εἰς τὸ νὰ μεταβάλλῃ τὴν διεύθυνσιν, τὸ σημεῖον ἐφαρμογῆς ἢ τὸ μέγεθος μιᾶς δυνάμεως. Κατὰ τὴν μεταβολὴν ταύτην τὸ ὑπὸ τῆς δυνάμεως ἀνὰ δευτερόλεπτον παρεχόμενον ἔργον παραμένει σταθερόν, κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς διατηρήσεως τῆς ἐνεργείας, ὥστε αὔξησις τῆς δυνάμεως συνδέεται πάντοτε πρὸς ἐλάττωσιν τῆς ταχύτητος μετακινήσεως τοῦ σημείου ἐφαρμογῆς, καὶ ἀντιστρόφως. Αἱ ὡς ἄνω ὁρισθεῖσαι μηχαναὶ ὀνομάζονται πρὸς διάκρισιν *φυσικαὶ μηχαναί*, διαιροῦνται δὲ εἰς *ἁπλᾶς* καὶ *συνθέτους*. Ἁπλαῖ φυσικαὶ μηχαναὶ εἶναι ὁ *μοχλός*, ἡ *τροχαλία*, ὁ *κοχλίας* καὶ τὸ *κεκλιμένον ἐπίπεδον*. Σύνθετοι φυσικαὶ μηχαναί, ἤτοι συγκείμεναι ἐκ περισσοτέρων ἁπλῶν τοιούτων, εἶναι τὸ *πολύσπαστον*, τὸ *βαροῦλκον*, τὸ *διαφορικὸν βαροῦλκον* καὶ ἄλλα ὅμοια.

— *[Τεχν.]* Καλεῖται *μηχανὴ* πᾶσα συσκευὴ διὰ τῆς ὁποίας κατορθοῦται ὁ μετασχηματισμὸς ἐνεργείας ἀπὸ μιᾶς μορφῆς εἰς ἄλλην, ἢ εἰς τὴν αὐτὴν μορφήν, μὲ ἄλλα χαρακτηριστικὰ (ταχύτης, δύναμις κτλ.).

*Ἱστορικὴ ἐπισκόπησις.* Οἱ ἀρχαιότατοι λαοὶ ἐγνώριζον ἤδη ὡρισμένας ἁπλᾶς μηχανάς, κυρίως ὁμοιώματα μελῶν τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος, προωρισμένα νὰ ἐκτελοῦν τὰς αὐτὰς ἐργασίας. Οὕτω π. χ. ἡ *σφῦρα* εἶναι προφανῶς ἀπομίμησις τῆς ἀνθρωπίνης πυγμῆς, ἡ *μάχαιρα* ἀπομίμησις τοῦ ὄνυχος ἢ τοῦ ὀδόντος, κτλ. Ἐπὶ μακροὺς δὲ τούτους αἰῶνας ἡ ἐξέλιξις τῶν μηχανῶν δὲν παρουσίασεν αἰσθητὴν πρόοδον, ἴσως διότι ἡ διαθέσιμος κινητήριος δύναμις ἦτο πολὺ περιωρισμένη. Κατὰ τὸν μεσαίωνα, ὡρισμέναι ἐφευρέσεις (*τυπογραφία, ἀεραντλία*, κ.τ.λ.) δίδουν νέαν ὤθησιν εἰς τὴν ἐξέλιξιν τῶν μηχανῶν, τὴν ὁποίαν ἐπιταχύνει ἐξαιρετικῶς ἡ ἐφεύρεσις τῆς *ἀτμομηχανῆς*, κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα. Ταύτης ἕπονται ἀναγκαστικῶς πολλαὶ ἐφευρέσεις ἐργομηχανῶν κατεργασίας, ἀπαραιτήτων διὰ τὴν κατασκευὴν τῆς ἀτμομηχανῆς. Ἀναγνωρίζεται δὲ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὁ σίδηρος ὡς τὸ κυριώτατον ὑλικὸν τῆς κατασκευῆς μηχανῶν. Ἄλλη συνέπεια τῆς ἀτμομηχανῆς εἶναι ἡ ραγδαία ἐξέλιξις τῶν μέσων συγκοινωνίας (*σιδηρόδρομος, ἀτμόπλοια*), ἐπιτευχθεῖσα βραδύτερον δὲ ἔτι πλέον διὰ τῆς ἐφευρέσεως τῆς *μηχανῆς ἐσωτερικῆς καύσεως* καὶ τῆς *ἠλεκτρικῆς* μηχανῆς (βλ. λ.). Ἀξιοσημείωτον γεγονὸς τῶν τελευταίων δεκαετηρίδων εἶναι καὶ ἡ τελειοποίησις τῶν αὐτομάτων *ἐργομηχανῶν* κατεργασίας, διὰ τῶν ὁποίων κατέστη δυνατὴ ἡ ἐν σειρᾷ παραγωγὴ (fabrication en série, Massenfabrikation).

Τὰ ὠφελήματα τῆς διὰ μηχανῶν ἀντικαταστάσεως τῆς ἀνθρωπίνης ἐργασίας ἔγκεινται εἰς τὴν μεγαλυτέραν ἀπόδοσιν, μεγαλυτέραν ἀκρίβειαν (καθισταμένην ἰδιαιτέρως αἰσθητὴν εἰς τὴν κατα-

Digitized by Google

σκευὴν πολλῶν ὁμοίων τεμαχίων) καὶ ὀλιγωτέραν σπατάλην κινητηρίου ἐνεργείας. Ἀποτέλεσμα ὅλων αὐτῶν εἶναι ὅτι ἡ διὰ μηχανῶν ἐργασία κοστίζει ὀλιγώτερον τῆς ἀνθρωπίνης τοιαύτης. Ὡς κυριώτατον ἐλάττωμα τῆς μηχανῆς, συγκρινομένης πρὸς τὴν ἐργασίαν ζώντων ἐργατῶν, δέον νὰ θεωρηθῇ ἡ παντελὴς ἔλλειψις εἰς αὐτὴν αἰσθητηρίων ἐντυπώσεων, ἡ ὁποία μόνον διὰ πολυπλοκωτάτων καὶ δυσαναλόγως πρὸς τὸν ἐπιδιωκόμενον σκοπὸν πολυτελῶν μέσων δύναται νὰ καταπολεμηθῇ. Προκειμένου περὶ ἐργασιῶν, εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ὁποίων παίζουν ρόλον λεπταὶ αἰσθητήριοι ἐντυπώσεις (π.χ. ἁφῆς), ἡ ἀντικατάστασις τοῦ ζῶντος ἐργάτου διὰ μηχανῆς παρουσιάζει μεγάλας δυσκολίας. Ἡ διὸ συστρέψεως τῶν ἰνῶν βάμβακος ἢ ἐρίου κατασκευὴ νήματος παρέχει πρὸς τοῦτο ἀξιοσημείωτον παράδειγμα. Ἡ ἐκτελοῦσα τὴν ἐργασίαν αὐτὴν ἐργάτρια ἔχει εἰς τὰ ἄκρα τῶν δακτύλων της τὸ λεπτότατον αἴσθημα τῆς ἁφῆς, διὰ τοῦ ὁποίου κανονίζει αὐτομάτως τὸν ἀριθμὸν τῶν συστρεφομένων ἰνῶν, οὕτως ὥστε ἡ διάμετρος τοῦ παραγομένου διὰ τῆς συστρέψεως νήματος νὰ εἶναι παντοῦ ἡ ἰδία. Ἵνα κατορθωθῇ ἡ σταθερότης αὕτη τῆς διαμέτρου ὑπὸ τῆς μηχανῆς, ἀπαιτεῖται ὁλόκληρος σειρὰ προκαταρκτικῶν ἐργασιῶν, τακτοποίησις τῶν ἰνῶν εἰς παραλλήλους γραμμὰς κτλ., περιπλέκουσα κατὰ πολὺ τὴν διὰ τῶν χειρῶν ἁπλουστάτην ἐργασίαν τῆς κατασκευῆς τοῦ νήματος. Ἡ εἰσαγωγὴ τῆς μηχανῆς εἰς τὴν βιομηχανίαν συνήντησε πολλὰς ἀντιρρήσεις, ἐκ μέρους ἰδίᾳ τῶν ἐργατικῶν κύκλων, διὰ τὸν λόγον ὅτι ἔσχεν ὡς συνέπειαν μεγάλην ἀνεργίαν. Ἡ ἀνεργία αὕτη προκύπτει, ἀφ' ἑνὸς μὲν διότι μία μηχανή, ἀπαιτοῦσα διὰ τὴν ἐπιτήρησίν της ἕνα ἢ δύο ἐργάτας, ἐκτελεῖ τὴν ἐργασίαν δεκάδων τοιούτων, ἀφ' ἑτέρου δὲ διότι ἡ ἐπιτήρησις αὐτῆς, ἐργασία ἐλαφρὰ καὶ εὐκόλως ἐκμανθανομένη, δύναται νὰ γίνῃ καὶ ὑπὸ γυναικῶν ἢ παιδίων, εὐλόγως ἐχόντων τὴν προτίμησιν τῶν ἐργοδοτῶν, διότι τὰ πληρωνόμενα ἡμερομίσθια εἶναι κατὰ πολὺ μικρότερα τῶν καταβαλλομένων εἰς ἄρρενας ἐξησκημένους ἐργάτας. Ἡ ὀξύτης τῆς ἀντιθέσεως μεταξὺ ἐργατῶν καὶ ἐργοδοτῶν, ἐξ αἰτίας τῆς εἰσαγωγῆς μηχανῶν, ὑπῆρξε πολλάκις τόσον μεγάλη, ὥστε προεκάλεσεν ἐπιθέσεις τῶν ἐργατῶν, αἵτινες ἀπέληξαν ἐνίοτε εἰς τὴν καταστροφὴν τῶν μηχανῶν.

***Διαίρεσις τῶν μηχανῶν.*** Αἱ μηχαναὶ διαιροῦνται εἰς *γενικὰς μηχανὰς* καὶ *κυρίως μηχανάς*. Κυρίως μηχανὴ εἶναι μηχανή, εἰς τὴν ὁποίαν μία τοὐλάχιστον μορφὴ ἐνεργείας (δηλ. ἢ ἡ πρὸς μετατροπὴν ἐνέργεια, ἢ ἡ διὰ τῆς μετατροπῆς παρεχομένη, ἢ τέλος καὶ αἱ δύο) εἶναι κινητικῆς φύσεως. Ἅπασαι αἱ λοιπαὶ εἶναι γενικαὶ μηχαναί. Γενικὴ μηχανὴ εἶναι π. χ. ὁ *λέβης*, ὁ ὁποῖος μετατρέπει τὴν χημικὴν ἐνέργειαν τῆς καυσίμου ὕλης εἰς δυναμικὴν ἐνέργειαν ἀτμοῦ, ὁ *ἠλεκτρικὸς στατὸς μετασχηματιστής*, μετατρέπων ἠλεκτρικὴν ἐνέργειαν εἰς ἐπίσης ἠλεκτρικήν, ἀλλ' ἄλλων χαρακτηριστικῶν (τάσεως, ἐντάσεως). Κυρίως μηχαναὶ εἶναι ἡ *ἀτμομηχανή*, ὁ *ἀτμοστρόβιλος*, ὁ *ἠλεκτρικὸς κινητήρ*, ἡ *ἠλεκτρικὴ γεννήτρια* κτλ. *Στοιχεῖα* μιᾶς μηχανῆς καλοῦνται τὰ διάφορα μέρη αὐτῆς. Τὰ στοιχεῖα ταῦτα συνδέονται πρὸς ἄλληλα οὕτως, ὥστε ν' ἀποτελοῦν *κινηματικὰ ζεύγη*, ἅτινα σχηματίζουν *κινηματικὰς ἁλύσεις* ἀποτελούσας διαφόρους *μηχανισμούς*. Ἀπὸ κινηματικῆς ἀπόψεως μηχανὴ σημαίνει συνδυασμὸν μηχανισμῶν. Ἡ ἀποδιδομένη ὑπὸ μηχανῆς τινος ἐνέργεια εἶναι πάντοτε κατὰ ποσὸν κατά τι μικροτέρα ἀπὸ τὴν εἰς τὴν μηχανὴν προσδιδομένην. Τοῦτο συμβαίνει διότι ἡ κίνησις καὶ ἡ ἐν γένει λειτουργία τῆς μηχανῆς εἶναι συνδεδεμένη πρὸς ὡρισμένας ἀπωλείας ἐνεργείας, λόγῳ τριβῶν, τοπικῶν θερμάνσεων καὶ ἄλλων τοιούτων. Μέρος δηλαδὴ τῆς παρεχομένης εἰς τὴν μηχανὴν ἐνεργείας καταναλίσκεται ἐντὸς αὐτῆς, τοῦ ὑπολοίπου μετατρεπομένου εἰς ἐνέργειαν ἄλλης μορφῆς. Ὁ λόγος τῆς ὑπὸ τῆς μηχανῆς ἀποδιδομένης ἐνεργείας πρὸς τὴν εἰς αὐτὴν προσδιδομένην (ἀμφοτέρων μετρουμένων εἰς τὴν αὐτὴν μονάδα ἐνεργείας) καλεῖται *βαθμὸς ἀποδόσεως* τῆς μηχανῆς. Ὁ βαθμὸς ἀποδόσεως εἶναι, κατὰ τ' ἀνωτέρω, πάντοτε μικρότερος τῆς μονάδος. Μηχανή τις εἶναι τελειοτέρα (δηλ. οἰκονομικωτέρα), ὅσον περισσότερον ὁ βαθμὸς ἀποδόσεως αὐτῆς πλησιάζει τὴν μονάδα. Βαθμὸς ἀποδόσεως ἴσος πρὸς τὴν μονάδα ἰσοδυναμεῖ πρὸς ἀεικίνητον τοῦ δευτέρου εἴδους, βαθμὸς ἀποδόσεως μεγαλύτερος τῆς μονάδος ἰσοδυναμεῖ πρὸς ἀεικίνητον τοῦ πρώτου εἴδους.

Τῶν κυρίως μηχανῶν διακρίνομεν δύο μεγάλας κατηγορίας: τὰς *κινητηρίους* καὶ τὰς *ἐργομηχανάς*. Κινητήριοι λέγονται αἱ μηχαναί, αἵτινες ἀποδίδουσιν ἐνέργειαν ὑπὸ μορφὴν κινήσεως, λαμβάνουσαι ἐνέργειαν οἱασδήποτε ἄλλης μορφῆς. Τοιαῦται εἶναι π. χ. αἱ μηχαναὶ ἐσωτερικῆς καύσεως, ἡ ἀτμομηχανή, ὁ ἠλεκτρικὸς κινητὴρ κτλ. Ἐργομηχαναὶ λέγονται αἱ μηχαναί, αἵτινες λαμβάνουν ἐνέργειαν κινητικῆς φύσεως· ἀναλόγως δὲ τῆς μορφῆς, εἰς ἣν αἱ ἐργομηχαναὶ μετατρέπουν τὴν ὑπ' αὐτῶν προσλαμβανομένην κινητικὴν ἐνέργειαν, διαιροῦνται πάλιν εἰς *κυρίως ἐργομηχανὰς* καὶ *γενικὰς ἐργομηχανάς*. Κυρίως ἐργομηχαναὶ εἶναι αἱ μετατρέπουσαι τὴν προσδιδομένην εἰς αὐτὰς κινητικὴν ἐνέργειαν πάλιν εἰς κινητικὴν τοιαύτην, ὑπὸ καταλληλοτέραν διὰ τοὺς ἑκάστοτε σκοποὺς μορφήν. Τοιαῦται π. χ. εἶναι τὸ πολύσπαστον, ἡ ἀντλία ἐν γένει, ὁ τόρνος κτλ. Γενικαὶ ἐργομηχαναὶ εἶναι αἱ μετατρέπουσαι τὴν κινητικὴν ἐνέργειαν, ἣν λαμβάνουσιν, εἰς ἐνέργειαν ἄλλης, μὴ κινητικῆς, μορφῆς. Ἡ ἠλεκτρικὴ γεννήτρια π. χ. εἶναι γενικὴ ἐργομηχανή, λαμβάνουσα κινητικὴν ἐνέργειαν καὶ μετατρέπουσα αὐτὴν εἰς ἠλεκτρικὴν τοιαύτην.

Α) *Κινητήριοι μηχαναί*. Ἐκ τῆς φύσεως δύναται νὰ ληφθῇ ἐνέργεια εἰς διαφόρους μορφάς. Πηγαὶ ἐνεργείας εἶναι π. χ. ἡ μυϊκὴ δύναμις ἀνθρώπων καὶ ζῴων, ἡ δύναμις τοῦ πίπτοντος ἢ ρέοντος ἢ ἐν γένει μετακινουμένου ὕδατος, ἡ δύναμις τοῦ ἀνέμου, ἡ θερμικὴ ἐνέργεια τοῦ ἡλίου, ἡ χημικὴ ἐνέργεια τοῦ ἄνθρακος, τοῦ πετρελαίου κτλ. Κινητήριοι μηχαναὶ τροφοδοτούμεναι ἀπ' εὐθείας ἀπὸ μιᾶς τοιαύτης πηγῆς ἐνεργείας τῆς φύσεως ὀνομάζονται *πρωτογενεῖς*. Τοιαῦται εἶναι ὁ ἀνεμοκινητήρ, ὁ ὑδροστρόβιλος, ὁ ὑδροτροχός, τὸ χειροκίνητον βαροῦλκον κτλ. Κινητήριοι μηχαναὶ χρησιμοποιοῦσαι ἐνέργειαν ἐκ μιᾶς τῶν ἀνωτέρω πηγῶν, ὄχι ὅμως ἀπ' εὐθείας, ἀλλ' ἀφοῦ ἡ ἐνέργεια τῆς πηγῆς μετατραπῇ δι' ἄλλης μηχανῆς εἰς πλέον πρόσφορον μορφήν, ὀνομάζονται *δευτερογενεῖς*. Τοιαῦται εἶναι αἱ ἀτμομηχαναὶ γενικῶς, αἵτινες χρησιμοποιοῦσι τὴν χημικὴν ἐνέργειαν τῶν καυσίμων ὑλῶν, ἀφοῦ πρῶτον αὕτη μετατραπῇ ἐν τῷ λέβητι εἰς δυναμικὴν ἐνέργειαν ἀτμοῦ, ὁ ἠλεκτρικὸς κινητήρ, μηχαναὶ κινούμεναι ἐν γένει διὰ πτώσεως βαρῶν, τὰ ὁποῖα προηγουμένως χρειάζεται ν' ἀνυψωθοῦν κ.ἄ.

1) *Θερμικαὶ μηχαναὶ* ἢ *θερμομηχαναὶ* καλοῦνται αἱ κινητήριοι μηχαναί, αἵτινες τροφοδοτοῦνται δι' ἐνεργείας, κύριος παράγων τῆς ὁποίας εἶναι ἡ θερμότης. Εἰς ὅλας τὰς θερμικὰς μηχανὰς ἡ θερμότης παράγεται διὰ καύσεως, ἤτοι διὰ μετατροπῆς τῆς χημικῆς ἐνεργείας τῶν καυσίμων ὑλῶν εἰς θερμικὴν τοιαύτην. Ἡ καῦσις αὕτη δύναται νὰ λαμβάνῃ χώραν εἴτε ἐκτὸς τῆς μηχανῆς (ὡς π. χ. εἰς τὰς ἀτμομηχανάς, ὅπου ἡ καῦσις λαμβάνει χώραν ἐν τῷ λέβητι), εἴτε ἐντὸς τῆς μηχανῆς (ὡς π. χ. εἰς τοὺς κινητῆρας αὐτοκινήτων, εἰς τὰς μηχανὰς Diesel κτλ.). Διακρίνομεν ὡς ἐκ τούτου *μηχανὰς ἐξωτερικῆς καύσεως* καὶ *μηχανὰς ἐσωτερικῆς καύσεως*. Αἱ μηχαναὶ ἐσωτερικῆς καύσεως ἐργάζονται ἐν γένει μὲ μεγαλύτερον βαθμὸν ἀποδόσεως ἢ αἱ ἀτμομηχαναί, καὶ τοῦτο διότι ὁ βαθμὸς ἀποδόσεως αὐξάνει αὐξανομένης τῆς θερμοκρασίας (κατὰ τὸν τύπον τοῦ Carnot)· ἐνῷ δὲ εἰς τὰς ἀτμομηχανὰς ἡ θερμοκρασία τοῦ ἀτμοῦ δὲν δύναται, διὰ λόγους ἀντοχῆς κυρίως, νὰ ὑπερβῇ τὸ ὅριον τῶν 450 ἕως 500 βαθμῶν Κελσίου, αἱ μηχαναὶ ἐσωτερικῆς καύσεως δύνανται, ὡς ἐκ τῆς φύσεώς των, νὰ ἐργάζωνται μὲ πολὺ μεγαλυτέρας θερμοκρασίας. Ἐννοεῖται ὅτι αἱ ὑψηλαὶ αὗται θερμοκρασίαι καθιστοῦν ἀπαραίτητον τὴν ψῦξιν τοῦ κυλίνδρου τῆς μηχανῆς κατὰ τὴν λειτουργίαν αὐτῆς. Ἀναλόγως τοῦ τρόπου μὲ τὸν ὁποῖον λαμβάνει χώραν ἡ καῦσις ἐντὸς τοῦ κυλίνδρου, διαιροῦμεν τὰς μηχανὰς ἐσωτερικῆς καύσεως εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας: α') *Μηχαναὶ ταχείας καύσεως (ἐκρηκτικαί)*, εἰς τὰς ὁποίας τὸ καύσιμον συμπιέζεται πρῶτον ἐντὸς τοῦ κυλίνδρου καὶ κατόπιν ἀναφλέγεται δι' ἠλεκτρικοῦ σπινθῆρος (ἔκρηξις). Ἀποτέλεσμα τῆς ἀναφλέξεως εἶναι ἡ ἄφθονος παραγωγὴ καυσαερίων καὶ ἡ ἀπότομος αὔξησις τῆς πιέσεως ἐν τῷ κυλίνδρῳ. Μηχανὴ ταχείας καύσεως δύναται νὰ χρησιμοποιήσῃ μόνον ἐλαφρά, πτητικὰ καύσιμα (βενζίνη, βενζόλη κτλ.). Συνηθέστατος ἀντιπρόσωπος αὐτῆς εἶναι ἡ μηχανὴ τοῦ αὐτοκινήτου. β') *Μηχαναὶ βραδείας καύσεως*, εἰς τὰς ὁποίας τὸ καύσιμον εἰσάγεται βαθμιαίως καὶ βραδέως εἰς τὸν κύλινδρον καὶ εἰσαγόμενον ἀναφλέγεται ἀμέσως. Λόγῳ τῆς βαθμιαίας αὐτῆς καύσεως, ἡ ἐν τῷ κυλίνδρῳ πίεσις παραμένει περίπου σταθερὰ καὶ ὡς ἐκ τούτου αἱ μηχαναὶ αὗται ὀνομάζονται καὶ *μηχαναὶ ἰσοβαροῦς καύσεως*. Τοιαῦται μηχαναὶ δύνανται νὰ χρησιμοποιήσουν καὶ βαρέα καύσιμα (ἀκάθαρτον πετρέλαιον κτλ.). Κυριώτατος ἀντιπρόσωπος αὐτῶν εἶναι ἡ μηχανὴ Diesel.

2) *Ὑδραυλικοὶ κινητῆρες* ἢ *ὑδρομηχαναὶ* καλοῦνται αἱ κινητήριοι μηχαναί, αἵτινες κινοῦνται διὰ τῆς ἐνεργείας πίπτοντος ἢ ἐν γένει κινουμένου ὕδατος. Αἱ ὑδρομηχαναὶ διαιροῦνται εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας, τοὺς *ὑδροτροχοὺς* καὶ τοὺς *ὑδροστροβίλους*. Οἱ πρῶτοι χαρακτηρίζονται ὑπὸ τοῦ γεγονότος ὅτι τὸ ὕδωρ ἐν αὐτοῖς ἐνεργεῖ μόνον διὰ τοῦ βάρους αὐτοῦ, ἐνῷ εἰς τοὺς ὑδροστροβίλους τὸ ὕδωρ ἐνεργεῖ ἢ διὰ τῆς πιέσεως ἢ διὰ τῆς κεκτημένης αὐτοῦ ταχύτητος. Διακρίνομεν δὲ *ὑδροστροβίλους δράσεως* ἢ ὑδροστροβίλους Peltou, εἰς τοὺς ὁποίους τὸ ὕδωρ ἐνεργεῖ διὰ τῆς κεκτημένης αὐτοῦ ταχύτητος, καὶ *ὑδροστροβίλους ἀντιδράσεως* ἢ ὑδροστροβίλους Francis, εἰς τοὺς ὁποίους τὸ ὕδωρ ἐνεργεῖ διὰ τῆς πιέσεως αὐτοῦ. Μετὰ τὰς θερμομηχανάς, οἱ ὑδροστρόβιλοι εἶναι ἡ κυριωτέρα πηγὴ κινήσεως ἐν τῇ παγκοσμίῳ βιομηχανίᾳ ἐνεργείας.

3) *Ἀνεμοκινητῆρες* ἢ *ἀνεμομηχαναὶ* καλοῦνται αἱ κινητήριοι μηχαναί, αἵτινες κινοῦνται διὰ τῆς δυνάμεως τοῦ ἀνέμου. Εἶναι μηχαναὶ πολὺ περιωρισμένης ἰσχύος, ἡ δὲ ἄμεσος ἐξάρτησίς των ἐκ τῶν μετεωρολογικῶν συνθηκῶν τὰς καθιστᾷ ἀκαταλλήλους διὰ χρήσεις τοιαύτας, ὅπου ἡ πρόχειρος καὶ εἰς οἱανδήποτε ὥραν ἐφικτὴ παραγωγὴ κινήσεως ἀποτελεῖ ἀπαράβατον ὅρον τῆς κινητηρίου ἐγκαταστάσεως. Χρησιμοποιοῦνται δι' ἄντλησιν ὕδατος ἐν συνδυασμῷ μετ' ἐμβολοφόρων ἀντλιῶν ἢ ἄλλων ἀντλητικῶν μηχανημάτων, διὰ κίνησιν μύλων, ὡς καὶ διὰ παραγωγὴν ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας ἐν συνδυασμῷ μετ' ἠλεκτρογεννητριῶν. Εἰς τὴν τελευταίαν αὐτὴν περίπτωσιν εἶναι ἀπαραίτητος ἡ ὕπαρξις ἠλεκτρικῆς συστοιχίας, ὡς καὶ διαφόρων αὐτομάτων διακοπτῶν πρὸς ἀποφυγὴν ὑπερφορτώσεως τῆς γεννητρίας ἐν περιπτώσει αἰφνιδίας αὐξήσεως τοῦ ἀνέμου, ὡς καὶ πρὸς ἀποφυγὴν ρεύματος ἐπιστροφῆς ἐκ τῆς συστοιχίας πρὸς τὴν γεννήτριαν ἐν περιπτώσει αἰφνιδίας νηνεμίας.

4) *Ἠλεκτρικοὶ κινητῆρες*· βλ. λ. *ἠλεκτρικαὶ μηχαναί*.

Β') *Ἐργομηχαναί*. Αἱ κυρίως ἐργομηχαναὶ διαιροῦνται εἰς τὰς ἑξῆς τρεῖς κατηγορίας: α') *Ἐργομηχαναὶ μεταφορᾶς*. Καλοῦνται αἱ μηχαναί, αἵτινες, τροφοδοτούμεναι διὰ μηχανικοῦ ἔργου, μετατρέπουν αὐτὸ εἰς ἔργον μετακινήσεως ἐν γένει (ἀνύψωσις βαρέων σωμάτων, ὕδατος, ὑγρῶν, ἀερίων κτλ.). Ἐργομηχαναὶ μεταφορᾶς εἶναι αἱ ἁπλαῖ καὶ αἱ σύνθετοι φυσικαὶ μηχαναί, τὰ παντὸς εἴδους μεταφορικὰ μέσα (ἀπὸ τῆς κινητηρίου μηχανῆς καὶ ἐντεῦθεν), γερανοί, ἀναβατῆρες, ἀντλίαι παντὸς εἴδους, ἀεροσυμπιεσταί, ἀνεμιστῆρες, φυσητῆρες κττ. β') *Ἐργομηχαναὶ κατεργασίας*. Καλοῦνται αἱ ἐργομηχαναί, αἵτινες τὸ ὑπ' αὐτῶν προσλαμβανόμενον μηχανικὸν ἔργον χρησιμοποιοῦν πρὸς κατεργασίαν διαφόρων ὑλικῶν. Διακρίνομεν τὰ ἑξῆς εἴδη ἐργομηχανῶν κατεργασίας: 1) Ἐργομηχαναί, εἰς τὰς ὁποίας ἡ κατεργατσία γίνεται μόνον διὰ μεταβολῆς τῆς σχετικῆς πρὸς ἄλληλα θέσεως τῶν μορίων τοῦ ὑπὸ κατεργασίαν σώματος, ἄνευ ἀφαιρέσεως ὑλικοῦ. Τοιαῦται μηχαναὶ εἶναι αἱ σφῦραι, τὰ ἔλαστρα, τὰ συμπιεστήρια (πρέσσαι κττ.). 2) Ἐργομηχαναί, εἰς τὰς ὁποίας ἡ κατεργασία γίνεται δι' ἀφαιρέσεως ὑλικοῦ. Τοιαῦται εἶναι οἱ τόρνοι, αἱ πλάναι, τὰ ἐκγλύφανα (φρέζαι), αἱ ψαλίδες, οἱ πρίονες κτλ. 3) Ἐργομηχαναί, εἰς τὰς ὁποίας ἡ κατεργασία συνίσταται εἰς τὴν σύνδεσιν δύο ἢ περισσοτέρων, ἀρχικῶς κεχωρισμένων, σωμάτων, ὡς π. χ. αἱ πλεκτικαὶ καὶ ραπτικαὶ μηχαναὶ κ. ἄ. γ') *Λοιπαὶ ἐργομηχαναί*. Τοιαῦται εἶναι αἱ μετρητικαί, αἱ λογιστικαί, αἱ γραφομηχαναὶ κττ.

***Παγκόσμιος παραγωγή.*** Αἱ μηχαναὶ ὑπολογίζονται καὶ σχεδιάζονται ὑπὸ μηχανικῶν, κατασκευάζονται δὲ εἰς τὰ μηχανουργεῖα. Ἡ ἐπεξεργασία τῶν διαφόρων αὐτῶν τεμαχίων γίνεται δι' ἐργομηχανῶν. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη καταβάλλεται μεγάλη προσπάθεια κατασκευῆς ὅσον τὸ δυνατὸν περισσοτέρων μηχανῶν τοῦ αὐτοῦ τύπου (fabrication en série), διότι ὑποβιβάζονται οὕτω τὰ ἔξοδα κατασκευῆς μιᾶς ἑκάστης ἐξ αὐτῶν. Ἐννοεῖται ὅτι πάντοτε ἀνώτατος ρυθμιστὴς τῆς παραγωγῆς παραμένει ἡ καταναλωτικὴ δύναμις τῆς ἀγορᾶς. Ἐπίσης ὑπάρχει, κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη, τάσις προτυποποιήσεως (normalisation) ὅσον τὸ δυνατὸν περισσοτέρων στοιχείων τῆς μηχανῆς, ἵνα καθίσταται δυνατὴ ἡ διὰ τῶν ἀνταλλακτικῶν ἐξυπηρέτησις μηχανῶν διαφόρων τύπων, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐπηρεάζει ὑποβιβαστικῶς τὴν τιμὴν τῶν ἀνταλλακτικῶν. Βιομηχανίαι κατασκευῆς μηχανῶν ἀκμάζουν κυρίως εἰς χώρας, ὅπου ἀφθονοῦν αἱ πρῶται ὗλαι, δηλαδὴ ἄνθραξ καὶ σίδηρος. Πατρὶς τῶν μηχανῶν, δύναταί τις νὰ εἴπῃ, ὑπῆρξεν ἡ Ἀγγλία, χρησιμοποιήσασα ἐκ τῶν πρώτων τὴν ἐφεύρεσιν τῆς ἀτμομηχανῆς διὰ τὴν κίνησιν τῶν ἐργοστασίων της. Αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι τῆς Ἀμερικῆς, βοηθοῦντος τοῦ γνωστοῦ αὐτῶν πλούτου εἰς πρώτας ὕλας, ἔπαιξαν καὶ παίζουν σπουδαιότατον ρόλον εἰς τὴν παγκόσμιον παραγωγὴν μηχανῶν, ἰδιαίτατα εἰς τὴν κατασκευὴν ἐργομηχανῶν. Ἡ ἐν σειρᾷ παραγωγὴ ἐφαρμόζεται εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας περισσότερον ἢ εἰς πᾶσαν ἄλλην χώραν τοῦ κόσμου. Ἡ Γερμανία, ἐπίσης, ἤρξατο ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἐργαζομένη μεθοδικῶς εἰς τὸ κεφάλαιον τῆς κατασκευῆς τῶν μηχανῶν καὶ κατέχει σήμερον πρωτεύουσαν θέσιν εἰς τὴν κατασκευὴν πλείστων ὅσων μηχανῶν καὶ μηχανημάτων.

Ὁ κατωτέρω πίναξ παρέχει τὴν παραγωγὴν μηχανῶν ἑκάστης χώρας εἰς % τῆς παγκοσμίου παραγωγῆς, κατὰ τὰ ἔτη 1913 καὶ 1925.

| *Χῶραι* | *1913* | *1925* |
|---|---|---|
| Ἀγγλία | 11.8 | 13,6 |
| Γερμανία | 20,7 | 13,1 |
| Γαλλία | 1,9 | 2,4 |
| Ρωσία | 3,5 | 1,8 |
| Ἰταλία | 1,3 | 1,2 |
| Λοιπὴ Εὐρώπη | 7,5 | 5,4 |
| Εὐρώπη | 46,7 | 37,5 |
| Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | 50,0 | 57,6 |
| Καναδᾶς | 2,4 | 3,2 |
| Ἀμερικὴ | 52,4 | 60,8 |
| Ἀσία (Ἰαπωνία) | 0,3 | 1,0 |
| Αὐστραλία | 0,6 | 0,7 |
| Σύνολον | 100,0 | 100,0 |

Ἐν Ἑλλάδι δὲν ὑφίσταται ἀκόμη ἀξία λόγου

Digitized by Google

παραγωγὴ μηχανῶν, ἂν καὶ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐφηρμόσθη ὑπό τινων μηχανουργικῶν ἐργοστασίων ἡ ἐν σειρᾷ παραγωγὴ (ἐννοεῖται ὑπὸ στοιχειώδη μορφὴν) ὡρισμένων μηχανημάτων, π. χ. ἀντλιῶν, πιεστηρίων κ.τ.τ. Γ. Θ. Κ.

— [Ἀρχ.] Οἱ ἀρχαῖοι ἐκάλουν *μηχανὴν* πᾶν ἐργαλεῖον ἢ μέσον, δι᾽ οὗ εὐκολύνεται ἡ ἐργασία τοῦ ἀνθρώπου ἢ αὐξάνεται ἡ δύναμις αὐτοῦ. Αἱ μηχαναὶ ἦσαν *ἁπλαῖ* ἢ *σύνθετοι*. Ἁπλαῖ μηχαναὶ ἦσαν ὁ *μοχλός*, ὁ *σφήν*, ὁ *κοχλίας*, ἡ *ἕλιξ*, ὁ *ἄξων ἐν περιτροχίῳ*. Σύνθετοι μηχαναὶ ἦσαν διάφοροι σ υ ν δ υ α σ μ ο ὶ τῶν ἁπλῶν τοιούτων, ὡς ὁ *μύλος* πρὸς ἄλεσιν τοῦ σίτου, τὸ *ἄροτρον*, τὸ *πιεστήριον* πρὸς ἐξαγωγὴν οἴνου ἢ ἐλαίου καὶ αἱ παντὸς εἴδους συσκευαὶ διὰ βιομηχανικὰς ἐργασίας. Εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν συνθέτων μηχανῶν ὑπάγονται βεβαίως καὶ αἱ *ἀνυψωτικαὶ* λεγόμεναι μηχαναὶ διὰ τὴν ἀνύψωσιν βαρέων ὄγκων, ὅπως ἦσαν τὰ *βαροῦλκα* πρὸς ἀνύψωσιν ὀγκολίθων δι᾽ οἰκοδομὰς καὶ τείχη καὶ ὀρυκτῶν ἐξ ὀρυχείων, αἱ πολιορκητικαὶ μηχαναὶ διὰ πολεμικοὺς σκοπούς, αἱ θεατρικαὶ μηχαναὶ διὰ τὸ θέατρον. Ἐκ τῶν μηχανῶν αἱ ἀρχαιότεραι εἶναι ὁ μοχλὸς καὶ ὁ σφήν. Ὁ κοχλίας καὶ ὁ ἄξων φαίνεται ὅτι ἐφευρέθησαν βραδύτερον. Ἐφευρέται μηχανῶν μνημονεύονται κυρίως ὁ *Ἀρχιμήδης* καὶ ὁ *Κτησίβιος* (βλ. τὰς λ.). Αἱ ἀνυψωτικαὶ μηχαναὶ ἐφευρέθησαν πιθανῶς τὸ πρῶτον ἐν Ἑλλάδι ἀπὸ τοῦ ΣΤ᾽ μέχρι τοῦ Ε᾽ π. Χ. αἰῶνος. Ἡ ἀνύψωσις βαρέων ὀγκολίθων διὰ τὰς πελωρίας ἐνίοτε οἰκοδομὰς τῶν ἀρχαιοτέρων χρόνων, ὅπως εἶναι τὰ ἔργα τῶν Ἀσσυρίων καὶ τῶν Αἰγυπτίων, ὡς καὶ τὰ προγενεστέρων Ἑλλήνων, ἐγίνετο ἁπλούστατα, ἄνευ μηχανικῆς βοηθείας, διὰ τῶν βραχιόνων τῶν ἐργατῶν, ὑποβοηθουμένων εἰς τὸ βαρὺ ἔργον των διὰ σχοινίων, ἐνίοτε δὲ καὶ διὰ μοχλῶν καὶ κυλίνδρων, καὶ τῶν κεκλιμένων ἐπιπέδων. Τὴν τελευταίαν ταύτην μέθοδον ἐφήρμοσε καὶ ὁ Χερσίφρων, ὁ ἐκ Κνωσοῦ ἀρχιτέκτων, ὅστις κατεσκεύασε τὸν ἐν Ἐφέσῳ πρῶτον ναὸν τῆς Ἀρτέμιδος κατὰ τὸν ΣΤ᾽ π. Χ. αἰῶνα. Ἀπὸ τοῦ Ε᾽ ὅμως π. Χ. αἰῶνος καὶ ἐντεῦθεν εἶναι πλέον ἐν χρήσει αἱ ἀνυψωτικαὶ μηχαναί. Ὁ πρωταρχικὸς τύπος τῶν τοιούτων μηχανῶν ἦσαν, κατὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ Βιτρουβίου, δύο τεμάχια ξύλων, ἀνάλογα πρὸς τὸ βάρος τὸ ὁποῖον προωρίζοντο νὰ σηκώσουν. Τὰ ξύλα ταῦτα ἠνοῦντο κατὰ τὴν κορυφὴν διὰ σφηνός, ἐχωρίζοντο δὲ κατὰ τὴν βάσιν. Σχοινία προσδεδεμένα ἀπὸ τῆς κορυφῆς καὶ τεταμένα πέριξ διὰ πασσάλων ἐκ τοῦ ἐδάφους ἐκράτουν τὸ μηχάνημα τοῦτο ὄρθιον. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς τότε προσηλοῦτο πολύσπαστον μὲ πολλὰς τροχαλίας στρεφομένας ἐπὶ τῶν ἀξόνων των. Περὶ τὴν ἀνωτάτην τροχαλίαν ἐπετίθετο χονδρὸν σχοινίον, τὸ ὁποῖον, τυλισσόμενον ἐφ᾽ ὅλων τῶν κάτωθεν τῆς πρώτης τροχαλίας πολυσπάστων καὶ συρόμενον ὑπὸ τῶν ἐργατῶν, ἔδιδε τὴν κίνησιν εἰς ὅλον τὸ μηχάνημα καὶ προὐκάλει τὴν ἀνύψωσιν τοῦ βάρους, τὸ ὁποῖον προσεδένετο ἐπὶ τῆς τελευταίας κάτω τροχαλίας. Ἡ μηχανὴ αὕτη ὠνομάζετο γενικῶς μὲν *πολύσπαστον*, ἰδίως δὲ *τρίσπαστον*, *πεντάσπαστον* κτλ., ἀναλόγως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν τροχαλιῶν. Μεταξὺ τῶν διαφόρων συνθέτων μηχανῶν μνημονευτέα καὶ ἡ *ὑδραυλικὴ* μηχανή, διὰ τὴν ἀνύψωσιν τῶν ὑδάτων. Ὡς πρωταρχικὸς τύπος τῶν τοιούτων μηχανῶν ἦτο ὁ ἐν χρήσει καὶ μέχρι σήμερον ἐν ἀγροτικοῖς συνοικισμοῖς τύπος, ὁ λεγόμενος *κήλων* ἢ *κηλώνειον*. Ὁ τύπος οὗτος σύγκειται ἐκ μοχλοῦ, ὅστις κινεῖται ὁριζοντίως ἐπὶ ὀρθίας δοκοῦ. Ἐπὶ τοῦ ἑνὸς ἄκρου τοῦ ὁριζοντίου μοχλοῦ κρέμαται τὸ δοχεῖον πρὸς ἄντλησιν ὕδατος, ἐπὶ δὲ τοῦ ἑτέρου ἄκρου εἶναι προσδεδεμένον τὸ ἀντίβαρον. Β. Δ. Θ.

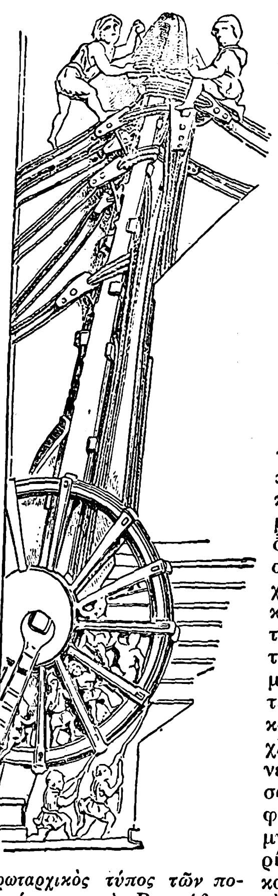

*Πρωταρχικὸς τύπος τῶν πολυσπάστων κατὰ Βιτρούβιον.*

*Ὁ τελειότερος τύπος ἀνυψωτικῆς μηχανῆς τῶν ἀρχαίων.*
[Ἀνάγλυφον τοῦ Μουσείου Latran.]

*Ὁ πρωταρχικὸς τύπος ὑδραυλικῆς μηχανῆς τῶν ἀρχαίων.*
[Ἀνάγλυφον Μουσείου Πάρμας.]

— [Οἰκονομ.] Ἡ πλουτολογικὴ σημασία τῶν μηχανῶν ἔγκειται εἰς τὴν δυνατότητα τῆς δι᾽ αὐτῶν ἀντικαταστάσεως βιοτεχνικῆς ἐργασίας ἐν τῇ παραγωγῇ.

Ἡ μετὰ τὴν ἐφεύρεσιν τῆς κινητηρίου δυνάμεως τοῦ ἀτμοῦ, ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, εὐρεῖα διάδοσις τῶν μηχανικῶν μέσων παραγωγῆς ἡ κυρίως κατὰ πρῶτον ἐν Ἀγγλίᾳ παρατηρηθεῖσα καὶ βαθμηδὸν μετὰ ταῦτα εἰς τὰς προσφορωτέρας περιφερείας οἰκονομικῆς προόδου ἐπεκταθεῖσα, διατελεῖ ἐξ ὑπαρχῆς ἐν στενῇ σχέσει ἀλληλεξαρτήσεως πρὸς τὴν καθόλου ἐξέλιξιν τῆς βιομηχανικῆς δράσεως. Ἡ διάδοσις αὕτη ηὐνοήθη ὑπὸ τῶν ὅρων τοῦ κοινωνικοῦ περιβάλλοντος (ὡς τῆς πληθύος τῶν κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ᾽ αἰῶνος καὶ κατ᾽ ἐξακολούθησιν μετὰ ταῦτα λαβουσῶν χώραν ἐπιστημονικῶν ἐφευρέσεων, τῆς μεγάλης ἐν τῷ παρελθόντι συσσωρεύσεως κεφαλαίων, τῆς ὑπάρξεως ἀθίκτων εἰσέτι σπουδαίων πηγῶν ἐθνικοῦ πλούτου, τῆς προϊούσης ἐλευθερώσεως τῆς παραγωγικῆς ἐργασίας ἀπὸ τῶν δεσμῶν τῆς μεσαιωνικῆς οἰκονομικῆς καὶ ἰδίως ἐπαγγελματικῆς ὀργανώσεως) καὶ ἤσκησεν αὐτοτελῆ ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἀναπτύξεως τῆς βιομηχανίας.

Τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἐν τῇ παραγωγῇ χρησιμοποιήσεως μηχανῶν εἶναι ἔν τε τῷ μερικωτέρῳ οἰκονομικῷ πεδίῳ καὶ τῷ γενικωτέρῳ κοινωνικῷ περιβάλλοντι κεφαλαιώδους σημασίας. Ἡ δραστικότης τῆς ἐν τῷ καταμερισμῷ τῆς ἐργασίας ἐγκειμένης βελτιώσεως τῶν παραγωγικῶν μεθόδων αὐξάνει εἰς τὸ πολλαπλοῦν διὰ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μηχανῶν εἰς ἓν ἕκαστον τῶν ἀπ᾽ ἀλλήλων χωριζομένων παραλλήλων ἢ ἀλληλοδιαδόχων τμημάτων κατασκευῆς. Ὁ ταχὺς ρυθμὸς τῶν μηχανῶν συμπαρασύρει τὴν ἄλλοτε κατὰ βούλησιν ἐπιταχυνομένην ἢ ἐπιβραδυνομένην προσωπικὴν ἐργασίαν, συντρεχούσης δὲ καὶ τῆς ἀκριβείας καὶ δυνάμεως τῆς μηχανικῆς ἐργασίας, καθιστώσης δυνατὰ ἔργα, εἰς ἃ δὲν ἐπαρκεῖ ἡ ἀνθρωπίνη δύναμις, συντελεῖ εἰς σπουδαίαν ἐπαναληπτικῶς ἐπενεργοῦσαν αὔξησιν τῆς παραγωγῆς. Ἡ αὔξησις αὕτη ἐκδηλοῦται εἰς τὴν ἄμεσον ὑποτίμησιν τῶν μηχανοποιήτων προϊόντων, καὶ εἰς τὴν κατ᾽ ἀκολουθίαν ἐπέκτασιν τῆς καταναλώσεως καὶ καλυτέραν πλήρωσιν τῶν κοινωνικῶν ἀναγκῶν. Ἡ ἐπέκτασις αὕτη, ὀφειλομένη εἰς τὴν συντρέχουσαν αὔξησιν τῆς ἀνταλλακτικῆς δυνάμεως τοῦ ἀφῃρημένου κοινωνικοῦ εἰσοδήματος (τὴν ἐκ τῆς διαφορᾶς τῆς ἀγοραίας ἀξίας τῶν χειροποιήτων ἀπὸ τῶν εὐθηνοτέρων μηχανοποιήτων προϊόντων προερχομένην) πολλαπλασιάζεται βαθμηδὸν ἐκ τοῦ κλάδου, εἰς ὃν κατὰ πρῶτον ἐφημόσθησαν αἱ μηχαναὶ πρὸς ὅλας τὰς κατευθύνσεις τῆς παραγωγικῆς διαδικασίας. Πράγματι, ὡς ἐκ τῆς ηὐξημένης ἐν κλάδῳ τινὶ τῆς παραγωγῆς κατ᾽ ἐργάτην ἀποδόσεως τῶν μηχανικῶν μέσων καὶ τῆς κατὰ συνέπειαν αὐξήσεως τοῦ ἀτομικοῦ καὶ τοῦ κοινωνικοῦ εἰσοδήματος, δημιουργοῦνται νέαι ἀτομικαὶ καὶ κοινωνικαὶ ἀνάγκαι, αὐξάνεται ἡ ζήτησις παντοειδῶν προϊόντων ἐξ ὅλων τῶν λοιπῶν κλάδων καὶ ἐπεκτείνεται ἑπομένως ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τῆς μεγαλυτέρας παραγωγικότητος τῶν μηχανῶν κατ᾽ ἀνιοῦσαν συνεχῶς κλίμακα ἡ παραγωγή, ἡ κατανάλωσις καὶ ἡ γενικωτέρα, ὑφ᾽ ὅλας τὰς ἐπόψεις, ἱκανοποίησις τῶν ἀναγκῶν, προαγομένης οὕτω τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῶν πλουτοφόρων πηγῶν ἑκάστης χώρας καὶ τῆς ἐκπληρώσεως τῶν ἀνωτέρων κοινωνικῶν σκοπῶν. Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων κοινωνικῶν μειονεκτημάτων τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μηχανῶν εἶναι ἡ ἐν τῷ ἀνταγωνισμῷ πρὸς τὰ μηχανικὰ προϊόντα καταστροφὴ τῶν ἐπαγγελματικῶν ἐπιχειρήσεων τῶν ἑκάστοτε ἐκβιομηχανοποιουμένων κλάδων τῆς παραγωγῆς καὶ συνεπῶς ἡ στέρησις πολλῶν τῆς δυνατότητος τῆς ἐλευθέρας ἀσκήσεως τῆς βιοτεχνικῆς ἐργασίας καὶ πολλάκις παντὸς πόρου ζωῆς. Ἡ σημασία τοῦ μειονεκτήματος τούτου δὲν δύναται νὰ παροραθῇ, παρὰ τὸν ἰσχυρισμὸν ὅτι ἡ διὰ τῶν μηχανῶν ἐπιτυγχανομένη αὔξησις τοῦ κοινωνικοῦ εἰσοδήματος ἐπιφέρει ἐπέκτασιν τῆς παραγωγῆς καὶ συνεπῶς αὔξησιν τῆς ζητήσεως ἐργατικῶν χειρῶν, ἀπορροφοῦσαν βαθμηδὸν τοὺς διὰ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μηχανικῶν μέσων εἰς κατάστασιν ἀνεργίας περιελθόντας. Διότι ἐν τῇ πράξει τῆς οἰκονομικῆς ζωῆς ἡ ἀλληλουχία αὕτη δὲν παρουσιάζεται κατὰ τὸν ἰδεώδη τοῦτον τύπον, τῆς αὐξήσεως τῆς παραγωγῆς ἐνδεχομένως πραγματοποιουμένης μετά τι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μακρὸν χρονικὸν διάστημα ἢ εἰς ἄλλον τόπον καὶ δὴ εἰς ὡρισμένα βιομηχανικὰ κέντρα ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τῆς εἰς προηγμένας οἰκονομικῶς περιφερείας συνήθως ἐκδηλουμένης συγκεντρωτικῆς τάσεως, εἰς ἃς περιπτώσεις προφανῶς δύσκολον καθίσταται νὰ ἐπωφεληθῇ ταύτης ἡ διὰ τῆς εἰσαγωγῆς τῶν μηχανῶν ἁπανταχοῦ διαθέσιμος καταστᾶσα παραγωγικὴ ἐργασία. Ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῶν μηχανῶν πραγματικῶς χρησιμοποιηθείσης ἐργατικῆς μάζης ὁ ριζικὸς μετασχηματισμὸς τῆς παραγωγικῆς διαδικασίας, ὁ ἐκ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μηχανικῶν μέσων προελθών, ἔσχε λίαν ἐπιζήμια ἀποτελέσματα, ἐκδηλωθέντα ἐντονώτερον κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς βιομηχανικῆς ἐξελίξεως καὶ δὴ ἐντὸς τῶν ἔκτοτε εἰς περιωρισμένον ἀριθμὸν διαμορφωθέντων βιομηχανικῶν κέντρων (πρὸς τὰ ὁποῖα κατηυθύνετο ἡ συγκεντρωτικὴ τάσις ὡρισμένων κλάδων τῆς παραγωγῆς), ἀλλὰ καὶ σήμερον ἀκόμη ἐν πολλοῖς αἰσθητά. Ἡ αὔξουσα ἐντὸς τῶν περιφερειῶν τούτων ζήτησις ἐργατικῶν χειρῶν προεκάλεσε μεγάλην συρροὴν ἐργατῶν ἐκ τῶν γεωργικῶν οἰκονομιῶν τῆς ὑπαίθρου ἀποσπασθέντων πρὸς τὰ βιομηχανικὰ καὶ μεταλλευτικὰ κέντρα, ὅπου οὗτοι, ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τῆς σωματικῶς ἐπιβλαβοῦς καὶ διανοητικῶς ἀμβλυνούσης μονοτόνου βιομηχανικῆς ἐργασίας, ὑποκείμενοι εἰς τὰς περιπετείας τῶν οἰκονομικῶν διακυμάνσεων καὶ τῆς ἐκ τούτων προκυπτούσης ἀνεργίας, κακῶς ἀμειβόμενοι καὶ ὑπὸ τὰς ἀθλιεστέρας τῶν συνθηκῶν διαιτώμενοι, ἀπετέλεσαν νέαν κοινωνικὴν τάξιν, κατὰ τὸ πλεῖστον ἐξ ὑπαρχῆς εἰς διηνεκῆ ἀπαθλίωσιν καταδικασθεῖσαν. Τοσούτῳ μᾶλλον, καθ᾽ ὅσον εἰς τὴν ἐργατικὴν ταύτην μᾶζαν, κατ᾽ ἀντίθεσιν πρὸς τὰς ἐπὶ τῆς ἐπαγγελματικῆς ἐργασίας τοῦ παρελθόντος κρατοῦντα, διὰ τῆς ἐφαρμογῆς πολυπλόκων μηχανῶν ἀπαιτουσῶν διάθεσιν μεγάλων κεφαλαίων, ἀπεκλείσθη σχεδὸν ἀπολύτως ἡ ἄνοδος εἰς τὰς διευθυνούσας θέσεις τῶν ἐπιχειρήσεων. Τὰς ἀναποφεύκτους ζημίας τῆς ἐργατικῆς τάξεως, τὰς ἐκ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μηχανῶν προερχομένας, καλοῦνται νὰ προλάβουν καὶ κατὰ τὸ δυνατὸν νὰ ἐπανορθώσουν τὰ μέτρα τῆς κοινωνικῆς πολιτικῆς, πολλὰ τῶν ὁποίων, ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἐφαρμοσθέντα, ἐβελτίωσαν κατὰ πολὺ τὴν θέσιν τῆς βιομηχανικῆς ἐργασίας.

Καθ᾽ ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ παρελθόντος καὶ τοῦ ἤδη διαρρεύσαντος τμήματος τοῦ Κ᾽ αἰῶνος, ὅλως δὲ ἰδιαιτέρως κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου δεκαπενταετίαν καὶ κατ᾽ ἐξοχὴν ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ ὁμοσπονδίᾳ, ὡς ἐκ τῆς διαρκοῦς αὐξήσεως τῆς παραγωγικῆς τάσεως, ἐχούσης ἐπὶ τούτοις νὰ ἀντιμετωπίσῃ τὴν εἰς ὁμαλὰς περιστάσεις παρατηρουμένην σπάνιν καταλλήλων ἐργατικῶν δυνάμεων καὶ τὰς κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν ἐποχὴν ἰσχυρῶς ὑποστηριζομένας ὑψηλὰς ἀξιώσεις ἡμερομισθίων, προάγεται ὁσημέραι ἡ ἀντικατάστασις τῶν ἐργατικῶν χειρῶν διὰ μηχανικῶν μέσων, αὐτομάτου κατὰ προτίμησιν λειτουργίας, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν ἐφαρμογὴν νέων μεθόδων ἐγγυωμένων, μεγαλυτέραν ἀπόδοσιν τῆς καταβαλλομένης ἐργασίας (συστήματα ὀργανώσεως ἐργασίας Taylor καὶ Ford).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἐκτὸς τῶν ἑλληνικῶν ἐγχειριδίων: *Ν. Καζάζη*, *Κ. Χ. Βουρνάζου* καὶ τῆς μεταφράσεως τοῦ *Ch. Gide*, βλ. *W. Sombart*, Wirtschaftsleben im Zeitalter des Hochkapitalismus. 1ος τόμος *v. Gottl-Ottlilienfeld*, Wirtschaft und Technik ἐν τῷ «Grundriss der Sozialöekonomik» 2ον μέρος, β᾽ τμῆμα (Τυβίγγη 1923). Α. Α. Τ.

— [Φυσιολογ.] Ὀνομάζεται *ζωϊκὴ μηχανικὴ* ἡ ὅλη σπουδὴ τῶν στατικῶν καὶ κινητικῶν φαινομένων τοῦ ἀνθρωπίνου ὀργανισμοῦ, τῆς ὁποίας βασικὸν κεφάλαιον ἀποτελεῖ ἡ μελέτη τῶν μοχλῶν καὶ ἀρθρώσεων τοῦ σκελετοῦ.

Τὰ διάφορα τοῦ σκελετοῦ τμήματα συνιστῶσιν ἁπλᾶς μηχανὰς (ἀντιστοίχους πρὸς τοὺς μοχλούς, τὰς τροχαλίας κλπ.), τῶν ὁποίων προορισμὸς εἶναι νὰ μετατρέπουν τὰς ὑπὸ τῶν μυῶν παραγομένας κινήσεις. Διακρίνονται δὲ οἱ ἐν τῷ σώματι τοῦ ἀνθρώπου μοχλοὶ εἰς τρεῖς κατηγορίας:

α᾽) Εἰς τοὺς προωρισμένους νὰ ἐξασφαλίζουν τὴν ἰσορροπίαν τοῦ σώματος, τόσον ἐν στάσει, ὅσον καὶ ἐν κινήσει. Εἰς αὐτοὺς τὸ ὑπομόχλιον εὑρίσκεται μεταξὺ τῶν σημείων ἐφαρμογῆς τῆς δυνάμεως καὶ τῆς ἀντιστάσεως, ὅπως π. χ. εἰς τὴν περίπτωσιν τῆς ἰσορροπίας τῆς κεφαλῆς, ὅπου ἀντίστασις εἶναι τὸ βάρος αὐτῆς, ἡ δὲ δύναμις ἐκπροσωπεῖται ὑπὸ τῶν μυῶν τοῦ τραχήλου.

β᾽) Εἰς τοὺς προωρισμένους νὰ δίδουν ἀποτελέσματα ἰσχύος. Εἰς τούτους ὁ μοχλοβραχίων τῆς δυνάμεως εἶναι μακρότερος τοῦ τῆς ἀντιστάσεως. Παράδειγμα ὁ πούς, ὅταν ὑψώνῃ τὸ σῶμα ὁλόκληρον ἐπὶ τῶν ἄκρων τῶν δακτύλων, ὁπότε ἡ ἀντίστασις, τὸ βάρος δηλαδὴ τοῦ σώματος, ἐνεργεῖ ἐπὶ τῆς ταρσικῆς ἀρθρώσεως, ἡ δὲ δύναμις ἀποτελεῖται ἀπὸ τὴν ἐνέργειαν τῶν μυῶν τῆς κνήμης ἐπὶ τῆς πτέρνης.

Digitized by Google

γ) Εἰς τοὺς μοχλοὺς τοὺς παράγοντας τὰ φαινόμενα τῆς κινήσεως. Εἰς αὐτοὺς ὁ μοχλοβραχίων τῆς δυνάμεως εἶναι βραχύτατος. Ὅταν, ἐπὶ παραδείγματι, ὁ πῆχυς κάμπτεται ἐπὶ τοῦ βραχίονος, ἡ μὲν δύναμις ἐκπροσωπεῖται ὑπὸ τοῦ δισχιδοῦς μυός, τοῦ ὁποίου ὁ μοχλοβραχίων εἶναι πολὺ μικρός, ἐνῷ ἡ ἀντίστασις, δηλαδὴ τὸ βάρος τοῦ πήχεως καὶ τοῦ ἀντικειμένου, τὸ ὁποῖον οὗτος ἀνυψώνει, ἔχει μοχλοβραχίονα πολὺ μεγαλυτέρου μήκους.

*Στάσις*. Διὰ νὰ ἵσταται τὸ σῶμα ἐν ἰσορροπίᾳ, δέον ἡ κατακόρυφος ἡ ἀγομένη διὰ τοῦ κέντρου τοῦ βάρους αὐτοῦ νὰ πίπτῃ ἐντὸς τοῦ πολυγώνου τῆς ὑποστηρίξεως. Ὅταν τὸ σῶμα τηρῆται εὐθυτενές, μὲ τοὺς βραχίονας ἐφαπτομένους ἐπὶ τῶν πλευρῶν, τὰς κνήμας ἐγγὺς ἀλλήλων καὶ τὴν κεφαλὴν ὀρθίαν, τότε τὸ κέντρον τοῦ βάρους αὐτοῦ εὑρίσκεται εἰς ἀπόστασιν ἑνὸς περίπου ὑφεκατομέτρου κάτω τῆς γωνίας ἣν σχηματίζει ἡ σπονδυλικὴ στήλη μετὰ τοῦ ἱεροῦ ὀστοῦ. Ἡ ἰσορροπία εἶναι κατὰ τοσοῦτον εὐσταθεστέρα ὅσον εὐρύτερον εἶναι τὸ πολύγωνον τῆς ὑποστηρίξεως (περίγραμμα τῶν πελμάτων καὶ τοῦ μεταξύ των χώρου) καὶ ὅσον χαμηλότερον ὡς πρὸς αὐτὸ κεῖται τὸ κέντρον τοῦ βάρους τοῦ σώματος. Διὰ τὴν ὀρθίαν στάσιν προϋποτίθεται ὅτι οἱ διάφοροι ὑπερκείμενοι ἀλλήλων μοχλοὶ τοῦ σκελετοῦ εὑρίσκονται ἐν ἀκινησίᾳ, τοῦθ' ὅπερ ἐπιτυγχάνεται διὰ καταλλήλου δράσεως τῶν ἐπενεργούντων ἐπ' αὐτῶν μυῶν. Οὕτως εἰς τὴν κνημοταρσικὴν ἄρθρωσιν τὰ ὀστᾶ τῆς κνήμης τείνουν νὰ πέσουν πρὸς τὰ ἐμπρός, εἰς τὰς ἀρθρώσεις τῶν γονάτων οἱ μηροὶ τείνουν νὰ στραφῶσι πρὸς τὰ ὀπίσω, εἰς τὴν ἰσχιομηρικὴν ἄρθρωσιν ὁ κορμὸς φέρεται ἐκ τοῦ βάρους του πρὸς τὰ πρόσω, ὁμοίως δὲ καὶ ἡ κεφαλὴ κατὰ τὴν ἄρθρωσιν αὐτῆς ἐπὶ τῶν σπονδύλων· πάντα ὅμως τὰ μέλη ταῦτα τοῦ σώματος συγκρατοῦνται εἰς τὴν ὀρθίαν στάσιν διὰ καταλλήλου συσπάσεως τῶν οἰκείων δι' ἕκαστον μυῶν.

Εἰς τὴν ὡς ἀνωτέρω εὐθυτενῆ ὀρθίαν στάσιν τοῦ σώματος εἶναι πολλοὶ οἱ ἐργαζόμενοι μύες, δι' ὃ καὶ ἡ κόπωσις ἐπέρχεται ταχέως. Ἀντιθέτως, ἡ ἐλαφρῶς κλίνουσα ὀρθία στάσις εἶναι κατὰ πολὺ ἀναπαυτικωτέρα, λόγῳ τοῦ ὅτι ἀπαιτεῖ ἐλάσσονα μυϊκὴν δαπάνην. Εἰς αὐτὴν τὸ βάρος φέρεται ὑπὸ τῆς μιᾶς μόνον κνήμης καὶ τὸ σῶμα κλίνει ἐλαφρῶς, κατὰ τρόπον ὥστε ἡ διὰ τοῦ κέντρου τοῦ βάρους του διερχομένη κατακόρυφος νὰ πίπτῃ ἐντὸς τῆς περιμέτρου τοῦ πέλματος τοῦ ἀντιστοίχου ποδός. Ἡ ἄλλη κνήμη, ἐν ἀναπαύσει, θίγει τὸ ἔδαφος ἐλαφρῶς, παρεμποδίζουσα τὴν μετακίνησιν τοῦ σώματος πρὸς τὰ ἔξω καὶ τὰ ἐμπρός.

*Κίνησις*. Διὰ τὸν ἄνθρωπον τὰ εἴδη τῆς κινήσεως εἶναι τρία: τὸ βάδισμα, τὸ ἅλμα καὶ ὁ δρόμος (τρέξιμον).

Εἰς τὸ βάδισμα δέον νὰ διακρίνωμεν δύο φάσεις: μίαν φάσιν «ἀμφιπλεύρου στηρίξεως», συντομωτάτης χρονικῆς διαρκείας, καθ' ἣν οἱ δύο πόδες, εὑρισκόμενοι εἰς τὸ ἄκρον ὅριον τοῦ ἀνοίγματος αὐτῶν, στηρίζονται ἀμφότεροι ἐπὶ τοῦ ἐδάφους· καὶ ἑτέραν «μονοπλεύρου στηρίξεως», κατὰ τὴν ὁποίαν τὸ σῶμα ἵσταται ἐπὶ τοῦ ἑνὸς μόνον ποδός, καθ' ὃν χρόνον ὁ ἕτερος εἶναι τεταμένος καὶ διαγράφει ἓν εἶδος κινήσεως ἐκκρεμοῦς. Τὸ βάδισμα οὕτω ἀποτελεῖται κατ' οὐσίαν ἀπὸ ἀλλεπάλληλον σειρὰν πτώσεων τοῦ σώματος πρὸς τὰ ἐμπρός, αἵτινες ἀνακόπτονται κατ' ἐναλλαγὴν διὰ τῆς προβολῆς τοῦ ἑνὸς καὶ τοῦ ἄλλου ποδός.

Εἰς τὸ ἅλμα, τὸ σῶμα, διὰ τῆς ἀποτόμου ἐκτάσεως τῶν συσταλθέντων μυῶν τῶν κάτω ἄκρων, ἀναρρίπτεται πρὸς τὰ ἄνω ἢ πρὸς τὰ ἐμπρός.

Εἰς τὸν δρόμον, τέλος, πρέπει νὰ διακρίνωμεν τρεῖς χρόνους. Εἰς τὸν πρῶτον τὸ σῶμα ὑποστηρίζεται ὑπὸ τῆς μιᾶς μόνον κνήμης· εἰς τὸν δεύτερον χρόνον εὑρίσκεται αἰωρημένον εἰς τὸν ἀέρα, ἄνευ οὐδενὸς στηρίγματος· εἰς δὲ τὸν τρίτον ἐπαναπίπτει εἰς τὴν ὑποστήριξιν τῆς ἑτέρας τῶν κνημῶν. Οὐδέποτε ὑπάρχει ἐνταῦθα «ἀμφίπλευρος στήριξις». Εἶναι δηλαδὴ ὁ δρόμος σειρὰ διαδοχικῶν ἁλμάτων ἀπὸ τῆς μιᾶς ἐπὶ τὴν ἑτέραν κνήμην.

[Βλ. καὶ λ. *ἄνθρωπος* (Μηχαν.).] —Ρ.

—[*Ἀρχ. Θέατρ.*] Ἡ *μηχανή*, ἓν τῶν σπουδαιοτέρων σκηνικῶν μηχανημάτων τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ θεάτρου, εὑρίσκετο ἐν τῷ ἐπισκηνίῳ, στηριζομένη, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, ἐπὶ λιθίνης βάσεως, ἐντὸς τῆς σκηνῆς τοποθετημένης καὶ ἴχνη τῆς ὁποίας ἀνευρέθησαν ἐν τῷ θεάτρῳ τοῦ Ὠρωποῦ. Τὸ τοιοῦτο μαρτυρεῖ καὶ ὁ Βιτρούβιος. Ἔκειτο δὲ ἡ μηχανή, κατὰ τὸν Πολυδεύκη, «κατὰ τὴν ἀριστερὰν πάροδον ὑπὲρ τὴν σκηνὴν τὸ ὕψος», κατὰ δὲ τὸν σχολιαστὴν τοῦ Λουκιανοῦ, ἀριστερὰ τῆς βασιλείου θύρας. Ἡ μηχανή, τῆς ὁποίας ἐγίνετο χρῆσις ἐν ταῖς κωμῳδίαις, καλεῖται παρὰ τῷ Πολυδεύκῃ *κράδη*: «ὃ δὲ ἐν τῇ τραγῳδίᾳ μηχανή, τοῦτο ἐν τῇ κωμῳδίᾳ κράδη». Ἐπὶ τοῦ χωρίου αὐτοῦ βασιζόμενο τινὲς τῶν νεωτέρων ἐπίστευσαν ὅτι πράγματι ἡ μηχανὴ εἶχε διπλῆν ὀνομασίαν, ἄλλην ἐν τῇ τραγῳδίᾳ καὶ ἄλλην ἐν τῇ κωμῳδίᾳ. Ὁ Wecklein μάλιστα ὑπεστήριξεν ὅτι ἡ τῆς κωμῳδίας μηχανή, ἡ κράδη, διέφερε καὶ κατὰ τὸ σχῆμα ἀκόμη τῆς τραγικῆς μηχανῆς. Παρὰ τοῦ Πλουτάρχου ἐν τούτοις καὶ τοῦ Ἡσυχίου μανθάνομεν ὅτι *κράδη* ἐλέγετο οὐχὶ ἡ μηχανή, ἀλλ' ἡ *ἀγκυρίς*, ἀφ' ἧς ἐκρέμαντο «ἐν ταῖς τραγικαῖς σκηναῖς» οἱ μιμούμενοι τοὺς θεούς.

Πῶς ἦτο κατεσκευασμένη ἡ μηχανή, εἶναι ἄγνωστον. Πάντως θὰ εἶχε τὸ σχῆμα καὶ τὴν λειτουργίαν τοῦ σημερινοῦ βαρούλκου. Ὁπωσδήποτε σῴζονται δύο περὶ αὐτῆς μαρτυρίαι: Μία τοῦ Πολυδεύκους, λέγοντος ὅτι «αἰώρα» ἐκαλεῖτο τὸ σχοινίον, ἐξ οὗ ἐκρέμαντο ἐν τῷ ἀέρι οἱ ὑποκρινόμενοι τοὺς ἥρωας ἢ θεούς. Εἰς τὸ ἄκρον τῆς αἰώρας ἐκρέμετο ἰκρίωμά τι, ὁτὲ μὲν τεχνητὸς ἵππος, ἐφ' οὗ ἐπιβαίνων ὁ Βελλερεφόντης ἐν τῇ ὁμωνύμῳ καὶ ἀπολεσθείσῃ τραγῳδίᾳ τοῦ Εὐριπίδου ἐφέρετο πρὸς τοὺς οὐρανούς, ὁτὲ δὲ ἄλλο τι φανταστικὸν ζῷον, ὡς ἦτο ὁ γρύψ, ἐφ' οὗ κατήρχετο ὁ Ὠκεανὸς πρὸς τὸν Προμηθέα ἐν τῷ «Προμηθεῖ δεσμώτῃ», καὶ ἄλλοτε, ὅπερ καὶ συνηθέστερον, ἅρμα, ὡς ἐν τῇ «Μηδείᾳ» τοῦ Εὐριπίδου, ἐφ' οὗ ἐπιβαίνουσα ἡ παιδοκτόνος μήτηρ ἀπήρχετο μὲ τὰ πτώματα τῶν δύο τέκνων της. Εἰς ἄλλας περιπτώσεις, εἰς τὸ ἄκρον τῆς αἰώρας, ἀντὶ τῶν ἀναφερθέντων, ὑπῆρχεν ἁπλῶς ἁρπάγη τις, *ἅρπαξ* ἢ *ἀγκυρὶς* καλουμένη, ἐξ ἧς ἐκρέμαντο «ζωστῆρσι καὶ ταινίαις κατειλημένοι» οἱ ὑποκρινόμενοι τοὺς ἐν τῷ ἀέρι ἱπταμένους θεοὺς ἢ ἄλλους ἥρωας. Τὴν δευτέραν τῶν περὶ μηχανῆς μαρτυριῶν εὑρίσκομεν ἐν ἀποσπάσματι τοῦ «Δαιδάλου» τοῦ Ἀριστοφάνους, ἐν ᾧ γίνεται μνεία ἑνὸς τῶν ὀργάνων αὐτῆς, *τροχὸς* καλουμένου. Ἐκ τῆς λέξεως συμπεραίνει τις ὅτι πρόκειται περὶ τροχαλίας, περὶ ἣν εἱλίσσοντο τὰ διάφορα τῆς μηχανῆς σχοινία. Τῆς μηχανῆς, ἐκτὸς τῶν περιπτώσεων περὶ ὧν ἐγένετο ἤδη λόγος, οἱ ἀρχαῖοι ἐποιοῦντο χρῆσιν ἰδίως διὰ τὴν ἐν ταῖς τραγῳδίαις ἐμφάνισιν τῶν θεῶν, διὰ νὰ δοθῇ εὐχερεστέρα λύσις εἰς τὰς δυσεπιλύτους περιπτώσεις τῶν διαφόρων τῆς τραγῳδίας περιπετειῶν, μέσον τὸ ὁποῖον μετεχειρίσθη συχνότατα ὁ Εὐριπίδης, ἐξ οὗ προῆλθε καὶ ἡ παροιμία: «ἀπὸ μηχανῆς θεός». Οὐχ ἧττον καὶ ἐν τῇ κωμῳδίᾳ συχνὰ ἐγίνετο τῆς μηχανῆς χρῆσις, ὡς λ. χ. ἐν ταῖς «Νεφέλαις» τοῦ Ἀριστοφάνους, ἐν αἷς παρίσταται ὁ Σωκράτης ἐντὸς «κρεμάθρας» μετέωρος ἐν τῷ φροντιστηρίῳ αὐτοῦ, ἢ ἐν τῇ «Εἰρήνῃ» τοῦ αὐτοῦ, ἐν ᾗ ὁ Τρυγαῖος, ἱππεύων κάνθαρον, μεταβαίνει πρὸς συνάντησιν τῶν θεῶν, ἢ ἐν τοῖς «Ὄρνισιν», ἐν οἷς ἡ Ἶρις ἔρχεται πετῶσα καὶ ἧς μακρόθεν «δίνης πτερωτὸς φθόγγος ἐξακούεται».

Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**μηχανηλάτης** (ὁ)· ὁ ἐλαύνων τὴν μηχανήν, μηχανοδηγός.

**μηχάνημα** (τό)· συσκευὴ πρὸς ὡρισμένην ἐνέργειαν, μηχανή: «ἡ κλειδαριὰ εἶναι ἕνα μηχάνημα» || ἀρχ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μηχανᾶσθαι*, τέχνασμα, πονήρευμα.

— **μηχανήματα συνοδείας** [*Στρατ.*]. Καλοῦνται οὕτω τὰ διαφόρων εἰδῶν μικρὰ πυροβόλα, τ' ἀνήκοντα ὀργανικῶς εἰς τὸ πεζικόν, τὰ ὑπηρετούμενα ὑπὸ προσωπικοῦ ἐκ τοῦ πεζικοῦ καὶ χρησιμοποιούμενα ἀπ' εὐθείας ὑπ' αὐτοῦ πρὸς ὑποστήριξίν του. Τὰ μηχανήματα ταῦτα εἰσήχθησαν εἰς τὸ πεζικὸν διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου 1914—1918, πρὸς ἐκπλήρωσιν ἀνάγκης τοῦ πεζικοῦ ὅπως διαθέτῃ μικρά τινα πυροβόλα, δυνάμενα νὰ τὸ παρακολουθῶσι κατὰ βῆμα καὶ νὰ δρῶσι κατὰ χώρων, καθ' ὧν τὸ πυροβολικὸν ἀδυνατεῖ νὰ βάλῃ. Κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν ἐποχὴν ἐκανονίσθη ὅπως ὑπάρχωσι τοιαῦτα μηχανήματα συνοδείας κατὰ τάγμα ἢ σύνταγμα πεζικοῦ. Τὰ μηχανήματα ταῦτα πρέπει νὰ παρουσιάζωσι μικρότατον ὄγκον (ἀποφυγὴ καταφανοῦς στόχου) καὶ νὰ ἔχωσιν ὀλίγιστον βάρος (εὐκολία μεταφορᾶς διὰ τῶν βραχιόνων), ἐξ ἄλλου ὅμως νὰ δύνανται νὰ βάλλωσι βλῆμα δυνάμενον νὰ ἔχῃ μικράς τινας καταστρεπτικὰς ἰδιότητας κατ' ἀσθενῶν τινων ἀψύχων στόχων. Ὅσον δ' ἀφορᾷ τὴν τροχιάν, ἐγένετο ἀποδεκτὸν ὅπως παρ' ἑκάστῃ μικρᾷ μονάδι πεζικοῦ (τάγματι ἢ συντάγματι) ὑπάρχῃ μηχάνημα ἔχον τεταμένην τὴν τροχιάν, ἕτερον δ' ἔχον κεκαμπυλωμένην. Διὰ νὰ δύνανται ν' ἀποδώσωσι τὰ μηχανήματα ταῦτα ἐν τῇ πράξει, πρέπει ἀπαραιτήτως νὰ τοῖς ἀνατίθενται ἀποστολαὶ σχετικαὶ πρὸς τὰς χαρακτηριστικὰς ἰδιότητας ἑνὸς ἑκάστου εἴδους ἐξ αὐτῶν, ἀπαραιτήτως ὅμως χωρὶς νὰ θέλωσιν οἱ χειριζόμενοι ταῦτα ἀξιωματικοὶ τοῦ πεζικοῦ νὰ τὰ ἐξομοιώσωσι πρὸς πυροβολικόν, διότι ταῦτα θεωρητέα ὡς μεμονωμένα πυροβόλα ἐκτελοῦντα πάντοτε βολὴν ἀτομικήν, καὶ οὐχὶ ποτὲ ὡς πυροβολικόν, καθ' ὅσον, ἀφ' ἧς στιγμῆς ἀρχίσῃ ἡ χρησιμοποίησις μεθόδων βολῆς πυροβολικοῦ (ἐμμέσου σκοπεύσεως, σχηματισμοῦ δέσμης, κανονισμοῦ βολῆς, διοικήσεως ἀπὸ ἀποστάσεως, εἰδικῆς παρατηρήσεως, κτλ.), τότε τὰ μηχανήματα ταῦτα μετατρέπονται εἰς πυροβολικόν, ὁπότε αἱ ὑπεισερχόμεναι σχετικαὶ δυσκολίαι, αἱ συμπαρομαρτοῦσαι παντὶ πυροβολικῷ, θὰ μειῶσι τὴν παρεχομένην εἰς τὸ πεζικὸν ἄμεσον ὑποστήριξιν, ἐνῷ ὁ σκοπὸς τῆς ὑπάρξεως τοιούτων μηχανημάτων εἶναι τὸ νὰ βάλλωσι ταχέως κατὰ παντὸς στόχου καθ' οὗ τὸ πυροβολικὸν ἀδυνατεῖ νὰ βάλῃ, εἴτε ἕνεκα δυσκολίας μεταφορᾶς ἐπὶ θέσεως καταλλήλου, εἴτε ἕνεκα δυσκολιῶν βολῆς κατὰ στόχου βαθέως προκεκαλυμμένου, κτλ. Ἐν πάσῃ περιπτώσει, οὐδέποτε πρέπει νὰ διστάζῃ ὁ διοικητὴς τοῦ τάγματος ἢ τοῦ συντάγματος νὰ θέτῃ αὐθωρεὶ τὰ μηχανήματα ταῦτα ἐν ἐφεδρείᾳ, ἀφ' ἧς στιγμῆς δὲν δύναται νὰ τοῖς ἀναθέσῃ ἀποστολὰς σχετικὰς πρὸς τὰς χαρακτηριστικὰς αὐτῶν ἰδιότητας (ρητὴ διάταξις τῆς § 174 τοῦ «Ἑλλ. Καν. Πεζ. 1924»). Ἡ διάταξις αὕτη εἶναι ἀρκετὰ χαρακτηριστικὴ τῆς διαφορᾶς δράσεως τῶν μηχανημάτων συνοδείας ἀπὸ τοῦ πυροβολικοῦ· διότι πυροβολικόν, μὴ δρῶν προσωρινῶς, δὲν ἀποσύρεται ἐν ἐφεδρείᾳ, ἀλλ' ἐφεδρεύει τὰ πυρά του (παραμένει ἐν ἐπιτηρήσει), ἐνῷ τὰ μηχανήματα συνοδείας ἀποσύρονται πρὸς τὰ ὀπίσω, παραμένοντα προσωρινῶς ἐν ἐφεδρείᾳ.

Σήμερον (1931) ὡς μηχανήματα συνοδείας χρησιμοποιοῦνται πυροβόλα (τεταμένη τροχιά, βεληνεκὲς 1500 μέτρα) καὶ ὅλμοι (κεκαμπυλωμένη τροχιά, βεληνεκὲς ἀπὸ 300 ἕως 2.000 μέτρων)· ἐν μὲν τῇ Γαλλίᾳ (καὶ ἐν Ἑλλάδι) τὸ πυροβόλον τῶν 37 χιλ., ἐν ἀναλογίᾳ τοῦ ἑνὸς κατὰ τάγμα, καὶ ὁ ὅλμος τῶν 81 χιλ., ἐν ἀναλογίᾳ τοῦ ἑνὸς κατὰ τάγμα, ἐν δὲ τῇ Γερμανίᾳ τὸ πυροβόλον (διαφόρου διαμετρήματος, ἀλλὰ πάντως μικροῦ), ἐν ἀναλογίᾳ τῶν ἓξ κατὰ σύνταγμα, καὶ τὸ βομβοβόλον τῶν 76 χιλ. (τὸ γνωστὸν Minenwerfer), ἐν ἀναλογίᾳ τῶν ὀκτὼ κατὰ σύνταγμα.

Αἱ ἀνατιθέμεναι ἀποστολαὶ εἰς τὰ μηχανήματα συνοδείας εἶναι· διὰ μὲν τὰ πυροβόλα, ἡ βολὴ κατὰ παντὸς ἀποκεκαλυμμένου πολυβόλου καὶ κατὰ παντὸς ἅρματος, εἰς δὲ τὴν ἔφοδον κατὰ παντὸς ὁρατοῦ ἐμψύχου στόχου παρακωλύοντος τὴν ἐλευθέραν ἐφόρμησιν τοῦ πεζικοῦ· διὰ δὲ τοὺς ὅλμους, ἡ βολὴ κατὰ παντὸς στόχου προκεκαλυμμένου καὶ κατὰ παντὸς ἀποκεκαλυμμένου ἀλλὰ παρουσιάζοντος ποιάν τινα ἀνθεκτικότητα.

Ν. Θ. Κ.

**μηχανικὴ** (ἡ). Κλάδος τῆς φυσικῆς, μελετῶν τὴν κίνησιν τῶν ἐν τῇ φύσει ἁπαντώντων σωμάτων. Ἡ ἔννοια τῆς κινήσεως εἶναι ἔννοια *σχετική*· λέγοντες δηλαδὴ κίνησιν σώματος ἐννοοῦμεν τὴν ἀλλαγὴν τῆς θέσεως αὐτοῦ ἐν σχέσει πρὸς ἄλλο δεδομένον σῶμα, τὸ *σῶμα ἀναφορᾶς* (π. χ. ἡ κίνησις τῆς γῆς καὶ τῶν πλανητῶν ἐν γένει περὶ τὸν ἥλιον). Τυχὸν σῶμα ἐν τῇ μηχανικῇ θεωρεῖται ὡς σύνολον *ὑλικῶν σημείων* (στοιχειωδῶν τμημάτων καθισταμένων ἐν τέλει ἀπειροστῶν), ὁπότε ἡ κίνησις τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸ ὑπ' ὄψει σῶμα ἀναφορᾶς θὰ εἶναι γνωστή, ὅταν γνωσταὶ εἶναι αἱ κινήσεις τῶν ἀποτελούντων τὸ σῶμα ὑλικῶν σημείων. Τὸ σύνολον τῶν διαδοχικῶν θέσεων ὑλικοῦ σημείου ἐν κινήσει εἶναι ἡ *τροχιὰ* αὐτοῦ (ὡς πρὸς τὸ ὑπ' ὄψει σύστημα ἀναφορᾶς)· σχετικὴ δέ, ὡς ἡ ἔννοια τῆς κινήσεως, εἶναι ἐπίσης ἡ ἔννοια τῆς τροχιᾶς, π. χ. μικροῦ βαρέος σώματος ἀφιεμένου ἐλευθέρου ἀπὸ κινουμένου σιδηροδρομικοῦ συρμοῦ ἡ τροχιὰ ὡς πρὸς ἐπιβάτην τοῦ συρμοῦ εἶναι εὐθύγραμμος κατακόρυφος, ἐνῷ ὡς πρὸς παρατηρητὴν ἱστάμενον παρὰ τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν εἶναι καμπύλη (*τροχιὰ παραβολική*). Εἰς διαφόρους περιπτώσεις ἡ κίνησις τοῦ σώματος ἀνάγεται εἰς κίνησιν ὑλικοῦ σημείου· οὕτω π. χ., θεωροῦντες τὴν κίνησιν τῆς γῆς περὶ τὸν ἥλιον, ἐξομοιοῦμεν ταύτην πρὸς ὑλικὸν σημεῖον· ἐπίσης τὴν κίνησιν σιδηροδρομικοῦ συρμοῦ (ἐν σχέσει πρὸς τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν) ὁρίζομεν διὰ της κινήσεως ἑνὸς σημείου τυχόντος ὀχήματος τοῦ συρμοῦ.

*Κινητικὴν* καλοῦμεν τὸ τμῆμα τῆς μηχανικῆς τὸ ἐξετάζον τὴν κίνησιν, ἀνεξαρτήτως τῆς φύσεως τῶν σωμάτων καὶ τῶν προκαλούντων τὴν κίνησιν αἰτίων. *Δυναμικὴν* δὲ καλοῦμεν τὸ τμῆμα τῆς μηχανικῆς τὸ μελετῶν τὴν κίνησιν ἐν σχέσει πρὸς τὴν ἀποτελοῦσαν τὸ σῶμα ὕλην καὶ ἐν ἀλληλουχίᾳ πρὸς τὰ προκαλοῦντα τὴν κίνησιν αἴτια. Οὕτω, τὸ πρῶτον μέρος τῆς μηχανικῆς ἐμφανίζεται σημαντικῶς ἁπλούστερον τοῦ δευτέρου. Τὰ προκαλοῦντα τὴν κίνησιν αἴτια, τὰ τροποποιοῦντα ἢ ἐκμηδενίζοντα ταύτην, καλοῦνται *δυνάμεις*. Τὴν πρώτην ἔννοιαν τῆς δυνάμεως ἔχομεν εἰς τὴν σύσπασιν ἢ διάτασιν τοῦ μυϊκοῦ ἡμῶν συστήματος κατὰ τὴν ἐκσφενδόνησιν λίθου, κατὰ τὴν ἀνύψωσιν βάρους ἢ τὴν συγκράτησιν αὐτοῦ κατὰ τὴν πτῶσιν κττ. Οὕτως ἀναγνωρίζεται ἡ δύναμις ὡς *διανυσματικὸν* μέγεθος, ἔχουσα ἔντασιν, διεύθυνσιν καὶ φοράν. Ἡ ἐκδήλωσις τῶν δυνάμεων ὀφείλεται εἰς τὴν ἀλληλεπίδρασιν τῶν ἐν τῇ φύσει ἁπαντώντων σωμάτων. Δυνάμεις ἐνεργοῦσαι ἐπὶ σώματος λέγομεν ὅτι ἰσορροποῦν ἀλλήλας, ὅταν αὗται ἐν τῇ κοινῇ ἐνεργείᾳ των οὐδεμίαν ἀσκοῦν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς κινητικῆς καταστάσεως τοῦ σώματος. Ἡ ἐν τῇ δυναμικῇ ἔρευνα τῆς εἰδικῆς ταύτης περιπτώσεως, τῆς ἰσορροπίας δηλαδὴ τῶν δυνάμεων, ἀποτελεῖ τὴν *στατικήν*. Ἡ μηχανικὴ διαιρεῖται εἰς τρεῖς χωριστοὺς κλάδους: τὴν *μηχανικὴν τῶν στερεῶν σωμάτων* (μὲ χωριστὴν ἔρευναν τῆς κινήσεως τῶν οὐρανίων σωμάτων, δηλαδὴ τὴν *οὐράνιον μηχανικήν*), τὴν *ὑδρομηχανικὴν* καὶ τὴν *ἀερομηχανικήν*· τούτων πρακτικὴν ἐφαρμογὴν ἀποτελεῖ ἡ *ἐφηρμοσμένη μηχανική*, περιλαμβάνουσα: τὴν *ἐφηρμοσμένην κινητικὴν* ἢ *κινητικὴν τῶν μηχανῶν*,

Digitized by Google

τὴν *ἀντοχὴν τῶν ὑλικῶν*, τὴν *ὑδραυλικήν*, τὴν *ἀεροπορίαν*.

*Ἱστορικὴ ἐξέλιξις τῶν ἀρχῶν τῆς μηχανικῆς*. Ἐκ τῶν σῳζομένων μνημείων καὶ ἄλλων μεγάλων ἔργων πολιτισμοῦ τῶν ἀρχαίων Αἰγυπτίων, Ἀσσυρίων καὶ Ἑλλήνων, ἐκ τῶν εὑρεθεισῶν εἰκόνων μηχανικῶν συσκευῶν, ἐργαλείων κττ. καὶ ἐξ ὁμοίων εὑρημάτων εἰς προϊστορικοὺς τάφους, συνάγεται ὅτι καὶ οἱ ἀρχαῖοι εἶχον οὐσιώδεις γνώσεις μηχανικῆς καὶ σημαντικὴν πεῖραν ἐφαρμογῆς αὐτῶν, ἐπιβληθεῖσαν προφανῶς ἀπὸ τὰς ἀνάγκας τῆς ζωῆς. Ὡς θεμελιωτὴς τῆς μηχανικῆς ὡς ἐπιστήμης ἀναγνωρίζεται ὁ Ἀρχιμήδης (287—212 π. Χ.). Ἐν τῇ θεωρίᾳ του περὶ μοχλοῦ καὶ ἁπλῶν μηχανῶν εἰσάγει τὴν ἔννοιαν τῆς ῥοπῆς καὶ τοῦ κέντρου τοῦ βάρους τῶν στερεῶν σωμάτων, καὶ διὰ τοῦ λεγομένου *χρυσοῦ νόμου* τῆς φυσικῆς, καθ᾽ ὃν «*ὅ,τι κερδίζομεν εἰς δύναμιν χάνομεν εἰς δρόμον*», διετύπωσε τὴν πρότασιν τῶν δυνατῶν ἔργων καὶ τὸ ἀξίωμα τοῦ ἀδυνάτου τοῦ ἀεικινήτου, ἐξ οὗ διὰ γενικεύσεως καὶ ἀντιστροφῆς ἐπήγασεν ἐσχάτως ὁ πρῶτος μέγας νόμος, ἡ ἀρχὴ τῆς διατηρήσεως τῆς ἐνεργείας. Ἀλλὰ καὶ τὴν στατικὴν τῶν ρευστῶν σωμάτων ὁ Ἀρχιμήδης ἐθεμελίωσε, διὰ τῆς γνωστῆς προτάσεως περὶ *ἀνώσεως*. Τὰ συγγράμματα τέλος τοῦ Ἀρχιμήδους, μεταφερθέντα εἰς τὴν δυτικὴν Εὐρώπην ὑπὸ τῶν προσφύγων Ἑλλήνων μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων (1453), παρέσχον ἀφορμὴν εἰς τοὺς σπουδαιοτέρους ἐρευνητὰς τῆς Δύσεως νὰ δώσουν νέαν ὤθησιν εἰς τὴν ἐν τῷ μεταξὺ ὑπνώττουσαν μηχανικὴν καὶ ἰδίως τὴν στατικήν, μὲ τὴν ὁποίαν κυρίως ἠσχολήθη ὁ Ἀρχιμήδης εἰς τὰ συγγράμματα αὐτοῦ.

Ὁ Stevinus τῷ 1608 ὑποθέτει ὅτι ἔχει βαρεῖαν ἄλυσιν κλειστὴν καὶ ὁμογενῆ περὶ τριγωνικὸν πρίσμα ὁριζοντίου βάσεως (σχ. 1), ἀποκλείει τὴν τριβὴν καὶ ἰσχυρίζεται ὅτι ἡ οὕτως ἐξηρτημένη ἄλυσις θὰ ἰσορροπῇ· διότι, ἂν ἅπαξ ἤρχιζε νὰ κινῆται, ἡ κίνησις αὐτῆς ἐν τῷ ἐπιπέδῳ της, ὡς μὴ συνεπαγομένη οὐδεμίαν ἀλλαγὴν κατανομῆς τῶν βαρῶν τῆς ἀλύσεως, θὰ ἐξηκολούθει ἐπ᾽ ἄπειρον, θὰ εἴχομεν δηλαδὴ τὸ ἀεικίνητον, τὸ ὁποῖον ὁ Stevinus δέχεται ὡς ἀποδεδειγμένως ἀδύνατον ἐπὶ τῇ βάσει τῆς μέχρι τότε πείρας· θὰ ἰσορροπῇ δὲ ἡ ἄλυσις καὶ ἂν ἀποκοπῇ τὸ κρεμάμενον τμῆμα αὐτῆς ADC (σχ. 2), διότι οὕτω, ὡς ἐκ τῆς συμμετρίας φαίνεται, ἀφαιροῦνται δύο ἴσαι καὶ ἀντίθετοι δυνάμεις, ἐνεργοῦσαι ἐπὶ τῆς ἀλύσεως κατὰ τὰ ἄκρα τῆς ὁριζοντίας ἕδρας τοῦ πρίσματος. Τὸ συμπέρασμα εἶναι ὅτι δύο βάρη Q καὶ P, ἀνάλογα πρὸς τὰ μήκη ἰσοϋψῶν κεκλιμένων ἐπιπέδων, ἐφ᾽ ὧν ἑδράζονται, ἰσορροποῦσιν ἄλληλα. Ἀναχωρῶν ἐκ τῆς ἀρχῆς ταύτης τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου ὁ Stevinus, ἐνῷ ἐξηγεῖ εὐκόλως τὰς συνθήκας λειτουργίας τῶν λοιπῶν ἁπλῶν μηχανῶν, φθάνει εἰς τὸ παραλληλόγραμμον τῶν δυνάμεων, τὸ χρησιμοποιεῖ χωρὶς νὰ τὸ διατυπώνῃ σαφῶς καὶ στηρίζει ἐπ᾽ αὐτοῦ ὁλόκληρον σύστημα στατικῆς. Εἰς τὸ αὐτὸ δὲ ἀποτέλεσμα κατέληγε χρησιμοποιῶν ὡς ἀφετηρίαν τὴν ἀρχὴν τοῦ μοχλοῦ τοῦ Ἀρχιμήδους. Ἀπόδειξις ὅτι οὕτω σκέπτεται ὁ Γαλιλαῖος, ὅστις τῷ 1594, πρὸ τοῦ Stevinus, βασιζόμενος ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ μοχλοῦ τοῦ Ἀρχιμήδους

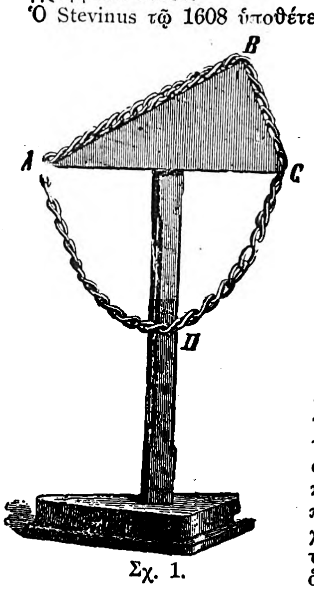

Σχ. 1.

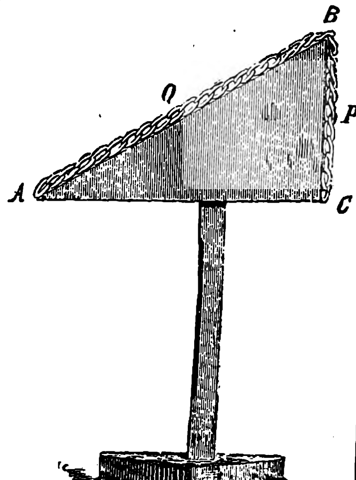

Σχ. 2.

φθάνει εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου. Κατὰ ταύτην, ἂν τὸ μῆκος AB εἶναι διπλάσιον τοῦ ὕψους h τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου, τὸ ἐπ᾽ αὐτοῦ βάρος Q ἰσορροπεῖται διὰ τοῦ ἡμίσεος βάρους P, ἐνεργοῦντος κατὰ τὴν διεύθυνσιν τοῦ ὕψους (σχ. 3). Ἐπὶ πλέον ὁ Γαλιλαῖος κάμνει τὴν σπουδαίαν παρατήρησιν, καθ᾽ ἣν ὅταν τὸ βάρος $P = \frac{Q}{2}$ ἀνέρχεται κατὰ τὸ ὕψος h, τὸ βάρος Q κατέρχεται κατὰ ὕψος $\frac{h}{2}$ λόγῳ τοῦ συνδέσμου διὰ τοῦ νήματος, οὕτως ὥστε τὰ γινόμενα τῶν βαρῶν ἐπὶ τὰ ἀντίστοιχα ὕψη εἶναι ἴσα ἢ $P.\,h = Q\,\frac{h}{2}$. Εὑρίσκει οὕτω νέον χαρακτηριστικὸν τῆς ἰσορροπίας, τὴν ἰσότητα τῶν ἔργων τῶν βαρῶν κατὰ τὴν κίνησιν· προφανῶς ὅμως γνωρίζει τὰ σχετικὰ συμπεράσματα καὶ πειράματα ἐπὶ τῶν ἁπλῶν μηχανῶν τοῦ Ἀρχιμήδους. Δίδεται οὕτω λαβὴ εἰς περαιτέρω ἐρεύνας ὑπὸ τοῦ Joh. Bernoulli (1717) καὶ ἄλλων, μὲ ἀποτέλεσμα τὴν διατύπωσιν τῆς σπουδαίας προτάσεως τῶν *δυνατῶν ἔργων* ὑπὸ τοῦ Lagrange (1736—1813).

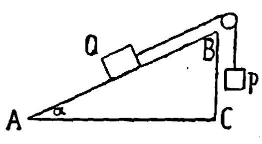

Σχ. 3.

Ὅσον ἀφορᾷ τὴν δυναμικήν, οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες, Ἀριστοτέλης, Ἵππαρχος, Ἀρχιμήδης κλπ., καὶ αἱ στατικαὶ τοῦ τελευταίου ἔρευναι ἐπὶ τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου, ὁδηγοῦν τὸν Γαλιλαῖον εἰς τὴν εὕρεσιν τῶν νόμων τῆς πτώσεως τῶν σωμάτων. Διὰ τὰς παρατηρήσεις καὶ τὰ πειράματα αὐτοῦ ἐβοηθεῖτο ἀπὸ ἀτελέστατα μέσα· ἀρκεῖ νὰ σημειωθῇ ὅτι ὡς ὡρολόγιον ἐχρησιμοποιεῖ εἶδος κλεψύδρας. Παρὰ τοῦτο διακρίνει ὁ Γαλιλαῖος ὅτι ἡ ταχύτης τοῦ πίπτοντος σώματος αὐξάνει ἀναλόγως τοῦ χρόνου καὶ εἰσάγει τὴν ἔννοιαν τῆς *ἐπιταχύνσεως*. Ἂν αὕτη κληθῇ g καὶ ὁ χρόνος τῆς πτώσεως t, ἡ ταχύτης v ἐκφράζεται διὰ τοῦ τύπου $v = gt$. Ἡ δὲ *μέση* ταχύτης τοῦ σώματος ἀφιεμένου ἐλευθέρου θὰ εἶναι $\frac{gt}{2}$, συνεπῶς τὸ ὕψος h τῆς πτώσεως εἰς χρόνον t θὰ εἶναι $\frac{gt}{2}\,t$ ἢ $g\,\frac{t^2}{2} = h$, ἤτοι αὐξάνει ἀναλόγως πρὸς τὸ τετράγωνον τοῦ χρόνου. Ἂν δέ, ἀφοῦ κατέλθῃ τὸ σῶμα τὸ ὕψος h, φαντασθῶμεν, λέγει ὁ Γαλιλαῖος, ὅτι ἡ κτηθεῖσα αὐτοῦ ταχύτης gt λάβῃ τὴν ἀντίθετον πρὸς τὰ ἄνω κατεύθυνσιν, θὰ φέρῃ τὸ σῶμα εἰς τὸν αὐτὸν χρόνον t κατὰ τὸ αὐτὸ ὕψος h ὑψηλότερα, δηλαδὴ εἰς τὴν αὐτὴν στάθμην ἐξ ἧς τὸ πρῶτον ἀφέθη, ἀλλ᾽ ὅτι κατὰ τὴν ἄνοδον ἡ ταχύτης ἐλαττοῦται ἀνὰ μονάδα χρόνου καθ᾽ ὃ ποσὸν g ηὔξανε κατὰ τὴν κάθοδον, μέχρις ὅτου μηδενισθῇ, ὅταν τὸ σῶμα θὰ ἔχῃ ἀνέλθει τὸ ὕψος h. Τοῦτο δὲ συμπεραίνει ὁ Γαλιλαῖος ἐκ τῆς πεποιθήσεως, ἥτις ἔκτοτε ἐπεκράτει περὶ τοῦ ἀδυνάτου τοῦ ἀεικινήτου, τὸ ὁποῖον ἀποκλείει ὅπως βάρος τι ἀνυψωθῇ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ εἰς ὑψηλοτέραν στάθμην ἐκείνης, εἰς ἣν εὑρίσκεται, ἢ νὰ καταστραφῇ ταχύτης σώματος χωρὶς ἀντίστοιχον ἀποτέλεσμα. Ἐπίσης, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἀδυνάτου τοῦ ἀεικινήτου ἰσχυρίζεται ὅτι οἱανδήποτε ὁδὸν καὶ ἂν ἀκολουθήσῃ τὸ σῶμα πίπτον, τὴν ΑΒ ἢ τὴν ΑΓ ἢ τὴν ΑΔ, ὅταν θὰ ἔχῃ κατέλθει κατὰ ὕψος h, θὰ κέκτηται τὴν αὐτὴν ταχύτητα. Συνεπῶς οἱ χρόνοι τῆς καθόδου θὰ εἶναι ἀνάλογοι τοῦ μήκους τοῦ κεκλιμένου ἐπιπέδου. Ἂν τὸ κεκλιμένον ἐπίπεδον ΑΔ εἶναι 2h, ὁ χρόνος τῆς καθόδου κατὰ τὴν ΑΔ θὰ εἶναι διπλάσιος 2t κτλ. καὶ ἑπομένως ἡ ἐπιτάχυνσις, οὖσα $\frac{v}{t} = g$ κατὰ τὴν κατακόρυφον πτῶσιν, θὰ εἶναι $\frac{v}{2t} = \frac{g}{2}$ κατὰ τὴν κάθοδον ἐπὶ τῆς ὁδοῦ ΑΔ. Αἱ ὀρθαὶ αὗται σκέψεις τοῦ Γαλιλαίου διευκολύνουν αὐτὸν τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῶν πειραμάτων του, διότι τοῦ ἐπιτρέπουν νὰ κυλίῃ τὰς σφαίρας του ἐπὶ κεκλιμένων ἐπιπέδων ἐπιμήκων, μικρᾶς κλίσεως ὡς πρὸς τὸν ὁρίζοντα, ἐφ᾽ ὧν ἑπομένως ὁ χρόνος καθόδου, ὡς μεγαλύτερος, εἶναι εὐχερέστερον μετρητός· τὸν διευκολύνουν ἐπίσης εἰς τὴν ἀπόδειξιν τοῦ ἀντιστρεπτοῦ τῶν κινήσεων τούτων. Ἡ ἄνοδος δηλαδὴ μὲ τὴν αὐτὴν ἀρχικὴν ταχύτητα v, τελικὴν τῆς καθόδου, συντελεῖται ἐν ἑκάστῳ κεκλιμένῳ ἐπιπέδῳ εἰς τὸν αὐτὸν χρόνον εἰς ὃν καὶ ἡ κάθοδος, ἀλλὰ μὲ ἐπιβράδυνσιν ἴσην πρὸς τὴν ἐπιτάχυνσιν τῆς ἀντιστοίχου καθόδου, δηλαδὴ τόσῳ μικροτέραν, ὅσῳ μικροτέρα εἶναι ἡ κλίσις τῶν κεκλιμένων ἐπιπέδων ὡς πρὸς τὸν ὁρίζοντα. Συνεπῶς, σκέπτεται ὁ Γαλιλαῖος — μεταχειριζόμενος ἀσυναισθήτως τὴν *ἀρχὴν τῆς συνεχείας* — ἂν ἡ σφαῖρα κατελθοῦσα κατά τινα ὁδὸν τὸ ὕψος h ὁδηγηθῇ ἐπὶ ὁριζοντίου τροχιᾶς, ὀφείλει νὰ διατηρήσῃ τὴν κεκτημένην ταχύτητα αὐτῆς ἐπ᾽ ἄπειρον, διότι τῆς κλίσεως τῆς τροχιᾶς μηδενισθείσης θὰ μηδενισθῇ καὶ ἡ ἐπιβράδυνσις· καταλήγει δηλαδὴ περίπου εἰς τὴν διατύπωσιν τῆς *ἀρχῆς τῆς ἀδρανείας*.

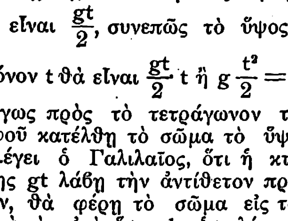

Σχ. 4.

Μεγάλης ἐπίσης σπουδαιότητος εἶναι αἱ ἔρευναι τοῦ Γαλιλαίου ἐπὶ τῆς κινήσεως σωμάτων ριπτομένων πρός τινα διεύθυνσιν μὲ ὡρισμένην ἀρχικὴν ταχύτητα. Διατείνεται ὅτι πᾶν σῶμα, ἐφ᾽ ὅσον εἶναι ἐλεύθερον, πίπτει ἀκολουθοῦν τοὺς ἀνωτέρω νόμους τῆς πτώσεως, συγχρόνως δὲ λόγῳ τῆς κεκτημένης ταχύτητος θὰ διανύῃ κατὰ τὴν διεύθυνσιν ταύτης ἴσον πρὸς αὐτὴν διάστημα ἀνὰ μονάδα χρόνου. Καταλήγει οὕτως εἰς τὴν ἔννοιαν ἢ τὴν ἀρχὴν τῆς συνθέσεως ἢ τῆς *ἐπαλληλίας τῶν κινήσεων*. Μετὰ τὸν Γαλιλαῖον ὁ Huygens (1629—1695) συμπληροῖ τὰς ἐρεύνας τοῦ πρώτου ἐπὶ τοῦ ἐκκρεμοῦς, εὑρίσκων καὶ ἐκθέτων ἐπίσης σαφῶς, ὡς ὁ Γαλιλαῖος, τὴν ἐξάρτησιν τῆς φυγοκέντρου δυνάμεως ἀπὸ τὰς συνθήκας κινήσεως. Οὕτως ἀμφότεροι οἱ ἐρευνηταί, ἀνεξαρτήτως τῶν ἄλλων ὑπηρεσιῶν τὰς ὁποίας προσέφερον εἰς τὴν ἐν γένει φυσικήν, ἑτοιμάζουν τὸν δρόμον τοῦ *Νεύτωνος*.

Ὁ Νεύτων (1642—1726) εὐρύνει τὸ πεδίον τῆς δράσεως τῆς μηχανικῆς φυσικῆς διὰ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ νόμου τῆς *παγκοσμίου ἕλξεως*, ἐξηγεῖ διὰ ταύτης τοὺς νόμους τοῦ *Κεπλέρου*, γενικεύει τὴν ἔννοιαν τῆς δυνάμεως, εἰσάγει τὴν ἔννοιαν τῆς μάζης, διατυποῖ σαφῶς καὶ γενικῶς τὴν πρότασιν τοῦ παραλληλογράμμου τῶν δυνάμεων, θέτει τὴν ἀρχὴν τῆς δράσεως καὶ ἀντιδράσεως ἢ τὴν *ἀρχὴν τῆς ἀλληλεπιδράσεως*. Τοιουτοτρόπως συμπληροῖ τὸ σύνολον τῶν ἀρχῶν, ἐφ᾽ ὧν ἑδράζεται τὸ σημερινὸν οἰκοδόμημα τῆς μηχανικῆς. Μετὰ τὸν Νεύτωνα δὲν ἐτέθη ἄλλη ἀρχή, διετυπώθησαν μόνον προτάσεις ὡς αἱ τοῦ D'Alembert, Lagrange, Gauss, Hamilton καὶ ἄλλων, δι᾽ ὧν διευκολύνεται ἡ περιγραφὴ τῶν μηχανικῶν φαινομένων καὶ ἡ λύσις διὰ τοῦ ὑπολογισμοῦ πρακτικῶς χρησίμων σχετικῶν προβλημάτων. Ἡ μετὰ τὸν Νεύτωνα ἐξέλιξις τῆς μηχανικῆς εἶναι μορφολογική, ἐξαγωγικὴ καὶ μαθηματικὴ ἢ ἀναλυτικὴ ἐξέλιξις. Ἡ συνθετικὴ ἐξέλιξις κλείει μὲ τὸν Νεύτωνα.

Α. ΜΙΧΑΛΟΠΟΥΛΟΣ

— **μηχανικὴ οὐράνιος**· βλ. λ. *οὐράνιος* μηχανική.

— **«Μηχανικὴ Ἐπιθεώρησις»**. Μηνιαῖον περιοδικὸν σύγγραμμα ἐν Ἀθήναις, ἱδρυθὲν τῷ 1887 ὑπὸ Ἠλ. Ἰ. Ἀγγελοπούλου.

**μηχανικὸν** (τὸ) *[Στρατ.]*. Καλεῖται οὕτω ἓν ἐκ τῶν πέντε μαχίμων ὅπλων τοῦ στρατεύματος καὶ ἡ σχετικὴ ὑπηρεσία. Κύριος προορισμὸς τούτου εἶναι ἡ κατασκευή, ἡ διευθέτησις καὶ ἡ ἀποκατάστασις τῶν συγκοινωνιῶν. Ἐπιφορτίζεται οὐχ ἧττον καὶ μὲ ἔργα ἐγκαταστάσεως παντὸς εἴδους. Εἰς τὸ ὅπλον τοῦ μηχανικοῦ ἀνήκουσι καὶ αἱ μονάδες τῶν τηλεγραφητῶν ὅλων τῶν εἰδικοτήτων, αἱ ἐξασφαλίζουσαι τὰς διαφόρους διαβιβάσεις. Τὸ μηχανικὸν εἶναι ὡπλισμένον διὰ τὴν ἄμεσον ἀσφάλειάν του καὶ ἐφοδιάζεται μὲ ἐργαλεῖα, μηχανήματα καὶ διάφορα ὑλικὰ διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τεχνικῶν ἔργων. Ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης ἐργάζεται γενικῶς ὑπὸ τὴν προστασίαν τοῦ πεζικοῦ. Τὰ ἔργα, εἰς τὰ ὁποῖα, κατὰ τὰ ἰσχύοντα τὴν σήμερον, ἀσχολεῖται τὸ μηχανικὸν ἐν ἐκστρατείᾳ, εἶναι αἱ ὀχυρώσεις, ὁδοποιητικαὶ καὶ γεφυροποιητικαὶ ἐργασίαι, καταστροφαί, πρόχειροι ἐγκαταστάσεις καὶ κατασκευαὶ πάσης φύσεως, διαβιβάσεις, στρῶσις σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, ἐφοδιασμὸς ὅλου τοῦ στρατεύματος εἰς ὑλικὰ ἁρμοδιότητος μηχανικοῦ (ἐκρηκτικαὶ ὗλαι, συρματόπλεγμα, τηλέφωνα κτλ.) καὶ ἡ διεξαγωγὴ τοῦ πολέμου ὑπονόμων (guerre des mines), ἀποτελοῦσα σπανιωτάτην περίπτωσιν. Λόγῳ τῆς πολυσχιδοῦς ταύτης ἀποστολῆς του τὸ μηχανικὸν περιλαμβάνει μεγάλην ποικιλίαν εἰδικοτήτων, συγκεκροτημένων εἰς μονάδας τιθεμένας εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ἀρχιστρατήγου ἢ τῶν μεγάλων μονάδων καὶ δρώσας ἀναλόγως τῶν ἀναγκῶν κατ᾽ ὀργανικὰ τμήματα ὑπὸ τὴν διοίκησιν τῶν ἰδίων αὐτοῦ βαθμοφόρων καὶ ὑπὸ τὴν ἀνωτέραν ἐποπτείαν τοῦ ἀρχηγοῦ τοῦ μηχανικοῦ τῆς σχετικῆς μονάδος. Ἀναλόγως τῆς εἰδικότητός των αἱ μονάδες τοῦ μηχανικοῦ περιλαμβάνουσι *σκαπανεῖς, γεφυροποιούς, τηλεγραφητὰς* καὶ *σιδηροδρομικούς*.

Τὸ μηχανικὸν εἶναι σχετικῶς ἐκ τῶν νεωτέρων ὅπλων τῶν στρατῶν. Οἱ παλαιότεροι στρατοί, καὶ δὴ πρὸ τῆς ἀνακαλύψεως τῆς πυρίτιδος, ἔχοντες ὡς μέσον τοῦ ἀγῶνος των τὴν κροῦσιν, δὲν παρουσίαζον ἀξίαν λόγου τεχνικὴν ἐξέλιξιν εἰς τὰς μεθόδους καὶ τὰ πολεμικὰ αὐτῶν μέσα. Εἰδικοί τινες στρατολογούμενοι εἰς τοὺς παλαιοτέρους στρατοὺς δὲν ἀπετέλουν συγκεκροτημένας ὁμάδας, ἀλλ᾽ ἄτομα ἀναλαμβάνοντα λόγῳ τῆς πείρας ἢ τῆς ἰδιοφυΐας αὐτῶν τὴν διεύθυνσιν ὡρισμένων ἔργων καὶ τὴν καθοδήγησιν τῶν στρατιωτῶν ἢ τῶν βοηθητικῶν ἐν τῇ ἐκτελέσει τούτων. Ἐκτὸς τούτου, ὡρισμέναι τεχνικαὶ ἀποστολαὶ κατὰ τὰς περιόδους ἐκείνας τῆς ἐλλείψεως πάσης τεχνικῆς προόδου δυσκόλως θὰ ἠδύναντο νὰ χαρακτηρι-

Digitized by Google

σθῶσιν ὡς ἀρχαὶ τοῦ ἑνὸς ἢ τοῦ ἄλλου τῶν σημερινῶν ἐξειλιγμένων τεχνικῶν ὅπλων τῶν στρατῶν. Τὰ χωματουργικὰ ἔργα τῶν ὀχυρώσεων, ἡ οἰκοδομικὴ τῶν τειχῶν ἢ τειχοδομική, ἡ διευθέτησις τῶν ὑδάτων διὰ τεχνητὰς πλημμύρας, ἦσαν καθαρῶς ἔργα τοῦ μηχανικοῦ ὅπως τὰ ἐννοοῦμεν καὶ σήμερον, ἐνῷ ἡ κατασκευή, ἡ συντήρησις καὶ ἡ χρησιμοποίησις διαφόρων πολεμικῶν μηχανημάτων κατὰ τὴν ἐπίθεσιν καὶ τὴν ἄμυναν θὰ ἦτο δυσχεροῦς προσδιορισμοῦ ἁρμοδιότητος, ὅπως αὕτη ἐννοεῖται σήμερον. Τοῦτο θὰ συνέβαινε μὲ τοὺς μηχανοποιοὺς τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων καὶ τοὺς μηχανικούς, τοὺς τεχνίτας δηλαδὴ κατασκευαστὰς τῶν μηχανῶν καὶ τοὺς εἰδικοὺς τοὺς χειριζομένους αὐτάς. Τὸ αὐτὸ θὰ ἠδύνατο νὰ λεχθῇ καὶ περὶ τῶν εἰδικῶν τεχνιτῶν τῶν ὑπηρετούντων ἐν τῷ ρωμαϊκῷ στρατῷ, ὡς καὶ περὶ τοῦ τεχνικοῦ τμήματος τοῦ βυζαντινοῦ τοιούτου, τοῦ περιλαμβάνοντος πάσης ἁρμοδιότητος τεχνίτας, ἀπὸ τοῦ γεφυροποιοῦ καὶ τοῦ τέκτονος μέχρι τοῦ μαγγαναρίου καὶ τοῦ τοξοποιοῦ.

Πρῶτοι οἱ Ρωμαῖοι εἰσήγαγον ἐν τῷ στρατῷ εἰδικὴν τεχνικὴν ὑπηρεσίαν, περιλαμβάνουσαν τεχνίτας διαφόρων εἰδικοτήτων, δηλαδὴ ξυλουργῶν, σιδηρουργῶν, κτιστῶν, γεφυροποιῶν, ὑπονομοποιῶν, ὁπλοδιορθωτῶν κλπ. Οὗτοι ἦσαν γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα fabri. Ἡ ὑπηρεσία αὕτη εἰσήχθη καὶ παρὰ τῷ βυζαντικῷ στρατῷ διὰ τῆς στρατολογίας τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων πάσης ἁρμοδιότητος τεχνιτῶν.

Ὁπωσδήποτε, μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος δὲν ὑπῆρχον συγκεκροτημέναι μονάδες τεχνικῆς ἀποστολῆς μὲ ἴδια στελέχη καὶ στρατεύματα. Αἱ μέθοδοι τῆς πολιορκίας καὶ ἀμύνης τῶν πόλεων ἦσαν ἁπλαῖ καὶ εὔκολοι καὶ δὲν ὑπῆχεν ἀνάγκη ἐκτελέσεως εἰδικῶν σοβαρῶν ἔργων παρ' εἰδικῶν ἀξιωματικῶν καὶ στρατευμάτων. Μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἡ λέξις μηχανικὸν δὲν ἐχρησιμοποιεῖτο μὲ τὴν σημερινὴν αὐτῆς ἐκδοχήν. Ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἐν Γαλλίᾳ πρὸς ἐκτέλεσιν στρατιωτικῶν τεχνικῶν ἔργων ἀπέσπων ἀξιωματικοὺς τοῦ πεζικοῦ εἰδικῶν γνώσεων καὶ ἱκανότητος, οἵτινες ἐπετύγχανον τὸ δίπλωμα καὶ τὸν τίτλον τοῦ μηχανικοῦ. Τότε ἐδημιουργήθησαν λόχοι ὑπονομοποιῶν ἐθελοντῶν, διοικούμενοι παρὰ μηχανικῶν, καὶ λόχοι σκαπανέων διὰ τὰ ἔργα πολιορκίας. Οἱ τελευταῖοι, ἀποσπώμενοι ἐκ τοῦ πεζικοῦ, ἀπελύοντο κατὰ τὴν περίοδον τῆς εἰρήνης. Πρῶτος ὁ Sully ἐν Γαλλίᾳ, ἀντιλαμβανόμενος τὴν χρησιμότητα ἑνὸς σώματος περιλαμβάνοντος γεωμέτρας καὶ διαφόρους τεχνικούς, ὠργάνωσε περὶ τὸ τέλος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος τὸ σῶμα τοῦ μηχανικοῦ. Ἡ κατάστασις αὕτη ἔμεινε μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ μεγάλου ὀχυρωτικοῦ Βωμπάν, ὅστις ὑπῆρξεν ὁ πραγματικὸς πατὴρ καὶ δημιουργὸς τοῦ τε πολιτικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ μηχανικοῦ, ἱδρύσας κατὰ τὸ 1690 ἀντάξιον τοῦ προορισμοῦ του σῶμα σκαπανέων.

Οἱ μόνιμοι λόχοι ὑπονομοποιῶν καὶ σκαπανέων συνεκροτήθησαν ὅταν ἀνεφάνησαν καὶ οἱ μόνιμοι στρατοί. Ἐν ἀρχῇ, ἐν Γαλλίᾳ, οὗτοι ὑπήγοντο εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ πυροβολικοῦ, διατιθέμενοι καὶ εἰς τοὺς μηχανικοὺς διὰ τὰ ἔργα πολιορκίας. Ἡ ἐλαττωματικότης τῆς λύσεως ταύτης ἤγαγεν εἰς τὴν δημιουργίαν κανονικῶν πλέον στρατευμάτων μηχανικοῦ ὑπὸ διάφορα ὀνόματα, ἀναλόγως τῆς εἰδικότητος αὐτῶν, δηλαδὴ σκαπανέων, ὑπονομοποιῶν, γεφυροποιῶν κλπ.

Ἐν Γαλλίᾳ τὸ σῶμα ἐγένετο καθαρῶς στρατιωτικὸν ἀπὸ τοῦ 1691 καὶ ἔφερεν ἰδιαιτέραν στολὴν ἀπὸ τοῦ 1732. Τὸ πλῆθος καὶ ἡ ποικιλία τῶν διαφόρων γνώσεων διὰ τοὺς ἀξιωματικοὺς τοῦ μηχανικοῦ ἔφερε τὴν ἀνάγκην δημιουργίας διαφόρων σχολῶν προπαρασκευῆς πρὸς τὸ στάδιον τοῦτο. Οἱ λόχοι τῶν σκαπανέων καὶ τῶν ὑπονομοποιῶν συνηνώθησαν ὁριστικῶς τῷ 1801 ὑπὸ τὸ ὄνομα «στρατεύματα τοῦ μηχανικοῦ». Οἱ λόχοι οὗτοι ἀπετέλεσαν συντάγματα, καὶ ἀπὸ τοῦ 1875 δὲν ὑπάρχουσι κεχωρισμένοι λόχοι σκαπανέων καὶ ὑπονομοποιῶν. Τῷ 1889 ἱδρύθη ἐν Γαλλίᾳ καὶ σύνταγμα σιδηροδρόμων. Ἡ σχολὴ τῆς Mezières, ἡ ἱδρυθεῖσα τῷ 1748, ὑπῆρξε τὸ πρῶτον φυτώριον, ὅπου ἐξεπαιδεύοντο τὰ στελέχη τοῦ μηχανικοῦ. Μεγάλην ὁμοίως ὤθησιν ἔδωσεν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν καὶ προαγωγὴν αὐτοῦ ἡ ἵδρυσις ἐν Γαλλίᾳ τῆς καὶ μέχρι σήμερον λειτουργούσης πολυτεχνικῆς σχολῆς. Ἀπὸ τοῦ 1801 ἐν Γαλλίᾳ οἱ ἀξιωματικοὶ τοῦ μηχανικοῦ προέρχονται ἐκ τῆς σχολῆς ταύτης. Ἀνάλογος ὑπῆρξεν ἡ ἐξέλιξις τοῦ μηχανικοῦ καὶ εἰς τὰ λοιπὰ στρατιωτικὰ κράτη τῆς Εὐρώπης κατὰ τὸν ΙΗ' καὶ ΙΘ' αἰῶνα.

Ἐν Ἑλλάδι τὸ σῶμα τοῦ μηχανικοῦ ἱδρύθη ἀπὸ τοῦ 1829, ὡς «σῶμα ἀξιωματικῶν ὀχυρωματοποιίας καὶ ἀρχιτεκτονικῆς». Κατὰ τὸ 1833 συνεκροτήθη ὡς «σῶμα μηχανικοῦ», περιλαμβάνον καὶ ἀνὰ μίαν διοίκησιν μηχανικοῦ ἐν ἑκάστῳ νομῷ ὑπὸ ἀξιωματικόν, ὅστις ἐξετέλει καθήκοντα νομομηχανικοῦ. Ὁ ὀργανισμὸς τοῦ μηχανικοῦ ἔκτοτε ὑπέστη διαφόρους μετατροπάς. Κατὰ τὰς χρονικὰς ταύτας περιόδους τὰ στελέχη τοῦ μηχανικοῦ ἀπετέλουν τὸ μᾶλλον τεχνικῶς προηγμένον καὶ μεμορφωμένον προσωπικὸν τοῦ νεοσυστάτου ἑλληνικοῦ κράτους. Οὕτω, ἀξιωματικοὶ τοῦ μηχανικοῦ ὑπῆρξαν οἱ πρῶτοι καθηγηταὶ τοῦ Ἐθνικοῦ Μετσοβίου πολυτεχνείου. Ἐκτὸς τῆς ἐν εἰρήνῃ δράσεως τῶν στελεχῶν αὐτοῦ, τὸ μηχανικὸν ἔχει νὰ ἐπιδείξῃ καὶ ἀξιόλογον δρᾶσιν ἀναλόγως τῶν δυνατοτήτων αὐτοῦ κατὰ τοὺς διαφόρους ἐθνικοὺς ἀγῶνας. Κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1897 τὸ μηχανικὸν ἐξετέλεσεν ἔργα ὀχυρωτικῆς, ὁδοποιίας, γεφυροποιίας, καταστροφῶν καὶ συνδέσμου ἄνευ εἰδικῶς κατηρτισμένων στρατευμάτων, καὶ μόνον διὰ τῆς θεωρητικῆς μορφώσεως, τῆς φιλοπονίας καὶ τῆς προσωπικῆς ἐργασίας τῶν ἀξιωματικῶν του. Οὕτως ἐξετέλεσεν ὀχυρωματικὰ ἔργα πεδίου μάχης εἰς τὴν Λαρισαϊκὴν πεδιάδα, εἰς Μακρυχώρι, εἰς τὰς περὶ τὸν Δομοκὸν θέσεις, τὸ χωρίον Τσατμᾶ, εἰς θέσεις Βούζι-Γερακλί, Κάτω Ἀγόριανην καὶ πέντε Μύλους. Ὁμοίως ἐχρησιμοποίησε γεφυροσκευὴν συστήματος Birago πρὸς ζεῦξιν τοῦ Πηνειοῦ παρὰ τὴν θέσιν Ἀλήφακα. Κατεσκεύασε δύο βαστακοστηρίκτους μικρὰς γεφύρας παρὰ τὴν Καλαμπάκαν, ἑτέραν ἐπὶ τοῦ Πηνειοῦ παρὰ τὸ χάνι Μουργάνη, μίαν λεμβόζευκτον παρὰ τὸ Κουτσόχειρον, ἄλλην παρὰ τὴν Γούνιτσαν καὶ δύο ἐκ προχείρου ὑλικοῦ παρὰ τὴν ὑπάρχουσαν λιθόκτιστον τῆς Λαρίσης. Τὸ μηχανικὸν κατέστρεψε τὴν γέφυραν τῆς ἐξόδου τῶν Τεμπῶν, τὴν τοῦ Μπαμπᾶ, καὶ τὸ πορθμεῖον Δερελῆ, ἀνετίναξε δὲ διὰ δυναμίτιδος τὴν γέφυραν Βερνέζι. Ὁμοίως κατεσκεύασε τὴν ὁδὸν Τυρνάβου-Μελούνας καὶ Καλαμπάκας-Βελεμίστι καὶ διαφόρους ἄλλας ἡμιονικὰς ὁδούς. Τέλος συνεπλήρωσε τὸ ὑπάρχον τηλεγραφικὸν δίκτυον καὶ ἐγκατέστησεν ὀπτικοὺς σταθμοὺς διὰ τῶν ὀλίγων διατιθεμένων παρ' αὐτοῦ ὀπτικῶν μηχανημάτων.

Κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους 1912—1913 τὸ μηχανικόν, ἀποτελοῦν μεραρχιακοὺς λόχους, ἀποσπάσματα τηλεγραφητῶν καὶ τάγμα γεφυροποιῶν, προσέφερεν ἀξιολόγους ὑπηρεσίας, λαμβανομένων ὑπ' ὄψιν τῶν τελείως ἀνεπαρκῶν μέσων καὶ ὑλικῶν, ἅτινα διέθετε. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον ἠσχολήθη εἰς ὁδοποιητικὰς ἐργασίας ἐν Ἠπείρῳ πρὸς διευκόλυνσιν τῶν κινήσεων τοῦ πυροβολικοῦ, ἐν Μακεδονίᾳ δέ, ἐκτὸς τῶν ὁδοποιητικῶν ἐργασιῶν, ἠσχολήθη καὶ εἰς γεφυροποιητικὰς τοιαύτας, κυρίως ἐπὶ τῶν ποταμῶν Ἁλιάκμονος, Λουδία καὶ Ἀξιοῦ. Ἡ ἔγκαιρος διασκευὴ τῆς ἐπὶ τοῦ Ἀξιοῦ σιδηροδρομικῆς γεφύρας πρὸς διάβασιν τῶν προελαυνόντων τμημάτων σπουδαίως συνετέλεσεν εἰς τὴν ταχεῖαν κατάληψιν τῆς Θεσσαλονίκης παρὰ τῶν ἑλληνικῶν στρατευμάτων. Κατὰ τὸν Ἑλληνοβουλγαρικὸν πόλεμον, ἐκτὸς τῶν ὁδοποιητικῶν ἔργων, τὸ μηχανικὸν ἐξετέλεσε καὶ ἀξιόλογα γεφυροποιητικὰ τοιαῦτα. Διὰ τὴν διευκόλυνσιν τῶν κινήσεων τῶν στρατευμάτων κατεσκευάσθησαν διάφορα γεφυρίδια ἐκ προχείρου ὑλικοῦ, ἐπανειλημμένως δὲ καὶ εἰς διάφορα σημεῖα ἐζεύχθη ὁ Στρυμὼν ὑπὸ τῶν τμημάτων τοῦ τάγματος γεφυροποιῶν, διαθέτοντος ὑλικὸν ἑλληνικῆς καὶ τουρκικῆς γεφυροσκευῆς. Οὕτω κατεσκευάσθησαν γέφυραι εἰς Ὄρλιακο, Τοπόλνιτζαν, Μίκροβον, Κρέσναν, Κροῦπνικ, Σιμιτλῆ, Οὐράνοβον, Μποστάντζαν καὶ παρὰ τὸ Γενίκιοϊ. Τὰ ἀποσπάσματα τηλεγραφητῶν, διαθέτοντα κυρίως ὀπτικοὺς σταθμούς, συνέδεον τὰς μεραρχίας μετὰ τοῦ στρατηγείου καὶ μεταξύ των κατ' ἀμφοτέρους τοὺς πολέμους. Σιδηροδρομικὴ στρατιωτικὴ ὑπηρεσία δὲν ὑπῆρχε κατὰ τοὺς πολέμους ἐκείνους.

Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, τὸ ἑλληνικὸν μηχανικὸν ἐν Μακεδονίᾳ καὶ βραδύτερον ἐν Θράκῃ ἠσχολήθη μὲ ὅλα τὰ ἔργα, ἅτινα ἡ ἐξέλιξις τῶν πολεμικῶν μεθόδων καὶ μέσων ἐπέβαλεν εἰς τὴν ἁρμοδιότητά του. Κατεσκεύασε καὶ ἐπεσκεύασεν ὁδούς, γεφύρας ἐκ προχείρων ὑλικῶν, ὡς καὶ ἐξ ὑλικοῦ γεφυροσκευῆς, ἔργα στρατοπεδείας καὶ καταστροφάς. Κυρίως ἠσχολήθη εἰς ἔργα ὀχυρωτικῆς, ἐπιβληθέντα ἐξ αὐτῆς τῆς φύσεως τοῦ πολέμου χαρακωμάτων (στασιμότητος). Αἱ μονάδες τῶν τηλεγραφητῶν, ἐφωδιασμέναι δι' ἀρκετοῦ ὑλικοῦ, ἐξυπηρέτησαν σπουδαίως τὸν σύνδεσμον διὰ τηλεφώνου, ὀπτικοῦ καὶ ἀσυρμάτου, οἱ δὲ λόχοι σιδηροδρόμων κατεσκεύασαν καὶ ἐξεμεταλλεύθησαν στενὰς σιδηροδρομικὰς γραμμάς. Ἡ μετὰ τὴν ἀνακωχὴν μὲ τοὺς Βουλγάρους χρονικὴ περίοδος παρέσχεν εἰς τὸ μηχανικὸν τὴν εὐκαιρίαν νὰ ἀσχοληθῇ οὐχὶ μόνον μὲ ἔργα στρατιωτικά, ἀλλὰ καὶ κοινῆς ὠφελείας. Οὕτω κατεσκεύασεν ὁδοὺς καὶ ἐπεσκεύασεν ἐπὶ τοῦ Στρυμόνος καὶ τοῦ Νέστου γεφύρας παρασυρθείσας ὑπὸ τοῦ ρεύματος. Ἡ δρᾶσις αὐτοῦ ἐπεξετάθη καὶ μέχρις αὐτῆς τῆς Παλαιᾶς Σερβίας, ἔνθα παρὰ τὸ Πιρὸτ τὸ μηχανικὸν τῆς ΙΙΙης μεραρχίας ἐπεσκεύασεν ὁδοὺς καὶ γεφύρας. Ἐπίσης κατεσκεύασε μνημεῖα τῶν φονευθέντων καὶ θανόντων Ἑλλήνων στρατιωτῶν.

Ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ἡ δρᾶσις τοῦ μηχανικοῦ ὑπῆρξεν ἔτι ἀξιολογωτέρα. Ἡ ποικιλία τῶν φάσεων τοῦ ἀγῶνος ἔφερε παντοειδῆ δρᾶσιν αὐτοῦ εἰς ὅλα τὰ ἔργα τῆς ἁρμοδιότητός του. Κατεσκεύασε καὶ ἐπεσκεύασε μέγαν ἀριθμὸν ὁδῶν καὶ γεφυρῶν ὁδικῶν καὶ σιδηροδρομικῶν διὰ προχείρων καὶ κανονικῶν ὑλικῶν, ἐξετέλεσε παντὸς εἴδους ἔργα ἐγκαταστάσεως καὶ καταστροφὰς τεχνικῶν ἔργων, ὡς καὶ ἀπειρίαν ὀχυρωτικῶν ἐργασιῶν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ μικρασιατικοῦ ἀγῶνος ἠγωνίσθη ὡς πεζικὸν εἰς πλείστας περιπτώσεις καὶ δὴ κατὰ τὴν ὑποχώρησιν. Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων καὶ σοβαρωτέρων ἔργων τοῦ ἑλληνικοῦ μηχανικοῦ κατὰ τὴν περίοδον ταύτην εἶναι ἡ ταχίστη ἐπισκευὴ τῆς παρὰ τῶν Τούρκων καταστραφείσης τὸν Ἰούλιον 1921 σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀφιὸν-Καραχισσὰρ—Ἐσκὶ-Σεχήρ, ἡ καταστροφὴ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τῆς Ἀγκύρας κατὰ τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1921, ἀπὸ τοῦ τελευταίου σημείου τῆς πρὸς Ἄγκυραν προελάσεως μέχρι τῶν πρὸ τοῦ Ἐσκὶ-Σεχὴρ γραμμῶν συμπτύξεως, ἡ εἰς διάφορα σημεῖα σύγχρονος ζεῦξις τοῦ Σαγγαρίου πρὸς ἐπιστροφὴν τῆς ἐκεῖθεν αὐτοῦ εὑρισκομένης στρατιᾶς, ἡ κατὰ τὴν ὑποχώρησιν καταστροφὴ τῶν παρὰ τὸ Ἐλβανλὰρ μεγάλων σιδηροδρομικῶν γεφυρῶν, ὧν ἡ κατόπιν ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐπισκευὴ ἀπῄτησε πλέον τοῦ ἔτους, καὶ ἡ ἔγκαιρος ἐν τέλει κατασκευὴ ἀποβαθρῶν παρὰ τὴν Ἀρτάκην καὶ Τσεσμὲν διὰ τὴν ἐπιβίβασιν τῶν ὑποχωρούντων τμημάτων καὶ τὴν φόρτωσιν τῶν κτηνῶν καὶ τοῦ ὑλικοῦ. Ὁμοίως αἱ μονάδες τηλεγραφητῶν προσέφερον πολυτίμους ὑπηρεσίας διὰ τῆς ὀργανώσεως τοῦ μεταξὺ τῶν μονάδων συνδέσμου, χρησιμοποιηθεισῶν τηλεφωνικῶν γραμμῶν, ὀπτικῶν σταθμῶν καὶ σταθμῶν ἀσυρμάτου. Τοιαύτη ὑπῆρξεν ἐν γενικαῖς γραμμαῖς ἡ δρᾶσις τοῦ μηχανικοῦ κατὰ τοὺς τελευταίους πολέμους, βασιζομένη κυρίως εἰς τὴν φιλοπονίαν καὶ φιλοτιμίαν τῶν στελεχῶν καὶ τῶν στρατευμάτων αὐτοῦ. Μεταπολεμικῶς ἤδη, μὲ τὴν ἐπὶ τὸ τεχνικώτερον ἐξέλιξιν τῶν στρατῶν, ἡ ἐκπαίδευσις καὶ ὁ τεχνικὸς καταρτισμὸς τοῦ μηχανικοῦ ἔχει μεγάλως προωθηθῇ. [Περὶ τῆς ὀργανώσεως τοῦ ἑλληνικοῦ μηχανικοῦ (1821—1931) βλ. λ. *Ἑλλὰς (Στρατ.)*.]

Ζ. ΝΟΜΠΕΛΗΣ

**μηχανικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰς μηχανάς, ὁ τῶν μηχανῶν: «μηχανικὴ ἐπιστήμη,—τέχνη»· || ὁ σχετιζόμενος μὲ τοὺς νόμους τῆς κινήσεως καὶ τῆς ἰσορροπίας: «μηχανικὴ κίνησις,—ἐνέργεια»· || μεταφ., ἐνέργεια ἀσυναίσθητος: «λόγοι μηχανικοί»· || «μηχανικὴ μνήμη» ἡ μνήμη καθ' ἣν ἡ ἀνάπλασις τῶν παραστάσεων αἰτίαν ἔχει τὸν συγχρονισμὸν καὶ οὐχὶ τὴν ἐσωτερικὴν σχέσιν τῶν παραστάσεων.—Ἐπίρρ. ***μηχανικῶς***.

— **μηχανικὰ *φάρμακα*** *[Φαρμ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ φάρμακα ἐκεῖνα, ἅτινα ἀποκλειστικῶς, ἐπιτοπίως χρησιμοποιούμενα, δρῶσι διὰ τῶν φυσικῶν αὐτῶν ἰδιοτήτων, μὴ προκαλοῦντα οὐδεμίαν χημικὴν μεταβολὴν ἐπὶ τῶν θέσεων εἰς ἃς φέρονται. Εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν φαρμάκων αὐτῶν ἀνήκουν: τὰ προστατευτικὰ (Protectiva), τὰ μαλακτικὰ (Emollientia), τὰ κοσμητικὰ (Cosmetica) καὶ τὰ ροφητικὰ (Rophetica) κτλ.

Κ. Γ. Μ.

— **μηχανικαὶ *δοκιμασίαι***. Καλοῦνται οὕτω αἱ *δοκιμασίαι* (βλ. λ.) τῆς φύσεως καὶ τῆς ποιότητος τῶν ὑλικῶν, γινόμεναι διὰ τῆς ἐνεργείας δυνάμεων μηχανικῶν πρὸς προσδιορισμὸν διαφόρων ἀριθμητικῶν συντελεστῶν, ὧν ἡ γνῶσις εἰς ἑκάστην περίπτωσιν καθιστᾷ δυνατὸν τὸν ὑπολογισμὸν τῆς ἀντοχῆς τῶν μερῶν τῶν κατασκευῶν παντὸς εἴδους ἐξ ὑλικῶν, ὧν ἐμετρήθησαν οἱ ἀντιστοιχοῦντες συντελεσταί.

Αὗται εἶναι, μεταξὺ ἄλλων: 1) Ἡ δοκιμὴ *ἐφελκυσμοῦ* ἢ *ἕλξεως*, δι' ἧς καθορίζεται τὸ φορτίον θραύσεως καὶ τὸ ὅριον ἐλαστικότητος τοῦ ὑλικοῦ (μετάλλου, κονίας, ξύλου κτλ.) καὶ ἀντίστοιχος μεγίστη καὶ ἐλαστικὴ ἐπιμήκυνσις, ὡς καὶ ἡ ἐκλέπτυνσις (striction). 2) Ἡ δοκιμὴ *θλίψεως*, δι' ἧς καθορίζεται ὁμοίως τὸ φορτίον ἀντοχῆς κατὰ τὴν θλῖψιν. 3) Ἡ δοκιμὴ *κάμψεως* διὰ τὴν ἀντοχὴν κάμψεως. 4) Ἡ δοκιμὴ *στρέψεως* διὰ τὴν ἀντοχὴν εἰς τὴν στρέψιν. 5) Ἡ δοκιμὴ *λυγισμοῦ* (flambement), καθ' ἣν μετρεῖται ἡ ἀντοχὴ καὶ ἡ παραμόρφωσις ἐπιμήκους δοκοῦ ἢ στύλου, ὅταν αὕτη ὑφίσταται συμπίεσιν κατὰ τὸν ἄξονα αὐτῆς ἀναγκαζομένη νὰ λυγισθῇ.

Αἱ ἄνω μηχανικαὶ δοκιμαὶ εἶναι στατικαί, καθ' ὅσον ἡ ἐνέργεια τῆς δυνάμεως ἐξασκεῖται ἀρκούντως βραδέως καὶ οἱ συντελεσταί, προκειμένου περὶ δυνάμεων, ἐκφράζονται εἰς χιλιόγραμμα κατὰ τετραγωνικὸν χιλιοστόμετρον ἢ ὑφεκατόμετρον, π. χ. χάλυψ ἀντοχῆς *ἕλξεως* (ὅριον θραύσεως) 70 χγρ. κατὰ χλσμ.². Ἡ δοκιμὴ *κρούσεως* ἀποτελεῖ δυναμικὴν δοκιμήν, καθ' ἣν μετρεῖται τὸ ἀπαιτούμενον ἔργον εἰς χιλιογραμμόμετρα κατὰ τετραγωνικὸν ὑφεκατόμετρον διὰ νὰ θραυσθῇ τὸ δοκίμιον π. χ. χάλυψ δυσθραυστότητος 15, ἢ ἀπαιτῶν 15 χιλιογραμμόμετρα κατὰ τετραγωνικὸν ὑφεκατόμετρον διὰ νὰ θραυσθῇ. Ἡ δοκιμὴ *σκληρότητος*, διὰ τῆς σφαίρας τοῦ Σουηδοῦ Brinell (1900), ἀποτελεῖ ἐπίσης δοκιμασίαν μηχανικήν, ἐκφράζεται δὲ εἰς ἀριθμοὺς τοῦ Brinell, ἤτοι: ἐὰν ἡ ἐπιφάνεια εἰς χλσμ. τοῦ ἀποτυπώματος ἐπὶ τοῦ ὑπὸ δοκιμασίαν μετάλλου εἶναι ε καὶ ἡ πίεσις, ἥτις ἀσκεῖται ἐπὶ τῆς σφαίρας, 3.000 χιλιογράμμων π. χ., ὁ ἀριθμὸς σκληρότητος Brinell Δ δίδεται ὑπὸ τοῦ τύπου

$$\Delta = \frac{3000}{\varepsilon}$$

Ἐὰν τὸ ἀποτύπωμα ε ἔχῃ ἐπιφάνειαν 10 τετρ. χλσμ. Δ=300 (σκληρὸς χάλυψ). Ἡ δοκιμὴ *ἀναπάλσεως*, καθ' ἣν ἀφήνεται νὰ ἀναπηδήσῃ σφαῖρα χαλυβδίνη ἐπὶ τῆς πρὸς δοκιμασίαν ἐπιφανείας, ἀποτελεῖ ἐπίσης μέτρησιν τῆς σκληρότητος. Οὕτω

Digitized by Google

ἐπίσης δοκιμάζονται αἱ σφαῖραι τῶν ἐνσφαίρων τριβέων. Ὑπάρχουσι καὶ δοκιμασίαι φθορᾶς διὰ τριβῆς ἢ κρούσεως διὰ τῆς ἐνεργείας μηχανικῶν δυνάμεων· ἀλλ' αὗται ἀποτελοῦσι φυσικὰς δοκιμασίας. θ. χ.

— μηχανικὴ ***ἐνέργεια*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἐνέργεια*.

— μηχανικὴ ***θεωρία*** *[Φιλοσ.]*· βλ. λ. *μηχανοκρατία*.

— μηχανικὴ ***τεχνολογία***· βλ. λ. *μηχανολογία*.

— μηχανικοὶ ***ἴκτεροι*** *['Ιατρ.]*· βλ. λ. *ἴκτερος*.

— μηχανικὸν ***ἔριον***· βλ. λ. *ἔριον*.

— μηχανικὸν ***ἰσοδύναμον τῆς θερμότητος*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἰσοδύναμον* μηχανικὸν τῆς θερμότητος.

**μηχανικὸς** (ὁ)· ὁ τῶν μηχανῶν, ὁ εἰδικὸς τεχνίτης ἢ ἐπιστήμων πρὸς ἐπίβλεψιν καὶ χειρισμὸν τῶν μηχανῶν: «μηχανικὸς ἀτμοπλοίου, — σιδηροδρόμου, —ἐργοστασίου, — ἀεροπλάνων κτλ.»· || «πολιτικὸς μηχανικὸς» ὁ διευθύνων μεγάλα τεχνικὰ ἔργα, ἀπαιτοῦντα ἐπιστημονικὴν παρακολούθησιν· || «μηχανικὸς ἠλεκτρολόγος, — γεωπόνος, — χημικός».

— *[Ἐγκυλ.]* Οἱ ἀπόφοιτοι κατωτέρων καὶ μέσων μηχανικῶν σχολῶν ὀνομάζονται *πρακτικοὶ μηχανικοί*, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τῶν ἀποφοίτων τῶν ἀνωτέρων τεχνικῶν σχολῶν, οἵτινες καλοῦνται *διπλωματοῦχοι μηχανικοί*. Διπλωματούχων μηχανικῶν διακρίνονται εἰς τὴν Ἑλλάδα αἱ ἑξῆς εἰδικότητες: *πολιτικοὶ μηχανικοί*, ἀσχολούμενοι μὲ στατικὴν ἐν γένει, οἰκοδομάς, σιδηρᾶς κατασκευάς, ὡπλισμένον σκυροκονίαμα, ὁδοποιίαν, γεφυροδομίαν, λιμενικὰ ἔργα κττ.· *μηχανολόγοι μηχανικοὶ* ἀσχολούμενοι μὲ μηχανὰς ἐν γένει, μηχανολογίαν, θεωρητικὴν καὶ ἐφηρμοσμένην, θερμοδυναμικὴν κτλ.· *ἠλεκτρολόγοι μηχανικοί*, τὴν εἰδικότητα τῶν ὁποίων ἀποτελεῖ ὁ ἠλεκτρισμὸς καὶ αἱ ἐφαρμογαὶ αὐτοῦ· *ἀρχιτέκτονες μηχανικοί*, *τοπογράφοι μηχανικοὶ* καὶ *χημικοὶ μηχανικοί*, ἀσχολούμενοι μὲ τὰς βιομηχανικὰς ἐφαρμογὰς τῆς χημείας (χημικὰ ἐργοστάσια κττ.). Γ. Θ. Κ.

**μηχανισμὸς** (ὁ)· σύνολον μηχανήματος, κατάλληλος συνδυασμὸς ὀργάνων πρὸς παραγωγὴν λειτουργίας: «μηχανισμὸς ὡρολογίου, — γραφομηχανῆς κττ.»· || μεταφ., ὁ τρόπος, τὰ μέσα διὰ τῶν ὁποίων συντελεῖται λειτουργία τις: «ὁ μηχανισμὸς τῆς ὑπηρεσίας τῶν δημοσίων ἔργων», «κάθε ὑπηρεσία ἔχει τὸν μηχανισμόν της».

— *[Τεχν.]* Καλεῖται *μηχανισμὸς* σύστημα στερεῶν σωμάτων συνδεομένων πρὸς ἄλληλα οὕτως, ὥστε κίνησις ἑνὸς ἐξ αὐτῶν νὰ προκαλῇ κίνησιν ὅλων τῶν ἄλλων. Ἓν ἐκ τῶν στερεῶν αὐτῶν σωμάτων θεωροῦμεν καθηλωμένον ἐπὶ στερεᾶς τινος βάσεως, ἑπομένως ἀκίνητον, ἐξετάζομεν δὲ τὴν κίνησιν τῶν λοιπῶν ὡς πρὸς αὐτό. Τὸ σῶμα δι' οὗ ὁ μηχανισμὸς τίθεται εἰς κίνησιν, δηλαδὴ ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον κινούμενον προκαλεῖ τὴν κίνησιν τῶν λοιπῶν, ὀνομάζεται *κίνητρον τοῦ μηχανισμοῦ*. Οἱ εἰς τὴν μηχανολογίαν χρησιμοποιούμενοι μηχανισμοὶ εἶναι σχεδὸν ὅλοι ἐπίπεδοι, ἤτοι ἡ κίνησις τῶν ἀπαρτιζόντων αὐτοὺς σωμάτων παραμένει καθ' ὅλην αὐτῆς τὴν διάρκειαν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ ἐπιπέδου, σχετικῶς πρὸς τὸ ἀκίνητον μέρος τοῦ μηχανισμοῦ. Τὰ ἀποτελοῦντα τὸν μηχανισμὸν σώματα καλοῦνται *μέλη* αὐτοῦ, συνδέονται δὲ τὰ μέλη μεταξύ των διὰ *κινηματικῶν ζευγῶν*. Διὰ νὰ εἶναι μηχανισμός τις χρησιμοποιήσιμος εἰς τὴν μηχανολογίαν, πρέπει ἡ κίνησις αὐτοῦ νὰ εἶναι ἐξηναγκασμένη, ἤτοι ὡρισμένη κίνησις τοῦ κινήτρου αὐτοῦ νὰ προκαλῇ ἐντελῶς ὡρισμένας κινήσεις τῶν ἄλλων μελῶν. Τοῦτο ἐκφράζομεν λέγοντες ὅτι μηχανισμὸς χρησιμοποιήσιμος πρέπει νὰ ἔχῃ βαθμὸν ἐλευθερίας ἴσον πρὸς τὴν μονάδα.

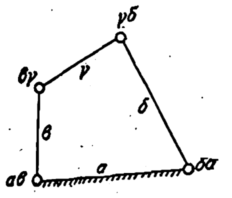


*Μηχανισμός.*

[α=ἀκίνητον μέλος· β,γ,δ,= λοιπὰ μέλη· αβ, βγ, γδ, δα= κινηματικὰ ζεύγη.]

— *[Μουσ.]* Ἐν τῇ μουσικῇ καλεῖται *μηχανισμὸς* τὸ σύνολον τῶν τεχνικῶν μέσων, δι' ὧν ἐπιτυγχάνεται ἡ ἐκμάθησις ἑνὸς ὀργάνου, εἰς τρόπον ὥστε νὰ ἀναπτυχθῇ ἡ εὐκαμψία καὶ ἡ δύναμις τῶν δακτύλων, ἡ ἀκρίβεια τῆς δακτυλοθεσίας κτλ. *Μηχανισμὸς* καλεῖται ἐπίσης, ἰδίως εἰς τὰ πληκτροφόρα ἢ αὐτόματα ὄργανα, τὸ ἐσωτερικὸν μηχανικὸν σύστημα, τὸ ὁποῖον τιθέμενον εἰς κίνησιν παράγει τὸν ἦχον. Γ. Σ.

— μηχανισμοὶ ***εὐθυαγωγοὶ*** *[Μηχανολ.]*· βλ. λ. *εὐθυαγωγοὶ* μηχανισμοί.

**Μηχανιώνα** *[Γεωγρ.]*. Παράλιος κωμόπολις τῆς Κυζικηνῆς χερσονήσου, ΒΔ. τῆς Περάμου. Κάτοικοι πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς 1600, ἀσχολούμενοι εἰς τὴν γεωργίαν καὶ ἁλιείαν. Ἀπέναντι τῆς Μηχανιώνας κεῖνται τρεῖς νησίδες ἀκατοίκητοι, καλούμεναι νῆσοι τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου.

— **Μηχανιώνα, Νέα** — *[Γεωγρ.]* Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Θερμαϊκοῦ μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Ἐμβόλου καὶ τοῦ λιμενίσκου Ἐπανωμῆς καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.323. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἀγγελοχώρι* καὶ *Κερασιά*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 1.919. Χ. Δ.

**μηχανοδηγὸς** (ὁ)· ὁ ἐντεταλμένος τὴν παρακολούθησιν καὶ ῥύθμισιν τῆς κινήσεως μηχανῆς τινος· εἰδικώτερον ὁ ὁδηγὸς μηχανοκινήτων μεταφορικῶν μέσων, κυρίως ἁμαξοστοιχιῶν. Τελευταίως εἰσήχθη καὶ ὁ μερικώτερος ὅρος *ἠλεκτροδηγός*, πρὸς δήλωσιν τοῦ ὁδηγοῦντος ἠλεκτροκίνητον ὄχημα ἢ ἁμαξοστοιχίαν. Γ. Θ. Κ.

**μηχανοδίφης** (ὁ) *[Τεχν. Θεάτρ.]*. Τὴν κατασκευήν, ἐπιμέλειαν καὶ λειτουργίαν τῶν διαφόρων σκηνικῶν μηχανημάτων τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ θεάτρου ἀνελάμβανον εἰδικοὶ ἄνδρες, *μηχανοποιοὶ* καλούμενοι, ἐξ ὧν τινες διεκρίθησαν εἰς τὴν μηχανικὴν λεγομένην θαυματοποιίαν, ἐξευρόντες διάφορα μέσα, δι' ὧν προεκάλουν τὸν θαυμασμὸν τῶν θεατῶν. Οἱ τοιοῦτοι ἐκαλοῦντο *μηχανοδίφαι*. Εἰς τὴν τέχνην αὐτὴν μνημονεύεται ὡς εἰδικὸς ὁ υἱὸς τοῦ Καρκίνου Ξενοκλῆς, ὅστις λέγεται ὅτι ἐπλούτισε τὴν σκηνὴν μὲ πολλὰ ἀξιοθαύμαστα μηχανήματα, περὶ ὧν ὅμως οὐδὲ τὴν ἐλαχίστην ἔχομεν πληροφορίαν. Ν. Ι. Λ.

**μηχανοδόκη** (ἡ). Διαμέρισμα τοῦ ὀπισθίου κώνου τῆς αὐτοκινήτου τορπίλλης, περιλαμβάνον τοὺς μηχανισμοὺς τῆς παροχῆς τοῦ ἀέρος, τὸ ὑπηρετικὸν μηχάνημα τῶν ἐλαιοδόχων, τὸν μηχανισμὸν τῆς κρατήσεως, τὸν τῆς ἀκινησίας τῶν πηδαλίων κατὰ τὴν ἐκσφενδόνισιν καὶ τὴν ἀεροκίνητον μηχανὴν τῆς προώσεως. Σ. Ε. Λ.

**μηχανοθεραπεία** (ἡ). Ἡ ἐν τῇ θεραπευτικῇ καὶ τῇ ὑγιεινῇ χρησιμοποίησις διαφόρων μηχανημάτων, προωρισμένων νὰ προκαλέσουν μεθοδικὰς κινήσεις τοῦ σώματος, ἐνεργητικὰς ἢ παθητικάς, ὧν ἐκ τῶν προτέρων ῥυθμίζεται ἡ μορφή, ἡ ἔκτασις καὶ ἡ ἐνέργεια. Ἡ μηχανοθεραπεία, εὔχρηστος κυρίως εἰς τὰς χώρας τοῦ Βορρᾶ, ἐστηρίχθη ἐπὶ τῶν ἀποτελεσμάτων τῆς σουηδικῆς γυμναστικῆς, ἥτις εἶναι ἰδίως ἰατρική, ἀποβλέπουσα εἰς τὴν ἀνάλυσιν τῶν κινήσεων, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν γαλλικήν, ἥτις ἀποβλέπει εἰς τὴν σύνθεσιν τῶν κινήσεων. Ἡ σουηδικὴ γυμναστικὴ ἀποφεύγει τὰς συνδυασμένας κινήσεις, τὴν συνεργίαν, ἑπομένως δὲ καὶ τὸν κάματον. Ἐντεῦθεν καὶ ἡ μηχανοθεραπεία σκοπεῖ πρὸς τὴν ὡς οἷόν τε μείζονα ἐλάττωσιν τῆς προσπαθείας, δι' ἧς καθίσταται δυνατὴ ἡ ἐφαρμογὴ αὐτῆς καὶ ἐπὶ ἀτόμων ἀδυνάτων καὶ ἀσθενικῶν ἔτι.

Τὰ πρὸς θεραπευτικοὺς σκοποὺς πρῶτα μηχανήματα ἐπενοήθησαν ὑπὸ τοῦ Σουηδοῦ G. Zander, τροποποιηθέντα βραδύτερον ὑπὸ τῶν Krukenberg, Vermeulen, Herz, Scholder, Courtault κτλ. Εἶναι δὲ γενικῶς συστήματα μοχλῶν βαθμολογημένων καὶ ποικιλοτρόπως συνηρθρωμένων, ἀναλόγως πρὸς τὸν δι' ὃν προωρίσθησαν σκοπόν. Ὑπάρχουν συσκευαὶ δι' ἐνεργητικὰς κινήσεις, ἄλλαι διὰ παθητικάς, ἄλλαι διὰ μεικτὰς καὶ ἄλλαι δι' ὀρθοπεδικοὺς σκοπούς. Ἕκαστον μηχάνημα συμβολικῶς χαρακτηρίζεται δι' ἑνὸς γράμματος συνοδευομένου καὶ ὑπὸ ἑνὸς ἀριθμητικοῦ ψηφίου, ὧν τὸ μὲν γράμμα δηλοῖ τὸ μέρος τοῦ σώματος, τὸ εἰς κίνησιν τιθέμενον, ὁ δ' ἀριθμὸς τὴν μορφὴν τῆς κινήσεως· λ. χ. τὸ B δηλοῖ τὸ κάτω ἄκρον, ὁ δὲ 4 τὴν ἔκτασιν· ἑπομένως ἡ συσκευὴ προώρισται πρὸς ἔκτασιν τοῦ κάτω ἄκρου.

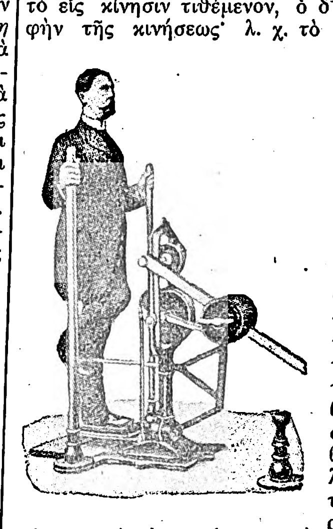

*Κάμψις καὶ τάσις γόνατος καὶ ἰσχίου. (Κινήσεις ἐνεργητικαί.)*

Τὰ διὰ *κινήσεις ἐνεργητικὰς* μηχανήματα κινοῦνται ὑπ' αὐτοῦ τοῦ ἀσθενοῦς. Ἡ πρὸς ὑπερνίκησιν ὑπὸ τοῦ πάσχοντος ἀντίστασις ῥυθμίζεται ἑκάστοτε διὰ τοῦ μήκους τοῦ βραχίονος ἀντιστάσεως, ὅπερ μεταβάλλεται κατὰ βούλησιν διὰ τῆς μετακινήσεως βάρους: Τοιαῦτα μηχανήματα ὑπάρχουν περὶ τὰ 34, ἓν δι' ἑκάστην ἄρθρωσιν καὶ δι' ἑκάστην μυϊκὴν ὁμάδα. Τὸ αὐτὸ μηχάνημα δύναται νὰ χρησιμεύσῃ πολλάκις καὶ διὰ δύο διαφόρους κινήσεις. Κατὰ τὴν περίπτωσιν, ὁ πάσχων τοποθετεῖται ἢ ὄρθιος ἢ καθήμενος ἢ κατακεκλιμένος.

Τὰ διὰ *παθητικὰς κινήσεις* μηχανήματα κινοῦνται διὰ ξένης πρὸς τὸν πάσχοντα δυνάμεως, δηλαδὴ δι' ἀτμοῦ, ἀερίου ἢ ἠλεκτρισμοῦ· μεταδίδουν δ' εἰς αὐτὸν τοιαύτας ἢ τοιαύτας κινήσεις, ὧν ἡ μορφή, ἡ εὐρύτης καὶ ὁ ῥυθμὸς καθορίζονται ἐπακριβῶς ἐκ τῶν προτέρων. Τὰ μηχανήματα ταῦτα μετακινοῦν τὸν κορμὸν ἐν συνόλῳ, καθέτως, ταλαντευτικῶς ἢ κυκλικῶς, ἢ ἐνεργοῦν ἐπὶ τμήματος μέλους τινὸς ἢ τέλος ἀποβλέπουν εἰς μηχανικὴν μάλαξιν. Ὁ de Champtassin ἐπενόησε γενικὸν ἀρθροκινητῆρα, κινούμενον δι' ἠλεκτρικῆς δυνάμεως, ὅστις ἐπιτρέπει τὴν παθητικὴν κινητοποίησιν πασῶν τῶν χωρῶν τοῦ σώματος καὶ πασῶν τῶν ἀρθρώσεων. Ἡ εὐρύτης τῶν κινήσεων ῥυθμίζεται κατὰ βούλησιν, τῇ βοηθείᾳ μικρομετρικοῦ κοχλίου, ἵνα διὰ βαθμιαίας ἀνεπαισθήτου αὐξήσεως τῆς εὐρύτητος ἀποφεύγωνται ἡ καταπόνησις τοῦ πάσχοντος καὶ ἡ πρόκλησις φλεγμονωδῶν ἀντιδράσεων.

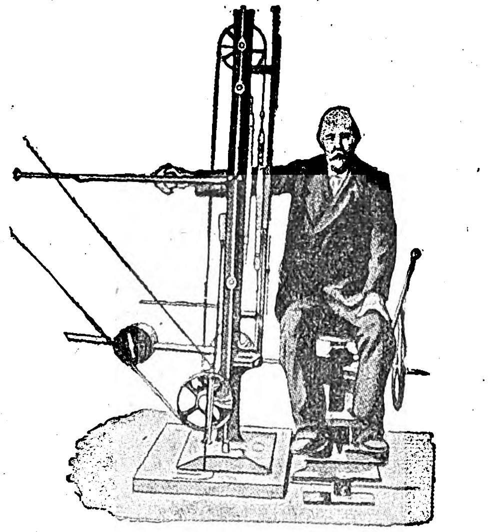

*Κινήσεις παθητικαὶ τῆς κατ' ὦμον διαρθρώσεως.*

Τὰ διὰ *μεικτὰς κινήσεις* μηχανήματα δύνανται νὰ μετατρέπωνται ἐναλλὰξ εἰς συσκευὰς ἐπιτρεπούσας τὴν ἐνεργητικὴν καὶ τὴν παθητικὴν κινητοποίησιν. Τοιαῦτα ἐπενόησαν ὁ Krukenberg καὶ ὁ Colombo.

Τέλος, τὰ μηχανήματα *ὀρθοπεδικῆς* ἀποβλέπουν εἰς τὴν στατικὴν καὶ τὴν ἐνεργητικὴν ἐπανόρθωσιν ἐπὶ ἐλαττωματικῶν ἀναπτύξεων, σκολιώσεων κλπ. καὶ τὴν σωματομετρίαν. Ὁ Zander κατεσκεύασε 5 μηχανήματα στατικῆς ἐπανορθώσεως, περιλαμβανόμενα εἰς τὴν σειρὰν K· διὰ τὴν ἐνεργητικὴν ἐπανόρθωσιν ὑπάρχουν 6 συσκευαί, περιλαμβανόμεναι εἰς τὴν σειρὰν L. Αἱ συσκευαὶ μετρήσεως εἶναι δύο τὸν ἀριθμόν, ὧν ἡ μία μετρεῖ τὴν κατακόρυφον, ἡ δ' ἑτέρα τὰς ἐγκαρσίας τομὰς τοῦ κορμοῦ.

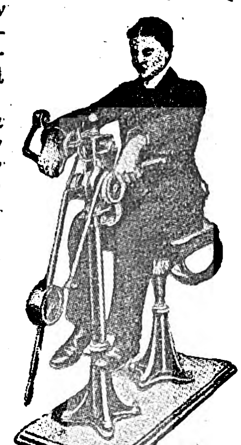

*Κινήσεις ἐνεργητικαὶ τῶν καρπῶν.*

Ἡ μηχανοθεραπεία, φυσικοθεραπευτικὸς κλάδος, ἐπικουρικὸς ἄλλων συγγενῶν μεθόδων, τῆς γυμναστικῆς, τῆς ὑδροθεραπείας καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, βοηθεῖ πολλάκις σημαντικῶς εἰς τὴν ἀποθεραπείαν πολλῶν παθολογικῶν ἢ χειρουργικῶν νοσημάτων. Ἐλαττώνει π. χ. κατὰ πολὺ τὴν πρὸς ἐργασίαν ἀνικανότητα μέλους, ἀκινητοποιηθέντος καὶ κατ' ἀκολουθίαν ὑποστάντος δυσκαμψίαν, ἀγκύλωσιν ἢ μυϊκὴν ἀτροφίαν, κατόπιν θλάσεως, ἐξαρθρήματος ἢ κατάγματος κλπ. Ὑποβοηθεῖ τὴν κανονικὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἀναπνευστικοῦ συστήματος ἐπὶ παθόντων ἐκ πλευρίτιδος ἢ πνευμονίας, ὡς καὶ ἐπὶ παιδίων πλημμελῶς ἢ καὶ πολὺ ταχέως ἀναπτυσσομένων. Εὐθυάζει τὴν ἐν σκολιώσει σπονδυλικὴν στήλην καὶ ἐπανορθοῖ πᾶσαν ἐξ ἀνωμάλου αὐξήσεως πάθησιν. Καταπολεμεῖ τὴν παχυσαρκίαν καὶ τονώνει τὴν λειτουργίαν τοῦ ἐντέρου, ὠφελοῦσα καὶ ἐπὶ διαφόρων μορφῶν δυσπεψίας. Εἶναι δὲ ἀνυσιμωτέρα, ὅπου ἡ μάλαξις καὶ οἱ διὰ τῶν χειρῶν χειρισμοὶ ἀπεδείχθησαν ἀνεπαρκεῖς εἰς ἀπόδοσιν καλῶν ἀποτελεσμάτων. Ἀλλά, κατὰ γενικὸν κανόνα, οὐδέποτε πρέπει νὰ προκαλῇ κάματον ἡ μηχανοθεραπεία. Διὰ τοῦτο, μετὰ τὴν χρησιμοποίησιν μηχανημάτων ἐνεργητικῶν, ἐπιβάλλεται καὶ ἡ χρησιμοποίησις παθητικῶν, ἵνα ἐπιτευχθῇ ἀνάπαυλα τοῦ πάσχοντος. Οὕτω τὴν πνευστίασιν θὰ κατευνάσῃ ἡ παθητικὴ ἀναπνευστικὴ συσκευή, τὴν δὲ καρδιακὴν διέγερσιν θὰ προλάβῃ ἢ θὰ κατευνάσῃ ἡ προκάρδιος σεισμοθεραπεία. Σ. Γ. Σ.



Digitized by Google

**μηχανοκάϊκον** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Πλοιάριον, ἱστιοφοροῦν διὰ σακκολαίφης, προωθούμενον δὲ διὰ κωπῶν ὅταν εὑρίσκεται ἐν τῷ ἔργῳ, ὀξύπρυμνον μετὰ καταστρώματος, ἔχον εἰς τὸ κύτος τὴν ἀντλίαν τοῦ ἀέρος, δι' ἧς καταθλίβεται καὶ ἀποστέλλεται εἰς τὸν περιβεβλημένον τὸ σκάφανδρον καὶ ἐν τῷ θαλασσίῳ βυθῷ ἐργαζόμενον δύτην ἀναπνεύσιμος ἀήρ. Εἰς τὸ ἰσχίον τοῦ μηχανοκαΐκου παραμένει, διαρκούσης τῆς καταδύσεως, ὁ κολαουζιέρης ναύτης κρατῶν τὸ σχοινίδιον (κολαοῦζος), δι' οὗ ὁ δύτης τινάσσων αὐτὸ ζητεῖ τὴν ἀνέλκυσίν του. Τὰ μηχανοκάϊκα ἀδυνατοῦντα λόγῳ τῆς μικρότητός των νὰ παραλαμβάνωσιν ἐφόδια ἢ νὰ ἀποθηκεύωσι τοὺς ἁλιευομένους σπόγγους, συνοδεύονται ἀπὸ βρατσέρας, ντεπόζιτα ὀνομαζομένας. Τὰ σύγχρονα μηχανοκάϊκα καὶ ντεπόζιτα ναυπηγοῦνται πετρελαιοκίνητα. Σ. Ε. Λ.

**μηχανοκρατία** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ἡ θεωρία, καθ' ἣν τὰ πάντα τελοῦνται κατὰ τὴν τυφλὴν καὶ ἀναγκαίαν συνάρτησιν αἰτίας καὶ ἀποτελέσματος, δυνάμενα νὰ ἀναχθῶσιν εἰς στατικοὺς καὶ δυναμικοὺς νόμους. Τὴν μηχανικὴν περὶ τοῦ σύμπαντος θεωρίαν ἐδίδαξεν ἐκ μὲν τῶν παλαιῶν ὁ *Λεύκιππος* καὶ ὁ *Δημόκριτος*, ἐκ δὲ τῶν νεωτέρων ὁ *Χόββες*, ὁ *Σπινόζας* καὶ ἄλλοι. Εἶναι φανερὰ ἡ στενὴ σχέσις τῆς μηχανοκρατίας πρὸς τὸν ὑλισμόν· διὰ τοῦτο καὶ εὑρίσκομεν αὐτὴν πάντοτε συνεζευγμένην πρὸς αὐτὸν δι' ὅλης τῆς ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας. Ἡ πρὸς αὐτὴν ἀντίθετος θεωρία καλεῖται *τελολογία*, κατὰ τὴν ὁποίαν τὰ πάντα διέπονται ὑπὸ τῆς ἰδέας τοῦ σκοποῦ. Συμβιβασμὸς τῶν δύο ἀντιμαχομένων θεωριῶν πρὸς ἀλλήλας ἐπεχειρήθη πολλάκις καὶ κατὰ τὸ παρελθὸν καὶ κατὰ τοὺς νεωτάτους χρόνους ἰδίᾳ. Οὕτως ἀναγνωρίζεται μὲν ἡ κυριαρχία τῶν μηχανικῶν αἰτίων, ἀλλ' ὑποτάσσονται ταῦτα ὡς τελικὰ αἴτια, τῶν ὁποίων τὴν πραγματοποίησιν ἐξυπηρετοῦν (βλ. λ. *τελολογία*). Ν. Λ.

**μηχανολογία** (ἡ). Καλεῖται ἡ ἐπιστήμη ἡ ἀσχολουμένη μὲ τὰς μεθόδους καὶ τὰ μέσα, διὰ τῶν ὁποίων ὁ ἄνθρωπος προσπαθεῖ νὰ χρησιμοποιήσῃ τὴν ἐν τῇ φύσει ἐλευθέραν ἐνέργειαν πρὸς πλήρωσιν τῶν ὑλικῶν αὐτοῦ ἀναγκῶν, αἵτινες συνίστανται εἰς τὴν μετάθεσιν ἢ τὸν μετασχηματισμὸν σώματος κτλ. Τὰ μέσα ταῦτα καλοῦνται *μηχαναὶ* καθόλου, αἱ δὲ μέθοδοι ἢ οἱ ὅροι τῆς προσφόρου λειτουργίας αὐτῶν καθορίζονται ὑπὸ τῶν νόμων τῆς φυσικῆς. Διὰ τοῦτο ἡ μηχανολογία ἀνήκει εἰς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας, ἀποτελοῦσα οἱονεὶ τὸ ἐκτελεστικὸν ὄργανον τοῦ σκοποῦ αὐτῶν· ὑποδιαιρεῖται δὲ εἰς τέσσαρας κυρίως κλάδους:

1) Τὴν *θεωρητικὴν μηχανολογίαν*. Αὕτη ἐρευνᾷ τοὺς δυνατοὺς τρόπους τῆς συνεχοῦς (δηλαδὴ διὰ μηχανῶν) μετατροπῆς τῆς ὑπαρχούσης ἐν τῇ φύσει ἐνεργείας εἰς ἔργον μηχανικόν. Ἀντιστοίχως πρὸς τὸ διατιθέμενον εἶδος ἐνεργείας (θερμότης, πτῶσις ὕδατος, ροή, ἄνεμος) εὑρίσκει τὸν οἰκονομικώτερον τρόπον μετατροπῆς καὶ ὑποδεικνύει τοὺς ὅρους, ὑφ' οὓς πραγματοῦται αὕτη ἐν μηχανῇ. Οἱ ὅροι δὲ ἢ αἱ συνθῆκαι τῆς οἰκονομικῆς μετατροπῆς ἐν συνδυασμῷ πρὸς πρακτικὰς ἀνάγκας ἐπιβάλλουν τὸ ὑλικόν, τὴν μορφὴν ἐν γενικαῖς γραμμαῖς καὶ τὰς κυρίας διαστάσεις τῶν τοιούτων μηχανῶν, τῶν κινητηρίων ἢ κινητήρων (βλ. λ. *μηχανή*) Ἡ θεωρητικὴ μηχανολογία ἀσχολεῖται ἐπὶ πλέον μὲ τὴν ροὴν τῆς ἐνεργείας διὰ μέσου πασῶν τῶν κυρίως μηχανῶν, δηλαδὴ μὲ τὰς κινητικὰς καὶ δυναμικὰς συνθήκας τῶν διαφόρων στοιχείων τῶν μηχανῶν καὶ καταλήγει εἰς τὸ νὰ ὑποδείξῃ τὰ μέσα διὰ τὴν ἀσφαλῆ, ἤρεμον καὶ ὁμοιόμορφον λειτουργίαν αὐτῶν (ρυθμιστάς, σφονδύλους, ἀντίβαρα κτλ.). Οἱ τρόποι καὶ τὰ ὄργανα ἐλέγχου τῆς οἰκονομικῆς καὶ ἀσφαλοῦς λειτουργίας τετελεσμένων μηχανῶν ἀποτελοῦν ἐπίσης ἀντικείμενον τῆς θεωρητικῆς μηχανολογίας, ἡ ὁποία τέλος ὑποδεικνύει ὁδοὺς πρὸς λύσιν τοῦ προβλήματος τῆς μορφώσεως μηχανισμοῦ πρὸς μετατροπὴν δοθείσης κινήσεως σώματος εἰς ὡρισμένην κίνησιν ἑτέρου σώματος.

2) Τὴν *κατασκευὴν τῶν μηχανῶν*. Αὕτη, βασιζομένη εἰς τὰ ἐξαγόμενα τῆς θεωρητικῆς μηχανολογίας, τῆς ἀντοχῆς τῆς ὕλης, τῆς στατικῆς καὶ τῆς μεταλλουργίας, καθορίζει τὰς μορφάς, τὸ ὑλικὸν καὶ τὰς διαστάσεις ἐκτελέσεως ἑκάστου τῶν στοιχείων τῶν διαφόρων μηχανῶν.

3) Τὴν *γενικὴν μηχανολογίαν*. Αὕτη ἀσχολεῖται μὲ τὴν κατάταξιν, τὴν περιγραφὴν καὶ τὴν ἱστορικὴν ἐξέλιξιν τῶν μηχανῶν ἀπὸ ἀπόψεως ἐξωτερικῆς συνθέσεως καὶ ἐσωτερικῆς λειτουργίας.

4) Τὴν *μηχανικὴν τεχνολογίαν*. Ὁ εὐρύτατος οὗτος κλάδος τῆς μηχανολογίας ἀσχολεῖται μὲ τὰς *ἐργομηχανάς*, αἵτινες δέχονται ἔργον μηχανικὸν ἀπὸ τὰς κινητηρίους μηχανὰς καὶ τὸ χρησιμοποιοῦν διὰ τὸν μετασχηματισμὸν ἢ τὴν μετάθεσιν σώματός τινος. Ἔχουσα ὑπ' ὄψιν τὴν διατιθεμένην πρώτην ὕλην καὶ τὴν ἐπιδιωκομένην χρήσιμον μορφήν, μελετᾷ ἡ μηχανικὴ τεχνολογία τῶν προσφορωτέραν λειτουργίαν τοῦ μετασχηματισμοῦ καὶ μορφώνει τὴν ἀντίστοιχον ἐργομηχανὴν ἀπὸ μηχανισμοὺς κατὰ τὸ δυνατὸν ἁπλουστέρους καὶ ὀλιγαριθμοτέρους. Α. ΜΙΧΑΛΟΠΟΥΛΟΣ

**μηχανολογικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μηχανολογίαν: «μηχανολογικὴ σχεδιογράφησις».

**μηχανολόγος** (ὁ, ἡ)· ἐπιστήμων ἀσχολούμενος εἰδικῶς εἰς τὴν ἐπίβλεψιν καὶ χειρισμὸν μηχανῶν, εἰς τὴν ἐφαρμογὴν μηχανικῶν μέσων κτλ.

**μηχανοπέδη** (ἡ). Μηχάνημα πεδήσεως, ἐν χρήσει εἰς σιδηροδρόμους καὶ τροχιοδρόμους, λειτουργοῦν διὰ πεπιεσμένου ἀέρος (βλ. *πέδη*).

**μηχανοποιεῖον** (τό)· τόπος κατασκευῆς μηχανῶν (βλ. *μηχανουργεῖον*).

**μηχανοποίησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ οἱονεὶ εἰς μηχανὴν μεταβολὴ ἢ διὰ μηχανῆς κατ' ἐξοχὴν συντέλεσις: «μηχανοποίησις τῆς παραγωγῆς» ἢ ἐφαρμογὴ τῆς μηχανῆς εἰς εὐρεῖαν καὶ διαρκῶς αὔξουσαν κλίμακα.

**μηχανοποίητος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ διὰ μηχανῆς κατασκευασθείς, ἀντίθ. *χειροποίητος*: «μηχανοποίητα ὑποδήματα,—σιγαρέτα».

**μηχανοποιὸς** (ὁ)· ὁ κατασκευάζων μηχανάς, μηχανουργός.

**μηχανορραφία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μηχανορράφου, ραδιουργία, σκευωρία, δόλος, δολοπλοκία: «διὰ τῶν μηχανορραφιῶν του προκαλεῖ διαμάχας μεταξὺ φίλων».

**μηχανορράφος** (ὁ, ἡ)· ὁ μηχανορραφῶν, ὁ δημιουργῶν σκευωρίας, δολοπλόκος, ραδιοῦργος.

**μηχανορραφῶ** (*—έω*)· εἶμαι μηχανορράφος, σκευωρῶ, ραδιουργῶ, δολοπλοκῶ: «δὲν παύει μηχανορραφῶν καὶ ἐμπλέκων εἰς δόλους τοὺς συνεργάτας του».

**μηχανοσεισμοθεραπεία** (ἡ) *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *δονησιθεραπεία*.

**μηχανοστάσιον** (τό). Χῶρος ἐν τῷ ὁποίῳ εἶναι ἐγκατεστημέναι καὶ ἐργάζονται μηχαναί, κυρίως κινητήριοι μηχαναί. Ἐὰν πρόκειται περὶ ἀτμομηχανῶν, τὸ μηχανοστάσιον τοποθετεῖται παραπλεύρως τοῦ λεβητοστασίου, οὕτως ὥστε αἱ σωληνώσεις τοῦ ἀτμοῦ νὰ εἶναι ὅσον τὸ δυνατὸν βραχύτεραι. Οἱ ἐν τῷ μηχανοστασίῳ ἐργάται παρακολουθοῦν τὴν λειτουργίαν τῶν μηχανῶν, φροντίζουν διὰ τὴν ἐπαρκῆ καὶ κατάλληλον λίπανσιν, διὰ τὴν τήρησιν τοῦ ἀπαιτουμένου ἀριθμοῦ τῶν στροφῶν κτλ. Εἰς τὰ ἐργοστάσια παραγωγῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας, τὸ μηχανοστάσιον εὑρίσκεται εἰς συνεχῆ ἐπικοινωνίαν μετὰ τοῦ πίνακος διανομῆς, πρὸς κανονισμὸν διαφόρων ζητημάτων ἐκκινήσεως, κρατήσεως, αὐξήσεως ἢ ἐλαττώσεως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν στροφῶν κ.τ.τ. Εἰς τὴν σιδηροδρομικὴν γλῶσσαν καλεῖται μηχανοστάσιον ὁ χῶρος, ἐν ᾧ παραμένουν αἱ ἀτμάμαξαι ἢ ἠλεκτράμαξαι κατὰ τὰς ὥρας τῆς ἀναπαύσεώς των, καὶ ἐν τῷ ὁποίῳ δύνανται νὰ ὑποβληθοῦν εἰς μικρὰς ἐπιδιορθώσεις βλαβῶν ἢ καθαρισμούς. Γ. Θ. Κ.

**μηχανοτεχνίτης** (ὁ)· τεχνίτης ἐργαζόμενος εἰς τὴν κατασκευήν, συντήρησιν, ἐπιδιόρθωσιν ἢ καὶ ἐκμετάλλευσιν οἱασδήποτε μηχανῆς.

**μηχανουργεῖον** (τό). Ἐργοστάσιον κατασκευῆς μηχανῶν ἐν γένει· εἰδικώτερον τὸ τμῆμα τοιούτων ἐργοστασίων, ἐν τῷ ὁποίῳ γίνεται ἡ δι' ἐργομηχανῶν κατεργασία τῶν τεμαχίων τῶν ἐν τῷ ἐργοστασίῳ κατασκευαζομένων ἢ ἐπισκευαζομένων μηχανῶν. Τὸ μηχανουργεῖον περιλαμβάνει τὸ ἐφαρμοστήριον, ἐν τῷ ὁποίῳ γίνονται στοιχειώδεις κατεργασίαι διὰ χειροκινήτων ἐργαλείων (λιμάρισμα, κοπίδιασμα κ.τ.τ.), καὶ τὸ κυρίως μηχανουργεῖον, τὸ ὁποῖον περιλαμβάνει τὰς ἐργομηχανὰς κατεργασίας. Διαιρεῖται δὲ τὸ κυρίως μηχανουργεῖον, ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῶν μηχανῶν, εἰς διάφορα τμήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: τμῆμα τόρνων, τμῆμα πλανῶν, τμῆμα τρυπάνων, τμῆμα ἐκγλυφάνων (φρεζῶν) κτλ. Γ.Θ.Κ.

**μηχανουργία** (ἡ)· τὸ ἔργον τοῦ μηχανουργοῦ, ἡ κατασκευὴ μηχανῶν.

**μηχανουργικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μηχανουργίαν, ὁ τῆς μηχανουργίας: «μηχανουργικὰ ἐργαλεῖα».

**μηχανουργὸς** (ὁ, ἡ)· ὁ κατασκευάζων μηχανάς, ἐν γένει ὁ τεχνίτης τῶν μηχανῶν.

— *[Στρατ.] Μηχανουργὸς* καλεῖται ἐν τῷ στρατῷ ὁ ἀρχιτεχνίτης ὁ ἐπιφορτιζόμενος τὴν ἐπίβλεψιν καὶ τὰς ἐν γένει ἐπισκευὰς τῶν διαφόρων ὑλικῶν, διακρινόμενος εἰς μηχανουργὸν πυροβόλων ἢ αὐτοκινήτων ἢ ἀεροπλοίας. Ν. Θ. Κ.

**μηχανῶμαι** (*—άομαι*)· ἐπινοῶ, ἐφευρίσκω τρόπον, ἄλλως *μηχανεύομαι* (βλ. λ.).

**μὶ** (mi). Τρίτος φθόγγος τῆς εὐρωπαϊκῆς μουσικῆς, προελθὼν ἐκ τοῦ στίχου τοῦ ὕμνου πρὸς

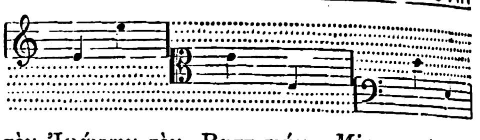

τὸν Ἰωάννην τὸν Βαπτιστήν: *Mira gestorum*. Ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ Ε τῶν Γερμανῶν καὶ Ἄγγλων.

**μία,** γεν. *μιᾶς*, κοιν. *μιά*, γεν. *μιανῆς*· θηλ. τοῦ *εἷς* (βλ. λ.)· ἀριθμ. ἀπόλυτον: «μιὰ βελόνα,—δραχμή, —πέννα», «μία σου καὶ μία μου» ἐπὶ διανομῆς ἐξ ἴσου ἢ ἀμοιβαιότητος, «μιὰ 'ς τὸ καρφὶ καὶ μιὰ 'ς τὸ πέταλο», «μιὰ τοῦ φίλου, δυὸ τοῦ φίλου, τρεῖς καὶ τὴν κακή του μέρα» ἐπὶ ἐνοχλητικοῦ φίλου διαρκῶς ἀξιοῦντος ὑπηρεσίας, «ἔφαγε παρὰ μίαν τεσσαράκοντα»· || φρ. «μὲ μιᾶς» ἄλλως «διὰ μιᾶς» ἄλλως «μονομιᾶς» ἀμέσως, ἐφάπαξ: «τὰ ἔφαγε ὅλα διὰ μιᾶς»· || ἡ αὐτή: «μιὰ κουβέντα λέμε», «μιὰ γνώμη ἔχουν ὅλοι τους»· || μία καὶ ὄχι ἄλλη, μία μόνον: «μία εἶναι ἡ Ἑλένη», «μιὰ εἶναι ἡ Ἀθήνα», «μιὰ εἶναι, μὰ ἀξίζει»· || φρ. «εἶναι μιὰ κακὴ ποῦ δὲ λέγεται» ἢ «εἶναι μιά, ποῦ Θεὸς νὰ σὲ φυλάξῃ», «ἔχω μιὰ πεῖνα ποῦ δὲ βλέπω μπρός μου»· || «μιὰ καὶ μιά», κάθε μιὰ ξεχωριστή, ἐκλεκτή: «οἱ γυναῖκες αὐτοῦ τοῦ χωριοῦ εἶναι μιὰ καὶ μιὰ 'ς τὴν ὀμορφιά»· || «μία—μία» ἢ «μιὰ—μιὰ» ἀνὰ μίαν· || ὡς ἀόριστος ἀντωνυμία: «μιὰ γυναῖκα, μιὰ φορά, μιὰ μέρα», «μιὰ φορὰ κι' ἕναν καιρὸ μπῆκε ἡ γάτα 'ς τὸ χορό»· || «ἂς ἔρθῃ μιὰ ἀπὸ σᾶς», «ἀπὸ τὶς πολλὲς φορὲς ποῦ πάει ἡ στάμνα 'ς τὴ βρύση, μιὰ φορὰ θὰ σπάσῃ»· || «μία τις» ἄλλως «μιὰ κάποια» ἢ ἁπλῶς «κάποια»· || πρὸς δήλωσιν ἀλληλοπαθείας: «ἡ μιὰ τῆς ἄλλης ἔλεγε», «πᾶρε τὴ μιά, χτύπα την 'ς τὴν ἄλλη»· || «μιὰ ποῦ ἦρθες» ἀφοῦ ἅπαξ ἦλθες, «μιὰ ποῦ ἀποφάσισες νὰ παντρευτῇς, ἡ ὥρα ἡ καλὴ νὰ εἶναι».

**Μιάβα** (σλοβ. Myiava) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἐν τῇ νοτιοδυτικῇ Σλοβακίᾳ. Κεῖται ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ Μιάβα. Κάτ. 9.300 περίπου. Γ. Ι. Β.

**Μιαγκάο** (Miagao) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς νήσου Πανάϋ τῶν Φιλιππίνων. Κάτ. 18.500, ὁμιλοῦντες τὴν διάλεκτον τῶν Βισάγια. Π. Γ. Λ.

**Μιαῖζεν** (Miösen) *[Γεωγρ.]*. Ἡ μεγαλυτέρα λίμνη τῆς Νορβηγίας (βλ. λ. *Μγιαῖσεν*).

**μιαίνω,** ἀόρ. *ἐμίανα—ἐμιάνθην*, παθ. μετχ. *μεμιασμένος*· κηλιδῶ, ρυπαίνω, λερώνω· || μεταφ., κηλιδῶ ἠθικῶς, βεβηλῶ, μολύνω: «μεμιασμένη ψυχή».

**μιαιφονία** (ἡ)· μίασμα, μόλυσμα ἕνεκα φόνου. ἡ πρᾶξις τοῦ μιαιφόνου, φόνος.

**μιαιφόνος** (ὁ, ἡ)· ὁ ἕνεκα φόνου μεμιασμένος, φονεύς, αἱμοδιψής.

**μιαιφονῶ** (*—έω*)· γίνομαι μιαιφόνος, μιαίνομαι, μολύνομαι διὰ φόνου, φονεύω.

**μιακίδαι** (οἱ) (Miacidae Cope) *[Παλαιοζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν φυλὴν τῶν *εὐκρεωδῶν σαρκοφάγων* θηλαστικῶν. Ἦσαν μικρὰ ἢ μεσαίου μεγέθους ἁρπακτικὰ σαρκοβόρα, τὰ ὁποῖα κατὰ τὴν ὀδοντοστοιχίαν των ὡμοίαζον ὁτὲ πρὸς τοὺς βιβερρίδας, ὁτὲ πρὸς τοὺς ἀρχαιοτέρους κυνίδας καὶ τοὺς ἀρκτίδας, τῶν ὁποίων ἀποτελοῦν ἀναμφισβητήτως τοὺς προπάτορας. Ὁ ἐγκέφαλός των ἐδείκνυε μεγαλυτέραν προοδευτικὴν ἐξέλιξιν ἔναντι τῶν ἄλλων κρεοδοντίων. Τὰ ἄκρα των ἦσαν πενταδάκτυλα. Τὰ κυριώτερα εἴδη εἶναι ὁ *βιβερράβος*, ἡ *διδυμικτίς*, ὁ *μίακις*, ὁ *οὐϊντακύων*, ὁ *βασσακύων*, ὁ *ὠοδείκτης* καὶ ὁ *βουλπάβος*.

Λείψανα τῶν ζῴων τούτων εὑρέθησαν ἀπολιθωμένα ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως ἐν Εὐρώπῃ καὶ Βορ. Ἀμερικῇ. Γ. Κ. Γ.

**μίακις** (ὁ) (Miacis Cope) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μιακιδῶν εὐκρεωδῶν σαρκοφάγων* θηλαστικῶν. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν στρωμάτων τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τοὺς φωσφορίτας τοῦ Quercy καὶ εἰς τὰ ὁμήλικα στρώματα τοῦ Wasatsch, Bridger καὶ Uinta τῆς Βορ. Ἀμερικῆς. Γ. Κ. Γ.

**Μιάκο** (Miako) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰαπωνίας, ἄλλως καλουμένη *Κιότο* (βλ. λ.).

**Μίακον** (Miacum) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ταρρακωνικῆς Ἱσπανίας, κειμένη ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Καρπητανῶν, μεταξὺ τοῦ ὄρους Juga Carpetana (νῦν Sierra Guadarrama) καὶ τοῦ Ταγωνίου ποταμοῦ (νῦν Tajuna). Σήμερον καλεῖται Carro de Meaques, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς. Α. Θ. Σ.

**Μιακότιν,** ***Βενέδικτος Ἀλεξάνδροβιτς***. Σύγχρονος Ρῶσος ἱστοριοδίφης καὶ πολιτικός. Ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1905, ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἐτάχθη εἰς τὸ κόμμα τῶν σοσιαλδημοκρατῶν. Μετὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Β' συνέπραξε μετὰ τοῦ Κερένσκυ κατὰ τῶν Μπολσεβίκων, παρ' ὧν φυλακισθεὶς τῷ 1920

Digitized by Google

ἐξωρίσθη τῷ 1922. Ἔκτοτε ἐγκατασταθεὶς εἰς Πράγαν ἀσχολεῖται εἰς τὴν ἱστορίαν. Συνέγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς: «Τὸ ἐν Πολωνίᾳ ἀγροτικὸν ζήτημα κατὰ τοὺς χρόνους τῆς διανομῆς της», «Ἱστορία τῆς ρωσικῆς κοινωνίας», «Ὁ σοσιαλισμὸς ἐν Οὐκρανίᾳ κατὰ τὸν ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνα», «Αἱ μεταρρυθμίσεις τοῦ Μεγάλου Πέτρου» κλπ. Θ. Β.

**Μιὰ Μηλιὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λευκωσίας καὶ τῷ διαμερίσματι Κυθρέας. Κάτ. 500 περίπου, Ἕλληνες ὀρθόδοξοι. Α.Κ.Α.

**Μιάμι** (Miami) *[Γεωγρ.]*. Πόλις, ποταμὸς καὶ διῶρυξ ἐν Ἀμερικῇ (βλ. λ. *Μαϊάμι*).

**Μιαμοῦ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καινουρίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 520. Παρὰ τὸ χωρίον εὑρέθη μικρὸν σπήλαιον, ἐντὸς τοῦ ὁποίου οἱ Ἰταλοὶ ἀνέσκαψαν καὶ ἀνεῦρον νεολιθικά τινα ἀγγεῖα καὶ ὄστρακα καὶ πολλὰ ὀστᾶ. Στρῶμα ἀποσυντεθειμένων ὀργανικῶν οὐσιῶν, πολλὰ ἴχνη πυρᾶς, ὀστᾶ κεκαυμένα ζῴων, μικρὰ ἐργαλεῖα κατεσκευασμένα ἐξ ὀστῶν, πείθουν ὅτι τὸ σπήλαιον ἐχρησίμευσεν ἐπὶ πολὺν χρόνον ὡς κατοικία ἀνθρώπων τῆς νεολιθικῆς ἐποχῆς. Ἀγγεῖα ὁλόκληρα ἐλάχιστα διεσώθησαν, ὧν τινα ἐγχάρακτα. Ν. Ε. Π.

**Μιαμοὺν - Μεριτουμοῦ.** Φαραὼ τῆς Κ' δυναστείας, 4ος υἱὸς τοῦ Ραμσῆ Γ' καὶ 4ος διάδοχος τοῦ Ραμσῆ Ε'. Οἱ τρεῖς τούτου προηγηθέντες εἰς τὸν θρόνον ἦσαν Ραμσῆς ΣΤ', Ζ' καὶ Η' (ΙΓ' αἰῶνα π. Χ.).

**Μιανὲς** *Κοκκινόγια [Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τοῦ νομοῦ Λακωνίας (βλ. *Κοκκινόγια Μιανές*). Χ. Δ.

**Μιάνης.** Ὄνομα δύο Ἑνετῶν δουκῶν τῆς Κρήτης. —1) *Πέτρος*, 64ος δοὺξ τῆς Κρήτης, ἀπὸ τοῦ 1343 μέχρι τοῦ 1345. —2) *Παῦλος-Ἀντώνιος*, 148ος δοὺξ τῆς Κρήτης, ἀπὸ τοῦ 1510 μέχρι τοῦ 1512. ΕΡ. Μ.

**Μιάνι** (Miani), *Ἰωάννης*. Βενετὸς ναύαρχος, γεννηθεὶς ἐν Βενετίᾳ τῷ 1332 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1399. Διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1383 ναύαρχος τοῦ ἐν Ἰονίῳ πελάγει βενετικοῦ στόλου, ὅτε ἡ Κέρκυρα ἀπελάμβανε μὲν αὐτοδιοικήσεως, ἀλλ' αἱ δυνάμεις της δὲν ἦσαν ἐπαρκεῖς ὅπως ἀποκρούσῃ τὰς διηνεκεῖς ἐπιθέσεις ἐκ τῆς Ἀνατολῆς καὶ τῆς Δύσεως, διὸ ἐπεζήτησε νὰ ταχθῇ ὑπὸ τὴν Βενετίαν, ὅπως ἐξασφαλισθῇ ἀπὸ τῶν ἔξωθεν ἐπιδρομῶν. Οἱ προὔχοντες αὐτῆς ἦλθον εἰς τοιαύτας διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ Βενετοῦ προξένου Ἰωάννου Πενεζάσκου, ἡ δὲ βενετικὴ κυβέρνησις ἀνέθεσεν εἰς τὸν Μιάνι τὴν διεξαγωγὴν τοῦ ζητήματος, ὅστις ἔφερε τοῦτο εἰς πέρας καὶ συνωμολόγησε μετὰ τῶν προὐχόντων Κερκύρας συνθήκην, διὰ τῆς ὁποίας ἀποκατεστάθη οὗτος ἀρχηγὸς καὶ διοικητὴς τῆς νήσου, περιβληθεὶς πᾶσαν ἐξουσίαν, τῷ 1386. Κατὰ τὴν 8 Ἰανουαρίου 1387 οἱ ἀντιπρόσωποι τῆς Κερκύρας ὑπέγραψαν ἐν Βενετίᾳ τὴν συνθήκην, δι' ἧς ἡ Κέρκυρα περιῆλθεν εἰς τὴν Βενετικὴν δημοκρατίαν. Θ. Β.

— **Μιάνι** (Miani), *Ἰωάννης*. Ἰταλὸς ἐξερευνητὴς (1810—1872). Ἔζησεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη ἐν Χαρτοὺμ εἰς τὴν ὑπηρεσίαν ἐμπόρου δούλων καὶ κατὰ τὰ ἔτη 1859—1860 ἐταξίδευσεν εἰς τὸ ἐσωτερικόν, ἀνελθὼν τὸ ρεῦμα τοῦ ποταμοῦ Γκοντοκόρο. Τῷ 1864 ἐξηρεύνησε μετὰ τοῦ Σβαίνφουρτ τὸν ἰσθμὸν τοῦ Σουὲζ καὶ τῷ 1871—1872 ἐπεχείρησε δεύτερον ταξίδιον εἰς τὰς χώρας τοῦ Ἰσημερινοῦ, ὅπου ἀπωλέσθη εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Μονμπουττοῦ. Ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον: «Ἀποστολὴ πρὸς τὰς πηγὰς τοῦ Νείλου» (1860), μετὰ δὲ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθη «Τὸ ταξίδιον τοῦ Μιάνι εἰς Μονμπουττοῦ» (1875). Μ. Δ. Β.

**μίανσις,—εως** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μιαίνειν, μολυσμός, βεβήλωσις.

**Μιάο-τσέ.** Ἀρχαῖος ἰθαγενὴς λαὸς τῆς Κίνας, ζῶν σήμερον εἰς τὸ νότιον μόνον αὐτῆς τμῆμα, ἐπὶ τῶν ὀρέων ἰδίως τῶν κειμένων μεταξὺ τῶν ἐπαρχιῶν Κουὰνγκ-Τούγκ, Κουὰνγκ-Σί, Κουεϊ-Τσέου, Γιουννὰν, Σὲ-Τουὲν καὶ Χουπέ.

— *[Ἐθνογρ.]* Ἀπὸ ἀρχαιοτάτων χρόνων οἱ Κινέζοι ἱστορικοὶ ἀναφέρουν ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μιάο-τσέ* (=αὐτόχθονες) ἀνυπότακτά τινα ἰθαγενῆ φῦλα, ἅτινα κατῴκουν κατὰ τὰ κεντρικὰ καὶ νότια τῆς ἀπεράντου χώρας. Αἱ φυλαὶ αὗται ἀπωθήθησαν βαθμηδὸν πρὸς τὰς ὀρεινὰς δυσπροσίτους περιοχάς, ὅπου καὶ ὑφίστανται ἀκόμη. Οἱ ἐθνολόγοι ἐχαρακτήριζον ἐν ἀρχῇ τοὺς Μιάο-τσὲ ὡς ἐξ ὁλοκλήρου διαφέροντας ἀνθρωπολογικῶς ἀπὸ τῶν Κινέζων. Ἄλλοι τοὺς κατέτασσον εἰς τὴν φυλὴν τῶν Σιαμαίων, ἄλλοι δὲ εἰς τὴν τῶν Μοΐ τῆς Ἰνδοκίνας. Πάντως, τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι διαφέρουν οὐσιωδῶς ἀπὸ πάντα τὰ λοιπὰ κινεζικὰ ἀθροίσματα, τὰ ὁποῖα ἄλλως τε ἔχουν συναναμειχθῆ πρὸς αὐτούς. Εἶναι μικροῦ ἀναστήματος, ἀλλὰ περισσότερον εὐσωμοι τῶν ἄλλων Κινέζων, οἱ ὀφθαλμοὶ των δέ, κατὰ κανόνα, δὲν εἶναι ἀποστενωμένοι ὅπως ἐκείνων καὶ τὸ τρίχωμά των εἶναι ὀλιγώτερον σκληρόν. Οἱ Κινέζοι τοὺς θεωροῦν ὡς ἀνθρώπους χαμηλοτέρου ἐπιπέδου, τοῦτο ὅμως δὲν σημαίνει ὅτι εἶναι κατώτεροί των σωματικῶς καὶ διανοητικῶς. Ἡ καθυστέρησις τὴν ὁποίαν ἐμφανίζουν τινὲς ἐκ τῶν ὁμάδων των, ὀφείλεται ἀφ' ἑνὸς εἰς τὸ ὅτι εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου σχεδὸν ἀνοργάνωτοι καὶ εἰς τὰς συνεπείας ἀφ' ἑτέρου τῶν βιοτικῶν στερήσεων. Γνωρίζουν καλῶς τὴν γεωργίαν, ἀλλὰ δὲν ἀποκομίζουν ἐξ αὐτῆς ἀξιόλογα ὠφελήματα, λόγῳ τῆς εἰς ὀρεινὰ μόνον μέρη καὶ ἀσταθοῦς ἄλλως τε διαμονῆς των. Εἶναι δ' ἐξ ἄλλου ἐπιδέξιοι ὑφανταί, καλοὶ μουσικοὶ καὶ φαίνεται ὅτι ἔχουν εἶδός τι γραφῆς καὶ βιβλία. Ὅσον ἀφορᾷ τὰς θρησκευτικὰς δοξασίας, οἱ Μιάο-τσὲ ἔχουν ἀποδεχθῆ τὸν βουδισμὸν συγκεκερασμένον μὲ τὴν θρησκείαν τῶν πνευμάτων καὶ τῶν ψυχῶν τῶν προγόνων, ἥτις ἄλλως τε ὑπῆρξεν ἡ ἀρχαιοτέρα καὶ κοινὴ εἰς ὅλους τοὺς λαοὺς τῆς Κίνας. Ἄνδρες καὶ γυναῖκες τρέφουν μακρὰν κόμην, ἀναδιπλουμένην εἰς κόρυμβον, καλύπτουν δὲ τὴν κεφαλήν των διὰ σαρικίου ἢ πίλου κωνικοῦ. Τὸ ἔνδυμά των ἀποτελεῖται ἐξ εἴδους χιτῶνος ἐκ πανίου ἢ μαλλίνου ὑφάσματος καὶ ἡ ὑπόδησίς των ἀπὸ ψιάθινα σανδάλια. Οἱ γάμοι παρ' αὐτοῖς γίνονται δι' ἐλευθέρας ἐκλογῆς τῶν νέων, τὰ δὲ δικαστήριά των συγκροτοῦνται ἀπὸ γέροντας, τῶν ὁποίων αἱ ἀποφάσεις εἶναι μορφῆς διαιτητικῆς. Ὅσον ἀφορᾷ ὅμως τὸ ἔγκλημα τοῦ φόνου, ἡ ἐκδίκησις τοῦ αἵματος ἰσχύει μέχρι καὶ τῆς ἐνάτης γενεᾶς.

Οἱ Μιάο-τσὲ εὑρίσκονται ἀπὸ εἴκοσι καὶ πλέον αἰώνων εἰς ἀμείλικτον πόλεμον πρὸς τοὺς Κινέζους, ἄλλοτε ἐκτελοῦντες αὐτοὶ ἐπιδρομὰς καὶ λεηλασίας εἰς βάρος τούτων, ἄλλοτε δὲ ὑφιστάμενοι ἐκ μέρους των ἀγρίας ἐπιθέσεις καὶ σφαγάς. Κατὰ τὰς τελευταίας ἐν τούτοις δεκαετηρίδας ἡ ὀξύτης τῆς μεταξύ των ἔχθρας ἔχει ὁπωσδήποτε ἀμβλυνθῆ. Σήμερον ἀρκετὰ τμήματα τῶν Μιάο-τσὲ ἔχουσιν ὑποταχθῆ, καλοῦνται δὲ οὗτοι *Μιάο-τσούγκ*, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τῶν *Μιάο-τσέγκ*, τῶν ἀνυποτάκτων. Μεταξὺ τῶν Μιάο-τσούγκ συγκαταλέγονται οἱ ζῶντες εἰς τὴν περιφέρειαν Κουὰνγκ-Σί, εἰς τοὺς ὁποίους ἤδη ἀπὸ τοῦ 1730 εἶχε παραχωρήσει ὁ αὐτοκράτωρ Γιουνγκ-Τσίνγκ ἱκανὰς πεδινὰς ἐκτάσεις.

Οἱ Μιάο-τσὲ ὁμιλοῦσι ποικίλας διαλέκτους, αἵτινες ὅμως ἀνάγονται πᾶσαι εἰς τὴν ἰνδοσινικὴν ὁμογλωσσίαν. —Ω.

**Μιαούλη** *ἀκτὴ [Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ἀνατολικὴ ἀκτὴ τοῦ προλιμένος τοῦ Πειραιῶς, ἡ κατὰ τὸ Βασιλικὸν Περίπτερον, ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ τέρματος τῆς προκυμαίας τοῦ Κανθάρου μέχρι τοῦ μώλου. Ἐκλήθη δ' οὕτω ἀπὸ τοῦ ναυάρχου Ἀνδρέου Μιαούλη, ἔνθα καὶ ὁ τάφος αὐτοῦ. Α.Σ.Χ.

— **Μιαούλη** *μῶλος*. Ὁ δεξιᾷ τῷ εἰσπλέοντι, κατὰ τὸ Ἄλκιμον. Ἐνταῦθα καὶ καθ' ὅλον τὸ μῆκος τῆς Ἀκτῆς (Πειραϊκῆς Χερσονήσου) σῴζονται τὰ ἐρείπια τοῦ ἀρχαίου τείχους τοῦ Πειραιῶς, τοῦ περιβάλλοντος τὴν τότε πόλιν μετὰ τῶν λιμένων. Α. Σ. Χ.

— **Μιαούλη** *ὕφαλος [Γεωγρ.]*. Ὀνομασία δοθεῖσα ὑπὸ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου εἰς ὕφαλον τοῦ Ἰονίου ἐν τῇ Τηλεβοΐδι θαλάσσῃ (Miaulis rock, πλάτ. 38°44'45'' Β., μῆκ. 20°47'00'' Ἀν.; χάρτ. ἀγγλ. 1609: Port Drepano, ναυτιλ. ὁδηγ. Mediter. pilot III, 309 ἔκδ. 1908), ἀπὸ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἀνακαλύψαντος αὐτὴν ὑποπλοιάρχου Ἀνδρ. Ἀντ. Μιαούλη. Εὑρισκομένη πρὸ τοῦ ἀκαρνανιακοῦ αὐλῶνος *Βαθεῖα Βάλη*, ἀποτελεῖ τὸ σύνορον οἱονεὶ τῶν κολπιζόντων ὅρμων τῆς *Ζαβέρδας* καὶ τοῦ *Ἀλεξάνδρου* ἢ *Δρεπάνου* τῆς Λευκάδος. Σ. Ε. Λ.

**Μιαούλης.** Ὄνομα ἱστορικῆς οἰκογενείας, ἥτις φέρουσα ἀρχικῶς τὸ ὄνομα *Βῶκος* (βλ. λ.) ἔλαβε τὸ ὄνομα *Μιαούλης* ἐκ τοῦ υἱοῦ τοῦ Δημ. Βώκου καὶ ναυάρχου τῆς Ἐπαναστάσεως *Ἀνδρέα Μιαούλη* (βλ. κατωτ.).

— **Μιαούλης,** *Ἀθανάσιος Ἀνδρ.* Ἕλλην ναυτικὸς καὶ πολιτικός, υἱὸς τοῦ ναυάρχου Μιαούλη, γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1815 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1867. Τὰ ἑλληνικὰ γράμματα ἐδιδάχθη ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Ἰωάννου ἐν τῇ ναυαρχίδι τοῦ πατρός του. Τῷ 1829 εἰσήχθη εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Μονάχου ὡς ὑπότροφος τοῦ βασιλέως τῆς Βαυαρίας Λουδοβίκου. Ἐξελθὼν αὐτῆς ὑπηρέτησεν ἐπὶ τριετίαν εἰς τὸν ἀγγλικὸν στόλον καὶ ἐπιστρέψας εἰς Ἑλλάδα κατετάχθη εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικὸν καὶ προσελήφθη ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Ὄθωνος. Εἰσῆλθεν εἶτα εἰς τὴν πολιτικήν, ἐκλεγεὶς βουλευτὴς Ὕδρας, καὶ τὴν 29 Σεπτεμβρίου 1855 ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ναυτικῶν ἐπὶ κυβερνήσεως Δημητρίου Βούλγαρη, ὅτε ἐξηκολούθει εἰσέτι ἡ γαλλικὴ κατοχή. Μετὰ τὴν παραίτησιν τῆς κυβερνήσεως Βούλγαρη (1857), λόγῳ διαφωνίας τοῦ πρωθυπουργοῦ πρὸς τὸ στέμμα, ἀνετέθη ἡ πρωθυπουργία εἰς τὸν Ἀθανάσιον Μιαούλην, ἤρξατο δὲ τότε νέα πολιτικὴ καὶ κοινωνικὴ ζύμωσις. Ἐνῷ δὲ ἐπιστεύετο ὅτι ἡ χώρα εὑρίσκετο ἐν πλήρει γαλήνῃ, ἤρξατο αἴφνης σφοδρὰ ἐπίθεσις τῆς βασιλείας ἀντιπολιτευσις, ἀρχικῶς μὲν λόγῳ τοῦ ζητήματος τῆς διαδοχῆς, βραδύτερον δὲ ἐπὶ τῷ λόγῳ ὅτι ὁ βασιλεὺς εἶχε προσδεθῆ εἰς τὴν πολιτικὴν τῆς Αὐστρίας καὶ παρεβίαζε τοὺς θεσμοὺς τῆς χώρας. Ἐπηκολούθησε μετά τινα χρόνον ἡ ἀπόπειρα κατὰ τῆς ζωῆς τῆς βασιλίσσης Ἀμαλίας καὶ ἐξερράγη ἡ ἐν Ναυπλίῳ ἐπανάστασις. Μετὰ τὴν καταστολὴν αὐτῆς ἡ κυβέρνησις Μιαούλη παρῃτήθη τὴν 26 Μαΐου 1862 καὶ ἀνέλαβε τὴν ἀρχὴν ὁ Κολοκοτρώνης. Κατὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ Ὄθωνος ὁ Μιαούλης ἐξεβιάσθη ν' ἀπέλθῃ τῆς Ἑλλάδος, ἐπέστρεψε δὲ μετὰ τὴν ἄνοδον εἰς τὸν θρόνον τοῦ Γεωργίου Α'. Ἔκτοτε ἔπαυσεν ἀναμιγνυόμενος εἰς τὴν πολιτικήν. Θ. Β.

— **Μιαούλης,** *Ἀθανάσιος Νικ.* Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς ἐν Πειραιεῖ (1868). Εἰσήχθη εἰς τὴν σχολὴν τῶν Εὐελπίδων (1883) καὶ μετηνέχθη εἰς τὴν σχολὴν τῶν Ναυτικῶν Δοκίμων ἅμα τῇ συστάσει της, Σημαιοφόρος τῷ 1888, ἀπεστρατεύθη ἀντιπλοίαρχος τῷ 1911 ὅπως πολιτευθῇ. Ὡς ἔφεδρος, ἀνακληθεὶς εἰς ἐνέργειαν, ἦτο κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους κυβερνήτης τοῦ ἀνιχνευτικοῦ «Πάνθηρ» ἀπὸ τῆς παραλαβῆς του μέχρι τῆς ὑπογραφῆς τῆς εἰρήνης, ὁπότε ἐπανῆλθεν εἰς τὴν κατάστασιν τῆς ἐφεδρείας. Βουλευτὴς Ὕδρας ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν ἐκλεγόμενος, ἐγένετο τετράκις (1909, 1914, 1915, 1919) ὑπουργὸς ἐπὶ τῶν Ναυτικῶν. Ἤδη ἀπόστρατος πλοίαρχος.

— **Μιαούλης,** *Ἀνδρέας*. Ἕλλην ναύαρχος τῆς Ἐπαναστάσεως, γεννηθεὶς κατὰ τὴν γενικὴν παράδοσιν τὴν 20 Μαΐου 1769 εἰς Ὕδραν καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τὴν 11 Ἰουνίου 1835. Ἦτο υἱὸς τοῦ ἐμποροπλοιάρχου Δημητρίου Βώκου, καταγομένου ἐκ τοῦ χωρίου Φυλλῶν τῆς Χαλκίδος. Τὰ περὶ τοῦ τόπου τῆς γεννήσεως τοῦ Μιαούλη πολλάκις ἠμφεσβητήθησαν ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν. Πολλοὶ ἐκ τῶν ἀσχοληθέντων περὶ τῆς καταγωγῆς αὐτοῦ διατείνονται ὅτι ἐγεννήθη ἐν Φύλλοις καὶ ὅτι εἰς ἡλικίαν δέκα ἑπτὰ ἐτῶν φονεύσας Ὀθωμανόν τινα, ἀτιμάσαντα τὴν ἀδελφὴν τοῦ πατρός του, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Ὕδραν, πατρίδα τῆς μητρός, μετὰ τῶν λοιπῶν μελῶν τῆς οἰκογενείας του. Ἡ παράδοσις αὕτη εὑρίσκεται εἰς ἀντίθεσιν πρὸς ἄλλα γεγονότα, δεικνύοντα ὅτι ἡ γνώμη τῶν πιστευόντων ὅτι ἐγεννήθη εἰς Ὕδραν εἶναι ἡ πιθανωτέρα, καθόσον ὁ πατὴρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ πρὸ τῆς χρονολογίας ταύτης εὑρίσκοντο ἐγκατεστημένοι εἰς Ὕδραν, εἶχον ἴδια πλοῖα, διεξῆγον ἐμπόριον καὶ αὐτὸς δὲ ὁ Ἀνδρέας Μιαούλης ἐβοήθει τὸν πατέρα αὐτοῦ εἰς τὰς ἐμπορικάς του ἐπιχειρήσεις. Ἀναφέρεται ἐπίσης ὅτι εἰς δεκαεπταετῆ ἡλικίαν ὁ Μιαούλης, προικισμένος δι' ἐκτάκτου τόλμης καὶ ριψοκίνδυνος ναύτης, μετεῖχε τῶν πειρατικῶν ἐκείνων ἐπιδρομῶν, αἵτινες, κατὰ τὴν τελευταίαν εἰκοσαετίαν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἐτρομοκράτουν τὸ Αἰγαῖον καὶ ἐξετείνοντο εἰς τὰς συριακὰς καὶ αἰγυπτιακὰς ἀκτάς. Τοιαύτη δὲ ἦτο ἡ τόλμη αὐτοῦ, ὥστε ὁ πατήρ του τὸν ἀπεκάλει Λάμπρον, παραβάλλων αὐτὸν πρὸς τὸν περιώνυμον ἥρωα Λάμπρον Κατσώνην.

Ἀποκτήσας ἰδίαν περιουσίαν ὁ Μιαούλης, ἐγένετο, νεανίας ἔτι, πλοίαρχος καὶ ἠγόρασε τουρκικὸν σκάφος εἰς Χίον ὀνομαζόμενον «Μιαοὺλ», ἐξ οὗ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα *Μιαούλης*. Οἱ διατεινόμενοι ὅτι οὗτος ἐγεννήθη εἰς τὴν Εὔβοιαν καὶ κατέφυγεν ἕνεκα τοῦ φόνου τοῦ Τούρκου εἰς Ὕδραν, ὑποστηρίζουν ὅτι μετωνομάσθη εἰς Μιαούλην, ὅπως ἀπομακρύνῃ ἀπ' αὐτοῦ τὴν καταδίωξιν τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν. Ἡ λαϊκὴ ὅμως παράδοσις ἄλλως ἀποδίδει τὴν μετονομασίαν αὐτήν. Παρακελεύων οὗτος τοὺς κωπηλάτας ἀνεφώνει «μία οὐλοι», ἐκ τούτου δὲ ἀπεκλήθη ὑπὸ τῶν ναυτῶν του Μιαούλης, τὸ ὄνομα δὲ τοῦτο ἐπεκράτησε καὶ ἐπληρώθη δόξης κατὰ τὰ ἔτη τοῦ Ἱεροῦ Ἀγῶνος.

Ἀπὸ τοῦ 1795, εὐνοηθεὶς εἰς τὰς ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις του, ἐκέκτητο τοιαύτην περιουσίαν, ὥστε τῷ 1802 ἠγόρασεν εἰς Βενετίαν μέγα πλοῖον, τὸ ὁποῖον ἐξώπλισε διὰ τηλεβόλων καὶ τοῦ ὁποίου ἡ ἀξία ὑπερέβαινε τὰς 300.000 δραχμῶν. Ἕνεκα τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως καὶ τῶν κατόπιν ναπολεοντείων πολέμων, ἡ ἑλληνικὴ ναυτιλία προσεκόμιζεν ἄφθονα κέρδη, ὁ δὲ Μιαούλης ἐπεδόθη εἰς τὸ ἐμπόριον τοῦτο μετὰ πάθους, μηδὲ οὐδενὸς πτοούμενος κινδύνου. Ὅταν ἡ Ἱσπανία ἐκήρυξε τὸν πόλεμον κατὰ τῆς Ἀγγλίας, ἀπεκλείσθησαν οἱ λιμένες αὐτῆς ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Νέλσον εἰς πάσας τὰς ξένας σημαίας ἐπὶ ποινῇ θανάτου. Ὁ Μιαούλης παρεβίασε τὰς διατάξεις ταύτας καὶ διαλαθὼν τοὺς Ἄγγλους κατέπλευσεν εἰς Γάδειρα, ὅπου ἀπεβίβασε μέγα φορτίον σίτου, ἀποκομίσας μεγάλα κέρδη. Ἀλλὰ κατὰ τὸν ἀπόπλουν αὐτοῦ συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ἤχθη ἐνώπιον τοῦ Νέλσον καὶ ἀνέμενε νὰ ὑποστῇ τὴν κεκανονισμένην ποινήν. Ἡ γενναιότης ὅμως αὐτοῦ καὶ ἡ εἰλικρινὴς ὁμολογία τῆς πράξεώς του διέθεσεν εὐνοϊκῶς ὑπὲρ αὐτοῦ τὸν Νέλσον, ὅστις ἠλευθέρωσεν αὐτόν. Ἀλλὰ τὸ ὡραῖον αὐτοῦ πλοῖον προσκροῦσαν εἰς ὕφαλον κατὰ τὰς ἱσπανικὰς ἀκτὰς κατεστράφη, καὶ ὁ Μιαούλης μεταβὰς εἰς Γένουαν ἠγόρασεν ἕτερον πλοῖον καὶ ἐξηκολούθησε τοὺς πλόας αὐτοῦ εἰς τὴν Μεσόγειον. Ἡ ἐμπορικὴ ναυτιλία κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἀναστατώσεως τῆς Εὐρώπης εὑρίσκετο ἐν διαρκεῖ κινδύνῳ, οὐχὶ δὲ σπανίως τὰ ἐμπορικὰ σκάφη ἀντεμετώπιζον τὰ πο-

Digitized by Google

λεμικὰ τοιαῦτα τῶν ἀντιμαχομένων κρατῶν. Εἰς τοιαύτην δυσχέρειαν περιῆλθεν ὁ Μιαούλης τῷ 1811 πλέων τὰ παράλια τοῦ παπικοῦ κράτους, ὅπου συναντηθεὶς μετὰ γαλλικοῦ καταδρομικοῦ ἐναυμάχησε καθ' ὅλην τὴν ἡμέραν καὶ ἀποκρούσας τὰς ἐπιθέσεις του ἠδυνήθη τὴν νύκτα νὰ διαφύγῃ καὶ νὰ πλεύσῃ πρὸς τὰς ἑλληνικὰς θαλάσσας. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος καὶ τὴν ἐπικράτησιν τῆς εἰρήνης, οἱ τοιοῦτοι κίνδυνοι παρῆλθον, ὁ δὲ Μιαούλης ἀπὸ τοῦ 1816 ἔπαυσε ταξιδεύων καὶ ἐγκατασταθεὶς ἐν Ὕδρᾳ μετήρχετο τὸν ἔμπορον καὶ προΐστατο τῆς συντηρητικῆς μερίδος τῶν πολιτῶν τῆς Ὕδρας.

Κατὰ τὴν κήρυξιν τῆς ἐπαναστάσεως ἐν Ὕδρᾳ (28 Ἀπριλίου 1821), ναύαρχος τῆς νήσου προεχειρίσθη ὁ Ἰάκωβος Τομπάζης, ἀλλὰ πάντες ἐν Ὕδρᾳ, καὶ ἰδίως ὁ Λάζαρος Κουντουριώτης, προσέβλεπον εἰς τὸν Μιαούλην, λήγοντος δὲ τοῦ πρώτου ἔτους τῆς ἐπαναστάσεως ἡ Ὕδρα ἀνέθεσε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στόλου της εἰς αὐτόν, καθ' ὅσον ὁ καπουδὰν πασᾶς Καρᾶ-Ἀλῆς ἐξέπλευσε τοῦ Ἑλλησπόντου πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ καταστρέψῃ τὰς ἐπαναστατησάσας ναυτικὰς νήσους. Εἶχεν ἤδη οὗτος ἐπιφέρει τὰς τρομερὰς καταστροφὰς εἰς τὰς Κυδωνίας καὶ ἐμελέτα νὰ συνεχίσῃ τὸ ἔργον του. Ὁ Καρᾶ-Ἀλῆς εἰσπλεύσας εἰς τὸν Κορινθιακὸν κόλπον ἐπυρπόλησε τὸν Ὀκτώβριον 1821 τὸ Γαλαξείδιον καὶ διέλυσε τὴν πολιορκίαν τῶν Πατρῶν. Μεσοῦντος τοῦ Φεβρουαρίου 1822 ἐνεφανίσθη ὁ ἑλληνικὸς στόλος κυβερνώμενος ὑπὸ τοῦ Μιαούλη καὶ τὴν 20 ἰδίου μηνὸς ἐπετέθη κατὰ τοῦ ὀθωμανικοῦ στόλου καὶ συνεκρότησε ναυμαχίαν προκαλέσασαν τὸν τρόμον εἰς τὸν ἐχθρόν, τοῦ ὁποίου τὰ πλοῖα διεσκορπίσθησαν ὑπὸ τοῦ πνεύσαντος σφοδροῦ ἀνέμου. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Καρᾶ-Ἀλῆς, ἐπαναπλεύσας εἰς τὸ Αἰγαῖον, προέβη εἰς τὴν σφαγὴν τῆς Χίου καὶ ὁ ἑλληνικὸς στόλος, ἡνωμένος καὶ ἀποτελούμενος ἐκ πεντήκοντα ἓξ σκαφῶν, συνηθροίσθη περὶ τὰ Ψαρὰ καὶ ἐστράφη πρὸς τὴν Χίον, ὅπως καταφέρῃ καίριον τραῦμα κατὰ τοῦ Τούρκου στολάρχου. Καὶ τῶν μὲν Ψαριανῶν ἡγεῖτο ὁ Ἀποστόλης, τῶν δὲ Σπετσιωτῶν ὁ Ἀνδροῦτσος. Τῆς ὑδραϊκῆς μοίρας ἦρχεν ὁ Ἀνδρέας Μιαούλης. Ἡ ζηλοτυπία τῶν δύο ἄλλων ναυτικῶν νήσων δὲν ἀφῆκεν ὅπως ἀνατεθῇ ἡ γενικὴ ἀρχηγία τοῦ στόλου εἰς αὐτόν, ἀλλ' ἡ μεγάλη ἐμπιστοσύνη, τὴν ὁποίαν ἀπελάμβανεν εἰς τὸν ἑλληνικὸν ναυτικὸν κόσμον ὁ ἀνήρ, ἔθεσε τοῦτον ἐπὶ κεφαλῆς καίτοι ἀνεπισήμως. Ἦγε τότε ὁ Μιαούλης τὸ πεντηκοστὸν τρίτον ἔτος τῆς ἡλικίας του, ἡ δὲ πανθομολογουμένη ἀνδρεία καὶ σύνεσις αὐτοῦ παρεῖχον τὴν ἐγγύησιν πάσης αὐτοῦ ἐπιχειρήσεως. Ἐπίστευεν ἀδιστάκτως οὗτος ὅτι ὁ Θεὸς ἔδωκε τὴν κυριαρχίαν τῆς θαλάσσης εἰς τοὺς Ἕλληνας, ἐγνώριζε δ' ἐν λεπτομερείᾳ τὰς ἀδυναμίας τοῦ τουρκικοῦ ναυτικοῦ. Ὁ Μιαούλης, λέγει Γερμανὸς ἱστορικός, ἦτο γνησία θαλασσίου ἀνδρὸς φύσις, ἐπιζητοῦσα τοὺς κινδύνους, χαρακτὴρ δὲ εἰς ὃν εἰς πᾶσαν περίστασιν ἠδύνατο ἡ πατρὶς αὐτοῦ νὰ ἐμπιστευθῇ. Ἐστερημένος ἀνωτέρας εἰδικῆς παιδεύσεως, εἶχεν ἐν τούτοις τὴν ἀντίληψιν τῆς ἐκπληρώσεως τοῦ καθήκοντος εἰς ὑπέρτατον βαθμόν, ὡς δὲ ἦτο ὁ λόγος αὐτοῦ ἀσφαλής, οὕτω καὶ κατὰ τὴν ἐκπλήρωσιν τῶν ἀνατιθεμένων αὐτῷ ἐντολῶν τὴν αὐτὴν ἐπεδείκνυεν εὐστάθειαν, ἥτις ἐξικνεῖτο σχεδὸν μέχρι σκληρότητος. Γίγας τὸ ἀνάστημα, εἶχεν ἡλιοκαυμένον καὶ πάντοτε σκυθρωπὸν τὸ πρόσωπον. Καθ' ὅλην τὴν περίοδον τοῦ Ἀγῶνος ἐβασανίζετο ὑπὸ ποδάγρας, τοῦτο ὅμως δὲν ἠμπόδιζεν αὐτὸν νὰ εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς ναυαρχίδος του, καθ' ὅλα δὲ τὰ ἔτη ἐκεῖνα οὐδὲ μιᾶς ἡμέρας ἀνάπαυσιν ἀπέλαυσε. Καὶ πρωτοῦ ἀναλάβῃ τὴν ἀρχὴν ὁ Μιαούλης, οἱ Ἕλληνες εἶχον πυρπολήσει ἐχθρικά τινα σκάφη, ἀλλὰ τὴν ἀδυναμίαν τοῦ τουρκικοῦ στόλου ἀπεκάλυψεν οὗτος καὶ ἐσυνήθισεν αὐτοὺς ναυμαχοῦντας ἐκ τοῦ συστάδην νὰ περιφρονῶσι τοὺς κολοσσοὺς τῆς ὀθωμανικῆς ἀρμάδας. Καίτοι ἐλάχιστα ἐγνώριζε γράμματα, λέγει ὁ Μένδελσον Βαρθόλδυ, ὑπερεῖχεν ἐν τούτοις κατὰ τὴν εὐφυΐαν καὶ τὴν ναυτικὴν τέχνην τοὺς μᾶλλον πεπαιδευμένους ἄνδρας.

Εἰς τοιοῦτον ἄνδρα ἐνεπιστεύθη ἡ ἀγωνιζομένη Ἑλλὰς τὴν διοίκησιν τοῦ στόλου της, νὰ ἐκδικήσῃ τὰς σφαγὰς τῆς Χίου καὶ νὰ ἀνακόψῃ τὸ ἔργον τοῦ Καρᾶ-Ἀλῆ. Εἰς τὸ συνελθὸν εἰς Ψαρὰ συμβούλιον τῶν καπιτάνων ἀπεφασίσθη ἡ χρῆσις πυρπολικῶν καὶ ὁ μὲν Μιαούλης ἀνέθεσεν εἰς τὸν Πιπῖνον, ἡ δὲ κοινότης τῶν Ψαρῶν εἰς τὸν Κανάρην, ὅπως διὰ τῶν πυρπολικῶν καταστρέψωσι τὰ κυριώτερα τῶν πλοίων τοῦ Καρᾶ-Ἀλῆ. Καὶ τὸ μὲν πυρπολικὸν τοῦ Πιπίνου ἀποσπασθὲν τῆς ἀρξαμένης ἤδη νὰ πυρπολῆται ὑποναυαρχίδος, ἕνεκα πνεύσαντος κατὰ τὴν στιγμὴν ἐκείνην δυσμενοῦς ἀνέμου, ἐκάη ματαίως, ὁ Κανάρης ὅμως κατώρθωσε ν' ἀνατινάξῃ εἰς τὸν ἀέρα τὴν ναυαρχίδα, μετὰ τῆς ὁποίας συναπωλέσθη καὶ ὁ Ὀθωμανὸς ναύαρχος. Ἡ ἐντύπωσις ἡ παραχθεῖσα ἐκ τῆς πράξεως ταύτης ὑπῆρξεν ἀπερίγραπτος. Ὁ τουρκικὸς στόλος δὲν ἐνόμιζε πλέον ἀσφαλῆ ἑαυτὸν εἰς Χίον καὶ μετὰ σπουδῆς ἐπανῆλθε διωκόμενος ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ εἰς τὸν Ἑλλήσποντον. Τὸν Καρᾶ-Ἀλῆν διεδέχθη ὡς στόλαρχος ὁ Ἀβδουλάχ, ὅστις μετὰ μεγάλου στόλου ἔπλευσεν εἰς τὸν Ἀργολικὸν κόλπον, ὅπως ὑποστηρίξῃ τὰς κατὰ ξηρὰν προσπαθείας τῶν Τούρκων καὶ διαλύσῃ τὴν στενὴν πολιορκίαν τοῦ Ναυπλίου. Τὴν 7 Σεπτεμβρίου 1822 ὁ τουρκικὸς στόλος ἐπέπεσε πάνοπλος κατὰ τοῦ ἑλληνικοῦ, τὸν ὁποῖον πρὸς στιγμὴν ἠδυνήθη νὰ διασκορπίσῃ. Ἀλλ' ὁ Μιαούλης, συγκεντρώσας τὰ ἑλληνικὰ πλοῖα εἰς τὸν λιμένα τοῦ Μάσητος, ἤρξατο τῆς ἐπιθέσεως, γενικευθείσης δὲ τῆς ναυμαχίας ὁ ὑπερήφανος ἐκεῖνος στόλος τοῦ Ἀβδουλὰχ ἐτράπη εἰς φυγήν, χωρὶς νὰ δυνηθῇ νὰ ἐπισιτίσῃ τὴν φρουρὰν τοῦ Ναυπλίου, ἥτις ἐγκαταλειφθεῖσα εἰς τὴν τύχην της παρεδόθη εἰς τοὺς πολιορκητάς. Ἡ ἀποτυχία τοῦ τουρκικοῦ στόλου διηυκόλυνε τὰς κατὰ ξηρὰν νίκας τῶν Ἑλλήνων, καὶ οἱ Ἕλληνες ναυτικοὶ μετὰ πεποιθήσεως περὶ τῆς νίκης των ἀντεμετώπιζον τοὺς τουρκικοὺς στόλους. Ὁ Ἀβδουλὰχ ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ Χοσρέφ, τοῦ ἐπονομαζομένου Τοπὰλ-πασᾶ, ἤτοι χωλοῦ, ὅστις καὶ αὐτὸς περιωρίσθη νὰ κρατῇ εἰς ἀνησυχίαν τοὺς Ἕλληνας διὰ περιωρισμένων προσβολῶν, μὴ τολμήσας δὲ νὰ προσβάλῃ τὴν Ὕδραν καὶ τὰς Σπέτσας ἐπανέπλευσε κατὰ τὰς ἀρχὰς Σεπτεμ-

*Ἀνδρέας Μιαούλης.*

[Ἐξ ἐλαιογραφίας ἀποκειμένης ἐν τῷ Μουσείῳ τῆς Ἱστορικῆς καὶ Ἐθνολογικῆς Ἑταιρείας τῆς Ἑλλάδος.]

βρίου 1823, ἀδόξως, εἰς τὰς μικρασιατικὰς ἀκτάς. Ἀλλὰ καὶ ὁ ἑλληνικὸς στόλος περιέπεσεν εἰς ἀδράνειαν, διότι πρὸς μεγάλην ἀπελπισίαν τοῦ Μιαούλη οἱ Ὑδραῖοι δὲν ἤθελον νὰ κινηθῶσι πρωτοῦ ἀποζημιωθῶσι διὰ τὰς προηγουμένας αὐτῶν δαπάνας. Ὁ ἐφοδιασμὸς τοῦ στόλου ἐγίνετο ἀτελέστατα, μόνον δὲ ἡ προσωπικὴ ἐπιβολὴ τοῦ Μιαούλη συνεκράτει τὴν τάξιν.

Ὁ σουλτᾶνος Μαχμοὺτ ἐν τῷ μεταξὺ ἐπεδίωκε νὰ ἐξαφανίσῃ τὸν ἑλληνικὸν στόλον καὶ νὰ ὑποτάξῃ τὰς τρεῖς ναυτικὰς νήσους, ἄνευ τῆς συνδρομῆς τῶν ὁποίων ἡ ἐπανάστασις ἤθελε σβεσθῇ ἀφ' ἑαυτῆς. Ἐπῆλθε τότε ἡ συμφωνία μετὰ τοῦ ἀντιβασιλέως τῆς Αἰγύπτου Μεχμὲτ Ἀλῆ, εἰς τὴν ὀργάνωσιν τοῦ στρατοῦ καὶ τοῦ στόλου τοῦ ὁποίου ἐθεώρει βεβαίαν τὴν κατάπνιξιν τῆς Ἑλληνικῆς ἐπαναστάσεως. Διέταξε τὸν Τοπὰλ-πασᾶν νὰ προσβάλῃ τὰ Ψαρά, οὗτος δὲ ἐπιβιβάσας εἰς τὰ πλοῖά του 14.000 ὁπλίτας ἐκ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, παραλαβὼν δὲ ἐκ τῆς Εὐβοίας καὶ ἐξακισχιλίους Ἀλβανούς, ἥλωσε τὴν 20 Ἰουνίου 1824 τὰ Ψαρά. Ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις ἐπὶ τῇ ἀγγελίᾳ τῆς συμφορᾶς ἀνέπτυξε σπανίαν δραστηριότατα. Ὁ Μιαούλης ἀπέπλευσεν ἐξ Ὕδρας μετὰ 16 πολεμικῶν πλοίων καὶ τεσσάρων πυρπολικῶν, ἀκολουθούμενος δὲ καὶ ὑπό τινων ψαριανῶν καὶ σπετσιωτικῶν τοιούτων κατηυθύνθη εἰς τὴν Χίον πρὸς συνάντησιν τοῦ ἐχθροῦ. Τὴν 15 Ἰουλίου ἐνεφανίσθη πρὸ τῶν Ψαρῶν καὶ διέταξεν ἀπόβασιν εἰς τὴν καταστραφεῖσαν νῆσον. Οἱ ἐν αὐτῇ εὑρισκόμενοι Ἀλβανοί, ἄλλοι μὲν κατέφυγον εἰς τὰ ἐν τῷ λιμένι εὑρισκόμενα τουρκικὰ πλοῖα, ἄλλοι δὲ κλεισθέντες εἰς τὰς οἰκίας ἀνθίσταντο ἀπεγνωσμένως. Ἀλλ' ὁ ἑλληνικὸς στόλος προσέβαλε τὰς ἐλλιμενισμένας εἴκοσι τουρκικὰς κανονιοφόρους, τὰς ὁποίας ἐβύθισε σχεδὸν ὅλας, κατέστρεψε δὲ καὶ τὰς λοιπὰς περὶ τὴν Χίον. Οἱ ἐν τῇ νήσῳ Ἀλβανοὶ ἐσφάγησαν, οὕτω δὲ ἐπήρχετο πλήρης ἐκδίκησις διὰ τὴν καταστροφὴν τῆς ἡρωϊκῆς νήσου. Ἡ νίκη αὕτη τοῦ Μιαούλη ἐξουδετέρωσε τὴν παραχθεῖσαν ἐκ τῆς καταστροφῆς ἐντύπωσιν, ὁ δὲ Τοπὰλ-πασᾶς τὴν 19 Ἰουλίου ἐνεφανίσθη μὲν μεθ' ὅλου τοῦ στόλου του, ἠναγκάσθη ὅμως νὰ ἐπαναπλεύσῃ ἄπρακτος εἰς Μυτιλήνην, ἐνῷ ὁ ἑλληνικὸς στόλος ἀπέπλευσεν ἀνενόχλητος πρὸς ἀνεφοδιασμόν.

Ὁ κύριος σκοπὸς τῶν Τούρκων ἦτο ἤδη ἡ κατάληψις τῆς Σάμου, οἱ κάτοικοι τῆς ὁποίας ἀπεφάσισαν νὰ ὑπερασπίσωσιν αὐτὴν μέχρι τῆς ἐμφανίσεως τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου. Τὴν 8 Αὐγούστου 1824 τῷ ὄντι ἠγκυροβόλησαν ἑλληνικὰ σκάφη πρὸ τῆς νήσου, ἡ ἁπλῆ δὲ ἐμφάνισις τούτων ἤρκεσεν ὅπως ἀποτρέψῃ πᾶσαν ἐπίθεσιν τοῦ Τούρκου ναυάρχου κατὰ τῆς Σάμου. Γενομένου συμβουλίου τὴν 15 Αὐγούστου, ἀπεφασίσθη νὰ παραμείνωσιν ἠγκυροβολημένοι ἐν τῇ μεταξὺ Σάμου καὶ Μικρᾶς Ἀσίας διώρυγι, ἐμποδίζοντες τὸν Τοῦρκον στόλαρχον νὰ μεταφέρῃ τὰ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἀναμένοντα στίφη. Ἡ ἀπόπειρα δὲ αὐτοῦ, ὅπως ἀπωθήσῃ τὸν ἑλληνικὸν στόλον, ἐστοίχισε τὴν πυρπόλησιν τῆς ναυαρχίδος τῆς Τύνιδος, ἓν ἕτερον πλοῖον καὶ τὴν ἀπώλειαν δισχιλίων Ὀθωμανῶν. Οὕτως ὁ Τοπὰλ-πασᾶς παρῃτήθη τῶν κατὰ τῆς Σάμου σχεδίων του. Ἀλλ' ὁ κίνδυνος δὲν εἶχε παρέλθει. Ὁ ὑπὸ τὸν Αἰγύπτιον Ἰμπραὴμ στόλος εἶχεν ἐκπλεύσει καὶ τὴν 1 Σεπτεμβρίου συνηνώθη ἀπέναντι τῆς Κῶ μετὰ τοῦ τουρκικοῦ. Τρεῖς χιλιάδες μεταφορικὰ σκάφη καὶ 85 πολεμικὰ εὑρίσκοντο ἐκεῖ. Τὴν 5 Σεπτεμβρίου ὁ ἑλληνικὸς στόλος, ἀποτελούμενος ἐξ 80 πλοίων μετὰ 850 τηλεβόλων, συνεκεντρώθη μεταξὺ Λέρου, Λιψοῦ καὶ Πάρου καὶ ἀπεφάσισε νὰ προσβάλῃ τὸν ἐχθρὸν εἰς τὸν λιμένα Βουδρουμίου, ἐφώρμησαν δὲ 6 πυρπολικὰ ὁδηγούμενα ὑπὸ εἴκοσι πολεμικῶν ἐναντίον τοῦ τουρκικοῦ στόλου. Ὁ Τοπὰλ-πασᾶς ὑπεχώρησε, αἱ δὲ γραμμαὶ τῶν τουρκικῶν πλοίων, περιῆλθον εἰς πλήρη σύγχυσιν. Τὴν 9 Σεπτεμβρίου συνεκροτήθη πρὸς βορρᾶν τοῦ Βουδρουμίου δευτέρα ναυμαχία, ἥτις μετηνέχθη ἐγγὺς τοῦ ἀκρωτηρίου τοῦ Γέροντα, ἕνεκα ἐναντίου ἀνέμου. Ὁ Μιαούλης ἔμεινεν εἰς τὸν Ἰασικὸν κόλπον, ὅπου ἐδέχθη ἐπίθεσιν τοῦ τουρκικοῦ στόλου, ἀλλὰ διαλαθὼν τὴν προσοχὴν τῶν ἐχθρῶν ἔφθασεν εἰς τὰ λοιπὰ πλοῖα, μεθ' ὧν ἡνωμένος ὑπεστήριξε τὸν Κανάρην, ὅστις ἐπολέμει τὴν ναυαρχίδα. Οἱ Τοῦρκοι ἐν τέλει ἐτράπησαν εἰς φυγήν, ἀφήσαντες εἰς τὰς χεῖρας τῶν Ἑλλήνων δύο δρόμωνας. Ὁ αἰγυπτιακὸς στόλος ἄπρακτος κατέπλευσεν εἰς τὸν λιμένα τῆς Σούδας, ὅπως διαχειμάσῃ, πλήρης ἀνησυχίας ἐκ τῶν ἀποτυχιῶν του. Τὸ ἐπόμενον ἔτος ὁ Ἰμπραὴμ ἀποβιβασθεὶς εἰς τὴν Μεθώνην ἐπολιόρκει τὸ Νεόκαστρον, ὁ δὲ Μιαούλης ἱστιοδρομῶν μεταξὺ Κρήτης καὶ Πελοποννήσου παρεκώλυε τὴν μετάβασιν τοῦ ναυλοχοῦντος ἐπικουρικοῦ στόλου, ἀλλὰ δὲν ἠδύνατο νὰ ματαιώσῃ ἐπὶ πλέον τὸν κατάπλουν αὐτοῦ εἰς Πελοπόννησον καὶ ν' ἀναστείλῃ τὴν καταστροφὴν τῆς Σφακτηρίας. Μετά τινας ὅμως ἡμέρας ὁ Μιαούλης ἐξεδικήθη. Τὴν 8ην ἑσπερινὴν ὥραν ἐξαπέλυσεν ὀκτὼ πυρπολικὰ ἐν μέσῳ τοῦ αἰγυπτιακοῦ στόλου, τὰ ὁποῖα ἐπέφερον καταστροφήν. Ἡ «Ἀσία», λαμπρὰ φρεγάτα, δύο πάρωνες καὶ εἴκοσιν ἄλλα σκάφη ἐπυρπολήθησαν, μία δὲ ἐπὶ τῆς ξηρᾶς ἀποθήκη πολεμεφοδίων ἐγένετο παρανάλωμα τῶν φλογῶν. Μετὰ δεκατέσσαρας ἡμέρας ὁ Μιαούλης προσέβαλε τὸν ἐν Σούδᾳ ἐλλιμενισμένον αἰγυπτιακὸν στόλον καὶ ἐπυρπόλησεν ἓν ἐκ τῶν πολεμικῶν αὐτοῦ πλοίων. Κατὰ τὴν δευτέραν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου προσέφερεν ἀνεκτιμήτους ὑπηρεσίας. Τὴν 3 Αὐγούστου ἔπεμψεν ὁ Ἕλλην ναύαρχος τρία πυρπολικὰ κατὰ τοῦ Τοπὰλ-πασᾶ, ὅστις ἐτράπη εἰς φυγὴν καταφυγὼν εἰς Κεφαλληνίαν καὶ εἶτα εἰς Ἀλεξάνδρειαν. Οὕτω ἐτροφοδοτήθη τὸ Μεσολόγγιον, κατεστράφη δὲ καὶ ὁ στολίσκος τοῦ Γιουσοὺφ πασᾶ τῶν Πατρῶν ἐντὸς τῶν ἑλῶν τοῦ Μεσολογγίου. Εἰς τὰς ἀρχὰς Ἰανουαρίου 1826 ὁ Μιαούλης ἐξέπλευσε πάλιν εἰς Μεσολόγγιον καὶ ἤρξατο ἀποβιβάζων τρόφιμα εἰς τὴν δεινῶς πάσχουσαν πόλιν. Τὴν ἐπομένην προσέβαλον αὐτὸν οἱ Τουρκοαιγύπτιοι, τὴν δὲ 28 τοῦ ἰδίου μηνὸς συνεκροτήθη ἡ παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Πάπα ναυμαχία, καθ' ἣν μετὰ τρίωρον μάχην ὁ ἐχθρικὸς στόλος τραπεὶς εἰς φυγὴν περιεσώθη εἰς Πάτρας, οὕτω δὲ ὁ Μιαούλης ἠδυνήθη καὶ πάλιν νὰ τροφοδοτήσῃ τὴν πόλιν διὰ δύο μῆνας, ἀρχομένου δὲ τοῦ Φεβρουαρίου ἐπέστρεψεν εἰς Ὕδραν. Ἀπόπειρα γενομένη παρ' αὐτοῦ πρὸς τροφοδοσίαν τῆς ἡρωϊκῆς πόλεως δὲν ἐπετεύχθη, καὶ ὁ Μιαούλης μετὰ τὴν πτῶσιν αὐτῆς ἐξέπλευσεν εἰς τὴν κινδυνεύουσαν Σάμον καὶ δὲν ἐπέστρεψεν οἴκαδε εἰμὴ ὅταν παρῆλθε πᾶς κίνδυνος αὐτῆς.

Τῷ 1827 ἐκλήθη εἰς Ἑλλάδα ὁ περιώνυμος Ἄγγλος ναυτικὸς Θωμᾶς Κόχραν, ὅπως ἀναλάβῃ τὴν ἀνωτέραν διοίκησιν τῶν θαλασσίων δυνάμεων, ὅστις καὶ ἀφίκετο τὸν Μάρτιον τοῦ ἔτους τούτου. Ὁ Μιαούλης μετὰ προθυμίας παρῃτήθη πολυετοῦς καὶ πολυενδόξου ἀρχηγίας καὶ φαιδρὸς κατῆλθεν εἰς τὴν θέσιν πλοιάρχου, παραδώσας εἰς τὸν Κόχραν τὴν φρεγάταν «Ἑλλάδα», ἣν ἐκυβέρνα. Μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Κόχραν ὁ Ἰωάννης Καποδίστριας ἐπανέφερε τὸν Μιαούλην εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ ναυάρχου, μὴ ὑπάρχοντος δὲ μετὰ τὴν ναυμαχίαν τοῦ Ναυαρίνου ἐχθροῦ πρὸς καταπολέμησιν, ἀνε-

Digitized by Google

τέθη αὐτῷ ἡ ἐκκαθάρισις τοῦ Αἰγαίου ἀπὸ τῆς μαστιζούσης αὐτὸ πειρατείας, εἰς τὴν ἐξόντωσιν τῆς ὁποίας συνετέλεσε μεγάλως. Ἀλλ' αἱ σχέσεις του μετὰ τοῦ Καποδιστρίου δὲν παρετάθησαν ἐπὶ μακρόν. Ὁ Μιαούλης ἐτάχθη μετὰ τῆς συνταγματικῆς μερίδος τῆς ἑδρευούσης εἰς Ὕδραν καὶ μετέσχε τῆς ἐπιτροπῆς αὐτῆς, ἥτις διέκοψε πᾶσαν σχέσιν μετὰ τῆς κυβερνήσεως. Κατὰ τὸ θέρος τοῦ 1831 ὁ Μιαούλης διετάχθη νὰ καταλάβῃ τὸν σταθμεύοντα εἰς τὸν ναύσταθμον τοῦ Πόρου στόλον, τὴν δὲ νύκτα τῆς 26 πρὸς τὴν 27 Ἰουλίου ἡγούμενος πεντήκοντα ἀνδρῶν κατέλαβε τὴν φρεγάταν «Ἑλλάδα» καὶ ἀνεπέτασε τὴν σημαίαν του. Τότε ἀπεστάλη ὁ Ρῶσος ναύαρχος Ρίκορδ, ὅστις μετὰ τῆς φρεγάτας του ἠγκυροβόλησε πρὸ τοῦ μεγάλου στομίου τοῦ λιμένος Πόρου, ἐζήτησε δὲ (1 Αὐγούστου) νὰ περιζώσῃ τὸν Μιαούλην καὶ τὸν ἐξαναγκάσῃ εἰς παράδοσιν. Ὁ Ὑδραῖος ναύαρχος ἐγνώρισεν εἰς τὸν Ρίκορδ ὅτι πρὸς τὸ ἐλάχιστον αὐτοῦ ἐχθρικὸν κίνημα ἤθελε παραδώσει εἰς τὸ πῦρ τὰ κατεχόμενα ὑπ' αὐτοῦ πλοῖα. Ἀλλ' ὁ Ρίκορδ ἐκινήθη πρὸς κατάληψιν καιρίων θέσεων, ὅπως ἀβλαβῶς προσβάλῃ τὸν ἑλληνικὸν στόλον. Τότε ὁ Μιαούλης ἐξετέλεσε τὴν ἀπειλήν του ἀνατινάξας εἰς τὸν ἀέρα τὴν «Ἑλλάδα» καὶ τὴν κορβέταν «Ὕδραν» καὶ διὰ λέμβου τινὸς διέφυγεν ὑπὸ τὴν βροχὴν τῶν ρωσικῶν σφαιρῶν εἰς Ὕδραν. Ὁ ἐπελθὼν θάνατος τοῦ Καποδιστρίου ἐτερμάτισε τὰς κατ' αὐτοῦ καταδιώξεις καὶ τῷ 1832 ἀπεστάλη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ἑλληνικῆς πρεσβείας εἰς Μόναχον, ὅπως προσφέρῃ τὸ ἑλληνικὸν στέμμα εἰς τὸν βασιλέα Ὄθωνα. Τῷ 1833 διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ διευθυντηρίου τοῦ στόλου καὶ γενικὸς ἐπιθεωρητὴς αὐτοῦ. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐγένετο σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας, ἀπενεμήθη δὲ αὐτῷ ὁ μεγαλόσταυρος τοῦ Σωτῆρος. Προσβληθεὶς ἐκ φθίσεως ἀπέθανε μετά τινας μῆνας, ἐτάφη δὲ εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ πειραϊκοῦ λιμένος παρὰ τὸν τάφον τοῦ Θεμιστοκλέους. Ἡ καρδία αὐτοῦ φυλάττεται ἐντὸς ἀργυρᾶς κάλπης εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ναυτικῶν, ἐν δὲ τῇ κεντρικῇ πλατείᾳ τῆς Σύρου ἠγέρθη τῷ 1889 ὁ ἀνδριὰς αὐτοῦ. Θ. Β.

— **Μιαούλης, *Ἀνδρέας*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἔγγονος τοῦ ναυάρχου τοῦ Ἀγῶνος ἀπὸ τοῦ υἱοῦ του *Δημητρίου*. Γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1819 κατετάχθη εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικὸν ὡς ἀνθυποπλοίαρχος (1836). Τυχὼν ἀρίστης μορφώσεως, ὑπῆρξεν ἀγαπητὸς εἰς τὸν βασιλέα Ὄθωνα, ὅστις τὸν μετέθετεν ἐπὶ τῶν ἑκάστοτε θαλαμηγῶν του. Ὡς ἀνώτερος ἀξιωματικὸς (πλωτάρχης 1862) ἀπεσπάσθη ἐπὶ μακρὸν παρὰ τῇ ἐν Κωνσταντινουπόλει πρεσβείᾳ. Διωργάνωσε τὸν ναύσταθμον Σαλαμῖνος ὡς πλοίαρχος γενικὸς διευθυντὴς αὐτοῦ, ἅμα τῇ μεταφορᾷ του ἐκ Φανερωμένης εἰς Ἀράπην. Ἀπεβίωσεν αὐτόχειρ (1887), καταπεσὼν ἀπὸ τοῦ ἐξώστου τοῦ διοικητηρίου. Σ. Ε. Λ.

— **Μιαούλης, *Ἀνδρέας Ἀντ.*** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἔγγονος τοῦ ναυάρχου τοῦ Ἀγῶνος ἀπὸ τοῦ υἱοῦ του *Ἀντωνίου*. Ἐγεννήθη ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1830, κατετάχθη ὡς δόκιμος β' τάξεως τῷ 1849 καὶ προήχθη εἰς ἀνθυποπλοίαρχον τῷ 1854. Ἡ μεγάλη του μόρφωσις, ἰδίως εἰς τὴν ὑδρογραφίαν, δυσκόλως ἐνηρμονίζετο πρὸς τὰς ἀντιλήψεις τοῦ τότε ναυτικοῦ, δι' ὃ καὶ «δάσκαλος» ἐπεκαλεῖτο, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ διαρκεῖς διωγμοὺς εὑρίσκετο, διὸ καὶ μετετέθη εἰς κατάστασιν διαθεσιμότητος (1854), μετηνέχθη εἰς τοὺς «ἐπιτάκτους» (1856) καὶ ἐτέθη εἰς ἀποστρατείαν (1856). Ἀνακληθεὶς τῷ 1866 εἰς ἐνέργειαν, ἔδωσε πλείστους καρποὺς τῶν γνώσεών του, ἃς ἐπλούτισεν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον, παρακολουθῶν ἐν Χαλκίδι ὡς κυβερνήτης τῆς «Μεθώνης» τὰς ἐπὶ τοῦ ρεύματος τοῦ Εὐρίπου ἐργασίας τοῦ Μένσελλ. Ὧν ὁ πρῶτος Ἕλλην ὑδρογράφος, ἀνεκάλυψε τὴν παρὰ τὸν Ἀλέξανδρον τῆς Λευκάδος φερώνυμον ὕφαλον (*Μιαούλη* ὕφαλος), συγγράψας μονογραφίας περὶ παλιρροίας ἐν Εὐρίπῳ καὶ περὶ τῆς παλιρροίας ἣν θὰ ἐγέννα ἡ τομὴ τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου. Σ. Ε. Λ.

— **Μιαούλης, *Ἀνδρέας Δημ.*** Ἀντιναύαρχος. Δισέγγονος τοῦ ναυάρχου, ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1869 καὶ εἰσήχθη κατόπιν ἐξετάσεων (1884) εἰς τὴν ἀρτισύστατον σχολὴν τῶν Ναυτικῶν Δοκίμων. Σημαιοφόρος τῷ 1888, ὑπηρετήσας ὡς ὑποπλοίαρχος εἰς τὸν γαλλικὸν στόλον, κυβερνήτης τῶν «Ψαρῶν» κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους καὶ τὰς ναυμαχίας τῆς Ἕλλης καὶ τῆς Λήμνου, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποναυάρχου ἐν ἐνεργείᾳ, ἀποστρατευθεὶς μὲ τὸν βαθμὸν ἀντιναυάρχου. Διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν τῷ 1910 καὶ πληρεξούσιος Ἀττικοβοιωτίας τῷ 1920. Σ. Ε. Λ.

— **Μιαούλης, *Ἀντώνιος Ἀνδρ.*** Ἕλλην πλοίαρχος, υἱὸς τοῦ ναυάρχου Ἀνδρέου Μιαούλη, γεννηθεὶς τῷ 1800 ἐν Ὕδρᾳ. Μετέσχε τοῦ ἑλληνικοῦ ἀγῶνος ὡς πλοίαρχος καὶ ἀρχιεπιστολεὺς τοῦ πατρός του. Ἅμα τῇ ἐλεύσει τοῦ βασιλέως Ὄθωνος διωρίσθη πλοίαρχος Β' τάξεως καὶ ὑπασπιστὴς αὐτοῦ, συνοδεύων δὲ αὐτὸν εἰς Μόναχον ἀπέθανε τῷ 1836. Θ. Β.

— **Μιαούλης *Δημήτριος Ἀνδρ.*** Ἕλλην πλοίαρχος, υἱὸς τοῦ ναυάρχου Ἀνδρέου Μιαούλη, γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1794 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πειραιεῖ τῷ 1835. Τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1821 ἐξελέγη ὑπὸ τῆς ὑδραϊκῆς κοινότητος διοικητὴς τῶν ὑδραϊκῶν σκαφῶν, τὰ ὁποῖα ἐν συμπράξει μετὰ σπετσιωτικῶν, ὧν ἡγεῖτο ὁ Νικόλαος Μπότασης, εἰσέπλευσαν εἰς τὸν Κορινθιακὸν κόλπον πρὸς καταστροφὴν ἢ ἐκδίωξιν τῶν περὶ τὰς Πάτρας σταθμευόντων τουρκικῶν πλοίων καὶ ἀποκλεισμὸν τῶν Πατρῶν καὶ τῆς Ναυπάκτου. Τὴν 21 Μαΐου ἡ ἑλληνικὴ μοῖρα διέπλευσε τὸ στόμιον τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου ἐν τῷ μέσῳ ἀκαταπαύστου πυρὸς τῶν φρουρίων τοῦ Ρίου καὶ Ἀντιρρίου καὶ ἐξηνάγκασε τὰ τουρκικὰ πλοῖα νὰ καταφύγωσιν εἰς τὸν μικρὸν λιμένα τῆς Ναυπάκτου. Πέντε ἀγγλικὰ πλοῖα εἰσπλεύσαντα εἰς τὸν κόλπον ἔθεσαν αὐτὰ ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς σημαίας των καὶ τὰ συνώδευσαν εἰς τὴν Ζάκυνθον. Εἶτα ὁ Δημήτριος Μιαούλης διέπρεψεν ὡς κυβερνήτης πλοίου εἰς πλείστας ναυμαχίας ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ πατρός του. Τῷ 1825 ἐστάλη ὡς κυβερνήτης τῆς κορβέτας «Κίμων» εἰς Λονδῖνον, ἐφ' ἧς ἐπέβαινεν ἡ ἐπιτροπή, ἥτις ἀπεστάλη ὅπως ζητήσῃ τὴν προστασίαν τῆς Ἑλλάδος ὑπὸ τῆς Ἀγγλίας κατὰ τὸν τύπον τῆς Ἰονίου πολιτείας. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν τοῦ ἑλληνικοῦ κράτους ἔλαβε τὸν βαθμὸν τοῦ πλοιάρχου. Θ. Β.

— **Μιαούλης, *Δημήτριος Δημ.*** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, ἔγγονος τοῦ ναυάρχου τοῦ Ἀγῶνος ἀπὸ τοῦ υἱοῦ του *Δημητρίου*, γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1836, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του. Καταταχθεὶς τῷ 1852 ὡς λιμενικός, μετετάχθη εἰς τὸν οἰκονομικὸν κλάδον (1855) καὶ κατόπιν εἰς τὸν μάχιμον ὡς δόκιμος α' τάξεως (1858). Λόγῳ τῆς μεγάλης μορφώσεώς του ὑπῆρξε πολὺ ἀγαπητὸς εἰς τὸν βασιλέα Γεώργιον, ὅστις τὸν ἐκράτει διαρκῶς ἐπὶ τῆς θαλαμηγοῦ «Ἀμφιτρίτη», ἐν ἀρχῇ ὡς ἀξιωματικὸν καὶ κατόπιν ὡς ὕπαρχον καὶ κυβερνήτην. Προαχθεὶς εἰς πλοίαρχον (1890), ἀφῆκεν ἐποχὴν ὡς διοικητὴς τῆς Σχολῆς τῶν Δοκίμων ἀπὸ τοῦ 1892 ἕως τοῦ θανάτου του (1899). Σ. Ε. Λ.

— **Μιαούλης, *Ἐμμανουὴλ Ἀνδρ.*** Ἕλλην ναυτικός, τέταρτος υἱὸς τοῦ *Ἀνδρέου Μιαούλη*, γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1812 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1871. Διετέλεσε πλοίαρχος τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ καὶ διευθυντὴς τοῦ Ναυστάθμου. Θ. Β.

— **Μιαούλης, *Ἐμμανουὴλ Ἀντ.*** Διαπρεπὴς ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ, πρῶτος διδάσκαλος (1853) τῆς ναυτικῆς θεωρίας εἰς τὴν ἐπὶ τοῦ «Λουδοβίκου» ἀρτισύστατον ναυτικὴν σχολήν. Ὡς κυβερνήτης τῆς μικρᾶς ἀτμομιολίας «Πανόπη», ναυαγησάσης (14 Δεκ. 1856) εἰς τὸν Βισκαϊκὸν κόλπον, ἔσωσε τὸ πλήρωμά του, χάρις εἰς τὸν ἀκριβῆ ὑπολογισμὸν τῆς παλιρροίας, λόγῳ τοῦ ὁποίου δὲν συνετρίβη αὕτη ἐπὶ τῶν βράχων (*Ἠλ. Κανελλοπούλου* «Μαθημ. Ναυτιλ.» λιθογρ. 1892, τόμ. Γ', 511). Εἶναι ὁ πρῶτος κυβερνήσας τὴν εἰς Ἀγγλίαν ναυπηγηθεῖσαν (1859) «Σαλαμινίαν». Σ. Ε. Λ.

— **Μιαούλης, *Ἰωάννης Ἀνδρ.*** Ἕλλην ναυτικός, υἱὸς τοῦ ναυάρχου Μιαούλη. Ἐγεννήθη τῷ 1803 ἐν Ὕδρᾳ καὶ ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1830, ταφεὶς ἐντὸς τοῦ Θησείου, ὄντος τότε ναοῦ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου. Διετέλεσε κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν πλοίαρχος ὑπὸ τὸν ὑποναύαρχον Σαχτούρην καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν μεταξὺ Κυθήρων καὶ Κρήτης ναυμαχίαν. Διατρίβων εἰς Ἀθήνας, ὅτε ἡ Ἀκρόπολις εὑρίσκετο ἔτι ὑπὸ τὴν κατοχὴν τῶν Τούρκων, προσεβλήθη ὑπὸ τύφου καὶ ἀπέθανε νεώτατος. Θ. Β.

— **Μιαούλης, *Ἰωάννης Ἀνδρ.*** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς ἐν Πειραιεῖ τῷ 1850. Δόκιμος β' τάξεως τῷ 1874, προήχθη διαδοχικῶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποναυάρχου (1910). Ὡς πλωτάρχης, κυβερνήτης τοῦ «Πηνειοῦ» ἐν Κρήτῃ, ἐπέσυρε τὸν θαυμασμὸν τῶν ναυάρχων τοῦ διεθνοῦς στόλου, διὰ τὰς ἀντιλήψεις του ὡς πρὸς τὴν ἐκτέλεσιν τῶν διαταγῶν τῆς κυβερνήσεως (1897). Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον ἠχμαλώτισε μετὰ τοῦ τορπιλλοβόλου «11» τὸ ἀτμόπλοιον «Γεώργιος» τῆς ἑταιρείας Χατζηδαούτ μεταφέρον τουρκικὸν στρατόν, τὸ μετονομασθὲν δὲ εἰς «Κρήτην» καὶ ἤδη «Αὔραν» ἐπίσης καὶ ἱστιοφόρον μεταφέρον τὸν φιλότουρκον Ἄγγλον βουλευτήν, κομιστὴν δὲ ἐπιστολῆς τοῦ σουλτάνου πρὸς τὸν Ἐτὲμ πασᾶν, Ἄσμετ Μπάρτλετ, ὅστις εἰς τὰ κατόπιν ἐκδοθέντα ἀπομνημονεύματά του τονίζει καὶ ἐξαίρει τὸ ἰδιόρρυθμον τοῦ χαρακτῆρός του ἐν τῇ ἀντιλήψει τῶν καθηκόντων του. Ὡς πλοίαρχος καὶ ἀρχηγὸς τῆς θωρηκτῆς μοίρας, κατέστειλε (16/29 Ὀκτωβρίου 1909) τὸ κίνημα τῶν ἀντιτορπιλλικῶν. Ἀπέθανεν ὡς γενικὸς διοικητὴς τοῦ ναυστάθμου (1913). Σ.Ε.Λ.

— **Μιαούλης, *Νικόλαος Ἀνδρ.*** Ἕλλην πλοίαρχος, ἕκτος υἱὸς τοῦ ναυάρχου Μιαούλη, γεννηθεὶς ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1818 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1872. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Μονάχου, εἶτα δὲ εἰς ἀγγλικὴν ναυτικὴν σχολὴν καὶ καταταχθεὶς εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικὸν διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ ὑπουργείου τῶν Ναυτικῶν καὶ ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Ὄθωνος. Θ. Β.

— **Μιαούλης, *Νικόλαος Δημ.*** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, υἱὸς τοῦ *Δημητρίου* καὶ ἔγγονος τοῦ ναυάρχου τοῦ Ἀγῶνος. Ἐγεννήθη ἐν Ὕδρᾳ τῷ 1833 καὶ ἀπέθανε τῷ 1885. Ὡς δόκιμος κατετάχθη τῷ 1858. Ἦτο εἷς τῶν ἱκανωτέρων χειριστῶν, προήχθη δὲ εἰς ἀντιπλοίαρχον. Σ. Ε. Λ.

**«Μιαούλης, *Ναύαρχος* —».** Ἐλαφρὸν ἀθωράκιστον καταδρομικὸν ἑλικοκίνητον, ναυπηγηθὲν εἰς τὰ ἐν Σέννῃ (Seyne-sur-Mer) ναυπηγεῖα «Forges et Chantiers de la Méditerranée» τῷ 1878 καὶ παραδοθὲν τῷ 1880, ἀριστοτέχνημα, εἰς κομψότητα καὶ ναυτικὰς ἀρετάς, τοῦ περιωνύμου ναυπηγοῦ Λαγκάν. Αἱ εἰς μέτρα διαστάσεις τοῦ σκάφους του, ὅπερ ἦτο σιδηροῦν ἐπενδεδυμένον διὰ ξύλου τὴν μετ' ἐπιχαλκώσεως, ἦσαν 75 μηκ., 11 πλάτ., 4,6 βύθισμα, τὸ δὲ ἐκτόπισμά του 1800 τόννων. Εἶχε μίαν ὁριζοντίαν μηχανὴν 2200 ἵππων, 6 κυλινδρικοὺς λέβητας 658 μ.² θερμαινομένης ἐπιφανείας, ταχύτητα οἰκονομικὴν 11 μιλλ., μεγίστην δὲ τοιαύτην 16 ½ μιλλ. Ἔφερεν ἐξαρτισμὸν δρόμωνος πλήρη 1718 τετρ. μέτρ. ἐπιφανείας ἱστιοφορίας, ἥτις ὅμως ἠλαττώθη κατόπιν, τοῦ πλοίου μετατραπέντος εἰς ἀτμομυοδρόμωνα, βραδύτερον δὲ (ὅταν τὸ σκάφος ἐχρησιμοποιήθη δι' ἐκτέλεσιν ὑπερωκεανίων ἐκπαιδευτικῶν πλόων) ἀντικατασταθέντων τῶν ἁπλῶν δολώνων διὰ διπλῶν πρὸς διευκόλυνσιν τοῦ πλοῦ. Ὁ ὁπλισμός του ἀπετελεῖτο ἐκ τεσσάρων πυροβόλων Κρούπ τῶν 17 ἑκατ. καὶ ἐξ ἐμβόλου σιδηροῦ, ὅπερ ὅμως δὲν ἐπέτρεπεν ἀναστροφὴν τοῦ πλοίου ἀνάπρωρα. Ἐστοίχισε 2.300.000 δρ., καταβληθέντος τοῦ ποσοῦ κατὰ τὸ μέγιστον μέρος ὑπὸ τοῦ τὸ πρῶτον χορηγοῦντος «Ταμείου τοῦ Ἐθνικοῦ στόλου». Ἓν τῶν ἀρίστων εὐδρόμων τῆς ἐποχῆς του, διήγειρε τὸν ἐνθουσιασμὸν τοῦ ὑποδούλου Ἑλληνισμοῦ, περιοδεῦσαν (1884) εἰς Μικρασίαν, τὰς προσκειμένας μεγαλονήσους, τὴν Κύπρον καὶ τὴν Συρίαν. Κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 1897, κυβερνώμενον ὑπὸ τοῦ πλοιάρχου Κοσμᾶ Ζώτου, ἀπεστάλη εἰς τὰ κρητικὰ παράλια λόγῳ τῶν ἀπειλουμένων σφαγῶν, πρὸς συνοδείαν τῶν ἐπιφορτισμένων τὴν μεταφορὰν γυναικοπαίδων ἐμπορικῶν πλοίων. Κατὰ τὴν ἐν τῷ λιμένι Ἡρακλείου διαμονήν του, ἀντιληφθὲν τὴν ἐπὶ τοῦ τουρκικοῦ εὐδρόμου «Φουάτ» ἐπιβίβασιν ἀτάκτων στιφῶν προωρισμένων ἐναντίον τῆς ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν πολιορκουμένης Σητείας, συναπέπλευσε καὶ παρηκολούθησε τὸ «Φουάτ», ἀναγκάσαν αὐτὸ διὰ τῶν πυροβόλων νὰ ἐπαναπλεύσῃ ἄπρακτον εἰς Ἡράκλειον καὶ ἀποβιβάσῃ τὰ στίφη· ἡ τοιαύτη πολεμικὴ ἐνέργεια τοῦ κυβερνήτου του, ὑπὸ ἀκήρυκτον πόλεμον καὶ ἄνευ διαταγῶν τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως, προεκάλεσεν ἐντονωτάτας διαμαρτυρίας τῶν ναυάρχων τοῦ εἰς τὰ κρητικὰ ὕδατα διεθνοῦς στόλου, ἀλλὰ καὶ ἐπέσυρε τὴν προσωπικήν των, ὡς ναυτικῶν, ἐκτίμησιν αὐτῶν πρὸς τὸν κυβερνήτην του. Κηρυχθέντος τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου, ἐγένετο μοιραρχὶς τῆς ὑπὸ τὸν Δημ. Κριεζῆν «δυτικῆς μοίρας», βομβαρδίσαν τὰ ἐξωτερικὰ φρούρια τῆς Πρεβέζης. Παροπλισθὲν τῷ 1912, ἐχρησιμοποιεῖτο ἔκτοτε ἐν Πόρῳ ὡς σχολὴ πυροβολικοῦ καὶ κατόπιν ὡς σχολὴ δοκίμων ὑπαξιωματικῶν· ἤδη (1931) ἐπωλήθη ὡς ἄχρηστον ὑλικόν. Σ. Ε. Λ.

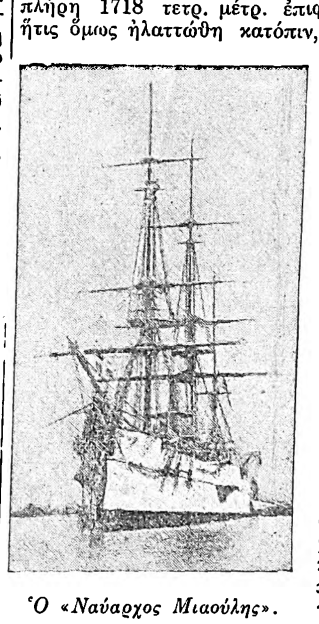

Ὁ «*Ναύαρχος Μιαούλης*».

— **«Μιαούλης»** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Κανονιοφόρος 43 τόν., 1 πυροβόλου 68 λ., ἔχουσα πλήρωμα 2 ἀξιωματικῶν, 1 ὑπαξιωματικοῦ καὶ 22 ναυτῶν. Εἶναι τὸ πρῶτον ἐν τῷ ἀναγεννηθέντι κράτει ναυπηγηθὲν πολεμικὸν πλοῖον, ὀνομασθὲν οὕτω (Β.Δ. 11 Δεκεμβρίου 1833) «εἰς μνήμην τῶν πρὸς τὴν πατρίδα ἐκδουλεύσεων τοῦ ναυάρχου καὶ διευθυντοῦ τοῦ Ναυτικοῦ». Σ. Ε. Λ.

**μιαουλίζω**, καὶ *μιαουρίζω*· ἄλλως *νιαουρίζω* (βλ. λ.).

**μιαούλισμα** (τό), καὶ *μιαούρισμα*: ἄλλως *νιαούρισμα* (βλ. λ.).

**μιαουρίζω**, *μιαούρισμα*· βλ. *νιαουρίζω*, *νιαούρισμα*.

**Μιάουταου** (Miautau) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχιπέλαγος τοῦ στενοῦ τοῦ Τσὶ-Λὶ εἰς τὴν Κιτρίνην θάλασσαν, μεταξὺ τῶν χερσονήσων Λιάο-Τοὺγκ καὶ Τσάτουγκ. Ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν μεγάλων νήσων, τῆς *Τα-*

Digitized by Google

*Πάϊ-Τσάν*, τῆς *Τσὰγκ-Τσὰν-Τάο* καὶ τοῦ *Μιάουτάου*. Καὶ αἱ τρεῖς νῆσοι εἶναι ἡφαιστειογενεῖς. Π.Γ.Α.

**μιαργυρίτης** (ὁ) (Miargyrit) [*'Ορυκτολ.*]. 'Ορυκτὸν θειοαντιμονιῶδες ἅλας τοῦ ἀργύρου. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $AgSbS_2$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα εἰς κρυστάλλους μικρούς, ἐπιμήκεις ἢ πινακοειδεῖς. Παρουσιάζει θραυσμὸν κογχώδη ἕως ἀνώμαλον, σκληρότητα 2—2$^1/_2$, εἰδικὸν βάρος 5,18 —5,25, λάμψιν μεταλλικὴν καὶ χρῶμα χαλυβδότεφρον καὶ μολυβδότεφρον ἕως μαῦρον. Τὸ χρῶμα τῆς κόνεως αὐτοῦ εἶναι κερασόχρουν. 'Απαντᾷ ἐπὶ φλεβῶν ἀργύρου εἰς τὸ Bräunsdorf παρὰ τὴν Freiberg, εἰς τὴν Hiendelaencina πλησίον τῆς Μαδρίτης, εἰς τὸ Μεξικόν, τὴν Χιλὴν κ. ἀ. Γ. Β.

**μιαρός,**—*ά*,—*όν*· ὁ μεμιασμένος, ὁ μεμολυσμένος, ἀκάθαρτος, βέβηλος, κακοῦργος, κατάρατος: «μιαρὰ ψυχή».

**μιαρότης,** —*ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μιαροῦ, ψυχικὴ ἀκαθαρσία, ἀχρειότης, κακουργία.

**Μιὰς** [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ρωσίας κειμένη ἐπὶ τῶν ἀνατολικῶν πλευρῶν τῶν Οὐραλίων καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σαμάρα-Τσελιαμπνίσκ. Εἶναι πρωτεύουσα τοῦ διαμερίσματος Μιάσκιι-Ζαβόντ καὶ ἀριθμεῖ 19.367 κατ. Θ. Β.

—**Μιὰς** [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τῆς Ρωσίας μήκους 500 χλμ., πηγάζων ἐκ τῶν ἀνατολικῶν κλιτύων τῶν Οὐραλίων ὀρέων. Τὸ ὑψηλὸν αὐτοῦ λεκανοπέδιον καὶ τὸ τῶν ἀριστερῶν αὐτοῦ παραποτάμων σχηματίζουσι τὸ χρυσοφόρον διαμέρισμα Μιάσκιι-Ζαβόντ. Θ. Β.

**Μιασκόφσκι, *Αὔγουστος*.** Λιθουανὸς οἰκονομολόγος (1838—1899), σπουδάσας ἐν Βερολίνῳ, Δόρπατ καὶ Ἀϊδελβέργῃ. 'Εδίδαξε πολιτικὴν οἰκονομίαν καὶ στατιστικὴν εἰς διάφορα γερμανικὰ πανεπιστήμια, εἰδικῶς δ' ἐπεδόθη κατὰ τὴν μέθοδον τῆς ἱστορικῆς σχολῆς εἰς τὴν μελέτην τῆς γεωργικῆς οἰκονομίας τῶν γερμανικῶν χωρῶν. Ἔγραψε: «Gebundenheit des Grundbesitzes und die Familienfideikommisse» (1873), «Erbrecht und Grundeigentumsverhöltnisse im Deutschen Reich» (1882—1884, 2 τόμ.), «Agrarpolitische Zeit und Streitfragen» (1889), «Das Problem der Grundbesityverteilung» (1890). Α. Α. Τ.

**μίασμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μιαίνειν, ἀκαθαρσία, λέρωμα· || ἔγκλημα· || μόλυσμα, νοσογόνος αἰτία: «ἑλειογενὲς μίασμα».

— [*'Εγκυκλ.*] Καλεῖται *μίασμα* στοιχεῖον ἀσύλληπτον συνήθως διὰ τῶν μέσων τῆς φυσικῆς καὶ χημείας, ὅπερ ὑπάρχει διακεχυμένον εἰς τὴν ἀτμοσφαῖραν, εἰσαγόμενον δὲ εἰς τὸν ὀργανισμὸν διὰ διαφόρων ὁδῶν καθίσταται πρόξενον ἐνοχλητικῶν καὶ ἐνίοτε ὀλεθρίων διαταραχῶν. Τὰ μιάσματα ἀποτελοῦσι μόρια ὀργανικῶν οὐσιῶν ἠλλοιωμένων, προερχόμενα ἐκ ζωϊκῶν ἱστῶν ἐν ἀποσυνθέσει διατελούντων, εἶναι δὲ πτητικὰ προϊόντα τῶν ἐκκρίσεων τοῦ πνεύμονος ἢ τοῦ δέρματος, δηλητηριωδῶν οὐσιῶν κλπ. Τὰς δὲ ἐκκρίσεις ταύτας ἀποκαλοῦσιν ὡσαύτως καὶ μιασματικὰς ἀναθυμιάσεις.

Ἡ παρουσία τῶν ὀργανικῶν οὐσιῶν ἐν τῷ ἀέρι ἀπεδείχθη πειραματικῶς ὑπὸ τοῦ Boussingault, ὅστις ἀνέλυσε τὰ ληφθέντα ἀέρια ὑπεράνω τῶν ἑλῶν τῆς 'Αμερικῆς. Αἱ ὀργανικαὶ αὗται οὐσίαι δὲν περιέρχονται ἐν τῷ ἀέρι, ἀλλ' ἐν τοῖς ὑδρατμοῖς τοῖς αἰωρουμένοις ἐν τῷ ἀέρι. Ἡ ἐκτίμησις ὅμως τῶν ἐν τῷ ἀέρι περιεχομένων ὀργανικῶν οὐσιῶν δὲν εἶναι εὐχερής· ἐν τούτοις εἶναι βέβαιον ὅτι τὰ μιάσματα τὰ διανύοντα μεγάλας ἀποστάσεις παρασυρόμενα ὑπὸ τῶν ρευμάτων τῆς ἀτμοσφαίρας, ἀνήκουσιν εἰς τὸ ζωϊκὸν ἢ τὸ φυτικὸν βασίλειον, ὀφειλόμενα εἰς οὐσίας κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἀποσυντεθειμένας καὶ ἀπαχθείσας μετὰ τοῦ ὕδατος, ὅπερ ἐξητμίσθη τῇ ἐπιδράσει τῶν ἡλιακῶν ἀκτίνων. Διὰ τοῦτο δὲ ὁ ὑγρὸς καὶ ὁ θερμὸς καιρὸς εἶναι ὁ μᾶλλον εὔθετος καὶ κατάλληλος πρὸς παραγωγὴν καὶ ἐξάπλωσιν εἰς τὴν ἀτμοσφαῖραν τῶν ὀργανικῶν τούτων οὐσιῶν· τὸ τοιοῦτον καθίσταται εὐκόλως αἰσθητὸν εἰς πάντας, ὁπόταν μετὰ τὴν ξηρασίαν ἐπέλθῃ βροχὴ καὶ τότε ἡ ἀτμοσφαῖρα ἀναδίδει ὀσμήν τινα χαρακτηριστικήν.

'Εν πάσῃ περιπτώσει, ἐὰν μέχρι τοῦδε δὲν κατωρθώθη νὰ καταμετρηθῇ ἐπακριβῶς τὸ ποσὸν τῶν ἐν τῷ ἀέρι περιεχομένων μιασμάτων ἢ καὶ ἡ ἀνάλυσις αὐτῶν, ὁ Pasteur ἀπέδειξεν ὅτι τὰ μιάσματα περιλαμβάνουσι πολλοὺς ζῶντας ὀργανισμούς, οἷον φύκη, δονάκια, βακτηρίας κλπ. Ὅθεν ἡ νοσηρὰ ἐπίδρασις τῶν μιασμάτων, ἥτις ἐκδηλοῦται διὰ τῆς ἐμφανίσεως τῆς νοσηρᾶς καταστάσεως, ἣν καλοῦσι *μίανσιν*, ἐπὶ τῶν μιασματικῶν παθήσεων, ἐξηγεῖται λογικῶς ὅπως καὶ πᾶσαι αἱ λοιπαὶ σηπτικαὶ παθήσεις, αἵτινες προέρχονται ἐκ τῆς ποιοτικῆς ἀλλοιώσεως τοῦ ἀέρος.

Διὰ τοῦ ὅρου *μίασμα* καθωρίζετο ἄλλοτε στοιχεῖον ἀγνώστου φύσεως, ὅπερ ἦτο τὸ αἴτιον τῶν ἐπιδημικῶν καὶ μεταδοτικῶν νόσων (χολέρας, πανώλους, τύφου κλπ.). Ὁ ἀσαφὴς οὗτος ὅρος δὲν ἔχει πλέον λόγον ὑπάρξεως, ἀφ' ὅτου αἱ ἀνακαλύψεις τοῦ Pasteur ἀπέδειξαν ὅτι τὸ αἴτιον τῶν νόσων τούτων ἦτο πάντοτε μορφολογικός τις παράγων, ἓν μικρόβιον. Μ. Ν. Κ.

**μιασματικός,** —*ή*,—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸ μίασμα, ὁ τοῦ μιάσματος, μολυσματικός: «μιασματικὴ ἑστία» ἢ νοσογόνος ἑστία, «μιασματικὸς πυρετὸς» ὁ ἐκ μιάσματος προερχόμενος.

**μιασματικότης,** —*ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μιασματικοῦ, τὸ νὰ εἶναί τι μιασματικόν.

**μιασματώδης** (ὁ, ἡ), —*ες* (τό)· ἄλλως *μιασματικὸς* (βλ. λ.).

**μιβόρα** (ἡ) (Mibora) [*Βοτ.*]. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας μικράς, πανταχοῦ σχεδὸν ἀπαντώσας. Γνωστὸν ἓν μόνον εἶδος, ἡ *μιβόρα ἡ ἐλαχίστη* (Mibora minima), μικρὰ ἐτησία πόα, ἀπαντῶσα εἰς ἀμμοαργιλλώδεις γαίας καὶ παρ' ἡμῖν ἐν Πελοποννήσῳ καὶ 'Ιονίοις νήσοις. Δ. Ν. Π.

**μιγαδικός,**—*ή*,—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς μιγάδα, ὁ τοῦ μιγάδος: «μιγαδικὸς ἀριθμός», «μιγαδικὴ ρίζα» (βλ. κατ.).

— **μιγαδικὴ *ρίζα ἐξισώσεως*.** Ἡ ρίζα τῆς ἐξισώσεως ὅταν εἶναι *μιγὰς* ἀριθμὸς (βλ. λ.).

— **μιγαδικὸς *ἀριθμός*·** βλ. *μιγὰς* ἀριθμός.

**μιγάς,**—*άδος* (ὁ, ἡ)· ὁ μεμειγμένος, ὁ ἐκ μείξεως προελθών· ἐπὶ ἀνθρώπου, ὁ ἐκ γονέων ἑτεροφύλων γεννηθείς, καὶ καθόλου, ὁ ἐξ ἑτεροφύλων καταγόμενος· || ἀρχ. «μιγὰς στρατός», «μιγάδες μισθοφόροι» οἱ ἐκ διαφόρων ἐθνῶν συλλεγέντες.

— [*Φυσιολ.*] Καλεῖται *μιγὰς* ὁ ἀπόγονος ὁ προερχόμενος ἐκ γονέων οἱ ὁποῖοι ἀνήκουν συνήθως μὲν εἰς διαφόρους ποικιλίας τοῦ αὐτοῦ εἴδους, σπανιώτερον εἰς διάφορα εἴδη τοῦ αὐτοῦ γένους καὶ σπανιώτατα εἰς διάφορα γένη μιᾶς οἰκογενείας. Ὁ σήμερον ἐν χρήσει ἐπιστημονικὸς ὅρος εἰς τὰς ὡς ἄνω περιπτώσεις εἶναι *νόθος*, ἡ δὲ παραγωγὴ νόθων ἔχει μελετηθῆ πειραματικῶς καὶ ἀπεδείχθη ὅτι ἀκολουθεῖ ὡρισμένους βιολογικοὺς νόμους, περὶ τῶν ὁποίων βλ. λ. *νόθος*. Θ. ΒΛ.

— [*'Ανθρωπολογ.*] Καλεῖται *μιγὰς* ὁ μεικτογενής, ὁ γεννηθεὶς ἐκ γονέων διαφόρων φυλῶν (*νόθος*). Λογικὴ συνέπεια τῆς ἐπὶ δεκάδας χιλιάδων ἐτῶν διαρκοῦς ἐπικοινωνίας καὶ τῶν μεταναστεύσεων τῶν μαζῶν τῶν ἀνθρώπων εἶναι ἡ παραδοχὴ τοῦ ἀδυνάτου ὑπάρξεως σήμερον ἀνθρωπολογικῶς καθαρῶν φυλῶν καὶ δὴ μεταξὺ τῶν προηγμένων λαῶν, ἀλλὰ καὶ τῶν κατωτέρων. Ἡ τοιαύτη ὅμως γενικὴ μεῖξις δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς πολὺ παλαιὰ καὶ βραδέως δώσασα μίαν ἁδρὰν διαίρεσιν τῶν ἀνθρώπων, βασικήν. Ὑπάρχει ὅμως καὶ μεῖξις τῶν νεωτέρων ἐποχῶν, τῆς συγχρόνου περιόδου, καὶ αὕτη εἶναι ἡ παράγουσα τοὺς *μιγάδας*, ἐκ τῆς ἑνώσεως οὐχὶ κυρίως συγγενῶν καὶ γειτονικῶν φυλῶν, ἀλλ' ἀτόμων ἀνηκόντων εἰς φυλὰς ἀπὸ ἀμνημονεύτων χρόνων ἐσχηματισμένας καὶ διὰ βασικῶν χαρακτήρων διακεκριμένας ἀπ' ἀλλήλων (λευκή, κιτρίνη, μέλαινα κλπ.). Εὑρίσκομεν τούτους κυρίως εἰς 'Αφρικήν, 'Αμερικὴν καὶ 'Ινδονησίαν, ὑπὸ τὰς διαφορωτάτας δὲ διασταυρώσεις. Οἱ μιγάδες ἔχουν διάφορα ὀνόματα, ἀναλόγως τοῦ μειχθέντος ἑκάστοτε αἵματος.

Τὰ φαινόμενα τῆς μείξεως τῶν φυλῶν καὶ τῆς ἐμφανίσεως τῶν ἐκγόνων δὲν ἔχουν ἀκόμη τελείως διαλευκανθῆ. Εἶναι γεγονὸς ὅτι μεταξὺ τῶν λευκῶν φυλῶν (ἢ τῶν συγγενῶν γενικῶς) ἡ μεῖξις εἶναι εὐνοϊκή. 'Αλλὰ καὶ αἱ πλεῖσται τῶν φυλῶν τῶν ἀνθρώπων εἶναι γόνιμοι μεταξύ των καὶ μετὰ τῶν μιγάδων, ὡς καὶ οὗτοι μεταξύ των. Οἱ ἔκγονοι ὅμως μιγάδες διασταυρούμενοι δὲν εἶναι τελείως ἐξηκριβωμένον ἐὰν παράγωσι νέον τύπον, ἢ ἐπιστρέφωσιν ἀργὰ ἢ ταχέως εἰς ἕνα τῶν ἀρχικῶν. Κατὰ τὸ πλεῖστον ἀκολουθοῦσι καὶ οἱ ἄνθρωποι τοὺς νόμους τοῦ Mendel ὡς πρὸς τὴν μεταβίβασιν τῶν κληρονομικῶν ἰδιοτήτων. Ἔχομεν ὅμως ἀποδείξεις ὅτι χαρακτηριστικά τινα (ἀνάστημα, κεφαλικὸς δείκτης) ἐκφεύγουν τῶν νόμων τούτων. Εἶναι δὲ δύσκολον τὸ πείραμα εἰς τὸν ἄνθρωπον, δεδομένης τῆς ἀπειρίας τῶν μεικτῶν μορφῶν, ἃς παρουσιάζει, ἀφοῦ σχεδὸν δὲν ὑπάρχει καθαρὰ ἀπὸ φυσικῆς ἀνθρωπολογικῆς ἀπόψεως φυλὴ ἐν τῷ κόσμῳ. Πολλάκις οἱ μιγάδες εἶναι ἥσσονος βιολογικῆς ἀξίας, ἀλλ' εὕρηνται καὶ ὑγιέστατοι σωματικῶς καὶ διανοητικῶς.

Ὁπωσδήποτε καλοῦσιν ἐν 'Αφρικῇ «νόθους» (Bastaards, Bâtards κλπ.) τὰ τέκνα τὰ προερχόμενα ἐκ μείξεως Εὐρωπαίων καὶ Ὀττεντότων (καὶ ἐκ φυσιολογικοῦ γάμου, τοῦ ὀνόματος νόθος μὴ ἔχοντος ἀτιμωτικὴν σημασίαν). Σπουδαίως μεμειγμένοι εἶναι ἐπίσης οἱ Μπόερς τοῦ Τράνσβααλ καὶ οἱ Πορτογάλοι τῆς Μοζαμβίκης (εὐρωπαϊκὸν καὶ αὐτόχθον αἷμα), ἐν μέρει δὲ οἱ Γάλλοι καὶ 'Ιταλοὶ τῆς 'Αλγερίας καὶ Τύνιδος, οἱ Ἱσπανοὶ τῆς 'Αλγερίας καὶ Μαρόκου. Μιγάδες εἶναι οἱ Ἱσπανοὶ τῶν Καναρίων νήσων, καταγόμενοι ἐκ τῶν Γκουάνσων καὶ οἱ Κρεολοὶ τῶν νήσων Reunion τέλος. Ἡ χώρα ὅμως τῶν μιγάδων εἶναι ἡ 'Αμερική, περιλαμβάνουσα περὶ τὰ 40 ἑκατομμύρια. Οἱ πλεῖστοι συναντῶνται ὅπου καὶ αἱ τρεῖς κύριαι φυλετικαὶ ὁμάδες, (Λευκή, 'Ινδοαμερικανικὴ καὶ Νεγρική), δηλαδὴ τὴν Κεντρικὴν 'Αμερικὴν (Μεξικόν, 'Αντίλλας κλπ.) καὶ ἀπὸ τῆς Κολομβίας μέχρι τῆς Βραζιλίας εἰς τὴν Νότιον κυρίως (τὸ $^1/_3$), εἰς δὲ τὴν Βόρειον σποραδικῶς. Εἰς τὸ Μεξικὸν καὶ καθόλου τὴν Κεντρικὴν 'Αμερικήν, ὁ αὐτόχθων πληθυσμὸς ('Ινδοαμερικανοὶ) εἶναι ἐλάχιστος, πλεονάζουν δὲ οἱ μιγάδες, (ἐν Μεξικῷ ἀποτελοῦντες τὸ ἥμισυ τοῦ πληθυσμοῦ) ἐξ ἰνδικοῦ καὶ εὐρωπαϊκοῦ αἵματος. Πολὺ ὀλιγώτεροι εἶναι οἱ μιγάδες ἐξ εὐρωπαϊκοῦ καὶ νεγρικοῦ αἵματος, τῶν Νέγρων ὄντων ἐλαχίστων. Τοὐναντίον, εἰς τὰς νήσους 'Αντίλλας καὶ ἄλλας, Ἀϊτὴν κλπ., ὅπου καὶ τὸ νεγρικὸν στοιχεῖον αὐξάνει, οἱ μιγάδες τούτου πλεονάζουν.

Συνεπείᾳ τῆς ἀφθονίας τῶν μιγάδων, ἐχάθησαν σήμερον αἱ διακρίσεις μεταξύ των. Πρότερον ἐκαλοῦντο διαφοροτρόπως, ὡς Mestizo ('Αμερικανοϊνδῆς καὶ λευκοῦ, Ἱσπανοῦ), Mulatte (Νέγρου καὶ λευκοῦ, Ἱσπανοῦ). Νεγρο-ἀμερικανοϊνδικὴ ἕνωσις παράγει τοὺς Zambo κλπ. Ὑπῆρχον δὲ καὶ ὀνόματα τῶν ἐκγόνων τούτων μετὰ λευκῶν, ἰδίᾳ λευκοῦ καὶ Mulatte (γυναικὸς) καλουμένων Terzeron ($^3/_4$ λευκοῦ), λευκοῦ καὶ Terzeron, καλουμένων Quarteron, εἶτα Quinteron κλπ. μέχρις Oktavon, ὁπότε ἀπὸ τῆς πέμπτης γενεᾶς (Fischer) πρόκειται περὶ λευκῶν ἀτόμων πλέον. Μιγάδες εἶναι πλεῖστοι λαοὶ τῆς 'Αμερικῆς ὑπὸ γνωστὰ ὀνόματα, ὡς οἱ Μαμελοῦκοι τῆς Βραζιλίας (Εὐρωπαιοϊνδοί), οἱ Κουριμπόκο τῆς Βραζιλίας ('Ινδονέγροι) κλπ.

Τέλος καὶ ἐν 'Ινδονησίᾳ, ὑπάρχουν τοιοῦτοι νεώτεροι μιγάδες, ἐκ λευκοῦ καὶ Μαλαίας ('Ιαβαναίας), λευκοῦ καὶ 'Ινδῆς, Μαλαίων καὶ Κινέζων, Νέγρων καὶ 'Ινδῶν.

Γυναῖκες μιγάδες εἶναι πολλάκις ἐξόχου ὡραιότητος ('Αμερική, 'Ινδονησία κλπ.), ὅπως καὶ αἱ κρεολαί.

*Κρεολοὶ* (criolo) καλοῦνται οἱ ἀπόγονοι ἀποίκων λατινικῶν φυλῶν, γεννηθέντες εἰς τὴν περὶ τὸν ἰσημερινὸν 'Αμερικήν, μεταβληθέντες τῇ ἐπιδράσει τῶν ἐξωτερικῶν ὅρων, ἄνευ μείξεως. 'Εν τούτοις μεγάλη παραλλαγὴ (χρώματος, χαρακτηριστικῶν) εἶναι ὕποπτος μείξεως. Οὗτοι καλοῦνται καὶ *λευκοὶ κρεολοί*, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τοὺς *μέλανας κρεολοὺς* τῶν μεταναστευσασῶν νεγρικῶν οἰκογενειῶν εἰς τὰ βόρεια. Καλοῦνται ὅμως *κρεολοὶ* καὶ οἱ μιγάδες λευκῆς φυλῆς γενικῶς. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

— **μιγὰς *ἀριθμός*.** Ὁ ἀριθμὸς ὁ συγκείμενος ἐκ πραγματικῶν καὶ φανταστικῶν μονάδων.

**Μιγγρελία** [*Γεωγρ.*]. Ἡ ἀρχαία *Κολχίς*. Χώρα ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ Εὐξείνου Πόντου μέχρι τοῦ Καυκάσου, κειμένη δὲ πρὸς Ν. τῆς 'Αβασγίας καὶ πρὸς Β. τοῦ ποταμοῦ Ριόν. Ἡ πρὸς Δ. ἔκτασις αὐτῆς εἶναι εὐφορωτάτη, περιλαμβάνει ὅμως ἐκτεταμένα ἕλη, ἡ δὲ πρὸς Α. εἶναι ὀρεινή, περικλείουσα μεταλλεῖα σιδήρου καὶ χρυσοῦ. Κάτ. 250.000 Χριστιανοὶ ὀρθόδοξοι. Γλῶσσα ἡ γεωργιανή. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς αὐτοκρατορίας τῆς Τραπεζοῦντος (1461) ἀπετέλεσεν αὐτόνομον ἡγεμονίαν ὑπὸ ἰθαγενεῖς ἡγεμόνας. Τῷ 1803 ὑπετάγη εἰς τὴν Ρωσίαν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1917 ἀποτελεῖ μέρος τῆς Σοβιετικῆς δημοκρατίας τῆς Γεωργίας.

**μιγγρελικός,**—*ή*,—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν Μιγγρελίαν, ὁ τῆς Μιγγρελίας: «μιγγρελικὴ γλῶσσα».

**Μιγγρελοὶ** (οἱ), ἢ ***Μιγγρέλιοι*.** Οἱ κάτοικοι τῆς *Μιγγρελίας*, οἱ ἀρχαῖοι *Κόλχοι*. Κατὰ τὰς ἐρεύνας τῶν Demolins καὶ Autran, οἱ Μιγγρελοὶ ἀνήκουσιν εἰς τοὺς Πρωτοέλληνας. Τῷ 1878, μετὰ τὴν ἐκστρατείαν τῶν Τούρκων πρὸς ἀνάκτησιν τῆς Μιγγρελίας καὶ 'Αβασγίας, πολλοὶ τῶν Μιγγρελῶν μετὰ 'Αβασγῶν καὶ Κιρκασίων ἐγκατέλιπον τὴν πατρίδα αὐτῶν καὶ μετηνάστευσαν εἰς Μικρὰν 'Ασίαν, ἐγκατασταθέντες εἰς τοὺς νομοὺς Κασταμονῆς καὶ Τραπεζοῦντος.

**μίγδην**· ἐπίρρ., μεμειγμένως, ἀναμίξ, ἀνάμικτα, ἀνάκατα· συνήθ. εἰς τὴν φρ. «φύρδην μίγδην», πρὸς δήλωσιν τελείας ἀκαταστασίας.

**Μιγιαζάκι** [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς 'Ιαπωνίας καὶ πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς νήσου Κιουσιοῦ καὶ ἔχει περὶ τὰς 42.000 κατ. Ἡ ἐπαρχία κεῖται εἰς τὰ ΝΑ. τῆς νήσου Κιουσιοῦ καὶ ἔχει πληθυσμὸν περὶ τὰς 500.000 κατ. Γ. Ι. Β.

**Μιγιαρὲς** (Mijarès) [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τῆς Ἱσπανίας, ὁ ἀρχαῖος *Λόσυρος* (βλ. λ.).

**Μιγιὰς** [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ρωσίας (βλ. *Μιάς*).

**Μίγια Σίμα** [*Γεωγρ.*]. 'Ιαπωνικὴ νῆσος (βλ. λ. *'Ιτάκου Σίμα*).

**Μιγιὸ** (Millot), ***Κλαύδιος-Φραγκῖσκος-Ξαβιέρος*.** Γάλλος ἱστορικὸς (1726—1785). 'Ανῆκεν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν καὶ ἐδίδαξε κατ' ἀρχὰς ἱστορίαν εἰς 'Ιταλίαν. 'Επιστρέψας εἰς Γαλλίαν ἐγένετο μέλος τῆς 'Ακαδημίας (1777) καὶ ἀνέλαβε

Digitized by Google

τὴν διαπαιδαγώγησιν τοῦ δουκὸς τῆς Ἀγγιένης. Ἔγραψε: «Στοιχεῖα τῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας ἀπὸ τοῦ Χλωδοβίκου μέχρι τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ'» (1767—1769), «Λογοτεχνικὴ ἱστορία τῶν τρουβαδούρων» (1774), «Πολιτικὰ καὶ στρατιωτικὰ ἀπομνημονεύματα, χρήσιμα διὰ τὴν ἱστορίαν τῶν βασιλέων Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ Λουδοβίκου ΙΕ'» (1777), «Διάλογοι καὶ ζωὴ τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας, πατρὸς τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ'» (1816) κλπ. Χ. Δ.

**Μιγιὼ** (Millau ἢ Milhau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Ἀβεϋρόν. Ἔχει ἀνθρακωρυχεῖα καὶ ἐργοστάσια δερμάτων καὶ χειροκτίων. Κάτ. 17.670. Τὸ Μιγιὼ (λατιν. Aemilianum) ἦτο κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀξιόλογον ὀχυρόν, ἀνῆκεν εἰς τοὺς κόμιτας τῆς Βαρκελώνης, βραδύτερον δὲ τοῦ Ἀρμανιὰκ μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Κατὰ τοὺς δύο ἐπακολουθήσαντας αἰῶνας ἔπαιξε σπουδαῖον ρόλον εἰς τοὺς πολέμους τῶν διαμαρτυρομένων ἐν Σεβέν. Μετὰ τὴν εἰρήνην τοῦ Ὑζὲς (1620) ὁ Ρισελιὲ διέταξε τὴν κατεδάφισιν τῶν ὀχυρώσεών της. Χ. Δ.

**Μίγκελ** (Miegel), *Ἀγνή*. Γερμανὶς ποιήτρια, γεννηθεῖσα τῷ 1879. Ἐγένετο γνωστὴ ἀπὸ τῶν πρώτων «Ποιημάτων» της (1901). Μεταξὺ τῶν ποιητικῶν της ἔργων ἀξιολογώτερον εἶναι «Βαλλίσματα καὶ ᾄσματα». Ἐκτὸς τούτων ἔγραψεν: «Ἱστορίας ἐκ τῆς Ἀνατολικῆς Πρωσσίας» καὶ «Θεατρικὰ ἔργα». Κατατάσσεται μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων Γερμανῶν ποιητῶν βαλλισμάτων. Γ. Ι. Β.

**Μιγκὲλ** (Miguel). Ἱσπανικὸς καὶ πορτογαλικὸς τύπος τοῦ ὀνόματος *Μιχαὴλ* (βλ. λ.).

— **Μιγκὲλ** (Miguel), *δὸν Μαρία Ἐβαρίστο*. Βασιλεὺς τῆς Πορτογαλίας (βλ. λ. *Μιχαήλ*, Δὸν Μαρία Εὐαρίστο).

**Μίγκιος** (Mincius) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαῖον ὄνομα τοῦ ἐν Ἰταλίᾳ ποταμοῦ *Μίντσιο* (βλ. λ.).

**μιγκουαρτία** (ἡ) (Minguartia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ὀλακιδῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὴν *μιγκουαρτίαν τὴν γουϊάνειον* (Minguartia Guyanensis), ἧς τὸ ξύλον εἶναι στερεώτατον καὶ χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν οἰκοδομικὴν καὶ τὴν ναυπηγικήν. Δ. Ν. Π.

**Μίγκουλα** (Migula), *Βάλτερ*. Γερμανὸς βοτανικός, γεννηθεὶς τῷ 1863. Σπουδάσας εἰς Μπρεσλάου φυσικὰς ἐπιστήμας, διωρίσθη τῷ 1893 ἔκτακτος καὶ τῷ 1895 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς δασονομικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Ἄϊζεναχ. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Σύστημα βακτηρίων» (1897—1900), «Κρυπτόγαμος χλωρὶς τῆς Γερμανίας, Αὐστρίας καὶ Ἑλβετίας» (1904), «Βιολογία τῶν φυτῶν» (1908), «Οἱ ἐδώδιμοι καὶ δηλητηριώδεις μύκητες» κλπ. Γ. Ι. Β.

**μῖγμα** (τό), ἢ *μεῖγμα*· τὸ μεμειγμένον, τὸ ἐξ ἀναμίξεως προελθόν, κρᾶμα: «μεῖγμα ἀκαθόριστον», «μεῖγμα χρυσοῦ καὶ ἀργύρου».

—*[Χημ.] Μῖγμα* ἢ πληρέστερον *μηχανικὸν μῖγμα* καλεῖται, πρὸς ἀντιδιαστολὴν ἀπὸ τὴν χημικὴν ἕνωσιν, τὸ προϊὸν τῆς ἀναμίξεως χημικῶν στοιχείων ἢ ἑνώσεων, εἰς τὸ ὁποῖον τὰ διάφορα συστατικὰ διατηροῦσι τὰς ἰδιότητάς των. Κατὰ τὴν παραγωγὴν μείγματος οὐδεμία μεταβολὴ τῆς ἐνεργείας παρατηρεῖται, εἶναι δὲ δυνατὸς ὁ διαχωρισμὸς τῶν διαφόρων συστατικῶν διὰ μηχανικῶν μέσων. Οὕτω λ. χ. ὅταν ἀναμείξωμεν κόνιν θείου μετὰ κόνεως σιδήρου παράγεται μῖγμα, τὸ ὁποῖον δυνάμεθα νὰ διαχωρίσωμεν πάλιν εἰς τὰ συστατικά του διὰ προσθήκης ὕδατος, ὁπότε ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ ὕδατος συλλέγεται τὸ θεῖον καὶ εἰς τὸν πυθμένα τοῦ δοχείου καθιζάνει ὁ σίδηρος. Ὁμοίως ἡ μαύρη πυρῖτις εἶναι μῖγμα ἐξ ἄνθρακος, θείου καὶ νίτρου, διότι δι' ὕδατος δυνάμεθα νὰ παραλάβωμεν καὶ ν' ἀποχωρίσωμεν τὸ νίτρον ἀπομένοντος τοῦ θείου καὶ ἄνθρακος, περαιτέρω διὰ διθειάνθρακος δυνάμεθα νὰ παραλάβωμεν τὸ θεῖον ὑπολειπομένου τοῦ ἄνθρακος. Ὡς μίγματα περαιτέρω θεωροῦνται καὶ τὰ διαλύματα τῶν χημικῶν ἑνώσεων εἰς τὸ ὕδωρ, ἐφ' ὅσον δὲν ἔχουσιν αὗται χημικὴν συγγένειαν πρὸς αὐτό, διότι δι' ἁπλῆς ἐξατμίσεως ἀποχωρίζεται πάλιν ἡ διαλελυμένη ἕνωσις ἀπὸ τοῦ διαλύτου. Σ. Γ.

—*μιγμάτων μέθοδος [Φυσ.]*. Θερμιδομετρικὴ μέθοδος μετρήσεως, χρησιμοποιουμένη διὰ τὴν μέτρησιν τῆς εἰδικῆς θερμότητος τῶν σωμάτων (βλ. *θερμιδομετρία*). Κ. Π.

**μιγματῖται** (οἱ) (Migmatite) *[Πετρογρ.]*. Πετρώματα κρυσταλλοσχιστώδη. Ἀποτελοῦνται κυρίως ἀπὸ γνευσίους, χαρακτηρίζονται δὲ ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι περιέχουν ἐντὸς τῆς μάζης αὐτῶν γρανιτικὸν ὑλικόν, τὸ ὁποῖον προῆλθεν ἐκ τοῦ γρανιτικοῦ πυρῆνος, πρὸς τὸν ὁποῖον τὰ πετρώματα ταῦτα εὑρίσκονται εἰς ἄμεσον ἐπαφὴν καὶ ἡ παρουσία τοῦ ὁποίου προεκάλεσε τὴν μεταμόρφωσιν αὐτῶν. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω συνάγεται ὅτι οἱ μιγματῖται ἐμφανίζονται εἰς τὴν κατωτάτην ζώνην μιᾶς κρυσταλλοσχιστώδους περιοχῆς καὶ ὅτι οἱ γνεύσιοι, οἱ ὁποῖοι παρουσιάζουν τὸν χαρακτῆρα τούτων, εἶναι ἰζηματογενοῦς προελεύσεως (παραγνεύσιοι). Οἱ μιγματῖται ἀναλόγως τῆς μορφῆς, τὴν ὁποίαν ἐμφανίζει τὸ γρανιτικὸν ὑλικὸν ἐντὸς τῆς μάζης αὐτῶν, λαμβάνουν διαφόρους ὀνομασίας. Οὕτω καλοῦνται *ἀρτηρῖται* (Arterite) ἢ *βενῖται* (Venite), ὅταν τὸ γρανιτικὸν ὑλικὸν διατάσσεται κατ' ἀρτηρίας, *ἀκματῖται* (Agmatite), ὅταν εὑρίσκεται κατὰ τὸ πλεῖστον ὑπὸ μορφὴν γωνιωδῶν θραυσμάτων, *νεπουλῖται* (Nebulite), ὅταν λαμβάνῃ διάταξιν νεφελοειδῆ, καὶ *στικτολῖται* (Stiktolite), ὅταν ἐμφανίζεται διάστικτον ἀπὸ γρανάτην, κορδιερίτην καὶ ἄλλα ἔγχροα ὀρυκτά. Οἱ μιγματῖται ἐμφανίζονται κυρίως εἰς τὰ κρυσταλλοσχιστώδη στρώματα τοῦ ἀρχαιολιθικοῦ αἰῶνος ἐν Φινλανδίᾳ καὶ Νοτίῳ Ἀμερικῇ, ἐνίοτε ὅμως καὶ εἰς παρόμοια στρώματα νεωτέρας γεωλογικῆς ἡλικίας. Γ. Β.

**μιγνύω**, καὶ *μίγνυμι* (ἢ *μειγνύω* καὶ *μείγνυμι*), *ἀόρ. ἔμιξα—ἐμίχθην, παθ. μετχ. μεμιγμένος*· ἀνακατώνω, συμμιγνύω, ἀναμιγνύω, συνήθως ἐπὶ στερεῶν, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ ὑγρῶν; «μιγνὺν σῖτον μετὰ κριθῆς, — μέλι μετὰ γάλακτος, — οἶνον μετὰ ὕδατος».

**μιγραινίνη** (ἡ) (Migraininum) *[Φαρμ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτω μεῖγμα 85 μ. ἀντιπυρίνης, 9 μ. καφεΐνης καὶ 6 μ. κιτρικοῦ ὀξέος. Τὸ σκεύασμα εἶναι φάρμακον ἀντινευραλγικόν, χρησιμοποιούμενον ἰδίᾳ ἐπὶ ἡμικρανίας, γρίππης κλπ. Κ. Γ. Μ.

**Μιγὼ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Μαρμαρικῆς ἐν Ἀφρικῇ, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου, μεταξὺ τῆς Κυρήνης καὶ τῆς ὀάσεως Αὔγιλα (νῦν Ἀουτζέλλα). Α. Θ. Σ.

**Μιγώνιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μέρος τῆς Λακωνίας, ἀπέναντι τῆς νησῖδος Κρανάης (νῦν Νησὶ ἢ Μαραθονήσι), ὅπου ὑπῆρχε ναὸς Ἀφροδίτης τῆς Μιγωνίτιδος. Α. Θ. Σ.

**Μιγωνῖτις** (ἡ) *[Ἀρχ.]*. Ἐπίθετον τῆς Ἀφροδίτης ἐν Λακωνικῇ, ὅπου ἐπιστεύετο ὅτι ὁ Πάρις ἔκτισε ναὸν εἰς τὴν θεάν, ὅτε ἥρπασε τὴν Ἑλένην. Ἡ χώρα ἔνθα ὁ ναὸς ἐκαλεῖτο *Μιγώνιον* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μιδάειον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἐν τῇ Μ. Ἀσίᾳ Ἐπικτήτου Φρυγίας, κειμένη μεταξὺ Δορυλαείου (Δορυλαίου) καὶ Πεσσινοῦντος, παρὰ τὴν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Τέμβριος. Ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἠχμαλωτίσθη κατὰ τὸ 35 π. Χ. ὁ Σέξτος Πομπήϊος, υἱὸς τοῦ Μ. Πομπηΐου, ὑπὸ τῶν ἀπεσταλμένων τοῦ Ἀντωνίου. Ἐκαλεῖτο καὶ *Μίδαιον* καὶ *Μιδίαιον* κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους, κατὰ δὲ τοὺς βυζαντινοὺς μετωνομάσθη *Μεδάϊον* καὶ ἀνῆκεν εἰς τὴν ἐπαρχίαν τῆς Φρυγίας Σαλουταρίαν. Κατὰ τὴν παράδοσιν ἡ πόλις εἶχε κτισθῆ ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Φρυγίας *Μίδα* (βλ. λ.), ὅστις ἐτιμᾶτο ἐν αὐτῇ, καὶ ἐν Πρυμνησῷ, ὡς ἥρως. Τούτου τὴν πωγωνοφόρον μετὰ φρυγικοῦ πίλου κεφαλὴν φέρουσι συνήθως, καὶ τὰ τῶν ρωμαϊκῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων νομίσματα τῆς πόλεως. ΚΑΨ.

**Μίδαμος** *[Μυθολ.]*. Εἷς τῶν 50 υἱῶν τοῦ Αἰγύπτου, φονευθεὶς ὑπὸ τῆς μνηστῆς του Ἀμυμώνης, θυγατρὸς τοῦ Δαναοῦ (Ὑγῖν. 170). Α. Θ. Σ.

**Μίδας**. Βασιλεὺς τῆς ἐν Μ. Ἀσίᾳ Φρυγίας, ζήσας κατὰ τὸ τέλος τοῦ Η' π. Χ. αἰῶνος. Ἐλέγετο ἀπόγονος τοῦ ἐκ Μακεδονίας εἰς Μικρὰν Ἀσίαν μεταναστεύσαντος βασιλικοῦ οἴκου τῶν Βριγῶν καὶ ἐφημίζετο ὡς πλούσιος καὶ σοφὸς βασιλεύς. Ἦτο υἱὸς τοῦ βασιλέως Γορδίου καὶ εἶχε συζευχθῆ τὴν Ἑρμοδίκην ἢ Δημοδίκην, ἐκ Κύμης τῆς Μ. Ἀσίας. Διὰ τῶν Κυμαίων εἶχεν ἔλθει εἰς φιλικὰς σχέσεις πρὸς τὴν μητρόπολιν τῆς Κύμης Χαλκίδα καὶ διὰ ταύτης πρὸς τὸ ἱερὸν τῶν Δελφῶν, ἔνθα, ἐν τῷ θησαυρῷ τῶν Κορινθίων, παρὰ τοὺς χρυσοῦς κρατῆρας τοῦ βασιλέως τῆς Λυδίας Γύγου, ὑπῆρχεν ὁ χρυσοῦς θρόνος του, ἐπὶ τοῦ ὁποίου καθήμενος ἐδίκαζε τοὺς ὑπηκόους του, πρῶτον ἐκ πολυτίμου μετάλλου ἀφιέρωμα ἐξ Ἀνατολῆς πρὸς τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος (*Ἡροδ.* Α' 14). Τὴν βασιλείαν του κατέλυσαν οἱ εἰς τὴν χώραν του εἰσβαλόντες Κιμμέριοι. Μετὰ τὸν θάνατόν του οἱ Φρύγες, ἀπελευθερωθέντες, ἐλάτρευσαν τὸν Μίδαν ὡς ἥρωα (ἰδίως ἐν Μιδαείῳ, τοῦ ὁποίου ἐλέγετο καὶ κτίστης, καὶ Πρυμνησῷ) καὶ ἔπλασαν αὐτὸν υἱὸν τῆς μεγάλης φρυγικῆς θεᾶς Κυβέλης. Τὸ ὄνομα τοῦ Μίδα κατέστη πολυθρύλητον κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, διὰ τὸν πλοῦτόν του δὲ καὶ διὰ τῶν ποικίλων περὶ αὐτοῦ παραδόσεων ἐν Μακεδονίᾳ καὶ Φρυγίᾳ μετέπεσεν οὗτος εἰς πρόσωπον μυθικόν. Αἱ κυριώτεραι τῶν περὶ αὐτοῦ παραδόσεων εἶναι αἱ ἑξῆς: Ἐν Ἐδέσσῃ τῆς Μακεδονίας, ἔνθα ὑπῆρχον «οἱ κῆποι τοῦ Μίδα» ἐν τῇ περιρρύτῳ κοιλάδι αὐτῆς, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐφύοντο τὰ πεφημισμένα διὰ τὸ ἄρωμά των ἑξηκοντάφυλλα ρόδα καὶ ἄνωθεν τῆς ὁποίας οἱ ἐξ Ἄργους Τημενίδαι, Περδίκκας, Γαυάνης καὶ Ἀέροπος ἔκτισαν τὴν πόλιν Αἰγὰς (Ἔδεσσαν), ἐλέγετο ὅτι ὁ Μίδας συνέλαβε τὸν Σιληνόν, «οἴνῳ κεράσας τὴν κρήνην» (ἡ αὐτὴ παράδοσις ἦτο διαδεδομένη καὶ ἐν Φρυγίᾳ, ἐν τῇ πόλει Θυμβρίῳ, ἔνθα ἐδείκνυον καὶ τὴν «Μίδου πηγήν», *Ξενοφ.* Ἀνάβ. 1. 2. 13). Ἡ παράδοσις ὅμως ὅτι ὁ δεθεὶς οὗτος Σιληνὸς ἀπεκάλυψεν εἰς τὸν Μίδαν ὡς μεγίστην εὐτυχίαν διὰ τὸν ἄνθρωπον τὸν ταχὺν θάνατόν του «ἄριστον πᾶσι καὶ πάσαις τὸ μὴ γενέσθαι, δεύτερον δὲ τὸ γενομένους ἀποθανεῖν ὡς τάχιστα», μαρτυρεῖ ὅτι ἡ ξένη αὐτὴ πρὸς τὴν εὔθυμον φύσιν τοῦ Ἕλληνος ἀνθρωπίνη ἀντίληψις παρήχθη ἐν τῇ Ἀνατολῇ καὶ ἐκ ταύτης μετεδόθη εἰς τὴν Μακεδονίαν καὶ τὴν ἄλλην Ἑλλάδα. Ἐκ Φρυγίας προῆλθε καὶ ἡ παράδοσις, ἡ διὰ τῶν Ἀλεξανδρινῶν συγγραφέων μεταδοθεῖσα καὶ εἰς τὴν Ρώμην, ὅτι ὁ βασιλεὺς Μίδας εἶχεν ὦτα ὄνου (ἐν Ἀσίᾳ πολλαὶ θεότητες ἀπεικονίζοντο ἔχουσαι μακρὰ ὦτα), τιμωρηθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀπόλλωνος, διότι κατὰ τὸν μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ Μαρσύου μουσικὸν εἰς τὸ ὄρος Τμῶλον ἀγῶνα ἔδωκε τὴν νίκην εἰς τὸν δεύτερον (κατ' ἄλλην παράδοσιν ὁ μουσικὸς ἀγὼν ἔγινε μεταξὺ Ἀπόλλωνος καὶ Πανός). Τὸ πάθημα ἀπέκρυπτε, κατὰ τὴν πλουτισθεῖσαν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων παράδοσιν, ἀπὸ τοὺς ἀνθρώπους ὁ Μίδας διὰ τοῦ ἐφευρεθέντος ὑπ' αὐτοῦ εὐρέος φρυγικοῦ πίλου, δὲν ἠδύνατο ὅμως ν' ἀποκρύψῃ καὶ ἀπὸ τὸν κουρέα του, ὅστις, βασανιζόμενος τὴν ψυχὴν διὰ τὴν ἀναγκαστικὴν (εἶχεν ἀπειληθῆ διὰ θανάτου, ἂν δὲν ἐτήρει σιωπὴν) ἀπόκρυψιν τοῦ μυστικοῦ, συνέλαβε τὴν σκέψιν νὰ σκάψῃ μίαν ὀπὴν εἰς τὴν γῆν καὶ νὰ ψιθυρίσῃ ἐντὸς αὐτῆς τὰς λέξεις «ὁ βασιλεὺς Μίδας ἔχει ὦτα ὄνου» καὶ νὰ σκεπάσῃ ἔπειτα αὐτὴν μὲ χῶμα. Καὶ ὁ μὲν κουρεὺς ἀνεκουφίσθη διὰ τῆς πράξεώς του ταύτης, τὸ μυστικὸν ὅμως ἀπεκαλύφθη, διότι αἴφνης ἐκ τῆς ὀπῆς ἐκείνης ἐφύτρωσε κάλαμος, ὅστις εἰς ἕκαστον φύσημα ἀνέμου ἐψιθύριζεν «ὁ βασιλεὺς Μίδας ἔχει ὦτα ὄνου». Διὰ τοῦ πλασθέντος ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων τούτου μύθου διεσκέδαζον οὗτοι ἀνευλαβῶς εἰς βάρος τῶν ξένων τῆς Ἀσίας θεῶν, οἵτινες ἔφερον μακρὰ ὦτα. Ἄλλη παράδοσις, πολὺ διαδεδομένη καὶ αὐτή, περὶ τοῦ Μίδα ἦτο ἡ τοῦ κινδύνου τὸν ὁποῖον διέτρεξεν οὗτος ν' ἀποθάνῃ ἐκ πείνης καὶ δίψης, διότι ὅ,τι ἔθιγεν ἐγίνετο χρυσός. Κατὰ τὴν παράδοσιν ταύτην ὁ Διόνυσος, τυχὼν εὐμενοῦς ὑπὸ τοῦ Μίδα ἐν Φρυγίᾳ, κατὰ τὴν μετὰ τῆς ἀκολουθίας του διέλευσίν του ἐκεῖθεν, ὑποδοχῆς, ὑπεσχέθη εἰς αὐτὸν ὅτι θὰ ἐκπληρώσῃ εὐχαρίστως οἱανδήποτε ἐπιθυμίαν του. Ὁ Μίδ ἐζήτησε τότε νὰ γίνεται χρυσὸς ὅ,τι ἔθιγεν. Ὅτε ὅμως ἀντελήφθη ὅτι διὰ τῆς ἱκανοποιήσεως τῆς ἐπιθυμίας του ἐκείνης ἐκινδύνευε ν' ἀποθάνῃ, ἐζήτησε τὴν σωτηρίαν του παρὰ τοῦ ἰδίου θεοῦ, ὅστις συνεβούλευσεν αὐτὸν νὰ λουσθῇ εἰς τὰ ὕδατα τοῦ ποταμοῦ Πακτωλοῦ, ὅστις ἀπὸ τότε ἔγινε χρυσορρόας. Εἰς μνημεῖον τοῦ Μίδα μετεβλήθη ὑπέρυθρος ἐκ ψαμμίτου βράχος, μεταξὺ τῶν πόλεων Πρυμνησοῦ καὶ Μιδιαίου, ὕψους 100 ποδῶν. Ἡ προσθία ὄψις τούτου διὰ τῶν γλυπτῶν κοσμημάτων παρέχει τὴν αἴσθησιν ἐπικρεμαμένου παραπετάσματος, ἡ δὲ κορυφή του καταλήγει εἰς ἀέτωμα, εἰς τὸ ὁποῖον ἔχει λαξευθῆ ἐπιγραφή, εἰς γλῶσσαν παρεμφερῆ πρὸς τὴν ἑλληνικήν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀναγινώσκεται τὸ ὄνομα τοῦ Μίδα. Ὁ τάφος τοῦ Μίδα εἶναι τὸ σπουδαιότερον μνημεῖον τῆς Φρυγίας. Ἡ ἅμαξα τοῦ Μίδα, τῆς ὁποίας τὸν δεσμὸν ἔκοψεν ὁ Μέγας Ἀλέξανδρος διὰ τοῦ ξίφους του ἐν Γορδίῳ, ἐθεωρεῖτο, ὡς γνωστόν, ὡς σύμβολον τῆς ἐπὶ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἡγεμονίας. Αἱ διάφοροι παραδόσεις περὶ Μίδα ἔγιναν πολλάκις καὶ τὸ θέμα διακοσμητικῶν παραστάσεων ἀρχαίων ἀγγείων.

Μὲ τὸ ὄνομα *Μίδας* μνημονεύονται ὑπὸ τῶν ἀρχαίων καὶ οἱ ἑξῆς: ὁ σύγχρονος τοῦ βασιλέως τῶν Λυδῶν Κροίσου βασιλεὺς τῶν Φρυγῶν *Μίδας*, ὁ ἐκδιώξας ἐκ τῶν ἀνακτόρων τὸν υἱόν του Ἄδραστον, γενόμενον ἀκούσιον φονέα τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ καθαρθέντα ὑπὸ τοῦ Κροίσου (*Ἡροδ.* Α' 35) καὶ εἷς Ἀκραγαντῖνος, νικήσας εἰς ἀγῶνα αὐλοῦ ἐν τοῖς Πυθίοις καὶ ἐξυμνηθεὶς ὑπὸ τοῦ Πινδάρου διὰ τὴν νίκην του. Βραδύτερον ἡ λέξις *Μίδας* μετέπεσεν εἰς μεταφορικὴν σημασίαν καὶ ἐσήμαινε τὸν πλουσιώτατον (*Λουκ.* Ἀλκ. 6). Γ. Δ. ΚΑΨΑΛΗΣ

**μίδας** (ὁ) (Midas) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τετραχείρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀρκτοπιθήκων*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους πιθήκους μὲ κεφαλὴν μικράν, λαιμὸν παχὺν καὶ βραχύν, πόδας βραχεῖς, οὐρὰν μακρὰν καὶ τρίχωμα μακρόν, πυκνὸν καὶ μεταξοειδές. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μίδας ὁ ὑπέρυθρος* (Midas roseus), ὅστις ἔχει μῆκος 50 περίπου ἑκατοστ. καὶ κεφαλὴν λεπτήν, τριγωνικήν, περιβαλλομένην ὑπὸ πυκνῶν τριχῶν ἐν εἴδει χαίτης, τρίχωμα μεταξοειδὲς οὖλον σχεδὸν καὶ μακρότατον καὶ οὐρὰν μακράν, στενὴν κατὰ τὴν ρίζαν της καὶ πλατυτάτην κατὰ τὸ ἄκρον της. Τρέφεται ἐξ ἐντόμων, διαφόρων καρπῶν καὶ ᾠῶν πτηνῶν. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Βραζιλίαν. Δ. Ν. Π.

*Μίδας ὁ ὑπέρυθρος.*

**Μιδάτ**· βλ. *Μιτχάτ*.

Digitized by Google

**Μιδέα** *[Μυθολ.]*. —1) Φρυγία γυνή, τῆς ὁποίας ἠράσθη ὁ Ἠλεκτρύων καὶ ἀπέκτησεν ἐξ αὐτῆς τὸν Λικύμνιον.

—2) Νύμφη, ἐκ τῆς ὁποίας, συνελθούσης μετὰ τοῦ Ποσειδῶνος, ἐγεννήθη ὁ Βοιώτιος ἥρως Ἀσπληδών. Ἀπὸ ταύτης ἔλαβε, κατὰ τὴν παράδοσιν, τὸ ὄνομά της ἡ βοιωτικὴ πόλις *Μιδέα*. ΚΑΨ.

**Μιδέα** (ἐπικ. *Μίδεια*) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. —1) Ἀρχαιοτάτη πολίχνη τῆς Ἀργολίδος, κτισθεῖσα, κατὰ τὴν παράδοσιν, ὑπὸ τοῦ Ἠλεκτρύονος, πατρὸς τῆς Ἀλκμήνης, ἥτις καὶ Μιδεᾶτις ἀπὸ τῆς πόλεως ταύτης ἐκαλεῖτο. Ἀνεξάρτητος οὖσα εἰς ἀρχαιοτάτους χρόνους, ἔγινε βραδύτερον ὑποτελὴς τῆς Τίρυνθος. Κατὰ τὸ 463—462 π. Χ. κατεστράφη μετὰ τῆς Τίρυνθος καὶ τῶν Ὑσιῶν ὑπὸ τῶν Ἀργείων, οἱ δὲ κάτοικοί της μετῴκησαν εἰς τὴν πόλιν τῆς Ἑρμιονίδος Ἁλιεῖς. Φαίνεται ὅμως ὅτι ἀνεκτίσθη βραδύτερον, διότι διεσώθησαν χαλκᾶ νομίσματα αὐτῆς τοῦ τέλους τοῦ Δ′ π. Χ. αἰῶνος, φέροντα ἔμπροσθεν μὲν κεφαλὴν τῆς Ἀργείας Ἥρας, ὄπισθεν δὲ πτηνὸν ἐπὶ κλάδου καὶ τὰ γράμματα ΜΙ. Ἴχνη τῆς Μιδέας ἀνευρέθησαν μετὰ κυκλωπείων τειχῶν καὶ προϊστορικῶν τάφων ὑπὸ ἀρχαιολόγων Σουηδῶν παρὰ τὸ χωρίον τῆς Ναυπλίας Δένδρα, κατὰ τὴν θέσιν «Παναγιὰ» τοῦ χωρίου Μέρμπακα.

—2) Πόλις τῆς Βοιωτίας, καταποθεῖσα μετὰ τῆς Ἄρνης, κατὰ τὸν Στράβωνα (C. 413), ὑπὸ τῶν ὑδάτων τῆς Κωπαΐδος. Κατὰ τὸν Παυσανίαν ὅμως (IX. 39.1) *Μίδεα* ἢ *Μίδεια* ἐκαλεῖτο πρότερον ἡ Λεβάδεια. Ἡ πόλις Μίδεα μνημονεύεται καὶ ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου (Ἰλ. Β. 507). ΚΑΨ.

— **Μιδέα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ὑπὸ τοὺς Δ. πρόποδας τοῦ Ἀραχναίου ὄρους (Προφήτης Ἠλίας) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Γκέρμπεσι*. Κάτ. (1928) 391. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ χωρίον *Ἀμυγδαλίτσα* (Μπάρδι). Χ. Δ.

— **Μιδέας, *τέως δῆμος*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, περιλαμβάνων τὰς νῦν κοινότητας Ἀνυφί, Ἀραχναίου, Μανεσίου, Μιδέας, Μέρμπακα καὶ Πουλακίδας, μὲ ἕδραν τὸ χωρίον Μέρμπακα. Χ. Δ.

**Μίδεια** *[Ἀρχ Γεωγρ.]* βλ. *Μιδέα*.

**Μίδενος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἀφρικῆς, ἐν Νουμιδίᾳ, ἡ τελευταία νουμιδικὴ πόλις τῆς Μαυριτανικῆς παραλίας, κειμένη κατὰ τὴν δυτικὴν ἄκραν τοῦ ὄρους Παππούα (νῦν Ἐδούγ). Α. Θ. Σ.

**Μιδηνοὶ** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Νουμιδίᾳ, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. IV, 3, 6). Πιθανὸν νὰ εἶναι οἱ αὐτοὶ μὲ τοὺς ὑπὸ τοῦ Στεφάνου τοῦ Βυζαντίου ἀναφερομένους *Μύνδωνας*, λιβυκὸν λαόν, «οἵπερ εὐγνωμονέστατοι δοκοῦσιν εἶναι καὶ πλουσιώτατοι τὸν βίον». Α. Θ. Σ.

**Μίδου *κρήνη***. Πηγή τις ἐν Φρυγίᾳ, ἐπὶ τῆς παρὰ τὴν πόλιν Θύμβριον ὁδοῦ, ὀνομαζομένη Κρήνη τοῦ βασιλέως Μίδα, «ἐφ' ᾗ λέγεται Μίδας τὸν Σάτυρον θηρεῦσαι, οἴνῳ κεράσας αὐτήν» (*Ξενοφ.* Κύρ. Ἀνάβ. I, 2, 13) (βλ. καὶ λ. *Μίδας*). Α. Θ. Σ.

**Μιδράς**. Ἐν τῇ μεταβιβλικῇ ἑβραϊκῇ ἡ λέξις αὕτη σημαίνει κυρίως τὴν ἔρευναν, τὴν ἑρμηνείαν, εἶτα δ' ἐν συγκεκριμένῃ ἐννοίᾳ δηλοῖ καὶ ραββινικὸν ὑπόμνημα εἰς τὴν ἁγίαν Γραφήν. *Μιδρασεὶμ* δὲ (ὅπερ εἶναι πληθυντ. τοῦ *μιδράς*) εἶναι τὰ βιβλία τὰ περιέχοντα τὴν μιδράς. Τοιαῦτα δὲ βιβλία, ἅτινα εἶναι γεγραμμένα ἐν τῇ μεταβιβλικῇ ἑβραϊκῇ, εἶναι ἡ *Μεχίλτα* (ἑρμηνεία μέρους τῆς Ἐξόδου), ἡ *Σίφρα* (ἑρμηνεία τοῦ Λευϊτικοῦ), τὰ *Σιφρὲ* (ἑρμηνεία τῶν Ἀριθμῶν καὶ τοῦ Δευτερονομίου), τὰ *Ραββὼθ* ἢ *Μιδρὰς Ραββὼθ* (=μεγάλα ὑπομνήματα) εἰς τὴν Πεντάτευχον καὶ εἰς τοὺς Μεγιλλώθ, δηλαδὴ εἰς τὸ Ἆσμα, τὴν Ρούθ, τοὺς Θρήνους, τὸν Ἐκκλησιαστὴν καὶ τὴν Ἐσθήρ, ἡ *Πεσίκτα* (ὑπόμνημα εἰς ὡρισμένας περικοπὰς τῆς Πεντατεύχου καὶ τῶν Προφητῶν, ἀναγινωσκομένας κατὰ τὰς ἑορτὰς καὶ τὰ κυριώτατα Σάββατα τοῦ ἐνιαυτοῦ), ἔτι δὲ καὶ ἄλλα τινὰ ὑπομνήματα. Ἐκ τῶν ὑπομνημάτων δὲ τούτων τὰ μὲν ἀναφερόμενα εἰς ἱστορικὰ καὶ ἠθικὰ τμήματα τῆς Γραφῆς ὀνομάζονται Χαγγαδᾶ (=διήγησις, διδασκαλία), τὰ δὲ ἀναφερόμενα εἰς τὰ νομικὰ μέρη τῆς Βίβλου λέγονται Χαλάχα (=ὁδός, κανών). Ἡ Μιδρὰς ἦτο ἔργον τῶν σωφερεὶμ (γραμματέων). Ἐπ' αὐτοῦ στηρίζεται ἡ *Μίσνα*. Π. Ι. Μ.

**Μίεβις**, ἢ ***Μιέβιδες***. Πέμπτος διάδοχος τοῦ α′ ἱστορικοῦ φαραὼ Μήνιος (4820 π. Χ.) καὶ ἄρα τῆς Α′ δυναστείας. Τὸ αἰγυπτιακόν του ὄνομα ἦτο *Μεριβά*.

**μιεμίτης** (ὁ) (Miemit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ τοπικὴν παραλλαγὴν τοῦ κρυσταλλοπαγοῦς δολομίτου, προερχομένην ἐκ τῆς γύψου τοῦ Miemo ἐν Τοσκάνῃ. Παρουσιάζει μορφὴν σφαιροειδῆ ἢ διάταξιν δενδροειδῆ. Γ. Β.

**Μίερες** (Mieres) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ Ὀβιέντο. Κάτ. 41.000. Εἶναι σιδηροδρομικὸς κόμβος τῆς γραμμῆς Λεώνης-Γκιχὸν καὶ ἔχει γαιανθρακωρυχεῖα καὶ μεταλλεῖα. Γ. Ι. Β.

**Μιεροσλάβσκι, *Λουδοβῖκος***. Πολωνὸς ἐπαναστάτης (1814—1878). Ἀνεμίχθη εἰς τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τοῦ 1830, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ ὁποίου κατέφυγεν εἰς Γαλλίαν. Ἐκεῖ ἐγένετο μέλος τῆς κεντρικῆς ἐπαναστατικῆς ἐπιτροπῆς τῶν ἐν Παρισίοις Πολωνῶν προσφύγων. Τῷ 1846, κατόπιν ἐντολῆς τῆς ἐπιτροπῆς ταύτης, μετέβη εἰς Πόζεν, ὅπως προπαρασκευάσῃ ἐκεῖθεν ἐπανάστασιν ἐν Πολωνίᾳ. Φθάσας ὅμως εἰς Πόζεν συνελήφθη καὶ ἀχθεὶς εἰς Βερολῖνον κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἡ ποινὴ αὕτη τῷ ἐχαρίσθη βραδύτερον (1848) μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Βερολίνου. Ἀνακτήσας τὴν ἐλευθερίαν του ἀπεπειράθη νὰ ὀργανώσῃ νέαν ἐπανάστασιν εἰς Πόζεν, ἀλλ' ἀποτυχὼν μετέβη εἰς Παρισίους καὶ μετὰ ἓν ἔτος εἰς Σικελίαν (1849). Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἐπαναστάσεως ἐν Βάδῃ, ἔνθα κληθεὶς εἶχεν ἀναλάβει τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἐπαναστατικοῦ στρατοῦ, ὁ Μιεροσλάβσκι κατέφυγεν εἰς Ἑλβετίαν καὶ εἶτα εἰς Γαλλίαν. Τῷ 1863 ἀνηγορεύθη ὑπὸ τῆς ἐθνικῆς πολωνικῆς κυβερνήσεως στρατηγὸς-δικτάτωρ, ἡττηθεὶς ὅμως τὴν 22 Φεβρουαρίου τοῦ ἰδίου ἔτους ὑπὸ τῶν Ρώσων ἐν Ραζιέγιεβο, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους. Ὁ Μιεροσλάβσκι ἔγραψε περὶ τῶν διαφόρων ἐπαναστάσεων, εἰς ἃς ἔδρασεν ἢ ἔλαβε μέρος. Τὰ βιβλία ταῦτα εἶναι: «Ἱστορία τῆς πολωνικῆς ἐπαναστάσεως», «Κριτικὴ ἔκθεσις τῆς ἐκστρατείας τοῦ 1831», «Ἀφήγησις περὶ τῆς ἐκστρατείας Βάδης», «Ἡ ἐπανάστασις τοῦ Πόζεν». Γ. Ι. Β.

**μιερσίτης** (ὁ) (Miersit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ διπλοῦν ἅλας ἐξ ἰωδιούχου ἀργύρου καὶ ἰωδιούχου χαλκοῦ $4\,AgJ + CuJ$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ κυβικὸν σύστημα, ἔχει χρῶμα ἀνοικτοκίτρινον, ἀπαντᾷ δὲ ἐντὸς φλεβῶν ἀργυρούχων μεταλλευμάτων τοῦ Broken Hill ἐν Neusüdwales. Γ. Β.

**μιεσίτης** (ὁ) (Miesit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ πυρομορφίτου, προερχομένην ἐκ τῆς ἰσομόρφου παραμίξεως πρὸς αὐτὸν καὶ μορίου ἀπατίτου, ἕνεκα τῆς ὁποίας περιέχει, καθ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν πυρομορφίτην, καὶ φωσφορικὸν ἀσβέστιον εἰς ἀναλογίαν 7% περίπου. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Mies τῆς Βοημίας. Γ. Β.

**μίζα** (ἡ), ἢ ***μίτζα***· ἡ διακυβευομένη χρηματικὴ καταβολὴ παίκτου εἰς τυχηρὸν παιγνίδιον, ἄλλως *πόστα*· ‖ μερίδιον ἐξ ἐκτάκτου κέρδους ἐπιχειρήσεώς τινος, παρεχόμενον κυρίως ὡς ἀμοιβὴ διὰ παροχὴν παρασκηνιακῶν ὑπηρεσιῶν.

— **μίζα** *[Ναυτ.]*. Πολεμικὸν σκεῦος τῶν πυρποληστῶν τοῦ Ἀγῶνος, ἀποτελούμενον ἐκ χαλκίνου κοίλου ἡμισφαιρίου διατρήτου, πρὸς ὃ ἦτο συνδεδεμένη μακρὰ χειρολαβὴ σιδηρᾶ. Ὅταν ὁ πλοίαρχος τοῦ πυρπολικοῦ, βέβαιος πλέον περὶ τῆς ἐπιτυχίας τῆς ἐπικειμένης ἐμπλοκῆς τοῦ προβόλου του εἰς τὸ ἐχθρικὸν σκάφος, συνῆγε τὸ πλήρωμα ὄπισθεν τοῦ μετεριζιοῦ τῶν γούμενων, ἀνεσκάλευε διὰ τῆς μίνας πύραυνον (τὸ καμίνι) ἀνημμένων ἀνθράκων, εἰς τὴν πρύμναν ἐπίσης εὑρισκόμενον· ὅταν δὲ καὶ οἱ γαντζέροι ἐπιτυχόντες νὰ ἀγκυρίσωσι τὰς ἁρπάγας τῆς ἐμβολῆς εἰς τὰ παρεξάρτια τοῦ ἐχθροῦ ἔσπευδον εἰς τὴν πρύμναν, ὁ πλοίαρχος λαμβάνων διὰ τῆς μίζας σωρὸν φλεγομένων ξυλανθράκων ἀπέθετεν αὐτοὺς εἰς τὴν μίναν τῆς μπαρούτης, τῆς στιγμῆς ταύτης ἀποτελούσης τὴν ἀπαρχὴν τοῦ ἔργου τῆς καταστροφῆς. Σ. Ε. Λ.

**Μιζὰρ** *[Ἀστρον.]*. Ἀραβικὴ ἐπωνυμία τοῦ ἀστέρος ζ Μεγάλης Ἄρκτου. Σ. Π.

**Μιζένο** (Capo Miseno) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον ἐπίσημον τῆς δυτικῆς Ἰταλίας, νοτία ἐσχατιὰ προβολῆς, ἀποτελουμένης ἀπὸ πελώριον ὑποκίτρινον ὄγκον γῆς, συνδεομένης δὲ πρὸς τὴν στερεὰν δι' ἰσθμοῦ στενοῦ καὶ ἀμμώδους (πλάτ. 40° 47′ Β., μῆκ. 14° 05′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1728: Gulf of Naples). Πρὸ αὐτοῦ ἐν σειρᾷ αἱ νῆσοι *Πρότσιντα* (Procida, ἀρχ. *Προχύτη*) καὶ *Ἴσκια* (Ischia, ἀρχ. *Αἰναρία* καὶ *Πιθηκοῦσσα*), ἀποσπασθεῖσαι τοῦ ἀκρωτηρίου πρὸ ἀμνημονεύτων χρόνων. Εἶναι τὸ *Μισηνὸν ἄκρον* τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

**μιζέρια** (ἡ)· ἀθλιότης, κακομοιριά, γκρίνια: «τί μιζέρια εἶναι αὐτὴ ποῦ σὲ βρῆκε σήμερα» ‖ φιλαργυρία: «κάποτε-κάποτε τὸν πιάνει μιὰ μιζέρια ποῦ λυπᾶται τὸ ψωμὶ ποῦ τρώει» (ἐκ τοῦ ἰταλ. mizeria).

—*[Χαρτοπ.]* Ἡ *μιζέρια* εἶναι διαβάθμισις ἐν τῷ παιγνίῳ της *μεγάλης πρέφας*, καθ' ὃ ὁ δηλῶν ὀφείλει νὰ μὴ «πιάσῃ χαρτωσιὰν» καμμίαν, γράφων ἄλλως δι' ἑκάστην τοιαύτην κάσσαν 10 μὲν ἐὰν ἐδήλωσε «κρυφὴν μιζέριαν» (παιζομένην μὲ κλειστὰ φύλλα) καὶ 15 ἐὰν ἐδήλωσε τοιαύτην ἀνοικτὴν («ντεκλαρέ»: παιζομένην μὲ ἀνοικτὰ φύλλα). Οἱ ἕτεροι δύο συμπαίζοντες «βοηθοῦν» τὸν δηλώσαντα ὑποχρεωτικῶς, ἀλλὰ καὶ ἀζημιώτως δι' αὐτούς.

**μίζερος, *—η, —ο*·** δημοτ., ἄθλιος, κακομοίρης, γκρινιάρης, δύστροπος: «μίζερος ἄνθρωπος, μὲ τίποτε δὲν εἶναι εὐχαριστημένος» ‖ πτωχός, ἐνδεής ‖ φιλάργυρος, γλίσχρος (ἰταλ. misero).

**μιζζονίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν σκαπολίθων. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ συνίσταται ἀπὸ τὸ μόριον τοῦ μαριαλίθου $Na_4Al_3Si_9O_{24}Cl = Ma$ καὶ ἀπὸ τὸ μόριον τοῦ μειονίτου $Ca_4Al_6Si_6O_{25} = Me$, τῶν δύο ἄκρων μελῶν τῆς ἐν λόγῳ ὁμάδος, τὰ ὁποῖα εἰς τὸ ὀρυκτὸν τοῦτο εὑρίσκονται εἰς ἰσόμορφον παράμιξιν ὑπὸ τὴν ἀναλογίαν $Ma_2Me_1$ ἕως $Ma_1Me_2$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ τετραγωνικὸν σύστημα ὑπὸ μορφὴν πρισματικήν, ἔχει εἰδικὸν βάρος 2,72 καὶ ἀπαντᾷ ἐντὸς κοκκώδους ἀσβεστολίθου παρὰ τὸ Arendal εἰς τὴν Σουηδίαν, ἐπίσης δὲ καὶ εἰς τὴν Φινλανδίαν καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Β.

**μιζήθρα** (ἡ)· βλ. λ. *μυζήθρα*.

**Μιζίζιος**. Ἀρμένιος ἀξιωματικὸς τοῦ βυζαντινοῦ στρατοῦ, ὑπηρετῶν ἐν Συρακούσαις τῆς Σικελίας τῷ 668, ὅτε ἐδολοφονήθη ἐκεῖ ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου Κώνστας Β′. Οἱ ἐν Σικελίᾳ ἀνηγόρευσαν τότε αὐτοκράτορα τὸν Μιζίζιον, παρὰ τὴν θέλησίν του, οὐχὶ διὰ τὰς ἐξαιρετικὰς αὐτοῦ ἀρετάς, ἀλλ' ἁπλῶς καὶ μόνον διότι «ἦν λίαν εὐπρεπὴς καὶ ὡραιότατος». Ὁ υἱὸς τοῦ δολοφονηθέντος βασιλέως Κωνσταντῖνος Δ′ ὁ Πωγωνᾶτος, πληροφορηθεὶς τὰ συμβάντα, ἔσπευσεν εἰς Σικελίαν μετὰ ἰσχυροῦ στόλου καὶ συλλαβὼν εὐχερῶς τόν τε δολοφόνον τοῦ πατρός του καὶ τὸν Μιζίζιον ἐφόνευσεν ἀμφοτέρους, μεθ' ὃ ἐπανῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ν. ΚΛΣ

**Μιζραχῆ, *Ἠλίας***. Σοφὸς ραββῖνος τῆς Κωνσταντινουπόλεως, γεννηθεὶς περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΕ′ αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν περὶ τὸ 1525. Ὑπεμνημάτισε τὰ σχόλια τοῦ Ρασῆ ἐπὶ τῆς «Πεντατεύχου», ἡρμήνευσε τὸ «Βιβλίον τῶν ἀποφθεγμάτων» τοῦ Μωϋσέως Κουσύ, ἠσχολήθη δὲ καὶ μὲ τὰς μαθηματικὰς ἐπιστήμας, ὑπομνηματίσας τὰ ἔργα τοῦ Πτολεμαίου καὶ τοῦ Εὐκλείδου καὶ συγγράψας ἔργον ἐπὶ τῆς ἀλγέβρας ὑπὸ τὸν τίτλον «Μελεσέτ-χὰ Μισπάρ», μέγα μέρος τοῦ ὁποίου μετεφράσθη εἰς τὴν λατινικὴν ὑπὸ τοῦ O. Schreckenfuchs καὶ ἐδημοσιεύθη μετὰ σχολίων ὑπὸ τοῦ S. Münster ἐν Βασιλείᾳ τῇ 1576. —Ω.

**Μίθαικος**. Ἀρχαῖος συγγραφεὺς ἐκ Σικελίας, συγγράψας μαγειρικὸν σύγγραμμα ὑπὸ τὸν τίτλον «Σικελικὴ ὀψοποιία», ὅπερ ἐφέρετο καὶ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὀψαρτυτικὰ» ἢ «Ὀψαρτυτικός». Πλὴν τούτου συνέγραψε καὶ «Κυνηγετικὰ» καὶ ἄλλα τοῦ αὐτοῦ εἴδους συγγράμματα. Ν. Λ.

**Μιθραδάτης**· βλ. *Μιθριδάτης*.

**Μίθρας** *[Θρησκειολ.]*. Περσικὸς θεὸς τοῦ φωτός, ἀρχάγγελος καὶ παραστάτης τοῦ Ὡρομάσδου ἐν τῷ κατὰ τοῦ σκότους ἀγῶνι, μεταπεσὼν ἀπὸ τῆς θρησκευτικῆς μεταρρυθμίσεως τοῦ Ζωροάστρου εἰς θεὸν τῆς ἀληθείας καὶ τῆς δικαιοσύνης. Δύναται νὰ παραβληθῇ πρὸς τὸν Ἀπόλλωνα τοῦ ἑλληνικοῦ πανθέου· ἀλλ' ἐνῷ παρ' ἐκείνῳ ἐκτυλίσσονται βαθμηδὸν μᾶλλον αἱ καλολογικαὶ ἰδιότητες, ἐξαίρεται ἐν τῷ Μίθρᾳ ὁ ἠθικὸς χαρακτὴρ καὶ ὁ

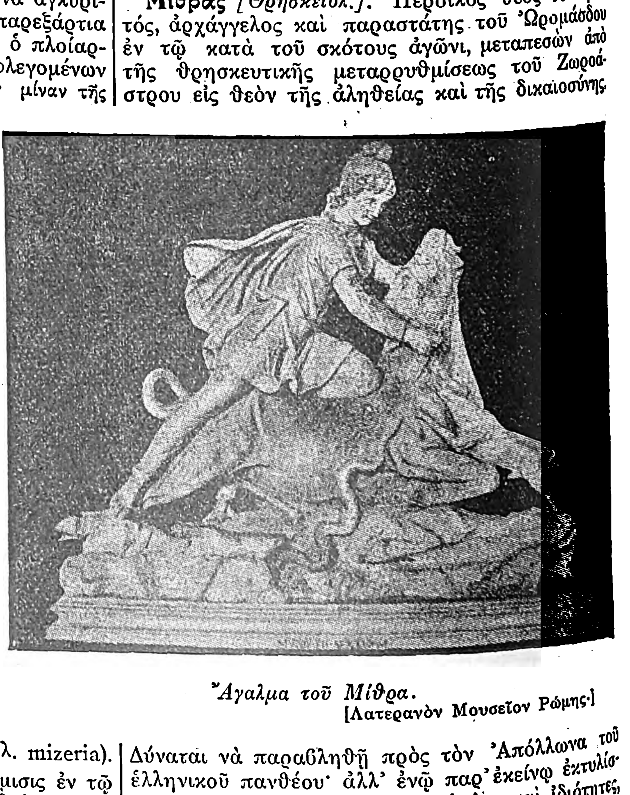

*Ἄγαλμα τοῦ Μίθρα.*
[Λατερανὸν Μουσεῖον Ρώμης.]

Digitized by Google

θεὸς οὗτος πιστεύεται τιμωρὸς τοῦ ψεύδους καὶ προστάτης τοῦ ὅρκου καὶ τῶν συμφωνιῶν. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον, ἔτι δὲ καὶ ἕνεκα τοῦ μαχητικοῦ αὐτοῦ χαρακτῆρος ὡς συμπαραστάτου τοῦ θεοῦ κατὰ τῶν δυνάμεων τοῦ σκότους, καθίσταται ὁ Μίθρας θεὸς τῶν στρατιωτῶν, ὡς τοιοῦτος δὲ κατακτᾷ καὶ αὐτὴν τὴν Δύσιν κατὰ τοὺς πρώτους μετὰ Χριστὸν αἰῶνας, καὶ δὴ ὡς κεντρικὸς θεὸς τῶν ἀπ' αὐτοῦ καλουμένων *μυστηρίων*, ἅτινα καταλαμβάνουσιν ἐξαιρετικὴν ὅλως θέσιν ἐν ταῖς μυστηριακαῖς θρησκείαις. Ν. Λ.

— **Μίθρα** *μυστήρια*· βλ. λ. *μυστηριακαὶ θρησκεῖαι*.

**Μιθρήνης.** Πέρσης στρατηγός, φρούραρχος τῆς ἀκροπόλεως τῶν Σάρδεων κατὰ τὴν εἰς Μικρὰν Ἀσίαν ἐκστρατείαν τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου. Ὅταν μετὰ τὴν παρὰ τὸν Γρανικὸν ποταμὸν νίκην ὁ Μέγας Ἀλέξανδρος ἐβάδισεν ἐναντίον τῶν Σάρδεων, ὁ Μιθρήνης ἐξῆλθε μετὰ τῶν ἐπισημοτέρων πολιτῶν εἰς προϋπάντησίν του καὶ παρέδωκεν εἰς αὐτὸν τὴν πόλιν μετὰ τῆς πέριξ χώρας. Εἰς ἀνταμοιβὴν διωρίσθη, τῷ 331 π. Χ., σατράπης τῆς Ἀρμενίας. Ν. Α.

**Μιθριδάτης,** ἢ *Μιθραδάτης* (ἐκ τοῦ περσ. Mithradata). Ὄνομα πολλῶν βασιλέων τοῦ Πόντου, τῆς Ἀρμενίας, τῶν Πάρθων, τοῦ Βοσπόρου καὶ τῆς Περγάμου.

ΑΡΜΕΝΙΑΣ

— **Μιθριδάτης** (35—52 μ. Χ.). Διάδοχος τοῦ Ἀρσάκη Α'. Κατορθώσας μακρόθεν διὰ δολοπλοκιῶν νὰ δολοφονηθῇ οὗτος, εἰσέβαλε κατόπιν εἰς τὴν Ἀρμενίαν, ἐκυρίευσε τὴν πρωτεύουσαν καὶ ἀνεκηρύχθη βασιλεύς, ἐπιτυχὼν παρὰ τοῦ Ρωμαίου αὐτοκράτορος Τιβερίου νὰ διατηρήσῃ τὴν κατακτηθεῖσαν χώραν. Κληθεὶς ὑπὸ τοῦ Καλιγόλα μετέβη εἰς Ρώμην, ὅπου ἔμεινε μέχρι τοῦ 47 μ. Χ. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν Ἀρμενίαν διετήρησε τὸν θρόνον του διὰ τῆς ὑποστηρίξεως τῶν Ρωμαίων. Ἐφονεύθη τῷ 52 μ.Χ. ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του Ραδαμίστου.

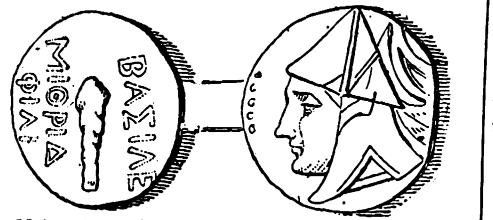


*Μιθριδάτης, βασιλεὺς τῆς Μικρᾶς Ἀρμενίας ἐπὶ βρονζίνου νομίσματος.*
[Ὄπισθεν ρόπαλον τοῦ Ἡρακλέους.]

ΠΑΡΘΙΑΣ

— **Μιθριδάτης Α'** (164—139 π.Χ.). Ὁ ἀληθὴς ἱδρυτὴς τῆς μοναρχίας τῶν Πάρθων, διὸ καὶ *μέγας* ἐπωνομάσθη. Διεδέχθη εἰς τὸν θρόνον τὸν ἀδελφόν του Φραάτην Α'. Ὑπέταξε τὴν Μηδίαν, Βαβυλωνίαν, Μεσοποταμίαν καὶ πολλὰς ἐπαρχίας τῆς Βακτριανῆς. Ἐπέβαλεν εἰς τὴν Ἀρμενίαν ὡς βασιλέα τὸν ἀδελφόν του καὶ πολεμήσας πρὸς τοὺς Σελευκίδας τῆς Συρίας ἀφήρεσεν ἀρκετὰς κτήσεις αὐτῶν. Συλλαβὼν αἰχμάλωτον τὸν Δημήτριον Β' τῆς Συρίας, μετεχειρίσθη αὐτὸν γενναιοφρόνως καὶ τοῦ ἔδωσεν ὡς σύζυγον τὴν θυγατέρα του Ροδογύνην. Ἀπέθανε δηλητηριασθεὶς ὑφ' ἑνὸς τῶν ἀδελφῶν του.

— **Μιθριδάτης Β'** (126—86 π. Χ.). Ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Διεξήγαγε νικηφόρους πολέμους ἐναντίον τῶν σκυθικῶν φυλῶν, ἐνίκησε τοὺς Ἀρμενίους καὶ ἀποκατέστησεν Ἀντίοχον τὸν εὐσεβῆ εἰς τὸν θρόνον τῆς Συρίας. Ἐφονεύθη ἐν πολέμῳ πρὸς τὸν βασιλέα τῆς Ἀρμενίας Τιγράνην.

— **Μιθριδάτης Γ'** (61—53 π. Χ.). Υἱὸς τοῦ Φραάτου Γ', ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον ἀφοῦ ἐδολοφόνησε τὸν πατέρα του. Ἐκδιωχθεὶς ἐκ τοῦ κράτους ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Ὀρόδου, ἐζήτησε τὴν βοήθειαν τοῦ Ρωμαίου διοικητοῦ τῆς Συρίας Γαβινίου, ἀντιπροσώπου τοῦ Πομπηΐου, ἀλλὰ δὲν ἐπέτυχεν αὐτήν. Κατορθώσας να συμμαχήσῃ μὲ τοὺς Ἄραβας, κατέλαβε τὴν Σελεύκειαν καὶ τὴν Βαβυλῶνα. Πολιορκηθεὶς ὅμως εἰς τὴν Βαβυλῶνα ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του ἐνικήθη καὶ συλληφθεὶς ἐφονεύθη κατὰ διαταγήν του.

ΒΟΣΠΟΡΟΥ

— **Μιθριδάτης.** Βασιλεὺς τοῦ Κιμμερίου Βοσπόρου, ἀπόγονος τοῦ Μιθριδάτου ΣΤ' τοῦ Πόντου, ζήσας κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ Α' μ. Χ. αἰῶνος. Τῷ 41 μ.Χ. ὁ Κλαύδιος τὸν ἀνηγόρευσε διάδοχον τοῦ Πολέμωνος Β', ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Κότυος. Ἐπολέμησε διὰ μισθοφορικοῦ στρατοῦ κατὰ τῶν Ρωμαίων, ἀλλὰ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος δὲν ἠδυνήθη νὰ ἐπανακτήσῃ τὸν θρόνον του.

ΠΕΡΓΑΜΟΥ

— **Μιθριδάτης.** Βασιλεὺς τῆς Περγάμου (64—45 π. Χ.). Ἐλέγετο υἱὸς τοῦ βασιλέως τοῦ Πόντου Μιθριδάτου ΣΤ', εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ὁποίου ἀνετράφη. Ἀποκτήσας τὴν φιλίαν τοῦ Καίσαρος, ἐπεφορτίσθη παρ' αὐτοῦ νὰ ὁδηγήσῃ εἰς Αἴγυπτον τὰ ἐκ Συρίας καὶ Κιλικίας ἀθροισθέντα στρατεύματα. Φθάσας εἰς τὸν Νεῖλον ὁ Μιθριδάτης, συνήντησεν ἰσχυρὰν αἰγυπτιακὴν στρατιὰν καὶ διέτρεξε τὸν ἔσχατον κίνδυνον, ἐξ οὗ ἔσωσεν αὐτὸν ὁ Καῖσαρ προσδραμὼν καὶ κατατροπώσας τοὺς Αἰγυπτίους. Πιθανῶς δὲ ἠκολούθησε κατόπιν τὸν Καίσαρα εἰς τὸν κατὰ τοῦ Φαρνάκου πόλεμον, διότι ἔλαβε παρ' αὐτοῦ τὸν τίτλον τοῦ βασιλέως τοῦ Βοσπόρου καὶ τετράρχου τῆς Γαλατίας. Θελήσας δὲ νὰ καταστῇ κύριος τῶν χωρῶν τούτων ἐφονεύθη ἐν μάχῃ. Α. Α. ΠΑΠΑΔΟΠΟΥΛΟΣ

ΠΟΝΤΟΥ

— **Μιθριδάτης** (402—363 π. Χ.). Σατράπης τοῦ Πόντου ὑποτελὴς τοῦ βασιλέως τῶν Περσῶν Ἀρταξέρξου. Συμμαχήσας μετὰ Κύρου τοῦ νεωτέρου, ἐπεχείρησε ν' ἀνακηρυχθῇ ἀνεξάρτητος βασιλεύς, ἀλλ' ἡ ἧττα ἐκείνου ἐματαίωσε τὰ σχέδιά του. Πολεμήσας κατόπιν τοὺς μυρίους τοῦ Ξενοφῶντος κατὰ τὴν κάθοδόν των, ἐπέτυχε ν' ἀμνηστευθῇ.

— **Μιθριδάτης Α'** (337—302 π. Χ.). Ἔγγονος τοῦ προηγουμένου, διαδεχθεὶς τὸν Ἀριοβαρζάνην. Ἐστερήθη τῶν κτήσεών του ὑπὸ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ἀλλὰ μετὰ τὸν θάνατον ἐκείνου τὰς ἐπανέκτησε καὶ ἀπέβη ἀνεξάρτητος βασιλεύς, ὀνομασθεὶς *κτίστης*, ἤτοι ἱδρυτὴς τοῦ ποντικοῦ βασιλείου. Ἀναμειχθεὶς εἰς τοὺς ἀγῶνας τῶν διαδόχων ἡττήθη καὶ ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Ἀντιγόνου.

— **Μιθριδάτης Β'** (302—266 π. Χ.). Υἱὸς καὶ διάδοχος τοῦ Μιθριδάτου Α'. Περιπλακεὶς εἰς ἀγῶνας πρὸς τὸν Λυσίμαχον, ἀπώλεσε πολλὰς κτήσεις, ἀλλὰ κατόπιν κατέκτησε τὴν Παφλαγονίαν καὶ Καππαδοκίαν.

— **Μιθριδάτης Γ'.** Υἱὸς τοῦ Ἀριοβαρζάνου Β', ἄγνωστον πότε ἀκριβῶς ἀνελθὼν τὸν θρόνον. Καταπολεμηθεὶς ὑπὸ τῶν γαλατικῶν φυλῶν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἐζήτησε τὴν συμμαχίαν τῶν Ἑλλήνων τῆς ἐν Πόντῳ Ἡρακλείας, διὰ τῆς βοηθείας τῶν ὁποίων τὰς ἀπέκρουσεν. Ἐνίκησε κατόπιν τὸν Σέλευκον, βασιλέα τῆς Συρίας, ὅστις ἐξηγόρασε τὴν εἰρήνην δοὺς εἰς αὐτὸν τὴν θυγατέρα του ὡς σύζυγον καὶ τὴν Καππαδοκίαν ὡς προῖκα. Ἀπέθανε περὶ τὸ 222 π. Χ.

*Μιθριδάτης ὁ Γ' τοῦ Πόντου ἐπὶ ἀργυροῦ νομίσματος.*
[Ὄπισθεν Ζεὺς καθήμενος, ἥλιος καὶ ἡμισέληνος μετὰ τοῦ τίτλου «βασιλέως Μιθριδάτου».]

— **Μιθριδάτης Δ'** (222—184 π. Χ.). Υἱὸς καὶ διάδοχος τοῦ Μιθριδάτου Γ'. Διεξήγαγε νικηφόρους πολέμους ἐν Παφλαγονίᾳ, τῆς ὁποίας κατέλαβε πολλὰς πόλεις, τελευταῖον ὅμως ἀπέτυχεν ἐν Σινώπῃ. Συνέζευξε τὴν θυγατέρα του Λαοδίκην μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Συρίας Ἀντιόχου.

— **Μιθριδάτης Ε'** (157—120 π. Χ.). Υἱὸς καὶ διάδοχος Φαρνάκου Α', ἐπικληθεὶς *Εὐεργέτης*. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος βασιλεὺς τοῦ Πόντου, ὅστις συνεμάχησε μὲ τοὺς Ρωμαίους. Κατὰ τὸν τρίτον Καρχηδονιακὸν πόλεμον ἔστειλεν ὡς ἐπικουρίαν εἰς τοὺς Ρωμαίους στρατὸν καὶ στόλον. Τοὺς ἐβοήθησε καὶ ἐναντίον τοῦ Ἀριστονίκου καὶ ἐδείχθη πάντοτε σταθερὸς εἰς τὴν φιλίαν του, διὸ καὶ οἱ Ρωμαῖοι τὸν ἀντήμειψαν γενναίως, παραχωρήσαντες εἰς αὐτὸν τὴν λεγομένην Μεγάλην Φρυγίαν. Ἀπέθανε δολοφονηθεὶς ὑπό τινος εὐνοουμένου του.

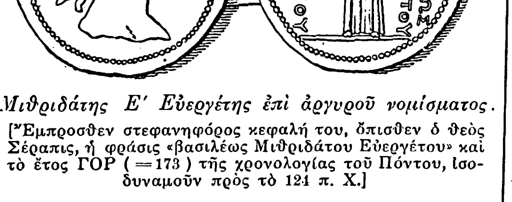


*Μιθριδάτης Ε' Εὐεργέτης ἐπὶ ἀργυροῦ νομίσματος.*
[Ἐμπροσθεν στεφανηφόρος κεφαλή του, ὄπισθεν ὁ θεὸς Σέραπις, ἡ φράσις «βασιλέως Μιθριδάτου Εὐεργέτου» καὶ τὸ ἔτος ΓΟΡ (=173) τῆς χρονολογίας τοῦ Πόντου, ἰσοδυναμοῦν πρὸς τὸ 121 π. Χ.]

— **Μιθριδάτης ΣΤ'**, ὁ λεγόμενος *μέγας καὶ εὐπάτωρ* (120—63 π. Χ.). Ἀνατραφεὶς ἐν Σινώπῃ, τῇ πρωτευούσῃ τοῦ κράτους, διεδέχθη τὸν πατέρα του Μιθριδάτην Γ' εἰς ἡλικίαν μόλις δεκατριῶν ἐτῶν ὑπὸ τὴν ἐπιτροπείαν τῆς μητρός του. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ μήτηρ του καὶ οἱ λοιποὶ συγγενεῖς του ἐπεβουλεύοντο τὴν ζωήν του, ἔφυγεν ἀπὸ τὴν αὐλὴν τῇ βοηθείᾳ πιστῶν ὑπηρετῶν καὶ ἀπεσύρθη εἰς ἔρημον μέρος, ὅπου ὑπεβάλλετο εἰς μακρὰς καὶ ἐπιπόνους ἀσκήσεις, ἀναγκαίας διὰ τὸ μέλλον ἔργον του. Σκληροὶ ἀγῶνες πρὸς τὰ θηρία ἐντὸς τῶν δασῶν, βαθμιαία ἕξις (βλ. κατ. [*Ἰατρ.*]) πρὸς ὅλα τὰ εἴδη τῶν δηλητηρίων διὰ νὰ καταστῇ ὁ ὀργανισμός του ἀπρόσβλητος ἀπὸ τὰς δολοφονικὰς ἀποπείρας τῶν ἐχθρῶν του καὶ περιοδεῖαι τῶν γειτονικῶν χωρῶν πρὸς μελέτην τῶν στρατιωτικῶν καὶ οἰκονομικῶν δυνάμεων αὐτῶν ἀπετέλουν τὴν σωματικὴν καὶ πνευματικὴν προπόνησιν πρὸς τοὺς μέλλοντας τραχεῖς ἀγῶνας τῆς βασιλείας του, τοὺς ὁποίους προέβλεπεν. Ἐπανελθὼν δὲ τῷ 113 π. Χ. εἰς τὴν πρωτεύουσαν ἀπηλλάγη ἀπὸ ὅλους τοὺς προσωπικοὺς ἐχθρούς. Ἐφόνευσε τὴν μητέρα του, τὴν σύζυγόν του, ἡ ὁποία ἦτο καὶ ἀδελφή του, καὶ ἄλλους τινὰς οἰκείους. Οὕτως ὁ Μιθριδάτης, καταστὰς μόνος κύριος τοῦ κράτους, ἤρχισε νὰ πραγματοποιῇ τὰ κατακτητικά του σχέδια. Ὑπέταξε τὴν Μικρὰν Ἀρμενίαν, τὴν Κολχίδα καὶ τὰς παρὰ τὸν Κιμμέριον Βόσπορον χώρας, ὅπου αἱ ἑλληνικαὶ πόλεις ἤνοιγον εἰς αὐτὸν τὰς πύλας των καὶ τὸν ἐδέχοντο ὡς προστάτην κατὰ τῶν ἐνοχλήσεων τῶν βαρβάρων γειτόνων. Κατόπιν κατέλαβε μέγα μέρος τῆς Παφλαγονίας καὶ Καππαδοκίας, τῆς ὁποίας καὶ ἐφόνευσε τὸν ἀνήλικον βασιλέα καὶ ἐξάδελφόν του Ἀριαράθην. Τοιουτοτρόπως, ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος ἐδημιούργησε μέγα κράτος, περιλαμβάνον ποικίλας φυλάς, ἀλλ' ἄνευ τῆς ἀναγκαίας στρατιωτικῆς ὀργανώσεως. Διὰ τῆς ἐπεκτάσεως ἐν τῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ τῶν ὁρίων τοῦ Ποντικοῦ κράτους, ὁ Μιθριδάτης ἦλθεν εἰς ἀντίθεσιν καὶ σύγκρουσιν πρὸς τοὺς Ρωμαίους. Οἱ τελευταῖοι εἶχον παραχωρήσει εἰς τὸν πατέρα του τὴν Μεγάλην Φρυγίαν, ἀλλ' ὀλίγον χρόνον μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἡ δωρεὰ ἀνεκλήθη. Ὁ Μιθριδάτης, ἂν καὶ εἶχεν εὔλογον ἀφορμήν, δὲν ἠδύνατο τότε νὰ κηρύξῃ ἀμέσως τὸν πόλεμον. Ἐπερίμενε τὴν κατάλληλον περίστασιν, ἥτις παρουσιάσθη τῷ 88 π. Χ., ὅτε οἱ Ρωμαῖοι ἔστειλαν εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν τὸν Μάνλιον Ἀκύλιον, ὅπως ἐπαναφέρῃ εἰς τοὺς θρόνους των τοὺς ὑπὸ τοῦ Μιθριδάτου ἐκβληθέντας ἐκ τῶν χωρῶν των ἡγεμόνας. Ὁ Μιθριδάτης ἀπέκρουσε τὴν ἀπαίτησιν ταύτην καὶ οὕτως ἐξερράγη ὁ πρῶτος Μιθριδατικὸς πόλεμος.

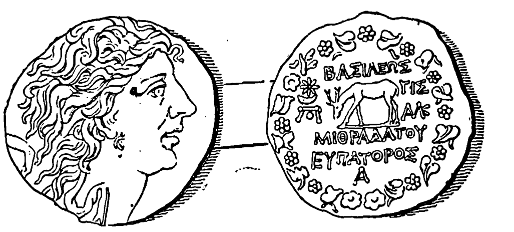


*Μιθριδάτης ΣΤ' ὁ Εὐπάτωρ ἐπὶ ἀργυροῦ νομίσματος.*
[Ὄπισθεν στέφανος κισσοῦ, ἔλαφος βόσκουσα, ἡμισέληνος, ἀστήρ, ἡ φράσις «βασιλέως Μιθριδάτου Εὐπάτορος» καὶ τὸ ἔτος ΓΙΣ (=213) τῆς χρονολογίας τοῦ Πόντου, ἰσοδυναμοῦν πρὸς τὸ 84 π. Χ.]

Ἡ τύχη ἐφάνη κατ' ἀρχὰς δυσμενὴς εἰς τοὺς Ρωμαίους. Μὴ ἔχοντες ἐπαρκῆ στρατεύματα, ἐνικήθησαν ἐπανειλημμένως καὶ ἐντὸς ὀλίγου χρόνου ὁ Μιθριδάτης ἔγινε κύριος ὅλης τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Εἰς τὰς νίκας του συνετέλουν καὶ οἱ λαοὶ αὐτῆς, εἰς τοὺς ὁποίους οὗτος ἐνεφανίζετο ὡς ἐλευθερωτὴς ἐναντίον τῆς ρωμαϊκῆς δεσποτείας. Οἱ Ρωμαῖοι ἦσαν ὑποχρεωμένοι νὰ μάχωνται οὐ μόνον ἐναντίον πανισχύρου μονάρχου, ἀλλὰ καὶ τῶν ἐθνῶν τῆς Ἀνατολῆς, τὰ ὁποῖα ἐν τῷ προσώπῳ του εὗρον τὸν ὑπέρμαχον τῆς ἐθνικῆς των ἀνεξαρτησίας. Δὲν ἠρκέσθη δὲ μόνον εἰς τὰς στρατιωτικάς του ἐπιτυχίας ὁ Μιθριδάτης, ἀλλ' ἐπεδίωξε νὰ ἐκμηδενίσῃ ἐντελῶς τὴν δύναμιν τῶν Ρωμαίων ἐν τῇ Ἀνατολῇ. Μυστικαὶ διαταγαὶ ἐστάλησαν εἰς πάσας τὰς πόλεις καὶ ἐν ῥητῇ ἡμέρᾳ ἐσφάγησαν ὅλοι οἱ Ρωμαῖοι πολῖται, ἀνερχόμενοι περίπου εἰς 100.000. Κυρίαρχος ἤδη ὅλης τῆς Μικρᾶς Ἀσίας καὶ πανταχοῦ ἀνευφημούμενος ὡς ἐλευθερωτής, ἐσκέφθη νὰ μεταφέρῃ τὰς νικηφόρους στρατιάς του εἰς τὴν κυρίως Ἑλλάδα. Αἱ ἑλληνικαὶ πόλεις, προεξαρχόντων τῶν Ἀθηναίων, Λακεδαιμονίων καὶ Βοιωτῶν, ἐμπλησθεῖσαι ἐνθουσιασμοῦ ἔστειλαν πρέσβεις ὅπως προσφωνήσουν αὐτὸν ὡς σωτῆρα καὶ ἐλευθερωτήν. Μόνον ἡ Ρόδος ἔμεινε πιστὴ εἰς τὴν Ρώμην. Ἐν μέσῳ τῶν ἐπιτυχιῶν τούτων ὁ Μιθριδάτης ἐτέλει ἀγῶνας ἐν Ἐφέσῳ καὶ διὰ νὰ στερεώσῃ καλύτερον τὴν μετὰ τῆς Ἑλλάδος συμμαχίαν συνεζεύχθη Ἑλληνίδα τῆς πόλεως ταύτης. Μετ' ὀλίγον στόλος τεράστιος μετέφερεν εἰς τὴν Ἑλλάδα στρατὸν συμποσούμενον εἰς 200.000 ἄνδρας. Ἀλλ' ἐνταῦθα ἡ τύχη ἔπαυσε νὰ εἶναι εὐμενὴς εἰς αὐτόν. Ὁ Σύλλας, ἡγούμενος τῶν ρωμαϊκῶν λεγεώνων, ἐκυρίευσε τῷ 86 π. Χ. ἐξ ἐφόδου τὰς Ἀθήνας, τὸ αὐτὸ ἔτος κατετρόπωσε τὸν στρατηγὸν Ἀρχέλαον ἐν Χαιρωνείᾳ καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος διὰ νέας νίκης παρὰ τὸν Ὀρχομενὸν ἐξεμηδένισε σχεδὸν ὅλην τὴν δύναμιν τοῦ Μιθριδάτου. Μόλις 20.000 ἀνδρῶν ἐσώθησαν εἰς τὴν



Digitized by Google

Μικρὰν Ἀσίαν, παρακολουθούμενοι ὑπὸ τῶν ρωμαϊκῶν λεγεώνων. Ἐνταῦθα ὁ Σύλλας ἠνάγκασε τὸν Μιθριδάτην τῷ 84 π. Χ. νὰ συνθηκολογήσῃ ὑπὸ τοὺς ἑξῆς ὅρους: νὰ παραιτηθῇ ὅλων τῶν κατακτήσεών του, νὰ παραδώσῃ 80 πλοῖα καὶ νὰ πληρώσῃ ὡς πολεμικὴν ἀποζημίωσιν 3.000 τάλαντα (περίπου 20.000.000 χρυσῶν δραχμῶν). Ἡ συνθήκη αὕτη εἰρήνης ἦτο διὰ τὸν Μιθριδάτην ἀνακωχὴ διὰ νὰ ἐπανορθώσῃ τὰς ἀπωλείας του καὶ ἐπιτύχῃ νέους συμμαχικοὺς συνδυασμούς. Πράγματι δὲ τῷ 83 π. Χ. ἐξερράγη ὁ δεύτερος Μιθριδατικὸς πόλεμος ἐξ αἰτίας τῆς αὐθαιρέτου συμπεριφορᾶς τοῦ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ Ρωμαίου ἀνθυπάτου Λικινίου Μουρήνα. Ὁ πόλεμος διήρκεσε μέχρι τοῦ 81, ὅτε ἐπῆλθε συνεννόησις συμφώνως πρὸς τοὺς ὅρους τῆς προτέρας συνθήκης. Καὶ ἡ δευτέρα αὕτη συνθήκη ἐχρησίμευσεν ὡς ἀνακωχὴ διὰ τὸν Μιθριδάτην. Συνεμάχησε μετὰ τοῦ ἐπὶ τῇ θυγατρὶ γαμβροῦ του Τιγράνου, βασιλέως τῆς Ἀρμενίας, καὶ τῶν πειρατῶν τοῦ Αἰγαίου, συνήγειρε νέαν στρατιὰν ἐκ τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Κιμμερίου Βοσπόρου καὶ τῷ 74 π. Χ. ἐκήρυξε τὸν πόλεμον. Εἰσέβαλεν ἀμέσως εἰς τὴν Βιθυνίαν καὶ ἐπροχώρησε μέχρι τῆς Χαλκηδόνος, ὅπου ἐνίκησε τὸν Ρωμαῖον ὕπατον Κότταν. Ἐκεῖθεν ἐπροχώρησε μέχρι τῆς Κυζίκου, ὅπου ἐπολιόρκησε στενῶς τοὺς Ρωμαίους, ἐπελθὼν ὅμως ὁ ὕπατος Λούκουλλος τὸν κατετρόπωσε καὶ τὸν ἠνάγκασε νὰ καταφύγῃ εἰς τὸν Πόντον παρακολουθῶν αὐτὸν κατὰ πόδας. Ἐνταῦθα ὁ Μιθριδάτης ὠχυρώθη εἰς τὰ Κάβειρα, ὅπου συνεκέντρωσε 44.000 στρατοῦ, ἀλλὰ γενομένης μάχης, τῷ 71 π. Χ., ἡττήθη καὶ κατέφυγεν εἰς τὸν Τιγράνην. Μετὰ ἓν ἔτος ἐκυριεύθη ἐξ ἐφόδου ὑπὸ τῶν Ρωμαίων καὶ ἡ Ἀμισός, ἡ ὁποία ὑπέστη δεινὴν καταστροφήν. Ἐπειδὴ δὲ ὁ Μιθριδάτης ἐν Ἀρμενίᾳ ἠσχολεῖτο εἰς τὴν συγκρότησιν νέου στρατοῦ, ἠναγκάσθη ὁ Λούκουλλος νὰ ζητήσῃ τὴν παράδοσίν του. Ἡ αἴτησις του ἀπερρίφθη καὶ συνήφθη μάχη παρὰ τὰ Τιγρανόκερτα τὸ 69 π.Χ. Καὶ ἐνίκησαν μὲν οἱ Ρωμαῖοι, ἀλλ' ὁ καταζητούμενος Μιθριδάτης κατώρθωσε νὰ διαφύγῃ, ἐλθὼν δὲ εἰς τὸν Πόντον συνήθροισε νέον στρατὸν καὶ τῷ 68 π.Χ. ἐνίκησε τοὺς Ρωμαίους περὶ τὴν Ζήλαν, φονεύσας ὑπὲρ τὰς 7.000. Τὸ γεγονὸς τοῦτο ἠνάγκασε τὸν Λούκουλλον νὰ ὑποχωρήσῃ ἐκ τῆς Ἀρμενίας, ἐπροκάλεσε δὲ καὶ στάσιν εἰς τὸν στρατόν, ἕνεκα τῆς ὁποίας ἀνεκλήθη οὗτος ὑπὸ τῆς ρωμαϊκῆς συγκλήτου. Ὁ ἀκούραστος Μιθριδάτης ἐπωφελήθη τῆς ἀπουσίας ταύτης τοῦ Ρωμαίου στρατηγοῦ καὶ παρεσκευάσθη πρὸς νέαν ἄμυναν. Μετὰ δύο ἔτη ὁ διάδοχος τοῦ Λουκούλλου Πομπήϊος κατενίκησεν εἰς τὰ Δάστειρα παρὰ τὸν Λύκον ποταμὸν τὸν φοβερὸν ἀντίπαλον τῆς Ρώμης καὶ τὸν ἠνάγκασε νὰ καταφύγῃ εἰς τὸν Κιμμέριον Βόσπορον. Ἐνταῦθα κατώρθωσε νὰ καταστείλῃ στάσιν ἐκραγεῖσαν ἐναντίον του εἰς τὴν Κολχίδα. Ἐνῷ δὲ προσεπάθει νὰ ἐξεγείρῃ κατὰ τῆς Ρώμης τὰς πόλεις τοῦ Πόντου, ἀφ' ἑτέρου ἐσκέπτετο νὰ στρατολογήσῃ νέας δυνάμεις ἀπὸ τὰς φυλὰς τοῦ Καυκάσου καὶ νὰ ἐκστρατεύσῃ ἐναντίον τῆς Ἰταλίας διὰ τῆς Θρᾴκης καὶ Ἰλλυρίας. Τὸ γιγάντειον τοῦτο σχέδιον ἐματαίωσεν ὁ υἱός του Φαρνάκης, ὅστις στασιάσας ἐναντίον του τῷ 63 π.Χ. τὸν ἐπολιόρκησεν εἰς τὸ Παντικάπαιον. Τότε μόνον ἠσθάνθη ὁ Μιθριδάτης νὰ τὸν ἐγκαταλείπῃ τὸ θάρρος καὶ ἐσκέφθη νὰ τερματίσῃ τὴν ζωήν διὰ δηλητηρίου. Ἀλλ' ἐπειδὴ οἱαδήποτε δόσις δηλητηρίου δὲν ἐνήργει, διότι εἶχε συνηθίσει τὸν ὀργανισμόν του δι' ἐπανειλημμένης χρήσεως μικρῶν δόσεων, ἔπεισεν ἕνα σωματοφύλακα νὰ τὸν φονεύσῃ διὰ ξίφους.

Ὁ Μιθριδάτης ΣΤ΄ ὑπῆρξεν εἷς τῶν μεγάλων ἀνδρῶν τῆς Ἀνατολῆς. Εἶχε παίδευσιν ἑλληνικήν, συζύγους Ἑλληνίδας καὶ καθόλου ἐπεζήτει παντοῦ καὶ πάντοτε νὰ ὑποστηρίζῃ καὶ προάγῃ τὰ ἑλληνικὰ γράμματα καὶ τὴν ἑλληνικὴν τέχνην. Διεκρίνετο ἐπὶ πλέον διὰ τὴν γλωσσομάθειάν του. Λέγεται ὅτι ἐγνώριζεν ὅλας τὰς γλώσσας τοῦ ποντικοῦ κράτους μετὰ τῶν διαλεκτικῶν ποικιλιῶν, ἐν ὅλῳ περὶ τὰς εἴκοσι δύο, καὶ συνεννοεῖτο ἄνευ διερμηνέως μὲ ὅλους τοὺς ὑπηκόους του. Α. Α. Π.

—*[Ἰατρ.]* Ὁ *Μιθριδάτης ΣΤ'*, δι' ἀτομικοὺς λόγους προφυλάξεως, ἀλλ' ἴσως καὶ ἐμφύτου φιλότητος, ἠσχολήθη περὶ τὴν τοξικολογίαν καὶ τὴν παρασκευὴν ἀντιδότων, ἐπιστημονικὸν σύμβουλον ἔχων τὸν φαρμακολόγον Κρατεύαν. Λέγεται δ' ὅτι ἐπὶ τούτοις τινὰς τῶν πέριξ αὐτοῦ ἐχειρούργει, ἄλλους δ' ἐδηλητηρίαζεν, ἰδίως κακούργους καταδικασθέντας εἰς θάνατον, δι' ὡρισμένων δηλητηρίων, ἰδίᾳ πρὸς πειραματισμὸν τῶν παρασκευαζομένων ὑπ' αὐτοῦ ἀντιδότων. Ἱστορεῖται μάλιστα ὑπὸ τοῦ Πλινίου, ὅτι καὶ αὐτὸς ὁ ἴδιος ἐλάμβανε καθ' ἡμέραν ποσότητα ἀντιδότου τινὸς *θηριακῆς*, ἵνα οὕτω ἐθισθῇ κατὰ παντὸς τυχὸν δοθησομένου αὐτῷ δηλητηρίου (XXV, 3). Ἡ θηριακὴ αὕτη κατέστη γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *μιθριδάτειος (Γαλ.* ΙΔ' 106), ἀπετελεῖτο δ' ἐκ 54 (κατόπιν 34) συστατικῶν. Ἐν ταύτῃ προσετίθετο καὶ τὸ αἷμα νησσῶν, ὧν ἡ τροφὴ συνίστατο εἰς δηλητηριώδη χόρτα καὶ ἐχίδνας ἢ εἰς ἃς πιθανὸν οὗτος ἐχορήγει πρὸς βρῶσιν τοιαῦτα (πρβλ. *Gell.* XVII, 16). Πρὸς τῇ ἀντιδότῳ ταύτῃ ἐλάμβανε καθ' ἡμέραν καὶ αὐξανομένας δόσεις δηλητηρίων φαρμάκων, γνωρίζων ὅτι ταῦτα δύνανται νὰ καταστῶσιν ἀνενεργῆ ἐπὶ εἰθισμένου πρὸς αὐτὰ ὀργανισμοῦ *(μιθριδατισμός)*. Ὁ Μιθριδάτης φέρεται ἐπίσης ὡς ἐφευρέτης καὶ ἄλλων θηριακῶν, ὧν πλεῖστα εἴδη μετὰ ταῦτα καὶ ὑπὸ ἄλλων παρεσκευάσθησαν καὶ ὧν ἡ χρῆσις ἐξηκολούθησε μέχρι τῶν νεωτέρων ἔτι χρόνων. Εἰς τὴν χρῆσιν τῶν ἀντιδότων τούτων καὶ τὸν ἐθισμὸν πρὸς τὰ δηλητήρια ἀπεδόθη καὶ ἡ βραδύτης ἢ ἀνενέργεια τοῦ ληφθέντος δηλητηρίου, ὅτε ἡττήθη ὑπὸ τοῦ Πομπηΐου, καὶ ἡ συνεπείᾳ τούτου θανάτωσις διὰ ξίφους. Τὰς ἀτομικὰς αὐτοῦ παρατηρήσεις (ὑπομνήματα, κατὰ Πλούταρχον) ἐπὶ τῶν ἐν λόγῳ πειραμάτων αὐτοῦ ἀνευρὼν ὁ Πομπήϊος, παρέδωκε τῷ γραμματικῷ Π. Λενναίῳ πρὸς μετάφρασιν εἰς τὴν λατινικήν, ταῦτα δ' εἶδε καὶ ὁ Στράβων ἐκτεθειμένα ἐν τῷ Καπιτωλίῳ. Λέγεται δ' ὅτι ἔγραψε καὶ βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Θηριακά». Γνωστὴ εἶναι καὶ ἡ γνώμη αὐτοῦ περὶ τῆς προφυλακτικῆς θεραπείας τῆς λύσσης δι' ἐπιθέσεως καρύων διαμασωμένων ὑπὸ νήστεως ἀτόμου. ΑΡ.Π.Κ.

ΑΛΛΑ ΠΡΟΣΩΠΑ

— **Μιθριδάτης.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ δύο Πέρσαι ἀξιωματοῦχοι, ὧν ὁ μὲν εἷς ἦτο γαζοφύλαξ τοῦ βασιλέως Κύρου (*Ἔσδρα α'* 8), ὁ δ' ἕτερος διετέλεσε κυβερνήτης τῆς Σαμαρείας ἐπὶ Ἀρταξέρξου (*Ἔσδρα δ'* 7). Π. Ι. Μ.

**Μιθριδάτιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀχυρὸν φρούριον τῆς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ Γαλατίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Τρόκμων, ΒΔ. τῆς Καισαρείας, παρὰ τὰ μεθόρια τοῦ Πόντου. Τὸ φρούριον τοῦτο μετὰ τῆς πέριξ χώρας παρεχώρησεν ὁ Πομπήϊος τῷ 63 ἢ 62 π. Χ. εἰς τὸν Δηϊόταρον, τετράρχην τῶν ἐν Μ. Ἀσίᾳ Γαλατῶν, φίλον τῶν Ρωμαίων. Ἐπὶ τῶν ἐρειπίων αὐτοῦ ἐκτίσθη, περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἡ πόλις *Γιουζκὰτ* ἢ *Ὑοσκάτη*. Α. Θ. Σ.

**μιθριδατισμὸς** (ὁ). Ὁ βαθμιαῖος ἐθισμὸς τοῦ ὀργανισμοῦ εἰς τὰ δηλητήρια, εἰς τρόπον ὥστε οὗτος νὰ ἀνέχηται καὶ τοξικὰ ἢ καὶ ἔτι μείζονας δόσεις. Τὸ φαινόμενον τοῦ μιθριδατισμοῦ παρατηρεῖται εἰς τοὺς μορφινομανεῖς, αἰθερομανεῖς, κοκαϊνομανεῖς, εἰς τοὺς μανιώδεις καπνιστάς κτλ., οἵτινες βαθμηδὸν ἐθισθέντες εἰς τὰ ἀνώτερω δηλητήρια λαμβάνουσι πολλαπλασίας δόσεις τῆς τοξικῆς τοιαύτης ἄνευ οὐδενὸς φαινομένου ὀξείας δηλητηριάσεως. Ὁ μιθριδατισμὸς ἔλαβε τὸ ὄνομά του ἐκ τοῦ βασιλέως τοῦ Πόντου *Μιθριδάτου ΣΤ'* (βλ. λ.). Κ. Α. ΤΖΩΝΗΣ

**Μιθριδάτου** *βουνὸς [Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία, ὑφ' ἣν εἶναι γνωστὸς διεθνῶς (Mithridate's mount) εἰς τοὺς ναυτικοὺς βουνὸς νοτίως τῆς πόλεως τοῦ Κὲρτς (πλάτ. 45°20' Β., μηκ. 36°31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2205: Kertch strait). Χρησιμεύει ὡς γνώρισμα εἰς τοὺς πρὸς τὸν Κιμμέριον Βόσπορον προσπλέοντας καὶ ἀπὸ τοῦ σχήματός του («πιλάφ-τεπέ») καὶ ἀπὸ ναοῦ ὁμοιάζοντος ἀρχαιοελληνικὸν τοιοῦτον καὶ ἐπιστέφοντος τὴν κορυφήν του. Σ. Ε. Λ.

— **Μιθριδάτου** *χώρα [Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ἀσιατικῆς Σαρματίας, παρὰ τὸν ποταμὸν Ρᾶ (Βόλγαν), λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἀπὸ τοῦ *Μιθριδάτου*, βασιλέως τοῦ Κιμμερίου Βοσπόρου (42—49 μ. Χ.), καταφυγόντος ἐνταῦθα ἐν τῷ τελευταίῳ κατὰ τῶν Ρωμαίων πολέμῳ ἐπὶ τοῦ αὐτοκράτορος Κλαυδίου. Α. Θ. Σ.

**Μιθροβαῖος.** Εἷς τῶν Περσῶν μεγιστάνων, καταχθεὶς μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Αὐτοβάρου εἰς τὸ κατὰ τὸ 324 π. Χ. καταρτισθὲν ἐκ 30.000 Ἀσιανῶν ἄγημα τῶν ἑταίρων ἱππέων τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου. Α. Θ. Σ.

**Μιθροβαρζάνης.** Πέρσης ἢ Χαλδαῖος σοφός, ζήσας κατὰ τὸν Γ' π. Χ. αἰῶνα, παρὰ τῷ ὁποίῳ, ὡς ἀναφέρει ὁ Λουκιανὸς (Νεκυομ. 6), ἐμαθήτευσεν ὁ κυνικὸς φιλόσοφος Μένιππος. Α. Θ. Σ.

**Μιθροβουζάνης.** Στρατηγὸς τοῦ Δαρείου, φονευθεὶς κατὰ τὴν ἐν Γρανικῷ μάχην τῷ 334 π. Χ. Α. Θ. Σ.

**Μικάδο** *χρώματα [Βιομ. Χημ.]*. Κίτρινα συνθετικὰ χρώματα τῆς ὁμάδος τοῦ συμμετρικοῦ διφαινυλαιθανίου. Σ. Γ.

**Μικάδος** (Micado=Ὑψηλὴ Πύλη). Ὄνομα μὲ τὸ ὁποῖον συνήθως οἱ Εὐρωπαῖοι ἀποκαλοῦν τὸν αὐτοκράτορα τῆς Ἰαπωνίας. Οἱ Ἰάπωνες τὴν προσωνυμίαν ταύτην χρησιμοποιοῦσι μόνον εἰς ποιητικὰς ἐκφράσεις, ἐνῷ ἐν τῷ πεζῷ λόγῳ τὸν αὐτοκράτορα ἀποκαλοῦν συνηθέστερον *τένσι* (=υἱὸν τοῦ οὐρανοῦ), *τέννο* (=οὐράνιον αὐτοκράτορα), *σούγιο* (=ὑπέρτατον κύριον) κλπ. Εἰς τὰ ἐπίσημα ἔγγραφα χρησιμοποιοῦσι σήμερον ἁπλῶς τὸν τίτλον αὐτοκράτωρ. Χ. Δ.

**Μικαὲλ** (Michael), *Ρογῆρος*. Διάσημος Βέλγος συνθέτης (περὶ τὸ 1550—1619). Ἐκ τῶν ἔργων του περιεσώθησαν 53 χορικά, μοτέττα, ψαλμοὶ κτλ. Ὁ υἱός του *Τωβίας* (1592—1657) ἔγραψε πλείστους γαμηλίους καὶ ἐπικηδείους ὕμνους, μοτέττα, τὸν ψαλμὸν 127 κ. ἄ. Γ. Σ.

**μικανία** (ἡ) (Mikania) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἀναρριχητικούς. Ἐκ τῶν 60 περίπου εἰδῶν, ἅτινα ἀπαντῶσιν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς Ἀμερικῆς, γνωστότερα εἶναι ἡ *μικανία ἡ πικρὰ* (Mikania amara) καὶ *μικανία ἡ ἀναρριχητικὴ* (Mikania scandens), ἀμφότερα καλλιεργούμενα πολλαχοῦ πρὸς κόσμον. Δ. Ν. Π.

**Μίκας** (Micas) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ ὁμώνυμος πόλις τῶν ἀνατολικῶν περιφερειῶν τῆς δημοκρατίας τῆς Οὐρουγουάης. Διαρρέεται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Σάντα-Λούτζια, παραποτάμου τοῦ Ρίο-Λὰ-Πλάτα. Ἔχει ἔκτασιν 13.257 τετρ. χλμ. καὶ κατ. 120.000. Πρωτεύουσα ἡ ὁμώνυμος πόλις. Ἔχει πλουσίας βοσκὰς καὶ παράγει δημητριακά. Π.Γ.Λ.

**Μικὲς** (Miquez), ***Ἰωσήφ**, δοὺξ τῆς Νάξου*· βλ. *Νάζης*.

**Μικελέτοι** (οἱ) (Miquelets). Ἄτακτοι στρατιῶται Ἱσπανοὶ *(Γκουεριλλέρος)*, οἵτινες ὡπλίσθησαν τῷ 1675 εἰς τὰ Πυρηναῖα, ἐπὶ τῆς μεθορίου τῆς Καταλωνίας καὶ τῆς Ἀραγῶνος, ὅπως ἀποκρούσωσιν ἐπιδρομὴν τῶν Γάλλων, διοικουμένων ὑπὸ τοῦ Σομβέργ. Οἱ Μικελέτοι ὠνομάζοντο οὕτως ἐκ τοῦ ὀνόματος ἑνὸς τῶν ἀρχηγῶν των. Ἐπολέμουν διεσκορπισμένοι, ὄπισθεν βράχων, κορμῶν δένδρων ἢ τοίχων, ἀποφεύγοντες πάντοτε τὴν ἐκ παρατάξεως μάχην. Εἰς συνήθεις καιροὺς ἦσαν πραγματικοὶ λησταί, λίαν ἐπίφοβοι εἰς τοὺς ὁδοιπόρους, οἵτινες δὲν εἶχον τὴν προνοητικότητα νὰ προσλαμβάνουν ἐξ αὐτῶν εἰς τὴν ἀκολουθίαν των ὡς μισθωτοὺς σωματοφύλακας. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ', διὰ νὰ τοὺς καταπολεμήσῃ, κατήρτισεν ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἐπωνυμίαν ἑκατὸν λόχους ὀρεινῶν πολεμιστῶν, οἵτινες ὡσαύτως ἐμάχοντο ἀτάκτως.

Καλοῦνται ὡσαύτως *Μικελέτοι* καὶ οἱ κάτοικοι τῶν Πυρηναίων, οἵτινες ἐπαγγέλλονται τὸν ὁδηγὸν ἀνὰ τὰ ὄρη. Ἡ Γαλλικὴ δημοκρατία τοὺς ὥπλισεν, ὅπως τοὺς ἀντιτάξῃ ἐναντίον τῶν Ἱσπανῶν ἀτάκτων πολεμιστῶν καὶ Ναπολέων ὁ Α' συνεπλήρωσε τὴν ὀργάνωσίν των τῷ 1808. Τ. Δ.

**Μικέλι** (Micheli). Εὐγενὴς ἑνετικὸς οἶκος. Τρία μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης ἀνεδείχθησαν δόγαι:

— 1) ***Βιτάλιος Α'***, ἀποθανὼν τῷ 1102. Διεδέχθη τῷ 1096 τὸν Βιτάλιον Φαλιέρον καὶ ἔθεσεν εἰς τὴν διάθεσιν τῶν ἀρχηγῶν τῆς πρώτης σταυροφορίας στόλον ἐκ 200 πλοίων. Οἱ Βενετοὶ κατὰ τὴν ἐπιστροφήν των ἐκ τῆς σταυροφορίας ἀπεκόμισαν πλεῖστα λάφυρα κυριευθέντα ἀπὸ τοὺς Σαρακηνοὺς καί τινα λείψανα ἁγίων, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὸ τοῦ ἁγίου Νικολάου. Ὁ δόγης οὗτος συνῆψε συμμαχίαν μὲ τοὺς Οὔγγρους.

2) ***Βιτάλιος Β'***, ἀποθανὼν τῷ 1173. Διεδέχθη τῷ 1156 τὸν Δομίνικον Μοροζίνην, συνῆψεν εἰρήνην μὲ τὴν Πίζαν, συνέλαβεν αἰχμάλωτον τὸν πατριάρχην τῆς Ἀκυληΐας καὶ τῷ 1167 εἰσῆλθεν εἰς τὴν Λομβαρδικὴν συμμαχίαν κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος Φρειδερίκου Α' Βαρβαρόσσα, ὁ ὁποῖος ὑπεχρεώθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Ἰταλίαν. Βραδύτερον ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς 100 γαλερῶν καὶ 20 ἐμπορικῶν πλοίων, ὅπως ἐκστρατεύσῃ κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Κωνσταντινουπόλεως Μιχαὴλ Κομνηνοῦ, ἀλλὰ λόγῳ κακοκαιρίας ἠναγκάσθη νὰ παραχειμάσῃ εἰς τὴν Χίον. Ἐπειδὴ ὅμως, ἐν τῷ μεταξύ, ἡ πανώλης ἀπεδεκάτισε τὰ στρατεύματά του, ὑπεχρεώθη νὰ ἐπιστρέψῃ ἄπρακτος εἰς Βενετίαν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε στάσιν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐφονεύθη.

— 3) ***Δομίνικος***, ἀποθανὼν τῷ 1130. Διεδέχθη τὸν Ὀρδελάφον Φαλιέρον καὶ συνῆψεν ἐπωφελῆ εἰρήνην μὲ τὸν βασιλέα τῆς Οὐγγαρίας Στέφανον Β'. Τῷ 1123, κατόπιν αἰτήσεως τοῦ Βαλδουΐνου Β', βασιλέως τῆς Ἱερουσαλήμ, ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς παλυαρίθμου στόλου καὶ ἔσπευσεν εἰς βοήθειαν αὐτοῦ κατὰ τῶν Μωαμεθανῶν, καταναυμαχήσας, παρὰ τὴν Γιάφφαν, τὸν στόλον τοῦ χαλίφου τῆς Αἰγύπτου Ἀμποὺλ Β' Μανσούρ. Κατὰ τὸ ἐπόμενον ἔτος ἔλαβε μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τῆς Τύρου, τὴν ὁποίαν κατόπιν σφοδρῶν ἐπιθέσεων κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ. Κατόπιν ὅμως ἐπιτῶν ἀπειλῶν τοῦ βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Βενετίαν, ὅπου ἀπέθανεν εἰς προκεχωρημένην ἡλικίαν. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του ἐλεηλάτησε τὰς νήσους τοῦ Ἑλληνικοῦ ἀρχιπελάγους, πρὸς ἐκδίκησιν διὰ τὴν κατ' αὐτοῦ ἐπιδειχθεῖσαν ἐχθρότητα τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Β' Κομνηνοῦ. Μ. Δ. Β.

***Οἱ Μικέλι ἐν Ἑλλάδι.*** Ὁ οἶκος τῶν Μικέλι ἐδέσποσε κατὰ τὸ 1207, ἐπὶ φραγκοκρατίας, ὑπὸ τὸν *Δομήνικον Μικέλι* τοῦ ἡμίσεος τῆς Κέας καὶ τῆς Σερίφου, τῆς ὁποίας βραδύτερον, κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα, οἱ Μικέλι ἐγένοντο ἐξ ὁλοκλήρου κύριοι. Ἦρξαν δ' οὗτοι τῆς Σερίφου μέχρι τοῦ 1537, ὅτε τὴν νῆσον κατέλαβεν ὁ Χαϊρεδδὶν Βαρβαρόσσας. Καὶ μέχρι τῆς σήμερον δὲ τὸ οἰκόσημον τῶν Μι-

Digitized by Google

κέλι μετὰ τῆς χρονολογίας 1434, ἐντετειχισμένον ὕπερθεν τῆς πύλης τοῦ κάστρου τῆς Σερίφου, διασῴζει τὴν ἀνάμνησιν τῆς ἐν τῇ νήσῳ ἀρχῆς αὐτῶν. Ἐκ τοῦ οἴκου τούτου ὁ *Μᾶρκος Μικέλι* διετέλεσε βάϊλος κατὰ τὸ 1220 παρὰ τῇ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐνετικῇ παροικίᾳ, ἕτερος δ' ὁμώνυμός του ἐχρημάτισε, τελευτῶντος τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, βάϊλος τῆς Εὐρίπου. Τῷ 1363 ὁ *Δομήνικος Μικέλι* ἐκυβέρνα τὸν εἰς τὰς ἑλληνικὰς θαλάσσας ἐνετικὸν στόλον, ἐν ἔτει δὲ 1467 εὑρίσκομεν βάϊλον Χαλκίδος τὸν *Ἀντώνιον Μικέλι*. Τελευτῶντος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἀναφέρεται ὁ Ἐνετὸς εὐπατρίδης *Φραγκίσκος Ἄγγελος Μικέλι*, ὅστις τῷ 1560 ἐνυμφεύθη τὴν Κιάραν, θυγατέρα τοῦ ὑποτελοῦς εἰς τὸν σουλτᾶνον δυνάστου τῆς Ἄνδρου Κρουσίνου τοῦ Γ'. Ἐν ἔτει 1691, διαρκοῦντος τοῦ δευτέρου Τουρκοενετικοῦ πολέμου (1684—1699), ὅστις ἐτερματίσθη διὰ τῆς παραχωρήσεως τῆς Πελοποννήσου εἰς τοὺς Ἐνετούς, εὑρίσκομεν προβλεπτὴν τῆς Πελοποννήσου τὸν *Μαρῖνον Μικέλι*, ὁ ὁποῖος κατὰ διαταγὴν τοῦ δόγη Φραγκίσκου Μοροζίνη, ἐλθὼν εἰς μυστικὴν συνεννόησιν μετὰ τοῦ μπέη τῆς Μάνης Λυμπεράκη Γερακάρη, ἀντέταξε κρατερὰν ἄμυναν εἰς τὸν ἰσθμὸν τῆς Κορίνθου κατὰ τῶν ἐπιχειρούντων νὰ εἰσβάλωσιν εἰς τὴν Πελοπόννησον Τούρκων, ὧν ἡγεῖτο ὁ σερασκέρης Χαλὴλ Χότζα πασᾶς.

Ἐκ τοῦ οἴκου τούτου ὁ *Μάφφιος Μικέλι* (1602—1604) καὶ ὁ *Κωνσταντῖνος Μικέλι* (1701—1703) ἐχρημάτισαν προβλεπταὶ τῆς Ζακύνθου.

Δ. Π. ΠΑΣΧΑΛΗΣ

— **Μικέλι** (Micheli), ***Πέτρος - Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς βοτανικὸς καὶ γεωλόγος (1679—1737). Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε λατινικά, βραδύτερον ὅμως ἀφιερώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς βοτανικῆς καὶ ἀπέκτησε τοιαύτην φήμην, ὥστε ὁ δοὺξ τῆς Τοσκάνης ἀπέστειλεν αὐτὸν ἐπὶ κεφαλῆς ἐπιστημονικῆς ἀποστολῆς εἰς τὴν Αἴγυπτον καὶ τὸν διώρισε τῷ 1706 καθηγητὴν τῆς βοτανικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πίζας, ὅπου διεδέχθη τὸν περίφημον Τίλλι. Ἐπεχείρησε πλεῖστα ταξίδια ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν, τὴν Αὐστρίαν καὶ τὴν Γερμανίαν καὶ κατήρτισε πλουσιωτάτας συλλογὰς φυτῶν. Θεωρεῖται ὁ πατὴρ τῆς κρυπτογαμικῆς βοτανικῆς. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα καὶ ἀφῆκε πολλὰ χειρόγραφα. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «*Τὰ σπανιώτερα φυτὰ τῆς Ἐτρουρίας*», «*Νέων φυτῶν γένη*» (1729), ἔργον προκαλέσαν τὸν θαυμασμὸν τοῦ Λινναίου, «*Ἱστορία τῶν φυτῶν τῶν Φαρνεσιανῶν κήπων*», «*Κατάλογος τῶν φυτῶν τῶν Καισαρικῶν κήπων τῆς Φλωρεντίας*» (1748). Πολλοὶ βοτανικοὶ ἔδωσαν τὸ ὄνομά του εἰς διάφορα φυτὰ ἀνακαλυφθέντα ἢ μελετηθέντα ὑπ' αὐτοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μικελὸν** (Miquelon) *[Γεωγρ.]*. Γαλλικὴ νῆσος τοῦ κόλπου τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου, κειμένη 20 χλμ. πρὸς Ν. τῆς μεσημβρινῆς παραλίας τῆς Νέας Γῆς. Ἀποτελεῖται ἐκ δύο νησίδων, κεχωρισμένων ἄλλοτε, συνενωθεισῶν δὲ ἀπὸ τοῦ 1783 δι' ἀμμώδους ἰσθμοῦ. Ἐκ τούτων ἡ μεγαλυτέρα, *Μεγάλη Μικελὸν* καλουμένη, κεῖται πρὸς Β., ἡ δὲ μικροτέρα, *Μικρὰ Μικελὸν* ἢ *Λαγκλάντ*, πρὸς Ν. Ἔχουσιν ἀμφότεραι συνολικὴν ἔκτασιν 208 τετρ. χλμ., ὁ δὲ πληθυσμὸς αὐτῶν, ἀποτελούμενος ἐξ ἁλιέων κατὰ τὸ πλεῖστον, ἀνέρχεται εἰς χιλίας περίπου ψυχάς, αὐξάνων σημαντικῶς κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἁλιείας. Αἱ νῆσοι στεροῦνται ἀσφαλῶν ἀγκυροβολίων, ἀποτελοῦσι δὲ μετὰ τῆς παρ' αὐτὰς νησῖδος *Σαὶν Πιὲρ*, ἐκτάσεως 33 τετρ. χλμ., τὴν ἀποικίαν *Σαὶν Πιὲρ* καὶ *Μικελόν*, ἡ ὁποία διοικεῖται ἀπὸ τοῦ 1921 ὑπὸ διοικητοῦ βοηθουμένου ὑπὸ δεκαμελοῦς διοικητικοῦ συμβουλίου ἀποτελουμένου ἐκ 5 αἱρετῶν μελῶν ἐκλεγομένων ἀνὰ τριετίαν διὰ καθολικῆς ψηφοφορίας καὶ 5 διοριζομένων. Πρωτεύουσα τῆς ἀποικίας εἶναι ἡ πόλις Σαὶν-Πιὲρ (κάτ. 3.040) ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου νησῖδος. Οἱ κάτοικοι τῆς ἀποικίας ἀνέρχονται εἰς 4.030 (1926). Τὰ δημόσια ἔσοδα καὶ ἔξοδα τῆς ἀποικίας ἀνῆλθον τῷ 1929 εἰς 11.027.700 φράγκα, τὸ δὲ ἐμπόριον ἐσημείωσε τῷ 1928 τὴν ἑξῆς κίνησιν: εἰσαγωγὴ 168.557.794, ἐξαγωγὴ (βακαλάος κυρίως) 145.788.882. Εἰς τοὺς λιμένας τῶν νήσων κατέπλευσαν τῷ 1928 πλοῖα ἐν ὅλῳ 1589, χωρητικότητος 416.896 τόννων. Π. Γ. Λ.

**Μικελότσι** (Michelozzi), ***Μικελότσο.*** Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, γλύπτης καὶ χρυσοχόος. Ἐγεννήθη ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ ἀπέθανεν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει περὶ τὸ 1468. Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Μπρουνελλέσκι καὶ τοῦ Ντονατέλλο. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ τελευταίου ἐξεπόνησεν ἀξιομνημόνευτα ἔργα, ἐν οἷς τὸ ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ πάπα Ἰωάννου τοῦ ΚΓ'. Ἐν Φλωρεντίᾳ ἐξετέλεσε τὸ θαυμάσιον παλάτιον Μέντιτσι ἢ Ρικκάρντι, ὅπερ ᾠκοδομήθη μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1430 καὶ 1440. Ἐξαίρετον εἶναι τὸ παρεκκλήσιον τοῦ παλατίου τούτου, ὅπερ ἐπίσης κατεσκεύασεν ὁ Μικελότσι, σχεδιάσας ἐπὶ πλέον καὶ τὴν ὀροφήν, τὰ στασίδια καὶ τὸ δάπεδον αὐτοῦ. Τὸ παλάτιον Ρικκάρντι θεωρεῖται ὡς ἓν τῶν καλλίστων ὑποδειγμάτων τῆς φλωρεντινῆς ἀρχιτεκτονικῆς.

Πλὴν ἄλλων ἔργων του ἐν Φλωρεντίᾳ ὁ Μικελότσι ἀνεκαίνισε καὶ τὸ περίφημον Palazzo Vecchio, τὸ ἄλλως γνωστὸν ὡς «Σινιορία», ὅπερ ἱδρύθη τῷ 1298 ὑπὸ τοῦ Ἀρνόλφο ντὶ Λάπο. Ἐν Βενετίᾳ ὁ Μικελότσι κατεσκεύασε τὸ μοναστήριον καὶ τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ἁγίου Μάρκου· ἐν Φιέζολε τὸ παλάτιον Μότσι, τὸν ναὸν καὶ τὸ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Ἱερωνύμου· ἐν Μιλάνῳ τὸ παρεκκλήσιον Ἁγίου Πέτρου τοῦ μάρτυρος ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Εὐστοργίου. Ἐκ τῶν πλαστικῶν του ἔργων μνημονεύομεν ἰδίᾳ τὸ ἄγαλμα τῆς «Πίστεως» ἐν τῷ βαπτιστηρίῳ τῆς Φλωρεντίας καὶ ἕνα ξύλινον «Ἐσταυρωμένον» ἐν τῇ μονῇ Ἁγίου Γεωργίου τοῦ Μείζονος, ἐν Βενετίᾳ. Ι. Μ. Π.

**Μίκελσον** (Michelson), ***Ἀλβέρτος - Ἀβραάμ.*** Ἀμερικανὸς φυσικός, γεννηθεὶς ἐν Strelno τῆς Γερμανίας τῷ 1852. Ἐσπούδασε φυσικὴν ἐν Ἁγίῳ Φραγκίσκῳ, κατόπιν δὲ ἐν Βερολίνῳ, Ἀϊδελβέργῃ καὶ Παρισίοις. Τῷ 1892, κατόπιν λαμπρᾶς διδασκαλικῆς καὶ ἐπιστημονικῆς σταδιοδρομίας, διωρίσθη καθηγητὴς καὶ διευθυντὴς τοῦ τμήματος φυσικῆς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Σικάγου.

*Ἀλβέρτος Μίκελσον.*

Ὁ Μίκελσον ἠσχολήθη εὐρέως εἰς τὸν καθορισμὸν τῆς ταχύτητος διαδόσεως τοῦ φωτός, ἀνεκάλυψε δὲ εἰς Cleveland τὸ φερώνυμον *συμβολόμετρον*, δι' οὗ κατώρθωσε νὰ μετρῇ ἀποστάσεις εἰς μήκη κύματος. Ἀκολούθως ἐπηλήθευσε τὸ πείραμα Fizeau ἐπὶ τῆς μετρήσεως τῆς ταχύτητος διαδόσεως τοῦ φωτὸς καὶ ἐβελτίωσεν ἐν πολλοῖς τὴν ἀρχικὴν διάταξιν αὐτοῦ. Γενικῶς ὁ Μίκελσον ἐτελειοποίησε τὰς πειραματικὰς διατάξεις διὰ τὴν μέτρησιν τῆς ταχύτητος διαδόσεως τοῦ φωτός, καὶ καθώρισε τὴν ταχύτητα αὐτοῦ μετὰ μεγάλης ἀκριβείας. Ὀνομαστὴ εἶναι ἡ πειραματικὴ διάταξις αὐτοῦ, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μίκελσον πείραμα* (βλ. λ.), δι' οὗ ἀπέδειξεν ὅτι ἡ ταχύτης διαδόσεως τοῦ φωτὸς ἀποτελεῖ τὸ ἀνώτατον ὅριον ταχύτητος μεθ' ἧς δύναται νὰ κινῆται ἡ ὕλη. Ἐπὶ πλέον κατώρθωσε νὰ ἐκφράσῃ τὸ πρότυπον μέτρον εἰς μήκη κύματος τοῦ φωτὸς Καδμίου. Τῷ 1892 διωρίσθη μέλος τοῦ «*Διεθνοῦς γραφείου μέτρων καὶ σταθμῶν*» καὶ τῷ 1897 μέλος τῆς «*Διεθνοῦς ἐπιτροπῆς μέτρων καὶ σταθμῶν*». Τῷ 1901 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς «American Physical Society» καὶ τῷ 1910 τῆς «*Ἀμερικανικῆς ἑταιρείας διὰ τὴν ἀνάδειξιν τῶν ἐπιστημῶν*». Ἐτιμήθη διὰ πλείστων μεταλλίων καὶ βραβείων διαφόρων κρατῶν, ἐν ἔτει δὲ 1907 διὰ τοῦ βραβείου φυσικῆς Nobel. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπηρέτησεν εἰς τὸ ἀμερικανικὸν ναυτικόν, εἰς ὃ προσέφερε σπουδαιοτάτας ἐπιστημονικὰς ὑπηρεσίας. Τῷ 1920 κατώρθωσε ν' ἀποδείξῃ, τῇ βοηθείᾳ τοῦ φαινομένου τῆς συμβολῆς τοῦ φωτός, ὅτι ἡ διάμετρος τοῦ Α τοῦ Ὠρίωνος ἀνέρχεται εἰς 260.000.000 μίλλια. Ἀπέθανε τῷ 1931.

Ὁ Μίκελσον συνέγραψε τὰ ἀκόλουθα ἔργα: «Velocity of Light» (1902), «Light Waves and their Uses» (1903) καὶ ἔκαμε πλῆθος ἐπιστημονικῶν ἀνακοινώσεων, αἵτινες ἐδημοσιεύθησαν εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικά. Τῷ 1921 ἐτιμήθη μὲ τὸ χρυσοῦν μετάλλιον τῆς «Society of Arts» τοῦ Λονδίνου διὰ τὸ περίφημον πείραμα αὐτοῦ (βλ. κατωτ.). Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

— ***Μίκελσον πείραμα.*** Τὸ πείραμα τοῦτο, ὅπερ κατέστη περίφημον ἐν τῇ νεωτέρᾳ φυσικῇ, καθ' ὅτι ἀποτελεῖ τὴν ἀφετηρίαν τῆς γενέσεως τῆς *θεωρίας τῆς σχετικότητος* ὑπὸ τοῦ Einstein, ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Μίκελσον ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Morley, ἐπὶ τῷ σκοπῷ ὅπως διὰ τούτου διαπιστωθῇ, ἐὰν πράγματι ὁ αἰθήρ, εἰς περίπτωσιν κινουμένων σωμάτων, παραμένῃ ἐν ἠρεμίᾳ ἢ παρασύρεται ἐν μέρει ἢ καθ' ὁλοκληρίαν εἰς κίνησιν.

Ἐν τῇ φυσικῇ πρὸς ἐξήγησιν τῶν ὀπτικῶν, μαγνητικῶν καὶ ἠλεκτρικῶν ἢ γενικώτερον τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν φαινομένων, δεχόμεθα τὴν ὕπαρξιν μέσου ἰδιαζούσης φύσεως, ὅπερ καλοῦμεν *αἰθέρα* καὶ τὸ ὁποῖον θεωροῦμεν ὡς φορέα τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν ἐπενεργειῶν. Παραδεχόμεθα δ' ὅτι ὁ αἰθὴρ πληροῖ τὸ σύμπαν, ἤτοι ἀνευρίσκεται τόσον εἰς τοὺς ὑπερπλανητικοὺς χώρους, ὅσον καὶ εἰς τὰ μεταξὺ τῶν μορίων, ἀτόμων καὶ ἠλεκτρονίων τῶν σωμάτων διάκενα. Ἡ παραδοχὴ τοῦ αἰθέρος ὡς φορέως τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν ἐνεργειῶν, ἤγαγεν εἰς τὴν ἔρευναν τῆς φύσεως τοῦ μέσου τούτου καὶ τῶν ἰδιοτήτων αὐτοῦ, ἀποτελεῖ δὲ τὸ ζήτημα τοῦτο ἓν τῶν σπουδαιοτέρων καὶ δυσχερεστέρων προβλημάτων τῆς φυσικῆς, οὗτινος ἡ λύσις δὲν ἔχει μέχρι σήμερον ἐπιτευχθῆ. Εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῆς εἰσαγωγῆς τῆς ὑποθέσεως τοῦ αἰθέρος, ἠγέρθη τὸ ζήτημα ἐὰν ὁ ἐλεύθερος αἰθήρ, ἤτοι ὁ αἰθὴρ ὁ εὑρισκόμενος εἰς τοὺς ὑπερπλανητικοὺς χώρους, οἵτινες θεωροῦνται ὡς ἐλεύθεροι συνήθους ὕλης, παρουσιάζει τὰς αὐτὰς ἰδιότητας πρὸς τὸν αἰθέρα τὸν περικλειόμενον ἐντὸς τῶν ὑλικῶν σωμάτων. Ἡ πειραματικὴ ἐπιβεβαίωσις ὅτι ἡ ταχύτης τοῦ φωτὸς ἐν τῷ ἐλευθέρῳ ὕλης χώρῳ, ἥτις ἐν τῷ κενῷ εἶναι $3.10^{10}$ cm/sec, ἐνῷ αὕτη καθίσταται μικροτέρα, ὅταν τὸ φῶς διαδίδεται διὰ μέσου ὑλικῶν σωμάτων, ἤγαγεν εἰς τὴν παραδοχὴν ὅτι, ἐφ' ὅσον θεωροῦμεν τὸν αἰθέρα ὡς σῶμα ἐλαστικόν, θὰ ἦτο δυνατὸν τὸ ἀνωτέρω ἀποτέλεσμα νὰ ἑρμηνευθῇ διὰ τῆς παραδοχῆς ὅτι ὁ ἐντὸς τῶν ὑλικῶν σωμάτων περικλειόμενος αἰθὴρ εἶναι τῆς αὐτῆς μὲν φύσεως πρὸς τὸν ἐλεύθερον αἰθέρα, ἀλλ' ὅτι παρουσιάζει διάφορον ἐλαστικότητα ἢ πυκνότητα αὐτοῦ. Βραδύτερον ὅμως, ὅταν διεμορφώθησαν αἱ νέαι θεωρίαι ἐπὶ τῆς συγκροτήσεως τοῦ ὑλικοῦ ἀτόμου καὶ ἡ ἠλεκτρονικὴ θεωρία τοῦ Lorenz, ἐγένετο ἀποδεκτὴ ἡ ἀντίληψις, ὅτι ὅτε ἐλεύθερος αἰθὴρ καὶ ὁ αἰθὴρ ὁ περικλειόμενος ἐν τοῖς ὑλικοῖς σώμασι εἶναι ἀκριβῶς ὅμοιος, ἡ δὲ μεταβολὴ τῆς ταχύτητος διαδόσεως τοῦ φωτὸς καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ διὰ μέσου τῶν ὑλικῶν σωμάτων ὀφείλεται εἰς τὴν ἀλληλεπίδρασιν αἰθέρος καὶ ἠλεκτρονίων. Ἀκολούθως ὅμως ἐγεννήθη ἕτερον σπουδαιότατον πρόβλημα διὰ τὸν αἰθέρα, ἤτοι τίνι τρόπῳ συμπεριφέρεται ὁ αἰθὴρ ὁ περικλειόμενος ἐν τοῖς ὑλικοῖς σώμασιν, ὅταν ταῦτα εὑρίσκωνται ἐν κινήσει.

Κατὰ τὴν προκειμένην περίπτωσιν ὑφίστανται τρεῖς δυνατότητες: α') Ὅτι τὰ σώματα κινοῦνται ἐν μέσῳ αἰθέρος εὑρισκομένου ἐν ἠρεμίᾳ ἐν σχέσει πρὸς τὸ κινούμενον σῶμα. Ὑπὸ τὴν ἔκδοχὴν ταύτην τὰ μόρια τῶν ἐν κινήσει εὑρισκομένων σωμάτων μετατίθενται διὰ μέσου τοῦ αἰθέρος καὶ ἑπομένως ὁ ἐντὸς τῶν σωμάτων εὑρισκόμενος αἰθὴρ ἀνανεοῦται διαρκῶς· ἤτοι εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην ἔχομε σχετικὴν κίνησιν τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸν αἰθέρα. β') Ὅτι ὁ ἐν τῷ σώματι περικλειόμενος αἰθὴρ μετατίθεται μετὰ τοῦ σώματος καὶ ἑπομένως ἐν τῷ σώματι παραμένει ἐγκεκλεισμένος πάντοτε ὁ αὐτὸς αἰθήρ. Ὑπὸ τὴν ἔκδοχὴν ταύτην δὲν ὑφίσταται σχετικὴ κίνησις τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸν αἰθέρα. Ὁ αἰθὴρ ὅμως ὁ περικλειόμενος ἐν τῷ σώματι μετατίθεται ἐν σχέσει πρὸς τὸν περιβάλλοντα αἰθέρα. Ἐν τῇ προκειμένῃ δὲ περιπτώσει ἡ μετατόπισις ὄγκου αἰθέρος ὡς πρὸς ἕτερον ὄγκον αἰθέρος δὲν θεωρεῖται μόνον ὡς δυνατὴ ἀλλὰ καὶ ὡς ἀναγκαία. Κατὰ συνέπειαν, ἐὰν πράγματι συμβαίνῃ ἡ ἀνωτέρω περίπτωσις, δέον ν' ἀποδώσωμεν εἰς τὸν αἰθέρα τὴν ἰδιότητα τῆς κινήσεως καὶ δυνάμεθα νὰ χαρακτηρίσωμεν τὰς ὡς ἄνω δύο περιπτώσεις ὡς ἑξῆς: Κατὰ τὴν πρώτην ὁ αἰθὴρ θεωρεῖται ἀκίνητος καὶ λαμβάνει χώραν σχετικὴ κίνησις τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸν αἰθέρα, ἐνῷ ἐν τῇ δευτέρᾳ περιπτώσει ὁ αἰθὴρ κινεῖται ἀλλὰ δὲν ὑφίσταται σχετικὴ κίνησις τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸν αἰθέρα. γ') Ὅτι ὁ αἰθὴρ κινεῖται ὡς ἐν τῇ δευτέρᾳ περιπτώσει μετὰ τοῦ σώματος, ἀλλ' ἡ ταχύτης αὐτοῦ δὲν εἶναι ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν τοῦ κινουμένου σώματος, ἀλλὰ διάφορος. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ὑφίσταται σχετικὴ κίνησις τοῦ σώματος ὡς πρὸς τὸν αἰθέρα, ὅστις θὰ εὑρίσκεται ταυτοχρόνως ἐν κινήσει. Ἡ περίπτωσις αὕτη εἶναι γενικωτέρα τῶν δύο προηγουμένων, μεταπίπτει δὲ αὕτη εἰς τὴν πρώτην ἐὰν ἡ ταχύτης τοῦ αἰθέρος ἰσοῦται τῷ μηδενί, εἰς τὴν δευτέραν δὲ ἐὰν ἡ ταχύτης τοῦ αἰθέρος εἶναι ἴση πρὸς τὴν τοῦ σώματος. Πρὸς διαπίστωσιν τοῦ ποία ἐκ τῶν ἀνωτέρω τριῶν δυνατοτήτων ὑφίσταται ἐν τῇ πραγματικότητι, ἐγένοντο πολλαὶ πειραματικαὶ ἔρευναι. Ἐκ τοῦ περιφήμου πειράματος τοῦ Fizeau καὶ ἐκ τῆς σπουδῆς τοῦ φαινομένου τῆς ἀποπλανήσεως τοῦ φωτὸς προκύπτει ἀδιστάκτως τὸ συμπέρασμα ὅτι ὁ αἰθὴρ εἶναι ἀκίνητος. Εἰς ὅλως ὅμως ἀντίθετον συμπέρασμα καταλήγει τὸ πείραμα τοῦ Μίκελσον, ὅπερ οὗτος ἐξετέλεσεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Morley καὶ τὸ ὁποῖον ἀκριβῶς, διὰ τὸ ἀποτέλεσμα εἰς τὸ ὁποῖον ἤγαγε, κατέστη περίφημον ἐν τῇ νεωτέρᾳ φυσικῇ.

Ἡ βασικὴ ἀρχὴ τοῦ πειράματος Μίκελσον εἶναι ἡ ἀκόλουθος: Φαντασθῶμεν ὅτι ἐπὶ τῆς γῆς θεωροῦμεν δύο τόπους Α καὶ Β (σχ. 1), τῆς ἀποστάσεως ΑΒ οὔσης ὡρισμένης καὶ σταθερᾶς, καὶ ἔστω ὅτι ἀπὸ τοῦ Α ἐκφεύγει φῶς διευθυνόμενον πρὸς Β. Εἶναι φανερὸν ὅτι ἐὰν ὁ αἰθὴρ ἦτο ἀκίνητος ἡ ἀπόστασις, ἣν θὰ διήνυε τὸ φῶς ὅπως φθάσῃ ἐκ τοῦ Α εἰς Β θὰ εἶναι διάφορος, ἐὰν ἡ ΑΒ συμπίπτῃ πρὸς τὴν διεύθυνσιν κινήσεως τῆς γῆς, ἢ ἐὰν συμπίπτῃ πρὸς διεύθυνσιν κάθετον πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως τῆς γῆς. Ὄντως ὡς δεικνύεται ἐκ τοῦ σχ. 1, τὸ ἐκ τοῦ Α ἐκπορευόμενον φῶς, ἐφ' ὅσον διαδίδεται ἐν αἰθέρι εὑρισκομένῳ ἀκινήτῳ, εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν ἡ ΑΒ συμπίπτει πρὸς τὴν διεύθυνσιν κινήσεως τῆς γῆς, ὅπως φθάσῃ ἐκ τοῦ Α εἰς Β θὰ εἶχε νὰ διανύσῃ τὴν ἀπόστασιν ΑΒ', καθ' ὅσον τὸ σημεῖον Β μέχρις ὅτου τὸ φῶς φθάσῃ εἰς

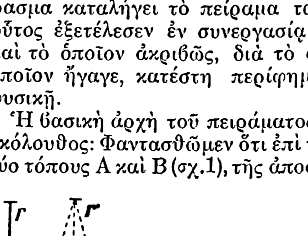

Σχ. 1. *Βασικὴ ἀρχὴ τοῦ πειράματος Μίκελσον.*

Digitized by Google

αὐτὸ μετατίθεται λόγῳ τῆς μεταβατικῆς κινήσεως τῆς γῆς εἰς Β'. Τοὐναντίον ἐὰν τὸ φῶς ὁδεύῃ κατὰ διεύθυνσιν κάθετον πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως τῆς γῆς, θὰ εἶχε νὰ διανύσῃ τὸ διάστημα ΑΓ', καθ' ὅσον τὸ σημεῖον Γ, λαμβανομένου ὑπ' ὄψιν ὅτι ΑΒ=ΑΓ, μέχρις ὅτου τὸ φῶς φθάσῃ εἰς αὐτὴν θὰ ἔχῃ μετατοπισθῇ, λόγῳ τῆς μεταβατικῆς κινήσεως τῆς γῆς εἰς Γ'. Εἶναι δὲ προδήλως ΑΒ'>ΑΓ'. Κατὰ συνέπειαν, ἐὰν ὁ αἰθὴρ εἶναι ἀκίνητος, τὸ φῶς χρειάζεται εἰς ἀμφοτέρας τὰς περιπτώσεις διάφορον χρόνον ὅπως διανύσῃ τὴν αὐτὴν ἀπόστασιν (ΑΒ=ΑΓ).

Τὸ πείραμα Μίκελσον πραγματοποιεῖται ὡς ἑξῆς: Εἰς τὰς θέσεις Β καὶ Γ τοποθετοῦνται δύο ἐπίπεδα κάτοπτρα (σχ. 2), ἅτινα ἀνακλῶσι τὸ εἰς Β καὶ Γ καταφθάνον φῶς, τὸ προερχόμενον ἐκ μιᾶς καὶ τῆς αὐτῆς φωτεινῆς πηγῆς. Ὅπως δ' ἔχωμεν ἐκ τοῦ Α δύο ἀκτῖνας διαδιδομένας τὴν μὲν κατὰ τὴν διεύθυνσιν ΑΒ συμπίπτουσαν πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως τῆς Γῆς, τὴν δὲ κατὰ τὴν κάθετον διεύθυνσιν ΑΓ, καταφεύγομεν εἰς τὴν ἀκόλουθον ὀπτικὴν διάταξιν.

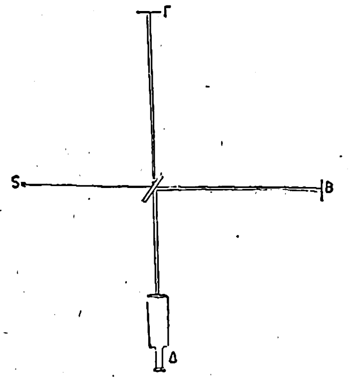


Σχ. 2 *Στοιχειώδης πειραματικὴ διάταξις τοῦ πειράματος Μίκελσον.*

Τοποθετοῦμεν εἰς Α (σχ. 2) πλακίδιον μετὰ παραλλήλων ἑδρῶν ὑπὸ γωνίαν 45° ὡς πρὸς τὴν ΑΒ, ἐπὶ τῆς προεκτάσεως δ' αὐτῆς καὶ ὄπισθεν τοῦ πλακιδίου τοποθετοῦμεν πηγὴν S μονοχρωματικοῦ φωτός. Εἶναι φανερὸν ὅτι τὸ ἐκ τοῦ S προερχόμενον φῶς προσπίπτει ἐπὶ τοῦ πλακιδίου καὶ ἓν μέρος αὐτοῦ διαπερᾷ τὸ πλακίδιον καὶ ὁδεύει κατὰ τὴν ΑΒ, προσπίπτει καθέτως ἐπὶ τοῦ κατόπτρου εἰς ΑΒ, ὁπόθεν ἀνακλώμενον ἐπανέρχεται πρὸς τὸ πλακίδιον καὶ δι' ἀνακλάσεως ἐπὶ τούτου εἰσχωρεῖ εἰς τὴν διοπτραν παρατηρήσεως Δ. Ἕτερον μέρος τοῦ ἐκ τῆς πηγῆς S φωτὸς ἀνακλᾶται ἐπὶ τοῦ πλακιδίου καὶ ὁδεύει κατὰ τὴν Γ, προσπίπτει καθέτως ἐπὶ τοῦ κατόπτρου εἰς Γ, ὁπόθεν ἀνακλώμενον ἐπανέρχεται εἰς τὸ πλακίδιον, ὅπερ διαπερᾷ, καὶ εἰσχωρεῖ εἰς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως. Διὰ τῆς διατάξεως ταύτης τοῦ Μίκελσον τὸ φῶς εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν διανύει δρόμον μεγαλύτερον ἢ εἰς τὴν δευτέραν· Πράγματι, ὅταν τὸ φῶς ὁδεύῃ ἐκ τοῦ Α εἰς Β (σχ. 1), φθάνει εἰς χρόνον t ἐπὶ τοῦ κατόπτρου εἰς Β, ὅπου ὅμως, ἐν τῷ μεταξύ, λόγῳ τῆς κινήσεως τῆς Γῆς, ἔχει μετατοπισθῇ εἰς Β' ὅπου ΒΒ'=vt, ἔνθα v ἡ ταχύτης τῆς κινήσεως τῆς Γῆς. Κατὰ συνέπειαν, ὁ ὑπὸ τοῦ φωτὸς διανυθεὶς δρόμος, ὅπως φθάσῃ ἐκ τοῦ Α τοῦ κατόπτρου εἰς Β, εἶναι $AB' = S = l + vt$, ἔνθα $AB = l$. Ἐὰν δὲ διὰ V καλέσωμεν τὴν ταχύτητα διαδόσεως τοῦ φωτός, θὰ εἶναι $S = Vt$. Ὁ χρόνος t, ὃν δαπανᾷ τὸ φῶς διὰ τὴν διαδρομὴν ἀπὸ Α εἰς Β, εἶναι $t = l/V-v$. Ἀλλὰ ὅταν τὸ φῶς ἔχῃ φθάσει εἰς Β', τὸ Α ἔχει φθάσει εἰς Α' (σχ. 1) καὶ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐπιστροφῆς τοῦ φωτός, τοῦτο θὰ ἔχῃ φθάσει εἰς Α'', εἶναι δὲ $A'A'' = vt'$ ἐπειδὴ δ' ἐξ ἄλλου $A'B' = l$, εἶναι φανερὸν ὅτι τὸ ὑπὸ τοῦ φωτὸς διανυόμενον διάσμημα $S' = l - vt'$. Δεδομένου ὅμως ὅτι τὸ διάστημα S' διανύεται εἰς χρόνον t', θὰ ἔχωμεν $vt' = l - vt'$ καὶ $t' = l/V+v$. Κατὰ συνέπειαν διὰ τὴν διαδρομὴν τοῦ φωτὸς ἀπὸ Α εἰς Β καὶ τἀνάπαλιν θ' ἀπαιτηθῇ, ἐν περιπτώσει ἀκινήτου αἰθέρος, χρονικὸν διάστημα

$$t + t' = \frac{l}{V-v} + \frac{l}{V+v} = \frac{2lv}{V^2-v^2}$$

τὸ δ' ὑπὸ τοῦ φωτὸς συνολικῶς διανυθὲν δ-άστημα εἶναι

$$r = V(t+t') = \frac{2\,lv^2}{V^2-v^2} = \frac{2l}{1-\frac{v^2}{V^2}}$$

Ἐν τῇ δευτέρᾳ περιπτώσει, καθ' ἣν τὸ φῶς ὁδεύει κατὰ τὴν ΑΓ, εἶναι φανερὸν ὅτι κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα τ, καθ' ὃ τὸ φῶς χρειάζεται νὰ φθάσῃ ἀπὸ Α μέχρι τοῦ κατόπτρου εἰς Γ, τὸ κάτοπτρον μετατοπίζεται εἰς Γ', εἶναι δὲ ΓΓ'=vτ, καὶ ἑπομένως τὸ φῶς κάμνει τὴν διαδρομὴν ΑΓ'=σ. Ὡς ἐκ τοῦ σχ. 1 συνάγεται, εἶναι:

$\sigma^2 = l^2 + v^2\tau^2$. Ἐπειδὴ ὅμως $\sigma = V\tau$, προκύπτει εὐκόλως $\tau^2 = l^2/V^2-v^2$ καὶ $\tau = l/\sqrt{V^2-v^2}$. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του τὸ φῶς ἀπὸ Γ' εἰς Α'' χρειάζεται πάλιν προδήλως, ὡς ἐκ τοῦ σχ. 1 ἐμφαίνεται, τὸ αὐτὸ χρονικὸν διάστημα, καὶ ἑπομένως διὰ τὴν συνολικὴν διαδρομὴν ΑΓ'Α'' τὸ φῶς χρειάζεται χρονικὸν διάστημα $2\tau = 2l/\sqrt{V^2-v^2}$. Τὸ μῆκος ὅθεν τῆς διαδρομῆς τοῦ φωτὸς κατὰ τὴν δευτέραν ταύτην περίπτωσιν εἶναι:

$$r' = 2\tau V = \frac{2lv}{\sqrt{V^2-v^2}} = \frac{2l}{\sqrt{1-\frac{v^2}{V^2}}}$$

Ἐπειδὴ ὅμως ἡ ποσότης v/V εἶναι πολὺ μικρὰ ($v = 3.10^6$ cm/sec, ἐνῷ $V = 3.10^{10}$ cm/sec), ἤτοι $10^{-4}$, δυνάμεθα ἄνευ αἰσθητοῦ σφάλματος νὰ γράφωμεν

$$r = 2l\left(1 + \frac{v^2}{V^2}\right) \text{ καὶ } r' = 2l\left(1 + \frac{1}{2}\frac{v^2}{V^2}\right)$$

καὶ

$$r - r' = l.\frac{v^2}{V^2}$$

Ἤτοι ἡ διαδρομὴ τοῦ φωτὸς κατὰ τὴν πρώτην περίπτωσιν, ἐφ' ὅσον ὁ αἰθὴρ θεωρεῖται ἀκίνητος, εἶναι μεγαλυτέρα τῆς δευτέρας διαδρομῆς κατὰ τὴν ποσότητα $lv^2/V^2$. Ἡ διαφορὰ ὅμως αὕτη τῶν δύο διαδρομῶν εἶναι ἱκανὴ νὰ προκαλέσῃ φαινόμενα συμβολῆς. Κατὰ τὴν διάταξιν τοῦ Μίκελσον ἦτο δυνατὸν ἡ συσκευή, ἥτις ἔφερε τὴν φωτεινὴν πηγὴν Α, τὰ κάτοπτρα Β καὶ Γ καὶ τὴν διόπτραν παρατηρήσεως, νὰ στραφῇ περὶ ἄξονα, ὥστε νὰ λάβῃ δευτέραν θέσιν τοιαύτην, ὥστε ἡ ἐπιμηκεστέρα διαδρομὴ ΑΒ νὰ καθίστατο ἐν τῇ δευτέρᾳ θέσει ἡ βραχυτέρα. Ἡ διαφορὰ τῶν μηκῶν τῶν δύο διαδρομῶν διπλασιάζεται οὕτω καὶ λαμβάνει τὴν τιμὴν $2lv^2/V^2$ καὶ ἑπομένως θὰ ἔπρεπεν ὡς ἐκ τούτου νὰ παρατηρηθῇ μεταβολὴ τῆς εἰκόνος συμβολῆς, ἤτοι μετατόπισις τῶν παρατηρουμένων κροσσῶν συμβολῆς. Οὕτω π. χ. ἐὰν ἡ ἀπόστασις $l = 100$cm, θὰ εἶναι $2lv^2/V^2 = 200.\ 10^{-8}$cm ἢ 0,02 μ ($\mu = 10^{-3}$mm). Ἐὰν δὲ χρησιμοποιῶμεν κίτρινον φῶς, δι' ὅπερ τὸ μῆκος κύματος εἶναι περίπου $^1/_2$ μ., ἡ ἀπόστασις δύο διαδοχικῶν κροσσῶν θὰ ἰσοῦται πρὸς τὸ μῆκος κύματος τοῦ χρησιμοποιουμένου φωτός, ἤτοι $^1/_2$μ., καὶ ἑπομένως δέον ν' ἀναμένεται μεταβολὴ τῆς ἀποστάσεως τῶν κροσσῶν κατὰ $^1/_{25}$ τοῦ μεγέθους αὐτῆς, ὅταν ἡ διάταξις στραφῇ ἐκ τῆς μιᾶς θέσεως εἰς τὴν ἑτέραν. Ἡ μετατόπισις πάντως αὕτη εἶναι ἀρκούντως μικρά, καὶ δὲν δύναται νὰ μετρηθῇ μετ' ἀκριβείας. Δυνάμεθα ὅμως δι' ὀπτικῶν μέσων νὰ μεγεθύνωμεν αὐτὴν εἰς τρόπον, ὥστε ἡ μέτρησις αὐτῆς νὰ εἶναι δυνατὴ μετ' ἀκριβείας. Ὁ Μίκελσον πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἐρρύθμισε τὴν διάταξιν κατὰ τρόπον, ὥστε τὸ φῶς νὰ μὴ ἀνακλᾶται ἅπαξ εἰς τὰ σημεῖα Β καὶ Γ, ἀλλὰ διὰ τοποθετήσεως συστήματος κατόπτρων εἰς Β καὶ Γ νὰ ἐπιτυγχάνωνται, πρὶν ἢ τὸ φῶς εἰσχωρήσῃ εἰς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως, πολλαπλαῖ ἀνακλάσεις. Οὕτω, μετὰ ὀκταπλῆν ἀνάκλασιν ἡ ἀνωτέρω μνημονευθεῖσα διαφορὰ διαδρομῆς ὀκταπλασιάζεται καὶ ἑπομένως ἡ ἀντίστοιχος μετατόπισις τῶν κροσσῶν μεγεθύνεται εἰς τρόπον, ὥστε, ἐὰν πράγματι τοιαύτη ὑφίστατο, νὰ δύναται νὰ παρατηρηθῇ καὶ νὰ μετρηθῇ ἐπακριβῶς.

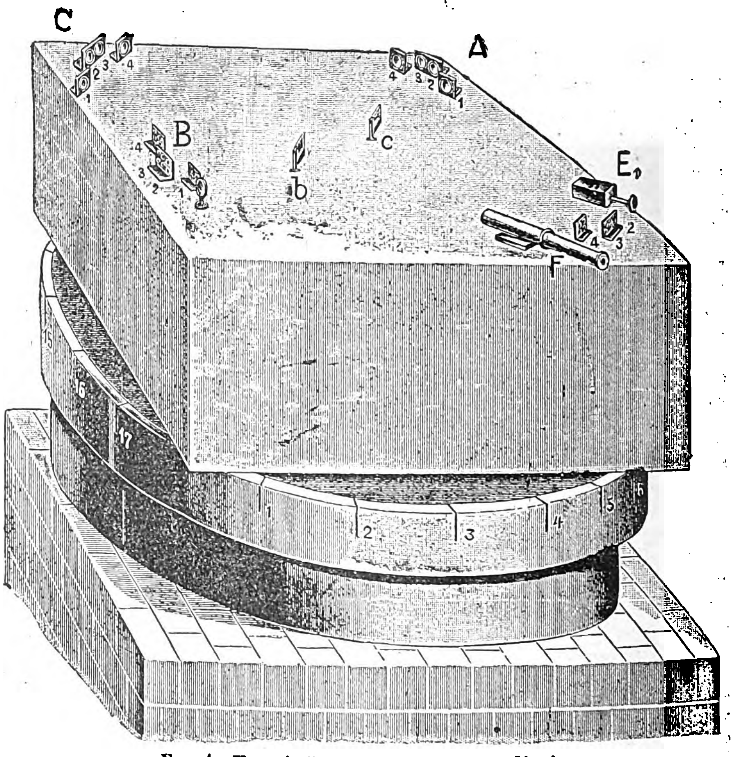


Σχ. 4. *Γενικὴ ὄψις τῆς συσκευῆς Μίκελσον.*

Τὸ σχ. 3 δεικνύει τὴν ὑπὸ τοῦ Μίκελσον χρησιμοποιηθεῖσαν διάταξιν.

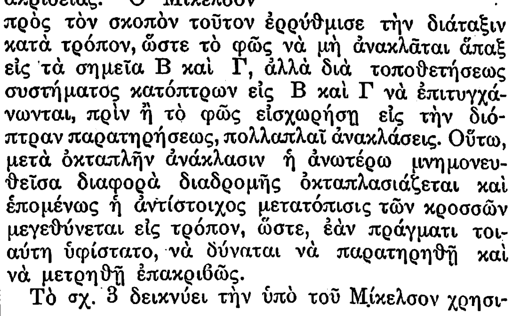


Σχ. 3. *Διάταξις τῆς συσκευῆς Μίκελσον.*

Εἰς Α καὶ Β ὑφίσταται σύστημα ἐκ τεσσάρων κατόπτρων, ἐπίσης δὲ εἰς Γ καὶ Ε. Τὸ φῶς ἐξ a προσπίπτει ἀρχικῶς ἐπὶ τῶν πλακιδίων μετὰ παραλλήλων ἑδρῶν καὶ ἓν μέρος αὐτοῦ διερχόμενον ὁδεύει πρὸς σύστημα τῶν κατόπτρων εἰς Α, ἕτερον δὲ ἀνακλώμενον πρὸς τὸ σύστημα τῶν κατόπτρων εἰς Β. Τὸ διερχόμενον φῶς προσπίπτει ἐπὶ τοῦ κατόπτρου 1 εἰς Α καὶ ἀνακλώμενον προσπίπτει ἐπὶ τοῦ κατόπτρου 1 εἰς Β, ὁπόθεν ἀνακλώμενον προσπίπτει ἐπὶ τοῦ κατόπτρου 2 εἰς Α κ.ο.κ. μέχρις ὅτου φθάσῃ ἐπὶ τοῦ κατόπτρου 4 εἰς Β ὑπὸ κάθετον πρόπτωσιν, ὁπόθεν ἀνακλώμενον ἀκολουθεῖ τὴν ἀντίστροφον ὁδὸν καὶ μετὰ διαδοχικὰς ἀνακλάσεις προσπίπτει τέλος ἐπὶ τοῦ κατόπτρου 1 εἰς Α, ὁπόθεν ἀνακλώμενον εἰσέρχεται δι' ἀνακλάσεως ἐπὶ τοῦ πλακιδίου 1 πρὸς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως· ὁμοίως τὸ ἀνακλώμενον ἀρχικῶς ἐπὶ τοῦ πλακιδίου φῶς, ἀφοῦ ὑποστῇ διαδοχικὰς ἀνακλάσεις καθ' ὅμοιον τρόπον ἐπὶ τῶν συστημάτων κατόπτρων εἰς Γ καὶ Ε, εἰσέρχεται τέλος εἰς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως. Τὸ κάτοπτρον $E_1$ εἶναι διατεταγμένον κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε νὰ ἐπιτυγχάνεται λεπτοτάτη ρύθμισις τῆς θέσεως αὐτοῦ, οὕτω δὲ δυνάμεθα νὰ ρυθμίσωμεν καταλλήλως τοὺς σχηματιζομένους κροσσοὺς συμβολῆς. Τὸ πλακίδιον c εἶναι ὅμοιον πρὸς τὸ πλακίδιον b καὶ παρεμβάλλεται μεταξὺ τῶν ἀκτίνων τῶν εὑρισκομένων μεταξὺ Α καὶ Β, καθ' ὅσον αἱ ἀκτῖνες μεταξὺ Γ καὶ Ε διέρχονται ἅπαξ περισσότερον διὰ τοῦ ὑαλίνου πλακιδίου b. Ἡ ὅλη συσκευή, ἤτοι κάτοπτρα, πλακίδιον, διόπτρα παρατηρήσεως, ἐτοποθετήθη ὑπὸ τοῦ Μίκελσον ἐπὶ μαρμαρίνου κυβολίθου ἐπιφανείας 1,5 m², τὸ δὲ ὅλον σύστημα ἐπιπλέει ἐπὶ μάζης ὑδραργύρου, εὑρισκομένης ἐντὸς μεγάλης δεξαμενῆς ὑδραργύρου· οὕτω δ' ἡ διάταξις ἦτο δυνατὸν νὰ στρέφηται εὐχερῶς ἐκ τῆς μιᾶς θέσεως πρὸς τὴν ἑτέραν. Τὸ σχ. 4 δεικνύει τὴν γενικὴν ὄψιν τῆς συσκευῆς Μίκελσον. Διὰ τῆς ἐξόχου ἀκριβείας διατάξεως ταύτης, ὁ Μίκελσον, μετὰ ἐπανειλημμένους πειραματισμούς, δὲν κατώρθωσε νὰ παρατηρήσῃ οὐδ' ἴχνος μετατοπίσεως τῶν κροσσῶν συμβολῆς, ὅταν ἡ συσκευὴ ἐστρέφετο ἐκ τῆς μιᾶς θέσεως εἰς τὴν ἑτέραν. Τὸ ἀρνητικὸν ἀποτέλεσμα τοῦ Μίκελσον ἄγει εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι τὸ φῶς διανύει διάστημα εὑρισκόμενον κατὰ τὴν αὐτὴν διεύθυνσιν πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως τῆς Γῆς μετὰ τῆς αὐτῆς ταχύτητος μεθ' ἧς διανύει τὸ αὐτὸ διάστημα κείμενον κατὰ διεύθυνσιν κάθετον πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς κινήσεως τῆς Γῆς, καὶ ἑπομένως ἡ ὑπόθεσις τοῦ ἠρεμοῦντος αἰθέρος εὑρίσκεται εἰς ἀντίφασιν πρὸς τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ πειράματος Μίκελσον. Τοὐναντίον τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ πειράματος Μίκελσον εὑρίσκεται ἐν πλήρει συμφωνίᾳ πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τοῦ κινουμένου αἰθέρος. Ἀλλ' ἤδη παρουσιάζεται τὸ δίλημμα: Τίνι τρόπῳ θὰ συμβιβασθῇ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ πειράματος Μίκελσον, ὅπερ συνηγορεῖ πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τοῦ κινουμένου αἰθέρος, πρὸς τὸ πείραμα Fizeau καὶ πρὸς τὸ φαινόμενον τῆς ἀποπλανήσεως τοῦ φωτός, ἅτινα συνηγοροῦσιν ὑπὲρ τοῦ ἀκινήτου αἰθέρος; Οὕτω ἀγόμεθα ν' ἀποδώσωμεν εἰς τὸν αἰθέρα δύο ἀντικρουομένας ἰδιότητας, ἤτοι τῆς κινήσεως καὶ τῆς ἠρεμίας.

Πρὸς ἄρσιν τῆς ἀντιφάσεως ταύτης ἐπροτάθησαν διάφοροι θεωρίαι. Οὕτω οἱ Fitzgerald καὶ Lorenz διετύπωσαν τὴν περίφημον θεωρίαν τῆς *συστολῆς*, καθ' ἣν τὰ ἐν κινήσει σώματα ὑφίστανται ἐπιβράχυνσιν ἢ συστολὴν τῆς διαστάσεως αὐτῶν τῆς συμπιπτούσης πρὸς τὴν κίνησιν τῆς Γῆς.

Digitized by Google

Τελειωτικῶς ὅμως ἐπέτυχε νὰ ἄρῃ τὴν ἀντίφασιν ταύτην ὁ Einstein διὰ γενικεύσεως τοῦ ἀξιώματος τῆς σχετικότητος τῆς μηχανικῆς καὶ ἐπεκτάσεως αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν φαινομένων, διαμορφώσας οὕτω τὴν θεωρίαν τῆς *σχετικότητος* (βλ. λ.), ἥτις κατέστη ὀνομαστὴ ἐν τῇ νεωτέρᾳ φυσικῇ. Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

— **Μίκελσον *συμβολόμετρον*** (Michelson Interferometer). Συσκευή, ἥτις χρησιμεύει πρὸς παραγωγὴν ἀκτίνων παρουσιαζουσῶν μεγάλην διαφορὰν πορείας. Τὸ σχ. 1 δεικνύει τὴν ἀρχὴν τῆς πραγματοποιήσεως τοῦ συμβολομέτρου Μίκελσον, ὅπερ ἀποτελεῖται ἐκ δύο πλακιδίων ὑαλίνων μετὰ παραλλήλων ἑδρῶν $A_1$ καὶ $A_2$, διατασσομένων ὡς δεικνύεται ἐν σχ. 1. Ἡ φωτεινὴ πηγὴ τίθεται εἰς S, τὸ δ' ἐξ αὐτῆς ἐκπορευόμενον φῶς συναντᾷ ὑπὸ γωνίαν 45° τὸ πλακίδιον $A_1$, ἀσθενῶς ἐπηργυρωμένον, καὶ ἐν μέρει ἀνακλώμενον ἐπὶ τοῦ $A_1$ ὁδεύει πρὸς τὸ κάτοπτρον $M_2$, ἀπὸ τοῦ ὁποίου παλινδρομεῖ καὶ διερχόμενον διὰ τῶν πλακιδίων $A_2$ καὶ $A_1$ εἰσέρχεται πρὸς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως Δ, ἕτερον δὲ μέρος, διερχόμενον διὰ τοῦ πλακιδίου $A_1$, προσπίπτει ἐπὶ τοῦ κατόπτρου $M_1$, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀνακλώμενον παλινδρομεῖ πρὸς τὸ πλακίδιον $A_1$, ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ ὁποίου πάλιν ἀνακλώμενον εἰσχωρεῖ εἰς τὴν διόπτραν παρατηρήσεως.

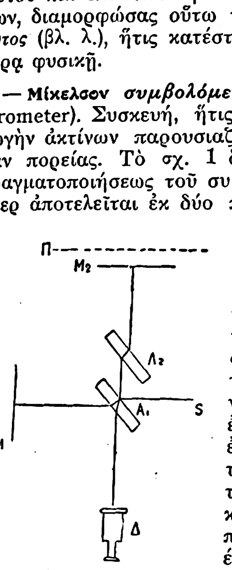

Σχ. 1. *Στοιχειώδης διάταξις συμβολομέτρου Μίκελσον.*

Ἐκ τῆς ὀπτικῆς σπουδῆς τοῦ ἀνωτέρω συστήματος προκύπτει ὅτι δυνάμεθα νὰ θεωρήσωμεν ὅτι τὸ δεύτερον μέρος τοῦ φωτὸς δὲν ἀνακλᾶται ὑπὸ τοῦ κατόπτρου $M_1$, ἀλλὰ ὑπὸ ἑτέρου ἐπιπέδου εὑρισκομένου εἰς Π, ὅπερ ὁ Μίκελσον ἐκάλεσεν *ἐπίπεδον παραβολῆς*. Πράγματι ὁ παρατηρητὴς βλέπει ἐν τῇ διόπτρᾳ τὸ φαινόμενον συμβολῆς, ὅπερ προκαλεῖται ὑπὸ τοῦ πάχους τοῦ στρώματος ἀέρος τοῦ περιεχομένου μεταξὺ $M_2$ καὶ Π.

Ἐὰν μετακινήσωμεν τὸ κάτοπτρον $M_2$, μεταβάλλεται ἡ ἀπόστασις μεταξὺ $M_2$ καὶ Π, δυνάμεθα δὲ νὰ ἐπιτύχωμεν, ὥστε αἱ ἐπιφάνειαι $M_2$ καὶ Π

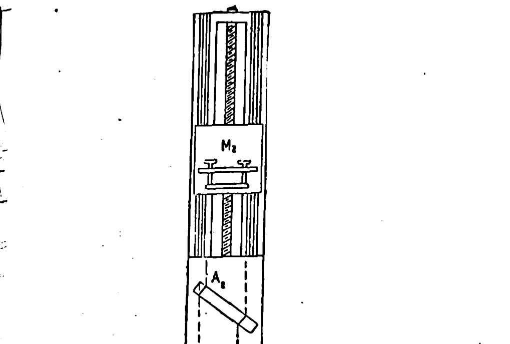

Σχ. 2. *Γενικὴ διάταξις συμβολομέτρου Μίκελσον.*

νὰ ταυτισθῶσιν. Ἐὰν αἱ δύο ἐπιφάνειαι $M_2$ καὶ Π εἶναι τελείως παράλληλοι, ἔχομεν δακτυλίους ἴσης κλίσεως. Ἐὰν αἱ ἐπιφάνειαι $M_2$ καὶ Π δὲν εἶναι τελείως παράλληλοι, τότε βλέπομεν εὐθυγράμμους κροσσοὺς ἴσου πάχους. Τὸ πλακίδιον $A_2$, ὅπερ εἶναι στρεπτὸν περὶ ἄξονα κάθετον τῷ σχήματι, χρησιμεύει ὡς ἀντισταθμιστής, ὁσάκις θέλομεν νὰ ἐπιτύχωμεν καὶ νὰ μετρήσωμεν μικρὰς μετατοπίσεις τῶν κροσσῶν συμβολῆς.

Τὸ σχ. 2 δεικνύει τὴν γενικὴν διάταξιν τοῦ συμβολομέτρου Μίκελσον. Ἡ φωτεινὴ πηγὴ S, ἥτις περιέχει συνήθως φωτεινοὺς ἀτμοὺς Hg, H, Cd, Na κλπ., εἶναι ἐφωδιασμένη διὰ συστήματος συγκεντρωτικῶν φακῶν καὶ πρίσματος παρέχοντος φάσμα τῆς φωτεινῆς πηγῆς, τῇ βοηθείᾳ δὲ σχισμῆς Σ λαμβάνομεν ἀκτῖνας ὡρισμένου μήκους κύματος, ἃς ἀφίνομεν νὰ προσπέσωσιν ἐπὶ τοῦ συμβολομέτρου. Τὸ κάτοπτρον $M_1$ διατίθεται, ὥστε νὰ εἶναι ἀκίνητον, ἐνῷ τὸ $M_2$ εἶναι κινητόν. Διὰ τῆς τοιαύτης διατάξεως κατώρθωσεν ὁ Μίκελσον νὰ ἐπιτύχῃ λίαν μεγάλας διαφορὰς πορείας. Οὕτω διὰ τὴν ἐρυθρὰν ἀκτῖνα τοῦ καδμίου ἔφθασε μέχρι 300.000 λ, διὰ τὴν πρασίνην ῥάβδωσιν τοῦ ὑδραργύρου μέχρι 540.000 λ, ὅπου λ τὸ μῆκος κύματος τῆς ἀντιστοίχου ῥαβδώσεως.

Ἡ μέτρησις διεξάγεται ὡς ἑξῆς: Καθιστῶμεν ἐν ἀρχῇ τὰς ἐπιφανείας Π καὶ $M_2$ παραλλήλους καὶ ἀκολούθως μετακινοῦμεν τὸ κάτοπτρον $M_2$ παραλλήλως ἑαυτῷ καὶ μετροῦμεν συγχρόνως τὸν ἀριθμὸν τῶν διαδοχικῶν ἐμφανίσεων τοῦ φωτεινοῦ κέντρου τῶν δακτυλίων. Τὴν διάταξιν ταύτην ἐχρησιμοποίησεν ὁ Μίκελσον ὅπως ἐκφράσῃ τὸ μῆκος τοῦ γαλλικοῦ μέτρου εἰς μήκη κύματος, ἀνεῦρε δὲ ὅτι, ἐὰν χρησιμοποιῶμεν τὴν ἐρυθρὰν ῥάβδωσιν τοῦ καδμίου, εἶναι 1m=1553163.5 λ, ἔνθα λ τὸ μῆκος κύματος τὰς ἐρυθρᾶς ῥαβδώσεως καδμίου, διὰ τὴν πρασίνην ῥάβδωσιν καδμίου εὑρέθη 1m=1.966249,7 $\lambda_2$, ὅπου $\lambda_2$ τὸ μῆκος κύματος τῆς πρασίνης ῥαβδώσεως τοῦ καδμίου· διὰ τὴν κυανῆν ῥάβδωσιν καδμίου εὑρέθη 1m=2083372,1 $\lambda_3$, ὅπου $\lambda_3$ τὸ μῆκος κύματος τῆς κυανῆς ῥαβδώσεως καδμίου. Εἶναι δὲ $\lambda_1=0,644\ \mu$, $\lambda_2=0,509\ \mu$, $\lambda_3=0,180\ \mu$, ὅπου $\mu=10^{-3}$ mm. Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

**Μικέττι** (Michetti), ***Φραγκῖσκος - Παῦλος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς τῷ 1851. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἐν Νεαπόλει Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν ἐκ τοῦ καθημερινοῦ βίου, ποιμένων καὶ ποιμενίδων. Ἔργα του ἐβραβεύθησαν πολλάκις εἰς ἰταλικὰς καὶ ξένας ἐκθέσεις. Ὁ Μικέττι θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν σημαντικωτέρων ἐκπροσώπων τῆς ἰταλικῆς τέχνης τοῦ ΙΘ' καὶ τῶν πρώτων ἐτῶν τοῦ Κ' αἰῶνος. Μεταξὺ τῶν ὡραιοτέρων πινάκων του τάσσονται οἱ ἀκόλουθοι: «Ποιμένες» (Μουσεῖον Revoltella Τεργέστης), «Ποιμενίδες» (Μουσεῖον Πίττι Φλωρεντίας), «Γάμος εἰς τὰ Ἀμβρούζια» (Παρίσιοι), «Νεᾶνις» (Βουκουρέστιον), «Μεσημβρινὴ ἀνάπαυσις» (Στουττγάρτη), «Ἡ εὐχὴ» καὶ «Ποιμενὶς» (Ἐθνικὴ Πινακοθήκη νεωτέρας τέχνης, Ρώμη). Ι. Μ. Π.

**Μὶ-Κιάνγκ,** ἢ ***Οὐκιάνγκ*** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ΝΔ. Κίνας, παραπόταμος τοῦ Κυανοῦ ποταμοῦ (Γιὰνγκ-Τσὲ-Κιάγκ), πηγάζων ἐκ τῶν διαχωριζόντων πρὸς Δ. τὴν περιφέρειαν Κουΐ-Τσέου τοῦ Γιοὺν-Νὰν ὀρέων. Ῥέει κατ' ἀρχὰς πρὸς Δ. ὑπὸ τὸ ὄνομα *Τσίγκισιγκ-Χό*, συνενοῦται μὲ τὸν Κουέϊ-Γιάγκ, στρέφεται εἶτα πρὸς Β., διέρχεται ὑπὸ τὰ τείχη τοῦ Τσέναν Φοὺ καὶ εἰσέρχεται εἰς τὴν ἐπαρχίαν Τσὲ-Σουάν, ὅπου ἑνοῦται μετὰ τῶν ποταμῶν Χοὺγκ-Τοὺ-Χὸ καὶ τοῦ Μὶ-Λιάγκ ἐρχομένων ἐκ δυσμῶν, καὶ τέλος ἐκβάλλει εἰς τὸν Γιὰνγκ-Τσὲ παρὰ τὴν πόλιν τοῦ Φοὺ-Τσέου μετὰ ῥοῦν 800 χλμ. Π. Γ. Λ.

**Μικιέλι** (Micheli)· βλ. *Μικέλι.*

**μίκι-μάους** (τό)· εἶδος κινηματογραφικῆς προβολῆς ἀπὸ κινούμενα σχεδιάσματα ζῴων, εἰς σκηνὰς φανταστικάς, κωμικοῦ πάντοτε τύπου.

—*[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *σχέδια κινούμενα.*

**Μικίνιος, *Ἀνδρέας.*** Ἰατροφιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα. Μετὰ πολλὰς περιηγήσεις ἐγκατεστάθη εἰς Μονεμβασίαν, ἔνθα ἐτιμήθη ὑπὸ τῆς βενετικῆς πολιτείας διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος. Μετὰ τὴν ἅλωσιν ὅμως τῆς πόλεως ταύτης ὑπὸ τῶν Τούρκων (1715) συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ὡδηγήθη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ἀπηγχονίσθη μετὰ τοῦ ἀνεψιοῦ του. Συνέγραψε διάφορα ἔργα. Λ. Χ. Ζ.

**μικιὸς** (ὁ) *καὶ* ***μιτσός***· ἰδιωμ. Κρήτ., ὁ μικρός.

**Μικίσλαος** (Mieczyslaw, *προφ. πολων. Μιετσσύσσουαβ*). Ὄνομα τῶν κατωτέρω βασιλέων καὶ δουκῶν τῆς Πολωνίας:

— **Μικίσλαος Α',** *ὁ ἔνδοξος* (ἢ *Μιέσκο Λάμπερτ ὁ Α'*), δοὺξ καὶ βασιλεὺς τῆς Πολωνίας (931—992), διαδεχθεὶς τῷ 962 τὸν πατέρα του Ziémomyzi. Ἦτο εἰδωλολάτρης, μὴ ἔχων δὲ τέκνα ἐξ οὐδεμιᾶς τῶν ἑπτὰ γυναικῶν αὐτοῦ, ἐζήτησε τῷ 965 τὴν χεῖρα τῆς Ντομπρόφκα, θυγατρὸς τοῦ Χριστιανοῦ δουκὸς τῆς Βοημίας Βολεσλάου, ἥτις καὶ τῷ ἐδόθη ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ προσχωρήσῃ εἰς τὸν Χριστιανισμόν. Ὁ Μικίσλαος ἐδέχθη, ἐβαπτίσθησαν δὲ μετ' αὐτοῦ τότε καὶ οἱ κυριώτεροι τῶν Πολωνῶν πυργοδεσποτῶν. Ὁ ἡγεμὼν οὗτος διεξήγαγε μακροὺς πολέμους πρὸς τοὺς Σλάβους ἡγεμονίσκους τῶν παρὰ τὸν ποταμὸν Ἔλβαν χωρῶν. Διὰ νὰ εἶναι ἰσχυρότερος ἀπέναντι τούτων, συνεδέθη διὰ συμμαχίας πρὸς τὸν αὐτοκράτορα Ὄθωνα Α', ἀναγνωρίσας τὴν ἐπικυριαρχίαν αὐτοῦ ἐπὶ τῶν κτήσεών του τῶν εὑρισκομένων μεταξὺ τοῦ Ἔλβα καὶ τοῦ Ὄντερ, ἐτάχθη δὲ κατόπιν μὲ τὸ μέρος τοῦ Ἐρρίκου τῆς Βαυαρίας, ὅστις εἶχεν ἀνακηρυχθῆ βασιλεὺς τῆς Γερμανίας, ἐναντίον τοῦ νεαροῦ Ὄθωνος Γ'. Μετέπειτα ὅμως μετέστη πρὸς τὸν τελευταῖον τοῦτον καὶ ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν ἐνισχύσεις ἐναντίον τοῦ Βολεσλάου τῆς Βοημίας, οὗτινος τὴν χώραν ἐδῄωσεν ὁ ἴδιος βραδύτερον (991). Τὸν Μικίσλαον Α' διεδέχθη εἰς τὸν θρόνον ὁ υἱὸς αὐτοῦ Βολέσλαος Χρόμπρυ.

— **Μικίσλαος Β'.** Ἔγγονος τοῦ προηγουμένου (990—1034), διαδεχθεὶς τῷ 1025 τὸν πατέρα του Βολέσλαον Χρόμπρυ εἰς τὸν θρόνον τῆς Πολωνίας. Ὢν ἀπὸ χαρακτῆρος ὀκνηρός, βάναυσος, ἐστερημένος εὐφυΐας καὶ ῥέπων πρὸς τὴν διαφθοράν, ἀπεμάκρυνεν ἀπὸ τὴν διοίκησιν τῆς χώρας του τοὺς ἱκανοὺς ἄνδρας, ἀντικαταστήσας αὐτοὺς μὲ τοὺς συντρόφους τῶν ἀκολασιῶν του. Συνέπεια τῆς ἄφρονος πολιτείας του ὑπῆρξε ν' ἀπολέσῃ τὸ πλεῖστον τῶν κατακτήσεων τοῦ πατρός του, διατηρήσας μόλις καὶ μετὰ δυσκολίας τὰ παλαιὰ πολωνικὰ σύνορα, εἶδε δὲ ἱδρυόμενα διαδοχικῶς, δαπάναις αὐτοῦ, τὰ πριγκιπᾶτα τοῦ Μεκλεμβούργου, τοῦ Βρανδεμβούργου, τοῦ Χολστάϊν, τοῦ Λοῦμπεκ κ. ἄ. Οἱ Πομμερανοὶ ἐξηγέρθησαν ἐναντίον του, ἐπέτυχε δὲ ὁ Μικίσλαος τὴν καθυπόταξίν των χάρις μόνον εἰς τὴν ἀνδρείαν τοῦ πρίγκιπος τῆς Οὑγγαρίας Μπέλα, εἰς τὸν ὁποῖον ἔδωκεν, εἰς ἀνταμοιβήν, ὡς τιμάριον τὴν Πομμερανίαν καὶ τὴν θυγατέρα του ὡς σύζυγον. Ἐν τέλει ἀπέθανε παράφρων ἐκ τῶν καταχρήσεων.

— **Μικίσλαος Γ',** δοὺξ τῆς Πολωνίας (1131—1201). Τῷ 1173 διεδέχθη τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Βολέσλαον Δ'. Ἐκδιωχθεὶς τῷ 1177, λόγῳ τῆς σκληρότητός του, κατώρθωσε νὰ ἐπανακτήσῃ τὸν θρόνον τῷ 1190. —Ω.

**Μικίψας.** Εἷς ἐκ τῶν 54 υἱῶν τοῦ βασιλέως τῆς Νουμιδίας Μασσανάσσου. Ἀποθανόντος τοῦ πατρός του τῷ 143 π.Χ., διεμοιράσθη μετὰ τῶν πρεσβυτέρων ἀδελφῶν του τὸ πατρικὸν βασίλειον, λαβὼν εἰς τὸ μερίδιόν του καὶ τοὺς θησαυροὺς τοῦ πατρός του. Βραδύτερον ὅμως κατέστη ὁ μόνος κύριος τῆς Νουμιδίας, τῆς ὁποίας τὰ ὅρια μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Καρχηδόνος ἐπεξέτεινε μέχρι τῶν Σύρτεων. Διετέλεσε πιστὸς σύμμαχος τῶν Ρωμαίων, βοηθήσας αὐτοὺς εἰς τὰς κατὰ τῆς Ἱσπανίας ἐκστρατείας των. Ἐπὶ τῆς βασιλείας του ἐν ἔτει 125 π.Χ. ἐνέσκηψε λοιμὸς εἰς τὸ κράτος του, καθ' ὃν ἀπωλέσθησαν περὶ τὰς 800 χιλιάδας ἄνθρωποι. Ἦτο πεπαιδευμένος καὶ φιλόμουσος βασιλεὺς καὶ διετήρει περὶ αὐτὸν πολλοὺς σοφοὺς Ἕλληνας, ἐκαλλώπισε δὲ τὴν πρωτεύουσαν τοῦ κράτους του διὰ λαμπρῶν μνημείων. Ἀποθανὼν τῷ 118 π.Χ. διένειμε τὸ βασίλειόν του μεταξὺ τῶν υἱῶν του Ἀδερβάλου καὶ Ἱεμψάλου καὶ τοῦ ἀνεψιοῦ του Ἰουγούρθα, ὃν εἶχεν υἱοθετήσει. Ν. Α.

**Μίκκαλος.** Κλαζομένιος, ἔμπιστος τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ἀποσταλεὶς τῷ 323 π.Χ. μετὰ 500 ταλάντων εἰς Φοινίκην καὶ Συρίαν πρὸς στρατολογίαν ναυτῶν καὶ ἐργατῶν, διὰ τὸν στόλον καὶ τὸν ναύσταθμον τοῦ Εὐφράτου. Α. Θ. Σ.

**Μίκκελσεν** (Mikkelsen), ***Ἄϊναρ.*** Δανὸς θαλασσοπόρος καὶ ἐξερευνητὴς τοῦ Βορείου Πόλου, γεννηθεὶς τῷ 1880. Μετέσχε τῶν ἀποστολῶν τοῦ Ἄνδρουπ (1899—1900) εἰς τὰς ἀνατολικὰς ἀκτὰς τῆς Γροιλανδίας καὶ τῆς ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Ἀμερικανοῦ καθηγητοῦ Μπάλδουϊν ἀποστολῆς τοῦ Τσίγκλερ εἰς τὴν Γῆν τοῦ Φραγκίσκου Ἰωσὴφ (1901—1902). Διηύθυνε τὴν ὑδρογραφικὴν ἀποστολὴν εἰς τὸν βόρειον Ἀτλαντικόν, τὴν ὀργανωθεῖσαν ὑπὸ τῆς δανικῆς κυβερνήσεως ἐν ἔτει 1903. Τῷ 1906, ἐπιβὰς τοῦ πλοίου «Δούκισσα Μπέλφορντ», ἐπεχείρησεν ἐξερευνητικὴν ἀποστολὴν εἰς τὸν Βόρειον Παγωμένον ὠκεανὸν μέχρι τῆς βορείου Ἀλάσκας, καὶ κατὰ τὸ ἔαρ τοῦ ἔτους 1907 ἐξηρεύνησε τὴν θάλασσαν τοῦ Μπωφόρ. Τῷ 1909 διηύθυνε τὴν πρὸς Γροιλανδίαν ὀργανωθεῖσαν ἀποστολὴν πρὸς ἀνεύρεσιν τῶν νεκρῶν τοῦ Μύλιους-Ἔρικσεν καὶ τῶν συντρόφων του. Δὲν ἐπέτυχε μὲν τοῦ σκοποῦ τούτου, κατώρθωσεν ὅμως τὸν Μάϊον τοῦ 1910 νὰ εὕρῃ σημειώσεις τῶν ἀφανισθέντων. Τῷ 1924 διηύθυνεν ἀποικιστικὴν ἀποστολὴν πρὸς τὸ φιόρδ Σκόρομπυ τῆς Α. Γροιλανδίας. Ἔγραψε: «Κατάκτησις τῆς Ἀρκτικῆς θαλάσσης», «Ροβινσὼν τῆς Ἄρκτου» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μικκιάδης.** Χῖος γλύπτης, ἀκμάσας κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ΣΤ' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος. Εἶχεν υἱὸν τὸν *Ἄρχερμον*, τὸν περίφημον Χῖον γλύπτην, ὅστις πρῶτος ἐξεικόνισε τὴν πτερωτὴν Νίκην. Ἐξ ἐπιγραφῆς εὑρεθείσης ἐν Δήλῳ, μανθάνομεν ὅτι ὁ Μικκιάδης συνειργάζετο μετὰ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ Ἀρχέρμου. εἶναι δὲ πιθανὸν ὅτι τὸ ἐν Δήλῳ ἐπίσης εὑρεθὲν ἄγαλμα τῆς πτερωτῆς Νίκης, τὸ ἀποκείμενον ἐν τῷ Ἐθνικῷ Ἀρχαιολογικῷ μουσείῳ Ἀθηνῶν, εἶναι ἔργον ἀμφοτέρων. Β. Δ. Θ.

**Μικκίων.** Ἀθηναῖος ζωγράφος, μαθητὴς τοῦ περιφήμου Ζεύξιδος, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Λουκιανοῦ (Ζεῦξ. 7). Α. Θ. Σ.

**μικκύλιον** (τό). Οὕτω καλεῖται συσσώρευσις μορίων, ἅτινα δέον νὰ θεωρῶνται ὡς τὸ ἐλάχιστον οὐσίας κατεχούσης πάσας τὰς ἰδιότητας σώματός τινος. Τὰ μόρια ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ σώματος δύνανται νὰ ἀθροισθῶσιν εἰς μικκύλια κατέχοντα φυσικὰς ἰδιότητας λίαν διαφορετικάς, ὁπότε προκύ-

Digitized by Google

πτει τὸ φαινόμενον της *ἀλλοτροπίας* καὶ τῆς *πολυμορφίας*. Μ. Ν. Κ.

**Μίκλας** (Miklas), ***Γουλιέλμος.*** Σύγχρονος Αὐστριακὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1872. Τῷ 1907 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ τῷ 1918 μέλος τῆς συντακτικῆς ἐθνοσυνελεύσεως, εἶτα δὲ διετέλεσεν ὑφυπουργὸς τῶν Θρησκευμάτων (1919—1920) καὶ μέλος τοῦ ἐθνικοῦ συμβουλίου (1920). Εἷς τῶν σημαντικωτέρων ἀρχηγῶν τοῦ χριστιανικοῦ-σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Ἐξελέγη τῷ 1923 καὶ τῷ 1927 πρόεδρος τοῦ αὐστριακοῦ ἐθνικοῦ συμβουλίου. Ἐδημοσίευσεν εἰς περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας μελέτας καὶ ἄρθρα ἀναγόμενα εἰς τὴν καθόλου πολιτικὴν τοῦ κράτους. Γ. Ι. Β.

**Μίκλοζιχ** (Miklosich), ***Φραγκῖσκος.*** Ἐπιφανὴς σλαβολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1813 ἐν Luttenberg καὶ ἀποθανὼν τῷ 1891 ἐν Βιέννῃ. Μετὰ τὰς ἐν Γρὰτς καὶ Βιέννῃ πανεπιστημιακὰς σπουδάς του διωρίσθη κατ' ἀρχὰς μὲν ὡς ἔκτακτος (1849), μετὰ ἓν δὲ ἔτος ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς σλαβικῆς γλωσσολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξελέγη καὶ μέλος τῆς ἐν Βιέννῃ Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Αἱ ἐπιστημονικαὶ ἐργασίαι τοῦ Μίκλοζιχ εἶναι πολλαὶ καὶ σπουδαῖαι, δι' αὐτῶν δὲ προήχθη ἡ συγκριτικὴ ἔρευνα τῶν σλαβικῶν γλωσσῶν, ὅσον ὑπὸ οὐδενὸς ἄλλου ἐκ τῶν σλαβολόγων. Ἐκ τῶν ἔργων του γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Radices linguae palaeoslovenicae» (Λιψία 1845), «Lexikon linguae palaeoslovenicae» (Βιέννη 1850, β' ἔκδ. 1865), «Vergleichende Grammatik der slavischen Sprachen, I—IV» (Βιέννη 1852—1874, ὁ 1ος καὶ ὁ 3ος τόμος καὶ εἰς β' ἔκδοσιν 1879 καὶ 1876), τὸ σπουδαιότερον ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μίκλοζιχ, ἀπαραίτητον διὰ πάντα ἐρευνητὴν τῶν σλαβικῶν γλωσσῶν «Monumenta linguae palaeoslovenicae e codice Suprasliensi» (1851), «Monumenta serbica» (1858), «Slavische Bibliothek» (ἀπὸ τοῦ 1851 κ.ἑξ.). Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *J. Müller* ἐξέδωκε τὸ γνωστὸν καὶ παρ' ἡμῖν ἔργον τοῦ «Acta et diplomata graeca medii aevi» (4 τόμ., Βιέννη 1860—1870). Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσε καὶ πολυπληθεῖς πραγματείας εἰς τὰ πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῆς Βιέννης, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ἐξαίρετον ἔρευναν τῶν διαλέκτων τῶν ἐν Εὐρώπῃ Τσιγγάνων. Γ. Π. Α.

**Μικνὰς** (Miknâs) *[Γεωγρ.].* Πόλις τοῦ Μαρόκου (βλ. λ. *Μεκνές).* Χ. Δ.

**μικονία** (ἡ) (Miconia) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μελανοστοματοειδῶν,* περιλαμβάνον περὶ τὰ 500 περίπου εἴδη, ἅπαντα δένδρα ἢ δενδρύλλια, ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς, μὲ κορμὸν εὐθυτενῆ ἢ ἕρποντα καὶ φύλλα ἀντίθετα καὶ διαφόρως διατεταγμένα. Τὸ μῆκός των κυμαίνεται μεταξὺ 4—8 μέτρων καὶ ἔχουσι σχῆμα κωδωνοειδές. Τὰ ἄνθη των εἶναι παμμέγιστα καὶ ὁ καρπὸς σαρκώδης. Γνωστότερα εἴδη εἶναι: *μικονία ἡ χιλιανθὴς* (Miconia milleflora), *μικονία ἡ στενόσταχυς* (Miconia stenostachys), *μικονία ἡ ἀγροδίαιτος* (Miconia agrestis) καὶ *μικονία ἡ βαφικὴ* (Miconia tinctoria), ἅπαντα ἰθαγενῆ τῆς Γουϊάνας. Δ. Ν. Π.

**Μικοῦλι** (Miculi), ***Κάρολος.*** Πολωνὸς συνθέτης κλειδοκυμβαλιστὴς (1821—1897), σπουδάσας ὑπὸ τὸν Σοπὲν ἐν Παρισίοις. Κατόπιν ἐπιτυχῶν καλλιτεχνικῶν περιοδειῶν ἀνὰ τὴν Εὐρώπην, ὠνομάσθη τῷ 1858 διευθυντὴς τῆς ἐν Λεμβέργῃ «Μουσικῆς ἑταιρείας τῆς Γαλικίας», περιλαμβανούσης τὸ ᾠδεῖον, τὰς συναυλίας κτλ. Ἔγραψε πλείστας μελῳδίας, βάλς, μαζοῦρκες, θρησκευτικοὺς ὕμνους διὰ χορῳδίαν κτλ. Κατήρτισεν ἐπίσης συλλογὴν δημωδῶν ρουμανικῶν ᾀσμάτων, ἑτέραν ἐκ γαλλικῶν καὶ τρίτην ἐκ πολωνικῶν λαϊκῶν τραγουδιῶν. Ἐπὶ πλέον ἐπεστάτησεν εἰς τὴν κριτικὴν ἔκδοσιν τῶν ἔργων τοῦ Σοπέν, εἰς ἃ προσέθεσεν εἰδικὰς παρατηρήσεις, τὰς ὁποίας εἶχεν ἐξ αὐτοῦ τοῦ συνθέτου. Γ. Σ.

**Μικοῦλιτς** (Miculicz), ***Ἰωάννης φὸν Ραντέκι.*** Αὐστριακὸς χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1850. Τῷ 1882 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς καὶ διευθυντὴς τῆς χειρουργικῆς κλινικῆς ἐν Krakau. Τῷ 1887 ἐκλήθη ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα ἐν Καινιξβέργῃ καὶ τῷ 1890 ἐν Μπρεσλάου. Ὑπέρμαχος τῆς ἀντισηπτικῆς μεθόδου, εἰργάσθη τὰ μέγιστα διὰ τὴν τελειοποίησιν ταύτης καὶ ἔγραψε: «Ἀντισηπτικὴ θεραπεία καὶ τεχνικὴ ταύτης», «Τὸ ζήτημα τῶν ἀντισηπτικῶν ψεκασμῶν» (1880), «Ἐφαρμογὴ τῆς ἀντισηψίας εἰς τὰς λαπαροτομίας», «Χρῆσις τοῦ ἰωδοφορμίου ἐν τῇ χειρουργικῇ» (1882), «Ἀποστείρωσις τῶν τραυματικῶν ἐπιφανειῶν» (1897). Διὰ τοῦ ἔργου αὐτοῦ «Γαστροσκόπησις καὶ οἰσοφαγοσκόπησις» (1881), ἐγένετο ὁ ἱδρυτὴς τῶν σήμερον ἐφαρμοζομένων μεθόδων τούτων. Ἠσχολήθη ὡσαύτως μὲ τὴν θεραπείαν τῆς βρογχοκήλης, μὲ τὴν νόσον τοῦ Basedow, μὲ τὴν ὀρθοπεδικὴν καὶ τὴν χειρουργικὴν τῶν ὀστῶν καὶ ἀρθρώσεων, καὶ τέλος μὲ τὴν χειρουργικὴν τῆς κοιλίας καὶ ἰδίως τοῦ στομάχου. Πλεῖσται μέθοδοι ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ εἶναι γνωσταὶ ἐν τῇ χειρουργικῇ, ἀφορῶσαι τὴν διασωλήνωσιν καὶ παροχέτευσιν τῆς περιτοναϊκῆς κοιλότητος, τὴν ραφὴν νεύρων, τὴν μερικὴν ἢ ὁλικὴν ἐκτομὴν τοῦ στερνοκλειδομαστοειδοῦς ἐπὶ ραιβοκράνου κτλ. Ο. Ρ.

**—Μικοῦλιτς,** ***νόσος τοῦ—.*** Ἡ νόσος αὕτη περιεγράφη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ καθηγητοῦ τῆς χειρουργικῆς *Ἰωάν. Μικοῦλιτς.* Ἀποτελεῖ αὐτοτελῆ πάθησιν, χαρακτηριζομένην ὑπὸ συμμετρικῆς ἀνωδύνου ἐξοιδήσεως ὅλων τῶν δακρυογόνων καὶ σιελογόνων ἀδένων. Εἶναι φύσεως μολυσματικῆς, εἰσβάλλει διὰ τῶν ἀγωγῶν τῶν ἀδένων, προσβάλλει τούτους καὶ τὸ λεμφικὸν σύστημα, ὡς καὶ τὸν περιβάλλοντα συνεκτικὸν ἱστόν, καὶ τοιουτοτρόπως προκαλεῖ δυσκολίαν εἰς τὴν ὁμιλίαν καὶ τὴν μάσησιν καὶ παραμόρφωσιν τοῦ προσώπου, ἐνίοτε δὲ μολύνει ὁλόκληρον τὸν ὀργανισμόν, προκαλεῖ περιτονίτιδα καὶ ἐν τέλει τὸν θάνατον. Θεραπευτικῶς συνιστᾶται ἀρσενικόν. Κ. Κ. Κ.

**Μικοῦλιτς,** ***Λυδία -Ἰβάνοβνα.*** Ρωσὶς συγγραφεὺς (1859—1918). Τῷ 1883 ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον διήγημά της «Ἡ νύφη Μίμοτσκα» καὶ μετ' αὐτό: «Ἡ Μίμοτσκα στὰ νερὰ» καὶ «Ἡ φαρμακωμένη Μίμοτσκα», τὰ ὁποῖα ἐστερέωσαν τὴν φήμην της. Καὶ τὰ τρία διηγήματα εἰκονίζουν τὴν αὐτὴν ἡρωΐδα σύγχρονον δέσποιναν τοῦ κόσμου, κοῦφον καὶ στερουμένην χαρακτῆρος. Τὸ ὕφος τῆς Μικοῦλιτς εἶναι γοητευτικὸν καὶ πλῆρες ἐλαφροῦ σκώμματος. Βραδύτερον ἐδημοσίευσε καὶ ἄλλα πολλὰ διηγήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ ἄριστα εἶναι: «Αἱ πρωϊναὶ ἀκτῖνες», «Ἡ τσαραμουχᾶ», «Κοντὰ στὸ ποτάμι». Θ. Β.

**Μικρὰ—,** ἢ ***Μικρὴ—*** *[Γεωγρ.].* Πρῶτον συνθετικὸν πλείστων τοπωνυμίων ἐν Ἑλλάδι, τιθέμενον ἢ ἀπολύτως *(Μικρὰ Μηγὴ)* ἢ πρὸς ἀντιδιαστολὴν πρὸς ἕτερον *Μεγάλη — (Μικρὰ Βόλβη — Μεγάλη Βόλβη).* Ἐκ τῶν τοπωνυμίων τούτων τὰ μὲν πρῶτα ζητητέα ἐνταῦθα. τὰ δὲ ἕτερα εἰς τὴν ἀλφαβητικὴν σειρὰν τοῦ δευτέρου αὐτῶν συνθετικοῦ.

**Μικρὰ Ἀσία** (λατ. καὶ ἀγγλ. Asia Minor, γαλλ. Asie Mineure, γερμ. Kleinasien). Γενικὸν γεωγραφικὸν ὄνομα, διδόμενον εἰς τὴν δυτικὴν τῆς ἀσιατικῆς ἠπείρου χερσόνησον, τῆς ὁποίας τὸ πρόσθεν τμῆμα καλεῖται καὶ *Ἀνατολὴ* ἢ *Ἀνατολία* καὶ ὑπὸ τῶν Τούρκων *Ἀναντὸλ* ἢ *Ἀναντολοῦ,* ὑπὸ δὲ τῶν Εὐρωπαίων Levant καὶ ἰταλιστὶ Levante. Τὸ ὄνομα *Μικρὰ* ἢ *Ἐλάσσων Ἀσία* εἶναι ἄγνωστον εἰς τοὺς ἀρχαίους Ἕλληνας. Οὗτοι ὠνόμασαν ἀρχικῶς τὴν χώραν *Ἀσία,* ὡς ἄλλωστε καὶ τὴν ὅλην εἰς αὐτοὺς γνωστὴν ἀσιατικὴν ἤπειρον, διαιροῦντες ὁλόκληρον τὸν κόσμον εἰς δύο μέρη, τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Ἀσίαν (περιλαμβάνουσαν ἀρχικῶς καὶ τὴν Λιβύην ἢ Ἀφρικήν). Κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Ἡροδότου οἱ Ἕλληνες διῄρουν τὴν ὅλην Ἀσίαν εἰς δύο σαφῶς διακεκριμένα μέρη. Καὶ τὸ μὲν κείμενον μεταξὺ τοῦ Αἰγαίου καὶ τοῦ ποταμοῦ Ἅλυος (Κιζὶλ—Ἰρμὰκ) ἐκάλουν *Κάτω Ἀσίαν,* ὅλας δὲ τὰς πέραν τοῦ ποταμοῦ τούτου χώρας *Ἄνω Ἀσίαν.* Οἱ Ρωμαῖοι, γενόμενοι κύριοι τῆς Κάτω Ἀσίας, ὠνόμασαν *Ἀσίαν* τὰς ἐντεῦθεν τοῦ Ταύρου χώρας, μὴ περιλαμβάνοντες ὅμως εἰς τὴν ὀνομασίαν ταύτην τὰ μεταξὺ τοῦ Ταύρου καὶ τῆς θαλάσσης τῆς Κύπρου τμήματα, τὰ ὁποῖα ἀφῆκαν εἰς τοὺς βασιλεῖς τῆς Συρίας. Ἡ ὀνομασία *Μικρὰ Ἀσία* (καὶ σπανιώτερον *Ἐλάσσων Ἀσία*) ἐμφανίζεται κατὰ πρῶτον εἰς τὸν Παῦλον Ὀρόσιον (Δ' αἰὼν μ. Χ.). Ἡ Μικρὰ Ἀσία ἀπ' ἀνατολῶν περιορίζεται ὑπὸ τῆς συνεχοῦς χαρακτηριστικῆς ὀροσειρᾶς, ἥτις ἀρχομένη ἀπὸ τοῦ Εὐξείνου Πόντου, παρὰ τὸ Βατούμ, καὶ διευθυνομένη πρὸς τὰ νοτιοδυτικά, διὰ τοῦ Ἂκ-δὰγ (3230 μ.) - Γκιορούν δὰγ (3340 μ.) - Νουρσὰκ δὰγ (3050 μ.) - Μουγκοὺρ δὰγ ἢ Ἀμανοῦ ὄρους (1840 μ.) ἀπολήγει εἰς τὸ ἀκρωτήριον Ρὰς ἐλ Χαντζὶρ ἢ Ρωσικὸν ἀκρωτήριον, ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Ἰσσοῦ, καὶ διαχωρίζει τὰ ὕδατα τὰ πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον ρέοντα (πρὸς Α.) διὰ τοῦ Εὐφράτου, ἀπὸ τῶν ὑδάτων ἃ ὑποδέχονται ὁ Εὔξεινος Πόντος διὰ τοῦ Κιζὶλ Ἰρμὰκ (Ἅλυος) καὶ ἡ Μεσόγειος διὰ τοῦ Τσιχὰν τσάϊ (Πυράμου) καὶ ἄλλων ποταμῶν (πρὸς Δ.). Τινὲς θεωροῦσιν ὡς βόρειον ἄκρον τῆς εἰρημένης ὀροσειρᾶς πρὸς τὸν Εὔξεινον τὸ ἀκρωτήριον Κεμὲρ μπουροὺν παρὰ τὰς Ἀθήνας, ἀνατολικῶς τῆς Τραπεζοῦντος, ἄλλοι δὲ τὸ Γιορὸς μπουροὺν (Ἱερὸν ἀκρωτήριον) δυτικῶς τῆς Τραπεζοῦντος. Ἡ ἱστορία τῆς χώρας ταύτης ἀπὸ τῶν μυθικῶν ἔτι χρόνων τόσον συνδέεται μετὰ τῆς τῶν εὐρωπαϊκῶν ἐθνῶν, ὥστε ἡ Μ. Ἀσία δύναται νὰ θεωρηθῇ μᾶλλον εὐρωπαϊκὴ χώρα· ἄλλως τε καὶ γεωλογικῶς φαίνεται ὅτι ἡ χερσόνησος αὕτη εὑρίσκετο ἐν συνεχείᾳ μετὰ τῆς Εὐρώπης, ὡς μαρτυροῦσι τὸ πολύνησον τοῦ Αἰγαίου, τὰ στενὰ τῆς Προποντίδος καὶ ἡ διεύθυνσις τῶν ὀρέων αὐτῆς. Ν. Μ.—Ν. Κ. Σ.

— [ΓΕΩΛΟΓ.] Εἰς τὴν κατασκευὴν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας λαμβάνουν μέρος τὰ ἀκόλουθα συστήματα στρωμάτων καὶ γεωλογικαὶ διαπλάσεις:

*Κρυσταλλοσχιστώδη καὶ μεταμορφωμένα πετρώματα.* Τὰ πετρώματα ταῦτα τῶν θεμελιωδῶν ὀροσειρῶν παρουσιάζονται εἰς εὐρείας ἐκτάσεις ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. Τὰ ὁλοκρυσταλλικὰ πετρώματα, γνεύσιοι, μαρμαρυγιακοὶ σχιστόλιθοι, ἀμφιβολῖται, γλαυκοφανιτικοί, χαλαζιτικοί, χλωριτικοί, ταλκικοὶ καὶ τουρμαλινικοὶ σχιστόλιθοι, ἐκλογῖται, ἀσβεστομαρμαρυγιακοὶ σχιστόλιθοι, μάρμαρα διαφόρων χρωμάτων καὶ μεγεθῶν κοκκίων (μεταξὺ τῶν ὁποίων καί τινα εὐγενῆ εἴδη, ἐκμεταλλευθέντα ὑπὸ τῶν ἀρχαίων), ὡς καὶ δολομῖται σχηματίζουν πρὸ πάντων τὴν μεγάλην ***λυδιοκαρικὴν*** μᾶζαν (βλ. λ.), τὸν πυρηνώδη τοῦτον ὄγκον τῆς δυτικῆς Μικρᾶς Ἀσίας.

Εἰς ἄλλα μέρη τῆς Μικρᾶς Ἀσίας παρουσιάζονται τὰ κρυσταλλοπαγῆ καὶ τὰ ἡμικρυσταλλικὰ πετρώματα εἰς ἐκτάσεις κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλας, ἐλλείπουν δὲ τελείως εἰς τὴν «αἰγαϊκὴν-ταυρικὴν ἐνδιάμεσον περιοχὴν» (Λυκίαν, Πισιδίαν).

Διασχίζονται ὑπὸ πολλῶν ἐκρηξιγενῶν πετρωμάτων, ἰδίᾳ δὲ συχνὰ ὑπὸ μεγάλων μαζῶν γρανιτῶν (μετὰ φλεβῶν πηγματίτου), ὡς καὶ ὑπὸ πορφυριτῶν, διαβάσου, ὀφειτῶν κλπ.

Ἡ γεωλογικὴ ἡλικία τῶν κρυσταλλοσχιστωδῶν καὶ ἡμικρυσταλλικῶν πετρωμάτων δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστή. Φαίνονται ὅτι εἶναι ἀρχαιότερα τῶν ἐν τῇ περιοχῇ των ἐμφανιζομένων παλαιοζωϊκῶν στρωμάτων.

*Στρώματα τοῦ παλαιοζωϊκοῦ.* Τοιαῦτα παρουσιάζονται εἰς ὅλα τὰ τμήματα τῆς Μ. Ἀσίας (ἐκτὸς τῆς λυδιοκαρικῆς μάζης) εἰς ἐπιφανειακὰς ἐμφανίσεις κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτεταμένας. Εἶναι ἀργιλλικοὶ σχιστόλιθοι (ἐνίοτε καὶ ἄργιλλοι καὶ μάργαι), γραουβάκαι, ψαμμῖται, χαλαζῖται, κροκαλοπαγῆ καὶ κροκαλοπαγοειδεῖς σχιστόλιθοι, πράσινοι σχιστόλιθοι, ἐρυθρὰ πυριτικὰ πετρώματα, ὡς καὶ ἀσβεστόλιθοι καὶ δολομῖται. Τὰ παλαιοζωϊκὰ στρώματα τῆς Μ. Ἀσίας ὁμοιάζουν γενικῶς πρὸς τὰ τῆς κεντρικῆς Εὐρώπης, μόνον ὅτι γενικῶς εἰς τὴν Μ. Ἀσίαν οἱ κατὰ μάζας ἀσβεστόλιθοι ἔχουσι μεγαλυτέραν ἐξάπλωσιν καὶ σημασίαν, καθόσον μετὰ τῶν παχέων μεσοζωϊκῶν ἀσβεστολίθων ἀποτελοῦσι τὰ μεγάλα, ἀπόκρημνα καὶ τραχέα ἀσβεστολιθικὰ ὄρη, τὰ ὁποῖα εἶναι χαρακτηριστικὰ τοπία τῆς Μ. Ἀσίας, ὡς καὶ τῶν πλείστων ἄλλων χωρῶν τῆς Μεσογείου. Τὰ παλαιοζωϊκὰ στρώματα διασχίζονται ὑπὸ ποικίλων ἐκρηξιγενῶν πετρωμάτων (γρανιτῶν, πορφυριτῶν, πρασινολίθων, τόφφων καὶ φλοιολίθων, ὀφειτῶν κ. ἄ.) Εἰς σχετικῶς ὀλίγας θέσεις κατωρθώθη νὰ καθορισθῇ δι' ἀνευρέσεως ἀπολιθωμάτων ἡ ἀκριβεστέρα γεωλογικὴ ἡλικία καὶ διάπλασις, εἰς τὴν ὁποίαν τὰ καθ' ἕκαστα παλαιοζωϊκὰ στρώματα ἀνήκουν. Μέχρι τοῦδε καθωρίσθησαν: α) Στρώματα τῆς σιλουρίου διαπλάσεως: εἰς τὸν Ἀντίταυρον, Ἀμανόν, Ταῦρον καὶ τὴν νότιον ἀκτὴν τῆς χερσονήσου τῆς Βιθυνίας. β) Στρώματα τῆς δεβονίου διαπλάσεως. Εἰς τὰς δύο ὄχθας τοῦ Βοσπόρου, εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς χερσονήσου Βιθυνίας, ἀνατολικῶς τοῦ Τσὰμ-δὰγ εἰς τὸ σύστημα τοῦ Ταύρου (χαράδρα τοῦ Τσακὶτ) καὶ Ἀντιταύρου (εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Χατζίν), εἰς τὴν δυτικὴν Κιλικίαν (ὄρος Ἴμπαρον). γ) Στρώματα τῆς λιθανθρακοφόρου καὶ τῆς περμίου: Θαλάσσια στρώματα ἀπαντῶσιν εἰς τὸ σύστημα τοῦ Ταύρου, εἰς τὸν Ἀντίταυρον, εἰς τὴν Ποντοηράκλειαν, εἰς τὴν Δυτικὴν Μυσίαν (Μπάλια-Μαντέν), τὴν Κύπρον, ὡς καὶ πολλοὶ ἄλλοι σκοτεινόχρωμοι ἀσβεστόλιθοι (ἐν συνδυασμῷ μετ' ἀργιλλικῶν σχιστολίθων, διαβασῶν, γραουβάκων κλπ.), οἱ ὁποῖοι ἀπαντῶνται εἰς τὰ πλεῖστα ἀσβεστολιθικὰ ὄρη τῆς Δυτικῆς Μικρᾶς Ἀσίας ὑπὸ τοὺς μεσοζωϊκοὺς ἀσβεστολίθους. Στρώματα τῆς λιθανθρακοφόρου διαπλάσεως, λιμναῖα ἢ χερσαῖα, συναντῶνται εἰς τὴν Ποντοηράκλειαν καὶ Ἀμάσραν, ἐγκλείοντα τὰ γνωστὰ κοιτάσματα λιθανθράκων, τῶν ὁποίων ἀπὸ ἐτῶν ἤδη γίνεται ἐκμετάλλευσις. Φουσουλινοφόροι ἀσβεστόλιθοι τῆς λιθανθρακοφόρου-περμίου διαπλάσεως συναντῶνται πολλαχοῦ, ὡς π. χ. εἰς Μπάλια-Μαντὲν καὶ εἰς ἄλλα μέρη τῆς δυτικῆς καὶ νοτιοδυτικῆς Μυσίας, εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς Ἐρυθραίας, εἰς τὴν νότιον Καρίαν καὶ Δυτικὴν Λυκίαν. Εἰς τὸ βόρειον τμῆμα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας (Ποντοηράκλειαν, χερσόνησον τῆς Βιθυνίας) ὑπὲρ τὰ λιμναῖα-χερσαῖα στρώματα ἐξαπλοῦνται ἐρυθροὶ ψαμμῖται, σχιστόλιθοι καὶ κροκαλοπαγῆ, ἀνήκοντα εἰς τὴν ὑποδιάπλασιν τοῦ ἐρυθροῦ κειμένου τῆς περμίου διαπλάσεως.

*Στρώματα τοῦ μεσοζωϊκοῦ.* Ταῦτα παρουσιάζονται παχέως ἐξηπλωμένα εἰς μεγάλα τμήματα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας καὶ μάλιστα κυρίως ὡς πετρώματα ἀλπινικῆς διαμορφώσεως. Ἐπικρατοῦν κυρίως ἀνοικτόχρωμοι ἀσβεστόλιθοι κατὰ παχείας ὀγκώδεις μάζας, μεταξὺ τῶν ὁποίων παρεντίθενται ταινίαι ἀργιλλικῶν σχιστολίθων καὶ γραουβάκων. Εἰς τὸ νοτιοδυτικὸν τμῆμα τῆς Μ. Ἀσίας παρουσιάζονται καὶ λεπτοστρωματώδεις, ἀνοικτόχρωμοι, στιφροὶ ἀσβεστόλιθοι (μετὰ κονδύλων κερατολίθου), συχνὰ ἐναλλασσόμενοι μὲ σχιστολίθους, τοφφίτας καὶ ἐρυθροὺς κερατολίθους (ὁμὰς σχιστολίθων-κερατολίθων). Ἐκτὸς τούτων εἰς τὰ βόρεια καὶ ἀνατολικὰ τῆς Μ. Ἀσίας συναντῶνται καὶ ἄλλα στρώματα μεσοζωϊκά, προσομοιάζοντα πρὸς τὰ τῆς Κεντρικῆς Εὐρώπης.

*Στρώματα τοῦ καινοζωϊκοῦ.* 1) **Τῆς τριτογενοῦς** διαπλάσεως. Στρώματα τῆς **ἠωκαίνου ὑποδιαπλά-**

Digitized by Google

σεως παρουσιάζονται πολλαχοῦ ὑπὸ μορφὴν ἀφ' ἑνὸς μὲν ἀνοικτοχρώμων ἢ σκοτεινοχρώμων, ἐνίοτε λατυποπαγοειδῶν νουμμουλιτοφόρων ἀσβεστολίθων, ἀφ' ἑτέρου δὲ φλύσχου (φαιῶν καὶ πρασινωπῶν ψαμμιτῶν, μαργῶν καὶ κροκαλοπαγῶν). Μεγάλην ἐξάπλωσιν παρουσιάζουν τὰ ἠώκαινα στρώματα εἰς τὰ ὄρη τοῦ Πόντου καὶ εἰς τὸ τόξον τοῦ Ἅλυος. Εἰς τὰς περιοχὰς ταύτας ὁ φλύσχης ἰδίᾳ καταλαμβάνει σημαντικὰς ζώνας. Ἐκτάκτως σπάνια καὶ εἰς μικρὰς ἐκτάσεις παρουσιάζονται ἠώκαινα στρώματα εἰς τὴν πτυχώδη ὀροσειρὰν τοῦ ἀνατολικοῦ Αἰγαίου, κατά τι περισσότερον ἐξηπλωμένα εἰς τὴν πτυχώδη ὀροσειρὰν τῆς νοτίου Καρίας. Μεγάλην ἐπίσης ἐξάπλωσιν παρουσιάζουν εἰς τὴν Λυκίαν καὶ εἰς τὴν περιοχὴν τῶν λιμνῶν τῆς Πισιδίας, ἐνῷ εἰς τὸ σύστημα τοῦ Ταύρου ἡ ἐξάπλωσίς των εἶναι περιωρισμένη.

Στρώματα τῆς ὀλιγοκαίνου ὑποδιαπλάσεως, κυρίως χερσαῖα (φαιαὶ καὶ πράσινοι ἀμμώδεις μάργαι μετὰ λειψάνων ἀπολιθωμένων φυτῶν) παρουσιάζονται εἰς τὸ σύστημα τοῦ Ταύρου. Ὀλιγόκαινα ἐπίσης στρώματα παρουσιάζονται εἰς τὸν Ἀντίταυρον, τὴν Κύπρον (φλύσχης καὶ γυψοφόροι μάργαι), Ῥόδον καὶ ἀλλαχοῦ. Ἐρυθροί τινες ψαμμῖται, κροκαλοπαγῆ τινα, ὡς καί τινες πηλοὶ ἄνευ ἀπολιθωμάτων, παρουσιαζόμενοι εἰς τὸ τόξον τοῦ Ἅλυος, εἰς τὸ ἀνατολικὸν ἢ τὸ βόρειον κράσπεδον τῆς λυκαονικῆς τραπεζοειδοῦς χώρας καὶ εἰς τὴν Παφλαγονίαν μεταξὺ τῶν νουμμουλιτοφόρων στρωμάτων καὶ τῶν γυψοφόρων στρωμάτων τῆς μειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως, κατατάσσονται ὑπ' ἄλλων μὲν γεωλόγων εἰς τὴν ἠώκαινον ὑποδιάπλασιν, ὑπ' ἄλλων δὲ εἰς τὴν ὀλιγόκαινον.

Στρώματα τῆς νεογενοῦς (μειοκαίνου καὶ πλειοκαίνου) ὑποδιαπλάσεως καταλαμβάνουν ἐν Μ. Ἀσίᾳ ἐκτάκτως μεγάλας ἐκτάσεις, σχηματίζοντα ὁτὲ μὲν συνεχομένας ἐκτεταμένας τραπεζοειδεῖς χώρας, ὁτὲ δὲ μικρότερα τεμάχη, εἰς λίαν διάφορα ὕψη κείμενα. Τὸ πάχος τῶν νεογενῶν στρωμάτων εἶναι πολὺ σημαντικόν, ἐνίοτε φθάνον μέχρι 500—800 μ. Πανταχοῦ τὰ στρώματα ταῦτα χωρίζονται ἀπὸ τὰ ὑποκείμενά των ἀρχαιότερα δι' ἀσυμφώνου ἐπιστρώσεως, δίδουν δὲ διὰ τῆς στρώσεώς των καὶ ἰδίᾳ διὰ τοῦ σχεδὸν πάντοτε ἀνοικτοῦ χρωματισμοῦ των (συχνὰ χιονόλευκα, συνήθως κιτρινωπὰ ἢ ἀνοικτόφαια, ἐνίοτε καστανέρυθρα) τὸν τοπικὸν χαρακτῆρα πολλῶν τμημάτων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Διακρίνονται εἰς δύο ὁμάδας: ἄμμους, ψαμμίτας καὶ κροκαλοπαγῆ ἀφ' ἑνός, ἀσβεστολίθους, ἀσβεστολιθικὰς μάργας καὶ συνήθεις μάργας ἐξ ἄλλου. Συνοδεύονται εἰς μεγάλα τμήματα τῆς χώρας ὑπὸ ἡφαιστειογενῶν πετρωμάτων (λαβῶν καὶ τόφφων). Τὰ νεογενῆ στρώματα εἶναι: α) Θαλάσσια μειόκαινα στρώματα. β) Μειόκαινα στρώματα, φέροντα κοιτάσματα γύψου καὶ ὀρυκτοῦ ἅλατος. γ) Στρώματα τῆς σαρματίου βαθμῖδος τῆς Τρῳάδος. δ) Στρώματα τῆς ποντίου βαθμῖδος. ε) Στρώματα θαλάσσια πλειόκαινα. στ) Στρώματα, γενικῶς νεογενῆ, γλυκέων ὑδάτων, φέροντα κοιτάσματα λιγνιτῶν.

Ἐκ τῆς μελέτης τῶν νεογενῶν στρωμάτων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας συνάγεται ὅτι κατὰ τὴν νεογενῆ ὑποπερίοδον τοῦ καινοζωϊκοῦ αἰῶνος εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν ὑπῆρχε μία μεγάλη λεκάνη γλυκέων ὑδάτων, ἡ ὁποία διεσχίζετο ὑπὸ πολυαρίθμων ὀρεινῶν χερσονήσων καὶ νήσων. Ἡ ἐπιφάνεια τῆς μεγάλης ταύτης λίμνης κατὰ καιροὺς δὲν εὑρίσκετο ὑπεράνω τῆς στάθμης τῆς θαλάσσης, καὶ συχνὰ ἡ θάλασσα εἰσώρμα ἐντὸς αὐτῆς. Τεμάχια ξηρᾶς ἐχώριζον τὴν νεογενῆ λίμνην ἀπὸ τῆς θαλάσσης. Ὁ Ταῦρος καὶ τὰ ὄρη τοῦ ἀνατολικοῦ Πόντου ἀπετέλουν τμήματα τῶν τεμαχίων τούτων ξηρᾶς.

2) Στρώματα τῆς τεταρτογενοῦς διαπλάσεως. Ἐκ τούτων ἰδιαίτερον ἐνδιαφέρον παρουσιάζουν αἱ παχεῖαι, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον καστανερύθρως χρωματισμέναι, συχνὰ μὲ χῶμα ἀναμεμειγμέναι, μᾶζαι προσχωμάτων καὶ κορημάτων, αἱ ὁποῖαι εἰς πολλοὺς τόπους εἶναι ἐπεστρωμέναι ἢ ἐπὶ τῶν ἀνοικτοχρώμων νεογενῶν, ἢ ἐπὶ ἀρχαιοτέρων πετρωμάτων. Τοιαῦται μᾶζαι τεταρτογενῶν ἀποθεμάτων παρουσιάζονται εἰς τὴν Φρυγίαν, τὴν Μυσίαν, εἰς τὰς περιοχὰς τοῦ Ἄνω Ἕρμου καὶ Μαιάνδρου, εἰς τὴν ἐνδοχώραν τῆς Καρίας καὶ τῆς δυτικῆς Λυκίας, εἰς τὰς περιοχὰς δηλαδὴ μεταβάσεως ἀπὸ τὴν στεππώδη ὑψηλὴν χώραν εἰς τὴν Μεσογειακὴν περιοχήν. Λιθῶνες παγετώνων προϊστορικῶν ἀνεγνωρίσθησαν μέχρι τοῦδε εἰς τὰ ὑψηλὰ ὄρη τοῦ Ὀλύμπου τοῦ Μυσίας. Ἀποθέσεις λαὶς ἐσημειώθησαν εἰς τὸν Ἀνατολικὸν Ταῦρον, εἰς τὸ Ἀδᾶ-παζὰρ τῆς Βιθυνίας καὶ εἰς τὴν Λυκίαν. Ποτάμια τεταρτογενῆ ἀποθέματα κορημάτων συναντῶνται συχνὰ εἰς τὰς σημερινὰς κοιλάδας, ἢ καὶ εἰς τὰς ῥάχεις τῶν ὀρέων, ὅπου αἱ κοιλάδες ἔχουν ὑποστῆ ἐξάρσιν. Ἰδιαιτέρως μεγαλοπρεπῆ παρουσιάζονται εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν τὰ ἀποθέματα ἐξ ἀσβεστολιθικοῦ τόφφου πολλῶν θερμῶν πηγῶν. Ἀποτελοῦν ἐνίοτε ἐκτεταμένας βαθμῖδας πάχους 100 καὶ πλέον μέτρων (Ἀττάλεια, Ἱεράπολις, Τουρκμένοβα, Προῦσα κ. ἀλ.).

*Νεοηφαιστειογενῆ πετρώματα.* Ταῦτα παρουσιάζονται πολλαχοῦ, ὑπὸ μορφὴν καλυμμάτων ἢ κώνων ἢ θόλων. Εἶναι κυρίως ἀνδεσῖται ἢ δακῖται μετὰ τῶν τόφφων των, ἐνιαχοῦ ἀποπυριτιωμένων. Ἡ μεγίστη ἐξάπλωσις καὶ τὰ πλέον ποικίλα φαινόμενα τῶν ἡφαιστειογενῶν πετρωμάτων παρουσιάζονται εἰς τὴν δυτικὴν καὶ νοτιοδυτικὴν Μυσίαν μὲ τὸ Γιοὺντ-δὰγ καὶ τὸ δυτικὸν Σίπυλον. Σπανιώτεροι εἶναι οἱ ὀψιανοὶ (Φώκαια), οἱ βασάλται καὶ οἱ δολερῖται. Κατὰ τὴν τεταρτογενῆ ἐποχὴν ἡ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἡφαιστεία ἐνέργεια ἦτο μικρά. Ὁ σχηματισμὸς τοῦ ἐξ ἀνδεσίτου μεγάλου ἡφαιστείου Ἀργαῖος ἀπετελειώθη κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην, ἂν καὶ ἐνέργεια αὐτοῦ ἐσημειώθη καὶ κατὰ τὴν ἱστορικὴν ἐποχήν. Ἐπίσης τὸ γειτονικὸν Χασσὰν-δάγ, τὰ ἡφαίστεια τῆς νοτίου Λυκαονίας (Καρατζᾶ-δὰγ καὶ Καρὰ-δάγ), ἡ περιοχὴ ἡφαιστείων τοῦ Σίλες, παρὰ τὸ Ἰκόνιον, εἶναι τεταρτογενοῦς ἡλικίας, ὡς ἐπίσης καὶ τὰ μικρὰ ἡφαίστεια τῶν Κατακεκαυμένων παρὰ τὴν Κούλαν (ἐκ κεροστιλβικοῦ βασάλτου). Ἀλλ' ἐκτὸς τοῦ Ἀργαίου εἰς τὴν ἠπειρωτικὴν Μικρὰν Ἀσίαν οὐδεμία περίπτωσις εἶναι γνωστὴ ἐκδηλώσεως ἡφαιστείου ἐνεργείας κατὰ τὴν ἱστορικὴν ἐποχήν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Philippson*, Kleinasien (Handbuch der region. Geologie τόμ. V, τμ. 2. Heidelberg 1918).

Γ. Κ. ΓΕΩΡΓΑΛΑΣ

— [ΦΥΣ. ΓΕΩΓΡ.] ***Ὀρεογραφία.*** Τὸ ὀρεογραφικὸν δίκτυον τῆ Μικρᾶς Ἀσίας προέρχεται ἀπὸ τοῦ ὄρους *Ἀραράτ* (5160) καὶ τοῦ ὑψηλοῦ εὐρέος ὀροπεδίου τῆς Ἀρμενίας (περὶ τὴν Ἐρζερούμ), ἀφ' ὧν ἐκπέμπονται ἀκτινοειδῶς ὀροσειραί, αἵτινες: πρὸς Β. μὲν σχηματίζουσι τὸν Καύκασον, πρὸς Α. τὰ ὄρη τῆς Περσίας, τὰ ἐκτεινόμενα Ν. τῆς Κασπίας, πρὸς τὰ ΝΑ. τὰ ὄρη τῆς Περσίας, τὰ ἐκτεινόμενα πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον, καὶ πρὸς Δ. τέλος τὰ ὄρη τῆς Μ. Ἀσίας, ἅτινα ἀποτελοῦσι τὸν σύνδεσμον τοῦ ὀρεογραφικοῦ συστήματος τῆς Ἀσίας πρὸς τὸ τῆς Εὐρώπης. Ἐπὶ τῆς τελευταίας ταύτας ὀροσειρᾶς συναντῶμεν τὸ Ἂκ δὰγ (3230), ΒΔ. τοῦ Ἐρζικιάν, ἀποτελοῦν τὸν συνδετικὸν κόμβον τῶν ὀρέων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Ἐξ αὐτοῦ ἐκφύονται: α) Πρὸς τὰ ΒΑ. τὰ ὄρη τῆς Ἀρμενίας: *Ντουμλοῦ δὰγ* (2830), *Σιβὶν δὰγ* (3030), *Ἀλακαμπλὰρ δὰγ* κτλ., συνδεόμενα βορειότερον μετὰ τοῦ Καυκάσου καὶ διαχωρίζοντα τὸν ἄνω Εὐφράτην ἀπὸ τοῦ Τσορὸχ-σοῦ (Ἀκάμψεως). β) Πρὸς Β. ἡ ὀροσειρὰ τοῦ Πόντου: *Σαγανλοῦ* (2700), *Βαρτσεμπὲκ* (3700), *Κατσγὰρ* (3200) μέχρι τοῦ Εὐξείνου, διαχωρίζουσα τὴν κοιλάδα τοῦ Τσορὸχ (πρὸς Ν.) ἀπὸ τῆς περιοχῆς τοῦ Πόντου (πρὸς Β.). γ) Πρὸς τὰ ΒΔ. ἡ ὀροσειρὰ τοῦ Πόντου: *Γκουμοὺς* (2850), *Γκουμπὲκ* (3150) μέχρι τοῦ *Τζίβα μπουρούν*, ἀνατολικῶς τῆς Σαμψοῦντος, διαχωρίζουσα τὴν κοιλάδα τοῦ Κελκὶντ Ὑρμὰκ (Λύκου), πρὸς Ν., ἀπὸ τῆς περιοχῆς τοῦ Πόντου (πρὸς Β.). δ) Πρὸς Δ. τὰ ὄρη τῆς Καππαδοκίας: *Γιλδὶζ* (2603), *Ἂκ δὰγ* (2780), ὄρη *Ὑοσγάτης* (1300), *Κεμὲρ* (2200), *Μεμπιὰν* (1250), ἅτινα διαχωρίζουσι τὰ εἰς τὸν Κελκὶντ Ἰρμὰκ (Λύκον) ῥέοντα ὕδατα, ἀπὸ τῶν ὑδάτων ἅτινα ὑποδέχονται ἡ κοιλὰς τοῦ Κιζὶλ Ἰρμὰκ (Ἅλυος). ε) Πρὸς τὰ ΝΔ. τέλος ἀποσπῶνται τὰ ὄρη τῆς Καππαδοκίας: *Ντελὶ* (1800), *Γκιουρλοὺμ* (2743), *Γκιουροὺν* (3340). Ἐκεῖ ἡ ὀροσειρὰ αὕτη τριχάζεται. Καὶ ὁ μὲν πρῶτος κλάδος αὐτῆς λαμβάνει διεύθυνσιν μᾶλλον μεσημβρινὴν καὶ ὑπὸ τὰ ὀνόματα: *Δερβὲν* (2440), *Νουρσὰκ* (3050), *Μουγκοὺρ* ἢ *Ἀμανὸν* (1840), *Πιέρια* ἢ *Ἀρσοὺζ* (1670), *Κιζὶλ* (780) ἐξικνεῖται μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Ῥὰς-ἐλ Χανζὶρ ἢ Ῥωσικοῦ ἀκρωτηρίου (Α. τῆς Ἀντιοχείας), παρεντιθέμενος μεταξὺ τῆς κοιλάδος τοῦ Εὐφράτου (πρὸς Α.) καὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Τζιχὰν τσάϊ ἢ Πυράμου (πρὸς Δ.), διαχωρίζων δὲ μετὰ τῆς λοιπῆς ὀροσειρᾶς πρὸς τὰ ΒΑ. τὴν Ἀρμενίαν, τὸ Κουρδιστάν, τὴν Μεσοποταμίαν καὶ τὴν Συρίαν (πρὸς Α.) ἀπὸ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας (πρὸς Δ.). Ὁ δεύτερος κλάδος τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης ἐξακολουθεῖ διευθυνόμενος ἐν ἀρχῇ μὲν πρὸς τὰ ΝΔ., εἶτα δὲ πρὸς Δ., καὶ φέρεται ὑπὸ τὰ ὀνόματα: *Ἀντίταυρος* (2550), *Κιλικιανὸς Ταῦρος* (3515), *Λυκιανὸς Ταῦρος* (3200), παραλλήλως διήκων τῇ ἀκτῇ τῆς Μεσογείου καὶ διαχωρίζων τὴν Κιλικίαν, τὴν Παμφυλίαν καὶ τὴν Λυκίαν, πρὸς Ν., ἀπὸ τῆς Λυκαονίας, τῆς Ἰσαυρίας καὶ τῆς Πισιδίας, πρὸς Β. Καὶ τέλος ὁ τρίτος κλάδος διευθύνεται ἀπὸ τοῦ Γκιορoὺν δάγ, ἐν ἀρχῇ μὲν πρὸς δυσμάς, σχηματίζων τὸ ὄρος τῆς Καππαδοκίας *Ἀρτζιὰς* ἢ *Ἀργαῖον* (4000), εἶτα δὲ πρὸς βορρᾶν, συνιστῶν τὰ ὄρη τῆς Γαλατίας: *Ρασᾶ-Ἀετὸς* (παρὰ τὴν Ἄγκυραν), *Ἐλμανλὶ* (2600), *Ἰσὶκ* (2100). Ἐκ τοῦ τελευταίου τούτου ὄρους διαπλοῦνται πρὸς Α. μὲν τὰ ὄρη τῆς Παφλαγονίας: *Ὄλγασσυς* ἢ *Ὀλκὰς* (2900), *Ἀλφὰς δάγ*, *Δουλμὲν δάγ*, πρὸς Δ. δὲ τὰ ὄρη τῆς Βιθυνίας: *Ὀρμίνιον* ἢ *Ἀλᾶ δὰγ* (2500), *Ὄλυμπος* ἢ *Καρδοὺς* ἢ *Ἀμπὰτ* (1800). Διὰ τοῦ τρίτου τούτου κλάδου τῆς τελευταίας ὀροσειρᾶς διαχωρίζεται ἡ κοιλὰς τοῦ Ἅλυος (πρὸς Α.) ἀπὸ τῶν ὑψηλῶν λεκανοπεδίων τῆς Λυκαονίας καὶ Ἰσαυρίας (κειμένων πρὸς Ν.) καὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Σαγγαρίου (πρὸς Δ.). Καὶ οὕτω μὲν ἔχει τὸ δίκτυον τῆς ὀρεογραφίας ἐν τῇ ἀνατολικῇ καὶ τῇ κεντρικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ.

Ἀλλ' ἐν τῇ δυτικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ παρατηροῦμεν ἀκόμη: I) Ὅτι τὸν κύριον ὀρεογραφικὸν κόμβον συνιστᾷ τὸ ἐν τῇ Φρυγίᾳ *Μουρὰτ δὰγ* ἢ *Δίνδυμον ὄρος* (2500), ἀφ' οὗ ἐκφύονται αἱ ἑξῆς ὀροσειραί: α) Πρὸς ΝΑ. ἡ ὀρεινὴ ἅλυσις: *Ἀκὰρ* (1980), *Καμελὰρ* (2300), *Σουλτὰν δὰγ* μέχρι τῆς κορυφῆς *Μπὸζ μπουροὺν* (2600) τοῦ *Λυκιανοῦ Ταύρου*· β) Πρὸς τὰ ΒΑ. τὸ *Τουρκμὲν δὰγ* (2000) ἐν τῇ Φρυγίᾳ. γ) Πρὸς Β. τὰ ὄρη *Δουμανὶτς* (2500), *Κεσὶζ* ἢ *Ὄλυμπος* (2530), *Γκιὸκ* (1625), *Τὰς* ἢ *Ἀργανθώνιον* (905) τῆς Μυσίας. δ) Πρὸς τὰ ΒΔ. τὸ παρὰ τὸ ὀροπέδιον τοῦ Σιμάβ: *Ἂκ δὰγ* ἢ *Τῆμνος* (2700), ὁπόθεν ἡ κορυφογραμμὴ περαιτέρω διχάζεται. Καὶ τὸν μὲν ἕνα κλάδον συνιστῶσι τὰ *Οὐλοὺς δάγ*, *Ἀδρανός*, τὸν δ' ἕτερον τὸ *Δεμιρτζῆ δάγ*, *Μαδάρας* ἢ *Πίνδασος* (1340) καὶ τὸ *Κὰς* ἢ *Ἴδη δὰγ* (1700). Σημειωτέον δ' ὅτι ἐκ τοῦ Δεμιρτζῆ δὰγ ἀποσπᾶται ὀρεινὸς κλάδος πρὸς Δ. ὑπὸ τὸ ὄνομα *Γιοὺνδ δάγ*, ἐκτεινόμενος νοτίως τοῦ Καΐκου καὶ διαχωρίζων τὴν κοιλάδα τοῦ Καΐκου (πρὸς Β.) ἀπὸ τῆς τοῦ Ἕρμου (πρὸς Ν.). ε) Πρὸς Δ. ἀποσπᾶται ἡ ὀροσειρά, ἡ νοτίως τοῦ Ἕρμου διήκουσα, διὰ τοῦ *Μπὸζ δὰγ* ἢ *Τμώλου* (2050), *Δράκοντος* ἢ *Μαχμούτ*, *Ὀλύμπου Ἰωνίας* ἢ *Νυμφαίου* (600) καὶ τοῦ *Σιπύλου* (1488), ἐκτεινομένη μέχρι τῆς Μαινεμένης ἀφ' ἑνὸς καὶ μέχρι τῆς χερσονήσου τῆς Ἐρυθραίας ἀφ' ἑτέρου, διαχωρίζουσα τὸν Ἕρμον (πρὸς Β.) ἀπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Καΰστρου (πρὸς Ν.) καὶ περιβάλλουσα τὸν λιμένα τῆς Σμύρνης. Καὶ στ') πρὸς τὰ ΝΔ. ἡ νοτίως τοῦ Καΰστρου ὀροσειρά: *Παλιάμπολι* (1325), *Μεσωγὶς* ἢ *Κοντζᾶ δὰγ* (1080), ἐκτεινομένη μέχρι τῆς Μυκάλης ἢ Σαμψοῦντος (1350) ἔναντι τῆς Σάμου καὶ διαχωρίζουσα τὴν κοιλάδα τοῦ Καΰστρου (πρὸς Β.) ἀπὸ τῆς τοῦ Μαιάνδρου (πρὸς Ν.). Καὶ II) ὅτι ἀπὸ τῆς κορυφῆς *Μπερεκὲτ* (3200) τοῦ Λυκιανοῦ Ταύρου ἀποσπᾶται ἐπίσης πρὸς τὰ ΒΔ. ἡ ἅλυσις τῶν ὀρέων τῆς Καρίας: *Χωνᾶς* (2506), *Μπαμπᾶς* (2870), *Σαντιρᾶς* (2987), *Μπεσπαρμὰκ δὰγ* ἢ *Λάτμος*, διαχωρίζουσα τὴν κοιλάδα τοῦ Μαιάνδρου (πρὸς Β.) ἀπὸ τῶν κοιλάδων, ὧν τὰ ὕδατα χύνονται ἀπ' εὐθείας εἰς τὸν Κεραμεικὸν κόλπον καὶ τὸν τῆς Μάκρης (πρὸς Ν.).

Θεωροῦντες γενικώτερον τὴν ὀρεογραφίαν παρατηροῦμεν ὅτι: τὸ ὀρεογραφικὸν σύστημα τῆς Μ. Ἀσίας ἀποτελεῖται ἀπὸ δύο κυρίας ὀρεινὰς ἁλύσεις, μίαν βορείαν καὶ μίαν νοτίαν, ἐκτεινομένας κατὰ διευθύνσεις σχεδὸν παραλλήλους πρὸς τὰς τῶν παραλιῶν τοῦ Εὐξείνου καὶ τῆς Μεσογείου, αἵτινες ἐκφυόμεναι ἀπὸ τοῦ Ἂκ δὰγ (3230), Β. τοῦ Ἐρζιγκιάν, καὶ διιστάμεναι ἀλλήλων, συγκλίνουσι πρὸς δυσμὰς καὶ συνενοῦνται εἰς τὸν Ὄλυμπον τῆς Μυσίας (Κεσὶς δὰγ-Δουμανὶτς δάγ). Ἡ τοιαύτη διάταξις τῶν κυρίων τούτων ὀροσειρῶν παρουσιάζει τὴν Μ. Ἀσίαν χαρακτηριστικῶς διῃρημένην εἰς μίαν περίκλειστον κεντρικὴν λεκάνην ἀφ' ἑνός, καὶ τὰς παραθαλασσίας χώρας ἀφ' ἑτέρου. Ἡ συνήθης μορφὴ τοῦ ὀρεογραφικοῦ συστήματος εἶναι ἐπιμήκης, μὲ γενικὴν διεύθυνσιν ἐξ Α. πρὸς Δ. καὶ μὲ κλιτῦς ὁμαλὰς μὲν συνήθως πρὸς τὸ ἐσωτερικόν, ἀποτόμους δ' ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον πρὸς τὰς ἀκτὰς τῆς Μεσογείου καὶ τοῦ Εὐξείνου. Ἡ διάταξις τῶν ὀρέων εἶναι διάφορος εἰς τὰς εἰρημένας δύο κυρίας ὀροσειρὰς τοῦ ὀρεογραφικοῦ συστήματος τῆς Μ. Ἀσίας. Καὶ εἰς μὲν τὴν βορείαν (Πόντος-Παφλαγονία-Βιθυνία) τὰ ὄρη, ἀκολουθοῦντα παράλληλον διάταξιν, διακόπτονται κατὰ τὴν ἐξ Α. πρὸς Δ. ἀνάπτυξίν των καὶ ἐμφανίζουσιν ἰδιαίτερα ὄρη μὲ κεχωρισμένας κορυφογραμμάς, εἰς δὲ τὴν νοτίαν ὀροσειρὰν (Κιλικία-Παμφυλία-Λυκία) τὰ ὄρη, ἀκολουθοῦντα συνεχῆ σχεδὸν διάταξιν, παρουσιάζονται κατὰ τὴν ἀνάπτυξίν των μὲ κοινήν, συνεχῆ καὶ χαρακτηριστικωτάτην κορυφογραμμήν. Αἱ ὑπάρχουσαι διακοπαὶ δὲν εἶναι συνήθεις αὐχένες, ἀλλ' αὐλῶνες βαθεῖς, σχεδὸν ἀπότομοι, οἵτινες ὅμως διαταράττουσι τὴν συνεχῆ διάταξιν τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης.

Εἰς τὸ ὅλον ὀρεογραφικὸν σύστημα τῆς Μ. Ἀσίας ἐπικρατοῦσι τὰ ὄρη, βουνοσειραὶ δὲ μόνον ἀπαντῶσιν εἰς τὰς διακλαδώσεις τῆς δυτικῆς ἄκρας τῆς νοτίας ὀροσειρᾶς, πρὸς τὸ Αἰγαῖον καὶ τὴν Προποντίδα. Τὸ ὕψος τῶν ὀρέων ποικίλλει μεταξὺ 1000—3500 μ., μὲ ἐπικρατοῦν ὕψος τῶν κυρίων ὀροσειρῶν 2000—2500 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης.

Εἰς τὰ ὄρη τῆς βορείας ὀροσειρᾶς ὑπάρχουσι πολλοὶ χαμηλοὶ αὐχένες, σχηματίζοντες διαβάσεις ὁμαλὰς ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, ἐνῷ εἰς τὰ τῆς νοτίας ὀροσειρᾶς οἱ ἐλάχιστοι σχηματιζόμενοι αὐχένες εἰσὶν ὑψηλότατοι, αἱ δὲ δι' αὐτῶν διαβάσεις ἐλάχιστα χρησιμοποιοῦνται. Αἱ συνήθεις διαβάσεις τῆς νοτίας ὀροσειρᾶς εἶναι εὐάριθμοι καὶ ἀποτελοῦσι στενά, καλούμενα ὑπὸ τῶν ἀρχαίων *πύλαι*, οἷαι αἱ *Στεναὶ* ἢ *Λυκιαναὶ Πύλαι* καὶ αἱ *Κιλικίας Πύλαι* (πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Μ. Ἀσίας), ἢ αἱ *Πύλαι Συρίας* καὶ αἱ *Πύλαι Ἀμανοῦ* (πρὸς τὴν Συρίαν).

Ἡ διάταξις τοῦ ὀρεογραφικοῦ συστήματος διαιρεῖ τὴν Μ. Ἀσίαν εἰς 4 κεχωρισμένα τμήματα: α) Τὴν *βόρειον* Μ. Ἀσίαν, ἔνθα αἱ κοιλάδες διανοίγονται πρὸς τὸν Εὔξεινον καὶ ἥτις περιλαμβάνει τὰς ἀρχαίας χώρας Βιθυνίαν, Παφλαγονίαν καὶ Ποντικὴν Καππαδοκίαν ἢ Πόντον. β) Τὴν *νότιον* Μ. Ἀσίαν, ἔνθα αἱ κοιλάδες διανοίγονται πρὸς τὴν Μεσόγειον (Πισιδία, Παμφυλία, Κιλικία). γ)

Digitized by Google

Τὴν *δυτικὴν* Μ. Ἀσίαν, ἔνθα αἱ κοιλάδες διανοίγονται κατὰ κανονικὴν διάταξιν πρὸς τὴν Προποντίδα, τὸ Αἰγαῖον καὶ τὴν Μεσόγειον (Μυσία, Τρωάς, Λυδία, Ἰωνία, Καρία, Λυκία)· καὶ δ) Τὴν *κεντρικήν*, ἔνθα αἱ κοιλάδες πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν διανοίγονται εἰς εὐρύτατον ὑψίπεδον, συνδέονται δὲ πρὸς τὰς κοιλάδας τῶν ἄλλων τμημάτων τῆς Μ. Ἀσίας δι' εὐαρίθμων διαβάσεων (Μεγάλη Καππαδοκία, Λυκαονία, Ἰσαυρία, Φρυγία, Γαλατία).

***Ὑδρογραφία.*** Ἐν μὲν τῇ κεντρικῇ καὶ τῇ ἀνατολικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ γεννῶνται ἀπὸ τοῦ ὀρεογραφικοῦ κόμβου τοῦ Ἂκ δὰγ (3.230) αἱ ἑξῆς κοιλάδες: 1) Ἡ τοῦ *Τσορὸχ-σοῦ (Ἀκάμψεως)*, ῥέοντος πρὸς Β. ἐπὶ μήκους 290 χλμ. καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὸν Εὔξεινον παρὰ τὸ Βατούμ. 2) Ἡ τοῦ *Εὐφράτου*, ῥέοντος πρὸς τὰ ΝΑ. καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὸν Περσικὸν κόλπον. 3) Ἡ τοῦ *Κελκὶτ* ἢ *Γεσὶλ Ἰρμὰκ (Λύκου)*, ἐκβάλλοντος μετὰ ῥοῦν περὶ τὰ 360 χλμ. πρὸς τὰ ΒΔ. εἰς τὸν Εὔξεινον Πόντον, δυτικῶς τῆς Σαμψοῦντος· καὶ 4) Ἡ τοῦ *Κιζὶλ Ἰρμὰκ (Ἅλυος)*, ῥέοντος κατὰ πρῶτον μὲν πρὸς Ν., εἶτα δὲ διευθυνομένου ἐν τῇ Καππαδοκίᾳ πρὸς Β. καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὸν Εὔξεινον Πόντον παρὰ τὴν Πάφραν (ΝΑ. τῆς Σινώπης). Ὁ ποταμὸς οὗτος, ἀναπτυσσόμενος ἐπὶ μήκους 1.040 χλμ. περίπου, ἀποτελεῖ τὸν μεγαλύτερον ποταμὸν τῆς ὅλης χερσονήσου τῆς Μ. Ἀσίας καὶ συνιστᾷ σπουδαῖον στρατιωτικὸν κώλυμα.

Ἐν δὲ τῇ δυτικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ περὶ τὸν ὀρεογραφικὸν κόμβον τοῦ Μουρὰτ (Διδύμου) δὰγ καὶ περὶ τὸ ὑψίπεδον τοῦ Τουμλοῦ Μπουνὰρ (Ν. τῆς Κιουταχείας) ἔχουσι τὴν γένεσιν αὐτῶν αἱ ἑξῆς κοιλάδες: 1) Ἡ τοῦ **Πουρσὰκ** ἢ **Θύμβρου** (μήκους

Digitized by Google

300 χλμ. περίπου), παραποτάμου τοῦ Σαγγαρίου, ὅστις ῥέει γενικῶς πρὸς Β. καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Εὔξεινον Πόντον μετὰ ῥοῦν 620 χλμ. δυτικῶς τῆς Ποντοηρακλείας. 2) Ἡ τοῦ *Ρυνδάκου* ἢ *Ἀδρανοῦ*, ἀναπτυσσομένου πρὸς τὰ ΒΔ. ἐπὶ μήκους 240 χλμ. καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὴν Προποντίδα, ἀνατολικῶς τῆς Πανόρμου. 3) Ἡ τοῦ *Γκεδὶζ τσάϊ (Ἕρμου)*, διευθυνομένου πρὸς Δ., ἀναπτυσσομένου δ' εἰς μῆκος 260 χλμ. περίπου καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὸ Αἰγαῖον (ΒΔ. τῆς Σμύρνης). 4) Ἡ τοῦ *Μαιάνδρου (Μπουγιοὺκ Μενδερέζ)*, ὡσαύτως ἔχοντος διεύθυνσιν πρὸς Δ. καὶ μῆκος 340 χλμ. περίπου καὶ ἐκβάλλοντος εἰς τὸ Αἰγαῖον πέλαγος, Ν. τῆς Μυκάλης· καὶ 5) Ἡ τοῦ *Ἀκὰρ τσάϊ*, διευθυνομένου πρὸς ΝΑ. καὶ μετὰ ῥοῦν 120 χλμ. ἐκβάλλοντος εἰς τὴν Ἄκ Σεχὶρ Γκιὸλ (Ἁλμυρὰν λίμνην) τοῦ ὑψιπέδου τῆς Λυκαονίας. Σημειωτέον ὅτι ὑπάρχουσιν ἐν τῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ οἱ ἑξῆς ἀκόμη ποταμοί: 1) Ὁ *Χὰν τσάϊ (Γρανικός)*, ὅστις πηγάζων ἀπὸ τοῦ Γιαϊλατζὶκ δὰγ (ἀνατολικῶς τῶν Δαρδανελλίων) διευθύνεται πρὸς τὰ ΒΑ. καὶ ἐκβάλλει μετὰ ῥοῦν 75 χλμ. εἰς τὴν Προποντίδα, παρὰ τὴν Καραμπίγαν. 2) Ὁ *Μενδερὲς τσάϊ (Σκάμανδρος)*, ὅστις πηγάζει ἀπὸ τοῦ ἰδίου ὄρους Γιαϊλατζὶκ (Α. τῶν Δαρδανελλίων) καὶ διευθυνόμενος ἐν ἀρχῇ μὲν πρὸς τὰ ΝΔ., εἶτα δὲ πρὸς Β., ἐκβάλλει, μετὰ ῥοῦν 85 χλμ., εἰς τὸν Ἑλλήσποντον παρὰ τὸ Κοὺμ-Καλέ. 3) Ὁ *Μπακὶρ τσάϊ (Κάϊκος)*, ὅστις ἀπὸ τοῦ Δεμιρτζῆ δὰγ τοῦ ὑψιπέδου τοῦ Σιμὰρ πηγάζων ῥέει πρὸς Δ. ἐπὶ μήκους 100 χλμ. καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἐλαϊτικὸν ἢ Τσανταρλὶ κόλπον, ἔναντι τῶν Ἀργινουσῶν νήσων. 4) Ὁ *Κάϋστρος (Κουτσοὺκ Μενδερές)*, ὅστις ἀπὸ τοῦ Μπὸζ δὰγ (Τμώλου) πηγάζων, ῥέει πρὸς Δ., ἀναπτυσσόμενος ἐπὶ μήκους 110 χλμ. μεταξὺ τῆς κοιλάδος τοῦ Ἕρμου ἢ Γκεδὶζ τσάϊ, πρὸς Β., καὶ τοῦ Μαιάνδρου (Μπουγιοὺκ Μενδερές), πρὸς Ν., ἐκβάλλει εἰς τὸ Αἰγαῖον παρὰ τὴν Ἔφεσον. 5) Οἱ ἐκ τοῦ Λυκιανοῦ Ταύρου προκύπτοντες ποταμοί: α') *Λαλαμὰν τσάϊ* ἢ *Ἰνδὸς* (μήκους 120 χλμ.) καὶ *Ἐρσὲν τσάϊ* ἢ *Ξανθὸς* (μήκους 100 χλμ.), ἐκβάλλοντες εἰς τὸν κόλπον τῆς Μάκρης· καὶ β') *Ἂκ τσάϊ* ἢ *Κέστρος* (μήκους 120 χλμ.) καὶ *Κιοπροῦ σοῦ* ἢ *Εὐρυμέδων* (μήκους 100 χλμ.) ἐκβάλλοντες εἰς τὸν κόλπον τῆς Ἀτταλείας. 6) Οἱ ἐκ τοῦ Κιλικιανοῦ Ταύρου πηγάζοντες: *Σελευκὲ σοῦ* ἢ *Καλύκαδνος* (μήκους 200 χλμ.) καὶ *Ταρσοῦς σοῦ* ἢ *Κύδνος* (μήκους 100 χλμ.), ἐκβάλλοντες εἰς τὸν κόλπον τῆς Μερσίνης. 7) Οἱ ἐκ τοῦ Ἀντιταύρου ἔχοντες τὴν ἀρχήν: *Σεϊχοὺν τσάϊ* ἢ *Σάρος* (μήκους 330 χλμ.), ἐκβάλλων εἰς τὸν κόλπον τῆς Μερσίνης, καὶ *Τζιχὰν τσάϊ* ἢ *Πύραμος* (μήκους 340 χλμ.), ἐκβάλλων εἰς τὸν κόλπον τῆς Ἰσσοῦ· καὶ τέλος 8) Ὁ *Καρασοὺτ* (μήκους 120 χλμ.) ἐν τῷ Πόντῳ καὶ ὁ *Βιλλαῖος* ἢ *Φίλιος* ἢ *Οὐλοῦ τσάϊ* (μήκους 250 χλμ.) ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ, ἐκβάλλοντες εἰς τὸν Εὔξεινον.

Θεωροῦντες γενικωτέραν τὴν ὑδρογραφίαν παρατηροῦμεν ὅτι οἱ ποταμοὶ τῆς Μ. Ἀσίας εἶναι συνήθως μεγάλοι. Ὑδρογραφικὸν αὐτῶν κέντρον χρησιμεύει πρωτίστως ἡ νοτία ὀροσειρὰ καὶ δὴ ὁ Ἀντίταυρος καὶ αἱ ἐκ τοῦ δυτικοῦ αὐτῆς ἄκρου ἐκπεμπόμεναι ὀροσειραί, κατὰ δεύτερον δὲ λόγον ἡ βορεία ὀροσειρά. Μεταξὺ τῶν εἰς τὸν Εὔξεινον Πόντον ἐκβαλλόντων ποταμῶν εὑρίσκονται οἱ μεγαλύτεροι τοιοῦτοι τῆς Μ. Ἀσίας, διότι οὗτοι συγκεντροῦσι καὶ διοχετεύουσι τὸ πλεῖστον τῶν ὑδάτων τῶν μεταξὺ τῆς βορείας καὶ νοτίας ὀροσειρᾶς ἐν τῇ κεντρικῇ Μ. Ἀσίᾳ σχηματιζομένων πολυαρίθμων ἐκτεταμένων κοιλάδων καὶ ὑψιπέδων.

Εἰς ἅπαντα τὰ ὑψίπεδα καὶ εἰς τὰς πλείστας τῶν χθαμαλῶν πεδιάδων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας σχηματίζονται εὐρύταται λίμναι, ὧν τὰ ὕδατα συνήθως εἶναι γλυκέα, ὀλίγων δέ, καὶ κυρίως τῶν τοῦ κεντρικοῦ ὑψιπέδου, εἰσὶν ἁλμυραί. Ἡ μεγίστη τῶν λιμνῶν εἶναι ἡ ἐν τῇ Λυκαονίᾳ *Τάτα (Κι ρ.ιτία* ἢ *Τοὺζ-γκιόλ)*, ἧς ἡ ἐπιφάνεια ἵσταται εἰς ἀπόλυτον ὕψος 940 μ. Μέρος τῆς λεκάνης τῆς λίμνης ταύτης παρὰ τὰς ὄχθας μένει ἐπί τινα χρόνον ξηρὸν καὶ ὑπὸ παχείας ὑποστάθμης ἅλατος κεκαλυμμένον. Νοτίως καὶ νοτιοδυτικῶς τῆς Τάτας ὑπάρχουσιν ἄλλαι λίμναι εἰς δύο σειρὰς σχεδὸν παραλλήλους, εἰς σχῆμα ἡμικυκλίου. Αὗται εἶναι ἡ *Σογλᾶ*, ἡ *Μπέη-σεχὶρ* (*Καραλῖτις*, Caralitis lacus), ἡ *Ἐγερδίρ*, ἡ *Μπουλντοὺρ* (*Ἀσκάνιος*, Ascanius lacus) καὶ ἡ *Ἀτζὶ-τοὺζ-γκιολοῦ* (Anaua lacus). Αἱ λίμναι αὗται ἔχουσιν ὕδατα ἁλμυρά. Ἡ ἄλλη ἐσωτερικὴ σειρὰ περιλαμβάνει τὰς ἑξῆς λίμνας: *Ἐρέγλι* ἢ *Ἂκ-γκιὸλ (Ἡρακλείας* ἢ *Λευκὴ λίμνη)*, *Καραμπουνὰρ* ἢ *Τουζλοῦ-γκιόλ*, τὴν *Λαδὶκ-γκιὸλ* (ἢ *Στεφάνη τοῦ Στράβωνος)*, τὴν *Ἰλγὶν-γκιόλ*, *Ἂκ-σεχὶρ-γκιὸλ* καὶ *Ἐμπὲρ-γκιόλ*, πλησίον τοῦ Μπουλαβαδίν. Πρὸς τὸ μέρος τοῦ Εὐξείνου ὑπάρχει ἡ μικρὰ λίμνη *Καρὰ-σοῦ (Μαύρη)* παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Σαγγαρίου, καὶ ἡ *Ἂκ-γκιὸλ (Λευκή)*, εἰς ἀπόστασιν 6 χλμ. ἀπὸ τοῦ Εὐξείνου μεταξὺ Μπάφρας καὶ Ἀμισοῦ, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Ἅλυος. Ἐπὶ τῆς παραλιακῆς πρὸς τὴν Προποντίδα χώρας ἐκτείνονται εἰς εὐθεῖαν γραμμὴν αἱ ἑξῆς τέσσαρες λίμναι: Ἡ *Σαμπάντζα-γκιολοῦ (Βαάνη* ἢ *Βοάνη* κατὰ Ἄνναν τὴν Κομνηνήν, κατὰ δὲ τοὺς Λατίνους Sumonensis lacus), εἰς ἀπόστασιν 16 χλμ. ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Νικομηδείας, λίαν ἰχθυοτρόφος, ἔχουσα ὕδατα γλυκέα καὶ πόσιμα. Δι' αὐτῆς καὶ διὰ διωρύγων ἐπεχειρήθη σύνδεσις τῆς Προποντίδος μετὰ τοῦ Εὐξείνου. Ἡ *Ἀσκανία (Ἰζνὶκ-γκιολοῦ* ἢ *λίμνη τῆς Νικαίας)* εἰς τὰ ΝΔ. τῆς προηγουμένης, ἔχουσα ἐπίσης ὕδατα γλυκέα, ἡ *Ἀπολλωνία (Ἀρτυνία, Ἀπολλωνιᾶτις, Ἀμπουλιοὺντ-γκιολοῦ)*, οὐχὶ μακρὰν τῆς θαλάσσης μὲ ἐπίσης γλυκέα ὕδατα, ἡ *Ἀφνῖτις (ἢ Μιλητοπολῖτις, Μανιὰς-γκιολοῦ)*, ἀπέχουσα 16 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἡ *Ἐτζὲ-γκιόλ*, πλησίον τῶν ἐκβολῶν τοῦ Γρανικοῦ παρὰ τὰ Δαρδανέλλια, ἡ *Σύναος (Σιμὰβ-γκιολοῦ)*, πλησίον τοῦ Τήμνου καὶ ἡ *Γυγαία (Μερμερὲ-γκιολοῦ)*, δεξιὰ τοῦ Ἕρμου παρὰ τὰς Σάρδεις, σκαφεῖσα κατὰ τὸν Στράβωνα τεχνητῶς, ὅπως εἰσδέχηται τὰ ὕδατα τῶν πλημμυρούντων ποταμῶν καὶ προστατεύῃ τὴν πόλιν τῶν Σάρδεων, εἶναι λίμναι μικραί. Ἡ *Βαφὶ-ντενὶζ (Μπαστάρδα θάλασσα)* παρὰ τὴν ἀρχαίαν Μίλητον, ἔχει ὑφάλμυρον ὕδωρ, περίσσευμα πιθανῶς τοῦ Λατμικοῦ κόλπου, ἐμφραχθέντος ὑπὸ τῶν προσχώσεων τοῦ Ἕρμου.

Ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἀφθονοῦσι καὶ αἱ θερμοπηγαὶ καὶ τὰ μεταλλικὰ ὕδατα. Αἱ κυριώτεραι εἶναι αἱ τῆς *Γιάλοβας* ἐν τῷ νομῷ Κοτζᾶ-Ἐλὶ (Νικομηδείας), αἱ τῆς *Προύσης*, αἱ τῆς *Τσιτλί*, *Ἐσκὶ-σεχίρ*, *Τοῦζλα* (ἐν τῷ νομῷ Καράσι), *Τσεσμὲ* (τῆς χερσονήσου Ἐρυθραίας), *Ἱεραπόλεως* μὲ μεγάλα ἰζήματα στυπτηρίας ἐν τῷ νομῷ Ἀϊδίν, *Τερζιλὶ-χαμὰμ* καὶ *Ἰσκελὶπ* ἐν τῷ νομῷ Ἀγκύρας, *Μπολοῦ* καὶ *Χάβζα* (Σεβαστείας). Πολλαὶ τούτων εἶναι ἀρχαῖαι, ἀναφερόμεναι ἐν καταλόγῳ, τὸν ὁποῖον δίδει ὁ Στράβων. Ἰδιαιτέρως πλουσία εἰς θερμοπηγὰς εἶναι ἡ κοιλὰς τοῦ Μαιάνδρου. Ν. Μ.

***Ἀκτογραφία.*** Ἡ Μικρὰ Ἀσία, συνεχομένη μόνον κατὰ τὴν ἀνατολικὴν αὐτῆς πλευρὰν μετὰ τῆς ξηρᾶς καὶ βρεχομένη κατὰ τὰ τρία ἄλλα σημεῖα τοῦ ὁρίζοντος (Β., Δ. καὶ Ν.) ὑπὸ τῆς θαλάσσης, σχηματίζει τὴν δυτικωτάτην καὶ ἐγγύτερον τῆς Εὐρώπης κειμένην χερσόνησον τῆς Ἀσιατικῆς ἠπείρου. Αἱ περιβάλλουσαι αὐτὴν θάλασσαι εἶναι, πρὸς Β. ὁ *Εὔξεινος Πόντος (Μαύρη Θάλασσα)*, πρὸς Δ. τὸ *Αἰγαῖον* πέλαγος καὶ πρὸς Ν. ἡ *Ἀνατολικὴ Μεσόγειος* καὶ τὸ *Ἰσσικὸν* ἢ *Κιλίκιον* πέλαγος. Πρὸς τὰ βορειοδυτικὰ μεταξὺ Αἰγαίου καὶ Εὐξείνου ἡ μικρασιατικὴ παραλία προσεγγίζει εἰς δύο σημεῖα τὴν εὐρωπαϊκὴν ἤπειρον (Ἀνατολικὴ Θράκη), σχηματίζουσα μετ' αὐτῆς τοὺς δύο σπουδαιοτάτους πορθμούς, τοῦ *Ἑλλησπόντου (Δαρδανελλίων)* πρὸς Δ. καὶ τοῦ *Βοσπόρου* πρὸς Α. Μεταξὺ τῶν δύο τούτων στενῶν ἀνοίγεται ἡ μικρὰ θάλασσα τῆς *Προποντίδος* ἢ τοῦ *Μαρμαρᾶ*. Τὰ ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου παράλια τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἄρχονται πρὸς Α. ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου *Κὶζ-Καλεσῆ*, ἀποτελοῦντος τὸ Δ. κέρας τοῦ ὅρμου Ἀθῆναι (41° 12′ Β. πλάτ., 40° 52′ Α. μῆκ. Γκρήνουϊτς), ἐκτείνονται δὲ μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου *Κοὺμ-Μπουρνοῦ*, ἀποτελοῦντος τὸ ΒΑ. κέρας τοῦ πρὸς τὸν Εὔξεινον στομίου τοῦ Βοσπόρου, ἐπὶ μήκους 565 περίπου μιλλίων. Ἡ παραλία αὕτη πλαισιοῦται ὑπὸ μικρῶν ὀρέων, ἔχει τοξοειδὲς σχῆμα, παρουσιάζει μικρὰ μόνον ἀκρωτήρια καὶ κολπώσεις καὶ δέχεται τὰ ὕδατα πολλῶν ποταμῶν (Σαγγάριος, Φίλιος, Ἅλυς, Ἶρις, κλπ.). Οἱ λιμένες καὶ τὰ ἀγκυροβόλια σπανίζουσιν, οὐδεμία δὲ μεγάλη νῆσος, ἐκτὸς σκοπέλων τινῶν, ἐμφανίζεται ἐγγὺς αὐτῆς (βλ. λ. *Εὔξεινος* Πόντος, τ. ΙΑ', *σ.* 758 *γ' καὶ ἑπ.*).

Ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Κοὺμ-Μπουρνοῦ ἀνοίγεται ὁ Βόσπορος, στενὸν μήκους 26 χιλιομέτρων κατ' εὐθεῖαν γραμμὴν καὶ πλάτους 500 ἕως 3.000 μ. Διὰ τοῦ στενοῦ τούτου, ὡς διὰ τεραστίου θαλασσίου ποταμοῦ, διοχετεύονται πρὸς τὴν Προποντίδα τὰ ἐν τῷ Εὐξείνῳ συγκεντρούμενα ὕδατα τῶν μεγάλων ποταμῶν Δουνάβεως, Δνειστέρου, Δνειπέρου, Δὸν κλπ. Ἡ μετὰ τὸν Βόσπορον ἀνοιγομένη Προποντὶς ἔχει χθαμαλὴν μὲν ἀλλὰ βαθέως διακοπτομένην παραλίαν, σχηματίζουσαν κατὰ σειρὰν τὸν *Ἀστακηνὸν* κόλπον, παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ ὁποίου κεῖται ἡ Νικομήδεια, τὸν *Κιανὸν* ἢ *κόλπον τῆς Κίου*, τὴν μικρὰν χερσόνησον τῆς *Ἀρτάκης* καὶ τέλος τὸ *Ροίτειον* ἀκρωτήριον, μετὰ τὸ ὁποῖον ἄρχεται στενούμενος ὁ Ἑλλήσποντος. Ἐν τῇ Προποντίδι καὶ πρὸς τὴν πλευρὰν τῆς ἀσιατικῆς παραλίας ἀναδύονται ὡραῖαι κατάφυτοι νησῖδες *(Πριγκηπόνησοι, Προκόννησος, Κούταλη, Ὀφιοῦσα* κλπ.). Ὁ *Ἑλλήσποντος* ἐπίσης διοχετεύει τὰ εἰς τὴν Προποντίδα ἐκχυνόμενα διὰ τοῦ Βοσπόρου ὕδατα εἰς τὸ Αἰγαῖον. Ἔχει μῆκος 33 μιλλ. καὶ πλάτος ἀπὸ 1200 μ. μέχρι 4 μιλλ. Ἡ πρὸς τὴν μικρασιατικὴν παραλίαν πλευρά του εἶναι χθαμαλωτέρα τῆς εὐρωπαϊκῆς, ἁπλοῦται δὲ ἀνυψουμένη διαρκῶς μέχρι τῶν κρασπέδων τοῦ ὄρους Ἴδη. Ἀπὸ τοῦ πρὸς Δ. ἀκραίου τῆς παραλίας τοῦ Ἑλλησπόντου σημείου, ὅπου τὸ ὠχυρωμένον ἀκρωτήριον *Κοὺμ Καλέ*, ἄρχεται ἡ πρὸς τὸ Αἰγαῖον μικρασιατικὴ παραλία βαθέως κολπουμένη καὶ ἔχουσα καθ' ὅλον τὸ μῆκος αὐτῆς πολλὰς καὶ μεγάλας νήσους καὶ ἄλλας μικροτέρας νησῖδας καὶ σκοπέλους (*βλ. λ. Αἰγαῖον*, *τ.* Β, *σ.* 388 *β' καὶ ἑπ.*). Παραπλέοντες τὴν παραλίαν ταύτην ἀπὸ Β. πρὸς Ν., ἀφίνομεν δεξιὰ τὴν νῆσον Τένεδον, κάμπτομεν τὸ ἀκρωτήριον Μπαμπᾶς καὶ ἀπαντῶμεν τὸν μέγαν *Ἀδραμυττηνὸν* κόλπον, ἐντὸς τοῦ ὁποίου κεῖνται αἱ πόλεις Ἀδραμύττιον, Κυδωνίαι κ.ἄ., καὶ τὸ μικρὸν ἀρχιπέλαγος τῶν *Μοσχονησίων*. Τὸν κόλπον τοῦτον φράσσει ἡ Λέσβος, ἡ μεγαλυτέρα τῶν αἰολικῶν νήσων, σχηματίζουσα ἑκατέρωθεν τοὺς δύο διέκπλους Μουζελὶμ καὶ Μυτιλήνης. Ἐν συνεχείᾳ τοῦ Ἀδραμυττηνοῦ ἀνοίγονται οἱ κόλποι *Καβακούμ*, *Ἐλαϊτικός*, καὶ ὁ ὑπὸ τῆς χερσονήσου τῆς Ἐρυθραίας περιβαλλόμενος μέγας κόλπος τῆς *Σμύρνης* (τῶν Σμυρναίων), εἰς τὸ βάθος τοῦ ὁποίου κεῖται ἡ ὁμώνυμος μικρασιατικὴ μεγαλόπολις καὶ δεξιὰ τῷ εἰσπλέοντι τὸ ἀρχιπέλαγος τῶν *Ἐγγλεζονησίων*. Κατέναντι τῆς χερσονήσου τῆς Ἐρυθραίας κεῖται ἡ δευτέρα μεγάλη αἰολικὴ νῆσος *Χίος*, χωριζομένη ἀπ' αὐτοῦ διὰ τοῦ διέκπλου τῆς Χίου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου εἶναι κατεσπαρμέναι αἱ νησῖδες Οἰνοῦσαι. Ἀκολουθοῦσι πρὸς Ν. οἱ κόλποι *Σιγατζὶκ* (ἀρχ. *Τέω*), καὶ *Ἐφέσου*, μετὰ δὲ τὸν τελευταῖον σχηματίζεται τὸ ἀκρωτήριον *Καναπίτζα (Τρωγύλιον)*, τοῦ ὁποίου ὑπέρκειται τὸ ὄρος *Μυκάλη*. Ἀπέναντι τοῦ ἀκρωτηρίου τούτου κεῖται ἡ ἑλληνικὴ μεγαλόνησος *Σάμος*, προσεγγίζουσα τὴν μικρασιατικὴν παραλίαν, μεθ' ἧς σχηματίζει τὸ ἱστορικὸν στενὸν τῆς Μυκάλης ἢ τῆς Σάμου. Περαιτέρω σχηματίζεται τὸ ἀκρωτήριον τοῦ *Γέροντα*, ἱστορικὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ νικηφόρου ναυμαχίας τοῦ Ἀγῶνος, ἐντεῦθεν δὲ καὶ ἡ παραλία καθίσταται ἐπὶ μᾶλλον πολυδαίδαλος, διακοπτομένη ὑπὸ τῶν βαθέως εἰς τὴν θάλασσαν εἰσχωρουσῶν χερσονήσων τῆς *Ἁλικαρνασσοῦ*, τῆς *Κνίδου (Κνιδίας)* καὶ τῆς *Ροδίας* (ἔναντι τῆς Ρόδου). Αἱ δύο πρῶται χερσόνησοι περιβάλλουσι τὸν βαθέως μέχρι 55 μιλλίων εἰσχωροῦντα μέγαν *Κεραμεικὸν* κόλπον (τῆς *Κῶ*), ἡ δὲ τρίτη προσεγγίζει τὴν μεγαλυτέραν τῶν νήσων τοῦ Δωδεκανησιακοῦ ἀρχιπελάγους Ρόδον, σχηματίζουσα μετ' αὐτῆς τὸν διέκπλουν *Περαία τῶν Ροδίων*. Ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Γέροντα μέχρι τῆς Ρόδου ἡ πολυσχιδὴς αὕτη παραλία φράσσεται ὑπὸ τῆς μακρᾶς σειρᾶς τῶν Δωδεκανήσων, καθισταμένη τοιουτοτρόπως ἐπὶ μᾶλλον πολυδαίδαλος. Ἐκεῖθεν τῆς Ρόδου καὶ μετὰ τὸν παράπλουν τῆς Ροδίας χερσονήσου, ἀνατολικῶς τῆς ὁποίας σχηματίζεται ὁ κόλπος *Μαρμαρᾶς*, ἄρχεται ἡ νοτία παραλία τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἐκτεινομένη μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ *Ἰσσικοῦ* κόλπου (τῆς *Ἀλεξανδρέττας*). Εἶναι, ὡς καὶ ἡ βόρειος, ὁμαλή, σχηματίζουσα δύο μεγάλους ἀναπεπταμένους κόλπους, τὸν *Παμφύλιον* (τῆς *Ἀτταλείας*) πρὸς Δ. καὶ τὸν μνημονευθέντα Ἰσσικὸν πρὸς Α. Μεταξὺ τῶν δύο τούτων κόλπων χωρεῖ τοξοειδῶς ἡ ἔναντι τῆς Κύπρου παραλία τῆς *Καραμανίας* (ἀρχ. *Κιλικίας*), μεταξὺ δὲ τοῦ πρώτου καὶ τῶν ἔναντι τῆς Ρόδου ΝΔ. ἀκτῶν (κόλπος *Μάκρης*) ἡ παραλία τῆς *Λυκίας*. Χ. Δ.

Δ') ***Κλῖμα.*** Τὸ κλῖμα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας εἶναι μεταβατικόν. Καὶ εἰς μὲν τὴν Β., Ν. καὶ Δ. Μικρὰν Ἀσίαν, ὅπου ὁ καύσων μετριάζεται κατὰ πολὺ ὑπὸ τῶν πολλῶν ὀροσειρῶν, ἡ δὲ τοῦ ψύχους ἔντασις μειοῦται ὑπὸ τῶν περιβαλλουσῶν τὰς χώρας θαλασσῶν, κυμαίνεται, δύναταί τις εἰπεῖν γενικῶς, μεταξὺ τοῦ εὐκράτου καὶ τοῦ θερμοῦ. Εἰς δὲ τὴν κεντρικὴν Μικρὰν Ἀσίαν, ἥτις περικλείεται πανταχόθεν ὑπὸ ὑψηλῶν ὀροσειρῶν καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ ὑψηλὰς στέππας κατὰ τὸ πλεῖστον, τὸ κλῖμα κυμαίνεται, ἀντιστρόφως, μεταξὺ τοῦ εὐκράτου καὶ τοῦ ψυχροῦ. Ἐπὶ τῶν ὀροσειρῶν τὸ κλῖμα εἶναι πάντοτε ψυχρὸν καὶ ὁ χειμὼν ἐπαχθής, εἰς δὲ τὰς μεσημβρινὰς ἀκτὰς συνήθως ἐπικρατοῦσιν ὑπερβολικοὶ καύσωνες, ἐνῷ τὰ παράλια τοῦ Εὐξείνου Πόντου μαστίζει πολλὴ ὑγρασία. Ν. Κ. Σ.

— [ΣΤΡΑΤ. ΓΕΩΓΡ.] Ἡ Μικρὰ Ἀσία ἀποτελεῖ τὴν μᾶλλον προηγμένην πρὸς Δ. χερσόνησον τῆς Ἀσίας καὶ κατέχει γεωγραφικὴν θέσιν κεντρικήν, μεταξὺ τῶν τριῶν Ἠπείρων, τῆς Ἀσίας, τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀφρικῆς, μεθ' ἧς συνάπτεται διὰ τῆς ὑγρᾶς ἐπιφανείας τῆς ἀνατολικῆς Μεσογείου. Εὐνόητον ὅτι προσαποκτᾷ ἐκ τοῦ λόγου τούτου ἡ χερσόνησος μεγάλην στρατηγικὴν ἀξίαν, ἐπαυξανομένην ἐκ τῆς ὑγρᾶς ἐπιφανείας τῶν θαλασσῶν, αἵτινες περιβάλλουσι τὴν χερσόνησον. Ὁ κατέχων ἄρα τὴν Μικρὰν Ἀσίαν, προφανὲς ὅτι εὑρίσκεται ὑπὸ λίαν εὐνοϊκὰς συνθήκας, ὅπως ἀναλάβῃ πρωτοβουλίαν ἐνεργείας καὶ κατευθύνῃ τὰς ἐπιχειρήσεις του κατὰ πᾶσαν βουλητὴν καὶ τακτικῶς συμφέρουσαν διεύθυνσιν, ἤ, ἀντιστρόφως, ταχέως ἀντιταχθῇ κατὰ παντὸς ἐπιδρομέως.

Προκεχωρημένον συνιστῶσα τμῆμα τῆς Ἀσίας ἡ χερσόνησος, χρησιμεύει οἱονεὶ ὡς γέφυρα συνδέουσα ἀμέσως τὴν Ἀσίαν μετὰ τῆς Μέσης Εὐρώπης καὶ περιλαμβάνουσα ἅπαν τὸ μεταξὺ τῶν δύο ἠπείρων τούτων συγκοινωνιακὸν δίκτυον, τὸ ὁδηγοῦν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον καὶ τὰς Ἰνδίας. Πᾶσαι αἱ ἐκστρατεῖαι ἀπὸ τῆς Ἀσίας πρὸς τὴν Εὐρώπην, καὶ ἀντιστρόφως, καθ' ὅλας τὰς ἐποχὰς ἐν τῷ παρελθόντι, διὰ τῆς χερσονήσου ταύτης ἐγένοντο (Πέρσαι, Ἕλληνες ὑπὸ Ἀλέξανδρον, Ρωμαῖοι, Ἄραβες, Σταυροφόροι, Τοῦρκοι, κλπ.). Ὅθεν ἱστορικῶς ἐπιβεβαιοῦται ἡ μεγάλη ῥοπή, ἣν ἡ κατοχὴ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας κέκτηται διὰ τὴν κυριαρχίαν οὐ μόνον τῆς Βαλκανικῆς ἀλλὰ καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Ἀσίας. Δύναται νὰ χρησιμεύσῃ ἄρα ἡ χερσόνησος ὡς εὐρεῖα ζώνη ἐπιχειρήσεων στρατοῦ, ἀπὸ τῆς Εὐρώπης



Digitized by Google

προτιθεμένου νὰ κινηθῇ πρὸς τὴν Ἀσίαν, καὶ ἀντιστρόφως.

Ἀλλ' ἡ στρατηγικὴ σπουδαιότης τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἔτι μᾶλλον ἐνισχύεται, διότι αὕτη συνιστᾷ τὸ ἀνατολικὸν πλευρὸν τῶν θαλασσίων Στενῶν τοῦ Βοσπόρου καὶ τοῦ Ἑλλησπόντου, ἀποτελοῦντων τὴν κλεῖδα τοῦ Εὐξείνου καὶ τῆς Μεσογείου, οἱονεὶ δὲ γέφυραν τῆς Ἀσίας μετὰ τῆς Εὐρώπης, ἀπαραλλάκτως ὡς τὸ Σουὲζ ἀποτελεῖ τὴν κλεῖδα τῆς Μεσογείου καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ καὶ γέφυραν μεταξὺ Ἀσίας καὶ Ἀφρικῆς, ἢ ὡς τὸ Γιβραλτὰρ ἀποτελεῖ τὴν κλεῖδα τῆς Μεσογείου καὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ καὶ γέφυραν μεταξὺ Εὐρώπης καὶ Ἀφρικῆς.

Ἡ ἐπίδρασις τῶν γεωγραφικῶν στοιχείων κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ εἶναι μεγάλη, καθ' ὅσον ἡ χώρα ἔχει ἀκόμη μικρὸν πολιτισμὸν καὶ ὡς ἐκ τούτου ἡ φύσις προσκτᾶται κυριαρχοῦσαν σχεδὸν σημασίαν ἐπὶ πάσης πολεμικῆς ἐνεργείας. Ἡ τοιαύτη ὅμως φυσικὴ ἐπίδρασις δὲν εἶναι πανταχοῦ τῆς Μ. Ἀσίας ἡ αὐτή, διότι ἀλλαχοῦ μὲν προεξάρχουσι τὰ φυσικὰ στοιχεῖα (ὄρη, ποταμοί, παράλια, βλάστησις κλπ.), ἀλλαχοῦ δὲ ἐπικρατοῦσι τὰ ἔργα τοῦ ἀνθρώπου (πόροι χώρας, συγκοινωνίαι, ᾠκημένοι τόποι, φρούρια κλπ.). Εἶναι δυνατὸν ἐν τῇ ἐπισταμένῃ καὶ συνδεδυασμένῃ μελέτῃ τῆς ἐδαφικῆς διαμορφώσεως πρὸς τὰς τεχνικὰς συγκοινωνίας καὶ τὴν ἐπάρκειαν τῆς χώρας νὰ καθορισθῶσι διάφοροι ἐδαφικαὶ ἐκτάσεις, δυνάμεναι νὰ ἀποτελέσωσι θέατρα ἐπιχειρήσεων, εἰς ἃ ἡ τε κίνησις, ἡ στάθμευσις καὶ ἡ διατροφὴ τῶν ἐπιχειρούντων στρατευμάτων νὰ ᾖ ὁπωσδήποτε εὐχερής. Ἀλλ' ὅμως τὰ θέατρα ἐπιχειρήσεων ταῦτα, λόγῳ ἐπιδράσεως τῶν παρεμβαλλομένων γεωγραφικῶν στοιχείων, εἶναι τελείως ἀνεξάρτητα ἀλλήλων καὶ αἱ ἐνεργοῦσαι ἐν αὐτοῖς φάλαγγες εἶναι κεχωρισμέναι καὶ δὲν δύνανται νὰ παράσχωσιν ἀλλήλαις συνδρομὴν ἢ ἀμοιβαίαν ὑποστήριξιν. Οὕτω, κατὰ τὸ 1921 τὸ βόρειον συγκρότημα μεραρχιῶν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ περὶ τὴν Προῦσαν ἐνήργει ἀνεξαρτήτως τοῦ νοτίου τοιούτου περὶ τὸ Οὐσάκ, ἀφ' οὗ ἐχωρίζετο διὰ τοῦ ὀρεινοῦ συγκροτήματος τοῦ Σιμὰβ καὶ τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας.

Ἡ ἐπίδρασις τοῦ ὀρεογραφικοῦ συστήματος τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, λόγῳ τῆς διατάξεως καὶ τῆς καταστάσεως τῶν ὀρεινῶν αὐτοῦ ὄγκων, εἶναι γενικῶς κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις μείζων παντὸς ἑτέρου στοιχείου, τοιαύτη δ' ὥστε νὰ εἰσέρχηται ὡς σημαντικὸς καὶ πολλάκις κύριος παράγων οὐχὶ μόνον ἐπὶ τῶν τακτικῶν ἐπιχειρήσεων, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς στρατηγικῆς ἐκλογῆς τοῦ θεάτρου πολέμου. Ἐν τῇ κεντρικῇ καὶ τῇ δυτικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ ὁ παράγων οὗτος δὲν ὑπολογίζεται καὶ πολύ. Εἰς τὰ ὄρη τῆς βορείας ὀροσειρᾶς (Βιθυνία, Παφλαγονία, Πόντος) ἡ ἐπίδρασις τῶν ὀρέων ἐπὶ τῶν στρατιωτικῶν ἐπιχειρήσεων εἶναι ἀρκούντως σημαντική· καὶ τέλος εἰς τοὺς ὀρεινοὺς ὄγκους τῆς νοτίας ὀροσειρᾶς ὁ παράγων οὗτος εἶναι μέγιστος καὶ ἀποτελεῖ τὸ κυριαρχοῦν στοιχεῖον ἐπὶ πάσης γενικῆς στρατηγικῆς ἐπιχειρήσεως.

Δι' ἐπιχειρήσεις συνεχεῖς καὶ καθ' ὡρισμένην κατεύθυνσιν, μὲ θέατρον πολέμου ἅπασαν τὴν Μικρὰν Ἀσίαν, αἱ κοιλάδες τῆς δυτικῆς Μικρᾶς Ἀσίας πρωτίστως, κατὰ δεύτερον δὲ λόγον τῆς κεντρικῆς τοιαύτης, εἶναι αἱ μᾶλλον κατάλληλοι καὶ ἐξυπηρετοῦσιν ὁπωσδήποτε ἐπαρκῶς τὰς ἀνάγκας ἐπιχειροῦντος στρατεύματος. Ἡ διαμόρφωσις καὶ αἱ εὐρύνσεις αὐτῶν (πεδιάδες, ὑψίπεδα), αἱ διατρέχουσαι τὰς κοιλάδας συγκοινωνίαι, οἱ κατῳκημένοι τόποι καὶ τὰ παρεχόμενα μέσα διατροφῆς συμβάλλουσι πρὸς τοῦτο, διότι ἐκτὸς τῆς ἐλευθέρας κινήσεως τῶν στρατευμάτων ἀπαραίτητος τυγχάνει καὶ ἡ ἄνετος ἐπισταθμία αὐτῶν καὶ ἡ ἐπαρκὴς διατροφή. Παράλληλον ἐκ Δ. πρὸς Α. ἔχουσαι τὴν διεύθυνσιν ἐν τῇ δυτικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ αἱ κοιλάδες (Καΐκος, Ἕρμος, Κάϋστρος, Μαίανδρος), συνιστῶσιν εὐρείας λεωφόρους (ζῶνας ἐπιχειρήσεων) εἰσδυούσας ἀπὸ τοῦ Αἰγαίου πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας καὶ ἐξυπηρετούσας σημαντικῶς τὴν ἐπίτευξιν τῶν ἐπιδιωκτέων ἀντικειμενικῶν σκοπῶν. Ἅπασαι αἱ λοιπαὶ κοιλάδες, τῆς βορείου καὶ δὴ τῆς νοτίου ὀροσειρᾶς, δυσχεραίνουσι σπουδαίως τὰς ἐπιχειρήσεις καὶ καθιστῶσι τοὺς ἀγῶνας οὐχὶ μόνον ὀρεινούς, ἀλλὰ κατ' ἐξοχὴν λίαν ἐπιπόνους.

Τὰ ὕδατα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ὑπὸ ἔποψιν ἐπαρκείας (πρὸς πόσιν καὶ ἐν γένει χρῆσιν) διὰ τὰ ἐπιχειροῦντα στρατεύματα εἶναι ἀφθονώτατα καθ' ὅλας τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους. Ἐκτὸς τῶν ποταμῶν καὶ τῶν λιμνῶν, ὑπάρχει καὶ εἰς τοὺς κατῳκημένους τόπους, ὡς καὶ κατὰ μῆκος πασῶν τῶν συγκοινωνιῶν τῶν διατρεχουσῶν τὴν χώραν, ἀπειρία φρεάτων καὶ κρηνῶν. Ἕνεκα θρησκευτικοῦ λόγου δὲν δύναται νὰ νοηθῇ συγκοινωνία ἐν τῇ ὀθωμανικῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἄνευ ποσίμου ὕδατος πρὸς κοινὴν χρῆσιν, θεωρουμένην ὡς τὴν μεγαλυτέραν ἀγαθοεργὸν πρᾶξιν. Ἀλλ' οἱ ποταμοὶ ὅσον ἀφορᾷ τὴν κίνησιν ἐπιχειροῦντος στρατεύματος παρεμβάλλουσι πάντοτε σοβαρὸν ἐμπόδιον λόγῳ τοῦ μὴ πλωτοῦ αὐτῶν καὶ τῆς ἐλλείψεως συγκοινωνιῶν δι' αὐτῶν. Αἱ ὑπάρχουσαι γέφυραι εἶναι ἐλάχισται καὶ ἀκατάλληλοι διὰ τὴν διέλευσιν βαρέων ὀχημάτων ἐν γένει. Ἡ τοιαύτη ὅμως κατάστασις, καίπερ δυσχεραίνουσα συνήθως τὰς ἐπιχειρήσεις, ἔστιν ὅτε κατὰ τοὺς ἀγῶνας, δύναται νὰ φανῇ ἐπωφελής, οἷον κατὰ τὴν ἀσφάλειαν τοῦ πλευροῦ τοῦ στρατοῦ ἢ ὅταν ἐπιθυμῶμεν νὰ δυσχεράνωμεν ἐχθρικὴν ἐπιθετικὴν ἐνέργειαν (οἷον ὁ Σαγγάριος κατὰ τὸν Σεπτέμβριον 1921).

Σχετικῶς μὲ τὰς συγκοινωνίας, αἵτινες δύναται νὰ λεχθῇ ὅτι ρυθμίζουσι τὰς ἐπιχειρήσεις καθόλου, παρατηροῦμεν ὅτι διὰ τοῦ συγκοινωνιακοῦ προγράμματος, οὗ ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις συστηματικῶς ἐπιδιώκει ἤδη ἀπὸ ἐτῶν τὴν ἐφαρμογήν, σημαντικώτατα ἐνισχύεται ὁ κατέχων τὴν Μικρὰν Ἀσίαν τουρκικὸς στρατός, δυνάμενος ἀπὸ τῆς κεντρικῆς Μικρᾶς Ἀσίας ν' ἀχθῇ ταχύτατα πρὸς πᾶσαν κατεύθυνσιν, εἴτε πρὸς τὸ Κουρδιστὰν καὶ τὴν Μεσοποταμίαν (πρὸς Α.), εἴτε πρὸς τὴν Ἀρμενίαν καὶ τὸν Καύκασον (πρὸς ΒΑ.), εἴτε πρὸς τὸν Εὔξεινον (πρὸς Β.), τὴν Προποντίδα καὶ τὸ Αἰγαῖον (πρὸς Δ.) καὶ τὴν Μεσόγειον (πρὸς Ν.), εἴτε πρὸς τὴν Συρίαν (πρὸς τὰ ΝΑ.), χρησιμοποιῶν πολλαπλᾶς σιδηροδρομικὰς γραμμὰς καὶ ὁδεύσεις.

Ἐν τῇ χερσονήσῳ ὑπάρχει τὸ κεντρικὸν ὑψίπεδον τῆς Ἀνατολίας ἐν γένει, ἀφ' οὗ ἐκτείνονται πρὸς τὰς παραλίας, κατὰ πᾶσαν ἔννοιαν κατευθύνσεως, κοιλάδες διάφοροι, δι' ὧν διανοίγονται ὁδεύσεις πρὸς τὴν κεντρικὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Ἀλλ' αἱ κοιλάδες αὗται εἶναι στεναί, προσφερόμεναι ὡς ἄριστα πρὸς ἄμυναν. Στρατὸς ἐπιχειρῶν ἀπὸ τῶν παραλίων πρὸς τὴν Ἀνατολίαν θὰ διέλθῃ ἀνερχόμενος διὰ στενῶν ἐπιμήκων κοιλάδων, ἔνθα εὐνοεῖται ἡ ἄμυνα, καὶ ἀναγκαίως θὰ ὑποστῇ μεγάλην φθορὰν προελαύνων, πρὶν ἢ προφθάσῃ νὰ εἰσδύσῃ εἰς τὸ ὑψίπεδον τῆς Ἀνατολίας.

Ἡ Μικρὰ Ἀσία γενικῶς, ὡς θέατρον πολέμου, ὑπὸ στρατηγικὴν ἔποψιν ἐξεταζομένη, παρ' ὅλους τοὺς ἐκ τῆς ἐπιδράσεως τῶν γεωγραφικῶν στοιχείων προερχομένους περιορισμούς, δύναται, ἀναλόγως τοῦ ἐπιδιωκομένου ἀντικειμενικοῦ σκοποῦ, νὰ παρουσιάσῃ κατάλληλα θέατρα ἐπιχειρήσεων κατὰ πάσας τὰς διευθύνσεις καὶ εἰς ἅπασαν τὴν ἔκτασιν αὐτῆς, ἐντὸς τῶν ὁποίων ἡ κίνησις, ἡ στάθμευσις καὶ ἡ διατροφὴ τῶν ἐπιχειρούντων στρατευμάτων νὰ ᾖ δυνατή. Προφανῶς ὁ καθορισμὸς τούτων δὲν εἶναι αὐθαίρετος, ἀλλ' ἐξαρτᾶται πάντοτε ἀπὸ τοῦ τμήματος τῆς παραλίας, ὅπου θὰ ἐπιτύχῃ ἡ ἀπόβασις, ἀπὸ τοῦ τρόπου τῆς προελάσεως ἀπὸ τῆς βάσεως ταύτης τῶν στρατευμάτων πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν καὶ ἐν γένει ἀπὸ τὴν καθόλου πορείαν καὶ κατεύθυνσιν τῶν ἐπιχειρήσεων πρὸς τὸ ἐσωτερικόν.

Αἱ ἐπιχειρήσεις, γενικῶς ἐξεταζόμεναι, ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ παρουσιάζονται δυσχερεῖς καὶ μεταπίπτουσι πολλάκις ἀπὸ πεδινὰς εἰς ὀρεινὰς καὶ τἀνάπαλιν. Ἑπομένως, ὡς εὐνόητον καθίσταται, ἀπαραίτητον ἡ ὀργανικὴ σύνθεσις τῶν ἐπιχειρούντων στρατευμάτων νὰ εἶναι τοιαύτη, ὥστε ν' ἀντεπεξέρχωνται ταῦτα εὐχερῶς καὶ ἐπιτυχῶς κατὰ τὰς διαφόρους φάσεις τοῦ ἀγῶνος.

Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

—[ΟΙΚΟΝ. ΓΕΩΓΡ.] Βλ. λ. *Τουρκία*.

—[ΠΟΛΙΤ. ΓΕΩΓΡ.] Μετὰ τὴν διοικητικὴν ἀναργάνωσιν τῆς Τουρκίας, ἡ Μικρὰ Ἀσία διῃρέθη εἰς γενικὰς διοικήσεις (ἐγιαλέτια κατ' ἀρχὰς καὶ κατόπιν βιλαγέτια), διοικήσεις (σαντζάκια) καὶ ὑποδιοικήσεις (καζάδες), τῶν ὁποίων πολλαὶ διετήρησαν τὰς ὀνομασίας τῶν παλαιῶν ἐκείνων Τούρκων ἢ Τουρκομάνων δυναστῶν. Γενικαὶ διοικήσεις ἦσαν αἱ: τοῦ *Ἀϊδινίου* (ἢ Σμύρνης) (ἐπὶ τῆς Λυδίας, Ἰωνίας, Καρίας καὶ μικροῦ μέρους τῆς δυτικῆς Λυκίας), *Ἰκονίου* (ἐπὶ τῆς Λυκίας, Πισιδίας, Παμφυλίας, Ἰσαυρίας), Λυκαονίας), *Ἀδάνων* (Κιλικίας), *Ἀγκύρας* (Γαλατίας, μέρους τῆς ἀν. Φρυγίας καὶ Καππαδοκίας, *Σεβαστείας* (Καππαδοκίας), *Τραπεζοῦντος* (Πόντου), *Προύσης* (Φρυγίας καὶ Μυσίας), *Κασταμονῆς* (Παφλαγονίας καὶ Βιθυνίας), πρὸς δὲ καὶ αἱ ἀνεξαρτήτως ἐκ Κωνσταντινουπόλεως διοικούμεναι διοικήσεις *Νικομηδείας* ἢ *Ἰζμὶτ* (Βιθυνίας) καὶ *Δαρδανελλίων* ἢ *Μπίγα* (Τρωάς).

Μετὰ τὴν ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ κεμαλικοῦ καθεστῶτος γενομένην τροποποίησιν τῆς διοικητικῆς διαιρέσεως τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, αὕτη ἀποτελεῖται ἐκ τῶν ἑξῆς νομῶν κατ' ἀλφαβητικὴν τάξιν: *Ἀδάνων*, *Ἀϊδίν*, *Ἄκ-σαράϊ*, *Ἀμασείας*, *Ἄνκαρα*, *Ἀντάλια (Ἀτταλείας)*, *Ἀφιὸν - Καραχισάρ*, *Γιοζγάτ*, *Γκιουμουσχανέ*, *Δενιζλί*, *Δζεμπέλι-Μπερεκέτ*, *Ἐσκὶ-σεχίρ*, *Ζουγγουλντάκ*, *Ἴτσ-ἔλ*, *Καϊσερι (Καισαρείας)*, *Κασταμούνι Κερασούντ*, *Κιουτάχειας*, *Κὶρ-Σεχίρ*, *Κοδζᾶ-ἐλὶ (Νικομηδείας)*, *Κόνια (Ἰκονίου)*, *Μάγνισα (Μαγνησίας)*, *Μερσίν*, *Μούγλα*, *Μπαλὶ-κεσίρ*, *Μπιλετζίκ*, *Μπολοῦ*, *Μπουρντούρ*, *Νίγδε*, *Ὀρντοῦ*, *Προύσης (Μπροῦσα)*, *Ρίζε (Ριζοῦντος)*, *Σαμσούν*, *Σινώπ*, *Σιβάζ*, *Σμύρνης (Ἰζμίρ)*, *Σπάρτης (Ἰζπάρτα)*, *Τοκάτ*, *Τραπεζοῦντος*, *Τσανὰκ-καλὲ (Δαρδανελλίων)*, *Τσάνκιρι (Γαγγρῶν)*, *Τσόρουμ*. Οἱ νομοὶ οὗτοι ἀποτελοῦσι τὸ μᾶλλον κατῳκημένον μέρος τῆς σημερινῆς Τουρκίας (βλ. καὶ λ. *Τουρκία*).

Ν. Μ.

— [ΑΡΧ. ΓΕΩΓΡ.] Κατὰ τὴν ἀρχαίαν ἐποχὴν ἡ Μικρὰ Ἀσία περιελάμβανε τὰς ἑξῆς χώρας: τὸν *Πόντον*, τὴν *Παφλαγονίαν* καὶ τὴν *Βιθυνίαν* πρὸς Β., τὴν *Μυσίαν*, *Λυδίαν* καὶ *Καρίαν* πρὸς Δ., τὴν *Λυκίαν*, *Πισιδίαν*, *Παμφυλίαν* καὶ *Κιλικίαν* πρὸς Ν.. καὶ τὴν *Φρυγίαν*, *Καβαλίδα* (τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων), *Ἰσαυρίαν*, *Λυκαονίαν*, *Γαλατίαν* καὶ *Καππαδοκίαν* ἐν τῷ κέντρῳ.

Ἐκ τούτων ὁ *Πόντος* (ὀνομασία πολιτικὴ μᾶλλον ἢ γεωγραφική) ἔλαβε τὸ ὄνομα τοῦτο κατὰ τοὺς μετὰ τὸν Μέγαν Ἀλέξανδρον χρόνους, καλούμενος προηγουμένως *Καππαδοκία ἡ πρὸς Πόντῳ*. Κυρίως ἔγινε γνωστὸς ἀπὸ Μιθριδάτου τοῦ ΣΤ' τοῦ Εὐπάτορος, ὅστις ἵδρυσεν ἐκεῖ κράτος ἰσχυρόν, διαιρεθὲν κατόπιν εἰς τρία, τὸ δυτικόν, ἤτοι τὸν *Γαλατικὸν Πόντον*, οὕτως ὀνομασθέντα ἀπὸ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Γαλατίας Δηϊοτάρου, τὸ μέσον, ἐκτεινόμενον ἀπὸ τοῦ Ἴριδος (Γεσὶλ - Ἰρμὰκ) μέχρι τοῦ Φάσιος, δοθὲν ὑπὸ τῶν Ρωμαίων (Ἀντωνίου) εἰς τὸν ἔγγονον τοῦ Μιθριδάτου Πολέμωνα καὶ ὀνομασθὲν ἐκ τούτου *Πόντος Πολεμωνιακός*, καὶ τὸ ἀνατολικόν, δοθὲν εἰς τὸν Ἀρχέλαον τῆς Καππαδοκίας καὶ ἀποκληθὲν ὡς ἐκ τούτου *Πόντος Καππαδοκικός*. Ὁ ὅλος Πόντος περιλαμβάνεται μεταξὺ τοῦ Εὐξείνου καὶ τῆς Κολχίδος πρὸς Β., τῆς Μικρᾶς Ἀρμενίας πρὸς Α., τῆς Παφλαγονίας πρὸς Δ. καὶ τῆς Καππαδοκίας πρὸς Ν. Ἡ *Παφλαγονία* εἶχε πρὸς Β. τὸν Εὔξεινον, χωριζομένη ἀπὸ τοῦ Πόντου διὰ τοῦ Ἅλυος, ἐξετείνετο δὲ μέχρι τῆς Βιθυνίας, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἐχωρίζετο διὰ τοῦ ποταμοῦ Παρθενίου καὶ εἶχε πρὸς Ν. τὴν Γαλατίαν. Ἡ *Βιθυνία* εἶχε πρὸς Δ. τὴν Μυσίαν, πρὸς Β. τὸν Εὔξεινον καὶ τὴν Προποντίδα καὶ πρὸς Ν. τὴν Γαλατίαν καὶ τὴν Ἐπίκτητον Φρυγίαν. Ἡ *Μυσία* ἐξετείνετο Δ. τῆς Βιθυνίας, χωριζομένη ἀπ' αὐτῆς διὰ τοῦ Ρυνδάκου ποταμοῦ, ἔχουσα δὲ πρὸς Β. τὴν Προποντίδα καὶ τὸν Ἑλλήσποντον, πρὸς Δ. τὸ Αἰγαῖον, πρὸς Ν. Κάϊκον ποταμὸν καὶ τὸ ὄρος Τῆμνον. Ἀλλὰ τὸ πρὸς τὸν Ἑλλήσποντον μέχρι Βιθυνίας τμῆμα αὐτῆς ἐκαλεῖτο καὶ *Φρυγία ἡ κατὰ τὸν Ἑλλήσποντον* ἢ *Μικρὰ Φρυγία* (Phrygia Minor). Πρὸς τὰ Δ. τῆς Μυσίας ἦτο ἡ *Τρωάς*, ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ τῆς Προποντίδος πρὸς Β. μέχρι τοῦ Ἀδραμυττηνοῦ κόλπου πρὸς Ν. Ἐπὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων Μυσία ἐκαλεῖτο ἡ μεταξὺ Τρωάδος, Λυδίας, Φρυγίας καὶ Βιθυνίας χώρα, τὸ δὲ νότιον αὐτῆς μέρος ἀπετέλει ἡ *Τευθρανία* μὲ πρωτεύουσαν τὴν Πέργαμον. Εἰς δὲ τὰ παράλια τῆς Μυσίας πρὸς τὸ Αἰγαῖον ἐξετείνετο ἡ *Αἰολὶς* μὲ τὰς 12 αἰολικὰς ἀποικίας. Ἡ *Λυδία*, ἀρχικῶς ὀνομαζομένη *Μαιονία*, δὲν εἶχε καθωρισμένα ὅρια. Ὡρίζετο πρὸς Δ. ὑπὸ τοῦ Αἰγαίου, πρὸς Β. ὑπὸ τῆς Μυσίας, πρὸς Α. ὑπὸ τῆς Φρυγίας καὶ πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Καρίας. Τὸ ἀνατολικὸν αὐτῆς μέρος, διαρρεόμενον ὑπὸ τοῦ Ἕρμου, ἐκαλεῖτο *Κατακεκαυμένη*, ὡς ἡφαιστειῶδες. Εἰς τὰ παράλιά της πρὸς τὸ Αἰγαῖον ἐξετείνετο ἡ *Ἰωνία* μὲ τὴν ἰωνικὴν δωδεκάπολιν, εἰς ἣν προσετέθη κατόπιν καὶ ἡ Σμύρνη, οὖσα πρότερον αἰολική. Ἡ *Φρυγία* ὡρίζετο πρὸς Β. ὑπὸ τῆς Βιθυνίας, πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Μυσίας, τῆς Λυδίας καὶ τῆς Καρίας, πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Καβαλίδος καὶ τῆς Πισιδίας, πρὸς Α. ὑπὸ τῆς Γαλατίας καὶ τῆς Λυκαονίας. Αὕτη ἦτο ἡ *Μεγάλη Φρυγία*, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν ἀνωτέρω ἀναφερομένην *Μικρὰν* ἢ *καθ' Ἑλλήσποντον Φρυγίαν*. Τὸ βόρειον μέρος τῆς Μεγάλης ταύτης Φρυγίας, ἑνωθὲν ὑπὸ τῶν Ρωμαίων μὲ τὸ βασίλειον τῆς Περγάμου, ὠνομάσθη *Ἐπίκτητος Φρυγία*. Τὰ νότια αὐτῆς διαμερίσματα, ὄντα ὀρεινά, ὠνομάζοντο *Παρώρειος* ἢ *Πισιδικὴ Φρυγία*. Ἡ *Καρία*, ἀποτελοῦσα τὴν ΝΔ. γωνίαν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, εἶχε πρὸς Δ. καὶ Ν. τὸ Αἰγαῖον πέλαγος, πρὸς Β. τὴν Λυδίαν καὶ πρὸς Α. τὴν Λυκίαν, τὴν Καβαλίδα καὶ τὴν Φρυγίαν. Τὸ πρὸς τὴν Λυδίαν σύνορόν της ἦτο κατά τινας μὲν ὁ Μαίανδρος, κατ' ἄλλους δὲ τὸ ὄρος Μεσωγίς. Ἐξετείνετο δὲ μέχρι τῆς ἀπέναντι τῆς Ρόδου παραλίας, καλουμένης *Ροδίας Περαίας*. Τὰ ἀνατολικά της ὅρια, μὴ ὄντα σαφῶς διαγεγραμμένα, ἀπετελοῦντο κατὰ προσέγγισιν ἐκ γραμμῆς διηκούσης ἀπὸ τοῦ ἄνω Μαιάνδρου πρὸς τὸ ὄρος Κάδμον καὶ πρὸς τὸν κόλπον τῆς Μάκρης. Ἀπὸ τῆς παρακειμένης Λυκίας ἡ Καρία ἐχωρίζετο διὰ τοῦ ποταμοῦ Ἰνδοῦ. Εἰς τὰ ΝΔ. της παράλια (καὶ ἐπὶ τῶν ἀπέναντι νήσων) ἦσαν αἱ δωρικαὶ ἀποικίαι ἀποτελοῦσαι τὴν *Δωρίδα*. Ἡ *Λυκία* κατεῖχε τὰ Ν. τῆς μικρασιατικῆς χερσονήσου, μεταξὺ τοῦ Καρπαθίου καὶ τοῦ Παμφυλίου πελάγους. Ὡρίζετο πρὸς Β. ὑπὸ γραμμῆς ἐκτεινομένης ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Μάκρης μέχρι τῆς Ἀτταλείας καὶ χωριζούσης αὐτὴν ἀπὸ τῆς Καρίας, τῆς Καβαλίδος καὶ τῆς *Πισιδίας*. Ἡ τελευταία αὕτη ἦτο χώρα τραχεῖα, περιλαμβάνουσα τὸν Δ. Ταῦρον. Ἀποκεκλεισμένη κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους, ἔγινε γνωστοτέρα μόνον ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου καὶ κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους. Ἔκειτο μεταξὺ τῆς Λυκίας καὶ Παμφυλίας, ἔχουσα πρὸς Α. τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Λυκαονίαν, πρὸς Β. τὴν Φρυγίαν καὶ πρὸς Δ. τὴν Καβαλίδα. Συνέχεια τῆς Πισιδίας πρὸς Ν., δηλαδὴ πρὸς τὴν θάλασσαν, ἦτο ἡ *Παμφυλία*, ἐκτεινομένη μεταξὺ τῶν δύο νοτιωτέρων ἀκρωτηρίων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, τοῦ Ἀνεμουρίου πρὸς Α. καὶ τῆς Ἱερᾶς Ἄκρας πρὸς Δ., μεταξὺ τῶν ὁποίων σχηματίζεται

Digitized by Google

ὁ Παμφύλιος κόλπος. Ἐχωρίζετο δὲ ἀπὸ τῆς Κιλικίας διὰ τοῦ ποταμοῦ Μέλανος. Ἡ *Καβαλὶς* ἔκειτο πρὸς Β. τῆς Λυκίας, Δ. τῆς Πισιδίας, Ν. τῆς Φρυγίας καὶ Α. τῆς Καρίας. Ἡ *Ἰσαυρία* εἶχε πρὸς Α. τὴν Λυκαονίαν, πρὸς Β. τὴν Φρυγίαν, πρὸς Δ. τὴν Πισιδίαν καὶ πρὸς Ν. τὴν Κιλικίαν, Εἶναι χώρα τραχεῖα, ὀρεινὴ καὶ ξηρά. Ἡ *Λυκαονία* εὑρίσκετο εἰς τὸ νότιον μέρος της κεντρικῆς μικρασιατικῆς ἐρήμου. Ὑποταχθεῖσα εἰς τοὺς Ρωμαίους τῷ 25 π. Χ., ἀπετέλεσε μέρος τῆς ρωμαϊκῆς ἐπαρχίας Γαλατίας, ἐκτεινομένης καὶ πρὸς Β. Πρὸς Α. συνώρευε μὲ τὴν Καππαδοκίαν, πρὸς Δ. μὲ τὴν Φρυγίαν, πρὸς ΝΑ. μὲ τὴν Ἰσαυρίαν καὶ πρὸς Ν. μὲ τὴν Κιλικίαν. Ἡ *Γαλατία*, κειμένη πρὸς Β. τῆς Λυκαονίας καὶ τῆς Καππαδοκίας, πρὸς Α. της Μεγάλης Φρυγίας, πρὸς Δ. τοῦ Πόντου καὶ πρὸς Ν. τῆς Βιθυνίας καὶ Παφλαγονίας, ἀπετέλεσεν ἰδίαν χώραν ἀπὸ τοῦ Γ′ π. Χ. αἰῶνος, ὅτε διεσκορπισμένα φῦλα Κελτῶν ἐκλήθησαν ἐκ Θρᾴκης εἰς Μικρὰν Ἀσίαν ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων τῆς Βιθυνίας. Ἀπετελέσθη δὲ ἀπὸ μέρη τῆς Βιθυνίας, τοῦ Πόντου, τῆς Καππαδοκίας καὶ ἰδίως τῆς Β. Φρυγίας. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς, ὀνομασθέντες Γαλάται ἢ Γαλλογραικοί, ὡς ἐκ τῆς ἀναμείξεως αὐτῶν μετὰ τῶν ἐγχωρίων ἐξηλληνισμένων ἤδη πληθυσμῶν, διεξήγαγον μακροὺς ἀγῶνας μέχρι τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, ὅτε ἡ Γαλατία ἔγινε ρωμαϊκὴ ἐπαρχία τῷ 25 π. Χ. Ἀνατολικωτάτη χώρα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἦτο ἡ *Καππαδοκία*, ἐκτεινομένη μέχρι τῆς ἐρήμου τῆς Λυκαονίας περὶ τὸ ὄρος Ἀργαῖον. Πρὸ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου ἡ χώρα αὕτη περιελάμβανε καὶ τὸν Πόντον. Μετὰ ταῦτα ἀπετέλεσεν ἰδίαν χώραν, τῷ δὲ 17 π. Χ. ἔγινε καὶ αὐτὴ ρωμαϊκὴ ἐπαρχία. Εἶχε πρὸς Β. τὸν Πόντον, πρὸς Ν. τὴν Κιλικίαν, πρὸς Δ. τὴν Λυκαονίαν καὶ πρὸς Α. τὸν ἄνω ροῦν τοῦ Εὐφράτου, ὅστις ἐχώριζεν αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας. Τὸ νότιον μέρος αὐτῆς, τὸ περιλαμβάνον τὰς διακλαδώσεις τοῦ Ταύρου, ἐκαλεῖτο *Καταονία*. Τέλος ἡ *Κιλικία*, τὸ πρὸς τὰ ΝΑ. τῆς Μικρᾶς Ἀσίας τμῆμα, ἐπέσυρεν, ὡς ἐκ τῆς γονιμότητός της, ἐνωρίτατα τὴν προσοχὴν τῶν Ἑλλήνων, οἵτινες ἐγκατεστάθησαν ἐκεῖ ὡς ἄποικοι. Ἀλλ' ὁ ἑλληνισμὸς ἐπεκράτησε καὶ ἐνταῦθα μόνον κατὰ τοὺς ἀλεξανδρινοὺς καὶ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους. Ἡ χώρα αὕτη ἐξετείνετο ἀπὸ τοῦ Παμφυλίου κόλπου μέχρι τοῦ ὄρους Ἀμανοῦ πρὸς Α., ὅστις ἀπετέλει τὸ πρὸς τὴν *Κομαγηνὴν* ὅριόν της, Β. δὲ μέχρι τῆς ὑψηλῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ταύρου, ὅστις ἐχώριζεν αὐτὴν ἀπὸ τῆς Λυκαονίας καὶ τῆς Κιλικίας. Τὸ δυτικὸν αὐτῆς τμῆμα, εἰς τὸ ὁποῖον εἰσέδυον αἱ ἀποφύσεις τοῦ Ταύρου, ἦτο βραχῶδες καὶ ὡς ἐκ τούτου ὠνομάζετο *Τραχεῖα Κιλικία* ἢ *Τραχειῶτις*, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ ἀνατολικόν, ἀποτελοῦν τὴν *Πεδιάδα Κιλικίαν*. Πρὸς Α. ὁ Ταῦρος διατέμνεται ὑπὸ τῶν Κιλικίων πυλῶν, τοῦ στενοῦ τῶν Λαράνδων καὶ μιᾶς ἄλλης μέσης διόδου.

Ἐπὶ Βυζαντινῶν ἡ Μικρὰ Ἀσία διῃρεῖτο διοικητικῶς εἰς θέματα, τὰ ὁποῖα ἦσαν κυρίως στρατιωτικαὶ διοικήσεις (σώματα), ἐπωνυμούμενα ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τῆς προελεύσεως τῶν ἐν αὐταῖς στρατιωτικῶν σωμάτων. Τὰ θέματα ταῦτα ἦσαν τὰ ἑξῆς κατ' ἀλφαβητικὴν τάξιν: *Ἀνατολικόν, Ἀρμενιακόν, Βουκελλαρίων, Θρᾳκησίων, Καππαδοκίας Κιβυρραιωτῶν, Κολωνείας, Λυκάνδου, Ὀπτιμάτου, Ὀψικίου, Παφλαγονίας, Σάμου* (περιλαμβάνον καὶ τὴν Ἰωνίαν), *Σεβαστείας, Σελευκείας, Χαλδίας, Χαρσιανόν.*

Κατὰ τοὺς πρώτους χρόνους τῆς ἐπικρατήσεως τῶν Ὀσμανιδῶν Τούρκων ἡ Μικρὰ Ἀσία διῃρεῖτο εἰς ἐπαρχίας (τοπαρχίας ἢ σατραπείας), λαβούσας τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἐκ τῶν τοπαρχῶν, οἵτινες ἐκυβέρνων αὐτὰς κατὰ τοὺς χρόνους τῆς ἀποσυνθέθέσεως τοῦ μεγάλου ἀνατολικοῦ κράτους τῶν Σελτζουκιδῶν Τούρκων, ἤτοι περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΓ′ αἰῶνος, καὶ ἀνεκηρύχθησαν ἀνεξάρτητοι μετὰ τὸν θάνατον Ἀλαεδδὶν τοῦ Β′, τελευταίου Σελτζουκίδου σουλτάνου. Οὗτοι ἦσαν ὁ *Καραμὰν* (ἐξ οὗ ὠνομάσθη ἡ Καραμανία), κυριαρχήσας μέρους τῆς Κιλικίας καὶ Φρυγίας μέχρι Φιλαδελφείας, ἔχων δὲ ὡς πρωτεύουσαν τὸ Ἰκόνιον, ὁ *Σαροὺ-Χὰν* καὶ ὁ *Ἀϊδὶν* ἐν τῇ Λυδίᾳ καὶ Μαιονίᾳ μέχρι Σμύρνης, ὁ *Μεντεσὲ* ἐν τῇ Καρίᾳ μέχρις Ἐφέσου, Πρυήνης καὶ Μαγνησίας, ὁ *Τεκκὲ* ἐν Λυδίᾳ καὶ Παμφυλίᾳ, ὁ *Χαμὶτ* (ἐξ οὗ ἡ χώρα Χαμὶτ-ἀμπὰτ) ἐν Πισιδίᾳ καὶ Ἰσαυρίᾳ, ὁ *Καράσι* ἐν Μυσίᾳ. Εἰς τὴν Παφλαγονίαν καὶ τὴν ἀνατολικὴν Βιθυνίαν μέχρι Κασταμονῆς καὶ Σινώπης διετηρήθη ἐφ' ἱκανὸν ὁ τελευταῖος ἀπόγονος τῶν Σελτζουκιδῶν.

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— [ΕΘΝΟΛ.] Προεκτεινομένη ἀπὸ τῶν προϊστορικῶν χρόνων ὑπὸ τὴν σημερινὴν αὐτῆς μορφὴν ὡς εἶδος γεφύρας μεταξὺ Εὐρώπης καὶ τῆς κυρίως Ἀσιατικῆς ἠπείρου, ἡ Μικρὰ Ἀσία ὑπῆρξεν ἀνέκαθεν ὁδὸς διαβάσεως λαῶν μετακινουμένων ἐξ Εὐρώπης εἰς Ἀσίαν καὶ τἀνάπαλιν. Ἂν καὶ ἐκτεθειμένη ἀνέκαθεν εἰς ἐπιδρομὰς τῶν ἐξ Ἀσίας λαῶν, ὑπέστη οὐχ ἧττον λίαν ἐνωρὶς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἑλληνισμοῦ διὰ τῶν ἑλληνικῶν ἀποικιῶν, αἵτινες ἐγκατεστάθησαν εἰς τὰ παράλια. Ἐξελληνισθεῖσα δὲ τελείως ἀπὸ τῆς ἐκστρατείας τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου καὶ ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ Χριστιανισμοῦ καὶ τοῦ βυζαντινοῦ πολιτισμοῦ, ὑπέστη κατόπιν τὰς εἰσβολὰς τῶν ἐξισλαμισθέντων Τούρκων τῆς Ἀσίας, οἵτινες, ὀλίγοι κατ' ἀρχάς, ἐδημιούργησαν συμπαγεῖς μάζας μουσουλμανικῶν πληθυσμῶν διὰ τῶν βιαίων ἐξισλαμισμῶν καὶ τῆς ἐξοντώσεως τῶν ἐντοπίων χριστιανικῶν στοιχείων. Καίτοι δεχθέντα ὅμως τὸν ἰσλαμισμόν, πολλὰ τῶν ἐντοπίων στοιχείων δὲν ἀπέβαλον τὸν ἐθνικόν των χαρακτῆρα, οὕτως ὥστε μεταξὺ τῶν σήμερον σχεδὸν ἀποκλειστικῶς οἰκούντων τὴν κυρίως Μικρὰν Ἀσίαν μουσουλμανικῶν πληθυσμῶν οἱ κυρίως Τοῦρκοι δὲν ἀποτελοῦσι τὴν πλειονότητα. Ἐν Καππαδοκίᾳ οἱ λεγόμενοι Τοῦρκοι διατηροῦσι τὸν ἀρχαῖον τύπον τῶν ἐντοπίων Καππαδόκων, εἰς δὲ τὴν Γαλατίαν καὶ κυρίως εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Ἀγκύρας ἀνευρίσκεται πολλάκις ἡ ἀρχικὴ γαλατικὴ φυσιογνωμία. Εἰς τὰ Δ. καὶ ΝΔ. οἱ Ζεϊμπέκαι εἶναι κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἀπόγονοι τῶν ἀρχαίων Καρῶν καὶ Λυκίων. Ἐπίσης εἰς τὰ παράλια τοῦ Εὐξείνου οἱ λεγόμενοι Τοῦρκοι εἶναι οἱ ἐξισλαμισθέντες ἀρχαῖοι πληθυσμοὶ τῆς Βιθυνίας, τῆς Παφλαγονίας καὶ τοῦ Πόντου. Δὲν ὑπάρχει δὲ ἀμφιβολία ὅτι πολλοὶ τῶν λεγομένων Τούρκων καθ' ὅλην τὴν δυτικὴν Μικρὰν Ἀσίαν εἶναι καθαροὶ ἐξισλαμισθέντες Ἕλληνες, ἐνῷ εἰς τὴν ἀνατολικὴν πλεῖστοι ὅσοι εἶναι οἱ ἐξισλαμισθέντες Ἀρμένιοι. Εἰς τοὺς ἀρχαίους τούτους ἐντοπίους ἐκμουσουλμανισθέντας πληθυσμοὺς προσετέθησαν ἐξ ὑστέρων, μετὰ τὴν τουρκικὴν κατάκτησιν, καὶ ἄλλοι, ἐλθόντες ἔξωθεν, Τάταροι, Γεωργιανοὶ (Γκιουρτζῆδες), Λαζοί, Κοζάκοι, Ἀλβανοὶ (Μουσουλμᾶνοι), Κιρκάσιοι, Πομάκοι (ἐξισλαμισθέντες Θρᾷκες) καὶ ἄλλοι, οὕτως ὥστε ὁ σημερινὸς πληθυσμὸς τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ν' ἀποτελῇ ἐθνολογικῶς ἀκαθόριστον πανσπερμίαν.

Ἐκτὸς τῶν ὀλίγων Ὀσμανλήδων Τούρκων, ὑπάρχουσιν οἱ Τουρκομᾶνοι, ὄντες καὶ οὗτοι Τοῦρκοι, ἐλθόντες ἐκ τοῦ Τουρκεστάν. Μογγολικοῦ τύπου φαίνεται καὶ ὁ παράδοξος λαὸς τῶν Κυζυλμπάσηδων (Ἐρυθροκέφαλοι ἢ Ἐρυθῖνοι), οἵτινες ὀνομάζονται καὶ Ταχτατζῆδες (πριονισταί), ὄντες διεσκορπισμένοι κυρίως εἰς τὴν Γαλατίαν καὶ Παφλαγονίαν. Ὑπό τινων θεωροῦνται ὡς Μουσουλμᾶνοι τοῦ σιιτικοῦ δόγματος ἐλθόντες ἐκ Περσίας. Παραδόξως ὅμως ἔχουσιν ἤθη καὶ ἔθιμα προσεγγίζοντα αὐτοὺς πρὸς τοὺς Χριστιανοὺς καὶ ἰδιαιτέρως πρὸς τοὺς Ἕλληνας καὶ ἐμπνέουσιν ἰδιάζουσαν ἀποστροφὴν εἰς τοὺς Τούρκους. Νομαδικὴ φυλὴ μογγολικοῦ τύπου εἶναι καὶ οἱ Τσετμῆδες ἢ Τσεπνῆδες, ὀνομαζόμενοι καὶ Ταχτατζῆδες, περιφρονούμενοι δὲ καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν Τούρκων. Μεῖγμα καυκασίου καὶ μογγολικῆς φυλῆς φαίνονται οἱ Γιουρούκηδες ἢ Γιουροῦκοι (= ὁδοιποροῦντες, νομάδες). Φαίνεται ὅμως ὅτι ἡ καταγωγὴ τῶν κατὰ τόπους Γιουρούκων εἶναι διάφορος. Οἱ ἐν Λυκίᾳ θεωροῦνται συγγενεῖς πρὸς τοὺς Ἀτσιγγάνους, ἐνῷ τὰ ἐπὶ τοῦ Λάτμου τῆς Καρίας χωρία τῶν Γιουρούκων (ἢ Τσομακλήδων, ἤτοι ραβδοφόρων) ὀνομάζονται ὑπὸ τῶν Τούρκων Γιουνάνκιοϊ (ἑλληνοχώρια). Γιουροῦκοι ὑπάρχουσι καὶ εἰς τὴν

Digitized by Google

περιοχὴν τοῦ Ἰκονίου. Ὁμιλοῦσι τὴν τουρκικὴν καὶ ἐπαγγέλλονται τὸν Μουσουλμᾶνον, ἀλλὰ δὲν ἔχουσιν οὔτε τζαμία οὔτε ἰμάμας. Ἄλλη φυλὴ τουρκοφανὴς εἶναι οἱ Ἀφσάροι, ἐλθόντες ἐκ τῆς ΒΔ. Περσίας καὶ κατοικοῦντες εἰς τὰς κοιλάδας τοῦ Ἀντιταύρου. Οἱ Τονιαλῆδες, ἤτοι οἱ κάτοικοι τῆς Τόνιας (τῆς ἀρχαίας Θοανίας), κατοικοῦσιν εἰς τὸν νομὸν Τραπεζοῦντος. Εἶναι ἑλληνόφωνοι καὶ Μουσουλμᾶνοι τὸ θρήσκευμα. Οἱ Λαζοὶ ὁμιλοῦσι γλῶσσαν ὁμοίαν πρὸς τὴν γεωργιανήν, κατοικοῦσι δὲ εἰς τὸν νομὸν Λαζιστὰν καὶ εἶναι καλοὶ ναυτικοί. Οἱ Ὀφλῆδες (ἑλληνιστὶ Ὀφῖται) κατοικοῦσιν εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ ποταμοῦ Ὄφ (Ὄφεως), εἰς τὸν νομὸν Τραπεζοῦντος, δώσαντες τὸ ὄνομά των καὶ εἰς μίαν τούτου ὑποδιοίκησιν. Θεωροῦνται ἀπόγονοι τῶν Ἑλλήνων τῆς αὐτοκρατορίας τῆς Τραπεζοῦντος, ἐξισλαμισθέντες διὰ τῆς βίας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος, διατηροῦν ὅμως ἀκόμη ὀνόματα, τοπωνύμια καὶ ἔθιμα ἑλληνικὰ καὶ χριστιανικά. Εἰς μέρος τῆς Κιλικίας ὑπάρχουσι καὶ Ἄραβες. Σπουδαῖον μέρος τοῦ πληθυσμοῦ εἰς τὰς ἀνατολικὰς ἐπαρχίας εἶναι οἱ Κοῦρδοι, ἀλλὰ τὸ κυρίως Κουρδιστὰν δὲν ἀνήκει εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐγκατεστάθησαν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ οἱ σλαβικῆς καταγωγῆς Μουσουλμᾶνοι Βόσνιοι, εἰς δὲ τὰ παράλια, μετὰ τὸ 1923, πολλοὶ Τουρκοκρῆτες, ὄντες καὶ οὗτοι ἐξισλαμισθέντες Ἕλληνες.

Σημαντικὸν μέρος τοῦ μικρασιατικοῦ πληθυσμοῦ ἀπετέλουν οἱ Ἕλληνες, ἰδίᾳ εἰς τὰ παράλια, εἰς δὲ τὸ ἐσωτερικὸν καὶ οἱ Ἀρμένιοι. Ἀλλὰ μετὰ τὴν συνθήκην εἰρήνης τῆς Λωζάννης καὶ τὴν ἐπακολουθήσασαν ἀνταλλαγὴν τῶν ἑλληνικῶν καὶ τουρκικῶν πληθυσμῶν ὁλόκληρος ὁ ἑλληνικὸς πληθυσμὸς προσέφυγεν εἰς Ἑλλάδα, ἐνῷ οἱ Ἀρμένιοι ἐξωλοθρεύθησαν κατὰ τὰς διαφόρους σφαγὰς ἢ κατέφυγον καὶ οὗτοι εἰς Ἑλλάδα καὶ ἄλλας χώρας.

— [ΙΣΤΟΡ.] Λόγῳ τῆς γεωγραφικῆς αὐτῆς θέσεως ἡ Μικρὰ Ἀσία ὑπῆρξεν ἀπὸ τῶν ἱστορικῶν καὶ προϊστορικῶν ἀκόμη χρόνων τὸ θέατρον σπουδαίων γεγονότων ἐν τῇ ἐξελίξει τῶν λαῶν τῆς νοτιοδυτικῆς Ἀσίας καὶ τῆς νοτιοανατολικῆς Εὐρώπης. Ἡ ὅλη αὐτῆς διάπλασις καὶ ἡ θέσις της ἐπὶ τῶν μεγάλων πρὸς τὴν Κεντρῴαν Ἀσίαν καὶ πρὸς τὴν Ἄπω Ἀνατολὴν ὁδῶν, διὰ τῶν ὁποίων διήρχετο ἡ μεταναστευτικὴ κίνησις τῶν λαῶν, καθίστων ἀδύνατον τὴν ἵδρυσιν κράτους μεγάλου καὶ ἑνιαίου μὲ μακρὸν εἰρηνικὸν βίον. Ἀντιθέτως πρὸς τὰς πρὸς Δ. ἐσχατιὰς τῆς Εὐρώπης καὶ τὰς πρὸς Α. ἀκραίας χώρας τῆς Ἀσίας, αἱ ὁποῖαι ἔμειναν ἔξω τῆς μεγάλης κινήσεως τῆς ἱστορίας, ἡ Μικρὰ Ἀσία ὑπῆρξεν ἀνέκαθεν τὸ θέατρον τῆς ἀκμῆς καὶ παρακμῆς λαῶν πολυποικίλων καὶ πολέμων διηνεκῶν μεταξὺ στρατῶν κινουμένων καθ' ὅλας τὰς διευθύνσεις.

Φαίνεται ὡς βέβαιον ὅτι οἱ ἀρχαιότεροι ἱστορικοὶ λαοὶ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας δὲν ἀνήκουν εἰς τὴν Ἀρίαν φυλήν. Ὁ κυριώτερος τῶν λαῶν τούτων ἦσαν οἱ Χιττῖται ἢ Χεταῖοι, περὶ τῆς ἱστορίας τῶν ὁποίων ἐγνώσθησαν πολλὰ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους. Ἡ φήμη τῶν Χεταίων τούτων ἔμεινεν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ μεγάλου αὐτῶν κράτους. Εἶναι οἱ Σύριοι Καππαδόκαι τοῦ Ἡροδότου, οἱ Λευκόσυροι τοῦ Στράβωνος, τῶν ὁποίων οἱ ἀπόγονοι ἀνευρίσκονται μεταξὺ τῶν σημερινῶν κατοίκων τῆς Καππαδοκίας, τόσον τῶν Χριστιανῶν ὅσον καὶ τῶν Μουσουλμάνων, δηλαδὴ τῶν ἀπὸ τοῦ ΙΑ′ μ. Χ. αἰῶνος ἐξισλαμισθέντων ἰθαγενῶν, οἵτινες φαίνονται συγγενεῖς τῶν Ἀρμενίων ἢ τῶν Πρωτο-Ἀρμενίων καὶ Ἀρμενοειδῶν, τῶν ἀρχαιοτέρων κατοίκων τῆς ἀνατολικῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Οἱ Χεταῖοι οὗτοι σχηματίσαντες, ἐκτὸς τοῦ νοτίου (ἐν Συρίᾳ καὶ Παλαιστίνῃ), καὶ βόρειον κράτος, ἐκυριάρχησαν εἰς τὸ κετρικὸν μικρασιατικὸν ὀροπέδιον, κυρίως δὲ εἰς τὴν χώραν τοῦ Ἅλυος, κατὰ μὲν τὰς μέχρι τέλους τοῦ παρελθόντος αἰῶνος μελέτας, κατὰ τὴν περίοδον τοῦ Κ′ π. Χ. αἰῶνος, κατὰ δὲ νεωτέρας μελέτας, πολὺ παλαιότερον, ἴσως μέχρι τῆς Ι′ χιλιετηρίδος (10.000 π. Χ.). Τὸ κέντρον αὐτῶν ἦτο τὸ Μπογάζκιοϊ (Α. τῆς Ἀγκύρας), ἡ Πτερία τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων (Πτερίη, ἢ Πτερίων πόλις κατὰ τὸν Ἡρόδοτον) τὴν ὁποίαν ἐκυρίευσεν, ἐξηνδραπόδισε καὶ κατέστρεψεν ὁ βασιλεὺς τῆς Λυδίας Κροῖσος, ὅταν ἐξεστράτευσε κατὰ τοῦ Κύρου τῆς Περσίας, καὶ τὸ Γκιαούρκιοϊ (ΝΔ. τῆς Ἀγκύρας). Ἀπὸ τὸ μέρος ἐκεῖνο ἐκκινοῦσιν ἀκτινοειδεῖς ἀρχαιόταται ὁδοὶ πρὸς τὴν ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου Σινώπην, πρὸς τὸ Αἰγαῖον (Ἔφεσον), πρὸς τὴν Συρίαν, τὴν Ἀσσυρίαν ὅπου ἦτο ἡ κοιτίς των, καὶ πρὸς τὴν Περσίαν. Αἱ παράδοξοι χιττιτικαὶ ἐπιγραφαί, αἵτινες εὑρέθησαν εἰς Ἐγιούκ, Κιλίσα-Χισὰρ (Τύανα), Ἰβρίζ, Μπουλγὰρ-Μαντὲν καὶ εἰς ἄλλα χωρία καὶ πολίσματα μεταξὺ Σμύρνης καὶ Εὐφράτου δὲν ἀπεκάλυψαν ἀκόμη ὅλα τὰ μυστήριά των. Πόσον διήρκεσεν ἡ κυριαρχία τῶν Χετταίων ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστόν. Γεγονὸς εἶναι ὅτι κατὰ τὸν ΙΒ′, ΙΑ′ καὶ Ι′ π. Χ. αἰῶνα ἤρχισεν ἡ εἰσβολὴ Ἀρίων φυλῶν. Διάφοροι λαοὶ ἐκ τῆς νοτιοανατολικῆς Εὐρώπης, ἔχοντες ὡς τελευταῖον σταθμὸν τὴν Θρᾴκην, διέβησαν τὸν Βόσπορον καὶ τὸν Ἑλλήσποντον καὶ ἐξεχύθησαν πρὸς τὴν κάτω κοιλάδα τοῦ Σαγγαρίου, συγκρουσθέντες δὲ μὲ τοὺς Χεταίους τοὺς ἐνίκησαν. Πρῶτος τοιοῦτος λαὸς ἀνήκων εἰς τὴν ἀρίαν φυλὴν εἶναι οἱ Φρύγες, ἱδρύσαντες κράτος, τὸ ὁποῖον ἐξετείνετο ἀπὸ τοῦ Εὐξείνου μέχρι τοῦ Αἰγαίου. Οἱ βασιλεῖς τοῦ κράτους τούτου ἔφερον τὸ γενικὸν ὄνομα Μίδας, ὡς οἱ τῆς Αἰγύπτου ἐκαλοῦντο γενικῶς Φαραώ. Ἴχνη τῆς κυριαρχίας τῶν Φρυγῶν παρέμειναν εἰς διάφορα μνημεῖα (τάφους ἐντὸς βράχων, ἐρείπια πόλεων καὶ φρουρίων) ὡς καὶ εἰς τὰς ἀορίστους παραδόσεις, αἵτινες περιεσώθησαν διὰ τῶν Ἑλλήνων ἱστορικῶν. Ἀλλ' ἐν γένει ἡ ἱστορία τῆς φρυγικῆς κυριαρχίας παραμένει ἀκόμη σκοτεινή. Πάντως θεωρεῖται βέβαιον ὅτι οἱ Φρύγες ἦλθον εἰς ἐμπορικὴν ἐπικοινωνίαν μετὰ τῶν Ἑλλήνων, οἵτινες εἶχον ἤδη ἐμφανισθῆ εἰς τὰ παράλια, ἱδρύοντες ἐκεῖ ἀποικίας. Τὸ κράτος τῶν Φρυγῶν κατέστρεψαν οἱ ἐκ τῆς νοτίου Ρωσίας διὰ τῶν παραλίων τοῦ Καυκάσου καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐλθόντες Κιμμέριοι, λαὸς σκυθικῆς καταγωγῆς. Συγγενεῖς πρὸς τοὺς Φρύγας ἦσαν οἱ Μυσοί, ἐποικίσαντες τὴν Μυσίαν, εἰς τὰ πρὸς τὸ Αἰγαῖον παράλια τῆς ὁποίας ἱδρύθησαν αἱ ἑλληνικαὶ αἰολικαὶ ἀποικίαι. Τοὺς Κιμμερίους ἐξεδίωξαν οἱ Λυδοί, ἱδρύσαντες κράτος μὲ πρωτεύουσαν τὰς Σάρδεις καὶ ὅρια πρὸς Α. τὸν Ἅλυν. Τὰ περὶ τοῦ κράτους τούτου καὶ τῆς λυδικῆς δυναστείας ἀναφέρει ὁ Ἡρόδοτος. Ὁ ἐκδιώξας τοὺς Κιμμερίους (617 π. Χ.) Λυδὸς βασιλεὺς ἦτο ὁ Ἀλυάττης οὗτινος υἱὸς ἦτο ὁ Κροῖσος, ὑποτάξας καὶ ὅλας τὰς ἑλληνικὰς ἀποικίας τῶν παραλίων, μέρος τῶν ὁποίων καὶ τὴν Σμύρνην εἶχεν ἤδη κυριεύσει ὁ Ἀλυάττης. Πρὸ τῆς ἱδρύσεως ἰδίου κράτους οἱ Λυδοί, τοὺς ὁποίους ὁ Ἡρόδοτος παριστᾷ ὡς κοινὴν ἔχοντας τὴν καταγωγὴν πρὸς τοὺς Ἕλληνας, ἦσαν ὑπήκοοι τῶν Χεταίων, ἴσως δὲ κατόπιν καὶ τῶν Φρυγῶν. Συγχρόνως μὲ τοὺς Κιμμερίους εἶχον εἰσχωρήσει εἰς τὴν βορειοδυτικὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ λαοὶ τῆς ἀρίας φυλῆς, οἱ Τρῆρες καὶ οἱ Βιθυνοί.

Πολὺ προηγουμένως εἶχεν ἀρχίσει ἡ ἐγκατάστασις Ἑλλήνων εἰς τὰς παράλια τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Ἀλλ' ἤδη πρὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης οἱ Κᾶρες, ἐπελθόντες ἐκ τῶν νήσων, εἰσεχώρησαν εἰς τὸ ΝΔ. τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Οἱ Λύκιοι, προερχόμενοι πιθανῶς ἐκ Κρήτης, προήλασαν ἔτι περισσότερον, ἐνῷ ἄλλοι προερχόμενοι ἐκ Πελοποννήσου (Ἀρκάδες) ἔφθανον μέχρι τῆς Παμφυλίας. Αἱ κυρίως ἑλληνικαὶ ἀποικίαι ἤρχισαν νὰ ἱδρύωνται πιθανῶς πρὸ τοῦ ΙΔ′ π. Χ. αἰῶνος, ἄρα πολὺ πρὸ τοῦ Τρωϊκοῦ πολέμου, εἰς τὰ παράλια τῶν κοιλάδων τῶν τεσσάρων ποταμῶν, οἵτινες ἐκβάλλουσιν εἰς τὸ Αἰγαῖον, ἤτοι τοῦ Καΐκου, τοῦ Ἕρμου, τοῦ Καΰστρου καὶ τοῦ Μαιάνδρου. Οἱ πρῶτοι Ἕλληνες εὗρον εἰς τὰ παράλια ἴχνη τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ, ἐνῷ οἱ ἴδιοι δὲν εἶχον φθάσει ἀκόμη εἰς τοιαύτην βαθμῖδα ἀναπτύξεως. Οἱ Ἕλληνες οὗτοι ἦσαν Αἰολεῖς (Ἀχαιοί), οἵτινες δὲν ἔδειξαν πολλὴν ἱκανότητα εἰς τὴν διακυβέρνησιν τῶν πόλεών των. Κατόπιν ἦλθον οἱ Ἴωνες, ἱδρύσαντες ἀποικίας εἰς τὰ παράλια τῆς Λυδίας καὶ τῆς Καρίας. Οὗτοι, ὄντες ἤδη μᾶλλον προηγμένοι εἰς τὸν πολιτισμόν, ἀνεπτύχθησαν ταχέως, ἐκταθέντες βαθμιαίως καὶ εἰς τὰ παράλια τοῦ Εὐξείνου μέχρι Τραπεζοῦντος. Κατὰ τὸν Η′ π. Χ. αἰῶνα μερικαὶ τῶν ἀποικιῶν τούτων κατέληξαν νὰ φθάσωσιν εἰς πλοῦτον τὴν Τύρον καὶ τὴν Σιδῶνα τῶν Φοινίκων, κατὰ τῶν ὁποίων ἀντηγωνίζοντο. Ἀλλ' ἡ μεταξύ των ἀντιζηλία εἰς τὰ ἀσιατικὰ ἔθιμα τοῦ πολυτελοῦς βίου, τὰ ὁποῖα παρέλαβον παρὰ τῶν Φρυγῶν καὶ Λυδῶν, κατέστησαν τοὺς Ἕλληνας τούτους ἀνικάνους ν' ἀντισταθῶσιν ἐναντίον κράτους ἑνιαίου καὶ ἰσχυροῦ, ὡς ἡ Λυδία. Τῷ 560 π. Χ. ὑπετάγησαν εἰς τὸν Κροῖσον, ὅτε δὲ οὗτος ἐνικήθη ὑπὸ τοῦ Κύρου (546 π. Χ.) ὑπέκυψαν σχεδὸν ἄνευ ἀντιστάσεως εἰς τοὺς Πέρσας.

Ὁλόκληρος ἡ Μικρὰ Ἀσία ἔγινε τότε ἐπαρχία περσική, διαιρεθεῖσα εἰς 4 σατραπείας. Ὑπὸ τοὺς Πέρσας σατράπας ὅμως πολλαὶ φυλαὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ διετήρησαν τοὺς ἰθαγενεῖς των ἡγεμόνας, αἱ δὲ ἑλληνικαὶ ἀποικίαι ἀπέλαυον αὐτονομίας ὑπὸ ἄρχοντας Ἕλληνας. Ἐν τούτοις, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Ε′ π. Χ. αἰῶνος (500—494) αἱ ἑλληνικαὶ ἀποικίαι συμμαχήσασαι ἐπανεστάτησαν κατὰ τῆς περσικῆς κυριαρχίας. Ἡ ἐπανάστασις ὅμως κατεστάλη, ἡ κυριωτέρα ἑλληνικὴ ἀποικία, ἡ Μίλητος, ἐκυριεύθη καὶ ὁ περσικὸς ζυγὸς ἔγινεν ἔκτοτε βαρύτερος. Βραδύτερον αἱ ἰωνικαὶ ἀποικίαι συνεμάχησαν μετὰ τῶν Ἑλλήνων τῆς Ἑλλάδος καὶ ἤρχισεν ὁ ἀγὼν ὅλων τῶν ἑλληνικῶν λαῶν κατὰ τῶν Περσῶν, τοῦ ὁποίου γνωσταὶ εἶναι ἐκ τῆς ἑλληνικῆς ἱστορίας αἱ διάφοροι περιπέτειαι. Οἱ Ἕλληνες τῆς Μικρᾶς Ἀσίας γίνονται ἐναλλὰξ ὑποτελεῖς τῶν Ἀθηναίων ἢ τῶν Περσῶν. Ἀλλὰ τὸ μέγα περσικὸν κράτος ἤρχισεν ἐν τῷ μεταξὺ νὰ ἐξασθενῇ. Ἡ ἀδυναμία ἀπεκαλύφθη κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον Κύρου τοῦ νεωτέρου ἐναντίον τοῦ ἀδελφοῦ του Ἀρταξέρξου κατὰ τὴν ἀνάβασιν τῶν Μυρίων (402 π. Χ.). Τὸν κατόπιν αἰῶνα ἡ Μικρὰ Ἀσία ὁλόκληρος ὑπετάγη εἰς τὸν Μέγαν Ἀλέξανδρον καὶ ἡ περσικὴ αὐτοκρατορία κατελύθη τελείως.

Ἐπὶ τῶν Διαδόχων ἡ Μικρὰ Ἀσία περιῆλθεν εἰς τοὺς Σελευκίδας, ἀλλ' οὐδεὶς ἐκ τούτων κατώρθωσε νὰ ἐπιβάλῃ διαρκῶς τὴν κυριαρχίαν του εἰς ὁλόκληρον τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Μέγα μέρος τῶν Ν. καὶ Δ. παραλίων ἀνῆκεν εἰς τοὺς Λαγίδας τῆς Αἰγύπτου, ἐνῷ εἰς τὰ Β. καὶ εἰς τὸ ἐσωτερικὸν ἱδρύοντο διάφορα ἀνεξάρτητα κράτη. Τῷ 283 π. Χ. ἱδρύθη τὸ βασίλειον τῶν Ἀτταλιδῶν τῆς Περγάμου, τὸ ὁποῖον διήρκεσε μέχρι τοῦ 133 π.Χ., ὅτε περιῆλθεν εἰς τοὺς Ρωμαίους. Ἄλλο κράτος ἀνεξάρτητον ἐσχηματίσθη εἰς τὴν Βιθυνίαν. Οἱ ἡγεμόνες τῆς χώρας ταύτης ἐκάλεσαν κατὰ τὸν Γ′ π.Χ. αἰῶνα (278—277) τοὺς Γαλάτας, οὕτω δὲ εἰσεχώρησεν εἰς Μικρὰν Ἀσίαν καὶ τὸ κελτικὸν στοιχεῖον, ἀναμειχθὲν μετὰ τῶν ἐξηλληνισμένων ἤδη ἐγχωρίων καὶ ἀποτελέσαν τοὺς λεγομένους Γαλλογραικούς. Οἱ Γαλάται οὗτοι ἔδωκαν τὸ ὄνομα αὐτῶν εἰς τὴν μικρασιατικὴν Γαλατίαν. Θελήσαντες ὅμως νὰ ἐπεκταθοῦν καὶ εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Καΐκου, ἀπεκρούσθησαν ὑπὸ Ἀττάλου τοῦ Α′ βασιλέως τῆς Περγάμου. Εἰς τὰ νότια ὅμως ἐπεκράτησαν ἐφ' ἱκανὸν οἱ Σελευκίδαι. Ἵδρυσαν τὴν Ἀντιόχειαν, τὴν Ἀπάμειαν, τὴν Ἀττάλειαν, τὴν Λαοδίκειαν καὶ ἄλλας πόλεις, κέντρα ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ καὶ συνάμα σπουδαίας ἐμπορικῆς κινήσεως, τὰ ὁποῖα διεδραμάτισαν βραδύτερον σπουδαῖον ἱστορικὸν ρόλον κατὰ τὸν ἐξελληνισμὸν τῆς χώρας.

Ἐπῆλθε κατόπιν ἡ εἰσβολὴ τῶν Ρωμαίων, οἵτινες ἐπικρατήσαντες ἀπὸ τῆς ἐν Μαγνησίᾳ ἥττης Ἀντιόχου τοῦ Μεγάλου (190 π. Χ.) ἐπέβαλον ὁριστικῶς τὴν κυριαρχίαν των ἀπὸ τοῦ 133, ὅτε ἡ Μικρὰ Ἀσία, πλὴν τῆς Βιθυνίας, ἀπετέλεσε ρωμαϊκὴν ἐπαρχίαν ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἀσία*. Σφάλματα ἐν τῇ διοικήσει καὶ ἐν τῇ ὅλῃ ἐν γένει πολιτικῇ τῆς Ρώμης διηυκόλυναν τὴν ἵδρυσιν καὶ τὴν ἐξάπλωσιν τοῦ βασιλείου τοῦ Πόντου, ἀναχθέντος εἰς μέγαν βαθμὸν δυνάμεως. Ἐπὶ τέλους ὅμως ὁ Πομπήϊος ἐξεδίωξε τὸν τελευταῖον Μιθριδάτην (63 π. Χ.). Ἐσχηματίσθη τότε νέα ἐπαρχία ρωμαϊκή, ἀποτελουμένη ἐκ τῆς Βιθυνίας καὶ τοῦ Πόντου, ἐνῷ ἡ Γαλατία καὶ ἡ Καππαδοκία διετήρησαν ἐπὶ ἥμισυν ἀκόμη αἰῶνα ὀνομαστικὴν ἀνεξαρτησίαν ὑπὸ ἐντοπίους ἡγεμόνας. Ἐπηκολούθησε περίοδος εἰρηνική, κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὁποίας ἡ ρωμαϊκὴ κυριαρχία ἐπεξετείνετο. Ἡ ὅλη Μικρὰ Ἀσία διῃρέθη εἰς δύο ἐπαρχίας, τῶν ὁποίων τὰ ὅρια μετεβάλλοντο συχνάκις. Ἐπὶ Διοκλητιανοῦ (297 μ.Χ.), ἀναδιοργανωθείσης τῆς διοικήσεως τοῦ ρωμαϊκοῦ κράτους, ἐθραύσθη ἡ δύναμις τῶν ἀνωτέρων στρατιωτικῶν διοικητῶν καὶ ἡ Μικρὰ Ἀσία διῃρέθη τότε εἰς μικροτέρας διοικητικὰς μονάδας, τὰς διοικήσεις.

Μεγάλη μεταβολὴ ἐπῆλθεν ἐν τῇ καταστάσει τῆς Μικρᾶς Ἀσίας διὰ τῆς ἐξαπλώσεως τοῦ Χριστιανισμοῦ, ὅστις διεδόθη ἀρχικῶς κατὰ μῆκος τῶν μεγάλων ὁδῶν, αἵτινες διήκουσι Β. καὶ Δ. ἐκ τῶν Κιλικίων πυλῶν καὶ κυρίως διὰ τῆς μεγάλης ἐμπορικῆς ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἔφεσον. Ἡ διάδοσις αὕτη ἔγινεν εἰς τινας ἐπαρχίας ταχέως, εἰς ἄλλας μὲ βραδύτητα. Διὰ τῆς ἐξαπλώσεως τοῦ Χριστιανισμοῦ ἐξέλιπον βαθμιαίως μετὰ τῶν τέως θρησκευμάτων καὶ αἱ ἐντόπιαι γλῶσσαι, οὕτως ὥστε ὁλόκληρος πλέον ἡ χώρα ἐξηλληνίσθη. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ἰδίᾳ ὅταν ἐχωρίσθη τὸ ἀνατολικὸν ἀπὸ τοῦ δυτικοῦ ρωμαϊκοῦ κράτους (395 μ. Χ.) ἡ Μικρὰ Ἀσία ἦτο χώρα πλουσιωτάτη καὶ πυκνότατα κατῳκημένη. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς ὑπελογίζετο εἰς 32.000.000. Ἡ εὐημερία αὕτη ἐξηκολούθησε μέχρι τέλους τοῦ ΣΤ′ αἰῶνος. Ἀλλ' ἡ μακρὰ εἰρήνη καὶ τὸ ὑπερβολικῶς συγκεντρωτικὸν σύστημα τῆς διοικήσεως ἐπέδρασαν ἐπὶ τοῦ ἠθικοῦ τοῦ λαοῦ καὶ ἐξησθένησαν τὴν κεντρικὴν κυβέρνησιν. Ὡς ἐκ τούτου ἐπεχειρήθη κατὰ τὸν Γ′ αἰῶνα διοικητικὴ μεταρρύθμισις, καθ' ἥν, ἐγκαταληφθείσης τῆς εἰς ἐπαρχίας διαιρέσεως, ἡ χώρα διῃρέθη εἰς θέματα, ἤτοι στρατιωτικὰς περιφερείας. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἡ ἀκμὴ καὶ ὁ πλοῦτος τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐπέσυρον τὴν ἀπληστίαν κατ' ἀρχὰς μὲν τῶν Περσῶν, ἀπὸ τῆς βασιλείας τοῦ αὐτοκράτορος Ἀναστασίου μέχρι τοῦ Ἡρακλείου, κατόπιν δὲ τῶν Ἀράβων. Ἀπὸ τοῦ 616 μέχρι τοῦ 626 ἡ χώρα ἐσαρώθη ὑπὸ τῶν ἐκ Περσίας στρατιῶν, ὁ δὲ Χοσρόης ὁ Β′ ἔφθασε μέχρι τῶν ἀκτῶν τοῦ Βοσπόρου. Ἡ ἀνδρεία καὶ ἡ στρατηγικὴ ἱκανότης τοῦ Ἡρακλείου ἐξεδίωξαν τοὺς Πέρσας καὶ ἀπέτρεψαν τὸν ἐκεῖθεν κίνδυνον. Ἀμέσως ὅμως κατόπιν ἐνεφανίσθησαν οἱ Ἄραβες, οἵτινες ἐπὶ τοῦ Ὀμεϊάδου χαλίφου ἔφθασαν μέχρις Ἀμορίου τῆς Φρυγίας καὶ ἐπολιόρκησαν τὴν Κωνσταντινούπολιν. Ἀλλ' οἱ εἰκονομάχοι αὐτοκράτορες ἀντεπεξῆλθον ἐρρωμένως κατὰ τῶν ἀραβικῶν ἐπιδρομῶν. Τὸν Ι′ αἰῶνα οἱ Ἄραβες ἐξεδιώχθησαν ὁριστικῶς ἐκ τῶν βυζαντινῶν χωρῶν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Μόνον ἐν Κιλικίᾳ ἐγκατέστησαν μονιμώτερον οἱ Ἄραβες ἐπὶ τῆς δυναστείας τῶν Ἀββασιδῶν.

Καθ' ὅλον τοῦτο τὸ διάστημα τῶν διηνεκῶν πρὸς ἐπιδρομεῖς πολέμων, ὁ ἑλληνισμὸς ἐκραταιώθη ἐν Μ. Ἀσίᾳ, ἥτις ἀπετέλεσε τὸ σπουδαιότερον τμῆμα τοῦ βυζαντινοῦ κράτους. Ἀλλ' ἀπὸ τοῦ ΙΑ′ αἰῶνος ἐνεφανίσθησαν νέοι ἐπιδρομεῖς, προερχό-

Digitized by Google

μενοι ἀπὸ τὴν ἀνατολικὴν καὶ τὴν κεντρῴαν Ἀσίαν. Ἦσαν οἱ μογγολικῆς καταγωγῆς Τοῦρκοι, οἱ Σελτζοῦκοι κατ' ἀρχὰς καὶ οἱ Ὀθωμανοὶ βραδύτερον. Τῷ 1067 οἱ Σελτζοῦκοι Τοῦρκοι ἐδῄωσαν τὴν Καππαδοκίαν καὶ τὴν Κιλικίαν. Τῷ 1071 ἐνίκησαν εἰς τὴν μάχην τοῦ Μανζικὲρτ καὶ συνέλαβον αἰχμάλωτον τὸν αὐτοκράτορα Ρωμανὸν τὸν Διογένη. Τῷ 1080 ἐκυρίευσαν τὴν Νίκαιαν, ὅπου ἐγκατεστάθη ἄλλος κλάδος τῆς δυναστείας τῶν Σελτζουκιδῶν, ὁ ἀποκληθεὶς Ροὺμ (Ρωμαίων, ὡς ἐγκατασταθεὶς εἰς τὰς ρωμαϊκὰς χώρας). Τοῦ κράτους τούτου (ἀναγνωρισθέντος ὑπὸ τῶν αὐτοκρατόρων τοῦ Βυζαντίου τῷ 1074) ἡ πρωτεύουσα μετεφέρθη βραδύτερον εἰς τὸ Ἰκόνιον, διότι ἡ Νίκαια ἀνεκτήθη ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν. Τὸ σελτζουκικὸν τοῦτο κράτος ἐξετάθη εἰς ὁλόκληρον τὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ εἰς μέρος τῆς Ἀρμενίας καὶ τῆς Συρίας. Νικηθὲν ὅμως τῷ 1243 ὑπὸ τῶν ἐξ Ἀσίας ἐπελθουσῶν μογγολικῶν ὀρδῶν τοῦ Δζεγκὶζ-χάν, ἔγινεν ὑποτελὲς τῶν μεγάλων χάνων τῆς Μογγολίας. Ἔκτοτε ἐξησθένησεν ἡ δύναμις τοῦ σελτζουκικοῦ κράτους καὶ κατέστη οὕτω δυνατὴ ἡ βαθμιαία ἀνάπτυξις μιᾶς ἄλλης ὀλιγανθρώπου τουρκικῆς πατριᾶς, ἐλθούσης εἰς Μικρὰν Ἀσίαν καὶ ταύτης ἐκ τῆς Α. Περσίας ὑπὸ τὸν Σουλεϋμὰνσὰχ καὶ κατόπιν ὑπὸ τὸν υἱὸν τούτου, τὸν Ἐρτογρούλ, ὅπως ζητήσῃ γαίας πρὸς ἐγκατάστασιν. Οἱ Τοῦρκοι οὗτοι, ἐγκατασταθέντες παρὰ τὰ πρὸς τὸ βυζαντινὸν κράτος σύνορα τῆς χώρας τῶν Σελτζουκιδῶν, ἐπωφελήθησαν τῆς παρακμῆς καὶ ἀκαταστασίας τοῦ Βυζαντίου, ὅπως ἐπεκταθῶσιν ὑπὸ τὸν Ὀσμὰν ἢ Ὀθμὰν—ἐξ οὗ καὶ ὀνομάσθησαν Ὀθωμανοὶ ἢ Ὀτουμᾶνοι ἢ Ὀσμανλῆδες—μέχρι Προύσης καὶ ὑποτάξωσι βαθμιαίως, κατόπιν μακρῶν ἀγώνων, ὅλους τοὺς δυνάστας καὶ σατράπας, οἵτινες ἀπεπειράθησαν νὰ ἱδρύσωσιν ἀνεξάρτητα κρατίδια ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ κράτους τῶν Σελτζουκιδῶν. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἡ κυριαρχία τῶν Ὀσμανιδῶν Τούρκων ἐξετείνετο πλέον καθ' ὅλην τὴν Μ. Ἀσίαν ἀπὸ τοῦ Αἰγαίου μέχρι τοῦ Εὐφράτου, ὅτε ἐπῆλθε νέα ἐπιδρομὴ ἐξ Ἀσίας, ἡ τῶν ὑπὸ τὸν Ταμερλᾶνον Ταταρομογγόλων. Οὗτοι ἐνίκησαν τῷ 1402 παρὰ τὴν Ἄγκυραν καὶ συνέλαβον αἰχμάλωτον τὸν σουλτᾶνον Βαγιαζὶτ Α', μεθ' ὃ ἐπεξέτειναν τὰς λεηλασίας καὶ καταστροφάς των μέχρι Προύσης καὶ Σμύρνης. Ὁ Ταμερλᾶνος διενοεῖτο μάλιστα νὰ διέλθῃ καὶ εἰς Εὐρώπην καὶ προχωρήσῃ μέχρι τοῦ ἄλλου αὐτῆς ἄκρου, εἰς Γιβραλτάρ, ὅτε, μαθὼν ὅτι τὸ κράτος του κινδυνεύει εἰς τὰ πρὸς τὴν Κίναν σύνορα, ἐξεκένωσε ραγδαίως ὁλόκληρον τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τῶν Ταταρων ἡ κυριαρχία τῶν Ὀσμανιδῶν Τούρκων ἐπεξετάθη πάλιν βαθμιαίως κατόπιν μακρῶν ἀγώνων εἰς ὁλόκληρον τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Ἐπὶ τοῦ σουλτάνου Μωάμεθ τοῦ Β' (1451—1481) προσηρτήθη ἡ Καραμανία καὶ ἡ Τραπεζοῦς, ἐνῷ συγχρόνως ἐγκατελείποντο αἱ εἰς τὰ παράλια τελευταῖαι ἰταλικαὶ (βενετικαὶ καὶ γενουατικαὶ) ἀποικίαι. Ἔκτοτε ἡ ἱστορία τῆς Μικρᾶς Ἀσίας περιλαμβάνεται εἰς τὴν ὅλην ἱστορίαν τῆς Τουρκίας. Δὲν ἐσημειώθησαν ἄλλως τε σπουδαῖα γεγονότα εἰς τὸ τμῆμα τοῦτο τῆς τουρκικῆς αὐτοκρατορίας, πλὴν μικρῶν ἐπαναστατικῶν κινημάτων διαφόρων ἐντοπίων δυναστῶν. Τῷ 1832—1833 διεξήχθη ὁ μεταξὺ Τούρκων καὶ τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη-πασᾶ τῆς Αἰγύπτου πόλεμος, ἀπειλήσας τὴν ὕπαρξιν τοῦ τουρκικοῦ κράτους, ἀλλὰ καταπαύσας συνεπείᾳ ἐπεμβάσεως τῶν περισσοτέρων εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων.

Ἀπὸ τῆς ἐμφανίσεως τῶν ὑπὸ τοὺς Σελτζούκους Τούρκων εἶχεν ἐπέλθει τελεία μεταβολὴ εἰς τὴν κατάστασιν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Τὴν τέως ἀκμὴν καὶ εὐημερίαν διεδέχθη στασιμότης κατ' ἀρχὰς καὶ ἐρήμωσις κατόπιν. Νομαδικαὶ ὀρδαὶ Τούρκων ἐπέτρεχον διαρκῶς ἐξ Ἀσίας διὰ Περσίας πρὸς ἀναζήτησιν βοσκησίμων γαιῶν διὰ τὰ ποίμνιά των. Καὶ ὁσάκις δὲν ἐλεηλάτουν τὴν χώραν οἱ Τοῦρκοι οὗτοι, οὐδὲν ἔπραττον πρὸς πρόοδον ἢ καὶ πρὸς συγκράτησιν τῆς γεωργίας τοῦ τόπου ἢ τῆς ἐμπορικῆς κινήσεως εἰς τὰ παράλια καὶ εἰς τοὺς μεγάλους ἀστικοὺς συνοικισμούς. Τὰ μέρη ἀπὸ τὰ ὁποῖα διήρχοντο ἔμενον γυμνά· μακραὶ ἐκτάσεις γαιῶν ἀφίνοντο ἀκαλλιέργητοι καὶ ἐδίδοντο πρὸς βοσκὴν εἰς ἄλλους νομάδας, ἕρμαιον εἰς ἀγέλας ἵππων καὶ καμήλων. Βαθμιαίως οἱ τέως μόνιμοι γεωργικοὶ πληθυσμοὶ ἔγιναν καὶ αὐτοὶ νομάδες ἢ προσέφευγον εἰς τὰς πόλεις. Ἄλλοι ἀνήρχοντο εἰς τὰ ὄρη, ἐνῷ συγχρόνως οἱ διάφοροι Τοῦρκοι ἐπιδρομεῖς, γενόμενοι Μουσουλμᾶνοι ἀπὸ τοῦ Ι' αἰῶνος, ἐξισλάμιζον διὰ τῆς βίας τοὺς ἐντοπίους πληθυσμούς. Αἱ ἐπιδρομαὶ τῶν Μογγόλων τοῦ Δζεγκὶζ-χὰν καὶ τῶν Τατάρων τοῦ Ταμερλάνου συνεπλήρωσαν τὴν καταστροφήν. Ὁλόκληροι χριστιανικοὶ πληθυσμοὶ ἐσφάγησαν, πόλεις ἀνθοῦσαι ἐσαρώθησαν καὶ κατεσκάφησαν κυριολεκτικῶς. Ὁλόκληρος ἡ Μικρὰ Ἀσία ἠρημώθη. Χῶραι τέως πυκνῶς κατῳκημέναι ἔμειναν σχεδὸν ἀκατοίκητοι. Μετὰ πάροδον ἱκανοῦ χρόνου, μόλις κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἤρχιζε πάλιν κάποια ἐμπορικὴ κίνησις ἐκ τῶν παραλίων, χάρις εἰς ἐποίκους Ἕλληνας ἐλθόντας εἰς Σμύρνην καὶ ἄλλας πόλεις ἐκ τῆς κυρίως Ἑλλάδος καὶ ἄλλων ἑλληνικῶν χωρῶν. Ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἤρχισαν νὰ κατασκευάζωνται οἱ πρῶτοι σιδηρόδρομοι (ὁ ἀγγλικὸς Σμύρνης-Ἀϊδινίου, ὁ γαλλικὸς Σμύρνης-Κασαμπᾶ). Εἰς τὸ ἐσωτερικὸν ὅμως ὁ πληθυσμὸς ἦτο ἀκόμη ἀραιότατος, τόσον ὥστε, ὅταν ἡ Γερμανία ἤρχισεν ἀπὸ τῆς τελευταίας δεκαετηρίδος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος νὰ στρέφῃ τὴν προσοχήν της πρὸς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ κατεσκευάσθησαν τότε οἱ ἐκ Κωνσταντινουπόλεως πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν σιδηρόδρομοι (Χαϊδὰρ πασᾶ—Νικομηδείας—Ἐσκὶ-σεχὶρ πρὸς Ἰκόνιον καὶ πρὸς Ἄγκυραν), διενοήθη νὰ συνοικίσῃ τὴν χώραν διὰ Γερμανῶν ἐποίκων. Ἐναντίον τῶν σχεδίων τούτων ἀντέπραττον ἡ Ἀγγλία καὶ ἡ Ρωσία, ἰδίως ἀφ' ὅτου ὁ σιδηρόδρομος τῆς Ἀνατολῆς ἤρχισε νὰ ἐπεκτείνεται πρὸς τὴν Βαγδάτην. Ἐγεννήθη οὕτω ζήτημα σιδηροδρόμων Μικρᾶς Ἀσίας καὶ Μεσοποταμίας, τὸ ὁποῖον περιλαμβάνεται εἰς τὰ γενικὰ αἴτια τῆς καταστάσεως, ἥτις ἤγαγεν εἰς τὸν μέγαν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον.

Κατὰ τὴν διάρκειαν τούτου ἡ Μικρὰ Ἀσία ἀπετέλεσε μέρος τοῦ ἀνατολικοῦ μετώπου τῶν κατὰ τῆς Γερμανίας μαχομένων συμμάχων δυνάμεων. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1915 εἰς τὸ θέατρον τοῦτο συνεκεντρώθη διὰ μίαν στιγμὴν ἡ προσοχὴ τῶν συμμάχων καὶ τῶν Γερμανῶν ὡς ἐκ τῆς ἀποπείρας τῆς Ἀγγλίας καὶ Γαλλίας νὰ βιάσωσι τὰ Στενὰ καὶ προχωρήσωσι πρὸς τὴν Κωνσταντινούπολιν. Ἡ ἀπόπειρα αὕτη ἀπέτυχεν. Ἐξ Α. οἱ Ρῶσοι προήλασαν μέχρι πέραν τῆς Τραπεζοῦντος, ἀλλὰ μετὰ τὴν μπολσεβικικὴν ἐπανάστασιν τὰ ρωσικὰ στρατεύματα ἀπεχώρησαν καὶ οἱ Τοῦρκοι ἀνέκτησαν διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Μπρὲστ-Λιτὸβσκ οὐχὶ μόνον τὰ τέως ἐδάφη των, ἀλλὰ καὶ μέρος τῆς Καυκασίου Ρωσίας, προχωρήσαντες πέραν τῶν συνόρων τοῦ 1878. Ἡ ἐκ Παλαιστίνης προέλασις τῶν Ἄγγλων ἠνάγκασε τοὺς Τούρκους νὰ συνθηκολογήσουν. Ἀλλ' ἡ ἀνακωχὴ τοῦ Μούδρου (1918) δὲν ἐφηρμόσθη αὐστηρῶς. Ὁ ἀφοπλισμὸς τῶν τουρκικῶν στρατευμάτων τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας δὲν ἐξετελέσθη, οὕτω δὲ κατέστη δυνατὸν τὸ ὑπὸ τὸν Μουσταφᾶ Κεμὰλ ἐθνικιστικὸν τουρκικὸν κίνημα, ὅπερ ἐνισχυθὲν μυστικῶς καὶ ὑπό τινων εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων ἠδυνήθη νὰ κατισχύσῃ καὶ νὰ διώξῃ (1922) ἐκ Μικρᾶς Ἀσίας οὐχὶ μόνον τὸν ἐκ Σμύρνης προελάσαντα ἑλληνικὸν στρατόν, ἀλλὰ καὶ τὰ πρὸς ἐξασφάλισιν τῶν Στενῶν, τοῦ Βοσπόρου καὶ τοῦ Ἑλλησπόντου προοριζόμενα ἀγγλικὰ στρατεύματα (βλ. *Μικρασιατικὴ ἐκστρατεία*). Μετὰ τὴν συνθήκην τῆς Λωζάννης (1923) ἡ Μικρὰ Ἀσία ἀπετέλεσε σχεδὸν ὁλόκληρον τὴν Τουρκίαν.

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— [ΑΡΧΑΙΟΛ.] Πολλαὶ ἀρχαιολογικαὶ ἀνασκαφαὶ διενηργήθησαν μέχρι τοῦδε ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. Αἱ σπουδαιότεραι τούτων εἶναι αἱ μεγάλαι ἀνασκαφαὶ τῆς Τροίας, αἵτινες ὑπὸ τῶν περιφήμων Γερμανῶν Σχλῆμαν καὶ Δαΐρπφελδ διεξαχθεῖσαι ἀπὸ τοῦ 1890—1894, ἔφερον εἰς φῶς τὸν προϊστορικὸν πολιτισμὸν τοῦ ὁμηρικοῦ Ἰλίου. Μεγάλης, οὐχ ἧττον, ἐκτάσεως καὶ σημασίας εἶναι καὶ αἱ ἀνασκαφαὶ τῆς Ἄσσου, αἱ διενεργηθεῖσαι ἀπὸ τοῦ 1881—1883 ὑπὸ τοῦ Ἀρχαιολογικοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Ἀμερικῆς. Αἱ ἀνασκαφαὶ αὗται ἀπεκάλυψαν τὰ τείχη τῆς πόλεως καὶ διάφορα ἄλλα

Digitized by Google

μνημεῖα τῆς ἀγορᾶς, ἐγένοντο δ' αἰτία ὥστε νὰ καταμετρηθῇ καὶ μελετηθῇ δεόντως ὁ ἐκεῖ μοναδικὸς δωρικὸς ναὸς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. Σημαντικὴν ἐπίσης γνῶσιν τοῦ μικρασιατικοῦ πολιτισμοῦ προσέθεσαν καὶ αἱ ἀνασκαφαὶ τῆς Περγάμου, αἵτινες διενηργήθησαν ἀπὸ τοῦ 1878 ὑπὸ τοῦ Μουσείου τοῦ Βερολίνου διὰ τῶν Karl Humann, Dörpfeld καὶ Wiegand. Κατὰ τὰς ἀνασκαφὰς ταύτας, συνεχισθείσας μέχρι τοῦ 1900, ἦλθον εἰς φῶς ὁλόκληρος ἡ ἀκρόπολις καὶ μέγα μέρος τῆς περιφήμου πόλεως μὲ τοὺς ναούς της, τὰς στοάς της, τοὺς πυλῶνας, τὰ γυμνάσια, τὸ θέατρον, τὸ ἀμφιθέατρον, τὰς οἰκίας της, τοὺς τάφους της, τὰ ὑδραγωγεῖά της, ὅλα ταῦτα κεκοσμημένα δι' ὡραίων γλυπτῶν ἔργων, ὡς εἶναι ὁ περίφημος βωμὸς τῆς Περγάμου, τοῦ ὁποίου τὰ τεμάχια, μεταφερθέντα εἰς Βερολῖνον καὶ συγκροτηθέντα, ἀναπαρέστησαν τὸν μεγαλοπρεπῆ καὶ ἀντάξιον τῆς δόξης τῆς μεγάλης Περγάμου βωμόν. Ἐκτεταμέναι ἐπίσης ἀνασκαφαὶ ἔγιναν καὶ ἐν Μαγνησίᾳ ἐπὶ Μαιάνδρῳ ὑπὸ τοῦ Hiller τῷ 1890 μὲ τὴν ἀποκάλυψιν τοῦ θεάτρου καὶ ἀπὸ τοῦ 1891—1893 ὑπὸ τοῦ Μουσείου τοῦ Βερολίνου μὲ ἀποτέλεσμα τὴν ὁλοκληρωτικὴν ἀποκάλυψιν ὁλοκλήρου τῆς πόλεως ταύτης. Τῷ 1895 ἤρχισεν ἡ συστηματικὴ ἀνασκαφὴ τῆς ἀρχαίας Ἐφέσου ὑπὸ τοῦ Αὐτοκρατορικοῦ μουσείου τῆς Βιέννης ὑπὸ τοὺς Benndorf, Niemann καὶ Petersen, μετὰ δεκαετῆ δὲ περίπου ἐργασίαν ἦλθον εἰς φῶς τὰ λείψανα τῆς μεγάλης ἑλληνιστικῆς καὶ ρωμαϊκῆς ταύτης πόλεως. Ἐνταῦθα μνημονευτέαι καὶ αἱ ἀνασκαφαὶ τῶν Ἄγγλων Newton καὶ Wood, αἵτινες ἀπεκάλυψαν τὰ λείψανα τοῦ περιφήμου ναοῦ τῆς Ἐφεσίας Ἀρτέμιδος, τὸν ὁποῖον ἔκαυσεν ὁ Ἡρόστρατος. Ἀλλὰ καὶ αἱ νοτιώτερον ἐπὶ τῆς μικρασιατικῆς ἀκτῆς γενόμεναι μεγάλαι ἀνασκαφαὶ τῆς Πριήνης, τῆς Μιλήτου μετὰ τοῦ Διδυμαίου δὲν ὑπολείπονται εἰς ἐπιστημονικὰ ἀποτελέσματα. Ἡ πόλις τῆς Πριήνης ἀνεσκάφη ὑπὸ τοῦ Μουσείου τοῦ Βερολίνου ἀπὸ 1895—1899 δι' ἄλλων τε καὶ ἰδίως διὰ τοῦ Th. Wiegand, μὲ ἀποτέλεσμα τὴν ἀποκάλυψιν ὁλοκλήρου τῆς ἑλληνιστικῆς ταύτης πόλεως, τῆς ὁποίας πολλαὶ οἰκίαι διατηροῦνται τόσον καλῶς, ὥστε νὰ μελετηθῇ δεόντως ἡ ἀρχιτεκτονικὴ τῶν ἰδιωτικῶν οἰκιῶν. Τῷ 1899 τὸ μουσεῖον τοῦ Βερολίνου διὰ τῶν αὐτῶν ἀρχαιολόγων, καὶ ἰδίως τοῦ πολλοῦ Th. Wiegand, ἀνέλαβε τὴν ἐπιχείρησιν τῆς ἀνασκάψεως τῆς Μιλήτου, ἐπιχείρησιν, ἥτις δὲν ἐπερατώθη εἰσέτι. Ἐνταῦθα, ὡς ἐν Ἐφέσῳ, Μαγνησίᾳ, Πριήνῃ, Περγάμῳ, αἱ ἀνασκαφαὶ ἀπεκάλυψαν κυρίως τὴν πόλιν τῶν τελευταίων περιόδων μὲ ὀλίγα λείψανα τῆς πρωΐμου ἰωνικῆς τέχνης. Εἰς τὰς ἀνασκαφὰς ταύτας προσθετέα καὶ ἡ ἀνασκαφὴ τοῦ δύο ὥρας μακρὰν τῆς Μιλήτου ἀπέχοντος περιφήμου ναοῦ τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος, τοῦ ὁποίου σῴζεται τὸ πλεῖστον μέρος. Σπουδαῖαι ἀνασκαφαὶ ἐγένοντο ἐπίσης ὑπὸ τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου διὰ τῶν ἀρχαιολόγων Wood καὶ Newton ἐν Ἁλικαρνασσῷ μὲ τὴν εὕρεσιν τοῦ ὀνομαστοῦ τάφου τοῦ Μαυσώλου, τοῦ Μαυσωλείου, τοῦ ὁποίου ἡ ζῳφόρος κοσμεῖ νῦν τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον, καὶ ἐν Κνίδῳ διὰ τοῦ αὐτοῦ Newton μὲ τὴν ἀποκάλυψιν τῆς ἀρχαίας πόλεως καὶ τὴν εὕρεσιν πολλῶν ἀριστουργημάτων τέχνης, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ἡ Δημήτηρ τῆς Κνίδου καὶ ὁ κολοσσικὸς λέων, ὅστις ἐστήθη ἐν τῇ πόλει τῷ 394 π.Χ. ἐπὶ τῇ νίκῃ τοῦ Κόνωνος. Ἀλλὰ καὶ διὰ πολλῶν ἄλλων μικροτέρας ἐκτάσεως ἀνασκαφῶν, ὡς ἐν Τρύσῃ, Γκιέλμπασι, ἐν Καρίᾳ, ἐν Λυκίᾳ, πλησίον τῆς Ἀγκύρας καὶ ἀλλαχοῦ, ἦλθον εἰς φῶς μνημεῖα καὶ εὑρήματα, ἀποδεικνύοντα τὴν μεγάλην ἀνάπτυξιν τῆς ἑλληνικῆς τέχνης καὶ τὴν σπουδαίαν ἐπίδρασιν τοῦ πολιτισμοῦ τῆς ἑλληνικῆς φυλῆς ἐπὶ τῆς Μικρασίας (βλ. καὶ λ. *Μίλητος, Ἔφεσος, Μαγνησία, Πέργαμος, Τροία* κλπ.). Β. Δ. Θ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ramsay:* The historical Geography of Asia Minor (Λονδῖνον 1890).— *C. Texier,* Asie Mineure (1843).— *P. Tchihatcheff,* Asie Mineure (8 τόμ. Παρίσιοι, 1852—1869).— *C. Ritter,* Erdkunde (18ος καὶ 19ος τόμος, 1858—1859).— *W. J. Hamilton,* Researches in Asia Minor (1843).— *Elisée Reclus,* Nouvelle Géographie Universelle (9ος τόμ. 1884).— *V. Cuinet,* La Turquie d'Asie (5 τόμοι, Παρίσιοι, 1890).— *Π. Μ. Κοντογιάννη,* Γεωγραφία τῆς Μικρᾶς Ἀσίας (Ἀθῆναι 1921).— *Γ. Σκαλιέρη,* Λαοὶ καὶ φυλαὶ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας (Ἀθῆναι 1922).—. *Κ. Ι. Ἀμάντου,* Ὁ Ἑλληνισμὸς τῆς Μικρᾶς Ἀσίας κατὰ τὸν μεσαίωνα (Ἀθῆναι 1919).— *Σ. Ἀντωνοπούλου,* Μικρὰ Ἀσία (Ἀθῆναι 1907). — *Ἀθ. Ἐξαδακτύλου,* Χάρτης τῆς Τουρκικῆς Αὐτοκρατορίας.— *Π Καρολίδου,* Γεωγραφικὰ Στράβωνος (Ἀθῆναι 1889).— *Π. Καρολίδου,* Μικρασιατικὴ Ἀρία ὁμοφυλία (Ἀθῆναι 1886).— *K. Dieterich,* Das Griechentum Kleinasiens (Λειψία 1915).— *Charles Vellay,* L'irrédentisme hellénique (Παρίσιοι 1913).— *Π. Καρολίδου,* Καππαδοκικά.— *Ἰωακεὶμ Βαλαβάνη,* Μικρασιατικὰ (Ἀθῆναι 1891).— *Von Luschan,* Die Tahtadschis und andere Ueberreste der alten Bevölkerung Lykiens (ἐν «Archiv für Anthropologie», Berlin 1891).— *Henri Mathieu,* La Turquie et ses différents peuples (Παρίσιοι, 1857).— *Α. Α. Παπαδοπούλου,* Ὁ ὑπόδουλος ἑλληνισμὸς τῆς Μικρασιατικῆς Ἑλλάδος ἐθνικῶς καὶ γλωσσικῶς ἐξεταζόμενος (Ἀθῆναι 1919).— *W. M. Ramsay,* The intermixture of Races in Asia Minor (Λονδῖνον 1906).— *Ἀθ. Σουλιώτη Νικολαΐδου,* Οἱ κάτοικοι τῆς Μικρᾶς Ἀσίας.— *J. Spon et G. Wheler,* Voyage du Levant (1679).— *P. de Tournefort,* Voyage du Levant (1718). — *W. M. Leake,* Journal of a Tour in Asia Minor (1820).— *O. Rayet* et *A. Thomas,* Milet et le Golfe Latmique (1872). — *W. M. Ramsay,* Cities and Bishoprics of Phrygia (1895). — *K. Buresch,* Aus Lydien (1898). — *R. Kiepert.* Karte von Kleinasien (1901).—*Friedrich Delitzsch,* Beiträge zur Entzifferung der Kappodokischen Keilschriften (Λειψία 1893) κτλ. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**μικραίνω,** ἢ ὀρθότ. *μικρένω,* ἀόρ. *ἐμίκρυνα·* κάμνω τι μικρόν, μικρότερον, σμικρύνω: «μικραίνω τὸ φόρεμα, —τὸ καπέλλο»· || ἀμεταβ., γίνομαι μικρότερος, σμικρύνομαι: «μεγάλωσα καὶ μοῦ μίκρυναν τὰ φορέματα», «οἱ μέρες ἀρχίζουν καὶ μικραίνουν».

**Μικράνιον** [*Γεωγρ.*]. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μικροῦ Δερείου τῆς ἐπαρχίας Σουφλίου τοῦ νομοῦ Ἕβρου. Κάτ. (1928) 63. Χ. Δ.

**Μικράλωνα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς κοινότητος Νέας Τενέδου (Καρὰ-Τεπὲ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς, ὀνομαζόμενον πρότερον *Πόζαλον.* Κάτ. (1928) 115. Χ. Δ.

**Μικρὰ Νίκαια** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Κώμη τῆς Θρᾴκης, ἡ νῦν τουρκικὴ *Κούλελι* (βλ. λ. *Νίκη*).

**Μικρὰ Παλούκοβα** [*Γεωγρ.*]. Παλαιοτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Λεύκα* (βλ λ.) τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας.

**Μικρὰ Πηγὴ** ἢ ***Αὐλοκρήνη*** (τουρκ. *Πηγαδίτς*) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Προύσης. Κεῖται ἐπὶ τῶν δυτικῶν κλιτύων τοῦ ὄρους Ὀρὸς δάγ. Κάτ. 4.000. Περιβάλλεται ὑπὸ κήπων εὐφορωτάτων καὶ ἐκτεταμένων δασῶν καὶ παράγει ἀραβόσιτον, σησάμιον καὶ ὄπιον. Κ. ΛΣ

**Μικρὰ Ρωσία** [*Γεωγρ.*]· βλ. λ. *Μικρορρωσία.*

**Μικρασία** [*Γεωγρ.*]· βλ. λ. *Μικρὰ* Ἀσία.

**μικρασιατικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν, ὁ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας: «μικρασιατικαὶ πόλεις», «μικρασιατικὴ συμφορά».

— **Μικρασιατικαὶ** ***γλῶσσαι.*** Ὑπὸ τὸν γεωγραφικὸν τοῦτον ὅρον περιλαμβάνονται διάφοροι γλῶσσαι, αἱ ὁποῖαι ὡμιλοῦντο ἐν Μ. Ἀσίᾳ κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους, ἤτοι ἡ τῆς Καρίας, Λυδίας, Λυκίας, Μυσίας, Πισιδίας, Λυκαονίας, Κιλικίας, Καππαδοκίας κ. λ. Ἐκ τῶν γλωσσῶν τούτων αἱ πλεῖσται—ἕνεκα τοῦ ἀνεπαρκεστάτου ὑλικοῦ, τὸ ὁποῖον μᾶς παρεδόθη, καὶ δὴ κυρίων τινῶν ὀνομάτων—μᾶς εἶναι ἐλάχιστα γνωσταί, δι' ὃ καὶ αἱ πρὸς ἀλλήλας σχέσεις τῶν μικρασιατικῶν γλωσσῶν καὶ ἡ καθόλου θέσις των ἐν τῷ κύκλῳ τῶν γνωστῶν γλωσσικῶν ὁμοεθνιῶν εἶναι—τοὐλάχιστον ἐπὶ τοῦ παρόντος—δυσεξακρίβωτοι. Τοῦτο μόνον φαίνεται πιθανόν, ὅτι δηλαδὴ αἱ ἀρχαῖαι μικρασιατικαὶ γλῶσσαι—ἐξαιρουμένης τῆς Φρυγικῆς, τῆς Ἀρμενικῆς καὶ τῆς πρὸ μικροῦ διὰ τῶν ἐπιγραφῶν τοῦ Μπογάζ-κιοϊ τῆς Καππαδοκίας γνωσθείσης Χεττιτικῆς—δὲν ἦσαν ἰαπετικῆς (ἤ, ἄλλως, ἰνδοευρωπαϊκῆς) καταγωγῆς. Ἐκ τῶν ρηθεισῶν γλωσσῶν μόνον ἡ Καρική, ἡ Λυδικὴ καὶ ἡ Λυκιακὴ ἐμελετήθησαν σχετικῶς καλύτερον ἕνεκα τῶν ἀνευρεθεισῶν εἰς τὰς οἰκείας χώρας ἐπιγραφῶν, ἐκ τῶν ὁποίων κατ' εὐτυχίαν μερικαὶ εἶναι δίγλωσσοι, διευκολύνασαι ἀρκούντως τὴν ἀνάγνωσιν καὶ τὴν κατὰ τὸ δυνατὸν κατανόησίν των. Συγγενὴς πρὸς τὰς ρηθείσας μικρασιατικὰς γλώσσας φαίνεται ὅτι ἦτο ἡ γλῶσσα τῶν Τυρρηνῶν ἢ Ἐτρούσκων (βλ. λ. *τυρρηνικὴ* γλῶσσα), οἱ ὁποῖοι πιθανῶς περὶ τὰ μέσα τῆς Β' π. Χ. χιλιετηρίδος μετενάστευσαν εἰς τὴν ἰταλικὴν χερσόνησον, καθὼς προσέτι καὶ ἡ γλῶσσα, εἰς τὴν ὁποίαν ἐχαράχθη ἡ γνωστὴ ξενόγλωσσος ἐπιγραφὴ τῆς Λήμνου, ἔτι δὲ καὶ ἡ γλῶσσα ἢ αἱ γλῶσσαι τῶν προελληνικῶν κατοίκων τῆς τε ἠπειρωτικῆς καὶ νησιωτικῆς Ἑλλάδος (ὡς δηλοῦν τὰ διάφορα παλαιότατα τοπωνύμια, ἰδίως τὰ εἰς *—ττός* ἢ —(σ)*σός, —νθος, —νδος* κ. λ.). Γ.Π.Α.

— **«Μικρασιατική».** Προσφυγικὴ ἐφημερίς, ἱδρυθεῖσα ἐν Ἀθήναις τὸν Νοέμβριον τοῦ 1922. Π.Ν.Π.

— **Μικρασιατικὴ** ***ἐκστρατεία.*** Ὀνομάζεται οὕτως ἡ ἐκστρατεία, ἣν ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς ἐπεχείρησεν εἰς Μικρὰν Ἀσίαν ἀπὸ τοῦ Μαΐου 1919, καὶ ἥτις, παραταθεῖσα μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου 1922, ἔσχε δι' ἀμφοτέρους τοὺς ἐμπολέμους, τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Τουρκίαν, πολλαπλᾶ ἀποτελέσματα, στρατιωτικά, ἐθνικά, πολιτικὰ καὶ πολιτειακά. Ἡ Μικρασιατικὴ ἐκστρατεία εἶναι ἀπὸ πάσης ἀπόψεως ἡ μεγαλυτέρα τῶν ὅσων ἄχρι τοῦδε ἔχει ἐκτελέσει ὁ ἑλληνικὸς στρατός.

***Αἴτια.*** Διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου 1914—1918, καὶ τῆς Τουρκίας ἐξ ἀρχῆς ταχθείσης μὲ τὸ μέρος τῶν κεντρικῶν αὐτοκρατοριῶν τῆς Εὐρώπης, αἱ ἀποτελοῦσαι τὴν τριπλῆν Ἀντὰντ δυνάμεις, εἰς ἣν εἶχε προστεθῆ καὶ ἡ Ἰταλία, εἶχον προβῆ, ἤδη ἀπὸ τοῦ Μαΐου 1915, εἰς προκαταρκτικὴν μεταξύ των διανομὴν τῆς Τουρκίας εἰς ζώνας ἐπιρροῶν. Κατὰ τὴν συμφωνίαν ἐκείνην ἡ Κωνσταντινούπολις, τὰ θαλάσσια στενὰ τοῦ Βοσπόρου καὶ τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ ἡ Ἀρμενία ἀνεγνωρίζοντο ὡς ρωσικὴ ζώνη ἐπιρροῆς· ἡ Συρία καὶ ἡ Παλαιστίνη ὡς ζώνη γαλλική· ἡ Ἀραβία καὶ ἡ ὁδὸς τῶν Ἰνδιῶν ἀπὸ τῆς Ἀλεξανδρέττας μέχρι τοῦ Περσικοῦ κόλπου ὡς ζώνη ἀγγλική· καὶ τέλος τὰ βιλαέτια τοῦ Ἀϊδινίου (Σμύρνης). τοῦ Ἰκονίου καὶ τῶν Ἀδάνων, ὡς ζώνη ἰταλική, Ἀλλὰ μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Ρωσίας καὶ τὴν ἐπέμβασιν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, μεταβληθείσης τῆς συμμαχικῆς ἰσορροπίας τῶν νικητῶν, ἡ διάσκεψις τῆς εἰρήνης ἐν Παρισίοις τὴν 1/14 Μαΐου 1919 ἐπεδίκαζε τὴν ἐπὶ τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐντολὴν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας, μέγα μέρος τοῦ βιλαετίου Ἀϊδινίου (Σμύρνης) εἰς τὴν Ἑλλάδα, τὴν νοτίως τοῦ Μαιάνδρου ζώνην εἰς τὴν Ἰταλίαν, τὴν δὲ Βορείαν Ἀνατολίαν, συμπεριλαμβανομένων τῆς Προύσης καὶ τῆς Ἀγκύρας, εἰς τὴν Γαλλίαν, ἐνῷ ἤδη, ἀπὸ τοῦ Μαρτίου 1919, συμμαχικὰ στρατεύματα εἶχον εἰσέλθει εἰς Κωνσταντινούπολιν. Βραδύτερον, τῇ 10 Αὐγούστου 1920, ὑπεγράφετο ἡ συνθήκη τῶν Σεβρῶν, δυνάμει τῆς ὁποίας πρὸς τοῖς ἀνωτέρω ἀπεσπῶντο ἐκ τῆς Τουρκίας ὁριστικῶς ἐν Εὐρώπῃ μὲν ἡ Ἀνατολικὴ Θρᾴκη μέχρι τῆς περιοχῆς τῆς Τσατάλτζας, ἐν Ἀσίᾳ δὲ ἡ Ἀραβία, ἡ Συρία, ἡ Παλαιστίνη καὶ ἡ Μεσοποταμία. Ἡ Γαλλία ὅμως ἀπὸ τῆς ἐπιούσης ἀκόμη τῆς ὑπογραφῆς τῆς συνθήκης ταύτης, δι' ἧς ἀφῃρεῖτο ἀπ' αὐτῆς ἡ Κιλικία, ἀντέδρασεν εἰς τὴν σταθεροποίησιν τοῦ καθεστῶτος, ὅπερ ἐδημιούργησεν ἡ συνθήκη τῶν Σεβρῶν, μάλιστα δὲ διὰ τοῦ Γάλλου πληρεξουσίου Πικὼ προῆλθεν ἐν Σεβαστείᾳ καὶ εἰς συνεννοήσεις μετὰ τοῦ Μουσταφᾶ Κεμάλ, ἅμα ὡς οὗτος ἐπανεστάτησε κατὰ τῆς κυβερνήσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ. καὶ λ. *Κιλικία*).

Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ Ἑλλάς, ἐκτελοῦσα τὴν ἐντολὴν τῆς πρεσβευτικῆς διασκέψεως τῆς 1/14 Μαΐου 1919, ἀπεφάσισε τὴν εἰς Μ. Ἀσίαν ἐκστρατείαν πρὸς ἐπιβολὴν τῆς τάξεως καὶ τοῦ κράτους τοῦ νόμου εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Σμύρνης.

### ΙΙ. Α' ΠΕΡΙΟΔΟΣ ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΩΝ

### *(2 Μαΐου 1919—1 Νοεμβρίου 1920)*

Ἡ Ι ἑλληνικὴ μεραρχία, συγκεντρωθεῖσα εἰς Ἐλευθερὰς καὶ ἐπιβιβασθεῖσα ἐπὶ πλοίων, διέπλευσεν ἐκεῖθεν τὸ Αἰγαῖον πέλαγος, συνοδείᾳ ἑλληνικῶν καὶ ἀγγλικῶν ἀντιτορπιλλικῶν, καὶ ἀπεβιβάσθη τῇ 2ᾳ Μαΐου 1919 εἰς Σμύρνην, ἣν καὶ κατέλαβε. Κατὰ τὴν κατάληψιν ὅμως αὐτῆς ὡς καὶ τῶν δεσποζόντων τῆς πόλεως ὑψωμάτων, ἡ Ι μεραρχία, μὴ λαβοῦσα τὰ προσήκοντα μέτρα ἀσφαλείας, προσεβλήθη ὑπὸ τῆς τουρκικῆς ἐν Σμύρνῃ φρουρᾶς καὶ ἀπῃτήθη νὰ καταβάλῃ προσπαθείας, ὅπως ἐξουδετερώσῃ τὴν τοιαύτην ἀντίστασιν (βλ. λ. *Σμύρνη*). Ἀφοῦ δὲ ἠδυνήθη νὰ ἐπιβάλῃ τὴν τάξιν ἔν τε τῇ Σμύρνῃ καὶ τοῖς προαστείοις αὐτῆς, ἐπεξέτεινε ταχέως τὴν ζώνην κατοχῆς, εἰσδύσασα πρὸς πάσας τὰς κοιλάδας. Οὕτω μέχρι τέλους Μαΐου 1919 κατελήφθη ἅπασα ἡ ὡς ἀνωτέρω ἐδαφικὴ ἔκτασις· ἐκ μὲν τῆς κοιλάδος τοῦ Μαιάνδρου διὰ τοῦ Ἀϊδινίου μέχρι τοῦ Ναζλί· ἐκ τῆς κοιλάδος τοῦ Καΰστρου διὰ τῶν Θείρων καὶ τοῦ Μπαϊνδηρίου μέχρι τοῦ Ὀδεμησίου· ἐκ τῆς κοιλάδος τοῦ Ἕρμου διὰ τῆς Μαινεμένης - Μαγνησίας - Κασαμπᾶ - Ἀχμετλῆ μέχρις Ἀξαρίου· ἐκ δὲ τῆς κοιλάδος τοῦ Καΐκου μέχρι τῆς Περγάμου καὶ τῶν Κυδωνιῶν. Ἡ κατάληψις τῶν εἰρημένων πόλεων ἐγένετο ἄνευ ἑτέρου τινὸς ἐπεισοδίου, μόνον δὲ τὴν 16 Μαΐου 1919, κατὰ τὴν κατάληψιν τῶν Κυδωνιῶν, καὶ τὴν 19 Μαΐου 1919, κατὰ τὴν κατάληψιν τοῦ Ὀδεμησίου, οἱ Τοῦρκοι προέβαλον μικρὰν ἀντίστασιν, ἣν ὅμως ἐξουδετέρωσαν τὰ ἑλληνικὰ τμήματα κατοχῆς. Ἀλλ' ἡ διεύρυνσις τῆς ἑλληνικῆς ζώνης ἤρξατο ἤδη ἀπὸ τοῦ Μαΐου 1919 συναντῶσα δυσχερείας, συνισταμένας ἰδίως εἰς τὰ ἑξῆς:

α) Ὠργανώθη ὑπὸ τοῦ Μουσταφᾶ Κεμὰλ βιαία στρατολόγησις τῶν Τούρκων ἐφέδρων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας καὶ ἄλλων ληστρικῶν τουρκικῶν στοιχείων (τσέτηδων) καὶ συνεκροτήθησαν αἱ καλούμεναι «ἐθνικαὶ ὀργανώσεις», διὰ τῆς ἱδρύσεως ἐπαναστατικῶν κέντρων, ὧν τὰ κυριώτερα εὑρίσκοντο εἰς Πάνορμον καὶ εἰς Ντενισλί, δευτερεύοντα δὲ τοιαῦτα εἰς Μπαλούκεσερ, Σόμα καὶ Φιλαδέλφειαν. Σκοπὸς τῶν κέντρων τούτων ἦτο ὁ σχηματισμὸς καὶ ἡ συντήρησις διαφόρων σωμάτων ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν ἀξιωματικῶν Τούρκων πρὸς ἀντίστασιν κατὰ πάσης πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς χώρας ἐξαπλώσεως τῆς ἑλληνικῆς στρατιωτικῆς κατοχῆς. Δεδομένου ὅτι οὐδεὶς ἔλεγχος ἐπὶ τοῦ τουρκικοῦ ὁπλισμοῦ καὶ τῶν πυρομαχικῶν, τῶν ἀποκειμένων εἰς ἀποθήκας, ἠσκεῖτο ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, εἰς οὓς οἱ σύμμαχοι εἶχον ἀναθέσει τὸ ἔργον τοῦτο, αἱ σχηματιζόμεναι τουρκικαὶ ὁμάδες ἐξωπλίζοντο καὶ ἀνεφωδιάζοντο εἰς πυρομαχικὰ ἀκωλύτως. Αἱ ὑπὸ Τούρκων ἀξιωματικῶν ὀργανούμεναι ἐπιτόπιοι αὗται ὁμάδες, μολονότι εὐνοούμεναι ὑπὸ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει τουρκικῆς κυβερνήσεως, ὑπήχθησαν ἐν τούτοις, διὰ νὰ μὴ περιπλέκωσι τὰς σχέσεις αὐτῆς πρὸς τὰς Μεγάλας Δυνάμεις, ὑπὸ τὴν ὀργάνωσιν τῶν ἐθνικῶν τουρκικῶν δυνάμεων τῆς Ἀνατολίας, ἧς προΐστατο ὁ Μουσταφᾶ Κεμὰλ πασᾶς.

β) Τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τοῦ Κεμὰλ δὲν ηὐνοεῖτο κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τῆς μεγάλης πλειονότητος τοῦ μουσουλμανικοῦ λαοῦ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, προσκειμένου ταῖς ἐθνικαῖς παραδόσεσι καὶ τῷ σουλτάνῳ τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ἀλλ' ἡ ἀπόβασις τῶν Ἑλλήνων εἰς Σμύρνην ἐξῆψε τὸν φανατισμὸν τῶν Τούρκων πατριωτῶν, οἵτινες σοβα-

Digitized by Google

ρώτατα ἐνίσχυσαν τότε τὰς ἐθνικάς ὀργανώσεις, ταχθέντες ἀπροκαλύπτως ὑπὲρ τῆς λεγομένης «Μεγάλης Ἐθνικῆς Συνελεύσεως», ἥτις εἶχε συνέλθει κατὰ πρῶτον μὲν εἰς Σεβάστειαν, εἶτα δὲ εἰς Ἄγκυραν.

γ) Ἀπὸ τῆς ἐπιούσης τῆς ἡμέρας τῆς ἀποφάσεως τῶν Μεγάλων Δυνάμεων, ὅπως ἀποβιβασθῇ ἑλληνικὸς στρατὸς εἰς Σμύρνην καὶ τὴν περιοχήν της, τινὲς αὐτῶν, ὧν τὰ συμφέροντα ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ δὲν συνέπιπτον πρὸς τὴν ληφθεῖσαν ἀπόφασιν, ἤρξαντο ἀντιδρῶσαι εἰς τὴν πραγματοποίησιν τῆς παγιώσεως τῆς ἑλληνικῆς στρατιωτικῆς κατοχῆς ἐπὶ τῆς Σμύρνης καὶ τῆς ἐνδοχώρας αὐτῆς. Οὕτω τὴν 3ην Μαΐου 1919 τμήματα ἰταλικοῦ στρατοῦ ἀποβιβασθέντα εἰς Νέαν Ἔφεσον καὶ προελάσαντα ἐν τῇ νοτίως τοῦ Μαιάνδρου ζώνῃ, ἠνάγκασαν τὰ ἑλληνικὰ τμήματα τὰ προχωρήσαντα περὶ τὰ 3 χλμ. νοτίως τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀϊδινίου ν' ἀποσυρθῶσιν, ἀνακληθέντα βορειότερον (19 Μαΐου). Πρὸς στιγμὴν μάλιστα τότε εἶχε διαταχθῆ καὶ ἡ ἐγκατάλειψις τοῦ τμήματος τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀγιασουλοὺκ-Μπαλατζίκ, κατόπιν ὅμως ἐνεργειῶν τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως διετηρήθη ἡ φρουρὰ τῆς γραμμῆς καὶ τῶν τεχνικῶν αὐτῆς ἔργων, ἀπαγορευθείσης μόνον τῆς ἐγκαταστάσεως ἑλληνικῶν τμημάτων νοτίως ταύτης. Ἐν τῇ ἰταλικῇ ἐκείνῃ ζώνῃ κατοχῆς ὠργανοῦντο συμμορίαι τουρκικαί, τῶν ὁποίων τὴν διάλυσιν δὲν ἠδύναντο νὰ ἐπιδιώξωσιν αἱ ἑλληνικαὶ στρατιωτικαὶ ἀρχαί, ὡς μὴ ἔχουσαι ἐν τούτῳ ἐλευθερίαν ἐνεργείας, δεδομένου ὅτι προαπῃτεῖτο ἔγκρισις τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Κάλθορπ, ὅστις δὲν ἐπέτρεπεν ἔντονον δρᾶσιν.

δ') Ἀπὸ τῆς 8/21 Μαΐου, ὁπότε διορισθεὶς εἶχεν ἀναλάβει ἐν Σμύρνῃ τὰ καθήκοντα τοῦ ὑπάτου ἁρμοστοῦ ὁ Α. Στεργιάδης, αἱ ἀποφάσεις τῶν στρατιωτικῶν ἀρχῶν ἐν γένει ὑπεβάλλοντο ὑπὸ τὴν ἔγκρισιν τῆς ἑλληνικῆς πολιτικῆς ἀρχῆς, κατὰ συνέπειαν δέ, ὡς ἐξαρτώμεναι ἐκ τῆς πολιτικῆς σκοπιμότητος, ἔδει νὰ ὦσιν ἔτι μᾶλλον περιωρισμέναι καί, κατ' ἀναπότρεπτον ἀνάγκην, ἐστερημέναι πρωτοβουλίας.

Ἡ Ι ἑλληνικὴ μεραρχία εἶχεν ἐνισχυθῆ κατὰ Μάϊον 1919 διὰ τοῦ 8ου συντάγματος Κρητῶν, διὰ τοῦ 3ου συντάγματος ἱππικοῦ καὶ διὰ τμημάτων τῆς μεραρχίας Ἀρχιπελάγους, ἀπὸ δὲ τῆς 2 Ἰουνίου ἐνισχύθη καὶ διὰ τῶν λοιπῶν δυνάμεων τοῦ Α' σώματος στρατοῦ, τῶν ἐπιστρεφουσῶν ἐκ τῆς εἰς Ρωσίαν ἐκστρατείας, ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Κ. Νίδερ, ὅστις καὶ ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ κατοχῆς ὑπὸ τὰς προεκτεθείσας συνθήκας.

Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἤρξαντο αἰφνιδιαστικαὶ τῶν Τούρκων ἐνέργειαι κατὰ τῶν ἑλληνικῶν τμημάτων κατοχῆς. Οὕτως: α') Τῇ 2ᾳ Ἰουνίου προσεβλήθη τὸ ἀπόσπασμα Περγάμου, ὅπερ ὑποχωρῆσαν διὰ Μαινεμένης ὑπέστη ἐκεῖ νέαν ἐπίθεσιν, ἐνισχυθὲν δὲ ἀνεκατέλαβε τὴν Πέργαμον τῇ 7/20 Ἰουνίου, ἀφοῦ ὅμως πρότερον οἱ Τοῦρκοι εἶχον ἐκτραπῆ εἰς φρικώδη κατὰ τῶν Ἑλλήνων κατοίκων ὄργια καὶ ἐγκλήματα. β') Τῇ 7/20 Ἰουνίου, αἰτήσει τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Φὶτς Μόρις, ἐξεκενώθη ὑπὸ τάγματος τοῦ 4ου συντάγματος πεζικοῦ τὸ Ναζλί, ἅτε μὴ ἀνῆκον εἰς τὴν ἑλληνικὴν ζώνην κατοχῆς· ἡ πόλις ὅμως ὑπέστη τὴν αὐτὴν ὡς πρὸς τὰς φρικαλεότητας τύχην, κατασφαγέντων τῶν Ἑλλήνων αὐτῆς. γ') Διεσκορπίσθησαν τουρκικαὶ συγκεντρώσεις παρατηρηθεῖσαι πεὶ τὸ Ἀξάριον καὶ Σαλιχλῆ, ἀλλὰ τὰ ἑλληνικὰ στρατιωτικὰ τμήματα ὑπεχρεώθησαν νὰ ἐκκενώσουν· καὶ τὰς πόλεις ταύτας, ἀξιώσει τοῦ ναυάρχου Μόρις, ὡς κειμένας ἔξω τῆς ὁρισθείσης ἑλληνικῆς ζώνης. δ') Τῇ 15/28 Ἰουνίου 1919 ἐπιτεθέντες οἱ Τοῦρκοι κατὰ τοῦ ἀποσπάσματος *Ἀϊδινίου* (βλ. λ.) ἐξηνάγκασαν αὐτὸ εἰς ὑποχώρησιν (17/30 Ἰουνίου). Ἀλλ' ἡ ἐνέργεια τῶν Τούρκων ἐκείνη ἤγαγεν εἰς ἀντεπίθεσιν τῶν Ἑλλήνων (20 Ἰουνίου/3 Ἰουλίου), καθ' ἣν ἀνακατελήφθη ἡ πόλις, μετὰ προηγηθεῖσαν ὑπὸ τῶν Τούρκων σφαγὴν ὑπερχιλίων Ἑλλήνων κατοίκων αὐτῆς, ἐν οἷς περιελαμβάνοντο παιδία, γραῖαι, γέροντες καὶ βρέφη ἀκόμη. Ἡ καταδίωξις ἐν τούτοις τῶν Τούρκων πρὸς Ν. τοῦ Μαιάνδρου ἀνεστάλη τῇ ἐπεμβάσει ἰταλικῶν τμημάτων καὶ τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Μόρις.

Περὶ τὰ τέλη Ἰουνίου ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς κατοχῆς ἦτο διατεθειμένος ὡς ἀκολούθως: Ἡ Ι μεραρχία (συν/χης Παπαθανασίου) εἰς τὴν περιφέρειαν Ἀγιασουλοὺκ - Ἀϊδινίου. Ἡ ΙΙ μεραρχία (ὑποστρ. Νικ. Βλαχόπουλος) εἰς τὴν περιφέρειαν Ὀδεμησίου. Ἡ ΧΙΙΙ μεραρχία (ὑποστρ. Νεγρεπόντης) εἰς τὴν περιφέρειαν Μαγνησίας. Ἡ μεραρχία Ἀρχιπελάγους (συν/χης Χ. Τσερούλης) εἰς τὴν περιφέρειαν Περγάμου Κυδωνιῶν. Ἡ μεραρχία Σμύρνης (συν/χης Ἀλεξ. Μαζαράκης) περὶ τὴν Σμύρνην, ὡς γενικὴ ἐφεδρεία. Αἱ ὡς ἀνωτέρω ὅμως μονάδες τοῦ ἐν Μ. Ἀσίᾳ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ὑπέστησαν ἄλλαι μὲν προσωρινὴν νέκρωσιν, ὡς π. χ. τὸ Β' σῶμα στρατοῦ, ἄλλαι δὲ σημαντικὴν μείωσιν τῶν δυνάμεών των, λόγῳ τῆς ἀπολύσεως τῶν ἐφεδρικῶν κλάσεων τοῦ 1911 καὶ 1912 (διαταχθείσης κατ' Ὀκτώβριον 1919), τῆς κλάσεως τοῦ 1913 (κατὰ Νοέμβριον) καὶ τῆς τοῦ 1914 (κατὰ Δεκέμβριον ἰδίου ἔτους).

Τὴν 28 Ἰουνίου ἀφίκετο εἰς Σμύρνην τὸ γενικὸν ἑλληνικὸν στρατηγεῖον (ὑπὸ τὸν ἀντιστράτηγον Λ. Παρασκευόπουλον), ὅπερ διῴκει ἀπ' εὐθείας τὸν στρατὸν κατοχῆς. Κατὰ τὸ τέλος ὅμως Ἰουλίου, ἐπεμβάσει τοῦ ὑπάτου ἁρμοστοῦ, ἐπανῆλθε τοῦτο εἰς Θεσσαλονίκην, ἀναλαβόντος αὖθις τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ κατοχῆς Μ. Ἀσίας τοῦ διοικητοῦ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ ὑποστρατήγου Νίδερ.

Μέχρι τέλους τοῦ ἔτους 1919 οἱ Τοῦρκοι ἐξηκολούθουν τὰς παρενοχλήσεις αὐτῶν, ὄντες ἐνεργητικώτεροι ἰδίως εἰς τὰς περιοχὰς Ὀδεμησίου καὶ Ἀϊδινίου. Ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς ὅμως δὲν ἠδύνατο νὰ ὑπερβῇ τὴν ὁρισθεῖσαν αὐτῷ ζώνην διὰ τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν (8 χλμ. ΒΑ. τῶν Κυδωνιῶν—20 χλμ. Β. τῆς Περγάμου—15 χλμ. ΒΑ. τῆς Μαγνησίας—20 χλμ. ΒΑ. τοῦ Κασαμπᾶ—Α. τοῦ Ὀδεμησίου—Α. τοῦ Ἀϊδινίου—βορεία ὄχθη τοῦ Μαιάνδρου μέχρις ὕψους σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Δεμερτζὶκ—σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Ἀϊδινίου—ἐκβολαὶ Καΰστρου). Τῇ ἐνεργείᾳ ἐν τούτοις τοῦ στρατηγείου τοῦ στρατοῦ κατοχῆς ἐπετράπη ὑπὸ τῶν ἀντιπροσώπων τῶν δυνάμεων, ὅπως ἐνεργῶνται ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἀντεπιθέσεις κατὰ τῶν Τούρκων, ἀλλ' εἰς βάθος οὐχὶ μεῖζον τῶν 3 χιλιομ. καὶ ὑπὸ τὸν ῥητὸν ὅρον, ὅπως μετὰ τὴν ἀντεπίθεσιν τὰ ἑλληνικὰ τμήματα ἐπανέρχωνται εἰς τὰς προτέρας αὐτῶν θέσεις.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἀφίκετο εἰς Σμύρνην (12 Δεκεμβρίου 1919) ὁ ἀντιστράτηγος Κ. Μηλιώτης Κομνηνὸς ὡς διοικητὴς τῆς στρατιᾶς Μικρᾶς Ἀσίας, ἥτις ἀπετελέσθη τότε ἐκ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ (ὑποστράτηγος Νίδερ), ἐνεργοῦντος εἰς τὰς κοιλάδας Μαιάνδρου (Ι μεραρχία) καὶ Καΰστρου (ΙΙ μεραρχία), καὶ τοῦ σώματος στρατοῦ Σμύρνης (ἀντιστράτηγος Δ. Ἰωάννου) ἐνεργοῦντος εἰς τοὺς τομεῖς Μαγνησίας—Κασαμπᾶ (ΧΙΙΙ μεραρχία) καὶ Περγάμου—Κυδωνιῶν (μεραρχία Ἀρχιπελάγους), ἐνῷ ἡ μεραχία Σμύρνης ἐξηκολούθει παραμένουσα ἐν ἐφεδρείᾳ εἰς Σμύρνην. Κατὰ τὸ πρῶτον δεκαήμερον Φεβρουαρίου 1920 συνεκροτήθη ἐν Σμύρνῃ ἡ μεραρχία Κυδωνιῶν (συνταγματάρχης πεζικοῦ Α. Ὀθωναῖος) διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν κληρωτῶν καὶ τῶν ἐφέδρων Μ. Ἀσίας, ἀφίκετο δ' ἐκεῖ ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ καὶ τὸ 1ον σύνταγμα ἱππικοῦ. Τῇ 19ῃ Φεβρουαρίου 1920 ὁμοίως ἀφίκετο ἐκ νέου εἰς Σμύρνην τὸ ἑλληνικὸν γενικὸν στρατηγεῖον (ἀντιστράτηγος Λ. Παρασκευόπουλος) καὶ ἀνέλαβε τὴν γενικὴν διοίκησιν τοῦ στρατοῦ κατοχῆς Μικρᾶς Ἀσίας.

Τῇ 17ῃ Φεβρουαρίου ἐξεκαθαρίσθη ἡ περιοχὴ τοῦ Τμώλου περὶ τὸ Γκιόλτζικ ἀπὸ τῶν ἀτάκτων τουρκικῶν ὁμάδων διὰ μεικτῶν ἀποσπασμάτων τῶν ΙΙ καὶ ΧΙΙΙ μεραρχιῶν. Ἀλλ' αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις ἐξηκολούθουν ὁλονὲν ἐνισχυόμεναι. Ἐπηκολούθησε μέχρι τῶν μέσων Ἰουνίου 1920, περίοδος σχετικῆς ἠρεμίας, καθ' ἣν οἱ ἀντίπαλοι ἠσχολοῦντο ἕκαστος εἰς ὀχυρώσεις καὶ παρασκευάς. Κατὰ τὴν ἄνοιξιν ὅμως τοῦ 1920 ἤρχισαν ν' ἀναγγέλλωνται μεγάλαι συγκεντρώσεις τουρκικῶν τμημάτων εἰς τὰς περιφερείας Φιλαδελφείας - Σαλιχλῆ καὶ Ἀξαρίου - Σόμα - Μπαλούκεσερ, κατόπιν δὲ τούτου τὸ ἐν Σμύρνῃ γενικὸν στρατηγεῖον ᾐτήσατο πλήρη ἐλευθερίαν ἐνεργείας πρὶν ἢ αἱ τουρκικαὶ αὗται δυνάμεις ἐκδηλώσωσι τὰς ἐπιθετικὰς διαθέσεις των. Μετὰ προηγηθείσας συνεχεῖς διαπραγματεύσεις τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως μετὰ τῶν συμμάχων Μ. Δυνάμεων, τὴν περίοδον τῆς στασιμότητος διεδέχθη, ἀπὸ τοῦ Ἰουνίου 1920, ἡ τῆς ἐνεργοῦ δράσεως.

Κατὰ τὰς ἀρχὰς Ἰουνίου 1920 ἡ τακτικὴ κατάστασις ἐν Μ. Ἀσίᾳ εἶχεν οὕτω:

1) *Τουρκικαὶ δυνάμεις* (κατὰ τὰς τότε πληροφορίας).—Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Μαιάνδρου: ἡ 57η μεραρχία, 1 πυροβολαρχία πεδινοῦ καὶ ἑτέρα ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, 2 ὀβιδοβόλα τῶν 105 χιλ. καὶ 1500 περίπου ἄτακτοι. Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Καΰστρου: ταξιαρχία πεζικοῦ, ἐνισχυομένη ὑπὸ ἀτάκτων μετὰ πεδινοῦ καὶ ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, κατέχουσα ὠργανωμένας θέσεις. Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Ἕρμου: τὸ 13ον σῶμα στρατοῦ, σύνταγμα ἱππικοῦ, συμμορίαι ἀτάκτων, συγκεκροτημένων εἰς τάγματα, 16 πεδινὰ καὶ 8 ὀρειβατικὰ πυροβόλα, τεταγμένα εἰς τὴν νοτίως τοῦ Σαλιχλῆ μέχρι τῆς λίμνης τοῦ Μαρμαρᾶ ὠχυρωμένην γραμμήν. Εἰς τὸν τομέα Μαγνησίας - Σόμα - Ἀδραμυττίου, στοιχεῖα τῶν 60ῆς καὶ 61ης μεραρχιῶν μετὰ συμμοριῶν ἀτάκτων. Εἰς τὴν ἰταλικὴν ζώνην, συμμορίαι ὑπὸ τὸν Γιουροὺκ Ἀλῆ. Εἰς Μπαλούκεσερ, εἰς Ἀφιὸν Καρᾶ Χισὰρ καὶ Ἐσκὶ Σεχὶρ ἐφεδρεῖαι. Ἐννοεῖται ὅτι αἱ τουρκικαὶ αὗται μονάδες ἦσαν ἠλαττωμένης κατὰ πολὺ δυνάμεως καὶ εὑρίσκοντο ἀκόμη ἐν τῷ συγκροτεῖσθαι.

2) *Ἑλληνικαὶ δυνάμεις*.—Εἰς τὰς κοιλάδας τοῦ Μαιάνδρου καὶ τοῦ Καΰστρου, τὸ Α' σῶμα στρατοῦ (Ι καὶ ΙΙ μεραρχίαι). Εἰς τὰς κοιλάδας τοῦ Ἕρμου καὶ τοῦ Καΐκου, τὸ σῶμα στρατοῦ Σμύρνης (ΧΙΙΙ μεραρχία, μεραρχία Σμύρνης, μεραρχία Ἀρχιπελάγους) καὶ ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ. Ἐφεδρεῖαι: ἡ μεραρχία Κυδωνιῶν, στοιχεῖα τῆς μεραρχίας Κρήτης καὶ βαρὺ πυροβολικόν.

***Ἐντολὴ τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς.*** Ἡ ἑλληνικὴ Στρατιὰ ἐντολὴν εἶχε διὰ μὲν τοῦ Α' σώματος στρατοῦ νὰ καταλάβῃ τὴν ἐπὶ τῆς πρὸς Ἀφιὸν Καρᾶ Χισὰρ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς στενωπὸν Ὀμὲρ Μπαμπᾶ (Α. τῆς Φιλαδελφείας) καὶ τοὺς ὀρεινοὺς ὄγκους Μεχμετλῆ - δὰγ καὶ Τουρκαλῆ - δὰγ μέχρι τοῦ Μαιάνδρου· διὰ δὲ τοῦ σώματος στρατοῦ Σμύρνης νὰ προελάσῃ μέχρι τῆς γραμμῆς: 30 χιλμ. ἀνατολικῶς τοῦ Ἀξαρίου—15 χλμ. βορείως τοῦ Σόμα.

Τὴν πρωΐαν τῆς 9 Ἰουνίου ἤρξατο ἡ ἐνέργεια τοῦ Σώματος Στρατοῦ Σμύρνης: α') Διὰ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ καὶ τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας, ἐπιχειρούσης δι' ἑνὸς μὲν μεικτοῦ ἀποσπάσματος αὐτῆς πρὸς Σάρδεις-Σαλιχλῆ, δι' ἑτέρου δὲ τοιούτου πρὸς Μπὶν Τεπέδες-Μαρμαρᾶ-Σαλιχλῆ καὶ διὰ τρίτου τοιούτου πρὸς Παπάσκιοϊ-Ἀξάριον. β') Διὰ τῆς μεραρχίας Σμύρνης πρὸς Τατὰρ - Ἀξάριον· καὶ γ') Διὰ τῆς μεραρχίας Ἀρχιπελάγους, ἐπιχειρούσης διὰ Γιοὺνδ-δὰγ πρὸς Ἀξάριον μὲ τὸ μεῖζον μέρος, καὶ διὰ τοῦ Κινὶκ πρὸς Σόμα μὲ ἓν μεικτὸν αὐτῆς ἀπόσπασμα. Τὴν δὲ 10 Ἰουνίου ἐκινήθη καὶ τὸ Α' σῶμα στρατοῦ πρὸς ἐπίθεσιν, ἐν μὲν τῇ κοιλάδι τοῦ Μαιάνδρου διὰ τῆς Ι μεραρχίας αὐτοῦ, ἐν δὲ τῇ τοῦ Καΰστρου διὰ τῆς ΙΙ μεραρχίας. Ἀποτέλεσμα τῆς ἐνεργείας ταύτης τῆς στρατιᾶς ὑπῆρξεν ἡ κατάληψις διαδοχικῶς τῶν Μπὶν-Τεπέδων, τῶν Μαρμάρων καὶ τοῦ Ἀξαρίου (9 Ἰουνίου), τοῦ Κέλες, τῆς Μεσωγίδος καὶ τοῦ Σαλιχλῆ τὴν 10 Ἰουνίου, τοῦ Κιόσκ, τοῦ Σουπτὰν Χισάρ, τῆς Φιλαδελφείας, τοῦ Κὶρκ-Ἀγάτς, μετὰ μάχην παρὰ τὴν Χάρταν, καὶ τοῦ Σόμα τὴν 11 Ἰουνίου. Μετὰ δὲ ταῦτα ἡ ἑλληνικὴ στρατιά, καλυφθεῖσα πρὸς ἀνατολὰς διὰ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ (Ι καὶ ΙΙ μεραρχιῶν) καὶ διὰ τῆς μεραρχίας Κυδωνιῶν, συνεκεντρώθη περὶ τὸ Γκέλεμπε-Κὶρκ Ἀγάτς-Σόμα, ὅπως ἐκεῖθεν ἀχθῇ διὰ τῆς λοιπῆς ὁμάδος μεραρχιῶν πρὸς βορρᾶν, πρὸς Μπαλούκεσερ-Πάνορμον, ὑπὸ τὴν ἄμεσον διοίκησιν τοῦ ἀρχιστρατήγου. Ἡ ὁμὰς αὕτη μεραρχιῶν πρὸς βορρᾶν περιελάμβανεν ἐν πρώτῃ μὲν γραμμῇ: ἀπόσπασμα τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας, τὴν μεραρχίαν Σμύρνης καὶ τὴν μεραρχίαν Ἀρχιπελάγους, μὲ προωθημένην ἐπὶ τοῦ μετώπου τὴν ταξιαρχίαν ἱππικοῦ (συνταγματάρχης Π. Νικολαΐδης), ἐν δευτέρᾳ δὲ γραμμῇ τὴν ὑπόλοιπον δύναμιν (τοῦ ὄγκου) τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας (εἰς Ἀξάριον). Τὸ δεξιὸν τῆς ὁμάδος ταύτης μεραρχιῶν ἐκάλυπτον ἡ μεραρχία Κυδωνιῶν καὶ ἡ ΙΙ μεραρχία, κατέχουσαι τὴν γραμμὴν Μάρμαρα—Ἄδαλα—Κούλα—Ἐλβανλάρ. Τὴν 16 Ἰουνίου ἤρξατο ἡ προέλασις τῶν εἰρημένων μεραρχιῶν. Μετὰ μάχην τῆς μεραρχίας Ἀρχιπελάγους παρὰ τὴν Κερασοῦντα καὶ ἀσημάντους τινὰς συμπλοκὰς ἐπὶ τοῦ λοιποῦ μετώπου, κατελήφθη τῇ 17 Ἰουνίου τὸ Μπαλούκεσερ, ἐνῷ συγχρόνως τὴν ἰδίαν ἡμέραν ἀπεβιβάσθη εἰς Πάνορμον καὶ Ἀρτάκην ἡ μεραρχία Ξάνθης (ὑποστράτηγος Κ. Μαζαράκης Αἰνιὰν) προερχομένη ἐκ Θράκης, ἑτέρα δέ τις φάλαγξ ἐκ Κυδωνιῶν προελάσασα εἰσῆλθεν ἀκωλύτως εἰς Ἀδραμύττιον. Τὴν 19ην Ἰουνίου προχωρήσασα πρὸς Β., πρὸς Σουζουρλοῦ, ἡ ὁμὰς μεραρχιῶν ἐκ Μπαλούκεσερ, προηγουμένης τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, συνεδέθη μετὰ τῆς ἀντιθέτως ἀπὸ Β. πρὸς Ν. χωρούσης μεραρχίας Ξάνθης, ἄνευ τινὸς ἀντιστάσεως. Οὕτως ἅπασα ἡ ἐδαφικὴ ζώνη ἑκατέρωθεν τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μαγνησίας—Πανόρμου, ὡς καὶ ἡ λοιπὴ ἔκτασις δυτικῶς αὐτῆς μέχρι τοῦ Αἰγαίου, περιῆλθεν εἰς τὴν κατοχὴν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ.

Τὸ γενικὸν στρατηγεῖον τότε ἔκρινεν ὅτι ἔτι μᾶλλον ἔδει νὰ ἐπεκτείνῃ πρὸς βορρᾶν τὴν ζώνην κατοχῆς καὶ διέταξεν, ἵνα ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ καὶ ἡ μεραρχία Ἀρχιπελάγους, ἐνισχυομένη καὶ διὰ συντάγματος τῆς μεραρχίας Σμύρνης, προχωρήσωσι πρὸς Προῦσαν—Κίον. Οὕτω δὲ προελάσασα τῇ 24 Ἰουνίου ἡ μεραρχία αὕτη, ἡγουμένης τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, κατέλαβε τὴν ἑπομένην ἡμέραν, μετὰ σφοδρὸν ἀγῶνα, τὴν Προῦσαν καὶ ἐπεξέτεινε τὴν κατοχὴν καὶ εἰς Κίον. Κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἡ μὲν ΙΙ μεραρχία (συνταγματάρχης Π. Γαργαλίδης) προωθήθη ὁμοίως ἐπὶ τῶν περιβαλλόντων τὴν πεδιάδα τῆς Φιλαδελφείας ὀρέων ὡς καὶ εἰς Κοῦλα, ἡ δὲ Ι μεραρχία κατέλαβε, μετὰ ἀσθενῆ ἀντίστασιν, τὸ Ναζλί. Εἰς τὴν προώθησιν ὅμως τῆς Ι μεραρχίας παρέσχον δυσκολίας τινὰς τουρκικαὶ ὁμάδες ἀτάκτων (τσέτηδες), προερχόμεναι ἀπὸ τῆς ἰταλικῆς ζώνης Ἐφέσου—Σωκίων, διὰ τῆς ἀνατινάξεως τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀγιασουλοὺκ—Μπαλατζίκ. Ἡ μεραχία τότε προώθησε τὸ 5ον σύνταγμα πεζικοῦ ἐπὶ δεσποζόντων σημείων, πρὸς κάλυψιν ἀπὸ νότου τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς· ἀλλὰ τοῦτο προὐκάλεσεν ἐπεισόδια μετὰ τοῦ ἰταλικοῦ στρατοῦ, διευθετηθέντα διὰ στρατιωτικῆς συμφωνίας, ὑπογραφείσης εἰς Ἀγιασουλούκ.

Ὁμοίως καὶ ἡ μεραρχία Κυδωνιῶν ἐξέπεμψεν ἐκ Σαλιχλῆ ἀποσπάσματα εἰς Ντεμιρτζῆ, Γκιόρδες καὶ Σιντιργῆ πρὸς ἐπιβολὴν τῆς τάξεως. Ἀλλὰ τὸ εἰς Ντεμιρτζῆ ἀπόσπασμα προσβληθὲν ὑπὸ τῆς ὁμάδος ἀτάκτων τοῦ Ἐτὲμ βέη καὶ τοῦ Μπεχλιβὰν ἠναγκάσθη, κατόπιν ἀγῶνος, τῇ 18ῃ Ἰουλίου ν' ἀποσυρθῇ, ἐγκαταλιπὸν τὴν πόλιν, ἥτις ἀνεκτήθη καὶ

Digitized by Google

πάλιν τῇ 22ᾳ ἰδίου μηνός. Τὴν 8 Αὐγούστου οἱ Τοῦρκοι προσβαλόντες αὖθις τὸ Ντεμιρτζῆ ἀπεκρούσθησαν.

Τὸ γενικὸν στρατηγεῖον τότε, ὑπαγαγὸν καὶ τὴν μεραρχίαν Κυδωνιῶν ὑπὸ τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ, ὅπως ἀπαλλάξῃ τοῦτο πάσης ἀπὸ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Σιμὰβ ἐνοχλήσεως, διέταξε νὰ γίνῃ νέα συνδεδυασμένη προσπάθεια πρὸς διεύρυνσιν τῆς ζώνης κατοχῆς πρὸς ἀνατολάς, πρὸς τὸ Οὐσὰκ-Τζεντὶς-Σιμάβ. Ὄντως τῇ 16ῃ Αὐγούστου κατελήφθησαν: τὸ Οὐσὰκ ὑπὸ τῆς II μεραρχίας καὶ τὸ Σιμὰβ ὑπὸ ἀποσπάσματος τῆς μεραρχίας Κυδωνιῶν, τῇ δὲ 22ᾳ ἰδίου μηνὸς ἡ XIII μεραρχία καὶ τὸ εἰρημένον ἀπόσπασμα τῆς μεραρχίας Κυδωνιῶν κατέλαβον τὸν Τζεντίς, ἐνῷ συγχρόνως ἡ I μεραρχία προελάσασα ὁμοίως εἶχε καταλάβει τὴν Ὀρτάντζαν, τὸ Μπουλαντάν, τὸ Γκιουνεΐ, ἤτοι ἅπασαν τὴν βορείως τοῦ Μαιάνδρου ἐδαφικὴν ἔκτασιν. Ἀλλὰ τῇ 11ῃ Ὀκτωβρίου τουρκικὸς στρατὸς ὁρμηθεὶς ἐκ Κιουταχείας ἐπετέθη κατ᾽ ἀποσπάσματος τῆς XIII ἑλληνικῆς μεραρχίας εἰς Τζεντίς, ὃ ἐξηνάγκασεν εἰς ὑποχώρησιν εἰς Χάν. Ἐκεῖ τὴν 14ην Ὀκτωβρίου ἡ XIII μεραρχία ἐνισχύσασα τὸ εἰρημένον ἀπόσπασμα, ἀπέκρουσε νέαν αἰφνιδίαν ἐπίθεσιν τῶν Τούρκων, καὶ προχωρήσασα ἀνακατέλαβε (18 Ὀκτωβρίου 1920) τὸ Τζεντίς, ὅπερ μετὰ ἕνα μῆνα, λόγῳ δυσκολιῶν ἀνεφοδιασμοῦ, ἐξεκένωσεν αὖθις, ἀποσυρθεῖσα εἰς Οὐσάκ· Ἐκ παραλλήλου, νοτιώτερον, ἡ II μεραρχία προχωρήσασα κατέλαβεν ἀκωλύτως σχεδὸν τὸ Μπανάζ, τῶν Τούρκων ἀποσυρθέντων πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ.

Κατὰ τὸ πρῶτον δεκαήμερον τοῦ Σεπτεμβρίου 1920 ἡ ἄρτι σχηματισθεῖσα μεραρχία Μαγνησίας (συνταγματάρχης Π. Γαργαλίδης) ἀπεστάλη εἰς Νικομήδειαν, αἰτήσει τοῦ ἀγγλικοῦ στρατηγείου Κωνσταντινουπόλεως πρὸς ἀντικατάστασιν τῆς ἐκεῖ 212ης βρεττανικῆς ταξιαρχίας, ἐνῷ τὸ ἐν Μπέϊκος παρὰ τὸν Βόσπορον τεταγμένον τάγμα τῆς μεραρχίας Ἀρχιπελάγους, ἐπεκτεῖναν τὴν παράταξιν τῆς μεραρχίας Μαγνησίας πρὸς βορρᾶν ἐν τῇ χερσονήσῳ τῆς Βιθυνίας, διέκοπτε πᾶσαν κατὰ ξηρὰν ἐπικοινωνίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως μετὰ τῆς Ἀνατολίας. Οὕτω, περὶ τὸ τέλος Ὀκτωβρίου 1920, ἡ ἑλληνικὴ στρατιὰ Μ. Ἀσίας κατεῖχε τὸ μέτωπον ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σαγγαρίου μέχρι τοῦ Εὐξείνου Πόντου, διὰ τοῦ Ἀδᾶ Παζὰρ—Ἀσκανίας λίμνης —Τίμπος — ἀνατολικῶς τῆς Προύσης — περιοχῆς Οὐσὰκ—Ὀτουρὰκ— τῆς ποταμίας γραμμῆς τοῦ Μαιάνδρου μέχρι καὶ τῆς Ἐρυθραίας. Ἐπὶ τούτοις δὲ τῇ 27ῃ Ἰουλίου (π.ἡ.) ὑπεγράφετο ἡ συνθήκη τῶν Σεβρῶν, δι᾽ ἧς ἐδημιουργεῖτο ἓν ὁπωσδήποτε πάγιον καθεστὼς διά τε τὴν ἀνατολικὴν Θρᾴκην καὶ τὴν δυτικὴν Μ. Ἀσίαν, ἣν ὅμως συνθήκην μόνον ἀντιπρόσωπος τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει σουλτανικῆς κυβερνήσεως εἶχεν ὑπογράψει, οὐχὶ δὲ καὶ τοιοῦτος τῆς μεγάλης ἐν Ἀγκύρᾳ τουρκικῆς ἐθνοσυνελεύσεως, ἐκπροσωπουμένης ὑπὸ τοῦ Μουσταφᾶ Κεμὰλ πασᾶ. Ὁ τελευταῖος οὗτος οὐδαμῶς ἀναγνωρίσας τὴν συνθήκην ἐκείνην, ἐψήφισε διὰ τῆς εἰρημένης ἐθνοσυνελεύσεως τὸ καλούμενον ἐθνικὸν συμβόλαιον, καθ᾽ ὃ διεδηλοῦτο ἡ ἀδιάσειστος θέλησις τοῦ ἔθνους «νὰ μὴ παύσῃ τοῦτο πολεμοῦν, εἰ μὴ μόνον ὅταν ὁ ἐχθρὸς ἐκδιωχθῇ πέραν τοῦ Ἕβρου».

Προσθετέον ἐνταῦθα ὅτι τῇ 31 Ὀκτωβρίου 1920 ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις διέταξε τὴν ἀπόλυσιν τῆς ἐφεδρικῆς κλάσεως τοῦ 1915. Οὕτω δὲ ἤδη παρέμενον ὑπηρετοῦσαι ὑπὸ τὰ ὅπλα αἱ κλάσεις 1919, 1918, 1917 καὶ 1916. Κατὰ συνέπειαν εὐνόητον ὅτι ἔτι μᾶλλον εἶχεν ἐλαττωθῇ ἡ δύναμις τῶν μαχίμων μονάδων τοῦ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ στρατοῦ.

### II). Β΄ ΠΕΡΙΟΔΟΣ ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΩΝ

*(1 Νοεμβρίου 1920—5 Σεπτεμβρίου 1922)*

Μετὰ τὰς κατὰ τὴν 1/14 Νοεμβρίου 1920 γενομένας βουλευτικὰς ἐν Ἑλλάδι ἐκλογάς, τὴν κυβέρνησιν τοῦ Ἐλ. Βενιζέλου διεδέξατο κατὰ πρῶτον μὲν ἡ μεταβατικὴ κυβέρνησις Δημ. Ράλλη καὶ Ν. Καλογεροπούλου, ἔπειτα δὲ ἡ ὁριστικὴ τοιαύτη τοῦ Δημ. Γούναρη. Ἐπηκολούθησεν ἡ παραίτησις τοῦ ἀρχιστρατήγου καὶ ἀντικατάστασις αὐτοῦ διὰ τοῦ ἀντιστρατήγου Α. Παπούλα, τοῦ Γενικοῦ Στρατηγείου μετονομασθέντος αὖθις εἰς «Στρατιὰν Μ. Ἀσίας».

Μέχρι τῶν μέσων Δεκεμβρίου ἀπόλυτος ἐκράτησεν ἠρεμία ἐφ᾽ ὅλου τοῦ μετώπου. Ἀλλὰ κατὰ τὸ δεύτερον τοῦ μηνὸς τούτου δεκαπενθήμερον σοβαραὶ συγκεντρώσεις τουρκικῶν δυνάμεων ἐγνώσθησαν εἰς Μπιλετζὶκ καὶ Μπόζεγιουκ. Ἡ διοίκησις τῆς Στρατιᾶς ἀπεφάσισε τότε νὰ ἐκτελεσθῇ ἐπιθετικὴ ἀναγνώρισις καὶ ἅμα διάλυσις τῶν τουρκικῶν ἐκείνων συγκεντρώσεων ὑπὸ τοῦ Γ΄ Σώματος Στρατοῦ ἐκ Προύσης, ἔτι δὲ ἐκ παραλλήλου σύγχρονος ἐπιδεικτικὴ ἐπίθεσις τοῦ Α΄ Σώματος ἐξ Οὐσὰκ πρὸς Μπανὰζ-Σαβασλῆ-Τσιβρίλ, πρὸς ματαίωσιν ἐνδεχομένης μεταφορᾶς τουρκικῶν στρατευμάτων ἀπὸ τοῦ νοτίου μετώπου πρὸς τὸ Δορύλαιον (Ἐσκὶ-Σεχίρ). Καὶ πρὸς ἐκτέλεσιν μὲν τῆς ἐπιθετικῆς ἀναγνωρίσεως τὸ σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Κ. Πετμεζᾶς) ὤθησε, τῇ 24 Δεκεμβρίου (π.ἡ.), ἐκ Προύσης μὲν τὴν μεραρχίαν Ἀρχιπελάγους (ὑποστράτηγος Π. Καράκαλος) δι᾽ Ἴνεγκιολ πρὸς Νασὶφ Πασᾶ-Κοβαλίτσαν, ἐκ Κίου δὲ συγχρόνως μεικτὸν ἀπόσπασμα τῆς μεραρχίας Σμύρνης (συνταγματάρχης Κ. Μπουκουβάλας) πρὸς Μπιλετζὶκ-Ποριάν. Τῇ 27 Δεκεμβρίου, μετὰ σφοδρὸν ἀγῶνα ἐπὶ τῆς Κοβαλίτσης, ἅπασαι αἱ ἐκεῖ συγκεντρωθεῖσαι διαθέσιμοι τουρκικαὶ δυνάμεις τακτικοῦ στρατοῦ ἐκ τοῦ Ἐσκὶ-Σεχὶρ καὶ αἱ ἐξ Ἀγκύρας σιδηροδρομικῶς μεταχθεῖσαι τοιαῦται, ὑπὸ τὸν Ἰσμὲτ πασᾶν, ἐξετοπίσθησαν καὶ ἐξηναγκάσθησαν, κατόπιν μεγάλων ἀπωλειῶν, νὰ ὑποχωρήσωσι πρὸς Ἐσκὶ-Σεχίρ, οὗτινος ἡ ἐκκένωσις παρεσκευάζετο. Αἱ ἑλληνικαὶ ὅμως δυνάμεις, θεωρήσασαι ὡς ἐπιτευχθέντα τὸν ἀντικειμενικὸν αὐτῶν σκοπὸν τῆς ἐπιθετικῆς ἀναγνωρίσεως, δὲν ἐξεμεταλλεύθησαν τὴν ἐπιτυχίαν, ἀλλ᾽ ἐπανῆλθον εἰς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτῶν, τοῦθ᾽ ὅπερ ἡ κυβέρνησις τοῦ Κεμὰλ ἐξεμεταλλεύθη βραδύτερον πολιτικῶς, ἅτε τῆς ἑλληνικῆς ἐπιχειρήσεως μὴ ἀχθείσης μέχρις ὁλοκληρώσεως τῆς ἐπιτυχίας (βλ. λ. *Ἴν Εὐνοῦ*). Διὰ δὲ τὴν ἀπασχόλησιν τῶν Τούρκων καὶ τὴν ἐπιδεικτικὴν κατ᾽ αὐτῶν ἐπίθεσιν, τὸ Α΄ Σῶμα Στρατοῦ προελάσαν κατέλαβεν, ἄνευ ἀντιστάσεώς τινος, τὸ Μπανὰζ - Σιβασλῆ-Μπουργκὰζ καὶ τὸ Τσιβρὶλ (26 Δεκεμβρίου π.ἡ.), μεθ᾽ ὃ θεωρῆσαν πληρωθέντας τοὺς ἀντικειμενικοὺς σκοποὺς τῆς ἐπιχειρήσεως, ἐπανῆλθε (3 Ἰανουαρίου 1921) εἰς τὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτοῦ. Αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις τῆς περιοχῆς ταύτης (2 μεραρχίαι) εἶχον διευθυνθῆ πρὸς Κιουτάχειαν πρὸς καταδίωξιν τοῦ Κιρκασίου ἀρχηγοῦ Ἐτὲμ βέη. Οὗτος, ἡγούμενος 2000 περίπου ἀτάκτων, ἤσκει μεγάλην ἐπιρροήν, ὡς εἷς τῶν κυριωτέρων ὀργανωτῶν τοῦ κεμαλικοῦ κινήματος, ἐπί τε τῶν συντρόφων αὐτοῦ καὶ ἐπὶ ὅλης τῆς περιοχῆς· ὅταν ὅμως ὁ Τοῦρκος δικτάτωρ ἀπεφάσισε τὴν διάλυσιν τῶν ἀτάκτων ὁμάδων καὶ τὴν συγκρότησιν ἑνιαίου ἐθνικοῦ τακτικοῦ στρατοῦ, ὁ Ἐτέμ, ἐπωφελούμενος τῆς ἑλληνικῆς προελάσεως, κατέλαβε τὸ Τζεντίς, τὴν Κιουτάχειαν καὶ τὸ Ἀλαγιούντ. Προσβληθεὶς ὑπὸ ἰσχυρῶν κεμαλικῶν δυνάμεων ἅμα ὡς αἱ ἑλληνικαὶ δυνάμεις ἐπανῆλθον εἰς τὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτῶν, ἠναγκάσθη νὰ ζητήσῃ τὴν συνδρομὴν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ, τυχὼν τῆς ἠθικῆς καὶ βραδύτερον τῆς ὑλικῆς αὐτοῦ ἐνισχύσεως· ἀλλ᾽ ἡττηθεὶς ἐκ νέου ὑπὸ τῶν τουρκικῶν στρατευμάτων ὑπεχώρησε, πρῶτον μὲν πρὸς Σιμάβ, εἶτα δὲ πρὸς Δεμιρτζῆ, παρεδόθη δὲ τέλος μετὰ 2.000 ὀπαδῶν ἐν Γκιόρδες (8 Ἰανουαρίου 1921) εἰς τὰς προφυλακὰς τοῦ ἀρχομένου ν᾽ ἀνασχηματίζηται ἤδη ἐν Μαγνησίᾳ Β΄ ἑλληνικοῦ σώματος. Οὕτως ἐκ τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ Δεκεμβρίου 1920 διεπιστώθη ὅτι ὠργανοῦντο μονάδες τακτικοῦ πλέον κεμαλικοῦ στρατοῦ, ἐνῷ κατὰ τὰς προηγηθείσας ἐπιχειρήσεις τοῦ Ἰουνίου, τὸ μεῖζον μέρος τῶν κεμαλικῶν δυνάμεων συνίστατο ἐξ ἀτάκτων ὁμάδων, μόνον δὲ πυρῆνές τινες τακτικῶν μονάδων ὑφίσταντο.

Κατὰ τοὺς μῆνας Ἰανουάριον καὶ Φεβρουάριον 1921 ἐπεκράτει ἐπὶ τοῦ μετώπου ἡσυχία. Ἀλλ᾽ ἤδη οἱ Τοῦρκοι ἐνέτειναν τὰς προσπαθείας αὐτῶν πρὸς συγκρότησιν ἰσχυρᾶς στρατιωτικῆς δυνάμεως, τὰς δὲ προσπαθείας ταύτας ἐνίσχυεν ἤδη ἐκ τοῦ ἐμφανοῦς καὶ ἡ κυβέρνησις τῆς Κωνσταντινουπόλεως διὰ τῆς ἀποστολῆς εἰς Ἄγκυραν πλείστων ἐφέδρων ἀξιωματικῶν, οἵτινες ἐπύκνουν τὰ στελέχη τοῦ νεαροῦ κεμαλικοῦ στρατοῦ.

***Ἐπιχειρήσεις Μαρτίου 1921.*** Κατὰ Φεβρουάριον 1921 ἐγένετο συμμαχικὴ διάσκεψις εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἀπεστάλησαν καὶ ἀντιπρόσωποι τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Τουρκίας. Ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις εἰσηγήθη εἰς τὸν ἀρχηγὸν τῆς Στρατιᾶς ὅτι ἦτο ἐπιθυμητὸν νὰ δημιουργηθῇ διὰ τὴν πολιτικὴν διαχείρισιν τοῦ ζητήματος εὐνοϊκὸν ἔδαφος ἐν τῇ διασκέψει διὰ νέας στρατιωτικῆς τινος ἐπιτυχίας, προέτεινε δὲ πρὸς τοῦτο νὰ προελάσῃ ὁ στρατὸς ἔτι μᾶλλον πρὸς ἀνατολάς, μέχρι τῆς γραμμῆς Δορυλαίου - Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ. Ἡ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἐπιχείρησις ἐπρόκειτο τότε ν᾽ ἀρχίσῃ τῇ 4 Μαρτίου (π. ἡ.), ἀλλ᾽ ἀναβληθεῖσα ἤρξατο τῇ 10 ἰδίου μηνὸς μὲ ἀντικειμενικὸν σκοπὸν τὴν κατάληψιν τοῦ Δορυλαίου καὶ τῆς Κιουταχείας. Πρὸς ἐνίσχυσιν εἶχον κληθῆ συγχρόνως ὑπὸ τὰ ὅπλα καὶ ἐφεδρικαί τινες ἡλικίαι, αἵτινες ὅμως, μήπω μεταφερθεῖσαι εἰς Μ. Ἀσίαν, δὲν εἶχον ἐνταχθῆ εἰς τὸν ἐκεῖ στρατὸν ἐκστρατείας.

Κατὰ Μάρτιον 1921 ἡ τακτικὴ κατάστασις εἶχεν ὡς ἑξῆς:

1) *Ἑλληνικαὶ δυνάμεις.* Ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς ἐσχημάτιζε δύο μεγάλας μάζας, χωριζομένας ὑπὸ τῶν ὀρεινῶν ὄγκων τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας καὶ τοῦ περὶ τὸ ὑψίπεδον τοῦ Σιμὰβ ὀρεινοῦ συγκροτήματος, τὴν μίαν περὶ τὴν Προῦσαν-Κίον καὶ τὴν ἑτέραν περὶ τὸ Οὐσάκ. Καὶ τὴν μὲν πρώτην ἀπετέλει τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ, τὸ τέως δηλαδὴ σῶμα στρατοῦ Σμύρνης (ὑποστράτηγος Ἀ. Βλαχόπουλος), περιλαμβάνον τὴν VII μεραρχίαν περὶ τὸ Ἂκ σοῦ, τὴν X περὶ τὴν Κίον, τὴν III περὶ τὴν Προῦσαν-Κεστέλ, ὡς ἐφεδρείαν, καὶ τὴν ταξιαρχίαν ἱππικοῦ. Τὴν δ᾽ ἑτέραν ὁμάδα ἀπετέλει τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Κοντούλης), συνιστάμενον ἐκ τῶν μεραρχιῶν: I περὶ τὸ Ναζλῆ, II εἰς τὸν χῶρον Ἰκὶ Σεράϊ - Τσαρλίκιοϊ καὶ XIII εἰς Καλφάκιοϊ - Καπακλὰρ (μὲ τὸ 3ον σύνταγμα πεζικοῦ αὐτῆς εἰς Τζεντίς).

Σημειωτέον ὅτι: 1) Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχον αἱ μεγάλαι μονάδες μετονομασθῆ ὡς ἑξῆς: Τὸ σῶμα στρατοῦ Σμύρνης εἰς Γ΄ σῶμα στρατοῦ, τὸ σῶμα στρατοῦ Ἐθνικῆς Ἀμύνης εἰς Δ΄ σῶμα στρατοῦ, ἡ μεραρχία Κρήτης εἰς V μεραρχίαν, ἡ τῶν Σερρῶν εἰς VI, ἡ τοῦ Ἀρχιπελάγους εἰς VII, ἡ τῆς Σμύρνης εἰς X, ἡ τῆς Μαγνησίας εἰς XI καὶ ἡ τῶν Κυδωνιῶν εἰς XII· καὶ 2) Μήπω μεταφερθεισῶν, ὡς εἴπομεν, εἰς Μικρὰν Ἀσίαν ἐξ Ἑλλάδος τῶν κληθεισῶν ὑπὸ τὰ ὅπλα ἐφεδρικῶν ἡλικιῶν, ἡ δύναμις τῶν μονάδων τοῦ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἑλληνικοῦ στρατοῦ κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην (Μάρτιος 1921) ἦτο πολὺ ἠλαττωμένη. Κατ᾽ ἀναφορὰν τοῦ ἐν Προύσῃ Γ΄ σώματος στρατοῦ πρὸς τὴν Στρατιὰν Μικρᾶς Ἀσίας, ἡ παρατακτὴ δύναμις τοῦ σώματος τούτου κατὰ λόχον ἦτο 78 τυφέκια μόνον. Ἡ ὅλη δὲ δύναμις τῶν μαχίμων μονάδων τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ δὲν ὑπερέβαινε, κατὰ τὴν ἔναρξιν τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ Μαρτίου, εἰς μὲν τὸν βόρειον τομέα (περὶ τὴν Προῦσαν) τὰς 18.000 ἀνδρῶν, εἰς δὲ τὸν νότιον τομέα (περὶ τὸ Οὐσάκ) τὰς 16.000 περίπου.

*Τουρκικαὶ δυνάμεις.* Εἰς τὸν νότιον τομέα (ἔναντι τοῦ Α΄ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ) αἱ κύριαι τουρκικαὶ δυνάμεις κατεῖχον τὴν ὠχυρωμένην τοποθεσίαν Τουμλοῦ Μπουνὰρ - Ὀτουρὰκ-Πασατζίκ, ἐνῷ ἐλαφρὰ προκαλυπτικὰ ἀποσπάσματα καὶ μικρὰ ἄλλα τμήματα ἦσαν προτεταγμένα εἰς Τζεντὶς καὶ εἰς Ἰσλάμκιοϊ. Εἰς τὸν βόρειον τομέα (ἔναντι τοῦ Γ΄ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ) αἱ μὲν κύριαι τουρκικαὶ δυνάμεις κατεῖχον τὴν ὠχυρωμένην τοποθεσίαν Κοβαλίτσα - Τσεπνὶ - Ἀβγκίν, μία δὲ μεραρχία ἱππικοῦ μετά τινων πυροβόλων καὶ ἐλαφρῶν τινων τμημάτων πεζικοῦ κατεῖχον προκεχωρημένας θέσεις ἔναντι τῆς μετωπικῆς τῶν Ἑλλήνων γραμμῆς, ἀνατολικῶς τῆς Προύσης καὶ ἐν ἀμέσῳ ἐπαφῇ μετὰ τῶν προφυλακῶν τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ.

***Ἐκτέλεσις τῆς ἐπιχειρήσεως.***—1) Τὸ περὶ τὴν Προῦσαν Γ΄ σῶμα στρατοῦ, ἐντολὴν ἔχον νὰ καταλάβῃ τὸ Ἐσκὶ Σεχίρ, προήλασεν ἀπὸ τῆς 10 Μαρτίου 1921, ἔχον τὴν μὲν VII μεραρχίαν δεξιά, ἐξ Ἂκ σοῦ πρὸς Ἴνεγκιολ-Νασὶφ Πασᾶ-Κοβαλίτσαν, τὴν III μεραρχίαν ἐν τῷ κέντρῳ, ἐκ Τίμπος πρὸς Φουντουκλοῦ-Κιντιρλὶ-Κιουπλοῦ, καὶ τὴν X μεραρχίαν ἀριστερά, ἐκ Μεντεσὲ πρὸς Γενὶ Σεχὶρ-Κιοπροὺ Χισὰρ-Μπίλετζικ-Σογιοὺτ-Ἀβγκίν. Προηγεῖτο τῆς ἀριστερᾶς πτέρυγος ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ. Κατὰ τὴν προχωρητικὴν κίνησιν αἱ μεραρχίαι III καὶ X διεσταυρώθησαν νοτίως τοῦ Μπίλετζικ, ἐναλλάξασαι τὰς ζώνας ἐνεργείας αὐτῶν. Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ, ἀπωθῆσαν εὐχερῶς τὴν δύναμιν προκαλύψεως τῶν Τούρκων, κατόπιν συμπλοκῶν τῆς μὲν VII μεραρχίας εἰς τὸ Νασὶφ Πασᾶ καὶ ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Ἀκτσὲ Μπουνὰρ (βορεία ἔξοδος στενωποῦ Καράκιοϊ), τῆς δὲ III μεραρχίας παρὰ τὸ Κιντιρλί, καὶ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ καὶ τῆς X μεραρχίας εἰς Κιοπροῦ Χισάρ, ἔφθασε τῇ 14 Μαρτίου ἐπὶ τῆς κυρίας ἀμυντικῆς τοποθεσίας τῶν Τούρκων, τῆς ἰσχυρῶς ὠργανωμένης γραμμῆς Κοβαλίτσας-Τσεπνὶ-Ἀβγκίν. Ἡ ἰδέα ἑλιγμοῦ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ συνίστατο, ὅπως προσβάλῃ τὸ δεξιὸν καὶ ἀχθῇ πρὸς τὰ νῶτα τοῦ ἐχθροῦ διὰ τῆς III μεραρχίας καὶ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, ἐν ᾧ χρόνῳ ἡ κατὰ μέτωπον πίεσις διὰ τῶν ἄλλων δύο μεραρχιῶν ἐπὶ τοῦ ὑπολοίπου τοῦ μετώπου τούτου (κέντρου καὶ ἀριστεροῦ) θὰ καθήλου τὰς ἐχθρικὰς δυνάμεις. Ἡ εἰρημένη ἀμυντικὴ τοποθεσία τῶν Τούρκων κατείχετο ἰσχυρῶς ὑπὸ τῆς δυτικῆς ὁμάδος μεραρχιῶν (διοικητὴς Ἰσμὲτ πασᾶς), ἑδρευούσης εἰς Ἐσκὶ - Σεχὶρ καὶ ἐνισχυθείσης δι᾽ ὅλων τῶν δυνάμεων, ἃς ἠδύναντο νὰ διαθέσουν αἱ λοιπαὶ ὁμάδες μεραρχιῶν, ἐξ ὧν ἡ βορεία (Μουχιεδὶν πασᾶς) εἶχε τὴν ἕδραν της εἰς Ἀδᾶ Παζάρ, ἡ δὲ νοτία (Ραφὲτ πασᾶς) εἰς Ἰκόνιον. Ἡ θέσις δηλαδὴ κατείχετο ὑπὸ τοῦ συνόλου σχεδὸν τῆς τότε δυνάμεως τῶν Τούρκων, ἀποτελουμένης ἐκ τῶν ἑξῆς μεραρχιῶν πεζικοῦ: 1ης, 4ης, 5ης Καυκάσου, 7ης, 3ης (Χεντέκ), 2ας, 24ης καὶ 61ης, ἐκ τῆς 1ης καὶ 3ης μεραρχίας ἱππικοῦ, ἐκ τοῦ τάγματος ἀσφαλείας τῆς Μεγάλης Ἐθνοσυνελεύσεως τῆς Ἀγκύρας, ἐκ μιᾶς πυροβολαρχίας τῶν 155 καὶ ἑνὸς συντάγματος μηχανικοῦ.

Ἐπιτεθεῖσα ἡ III ἑλληνικὴ μεραρχία ἐξετόπισε μὲν τὸν ἐχθρὸν ἀπὸ τῶν πρώτων αὐτοῦ χαρακωμάτων καὶ ἔθηκε πόδα ἐπί τινων ὑψωμάτων τῆς κυρίας γραμμῆς ἀντιστάσεως, ἀλλὰ δὲν κατέστη δυνατὸν νὰ τὸν ἐκδιώξῃ ὁλοσχερῶς ἐκ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Ἀβγκίν, παρὰ τὰς ἡρωϊκὰς αὐτῆς προσπαθείας. Τὸν κρατερὸν ἀγῶνα διεδέχοντο ἑκατέρωθεν λυσσώδεις ἐπιθέσεις καὶ ἀντεπιθέσεις, οὐδὲν σχοῦσαι οὐσιῶδες ἀποτέλεσμα. Ἡ ἀνδρεία τῶν ἐπιτιθεμένων ἡμιλλᾶτο πρὸς τὴν πείσμονα καρτερικότητα τῶν ἀμυνομένων καθ᾽ ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς σκληρᾶς ταύτης πάλης. Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ τότε, ὅπως ἀποσπάσῃ ἀλλαχοῦ τὴν προσοχὴν τοῦ ἐχθροῦ καὶ διευκολύνῃ τὸ ἔργον τῆς III μεραρχίας, ὤθησε τῇ 17 Μαρτίου εἰς σφοδρὰν ἐπίθεσιν

Digitized by Google

τὴν VII μεραρχίαν, ἐνισχυθεῖσαν καὶ διὰ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, ἐναντίον τῆς Κοβαλίτσης, ἣν καὶ κατέλαβεν ἡ ἡρωϊκὴ αὕτη μεραρχία, ἀπειλήσασα δι' ὑπερκεράσεως τὴν ἀριστερὰν τουρκικὴν πτέρυγα διὰ μικτοῦ ἀποσπάσματος βαδίσαντος πρὸς τὰ ΝΔ. τοῦ Ἲν Ἐϋνοῦ ὑψώματα. Ἀλλ' ἡ κατάστασις, πρὸς στιγμὴν μόνον βελτιωθεῖσα, δὲν μετεβλήθη οὐσιωδῶς. Τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ τότε συνεδύασεν ἐπίθεσιν τῆς Χ μεραρχίας μὲ κατεύθυνσιν πρὸς τὰ ὑψώματα Τσεπνὶ-Ριζᾶ πασᾶ χάνι, καὶ σύγχρονον τοιαύτην τῆς ΙΙΙ μεραρχίας κατὰ τῶν περὶ τὸ Ἀβγκὶν ὑψωμάτων. Καὶ ἡ μὲν Χ μεραρχία, ἐπιτεθεῖσα τῇ 18 Μαρτίου διὰ δύο φαλάγγων, κατέλαβε τὰ ὑψώματα Τσεπνί, ἀποκρούσασα λυσσώδεις ἐπιθετικὰς ἐπιστροφὰς τῶν Τούρκων πρὸς ἀνάκτησιν αὐτῶν, καὶ ὤθησεν εἰς προηγμένην ἐπὶ τὰ πρόσω θέσιν τὴν ἀριστερὰν αὐτῆς φάλαγγα (28ον σύνταγμα πεζικοῦ), ἀλλὰ δὲν κατέστη ἐφικτὸν ἐντὸς τῆς ἡμέρας νὰ ἀχθῇ αὕτη μέχρι τοῦ Ριζᾶ πασᾶ χάνι, ὅπως ἀποκόψῃ τὴν γραμμὴν ὑποχωρήσεως τῶν περὶ τὸ Ἀβγκὶν ἀμυνομένων Τούρκων. Ἡ δὲ ΙΙΙ μεραρχία μὴ συγχρονίσασα τὴν ἐπιθετικήν της προσπάθειαν πρὸς τὴν τῆς Χ μεραρχίας, δὲν ἐπέτυχε πλεονέκτημά τι τακτικόν. Ἀλλὰ περὶ τὴν χαραυγὴν τῆς 19 Μαρτίου ἡ προηγμένη δίκην σφηνὸς ἀριστερὰ πτέρυξ τῆς Χ μεραρχίας (28ον σύνταγμα Πεζικοῦ), ὑποστᾶσα κατὰ πλευρὸν αἰφνιδιαστικὴν ἐπιβολὴν τῶν Τούρκων, ὑπεχώρησε, δημιουργηθέντος οὕτως κενοῦ μεταξὺ τῆς μεραρχίας ταύτης καὶ τῆς ἀριστερὰ μαχομένης ΙΙΙ μεραρχίας. Μετ' ἐπελθοῦσαν ἐκ τούτου αὐτόβουλον σύμπτυξιν ὁλοκλήρου τῆς Χ μεραρχίας, ἀδυνατούσης νὰ συνεχίσῃ τὸν ἀγῶνα καὶ ἀποσυρθείσης εἰς τὰ ὑψώματα Καραμπεκὴρ (ἀντὶ τῶν ὑπὸ τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ ὁρισθέντων τοιούτων Ντοὺζ-δάγ), οἱ Τοῦρκοι ἐνέτειναν ἔτι μᾶλλον τὴν πίεσιν αὐτῶν ἐπὶ τῆς ΙΙΙ μεραρχίας, ἥτις καὶ αὐτὴ αὐτοβούλως, κατὰ τὴν νύκτα τῆς 19—20 Μαρτίου, πρὸς ἀποφυγὴν τοῦ κινδύνου κυκλώσεως ὑπὸ τοῦ ἐχθροῦ, ὑπεχώρησεν εἰς Γενίκιοϊ (ἀνατολικῶς τοῦ Μπιλετζίκ). Τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ, περὶ τὰς πρωϊνὰς ὥρας τῆς 20 Μαρτίου, λαβὸν τηλεφωνικῶς γνῶσιν τῆς καταστάσεως, ἔσπευσε νὰ διατάξῃ, κατόπιν προηγουμένης ἐγκρίσεως τῆς Στρατιᾶς, ὅπως αἱ μεραρχίαι καὶ ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ ἀποχωρήσωσι πρὸς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτῶν (ἀνατ. τῆς Προύσης), ληξάσης οὕτως ἄνευ ἀποτελέσματος τῆς ἐπιχειρήσεως ταύτης, καθ' ἣν μεγάλαι ὑπῆρξαν αἱ ἑκατέρωθεν ἀπώλειαι.

Ἡ ὑποχώρησις τοῦ ἑλληνικοῦ Γ' σώματος στρατοῦ πρὸς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτοῦ, ἐγένετο ἄνευ ἰσχυρᾶς πιέσεως τῶν Τούρκων, οἵτινες, ὑποστάντες καὶ οὗτοι μεγάλην φθορὰν καὶ τὸν κάματον τοῦ δεινοῦ ἀγῶνος, παρηκολούθησαν μόνον αὐτὸ διὰ τοῦ ἱππικοῦ των καὶ δι' ἐλαφρῶν τινων τμημάτων πεζικοῦ. Αἱ ἑλληνικαὶ μεραρχίαι, ὑποχωροῦσαι διαδοχικῶς, ἐγκαθίσταντο ἐπὶ θέσεων, αἵτινες ἤδη ἀπὸ τῆς 16 Μαρτίου εἶχον ὁρισθῆ αὐταῖς ὑπὸ τοῦ Γ' σώματος διὰ τὴν περίπτωσιν καθ' ἥν, ἐν ἀναποτρέπτῳ ἀνάγκῃ, θὰ ἐπεβάλλετο ἡ σύμπτυξις. Διὰ τῶν ὀπισθοφυλακῶν δ' αὐτῶν ἀπέκρουσαν ἐπιτυχῶς ἐπίθεσιν τῶν Τούρκων, ἡ μὲν VII μεραρχία, ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ καὶ τριλοχία τοῦ 5ου συντάγματος πεζικοῦ παρὰ τὸ Ἰνεγκιὸλ καὶ παρὰ τὸ Χεμζὲ-Μπεΰκιοϊ καὶ τὸ Μπογάζκιοϊ, ἡ δὲ Χ μεραρχία ἐπίσης παρὰ τὸ Μπογάζκιοϊ.

Τῇ 24ῃ Μαρτίου τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἐπανῆλθε πάλιν εἰς τὴν ἀνατολικῶς τῆς Προύσης (μεταξὺ Ὀλύμπου καὶ Ἀσκανίας λίμνης) ὠχυρωμένην τοποθεσίαν αὐτοῦ.

2) Τὸ δὲ περὶ τὸ Οὐσὰκ Α' σῶμα στρατοῦ, ἐντολὴν ἔχον νὰ καταλάβῃ τὸ Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ, προήλασε τῇ 10 Μαρτίου, μὲ τὴν ΧΙΙΙ μεραρχίαν αὐτοῦ (πλὴν τοῦ 3ου συντάγματος πεζικοῦ) δεξιά, διὰ τοῦ Ἀκὰρ-δάγ, καὶ τὴν ΙΙ τοιαύτην ἀριστερά, διὰ τῆς ὁδοῦ Οὐσὰκ-Τουμλοῦ Μπουνὰρ-Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Ἐκαλύπτετο δὲ συγχρόνως τὸ Α' σῶμα κατὰ τὸ δεξιὸν αὐτοῦ πλευρὸν διὰ τῆς Ι μεραρχίας καὶ κατὰ τὸ ἀριστερόν, εἰς Τζεντίς, διὰ τοῦ 3ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας. Οὕτω προχωρῆσαν τὸ Α' σῶμα στρατοῦ, κατέλαβε διὰ τῆς ΙΙ μεραρχίας τὴν ὠχυρωμένην τοποθεσίαν Τουμλοῦ Μπουνὰρ-Ὀτουρὰκ-Πασαντζίκ, ἐκτοπισθέντων ἄνευ πολλῆς δυσκολίας τῶν Τούρκων πρὸς Β. καὶ πρὸς ΒΑ., ἐνῷ ἡ ΧΙΙΙ μεραρχία, κατόπιν κοπιωδεστάτης πορείας μέσῳ χιονοσκεπῶν ὁδεύσεων, ἤχθη ἐπὶ τῆς δυτικῶς τοῦ Ἀφιὸν κορυφογραμμῆς τοῦ Ἀκὰρ-ντάγ. Ἐξακολουθῆσαν τὴν προχώρησιν αὐτοῦ τὸ Α' σῶμα στρατοῦ, συνεπλάκη τῇ 13 καὶ 14 Μαρτίου (π. ἡ.) περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισσάρ, καταλαβὸν τὴν ἀμυντικὴν τοποθεσίαν τῶν Τούρκων, οἵτινες, ἀπειληθέντες διὰ κυκλώσεως τοῦ ἀριστεροῦ αὐτῶν ὑκὸ τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας, ὑπεχώρησαν τῃ 14ῃ Μαρτίου (π. ἡ.). Ἡ ΧΙΙΙ τέλος μεραρχία προελάσασα κατέλαβε τότε αὐθημερὸν τὴν πόλιν τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Εἶτα τὸ Α' σῶμα στρατοῦ προέβη εἰς ἐκκαθάρισιν τῆς ὅλης περιοχῆς, Καὶ ἡ μὲν Ι μεραρχία αὐτοῦ, προχωρήσασα ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Μαιάνδρου πρὸς Α., κατέλαβε (19 Μαρτίου) τὸ Τσιβρίλ. Ἡ δὲ ΧΙΙΙ, ἐνισχυθεῖσα καὶ διὰ τοῦ 1ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς ΙΙ μεραρχίας, ἀφοῦ ἐξεδίωξεν ἀπὸ τῶν βορείως τοῦ Ἀφιὸν ὑψωμάτων τουρκικὰς δυνάμεις, ἐξετέλεσεν ἐπιδρομὴν πρὸς Μπουλεβανδὶ-Τσάϊ καὶ ἐξώθησε τοὺς Τούρκους πρὸς Ἂκ Σεχίρ, ἀφοῦ δὲ κατέστρεψε τὰ τεχνικὰ ἔργα τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς κατὰ τὴν διεύθυνσιν ἐκείνην, ἐπανῆλθεν εἰς τὰς περὶ τὸ Ἀφιὸν θέσεις αὐτῆς (21 Μαρτίου π. ἡ.). Ἐπληροφορήθη τότε τὸ Α' σῶμα στρατοῦ περὶ τῆς ἐκβάσεως τῆς ἐπιχειρήσεως τοῦ Γ' σώματος καὶ διετάχθη ἅμα ὑπὸ τῆς Στρατιᾶς ν' ἀσφαλισθῇ ἀπὸ τῆς κατευθύνσεως Κιουταχείας, Τουμλοῦ Μπουνάρ. διατηροῦν τὴν κατοχὴν τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Τὸ Α' σῶμα τότε ἐνίσχυσε τὸ εἰς Τουμλοῦ Μπουνὰρ ἀφεθὲν τμῆμα διὰ τοῦ 34ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς ΙΙ μεραρχίας καὶ μοίρας ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, καὶ μετήνεγκε τὸν σταθμὸν διοικήσεως αὐτοῦ εἰς Οὐσάκ. Πληροφορηθὲν δὲ τὴν ἀπὸ τοῦ βορείου τομέως κάθοδον πολλῶν τουρκικῶν μεραρχιῶν, διέταξε τὴν ἐκκένωσιν τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ καὶ τὴν διάθεσιν τῶν ἐκεῖ δύο μεραρχιῶν του (ΙΙ καὶ ΧΙΙΙ) πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ εἰς τὴν περιοχὴν Τουμλοῦ Μπουνὰρ 34ου συντάγματος πεζικοῦ. Οὕτω, τὴν 26 Μαρτίου ἡ μὲν ΧΙΙΙ μεραρχία συνεκεντρώθη εἰς τὴν περιοχὴν Δοὺζ-Ἀγάτς-Γκιούνεϊ, ἡ δὲ ΙΙ τοιαύτη εἰς τὴν περιοχὴν Ἀϊβαλῆ. Μετὰ μεσημβρίαν τῆς ἰδίας ἡμέρας ἐξεδηλώθη ἐπίθεσις 7 τουρκικῶν μεραρχιῶν κατὰ τοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 34ου συντάγματος πεζικοῦ (συνταγματάρχης Δ. Διαλέτης), ὅπερ, καίπερ ἐνισχυθὲν καὶ ὑπὸ τοῦ αὐτοβούλως προσδραμόντος 1ου συντάγματος πεδινοῦ πυροβολικοῦ, μετὰ πολλῆς δυσκολίας συνεκρατεῖτο εἰς τὰς θέσεις του, ἠναγκάσθη δὲ νὰ διαθέσῃ εἰς τὴν γραμμὴν τοῦ πυρὸς καὶ τοὺς ἄνδρας ἀκόμη τῶν μεταγωγικῶν μάχης καὶ σώματος. Ἦτο τόσης σκληρότητος ὁ διεξαγόμενος ὑπὸ τοῦ συντάγματος τούτου ἀγών, ὥστε παρέστη ἀνάγκη ν' ἀναπετασθῇ πρὸς στιγμὴν καὶ ἡ σημαία αὐτοῦ πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ ἠθικοῦ τῶν ἀνδρῶν, ἐνθαρρυνομένων ἐξ ἄλλου ὑπ' αὐτοῦ, τοῦ καὶ τραυματισθέντος ἐν τέλει, ἱεροκήρυκος τοῦ συντάγματος (τοῦ βραδύτερον μητροπολίτου Θεσσαλιώτιδος-Φαναρίου-Φαρσάλου Σεβ. Ἰεζεκιήλ, τοῦ ἀπὸ Βελανιδιᾶς). Ἀλλ' ἐνῷ οὕτως ἡ κατάστασις ἀπέβαινεν ἀπὸ στιγμῆς εἰς στιγμὴν κρισιμωτάτη, ἡ ΙΙ μεραρχία (συνταγματάρχης μηχανικοῦ Βαλέττας), *ἐξ ἐπαινετῆς ἀλληλεγγύης καὶ ἐξ ὅλως ἰδίας πρωτοβουλίας*, σπεύσασα διὰ συντόνου νυκτερινῆς πορείας ἐπετέθη μετὰ θυελλώδους σφοδρότητος τὴν πρωΐαν τῆς 27 Μαρτίου κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ πλευροῦ τῶν Τούρκων, ἀναγκάσασα τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα αὐτῶν ν' ἀποσυρθῇ εἰς ἀμυντικὴν καμπὴν μὲ μέτωπον πρὸς ἀνατολάς, καὶ ἔσωσεν οὕτω τὴν κατάστασιν, ἀπαλλάξασα τὸ 34ον σύνταγμα πεζικοῦ ἀπὸ τῆς εἰς ἣν εὑρίσκετο δυσχερεστάτης θέσεως. Ἐπὶ τούτοις δέ, ἐνισχυθὲν κατὰ τὴν ἰδίαν ταύτην ἡμέραν ἔτι μᾶλλον τὸ ἐν λόγῳ σύνταγμα διὰ τάγματος τῆς ΧΙΙΙ καὶ διὰ δύο ταγμάτων τῆς ΙΙ μεραρχίας, διετήρησε μετ' ἀξιοθαυμάστου ἐμμονῆς τὸν ἀγῶνα μέχρι τῆς ἑσπέρας, ἔναντι τῶν λίαν ὑπερτέρων ἀριθμητικῶς ἐχθρικῶν δυνάμεων. Τὴν ἐπομένην τέλος, 28 Μαρτίου, ἡ ἐξακολούθησις τῆς κατὰ μέτωπον ἐπιθέσεως τῆς ΙΙ μεραρχίας καὶ σύγχρονος ὑπερκερωτικὸς ἑλιγμὸς κατὰ τοῦ δεξιοῦ καὶ πρὸς τὰ νῶτα τοῦ ἐχθροῦ, ἐκτελεσθεὶς ὑπὸ ἀποσπάσματος τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων μετὰ τάγματος τοῦ 2ου συντάγματος πεζικοῦ καὶ 2 πυροβολαρχιῶν, ἐξηνάγκασαν τὰς τουρκικὰς μεραρχίας εἰς ὁριστικὴν ὑποχώρησιν πρὸς βορρᾶν. Οὕτως ἐματαιώθη ἡ προσπάθεια τῶν Τούρκων ν' ἀποκόψωσι δι' ἰσχυρῶν δυνάμεων, καταλαμβανουσῶν τὸ Τουμλοῦ Μπουνάρ, τὴν πρὸς Σμύρνην ὁδὸν ὑποχωρήσεως τοῦ Α' σώματος στρατοῦ ἐξ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Καὶ ἐπεζήτησαν μὲν καὶ πάλιν οἱ Τοῦρκοι, τὴν ἐπομένην ἡμέραν, 29 Μαρτίου νὰ αἰφνιδιάσωσι τὸ ἐν Μπανὰζ 33ον σύνταγμα πεζικοῦ, ἀλλ' ἡ προσπάθεια αὐτῶν ἀπέτυχεν ἐπεμβάσει τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας, ἐκδιωξάσης αὐτοὺς ἐκεῖθεν ὁριστικῶς. Οὕτως ἔληξαν αἱ ἐπιχειρήσεις κατὰ τὸν Μάρτιον 1921. Ἐξ αὐτῶν διεπιστώθησαν τὰ ἑξῆς: α') Ὅτι ὁ κεμαλικὸς στρατὸς ἦτο πλέον ἀρτιώτατα ὠργανωμένος, ὡπλισμένος καὶ ἐφωδιασμένος. β') Ὅτι ἂν αἱ κατευθύνσεις προσβολῆς τῶν Α' καὶ Β' σωμάτων στρατοῦ δὲν ἦσαν παράλληλοι ἢ ἀποκλίνουσαι, ἀλλὰ συνέκλινον πρὸς Ἐσκὶ Σεχὶρ (ἂν δηλαδὴ καὶ τὸ Α' σῶμα στρατοῦ διηυθύνετο ἐξ Οὐσὰκ οὐχὶ πρὸς Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ἀλλὰ διὰ Κιουταχείας πρὸς Ἐσκὶ Σεχίρ), συνδυαζομένων καὶ συγχρονιζομένων τῶν κινήσεων τῶν δύο σωμάτων, θὰ κατωρθοῦτο πιθανῶς ἡ ἐπίτευξις τῶν τεθέντων ἀντικειμενικῶν σκοπῶν. γ') Παρατηροῦμεν, ἀντιθέτως, ὅτι ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐκινήθη κατ' ἐσωτερικὰς γραμμάς, διότι συγκεντρωθεὶς κατὰ πρῶτον εἰς τὴν περιοχὴν Κοβαλίτσης-Τσεπνὶ-Ἀβγκὶν ἀντέστη διὰ τοῦ συνόλου σχεδὸν τῶν δυνάμεων αὐτοῦ πεισμόνως κατὰ τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, προελαύνοντος ἀπὸ Προύσης πρὸς Δορύλαιον, καὶ ἀνέκοψε τὴν προχώρησιν τούτου, εἶτα δέ, ταχέως στραφεὶς καὶ κινηθεὶς πρὸς νότον, διά τε τοῦ ὁδικοῦ καὶ τοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου (χρησιμοποιήσας τουτέστιν ἐσωτερικὰς γραμμάς), ἤχθη πρὸς τὸ ὑψίπεδον τοῦ Τουμλοῦ Μπουνάρ, ἤτοι πρὸς σημαντικώτατον γεωγραφικὸν χῶρον, ἀφ' οὗ γεννῶνται, ὡς γνωστόν, αἱ κοιλάδες τοῦ Πουρσὰκ (πρὸς Β.), τοῦ Ἀκὰρ τσάϊ (πρὸς Α.), τοῦ Μαιάνδρου (πρὸς Ν.) καὶ τοῦ Ἕρμου (πρὸς Δ.), πρὸς σημεῖον δηλαδὴ διασταυρώσεως ὁδεύσεων πρὸς πᾶσαν πέριξ κατεύθυνσιν, καὶ ἐπεζήτησε ν' ἀποκόψῃ τὴν πρὸς Σμύρνην γραμμὴν ὑποχωρήσεως τοῦ Α' σώματος στρατοῦ, ὅπερ πρότερον, ἄνευ σοβαρᾶς ἀντιστάσεως, εἶχεν ἀφεθῆ νὰ προχωρήσῃ πρὸς Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ καὶ νοτιοανατολικώτερον. δ') Ὅτι τὸ τμῆμα τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀφιὸν Καρὰ Χισὸρ-Ἐσκὶ Σεχίρ, ὀπίσω τοῦ τουρκικοῦ μετώπου διῆκον, προσέδιδεν εὐκινησίαν καὶ εὐχέρειαν ἑλιγμῶν εἰς τὸν κεμαλικὸν στρατόν, δυνάμενον εὐκόλως καὶ ταχέως νὰ μεταφέρηται ἀπὸ τοῦ βορείου εἰς τὸν νότιον τομέα τοῦ μετώπου, καὶ ἀντιστρόφως. Οὕτω κατεδείχθη, κατὰ τρόπον πασιφανῆ, ἡ μεγάλη ἀξία, ἣν προσεκτᾶτο ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐκ τῆς κατοχῆς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Δορυλαίου-Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. ε') Δεδομένου ὅτι ἡ ἐκτέλεσις τῆς ἐπιχειρήσεως, κατὰ Μάρτιον 1921, *ἐπεταχύνθη* ἕνεκα πολιτικῆς μᾶλλον σκοπιμότητος ἢ ἐξ ἀπαιτήσεων τακτικοῦ τινος συμφέροντος, ἅπαξ ἔτι κυροῦται ἡ ἀρχὴ ὅτι ἐν ταῖς ἐκστρατείαις πρυτανεύουσα σκέψις, καθοδηγοῦσα εἰς ἐνέργειαν, πρέπει πάντοτε νὰ ᾖ τὸ συμφέρον τοῦ στρατοῦ καὶ μόνον, οὐδαμῶς καὶ ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ ὑποκαθιστάμενον δι' οἱασδήποτε πολιτικῆς ἀνάγκης ἢ πολιτικῆς τινος σκοπιμότητος, ἥτις ἐννοια δέον νὰ ὑποχωρῇ εἰς τὸ προέχον τακτικὸν συμφέρον. Ἐνῷ ἦτο γνωστὴ ἡ ἔλλειψις ἐπαρκοῦς δυνάμεως πρὸς ἐπίτευξιν τοῦ ταχθέντος διὰ τῆς ἐπιχειρήσεως ἀντικειμενικοῦ σκοποῦ, δὲν ἀνεβλήθη ἡ ἐπιχείρησις ἐκείνη μέχρις ἐνισχύσεως τῶν μονάδων διὰ τῶν ὑπὸ τὰ ὅπλα κληθεισῶν ἐφεδρικῶν κλάσεων, ἀλλὰ μετὰ ποιᾶς τινος νευρικότητος, μηδόλως δικαιολογουμένης, ἐπεσπεύσθη ἡ ἐκτέλεσις τῆς ἐπιχειρήσεως ἐκείνης, ἥτις ἐπόμενον ἦτο ν' ἀποβῇ ἄκαρπος καὶ ἀτελεσφόρητος, παρὰ τὰς ἐπιβληθείσας σκληρὰς θυσίας καὶ τὸν ἐπιδειχθέντα ἡρωϊσμὸν καὶ γενναιότητα τῶν μαχητῶν.

Ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ πράγματι ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις ἐκάλεσεν αὖθις, ὡς εἴπομεν, ὑπὸ τὰ ὅπλα πάσας τὰς ἐφεδρικὰς κλάσεις μέχρι καὶ τοῦ 1912 (τῶν ἐφέδρων ἀξιωματικῶν μέχρι καὶ τοῦ 1908) καὶ δι' αὐτῶν ἐπληρώθησαν πάντα τὰ κενὰ τῶν ὑφισταμένων μονάδων καὶ ἅμα ἐσχηματίσθησαν νέαι τοιαῦται. Ἐπὶ δὲ τούτοις ἐπεστρατεύθησαν καὶ αἱ κλάσεις 1910—1921 τῶν Ἑλλήνων τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, διὰ τὴν ἐκγύμνασιν τῶν ὁποίων συνεκροτήθησαν τὰ ἔμπεδα τῶν Α', Β' καὶ Γ' σωμάτων στρατοῦ. Οὕτως ἀνεσχηματίσθη ἤδη καὶ τὸ Β' σῶμα ἐκ τῶν μεραρχιῶν IV, V καὶ XII, ἀκόμη δὲ καὶ ἡ ΙΧ μεραρχία καὶ ἡ Ἀνεξάρτητος τοιαύτη, ὠργανώθη δὲ καὶ ἡ ζώνη τῶν ἐπιχειρήσεων εἰς στρατιωτικὰς διοικήσεις, ἀσκουμένης τῆς κατοχῆς αὐτῆς καὶ τῆς ἀσφαλείας τῶν συγκοινωνιῶν διὰ συνταγμάτων μετόπισθεν. Κατεβλήθη οὕτως ὑπό τε τοῦ Γενικοῦ Ἐπιτελείου καὶ τοῦ τῆς Στρατιᾶς μεγίστη προσπάθεια διὰ τὴν ἀρτιωτέραν παρασκευὴν τοῦ στρατοῦ. Συμπληρώσας δ' εἶτα ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς καὶ τὸν εἰς παντοειδὲς ὑλικὸν ἐφοδιασμόν, ἦτο ἤδη κατὰ πάντα ἕτοιμος πρὸς νέαν ἐπιχείρησιν.

#### III). ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΙΣ ΙΟΥΝΙΟΥ - ΙΟΥΛΙΟΥ 1921

Κατὰ τὸ μέχρι τέλους Ἰουνίου 1921 ἐπακολουθῆσαν χρονικὸν διάστημα ἐπεκράτησεν ἡσυχία ἐφόλου τοῦ μετώπου. Ἀμφότεροι οἱ ἀντίπαλοι στρατοὶ ἐξηκολούθουν τὰς ἀναγκαίας προπαρασκευὰς πρὸς ἀρτιωτέραν συμπλήρωσιν τῶν ἐλλείψεων αὐτῶν ἐν γένει. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἀξιολογώτερα γεγονότα ὑπῆρξαν τὰ ἑξῆς: α') Κατὰ τὸ 3ον δεκαήμερον τοῦ Ἀπριλίου 1921 τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ὠργάνωσεν ἐπιθετικὴν ἀναγνώρισιν ἐκ Προύσης διὰ τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας μέχρις Ἀδρανοῦ (Μπεϋζέκιοι), ὁπόθεν αὕτη, διασκορπίσασα ὁμάδας Τούρκων ἀτάκτων, ἐπανῆλθεν εἰς τὰς ἐπὶ τοῦ Ὀλύμπου (Ν. Προύσης) θέσεις της. β') Ἀνακληθεῖσα κατ' Ἰούνιον 1921 ὑπὸ τῆς Στρατιᾶς, ἐκ Νικομηδείας, ἡ ΧΙ μεραρχία (τέως Μαγνησίας) (συνταγματάρχης Ν. Κλαδᾶς), παρηνωχλήθη σοβαρῶς ὑπὸ τῶν Τούρκων κατὰ τὴν ἀποχώρησιν αὐτῆς καὶ συνῆψε σφοδρὰς πρὸς αὐτοὺς μάχας εἰς τὴν νοτίως τῆς λίμνης Σαπάντζας στενωπὸν καὶ περὶ τὸ Μπακτσετζὶκ (Ν. τῆς Νικομηδείας). Διὰ τῆς συμπτύξεως αὐτῆς εἰς τὴν περιοχὴν Κίου ἐμειοῦτο σημαντικῶς τὸ ὑπερβολικὸν ἀνάπτυγμα τοῦ ἑλληνικοῦ μετώπου. Τὸ ἀντικαταστῆσαν τὴν ΧΙ μεραρχίαν ἀπόσπασμα ἐξ ἑνὸς συντάγματος πεζικοῦ, ἐξ ἀγήματος πεζοναυτῶν καὶ πυροβολαρχίας ἐκ βραδυβόλων πυροβόλων (συνταγματάρχης Γ. Ἀλεξάνδρου), πιεσθὲν καὶ τοῦτο ἰσχυρῶς ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐν Νικομηδείᾳ, ἠναγκάσθη νὰ ἀποπλεύσῃ ἐκεῖθεν εἰς Κίον· καὶ γ') Τουρκικὸν ἱππικὸν δυνάμεως ταξιαρχίας ἀπεπειράθη κατὰ τὸ τελευταῖον τοῦ Ἰουνίου δεκαήμερον ν' ἀνατινάξῃ τὴν μεγάλην παρὰ τὸ Ἐλβανλὰρ σιδηροδρομικὴν γέφυραν, ἀλλ' ἀπεκρούσθη μετὰ κρατερὸν καὶ ἄνισον ἀγῶνα ὑπὸ τῶν ἐκεῖ μικρῶν ἑλληνικῶν τμημάτων.



Digitized by Google

*Διάθεσις ἀντιπάλων δυνάμεων.* Κατὰ τὸ τρίτον δεκαήμερον τοῦ Ἰουνίου 1921 οἱ *Τοῦρκοι* διέθετον εἰς μὲν τὸν βόρειον τομέα (Α. τῆς Προύσης) τρεῖς μεραρχίας πεζικοῦ καὶ συντάγματά τινα ἱππικοῦ, εἰς δὲ τὸν νότιον τομέα (Κιουτάχεια - Τουμλοῦ Μπουνὰρ - Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ) ὀκτὼ μεραρχίας πεζικοῦ καὶ τρεῖς τοιαύτας ἱππικοῦ, ἤτοι δύναμιν περίπου 45.000 πεζικοῦ καὶ 5.000 περίπου ἱππικοῦ, κατὰ τὰς τότε πληροφορίας.

Ὁ *δὲ ἑλληνικὸς στρατός*, ὡς οὗτος, ἐπικειμένων νέων ἐπιχειρήσεων, εἶχεν ὀργανωθῆ, περιελάμβανεν ὁμοίως δύο μάζας στρατοῦ. Εἰς μὲν τὴν περιοχὴν τοῦ Οὐσὰκ καὶ νοτιώτερον: τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ (Ι καὶ ΙΙ μεραρχίαν), τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ (V καὶ XIII μεραρχίας), τὸ νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν (IV καὶ XII μεραρχίας), τὸ ἀπόσπασμα τῆς IX μεραρχίας, τὴν ταξιαρχίαν ἱππικοῦ καὶ δύο μοίρας ἀεροπλάνων. Εἰς δὲ τὴν περιοχὴν Προύσης καὶ βορειότερον: τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ (VII καὶ X μεραρχίας καὶ τὸ 17ον σύνταγμα πεζικοῦ) καὶ τὸ βόρειον συγκρότημα μεραρχιῶν (III καὶ XI μεραρχίας, πλὴν τοῦ 17ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς τελευταίας). Ἡ διοίκησις τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς ἐστάθμευεν εἰς Οὐσάκ. Ἡ ὅλη δύναμις τοῦ στρατοῦ τούτου ἐκστρατείας ἀνεβιβάσθη τότε εἰς 132.000 ἀνδρῶν περίπου, μὴ ὑπολογιζομένης τῆς δυνάμεως τῆς διατιθεμένης διὰ τὴν ἀσφάλειαν τῶν συγκοινωνιῶν καὶ τὴν κατοχὴν τῆς χώρας.

***Σχέδιον ἐνεργείας τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς.*** Συνίστατο τοῦτο εἰς προσπάθειαν ὑπερκεράσεως τοῦ περὶ τὴν Κιουτάχειαν ὠχυρωμένου τουρκικοῦ στρατοῦ ἐξ ἀμφοτέρων τῶν πλευρῶν καὶ ἀποκοπῆς τῆς ὑποχωρήσεως αὐτοῦ πρὸς Ἄγκυραν. Πρὸς τοῦτο, τὸ μὲν *νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν* μετὰ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, καταλαμβάνον τὸν περὶ τὸ Μπὰλ Μαχμοὺτ - Κιοπρουλοῦ χῶρον, θὰ ἐπεδίωκε τὴν ἀποκοπὴν τῆς ὑποχωρήσεως τῶν Τούρκων πρὸς Τσάϊ καὶ πρὸς Α. Τὰ δὲ *Α΄* καὶ *Β΄ σώματα στρατοῦ*, κινούμενα κατὰ πρῶτον πρὸς Α. καὶ εἶτα στρεφόμενα πρὸς Β., θὰ προσέβαλλον τὸ νοτίως τῆς Κιουταχείας περικεχαρακωμένον μέτωπον τῶν Τούρκων Ἐλμανλὶ δάγ—Ἂκ τσὰλ δὰγ καὶ θὰ ἀπέκοπτον τὴν πρὸς τὰ ΒΑ. (πρὸς Σεϊντῆ Γαζῆ - Ἀλπίκιοϊ) ὑποχώρησιν αὐτῶν. Τὸ *Ἀπόσπασμα τῆς IX μεραρχίας*, κινούμενον ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Οὐσὰκ - Κιουταχείας, θὰ ἐπετίθετο κατὰ μέτωπον ἐναντίον τοῦ πρὸ αὐτῆς ἀντιπάλου. Τὸ *Γ΄ σῶμα στρατοῦ*, προελαῦνον διὰ τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας καὶ τοῦ Ἀδρανοῦ καὶ ἐπιτιθέμενον κατὰ τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τοῦ ὠχυρωμένου τουρκικοῦ μετώπου τῆς Κιουταχείας ἀπὸ Ἀρσανλὶ διὰ Κιζὶλ τεπὲ μέχρις Ἂκ τεπέ, θὰ ἐπεζήτει τὴν κύκλωσιν τοῦ ἐχθροῦ ἀπὸ βορρᾶ καὶ τὴν ἀποκοπὴν τῆς ὑποχωρήσεως αὐτοῦ πρὸς Ἐσκὶ Σεχίρ. Τέλος, τὸ *βόρειον συγκρότημα μεραρχιῶν*, ἐξορμοῦν ἀπὸ Προύσης, θὰ ἐβάδιζε μὲ κατεύθυνσιν ἐπιθέσεως πρὸς Ἐσκὶ Σεχίρ, ἀπασχολοῦν ζωηρῶς τὸν ἀντίπαλον.

***Μάχαι περὶ τὴν Κιουτάχειαν.*** Ἡ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ σχεδίου τούτου ἐνέργεια ἐξειλίχθη ὡς ἑξῆς:

α΄) Εἰς τὸν *βόρειον τομέα*, τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Γ. Πολυμενᾶκος), προελάσαν ἐκ Προύσης διὰ τοῦ Ἀδρανοῦ, ἀφοῦ ἀπώθησε μικρὰ τουρκικὰ τμήματα περὶ τὸ Ἀκτσέκιοϊ, προσέβαλε τῇ 2 καὶ 3 Ἰουλίου τὸ πρὸ αὐτοῦ ὠχυρωμένον μέτωπον τῶν Τούρκων, ΒΔ. τῆς Κιουταχείας, ἤτοι τὸ περὶ τὸ Ἂκ Τεπὲ—Κιζὶλ Τεπὲ διὰ τῆς X μεραρχίας (συνταγματάρχης Σουμίλας) καὶ τὸ περὶ τὸ Ἀρσανλὶ—Κεπὲς διὰ τῆς VII (συνταγματάρχης Ἀ. Πλατύς). Μετὰ σφοδρότατον διήμερον ἀγῶνα τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ ἐξηνάγκασε τοὺς Τούρκους εἰς ὑποχώρησιν, καταλαβὸν 4 πυροβόλα, πολυβόλα, ἄφθονον ἄλλο πολεμικὸν ὑλικὸν καὶ αἰχμαλώτους (βλ. λ. *Κιουτάχεια*). Τῇ 4ῃ Ἰουλίου 1921 τὸ Γ΄ σῶμα, συμπράξει καὶ τοῦ ὑπαχθέντος εἰς αὐτὸ ἀποσπάσματος τῆς IX μεραρχίας (συνταγματάρχης Τσιρογιάννης), κατέλαβε τὴν Κιουτάχειαν διὰ τάγματος τῆς X μεραρχίας καὶ προὐχώρησε καταδιῶκον τὸν τουρκικὸν στρατὸν ὑποχωρήσαντα πρὸς Ἐσκὶ Σεχίρ, ὅπερ καὶ κατέλαβεν ἡ X αὐτοῦ μεραρχία, ἀνατρέψασα τουρκικὴν ὀπισθοφυλακὴν (ὥρᾳ 20ῇ τῆς 6 Ἰουλίου 1921). Ἐν τῷ μεταξὺ τὸ Βόρειον συγκρότημα μεραρχιῶν (ὑποστράτηγος Ν. Τρικούπης), προελάσαν πρὸς Νασὶφ πασᾶ-Μπιλετζὶκ ἀπησχόλει τὰς ἀντιπάλους δυνάμεις.

β) Εἰς τὸν *νότιον τομέα*, τὸ μὲν νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν (ὑποστράτηγος Δ. Γίδας), καλυπτόμενον νοτιώτερον ὑπὸ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ (συνταγματάρχης Π. Νικολαΐδης), προὐχώρησε τῇ 29 Ἰουνίου καὶ μετ᾽ ἀγῶνα κατέλαβε διὰ τῆς IV αὐτοῦ μεραρχίας (συνταγματάρχης Δημαρᾶς) τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ἀπωθῆσαν τοὺς Τούρκους πρὸς τὴν διευθυνσιν τοῦ Τσάϊ· τὰ δὲ Α΄ καὶ Β΄ σώματα στρατοῦ, ἐξορμησαντα τῇ 29 ἰδίου μηνός, ἐστράφησαν ἀχθέντα πρὸς βορρᾶν. Καὶ τὸ μὲν Β΄ σῶμα (ὑποστράτηγος Ἀρ. Βλαχόπουλος) προσέβαλε τῇ 2 Ἰουλίου διὰ μὲν τῆς XIII μεραρχίας (συνταγματάρχης Διγενὴς) τὸ Ἀκτσὰλ δάγ, διὰ δὲ τῆς V τοιαύτης (συνταγματάρχης Τριλίβας) τὸ Ἐλμανλῆ δάγ. Ἀλλὰ λόγῳ δυσμενῶν ἐδαφικῶν συνθηκῶν, μὴ ὁλοκληρωθείσης τῆς ἐπιθετικῆς προσπαθείας τῆς XIII μεραρχίας, αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις μετηνέχθησαν συσσωρευθεῖσαι ἔναντι τοῦ μετώπου τῆς V μεραρχίας, ἥτις ἐκ τούτου ἐπιέζετο ἰσχυρότατα, ὑποστᾶσα μεγάλην φθοράν. Ἐκ τῆς δυσχεροῦς ἐν τούτοις θέσεως ἐξήγαγε τὴν μεραρχίαν ταύτην ἡ ἔγκαιρος διὰ μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 5ου συντάγματος πεζικοῦ ἐπέμβασις τῆς Ι μεραρχίας, ἀνατολικώτερον προελαυνούσης, ὑπαγορευθεῖσα ἐκ πρωτοβουλίας τοῦ διοικητοῦ αὐτῆς καὶ ἐκ λόγων ἀλληλεγγύης. Τὸ μικτὸν ἐκεῖνο ἀπόσπασμα (συνταγματάρχης Ν. Χρυσοσπάθης), κατευθῦναν τὴν ἐπίθεσίν του πρὸς τὰ περὶ τὸ Τσαοὺς Τσιφλὶκ ὑψώματα, ἀμυντικῶς ὠργανωμένα ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἤτοι κατὰ πλευρὸν ἀπ᾽ ἀνατολῶν, ἐπήνεγκε τὴν ἄμεσον ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐγκατάλειψιν τῆς ὠχυρωμένης τοποθεσίας καὶ τὴν ὑποχώρησιν αὐτῶν πρὸς Σεϊντῆ Γαζῆ, ἐξαναγκασθέντων πρὸς τοῦτο καὶ ὑπὸ τῆς συγχρόνου, ὡς εἴδομεν, ἀνατροπῆς τῆς δεξιᾶς των πτέρυγος ὑπὸ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ, ἀπειλήσαντος αὐτοὺς διὰ κυκλώσεως, ἀπὸ βορρᾶ, ἂν παρέμενον εἰς τὸ Ἐλμανλῆ δάγ. Τῇ 4 Ἰουλίου ἡ εἰς τὸ νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν ἀρχικῶς ἀνήκουσα XII μεραρχία (πρίγκιψ Ἀνδρέας) ὑπήχθη ὑπὸ τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ, τὸ ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Κοντούλην (Ι μεραρχίας συν/χης Φράγκου, II μεραρχίας συντ/χης Βαλέττας). Κατὰ τὴν ἐξακολούθησιν τῆς ἐπιθετικῆς ἐνεργείας πρὸς βορρᾶν ἡ Στρατιὰ διέταξε τὴν ἐναλλαγὴν τῆς θέσεως τοῦ Α΄ καὶ τοῦ Β΄ σώματος στρατοῦ, ὁρίσασα γενικὴν κατεύθυνσιν τοῦ μὲν Α΄ τὴν πρὸς Δ. τοῦ Δορυλαίου, τοῦ δὲ Β΄ τὴν πρὸς Α. αὐτοῦ στροφήν, ἐπὶ σκοπῷ ὅπως τὸ τελευταῖον τοῦτο σῶμα, ἀποτελοῦν ἤδη τὸ δεξιὸν τῆς Στρατιᾶς, διευθυνθῇ πρὸς Ἂκ Ἴν, ἔνθα ἀπὸ τῆς ἑσπέρας τῆς 3 Ἰουλίου εὑρίσκετο μικτὸν ἀπόσπασμα (συνταγματάρχης Γ. Ζήρας) ἐκ τοῦ 14ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς XII μεραρχίας καὶ μοῖρα ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, μὲ ἐντολὴν ἵνα μετὰ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ ἐπιδιώξῃ τὴν ἀποκοπὴν τῆς πρὸς Ἄγκυραν ὑποχωρήσεως τῶν τουρκικῶν δυνάμεων. Ἀλλὰ τὸ μικτὸν ἀπόσπασμα Ζήρα καὶ ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ προσεβλήθησαν εἰς Οὖτς Σεράϊ ὑπὸ ἰσχυρῶν τουρκικῶν δυνάμεων καὶ ἠναγκάσθησαν εἰς ὑποχώρησιν. Καταληφθέντος ἐν τῷ μεταξύ, ὡς εἴδομεν, τοῦ Δορλλαίου ὑπὸ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ (6 Ἰουλίου 1921), ἡ Στρατιὰ διέταξε νὰ προωθηθῶσι τὸ μὲν Α΄ σῶμα πρὸς τὸ ὑψίπεδον Τσὶλ Χαννὰρ δάγ, τὸ δὲ Β΄ πρὸς τὸ Σεϊντὶ Γαζῆ καὶ τὸ Γ΄ κατὰ 20 χλμ. ἀνατολικῶς τοῦ Δορυλαίου.

***Μάχη Δορυλαίου*** (7 καὶ 8 Ἰουλίου 1921). Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ, καταλαβὸν τὸ Ἐσκὶ Σεχίρ, εἶχε τηρήσει τὰς δυνάμεις αὐτοῦ κλιμακηδὸν διατεθειμένας κατὰ βάθος, ἐνῷ αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις, ἀποχωρήσασαι ἀπὸ τοῦ μετώπου περὶ τὴν Κιουτάχειαν καὶ ἀπὸ Κοβαλίτσης - Ἀβγκίν, εἶχον συγκεντρωθῆ, ὑπὸ τὴν προσωπικὴν ἡγεσίαν τοῦ Ἰσμὲτ πασᾶ (σταθμὸς διοικήσεως αὐτοῦ εἰς Καρὰ Τοκὰτ) καὶ τοῦ Μουσταφᾶ Κεμὰλ (σταθμὸς διοικήσεως ὁ σιδηροδρομικὸς σταθμὸς Ἀλπίκιοϊ) εἰς τὸν περὶ τὸ Δορύλαιον ὀρεινὸν περίβολον, ἐκεῖθεν δ᾽ ἐξετέλεσαν αἰφνιδιαστικὸν εὐρὺν ἀντεπιθετικὸν ἑλιγμὸν δι᾽ ἁπασῶν τῶν δυνάμεων αὐτῶν μὲ συγκλινούσας προσπαθείας πρὸς Ἐσκὶ Σεχὶρ (ἀπὸ Μπὸς δὰγ 3 μεραρχίαι, ἀπὸ Σινεκλῆ Καγιᾶ 1 μεραρχία πεζικοῦ καὶ 1 μεραρχία ἱππικοῦ, ἀπὸ τῶν ἀνατολικῶς τοῦ Σουλτανιὲ ὑψωμάτων 3 μεραρχίαι καὶ ἕτεραι 3 ἀπὸ Τσὶλ Χαννὰρ δάγ) μὲ ἀντικειμενικὸν σκοπὸν τὴν κύκλωσιν τοῦ Γ΄ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, ἐνῷ δι᾽ ἄλλων δυνάμεων κατεῖχον τὰ ὑψώματα Ἀχμὲτ Τιρὰν-Τσὰμ Τεπὲ πρὸς συγκράτησιν τῆς προελάσεως τοῦ Β΄ σώματος πρὸς Σεϊντῆ Γαζῆ ἀπὸ Ἂκ Ἴν. Ἀλλὰ τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ, καθ᾽ οὗ ἐστρέφετο ἡ κυρία τουρκικὴ προσπάθεια, κατὰ πρῶτον μὲν ἀπέκρουσε τὰς ὁρμητικωτάτας καὶ λυσσώδεις τουρκικὰς ἐπιθέσεις (8 Ἰουλίου), ἀντεπιτεθὲν δ᾽ εἶτα μετὰ θυελλώδους σφοδρότητος —τῇ συνδρομῇ καὶ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, ἑνὸς μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 1ου συντάγματος εὐζώνων τῆς Ι μεραρχίας, καὶ περὶ τὸ τέλος τῆς μάχης καὶ τοῦ 7ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς II τοιαύτης— κατήγαγε λαμπρὰν νίκην, καταδιῶξαν τὸν ἐχθρὸν καὶ καταλαβὸν πυροβόλα, πολυβόλα, ἄφθονον πολεμικὸν ὑλικὸν καὶ αἰχμαλώτους πολλούς. Κατὰ τὸν ἴδιον χρόνον τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ, ἀπωθῆσαν διὰ τῆς V μεραρχίας αὐτοῦ, μετὰ σφοδρὸν ἀγῶνα, τοὺς Τούρκους ἀπὸ τοῦ Τσὰμ Τεπέ, προήλασε πρὸς Σεϊντῆ Γαζῆ. Αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις, καίπερ ἡττηθεῖσαι τακτικῶς, κατώρθωσαν νὰ ὑποχωρήσωσι, διαφυγοῦσαι πρὸς ἀνατολάς, διότι ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ, ἕνεκα τῆς καταστάσεως τῶν ἵππων αὐτῆς μετὰ ὁλοήμερον μάχην, καὶ ἡ XIII μεραρχία τοῦ Β΄ σώματος στρατοῦ, μετὰ κοπιώδη προώθησιν αὐτῆς πρὸς Ντοὺζ τεπὲ (ΒΑ. τοῦ Σεϊντῆ Γαζῆ), δὲν ἠδυνήθησαν νὰ παρακωλύσωσι τὴν εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς χώρας διολίσθησιν τῶν ὑποχωρούντων Τούρκων πρὸς ἀνατολάς. Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ μόνον ἐνήργησε καταδίωξιν διὰ τῆς X μεραρχίας αὐτοῦ καὶ τῶν μεραρχιακῶν του ἰλῶν ἱππικοῦ, μέχρι καὶ πέραν τοῦ Ἀλπίκιοϊ.

Οὕτω, μὲ τὴν λαμπρὰν νίκην τῆς 8 Ἰουλίου 1921, ἔληξεν ἡ πρώτη περίοδος τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ κατὰ Δορυλαίου - Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ, καθ᾽ ἃς ἀξιοθαύμαστος ὑπῆρξεν ἡ ἐπιδειχθεῖσα παρ᾽ αὐτοῦ αὐτοθυσία καὶ ἀνδρεία. Αἱ ἀπώλειαι ἐν γένει ἑκατέρωθεν τῶν ἀντιπάλων ὑπῆρξαν μεγάλαι κατὰ τὴν περίοδον ταύτην τῶν πολεμικῶν ἐπιχειρήσεων.

### IV). ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΙΣ ΠΡΟΣ ΑΓΚΥΡΑΝ

(Αὔγουστος καὶ Σεπτέμβριος 1921)

I. Τῇ 16 Ἰουλίου 1921 ἐγένετο ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου εἰς Κιουτάχειαν σύσκεψις, εἰς ἣν παρέστησαν ὁ τότε πρόεδρος τῆς κυβερνήσεως Γούναρης, ὁ ὑπουργὸς ἐπὶ τῶν Στρατιωτικῶν Θεοτόκης, ὁ διοικητὴς τῆς Στρατιᾶς Μ. Ἀσίας μετὰ τοῦ ἐπιτελάρχου του, ὁ ἀρχηγὸς τοῦ Γενικοῦ Ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ ὑποστράτηγος Β. Δούσμανης καὶ ὁ ὑποστράτηγος Ξ. Στρατηγός. Κατ᾽ αὐτὴν ὁ πρωθυπουργὸς ἐζήτησε νὰ μάθῃ ἂν οἱ ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως τεθέντες πολιτικοὶ ἀντικειμενικοὶ σκοποὶ ἐπετεύχθησαν διὰ τῶν ὑπ᾽ αὐτῆς ἐγκριθεισῶν καὶ ἐκτελεσθεισῶν ὑπὸ τῆς Στρατιᾶς μέχρι τοῦδε ἐπιχειρήσεων, ὥστε, πιστοποιουμένης τῆς διαλύσεως καὶ ἀποσυνθέσεως τοῦ κεμαλικοῦ στρατοῦ, νὰ διαπραγματευθῇ ἡ κυβέρνησις καὶ δεχθῇ εἰρήνην, οἵαν αὕτη κρίνει συμφέρουσαν, ἢ νὰ ἐπιτραπῇ αὐτῇ μονομερῶς νὰ κηρύξῃ περαιωμένον τὸν ἀγῶνα καὶ προβῇ εἰς κατάστασιν ἡμιεπισήμου εἰρήνης, ἀποστρατεύουσα τὴν χώραν. Ἀλλ᾽ ὁ διοικητὴς τῆς Στρατιᾶς ἐδήλωσεν ὅτι ἡ κατάστασις τοῦ ἐχθροῦ δὲν δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὡς ἐκμηδένισις κατὰ τὴν ἀνωτέρω ἔννοιαν, ὅτι δὲ πρὸς ἐπιτυχίαν τοῦ σκοπουμένου ἀποτελέσματος (πλήρους ἤ, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, ἐπαρκοῦς) δέον νὰ συνεχισθῇ ἡ δίωξις τοῦ ἐχθροῦ τὸ πολὺ μέχρις Ἀγκύρας. Πρὸς τὴν ἄποψιν ταύτην πάντες συνεφώνησαν, ὁ δὲ διοικητὴς τῆς Στρατιᾶς τὰς ἐκτεθείσας συντόμους ἀπόψεις του ἐξέθηκε καὶ δι᾽ ὑπομνήματος αὐτοῦ, παραδοθέντος εἰς τὴν κυβέρνησιν μετὰ τὸ πέρας τοῦ συμβουλίου, ὅπως ᾖ σαφέστερος. Ἐν τῷ ὑπομνήματι ἐκείνῳ, φέροντι ἡμερομηνίαν 15 Ἰουλίου 1921, τίθεται ὡς ἀντικειμενικὸς σκοπὸς τῆς πρὸς ἀνατολὰς τοῦ Ἐσκὶ Σεχὶρ ἐπιχειρήσεως ἡ διάλυσις τῶν κεμαλικῶν δυνάμεων ἢ ἡ ἀπομάκρυνσις αὐτῶν ἀπὸ τοῦ μετώπου Δορυλαίου εἰς τοιαύτην ἀπόστασιν, ὥστε ἡ ἐπάνοδος αὐτῶν νὰ ᾖ ἀδύνατος ἢ δυσχερής. Μέσον διὰ τὴν ἐπίτευξιν τοῦ τελευταίου τούτου σκοποῦ θεωρεῖται ἡ ριζικὴ καταστροφὴ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἐπὶ μήκους 100 χλμ. ἀπὸ Μπεϋλὶκ Κιοπροῦ μέχρις ἀνατολικῶς τοῦ Δορυλαίου, καὶ εἶτα ἐπάνοδος τῆς στρατιᾶς εἰς τὰς ἀνατολικῶς τοῦ Δορυλαίου θέσεις ἐξορμήσεως αὐτῆς.

Κριθείσης οὕτως ἀπαραιτήτου τῆς ἐξακολουθήσεως τῶν ἐπιχειρήσεων, ἔδει πρότερον νὰ συμπληρωθῶσι τὰ κενὰ τῶν μονάδων, νὰ ἐφοδιασθῶσιν αὗται ἀρτιώτερον διὰ παντοειδοῦς ὑλικοῦ, νὰ ἐπισκευασθῶσιν αἱ ὁδοὶ καὶ ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμή, ἥτις εἶχε καταστραφῆ ὑπὸ τῶν ὑποχωρησάντων Τούρκων, καὶ νὰ ὀργανωθῇ τὸ προκεχωρημένον κέντρον ἐφοδιασμοῦ Δορυλαίου (ἀκραῖος σταθμὸς ἐφοδιασμοῦ). Ἀπητήθη δὲ πρὸς τοῦτο τὸ μέχρι τέλους Ἰουλίου χρονικὸν διάστημα. Οἱ διοικηταὶ μεγάλων μονάδων, τῶν ὁποίων ἐζητήθη ἐμπιστευτικῶς ὑπὸ τῆς Στρατιᾶς ἡ γνώμη, σχετικῶς μὲ τὴν σκοπιμότητα τῶν μελλουσῶν ἐπιχειρήσεων, ἀπήντησαν εἰς αὐτὴν καταφατικῶς, ἐπενεγκόντες παρατηρήσεις τινάς, πλὴν τοῦ διοικητοῦ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ, τηρήσαντος ἐνδοιασμὸν ὡς πρὸς τὸ σκόπιμον καὶ ἀπαριθμήσαντος τὰς δυσχερείας, καθ᾽ ὧν ἀπαραιτήτως θὰ προσέκρουον αἱ μέλλουσαι ἐπιχειρήσεις.

***Διάταξις μονάδων τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς.*** Κατὰ τὴν 31 Ἰουλίου 1921 ὡς ἑξῆς ἦσαν διατεταγμέναι αἱ ἑκατέρωθεν δυνάμεις τῶν ἀντιπάλων:

Τοῦ *ἑλληνικοῦ στρατοῦ*: Ἡ IX μεραρχία εἰς Ἰντζὲ Καρὰ Χισὰρ μὲ ἐντολὴν νὰ συναντήσῃ τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ, προελαύνουσα δι᾽ Ἀζιζιὲ-Ἀμορίου. Τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ ὑπὸ τὸν βασιλόπαιδα Ἀνδρέαν (V καὶ XIII μεραρχίαι) περὶ τὸ Σεϊντῆ Γαζῆ. Τὸ Α΄ σῶμα ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Ἀ. Κοντούλην (I, II καὶ XII μεραρχίαι) περὶ τὸ Δορύλαιον. Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Γ. Πολυμενάκον (III, VII, X μεραρχίαι καὶ μικτὸν ἀπόσπασμα 16ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς XI μεραρχίας) ἀνατολικῶς τοῦ Δορυλαίου, ἑκατέρωθεν τοῦ Πουρσάκ. Ἡ XI μεραρχία (μεῖον μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ) εἰς τὸν τομέα Κίου-Κιοπροῦ Χισάρ. Τὸ νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν (IV μεραρχία καὶ μονάδες μετόπισθεν) εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ καὶ ἀπὸ Τσιβρὶλ πρὸς Σεραΐκιοϊ κατὰ μῆκος τοῦ Μαιάνδρου μέχρι τῆς θαλάσσης (18ον σύνταγμα πεζικοῦ).

Ὁ *τουρκικὸς στρατὸς* ὁλόκληρος (18 μεραρχίαι πεζικοῦ καὶ σῶμα στρατοῦ ἱππικοῦ), ἀποσυρθεὶς ἀνατολικῶς τοῦ Σαγγαρίου, ὠργάνωσεν ἀμυντικῶς τὴν τοποθεσίαν τὴν ἐκτεινομένην ἀπὸ τοῦ Γορδίου, διὰ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Μπασρίκιοϊ-τοῦ ὑψιπέδου

Digitized by Google

Τσανακτζίκιοϊ - τοῦ Γιλντὶζ δὰγ - τῆς Σαπάντζας - τοῦ Ταμπούρογλου, μέχρι καὶ τοῦ ὀροπεδίου Καλὲ Γκρότο, περιβάλλουσαν ἀπὸ τῶν ΝΔ. καὶ ἀπὸ Ν. τὸ λεκανοπέδιον τῆς Ἀγκύρας, καὶ ἥτις ἐνισχύεται φυσικῶς ὑπὸ τῶν κατὰ μῆκος τῆς μετωπικῆς γραμμῆς ὑπαρχούσης ποταμίας γραμμῆς τοῦ Σαγγαρίου καὶ τῆς ἑλώδους τοιαύτης τοῦ παραποτάμου αὐτοῦ Γκεοὺκ-Κατραντζῆ. Ἡ ἀμυντικὴ ὀργάνωσις, στηριζομένη ἐπὶ τῶν κυρίων ὀρεινῶν ὄγκων Μπασρίκιοϊ - Σαπάντζα - Ταμπούρογλου - Καλὲ Γκρότο, περιελάμβανεν εἰς μέγα βάθος πολλὰς σειρὰς χαρακωμάτων, προφυλασσομένων διὰ συρματοπλεγμάτων. Τῶν ὑψωμάτων διατιθεμένων κατ' ἀβάκιον, ἀπῃτεῖτο ἡ βῆμα πρὸς βῆμα διεκδίκησις τῆς φύσει καὶ τέχνῃ ὀχυρᾶς τοποθεσίας. Δυτικῶς τοῦ Σαγγαρίου, πρὸ τοῦ μετώπου τῶν ἑλληνικῶν προφυλακῶν, εἶχεν ἀφεθῆ ἡ Ιη τουρκικὴ μεραρχία ἱππικοῦ, ὅπως τηρῇ ἐπαφὴν μετὰ τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς, παρακολουθῇ τὰς κινήσεις της καὶ παρεμποδίζῃ τὴν εἰς τὸν ἑλληνικὸν στρατὸν διαρροὴν Τούρκων αὐτομόλων. Σημειωτέον ὅτι ἤδη ὁ κεμαλικὸς στρατὸς εἶχεν ἐφοδιασθῆ διὰ πυροβόλων, ὅπλων, παντοειδοῦς ἄλλου ὑλικοῦ καὶ δι' ἀεροπλάνων, ἅτινα πάντα εἶχε παραχωρήσει αὐτῷ ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ἐκ τοῦ ἐν Κιλικίᾳ γαλλικοῦ στρατοῦ, ἐκκενώσαντος τὴν χώραν ταύτην.

***Σχέδιον ἐνεργείας.*** Τὰ ἑλληνικὰ σώματα στρατοῦ θὰ ἐβάδιζον πρὸς ἀνατολὰς ἐκ τῶν χώρων ἐξορμήσεως αὐτῶν συμπαρατεταγμένα.—Τὸ Α΄ σῶμα, ἀποτελοῦν τὸ κέντρον, ἀφικνούμενον εἰς Σιβρὶ Χισάρ, θὰ ἐστρέφετο πρὸς νότον καί, διαβαῖνον τὸν νότιον βραχίονα τοῦ Σαγγαρίου διὰ τῶν γεφυρῶν Φεδιόγλου καὶ Μπαλικνταμί, θὰ εἰσήρχετο εἰς Ἁλμυρὰν Ἔρημον (Τζιχὰν Μπεϋλί).—Τὸ Γ΄ σῶμα ἐκκαθαρίζον τὴν μέχρι τοῦ ἀνατολικοῦ βραχίονος τοῦ Σαγγαρίου ζώνην, θὰ ὤθει κατὰ τὴν διεύθυνσιν ταύτην, πρὸς Α., τὴν VII μεραρχίαν, ἐνῷ περὶ τὸ Μιχαλίτς, βορείως τοῦ Πουρσάκ, θὰ κατέλειπε τὸ μικτὸν ἀπόσπασμα Στημοναρᾶ (16ον σύνταγμα πεζικοῦ καὶ μοῖρα ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ), διὰ δὲ τῶν λοιπῶν δυνάμεων αὐτοῦ (III καὶ X μεραρχιῶν) θὰ διωλίσθαινεν ὀπίσω τοῦ μετώπου τῆς VII μεραρχίας, διευθυνόμενον δὲ πρὸς Ν. θὰ διέβαινε καὶ αὐτὸ τὸν Ν. βραχίονα τοῦ Σαγγαρίου διὰ τῶν αὐτῶν γεφυρῶν καὶ εἰσερχόμενον εἰς τὴν Ἁλμυρὰν Ἔρημον θ' ἀπετέλει τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα τῆς στρατιᾶς.—Τὸ Β΄ Σῶμα Στρατοῦ, προελαῦνον νοτίως τοῦ νοτίου βραχίονος τοῦ Σαγγαρίου, θὰ ἐκάλυπτεν ἀπὸ νότου τὰς κινήσεις ταύτας τοῦ Α΄ καὶ τοῦ Β΄ σώματος, ἀποτελοῦν τὴν δεξιὰν πτέρυγα τῆς στρατιᾶς, καλυπτομένης δεξιᾷ ὑπὸ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ.—Τὰ σώματα στρατοῦ θὰ ἐξετέλουν ἐν τῇ Ἁλμυρᾷ Ἐρήμῳ στροφὴν ἐπ' ἀριστερὰ (πρὸς Β.) καὶ θὰ κατηυθύνοντο ἔναντι τῆς ἀμυντικῆς τουρκικῆς τοποθεσίας, βορείως τοῦ Γκεοὺκ-Κατραντζῆ. Καὶ τὰ μὲν Α΄ καὶ Β΄ σώματα στρατοῦ θὰ προσέβαλλον αὐτὴν κατὰ μέτωπον, τὸ δὲ Β΄ (δεξιὰ πτέρυξ) θὰ ἐπεδίωκε τὴν ὑπερκέρασιν τοῦ ἀριστεροῦ τῆς τουρκικῆς παρατάξεως.—Ἡ VII μεραρχία, διαβαίνουσα τὸν Σαγγάριον εἰς τὴν περιοχὴν Μπεϋλὶκ Κιοπροῦ, θὰ ἐπετίθετο ἀπὸ δυσμῶν κατὰ τῶν τουρκικῶν θέσεων πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Πολατλῆ, συγχρονίζουσα τὴν ἐπίθεσιν αὐτῆς μετὰ τῆς τῶν σωμάτων στρατοῦ.

***Ἐκτέλεσις τῶν ἐπιχειρήσεων.*** Περατωθεισῶν τῶν προπαρασκευῶν, τὰ σώματα στρατοῦ, ἐξορμήσαντα τῇ 1 Αὐγούστου 1921, προήλασαν πρὸς ἀνατολάς. Τὸ Γ΄ σῶμα διὰ τῆς III αὐτοῦ μεραρχίας καὶ τοῦ ἀποσπάσματος Στημοναρᾶ, ἐξέβαλεν ἀπὸ τῶν χαρακωμάτων τοῦ Γκελκὲν Τεπὲ καὶ Καρτὰλ δὰγ (παρὰ τὸ Μιχαλίτς) τὴν ἀντιταχθεῖσαν 1ην τουρκικὴν μεραρχίαν ἱππικοῦ (5 Αὐγούστου), ἐκκαθαρίσαν τὴν μέχρι τοῦ Σαγγαρίου ἐδαφικὴν ζώνην. Τῇ 8ῃ Αὐγούστου ἀπεπερατώθη ἡ διάβασις τοῦ Σαγγαρίου ὑπὸ τῶν σωμάτων στρατοῦ, ἅτινα κατέλαβον θέσιν ἔναντι περίπου τῆς τουρκικῆς ἀμυντικῆς τοποθεσίας. Τῇ 10 Αὐγούστου προσήγγισαν πρὸς τὴν τοποθεσίαν ταύτην νοτίως τοῦ Γκεοὺκ - Κατραντζῆ. Ἀφοῦ τῇ 11 Αὐγούστου (π. ἡ.), ἀπεκτήθη ἡ ἐπαφή, ἤρξατο ἡ μεγάλη εἰκοσαήμερος μάχη, ἡ ἐπονομασθεῖσα «μάχη τοῦ Σαγγαρίου» ἐκ τοῦ ὁμωνύμου παραρρέοντος ποταμοῦ (βλ. λ. *Σαγγάριος*). Τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ θὰ προσέβαλλε τὸ μέτωπον Σαγγάριος — Σαπάντζα, τὸ Α΄ σῶμα τὸ ἀνατολικώτερον τοῦ Γ΄ σώματος μέτωπον μέχρι τοῦ Κιζὶλ Χισὰρ καὶ τὸ Β΄ ἔτι ἀνατολικώτερον, ἐπιζητοῦν τὴν κύκλωσιν τῆς ἀριστερᾶς πτέρυγος τοῦ ἀντιπάλου. Συγχρόνως ἡ VII μεραρχία τοῦ Γ΄ σώματος, διελθοῦσα τὸν Σαγγάριον ἐπὶ κατασκευασθείσης γεφύρας, θὰ ἐπετίθετο κατὰ τοῦ Πολατλῆ μὲ ἄξονα ἐπιθέσεως τὴν πρὸς αὐτὸ σιδηροδρομικὴν γραμμήν.

Ἡ ἐπίθεσις ἤρξατο διὰ τῶν Γ΄ καὶ Α΄ σωμάτων στρατοῦ, τοῦ Β΄ τοιούτου κατ' ἀρχὰς διατεθέντος (μετὰ τῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ) κλιμακηδὸν ὀπίσω καὶ δεξιά, πρὸς κάλυψιν τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ. Μετὰ σειρὰν σκληροτάτων μαχῶν, λυσσωδῶν ἐπιθέσεων καὶ ἀντεπιθέσεων, αἵτινες συνίστων αὐτόχρημα γιγαντομαχίας, κατελήφθησαν διαδοχικῶς τὰ κύρια ἐρείσματα τῆς τουρκικῆς ἀμυντικῶς ὠργανωμένης τοποθεσίας, τὸ Ταμπούρογλου ὑπὸ τοῦ Α΄ σώματος στρατοῦ, τὸ Καλὲ Γκρότο ὑπὸ τοῦ Β΄, ἡ Σαπάντζα καὶ τὸ Γιλδὶζ ὑπὸ τοῦ Γ΄. Οἱ Τοῦρκοι ἐγκατέστησαν τὴν ἄμυναν αὐτῶν ἐπὶ ἑτέρας τοποθεσίας βορειότερον: Ἀρτὶζ δὰγ - Τσὰλ δὰγ - Σαρὶ Χαλὶλ - Κορσακλὶ - Μπασρίκιοϊ. Ἐξωσθεῖσαι δὲ καὶ ἐκεῖθεν αἱ τουρκικαὶ δυνάμεις ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς, κατόπιν ὑπερανθρώπου προσπαθείας, διὰ μὲν τοῦ Α΄ σώματος στρατοῦ ἀπὸ τοῦ Ἀρτὶζ καὶ ἀπὸ τῶν ἀνατολικῶν ἀντηρίδων τοῦ Τσὰλ δάγ, διὰ δὲ τοῦ Γ΄ σώματος ἀπὸ παντὸς τοῦ λοιποῦ μετώπου δυτικώτερον, ἐγκατεστάθησαν ἐπὶ ἑτέρας, βορειότερον ἔτι κειμένης τοποθεσίας τοῦ ὀροπεδίου: Ὀσμανιὲ - Καμιστζὶκ - Μπαϊμποὺρτ - Ἐσκὶ Πολατλὶ - Μπεϊτζᾶ. Προσβληθεῖσαι δὲ καὶ ἐκεῖ ὑπὸ τοῦ Γ΄ Σώματος, ἐνισχυθέντος διὰ τῆς IX μεραρχίας, ἐξετοπίσθησαν μὲν ἀπὸ τοῦ Καμιστζίκ, τοῦ Μπαϊμποὺρτ καὶ τοῦ Ἐσκὶ Πολατλί, ἐκρατήθησαν ὅμως ἐπὶ τῶν λοιπῶν θέσεων τοῦ μετώπου. Ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ἑλληνικὴ Στρατιά, λαβοῦσα ὑπ' ὄψει: τὴν μεγάλην φθοράν, ἣν ὑπέστησαν αἱ μονάδες· τὴν κόπωσιν τῶν ἀνδρῶν ἐκ τῆς συνεχοῦς πολυημέρου καὶ πολυνέκρου μάχης· τὰς δυσχερείας τοῦ ἀνεφοδιασμοῦ, αὐξηθείσας λόγῳ τῆς φθορᾶς τῶν αὐτοκινήτων· καὶ τὴν προσέγγισιν τοῦ φθινοπώρου, ὁπότε ἐκ τῶν βροχῶν θὰ ἐπετείνοντο αἱ δυσκολίαι—λαβοῦσα, λέγομεν, ὑπ' ὄψιν ταῦτα πάντα, διέταξε τὴν ἀναστολὴν τῆς προελάσεως καὶ τὴν ἐνίσχυσιν τοῦ κατακτηθέντος ἐδάφους δι' ἀμυντικῆς ὀργανώσεως. Οἱ Τοῦρκοι, ἀντιληφθέντες τοῦτο, συνεκέντρωσαν τὸ μεῖζον μέρος τῶν δυνάμεων αὐτῶν ἔναντι τοῦ Γ΄ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ—ἀφοῦ ἤδη καὶ πρότερον διὰ τοῦ ἱππικοῦ αὐτῶν εἶχον προσβάλει τὰς ἐφοδιοπομπὰς τῆς ἑλληνικῆς Στρατιᾶς καὶ αὐτὸ ἀκόμη τὸ στρατηγεῖον αὐτῆς εἰς Οὐζούμπεϋ, κατὰ τὴν 14 Αὐγούστου, ἀποκρουσθέντες μετὰ τετράωρον ἀγῶνα—καὶ ἤρξαντο ἀντεπιτιθέμενοι. Ἡ ἀντεπίθεσις αὕτη ἐξεδηλώθη σφοδροτάτη κατὰ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ τὴν 28 Αὐγούστου καὶ ἐξηκολούθησε τὴν 29 καὶ τὴν 30 ἰδίου μηνὸς ἐπίμονος καὶ ἰσχυρά. Σκοπός των ἦτο νὰ καμφθῇ ἡ ἀριστερὰ ἑλληνικὴ πτέρυξ καὶ καταλαμβανομένων ὑπ' αὐτῶν τῶν ἐπὶ τοῦ Σαγγαρίου γεφυρῶν νὰ ἐξωθηθῇ ἡ Στρατιὰ πρὸς Ν., πρὸς τὴν Ἁλμυρὰν Ἔρημον, ἀποκοπτομένων τῶν συγκοινωνιῶν αὐτῆς μετὰ τοῦ Ἐσκὶ Σεχίρ. Ἀλλὰ τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ (III, VII, IX καὶ X μεραρχίαι καὶ μικτὸν ἀπόσπασμα Στημοναρᾶ τῆς XI μεραρχίας) ἀπέκρουσεν ἀποτελεσματικῶς μέχρι τέλους τὰς λυσσώδεις ἐκείνας ἐπιθέσεις, καλύψαν τὰς γεφύρας τοῦ Σαγγαρίου καὶ ἐξαναγκάσαν τοὺς Τούρκους εἰς ὑποχώρησιν. Ἡ στρατιὰ τότε ἀπεφάσισε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν ἐξακολούθησιν τῶν ἐπιχειρήσεων πρὸς Ἄγκυραν καὶ διέταξε τὴν ἐπάνοδον τῶν σωμάτων στρατοῦ εἰς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτῶν περὶ τὸ Δορύλαιον. Κατόπιν ἐνδεδειγμένων μετακινήσεων διῆλθον τὸν Σαγγάριον ἐπὶ 7 γεφυρῶν αἱ 9 μεραρχίαι τῆς Στρατιᾶς καὶ ἡ ταξιαρχία ἱππικοῦ ἐν παραδειγματικῇ τάξει καὶ ἐτάχθησαν ἐπὶ τῆς δυτικῆς τοῦ ποταμοῦ ὄχθης, ἔνθα τμήματα αὐτῶν παρέμειναν μέχρι τῆς 4 Σεπτεμβρίου, καλύπτοντα τὴν ὑποχώρησιν τῶν λοιπῶν μονάδων καὶ τὰ ἐνεργοῦντα τὴν καταστροφὴν τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἀποσπάσματα. Τὸ δεξιὸν ἤδη τῆς Στρατιᾶς ἀπετέλεσε τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ, τὸ κέντρον αὐτῆς τὸ Β΄, καὶ τὸ ἀριστερόν, ἑκατέρωθεν τοῦ Πουρσάκ, τὸ Γ΄ σῶμα. Ὁ τουρκικὸς στρατός, ὑποστὰς καὶ αὐτὸς μεγίστην φθορὰν καὶ κόπωσιν, οὐδὲν σχεδὸν ἄξιον λόγου τότε ἀμέσως ἐπεχείρησε. Μόνον τῇ 1 Σεπτεμβρίου τὸ ἱππικὸν αὐτοῦ διὰ τῆς γεφύρας Φεδιόγλου ἤχθη εἰς Σιβρὶ Χισάρ, ὅπου ἑλληνικὰ χειρουργεῖα, καὶ μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ ὑλικοῦ καὶ τὴν αἰχμαλωσίαν τῶν ἐλαφρῶς τραυματιῶν ἀπεσύρθη πάλιν νοτίως τοῦ Σαγγαρίου. Ἐπίσης τῇ 3 Σεπτεμβρίου δύναμις ἐκ 3000 ἀνδρῶν περίπου ἀπὸ Γορδίου, διαβᾶσα τὸν Σαγγάριον, ἐπεχείρησε νὰ χωρήσῃ πρὸς Δ., ἀλλὰ προσβληθεῖσα ὑπὸ τῶν III καὶ V μεραρχιῶν συνετρίβη καὶ ἠναγκάσθη αὖθις νὰ ἀποσυρθῇ ἀνατολικῶς τοῦ Σαγγαρίου. Ἐπεζήτησαν τότε οἱ Τοῦρκοι διὰ δυνάμεως 12.000 ἀνδρῶν περίπου, διευθυνθείσης ἐκ Τσιφτιλὲρ πρὸς Δορύλαιον καὶ πρὸς Ἀλπίκιοϊ, ν' ἀποκόψωσιν ἐκεῖθεν τὴν πρὸς Δ. ὑποχώρησιν τῆς Στρατιᾶς. Ἀλλ' ἡ προέλασις αὕτη ἀνεχαιτίσθη ὑπὸ τῆς Ἀνεξαρτήτου ἑλληνικῆς μεραρχίας (τῆς ἀπὸ τῶν ἀρχῶν Σεπτεμβρίου 1921 μεταφερθείσης εἰς Μ. Ἀσίαν), ἐκδιωξάσης μετὰ μάχην τὸ πρὸς Ἀλπίκιοϊ βαδίζον τουρκικὸν τμῆμα καὶ ἐξαναγκασάσης τὰ λοιπὰ τουρκικὰ τμήματα εἰς ὑποχώρησιν. Τῇ 10 Σεπτεμβρίου τέλος τὰ σώματα στρατοῦ εἶχον καταλάβει τὴν ὁρισθεῖσαν αὐτοῖς γραμμὴν ἀνατολικῶς τοῦ Δορυλαίου (Β΄ σῶμα δεξιά, Γ΄ ἀριστερά, Α΄ ὀπίσω, ἐν ἐφεδρείᾳ). Ἀλλὰ τῇ 14 Σεπτεμβρίου πληροφορηθὲν τὸ στρατηγεῖον ὅτι τουρκικαὶ δυνάμεις ἐκ 12.000 κατηυθύνοντο πρὸς Ἀμόριον μὲ προφανῆ σκοπὸν καταλήψεως τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ καὶ ἀποκοπὴν τῆς Στρατιᾶς ἀπὸ τῆς Σμύρνης, διέταξε τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ νὰ ἐνισχύσῃ τὴν IV μεραρχίαν, ἧς ἀγωνιζομένης καθ' ὑπερτέρων δυνάμεων ἡ θέσις ὁσημέραι ἀπέβαινε κρίσιμος. Τῇ 20 Σεπτεμβρίου συγκεντρωθὲν τὸ Α΄ σῶμα περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ ἀνέλαβεν ἐπίθεσιν κατὰ τῶν Τούρκων (ἐχόντων 4 μεραρχίας πεζικοῦ καὶ 3 τοιαύτας ἱππικοῦ) μετὰ τῆς IV μεραρχίας κατ' ἀρχάς, εἶτα δέ, τῇ συμπράξει καὶ τοῦ Β΄ σώματος, ὅπερ ἐκ Σεϊντῆ Γαζῆ-Μπορντὶ προχωρῆσαν ἀνέτρεψε τὰς πρὸ αὐτοῦ τουρκικὰς δυνάμεις, ἀπειλῆσαν αὐτὰς ἐκ τῶν νώτων. Οἱ Τοῦρκοι τότε ἠναγκάσθησαν νὰ ὑποχωρήσωσι πρὸς Μπαγιὰτ καὶ Μπουλαβαντὶ - Τσάϊ, τὰ δὲ Α΄ καὶ Β΄ ἑλληνικὰ σώματα στρατοῦ ἐγκατεστάθησαν ἔκτοτε περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Μετὰ τὴν ἐκεῖθεν ἀπώθησιν τῶν Τούρκων διετάχθη ἡ ἀμυντικὴ ὀργάνωσις τοῦ στρατοῦ ἐπὶ τῶν θέσεων αὐτοῦ.

### ν). Γ΄ ΠΕΡΙΟΔΟΣ (ΝΕΚΡΑ) ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΩΝ
### (Ὀκτώβριος 1921—Αὔγουστος 1922).

Τὰ κατέχοντα τὴν κυρίαν ἀμυντικὴν γραμμὴν Α΄, Β΄ καὶ Γ΄ σώματα στρατοῦ διῃρέθησαν εἰς δύο ὁμάδας μεραρχιῶν, τὴν μίαν περὶ τὸ Δορύλαιον, ἀποτελοῦσαν τὸ *Βόρειον συγκρότημα μεραρχιῶν,* μὲ ἕδραν τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ τὸ Δορύλαιον, καὶ τὴν ἑτέραν περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ἀποτελοῦσαν τὸ *Νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν,* μὲ ἕδραν τοῦ Α΄ σώματος στρατοῦ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ὑφ' ὃ σῶμα ὑπήχθη καὶ τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ. Ἐπὶ πλέον εἰς τὸ ἐσωτερικὸν ἐδημιουργήθησαν στρατιωτικαὶ διοικήσεις, ἔχουσαι ὡς σκοπὸν τὴν τήρησιν τῆς ἐσωτερικῆς ἀσφαλείας, τὴν φρούρησιν τῶν γραμμῶν συγκοινωνιῶν καὶ τὴν δίωξιν τῶν τουρκικῶν συμμοριῶν ἀτάκτων.

Ἡ μετωπικὴ γραμμή, ἣν τότε ἐτήρει ὁ στρατὸς ἐν τῇ Δ. Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ἀρχομένη ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Μαιάνδρου περίπου, ἠκολούθει τὴν δεξιὰν αὐτοῦ ὄχθην μέχρι τῶν πηγῶν του σχεδόν, ἐκεῖθεν δὲ συνήντα τὸν ποταμὸν Ἀκάρ, 6 χλμ. ἀνατολικῶς τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ὁπόθεν ἐστρέφετο πρὸς βορρᾶν μέχρι τοῦ Σαριτζὲ δάγ. Ἐκεῖ ὑπῆρχε μέγα κενὸν ἐπιτηρούμενον ὑπὸ τοῦ κέντρου ἀντιστάσεως Κὶρκ Γιαϊλᾶ Ἐρικλῆ καὶ δι' ἱππικοῦ μέχρι τοῦ Ἂκ Ἴν. Ἀπὸ τοῦ σημείου τούτου ἡ γραμμὴ τοῦ μετώπου διήρχετο ἀνατολικῶς τοῦ Σεϊντῆ Γαζῆ-Ὀρτᾶ Τεπὲ-Σαρὶ Καβακτζᾶ δὰγ - Σινεκλῆ Καγιᾶ-Μπὸζ δάγ. Μετὰ τοῦτο διακοπτομένη ὑπὸ διαφόρων κενῶν διὰ τῶν ὑψωμάτων τῶν κειμένων ἀνατολικῶς τῆς τοποθεσίας Σεϋγοὺντ-Μπιλεντζὶκ - Κιοπροῦ Χισάρ, ἐξετείνετο μέχρι τῆς θαλάσσης τοῦ κόλπου τῆς Κίου, ἔχουσα ὁλικὸν ἀνάπτυγμα 600 περίπου χιλιομέτρων. Αἱ μεραρχίαι προέβησαν ἅμα τῇ ἐγκαταστάσει αὐτῶν εἰς ἀμυντικὴν ὀργάνωσιν, ἀπολήξασαν εἰς συνεχῆ σχεδὸν γραμμὴν χαρακωμάτων, ἄνευ ἀρκετοῦ βάθους, πλὴν τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ, καταρτίσαντος καὶ δευτέραν γραμμὴν ἀμύνης εἰς τὸ περὶ τὸ Δορύλαιον καὶ τὸ Κιοπροῦ Χισὰρ μέτωπον.

Κατὰ τὴν χρονικὴν περίοδον, ἣν ἐξετάζομεν, μικραί τινες ἐπιχειρήσεις μόνον ἐγένοντο. Οὕτω κατὰ τὸν Νοέμβριον 1921 οἱ Τοῦρκοι ἐξετέλεσαν αἰφνιδιαστικὴν ἐπιβολὴν εἰς Ὀρτᾶ Τεπὲ καὶ εἰς Τσιβισλῆ ἐπὶ τμημάτων τινῶν τοῦ βορείου συγκροτήματος μεραρχιῶν, ὡς καὶ εἰς τὸν ὑποτομέα Κίου, ἀποκρουσθεῖσαν, τῇ δὲ 24 Μαρτίου 1922 ἑτέραν εἰς τὸν ὑποτομέα Κίου, πάλιν ἀποκρουσθεῖσαν.

Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ διοικητὴς τῆς Στρατιᾶς ἀντιστράτηγος Παπούλας, καταληφθεὶς ὑπὸ τοῦ ὁρίου ἡλικίας κατὰ Μάϊον 1922 καὶ ἀποστρατευθείς, ἀντικατεστάθη διὰ τοῦ ἀντιστρατήγου Χατζανέστη. Ὁ νέος ἀρχηγὸς ἐπιθεωρήσας τὸν Στρατὸν ἐν τῷ μετώπῳ ἐπήνεγκε μεταβολάς τινας ἐν τῇ ὀργανώσει τῆς διοικήσεως τῶν μεγάλων μονάδων καὶ διέλυσεν ἅμα τὰ συγκροτήματα μεραρχιῶν, ὑπαγαγὼν τακτικῶς τὰ σώματα στρατοῦ ἀπ' εὐθείας ὑφ' ἑαυτόν, ἐβελτίωσε τὴν θέσιν τοῦ ὁπλίτου, ἐμελέτησε τὸν περιορισμὸν τοῦ μετώπου καὶ τέλος, κατὰ Ἰούλιον 1922, ἐνέκρινε τὴν ἀφαίρεσιν μονάδων τινῶν ἐκ τοῦ μετώπου (ἰδίᾳ τοῦ Γ΄ σώματος Στρατοῦ), καὶ τὴν ἀποστολὴν αὐτῶν εἰς Ἀνατολικὴν Θρᾴκην, ὅπως μετάσχωσι σκοπουμένης ἐπιχειρήσεως κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἣν ὅμως ἐματαίωσαν ἐπεμβᾶσαι αἱ μεγάλαι Δυνάμεις. Ἦσαν δὲ αἱ ἀποσταλεῖσαι εἰς Ἀνατολικὴν Θρᾴκην μονάδες τὰ 56ον καὶ 62ον ἀνεξάρτητα συντάγματα πεζικοῦ καὶ τὸ 28ον σύνταγμα πεζικοῦ τῆς X μεραρχίας, ἀνὰ ἓν τάγμα τῶν $^{2}/_{39}$ καὶ $^{3}/_{40}$ συνταγμάτων εὐζώνων, μία ἀνεξάρτητος ὀρειβατικὴ πυροβολαρχία καὶ ἡ 3η μοῖρα ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, συνολικῆς δυνάμεως 8.000 ἀνδρῶν περίπου.

### ν). Δ΄ ΠΕΡΙΟΔΟΣ ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΕΩΝ
### (13 Αὐγούστου—5 Σεπτεμβρίου 1922)

Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ τουρκικὸς στρατὸς ὑπερτάτας κατέβαλε προσπαθείας, ὅπως δυνηθῇ ν' ἀναλάβῃ τὴν ἐπίθεσιν. Ἐπικειμένης κατ' Ὀκτώβριον 1922 συνδιασκέψεως ἀντιπροσώπων τῶν μεγάλων Δυνάμεων καὶ τῶν ἐμπολέμων ἐν Βενετίᾳ, οἱ Κεμαλικοὶ ἔκριναν ὅτι θὰ ἐξησφάλιζον πλεονεκτικὴν ἐν τῇ διασκέψει θέσιν, ἂν ὁ στρατὸς αὐτῶν κατώρθου νὰ παράσχῃ καὶ ἀπὸ ἐπιθετικῆς ἀπόψεως δείγματα ἱκανότητος, ὡς ἤδη τοιαῦτα εἶχεν ἀποδείξει ἀπὸ ἀμυντικῆς ἀπόψεως κατὰ τὰς μάχας τοῦ Σαγγαρίου. Ἀπεφάσισε δ' ἐκ τούτου ὁ Κεμὰλ ν' ἀναλάβῃ

Digitized by Google

τὴν πρωτοβουλίαν τῆς ἐνεργείας, ἐλπίζων, ἂν μή τι ἄλλο, νὰ καταλάβῃ, διὰ τὸν εἰρημένον σκοπόν, τὴν προέχουσαν τοῦ ἑλληνικοῦ μετώπου περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ-Χισάρ. Ὤθησε λοιπὸν πρὸς τὸ μέ-

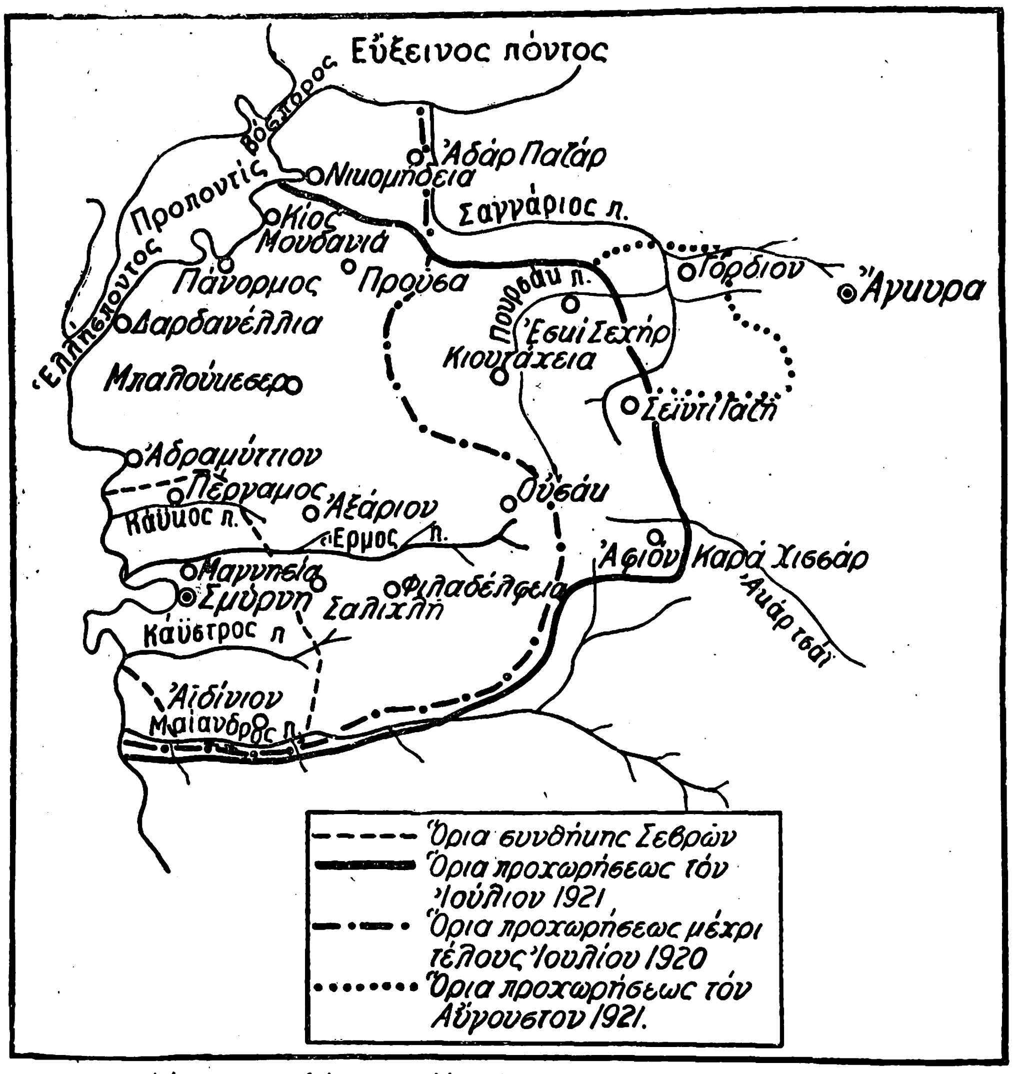


*Διάγραμμα τῶν ὁρίων προσπελάσεως τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. (Μάϊος 1919—Αὔγουστος 1922.)*

τωπον ἁπάσας τὰς δυνάμεις αὐτοῦ, ἀποτελουμένας ἐξ 7 σωμάτων στρατοῦ, ἤτοι ἐκ 18 μεραρχιῶν πεζικοῦ καὶ ἐκ 4 τοιούτων ἱππικοῦ, περίπου 75.000 ἀνδρῶν ἐν συνόλῳ, ὑπὸ τὸν Ἰσμὲτ πασᾶν, σχηματίσας δύο στρατιάς.

Κατ' Ἰούλιον 1922 ἡ τουρκικὴ αὕτη δύναμις ἦτο διανεμημένη ὡς ἑξῆς: —*1η στρατιὰ* (Νουρεδὶν πασᾶς, εἰς Τσάϊ). Ἐκ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ (8η μεραρχία εἰς Ἐφὲ Σουλτάν, 23η εἰς Καρατζᾶ Εὐρέκ, καὶ 57η εἰς Ἰσαακλῆ)· ἐκ τοῦ Β' σώματος Στρατοῦ (3η μεραρχία Καυκάσου εἰς Χοσρὲφ πασᾶ χάν, 4η Καυκάσου εἰς Μπαγιάζ, καὶ 7η Καυκάσου εἰς Ἀλήβεϋ)· ἐκ τοῦ Δ' σώματος στρατοῦ (5η μεραρχία Καυκάσου εἰς Δισλί, 12η Καυκάσου εἰς Μπουλεβαντί, 11η πεζικοῦ εἰς Τζολί)· ἐκ τοῦ ΣΤ' σώματος στρατοῦ (16η μεραρχία πεζικοῦ εἰς Ἰντζὲ Καρὰ Χισὰρ καὶ 17η εἰς Χαμηδιέ)· καὶ ἐκ τοῦ Ε' σώματος στρατοῦ ἱππικοῦ (Φαχρεδὶν πασᾶς), ἀποτελουμένου ἐκ τῶν μεραρχιῶν ἱππικοῦ 1ης, 2ας καὶ 14ης, εἰς Ἄκ Σεχίρ. Ἐπὶ δὲ τούτοις ὑπήγοντο ὑπὸ τὴν 1ην στρατιάν: ἡ 6η μεραρχία εἰς Σαντουκλῆ, ἡ 14η εἰς Τσιφοὺτ Κασαμπᾶ, ἡ 15η εἰς Ἐμπέρκιοϊ καὶ ἡ 3η μεραρχία ἱππικοῦ εἰς Δενιζλῆ. —*2α στρατιὰ* (Γιακοὺπ Σεβδὶ πασᾶς, εἰς Σιβρὶ Χισσάρ), ἀποτελουμένη ἐκ τοῦ Γ' σώματος Στρατοῦ (1η μεραρχία εἰς Καρὰ Καγιά, 41η εἰς Μπατὶκ καὶ 61η εἰς Τσαντίρ), καὶ ἐκ τοῦ ΙΒ' Σώματος στρατοῦ (18η μεραρχία εἰς Μεκετζέ, 61ον σύνταγμα πεζικοῦ εἰς Κιοπλοῦ καὶ 33ον σύνταγμα ἱππικοῦ εἰς Μαχμουδιέ). Βάσιν ἐφοδιασμοῦ καθώρισαν διὰ τὴν μᾶζαν ἐπιθέσεως αὐτῶν οἱ Τοῦρκοι τὸ Ἐγκερντίρ, ἐπισκευάσαντες τὰς ὁδοὺς Ἄκ Σεχὶρ - Ἐγκερντὶρ καὶ Ἐγκερντὶρ - Σαντουκλῆ.

Ὁ ἑλληνικὸς στρατός, ἐξ ἀντιθέτου, κατὰ τὴν ἰδίαν ἐποχὴν ἦτο τεταγμένος ὡς ἑξῆς: Κατὰ μῆκος τοῦ Μαιάνδρου μέχρι Δ. τῆς Ὀρτάντζης τὸ 18ον σύνταγμα πεζικοῦ· εἶτα μέχρι Σουσοὺζ δὰγ ἡ II μεραρχία. Ἀπὸ Ὀτουρὰκ μέχρι Καγιὰν Διβὶ ἡ I μεραρχία, ἔχουσα ὑπὸ τὰς διαταγὰς αὐτῆς καὶ τὸ 49ον σύνταγμα πεζικοῦ. Ἀπὸ Καλετζὶκ δὰγ μέχρι τοῦ Ἀκὰρ Τσάϊ ἡ IV μεραρχία. Βορείως τοῦ Ἀκὰρ Τσάϊ μέχρις Ἰντζὲ Καρὰ Χισὰρ ἡ XII μεραρχία. Ἐκεῖθεν μέχρις Ἀγιὰς Ἴν Δερὲ ἡ V. Ἐν ἐφεδρείᾳ δὲ εἰς Ντουγκὲρ-Καρὰ Μπουνὰρ ἡ IX μεραρχία, εἰς Ἐϋρὲτ ἡ VII, εἰς Καρατζᾶ-Ἀχμὲτ-Μπελτζεμίτσα ἡ XIII, ἧς σύνταγμα ἐτηρεῖτο εἰς τὸν ὑποτομέα Κισὶρ Ὀγ... Καλὲ Ρουκλοῦ δάγ, ἕτερον δὲ σύνταγμα (τὸ 5/42 εὐζώνων) ἐτηρεῖτο ἐν ἐφεδρείᾳ εἰς Ἔρικμαν ὑπὸ τὰς ἀμέσους διαταγὰς τοῦ διοικητοῦ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ.—Βορειότερον ἦσαν τεταγμέναι αἱ δυνάμεις τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ οὕτως: Ἀπὸ Ἄκ Ἴν διὰ Τσεβισλῆ μέχρι Ντοὺζ Τεπὲ ἡ Ἀνεξάρτητος μεραρχία. Ἐκεῖθεν δι' Ὀρτᾶ Τεπὲ-Σαρὶ Καβακτζὰ μέχρι τοῦ Πουρσὰκ ἡ X μεραρχία. Βορείως τοῦ Πουρσὰκ διὰ Σινεκλῆ Καγιᾶ καὶ ἐπὶ τοῦ Μπὸζ δὰγ ἡ III. Ἐπηκολούθει

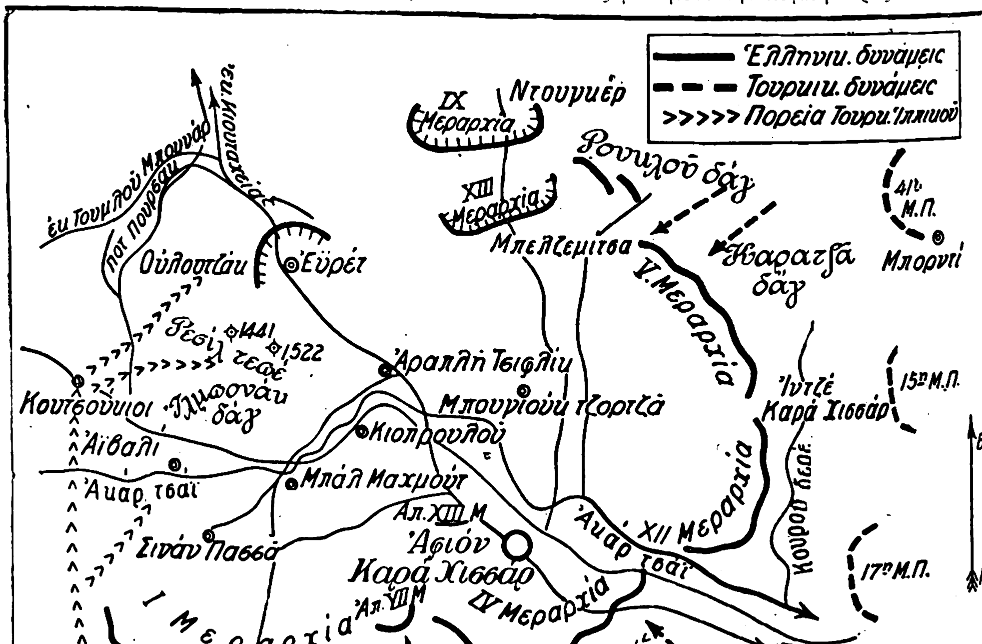


*Ἐπίθεσις τῶν Τούρκων πρὸς διάρρηξιν τοῦ ἑλληνικοῦ μετώπου, 13 καὶ 14 Αὐγούστου 1922.*

κενὸν διάστημα περὶ τὸ Σογιούτ. Ἀπὸ Μπιλετζὶκ μέχρι τῆς λίμνης Ἀσκανίας ἡ XI μεραρχία. Καὶ τέλος περὶ τὴν Κίον τὸ 47ον σύνταγμα πεζικοῦ. Ἐπὶ πλέον ἡ Στρατιὰ διέθετεν εἰς Οὐσὰκ καὶ τὴν μεραρχίαν Ἱππικοῦ (3 συντάγματα καὶ μοῖραν Πεδ. Πυροβολικοῦ), εἰς ἣν μονάδα εἶχεν ἀναπτυχθῆ ἡ πρώην ταξιαρχία ἱππικοῦ, ἐνισχυθεῖσα δι' ἑνὸς συντάγματος ἱππέων.

Πρὶν ἢ ἐκδηλωθῇ ἡ πρόθεσις τῶν Τούρκων περὶ τοῦ καθορισμοῦ τοῦ πραγματικοῦ σημείου τοῦ μετώπου, καθ' οὗ θὰ κατηύθυνον τὴν κυρίαν αὐτῶν προσπάθειαν, ἐνήργησαν, πρὸς παραπλάνησιν τῶν Ἑλλήνων, τῇ μὲν 8 Αὐγούστου 1922 αἰφνιδιαστικὴν ἐπίθεσιν καὶ κατέλαβον τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν Ὀρτάντζης, αἰχμαλωτίσαντες τὴν ἐκεῖ φρουράν, τῇ δὲ 11 ἰδίου μηνὸς ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ ὑποτομέως Μπιλετζίκ, ἀποκρουσθέντες ὅμως ἐκεῖ μετὰ πολλῶν ἀπωλειῶν καὶ καταδιωχθέντες. Τέλος, τῇ πρωΐᾳ τῇ 13 Αὐγούστου, ἐξεδηλώθη ἐντονωτάτη ἡ τουρκικὴ ἐπίθεσις ἐπὶ μετώπου 50 χιλιομέτρων περίπου, μὲ κυρίαν προσπάθειαν κατὰ τοῦ μεταξὺ τῶν μεραρχιῶν I καὶ IV ὑφισταμένου διακένου καὶ μὲ δευτερευούσας τοιαύτας κατὰ τοῦ κέντρου ἀντιστάσεως Σαντζὰκ (ἀριστεροῦ τῆς V μεραρχίας) καὶ τοῦ ἀνατολικῶς τοῦ Σεϊντῆ Γαζῆ μετώπου τῆς Ἀνεξαρτήτου μεραρχίας. Ὁμοίως τὸ τουρκικὸν σῶμα στρατοῦ ἱππικοῦ, καταλαβὸν τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν Κουτσούκιοϊ, διέκοψε τὰς σιδηροδρομικὰς καὶ τηλεγραφικὰς συγκοινωνίας τοῦ Α' καὶ τοῦ Β' σώματος στρατοῦ μετὰ τῆς Σμύρνης. Διὰ τὴν ἑσπέραν τῆς 13—14 Αὐγούστου (π. ἡ.) εἶχε διαταχθῆ ἀντεπίθεσις ὑπὸ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ (ὑποστράτηγος Ν. Τρικούπης) διὰ μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων καὶ τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τῆς IV μεραρχίας, ἥτις ὅμως δὲν κατέστη ἐφικτὸν νὰ ἐκτελεσθῇ. Τῇ πρωΐᾳ τῆς 14 Αὐγούστου ἐξηκολούθησεν ἐντονώτερος ὁ ἀγών. Δέκα μεραρχίαι τουρκικαὶ ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ μετώπου τῶν I καὶ IV ἑλληνικῶν μεραρχιῶν (ἀνὰ 5 ἐφ' ἑκατέρου τῶν μετώπων). Ἡ μελετηθεῖσα ἀντεπίθεσις τοῦ μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων καὶ τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τῆς IV μεραρχίας, γενομένη τμηματικῶς, δὲν ἐπήνεγκε θετικόν τι ἀποτέλεσμα. Ὑπὸ τὴν ἰσχυροτέραν πίεσιν τῶν Τούρκων αἱ μαχόμεναι ἑλληνικαὶ δυνάμεις, καμφθεῖσαι, συνεπτύχθησαν κατόπιν διαταγῆς τοῦ Α' σώματος στρατοῦ ἐπὶ τῆς γραμμῆς Ταζλὲρ - Μπουγιοὺκ Τζορτλᾶ (βορείως τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ). Τὸ Β' σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Διγενής), προτιθέμενον νὰ ἐπιτεθῇ, κατόπιν διαταγῆς τῆς Στρατιᾶς, πρὸς Μπορντὶ - Τσάϊ, ἠναγκάσθη νὰ συμπτυχθῇ καὶ τοῦτο εἰς τὴν γραμμὴν Μπουγιοὺκ Τζορτζᾶ - Ἐϋρέτ, ἐκκενωθέντος τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Διὰ τὴν 15 Αὐγούστου διετάχθη ὑπὸ τῆς Στρατιᾶς νὰ ὑποχωρήσωσι τὰ Α' καὶ Β' σώματα στρατοῦ, καλύπτοντα τὴν Σμύρνην. Τὸ Α' σῶμα στρατοῦ διέταξε τότε ὑποχώρησιν πρὸς τὴν γραμμὴν Ἰλμπιλὰκ δὰγ - Ρεσὶλ τεπέ, προτιθέμενον ν' ἀντιστῇ ἐπὶ τῆς γραμμῆς: Ἀκὰρ δὰγ - Ἰλμπιλὰκ δὰγ - Ρεσὶλ τεπὲ (μέτωπον πρὸς ἀνατολὰς μὲ ἀμυντικὴν καμπὴν πρὸς νότον). Ἀλλ' αἱ I καὶ VII μεραρχίαι καὶ τὸ μικτὸν ἀπόσπασμα τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων εἶχον ἤδη ὑποχωρήσει πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ. Ἡ IV μεραρχία κατὰ τὴν ἐκ τῆς στενωποῦ Ἀραπλῆ Τσι-

Digitized by Google

φλὶκ ἔξοδον αὐτῆς, τῇ πρωΐᾳ τῆς 15 Αὐγούστου, αἰφνιδιασθεῖσα ὑπὸ τοῦ πυρὸς τουρκικῶν τμημάτων ἱππικοῦ προχωρησάντων ἀπὸ τῶν ὑψωμάτων Κιοπρουλοῦ, ἀπεκόπη εἰς δύο τμήματα. Καὶ τὸ μὲν μεῖζον τῆς δυνάμεως αὐτῆς διηυθύνθη πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ, τὸ δὲ μικρότερον μετὰ τοῦ μεράρχου ὑποστρατήγου Δημαρᾶ, ἀντιταχθὲν καὶ μαχόμενον, ὡς καὶ τὸ 25ον σύνταγμα πεζικοῦ τῆς IX μεραρχίας, ἀποτελοῦν σταθερὰν πρὸς Ν. πλαγιοφυλακήν, ἀπεσύρθησαν πρὸς Ρεσὶλ τεπὲ - Οὐλουτζάκ. Κατὰ τὴν τοιαύτην κίνησιν πρὸς βορρᾶν τῆς IV μεραρχίας ὑπέστη αἰφνιδιασμὸν τὸ ἀπὸ τῆς προτεραίας ἤδη προελάσαν πρὸς βορρᾶν διὰ Κουζλούκιοϊ τουρκικὸν ἱππικόν, ὅπερ, εὑρεθὲν κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἐν μέσῳ καὶ τῶν ἀπ' ἀνατολῶν ἀποχωρουσῶν μεραρχιῶν τοῦ Β' σώματος στρατοῦ, ἀπεσύρθη ταχέως πρὸς νότον τοῦ Ρεσὶλ Τεπέ. Κατὰ τὴν ἑσπέραν τῆς 15 Αὐγούστου ἐγκατέστησαν προφυλακὰς (μέτωπον πρὸς νότον) ἡ V μεραρχία εἰς Ρεσὶλ Τεπέ, ἡ XII εἰς Ἰλμπιλὰκ δὰγ καὶ ἡ IX εἰς Οὐλουτζάκ. Οὕτως ἤδη τὸ Νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν εἶχεν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης εὑρεθῇ κατατετμημένον, ἀφ' ἑαυτοῦ, λόγῳ τῶν εἰρημένων κινήσεων, εἰς δύο ὁμάδας : τὴν *περὶ τὸ Ρεσὶλ Τεπέ,* ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Ν. Τρικούπην, ἣν ἀπετέλουν αἱ μεραρχίαι V, IX, XII (πλὴν 2 ταγμάτων), XIII (μεῖον τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων καὶ ὀρειβατικῆς μοίρας), μικρὰ δύναμις τῆς IV μεραρχίας, δύο συντάγματα πεδινοῦ πυροβολικοῦ, δύο μοῖραι πυροβολικοῦ Σκόντα, οἱ σχηματισμοὶ καὶ τὰ στραταγεῖα τῶν μεραρχιῶν τούτων· καὶ τὴν *περὶ τὸ Τουμλοῦ Μπουνὰρ* ὑπὸ τὸν ὑποστράτηγον Ἀθ. Φράγκον ὁμάδα, ἣν ἀπετέλουν αἱ μεραρχίαι I, VII καὶ IV (μεῖον τοῦ στρατηγείου αὐτῆς καὶ μικρᾶς δυνάμεως), δύο τάγματα τῆς XII μεραρχίας, τὸ 5/42 σύνταγμα Εὐζώνων μετὰ μοίρας ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ τῆς XIII μεραρχίας καὶ μία μοῖρα πεδινοῦ πυροβολικοῦ. Εἰς τὴν ὁμάδα ταύτην βραδύτερον προσετέθησαν, ὡς θὰ ἴδωμεν, ἡ μεραρχία ἱππικοῦ καὶ ἡ II μεραρχία. Ἡ πρώτη ὁμὰς (Τρικούπη) ἐχωρίζετο ἀπὸ τῆς δευτέρας (Φράγκου) δι' ἀποστάσεως 25 χλμ. περίπου.

Ἐν τῷ βορείῳ συγκροτήματι μεραρχιῶν, ἀποκρουσθείσης ἐπιτυχῶς τῆς ἐπιθέσεως τῶν Τούρκων κατὰ τοῦ κέντρου ἀντιστάσεως ἀνατολικῶς τοῦ Σεΐντῆ Γαζῆ, ἡ Ἀνεξάρτητος μεραρχία συνεκεντρώθη εἰς Ἂκ Ἴν, ἀναμένουσα διαταγὰς νὰ κινηθῇ πρὸς νότον, πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ νοτίου συγκροτήματος μεραρχιῶν.

Τὴν πρωΐαν τῆς 16 Αὐγούστου 1922 (π. ἡ.) ἡ ὁμὰς Τρικούπη ἐξηκολούθησε, κατόπιν τῆς ἐξελισσομένης καταστάσεως, τὴν ὑποχωρητικὴν κίνησιν αὐτῆς πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ, καλυπτομένη πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς XII μεραρχίας, ὡς σταθερᾶς πλαγιοφυλακῆς ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Ἰλμπιλάκ. Ἀλλὰ κατὰ τὸν ὑποχωρητικὸν ἑλιγμὸν τοῦτον, γενόμενον ἐν ἡμέρᾳ, ἅπασα ἡ δύναμις τῆς ὁμάδος ταύτης ἐνεπλάκη εἰς ἀγῶνα ἀπεγνωσμένον μεταξὺ Ἰλμπιλὰκ δὰγ — Κουτσούκιοϊ. Περίπου 11 τουρκικαὶ μεραρχίαι πεζικοῦ καὶ 3 τοιαῦται ἱππικοῦ περιέσφιγγον τὴν ὁμάδα Τρικούπη ἀπὸ νότου, ἀπὸ δυσμῶν καὶ ἀπ' ἀνατολῶν, ἐκμεταλλευόμεναι τὴν ἐπιτυχίαν καὶ καταδιώκουσαι. Ἡ τύχη ἐδείχθη δυσμενὴς διὰ τὰ ἑλληνικὰ ὅπλα. Ὑπὸ τὴν πίεσιν τῶν γεγονότων ὁ στρατηγὸς Ν. Τρικούπης ἐπεδίωξε τότε νὰ ἐπιτύχῃ τὴν πρὸς Τουμλοῦ Μπουνὰρ ὑποχώρησιν διὰ βορειοτέρου δρομολογίου, διὰ *Τσάλκιοϊ* (βλ. λ.), μὴ ἐπιζητήσας νὰ ἀποσυρθῇ πρὸς βορρᾶν, ἤτοι πρὸς Κιουτάχειαν. Ἀλλ' ἕνεκα τῆς ἐπελθούσης κατὰ τὴν μάχην φθορᾶς, τῆς ἀναμίξεως τῶν μονάδων, τῆς ἐπελθούσης κατὰ τὴν νύκτα συγχύσεως καὶ ἀταξίας, κατωρθώθη μόνον ἀπὸ τοῦ μεσονυκτίου τῆς 16 πρὸς τὴν 17 Αὐγούστου νὰ συνεχισθῇ ἡ ὑποχώρησις, καὶ ἀφοῦ ἀπωλέσθη ἡ κατεύθυνσις καὶ μετ' αὐτῆς πολύτιμος χρόνος, αἱ μεραρχίαι ἀφίκοντο τὴν πρωΐαν τῆς 17 Αὐγούστου εἰς Σάλκιοϊ, ὁπόθεν ἐξηκολούθησεν ἡ ὑποχώρησις πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ. Ἀλλ' ἡ πορεία πρὸς τὴν κατεύθυνσιν ταύτην ἐφράχθη ὑπὸ τοῦ ἐχθροῦ, καθ' οὗ ἀντετάχθησαν αἱ IX καὶ XIII μεραρχίαι, ἀναπτυχθεῖσαι ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων ἑκατέρωθεν τοῦ Μπουγιοὺκ Ἀρσλανλάρ. Ἐπιτεθέντος ὅμως μετὰ σφοδρότητος τοῦ ἐχθροῦ, ὁ στρατηγὸς Τρικούπης ἀπεφάσισε νὰ διευθυνθῇ πρὸς Μπανὰζ μέσῳ Ἀλῆ Βεράν - Ντουνλί. Ἡ διαταγὴ ὥριζε πρὸς τοῦτο τὴν ἑξῆς τάξιν πορείας : V μεραρχία, σχηματισμοὶ καὶ αὐτοκίνητα, XII, IV, IX καὶ XIII μεραρχίαι. Ἀλλὰ ἡ V μεραρχία, ἀκολουθήσασα βορειότερον δρομολόγιον αὐτοβούλως κατὰ τὴν προηγουμένην νύκτα, πρὸς Ἀλῆ Βερὰν καὶ ἐκεῖθεν πρὸς Μουρὰτ τσάϊ, ἀντικατεστάθη ἐν τῇ τάξει πορείας διὰ τῆς XII μεραρχίας καὶ τῆς μικρᾶς δυνάμεως τῆς IV. Ἡ ἐκκίνησις ἐγένετο περὶ τὴν μεσημβρίαν τῆς 17ης. Καθ' ὥραν ὅμως 13,30' τῆς αὐτῆς ἡμέρας (17 Αὐγούστου), ἅμα ὡς ἡ ἐμπροσθοφυλακὴ τῆς στρατιᾶς ἐξήρχετο τῆς δυτικῆς ἐξόδου πρὸς τὴν κοιλάδα Ἀλῆ Βεράν, ἐδέχθη ἐπίθεσιν τουρκικοῦ ἱππικοῦ ἀπὸ δυσμῶν, ἀνακόψαντος τὴν ὑποχώρησιν αὐτῆς. Οὕτως ἤρξατο ἡ ὀλεθριωτέρα τῶν μαχῶν, ἅς ποτε συνῆψεν ὁ ἑλληνικὸς στρατός, διεξαχθεῖσα ὑπὸ δυσμενεστάτας δι' αὐτὸν συνθήκας καὶ σημειώσασα τὸ τέλος τῆς ὁμάδος μεραρχιῶν Τρικούπη καὶ συγχρόνως τὸ τέλος τῆς ἑλληνικῆς κατοχῆς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. Μετ' οὐ πολὺ ἡ ὁμὰς Τρικούπη, μαχομένη πρὸς βορρᾶν κατὰ τοῦ τουρκικοῦ ἱππικοῦ, προσεβλήθη καὶ ἀπὸ νότου ὑπὸ τῶν 2ου καὶ 4ου τουρκικῶν σωμάτων στρατοῦ καὶ ἀπ' ἀνατολῶν ὑπὸ τοῦ 5ου σώματος, σχεδὸν κυκλωθεῖσα. Ὅπως ἀντιμετωπισθῇ τότε ἡ κατάστασις, ἐτάχθησαν ἡ XII ἑλληνικὴ μεραρχία μὲ μέτωπον πρὸς Β, ἡ XIII πρὸς Α, καὶ ἡ IX πρὸς Ν. Τὸ πεδινὸν ἑλληνικὸν πυροβολικόν, εὑρισκόμενον ἐν βαθείᾳ γραμμῇ ἐν συγκεντρώσει μετὰ τῶν διαφόρων σχηματισμῶν, ἠδυνάτει νὰ ἐνισχύσῃ τὸν ἀγῶνα, μόνον δὲ ὀρειβατικὸν πυροβολικὸν ἔβαλλε κατὰ τοῦ ἀντιπάλου. Μέχρι τῆς ἑσπέρας ἐξηκολούθησε σκληρότατος καὶ λυσσώδης ἀγών, κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὁποίου 20.000 περίπου ἄνδρες τῶν σχηματισμῶν, ἐντὸς περιεσφιγμένου χώρου, ἐδέχοντο τὸ σφοδρότατον πῦρ τοῦ τουρκικοῦ πυροβολικοῦ. Πρὸς τὴν ἑσπέραν τὸ 2ον σύνταγμα πεζικοῦ πρὸς Α. καὶ τὸ 26ον τοιοῦτον πρὸς Ν. διεξῆγον σκληρὰν πάλην, ἀποκρούσαντα ὁρμητικὰς ἐπιθέσεις τῶν Τούρκων. Τέλος ὅμως τὸ δεξιὸν τῆς XII μεραρχίας καὶ τοῦ 26ου συντάγματος πεζικοῦ ἐκάμφθησαν. Οἱ ἄνδρες ὑπεχώρησαν ἐν ἀλαλαγμοῖς καὶ πανικὸς μετεδόθη εἰς τὰ ἀπὸ ἐξαώρου μαχόμενα καὶ ἀγωνιῶντα τμήματα, πρὸς δὲ ἐσημειώθη τότε καὶ γενικὴ φυγὴ πρὸς Δ., πρὸς τὴν κοιλάδα τοῦ Ἀλῆ Βεράν. Οὕτως ἡ ὁμὰς ἐκείνη μεραρχιῶν ἔπαυσεν ὑφισταμένη. Ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Κουτσοὺκ Ἀρσλανλὰρ παρέμεινεν ἀγωνιζομένη ἡ XIII μεραρχία μέχρι βαθείας νυκτός, ἀποχωρήσασα τελευταία ἐκ τοῦ πεδίου τῆς μάχης.

Ἀφ' ἑτέρου ἡ ὁμὰς μεραρχιῶν τοῦ στρατηγοῦ Φράγκου, ὑποχωρήσασα τὴν νύκτα τῆς 16ης—17ης Αὐγούστου ἐκ Τουμλοῦ Μπουνάρ, ἐγκατεστάθη δυτικώτερον ἐπὶ τῆς γραμμῆς Γενιτζὲ-Τσοροὺμ δάγ. Τῇ ἡμέρᾳ τῆς 17ης Αὐγούστου ἡ ὁμὰς παρηκολουθήθη ὑπὸ τοῦ 1ου τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ. Αἱ ὑπὸ τοῦ 1/38 συντάγματος εὐζώνων καὶ 49ου συντάγματος πεζικοῦ ἐγκαταλειφθεῖσαι θέσεις ἀνακατελήφθησαν δι' ἀντεπιθέσεων, ἃς ἐξετέλεσαν ἐφεδρικαὶ δυνάμεις τῆς Ιης μεραρχίας, ἐνῷ συγχρόνως τὸ κέντρον τῆς VII μεραρχίας ὑπέστη πανικὸν καὶ ἐτράπη ἀτάκτως πρὸς τὰ ὀπίσω. Ἡ ἀνεξάρτητος μεραρχία ἀφίκετο κατὰ τὴν 17ην Αὐγουστου εἰς Ἀλαγιούντ, τὸ δὲ λοιπὸν Γ' σῶμα στρατοῦ ἐξηκολούθει τὴν προπαρασκευὴν τῆς μετακινήσεώς του ἐκ Δορυλαίου πρὸς Προῦσαν, κατόπιν διαταγῆς τῆς Στρατιᾶς.

Κατὰ τὴν 18ην Αὐγούστου τὰ τμήματα τῆς ὁμάδος Τρικούπη, ἄνευ οἱασδήποτε συνοχῆς πλέον, ὑπεχώρουν βαδίζοντα ἐπὶ τοῦ Μουρὰτ δάγ. Ἐξ αὐτῶν ἡ ὁμὰς ἡ ἀκολουθοῦσα τὸν στρατηγὸν Τρικούπην, περιλαμβάνουσα κυρίως τὴν XIII μεραρχίαν, παρακολουθουμένη ὑπὸ τουρκικοῦ ἱππικοῦ, ἠναγκάσθη νὰ παραδοθῇ εἰς Καρατζᾶ Χισὰρ αἰχμάλωτος, ἀρνηθέντων τῶν ὁπλιτῶν νὰ συνεχίσωσι τὸν ἀγῶνα.

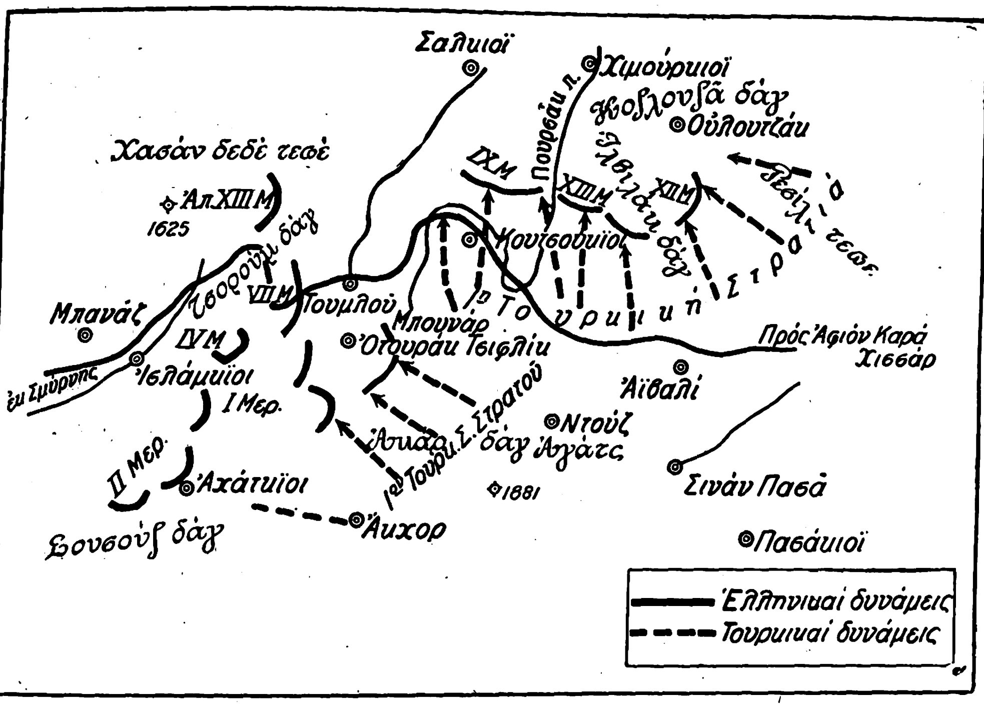


*Μάχη τῆς 16ης Αὐγούστου 1922.*

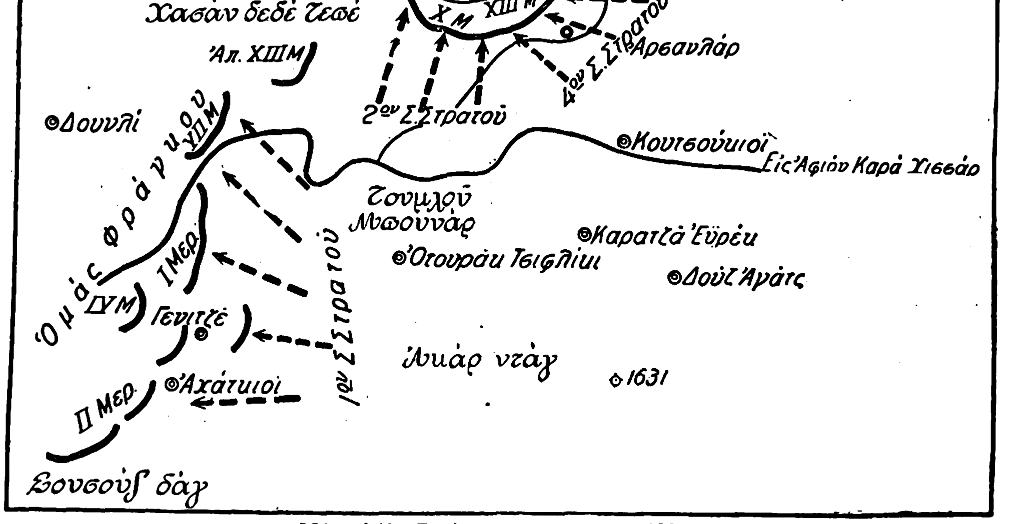


*Μάχη Ἀλῆ Βερὰν (17 Αὐγούστου 1922).*

Ἑτέρα δὲ φάλαγξ, ἡ καὶ πολυαριθμοτέρα, ἡνώθη τῇ 19ῃ Αὐγούστου ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Τζεντὶς-Οὐσὰκ μετὰ τῆς V μεραρχίας, ἀποτελέσασα δὲ αὕτη δύναμιν 25.000 ἀδρῶν περίπου καὶ ἀφικομένη τὴν ἑσπέραν εἰς ἀπόστασιν 6 χλμ. βορείως τοῦ Οὐσάκ, διηυθύνθη πρὸς Γιουρὲ-Ταχμὰκ-Ἐλβανλάρ, διότι ἐπληροφορήθη ὅτι εἶχεν ἐκκενώσει τὸ Οὐσὰκ ἡ ὁμὰς Φράγκου, μεθ' ἧς ἡνώθη βραδύτερον. Ἑτέρα φάλαγξ, ἧς ἡγοῦντο οἱ διοικηταὶ τῶν IV καὶ XII μεραρχιῶν, περιπλανηθεῖσα εἰς τοὺς δρυμοὺς τοῦ Μουρὰτ δάγ, παρεδόθη τῇ 19ῃ Αὐγούστου εἰς τὴν 17ην τουρκικὴν μεραρχίαν εἰς χωρίον Ἐϋκζούζ. Ἕτερα τέλος μικρότερα τμήματα ἀποκοπέντα ἐντὸς τῶν δρυμῶν τοῦ Μουράτ, κατεσφάγησαν ὑπὸ βαρβάρων Τούρκων χωρικῶν. Τέλος πολλοὶ ἄνδρες παρεφρόνησαν καὶ ηὐτοκτόνησαν, ἕτεροι δὲ ἀλλόφρονες ἐφόνευον συναδέλφους των καὶ ἔθραυον τὰ ὅπλα.

Ἡ ὁμὰς μεραρχιῶν Φράγκου ἐξηκολούθησε τῇ 18ῃ Αὐγούστου ὑποχωροῦσα πρὸς δυσμὰς οὐχὶ ἐν πολλῇ τάξει καὶ ἔφθασε κατὰ τὴν νύκτα τῆς ἡμέρας ταύτης ἐπὶ τῆς ἀνατολικῶς τοῦ Οὐσὰκ προϋπαρχούσης ἀμυντικῆς γραμμῆς, ἐφ' ἧς καὶ ἀνεπτύχθη. Εἰς τὴν ὁμάδα ταύτην προσετέθη ἤδη ἡ μεραρχία ἱππικοῦ καὶ ἡ II μεραρχία, ἧς τὸ 7ον σύνταγμα πεζικοῦ εἶχεν ἐμπλακῆ εἰς Ἀχάτκιοϊ καὶ εἰς Γενιτζὲ μετὰ προηγουμένων τμημάτων τοῦ 1ου νην γραμμήν, ἐφ' ἧς καὶ ἐγκατεστάθη (Ὄλυμπος-Ἀκ-σοῦ-Τίμπος- Ἀσκανία λίμνη), ἐνῷ τὸν ὑποτομέα Κίου ἐτήρουν τὸ 47ον καὶ τὸ 56ον σύνταγμα πεζικοῦ (ὧν τὸ τελευταῖον εἶχεν ἐπανέλθει ἐξ Ἀνατολικῆς Θρᾴκης). Τῇ 24ῃ καὶ 25ῃ Αὐγούστου τὸ Γ' σῶμα διὰ τῶν εἰρημένων δύο συνταγμάτων, ἐνισχυθέντων καὶ διὰ μικτοῦ ἀποσπάσματος ἐκ τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ καὶ πεδινῆς μοίρας πυροβολικοῦ ὑπὸ τὸν συνταγματάρχ. Γ. Ζῆραν, κατενίκησε τοὺς Τούρκους, ἐπιτεθέντας εἰς τὸν ὑποτομέα Κίου. Ὁμοίως τὴν νύκτα τῆς 26 - 27 Αὐγούστου τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἀπέκρουσε νικηφόρως ἐπίθεσιν τῶν Τούρκων, ἑπτάκις ἐπαναληφθεῖσαν, κατὰ τοῦ ὑψώματος Μαχμοὺτ πασᾶ, παρὰ τὸ Οὐμενταλὰκ (ΒΑ. τοῦ Ἀκσοῦ). Διαταχθὲν τέλος τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ὑπεχώρησεν πρὸς τοὺς λιμένας τῆς Πανόρμου καὶ Ἀρτάκης, ἀφοῦ ἔδωκε καιρὸν καὶ διεπεραιώθησαν εἰς Α. Θρᾴκην 60.000 περίπου πρόσφυγες Ἕλληνες, Κιρκάσιοι, Ἀρμένιοι καὶ ἀντικεμαλικοὶ Τοῦρκοι, μετὰ τῆς κινητῆς περιουσίας αὐτῶν, ἅμα δὲ ἀφοῦ πρότερον μετηνέχθη καὶ ἅπαν τὸ χρήσιμον ὑλικὸν στρατοῦ εἰς Ραιδεστόν. Κατὰ τὴν κίνησιν ὅμως τοῦ ὑποχωρητικοῦ ἑλιγμοῦ τούτου, ἀποκοπεῖσα παρὰ τὰ *Μουδανιὰ* (βλ. λ.) ᾐχμαλωτίσθη ἡ XI Μεραρχία (17ον καὶ 45ον σύνταγμα πεζικοῦ) Τέλος τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἐνισχυόμε

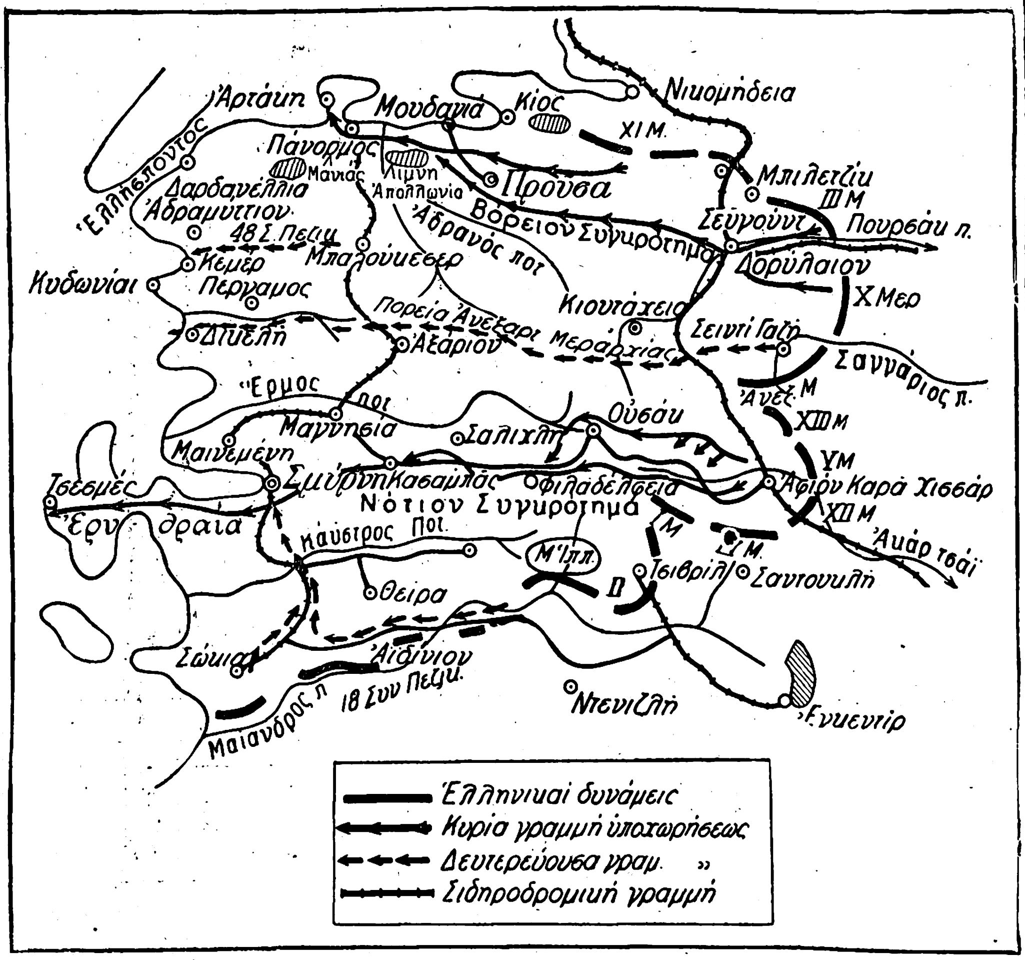


*Σχεδιάγραμμα δεικνῦον τὰς γραμμὰς ὑποχωρήσεως τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς κατ' Αὔγουστον 1922.*

τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ. Τῇ ἑσπέρᾳ τῆς 20 Αὐγούστου ἡ ὁμὰς Φράγκου ἀφίκετο εἰς τὴν γραμμὴν Ταχμὰκ-Ἐλβανλὰρ-Μπουλαντὰν καὶ μετ' αὐτῆς ἡνώθησαν, τῇ πρωΐᾳ τῆς ἑπομένης, τὰ λείψανα τῆς ὁμάδος Τρικούπη. Ἐκεῖθεν διὰ Φιλαδελφείας, Σαλιχλῆ, Κασαμπᾶ, Νυμφαίου, ἡ ὁμὰς αὕτη διηυθύνθη πρὸς Ἐρυθραίαν, παρακάμψασα τὴν Σμύρνην (ἑσπέρα 26 Αὐγούστου). Καλυφθεῖσα ἡ δύναμίς αὕτη διὰ τοῦ 1ου συντάγματος πεζικοῦ εἰς τὸν λαιμὸν Ἀλάτσατα, ἐπεβιβάσθη πλοίων καὶ μετηνέχθη εἰς Χίον καὶ Μυτιλήνην, τοῦ Ιου συντάγματος πεζικοῦ ἐγκαταλιπόντος τελευταίου τὸ Μικρασιατικὸν ἔδαφος, ἐν τῇ περιοχῇ Σμύρνης, τὴν 1ην ὥραν τῆς νυκτὸς τῆς 2 πρὸς τὴν 3 Σεπτεμβρίου.

Τὸ δὲ Γ' σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Σουμίλας), ἀποτελούμενον ἐκ τῶν μεραρχιῶν III, X καὶ XI, ἐκ τῆς Ἀνεξαρτήτου τοιαύτης καὶ ἐκ τῶν 47ου, 48ου, 56ου καὶ 57ου συνταγμάτων πεζικοῦ, μὴ ἀνηκόντων εἰς μεραρχίας, ἤρξατο, κατόπιν διαταγῆς τῆς Στρατιᾶς, ἀποχωροῦν πρὸς δυσμὰς ἐκ τοῦ Σεϊντῆ Γαζῆ-Ἐσκὶ Σεχὶρ κατὰ τὴν νύκτα τῆς 18-19 Αὐγούστου. Συνῆψε δὲ τοῦτο πρὸς τὸν παρακολουθοῦντα τουρκικὸν στρατὸν τὰς ἑξῆς μάχας: α) εἰς Τσοκοὺρ Χισὰρ-ὑψώματα Ν. Ἲν Ἐϋνοῦ· β) περὶ τὴν Κοβαλίτσαν καὶ γ) ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Ἀκτσὲ Μπουνὰρ - Κούρτκιοϊ (ἀνατολικῶς τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Καράκιοϊ), καθ' ἃς τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἐνίκησε καὶ κατεδίωξε τοὺς Τούρκους. Τὴν πρωΐαν τῆς 24 Αὐγούστου ἀφίκετο εἰς τὴν ἀνατολικῶς τῆς Προύσης ὠχυρωμένον καὶ ὑπὸ τοῦ πυρὸς τοῦ στόλου ἀπέκρουσεν ἰσχυρὰς ἐπιθέσεις τῶν Τούρκων τῇ 3 Σεπτεμβρίου ἐπὶ τοῦ Μπαϊρὰμ Τεπὲ (δυτικῶς τῆς Πανόρμου) καὶ τῇ 4 Σεπτεμβρίου ἐπὶ τοῦ Ντελικλῆ Μπάϊρ (νοτίως τοῦ λαιμοῦ τῆς χερσονήσου τῆς Ἀρτάκης), συμπληρῶσαν δὲ τέλος τὴν ἐπιβίβασίν του ἐπὶ πλοίων, ἐγκατέλιπε τὸ αἱματόβρεκτον ἔδαφος τῆς Μ. Ἀσίας, ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Κυζίκου, τῇ 11ῃ ὥρᾳ τῆς 5 Σεπτεμβρίου 1922. Τελευταῖον ἐπιβιβάσθη τὸ 30ὸν σύνταγμα πεζικοῦ ἐν τῷ ὅρμῳ τῆς Γωνιᾶς, βορείως τῆς Ἀρτάκης, ἐνῷ ὡς τελευταῖον τμῆμα ὀπισθοφυλακῆς τοῦ σώματος παρὰ τὸν λαιμὸν τῆς χερσονήσου τῆς Κυζίκου εἶχε παραμείνει τάγμα τοῦ 27ου συντάγματος πεζικοῦ μετὰ πεδινῆς πυρβολαρχίας, ἐνισχυόμενον ἀπὸ τῆς θαλάσσης διὰ τοῦ πυρὸς 4 ἀντιτορπιλλικῶν καὶ τοῦ θωρηκτοῦ καταδρομικοῦ Ἀβέρωφ.

Ἡ Ἀνεξάρτητος μεραρχία τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ὁδηγηθεῖσα παρ' ἀεροπλάνου ἑλληνικοῦ δι' ἠρματισμένου φακέλου, ἀπέφυγε νὰ διευθυνθῇ εἰς Οὐσὰκ καὶ διὰ Σιμὰβ-Κίρκαγατς-Σόμα κατέληξεν ἀνενόχλητος εἰς Δικελῆ, ὁπόθεν διεπεραιώθη εἰς Μιτυλήνην.

Τέλος, τὸ κατὰ μῆκος τοῦ Μαιάνδρου τεταγμένον 18ον σύνταγμα πεζικοῦ συνεπτύχθη εἰς Τουρμπαλῆ, ἔνθα συνεκρούσθη πρὸς τουρκικὰ τμήματα, ἐκεῖθεν δὲ διηυθύνθη πρὸς Καζιμὶρ-Σεβδίκιοϊ, ὅπου ὑποστὰν ἐχθρικὴν ἐπίθεσιν ᾐχμαλωτίσθη, πλὴν τάγματος διαφυγόντος εἰς Τσεσμὲ καὶ ἐκεῖθεν διασωθέντος εἰς Χίον.

Οὕτως ἔληξεν ἡ Μικρασιατικὴ ἐκστρατεία, ἀρξαμένη τῇ 2 Μαΐου 1919 (π. ἡ) δι' ἀποβιβάσεως εἰς Σμύρνην τῆς I μεραρχίας καὶ λήξασα τὴν 5 Σεπτεμβρίου 1922, καθ' ἣν τὸ τελευταῖον τμῆμα τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ ἀπέπλεεν ἐκ τοῦ λιμένος τῆς Γωνιᾶς τῆς Κυζικηνῆς χερσονήσου.

Σημειωτέον ὅτι ἤδη ἀπὸ τῆς 24 Αὐγούστου ἡ κυβέρνησις εἶχεν ἀντικαταστήσει τὸν ἀρχηγὸν τῆς Στρατιᾶς ἀντιστράτηγον Χατζανέστην διὰ τοῦ ὁμοιοβάθμου του Γ. Πολυμενάκου, ὅστις καὶ ὡδήγησε τὸν ἑλληνικὸν στρατὸν εἰς Ἀνατ. Θρᾴκην, διαταγῇ τῆς σχηματισθείσης νέας κυβερνήσεως ὑπὸ τὸν Ν. Τριανταφυλλάκον.

[Διὰ τὰ ἐπὶ μέρους βλ. καὶ τὰς οἰκείας λέξεις, ὡς π. χ. *Ἀϊδίνιον, Δορύλαιον, Ἲν-Ἐϋνοῦ, Νικομήδεια, Σαγγάριος* κ.λ.π.].

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Διὰ τὴν σύνταξιν τοῦ παρόντος ἄρθρου συνεβουλεύθημεν: Τὸ Ἱστορικὸν Ἀρχεῖον τοῦ Γενικοῦ Ἐπιτελείου τοῦ Στρατοῦ καὶ διαφόρους ἄλλας ἐκθέσεις, πρὸς δέ: *Β. Δούσμανη* «Ἡ ἐσωτερικὴ ὄψις τῆς Μικρασιατικῆς ἐμπλοκῆς».

Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**μικραστὴρ** (ὁ) (Micraster Ag.) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *σπαταγγιδῶν ἀτελοστόμων ἀκανονίστων ἐχινοειδῶν* ἐχινοδέρμων. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον κέλυφος καρδιοειδὲς ἢ ᾠοειδές. Τὸ ἐμπρόσθιον ὑδροφόρον πεδίον εὑρίσκετο ἐντὸς ἀβαθοῦς αὔλακος, ἔφερε δ' ἑκατέρωθεν μικροὺς στρογγυλοὺς

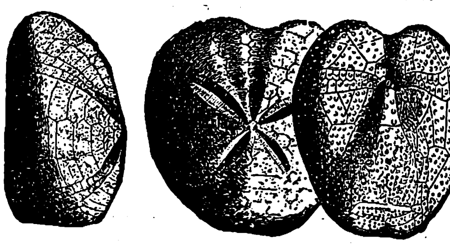

*Ὁ μικραστὴρ Cor testudinarium.*

διπλοπόρους. Τὰ κατὰ ζεύγη ὑδροφόρα πεδία ἦσαν βεβυθισμένα, ἐκ τούτων δὲ τὰ δύο ἐμπρόσθια ἦσαν ἐπιμηκέστερα τῶν ὀπισθίων καὶ ἔφερον συνεζευγμένα ζεύγη πόρων. Λείψανα ἄφθονα τῶν ζῴων τούτων ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς κρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ καὶ σπανιώτερον ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς τοῦ καινοζωϊκοῦ.

Γ. Κ. Γ.

**μικρεγκεφαλία** (ἡ). Ὁ ὅρος οὗτος χρησιμοποιεῖται ἀντὶ τοῦ *μικροκεφαλία* (βλ. λ.), ὅταν λαμβάνωμεν ὡς βάσιν τὸν ἐγκέφαλον, πρὸς κατάταξιν τῶν ἀνθρώπων.

Ι. Γ. Κ.

**μικρεμπόριον** (τό)· τὸ μικρὸν ἐμπόριον, τὸ ἐμπόριον ψιλικῶν, τὸ διεξαγόμενον γενικῶς μὲ μικρὰ κεφάλαια.

**μικρέμπορος** (ὁ)· ὁ μικρὸς ἔμπορος, ὁ ἔμπορος ψιλικῶν, ὁ πλανόδιος (τοῦ ποδαριοῦ)· ἀντίθ. *μεγαλέμπορος*.

**Μικρὴ—** *[Γεωγρ.]*. Πρῶτον συνθετικὸν πλείστων τοπωνυμίων ἐν Ἑλλάδι (βλ. *Μικρά*).

**Μικρὴ Σάντα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Γεωργιανῶν (Τόπλιανης), τῆς ἐπαρχίας Ἠμαθίας (Βεροίας) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 211.

Χ. Δ.

**μικρο—**· θέμα τῆς λ. *μικρός*, ἐκ τῆς ὁποίας ὡς πρώτου συνθετικοῦ σχηματίζονται πλεῖστα σύνθετα χαλαρῶς συντεθειμένα: *μικροδουλειά, μικροέξοδα, μικροεπαγγελματίας, μικροεπιχείρησις, μικροϊδιοκτησία* κ.ἄ.

**—μικρο—**. Τὸ θέμα τοῦτο τῆς λ. *μικρὸς* προτασσόμενον τοῦ ὀνόματος κυρίως μονάδος μεγέθους τινὸς ὑποδηλοῖ μονάδα κατὰ 1/1.000.000 μικροτέραν τῆς κυρίας. Οὕτω τὸ μικρο-αμπὲρ ἰσοδυναμεῖ πρὸς $10^{-6}$ ἀμπέρ, τὸ μικρὼμ πρὸς $10^{-6}$ Ὤμ κ.ο.κ.

Κ. Π.

**Μικρὸ** *[Γεωγρ.]*. Πρῶτον συνθετικὸν πλείστων τοπωνυμίων ἐν Ἑλλάδι (βλ. λ. *Μικρόν*).

— **Μικρὸ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου Μικρόκαμπος (βλ.λ.).

Χ. Δ.

— **Μικρὸ** *[Γεωγρ.]*. —1) Νησίον μεταξὺ Σκοπέλου καὶ Ἀλοννήσου καὶ ἐν τῷ μέσῳ τοῦ πορθμοῦ (πλάτ. 39° 07′ 45″ Β., μῆκ. 23° 49′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2702: Scopelos Group), ἐφ' οὗ φερώνυμος φάρος Ἄγκα (1920) λευκῶν ἐκλάμψεων. —2) Νησίον τῆς νοτίας ἐσχατιᾶς τῆς Σερίφου, ½ μίλλ. δυτικῶς τοῦ φάρου Σπαθὶ (πλάτ. 37° 06′ 30″ Β., μῆκ. 24° 30′ 20″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1815: Serpho island). —3) Νησίον τῆς Ἑρμιονίδος θαλάσσης, 1 μίλλ. ΒΑ. τοῦ ἀκρωτηρίου Μέτζο, ΝΑ. τῆς Σπετσοπούλας ἐσχατιᾶς (πλάτ. 37° 24′ 30″ Β., μῆκ. 23° 10′ 25″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spetsai and Dhokos). —4) Νησίον τῶν προσγείων τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 39° 55′ 55″ Β., μῆκ. 23° 03′ 55″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1599: Eski Stamboul to Kum Kalé, Beshikia and Tenedos), ἐν τῇ συ-

Digitized by Google

στάδι τῶν Μαυρειῶν μεταξὺ Μαυρονησίου καὶ Πρασονησίου. Σ. Ε. Λ.

— **Μικρὸ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον ἐν τῷ Θερμαϊκῷ κόλπῳ, τὸ ἄλλως *Κουτσοὺκ Καραμπουρνοῦ* (πλάτ. 40° 35′ Β., μῆκ. 22° 57′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2070: Saloniki bay). Σ. Ε. Λ.

**μικροαμπὲρ** (τό). Μονὰς ἐντάσεως τοῦ ρεύματος πρὸς μέτρησιν λίαν ἀσθενῶν ρευμάτων. Εἶναι δὲ 1 μικροαμπὲρ$=10^{-6}$ *ἀμπὲρ* (βλ. λ.). Κ. Π.

**μικροαπορροφόμετρον** (τό), ἢ *ἀπορροφομικρόμετρον*. Διὰ τοῦ ὀργάνου τούτου κατορθοῦται ἡ μέτρησις ἐλαχίστων ἀλλαγῶν μήκους τῆς τάξεως $\frac{1}{10.000.000}$ τοῦ χιλιοστοῦ. Ἡ ἀρχὴ ἐφ' ἧς στηρίζεται τὸ ὄργανον τοῦτο εἶναι ἡ ἑξῆς. Ἐὰν αἱ μετρητέαι ἀλλαγαὶ τῶν μηκῶν μεταφερθῶσιν ἐπὶ τῶν πλακῶν πυκνωτοῦ ἀποτελοῦντος μέρος κυκλώματος ὑψηλῆς συχνότητος, τροφοδοτουμένων δὲ ὑπὸ τριαδικῆς λυχνίας, τότε κατὰ τὰς μετακινήσεις τῶν πλακῶν, ἀλλάσσει καὶ ἡ συχνότης τῶν ὑψισύχνων τοῦ κυκλώματος τούτου (κύκλωμα ἐξερευνήσεως), ὅπερ εἶναι συνδεσμολογημένον κατ' ἐπαγωγὴν μὲ δεύτερον κύκλωμα, ἀποτελούμενον ἐκ τῆς αὐτεπαγωγῆς μετρήσεως καὶ τοῦ πυκνωτοῦ μετρήσεως. Εἶναι δὲ οὕτως ὑπολογισμέναι αἱ σχέσεις τῶν πυκνωτῶν καὶ αὐτεπαγωγῶν τῶν δύο κυκλωμάτων, ὥστε ἐλαχίστη ἀλλαγὴ χωρητικότητος τοῦ κυκλώματος ἐξερευνήσεως νὰ ἀντιστοιχῇ εἰς πολὺ μεγαλυτέραν τοῦ κυκλώματος μετρήσεως. Τὸ σημεῖον δὲ τοῦ συντονισμοῦ γίνεται ἀντιληπτὸν διὰ τοῦ χιλιοστοαμπερομέτρου τῆς ἐσχάρας, ὅπερ ἀποκλίνει ἐκ τῆς ἀρχικῶς ρυθμισθείσης θέσεως, καθ' ἣν στιγμὴν στρέφομεν τὸν πυκνωτὴν μετρήσεως, πρὸς ἀνίχνευσιν, ἀμφοτεροστρόφως.

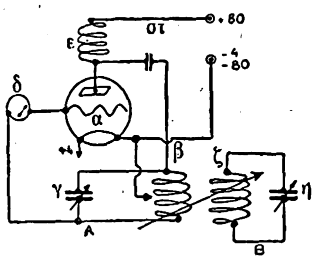


*Μικροαπορροφόμετρον.*

[Α=κύκλωμα ἐξερευνήσεως· Β=κύκλωμα μετρήσεως. α=τριοδικὴ λυχνία, β=αὐτεπαγωγὴ κυκλώματος ἐξερευνήσεως, γ=πυκνωτὴς ἐξερευνήσεως, δ=χιλιοστοαμπερόμετρον, ε=αὐτεπαγωγή, στ=πυκνωτὴς σταθερός, ζ=αὐτεπαγωγὴ κυκλώματος μετρήσεως, η=πυκνωτὴς μετρήσεως.]

Τὸ μικροαπορροφόμετρον χρησιμοποιεῖται πρὸς τούτοις διὰ τὴν μέτρησιν τῶν παραμορφώσεων τῆς ὕλης, εἰς δοκιμὰς γεφυρῶν καὶ οἰκοδομῶν, εἰς τὰς ἀλλαγὰς τῶν ἐσωτερικῶν τάσεων τοῦ μπετὸν διὰ τῆς τοποθετήσεως τῶν δύο πλακῶν τοῦ πυκνωτοῦ ἐξερευνήσεως ἐντὸς τῆς μάζης τοῦ μπετόν, καὶ ἐν γένει εἰς μέτρησιν ἐλαχιστοτάτων αὐξομειώσεων τῆς ὕλης (πρβλ. Πρακτικὰ Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν, ἔτ. 1930 σελ. 217 καὶ 460). Π. ΣΑΝΤΟΡΙΝΗΣ

**Μικρόβαλτον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῆς μεγάλης ὁδοῦ Σερβίων-Δεσκάτης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 460. Χ. Δ.

**μικροβαρογράφος** (ὁ) *[Μετεωρολ.]*. Ὄργανον αὐτογραφικὸν παρέχον τὰς ἀσθενεῖς καὶ ταχείας μεταβολὰς τῆς ἀτμοσφαιρικῆς πιέσεως. Ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς δοχείου διαστάσεων μεγάλων, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ἀήρ, ὅστις δύναται νὰ τεθῇ εἰς ἐπικοινωνίαν μετὰ τοῦ ἐξωτερικοῦ ἀέρος εἴτε δι' ἑνὸς τριχοειδοῦς σωλῆνος, εἴτε διὰ συνήθους σωλῆνος, ὃν δυνάμεθα νὰ κλείσωμεν τῇ βοηθείᾳ στροφίγγος. Ἀφ' ἑτέρου τὸ δοχεῖον εὑρίσκεται εἰς διαρκῆ συγκοινωνίαν πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν συστοιχίας βαρομετρικῶν τυμπάνων τοῦ Vidi λίαν εὐαισθήτων, ἐπὶ τῆς ἐξωτερικῆς ἐπιφανείας τῶν ὁποίων ἐπιδρᾷ ἡ ἀτμοσφαιρικὴ πίεσις. Ἡ συσκευὴ ἑπομένως καταγράφει τὰς διαφορὰς μεταξὺ τῆς πιέσεως τοῦ ἀέρος τοῦ δοχείου καὶ τῆς πιέσεως τῆς ἀτμοσφαίρας. Ἡ καταγραφὴ γίνεται κατὰ τὸν συνήθη τρόπον, ὅπως εἰς τὰ λοιπὰ αὐτογραφικὰ μετεωρολογικὰ ὄργανα, ἐπὶ ὡρολογιακοῦ κυλίνδρου. Τὸ ὄργανον προφυλάσσεται καλῶς ἀπὸ τῶν μεταβολῶν τῆς θερμοκρασίας, καλυπτόμενον διὰ σωμάτων δυσθερμαγωγῶν, τοῦτο δὲ ἀποτελεῖ οὐσιώδη ὅρον διὰ τὴν ἀκρίβειαν τῶν ἐνδείξεων τοῦ ὀργάνου. Ὅταν τὸ δοχεῖον ἐπικοινωνῇ ἐξωτερικῶς δι' ἑνὸς τριχοειδοῦς σωλῆνος, αἱ μόναι μεταβολαὶ τῆς πιέσεως, αἵτινες καταγράφονται, εἶναι αἱ ἀπότομοι μεταβολαὶ ἢ αἱ τῆς βραχείας περιόδου τῆς ἐξωτερικῆς πιέσεως, διότι συνεπείᾳ τῆς ὑπάρξεως τοῦ τριχοειδοῦς σωλῆνος, ἡ πίεσις τοῦ δοχείου μένει αἰσθητῶς σταθερὰ εἰς τὸ βραχὺ διάστημα τοῦ χρόνου, κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὁποίου μεταβάλλεται ταχέως ἡ ἐξωτερικὴ πίεσις. Ἀντιθέτως, ἐὰν αἱ μεταβολαὶ τῆς ἐξωτερικῆς πιέσεως εἶναι βραδεῖαι, ἡ πίεσις τοῦ δοχείου ἔχει τὸν καιρὸν νὰ ἰσορροπήσῃ πρὸς τὴν ἀτμοσφαιρικὴν πίεσιν καὶ ἡ συσκευὴ δεικνύει μηδέν. Ὅταν τὸ δοχεῖον ἐπικοινωνῇ ἐξωτερικῶς δι' ἑνὸς συνήθους σωλῆνος καὶ κλείσωμεν ἑρμητικῶς τὴν ἐπικοινωνίαν ταύτην τῇ βοηθείᾳ στρόφιγγος, ἡ συσκευὴ δεικνύει χονδροειδῶς τὴν διαφορὰν μεταξὺ τῆς βαρομετρικῆς πιέσεως κατὰ τὴν στιγμὴν τοῦ κλεισίματος καὶ τῆς πραγματικῆς πιέσεως, καὶ συνεπῶς ἡ συσκευὴ ἐργάζεται τότε ὅπως ἓν πραγματικὸν διαφορικὸν βαρόμετρον. Ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ταύτης ἀκριβῶς στηρίζεται ἡ κατασκευὴ τῶν μικροβαρογράφων, τῶν καλουμένων εἰδικώτερον *στατοσκοπίων*, ἤτοι τῶν ὑπερευαισθήτων βαρομέτρων τῶν χρησιμοποιουμένων διὰ τὴν μελέτην τῶν ἀποτόμων μεταβολῶν κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν καταιγίδων ἢ τῶν ἀτμοσφαιρικῶν ἀσυνεχειῶν. Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

**μικροβασίλειον** (τό)· μικρὸν βασίλειον, μικρὸν κράτος.

**μικροβασιλεύς,**—*έως*· βασιλεὺς μικροῦ κράτους.

**μικροβατικὸς** *κοχλίας [Ἀστρον.]*. Κοχλίας, τὸν ὁποῖον φέρουσι διάφορα ἀστρονομικὰ ὄργανα, χρησιμεύων πρὸς ἐπίτευξιν ἐλαφρᾶς καὶ βραδείας μετακινήσεως. Τοιοῦτοι κοχλίαι ἐπιτρέπουσι τὴν βαθμιαίαν κίνησιν τῆς διόπτρας θεοδολίχου κατ' ἀζιμούθιον καὶ καθ' ὕψος, τὴν παρακολούθησιν ἀστέρος καὶ τὴν συγκράτησίν του ἐπὶ τοῦ σταυρονήματος ἰσημερινοῦ τηλεσκοπίου διὰ βαθμιαίας κινήσεως αὐτοῦ κατ' ἀπόκλισιν καὶ καθ' ὡριαίαν γωνίαν κτλ. Μικροβατικὸν ἢ *βραδύποδα κοχλίαν* ἔχει ἐπίσης ὁ ἐξᾶς πρὸς εὐχερῆ ἐπίτευξιν τῆς ἐπαφῆς τῶν δι' αὐτοῦ σκοπευομένων δύο ἀντικειμένων, ὡς λ. χ. τοῦ Ἡλίου καὶ τοῦ ὁρίζοντος, ἡ μεσημβρινὴ διόπτρα ἢ ὁ μεσημβρινὸς κύκλος πρὸς ἐπίτευξιν ἐλαφρῶν μετακινήσεων τῶν σκοπευομένων ἀστέρων ἐντὸς τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου κτλ. Οἱ μικροβατικοὶ κοχλίαι εἶναι δύο εἰδῶν: α') Ἀπεριορίστου ἐνεργείας, ὁπότε σύγκεινται ἐξ ἀτέρμονος κοχλίου, ἐνεργοῦντος ἐφαπτομενικῶς ἐπὶ τῆς ὀδοντωτῆς περιφερείας τοῦ πρὸς περιστροφὴν κύκλου. β') Περιωρισμένης ἐνεργείας, ὁπότε ὁ ἀτέρμων κοχλίας περιβάλλεται ὑπὸ περικοχλίου, τὸ ὁποῖον συσφίγγεται διὰ τῶν δύο σιαγόνων, τὰς ὁποίας φέρει ἐπὶ τοῦ πρὸς περιστροφὴν κύκλου. Σ. Π.

**μικρόβια** (τά)· βλ. λ. *μικρόβιον*.

**μικροβιαιμία** (ἡ), ἢ *βακτηριαιμία*, ἢ *βακιλλαιμία [Μικροβ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ παρουσία μικροβίων εἰς τὸ αἷμα. Ἡ μικροβιαιμία διαιρεῖται εἰς τὴν *ἀληθῆ μικροβιαιμίαν*, καθ' ἣν πλὴν τῆς παρουσίας μικροβίων ἐν τῷ αἵματι παρατηροῦνται καὶ ὡρισμέναι παθολογικαὶ ἐκδηλώσεις, καὶ εἰς τὴν *λανθάνουσαν*, καθ' ἣν οὐδεμία ὡρισμένη παθολογικὴ ἐκδήλωσις παρατηρεῖται. Ἡ τελευταία αὕτη καλεῖται καὶ *λανθάνων μικροβισμός*.

Ἵνα παραχθῇ μικροβιαιμία, ἀπαιτεῖται ἀφ' ἑνὸς μὲν ὕπαρξις ἀρχικῆς τινος ἑστίας μικροβίων, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἀδυναμία τοῦ ὀργανισμοῦ, ἵνα καταστρέψῃ ταῦτα. Τὰ μικρόβια, ἔχοντα ὡς ἀφετηρίαν τὴν ἀρχικὴν ἑστίαν, εἰσέρχονται εἰς τὸ κυκλοφορικὸν σύστημα καὶ διὰ τούτου, μὴ εὑρίσκοντα ἐπαρκῆ ἀντίδρασιν, διαδίδονται εἰς ὅλον τὸν ὀργανισμόν. Μικροβιαιμία παρατηρεῖται εἰς πολλὰς νόσους. Συνηθέστερον ὅμως ἀπαντᾶται αὕτη εἰς τὰς παθήσεις τὰς ἐχούσας ὡς αἴτιον τοὺς σταφυλοκόκκους, τοὺς στρεπτοκόκκους, τοὺς πνευμονοκόκκους, τὸν μελιταῖον κόκκον, τὸ βακτηρίδιον τοῦ κοιλιακοῦ τύφου, τὸ τοῦ σπληνάνθρακος, τὸ ἑλοπαράσιτον, τὴν σπειροχαίτην κτλ. Τὴν μικροβιαιμίαν δυνάμεθα νὰ διαγνώσωμεν κυρίως διὰ τῆς αἱματοκαλλιεργείας. Ἀλλὰ καὶ ἡ ἄμεσος μικροσκοπικὴ ἐξέτασις τοῦ αἵματος δύναται πολλάκις νὰ μᾶς βοηθήσῃ εἰς τὴν διάγνωσιν διὰ τῆς ἀνευρέσεως τοῦ εἰδικοῦ παράγοντος (ἑλονοσία, ὑπόστροφος κτλ.). Ν. Α. Μ.

**μικροβιακός,**—*ή*,—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μικρόβια, ὁ τῶν μικροβίων || «μικροβιακὴ καλλιέργεια», καλλιέργεια μικροβίων πρὸς ἀπομόνωσιν καὶ ἐξέτασιν.—Ἐπίρρ. *μικροβιακῶς*.

**μικροβιοβριθὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ πλήρης μικροβίων.

— **μικροβιοβριθῆ** *σταγονίδια [Μικροβιολ.]*. Οὕτω καλοῦνται τὰ σταγονίδια ὑγροῦ τινος, ἅτινα περιέχουσι μικρόβια. Ὑγρὰ σταγονίδια δύνανται νὰ προέλθωσιν εἴτε ἐξ ἀναταράξεως ὑγροῦ τινος (μετάγγισις ὑγρῶν, θραῦσις κυμάτων, κατάβρεξις ὁδῶν καὶ δωματίων, ἀνατίναξις ὑγρῶν ὑφασμάτων, ἐκτίναξις ὑγρῶν διὰ ψεκαστῆρος κτλ.)., εἴτε ἐξ ἐπιφανείας ὑγροῦ τινος, ὅταν ἡ ταχύτης τοῦ ἀνέμου εἶναι μεγαλυτέρα τῶν 4 μέτρων κατὰ δευτερόλεπτον, εἴτε τέλος ἐκ τῆς ρινὸς ἢ τοῦ στόματος τῶν ἀνθρώπων καὶ τῶν ζῴων μετ' ἰσχυρὰν ἐκπνευστικὴν κίνησιν (βήξ, πταρμός, ἔντονος ὁμιλία). Ἐκ τῶν καθ' οἱονδήποτε τρόπον παραχθέντων σταγονιδίων τὰ μὲν μικρὰ αἰωροῦνται ἐφ' ἱκανὰς ὥρας (5—6) εἰς τὸν ἀέρα, τὰ δὲ μεγαλύτερα καταπίπτουσι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ταχέως ($^1/_2$ ὥραν). Πάντα ὅμως, πλὴν τῶν μικροβίων, ἅτινα φέρουσιν ἐν ἑαυτοῖς σταγονίδια ἐκ τῶν ὑγρῶν, ἐξ ὧν προέρχονται, παραλαμβάνουσι τοιαῦτα καὶ ἐκ τοῦ ἀέρος, καθιστάμενα οὕτω μικροβιοβριθέστερα. Τὰ σταγονίδια ταῦτα, καὶ ἰδίᾳ τὰ περιέχοντα παθογόνους μικροργανισμούς, εἶναι λίαν ἐπικίνδυνα, ὡς δυνάμενα νὰ μεταδώσωσι νόσους εἰς τὰ ἄτομα, ἅτινα κατὰ τύχην εἰσέπνευσαν ταῦτα. Ἐκ παρατηρήσεων, αἵτινες ἐγένοντο ὑπὸ διαφόρων ἐρευνητῶν, ἀνευρέθησαν εἰς τοιαῦτα σταγονίδια διάφορα μικρόβια (γρίππης, κοκκύτου, μηνιγγίτιδος, διφθερίτιδος, δυσεντερίας, κοιλιακοῦ τύφου, φυματιάσεως κτλ.). Ἐπίσης παρετηρήθη ὅτι οὐδέποτε εἰς σταγονίδιον περιέχεται ἓν μόνον εἶδος μικροβίου. Ἵνα καταδειχθῇ πόσον μέγας εἶναι ὁ κίνδυνος τῆς μολύνσεως ἐκ τῆς εἰσπνοῆς τοιούτων σταγονιδίων, ἀρκεῖ ν' ἀναφέρωμεν ὅτι κατὰ τὰ γενόμενα πειράματα εἰς φθισικὸς βήχων ὁπωσδήποτε ἰσχυρῶς δύναται νὰ μολύνῃ χῶρον πρὸ αὐτοῦ ἱσταμένους εἰς ἀπόστασιν ἑνὸς καὶ ἡμίσεος μέτρου. Διὸ ἀπὸ ἐπιδημιολογικῆς ἐπόψεως τὰ μικροβιοβριθῆ σταγονίδια ἀποτελοῦσιν ἕνα ἐκ τῶν ἐπικινδυνωδεστέρων παραγόντων πρὸς διάδοσιν τῶν ἐπιδημιῶν. Ν. Α. Μ.

**μικροβιοθεραπευτικὴ** (ἡ) *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *ἐμβολιοθεραπευτική*.

**μικροβιοκρατεῖς** *ἠθμοὶ [Μικροβιολ.]*· βλ. λ. *ἠθμοὶ* μικροβιοκρατεῖς.

**μικροβιοκτόνος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ κτείνων, ὁ φονεύων μικρόβια: «μικροβιοκτόνον φάρμακον» καὶ ἁπλῶς «μικροβιοκτόνον».

— **μικροβιοκτόνα** *μέσα*. Καλοῦνται τὰ φυσικὰ ἢ χημικὰ μέσα, ἅτινα ἐπιδρῶσιν ἐπιβλαβῶς ἐπὶ τῆς ζωῆς τῶν μικροβίων. Τὰ μέσα ταῦτα ὀνομάζονται *ἀντισηπτικὰ* μέν, ὅταν ἀναστέλλωσι τὸν πολλαπλασιασμὸν τῶν μικροβίων, *ἀπολυμαντικὰ* δέ, ὅταν ἀπονεκρῶσιν αὐτά. Ἐκ τῶν φυσικῶν μέσων κυριώτερα εἶναι: 1) Ἡ *θερμότης*, ἣν μεταχειριζόμεθα εἴτε ὡς ὑγρὰν εἴτε ὡς ξηράν. Ἡ ὑγρὰ ὑπὸ τοὺς αὐτοὺς βαθμοὺς φονεύει τὰ μικρόβια ταχύτερον τῆς ξηρᾶς. Οὕτω ἐπίδρασις ὑγρᾶς θερμότητος 50°, 60° βαθμῶν ἐπὶ 10′—15′ λεπτὰ φονεύει τὰ ἄνευ σπόρων μικρόβια, ἐνῷ ξηρὰ θερμότης τῆς ἰδίας ἐντάσεως πρέπει νὰ ἐπιδράσῃ ἐπὶ πλειότερον χρόνον, ἵνα ἐπιφέρῃ τὸ ἴδιον ἀποτέλεσμα. Πρὸς καταστροφὴν τῶν σπόρων ὡς καὶ τῶν σπορογόνων μικροβίων ἀπαιτεῖται μεγαλυτέρα θερμοκρασία καὶ ὡς τοιαύτην μεταχειριζόμεθα ἢ τὸν κεκορεσμένον διελαύνοντα ἀτμὸν ἢ τὸν ἀτμὸν μετὰ πιέσεως 2—4 ἀτμοσφαιρῶν. Τὴν ξηρὰν θερμότητα μεταχειριζόμεθα, ὅταν θέλωμεν ν' ἀποστειρώσωμεν ὑάλινα σκεύη. Θερμοκρασία 180°—200° εἶναι ἀρκετή, ὅπως ἀποστειρώσῃ ταῦτα τελείως. Τὴν δὲ ὑγρὰν μεταχειριζόμεθα διὰ τὰς στερεὰς καὶ ὑγρὰς οὐσίας ὡς καὶ διὰ τὰ ὑφάσματα (120° βαθμοὶ ὑπὸ πίεσιν).

2) Τὸ *ψῦχος* καὶ εἰς τὴν ταπεινοτάτην ἔτι θερμοκρασίαν τῶν —190° δὲν δύναται νὰ φονεύσῃ τὰ μικρόβια. Ἐν τούτοις ὡς ἀνακόπτον τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν χρησιμοποιεῖται πρὸς συντήρησιν τῶν τροφῶν (ψυγεῖα).

3) Τὸ *φῶς* ἐπίσης ἐπιδρᾷ ἐπιβλαβῶς ἐπὶ τῶν μικροβίων, ἀνακόπτον τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν ἢ καὶ ἀποκτεῖνον ἔτι αὐτά. Ἡ ἄμεσος προσβολὴ τοῦ ἡλιακοῦ φωτὸς ἐπιδρᾷ ἐντονώτερον τοῦ διαχύτου φωτὸς τῆς ἡμέρας, ἰδίᾳ διὰ τῶν ὑπεριωδῶν ἀκτίνων αὐτοῦ. Ἀσθενῆ μικροβιοκτόνον δύναμιν ἔχουσι τὸ ἠλεκτρικὸν ρεῦμα καὶ αἱ ἀκτῖνες Ραίντγκεν. Αἱ ἀκτῖνες τοῦ ραδίου ἔχουσι μεγαλυτέραν μικροβιοκτόνον δύναμιν, φονεύουσαι ἐντὸς τριώρου τοὺς σπόρους τοῦ βακτηριδίου τοῦ σπληνάνθρακος.

4) Ἡ *μεγάλη πίεσις* (μέχρι 2—3 χιλ. ἀτμοσφαιρῶν) ἀνακόπτει ἁπλῶς τὴν δρᾶσιν τῶν μικροβίων, ἐνῷ ἡ ἰσχυρὰ καὶ πολύωρος ἀνακίνησις δύναται καὶ νὰ τὰ φονεύσῃ.

5) Ἡ *ἀποξήρανσις*, ἥτις εἶναι ἐκ τῶν καλυτέρων φυσικῶν μικροβιοκτόνων μέσων, καταστρέφει μὲν ταχέως τὰ μικροβιακὰ σώματα, οὐχὶ ὅμως καὶ τοὺς σπόρους αὐτῶν.

Ἐκ τῶν χημικῶν μικροβιοκτόνων μέσων τὰ κυριώτερα εἶναι τὰ ἅλατα διαφόρων μετάλλων καὶ ἰδίᾳ τοῦ ὑδραργύρου καὶ ἀργύρου (ἄχνη ὑδραργύρου, ὀξυκυανιοῦχος ὑδράργυρος, σουμπλαμίνη, νιτρικὸς ἄργυρος, ἀργυραμίνη, ἀργυνίνη κτλ.), τὰ ὑδροξείδια τοῦ καλίου καὶ τοῦ νατρίου καὶ τῆς ἀσβέστου (ἀλκαλικοὶ σάπωνες, κοινὴ ἄσβεστος, γάλα ἀσβέστου), αἱ ὀξειδωτικαὶ οὐσίαι (ὑπερμαγγανικὸν κάλι), τὸ χλώριον, τὸ βρώμιον, τὸ ἰώδιον κτλ. Ἐπίσης ἰσχυρὰν ἀπολυμαντικὴν δύναμιν ἔχει καὶ τὸ ἠραιωμένον οἰνόπνευμα τῶν 60°, οὐχὶ δὲ καὶ τὸ πυκνὸν τοιοῦτον, ἡ φορμόλη, τὸ χλωροφόρμιον, τὸ ἰωδοφόρμιον, τὸ φαινικὸν ὀξὺ καὶ τὰ συστατικὰ αὐτοῦ (κρεολίνη, λυσόλη κτλ.), ὡς καὶ ἄλλα τινά, τῶν ὁποίων ὅμως ἡ μικροβιοκτόνος δύναμις εἶναι μικροτέρα τῶν ἀναφερθέντων.

Εὐνόητον εἶναι ὅτι ἡ μικροβιοκτόνος δύναμις τῶν διαφόρων χημικῶν καὶ φυσικῶν μέσων ἐξαρτᾶται ἐκ διαφόρων παραγόντων, ἤτοι τῆς πυκνότητος τῆς οὐσίας, τῆς διαρκείας τῆς ἐπιδράσεως, τοῦ εἴδους καὶ τῆς πληθύος τῶν μικροβίων ὡς καὶ τῆς συστάσεως τῆς οὐσίας, εἰς ἣν ταῦτα εὑρίσκονται. Μικροβιοκτόνους ἰδιότητας κέκτηται ἐπίσης τὸ αἷμα καὶ ἰδίᾳ ὁ ὀρὸς αὐτοῦ. Τὴν μικροβιοκτό-

Digitized by Google

νον δὲ δύναμιν δίδουσιν αὐτῷ οὐσίαι τινὲς ὀνομαζόμεναι *μικροβιοκτονῖναι* (βλ. λ.), αἵτινες εὑρίσκονται ἰδίᾳ εἰς τὸν ὀρὸν τῶν ἐπὶ τούτῳ ἀνοσοποιηθέντων ζῴων. Μικροβιοκτόνους οὐσίας ἐκκρίνουσιν ἐπίσης καί τινα λευκοκύτταρα· αὗται εἶναι διάφοροι τῶν ἀλεξινῶν καὶ ὀνομάζονται *λευκῖναι*. Ἀλλὰ καὶ τὰ αἱμοπετάλια παράγουσιν οὐσίας, τὰς *πλακίνας*, αἵτινες ἔχουσι μικροβιοκτόνον δύναμιν ἐπὶ τῶν βακτηριδίων τοῦ σπληνάνθρακος. Ν. Α. Μ.

**μικροβιοκτονῖναι** (αἱ). Οὐσίαι εὑρισκόμεναι εἰς τὸν ὀρὸν τοῦ αἵματος, εἰς ἃς ἀποδίδεται ἡ μικροβιοκτόνος δύναμις αὐτοῦ καὶ ἑπομένως καὶ τοῦ ὀροῦ. Ἡ ἰδιότης αὕτη κατεδείχθη κατὰ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Fodor, ὅστις ἀπέδειξεν ὅτι ὁ ὀρὸς τοῦ κονίκλου δύναται νὰ φονεύσῃ τὸ βακτηρίδιον τοῦ σπληνάνθρακος in vitro. Αἱ οὐσίαι αὗται εὑρίσκονται εἰς μικρὰς μὲν ποσότητας εἰς ὅλους τοὺς φυσιολογικοὺς ὀρούς, εἰς μεγαλυτέρας δὲ εἰς τὰ ἐπὶ τούτῳ ἀνοσοποιηθέντα ζῷα. Ἵνα ὁ ὀρὸς οὗτος δράσῃ, πρέπει νὰ εἶναι πρόσφατος, ἤτοι νὰ περιέχῃ συμπλήρωμα. Ἡ μικροβιοκτόνος δύναμις τῶν ὀρῶν καὶ ἑπομένως ἡ περιεκτικότης αὐτῶν εἰς μικροβιοκτονίνας ἐξακριβοῦται διὰ τοῦ *πειράματος τῶν πλακῶν*. Ἡ παρασκευὴ δὲ μικροβιοκτονικοῦ ὀροῦ γίνεται δι' ἀνοσοποιήσεως ζῴων. Ν.Α.Μ.

**μικροβιολογία** (ἡ). Καλεῖται ἡ ἐπιστήμη ἡ ἀσχολουμένη περὶ τὴν ἔρευναν καὶ σπουδὴν τῶν μικροβίων. Ὁ ὅρος οὗτος εἶναι συνώνυμος πρὸς τοὺς ὅρους *βακτηριολογία* καὶ *βακτηριδιολογία*, τοὺς ὁποίους μεταχειρίζονταί τινες εἰσέτι καὶ οἱ ὁποῖοι ἔχουσι στενοτέραν ἔννοιαν, ὡς σημαίνοντες τὴν σπουδὴν τῶν *βακτηριδίων* καὶ οὐχὶ τῶν *μικροβίων* ἐν γένει.

Ὡς πατὴρ τῆς μικροβιολογίας καὶ τῆς μικροσκοπίας θεωρεῖται ὁ Ὀλλανδὸς φυσιοδίφης Ant. van Leeuwenhoeck (1632—1723), ὅστις πρῶτος κατώρθωσε διὰ συνδυασμοῦ ἁπλῶν ἀμφικύρτων φακῶν ν' ἀνεύρῃ διαφόρους μικροργανισμούς, κινουμένους ἢ ἀκινήτους, ἐντὸς ὕδατος, φυτικῶν ἐγχυμάτων καὶ περιεχομένου τῶν ἐντέρων διαφόρων ζῴων καὶ ἀνθρώπων, ὡς καὶ εἰς τερηδονισμένους ὀδόντας ἀνθρώπων καὶ νὰ περιγράψῃ τούτους εἰς τὴν κατὰ τὸ 1680 δημοσιευθεῖσαν μελέτην αὐτοῦ. Βραδύτερον (1774) ὁ Δανὸς φυσιοδίφης Otto Fr. Müller, χρησιμοποιῶν τελειότερα μέσα παρατηρήσεως, ἐπεβεβαίωσε τὰς ὡς ἄνω ἐρεύνας καὶ ἐπεχείρησε νὰ θέσῃ ποιάν τινα τάξιν εἰς τὰ μικροσκοπικὰ ταῦτα ὄντα, διὰ τὰ ὁποῖα ὁ Λινναῖος, μὴ δυνάμενος νὰ τὰ ταξινομήσῃ, ἵδρυσε τὴν τάξιν *χάος*, διαιρέσας αὐτὰ εἰς *μονάδας* καὶ *δονάκια*. Τῷ 1833 ὁ Ehrenberg, μεταχειρισθεὶς τελειότερα ὀπτικὰ συστήματα, οὐ μόνον ἐπεξέτεινε τὴν ἐπὶ τούτων ἔρευναν, ἀλλὰ καὶ ἐπεχείρησε τελειοτέραν ταξινόμησιν, κατατάξας αὐτὰ εἰς τέσσαρα γένη, ἤτοι τὰς *βακτηρίας*, τὰ *δονάκια*, τὰ *σπειρύλλια* καὶ τοὺς *σπειροχαίτας*.

Τὴν ἐπιστημονικὴν ὅμως κατάταξιν τῶν μικροβίων ὀφείλομεν εἰς τὸν F. Cohn, ὅστις οὐ μόνον κατέταξε ταῦτα εἰς τὰ φυτά, ἀλλὰ καὶ ἐξέφερε τὴν γνώμην ὅτι ταῦτα ἀποτελοῦσιν ἴδια εἴδη, ἂν καὶ ὁμοιάζουσι τὰ μέγιστα πρὸς ἄλληλα. Ἀλλ' ἂν καὶ οἱ μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἐρευνηταὶ εἶχον παρατηρήσει ὅτι ὁ πολλαπλασιασμὸς τῶν ὀνταρίων τούτων συνέπιπτε πρὸς ἁπτὰς ἀλλοιώσεις τοῦ μέσου εἰς τὸ ὁποῖον εὑρίσκοντο, ἐν τούτοις δὲν ὑπωπτεύοντο τὴν σημασίαν ἣν εἶχεν ἡ σχέσις αὕτη, ἥτις ἦτο σχέσις αἰτίου πρὸς αἰτιατόν. Τόσον δὲ ὀλίγον ἐστοχάζοντο τῆς σχέσεως ταύτης, ὥστε οἱ Davaine καὶ Rayer τῷ 1850 ἀνέφερον ὡς περίεργον φαινόμενον τὴν παρουσίαν τοῦ βακτηριδίου τοῦ σπληνάνθρακος εἰς τὸ αἷμα τῶν ζῴων τῶν ἀποθνῃσκόντων ἐκ τῆς νόσου ταύτης. Οὕτως εἶχον τὰ τῆς μικροβιολογίας, ὅτε ἀνεφάνη εἰς τὸν ἐπιστημονικὸν ὁρίζοντα ὁ μέγας Γάλλος χημικὸς *Παστὲρ* (1822—1895). Οὗτος διὰ μὲν τῶν ἐργασιῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γαλακτικῆς ζυμώσεως καὶ τῶν ζυμώσεων ἐπὶ τοῦ ζύθου καὶ τοῦ οἴνου ἀπέδειξε, δι' ἀκαταμαχήτων ἐπιχειρημάτων, οὐ μόνον τὴν σχέσιν, ἥτις ὑπάρχει μεταξὺ τῆς ζυμώσεως καὶ τῶν εἰδικῶν πρὸς ταύτην μικροργανισμῶν, ἀλλὰ καὶ κατέρριψε τὴν θεωρίαν τῆς *αὐτομάτου γενέσεως* (gerenatio equivoca), ἀποδείξας ὅτι εἶναι ἀδύνατος ἡ γένεσις ὠργανωμένων ὄντων ἐκ μὴ ὠργανωμένης ὕλης καὶ ἐπιβεβαιώσας οὕτω τὴν γνώμην τοῦ Ἀριστοτέλους («Περὶ οὐρανοῦ» 283 a), καθ' ἣν «οὐδὲν ἀπὸ τοῦ αὐτομάτου οὔτ' ἄφθαρτον οὔτ' ἀγέννητον οἷόν τ' εἶναι»· διὰ δὲ τῶν ἐργασιῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῶν νόσων τῶν μεταξοσκωλήκων καὶ τοῦ προφυλακτικοῦ ἐμβολιασμοῦ τοῦ σπληνάνθρακος, τῆς ἐρυθρᾶς τῶν χοίρων, τῆς χολέρας τῶν ὀρνίθων καὶ τῆς θεραπείας τῆς λύσσης, καθώρισε λεπτομερῶς οὐ μόνον τὴν ὁδὸν τῆς ἐρεύνης, ἀλλὰ καὶ τὴν τῆς θεραπείας τῶν μεταδοτικῶν νόσων, χαράξας οὕτω τὴν κατεύθυνσιν, ἣν ὤφειλε νὰ λάβῃ ἡ νέα αὕτη ἐπιστήμη. Ἀλλ' ἐὰν αἱ ἐργασίαι τοῦ Παστὲρ ἔθεσαν τὰς βάσεις τῶν γνώσεων ἡμῶν περὶ τῆς σημασίας τῶν μικροβίων ἐν τῇ φύσει, τὴν σχέσιν ὅμως τούτων ὡς πρὸς τὰς νόσους τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ζῴων διηυκρίνησαν ἰδίᾳ αἱ ἐργασίαι τοῦ ἐπίσης μεγάλου Γερμανοῦ ἐρευνητοῦ *Ροβέρτου Κὼχ* (1843—1910). Οὗτος εἰσαγαγὼν πρῶτος τοὺς ἐλαιοβαπτικοὺς φακούς, τὸ φωτιστικὸν μηχάνημα τοῦ Abbe, τὰς χρωστικὰς τῆς ἀνιλίνης, τὴν μικροφωτογραφίαν, τὴν πηκτὴν καὶ τὸ ἄγαρ ὡς θρεπτικὰ ὑποστρώματα πρὸς καλλιέργειαν τῶν μικροβίων, ἠδυνήθη ἀφ' ἑνὸς μὲν ν' ἀποχωρίσῃ τὰ μικρόβια ἀπ' ἀλλήλων, ἀφ' ἑτέρου δὲ νὰ καλλιεργήσῃ ταῦτα κεχωρισμένως. Οὕτως, ἐπιτευχθέντων καθαρῶν καλλιεργημάτων, ἠδυνήθησαν νὰ μελετήσωσι τὰς βιολογικὰς ἰδιότητας τῶν μικροβίων. Αἱ ἀνακαλύψεις αὗται κατέστησαν τὴν μικροβιολογίαν ἰδίαν καὶ αὐτοτελῆ ἐπιστήμην, ἥτις οὐ μόνον ἀνέτρεψεν ἐκ βάθρων τὴν περὶ λοιμωδῶν νόσων διδασκαλίαν, ἀλλὰ καὶ ἐστήριξεν ἐπὶ νέων βάσεων τὴν παθολογίαν καὶ ἐδημιούργησε τὴν ἐπιστημονικὴν ὑγιεινήν. Ἡ πρόοδος ἦτο τόσον ραγδαία, ὥστε παρὰ τὸν Παστὲρ καὶ τὸν Κὼχ ν' ἀναφέρωνται τὰ ὀνόματα πολλῶν ἄλλων ἐρευνητῶν, οἵτινες ἐκλέϊσαν τὴν νέαν ταύτην ἐπιστήμην διὰ τῆς ἀνακαλύψεως πλείστων παθογόνων καὶ μὴ μικροβίων, καὶ διὰ τῆς ἐξακριβώσεως τῆς μεταδόσεως τῶν λοιμωδῶν νόσων, ὡς καὶ διὰ τῆς ἀνευρέσεως τῆς καταπολεμήσεως τούτων.

Ἡ μικροβιολογία περιλαμβάνει τὴν σπουδὴν τῆς ἱστορίας τῶν μικροβίων (προέλευσις καὶ διάδοσις αὐτῶν), τῆς μορφολογίας, τῆς φυσιολογίας καὶ τῆς βιολογίας αὐτῶν, τῆς ἱστολογίας (συντήρησις, καλλιεργία, χρῶσις), τῆς δράσεως αὐτῶν ὡς παθογόνων αἰτίων καὶ ἐν γένει ὡς αἰτίων διαφόρων φαινομένων (ζύμωσις, ἀπονίτρωσις). Εἰς τὴν μικροβιολογίαν ὑπάγονται ἐπίσης καὶ οἱ κλάδοι τῆς ἐφηρμοσμένης μικροβιολογίας ἤτοι ἡ *ἀπολύμανσις* καὶ *ἀποστείρωσις*, ὁ *ἐμβολιασμὸς* καὶ ἡ *ἐξασθένησις τῶν ἰῶν*, ἡ *ὀροθεραπευτική*, *μικροβιοθεραπευτικὴ* καὶ *χημικοθεραπευτικὴ* καὶ τέλος ἡ *ὀροδιαγνωστικὴ* καὶ *μικροβιοδιαγνωστική*. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω βλέπομεν ὅτι ἡ νεαρὰ αὕτη ἐπιστήμη, ἥτις ἀριθμεῖ βίον ἑβδομήκοντα μόλις ἐτῶν, ἔλαβε τοιαύτας διαστάσεις, ὥστε νὰ εἶναι σήμερον ἀπαραίτητος οὐ μόνον εἰς τὴν ἰατρικὴν ἀλλὰ καὶ εἰς κλάδους ἄλλων ἐπιστημῶν, ἤτοι τῆς γεωργίας, φυτοκομίας, ζυμοτεχνίας κ.τ.λ. Ἀποδειχθείσης δ' οὕτω τῆς χρησιμότητος τῆς ἐπιστήμης ταύτης, ἱδρύθησαν πρὸς διδασκαλίαν αὐτῆς ἀφ' ἑνὸς μὲν ἕδραι εἰδικαὶ εἰς ἅπαντα τὰ πανεπιστήμια τοῦ κόσμου, ἀφ' ἑτέρου δὲ εἰδικὰ ἱδρύματα (ἰνστιτοῦτα ἐπ' ὀνόματι τῶν Παστὲρ καὶ Κώχ), εἰς τὰ ὁποῖα, πλὴν τῆς διδασκαλίας τῆς μικροβιολογίας, συνεχίζονται συστηματικῶς αἱ ἔρευναι καὶ παρασκευάζονται εἰδικοὶ ὀροὶ καὶ εἰδικὰ ἐμβόλια (βλ. καὶ λ. *ἰατρικὴ* τ. ΙΒ', σ. 816 β ἑ.). Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

— ***μικροβιολογία τοῦ ἐδάφους***. Τὰ φυτά, ἵνα κατασκευάσωσιν ὀργανικὴν οὐσίαν, τρέφονται ἀποκλειστικῶς ἀπὸ μεταλλικὰς οὐσίας, ἃς παραλαμβάνουσιν ἐκ τοῦ ἐδάφους καὶ τῆς ἀτμοσφαίρας. Τὰ ζῷα μὴ δυνάμενα νὰ παρασκευάσωσι τὰς τροφὰς αὐτῶν διὰ τῶν ἀνοργάνων μεταλλικῶν στοιχείων, δανείζονται ταύτας εἴτε ἀπ' εὐθείας ἀπὸ τὰ φυτὰ καὶ ὀνομάζονται εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην *φυτοφάγα*, εἴτε ἐμμέσως, ὁπότε τρέφονται ἀπὸ ζῷα φυτοφάγα. Ἡ ὀργανικὴ οὐσία ἡ προερχομένη ἀπὸ τὰ φυτὰ ἢ τὰ ζῷα ἀποσυντίθεται ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν μικροβίων, καὶ τὰ στοιχεῖα αὐτῆς ἐπανέρχονται εἰς τὸν ὀρυκτὸν κόσμον. «Ἐὰν τὰ μικρόβια ἐξηφανίζοντο ἐκ τοῦ πλανήτου ἡμῶν, ἡ ἐπιφάνεια τῆς Γῆς θὰ περιεβάλλετο ἀπὸ νεκρὰν ὀργανικὴν οὐσίαν καὶ πτώματα διαφόρων εἰδῶν, φυτικὰ ἢ ζωϊκά. Τὸ ἔργον τοῦ θανάτου θὰ ἦτο ἀτελὲς καὶ ἡ ζωὴ θὰ καθίστατο συνεπῶς ἀδύνατος» *(Pasteur)*. Ὁ θάνατος ἑπομένως εἶναι μία ἐπιτακτικὴ ἀνάγκη, ἥτις ἐπιτρέπει τῇ βοηθείᾳ τῶν μικροβίων τὴν ἀνανέωσιν τῆς μεταλλικῆς οὐσίας, τῆς ἀπαραιτήτου διὰ τὴν ὕπαρξιν τῶν ὠργανωμένων ὄντων, τὰ ὁποῖα διαδέχονται ἄλληλα. Μέγιστος ἀριθμὸς μικροργανισμῶν ζῇ εἰς τὸ ἔδαφος, ἐξ ὧν ἄλλοι μὲν εἶναι χρήσιμοι εἰς τὴν γεωργίαν, ἄλλοι δὲ ἐπιβλαβεῖς. Γενικῶς δύναταί τις νὰ παραδεχθῇ ὅτι ἡ γονιμότης τοῦ ἐδάφους εἶναι στενῶς συνυφασμένη μὲ τὴν ἔντασιν τῶν βιολογικῶν παραγόντων, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὰ φυσικο-χημικὰ φαινόμενα. Οὐδεὶς πεδολόγος δύναται μετὰ κύρους ν' ἀποφανθῇ ἐπὶ τῆς γονιμότητος ἢ τῆς καρποφόρου δυνάμεως τοῦ ἐδάφους, ἐὰν δὲν λάβῃ ὑπ' ὄψιν τοὺς κατωτέρους μικροργανισμοὺς αὐτοῦ. Ὁ Albrecht Thaer τῷ 1815, εἶτα ὁ Pasteur καὶ τέλος ὁ Georges Ville τῷ 1853 παρετήρησε καὶ ὑπεστήριξε, παρὰ τὴν δημιουργηθεῖσαν τότε ἀντίδρασιν, ὅτι εἰς μερικὰ φυτὰ κατὰ τὸ τέρμα τῆς ἀναπτύξεως αὐτῶν εὑρίσκετο περισσότερον ἄζωτον ἀπὸ τὸ ἐνυπάρχον ἡνωμένον εἰς τὸ ἔδαφος, καὶ συνεπείᾳ τοῦ γεγονότος τούτου ἀπεκρυστάλλωσε τὴν γνώμην ὅτι μέρος αὐτοῦ προήρχετο ἀπὸ τὸ ἀτμοσφαιρικὸν ἄζωτον. Λόγῳ τῆς πολεμικῆς τοῦ Boussingault καὶ Dumas ἡ γνώμη τοῦ G. Ville μόλις κατὰ τὸ ἔτος 1886 ἐπεβεβαιώθη, ὁπότε ἀρχικῶς οἱ Robert Koch, Duclaux καὶ Berthelot καὶ εἶτα ὁ Hellriegel ἀπέδειξε διὰ πειραμάτων ὅτι τὰ ἐλλοβόκαρπα (ψυχανθῆ) ἠδύναντο ν' ἀφομοιώσωσιν ἄζωτον ἀτμοσφαιρικόν· τοῦτο ἀπεδείκνυε διὰ τῆς μεγάλης ἀναπτύξεως τῶν φυτῶν αὐτῶν, ὅταν αἱ ρίζαι ἔφερον φυμάτια, ἀντιθέτως δὲ διὰ τοῦ ραχιτισμοῦ καὶ τῆς ἐξασθενήσεως τῶν φυτῶν, ὅταν ταῦτα ἐκαλλιεργοῦντο εἰς ἐδάφη ἀποστειρωθέντα εἰς 110° Κ., ὁπότε αἱ ρίζαι αὐτῶν ἐστεροῦντο φυματίων. Ὁ Ρῶσος ἐρευνητὴς Winogradsky ἀνεκάλυψε κατὰ τὸ 1893 καὶ ἀπεμόνωσε νέα εἴδη βακτηρίων, τὰ ὁποῖα κατεργάζονται τὴν ὀξείδωσιν τῆς ἀμμωνίας καὶ τῶν ἀμμωνιακῶν ἁλάτων εἰς νιτρικὰ ἅλατα, τὴν ἀπονίτρωσιν αὐτῶν, καὶ τὴν ἀφομοίωσιν τοῦ στοιχείου ἀζώτου. Τὰ ἐν τῷ ἐδάφει εὑρισκόμενα βακτήρια προκαλοῦσιν ἐπὶ τῶν ριζῶν τῶν ψυχανθῶν τὴν ἀνάπτυξιν φυματίων, ἐντὸς τῶν ὁποίων πολλαπλασιάζονται, συμβιοῦντα μετὰ τῶν κυττάρων τῶν φυματίων τούτων, ἐντὸς δὲ αὐτῶν ἀναπτύσσονται, προσλαμβάνοντα καὶ ἀφομοιοῦντα ἀπ' εὐθείας τὸ ἀτμοσφαιρικὸν ἄζωτον, ἵνα παραγάγωσιν ἑνώσεις εὐκόλως ἀφομοιωσίμους ὑπὸ τῶν ριζῶν τῶν φυτῶν.

Ἀπὸ 2.000 ἐτῶν παρετηρήθη ὅτι ἠδύνατο ν' αὐξηθῇ ἡ γονιμότης τοῦ ἐδάφους διὰ τῆς κατ' ἀμειψισπορὰν καλλιεργείας ψυχανθῶν, πρὸ ὀλίγων ὅμως δεκαετηρίδων ἀπεδείχθη ἡ αἰτία τοῦ εὐεργετικοῦ διὰ τὴν αὔξησιν τῆς παραγωγῆς φαινομένου τούτου. Ὡς ζῶσαι ὑπάρξεις τὰ βακτήρια ἐργάζονται καλῶς ὑπὸ ὡρισμένας προϋποθέσεις. Εἶναι λίαν εὐαίσθητα εἰς τὸ ψῦχος καὶ εἰς τὴν θερμότητα, εἰς τὴν ὑγρασίαν καὶ τὴν ξηρασίαν, εἰς τὴν ὀξύτητα καὶ τὴν ἀλκαλικότητα τοῦ ἐδάφους. Εὑρίσκονται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἀφθόνως διεσπαρμένα εἰς τὸ ἔδαφος καὶ ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν ποικίλλει ἀναλόγως τῆς γεωλογικῆς συστάσεως τοῦ ἐδάφους, τῆς ἐποχῆς, τοῦ εἴδους τῆς καλλιεργείας, τοῦ βάθους κλπ. Τὰ ἐδάφη τῶν πεδιάδων, τὰ ὁποῖα ὑποβάλλονται εἰς ἐντατικὴν καλλιέργειαν, παρουσιάζουσι τὴν μεγαλυτέραν ἀναλογίαν τῶν βακτηρίων αὐτῶν, ἐνῷ τὸ ἀντίθετον παρατηρεῖται εἰς τὰ ὑψηλὰ ὄρη καὶ τὰ ὄξινα ἐδάφη. Ἡ διασπορὰ αὐτῶν εἰς βάθος εἶναι ἀνομοιόμορφος. Τὸ ἐπιφανειακὸν στρῶμα εἶναι ἀσηπτικόν, λόγῳ τῶν ἡλιακῶν ἀκτίνων καὶ συνεπῶς στεῖρον μικροβίων. Εἰς βάθος 10—25 ἑκ. μ. παρατηρεῖται ἡ μεγαλυτέρα ἀφθονία, καὶ ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν ἐλαττοῦται διαδοχικῶς, ἐφ' ὅσον διεισδύομεν εἰς τὸ ἔδαφος. Εἰς βάθος μεγαλύτερον τῶν 3 μέτρων οἱ μικροργανισμοὶ ἐξαφανίζονται σχεδὸν τελείως. Εἰς τὸ ἀνώτερον ἔδαφος ζῶσι ποικίλα εἴδη μικροργανισμῶν, βακτήρια, μύκητες, φύκη, πρωτόζῳα, ὀλιγοχαῖται, νηματίδια, ἔντομα, σκώληκες. Πάντες οὗτοι διὰ νὰ ζήσωσι καὶ ἀναπτυχθῶσιν ἔχουσιν ἀπαραιτήτως ἀνάγκην ὀξυγόνου, ὑδρογόνου, ἄνθρακος, φωσφορικοῦ ὀξέος, θείου, χλωρίου, πυριτίου, ὀξειδίου καλίου, νατρίου, ἀσβεστίου, μαγνησίου, ἀργιλλίου, σιδήρου, μαγγανίου. Οἱ ἑτερότροφοι ὀργανισμοὶ ἀπαιτοῦσι καὶ τὴν παρουσίαν ὀργανικῆς ὕλης, ἐξ οὗ καταφαίνεται ποίαν σημασίαν ἔχει ἡ εὐκόλως ἀποσυντεθειμένη ὀργανικὴ οὐσία διὰ τὴν ζωὴν τῶν βακτηρίων καὶ μυκήτων τοῦ ἐδάφους. Ἡ ποσότης τῶν μικροργανισμῶν ἡ ἐξευρεθεῖσα διὰ τῶν κλασσικῶν πειραμάτων τοῦ Τσέχου ἐδαφολόγου J. Stoklasa εἰς 1 γρ. χώματος ἐν ξηρᾷ καταστάσει, προερχομένου ἐκ βάθους 10—20 ἑκ. μ. μετὰ τὴν συγκομιδὴν καὶ κατὰ μῆνα Αὔγουστον, ἀνέρχεται εἰς:

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Ἀγρὸν | σικάλεως | εἰς | 30 — 43 | ἑκατομ. μικροβ. |
| » | βρόμης | » | 28 — 37 | » » |
| » | κριθῆς | » | 42 — 58 | » » |
| » | τεύτλων | » | 70 — 90 | » » |
| » | γεωμήλων | » | 42 — 45 | » » |
| » | τριφυλλίου | » | 72 — 86 | » » |
| » | κήπου | » | 130 | » » |

Διὰ τῶν ἐρευνῶν τῶν Ἀμερικανῶν ἐδαφοβιολόγων καθωρίσθη ὅτι εἰς ἔκτασιν ἑνὸς ἑκταρίου (10 στρεμμάτων) καὶ βάθος μέχρι 40 ἑκατ. μ. εὑρίσκονται ἐν τῇ ζωῇ 200—400 χιλιόγραμ. βακτήρια, οὕτω δὲ ἀντιλαμβάνεταί τις τὰ κολοσσιαῖα ποσὰ ζώσης ὕλης, τὰ ὁποῖα περιέχουν τὰ ἐδάφη, ἅτινα δέον νὰ τυγχάνωσι τῆς προσοχῆς μας. Ὑπελογίσθη δὲ πρὸς τούτοις παρὰ τοῦ καθηγητοῦ Nobbe τελευταίως ὅτι τὰ βακτήρια ταῦτα εἰς ἓν ἑκτάριον καλλιεργουμένου ἐδάφους ἀφομοιοῦσιν ἄζωτον ἀτμοσφαιρικὸν ἀξίας 80 γαλλικῶν φράγκων εἰς ἀζωτοῦχα λιπάσματα, ποσὸν τὸ ὁποῖον δύναται νὰ αὐξηθῇ εἰς 100 φράγκα διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως καθαρᾶς καλλιεργείας ἀζωτολόγων βακτηρίων. Τὰ ἐπιτευχθέντα ἱκανοποιητικὰ ἀποτελέσματα ἐκ τῆς χρήσεως τῶν σκευασιῶν αὐτῶν ἐγένοντο ἀφορμὴ νὰ διαδοθῶσιν αὗται ἐν τῇ γεωργίᾳ, συναντῶνται δὲ εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὸ ὄνομα Nitragine καὶ Alinit.

Τῶν μικροβίων τούτων τὰ μὲν ἀερόβια χρησιμοποιοῦσιν ἀπ' εὐθείας τὸ ὀξυγόνον τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ εὑρίσκονται ὑπὸ τοὺς εὐνοϊκωτέρους ὅρους διὰ τὴν ἀνάπτυξιν αὐτῶν εἰς τὸ καλλιεργήσιμον ἔδαφος, τὰ δὲ ἀναερόβια ἐργάζονται ἀπουσίᾳ τοῦ ἐλευθέρου ἀέρος, δανείζονται τὸ ὀξυγόνον ἀπὸ τὰς ὀργανικὰς ἢ μεταλλικὰς (ἀνοργάνους) ὀξυγονούχους ἑνώσεις, τὰς ὁποίας ἀνάγουσι, καὶ ζῶσιν εἰς τὰ βαθύτερα στρώματα τοῦ ἐδάφους. Οἱ μικροργανισμοὶ τοῦ ἐδάφους, οἱ ὁποῖοι ἐνδιαφέρουσι τὴν γεωργίαν, κρινόμενοι οὐχὶ ἐκ τῶν μορφολογικῶν αὐτῶν χαρακτήρων, κατατάσσονται εἰς τέσσαρας διακεκριμένας κατηγορίας.

Α') *Μικροργανισμοὶ χουμοποιητικοὶ* (humificateurs). *Χοῦμος* εἶναι τὸ προϊὸν τῆς ἀποσυνθέσεως

Digitized by Google

φυτικῶν ἢ ζωϊκῶν ὀργανικῶν σωμάτων, ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ὀξυγόνου τῆς ὑγρασίας, καὶ ἰδιαιτέρως τῶν μικροργανισμῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων δύναταί τις νὰ διακρίνῃ τοὺς Mucor stolonifer, Botrytis vulgaris, Cladosporium herbarum, Bacillus Amylobacter. Ἡ ἀποσύνθεσις τῆς ὀργανικῆς ὕλης συντελεῖται διὰ καύσεως, ὀξειδώσεως ἢ διὰ τῆς ἀναγωγῆς. Καὶ εἰς τὰς δύο ταύτας περιπτώσεις, καθ' ἃς δρῶσι μικρόβια ὁτὲ μὲν ἀερόβια, ὁτὲ δὲ ἀναερόβια, συμπληροῦντα ἄλληλα, ἀπορρέει ἡ καταστροφὴ τῆς ὀργανικῆς οὐσίας καὶ ἡ μετατροπὴ αὐτῆς διὰ σειρᾶς ἀντιδράσεων εἰς χοῦμος, δηλαδὴ χουμικόν, οὐλμικόν, κρηνικὸν ὀξύ, χουμίνην, οὐλμίνην καὶ τέλος εἰς ὕδωρ, διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος, μεθάνιον, ὑδρογόνον καὶ ἅλατα. Οἱ ὑδατάνθρακες, ἐξ ὧν συνίσταται ἡ ὀργανικὴ ὕλη, ἀποσυντίθενται ἀνομοιομόρφως. Κατ' ἀρχὴν τὰ σάκχαρα, δεξτρῖναι, ταννίνη ἐξαφανίζονται ταχύτερον, ἀκολούθως ἔρχονται αἱ ἀμυλοῦχοι οὐσίαι, τὰ κόμμεα καὶ ἡ κυτταρίνη. Τὰ λίπη δὲν ἀνάγονται ἀπ' εὐθείας, ἀλλ' ὀξειδοῦνται καὶ σαπωνοποιοῦνται. Ἡ γλυκερίνη καὶ τὰ λιπαρὰ ὀξέα, ἐλευθερούμενα διὰ τῆς σαπωνοποιήσεως, καθίστανται λεία τῶν μικροβίων. ἅτινα ἀνάγουσι ταῦτα μετὰ μεγαλυτέρας ἢ μικροτέρας ταχύτητος. Ἀναγκαία προϋπόθεσις διὰ τὴν ἐπιτάχυνσιν τῆς ἀποσυνθέσεως τῶν ὀργανικῶν οὐσιῶν εἶναι ὁ ἀερισμός, ἡ ὑγρασία, ἡ κάλυψις αὐτῶν ὑπὸ τοῦ ἐδάφους, ἡ σκαλιστικὴ καλλιέργεια καὶ ἡ ἐξουδετέρωσις τῶν παραγομένων ὑπὸ τῶν ζυμώσεων ὀξέων διὰ συμπληρωματικῶν λιπασμάτων ἢ μεταπλασμάτων. Ἐπειδὴ οἱ ὅροι οὗτοι εὑρίσκονται ἐν μειονεκτικῇ θέσει, ἡ χουμοποίησις εἰς μὲν τοὺς λειμῶνας διενεργεῖται βραδέως, εἰς δὲ τὰ δάση ἀτελῶς.

Β') *Μικροργανισμοὶ νιτροποιητικοὶ* (nitrificateurs). Ὁ χοῦμος ἅπαξ σχηματισθεὶς ὑφίσταται ἀμμωνιακὴν ζύμωσιν. Αἱ ἀζωτοῦχοι ὀργανικαὶ οὐσίαι ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν ὡρισμένων μικροργανισμῶν μετατρέπονται διαδοχικῶς εἰς ἀντιστοίχους ἀμμωνιακὰς συνθέσεις, διὰ παρεμβολῆς ἀμιδῶν, ἐν ἑνὶ λόγῳ τὸ ὀργανικὸν ἄζωτον μετατρέπεται εἰς ἀμμωνιακόν. Ἡ ἀμμωνιακὴ ζύμωσις ὀφείλεται εἰς ἀριθμὸν μικροβίων, μεταξὺ τῶν ὁποίων οἱ Bacillus arborescens mesentericus, racemosus καὶ διάφοροι μικρόκοκκοι, κατεργαζόμενοι τὴν οὐρίαν τῶν οὔρων διαδοχικῶς εἰς ἀνθρακικὸν ἀμμώνιον κατὰ τὴν ἐξίσωσιν:

$$CO\,(NH^2)^2+2\,H^2O=CO^3(NH^4)^2.$$

Οἱ νιτρώδεις μικροργανισμοὶ (Nitrosococcus et Nitrosomonas) συνεχίζουσι τὸ ἀρξάμενον ἔργον ὑπὸ τῶν ἀμμωνιακῶν μικροβίων, τῆς μετατροπῆς τῆς ὀργανικῆς οὐσίας εἰς μεταλλικήν. Διὰ τῆς συντελουμένης ὀξειδώσεως κατὰ τὴν δευτέραν ταύτην φάσιν μεταβάλλεται ἡ ἀμμωνία εἰς νιτρῶδες ὀξὺ καὶ τὰ ἀμμωνιακὰ ἅλατα εἰς νιτρώδη. Ἡ ὀξείδωσις παρίσταται διὰ τῆς ἀκολούθου ἐξισώσεως: $NH^3+3O=NO.OH+H^2O$. Σχεδὸν ὅλα τὰ ἀμμωνιακὰ ἅλατα μετατρέπονται ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν νιτρωδῶν μικροβίων εἰς νιτρώδη. Ἡ τρίτη φάσις τῆς ὀξειδώσεως προκαλεῖ τὸν σχηματισμὸν τῶν νιτρικῶν διὰ τῶν βακτηρίων, ἐξ ὧν ὁ Winogradsky τῷ 1891 ἀπεμόνωσε τὸ νιτροβακτήριον. Ἡ ἀντίδρασις διεξάγεται ὡς ἀκολούθως:

$$HNO^2+O=HNO^3,$$

Παράγοντες εὐνοοῦντες τὴν νιτροποίησιν, ἥτις ἐνέχει ἰδιαιτέραν σημασίαν διὰ τὴν γεωργίαν, εἶναι ὁ ἀὴρ διὰ τὴν ὀξείδωσιν τῆς ἀζωτούχου οὐσίας καὶ τὴν ἀναπνοὴν τῶν μικροργανισμῶν, τὸ ὕδωρ, μέση θερμοκρασία 25°—37° C., ἔδαφος οὐδέτερον ἢ ἐλαφρῶς ἀλκαλικὸν παρουσίᾳ ἐν τῷ ἐδάφει ἄνθρακος, φωσφορικοῦ ὀξέος, θείου καὶ βάσκου (ἀσβέστου, ὀξειδίου καλίου ἢ νατρίου) πρὸς ἐξουδετέρωσιν τοῦ παραγομένου νιτρικοῦ ὀξέος.

Γ') *Μικροργανισμοὶ ἀπονιτρωτικοὶ* (dénitrificateurs). Πρὸ 70 ἐτῶν περίπου οἱ Coppelsroder καὶ Smith διεπίστωσαν διαφόρους περιπτώσεις ἀναγωγῆς τοῦ νίτρου τῆς Χιλῆς εἰς τὸ ἔδαφος. Κατὰ τὸ 1873 ὁ Th. Schlœsing ἐπεβεβαίωσε τὸ γεγονὸς τοῦτο διὰ πειραμάτων, τὰ ὁποῖα ἐξετέλεσεν εἰς ὑγρὸν χῶμα καὶ κλειστὰ δοχεῖα. Αἱ νιτρικαὶ ἑνώσεις ἐξηφανίζοντο καὶ ἡ ἀτμοσφαῖρα ἐνεπλουτίζετο μὲ διοξείξιον τοῦ ἄνθρακος καὶ ἄζωτον. Δύο ἔτη βραδύτερον ὁ Mensel παρετήρησεν, ὅτι ἡ ἀποσύνθεσις αὕτη δὲν ἐλάμβανε χώραν παρουσίᾳ ἀντισηπτικῶν καὶ ἐκ τούτων ἐξήγαγε τὸ συμπέρασμα ὅτι ἡ ἀπονίτρωσις ὀφείλεται εἰς μικροβιολογικὴν ἐνέργειαν. Ἐπανειλημμέναι ἔρευναι, διεξαχθεῖσαι ἔκτοτε ὑπὸ διαφόρων σοφῶν, καθώρισαν ὅτι ἡ ἀναγωγὴ τῶν νιτρικῶν ἑνώσεων ἐν τῷ ἐδάφει ὀφείλεται εἰς μέγαν ἀριθμὸν μικροβίων. Ἐκ τούτων ἄλλα μὲν δίδουσι γένεσιν ἀντιστρόφως εἰς ὅλας τὰς ἀντιδράσεις τῆς νιτροποιήσεως καὶ μετατρέπουσι τὰ νιτρικὰ εἰς νιτρώδη, εἶτα ἀμμωνίαν, ὀξείδιον ἀζώτου καὶ τελικῶς ἐλεύθερον ἄζωτον, ἄλλα δὲ παράγουσιν ἄζωτον καὶ ὀξείδιον τοῦ ἄνθρακος. Οἱ ἀπονιτρωτικοὶ μικροργανισμοὶ εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον ἀερόβιοι, δρῶντες ἰδίως ἀναεροβίως. Ἡ κυκλοφορία τοῦ ἀέρος παρακωλύει τὴν ἀπονίτρωσιν, χωρὶς ἐννοεῖται νὰ σταματᾷ τὴν ἀνάπτυξιν καὶ πολλαπλασιασμὸν τῶν μικροβίων. Ταῦτα δύνανται νὰ θεωρηθῶσιν ὡς μικρόβια ἐπιβλαβῆ διὰ τὴν γεωργίαν. Εἶνε λίαν διαδεδομένα, συναντώμενα εἰς τὸν ἀέρα, τὸ ὕδωρ, τὸ ἔδαφος, τὰ περιττώματα καὶ ἐν ἀφθονίᾳ εἰς τὸν σανόν, τὸ χόρτον, τὸ τριφύλλιον. Ἀφθονία ὀργανικῶν οὐσιῶν, ὑγρασίας καὶ ξηρασίας εὐνοοῦσι τὴν ἀπονίτρωσιν. Ἡ ἐκ τῆς ἀπονιτρώσεως ἀπώλεια εἰς ἄζωτον εἶναι σημαντική, ὅταν ἀναμιγνύεται κόπρος ἵππου, πλουσία εἰς χόρτον μετὰ νιτρικῶν λιπασμάτων. Εἰς ἐδάφη καλλιεργούμενα, διαρκῶς ἀεριζόμενα καὶ ἐπιμελῶς ὑπὸ τῶν γεωργικῶν ἐργαλείων ἀνακινούμενα πρὸς διείσδυσιν τῶν ἀτμοσφαιρικῶν παραγόντων, οἱ ὅροι εἶναι δυσμενεῖς διὰ τὴν ἀπονίτρωσιν.

Δ') *Μικροργανισμοὶ ἀζωτοφάγοι* (fixateurs d' azote). Τὸ ἐλεύθερον ἄζωτον τοῦ ἀέρος δύναται ν' ἀφομοιωθῇ εἴτε ἀπ' εὐθείας εἴτε διὰ συμβιώσεως. Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν τὰ μικρόβια ζῶσι μεμονωμένα καὶ ἀναπτύσσονται ἀφαιροῦντα τὸ ἄζωτον τῆς ἀτμοσφαίρας, τὸ ὁποῖον ἀποδίδουσιν εἰς τὸ ἔδαφος διὰ τῶν πτωμάτων αὐτῶν. Εἰς τὴν δευτέραν περίπτωσιν τὰ μικρόβια ἐργάζονται διὰ λογαριασμὸν ἄλλης ζώσης ὑπάρξεως ἡ ὁποία τὰ φιλοξενεῖ.

Μεταξὺ τῶν συντελεστῶν ἀμέσου ἀφομοιώσεως ἀζώτου διακρίνομεν διάφορα εἴδη Clostridium, ὡς τὸ Clostr. Pasterianum, ἀναερόβιον μικρόβιον ἀνακαλυφθὲν ὑπὸ τοῦ Winogradsky, διάφορα Amylobacter καὶ Azotobacter, ἀερόβια μικρόβια ἀπομονωθέντα ὑπὸ τοῦ Beyerinek. Τὰ πλούσια εἰς ὀργανικὰς οὐσίας καὶ χοῦμον ἐδάφη εὐνοοῦσι τὴν ἀνάπτυξιν τῶν μικροβίων αὐτῶν. Τὰ ἀκαλλιέργητα ἐπίσης ἐδάφη, τὰ δασικά, ὡς καὶ τὰ τῶν παλαιῶν λειμώνων, τῶν ὁποίων ἡ χλωρὶς δὲν ἀπεκόπη, ἐμπλουτίζονται σημαντικῶς διὰ τοῦ στοιχειακοῦ ἀζώτου τῇ ἐπιδράσει τῶν μικροργανισμῶν αὐτῶν. Οὕτω εἰς δάσος ὀξυᾶς τοῦ Nancy ὁ M. Henry διεπίστωσεν ἀφομοίωσιν ἀτμοσφαιρικοῦ ἀζώτου 45 — 55 kgs ἐνιαυσίως εἰς ἕκαστον ἑκτάριον. Ὁμοίως εἰς Rothamsted ἀκαλλιέργητοι γαῖαι ἐνεπλουτίσθησαν μὲ 30-55 kgs ἐνιαυσίως κατὰ ἑκτάριον.

Εἰς τὰ καλλιεργούμενα ἐντατικῶς ἐδάφη, εἰς τὰ ὁποῖα οἱ ὑδατάνθρακες μειονεκτοῦσι διὰ νὰ ἐπιτρέψωσιν εἰς τοὺς μικροργανισμοὺς ν' ἀσκήσωσι ζωηρῶς τὴν δρᾶσιν αὐτῶν, ὁ ἐμπλουτισμὸς εἰς στοιχειακὸν ἄζωτον εἶναι ἀσήμαντος.

Μερικὰ φυτά, ἀνήκοντα εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν ψυχανθῶν, ἐμπλουτίζουσιν ἐπίσης τὸ ἔδαφος εἰς ἀτμοσφαιρικὸν ἄζωτον. Ὁ μηχανισμὸς τῆς ἀφομοιώσεως τοῦ ἀζώτου διηυκρινίσθη ὑπὸ τῶν Hellriegel καὶ Wilfarth. Οἱ δύο οὗτοι ἐρευνηταὶ ἀπέδειξαν διὰ πειραμάτων ὅτι ἡ ἀφομοίωσις τοῦ ἀζώτου τῆς ἀτμοσφαίρας συντελεῖται διὰ τῶν βακτηρίων Rhizobium leguminosorum ἢ Bacillus radicola, τὰ ὁποῖα ζῶσιν ἐν συμβιώσει μετὰ τῶν ψυχανθῶν εἰς τὰ φυμάτια τῶν ριζῶν αὐτῶν. Τὰ βακτήρια ταῦτα δεσμεύουσι τὸ ἄζωτον εὐθὺς ὡς λάβῃ τὸ φυτὸν ὡρισμένην ἀνάπτυξιν, διὰ νὰ παρασκευάσωσιν ἀζωτοῦχον οὐσίαν, τὴν ὁποίαν προσφέρουσιν εἰς τὸ φυτόν, διὰ νὰ λάβωσι παρ' αὐτοῦ ὡς ἀντάλλαγμα τὰς ἀνθρακούχους ἑνώσεις τὰς σχηματισθείσας εἰς τὰ φύλλα τούτου.

Ι. Γ. ΠΑΠΟΥΤΣΟΥΠΟΥΛΟΣ

**μικροβιολογικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μικροβιολογίαν: «μικροβιολογικὴ ἐξέτασις».— Ἐπίρρ. ***μικροβιολογικῶς***.

— **μικροβιολογικὴ** ***ἐξέτασις αἵματος*** *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *ἐξέτασις αἵματος*.

**μικροβιολόγος** (ὁ, ἡ). Καλεῖται ὁ ἀσχολούμενος περὶ τὴν μικροβιολογίαν. Κατ' ἐπέκτασιν ὀνομάζονται μικροβιολόγοι καὶ οἱ ἀσχολούμενοι περὶ τὴν ἐργαστηριακὴν διαγνωστικήν. Εἶναι συνώνυμον τοῦ *βακτηριολόγος* ἢ *βακτηριδιολόγος*, ὅρον ὃν προτιμῶσί τινες καὶ ἰδίᾳ ἐν Γερμανίᾳ. Ἐν Ἑλλάδι ὁ μικροβιολόγος πρέπει νὰ εἶναι ἰατρός. Ὁ ἐπιθυμῶν δὲ νὰ ἐξασκήσῃ τὴν εἰδικότητα ταύτην, πρέπει κατὰ τὸν νόμον, μετὰ τὸ πέρας τῶν ἰατρικῶν σπουδῶν, ν' ἀσκηθῇ εἰδικῶς ἐπὶ διετίαν εἴς τι κρατικὸν μικροβιολογικὸν ἐργαστήριον καὶ νὰ ὑποστῇ τὴν πρὸς τοῦτο ἐξέτασιν. Ν. Α. Μ.

**μικροβιολυσία** (ἡ). Ἡ ἀπονέκρωσις τῶν μικροβίων ὡς καὶ ἡ διάλυσις καὶ μετατροπὴ τούτων εἰς κοκκία καλεῖται *μικροβιολυσία* ἢ *βακτηριολυσία*. Ὁ ὅρος μικροβιολυσία, ὡς γενικώτερος, εἶναι συνηθέστερος τοῦ δευτέρου. Τὴν μεταβολὴν ταύτην τῶν μικροβίων ὡς καὶ τὴν ἐξασθένησιν ἢ καὶ ἐκμηδένισιν τῶν χρωστικῶν αὐτῶν ἰδιοτήτων ἐπιφέρουσιν αἱ *μικροβιολυσῖναι* (βλ. λ.), αἵτινες εἶναι οὐσίαι εὑρισκόμεναι εἰς μικρὰν μὲν ποσότητα εἰς τοὺς ὀροὺς τῶν φυσιολογικῶν ζῴων, εἰς μεγαλυτέρας δὲ εἰς τοὺς ὀροὺς τῶν εἰδικῶς πρὸς τοῦτο ἀνοσοποιηθέντων ζῴων. Ἡ μικροβιολυτικὴ δύναμις τῶν ὀρῶν τούτων ἀπεδείχθη ὑπὸ τοῦ Pfeiffer διὰ τοῦ κλασσικοῦ πειράματος αὐτοῦ, τοῦ γνωστοῦ ὑπὸ τὸ ὄνομα *φαινόμενον τοῦ Πφάϊφερ*. Ἡ μικροβιολυσία δὲν ἐπέρχεται μόνον ἐντὸς τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ (in vivo), ἀλλὰ καὶ ἐκτὸς αὐτοῦ (in vitro), ὡς ἀπέδειξε τοῦτο ὁ Μετσνικώφ. Τὸ φαινόμενον τῆς μικροβιολυσίας χρησιμοποιεῖται πρὸς διαφορικὴν διάγνωσιν διαφόρων μικροβίων, ὡς καὶ πρὸς προσδιορισμὸν ὀροῦ τινος τῇ βοηθείᾳ γνωστοῦ ἀντιγόνου, Ν. Α. Μ.

**μικροβιολυσῖναι** (αἱ). Αἱ οὐσίαι αἵτινες εὑρίσκονται φυσιολογικῶς μὲν εἰς μικρὰν ποσότητα εἰς πάντα ὀρὸν αἵματος, εἰς μεγαλυτέραν δὲ εἰς τὰ ἐπὶ τούτῳ ἀνοσοποιηθέντα ζῷα. Αἱ οὐσίαι αὗται ἐπιδρῶσαι ἐπὶ τῶν μικροβίων οὐ μόνον φονεύουσιν αὐτά, ἀλλὰ καὶ μεταβάλλουσι τὴν μορφὴν αὐτῶν. Αἱ μικροβιολυσῖναι εἶναι δύο. Καὶ ἡ μὲν μία ὀνομάζεται *ἀμφιδοχεὺς* ἢ *εὐαισθητοποιὸς* ἢ *στερεωτής*, ἡ δὲ ἑτέρα *ἀλεξίνη* ἢ *συμπλήρωμα* ἢ *κυττάση*. Εὑρίσκονται ἀμφότεραι εἰς τὸν ὀρὸν καὶ οὐχὶ εἰς τὰ ἄλλα στοιχεῖα τοῦ αἵματος. Ἡ πρώτη, ἥτις συνήθως καλεῖται ἀμφιδοχεύς, εἶναι εἰδική, εὑρίσκεται εἰς μεγάλην ποσότητα εἰς τὸν ὀρὸν τῶν ἀνοσοποιηθέντων ζῴων καὶ δὲν καταστρέφεται διὰ τῆς θερμάνσεως τοῦ ὀροῦ ἐπὶ ½ ὥραν εἰς 56° (θερμοανθεκτική). Ἡ δευτέρα, ἥτις συνήθως καλεῖται συμπλήρωμα, δὲν εἶναι εἰδική, δὲν αὐξάνεται διὰ τῆς ἀνοσοποιήσεως τῶν ζῴων καὶ εὑρίσκεται εἰς τὸν ὀρὸν ὅλων τῶν ζῴων εἰς διάφορα ποσά. Ἵνα ἐπέλθῃ μικροβιολυσία, ὁ μὲν ἀμφιδοχεὺς προσηλοῦται εἰς τὰ μικρόβια, δι' ἃ προορίζεται ἡ εἰδικότης αὐτοῦ καὶ τὰ καθιστᾷ εὐαίσθητα, τὸ δὲ συμπλήρωμα, ὅπερ κέκτηται τὴν λυτικὴν δύναμιν, συνδέεται πρὸς τὰ εὐαισθητοποιηθέντα μικρόβια καὶ ἐπιφέρει τὴν μερικὴν ἢ ὁλικὴν διάλυσιν αὐτῶν. Παρατηρεῖται δηλαδὴ καὶ ἐνταῦθα τὸ γενικὸν φαινόμενον τῶν *λυσινῶν*, καθ' ὃ ὁ ἀμφιδοχεὺς χρησιμεύει ὡς σύνδεσμος μεταξὺ τοῦ μικροβίου καὶ τοῦ συμπληρώματος. Αἱ μικροβιολυσῖναι, αἱ τόσον χρήσιμοι διὰ τὴν ἄμυναν τοῦ ὀργανισμοῦ, δὲν παράγονται δι' ὅλα τὰ εἴδη τῶν μικροβίων. Οἱ δὲ παραγόμενοι δι' ἐγχύσεως μικροβίων εἰς ζῷα ὀροὶ ὀνομάζονται *μικροβιολυτικοί*. Ν. Α. Μ.

**μικροβιολυτικός,** *—ή, —όν·* ὁ λύων, ὁ φονεύων τὰ μικρόβια, τὰ μικροβιακὰ κύτταρα, ἄλλως *βακτηριολυτικός*.

— **μικροβιολυτικὸς** ***ὀρός***. Ὁ ὀρὸς ὁ περιέχων *μικροβιολυσίνας*, ὅστις χρησιμοποιεῖται ἰδίᾳ πρὸς διαγνωστικὸν σκοπόν. Πρὸς παρασκευὴν μικροβιολυτικῶν ὀρῶν ἐφαρμόζομεν τὴν μέθοδον ἣν χρησιμοποιοῦμεν καὶ πρὸς παρασκευὴν τῶν *συγκολλητικῶν* καὶ *ἀντιμικροβιακῶν* ὀρῶν, μὲ μόνην τὴν διαφορὰν ὅτι πρὸς παρασκευὴν τοιούτου ὀροῦ πρέπει ν' ἀρχίσωμεν ἐνίεντες εἰς τὰ ζῷα τεθνεῶτα μικρόβια καὶ εἶτα ζῶντα. Ἐπειδὴ δὲ ἡ ἱκανότης πρὸς παραγωγὴν μικροβιολυτικοῦ ὀροῦ ποικίλλει εἰς τὰ διάφορα ζῷα, διὰ τοῦτο ὀφείλομεν νὰ ἀνοσοποιῶμεν τὰ πλεῖστα αὐτῶν. Ἵνα χρησιμοποιηθῇ μικροβιολυτικός τις ὀρός, πρέπει νὰ ἔχῃ τίτλον τοὐλάχιστον 1 : 5000. Τοιοῦτοι ὀροὶ παρασκευάζονται διὰ τὸ βακτηρίδιον τοῦ κοιλιακοῦ τύφου, τῶν παρατύφων καὶ τοῦ χολερικοῦ δονακίου. Ν. Α. Μ.

**μικροβιομετρία** (ἡ). Εἰς πᾶσαν κυτταρολογικὴν σπουδὴν καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν μικροβιολογίαν παρίσταται πολλάκις ἀνάγκη προσδιορισμοῦ τῶν ὑπὸ παρατήρησιν ἀντικειμένων. Εὐνόητον εἶναι ὅτι ὅσῳ μικρότερα εἶναι τὰ ἀντικείμενα, ἅτινα θέλομεν νὰ μετρήσωμεν, τόσῳ μεγαλύτεραι δυσχέρειαι παρουσιάζονται. Καὶ διὰ τοῦτο, ὅταν θέλωμεν νὰ μετρήσωμεν τὰς διαστάσεις τῶν μικροβίων, αἵτινες εἶναι συνήθως χιλιοστά τινα τοῦ χιλιοστομέτρου ἢ καὶ ὑποδιαιρέσεις τούτου, λαμβάνομεν ὡς μονάδα τὸ χιλιοστὸν τοῦ χιλιοστομέτρου, ὅπερ σημειοῦται διεθνῶς διὰ τοῦ ἑλληνικοῦ γράμματος *μ* καὶ προφέρεται ἢ *μικρὸν* ἢ ἁπλῶς *μι*, ἥτις εἶναι ἡ πρώτη συλλαβὴ τῆς λέξεως μικρόν. Ἡ μέτρησις τῶν διαστάσεων τούτων ἐπιτυγχάνεται διὰ τῶν *μικροβιομέτρων*. Ν. Α. Μ.

**μικροβιόμετρον** (τό), ἢ ***μικρόμετρον***. Τὸ ὄργανον δι' οὗ ἐπιτυγχάνεται ἡ μέτρησις τῶν διαστάσεων τῶν διὰ τοῦ μικροσκοπίου ὁρωμένων ἀντικειμένων. Μικρομέτρων δύο κυρίως εἴδη ὑπάρχουσι, τὸ *προσοφθάλμιον* καὶ τὸ *ἀντοφθάλμιον*. Τὸ πρῶτον εἶναι ὑάλινος δίσκος, ἐφ' οὗ ὑπάρχει κεχαραγμένη κλῖμαξ 5 χιλιοστῶν, διῃρημένη εἰς 50 ἴσα μέρη. Ὁ δίσκος οὗτος τοποθετεῖται εἰς τὸ μέσον τοῦ σωλῆνος τοῦ προσοφθαλμίου φακοῦ. Τὸ ἀντοφθάλμιον μικρόμετρον εἶναι ἀντικειμενοφόρος πλὰξ κινουμένη διὰ μικρομετρικοῦ στροφάλου καὶ φέρει κλίμακα 1 χιλιοστοῦ, διῃρημένην εἰς 100 ἴσα μέρη. Πρὸς μέτρησιν ἀντικειμένου τινὸς ἀκολουθοῦμεν τὸν ἑξῆς τρόπον: Τοποθετοῦντες τὸ ἀντοφθάλμιον μικρόμετρον ἐπὶ τῆς τραπέζης τοῦ μικροσκοπίου, παρατηροῦμεν τοῦτο διὰ προσοφθαλμίου φακοῦ φέροντος μικρόμετρον καὶ ἑνὸς ἀντοφθαλμίου ξηροῦ π. χ. τοῦ ἀριθ. 8. Διὰ τῆς παρατηρήσεώς μας ταύτης διαπιστοῦμεν ὅτι μία ὑποδιαίρεσις τοῦ ἀντοφθαλμίου μικρομέτρου καλύπτει 5 διαιρέσεις τοῦ προσοφθαλμίου. Ἀντικαθιστῶντες τὸ ἀντοφθάλμιον μικρόμετρον διὰ τοῦ πρὸς μέτρησιν ἀντικειμένου, εὑρίσκομεν ὅτι τοῦτο καλύπτει 3 ὑποδιαιρέσεις τοῦ προσοφθαλμίου μικρομέτρου. Ἐπειδὴ δὲ γνωρίζομεν ὅτι μία ὑποδιαίρεσις τοῦ προσοφθαλμίου μικρομέτρου ἀντιστοιχεῖ πρὸς 2 μ καὶ πολλαπλασιά-



Digitized by Google

ζοντες τὸν ἀριθμὸν 3 ἐπὶ 2 μ, θὰ εὕρωμεν τὸν ἀριθμὸν 6 μ, ὅστις μᾶς δεικνύει τὸ μέγεθος τοῦ πρὸς μέτρησιν ἀντικειμένου. Ἐὰν γνωρίζωμεν ἐκ τῶν προτέρων τὴν εἰς μ ἀξίαν τῶν χρησιμοποιουμένων ἀντοφθαλμίων φακῶν, ἡ μέτρησις καθίσταται εὐκολωτέρα, διότι ἀρκεῖ νὰ πολλαπλασιάσωμεν τὴν ἀξίαν ταύτην ἐπὶ τὸν ἀριθμὸν τῶν ὑποδιαιρέσεων τοῦ προσοφθαλμίου μικρομέτρου τῶν καλυπτομένων ὑπὸ τοῦ πρὸς μέτρησιν ἀντικειμένου, ἵνα εὕρωμεν τὰς διαστάσεις τούτου. Παράδειγμα: Ἐὰν μικρόβιόν τι ὁρώμενον διὰ τοῦ ὑπ' ἀριθμὸν 7 ξηροῦ φακοῦ καλύπτῃ 2 ὑποδιαιρέσεις τοῦ προσοφθαλμίου μικρομέτρου, ἡ ἀξία δὲ εἰς μ τοῦ φακοῦ τούτου εἶναι 0,0026, τὸ μέγεθος τοῦ μικροβίου θὰ εἶναι 0,0026×2=0,0052, ἤτοι 5,2 μ. Τὴν ἀξίαν εἰς μ τῶν ἀντοφθαλμίων φακῶν εὑρίσκομεν εἰς πίνακα διδόμενον μετὰ τῶν φακῶν ὑπὸ τοῦ κατασκευαστοῦ. Ἐὰν δὲν γνωρίζωμεν τὴν ἀξίαν ταύτην καὶ ἐπειδὴ οἱ διάφοροι φακοὶ δὲν ἔχουσι τὴν αὐτὴν ἀξίαν, καλὸν εἶναι ὅταν θέλωμεν ν' ἀναγράψωμεν τὸ μέγεθος ἀντικειμένου τινὸς νὰ σημειώνωμεν καὶ τοὺς ἀριθμοὺς τῶν φακῶν οὓς μετεχειρίσθημεν. Ὅσον μεγαλυτέρα εἶναι ἡ μεγέθυνσις ὑφ' ἣν παρατηροῦμεν, τόσον ἀκριβεστέρα θὰ εἶναι καὶ ἡ μέτρησις τοῦ ἀντικειμένου. Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

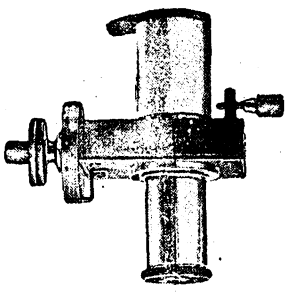

*Προσοφθάλμιον μικροβιόμετρον.*

**μικροβιομηχανία** (ἡ)· μικρὰ βιομηχανία, βιομηχανία διενεργουμένη διὰ μικρῶν ἐγκαταστάσεων.

**μικροβιομήχανος** (ὁ, ἡ)· ὁ ἀσχολούμενος εἰς τὴν μικρὰν βιομηχανίαν.

**μικρόβιον** (τό)· τὸ μικρὸν βίον ἔχον, βραχύβιον, ὀλιγόζωον, ὅρος σημαίνων μονοκύτταρον ζωικὸν ἢ φυτικὸν ὀργανισμόν, ὁρατὸν μόνον διὰ μικροσκοπίου.

— [*Ἐγκυκλ.*] Διὰ τοῦ γενικοῦ ὅρου *μικρόβια* νοοῦμεν μονοκυττάρους ὀργανισμοὺς ἀνήκοντας εἰς τὴν κατωτάτην βαθμῖδα τοῦ φυτικοῦ ἢ ζωϊκοῦ βασιλείου ἢ εἰς τὸ μεταίχμιον τούτων. Ὁ ὅρος οὗτος (*μικρόβιον*=τὸ ἔχον βραχὺν βίον) ἐπροτάθη ὑπὸ τοῦ Sedillot τῷ 1878, εἶναι δὲ συνώνυμος πρὸς τὸν ὅρον *μικροργανισμός*. Ἑπομένως, ὅταν λέγωμεν μικρόβιον ἢ μικροργανισμὸν νοοῦμεν ἐκ μὲν τοῦ φυτικοῦ βασιλείου τὰς *βακτηρίας* ἢ τοὺς ἄνευ χλωροφύλλης *μύκητας*, ἐκ τοῦ ζωϊκοῦ βασιλείου τὰ *πρωτόζῳα* καὶ ἐκ τοῦ μεταιχμίου τούτων τὰς *σπειροχαίτας*. Εἰς τὰ μικρόβια κατατάσσονται ἐπίσης καὶ οἱ *διηθητοὶ ἰοί*, οἵτινες εἶναι μικροργανισμοὶ ἀόρατοι μέχρι σήμερον τοὐλάχιστον καὶ οἵτινες εἶναι τόσον μικροί, ὥστε νὰ διέρχωνται διὰ τῶν πόρων τῶν ἐκ πορσελλάνης ἠθμῶν. Τὴν ὕπαρξιν τῶν μικροβίων ὑπωπτεύοντο καὶ οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες Ἱπποκράτης καὶ Ἀριστοτέλης, ὅταν ὡμίλουν περὶ μιάσματος εἰσερχομένου εἰς τὸ σῶμα καὶ ἀναπτύσσοντος νόσον, ὡς καὶ ὁ Βάρρος, ζήσας κατὰ τὸν Α' π. Χ. αἰῶνα, ὅστις ἔγραφεν ὅτι «ἐκ τῶν ἑλωδῶν τόπων ἀνεδίδοντο ἀόρατα ζωΰφια, ἅτινα εἰσέδυον εἰς τὸ σῶμα διὰ τοῦ στόματος καὶ τῆς ῥινός». Ἀλλ' ἡ γνῶσις τῶν μικροβίων ἤρξατο κυρίως ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ὅτε ἀνεκαλύφθησαν τὰ ὀπτικὰ συστήματα, ἅτινα κατέστησαν ταῦτα ὁρατά. Πράγματι δέ, ὁ πρῶτος ὅστις ἠδυνήθη νὰ ἀνεύρῃ καὶ νὰ περιγράψῃ τὴν ὕπαρξιν μικροβίων, ἦτο ὁ Ὁλλανδὸς Ant. van Leeuwenhoeck (1632—1723), ὅστις μεταχειρισθεὶς ἁπλοῦς ἀμφικύρτους φακοὺς κατασκευασθέντας ὑπ' αὐτοῦ τοῦ ἰδίου ἀνεῦρεν ἐντὸς τοῦ ὕδατος, τοῦ περιεχομένου τῶν ἐντέρων, τῶν μυιῶν, τῶν βατράχων, τῆς ὄρνιθος καὶ τοῦ ἀνθρώπου, ὡς καὶ εἰς τοὺς τερηδονισμένους ὀδόντας τοῦ ἀνθρώπου καὶ τὸν σίελον πλεῖστα εἴδη μικροβίων καὶ διέγραψε τὴν δρᾶσιν αὐτῶν εἰς τὴν σῆψιν καὶ τὴν ἀποσύνθεσιν.

*Διάδοσις, διαίρεσις καὶ σημασία τῶν μικροβίων.* Τὰ μικρόβια εἶναι λίαν διαδεδομένα ἐν τῇ φύσει. Ζῶσι δὲ καὶ πολλαπλασιάζονται ὁπουδήποτε εὕρωσιν ὅρους καταλλήλους, ἤτοι ὑγρασίαν, θερμοκρασίαν καὶ οὐσίας χρησίμους πρὸς διατροφήν. Ὅσῳ προσφορώτεροι εἶναι οἱ ὅροι, τόσῳ πλουσιωτέρα εἶναι ἡ βλάστησις αὐτῶν, παραγομένην διὰ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν μικροβιακῶν ἑστιῶν ὁπουδήποτε ὑπάρχει νεκρὰ ὀργανικὴ οὐσία (πτώματα ἀνθρώπων καὶ ζῴων, νεκρὰ φυτά, περιττωματικαὶ οὐσίαι καὶ ἐκκρίματα ἀνθρώπων καὶ ζῴων, κ. τ. τ.). Τινὰ τούτων δύνανται νὰ ζήσωσι καὶ ὡς παράσιτα ἐπὶ ζῴων καὶ φυτῶν, παραλαμβάνοντα ἐξ αὐτῶν τὰς ὀργανικὰς οὐσίας ὧν ἔχουσιν ἀνάγκην πρὸς βλάστησιν καὶ πολλαπλασιασμόν. Τὰ μικρόβια διαιροῦνται εἰς δύο μεγάλας τάξεις, εἰς τὰ *παθογόνα* ἢ *παράσιτα*, ἅτινα προκαλοῦσι τὰς διαφόρους νόσους τῶν ἀνθρώπων, τῶν ζῴων καὶ τῶν φυτῶν, καὶ εἰς τὰ *μὴ παθογόνα* ἢ *σαπρόφυτα*, ἅτινα κανονικῶς ζῶντα οὐδεμίαν νοσογόνον δύναμιν ἔχουσι· μεταβαλλομένων ὅμως τῶν ὅρων τῆς ζωῆς αὐτῶν δύνανται ν' ἀποκτήσωσι παθογόνον δύναμιν καὶ νὰ δράσωσιν εἴτε μόνα εἴτε ἐν συνδυασμῷ μετ' ἄλλων. Ὁ προορισμὸς τῶν μικροβίων ἐν τῇ φύσει εἶναι μέγας καὶ σοβαρός, διότι διὰ τῶν μικροβίων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐπιτελεῖται ἡ ἀποσύνθεσις τῶν ὀργανικῶν ὡς καὶ ἀνοργάνων τινῶν οὐσιῶν, ἵνα ἐκ τῶν ἀποσυντεθέντων ἁπλῶν στοιχείων ἀνασυγκροτηθῇ ἡ χημικὴ σύνθεσις νέων οὐσιῶν. Ἄνευ τῶν μικροβίων ἡ θανοῦσα ὀργανικὴ ὕλη, ζωϊκὴ ἢ φυτική, θὰ ἀκινητοποιεῖτο καὶ δὲν θὰ ὑπῆρχεν ἡ ἐλπὶς νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὸν κύκλον τῆς ζωῆς. Τὰ μικρόβια ἀποσυνθέτουν τὰς πολυπλόκους ἐνίοτε ταύτας οὐσίας εἰς ἁπλουστέρας, ὧν κυριώτεραι εἶναι τὸ ἀνθρακικὸν ὀξὺ καὶ ἡ ἀμμωνία καὶ αἵτινες εἶναι εὐκόλως ἀφομοιώσιμοι παρὰ τῶν φυτῶν τῶν περιεχόντων χλωροφύλλην. Τὰ πράσινα ταῦτα φυτά, ἅτινα εἶναι ὀργανισμοὶ συνθέσεως, ἐπανιδρύουσι διὰ τῶν ἁπλῶν ὑλικῶν, ἅτινα χρησιμοποιοῦσι, νέα σύνθετα ἄτομα (λιπαρὰς οὐσίας, ὑδατάνθρακας, λευκωματοειδῆ), οὐσίας δηλονότι αἵτινες χρησιμεύουν ὡς τροφὴ τῶν ζῴων. Ταῦτα χρησιμοποιοῦντα ὅ,τι χρειάζεται εἰς αὐτά, ἀπορρίπτουσι τὸ ὑπόλοιπον ὡς ἄχρηστον διά τε τὸ ζῷον καὶ τὸ φυτόν. Ὁ πρωτεύων λοιπὸν σκοπὸς τῶν μικροβίων εἶναι ἡ ἀποσύνθεσις τῆς θανούσης ὀργανικῆς ὕλης, αἱ δὲ ἄλλαι λειτουργίαι αὐτῶν εἶναι δευτερεύουσαι καὶ ἐπίκτητοι. Εἰδικῶς ἐκ τῶν παθογόνων μικροβίων, τὰ ὁποῖα ζῶσι παρασιτικῶς, ἄλλα μὲν διαβιοῦσιν ὡς σαπρόφυτα καὶ μόνον ὅταν εὕρωσι κατάλληλον εὐκαιρίαν καθίστανται παθογόνα, ἄλλα δὲ κατέστησαν τοιαῦτα, διότι, εὑρίσκοντα δυσκόλους τοὺς εὐνοϊκοὺς ὅρους τῆς ἀναπτύξεως αὐτῶν ἐκτὸς τοῦ ὀργανισμοῦ, ἀπέκτησαν τοιαύτας ἰδιότητας διὰ τοῦ χρόνου. Τοῦτο ἀποδεικνύεται ἐκ τοῦ ὅτι δυνάμεθα νὰ ἐπαναφέρωμεν εἰς τὸν σαπροφυτικὸν τύπον διάφορα παθογόνα μικρόβια, ὡς καὶ ἀντιθέτως ἀληθῆ σαπρόφυτα νὰ μετατρέψωμεν εἰς παθογόνα. Ἄλλωστε πολλὰ εἴδη μικροβίων, θεωρούμενα ὡς σαπρόφυτα, παράγουσι βλαβερὰς οὐσίας, ἀληθεῖς τοξίνας, δρῶντα δὲ ὡς παθογόνα καθίστανται, οὕτως εἰπεῖν, σύνδεσμος μεταξὺ τῶν δύο εἰδῶν.

*Καταγωγὴ τῶν μικροβίων.* Ἡ ταχεῖα ἐμφάνισις τῶν μικροβίων εἰς τὰ φαινομενικῶς καθαρὰ θρεπτικὰ ὑποστρώματα, ἀποτέλεσμα τῆς μεγάλης διαδόσεως τῶν ὄντων τούτων, ὑπῆρξε μία τῶν κυριωτέρων ἀντιρρήσεων τῶν ὑποστηριζόντων τὴν δοξασίαν τῆς *αὐτομάτου γενέσεως*. Ἀλλὰ καὶ μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τῶν μικροβίων οἱ ὑποστηρικταὶ τῆς θεωρίας ταύτης δὲν ἠδύναντο νὰ ἐννοήσωσιν οὐδὲ νὰ παραδεχθῶσιν ὅτι ἡ εἰς τὰς οὐσίας ταύτας παρόντες μικροργανισμοὶ ἦσαν τὸ αἴτιον τῆς ἀποσυνθέσεως τῶν οὐσιῶν τούτων. Ἐκ τῆς ἰδέας τῆς αὐτομάτου γενέσεως ἐξήγαγε τοὺς ὑποστηρικτὰς αὐτῆς ὁ Παστέρ, ἀποδείξας δι' ἀκαταμαχήτων ἐπιχειρημάτων: α') Ὅτι πᾶν ὑγρὸν ἀπεστειρωμένον καὶ προφυλασσόμενον ἀπὸ τοῦ ἀέρος οὐδέποτε παρουσιάζει μικροργανισμούς. β) Ὅτι τὴν ἀνάπτυξιν τῶν μικροβίων ἐν τῷ ὑγρῷ προκαλεῖ ὁ ἐλθὼν εἰς ἐπαφὴν μετ' αὐτοῦ μεμολυσμένος ἀήρ. γ') Ὅτι ὁ ἀὴρ ἀποξενούμενος τῶν μικροβίων αὐτοῦ δὲν δύναται νὰ μολύνῃ τὸ ὑγρόν. Διὰ τῆς ἀποδείξεως τῶν ἀνωτέρω ὁ Παστὲρ ἔθεσε τέρμα εἰς τὴν θεωρίαν τῆς αὐτομάτου γενέσεως, ἥτις ἠρίθμει βίον δύο καὶ πλέον χιλιάδων ἐτῶν. Σήμερον εἶναι πλέον τελείως ἀποδεδειγμένον ὅτι οὐδεμία ἀνάπτυξις ζωῆς δύναται νὰ γίνῃ ἄνευ μικροργανισμοῦ. Ἡ ἀπειρία τῶν ὄντων τούτων, ἡ σμικρότης καὶ ἡ διασπορὰ αὐτῶν ἐξηγοῦσιν εὐκόλως τὴν ταχύτητα τῆς ἐμφανίσεως αὐτῶν εἰς τὸ ὑλικόν, διὰ τὸ ὁποῖον δὲν ἐλήφθησαν τὰ κατάλληλα μέτρα πρὸς ἀποφυγὴν αὐτῶν. Εἶναι παγκοίνως γνωστὸν ὅτι τὰ μικρόβια εἶναι τοσοῦτον διαδεδομένα, ὥστε νὰ εὑρίσκωνται οὐ μόνον εἰς τὸν ἀέρα, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ ὕδωρ, τὴν γῆν, τὰς κατοικίας καὶ τὰ ἐνδύματα ἡμῶν, ὡς καὶ εἰς ἁπάσας τὰς κοιλότητας τοῦ σώματος τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ζῴων. Πολλὰ τῶν μικροβίων εὑρισκόμενα εἴτε ἐπὶ τοῦ δέρματος, εἴτε εἰς τινα κοιλότητα τοῦ σώματος ἀναμένουσι τὴν κατάλληλον εὐκαιρίαν, ὅπως ἀναπτυχθῶσι καὶ προσβάλλωσι τὸν ὀργανισμόν. Ἡ εὐκαιρία αὕτη εἶναι διάφορος εἰς τὰ διάφορα εἴδη καὶ ποικίλλει ἀναλόγως τῶν φυσικῶν καὶ βιολογικῶν ὅρων τοῦ περιβάλλοντος εἰς τὸ ὁποῖον εὑρίσκονται. Τὰ μικρόβια ταῦτα, τῶν ὁποίων ἄλλα μὲν εἶναι παθογόνα, ἄλλα δὲ σαπρόφυτα, εἰσερχόμενα εἰς τὸν ὀργανισμὸν ἀναπτύσσονται δαπάναις αὐτοῦ. Εἰς τὸν ὀργανισμὸν τότε προκαλεῖται ἀληθὴς πάλη διὰ τὴν ζωὴν μεταξὺ τῶν κυττάρων τούτων καὶ τῶν εἰσελθόντων μικροβίων. Ἐὰν ὁ ὀργανισμὸς κατορθώσῃ νὰ ὑπερισχύσῃ τούτων, ἐπέρχεται ἡ ἴασις· ἐὰν τοὐναντίον κατισχύσωσι ταῦτα ὁ ὀργανισμὸς ὑποκύπτει. Τὰ διάφορα εἴδη τῶν μικροβίων φαίνεται ὅτι δὲν μετεβλήθησαν διὰ τοῦ χρόνου. Τοῦτο ἀποδεικνύεται διὰ τῆς εὑρέσεως εἰς τοὺς τερηδονισμένους ὀδόντας τῶν αἰγυπτιακῶν μουμιῶν μικροβίων ὁμοίων πρὸς τὰ εὑρισκόμενα καὶ σήμερον ἐν τῷ στόματι τῶν ἀνθρώπων. Ἐπίσης εὑρέθησαν εἰς ὀρυκτὰ ἢ παλαιοντολογικὰ εὑρήματα μικρόβια παρόμοια πρὸς τὰ παρατηρούμενα καὶ νῦν ἐν τῇ φύσει. Ὁ τρόπος ἄρα τῆς ἀποσυνθέσεως ἐγίνετο καὶ εἰς ἀπωτάτας ἐποχάς, ὅπως γίνεται καὶ σήμερον, ἐξ οὗ δυνάμεθα νὰ συμπεράνωμεν ὅτι τὰ μικρόβια οὐδεμίαν ὑπέστησαν διὰ τοῦ χρόνου μεταβολήν.

*Κατάταξις καὶ μορφολογία τῶν μικροβίων.* Τὰ μικρόβια, ὡς εἴπομεν, διαιροῦνται εἰς *φυτικὰ* καὶ *ζωϊκά*. Καὶ τὰ μὲν φυτικὰ διαιροῦνται εἰς τὰς *βακτηρίας* ἢ *σχιζομύκητας* καὶ εἰς τοὺς *μύκητας*, τὰ δὲ ζωϊκὰ εἰς τὰ *ῥιζόποδα*, τὰ *σπορόζῳα*, τὰ *μαστιγωτὰ* καὶ τὰ *ἐγχυματικά*. Τοὺς διηθητοὺς ἰούς, οἵτινες εἶναι ἀόρατοι μικροσκοπικῶς, ὡς μὴ γνωρίζοντες τὴν μορφολογίαν αὐτῶν, δὲν δυνάμεθα νὰ τοὺς κατατάξωμεν. Τὰς δὲ σπειροχαίτας κατατάσσομεν εἰς τὸ μεταίχμιον τῶν φυτῶν καὶ τῶν ζῴων.

Αἱ βακτηρίαι ἀναλόγως τῆς μορφῆς αὐτῶν διαιροῦνται: α') Εἰς *κόκκους*, οἵτινες εἶναι στρογγύλοι, σφαιρικοί, ᾠοειδεῖς ἢ ἔχουν σχῆμα κόκκου καφφὲ ἢ νεφροῦ. Εὑρίσκονται δὲ ἢ μεμονωμένοι *(μικρόκοκκοι)* ἢ κατ' ἀθροίσματα ἐν εἴδει σταφυλῆς *(σταφυλόκοκκοι)* ἢ εἰς ἁλύσεις *(στρεπτόκοκκοι)* ἢ τεταγμένοι ἀνὰ δύο *(διπλόκοκκοι)* ἢ ἀνὰ τέσσαρες *(τετραδικοὶ)* ἢ ἀνὰ 8—32 *(σαρκῖναι, φακελόκοκκοι)*. β') Εἰς *βακτηρίδια*, ἅτινα ἔχουσιν ἄλλοτε μὲν σχῆμα μικροῦ ῥαβδίου *(κοκκοβακτηρίδια)*, ἄλλοτε μεγαλυτέρου *(βακτήρια* ἢ *βάκιλλοι)*, ἄλλοτε παχυτέρου κατὰ τὰ ἄκρα καὶ λεπτοτέρου κατὰ τὸ μέσον καὶ ἄλλοτε ἀντιθέτως. Καὶ ὅταν μὲν εὑρίσκωνται ἀνὰ δύο, ὀνομάζονται *διπλοβακτηρίδια*, ὅταν δὲ εἰς ἁλύσεις ὀνομάζονται *στρεπτοβακτηρίδια*. Ἐνίοτε ὅμως εὑρίσκονται καὶ εἰς ἀκανόνιστα ἀθροίσματα. γ') Εἰς *σπειρίδια*, ἅτινα εἶναι ῥαβδία ἄλλοτε μὲν ἐλαφρῶς κεκαμμένα *(δονάκια)*, ἄλλοτε ἔχουσι περισσοτέρας σπείρας *(σπειρύλλια)* καὶ ἄλλοτε πολυαρίθμους σπείρας *(σπειροχαῖται)*. δ') Εἰς *τριχομύκητας* ἀποτελουμένους ἐκ μακρῶν νηματίων μετὰ ψευδῶν διακλαδώσεων καὶ ὑποδιαιρουμένους εἰς *ἀκτινομύκητας, στρεπτότριχας* καὶ *λεπτότριχας*. ε') Εἰς *νηματομύκητας*, ἀποτελουμένους ἐκ μυκητυλλίων νηματοειδῶν καὶ πλαγίων διακλαδώσεων. στ') Εἰς *βλαστομύκητας*, οἵτινες εἶναι μονοκύτταροι ὀργανισμοὶ πολλαπλασιαζόμενοι δι' ἐκβλαστήσεως. Αἱ περιγραφεῖσαι μορφαὶ τῶν φυτικῶν μικροβίων δὲν παρουσιάζουσι πάντοτε τὴν ἰδίαν μορφήν.

Οὕτως ἕνεκα διαφόρων αἰτίων (ἀλλαγὴ θρεπτικοῦ ὑλικοῦ, μεταβολὴ τῶν ὅρων τῆς διατροφῆς) μικρόβιά τινα μεταβάλλουσιν οὐ μόνον τὴν μορφήν, ἀλλὰ καὶ τὰς βιολογικὰς αὐτῶν ἰδιότητας. Ἡ τοιαύτη μεταβολή, ὅταν μὲν εἶναι πρόσκαιρος, ὀνομάζεται *εὐμεταβλησία*, ὅταν δὲ εἶναι σταθερὰ καὶ ἀπότομος, καλεῖται *μετάλλαξις*. Ἐνίοτε πάλιν, τῇ ἐπιδράσει τοῦ χρόνου ἢ ἀντισηπτικῶν, παράγονται φυλαὶ *ἐκφυλώσεως*.

*Μέγεθος καὶ βάρος (ἀπόλυτον καὶ εἰδικόν).* Τὸ μέγεθος τῶν μικροβίων μετρούμενον διὰ χιλιοστῶν τοῦ χιλιοστομέτρου, ὅπερ σημειοῦται διὰ τοῦ γράμματος *μ*, εἶναι διάφορον εἰς τὰ διάφορα εἴδη. Οἱ κόκκοι π. χ. ἔχουσι μέγεθος ἀπὸ 0,1 μ—0,3 μ, τὰ δὲ βακτηρίδια καὶ οἱ ἄλλοι μύκητες ἀπὸ 1 μ—30 μ. Τὸ ἀπόλυτον βάρος τῶν μικροβιακῶν κυττάρων εἶναι ἀνάλογον πρὸς τὸ μέγεθος αὐτῶν. Ὁ Rubner εὗρεν ὅτι 1 χιλιοστόγραμμον νωποῦ καλλιεργήματος πρωτέως ἀπετελεῖτο ἐξ 61 ἑκατομμυρίων ἀτόμων. Τὸ εἰδικὸν βάρος τῆς μικροβιακῆς οὐσίας κατὰ τὸν αὐτὸν ἐρευνητὴν διά τινα εἴδη κυμαίνεται μεταξὺ 1,038—1,065, ἄρα τὸ εἰδικὸν βάρος τῶν μικροβίων εἶναι μικρότερον τοῦ εἰδικοῦ βάρους τοῦ ὕδατος. Διὰ τοῦτο δὲ καὶ τὰ μὴ κινούμενα μικρόβια καταπίπτουσιν εἰς τὸν πυθμένα ἀκινητοῦντος ὕδατος.

*Ὑφὴ τῶν μικροβίων.* Ἡ ὑφὴ τῶν μικροτέρων εἶναι ἁπλῆ, ἀποτελουμένων ἐξ οὐσίας ὁμοιογενοῦς ὑαλοειδοῦς. Εἰς τὰ μεγαλύτερα ὅμως παρατηρεῖται περιβλητικὸς ὑμὴν ὀνομαζόμενος *ἐξώπλασμα*, ὡς καὶ πρωτοπλασματικὴ μᾶζα ὀνομαζομένη *ἐσώπλασμα*. Βακτηρίδιά τινα παρουσιάζουσιν εἰς τὸ ἐσώπλασμα αὐτῶν κοκκία, ἅτινα ἄλλοι μὲν ὀνομάζουσι ταῦτα *μεταχρωματικὰ* ἢ *ἀλλόχρωμα*, ἄλλοι *πολικὰ* σωμάτια καὶ ἄλλοι σωμάτια τῶν Babes-Ernst. Τὰ κοκκία ταῦτα, τῶν ὁποίων ἡ μορφολογικὴ σύστασις εἶναι ἄγνωστος, χρωματίζονται διὰ τῶν βασικῶν χρωστικῶν τῆς ἀνιλίνης. Πλὴν τῶν κοκκίων τούτων παρετηρήθησαν ἐνίοτε εἴς τινα εἴδη μικροβίων κοκκία θείου *(βεγγιατόη* ἢ *θειόθριξ)* καὶ εἰς ἄλλα κοκκία σιδήρου *(σιδηροβακτηρίαι)*. Ἐνίοτε εἰς τὸ ἐσώπλασμα παρατηροῦνται *κενοτόπια* ἢ *κενοχώρια*, κακῶς ἢ οὐδόλως χρωματιζόμενα. Πυρὴν, ὡς παρατηρεῖται τοιοῦτος εἰς τὰ κύτταρα τῶν τελειοτέρων ὄντων, δὲν ὑπάρχει. Ἐν τούτοις διὰ τῆς χρώσεως κατὰ Giemsa βλέπομεν ἐντὸς τοῦ κυανῶς χρωσθέντος ἐσωπλάσματος πυρηνικὴν οὐσίαν *(χρωματίνην)* ἐγκατεσπαρμένην καὶ ἐρυθρῶς κεχρωσμένην, εἰς ἄλλα μὲν εἴδη εἰς μικροτέραν, εἰς ἄλλα δὲ εἰς μεγαλυτέραν ποσότητα. Μικρόβιά τινα, ἰδίᾳ τὰ προερχόμενα κατ' εὐθεῖαν ἐκ ζῶντος ὀργανισμοῦ, παρουσιάζουσιν ἔλυτρον, ὅπερ περιβάλλει ταῦτα ὡς στίλβουσα ὑαλίνη ζώνη καὶ ὅπερ συνήθως ἐξαφανίζεται, ὅταν καλλιεργηθῶσιν εἰς τεχνητὰ θρεπτικὰ ὑλικά. Τέλος μικρόβιά τινα περιβάλλονται ὑπὸ βλεννώδους τινὸς ὕλης

Digitized by Google

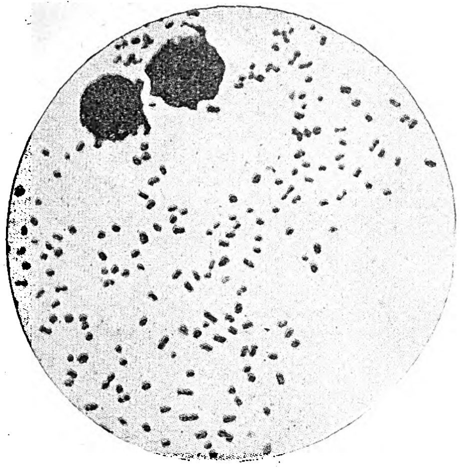

Βακτηρίδιον πανώλους Παρασκεύασμα ἐξ ὀποῦ βουβῶνος πάσχοντος ἀνθρώπου. [Μεγ. 1500 : 1.]

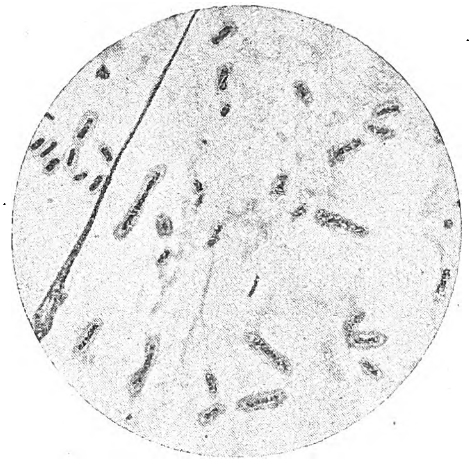

Βακτηρίδιον πνευμονίας μετὰ κάψης. Παρασκεύασμα ἐκ πλευριτικοῦ ἐξιδρώματος μυός. [Μεγ. 1500 : 1.]

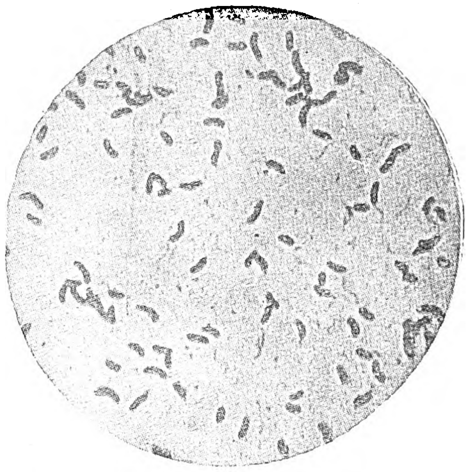

Δονάκιον χολέρας μετὰ βλεφαρίδων ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ ἄγαρ. [Μεγ. 1500 : 1].

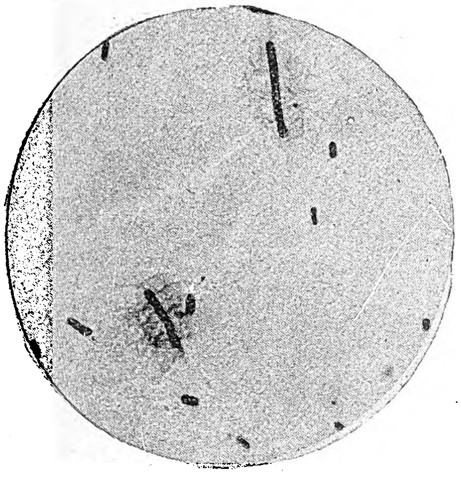

Πρωτεὺς ὁ κοινὸς μετὰ βλεφαρίδων ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ ἄγαρ. [Μεγ. 1500 : 1.]

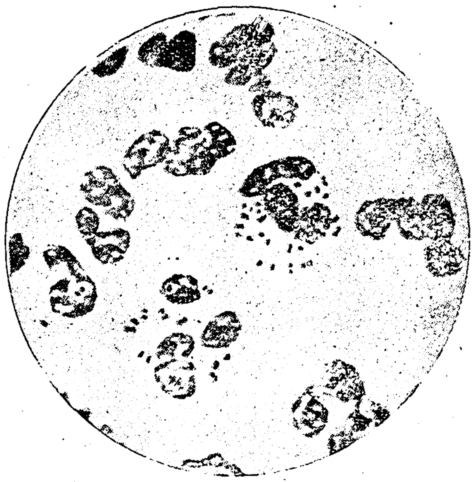

Γονόκοκκοι Παρασκεύασμα ἐκ πύου γονοκοκκικῆς οὐρηθρίτιδος. [Μεγ. 1500 : 1.]

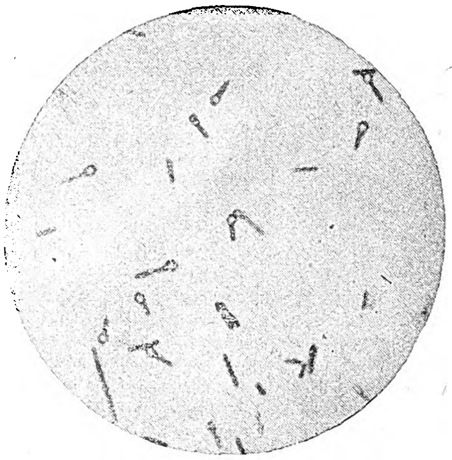

Βακτηρίδιον τοῦ τετάνου μετὰ σπόρων ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ ἄγαρ [Μεγ. 1500 : 1.]

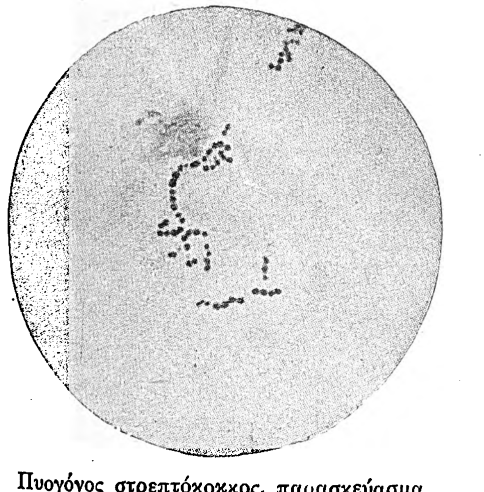

Πυογόνος στρεπτόκοκκος, παρασκεύασμα ἐκ πύου φλέγμονος. [Μεγ. 1500 : 1.]

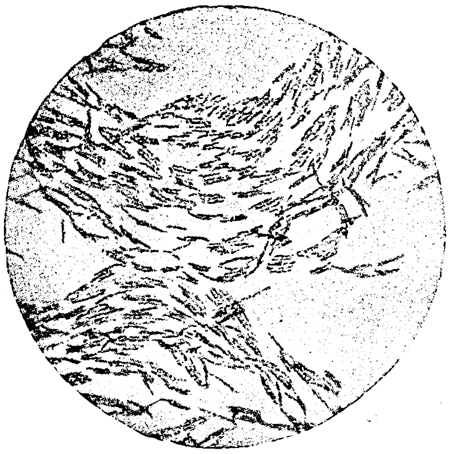

Λεπτὸν βακτηρίδιον προερχόμενον ἐκ τοῦ ὕδατος. Καλλιέργημα ἐπὶ πηκτῆς. [Μεγ. 1500 : 1.]

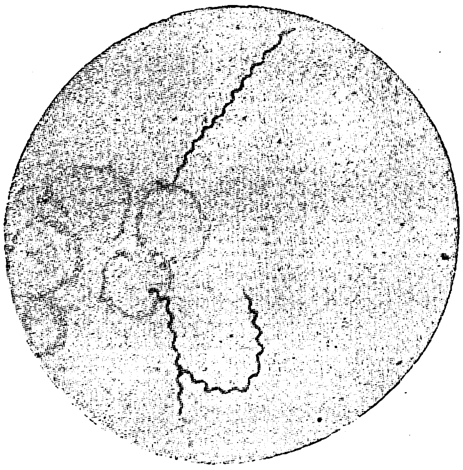

Σπειροχαίτη ὑποστρόφου πυρετοῦ. Παρασκεύασμα ἐξ αἵματος ἀνθρώπου πάσχοντος. [Μεγ. 1500 : 1.]

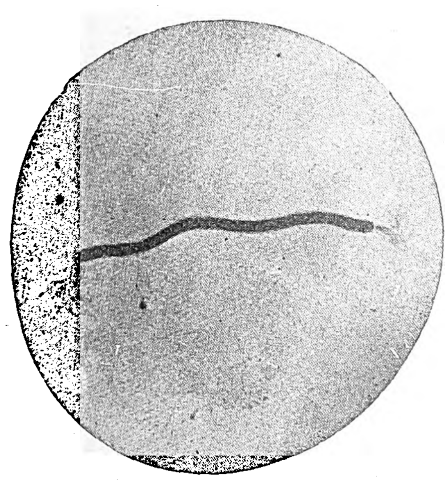

Ὀφιοειδὲς δονάκιον μετὰ βλεφαρίδων. Παρασκεύασμα ἐξ ὕδατος ὑπονόμων. [Μεγ. 1500 : 1.]

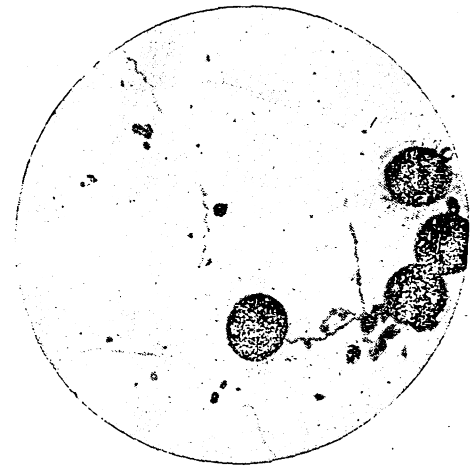

Σπειροχαῖται ὠχραὶ καὶ διαθλαστικαί. Παρασκεύασμα ἐξ ὀρώδους ὑγροῦ ἕλκους. [Μεγ. 1500 : 1.]

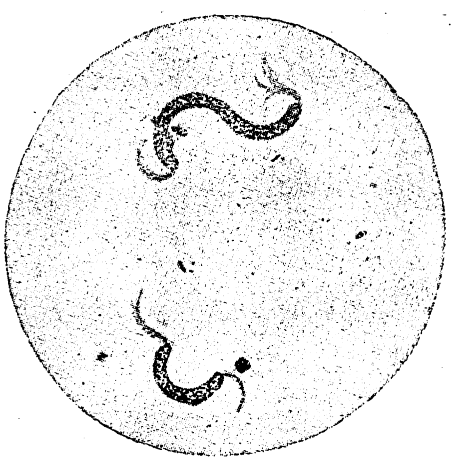

Κυματοειδὲς δονάκιον μετὰ βλεφαρίδων. Παρασκεύασμα ἐκ σεσηπότος ἐγχύματος ἀχύρου. [Μεγ. 1500 : 1.]

Digitized by Google

ἢ πηκτώδους, περικλειούσης πλείονα στοιχεῖα ὁμοῦ. Τὰ ἀθροίσματα ταῦτα ὀνομάζονται *ζωόγλοιαι*.

*Κινητικότης*. Ἐκ τῶν μικροβίων ἄλλα μὲν κινοῦνται ταχέως, ἄλλα βραδέως καὶ ἄλλα οὐδόλως. Οἱ Lehmann καὶ Fried, σπουδάζοντες τὴν κίνησιν τῶν μικροβίων, εὗρον ὅτι τὰ μὲν μικρόβια τῆς χολέρας κινοῦνται 0,03 χιλιοστόμετρα κατὰ δευτερόλεπτον, τὰ τοῦ τύφου 0,018, τὰ τοῦ τετάνου 0,011, τὸ βακ-μεγαθήριον 0,0075 κ.τ.λ. Εἰς τὰ μὴ κινούμενα παρατηρεῖται τρομώδης τις κίνησις, ὁμοία πρὸς τὴν *βραούνειον*. Ἡ κίνησις εἰς τὰ μικρόβια προκαλεῖται ὑπὸ τῶν *βλεφαρίδων*, αἵτινες ἔχουσι τὸ σχῆμα μαστιγίου καὶ αἱ ὁποῖαι θεωροῦνται ὡς προέκτασις τοῦ ἐξωπλάσματος. Καὶ ὅταν μὲν ἔχουσι μίαν βλεφαρίδα, ὀνομάζονται *μονότριχα* (δονάκιον χολέρας), ὅταν ἔχουσιν ἀνὰ μίαν εἰς ἕκαστον ἄκρον ὀνομάζονται *ἀμφίτριχα* (βακτηρίδιον μεγαθήριον), ὅταν ἔχουσι πολλὰς εἰς τὸ ἓν ἄκρον, καλοῦνται *λοφιότριχα* (βακτηρίδιον κυανοῦ γάλακτος), ὅταν ἔχουσι πολλὰς τοιαύτας καὶ εἰς τὰ δύο ἄκρα, καλοῦνται *ἀμφιλοφιότριχα* (κυματοειδὲς δονάκιον) καὶ τέλος ὅταν παρατηροῦνται πολλαὶ καθ' ὅλον τὸ σῶμα καλοῦνται *περίτριχα* (βακτηρίδιον τύφου, πρωτεύς, κολοβακτηρίδιον κ.λ.). Ἵνα ἴδωμεν τὰς βλεφαρίδας, πρέπει νὰ μεταχειρισθῶμεν ἰδίας χρωστικὰς μεθόδους, διότι οὔτε εἰς τὰ ἄχροα μικρόβια εἶναι καταφανεῖς οὔτε καὶ εἰς τὰ κεχρωσμένα διὰ τῶν κοινῶν χρωστικῶν μεθόδων.

Ἡ κινητικότης τῶν μικροβίων ἀποτελεῖ πολύτιμον διαγνωστικὸν γνώρισμα διὰ τὰ διάφορα εἴδη τούτων. Πρὸς σπουδὴν δὲ ταύτης ὑπάρχουσι διάφοροι τρόποι, τῶν ὁποίων ὁ *καλύτερος* εἶναι ὁ τῶν Carnot καὶ Garnier. Τὸν τρόπον τοῦτον μεταχειριζόμεθα, ὅταν θέλωμεν νὰ ἀπομονώσωμεν τὰ τυφικὰ βακτηρίδια ἐκ τῶν κοπράνων τῶν πασχόντων. Ἡ κίνησις παύεται εἴς τινας περιπτώσεις (σπορογονία, ἀνεπαρκὴς τροφή, περίσσεια οὐδετέρων ἁλάτων, ἐπίδρασις συγκολλητικῶν ὀρῶν καὶ δηλητηρίων, ὑψηλὴ ἢ ταπεινὴ θερμοκρασία), ἐπαναλαμβάνεται δὲ πάλιν μόλις τὰ μικρόβια εὑρεθῶσιν ὑπὸ προσφορωτέρους ὅρους καὶ δὴ εἰς τὴν ἀρίστην διὰ τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν θερμοκρασίαν. Ἡ διεύθυνσις τῆς κινήσεως τῶν μικροβίων ἐξαρτᾶται ἐκ διαφόρων ἐξωτερικῶν ἐπιδράσεων. Οὕτω οὐσίαι τινὲς προκαλοῦσι τὴν πρὸς αὐτὰς κίνησιν τῶν μικροβίων (θετικὴ χημικοταξία) ἢ ἀπωθοῦσιν αὐτὰ (ἀρνητικὴ χημικοταξία). Ἀλλὰ καὶ ἄλλαι ἐξωτερικαὶ αἰτίαι, ὅπως τὸ φῶς, ὁ ἠλεκτρισμός, ὁ ἀήρ, ἡ ὡσμωτικὴ κατάστασις τοῦ περιβάλλοντος ἀσκοῦσιν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς κινήσεως τῶν μικροβίων (φωτοταξία, γαλβανοταξία, ἀεροταξία, ὡσμωταξία). Ἡ χημικοταξία εἶναι φαινόμενον παρατηρούμενον καὶ εἰς ἄλλους φυτικοὺς ἢ ζωϊκοὺς μικροοργανισμούς, ὡς καὶ εἰς τὰ λευκὰ αἱμοσφαίρια τοῦ αἵματος. Ἡ διατήρησις τοῦ σχήματος τῶν μικροβίων ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς ὡσμωτικῆς πιέσεως, ἥτις ὑφίσταται εἰς τὸ ἐσώπλασμα τοῦ μικροβιακοῦ κυττάρου καὶ ἰσορροπεῖ τὴν τοῦ ἐξωτερικοῦ περιβάλλοντος. Ἐὰν ὅμως διά τινα λόγον διαταραχθῇ ἡ ἰσορροπία αὕτη, παρατηρεῖται ἢ ἀποχωρισμὸς τοῦ ἐσωπλάσματος ἀπὸ τοῦ ἐξωπλάσματος (*πλασμολυσία*) ἢ ἔξοδος τοῦ ἐσωπλάσματος ἀπὸ τοῦ κυτταρικοῦ ὑμένος (*πλασμοπτυσία*).

*Πολλαπλασιασμὸς τῶν μικροβίων*. Τὰ μικρόβια πολλαπλασιάζονται κατὰ δύο τρόπους, διὰ *διχοτομίας* ἢ διὰ *σπορογονίας*. Κατὰ τὸν πρῶτον τρόπον, ὅταν τὸ μικρόβιον ἀποκτήσῃ τὸ κανονικὸν αὐτοῦ μέγεθος, διαιρεῖται εἰς δύο ἴσα μέρη δι' ἐγκαρσίας περισφίγξεως. Καὶ ἄλλοτε μὲν τὰ στοιχεῖα ἀποχωρίζονται, ἄλλοτε ὅμως μένουν πλησίον ἀλλήλων σχηματίζοντα ἁλύσεις ἐκ δύο ἢ περισσοτέρων στοιχείων. Ὁ τρόπος οὗτος εἶναι ὁ συνηθέστερος. Εἴς τινας ὅμως κόκκους ὁ διαχωρισμὸς ἐπέρχεται κατὰ δύο ἢ τρεῖς διευθύνσεις καθέτους πρὸς ἀλλήλας, τὰ δὲ χωριζόμενα στοιχεῖα, μένοντα πλησίον ἀλλήλων, παρουσιάζουσι διάφορα σχήματα (τετραδικός, φακελόκοκκος). Κατὰ τὸν δεύτερον τρόπον τὰ μικρόβια ἀναπτύσσουσιν εἰς τὸ ἐσώπλασμα αὐτῶν μικρὸν στίλβον σημεῖον, ὅπερ ὀνομάζεται *σπόρος* ἢ *ἐνδοσπόριον*. Ὁ σπόρος οὗτος, ὅστις ἀντέχει τὰ μέγιστα εἰς τὰς παντοειδεῖς ἐξωτερικὰς βλαβερὰς ἐπιδράσεις, χρωματίζεται δυσκόλως καὶ χρησιμεύει εἰς τὴν ἀναπαραγωγὴν τοῦ μικροβίου. Ὁ σπόρος, περιβαλλόμενος ὑπὸ ἀνθεκτικῆς μεμβράνης, ἀναπτύσσεται συνήθως μὲν εἰς τὸ κέντρον, σπανιώτερον δὲ εἰς τὸ ἄκρον, ὁπότε προσδίδει εἰς τὸ μικρόβιον τὴν μορφὴν καρφίδος (βακτηρίδιον τετάνου). Οἱ σπόροι ἀναφαίνονται μόνον εἰς τὰ βακτηρίδια, οὐδέποτε δὲ εἰς τοὺς κόκκους καὶ τὰ σπειρίδια. Ἐκ τῶν παθογόνων μικροβίων ὀλίγα μόνον παρουσιάζουσι σπόρους (βακτηρίδιον σπληνάνθρακος, τετάνου καί τινα ἄλλα). Εἰς ἕκαστον βακτηρίδιον συνήθως παράγεται εἷς σπόρος, σπανιώτατα δὲ παρετηρήθησαν δύο. Ἔχει δὲ ὁ σπόρος σχῆμα στρογγύλον ἢ ἐλλειψοειδές. Ὁ τρόπος τῆς ἐκκολάψεως τοῦ σπόρου εἶναι σταθερὸς δι' ἕκαστον εἶδος. Ἐπὶ τοῦ βακτηριδίου τοῦ σπληνάνθρακος π. χ. ὁ σπόρος κατ' ἀρχὰς γίνεται θολερός, ἐπιμηκύνεται καὶ ῥήγνυται κατὰ τὸ ἓν ἄκρον, ἐκ τῆς ῥωγμῆς δὲ ταύτης ἐξέρχεται βραχὺ βακτηρίδιον φέρον εἰς τὸ ὀπίσθιον ἄκρον καὶ τὴν διαρραγεῖσαν μεμβράναν. Τὸ νέον τοῦτον βακτηρίδιον ἐπιμηκυνόμενον πολλαπλασιάζεται διὰ διχοτομίας. Εἴς τινα βακτηρίδια, ἅτινα συνήθως παράγουσι σπόρους ἕνεκα διαφόρων ἐπιδράσεων (θερμοκρασία ἄνω τῶν 42°, ὑδράργυρος) ἀναπτύσσονται πολλάκις ἄσποροι γενεαί. Ἐκ τῶν ἀσπόρων δὲ τούτων γενεῶν δύνανται ν' ἀναπαραχθῶσι πάλιν σπορογόνοι. Εἰς ἕτερα μικρόβια, μὴ ἔχοντα ἐνδοσπόριον, καὶ ἰδίᾳ εἰς τοὺς κόκκους περιέγραψαν ἀνθεκτικὰς μορφὰς ἀποτελουμένας ἐξ αὐτῶν τούτων τῶν μικροβίων μετὰ παχέων τοιχωμάτων (*ἀρθροσπόρια*).

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω βλέπομεν ὅτι ὁ διὰ διχοτομίας πολλαπλασιασμὸς εἶναι οὐ μόνον ὁ συχνότερος, ἀλλὰ καὶ ὁ σπουδαιότερος ἀπὸ ἀπόψεως τῶν λειτουργιῶν τῶν μικροβίων. Ἡ ταχύτης, μεθ' ἧς πολλαπλασιάζονται ταῦτα ὑπὸ εὐνοϊκοὺς ὅρους, εἶναι μεγίστη. Κατά τινας ἐρευνητὰς ἡ διχοτομία μικροβίου τινὸς ἐπέρχεται ἐντὸς 20 λεπτῶν, ἐπομένως εἰς διάστημα 24 ὡρῶν ἐξ ἑνὸς μικροβίου δύνανται νὰ παραχθῶσι 4700 τρισεκατομμύρια μικροβίων. Ὁ πολλαπλασιασμὸς ὅμως οὗτος παρακωλύεται ὑπὸ πλείστων αἰτίων. Οὕτως ἡ ταχεῖα διχοτόμησις ἐπέρχεται εἰς τὰς νεαρὰς καλλιεργείας καὶ οὐχὶ εἰς τὰς παλαιοτέρας. Ἐπίσης παρετηρήθη ὅτι τὸ μέγιστον τῆς ἀναπτύξεως ἐπέρχεται τὰς πρώτας 24 ὥρας ἀπὸ τῆς ἐμφυτεύσεως εἰς τὸ θρεπτικὸν ὑπόστρωμα καὶ ἐν θερμοκρασίᾳ 37°. Βραδύτερον, ὄχι μόνον παύονται πολλαπλασιαζόμενα ἀλλὰ καὶ θνήσκουσι πολλὰ ἐξ αὐτῶν, οὕτως ὥστε ἐκ τῶν ἐν τῷ εἰκοσιτετραώρῳ καλλιεργήματι ὑπαρχόντων ὑπολείπονται ζῶντα μόνον 7 %, μετὰ τριήμερον δὲ μόνον 0,8 %. Ἡ αἰτία τοῦ θανάτου αὐτῶν εἶναι ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ ἐξάντλησις τοῦ θρεπτικοῦ ὑλικοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ βλαβερὰ ἐπίδρασις τῶν προϊόντων τῆς ἐναλλαγῆς τῆς ὕλης αὐτῶν. Ἐὰν ἡ διχοτόμησις γίνῃ ἐντὸς ὑγροῦ ὑποστρώματος, σχηματίζονται εἴτε νημάτια (ψευδονημάτια) εἴτε διάφορα ἀθροίσματα (κροκύδες-νιφάδες). Ἐὰν ὅμως ἡ διχοτόμησις γίνῃ ἐπὶ στερεῶν θρεπτικῶν ὑποστρωμάτων, γεννῶνται διαφόρων σχημάτων ἀθροίσματα, ἅτινα καλοῦνται *ἀποικίαι*, αἵτινες ἔχουσι τὸ αὐτὸ σχεδὸν πάντοτε σχῆμα. Τὸ σχῆμα τῶν ἀποικιῶν ἔχει μεγάλην διαγνωστικὴν σημασίαν, διότι ἐξ αὐτοῦ καὶ μόνου ἐνίοτε δυνάμεθα ν' ἀναγνωρίσωμεν τὸ εἶδος τοῦ μικροβίου, ὅπερ ἀνεπτύχθη.

*Βιολογία τῶν μικροβίων*. Τὸ σῶμα τῶν μικροβίων σύγκειται ἐξ 85 % ὕδατος, λευκωματοειδῶν οὐσιῶν, αἵτινες ἀποτελοῦσι τὰ 30—80 % τῆς ξηρᾶς οὐσίας, καὶ ἐκ διαφόρων ἄλλων οὐσιῶν, ὡς θείου, φωσφόρου ἀσβεστίου, καλίου, σιδήρου, μαγνησίου κ.ἄ. Εἴς τινα ἀνευρέθησαν διάφοροι ὑδατάνθρακες, κυτταρίνη, κηρός, λίπος καὶ λιποειδεῖς οὐσίαι, ὡς καὶ χρωστικαί. Ἐπομένως ἡ σύστασις τῶν διαφόρων μικροβίων δὲν εἶναι τυπικὴ καὶ ὡρισμένη, ἀλλὰ ποικίλλει ἀκόμη καὶ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ εἴδους, ἐξαρτωμένη καὶ ἐκ τῆς συστάσεως τῶν θρεπτικῶν ὑποστρωμάτων, εἰς τὰ ὁποῖα ζῶσι καὶ ἀναπτύσσονται. Πάντως, μολονότι ποικίλλει ἡ ποσοτικὴ χημικὴ σύνθεσις, ἕκαστον τούτων ἔχει ἴδιον χημικὸν χαρακτῆρα, ὡς ἄλλως τε φαίνεται καὶ ἐκ τῆς σταθερᾶς παραγωγῆς ὡρισμένων βιολογικῶν ἐκκριμάτων (τοξῖναι, ἔνζυμα, ὀρολογικαὶ ἀντιδράσεις κ.τ.τ.). Ἵνα ἀναπτυχθῶσι τὰ μικρόβια ἢ ἀναπληρώσωσι τὰς καταναλισκομένας οὐσίας, ἔχουσιν ἀνάγκην καταλλήλων τροφῶν, ἀπὸ τῶν ὁποίων θ' ἀρυσθῶσι τὰ ἐλλείποντα στοιχεῖα. Οὕτως, ἄλλα μὲν λαμβάνουσι τὸ ἄζωτον ἐκ τῶν λευκωματοειδῶν ἢ ἀμμωνιούχων οὐσιῶν ἢ καὶ ἐκ νιτρικῶν ἁλάτων δι' ἀναγωγῆς τούτων εἰς νιτρικὸν ὀξὺ καὶ ἀμμωνίαν, ἕτερα δέ, καὶ ἰδίᾳ τὰ ζῶντα εἰς τὰς ῥίζας τῶν φυτῶν, λαμβάνουσι τοῦτο ἐκ τῆς ἀτμοσφαίρας (ἀζωτολάβα) παράγοντα συνθετικῶς ἀμμωνίαν καὶ φυτικὸν λεύκωμα. Τὸν ἄνθρακα, οὗτινος ἔχουσι μεγάλην ἀνάγκην τινὰ τούτων, λαμβάνουσιν ἐκ τῶν λευκωμάτων καὶ ὑδατανθράκων, αἱ δὲ νιτροβακτηρίαι ἐκ τοῦ ἀνθρακικοῦ ὀξέος τῆς ἀτμοσφαίρας. Ἐπίσης τὸ θεῖον, τὸ φωσφορικὸν ὀξύ, τὸν σίδηρον κτλ. λαμβάνουσιν ἐκ διαφόρων οὐσιῶν ἐμπεριεχουσῶν τὰ ἄνω στοιχεῖα. Ὡς ἔχοντα δὲ ἀνάγκην μεγάλης ποσότητος ὕδατος, φιλοῦσι νὰ ζῶσιν εἰς ὑγρὰ θρεπτικὰ ὑποστρώματα. Μικρόβιά τινα, ἵνα ζήσωσι καὶ ἀναπτυχθῶσιν, ἔχουσιν ἀνάγκην ὀξυγόνου καὶ ὀνομάζονται ὡς ἐκ τούτου *ἀερόβια*. Ἕτερα ἢ δὲν ἀνέχονται τοῦτο οὐδόλως, ἢ ἀνέχονται μικρὰς μόνον ποσότητας καὶ καλοῦνται *ἀναερόβια*. Ἄλλα τέλος δύνανται νὰ ζήσωσι καὶ ἐπὶ παρουσίᾳ ὀξυγόνου καὶ ἐπὶ ἀπουσίᾳ τούτου, δι' ὃ ὀνομάζονται *ἀμφίβια*.

Πρὸς σπουδὴν τῶν μικροβίων ἡ μικροβιολογία κατώρθωσε νὰ καλλιεργήσῃ τὰ περισσότερα τούτων τεχνητῶς. Λέγομεν δὲ τὰ περισσότερα, διότι ὑπάρχουσι καί τινα μικρόβια, τὰ ὁποῖα μόνον ἐπὶ οὐσιῶν τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ δύνανται νὰ ζήσωσι καὶ πολλαπλασιασθῶσι. Διὸ ἡ ἐκτὸς τούτου καλλιέργεια αὐτῶν δὲν ἐπετεύχθη μέχρι σήμερον. Ἀλλ' ἵνα ἡ ἀνάπτυξις τῶν μικροβίων ἀποβῇ τελεία, ἀπαιτοῦνται ἰδιαίτερα θρεπτικὰ ὑποστρώματα δι' ἕκαστον εἶδος, ὡρισμένης δὲ συστάσεως καὶ ἀντιδράσεως. Οὕτω μικρόβιά τινα ἀναπτύσσονται εἰς θρεπτικὰ ὑποστρώματα οὐδετέρας ἀντιδράσεως, ἄλλα εἰς ἐλαφρῶς ἀλκαλικῆς καὶ ἕτερα εἰς ἀσθενῶς ὀξίνου τοιαύτης.

Τὰ μικρόβια τεχνητῶς καλλιεργούμενα ζῶσιν ἐπὶ μακρόν, ἰδίᾳ εἰς ὑγρὰ θρεπτικὰ ὑποστρώματα. Ἡ καλυτέρα δὲ θερμοκρασία πρὸς ἀνάπτυξιν αὐτῶν εἶναι ἡ τῶν 37° — 38°· δύνανται ὅμως νὰ διατηρηθῶσι καὶ εἰς μικροτέραν, ἀλλὰ καὶ εἰς μεγαλυτέραν τοιαύτην. Πάντως δι' ἕκαστον μικρόβιον ὑπάρχει ὡρισμένη θερμοκρασία (ἀρίστη), εἰς ἣν ἀναπτύσσεται καλύτερον. Ἡ ἀντοχὴ εἰς τὸ μέγιστον καὶ εἰς τὸ ἐλάχιστον τῆς θερμοκρασίας, ὡς καὶ ἡ ἀρίστη πρὸς ἀνάπτυξιν αὐτῶν, ἀποτελεῖ πολύτιμον διαγνωστικὸν στοιχεῖον δι' ἕκαστον εἶδος. Ἡ ἄνω τοῦ μεγίστου ὁρίου θερμότης καταστρέφει ταῦτα ταχέως, ἐνῷ τὸ ψῦχος εἶναι ὀλιγώτερον βλαβερόν. Ἐν τούτοις ὑπάρχουσι μικρόβια, ἅτινα ἀντέχουσιν εἰς ἀρκετὰ ὑψηλὰς θερμοκρασίας (50°—70°, *φιλόθερμα*) καὶ ἄλλα, ἅτινα ἀντέχουσιν εἰς ψῦχος καὶ κάτω ἔτι τοῦ μηδενὸς (*φιλόψυχρα*). Μικρόβιά τινα, καὶ ἰδίᾳ τὰ ἔχοντα σπόρους, ἀντέχουσι μεγάλως εἰς τὴν ξηρασίαν, ἐνῷ ἄλλα θνήσκουσιν εἰς ταύτην ταχέως. Ἐπίσης μεγίστην ἐπίδρασιν κέκτηται ἐπ' αὐτῶν τὸ φῶς. Ἡ ἔκθεσις καλλιεργημάτων ἐπί τινας ὥρας εἰς τὰς ἀκτῖνας τοῦ ἡλίου εἶναι λίαν καταστρεπτικὴ διὰ τὰ μικρόβια. Δι' ὃ συνιστᾶται ὅπως αἱ καλλιέργειαι τίθενται εἰς σκοτεινὸν κλίβανον. Ἐπίσης χημικαί τινες οὐσίαι, αἱ λεγόμεναι ἀντισηπτικαί, ἐπιδρῶσι κακῶς ἐπὶ τῆς ζωῆς καὶ τῆς ἀναπτύξεως τῶν μικροβίων. Ἡ καταστρεπτικὴ δύναμις τῶν οὐσιῶν τούτων εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὴν δρῶσαν ποσότητα καὶ πρὸς τὸ εἶδος τοῦ μικροβίου.

*Προϊόντα παραγόμενα ὑπὸ τῶν μικροβίων*. Τὰ μικρόβια, ἵνα ἀναπτυχθῶσιν, ἔχουσιν ἀνάγκην τροφῆς. Τὴν τροφὴν ταύτην λαμβάνουσιν ἐκ τῶν θρεπτικῶν οὐσιῶν διὰ τῶν ἐνζύμων, ἅτινα διαχωρίζοντα τὰ στοιχεῖα τοῦ θρεπτικοῦ ὑλικοῦ τὰ καθιστῶσιν ἀφομοιώσιμα. Ταῦτα, ἐνῷ ἀφ' ἑνὸς ἐξασφαλίζουσι τὴν θρέψιν τῶν μικροβίων, ἀφ' ἑτέρου παράγουσιν οὐσίας ἀχρήστους, αἵτινες μένουσιν ἐν διαλύσει εἰς τὸ θρεπτικὸν ὑλικὸν ἢ ἐξέρχονται ὡς ἀέρια. Ἐκ τῶν οὐσιῶν αἱ κυριώτεραι εἶναι αἱ χρωστικαί, τὰ νιτρικὰ ἅλατα, τὰ διάφορα ὀξέα (ὀξεικόν, βουτυρικόν, γαλακτικόν, ὀξαλικόν, τρυγικὸν κ. ἄ.), ἡ φαινόλη, ἡ κρεζόλη, ἡ ἰνδόλη, ὑδατάνθρακες, πεπτά, ἔνζυμα, τοξῖναι, ὕδωρ κτλ. Ἐκ δὲ τῶν ἀερίων, τὸ ὑδρογόνον, ἡ ἀμμωνία, τὸ μεθάνιον, τὸ ἀνθρακικὸν ὀξύ, τὸ ὑδρόθειον. Ἐκ τῶν οὐσιῶν τούτων αἱ πλέον ἐνδιαφέρουσαι εἶναι τὰ ἔνζυμα καὶ αἱ τοξῖναι.

*Ἔνζυμα, ἢ διαστάσεις, ἢ διαλυτὰ φυράματα*. Ταῦτα εἶναι οὐσίαι χημικαί, ἐκκρινόμεναι ὑπὸ τῶν μικροβίων· διαλύονται εἰς τὸ ὕδωρ καὶ εἰς τὴν γλυκερίνην, καθιζάνονται ὑπὸ τοῦ οἰνοπνεύματος καὶ καταστρέφονται διὰ τῆς θερμότητος τῶν 55°—80° καὶ τοῦ ἡλιακοῦ φωτός. Αἱ περισσότεραι τούτων διέρχονται διὰ τῶν πόρων τῶν κηρίων τῆς πορσελλάνης, μικρόταται δὲ ποσότητες τούτων δύνανται ν' ἀποσυνθέσωσι μεγάλας ποσότητας ὀργανικῶν οὐσιῶν. Αἱ κυριώτεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι αἱ *τρυψῖναι*, αἵτινες διαλύουσι τὸ λεύκωμα, τὴν πηκτὴν καὶ τὴν τυρίνην, ἡ *οὐριάση* διαλύουσα τὴν οὐρίαν, αἱ *αἱμολυσῖναι* διαλύουσαι τὰ ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια, αἱ *λευκολυσῖναι* καταστρέφουσαι τὰ λευκὰ αἱμοσφαίρια, αἱ *ἀμυλάσαι* μετατρέπουσαι τὸ ἄμυλον εἰς διάφορα σάκχαρα, αἱ *πρωτεϊνάσαι* (πεψίνη, θρυψίνη, παπαΐνη) διασπῶσαι τὰς λευκωματοειδεῖς οὐσίας, αἱ *λιπάσαι* διχάζουσαι τὰ λίπη εἰς λιπαρὰ ὀξέα καὶ γλυκερίνην, αἱ *ὀξειδάσαι*, *ὑπεροξειδάσαι* καὶ *ἀναγωγάσαι*, εὑρισκόμεναι εἰς πάντα σχεδὸν τὰ φυτικὰ καὶ ζωϊκὰ κύτταρα καὶ παράγουσαι τὰς διαφόρους ὀξειδώσεις, καὶ τὰ *πυτιοειδῆ ἔνζυμα*, ἅτινα ἐπιφέρουσι τὴν πῆξιν τοῦ γάλακτος. Ἀλλὰ καὶ αἱ διάφοροι ζυμώσεις (οἰνοπνευματική, βουτυρική, γαλακτική, ὀξεικὴ κτλ.) παράγονται ἔκ τινος ἐνζύμου, ὅπερ ὀνομάζεται *ζυμάση* καὶ ὅπερ ὁ Buchner ἠδυνήθη νὰ ἐξαγάγῃ διὰ μεγάλης πιέσεως ἔκ τινων ζυμομυκήτων.

*Τοξῖναι*. Αὗται εἶναι δηλητηριώδεις οὐσίαι ἐκκρινόμεναι ὑπὸ τῶν μικροβίων. Ἀναλόγως τῆς προελεύσεως αὐτῶν διαιροῦνται εἰς τρεῖς κατηγορίας: α') εἰς τὰς *ἐξωτοξίνας*, αἵτινες εἶναι αἱ γνήσιαι τοξῖναι, διαχεόμεναι ἐκτὸς τοῦ μικροβίου· β') εἰς τὰς *ἐνδοτοξίνας* καὶ *βακτηριοπρωτεΐνας*, αἵτινες ἐμπεριέχονται εἰς τὸ σῶμα τῶν μικροβίων καὶ ἐκχύνονται μετὰ τὸν θάνατον αὐτῶν· καὶ γ') εἰς τὰς *πτωμαΐνας*, αἵτινες εἶναι προϊόντα διασπάσεως τῶν λευκωματοειδῶν καὶ λεκιθινῶν τῇ ἐπιδράσει μικροβίων.

*Ἕτεραι ἰδιότητες τῶν μικροβίων*. Σύνηθες φαινόμενον τῆς ζωῆς τῶν μικροβίων εἶναι ἀνάπτυξις μικρὰ θερμαντικοῦ, ἥτις παρατηρεῖται συνήθως ὡς αὐτοθέρμανσις εἰς τὴν κόπρον, εἰς τὸ χόρτον, τὸν καπνόν, τὸν βάμβακα, ὅταν ἀποτελῶσι μεγάλους σωρούς. Ἡ θερμότης αὕτη δύναται ν' ἀνέλθῃ ἐνίοτε καὶ εἰς 70° καὶ ἄνω ἔτι βαθμούς, προκαλουμένης καὶ αὐτομάτου ἀναφλέξεως. Ἑτέρα ἰδιότης εἶναι ὁ φωσφορισμός, ὅστις παρατηρεῖται εἴς τινα μικρόβια εὑρισκόμενα εἴς τινας θαλάσσας. Ἡ ἔντασις τοῦ φωσφορισμοῦ τῶν καλλιεργημάτων τῶν μικροβίων τούτων εἶναι τοιαύτη, ὥστε δυνάμεθα νὰ ἴδωμεν ἐν καιρῷ νυκτὸς τοὺς δείκτας τοῦ

Digitized by Google

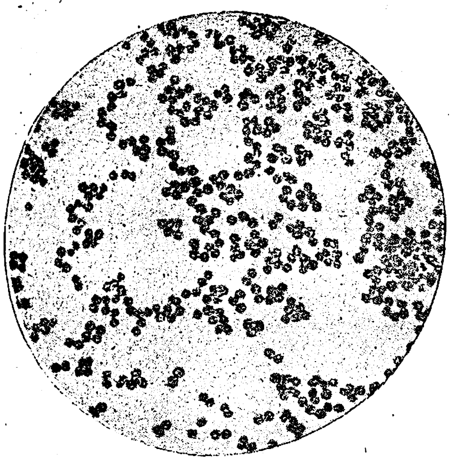

Μεγάλοι κόκκοι τοῦ ἀέρος, προερχόμενοι ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ πηκτῆς.
[Μεγ. 1500 : 1.]

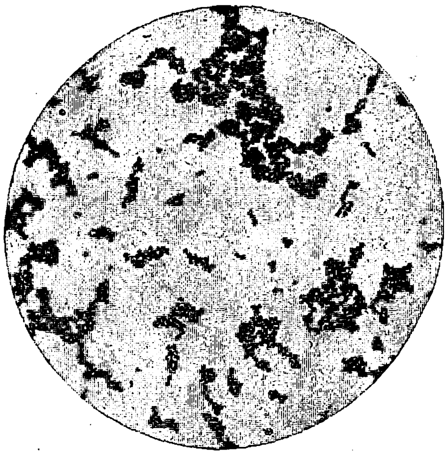

Σταφυλόκοκκος ὁ χρυσίζων, ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ ἄγαρ.
[Μεγ 1500 : 1.]

Βακτηρίδιον τοῦ κοιλιακοῦ τύφου, ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ πηκτῆς.
[Μεγ. 1500 : 1]

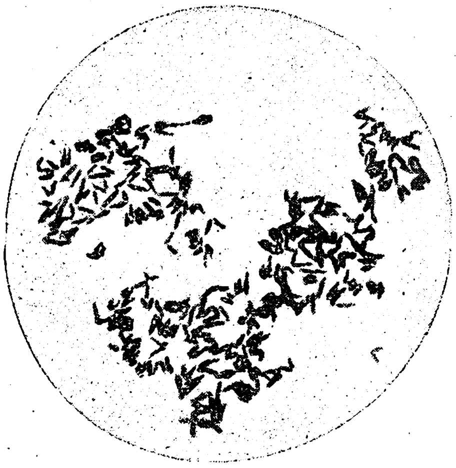

Βακτηρίδιον διφθερίτιδος ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ ἄγαρ.
[Μεγ. 1500 : 1.]

Βακτηρίδιον σπληνάνθρακος. Παρασκεύασμα ἐξ ὁποῦ σπληνὸς μυός.
[Μεγ. 1500 : 1.]

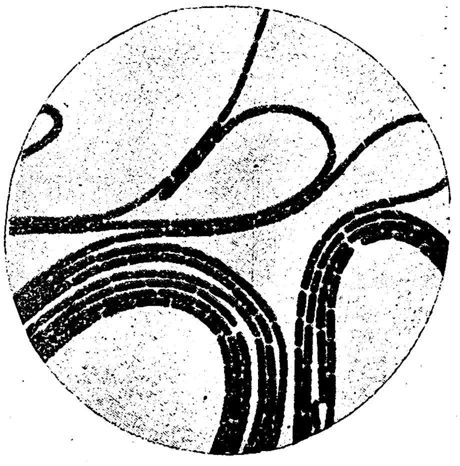

Βακτηρίδιον σπληνάνθρακος ἐκ καλλιεργήματος ἐπὶ πηκτῆς.
[Μεγ. 1500 : 1.]

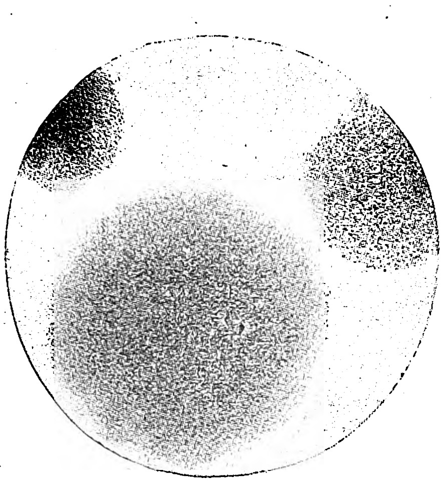

Ἀποικίαι βακτ. διφθερίτιδος ἐπὶ ἄγαρ 18 ὥρας ἀπὸ τοῦ ἐμβολιασμοῦ.
[Μεγ. 150 : 1.]

Βακτηρίδια φυματιώσεως. Παρασκεύασμα ἐκ πτυέλων φυματικοῦ.
[Μεγ. 1500 : 1.]

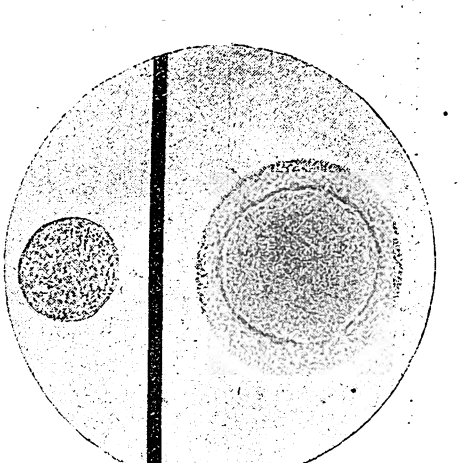

Ἀποικίαι χολερικοῦ δονακίου ἐπὶ πηκτῆς. Ἀριστερὰ μετὰ 48 ὥρας, δεξιὰ μετὰ 72 ὥρας.
[Μεγ. 150 : 1.]

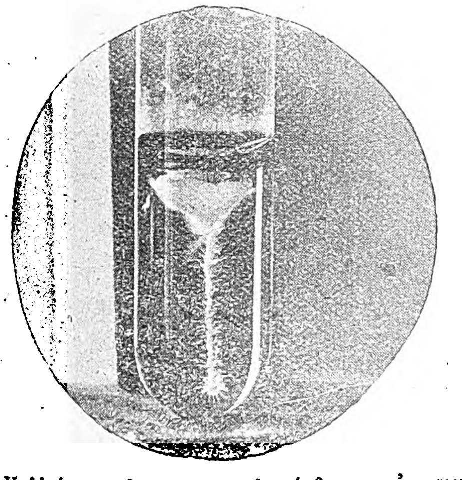

Καλλιέργεια βακτ. τοῦ σπληνάνθρακος ἐν πηκτῇ μετὰ 7 ἡμέρας ἀπὸ τοῦ ἐμβολιασμοῦ.
[Μεγ. 1,5 : 1.]

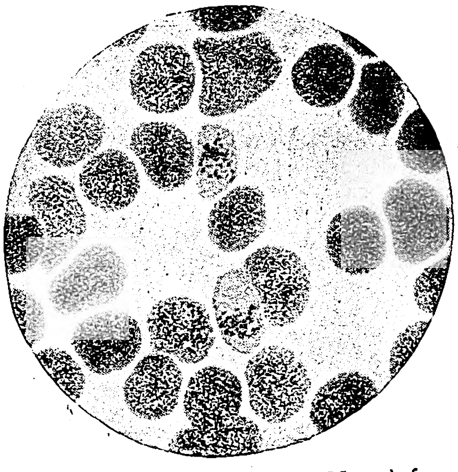

Αἱματοζῷ(ρι)ον ἑλωδῶν πυρετῶν. Μορφὴ ἡμισεληνοειδὴς ἐξ αἵματος πάσχοντος ἀνθρώπου.
[Μεγ. 1500 : 1.]

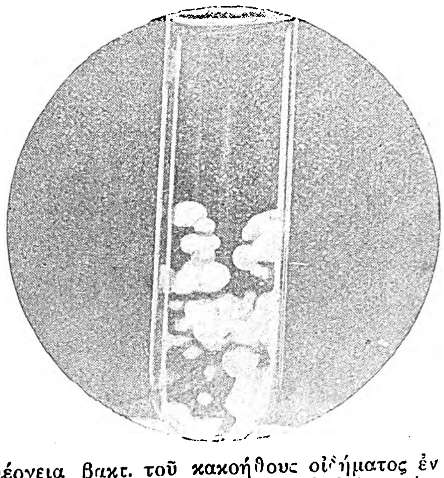

Καλλιέργεια βακτ. τοῦ κακοήθους οἰδήματος ἐν σακχαρούχῳ πηκτῇ 44 ὥρας μετὰ τὸν ἐμβολιασμόν.
[Μεγ. 1,5 : 1.]

Digitized by Google

ὡρολογίου. Τέλος, μικρόβιά τινα παράγουσι χρωστικάς. Αἱ παρατηρηθεῖσαι κυριώτεραι χρωστικαὶ εἶναι αἱ ἐρυθραί, αἱ κίτριναι, αἱ κυαναῖ, αἱ ἰώδεις, αἱ καφεόχροοι, αἱ πράσιναι, αἱ φθορίζουσαι καὶ αἱ μελαναί. Καὶ ὅταν μὲν αἱ χρωστικαὶ εὑρίσκωνται ἐντὸς τοῦ σώματος τῶν μικροβίων, τὰ μικρόβια ὀνομάζονται *χρωματοφόρα*· ὅταν ἡ χρωστικὴ ἀποβαλλομένη διαχέεται εἰς τὸ θρεπτικὸν ὑπόστρωμα, ὀνομάζονται *χρωματογόνα*· καὶ τέλος ὀνομάζονται *παραχρωματοφόρα* τὰ μικρόβια, τὰ ὁποῖα διατηροῦσιν αὐτὴν εἰς τὸ ἔλυτρον αὐτῶν. Ἡ παραγωγὴ τῆς χρωστικῆς ποικίλλει ἀναλόγως τῶν διαφόρων ὅρων τῆς καλλιεργείας. Ἡ καλύτερον σπουδασθεῖσα χρωστικὴ εἶναι ἡ *πυοκυανίνη*.

*Συμβίωσις, ἀνταγωνισμὸς καὶ καταστροφὴ τῶν μικροβίων.* Πολλὰ εἴδη μικροβίων ζῶσι καὶ πολλαπλασιάζονται τότε μόνον, ὅταν συμβιῶσι μετ' ἄλλων εἰδῶν. Τὸ φαινόμενον τοῦτο καλεῖται *συμβίωσις*. Τὸ δὲ ἀντίθετον αὐτῆς εἶναι ὁ *ἀνταγωνισμός*, ὅστις παρατηρεῖται ἐπίσης εἰς πλεῖστα μικρόβια καὶ εἰς ὃν ὀφείλεται ἡ καταστροφὴ καὶ ὁ θάνατος πολλῶν μικροβίων. Συμβαίνει καὶ εἰς τὰ μικρόβια ὅ,τι καὶ εἰς τὸ ζωϊκὸν βασίλειον, ἔνθα ἐπικρατεῖ πάντοτε τὸ ἰσχυρότερον εἶδος. Οὕτω τὸ βακτηρίδιον τοῦ τύφου ἐξαφανίζεται ἐκ τῶν κοπράνων τῶν τυφικῶν, κατανικώμενον ὑπὸ τῶν ἄλλων μικροβίων τῶν εὑρισκομένων εἰς αὐτά. Τὸ βακτηρίδιον τῆς πανώλους, ὡς εὐπαθέστερον, κατανικᾶται ὑπὸ τοῦ στρεπτοκόκκου, τὸ βακτηρίδιον τῆς δυσεντερίας ὡς καί τινα ἄλλα καταστρέφονται ὑπὸ τοῦ βακτηριοφάγου τοῦ δ' Ἐρὲλλ κτλ.

Πλὴν ὅμως τοῦ ἀνταγωνισμοῦ καὶ τοῦ βακτηριοφάγου ἡ φύσις ἐδημιούργησε καὶ ἄλλα μέσα πρὸς παρακώλυσιν τῆς ὑπερμέτρου παραγωγῆς τῶν μικροβίων. Ἡ ἀποξήρανσις, ἡ ἐξάντλησις τῶν θρεπτικῶν οὐσιῶν, ἡ ὑψηλὴ θερμότης ἡ ἀναπτυσσομένη ὑπὸ τοῦ ἡλίου καὶ ἰδίᾳ αἱ χημικαὶ ἀκτῖνες τοῦ ἡλιακοῦ φωτὸς εἶναι οἱ μεγαλύτεροι ἐχθροὶ τῶν μικροβίων καὶ ἑπομένως οἱ μεγαλύτεροι εὐεργέται τῆς ἀνθρωπότητος ἐν τῇ καταπολεμήσει τῶν παθολόγων μικροβίων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Κ. Σάββα*, «Ἐγχειρίδιον μικροβιολογίας» (ἔκδ. 4η 1927).— *Σπ. Μηλιαράκη*, «Βιολογικὸς ἐρανιστὴς» (τ. Α´ 1914).— *W. Kolle* und *A. v. Wassermann*, «Handb. der pathog. Mikroorganismen» (3e Aufl.).— *E. Macé*, «Traité de Bactériologie» (6e édit.).— *C. Günther*, «Einführung in das Studium der Bakteriologie» (6e Aufl.).— *A. Besson*, «Technique Microbiologique e.t.c.» (7e édit.). — *A. Calmette, L. Negre, A. Boquet*, «Manuel techn. d. microbiologie e.t.c.» (1925).— *Ν. Α. Μιχαηλίδου*, «Ἐργαστηριακὴ διαγνωστικὴ» (1926—1927). Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

***Ἐπίδρασις τῶν μικροβίων.*** Ἐπὶ τοῦ λοιμωθέντος ὑπὸ μικροβίων ὀργανισμοῦ ἡ δρᾶσις αὐτῶν ἐκδηλοῦται κατὰ δύο τρόπους, ὡς *τοπικὴ* καὶ ὡς *γενική*. Ὡς τοπικὴ δρᾶσις χαρακτηρίζεται τὸ σύνολον τῶν ἀλλοιώσεων, ἃς τὰ μικρόβια καὶ τὰ τοξικὰ αὐτῶν προϊόντα προκαλοῦσι κατὰ τὰ σημεῖα τῆς εἰσδύσεως καὶ ἐγκαταστάσεως αὐτῶν. Ἡ τοπικὴ συνεπῶς ἐπίδρασις τῶν μικροβίων συνεπάγεται τὴν ἀνάπτυξιν φλεγμονῆς, ἥτις ἐμφανίζεται ὑπὸ ποικίλας μορφάς, π. χ. ὀρώδης, πυώδης, αἱμορραγική, γαγγραινώδης, νεκρωτικὴ κλπ. Τὴν τοπικὴν δὲ ταύτην ἐπίδρασιν ἐπακολουθεῖ καὶ ἡ γενικὴ τοιαύτη, ἐπιφέρουσα τὰ γενικὰ ἀπὸ τοῦ ὀργανισμοῦ συμπτώματα, π. χ. πυρετόν, διαταραχὰς νευρικάς, ἀγγειοκινητικὰς κλπ. Πλεῖστα μικρόβια στεροῦνται τῆς ἰδιότητος τοῦ νὰ προκαλῶσι τοπικὰς ἀλλοιώσεις, ἐπιφέροντα τοὐναντίον σοβαρὰν γενικὴν λοίμωξιν, ἥτις ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ καλεῖται *κρυψιγενής*· τοῦτο π. χ. παρατηρεῖται ἐπὶ τῶν μικροβίων τοῦ τετάνου, τῆς πανώλους κλπ.

Κ. Ι. Κ.

**μικρόβιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ βίον ἔχων μικρόν, βραχύβιος, ἀντίθ. *μακρόβιος*.

**μικροβιοτροπία** (ἡ), ἢ ***βακτηριοτροπία.*** Ἡ ἰδιότης ἣν ἀποκτῶσι τὰ μικρόβια, ἵνα γίνωσιν εὐκόλως συλληπτὰ παρὰ τῶν φαγοκυττάρων. Τὴν ἰδιότητα ταύτην ἀποκτῶσι τὰ μικρόβια ἐκ τῆς ἐπιδράσεως ἐπ' αὐτῶν τῶν *ὀψωνινῶν* καὶ *μικροβιοτροπινῶν*, αἵτινες εἶναι οὐσίαι εὑρισκόμεναι εἰς τὸν ὀρὸν τοῦ αἵματος.

Ν. Α. Μ.

**μικροβιοτροπῖναι** (αἱ). Καλοῦνται αἱ οὐσίαι τοῦ ὀροῦ τοῦ αἵματος τῶν φύσει ἀνόσων ἢ διὰ τῆς τέχνης ἀνοσοποιηθέντων ζῴων, αἵτινες δρῶσαι ἐπὶ τῶν μικροβίων καθιστῶσι ταῦτα ἱκανὰ ὅπως συλληφθῶσιν ὑπὸ τῶν φαγοκυττάρων. Αἱ οὐσίαι αὗται, αἵτινες δύνανται νὰ ὀνομασθῶσι καὶ *ἄνοσοι ὀψωνῖναι*, καὶ αἵτινες ὁμοιάζουσι πρὸς τὰς *ἀντιπροσβολίνας* τοῦ Bail, περιεγράφησαν ὑπὸ τοῦ Neufeld καὶ εἶναι ἀπολύτως εἰδικαὶ δι' ἕκαστον εἶδος μικροβίων. Δὲν καταστρέφονται διὰ τῆς θερμάνσεως εἰς 58° καὶ ἵνα δράσωσι δὲν ἔχουσιν ἀνάγκην τῆς παρουσίας συμπληρώματος ὅπως αἱ ὀψωνῖναι. Ὁ ὀρὸς ὁ περιέχων μικροβιοτροπίνας ὀνομάζεται *μικροβιοτρόπος*, εἶναι διάφορος τοῦ μικροβιολυτικοῦ καὶ μικροβιοκτονικοῦ καὶ δύναται νὰ παρασκευασθῇ διὰ τεχνητῆς ἐγχύσεως μικροβίων εἰς ζῷα. Ὁ ὀρὸς οὗτος δρᾷ μόνον ἐπὶ τοῦ εἴδους τῶν μικροβίων, ὅπερ ἐχρησιμοποιήθη πρὸς παραγωγὴν αὐτοῦ. Τοιοῦτοι ὀροί, χρησιμοποιούμενοι καὶ εἰς τὴν ὀροθεραπευτικήν, εἶναι ἰδίως οἱ ἀντιστρεπτοκοκκικοί, οἱ ἀντιμηνιγγιτιδικοὶ καὶ οἱ ἀντιπνευμονικοί. Μικροβιοτροπίνας ὅμως εἰς διάφορα ποσὰ δυνάμεθα νὰ εὕρωμεν καὶ εἰς ἄλλους ὀροὺς καὶ ἰδίᾳ εἰς τοὺς μικροβιολυτικούς, ὡς εἶναι οἱ ἀντιχολερικοί, οἱ ἀντιτυφικοί, οἱ ἀντιπαρατυφικοὶ κτλ.

Ν. Α. Μ.

**μικροβιουρία,** ἢ ***βακτηριουρία,*** ἢ ***βακτηριδουρία*** *[Μικροβιολ.]*. Καλεῖται ἡ παρουσία μικροβίων ἐν τοῖς οὔροις ἄνευ ἐκδήλων συμπτωμάτων, γενικῶν ἢ μερικῶν, ἀπὸ τῶν οὐροποιητικῶν ὁδῶν. Ἡ μικροβιουρία δύναται νὰ προέλθῃ εἴτε φυσιολογικῶς, οὕτως εἰπεῖν, κατόπιν ἐνδοφλεβίου ἐνέσεως μικροβίων, εἴτε παθολογικῶς, κατόπιν ἀνιούσης ἢ κατιούσης αὐτομολύνσεως. Κατὰ τὴν φυσιολογικὴν μικροβιουρίαν, 5′—12′ ἀπὸ τῆς ἐνδοφλεβίου ἐνέσεως, ἀνευρίσκομεν εἰς τὰ οὖρα ἄφθονα μικρόβια διελθόντα εὐκόλως τὸν νεφρικὸν ἠθμόν. Ἐνίοτε ἡ δίοδος αὕτη δὲν εἶναι δυνατὴ δι' ἀμφοτέρων τῶν νεφρῶν, παρατηρεῖται δ' οὕτω ἀνισομερὴς ἀπέκκρισις μικροβίων. Τοιαῦται διαφοραὶ παρετηρήθησαν εἰς τὸ $^1/_4$ περίπου τῶν συμπτώσεων. Κατα τὴν παθολογικὴν μικροβιουρίαν ἡ εἴσοδος τῶν μικροβίων εἰς τὰς οὐροποιητικὰς ὁδοὺς γίνεται εἴτε ἀπ' εὐθείας ἐκ τῶν ἐντέρων, εἴτε ἔξωθεν διὰ τῆς οὐρήθρας, εἴτε τέλος καὶ ἀπὸ τοῦ λεμφικοῦ συστήματος. Τοιαῦται αὐτομολύνσεις, παράγουσαι ἐνίοτε καὶ νεφρίτιδας ὀξείας ἢ χρονίας, παρατηροῦνται εἰς τὰς λοιμώδεις νόσους καὶ ἰδίᾳ εἰς τὰς μολύνσεις ἐκ σταφυλοκόκκων, στρεπτοκόκκων, βακτηριδίων τοῦ κοιλιακοῦ τύφου, τῆς φυματιάσεως, τοῦ σπληνάνθρακος, τῆς μάλεως καὶ τῆς πανώλους, ὡς καὶ ἐκ μελιταίου κόκκου καὶ κολοβακτηριδίου. Μεγίστην σημασίαν ἀπὸ ὑγιεινῆς ἀπόψεως κέκτηται ἡ εὕρεσις δισεκατομμυρίων μικροβίων τύφου καὶ μελιταίου κόκκου εἰς τὰ οὖρα τῶν πασχόντων ἢ ἀναρρωννυόντων ἐκ κοιλιακοῦ τύφου ἢ μελιταίου πυρετοῦ. Ἡ μικροβιουρία αὕτη, παρατηρουμένη εἰς τὰ 25% τῶν περιπτώσεων, ἄρχεται ἀπὸ τοῦ δευτέρου δεκαπενθημέρου τῆς νόσου καὶ διαρκεῖ δύο καὶ πλέον μῆνας μετὰ τὴν ἀνάρρωσιν. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω συμπεραίνει τις ὁπόσον εὔκολος εἶναι ἡ μετάδοσις τῶν ἐν λόγῳ νόσων, ἐὰν μὴ ληφθῇ πρόνοια πρὸς ἀποστείρωσιν τῶν οὔρων τῶν ἀτόμων τούτων.

Ν.Α.Μ.

**μικροβιοφάγα** (τά). Καλοῦνται τὰ κύτταρα τοῦ ὀργανισμοῦ τὰ ἔχοντα τὴν ἰδιότητα νὰ συλλαμβάνωσιν ἰδίᾳ τὰ μικρόβια, ἐνίοτε ὅμως καὶ ἄλλα μόρια ποικίλης φύσεως, εἰσελθόντα ἢ εὑρισκόμενα ἐντὸς τοῦ ὀργανισμοῦ. Μικροβιοφάγα κύτταρα εἶναι πάντα μὲν τὰ λευκοκύτταρα τοῦ αἵματος, ἰδίᾳ ὅμως τὰ πολυμορφοπύρηνα (οὐδετερόφιλα καὶ ἠωζινόφιλα) καὶ τὰ μεγάλα μονοπύρηνα· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων κυττάρων τοῦ ὀργανισμοῦ μικροβιοφάγα εἶναι τὰ προερχόμενα ἐκ τοῦ μέσου βλαστοδέρματος. Καὶ τὰ μὲν λεμφοκύτταρα καὶ πολυμορφοπύρηνα, ὡς ἔχοντα ὀλίγον πρωτόπλασμα καὶ συλλαμβάνοντα μικρὰ μόνον στοιχεῖα, ὀνομάζονται *μικροφάγα*, τὰ δὲ μεγάλα μονοπύρηνα καὶ τὰ ἄλλα μικροβιοφάγα κύτταρα ὡς ἔχοντα πολὺ πρωτόπλασμα καὶ ἑπομένως ὡς δυνάμενα νὰ συλλάβωσι μεγαλύτερα μόρια ὀνομάζονται *μακροφάγα*. Τὰ μικροβιοφάγα κύτταρα, ἀναλόγως τῆς κινητικότητος αὐτῶν, διαιροῦνται εἰς *κινητά*, τοιαῦτα δὲ εἶναι ἅπαντα τὰ λευκοκύτταρα, καὶ εἰς *ἀκίνητα*, εἰς τὰ ὁποῖα ὑπάγονται ὅλα τὰ ἄλλα μικροβιοφάγα κύτταρα, τὰ ἔχοντα μέγαν καὶ δυσκόλως χρωματιζόμενον πυρῆνα. Ἐκ τῶν μικροβιοφάγων κυττάρων τὰ μὲν μικροφάγα παράγουσιν ἔνζυμόν τι, ὅπερ ὁ Μετσνικὼφ ὠνόμασε *μικροκυττάσην* καὶ ὅπερ φαίνεται ὅτι εἶναι ἡ *ἀλεξίνη* τοῦ Μπύχνερ, τὰ δὲ μακροφάγα τὴν *μακροκυττάσην*, ἥτις εἶναι ὁμοία πρὸς τὸν *ἀμφιδοχέα*. Αἱ οὐσίαι αὗται χρησιμοποιοῦνται ὑπὸ τῶν κυττάρων πρὸς καταστροφὴν καὶ πέψιν τῶν μικροβίων.

Ν. Α. Μ.

**μικροβιοφαγία** (ἡ). Πρόκειται περὶ τοῦ γαλλικοῦ ὅρου phagocytose (=φαγοκυττάρωσις), τὸν ὁποῖον ὁ Σάββας ἐξηλλήνισε διὰ τῆς φράσεως *κυτταρικὴ μικροβιοφαγία* ἢ *κυτταρικὴ παμβορία*, ἥτις πράγματι ἀποδίδει καλύτερον τὴν σημασίαν τῆς γαλλικῆς λέξεως. Εἶναι ἡ ἰδιότης, ἣν ἔχουσι τὰ λευκὰ αἱμοσφαίρια τοῦ αἵματος, ὡς καί τινα κύτταρα ἐνδοθηλιακά, ἐπιθηλιακὰ καὶ τοῦ συνεκτικοῦ ἱστοῦ, νὰ προσελκύωσι τὰ εἰσελθόντα εἰς τὸν ὀργανισμὸν μικρόβια, νὰ τὰ συλλαμβάνωσι καὶ νὰ τὰ καταστρέφωσι διὰ τῆς πέψεως. Τὴν ἰδιότητα ταύτην τῶν κυττάρων ἀπεκάλυψεν ὁ Μετσνικώφ, ὁρμηθεὶς ἐκ τοῦ τρόπου τῆς προσλήψεως τῆς τροφῆς ὑπὸ μονοκυττάρων τινῶν μικροοργανισμῶν τοῦ ζωϊκοῦ βασιλείου (ἀμοιβάδες, ριζόποδα κ. τ. λ.). Τὰ πρωτόζῳα ταῦτα συλλαμβάνουσι διὰ προεκβολῶν τοῦ πρωτοπλάσματος αὐτῶν (*ψευδοπόδια*) μόρια ποικίλης φύσεως· καὶ ὅσα μὲν τούτων χρησιμεύουσι διὰ τὴν θρέψιν αὐτῶν ἀφομοιοῦσι διὰ πέψεως, τὰ δ' ἄλλα ἀπορρίπτουσι. Τοῦτ' αὐτὸ πράττουσι καὶ ὅλα τὰ μικροβιοφάγα κύτταρα, ἅτινα συλλαμβάνουσιν οὐ μόνον τὰ μικρόβια ἀλλὰ καὶ ἄλλα ποικίλα στοιχεῖα, ὡς ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια, ἶνας μετάξης, παρασχίδας ὀστῶν κ. τ. λ. Εἰς τὴν κυτταρικὴν μικροβιοφαγίαν ἀπέδιδεν ὁ Μετσνικὼφ τὴν ἄμυναν τοῦ ὀργανισμοῦ κατὰ τῶν λοιμώξεων εἴς τε τὴν φυσικὴν καὶ ἐπίκτητον ἀνοσίαν.

Ν. Α. Μ.

**μικροβιοφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ φορεὺς μικροβίων.

—*[Ἰατρ.] Μικροβιοφόρα* εἶναι τὰ ἄτομα, τὰ ὁποῖα μετὰ τὴν ἀνάρρωσιν ἔκ τινος νόσου διατηροῦσιν ἐν τῷ ὀργανισμῷ αὐτῶν μικρόβια τῆς νόσου ἐξ ἧς ἔπασχον ἄνευ ἐκδηλώσεώς τινος. Τὰ ἄτομα ταῦτα, ἀγνοοῦντα τὴν ὕπαρξιν τῶν μικροβίων, ἅτινα φέρουσιν ἐν ἑαυτοῖς, ἀποβάλλουσι ταῦτα διὰ τῶν διαφόρων ἐκκριμάτων (σίελος, βλέννα ρινός, πτύελα, χολή, οὖρα, κόπρανα). Καὶ ἐὰν μὲν ἡ ἀπέκκρισις τῶν μικροβίων διαρκῇ ἐπ' ὀλίγον χρόνον, ἤτοι ἡμέρας τινὰς ἢ ἑβδομάδας, οἱ μικροβιοφόροι οὗτοι ὀνομάζονται *πρόσκαιροι*, τοιοῦτοι δ' εἶναι συνήθως οἱ ἀναρρωννύοντες· ἐὰν δὲ διαρκέσῃ ἐπὶ πλείονα χρόνον, ἤτοι ἐπὶ μῆνας ἢ καὶ ἔτη, καλοῦνται *διαρκεῖς*. Εἰς τὴν χολὴν τοιούτων διαρκῶν μικροβιοφόρων, παθόντων ἐκ τύφου, ἀνεῦρον μικρόβια κοιλιακοῦ τύφου μετὰ 52 ἔτη, εἰς ἄλλων δὲ τὰ οὖρα μετὰ 3 καὶ 10 ἀκόμη ἔτη. Ἐπίσης ἐκ παθόντων ἐκ δυσεντερίας ἀνεῦρον τὰ εἰδικὰ μικρόβια ἐπὶ πολλὰ ἔτη. Εἰς τὰ πτύελα ἀναρρωσάντων ἐκ πανώλους ἀνεῦρον τὰ βακτηρίδια τῆς νόσου ἐπὶ 76 ἡμέρας, τὰ δὲ βακτηρίδια τῆς γρίππης ἀνευρέθησαν ἐπὶ παθόντων μετὰ ἓν ἔτος. Τέλος, εἰς τὴν βλένναν τῆς ρινὸς παθόντων ἐκ διφθερίτιδος ἀνευρέθη τὸ βακτηρίδιον τῆς νόσου ταύτης μετὰ 7 $^1/_2$ μῆνας. Εἰς τοὺς μικροβιοφόρους τὰ μικρόβια διαβιοῦσι λαθραίως καὶ ἐν σαπροφυτικῇ καταστάσει. Καὶ ὅσοι μὲν τούτων νοσήσαντες ἀπέκτησαν ἀνοσίαν ἢ εἶχον τοιαύτην ἐκ φύσεως, οὐ μόνον οὐδὲν σύμπτωμα τῆς νόσου παρουσιάζουσιν, ἀλλὰ καὶ οὐδόλως νοσοῦσιν. Ὅσοι ὅμως εὑρίσκονται εἰς τὸ στάδιον τῆς ἀναρρώσεως, εἶναι δυνατὸν νὰ νοσήσωσι καὶ πάλιν, ἤτοι νὰ ὑποστῶσιν ὑποτροπὴν τῆς νόσου ἢ νὰ πάθωσιν αὐτολοίμωξιν, ἐὰν παρῆλθεν ἱκανὸς χρόνος ἀπὸ τῆς ἀναρρώσεως αὐτῶν. Οἴκοθεν νοεῖται ὅτι οἱ μικροβιοφόροι συναναστρεφόμενοι μεθ' ὑγιῶν ἀτόμων εἶναι λίαν ἐπικίνδυνοι διὰ τὴν διάδοσιν τῶν νόσων. Δι' ὃ τοὺς τοιούτους μικροβιοφόρους πρέπει ν' ἀναζητῶμεν πάντοτε εἰς τὰς διαφόρους ἐπιδημίας καὶ νὰ προσπαθῶμεν νὰ τοὺς καταστήσωμεν ἀκινδύνους διὰ παντὸς τρόπου (ἀπομόνωσις, χορήγησις ἀντισηπτικῶν, ἀπολύμανσις τῶν διαφόρων αὐτῶν ἐκκριμάτων κτλ.).

Ν.Α.Μ.

**μικροβισμὸς** (ὁ). Ὁ ὅρος οὗτος εἶναι μετάφρασις τοῦ γαλλικοῦ microbisme latent, πλασθέντος ὑπὸ τοῦ Verneuil, καὶ σημαίνει τὴν λαθραίαν διαβίωσιν τῶν μικροβίων ἔν τινι ὀργανισμῷ. Ὁ Adami ὀνομάζει ταύτην *λαθραίαν λοίμωξιν*. Ἐὰν παθογόνα μικρόβια εἰσέλθωσιν εἴς τινα ὀργανισμόν, μὴ παρουσιάζοντα καταλλήλους ὅρους ἀναπτύξεως αὐτῶν, δύνανται νὰ ὑπνώττωσιν, οὕτως εἰπεῖν, ἐφ' ἱκανὸν χρόνον καὶ νὰ διατηρῶσι συνάμα καὶ τὴν τοξικὴν αὐτῶν δύναμιν. Τὰ μικρόβια ὅμως ταῦτα εἶναι δυνατὸν ἐνίοτε μετ' ἀλλαγήν τινα ἀσήμαντον τοῦ ὀργανισμοῦ νὰ πολλαπλασιασθῶσι καὶ νὰ διασπαρῶσι καθ' ὅλον τὸν ὀργανισμόν, προκαλοῦντα νόσον. Παρετηρήθη π. χ. ἀνάπτυξις ὀστεομυελίτιδος ἐξ ἁπλῆς καὶ ἐπιπολαίας θλάσεως τῶν ἱστῶν ἄνευ ἀμυχῆς τινος. Ἡ τοιαύτη ὀστεομυελῖτις προεκλήθη ὑπὸ τοῦ εἰδικοῦ μικροβίου, ὅπερ ὑπῆρχεν ἐν τῷ ὀργανισμῷ τοῦ παθόντος ἐν λανθανούσῃ καταστάσει. Τὴν ἐξήγησιν τῆς τοιαύτης διαβιώσεως τῶν μικροβίων παρέχουσιν ἐν μέρει αἱ ἐργασίαι τοῦ Duclaux. Ἐξ αὐτῶν γνωρίζομεν ὅτι μικρόβια συντηρούμενα εἰς θρεπτικὸν ὑπόστρωμα, τοῦ ὁποίου αἱ θρεπτικαὶ οὐσίαι ἐξηντλήθησαν, δύνανται νὰ διατηρήσωσιν ἐπὶ μακρὸν οὐ μόνον τὴν βλαστικὴν ἀλλὰ καὶ τὴν τοξικὴν αὐτῶν δύναμιν καὶ ν' ἀναπτύξωσι ταύτας ἐὰν καλλιεργηθῶσιν εἰς νέα θρεπτικὰ ὑποστρώματα. Τοῦτ' αὐτὸ πιθανῶς συμβαίνει καὶ ἐν τῷ ὀργανισμῷ, ἔνθα τὰ διαβιοῦντα ἐν λανθανούσῃ καταστάσει μικρόβια ἐκδηλοῦσι τὰς ἰδιότητας αὐτῶν εὐθὺς ὡς προκληθῶσιν εὐνοϊκοὶ ὅροι ἀναπτύξεως.

Ν. Α. Μ.

**μικροβλάστη** (ἡ). Διὰ τοῦ ὅρου τούτου νοοῦσί τινες τὰ ἐμπύρηνα ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια, ἅτινα εἶναι μικρότερα τῶν *νορμοβλαστῶν*.

Ν. Α. Μ.

**μικροβὸλτ** (τό)· βλ. λ. *βόλτ*.

**Μικρόβρυση** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μουριῶν (Ἀκίντζαλι) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Τσααλή*. Κάτ. (1928) 151.

Χ. Δ.

**μικροβρωμίτης** (ὁ)· βλ. λ. *βρωμαργυρίτης*.

**μικρογαμέτης** (ὁ)· βλ. λ. *γαμέτης* καὶ *πρωτόζῳα*.

**μικρογαστρία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Μικρότης τοῦ στομάχου, ὀφειλομένη εἰς ὑπόλειψιν τῆς ἀναπτύξεως αὐτοῦ. Ἀπαντᾷ κυρίως ἐπὶ γυναικῶν καὶ συνυπάρχει μεθ' ὑπερδιεγερτικότητος τοῦ γαστρικοῦ βλεννογόνου (λύγξ, ἐρυγαί, ἔμετοι συχνοί) κλπ.

Ι. Π.

**μικρογάστωρ** (ὁ) (Microgaster) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *βρακονιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ ἔντομα μελανοῦ, ὡς

Digitized by Google

ἐπὶ τὸ πολύ, χρώματος, μὲ πτέρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ ἐπιμήκεις λεπτὰς κεραίας. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, πανταχοῦ τῆς γῆς ἀπαντῶντα. Δ. Ν. Π.

**μικρογλήνη** (ἡ) (Microglena) *[Ζῳολ.]*. Γένος πρωτοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μαστιγωτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μοναδιδῶν*, περιλαμβάνον μικροσκοπικοὺς ὀργανισμοὺς ζῶντας εἰς γλυκέα ὕδατα. Δ. Ν. Π.

**μικρογλωσσία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Σμικρότης τῆς γλώσσης, ὀφειλομένη εἰς ἀτελῆ ἀνάπτυξιν αὐτῆς. Ι. Π.

**μικρογλωσσίδαι** (οἱ) (Microglossidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατυρράμφων*, περιλαμβάνουσα ἀρκετοῦ μεγέθους πελαργοὺς μὲ σῶμα ἐπίμηκες, κεφαλὴν λεπτήν, ράμφος λεπτόν, κεκαμμένον ἐλαφρῶς κατὰ τὸ ἄκρον του, γλῶσσαν μικροτάτην καὶ πτέρυγας ἀρκετὰ ἀνεπτυγμένας. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς γῆς, ἐνδιαιτώμενα παρὰ τὰς ὄχθας τῶν ποταμῶν καὶ λιμνῶν καὶ τρεφόμενα ἐκ μικρῶν ὑδροβίων ζῴων. Ἀξιολογώτερα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι ἡ *πλαταλέα* καὶ ὁ *φαλκινέλλος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μικρόγλωσσον** (τὸ) (Microglossum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον πόας μετρίου ἀναστήματος, ἰθαγενεῖς τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Ἀφρικῆς καὶ πρὸς κόσμον καλλιεργουμένας. Δ. Ν. Π.

**μικρόγλωσσος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μικρὰν γλῶσσαν, ἐκεῖνος τοῦ ὁποίου ἡ διάπλασις τῆς γλώσσης εἶναι ἀτελής.

**μικρόγλωσσος** (ὁ) (Microglossus) *[Ζῳολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀναρριχητικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ψιττακιδῶν*, περιλαμβάνον μεγάλους ψιττακοὺς μὲ κεφαλὴν μεγάλην, ράμφος μετρίου μεγέθους, κυρτότατον καὶ κεκαμμένον, ἀπολῆγον εἰς αἰχμηρὸν ἄκρον, πτέρυγας ἀνεπτυγμένας, πόδας βραχεῖς καὶ ἰσχυροὺς καὶ οὐρὰν μακράν. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μικρόγλωσσος ὁ μελανὸς* (Microglossus niger). Οὗτος φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ ἔχει μῆκος 0,75 μ. περίπου καὶ χρῶμα στιλπνῶς μελανόν. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς κεφαλῆς φέρει λοφίον ἐξ ἀραιῶν πτερῶν πρὸς τὰ ὄπισθεν διευθυνόμενον, ὅπερ κινεῖ τὸ πτηνὸν κατὰ βούλησιν. Αἱ παρειαί του εἶναι γυμναὶ καὶ ἔχουσι χρῶμα ὑπέρυθρον. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Νέαν Γουϊνέαν καὶ εἰς τὰς πέριξ νήσους καὶ τρέφεται ἐκ διαφόρων καρπῶν. Δ. Ν. Π.

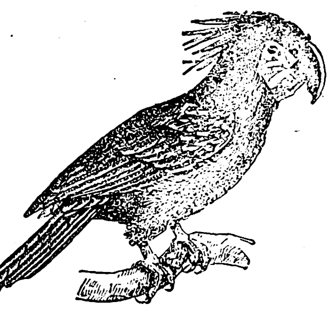

*Μικρόγλωσσος ὁ μελανός.*

**μικρογναθία** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ἡ σμικρότης τῶν γνάθων, δυσανάλογος πρὸς τὰ φυσιολογικὰ ὅρια ἐντὸς τῶν ὁποίων ποικίλλουν αὗται, ἰδίᾳ ὅμως ἡ συγγενὴς σμικρότης, ὑποπλασία τῆς κάτω σιαγόνος μετὰ χαρακτηριστικῆς ὀπισθογενείας, δηλαδὴ ἥσσονος ἀναπτύξεως τοῦ γενείου, τοῦ χαρακτηριστικοῦ τούτου διὰ τὸν σύγχρονον ἄνθρωπον προβάλλοντος προσθίου τμήματος τῆς σιαγόνος. Ἡ μικρογναθία ἀκολουθεῖται καὶ ὑπὸ παραμορφώσεως τοῦ προσώπου καὶ τῶν φραγμῶν τῶν ὀδόντων. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**Μικρογοῦζι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἠμαθίας (Βεροίας) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται πρὸς Α.ΒΑ. τῆς Βεροίας ἐπὶ τῆς πρὸς τὴν Θεσσαλονίκην ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.154. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ χωρίον *Μπρανιάτες*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 1.432. Χ. Δ.

**μικρογράμματος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ διὰ μικρῶν γραμμάτων γεγραμμένος· ‖ συνήθ. εἰς τὴν φρ. «γραφὴ μικρογραμμάτου ρυθμοῦ» ἡ διὰ μικρῶν γραμμάτων γραφή, πβλ. *μεγαλογράμματος*.

**μικρογρανίτης** (ὁ) (Mikrogranit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα ἡφαιστειογενὲς μὲ θεμελιώδη μᾶζαν μικρογρανιτικήν. Χαρακτηριστικὸν τῆς τοιαύτης θεμελιώδους μάζης εἶναι ὅτι αὕτη παρουσιάζεται ὁλοκρυσταλλική, συνίσταται δὲ ἐξ ἰσομετρικῶν κοκκίων ἀπὸ ἀστρίους, τὰ ὁποῖα εἴτε συνδέονται πρὸς ἄλληλα διὰ χαλαζιακῆς ὕλης, εἴτε διατάσσονται ἀκανονίστως μὲ περίπου ἰσομετρικὰ ἐπίσης κοκκία χαλαζίου. Πολλοὶ λιπαρῖται καὶ χαλαζιακοὶ πορφύραι, τῶν ὁποίων ἡ θεμελιώδης μᾶζα εἶναι μικρογρανιτική, ὀνομάζονται μικρογρανῖται. Γ. Β.

**μικρογραφία** (ἡ)· ἡ τέχνη τοῦ μικρογράφου: «σπουδάζω τὴν μικρογραφίαν»· ‖ τὸ ἔργον τοῦ μικρογράφου, εἰκὼν μικροτάτων διαστάσεων, ἐκτελουμένη μὲ ἐξαιρετικὴν λεπτότητα· ‖ ἡ διὰ τοῦ μικροσκοπίου ἔρευνα ἢ φωτογράφησις, κατ' ἀντίθεσιν τῆς διὰ γυμνοῦ ὀφθαλμοῦ ἢ δι' ἁπλοῦ φακοῦ γινομένης (καλουμένης μακρογραφίας)· ‖ μεταφ., πᾶν ἀντικείμενον τέχνης μικρῶν διαστάσεων, κοιν. *μινιατούρα* (ἰταλ. miniatura, γαλλ. miniature).

— *[Καλλιτεχν.]* Ὀνομάζεται *μικρογραφία* (γαλλ. miniature) γενικῶς μὲν ἡ τέχνη ἡ διὰ ποικίλων μέσων καὶ ἐπὶ ποικίλων ὑλῶν ἐξεργαζομένη ἀπεικονίσεις μικρῶν διαστάσεων, μάλιστα δὲ ἡ διακοσμοῦσα χειρόγραφα δι' ἐγχρώμων ἢ μὴ ζωγραφιῶν, προμετωπίδων, ἐπιτίτλων, συμβόλων, ἀρχικῶν γραμμάτων ἢ διαφόρων σχημάτων. Καὶ αὗται δ' αὗται αἱ ἐπὶ χειρογράφων μικραὶ ζωγραφίαι καλοῦνται κοινῶς *μικρογραφίαι*. Ἡ τέχνη αὕτη ἔλαβε σπουδαίαν ἀνάπτυξιν κατὰ τοὺς μεσαιωνικοὺς ἰδίᾳ χρόνους καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ἀναγεννήσεως ἔν τε τῇ Ἀνατολῇ καὶ τῇ Δύσει, ἐδημιούργησε δὲ πολυπληθέστατα ἔργα, ὧν πολλὰ προκαλοῦν αὐθορμήτως τὸν θαυμασμὸν διὰ τὴν ζωηρότητα τῆς ἐκφράσεως, τὴν διαύγειαν τοῦ σχεδίου, τὴν λαμπρότητα τοῦ χρωματισμοῦ, τὴν ἐλευθέραν καὶ σοφὴν διάταξιν ἐν σμικροτάτῳ πολλάκις χώρῳ πολυπροσώπων συνόλων. Ὡς εἶναι δὲ φυσικόν, ἐν τῇ μικρογραφίᾳ ἑκάστου ἔθνους δυνάμεθα νὰ διακρίνωμεν τὰς γενικὰς τάσεις τὰς κατευθυνούσας τὴν καθόλου τέχνην τοῦ ἔθνους τούτου· τοιουτοτρόπως ὁμιλοῦμεν περὶ βυζαντινῆς, ἀραβικῆς, φραγκο-φλαμανδικῆς ἢ ἰρλανδικῆς μικρογραφίας. Ἐν τοσούτῳ ὅμως παριστάμεθα πολλάκις μάρτυρες ἰδιαζουσῶν ἐν τῇ μικρογραφίᾳ τάσεων, αἵτινες ἀποκαθιστοῦν, οὕτως εἰπεῖν, τὴν ἀνεξαρτησίαν καὶ τὴν αὐθυπαρξίαν τῆς τέχνης ταύτης. Ἐν τῇ βυζαντινῇ τέχνῃ χρησιμοποιεῖται τὸ ρῆμα ἱστορῶ ἢ ἱστορίζω ἐπὶ τῆς ἐννοίας τοῦ διακοσμῶ χειρόγραφα διὰ μικρογραφιῶν. Τὰ τοιαῦτα χειρόγραφα ὀνομάζονται ἱστορημένα. Σημειωτέον ὅμως ὅτι τοῦ αὐτοῦ ρήματος γίνεται χρῆσις καὶ ἐπὶ τῆς ἐννοίας τοῦ ζωγραφῶ ἢ διακοσμῶ ὁλόκληρον ναὸν διὰ τοιχογραφιῶν. Τοιουτοτρόπως, ἐν τῇ «Ἑρμηνείᾳ ζωγράφων» τοῦ ἐκ Φουρνᾶ ἱερομονάχου καὶ καλλιτέχνου Διονυσίου ἀναγινώσκομεν: «Ἑρμηνεία τῆς ζωγραφικῆς τοῦ τοίχου, ἤγουν πῶς νὰ ἱστορίζῃς τὸν τοῖχον καὶ πῶς νὰ κατασκευάζῃς κονδύλια τοῦ τοίχου».

Ἡ βυζαντινὴ μικρογραφία, ἡ ὁποία ἔχει νὰ παρουσιάσῃ ἀπέραντον πλῆθος ἀληθῶν ἀριστουργημάτων, ὡρμήθη κατ' ἀρχὰς ἐξ ἀρχαίων προτύπων, ἅτινα ἐμιμήθη, ἀποδίδουσα τὴν λαμπρότητα τοῦ χρωματισμοῦ των, τὴν γραφικότητα καὶ τὴν εἰδυλλιακήν των χάριν. Βραδύτερον ἠκολούθησε τὸ ἐν τῇ καθόλου βυζαντινῇ τέχνῃ κρατῆσαν πνεῦμα. Μετὰ θαυμασμοῦ ὁμιλοῦμεν διὰ τὰ δύο ἑλληνικὰ ἱστορημένα χειρόγραφα τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης τῶν Παρισίων, ἐξ ὧν τὸ ἓν περιλαμβάνει τὰς «Ὁμιλίας» Γρηγορίου τοῦ Ναζιανζηνοῦ, ἀνήκει δὲ εἰς τὸν Θ' αἰῶνα, τὸ δ' ἕτερον τοὺς «Ψαλμοὺς» τοῦ Δαβὶδ καὶ χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ Θ' ὁμοίως ἢ τοῦ Ι' αἰῶνος· πολὺ παλαιότερα τούτων, ἀνήκοντα εἰς τὴν α' περίοδον τῆς βυζαντινῆς τέχνης, εἶναι τὰ χειρόγραφα τῆς «Γενέσεως» τῆς βιβλιοθήκης τῆς Βιέννης, τοῦ Εὐαγγελίου τοῦ Ροσάνο καὶ τῶν ἔργων τοῦ ἰατροῦ Διοσκορίδου, ἀντιγραφέντων χάριν τῆς πριγκιπίσσης Ἰουλιανῆς Ἀνικίας. Ἕτερα ἀξιολογώτατα ἱστορημένα βυζαντινὰ χειρόγραφα εἶναι τὸ χειρόγραφον τοῦ Ὠσηέ, ὅπερ ἀπόκειται εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Βατικανοῦ, τὰ «Κυνηγετικὰ» τοῦ Ὀππιανοῦ, ἀποκείμενα εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας, ἡ ὑπ' ἀριθμὸν 746 Ὀκτάτευχος τοῦ Βατικανοῦ, τὸ Ψαλτήριον τοῦ Χλουδὼφ (ἐν Μόσχᾳ) καὶ τὸ χειρόγραφον τοῦ Σκυλίτση (Ἐθνικὴ Βιβλιοθήκη Μαδρίτης). Ἡ μικρογραφία ἐξ ἄλλου τῆς Δυτικῆς Εὐρώπης ἐστηρίχθη ἐπὶ βυζαντινῶν καὶ ἀνατολικῶν ἐν γένει προτύπων. Ἥ τε ρωμανικὴ καὶ ἡ γοτθικὴ τέχνη ἔχουν νὰ παρουσιάσουν θαυμάσια ἱστορημένα χειρόγραφα, ὡς τὸ Ψαλτήριον τοῦ ἁγίου Λουδοβίκου ἢ τὸ βιβλίον τῶν «Ὡρῶν» τοῦ δοκὸς ντὲ Μπερρύ. Ἀξιόλογοι δ' ἐπίσης εἶναι αἱ ἰρλανδικαὶ μικρογραφίαι τοῦ «Βιβλίου τοῦ Durrow» (Ζ' αἰών, Trinity College, Dublin) καὶ τοῦ «Βιβλίου τοῦ Kells» (Η' αἰών, αὐτόθι). Καὶ οἱ πλεῖστοι ὅμως τῶν καλλιτεχνῶν τῶν πρὸ τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ τῶν κατὰ τὴν Ἀναγέννησιν χρόνων ἐπεδόθησαν καὶ εἰς τὴν μικρογραφίαν. Δύναται περὶ τούτων νὰ πληροφορηθῇ ὁ ἀναγνώστης εἰς τὰ ἐπὶ μέρους ἄρθρα. Ἐνταῦθα ἀρκούμεθα ἁπλῶς νὰ σημειώσωμεν καὶ τὰς ἀραβικὰς μικρογραφίας (χειρόγραφα ἰδίᾳ τοῦ Κορανίου πλήρη ἐξαιρέτων ἀραβουργημάτων) καὶ τὰς περσικὰς μικρογραφίας, ὡς καὶ τὰς ἰνδικάς, ὧν περίφημον συλλογὴν κατέχει τὸ μουσεῖον τῆς Βοστώνης.

[Βλ. γενικὰ ἔργα, ὡς ἐπὶ παραδείγματι, ὁ «Apollo» τοῦ *S. Reinach* ἢ τοῦ *Ch. Diehl* τὸ «Manuel d'art byzantin», ἢ τοῦ *H. Martin* «La miniature française», ἔνθα πλουσία βιβλιογραφία.] Ι. Μ. Π.

—*[Μικροβιολ.]* Οἱ ξένοι μικροβιολόγοι διὰ τοῦ ὅρου *μικρογραφία* ὀνομάζουσι πᾶν ὅ,τι γίνεται διὰ τῆς μικροσκοπικῆς τεχνικῆς. Ἐν τούτοις ὁ ὅρος οὗτος δὲ χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν ἑλληνικὴν μικροβιολογίαν. Ν. Α. Μ.

—*[Μεταλλ.]* Βλ. λ. *μεταλλοτεχνία*.

**μικρογραφικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μικρογραφίαν, ὁ τῆς μικρογραφίας: «μικρογραφικὴ εἰκών, — παράστασις».

**μικρογράφος** (ὁ, ἡ)· ὁ γνωρίζων μικρογραφίαν, ὁ ἀπεικονίζων εἰς μεγάλην σμίκρυνσιν.

**μικρογραφῶ** (*—έω*)· καταγίνομαι εἰς τὴν μικρογραφίαν, ἀπεικονίζω τι εἰς μεγάλην σμίκρυνσιν.

**μικρογυρία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Ἐλάττωσις τοῦ μεγέθους (στενότης) τῶν ἑλίκων τοῦ ἐγκεφάλου, προερχομένη εἴτε ἐξ ἀτροφίας αὐτῶν, εἴτε ἐξ ἀτελοῦς ἀναπτύξεως. Ι. Π.

**μικροδακτυλία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Μικρότης ἑνὸς ἢ πλειόνων δακτύλων, ὀφειλομένη εἴτε εἰς ἀτελῆ ἀνάπτυξιν αὐτῶν, εἴτε εἰς ἔλλειψιν συγγενῆ φαλάγγων τινῶν. Ι. Π.

**μικροδάκτυλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μικροὺς δακτύλους.

**μικροδουλειά** (ἡ)· μικρὴ δουλειά, ἐργασία οὐχὶ σπουδαία, ὑπόθεσις μικρᾶς σημασίας.

**μικρόδους,** *—οντος* (ὁ, ἡ)· ὁ ἔχων μικροὺς ὀδόντας.

**μικρόδους** (ὁ), ἢ ***μικρόδων*** (Microdon) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυκέρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *συρφιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰς μυίας μὲ σῶμα εὔρωστον, ᾠοειδές, πόδας χονδρούς, πτέρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ σκοτεινοὺς χρωματισμούς. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ὧν κυριώτερον ὁ *μικρόδων ὁ μελισσοειδὴς* (Microdon apioformis), ὅστις ἔχει χρῶμα πρασινομελανὸν καὶ ἀπαντᾷ εἰς ὑγροὺς τόπους κατὰ τὴν ἄνοιξιν. Δ. Ν. Π.

**μικροέξοδα** (τά)· μικρὰ ἔξοδα.

**μικροζῳάριον** (τὸ) *[Ζῳολ.]*. Καλεῖται οὕτως ὁ μικροσκοπικὸς ζωϊκὸς ὀργανισμός, ἁπλούστατος κατὰ τὴν ὀργανικὴν αὐτοῦ σύστασιν.

**μικρόζῳον** (τό)· μικρὸν ζῷον, μικροργανισμός.

**Μικροθῆβαι** (πρώην ***Ἄκιτοι***) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Θεσσαλίας, κείμενον ἐπὶ εὐφόρου ἐδάφους κατὰ τὸ Β. μέρος τῆς πεδιάδος τοῦ Ἁλμυροῦ, εἰς ἀπόστασιν δύο ὡρῶν ἀπὸ τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Περσουφλὶ τῆς γραμμῆς Βόλου - Καλαμπάκας. Εἶναι ἕδρα κοινότητος (ἐν ὅλῳ κάτ. 742) περιλαμβανούσης καὶ τὸ χωρίον *Κασσαβέτεια* ἢ *Κασσαβέτικα* καὶ ἀνηκούσης εἰς τὴν ἐπαρχίαν Ἁλμυροῦ τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Ἔχει ἑξατάξιον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ γεωργικὸν συνεταιρισμὸν (κάτ. 338), παράγει δὲ σιτηρὰ καὶ ὄσπρια. Εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. ἀπὸ τοῦ χωρίου ὑπάρχουσι τὰ ἐρείπια τῆς σημαντικῆς ἀρχαίας πόλεως Φθιωτίδων Θηβῶν. Ἐν τῷ χωρίῳ ὑπάρχει μεγάλη λιθίνη σαρκοφάγος μετ' ἐπιγραφῆς, διάφορα δὲ μαρμάρινα ἀρχαῖα ἀντικείμενα ἐξ ἐπιγραφῶν καὶ ἀναγλύφων διακρίνονται εἰς τὴν ἐκκλησίαν καὶ τὰς παλαιὰς οἰκίας, παρὰ δὲ τὸ χωρίον ἀνευρίσκονται καὶ ἀρχαῖοι τάφοι. Ι. Σ. Σ.

**μικροθυμία** (ἡ)· ἀδυναμία τῆς ψυχῆς, μικροψυχία.

**μικρόθυμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μικρὸν θυμόν, μικρὰν ψυχήν, μικρόψυχος.

**Μικρόκαβος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μικρασιατικὸν ἀκρωτήριον τοῦ ὅρμου Τάλιανη ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Ἐφέσου, 1 $^{3}/_{4}$ μίλλ. βορείως τῆς ἐκβολῆς (πλάτ. 37°57' Β., μῆκ. 27°18' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3446: Paspargo islet to Samos strait) τοῦ Κουτσοὺκ Μενδερὲ (ἀρχ. Καΰστρου). Σ. Ε. Λ.

**Μικρόκαμπος** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Σιταγρῶν (Μιναρὲ - τσιφλὶκ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μικρό*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 285.

2) Χωρίον τῆς κοινότητος Πικρολίμνης (Γκιὸλ-Ὄμπαση) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ἀλῆ - Χοτζαλάρ*. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 672. Χ. Δ.

**μικροκαμωμένος,** *—η, —ο*· δημοτ., ὁ ἔχων μικρὸν ἀνάστημα, κατ' ἀναλογίαν δὲ καὶ τὰ μέλη μικρά, μικροφυής, λεπτοφυής.

**Μικρόκαστρον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται νοτιοδυτικῶς καὶ ἐγγὺς τῆς Σιατίστης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κατ. (1928) 377. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Τσιρούσινον*. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ

Digitized by Google

χωρίον Μεσοπόταμον (Γιάγκοβα), ἔχει δὲ κατοίκους (1928) 501. Χ. Δ.

**μικροκαυλία** (ἡ) *['Ανατομ.]*. Μικρότης τοῦ καυλοῦ (=τοῦ πέους) συγγενής. Ι. Π.

**μικρόκαχρυς** (ἡ) (Microcachris) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κωνοφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ταξοειδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν θερμῶν καὶ τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς, ὧν ἀξιολογώτερον εἶναι *μικρόκαχρυς ἡ τετράγωνος* (Microcachris tetragonus), μετρίου ἀναστήματος κωνοφόρον, ἰθαγενὲς τῆς Τασμανίας, καλλιεργούμενον καὶ πρὸς κόσμον, ἐντὸς θερμοκηπίων, πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μικροκεφαλία** (ἡ) *['Ανατομ.]*. Μικροκεφαλία ἢ μικρὸν κρανίον σχηματίζεται, ὅταν ἅπασαι αἱ ῥαφαὶ τοῦ κρανίου συνοστεῶνται προώρως. Ι. Π.

— *['Ανθρωπολ.] Μικροκεφαλία* παλαιόθεν ὀνομάζεται ἡ τερατομορφία, καθ' ἣν τὸ κρανίον ὑπελείφθη κατὰ τὴν διάπλασιν. Σήμερον μικροκεφαλία εἶναι βαθμὶς διαιρέσεως τῆς μορφῆς τῆς κεφαλῆς, ἀντιστοιχοῦσα πρὸς κρανιακὴν χωρητικότητα 1001—1300 κυβ. ἑκατ. Ἡ σχετικὴ αὐτὴ σμικρότης δὲν ἔχει σημασίαν διὰ τὴν διανοητικὴν ἀνάπτυξιν. Εἰς τὴν ὅλην σειρὰν τῆς ζωϊκῆς ἐξελίξεως εἶναι ἀληθὲς ὅτι ἡ ἀνάπτυξις τοῦ ὄγκου τοῦ ἐγκεφάλου (κρανιακῆς χωρητικότητος) συνεβάδισε περίπου μετὰ τῆς διανοητικῆς ἀναπτύξεως. Ὑπάρχει ὅμως ἀρκετὰ εὐρὺ πλάτος ποικιλίας, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ὁ ὄγκος οὗτος δύναται νὰ ποικίλλῃ, ἐπὶ ὅλως φυσιολογικῆς πνευματικῆς ἀναπτύξεως, ὅπως δεικνύουν οἱ ἐγκέφαλοι τοῦ A. France, τοῦ Gambetta κ.ἄ.

Φυλετικῶς διακρίνονται διὰ μικροκεφαλίαν οἱ Βέντα τῆς Κεϋλάνης (χωρητικ. 1200 κ. ἑ.), οἱ 'Ανδαμάναι (1281 κ. ἑ.), οἱ Παπούαι (1236 κ. ἑ.) καὶ ἄλλοι λαοὶ τῆς Ὠκεανίας, οἱ Αὐστραλοὶ (1310 κ. ἑ.), Νέγροι τινὲς καὶ Μπουσμᾶνοι τῆς 'Αφρικῆς κλπ., εὑρισκόμενοι εἰς τὰ ὅρια μικροκεφαλίας καὶ μετριοκεφαλίας (1301—1450 κυβ. ἑκατ.). Πάντως, ἀτομικῶς ποικίλλουν λίαν καὶ κατ' ἀρχὴν τὰ μικρότερα κρανία ἀπαντοῦν μεταξὺ τῶν κατωτέρων φυλῶν, ἐνῷ εἶναι σπανιώτερα εἰς τοὺς ἀνωτέρου πολιτισμοῦ εὐρωπαϊκοὺς λαούς. Μικροκεφαλίαν δεικνύουν καί τινα προϊστορικὰ κρανία (Γιβραλτὰρ 1296 κ. ἑκατ., Piltdown 1300 κ. ἑκατ. κλπ.). Ι.Γ.Κ.

**μικροκέφαλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μικρὰν κεφαλήν, μικροτέραν τῆς ἀναλογούσης εἰς τὸ ὅλον σῶμα.

**μικρόκηβος** (ὁ) (Microcebus) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τετραχείρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἡμιπιθήκων* τῆς οἰκογενείας τῶν *λεμουριδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους λεμουρίους μὲ σῶμα κυρτὸν κατὰ τὴν ῥάχιν, ἐπιμήκες, κεφαλὴν μικράν, κομψὴν καὶ τριγωνικήν, ἀπολήγουσαν εἰς μᾶλλον ἀμβλὺ ῥύγχος, ὀφθαλμοὺς ἀρκετὰ μεγάλους, σχετικῶς πρὸς τὸ μέγεθος τοῦ ζῴου, ὦτα μικρὰ καὶ ἠνωρθωμένα, πόδας λεπτοὺς καὶ οὐρὰν κυλινδρικήν, μακροτάτην καὶ παχεῖαν κατὰ τὸ ἄκρον της. 'Απαντῶσιν εἰς τὴν Μαδαγασκάρην. Δ. Ν. Π.

*Μικρόκηβος.*

**Μικροκλεισοῦρα** *[Γεωγρ.]*.—1) Χωρίον τῆς κοινότητος Παγονερίου (Τσερεσόβου) τῆς ἐπαρχίας Νευροκοπίου (Ζυρνόβου) τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Λακάβιτσα*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 219.

—2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κνίδης (Κοπρίβης) τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ὀνομαζόμενος πρότερον *Σαδοβίτσα*. Κάτ. (1928) 98. Χ. Δ.

**μικροκλέπτης** (ὁ)· κλέπτης μικρῶν πραγμάτων.

**μικροκλινὴς** (ὁ) (Mikroklin) *['Ορυκτολ.]*. 'Ορυκτὸν ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν τρικλινῶν ἀστρίων. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $K\,Al\,Si_3\,O_8$, ἤτοι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν τύπον τοῦ ὀρθοκλάστου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ὅμως διαφέρει ὡς πρὸς τὴν κρυσταλλογραφικὴν ἀνάπτυξιν, καθόσον τὸ ὀρθόκλαστον κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα. Αἱ κρυσταλλογραφικαὶ σταθεραὶ αὐτοῦ πλησιάζουν πολὺ πρὸς ἐκείνας τοῦ ὀρθοκλάστου· διὰ τοῦτο ὁ μικροκλινὴς εἶναι ἰσόμορφος πρὸς τὸ ὀρθόκλαστον, οἱ δὲ κρύσταλλοι αὐτοῦ παρουσιάζουν φαινομενικῶς μονοκλινῆ συμμετρίαν καὶ συνεπῶς θεωροῦνται μιμητικοί. Ἔχει σκληρότητα 6, εἰδικὸν βάρος 2,57, λάμψιν ὑαλώδη καὶ χρῶμα ἀνοικτόχρουν, λευκόν, ὑποκίτρινον, ὑποπράσινον καὶ ὑπέρυθρον, σπανίως δὲ σμαραγδοπράσινον (λίθος 'Αμαζόνων), ὁπότε ἐμφανίζει καὶ πλεοχροϊσμόν. 'Αποτελεῖ συστατικὸν ὀξίνων καὶ ἀλκαλιούχων πυριγενῶν πετρωμάτων. Γ. Β.

**μικροκλινοαλβίτης** (ὁ) (Mikroklinalbit) *['Ορυκτολ.]*. 'Ορυκτὸν τῆς ὁμάδος τῶν τρικλινῶν ἀστρίων· καλεῖται καὶ *ἀνορθόκλαστον* (Anorthoklas), ἢ *νατριοῦχος μικροκλινὴς* (Natronmikroklin). Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $(Na\,K)\,Al\,Si_3O_8$, ἀποτελεῖ δὲ ἰσόμορφον παράμιξιν τοῦ ἀλβίτου καὶ τοῦ ἀνορθίτου ὑπὸ τὴν ἀναλογίαν 2 : 1 ἕως 4,5 : 1. 'Απαντᾷ εἰς κρυστάλλους μορφῆς πρισματικῆς, ὅπως συνήθως καὶ τὰ λοιπὰ μέλη τῆς ὁμάδος, ἔχει σκληρότητα 6, εἰδικὸν βάρος 2,58—2,6, εὑρίσκεται δὲ εἰς πυριγενῆ πετρώματα καὶ ἰδίως εἰς ἔκχυτα ἐκ μαγμάτων φογιαϊτικῶν. Γ. Β.

**μικροκλινοπερθίτης** (ὁ) (Mikroklinperthit) *['Ορυκτολ.]*. 'Ορυκτὸν τῆς ὁμάδος τῶν τρικλινῶν ἀστρίων. 'Αποτελεῖ σύμφυσιν μικροκλινοῦς μὲ ἀλβίτην, εἶναι δὲ σύνηθες ὀρυκτολογικὸν συστατικὸν πυριγενῶν πετρωμάτων. Μικροὶ κρύσταλλοι αὐτοῦ ἐκ τῶν ἀσβεστολίθων τῆς Πενσυλβανίας φέρουν τὴν ὀνομασίαν *χερστέρλιθοι* (Chersterlith). Γ. Β.

**μικροκλοπὴ** (ἡ)· κλοπὴ μικρῶν, μικρᾶς ἀξίας πραγμάτων.

**μικρόκοκκος** (ὁ)· μικρὸς κόκκος, προσηγορία κοκκοειδοῦς βακτηριδίου.

— *[Μικροβιολ.]* Κατὰ τὸν Cohn, ὅστις ἐταξινόμησε πρῶτος τὰ βακτήρια, *μικρόκοκκοι* καλοῦνται πάντες ἀνεξαιρέτως οἱ κόκκοι (coccus ἢ micrococcus). Οἱ νεώτεροι ὅμως συγγραφεῖς *μικροκόκκους* ὀνομάζουσι μόνον τοὺς μεμονωμένους κόκκους. 'Εν τούτοις ἡ πρὸς καλυτέραν ταξινόμησιν τῶν βακτηρίων συσταθεῖσα τῷ 1917 ἐπιτροπὴ ἐξ 'Αμερικανῶν εἰδικῶν ἐπιστημόνων (Committee on characterisation and classification of bacterial types) διαιρεῖ τὰ βακτήρια εἰς 5 τάξεις (μυξοβακτήρια, θειοβακτήρια, χλαμυδοβακτήρια, ἀκτινομύκητας καὶ εὐβακτήρια). Τὴν τάξιν τῶν εὐβακτηρίων, ἥτις εἶναι καὶ ἡ σπουδαιοτέρα, ἡ ἐπιτροπὴ τὴν διαιρεῖ εἰς 6 οἰκογενείας (νιτροβακτηριοειδῆ, ψευδομοναδοειδῆ, σπειριλλοειδῆ, κοκκοειδῆ, βακτηριοειδῆ καὶ βακιλλοειδῆ). Ἑκάστη τῶν οἰκογενειῶν τούτων περιλαμβάνει πολλὰς φυλὰς καὶ ἑκάστη τῶν φυλῶν πολλὰ γένη. Ἡ οἰκογένεια τῶν κοκκοειδῶν βακτηρίων διαιρεῖται εἰς τρεῖς φυλὰς (τὰ ναϊσσέρεια, τὰ στρεπτοκοκκοειδῆ καὶ τὰ μικροκόκκεια). Εἰς τὰ μικροκόκκεια ἡ ἐπιτροπὴ διακρίνει τρία γένη : τὸν *μικρόκοκκον*, τὸν *φακελόκοκκον* καὶ τὸν *ῥοδόκοκκον*. Ἑπομένως κατὰ τὴν διαίρεσιν ταύτην ἥτις φαίνεται ὡς ἡ καλυτέρα, ὁ μικρόκοκκος εἶναι ἓν ἐκ τῶν γενῶν τῆς φυλῆς τῶν μικροκοκκείων τῆς οἰκογενείας τῶν κοκκοειδῶν τῆς τάξεως τῶν εὐβακτηρίων.

Εἰς τοὺς μικροκόκκους ὑπάγονται πολλὰ εἴδη κόκκων, τῶν ὁποίων οἱ σπουδαιότεροι καὶ συνηθέστεροι εἶναι οἱ ἑπόμενοι :

*Μικρόκοκκος ὁ ἀεριογόνος* (micrococcus gazogenes), ἢ *σταφυλόκοκκος ὁ μικρός*. Εἶναι κόκκος μικρότερος τοῦ σταφυλοκόκκου, ἀναερόβιος, χρωματίζεται κατὰ Gram καὶ ἀνευρέθη εἰς τὸ πύον σκωληκοειδίτιδος, γαγγραίνης τοῦ πνεύμονος, εἰς τὸ στόμα τῶν νεογνῶν καὶ εἴς τινας μολύνσεις τοῦ οὐροποιητικοῦ συστήματος.

*Μικρόκοκκος τῆς γυροειδοῦς ἀλωπεκίας* (micrococcus de la pelade). Περιεγράφη ὑπὸ τῶν Vaillard καὶ Vincent, ἔχει τοὺς χαρακτῆρας τοῦ μικροκόκκου τῆς ἐπιδερμίδος καὶ ἐπιτιθέμενος ἐπὶ ἐξυρισμένου δέρματος κονίκλου προκαλεῖ τὸν σχηματισμὸν πλακὸς ἀλωπεκίας.

*Μικρόκοκκος ὁ δυσώδης* (micrococcus foetidus). Εἶναι κόκκος ὅστις εὑρίσκεται μεμονωμένος ἢ ἀνὰ δύο, σχηματίζων ἐνίοτε μικρὰ ἀθροίσματα. Χρωματίζεται κατὰ Gram, εἶναι ἀναερόβιος, παράγει δυσώδη ἀέρια καὶ ἀνευρέθη εἰς τὸ πύον τῆς γαγγραίνης τῆς διαπυηθείσης ὠτίτιδος, εἰς τὸν κόλπον καὶ τοὺς βαρθολινίους ἀδένας ὡς καὶ εἴς τινα ἐπιλόχειον μόλυνσιν καὶ χολοκυστίτιδα.

*Μικρόκοκκος ὁ θαυμαστὸς* (Micrococcus prodigiosus). Εἶναι κόκκος σφαιρικὸς ἢ ᾠοειδὴς ἢ ἐλλειψοειδὴς ἢ καὶ βραχὺ βακτηρίδιον μεγέθους 0,5—1 μ. Χρωματίζεται κατὰ Gram, εἶναι λίαν διαδεδομένος εἰς τὸν ἀέρα καὶ ἀναπτύσσεται ἐπὶ τῶν ἀμυλούχων (ἄρτος, σῖτος) καὶ ἐπὶ τοῦ πεπηγότος λευκώματος τοῦ ᾠοῦ, σχηματίζων ῥοδοχρόους κηλῖδας, αἵτινες μετέπειτα γίνονται αἱματηρῶς ἐρυθραί. Περιγράφεται καὶ ὡς βακτηρίδιον.

*Μικρόκοκκος ὁ καταρροϊκὸς* (micrococcus catarrhalis)· βλ. λ. *κόκκος*.

*Μικρόκοκκος ὁ κίτρινος* (micrococcus luteus). Εἶναι κόκκος μεμονωμένος ἢ εἰς διπλοκόκκους ἢ εἰς τετράδας. Φαίνεται ὅτι εἶναι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν φακελόκοκκον τὸν κίτρινον. Εἶναι λίαν διαδεδομένος εἰς τὸν ἀέρα, ἀπαντᾶται εἰς τὸ δέρμα τοῦ ἀνθρώπου καὶ δὲν εἶναι παθογόνος.

*Μικρόκοκκος ὁ λευκάζων* (micrococcus candicans). Εἶναι στρογγύλος κόκκος 1—2 μ, μεμονωμένος ἢ κατ' ἀθροίσματα, χρωματίζεται κατὰ Gram καὶ εἶναι μεγαλύτερος τοῦ λευκοῦ σταφυλοκόκκου. Εἶναι λίαν διαδεδομένος ἐν τῇ φύσει (ἀήρ, ὕδωρ) καὶ ἀπαντᾶται εἰς τὸ σμῆγμα τῆς πόσθης, τὴν βλένναν τοῦ κόλπου, εἰς τὰ πτύελα, εἰς τὰς τρίχας καὶ ἐν γένει εἰς τὴν ἐπιδερμίδα. Κατὰ τὸν Leube εἶναι ὅμοιος πρὸς τὸν οὐρόκοκκον. Δὲν εἶναι παθογόνος.

*Μικρόκοκκος ὁ λευκαυγὴς* (micrococcus candidus). 'Ανευρέθη μετ' ἄλλων μικροβίων εἰς τὰς ἐκ τοῦ πολέμου πληγάς.

*Μικρόκοκκος ὁ λευκὸς τῆς ἐπιδερμίδος* (micrococcus albus epidermidis)· βλ. λ. *κόκκος*.

*Μικρόκοκκος ὁ μελιταῖος* (micrococcus melitensis)· βλ. λ. *κόκκος*.

*Μικρόκοκκος ὁ νεοπλασματικὸς* (micrococcus neoformans). Εἶναι μικρὸς κόκκος μεγέθους ἀπὸ 0,5 μ—2 μ, εὑρίσκεται δὲ ἄλλοτε μεμονωμένος, ἄλλοτε εἰς ἀθροίσματα ἢ διπλοκόκκους σχηματίζοντας τριάδας, τετράδας ἢ ἁλύσεις ἐκ 4—9 στοιχείων. 'Ανευρίσκεται εἰς τοὺς κακοήθεις ὡς καὶ εἰς τοὺς καλοήθεις ὄγκους. Παρετηρήθη καὶ περιεγράφη ὑπὸ τοῦ Doyen, φαίνεται δὲ μὴ ἔχων παθογόνον δύναμιν.

*Μικρόκοκκος ὁ ξανθὸς* (Micrococcus flavus). Περιεγράφησαν 3 εἴδη τούτων. Ὁ πρῶτος εἶναι παχὺς διπλόκοκκος, ἀπαντᾶται κατὰ τετράδας, ὁμοιάζει πρὸς τὸν μηνιγγιτιδόκοκκον, εἶναι ἀερόβιος καὶ δὲν χρωματίζεται κατὰ Gram. Ὁ δεύτερος εἶναι μικρὸς διπλόκοκκος, ἀθροίζεται κατὰ μάζας ἀκανονίστους καὶ χρωματίζεται κατὰ Gram. Ὁ τρίτος ἔχει τὸ αὐτὸ μέγεθος πρὸς τὸν μηνιγγιτιδόκοκκον, εὑρίσκεται ὡς διπλόκοκκος, οὐδέποτε εἰς τετράδας, καὶ δὲν χρωματίζεται κατὰ Gram. Καὶ τὰ τρία εἴδη ἀπαντῶνται εἰς τὸ ῥινοφαρυγγιτικὸν ἔκκριμα.

*Μικρόκοκκος ὁ ξηρὸς* (Micrococcus siccus), ἢ *διπλόκοκκος ὁ φαρυγγιτικὸς ὁ ξηρός*. Εἶναι διπλόκοκκος μικρότερος τοῦ μηνιγγιτιδοκόκκου, ἀερόβιος καὶ δὲν χρωματίζεται κατὰ Gram.

*Μικρόκοκκος ὁ παστέρειος* (Micrococcus Pasteuri). Εἶναι ὁ πνευμονιόκοκκος ὁ περιγραφεὶς ὑπὸ τῶν Talamon καὶ Fränkel, ὀνομαζόμενος καὶ *στρεπτόκοκκος ὁ λογχοειδὴς* (Streptococcus lanceolatus).

*Μικρόκοκκος ὁ παχὺς* (Micrococcus crassus). 'Ονομάζεται καὶ *διπλόκοκκος ὁ παχὺς* καὶ εἶναι κόκκος ὁμοιάζων πρὸς τὸν μηνιγγιτιδόκοκκον. Χρωματίζεται κατὰ Gram καὶ ἀνευρίσκεται συνήθως εἰς τὸ ῥινοφαρυγγιτικὸν ἔκκριμα ὑπὸ σαπροφυτικὴν κατάστασιν. Σχηματίζει ἀποικίας μικροτέρας τῶν τῶν μηνιγγιτιδοκόκκων καὶ ὁμοιαζούσας μᾶλλον πρὸς τὸν στρεπτόκοκκον.

*Μικρόκοκκος πυογόνος ὁ σιαλικὸς* (micrococcus salivarius pyogenes). Εἶναι κόκκος μεγέθους 0,2—0,5 μ κατ' ἀθροίσματα χρωματιζόμενος κατὰ Gram καὶ ἀνευρέθη ὑπὸ τοῦ Biondi εἰς τὸ πύον τὸ παραχθὲν δι' ὑποδορίου ἐμβολιασμοῦ σιέλου εἰς πειραματόζῳα. Φαίνεται ὅτι εἶναι μᾶλλον παραλλαγὴ τοῦ σταφυλοκόκκου.

*Μικρόκοκκος ὁ τεφρὸς* (Micrococcus cinereus). Εἶναι παχὺς κόκκος καὶ ἀπαντᾶται εἰς τὰς ῥινοφαρυγγιτικὰς κοιλότητας ὡς διπλόκοκκος ἢ κατ' ἀθροίσματα. Δὲν χρωματίζεται κατὰ Gram.

*Μικρόκοκκος ὁ φαιὸς* (micrococcus griseus). Εἶναι παχὺς διπλόκοκκος μεμονωμένος ἢ εἰς μικρὰ ἀθροίσματα ἢ μικρὰς ἁλύσεις. Χρωματίζεται κατὰ Gram καὶ ἀνευρέθη εἰς τὰ σεσηπότα κρέατα καὶ εἰς τὰς ἐκ τοῦ πολέμου πληγὰς ἐν συνδυασμῷ μετ' ἄλλων μικροβίων.

*Μικρόκοκκος ὁ ᾠοειδὴς* (micrococcus ovalis). Περιεγράφη ὑπὸ τοῦ Escherich καὶ φαίνεται ὅτι εἶναι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν ἐντερόκοκκον τοῦ Thiereelin.

Οἱ ἀνωτέρω περιγραφέντες μικρόκοκκοι εἶναι οἱ συνηθέστερον εὑρισκόμενοι καὶ γνωστοὶ ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν μικρόκοκκοι. 'Εν τῇ μικροβιολογίᾳ ὅμως εὑρίσκονται καὶ ἄλλοι ὀλιγώτερον συχνοὶ καὶ γνωστοὶ ὑπ' ἄλλην ὀνομασίαν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *E. Macé*, Traité pratique de Bactériologie.—*W. Kolle* und *A. v. Wassermann*, Hand. der pathog. Microorganismen.—*A. Besson*, Tech. microbiologique e.t.c. —*K. Σάββα*, 'Εγχειρίδιον μικροβιολογίας (δ' ἐκδ. 1927).— *Ν. Α. Μιχαηλίδου*, 'Εργαστηριακὴ διαγνωστικὴ (1926—1927).

Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

— **μικροκόκκου ἔλαιον** (Essence d'orcanettes ou de petits grains) *[Φαρμακογ.]*. Χαρακτηρίζεται οὕτω τὸ αἰθέριον ἔλαιον τὸ λαμβανόμενον ἐκ τῶν ἀώρων ἔτι καρπῶν τῆς πορτοκαλέας καὶ τῆς χρυσομηλέας (νεραντζιᾶς). Οἱ καρποὶ οὗτοι εἶναι μικρὰ σφαιρικὰ σώματα 0,015—0,02 μ. διαμέτρου, καθιστάμενα μετὰ τὴν ξήρανσιν σκληρότατα καὶ δυσκόλως κοπτόμενα. Εἶναι ἄοσμα, γεύσεως δὲ πικρᾶς ἀρωματικῆς. Συστατικὰ αὐτῶν εἶναι ἡ ἑσπεριδίνη, μηλικὸν ὀξύ, πικρά τις οὐσία, ἡ ἀουραντίνη ἢ ναριγκίνη, γλυκόζη, κιτρικὸν ὀξύ, ἴχνη σαλικυλικοῦ ὀξέος, αἰθέριον ἔλαιον κλπ. Τὸ αἰθέριον ἔλαιον λαμβάνεται δι' ἀποστάξεως μεθ' ὑδρατμῶν ὑπὸ ἠλαττωμένην πίεσιν τῶν καρπῶν αὐτῶν, ἀφοῦ προηγουμένως θραυσθῶσι καὶ κονιοποιηθῶσι. Τὸ ἔλαιον τοῦτο εἶναι ἄχρουν, πτητικόν, εἰδικῶς ἀρωματικῆς ὀσμῆς, ὑπομιμνησκούσης κατά τι τὴν τοῦ νερολὶ καὶ γεύσεως θερμῆς, ἀρωματικῆς, ἀναψυκτικῆς. Ἔχει εἰδ. βάρος 0,887—0,900 καὶ διαλύεται εἰς τὸ οἰνόπνευμα, τὸ χλωροφόρμιον, τὸ βενζόλιον, τὰ αἰθέρια καὶ λιπαρὰ ἔλαια. Συστατικὰ τοῦ ἐλαίου εἶναι 38—80 % ὀξικοῦ λιναλυλίου, λιναλόλη, γερανιόλη, λιμονένιον, διπεντένιον, νερόλη, τερπινεόλη, ὀξικὸν γερανύλιον καὶ πινένιον. 'Απο-

Digitized by Google

κλειστικὴ χρῆσις τοῦ ἐλαίου τοῦ μικροκόκκου γίνεται εἰς τὴν ἀρωματοποιίαν, σακχαροπλαστικὴν καὶ ποτοποιίαν. Κ. Γ. Μ.

**μικροκοσμικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μικρόκοσμον, ὁ τοῦ μικροκόσμου.

**μικρόκοσμος** (ὁ)· ὁ μικρὸς κόσμος, κόσμος ἐν μικρῷ· οὕτω χαρακτηρίζεται ὁ ἄνθρωπος ὡς ἐπιτομὴ τοῦ ὅλου κόσμου (βλ. κατωτ.).

— *[Ἀποκρυφ.]* Ὅρος τῆς ἀποκρύφου ἐπιστήμης, ὑποδηλῶν πᾶν ὀργανικὸν ἄτομον τοῦ ζωϊκοῦ, φυτικοῦ καὶ ὀρυκτοῦ βασιλείου τοῦ πλανήτου μας, ἰδιαιτέρως δὲ τὸν ἄνθρωπον, ὡς τὴν μᾶλλον ἐξειλιγμένην ὀντότητα, ὅστις ἐν μικρογραφίᾳ ἀποτελεῖ αὐτὴν ταύτην τὴν εἰκόνα τοῦ σύμπαντος. Ἐν αὐτῷ ἐκδηλοῦνται, ἐν σχέσει ἀναλογίας, ἅπαντες οἱ νόμοι, οἱ ὁποῖοι διέπουν καὶ τὸ σύμπαν, ἀποκαλούμενον κατ' ἀντιδιαστολὴν *μακρόκοσμον* (βλ.λ.), ἕκαστον δὲ τμῆμα τοῦ μικροκόσμου ἔχει τὸ ἀντίστοιχον αὐτοῦ ἐν τῷ μακροκόσμῳ. Οὕτω, κατὰ τὸν Robert Fludd, ἡ κεφαλὴ τοῦ ἀνθρώπου ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸν κόσμον τῶν ἀρχῶν ἢ ἀνωτάτων κοσμικῶν δυνάμεων (ἐμπυρεῖον), τὸ στῆθος πρὸς τὸν κόσμον τῶν σφαιρῶν ἢ μέσον οὐρανὸν καὶ ἡ κοιλία καὶ τὰ κάτω ἄκρα πρὸς τὸν στοιχειώδη ἢ κατώτερον κόσμον (ὑποσεληναῖον). Ἐπὶ τῆς σχέσεως ταύτης μεταξὺ μακροκόσμου καὶ μικροκόσμου καὶ τῶν ἀλληλεπιδράσεων τοῦ μὲν ἐπὶ τοῦ δὲ ἐστηρίχθη, ἀπὸ ἀρχαιοτάτων χρόνων, ἡ ἀστρολογία καὶ ἡ ἐπιστήμη τῶν μάγων, αἵτινες καθώριζον τὰς ἐπιρροὰς τῶν ἀστέρων καὶ τῶν σημείων τοῦ ζῳδιακοῦ ἐπὶ τοῦ μικροκόσμου, ἐκ τῆς κινήσεως δὲ καὶ ἐκ τῆς θέσεως τούτων συνῆγον συμπεράσματα ἐπὶ τῶν μελλόντων νὰ συμβοῦν καὶ τῶν ἀνθρωπίνων πεπρωμένων. Εἰς τὴν συμβολικὴν ἰδεογραφίαν ὁ μικρόκοσμος ἀναπαρίσταται διὰ τοῦ φλογοφόρου πενταγράμματος ἢ ἀκτινοβόλου ἀστέρος μὲ τὴν μίαν τῶν πέντε ἀκτίνων πρὸς τὰ ἄνω καὶ τὸ ἰδεόγραμμα g ἢ Γ εἰς τὸ κέντρον, σύμβολον τῆς ἀφθάρτου διανοίας. Η. Π. Γ.

*Ὁ ἀκτινοβόλος ἀστήρ, ἔμβλημα τοῦ μικροκόσμου*

**μικροκουκκιά** (ἡ), ἢ ***μικροκούκκι*** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κελτὶς ἡ νότιος*.

**μικροκρανία** (ἡ) *[Ἀνθρωπολ.]*. Ἀκριβέστερος ὅρος, ὅταν πρόκειται περὶ τοῦ κρανίου, ἀντὶ τοῦ ὅρου *μικροκεφαλία* (βλ. λ.). Ι. Γ. Κ.

**μικροκυτταραιμία** (ἡ) *[Μικροβιολ.]*. Παθολογικὴ κατάστασις τοῦ αἵματος, καθ' ἣν εὑρίσκονται ἐν αὐτῷ μικροκύτταρα. Τοιαῦται καταστάσεις παρατηροῦνται ἰδίᾳ μὲν εἰς τὴν χλώρωσιν, οὐχὶ δὲ σπανίως καὶ εἰς τὰς κακοήθεις καὶ βαρείας ἀναιμίας (ἰδίᾳ τὰς μεθαιμορραγικάς), εἰς τὰς δηλητηριάσεις, εἰς τὰ βαρέα ἐγκαύματα κ.τ.λ. Ν. Α. Μ.

**μικροκύτταρον** (τό). Εἰς τὸ κυκλοφοροῦν αἷμα παρατηροῦνται ἐνίοτε μικρά τινα ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια πλήρη αἱμοσφαιρίνης ἐν σχήματι κυπέλλων. Τὰ αἱμοσφαίρια ταῦτα, ἅτινα ὀνομάζομεν *μικροκύτταρα* (microcytes), ἄλλοι μὲν θεωροῦσιν ὡς τμήματα ἐρυθροκυττάρων, ἄλλοι δὲ ὡς παράγωγα ἐλαττωματικῆς κατασκευῆς τοῦ ὀργανισμοῦ συνεπείᾳ τῆς ἐσπευσμένης καὶ ἐντόνου ἐργασίας, ἣν καταβάλλει οὗτος, ὅπως ἀντικαταστήσῃ τὰ ἔκ τινος αἰτίας καταστραφέντα ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια.

Τὰ μικροκύτταρα ὁ Hayem ἐθεώρει ὡς νεαρὰς μορφὰς ἐνδιαμέσους μεταξὺ τῶν αἱμοπεταλίων καὶ τῶν φυσιολογικῶν ἐρυθρῶν αἱμοσφαιρίων. Σήμερον ὅμως, ὁπότε ὁ Wright ἀπέδειξεν ὅτι τὰ αἱμοπετάλια ἔχουσιν ἄλλην λειτουργίαν, ὡς νεαρὰ ἐρυθροκύτταρα δὲν θεωροῦνται τὰ μικροκύτταρα ἀλλὰ τὰ μακροκύτταρα (macrocytes), ἅτινα εἶναι μεγαλύτερα τῶν φυσιολογικῶν ἐρυθροκυττάρων.

Τὸ μέγεθος τῶν μικροκυττάρων κυμαίνεται ἀπὸ 1 μ—3 μ. Ἀπολέσαντα τὴν ἀμφικοιλότητα τείνουσι νὰ γίνωσι σφαιρικὰ καὶ δὲν διατίθενται εἰς νομισματοειδεῖς στήλας ὅπως τὰ ἐρυθροκύτταρα. Ἀπαντῶνται συχνότερον εἴς τινας παθολογικὰς καταστάσεις καὶ ἰδίᾳ εἰς τὰς μεθαιμορραγικὰς ἀναιμίας, τὴν χλώρωσιν, τὰς κακοήθεις καὶ βαρείας ἀναιμίας, τὰς δηλητηριάσεις, εἴς τινας λοιμώδεις νόσους καὶ εἰς τὰ ἐκτεταμένα ἐγκαύματα. Τὰ μικροκύτταρα δὲν προέρχονται ἐκ τῶν ἐρυθροβλαστῶν, ἀλλ' εἶναι παράγωγα, ἄλλα μὲν φαινομένων συστολῆς, ἄλλα δὲ περισφίγξεως καὶ διαιρέσεως ἀτελῶς διαπεπλασμένων ἐρυθροκυττάρων. Πάντως πρόκειται περὶ ἐρυθροκυττάρων ἐκπεφυλισμένων, ὡς ἐξάγεται καὶ ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἀνευρίσκονται εἰς τὰ ἐκτεταμένα ἐγκαύματα ὡς καὶ εἰς τὴν περιφέρειαν τῶν φυσαλίδων τοῦ ἀέρος τῶν σχηματιζομένων εἰς παρασκευάσματα προσφάτου αἵματος μεταξὺ ἀντικειμενοφόρου καὶ καλυπτρίδος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Gilbert et M. Weinberg*, «Traité du sang» (Paris 1913).—*F. Weidenreich*, Studien über das Blut (Arck. f. mikr. Anat. 1906).—*F. Weidenreich*, Blutkörperchen und Wanderzellen (Jena 1911). —*J. Jolly*, Traité d' hématologie (Paris 1923). Ν. Α. Μ.

**Μικροκώμη** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Προφήτου (Κλείσαλι) τῆς ἐπαρχίας Λαγκαδᾶ τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Γκιουλτζοὺκ Μαχαλάδες*. Κάτ. (1928) 177.

— 2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μεσολόφου (Λοζίστης) τῆς ἐπαρχίας Σιντικῆς (Σιδηροκάστρου) τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ὀνομαζόμενον πρότερον *Τσαλὶκ Μαχαλέ*. Κάτ. (1928) 38. Χ. Δ.

**Μικρολείβαδον** *[Γεωγρ.]* βλ. *Μικρολίβαδον*.

**μικρολεπιδόπτερα** (τὰ) (Microlepidoptera) *[Ζῳολ.]*. Κατηγορία ἐντόμων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *λεπιδοπτέρων* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μικρολῃστὴς** (ὁ) (Microlestes) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *πλαγιαυλακιδῶν ἀλλοθηρίων μαρσυποφόρων* θηλαστικῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον μικροὺς ὀδόντας ἐπιμήκως τετραπλεύρους, εἰς τὸ μέσον κοιλαινομένους καὶ πρὸς τὰ ἔξω καὶ ἔσω ἐφωδιασμένους μὲ ὑβώδεις προεξοχάς. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς ραιτίου βαθμῖδος τῆς ἀνωτέρας τριασίου ὑποδιαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς τὴν Βυρττεμβέργην καὶ τὸ Σόμερσετ. Γ. Κ. Γ.

**Μικρολίβαδον,** ἢ ***Μικρολείβαδον*** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Νικηφόρου (Νουσρατλῆ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Κηραυλῆ*. Κάτ. (1928) 73.

— 2) Χωρίον τῆς κοινότητος Μοναχητίου τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Λαβανίτσα*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 138. Χ. Δ.

**μικρολιθικὴ** ***τέχνη***. Οὕτω καλεῖται ἰδιαιτέρως ἡ μαγδαληναία τέχνη (βλ. *μαγδαλιναία ἐποχή*)· ἐπίσης μικρολιθικὴ τέχνη ἢ μικροβιομηχανία τοῦ λίθου, διακρίνει καὶ τὴν μεσολιθικὴν περίοδον (ταρντενουάσιον κλπ.). Ι. Γ. Κ.

**μικρόλιθοι** (οἱ) (Mikrolithe) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀνομάζονται οὕτω μικροσκοπικοὶ κρύσταλλοι, οἱ ὁποῖοι παρατηροῦνται πολλάκις ὑπὸ μορφὴν ἐγκλεισμάτων ἐντὸς ἄλλης διαφόρου ὀρυκτολογικῆς ὕλης. Οἱ μικρόλιθοι παρουσιάζουν συνήθως κρυσταλλικὴν μορφήν, ἡ ὁποία χαρακτηρίζει τὴν ὀρυκτολογικὴν ὕλην, ἐξ ἧς ἀποτελοῦνται, καὶ τὴν ὁποίαν αὕτη λαμβάνει, ὅταν ἀναπτύσσεται ἐλευθέρως εἰς ἄτομα μακροσκοπικῶς ὁρατά. Ἐνίοτε ὅμως λαμβάνουν καὶ ἄλλας μορφὰς διαφόρους, ἰδίως δὲ ραβδοειδεῖς, βελονοειδεῖς (βελονῖται), τριχοειδεῖς (τριχῖται) κ.ο.κ., ἀνεξαρτήτως πρὸς τὴν χαρακτηρίζουσαν τὴν ὀρυκτολογικὴν σύστασιν αὐτῶν κρυσταλλογραφικὴν ἀνάπτυξιν. Ἡ ὀρυκτολογικὴ σύστασις τῶν μικρολίθων εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον γνωστή. Οὕτως ἔχομεν μικρολίθους ρουτυλίου ἐντὸς τῆς ὀρείας κρυστάλλου, χαλαζίου ἐντὸς τοῦ σταυρολίθου, ἐπίσης μικρολίθους ἐξ ἀπατίτου, ἀστρίων, αὐγίτου κλπ. Ἐνίοτε ὅμως καθίσταται ἀδύνατος ὁ προσδιορισμὸς τῆς ὀρυκτολογικῆς συστάσεως αὐτῶν. Ἀφθονία μικροσκοπικῶν ἐγκλεισμάτων ἐντὸς ὀρυκτολογικῆς τινος ὕλης παρέχει πολλάκις εἰς αὐτὴν χαρακτηριστικὴν ἀπόχρωσιν. Γ. Β.

**μικρόλιθος** (ὁ) (Mikrolith) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ταντάλικὸν ἀσβέστιον τοῦ τύπου $Ca_2 Ta_2 O_7$ μὲ περιεκτικότητα πεντοξειδίου τοῦ νιοβίου $Nb_2 O_5$ καὶ σιδήρου Fe. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ κυβικὸν σύστημα μὲ ἕδρας συνήθως ὀκταεδρικὰς καὶ ρομβικοῦ δωδεκαέδρου, παρουσιάζει δὲ θραυσμὸν κογχώδη, σκληρότητα 5—6, εἰδικὸν βάρος 5,5—5,6, λάμψιν στεατώδη καὶ χρῶμα ὑποκίτρινον, ἐρυθρόφαιον καὶ φαιόμαυρον. Ἀπαντᾷ ἐντὸς ἀλβίτου τοῦ Chesterfield, ἐπίσης δὲ εἰς γρανιτικὰς φλέβας τῆς Elba, Utö κ.ἀ. Γ. Β.

**Μικρολίμνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται εἰς τὸ μέσον τῆς Α. ὄχθης τῆς Μικρᾶς Βρυγηΐδος (Πρέσπας) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Λάγκα*. Κάτ. (1928) 360. Χ.Δ.

**μικρολόγημα** (τό)· δημοτ., πρᾶγμα ἀσήμαντον, εὐτελές: «ἡ κληρονομιὰ ποῦ πῆρε ἦτον κάτι μικρολογήματα ποῦ δὲν λέγονται».

**μικρολογία** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μικρολογεῖν, λόγος περὶ μικρῶν καὶ ἀναξίων προσοχῆς πραγμάτων, φλυαρία· || αὐτὸ τοῦτο διὰ τὸ ὁποῖον μικρολογεῖ τις.

**μικρολόγος,** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μικρολογῶν, ὁ κάμνων λόγον ἢ παρατηρήσεις, ὁ φιλονικῶν περὶ μικρῶν ἢ ἀναξίων προσοχῆς πραγμάτων, ὁ περὶ μικρὰ καὶ εὐτελῆ ἀσχολούμενος: «μικρολόγος ἄνθρωπος, — ἐπιστήμων», «μικρολόγος πολιτική», «μὴν εἶσαι μικρολόγος».

**μικρολογχοειδὲς** (τὸ)(Microlonchoides) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὸ *μικρολογχοειδὲς τὸ ἑλληνικὸν* (Microlonchoides graecum), ἰθαγενὲς τῆς Ἑλλάδος. Δ. Ν. Π.

**μικρολογῶ** (*—έω*)· εἶμαι μικρολόγος, ἀσχολοῦμαι περὶ μικρὰ καὶ ἀνάξια προσοχῆς πράγματα, κάμνω λόγον, φιλονικῶ διὰ μικρὰ πράγματα.

**Μικρόλοφος** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πλατανιᾶς (Κουζλοῦ-κιοϊ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας. Κάτ. (1928) 29. Χ. Δ.

**μικρόλυχνος** (ὁ)· μικρὸς λύχνος: «μικρόλυχνος ἀσφαλιστικὸς» (βλ. κατ.).

—**μικρόλυχνος** ***ἀσφαλιστικός***. Συσκευή, ἥτις τοποθετεῖται εἰς τοὺς δι' ἀεριόφωτος θερμαινομένους ἐπωαστικοὺς κλιβάνους. Ἡ συσκευὴ αὕτη σκοπὸν ἔχει ὅπως κλείῃ αὐτομάτως τὴν στρόφιγγα τῆς ἐκροῆς τοῦ ἀερίου, ὅταν ἡ φλὸξ σβεσθῇ ἔκ τινος αἰτίας καὶ ἑπομένως ἐμποδίζῃ τὴν διάχυσιν τοῦ ἀερίου, λίαν ἐπικινδύνου, ὡς δυναμένου νὰ προκαλέσῃ δηλητηρίασιν καὶ ἔκρηξιν.

Τοιούτων συσκευῶν ὑπάρχουσι διάφορα εἴδη. Ἡ ἁπλουστέρα εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Κὼχ ἐπινοηθεῖσα, ἥτις εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα ἀσφαλιστικὸς μικρόλυχνος τοῦ Κώχ. Οὗτος ἀπαρτίζεται ἐκ σωλῆνος κεκαμμένου ὑπὸ ὀρθὴν γωνίαν. Εἰς τὸ ἄκρον τοῦ καθέτου σκέλους τοῦ σωλῆνος τοποθετεῖται ἡ λυχνία, προστατευομένη ὑπὸ σωλῆνος ἐξ ἀκαύστου οὐσίας· εἰς τὸ ἕτερον δὲ ἄκρον τοῦ ὁριζοντίου σκέλους εὑρίσκεται ἡ στρόφιγξ ἡ διακόπτουσα τὴν ἐκροὴν τοῦ ἀερίου καὶ ἥτις φέρει βραχίονα μήκους ἴσου περίπου πρὸς τὸ σκέλος τοῦτο. Εἰς τὴν λυχνίαν προσαρμόζεται μεταλλικὸν ἔλασμα κεκαμμένον ἀντιθέτως κατὰ τὰ δύο ἄκρα καὶ μήκους ἴσου πρὸς τὸ κάθετον σκέλος τοῦ σωλῆνος. Τὸ ἔλασμα τοῦτο διὰ τοῦ ἑνὸς ἄκρου θερμαίνεται ὑπὸ τῆς φλογός, διὰ τοῦ ἑτέρου δὲ διακρατεῖ ἐν ὁριζοντίᾳ θέσει τὸν βραχίονα τῆς στρόφιγγος. Ἐν τῇ θέσει ταύτῃ ἡ στρόφιγξ εἶναι ἀνοικτὴ καὶ ἀφίνει τὸ ἀέριον νὰ ἐκρέῃ. Καὶ ἐφόσον μὲν ἡ φλὸξ εἶναι ἀνημμένη, τὸ ἔλασμα θερμαινόμενον διαστέλλεται καὶ κρατεῖ τὴν στρόφιγγα ἀνοικτήν. Ὅταν ὅμως αὕτη σβεσθῇ, τὸ ἔλασμα ψυχόμενον συστέλλεται καὶ ἀφίνει τὸν βραχίονα νὰ καταπέσῃ καὶ νὰ λάβῃ κάθετον θέσιν. Ἐν τῇ θέσει ταύτῃ ἡ στρόφιγξ κλείουσα διακόπτει τὴν ἐκροὴν τοῦ ἀερίου. Εὐνόητον εἶναι ὅτι ὁ μικρόλυχνος οὗτος πρέπει νὰ ἐπιτηρῆται συνεχῶς, ἵνα μὴ σβεσθείσης τῆς φλογὸς κατέλθῃ ἡ θερμοκρασία τοῦ κλιβάνου, ἥτις πρέπει νὰ εἶναι ἡ αὐτή, ἡμέρας τε καὶ νυκτός, πρὸς κανονικὴν ἀνάπτυξιν καὶ διατήρησιν τῶν καλλιεργειῶν τῶν μικροβίων. Ν. Α. Μ.

**Μικρομάνη** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Καλαμῶν τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐντὸς τῆς πεδιάδος πρὸς ΒΑ. τῆς Μεσσήνης, εἰς ἀπόστασιν 15′ ἀπὸ τῆς Θουρίας (Καμαρίου), ἐπὶ μικροῦ παραποτάμου τοῦ Παμίσου, τοῦ ἀρχαίου Ἄριος πιθανῶς, καὶ ἔχει ἁμαξιτὴν συγκοινωνίαν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.186. Χ. Δ.

**μικρομανία** (ἡ)· ἡ μανία, ἡ ἐπίμονος ἐνασχόλησις περὶ μικρὰ πράγματα.

**μικρομανιακός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς μικρομανίαν· || ὁ πάσχων ἐκ μικρομανίας.

— **μικρομανιακὸν** ***παραλήρημα***. Καλεῖται οὕτω τὸ παραλήρημα μεταμορφώσεως τῆς προσωπικότητος. Ὁ ἐξ αὐτοῦ πάσχων λέγει ὅτι μετεμορφώθη εἰς μικρὸν παῖδα, εἴτε εἰς μικρὸν ζῷον κτλ., ἢ ἐν γένει θεωρεῖ ἑαυτὸν λίαν μικρὸν ὄν. Εἶναι βαρὺ τὴν πρόγνωσιν, ὡς καὶ τὰ λοιπὰ παραληρήματα μεταμορφώσεως, εἰ καὶ κάπως, εἰδικώτερον, βαρυτέρας προγνώσεως, ὡς παρατηρούμενον κυρίως ἐπὶ προϊούσης παραλύσεως, καὶ ἄρα ἐκδηλωτικὸν μεγάλης διανοητικῆς ἐξασθενήσεως. Δέον νὰ διακρίνεται τῶν ἀντιστοίχων ἰδεοληψιῶν, εἰς ἃς ἔχομεν ὅλους τοὺς χαρακτῆρας τῶν ἰδεοληψιῶν καὶ δὴ τὸν χαρακτῆρα τοῦ ἐνσυνειδήτου καὶ παρορμητικοῦ, ὅστις ἐλλείπει ἀπὸ τὸ κυρίως μικρομανιακὸν παραλήρημα, εἰς ὃ ὁ πάσχων δὲν ἔχει οὐδόλως συνείδησιν της νοσηρότητος τῶν ἰδεῶν του. Ἔπειτα καὶ τὰ ἄλλα σημεῖα τῆς προϊούσης παραλύσεως ἐπικυροῦσι τὴν διαφόρησιν. Τ. Α. ΖΗΣ

**μικρομαστία** (ἡ)· Ἡ ἀναλόγως πρὸς τὸ ἀνάστημα καὶ τὴν καθόλου ἀνάπτυξιν τοῦ σώματος μικρὰ ἀνάπτυξις τῶν μαστῶν τοῦ θήλεος. Ἡ ὑποπλασία αὕτη συνοδεύει κατὰ κανόνα τὴν κατάστασιν ἣν καλοῦμεν παιδομορφισμὸν (infantilismus). Δύναται δὲ νὰ φθάσῃ καὶ μέχρι τελείας ἀπουσίας τῶν μαστῶν (ἀμαστία, ἀμαζία) εἰς σπανιωτάτας περιστάσεις. Ι. Γ. Κ.

**μικρομέγας,** *—άλου* (ὁ), θηλ. ***μικρομέγαλη***· μικρὸς ὁ ὁποῖος θέλει νὰ παραστήσῃ ἑαυτὸν μέγαν, ὁ παρέχων γνωρίσματα μεγάλου.



Digitized by Google

**μικρομέλεια** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μικρομελοῦς, τὸ νὰ ἔχῃ τις τὰ μέλη παρὰ φύσιν μικρά.

— *[Ἐγκυκλ.] Μικρομέλεια* ἢ *μικρομελία* εἶναι ἡ κατάστασις ἐκείνη, καθ' ἣν ἄτομόν τι γεννᾶται μὲ τὰ μέλη του σμικρὰ ἀλλὰ φυσιολογικά, χωρὶς δηλαδὴ νὰ παρουσιάζωσιν οὐδεμίαν δυσμορφίαν ἢ ἐλαττωματικότητα. Συχνὰ συμβαίνει, ὥστε τὸ ἔχον σμικρὰ μέλη ἄτομον νὰ ἔχῃ καὶ σῶμα σμικρὸν καὶ τότε πρόκειται περὶ τῆς συγγενοῦς ἐκείνης δυσμορφίας, ἥτις καλεῖται *μικροσωμία* ἢ *νανοσωμία*. Ἄλλοτε πάλιν συμβαίνει ὥστε τὸ ἔχον σμικρὰ μέλη ἄτομον νὰ ἔχῃ σῶμα φυσιολογικόν, ἀλλὰ τότε πρόκειται περὶ τῆς παθολογικῆς ἐκείνης καταστάσεως, ἥτις καλεῖται *χονδροδυστροφία*. Εἰς τὴν μικρομελίαν δὲν πρέπει ὅμως νὰ ὑπαχθῇ καὶ ἡ *φωκομελία*. Διότι αὕτη παριστᾷ ἓν εἶδος ἐκτρομελίας, καθ' ἣν ἐλλείπει ὁ σκελετὸς τοῦ ἄνω καὶ κάτω ἄκρου πλὴν τῶν ἄκρων χειρῶν καὶ ποδῶν, οἵτινες ἀρθροῦνται, δίκην πτερυγίων φώκης, κατ' εὐθεῖαν πρὸς τὸν κορμόν. Α. Κ.

**μικρομελὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ ἔχων τὰ μέλη μικρὰ παρὰ φύσιν, ὁ πάσχων ἐκ μικρομελείας.

**μικρομερὶς** (ἡ) (Micromeria) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *χειλανθῶν*, περιλαμβάνον πόας ἢ καὶ φρύγανα ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων καὶ θερμῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν, ἅτινα ἀπαντῶσι καὶ παρ' ἡμῖν, εἶναι ἡ *μικρομερὶς ἡ ἑλληνικὴ* (Micromeria graeca), ἥτις καλλιεργεῖται πολλαχοῦ τῶν παραμεσογειακῶν χωρῶν ὡς εἶδος κοσμητικόν, *μικρομερὶς ἡ ἰουλιανὴ* (Micromeria juliana), ἥτις ἀπαντᾷ κυρίως εἰς τὴν Κεφαλληνίαν καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *ὕσσωπος*, καὶ ἐν τῇ νήσῳ Θήρᾳ, ὅπου εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἄγριο τσάϊ* καὶ χρησιμοποιεῖται ὑπὸ πλείστων κατοίκων τῆς νήσου ταύτης ἀντὶ τεΐου, καὶ ἡ *μικρομερὶς ἡ νευρώδης* (Micromeria rervosa), ἥτις κυρίως φύεται εἰς τὴν Θήραν καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἥμερο θρέμπο*. Ἐκ τῶν ἐξωτικῶν εἰδῶν ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μικρομερὶς ἡ πιπερὶς* (Micromeria piperella), ἰθαγενὲς φυτὸν τῶν νοτίων χωρῶν τῆς Εὐρώπης, καλλιεργούμενον πρὸς κόσμον, καὶ *μικρομερὶς ἡ δουγλάσειος* (Micromeria Duglasii), ἰθαγενὴς τῶν βορείων χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς, χρησιμοποιουμένη ἐνιαχοῦ εἰς τὴν φαρμακευτικὴν ὡς ἀνθελμιντικὸν φάρμακον. Δ. Ν. Π.

*Μικρομερίς.*

**μικρομετρία** (ἡ)· ὁ διὰ τοῦ μικρομέτρου προσδιορισμὸς ἀποστάσεων ἢ μεγέθους, ὁ χειρισμὸς τοῦ μικρομέτρου.

**μικρομετρικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μικρομετρίαν, ὁ τῆς μικρομετρίας: «μικρομετρικαὶ μέθοδοι», «κοχλίας μικρομετρικός».—Ἐπίρρ. ***μικρομετρικῶς***.

— **μικρομετρικαὶ** ***μετρήσεις***. Μετρήσεις διὰ *μικρομέτρου* (βλ. λ.)· κατ' ἐπέκτασιν, μετρήσεις πολὺ μικρῶν μεγεθῶν δι' εἰδικῶν ὀργάνων καὶ μεθόδων.

— **μικρομετρικὸς** ***κοχλίας*** *[Ἀστρον.]*. Κοχλίας χρησιμεύων δι' ἐκτέλεσιν μικρομετρικῶν μετρήσεων. Οἱ τοιοῦτοι κοχλίαι ἔχουσι πολὺ μικρὸν βῆμα καὶ κινοῦσι βραδέως μεταλλικὸν πλαίσιον, ἐφ' οὗ εἶναι τεταμένα ἀραχναῖα νήματα. Ἡ διὰ στροφῆς τοῦ μικρομετρικοῦ κοχλίου μετάθεσις τοῦ νήματος ἀπὸ μιᾶς θέσεως εἰς ἄλλην ἐντὸς τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου ἀστρονομικῆς διόπτρας μετρεῖται τῇ βοηθείᾳ τυμπάνου ἀνενδότως ἐστερεωμένου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς τοῦ κοχλίου καὶ φέροντος διαιρέσεις εἰς στροφὰς καὶ μέρη στροφῆς.

Τοιούτους μικρομετρικοὺς κοχλίας ἀπαντῶμεν εἰς τὸ μικρόμετρον τοῦ μεσημβρινοῦ κύκλου, τοῦ ἰσημερινοῦ τηλεσκοπίου, εἰς τὰς συσκευὰς μετρήσεως τῶν ἀστρογραφικῶν πλακῶν, τῶν φασματογραμμάτων, τῶν ἡλιογραμμάτων κ.τ.λ. Σ. Π.

— **μικρομετρικὸς** ***κοχλίας Πάλμερ***· βλ. λ. *κοχλίας* μικρομετρικός.

**μικρόμετρον** (τό). Ἐξάρτημα τῶν ἀστρονομικῶν τηλεσκοπίων, τὸ ὁποῖον προσαρμόζεται εἰς τὸ προσοφθάλμιον ἄκρον τοῦ σωλῆνος αὐτῶν καὶ τὸ ὁποῖον φέρει, πλὴν τῶν προσοφθαλμίων μεγεθυντικῶν φακῶν, καὶ σύστημα νημάτων, ὧν τινα μὲν εἶναι τεταμένα ἐπὶ ἀκινήτων πλαισίων, τινὰ δὲ ἐπὶ κινητῶν, μετατιθεμένων τῇ βοηθείᾳ εἰδικῶν μικρομετρικῶν κοχλιῶν. Ὁ συνήθης τύπος μικρομέτρου ἀποτελεῖται ἐκ κοχλιοφόρου σωλῆνος, δι' οὗ τὸ ὅλον μικρόμετρον προσαρμόζεται στερεῶς ἐπὶ τοῦ προσοφθαλμίου ἄκρου τοῦ σωλῆνος τοῦ τηλεσκοπίου, καὶ ἐκ πεπλατυσμένου κιβωτίου, φέροντος τὸν προσοφθάλμιον μεγεθυντικὸν φακὸν καὶ τοὺς μικρομετρικοὺς κοχλίας, οἱ ὁποῖοι κινοῦσι τὰ ἐντὸς τοῦ κιβωτίου κινητὰ πλαίσια, τὰ φέροντα τὰ νήματα. Τὸ κιβώτιον τοῦ μικρομέτρου δύναται νὰ στραφῇ περὶ τὸν ὀπτικὸν ἄξονα τοῦ προσοφθαλμίου φακοῦ καθ' οἱανδήποτε γωνίαν. Ἐπὶ τοῦ ἀκινήτου πλαισίου εἶναι τεταμένα δύο νήματα, διασταυρούμενα καθέτως πρὸς ἄλληλα καὶ συνιστάμενα ἐκ θύλακος ἀράχνης. Τὰ δύο ταῦτα νήματα ἀποτελοῦσι τὸ λεγόμενον ἀκίνητον *σταυρόνημα*. Ἐπὶ τοῦ δευτέρου πλαισίου ὑπάρχει τεταμένον, συνήθως ἕν, ἐνίοτε ὅμως καὶ δύο νήματα εἰς ἐλαχίστην ἀπ' ἀλλήλων ἀπόστασιν. Στρεφομένου τοῦ μικρομετρικοῦ κοχλίου ἐντὸς περικοχλίου ἐστερεωμένου ἐπὶ τοῦ νηματούχου πλαισίου, τὸ τελευταῖον τοῦτο μετατίθεται κατὰ βούλησιν κατά τινα διεύθυνσιν ἢ τὴν ἀντίθετον αὐτῇ, οὕτω δὲ τὸ ἐπ' αὐτοῦ τεταμένον ἁπλοῦν ἢ διπλοῦν νῆμα φέρεται εἰς διαφόρους ἀποστάσεις ἀπὸ τοῦ παραλλήλου αὐτῷ νήματος τοῦ ἀκινήτου σταυρογήματος. Τὰς ἀποστάσεις ταύτας μετροῦμεν εἰς στροφὰς καὶ μέρη στροφῆς διὰ τοῦ ἠριθμημένου τυμπάνου, ὅπερ εὑρίσκεται εἰς τὴν κεφαλὴν τοῦ μικρομετρικοῦ κοχλίου, ἀντιστοιχούσας εἰς ὡρισμένα κλάσματα μοίρας (π. χ. 1 δ.) πλανητῶν, τοῦ Ἡλίου, τῆς Σελήνης κλπ.

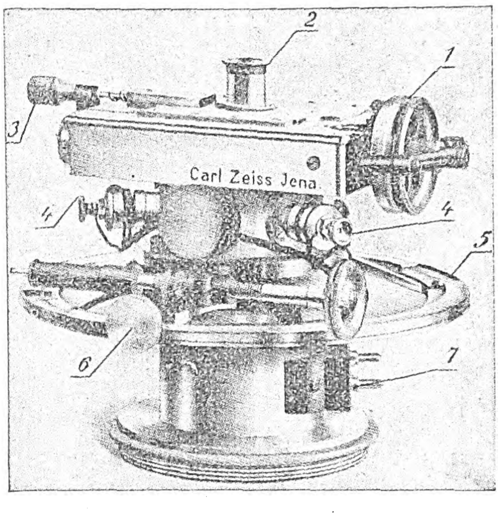


*Μικρόμετρον ἰσημερινοῦ τηλεσκοπίου.*

[1=μικρομετρικὸς κοχλίας, 2=προσοφθάλμιος μεγεθυντικὸς φακός, 3=κοχλίας μετακινήσεως τοῦ προσοφθαλμίου πρὸς διαδρομὴν τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου, 4=σύστημα ἠλεκτροφωτισμοῦ τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου ἢ τῶν νημάτων, 5=κύκλος θέσεως, 6=κοχλίας στερεώσεως ἢ βραδείας στροφῆς τοῦ κιβωτίου τῶν νημάτων, 7=κοχλιοφόρος σωλὴν πρὸς προσαρμογὴν τοῦ μικρομέτρου ἐπὶ τοῦ τηλεσκοπίου.]

*Ἀπρόσωπον μικρόμετρον*. Τοῦτο ἐπενοήθη πρὸς ἀπαλλαγὴν τῶν παρατηρήσεων ἐκ τῆς λεγομένης *προσωπικῆς ἐξισώσεως* τῶν παρατηρητῶν, ἤτοι τοῦ συστηματικοῦ σφάλματος, ὅπερ εἰσάγει ἡ μέθοδος ὁράσεως καὶ ἀκοῆς, δοθέντος ὅτι διάφοροι παρατηρηταί, ὁσονδήποτε καὶ ἂν εἶναι πεπειραμένοι, ἐκ φυσιολογικῶν λόγων προσδιορίζουσι τὰς διαβάσεις τῶν ἀστέρων διὰ τῶν νημάτων ὀρθῶν ἀναφορῶν ἄλλοι κατά τι ἐνωρίτερον καὶ ἄλλοι κατά τι βραδύτερον τοῦ δέοντος. Σ. Π.

— **μικρόμετρον** ***Φλεριαὶ*** (Fleuriais) *[Ναυτ.]*. Διάτοπτρον γωνιομετρικὸν ὄργανον, προσομοιάζον ἑξᾶντα, πλὴν τῆς διαφορᾶς ὅτι, προωρισμένον εἰς μετρήσεις γωνιῶν μικροῦ εὔρους, δὲν ἔχει ἴτυν οὐδὲ μοιρογνωμόνιον καὶ μικροσκόπιον. Ἐπιτυγχάνεται δὲ ἡ διὰ γυμνοῦ ὀφθαλμοῦ ἀνάγνωσις τοῦ εὔρους τῆς μετρηθείσης γωνίας διὰ τοῦ κοχλίου τοῦ κινοῦντος τὸν κανόνα τοῦ μεγάλου κατόπτρου, δεδομένου ὅτι στροφὴ τοῦ κοχλίου κατὰ ἓν πλῆρες βῆμά του στρέφει κατὰ 100′, ἐνῷ τὸ τύμπανον τοῦ κοχλίου, διῃρημένον εἰς 100 διαιρέσεις, παρέχει ἄμεσον τὴν ἀνάγνωσιν μετὰ προσεγγίσεως ἡμίσεος πρώτου λεπτοῦ τῆς μοίρας. Χρησιμοποιεῖται δὲ τὸ μικρόμετρον τοῦτο κατὰ τὰς στολοδρομίας, ὡς *διαστημόμετρον*, ἅτε παρέχον τὴν γωνίαν ἣν ὑποτείνει ὁ γνωστοῦ ὕψους ἱστὸς τοῦ πλοίου, ἀφ' οὗ ζητεῖται ἡ ἀπόστασις. Πρὸς ἀποφυγὴν μάλιστα ὑπολογισμοῦ ἢ χρήσεως πινάκων, προσαρμόζεται ἄνωθεν τῆς λαβῆς τοῦ ὀργάνου ὁ λογιστικὸς κύκλος τοῦ Γκυουγιού, ὅστις, φέρων ἀκτινωτὰς διαιρέσεις λογαριθμικοῦ λογισμοῦ, παρέχει ἀμέσως ἔναντι τοῦ ἀριθμοῦ τῶν πρώτων λεπτῶν τῆς μετρηθείσης γωνίας τὴν ζητουμένην ἀπόστασιν· ἀρκεῖ πρὸς τοῦτο νὰ ἔχῃ προηγουμένως στραφῇ ἡ ἐξωτερικὴ τοῦ κύκλου στεφάνη, ἕως ὅτου ὁ δείκτης της, εὑρισκόμενος ἐπὶ τοῦ ἀκινήτου κύκλου, ἀντικρύσῃ τὸν ἀριθμὸν τὸν ἐκφράζοντα τὸ ὕψος τοῦ γωνιομετρηθέντος ἀντικειμένου. Δύναται ὅμως νὰ χρησιμοποιηθῇ καὶ ὅταν δὲν εἶναι γνωστὸν τὸ ὕψος τοῦ ἀντικειμένου, οὗ ζητοῦμεν τὴν ἀπόστασιν· ἐν τοιαύτῃ ὅμως περιπτώσει πρέπει νὰ μετρηθῇ δι' αὐτοῦ ἡ γωνία, ἣν σχηματίζουν, εἰς τὸν ὀφθαλμὸν τοῦ παρατηρητοῦ, ἡ ἴσαλος τοῦ ἀφ' οὗ ζητοῦμεν τὴν ἀπόστασίν μας πλοίου πρὸς τὸν ὁρίζοντα τῆς θαλάσσης. Σ. Ε. Λ.

**Μικρομηλιὰ** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Ποταμῶν (Μπορόβου) τῆς ἐπαρχίας Νευροκοπίου (Ζυρνόβου) τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ὄστιστα*. Κάτ. (1928) 183. —2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀμυγδαλῶν (Γιαρδεμλῆ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενος πρότερον *Κάτω Μαμουτλῆ*. Κάτ. (1928) 45. Χ. Δ.

**μικρόμματος** (ὁ) (Micrommatus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἀραχνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀραχνωδῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *φυτοδρομιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰς ἀράχνας ἐπὶ διαφόρων φυτῶν ἐνδιαιτωμένας. Δ. Ν. Π.

**Μικρὸ Μοναστήρι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κουφαλίων τῆς ἐπαρχίας Γιαννιτσῶν (Γενιτσῶν) τοῦ νομοῦ Πέλλης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ζορμπᾶς*. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 607. Χ. Δ.

**μικρομούρης** (ὁ), θηλ. —*μούρα*, οὐδ. —*ικο*· ὁ ἔχων μικρὴ μούρη, μικρὸν πρόσωπον: «αὐτὸς ὁ μικρομούρης», «ἕνα μικρομούρικο παιδάκι».

**μικρόμυς** (ὁ) (Micromys) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων νευροπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μεγαλοπτεριδῶν*· περιλαμβάνον ἔντομα μικροῦ μεγέθους, μὲ σῶμα ἐπίμηκες, λεπτοφυές, κεραίας κυματοειδεῖς καὶ πόδας λεπτοτάτους. Γνωστὰ ἐλάχιστα εἴδη, ὧν τινα ἀπαντῶσιν ἐν Εὐρώπῃ. Δ. Ν. Π.

**μικρὸν** (τό)· τὸ χιλιοστὸν τοῦ χιλιοστομέτρου ὡς μονὰς μήκους.

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὸ *μικρόν*, παριστώμενον διὰ τοῦ συμβόλου μ, χρησιμεύει ὡς μονὰς μήκους διὰ τὴν μέτρησιν λίαν μικρῶν μηκῶν, γίνεται δ' εὐρυτάτη χρῆσις αὐτοῦ ἐν τῇ ὀπτικῇ διὰ τὴν ἔκφρασιν τοῦ μήκους τοῦ κύματος τῶν διαφόρων ἀκτινοβολιῶν. Κ. Π.

**Μικρόν**, ἢ ***Μικρὸ*** — *[Γεωγρ.]*. Πρῶτον συνθετικὸν πλείστων τοπωνυμίων ἐν Ἑλλάδι, τιθέμενον ἢ ἀπολύτως *(Μικρὸν Περιβολάκιον)*, ἢ πρὸς ἀντιδιαστολὴν πρὸς ἕτερον *Μέγα*—(*Μέγα Δέρειον, Μικρὸν Δέρειον*). Ἐκ τῶν τοπωνυμίων τούτων τὰ μὲν πρῶτα ζητητέα ἐνταῦθα, τὰ δὲ δεύτερα εἰς τὴν ἀλφαβητικὴν σειρὰν τοῦ δευτέρου αὐτῶν συνθετικοῦ.

**Μικρὸν** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καρπεροῦ (Δημηνίτσης) τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Γκομπλαράκι*. Κάτ. (1928) 34. Χ. Δ.

«**Μικρὸν** ***κατὰ στοιχεῖον***». Νομικὸν σύγγραμμα τῆς ΙΓ' πιθανώτατα ἑκατονταετηρίδος, ἀποτελοῦν ἐπεξεργασίαν τοῦ ἰσχύοντος τότε βυζαντινοῦ δικαίου, καλούμενον ἐπίσης «Νόμιμον κατὰ στοιχεῖον» ἢ «Synopsis minor». Περιέχει τὴν συγγραφὴν Μιχαὴλ τοῦ Ἀτταλειώτου μετὰ προσθηκῶν ἐξ ἄλλων πηγῶν καὶ ἰδίᾳ τῆς «Synopsis major» καὶ τῶν κρατούντων ἐθίμων, κατ' ἀλφαβητικὴν τάξιν ἐν εἴδει λεξικοῦ νομικῆς ὑπὸ τὴν σημερινὴν ἔννοιαν. Διαιρεῖται εἰς 24 μέρη, ὧν προτάσσεται τὸ ἀντίστοιχον γράμμα τοῦ ἑλληνικοῦ ἀλφαβήτου μετὰ τῆς λέξεως: ἀρχή. Ἕκαστον μέρος ἀποτελεῖται ἐκ πολλῶν, ἀλλὰ συνήθως βραχυτάτων, θεμάτων. Ὡς συγγραφεὺς φέρεται κατά τινας μὲν Ἰωσήφ τις Τενέδιος, κατ' ἄλλους δὲ Δοκίμιός τις. Τὸ κείμενον περιεσώθη εἰς διαφόρους κώδικας σῳζομένους εἰς εὐρωπαϊκὰς βιβλιοθήκας καὶ παρατίθεται ὑπὸ μακροὺς τίτλους, περιελήφθη δὲ ὑπὸ τοῦ Zachariae ὡς Α' μέρος τοῦ Β' τόμου ἐν «Jus Graecoromanum», ὅπου προτάσσεται εἰσαγωγὴ καὶ μνημονεύονται οἱ κώδικες, ἐν οἷς περιεσώθη τὸ κείμενον. Κ. Ε. Π.

**Μικρὸν Δάσος** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Δάσος* Μικρόν.

**Μικρονήσι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασίαι ἑλληνικῶν νησίων: —1) Ἐν τῷ φυσικῷ λιμένι τοῦ Ἁγίου Νικολάου τοῦ κόλπου Μεραμπέλλου τῆς Κρήτης (πλάτ. 35°12′ Β., μῆκ. 25°45′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536b: Candia Eastern portion καὶ 2850: Poro bay), χωριζόμενον βορείως τῆς νησῖδος τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου διὰ στενοτάτου πόρου. Ἔχει φάρον.—2) Τοῦ ἀνατολικοῦ τῶν κρητικῶν νήσων Χρυσαῖ (κοιν. Γαϊδουρόνησα), $7^{1}/_{2}$ μίλλ. νοτίως τῆς Ἱεραπέτρας (πλάτ. 34°52′20″ Β., μῆκ. 25°45′40″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536b: Candia Eastern portion).—3) Νοτίως τοῦ μέσου τῆς Δωδεκανησιακῆς νήσου Μαντόνας ἢ Καλολίμνου (πλάτ. 37°03′00″ Β., μῆκ. 27°06′35″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1899: Kalimno, Kappari and Kos channels). Λέγεται καὶ *Πλέρο*. —4) Ποτὲ νησίον τῆς Θήρας (πλάτ. 36°24′25″ Β., μῆκ. 25°24′50″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2043: Santorin island), ὅπερ ἔκειτο ἐγγύτατα τοῦ μέσου τῆς ΒΑ. πλευρᾶς τῆς νήσου Νέας Καϋμένης, μετὰ τῆς ὁποίας συνεχωνεύθη διὰ τῶν λαβῶν καὶ τῶν μύδρων τῆς ἐκρήξεως τοῦ Ὀκτωβρίου τοῦ 1925. Ὠνομάζετο καὶ *Μικρὴ Καϋμένη*. Σ. Ε. Λ.

**Μικρονησία** (Micronesie) *[Γεωγρ.]*. Διαίρεσις ἐθνογραφικὴ μᾶλλον παρὰ γεωγραφικὴ τῆς Ὠκεανίας, μεταξὺ τῆς 8° καὶ 25° βορ. πλάτους καὶ 130° Ἀν. μήκους. Περιλαμβάνει τὰ συμπλέγματα

Digitized by Google

τῶν νήσων Μαριάννας, Καρολίνας, Τζιλμπέρ, Μάρσαλ, Ραντὰκ καὶ Παλάος. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται κυρίως μὲ τὴν ἁλιείαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Τὰ συμπλέγματα τῶν νήσων τῶν ἀνήκουν εἰς τοὺς Ἄγγλους, Ἀμερικανοὺς καὶ Ἰάπωνας. Π. Λ.

**Μικρονήσιοι** *[Φυσικ. Ἀνθρωπολ.]*. Μεικτὸς φυλετικῶς τύπος τῆς Ὠκεανίας, συναντώμενος εἰς τὰς τοξοειδῶς περὶ τὴν Μελανησίαν καὶ δυτικῶς τῆς Πολυνησίας διεσπαρμένας μικροτέρας νήσους τῆς *Μικρονησίας* (Γκιλμπέρ, Μαρσάλ, Καρολίνας, Μαριάννας). Οἱ Μικρονήσιοι προῆλθον ἐν τοῖς νεωτέροις χρόνοις ἐκ τῆς συναντήσεως καὶ μείξεως κατακτητῶν ἐκ τῆς Πολυνησίας καὶ Μελανησίας, ὡς καὶ μαλαϊκῶν στοιχείων καὶ ξένων (μογγολικῶν). Ἑπομένως, ἐμφανίζουν σωματολογικῶς μεγάλην ποικιλίαν. Ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ γενικοῦ τύπου ἀνθρώπων (Μελανήσιοι), ἐμφανίζονται οἱ Μικρονήσιοι μὲ οὔλας, ἀλλὰ καὶ συνηθέστερον λείας (Πολυνήσιοι) πυκνὰς τρίχας, λίαν βαθὺ μέχρις ἀνοικτοῦ χρῶμα δέρματος, μᾶλλον δολιχοκεφαλίαν, ἀλλὰ καὶ βραχυκεφαλίαν, στενορρινίαν ἢ πλατυρρινίαν κλπ. Ἀνάστημα μικρότερον τῶν Πολυνησίων, περίπου 1,65 μ.

Ἐθνογραφικῶς, ἀποτελοῦν ὅλοι κοινὸν τύπον καὶ διακρίνονται διαφοροτρόπως ἀπὸ ἀπόψεως πολιτισμοῦ τῶν Πολυνησίων, μεθ' ὧν ἄλλωστε κυρίως συγχέονται. Βαίνουν δὲ καὶ οὗτοι, ὅπως ὅλοι οἱ λαοὶ τῆς Ὠκεανίας, ἐλαττούμενοι ἀριθμητικῶς. Ἤδη ἀπὸ τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἐξηλείφθησαν ἀπὸ τῶν Μαριάννων νήσων.

Ἐν Μικρονησίᾳ, ἔχουν εὑρεθῆ καὶ προϊστορικὰ ἴχνη, δηλαδὴ μεγαλιθικά, κολοσσιαῖα μνημεῖα, οἰκισμοὶ καὶ τάφοι, καθὼς καὶ *μενὶρ* (=στῆλαι), τῶν παλαιοτάτων κατοίκων, εἰς τὰ ὑψηλότερα μέρη τῶν νήσων. Ι. Γ. Κ.

**μικρόνησος** (ἡ)· μικρὰ νῆσος, νησίς.

**μικρόνοια** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναι τις μικρόνους, ἀνεπάρκεια, νωθρότης διανοητική, μικρός, περιωρισμένος νοῦς.

—*[Ἐγκυκλ.]* *Μικρόνοια* καλεῖται ὁ ἐλαφρότερος βαθμὸς τῆς συμφύτου διανοητικῆς ἐξασθενήσεως, ἧς διακρίνουσιν ἐπὶ πλέον ἑτέρους δύο βαθμούς, τὴν *μωρίαν* (μέσον βαθμὸν) καὶ τὴν *ἰδιωτίαν* (ἔσχατον βαθμόν). Τὰ ἄτομα ταῦτα ἐμφανίζουσι συνήθως διαφόρους ἀνωμαλίας διαπλάσεως (στίγματα), ὧν τὸ ὑπερμέγεθες τῶν γεννητικῶν ὀργάνων (διὰ τὸν ἄρρενα) εἶναι τὸ κύριον καὶ σταθερώτερον σημεῖον, καθυστεροῦν εἰς τὴν ἐμφάνισιν τοῦ λόγου καὶ βαδίσματος (οὐχὶ ὅμως πάντοτε), ἰδίᾳ δὲ κατὰ τὴν σχολικὴν περίοδον δυσχερέστατα μανθάνουν καὶ ὑπολείπονται τῶν ὁμηλίκων των. Μανθάνουσι τέχνας ἢ καί τινα γράμματα, ἀλλὰ ἀπὸ ἀπόψεως γενικῆς διανοητικῆς ἀναπτύξεως ὑπολείπονται λίαν. Δύνανται νὰ ζήσωσιν εἰς τὴν κοινωνίαν καὶ νὰ εὐδοκιμήσωσι εἰς ἐπαγγέλματα τεχνικὰ (μουσικὴν κτλ.). Ὑπόκεινται εἰς ψυχικὰς προσβολάς, αἵτινες οὐχὶ σπανίως ἐγκαταλείπουσι μείζονα διανοητικὴν ἐξασθένησιν. Ἠθικῶς, ὅταν δὲν διαπαιδαγωγηθῶσι καλῶς, ἐμφανίζουσι μεγάλας ἀνωμαλίας μέχρις ἠθικῆς παρανοίας. Ἡ ἔγκαιρος διάγνωσις καὶ ἡ ἐφαρμογὴ ἀναλόγου ἀγωγῆς μακρᾶς (ὅση τοὐλάχιστον καὶ ἡ τοῦ σχολείου) καθιστᾷ αὐτοὺς χρησίμους καὶ ὄχι ἐπικινδύνους διὰ τὴν κοινωνίαν. Διὰ τούτους ἐν Εὐρώπῃ ἔχουσι τὰ εἰδικὰ ἰατροπαιδαγωγικὰ ἰνστιτοῦτα, διευθυνόμενα παρ' εἰδικῶν ἰατρῶν παιδαγωγῶν. Τ. Α. Ζ.

**μικρόνους**, —ου (ὁ, ἡ), —ουν (τό)· ὁ ἔχων μικρὸν νοῦν, ὁ νωθρὸς τὴν διάνοιαν, ὁ ἀσθενὴς τὴν διανόησιν.

**Μικρὸν Περιβολάκιον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ Βελεστίνου (Φερῶν) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ταχταλισμάν*. Κάτ. (1928) 279. Χ.Δ.

**Μικρὸ(ν) Χωρίον** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται τρίωρον νοτιοδυτικῶς τοῦ Καρπενησίου, παρὰ τὸ Καρπενησιώτικο ποτάμι καὶ ὑπὸ τὸ ὄρος Χελιδῶνα καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 622. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ χωρίον *Ἐρκίστα*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 915.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 1 $^1/_2$ ὥραν πρὸς Ν. τῆς Δράμας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Κουτσοὺκ-κιοΐ*. Κάτ. (1928) 492. Χ. Δ.

**Μικροξύδιον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Δοχοῦ τῆς ἐπαρχίας Σαπῶν τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 179. Χ. Δ.

**μικροπαντρεμένος**, —η, —ο· δημοτ., ὁ πανδρευθείς, ὁ ἐλθὼν εἰς γάμον ἐν μικρᾷ ἡλικίᾳ.

**μικρόπεπλος** (ὁ) (Micropeplus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σταφυλινιδῶν*, περιλαμβάνον μικροὺς κανθάρους μὲ σῶμα ἐπίμηκες, ᾠοειδὲς καὶ ποικιλόχρωμον. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἐν Εὐρώπῃ ἀπαντῶντα. Δ. Ν. Π.

**μικροπερθίτης** (ὁ) (Mikroperthit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν, ἀποτελοῦν παραλλαγὴν τοῦ ὀρθοκλάστου, τὴν ὁποίαν χαρακτηρίζει σύμφυσις αὐτοῦ μὲ ἀλβίτην.

Τοιαύτη σύμφυσις ὀρθοκλάστου μὲ ἀλβίτην καλεῖται ἐν γένει *περθίτης*. Μικροπερθίτης ὀνομάζεται ὅταν ἡ ἀλβιτικὴ οὐσία διακρίνεται μόνον μικροσκοπικῶς. Γ. Β.

**μικροπόδαρος**, —η, —ο· δημοτ., ὁ ἔχων μικροὺς τοὺς πόδας.

**Μικρόπολις** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ὑπὸ τοὺς Α. πρόποδας τοῦ Μελενίκου ὄρους, πρὸς Δ. τῆς Πυρσοπόλεως. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν κατῴκεῖτο ὑπὸ Τούρκων καὶ Βουλγάρων, νῦν δὲ ὑπὸ προσφύγων, κατὰ τὸ πλεῖστον καλλιεργητῶν καπνοῦ. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Καρλίκοβα*. Κατ. (1928) 2.176. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὰ χωρία *Γραμμένη (Γραμέντζα)* καὶ *Παλαιὸν Καλαπότι*, ὡς καὶ τὴν μονὴν *Ἁγίου Δημητρίου*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 2.830. Χ. Δ.

**μικροπολιτική** (ἡ)· πολιτικὴ ἀσχολουμένη περὶ μικρὰ καὶ ἀνάξια λόγου: «ἡ μικροπολιτικὴ δὲν τοὺς ἀφήνει νὰ φροντίσουν διὰ κάτι γενικώτερον».

**μικροπολιτικός** (ὁ)· πολιτικὸς ἀσχολούμενος περὶ μικρὰ καὶ ἀνάξια λόγου.

**μικροπονηρία** (ἡ)· ἄλλως *κουτοπονηρία* (βλ. λ.).

**μικροπόνηρος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ πονηρὸς εἰς μικρὰ πράγματα, κουτοπόνηρος.

**Μικροποταμιά** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Πηλαλίστρας τῆς ἐπαρχίας Μεσσήνης τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μισυρλί*. Κατ. (1928) 117. Χ. Δ.

**μικρόπους**, —οδος (ὁ, ἡ), —ουν (τό)· ὁ ἔχων μικροὺς πόδας, μικροπόδαρος.

**μικρόπους** (ὁ) (Micropus)· *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων ἀκανθοπτερυγίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τελεοστέων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σκορπενιδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους ἰχθῦς μὲ σῶμα πλατύ, ὑψηλὸν καὶ πολυακανθωτόν. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μικρόπους ὁ πεποικιλμένος* (Micropus ornatus), ὅστις ἔχει μικρόν, σχετικῶς, μέγεθος, σῶμα βραχὺ καὶ ὑψηλόν, κεφαλὴν μεγάλην, ἀπολήγουσαν εἰς βραχὺ ῥύγχος, οὗ ἡ ἄνω σιαγὼν εἶναι κατὰ πολὺ βραχυτέρα τῆς κάτω. Οἱ ὀφθαλμοὶ εἶναι μικρότατοι καὶ κατὰ τὸ ἀνώτερον τμῆμα τῆς κεφαλῆς τοποθετημένοι. Τὸ μοναδικὸν ῥαχιαῖον πτερύγιον ἐπιμηκέστατον καὶ χαμηλόν. Τὰ στηθιαῖα καὶ κοιλιακὰ πτερύγια μικρὰ καὶ πολυακανθωτά, τὸ ἑδραῖον ἐπίμηκες, χαμηλὸν καὶ ἀκανθῶδες, καὶ τὸ οὐραῖον βραχὺ καὶ ἀπεστρογγυλωμένον. Ὁ χρωματισμὸς του εἶναι φαιομελανὸς μὲ κυανοκιτρίνας ἀποχρώσεις καὶ λευκοϊώδη ποικίλματα ἐπὶ τῶν πλευρῶν. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς ἀκτὰς τοῦ Εἰρηνικοῦ ὠκεανοῦ. Δ. Ν. Π.

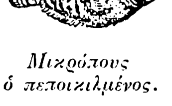

*Μικρόπους ὁ πεποικιλμένος.*

—**μικρόπους** *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον πόας ἰθαγενεῖς τῶν παρὰ τὴν Μεσόγειον χωρῶν καὶ τῆς βορείου Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**μικροπράγματα** (τά), καὶ *μικροπράματα*· δημοτ., μικρὰ πράγματα, μικραὶ ὑποθέσεις, ἀνάξιαι προσοχῆς: «ἐμάλωσαν γιὰ κάτι μικροπράγματα».

**μικροπρέπεια** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μικροπρεποῦς, εὐτέλεια χαρακτῆρος, ἀναξιοπρέπεια, ἰδίᾳ ἔλλειψις ἐλευθεριότητος.

**μικροπρεπής** (ὁ, ἡ), —ές (τό)· ὁ εὐτελοὺς χαρακτῆρος, ἀναξιοπρεπής, ἰδίᾳ γλίσχρος, ἀντίθ. *ἐλευθέριος*.—Ἐπίρρ. **μικροπρεπῶς**.

**μικροπρόσωπος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ ἔχων μικρὸν πρόσωπον, κοιν. *μικρομούρης*.

**μικρόπτερα** (τά) *[Ζωολ.]*. Οὕτως ἐκαλοῦντο ὑπὸ τῶν παλαιῶν φυσιοδιφῶν τὰ κολεόπτερα ἔντομα τῆς οἰκογενείας τῶν *σταφυλινιδῶν*. Δ. Ν. Π.

**μικρόπτερος** (ὁ) (Micropterus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων ἀκανθοπτερυγίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τελεοστέων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κενταρχιδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ, σχετικῶς, μεγέθους ἰχθῦς, μὲ σῶμα ἐπίμηκες, πεπλατυσμένον ἐκ τῶν πλευρῶν, ἀρκετὰ ὑψηλὸν καὶ ὑπὸ λεπτοτάτων λεπίων κεκαλυμμένον. Ἐκ τῶν δύο εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερον εἶναι ὁ *μικρόπτερος ὁ φαιὸς* (Micropterus cinereus), ὅστις ἔχει μέτριον μῆκος, σῶμα ἀρκετὰ ὑψηλόν, κεφαλὴν ἀρκετὰ εὐμεγέθη καὶ τριγωνικήν, ῥύγχος βραχὺ καὶ ὀξύ, ὀφθαλμοὺς μικρούς, πρῶτον ῥαχιαῖον πτερύγιον βραχὺ καὶ μικρὸν μετὰ 7 ἀκανθῶν, δεύτερον ῥαχιαῖον πτερύγιον βραχὺ καὶ ἐπίμηκες, στηθιαῖα μικρά, κοιλιακὰ μικρὰ καὶ λίαν πρόσω τοῦ σώματος τοποθετημένα, ἑδραῖον βραχὺ καὶ πλατύτατον καὶ οὐραῖον μέτριον καὶ πλατύ. Ὁ γενικὸς χρωματισμὸς εἶναι φαιὸς μετὰ ἀργυρολεύκων ἀποχρώσεων ἐπὶ τῶν πλευρῶν καὶ τῆς κοιλίας. Ἀπαντᾷ εἰς τὰ γλυκέα ὕδατα τῆς βορείου Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

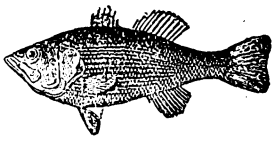

*Μικρόπτερος ὁ φαιός.*

**μικροπώγων** (ὁ) (Micropogon) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων ἀκανθοπτερυγίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τελεοστέων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σπαινιδῶν*, περιλαμβάνον δύο εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς πρὸς τὴν Ἀμερικὴν ἀκτὰς τοῦ Ἀτλαντικοῦ ὠκεανοῦ. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι *ὁ μικροπώγων ὁ ἀμερικανικὸς* (Micropogon americanus), ὅστις ἔχει ἀρκετὸν μῆκος, σῶμα ἐπίμηκες, μὲ ῥάχιν κυρτὴν καὶ κεκαλυμμένην ὑπὸ μετρίου μεγέθους κτενοειδῶν λεπίων. Φέρει δύο ῥαχιαῖα πτερύγια, ἐκ τῶν ὁποίων τὸ πρῶτον ὑψηλόν, τριγωνικὸν καὶ βραχὺ καὶ τὸ δεύτερον χαμηλὸν καὶ ἐπίμηκες. Τὰ στηθιαῖα πτερύγια εἶναι εὐθέα κατὰ τὸ ἄνω αὐτῶν μέρος καὶ ἀπεστρογγυλωμένα κατὰ τὸ κάτω. Τὰ κοιλιακὰ εἶναι μικρὰ καὶ εὑρίσκονται πολὺ πρὸς τὰ πρόσω τοῦ σώματος, τὸ ἑδραῖον εἶναι βραχὺ καὶ πλατὺ καὶ τὸ οὐραῖον βραχὺ καὶ ἀρκετὰ στενόν. Ὁ χρωματισμὸς εἶναι φαιὸς κατὰ τὴν ῥάχιν καὶ τὴν ἄνω ἡμίσειαν ἐπιφάνειαν τῶν πλευρῶν καὶ φαιοαργυρώδης κατὰ τὴν ὑπόλοιπον ἐπιφάνειαν τῶν πλευρῶν καὶ τὴν κοιλίαν. Δ. Ν. Π.

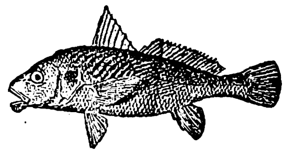

*Μικροπώγων ὁ ἀμερικανικός.*

**μικροπύλη** (ἡ) *[Βιολ.]*. Μικρὰ ὀπή, ἡ ὁποία σχηματίζεται ὑπὸ τῶν χιτώνων τῆς σπερματικῆς βλάστης (ἤτοι τοῦ φαρίου) τῶν φυτῶν καὶ διὰ τῆς ὁποίας εἰσέρχεται εἰς αὐτὴν ὁ γεννητικὸς πυρὴν τοῦ κόκκου τῆς γύρεως, ὅπως γονιμοποιήσῃ τὸ ἐντὸς αὐτῆς ᾠοκύτταρον.

Ὁμοίως καλοῦνται *μικροπύλαι* προδιαμεμορφωμένα ἀνοίγματα, τὰ ὁποῖα παρουσιάζονται εἰς ᾠὰ ἐνίων ζῴων μὲ στερεά πως περιβλήματα, διὰ τῶν ὁποίων εἰσέρχεται εἰς τὸ ὥριμον πρὸς γονιμοποίησιν ᾠὸν τὸ ἄρρεν σπερματοζῳάριον. Θ. ΒΛ.

**μικροπυρήν**, —ῆνος (ὁ) *[Βιολ.]*. Ὁ μικρότερος ἐκ τῶν δύο πυρήνων, τοὺς ὁποίους ἔχουν πολλοὶ κατώτεροι μονοκύτταροι ὀργανισμοί, ὡς λ. χ. ἐγχυματικὰ πρωτόζῳα. Ὁ μικροπυρὴν οὗτος παίζει σπουδαῖον ῥόλον κατὰ τὴν σύζευξιν δύο τοιούτων μικροργανισμῶν, ὁπότε οὗτοι πλησιάζουν πρὸς ἀλλήλους καὶ ἑνοῦνται διὰ τοῦ στοματικοῦ των ἀνοίγματος. Ὁ μεγαλύτερος τότε πυρήν, ὁ ὁποῖος καλεῖται *μακροπυρήν*, ἐξαφανίζεται, ἐνῷ ὁ μικροπυρὴν τέμνεται δύο φοράς, οὕτω δὲ σχηματίζονται τέσσαρες πυρῆνες. Ἐκ τούτων οἱ μὲν τρεῖς καταστρέφονται, ὁ δὲ τέταρτος μετατίθεται πρὸς τὸ στοματικὸν ἄνοιγμα καὶ τέμνεται ἐκ νέου. Ἐκ τῶν δύο ἤδη μερῶν αὐτοῦ τὸ μὲν ἓν παραμένει, τὸ δ' ἕτερον μεταβιβάζεται εἰς τὸ συνεζευγμένον ἄτομον. Τοιουτοτρόπως ἕκαστον ἄτομον ἔχει ἤδη ἓν τεμάχιον τοῦ ἰδίου πυρῆνος καὶ ἓν τοιοῦτον ἐκ τοῦ πυρῆνος τοῦ ἄλλου ἀτόμου. Τὰ δύο ταῦτα τεμάχια ἑνοῦνται εἰς ἕκαστον ἄτομον καὶ παράγουν ἕνα πυρῆνα, ὁ ὁποῖος διὰ νέων τομῶν σχηματίζει πάλιν ἕνα μακροπυρῆνα καὶ ἕνα μικροπυρῆνα. Τότε τὰ συνεζευγμένα ἄτομα ἀποχωρίζονται καὶ πολλαπλασιάζονται περαιτέρω διὰ τομῆς. Ποία ἡ σημασία τῶν τομῶν τούτων δὲν γνωρίζομεν ἀκριβῶς. Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

**μικροργανισμός** (ὁ), ἢ *μικροοργανισμός*. Εἶναι συνώνυμον τοῦ *μικροβίου* (βλ. λ.) καὶ σημαίνει τοὺς φυτικοὺς ἢ ζωϊκοὺς ὀργανισμούς, οἵτινες εἶναι ὁρατοὶ διὰ τοῦ μικροσκοπίου, δι' ὃ λέγονται καὶ *μικροσκοπικοὶ ὀργανισμοί*. Εἰς τούτους ὑπάγονται καὶ οἱ ἀόρατοι μέχρι σήμερον παθογόνοι μικροργανισμοί, οἵτινες ὀνομάζονται καὶ *διηθητοὶ ἰοί*. Τὸν ὅρον μικροργανισμοὶ μεταχειρίζονται πρὸ πάντων οἱ Γερμανοὶ ἀντὶ τοῦ ὅρου μικρόβια. Διαιροῦνται δὲ εἰς παθογόνους καὶ μὴ παθογόνους. Καὶ εἰς μὲν τοὺς παθογόνους κατατάσσουσι τοὺς μικροργανισμούς, οἵτινες εἶναι τὸ αἴτιον τῶν νόσων τῶν ἀνθρώπων, τῶν ζῴων καὶ τῶν φυτῶν, εἰς δὲ τοὺς μὴ παθογόνους πάντας τοὺς ἄλλους σαπροφυτικῶς ζῶντας μικροργανισμοὺς τοὺς μὴ ἐπιφέροντας νόσον. Ν. Α. Μ.

Digitized by Google

**μικρορρινία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Περιστολὴ ἢ στένωσις τῆς ρινὸς ἔγκαρσία, ἔγγονος ἀτελοῦς τῆς κάτω γνάθου ἀναπτύξεως, ἐξ ἧς ἐλαττοῦται ἢ μηδενίζεται τὸ μεταξὺ τῆς κάτω ρινικῆς κόγχης καὶ τοῦ ρινικοῦ διαφράγματος (μεσορίου) διάστημα. Ι. Π.

**μικρόρρυγχος** (ὁ) (Microrhychus) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τετραχείρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἡμιπιθήκων* τῆς οἰκογενείας τῶν *λεμουριδῶν*. Οἱ πίθηκοι οὗτοι φθάνουσιν εἰς μῆκος 0,40 μ. καὶ ἔχουσι σῶμα λεπτὸν καὶ κομψόν, κεφαλὴν ἀρκετὰ προτεταμένην, ὀφθαλμοὺς ἀρκούντως μεγάλους, οὐρὰν ἐπιμηκεστάτην, ὀπισθίους πόδας κατὰ πολὺ ἐπιμηκεστέρους τῶν προσθίων καὶ τρίχωμα ἄφθονον καὶ μεταξοειδές. Γνωστὰ ἐλάχιστα εἴδη, πάντα νυκτόβια, ἀπαντῶντα εἰς τὰ μεγάλα δάση της Μαδαγασκάρης. Δ. Ν. Π.

— **μικρόρρυγχος** *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον πόας ἰθαγενεῖς τῆς ἀνατολικῆς Ἀσίας καὶ τῶν νοτίων χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**Μικρορρωσία** *[Γεωγρ.]*. Οὕτω καλεῖται μέγα διαμέρισμα τῆς μεσημβρινῆς εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας, περιλαμβάνον τὸ κέντρον τῆς Οὐκρανίας, ἤτοι τὰ πρώην κυβερνεῖα τοῦ Κιέβου, Τσέρνιγκοβ, Πολτάβας καὶ Χάρκοβ. Οἱ κάτοικοι τῆς Μικρορρωσίας, εἶναι μῖγμα ἀνατολικῶν σλαβικῶν λαῶν, Οὐκρανῶν Ποδολίων, Βολυνίων, Ρουθήνων καὶ Ποντλαχίων, μεταξὺ δὲ αὐτῶν ὑπάρχουσι καὶ πολλοὶ Ἰσραηλῖται. Οἱ λαοὶ οὗτοι ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος ἦσαν γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα Ρῶσοι, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, συγγραφεῖς τινες ὠνόμασαν αὐτοὺς *Μικρορρώσους*, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τῶν *Μεγαλορρώσων* ἢ *Μοσχοβιτῶν*, κλάδου τῶν Σλάβων τῆς Ἀνατολῆς ἀναμιχθέντων μετ' ἄλλων λαῶν, σχηματισάντων τὴν μεγάλην ἡγεμονίαν τῆς Μόσχας καὶ ὀνομασθέντων *Ρώσων*. Οἱ Μικρορρῶσοι εἶναι βραχυκέφαλοι, ὑψηλοῦ μᾶλλον ἀναστήματος καὶ ἔχουν ὀφθαλμοὺς μαύρους. Καταγίνονται κυρίως εἰς την γεωργίαν καὶ κτηνοτροφίαν. Ἡ γλῶσσά των διαφέρει οὐσιωδῶς τῆς ρωσικῆς, εἶναι δὲ μᾶλλον εὐκολοπρόφερτος ταύτης. Ἡ μικρορρωσικὴ γλῶσσα ἐδημιούργησε πλουσίαν λαϊκὴν φιλολογίαν, περιλαμβάνουσαν πολυαρίθμους παροιμίας, μύθους, θρύλους καὶ ᾄσματα, ἐκ τῶν ὁποίων μεγίστης ἀξίας εἶναι τὰ ἐπικὰ καὶ ἱστορικὰ τοιαῦτα. Ἡ ἔγγραφος ἐξ ἄλλου φιλολογία ἄρχεται ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος καὶ ἰδίως ἀπὸ τῶν Χρονικῶν τοῦ Νέστορος. Αὕτη ἀνεστάλη ἕνεκα τῶν διαφόρων βαρβάρων εἰσβολῶν, ἀνεφάνη δ' αὖθις καὶ ἀπέδωκε πλεῖστα μεγάλης σημασίας ἱστορικά, θεολογικὰ καὶ φιλοσοφικὰ ἔργα, ἀπὸ τοῦ παρελθόντος δὲ αἰῶνος ἀνεφάνησαν πλεῖστοι λογοτέχναι καὶ ποιηταί. Βαθὺ ἐπίσης εἶναι τὸ αἴσθημα τοῦ λαοῦ πρὸς τὴν μουσικήν, τὰ λαϊκὰ δὲ αὐτοῦ τραγούδια ὑπῆξαν ἀκένωτος πηγή, ἐξ ἧς ἤντλησαν οἱ Ρῶσοι μουσουργοὶ τὰ συνθέματά των. Θ. Β.

**Μικρορρωσική** (ἡ)· βλ. λ. *ρωσικὴ* γλῶσσα.

**μικρορχιδία** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Μικρότης τῶν ὄρχεων συγγενὴς ἢ ἐπίκτητος (ἀτροφική). Αὕτη ἐπάγεται στείρωσιν. Ι. Π.

**μικρόρχις,** —*εως* (ὁ)· ὁ ἔχων μικροὺς ὄρχεις παρὰ φύσιν.

**μικρός,** —*ά*, —*όν*, *μικρός*, —*ή*, —*ό* συνήθ. ἐπὶ ποσοῦ συνεχοῦς, ὁ μὴ ἐκτεταμένος, ὁ περιωρισμένων διαστάσεων, ἄλλως *βραχύς*, ἀντίθ. *μέγας*: «μικρὸς κύκλος», «μικρὰ ἀπόστασις», «μικρὸν ἀνάστημα» || «μικρὰ γράμματα» τὰ μικρογραμμάτου ρυθμοῦ, ἀντίθ. *κεφαλαῖα* || ἐπὶ ποσοῦ διακεκριμένου: «μικρὸς ἀριθμὸς ἀνθρώπων», «μικρὰ κεφάλαια» || καθόλου ἀσήμαντος: «ἔχω μικρὰς ὑποχρεώσεις, — μικρὰ χρέη, — μικρὰ εἰσοδήματα», «ἔχομε ἕνα μικρὸ λογαριασμό» || μικρὸς τὴν ἡλικίαν: «παντρεύθηκε μικρός», «εἶναι τρία χρόνια μικρότερός μου» || μεταφ. «μικρὸς ἄνθρωπος» ἀναξιοπρεπής, χυδαῖος || ***μικρὸς*** (ὁ)· ὡς οὐσ., ὁ μικρὸς τὴν ἡλικίαν: «χώρια οἱ μικροί, χώρια οἱ μεγάλοι», «μικρέ μου, ἔλα νὰ σοῦ πῶ» || *μικρὸ* (τό)· τὸ νήπιον καὶ ἐν γένει τὸ νεογνόν: «ἀρρώστησε τὸ μικρό μας», «ἡ κατσίκα μας ἔχει μικρά» || φρ. «μικρὸν κατὰ μικρὸν» σιγὰ-σιγά, ἄλλως «ὀλίγον κατ' ὀλίγον» || «μετὰ μικρόν», μετ' ὀλίγον || «πρὸ μικροῦ» πρὸ ὀλίγου.—Παραθετ. *μικρότερος*, *μικρότατος*, ἀρχ. *ἐλάττων* ἢ *ἥττων*—*ἐλάχιστος*.

— **«Μικρά»**. Ἑβδομαδιαία πολιτικὴ καὶ εἰδησεογραφικὴ ἐφημερὶς ἐν Λαρίσῃ, ἱδρυθεῖσα τῷ 1898 ὑπὸ Θρασ. Μακρῆ καὶ ἐκδοθεῖσα μέχρι τοῦ 1914. Π. Ν. Π.

— **Μικρὰ** *εἴσοδος* *[Λειτουργ.]*· βλ. λ. *εἴσοδος*.

— **Μικρὰ** *Συναπτὴ* *[Λειτουργ.]*· βλ. λ. *Συναπτή*.

**μικροσαύρια** (τὰ) (Microsauria Dawson) *[Παλαιοζωολ.]*. Ὑποτάξις ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *στεγοκεφάλων ἀμφιβίων*, συνώνυμος τῶν *λεπτοσπονδύλων* (βλ. λ.). Γ. Κ. Γ.

**Μικρὸς Βόλγας** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Κάμα*.

**μικροσεισμογράφος** (ὁ). Σεισμογράφος λίαν εὐαίσθητος, χρησιμεύων εἰς τὸ νὰ ἀναγράφῃ τοὺς μικροσεισμοὺς (βλ. *σεισμογράφος*). Γ. Κ. Γ.

**μικροσεισμὸς** (ὁ). Σεισμὸς λίαν ἀσθενοῦς ἐντάσεως, σημειούμενος μόνον ὑπὸ εὐαισθήτων σεισμογράφων (μικροσεισμογράφων) καὶ μὴ γινόμενος ἀντιληπτὸς ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων. Ἀποτελεῖ τὴν κατωτάτην ὑποδιαίρεσιν τῆς δεκαβάθμου κλίμακος τῆς ἐντάσεως τῶν *σεισμῶν* (βλ. λ.). Γ. Κ. Γ.

**μικροσερίς** (ἡ) (Microseris) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον πόας ἐτησίας ἢ διετεῖς, ἰθαγενεῖς τῶν βορείων χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν 12 εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ἡ *μικροσερὶς ἡ φορστέριος* (Microseris forsterii), ἰθαγενὴς πόα τῆς Αὐστραλίας, ἧς ἡ ρίζα εἶναι ἐδώδιμος. Δ. Ν. Π.

**μικροσιδίνη** (ἡ) (Microcidine) *[Φαρμ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ βῆτα-ναφθολικὸν νάτριον:

$$C_{10}\ H_7\ O\ Na.$$

Λαμβάνεται διὰ προσεκτικῆς ἐξατμίσεως 15 μ. β-ναφθόλης καὶ 4 μ. καθαροῦ καυστικοῦ νάτρου. Κόνις λευκή, διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ, ταχέως χρωματιζομένη διὰ τῆς ἐπιδράσεως τοῦ ἀέρος καὶ φωτός. Ἡ μικροσιδίνη ἀνεγράφη εἰς διαλύματα ὡς χειρουργικὸν ἀντισηπτικὸν καὶ εἰς ὠτορρινολαρυγγολογικὰς παθήσεις. Κ. Γ. Μ.

**μικρόσιτος** (ὁ) (Micrositus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον μικροὺς κανθάρους μὲ σῶμα ᾠοειδές, ἔλυτρα μικρὰ καὶ διάστικτα καὶ χρῶμα μελανόν. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς ἀγόνους ἐκτάσεις τῆς Εὐρώπης καὶ ἐνδιαιτώμενα ὑπὸ τὰς πέτρας. Δ. Ν. Π.

**μικροσκελής** (ὁ, ἡ),—*ές* (τό)· ὁ ἔχων μικρὰ σκέλη.

**μικροσκοπία** (ἡ), ἡ ***μικροσκοπικὴ τέχνη***, ἡ ***μικροβιολογικὴ τέχνη***. Καλεῖται ἡ ἐμπειρία περὶ τὸν χειρισμὸν τῶν μεθόδων καὶ τῶν μέσων, ὧν γίνεται χρῆσις εἰς τὴν μικροβιολογίαν καὶ τὴν καθόλου μικροσκοπικὴν ἐξέτασιν ὀργανικοῦ ἢ ἀνοργάνου τινὸς ἀντικειμένου. Εἰς ταύτην περιλαμβάνεται ἡ χρῆσις τοῦ μικροσκοπίου καὶ τῶν ἐξαρτημάτων αὐτοῦ (σταυροειδὴς τράπεζα, θερμαντὴ τράπεζα, ἰχνογραφικὰ μηχανήματα, μικρόμετρα, μικροφωτογραφικὰ μηχανήματα κ.τ.λ.), ἡ χρῆσις τοῦ ὑπερμικροσκοπίου καὶ τέλος ἡ γνῶσις τῶν διαφόρων μεθόδων καὶ τρόπων τῆς ἐξετάσεως διὰ τῶν ὀργάνων τούτων. Ἵνα ἐξετάσωμεν ἀντικείμενόν τι διὰ τοῦ μικροσκοπίου ἢ τοῦ ὑπερμικροσκοπίου, πρέπει πρωτίστως νὰ γνωρίζωμεν τὸν τρόπον τῆς προπαρασκευῆς αὐτοῦ. Οὗτος διαφέρει ἀναλόγως τῆς καταστάσεως, εἰς ἣν θέλομεν νὰ τὸ ἐξετάσωμεν, ὡς καὶ τῆς μεγεθύνσεως, ὑφ' ἣν θέλομεν νὰ τὸ παρατηρήσωμεν. Αἱ καταστάσεις δὲ αὗται εἶναι τρεῖς, νωπή, ξηρὰ καὶ εἰς λεπτὰς τομάς. Ἡ δὲ προετοιμασία τοῦ πρὸς παρατήρησιν ἀντικειμένου ὀνομάζεται *μικροσκοπικὸν παρασκεύασμα*. Ἵνα τὸ μικροσκοπικὸν παρασκεύασμα εἶναι ὁρατὸν διὰ τοῦ μικροσκοπίου, πρέπει νὰ πληροῖ τοὺς ἑξῆς ὅρους: νὰ εἶναι λεπτὸν καὶ διαφανὲς καὶ νὰ ἐπιτρέπῃ τὴν δίοδον τῶν φωτεινῶν ἀκτίνων. Πρὸς τοῦτο τίθεται τὸ πρὸς παρατήρησιν ἀντικείμενον ἐπὶ ὑαλίνης πλακὸς (ἀντικειμενοφόρου) καὶ καλύπτεται δι' ἑτέρας τοιαύτης λεπτοτέρας (καλυπτρίδος). Ἐξετάζεται δὲ εἴτε εἰς νωπὴν κατάστασιν, εἴτε εἰς ξηράν, εἴτε εἰς μικροτομάς.

Ἡ ἐν νωπῇ καταστάσει ἐξέτασις γίνεται μετὰ ἢ ἄνευ χρώσεως, εἰς ἀπῃωρημένην σταγόνα, ἢ εἰς λεπτὴν στιβάδα ἄνευ ἀποξηράνσεως. Ἡ ἐν ξηρᾷ καταστάσει ἐξέτασις γίνεται ἐπίσης μετὰ ἢ ἄνευ προηγουμένης χρώσεως. Ἡ μετὰ χρῶσιν ἐξέτασις, ἣν εἰσήγαγεν ὁ Κὼχ ἀπὸ τοῦ 1877, εἶναι ἡ συνηθεστέρα, παρέσχε δὲ μεγάλας ἐκδουλεύσεις εἰς τὴν μικροβιολογίαν, καθότι διὰ ταύτης ἠδυνήθησαν νὰ ἀνακαλύψωσι τὰ διάφορα μικρόβια καὶ νὰ παρατηρήσωσι τοὺς μορφολογικοὺς αὐτῶν χαρακτῆρας (βλεφαρίδας, ἔλυτρα, σπόρους). Τέλος ἑτέρα κατάστασις, εἰς ἣν δυνάμεθα νὰ παρατηρήσωμεν ἀντικείμενόν τι (ἱστοί, τεμάχια ὀργάνων κ.τ.λ.), εἶναι αἱ λεπταὶ τομαί, τὰς ὁποίας ἐπιτυγχάνομεν διὰ τοῦ μικροτόμου. Εἰς τὴν μικροβιολογικὴν τέχνην ὑπάγεται καὶ ἡ παρασκευὴ θρεπτικῶν ὑποστρωμάτων πρὸς ἐμφύτευσιν καὶ πολλαπλασιασμὸν τῶν μικροβίων, ἡ χρῆσις τῶν ἐπωαστικῶν κλιβάνων, ἡ ἀπομόνωσις καὶ διατήρησις τῶν καλλιεργημάτων τῶν μικροβίων, ὁ ἐμβολιασμὸς εἰς πειραματόζῳα, ἡ χρῆσις τῶν ἠθμῶν, ἡ παραγωγὴ τοξινῶν, ὀρῶν καὶ ἐμβολίων κ.τ.λ. Ν. Α. Μ.

**μικροσκοπικός,** —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸ μικροσκόπιον, ὁ τοῦ μικροσκοπίου: «μικροσκοπικαὶ μελέται» || «μικροσκοπικαὶ παρατηρήσεις» αἱ γινόμεναι διὰ τοῦ μικροσκοπίου || ὁ πολὺ μικρός, ὁ διὰ μικροσκοπίου ὁρατός: «ζωΰφια μικροσκοπικά».—Ἐπίρρ. ***μικροσκοπικῶς***.

—*μικροσκοπικὴ τέχνη*· βλ. λ. *μικροσκοπία*.

**μικροσκόπιον** (τό). Συσκευὴ ἀνήκουσα εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ὀπτικῶν ὀργάνων καὶ χρησιμεύουσα διὰ τὴν παρατήρησιν ἀντικειμένων λίαν μικρῶν, μὴ ὁρατῶν διὰ γυμνοῦ ὀφθαλμοῦ. Διακρίνομεν δὲ τὸ ἁπλοῦν *μικροσκόπιον* καὶ τὸ *σύνθετον μικροσκόπιον*, ὅπερ ἀποτελεῖ καὶ τὸ κυρίως μικροσκόπιον.

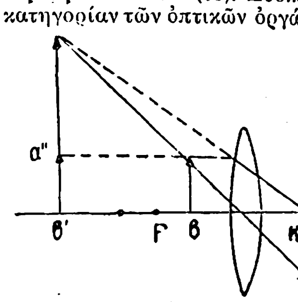


Σχ. 1. *Σχηματισμὸς εἰδώλου εἰς ἁπλοῦν μικροσκόπιον.*

Τὸ ἁπλοῦν μικροσκόπιον πραγματοποιεῖται δι' ἑνὸς μόνου συγκλίνοντος φακοῦ μικρᾶς ἑστιακῆς ἀποστάσεως. Τὸ πρὸς παρατήρησιν ἀντικείμενον τίθεται μεταξὺ τοῦ φακοῦ καὶ τῆς κυρίας ἑστίας αὐτοῦ, οὕτω δὲ ὁ φακὸς παρέχει εἴδωλον φανταστικὸν ἢ κατ' ἔμφασιν τοῦ ἀντικειμένου, μεγαλύτερον τοῦ πραγματικοῦ, ὅπερ παρατηροῦμεν τοποθετοῦντες τὸν ὀφθαλμὸν εἰς Κ, ὡς δεικνύεται ἐν σχ. 1. *Μεγέθυνσιν* διὰ τοῦ ἁπλοῦ μικροσκοπίου ὀνομάζομεν τὸν λόγον τῆς γωνίας, ὑπὸ τὴν ὁποίαν βλέπομεν τὸ εἴδωλον α'β', πρὸς τὴν γωνίαν, ὑπὸ τὴν ὁποίαν βλέπομεν τὸ ἀντικείμενον αβ, εὑρισκομένων ἀμφοτέρων εἰς τὴν ἐλαχίστην ἀπόστασιν τῆς εὐκρινοῦς ὁράσεως. Οὕτω, ἐνῷ διὰ τοῦ φακοῦ θὰ ἐβλέπομεν τὸ ἀντικείμενον εὐκρινῶς ἐὰν ἐτίθετο εἰς τὴν ἀπόστασιν Κβ' ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ, εὑρισκομένου εἰς Κ, ὅπου Κβ= 25cm εἶναι ἡ ἐλαχίστη ἀπόστασις τῆς εὐκρινοῦς ὁράσεως, τὸ ἀντικείμενον θὰ ἐβλέπομεν ὑπὸ τὴν γωνίαν α''Κβ'. Τῇ βοηθείᾳ τοῦ φακοῦ βλέπομεν τὸ ἀντικείμενον ὑπὸ τὴν γωνίαν α'Κβ>α''Κβ. Δυνάμεθα εὐκόλως νὰ ὑπολογίσωμεν τὴν μεγέθυνσιν, ἐὰν ταυτίσωμεν τὴν οβ' πρὸς τὴν Κβ', τοῦθ' ὅπερ συμβαίνει πάντοτε ἐν τῇ πράξει, δεδομένου ὅτι ὁ ὀφθαλμὸς τίθεται λίαν ἐγγὺς τοῦ φακοῦ κατὰ τὴν ἀκόλουθον τρόπον.

Συμφώνως πρὸς τὸν ἀνωτέρω τεθέντα ὁρισμὸν διὰ τὴν μεγέθυνσιν, ἐὰν καλέσωμεν ταύτην διὰ Μ θὰ ἔχωμεν:

$$M = \frac{\alpha'o\beta'}{\alpha''o\beta'} = \frac{\alpha'\beta'}{\alpha\beta} = \frac{o\beta'}{o\beta}.$$

Εἶναι ὅμως $o\beta' = 25$ cm$=\Delta$ καὶ $o\beta = \pi$. Ἐξ ἄλλου ἐκ τοῦ τύπου τῶν φακῶν προκύπτει $1/o\beta - 1/o\beta' = 1/\varphi$ καὶ ἑπομένως $1/\pi - 1/\Delta = 1/\varphi$, ἤτοι:

$$M = \frac{\Delta}{\pi} - 1 + \frac{\Delta}{\varphi}$$

Οὕτω, ἐὰν ὁ φακὸς ἁπλοῦ μικροσκοπίου ἔχῃ ἑστιακὴν ἀπόστασιν 5 cm, ἡ μεγέθυνσις αὕτη θὰ εἶναι Μ = 6. Συνήθως προκειμένου περὶ τῶν ἁπλῶν μικροσκοπίων ἡ ἑστιακὴ ἀπόστασις τοῦ φακοῦ φ εἶναι λίαν μικρὰ ὡς πρὸς τὸ Δ, ὥστε αὕτη νὰ παραλείπεται ἄνευ αἰσθητοῦ σφάλματος, ὅτε ἔχομεν $M=\Delta/\varphi$ κατὰ μεγάλην προσέγγισιν. Ἐκ τοῦ τύπου τῆς μεγεθύνσεως ἁπλοῦ μικροσκοπίου $M=\Delta/\varphi$ προκύπτει ὅτι ἡ μεγέθυνσις αὐτοῦ δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ὑπερβῇ ὡρισμένον ὅριον, καθ' ὅσον, ὅπως ἐπιτύχωμεν μεγάλην μεγέθυνσιν, πρέπει ἡ ἑστιακὴ ἀπόστασις τοῦ φακοῦ νὰ κατασταθῇ πολὺ μικρά, ὅτε καὶ ἡ ἀκτὶς τῶν ἐπιφανειῶν τοῦ φακοῦ ὡς καὶ ἡ ἀπόστασις

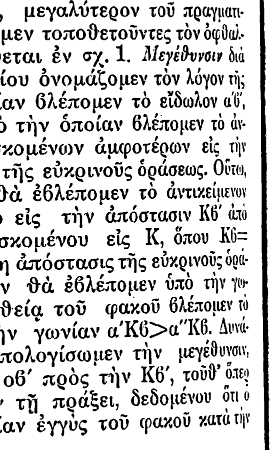


Σχ. 2. *Γενικὴ ὄψις ἁπλοῦ μικροσκοπίου.*

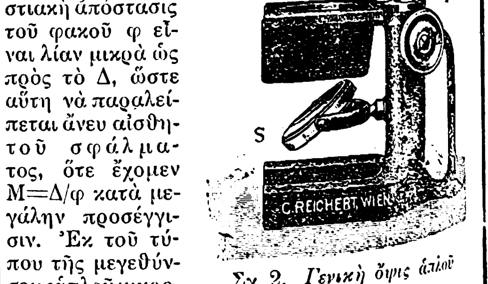


Σχ. 3. *Σχηματισμὸς εἰδώλου εἰς σύνθετον μικροσκόπιον.*

τοῦ ἀντικειμένου ἀπὸ τοῦ φακοῦ δέον νὰ κατασταθῶσι πολὺ μικραί, τοῦθ' ὅπερ δὲν ἐπιτρέπει τὴν πρακτικὴν πραγματοποίησιν ἁπλῶν μικροσκοπίων μὲ μεγάλην μεγέθυνσιν. Πρὸς ἐπιτυχίαν μεγάλων μεγεθύνσεων χρησιμοποιοῦμεν τὸ σύνθετον μικροσκόπιον. Τοῦτο ἀποτελεῖται ἐκ συστήματος δύο φακῶν $\Phi_1$, $\Phi_2$ (σχ. 3), εὑρισκομένων εἰς ἀπόστασιν

Digitized by Google

ἀπ᾽ ἀλλήλων, ὧν ὁ μὲν πρῶτος, ὅστις καλεῖται *ἀντικειμενικός*, παρέχει μεγεθυσμένον καὶ πραγματικὸν τοῦ ἀντικειμένου εἴδωλον, ὅπερ εἶναι ἀνεστραμμένον καὶ τὸ ὁποῖον παρατηροῦμεν διὰ τοῦ ἑτέρου τῶν φακῶν, ὅστις καλεῖται *προσοφθάλμιος*. Ὅ τε ἀντικειμενικὸς καὶ προσοφθάλμιος προσαρ-

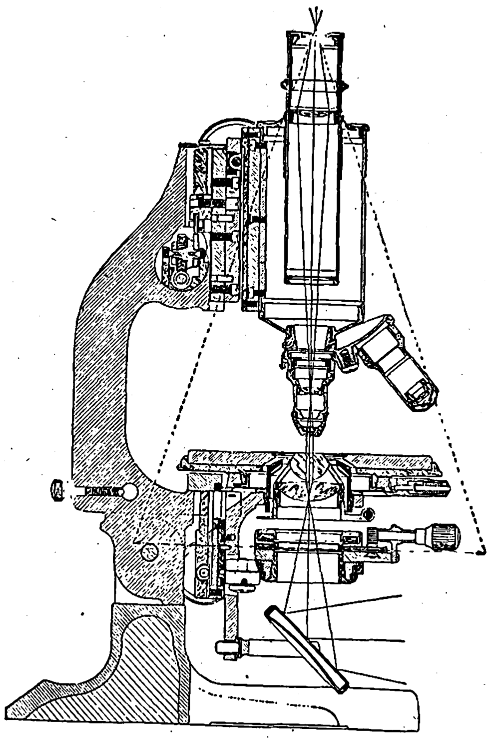

Σχ. 4. *Τομὴ συνθέτου μικροσκοπίου, δεικνύουσα λεπτομερῶς τὴν διάταξιν τῶν διαφόρων μερῶν αὐτοῦ, ὡς καὶ τὴν πορείαν τῶν ἀκτίνων.*

μόζονται κατὰ τ᾽ ἄκρα σωλῆνος, ὅστις στηρίζεται κατακορύφως ἐπὶ καταλλήλου βάσεως. Τὸ μικροσκόπιον εἶναι ἐφωδιασμένον διὰ τραπεζίου, ἐφ᾽ οὗ τοποθετεῖται τὸ πρὸς παρατήρησιν ἀντικείμενον, ὅπερ φωτίζεται ἐκ τῶν κάτωθεν διὰ καταλλήλου συστήματος φωτισμοῦ, δι᾽ ἡλιακοῦ ἢ τεχνικοῦ φω-

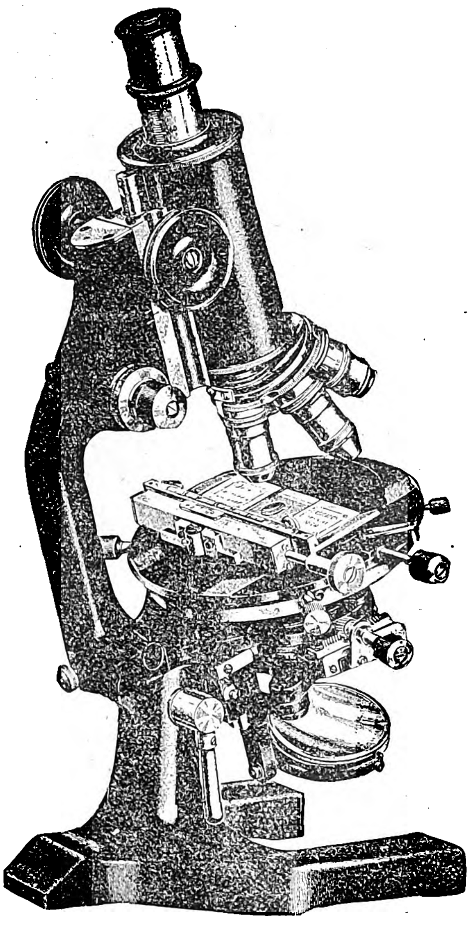

Σχ. 5. *Γενικὴ ὄψις μικροσκοπίου μετὰ τριῶν διαφόρων μεγεθύνσεων ἀντικειμενικῶν φακῶν.*

τός. Τὸ πρὸς παρατήρησιν ἀντικείμενον τοποθετεῖται ἐπὶ λεπτῆς πλακὸς ὑαλίνης, καλουμένης *ἀντικειμενοφόρου*, καὶ καλύπτεται ὑπὸ ἑτέρας λεπτοτέρας ὑαλίνης πλακὸς καλουμένης *καλυπτρίδος*. Ἡ ὡς ἄνω σύνθεσις τῶν μικροσκοπίων ἐπενοήθη περὶ τὴν ΙΖ′ ἑκατονταετηρίδα, δὲν εἶναι δὲ ἐπακριβῶς γνωστὸν τίς ὑπῆρξεν ὁ ἐφευρέτης αὐτῆς.

Πρὸς ἐπιτυχίαν διαφόρων μεγεθύνσεων τὸ μικροσκόπιον εἶναι ἐφωδιασμένον διὰ διαφόρων προσοφθαλμίων καὶ ἀντικειμενικῶν φακῶν, διὰ συνδυασμοῦ τῶν ὁποίων ἐπιτυγχάνονται αὗται. Ὅ τε προσοφθάλμιος καὶ ὁ ἀντικειμενικὸς φακὸς δὲν εἶναι ἁπλοῖ φακοί, ἀλλὰ συστήματα φακῶν, πρὸς ἄρσιν τῶν ἐλαττωμάτων ἐκτροπῆς ἐκ σφαιρικότητος καὶ τοῦ χρωματισμοῦ τῶν εἰδώλων. Οὕτω προσοφθαλμίων φακῶν χρησιμοποιοῦνται δύο τύποι, ὁ τοῦ Huygens καὶ ὁ τοῦ Ramsden. Ὡς ἀντικειμενικοὶ δὲ φακοὶ χρησιμοποιοῦνται ἐπίσης διάφοροι τύποι ἀποχρωματικῶν καὶ ἀχρωματικῶν φακῶν.

Ἡ μεγέθυνσις τοῦ συνθέτου μικροσκοπίου, ἥτις ὁρίζεται ὡς ὁ λόγος τοῦ μεγέθους τοῦ εἰδώλου πρὸς τὸ μέγεθος τοῦ ἀντικειμένου, παρέχεται διὰ τῆς σχέσεως:

$$M = \frac{\Lambda}{\varphi_1} \cdot \frac{\Delta}{\varphi_2}$$

ἔνθα $\varphi_1$ ἡ ἑστιακὴ ἀπόστασις τοῦ ἀντικειμενικοῦ (λίαν μικρά, καθ᾽ ὅτι οὗτος εἶναι λίαν συγκλίνων φακός), $\varphi_2$ ἡ ἑστιακὴ ἀπόστασις τοῦ προσοφθαλμίου φακοῦ, Λ ἡ ἀπόστασις προσοφθαλμίου καὶ ἀντικειμενικοῦ φακοῦ καὶ $\Delta = 25$ cm ἡ ἐλαχίστη ἀπόστασις τῆς εὐκρινοῦς ὁράσεως.

Πρακτικῶς εὑρίσκομεν τὴν μεγέθυνσιν μικροσκοπίου ὡς ἑξῆς: Παρατηροῦμεν διὰ τοῦ μικροσκοπίου διαφανῆ μικρομετρικὴν κλίμακα καὶ πλησίον αὐτοῦ τοποθετοῦμεν ἑτέραν κλίμακα μετρικὴν εἰς mm. Ταυτοχρόνως παρατηροῦμεν διὰ τοῦ ἑνὸς μὲν ὀφθαλμοῦ ἀπ᾽ εὐθείας τὴν ἐξωτερικὴν κλίμακα, διὰ τοῦ ἑτέρου δὲ μέσῳ τοῦ μικροσκοπίου τὴν μικρομετρικὴν κλίμακα μεγεθυσμένην καὶ προσπαθοῦμεν νὰ ἐξακριβώσωμεν πόσας διαιρέσεις τῆς μεγεθυνθείσης μικρομετρικῆς κλίμακος ἀντιστοιχοῦσιν εἰς ὡρισμένον ἀριθμὸν διαιρέσεων τῆς ἐξωτερικῆς χιλιοστομετρικῆς κλίμακος. Ἐὰν π. χ. ν διαιρέσεις τῆς μικρομετρικῆς κλίμακος, ὧν ἑκάστη ἰσοδυναμεῖ πρὸς 0,01 mm, καλύπτουσι τὰς διαιρέσεις τῆς ἐξωτερικῆς κλίμακος, εἶναι φανερὸν ὅτι θὰ ἰσχύῃ ἡ σχέσις, καθ᾽ ἣν αἱ ν διαιρέσεις τῆς μικρομετρικῆς κλίμακος πολλαπλασιασθεῖσαι ἐπὶ τὴν μεγέθυνσιν τοῦ μικροσκοπίου M καλύπτουσι k διαιρέσεις τῆς ἐξωτερικῆς κλίμακος, ἤτοι:

$$\frac{\nu}{100} \cdot M = k \quad \text{καὶ} \quad M = \frac{k.100}{\nu}$$

(ὁ συντελεστὴς 100 δικαιολογεῖται λόγῳ τοῦ ὅτι ἡ μικρομετρικὴ κλῖμαξ εἶναι διῃρημένη εἰς 0,01 mm). Ἡ ὡς ἄνω μέτρησις διεξάγεται εὐχερέστατα διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως εἰδικῶν συσκευῶν, καλουμένων *φωτεινῶν θαλάμων*. Καὶ εἰς τὴν περίπτωσιν τοῦ συνθέτου μικροσκοπίου ἡ μεγέθυνσις αὐτοῦ δὲν δύναται νὰ ὑπερβῇ ὡρισμένον ὅριον. Δεικνύεται δὲ ὅτι ὑπὸ τὰς εὐνοϊκωτέρας περιστάσεις δὲν δυνάμεθα νὰ παρατηρήσωμεν ἀντικείμενα, ὧν τὸ μέγεθος εἶναι μικρότερον ὡρισμένου ὁρίου (περίπου 0,003 mm) καὶ ἐπομένως εἶναι ἄσκοπον ν᾽ αὐξάνωμεν τὴν μεγέθυνσιν μικροσκοπίου πέραν τῆς τιμῆς 1700.

*Διαχωριστικὴ δύναμις* μικροσκοπίου καλεῖται ἡ ἐλαχίστη ἀπόστασις, εἰς ἣν δέον νὰ εὑρίσκωνται δύο σημεῖα, ἵνα, παρατηρούμενα διὰ τοῦ μικροσκοπίου, φαίνωνται διακεκριμένα ἀλλήλων. Περὶ τῆς διαχωριστικῆς ἱκανότητος μικροσκοπίου κρίνομεν, ἐὰν παρατηρήσωμεν διὰ τούτου λεπτότατα μικροσκοπικὰ παρασκευάσματα (test object), ὡς π. χ. παρασκευάσματα διατόμων (Novicula καὶ Pleurosigma), ὧν τὸ πυριτικὸν περίβλημα φέρει ῥαβδώσεις, ὧν ἡ πυκνότης ἀνέρχεται μέχρι 2.000 κατὰ mm. Ἐὰν 2б εἶναι ἡ γωνία ἡ σχηματιζομένη ὑπὸ τῶν δύο ἄκρων ἀκτίνων *(γωνία ἀνοίγματος)*, αἵτινες δύνανται νὰ εἰσχωρήσωσιν εἰς τὸ μικροσκόπιον προερχόμεναι ἐκ σημείων τοῦ ἄξονος τούτου, ὅπερ βλέπομεν εὐκρινῶς, ν ὁ *δείκτης διαπλάσεως* τοῦ μέσου μεταξὺ ἀντοφθαλμίου καὶ ἀντικειμένου καὶ α τὸ *ἀριθμητικὸν ἄνοιγμα* τοῦ ἀντοφθαλμίου, εἶναι α=ν ημб. Ἐὰν ν=1, τότε α<1. Ἐὰν ὅμως τὸ ἐνδιάμεσον μέσον εἶναι τοιοῦτον, ὥστε ν>1, ὡς π. χ. εἰς τὴν περίπτωσιν καθ᾽ ἣν μεταξὺ ἀντοφθαλμίου καὶ ἀντικειμένου τίθεται ὑγρὸν (ὕδωρ, κεδρέλαιον καὶ μονεμβρώμιος ναφθαλίνη), ὅτε ἔχομεν *καταδυτικὸν σύστημα*, τότε δύναται τὸ ἀριθμητικὸν ἄνοιγμα νὰ καταστῇ μεγαλύτερον τῆς μονάδος. Ἐκ τοῦ μεγέθους τοῦ ἀριθμητικοῦ ἀνοίγματος ἐξαρτᾶται ἡ διαχωριστικὴ δύναμις τοῦ μικροσκοπίου. Τὰ μέγιστα ὅμως ἐξαρτᾶται αὕτη ἐκ τοῦ μήκους κύματος ἢ τοῦ χρώματος τοῦ χρησιμοποιουμένου φωτός. Προκειμένου διὰ τὴν παρατήρησιν λίαν μικρῶν ἀντικειμένων, ἅτινα δὲν δυνάμεθα νὰ παρατηρήσωμεν διὰ τοῦ συνήθους μικροσκοπίου, ἐφαρμόζομεν τὴν *ὑπερμικροσκοπικὴν ὅρασιν* ἢ τὸ *ὑπερμικροσκόπιον* (Ultramikroskop).

Διὰ συνδυασμοῦ τοῦ μικροσκοπίου πρὸς σύστημα προβολέως ἐπιτυγχάνομεν τὸ *μικροσκόπιον προβολῆς*, ὅπερ χρησιμεύει διὰ τὴν προβολὴν μικροσκοπικῶν παρασκευασμάτων καὶ εἶναι λίαν χρήσιμον διὰ διδακτικοὺς σκοπούς, ἐνῷ διὰ συνδυασμοῦ τοῦ μικροσκοπίου πρὸς φωτογραφικὴν διάταξιν δυνάμεθα νὰ φωτογραφήσωμεν μικροσκοπικὰ ἀντικείμενα, ἤτοι νὰ ἐπιτύχωμεν *μικροφωτογραφίαν* (βλ. λ.)

Κ. ΠΑΛΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

—[*Ἀστρον.*] Τὸ *μικροσκόπιον* τὸ χρησιμοποιούμενον ἐν τῇ ἀστρονομίᾳ ἀποτελεῖ σύστημα φακῶν καὶ χρησιμεύει πρὸς ἀκριβῆ ἀνάγνωσιν τῶν διαιρέσεων τῶν γωνιοσκοπικῶν κύκλων τῶν ἀστρονομικῶν ὀργάνων, ἤτοι πρὸς ἀκριβῆ καθορισμὸν τῆς διαιρέσεως τοῦ βερνιέρου τῆς συμπιπτούσης μετὰ τῆς ἀντιστοίχου διαιρέσεως τῆς ἄντυγος. Εἰς ὄργανα, δι᾽ ὧν ἐπιδιώκεται ἀκρίβεια μείζων τῆς παρεχομένης διὰ τῆς χρήσεως βερνιέρου, ὡς λ. χ. εἰς τὸν μεσημβρινὸν κύκλον, τὸ μικροσκόπιον ἔχει μορφὴν διόπτρας, ἐν τῷ ὀπτικῷ πεδίῳ τῆς ὁποίας εἶναι τεταμένον ἓν ζεῦγος ἀκινήτων νημάτων καὶ ἕτερον ζεῦγος κινητῶν, διευθυνομένων καθέτως πρὸς τὰ πρῶτα. Τὸ ζεῦγος τῶν κινητῶν νημάτων μετατίθεται κατὰ βούλησιν διὰ μικρομετρικοῦ κοχλίου, εἰς τὴν κεφαλὴν τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ἠριθμημένον τύμπανον. Τὰ ἀναγνώσματα τοῦ τυμπάνου τούτου παρέχουσι τὸ κλάσμα ἀκεραίας στροφῆς τοῦ κοχλίου, ὁ δὲ ἀριθμὸς τῶν τοιούτων ἀκεραίων στροφῶν προσδιορίζεται τῇ βοηθείᾳ κτενὸς εὑρισκομένης ἐν τῷ ὀπτικῷ πεδίῳ τοῦ μικροσκοπίου καὶ τῆς ὁποίας ἕκαστος ὀδοὺς ἀπέχει τοῦ ἀμέσως ἑπομένου κατὰ μίαν ἀκεραίαν στροφὴν τοῦ τυμπάνου, ἰσοδυναμοῦσαν συνήθως πρὸς ἓν πρῶτον λεπτὸν τοῦ τόξου. Ἡ ἀρχὴ τῆς μετρήσεως τῶν ἀκεραίων στροφῶν ἐπὶ τῆς κτενὸς ὁρίζεται ὑπὸ δύο μικρῶν ὀπῶν ἐγγὺς ἀλλήλων εὑρισκομένων ἢ ὑπὸ βαθείας τινὸς ἐγκοπῆς. Συνήθως ἡ ἀρχὴ μετρήσεως τῶν στροφῶν εὑρίσκεται εἰς τὸ ὕψος τοῦ κέντρου τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου, αἱ δὲ στροφαὶ λογίζονται ὡς θετικαὶ μὲν ἐὰν ἀριθμῶνται δι᾽ ὀδόντων τῆς κτενός, περιλαμβανομένων μεταξὺ τῆς ἀρχῆς μετρήσεως καὶ τῆς κεφαλῆς τοῦ κοχλίου τοῦ μικροσκοπίου, ὡς ἀρνητικαὶ δὲ ὅταν ἡ ἀρίθμησις αὐτῶν γίνεται διὰ τῶν ὀδόντων τῆς κτενὸς ἀπὸ τῆς ἀρχῆς μετρήσεως κατὰ διεύθυνσιν ἀντίθετον ἐκείνης πρὸς ἣν εὑρίσκεται ἡ κεφαλὴ τοῦ μικροκεντρικοῦ κοχλίου. Πρὸς λῆψιν ἀναγνώσματος διὰ τοιούτου μικροσκοπίου στρέφομεν τὸν μικρομετρικὸν κοχλίαν αὐτοῦ ἕως οὗ τὸ δι᾽ αὐτοῦ μετατιθέμενον κινητὸν ζεῦγος νημάτων διχάσῃ τὴν χαραγὴν τοῦ κύκλου, τὴν εὑρισκομένην ἐγγύτερον τῆς ἀρχῆς μετρήσεως τῶν στροφῶν. Ἡ προτίμησις τῆς τοιαύτης χαραγῆς ἀντὶ πάσης ἄλλης ἀπεχούσης περισσότερον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς ἐπιβάλλεται πρὸς ἀποφυγὴν τοῦ σφάλματος παραλλάξεως.

Λέγομεν ὅτι διχάζομεν χαραγὴν τοῦ κύκλου, ὅταν ἐν τῷ τετραγωνιδίῳ, ὅπερ ἀποτελοῦσι τὰ δύο νήματα τοῦ ἀκινήτου ζεύγους μετὰ τῶν δύο τοῦ κινητοῦ, ἑκάτερον τῶν νημάτων τοῦ τελευταίου τούτου ἀπέχῃ κατὰ τὸ αὐτὸ ποσὸν ἀπὸ τοῦ προσκειμένου αὐτῷ χείλους τῆς διχαζομένης χαραγῆς. Εἰς τὴν τοιαύτην ἐξίσωσιν τῶν ἀποστάσεων βοηθεῖ σημαντικῶς ὁ φωτισμὸς τῆς περιοχῆς ἐν ᾗ εὑρίσκεται ἡ πρὸς διχασμὸν χαραγή, διότι πρὸς ἐπίτευξιν τοῦ ζητουμένου ἀρκεῖ νὰ προσέξωμεν ὥστε αἱ ἐν τῷ προαναφερθέντι τετραγωνιδίῳ μεταξὺ τῶν νημάτων τοῦ κινητοῦ ζεύγους καὶ τῶν προσκειμένων πρὸς αὐτὰ χειλέων τῆς χαραγῆς φωτειναὶ λωρίδες νὰ εἶναι τοῦ αὐτοῦ πάχους. Τοιαῦτα μικροσκόπια ἔχουσιν οἱ μεσημβρινοὶ κύκλοι τέσσαρα ἢ ἓξ τὸν ἀριθμόν, ἐστερεωμένα εἰς ἴσας ἀπ᾽ ἀλλήλων ἀποστάσεις ἐπὶ σταθεροῦ βάθρου. Οἱ ὀπτικοὶ ἄξονες τῶν μικροσκοπίων τούτων δέον νὰ εἶναι κάθετοι ἐπὶ τὸ ἐπίπεδον τοῦ δι᾽ αὐτῶν σκοπευομένου κύκλου, καθ᾽ ἑκάστην δὲ παρατήρησιν σειρᾶς ἀστέρων νὰ προσδιορίζηται δὶς ἢ τρίς, ἤτοι εἰς τὴν ἀρχήν, εἰς τὸ μέσον καὶ εἰς τὸ τέλος τῆς σειρᾶς ἡ λεγομένη τιμὴ τῆς κοχλιοστροφῆς τῶν μικροσκοπίων, ἤτοι ἡ εἰς δευτερόλεπτα τόξου τιμὴ μιᾶς στροφῆς τοῦ τυμπάνου τοῦ μικρομετρικοῦ κοχλίου τῶν μικροσκοπίων. Παρόμοια μικροσκόπια φέρουσι καὶ ἄλλα ἀστρονομικὰ ὄργανα, ὡς λ. χ. τὰ ἀλταζιμούθια τηλεσκόπια, οἱ ἀζιμουθιακοὶ κύκλοι, οἱ ἀστρονομικοὶ θεοδόλιχοι κτλ.

Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

— **μικροσκόπιον *πολωτικόν*.** Καλεῖται τὸ μικροσκόπιον, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπιτυγχάνεται ἡ σπουδὴ τῆς κρυσταλλικῆς ὕλης διὰ πεπολωμένου φωτός. Εἰς τὸ μικροσκόπιον τοῦτο ἡ σπουδὴ τῆς κρυσταλλικῆς ὕλης γίνεται διὰ μικροσκοπικῶν παρασκευασμάτων. Τὰ χαρακτηριστικὰ μέρη τοῦ πολωτικοῦ μικροσκοπίου εἶναι ἡ φωτεινὴ συσκευὴ τοῦ Abbe, ἡ τράπεζα ἐφ᾽ ἧς τοποθετοῦνται τὰ πρὸς ἐξέτασιν μικροσκοπικὰ παρασκευάσματα, ὁ πολωτὴς καὶ ὁ ἀναλυτής, ἕκαστος τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς πρίσματος Nicol. Διὰ τῆς συσκευῆς τοῦ Abbe λαμβάνεται κατὰ βούλησιν παράλληλον ἢ κωνικόν, ἤτοι ἰσχυρῶς συγκλῖνον φῶς, τὸ ὁποῖον διὰ τοῦ πολωτοῦ μετατρέπεται ἀπὸ κοινοῦ εἰς πεπολωμένον. Τὸ πολωτικὸν μικροσκόπιον εἶναι κυρίως ὄργανον μετρήσεως, καὶ μόνον ὅταν ἐπιδιώκηται δι᾽ αὐτοῦ καὶ πετρογραφικὴ ἐξέτασις χρησιμεύει συγχρόνως καὶ ὡς ὄργανον παρατηρήσεως. Δι᾽ αὐτοῦ ἐπιτυγχάνεται ἡ διάγνωσις τῆς κρυσταλλικῆς συμμετρίας εἰς τὴν μελετωμένην κρυσταλλικὴν ὕλην, διὰ τῆς μετρήσεως δὲ καὶ ὡρισμένων κρυσταλλογραφικῶν καὶ ὀπτικῶν στα-

Digitized by Google

θερῶν ἢ ἀνεύρεσις τῆς ὀρυκτολογικῆς συστάσεως αὐτῆς. Γ. Β.

**μικροσκοπιστὴς** (ὁ)· ὁ χειριστὴς τοῦ μικροσκοπίου, ὁ ἔχων τὴν ἱκανότητα νὰ χειρίζεται τὸ μικροσκόπιον.

**μικροσκόπος** (ὁ)· ὁ ἐξετάζων, ὁ παρατηρῶν διὰ τοῦ μικροσκοπίου.

**μικροσκοπῶ** (— *έω*)· ἐξετάζω, παρατηρῶ διὰ τοῦ μικροσκοπίου.

**μικροσομμίτης** (ὁ) (Mikrosommit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀποτελοῦν παραλλαγὴν τοῦ νεφελίνου ἢ ἐλαιολίθου, τὴν ὁποίαν χαρακτηρίζει σημαντικὴ παράμειξις ὀξειδίου τοῦ ἀσβεστίου CaO καὶ ὑποξειδίου τοῦ καλίου $K_2O$, καθὼς καὶ περιεκτικότης εἰς χλώριον, τριοξείδιον τοῦ θείου καὶ διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος. Ἀπαντᾷ εἰς μικροτάτους κρυστάλλους, πολλάκις διατεταγμένους κατὰ δέσμας ἐντὸς τῆς λάβας τοῦ Βεζουβίου τῆς ἐκρήξεως τοῦ 1872. Γ. Β.

**μικρόσπερμα** (τὰ) *[Βοτ.]*. Κατηγορία φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα διαφόρου γένους φυτὰ μὲ κυκλικὰ ἄνθη *ἑτεροχλαμύδια* ἢ *ὁμοχλαμύδια*. Δ. Ν. Π.

**Μικροσπηλιὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λεπιανῶν τῆς ἐπαρχίας Ἄρτης καὶ Τζουμέρκων τοῦ νομοῦ Ἄρτης, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 290. Χ. Δ.

**μικροσπορίαι** (αἱ) *[Δερματοπ.]*. Δερματοπάθειαι ὅμοιαι πρὸς τὰς τριχοφυτίας, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἀπεχωρίσθησαν ὑπὸ τοῦ Sabouraud, ὅστις ἐστηρίχθη πρὸς τοῦτο ἐπὶ τῆς κλινικῆς σπουδαιότητος, τῆς συχνότητος τῆς παθήσεως, τῆς ἀτομικότητος τῶν συμπτωμάτων καὶ τῆς μορφολογικῆς καὶ βιολογικῆς ἰδιότητος τῶν προκαλούντων ταύτας παρασίτων, τῶν καλουμένων *μικροσπόρων* (βλ.λ.) Αὗται παρατηροῦνται συχνότατα ἰδίᾳ ἐπὶ τοῦ τριχωτοῦ τῆς κεφαλῆς τῶν παίδων, σπανίως καταλαμβάνουσι τὸ γένειον καὶ τὸ ἄτριχον δέρμα καὶ ἔχουσι κοινὸν μὲν χαρακτηριστικὸν ἀντικειμενικὸν σημεῖον, τὴν ὄψιν τῆς τριχός, τὸ εὔθραυστον αὐτῆς (ἐξέχει μόλις 3—4 χιλ. τοῦ δέρματος) καὶ τὸ ὅτι περιβάλλει ταύτην διὰ λεπτῆς λευκῆς θήκης· ἀπόλυτον δὲ μικροσκοπικὸν χαρακτῆρα ἔχουσι τὸ ὅτι ἡ περιβάλλουσα τὴν πάσχουσαν τρίχα θήκη ἀποτελεῖται ἐκ μικρῶν σπόρων μεγέθους 2 μ—4 μ μὴ σχηματιζόντων ἁλύσεις, ἀλλὰ διατεθειμένων ἐν εἴδει μωσαϊκοῦ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς τριχός. Αἱ μικροσπορίαι προέρχονται ἐκ πολλῶν διακρίτων εἰδῶν μυκήτων τῆς αὐτῆς οἰκογενείας. Ἐξετάζοντες ὅμως ἐν τῷ συνόλῳ τὰ εἴδη ταῦτα διακρίνομεν δύο τύπους: 1) τὸν *ἀνθρώπειον*, ὅστις περιλαμβάνει τὰ μικρόσπορα, ὧν ἡ βλάστησις ἐν καλλιεργείαις εἶναι νωθρὰ καὶ μετρία, καὶ 2) τὸν *ζώειον*, ὅστις περιλαμβάνει παράσιτα ζωηρῶς καὶ ἀφθόνως καλλιεργούμενα. Ἐξ ὅλων τῶν μικροσπόρων τὰ συχνότερον ἀπαντώμενα ἐκ μὲν τοῦ ἀνθρωπείου τύπου εἶναι τὸ *ὠδουΐνειον*, ἐκ δὲ τοῦ ζωείου τὸ τοῦ *κυνὸς* ἢ *ἐριῶδες*, ἅτινα ἀποτελοῦσι τοὺς ἀντιπροσωπευτικοὺς τύπους τῶν δύο τούτων διακρίσεων.

*Θεραπεία*. Εἰς τὰς μικροσπορίας ἡ θεραπεία ἐπέρχεται αὐτομάτως διὰ τῆς προόδου τῆς ἡλικίας καὶ μόλις τὸ ἄτομον εἰσέλθῃ εἰς τὴν ἐφηβικὴν ἡλικίαν. Δύναται ὅμως νὰ ἐπιταχυνθῇ διὰ τῆς ἀποψιλώσεως, ἥτις ἐπιτυγχάνεται εἴτε δι' ἀκτίνων Ραΐντγκεν εἴτε δι' ὀξικοῦ θαλίου. Ἡ αὐτὴ θεραπεία δύναται νὰ ἐφαρμοσθῇ καὶ εἰς τὰ πάσχοντα ζῷα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *R. Sabouraud*, Les teignes (Paris 1910). —*E. Brumpt*, Précis de parasitologie (Paris 1927).—*K. Σάββα*, Μικροβιολογία (4η ἔκδ. 1927).—*Ν. Α. Μιχαηλίδου*, Ἐργαστηριακὴ διαγνωστικὴ (Ἀθῆναι 1926—1927). Ν. Α. Μ.

**μικροσπόριον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται ὁ σπόρος ἢ τὸ σπόριον, ὅπερ βλαστάνον παράγει ἀνθηρίδια παρεμφερῆ πρὸς τοὺς κόκκους τῆς γύρεως τῶν φανερογάμων φυτῶν. Δ. Ν. Π.

**μικρόσπορον** (τό). Κατηγορία νηματομυκήτων, ἐχόντων ὁμοιότητα πρὸς τὰ *τριχόφυτα*, προκαλούντων δὲ τὰς *μικροσπορίας* (βλ. λ.). Διακρίνονται εἰς δύο τύπους, τὸν *ἀνθρώπειον*, περιλαμβάνοντα εἴδη ὧν ἡ βλάστησις ἐν καλλιεργείᾳ εἶναι νωθρὰ καὶ μετρία, καὶ τὸν ζώειον, περιλαμβάνον, παράσιτα ζωηρῶς καὶ ἀφθόνως καλλιεργούμενα. Τοῦ ἀνθρωπείου τύπου κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς:

***Μικρόσπορον τὸ βελουδωτὸν*** (m. velveticum). Ἀνευρέθη ὑπὸ τοῦ Sabouraud τῷ 1907 εἰς ἀλωπεκίαν παιδός. Κλινικῶς καὶ μικροσκοπικῶς δὲν διαφέρει τοῦ ὠδουϊνείου. Μόνον εἰς τὰς καλλιεργείας παρετηρήθη διαφορά.

***Μικρόσπορον τὸ νωθρὸν*** (m. tardum). Εἶναι μικρόσπορον ἄτυπον, παρουσιάζον ἀποικίας νάννους. Ἀνευρέθη 15άκις ἐπὶ 500 περιπτώσεων.

***Μικρόσπορον τὸ πιτυριῶδες*** (m. furfur). Εἶναι τὸ αἴτιον τῆς ποικιλοχρόου πιτυριάσεως, παθήσεως χαρακτηριζομένης ὑπὸ κηλίδων καφεογαλακτοχρόων ἢ ὑποφαίως κιτρίνων, καὶ ἐντοπιζομένης συνήθως μὲν ἐπὶ της προσθίας ἐπιφανείας τοῦ θώρακος, δυναμένης ὅμως νὰ ἐκταθῇ καὶ εἰς ἄλλα μέρη τοῦ σώματος. Πρὸς ἀνεύρεσιν τοῦ μύκητος τούτου λαμβάνομεν λέπια ἐκ τῆς πασχούσης μοίρας καὶ διὰ τούτων ἑτοιμάζομεν παρασκευάσματα, ἅτινα δυνάμεθα νὰ παρατηρήσωμεν διὰ τοῦ μικροσκοπίου εἴτε μετὰ χρῶσιν, εἴτε ἄνευ χρώσεως. Τὰ ἄνευ χρώσεως παρασκευάσματα προετοιμάζονται διὰ προσθήκης ἐπὶ τῶν λεπίων 2 — 3 σταγόνων διαλύματος καυστικοῦ καλίου 40 % καὶ θερμάνσεως τοῦ καλυφθέντος διὰ καλυπτρίδος παρασκευάσματος μέχρι παραγωγῆς φυσαλίδων παρατηροῦμεν κατόπιν διὰ ξηροῦ φακοῦ. Πρὸς χρῶσιν τῶν παρασκευασμάτων ῥίπτομεν ἐπὶ τῶν λεπίων 3—4 σταγόνας ὀξικοῦ ὀξέος, θερμαίνομεν μέχρις ἐξατμήσεως, πλύνομεν δι' ὕδατος ἵνα ἀπομακρύνωμεν τοὺς ἐναπομείναντας κρυστάλλους, χρωματίζομεν δι' ἠραιωμένης χρωστικῆς, πλύνομεν καὶ πάλιν, ἀποξηραίνομεν ἄνωθεν φλογός, θέτομεν σταγόνα κεδρελαίου καὶ παρατηροῦμεν διὰ καταδυτικοῦ φακοῦ. Εἰς τὸ παρασκεύασμα θ' ἀνεύρωμεν μυκητύλλια μακρὰ μετὰ περισφίγξεων ἐν εἴδει ἀλλάντων, ἅτινα ἐκτεινόμενα πρὸς διαφόρους διευθύνσεις σχηματίζουσι δίκτυον, εἰς οὗ τὰ διάκενα εὑρίσκομεν στρογγύλους ἢ ᾠοειδεῖς σπόρους ἀνισομεγέθεις, λίαν διαθλαστικούς, συνηγμένους κατ' ἀθροίσματα ἐν εἴδει ᾠῶν ἐντὸς φωλεᾶς. Καλλιεργεῖται δυσκόλως. Ἐὰν δὲ βλαστήσῃ ἐπὶ γλυκερινούχου πηκτῆς, παράγει ἀποικίας μεγέθους κεφαλῆς καρφίδος, ἐλαφρῶς κιτρίνας καὶ πτυχωτάς.

***Μικρόσπορον τὸ ὑβῶδες*** (m. umbonatum). Τὸ παράσιτον τοῦτο ἀνευρέθη ὑπὸ τοῦ Sabouraud ἐπὶ δύο παιδίων ἐκ Ρωσίας προερχομένων. Διαφέρει τοῦ ὠδουϊνείου εἰς τὴν καλλιέργειαν.

***Μικρόσπορον τὸ ὠδουΐνειον***. Τὸ παράσιτον τοῦτο, ἀναπτυσσόμενον μόνον εἰς τὸ τριχωτὸν τῆς κεφαλῆς τῶν παίδων, παράγει ἀλωπεκίαν ὑπὸ μορφὴν κηλίδων στρογγύλων ἢ ᾠοειδῶν, μεγέθους 3—4 ἑκμ. κεκαλυμμένων ὑπὸ τεφροχρόων λεπίων. Αἱ πάσχουσαι τρίχες εἶναι ἀποκεκομμέναι καὶ ἐξέχουσι τοῦ δέρματος μόλις 4—5 χιλιοστά. Ἡ ἔναρξις εἶναι δυσκόλως ὁρατή. Ἄρχεται δι' ἐρυθηματώδους κηλῖδος 3—4 ἑκ., ἥτις μετά τινας ἡμέρας ὠχριᾷ, γίνεται πιτυρώδης καὶ ὁμοιάζει πρὸς κηλῖδα ῥοδοχρόου πιτυριάσεως τοῦ Gibert, ἐνῷ αἱ τρίχες λεπτύνονται, γίνονται εὔθρυπτοι, κλίνουσι πρὸς τὴν αὐτὴν διεύθυνσιν καὶ τέλος θραύονται εἰς ἀπόστασιν 3—5 χιλ. ἀπὸ τοῦ δέρματος. Ἑκάστη θρὶξ τῆς κηλῖδος ἐκ τῆς βάσεως καὶ εἰς ὕψος 3—4 χιλ. ἀπὸ τῆς θηλῆς ἐπενδύεται ὑπὸ θήκης τεφρολεύκου, ὡς ἐὰν ἐπεπάσθη διὰ τέφρας. Εἰς τὴν αὐτὴν κεφαλὴν δύναται νὰ παρατηρηθῇ ἐπέκτασις τῆς νόσου, σχηματιζομένων καὶ ἑτέρων πλακῶν 4—6 ἑκ., οὐχὶ ὅμως περισσοτέρων τῶν 6—7. Σπανίως παρετηρήθησαν μικρότεραι καὶ περισσότεραι. Ἐπὶ τοῦ ἀτρίχου δέρματος σπανιώτατα παρετηρήθη ἐπέκτασις τοῦ ὠδουϊνείου μικροσπόρου. Ἡ ἐπέκτασις τῆς νόσου μεταξὺ τῶν παιδίων τῆς αὐτῆς οἰκογενείας εἶναι συχνοτάτη, ὅπως καὶ εἰς τὰ συχνάζοντα εἰς τὸ αὐτὸ σχολεῖον. Ἡ διαφορικὴ διάγνωσις θὰ γίνῃ πρὸς τὰς τριχοφυτίας, τὴν ψωρίασιν, τὸ σμηγματορροϊκὸν ἔκζεμα, τὸν ἀμιαντώδη τριχοβρῶτα καὶ τὴν πιτυριασιοειδῆ μορφὴν τοῦ ἄχορος. Τὸν μύκητα θ' ἀναζητήσωμεν εἴτε εἰς τὰ λέπια τῆς πλακὸς εἴτε εἰς τὰς πασχούσας τρίχας. Πρὸς τοῦτο λαμβάνομεν δι' ἀποψιλωτικῆς λαβίδος τρίχας τινάς, φέρομεν ἐπὶ ἀντικειμενοφόρου πλακός, ῥίπτομεν 2—3 σταγόνας διαλύματος καυστικοῦ καλίου 40 %, καλύπτομεν διὰ καλυπτρίδος καὶ θερμαίνομεν ἄνωθεν μικρᾶς φλογὸς μέχρι παραγωγῆς φυσαλίδων. Καταθέτομεν τὸ παρασκεύασμα ἐπὶ ψυχρᾶς τραπέζης, ἵνα σταματήσωμεν τὸν περαιτέρω βρασμὸν καὶ φέρομεν τοῦτο ὑπὸ τὸ μικροσκόπιον. Παρατηροῦντες διὰ ξηροῦ φακοῦ ἀντοφθαλμίου καὶ ἡμικλείστου διαφράγματος, βλέπομεν τὴν τρίχα κεκαλυμμένην ὑπ' ἀφθόνων μικρῶν στρογγύλων σπόρων ἀτάκτως διατεθειμένων ἐν εἴδει μωσαϊκοῦ.

Καλλιεργεῖται εἰς σακχαροῦχα θρεπτικὰ ὑποστρώματα ὡς καὶ εἰς γεώμηλα. Καὶ εἰς μὲν τὰ γεώμηλα μετὰ 7—8 ἡμέρας ἀναφαίνεται τεφρὰ ταινία, ἥτις βραδύτερον γίνεται ἐρυθρὰ μετὰ χνοός, εἰς δὲ τὸ ἄγαρ μετὰ μαλτόζης παρουσιάζεται μικρὸς λευκὸς δίσκος, ὅστις ἐντὸς μηνὸς μεγεθυνόμενος μέχρι 5 ἑκ. παρουσιάζει χνοῦν τεφρόχρουν καὶ βραχύν. Βραδύτερον ἡ ἀποικία, μεγεθυνομένη μέχρι 10 ἑκ., παρουσιάζει 3—4 ἀκτινοειδεῖς γραμμὰς διαιρούσας ταύτην εἰς τομεῖς καὶ ἔτι βραδύτερον ἀναφαίνονται καὶ ἄλλαι μικρότεραι γραμμαί, οὐχὶ περισσότεραι τῶν δέκα. Ὅπως ὅλοι οἱ δερματομύκητες, ἀναπτύσσεται καὶ οὗτος εἰς θερμοκρασίαν 22°—25°. Διατηρεῖται ἐφ' ὅσον ὑπάρχει θρεπτικὸν ὑλικόν. Ὁ πειραματικὸς ἐμβολιασμὸς εἰς ζῷα ἀστοχεῖ. Παρετηρήθη ὅμως αὐτόματος μόλυνσις ζῴων ἐκ μικροσπορίας ὠδουϊνείου.

Τοῦ δὲ ζωείου τύπου κυριώτερα εἴδη μικροσπόρων εἶναι τὰ κάτωθι:

***Μικρόσπορον τῆς γαλῆς*** (m. felineum). Ἀνευρέθη τὸ πρῶτον ἐν Ἀγγλίᾳ τῷ 1896 ἐπὶ γαλῶν, ὡς καὶ ἐπὶ ἀνθρώπων εἰς οὓς μετεδόθη ἐκ τῶν ζῴων τούτων. Μικροσκοπικῶς καὶ κλινικῶς κατ' οὐδὲν διαφέρει τοῦ ὠδουϊνείου. Ἡ διαφορὰ παρατηρεῖται εἰς τὴν ταχύτητα τῆς βλαστήσεως καὶ τὴν μορφολογίαν τῶν ἀποικιῶν.

***Μικρόσπορον τὸ γναφαλῶδες*** (m. tomentosum). Ἀπεμονώθη τῷ 1909 ὑπὸ τοῦ Pelagatti ἐν Σαρδηνίᾳ. Κλινικῶς καὶ μικροσκοπικῶς κατ' οὐδὲν διαφέρει τοῦ ὠδουϊνείου. Αἱ καλλιέργειαι ἀναπτύσσονται ταχέως.

***Μικρόσπορον τὸ ἐριῶδες***· βλ. *μικρόσπορον τοῦ κυνός*.

***Μικρόσπορον τὸ ἵππειον*** (m. equinum). Προκαλεῖ τριχοβρωτικὰς πλάκας εἰς τοὺς πώλους. Εἰς τὸν ἄνθρωπον προκαλεῖ μικρὰς δερματικὰς ἐντοπίσεις ἐρυθηματώδεις, φευγαλέας, θεραπευομένας αὐτομάτως. Ἡ καλλιέργεια παρουσιάζει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι φέρει βραχύτατον χνοῦν ῥοδίζοντα καὶ μόλις ὁρατόν. Αἱ ἐπὶ ζυθογλεύκους καλλιέργειαι εἶναι λίαν τυπικαὶ ἄνευ χνοός, χροιᾶς ὑπολεύκου, κέντρου προέχοντος καὶ κανονικῶν πτυχώσεων.

***Μικρόσπορον τὸ κλαδῶδες*** (m. ramos). Παρετηρήθη ὑπὸ τοῦ Horta τῷ 1924 ἐπὶ παθήσεως ὁμοιαζούσης πρὸς ἄχορα, ἐπιπλακείσης ὑπὸ θηλακίτιδος. Μορφολογικῶς αἱ καλλιέργειαι ὁμοιάζουσι πρὸς τὸ ἵππειον. Ἐκκρίνει κατ' ἀρχὰς χρωστικὴν κιτρίνην καὶ εἶτα ἐρυθράν, ὑπεισερχομένην εἰς τὸ θρεπτικὸν ὑπόστρωμα.

***Μικρόσπορον τοῦ κυνὸς ἢ ἐριῶδες*** (m. canis vel lanosum). Προσβάλλει τὸν κύνα, τὴν γαλῆν, τὸν ἵππον, ὡς καὶ ἄλλα ζῷα, καὶ δύναται νὰ μεταδοθῇ εἰς τὸν ἄνθρωπον. Οὕτως ἀνευρέθη εἰς τὴν κεφαλὴν τῶν παίδων, ἐν ἀναλογίᾳ 1:30 περίπου πρὸς τὸ ὠδουΐνειον, εἰς τὸ γένειον τῶν ἀνδρῶν ὡς καὶ εἰς τὸ ἄτριχον δέρμα. Τὰ κλινικὰ συμπτώματα ἐλάχιστα διαφέρουσι τῶν τοῦ ὠδουϊνείου. Προκαλεῖ δὲ ἐπιδημίας οἰκογενειακὰς μᾶλλον παρὰ σχολικάς. Θεραπεύεται ταχύτερον τοῦ ὠδουϊνείου. Ἡ μεγαλυτέρα διαφορὰ παρατηρεῖται εἰς τὰς καλλιεργείας. Αὗται ἀναπτύσσονται ταχύτερον καὶ βλαστάνουσιν ἀφθονώτερον. Τὸ κέντρον τῆς ἀποικίας εἶναι ψιλὸν καὶ κονιορτῶδες, ὀμφαλωτὸν καὶ ἐστιγμένον πολλάκις διὰ σταγονίων ὕδατος. Σχηματίζει δακτυλίους ἐκ λευκοῦ μακροῦ χνοὸς ἐριώδους, λίαν χαρακτηριστικούς. Ἡ ἀρίστη ἀνάπτυξις παρατηρεῖται μεταξὺ τῆς 25ης—30ῆς ἡμέρας, ὅτε μεγεθύνεται μέχρι 10 ἑκατ. περίπου. Ἡ ἐπὶ γεωμήλων ἀποικία εἶναι ὁμοία πρὸς τὴν τοῦ ὠδουϊνείου. Ἡ μικροσκοπικὴ ἐξέτασις τοῦ χνοὸς τῶν καλλιεργημάτων τῶν μικροσπόρων τοῦ ζωείου τύπου ἀποδεικνύει τὴν ὕπαρξιν ἀτρακτοειδῶν στοιχείων πολυχώρων λίαν χαρακτηριστικῶν, ἐνῷ ὁ χνοῦς τῶν καλλιεργημάτων τοῦ ἀνθρωπείου τύπου παρουσιάζει ἁπλᾶ νηματοειδῆ μυκητύλλια. Ὁ μύκης θ' ἀναζητηθῇ εἰς τὰ λέπια τοῦ ψιλοῦ δέρματος ἢ τὰς πασχούσας τρίχας. Εἰς τὰ λέπια τῶν κυκλικῶν βλαβῶν ἀνευρίσκονται ἄφθονα μυκητύλλια ἀτάκτως διατεθειμένα, ὧν ἕκαστον ἀποτελεῖται ἐξ ὀρθογωνίων στοιχείων μεγέθους 5 μ περίπου, σχηματιζόντων ἁλύσεις. Πολλαπλασιάζονται διὰ διχοτομίας καὶ ἀποτελοῦσιν ἀθροίσματα ὡς ἐν τοῖς ἀχορικοῖς σκυφίοις τὰ μυκητύλλια τοῦ ἀχορίου. Εἰς τὰς τρίχας εἶναι ὅμοιον πρὸς τὸ ὠδουΐνειον, ὥστε εἶναι ἀδύνατον νὰ διακριθῇ τούτου. Ἐνίοτε εὑρίσκομεν παρὰ τοὺς στρογγύλους σπόρους καὶ μεγάλα ὀρθογώνια μυκητύλλια εἰς ἁλύσεις. Ὁ πειραματικὸς ἐμβολιασμὸς εἰς ζῷα καὶ ἰδίᾳ εἰς τὸν ἰνδόχοιρον εἶναι εὔκολος, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν τοῦ ὠδουϊνείου, ὅστις πάντοτε ἀστοχεῖ.

***Μικρόσπορον τὸ λάσιον*** (m. villosum). Ἀνευρέθη ὑπὸ τοῦ Minne ἐν Βελγίῳ. Αἱ καλλιέργειαι ἀναπτυσσόμεναι ταχέως λαμβάνουσι χαρακτηριστικὴν ὄψιν μετ' ὀμφαλωτοῦ κέντρου, ἀκτινωτῶν πτυχώσεων καὶ χνοὸς λεπτοῦ ὡς ἀπὸ μετάξης.

***Μικρόσπορον τὸ λεπτότατον*** (m. minutissimum). Εἶναι τὸ αἴτιον τοῦ *ἐρυθράσματος*, νόσου ἀπαντώσης εἰς τὰς μασχάλας καὶ τὰς μηρογεννητικὰς χώρας καὶ χαρακτηριζομένης ὑπὸ καφεοχρόων κηλίδων. Πρὸς εὕρεσιν τοῦ μύκητος λαμβάνομεν τὰ λέπια καὶ ἑτοιμάζομεν διὰ τούτων παρασκευάσματα ἄχροα ἢ ἔγχρωμα καθ' ὅμοιον πρὸς τὸ *πιτυριῶδες* τρόπον. Εἰς τὰ παρασκευάσματα θὰ ἴδωμεν λεπτότατα μυκητύλλια πολυσχιδῆ μετὰ διαφραγμάτων, ὁμοιάζοντα πρὸς τὰς στρεπτότριχας, ὡς καὶ λεπτοτάτους στρογγύλους ἢ τετραπλεύρους σπόρους, προερχομένους ἐκ τῆς τμήσεως τῶν μυκητυλλίων. Καλλιεργεῖται εὐκόλως ἐπὶ συνήθων θρεπτικῶν ὑποστρωμάτων.

***Μικρόσπορον τὸ μανσόνιον*** (m. Mansoni). Εἶναι τὸ αἴτιον νόσου ὁμοιαζούσης πρὸς τὴν ποικιλόχρουν πιτυρίασιν καὶ παρατηρηθείσης τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Manson εἰς τὴν Ν. Κίναν, τὴν Κεϋλάνην, Ἰάβαν κ. τ. λ. Προσβάλλει ἅπαν τὸ σῶμα, πλὴν τοῦ προσώπου, αἱ δὲ κατειλημμέναι ἐπιφάνειαι παρουσιάζουσι μικρὰς μελανὰς κηλῖδας μετ' ἀπολεπίσεως, οὐχὶ κνησμώδεις. Ἐν Εὐρώπῃ παρετηρήθη ὑπὸ τοῦ Castellani τῷ 1905 καὶ περιεγράφη ὑπὸ τὸ ὄνομα tinea nigra. Εἶναι μύκης ἀποτελούμενος ἐξ ἐπιμήκων νηματίων μεγέθους 18—20 μ (=μικρῶν) καὶ πάχους 2—3 ½ ἄνευ δια-

Digitized by Google

κλαδίσεων. Καλλιεργεῖται εὐκόλως εἰς σακχαροῦχα θρεπτικὰ ὑποστρώματα, παράγων ἐντὸς 2—3 ἡμερῶν ἀποικίας μελανάς, βαθέως εἰσχωρούσας εἰς τὸ θρεπτικὸν ὑπόστρωμα.

*Μικρόσπορον τὸ ξανθῶδες* (m. xanthodes). Ἀνευρέθη εἴς τινα σύκωσιν τῷ 1918 ὑπὸ τοῦ Fischer καὶ εἶναι πιθανῶς ἱππείας καταγωγῆς. Αἱ καλλιέργειαι ἔχουσι κιτρίνην χροιὰν ψάμμου.

*Μικρόσπορον τὸ χνοῶδες* (m. pubescens). Περιεγράφη ὑπὸ τοῦ Sabouraud τῷ 1909 καὶ χαρακτηρίζεται ὑπὸ καλλιεργείας ταχείας μετὰ χνοὸς λεπτοτάτου. Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

**μικροστομίδαι** (οἱ) (Microstomidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατελμίνθων*, περιλαμβάνουσα μικροὺς σκώληκας τῶν ἁλμυρῶν ἢ τῶν γλυκέων ὑδάτων τῆς Εὐρώπης. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μικρόστομος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μικρόστομος** (ὁ) (Microstomus) *[Ζωολ.]*. Γένος σκωλήκων τῆς οἰκογενείας τῶν *μικροστομιδῶν*, περιλαμβάνον σκώληκας ὑδροβίους μικροῦ μεγέθους καὶ διὰ καταμερισμοῦ πολλαπλασιαζομένους. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς θαλάσσας τῆς Εὐρώπης καὶ ἐντὸς τῆς ἰλύος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν. Δ. Ν. Π.

— μικρόστομος (ὁ) (Microstomus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων ἀκανθοπτερυγίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σαλμονιδῶν*, περιλαμβάνον σολωμοὺς μικροῦ μεγέθους. Ἐκ τῶν τριῶν γνωστῶν εἰδῶν τοῦ γένους, ἅτινα ἀπαντῶ-

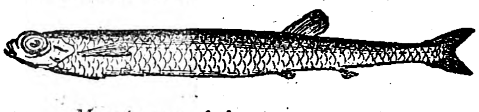

*Μικρόστομος ὁ ἀπεστρογγυλωμένος.*

σιν εἰς τὰς εὐκράτους θαλάσσας τῆς Εὐρώπης, ἀξιολογώτερον εἶναι ὁ *μικρόστομος ὁ ἀπεστρογγυλωμένος* (Microstomus rotundatus), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος 30 περίπου ἑκατοστομέτρων, ἔχει δὲ σῶμα κυλινδρικὸν καὶ ἐπίμηκες, ὑπὸ πολυπληθῶν λεπτῶν λεπίων καλυπτόμενον. Ὁ χρωματισμός του εἶναι ἀργυροκίτρινος. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Μεσογείου καὶ ἰδίως εἰς τὰς παρὰ τὴν Γαλλίαν τοιαύτας. Δ. Ν. Π.

**Μικρόστομος, Παρθένιος·** βλ *Παρθένιος* Μικρόστομος.

**μικροσύωψ** (ὁ) (Microsyops Leidy) *[Παλαιοζωολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μιξοδηκτιδῶν ἐντομοφάγων* θηλαστικῶν. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν στρωμάτων Bridger τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Βόρειον Ἀμερικήν.

Συνώνυμα: *λιμνοθήριον, βαθρόδους, μεσακόδους, παλαιακόδους.* Γ. Κ. Γ.

**μικρόσφαιρα** (τὰ) (Microsphoera) *[Βοτ.]*. Γένος μυκήτων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πυρηνομυκήτων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐρυσιβοειδῶν*, περιλαμβάνον μικροσκοπικοὺς παρασιτικοὺς μύκητας ἐνδιαιτωμένους ἐπὶ διαφόρων φυτῶν καὶ καταστρέφοντας τὰ φύλλα καὶ τοὺς καρποὺς τούτων. Ν. Δ. Π.

**μικροσφυγμία** (ἡ). Καλεῖται οὕτω μόνιμος μικρότης τοῦ σφυγμοῦ, ὅστις δυσκόλως γίνεται ἀντιληπτός. Ἡ κατάστασις αὕτη παρατηρεῖται κυρίως ἐπὶ παιδίων καὶ παρακολουθεῖται ἀπὸ κυάνωσιν καὶ ψῦξιν τῶν ἄκρων, ἰχθύωσιν καὶ νανισμόν, φαίνεται δὲ ἔχουσα σχέσιν πρὸς ἀνεπάρκειαν τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος συνεπείᾳ κληρονομικῆς συφίλιδος ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον.

**μικρόσχημος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ἐπὶ μοναχῶν, ὁ ἔχων μικρὸν σχῆμα, ὁ μικροῦ σχήματος, ἀντίθ. *μεγαλόσχημος.*

**μικρόσωμα** (τὰ) *[Ἀνατομ.]*. Ἐκ τῶν δύο οὐσιῶν, ἐξ ὧν συνίσταται τὸ πρωτόπλασμα τῶν κυττάρων, τῆς μὲν συμπαγεστέρας, τῆς δὲ μαλθακωτέρας ἢ ῥευστοτέρας, ἡ συμπαγεστέρα ἀποτελεῖται ἐξ ἰνιδίων, ἅτινα ἐμπεριέχουσι κοκκοειδῆ μόρια. Τὰ κοκκοειδῆ ταῦτα μόρια, τὰ ἐν τοῖς ἰνιδίοις σκηνοῦντα, καλοῦνται *μικρόσωμα.* Ι. Π.

**μικροσωμάτιον** (τὸ) *[Βιολ.]*· βλ. λ. *κυτομικρόσωμον.*

**Μικροτάλιανη** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἄλλοτε νησὶς ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Ἐφέσου (Σκαλανόβας), ἤδη δὲ ὀρθόπαγος (ὑψόμ. 235 ποδ., πλάτ. 37° 53′ 50″ Β., μῆκ. 27° 17′ 05″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3446: Paspargo islet to Samos), ὀρθούμενος ἀπὸ πεδιάδος σχηματισθείσης ὑπὸ τῶν ἰλύων, ἃς κυλινδεῖ ὁ Καΰστρος. —2) Ὅρμος, καθ' ὃν τὸ στόμιον τοῦ πόρου πρὸς τὴν ὁμώνυμον λίμνην, 6 ¼ μίλλ. βορείως τοῦ Κουσάντασι. Σ. Ε. Λ.

**μικρότερος**, —α, —ον, κοιν. —ρος, —η, —ο· συγκριτικὸν τοῦ μικρός, ἐλάσσων, ἥττων, βραχύτερος (βλ. λ. *μικρός*).

**μικροτέχνημα** (τό)· πᾶν προϊὸν τῆς μικροτεχνίας ἢ τῶν μικρῶν καλουμένων τεχνῶν.

—*[Ἐγκυκλοπ.]* Τὸ *μικροτέχνημα* δύναται νὰ εἶναι εἰδώλιον ἢ ἔργον ξυλογλυπτικῆς ἢ εἰκονίδιον ἢ τρίχαπτον ἢ ἔργον τῆς χρυσοχοΐας, τῆς ἀργυροχοΐας, τῆς κεραμευτικῆς, τῆς ὁπλουργίας, τῆς σμαλτοποικιλτικῆς, τῆς ἐξεργασίας τοῦ σφυρηλάτου σιδήρου κλπ. Πολλὰ μικροτεχνήματα ἔχουν μεγίστην ἀξίαν διὰ τὴν πρωτοτυπίαν τῆς ἐμπνεύσεως καὶ τὴν θαυμασίαν δεξιοτεχνίαν τῆς ἐκτελέσεώς των καὶ τῆς ἐξεργασίας πάσης λεπτομερείας των. Ι. Μ. Π.

**μικροτεχνία** (ἡ)· ἡ τέχνη τῆς κατασκευῆς μικροῦ μεγέθους καλλιτεχνικῶν ἔργων.

—*[Ἐγκυκλοπ.]* Ὀνομάζεται *μικροτεχνία* ἢ *μικροτεχνικὴ* τὸ σύνολον τῶν κλάδων ἐκείνων τῆς τέχνης, οἵτινες κέκτηνται ἐλάσσονα, ἐν συγκρίσει πρὸς τὴν ἀρχιτεκτονικήν, τὴν πλαστικὴν ἢ τὴν ζωγραφικὴν σημασίαν, εἴτε ἕνεκα τῶν ὑλῶν, τὰς ὁποίας ἐξεργάζονται, εἴτε ἕνεκα τῶν ἀναγκῶν, εἰς τὰς ὁποίας ἐπικουροῦσιν, εἴτε ἕνεκα τοῦ ὅτι πρὸς καλλιέργειάν των ἀπαιτεῖται πολλάκις δεξιοτεχνία μᾶλλον παρὰ καλλιτεχνικὴ ἰδιοφυΐα. Τοιουτοτρόπως εἰς τὴν μικροτεχνίαν δύναται νὰ περιληφθῇ πᾶσα κατασκευὴ κομψοτεχνημάτων ἢ σκευῶν χρησίμων εἰς τὸν καθ' ἡμέραν βίον ἢ ἔτι καὶ ζωγραφικῶν ἢ πλαστικῶν ἔργων (ὡς αἱ μικρογραφίαι ἢ τὰ εἰδώλια), ἅτινα διὰ τὴν σμικρότητα τῶν διαστάσεών των παρουσιάζουν ἐκδήλους χαρακτῆρας ἀπομακρύνοντας ταῦτα τῆς περιοχῆς τῆς κατὰ κυριολεξίαν μεγάλης τέχνης. Μεταξὺ τῶν μικρῶν τεχνῶν περιλαμβάνονται καὶ ἡ χρυσοχοΐα, ἡ ἀργυροχοΐα, ἡ σμαλτοποικιλτική, ἡ κεντητική, ἡ κεραμεική (νοουμένη ὡς ἀγγειοπλαστικὴ καὶ ἀγγειογραφία), ἡ ἐξεργασία τοῦ ἐλεφαντοστοῦ, ἡ δαντελλοπλεκτική, ἡ ὁπλουργία κλπ. Ὑπάρχουν ἐν τούτοις περιπτώσεις, καθ' ἃς δημιουργήματά τινα ἐνίων τῶν τεχνῶν τούτων δύνανται νὰ παρουσιάσουν ἀξιώσεις προϊόντων μεγάλης τέχνης. Τοῦτο ἐξαρτᾶται ἀπὸ τὰς διαστάσεις των καὶ ἀπὸ τὴν προσωπικότητα τοῦ καλλιτέχνου, εἰς ὃν ταῦτα ὀφείλονται. Εἶναι ἀναμφισβήτητον ὅτι λαοί τινες παρουσιάζουν ὅλως ἰδιάζουσαν ἐπίδοσιν εἰς τὰς μικρὰς τέχνας. Τοιοῦτοι εἶναι οἱ λαοὶ τῆς Ἄπω Ἀνατολῆς. Καὶ παρὰ τοῖς Βυζαντινοῖς ὅμως ἔχομεν νὰ παρατηρήσωμεν θαυμασίαν ἀνάπτυξιν τῶν μικρῶν τεχνῶν παραλλήλως πρὸς τὴν μεγάλην τέχνην. Σήμερον ἡ μικροτεχνία ὑπέστη ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ τὴν ἐπίδρασιν τῆς βιομηχανοποιήσεως τῶν πάντων· τὰ προϊόντα της δὲν ὀφείλουνται εἰς τὴν ἐπίνοιαν ἢ τὴν δεξιοτεχνίαν τοῦ ἀνθρώπου· ὅπου δὲ τοῦτο συμβαίνει, εἶναι ταῦτα περιζήτητα καὶ ὀνομαστά. Ι. Μ. Π.

**μικροτεχνικὴ** (ἡ)· βλ. *μικροτεχνία.*

**μικροτεχνίτης** (ὁ)· ὁ ἀσχολούμενος εἰς τὴν μικροτεχνίαν.

**μικροτηλέφωνον** (τό). Σύσκευὴ φέρουσα συνδεδυασμένα εἰς ἑνιαῖον μηχανικὸν σύνολον τὸ μικρόφωνον (πομπὸν) καὶ τὸ ἀκουστικὸν (δέκτην) ἑνὸς τηλεφώνου, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὰ τηλέφωνα, εἰς ἃ ἀκουστικὸν καὶ μικρόφωνον ἀποτε-

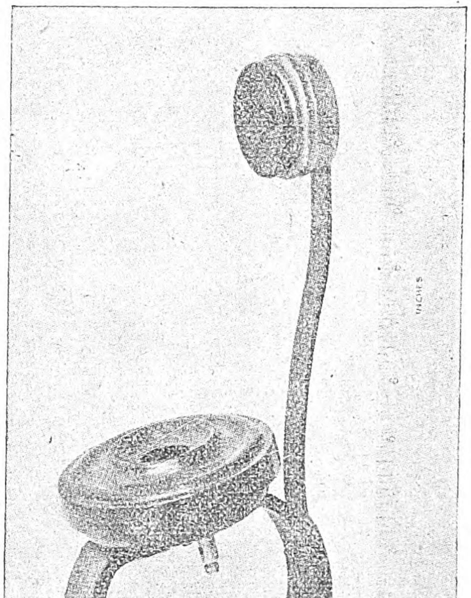

Σχ. 1. *Μικροτηλέφωνον χρησιμοποιηθὲν κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τῆς τηλεφωνίας, μὲ μαγνητικὸν μικρόφωνον.*

λοῦν χωριστὰ τεμάχια. Ὁ ἐπὶ μιᾶς μονάδος συνδυασμὸς μικροφώνου ἀκουστικοῦ εἶναι καθαρῶς ζήτημα εὐκολίας καὶ ἀνέσεως τοῦ χειριστοῦ τοῦ τηλεφώνου, καίτοι δὲ τὰ πλεονεκτήματα τοῦ τοιούτου συνδυασμοῦ εἶχον γίνει φανερὰ ἀπὸ τῶν πρώ-

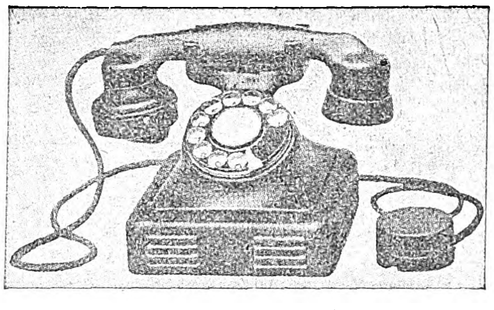

Σχ. 2. *Σύγχρονον μικροτηλέφωνον τῆς International Standard Electric Corporation, ἐπὶ αὐτομάτου τηλεφώνου.*

των χρόνων τῆς τηλεφωνίας (σχ. 1) εἰς πολλὰς χώρας, ὡς ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ, τὸ μικροτηλέφωνον μόλις σήμερον ἀρχίζει νὰ διαδίδηται, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ κεχωρισμένου ἀκουστικοῦ - μικροφώνου, ὅπερ διετηρεῖτο πιθανῶς λόγῳ τῆς κεκτημένης συνηθείας. Λ. Ν. Κ.

**μικρότης**, —ητος (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μικροῦ, τὸ νὰ εἶναι τι μικρόν.

**μικροτομὴ** (ἡ)· μικρὰ τομὴ μετρουμένη διὰ χιλιοστῶν τοῦ χιλιοστομέτρου.

—*[Ἱστολ.]* Ἐν τῇ ἱστολογικῇ τέχνῃ (ἢ μικροτεχνικῇ) ὀνομάζομεν *μικροτομὰς* λεπτοτάτας στιβάδας ἱστοῦ, ἃς ἀποτέμνομεν ἐξ ἱστοτεμαχίου τινὸς δι' εἰδικῶν μηχανημάτων, τῶν καλουμένων *μικροτόμων.* Αἱ μικροτομαὶ αὗται χρησιμοποιοῦνται κατόπιν πρὸς ἐξέτασιν διὰ τοῦ μικροσκοπίου, ἀναλόγως πρὸς τὸν ἐπιδιωκόμενον σκοπόν, ἢ ὅπως ἔχουσιν, ἐν ἀχρώστῳ δηλαδὴ καταστάσει, ἢ μετὰ χρῶσιν δι' εἰδικῶν χρωστικῶν οὐσιῶν. Μεγάλης σπουδαιότητος, ἰδίως προκειμένου νὰ σπουδάσωμεν λεπτὰς ὑφὰς τῶν ἱστῶν καὶ τῶν κυττάρων, εἶναι τὸ πάχος τῶν μικροτομῶν, ὅπερ συνήθως δέον νὰ μὴ ὑπερβαίνῃ τὰ 15 μ (=*μικρά*, ἤτοι χιλιοστὰ τοῦ χιλιοστομέτρου). Καὶ διὰ μὲν τοῦ ψυκτικοῦ μικροτόμου δυνάμεθα, ὅταν ἔχωμεν ἐξασκηθῆ εἰς τὴν τμητικὴν τέχνην, νὰ λάβωμεν τομὰς μέχρι 5 μ, διὰ δὲ τῆς μεθόδου τῆς ζελοϊδίνης (Zelloidin) ἐπιτυγχάνομεν τομὰς πάχους 10—15 μ, ἐνῷ διὰ τῆς μεθόδου τῆς κατασκηνώσεως ἐν παραφφίνῃ παρέχονται ἐξόχως λεπταὶ τομαὶ πάχους 5 μ καὶ κατωτέρω τούτου. Αἱ δύο τελευταῖαι μέθοδοι ἔχουσιν ἔναντι τῶν πολλῶν πλεονεκτημάτων τὸ μειονέκτημα τῆς μακρᾶς διαρκείας, καθ' ὅσον πρὸ τῆς τμήσεως δέον νὰ προηγηθῇ ἡ διεργασία τοῦ ἐγκλεισμοῦ ἢ κατασκηνώσεως τοῦ πρὸς μικροσκοπικὴν ἐξέτασιν ἱστικοῦ τμηματίου ἐν ζελοϊδίνῃ ἢ ἐν παραφφίνῃ. Μόνον διὰ τῆς ἀπολύτως ἀναγκαίας ταύτης προεργασίας καθίστανται τὰ ἱστοτεμάχια εὔτμητα. Ἡ μικρὰ διάρκεια τῆς κατασκευῆς τῶν ἱστολογικῶν παρασκευασμάτων ἔχει κυρίως διὰ τὸν παθολογοανατόμον μεγάλην σημασίαν, καθ' ὅσον οὗτος, προκειμένου περὶ ἐξετάσεως ἐπειγουσῶν δοκιμαστικῶν ἐκτομῶν ἐξ ὄγκων κττ., εἶναι ἠναγκασμένος ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος νὰ δώσῃ τὸ πόρισμα τῆς ἱστολογικῆς ἐξετάσεως εἰς τὸν χειρουργόν, γυναικολόγον, λαρυγγολόγον κτλ., ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁποίου κανονίζεται ἡ περαιτέρω χειρουργικὴ θεραπεία. Πρὸ τῆς ἐφευρέσεως τοῦ μικροτόμου τοιαῦται λεπταὶ τομαὶ κατάλληλοι πρὸς μικροσκοπικὴν ἐξέτασιν ἐγίνοντο διὰ τῆς χειρός, χρησιμοποιουμένου πρὸς τοῦτο ξυραφίου ἢ εἰδικοῦ διπλοῦ μαχαιρίου (Doppemesser). Ἡ μέθοδος αὕτη ἐφαρμόζεται ἀκόμη σήμερον πρὸς τμῆσιν φυτικῶν ἱστῶν. Θ. ΣΚΛΑΒΟΥΝΟΣ

**μικροτόμος** (ὁ). Ὄργανον διὰ τοῦ ὁποίου κατορθοῦται ἡ ἐκτέλεσις λεπτῶν τομῶν φυσιολογι-

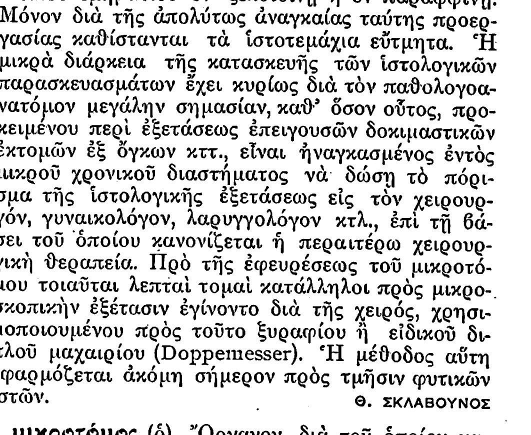

*Μικροτόμος.*

Digitized by Google

κοῦ ἢ παθολογικοῦ τινος ἱστοῦ ἢ ὀργάνου, πρὸς εὐχερῆ μικροσκοπικὴν μελέτην αὐτοῦ. Ἄλλοτε μετεχειρίζοντο μικροτόμους κρατουμένους διὰ τῆς χειρός. Σήμερον ἔχομεν τοὺς μηχανικοὺς καλουμένους μικροτόμους, οἵτινες εἶναι κατεσκευασμένοι κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε καὶ τὸ ξυράφιον νὰ εἶναι στερεωμένον ἐπὶ τοῦ μικροτόμου καὶ αἱ τομαὶ νὰ ἔχωσι πάντοτε τὸ αὐτὸ πάχος. Διὰ τῶν τελειοτέρων μικροτόμων (Minot) γίνεται κατορθωτὴ τομὴ πάχους καὶ μέχρις ἑνὸς χιλιοστοῦ τοῦ χιλιοστομέτρου. Γ. Φ. Κ.

**Μικροῦ Ἀγροῦ** *μονή*. Ὠνομάσθη οὕτω, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν μονὴν τοῦ *Μεγάλου Ἀγροῦ* (βλ. λ.), κτισθεῖσα πιθανῶς κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον. Τῆς μονῆς ταύτης ὁ ἡγούμενος Χριστοφόρος ἔλαβε μέρος εἰς τὴν Ζ' ἐν Νικαίᾳ Σύνοδον. Μ. Ι. Γ.

**Μικρουλέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἐρυμανθίας (Τουρκοχωρίου) τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 41. Χ. Δ.

**μικρούλης** (ὁ), θηλ. *μικρούλα*, οὐδ. *μικρούλι* καὶ —*ικο*, ὑποκορ. τοῦ *μικρός*· συνήθ. ὡς οὐσ., μικρὸς παῖς: «σὰν μικρούλης κάμνεις», «μικρούλα κι' ὀμορφοῦλα»· || καὶ ἐπίθ. «'ς τὴ μικροῦλα κάμαρη».

**μικρουργική** (ἡ) (Mikrurgie) *[Μικροβιολ.]*. Τὸν ὅρον τοῦτον, ὅστις δὲν εἶναι ἐν χρήσει ἐν τῇ ἑλληνικῇ, μεταχειρίζονται οἱ ξένοι, ὁσάκις θέλουσι νὰ σημάνωσι διαφόρους χειρισμοὺς γινομένους τῇ χρήσει τοῦ μικροσκοπίου. Ἡ διὰ λεπτοτάτων βελονῶν π.χ. καὶ μαχαιριδίων διάσχισις κυττάρων, ἡ εἰσαγωγὴ χημικῶν ἢ χρωστικῶν οὐσιῶν ἐντὸς αὐτῶν διὰ μικροσιφωνίων, ἡ παρατήρησις τῆς ἐπιδράσεως τούτων ἐπὶ τοῦ πρωτοπλάσματος τῶν κυττάρων κτλ. λέγεται ὑπὸ τῶν ξένων μικρουργική. Ν. Α. Μ.

**μικρούτσικος,** —*η*, —*ο*· ὑποκορ. τοῦ *μικρός*, ὁ πολὺ μικρός: «μιὰ μικρούτσικη κάμαρη, ἴσα-ἴσια ποῦ χωρεῖς».

**μικροφάγα** (τὰ) *[Μικροβιολ.]*. Οὕτως ἐκλήθησαν ὑπὸ τοῦ Μετσνικὼφ τὰ λευκὰ αἱμοσφαίρια τοῦ αἵματος, ἅτινα ἔχουσιν ὀλίγον πρωτόπλασμα· ταῦτα προσελκύοντα τὰ μικρόβια συλλαμβάνουσιν αὐτὰ καὶ τὰ καταστρέφουσι διὰ τῆς οὐσίας, ἣν ἐκκρίνουσι καὶ ἥτις ὀνομάζεται *μικροκυττάση*. Τοιαῦτα κύτταρα εἶναι τὰ λεμφοκύτταρα, τὰ μικρὰ μονοπύρηνα καὶ τὰ πολυμορφοπύρηνα οὐδετερόφιλα καὶ ἠωσινόφιλα. Ἅπαντα ταῦτα ἀποτελοῦσι τὴν μίαν τάξιν τῶν *φαγοκυττάρων*, τῆς ἑτέρας περιλαμβανούσης τὰ μακροφάγα. Ν. Α. Μ.

**μικροφαράδ(ιον)** (τό). Μονὰς πρὸς μέτρησιν τῆς ἠλεκτρικῆς χωρητικότητος. Εἶναι δὲ 1 μικροφαρὰδ $= 10^{-6}$ φαράδ. Κ. Π.

**μικροφελσίτης** (ἡ) (Mikrofelsit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα ἡφαιστειογενὲς μὲ θεμελιώδη μᾶζαν μικροφελσιτικήν. Ἡ τοιαύτη μᾶζα παρατηρεῖται εἴς τινας λιπαρίτας ἢ χαλαζιακοὺς πορφύρας, συνίσταται δὲ ἀπὸ σύμπλεγμα σκοτεινὸν καὶ ἐλάχιστα διαφανὲς ἐκ λεπτοτάτων λεπίων, ἰνῶν ἢ κοκκίων, τὸ ὁποῖον οὐδεμίαν ἐμφανίζει ἀντίδρασιν εἰς τὸ πεπολωμένον φῶς καὶ εἰς τὸ ὁποῖον μόνον ὅταν τὰ ἀνωτέρω ἱστολογικὰ στοιχεῖα διατάσσωνται παραλλήλως ἢ ἀκτινοειδῶς, δύναται νὰ παρατηρήσῃ τις ἀσθενῆ διπλοθλαστικότητα. Οἱ λιπαρῖται καὶ οἱ χαλαζιακοὶ πορφύραι, οἱ ὁποῖοι παρουσιάζουν μικροφελσιτικὴν θεμελιώδη μᾶζαν, καλοῦνται μικροφελσιτικοὶ ἢ φελσοφυρικοὶ λιπαρῖται καὶ χαλαζιακοὶ πορφύραι ἢ καὶ ἁπλῶς φεσοφύραι. Γ. Β.

**μικροφθαλμία** (ἡ). Ἡ ἐλάττωσις τῶν διαστάσεων τοῦ βολβοῦ ἐν συγκρίσει πρὸς τὰς φυσιολογικὰς τοιαύτας. Ἐπὶ ἐνηλίκων καὶ ἐμμετρόπων αἱ ὀφθαλμικαὶ διαστάσεις εἶναι 24 χιλιοστόμετρα διὰ τὸν προσθοπίσθιον καὶ τὸν ὁριζόντιον ἄξονα. Οἱ μικρόφθαλμοι σπανίως ἔχουσιν ὅρασιν ἱκανοποιητικήν, ἔστω καὶ μετὰ διόρθωσιν τῶν διαθλαστικῶν αὐτῶν ἀνωμαλιῶν ἢ καὶ ἐπέμβασιν, διότι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον φέρουσιν ἄλλας συγγενεῖς ἀνωμαλίας (κολοβώματα, ἐμμονὴν τῆς ὑαλοειδοῦς ἀρτηρίας, τῆς μεμβράνης τῆς ἴριδος, καταρράκτην, ὑποπλασίαν ἢ ἀπλασίαν τοῦ φακοῦ, νυσταγμόν, μικροβλεφαρίαν, κορεκτοπίαν, δερματοειδεῖς κύστεις κτλ.). Αἱ ἀνωμαλίαι αὗται συνοδεύονται συχνάκις καὶ μὲ ἑτέρας ἐνδοκογχικὰς (κύστεις, κολοβώματα) ἢ τοῦ κρανίου, μὴ ἐξαιρουμένης καὶ τῆς ὑδροφθαλμίας. Κατὰ τὴν μικροφθαλμίαν ὁ βολβὸς ἐνίοτε εἶναι τόσον μικρός, ὥστε μετὰ δυσκολίας ἀντιλαμβανόμεθα τὴν ὕπαρξιν αὐτοῦ διὰ τῆς δακτυλικῆς ἐξετάσεως. Ἄλλοτε ἡ τοιαύτη ἐξέτασις εἶναι ἀρνητική, ὁπότε πρέπει τις νὰ προστρέξῃ εἰς τὴν μικροσκοπικὴν ἐξέτασιν, ἵνα ἀνεύρῃ ὑπόλοιπά τινα χιτώνων τοῦ βολβοῦ (μελαγχρωστικὰ κύτταρα τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς κτλ.). Ἡ τοιαύτη μικροφθαλμία καλεῖται καὶ ἀοφθαλμία. Συνήθως κατὰ τὴν μικροφθαλμίαν αἱ διαστάσεις τῆς κόγχης εἶναι ἠλαττωμέναι ἐν συγκρίσει πρὸς τὸ μέγεθος τοῦ κρανίου καὶ τοῦ λοιποῦ σώματος. Ὅταν ὅμως πρόκειται περὶ νάνου, ὁπότε ὁ βολβὸς εἶναι μὲν μικρός, ἀλλ' εὑρίσκεται ἐν ἁρμονικῇ ἀναλογίᾳ μὲ τὰς διαστάσεις τῆς κεφαλῆς καὶ τοῦ λοιποῦ σώματος, τότε ἡ κατάστασις αὕτη ὀνομάζεται *ἀληθὴς νανοφθαλμία* καὶ οἱ τοιοῦτοι ὀφθαλμοί, συνήθως μὴ παρουσιάζοντες ἄλλας ἀλλοιώσεις, ἔχουσιν ὅρασιν ἱκανοποιητικήν.

Ὅταν ὁ ὀφθαλμὸς συνεπείᾳ διαφόρων παθήσεων ἢ τραυμάτων ἀπολέσῃ τὸ ἀρχικὸν αὐτοῦ μέγεθος καὶ σμικρυνθῇ, τότε ὁ τοιοῦτος βολβὸς ὀνομάζεται *ἀτροφικὸς* καὶ ὄχι μικρόφθαλμος. Α. Γ.

**μικρόφθαλμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων μικροὺς ὀφθαλμούς, μικρόμματος.

**μικροφιλοδοξία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ *μικροφιλοδόξου* (βλ. λ.).

**μικροφιλόδοξος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἐπὶ μικροῖς ἀγαπῶν τὴν δόξαν· || ὁ μικρός, ὁ ἄσημος ἅμα καὶ φιλόδοξος.

**μικροφιλοτιμία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μικροφιλοτίμου, κενοδοξία.

**μικροφιλότιμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἐπὶ μικροῖς φιλότιμος, ὁ ἀξιῶν τιμὴν δι' ἀσήμαντα πράγματα, κενόδοξος.

**μικροφυής** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· λεπτοφυής, μικροκαμωμένος.

**μικρόφυτα** (τὰ) *[Βοτ.]*. Καλοῦνται οὕτως οἱ μικροσκοπικοὶ φυτικοὶ ὀργανισμοί.

**μικροφυτικός,** —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ φυκόφυτα, ὁ τῶν μικροφύτων.

**μικρόφωνον** (τό). Συσκευὴ ἀποτελουμένη ἐξ ἀγωγοῦ, οὗτινος ἡ ἠλεκτρικὴ ἀντίστασις μεταβάλλεται ἐκ τῶν ὑπὸ τῆς ὁμιλίας προκαλουμένων περιοδικῶν μεταβολῶν τῆς πιέσεως τοῦ ἀέρος. Αἱ μεταβολαὶ τῆς ἀντιστάσεως ἀποδίδονται ὡς μεταβολαὶ τοῦ ρεύματος ἐν κυκλώματι ἀποτελουμένῳ ἐκ τῆς συνδέσεως ἐν σειρᾷ τοῦ μικροφώνου πρὸς πηγὴν συνεχοῦς ρεύματος. Προκειμένου περὶ μικροφώνου χρησιμοποιουμένου ἐν συνδυασμῷ πρὸς ἀσθενῆ ρεύματα, λίαν συνήθης τύπος εἶναι τὸ μικρόφωνον, ἐν ᾧ ὁ ἀγωγὸς μεταβλητῆς ἀντιστάσεως ἀποτελεῖται ἐκ στερεοῦ σώματος, συνήθως ἐκ ψηγμάτων ἄνθρακος τοποθετουμένων μεταξὺ δύο ἠλεκτροδίων, ὧν τὸ ἓν πραγματοποιεῖται ὑπὸ λεπτῆς μεμβράνης ἄνθρακος καὶ πρὸ τῆς ὁποίας διεξάγεται ἡ ὁμιλία. Ὅταν ὁμιλοῦμεν πρὸ τῆς μεμβράνης, αὕτη, λόγῳ τῶν διακυμάνσεων τῆς πιέσεως τοῦ ἀέρος τῆς προκαλουμένης ἐκ τῆς ὁμιλίας, ἄλλοτε μὲν πιέζεται ἀσθενέστερον, ἄλλοτε δὲ ἰσχυρότερον ἐπὶ τῶν ψηγμάτων τοῦ ἄνθρακος, οὕτω δὲ ἡ ἀντίστασις διόδου ἀπὸ τῆς μεμβράνης πρὸς τὰ ψήγματα μεταβάλλεται ἀναλόγως. Αἱ μεταβολαὶ αὗται τῆς ἀντιστάσεως προκαλοῦσιν ἀναλόγους τοιαύτας τοῦ ρεύματος τοῦ μικροφωνικοῦ κυκλώματος, ἐὰν δὲ ἐν αὐτῷ ἔχῃ εἰσαχθῆ τηλέφωνον, τοῦτο ἀναπαράγει πιστῶς τὴν ὁμιλίαν. Ἡ διάταξις αὕτη ἀποτελεῖ τὴν ἀρχὴν τῆς τηλεφωνίας.

Ἡ μεμβρᾶνα τοῦ μικροφώνου παρουσιάζει ἰδίαν συχνότητα, ἥτις ὅμως λόγῳ τῆς μεγάλης ἀποσβέσεως αὐτῆς ἐλάχιστα ἐπικρατεῖ. Εἰς μικρόφωνα ἐν οἷς ἡ μεμβρᾶνα ἔχει πάχος 0,5 mm καὶ διάμετρον 2,5 cm, ἡ ἰδία συχνότης αὐτῆς εἶναι περίπου 800, καὶ ἑπομένως συχνότητες ἀνώτεραι τῆς ἄνω τιμῆς ἀποσβέννυνται ἰσχυρότερον. Εἰς τὰ νέα μικρόφωνα, ἐν οἷς ἡ διάμετρος τῆς μεμβράνης εἶναι 1 cm καὶ τὸ πάχος 0,2 mm, ἡ ἰδία συχνότης

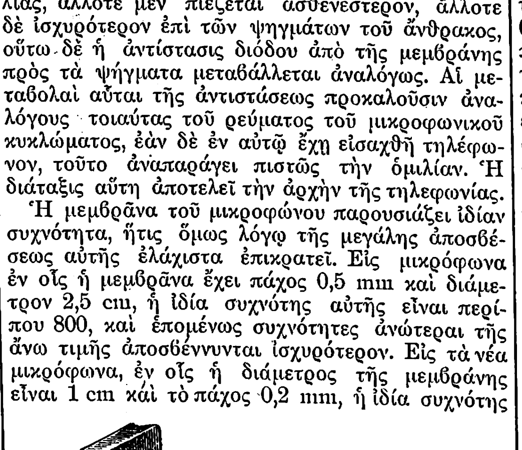


*Μικροφωνικὴ διάταξις μεγαφωνικοῦ τηλεφώνου ἐκ ψηγμάτων ἄνθρακος.*

ἀνέρχεται εἰς 1900. Τὰ μικρόφωνα κατασκευάζονται οὕτως, ὥστε, ἀναλόγως τῶν συνθηκῶν χρησιμοποιήσεως αὐτῶν, νὰ παρουσιάζωσιν ἀντίστασιν μεταξὺ 10—500 Ohm. Ἡ μεταβολὴ δὲ τῆς ἀντιστάσεως αὐτῶν ἀνέρχεται εἰς 1 : 2. Ὡς ἐφευρέτης τοῦ μικροφώνου φέρεται ὁ Hughes. Τὸ μικρόφωνον, ὅπερ ἐπραγματοποίησεν ἀρχικῶς οὗτος, ἀποτελεῖται ἐκ ράβδου ἄνθρακος ἀποληγούσης ἀμφοτέρωθεν εἰς ἀκίδας καὶ στηριζομένης κατακορύφως μεταξὺ δύο τεμαχίων ἄνθρακος. Αἱ ἐκ τῆς ὁμιλίας προερχόμεναι διακυμάνσεις τῆς πιέσεως τοῦ ἀέρος προεκάλουν ἐλαφροὺς κραδασμοὺς τοῦ ὑποστηρίγματος τοῦ συστήματος, οἵτινες μετεδίδοντο εἰς τὴν ράβδον τοῦ ἄνθρακος, οὕτω δὲ ἡ ἠλεκτρικὴ ἀντίστασις τοῦ συστήματος μετεβάλλετο. Τὸ μικρόφωνον ἀποτελεῖ σπουδαιότατον ἐξάρτημα τῶν τηλεφωνικῶν καὶ ραδιοτηλεφωνικῶν ἐγκαταστάσεων. Κ. Π.

**μικρόφωνος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων μικράν, ἀσθενῆ φωνήν.

**μικροφωτογραφία** (ἡ) *[Φωτογρ.]*. Καλεῖται οὕτω ἡ ἐκ μικροσκοπικῶν παρασκευασμάτων τῇ βοηθείᾳ τοῦ μικροσκοπίου λαμβανομένη ἐν μεγεθύνσει εἰκών. Ἡ γραμμικὴ μεγέθυνσις τῶν διὰ τῆς μικροφωτογραφήσεως λαμβανομένων εἰκόνων φθά-

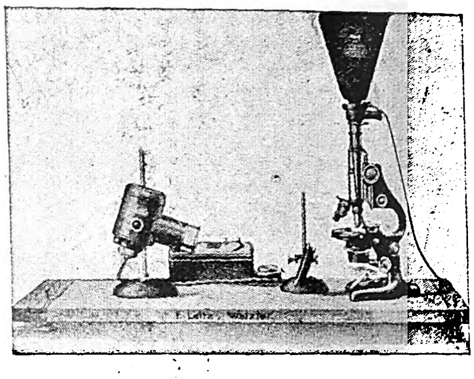

*Πλῆρες μικροφωτογραφικὸν μηχάνημα.*

νει ἀπὸ 1—3.000, σπανιώτερον δὲ καὶ μέχρι 10.000. Ἡ μικρὰ φωτογραφία ἀποτελεῖ σπουδαιότατον βοηθητικὸν μέσον διὰ τὴν μελέτην τῶν μικροργανισμῶν καὶ τὴν μικροβιολογίαν, ὡς ἐπίσης καὶ εἰς τὴν μελέτην τῆς ἐσωτερικῆς ὑφῆς τῶν διαφόρων πετρωμάτων, μετάλλων, κραμάτων κλπ. Πρῶτος ὁ Χάμφρυ Νταίβυ ἐπέτυχε τὴν λῆψιν μικροφωτογραφημάτων τῇ βοηθείᾳ τοῦ ἡλιακοῦ μικροσκοπίου. Κατὰ τὸ 1840 ὁ Φουκὼ ἐπέτυχε τὴν λῆψιν ὁμοίων εἰκόνων δαγγερροτυπικῶς. Αἱ ἀκολούθως ἐπιτευχθεῖσαι πρόοδοι εἰς τὴν καθόλου φωτογραφικὴν τέχνην διὰ τῆς εἰσαγωγῆς τῶν διὰ βρωμιαργυρούχου ζελατίνης ξηρῶν πλακῶν καὶ αἱ πρόοδοι τῆς ὀπτικῆς συνέβαλον εἰς τὴν σημερινὴν ἐξέλιξιν τοῦ κλάδου τούτου τῆς φωτογραφικῆς. Διὰ τὴν λῆψιν τῶν μικροφωτογραφημάτων εἶναι ἀπαραίτητος ὁ συνδυασμὸς μικροσκοπίου καὶ φωτογραφικοῦ θαλάμου. Πλήρεις τοιαῦται συσκευαὶ φέρονται σήμερον ἕτοιμοι ὑπὸ τῶν διαφόρων ὀπτικῶν οἴκων. Αἱ συσκευαὶ αὗται ἀποτελοῦνται ἐξ ἑνὸς συνήθους ἢ εἰδικοῦ, διὰ φωτογραφικοὺς σκοποὺς προοριζομένου, μικροσκοπίου, εὑρισκομένου ἐπὶ ὀπτικῆς τραπέζης, ἐκ τῶν διὰ τὸν φωτισμὸν τῆς συσκευῆς προοριζομένων μερῶν καὶ ἐκ τοῦ φωτογραφικοῦ θαλάμου, εὑρισκομένου ἔμπροσθεν ἢ ἄνωθεν τοῦ προσοφθαλμίου καὶ τοῦ ὁποίου τὸ ἄνοιγμα δύναται νὰ εἶναι 1—2 μ. Εἰς τὰς μεγάλας ὁριζοντίους μικροφωτογραφικὰς συσκευὰς ὁ φωτογραφικὸς θάλαμος εἶναι τελείως κεχωρισμένος ἀπὸ τὴν τράπεζαν τῆς προβολῆς καὶ τὴν μικροσκοπικήν, ὁ δὲ σύνδεσμος μεταξὺ τῶν δύο μερῶν κατὰ τὴν φωτογράφησιν ἐπιτυγχάνεται φωτοστεγῶς διὰ μεταλλικῆς χειρίδος. Κατὰ τὰς μικροφωτογραφήσεις χρησιμοποιεῖται ὡς φωτεινὴ πηγὴ εἴτε τὸ ἡλιακὸν φῶς, εἴτε τὸ τοῦ ἠλεκτρικοῦ τόξου ἢ τοῦ φωταερίου.

Ἡ μικροφωτογράφησις βασίζεται ἐπὶ τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ μικροσκοπικὴ εἰκών, ἥτις εἶναι ὁρατὴ εἰς τὸν ὀφθαλμόν, ὅστις δὲν εἶναι ἄλλο τι ἢ ἓν εἶδος φωτογραφικοῦ θαλάμου, γινομένης τῆς καταλλήλου προσαρμογῆς σχηματίζεται ἐπὶ τῆς θαμβῆς πλακὸς τῆς φωτογραφικῆς συσκευῆς, τῆς συνηρμοσμένης μετὰ τοῦ μικροσκοπίου, ὅπου καὶ δύναται νὰ ἀποτυπωθῇ ἀντικαθισταμένης τῆς θαμβῆς πλακὸς διὰ φωτοπαθοῦς τοιαύτης. Κατὰ τὰς μικροφωτογραφήσεις χρησιμοποιεῖται τὸ μικροσκόπιον εἴτε μετὰ τοῦ προσοφθαλμίου φακοῦ του, εἴτε ἄνευ αὐτοῦ. Ὅταν ἀφαιρεθῇ ὁ προσοφθάλμιος, ἀπαιτεῖται μεγαλύτερον ἄνοιγμα τοῦ φωτογραφικοῦ θαλάμου διὰ τὴν αὐτὴν μεγέθυνσιν. Διὰ νὰ ἐπιτευχθῇ κατὰ τὸ δυνατὸν μεγαλυτέρα μεγέθυνσις, ἀπαιτεῖται ὁ ἀντικειμενικὸς νὰ πλησιάσῃ περισσότερον τὸ παρασκεύασμα, ἡ δὲ φωτοπαθὴς πλὰξ ν' ἀπομακρυνθῇ περισσότερον ἀπὸ τὸν φωτογραφικὸν φακόν. Πάντως πρέπει νὰ ἔχῃ τις ὑπ' ὄψιν ὅτι ἡ ἐπίτευξις μεγάλων μεγεθύνσεων γίνεται εἰς βάρος τῆς σαφηνείας τῆς εἰκόνος. Ἐφόσον τὸ μικροσκόπιον φέρει τὸν προσοφθάλμιον αὐτοῦ, ἡ εἰκὼν θὰ εἶναι μεγαλυτέρα διὰ τὴν αὐτὴν ἀπόστασιν τῆς φωτοπαθοῦς πλακός, ἢ ὅταν ὁ προσοφθάλμιος ἔχῃ ἀφαιρεθῇ.

Digitized by Google

Κατὰ τὴν μικροφωτογράφησιν δυνάμεθα νὰ ἐπιτύχωμεν εὐκόλως τὴν ἐπὶ τῆς θαμβῆς πλακὸς προσαρμογήν, ἐάν, ἀφοῦ ρυθμισθῇ ἡ θέσις τῆς εἰκόνος, ὥστε νὰ εἶναι σαφὴς ἡ ὑπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ διὰ τοῦ προσοφθαλμίου παρατηρουμένη εἰκών, συνδέσωμεν ἀκολούθως τὸ μικροσκόπιον μετὰ τῆς φωτογραφικῆς συσκευῆς, ἣν ἔχομεν ἑτοίμην. Οὕτως ἐπιτυγχάνεται εὐκόλως ἡ ἐναλλὰξ παρατήρησις διὰ τοῦ ὀφθαλμοῦ καὶ ἡ φωτογράφησις. Τὸ μόνον μειονέκτημα, τὸ ὁποῖον παρουσιάζει ὁ προσοφθάλμιος τοῦ μικροσκοπίου, εἶναι ὅτι ὑπὸ τῶν φακῶν αὐτοῦ ἀπορροφεῖται μεγάλη ποσότης φωτός, ἀναγκαστικῶς δὲ πρέπει συνεπείᾳ τούτου νὰ παρατείνεται καὶ ὁ χρόνος τῆς ἐκθέσεως. Διὰ νὰ ἀποφεύγωνται αἱ ἀνακλάσεις ἐπὶ τῶν ἐσωτερικῶν παρειῶν τοῦ σωλῆνος τοῦ μικροσκοπίου, πρέπει οὗτος νὰ εἶναι κατὰ τὸ δυνατὸν βραχὺς καὶ μεγάλης διαμέτρου, ἄλλωστε εἶναι δυνατὸν νὰ χρησιμοποιηθῇ ὁλόκληρον τὸ πεδίον τῶν ἀντικειμενικῶν μεγάλης ἑστιακῆς ἀποστάσεως, ὡς εἶναι οἱ καλούμενοι Mikroplanars καὶ οἱ διάφοροι ἄλλοι ἀναστιγματικοί. Ἐὰν ἡ ὀπτικὴ ἑστία δὲν ταυτίζεται κατὰ τὴν φωτογράφησιν πρὸς τὴν χημικὴν τοιαύτην, ἐνδείκνυται τότε ἡ χρῆσις ὀπτικοῦ ἠθμοῦ διὰ νὰ καταστῇ μονόχρουν τὸ φῶς. Αἱ διὰ τὰς μικροφωτογραφήσεις ἐνδεικνύμεναι φωτοπαθεῖς πλάκες εἶναι αἱ ὀρθοχρωματικαί. Λόγῳ τοῦ ὅτι ἡ ἱκανότης πρὸς ἀπόδοσιν λεπτοτάτων ὑφῶν εἶναι ἀντιστρόφως ἀνάλογος πρὸς τὸ μῆκος κύματος τοῦ φωτός, ἀπὸ δύο δεκατηρίδων περίπου ἐφηρμόσθη τοιαύτη εἰδικὴ διάταξις διὰ μικροφωτογραφήσεις, δι᾽ ἧς χρησιμοποιεῖται μόνον ὑπεριῶδες φῶς μήκους κύματος ἀπὸ 0,275 μ. Αἱ συσκευαὶ αὗται φέρουν ἀντικειμενικοὺς καὶ προσοφθαλμίους ἐκ χαλαζίου καὶ εἰδικὴν ἠλεκτρικὴν φωτεινὴν πηγήν. Εἰς τὸ ἐμπόριον φέρονται ὑπὸ τῶν διαφόρων ὀπτικῶν καταστημάτων καὶ ἁπλᾶ τινα ἐξαρτήματα τῶν μικροσκοπίων, δι᾽ ὧν δύναταί τις εὐκόλως νὰ προσαρμόσῃ πτυσσόμενον φωτογραφικὸν θάλαμον μετὰ τοῦ μικροσκοπίου καὶ νὰ ἐπιτύχῃ οὕτω πρόχειρον καὶ εὔχρηστον μικροφωτογραφικὴν συσκευήν.

Κ. Γ. Μ.

—*[Μικροβιολ.]* Ἡ *μικροφωτογραφία*, εἰσαχθεῖσα ὑπὸ τοῦ Κώχ, διεδόθη εὐρύτατα εἰς τὴν μικροσκοπικὴν τέχνην πρὸς σπουδὴν τῶν λεπτομερειῶν τῆς ζωῆς καὶ ἰδίᾳ τῆς μορφῆς τῶν μικροβίων.

Πρὸ τῆς εἰσαγωγῆς τῆς φωτογραφίας οἱ ἐρευνηταί, ὅταν ἤθελον ν᾽ ἀπεικονίσωσι μικροσκοπικόν τι ἀντικείμενον, προσέτρεχον εἰς τὴν ἰχνογράφησιν. Μετὰ τὴν εἰσαγωγὴν ὅμως τῆς φωτογραφίας, εἰς σπανιωτάτας πλέον περιπτώσεις προστρέχουσιν εἰς τὴν ἰχνογράφησιν, διότι ἡ ἀκρίβεια τῆς ἀναπαραστάσεως τῶν μορφῶν καὶ τῶν διαστάσεων, ἡ ἐπιτυγχανομένη διὰ τῆς φωτογραφικῆς πλακός, καὶ ἡ αὐθεντικότης ταύτης ἀξίζει ὅσον καὶ αὐτὸ τοῦτο τὸ παρασκεύασμα. Αἱ λεπτομέρειαι τὰς ὁποίας μᾶς δίδει εὐαίσθητος φωτογραφικὴ πλὰξ εἶναι σχεδὸν ἀδύνατον νὰ ληφθῶσι διὰ τῆς ἰχνογραφήσεως, ἐνίοτε δὲ καὶ τῆς ὁράσεως. Τοῦτο ἄλλως τε συνάγεται καὶ ἐκ τοῦ ὅτι ὁ Κὼχ μόνον διὰ τῆς φωτογραφίας ἠδυνήθη ν᾽ ἀνακαλύψῃ τὰς βλεφαρίδας τῶν κινουμένων βακτηριδίων, αἵτινες πρότερον ἦσαν ἀόρατοι. Ἡ φωτογράφησις δὲν περιωρίσθη εἰς τὴν ἀναπαράστασιν μόνον τῶν μικροσκοπικῶν παρασκευασμάτων, ἀλλ᾽ ἐξετάθη καὶ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν λεπτομερειῶν τῶν διαφόρων ἀποικιῶν τῶν μικροβίων, αἵτινες πολλάκις κέκτηνται σπουδαίαν διαγνωστικὴν σημασίαν. Πρὸς μικροφωτογράφησιν ἀρκεῖ οἱονδήποτε φωτογραφικὸν μηχάνημα, ὅπερ νὰ δύναται νὰ ἐφαρμοσθῇ ἐπὶ τοῦ μικροσκοπίου. Τῶν μηχανημάτων τούτων ἄλλα μὲν ἐφαρμόζονται ἐπὶ καθέτως τοποθετημένου μικροσκοπίου, ἄλλα ἐπὶ ὁριζοντίως καὶ τέλος ἄλλα καὶ κατὰ τὰς δύο θέσεις. Ἡ κάθετος θέσις εἶναι διὰ τὴν φωτογράφησιν ὑγρῶν παρασκευασμάτων, ἡ δὲ ὁριζοντία διὰ τὴν τῶν ξηρῶν. Διὰ τὰς φωτογραφίας, ἃς λαμβάνομεν δι᾽ ἀσθενῶν μεγεθύνσεων, εἶναι ἀρκετὸν τὸ φῶς τῆς ἡμέρας. Διὰ τὰς λαμβανομένας ὅμως διὰ μεγάλων μεγεθύνσεων πρέπει ἀπαραιτήτως νὰ μεταχειρισθῶμεν ἔντονον φῶς καὶ ὡς τοιοῦτον προτιμᾶται τὸ ἠλεκτρικὸν διὰ βολταϊκοῦ τόξου. Τὸ φῶς τοῦτο συγκεντροῦμεν διὰ φακοῦ εἴτε ἐπὶ τοῦ κατόπτρου ἐὰν τὸ μικροσκόπιον εἶναι ἐν καθέτῳ θέσει, εἴτε ἀπ᾽ εὐθείας ἐπὶ τοῦ συγκεντρωτικοῦ συστήματος τοῦ Abbe, ὅταν τὸ μικροσκόπιον εἶναι ἐν ὁριζοντίᾳ θέσει. Σπουδαῖον ζήτημα γεννᾶται εἰς τὴν φωτογράφησιν τῶν κεχρωσμένων παρασκευασμάτων. Ἀπεδείχθη ὅτι τὰ παρασκευάσματα τὰ ὁποῖα εἶναι κεχρωσμένα διὰ βεζουβίνης ἢ καστανοχρόου τοῦ Bismarck ἀποδίδονται καλύτερον εἰς τὴν φωτογραφικὴν πλάκα τῶν παρασκευασμάτων τῶν κεχρωσμένων δι᾽ ἐρυθροῦ, κυανοῦ καὶ ἰώδους χρώματος. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ἢ πρέπει νὰ μεταχειρισθῶμεν πλάκας ἰσοχρωματικὰς ἢ ὀρθοχρωματικὰς ἢ νὰ παρεμβάλωμεν μεταξὺ φωτὸς καὶ ἀντικειμένου κιτρίνους ἢ πρασίνους χρωματιστὰς ὑάλους. Εἰς τὴν φωτογραφικὴν πλάκα πρέπει νὰ σημειοῦται ἡ μεγέθυνσις ἢ νὰ συμφωτογραφῆται καὶ ἀντικειμενικὸν μικρόμετρον, ὡς συμβουλεύει τοῦτο ὁ Roux. Τελευταίως, ἐπειδὴ ἡ φωτογράφησις τῶν κινουμένων μικροβίων ἦτο δύσκολος, ἐφηρμόσθη μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας ἡ κινηματογράφησις τούτων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Huberson*, Précis de microphotographie (Paris 1879).—*Viallanes*, La phot. appl. aux études d'anatomie microscopique (Paris 1886).—*Neuhaus*, Lehrbuch der Mikrophotographie (1890).—*Crookshank*, Photography of Bacteria (London 1887). —*Itzerott* und *Niemann*, Mikroph. Atlas der Bakterienkunde (1895).

Ν. Α. Μ.

**μικροχημεία** (ἡ). Κλάδος τῆς γενικῆς χημείας ἀσχολούμενος μὲ τὰς εἰδικὰς ἰδιότητας μικρῶν καὶ ἐλαχίστων τεμαχιδίων (χημικὰ κολλοειδῆ φαινόμενα, μοριακαὶ κινήσεις κλπ.), μὲ τὸν καθαρισμὸν τῶν συστατικῶν, ἅτινα δύνανται νὰ εὑρεθῶσι διὰ τοῦ μικροσκοπίου ἢ ὑπερμικροσκοπίου, τοῦ ὑπερηθμοῦ, τοῦ μικροζυγοῦ, εὐπαθῶν δεικτῶν, τῆς φασματοσκοπικῆς ἀναλύσεως, τῆς πολώσεως κλπ. (μικροχημικὴ ἀνάλυσις, μικροανάλυσις). Ὁ κλάδος οὗτος τῆς χημείας εἶναι σπουδαιότατος διὰ κολλοϊδοχημικάς, φυσιολογικάς, ἱστολογικάς, ὀρυκτολογικὰς καὶ πετρογραφικὰς ἐρεύνας.

Σ. Γ.

**μικροχημικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μικροχημείαν, ὁ τῆς μικροχημείας: «μικροχημικὴ ἀνάλυσις».

**μικροχρονόμετρον** (τό)· χρονόμετρον χρησιμεῦον πρὸς καταμέτρησιν μικροτάτων διαιρέσεων τοῦ χρόνου.

**Μικροχώρι(ον)** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μελισσοπέτρας (Τρεστενῶν) τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Κοκορίτσα*. Κάτ. (1928) 59.

— 2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καπανδριτίου τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Βελιαντζίκι*. Κάτ. (1928) 89.

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Δρατσίστης τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Κιουτσούκ-κιοϊ*. Κάτ. (1928) 106.

— 4) Χωρίον τῆς κοινότητος Μεσορώπης τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ἀχατλάρ*. Κάτ. (1928) 144.

— 5) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πιπεργιῶν (Μπίτζιο Μαχαλᾶ) τῆς ἐπαρχίας Ἀλμωπίας (Ἐνωτίας) τοῦ νομοῦ Πέλλης, ὀνομαζόμενος πρότερον *Γενῆ Μαχαλᾶ*. Κάτ. (1928) 70.

Χ. Δ.

**μικροψία** (ἡ) *[Ὀφθαλμ.]*. Ἀνωμαλία τῶν ὀφθαλμῶν, καθ᾽ ἣν τ᾽ ἀντικείμενα φαίνονται μικρότερα τοῦ φυσικοῦ των μεγέθους. Ἡ μικροψία παρατηρεῖται κατὰ τὰς ἀμφιβληστροειδίτιδας καὶ καὶ δὴ τὰς συφιλιδικάς, καθὼς καὶ εἴς τινας αἱμορραγίας κατὰ τὴν ὠχρὰν κηλῖδα. Εἶναι γνωστὸν ὅτι τὰ ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς σχηματιζόμενα εἴδωλα τῶν διαφόρων ἀντικειμένων εἶναι πάντοτε ἀνάλογα τοῦ μεγέθους αὐτῶν, κατέχουσι δὲ ἀντίστοιχον ἀριθμὸν κωνίων καὶ ραβδίων. Ὅταν δι᾽ οἱονδήποτε λόγον ὁ ἀμφιβληστροειδὴς παρουσιάζῃ οἴδημα τῶν ἀποτελούντων αὐτὸν στοιχείων καὶ δὴ τῶν ραβδίων καὶ κωνίων, τότε τὰ εἴδωλα τῶν ἐξωτερικῶν ἀντικειμένων σχηματίζονται μὲν καὶ πάλιν ἀναλόγως τοῦ μεγέθους αὐτῶν, ἀλλὰ καταλαμβάνουσιν ὀλιγώτερα κωνία καὶ ραβδία. Οὕτως ἡ ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς σχηματιζομένη εἰκὼν τῶν παρατηρουμένων ἀντικειμένων, καλύπτουσα ἀριθμὸν κωνίων καὶ ραβδίων μικρότερον τοῦ φυσιολογικοῦ, φαίνεται καὶ μικροτέρα. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ὁ ἐγκέφαλος, γνωρίζων ἐκ συνηθείας καὶ μνήμης ὅτι ὅσον τὸ εἴδωλον εἶναι μικρότερον τόσον καὶ ἡ κατεχομένη ὑπ᾽ αὐτοῦ ἐπιφάνεια εἶναι μικροτέρα, βλέπει τὰ ἀντικείμενα μικρότερα ἐν συγκρίσει πρὸς τὸ πραγματικὸν αὐτῶν μέγεθος. Τῆς μικροψίας του ἀντιλαμβάνεται καὶ ὁ ἴδιος ὁ ἀσθενής, ἐὰν κλείων ἐναλλὰξ τοὺς ὀφθαλμούς του συγκρίνῃ τὸ ἐπὶ τῶν δύο αὐτοῦ ἀμφιβληστροειδῶν σχηματιζόμενον εἴδωλον ὡρισμένου τινὸς ἀντικειμένου. Οὕτω τὸ ἐπὶ τοῦ πάσχοντος ὀφθαλμοῦ σχηματιζόμενον εἴδωλον φαίνεται μικρότερον τοῦ ἐπὶ τοῦ ὑγιοῦς ἀμφιβληστροειδοῦς σχηματιζομένου. Ἡ μικροψία παρατηρεῖται ἐπίσης καὶ κατὰ τὰς παραλύσεις τῆς προσαρμοστίας, ἢ τὴν ἀνεπάρκειαν τῆς προσαρμογῆς. Εἶναι ἀντίθετος τῆς *μακροψίας* (βλ. λ.).

Α. ΓΑΒΡΙΗΛΙΔΗΣ

**μικροψυχία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μικροψύχου, ἔλλειψις γενναιότητος, ταπεινότης φρονήματος· ἀντίθ. *γενναιοψυχία*.

**μικρόψυχος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μικρὸς τὴν ψυχήν, τὸ φρόνημα, ὁ διὰ τῶν πράξεών του εὐτελίζων ἑαυτόν, ὁ μὴ συγγνωμονικός, ὁ μὴ ἐλευθέριος· ἀντίθ. *μεγαλόψυχος*.

**μικροψυχῶ** (*—έω*)· εἶμαι μικρόψυχος, πράττω ἢ σκέπτομαι ἀναξίως ἐμαυτοῦ.

**μικροὼμ** (τὸ) (microohm). Καλεῖται οὕτω ἐν τῇ ἠλεκτροτεχνίᾳ τὸ ἓν ἑκατομμυριοστὸν τοῦ *ὤμ*, δηλαδὴ τῆς μονάδος μετρήσεως ἠλεκτρικῶν ἀντιστάσεων. Λόγῳ τοῦ ἐξαιρετικῶς μικροῦ μεγέθους αὐτοῦ, τὸ μικροὼμ χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν ἔκφρασιν τῶν ἀποτελεσμάτων ἐξόχως ἀκριβῶν μετρήσεων μικρῶν ἀντιστάσεων. Ἀντιθέτως τὸ *μεγὼμ* (megohm) εἶναι μονὰς 1.000.000 φορὰς μεγαλυτέρα τοῦ ὤμ καὶ χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν μέτρησιν μεγάλων ἀντιστάσεων.

Λ. Ν. Κ.

**μικροωμόμετρον** (τὸ) *['Ηλεκτρ.]*. Εἰδικὴ συσκευὴ ἀκριβείας, χρησιμοποιουμένη διὰ τὴν μέτρησιν ἐλαχίστων ἠλεκτρικῶν ἀντιστάσεων τῆς τάξεως μεγέθους τοῦ μικροώμ.

Λ. Ν. Κ.

**μικρύλη** (ἡ) (Micryla) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἀμφιβίων ἀνούρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μικρυλιδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους βατράχους μὲ δέρμα μαλακόν, κεφαλὴν πεπλατυσμένην καὶ μᾶλλον βραχεῖαν καὶ γλῶσσαν ἐπιμηκεστάτην. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Ἰάβαν.

Δ. Ν. Π.

**μικρυλίδαι** (οἱ) (Micrylidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἀμφιβίων ἀνούρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φανερογλώσσων*, περιλαμβάνουσα γένη τινὰ μικροτάτου μεγέθους βατράχων, ἀπαντῶντα εἰς τὰς περὶ τὸν Ἰνδικὸν ὠκεανὸν νήσους· γνωστότερον γένος εἶναι ἡ *μικρύλη* (βλ. λ.).

Δ. Ν. Π.

**μικρύνω**· κάμνω τι μικρόν, σμικρύνω, κοιν. *μικραίνω* (βλ. λ.).

**μικρὼμ** (τὸ) (microohm)· βλ. *μικροώμ*.

**μικρωμόμετρον** (τό)· βλ. λ. *μικροωμόμετρον*.

**Μίκσατ** (Mikszath), ***Κόλμαν***. Εἷς τῶν σπουδαιοτέρων Οὔγγρων διηγηματογράφων τῶν νεωτέρων χρόνων (1849—1910). Ἐσπούδασε νομικά, ἐπεδόθη κατόπιν εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ ἐν τέλει ἀφιερώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Ὡς διηγηματογράφος διακρίνεται διὰ τὴν ἰσχυρὰν πρωτοτυπίαν καὶ τὴν βαθεῖαν ἀνάλυσιν τῆς λαϊκῆς ψυχῆς, διὰ τὴν θερμότητα τοῦ αἰσθήματος καὶ τὴν πλήρη πνεύματος εἰρωνείαν του. Ἐκ τῶν ἔργων του διακρίνονται: Δύο συλλογαὶ πνευματώδους πολιτικῆς σατίρας: «Τὸ τίμιο σπίτι» (1886) καὶ «Κλοὺμπ καὶ κουλουὰρ» (1888), τὰ μυθιστορήματα: «Ὁ κομπογιαννίτης», «Τὸ ἀλεξιβρόχιον τοῦ Ἁγίου Πέτρου», «Πρακόβσκυ, ὁ κωφὸς σιδηρουργός» (1897), «Ἱστορία ἑνὸς ἀλλοκότου γάμου», «Ὁ μαῦρος πετεινὸς» (1901) κ. ἄ. Πλεῖστα τῶν ἔργων του μετεφράσθησαν εἰς πολλὰς ξένας γλώσσας.

Γ. Ε. Κ.

**μικτογενὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ἐκ μίξεως γενόμενος, ὁ προερχόμενος ἐκ συνδυασμοῦ ἀτόμων (ζῴων ἢ φυτῶν) διαφόρων γενῶν: «κύων μικτογενής».

**μικτόλιθος** (ὁ), ἢ ***μιγματίτης*** (Migmatit) *[Πετρογρ.]*. Ὀνομάζεται οὕτω κατὰ τὸν Sederholm ὁ ἰζηματογενοῦς προελεύσεως γνεύσιος (παραγνεύσιος), τοῦ ὁποίου ἡ μᾶζα παρουσιάζεται ἀνομοιογενὴς συνεπείᾳ ἐμπλουτισμοῦ κατὰ διαφόρους μορφὰς ὑπὸ γρανιτικοῦ ὑλικοῦ προερχομένου ἐκ τοῦ παρακειμένου μάγματος. Οἱ μιγματῖται ἐν γένει ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμάδα κρυσταλλοσχιστωδῶν πετρωμάτων, ἀναλόγως δὲ τῆς μορφῆς, τὴν ὁποίαν λαμβάνει ἐντὸς τῆς μάζης αὐτῶν ὁ γρανιτικὸς ἐμπλουτισμός, διακρίνομεν αὐτοὺς εἰς *ἀρτηρίτας, ἀκματίτας, νεπουλίτας* καὶ *στικτολίτας*. Οἱ μιγματῖται παρουσιάζουν μεγάλην ἀνάπτυξιν ἰδίως εἰς τὰς περιοχάς, ἔνθα ἐμφανίζονται στρώματα τοῦ ἀρχαϊκοῦ αἰῶνος, ὡς ἐν Φινλανδίᾳ καὶ νοτίῳ Ἀμερικῇ, ἐπίσης δὲ καὶ εἴς τινας νεωτέρας κρυσταλλοσχιστώδεις διαπλάσεις.

Γ. Β.

**μικτός,** *—ή, —όν*· καὶ μεικτός· ὁ μεμιγμένος, ὁ ἐκ διαφόρων εἰδῶν προερχόμενος: «μικτὸν βάρος» τὸ βάρος ἐμπορεύματος μετὰ τοῦ ἀποβάρου, «μικτὸν σχολεῖον» τὸ ἐν ᾧ φοιτῶσιν ἄρρενες καὶ θήλεις.

—***μικτὰ διαιτητικὰ δικαστήρια.*** Αἱ ποικίλαι ἰδιωτικῆς κυρίως φύσεως διαφοραί, αἱ ὑφιστάμεναι μεταξὺ ὑπηκόων τῶν συμμάχων καὶ συνησπισμένων δυνάμεων ἀφ᾽ ἑνὸς καὶ τῶν ἡττημένων ἐπικρατειῶν ἀφ᾽ ἑτέρου, αἵτινες δὲν ἐλύθησαν διὰ τῶν συνθηκῶν τῆς εἰρήνης τοῦ 1919 καὶ 1920 καὶ τῆς συνθήκης τῆς Λωζάννης τοῦ 1923, παρεπέμφθησαν εἰς μικτὰ διαιτητικὰ δικαστήρια πρὸς ἐκδίκασιν συμφώνως πρὸς ρητὰς διατάξεις τῶν ἐν λόγῳ συνθηκῶν. Οὕτω, δυνάμει τοῦ ἄρθρου 304 τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν καὶ ἀντιστοίχων ἄρθρων τῶν συνθηκῶν Ἁγίου Γερμανοῦ, Τριανόν, Νεϊγὺ καὶ Λωζάννης συνεστήθησαν τοιαῦτα δικαστήρια ἐν Παρισίοις, Λονδίνῳ, Βρυξέλλαις, Ρώμῃ καὶ Κωνσταντινουπόλει, τὰ ὁποῖα ἐπελήφθησαν τῆς ἐξετάσεως καὶ λύσεως πάσης φύσεως διαφορῶν ἰδιωτικῶν καὶ ζητημάτων ἀναφερομένων εἰς τὰ τμήματα 3, 4, 5 καὶ 7 τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν καὶ τὰ ἀντίστοιχα τῶν λοιπῶν συνθηκῶν, ἤτοι εἰς ἐκκρεμῆ χρέη, περιουσιακὰ δικαιώματα καὶ συμφέροντα ἐν χώρᾳ τέως ἐχθρικῇ, συμβάσεις καὶ δικαστικὰς ἀποφάσεις ἢ παραγραφὰς καὶ τέλος εἰς ζητήματα βιομηχανικῆς ἰδιοκτησίας. Συμφώνως πρὸς τὰς συνθήκας ταύτας ἐντὸς τριῶν μηνῶν ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς ἰσχύος αὐτῶν ἔπρεπε νὰ ἱδρυθῇ διαιτητικὸν δικαστήριον μεταξὺ ἑκάστης τῶν συμμάχων συνησπισμένων δυνάμεων καὶ ἑκάστης τῶν ἡττημένων ἐπικρατειῶν



Digitized by Google

Τὰ δικαστήρια ταῦτα εἶνα τριμελῆ ἐξ ἑνὸς προέδρου καὶ δύο μελῶν. Ὁ πρόεδρος, ἀνήκων πάντοτε εἰς οὐδετέραν χώραν ὡς ὑπήκοος, ἐκλέγεται διὰ συμφωνίας μεταξὺ τῶν δύο πολιτειῶν, ἑκάστη τῶν ὁποίων ἔχει τὸ δικαίωμα νὰ ὑποδείξῃ τὸ ἕτερον τῶν δύο μελῶν. Εἰς περίπτωσιν ἀσυμφωνίας μεταξὺ τῆς νικήτριας καὶ τῆς ἡττημένης ἐπικρατείας, ὡς πρὸς τὴν ὑπόδειξιν τοῦ προέδρου, ἡ ἐκλογὴ αὐτοῦ ἀνατίθεται εἰς τὸ συμβούλιον τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν. Τὰ μικτὰ διαιτητικὰ δικαστήρια καθορίζουσι τὴν ἀκολουθητέαν δικονομίαν ὡς καὶ τὴν γλῶσσαν τῶν συνεδριάσεων καὶ τῶν πρακτικῶν, διορίζουσι τὸν γραμματέα καὶ τοὺς βοηθοὺς του κ.λ.π., δικαιούμενα προσέτι νὰ συνεδριάσωσι καὶ ἐκτὸς τῆς ἕδρας τοῦ δικαστηρίου ἐν περιπτώσει ἀνάγκης. Ἑκάστη τῶν ἐνδιαφερομένων πολιτειῶν δικαιοῦται νὰ διορίσῃ ἀντιπροσώπους ὅπως τὴν ἀντιπροσωπεύσωσιν ἐνώπιον τοῦ δικαστηρίου. Τὰ μικτὰ διαιτητικὰ δικαστήρια φέρουσι τὸ ὄνομα τῶν πολιτειῶν εἰς τὰς ὁποίας ἀνήκουσιν οἱ ὑπήκοοι ὧν θὰ λύσωσι τὰς διαφοράς. Συμφώνως πρὸς τὰς ὡς ἄνω συνθήκας ἱδρύθησαν ἐν σχέσει μὲ τὴν Ἑλλάδα μικτὸν διαιτητικὸν δικαστήριον ἑλληνογερμανικόν, ἑλληνοβουλγαρικόν, ἑλληνοαυστριακόν, ἑλληνοουγγρικὸν καὶ ἑλληνοτουρκικόν. Ἤδη τὰ πλεῖστα τῶν τοιούτων δικαστηρίων ἔχουσι περατώσει τὰς ἐργασίας των καὶ ἄλλα εὑρίσκονται ἐν τῷ περατοῦσθαι. Α. Κ. Α.

— **μικτὰ *δικαστήρια*.** Καλοῦνται οὕτω δικαστήρια ἐν Αἰγύπτῳ λειτουργοῦντα μέχρι σήμερον. Ἡ ἵδρυσις αὐτῶν κατὰ τὴν 1ην Φεβρουαρίου 1870 ἐπὶ χεβίδου Ἰσμαὴλ τῇ εἰσηγήσει τοῦ Αἰγυπτίου πολιτικοῦ Νουμπὰρ πασᾶ ὠφείλετο εἰς τὴν ἐπιθυμίαν της αἰγυπτιακῆς κυβερνήσεως, ὅπως διὰ τῆς ἱδρύσεως διεθνῶν δικαστηρίων ἀπολαυόντων τῆς ἐμπιστοσύνης τῶν εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων τεθῇ τέρμα εἰς τὴν πρότερον ὑφισταμένην ἔκρυθμον κατάστασιν καὶ τὰς διηνεκεῖς διπλωματικὰς ἐπεμβάσεις τῶν Δυνάμεων χάριν τῆς προστασίας τῶν συμφερόντων τῶν ὑπηκόων των. Ἡ δικαιοδοσία τῶν μικτῶν δικαστηρίων ἐπεκτείνεται εἰς τὴν ἐπίλυσιν ὅλων τῶν πολιτικῆς φύσεως διαφορῶν μεταξὺ ἀλλοδαπῶν καὶ Αἰγυπτίων ἢ ἀλλοδαπῶν διαφόρου ἰθαγενείας. Ἡ δικαιοδοσία των ἐπὶ ποινικῆς φύσεως ζητημάτων εἶναι λίαν περιωρισμένη, ὡς ἐπὶ παραδείγματι ἐπὶ τῶν ἀδικημάτων τῶν σχετιζομένων μὲ τὴν πτώχευσιν, ἐνῷ διὰ τὰς ἀδικοπραξίας γενικῶς ὡς ποινικὰ δικαστήρια ὑφίστανται τὰ προξενικὰ τοιαῦτα, ἔχοντα δικαιοδοσίαν νὰ δικάζωσι ποινικὰς ὑποθέσεις, εἰς ἃς ὁ κατηγορούμενος εἶναι ὑπήκοος τῆς πολιτείας εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήκουσι. Τὰ μικτὰ δικαστήρια εἶναι πρώτου καὶ δευτέρου βαθμοῦ. Τρία πρωτοδικεῖα ἐν Καΐρῳ, Ἀλεξανδρείᾳ καὶ Μανσούρᾳ καὶ ἓν ἐφετεῖον ἐν Ἀλεξανδρείᾳ. Ἡ σύνθεσίς των εἶναι μικτή, ἐξ ἧς ἔλαβον καὶ τὴν ὀνομασίαν των. Ἀπαρτίζονται ἐκ δικαστῶν Αἰγυπτίων καὶ ξένων, κατὰ τοιοῦτον ὅμως τρόπον, ὥστε ἡ πλειοψηφία πάντοτε ν' ἀνήκῃ εἰς τοὺς ξένους δικαστάς. Ἐπίσημοι γλῶσσαι τῶν δικαστηρίων τούτων εἶναι, ἐκτὸς τῆς ἀραβικῆς, καὶ ἡ ἀγγλική, γαλλικὴ καὶ ἰταλική. Τὰ μικτὰ δικαστήρια δικάζουσιν ἐπὶ τῇ βάσει ἀστικοῦ κώδικος στηριζομένου ἐπὶ τοῦ ναπολεοντείου ἀστικοῦ κώδικος καὶ ἐπὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ μωαμεθανικοῦ δικαίου, ὅπου τοῦτο εἶναι δυνατόν. Πλὴν τῆς καθαρῶς δικαστικῆς αὐτῶν ἐξουσίας, τὰ μικτὰ δικαστήρια ἐν τῇ πρακτικῇ ἐνασκοῦσι καὶ νομοθετικὴν τοιαύτην, καθότι οὐδεμία νομοθεσία εἶναι δι' αὐτὰ ὑποχρεωτική. Ἐπίσης ἐπεκράτησε τὸ ἔθιμον, ὅπως δι' οἱονδήποτε νομοθετικὸν μέτρον, τὸ ὁποῖον ἀφορᾷ τοὺς Εὐρωπαίους καὶ δι' ὃ ἀπαιτεῖται συνεπῶς ἡ συγκατάθεσις τῶν Δυνάμεων, ἐρωτῶνται πάντοτε οἱ οἰκεῖοι δικασταὶ τῶν μικτῶν δικαστηρίων, τῶν ὁποίων ἡ γνώμη εἶναι καὶ ἡ βαρύνουσα. Συμφώνως πρὸς σχετικὴν σύμβασιν, ἡ Ἑλλὰς ἔχει τὸ δικαίωμα συμμετοχῆς εἰς τὰ μικτὰ δικαστήρια δι' ἑνὸς ἐφέτου καὶ τριῶν πρωτοδικῶν. Κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους παρατηρεῖται μεγάλη κίνησις ἐκ μέρους τῶν Αἰγυπτίων ἐθνικοχρόνων πρὸς τελείαν κατάργησιν τῶν μικτῶν δικαστηρίων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. H. Scott*, The Law affecting Foreigners in Egypt. — *H. Lamba*, De l' évolution de la condition des Européens en Égypte. ΑΧ. Κ. ΑΙΜΙΛΙΑΝΙΔΗΣ

— **μικταὶ *ἀγωγαὶ*** *[Νομ.]*. Ἐκτὸς τῶν ἄλλων διακρίσεων ὑφίσταται καὶ ἡ διάκρισις τῶν ἀγωγῶν εἰς *ἐμπραγμάτους*, δι' ὧν σκοπεῖται ἡ ἀναγνώρισις καὶ ἡ ἐπιδίκασις ἐμπραγμάτου δικαιώματος, καὶ εἰς *προσωπικάς*, αἵτινες ἔχουσαι βάσιν δικαίωμα ἐνοχικὸν σκοποῦσι τὴν καταδίκην τοῦ ἐναγομένου εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐνοχῆς. Ἀμφοτέρων τῶν ἰδιοτήτων μετέχουσι κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον αἱ καλούμεναι *μικταὶ ἀγωγαὶ* (actiones mixtae), αἵτινες εἶναι τρεῖς: ἡ περὶ διαιρέσεως κοινοῦ πράγματος μεταξὺ συνιδιοκτητῶν (actio communi dividundo), ἡ περὶ διανομῆς κοινῆς κληρονομίας (actio familiae herciscundae) καὶ ἡ περὶ καθορισμοῦ τῶν ὁρίων γειτονικῶν κτημάτων (actio finium regundorum). Ὁ χαρακτηρισμὸς τῶν ἀγωγῶν τούτων ὡς μικτῶν δικαιολογεῖται ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ἐν περιπτώσει, καθ' ἣν ἡ σωματικὴ διαίρεσις τοῦ κοινοῦ πράγματος ἐκρίνετο ἀνέφικτος, ἦτο δυνατὸν ὁλόκληρον τὸ πρᾶγμα νὰ ἐπιδικασθῇ εἰς τὸν ἕνα τῶν διαδίκων, καταδικαζόμενον συνάμα εἰς καταβολὴν πρὸς τὸν ἕτερον τῆς ἀξίας τοῦ εἰς αὐτὸν ἀναλογοῦντος μέρους τοῦ κοινοῦ πράγματος (Βασ. 12, 2, 19 § 3 καὶ 12, 2, 34). Παρ' ἡμῖν, ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ διατάσσεται δημοπρασία (πολιτ. δικ. ἄρθρ. 1088—1099), οὕτω δὲ οὐδεμία πλέον ὑφίσταται πρακτικὴ ἀξία τῆς διακρίσεως τῶν ἀγωγῶν τούτων ἀπὸ τῶν λοιπῶν ἐμπραγμάτων. Δ. Φ. Π.

— **μικταὶ *συμβάσεις*** *[Ἀστ. Δίκ.]*. Κατὰ τὸν ἐν τῇ νομοθεσίᾳ ἰσχύοντα κανόνα τῆς ἐλευθερίας τῶν συμβάσεων, εἶναι δυνατὸν νὰ συναφθῇ μεταξὺ δύο ἢ περισσοτέρων προσώπων σύμβασις ἄγνωστος εἰς τὸν νόμον καὶ ἐν τούτοις ἡ σύμβασις αὕτη νὰ εἶναι ἰσχυρά, ἐφ' ὅσον δὲν θίγει τὴν ἔννομον τάξιν καὶ τὰ χρηστὰ ἤθη. Ὁ ἀριθμὸς τῶν συμβάσεων δὲν περιορίζεται ἐν τῷ νόμῳ, ὅστις ἁπλῶς, ἐνδεικτικῶς καὶ οὐχὶ περιοριστικῶς, ἀρκεῖται εἰς τὴν ἀπαρίθμησιν καὶ τὴν ρύθμισιν τῶν κυριωτέρων καὶ συνηθεστέρων συμβάσεων. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἀρχῆς ταύτης εἶναι ἐπίσης δυνατὸν νὰ συναφθῇ σύμβασις ἄγνωστος μὲν εἰς τὸν νόμον, περιέχουσα ὅμως ἐν ἑαυτῇ τὰ στοιχεῖα δύο ἢ πλειόνων γνωστῶν ἐν τῷ νόμῳ συμβάσεων, ἢ ἄλλως στοιχεῖα περιεχόμενα εἰς γνωστὰς εἰς τὸν νόμον συμβάσεις δύνανται νὰ συνδεθῶσι μεταξύ των κατὰ τρόπον ἄγνωστον ὑπὸ τοῦ νόμου, ὥστε ν' ἀποτελεσθῇ διὰ τοῦ συνδυασμοῦ τούτου νέα σύμβασις. Αἱ οὑτωσεὶ δημιουργούμεναι συμβάσεις καλοῦνται *μικταὶ* (mixta negotia). Δ. Φ. Π.

— **μικτοὶ *γάμοι*** *[Κανον. Δίκ.]*. Καλοῦνται οἱ γάμοι ὀρθοδόξων μετὰ ἑτεροδόξων Χριστιανῶν. Ἐν Ἑλλάδι ὁ ἀπὸ 10 Αὐγούστου 1861 νόμος ἀπεφήνατο ἐγκύρους τοὺς μέχρι τῆς δημοσιεύσεως αὐτοῦ παρ' ἱερέως τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας τελεσθέντας γάμους ὀρθοδόξων μεθ' ἑτεροδόξων Χριστιανῶν. Περὶ δὲ τῶν ἐν τῷ μέλλοντι τελεσθησομένων μικτῶν γάμων ὥρισεν ὅτι θὰ ὦσιν ἔγκυροι, ἂν τελεσθῶσι παρ' ἱερέως τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, δοθῇ δ' ἅμα καὶ ὑπὸ τοῦ ἑτεροδόξου μελλονύμφου πρὸ τοῦ εἰρηνοδίκου διὰ χειραψίας ὑπόσχεσις, ὅτι τὰ ἐκ τοῦ τοιούτου γάμου τέκνα θὰ βαπτισθῶσι καὶ ἀνατραφῶσι κατὰ τὴν ὀρθόδοξον διδασκαλίαν καὶ ὅτι ἐν περιπτώσει μὴ δόσεως τῆς τοιαύτης ὑποσχέσεως, ὁ γάμος θὰ ἦτο ἄκυρος, τὴν τοιαύτην δ' ἀκυρότητα θὰ ἠδύνατο νὰ προτείνῃ πᾶς ἔχων συμφέρον καὶ ὁ εἰσαγγελεύς. Ἀλλ' ἕνεκεν παραστάσεων ξένης κυβερνήσεως, νομιζούσης ὅτι διὰ τοῦ νόμου τούτου θὰ προσεβάλλοντο τὰ συμφέροντα τῶν ἐν Ἑλλάδι καθολικῶν, προὐκλήθη ἡ κατάργησις τοῦ εἰρημένου νόμου. Διὰ τοῦ ἀπὸ 15 Ὀκτωβρίου τοῦ αὐτοῦ ἔτους νόμου ἀνεγνωρίσθησαν ὡς καὶ διὰ τοῦ ἀρχαιοτέρου ἔγκυροι οἱ μέχρι τῆς δημοσιεύσεως αὐτοῦ τελεσθέντες γάμοι, μὴ προσαπαιτηθέντος ὅμως διὰ τὸ κῦρος αὐτῶν τοῦ ὅρου τῆς παρ' ἱερέως τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας τελέσεως. Περὶ δὲ τῶν εἰς τὸ μέλλον τελεσθησμένων ὥρισεν ὅτι ἐπιτρέπεται ὁ γάμος ὀρθοδόξων μετὰ ἑτεροδόξων Χριστιανῶν, τηρουμένων τῶν ὑπὸ τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας ὁριζομένων, ἐξ οὗ καὶ τὸ ἐκ τῆς σκοπίμου ἀοριστίας τοῦ νόμου ζήτημα τίνα τὰ ὑπὸ τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας ὁριζόμενα ὧν ἀπαιτεῖται ἡ τήρησις. Ἐν τῇ ρωμαϊκῇ Ἐκκλησίᾳ οἱ μικτοὶ γάμοι, ἤτοι οἱ γάμοι καθολικοῦ μετὰ βεβαπτισμένου μὴ καθολικοῦ, αἱρετικοῦ δηλονότι ἢ σχισματικοῦ, ἐπιτρέπεται μόνον: α') ἂν ὑπάρχωσι διὰ τὴν τέλεσιν αὐτῶν ἰσχυροὶ λόγοι, β') ἂν ἐγγυηθῶσιν ἐκ τῶν μελλονύμφων ὁ μὲν μὴ καθολικὸς τὴν ἐκ τῆς ρωμαϊκῆς Ἐκκλησίας μὴ ἀποσκίρτησιν τοῦ μέλλοντος συζύγου, ἀμφότεροι δὲ οἱ μελλόνυμφοι τὴν κατὰ τὰς διατάξεις τῆς ρωμαϊκῆς Ἐκκλησίας βάπτισιν καὶ ἀνατροφὴν τῶν ἐκ τοῦ μικτοῦ γάμου τεχθησομένων τέκνων, καὶ γ') ἂν καθίσταται πιθανὴ ἡ τήρησις τῶν τοιούτων ἐγγράφως κατὰ κανόνα διδομένων ὑποσχέσεων. Ὀφείλει δὲ ὁ καθολικὸς σύζυγος μετὰ τῆς δεούσης συνέσεως νὰ μεριμνᾷ περὶ τῆς ὑπὸ τοῦ ἑτεροδόξου συζύγου ἀποδοχῆς τοῦ καθολικισμοῦ, τοῦτο ὅμως δὲν ὑποχρεοῦται νὰ ὑποσχεθῇ ἐγγράφως. Δοθείσης τῆς πρὸς σύναψιν τοῦ μικτοῦ γάμου ἀδείας, ἡ ἐνώπιον ἑτεροδόξου ἐκκλησιαστικοῦ λειτουργοῦ δήλωσις τῆς πρὸς γάμον συναινέσεως οὔτε πρὸ τῆς τοῦ γάμου τελέσεως ἐπιτρέπεται, οὔτε μετ' αὐτήν. Ὁ καθολικὸς ἱερεύς, ὁ βασίμως προβλέπων ὅτι οἱ μελλόνυμφοι θὰ παραβῶσι τὴν τοιαύτην διάταξιν ἢ γιγνώσκων ὅτι παρέβησαν ἤδη αὐτήν, μόνον ἂν ὑπάρχωσιν ἰσχυροὶ λόγοι δύναται νὰ παραστῇ κατὰ τὴν τοῦ γάμου τέλεσιν καὶ ἀφοῦ λάβῃ τὴν τοῦ ἐπισκόπου ἄδειαν. Ἡ ἐνώπιον ἑτεροδόξου ἐκκλησιαστικοῦ λειτουργοῦ ὡς πολιτικοῦ ληξιάρχου τέλεσις μικτοῦ γάμου ἐπιτρέπεται χάριν τῶν ἀστικῶν ἐπακολουθημάτων τοῦ γάμου, μόνον ἐφ' ὅσον τὴν ἐνώπιον ἐκείνου τέλεσιν ἐπιβάλλει ὁ πολιτικὸς νόμος. Ἐπίσκοποι καὶ πνευματικοὶ πατέρες ὀφείλουσι νὰ ἀποτρέπωσι τοὺς καθολικοὺς ἀπὸ τῆς συνάψεως μικτῶν γάμων, ἀναποτρέπτου δὲ οὔσης τῆς συνάψεως τοιούτων γάμων, παντὶ σθένει νὰ μεριμνῶσι περὶ τῆς κατὰ τὰς διατάξεις τῆς Ἐκκλησίας τελέσεως αὐτῶν, μετὰ τὴν τέλεσιν δὲ περὶ τῆς ἀπαρεγκλήτου τηρήσεως τῶν ὑπεσχημένων. Πρέπει δὲ οἱ καθολικοὶ νὰ ἀποτρέπωνται ἀπὸ τῆς συνάψεως οὐ μόνον μικτῶν γάμων, ἀλλὰ καὶ γάμων μετὰ προσώπων ἅτινα ἀπεσκίρτησαν τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας καὶ ἂν ἔτι δὲν ἐδέχθησαν ἕτερον δόγμα, ὡς καὶ μετὰ προσώπων ἀνηκόντων εἰς σωματεῖα ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας ἀπηγορευμένα. Κατὰ τὴν τέλεσιν τοιούτων γάμων ὁ ἱερεὺς δύναται νὰ παρίσταται μόνον ἂν τύχῃ τῆς τοῦ ἐπισκόπου ἀδείας, ἥτις δίδεται ὑπαρχόντων ἰσχυρῶν πρὸς τοῦτο λόγων, θεωρηθῇ δὲ ἱκανῶς ἐξησφαλισμένη ἡ ἐν τῇ καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ ἀνατροφὴ τῶν ἐκ τοιούτων γάμων τεχθησομένων τέκνων καὶ ἡ μὴ διακινδύνευσις τῆς ἐν τῇ καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ παραμονῆς τοῦ συζύγου. Καὶ κατὰ τὴν τέλεσιν γάμου καθολικοῦ μετὰ προσώπου καθυποβληθέντος εἰς ἐκκλησιαστικὴν ποινὴν καὶ καθόλου κοινῶς γνωστοῦ ὡς ἁμαρτωλοῦ, ἀποστέργοντος δὲ τὴν ἐξομολόγησιν ἢ τὴν πρὸς τὴν Ἐκκλησίαν καταλλαγήν, δύναται ὁ ἱερεὺς νὰ παραστῇ μόνον ἂν ὑπάρχωσιν ἰσχυροὶ πρὸς τὴν σύναψιν τοιούτου γάμου λόγοι, περὶ ὧν δέον νὰ ἐρωτᾶται ὁ ἁρμόδιος ἐπίσκοπος, ἐφ' ὅσον τοῦτο εἶναι εὐχερές. Κ. Μ. Ρ.

— **μικτὸν *γένος*** *[Ἀρχ. Μουσ.]* Ἐκαλεῖτο οὕτω τὸ γένος, ἐν τῷ ὁποίῳ παρουσιάζοντο δύο ἢ τρεῖς χαρακτῆρες γενικοί, π. χ. διατόνου καὶ χρώματος, ἢ διατόνου καὶ ἁρμονίας ἢ χρώματος καὶ ἁρμονίας ἢ καὶ διατόνου καὶ χρώματος καὶ ἁρμονίας. Ν. Α. Χ.

— **Μικτὸν *συμβούλιον*** *[Ἐκκλησ. Δίκ.]* Καλεῖται οὕτω (ἢ καὶ *διαρκὲς ἐθνικὸν μικτὸν συμβούλιον*) τὸ ἐν τῷ πατριαρχείῳ Κωνσταντινουπόλεως ἑδρεῦον συμβούλιον, ὅπερ ἀποτελεῖ μετὰ τῆς ἱερᾶς συνόδου τὰ δύο ἀνώτατα διοικητικὰ τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχείου σώματα. Τὸ συμβούλιον τοῦτο: 1) Ἀποτελεῖται ἐκ δώδεκα μελῶν, ὧν τὰ μὲν τέσσαρα ἀρχιερατικά, ἐκλεγόμενα ἐκ τοῦ προσωπικοῦ τῆς ἱερᾶς συνόδου ὑπὸ τοῦ πατριάρχου καὶ τῶν συνοδικῶν μελῶν, τὰ δὲ λοικὰ ὀκτὼ λαϊκά. 2) Προεδρεύεται ὑφ' ἑνὸς τῶν ἀρχιερατικῶν αὐτοῦ μελῶν καὶ δὴ τοῦ πρώτου τῇ τάξει ἐκ τῶν τεσσάρων. Ὁσάκις δὲ ὑποθέσεις μείζονος σπουδαιότητος καθιστῶσιν ἀναγκαίαν τὴν παρουσίαν τοῦ πατριάρχου, τότε οὗτος ἢ αὐτόκλητος ἢ μετὰ πρόσκλησιν παρευρισκόμενος ἐν τῷ συμβουλίῳ προεδρεύει αὐτοῦ. 3) Ἔχει δικαιοδοσίαν: α') Διοικητικήν, συνισταμένην ἐν τῇ ἐποπτείᾳ τῶν ἐθνικῶν σχολείων, νοσοκομείων καὶ ἄλλων κοινωφελῶν ἱδρυμάτων Κωνσταντινουπόλεως, ὡς καὶ τῶν μοναστηρίων τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχείου. Πρὸς τοῦτο τὸ μικτὸν συμβούλιον διορίζει ἐπιτρόπους καὶ ἐφόρους, τῇ γνώμῃ καὶ ἐγκρίσει τοῦ πατριάρχου. β') Δικαστικήν, δικάζον πρωτοδίκως μὲν τὰς περὶ προικὸς καὶ διαθηκῶν διαφορὰς τῶν ὀρθοδόξων κατοίκων Κωνσταντινουπόλεως, ἐν δευτέρῳ δὲ βαθμῷ τὰς τῆς αὐτῆς φύσεως διαφορὰς τὰς ἐκδικασθείσας πρωτοδίκως ὑπὸ μικτῶν μητροπολιτικῶν συμβουλίων, καὶ κατ' ἀναίρεσιν τὰς ὑπὸ μικτῶν ἐπισκοπικῶν συμβουλίων πρωτοδίκως καὶ ὑπὸ μικτῶν μητροπολιτικῶν συμβουλίων ἐν δευτέρῳ βαθμῷ ἐκδικασθείσας διαφορὰς τῆς αὐτῆς φύσεως. 4) Ἔχει τριμερῆ σφραγῖδα, ἧς τηροῦσι τὸ μὲν ἓν τμῆμα τὰ τέσσαρα ἀρχιερατικὰ μέλη, τὰ ἄλλα δύο τὰ ὀκτὼ λαϊκὰ μέλη, τὴν δὲ κλεῖδα ὁ πρόεδρος. Ἀπὸ τοῦ ἔτους 1923 ἀνεστάλη ἡ λειτουργία τοῦ μικτοῦ συμβουλίου κατ' ἀπαίτησιν τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως. Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

— **μικτὸς *ἀριθμός*.** Καλεῖται οὕτως ὁ πραγματικὸς ἀριθμὸς ὁ συγκείμενος ἀπὸ ἀκέραιον καὶ κλάσμα, π.χ. $5\frac{3}{7}$· τρέπεται δὲ οὗτος εἰς κλάσμα, ἐὰν πολλαπλασιάσωμεν τὸν ἀκέραιον ἐπὶ τὸν παρονομαστὴν καὶ εἰς τὸ γινόμενον προσθέσωμεν τὸν ἀριθμητήν. Τὸ οὕτω λαμβανόμενον ἐξαγόμενον θέτομεν ὡς ἀριθμητὴν τοῦ ἴσου πρὸς τὸν μικτὸν κλάσματος ἔχοντος τὸν αὐτὸν παρονομαστήν, ἤτοι εἶναι:

$$5\frac{3}{7}=\frac{38}{7}.$$

Ν. Γ.

**Μίκυθος.** —1) Πιστὸς θεράπων τοῦ Ἀναξιλάου, τυράννου ἐν Ρηγίῳ τῆς Ἰταλίας, ἐπιτροπεύσας μετὰ τὸν θάνατόν του (476 π. Χ.) τοὺς ἀνηλίκους υἱούς του, οἵτινες ἐβασίλευσαν τῷ 467 π. Χ.

—2) Θηβαῖος, φίλος τοῦ Ἐπαμεινώνδα, ἐκδιωχθεὶς ὑπ' αὐτοῦ ἐκ Θηβῶν, διότι λαβὼν πέντε τάλαντα παρὰ Διομέδοντος τοῦ Κυζικηνοῦ, ἀπεσταλμένου Ἀρταξέρξου τοῦ Μνήμονος, ἠθέλησε νὰ διαφθείρῃ αὐτὸν ὑπὲρ τῶν σχεδίων τοῦ μεγάλου βασιλέως. Α. Θ. Σ.

**Μίκυλλος.** Ἀρχαῖος ποιητής, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Καλλιμάχου εἰς τὰ ἐπιγράμματά του. Α. Θ. Σ.

**Μίκων.** Ἕλλην γλύπτης καὶ ζωγράφος, ἀκμάσας κατὰ τὰ μέσα τῆς Ε' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος. Κατὰ τὸν Σχολιαστὴν τοῦ Ἀριστοφάνους, ὁ Μίκων ἦτο Ἀθηναῖος, κατὰ δὲ τὸν Παυσανίαν συνειργάσθη μετὰ τοῦ Πολυγνώτου ἐν τῇ Ποικίλῃ Στοᾷ, τῷ Θησείῳ καὶ ἐν τῷ ναῷ τῶν Διοσκούρων. Τὸν Μίκωνα ὡς γλύπτην ἀναφέρει πρῶτος ὁ

Digitized by Google

Πλίνιος, λέγων ὅτι ἦτο γλύπτης ἰδίως ἀγαλμάτων ἀθλητῶν. Τὴν πληροφορίαν ταύτην ἐνισχύει καὶ ὁ Παυσανίας, ἀναφέρων ὅτι ὁ Ἀθηναῖος ζωγράφος Μίκων ἐτεχνούργησε τὸ ἐπὶ τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν ἄγαλμα τοῦ παγκρασιαστοῦ Καλλίου, ὅστις ἐνίκησε κατὰ τὴν 77ην Ὀλυμπιάδα. Ἀλλ' ὁ Μί-

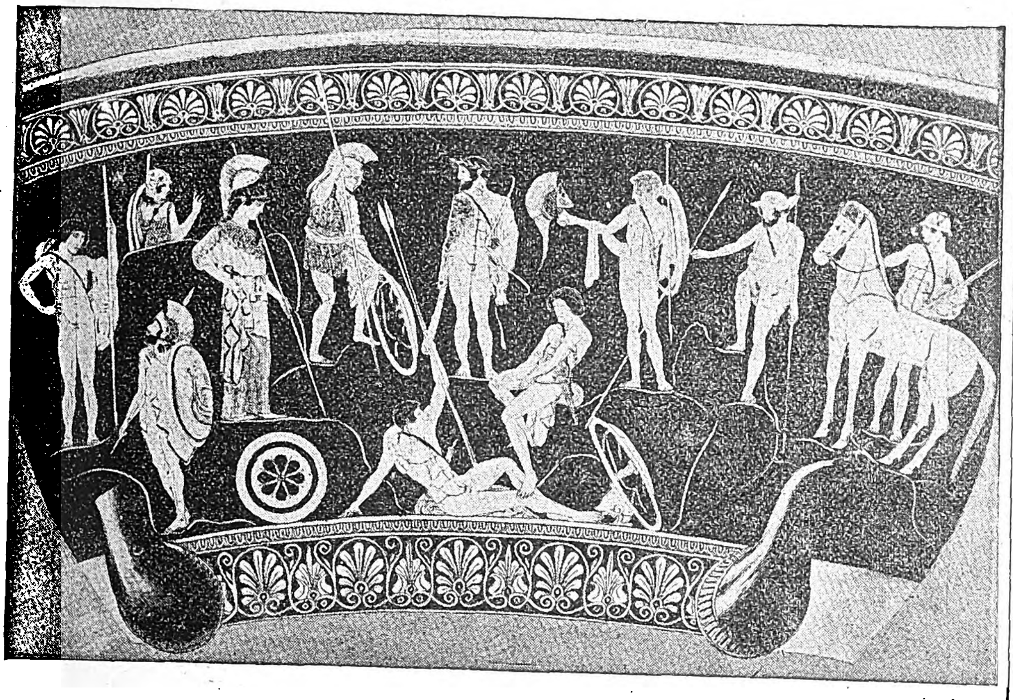

*Μίκωνος: Ἡ Ἀθηνᾶ καὶ οἱ Ἀργοναῦται.*

[Ἀγγειογραφία ἐν τῷ Μουσείῳ τοῦ Λούβρου.]

κων ἐξαίρεται παρὰ διαφόρων ἀρχαίων συγγραφέως κυρίως ὡς ζωγράφος. Ἐκ τῶν πινάκων, τοὺς ὁποίους ἐζωγράφησε, σημαντικώτεροι ἦσαν: 1) Ὁ πίναξ ὁ ἐξιστορῶν τὴν ὑπὸ τὴν ὁδηγίαν τοῦ Θησέως μάχην τῶν Ἀθηναίων ἐναντίον τῶν Ἀμαζόνων. Ὁ πίναξ οὗτος, κατὰ τὸν Παυσανίαν, εὑρίσκετο ἐν τῇ Ποικίλῃ Στοᾷ, ἀπετέλει δὲ τὸν δεύτερον πίνακα τῆς ἐκ τεσσάρων πινάκων μεγάλης συνθέσεως, ἥτις ἐκόσμει τὸ ἵδρυμα ἐκεῖνο. Κατὰ τὸν Ἀρριανὸν δὲ καὶ τὸν Σώπατρον, ὁ Μίκων ἐζωγράφησε καὶ τὸν τέταρτον πίνακα τῆς Ποικίλης Στοᾶς, ὅστις ἐξιστόρει τὴν μάχην τοῦ Μαραθῶνος. 2) Ὁ ἐν τῷ Θησείῳ πίναξ ὁ εἰκονίζων τὸν Θησέα ἐν τῷ βυθῷ τῆς θαλάσσης πρὸ τοῦ Ποσειδῶνος καὶ τῆς Ἀμφιτρίτης. 3) Ὁ πίναξ ὁ ἐξιστορῶν τὴν ἐπιστροφὴν τῶν Ἀργοναυτῶν εἰς Ἑλλάδα, ὅστις ἐκόσμει μετ' ἄλλου τοῦ Πολυγνώτου τὸν ναὸν τῶν Διοσκούρων, ἢ τὸ Ἀνάκειον λεγόμενον ἱερόν, ἐπὶ τῶν βορείων προπόδων τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν. Ἰδέαν τῆς συνθέσεως ταύτης παρέχει ἀγγειογραφία ἐπὶ ἀγγείου τοῦ μουσείου τοῦ Λούβρου, ἥτις ἀναμφιβόλως εἶναι ἀπομίμησις τοῦ μικωνείου πίνακος. Β. Δ Θ.

— **Μίκων.** Συρακούσιος γλύπτης, ὅστις ἐντολῇ τῶν υἱῶν τοῦ Ἱέρωνος κατεσκεύασε τῷ 215 π. Χ. τοὺς δύο ἐν Ὀλυμπίᾳ ἀνδριάντας αὐτοῦ, τὸν μὲν πεζόν, τὸν δὲ ἔφιππον. Α. Θ. Σ.

**Μίλ** (Mille)· βλ. *Μίλλ*.

**Μιλᾶν-σοὺ** *[Γεωγρ.]*. Ὁ ποταμὸς Ὕψιος τῶν ἀρχαίων, πηγάζων ἐκ τῶν ὁρίων τῆς ὑποδιοικήσεως Δοῦζτσε τοῦ νομοῦ Κασταμονῆς καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Εὔξεινον, παρὰ τὰ ΒΑ. ὅρια τῆς διοικήσεως Κέντερε. Παρὰ τὸν ποταμὸν τοῦτον ἔκειτο ἡ πόλις Ὑπία, ἣν Προυσίας ὁ Δ' ἐκάλεσε *Προῦσαν πρὸς τῷ Ὑπίῳ*. Κατὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ τούτου ὑπάρχουσι νῦν μεγάλα ἐργοστάσια, ἐν οἷς κατασκευάζονται διάφορα ἐξαρτήματα τοῦ τουρκικοῦ στόλου.

**μιλάνδρη** (ἡ) *[Ζῳολ.]*· βλ. *γαλέος*.

**Μιλανέζος** (ὁ), θηλ.—α· ὁ κάτοικος τοῦ Μιλάνου, ὁ ἐκ Μιλάνου καταγόμενος.

**Μιλᾶνον** (ἰταλ. Milano, λατ. Mediolanum, ἐξ οὗ τὸ ἀρχ. ἑλλην. *Μεδιόλανα*, γαλλ. Milan, γερμαν. Mailand) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, ἐν Λομβαρδίᾳ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ καὶ ἐπαρχίας, παλαιὰ πρωτεύουσα τοῦ δουκάτου τοῦ Μιλάνου, τοῦ βασιλείου τῆς Ἰταλίας (1805—1814) καὶ τοῦ λομβαρδοβενετικοῦ βασιλείου (1815—1859). Κεῖται ἐν εὐφόρῳ πεδιάδι, εἰς ὕψος 110—128 μ., μεταξὺ 45°28' Β. πλάτους καὶ 9°11' Α. μήκους καὶ ἐπὶ τῆς διασταυρώσεως τῶν ὁδῶν, αἵτινες ἄγουν ἀφ' ἑνὸς μὲν ἐκ τῶν λιμένων τῆς Ἀδριατικῆς πρὸς τὸ Πεδεμόντιον καὶ τὴν Γαλλίαν, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἐκ τῶν λιμένων τῆς Μεσογείου πρὸς τὰς διαβάσεις τῶν Ἄλπεων (Σεμπλόν, Ἅγιος Γοτθάρδος, Σολοῦγκεν, Στέλβιο), πρὸς τὴν Ἑλβετίαν καὶ τὴν Γερμανίαν. Διαρρέεται ὑπὸ τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Ὀλόνα καὶ συνδέεται διὰ διωρύγων πρὸς ἁπάσας τὰς περικυκλούσας αὐτὴν μεγάλας ποταμίους ὁδούς, ἤτοι πρὸς τὸν Ἄδδαν καὶ τὴν λίμνην τοῦ Κώμου διὰ τῆς διώρυγος Μαρτεζάνα, μήκους 58 χλμ., ἧς ἡ κατασκευὴ ἤρχισε τῷ 1451 καὶ ἐπερατώθη ὑπὸ τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι καὶ ἡ ὁποία περιβάλλει τὴν παλαιὰν πόλιν, πρὸς τὸν Τιτσίνο καὶ τὴν Λάγκο Ματζιόρε διὰ τῆς διώρυγος Ναβίλιο Γκράντε, μήκους 50 χλμ., καὶ πρὸς τὸν Πάδον διὰ τῆς διώρυγος τῆς Παβίας, μήκους 39 χλμ., ἥτις κατεσκευάσθη κατὰ διαταγὴν τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος. Εἶναι τὸ κέντρον τῆς σιδηροδρομικῆς συγκοινωνίας τῆς Ἄνω Ἰταλίας μετὰ πέντε σταθμῶν καὶ κόμβος τῆς ἀεροπλοϊκῆς συγκοινωνίας τῆς Ἰταλίας, ἐπὶ τῶν γραμμῶν τοῦ ἐσωτερικοῦ καὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ, μετὰ στρατιωτικοῦ καὶ ἐμπορικοῦ ἀεροδρομίου. Ἡ προνομιοῦχος αὐτὴ θέσις ἀπὸ ἀπόψεως συγκοινωνιῶν, ὑπῆρξεν ἀπ' ἀρχαιοτάτων χρόνων διὰ τὸ Μιλᾶνον πηγὴ μεγάλης εὐημερίας, ἥτις ηὔξησεν ἔτι πλέον κατὰ τοὺς δύο τελευταίους αἰῶνας, διὰ τῆς τεραστίας ἀναπτύξεως τῆς γεωργίας, τῆς βιομηχανίας καὶ τοῦ ἐμπορίου, καθὼς ἐπίσης καὶ τῆς καλλιτεχνικῆς καὶ πνευματικῆς ἐν γένει κινήσεως, καὶ κατέστησεν αὐτὸ τὴν οἰκονομικὴν καὶ πνευματικὴν πρωτεύουσαν τῆς νεωτέρας Ἰταλίας. Ἀπὸ ἀπόψεως πληθυσμοῦ, ὁ ὁποῖος ηὐξήθη ἁλματωδῶς, ἀπὸ 124.000 κατὰ τὸ 1810 εἰς 456.698 κατὰ τὸ 1896, εἰς 941.070 τῷ 1928 καὶ 980.119 τῷ 1930, τὸ Μιλᾶνον εἶναι ἡ δευτέρα πόλις τῆς Ἰταλίας, ἐρχομένη εὐθὺς ἀμέσως μετὰ τὴν Νεάπολιν (986.989 κατ. τῷ 1930). Τὸ κλῖμα τῆς πόλεως εἶναι μᾶλλον ὑγιεινόν, μὲ μέσην θερμοκρασίαν 12°7, ἐλαχίστην —17° καὶ ἀνωτάτην +36°2, καίτοι, λόγῳ τῆς γειτνιάσεως τῶν ὀρυζώνων τῆς Λομβαρδικῆς πεδιάδος καὶ τῆς παρουσίας τῶν διωρύγων, αἵτινες διασχίζουν τὴν πόλιν, ἡ ὑγρασία εἶναι ἀρκετὰ μεγάλη, αἱ βροχαὶ συχναὶ καὶ ἄφθονοι (103 κατὰ μέσον ὅρον ἐτησίως), ἡ δὲ ὁμίχλη κατὰ τὸν χειμῶνα φθάνει πολλάκις τὴν πυκνότητα τῆς ὁμίχλης τοῦ Λονδίνου.

Τὸ Μιλᾶνον ἀποτελεῖται ἐκ τῆς παλαιᾶς πόλεως, ἥτις εἶναι τὸ κέντρον αὐτοῦ, καὶ τῆς νέας, ἡ ὁποία ἐκτείνεται πέριξ τῆς παλαιᾶς. Ἡ παλαιὰ πόλις περιβάλλεται ὑπὸ παχέων τειχῶν, φερόντων δεκατέσσαρας πύλας, ὧν κυριώτεραι εἶναι ἡ Πύλη τῆς Γενούης, ἡ Τιτσινέζε, ἡ Ρομάνα, ἡ Βιττόρια, ἡ τῆς Βενετίας, ἡ Νέα, ἡ τοῦ Γαριβάλδη, ἡ τῆς Μαγεντίας κλπ. Τὰ τείχη ταῦτα, κατεδαφισθέντα τελείως κατὰ τὸ ΒΔ. τμῆμα, μετεβλήθησαν κατὰ τὰς τρεῖς ἑτέρας πλευρὰς των εἰς ὡραίους δενδροφύτους περιπάτους, ὅπόθεν ἡ θέα εἶναι εὐρυτάτη πρὸς τὰ προάστεια, τὴν μεγάλην Λομβαρδικὴν πεδιάδα καὶ τὰς κορυφὰς τῶν Ἄλπεων πρὸς Β. καὶ τῶν Ἀπεννίνων πρὸς Ν. καὶ Δ. Αἱ ὁδοὶ τῆς παλαιᾶς πόλεως εἶναι στεναὶ καὶ σκολιαί, ἐν αὐτῇ δὲ ὑπάρχουν καὶ τὰ ἱστορικὰ μέγαρα τῶν μεγάλων λομβαρδικῶν οἰκογενειῶν, αἱ κυριώτεραι ἐκκλησίαι καὶ αἱ διώρυγες, ὧν ἡ μία περιβάλλει τὸ τεῖχος κατὰ τὰς τρεῖς πλευρὰς αὐτοῦ, ἡ δὲ

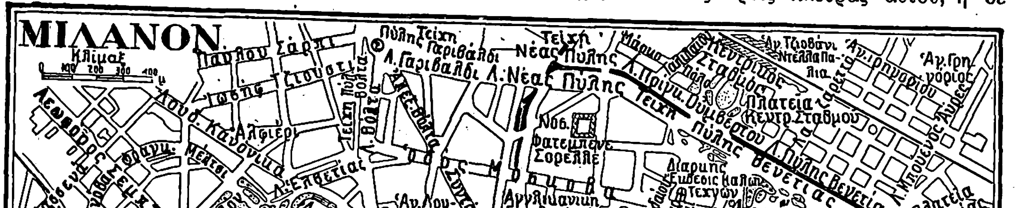


*Σχεδιάγραμμα τοῦ Μιλάνου.*

[1=Ἀψὶς τῆς εἰρήνης. 2=Πύλη Βόλτα. 3=Ἐμπορικὸν πανεπιστήμιον. 4=Ἅγιος Σιμπλιτσιάνο. 5=Πλατεῖα Ἁγίου Μάρκου. 6=Προτεσταντικὸς ναός. 7=Ναὸς Ἁγ. Ἀγγέλου. 8=Ἀνώτερον Τεχνικὸν Ἰνστιτοῦτον. 9=Ἁψῖδες τῆς Νέας Πύλης. 10=Βίλλα Ρεάλε (Πινακοθήκη νεωτέρας ζωγραφικῆς). 11=Μέγαρον Γερουσίας (Κρατικὸν Ἀρχεῖον). 12=Ἁγία Μαρία Ποντόνε. 13=Μέγαρον Μπορομέο. 14=Μέγαρον Τζιουρεκονσοῦλτι. 15=Μνημεῖον Λεονάρδου Ντὰ Βίντσι. 16=Θέατρον Μαντσόνι. 17=Πλατεῖα καὶ Μέγαρον Μπελτζιογιόζο. 18=Πλατεῖα Φοντάνα. 19=Πύλη Μονφόρτε.
━━ διώρυγες. ━━ σιδηροδρομικαὶ γραμμαί.]

ἑτέρα διασχίζει τὴν πόλιν, σχεδὸν παραλλήλως πρὸς τὴν πρώτην, μεταξὺ τῶν τειχῶν καὶ τῆς κεντρικῆς πλατείας τῆς Μητροπόλεως. Κατὰ τὰς τε-

Digitized by Google

λευταίας δεκαετηρίδας κατέστη δυνατὸν νὰ διανοιγοῦν μεγάλαι καὶ εὐρύταται λεωφόροι καὶ πλατεῖαι καὶ εἰς τὴν παλαιὰν πόλιν μέχρι τοῦ κέντρου αὐτῆς, πλαισιούμεναι ὑπὸ μεγαλοπρεπῶν νέων οἰκοδομῶν, ὡς εἶναι ἡ ὁδὸς Δάντη, ἡ Κόρσο Ἰτάλια, ἡ Κάρλο Ἀλμπέρτο, ἡ Κόρσο Ρώμα κτλ. Ἡ νέα πόλις περιβάλλει τὴν παλαιάν, ἐκεῖθεν τῶν παλαιῶν τειχῶν, καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ νέας συνοικίας μὲ εὐρείας καὶ εὐθυγράμμους ὁδούς, μεγάλας καὶ πολυωρόφους οἰκίας καὶ πολυκατοικίας καὶ πολλὰ νέα δημόσια κτήρια, καθὼς καὶ βιομηχανικὰς ἐγκαταστάσεις. Τὸ γεωγραφικὸν κέντρον τῆς πόλεως καὶ ἡ καρδία αὐτῆς, ὅπου περιστρέφεται ἡ μεγαλυτέρα κίνησις πάσης φύσεως, εἶναι ἡ πλατεῖα τῆς Μητροπόλεως (Piazza del Duomo). Ἡ πλατεῖα αὐτη, διευρυνθεῖσα τῷ 1876, περικλείεται πρὸς τὸ Β. αὐτῆς τμῆμα ὑπὸ μεγαλοπρεποῦς νεοδμήτου οἰκοδομῆς μετ' ἁψιδωτοῦ περιστυλίου, ὅπου ἡ ὀνομαστὴ στοὰ Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ (Galleria Vittorio Emmanuele). Ἡ στοὰ αὐτη εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τῆς Ἰταλίας καὶ κατεσκευάσθη ἀπὸ τοῦ 1865 μέχρι τοῦ 1867. Ἔχει σχῆμα σταυροῦ καὶ ἑνώνει τὴν πλατεῖαν Μητροπόλεως μετὰ τῆς πλατείας Σκάλας καὶ τὰς ὁδοὺς Πέλλικο καὶ Φώσκολο. Ἔχει πλάτος 14,5 μ., ὕψος 50 μ., μῆκος 195 μ. καὶ καλύπτεται ὑπὸ ὑαλοφράκτου σκεπῆς. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν ὡραῖα καταστήματα, πολυτελῆ καφενεῖα, ἑστιατόρια καὶ διάφορα ἄλλα κέντρα, ἅτινα καθιστοῦν αὐτὴν τὸ σημαντικώτερον σημεῖον συναντήσεως τῆς ἐκλεκτῆς κοινωνίας, τῶν συναλλασσομένων καὶ τῶν ξένων.

*Μερικὴ ἄποψις τοῦ Μιλάνου.*

***Μνημεῖα.*** Τὸ Μιλᾶνον περιέχει πλεῖστα καλλιτεχνικὰ μνημεῖα, παλαιὰ καὶ νέα, καθὼς καὶ ναοὺς καὶ ἱστορικὰ μέγαρα. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: Ἡ μητρόπολις (Duomo), εὑρισκομένη ἐν τῇ πλατείᾳ, ἥτις ἐξ αὐτῆς ἔλαβε τὸ ὄνομα. Εἶναι ἐκ τῶν σημαντικωτέρων γοτθικοῦ ῥυθμοῦ ναῶν τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Εὐρώπης, ἡ δὲ κατασκευή του ἤρχισε τῷ 1386 καὶ ἐπερατώθη τῷ 1831, ἐκ λευκοῦ μαρμάρου, ἔχει δὲ ὑπὲρ τὴν στέγην αὐτῆς 130 πυργίσκους ἀπολήγοντας εἰς ἰσάριθμα βέλη μετ' ἀγαλμάτων. Τὸ ἐξωτερικὸν τοῦ ναοῦ κοσμοῦσιν ὑπὲρ τὰ 2000 ἀγάλματα. Διὰ τὴν κατασκευὴν αὐτοῦ εἰργάσθησαν οἱ Γερμανοὶ ἀρχιτέκτονες Ἐρρῖκος Γκμοῦντ καὶ Οὐλρῖχος φὸν Φούσσινγκεν, ὁ Γάλλος Ἰωάννης Μινιὸ καὶ οἱ Ἰταλοὶ Φραγκῖσκος ντὶ Τζώρτζιο, Ἰωάννης Ἀντώνιος Ἀμαντέο, Ντολτσεμπουόνο, Σολάρι καὶ Πελλεγκρίνο Τιμπάλντι, ὁ ὁποῖος κατεσκεύασε τὴν πρόσοψιν εἰς ῥυθμὸν μπαρόκ. Ἡ ἰδέα τῆς κατασκευῆς ὀφείλεται εἰς τὸν Ἰωάννην Γαλεάτσι Βισκόντι, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἀναθέσει εἰς Γερμανοὺς ἀρχιτέκτονας τὴν δημιουργίαν ναοῦ ἀνταξίου τῶν περιφήμων γοτθικῶν ναῶν, οἵτινες κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἐκόσμουν τὰς ὄχθας τοῦ Ρήνου. Ὁ ἀρχικὸς ἀμιγὴς γοτθικὸς ῥυθμὸς αὐτοῦ ἀνεμείχθη βραδύτερον μὲ ἄλλους ῥυθμούς, ἀναγεννήσεως καὶ μπαρόκ, ὀφειλομένους εἰς τοὺς Λομβαρδοὺς ἀρχιτέκτονας, οἵτινες ἀνέλαβον τὴν ἀποπεράτωσίν του. Ὁ πλοῦτος τῶν διακοσμήσεων τοῦ ἐξωτερικοῦ τοῦ ναοῦ προκαλεῖ καταπληκτικὴν καὶ ἐκθαμβωτικὴν ἐντύπωσιν. Τὸ ἐσωτερικὸν αὐτοῦ, ὅπου ἡ ἀνάμιξις τῶν ῥυθμῶν εἶναι ὀλιγώτερον αἰσθητή, προκαλεῖ ἔτι ἰσχυροτέραν καὶ βαθυτέραν ἐντύπωσιν, λόγῳ τῶν κολοσσιαίων διαστάσεων (148 μ. μήκους, 88 μ. πλάτους καὶ 108,5 μ. ὕψους, μετὰ ἐμβαδοῦ 11.700 τ. μ.), τοῦ μυστηριώδους ἡμίφωτος καὶ τῆς μεγαλοπρεπείας καὶ ἐπιβλητικότητος τῶν πολυαρίθμων κιόνων. Ἀπὸ τῆς κορυφῆς τοῦ κεντρικοῦ πύργου, προσιτῆς εἰς τοὺς ἐπισκέπτας, ἡ θέα εἶναι εὐρυτάτη πρὸς τὴν Λομβαρδικὴν πεδιάδα καὶ τὰς Ἄλπεις. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων καλλιτεχνημάτων τοῦ ναοῦ εἶναι ὁ τάφος τοῦ Βιμερκάτι, τὰ μνημεῖα τοῦ Ἰωάννου καὶ Γαβριὴλ τῶν Μεδίκων, τοῦ καρδιναλίου Καράτσιολι, τοῦ ἁγίου Βαρθολομαίου, τὰ μανουάλια, οἱ ἔγχρωμοι καὶ ζωγραφιστοὶ ὑαλοπίνακες κτλ. Ἐκ τῶν ἄλλων ἐκκλησιῶν τοῦ Μιλάνου, αἵτινες ὑπερβαίνουν τὰς 185, σημαντικώτεραι εἶναι: τοῦ Ἁγίου Ἀμβροσίου τοῦ Θ' αἰῶνος, ἥτις δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ὁ τύπος τῆς παλαιᾶς λομβαρδικῆς ἢ ῥωμανοβυζαντινῆς ἀρχιτεκτονικῆς περιέχει ἐνδιαφέροντα ἀγάλματα, ἐν αὐτῇ δὲ ἐστέφθησαν ἑπτὰ αὐτοκράτορες· τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου τοῦ Ζ' αἰῶνος, ἀνακαινισθεὶς τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα μετὰ 16 ἀρχαίων κιόνων, προερχομένων ἐκ τῶν θερμῶν τοῦ Μαξιμίνου· τῆς Ἁγίας Μαρίας τῶν Χαρίτων, ἥτις ἐκτίσθη κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἐπὶ σχεδίων τοῦ Μπραμάντε καὶ ἐν τῇ συνεχομένῃ μονῇ τῆς ὁποίας εὑρίσκεται ὁ ἡμικατεστραμμένος περίφημος «Μυστικὸς Δεῖπνος» τοῦ Λεονάρδο ντὰ Βίντσι· τοῦ Ἁγίου Μαυρικίου, κτισθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1503—1519 καὶ περιέχουσα ὡραίας νωπογραφίας τοῦ Βερναρδίνου Λουΐνι· τοῦ Ἁγίου Σατύρου τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, μετ' ἐπιβλητικοῦ θόλου· τοῦ Ἁγίου Καρόλου κτλ.

Μεταξὺ τῶν ἄλλων κτηρίων τὰ κυριώτερα εἶναι: τὸ βασιλικὸν ἀνάκτορον, παρὰ τὴν Ν. πλευρὰν τῆς πλατείας Μητροπόλεως, θεμελιωθὲν κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ὑπὸ Πιερμαρίνι καὶ ἀποπερατωθέν, ἀνακαινισθὲν καὶ κοσμηθὲν διὰ νωπογραφιῶν τοῦ Ἀππιάνι κατὰ διαταγὴν τοῦ Ναπολέοντος Α'. Τὸ ἀνάκτορον τοῦτο κεῖται ἐν τῇ θέσει, ὅπου ἔκειτο ἄλλοτε τὸ φρούριον τῶν Βισκόντι: Τὸ κοινῶς καλούμενον ἀνάκτορον Μπρέρα, ἐπισήμως δὲ μέγαρον τῶν ἐπιστημῶν, γραμμάτων καὶ τεχνῶν, εἶναι ἐκ τῶν σημαντικωτάτων τοῦ Μιλάνου καὶ ἀποτελεῖ τεράστιον τετράγωνον κτήριον, κτισθὲν κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα ὑπὸ ἰησουϊτῶν, οἱ ὁποῖοι μετέβαλον αὐτὸ τῷ 1571 εἰς κολλέγιον. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ηὔρυνε καὶ ἀνεκαίνισε τοῦτο ὁ Ρικίνι. Ἐν τῇ αὐλῇ του ὑπάρχει ὀρειχάλκινον ἄγαλμα τοῦ Ναπολέοντος Α', ἐν στολῇ Ρωμαίου αὐτοκράτορος, κατασκευασθὲν τῷ 1810 ὑπὸ τοῦ Κανόβα. Ἐν τῇ αὐλῇ ὑπάρχουν καὶ ἄλλα ἀγάλματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ ἀξιομνημονευτότερον εἶναι τοῦ Καίσαρος Βεκκαρία. Τὸ ἀνάκτορον τοῦτο περιέχει δημοσίαν βιβλιοθήκην, νομισματικὴν συλλογὴν μετὰ μεταλλίων, ἀστεροσκοπεῖον, μουσεῖα ζωγραφικῆς, ἀρχαιοτήτων, καλλιτεχνικὴν Ἀκαδημίαν κτλ. Τὸ μουσεῖον ζωγραφικῆς ἢ πινακοθήκη Μπρέρ ἱδρύθη τῷ 1798 ὑπὸ τῆς ἐντεῦθεν τῶν Ἄλπεων δημοκρατίας καὶ περιέχει σημαντικώτατα ἔργα τῶν μεγαλυτέρων ζωγράφων, Ἰταλῶν καὶ ξένων, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τοῦ Φερράρι, τοῦ Λουΐνι, τοῦ Βερονέζε, τοῦ Τισιανοῦ, τοῦ Λορέντσο Λόττο, τοῦ Κριβέλλι, τοῦ Καραβάτζιο, τοῦ Κορρέτζιο, τοῦ Κόστα, τοῦ Ν. Πιζάνο, τοῦ Ντόσσι, τοῦ Ραφαήλου, τοῦ Σινιορέλλι, τοῦ Καρράτσι, τοῦ Γκουΐντο Ρένι, τοῦ Δομενίκου, τοῦ Γκουαρτσίνο, τοῦ Ντόλτσι, τοῦ Σασσοφερράτο, τοῦ Τσούκκαρι, τοῦ Ρόσσα, τοῦ Ρέμπραντ, τοῦ Ρούμπενς, τοῦ Βὰν ντ' Αὔκ, τοῦ Μέντς, τοῦ Ριμπέρα κτλ. Τὸ κυριώτερον ἔργον τοῦ μουσείου τούτου εἶναι «Ἡ μνήστευσις τῆς παρθένου» τοῦ Ραφαήλου. Τὸ καστέλλο Σφόρτσα ἐκτίσθη τῷ 1368 ὑπὸ τοῦ Γκαλεάτσο Β' Βισκόντι καὶ ἀνεκαινίσθη τῷ 1893 ἐπὶ ῥυθμοῦ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, περιέχει δὲ μεγίστης καλλιτεχνικῆς ἀξίας ἔργα διακοσμητικῆς καὶ καλλιτεχνικά. Ἐλεηλατήθη πολλάκις κατὰ τοὺς ἐμφυλίους πολέμους τῆς Ἰταλίας, μετὰ δὲ τὴν ἀνακαίνισίν του τὸ πρὸ αὐτοῦ πεδίον τοῦ Ἄρεως μετεβλήθη εἰς θαυμάσιον κῆπον. Τὸ μέγαρον Μαρίνο, εὑρισκόμενον ἐν τῇ πλατείᾳ τῆς Σκάλας, ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ Γκαλεάτσο Ἀλέσσι τῷ 1551 καὶ ἀπὸ τοῦ 1861 μετεβλήθη εἰς δημαρχεῖον. Τὸ μέγαρον τοῦ Ρατζιόνε ἦτο ἄλλοτε μέγαρον τῆς δικαιοσύνης, νῦν δὲ περιέχει σημαντικὰς καλλιτεχνικὰς συλλογάς. Τὸ μέγαρον Σερμπελλόνι - Μποῦσκο ἐκτίσθη τῷ 1794. Τὸ μέγα νοσοκομεῖον (Ospedale Maggiore) ἐκτίσθη τῷ 1456 ὑπὸ τοῦ Φραγκίσκου Σφόρτσα καὶ ἀποτελεῖ ἓν τῶν ὡραιοτέρων δειγμάτων τῆς λομβαρδικῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῆς Ἀναγεννήσεως. Τὸ ἀνάκτορον τὸ καλούμενον βασιλικὴ ἔπαυλις ἐκτίσθη τῷ 1790 ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Μπελτζιογιόζο καὶ κοσμεῖται ὑπὸ ὡραίων ἔργων τοῦ Λουΐνι. Τὸ ἀρχιεπισκοπικὸν μέγαρον, θεμελιωθὲν τῷ 1494, περικλείει ἐνδιαφέρουσαν πινακοθήκην ἔργων παλαιῶν Ἰταλῶν διδασκάλων. Τὸ μέγαρον Ἀννόνι περιέχει ὀνομαστὴν πινακοθήκην. Τὸ μέγαρον Ἀρτσίντο κοσμεῖται διὰ νωπογραφιῶν τοῦ Τιέπολο. Τὸ μέγαρον Λεόνε Λεόνι (1607) ἔχον ὀκτὼ κολοσσιαίας Καρυάτιδας. Τὸ μέγαρον Τιβοῦλτσι ἔχει πολυτίμους συλλογὰς σπανίων ἐκδόσεων καὶ πινάκων κτλ. Τὸ Μιλᾶνον ἔχει ἐπίσης πλούσιον νεκροταφεῖον, πολυαρίθμους στρατῶνας, ὡραίαν ἁψῖδα τῆς εἰρήνης τοῦ Κανιόλα καὶ διάφορα ἀγάλματα καὶ μνημεῖα εἰς πολλὰς πλατείας, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι τοῦ Καβοὺρ (1855), τοῦ ἁγίου Καρόλου - Βαρθολομαίου (1865), τοῦ Μπεκκαρία (1871), τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι (1872), τοῦ Μαντσόνι (1883), τοῦ Γαριβάλδι (1895), κτλ.

***Πνευματικὴ καὶ καλλιτεχνικὴ κίνησις.*** Χάρις εἰς τὰ πολυπληθῆ καὶ πλούσια πνευματικὰ καὶ καλλιτεχνικὰ αὐτοῦ κέντρα, τὸ Μιλᾶνον ἀπέβη, ἀπὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἡ πνευματικὴ πρωτεύουσα τῆς Ἰταλίας, συγκεντρώσασα τὴν μεγαλυτέραν διανοητικὴν κίνησιν τῆς χώρας. Ἔχει δύο πανεπιστήμια, Ἀκαδημίαν ἐπιστημῶν, ἐμπορικὸν πανεπιστήμιον, σχολὴν μηχανικῶν (τὸ περίφημον Politecnico), διαφόρους ἄλλας τεχνικὰς καὶ εἰδικὰς σχολάς, διδασκαλεῖα, ἐμπορικὰς σχολάς, ᾠδεῖον, ζωολογικὸν κῆπον, βοτανικόν, διεθνῆ ἑταιρείαν τῶν μουσικῶν συγγραφέων κτλ. Πλὴν τῶν μνημονευθέντων ἀνωτέρω μουσείων καὶ βιβλιοθηκῶν ἔχει καὶ ἄλλα πέντε μουσεῖα, τὴν περίφημον Ἀμβροσιανὴν βιβλιοθήκην μὲ 400.000 τόμους καὶ 30.000 χειρόγραφα, ἱδρυθεῖσαν ὑπὸ τοῦ καρδιναλίου Φρειδερίκου Βορρομαίου ἐπὶ τῆς πλατείας τοῦ Ἁγίου Τάφου καὶ περιέχουσαν μεταξὺ ἄλλων ἀποσπάσματα τῆς «Ἰλιάδος» ἐν χειρογράφοις τοῦ Δ' αἰῶνος, τὴν Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην μὲ 300.000 τόμους, τὴν Τριβουλσιανὴν βιβλιοθήκην κτλ. Ἔχει ἐπίσης ὑπὲρ τὰ εἴκοσι θέατρα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ θέατρον «Σκάλα», ἱδρυθὲν τῷ 1778 ὑπὸ τοῦ Πιερμαρίνι, εὐρυνθὲν τῷ 1814 ὑπὸ τοῦ Κανομία καὶ ἀνακαινισθὲν τῷ 1920. Τὸ θέατρον τοῦτο, ἓν τῶν μεγαλυτέρων τοῦ κόσμου καὶ τὸ δεύτερον τῆς Ἰταλίας εἰς μέγεθος, μετὰ τὸ Σὰν Κάρλο τῆς Νεαπόλεως, δύναται νὰ περιλάβῃ 3.600 θεατὰς καὶ ἔχει πέντε σειρὰς θεωρείων, εἶναι δὲ ὀνομαστὸν καθ' ἅπαντα τὸν κόσμον διὰ τὰς ἐν αὐτῷ θαυμασίας παραστάσεις μελοδραμάτων ὑπὸ τῶν μεγαλυτέρων ἀοιδῶν τοῦ κόσμου, ὧν ἡ ἀπὸ τῆς σκηνῆς αὐτοῦ ἐμφάνισις ἀποτελεῖ ἐπίσημον τρόπον τινὰ καθιέρωσιν τῆς ἀξίας των. Μεταξὺ τῶν ἄλλων θεάτρων εἶναι τὸ Μαντσόνι, τὸ Ντὰλ Βέρμε, τὸ Φοσσάτι, τὸ Ἔντεν, τὰ Ὀλύμπια, τὸ Κάρκανο, τὸ Λυρικὸν θέατρον, τὸ Φιλοδραματικόν, τὸ Πολυθέαμα Βέρντι, κτλ. Ἔχει ἐπίσης μέγα ἀμφιθέατρον, δυνάμενον νὰ περιλάβῃ 30.000 θεατάς, ἐνυδρεῖον, δημόσιον κῆπον, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχουν πλεῖστα μνημεῖα, καὶ μουσεῖον φυσικῆς ἱστορίας, ἕτερον κῆπον, τὸ Νέον πάρκον, μετὰ πολλῶν μνημείων κτλ. Πρὸς Β. τῆς πόλεως ὑπάρχει τὸ νεκροταφεῖον μετὰ ὡραίων καὶ πλουσίων μνημείων καὶ κρεματορίου, ἐγκατασταθέντος ἀπὸ τοῦ 1876. Ἐν Μιλάνῳ ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ τὰ μεγαλύτερα ἐκδοτικὰ καταστήματα τῆς Ἰταλίας, καθὼς καὶ δύο παγκοσμίου φήμης ἐκδοτικοὶ οἶκοι μουσικῆς τοῦ Ρικόρντι καὶ τοῦ Σοντζόνιο, πλεῖστοι φιλολογικοὶ καὶ ἐπιστημονικοὶ σύλλογοι καὶ ἐκδίδονται αἱ μεγαλύτεραι καὶ εὐρύτερον κυκλοφοροῦσαι ἐφημερίδες τῆς Ἰταλίας, καθὼς καὶ περιοδικὰ πάσης φύσεως. Ἀπὸ τῆς ἀνόδου τοῦ φασισμοῦ εἰς τὴν ἀρχὴν ἐπεχειρήθη ὅπως τὰ πρωτεῖα εἰς τὴν πνευ-

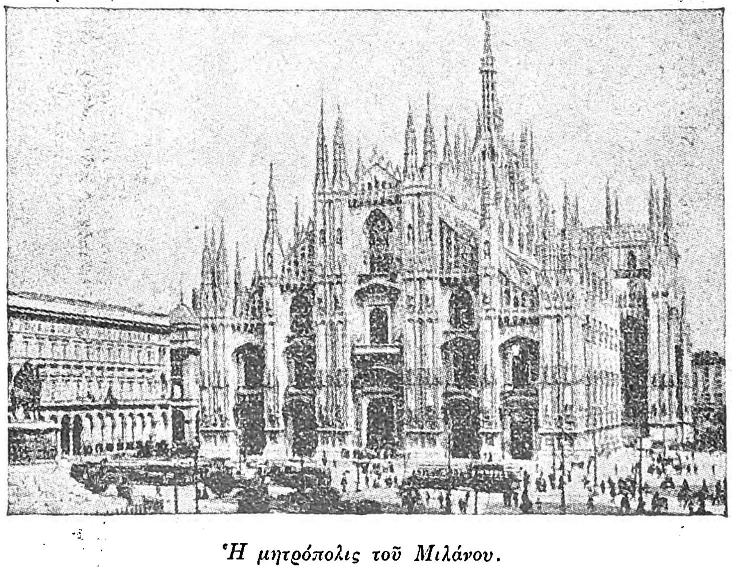

*Ἡ μητρόπολις τοῦ Μιλάνου.*

Digitized by Google

ματικὴν ζωὴν τῆς χώρας ἀναλάβῃ ἡ Ρώμη, ὡς πρωτεύουσα τοῦ κράτους, χωρὶς ὅμως ἡ προσπάθεια αὐτὴ νὰ μειώσῃ σημαντικῶς, ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης, τὸ Μιλᾶνον.

*Οἰκονομικὴ ἀνάπτυξις*. Τὸ Μιλᾶνον, ὡς ἐκ τῆς θέσεώς του, κατέστη ἡ πλουσιωτέρα καὶ ἡ πρώτη βιομηχανικὴ καὶ ἐμπορικὴ πόλις τῆς Ἰταλίας. Εἰς τὴν τεραστίαν ἀνάπτυξιν τοῦ Μιλάνου συνετέλεσεν ὄχι μόνον ἡ γεωγραφικὴ αὐτοῦ θέσις, ἐν τῷ μέσῳ εὐφορωτάτης πεδιάδος καὶ πλησίον εἰς πλουσιώτατα κέντρα παραγωγῆς, ἀλλὰ καὶ ἡ μεγίστη ἀνάπτυξις τῶν σιδηροδρομικῶν, αὐτοκινητιστικῶν καὶ ἀεροπορικῶν συγκοινωνιῶν, ἰδίως δὲ ἡ διάνοιξις τῶν σηράγγων τοῦ Ἁγίου Γοτθάρδου καὶ τοῦ Σεμπλόν, δι' ὧν κατέστη ὁ κόμβος τῶν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ ἀπὸ Α. πρὸς Δ. καὶ τἀνάπαλιν συγκοινωνιῶν καὶ τὸ διαμετακομιστικὸν κέντρον ὁλοκλήρου τῆς Ἰταλίας. Ἡ θέσις αὐτὴ προκαλεῖ τὴν συγκέντρωσιν ἐν Μιλάνῳ ὁλοκλήρου τῆς γεωργικῆς παραγωγῆς τῆς Λομβαρδίας καὶ τῶν ἄλλων γειτονικῶν περιφερειῶν, ἕνεκα δὲ τούτου τὸ ἐμπόριον τῆς ὀρύζης, τῶν ὀπωρῶν, τοῦ σίτου, τοῦ ἀραβοσίτου, τοῦ γάλακτος, τοῦ βουτύρου, τοῦ τυροῦ, τοῦ ἐλαίου, τοῦ οἴνου καὶ τῶν κτηνοτροφικῶν ἐν γένει προϊόντων εἶναι τὰ μέγιστα ἀνεπτυγμένον. Διὰ τοὺς αὐτοὺς λόγους ἀνεπτύχθη καὶ ἡ βιομηχανία, ἥτις κατέστησε τὸ Μιλᾶνον ἐκ τῶν βιομηχανικωτέρων πόλεων τῆς Εὐρώπης. Ἡ κυριωτέρα καὶ ἡ ἀρχαιοτέρα βιομηχανία τοῦ Μιλάνου εἶναι ἡ τῆς μετάξης, ἡ ἁλματώδης ἀνάπτυξις τῆς ὁποίας κατέστησεν αὐτὴν κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ἐπικίνδυνον ἀντίπαλον τῆς Λυὼν καὶ προσέδωσεν εἰς αὐτὴν κατὰ τὸν Κ' αἰῶνα τὴν πρώτην θέσιν ἐν ὅλῃ τῇ Εὐρώπῃ. Εἶναι ἐπίσης τὸ κυριώτερον ἰταλικὸν κέντρον κατασκευῆς ἀτμομηχανῶν, ἁμαξῶν σιδηροδρόμων, μηχανημάτων πάσης φύσεως, γεωργικῶν ἐργαλείων κτλ. Ἔχει ἐπίσης ἐργοστάσια μαλλίνων καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων, βυρσοδεψεῖα, χρωματουργεῖα, ὁπλουργεῖα, ἐργοστάσια κλειδοκυμβάλων, αὐτοκινήτων, ἐπίπλων, ἀεροπλάνων κτλ. Λόγῳ τῆς μεγάλης ἐμπορικῆς καὶ βιομηχανικῆς ἀναπτύξεως, τὸ Μιλᾶνον συγκεντρώνει ὡσαύτως καὶ τὴν μεγαλυτέραν οἰκονομικὴν καὶ τραπεζιτικὴν κίνησιν τῆς χώρας, ἔχον σημαντικὰ χρηματιστήρια νομισμάτων καὶ ἐμπορευμάτων καὶ ὂν ἕδρα τῶν κυριωτέρων τραπεζῶν τῆς Ἰταλίας, ὡς εἶναι ἡ «Ἐμπορικὴ Ἰταλικὴ Τράπεζα», ἡ «Τράπεζα Ἰταλικῆς Πίστεως», μετὰ μεγαλοπρεπῶν ἐγκαταστάσεων κτλ. Ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ περὶ τὰς 100 ἄλλαι τράπεζαι καὶ ὑποκαταστήματα μεγάλων τραπεζῶν.

Τὸ Μιλᾶνον ἔχει ἐπίσης ἄφθονα φιλανθρωπικὰ καθιδρύματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ Γενικὸν Νοσοκομεῖον (Ospedale Generale), τεράστιον οἰκοδόμημα μετὰ ὡραίας προσόψεως, θεμελιωθὲν τῷ 1456 ἐπὶ Φραγκίσκου Σφόρτσα, τὸ βρεφοκομεῖον, τὸ ἰνστιτοῦτον κωφαλάλων, ὁ οἶκος τυφλῶν, τὸ φρενοκομεῖον, τὸ ὀρφανοτροφεῖον, τὸ ἄσυλον κτλ. Μεταξὺ τῶν ἀξιομνημονεύτων τοῦ Μιλάνου εἶναι καὶ αἱ ἄφθονοι ἐργατικαὶ οἰκίαι καὶ πολυκατοικίαι, ἀποτελοῦσαι ὁλοκλήρους συνοικίας εἰς τὸ περιθώριον τῆς νέας πόλεως καὶ κατασκευασθεῖσαι συμφώνως πρὸς τὰ τελειότερα καὶ νεώτατα ὑποδείγματα τοῦ εἴδους των.

— [*Ἱστορ.*] Τὸ Μιλᾶνον ἐκαλεῖτο κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους *Μεδιόλανον* (Mediolanum). Ἡ ἐτυμολογία τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ δὲν εἶναι γνωστή, πρὸς ἀνεύρεσιν δὲ ταύτης οἱ ἱστορικοὶ καταφεύγουν εἰς διαφόρους ὑποθέσεις καὶ εἰς οὐχὶ ἀξιοπίστους πηγάς, ἄλλοι διατεινόμενοι ὅτι προῆλθεν ἐκ τῶν δύο βαρβάρων ἀρχηγῶν Μέδο καὶ Ὄλανο καὶ ἄλλοι ἐκ τῆς ἐντυπώσεως τὴν ὁποίαν ἐπροξένησεν εἰς τοὺς πρώτους εἰσβολεῖς καὶ κατακτητὰς τοῦ βορρᾶ τὸ κλῖμα καὶ ὁ πλοῦτος τῆς χώρας (mayland, τὴν χώρα τοῦ Μαΐου). Ἐπίσης καὶ ὁ χρόνος τῆς ἱδρύσεως αὐτοῦ δὲν εἶναι ἱστορικῶς ἐξηκριβωμένος. Κατά τινας πληροφορίας τοῦ Τίτου Λιβίου ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ Βελλοβέζου, ἀρχηγοῦ τῶν Ἰνσόβρων Γαλατῶν τῷ 590 π. Χ. Ἡ πραγματικὴ ὅμως ἱστορικὴ ἐποχὴ τοῦ Μιλάνου ἄρχεται ἀπὸ τῆς κυριεύσεως αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ Ρωμαίου ὑπάτου Σκηπίωνος Νασικᾶ τῷ 222 π. Χ. Ἐπὶ τῆς ὑπατείας τοῦ Πομπηΐου ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τῆς «Δευτέρας Ρώμης», ὅπως ἐπίσης περὶ τὸ τέλος τῆς Ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας ἐδόθη εἰς αὐτὸ τὸ ὄνομα *Νέαι Ἀθῆναι*, διότι κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἀπετέλει τὴν κυριωτέραν ἑστίαν τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν ὁλοκλήρου τῆς Ἰταλίας. Κατὰ τὸ ἔτος 253 μ. Χ. ὁ αὐτοκράτωρ Γαλλιηνὸς κατετρόπωσε παρὰ τὸ Μιλᾶνον μεγάλην στρατιὰν Γερμανῶν, ἀλλ' ἐδολοφονήθη ἐν αὐτῷ τῷ 268.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην τὸ Μιλᾶνον ἐγένετο ἐπανειλημμένως ἡ προτιμωμένη διαμονὴ τῶν Ρωμαίων αὐτοκρατόρων, οἱ ὁποῖοι ἐξωράισαν αὐτὸ μεγάλως διὰ πολυτελῶν κτηρίων καὶ τὸ περιέβαλον διὰ τειχῶν 5 χιλ. περιφερείας. Τῷ 313 ὁ αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος, διαιρέσας τὴν Ἰταλίαν εἰς δύο τμήματα, κατέστησε τὸ Μιλᾶνον πρωτεύουσαν τῆς Ἄνω Ἰταλίας καὶ ἕδραν ἰδιαιτέρας ἀρχιεπισκοπῆς. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξέδωκεν ἐν αὐτῷ τὸ περίφημον ἔδικτον τοῦ Μιλάνου, διὰ τοῦ ὁποίου ἀνεκήρυττε τὸν Χριστιανισμὸν ὡς τὴν θρησκείαν τοῦ κράτους. Ἀπὸ τοῦ 374 μέχρι τοῦ 397 τὴν ἀρχιεπισκοπικὴν ἕδραν τοῦ Μιλάνου κατεῖχεν ὁ ἅγιος Ἀμβρόσιος, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἐπεκτείνει τὴν δικαιοδοσίαν του ἐφ' ὁλοκλήρου τῆς Ἄνω Ἰταλίας. Ἕνεκα τούτου ἔλαβον χώραν κατὰ διαφόρους ἐποχὰς πολλαὶ ἐκκλησιαστικαὶ σύνοδοι ἐν τῇ πόλει ταύτῃ. Τῷ 395 ἀπέθανεν ἐν αὐτῇ ὁ Θεοδόσιος ὁ Μέγας. Κατὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Οὔννων ἐν Ἰταλίᾳ τὸ Μιλᾶνον κατελήφθη καὶ ἐλεηλατήθη ὑπὸ τοῦ Ἀττίλα τῷ 452 μ. Χ. Βραδύτερον ἤνοιξε τὰς πύλας του εἰς τὸν Θεοδόριχον τὸν Μέγαν, βασιλέα τῶν Ὀστρογότθων, ἕνεκα δὲ τούτου ἐτιμωρήθη σκληρῶς τῷ 540 ὑπὸ τῶν Γότθων, οἵτινες κατέστρεψαν μέγα μέρος τῆς πόλεως. Βραδύτερον ἡ πόλις κατελήφθη ὑπὸ τῶν Λομβαρδῶν, οἵτινες ἐκυριάρχησαν αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ 570 μέχρι τοῦ 774, ἐποχῆς κατὰ τὴν ὁποίαν περιῆλθεν ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν τοῦ Καρλομάγνου, ὁμοῦ μετὰ τῆς λοιπῆς Λομβαρδίας. Πολλοὶ ἐκ τῶν διαδόχων τοῦ Καρλομάγνου ἐστέφθησαν βασιλεῖς τῆς Ἰταλίας ἐν Μιλάνῳ διὰ τοῦ σιδηροῦ στέμματος, ὅπερ ἐφυλάσσετο ἐν τῷ προαστείῳ Μόντσα. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῆς στέψεως τοῦ Ὄθωνος Α', τῷ 961, τὸ Μιλᾶνον, μετὰ τοῦ βασιλείου τῆς Ἰταλίας, ἀπετέλεσε τμῆμα τῆς Γερμανικῆς αὐτοκρατορίας καὶ ἐκυβερνᾶτο ὑπὸ διοικητῶν ἢ αὐτοκρατορικῶν ἐπιτρόπων. Τῷ 1037 ὁ ἀρχιεπίσκοπος Ἐριβέρτος, διὰ τῶν τυραννικῶν του μεθόδων καὶ τῆς πλεονεξίας του, προεκάλεσε τὴν σύγκρουσιν μεταξὺ τῶν εὐγενῶν καὶ τοῦ λαοῦ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἠνάγκασε τὸν αὐτοκράτορα Κορράδον Β' νὰ μεταβῇ αὐτοπροσώπως εἰς τὸ Μιλᾶνον καὶ νὰ ἐκδώσῃ τὴν περίφημον ἀπόφασιν περὶ τῆς κληρονομικότητος τῶν τιμαρίων. Τοῦτο προεκάλεσε τὴν κίνησιν πρὸς ἀπελευθέρωσιν τῶν κοινοτήτων καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν, ἡ δὲ ἀνάγκη τῆς ἀμύνης συνήνωσε πολλὰς κοινότητας ἐπὶ τὸ αὐτὸ καὶ ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὴν γέννησιν τοῦ συνδέσμου τῶν λομβαρδικῶν πόλεων. Αἱ ἰταλικαὶ ὅμως πόλεις δὲν κατώρθωσαν νὰ παραμείνουν ἡνωμέναι ἐπὶ πολύ, ὁ δὲ αὐτοκράτωρ Φρειδερῖκος Α', ἐπωφελούμενος τῶν διχονοιῶν, ἐπολιόρκησε τὸ Μιλᾶνον, τὸ ὁποῖον κατώρθωσε νὰ κυριεύσῃ τῷ 1162, νὰ τὸ λεηλατήσῃ καὶ νὰ τὸ καταστρέψῃ τελείως. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην τὸ Μιλᾶνον ἦτο ἡ μεγαλυτέρα καὶ ἡ σημαντικωτέρα πόλις τῆς Λομβαρδίας. Βραδύτερον ὁ σύνδεσμος τῶν λομβαρδικῶν πόλεων ἐπανήγειρε τὰ τείχη τοῦ Μιλάνου, τοῦ ὁποίου τὰ στρατεύματα τῷ 1176 ἐνίκησαν τὸν στρατὸν τοῦ Φρειδερίκου Βαρβαρόσσα εἰς Λενιάνο. Μετὰ τὴν νίκην ταύτην τὸ Μιλᾶνον ἀνεγνωρίσθη ὡς ἐλευθέρα πόλις, ἐπὶ τῇ βάσει τῆς συνθήκης τῆς Κωνσταντίας τοῦ 1183, ἀλλά, καίτοι ἔφθασεν εἰς μεγάλην ἀκμήν, ἐξηκολούθει νὰ σπαράσσεται ὑπὸ τῶν ἐρίδων τῶν Γουέλφων, ἐχόντων ἐπὶ κεφαλῆς τὴν οἰκογένειαν τῶν Ντέλλα Τόρρε, καὶ τῶν Γιβελίνων, ἐχόντων ὡς ἀρχηγοὺς τὴν οἰκογένειαν τῶν Βισκόντι. Ἀπὸ τοῦ 1237 οἱ Ντέλλα Τόρρε ἐπικρατήσαντες κατεῖχον κληρονομικῶς τὸ ἀξίωμα τοῦ ποδεστ', ἀλλὰ τῷ 1311, συνεπείᾳ ἐπαναστάσεως κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος Ἐρρίκου Β', ἀνετράπησαν ὑπὸ τοῦ Ματθαίου Βισκόντι, ὁ ὁποῖος κατέλαβε τὴν ἀρχὴν ὡς ἀντιπρόσωπος τοῦ Γερμανοῦ αὐτοκράτορος. Εἷς τῶν διαδόχων αὐτοῦ, ὁ Ἰωάννης Γκαλεάτσο, κατώρθωσε, πληρώσας 100.000 φιορίνια, νὰ λάβῃ παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τοῦ Μιλάνου. Ὁ δοὺξ οὗτος τοῦ Μιλάνου ἔδωσε κατόπιν εἰς γάμον τὴν θυγατέρα του Βαλεντίναν ὡς σύζυγον εἰς τὸν Λουδοβῖκον τῆς Γαλλίας, δοῦκα τῆς Ὀρλεάνης, καὶ καθώρισε διὰ διαθήκης ὅτι, εἰς περίπτωσιν ἐλλείψεως ἄρρενος διαδόχου, ἡ θυγάτηρ του αὐτὴ ἢ οἱ διάδοχοί της θὰ ἠδύναντο νὰ κληρονομήσουν τὸ δουκᾶτον τοῦ Μιλάνου. Ὁ ὅρος οὗτος ἐγένετο ἡ ἀφορμὴ αἱματηροτάτου πολέμου ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Μιλάνου ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΒ' καὶ Φραγκίσκου Α'. Ὁ Φίλιππος-Μαρία ὑπῆρξεν ὁ τελευταῖος δοὺξ τοῦ Μιλάνου ἐκ τῆς οἰκογενείας τῶν Βισκόντι, ἀποθανὼν τῷ 1449. Τὸ ἑπόμενον ὅμως ἔτος ἀνεκηρύχθη δοὺξ ὁ Φραγκίσκος Σφόρτσα, παρὰ τὰς ἀπαιτήσεις τῶν διαδόχων τῆς Βαλεντίνης Βισκόντι ἐπὶ τοῦ δουκάτου. Ἕνεκα τούτου τὰ γαλλικὰ στρατεύματα ἐξεστράτευσαν ἐπανειλημμένως κατὰ τῆς πόλεως, χωρὶς ὅμως νὰ κατορθώσουν νὰ τὴν καταλάβουν. Οἱ Σφόρτσα ἐκυβέρνησαν τὸ δουκᾶτον μέχρι τῷ 1535, ὁπότε ὁ Κάρολος Ε' τῆς Γερμανίας παρεχώρησεν αὐτὸ εἰς τὸν βασιλέα τῆς Ἰσπανίας Φίλιππον Β'. Τῷ 1713 περιῆλθεν εἰς τὴν Αὐστρίαν.

Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ὁ Ναπολέων κατέλαβε τὸ Μιλᾶνον τὴν 4 Μαΐου 1796. Τῷ 1799 ἀνακατέλαβον τὴν πόλιν οἱ Αὐστριακοί, οἱ ὁποῖοι τὴν ἐξεκένωσαν τῷ 1800 δυνάμει τῆς συνθήκης τῆς Ἀλεξανδρείας. Ὁ Ναπολέων κατέστησε τότε αὐτὸ πρωτεύουσαν τῆς ἐντεῦθεν τῶν Ἄλπεων δημοκρατίας καὶ τῷ 1805 πρωτεύουσαν τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθέντος βασιλείου τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1815 περιέπεσε καὶ πάλιν ὑπὸ τὴν αὐστριακὴν κατοχὴν καὶ ἐγένετο πρωτεύουσα τοῦ λομβαρδο-βενετικοῦ βασιλείου. Παραμεῖναν ὑπὸ τὸν ξενικὸν ζυγὸν μέχρι τοῦ 1848, ἐπαναστάτησε τὴν 18 Μαρτίου αὐτοῦ τοῦ ἔτους κατὰ τῶν αὐστριακῶν στρατευμάτων τοῦ Ραντέτσκυ. Ἡ ἐπανάστασις αὐτὴ διήρκεσεν ἐπὶ 5 ἡμέρας καὶ εἶναι γνωστὴ ἐν τῇ ἱστορίᾳ ὡς τὸ «πενθήμερον τοῦ Μιλάνου». Κατ' αὐτὴν ὁ λαὸς τοῦ Μιλάνου, ἄνδρες, γυναῖκες, γέροντες, παιδία, ἐξηγέρθησαν σύσσωμοι καὶ ἐπέδειξαν μέγιστον ἡρωϊσμόν, διεξαγαγόντες ἐντὸς τῶν οἰκιῶν καὶ τῶν ὁδῶν τῆς πόλεως ἀπεγνωσμένον ἀγῶνα ὁδοφραγμάτων καὶ κατορθώσαντες ἐν τέλει νὰ ἐκδιώξουν τοὺς Αὐστριακούς. Ἡ νίκη ὅμως αὐτὴ ἀπέβη ματαία, διότι μετ' ὀλίγον, συνεπείᾳ ἥττης, τὴν ὁποίαν εἶχον ὑποστῆ τὰ ἰταλικὰ στρατεύματα, οἱ Αὐστριακοὶ κατώρθωσαν νὰ ἐπιστρέψουν καὶ νὰ ἀνακαταλάβουν τὴν πόλιν. Τέλος τὴν 9 Ἰουνίου 1859 οἱ Αὐστριακοί, μετὰ τὴν ἧτταν των ἐν Μαγέντᾳ, ἠναγκάσθησαν νὰ ἐκκενώσουν ὁριστικῶς τὸ Μιλᾶνον, τὸ ὁποῖον μετ' ὀλίγον, δυνάμει τῆς συνθήκης τῆς Βιλλαφράνκα, ἡνοῦτο πρὸς τὸ κράτος τῆς Σαρδηνίας, τοῦ ὁποίου ἠκολούθησε τὴν τύχην ἐν τῇ ἑνώσει πρὸς τὴν λοιπὴν Ἰταλίαν. Τῷ 1898 ἔλαβε χώραν ἐν Μιλάνῳ ἀναρχικὴ καὶ ἀντιδυναστικὴ ἐπανάστασις, καταπνιγεῖσα ταχέως εἰς τὸ αἷμα, μετὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, συνεπείᾳ τῆς συγκεντρώσεως μεγίστου ἀριθμοῦ ἐργατῶν καὶ ὑπαλλήλων ἐν τῇ πόλει καὶ εἰς τὰ προάστεια, λόγῳ τῆς τεραστίας βιομηχανικῆς καὶ ἐμπορικῆς ἀναπτύξεως, ἡ σοσιαλιστικὴ καὶ ἡ κομμουνιστικὴ κίνησις εἶχεν ἐπεκταθῆ εἰς μέγιστον βαθμόν, ἀνακοπεῖσα μετὰ τὴν ἐμφάνισιν καὶ τὴν ἐπικράτησιν τοῦ φασισμοῦ, ἐπιτευχθεῖσαν κατόπιν αἱματηροτάτων ταραχῶν, αἵτινες ἐτάρασσον τὴν πόλιν κατὰ συχνὰς περιόδους. Μ. Δ. Β.

—**Μιλάνου, δουκᾶτον τοῦ** —. Παλαιὸν δουκᾶτον τῆς Β. Ἰταλίας, περιλαμβανόμενον μεταξὺ τῆς Ἑλβετίας πρὸς Β., τῆς παλαιᾶς δημοκρατίας τῆς Βενετίας καὶ τοῦ δουκάτου τῆς Μαντούης πρὸς Α., τοῦ ποταμοῦ Πάδου πρὸς Ν. καὶ τοῦ Πεδεμοντίου πρὸς Δ. (βλ. λ. *Μιλᾶνον*).

— **Μιλάνου νομὸς** [*Γεωγρ.*]. Νομὸς τῆς Β. Ἰταλίας ἐν Λομβαρδίᾳ, περιλαμβανόμενος μεταξὺ τοῦ νομοῦ τῆς Βρεσκίας, τοῦ Κώμου, τῆς Νοβάρας καὶ τῆς Παβίας. Ἔχει ἐμβαδὸν 2.761 τ.χλμ. καὶ 1.734.161 κατ. Κατέχει τὸ κέντρον τῆς παλαιᾶς Λομβαρδίας, ἐν εὐρείᾳ πεδιάδι ἀρδευομένῃ ὑπὸ τριῶν ἀριστερῶν παραποτάμων τοῦ Πάδου, τοῦ Τιτσίνο, τοῦ Λάμπρο καὶ τοῦ Ἄδδα. Παράγει μετάξαν, σιτηρά, ὄρυζαν, οἶνον, ἔλαιον καὶ ἄφθονα βιομηχανικὰ προϊόντα (βλ. λ. *Μιλᾶνον*). Μ. Δ. Β.

**Μιλᾶνος Ὀβρένοβιτς Β'.** Ἡγεμὼν τῆς Σερβίας, πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Μίλος Ὀβρένοβιτς, γεννηθεὶς ἐν Κραγιούγιεβατς τὴν 19 Ὀκτωβρίου 1819 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βελιγραδίῳ τὴν 8 Ἰουλίου 1839. Τὴν 13 Ἰουνίου 1839 ἀνεκηρύχθη ἡγεμὼν τῆς Σερβίας, παραιτηθέντος τοῦ πατρός του ὑπὲρ αὐτοῦ. Ἐπειδὴ ὅμως ἦτο σοβαρῶς ἀσθενής, οὐδόλως ἠδυνήθη κατὰ τὸ ὀλιγόμηνον διάστημα τῆς ἡγεμονίας του νὰ ἀναμιχθῇ εἰς τὰ τῆς διοικήσεως. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ὁ δεκαεπταετὴς ἀδελφός του *Μιχαὴλ Ὀβρένοβιτς*. Χ. Δ.

— **Μιλᾶνος Ὀβρένοβιτς Δ'.** Ἡγεμὼν καὶ εἶτα βασιλεὺς τῆς Σερβίας, γεννηθεὶς ἐν Ἰασίῳ τῆς Ρουμανίας τὴν 10 Αὐγούστου 1854 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βιέννῃ τὴν 11 Φεβρουαρίου 1901. Ἦτο υἱὸς τοῦ Μίλος Ὀβρένοβιτς καὶ τῆς ἑλληνικῆς καταγωγῆς Μαρίας Καταρτζῆ, ἀνεψιὸς δὲ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Σερβίας Μιχαήλ, ὁ ὁποῖος, στερούμενος νομίμων τέκνων, εἶχεν υἱοθετήσει αὐτόν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μιχαὴλ ὁ ἀνήλικος ἔτι πρίγκηψ ἀνεκηρύχθη ὑπὸ τῆς Σκουψτίνας ἡγεμὼν τῆς Σερβίας (5 Ἰουλίου 1868), τὴν δὲ ἀντιβασιλείαν μέχρι τῆς ἐνηλικιώσεως του ἀνέλαβε τριμελὴς ἐπιτροπή, ἀποτελουμένη ἐκ τῶν Μπλάζναβατς, Γαβρίλοβιτς καὶ Ρίστιτς. Τὴν 22 Αὐγούστου 1872 ὁ Μιλᾶνος ἀνεκηρύχθη ἐνήλικος καὶ ἀνέλαβεν αὐτοπροσώπως τὴν διοίκησιν τῆς χώρας, μετὰ τριετίαν δὲ (5 Ὀκτωβρίου 1875) ἐνυμφεύθη τὴν *Ναθαλίαν Κέσκο*, θυγατέρα Ρώσου συνταγματάρχου. Πρῶτον σημαντικὸν γεγονὸς τῆς ἡγεμονίας του ὑπῆρξεν ἀτυχὴς κατὰ τῆς Τουρκίας πόλεμος, κηρυχθεὶς ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ Μαυροβουνίου, ἀπολήξας εἰς ἧτταν τῆς Σερβίας ἄνευ ἐδαφικῶν ἀπωλειῶν.

Κατὰ τὸν μετ' ὀλίγον ἐκραγέντα Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον (1877), ὁ Μιλᾶνος παρέμεινε κατ' ἀρχὰς οὐδέτερος, μετὰ τὴν νίκην ὅμως τῆς Πλεύνας (10 Δεκεμβρίου 1877) εἰσήλασεν εἰς τὸ τουρκικὸν ἔδαφος, κατέλαβε τὴν Νύσσαν καὶ τὸ Πιρὸτ καὶ προήλασε μέχρι τῆς κοιλάδος τοῦ Κοσσυφοπεδίου. Ἡ συνθήκη τοῦ Ἁγίου Στεφάνου (3 Μαρτίου 1878), τὴν ὁποίαν ἡ Ρωσία ἐπέβαλεν εἰς τὴν Τουρκίαν, δὲν ηὐνόησε τὰς σερβικὰς ἀπόψεις, ὡς ἐκ τούτου δὲ ὁ Μιλᾶνος, ἐγκαταλείψας τὴν ρωσόφιλον πολιτικήν, ἐστράφη πρὸς τὴν Αὐστρίαν, συνομολογήσας δὲ μετ' αὐτῆς ἐμπορικὴν σύμβασιν, δι' ἧς οἱ ὑπὸ κατασκευὴν σερβικοὶ σιδηρόδρομοι θὰ ἡνοῦντο μετὰ τοῦ αὐστροουγγρικοῦ δικτύου, ἐξησφάλισε τὴν εἰς τὸ Βερολίνειον συνέδριον ὑποστήριξίν της. Ἡ Αὐστρία ἐπέτυχε παρὰ τοῦ συνεδρίου τὴν ἀναγνώρισιν τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Σερβίας καὶ τὴν προσάρτησιν εἰς αὐτὴν τῶν κατὰ τὸν τελευταῖον πόλεμον καταληφθέντων ἐδαφῶν, ἐκτάσεως 197 τετρ. χλμ.

Τὴν 5 Μαρτίου 1882 ἡ Σερβία ἀνεκηρύχθη εἰς

Digitized by Google

βασίλειον καὶ ὁ Μιλᾶνος ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βασιλέως, ἀλλ' οἱ πολιτικοὶ δυσαρεστηθέντες ἐκ τῆς καταλήψεως ὑπὸ τῆς Αὐστροουγγαρίας τῶν δύο σλαβοφώνων ἐπαρχιῶν Βοσνίας καὶ Ἑρζεγοβίνης καὶ φοβούμενοι ἐκ τῆς διαρκοῦς αὐξήσεως τοῦ δημοσίου χρέους, λόγῳ τῶν ἀρξαμένων τότε μεγάλων ἔργων, ἐπηρέασαν σημαντικῶς τὸν λαὸν ἐναντίον τῆς πολιτικῆς τοῦ βασιλέως καὶ τῆς κυβερνήσεως καὶ ἐπέτυχον τὴν μεταστροφὴν αὐτοῦ πρὸς τὸ μέρος τοῦ ρωσοφίλου καὶ τοῦ ριζοσπαστικοῦ κόμματος. Ἔκτοτε ἡ ἐπιρροὴ τοῦ Μιλάνου ἤρξατο σημαντικῶς μειουμένη. Κατὰ τὰς προκηρυχθείσας τῷ 1883 ἐκλογάς, ἐξελέγη ἐχθρικὴ πρὸς τὴν κυβέρνησιν Σκουψίνα. Ὁ πρωθυπουργὸς Πιροτσάνατς ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ Χρίστιτς, ὅστις κατέπνιξε κατὰ σκληρὸν τρόπον ἐξέγερσιν ἐκδηλωθεῖσαν τῇ ὑποκινήσει τῶν ριζοσπαστῶν εἰς τὰς ἐπαρχίας Ζαϊετσὰρ καὶ Μπάνια, διέλυσε τὴν Σκουψίναν καὶ διεξήγαγε νέας ἐκλογάς.

*Μιλᾶνος Ὀβρένοβιτς Δ΄.*

Ἐν τῷ μεταξὺ αἱ διπλωματικαὶ σχέσεις μεταξὺ Βουλγαρίας καὶ Σερβίας εἶχον ἐνταθῆ, λόγῳ τοῦ ὅτι εἶχε παραχωρηθῆ ἄσυλον ἐκ μέρους τῆς πρώτης εἰς τοὺς ὑποκινήσαντας τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ζαϊετσὰρ ριζοσπάστας, κατόπιν δὲ λόγῳ καὶ τῆς προσαρτήσεως τῷ 1885 τῆς Ρωμυλίας ὑπὸ τῆς Βουλγαρίας προεκλήθη ὁ Σερβοβουλγαρικὸς πόλεμος τοῦ 1885, κηρυχθεὶς ὑπὸ τοῦ Μιλάνου τὴν 14 Νοεμβρίου ὑπὸ τὸ πρόσχημα τῆς παραβάσεως τῆς συνθήκης τοῦ Βερολίνου. Μετὰ μικρᾶς ἐπιτυχίας ὁ σερβικὸς στρατὸς ἡττήθη ἐν Σλιβνίτσᾳ (20 Νοεμβρίου) καὶ Πιρὸτ (27 Νοεμβρίου), ἐπεμβάσει δὲ τῆς Αὐστρίας συνωμολογήθη ἐν Βουκουρεστίῳ τὴν 3 Μαρτίου 1886 συνθήκη εἰρήνης. Ἐκ τοῦ ἀτυχοῦς τούτου πολέμου ἡ ἐπιρροὴ τοῦ Μιλάνου ἐμειώθη εἰς τοσοῦτον βαθμόν, ὥστε ἤρχισεν ἔκτοτε σκεπτόμενος σοβαρῶς νὰ παραιτηθῇ ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ του Ἀλεξάνδρου, τὸν ὁποῖον ἀνήλικον ὄντα θ' ἀνεπλήρου ὡς ἀντιβασίλισσα ἡ μήτηρ του Ναθαλία. Μετ' ὀλίγον ὅμως μετανοήσας προέβη εἰς διαφόρους παραχωρήσεις, προσπαθῶν νὰ ἀνακτήσῃ τὴν δημοτικότητά του. Ἐνεπιστεύθη τότε τὴν κυβέρνησιν εἰς τοὺς ριζοσπάστας (ὑπουργεῖον Γκρούιτς, 1888), ἀλλ' ὁ αὐταρχικὸς χαρακτήρ του ἐξεδηλώθη ἐκ νέου. Ἠρνήθη νὰ κυρώσῃ τὸν ὑπὸ τῆς νέας Σκουψίνας ψηφισθέντα νόμον περὶ διοικητικῆς μεταρρυθμίσεως καὶ ἀντικατέστησε τὸ ὑπουργεῖον Γκρούιτς. Παρὰ τὰς πολιτικὰς δὲ ταύτας δυσχερείας ὑφίσταντο ἀπὸ τοῦ 1887 ἀνωμαλίαι ἀφορῶσαι τὸν ἰδιωτικὸν βίον τοῦ Μιλάνου καὶ τὰς μετὰ τῆς βασιλίσσης σχέσεις του. Ἀπὸ πολλῶν ἤδη ἐτῶν προεκαλοῦντο πολλάκις συγκρούσεις τοῦ βασιλικοῦ ζεύγους, προερχόμεναι ἐκ διαφόρων ἰδιωτικῆς φύσεως αἰτίων καὶ αἱ ὁποῖαι φαίνεται ὅτι ἐνετείνοντο ἔτι μᾶλλον ἐκ τῶν ραδιουργιῶν τῶν πολιτικῶν κομμάτων καὶ τῆς ἐκ μέρους τῆς βασιλίσσης προσπαθείας ἐνεργοῦ ἀναμίξεως εἰς τὴν πολιτικήν. Τέλος, τῷ 1888, ἐνῷ ἡ Ναθαλία εὑρίσκετο μετὰ τοῦ διαδόχου εἰς Βισβάδεν, ὁ Μιλᾶνος ἀπηγόρευσεν εἰς αὐτὴν τὴν εἰς Σερβίαν ἐπάνοδον, προτείνων εἰς ἀντάλλαγμα νὰ διατηρήσῃ τοὺς βασιλικοὺς τίτλους της καὶ νὰ τῇ ἐμπιστευθῇ τὴν φροντίδα τῆς ἀνατροφῆς τοῦ διαδόχου μέχρι τῆς ἐνηλικιώσεως. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ βασίλισσα ἠρνήθη οἱανδήποτε σχετικὴν συζήτησιν, ἐστάλη ὁ στρατηγὸς Πρώτιτς, ὁ ὁποῖος, βοηθούμενος ὑπὸ τῶν γερμανικῶν ἀρχῶν, ἀπήγαγε διὰ τῆς βίας τὸν πρίγκιπα. Ταυτοχρόνως ὁ Μιλᾶνος, παρ' ὅλην τὴν ἀντίστασιν τῆς Ἱερᾶς Συνόδου, ἐπέτυχε μέσῳ τοῦ μητροπολίτου Θεοδοσίου νὰ διαλύσῃ τὸν μετὰ τῆς βασιλίσσης Ναθαλίας γάμον του. Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ἐσωτερικὴ κατάστασις κατ' οὐδὲν ἐβελτιοῦτο, παρ' ὅλην τὴν κατὰ τὸ 1889 καταβληθεῖσαν προσπάθειαν μεταρρυθμίσεως διὰ ψηφίσεως νέου Συντάγματος, αἱ ἀλλεπάλληλοι δ' αὗται δυσχέρειαι ἤγαγον τὸν Μιλᾶνον εἰς τὴν ἀπόφασιν τῆς παραιτήσεως ἀπὸ τοῦ θρόνου. Τοῦτο ἐγένετο τὴν 6 Μαρτίου 1889, ἐπέτειον τῆς ἀνακηρύξεως τῆς βασιλείας. Εἰς τὸ διάγγελμα τῆς παραιτήσεως ἐπεφύλαξεν ἑαυτῷ τὸ δικαίωμα τῆς μορφώσεως τοῦ νεαροῦ πρίγκιπος μέχρις ἐνηλικιώσεως καὶ διώρισε τριμελῆ ἀντιβασιλείαν, ἀποτελεσθεῖσαν ἐκ τῶν στρατηγῶν Μπέλι - Μάρκοβιτς καὶ Πρώτιτς καὶ τοῦ πολιτικοῦ Ρίστιτς. Μετὰ ταῦτα ἀνεχώρησεν εἰς τοὺς ἁγίους Τόπους, ἐπιστρέψας δ' ἐκεῖθεν ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους ὑπὸ τὸ ὄνομα *κόμις τοῦ Τάκοβο* καὶ ἐπεσκέπτετο συχνὰ τὸ Βελιγράδιον. Βραδύτερον (15 Ἀπριλίου 1891) ἀνέλαβεν ἀπέναντι τῆς ἀντιβασιλείας τὴν ὑποχρέωσιν νὰ μὴ ἐπισκεφθῇ πλέον τὴν Σερβίαν πρὸ τῆς ἐνηλικιώσεως τοῦ βασιλέως, ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ ἐκδιωχθῇ ἐπίσης ἡ ἐκεῖ παραμένουσα τότε Ναθαλία, ὅπερ καὶ ἐγένετο. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ὁ Μιλᾶνος παρῃτεῖτο πάντων τῶν ἀξιωμάτων του καὶ αὐτῆς ἀκόμη τῆς σερβικῆς ἰθαγενείας. Τὴν 13 Ἀπριλίου 1893 ὁ βασιλεὺς Ἀλέξανδρος ἐνηλικιώθη, μετ' ὀλίγον δὲ (1894) προσεκάλεσεν εἰς Βελιγράδιον τὸν πατέρα του, ὁ ὁποῖος ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε συμφιλιωθῆ μετὰ τῆς Ναθαλίας. Εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν πρὸς τὸ ἔθνος ὑπηρεσιῶν του ἡ Σκουψίνα ἐψήφισεν ὑπὲρ αὐτοῦ (1895) ἐπιχορήγησιν. Τῷ 1897 διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ, συμβαλὼν τὰ μάλιστα εἰς τὴν ὀργάνωσιν καὶ προαγωγὴν αὐτοῦ. Εἰς τὴν θέσιν ταύτην παρέμεινε μέχρι τοῦ 1900, ὁπότε ἔφυγεν ἐκ Σερβίας, χολωθεὶς διότι ὁ υἱός του ἐνυμφεύθη παρὰ τὴν θέλησίν του τὴν ἀσήμου καταγωγῆς Δράγαν. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀπέθανεν ἐν Βιέννῃ. Χ. Δ.

**Μιλαντίνοβι, *Δημήτριος*** καὶ ***Κωνσταντῖνος***. Βουλγαρομακεδόνες ἀδελφοὶ ἀγωνισταί, γεννηθέντες εἰς τὸ χωρίον Στρούγα τῆς Ἀχρίδος, ὁ μὲν πρῶτος τῷ 1810, ὁ δὲ δεύτερος τῷ 1830. Ὁ Δημήτριος ἐφοίτησεν εἰς τὰ ἐν Ἀχρίδι ἑλληνικὰ σχολεῖα καὶ εἰς τὰ Ἰωάννινα, μεθ' ὃ ἐγένετο διδάσκαλος εἰς διαφόρους πόλεις τῆς Μακεδονίας. Τῷ 1844 ἐγνωρίσθη μὲ τὸν Ρῶσον σλαβολόγον Γρηγόροβιτς, ὅστις τοῦ ἐνέπνευσε τὴν ἀγάπην πρὸς τὰ σλαβικὰ δημοτικὰ τραγούδια τῆς Μακεδονίας. Τῷ 1857—1858 συνειργάσθη μετὰ τοῦ ποιητοῦ Ζινζιφὼφ διὰ τὴν εἰσαγωγὴν τῆς βουλγαρικῆς γλώσσης εἰς τὰ σχολεῖα τῆς Μακεδονίας καὶ τῆς σλαβικῆς εἰς τὰς ἐκκλησίας. Ἀργότερον, ἀναμειχθεὶς εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν ζήτημα, συνελήφθη ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν καὶ ἐνεκλείσθη εἰς τὰς φυλακὰς τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ὁ Κωνσταντῖνος ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ πρώτου, ἐφοίτησεν εἰς τὰ σχολεῖα Ἰωαννίνων καὶ εἰς τὸ πανεπιστήμιον Ἀθηνῶν, μεθ' ὃ ἐγένετο διδάσκαλος ἐν Μακεδονίᾳ. Βραδύτερον μετέβη δι' εὐρυτέρας σπουδὰς εἰς Ρωσίαν, ἐκεῖθεν δὲ εἰς Αὐστρίαν, ὅπου τῷ 1861 ἐξέδωκε συλλογὴν δημοτικῶν βουλγαρικῶν τραγουδιῶν. Μαθὼν τὴν φυλάκισιν τοῦ ἀδελφοῦ του μετέβη εἰς Κωνσταντινούπολιν διὰ νὰ ἐργασθῇ πρὸς ἀποφυλάκισίν του, συνελήφθη ὅμως καὶ αὐτὸς καὶ ἀπέθανον ἀμφότεροι εἰς τὰς φυλακὰς τῷ 1862. Τ. Β.

**μῖλαξ** (ὁ) *[Βοτ.]*. Οὕτω ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ Θεοφράστου τὸ φυτὸν *σμῖλαξ* (βλ. λ.).

**μιλαρίτης** *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν σκαπολίθων. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $HKCa_2Al_2Si_{12}O_{30}$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα, παρουσιάζει δὲ θραυσμὸν κογχώδη ἕως ἀνώμαλον, σκληρότητα $5\,^1/_2$—6, εἰδικὸν βάρος 2,59 καὶ χρῶμα ἄχρουν ὑποπράσινον. Ἀπαντᾷ εἰς τὸν γρανίτην τοῦ Val Giuf τῆς Σουηδίας. Γ. Β.

**Μιλάρωφ.**—1) ***Ἠλίας***. Βούλγαρος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος. Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὸ δρᾶμα «Ἀπόστολος», εἰλημμένον ἐκ τῶν ὑπὲρ ἐλευθερίας ἀγώνων τῆς πατρίδος του, ὅπερ μετεφράσθη καὶ παρεστάθη εἰς τὸ Ἐθνικὸν θέατρον τῆς Κροατίας.

— 2) ***Σβετοσλάβ***. Πρεσβύτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1850—1892). Ἀπόφοιτος κολλεγίου τινὸς τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἐνεγράφη εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Ζάγκρεμπ, μεθ' ὃ ἐγένετο διδάσκαλος καὶ συντάκτης τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐκδιδομένης βουλγαρικῆς ἐφημερίδος «Μακεδονία». Συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν ἐφυλακίσθη, ἀλλὰ δραπετεύσας κατέφυγεν εἰς τὴν Ρωσίαν. Βραδύτερον ἐπανῆλθεν εἰς Βουλγαρίαν, ἐγένετο μέλος συνωμοτικῆς μυστικῆς ὀργανώσεως κατὰ τῆς ζωῆς τοῦ Σταμπούλωφ καὶ τοῦ Φερδινάνδου καὶ συλληφθεὶς ἀπηγχονίσθη μετὰ τῶν λοιπῶν συνωμοτῶν. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τοῦ βουλγαρικοῦ ἔθνους ἀπὸ τοῦ 679—1877» (1885), ἓν δρᾶμα, μυθιστόρημα, κωμῳδίαν κ.ἄ. Τ. Β.

**Μίλατος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαιοτάτη πόλις ἐν Κρήτῃ (βλ. λ. *Μίλητος*).

— **Μίλατος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μεραμβέλλου τοῦ νομοῦ Λασηθίου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 506. Τὸ χωρίον κεῖται εἰς τὴν ρίζαν τοῦ ὑψηλοῦ βουνοῦ Σταυροῦ (835 μ.) καὶ ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας ὁμωνύμου πόλεως. ΒΑ. τοῦ χωρίου, ἐπὶ τραχείας ὀρεινῆς ράχεως, κεῖται τὸ ἱστορικὸν σπήλαιον, εἰς τὸ ὁποῖον τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1823 ὁ Χασὰν πασᾶς ἐπολιόρκησεν ὑπερδισχιλίους ἄνδρας καὶ γυναικόπαιδα τῆς Κρήτης, ἀναγκασμένα ὑπὸ τῆς πείνης νὰ παραδοθῶσι. Καὶ τοὺς μὲν ἄνδρας καὶ τὰς ἡλικιωμένας γυναῖκας ἐθανάτωσε, τοὺς δὲ ἀνηλίκους, παιδιὰ καὶ νεάνιδας παρέδωκεν εἰς τὴν ἀκολασίαν τῶν ὀρδῶν του, ἔπεμψε δ' ἔπειτα εἰς Αἴγυπτον καὶ Ἀσίαν πρὸς πώλησιν. Ε. Γ.

**Μιλάτσο** (Milazzo) *[Γεωγρ.]*. Νησίζουσα χερσονησὶς τῆς βορείας ἀκτῆς τῆς Σικελίας πρὸς τὸν πορθμὸν τῆς Μεσσήνης (πλάτ. 38° 13′ Β., μῆκ. 15° 15′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 188: Catania to Cephalù) καὶ ΝΑ. αὐτῆς ὁ *κόλπος τοῦ Μιλάτσο* (Baia di Milazzo). Ἡ ὁμώνυμος πόλις, συνδεομένη σιδηροδρομικῶς πρὸς τὴν Μεσσήνην, εἰς τὸν νομὸν τῆς ὁποίας ὑπάγεται διοικητικῶς, ἔχει πληθυσμὸν 24.500 κατ. καὶ ἐπιστέφεται ἀπὸ μεσαιωνικὴν ἀκρόπολιν. Εἶναι αἱ ἀρχαῖαι *Μυλαί*. Ἐγγὺς τῆς πόλεως ἐνίκησαν οἱ Ἱσπανοὶ τοὺς Αὐστριακοὺς (1718) καὶ ὁ Γαριβάλδης τοὺς Νεαπολιτάνους (1860). Σ. Ε. Λ.

**Μιλβία *γέφυρα*** (Pons Milvius) *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Μίλβιο*, πόντε —.

**Μίλβιο, *πόντε*—** (Ponte Milvio) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία γέφυρα ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τιβέρεως, εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ. πρὸς Α. τῆς Ρώμης. Εἶναι ἡ πρώτη γέφυρα ἐπὶ τοῦ Τιβέρεως κατὰ τὴν εἴσοδον αὐτοῦ εἰς τὴν Ρώμην καὶ κατεσκευάσθη κατὰ τοὺς ἀρχαιοτάτους χρόνους, ἀνακαινισθεῖσα κατὰ τὸν Β' αἰῶνα π.Χ. ὑπὸ τοῦ Αἰμιλίου Σκαύρου. Εἶναι ὀνομαστὴ ἐν τῇ ἱστορίᾳ, διότι ἐν αὐτῇ συνελήφθησαν κατὰ διαταγὴν τοῦ Κικέρωνος οἱ ἀπεσταλμένοι τῶν Ἀλλοβρόγων ὡς συνένοχοι τοῦ Κατιλίνα· κυρίως ὅμως διότι παρ' αὐτὴν τὴν 12 Ὀκτωβρίου 312 ὁ Κωνσταντῖνος ἐνίκησε τὸν Μαξέντιον, ἐν τῇ περιφήμῳ μάχῃ τῆς Saxa Rubra, καθ' ἣν ὁ Μαξέντιος ἐπιχειρήσας νὰ διέλθῃ τὴν γέφυραν, κατέπεσε καὶ ἐπνίγη εἰς τὸν Τίβερον. Ἡ γέφυρα αὕτη καταστραφεῖσα κατὰ μέγα μέρος τῷ 1849 ὑπὸ τοῦ Γαριβάλδη πρὸς παρεμπόδισιν τῆς προελάσεως τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων πρὸς τὴν Ρώμην πρὸς βοήθειαν τοῦ πάπα κατὰ τῆς ἀνακηρυχθείσης τότε δημοκρατίας, ἐπεσκευάσθη τῷ 1850. Ἐκ τῆς ἀρχαίας γεφύρας παραμένουν ἤδη μόνον τὰ τρία κεντρικὰ τόξα. Εἰς τὰ ἄκρα τῆς γεφύρας ὑπάρχουν ἀγάλματα τοῦ ἁγίου Ἰωάννου καὶ τῆς Θεοτόκου ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου τοῦ Ἰησοῦ βαπτιζομένου καὶ τοῦ ἁγίου Ἰωάννου, καθὼς καὶ πυργίσκος. Σήμερον καλεῖται κοινῶς *Πόντε Μόλλε*. Μ. Δ. Β.

**μίλβος** (ὁ) (milvus) *[Ζῳολ.]*· βλ. λ. *κιρκάετος*.

**Μιλένα** (Milena). Βασίλισσα τοῦ Μαυροβουνίου (1847—1923). Θυγάτηρ τοῦ βοεβόδα Πέτρου Βούκοβιτς, συνεζεύχθη τῷ 1860 τὸν ἡγεμόνα τοῦ Μαυροβουνίου Νικόλαον τὸν Α΄. Ἐκ τοῦ γάμου τούτου ἀπέκτησε τρεῖς υἱοὺς καὶ ἓξ θυγατέρας. Ἐκ τῶν υἱῶν της ὁ πρεσβύτερος, πρίγκιψ Δανιὴλ Ἀλέξανδρος, ἀνακηρυχθεὶς ἅμα τῷ θανάτῳ τοῦ πατρός του (1 Μαρτίου 1921) βασιλεὺς τοῦ Μαυροβουνίου, παρῃτήθη μετά τινας ἡμέρας ὑπὲρ τοῦ ἀνεψιοῦ του πρίγκιπος Μιχαήλ, ἐκ δὲ τῶν θυγατέρων της ἡ πριγκίπισσα Ἑλένη συνεζεύχθη τὸν Βίκτωρα Ἐμμανουήλ, βασιλέα τῆς Ἰταλίας. Γ.Ι.Β.

**Μιλένα, *Κορράδος***. Ἑνετὸς στρατιωτικός. Διατελῶν τῷ 1228 φρούραρχος τοῦ Castelnuovo ἢ *Καινούριου* τῆς Κρήτης, ὅτε οἱ Κρῆτες ἐπανεστάτησαν κατὰ τῆς ἑνετοκρατίας, προσεβλήθη ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν καὶ ἠναγκάσθη νὰ παραδοθῇ. Ν.ΚΛΣ

**Μίλεον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*· βλ. *Μιλεύη*.

**Μιλετὴς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Δαρδανίας, τὸ ὁποῖον ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μίλετις** (Miletis), ***Στέφανος φὸν***—. Κροάτης συγγραφεύς. Ἔγραψε τὰς τραγῳδίας «Βολεσλαῦος» καὶ «Βασιλεὺς Τομισλαῦος» καὶ τὴν μελέτην «Ἡ αἰσθητικὴ μορφὴ τῆς λύσεως εἰς τὰ δράματα τοῦ Σαίξπηρ» (1893). Τ. Β.

**Μίλετιτς, *Διουμπομίρ***. Βούλγαρος φιλόλογος καὶ καθηγητὴς τῆς παλαιοβουλγαρικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Σόφιας, γεννηθεὶς τῷ 1863. Ἔγραψεν: «Ἡ βουλγαρικὴ γλῶσσα» (1887), «Παλαιοβουλγαρικὴ γραμματική» (1888), «Περὶ τῶν Παυλιανῶν» (1903) κ.ἄ. Τ. Β.

**Μιλέτο** (Mileto) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Καλαβρίᾳ καὶ τῷ νομῷ τοῦ Κατανττζάρο ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πόρτο Σάιτι Βένερε—Μιλέτο. Κάτ. 6.372. Εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου, ἔχει γυμνάσιον καὶ παράγει γεωργικὰ προϊόντα. Τῷ 1783 κατεστράφη ὑπὸ σεισμοῦ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχει ὀνομαστὸν μοναστήριον τοῦ τάγματος τῶν Βενεδικτίνων ἱδρυθὲν κατὰ τὸν ΙΑ΄ αἰῶνα ὑπὸ τοῦ κόμιτος Ρογήρου τῆς Νορμανδίας. Τῷ 1581 ὁ πάπας Γρηγόριος ΙΓ΄ ἔκλεισε τὸ μοναστήριον τοῦτο καὶ παρεχώρησε τὰ πλούσια κτήματά του εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ἁγίου Ἀθανασίου τῆς Ρώμης, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἱδρυθῆ ἐν αὐτῇ τῷ 1577 ὑπὸ Ἑλλήνων οὐνιτῶν. Μ. Δ. Β.

**Μιλεύη,** καὶ ***Μίλεον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀφρικῆς ἐν Νουμιδίᾳ, κειμένη ἀριστερὰ τοῦ Ἀμψάγα ποταμοῦ, 35 χλμ. ΒΔ. τῆς Κίρτας (νῦν Κωνσταντίνης), τῆς ὁποίας ἦτο ἀποικία. Φέρεται ὑπὸ διάφορα ὀνόματα: *Μήλεον, Μιλεύη, Μίλεον, Colonia Sarnensis Milonia Milevitana,* ἢ *Colonia Sarnensis Milevitana*. Κατὰ τοὺς πρώτους χριστιανικοὺς αἰῶνας ὑπῆρξε σπουδαῖον κέντρον τοῦ Χριστιανισμοῦ,

Digitized by Google

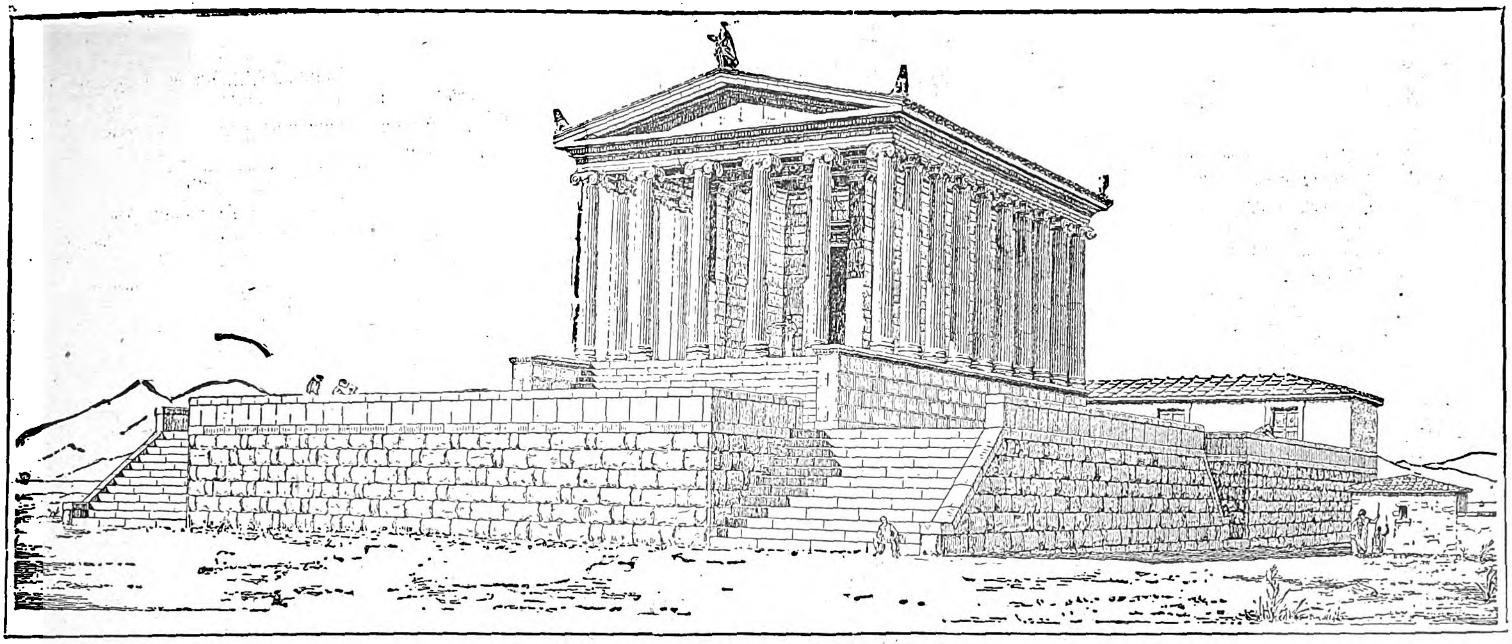

*Ὁ ἐν Μιλήτῳ ναὸς τῆς Ἀθηνᾶς (κατ' ἀναπαράστασιν).*

ὑπέστη δὲ τὰ πάνδεινα κατὰ τὸν ἐπὶ Διοκλητιανοῦ διωγμὸν (303—311). Τὴν πόλιν ταύτην μετ' ἄλλων γειτονικῶν περιετείχισεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565) πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς χώρας ἀπὸ τῶν ἐπιδρομῶν τῶν βαρβάρων. Τῷ 1838 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων, σήμερον δὲ καλεῖται *Μίλα* ἢ *Μίλαχ*, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς. Α. Θ. Σ.

— Μιλεύης *σύνοδοι*. Ἐν Μιλεύῃ συνῆλθον δύο τοπικαὶ σύνοδοι κατὰ τὸν Ε' αἰῶνα. Ἡ πρώτη, τῇ 27 Αὐγούστου τοῦ 402, ἐπὶ τῶν αὐτοκρατόρων Ἀρκαδίου καὶ Ὀνωρίου ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ Καρχηδόνος Αὐρηλίου, ἡ δὲ δευτέρα, ἀποτελουμένη ἐκ 59 ἐπισκόπων, ἐν οἷς καὶ ὁ Αὐγουστῖνος, ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ Σιλβανοῦ, τῷ 416. Ἡ σύνοδος αὐτὴ ἐκτὸς ἄλλων κατεδίκασε τὸν Πελάγιον καὶ Καλέστιον (πρβλ. *Hefele*, Concileengesch. τόμ. Β', σ. 86 καὶ 113 καὶ codex can. eccl. afric. ἄρ. 85—90). Κ. Ι. Δ.

**Μίλεφ, Γκέο ἢ Γεώργιος.** Βούλγαρος ἐπαναστάτης καὶ ποιητής. Ἐνεφανίσθη τῷ 1919 καὶ διεξήγαγε ζωηρὰν πάλην κατὰ τῶν σχολῶν τῆς ἐποχῆς του. Ἐξέδωκε τὸ λογοτεχνικὸν περιοδικὸν «Φλόγα» καὶ τὰς ποιητικὰς συλλογάς: «Σεπτέμβρης» καὶ «Αἱ εἰκόνες κοιμοῦνται». Μετέφρασεν ὡσαύτως καὶ γαλλικὰ ἐξπρεσιονιστικὰ ἔργα. Τ. Β.

— **Μίλεφ, Νικόλαος.** Βουλγαρομακεδὼν δημοσιογράφος καὶ ἱστορικὸς (1881—1925). Ἀρχισυντάκτης τῆς γαλλοφώνου ἐφημερίδος «Echo de Bulgarie» (1913—1918) καὶ συντάκτης τῆς «Σλόβο», διωρίσθη τῷ 1923 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς Βουλγαρίας καὶ τῶν βαλκανικῶν λαῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Σόφιας. Τῷ 1924 ἐξελέγη βουλευτής. Ἐφονεύθη βραδύτερον κατὰ τοὺς ἀνταγωνισμοὺς τῶν Βουλγαρομακεδόνων ἐν Βουλγαρίᾳ. Τ. Β.

**μίλημα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *ὁμιλεῖν*, ὁμιλία, ἄλλως *κουβέντιασμα*: «ἔχει ἕνα ἄσχημο μίλημα» || παρακίνησις, παράκλησις: «παίρνει ἀπὸ μίλημα», «δὲν παίρνει μίλημα, εἶναι αὐστηρός».

**μιλησία** (ἡ) (Milesia) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *συρφιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 15 εἴδη, ἀπαντῶντα κυρίως εἰς τὰς χώρας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου τῆς γῆς. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εὐρωπαϊκῶν εἰδῶν εἶναι ἡ *μιλησία ἡ λαμπρὰ* (Milesia splendida), ἥτις εἶναι μετρίου μεγέθους μυῖα μὲ ἀπεστρογγυλωμένην κεφαλήν, πόδας τραχεῖς καὶ λεπτούς, πτέρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ χρῶμα πορτοκαλλιομέλαν. Ἐνδιαιτᾶται ἐπὶ διαφόρων ἀνθέων. Δ. Ν. Π.

**«Μιλησιακά».** Τίτλος εὐτραπέλων διηγημάτων τοῦ Ἀριστείδου τοῦ Μιλησίου. Τὰ διηγήματα ταῦτα, τὰ ὁποῖα τόσον ἤρεσκον εἰς τοὺς Ρωμαίους, ὥστε ἀπ' αὐτῶν εἶχον κληθῆ καὶ ἄλλα ἐλαφρὰ καὶ εὐτράπελα διηγήματα «Fabulae Milesiae», ἀπωλέσθησαν, ἔννοιαν δὲ αὐτῶν λαμβάνομεν μόνον ἐκ τοῦ «Σατιρικοῦ» τοῦ Πετρωνίου (κεφ. 111). Τὰ «Μιλησιακὰ» τοῦ Ἀριστείδου μετὰ τῶν «Ἐρωτικῶν Παθημάτων» τοῦ Παρθενίου θεωροῦνται οἱ πρόδρομοι τοῦ μυθιστορήματος, παραβάλλονται δὲ πρὸς τὰ παλαιὰ γαλλικὰ fabliaux καὶ τὰ διηγήματα τοῦ Βοκκακίου. ΙΑΨ.

**Μιλήσιος** (ὁ), θηλ. —α· ὁ κάτοικος τῆς Μιλήτου, ὁ ἐκ Μιλήτου καταγόμενος.

**Μιλητόπολις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις κειμένη ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Ρυνδάκου (Ἀδρανὸς τσάϊ) καὶ Μακέστου (Σιμὰβ σού) πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς Κερμαστῆς καὶ πρὸς τὰ Ν. τῆς λίμνης Μιλητοπολίτιδος ἢ Ἀπολλωνίας (Ἀμπολὸν γκιόλ). Ἐρείπια τῆς πόλεως σῴζονται παρὰ τὴν Κερμαστήν.

**Μίλητος** *[Μυθολ.]*. Ὡραῖος νεανίας ἐν Κρήτῃ, υἱὸς τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρείας τῆς Κλεόχου ἢ τῆς Δηϊώνης. Γενόμενος ὕποπτος εἰς τὸν Μίνωα, ὡς ἐποφθαλμιῶν τὸν θρόνον, ἔφυγε μετὰ τοῦ φίλου του Σαρπηδόνος εἰς Καρίαν, ὅπου κατὰ τὴν παράδοσιν ἔκτισε τὴν ὁμώνυμον αὐτοῦ πόλιν *Μίλητον*. Ἐκεῖ νυμφευθεὶς τὴν Κυανέαν, θυγατέρα τοῦ Μαιάνδρου, ἀπέκτησε τέκνα τὸν Καῦνον καὶ τὸν Βύβλιν. Κατ' ἄλλην παράδοσιν ὁ Μίλητος καὶ ὁ Καῦνος κατήγοντο ἐκ τοῦ Ἀστερίου, βασιλέως τῆς Κρήτης, καὶ παρηκολούθησαν τὸν Διόνυσον εἰς τὴν κατὰ τῶν Ἰνδιῶν ἐκστρατείαν του, κατ' ἄλλην δὲ ὁ Μίλητος ἦτο προγενέστερος τοῦ Μίνωος, βασιλέως τῆς Κρήτης. Α. Θ. Σ.

**Μίλητος.** Μεγάλη καὶ ὀνομαστὴ παραθαλασσία πόλις τῆς ἀρχαίας Ἰωνίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ. Ἔκειτο ἐν τῷ μυχῷ τοῦ Λατμικοῦ κόλπου, ἐπὶ τῆς βορείας ἄκρας τῆς χερσονήσου τῆς σχηματιζομένης ἐκ τῆς προεξοχῆς τοῦ ὄρους Γρίου. Ἡ πόλις ἠγείρετο ἀπέναντι τοῦ στομίου τοῦ Μαιάνδρου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπεῖχεν ὀγδοήκοντα στάδια (δέκα μίλλια). Σήμερον τὰ ἐρείπια τῆς Μιλήτου εὑρίσκονται τέσσαρας ὥρας μακρὰν τῆς θαλάσσης συνεπείᾳ προσχώσεως τοῦ κόλπου ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Μαιάνδρου, ὀνομάζονται δὲ παρὰ τῶν ἐντοπίων Παλάτια καὶ ἡ ἐκ τῆς προσχώσεως σχηματισθεῖσα πεδιὰς Παλαντόβασι.

—*[Ἱστορ.]* Καθ' Ἡρόδοτον, ἡ Μίλητος κατῳκεῖτο κατὰ τοὺς προϊστορικοὺς χρόνους ὑπὸ Καρῶν, κατὰ τὸν Εὔφορον ὅμως ὑπὸ Λελέγων, τοὺς ὁποίους ἐκδιώξας ὁ Σαρπηδών, ὁ ἀδελφὸς τοῦ Μίνωος, συνῴκισε τὸ μέρος διὰ Κρητῶν ἀποίκων. Τὴν ὑπὸ διαφόρων προϊστορικῶν λαῶν συνοίκησιν τῆς φανερώνουσι τὰ πρῶτα ὀνόματα τῆς Μιλήτου, ἥτις, κατὰ τὸν Πλίνιον, ἐκαλεῖτο ἀρχικῶς *Λελεγηΐς, Πιτυοῦσα, Ἀνακτορία*. Τοὺς τελευταίους ὡς ἄνω κατοίκους ἀντικατέστησαν οἱ Ἴωνες, οἵτινες ὑπὸ τὸν Νηλέα κατέλαβον τὴν πόλιν, κατέσφαξαν ὅλους τοὺς ἄρρενας Μιλησίους καὶ ἔλαβον ὡς συζύγους των τὰς γυναῖκας ἐκείνων. Κατὰ Στράβωνα, ἐν τούτοις, ὁ Νηλεὺς μὲ τοὺς Ἴωνάς του δὲν ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν προϊστορικὴν ἐκείνην πόλιν, τὴν ὁποίαν ὁλοσχερῶς, φαίνεται, ἠρήμωσαν, ἀλλ' ἔκτισαν νέαν τοιαύτην πλησιέστερον τῆς θαλάσσης ἐπὶ θέσεως ἐχούσης τέσσαρας λιμένας. Ἕνεκα τῆς ἐξαιρέτου ταύτης τοποθεσίας της, ἡ Μίλητος ἀπέβη μεγάλη ναυτικὴ καὶ ἐμπορικὴ δύναμις. Τὰ πλοῖα της διέπλεον ὅλην τὴν Μεσόγειον καὶ τὸν Εὔξεινον, ἱδρύθησαν δὲ τότε ἐπὶ διαφόρων ἀκτῶν τῶν θαλασσῶν τούτων ἑβδομήκοντα πέντε ἀποικίαι τῶν Μιλησίων, ὡς ἀναφέρουσιν ὁ Σενέκας, ὁ Στράβων, ὁ Πλίνιος καὶ ὁ Ἀθήναιος. Αἱ σπουδαιότεραι τῶν ἀποικιῶν τούτων ἦσαν ἡ Ἄβυδος, ἡ Λάμψακος καὶ τὸ Πάριον ἐπὶ τοῦ Ἑλλησπόντου· ἡ Προκόννησος καὶ ἡ Κύζικος ἐπὶ τῆς Προποντίδος, ἡ Σινώπη καὶ ἡ Ἀμισὸς ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου, ἄλλαι δὲ ἐν Θρᾴκῃ, ἐν Κριμαίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ. Οὕτω ἡ Μίλητος, γενομένη κέντρον μεγάλου ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου, προήγετο ὁλονὲν ἀπὸ πάσης ἀπόψεως. Ἡ βιομηχανία της ἤχθη εἰς ἐξαίρετον ἀκμήν, ὀνομαστὰ δὲ ἰδίως ἦσαν τὰ ἀγγειοπλαστικά της εἴδη, τὰ ἔπιπλα καὶ τὰ πολυτελῆ ὑφάσματα. Παράλληλος ἐξ ἄλλου ὑπῆρξεν ἐν Μιλήτῳ ἡ ἄνθησις τῶν γραμμάτων καὶ τῶν τεχνῶν, ἀρκετοὶ δὲ μεγάλοι τῆς ἀρχαιότητος ἄνδρες ἐν αὐτῇ ἀνεδείχθησαν, ὡς οἱ φιλόσοφοι Θαλῆς, Ἀναξίμανδρος καὶ Ἀναξιμένης καὶ οἱ ἱστορικοὶ Κάδμος, Ἑκαταῖος καὶ Ἱστιαῖος.

Κατὰ τὸ διάστημα τῆς ἀναπτύξεως καὶ τῆς ἀκμῆς αὐτῆς ἡ Μίλητος διῳκεῖτο κατ' ἀρχὰς μὲν ὑπὸ τυράννου, μετὰ τὴν πτῶσιν δὲ τῆς τυραννίδος ὑπὸ δύο μερίδων, ὀλιγαρχικῆς καὶ δημοκρατικῆς. Ἐρίζουσαι αὗται μεταξὺ των περὶ τὴν κατάκτησιν τῆς ἐξουσίας, προυκάλεσαν τὴν ἐπέμβασιν τῶν Λυδῶν, οἵτινες ὀρεγόμενοι τοῦ πλούτου τῆς Μιλήτου καὶ φθονοῦντες τὴν εὐδαιμονίαν αὐτῆς ἐπεχείρησαν νὰ καταχτήσωσι τὴν πόλιν πρῶτον μὲν διὰ τοῦ Ἄρδυος καὶ κατόπιν διὰ τοῦ Σαδυάττου. Ἀποθανόντος τοῦ Σαδυάττου, τὸν πόλεμον ἐσυνέχισεν ἐπί τινα χρόνον ὁ Ἀλυάττης, ὅστις ὅμως ἀσθενήσας ἠναγκάσθη νὰ συνάψῃ εἰρήνην. Βραδύτερον ἡ Μίλητος συνῆψε συμμαχίαν μετὰ τοῦ Κροίσου, τοῦ ὁποίου ἀνεγνώρισε τὴν κυριαρχίαν καὶ εἰς τὸν ὁποῖον ἐπλήρωνε φόρον ὑποτελείας.

Μετὰ τὴν κατάκτησιν τῆς Λυδίας ὑπὸ τῶν Περσῶν, ἡ Μίλητος διετήρησε τὰς ἰδίας μετ' αὐτῆς πολιτικὰς σχέσεις ὡς καὶ προγενεστέρως μετὰ τῶν Λυδῶν, σωθεῖσα οὕτως ἐκ τῆς καταστροφῆς, τὴν ὁποίαν ὑπέστησαν αἱ ἄλλαι ἰωνικαὶ πόλεις, ὡς ἱστορεῖ ὁ Ἡρόδοτος. Ἐπὶ Δαρείου ὅμως οἱ Μιλήσιοι, ὑπὸ τὸν Ἱστιαῖον, ἐπαναστάτησαν ἐπὶ κεφαλῆς τῶν Ἰώνων ἐναντίον τῆς Περσίας τῷ 500 π.Χ., ἀλλ' ἡττήθησαν μετὰ πείσμονα πολιορκίαν ἀπὸ ξηρᾶς καὶ θαλάσσης τῷ 494. Ἡ Μίλητος τότε ἐλεηλατήθη ἀγρίως καὶ οἱ κάτοικοι ἐσφάγησαν, ὅσοι δὲ ἐπέζησαν μετετοπίσθησαν τῇ διαταγῇ τοῦ Δαρείου εἰς τὴν θέσιν Ἄμπην, πλησίον τῶν ἐκβολῶν τοῦ Τίγρητος, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς τοὺς Κᾶρας, ὡς λέγει ὁ Ἡρόδοτος καὶ ὁ Στράβων. Ἡ ἐν Μυκάλῃ ναυμαχία κατὰ τὸ 479 π. Χ. μεταξὺ Ἑλλήνων καὶ Περσῶν ἀπέδωκε τὴν ἐλευθερίαν εἰς τὴν Μίλητον, ἑνωθεῖσαν ἀμέσως μετὰ τῆς ἀθηναϊκῆς συμπολιτείας, ἀπὸ τῆς ὁποίας ὅμως ἀπεσπάσθη κατὰ τὸ τέλος τοῦ Πελοποννησιακοῦ πολέμου, ἀποτινάξασα τὸν ἀθηναϊκὸν ζυγὸν διὰ νικηφόρου ἀγῶνος, διεξαχθέντος κάτωθεν τῶν τειχῶν της. Βραδύτερον ὑπετάχθησαν ἐκ νέου ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων, κατὰ τῶν ὁποίων ὅμως ἐπαναστάτησαν καὶ πάλιν τῷ 412, εἰς τοὺς μετέπειτα δὲ χρόνους ἡ πόλις ἤρχιζε παρακμάζουσα λόγῳ τῶν ἐν αὐτῇ ἐμφυλίων ἐρίδων. Κατὰ τὸ 334 π.Χ., ὅταν ὁ Μ. Ἀλέξανδρος ἐνεφανίσθη πρὸ τῆς Μιλήτου, οἱ Μιλήσιοι, ἐνθαρρυνθέντες ἐκ τῆς παρουσίας περσικοῦ στρατοῦ καὶ στόλου παρὰ τὴν Μυκάλην, ἠρνήθησαν νὰ ὑποταχθῶσιν εἰς τὸν Μακεδόνα κατακτητήν, ὅστις τότε κατέλαβεν ἐξ ἐφόδου καὶ κατέστρεψεν ἐν μέρει τὴν πόλιν. Συνεχώρησεν ὅμως τοὺς ἐπιζήσαντας, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀρριανός, καὶ ἐχάρισεν εἰς αὐτοὺς ἐλευθερίαν. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἡ Μίλητος, μολονότι ἐξακολουθοῦσα νὰ εὐημερῇ ἐμπορικῶς, εἶναι πλέον δευτερεύουσα πόλις, περιέρχεται δὲ διαδοχικῶς εἰς τὸν Ἀντίγονον, τὸν Δημήτριον, τοὺς Πτολεμαίους καὶ τὸν Ἀντίοχον, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἠλευθερώθη ὑπὸ τῶν Ρωμαίων. Ὑπ' αὐτοὺς ἡ πόλις ἀνθεῖ ἐκ νέου, ὡς ἱστορεῖται ὑπὸ τοῦ Στράβωνος καὶ τοῦ Πλινίου. Κατὰ τοὺς χριστιανικοὺς τέλος χρόνους, ἡ Μίλητος, τὴν ὁποίαν ἐπεσκέφθη καὶ ὁ ἀπόστολος Παῦλος, ἦτο ἕδρα ἐπισκόπου, παρέμεινε δὲ ἐν ἱκανῇ εὐημερίᾳ, μέχρις ὅτου οἱ Τοῦρκοι καὶ ἄλλοι βάρβαροι λαοὶ κατέστρεψαν καὶ ἐξηφάνισαν τὴν ἄλλοτε μεγάλην καὶ εὐδαίμονα ταύτην πόλιν.

— *[Ἀρχαιολ.]* Ἡ Μίλητος, κατὰ τὰς ἡμέρας τῆς ἀκμῆς αὐτῆς, ἀπετελεῖτο ἐκ δύο συνοικισμῶν, ἐκ τοῦ ἐσωτερικοῦ καὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ ἄστεως,

Digitized by Google

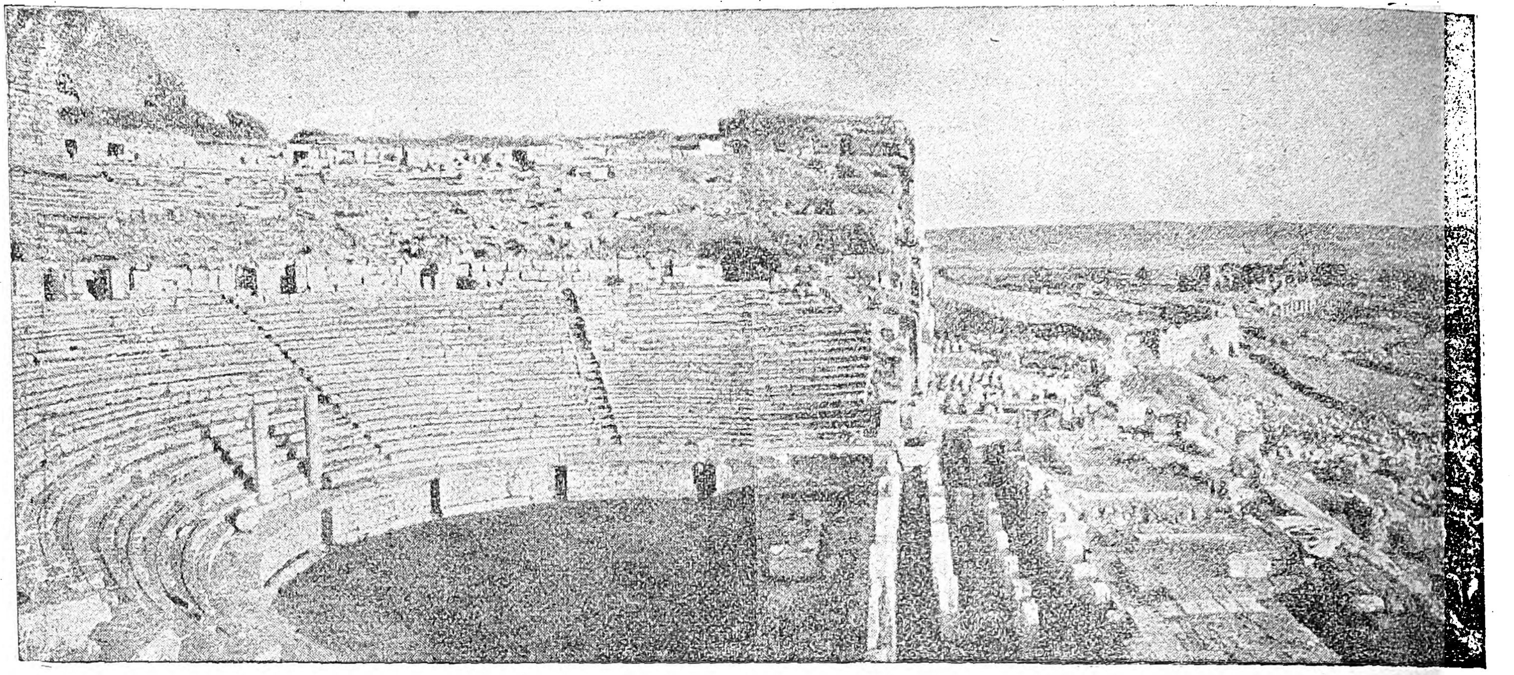

*Τὸ θέατρον τοῦ Μιλήτου καὶ τὰ λουτρὰ τῆς Φαυστίνας.*

ἀμφοτέρων ὠχυρωμένων διὰ τειχῶν. Τοὺς λιμένας της ἐπροστάτευον αἱ πρὸ αὐτῶν κείμεναι *Τραγαῖαι* λεγόμεναι νῆσοι, ἐξ ὧν ἡ μεγίστη ἦτο ἡ *Λάδη*. Τὰ ἐρείπια τῆς μεγάλης ταύτης πόλεως, μετὰ τὴν καταστροφήν της, ἐκαλύφθησαν διὰ τῶν προσχώσεων τοῦ ποταμοῦ Μαιάνδρου, ἡ δὲ θέσις μετεβλήθη εἰς ἕλη, ἐκ τῶν ὁποίων ἤχθησαν εἰς φῶς σημαντικαὶ ἀρχαιότητες διὰ τῶν γενομένων ἀπὸ τοῦ 1899 καὶ ἐντεῦθεν μεγάλων ἀνασκαφῶν ὑπὸ τοῦ Μουσείου τοῦ Βερολίνου διὰ πολλῶν ἀρχαιολόγων, καὶ δὴ τοῦ ἀκαμάτου Θεοδ. Βήγαντ.

Ἡ πόλις ἤρχιζεν ἀπὸ τοῦ λόφου, ὅπου ἐγείρεται νῦν τὸ τουρκικὸν χωρίον *Μπαλάτ*. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ἐξωτάτου τούτου λόφου ἀπεκαλύφθησαν τείχη καὶ λείψανα κατοικιῶν τῆς τελευταίας γεωμετρικῆς περιόδου, ἤτοι τῶν ἀρχῶν τῆς ΣΤ′ π. Χ. ἑκατονταετηρίδος, ὁ ὅλος δὲ λόφος περιεβάλλετο ὑπὸ τειχῶν κατὰ τὴν ἀρχαϊκὴν περίοδον. Ἀπὸ τοῦ λόφου τούτου ἡ πόλις ἐξετείνετο μέχρι θαλάσσης πρὸς δυσμάς. Τὸ κυριώτερον τῶν μνημείων, τὰ ὁποῖα ἐκόσμουν τὴν Μίλητον, ἦτο ὁ Ναὸς τῆς Ἀθηνᾶς. Ἐκ τῶν ἀποκαλυφθέντων θεμελίων αὐτοῦ δείκνυται ὅτι ἦτο περίπτερος ναὸς ἰωνικοῦ ρυθμοῦ, ἔχων μῆκος 24,60 καὶ πλάτος 16,80 μέτρων, ἓξ δὲ κίονας κατὰ τὰς στενὰς πλευρὰς καὶ ἐννέα κατὰ τὰς μακράς. Ὁ ναός, ἱδρυθεὶς κατὰ τοὺς ἀρχαϊκοὺς χρόνους καὶ μεταρρυθμισθεὶς κατὰ τοὺς ἑλληνικούς, διετηρήθη μέχρι τῆς ρωμαϊκῆς περιόδου. Κατὰ τὴν βορείαν πλευρὰν τοῦ ναοῦ τούτου ἀπεκαλύφθησαν τὰ λείψανα τῆς δυτικῆς Ἀγορᾶς, νοτίως δὲ αὐτοῦ ὑπῆρχεν εὐρεῖα ὁδὸς ἀπ᾽ ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς. Ἡ ὁδὸς αὕτη, χαραχθεῖσα κατὰ τὸ 100 π. Χ., ἡνοῦτο ἐντὸς τῆς πόλεως μετὰ τῆς Ἱερᾶς ὁδοῦ, ἥτις ἤρχετο ἐκ τοῦ ναοῦ τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος, ἀπέχοντος τρεῖς ὥρας περίπου ἀπὸ τῆς Μιλήτου.

Κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους ὁ βορείως τῆς μεγάλης Ἀγορᾶς χῶρος εἶχε πολλὰ κτίσματα, ἐκ τῶν ὁποίων σημαντικώτερα μεταξὺ τῶν ἀποκαλυφθέντων εἶναι: 1) Τὸ γυμνάσιον. Ἐκ τῶν σῳζομένων θεμελίων καὶ ὀλίγων κιόνων συνάγεται ὅτι τὸ κτίσμα τοῦτο ἦτο διῃρημένον εἰς τρία κύρια μέρη. Πρὸς βορρᾶν ὑπῆρχε μία σειρὰ δωματίων μὲ ἔξοδον εἰς στενὴν καὶ ἀνοικτὴν στοάν. Κατὰ τὴν δεξιὰν γωνίαν τοῦ κυρίου κτίσματος ὑπῆρχεν αὐλὴ μετὰ πεταλοσχήμου στοᾶς καὶ προπύλου. Τὸ κύριον οἰκοδόμημα ἦτο ὀρθογωνίου σχήματος καὶ εἶχε τὴν πρόσοψιν πρὸς νότον μὲ ἰωνικοὺς κίονας. 2) Πρὸς βορρᾶν τοῦ γυμνασίου εὑρίσκοντο τὰ ρωμαϊκὰ λουτρὰ καὶ ἡ συναπτὴ παλαίστρα. Καὶ τὰ μὲν πλησίον τοῦ γυμνασίου κείμενα λουτρὰ εἶναι τοῦ Vergilius Capito καὶ διατηροῦνται ἀρκετὰ καλῶς, τὰ δὲ ἄλλα, τὰ πλησίον τῆς παλαίστρας, εἶναι τὰ λουτρὰ τῆς Φαυστίνας, τελειότατα εἰς τὸ εἶδός των. Τμήματα τῶν λουτρῶν τούτων εἶναι: ἡ παλαίστρα, μεγάλη ὀρθογώνιος αὐλή, περιβαλλομένη ὑπὸ στοῶν καὶ ἔχουσα διαστάσεις 62 × 64 μέτρων, καὶ τὸ λεγόμενον Μουσεῖον, μεγάλη, ἐπιμήκης αἴθουσα, ἐν ᾗ εὑρέθησαν συμπλέγματα Μουσῶν καὶ ἐν ᾗ, ὡς φαίνεται, συνεδρίαζον ἰατροὶ καὶ παιδευταί. Ἐντὸς τῶν κτισμάτων τούτων εὑρέθησαν κατὰ τὰς ἀνασκαφὰς ἀρκετὰ ἀγάλματα, ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὰ τοῦ Ἀσκληπιοῦ καὶ τοῦ Τελεσφόρου, τὸ τῆς Ὑγείας, τοῦ Ἀθλητοῦ, τοῦ κιθαρῳδοῦ Ἀπόλλωνος, τῆς χορευούσης Μούσης, τῆς καθημένης Μούσης, τῆς αὐλητρίδος Μούσης, τῆς Μελπομένης, τοῦ ποταμοῦ Μαιάνδρου κ. ἄ. Τὰ περισσότερα τῶν ἀγαλμάτων τούτων κοσμοῦσι νῦν τὸ μουσεῖον Κωνσταντινουπόλεως, ἄλλα δὲ παραμένουσι κατὰ χώραν, ὡς τὸ τοῦ ποταμοῦ Μαιάνδρου, ὅστις παρίσταται ἐξηπλωμένος πρὸ εὐρείας λίμνης λουομένων.

Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων κτισμάτων τῆς Μιλήτου ἦτο καὶ τὸ βουλευτήριον. Τὸ κτήριον τοῦτο ἔκειτο ἐν τῇ περιοχῇ ἥτις ὡρίζετο δυτικῶς ὑπὸ τῆς Ἱερᾶς ὁδοῦ καὶ βορείως ὑπὸ τοῦ λιμένος τοῦ Λέοντος, καὶ ἐν ᾗ εὑρίσκοντο ἐπίσης αἱ μεγάλαι ἀγοραί. Τὸ βουλευτήριον εἶχε κτισθῇ μεταξὺ τῆς βορείας ἀγορᾶς καὶ τῆς νοτίας τοιαύτης, ἐπὶ πετρώδους τινὸς ὑψώματος. Ἀπετελεῖτο δὲ ἐκ τῆς αἰθούσης τῶν συνεδριάσεων, ἐκ τοῦ προαυλίου, περιβαλλομένου ὑπὸ σειρᾶς κιόνων καὶ προπύλου καὶ ἐκ τοῦ ἐν τῷ προαυλίῳ ὑπάρχοντος τιμητικοῦ τάφου ἢ κενοταφίου. Ἡ αἴθουσα τῶν συνεδριάσεων εἶναι διαστάσεων 34×24 μ., ἔχουσα σχῆμα θεάτρου, καὶ διαιρεῖται εἰς τρεῖς κερκίδας μὲ 19 σειρὰς ἑδωλίων. Τὸ προαύλιον εἶναι τετράγωνον, μὲ διαστάσεις 34 × 31 μ., χωρίζεται δὲ ἀπὸ τῆς αἰθούσης τῶν συνεδριάσεων διὰ τοίχου καὶ συγκοινωνεῖ μετ᾽ αὐτοῦ διὰ τεσσάρων θυρῶν. Κατὰ τὰς τρεῖς ἄλλας αὐτοῦ πλευρὰς κοσμεῖται διὰ κιόνων δωρικοῦ ρυθμοῦ καὶ κατὰ μέτωπον διὰ προπύλου, τοῦ ὁποίου ἡ πρόσοψις φέρει τέσσαρας κορινθιακοὺς κίονας. Τὸ ἐν τῷ μέσῳ τοῦ προαυλίου κείμενον ὀρθογώνιον μνημεῖον ἦτο, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, κενοτάφιον, περιβαλλόμενον ὑπὸ 4×5 κιόνων ἰωνικοῦ ρυθμοῦ καὶ κοσμουμένων δι᾽ ἀναγλύφων, ἐξ ὧν πολλὰ τεμάχια εὑρέθησαν κατὰ τὰς ἀνασκαφάς. Τὸ ἐν γένει κτίσμα τοῦ βουλευτηρίου συνεπλήρωνεν ὡραῖος γλυπτικὸς καὶ ἀρχιτεκτονικὸς διάκοσμος. Τὸ πρόπυλον ἐκοσμεῖτο δι᾽ ὡραίας ζῳφόρου μὲ ἀναγλύπτους παραστάσεις πολεμικῶν ὅπλων, τὸ δὲ κενοτάφιον δι᾽ ἀναγλύπτων πλακῶν 1.50×1.90 μ., αἵτινες εὑρίσκονται νῦν ἐν τῷ μουσείῳ Κωνσταντινουπόλεως. Ἑκάστη τῶν πλακῶν τούτων φέρει πλήρη μυθολογικὴν παράστασιν. Ἔν τε τῇ αἰθούσῃ τῶν συνεδριάσεων καὶ ἐν τῇ αὐλῇ εὑρέθησαν ἐπίσης κολοσσιαῖοι μαρμάρινοι τρίποδες. Τὴν χρονολογίαν τῆς ἱδρύσεως τοῦ βουλευτηρίου φανερώνει ἐπιγραφὴ ἐπὶ τοῦ ἐπιστυλίου τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τῆς αἰθούσης τῶν συνεδριάσεων, ἔχουσα οὕτω: «Τίμαρχος καὶ Ἡρακλείδης, οἱ Ἡρακλεῖδαι, ὑπὲρ βασιλέως Ἀντιόχου τοῦ Ἐπιφανοῦς Ἀπόλλωνι Διδυμεῖ καὶ Ἑστίᾳ Βουλαίᾳ καὶ τῷ Δήμῳ». Κατὰ τὴν ἐπιγραφὴν ταύτην λοιπὸν εἰκάζεται ὅτι τὸ κτήριον τοῦ βουλευτηρίου ἐκτίσθη μεταξὺ τῶν ἐτῶν 175—164 π. Χ.

Πεντήκοντα μέτρα ἀνατολικῶς τοῦ προπυλαίου τοῦ βουλευτηρίου ἠγείρετο τὸ Νυμφαῖον, μνημειώδης κρήνη ἀφιερωμένη εἰς τὰς Νύμφας, εἰς ἣν κατήρχετο τὸ ἔκ τινος ὀροπεδίου πρὸς βορρᾶν τῆς πόλεως ρέον ὕδωρ. Τὸ μνημεῖον τοῦτο ἦτο ἄλλοτε μεγαλοπρεπὲς κτίσμα, ἀποτελούμενον ἐκ τριῶν μερῶν. Ἐν τῷ μέσῳ ἠγείρετο τοῖχος κεκοσμημένος μὲ ἀγάλματα ἐν-

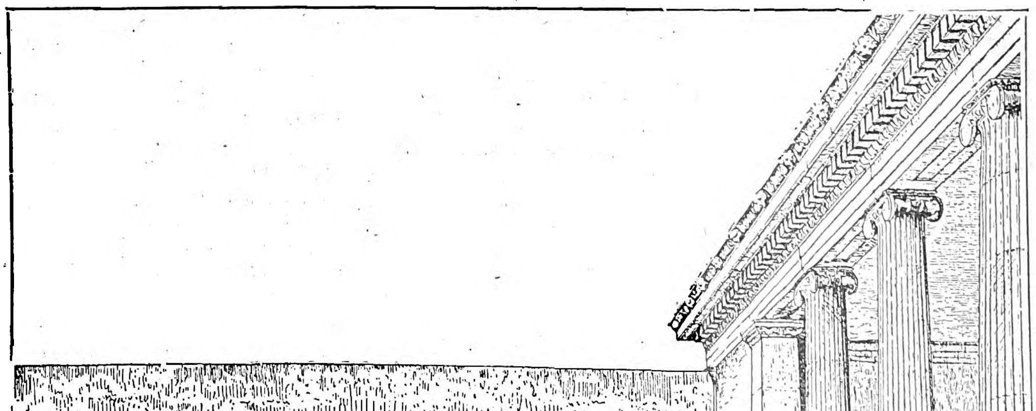

*Τὸ γυμνάσιον τῆς Μιλήτου (κατ᾽ ἀναπαράστασιν).*

Digitized by Google

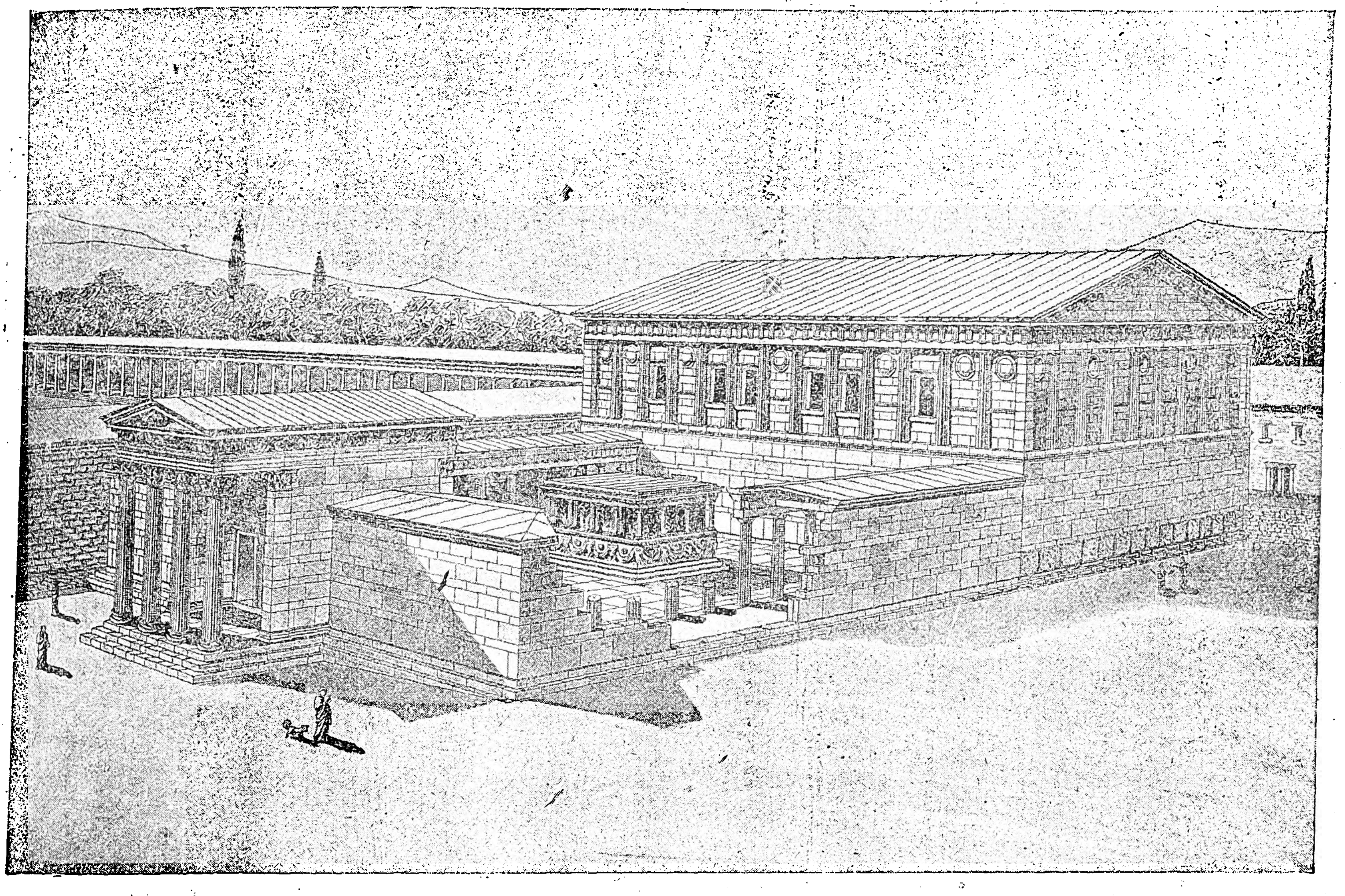

*Ἀναπαράστασις τοῦ βουλευτηρίου τῆς Μιλήτου κατὰ τὸν Knackfuss.*

τὸς κογχῶν, ὄπισθεν τοῦ ὁποίου ἔκειτο τὸ ὑδραυλικὸν ἔργον, ἀποτελούμενον ἀπὸ τρία θολωτὰ διαμερίσματα. Ἑκατέρωθεν τοῦ κεντρικοῦ τούτου τμήματος προεξεῖχον δύο πτέρυγες. Τοῦ ἐν λόγῳ μνημείου σῴζονται ἀκόμη κατὰ χώραν ἐλάχιστα μόνον μέρη, ἱκανὰ ἐν τούτοις νὰ καταδείξουν τὸν πλούσιον γλυπτικὸν καὶ ἀρχιτεκτονικὸν αὐτοῦ διάκοσμον. Καὶ ἐνταῦθα εὑρέθησαν πολλὰ ἀγάλματα, κοσμοῦντα ἄλλοτε τὴν μεγαλοπρεπῆ καὶ ὡραίαν ταύτην κρήνην.

Τὸ στάδιον καὶ τὸ θέατρον ἔκειντο κατὰ τὴν νοτίαν ἀκτὴν τοῦ λεγομένο *κόλπου ἢ λιμένος τοῦ θεάτρου*, ἤτοι τοῦ πλέον εὐρυχώρου τῶν λιμένων τῆς πόλεως. Τὸ στάδιον τῆς Μιλήτου εἶχε σφενδόνην οὐχὶ ἡμικυκλικήν, ὅπως συνήθως, ἀλλ᾽ εἰς σχῆμα ὀρθογωνίου τετραπλεύρου, μὲ δύο θέσεις καθισμάτων κατὰ τὰς μακρὰς πλευράς. Κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν ὑπῆρχεν ἡ πύλη, ἰωνικοῦ ρυθμοῦ, καὶ κατὰ τὴν ἀνατολικὴν ἑτέρα στοὰ μὲ διπλῆν σειρὰν κιόνων, κορινθιακοῦ ρυθμοῦ, ἐφ᾽ ὧν ἠγείρετο τοξωτὴ στέγη. Τὸ μῆκος τοῦ σταδίου ἦτο 194,45 μ. Ἱδρύθη δὲ τοῦτο κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους, μετεσκευάσθη κατὰ τοὺς ρωμαϊκούς, καὶ κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς περιελήφθη ἐντὸς τῶν τειχῶν τῆς πόλεως. Τὸ θέατρον, ὅπερ σῴζεται σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου, κατεσκευάσθη ἐπὶ ρωμαϊκῆς ἐποχῆς ἐπὶ παλαιοτέρου τοιούτου, καὶ ἔχει ἐξωτερικὴν μὲν διάμετρον 126 μ. καὶ ἐσωτερικὴν 73. Τὸ κοῖλον εἶναι ἐκτισμένον ἐν τῷ λόφῳ τῆς Ἀκροπόλεως καὶ ἔχει τρία διαζώματα. Ἐπὶ τοῦ περιφερικοῦ τοιχώματος ὑπάρχουσι θύραι θολωτῶν διαδρόμων, οἵτινες διὰ μεγάλης ἐντετειχισμένης θολωτῆς κλίμακος ἄγουσιν εἰς τὰς ἀνωτέρω σειράς. Ἐν τῷ θεάτρῳ ἐλλείπουσιν αἱ τρεῖς κιονοστοιχίαι, αἵτινες ὑπεβάσταζον τὸ μαρμάρινον δάπεδον τοῦ ρωμαϊκοῦ λογείου. Τούτου ὁ ἐμπρόσθιος μαρμάρινος τοῖχος, πάχους 0.54 μ., εἶ κατεσκευασμένος κατὰ τὸν προρρωμαϊκὸν τρόπον καὶ διαιρεῖται μὲ τρεῖς ὑπογείους διαδρόμους. Πρὸ αὐτοῦ, εἰς ἀπόστασιν 0.27 μ., ἐγείρεται διακοσμητικὴ κιονοστοιχία ἐκ δωρικῶν κιονίσκων μὲ ὀδοντωτὸν ἐπιστύλιον καὶ σίμας. Τὸ κατώτερον τμῆμα τῶν ἐν γένει κιόνων τοῦ θεάτρου εἶναι ἐξ ἐρυθροῦ μαρμάρου, τὸ ραβδωτὸν μέρος ἐκ μέλανος, τὸ δὲ κιονόκρανον καὶ τὸ ἐπιστύλιον ἐκ λευκοῦ.

Ἡ ἐπισημοτέρα συνοικία ἦτο ἡ τοῦ *λιμένος τοῦ Λέοντος*, κόλπου ὅστις εἰσεχώρει βαθέως μέχρι τοῦ κέντρου τῆς πόλεως καὶ τοῦ ὁποίου ἡ ὀνομασία ὠφείλετο εἰς μαρμάρινον λέοντα ἐστημένον κατὰ τὴν εἴσοδον αὐτοῦ καὶ μέχρι σήμερον ἔτι διασῳζόμενον. Τὸν λιμένα τοῦτον ἐκόσμει ἀκόμη καὶ ἕτερον μέγα μνημεῖον τρίποδος ἐπὶ βάσεως ἐν σχήματι τριήρους κεκοσμημένης δι᾽ ἐγγλύπτων παραστάσεων τριτώνων καὶ δελφίνων. Τὸ μνημεῖον τοῦτο ἤγειρον οἱ Μιλήσιοι ἐπὶ ρωμαιοκρατίας πρὸς τιμὴν τοῦ Καίσαρος. Ἐν τῇ συνοικίᾳ ταύτῃ ἔκειντο τὰ μέγιστα τῶν ἐπισήμων κτηρίων. Ἀνατολικῶς εὑρίσκετο τὸ ἱερὸν τοῦ Δελφινίου Ἀπόλλωνος μὲ στοὰν κατὰ τὴν νοτίαν ἀκτὴν τοῦ λιμένος. Ὄπισθεν τῆς στοᾶς ταύτης ἦτο ἡ μεγάλη ἀγορά, ἡ πολιτικὴ ἀγορά, ἢ καὶ ἄλλως καλουμένη βορεία ἀγορά. Ἡ στοὰ τοῦ λιμένος σῴζεται ὁπωσδήποτε εἰς πολλὰ σημεῖα, ἐκ τῆς καταμετρήσεως τῶν, ὁποίων ἐβεβαιώθη ὅτι τὸ κτίσμα τοῦτο ἀπετελεῖτο ἐκ πολλῶν διαμερισμάτων μὲ πρόστασιν ἐξ ἰωνικῶν κιόνων. Ἡ ὄπισθεν τῆς μεγάλης ταύτης στοᾶς ἐκτεινομένη μεγάλη ἐπίσης ἀγορὰ ὡρίζετο κατὰ τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν μὲ τοῖχον μήκους 87 μέτρων, ὅστις ἔφερε μαρμαρίνην πύλην πλουσίως κεκοσμημένην.

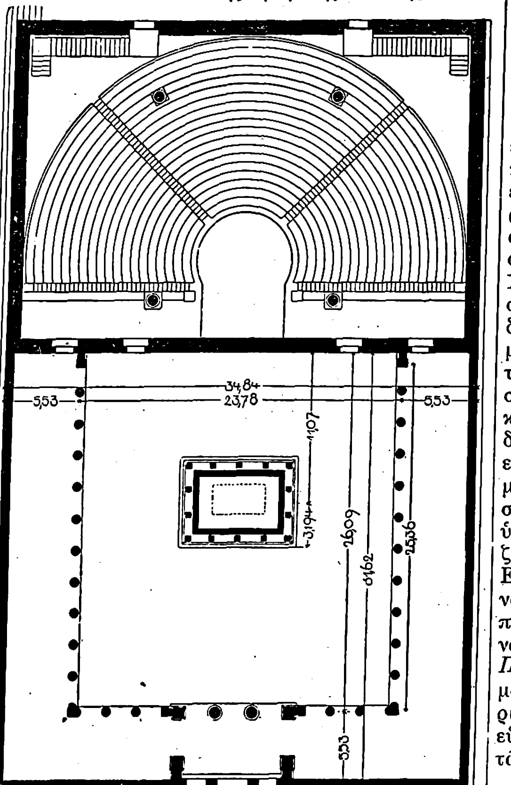

*Σχεδιάγραμμα τοῦ βουλευτηρίου τῆς Μιλήτου.*

Ἑτέραν συνοικίαν τῆς Μιλήτου ἀπετέλει καὶ ἡ περιοχὴ τῆς *Νοτίας Ἀγορᾶς*. Αὕτη ἦτο εὐρεῖα τετράγωνος ἔκτασις, περιβαλλομένη πανταχόθεν ὑπὸ στοῶν καὶ μόνον κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν ἔχουσα τρεῖς σειρὰς δωματίων μὲ προστάσεις. Μεγαλοπρεπῆ καὶ πλουσίως διακεκοσμημένην πύλην εἶχεν ἡ ἀγορὰ αὕτη κατὰ τὴν βορείαν πλευρὰν αὐτῆς, ἑτέρας δὲ μικροτέρας ἐπὶ τῶν ἄλλων πλευρῶν.

Εἰς τὴν Μίλητον ἀνῆκε καὶ ὁ προαναφερθεὶς ναὸς τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος, ὅστις ἀπεῖχε περὶ τὰ 15 χιλιομ. νοτίως ἀπὸ τῆς Μιλήτου, ἔργον τῶν ἀρχιτεκτόνων Παιωνίου τοῦ Ἐφεσίου καὶ Δάφνιδος τοῦ Μιλησίου. Ὁ κολοσσιαῖος οὗτος ναός, ὅστις σῴζεται ἐν πολλοῖς, καὶ σήμερον, κείμενος ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ χωρίου Γέροντα, ἤρχισε νὰ οἰκοδομῆται κατὰ τοὺς μετὰ Μ. Ἀλέξανδρον χρόνους, ἐξηκολούθησε δὲ κατὰ διαφόρους ἐποχὰς συμπληρούμενος, χωρὶς νὰ ἀχθῇ ποτὲ εἰς πέρας. Τὸ κτίσμα ἑδράζεται ἐπὶ κρηπιδώματος ἐξ ἑπτὰ ὑψηλῶν ἀναβαθμῶν, περιεβάλλετο δὲ ὑπὸ δύο σειρῶν ἐξ 109 ἐν ὅλῳ κιόνων, ἰωνικοῦ ρυθμοῦ, μὲ πρωτοφανῆ καὶ ποικίλην ἀνάγλυπτον φυτικὴν καὶ ζωϊκὴν διακόσμησιν. Ὁ ναὸς οὗτος εἶχε δωμάτιον, καλούμενον, κατ᾽ ἐπιγραφάς, χρησμοφόριον, βῆμα ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐξηγγέλλοντο ὑπὸ τῶν ἱερέων οἱ χρησμοί. Ἡ συγκοινωνία τοῦ προνάου μετὰ τοῦ σηκοῦ ἐγίνετο διὰ δύο μικρῶν ἐν τῷ τοίχῳ θυρῶν, δεξιὰ καὶ ἀριστερὰ τοῦ κατωφλίου, αἵτινες ἦγον εἰς καμαρωτῶς στεγαζόμενον κλιμακωτὸν διάδρομον, συγκοινωνοῦντα ἑκατέρωθεν μετὰ τοῦ χρησμοφορίου. Ὁ σηκὸς ἦτο ὕπαιθρος καὶ ἐν αὐτῷ ὑπῆρχε μαντεῖον, ἤτοι χάσμα γῆς, ἐξ οὗ ἀνέβλυζεν ἡ προφητικὴ πηγὴ καὶ παρὰ ταύτην δάφνη. Εἰς τὸ βάθος τοῦ σηκοῦ ὑπῆρχεν ὡραῖος ἰωνικὸς ναΐσκος, ἐν ᾧ ἦτο ἱδρυμένον τὸ ὑπὸ τοῦ Κανάχου ποιηθὲν ἄγαλμα τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ Φιλησίου. Ὁ ναὸς οὗτος ἦτο συνδεδεμένος μετὰ τοῦ *λιμένος τῆς Πανόρμου* δι᾽ ἱερᾶς ὁδοῦ, κεκοσμημένης δι᾽ ἀγαλμάτων τῶν Βραγχιδῶν καὶ λεόντων. Δέκα μαρμάρινα τοιαῦτα ἀγάλματα, γυναικεῖα καὶ ἀνδρικά, εὑρεθέντα κατὰ τὸ 1862—1863, ἀπόκεινται νῦν ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ.

*Νομίσματα.* Τὰ ἀρχαιότατα νομίσματα τῆς Μιλήτου εἶναι ἐξ ἠλέκτρου καὶ χρονολογοῦνται ἀπὸ 700—494 π. Χ. Φέρουσιν, ὡς ἐμπροσθότυπον, λέοντα μὲ κεφαλὴν ἐστραμμένην πρὸς τὰ ὀπίσω, ἢ δύο λεοντοκεφαλὰς ἀντωπούς, καὶ ὡς ὀπισθότυπον ἔγκοιλον τετράγωνον. Τὰ ἀργυρᾶ νομίσματα ἐκόπησαν μετὰ τὴν ἀποστασίαν τῆς Μιλήτου ἀπὸ τῶν Ἀθηνῶν κατὰ τὸ τέλος τοῦ Πελοποννησια-



Digitized by Google

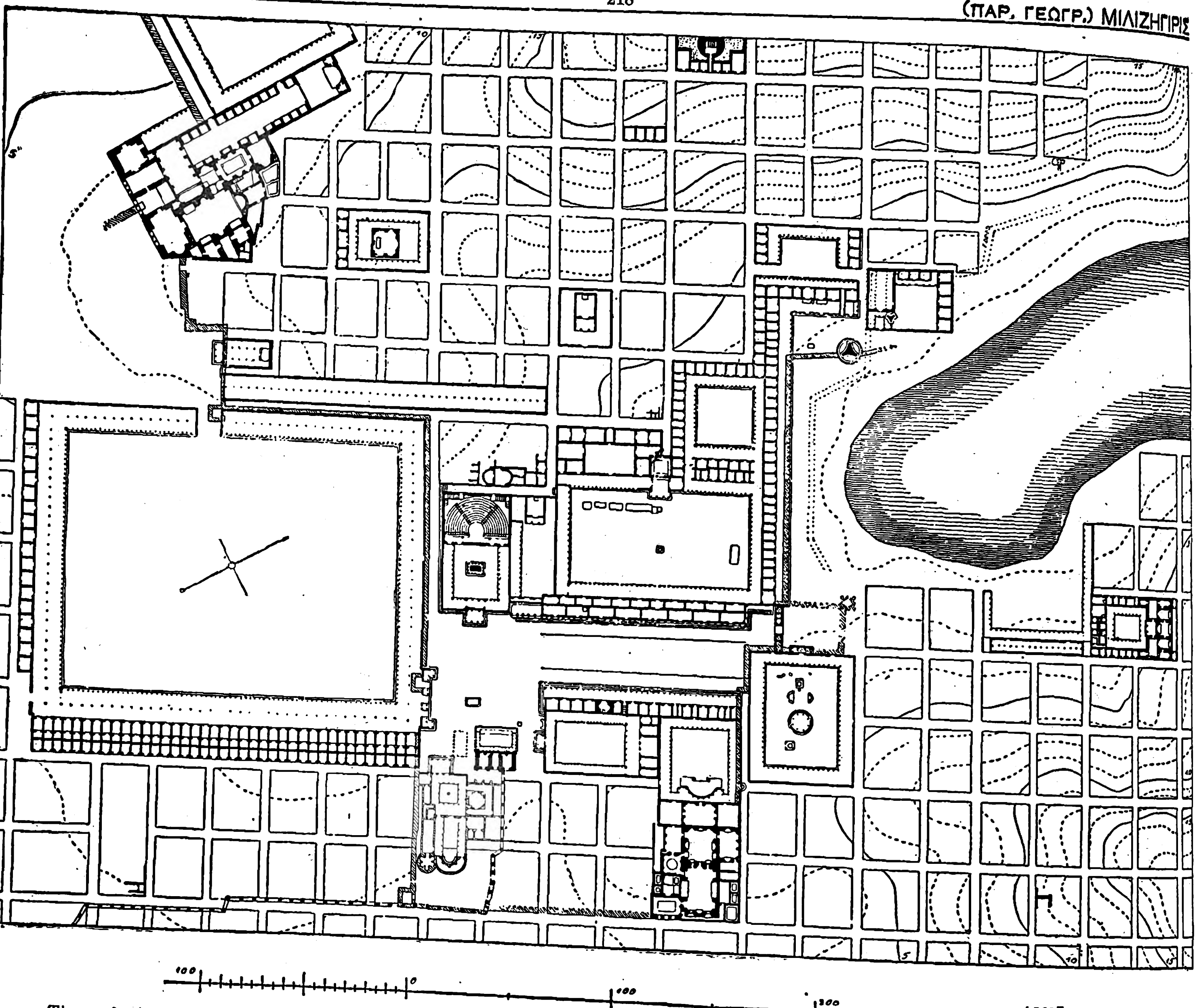

*Τὸ σπουδαιότερον τμῆμα τῆς ἀρχαίας Μιλήτου κατὰ τὸν λιμένα τοῦ Λέοντος, μὲ τὴν στοὰν τοῦ λιμένος, τὴν μεγάλην ἀγοράν, τὸ βουλευτήριον καὶ τὴν βορείαν ἀγοράν.*

κοῦ πολέμου, ἤτοι ἀπὸ τοῦ 478—390 π. Χ. καὶ φέρουσιν ἐμπρὸς μὲν λέοντα ἢ τὸ πρόσθιον ἥμισυ λέοντος μὲ κεφαλὴν ἐστραμμένην πρὸς τὰ ὀπίσω, ὄπισθεν δὲ φυτικὸν ἄστρον ἐντὸς ἐγκοίλου τετραγώνου. Ἀπὸ τοῦ 385—350, ὅτε ἡ Μίλητος διετέλει ὑπὸ τοὺς Καρίους δυνάστας, Ἑκάτομνον καὶ Μαύσωλον, τὰ ἀργυρᾶ αὐτῆς νομίσματα ἔχουν τὰς ἰδίας ὡς ἄνω παραστάσεις μὲ τὰ ἀρχικὰ τῶν ὀνομάτων τῶν δυναστῶν: ΕΚΑ καὶ ΜΑ. Εἰς τὰ ἀργυρᾶ νομίσματα τῆς Μιλήτου ὑπάγονται καὶ τὰ ὑπὸ τοῦ ἱεροῦ τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος ἐκδοθέντα, τὰ ὁποῖα φέρουσι τὴν κεφαλὴν τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου ὄρθιον λέοντα μετ' ἄστρων καὶ τῆς ἐπιγραφῆς: ΕΓ ΔΙΔΥΜΩΝ ΙΕΡΗ. Ἀπὸ τοῦ 190 π. Χ. ἡ Μίλητος, ἀνακτήσασα τὴν ἐλευθερίαν της μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Ἀντιόχου ἐν Μαγνησίᾳ, ἐξέδωκε χρυσοῦς στατῆρας μὲ κεφαλὴν τοῦ Ἀπόλλωνος ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου λέοντα ἀτενίζοντα ὀπίσω ἄστρον μὲ τὸ ὄνομα τοῦ ἄρχοντος. Τὰ νομίσματα ταῦτα εἶναι σπάνια καὶ διὰ τοῦτο μεγάλης ἀξίας. Τὰ χάλκινα νομίσματα τῆς Μιλήτου, ἐκδοθέντα ἀπὸ τοῦ 350 π. Χ. μέχρι τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, ὁμοιάζουσι κατὰ τὸν τύπον πρὸς τὰ ἀργυρᾶ. Κατὰ τὴν αὐτονομιακὴν ὅμως περίοδον τῆς πόλεως ἐπὶ ρωμαϊκῆς κυριαρχίας τὰ χάλκινα νομίσματα φέρουσι παράστασιν γυμνοῦ ἀγάλματος Ἀπόλλωνος κρατοῦντος εἰς τὰς χεῖρας ἔλαφον καὶ τόξον, ἀντίγραφον τοῦ περιφήμου λατρευτικοῦ ἀγάλματος τοῦ Διδυμαίου Ἀπόλλωνος, τὸ ὁποῖον ἐφιλοτέχνησεν ὁ γλύπτης Κάναχος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Milet*, Ergebnisse der ausgrabungen und untersuchungen seit dem Jahre 1889, σειρὰ τευχῶν περὶ τῶν ἀποτελεσμάτων τῶν ἀνασκαφῶν τῶν διαφόρων μνημείων καὶ κτισμάτων τῆς Μιλήτου ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Th. Wiegand καὶ τῇ συνεργασίᾳ τῶν A. Gerkan. Krackfuss, Hülsen, Krischen κτλ.—*Rayet*, Milète et le golfe Latmique.—*Head*, Historia Numorum.

Β Δ. ΘΕΟΦΑΝΕΙΔΗΣ

— **Μίλητος** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς ἐν τῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ Μυσίας ὑπὸ τοῦ Πλινίου μνημονευομένη. Ἔκειτο ἐπὶ τῆς ὄχθης τοῦ Εὐήνου ποταμοῦ καὶ παρὰ τὴν πόλιν Σκῆψιν. ΚΑΨ.

— **Μίλητος**, ἢ ***Μίλατος*** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀρχαιοτάτη αὐτόνομος πόλις τῆς Κρήτης, μνημονευομένη ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου μεταξὺ τῶν ἑπτὰ πόλεων, αἱ ὁποῖαι μετέσχον τῆς εἰς Τροίαν ἐκστρατείας ὑπὸ τὸν Ἰδομενέα καὶ Μηριόνην. Ἡ ὀνομασία ἐσώθη εἰς δωρικὴν διάλεκτον ἐν τῷ σημερινῷ χωρίῳ *Μιλάτῳ*, τῆς ἐπαρχίας Μεραμβέλλου, πλησίον τοῦ ὁποίου, παρὰ τὴν θάλασσαν, εὑρέθησαν ἐρείπια, μαρτυροῦντα ὅτι ἐκεῖ ἦτο τὸ νεκροταφεῖον τῆς πόλεως, ὡς καὶ λείψανα δεξαμενῶν καὶ ἀναχωμάτων καὶ δοχεῖα σχήματος καὶ ρυθμοῦ μυκηναϊκοῦ. Ἡ πόλις θὰ ἔκειτο ἐπὶ τοῦ σημερινοῦ λόφου *Καστέλλου*. Ἡ αὐτονομία τῆς πόλεως κατελύθη ὑπὸ τῆς Λύκτου, πρὸ τοῦ 220 π. Χ. βεβαίως, διότι τότε κατέστρεψε ταύτην ἡ Κνωσός.

Ἡ Μίλητος τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐθεωρεῖτο ἀποικία τῆς κρητικῆς ὑπὸ τὸν Σαρπηδόνα, ἀδελφὸν τοῦ Μίνωος, ἢ τὸν περικαλλῆ νεανίαν Μίλητον, ἐκ τῆς κρητικῆς ὡσαύτως Μιλάτου, ὅστις ἔδωκε καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ εἰς τὴν Μίλητον τῆς Καρίας. Ε. Γ.

**Μιλητούπολις** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν τῇ πρὸς Ἑλλήσποντον Φρυγίᾳ, ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Ρυνδάκου καὶ Μακέστου, πρὸς Δ. τῆς Ἀρτυνίας ἢ Ἀπολλωνιάτιδος λίμνης (*Στράβ.* XII 575). Ἱδρυθεῖσα ὑπὸ ἀποίκων τῆς Μιλήτου, ὑπετάχθη ἀκολούθως εἰς τοὺς βασιλεῖς τῆς Βιθυνίας. Σῴζονται νομίσματα αὐτῆς αὐτόνομα καὶ αὐτοκρατορικὰ ἀπὸ τοῦ Βεσπασιανοῦ μέχρι Φιλίππου τοῦ νεωτέρου, μετὰ τῆς ἐπιγραφῆς ΜΙΛΗΤΟΠΟΛΙΤΩΝ ἢ ΜΕΙΛΙΤΟΠΟΛΕΙΤΩΝ, ἐνίοτε δὲ καὶ τῆς προσθήκης ΕΝ ΠΟ[ΝΤΩ] (*Head-Σβορώνου*, Ἱστορ. τῶν Νομισμ. τόμ. Β', σελ. 56).

Σήμερον καλεῖται *Μιχαλίτς*, τὸ *Μιχαλίκιον* τοῦ Χαλκοκονδύλη, ἀριθμοῦσα μέχρι τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς 7.800 κατοίκους, ἐξ ὧν 6.800 Ἕλληνες, ἐξαρτώμενοι ἐκκλησιαστικῶς ἐκ τῆς μητροπόλεως Κυζίκου. Α. Θ. Σ.

**Μιλητουπολῖτις** ***λίμνη*** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Λίμνη τῆς Μ. Ἀσίας ἐν τῇ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίᾳ ἢ Μοισίᾳ, πρὸς Δ. τῆς Προύσης, ἀπέχουσα 12 χλμ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης (*Στράβ.* XII, 575). Διασχίζεται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ρυνδάκου, καθιστῶντος τὰ ὕδατα αὐτῆς γλυκέα. Εἶναι ἡ ἄλλως καλουμένη *Ἀρτυνία* ἢ *Ἀπολλωνιᾶτις* λίμνη, νῦν δὲ *Ἀμπουλιὸντ-γκιόλ*. Α. Θ. Σ.

**μίλι** (τό)· δημοτ., βλ. *μίλιον*.

**μιλιὰ** (ἡ)· δημοτ., ἀντὶ *ὁμιλία* (βλ. λ.): «μιλιὰ δὲ βγάνει ἀπ' τὸ στόμα του», «τὸν ἐγνώρισα ἀπὸ τὴ μιλιά του»· || προστακτ. «μιλιά!» ἢ «μιλιὰ μὴ βγάνῃς!» ἄλλως «σιωπή!».

**Μιλιὰν** (Milian), ***Γάστων***. Γάλλος συφιλιδολόγος, ἰατρὸς τοῦ νοσοκομείου Σαὶν Λουΐ ἀπὸ τοῦ 1906, συγγραφεὺς πλείστων μονογραφιῶν καὶ συγγραμμάτων δερματολογίας καὶ ἀφροδισιολογίας καὶ ἐφευρέτης πολλῶν μεθόδων διαγνωστικῶν καὶ θεραπευτικῶν, ἐκ τῶν ὁποίων κυριώτεραι εἶναι: ἡ τεχνικὴ προσδιορισμοῦ ταχύτητος πήξεως τοῦ αἵματος, ἡ συφιλιδικὴ ἀναμόλυνσις, ἡ ἑτεροθεραπεία, ἡ ἑρμηνεία καὶ θεραπευτικὴ τῶν ἐκ τοῦ 606 ἀτυχημάτων, ἡ ἀνακάλυψις τοῦ βακίλλου τῆς κεραυνοβόλου γαγγραίνης τῶν γεννητικῶν ὀργάνων, ἡ ἀναζωπύρησις τῆς ἀντιδράσεως Βάσσερμαν καὶ ὁ βιοτροπισμός. Ν. Ν. Δ.

— **Μιλιὰν** (Milian), ***ἕλκος τοῦ —*** [*Ἰατρ.*]· βλ. λ. *ἕλκος*.

**Μιλιάνα** [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἀλγερίας, ἡ *Μανλιάνα* τῶν Ρωμαίων, κειμένη ἐπὶ τῶν ὑπωρειῶν τοῦ Zakkar (διακλάδωσις τοῦ Ἄτλαντος), 118 χλμ. ΝΔ. τοῦ Ἀλγερίου ἐπὶ τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τύνιδος—Καζαμπλάνκας. Ἐκυριεύθη ὑπὸ τῶν Γάλλων τῷ 1840, σήμερον δὲ εἶναι πρωτεύουσα ἐπαρχίας καὶ ἕδρα στρατιωτικῆς διοικήσεως, ἀριθμοῦσα 12.000 κατ. περίπου. Ἐπίνειον αὐτῆς εἶναι ἡ *Σερσέλ*. Α. Θ. Σ.

**μιλιαρίσιον** (τὸ) [*Βυζαντ.*]. Ἀργυροῦν νόμισμα παρὰ Βυζαντινοῖς, οὗτινος ἡ ἀξία ἦτο ἴση πρὸς 1,25 χρυσῆς δραχμῆς σημερινῆς. Δώδεκα μιλιαρίσια ἀπετέλουν ἓν χρυσοῦν νόμισμα ἢ *ὁλοκοτίνην* (ἀξίας 15 χρυσῶν δραχμῶν σημερινῶν). Ὑποδιῃρεῖτο δὲ τὸ μιλιαρίσιον εἰς 24 φόλλες. Ν. ΚΛΣ

**μιλίγγρα** (ἡ) [*Ζῳολ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ παρασιτικοῦ ἐντόμου *ἀφὶς* (βλ. λ.).

**Μιλιζήγιρις** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Νῆσος τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς (*Πτολ.* Ζ', α', 95 Nobbe) μεταξὺ κόλπων Κάνθι καὶ Κολχικοῦ. Ταυτότης ἀνεξακρίβωτος. Σ. Ε. Λ.

Digitized by Google

**Μιλίνα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς εἰς τὴν νοτιοανατολικὴν πλευρὰν τοῦ Παγασιτικοῦ κόλπου, ἐπίνειον τοῦ χωρίου Λαῦκος, ἀπέχον ἀπὸ τούτου μίαν περίπου ὥραν. Ἔχει τελωνειακὸν σταθμόν, τακτικὴν δὲ συγκοινωνίαν μετὰ τοῦ Βόλου διὰ μικρῶν βενζινοπλοίων. Γ. Κ. ΚΟΡ.

**«Μιλίντα πάνχα»** ἢ **«*Μιλινταπάνχο*»** (Milinda panjo). Θρησκευτικὸν βιβλίον τοῦ βουδισμοῦ, γεγραμμένον εἰς γλῶσσαν πάλι καὶ ἀποτελρύμενον ἐκ φιλοσοφικοῦ διαλόγου μεταξὺ τοῦ βασιλέως τῶν Ἰνδιῶν Μιλίντα καὶ τοῦ βουδιστοῦ μοναχοῦ Ναγκασένα. Κατὰ λέξιν ὁ τίτλος τοῦ βιβλίου σημαίνει «Ἐρωτήσεις τοῦ Μιλίντα». Διαιρεῖται δὲ εἰς ἑπτὰ βιβλία, εἰς τὰ ὁποῖα ἐκτίθενται αἱ διδασκαλίαι τοῦ βουδισμοῦ μετὰ μεγάλης εὐγλωττίας καὶ δεινῆς διαλεκτικότητος. Μ. Δ. Β.

**μιλιοδείκτης** (ὁ)· ὁ δεικνύων τὰ μίλια, εἶδος ὁδομετρικῆς συσκευῆς.

**μιλιόλη** (ἡ) (Miliola) *[Ζῳολ.]*. Γένος τρηματοκόγχων τῆς οἰκογενείας τῶν *μιλιολιδῶν*, περιλαμβάνον μικροσκοπικὰ θαλάσσια ζῳάρια μὲ κόγχην πολυμερῆ ἀσβεστολιθικὴν καὶ διάτρητον. Πολυπληθῆ εἴδη τοῦ γένους τούτου ἀπαντῶσιν εἰς πάσας τὰς θαλάσσας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζῳολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα μιλιόλης διαφόρων μορφῶν εὑρίσκονται ἐν ἀφθονίᾳ, σχηματίζοντα πολλαχοῦ ὁλόκληρα πετρώματα. Οὕτω, μιλιόλαι σχηματίζουν εἰς τὴν Παρισινὴν λεκάνην καὶ τὰ Πυρηναῖα παχέα ἀποθέματα ἀσβεστολίθων τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Αἱ ἀρχαιότεραι σπάνιαι μιλιόλαι συναντῶνται ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ καὶ ἀφθονώτεραι ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἰουρασίου καὶ κρητιδικῆς διαπλάσεως. Τὴν κυρίαν των ἐξάπλωσιν παρουσιάζουν κατὰ τὴν τριτογενῆ περίοδον τοῦ καινοζωϊκοῦ αἰῶνος καὶ κατὰ τὴν σημερινὴν ἐποχήν. Γ. Κ. Γ.

**μιλιολίδαι** (οἱ) (Miliolidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια τρηματοκόγχων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ῥιζοπόδων*, περιλαμβάνουσα θαλάσσια ζῳάρια μὲ κόγχην ἀσβεστολιθικὴν διάτρητον καὶ σῶμα σαρκῶδες. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων γενῶν εἶναι ἡ *μιλιόλη* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζῳολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μιλιολιδῶν* εὑρίσκονται πολλαχοῦ ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς λιθανθρακοφόρου τοῦ παλαιοζωϊκοῦ μέχρι τῆς σημερινῆς. Ἐν Ἑλλάδι εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Ἀράχθου, ἐντὸς μαργῶν τῆς ὀλιγοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ παρὰ τὴν Καλαμπάκαν, εἰς τὴν Πελοπόννησον καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μίλιον** (τό), κοιν. *μίλι*· μονὰς μήκους μεγάλων ἀποστάσεων, ἔχουσα πιθανώτατα τὴν ἀρχὴν αὐτῆς ἐκ τοῦ ῥωμαϊκοῦ «mille passum», ποικίλλουσα δὲ κατὰ τόπους, χρήσεις καὶ ἐποχάς.

— *[Ἐγκυκλοπ.]* Τὸ *μίλλιον* χρησιμοποιεῖται γενικῶς σήμερον ὡς ἀποκλειστικὴ σχεδὸν μονὰς μετρήσεως τῶν κατὰ θάλασσαν ἀποστάσεων, εἰς διαφόρους δὲ τόπους καὶ τῶν κατὰ ξηράν. Αἱ κατὰ ἐποχὰς καὶ χώρας ποικιλίαι αὐτοῦ ἔχουσιν ὡς ἀκολούθως:

***Ρωμαϊκὸν μίλιον*** (συντετμ. ἔκφρασις *m. p.*). Ἦτο τοῦτο ἰσοδύναμον πρὸς 1000 διπλᾶ βήματα, δι' ὃ καὶ ὠνομάζετο mille passum, ἐξ οὗ καὶ ἡ παγκόσμιος ὀνομασία τῶν ἀναλόγων μονάδων. Τὸ εἰς μέτρα ἰσοδύναμόν του, λόγῳ τοῦ ἀκαθορίστου μήκους τοῦ βήματος, δὲν εἶναι ἀκριβῶς καθωρισμένον, οἱ δὲ διάφοροι ἀρχαιολόγοι δίδουσιν εἰς αὐτὸ τιμὴν ποικίλλουσαν μεταξὺ 1477,5 μέτρων καὶ 1482,5 μ. Ὁ Γκοσλὲν («Géogr. de Strabon» ἐκδ. 1805, τόμ. I, σελ. XC), δεχόμενος τὸ ῥωμαϊκὸν μίλιον ἴσον πρὸς 0,1481 γαλλικὰ μυριάμετρα (=760 γαλλ. ὀργ., 0 πόδ., 7 δακτ., 8 γρ., 160) καὶ πρὸς τὸ ἀνάπτυγμα 48″ τοῦ παραλλήλου 45°, καθορίζει τὰ ἀκόλουθα ἰσοδύναμα: 1 ῥωμ. μιλ.=14 σταδ., 815 τῶν 1111 $^1/_8$ σταδ. κατὰ μοῖραν=11 σταδ., 111 τῶν 833$^1/_8$ κατὰ μοῖραν = 9 σταδ., 333 τῶν 700=8 σταδ., 889 τῶν 666 $^3/_5$ = 8 σταδ. ὀλυμπιακὰ τῶν 600 κατὰ μοῖραν=6 σταδ., 667 τῶν 500 κατὰ μοῖραν. Τὸ βυζαντινὸν ὅμως κράτος ἐδέχθη μίλιον τῶν 1800 βημάτων.

***Μίλιον γεωγραφικόν.*** Τοῦτο εἶναι μονάς, οὐχὶ συνήθους χρήσεως, ἰσοδυναμοῦσα πρὸς 4′ τοῦ γηΐνου ἰσημερινοῦ καὶ λογιζομένη ἴση πρὸς 7422 μέτρα περίπου (παρὰ Βαυαροῖς=7420,44).

***Ἀγγλικὸν χερσαῖον μίλιον.*** Τοῦτο, γνωστὸν ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν statute mile, ἰσοῦται πρὸς 1760 γυάρδας καὶ ἰσοδυναμεῖ πρὸς 1 χιλιόμ., 609315 (λογαρ.=0,206641), ὁπότε τὸ χιλιόμετρον ἰσοδυναμεῖ πρὸς 0 μιλ., 62138 (λογ.=$\bar{1}$,793359). Εἶναι δὲ τοῦτο γενικευμένης χρήσεως, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ *μίλιον τοῦ Λονδίνου* (London mile =5000 πόδ.=1,52397 χιλιόμ.). Ὡς μονὰς δὲ μετρήσεως χερσαίων ἐπιφανειῶν χρησιμοποιεῖται ἐν Ἀγγλίᾳ τὸ *τετραγωνικὸν μίλιον* (square mile), ἔχον πλευρὰν τὸ statute mile καὶ ἰσοδυναμοῦν πρὸς 2,58989477 τετραγωνικὰ χιλιόμετρα (λογ.= 0,413283)· εἶναι δηλ. τὸ τετραγων. χιλιόμετρον ἴσον πρὸς 0,38612.... τοῦ τετραγ. μιλίου (λογαρ.= $\bar{1}$,586717).

***Χερσαῖα μίλια ἄλλων κρατῶν.*** Εἰς τὴν Γαλλίαν, πρὸ τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ δεκαδικοῦ μετρικοῦ συστήματος, ὠνομάζετο *μίλιον ταχυδρομικὸν* ἢ *παρισινὸν* (mille de poste ἢ mille de Paris) τὸ ἰσοδύναμον 1000 ὀργυιῶν, ἤτοι 1949.04 μέτρων, ὅπερ κατόπιν ἐλογίζετο ἔτι μεῖζον, 1100 ὀργ.=2143,94 μέτρ. Τὰ *ταχυδρομικὰ μίλια* τῶν βορείων κρατῶν εἶναι πολὺ ἐπιμηκέστερα· οὕτω τὸ σαξωνικὸν poste meil ἰσοῦται πρὸς 7.500 μέτρα, τὸ πρωσσικὸν καὶ τὸ ἁμβούργιον πρὸς 7.532μ.,48, τὸ αὐστριακὸν πρὸς 7.585,94, τὸ δανιμαρκικὸν miil πρὸς τὸ πρωσσικὸν καὶ τὸ ὀλλανδικὸν mijl πρὸς 6.278,53 καὶ τὸ πολωνικὸν mila πρὸς 8.534,25 καὶ τὸ σουηδικὸν mil πρὸς 10.688,44. Τὰ παλαιὰ ὅμως ἰταλικὰ κράτη εἶχον ἐν χρήσει βραχύτερα μίλια· οὕτω τὸ ἑνετικὸν miglio ἰσοδυνάμει πρὸς 1.738,67, τὸ λομβαρδικὸν πρὸς 1.784,81 τὸ νεαπολιτανικὸν πρὸς 1.835,11 καὶ τὸ πεδεμόντιον πρὸς 2.466,08. Τέλος, τὸ πορτογαλικὸν milha ἰσοῦται πρὸς 2.065,65, τὸ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν εἶναι ἰσομέγεθες πρὸς τὸ ἀγγλικόν, ἐνῷ ἐν Βελγίῳ καὶ Ἑλβετίᾳ ὀνομάζεται mille métrique αὐτὸ τοῦτο τὸ χιλιόμετρον.

***Ναυτικὸν μίλιον.*** Ἡ τελειοποίησις τῶν δικατόπτρων ὀργάνων ὡς καὶ τῶν χρονομέτρων, ἐπενεγκοῦσα εἰς τὸν ὑπολογισμὸν τοῦ στίγματος μείζονα ἀκρίβειαν, ἔθεσεν ἐν ἀχρηστίᾳ, ὡς μεγαλυτέραν τοῦ πρέποντος, τὴν ὡς μονάδα τῶν διαρμάτων χρησιμοποιουμένην ἕως τότε *λεύγαν*, ὑποκατασταθεῖσαν διὰ τὸν ἀναπτύγματος 1 πρώτου λεπτοῦ τῆς μοίρας κατὰ τὸν παράλληλον τῶν 45°, ὀνομασθεῖσαν δὲ *μίλιον* (mille γαλλ., mile ἀγγλ.), ἢ *ναυτικὸν μίλιον*. Ἰσοῦται δὲ τοῦτο πρὸς 1.851 μέτρ., 852 (λογ.=3,2676063), τοῦ χιλιομέτρου ἰσοδυναμοῦντος πρὸς 0,54 (λογ.=$\bar{1}$,7323937) τοῦ μιλίου.- Ἔχει δὲ πολλαπλασίαν μὲν μονάδα τὴν *ναυτικὴν λεύγαν* (=$^1/_{20}$ τῆς μοίρας = 3 μίλια), ὑποπολλαπλασίαν δὲ τὸ *ναυτικὸν στάδιον* (=$^1/_{10}$ μιλ.=185 μέτρ. στρογγύλως). Ἐπιφανειακὴ μονὰς βασιζομένη ἐπὶ τοῦ ναυτικοῦ μιλίου εἶναι τὸ θαλάσσιον τετραγων. μίλιον (= 3,4307 τετραγων. χιλιόμετρα), χρησιμοποιούμενον μόνον διὰ τὸν καθορισμὸν ἐκτάσεων ὑδατίνων ἐπιφανειῶν. Τὸ εἰς μέτρα ἰσοδύναμον τοῦ μιλίου ποικίλλει κατὰ 3 ἢ 4 μέτρα εἰς διάφορα κράτη, λογίζοντα τὸ 1′ εἰς τὸ πλάτος των καὶ οὐχὶ εἰς τὸ τῶν 45°. Σ. Ε. Λ.

**Μίλιον** *[Βυζαντ.]*. Μεγάλη ἀγορὰ ἢ φόρος (forum) ἐν Βυζαντίῳ, πρὸς Δ. τῆς Ἁγίας Σοφίας, οὐ μακρὰν τοῦ Αὐγουσταίου φόρου, μετὰ τοῦ ὁποίου συνείχετο πιθανῶς. Ἐπὶ τῆς ἀψῖδος τῆς ἀγορᾶς ταύτης ἵσταντο κατὰ τὸν Κεδρηνὸν «στῆλαι δύο, τοῦ τε Μεγάλου Κωνσταντίνου καὶ τῆς μητρὸς αὐτοῦ, μέσον ἔχουσαι σταυρόν, ὄπισθεν δὲ Τραϊανὸς ἔφιππος ἔχων συνεγγὺς τὸν Αἴλιον Ἀδριανὸν ἱππότην». Ἐνταῦθα ὑπῆρχε καὶ τὸ Ὡρολογεῖον ἢ Ὡρολόγιον, πιθανῶς ἡλιακός τις γνώμων, δῶρον τοῦ Μεγάλου Ἰουστινιανοῦ ἢ τοῦ διαδόχου του Ἰουστίνου καὶ τῆς συζύγου αὐτοῦ Σοφίας.

Ἀπὸ τῆς πλατείας τοῦ Μιλίου ἤρχιζεν ἡ Μεγάλη ἢ Μέση Λεωφόρος ἢ Ὁδὸς τῶν Θριάμβων, ἥτις διασχίζουσα τὰς πλατείας τοῦ Κωνσταντίνου, τοῦ Θεοδοσίου ἢ Ταύρου, τοῦ Βοὸς καὶ τοῦ Ἀρκαδίου, κατέληγεν εἰς τὴν Χρυσῆν Πύλην. Α. Θ. Σ.

**μίλιον** (τὸ) (Milium) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστιδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἀπαντώσας εἰς τὰς εὐκράτους χώρας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Παρ' ἡμῖν ἀπαντᾷ ἓν μόνον εἶδος, τὸ *μίλιον τὸ ἐαρινὸν* (Milium printanensis), ὅπερ φύεται ἰδίως εἰς τὸν Ὑμηττόν. Δ. Ν. Π.

**μιλιόνι** (τό). Κοινὴ ὀνομασία ἑνὸς ἐκ τῶν μᾶλλον ἐν χρήσει κατὰ τὴν ἑλληνικὴν ἐπανάστασιν πυροβόλων ὅπλων. Ἦτο μακρὸν καὶ ἐμπροσθογεμές, ἐχρησιμοποιήθη δὲ μέχρι τοῦ 1841, ὁπότε ἐνεφανίσθησαν τὰ ὀπισθογεμῆ τυφέκια.

**Μιλιούκωφ**, ***Παῦλος Νικολάϊεβιτς.*** Ρῶσος πολιτικὸς ἀνὴρ καὶ ἱστορικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τὴν 7 Ἀπριλίου 1859 ἐν Μόσχᾳ. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς νομικά, εἶτα δὲ φιλολογίαν καὶ διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς γενετείρας του πόλεως. Ἡ μαχητική του ὅμως ἰδιοσυγκρασία καὶ αἱ ἀναρχικαὶ ἰδέαι του προεκάλεσαν τὴν ἐπ' αὐτοῦ ἐπαγρύπνησιν τῆς ἀστυνομίας, ἐξ οὗ καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταλίπῃ τὴν Ρωσίαν καὶ νὰ μεταβῇ εἰς Σόφιαν, εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς ὁποίας ἐδίδαξεν ἱστ ρίαν. Κατεχόμενος ὑπὸ τῶν ἰδεῶν τῶν Σλαβοφίλων, ἐθεώρει ὅτι εἰς τὴν Ρωσίαν ἀνῆκεν ἡ Κωνσταντινούπολις, συνέταξε δὲ μακρὰν ἔκθεσιν, δι' ἧς ἐπεχείρει ν' ἀποδείξῃ ὅτι τῆς Μακεδονίας ὁ πληθυσμὸς ἦτο κατὰ μεγάλην πλειοψηφίαν βουλγαρικός. Ἀπελθὼν ἐκ Βουλγαρίας μετέβη εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς, ὅπου ἐδίδαξεν ἐπί τινα χρόνον ἱστορίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Σικάγου. Ὅταν, μετὰ τὴν ἧτταν τῆς Ρωσίας κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον καὶ τὰς ἐκραγείσας ἐπαναστάσεις τοῦ Ὀκτωβρίου 1905, ἐχορηγήθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Α′ συνταγματικὸν πολίτευμα, ὁ Μιλιούκωφ ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν πρώτην ἐθνοσυνέλευσιν, καθὼς καὶ εἰς τὰς μετέπειτα δούμας (βουλάς), διαπρέψας ὡς ῥήτωρ καὶ γενόμενος ἀρχηγὸς τοῦ πολιτικοῦ κόμματος τῶν Καντέ.

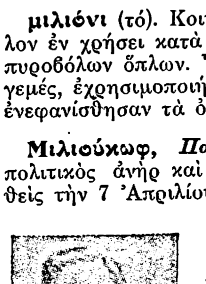

*Παῦλος Νικ. Μιλιούκωφ.*

Αἱ ῥωσικαὶ αὗται βουλαὶ διελύοντο ἡ μία μετὰ τὴν ἄλλην ὡς ἐκ τῶν φιλελευθέρων φρονημάτων αὐτῶν. Τῷ 1912 ἐγένοντο ἐκλογαὶ διὰ τὴν τετάρτην δούμαν, ἀποτελεσθεῖσαν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὑπὸ μετριοπαθῶν ἀντιπροσώπων. Τὸ κράτος ἐπανῆλθεν οὕτω εἰς τὴν μοναρχικὴν τάξιν καὶ ἡ ἐθνικὴ ἀντιπροσωπεία ἀπέβη ἁπλοῦν κόσμημα τῆς παλαιᾶς ἀπολυταρχίας. Τοιαύτη ἦτο ἡ κατάστασις ἐν Ρωσίᾳ ὅτε ἐξερράγη ὁ Παγκόσμιος πόλεμος. Ἡ κακίστη ὀργάνωσις τοῦ ῥωσικοῦ στρατοῦ, ὁ ἄθλιος ἐπισιτισμὸς τῆς χώρας, αἱ αὐθαιρεσίαι τῆς αὐλῆς καὶ αἱ καταχρήσεις μελῶν τινων τῆς κυβερνήσεως ἐξήγειραν τὸ γενικὸν φρόνημα καὶ ἡ δοῦμα ἐζήτησε τὸν διορισμὸν κυβερνήσεως ὑπευθύνου ἐνώπιον τῆς Βουλῆς. Εἰς τὴν τοιαύτην πολιτικὴν κίνησιν ὁ Μιλιούκωφ ἠγωνίσθη ἐν τῇ πρώτῃ γραμμῇ, ἀλλ' ὁ αὐτοκράτωρ Νικόλαος Β′, κωφεύων εἰς τὰς ἐπικλήσεις ταύτας τῆς βουλῆς, δὲν ἐδέχετο τὴν μεταβολὴν τοῦ παλαιοῦ καθεστῶτος, ἐκ τούτου δὲ προεκλήθη ἡ ἐπανάστασις καὶ τὴν 28 Φεβρουαρίου ἐσχηματίζετο προσωρινὴ κυβέρνησις ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ πρίγκιπος Λβώφ, ἐξαναγκαζομένου τοῦ αὐτοκράτορος εἰς παραίτησιν. Ὁ Μιλιούκωφ ἀνέλαβε τότε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Ἡ πολιτικὴ τὴν ὁποίαν ἠκολούθει δὲν συνεβιβάζετο πρὸς τὰς σοσιαλιστικὰς ἀρχὰς τῶν λοιπῶν δημοκρατικῶν κομμάτων, ἡ δὲ ἀντίθεσις αὕτη ἐνέκειτο οὐχὶ εἰς τοὺς σκοπούς, τοὺς ὁποίους ἐπεδίωκε νὰ πραγματοποιήσῃ ὁ Μιλιούκωφ, ἀλλ' εἰς τὰς μεθόδους, τὰς ὁποίας ἐξέλεξεν ὅπως φθάσῃ εἰς αὐτούς. Αἱ καθημεριναὶ αὐτοῦ δηλώσεις ἐπὶ τοῦ ζητήματος τῆς κατοχῆς τῶν Δαρδανελλίων ὑπὸ τῆς Ρωσίας, αἱ περὶ τῆς ἀνυψώσεως τοῦ σταυροῦ ἐπὶ τοῦ θόλου τῆς Ἁγίας Σοφίας καὶ τῆς ἐξακολουθήσεως τοῦ πολέμου μέχρι τελείας νίκης, ἐξήγειραν τὸ παντοδύναμον σοβιὲτ τῆς Πετρουπόλεως, ὅπερ ἐζήτει γενικὴν εἰρήνην ἄνευ κατακτήσεων καὶ πολεμικῶν ἀποζημιώσεων, αἱ δὲ προκληθεῖσαι αἱματηραὶ σκηναὶ τῆς 3 καὶ 4 Μαΐου 1917 ἐν Πετρουπόλει μετέβαλον τὴν σύστασιν τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως καὶ ὁ Μιλιούκωφ ἠναγκάσθη νὰ μὴ μετάσχῃ τῆς νέας τοιαύτης. Μετὰ τὴν ἐπικράτησιν τοῦ Λένιν ἐφυγαδεύθη εἰς Γερμανίαν, εἶτα δὲ διέτριψεν ἐπὶ μικρὸν εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἐδίδαξεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον περὶ τῆς ἱστορίας καὶ τοῦ πολιτισμοῦ τῶν Ρώσων. Ἀπὸ τοῦ 1919 ἐγκατασταθεὶς εἰς Παρισίους συμπράττει μετὰ τῶν Γάλλων σοσιαλιστῶν καὶ ἐκδίδει τὴν ἐφημερίδα τὰ «Τελευταῖα Νέα», ἐδημοσίευσε δὲ καὶ δίτομον ἔργον περὶ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1917. Θ. Β.

**μιλιούνι** (τό), καὶ *μελεούνι*· δημοτ., ἓν ἑκατομμύριον (ἐκ τοῦ ἰταλ. milione)· ‖ καθόλου, μέγας ἀριθμός, ἀνυπολόγιστος, ἀμέτρητον πλῆθος· ‖ εὐχ. «μελεούνια νὰ ἀποχτήσῃς».

**μιλιοῦσα** (ἡ) (Miliusa) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀνωνοειδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἰθαγενῆ τῶν ἀσιατικῶν χωρῶν καὶ ἰδίως τῆς Κοχιγκίνας. Δ. Ν. Π.

**Μιλιούτιν**, ***Δημήτριος Ἀλεξίγεβιτς***, *κόμις* —. Ρῶσος στρατηγός, πολιτικὸς καὶ ἱστορικὸς (1816—1912). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν τῆς Πετρουπόλεως, εἰς τὴν ὁποίαν ἐδίδαξε βραδύτερον, εἶτα διετέλεσεν ἐπιτελάρχης τοῦ στρατοῦ τοῦ Καυκάσου καὶ ἀπὸ τοῦ 1861 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, ὁπότε εἰσήγαγε πλείστας μεταρρυθμίσεις εἰς τὸν ῥωσικὸν στρατόν, ἐν αἷς καὶ τὴν γενικὴν στρατολογίαν. Τῷ 1881 διωρίσθη μέλος τοῦ συμβουλίου τῆς αὐτοκρατορίας καὶ ἐπίτιμος πρόεδρος τῆς στρατιωτικῆς Ἀκαδημίας. Ὁ αὐτοκράτωρ Ἀλέξανδρος ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος καὶ ὁ Νικόλαος Β′ τὸν βαθμὸν τοῦ στρατάρχου (1898). Συνέγραψε διάφορα ἱστορικὰ ἔργα, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ ἄριστα εἶναι: «Ἀφηγήσεις τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ πολέμου τοῦ Δαγεστὰν τῷ 1830», εἰς δύο τόμους, «Ἱστορία τοῦ πολέμου τῆς Ρωσίας μετὰ τῆς Γαλλίας τῷ 1799» εἰς πέντε τόμους, «Ἱστορία τοῦ ἀνατολικοῦ πολέμου» κτλ. Θ. Β.

**μιλιταρισμὸς** (ὁ) (militarismus)· ἡ τάσις, ὅπως ἡ ὠργανωμένη καὶ δὴ ἡ στρατιωτικὴ βία καθορίζῃ τὴν πολιτικὴν μιᾶς χώρας, ἄλλως *στρατοκρατία*· ἀντίθετον *ἀντιμιλιταρισμός*.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *στρατοκρατία*.

Digitized by Google

**μιλιταριστὴς** (ὁ)· ὁ ἀσπαζόμενος τὸν μιλιταρισμὸν ὡς πολιτικὸν σύστημα, ἄλλως *στρατοκράτης* ἢ *στρατοκρατικός*.

**Μίλιτσα.** Σύζυγος τοῦ βασιλέως τῆς Σερβίας Λαζάρου Γκρμπλιάνοβιτς· λαβοῦσα βραδύτερον ὡς μοναχὴ τὸ ὄνομα *Εὐγενία* (βλ. λ.).

**Μιλίτσεβιτς.** Σέρβος πατριώτης (βλ. λ. *Λουνιεβίτσα*).

— **Μιλίτσεβιτς,** ***Μιλᾶνος.*** Σέρβος συγγραφεὺς (1831—1908), ἀσχοληθεὶς κυρίως εἰς παιδαγωγικὰ καὶ ἐθνολογικὰ ζητήματα. Ἔγραψεν: «Ἡ ἡγεμονία τῆς Σερβίας», «Ἡ ζωὴ τῶν Σέρβων χωρικῶν» κ.ἄ., καθὼς καὶ τόμον διηγημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Χειμωνιάτικα βράδια». Τ. Β.

**Μὶλλ** (Mill), ***Ἰάκωβος.*** Ἄγγλος ἱστορικὸς καὶ φιλόσοφος (1773—1836). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου, ὅπου ἀφωσιώθη κατ' ἀρχὰς εἰς ἱστορικὰς καὶ φιλοσοφικὰς μελέτας, τῷ δὲ 1802 μετέβη εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἤρχισε συνεργαζόμενος εἰς διαφόρους ἐπιθεωρήσεις. Τῷ 1806 ἤρχισε συγγράφων τὴν «Ἱστορίαν τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν», τὴν ὁποίαν ἐπεράτωσε καὶ ἐξέδωκε τῷ 1818. Τῷ 1824 ἵδρυσε τὴν «Ἐπιθεώρησιν τοῦ Οὐεστμίνστερ», ἐν ᾗ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἄρθρα καὶ μελέτας. Τῷ 1821 ἐξέδωκε τὰ «Στοιχεῖα πολιτικῆς οἰκονομίας», ἔργον ὅπερ ἐνεποίησε μεγίστην ἐντύπωσιν καὶ ἔσχε πολλὰς ἐκδόσεις. Τῷ 1829 ἐδημοσίευσε τὸ σημαντικώτερον τῶν φιλοσοφικῶν του ἔργων «Ἀνάλυσις τῶν φαινομένων τοῦ ἀνθρωπίνου νοῦ». Τὸ τελευταῖόν του ἔργον «Fragment on Mackintosh» ἐκδοθὲν τῷ 1835, ἀπετέλεσε κριτικὴν τῆς φιλοσοφίας τοῦ Μάκκιντος. Ὁ Μὶλλ ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Βένθαμ, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξε συνεργάτης καὶ ἐκλαϊκευτὴς τῶν ἔργων καὶ ὃν ἠκολούθησε δουλικώτατα εἰς τὰς φιλοσοφικὰς καὶ ἰδίως τὰς ἠθικὰς καὶ οἰκονομικὰς ἰδέας. Ἐν τῇ ψυχολογίᾳ ἠκολούθησε τὸν Δαβὶδ Χάρτλυ, περιορίζων τοὺς τρεῖς νόμους τοῦ συνειρμοῦ τῶν ἰδεῶν τοῦ Χιοὺμ εἰς ἕνα μόνον, τὸν τῆς συνεχείας ἐν τῷ διαστήματι καὶ τῷ χρόνῳ. Ἐν τῇ πολιτικῇ ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τοῦ «φιλοσοφικοῦ ριζοσπαστισμοῦ», ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν δὲ τῶν ἰδεῶν τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως εἰργάσθη πρὸς ἐπέκτασιν τοῦ δικαιώματος τῆς ψήφου καὶ πρὸς ἐπικράτησιν τῶν φιλελευθέρων ἀρχῶν, συντελέσας τὰ μέγιστα εἰς τὴν διαμόρφωσιν τῶν πολιτικῶν θεσμῶν, οἵτινες ἐπεκράτησαν ἐν Ἀγγλίᾳ κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ'. Μ. Δ. Β.

—**Μὶλλ** (Mill), ***Οὖγος Ροβέρτος.*** Ἄγγλος γεωγράφος καὶ μετεωρολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ἐσπούδασε ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου καὶ τῷ 1884 διωρίσθη εἰς τὴν σκωτικὴν ναυτικὴν ὑπηρεσίαν, κατόπιν δὲ εἰργάσθη διὰ λογοριασμὸν τῆς «Βρεττανικῆς γεωγραφικῆς ἑταιρείας», τῆς ὁποίας ἐγένετο γραμματεὺς καὶ τῷ 1927 πρόεδρος. Ἐγένετο ἐπίσης πρόεδρος τῆς «Βρεττανικῆς βασιλικῆς μετεωρολογικῆς ἑταιρείας» καὶ ἔλαβε μέρος εἰς πλεῖστα συνέδρια καὶ ἐπιτροπὰς πρὸς συζήτησιν γεωγραφικῶν καὶ μετεωρολικῶν ζητημάτων. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Τὸ βασίλειον τῆς φύσεως» (1892), «Αἱ ἀγγλικαὶ λίμναι» (1895), «Νέαι χῶραι» (1900), «Ὁ Νότιος Πόλος» (1905), «Διεθνὴς γεωγραφία» (1911). Μ. Δ. Β.

—**Μὶλλ** (Mille), ***Πέτρος.*** Γάλλος πεζογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1864. Ἐταξίδευσε πολὺ καὶ ἔγραψε διάφορα μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, ἐν οἷς: «Barnavaux», «Caillou et Tili», «Ὁ Μονάρχης». Ι. Μ. Τ.

— **Μὶλλ** (Mill), ***Τζὼν-Στούαρτ.*** Ἄγγλος φιλόσοφος (1806—1873), ἀνήκων εἰς τὴν σειρὰν τῶν ἐμπειριοκρατικῶν τῆς Ἀγγλίας, οἷοι οἱ Βάκων, Μπέρκλεϋ, Hume. Ἤδη ὡς παῖς διεκρίνετο διὰ τὴν πρόωρον αὐτοῦ πνευματικὴν ἀνάπτυξιν καὶ διὰ τὴν πολυγνωσίαν, εἰς ἣν συνέβαλε μεγάλως ὁ πατὴρ αὐτοῦ, ὅστις ὅμως ἀπέκλεισεν ἐντελῶς τὴν θρησκευτικὴν ἀγωγὴν καὶ τὴν ἐξ αὐτῆς ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ υἱοῦ του. Ὁ Μὶλλ προσῳκειώθη τὴν ὠφελιμαρχικὴν θεωρίαν τοῦ Βένθαμ, πρὸς ὃν ἦλθεν εἰς στενὴν ἐπαφήν, ὡς δὲ ὁ ἴδιος λέγει, δὲν εὗρε μὲν αὐτὸς τὸν ὅρον *ὠφελιμαρχία*, ἀλλ' ὅμως συνετέλεσεν ὅσον οὐδεὶς ἄλλος εἰς τὴν διάδοσιν αὐτοῦ καὶ τῆς κατευθύνσεως, τὴν ὁποίαν ἐκφράζει οὗτος. Κύριον ἔργον τοῦ φιλοσόφου τούτου εἶναι τὸ «Σύστημα ἐπαγωγικῆς καὶ ἀπαγωγικῆς λογικῆς». Τὸ βιβλίον τοῦτο διδάσκει τὸν ἄκρον ἐμπειρισμὸν καὶ καταπολεμεῖ ὀξέως πᾶσαν ἐκ τῶν προτέρων φιλοσοφίαν καὶ πᾶσαν μεταφυσικήν. Ὁ Μὶλλ πειρᾶται νὰ μεταφέρῃ τὴν μέθοδον τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν ἐπὶ τὴν κοινωνιολογίαν, τελῶν ἐν τούτῳ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς θετικοφροσύνης ἐν Γαλλίᾳ A. Komte, τοῦ ὁποίου τὰ ἔργα ἐμελέτησεν ἐπιμελῶς καὶ πρὸς τὸν ὁποῖον διετήρει ἀλληλογραφίαν. Δὲν εἶναι παράδοξον διὰ τοῦτο

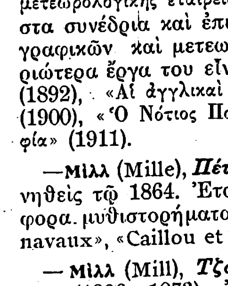

*Τζὼν-Στούαρτ Μίλλ.*

ὅτι ἐγένετο ἐν Ἀγγλίᾳ διαπρύσιος κήρυξ τῆς θετικῆς φιλοσοφίας καὶ ὁ κατ' ἐξοχὴν ἐκπρόσωπος αὐτῆς. Ὁ Γλάδστων ὠνομάζει αὐτὸν τὸν «ἅγιον τοῦ ὀρθολογισμοῦ», ὁ δὲ Καρλάϋλ εἰρωνεύεται αὐτὸν ὡς τὸν «νοησιαρχικὸν φανατικόν», ὅστις ἐπιβλέπει τὸν «μύλον τοῦ λογικοῦ». Ἀλλ' ὁ Μὶλλ δὲν παρέμεινε μέχρι τέλους πιστὸς εἰς τὰς ἀρχὰς τῆς θετικοφροσύνης. Ἓν ἔτος μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ εἶδον τὸ φῶς τρεῖς πραγματεῖαί του (1884), φέρουσαι τοὺς χαρακτηριστικοὺς τίτλους: «Φύσις», «Ὠφελιμότης τῆς θρησκείας» καὶ «Θεϊσμός». Ἐν τῇ δευτέρᾳ αὐτῶν ὑποστηρίζει ὁ Μίλλ, πρὸς μεγάλην ἔκπληξιν τῶν ὀπαδῶν του καὶ ἐναντίον τῆς ἐκπεφρασμένης αὐτοῦ γνώμης περὶ τοῦ ἀχρήστου τῆς θρησκείας, τὴν μεγάλην ἐξ αὐτῆς ὠφέλειαν διὰ τὸν ἠθικὸν καὶ κοινωνικὸν βίον, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ εἰσέρχεται εἰς τὸ ζήτημα τῆς ἀληθείας αὐτῆς. Ἡ τρίτη πραγματεία διδάσκει τὴν ὕπαρξιν τοῦ θεοῦ καὶ προσπαθεῖ νὰ συμβιβάσῃ αὐτὴν πρὸς τὸ γεγονὸς ὅτι ἡ ὕπαρξις καθόλου εἶναι πόνος καὶ δυστυχία. Τοῦτο κατορθώνει ὁ Μὶλλ δεχόμενος ὅτι εἶναι μὲν ὁ θεὸς πανάγαθος καὶ πλήρης ἀγάπης πατήρ, ἀλλ' οὐχὶ καὶ παντοδύναμος. Ἐν τῇ πολιτικῇ ἐχρημάτισεν ὁ Μὶλλ ἐκπρόσωπος τῶν φιλελευθέρων ἀρχῶν καὶ τῶν δημοκρατικῶν ἰδεῶν, ἐκηρύχθη δὲ ὑπὲρ τῆς ἰσοπολιτείας καὶ ἰσονομίας τῆς γυναικὸς καὶ ὑπὲρ τοῦ δικαιώματος αὐτῆς ἐπὶ τὴν ἀνωτέραν μόρφωσιν.

Ἐν τῇ οἰκονομικῇ διδασκαλίᾳ τοῦ Μὶλλ κορυφοῦται ἡ κλασσικὴ θεωρία εἰς ἑνιαῖον συστηματικὸν σύνολον, ἐν τῷ ὁποίῳ διὰ πρώτην φορὰν συγκεντροῦνται πλήρως τὰ μέχρι τότε πορίσματά της καὶ ἐκτίθεται μεθοδικῶς ὁ συνειρμὸς τῶν οἰκονομικῶν λειτουργιῶν ὑπὸ τὸ κράτος τῶν οἰκονομικῶν νόμων. Ἐν τῇ οἰκονομικῇ πολιτικῇ ὁ Μὶλλ εἶναι ὑπέρμαχος τῆς ἐλευθερίας τῶν συναλλαγῶν καὶ τοῦ διεθνοῦς ἐμπορίου· ἀναγνωρίζει ἐν τούτοις τὴν ἀνάγκην τῆς κοινωνικῆς προστασίας τῶν συμφερόντων τῆς ἐργατικῆς τάξεως καὶ ἀποδέχεται τὸ δεδικαιολογημένον σοσιαλιστικῶν τινων θεωριῶν. Ἐπ τῶν οἰκονομολογικῶν του ἔργων διακρίνονται: «Principles of Political Economy» (1848), ἐγχειρίδιον εὐρέως διαδοθὲν καὶ σπουδαίαν ἐπίδρασιν ἐξασκῆσαν, καὶ «Essays on some rinsettled questions of Political Economy» (1844, β' ἔκδ. 1874).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ *Saenger*, John Stuart Mill (1901).—*Alexander*, J. St. Mill und der Empirismus (1927).

Ν. Λ.—Α. Α. Τ.

**μίλλα** (ἡ)· ἀντὶ *μύλα* (βλ. λ.).

**Μιλλαῖκερ** (Milloecker), ***Κάρολος.*** Αὐστριακὸς συνθέτης μελοδραματίων (1842—1899). Ἐπὶ πολλὰ ἔτη διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν τῷ θεάτρῳ «Ἂν ντὲρ Βὶν» τῆς Βιέννης, ἔγραψε μεγάλον ἀριθμὸν μελοδραματίων, λεπτῶν καὶ ἐπιχαρίτων, ἐν τοῖς ὁποίοις ἀναζῇ τὸ γοητευτικὸν ὕφος τῆς βιενναίας ὀπερέττας. Ἐκ τούτων τὰ γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἄρτεμις», «Ἡ νῆσος τῶν γυναικῶν», «Ἕνας τυχοδιώκτης στὴ Βιέννη», «Τρία ζευγάρια παπούτσια», «Ἡ μουσικὴ τοῦ διαβόλου», «Τὸ καταραμένο παλάτι», «Κόμισσα Ντουμπαρρύ», «Ἡ παρθένος τοῦ Μπελβίλ», «Ὁ ζητιᾶνος φοιτητής», «Ὁ στρατιωτικὸς ἱερεύς», «Γκασπαρόνε», «Ὁ κλέπτης», «Ὁ ἀντιναύαρχος», «Ὁ φτωχὸς Ἰωνάθαν», «Τὸ δοκιμαστικὸ φιλί» κλπ. Ἐκτὸς τῶν ὀπερεττῶν ὁ Μιλλαῖκερ ἔγραψε πλεῖστα κωμειδύλλια, χοροὺς κτλ. Γ. Σ.

**Μίλλαις** (Millais), ***σὲρ Τζὼν Ἔβερεττ.*** Ὀνομαστὸς Ἄγγλος ζωγράφος (1829—1896). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Λονδίνῳ Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν Τεχνῶν, ἀπεδείχθη δὲ πρωϊμώτατα πεπροικισμένος διὰ πλουσίου ταλάντου, βραβευθεὶς εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν δι' ἀργυροῦ καὶ εἰς ἡλικίαν 18 ἐτῶν διὰ χρυσοῦ μεταλλίου. Διετέλεσε διευθυντὴς τῆς προμνημονευθείσης Λονδινείου Ἀκαδημίας. Ἡ μεγίστη σημασία τοῦ ἔργου τοῦ Μίλλαις ἔγκειται κυρίως εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι τοῦτο ἀποτελεῖ τὴν σοβαρωτέραν καλλιτεχνικὴν ἐπανάστασιν κατὰ τοῦ ξηροῦ ἀκαδημαϊσμοῦ, ὅστις εἶχεν ἀπονεκρώσει διὰ τῆς συμβατικότητός του τὴν ἀγγλικὴν τέχνην κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ὁ Μίλλαις ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τῶν Hunt καὶ Rossetti ὕψωσε τὴν σημαίαν τῆς ἀντιδράσεως κατὰ τῆς παρηκμακυίας καὶ θνησιμαίας ταύτης τεχνοτροπίας καὶ ἐδημιούργησε τὴν λαμπρὰν σχολὴν τῶν «προρραφαηλιτῶν», οἵτινες ὁμολογουμένως ἐπροίκισαν τὴν ἀγγλικὴν τέχνην καὶ ποίησιν μὲ σελίδας καὶ συνθέσεις πλήρεις εἰλικρινοῦς αἰσθήματος καὶ ἰδεαλισμοῦ ἀπηλλαγμένου ξηρότητος, ἀπορρέοντος δ' ἐξ ἀληθοῦς ἐξάρσεως καὶ πηγαίας συγκινήσεως. Ὁ Μίλλαις διεκρίθη διὰ τὴν θέρμην, μεθ' ἧς ὑπερήσπισε τὰς νέας τάσεις, ἂν ὄχι διὰ τὴν ἀφοσίωσίν του εἰς αὐτάς, διότι, ὡς παρατηρεῖ ὁ S. Reinach (Apollo, σελ. 313), «ἀπεμακρύνθη βραδύτερον τοῦ ὁμίλου τῶν προρραφαηλιτῶν διὰ νὰ καταστῇ εἷς καλὸς ἀστὸς ζωγράφος». Μεταξὺ τῶν ἀπειροπληθῶν ἔργων τοῦ Μίλλαις σημειοῦμεν τ' ἀκόλουθα: «Ὁ Πιθάρρο συλλαμβάνων τοὺς Ἴνκας τοῦ Μεξικοῦ», «Ἡ βασίλισσα Elgiva παραδιδομένη εἰς τοὺς ἀπεσταλμένους τοῦ Dunstan», «Τὸ δηνάριον τῆς χώρας», «Ἰσαβέλλα» (πίναξ ἐμπνευσμένος ἐξ ἔργου τοῦ Τζὼν Κήτς), «Φερδινάνδος καὶ Ἄριελ», «Ἡ παιδικὴ ἡλικία τοῦ Χριστοῦ», «Ἡ κόρη τοῦ ὑλοτόμου», «Μαριάννα», «Ἡ ἐπάνοδος ἀπὸ τὴν ἑορτὴν τοῦ τόξου», «Ὀφηλία», «Ἐπεισόδιον ἐκ τοῦ βίου τοῦ ἁγίου Βαρθολομαίου», «Ὁ προγεγραμμένος βασιλόφρων», «Προσωπογραφία τοῦ Ράσκιν», «Ἡ κοιλὰς τῆς ἀναπαύσεως», «Φθινοπωρινὰ φύλλα», «Ἀνθισμένες μηλιές», «Ἡ ἀγρυπνία τῆς ἁγίας Ἁγνῆς», «Ὁ Σατανᾶς σπείρων τὰ ζιζάνια», «Οἱ Ρωμαῖοι ἐγκαταλείποντες τὴν Μεγάλην Βρεττανίαν», «Ὁ παλιὸς κῆπος». Ἐνιαχοῦ τῶν πινάκων του τούτων ἡ προρραφαηλιτικὴ ἀρχαϊκότης τοῦ Μέλλαις διασπᾶται ἀπὸ ζωηρὸν καὶ νευρώδη ρεαλισμόν, ὅστις προσθέτει ὅλως ἰδιάζον θέλγητρον εἰς τὰς συνθέσεις του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *H. Spielmann*, J.-Ev. Millais (Revue de l'Art, 1903, I, σελ. 33).—*M. Darmesteter*, Millais (Gazette, 1897, II, σελ. 89).

Ι. Μ. Π.

**Μίλλαρ** ***Γκύμπλερ*** (Millard Gübler) ***συνδρομή*** — *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ἐπαλλάσσουσα γεφυρικὴ ἡμιπληγία, ἡ συνισταμένη εἰς περιφερικὴν παράλυσιν τοῦ ἑνὸς προσωπικοῦ, μετὰ παραλύσεως τοῦ ἀντιθέτου ἄνω καὶ κάτω ἄκρου (δεξιοῦ φέρ' εἰπεῖν προσωπικοῦ καὶ ἀριστερῶν ἄκρων, ἤ, ἀντιστρόφως, ἀριστεροῦ προσωπικοῦ καὶ δεξιῶν ἄκρων). Ὀφείλεται δ' ἡ τοιαύτη παράλυσις εἰς τὸ ὅτι εἰς τὴν γέφυραν ἀπέληξαν ἤδη αἱ μετωπογεφυρικαὶ ἶνες (διὰ τὸ προσωπικὸν) χιασθεῖσαι, ἐνῷ αἱ λοιπαὶ πυραμιδικαὶ ἶνες (διὰ τὰ ἄκρα) ἐξακολουθοῦσι φερόμεναι ἀχίαστοι μέχρι τοῦ προμήκους. Τὴν συνδρομὴν ταύτην, οὖσαν καθαρῶς ἀνατομικήν, δύναται συνεπῶς νὰ προκαλέσῃ πᾶσα ἀλλοίωσις προσβάλλουσα τὴν ρηθεῖσαν γεφυρικὴν χώραν, καθ' ὃ μέρος τὸ πυραμιδικὸν δεμάτιον πρόσκειται εἰς τὸν πυρῆνα ἢ τὴν ἐνδογεφυρικὴν μοῖραν τοῦ προσωπικοῦ νεύρου. Συνηθέστερον αἴτιον εἶναι ἡ ἀρτηριοσκλήρυνσις, εἴτε διὰ μαλακύνσεως, εἴτε δι' αἱμορραγίας, ἐν τῇ γεφύρᾳ, καὶ δὴ τῇ ρηθείσῃ χώρᾳ αὐτῆς ἐντοπιζομένων, ἔπειτα ἡ σύφιλις, αἱ ἐμβολαὶ τῶν καρδιοπαθῶν, οἱ ὄγκοι, καὶ ἐν γένει πᾶσα ἀλλοίωσις περιοριζομένη εἰς τὴν ἐν λόγῳ χώραν. Ἀνάλογος εἶναι καὶ ἡ πρόγνωσις, εἰ καὶ ἀείποτε ἡ ἡμιπληγία εἶναι ἀνίατος, παρεκτὸς τῆς συφιλιδικῆς καὶ ταύτης ἐν ἀρχῇ μόνον θεραπευομένης. Τ. Α. Ζ.

**Μιλλαρντὲ** (Millardet), ***Πέτρος - Μαρία - Ἀλέξιος.*** Γάλλος βοτανικὸς καὶ φυτοπαθολόγος (1838—1902). Ἐσπούδασεν ἐν ἀρχῇ ἰατρικήν, ἀλλ' ἡ κλίσις του πρὸς τὰς φυτολογικὰς ἐρεύνας ἦτο τόση, ὥστε, ἁπλοῦς φοιτητὴς ἀκόμη, εἶχε γίνει δεκτὸς εἰς τὴν Βοτανικὴν ἑταιρείαν τῆς Γαλλίας. Ἐγένετο ἐν ἀρχῇ βοηθὸς καὶ συνεργάτης τοῦ διαπρεποῦς βοτανικοῦ Montagne, βραδύτερον δὲ ἐσυνέχισε τὰς φυτολογικὰς σπουδάς του ἐν Γερμανίᾳ ἐπὶ τετραετίαν. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν τῷ 1869 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς Βοτανικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Στρασβούργου καὶ τῷ 1876 τακτικὸς καθηγητὴς τοῦ ἰδίου μαθήματος εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Βορδώ. Ἔκτοτε ἐπεδόθη ἰδιαιτέρως εἰς τὴν ἐφηρμοσμένην βοτανικὴν καὶ εἰδικώτερον ἔτι εἰς τὴν φυτοπαθολογίαν τῆς ἀμπέλου. Τὸ ἔργον του διὰ τὴν πρόληψιν καὶ καταπολέμησιν τῶν νόσων, αἵτινες τόσας συχνὰς καὶ μεγάλας καταστροφὰς ἐπιφέρουν εἰς τὴν ἀμπελουργίαν, ὑπῆρξεν αὐτόχρημα εὐεργετικόν. Δι' ὃ καὶ οἱ Γάλλοι ἀμπελοκτήμονες, εἰς ἔνδειξιν εὐγνωμοσύνης διὰ τὰς ὑπηρεσίας του ταύτας, ἀνήγειραν εἰς αὐτὸν μετὰ τὸν θάνατόν του μεγαλοπρεπὲς μνημεῖον ἐν Βορδὼ (1914).

**Μιλλ'βουὰ** (Millevoye), ***Κάρολος - Οὐμβέρτος.*** Γάλλος ποιητὴς τῆς ρωμαντικῆς σχολῆς (1782—1816), τοῦ ὁποίου τὰ ἔργα ἐσημείωσαν ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν κατὰ τὴν ἐποχήν των, ἐξηκολούθησαν δὲ καὶ ἐπὶ μακρὸν μετέπειτα νὰ θεωροῦνται ὡς ἀριστουργήματα τρυφερᾶς καὶ μελαγχολικῆς ἐμπνεύσεως. Ὁ Μιλλ'βουά, γεννηθεὶς ἐν Abbeville, διῆλθε τὴν παιδικήν του ἡλικίαν ἐν Παρισίοις, ὅπου, μετὰ τὰς ἐγκυκλίους αὐτοῦ σπουδάς, ἀνέλαβεν ἐργασίαν εἰς βιβλιοπωλεῖον. Δεκαοκταετὴς μόλις ἐδημοσίευσε τὰ πρῶτά του ποιήματα, ἐν οἷς τὸν «Θάνατον τοῦ ποιητοῦ» καὶ τὴν «Πτῶσιν τῶν φύλλων», διαπνεόμενα ἀπὸ βαθεῖαν μελαγχολίαν νοσηροῦ τύπου, ἥτις ἐν τούτοις ἐνηρμονίζετο πρὸς τὰς προτιμήσεις τοῦ πολλοῦ κοινοῦ, ἐπηρεασμένου ἀπὸ τὴν ποίησιν τοῦ Ἀνδρέα Σενιὲ καὶ τῶν ἄλλων ρωμαντικῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Ἀπὸ τοῦ 1804 μέχρι τοῦ 1812 ὁ Μιλλ'βουὰ ἐκέρδισε πολλὰ ποιητικὰ βραβεῖα τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, τὰ ὁποῖα καὶ εὐμάρειαν τοῦ προσεπόρισαν καὶ εὐρυτάτην φήμην. Ἐκ τῶν ρωμαντικῶν του συνθέσεων ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: ἡ «Δανάη», ὁ «Ὅμηρος ἐπαίτης», ἡ «Μητρικὴ ἀγάπη» κ. ἄ. Μὲ ὀλιγωτέραν ἐπιτυχίαν ἔγραψε καὶ ἡρωϊκὰ ποιήματα, ἐν οἷς: «Ὁ Καρλομάγνος εἰς τὴν Παυΐαν», «Ἀλφρέδος ὁ βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας», «Ἡ πανώλης τῆς Μασσαλίας» κλπ., καθὼς καὶ μίαν λυρικὴν σύνθεσιν, τὴν «Σουλαμίτιδα» κατ' ἀπομίμησιν τοῦ «Ἄσματος τῶν ᾀσμάτων». Παρὰ τὴν μεγάλην ἐκτίμησιν καὶ συμπάθειαν, τὴν ὁποίαν τὸ ἔργον τοῦ Μιλλ'βουὰ διετήρησε μέχρι καὶ πέραν τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἡ νεωτέρα κριτικὴ δὲν εὑρίσκει εἰς αὐτὸ πραγματικὸν ποιητικὸν αἴσθημα, ἀλλὰ στιχουργικὴν μόνον ἱκανότητα εἰς ἀπόδοσιν μελαγχολικῶν ἐμπνεύσεων, μὴ ἀπεχουσῶν τῆς κοινοτοπίας.

Digitized by Google

*'Ιωάν. Μιλλέ: 1) Αἱ σταχυοσυλλέκτριαι. 2) Ὁ ἑσπερινός.* [Μουσεῖον Λούβρου].

Ἐκ τῶν ποιημάτων του ἀρκετὰ μετεφράσθησαν καὶ εἰς τὴν ἑλληνικήν, ἰδίως δὲ ἡ «Πτῶσις τῶν φύλλων» κατ' ἐπανάληψιν. —Ω.

**Μιλλὲ** (Millet), ***Αἰμέ.*** Γάλλος γλύπτης καὶ σχεδιαστὴς (1819—1891), υἱὸς τοῦ ζωγράφου *Φρειδερίκου Μιλλὲ* (βλ. κατωτ.). Κατ' ἀρχὰς ἐγένετο γνωστὸς ὡς σχεδιαστὴς δι' ἐξαιρέτων ἔργων, ἐν οἷς «Ἡ ἁγία Ἄννα καὶ ἡ ἁγία Μαρία» (κατὰ τὸν Ραφαήλ), «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» (κατὰ τὸν Ριμπέρα), «Ἡ Τζιοκόντα» (κατὰ τὸν ντὰ Βίντσι) κλπ. Βραδύτερον, ἀφοσιωθεὶς ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν γλυπτικήν, παρήγαγε μακρὰν σειρὰν ἐξόχων ἔργων, ἐκ τῶν ὁποίων μνημονεύομεν ἐνταῦθα τὰ ἑξῆς: «Βαχχίς», «Νάρκισσος», προτομὴ τοῦ Γκαϊ-Λυσσάκ, «Ἡ Ἀριάδνη» (ἓν τῶν γνωστοτέρων του ἔργων), «Ὁ Βερκιγγετόριξ», «Ἡ νεότης ἀποφυλλίζουσα ρόδα» (ἐπὶ τοῦ τάφου τοῦ Ἑρρίκου Μυρζέ), «Ἀπόλλων», «Γεωργία Σάνδη», τὸ μνημεῖον τοῦ Μπωντὲν ἐν τῷ κοιμητηρίῳ Πὲρ-Λασαὶζ κλπ. Ι. Μ. Π.

—**Μιλλὲ** (Millet), ***Γαβριήλ.*** Γάλλος ἀρχαιολόγος, εἰδικευθεὶς εἰς τὴν βυζαντιολογίαν. Ἐγεννήθη ἐν Σενεγάλῃ τῷ 1867, ἐσπούδασε δὲ τὴν ἀρχαιολογίαν ἐν Γαλλίᾳ. Γενόμενος ἑταῖρος τῆς ἐν Ἀθήναις γαλλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐξερεύνησιν καὶ μελέτην τῶν βυζαντινῶν μνημείων, διενεργήσας ἀνασκαφὰς ἐν Μιστρᾷ, Ἁγίῳ Ὄρει, Τραπεζοῦντι καὶ Πορέντσῳ τῆς Ἰστρίας καὶ ἑρμηνεύσας δεόντως τὰ ἐλθόντα εἰς φῶς βυζαντινὰ εὑρήματα, ὡς καὶ τὰς ἁγιογραφίας τοῦ Δαφνίου. Ἀπὸ τοῦ 1902, γενόμενος καθηγητὴς τῆς βυζαντιολογίας ἐν τῇ πρακτικῇ σχολῇ τῶν ἀνωτέρων σπουδῶν ἐν Παρισίοις, κατήρτισεν ἀξιόλογον βυζαντιακὴν συλλογὴν διὰ τὴν σχολὴν ταύτην, τῆς ὁποίας ἐγένετο βραδύτερον καὶ διευθυντής. Ἐκτὸς πολυαρίθμων μελετῶν του, δημοσιευθεισῶν εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, ὁ Μιλλὲ ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἑξῆς ἔργα του κατὰ χρονολογικὴν σειράν: «Mosaïques de Daphni. Adoration des Mages—Anastasis» (1896). «Le Monastère de Daphni. Histoire, architecture, mosaïques» (1899), «Recueil des inscriptions chrétiennes de l'Athos» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Pargoire et Petit (1904). «Monuments Byzantins de Mistra: Matériaux pour l'étude de l'architecture et de la peinture en Grèce aux XIV et XV siecles» (1910). «L'école grecque dans l'architecture byzantine» (1916). «L' ancien art serbe: Les églises» (1919). «Monuments de l'Athos relevés avec le concours de l'armée française d'Orient et de l'école française d'Athénes» Tom. 1: Les Peintures (1927). Β. Δ. Θ.

—**Μιλλέ,** ἢ ***Μιλὲ*** (Millet, Milé), ***'Ιωάννης.*** Υἱὸς τοῦ *Φραγκίσκου Μιλὲ* (βλ. κατωτ.), ζωγράφος καὶ οὗτος (1666—1723). Τῷ 1709 ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ Βαττὼ εἰς τὸ ὀνομαστὸν «Τοπίον» τοῦ Μουσείου τῆς Γρενόβλης. Ι. Μ. Π.

—**Μιλλὲ** (Millet), ***'Ιωάννης-Φραγκῖσκος.*** Διάσημος Γάλλος ζωγράφος. Ἐγεννήθη ἐν Γκρεβίλ, παρὰ τὴν Μάγχην, τῷ 1815 καὶ ἀπέθανεν ἐν Μπαρμπιζόν, ἔνθα εἰργάσθη κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ βίου του, τῷ 1875. Προερχόμενος ἐξ οἰκογενείας χωρικῶν, διῆλθε τὴν παιδικήν του ἡλικίαν ὡς βοσκὸς καὶ ὡς καλλιεργητής. Ἀλλ' ἡ πρὸς τὴν τέχνην κλίσις του, ἡ ἐπιτηδειότης του εἰς τὸ σχέδιον ἐξεδηλώθησαν μὲ τοιαύτην πρωϊμότητα καὶ σφοδρότητα, ὥστε ὁ πατὴρ Μιλλέ, μολονότι ἐν ἐσχάτῃ πενίᾳ διατελῶν, ἐθεώρησεν ἀναγκαῖον ν' ἀποστείλῃ τὸν υἱόν του εἰς Χερβοῦργον παρά τινι μετριωτάτῳ διδασκάλῳ. Ἦτο τότε δεκαὲξ ἐτῶν. Ὁ διδάσκαλός του, ὀνομαζόμενος Μονσέλ, δὲν ἦτο σπουδαῖος καλλιτέχνης, ἀλλ' εἶχε διορατικότητα. Διέγνωσεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς πόσον ἡ ἰσχυρὰ ἰδιοφυΐα τοῦ Μιλλὲ εἶχεν ἀνάγκην εὐρυτέρων πλαισίων σπουδῆς καὶ δράσεως διὰ νὰ ἀναπτυχθῇ καὶ νὰ καρποφορήσῃ, καὶ συνέστησεν εἰς αὐτὸν ν' ἀπέλθῃ εἰς Παρισίους. Εἰς τὴν ἀπέραντον ταύτην κοσμόπολιν ὁ Μιλλὲ διάγει βίον πλήρη στερήσεων. Εἰσέρχεται εἰς τὸ ἐργαστήριον ὀνομαστοῦ καλλιτέχνου, τοῦ Παύλου Ντελαρός, διὰ νὰ πορίζηται δὲ τὰ πρὸς τὸ ζῆν κατασκευάζει τὰς προσωπογραφίας τῶν πτωχῶν γειτόνων του ἀντὶ ποσῶν αὐτόχρημα ἐξευτελιστικῶν. Τῷ 1840 ἐμφανίζεται διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν διὰ μιᾶς «Προσωπογραφίας ἀνδρός». Δὲν εὑρίσκεται εἰς τὸν δρόμον του. Τὰ διδάγματα τῆς σχολῆς, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀνετράφη, καταθλίβουν τὸ ἁγνόν, πηγαῖον τάλαντόν του. Ἀρύεται τὰ θέματά του ἐκ τῆς ἱστορίας, ἐκ τῆς μυθολογίας, ἐκ τῆς Ἁγίας Γραφῆς. Ἄμετρος ρωμαντισμὸς διαπνέει ἐνίοτε τὰς συνθέσεις του. Καὶ μολονότι οἱ πίνακές του οὗτοι δὲν στεροῦνται καλλιτεχνικῆς ἀξίας, δὲν ἀποτελοῦν οὐσιῶδες τμῆμα τοῦ ἔργου του. Τοῦ προσπορίζουν ἐν τούτοις μερικὰς ἐπιτυχίας. Ἀλλ' αἱ ἐπιτυχίαι αὗται δὲν κατορθώνουν νὰ τὸν ἀπαλλάξουν ἀπὸ τὴν ἀθλιότητα τῆς καθημερινῆς του ζωῆς, ἀπὸ τὴν στυγνὴν πενίαν, ἀπὸ τὴν διηνεκῆ στέρησιν. Ἐγκαταλείπει τοὺς Παρισίους καὶ μεταβαίνει εἰς τὴν Χάβρην καὶ εἰς τὸ Κρουσύ, ὅπου νυμφεύεται μίαν πτωχοτάτην καλλιτέχνιδα, ἡ ὁποία ἀποθνήσκει μετὰ τριετῆ συμβίωσιν. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπανέρχεται εἰς Παρισίους, φεύγει καὶ πάλιν εἰς τὸ Κρουσύ, διὰ νὰ ἐπανέλθῃ βραδύτερον εἰς τὴν πρωτεύουσαν, ὀλίγον δὲ μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 ἀποσύρεται εἰς Μπαρμπιζόν, ἔνθα δημιουργεῖ τὸ σημαντικώτερον τμῆμα τοῦ ἔργου του, ἀποβαίνων εἷς τῶν μεγαλυτέρων ἐκπροσώπων τῆς γαλλικῆς τοπιογραφίας κατὰ τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ὅ,τι προέχει εἰς τὸ ἔργον τοῦ Μιλλὲ εἶναι ὁ σύνδεσμος τοῦ καλλιτέχνου πρὸς τὴν γῆν. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ἐλαχιστῶν ἐκείνων δημιουργῶν, ὅσοι ᾐσθάνθησαν τὸ τοπίον ὄχι ὡς συμπλήρωμα ἢ πλαίσιον εἰδυλλιακῶν σκηνῶν, οὐδ' ὡς ἁπλῶς πλήρη αἰσθητικότητος σκηνογραφίαν, ἀλλ' ὡς θέατρον ἐπιπόνων ἀγώνων, καθ' οὓς δι' ὑπερτάτου μόχθου ὁ ἄνθρωπος προσπαθεῖ νὰ ὑποτάξῃ τὰς ἐναντιότητας τοῦ ἐδάφους καὶ τῶν καιρικῶν μεταβολῶν καὶ νὰ κερδίσῃ τὴν ζωήν του δι' ἀκαμάτου προσπαθείας. Εἰς τὸ ἔργον του ὑπάρχει τραχὺς καὶ ἐπίπονος ρεαλισμός, ἐπενδεδυμένος δι' εἰδυλλιακοῦ τόνου, ὅστις συνετέλεσεν ὥστε συνθέσεις τινὲς τοῦ Μιλλέ, ὡς «Αἱ σταχυοσυλλέκτριαι» καὶ «Ὁ ἑσπερινὸς» νὰ καταστοῦν δημοτικώταται. Ἀκριβῶς διὰ τοῦτο ὠνομάσθη «εἰδυλλιακὸς ρεαλιστής». Οὐδεὶς ἄλλος, ὅσον αὐτός, ἀπεικόνισε μὲ τόσον πόνον, μὲ τόσην εἰλικρίνειαν αἰσθήματος, μὲ τόσην αὐθορμησίαν τὴν ζωὴν τῶν ἀγρῶν, τὴν ζωὴν τῶν ταπεινῶν χωρικῶν, διὰ τοὺς ὁποίους ὁ κόσμος ἀρχίζει ἀπὸ τὸ ἄκρον τῆς νεροσυρμῆς, τοῦ λιβαδιοῦ ἢ τοῦ ἀμπελῶνος καὶ τελειώνει εἰς τὴν πτωχικὴν καλύβην, ἐντὸς τῆς ὁποίας ἡ οἰκογενειακὴ θαλπωρὴ μεγαλώνει ἐκείνους ποῦ θὰ διαδεχθοῦν τοὺς πατέρας των εἰς τὴν τραχεῖαν, ἀλλὰ καὶ μεγαλοπρεπῆ ἐποποιίαν τῆς γῆς. Πολλοὶ ἀπέδωσαν σοσιαλιστικὰς τάσεις εἰς τὸ καλλιτεχνικὸν ἔργον τοῦ Μιλλέ. Εἶναι βεβαιότερον ὅτι, ἔξω ἀπὸ κάθε φιλοσοφικὴν προκατάληψιν, εἶδε τὴν φύσιν καὶ τὴν ἁπλῆν ζωὴν διὰ μέσου τῆς πονεμένης ψυχῆς του, ἡ ὁποία ἐπάλαιε καθημερινῶς κατὰ τῶν ἐναντιοτήτων τοῦ βίου καὶ ἡ ὁποία, μολονότι διακατεχομένη ἀπὸ ἄπειρον τρυφερότητα, δὲν ἠδύνατο νὰ παραβλέψῃ τὴν πάλην, τὸν ἀτελείωτον ἐκεῖνον καὶ σκληρότατον ἀγῶνα, ὅστις διεξάγεται εἰς τὴν σιωπηλὴν ἔκτασιν τῶν κοιλάδων. Ὁ Μιλλὲ δὲν κατέλιπε μόνον ἐλαιογραφίας· διεκρίθη καὶ ὡς κρητιδογράφος καὶ ὡς σχεδιαστής. Ἐκ τῶν ἔργων του μνημονεύομεν τὰ ἀκόλουθα: «Ὁ στρατάρχης Bugeaud εἰς τὴν μάχην τοῦ Isly», «Νύμφαι κοιμώμεναι», «Λουόμενοι», «Ὁ πειρασμὸς τοῦ ἁγίου Ἱερωνύμου» (τὸ ἔργον τοῦτο σταλὲν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τοῦ 1843 δὲν ἐγένετο δεκτόν), «Μάθημα ἱππασίας» (μὴ διασωθέν), «Ἡ γαλακτοκόμος», «Ὁ Οἰδίπους ἀποσπώμενος τοῦ δένδρου», «Ἡ αἰχμαλωσία τῶν Ἰουδαίων ἐν Βαβυλῶνι», «Ὁ λιχνιστής», «Χωρικὴ καθημένη», «Οἱ δεματισταί», «Ὁ σπορεύς», «Ὁ ποιμήν», «Οἱ θερισταί», «Αἱ σταχυοσυλλέκτριαι» (τοῦτο θεωρεῖται ὡς τὸ ἀριστούργημά του, ἀπεκτήθη δὲ ὑπὸ τοῦ Μουσείου τοῦ Λούβρου τῷ 1892), «Γυνὴ βόσκουσα τὴν ἀγελάδα της», «Ἡ ἀναμονή», «Γυνὴ τρέφουσα τὸ τέκνον της», «Βοσκὸς ἐπαναφέρων εἰς τὴν στάνην τὰ πρόβατά του», «Ποιμενὶς μετὰ τοῦ ποιμνίου της», «Ἡ ἐν Γκρεβὶλ οἰκία τοῦ καλλιτέχνου», «Ἡ φύλαξ τῶν χηνῶν», «Ὁ θάνατος καὶ ὁ ὑλοτόμος», «Ὁ ἑσπερινὸς» (τὸ γνωστότερον ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μιλλέ, ἀποκείμενον νῦν εἰς τὸ Λοῦβρον), «Ἡ συγκομιδὴ τῆς πατάτας», «Νοέμβριος», «Ὁ χωρικὸς μὲ τὸ τσαπὶ» κλπ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Thomson,* Millet and the Barbizon school, London 1903.—*E. Michel,* Les Maîtres du paysage, Paris 1906.—*H. Marcel,* Millet, Paris 1903.—*R. Rolland,* Millet 1903.

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

—**Μιλλέ,** ἢ ***Μιλὲ*** (Millet, Milé), ***Φραγκῖσκος.*** Φλαμανδὸς ζωγράφος (1642—1679). Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Φράνκεν, μεθ' οὗ ἐγκατεστάθη τῷ 1660 ἐν Παρισίοις, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Διετέλεσε μέλος τῆς ὑπὸ τοῦ Λεμπρὲν ἱδρυθείσης Ἀκαδημίας καὶ διεκρίθη εἰς τὸ ἱστορικὸν τοπίον. Ι. Μ. Π.

—**Μιλλὲ** (Millet), ***Φρειδερῖκος.*** Γάλλος ζωγράφος (1786—1859). Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς ὑδατογράφος καὶ μικρογράφος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Λουδοβῖκος Φίλιππος» (1831), «Ἡ αὐτοκράτειρα Ἰωσηφίνα» (1855), «Ὁ δοὺξ τοῦ Μομορανσύ», «Ναπολέων ὁ 3ος», «Ὁ οἶκος τῆς Ὀρλεάνης» κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μιλλὲν** (Millen), ***'Ωμπὲν-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος ἀρχαιολόγος (1759—1818). Ὑπηρετήσας προηγουμένως εἰς διαφόρους ἄλλας θέσεις, διωρίσθη τῷ 1795 ἐπιμελητὴς τοῦ ἀρχαιολογικοῦ καὶ νομισματολογικοῦ μουσείου τῆς γαλλκῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης, ἐν τῷ ὁποίῳ ἵδρυσε τὴν ἕδραν τῆς ἀρχαιολογίας. Ὁ Μιλλὲν συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν πρόοδον τῆς ἀρχαιολογίας διὰ τῆς δημοσιεύσεως πλείστων ἰχνογραφημάτων διαφόρων ἀρχαίων μνημείων καὶ ἐπιγραφῶν, τὰς ὁποίας εἶδε καὶ ἐμελέτησε κατὰ τὰς διαφόρους αὐτοῦ περιηγήσεις εἰς Ν. Γαλλίαν καὶ Ἰταλίαν. Αἱ ἐργασίαι του αὗται ἐδημοσιεύθησαν ἐν ἰδιαιτέροις βιβλίοις ὑπὸ τοὺς τίτλους «Voyage dans le Midi de la France», «Voyage en Savoie», «Voyage au Piémont», «Voyage dans le Milanais». Ἐκτὸς τῆς πολυσημάντου ταύτης συλλογῆς ὁ Μιλλὲν ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἑξῆς ἔργα: «Aegyptiaques, ou recueil de quelques monuments aegyptiens inédits», «Gallerie mythologique», Β. Δ. Θ.

**μιλλεπόρα** (ἡ) (Millepora) *[Ζῳολ.].* Γένος πολυπόδων τῆς οἰκογενείας τῶν *μιλλεποριδῶν,* περιλαμβάνον κοραλλιοειδῆ ζῳάρια κατ' ἀποικίας ἐνδιαιτώμενα. Αἱ ἀποικίαι των αὗται εἶναι πολυκλαδώδεις καὶ ποικιλόσχημοι, φέρουσι δὲ ἀναριθμήτους πόρους, ἐξ οὗ ἔλαβον καὶ τὸ ὄνομα. Συχνὰ ἀπαντῶσιν εἰς πολυπληθεῖς καὶ πυκνὰς ὁμάδας,

Digitized by Google

συντελούσας εἰς τὸν σχηματισμὸν τῶν κοραλλιογενῶν ὑποθαλασσίων στρωμάτων. Δ. Ν. Π.

— [*Παλαιοζῳολ.*] Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν ζῴων τούτων εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μιλλεπορίδαι** (οἱ) (Milleporidae) [*Ζῳολ.*]. Οἰκογένεια πολυπόδων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κοραλλιωδῶν*, περιλαμβάνουσα θαλάσσια ζῷα σχηματίζοντα κλαδώδεις ἀποικίας. Μοναδικὸν γένος εἶναι ἡ *μιλλεπόρα* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**Μίλλερ** (Miller), ***Βσέλοβοντ - Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος γλωσσολόγος, φιλόλογος καὶ ἐθνογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1848 ἐν Μόσχᾳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1913. Τῷ 1876 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Μόσχας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1897 καὶ διευθυντὴς τοῦ Ἰνστιτούτου τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν. Τῷ 1911 ἐξελέγη μέλος τῆς ἐν Πετρουπόλει Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Αἱ ἔρευναι τοῦ Μίλλερ ἀναφέρονται εἰς τὰς ἰαπετικὰς (ἢ ἰνδοευρωπαϊκὰς) γλώσσας, εἰς τὰς πολλὰς καὶ ποικίλας καὶ ἐλάχιστα μέχρι τοῦδε ἠρευνημένας γλώσσας τῆς Καυκασίου Ρωσίας, εἰς τὴν λαογραφίαν τῆς Ρωσίας καὶ διαφόρων ἀσιατικῶν χωρῶν κ. οὕ. κ. Ἐκ τῶν ἔργων του τὰ γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Μελέται εἰς τὴν ἀρίαν μυθολογίαν» (1876), «Ἀπήχησις τοῦ φινλανδικοῦ ἔπους εἰς τὸ ρωσικὸν (1879), «Ὀσσητικαὶ μελέται» (εἰς 3 τόμ. 1882—1887), «Ἐγχειρίδιον τῆς σανσκριτικῆς γλώσσης» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Knauer*, 1891), «Περὶ τῆς γλώσσης τῶν Ὀσσητῶν» (ἐν τῷ «Grundriss der Iranischen Philologie», τόμ. Α', 1903), «Μελέται εἰς τὴν δημώδη ρωσικὴν ποίησιν» (1910) κ.ἄ. Γ. Π. Α.

—**Μίλλερ** (Miller), ***Ἰωάννης-Μαρτῖνος.*** Γερμανὸς ποιητὴς (1750—1814). Ἐσπούδασε θεολογίαν, διετέλεσε διαμαρτυρόμενος κληρικὸς καὶ συνέγραψε τὰ ἑξῆς: «Σίγκβαρτ, μία ἱστορία μοναστηρίου» (1776, 2 τ.), «Συμβολὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς τρυφερότητος· ἐκ τῶν ἐπιστολῶν δύο ἐρωτευμένων» (1776), «Ἀλληλογραφία τριῶν ἀκαδημαϊκῶν φίλων» (1776—1777). Ὁ Μίλλερ ἐγένετο γνωστὸς πρὸ παντὸς μὲ τὰ «Τραγούδια» του, τὰ ὁποῖα ἄλλοτε ἐψάλλοντο εἰς ὅλην τὴν Γερμανίαν. Ἡ αὐτοβιογραφία του εὑρίσκεται εἰς τὴν «Συλλογὴν λογίων καὶ καλλιτεχνῶν» (1803) τοῦ Μπὸκ καὶ Μόζερ. Γ. Ε. Κ.

—**Μίλλερ** (Miller), ***Ἰωνάθαν.*** Ἀμ ρικανὸς στρατιωτικός, φιλέλλην, δράσας κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν ἐπανάστασιν. Κατήγετο ἐκ τῆς πολιτείας Βέρμοντ καὶ εἰκοσιτριετὴς μόλις τῷ 1821 κατῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ κατετάγη μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ, παρέμεινε δὲ πολεμῶν μέχρι τοῦ 1826, εἰς τὸ Μεσολόγγιον, ὅπου διεσώθη ὡς ἐκ θαύματος κατὰ τὴν πολιορκίαν καὶ ἅλωσιν αὐτοῦ ὑπὸ τῶν Τούρκων. Τὴν ἅλωσιν τοῦ Μεσολογγίου περιγράφει θαυμασίως εἰς ἐπιστολὴν του πρὸς τὸν φίλον του Ἔβερρετ. Μετὰ τὴν ἅλωσιν τούτου ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἀμερικὴν πρὸς ἐνέργειαν ἐράνων ὑπὲρ τῶν πολεμούντων Ἑλλήνων.

—**Μίλλερ** (Miller), ***Κιγκιννᾶτος Χάϊνε,*** ὁ ἐπιλεγόμενος ***Ἰωακεὶμ.*** Ἀμερικανὸς ποιητὴς ἐξ Ἰνδιάνας (1841—1913). Κατὰ τὴν νεότητά του διῆγε βίον περιπετειώδη ἐν Ὀρεγκὸν καὶ Καλιφορνίᾳ. Μεταβὰς ἐκεῖθεν εἰς Λονδῖνον ἐδημοσίευσε τὴν συλλογήν: «Τραγούδια τῶν Σιέρρα» (=τῶν βουνῶν) (1871), σημειώσασαν μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ἐν συνεχείᾳ ἔγραψε «Τραγούδια τῆς χώρας τοῦ ἡλίου» (1873), «Ἡ ζωή μου ἀνάμεσα στοὺς Ἰνδοὺς Μόντοκς» κλπ. Τῷ 1908 ἐδημοσίευσεν ὁ ἴδιος εἰς πέντε τόμους πλήρη συλλογὴν τῶν ἔργων του. Χ. Δ.

—**Μίλλερ** (Miller), ***Ὀρέστης-Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1834 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1889. Ἀνῆκεν εἰς τὸ καθολικὸν δόγμα, ἀλλὰ συνδεθεὶς μετὰ τοῦ ἀρχιεπισκόπου Πλάτωνος ἠσπάσθη τὸ ὀρθόδοξον θρήσκευμα. Περατώσας τὰς φιλολογικὰς σπουδάς του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πετρουπόλεως καὶ κατόπιν φοιτήσας εἰς διάφορα πανεπιστήμια τῆς Γερμανίας, ἤρξατο τοῦ φιλολογικοῦ του σταδίου διὰ τοῦ συγγράμματός του: «Περὶ τοῦ ἠθικοῦ στοιχείου ἐν τῇ ποιήσει», δι' οὗ ἐπισκοπεῖ τὰ ποιητικὰ μνημεῖα ὅλων τῶν λαῶν ἀπὸ τῆς ἠθικῆς των ἀπόψεως. Τὸ σύγγραμμα τοῦτο προεκάλεσε γενικὴν ἔξαψιν εἰς τοὺς φιλολογικοὺς κύκλους, ἐθεωρήθη δὲ ὁ Μίλλερ ὡς ὀπισθοδρομικὸς καὶ μυστικοπαθής, διότι ἐνεφανίσθη ὑπὸ ἄκρως θρησκευτικὸν πνεῦμα, ἀφ' ἣν ἐποχὴν ἡ ρωσικὴ λογοτεχνία διετέλει ἐν ἐπαναστατικῇ ἐξάψει. Μετὰ τριετίαν ἐδημοσίευσε τὰς «Μελέτας περὶ Σύλλερ», αἱ ὁποῖαι ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν. Τῷ 1864 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Πετρουπόλεως, ἤρξατο δὲ τῶν παραδόσεών του ἀναλύων τὰ ρωσικὰ δημώδη ἔπη, ἐκ τῶν ὁποίων ἤντλει τὰ δημοκρατικὰ ἰδεώδη τοῦ ρωσικοῦ λαοῦ, καὶ ἀπεκήρυξε τὴν ἀγαθοεργὸν ἐπίδρασιν τοῦ Βυζαντίου, ἐκ τοῦ ὁποίου ἐθεώρει ὅτι εἰσέδυσεν ἐν Ρωσίᾳ ὁ ἄκρος ἀσκητισμός. Τὰ συγγράμματα τοῦ Μίλλερ εἶναι πάμπολλα, ἐκ τῶν κυριωτέρων δὲ θεωροῦνται αἱ: «Συγκριτικαὶ κριτικαὶ παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς βαθμιαίας συνθέσεως τοῦ ρωσικοῦ δημώδους ἔπους», «Ὁ Ἠλίας Μουράμετς καὶ ὁ ἡρωϊσμὸς τοῦ Κιέβου», «Οἱ μετὰ τὸν Γκόγκολ συγγραφεῖς τῆς Ρωσίας» κτλ. Εἰς τὸ σύγγραμμά του περὶ τῶν ρωσικῶν θρύλων συνεκέντρωσε τὰς μελέτας του περὶ ὅλων τῶν παραδόσεων τοῦ Κιέβου. Κατὰ τὸν ἀριθμὸν τῆς συλλεγείσης ὕλης καὶ τῶν ἐξαχθέντων συμπερασμάτων, τὸ σύγγραμμα τοῦ Μίλλερ οὐδὲν ἔχει τὸ ὅμοιόν του εἰς τὴν ρωσικὴν φιλολογίαν καὶ κρίνεται ὡς ἡ πληρεστέρα μελέτη περὶ τοῦ μυθικοῦ ρωσικοῦ ἔπους. Θ. Β.

— **Μίλλερ** (Miller), ***Ὄσκαρ φὸν —.*** Γερμανὸς μηχανικός, γεννηθεὶς ἐν Μονάχῳ τῷ 1855. Ἵδρυσε μετὰ τοῦ Ἔμιλ Ρατενάου τὴν γερμανικὴν ἑταιρείαν Edison (διατελέσας ἐπὶ τινα χρόνον καὶ διευθυντὴς αὐτῆς), τὴν κατόπιν ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν Allgemeine Elektrizitaets - Gesellschaft (A. E. G.), ἐξελιχθεῖσαν εἰς τὴν σημερινὴν παγκοσμίως γνωστὴν τεραστίαν τεχνικὴν ὀργάνωσιν. Ἵδρυσεν ἐπίσης καὶ τὰ ἠλεκτρικὰ ἐργοστάσια τοῦ Βερολίνου (1884—1890). Ὁ Μίλλερ διεκρίθη κυρίως διὰ τὸ ὀργανωτικὸν πνεῦμά του εἰς ζητήματα ἀφορῶντα μεταβιβάσεις ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας εἰς μεγάλην κλίμακα, ὡς καὶ εἰς ζητήματα ἐκμεταλλεύσεως ὑδατίνων πτώσεων, ὅπου καὶ ἔταμε νέας τολμηρὰς τεχνικὰς ὁδούς· εἰς τὴν μελέτην καὶ κατασκευὴν τῶν μεγάλων ὑδροηλεκτρικῶν ἐργοστασίων παραγωγῆς τῆς Βαυαρίας ἔπαιξε πρωτεύοντα ρόλον. Μεταξὺ τῶν διεθνοῦς φήμης ἐργασιῶν του εἶναι καὶ ἡ ἵδρυσις τοῦ Γερμανικοῦ Μουσείου τοῦ Μονάχου, τοῦ μεγαλυτέρου τεχνικοῦ μουσείου τοῦ κόσμου. Γ. Θ. Κ.

— **Μίλλερ** (Miller), ***Οὐΐλλιαμ.*** Ἐγεννήθη ἐν Ἀμερικῇ τῷ 1782 καὶ ἀπέθανε τῷ 1849. Ἐνόμιζεν, ἐκ παρερμηνείας τῆς ἁγίας Γραφῆς, ὡς ἐπικειμένην τὴν καταστροφὴν τοῦ κόσμου καὶ τὴν ἔλευσιν τοῦ Χριστοῦ πρὸς ἵδρυσιν τῆς βασιλείας αὐτοῦ, εἰς ἣν θὰ λάβωσι μέρος μόνον οἱ ἀναστάντες πιστοὶ (πρώτη ἀνάστασις), τῶν ἀσεβῶν μελλόντων νὰ ἀνασταθῶσι (δευτέρα ἀνάστασις) μετὰ τὸ πέρας τῆς χιλιετοῦς βασιλείας, ὅτε θὰ γίνῃ καὶ ἡ τελικὴ κρίσις. Στηριζόμενος ἰδίᾳ ἐπὶ τοῦ ὀγδόου κεφαλαίου τοῦ Δανιήλ, ἐπίστευεν ἀκραδάντως ὅτι τὸ τέλος τοῦ κόσμου θὰ ἐπήρχετο τῷ 1843. Ὅτε ὅμως τὸ ἔτος τοῦτο παρῆλθεν, ὑπέδειξεν εἰς τοὺς προετοιμασθέντας καὶ ἀνυπομόνως ἀναμένοντας τὸ τέλος τοῦ κόσμου μαθητὰς αὐτοῦ ὅτι ἕνεκα σφάλματος γενομένου εἰς τοὺς ὑπολογισμοὺς ὥρισε τῷ 1843 ἀντὶ τοῦ 1847, ὁπότε ὡρισμένως θὰ ἐπήρχετο ἡ καταστροφή. Ὁ Μίλλερ προσκολληθεὶς τοῖς βαπτισταῖς ἐκήρυττε κυρίως μεταξὺ αὐτῶν καὶ τῶν μεθοδιστῶν, μὴ προτιθέμενος νὰ ἱδρύσῃ ἰδίαν κοινότητα. Μετὰ τὴν ἀποτυχοῦσαν ὅμως πρόρρησιν τῆς καταστροφῆς τοῦ κόσμου, κατὰ τὸ 1845, οἱ βαπτισταὶ ἐξέβαλον τὸν Μίλλερ καὶ τοὺς ὀπαδοὺς αὐτοῦ ἐκ τῆς ἐκκλησιαστικῆς αὐτῶν κοινότητος καὶ οὕτω ἠναγκάσθησαν οὗτοι νὰ ἱδρύσωσιν ἰδίας κοινότητας, τῶν ἀδβεντιστῶν, ἑκάστη τῶν ὁποίων ἦτο ἀνεξάρτητος, μὴ ὑπάρχοντος κοινοῦ αὐτῶν ὀργανισμοῦ. Καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μίλλερ ἐξηκολούθουν οἱ ὀπαδοὶ αὐτοῦ νὰ ἀναμένωσι τὴν ἐπικειμένην καταστροφὴν τοῦ κόσμου καὶ τὴν ἔλευσιν τοῦ Χριστοῦ πρὸς ἵδρυσιν τῆς χιλιετοῦς βασιλείας, ἀποτελέσαντες οὕτω τὴν αἵρεσιν τοῦ *χιλιασμοῦ* (βλ. λ.). Κ. Ι. Δ.

— **Μίλλερ** (Miller), ***Οὐΐλλιαμ.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος, διακεκριμένος δὲ ἑλληνιστὴς καὶ ἀκραιφνὴς φιλέλλην, γεννηθεὶς ἐν Wigton τῷ 1864. Ἐσπούδασεν εἰς Rugby καὶ εἰς τὰ κολλέγια τοῦ Χάρτφορδ καὶ τῆς Ὀξφόρδης. Ἔγραψε πολλὰς μελέτας πολιτικὰς καὶ ἱστορικὰς εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ ὑπηρέτησεν ὡς ἀνταποκριτὴς τοῦ «Morning Post» ἐν Ρώμῃ καὶ ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ 1903. Ἔκτοτε, ἐγκατασταθεὶς ἐν Ἀθήναις, ἀσχολεῖται μὲ τὴν μελέτην τῆς μεσαιωνικῆς καὶ νέας ἑλληνικῆς ἱστορίας, καθὼς καὶ τῆς τῶν ἄλλων βαλκανικῶν χωρῶν. Μέλος ἀντεπιστέλλον τῆς Βασιλικῆς Ἱστορικῆς Ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ ἐπίτιμος διδάκτωρ τῆς νομικῆς σχολῆς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, ἐπίτιμος φοιτητὴς τῆς ἐν Ἀθήναις Βρεττανικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς καὶ μέλος τῆς Ἱστορικῆς καὶ Ἐθνολογικῆς ἑταιρείας τῆς Ἑλλάδος, συνέγραψε πολλὰ συγγράμματα καὶ μελέτας, ὧν τὰς πλείστας, ἀναφερομένας εἰς τὴν Ἑλλάδα, μετέφρασεν ὁ Σπ. Λάμπρος. Κυριώτεραι τούτων εἶναι: «The Ottoman Empire in Europe (1356—1897)» (Part. XXVI, Map 82 τοῦ «Histor. Atlas of moderne Europe», Oxford 1900), «Travels and politics in the Near East» (London 1898), «Greek Life in Town and Country» (London 1905), «The Latins in the Levant» (1204—1566)» (London 1908). Μετεφράσθη ὑπὸ Σπ. Λάμπρου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Φραγκοκρατία ἐν Ἑλλάδι» (Ἀθῆναι 1909—1010 εἰς 2 τόμ.), «The Ottoman Empire and the Balkan Peninsula» (ἐν «The Cambridge Modern History», τόμ. XII Cambridge 1910), «The Ottoman Empire and its successors, 1801—1927» (Cambridge 1927), «Greece and Macedonia» (London 1920). Μετεφράσθη ὑπὸ Σπ. Λάμπρου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Τουρκία καταρρέουσα» (ἀπὸ τὴν α' ἔκδ. τοῦ 1913), «The Latin Orient» (London 1920), «The Turkish Restoration in Greece, 1718—1797» (London 1921), «Essays on the Latin Orient» (Cambridge 1921). Ὁ Σπ, Λάμπρος μετέφρασεν 174 σελίδας τούτου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Ἑλλὰς ἐπὶ Ρωμαίων, Φράγκων καὶ Τούρκων» (Ἀθῆναι 1924—1927) Ἐξεδόθησαν 26 τεύχη τοῦ ἔργου τούτου, τὸ ὁποῖον περιέχει καὶ 24 ἄρθρα τοῦ W. Miller ἐπὶ θεμάτων τῆς Ἑλληνικῆς ἱστορίας) «A History of the Greek People (1821—1921)» (London 1922), «Greece and the Aegean under Frank and Venetian domination (1204—1571), and the Empire of Nicaea and the Recovery of Constantinople» (Cambridge 1923). Μετεφράσθη ὑπὸ Σπ. Λάμπρου «Ἡ Ἑλλὰς ἐπὶ Ρωμαίων, Φράγκων καὶ Τούρκων» (Ἀθῆναι 1925), «Trebizond, the Last Greek Empire» (London 1926), «The early years of modern Athens» (London 1926 καὶ ἑλλην. μετάφρ.). Διάφορα ἄρθρα: Castellorizo, Coudouriotes, Constantin VI, Corfu, Dodecanèse, George II, Macedonia, Palamas, Pangalos, Salonica, Thrace, Zaimis, ἐν τῇ Μ. Βρεττανν. Ἐγκυκλοπ. (London 1926), «Greece» (London 1928) «Adriatic Sea etc.» «Montenegro and Serbia: Political History» (London 1920), «The Balkans» (London 1896. 2α ἔκδ. 1922. Τὸ περὶ Βουλγαρίας μετεφράσθη ὑπὸ Λ. Μ. Καλβοκορέση, Ἀθῆναι 1922), «The Rise and Fall of the First Bulgarian Empire (679—1018) und the Balkan States (1186—1483)» (Cambridge 1923), «The island of the Andros» (ἐδημοσιεύθη ἑλληνιστὶ εἰς τὸ «Ἀνδριακὸν Ἡμερολόγιον 1930» κατὰ μετάφρασιν Σπ. Λάμπρου). Γ. Λ. Λ.

*Οὐΐλλιαμ Μίλλερ.*

— **Μίλλερ** (Miller). —1) ***Φερδινάνδος.*** Γερμανὸς χύτης ἀγαλμάτων (1813—1887). Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Μονάχου καὶ ἐν Παρισίοις καὶ διετέλεσεν ἐπιθεωρητὴς τοῦ βασιλικοῦ χυτηρίου τοῦ Μονάχου. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἀνεμείχθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγη βουλευτής. Ἐξέθεσεν ἔργα εἰς τὴν ἔκθεσιν τοῦ Λονδίνου τῷ 1851 καὶ ἐξετέλεσε πλεῖστα ἔργα ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἀμερικῇ, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὴν «Βαυαρίαν» τοῦ Σβαντάλερ, τὸν λέοντα τῆς Θριαμβευτικῆς ἁψῖδος τοῦ Μονάχου, πολλὰ ἀγάλματα τοῦ Καπιτωλίου τῆς Βασιγκτῶνος, τὴν «Γερμανίαν» τοῦ μνημείου τοῦ Νήντερβαλντ κτλ. —2) ***Φερδινάνδος ὁ νεώτερος.*** Γερμανὸς χύτης ἀγαλμάτων, γεννηθεὶς τῷ 1842. Ἐσπούδασεν ἐν Βερολίνῳ, Παρισίοις καὶ Λονδίνῳ καὶ κατεσκεύασεν ἐξ ὀρειχάλκου πλεῖστα ἀγάλματα τῶν μεγαλυτέρων γλυπτῶν τῆς Γερμανίας ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἀμερικῇ, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ἡ μνημειώδης κρήνη ἐν Κιγκινάττοις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, καὶ τὸ ἄγαλμα τοῦ Κολόμβου ἐν Ἁγίῳ Λουδοβίκῳ κτλ. Τῷ 1900 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς Καλλιτεχνικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου. Μ. Δ. Β.

**Μιλλὲρ** (Miller), ***Ἐμμανουὴλ-Κλεμὰν-Μπενίν.*** Γάλλος φιλόλογος καὶ ἑλληνιστής, γεννηθεὶς εἰς Παρισίους τῷ 1812 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1886. Ὑπάλληλος τῆς ἐν Παρισίοις Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης τῆς Γαλλίας εἰς τὸ τμῆμα τῶν χειρογράφων, εἰδικοποιήθη εἰς τὴν παλαιογραφίαν. Τῷ 1835 ἐπεσκέφθη τὰς βιβλιοθήκας τῆς Ἰταλίας καὶ συνέλεξε τὰ σχόλια τοῦ Ἀριστοφάνους, τῷ δὲ 1840 ἵδρυσε μετ' ἄλλων τὴν «Revue de bibliographie analytique». Ἐν Ἱσπανίᾳ ἀνεκάλυψε διάφορα ἀποσπάσματα τοῦ Νικολάου τοῦ Δαμασκηνοῦ καὶ κατήρτισε κατάλογον τῶν ἑλληνικῶν χειρογράφων τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ἐσκουριάλ, δημοσιευθέντα τῷ 1848. Ὁ Μιλλὲρ ἐδημοσίευσεν ἐπίσης: «Περίπλουν τοῦ Μαρκιανοῦ», Ἐπιτομὴν τοῦ Ἀρτεμιδώρου, τοῦ Ἰσιδώρου τοῦ ἐκ Χάρακος κλπ., ἢ προσθήκας εἰς τὰς τελευταίας ἐκδόσεις τῶν μικρῶν γεωγράφων, συμφώνως πρὸς ἑλληνικὸν χειρόγραφον τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης Παρισίων (1839), Ἐγκώμιον πρὸς τὴν κόμην (Παρίσιοι, 1840), Συλλογὴν ἀρχαίων περιηγητικῶν, περιλαμβάνουσαν τὰς περιηγήσεις τοῦ Ἀντωνίνου, τὸν Πίνακα τοῦ Peutinger καὶ ἐκλογὴν ἀπὸ διαφόρους ἑλληνικοὺς περίπλους (1845), «Origenis Philosophumena, sive omnium haeresium refutatio, e codice Parisino nunc primum edito» (Oxford, 1851), «Manuelis Philae carmina e codicibus Escurialensi, Florentino, Parisino, Vaticano, nunc primus edita» (Paris 1854—1855, τ. 2), συλλογὴν περιέχουσαν 25.000 περίπου ἀνεκδότων στίχων «Mélanges de littérature grecque» (1868) κ. ἄ. Ι. Ο.

**Μιλλερὰν** (Millerand), ***Ἀλέξανδρος-Στέφανος.*** Γάλλος πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1859. Καταγόμενος ἐκ γονέων μικρεμπόρων, ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις, κατ' ἀρ-

Digitized by Google

χὰς εἰς τὰ λύκεια Μισελὲ καὶ Ἑρρίκου Δ΄ καὶ κατόπιν τὰ νομικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, γενόμενος δικηγόρος τῷ 1881 καὶ διακριθεὶς τάχιστα, χάρις εἰς τὴν εὐγλωττίαν του καὶ τὴν εὐρυμάθειάν του, ὡς εἷς τῶν καλυτέρων δικηγόρων τῆς γαλλικῆς πρωτευούσης. Ἐν τούτοις λίαν ἐνωρὶς εἶχε δείξει μεγάλην κλίσιν εἰς τὴν πολιτικήν, ἐν τῇ ὁποίᾳ κατώρθωσε νὰ εἰσέλθῃ καὶ νὰ ἐπιβληθῇ διὰ τῆς δημοσιογραφίας.

Ἀλέξανδρος Μιλλεράν.

Τῷ 1882 ἀπετέλεσε μέλος τῆς συντάξεως τῆς «Δικαιοσύνης», τὴν ὁποίαν διηύθυνε τότε ὁ Κλεμανσώ, μετὰ δύο δὲ ἔτη κατῆλθεν εἰς τὰς δημαρχιακὰς ἐκλογάς, ἐκλεγεὶς τῷ 1884 δημοτικὸς σύμβουλος Παρισίων. Τῷ 1885 ἐξέθεσεν ὑποψηφιότητα καὶ εἰς τὰς βουλευτικὰς ἐκλογὰς ἀλλ᾽ ἀπέτυχεν, ἐκλεγεὶς ὡς ριζοσπαστικὸς μόνον κατὰ τὰς ἀναπληρωματικὰς ἐκλογάς, αἵτινες ἔλαβον χώραν μετά τινας μῆνας, καὶ παρακαθήσας ἐν τῇ βουλῇ ἐν τῇ ἄκρᾳ ἀριστερᾷ, παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Κλεμανσώ, τοῦ ὁποίου ἀπέβη ὁ ὑπαρχηγός. Ἐν τῇ βουλῇ ἔλαβεν εὐθὺς ἀμέσως μέρος εἰς πλείστας συζητήσεις καὶ διεκρίθη διὰ τὰς προοδευτικάς του ἰδέας, ἐξελιχθεὶς σὺν τῷ χρόνῳ εἰς ἔνθερμον σοσιαλιστήν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ κινήματος τοῦ Μπουλανζέ, ἀπεσχίσθη τῶν φίλων του ριζοσπαστῶν καὶ κατεπολέμησε τοῦτον, καθὼς καὶ τὸν Ἰούλιον Φερρύ, τόσον ἐν τῇ βουλῇ, ὅσον καὶ διὰ τῆς ἐφημερίδος «Φωνή», τῆς ὁποίας ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν μετὰ τὴν ἀποχώρησίν του ἐκ τῆς «Δικαιοσύνης». Ἐπανεκλεγεὶς κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1889, ἔφθασε μέχρι τοῦ σημείου νὰ μὴ ἀποκλείσῃ ἀκόμη καὶ συνεργασίαν μετὰ τοῦ ἐπαναστατικοῦ σοσιαλισμοῦ. Κατανοήσας ὅμως ὅτι ἡ πολιτικὴ τῆς διαρκοῦς ἀντιπολιτεύσεως καθίστατο ἄγονος καὶ ἀρνητική, ἐστράφη πρὸς τὸν μεταρρυθμιστικὸν σοσιαλισμόν, τοῦ ὁποίου κατέστησεν ὄργανον τὴν «Μικρὰν Δημοκρατίαν», ἱδρυθεῖσαν ἄλλοτε ὑπὸ τοῦ Γαμβέττα καὶ ἧς τὴν διεύθυνσιν εἶχεν ἀναλάβει κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1893, καθ᾽ ἃς ἐπανεξελέγη βουλευτής. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην εἶχεν ἀποκτήσει μέγα κῦρος μεταξὺ τῶν σοσιαλιστῶν, κατὰ δὲ τὸ συνέδριον τοῦ Σαὶν-Μαντὲ τοῦ 1896 καθώρισε τὸ ἐλάχιστον ὅριον τὸ ὁποῖον ἔπρεπε νὰ ἐπιδιώξουν οἱ σοσιαλισταὶ ἐν τῇ ἐφαρμογῇ τοῦ προγράμματός των. Τῷ 1898 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ «Φανοῦ» μὲ συνεργάτας τὸν Βιβιανὶ καὶ τὸν Μπριὰν καὶ κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος προσελήφθη εἰς τὴν νέαν κυβέρνησιν τοῦ Βαλδὲκ Ρουσσὼ ὡς ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου. Ἡ πρόσληψις αὕτη προεκάλεσεν ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν τὰς ἀνησυχίας τῶν συντηρητικῶν, διὰ τὴν συμμετοχὴν εἰς τὴν κυβέρνησιν, διὰ πρώτην φοράν, ἑνὸς σοσιαλιστοῦ, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ τῶν σοσιαλιστῶν, οἱ ὁποῖοι κατηγόρησαν τὸν Μιλλερὰν ὡς προδώσαντα τὰ σοσιαλιστικὰ ἰδεώδη, διὰ τῆς προσφορᾶς τῶν ὑπηρεσιῶν του εἰς καθαρῶς ἀστικὴν κυβέρνησιν. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν ὅμως συζήτησιν εἰς τὸ σοσιαλιστικὸν συνέδριον τῶν Παρισίων ὁ Μιλλερὰν ἠθωώθη καὶ ἀπέφυγε τὴν ἀπειληθεῖσαν διαγραφὴν ἐκ τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Ὡς ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου κατώρθωσε νὰ ψηφίσῃ πλείστους νόμους μεγάλων κοινωνικῶν μεταρρυθμίσεων καὶ βελτιώσεων τῶν ὅρων τῆς ἐργασίας τῶν ἐργατῶν. Παραιτηθεὶς τῷ 1902, ἐγένετο ἐκ νέου ὑπουργὸς τῷ 1909 ἐν τῇ κυβερνήσει Μπριάν, λαβὼν τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Δημοσίων Ἔργων καὶ εἰσαγαγὼν πλείστους νέους μεταρρυθμιστικοὺς καὶ προοδευτικοὺς νόμους. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Μιλλερὰν εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην νὰ μεταχειρισθῇ δραστικὰ μέτρα πρὸς τερματισμὸν τῆς σιδηροδρομικῆς ἀπεργίας τοῦ Ὀκτωβρίου τοῦ 1910, ἕνεκα δὲ τῶν μέτρων τούτων ἠναγκάσθη νὰ ἀποσχισθῇ τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Ἀπὸ τοῦ 1898 ἦτο μέλος τῆς κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς ἐπὶ τῶν στρατιωτικῶν ζητημάτων, ἐφ᾽ ὧν εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην πεῖραν, ἕνεκα δὲ τούτου, ὅταν τῷ 1912 εἶχε δημιουργηθῇ κρίσιμος κατάστασις ἐν τῷ γαλλικῷ στρατῷ, συνεπείᾳ τῆς παρεισδύσεως ἐν αὐτῷ τῆς πολιτικῆς, ὁ Πουανκαρὲ προσέλαβεν αὐτὸν εἰς τὴν τότε ὑπ᾽ αὐτοῦ σχηματισθεῖσαν κυβέρνησιν ὡς ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν. Ὁ Μιλλερὰν κατώρθωσε νὰ ἐπαναφέρῃ τὴν γαλήνην εἰς τὸν στρατόν, καὶ νὰ ψηφίσῃ διάφορα μέτρα πρὸς ἀναδιοργάνωσιν αὐτοῦ καὶ ἐνίσχυσιν τοῦ στρατιωτικοῦ ὑλικοῦ, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ νόμος περὶ τριετοῦς θητείας, ἡ ἀναδιοργάνωσις τοῦ ἐπιτελείου καὶ ἡ ἐνίσχυσις τῆς ἀεροπορίας. Δὲν παρέμεινεν ὅμως εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Στρατιωτικῶν, εἰμὴ μόνον ἐπὶ ἓν ἔτος (Ἰαν. 1912—Ἰαν. 1913), ἀναγκασθεὶς νὰ παραιτηθῇ συνεπείᾳ προσωπικοῦ ζητήματος. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ὁ τότε πρωθυπουργὸς Βιβιανὶ προσέβλεψεν εἰς αὐτὸν ὡς τὸν καταλληλότερον ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν καὶ προσέφερεν εἰς αὐτὸν τὸ ὑπουργεῖον τὸν Αὔγουστον τοῦ 1914, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ στρατηγοῦ Μοσσιμύ. Ἦτο ἡ κρίσιμος περίστασις, κατὰ τὴν ὁποίαν οἱ Γερμανοὶ εὑρίσκοντο παρὰ τὰς θύρας τῶν Παρισίων, ὁ δὲ νέος ὑπουργὸς κατώρθωσε νὰ λάβῃ ταχείας ἀποφάσεις, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ τὸν ἀνεφοδιασμὸν τοῦ μετώπου καὶ τὴν ὀργάνωσιν τῶν προμηθειῶν εἰς τὰ μετόπισθεν. Παραιτηθεὶς τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1915 μετὰ τῆς κυβερνήσεως Βιβιανί, διωρίσθη, μετὰ τὴν ἀνακωχήν, ὕπατος ἁρμοστὴς τῆς Γαλλίας ἐν Ἀλσατίᾳ καὶ Λωρραίνῃ. Τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1920, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ Κλεμανσώ, ἐγένετο πρωθυπουργὸς καὶ ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Κληρονομήσας λίαν λεπτὴν καὶ δύσκολον κατάστασιν, ὀφειλομένην εἰς τὰς δυσχερείας τῆς ἐφαρμογῆς τῶν ἐκ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου προκυψασῶν συνθηκῶν, κατώρθωσε νὰ ἐπιβάλῃ τὰς γαλλικὰς ἀντιλήψεις ἔναντι τῆς Γερμανίας διὰ τῆς καταλήψεως τῆς Φραγκφούρτης, ἔλαβε μέρος εἰς τὴν συνδιάσκεψιν τοῦ Σὰν Ρέμο τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1920 καὶ διεπραγματεύθη τὴν διεθνῆ συμφωνίαν τοῦ Σπᾶ, ὅσον ἀφορᾷ τὸν διακανονισμὸν τῶν ἐπανορθώσεων καὶ τὴν διανομὴν αὐτῶν μεταξὺ τῶν συμμάχων. Κατὰ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν κατώρθωσε νὰ καταστείλῃ διὰ δραστηριωτάτων μέτρων τὰς ἐπαναστατικὰς ἐργατικὰς κινήσεις, αἵτινες εἶχον ἀρχίσει νὰ ἀναφαίνωνται εἰς διάφορα σημεῖα τῆς Γαλλίας. Καθ᾽ ὅλην ταύτην τὴν περίοδον τῆς πολιτικῆς του ζωῆς ὁ Μιλλερὰν εἶχεν ἀποκτήσει μεγίστην δημοτικότητα καὶ ἐθεωρεῖτο ὡς ὁ ἄνθρωπος τῶν δυσκόλων στιγμῶν, ἕνεκα δὲ τούτου, ὅταν, συνεπείᾳ ἀσθενείας, ὁ πρόεδρος τῆς γαλλικῆς δημοκρατίας Ντεσανὲλ ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ, ἡ μεγάλη πλειοψηφία τοῦ πολιτικοῦ κόσμου ἀπέβλεψε πρὸς αὐτόν, ὡς τὸν ἐνδεδειγμένον διάδοχον εἰς τὸ προεδρικὸν ἀξίωμα. Ὁ Μιλλερὰν ὅμως, πρὸ τῆς ἐκλογῆς του, προέβη εἰς τὴν σημαντικὴν καὶ ἐνδεικτικὴν τοῦ χαρακτῆρός του δήλωσιν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐκλεγόμενος πρόεδρος τῆς δημοκρατίας δὲν θὰ περιωρίζετο εἰς διακοσμητικὰ ἁπλῶς καθήκοντα, ἀλλὰ θὰ ἐπεφύλασσεν εἰς ἑαυτὸν τὸ δικαίωμα τῆς ἐπεμβάσεως, ἐνεργότερον τῶν προκατόχων του, εἰς τὰ τῆς ἐξωτερικῆς ἰδίᾳ πολιτικῆς, πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς συνεχείας της καὶ ὅτι θὰ ἐφρόντιζε νὰ μεταρρυθμίσῃ τὸ Σύνταγμα, ὅπως αὐξήσῃ καὶ ἐπεκτείνῃ τὰ δικαιώματα τοῦ προέδρου τῆς δημοκρατίας. Παρὰ τὴν δήλωσιν ταύτην, ἥτις προεκάλεσε μεγάλας ἀνησυχίας μεταξὺ τοῦ πολιτικοῦ κόσμου τοῦ ἀντιτιθεμένου εἰς τὴν προσωπικὴν πολιτικὴν τοῦ προέδρου τῆς δημοκρατίας, ὁ Μιλλερὰν ἐξελέγη πρόεδρος τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1920 διὰ ψήφων 695 κατὰ 197. Μετὰ τὴν ἐκλογήν του ἤρχισε νὰ θέτῃ εἰς ἐφαρμογὴν τὸ πρόγραμμά του, ἐπεμβαίνων ἐνεργῶς εἰς τὰς διπλωματικὰς διαπραγματεύσεις. Κατὰ τὴν διεθνῆ συνδιάσκεψιν τῶν Καννῶν τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1922, διὰ τηλεγραφήματός του ἐξέφραζε τὴν δυσαρέσκειάν του διὰ τὴν πορείαν τῶν διαπραγματεύσεων, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε τὴν ἐσπευσμένην ἐπιστροφὴν εἰς Παρισίους καὶ τὴν παραίτησιν τοῦ τότε ἀντιπροσώπου τῆς Γαλλίας καὶ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν Μπριάν. Αἱ ἐπὶ τοῦ ἀξιώματος τοῦ προέδρου τῆς δημοκρατίας ἀντιλήψεις τοῦ Μιλλερὰν προεκάλεσαν τὴν συνεργασίαν τῶν ριζοσπαστῶν καὶ σοσιαλιστῶν καὶ τὸν σχηματισμὸν τοῦ περιφήμου «συνασπισμοῦ τῆς ἀριστερᾶς» (Cartel des gauches), κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ Μαΐου τοῦ 1924, κατὰ τὰς ὁποίας ὁ συνασπισμὸς οὗτος ἐξῆλθε νικητής. Ἐπειδὴ δὲ ὁ Μιλλεράν, κατὰ τὰς παραμονὰς τῶν ἐκλογῶν, εἶχεν εὐνοήσει ἐμφανῶς τὰ ἡττηθέντα κόμματα τοῦ «ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ», ὁ ἀρχηγὸς τῆς πλειοψηφίας τῆς βουλῆς Ἑρριό, κληθεὶς νὰ σχηματίσῃ κυβέρνησιν, ἠρνήθη νὰ δεχθῇ, ἀξιώσας ὅπως παραιτηθῇ προηγουμένως ὁ Μιλλεράν, ὡς εὑρισκόμενος διὰ τῆς πολιτικῆς τῶν ἐπεμβάσεών του εἰς τὴν ἐκτελεστικὴν ἐξουσίαν, εἰς πλήρη ἀντίθεσιν πρὸς τὴν λαϊκὴν θέλησιν. Ὁ Μιλλερὰν τότε ἀνέθεσε τὸν σχηματισμὸν τῆς κυβερνήσεως εἰς τὸν γερουσιαστὴν Φραγκῖσκον Μαρσάλ, ἀλλ᾽ ἡ ὑπ᾽ αὐτοῦ σχηματισθεῖσα κυβέρνησις κατεψηφίσθη ἐν τῇ βουλῇ. Τότε ὁ Μιλλερὰν ἠναγκάσθη νὰ ὑποκύψῃ εἰς τὰς ἀξιώσεις τοῦ «συνασπισμοῦ τῆς ἀριστερᾶς» καὶ νὰ παραιτηθῇ. Ἡ στάσις ὅμως τῆς πλειοψηφίας τῆς βουλῆς ἔναντι τοῦ Μιλλερὰν ἀπήρεσεν εἰς τὴν γερουσίαν, ἡ ὁποία, κατὰ τὴν ἐκλογὴν τοῦ διαδόχου του, ἐψήφισε μετὰ τῆς ἀντιπολιτεύσεως τῆς βουλῆς καὶ ἐξέλεξε τὸν Ντουμέργκ, ἀντὶ τοῦ ὑπὸ τοῦ «συνασπισμοῦ τῆς ἀριστερᾶς» ὑποδειχθέντος Παινλεβέ. Μετά τινας μῆνας ὁ Μιλλερὰν ἐξελέγη, εἰς ἐπαναληπτικὴν ἐκλογήν, γερουσιαστὴς Σηκουάνα. Τῷ 1918 εἶχεν ἐκλεγῇ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Τῷ 1907, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐργασία καὶ ἐργάται», ἐξεδόθη τόμος τῶν ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ 1907 ἐκφωνηθέντων λόγων του. Ἔγραψεν ἐπίσης τὰ ἔργα: «Ὁ μεταρρυθμιστικὸς σοσιαλισμὸς ἐν Γαλλίᾳ» (1903), «Πολιτικὴ τῶν πραγματοποιήσεων» (1918), «Λόγοι κατ᾽ ἐκλογήν» (1921), «Ἡ ἀπόδοσις τῆς Ἀλσατίας εἰς τὴν Γαλλίαν» (1923) κτλ. Μ. Δ. Β.

**μιλλερανδισμὸς** (ὁ) (millerandage) *[Ἀμπελουργ.]*. Οὕτω καλεῖται ἡ ἀτελὴς γονιμοποίησις ἢ ἡ ἀτελὴς ἀνάπτυξις τῶν ραγῶν τοῦ βότρυος τῆς ἀμπέλου. Προέρχεται ἀπὸ φυσιολογικὴν πτωχείαν τῶν πρέμνων ἐξ αἰτίας βροχῶν ἢ πτώσεων τῆς θερμοκρασίας, ὁπότε εἶναι παροδικός, ἢ ἐξαντλήσεως τῆς ἀμπέλου ἀπὸ κρυπτογαμικὰς νόσους (περονόσπορος, ἄνθραξ) ἤ, τέλος, ὅπου ἡ εὐρωπαϊκὴ ἄμπελος εἶναι ἐμβολιασμένη ἐπὶ ἀμερικανικῶν, ἐκ κακῆς προσαρμογῆς τῶν δύο εἰδῶν. Ἐνδείκνυται ἡ ἄφθονος λίπανσις, τὸ κορυφολόγημα καὶ τὸ χάραγμα. Ε. Τ. Ε.

**μιλλερίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν θειοῦχον νικέλιον Ni S. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν σύστημα ὡς ἰσόμορφον πρὸς τὸν βουρτσίτην εἰς κρυστάλλους βελονοειδεῖς ἐπιμήκεις, διατεταγμένους ἀκτινοειδῶς ἢ μορφῆς τριχοειδοῦς, καὶ εἶναι εὔθραυστος μὲ σκληρότητα $3^1/_2$. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 5,26—5,30, λάμψιν μεταλλικήν, εἰς λεπτότατα τριχίδια μεταξώδη, καὶ χρῶμα πρασινότεφρον καὶ ὑπόφαιον ἕως ὑπόμαυρον. Ἀπαντᾷ ἐπὶ φλεβῶν νικελιούχων μεταλλευμάτων εἰς τὰ Erzgebirge, ἐπὶ ἄλλων φλεβῶν, πλησίον βαρύτου εἰς τὸ Riechelsdorf κ. ἀ., καθὼς καὶ εἰς τὰς λιθανθρακοφόρους περιοχὰς τοῦ Saarbrücken, εἰς τὴν Πενσυλβανίαν, πάντοτε ὅμως εἰς μικρὰ ποσά. Γ. Β.

**μιλλέτι** (τὸ) (ἐκ τοῦ ἀραβ. *μιλλέτ*)· ἔθνος.

**μιλλι—**, ἢ *χιλιοστο—*. Πρῶτον συνθετικὸν τῶν ὀνομασιῶν τεχνικῶν καὶ φυσικῶν μονάδων, σημαῖνον τὸ χιλιοστὸν μέρος τῆς διὰ τῆς ὑπολοίπου λέξεως δηλουμένης μονάδος. Οὕτω π. χ. *μιλλιαμπὲρ* $= \frac{1}{1000}$ τῆς μονάδος ἀμπέρ, *μιλλιβὸλτ* $\frac{1}{1000}$ τῆς μονάδος βόλτ, κτλ. Συμβολικῶς παρίσταται διὰ τοῦ συμβόλου m, τιθεμένου πρὸ τοῦ συμβόλου τῆς κυρίας μονάδος· λ. χ. mm = χιλιοστόμετρον $= \frac{1}{1000}$ τοῦ μέτρου, mg = χιλιοστόγραμμον $= \frac{1}{1000}$ τοῦ γραμμαρίου κτλ. Γ. Θ. Κ.

**Μιλλιὰν - Ἀρμανὶ** (Millian - Armani) ***ἀντίδρασις.*** Εἰδικὴ χρωστικὴ ἀντίδρασις πρὸς ἀνίχνευσιν τοῦ βαμβακελαίου εἰς ἔλαια, ἐπιτελουμένη δι᾽ ἀλκοολικοῦ διαλύματος νιτρικοῦ ἀργύρου. Σ. Γ.

**Μίλλιγκεν** (Millingen)· βλ. λ. *Μίλλινγκεν*.

**Μίλλικαν** (Millikan), ***Ροβέρτος - Ἀνδρέας.*** Διαπρεπὴς Ἀμερικανὸς φυσικός, καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Passadena ἐν Καλιφορνίᾳ. Τῷ 1923 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου τῆς φυσικῆς τοῦ ἱδρύματος Νόμπελ, εἰς ἀναγνώρισιν τῶν σημαντικῆς ἐπιστημονικῆς ἀξίας ἐργασιῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς ἠλεκτρικῆς ἑνότητος καὶ τῶν φωτοηλεκτρικῶν ἀποτελεσμάτων. — Ω.

**μιλλίμετρον** (τό)· ἄλλη ὀνομασία τοῦ *χιλιοστομέτρου* (γαλλ. millimètre)· βλ. λ. *mm*.

**μιλλιμπάρ.** Μονὰς πιέσεως τοῦ συστήματος C. G. S., ἥτις ἤρξατο χρησιμοποιουμένη τελευταῖον εἰς πλείστας χώρας διὰ τὴν ἔκφρασιν τῆς βαρομετρικῆς πιέσεως ἀντὶ τῆς μονάδος τοῦ *χιλιοστομέτρου*. Τὸ ἰσοδύναμον τοῦ μιλλιμπὰρ εἰς χιλιοστόμετρα κανονικοῦ ὑδραργύρου ἢ ἀντιστρόφως τοῦ χιλιοστομέτρου κανονικοῦ ὑδραργύρου εἰς μιλλιμπὰρ ἐξαρτᾶται ἐκ τῶν τιμῶν τῶν παραδεδεγμένων διὰ τὴν κανονικὴν βαρύτητα καὶ τὴν πυκνότητα τοῦ ὑδραργύρου εἰς τὴν θερμοκρασίαν τοῦ 0. Ἡ ἀντιστοιχία χιλιοστομέτρων πρὸς μιλλιμπὰρ εἶναι ἡ ἑξῆς:

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 735 χιλιοστ. | (χμ) | = 980 | μιλλιμπὰρ (mb) | ἢ χλβ. |
| 750 » | » | = 1000 | » » | » |
| 765 » | » | = 1020 | » » | » |
| 780 » | » | = 1040 | » » | » |

Πᾶν μεταλλικὸν βαρόμετρον ἀντίσπαστον τῆς θερμοκρασίας δεικνύει τὴν πίεσιν κατ᾽ ἀπόλυτον τιμήν, ἀνεξαρτήτως τοῦ γεωγραφικοῦ πλάτους καὶ δύναται ἑπομένως νὰ βαθμολογηθῇ ἀπ᾽ εὐθείας εἰς μιλλιμπάρ, ὅπως ἐξ ἄλλου καὶ εἰς χιλιοστόμετρα. Ὡς πρὸς τὰ ὑδραργυρικὰ βαρόμετρα ἡ ἀπ᾽ εὐθείας βαθμολόγησις εἰς μιλλιμπὰρ παρουσιάζει δυσκολίας τινάς, αἵτινες προέρχονται ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι, διὰ νὰ μεταβῶμεν ἀπὸ ἑνὸς ὕψους ὑδραργύρου ἀναγνωσθέντος ἐπὶ τοῦ ὀργάνου εἰς ἀπόλυτον πίεσιν, πρέπει νὰ ληφθῇ ὑπ᾽ ὄψιν συγχρόνως ἡ θερμοκρασία (ἥτις λαμβάνεται διὰ τοῦ προσηρμοσμένου ἐπὶ τοῦ βαρομέτρου θερμομέτρου) καὶ ἡ βαρύτης. Εἰς τοὺς διαφόρους μετεωρολογικοὺς σταθμοὺς ὑπάρχουσιν ἐν χρήσει πίνακες, δι᾽ ὧν τὰ εἰς χιλιοστόμετρα ὕψη τοῦ βαρομέτρου μετατρέπονται εἰς μιλλιμπὰρ καὶ ἀντιστρόφως. Θ. Θ. Φ.

**Μίλλινγκεν** (Millingen), ***Ἰάκωβος.*** Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ νομισματολόγος (1755—1845). Ἦτο ὀλλανδικῆς καταγωγῆς καὶ ἐγκατεστάθη κατ᾽ ἀρχὰς ἐν Παρισίοις, ὅπου ἐφυλακίσθη κατὰ τὴν Γαλλικὴν ἐπανάστασιν· κατόπιν ἐγένετο διευ-

Digitized by Google

θυντὴς τραπέζης καὶ ἐγνωρίσθη μὲ πολλοὺς σοφοὺς τῆς ἐποχῆς. Βραδύτερον ἐγκατεστάθη ἐν Ἰταλίᾳ, ὅπου κατεγίνετο εἰς ἀρχαιολογικὰς μελέτας καὶ τὸ ἐμπόριον ἀρχαιοτήτων, ἀποκτήσας πανευρωπαϊκὴν φήμην ὡς νομισματολόγος. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἀρχαία καὶ ἀνέκδοτος ζωγραφικὴ ἑλληνικῶν ἀγγείων» (1813), «Συλλογὴ ἀνεκδότων ἑλληνικῶν μεταλλίων» (1813), «Ἀρχαῖα ἀνέκδοτα μνημεῖα ἑλληνικῆς τέχνης» (1823—1826), εἰς δύο τόμους, «Ἀρχαῖα νομίσματα ἑλληνικῶν πόλεων καὶ βασιλέων» (1831) κτλ. Ὁ Μίλλινγκεν ἐσυνέχισε καὶ ἐδημοσίευσε τὴν «Ἱστορίαν τῶν μεταλλίων τοῦ Ναπολέοντος» (1818—1822), τὴν ὁποίαν εἶχεν ἀρχίσει ὁ Μίλλιν. Ἦτο μέλος τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου καὶ διαφόρων φιλολογικῶν ἑταιρειῶν τῆς Εὐρώπης. Μ. Δ. Β.

— **Μίλλινγκεν** (Millingen), *Ἰ. Γ.* Ἄγγλος στρατιωτικὸς ἰατρός, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Παρευρέθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Βατερλὼ ὡς χειρουργὸς τοῦ ἀγγλικοῦ στρατοῦ καὶ κατόπιν ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ ἀσύλου φρενοβλαβῶν ἐν Τσάταμ. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἐγχειρίδιον τῶν στρατιωτικῶν ἰατρῶν» (1819), «Σημειώσεις ἐπὶ τῶν ἑλληνικῶν ὑποθέσεων» (1830), «Τὰ περίφημα τῆς ἰατρικῆς πείρας» (1837, εἰς 2 τόμ.). Μ. Δ. Β.

— **Μίλλινγκεν** (Millingen), *Ἰ. Μ.* Σκῶτος ἰατρός, ὀλλανδικῆς καταγωγῆς. Ἐχρημάτισεν ἰατρὸς τοῦ λόρδου Βύρωνος, τὸν ὁποῖον καὶ ἐνοσήλευσεν ἐν Μεσολογγίῳ τῷ 1824. Μεταβὰς κατόπιν εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἐγκατεστάθη ἐκεῖ ὁριστικῶς καὶ διετέλεσεν ἰατρὸς πολλῶν σουλτάνων. Εἰδήμων τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης καὶ Ἕλλην μᾶλλον λογιζόμενος ὡς ἐκ τῆς μεθ' Ἑλλήνων συνεχοῦς ἀναστροφῆς αὐτοῦ, ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πρώτων μελῶν τοῦ «Ἑλληνικοῦ Φιλολογικοῦ Συλλόγου» τῆς Κωνσταντινουπόλεως, τοῦ ὁποίου καὶ πρόεδρος ἐχρημάτισε καὶ πολλὰς κατὰ καιροὺς ἔκαμεν εἰς τὴν αἴθουσαν αὐτοῦ διαλέξεις ἑλληνιστί. Ἀπεβίωσε τῷ 1878. Δ. Π. Π.

**μίλλιον** (τό)· βλ. *μίλιον*.

**Μιλλὸν ἀντίδρασις** *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται ἡ διὰ τοῦ *μιλλονείου ἀντιδραστηρίου* προκαλουμένη χρῶσις τῶν λευκωμάτων. Σ. Γ.

**μιλλόνειον ἀντιδραστήριον** *[Ὀργ. Χημ.]*. Διάλυμα ὑδραργύρου εἰς νιτρικὸν ὀξύ, περιέχον καὶ ὀλίγον νιτρῶδες ὀξύ. Χρησιμοποιεῖται πρὸς ἀνίχνευσιν τῶν λευκωμάτων, διότι ταῦτα κατὰ τὴν θέρμανσιν μετὰ τοῦ ἀντιδραστηρίου τούτου χρώννυνται ἐρυθρὰ ἕως καστανέρυθρα. Ὠνομάσθη οὕτω ἐκ τοῦ Γάλλου χημικοῦ Ε. Μιλλόν, λόγῳ δὲ τῆς χημικῆς αὐτοῦ συστάσεως καλεῖται καὶ *ἀζωτοῦδραργυρικὸν ἀντιδραστήριον*. Σ. Γ.

**Μίλν** (Milne), *σὲρ Γεώργιος - Φράνσις*. Ἄγγλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1866. Τῷ 1885 κατετάχθη εἰς τὸ πυροβολικὸν καὶ τῷ 1898 μετέσχε τῆς ἀγγλικῆς ἐκστρατείας τοῦ Σουδὰν καὶ τῆς καταλήψεως τοῦ Χαρτούμ. Ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ 1902 μετέσχε τοῦ νοτιοαφρικανικοῦ πολέμου, προαχθεὶς εἰς ἀντισυνταγματάρχην. Τῷ 1905 προήχθη εἰς συνταγματάρχην καὶ τῷ 1913 διωρίσθη διοικητὴς τοῦ πυροβολικοῦ τῆς 4ης μεραρχίας, μετὰ τῆς ὁποίας τῷ 1914 ἀπεστάλη, κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, εἰς τὸ γαλλικὸν μέτωπον. Προαχθεὶς μετ' ὀλίγον εἰς ὑποστράτηγον, λόγῳ τῶν ἐξαιρετικῶν ὑπηρεσιῶν του, ὑπηρέτησεν ἐπί τι χρονικὸν διάστημα εἰς τὸ στρατηγεῖον τοῦ δυτικοῦ μετώπου, τὸν δὲ Ἰούλιον τοῦ 1915 διωρίσθη διοικητὴς τῆς 27ης μεραρχίας, μετὰ τῆς ὁποίας ἀπεστάλη μετά τινας μῆνας εἰς τὸ μέτωπον τῆς Θεσσαλονίκης. Κατὰ τὸ τέλος τοῦ 1915 εἶχεν ἀναλάβει τὴν διοίκησιν τοῦ ἐκεῖ συγκεντρωθέντος ἀγγλικοῦ σώματος στρατοῦ, τὸν δὲ Μάϊον τοῦ 1916 διωρίσθη ἀρχηγὸς τῶν ἐν Μακεδονίᾳ ἀγγλικῶν δυνάμεων, τὰς ὁποίας διηύθυνε κατὰ τὴν νικηφόρον ἐπίθεσιν καὶ προέλασιν τοῦ 1918. Παρέμεινεν ἀρχηγὸς τοῦ ἐν τῇ Ἐγγὺς Ἀνατολῇ καὶ τῇ Μαύρῃ Θαλάσσῃ ἀγγλικοῦ στρατοῦ μέχρι τοῦ 1920, ὁπότε ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ Πύργου τοῦ Λονδίνου, γενόμενος κατόπιν, τῷ 1926, ἀρχηγὸς τοῦ αὐτοκρατορικοῦ βρεττανικοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου. Μ. Δ. Β.

— **Μίλν** (Milne), *Ἐδουάρδος-Ἀλφόνσος*. Γάλλος ἀνατόμος καὶ ζωολόγος. Τῷ 1865 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φαρμακολογίας ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων. Ἐγένετο μέλος τοῦ ἰνστιτούτου (1877) καὶ τῆς ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς (1885) καὶ ἔγραψε πλείστας μελέτας ἐπὶ τῶν κλάδων τῆς ἀνατομικῆς, ζωολογίας καὶ παλαιοντολογίας. Ο. Γ.

— **Μίλν** (Milne), *μέθοδος τοῦ* —. Οὕτω καθορίζεται θεραπευτικὴ μέθοδος τῶν ἐξανθηματικῶν πυρετῶν, ἰδιαίτατα δὲ τῆς ἱλαρᾶς καὶ τῆς ὀστρακιᾶς, προταθεῖσα ὑπὸ τοῦ συγχρόνου Ἀμερικανοῦ ἰατροῦ Robert Milne, διὰ τῆς ὁποίας δυνάμεθα ν' ἀποφύγωμεν τὴν μετάδοσιν τῶν νόσων τούτων, χωρὶς νὰ προσφύγωμεν εἰς τὴν ἀπομόνωσιν τοῦ πάσχοντος. Συνίσταται δὲ ἡ μέθοδος αὕτη εἰς ἐπαλειμμένας καὶ συχνὰς ἐπιχρίσεις τῶν ἀμυγδαλῶν καὶ τοῦ φάρυγγος διὰ φαινικούχου ἐλαίου καὶ εἰς ἐπαλείψεις τοῦ δέρματος δι' αἰθερίου ἐλαίου ἁγνοῦ εὐκαλύπτου (essence d'eucalyptus pure). Ταυτοχρόνως δὲ προστατεύομεν τὴν κεφαλὴν καὶ τὸ πρόσωπον τοῦ ἀρρώστου, κατὰ τὴν περίοδον τῶν πταρμῶν καὶ τοῦ βηχός, ἐπιθέτοντες πέριξ μέγα ξύλινον τόξον κεκαλυμμένον διὰ λεπτοτάτης ὀθόνης, τὴν ὁποίαν ἐπιρραντίζομεν ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν διὰ τοῦ αἰθερίου ἐλαίου εὐκαλύπτου. Μ. Ν. Κ.

**μιλνέσιον** (τὸ) (Milnesium) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἀκάρεων τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀρκτισκιδῶν*, περιλαμβάνον μικροσκοπικοὺς ζωϊκοὺς ὀργανισμοὺς μὲ εὐδιαχώριστον κεφαλήν, θώρακα καὶ κοιλίαν. Τὰ μιλνέσια εἶναι ἑρμαφρόδιτα ζῳάρια καὶ τρέφονται ἐκ διαφόρων μικροργανισμῶν, φυτικῶν ἢ ζωϊκῶν. Δ. Ν. Π.

**Μίλντα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία ἀκρωτηρίου τῆς νοτίας ἀκτῆς τῆς Λέσβου, μεταξὺ τῶν στομίων τῶν κόλπων Γέρας καὶ Καλλονῆς (πλάτ. 38°58′ 30″ Β., μῆκ. 26°20′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1665: Lesbos island) καὶ ἀμέσως ΝΑ. τῆς ἐκβολῆς τοῦ ποταμίου Ποταμός. Ἔχει πρὸ αὐτοῦ σκοπέλους. Σ. Ε. Λ.

**Μιλοβάνοβιτς**, *Μιλοβάν*. Σέρβος πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης (1863—1912). Ἐσπούδασεν ἐν Βελιγραδίῳ, Βερολίνῳ καὶ Παρισίοις, ὅπου ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος Σέρβος ὁ τυχὼν διπλώματος νομικῆς καὶ τοῦ ὁποίου ἐναίσιμος διατριβὴ ἐτιμήθη διὰ χρυσοῦ μεταλλίου. Μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς τὴν πατρίδα του διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ διεθνοῦς δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βελιγραδίου καὶ ταχέως ἀπέκτησε φήμην μεγάλου νομομαθοῦς, χρηματίσας ὁ κυριώτερος συντάκτης τοῦ σερβικοῦ Συντάγματος τοῦ 1888. Ἀναμειχθεὶς κατόπιν εἰς τὴν πολιτικήν, ἐγένετο γραμματεὺς τῆς κεντρικῆς ἐπιτροπῆς τοῦ ριζοσπαστικοῦ κόμματος. Λόγῳ τῆς εἰδικότητος αὐτοῦ εἰς τὰ διεθνῆ ζητήματα, διωρίσθη γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν, τῷ δὲ 1890 διεπραγματεύθη τὴν ἐμπορικὴν συνθήκην μεταξὺ Σερβίας καὶ Αὐστροουγγαρίας. Ἕνεκα τῶν ριζοσπαστικῶν του ἰδεῶν, ἐπειδή, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ βασιλέως Μιλάνου, ἡ ἀντιβασιλεία ἀνέθεσε τὴν ἀρχὴν εἰς τοὺς φιλελευθέρους, ὁ Μιλοβάνοβιτς ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ ἐκ τῆς θέσεώς του τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὴν ἕδραν του ἐν τῷ πανεπιστημίῳ. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐδημοσίευσε σφοδρότατα ἄρθρα κατὰ τῆς ἀναμείξεως τοῦ Μιλάνου εἰς τὰς ὑποθέσεις τοῦ κράτους καὶ προσεπάθησε νὰ ἐπιτύχῃ τὴν ἕνωσιν ὅλων τῶν ριζοσπαστικῶν κομμάτων. Λέγεται μάλιστα ὅτι ἐξύφανε καὶ συνωμοσίαν κατὰ τοῦ βασιλέως, ἀναγκασθεὶς νὰ καταφύγῃ εἰς τὸ ἐξωτερικὸν καὶ καταδικασθεὶς ἐρήμην εἰς δύο ἐτῶν φυλάκισιν. Τῷ 1900, μετὰ τὴν διακοπὴν τῶν σχέσεων τοῦ βασιλέως Ἀλεξάνδρου μετὰ τοῦ πατρός του, πρώην βασιλέως Μιλάνου, ἔτυχεν ἀμνηστείας καὶ διωρίσθη πρεσβευτὴς τῆς Σερβίας ἐν Βουκουρεστίῳ. Μετ' ὀλίγον ὅμως ἐκλήθη εἰς τὴν πατρίδα του καὶ ἀνέλαβε τὰ ὑπουργεῖα τῆς Γεωργίας καὶ τῶν Οἰκονομικῶν. Τῷ 1901 ἐζήτησε καὶ μετέβη εἰς τὴν Ῥώμην ὡς πρεσβευτής, διατηρήσας τὴν θέσιν ταύτην καὶ μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1903 καὶ τὴν δολοφονίαν τῶν βασιλέων Ἀλεξάνδρου καὶ Δράγας, τῷ δὲ 1907 ἀντεπροσώπευσε τὴν Σερβίαν εἰς τὸ δεύτερον συνέδριον τῆς Χάγης, ὅπου ἐξελέγη καὶ μέλος τοῦ διεθνοῦς δικαστηρίου τῆς διαιτησίας. Τῷ 1908 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ἐν τῷ ὑπουργείῳ τοῦ Βετιμίροβιτς καὶ διηύθυνε τὴν σερβικὴν πολιτικ ν κατὰ τὴν δύσκολον περίοδον τῆς κρίσεως, ἥτις προεκλήθη συνεπείᾳ τῆς προσαρτήσεως Βοσνίας καὶ Ἑρζεγοβίνης ὑπὸ τῆς Αὐστροουγγαρίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐπεχείρησε περιοδείαν ἀνὰ τὰς πρωτευούσας τῶν μεγάλων Δυνάμεων τῆς Εὐρώπης, πρὸς ἔκθεσιν τῶν σερβικῶν ἀπόψεων καὶ ἐπιτυχίαν ἀνταλλαγμάτων διὰ τῆς προσαρτήσεως εἰς τὴν Σερβίαν λωρίδος γῆς ἐκ τῆς Βοσνίας. Καίτοι δὲ ἡ περιοδεία αὕτη ἀπέβη ἄκαρπος, συνέβαλεν ἐν τούτοις εἰς τὸν κατευνασμὸν τῶν πνευμάτων ἐν Σερβίᾳ καὶ εἰς τὴν ἀποφυγὴν ρήξεως μετὰ τῆς Αὐστροουγγαρίας. Τῷ 1911 διεδέχθη τὸν Πάσιτς εἰς τὴν πρωθυπουργίαν καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυρίων ἱδρυτῶν τοῦ βαλκανικοῦ συνδέσμου, συναντηθεὶς πρὸς τοῦτο κατὰ πρῶτον μυστικῶς τὴν 11 Ὀκτωβρίου 1911 ἐν Σερβίᾳ μετὰ τοῦ ἐκεῖ μεταβάντος πρωθυπουργοῦ τῆς Βουλγαρίας Γκέσωφ. Αἱ μυστικαὶ διαπραγματεύσεις ἐξηκολούθησαν καθ' ὅλον τὸν χειμῶνα καὶ κατέληξαν εἰς τὴν ὑπογραφὴν τῆς σερβοβουλγαρικῆς συνθήκης τῆς 13 Μαρτίου 1912 κατὰ τῆς Τουρκίας. Ἀλλ' ἐνῷ ἐξηκολούθει τὰς μυστικὰς διαπραγματεύσεις πρὸς συμπλήρωσιν τῆς συνθήκης ἐκείνης καὶ πρὸς σύναψιν ὁμοίας συνθήκης καὶ μὲ τὰ ἄλλα βαλκανικὰ κράτη, ἀπέθανεν ἐκ συγκοπῆς τῆς καρδίας. Ὁ Μιλοβάνοβιτς ἔγραψε διάφορα ἔργα, κυρίως νομικοῦ χαρακτῆρος, τὸ κυριώτερον τῶν ὁποίων εἶναι «Ἡ συνταγματικὴ Σερβία». Μ. Δ. Β.

*Μιλοβὰν Μιλοβάνοβιτς.*

**Μιλός.** Σέρβος ἡγεμὼν (1780—1860). Υἱὸς πτωχοῦ χωρικοῦ, ἔμεινεν εἰς μικρὰν ἡλικίαν ὀρφανὸς πατρὸς καὶ ἐγένετο βοσκός. Ὅτε ὅμως ὁ ἀδελφός του *Μιλὰν Ὀβρένοβιτς* ἐπλούτησεν ἐκ τοῦ ἐμπορίου χοίρων ὅπερ ἐξήσκει, ὁ Μιλὸς εἰσῆλθεν εἰς τὰς ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ ἀδελφοῦ του, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου (1810) ἔλαβεν ὅλην αὐτοῦ τὴν περιουσίαν καὶ τὸ ὄνομά του. Τῷ 1804 καὶ 1806 οἱ δύο ἀδελφοὶ ἔλαβον μέρος εἴς τινα κατὰ τῶν Τούρκων ἐπανάστασιν. Τῷ 1813 ὁ Μιλὸς ἦτο εἷς τῶν ὀλίγων δεσποτῶν ἐν Σερβίᾳ, οἵτινες δὲν ἔστεργον νὰ ἀκολουθήσωσι τὸν Καραγεώργην κατὰ τὴν φυγήν του εἰς Αὐστρίαν, γεγονὸς ὅπερ ἐνίσχυσε τὴν ἐπιρροήν του, ὥστε νὰ ἔλθωσιν οἱ Τοῦρκοι εἰς διαπραγματεύσεις εἰρήνης πρὸς αὐτόν, ἀναγνωρίσαντες τὸν Μιλὸς κνιὰζ τῶν ἐπαρχιῶν Ρούντνικ, Ποζιὲσκ καὶ Κραγιούγεβατς, ὁλοκλήρου τουτέστι τῆς ΝΔ. Σερβίας. Κατ' ἀρχὰς διετέλει φιλικῶς πρὸς τοὺς Τούρκους, ἀλλὰ τῷ 1815 ἀνέλαβε μόνος τὸν κατὰ τῆς Τουρκίας ἀγῶνα, καθ' ὃν ἠλευθέρωσεν ὁλόκληρον τὴν Σερβίαν. Τῷ 1817, δολοφονήσας τὸν ἐκ τῆς Αὐστρίας ἐπανελθόντα Καραγεώργην, ἀνεγνωρίσθη ὑπὸ τῶν λοιπῶν ἡγεμόνων καὶ τῶν ἐπισκόπων τῆς Σερβίας ὡς ὕπατος ἡγεμὼν τῆς χώρας μετὰ κληρονομικῆς ἐξουσίας. Ἔκτοτε ἡ Σερβία ἀνεγνωρίσθη ὡς αὐτόνομον κράτος, ἡ δὲ ἐξουσία τοῦ Μιλὸς ἐκυρώθη καὶ ὑπὸ τῆς ἐν Κραγιούγεβατς συνελθούσης Σκουψίνας. Ὁ Μιλός, καίτοι ἀμόρφωτος καὶ τελείως ἀγράμματος, διεκρίνετο διὰ τὴν εὐφυΐαν, τὴν σύνεσιν καὶ τὴν διπλωματικήν του ἱκανότητα. Ἡ πλεονεξία του ὅμως ἐδημιούργησεν ἐχθρότητας μεταξὺ τῶν συγγενῶν του καὶ τῷ 1835 ἡ ἐξουσία του ἐκινδύνευσεν ἔκ τινος ἐπαναστάσεως. Τῷ 1839 ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τοῦ θρόνου ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ του Μιλάνου τοῦ Β′ καὶ νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Σερβίαν. Ἡ ἔκρυθμος ὅμως κατάστασις, ἡ δημιουργηθεῖσα ἐν τῇ χώρᾳ, ἠνάγκασε τὴν Σκουψίναν νὰ τὸν ἀνακαλέσῃ (1858) εἰς τὴν ἐξουσίαν. Κατὰ τὴν τελευταίαν διετῆ ἡγεμονίαν του εἰσήγαγε νέους τινὰς νόμους καὶ μεταρρυθμίσεις ἐν τῷ στρατῷ. Τὸν διεδέχθη ὁ Μιχαὴλ Γ′ Ὀβρένοβιτς. Τ. ΒΑΦΕΙΑΔΗΣ

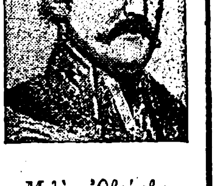

*Μιλὸς Ὀβρένοβιτς.*

**μιλοσχίνης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου ἔνυδρον. Ἀποτελεῖ χρωμιοῦχον παραλλαγὴν τοῦ ἀλλοφανοῦς, παρουσιάζει δὲ θραυσμὸν κογχώδη, σκληρότητα $1\frac{1}{2}$—2 καὶ χρῶμα ἰνδικόν, κυανοῦν καὶ πράσινον. Ἀπαντᾷ μὲ λειμωνίτην παρὰ τὸ Rudnik ἐν Σερβίᾳ. Γ. Β.

**Μιλούτιν**, ***Νεμάνιτς*** ἢ ***Νεμάνιας***. Σέρβος βασιλεύς, δεύτερος υἱὸς τοῦ βασιλέως Οὐρὸς τοῦ Α′. Ἐπολέμησε πρὸς τὸν Μιχαὴλ Παλαιολόγον (1261) καὶ τὸν Ἀνδρόνικον τὸν πρεσβύτερον (1296), τοῦ ὁποίου βραδύτερον ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα. Ἀπέθανε τῷ 1322. Τ. Β.

**Μιλουτίνοβιτς**, ***Συμεὼν*** ἢ ***Σίμα Σαραηλής***. Σέρβος ποιητὴς (1791—1848). Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Σερβίς» ποίημά του, ὅπου εἰς στίχους ἐπικολυρικοὺς ψάλλει τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς πατρίδος του (1804—1815) ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Καραγεώργη καὶ τοῦ Μιλός. Ἐδημοσίευσεν ὡσαύτως συλλογὴν λαϊκῶν τραγουδιῶν καὶ ἱστορικάς τινας πραγματείας. Τ. Β.

**Μιλουώκη** (Milwaukee) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη ἐμπορικὴ καὶ βιομηχανικὴ πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς ἐν Οὐΐσκονσιν, ἕδρα ὁμωνύμου κομιτείας. Κεῖται ἐπὶ τῆς δυτικῆς ὄχθης τῆς λίμνης τοῦ Μίτσιγκαν, 132 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Σικάγου, παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, ὅστις κατὰ τὸν ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν ἀνάπλουν μέχρις ἀποστάσεως 4 χλμ. εἶναι πλωτὸς εἰς μεγάλα ἀτμόπλοια, συναντᾶται δὲ ἐντὸς τῆς πόλεως μετὰ τῶν παραποτάμων του *Μενόμονη* καὶ *Κιννίκιννιχ*. Εἶναι ἐκ τῶν τεραστίως ἀναπτυχθεισῶν κατὰ τὴν τελευταίαν ἑκατονταετηρίδα πόλεων, ἔχουσα σήμερον 544.200 κατ., ἐνῷ τῷ 1850 ὁ πληθυσμός αὐτῆς ἀνήρχετο εἰς 20.000 κατ. μόνον. Εἶναι ὁ κυριώτερος συγκοινωνιακὸς κόμβος τῆς πολιτείας Οὐΐσκονσιν, οὖσα ἀφετηρία 8 σιδηροδρομικῶν γραμμῶν πρὸς ὅλας τὰς διευθύνσεις. Ἐπίσης ὁ λιμὴν αὐτῆς εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τῆς λίμνης Μίτσιγκαν, συναγωνιζόμενος ἐπιτυχῶς τὸν τοῦ Σικάγου. Ἡ πόλις εἶναι ἐκτισμένη κατὰ μὲν τὸ ἓν ἥμισυ ἐπὶ ἐπιπέδου ἐδάφους, ὀλίγον ὑψηλοτέρου τῆς στάθμης τῆς λίμνης, κατὰ δὲ τὸ ἕτερον ἥμισυ ἐπὶ βράχων 6 ἕως 30 μ. Αἱ οἰκοδομαὶ εἶναι

Digitized by Google

κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ἐκτισμέναι ἐξ εἰδικῶν πλίνθων χρώματος ἀνοικτοῦ, κατασκευαζομένων ἐπιτοπίως καὶ τῶν ὁποίων γίνεται μεγάλη ἐξαγωγή. Ἡ Μιλουώκη εἶναι μεγάλη καὶ ὡραία πόλις κοσμουμένη ὑπὸ πολλῶν ἐκτεταμένων πάρκων (Juneau Park, Schlitz Park κλπ.) καὶ διασχιζομένη ὑπὸ εὐρειῶν καὶ δενδροφύτων λεωφόρων. Σπουδαιότεραι τούτων εἶναι ἡ Μεγάλη λεωφόρος (Grand Avenue), διασχίζουσα τὴν πόλιν ἐκ Δ. πρὸς Α., ἡ ἐμπορικὴ ἀρτηρία Cast Water Street, ἡ παρὰ τὴν λίμνην λεωφόρος Prospect κλπ. Ἐκ τῶν κτηρίων διακρίνονται τὸ δημαρχεῖον, τὸ δικαστικὸν μέγαρον, τὸ ἐμπορικὸν ἐπιμελητήριον, ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Παύλου, τὸ μέγαρον τῆς ἐκθέσεως, τὸ μουσεῖον Λάϋτον, τὸ θέατρον κλπ.

Κυριώτερα ἐκπαιδευτικὰ καὶ ἐπιστημονικὰ ἱδρύματα εἶναι τὸ πανεπιστήμιον Marquette College (4500 σπουδασταὶ τῷ 1925), τὸ κολλέγιον κορασίδων, τὸ γερμανικὸν σεμινάριον, τὸ μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας καὶ ἡ βιβλιοθήκη, περιλαμβάνουσα 580.858 τόμους. Ἐπίσης λειτουργεῖ πλῆθος φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων καὶ κατάστημα ἀπομάχων, ἔνθα διαιτῶνται 20.000 παλαιοὶ πολεμισταί. Τὸ ἥμισυ καὶ πλέον τοῦ πληθυσμοῦ τῆς Μιλουώκη εἶναι Γερμανοὶ προσδίδοντες εἰς αὐτὴν χαρακτῆρα γερμανικῆς πόλεως, ἐπονομάζεται δὲ συχνάκις «Γερμανικαὶ Ἀθῆναι τῆς Ἀμερικῆς». Κύρια προϊόντα τοῦ ἐμπορίου τῆς Μιλουώκη εἶναι τὰ σιτηρά, τὸ ἄλευρον καὶ ἡ οἰκοδομικὴ ξυλεία. Ἡ βιομηχανία περιλαμβάνει μεγάλα σφαγεῖα μετὰ κονσερβοποιητικῶν ἐγκαταστάσεων χοιρείου κρέατος, μεγάλα καὶ τελειότατα ἐργοστάσια ζυθοποιίας, τὰ κάλλιστα τῶν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας, μηχανουργεῖα καὶ ἐγκαταστάσεις κατασκευῆς εἰδῶν κιγκαλερίας. Ἐπίσης λειτουργοῦσιν ἀλευρόμυλοι, διυλιστήρια, βυρσοδεψεῖα κλπ. Ἡ Μιλουώκη τῷ 1785 ἦτο μικρὸς ἐμπορικὸς σταθμός, ἱδρυθεὶς ὑπὸ τοῦ γαλλικῆς καταγωγῆς ἀποίκου Ἀλεξάνδρου Λαφραμποναζ ντὲ Μακινώ. Τῷ 1835 ὁ Σολομὼν Ζυνὼ ἵδρυσε τὴν πόλιν, ἡ ὁποία τῷ 1840 ἠρίθμει μόνον 1.750 κατ. Μετὰ ἓξ ἔτη (1846) ἀνεκηρύχθη εἰς ἄστυ, σημειώσασα ἔκτοτε καταπληκτικὴν πρόοδον. [Πρβλ. καὶ *H. L. Conrad* «History of Milwaukee, 1896.]

Χ. Δ.

**μιλρεΐς** (milreis).—1) Χρυσῆ νομισματικὴ μονὰς τῆς Βραζιλίας, περιέχουσα 0,82166 γραμ. καθαροῦ χρυσοῦ καὶ ὑποδιαιρουμένη εἰς 1000 ρεΐς.

Ἰσοτιμία: 1 £=8,9117 mr.—1 $ = 1,8319 mr.—1 mr.=42,0795 δραχ.

— 2) Χρυσῆ νομισματικὴ μονὰς τῆς Πορτογαλίας πρὸ τοῦ 1911, ὑποδιαιρουμένη εἰς 1000 ρεΐς, βάρους 1,7735 γρ., τίτλου 0,9166. Ἰσοτιμία: 1 mr.= 5,599 χρ. φρ. Λ. Ν. Ε. ἢ £ 0-4-6, ἢ 81, 19 χρ. δρ.— Ἀπὸ τοῦ 1911 ἡ νομισματικὴ μονὰς τῆς Πορτογαλίας ὠνομάσθη escudo. Εἰς τὸ ἐμπόριον κρατεῖ εἰσέτι ἡ ὀνομασία milreis.

ΤΡ. ΚΕΡΑΜΙΔΑΣ

**Μιλτιάδης.** —1) Εὐπατρίδης Ἀθηναῖος, υἱὸς τοῦ Κυψέλου, ἐκ τοῦ γένους τῶν Φιλαϊδῶν. Οὗτος ἔζη ἐν Ἀθήναις κατὰ τοὺς χρόνους τῆς πρώτης τυραννίδος τοῦ Πεισιστράτου, τοῦ ὁποίου βαρέως ἔφερε τὸν ζυγόν, διότι ἦτο ἰσότιμος του εὐπατρίδης, ἀνάγων τὴν ἀρχὴν τοῦ γένους του εἰς τὸν ἥρωα Φίλαιον, τὸν υἱὸν του Τελαμωνίου Αἴαντος. Τῶν Ἀθηνῶν ἀπεμακρύνθη ὁ Μιλτιάδης γενόμενος, κατὰ προτροπὴν τῆς Πυθίας (*Ἡροδ. ΣΤ´ 36*), ἡγεμὼν τῶν Δολόγκων τῆς Θράκης, τῶν ὁποίων πρεσβεία κατὰ συμβουλὴν τοῦ ἐν Δελφοῖς Ἀπόλλωνος εἶχε μεταβῆ εἰς Ἀθήνας, διὰ νὰ ζητήσῃ ἡγεμόνα. Μεταβὰς εἰς τὴν Θρακικὴν χερσόνησον ὁ Μιλτιάδης ἔκτισεν ἐγκάρσιον τεῖχος ἐν αὐτῇ πρὸς προφύλαξιν τοῦ κράτους ἀπὸ τῶν ἀπὸ βορρᾶ προσβολῶν τῶν βαρβάρων. Μετὰ ταῦτα, θελήσας νὰ ἐπεκτείνῃ τὸ κράτος του καὶ ἐπὶ τῆς ἀσιατικῆς ἀκτῆς τοῦ Ἑλλησπόντου, περιῆλθεν εἰς πόλεμον πρὸς τοὺς Λαμψακηνούς, ὑπὸ τῶν ὁποίων καὶ ᾐχμαλωτίσθη κατά τινα μάχην. Ἄφησαν ὅμως τοῦτον ἐλεύθερον οἱ Λαμψακηνοί, ἀπειληθέντες ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Λυδίας Κροίσου, φίλου τοῦ Μιλτιάδου. Τὸν Μιλτιάδην, ἀποθανόντα ἄτεκνον, διεδέχθη ὡς ἡγεμὼν τῶν Δολόγκων ὁ ἀνεψιός του Στησαγόρας.

—2) Ὁ ἔνδοξος νικητὴς τῶν Περσῶν ἐν Μαραθῶνι, ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου καὶ διάδοχος ἐν τῇ ἡγεμονίᾳ τῶν Δολόγκων τοῦ ἀδελφοῦ του Στησαγόρου. Γενόμενος ἡγεμὼν τῆς Θρακικῆς χερσονήσου, συνεζεύχθη τὴν θυγατέρα τοῦ βασιλέως τῶν Θρακῶν Ὀλόρου καὶ ὑπέταξεν εὐθὺς μετὰ τὴν ἀνάληψιν τῆς ἡγεμονίας τὴν νῆσον Λῆμνον, τὴν ὁποίαν καὶ παρέδωκεν εἰς τοὺς συμπολίτας του Ἀθηναίους. Μετὰ ταῦτα ἤρχισε τὴν ἐπέκτασιν τοῦ κράτους του εἰς τὰς περικειμένας ἀκτὰς καὶ νήσους, ἀλλὰ προκατέλαβε τοῦτον ἡ κατὰ τῶν Σκυθῶν ἐκστρατεία τοῦ Δαρείου, ἡ ὁποία τὸν ἠνάγκασε νὰ γίνῃ, ἄκων, ὄργανον τῶν κατακτητικῶν σχεδίων τοῦ βασιλέως ἐκείνου. Φυλάττων μετὰ τῶν τυράννων τῶν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἑλληνικῶν πόλεων τὴν ἐπὶ τοῦ Ἴστρου (Δουνάβεως) στηθεῖσαν ὑπὸ τοῦ Δαρείου γέφυραν, προέτεινε τὴν διάλυσιν αὐτῆς πρὸς ἐξολόθρευσιν τῆς πέραν τοῦ ποταμοῦ μαχομένης στρατιᾶς τοῦ Δαρείου καὶ ἀπολύτρωσιν τῶν Ἰώνων ἀπὸ τοῦ περσικοῦ ζυγοῦ. Ἡ πρότασίς του ὅμως ἐκείνη ἀπερρίφθη, διότι κατίσχυσεν ἡ γνώμη τοῦ Ἱστιαίου, τυράννου τῆς Μιλήτου, ὅστις ὑπέδειξεν ὅτι τὰ συμφέροντα τῶν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ Ἑλλήνων τυράννων συνδέονται στενῶς μετὰ τῶν συμφερόντων τοῦ Πέρσου μονάρχου. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἰωνικῆς ἐπαναστάσεως ὁ Μιλτιάδης κατῆλθεν εἰς Ἀθήνας, ἔνθα δὲν ἦτο δημοφιλής, διότι οὔτε εἰς τὴν ἐξωσιν τῶν Πεισιστρατιδῶν εἶχε συντελέσει καὶ ὁ ἴδιος ὑπῆρξε τύραννος ἐν τῇ Θρᾳκικῇ χερσονήσῳ ἐπὶ μακρὰ ἔτη. Μάλιστα καὶ κατηγορήθη ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν του, ἀλλ' ἠθῳώθη, ὅτε ἀπέδειξεν ὅτι ἡ τυραννία του τὰς Ἀθήνας ὠφέλησε διὰ τῆς εἰς αὐτὰ παραδόσεως τῆς Λήμνου καὶ παρ' ὀλίγον νὰ συντελέσῃ εἰς τὸν ὄλεθρον τοῦ ἐθνικοῦ ἐχθροῦ τῶν Ἑλλήνων, τοῦ βασιλέως τῶν Περσῶν Δαρείου. Κατὰ τὸ ἔτος τῆς πρώτης ἐναντίον τῆς Ἑλλάδος

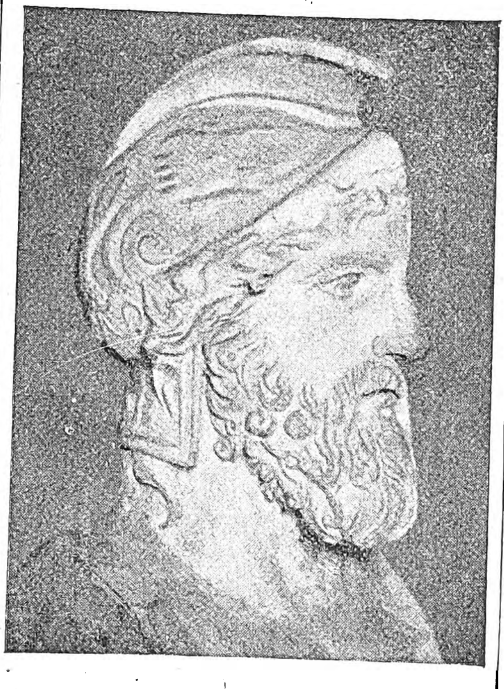

*Προτομὴ τοῦ Μιλτιάδου.*

[Μουσεῖον Λούβρου.]

ἐκστρατείας τῶν Περσῶν, ὁ Μιλτιάδης εἶχεν ἐκλεγῇ μετὰ τοῦ Ἀριστείδου μεταξὺ τῶν 10 Ἀθηναίων στρατηγῶν καὶ εἶχεν ἐφελκύσει εἰς ἑαυτὸν ἀπεριόριστον τὴν ἐμπιστοσύνην τῶν συμπολιτῶν του, διότι καὶ τὸν τρόπον τοῦ μάχεσθαι τῶν Περσῶν ἐγνώριζε καὶ ἐμπειροπολεμώτερος τῶν συστρατήγων του ἐν γένει ἦτο. Εἰς τὴν κατίσχυσιν δὲ τῆς γνώμης αὐτοῦ ὀφείλεται καὶ ὅτι ἐξῆλθον οἱ Ἀθηναῖοι εἰς Μαραθῶνα πρὸ τῆς εἰς Ἀθήνας ἀφίξεως τῆς ζητηθείσης βοηθείας τῶν Σπαρτιατῶν καὶ ὅτι συνῆψαν τὴν ἐν Μαραθῶνι μάχην, ἀφοῦ ἐτάχθη μὲ τὴν γνώμην τοῦ Μιλτιάδου καὶ ὁ πολέμαρχος Καλλίμαχος (βλ. λ. *Μαραθών*). Ἔργον τοῦ Μιλτιάδου ἦτο καὶ ἡ ἐκλογὴ τῆς καταλλήλου πρὸς στρατοπέδευσιν θέσεως καὶ ἡ εἰς ἴσον πρὸς τὸ τῆς περσικῆς στρατιᾶς μέτωπον ἀντιπαράταξις τῶν Ἀθηναίων διὰ τῆς ἀραιώσεως τοῦ κέντρου των, πρὸς ἀποφυγὴν τῆς ὑπὸ τῆς πολυπληθεστέρας περσικῆς στρατιᾶς ὑπερφαλαγγίσεώς των. Ἔργον τῆς πρωτοβουλίας του ἐπίσης ἦτο ἡ ἐκλογὴ τῆς καταλλήλου πρὸς ἐπίθεσιν στιγμῆς καὶ ὁ τρόπος τῆς ἐπιθέσεως (δρμητικὴ ἐπίθεσις) πρὸς καταπτόησιν τοῦ ἐχθροῦ καὶ ὅπως οἱ ἐπιτιθέμενοι βλαβῶσιν ὅσον τὸ δυνατὸν ὀλιγώτερον ὑπὸ τῶν τοξευμάτων τοῦ ἐχθροῦ, ὅστις ἐπλεονέκτει κατὰ τὸν ὁπλισμὸν τοῦτον, ὡς καὶ ἡ διακοῦσης τῆς μάχης συνένωσις τῶν κεράτων πρὸς ἐπίθεσιν ἀπὸ τῶν νώτων τῶν νικώντων ἐν τῷ κέντρῳ Περσῶν. Ἡ ἐν τῇ μάχῃ ταύτῃ ἔλλειψις γραμμῆς ὑποχωρήσεως τῶν Περσῶν, εἰς τὴν ὁποίαν θὰ ἦτο δυνατὸν ν' ἀνασυνταχθῶσιν οὗτοι, ἐπήνεγκεν, ὡς εἶχε προΐδει ὁ Μιλτιάδης, τὴν πανωλεθρίαν των. Διὰ τοῦτο δικαίως ἡ ἔνδοξος μάχη τοῦ Μαραθῶνος, ἥτις ὑπῆρξε τὸ θεμέλιον τοῦ μεγαλείου τῶν Ἀθηνῶν, δὲν ἦτο μόνον ὁ ὥριμος καρπὸς τοῦ φιλελευθέρου πολιτεύματος τοῦ κλεινοῦ ἄστεως, ἀλλὰ καὶ τὸ ἔργον τῆς τόλμης καὶ τῆς στρατηγικῆς μεγαλοφυΐας τοῦ Μιλτιάδου. Τὸ ὄνομα τοῦ νικητοῦ στρατηγοῦ κατέστη περιλάλητον ἀνὰ τὸ πανελλήνιον μετὰ τὴν ἔνδοξον νίκην του, οἱ δὲ Ἀθηναῖοι εὐγνωμονοῦντες ἐτίμησαν αὐτὸν ποικιλοτρόπως μετὰ τὸν θάνατόν του. Οὕτως εἰς τὸ ἀφιερωθὲν εἰς τοὺς Δελφοὺς χάλκινον ἀνάθημά των (ἔργον τοῦ Φειδίου), τὸ συγκείμενον ἀπὸ τὰ ἀγάλματα τῆς Ἀθηνᾶς, τοῦ Ἀπόλλωνος, τοῦ Θησέως, τοῦ Κόδρου καὶ τῶν ἐπωνύμων ἡρώων τῶν ἀττικῶν φυλῶν, περιελαμβάνετο, ὅλως ἐξαιρετικῶς, ἐκ τῶν ἱστορικῶν προσώπων τῶν ἀρχαίων Ἀθηνῶν καὶ ὁ Μιλτιάδης. Ὁμοίως εἰς τὴν ἐν τῇ Ποικίλῃ Στοᾷ εἰκόνα τῆς ἐν Μαραθῶνι μάχης οἱ ζωγράφοι Μίκων καὶ Πάναινος κατέστησαν ὅλως καταφανεῖς μεταξὺ τῶν μαχομένων τὰς μεγάλας μορφὰς τοῦ Μιλτιάδου, τοῦ πολεμάρχου Καλλιμάχου, τοῦ μαραθωνομάχου ποιητοῦ Αἰσχύλου καὶ τοῦ ἥρωος ἀδελφοῦ του Κυναιγείρου. Ἀλλὰ καὶ τάφον ἀνήγειραν εἰς αὐτὸν ἐν αὐτῷ τῷ πεδίῳ τῆς νίκης του. Ἀτυχῶς ὑπῆρξεν οἰκτρὸν τὸ τέλος τοῦ μαραθωνομάχου τούτου ἥρωος. Ἐπιβαλὼν εἰς τὸν δῆμον νὰ χορηγήσῃ πρὸς αὐτὸν πολεμικὰ πλοῖα καὶ χρήματα, ὅπως ἐκδικηθῇ, ὡς ἀρχιστράτηγος τοῦ ἀθηναϊκοῦ στόλου, τὰς μηδισάσας νήσους τῶν Κυκλάδων, ἐξεστράτευσε κατὰ τῆς Πάρου, ἥτις εἶχε χορηγήσει μίαν τριήρη πρὸς τοὺς Πέρσας. Ἡ ἐκστρατεία του ὅμως ὑπῆρξεν ἀτυχής, διότι στερούμενος πολιορκητικῶν μηχανῶν δὲν ἐπέτυχε τὴν ἅλωσιν τοῦ φρουρίου τῆς νήσου καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὰς Ἀθήνας ἄπρακτος. Οἱ ἐχθροί του τότε, προεξαρχόντων ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Ξανθίππου τῶν Ἀλκμεωνιδῶν, οἵτινες εἶχον διαβληθῆ ὡς μηδίζοντες μετὰ τὴν μάχην τοῦ Μαραθῶνος, τὸν κατηγόρησαν ὅτι παρέσυρε τοὺς Ἀθηναίους εἰς τὴν κατὰ τῆς Πάρου ἐκστρατείαν πρὸς ἱκανοποίησιν ἀτομικοῦ του πάθους, ἤτοι πρὸς τιμωρίαν τοῦ προσωπικοῦ του ἐχθροῦ Λυσαγόρα, ὅστις εἶχε διαβάλει ἄλλοτε αὐτὸν πρὸς τοὺς Πέρσας, καὶ ἐπέτυχον τὴν καταδίκην αὐτοῦ εἰς πρόστιμον 50 ταλάντων. Ἐπειδὴ δὲ δὲν ἠδυνήθη νὰ πληρώσῃ τὸ πρόστιμον, διότι τὰ ἐν τῇ Θρᾳκικῇ χερσονήσῳ κτήματά του εἶχον περιέλθει εἰς τοὺς Πέρσας, ἐκηρύχθη ἄτιμος καὶ ἐφυλακίσθη. Ἀπέθανε δὲ ἐν τῇ εἱρκτῇ, καταβληθεὶς καὶ σωματικῶς ἐκ τοῦ τραύματος τὸ ὁποῖον εἶχε λάβει ἐν Πάρῳ καὶ ψυχικῶς διὰ τὴν ταπείνωσιν τὴν ὁποίαν ὑπέστη. Τὸ χρηματικὸν πρόστιμον ἐπλήρωσεν ὁ υἱὸς του Κίμων πρὸς ἀνάκτησιν τῶν πολιτικῶν δικαιωμάτων του, τὰ ὁποῖα καὶ οὗτος εἶχε στερηθῆ ἕνεκα τοῦ πατρικοῦ χρέους. Βιογραφίαν τοῦ Μιλτιάδου ἔχομεν τὴν τοῦ Κορνηλίου Νέπωτος.

Γ. Δ. ΚΑΨΑΛΗΣ

— **Μιλτιάδης ὁ *ἀπολογητής*.** Εἷς τῶν ἐπισημοτέρων ἀπολογητῶν τῆς χριστιανικῆς πίστεως, κατὰ τὸν Συνέσιον (Ἐκκλ. ἱστορ. 5, 28), ὁμότιμος πρὸς τὸν Ἰουστῖνον, Τατιανὸν καὶ Κλήμεντα. Ἔγραψε «Πρὸς τὰ ἔθνη ὑπὲρ τῆς ἀληθείας καὶ πρὸς τὰς τότε αἱρέσεις», ὡς καὶ ἄλλα συγγράμματα ἀπολεσθέντα ἐξ ὁλοκλήρου.

† Η. Φ. Β.

— **Μιλτιάδης.** Πάπας τῆς Ρώμης (βλ.λ. *Μελχιάδης*).

**μίλτινος,**—*η*,—*ον* ὁ ἐκ μίλτου κατεσκευασμένος || ***μίλτινον*** (τό) ὡς οὐσ., τὸ κόκκινον χρῶμα.

**μιλτοβαφῶ** (—*έω*)· βάφω, χρωματίζω διὰ τῆς μίλτου.

**μιλτογραφία** (ἡ). Ὀνομάζεται οὕτως ἡ διὰ μίλτου γραφὴ καὶ διακόσμησις χειρογράφων. Ἡ διακόσμησις αὕτη περιλαμβάνει προμετωπίδας, τίτλους, ἐπιτίτλους, ἀρχικὰ καὶ μικρὰς παραστάσεις, αἵτινες κυρίως φέρονται ὑπὸ τὸ ὄνομα *μικρογραφίαι* (βλ. λ.). Τινὲς νομίζουσιν ὅτι ἀντὶ τοῦ ὅρου *μικρογραφία* δέον νὰ χρησιμοποιῆται ὁ ὅρος *μιλτογραφία*, ἣν ἄλλως καὶ *μινιογραφίαν* καλοῦσι.

Ι. Μ. Π.

**Μιλτοκύθης.**—1) Ἡγεμὼν τῆς Θράκης, ὅστις, ἀκολουθήσας Κῦρον τὸν νεώτερον κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἀρταξέρξου, ηὐτομόλησε πρὸς τὸν τελευταῖον μετὰ τὴν παρὰ τὰ Κούναξα μάχην (401 π. Χ.) μετὰ 40 ἱππέων καὶ 300 πεζῶν.

— 2) Δυνάστης Θρᾷξ, ὅστις ἀποστατήσας ἀπὸ τοῦ Κότυος Α´ βασιλέως τῆς Θράκης καὶ νικηθεὶς ὑπ' αὐτοῦ, ηὐτομόλησε πρὸς τοὺς Ἀθηναίους. Βραδύτερον ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ Χαριδήμου, γαμβροῦ τοῦ Κότυος, εἰς τοὺς Καρδιανούς, ἐχθροὺς τῶν Ἀθηναίων, οἵτινες τὸν κατέσφαξαν.

Α. Θ. Σ.

**μίλτος** (ἡ). Παραλλαγὴ τοῦ ὀρυκτοῦ αἱματίτου, χρησιμοποιουμένη πρὸς ἐρυθρὰν χρῶσιν. Ἐκ τούτου προῆλθεν ὁ ὅρος *μιλτογραφία* (βλ. λ.). —Ω.

**μιλτόχρους,** —*ου* (ὁ, ἡ), —*ουν* (τό)· ὁ ἔχων τὸ χρῶμα τῆς μίλτου, ἐρυθρόχρους.

**μιλτῶ** (—*όω*)· ἀλείφω, βάφω μὲ μίλτον, βάφω κόκκινον: «*μεμιλτωμένον σχοινίον*».

**μιλτώδης** (ὁ, ἡ), —*ες* (τό)· ὁ ἔχων τὸ χρῶμα τῆς μίλτου, κόκκινος, ἄλλως *μιλτόχρους*.

**Μίλτων** (Milton), ***Ἰωάννης.*** Ὁ μέγιστος τῶν ἐπικῶν ποιητῶν τῆς Ἀγγλίας, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Λονδίνῳ (1608—1674). Ἦτο υἱὸς συμβολαιογράφου καὶ μουσικοῦ, καταγομένου ἐξ Ὀξφόρδης, ὅπου ὁ πάππος τοῦ ποιητοῦ, φανατικὸς καθολικός, τὸν εἶχεν ἀποκληρώσει ὡς ἀσπασθέντα τὸ ἀγγλικανικὸν δόγμα. Χάρις εἰς τὴν εὐρεῖαν μόρφωσίν του καὶ τὰς νομικὰς καὶ μουσικὰς γνώσεις του, ὁ πατὴρ τοῦ ποιητοῦ, ἐγκατασταθεὶς ἐν Λονδίνῳ, κατώρθωσε ν' ἀποκτήσῃ ἱκανὴν περιουσίαν, ἡ ὁποία ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ δώσῃ εἰς τὸν υἱόν του ἐξαιρετικῶς ἐπιμεμελημένην ἀνατροφήν. Τὰ πρῶτα μαθήματα ὁ νεαρὸς Μίλτων ἐδιδάχθη κατ' οἶκον, ἔχων ὡς διδάσκαλον τὸν Θω-



Digitized by Google

μᾶν Γιούνγκ, τοῦ ὁποίου ὁ αὐστηρὸς πουριτανισμὸς ἐξήσκησε μεγίστην ἐπίδρασιν εἰς τὸ πνεῦμα, τὴν ψυχὴν καὶ τὸ μέλλον ἐν γένει τοῦ ποιητοῦ. Ἐφοίτησε κατόπιν εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Ἁγίου Παύλου, ὅπου αἱ εἰς τὴν λατινικὴν καὶ τὴν ἀγγλικὴν γλῶσσαν ἐκθέσεις του προσείλκυσαν τὴν προσοχὴν τῶν καθηγητῶν του. Τῷ 1624 ἐτελειοποίησε τὰς σπουδάς του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κανταβριγίας, ὅπου οἱ συμμαθηταί του προσέδωκαν εἰς αὐτὸν τὸ παρωνύμιον «ἡ κυρία», λόγῳ τῆς σχεδὸν γυναικείας ὡραιότητός του καὶ τῶν λεπτῶν καὶ σχεδὸν ἐκτεθηλυμένων τρόπων του· ἐν τούτοις δὲν ἐστερεῖτο μεγάλης δυνάμεως χαρακτῆρος καὶ ἀνδρικῆς ἀγερωχίας, ἕνεκα τῆς ὁποίας ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ ἐπί τι χρονικὸν διάστημα τὸ πανεπιστήμιον συνεπείᾳ βιαίας συζητήσεως μὲ τοὺς καθηγητάς του. Τῷ 1632, μετὰ τὸ τέλος τῶν σπουδῶν του, ἐπέστρεψε παρὰ τῷ πατρί του, ὁ ὁποῖος ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἀποσυρθῆ ἐκ τοῦ συμβολαιογραφείου καὶ ἔζη εἰς τὴν ἔπαυλίν του ἐν Χόρτον παρὰ τὸ Οὐΐνδσωρ τῆς κομιτείας τοῦ Μπάκκιγχαμ. Καίτοι εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κανταβριγίας εἶχε σπουδάσει θεολογίαν, πρὸς τὸν σκοπὸν ὅπως ἀφιερωθῇ βραδύτερον εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν στάδιον, ἐν τούτοις ἐγκατέλειψε τὴν πρόθεσίν του ταύτην, ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν διότι δὲν ἤθελε νὰ καθυποτάξῃ τὴν ἐλευθερίαν τοῦ πνεύματός του, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ λόγῳ τῆς διαφωνίας του καὶ τῆς ἀντιπαθείας του πρὸς τοὺς ἰθύνοντας τὰ τῆς πρεσβυτεριανῆς Ἐκκλησίας. Ἀφιερώθη δὲ τελείως, ἐπὶ ἓξ συνεχῆ ἔτη, ἐν τῷ μέσῳ τῆς γαλήνης καὶ τῆς μονώσεως, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἔζη ἡ οἰκογένειά του ἐν τῇ ἐξοχῇ, εἰς τὴν μουσικὴν καὶ τὴν μελέτην τῶν Ἑλλήνων καὶ Λατίνων κλασσικῶν, τῶν μαθηματικῶν καὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ μαθηματικοῦ του βίου ἐν Κανταβριγίᾳ εἶχε συνθέσει πλεῖστα ποιήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων πολλὰ εἰς τὴν ἑλληνικὴν γλῶσσαν καὶ ἄλλα εἰς τὴν λατινικήν, ἐξ ὧν ἐξαίρονται αἱ ἑπτὰ συνθέσεις τοῦ «Elegiarum Liber», διάφορα ἐπιγράμματα, πέντε συνθέσεις τοῦ «Sylvarum Liber», τὰ ποιήματα «In quintum novembris» (1626) καὶ «Naturam non pati senium (1628), καθὼς καί τινα εἰς τὴν ἀγγλικὴν γλῶσσαν, ὧν τὸ ὀνομαστότερον εἶναι ἡ ᾠδὴ «On the morning of Christ's Nativity» (1629). Ἐν Χόρτον, πλὴν τοῦ λατινικοῦ ποιήματος «Ad patrem», συνέθεσε τὰ εἰδύλλια «L'Allegro» καὶ «Il Penseroso» (1645), τὰ ὁποῖα, διακρινόμενα διὰ τὴν καλλιτεχνικήν των ὡραιότητα, ἐπέδρασαν σημαντικώτατα εἰς τὴν βουκολικὴν ποίησιν τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος καὶ περὶ τῶν ὁποίων ὁ Μακώλεϋ ἔγραψεν ὅτι «δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ φαντασθῇ κανεὶς ἐξαιρετικώτερον βαθμὸν τελειότητος ἐν τῷ μηχανισμῷ τῆς γλώσσης. Τὰ ποιήματα ταῦτα διαφέρουν ἀπὸ τὰ ἄλλα, ὅπως διαφέρει τὸ ἀπόσταγμα τῶν ῥόδων ἀπὸ τὸ σύνηθες ῥοδόνερον, ὅπως διαφέρει τὸ συμπεπυκνωμένον ἀπόσταγμα ἀρώματος ἀπὸ τὸ ἀναμεμειγμένον μὲ ἄφθονον ὕδωρ. Ἕκαστον ἐπίθετον δύναται νὰ χρησιμεύσῃ ὡς θέμα μιᾶς ὁλοκλήρου στροφῆς». Τῷ 1633 εἶχε συνθέσει τὸ ποίημα «Arcades», τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος τὸ περίφημον λυρικὸν δρᾶμα «Comus», τὸ ἀριστούργημα τῶν νεανικῶν του ἔργων. Πρόκειται περὶ μικροῦ δράματος, τὸ ὁποῖον ὁ ποιητὴς ἐνεπνεύσθη ἐκ τοῦ πραγματικοῦ γεγονότος τῆς ἀποπλανήσεως τῶν δύο υἱῶν καὶ τῆς θυγατρὸς τοῦ ἄρχοντος τῆς Οὐαλλίας Μπριτζγουῶτερ ἐν τῷ δάσει τοῦ Χάϋγουντ, ὅπου ἡ νεαρὰ κόρη εἶχεν ἀποχωρισθῆ πρὸς στιγμὴν ἀπὸ τοὺς δύο ἀδελφούς της. Ὁ Μίλτων φαντάζεται ὅτι ὁ υἱὸς τῆς Κίρκης Κῶμος, ὁ θεὸς τῶν φλογερῶν ἀπολαύσεων καὶ τῶν ἡδονῶν, συναντήσας τὴν νεαρὰν κόρην, ὡδήγησεν αὐτὴν εἰς μαγικὸν ἀνάκτορον, ὅπου οἱ ἀδελφοί της προστρέξαντες ἀπηλευθέρωσαν αὐτήν. Εἶναι ἀνυπέρβλητος ἡ αὐστηρὰ χάρις τοῦ στίχου καὶ ἡ λεπτότης τῆς φρασιολογίας καὶ τῶν εὐγενῶν αἰσθημάτων τοῦ ἔργου τούτου, ὅπερ παρέμεινε κλασσικὸν εἰς τὸ εἶδός του. Ὁ φίλος τοῦ ποιητοῦ Ἐρρῖκος Lawes ἐμελοποίησε τὸ δρᾶμα τοῦτο, ὅπερ τὰ τέκνα τοῦ κόμιτος Μπριτζγουῶτερ παρέστησαν κατόπιν διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸν πύργον τοῦ Λούντλω. Τῷ 1637 ἔγραψε τὸν «Lycidas», ποιμενικὸν ἐλεγεῖον, ἐν τῷ ὁποίῳ θρηνεῖ τὸν θάνατον τοῦ φίλου του Κίνγκ, πνιγέντος εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Ἰρλανδίας. Τὰ ποιήματα ταῦτα καὶ ἄλλα τινά, ἅτινα εἶχον διαδοθῆ διὰ χειρογράφων, κατέστησαν αὐτὸν γνωστότατον μεταξὺ τοῦ φιλολογικοῦ κόσμου καὶ εἶχον κατατάξει, ἀπὸ νεαρωτάτης ἤδη ἡλικίας, μεταξὺ τῶν ὀνομαστοτέρων ποιητῶν τῆς ἐποχῆς του. Τῷ 1637, μετὰ τὸν θάνατον τῆς μητρός του, ἀπεφάσισε νὰ πραγματοποιήσῃ τὸ ἀπὸ πολλοῦ ὑπ᾽ αὐτοῦ σχεδιαζόμενον ταξίδιον εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα, πρὸς συμπλήρωσιν τῆς κλασσικῆς του μορφώσεως. Μετὰ ὀλιγοχρόνιον διαμονὴν εἰς Παρισίους, ὅπου συνεδέθη μετὰ τοῦ περιφήμου συγγραφέως τοῦ «Δικαίου τοῦ πολέμου καὶ τῆς εἰρήνης» Γροτίου, τοῦ ὁποίου ἐχρησιμοποίησε βραδύτερον εἰς τὰ ἔργα του πλείστας ἰδέας καὶ ἀξιώματα, μετέβη κατ᾽ ἀρχὰς εἰς τὴν Πίζαν καὶ κατόπιν εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ὅπου ἐπεσκέφθη ἐπανειλημμένως τὸν γηραιὸν τότε Γαλιλαῖον, ἐγκάθειρκτον τῆς Ἱερᾶς Ἐξετάσεως. Ἐκεῖθεν μετέβη εἰς τὴν Ῥώμην, ὅπου ὁ καρδινάλιος Μπαρμπερίνι ἔθεσεν εἰς τὴν διάθεσίν του τοὺς καλλιτεχνικοὺς θησαυροὺς τοῦ Βατικανοῦ καὶ τὴν πλουσίαν βιβλιοθήκην του καὶ κατόπιν κατῆλθεν εἰς τὴν Νεάπολιν, ὅπου ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ κόμιτος Μάνσο, παλαιοῦ φίλου τοῦ ποιητοῦ Τάσσου. Τῷ 1639 εἶχεν ἐκδώσει ἐν Ῥώμῃ συλλογὴν λατινικῶν ποιημάτων, τὰ ὁποῖα ἔγραψε κατὰ τὴν ἐν Ἰταλίᾳ παραμονήν του. Ἐν Νεαπόλει ἔλαβε τὰς πρώτας εἰδήσεις περὶ τῆς ἐκρήξεως τῶν ἐμφυλίων σπαραγμῶν ἐν Ἀγγλίᾳ, ἕνεκα τῶν ὁποίων ἀπεφάσισε νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὴν πατρίδα του, διαπνεόμενος ὑπὸ τοῦ εἰλικρινοῦς πόθου νὰ ἀγωνισθῇ ὑπὲρ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν ἐλευθεριῶν τοῦ λαοῦ. Ἐπανελθὼν εἰς τὸ Λονδῖνον ἐντὸς τοῦ 1639, ἐπληροφορήθη τὸν θάνατον τοῦ φίλου του Καρόλου Ντιοντάτι, εἰς τὸν ὁποῖον ἀφιέρωσε θαυμάσιον ἐλεγεῖον, τιτλοφορούμενον «Epitaphium Damonis», ὅπερ θεωρεῖται ὡς τὸ καλύτερον ἐκ τῶν λατινιστὶ γεγραμμένων ποιημάτων του. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Μίλτων, συμπληρώσας ἤδη τὴν ἡλικίαν τῶν τριάκοντα ἐτῶν καὶ ὢν προικισμένος μὲ εὐρεῖαν πολυμάθειαν, αὐξηθεῖσαν διὰ τῶν ταξιδίων του, συνῃσθάνετο ὅτι ἦτο ἱκανὸς νὰ διαδραματίσῃ πρόσωπον ἐν τῇ σκηνῇ τῶν σφοδρῶν πολιτικῶν παθῶν καὶ ἀγώνων, οἵτινες εἶχον ἀρχίσει νὰ κλονίζουν ἀπ᾽ ἄκρου εἰς ἄκρον τὴν Ἀγγλίαν, ἔχοντες ὡς κυριωτέραν ἀφορμὴν τὰ προνόμια τῆς Ἐκκλησίας καὶ τὰς λαϊκὰς ἐλευθερίας. Ὁ Μίλτων ἐτάχθη κατὰ τοῦ βασιλέως καὶ ὑπὲρ τοῦ κοινοβουλίου, παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Κρόμβελ, ὃν ἐθεώρει ὡς τὸν ἀληθῆ ὑπερασπιστὴν τῆς ἐλευθερίας. Ἔγραψε καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἄρθρα καὶ φυλλάδια, πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ἐλευθεριῶν τοῦ λαοῦ, καὶ ἐπετέθη δριμύτατα κατὰ τοῦ βασιλέως καὶ τῆς τυραννικῆς διοικήσεως τῆς ἐν Ἀγγλίᾳ πρεσβυτεριανῆς Ἐκκλησίας. Ἐπὶ πλέον δὲ ἐρριψοκινδύνευσε καὶ τὴν ἰδιωτικήν του περιουσίαν, τὴν ὁποίαν ἐδάνεισεν εἰς τὸ κοινοβούλιον. Φαίνεται ὅτι ἡ ἀγγλικὴ βουλὴ οὐδέποτε ἐπλήρωσε τὴν ὀφειλήν της ταύτην εἰς τὸν Μίλτωνα, ὁ ὁποῖος, καταστραφεὶς οὕτω οἰκονομικῶς, ἠναγκάσθη, μετὰ τὴν ἐγκαθίδρυσιν τῆς δημοκρατίας, νὰ ζητήσῃ ὅπως διορισθῇ γραμματεὺς τοῦ συμβουλίου τῆς ἐπικρατείας

Τῷ 1643 ὁ Μίλτων εἶχε νυμφευθῆ τὴν Μαρίαν Πάουελ, κόρην πλουσίου βασιλόφρονος τῆς κομιτείας τῆς Ὀξφόρδης, ἀλλὰ μετ᾽ ὀλίγους μῆνας ἡ σύζυγός του τὸν ἐγκατέλειψεν, ἐπιστρέψασα εἰς τὴν οἰκίαν της, τὸ μὲν λόγῳ ἀσυμφωνίας χαρακτήρων, τὸ δὲ συνεπείᾳ τοῦ φανατισμοῦ τῆς οἰκογενείας της, ἡ ὁποία κατώρθωσε ν᾽ ἀποσπάσῃ αὐτὴν ἀπὸ τὰς χεῖρας ἑνὸς ἐχθροῦ τοῦ βασιλέως. Τὸ ἐπεισόδιον τοῦτο ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὸν Μίλτωνα νὰ γράψῃ τέσσαρας πραγματείας περὶ τοῦ διαζυγίου. Βραδύτερον ὅμως ἐπῆλθε συμφιλίωσις τῶν δύο συζύγων, ὁ δὲ Μίλτων, μετὰ τὴν ἧτταν τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων, ἐπροστάτευσε τὴν οἰκογένειαν τῆς συζύγου του ἀπὸ τὰς ἐπιθέσεις τῶν δημοκρατικῶν. Τῷ 1644 ἐδημοσίευσε δύο περίφημα φυλλάδια κατὰ τοῦ τρόπου τῆς διδασκαλίας εἰς τὰ πανεπιστήμια καὶ κατὰ τῆς λογοκρισίας. Τὸ τελευταῖον τοῦτο, φέρον τὸν τίτλον «Areopagitica», προεκάλεσε μέγαν θόρυβον καὶ θεωρεῖται κλασσικὸν εἰς τὸ εἶδός του, διὰ τὴν ἁδρότητα τῶν ἐπιχειρημάτων του καὶ τὴν δύναμιν μετὰ τῆς ὁποίας ὑποστηρίζει τὰς ἐλευθερίας τοῦ τύπου. Μετὰ τὸν ἀπαγχονισμὸν τοῦ Καρόλου Α΄, ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Περὶ τῆς εὐθύνης τῶν βασιλέων καὶ τῶν ἀρχόντων», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐδικαιολόγει τὸν ἀπαγχονισμὸν μετὰ σκληρότητος, ἥτις προεκάλεσε δριμυτάτας ἐπιθέσεις τῶν βασιλοφρόνων ἐναντίον του. Ἐδημοσίευσε κατόπιν τὸν «Εἰκονοκλάστην» (1649) καὶ τὸ «Defensio pro populo Anglicano» (1650), μεταφρασθὲν ταχέως εἰς πολλὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας καὶ θεωρούμενον ὑπὸ πολλῶν κριτικῶν ὡς τὸ ἀριστούργημα τῶν εἰς πεζὸν λόγον ἔργων του. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἀπέθανε, κατὰ τὸν τοκετόν, ἡ πρώτη του σύζυγος, ἐξ ἧς εἶχεν ἀποκτήσει τρεῖς θυγατέρας, βραδύτερον δὲ ἐνυμφεύθη δευτέραν, ἡ ὁποία ἀπέθανεν ἐπίσης μετὰ ἓν ἔτος κατὰ τὸν τοκετὸν τῆς θυγατρός του Δεβώρας. Τῆς δευτέρας ταύτης συζύγου διετήρησε τρυφερὰν ἀνάμνησιν εἰς πολλὰ ποιήματά του. Ἐν τῷ μεταξύ, τῷ 1652, ἐδημοσίευσε καὶ δεύτερον «Defensio», ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπερημύνετο τῶν πρωτεργατῶν τῆς ἐπαναστάσεως, καθὼς καὶ τρίτον «Defensio auctoris» εἰς ἀπάντησιν τῶν ἐπιθέσεων τῶν βασιλοφρόνων. Μετά τινα καιρόν, συνεπείᾳ τῶν πολλῶν στερήσεων καὶ τῆς ὑπερκοπώσεως, προσεβλήθη ὑπὸ ἀσθενείας τῶν ὀφθαλμῶν του, ἕνεκα δὲ τούτου ἠναγκάσθη νὰ νυμφευθῇ ἐκ τρίτου, ὅπως προσλάβῃ σύντροφον καὶ καθοδηγήτριαν τῶν ὑπολοίπων ἡμερῶν τῆς ζωῆς του. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κρόμβελ καὶ τὴν παλινόρθωσιν τῆς βασιλείας, ὁ Μίλτων ἐπαύθη ἐκ τῆς θέσεώς του καὶ ἐφυλακίσθη. Ἀσφαλῶς δὲ θὰ κατεδικάζετο εἰς θάνατον, ὡς συνένοχος τῆς βασιλοκτονίας, ἐὰν δὲν ἐπενέβαινεν ὁ βασιλόφρων ποιητὴς Ντάβεναντ, τὸν ὁποῖον ἄλλοτε ὁ Μίλτων εἶχε διασώσει ἀπὸ τὰς καταδιώξεις τοῦ δημοκρατικῶν· οὗτος κατώρθωσε νὰ τὸν ἀποφυλακίσῃ μετὰ δίμηνον, ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ παύσῃ πλέον ν᾽ ἀσχολῆται μὲ τὴν πολιτικήν. Ὁ ὅρος οὗτος ὑπῆρξε σωτήριος διὰ τὸ ποιητικὸν ἔργον τοῦ Μίλτωνος καὶ ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ συμπληρώσῃ καὶ νὰ ἀποτελειώσῃ τὸ μεγαλύτερον ποιητικὸν αὐτοῦ ἔργον, τὸν «Ἀπολεσθέντα παράδεισον», τὸν ὁποῖον εἶχεν ἀρχίσει νὰ συνθέτῃ τῷ 1658 καὶ ἔφερεν εἰς πέρας τῷ 1665. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως κατετρύχετο ὑπὸ πολλῶν οἰκονομικῶν δυσχερειῶν καὶ οἰκογενειακῶν κακοτυχιῶν, διότι αἱ δύο μεγαλύτεραι θυγατέρες του, τυφλωθέντα πλέον ὁλοσχερῶς, ἐβασάνιζον αὐτὸν παντοιοτρόπως, ἐπώλουν τὰ βιβλία του καὶ ἐσπατάλων τὰ τελευταῖα ὑπολείμματα τῆς περιουσίας του, μόνον δὲ ἡ μικροτέρα αὐτοῦ θυγάτηρ, ἡ Δεβώρα, ὡς ἄλλη Ἀντιγόνη, εἶχεν ἀποβῆ ἡ ἀχώριστος σύντροφός του καὶ εἶχε μεταβληθῆ εἰς ἀναγνώστριάν του καὶ εἰς γραμματέα, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπηγόρευσε τὰ τελευταῖα ποιήματά του. Ἡ θυγάτηρ του αὕτη, ἐκμαθοῦσα τὴν τέχνην τῆς ἅρπας, τὸν ἔτερπε πολλάκις καὶ τὸν καθησύχαζε κατὰ τὰς θλιβερὰς στιγμὰς τοῦ βίου του. Τὸν «Ἀπολεσθέντα παράδεισον» ὁ Μίλτων παρεχώρησεν εἰς τὸν ἐκδότην Σύμονς, ὑπὸ ὅρους σχεδὸν ἐξευτελιστικούς. Κατὰ τὸ ὑπογραφὲν καὶ διασῳζόμενον συμβόλαιον, ὁ Μίλτων ἔλαβε 5 λίρας στερλίνας ἀμέσως, καὶ θὰ ἐλάμβανεν ἑτέρας 5 λίρας στερλίνας μετὰ τὴν πώλησιν τῆς πρώτης ἐκδόσεως, γενομένης εἰς 1500 ἀντίτυπα. Δι᾽ ἑκάστην τῶν ἀκολούθων ἐκδόσεων θὰ ἐλάμβανεν αὐτὸς ἢ οἱ κληρονόμοι του ἀνὰ 5 λίρας στερλίνας. Τοῦ ἔργου του τούτου ἐγένοντο δύο μόνον ἐκδόσεις, ἐφ᾽ ὅσον ἔζη ὁ Μίλτων. Μετὰ τὸν θανατόν του ἡ χήρα του ἐπώλησε τὰ δικαιώματά της ἀντὶ 8 λιρῶν στερλινῶν. Ἐκ τῶν ἐξευτελιστικῶν τούτων τιμῶν δὲν πρέπει νὰ θεωρηθῇ ὅτι τὸ ἔργον παρῆλθεν, ἐφ᾽ ὅσον ἔζη ὁ Μίλτων, ἐντελῶς ἀπαρατήρητον. Εἰς ἐποχὴν γενικῆς ἠθικῆς ἐκλύσεως καὶ πολιτικῶν ἀνωμαλιῶν, ἔργον τῆς βαρύτητος καὶ τῆς σοβαρότητος τοῦ «Ἀπολεσθέντος παραδείσου» δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ καταστῇ δημοφιλὲς εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς· τὸ γεγονὸς δὲ ὅτι ἐντὸς 11 ἐτῶν ἐπωλήθησαν 3000 ἀντίτυπα αὐτοῦ μαρτυρεῖ ὅτι ἐξετιμήθη δεόντως ὑπὸ μεγάλης μερίδος τοῦ φιλολογικοῦ κόσμου. Ὁ Μίλτων συνέθεσε, κατὰ τὸ γῆρας αὐτοῦ, καὶ ἕτερον μέγα ποίημα, τὸν «Ἀνακτηθέντα παράδεισον» καὶ τὴν βιβλικὴν τραγῳδίαν «Σαμψὼν» (1671). Δὲν εἶναι ἀκριβὲς ὅτι ὁ Μίλτων διῆλθε τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἐν πλήρει πενίᾳ. Παρὰ τὴν ἀπώλειαν τῶν τριῶν τετάρτων τῆς μεγάλης περιουσίας του κατὰ τὴν ἐποχὴν κατὰ τὴν ὁποίαν εἶχεν ἀναμιχθῆ εἰς τοὺς πολιτικοὺς ἀγῶνας, φαίνεται ὅτι εἶχε διατηρήσει ἱκανὰ χρήματα, ἐπιτρέποντα εἰς αὐτὸν νὰ ζῇ ἄνευ μεγάλων στερήσεων, διότι κατὰ τὸν θάνατόν του εὑρέθη κάτοχος 1500 λιρῶν στερλινῶν, τὰς ὁποίας ἐκληροδότησεν εἰς τὴν σύζυγόν του, ἀφήσας εἰς τὰς θυγατέρας του ἀνὰ 100 λίρας στερλίνας μόνον.

Λόγῳ τῆς ἀναμίξεώς του εἰς τὴν πολιτικήν, εἰς μίαν ἐκ τῶν μᾶλλον πολυκυμάντων περιόδων τῆς ἀγγλικῆς ἱστορίας, ὁ Μίλτων δὲν ἐξετιμήθη εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς δεόντως ὑπὸ τῶν συμπατριωτῶν του καὶ τῶν συγχρόνων του ἐν γένει. Βραδύτερον ὅμως ἐφείλκυσε τὴν προσοχὴν τῶν διανοουμένων καὶ τοῦ μεγάλου κοινοῦ καὶ κατετάχθη ὑπὸ τῶν κριτικῶν μεταξὺ τῶν μεγαλυτέρων ἐπικῶν ποιητῶν τοῦ κόσμου καὶ ὁμότιμος πρὸς τὸν Ὅμηρον, τὸν Βιργίλιον καὶ τὸν Δάντην. Τὸ κυριώτερον ἔργον του, ὁ «Ἀπολεσθεὶς παράδεισος», εἶναι ποίημα εἰς ἐλεύθερον στίχου, μεγαλειώδους φαντασίας, τολμηροτάτης ἐμπνεύσεως καὶ ἀφθάστου τελειότητος μορφῆς. Λέγεται ὅτι ἐνεπνεύσθη τοῦτο κατὰ τὴν παραμονήν του ἐν Ἰταλίᾳ καὶ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς παραστάσεως ἑνὸς μελοδράματος. Κατ᾽ ἀρχὰς εἶχε σκεφθῆ νὰ προσδώσῃ εἰς αὐτὸ τὴν μορφὴν δράματος καὶ εἶχε πρὸς τοῦτο καταστρώσει δύο σχέδια, τὸ ἓν κατὰ τὸ ὑπόδειγμα τῶν «μυστηρίων» τοῦ μεσαίωνος, τὸ δὲ ἕτερον πλησιάζον μᾶλλον πρὸς τὸν αὐστηρὸν τύπον τῆς ἑλληνικῆς τραγῳδίας. Ἐν τέλει ὅμως κατέληξεν εἰς τὴν μεγαλειώδη μορφὴν τοῦ ἔπους. Ὑπόθεσις τοῦ ἔργου εἶναι ἡ πτῶσις τοῦ πρώτου ἀνθρωπίνου ζεύγους, συνεπείᾳ ἀπειθείας πρὸς τὰς διαταγὰς τοῦ Θεοῦ, συμπαρασύρασα εἰς τὰς συνεπείας τοῦ προπατορικοῦ ἁμαρτήματος ὁλόκληρον τὴν ἀνθρωπότητα. Ὁ Μίλτων πραγματεύεται τὸ βιβλικὸν τοῦτο θέμα μετὰ σπανίας δυνάμεως φαντασίας. Ἡ μεγαλειώδης πτῶσις τοῦ Σατανᾶ, ἡ μετάνοια τῶν πρωτοπλάστων, ἡ ἐκδίωξις αὐτῶν ἐκ τοῦ παραδείσου, ἡ συμφιλίωσις κατόπιν πρὸς τὸν Θεόν, ἡ ὁποία δημιουργεῖ τὴν

Ἰωάννης Μίλτων.

Digitized by Google

ἐλπίδα τῆς ἀναστάσεως, δίδουν ἀφορμὴν εἰς τὸν ποιητὴν νὰ ἀναμίξῃ ὁλόκληρον τὴν ἱστορίαν τῆς ἀνθρωπότητος καὶ τῶν θρησκειῶν, νὰ προβῇ εἰς ὑπερόχους περιγραφὰς τῆς φύσεως καὶ νὰ ἐκθέσῃ ὑψηλὰς ἠθικὰς καὶ θεολογικὰς ἰδέας. Καίτοι τὸ θέμα τοῦ ἔργου τούτου δὲν παρέχει εἰς τὸν ποιητὴν τὴν εὐκαιρίαν μεγάλων δραματικῶν συγκρούσεων καὶ τὴν εὐχέρειαν δημιουργίας συγκινήσεων λόγῳ περιπετειῶν καὶ πολυδαιδάλου πλοκῆς, ἐν τούτοις ὁ Μίλτων κατώρθωσε, διὰ τῆς μεγάλης του τέχνης, τῆς ὡραιότητος τῆς ἐκφράσεως, τοῦ ἐντόνου χρωματισμοῦ εἰκόνων, τῆς γλαφυρότητος τοῦ στίχου καὶ τῆς πρωτοτυπίας μὲ τὴν ὁποίαν ἀναδημιουργεῖ τὰ γνωστὰ βιβλικὰ ἐπεισόδια, νὰ καταστήσῃ τὸν «Ἀπολεσθέντα παράδεισον» ἔργον συναρπαστικοῦ ἐνδιαφέροντος. Ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον ἐξαίρεται ἰδίως ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ εἶναι τὸ ὕψος τῶν ἰδεῶν, τὰς ὁποίας εὑρίσκει ἀφορμὴν νὰ παρεμβάλῃ ὁ ποιητής, ὁ ὁποῖος, προικισμένος διὰ σπανίας μορφώσεως καὶ ἐμπεποτισμένος μὲ εὐρείας ἀντιλήψεις ἐπὶ πάντων τῶν ζητημάτων, ἀπὸ χαρακτῆρος δὲ ὑψηλόφρων, εὐθὺς καὶ ἀκλόνητος εἰς τὰς πουριτανικάς του πεποιθήσεις, κατορθώνει νὰ ὀρθοῦται εἰς μέγαν διδάσκαλον, τοῦ ὁποίου τὰ διδάγματα παραμένουν αἰώνια, ἐκτὸς τόπου καὶ χρόνου. Αὐτὸς δὲ εἶναι ὁ λόγος, διὰ τὸν ὁποῖον τὸ ἔπος τοῦτο, θεωρούμενον ὡς τὸ κατ' ἐξοχὴν ἔπος τοῦ ἀγγλικοῦ πουριτανισμοῦ, ἔσχεν εὐρυτάτην ἀπήχησιν καθ' ἅπαντα τὸν κόσμον καὶ καθ' ὅλους τοὺς αἰῶνας. Τὸ ἔργον εἶχεν ἐκδοθῇ κατ' ἀρχὰς εἰς 10 βιβλία, ἀλλ' ἡ δευτέρα καὶ ὁριστικὴ ἔκδοσις τοῦ 1677 χωρίζει τοῦτο εἰς δώδεκα. Ὁ «Ἀνακτηθεὶς παράδεισος» ἀποτελεῖ ἕνα εἶδος συμπληρώματος τοῦ «Ἀπολεσθέντος παραδείσου». Μετὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ πρώτου ἀνθρώπου, ὁ ὁποῖος ἀπώλεσε τὸν παράδεισον, διότι ὑπεχώρησεν εἰς τοὺς πειρασμοὺς τοῦ Σατανᾶ, ὁ Μίλτων περιγράφει ἐν τῷ ἔργῳ του τούτῳ «ἕνα μεγαλύτερον ἄνθρωπον», τὸν Χριστόν, ὁ ὁποῖος ἀνακτᾷ τὸν παράδεισον διὰ τῆς ἀντιστάσεως εἰς τοὺς πειρασμοὺς τοῦ Σατανᾶ. Καίτοι τὸ ποίημα τοῦτο προκαλεῖ ὀλιγωτέραν συγκίνησιν, περιέχει ἐν τούτοις πλεῖστα ὑπέροχα χωρία καὶ μεγαλειώδεις ἰδέας καὶ εἶναι συντεθειμένον μετὰ τῆς συνήθους εἰς τὸν ποιητὴν εὐγλωττίας, κομψότητος καὶ τελειότητος εἰς τὸν στίχον. Τὸ τρίτον τῆς βιβλικῆς ἐμπνεύσεως ἔργον του, ὁ «Σαμψών», περιστρέφεται περὶ τὴν γνωστὴν ὑπόθεσιν τοῦ Σαμψῶνος, ὁ ὁποῖος, τυφλὸς καὶ καταστὰς τὸ παίγνιον εἰς τὰς χεῖρας τῶν Φιλισταίων, θάπτεται μετ' αὐτῶν ὑπὸ τὰ ἐρείπια τοῦ ναοῦ, τὸν ὁποῖον καταρρίπτει. Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ὁ Μίλτων μιμεῖται τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν τραγῳδίαν, μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας, ἡ ὁποία κατατάσσει τοῦτο μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων του. Πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων ἔργων, ὁ Μίλτων ἔγραψε καὶ πλεῖστα ἄλλα ποιητικά, φιλοσοφικά, παιδαγωγικά, θρησκευτικὰ καὶ φιλολογικά: «Ἱστορίαν τῆς Ἀγγλίας μέχρι τῆς νορμανδικῆς κατακτήσεως» (1670), «Λογικὴν κατὰ τὴν μέθοδον τοῦ Ράμους» (1672 λατινιστί) καὶ εἶχε συγκεντρώσει πολυάριθμον ὑλικὸν διὰ τὴν σύνταξιν μεγάλου λατινικοῦ λεξικοῦ. Ἡ πρώτη πλήρης ἔκδοσις τῶν ποιητικῶν του ἔργων ἐγένετο τῷ 1695 καὶ κατόπιν τῷ 1749—1752 εἰς τρεῖς τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιητικὰ ἔργα». Τῷ 1859 ὁ Keightley ἐξέδωκε τὰ ποιήματα τοῦ Μίλτωνος, συνοδεύσας ταῦτα μετὰ πολυτίμων σημειώσεων καὶ ἐπεξηγήσεων. Ἐκ τῶν νεωτέρων ἐκδόσεων αἱ κυριώτεραι εἶναι ἡ «Aldine edition» τοῦ 1892, ἡ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κανταβρυγίας τοῦ 1903 καὶ ἡ τοῦ Grierson τῷ 1925. Αἱ πρῶται ἐκδόσεις τῶν εἰς πεζὸν ἔργων του εἶναι τοῦ Τόλαντ τοῦ 1697—1698 εἰς τρεῖς τόμους καὶ ἡ πληρεστέρα τοῦ Μπὶρχ τοῦ 1753. Ὁ «Ἀπολεσθεὶς παράδεισος» μετεφράσθη ἐπανειλημμένως εἰς τὰς γλώσσας ὅλων τῶν πεπολιτισμένων ἐθνῶν. Ἑλληνιστὶ μετεφράσθη εἰς δακτυλικὸν ἑξάμετρον ὑπὸ τοῦ Ἀλ. Κάσδαγλη (1887, Λονδῖνον) καὶ εἰς πεζὸν ὑπὸ Ἰ. Γ. Καραγεωργιάδη (1925, Λευκωσία).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Macaulay*, «Essays» (1825).—*G. Liebert*, «Milton», Studien zur Geschichte des englischen Geistes» (1860). —*Masson*, «The tree Devils Lutter's, Milton's and Goethe's» (1874).—*L. Ferrini*, «G. Milton» (1881).—*Garnett*, «Life of J. Milton» (1890).—*W. Rareigh* «Milton» (1900).—*E. Lockwood*, «Lexicon to the English Poetical Works of John Milton» (1907). —*Liljegren*, «Studies in Milton» (1918). —*Saurat*, «Milton, man and thinker» (1925). Α. Δ.—Μ. Δ. Β.

**μιλτώνω**· δημοτ. τύπος τοῦ *μιλτῶ* (βλ. λ.).

**μίλτωσις**, —*εως* (ἡ)· ἡ διὰ μίλτου ἐπάλειψις.

**μιλτωτός**, —*ή*, —*όν*· ὁ μεμιλτωμένος, ὁ διὰ μίλτου ἠλειμμένος.

**Μιλύαι** *[Ἀρχ.]*. Οἱ ἀρχαῖοι κάτοικοι τῆς Λυκίας ἐν Μ. Ἀσίᾳ, καταγόμενοι ἀπὸ τῶν Σολύμων, οἱ μετὰ ταῦτα ὀνομασθέντες *Τερμίλαι*, ἀπὸ τῶν μετὰ τοῦ Σαρπηδόνος ἐλθόντων εἰς Λυκίαν Κρητῶν. Α. Θ. Σ.

**Μιλυὰς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαῖον ὄνομα τῆς ἐν Μ. Ἀσίᾳ Λυκίας, περιορισθὲν βραδύτερον εἰς τὸ ὀρεινὸν τμῆμα αὐτῆς, περιλαμβάνον τὰ βόρεια τῆς Λυκίας καὶ τὰ ΝΔ. τῆς Πισιδίας. Περιελαμβάνετο δὲ ἄλλοτε μὲν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Λυκίας, ἄλλοτε δὲ ἐν τῇ τῆς Παμφυλίας καὶ Πισιδίας. Οἱ κάτοικοί της *Μιλύαι* (βλ. λ.) ἔλαβον μέρος εἰς τὴν κατὰ τῆς Ἑλλάδος ἐκστρατείαν τοῦ Ξέρξου. Μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ βασιλέως Ἀντιόχου ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, ἡ χώρα παρεχωρήθη εἰς τὸν Εὐμένη, βασιλέα τῆς Περγάμου. Α. Θ. Σ.

— **Μιλυὰς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Παμφυλίᾳ, ΝΔ. τῆς Ἀτταλείας. Κατὰ τὸν Θ' αἰῶνα μνημονεύεται ὡς ἕδρα ἐπισκόπου ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Παμφυλίας, πιθανῶς δὲ εἶναι μία τῶν ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους ἀναφερομένων (Συνέκδ. 680, 9) πόλεων ὑπὸ τὸ ὄνομα *Χωριομυλιάδικα*. Σήμερον καλεῖται *Ἐλμαλῦ*, ἀριθμοῦσα περὶ τοὺς 4.000 κατοίκους καὶ ὑπαγομένη εἰς τὸν νομὸν Ἰκονίου. Α. Θ. Σ.

**μίλφωσις**, —*εως* (ἡ) *[Ὀφθαλμιατρ.]*. Ἡ κατὰ Γαληνὸν καὶ Ἀέτιον ὀνομασία τῆς *μαδαρώσεως* (βλ. λ.).

**Μίλχχαιφερ** (Milchhaefer), ***Ἀρθοῦρος***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος (1852—1903). Διαμείνας τὸ πρῶτον ἐν Ἑλλάδι τῷ 1876, ὡς ἑταῖρος τῆς γερμανικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, καὶ βραδύτερον (1886—1887) ὡς ἐξερευνητὴς τῆς Ἀττικῆς, ἐπεδόθη μετὰ θέρμης εἰς τὴν μελέτην τῆς τοπογραφίας αὐτῆς, συνεργασθεὶς μετὰ τοῦ Κουρτίου καὶ Κάουπερτ εἰς τὴν ἔκδοσιν τοῦ χαρτογραφικοῦ περὶ Ἀττικῆς ἔργου ἐκείνων, διὰ τὸ ὁποῖον συνέλεξε τὸ περιγραφικὸν κείμενον «Attische Topographie». Τῷ 1883 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μύνστερ τῆς Βεστφαλίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1895 μέχρι τοῦ θανάτου του ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Κιέλου. Ἐδημοσίευσε πολυάριθμα ἀρχαιολογικὰ ἄρθρα, διατριβὰς καὶ συγγράμματα, ἐν οἷς: «Die Museer Athens» (1881), «Die Befreiung des Prometheus, ein Fund von Pergamon» (1882), «Diè Anfänge der Kunst in Griechenland» (1883), «Untersuchungen über die Demenordnung des Kleisthenes» (1892), «Archaeologische Studien» (1893), «Akropolis Altatheus» (1898), «Über die alten Burgheiligthümer in Attika» (1899), «Die Gräberkunst der Hellenen» (1899). Β. Δ. Θ.

**μιλῶ**, καὶ *μιλάω*· δημοτ. τύπος τοῦ *ὁμιλῶ* (βλ.λ.).

**Μιλώκη** (Milwaukee) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς· βλ. λ. *Μιλουώκη*.

**Μίλων**. Περίφημος Ἕλλην ἀθλητὴς ἐκ Κρότωνος τῆς Μεγάλης Ἑλλάδος. Ἤκμασε κατὰ τὸν ΣΤ' π. Χ. αἰῶνα, κερδήσας 6 ὀλυμπιακάς, 2 πυθικάς, 9 νεμεακὰς καὶ 10 ἰσθμιακὰς νίκας. Ἐκ μικρᾶς ἡλικίας διεκρίνετο διὰ τὴν ἱκανότητά του πρὸς ἄρσιν βαρῶν, ἐνῷ δὲ ἦτο ἀκόμη παῖς ἐνίκησε τὴν πρώτην του πάλην εἰς τὰ Ὀλύμπια τῷ 540 π.Χ. Ὁ Μίλων ἦτο ἐκ τῶν ἐπιμελεστέρων μαθητῶν τοῦ Πυθαγόρα, τοῦ ὁποίου μάλιστα, ὡς ἀναφέρει ἡ παράδοσις ἔσωσε τὴν ζωήν. Ὅτε δηλαδή, κατὰ τὴν διάρκειαν μαθήματός τινος, ὁ κίων ὁ ὑποβαστάζων τὴν στέγην ἤρχισε νὰ ὑποχωρῇ, ὁ Μίλων χωρὶς νὰ χάσῃ καιρὸν ἀντικατέστησεν αὐτὸς τὸν κίονα καὶ ὑποβαστάσας αὐτὸς τὴν στέγην ἔδωσε καιρὸν εἰς τὸν Πυθαγόραν καὶ τοὺς μαθητάς του νὰ σωθῶσι διὰ τῆς φυγῆς. Οἱ συμπολῖταί του τὸν ἐξετίμων πολύ, εἰς αὐτὸν δὲ ἀνέθεσαν τὴν στρατηγίαν τοῦ ἐναντίον τῶν Συβαριτῶν πολέμου. Κατὰ τὸν πόλεμον τοῦτον οἱ Κροτωνιᾶται ἐνίκησαν, καθὼς λέγει ὁ Διόδωρος, διὰ τῆς προσωπικῆς τοῦ Μίλωνος δυνάμεως, ὁ ὁποῖος, ὡς ἄλλος Ἡρακλῆς, κρατῶν λεοντῆν καὶ ῥόπαλον ἐπῆλθεν ὁρμητικὸς κατὰ τῶν Συβαριτῶν καὶ ἐνέσπειρεν εἰς αὐτοὺς τὸν πανικόν. Τὸ τέλος ὅμως τοῦ Μίλωνος ἦτο οἰκτρόν. Ἡμέραν τινά, ἐνῷ ἐπλανᾶτο ἀνὰ τὸ δάσος, εὗρε κορμὸν δένδρου, εἰς τὸν ὁποῖον οἱ ὑλοτόμοι εἶχον ἐμπήξει σφῆνας, ἵνα τεμαχίσωσιν αὐτόν. Ὁ Μίλων, ἔχων πεποίθησιν εἰς τὴν δύναμίν του, ἐπεχείρησε νὰ σχίσῃ αὐτὸν διὰ τῶν χειρῶν, ἔθεσε τὰς χεῖρας εἰς τὸ ὑπάρχον ἤδη ἄνοιγμα τοῦ κορμοῦ καὶ ἤρχισε τὸ ἔργον του, ἀλλ' αἱ σφῆνες ἐξέφυγον καὶ αἱ χεῖρές του ἔμειναν ἔγκλειστοι ἐντὸς τοῦ κορμοῦ. Παρ' ὅλας του τὰς προσπαθείας δὲν κατώρθωσε νὰ ἐλευθερώσῃ τὰς χεῖράς του, εἰς δὲ τὰς φρικώδεις φωνάς του προσδραμόντα τὰ θηρία τὸν κατεσπάραξαν.

*Μίλων ὁ Κροτωνιάτης.*
[Ἔργον τοῦ Puget ἐν τῷ Μουσείῳ Λούβρου.]

Τὸν ἀνδριάντα του, κατασκευασθέντα ὑπὸ τοῦ Κροτωνιάτου Δαμέα, ἐκόμισεν ὁ ἴδιος ὁ Μίλων ἐπὶ τῶν ὤμων εἰς τὴν Ἄλτιν, ὁ δὲ ποιητὴς Σιμωνίδης εἶχεν ἐπιγράψει ἐπ' αὐτοῦ:

Μίλωνος τόδ' ἄγαλμα καλοῦ καλόν, ὃς ποτε Πίσῃ
ἑπτάκι νικήσας, ἐς γόνατ' οὐκ ἔπεσεν.

Μ. Σ. Μ.

— **Μίλων**. Στρατηγὸς τοῦ Πύρρου, βασιλέως τῆς Ἠπείρου, τὸν ὁποῖον οὗτος, ἐπιστρέφων εἰς Ἑλλάδα, ἀφῆκε μὲ μικρὰν φρουρὰν εἰς τὴν Ἰταλίαν πρὸς ὑπεράσπισιν τοῦ Τάραντος. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Πύρρου ἠναγκάσθη, ἵνα σώσῃ ἑαυτὸν καὶ τὴν φρουράν, νὰ παραδώσῃ τὴν πόλιν εἰς τοὺς Ρωμαίους. Μ. Σ. Μ.

**μίμ**. Εἰκοστὸν ἕβδομον γράμμα τοῦ ἀραβικοῦ καὶ τοῦ τέως τουρκικοῦ ἀλφαβήτου. Ἦτο τὸ 13ον γράμμα τοῦ σημιτικοῦ ἀλφαβήτου, ἐκ τοῦ ὁποίου ἐσχηματίσθη τὸ *μὲμ* τοῦ ἑβραϊκοῦ, καὶ τὸ *Μ* τοῦ ἑλληνικοῦ καὶ τοῦ λατινικοῦ.

**Μιμὰ** (Mimat) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Γαλλίας, ἐν τῇ ὀροσειρᾷ τῶν Σεβέν. Ἔχει ὕψος 1.111 μ. καὶ ἔχει ἐπὶ τῆς κορυφῆς του τὸ ἀσκητήριον τοῦ Σαὶν-Πριβά.

**μιμαίκυλον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται οὕτως ὁ ψευδόκαρπος, ἐν τῷ ὁποίῳ ὁ ἀνθικὸς ἄξων καθιστάμενος σαρκώδης περιβάλλει τοὺς μικροὺς καρπούς, ὡς εἰς τὸ χαμαικέρασον.

**Μίμακες** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Ἀν. Ἀφρικανικῆς Ἠπείρου, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου καὶ κατοικῶν πρὸς νότον τοῦ ὄρους Θάλα, πρὸς Β. τῆς λίμνης Ροδόλφου. Α. Θ. Σ.

**Μιμαλλὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μία τῶν ἀρχαίων ὀνομασιῶν τῆς νήσου *Μήλου*. Σ. Ε. Λ.

**Μιμαλλόνες** (αἱ) *[Ἀρχ.]*. Γυναῖκες μετέχουσαι τῶν ὀρφικῶν καὶ διονυσιακῶν ὀργίων εἰς Μακεδονίαν καὶ Θρᾴκην, ἄλλως *Κλώδωνες* (βλ. λ.).

**Μίμας** *[Μυθολ.]*. —1) Γίγας τις κατακεραυνωθεὶς ὑπὸ τοῦ Διὸς ἢ τοῦ Ἄρεως, τοῦ ὁποίου τὸ σῶμα ἐτάφη ὑπὸ τὴν νῆσον Προχύτην, παρὰ τὰ παράλια τῆς Καμπανίας.

— 2) Υἱὸς τοῦ Αἰόλου, τοῦ γενάρχου τῆς Αἰολικῆς φυλῆς.

— 3) Εἷς τῶν Κενταύρων, παρευρεθεὶς εἰς τοὺς γάμους τοῦ Πειριθόου.

— 4) Εἷς τῶν Βεβρύκων τῆς Βιθυνίας, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Κάστορος κατὰ τὴν Ἀργοναυτικὴν ἐκστρατείαν.

— 5) Υἱὸς τοῦ Τρωὸς Ἀμύκου καὶ τῆς Θεανοῦς, γεννηθείς, κατὰ τὸν Βιργίλιον (Αἰν. Χ, 720), τὴν αὐτὴν νύκτα μετὰ τοῦ Πάριδος. Παρακολουθήσας τὸν Αἰνείαν, ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Μεζεντίου. Α. Θ. Σ.

**Μίμας** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Ἰωνίᾳ, ἐπὶ τῆς μεσημβρινῆς ἄκρας τῆς Ἐρυθραίας χερσονήσου, ἀπέναντι τῆς Χίου, ἀναφερόμενον ἤδη ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου (Ὀδυσσ. Γ, 172). Κατὰ τὸν Μελέτιον (Γεωγρ., τόμ. ΙΙΙ, σελ. 145) εἶναι τὸ σημερινὸν *Κάβο-Στυλλάρι*. Α. Θ. Σ.

— **Μίμας** *ὄρος* *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Ἰωνίᾳ, ἐπὶ τῆς χερσονήσου Ἐρυθραίας, «ὑψηλόν, εὔθηρον, πολύδενδρον», κατὰ Στράβωνα (XIV, 645), μεταξὺ τῶν Ἐλευθερῶν (νῦν Λυθρὶ) καὶ τοῦ Ὑποκρήμνου (νῦν ὅρμος Γκιοὺλ - Μπαχτσέ), κλεῖον τὴν Δ. πλευρὰν τοῦ Ἑρμαίου κόλπου (κόλπος τῆς Σμύρνης), καὶ καταλῆγον ΒΔ. εἰς τὴν Μέλαιναν ἄκραν (νῦν Καρὰ-Μπουρνού). Ἀποτελεῖ προέκτασιν τοῦ Τμώλου, μὲ ἀποκρήμνους τιτανώδεις κατωφερείας, τὸ δὲ ὕψος του ἀνέρχεται εἰς 1.190 μέτρα. Τὸν ἰσθμὸν αὐτοῦ, πλάτους 50 σταδίων (5 ½ μίλια) ἀπὸ τῶν Χαλκιδέων (νῦν ὅρμος Ἐρεκεβῆ) πρὸς Β. μέχρι τοῦ Ὑποκρήμνου πρὸς Ν. ἐσκέφθη νὰ διορύξῃ ὁ Μ. Ἀλέξανδρος, «ἀλλ' οὐ προὐχώρησε τὸ ἔργον» (*Παυσ.* ΙΙ, 1, 5). Σήμερον καλεῖται *Μπὸζ-δάγ*. Α. Θ. Σ.

**Μίμας** *[Ἀστρον.]*. Εἷς ἐκ τῶν ἐννέα δορυφόρων τοῦ Κρόνου καὶ ὁ ἐγγύτατος πρὸς αὐτόν. Εὑρισκόμενος εἰς ἀπόστασιν 185.000 χμ. κατὰ μέσον ὅρον ἀπὸ τοῦ κεντρικοῦ πλανήτου, περιφέρεται περὶ αὐτὸν ἐντὸς $22^{ω.} 37^{λ.} 5^{δ},25$. Ἡ διάμετρός του ὑπολογίζεται εἰς 650 χμ. περίπου, τὸ δὲ ἀστρικὸν μέγεθος αὐτοῦ κατὰ τὴν μέσην ἀντίθεσιν εἰς 12,1. Ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ W. Herschel τῷ 1789 (βλ. *Κρόνος*). Σ. Π.

**Μίμερ**, ἢ ***Μίμιρ*** (Mimer) *(Σκανδ. Μυθολ.)*. Θεὸς τῆς βορείου μυθολογίας, πνεῦμα τοῦ ὕδατος καὶ τῆς εὐφορίας, πηγὴ τῆς σοφίας. Ὁ πατὴρ τῶν θεῶν Ὀδὶν μεταβαίνει παρ' αὐτῷ καθ' ἑκάστην ἵνα λάβῃ τὴν συμβουλήν του (συμβολισμὸς τοῦ εἰς τὸν ὠκεανὸν δύοντος ἡλίου). Κατὰ τὸν γερμανικὸν θρῦλον, ὁ Μίμερ ὑπῆρξεν ὁ σοφὸς καλλιτέχνης καὶ διδάσκαλος τοῦ θεοῦ Βίλαντ, Ἡφαίστου τῆς βορείου μυθολογίας, καὶ Σίγκφριντ. Πόσον πιστὴ παρὰ τῷ γερμανικῷ λαῷ ὑπῆρξεν ἡ λατρεία τοῦ θεοῦ τούτου, μαρτυροῦν αἱ ἐξ αὐτοῦ διασῳζόμεναι εἰσέτι τοπωνυμίαι. Θ. Κ.

Digitized by Google

**μιμηλὴ** (ἡ), ἢ ***μιμόζα*** (Mimosa) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐλλοβοκάρπων*, περιλαμβάνον πόας, θάμνους ἢ καὶ δένδρα, ἰθαγενῆ τὰ περισσότερα τῶν θερμῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν 300 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, ἀξιολογώτερα εἶναι δύο: *Μιμηλὴ ἡ αἰσχυντηλὴ* (Mimosa pudica), ἐτησία πόα ἰθαγενὴς τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς, ἐγκλιματισθεῖσα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης, τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Ἀφρικῆς, ἐνιαχοῦ δὲ ἀπαντῶσα καὶ ὡς αὐτοφυές. Καλλιεργεῖται πολλαχοῦ καὶ παρ' ἡμῖν ὡς λίαν κοσμητικὸν καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὰ ὀνόματα *μή μου ἅπτου* καὶ *μιμόζα*. Τὰ φύλλα αὐτῆς εὐθὺς ὡς θιγῶσι συμπτύσσονται καὶ κλίνουσι πρὸς τὴν γῆν ὡς ἐξ αἰδημοσύνης, ἐξ οὗ καὶ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ἐκλήθη *αἰσχυντηλὴ ἢ αἰδήμων*. Πολλαπλασιάζεται εὐκόλως διὰ σπορᾶς. *Μιμηλὴ ἡ εὐαίσθητος* (Mimosa sensitiva), θάμνος ἀειθαλὴς τῆς Βραζιλίας. Καὶ αὕτη παρουσιάζει τὸ περίεργον φαινόμενον τῆς συμπτύξεως καὶ κατακλίσεως τῶν φύλλων της εὐθὺς ὡς θίξῃ τις ταῦτα. Δ. Ν. Π.

*Μιμηλή.*

— *[Παλαιοφ.]*. Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν φυτῶν τοῦ εἴδους *μιμηλὴ Medeae* εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν τριτογενῶν στρωμάτων τῆς λιγνιτοφόρου λεκάνης τῆς Κύμης ἐν Εὐβοίᾳ. Γ. Κ. Γ.

— *[Φαρμ.]*. Ἐκ τοῦ γένους τοῦ φυτοῦ τούτου χρησιμοποιοῦνται ὡς δρόγαι εἰς τὴν λαϊκὴν θεραπευτικὴν τὰ εἴδη *μιμηλὴ ἡ εὐαίσθητος* καὶ *μιμηλὴ ἡ αἰσχυντηλή*. Οἱ καρποὶ καὶ ὁ φλοιὸς τοῦ πρώτου εἴδους ἀναγράφονται ὡς εἰδικὸν φάρμακον κατὰ τῆς διαρροίας καὶ τῶν ἐμέτων. Εἰς μεγαλυτέρας δόσεις ἡ δρόγη δρᾷ καθαρτικῶς. Τὰ φύλλα τοῦ δευτέρου εἴδους εἶναι δηλητηριώδη, ἐνῷ ἡ ρίζα, ἥτις περιέχει δεψικὰς οὐσίας, δρᾷ ὡς ἀντιδηλητήριον. Εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικὴν ἡ ρίζα τοῦ φυτοῦ τούτου δίδεται ὡς φάρμακον ἀφροδισιακόν. Κ. Γ. Μ.

— **μιμηλῆς φλοιὸς** *[Φαρμ.]*. Δρόγη πλουσία εἰς δεψικὰς οὐσίας, χρησιμοποιουμένη εἰς τὴν βυρσοδεψίαν. Εἶναι σκληροί, βαρεῖς, σκοτεινόχροοι, ἔχουν ἀσθενῆ ὀσμὴν ἴων καὶ θραῦσιν κερατοειδῆ, περιέχουν δὲ 20—35 % δεψικῶν οὐσιῶν. Τῶν φλοιῶν τῆς μιμόζας φέρονται ἔτι καὶ ἐκχυλίσματα, χρησιμεύοντα ἐπίσης εἰς τὴν βυρσοδεψίαν. Κ. Γ. Μ.

**μίμησις**, **—εως** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μιμεῖσθαι, ἀπομίμησις.

— *[Παιδαγ. Ψυχ.]* Ἡ *μίμησις* μετὰ τοῦ παιγνίου εἶναι ὁ κυριώτατος συντελεστὴς τῆς ἀναπτύξεως τοῦ ψυχικοῦ βίου τοῦ παιδός. Πρὸς κατανόησιν τοῦ ρόλου τῆς μιμήσεως πρέπει νὰ ἴδωμεν ποία εἶναι ἡ ψυχοφυσιολογικὴ λειτουργία ἡ χρησιμεύουσα ὡς βάσις τῆς ἐνεργείας ταύτης. Μιμοῦμαι, σημαίνει ἐπαναλαμβάνω ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον εἶδον πραττόμενον παρ' ἄλλου ἢ ἤκουσα. Ἑπομένως διὰ νὰ μιμηθῶμέν τι εἶναι ἀνάγκη ὅπως ἀντίληψίς τις (perceptio) ἀκουστικὴ ἢ ὀπτικὴ προκαλέσῃ τὰς κινήσεις τῶν μελῶν ἐκείνων ἀκριβῶς (ἢ τῆς γλώσσης ἐὰν πρόκειται περὶ ἤχου), ἅτινα δύνανται νὰ ἐπιτύχωσι τὴν ἐπανάληψιν. Διὰ νὰ προκληθῶσιν ὅμως αἱ κινήσεις αὗται, ἀπαιτεῖται ἡ παρουσία συνειρμοῦ μεταξὺ τῆς ἀντιλήψεως ταύτης καὶ τῶν κινητικῶν εἰκόνων αἵτινες διέπουσι τὴν κίνησιν, ἀπαιτεῖται δηλαδὴ ὕπαρξις συναφείας μεταξὺ τῶν νευρώνων τοῦ αἰσθητικοῦ κέντρου τοῦ ἀντιστοιχοῦντος πρὸς τὴν ἀντίληψιν ταύτην, καὶ τοῦ συμπλέγματος τῶν κινητικῶν νευρώνων, ὅπερ διέπει τὴν κίνησιν. Μέγιστον ὅμως τμῆμα τῶν αἰσθητικοκινητικῶν τούτων συνειρμῶν δὲν εἶναι κληρονομικῶς δεδομένον, ἑπομένως οὗτοι πρέπει νὰ δημιουργηθῶσι, καὶ ἡ δημιουργία αὐτῶν εἶναι ἀκριβῶς τὸ ἔργον τῆς μιμήσεως. Ἡ μίμησις ἐμφανίζεται παρὰ τοῦ νηπίου, κατά τινας μὲν *(W. Stern)* πρὸ τῆς συμπληρώσεως ἔτι τοῦ τρίτου μηνός, κατ' ἄλλους δὲ *(Bühler)* βραδύτερον, λειτουργοῦσα κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τὰς στοιχειώδεις αὐτῆς μορφάς, τὴν *αὐτομίμησιν* καὶ τὴν *ἐνστικτικὴν μίμησιν*. Ἡ κυρίως ὅμως ἱκανότης πρὸς πολυμερῆ μίμησιν ἐμφανίζεται ἔντονος ἀπὸ τοῦ ἐνάτου μηνός.

Καθοριστικὸς παράγων τοῦ τόνου τῆς μιμήσεως εἶναι κυρίως ἡ ἀνατομικὴ διάπλασις, ἥτις προδιαθέτει τὸν παῖδα νὰ ἐπαναλαμβάνῃ μετὰ μεγαλυτέρας ἐπιμονῆς ταῦτα καὶ οὐχὶ τὰ ἄλλα φαινόμενα. Ἐν τούτοις, μεταξὺ τῶν πρὸς μίμησιν προτύπων καὶ παραδειγμάτων ἐνεργεῖται ἐκ μέρους τοῦ παιδὸς ἐπιλογή, ὑπαγορευομένη ἀπὸ τὰς ἀνάγκας τῆς ἀναπτύξεως τοῦ ψυχικοῦ καὶ πνευματικοῦ αὐτοῦ βίου. Πλῆθος αὐτοδυνάμων στοιχείων, τὰ ὁποῖα φέρομεν ἐν ἡμῖν γεννώμενοι, θὰ παρέμενον ἀνεξέλικτα, ἄνευ τῆς ἐπικαίρου ἐπεμβάσεως τῆς μιμητικῆς ὁρμῆς. Ἡ ἐπιλογὴ ὅμως αὕτη θὰ εἶναι ποικίλη, ἀναλόγως τῆς ἡλικίας καὶ τῶν ἀναγκῶν τῆς στιγμῆς. Ὁ παῖς θὰ μιμηθῇ ἑκάστοτε ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον ἐξυπηρετεῖ, προάγει τὴν τελειοποίησίν του.

Ὁ παῖς ὅμως ἀπομιμεῖται πλῆθος πράξεων ἐντελῶς νέων διὰ τὸ ἀνθρώπινον γένος. Οὕτω παίζει τὸν ἰατρὸν ἢ τὸν διδάσκαλον, ἀναγινώσκει ἐφημερίδα, καπνίζει, κτλ. Ἀπομιμεῖται δηλαδὴ πράξεις, τῶν ὁποίων τὸ φυσιολογικὸν ὑπόβαθρον οὐδαμῶς ἐκληρονόμησεν. Ἐὰν παρεσύρθη εἰς μίμησιν, τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὴν γοητείαν ἣν ἐξασκοῦσιν ἐπ' αὐτοῦ πρόσωπα μεγαλύτερα κατὰ τὴν ἡλικίαν, ἢ διότι αἰσθάνεται ἐνδομύχως τὴν οἱανδήποτε ὑπεροχὴν τῶν προσώπων τούτων. Ἀναντιρρήτως, πᾶσα προσπάθεια τοῦ παιδὸς ὅπως προσαρμοσθῇ πρὸς ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον θεωρεῖ εὑρισκόμενον εἰς ἀνώτερον τοῦ ἰδικοῦ του ἐπίπεδον, γίνεται πρὸς τὸ συμφέρον τῆς ψυχικῆς καὶ πνευματικῆς αὐτοῦ ἀναπτύξεως, ἐκεῖνο δὲ τὸ ὁποῖον καθορίζει ἐμμέσως τὴν πρὸς ἀπομίμησιν πράξεων ἐπιλογήν, εἶναι ἀσφαλῶς τὸ ἐνδιαφέρον τοῦτο τοῦ παιδὸς νὰ ἀντιγράφῃ ἐν γένει τοὺς ἐνήλικας ἢ ὡρισμένον πρόσωπον. Ὁ παῖς μιμεῖται ταύτην ἢ ἐκείνην τὴν πρᾶξιν, διότι τὸν ἐνδιαφέρει οὐχὶ τόσον αὐτὴ καθ' ἑαυτὴν ἡ πρᾶξις, ἀλλὰ ἡ προσωπικότης, ἥτις ἔχει τὴν συνήθειαν νὰ πράττῃ τὴν πρᾶξιν ταύτην.

Τὰ ἐκ τῆς μιμήσεως κέρδη δύνανται νὰ καταvεμηθῶσιν εἰς δύο ὁμάδας. Ἐκ τούτων ἡ μὲν πρώτη περιλαμβάνει τὴν ἀπόκτησιν γενικῶν, ἡ δὲ δευτέρα τὴν ἀπόκτησιν εἰδικῶν λειτουργιῶν. Εἰς τὴν πρώτην ἀνήκουσιν: ἡ κινητικὴ προσαρμογὴ ἐν γένει, ἡ βουλητικὴ κίνησις καὶ ἡ κατανόησις τῶν περιστοιχούντων ἡμᾶς ἀντικειμένων. Ἡ δευτέρα περιλαμβάνει ἀπειρίαν ἀποκτήσεων. Ἀρκούμεθα εἰς ὑποδείξεις: Ἡ πρώτη ὤθησις πρὸς ἰχνογράφησιν ὀφείλεται εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι ὁ μικρὸς μαθητὴς βλέπει τοὺς μεγαλυτέρους ἢ τοὺς φίλους του νὰ γράφωσι, νὰ ζωγραφίζωσιν ἢ νὰ ἰχνογραφῶσιν. Ὡσαύτως ἡ μίμησις ἀποτελεῖ σπουδαιότατον καθοριστικὸν παράγοντα διὰ τὸ παιδικὸν παίγνιον. Ἡ σπουδαιοτέρα ὅμως ἀπόκτησις, ἡ ὀφειλομένη εἰς τὴν μίμησιν, εἶναι ἡ γλῶσσα. Πράγματι ἡ μίμησις ἀποτελεῖ τὸν ἀποκλειστικὸν σχεδὸν παράγοντα, τὸν καθιστῶντα δυνατὴν τὴν ἐκμάθησιν τῆς γλώσσης. Οὕτως ὥστε παιδία ἐστερημένα τῆς ἀκοῆς μένουσιν ἄγλωσσα. Ἐὰν βραδύτερον, ὡς οἱ κωφάλαλοι, μανθάνωσι τὴν γλῶσσαν διὰ μέσων λίαν τεχνητῶν καὶ ἐνίοτε λίαν ἐπιπόνων, τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι παρακολουθοῦσι διὰ τῶν ὀφθαλμῶν τὰς κινήσεις τῆς γλώσσης τοῦ διδασκάλου καὶ ἐπιψαύουσι διὰ τῆς χειρός, δηλαδὴ καὶ αὐθις εἰς τὴν μίμησιν.

Ἡ τάσις πρὸς μίμησιν, ἀπὸ τοῦ ἐνάτου ἰδίως μηνός, ὁδηγεῖ τὸ παιδίον εἰς τὴν συχνὴν ἐπανάληψιν τῶν θορύβων τοὺς ὁποίους ἀκούει, τῶν συλλαβῶν καὶ τῶν συμπλεγμάτων συλλαβῶν, τῶν προφερομένων ὑπὸ τῶν περὶ αὐτό. Τοιουτοτρόπως ἡ μίμησις πλουτίζει τὸν θησαυρὸν τοῦ παιδίου εἰς φθόγγους, συμπλέγματα φθόγγων κτλ., ἤτοι τοῦ παρέχει τὸ ἀκατέργαστον ὑλικὸν διὰ τὴν μελλοντικὴν γλῶσσαν. Ἐπίσης σπουδαιότατον ρόλον παίζει ἡ μίμησις εἰς τὴν περιοχὴν τῆς ἠθικῆς. Ι. Ι.

— *[Μουσ.] Μίμησις* (γαλλ. imitation, γερμ. Nachahmnng) σημαίνει τὴν ἐπανάληψιν ὑπὸ μιᾶς φωνῆς, φράσεως ἢ τμήματος φράσεως, προταθείσης ὑπὸ ἑτέρας φωνῆς. Ἡ ἐπανάληψις αὕτη δὲν εἶναι πάντοτε πιστή· συχνάκις ἀντὶ τῆς μελῳδικῆς μιμήσεως ὑπάρχει μόνον ρυθμικὴ ἀναπαράστασις τοῦ θέματος, ἀντὶ ἀντιγραφῆς ὁμοιότης κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλη. Ἡ μίμησις ἀποτελεῖ ἓν ἐκ τῶν κυριωτέρων στοιχείων τῆς *φυγῆς* (βλ. λ.).

Ἡ φωνὴ ἡ ἐκθέτουσα τὸ θέμα ὀνομάζεται πρότασις, ἡ ἀπαντῶσα ἐν μιμήσει, ἐπαγόμενον.

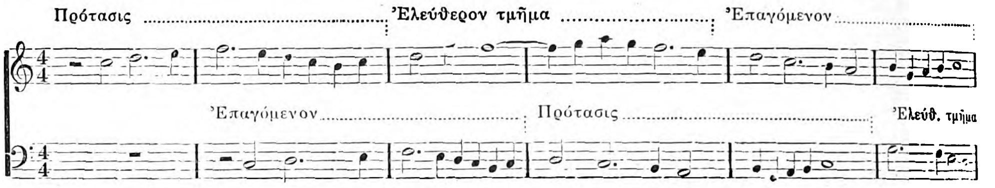


Ἡ μίμησις εἶναι *κανονικὴ* ἢ *ὑποχρεωτική*, ὅταν ἡ ἀπάντησις εἰς τὸ κύριον θέμα εἶναι ἀπολύτως ἀκριβής, ἀποδίδουσα τὰ αὐτὰ διαστήματα, ὅταν π. χ. εἰς τὸ διάστημα τρίτης μεγάλης ἀπαντῶμεν διὰ τρίτης μεγάλης, εἰς τὸ τῆς πέμπτης, διὰ πέμπτης κ.ο.κ. *Ἀντικανονικὴ* δέ, ὅταν ἡ ἀναπαραγωγὴ τοῦ θέματος δὲν εἶναι πιστὴ καὶ εἰς διάστημα μεγάλης δευτέρας ἀπαντῶμεν διὰ μικρᾶς δευτέρας, εἰς τὸ τῆς μικρᾶς ἕκτης διὰ μεγάλης κτλ. Ἀπολύτως κανονικὴ μίμησις εἶναι δυνατὸν νὰ ἐπιτευχθῇ μόνον ἐν ταυτοφωνίᾳ, ὀγδόῃ καὶ πέμπτῃ· ἐν τῇ τελευταίᾳ ταύτῃ, ἐννοεῖται, πρέπει νὰ ἀλλοιωθῇ ἡ ἑβδόμη βαθμὶς ἢ ἡ ὑποδεσπόζουσα τῆς μιμουμένης φωνῆς.

Τὰ εἴδη τῶν μιμήσεων εἶναι τὰ ἑξῆς: 1) Μίμησις ἐξ εὐθείας κινήσεως. 2) Μίμησις ἐξ ἀντιθέτου κινήσεως. 3) Μίμησις ἀναδρομικὴ ἢ καρκινική. 4) Μίμησις διὰ μεγεθύνσεως τῆς ἀξίας τῶν φθογγοσήμων. 5) Μίμησις διὰ σμικρύνσεως τῆς ἀξίας τῶν φθογγοσήμων. 6) Μίμησις δι' ἀντιχρονισμοῦ. 7) Μίμησις διακεκομμένη. 8) Μίμησις περιοδική. 9) Μίμησις κανονική.

Παράδειγμα μιμήσεως ἐξ εὐθείας κινήσεως:

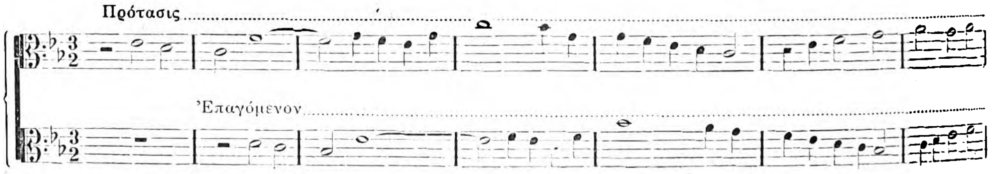


Παράδειγμα μιμήσεως ἐξ ἀντιθέτου κινήσεως:

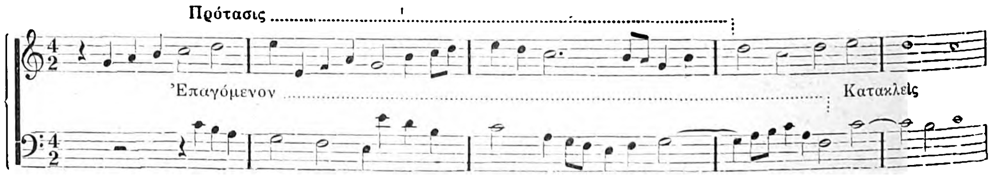


Ἡ *ἀναδρομικὴ* ἢ *καρκινικὴ* μίμησις γίνεται ἐὰν ἀναπαραγάγωμεν φράσιν ἢ τμῆμα φράσεως ἀρχίζοντες ἐκ τοῦ τελευταίου φθόγγου καὶ προχωροῦντες ἀναδρομικῶς πρὸς τὴν ἀρχήν. Π. χ.

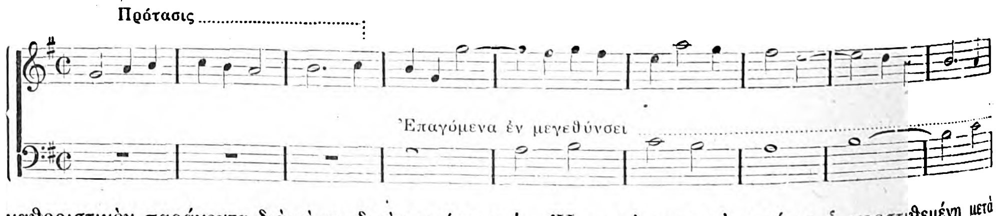


Ἡ μικρὰ μουσικὴ φράσις, ἡ προστιθεμένη μετὰ τὴν λῆξιν τῆς μιμήσεως, ὀνομάζεται *κατακλεὶς* (βλ. *κανών*). Γ. Σ.

— *[Ὀρυκτολ.]* Πολλάκις ὡρισμένη κρυσταλλικὴ ὕλη, συνεπείᾳ διδύμου ἢ πολυδύμου κατασκευῆς αὐτῆς, παρουσιάζει φαινομενικῶς κρυσταλλικὴν συμμετρίαν ἀνωτέραν ἐκείνης, εἰς τὴν ὁποίαν κρυσταλλοῦται ὡς ἁπλοῦς κρύσταλλος. Τὸ φαινόμενον τοῦτο καλεῖται *μίμησις* (Mimesie), οἱ δὲ τοιοῦτοι κρύσταλλοι ὀνομάζονται *μιμητικοί* (mimetische Krystalle). Ὡς ἁπλοῦν παράδειγμα μιμήσεως εἶναι οἱ κρύσταλλοι τοῦ μικροκλινοῦς, ἑνὸς μέλους τῶν ἀστρίων κρυσταλλουμένου εἰς τὸ τρικλινὲς σύστημα. Οἱ κρύσταλλοι τοῦ μικροκλινοῦς παρουσιάζουν φαινομενικῶς μονοκλινῆ συμμετρίαν, ἐθεωροῦντο δὲ διὰ τοῦτο μέχρι τινὸς ὡς κρύσταλλοι τοῦ ὀρθοκλάστου, τὸ ὁποῖον κρυσταλλοῦται ὄντως εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα, μέχρις ὅτου ὁ Descloiseaux ἀπέδειξεν ὅτι πρόκειται περὶ κρυ-

Digitized by Google

στάλλων μιμητικῶν, καθόσον συνίστανται ἀπὸ πολλὰ κρυσταλλικὰ ἄτομα τοῦ μικροκλινοῦς, τὰ ὁποῖα συνάπτονται πρὸς ἄλληλα κατὰ τὸ ἐπίπεδον τοῦ δευτέρου πινακοειδοῦς. Μιμητικοὶ εἶναι καὶ οἱ κρύσταλλοι τοῦ λευκίτου, οἱ ὁποῖοι φαινομενικῶς παρουσιάζουν συμμετρίαν τοῦ κυβικοῦ συστήματος, κρυσταλλούμενοι μάλιστα εἰς δελτοειδῆ εἰκοσιτετράεδρα, εἰς τὴν πραγματικότητα ὅμως ἀνήκουν εἰς κατωτέραν κρυσταλλικὴν συμμετρίαν. Γ. Β.

—«Μιμήσεως **Χριστοῦ, περὶ—»**. Τὸ γνωστὸν ἔργον «De imitatione Christi», τὸ μετὰ τὴν Καινὴν Διαθήκην ἀριθμοῦν τὰς περισσοτέρας ἐκδόσεις καὶ μεταφράσεις, ἐξεδίδετο μέχρι τοῦ 1445 ἀνωνύμως καὶ ἄνευ γενικοῦ τίτλου εἰς τέσσαρα κεχωρισμένα τεύχη (tractatus), ὡς εὕρηται ἐν τοῖς ἀρχαιοτέροις χειρογράφοις. Ὡς φαίνεται, ὁ συγγραφεὺς τοῦ ἔργου τούτου εἶχεν ἐκδώσει αὐτό, πιθανῶς ἐκ μοναχικῆς μετριοφροσύνης, ἀνωνύμως. Τούτου ἕνεκα λίαν ἐνωρὶς ἤρχισαν συζητήσεις καὶ ἔριδες περὶ τοῦ συγγραφέως, αἵτινες ἔλαβον μεγάλας διαστάσεις. Ὑπεστηρίχθησαν ὑπὸ διαφόρων τὰ ὀνόματα τριάκοντα καὶ πέντε ἐν ὅλῳ συγγραφέων, ἐξ ὧν ἐπεκράτησαν τρία κυρίως, τοῦ Ἰωάννου Gersen, τοῦ ἱεροκήρυκος Gerson καὶ τοῦ Θωμᾶ τοῦ ἐκ Κέμπης. Τὰ περισσότερα χειρόγραφα φέρουσι τὸ ὄνομα τοῦ *Θωμᾶ* τοῦ ἐκ Κέμπης (βλ. καὶ λ.), ὅστις, ὡς φαίνεται, εἶναι καὶ ὁ συγγραφεὺς τοῦ ἔργου τούτου. Κ. Ι. Δ.

**μιμητέος**, *—α, —ον*· ἐκεῖνος τὸν ὁποῖον πρέπει τις νὰ μιμηθῇ.

**μιμητὴς** (ὁ)· ὁ μιμούμενός τινα, ὁ ἀκολουθῶν πιστῶς τὸ παράδειγμά τινος: «μιμηταὶ τοῦ Χριστοῦ».

**μιμητησίτης** (Mimetesit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ ἀρσενικικὸν ἅλας τοῦ μολύβδου χλωριοῦχον, ὁ χημικὸς τύπος τοῦ ὁποίου εἶναι $Pb_5Cl\,[AsO_4]_3$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν σύστημα ὡς ἰσόμορφον πρὸς τὸν ἀπατίτην καὶ τὸν πυρομορφίτην, ἐμφανίζεται δὲ συνήθως εἰς συσσωματώματα μικρὰ βοτρυοειδῆ, νεφροειδῆ ἢ καὶ γεώδη. Εἶναι εὔθραυστον, παρουσιάζει θραυσμὸν κογχώδη ἕως ἀνώμαλον καὶ ἔχει σκληρότητα 3 ½—4, εἰδικὸν βάρος 7,1—7,3, λάμψιν ἀδαμαντοειδῆ ἕως στεατώδη καὶ χρῶμα κίτρινον, ἐπίσης δὲ καὶ λευκόν, ὑποπράσινον καὶ τεφρόν. Ὁ μιμητησίτης εἰς ἰσόμορφον παράμειξιν μὲ τὸν ἀπατίτην ἀποτελεῖ τὸν *ἡδυφανῆ*, μὲ τὸν πυρομορφίτην δὲ τὸν *καμπυλίτην*. Ἀπαντᾷ ὡς σύνδρομον ὀρυκτὸν τοῦ γαληνίτου εἰς ἐμφανίσεις μεταλλευμάτων ἀρσενικοῦ ἐν Johann-Georgenstadt, Badenweiler, Primbram κ. ἄ., ἐν Ἑλλάδι δὲ σπανιώτατα εἰς μικροὺς κιτρίνους κρυστάλλους μὲ γαληνίτην καὶ κερουσσίτην εἰς τὰ κοιτάσματα τῆς Καμαρίζης τοῦ Λαυρείου. Γ. Β.

**μιμητικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἱκανός, ὁ ἐπιτήδειος εἰς τὸ μιμεῖσθαι: «ζῷον μιμητικόν».—Ἐπίρρ. ***μιμητικῶς***.

—μιμητικοὶ ***κρύσταλλοι***· βλ. λ. *μίμησις [Ὀρυκτ.]*.

**μιμητικότης**, *—ητος* (ἡ)· ἡ ἰδιότης τοῦ μιμητικοῦ, ἡ πρὸς μίμησιν τάσις, ἡ ἱκανότης πρὸς μίμησιν.

**μιμητισμὸς** (ὁ)· ἡ τάσις πρὸς μίμησιν, μιμητικότης.

— *[Βιολογ.]* Καλεῖται ἐν τῇ βιολογίᾳ *μιμητισμὸς* ἡ ἰδιότης ἣν ἔχουσι πολλὰ ζῷα καὶ φυτὰ νὰ μεταβάλλωσιν ἐξωτερικὴν ὄψιν, ἐπιτυχῶς κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, ὅπως καλύτερον ἀντεπεξέλθωσιν εἰς τὸν περὶ ὑπάρξεως ἀγῶνα. Ἀπαντῶνται δὲ πολλὰ εἴδη μιμητισμοῦ, ἐκ τῶν ὁποίων συνηθέστερα καὶ κυριώτερα εἶναι: ἡ *ἔμμονος ὁμοχρωμία*, ἡ *παροδικὴ ὁμοχρωμία*, ἡ *μεταμφίεσις* καὶ ὁ *κυρίως μιμητισμός*.

***Ἔμμονος ὁμοχρωμία.*** Εἶναι αὕτη ἡ ἁπλουστέρα μορφὴ τοῦ μιμητισμοῦ, καθ᾽ ἣν τὰ διάφορα ζῷα ἔχουν χρωματισμὸν ὅμοιον ἢ παρεμφερῆ πρὸς τὸ περιβάλλον, ἐν τῷ ὁποίῳ συνήθως ζῶσιν. Οὕτω, παρατηρεῖται ὅτι τὰ ζῷα τῶν ὁποίων τὸ χρῶμα εἶναι λευκὸν ἀπαντῶσιν ἰδίως εἰς τὰς ἀρκτικὰς χώρας καὶ εἰς τὰς χιονοσκεπεῖς κορυφὰς τῶν ὀρέων. Ἐπίσης ὁ χρωματισμὸς τῶν ζῴων τῆς ἐρήμου συγχέεται μὲ τὸ χρῶμα τοῦ ἐδάφους, εἰς ὃ κατὰ προτίμησιν διαβιοῦσιν. Αἱ κάθετοι γραμμώσεις τοῦ *ζέβρου* καὶ τῆς *τίγρεως* ἐναρμονίζονται τελείως πρὸς τὴν ζωὴν τῶν θηλαστικῶν τούτων, ἐνδιαιτωμένων εἰς πεδιάδας καλυπτομένας ὑπὸ ὑψηλῶν χόρτων, ὧν τὸν πράσινον χρωματισμὸν ἔχουσι μεταβάλει εἰς πυρρόχρυσον αἱ καυστικαὶ ἀκτῖνες τοῦ ἡλίου. Κατ᾽ αὐτὸν τὸν τρόπον τὰ ζῷα ταῦτα κατορθώνουσιν ἢ ν᾽ ἀποφεύγωσι τὸν ἐχθρόν των ἢ νὰ πλησιάζωσιν ἀπαρατήρητα καὶ νὰ ἐπιτίθενται κατ᾽ αὐτοῦ. Τὰ ζῷα τὰ ἔχοντα διάστικτον δέρμα, ὅπως λ. χ. ὁ πάνθηρ κ. ἄ., κατοικοῦσι τὰ δάση ἢ ἀναρριχῶνται ἐπὶ τῶν δένδρων, ὅπου, ἰδίως κατὰ τὴν νύκτα, ἀφομοιοῦνται τελείως σχεδὸν μὲ τὸ χρῶμα τοῦ φυλλώματος ἢ τῶν πυκνῶν κλάδων. Ἔχει παρατηρηθῆ ἐξ ἄλλου ὅτι τὰ πρασίνου χρώματος πτηνά, ὅπως π. χ. τὰ διάφορα εἴδη τῶν πρασινοκιτρίνων *ψυττακῶν*, ἐνδιαιτῶνται πάντοτε ἐντὸς τῶν φυλλωμάτων τῶν δένδρων, τὰ δὲ λαμπρότατα εἰς ποικίλους χρωματισμοὺς μικροσκοπικὰ *κολύβρια* ζῶσι κατὰ κανόνα ἐπὶ διαφόρων ποικιλοχρώμων ἀνθέων καὶ τέλος τὰ μελανά, ὡς ὁ *κόραξ* κ. ἄ., καὶ τὰ τεφρὰ ἢ φαιότεφρα, ὡς ἡ *γλαῦξ*, ὁ *βύας* κ. ἄ. εἶναι νυκτόβια ἢ σκιόβια. Πολλοὶ ἰχθύες ἐκ τοῦ ἀθροίσματος τῶν πλεκτογνάθων, ὅπως ἡ *βατίς*, ἡ *νάρκη*, ἔχουσι τὴν ῥάχιν ὁμοιόχρωμον μὲ τὴν ἄμμον ἢ τὴν ἰλύν, εἰς ἣν διαιτῶνται. Ἐκ τῶν ἀμφιβίων ὁ *βάτραχος ὁ δενδρόβιος* εἶναι πράσινος ὡς καὶ τὰ φυλλώματα τῶν δένδρων ἐφ᾽ ὧν ἐνδιαιτᾶται. Ἐκ τῶν ἐντόμων ἡ *ἀκρὶς ἡ πρασίνη* ζῇ κυρίως ἐπὶ τῆς χλόης ἢ ἐπὶ τῶν φυλλωμάτων τῶν δένδρων, ἐνῷ ἀντιθέτως ἡ *ἀκρὶς ἡ φαιὰ* ἐπὶ τῶν κορμῶν ἢ τῶν ξηρῶν κλάδων. Ἐκ τῶν ὑδροβίων ζῴων πλεῖσται *μέδουσαι, σιφωνοφόρα, κτενοφόρα, σάλπαι* καὶ ἕτερα μικρότερα θαλάσσια ζῷα ἔχουσι σῶμα διαφανές, ὥστε νὰ καθίσταται δυσδιάκριτον ἢ καὶ τελείως ἀόρατον ἐνίοτε.

***Παροδικὴ ὁμοχρωμία.*** Κατ᾽ αὐτὴν παρατηρεῖται ταχεῖα ἢ καὶ βραδεῖα ἀλλαγὴ τοῦ χρωματισμοῦ τοῦ ζῴου, ὅταν τοῦτο ἀναγκάζεται δι᾽ οἱονδήποτε λόγον ν᾽ ἀλλάξῃ τόπον διαμονῆς. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὴν καλουμένην χρωματικὴν λειτουργίαν, ἥτις συνίσταται εἰς τὴν συστολὴν ἢ διαστολὴν τῶν καλουμένων χρωματοφόρων κυττάρων τῆς ἐπιδερμίδος. Ἡ παροδικὴ ὁμοχρωμία παρατηρεῖται εἰς τὸν *χαμαιλέοντα*, τὸν *βάτραχον τὸν κοινὸν* καί τινα ἄλλα ζῷα.

***Μεταμφίεσις.*** Ὀνομάζεται οὕτω ἡ περίπτωσις ἐκείνη τοῦ μιμητισμοῦ, καθ᾽ ἣν τὸ ζῷον περιβάλλει τὸ σῶμά του διὰ διαφόρων ὑλῶν ἢ ζῇ ἐντὸς ξένων ἀντικειμένων, διὰ ν᾽ ἀποκρύπτεται καὶ γίνεται ἀγνώριστον. Κλασσικὸν ἐν προκειμένῳ παράδειγμα παρουσιάζει τὸ θαλάσσιον ζῷον *βερνάρδος ὁ ἐρημίτης*, εἶδος καρκίνου, ὅστις κατοικεῖ μονίμως ἐντὸς τῶν ὀστράκων τεθνεώτων μαλακίων. Ὁ *σύγγναθος* (κοιν. *σακοράφα*), μικρὸς ἰχθὺς μὲ σῶμα μακρὸν καὶ λεπτόν, περιβάλλεται διὰ διαφόρων θαλασσίων φυτῶν καὶ ἰδίως τῶν ζωστήρων, ἅτινα ἔχουσιν, ὅπως καὶ οὗτος, λεπτὴν ἐπιμήκη μορφὴν καὶ πράσινον χρῶμα. Ἐκ τῶν ἐντόμων, τέλος, ὁ κριόκερως καλύπτει τὸ σῶμά του διὰ τῆς ἰδίας αὐτοῦ κόπρου, ὅπως γίνεται δυσδιάκριτος.

***Κυρίως μιμητισμός.*** Κατὰ τοῦτον τὸ ζῷον δὲν προσκτᾶται μόνον τὸ χρῶμα, ἀλλὰ καὶ τὸ σχῆμα διαφόρων ἀντικειμένων, κατορθώνει δηλαδὴ νὰ ἐξομοιοῦται πρὸς ἐξωτερικὰ ἀντικείμενα τοῦ περιβάλλοντος ἐν τῷ ὁποίῳ ζῇ, ἄλλοτε δὲ καὶ πρὸς ἐπικίνδυνα ζῷα.

Α') *Ἐξομοίωσις πρὸς ἐξωτερικὰ ἀντικείμενα.* Ἓν τῶν ἀξιολογωτέρων παραδειγμάτων τοιούτου εἴ-

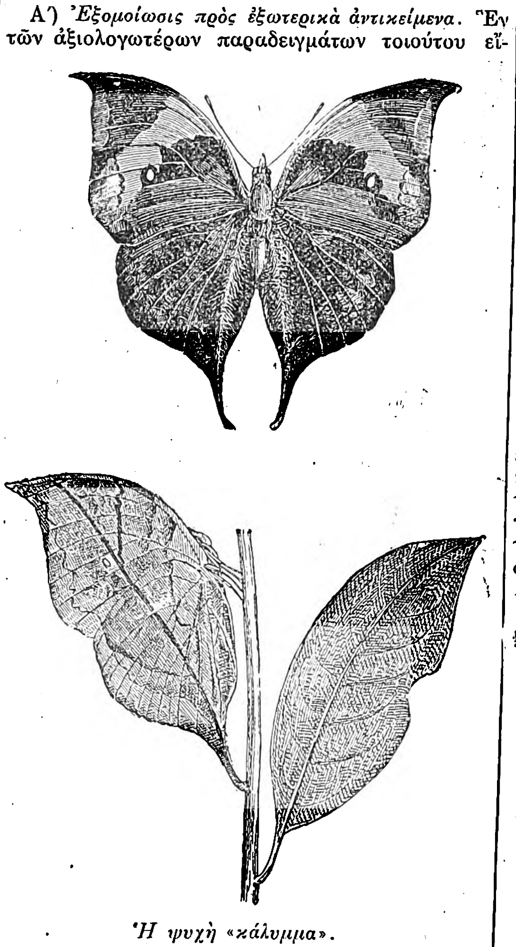

*Ἡ ψυχὴ «κάλυμμα».*

[Κάτω: τὸ φύλλον, καὶ ἄνω: τὸ ἔντομον ἐν ἀναπαύσει.]

δους μιμητισμοῦ παρουσιάζει τὸ ὀρθόπτερον ἔντομον *φύλλιον* (Phyllium), ὅπερ ἀπαντᾷ εἰς τὰς τροπικὰς χώρας. Ἐνδιαιτᾶται ἐπὶ δένδρων καὶ ἔχει σῶμα πλατύ, ᾠοειδές, πτέρυγας τελείως συνεσφιγμένας ἐπὶ τοῦ σώματος καὶ πεποικιλμένας μὲ ἀπείρους νευρώσεις. Ὅταν εὑρίσκεται ἐπὶ τῶν φύλλων, εἶναι σχεδὸν ἀδύνατον νὰ διακρίνῃ τις ποῖον εἶναι τὸ φύλλον καὶ ποῖον τὸ ἔντομον.

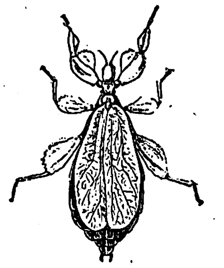

*Φύλλιον.*

Παρόμοιον φαινόμενον παρουσιάζει καὶ ἡ ἰθαγενὴς τῆς Σουμάτρας ψυχὴ *κάλυμμα* (Calymma). Ἰδοὺ πῶς περιγράφει αὐτὴν ὁ ἰδιαιτέρως ἀσχοληθεὶς μὲ τὸ φαινόμενον τοῦ μιμητισμοῦ Wallace: «Τὰ ἔντομα ταῦτα συναντῶνται κατὰ δεκάδας ἑκατοντάδων ἐντὸς τῶν πυκνῶν καὶ σκιερῶν δασῶν. Ἡ ἄνω ἐπιφάνεια τοῦ σώματός των ἔχει χρῶμα ἐρυθρὸν ἀναμὶξ καὶ φαιόν. Τὸ ἀνώτερον τμῆμα τῶν πτερύγων διατρέχεται ὑπὸ εὐρείας πορτοκαλοχρόου λωρίδος, ἥτις μακρόθεν καθιστᾷ τὸ ἔντομον εὐδιάκριτον. Εἶναι ὅμως ἀδύνατον νὰ τὸ συλλάβῃ τις, διότι, ἀφοῦ διατρέξῃ ἱπτάμενον ἀρκετὸν διάστημα, εἶτα ἐπικάθηται μεταξὺ τῶν ξηρῶν κλωνίων τοῦ δένδρου, κλεῖον τὰς πτέρυγάς του καὶ οὐδόλως διαφέρει ἀπὸ τὰ ἀπεξηραμμένα φύλλα. Τοῦτο δὲ πρὸ πάντων, διότι τὸ ἀνώτερον μέρος τῶν πτερύγων του τελευτᾷ εἰς λεπτοτάτην αἰχμήν, ὅπως ἀκριβῶς καὶ τὰ ἄκρα τῶν ξηρῶν φύλλων πολλῶν δένδρων καὶ θάμνων τῶν τροπικῶν χωρῶν. Τὸ κατώτερον, ἀντιθέτως, τμῆμα τῶν πτερύγων του εἶναι πλατὺ καὶ ἀπολήγει εἰς ἐπιμήκη ἀπόφυσιν, παρομοίαν πρὸς τὸν μίσχον τοῦ φύλλου. Μεταξὺ τῶν δύο ἄκρων τῶν πτερῶν ὑπάρχει κυρτή, σκοτεινοῦ χρώματος γραμμή, ὁμοία ἀκριβῶς μὲ τὴν μεσαίαν νεύρωσιν τοῦ φύλλου, ἐκ ταύτης δὲ διακλαδίζονται πλάγιαι λεπτότεραι γραμμαί, ὅπως ἀκριβῶς αἱ λεπταὶ πλάγιαι νευρώσεις τῶν φύλλων».

Ἕτερον ἔντομον, τὸ *πτερόχροζον* (Pterochrozum), ἰθαγενὲς τῶν δασῶν τῆς Βόρνεο, τῆς Σουμάτρας καὶ τῆς Ἰάβας, ὅταν εὑρίσκεται ἐν κινδύνῳ ἀπομιμεῖται τελείως τὸ φύλλον.

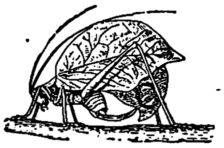

*Πτερόχροζον.*

Ὁ *βάκιλλος ὁ γαλλικὸς* (Bacillus gallicus), γνωστότατον ἔντομον τῶν δασῶν τῆς Εὐρώπης, ἔχον σῶμα ἐπίμηκες κυλινδρικὸν καὶ φέρον ἐπιμήκεις λεπτοὺς πόδας, ὅταν ἀκούσῃ τὸν παραμικρὸν θόρυβον προσηλοῦται ἐπὶ τῶν κλώνων τῶν δένδρων καὶ οὐδόλως διαφέρει τοῦ ξηροῦ φύλλου.

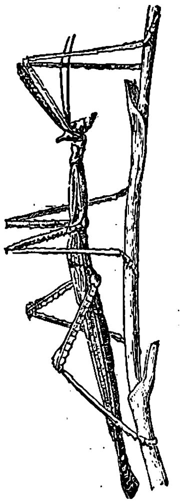

*Βάκιλλος ὁ γαλλικός.*

Ὁ ἰχθὺς *φυλλοπτέρυξ*, ὅστις καταπληκτικῶς ὁμοιάζει μὲ τὸν *ἱππόκαμπον* (κοιν. ἀλογάκι), ἕτερον θαλάσσιον ἰχθύν, ἔχει σῶμα ἐπίμηκες πλῆρες διωγκωμένων ἀποφύσεων καὶ πράσινον, ὅπως ἀκριβῶς καί τινα εἴδη φυκῶν, ἀπὸ τὰ ὁποῖα πολὺ δυσκόλως διακρίνεται.

Β') *Ἐξομοίωσις πρὸς ἐπικίνδυνα ζῷα.* Διάφορα ζῷα, ὅπως ὑπερασπίσωσιν ἑαυτὰ ἔναντι ἑτέρων ἰσχυροτέρων, λαμβάνουσι μορφὴν ζῴου τελείως διαφορετικοῦ εἴδους, ὅπερ δι᾽ οἱονδήποτε λόγον προκαλεῖ φόβον εἰς τὸν διώκτην του. Τὸ φαινόμενον τοῦτο εἶναι ἐκ τῶν περιεργοτέρων τοῦ μιμητισμοῦ, ὄχι τόσον διὰ τὴν τελείαν μίμησιν, ὅσον διὰ τὴν σοφὴν ἐπίγνωσιν ἣν ἔχουσι τὰ ἀσθενῆ ζῷα περὶ τῶν ψυχικῶν ἰδιοτήτων τῶν ἰσχυροτέρων των.

*Φυλλοπτέρυξ.*

[Κάτω ἀριστερὰ προσόμοιον πρὸς αὐτὸν φῦκος.]

Μεταξὺ τῶν παρουσιαζόντων τὸ εἶδος τοῦτο τοῦ μιμητισμοῦ περιλαμβάνονται διάφορα ἔντομα ἀνήκοντα εἰς τὰς οἰκογενείας τῶν *ἑλικονιδῶν* καὶ τῶν *λεπταλιδῶν*. Εἰς τὴν πρώτην οἰκογένειαν ἀνήκει τὸ εἶδος *ἰθόμυια* (Ithomya), ἥτις εἶναι ψυχὴ μετρίου μεγέθους μὲ εὐρείας πτέρυγας ποικίλου καὶ ζωηροῦ χρωματισμοῦ. Ἡ ψυχὴ αὕτη ἀναδίδει δυσάρεστον ὀσμήν, προερχομένην ἐκ τῆς ἐκκρίσεως ἀδένων τινῶν τοῦ σώματός της καὶ δίδουσαν εἰς τὸ κρέας της δυσάρεστον γεῦσιν. Τοῦτο εἶναι γνωστὸν εἰς πλεῖστα ἐντομοφάγα πτηνά, ἅτινα οὐδέποτε πλησιά-

Digitized by Google

ζουσιν οὔτε καταδιώκουσι τὴν ἰθόμυιαν. Εἰς τὰ μέρη ὅπου αὕτη ἀπαντᾷ, ζῇ καὶ ἓν ἄλλο εἶδος ψυχῆς, ἡ *λεπταλίς*, τῆς οἰκογενείας τῶν λεπταλιδῶν. Αὕτη ἂν καὶ ἔχει δύο ζεύγη ποδῶν μακροτάτων, ἐνῷ ἡ πρώτη ἔχει τρία ζεύγη μικρῶν ποδῶν, καὶ παρ' ὅλας τὰς ἄλλας ἀνατομικὰς μεταξύ των διαφοράς, κατορθώνει, λόγῳ τῆς ἐξωτερικῆς αὐτῆς ὁμοιότητος πρὸς τὴν ἰθόμυιαν, νὰ ἐξαπατᾷ ὄχι μόνον τὰ πτηνά, ἀλλὰ καὶ αὐτοὺς ἔτι τοὺς ἐντομολόγους. Ἂν καὶ οὐδεμίαν δυσάρεστον ὀσμὴν ἀναδίδει, ἂν καὶ λόγῳ τῶν ποικίλων καὶ ζωηρῶν αὐτῆς χρωματισμῶν προκαλεῖ μακρόθεν τὴν ἐπίθεσιν τῶν ἐντομοφάγων πτηνῶν, ἐν τούτοις, ἅμα ὡς ταῦτα τὴν πλησιάσωσιν, ἀπομακρύνονται, διότι τὴν ἐκλαμβάνουσιν ὡς ἰθόμυιαν. Τοῦτο τὸ γνωρίζει ἄριστα τὸ πονηρὸν ἔντομον, δι' ὃ καὶ ἐνδιαιτᾶται πάντοτε μεταξὺ τῶν ἰθομυιῶν.

Εἰς τὸ ἔντομον *διάδημα* (Diadema), παρατηρεῖται τὸ ἀξιοπερίεργον φαινόμενον, ὅτι μόνον ἡ θήλεια αὐτοῦ μιμεῖται ἕτερον ἔντομον, τὴν *δαναΐδα* (Danaïs), ἥτις ἀναδίδει δυσάρεστον καὶ ἀποπνικτικὴν ὀσμὴν καὶ ἀποφεύγεται ὑπὸ τῶν ἐντομοφάγων πτηνῶν, ἐνῷ, ἀντιθέτως, ὁ ἄρρην τοῦ διαδήματος κατατρώγεται ὑπὸ τούτων. Ἡ περίπτωσις ὀφείλεται κυρίως εἰς οἰκονομίαν τῆς φύσεως, ἥτις προστατεύει τὸ θῆλυ διὰ τὸν πολλαπλασιασμὸν τοῦ γένους, ἐνῷ ὁ ἄρρην, ἅπαξ ἐκτελέσας τὸν προορισμόν του, δηλαδὴ τὴν ὀχείαν, δὲν θεωρεῖται ἀπαραίτητος.

Εἰς τὴν μέσην καὶ δυτικὴν Εὐρώπην ἀπαντᾷ τὸ ἔντομον *σεσία* (Sesia), τὸ ὁποῖον κατορθώνει νὰ φαίνεται καταπληκτικῶς ὅμοιον πρὸς τὴν μέλισσαν καὶ τὴν σφῆκα. Ἡ σεσία, ἂν καὶ δὲν φέρει ἀμυν-

*Σεσσία* (ἀριστερὰ) *καὶ σφὴξ* (δεξιά).

τικὸν ὅπλον (κεντρί), ἐν τούτοις ἐπιτυγχάνει νὰ πλανᾷ τὰ ἐντομοφάγα πτηνά, ἅτινα φοβούμενα τὴν ἀποφεύγουσι.

Τὸ ἔντομον *βολουκέλλη* (Vollucella) ἐξομοιοῦται τόσον πρὸς τὸ ἔντομον *βέμβυξ* (Bembyx), ὥστε ὁ τελευταῖος ἀπατᾶται καὶ ἀφίνει τὸ θῆλυ τούτου νὰ εἰσέλθῃ εἰς τὴν φωλεάν του καὶ νὰ τοποθετήσῃ τὰ ᾠά του εἰς τὸ μέσον τῆς συγκομιδῆς, ἣν προορίζει διὰ τὰς νύμφας του. Ἐπειδὴ δὲ τὰ ᾠὰ τῆς βολουκέλλης ἐκκολάπτονται ἐνωρίτερον τῶν τοῦ βέμβυκος, αἱ νεαραὶ νύμφαι τῆς πρώτης τρέφονται δαπάναις τοῦ δευτέρου.

*Βολουκέλλη* (ἀριστερὰ) *καὶ βέμβυξ* (δεξιά).

Τὸ φαινόμενον τοῦ μιμητισμοῦ παρατηρεῖται ἐπίσης καὶ εἰς τὰ φυτά, ἀλλ' εἰς μικροτέραν κλίμακα. Τινὰ δηλαδὴ ἐξ αὐτῶν, ὅπως καὶ τὰ ζῷα, ἀπομιμοῦνται ἕτερα, ἀκριβῶς διὰ νὰ ἀποφύγωσι τὴν ἐπίθεσιν τῶν διωκτῶν των. Οὕτω πολλοὶ ἀβλαβεῖς καὶ ἐδώδιμοι *μύκητες* μιμοῦνται ἑτέρους μύκητας δηλητηριώδεις, ὅπως μὴ καταστρέφωνται ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων. Πολλὰ δὲ ἄνθη μελιφόρα μιμοῦνται ἕτερα ἄνθη, ἀναδίδοντα δυσάρεστον ὀσμήν, ὅπως ἀποφεύγωσι τὴν ἐπίσκεψιν τῶν μελισσῶν κτλ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Wallace*, La selection naturelle.— *E. Perrier*, Traité de Zoologie (1890).— *Guenot*, Les moyens de defénse dans la série animale (Paris, 1898).— *Pieper*, Selection und Darwinismus (Leyden, 1903). — *Weismann*, Vorträge über Descendentheorie (Jena, 1913).

Δ. Ν. ΠΑΠΑΓΙΑΝΝΟΠΟΥΛΟΣ

—*[Ὀρυκτολ.]* Καλεῖται *μιμητισμὸς* ἡ ἰδιότης, ἣν κέκτηνται ὀρυκτά τινα νὰ διαμορφοῦνται κατὰ τρόπον, ὥστε νὰ παρουσιάζωνται ὑπὸ συμμετρίαν διάφορον καὶ περιπλοκωτέραν ἐκείνης, ἣν ἔδει νὰ ἔχωσι. Τοιοῦτος εἶναι π. χ. ὁ *χριστιανίτης*, ἔχων σχῆμα κλινορρομβικόν, ὅπερ διὰ τῆς συνδέσεως τεσσάρων τοιούτων ὀρυκτῶν μεταβάλλεται εἰς ὀρθορρομβικόν. Τὸ αὐτὸ φαινόμενον παρατηρεῖται καὶ εἰς πλεῖστα ἄλλα ὀρυκτὰ καὶ ὀφείλεται εἰς τὸν φυσικὸν νόμον τῆς διατηρήσεως τοῦ εἴδους, διότι, ὡς ἔχει διαπιστωθῇ, ἡ αὔξησις τῆς συμμετρίας προσδίδει μεγαλυτέραν ἀντίστασιν ἔναντι τῆς ἐπιδράσεως τῶν φθοροποιῶν ἐξωτερικῶν συνθηκῶν.

Δ. Ν. Π.

—*[Κοινωνιολ.]* Ἐκλήθη *μιμητισμὸς* (mimétisme) ἡ περὶ τῶν κοινωτικῶν φαινομένων θεωρία τοῦ G. Tarde, καθ' ἣν ταῦτα οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ φαινόμενα μιμήσεως, ἡ μελέτη τῶν νόμων τῆς ὁποίας δύναται ν' ἀνακαλύψῃ καὶ τὴν φύσιν τῶν κοινωνικῶν φαινομένων, ὡς ἡ μελέτη τῶν νόμων τῆς παγκοσμίας περιοδικότητος καὶ ἐπαναλήψεως τῶν ὁμοίων πραγμάτων (ἐν τῇ φυσικῇ τῶν κυμάτων αἰθέρος, φωτός, ἀέρος) μᾶς γνωρίζει τὰ φυσικὰ φαινόμενα καὶ ἐν τῇ βιολογίᾳ (γέννησις, ἀναπαραγωγή, κληρονομικότης) μᾶς γνωρίζει τὰ ὀργανικὰ φαινόμενα. Πρωτοβουλία καὶ μίμησις (πρώτη κίνησις καὶ ἐπανάληψις) εἶναι οἱ δύο πόλοι τῆς παγκοσμίας φυσικῆς, βιολογικῆς καὶ κοινωνικῆς ζωῆς. Ἡ μελέτη ὅθεν τῶν στοιχείων τῆς κοινωνικῆς ἐπαναλήψεως, τῶν ἀτομικῶν δράσεων καὶ τῆς ἑνότητος αὐτῶν ἐν τῇ ὁμοιότητι, αὐτὴ καὶ μόνη μᾶς γνωρίζει τὰ κοινωνικὰ φαινόμενα, ἄνευ ἄλλης ζητήσεως τῶν γενικῶν νόμων καὶ γενικῶν ἐννοιῶν, ἄνευ μεταφυσικῆς ζητήσεως κεκρυμμένων στοιχείων. Τοιουτοτρόπως, κατὰ τὸν Tarde, ἡ κοινωνιολογία ὡς ἐπιστήμη εἶναι ἁπλῆ κοινωνικὴ ψυχολογία, διότι καὶ τὰ κοινωνικὰ φαινόμενα δὲν εἶναι διάφορα τῶν ἀτομικῶν ἀνθρωπολογικῶν φαινομένων [Πρβλ. *G. Tarde*, Les lois de l'imitation (Paris 1895). —*Τοῦ αὐτοῦ*, La logique sociale (Paris 1904)].

Θ. Π.

—*[Ψυχοπαθολ.]* Καλεῖται *μιμητισμὸς* ἡ εἴς τινας ψυχοπαθεῖς, ἰδίως μικρόνοας, ἐπιληπτικούς, ὑστερικούς, παρατηρουμένη τάσις νὰ μιμοῦνται ἐμπαικτικῶς τοὺς περὶ αὐτούς. Ὁ τοιοῦτος μιμητισμὸς εἶναι ἑκούσιος, καὶ δὲν πρέπει νὰ συγχέεται πρὸς τὴν *ἠχοπραξίαν, ἠχολαλίαν* τῶν ἀνόων ἢ ἁπλῶν κατατονικῶν. Χαρακτηρίζει δὲ ἰδίας καταστάσεις εἴτε ὑστερικὰς ἢ ἐπιληπτικάς, εἴτε καὶ κυρίως καταστάσεις ἐλαφρᾶς διανοητικῆς ἐξασθενήσεως, ἰδίᾳ συμφύτου.

Τ. Α. ΖΗΣ

**μιμητός,** *—ή, —όν*˙ ἐκεῖνος τὸν ὁποῖον δύναταί τις νὰ μιμηθῇ.

**μιμίαμβος** (ὁ). Καλοῦνται οὕτω οἱ εἰς ἰαμβικὸν τρίμετρον χωλιαμβικὸν γεγραμμένοι μῖμοι. Τοῦ λογοτεχνικοῦ τούτου εἴδους ἐκπρόσωποι παρὰ μὲν τοῖς Ἕλλησιν εἶναι ὁ Ἡρώδας ἢ Ἡρώνδας, παρὰ δὲ Λατίνοις ὁ Γν. Μάτιος. Μιμίαμβοι εὑρέθησαν ἐσχάτως, ἀνώνυμοι, καὶ εἰς αἰγυπτιακοὺς παπύρους.

**μιμική** (ἡ)˙ ἡ τέχνη τῆς ἐκδηλώσεως τῶν συναισθημάτων καὶ τῶν σκέψεων δι' ἐξωτερικῶν σχημάτων, οἷον διὰ χειρονομιῶν, διὰ μορφασμῶν, διὰ τῆς ἀπαγγελίας κττ.: «ἡ μιμικὴ εἶναι τέχνη ἰδίᾳ τοῦ ἠθοποιοῦ, τοῦ ῥήτορος, τοῦ ἱεροκήρυκος».

—*[Ἐγκυκλ.]* Ἡ διὰ τοῦ προσώπου, τοῦ κορμοῦ καὶ τῶν ἄκρων ἄφωνος ἀπεικόνισις ὅλων τῶν ὁρατῶν κινήσεων, αἱ ὁποῖαι ἐκφράζουν τὰς διαφόρους ψυχικὰς καταστάσεις.

Διὰ νὰ συνεννοηθῇ μετὰ τῶν ὁμοίων του ὁ ἄνθρωπος καὶ νὰ ἱκανοποιῇ τὰς διαφόρους ἀνάγκας του, ἐπενόησε τρεῖς γλώσσας *μιμικήν, προφορικήν, γραπτήν*. Ἡ μιμικὴ ὑπῆρξεν ἀναμφιβόλως ἡ πρώτη χρησιμοποιηθεῖσα ὑπὸ τῶν ἀρχεγόνων ἀνθρώπων πρὸς ἔκφρασιν ἀναγκῶν, φόβων, ἐπιθυμιῶν, θελήσεων πολὺ πρὸ τῆς διαμορφώσεως τῆς λαλιᾶς καὶ τῆς γραφῆς, διὰ τὴν τελειοποίησιν τῶν ὁποίων μακροὶ διανοητικοὶ ἀγῶνες ἀπῃτήθησαν. Ἡ μιμική, συγκρινομένη πρὸς τὰς ἄλλας δύο γλώσσας, εἶνε ταχυτέρα, διαυγεστέρα, ἐντονωτέρα, ἐπὶ πλέον δ' ἔχει μορφὴν καθολικήν, διότι, ἐκτὸς ἀσημάντων ἐξαιρέσεων, εἶναι ἡ αὐτὴ δι' ὅλας τὰς χώρας καὶ δι' ὅλους τοὺς ἀνθρώπους, ἀδιαφόρως τῆς ὑπ' αὐτῶν λαλουμένης γλώσσης, δεδομένου ὅτι τὰ αἰσθήματα καὶ τὰ πάθη κατὰ τὸν αὐτὸν ἐκφράζονται τρόπον. Ἡ μιμικὴ εἶναι τόσον σαφὴς καὶ καταληπτή, ὥστε παιδία ἀπὸ τοῦ πρώτου ἔτους τῆς ἡλικίας των διακρίνουν εἰς τὸ πρόσωπον τῆς μητρός των ἔκφρασιν δυσαρεσκείας ἢ εὐχαριστήσεως, πρὶν ἢ διὰ τοῦ προφορικοῦ λόγου δηλωθῇ τὸ σκοπούμενον. Διάνοιαι ὑπέροχοι κατὰ διαφόρους ἐποχὰς ἐνησχολήθησαν εἰς τὴν μελέτην τῶν ἐνάρθρων γλωσσῶν, μόνη δὲ ἡ συστηματικὴ ἔρευνα τῆς μιμικῆς δὲν ἠξιώθη, ἐξαιρέσει τινῶν νεωτέρων συγγραμμάτων, τῆς δεούσης προσοχῆς ἐκ μέρους τῶν φυσιολόγων καὶ ψυχολόγων, ἐκ τῶν ὁποίων ἄλλοι ἐθεώρησαν τὴν σπουδὴν τῆς μιμικῆς ὡς ἐπιστημονικὸν πάρεργον καὶ ἄλλοι ἔθεσαν αὐτὴν εἰς ἴσην μοῖραν πρὸς τὴν χειρομαντείαν καὶ τὴν ἀστρολογίαν.

Ἡ μιμικὴ δὲν εἶναι μόνον ἡ ἄμεσος ἐκδήλωσις τοῦ αἰσθητικοῦ, ἀλλὰ καὶ ὁ ὑποχρεωτικὸς ἐπίκουρος ὅλων σχεδὸν τῶν τεχνῶν, αἱ ὁποῖαι ἔχουν ὡς σκοπὸν ν' ἀναπαραστήσουν τὸν ἄνθρωπον σκεπτόμενον, αἰσθανόμενον, ἐνεργοῦντα. Διὰ τοῦτο ἡ ἐπιστημονικὴ γνῶσις τῶν μιμικῶν κινήσεων ἔχει μεγίστην σπουδαιότητα διὰ τοὺς γλύπτας, ζωγράφους, ἠθοποιούς, ἀλλὰ καὶ διὰ τοὺς δικανικούς, πολιτικοὺς καὶ ἐκκλησιαστικοὺς ῥήτορας.

Ἡ μιμική, τὸ μετὰ τῆς τέχνης τοῦ λόγου ἕτερον ἀπαραίτητον στοιχεῖον διὰ τὴν ὁλοκλήρωσιν τῆς ὑποκριτικῆς, περιλαμβάνει τὴν σπουδήν: α') τῶν ἐκφράσεων τῶν διαφόρων μερῶν τοῦ προσώπου, δηλαδὴ ὀφθαλμῶν, ὀφρύων, στόματος κλπ., β') τῶν στάσεων, γ') τῶν χειρονομιῶν, δ') τῶν κινήσεων κορμοῦ καὶ ἄκρων, ε') τοῦ γέλωτος, τῶν δακρύων κατὰ ποικίλας διαβαθμίσεις των.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Piderit*, «La Mimique et la Physiognomonie».—*Cerchiari*, «Mimica».—*Ch. Aubert*, «Mimique».—*Ed. Cuyer* «La Mimique».—*Πάνου Καλογερίκου*, «Ἡ μιμική».

Π. ΚΑΛΟΓΕΡΙΚΟΣ

—*[Ψυχοπαθ.]* Αἱ παθολογικαὶ διαταραχαὶ τῆς *μιμικῆς* συνίστανται:

1) Εἰς *ὑπερμιμίαν*, ἤτοι αὔξησιν τῶν φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων ἢ τῶν χειρονομιῶν, ἀπότοκον τῆς αὐξήσεως τῆς ταχύτητος ἐναλλαγῆς τῶν ἰδεῶν καὶ ὑπερτονίας νευροψυχικῆς. Τοιαύτη ὑπερμιμία παρατηρεῖται ἐπὶ μανίας, ἐπὶ πάσης ἐν γένει διεγέρσεως, ἀγχώδους μελαγχολίας κττ.

2) Εἰς *ὑπομιμίαν*, ἤτοι ἐλάττωσιν τῶν τε φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων καὶ τῶν χειρονομιῶν, ἀπότοκον βραδύτητος ἐπιτελέσεως τῶν ψυχικῶν λειτουργιῶν (μελαγχολία-ὑποτονίαι).

3) Εἰς *ἀμιμίαν*, ἤτοι κατάργησιν ἢ ἔλλειψιν τῶν φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων, παρατηρουμένην ἐπὶ πάσης καταπληξίας, νάρκης, κατατονιῶν κττ. Ἡ τοιαύτη κατάργησις τῶν φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων συνοδεύεται ἢ ὑπὸ καταργήσεως καὶ τῶν χειρονομιῶν (καταπληξία) ἢ ὑπὸ αὐξήσεως αὐτῶν, ἐμφανιζομένων τινῶν κινήσεων ἢ δυναμικῶν θέσεων στερεοτύπως, (κατατονικαὶ καταπληξίαι, κατατονίαι ἁπλαῖ, συγχυτικαὶ κατατονίαι κττ.).

4) Εἰς *παραμιμίαν*, ἤτοι εἰς δυσαναλογίαν καὶ ἀντίθεσιν μεταξὺ περιεχομένου διανοίας καὶ φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων ἢ καὶ χειρονομιῶν, ὡς συμβαίνει ἐπὶ ψευδαισθητικῆς κατατονικῆς μελαγχολίας, ἐπί τινων πασχόντων παράλήρημα καταδιώξεων, ἐπὶ πρωτογόνου ἀνοίας (grimaces) κττ.

5) Ὡς πέμπτον εἶδος θὰ ἠδύνατό τις νὰ κατατάξῃ τὰς ἐκ συμβολισμοῦ διαταραχὰς τῆς μιμικῆς (συμβολικὰς φυσιογνωμικὰς ἐκδηλώσεις, συμβολικὰς στερεοτυπίας, κινητικὰς ἢ δυναμικάς), αἵτινες εἶναι ἀνάλογοι τῶν παραληρητικῶν ἰδεῶν τῶν πασχόντων.

Ἐκτὸς ὅμως αὐτῶν, τῶν ψυχικῆς ἀρχῆς διαταραχῶν τῆς μιμικῆς, ἔχομεν καὶ τοιαύτας νευρολογικῆς ἀρχῆς˙ τοιαῦται δ' εἶναι:

1) Ἡ εἰδικὴ φυσιογνωμικὴ ἐκδήλωσις ἀπορίας, τοῦ συνδρόμου Parkinson, ἀπότοκος τῆς μυϊκῆς δυσκαμψίας καὶ ἐν γένει αἱ ἐξ ἀλλοιώσεων τοῦ ραβδωτοῦ σώματος.

2) Αἱ διαταραχαὶ τῶν φυσιογνωμικῶν ἐκδηλώσεων καὶ χειρονομιῶν συνεπείᾳ ἐμφανίσεως ὑπερκινητικῶν φαινομένων, ἤτοι μυοκλόνων, χορείας, ἀθετώσεως, tic κ. τ. τ., εἰς ἃς ὁ πάσχων ποιεῖται ἀκουσίως διαφόρους κινήσεις τῶν μυῶν τοῦ προσώπου, τῶν ἄνω ἄκρων καὶ τῆς κεφαλῆς, ὧν αἱ πλεῖσται συντελοῦσιν εἰς τὴν ἀλλοίωσιν τῆς μιμικῆς.

3) Αἱ διαταραχαὶ μιμικῆς ἐκ τοῦ τρόμου τῶν γερόντων.

4) Ἡ ἔλλειψις μιμικῆς ἐκφράσεως τῶν πασχόντων μυοπάθειαν τύπου Landouzy - Dejerine, αἱ μυασθένειαι καὶ ἐν γένει αἱ παραλύσεις μυῶν τοῦ προσώπου (χειλέων, βλεφάρων, ὀφθαλμῶν, σιαγόνος).

5) Αἱ διάφοροι ἀλλοιώσεις τῆς φυσιογνωμίας τῶν πασχόντων δερματοπαθείας μεγάλως ἀλλοιούσας τὸ πρόσωπον (λέπρα, λύκος, σύφιλις, ἐγκαύματα διάχυτα τοῦ προσώπου).

6) Αἱ ἐξ ἀγγειοκινητικῶν διαταραχῶν ἀλλοιώσεις τῆς φυσιογνωμίας (ὑπερσυμπαθητικοτονικοί, βαγοτονικοί, νευρικὰ ἄτομα κ.τ.τ.).

7) Αἱ διαταραχαὶ τῆς μιμικῆς ἐκ βλάβης τοῦ ἡμίσεος προσώπου (ἡμιατροφία τοῦ προσώπου), ὡς καὶ αἱ ἀνάλογοι ψυχικῆς ἀρχῆς (ἡμιμιμία).

Τ.Α.ΖΗΣ

**μιμικός,** *—ή, —όν*˙ ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μίμους, ὁ τῶν μίμων˙ || *μιμικὴ* (ἡ)˙ ὡς οὐσ. (βλ. λ.) κατὰ παράλειψιν τοῦ *τέχνη*.

**Μίμνερμος** ὁ ***Κολοφώνιος.*** Ἐλεγειακὸς ποιητὴς ἀκμάσας περὶ τὸ τέλος τῆς Ζ' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος (632—600). Πιθανῶς ἐγεννήθη ἐν Σμύρνῃ ἐκ γονέων Κολοφωνίων. Κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους τὰ ἔφιππα στίφη τῶν Λυδῶν ἐξώρμων ἀπροσδοκήτως ἐκ τῆς μεσογαίας καὶ διευθυνόμενα τῇδε κἀκεῖσε κατὰ τὰς περιστάσεις ἐνέβαλλον εἰς διαρκῆ ἀμηχανίαν τὰς παραθαλασσίας ἑλληνικὰς πόλεις. Ὁ Μίμνερμος ἔν τινι τῶν ἐλεγειῶν αὐτοῦ ἐξυμνεῖ τὸ ἡρωϊκὸν θάρρος τῶν Σμυρναίων, οἵτινες ἐξέβαλον τοὺς Λυδοὺς ἐκ τῆς πόλεως αὐτῶν, ἣν εἶχον κυριεύσει. Ἐν ἄλλῃ ἐλεγείᾳ (ἀπόσπ. 14) ὑμνεῖ τὴν ἀνδρείαν («ἀγήνορα θυμὸν») Σμυρναίου πολεμιστοῦ, ἀγωνιζομένου ἐν τῇ πεδιάδι τοῦ Ἕρμου πρὸς τὰς πυκνὰς φάλαγγας τῶν ἱππομάχων Λυδῶν. Ἀλλ' ἤδη οἱ Ἴωνες εἶχον γίνει ἁβροδίαιτοι, καὶ ὁ ποιητὴς ἐγκαταλείπων τὸν ἡρωϊκὸν χαρακτῆρα τῆς ἐλεγείαις ᾄδει μετὰ μανικοῦ πάθους τὸν ἔρωτα αὐτοῦ πρὸς τὴν καλὴν αὐλητρίδα Νανυὼ καὶ θρηνεῖ μετὰ πολλοῦ ἄλγους τὸν ταχέως ἐπερχόμενον μαρασμὸν τῆς νεότητος νομίζει ὅτι οὐδὲν ἐν τῷ βίῳ εἶναι τερπνὸν ἄνευ τῶν ἀφροδισίων καὶ προτιμᾷ ν' ἀποθάνῃ. Προβεβηκὼς ἤδη τὴν ἡλικίαν περιπίπτει εἰς μελαγχολίαν καὶ μεμψιμοιρίαν διὰ τὴν βραχύτητα τοῦ ἀνθρωπίνου βίου. Ὡς ἐρωτικὸς ποιητὴς λίαν ἐτιμᾶτο ὑπό τε τῶν Ἀλεξανδρινῶν ποιητῶν καὶ τῶν Ρωμαίων, ἐν δὲ τῷ ἀλεξανδρεωτικῷ κανόνι ἐτίθετο δεύτερος. Ὁ Μίμνερμος ἦτο συνάμα καὶ αὐλῳδὸς καὶ εὑρετὴς αὐλῳδικῶν νόμων, ἐξ ὧν ὑπὸ τοῦ Πλουτάρχου (Περὶ Μουσ. 8) ἀναφέρεται ὁ *κραδίας* νόμος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *D. B. Durham*, Mimnermus and Propertius (1916).—*F. Jacoby*, Studien zu den älteren griechischen Elegikern.

Ι. Φ. Δ.

Digitized by Google

**μιμογράφος** (ὁ)· ὁ γράφων μίμους, ὁ συνθέτων εἶδος ποιημάτων καλουμένων *μίμων* (6λ. λ.).

**μιμόδραμα,** *—ατος* (τό). Περιπετειῶδες καὶ λυρικὸν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον δρᾶμα, ἐν ᾧ ἐπικρατεῖ τὸ παντομιμικὸν στοιχεῖον καὶ ὁ πλοῦτος τοῦ σκηνικοῦ διακόσμου. Ἓν τοιοῦτον, ὁ «Ὀρφεὺς» τοῦ Ντουκάς, ἐδόθη τὸν Ἰούνιον τοῦ 1926 ἐν τῇ Opéra τῶν Παρισίων μὲ μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ν. Ι. Λ.

**μιμόζα** (ἡ) (mimosa) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *μιμηλή*.

**μιμόκερας** (τὸ) (Mimoceras Hyatt) *[Παλαιοζωολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζώων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *γωνιατιτιδῶν ἀμμωνοειδῶν κεφαλοπόδων* μαλακίων. Τὰ ζῶα ταῦτα εἶχον ὄστρακον δισκοειδές, εὐρυόμφαλον, πρὸς τὰ ἔξω ἀπεστρογγυλωμένον, καὶ μὲ τοὺς πρώτους γύρους ἐν ἀνοικτῇ σπείρᾳ. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων τῆς δεβονίου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μιμολόγος** (ὁ)· ὁ ἀπαγγέλλων μίμους.

**μιμόρχημα** (τό)· τὸ ἄλλως *χορόδραμα*, ὡς ἀπεδόθη εἰς τὴν ἑλληνικὴν τὸ *μπαλέττο* (βλ. λ.).

**μῖμος** (ὁ)· ὁ μιμούμενος, ὁ διὰ τῆς μιμήσεως ἐκδηλῶν συναισθήματα ἢ παριστάνων πρόσωπα· || ὁ γελωτοποιὸς ὑποκριτής· || καθόλου, ὁ γελοιαστικῶς ἀπομιμούμενος πρόσωπα ἢ καταστάσεις· || παρ' ἀρχαίοις, εἶδος δραματικῆς ποιήσεως, τῆς ὁποίας σκοπὸς ἦτο ἡ παράστασις σκηνῶν ἐκ τοῦ πραγματικοῦ βίου, εἰς τὰς ὁποίας πολλάκις παρηκολούθει τὸ σκῶμμα καὶ ἡ χλεύη.

—*[Θεατρ.] Μῖμοι* ὠνομάσθησαν ἀπὸ τῆς ἀρχοντείας τοῦ Εὐκλείδου (403 π. Χ.) αἱ βαθμηδὸν καὶ κατ' ὀλίγον τελειοποιηθεῖσαι, ἔμμετροι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, κωμικαὶ σκηναί, τὰς ὁποίας, πρὸ τῆς γενέσεως τῆς τραγῳδίας καὶ κωμῳδίας, ἐξετέλουν ἐκ τοῦ προχείρου οἱ ἑορτάζοντες κατὰ τὴν συγκομιδὴν τῶν καρπῶν καὶ αἵτινες ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἑλληνικῆς ποιήσεως καλοῦνται αὐτοσχεδιάσματα ποιητικὰ (*Ἀριστ.* Ποιητ. 4). Ἡ λέξις *μῖμος* ἐν τῇ ἑλληνικῇ γλώσσῃ καὶ κατόπιν ἐν τῇ λατινικῇ εἶχε διπλῆν σημασίαν. Ἐσήμαινε συγχρόνως καὶ τὰ μικρὰ κωμικὰ σκηνικὰ ἔργα καὶ τοὺς ἠθοποιοὺς οἵτινες τὰ παρίστανον.

Ὡς φιλολογικὸν εἶδος, οἱ μῖμοι οὐδὲν τὸ κοινὸν ἔχουν πρὸς τὴν τραγῳδίαν καὶ τὸ σατυρικὸν δρᾶμα, οὐδὲ παρουσιάζουν τὴν αὐτὴν ὡς ταῦτα ὁμογένειαν, οὐδὲ κανονικὴν ἔχουν μορφήν, ὡς προελθόντες ἐκ διαφόρων καὶ ποικίλων μορφῶν. Ὡς πρὸς τοὺς ὑποκρινομένους τοὺς μίμους, τοὺς ἐκτὸς τῶν δραματικῶν ἀγώνων δηλονότι ὑποκριτάς, οὗτοι παρουσίαζον μεγάλην ποικιλίαν τύπων καὶ ὀνομάτων. Ἔπαιζον δὲ κατ' ἀρχὰς εἰς τὰς πλατείας καὶ τὰς ὁδοὺς ἐπὶ προχείρως κατασκευαζομένων ἰκρίων πρὸς διασκέδασιν τοῦ ὄχλου ἢ καὶ κατὰ τὰ συμπόσια τῶν πλουσίων. Κατόπιν τελειοποιηθέντος τοῦ εἴδους, μετηνέχθη τοῦτο καὶ ἐπὶ τῆς κυρίως σκηνῆς. Οἱ πρῶτοι μῖμοι, ἢ μᾶλλον οἱ πρῶτοι λαϊκοὶ κωμῳδοί, ὑπῆρξαν πανταχοῦ αὐτοσχεδιασταί. Κατὰ τὸν Σῖμον τὸν Δήλιον, ὑπῆρξάν τινες ὀνομαζόμενοι *αὐτοκάβδαλοι*, οἱ Θηβαῖοι τοὺς ὠνόμαζον *ἐθελοντάς*, ὡς ἑκουσίως κατερχομένους εἰς τὰ τοιαῦτα, οἱ Λακεδαιμόνιοι *δικηλιστάς*, ἢ κατὰ Πλούταρχον *δεικιλίκτας*. Ἀλλαχοῦ τοὺς ἐκάλουν *σοφιστὰς* ἢ *παραδοξολογοῦντας*. Οἱ μῖμοι ἠθοποιοί, ἐκτὸς τῆς ἀνωτέρω γενικῆς ὀνομασίας, ἔλαβον καὶ ἄλλας ἰδιαιτέρας τοιαύτας, εἴτε ἐκ τοῦ θεατρικοῦ ἐνδύματος ὅπερ ἔφερον κατὰ τὰς παραστάσεις, εἴτε ἐκ της φύσεως τοῦ ἔργου τὸ ὁποῖον ἔπαιζον. Εἰς τὴν πρώτην τάξιν ὑπάγονται οἱ *ἰθύφαλλοι*, οἱ *φαλλοφόροι*, οἱ *μαγῳδοὶ* καὶ οἱ *λυσιῳδοί*· εἰς τὴν δευτέραν τάξιν οἱ *ἠθολόγοι*, οἱ *βιολόγοι*, οἱ *κυναιδολόγοι*, οἱ *φλύακες* καὶ οἱ ἠθοποιοὶ ἱλαροτραγῳδιῶν. Οἱ μῖμοι διέφερον τῶν ἄλλων ὑποκριτῶν τῆς τραγῳδίας, τῆς κωμῳδίας καὶ τοῦ σατυρικοῦ δράματος, καθόσον δὲν μετεχειρίζοντο ὡς αὐτοί, οὔτε κοθόρνους, οὔτε προσωπίδας (ἐκτὸς τῶν ἰθυφάλλων), ἀλλ' οὐδ' ἐπὶ σκηνῆς ἔπαιζον, ἀλλ' ἐπὶ τῆς ὀρχήστρας, ἔνθα, πλησιέστερον ὄντες τῶν θεατῶν, μετὰ δυσκολίας ἠδύναντο νὰ παίζωσι γυναικεῖα πρόσωπα· τούτου ἕνεκα ἔλαβον μέρος εἰς τὰς παραστάσεις των καὶ *μιμάδες*, *δεικτηριάδες* λεγόμεναι καὶ *λυσιῳδοί*, κυρίως εἰς τὰς δωρικὰς χώρας. Μετὰ τὴν κατάπτωσιν τοῦ θεάτρου καὶ ἰδίως μετὰ τὴν κατάληψιν τῶν Ἀθηνῶν ὑπὸ τοῦ Λυσάνδρου, οἱ μῖμοι, οἵτινες ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Σοφοκλέους καὶ τοῦ Ἀριστοφάνους εἶχον ἀποκλεισθῆ τῶν σκηνικῶν ἀγώνων, κατέλαβον τὴν σκηνήν.

Ἐκτὸς τῶν αὐτοσχεδίων μίμων, ὑπῆρξαν ἐν Ἑλλάδι καὶ γραπτοὶ τοιοῦτοι, ἔμμετροι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον καὶ ψαλλόμενοι τῇ συνοδείᾳ αὐλῶν, ἐξ οὗ καὶ *μίμαυλοι* ὠνομάσθησαν. Ἐπειδὴ δὲ ὁ ἴαμβος ἐξ ὅλων τῶν στίχων ἦτο ὁ καταλληλότερος διὰ τὸν διάλογον, οἱ μῖμοι συχνότατα ἐγράφοντο δι' ἰάμβων, ὀνομασθέντες ὡς ἐκ τούτου *ἴαμβοι* ἢ *μιμίαμβοι*, καθὼς καὶ οἱ ποιηταί των. Πρῶτος ὅστις ἐτελειοποίησε τοὺς *ἰάμβους* τοῦ εἴδους τούτου, τουτέστι τὴν χορικὴν καὶ διαλογικὴν τῶν αὐτοσχεδιαστῶν ποίησιν, ὑπῆρξεν ὁ Ἀριστόξενος. Ἀπὸ τῆς 75ης ὀλυμπιάδος, τὴν αὐτὴν σχεδὸν ἐποχὴν καθ' ἣν ὁ Αἰσχύλος ἐτελειοποίησε τὴν τραγῳδίαν ἐν Ἀθήναις καὶ ὁ Ἐπίχαρμος τὴν κωμῳδίαν ἐν Συρακούσαις, τοῦτ' αὐτὸ ἔπραττεν ὁ Σώφρων ἐν Σικελίᾳ διὰ τὸν μῖμον. Κατὰ μίμησιν τῶν μίμων τοῦ Σώφρονος εἶναι πεποιημένα καὶ τρία τῶν εἰδυλλίων τοῦ Θεοκρίτου: Κυνίσκας ἔρως, Ἀδωνιάζουσαι καὶ Φαρμακεύτριαι, τὰ ὁποῖα κατὰ τὸν Charles Magnin, θὰ παρεστάθησαν τὰ μὲν δύο ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Πτολεμαίου Φιλαδέλφου ἐν Ἀλεξανδρίᾳ, τὸ δὲ τρίτον ἐν Συρακούσαις ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Ἱέρωνος Β΄. Ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς μετὰ τὸν Ἀλέξανδρον χρόνοις, ὁ μῖμος διετήρησε τὴν ἑλκτικὴν αὐτοῦ δύναμιν, ἐξ οὗ καὶ μεγαλοφυεῖς ποιηταὶ ἐπελήφθησαν αὐτοῦ. Ἀξιολογώτατος τῶν χρόνων τούτων ποιητὴς μίμων εἶναι ὁ Ἡρώνδας, τοῦ ὁποίου εἶναι ἤδη γνωστοὶ ἑπτὰ πλήρεις μῖμοι, ὧν ὁ εἷς μετεφράσθη ἐμμέτρως εἰς τὴν νεοελληνικὴν ὑπὸ τοῦ καθηγητοῦ Ν.Γ. Πολίτου. (περιοδ. «Ἑστία» 1892, σελ. 89 κ. ἑπ.). Κατὰ τὴν 96ην ὀλυμπιάδα ὁ ἐκ Μυτιλήνης Ἀλκαῖος συνέθεσε δρᾶμα νέου εἴδους, κωμῳδοτραγῳδίαν. Τοῦτον ἠκολούθησαν ὁ ἐκ τῆς ἐν Ῥόδῳ Καμείρου Ἀλεξανδρίδης, ὁ Κολοφώνιος καὶ ἄλλοι τινές. Μεταγενεστέρως, ὁ Ῥίνθων ὁ Συρακόσιος συνέθεσεν ἱλαροτραγῳδίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀναφέρεται ὁ «Ἀμφιτρύων», ὅστις ὑπῆρξεν ἴσως ὁ τύπος τῆς κωμῳδοτραγῳδίας τοῦ Πλαύτου. Διὰ τοῦ Ῥίνθωνος εἰσήχθησαν εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ οἱ φλύακες, τὸ εἶδος τῶν ὁποίων ἤκμασεν ἐν τῇ μεγάλῃ Ἑλλάδι. Πλὴν τοῦ Ῥίνθωνος, ὡς ποιηταὶ φλυάκων ἀναφέρονται Σκίρος ὁ Ταραντῖνος, Βλαῖσος ὁ ἐκ Καμπανίας καὶ Σώπατρος ὁ Πάφιος.

Ἐν *Ῥώμῃ*, εἰσαχθέντες ἐξ Ἑλλάδος οἱ μῖμοι, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Πύρρου ἐκ Τάραντος (172 π. Χ.), ἀπετέλεσαν ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν Fabula Rhinthonica μίαν τῶν ὑποδιαιρέσεων τοῦ ρωμαϊκοῦ δράματος. Τοσαύτης δ' ἔτυχον ὑποδοχῆς παρὰ τῶν Ῥωμαίων, ὥστε, μετὰ τὸν Σύλλαν, ἀντικατέστησαν σχεδὸν τὴν comoedia planipedia καὶ τὰ ἀτελλανὰ δράματα, ἢ μᾶλλον τὸ ἑλληνικὸν ὄνομα *μῖμος* ἀντικατέστησε τὸ λατινικὸν planipes. Ἔσχε δὲ ἡ λέξις mimus ἐν τῇ λατινικῇ γλώσσῃ τὴν αὐτήν, ὅπως καὶ ἐν τῇ ἑλληνικῇ, διπλῆν σημασίαν. Οἱ λατινικοὶ μῖμοι, ὅπως καὶ οἱ ἑλληνικοὶ τοιοῦτοι, ἔλαβον πολλὰ καὶ ποικίλα ὀνόματα, ἰδίως ὡς ἐκ τῆς ἰδιαζούσης ἐνδυμασίας τῶν ὑποκριτῶν· οὕτως ἐκαλοῦντο mimi ricinati, ἐκ τοῦ ricinium, τοῦ καλύμματος ὅπερ ἔφερον ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, mimi centuculo amicti ὡς ἐκ τῶν συρραπτῶν ρακῶν τῆς ἐνδυμασίας κτλ. Ἔστιν ὅτε οἱ μῖμοι ἐλάμβανον τὴν ὀνομασίαν των ἐκ τῆς σειρᾶς ἣν κατεῖχον εἰς τὸ πρόγραμμα τῆς παραστάσεως, οὕτως ὑπῆρχον mimi communes, mimi emboliarii καὶ mimi exodiarii. Οἱ πρῶτοι ἦσαν εἶδος τῶν σημερινῶν lever de rideau, παριστανόμενοι πρὸ τοῦ κυρίως ἔργου τῆς παραστάσεως. Οἱ δεύτεροι ἦσαν τὰ διάμεσα τῶν μεγάλων ἔργων, ὡς τὰ μεταγενέστερα intermezzi τῶν Ἰταλῶν, ἐκτελούμενα κατὰ τὰ διαλείμματα τῶν πράξεων. Οἱ τρίτοι ἦσαν ἐκεῖνοι, δι' ὧν ἐπερατοῦτο ἡ παράστασις. Οἱ λατινικοὶ μῖμοι μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος αὐτοσχεδιάζοντο. Οἱ μετὰ ταῦτα ἐγράφοντο κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν προτέρων, ἐμμέτρως μάλιστα, καὶ ἰδίως οἱ πρόλογοι καὶ τὰ ᾄσματα αὐτῶν. Εἰς τοὺς λατινικοὺς μίμους ἐλάμβανον μέρος καὶ γυναῖκες, *μῖμαι* καλούμεναι. Τοιαῦται ἀναφέρονται ἡ Διονυσία, εἰδικῶς ἐπονομαζομένη gesticularia, ἡ Γκαλέρια Κοπιόλα, ἡ Lucceia καὶ ἄλλαι. Οἱ διασημότεροι τῶν Ῥωμαίων μιμογράφων ὑπῆρξαν τρεῖς: Ὁ Δέκιμος Λαβέριος, ὁ Πουβλίλιος Σύρος καὶ ὁ Cn. Mattius.

Ἐν *Βυζαντίῳ* οἱ μῖμοι δὲν μετῆλθον τὸ αὐτὸ διαρκῶς ἐπιτήδευμα, ἀλλ' ἦσαν καὶ αὐληταὶ καὶ ὀρχησταὶ καὶ κωμῳδοὶ καὶ τραγῳδοί. Μέχρι τῆς Ε΄ ἑκατονταετηρίδος μῖμοι, χοραῦλαι, αὐληταὶ καὶ κιθαρισταὶ ἦσαν τ' αὐτὰ πρόσωπα. Ἐξ αὐτῶν ἦσαν καὶ οἱ ἐπὶ σκηνῆς μαρτυρήσαντες καὶ μεταξὺ τῶν ἁγίων καταταχθέντες κατόπιν μῖμοι Πορφύριος (270), Γελασῖνος (297), ἕτερος Πορφύριος (262) καὶ ἄλλοι τινές. Οἱ τῆς ΣΤ΄ ἑκατονταετηρίδος μῖμοι, κατὰ τὸν ἀπολογητὴν αὐτῶν Χορίκιον, ἦσαν οἱ κυρίως λεγόμενοι κωμῳδοί, παίζοντες τὰ τῆς μέσης Ἀττικῆς κωμῳδίας δράματα, οἱ *ἠθολόγοι* καὶ *βιολόγοι* τουτέστι τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων. Αἱ παραστάσεις των ἐδίδοντο συνήθως μετὰ τὴν δύσιν τοῦ ἡλίου, πρὸ τῆς ἐνάρξεως δ' αὐτῶν ἀπέτεινον δέησιν πρὸς τὸ ἀκροατήριον, ὅπως τοὺς ἀκούσῃ ἱλαρῶς. Παρίστανον ἄνευ προσωπείων καὶ ἐθεωροῦντο πάντοτε κατώτεροι τῶν τραγῳδῶν. Κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ ἀπολογητήν των, τὸν Χορίκιον, ἔπρεπε νὰ ἔχωσι καὶ «φωνὴν εὐφραίνουσαν καὶ γλῶτταν ἑτοίμως ρέουσαν» διότι ἄλλως ἐσυρίζοντο. Πρὸς τοῖς ἄλλοις, ἔπρεπε νὰ γνωρίζωσι καὶ χορὸν καὶ «βλέμματι θέλγειν». Νὰ μὴ εἶναι δὲ καὶ ἐπιλήσμονες, ἵνα «μή τι τῶν ἔξω μελετηθέντων ἔνδον αὐτῶν διαφύγῃ». Οὔτε «λίχνοι καὶ φιλοπόται» ὅπως «μὴ βλάψῃ αὐτοῖς τὴν εὐφωνίαν σιτίων πλῆθος καὶ μέθη». Εἰς τὰς παραστάσεις των ἐλάμβανον μέρος καὶ γυναῖκες, *μιμάδες* καλούμεναι. Μίαν τοιαύτην, τὴν ἐπὶ Θεοδοσίου τοῦ Β΄ ἀκμάσασαν Μαργαριτὼ (τὴν μετέπειτα Ἁγίαν Πελαγίαν), ὁ μὲν Θεοφάνης τὴν ὀνομάζει «πρώτην τῶν μιμάδων», ὁ δὲ Ἀναστάσιος ὁ Βιβλιοθηκάριος primam mimarum.

Ἐν τῷ νεωτέρῳ θεάτρῳ *μῖμος* σημαίνει τὸν παντόμιμον. Τὸ δὲ εἶδος τῶν μικρῶν αὐτῶν σκηνικῶν ἔργων (*μίμων*) σχεδὸν ἐξέλιπε. Παρ' ἡμῖν, μόνον ὁ Δ. Κορομηλᾶς ἔγραψε τοιαῦτα.

Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**μῖμος** (ὁ) (Mimus) *[Ζῳολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *κοττυφιδῶν*. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μῖμος ὁ πολύγλωσσος* (Mimus polyglossus), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος 25 περίπου ἑκτστμ. καὶ ἔχει κεφαλὴν μᾶλλον λεπτήν, ράμφος κωνικὸν καὶ μετρίου μήκους, σῶμα εὔρωστον καὶ ἐπίμηκες, πτέρυγας ἀνεπτυγμένας, μᾶλλον βραχείας καὶ ὀξυλήκτους, οὐρὰν μακρὰν καὶ πλατεῖαν κατὰ τὸ ἄκρον της, πόδας μετρίως ὑψηλοὺς καὶ λεπτοὺς καὶ χρῶμα μελανόχαλκον κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ ὑπολευκόφαιον κατὰ τὰ κάτω. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Μεξικόν. Δ. Ν. Π.

—**μῖμος** (Mimulus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *γρομφαδιοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, ἰθαγενεῖς τῶν θερμῶν καὶ εὐκράτων χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ των 50 περίπου εἰδῶν τοῦ γένους, ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον, γνωστότερα εἶναι ὁ *μῖμος ὁ γλοιώδης* (Mimulus glutinosus), ὁ *μῖμος ὁ μόσχοσμος* (Mimulns moschatus) καὶ ὁ *μῖμος ὁ κιτρινανθὴς* (Mimulus luteus), ἅπαντα ἰθαγενῆ τῆς Ἀμερικῆς, καλλιεργούμενα ὅμως καὶ πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μιμοῦμαι** (*—έομαι*)· ἀποθετ., πράττω τι κατὰ μίμησιν, ἀκολουθῶ τὸ παράδειγμά τινος: «μιμεῖται τὸν πατέρα του, — τὸν διδάσκαλόν του», «— τὴν φωνήν, —τὸ βάδισμα», «μιμεῖται δουλικῶς, —ὡς πίθηκος»· || *ἀπομιμοῦμαι* (βλ. λ.).

**μίμοψις** (ἡ) (Mimopsis) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σαποτοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἢ καὶ θάμνους, ὧν τινα διακρίνονται ἐκ τοῦ γαλακτώδους ὀποῦ τοῦ κορμοῦ των καὶ τοῦ βρωσίμου καρποῦ των. Ἐκ τῶν 30 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μίμοψις ἡ κάφριος* (Mimopsis cafra), μετρίου ἀναστήματος δένδρον, ἀπαντῶν εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς Ἀφρικῆς καὶ χρήσιμον διὰ τὸ σκληρόν, ἐρυθρὸν καὶ εἰς τὴν ἁμαξοπηγίαν χρησιμοποιούμενον ξύλον του. *Μίμοψις ἡ σιεβέριος* (Mimopsis sieberii), ἰθαγενὲς δένδρον, ἀρκούντως ἀνεπτυγμένον, τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Φλωρίδος καὶ καλλιεργούμενον διὰ τὸν ἐδώδιμον καρπόν του. *Μίμοψις ἡ σφαιροειδὴς* (Mimopsis globosa), μεγάλου ἀναστήματος δένδρον, φυόμενον εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν προξενουμένων ἐπὶ τοῦ κορμοῦ τούτου ἐντομῶν λαμβάνεται γαλακτώδης χυμός, ὅστις ἀποξηραινόμενος ἀποτελεῖ τὴν κατωτέρας ποιότητος γουταπέρκαν, ἥτις εἶναι γνωστὴ εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὸ ὄνομα *βαλάτα*.

Δ. Ν. Π.

**μιμώ,** *—οῦς* (ἡ)· ἡ κατ' ἐξοχὴν μιμουμένη, ὁ πίθηκος, κοιν. *μαϊμοῦ*.

**Μίνι** (Migne), ***Ἰάκωβος-Παῦλος.*** Ἐγεννήθη ἐν Saint Flour τῷ 1800. Σπουδάσας ἐν Orleans, ἐχρημάτισεν ἐπί τινα ἔτη διδάσκαλος καὶ ἔπειτα τῷ 1824, ἐχειροτονήθη ἱερεύς. Ὡς ἱερεὺς ἔμεινεν ἐπί τινα ἔτη ἐν Orleans, ἔπειτα ὅμως, ἐλθὼν εἰς διενέξεις πρὸς τὸν ἑαυτοῦ ἐπίσκοπον, ἔφυγε καὶ ἦλθεν εἰς Παρισίους. Ἐκεῖ ἤρχισε, τῇ συνεργασίᾳ καὶ ἄλλων, ἐκδίδων περιοδικόν, ἀλλὰ τῷ 1836 ἀπεχώρησε τῆς διευθύνσεως τούτου καὶ ἀφιερώθη εἰς τὴν ἔκδοσιν ἀρχαιοτέρων θεολογικῶν ἔργων, ἱδρύσας ἐν Petit Mont-rouge ἐκδοτικὸν κατάστημα. Μετὰ μεγίστης ὑπομονῆς καὶ θαυμαστοῦ ζήλου ἐργασθεὶς ἐπὶ 32 ὅλα ἔτη, τῇ βοηθείᾳ καὶ ἄλλων ἐπιστημόνων, καὶ Γάλλων καὶ ἐκτὸς τῆς Γαλλίας, ἐξέδωκε τὴν γενικὴν βιβλιοθήκην τοῦ κλήρου καὶ τῶν λογίων λαϊκῶν (Bibliothèque universelle du clergé et des laïques instruits), ἀποτελουμένην ἐκ 1000 μεγάλων τόμων θεολογικῆς ὕλης. Δυστυχῶς, ἕνεκα τῆς κατὰ τὸ 1868 καταστρεπτικῆς πυρκαϊᾶς τῶν καταστημάτων αὐτοῦ, τῆς ἀποτεφρωσάσης πάντα σχεδὸν τὰ ἐν αὐτοῖς ἔργα καὶ αὐτὰς τὰς στερεοτύπους πλάκας τῆς «Πατρολογίας», ἠναγκάσθη νὰ διακόψῃ ἐπί τινα χρόνον τὰς ἐργασίας αὐτοῦ. Ὀλίγον πρὸ τοῦ 1870 ἤρξατο πάλιν τῶν ἐργασιῶν του, ἀλλ' ὁ ἐκραγεὶς Γαλλογερμανικὸς πόλεμος καὶ τὰ ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου τῶν Παρισίων καὶ τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας παρεμβαλλόμενα ἐμπόδια ἐκώλυσαν τὴν ἐπιτυχῆ συνέχισιν τοῦ ἔργου του. Τῷ 1875 ἐτελεύτησεν ἐν Παρισίοις, καταστήσας διὰ τῶν ἐκδόσεων αὐτοῦ ἀλησμόνητον τὸ ὄνομά του.

Αἱ κυριώτεραι ἐκδόσεις τοῦ Migne εἶναι αἱ ἑξῆς: 1) «Patrologiae cursus completus». Τὸ ὅλον ἔργον, ἀποτελούμενον ἐκ 378 τόμων, διαιρεῖται εἰς δύο σειράς, ὧν ἡ πρώτη περιλαμβάνει ἐν 217 τόμοις τὰ ἔργα τῶν Λατίνων πατέρων καὶ ἐκκλησιαστικῶν συγγραφέων, ἀπὸ τοῦ Τερτυλλιανοῦ μέχρι τοῦ Ἰννοκεντίου τοῦ Γ΄ (1216), ἡ δὲ δευτέρα ἐν 161 τόμοις τὰ ἔργα τῶν Ἑλλήνων πατέρων καὶ ἐκκλησιαστικῶν συγγραφέων ἀπὸ τῶν ἀποστολικῶν

Digitized by Google

πατέρων μέχρι τῶν κατὰ τὴν σύνοδον τῆς Φλωρεντίας ἀκμασάντων. Ἡ ἔκδοσις τῆς πρώτης σειρᾶς, ἀρξαμένη τῷ 1841, ἐπερατώθη τῷ 1865, ἡ δὲ τῆς δευτέρας, ἀρξαμένη τῷ 1857, ἐπερατώθη τῷ 1866. Τῆς δευτέρας σειρᾶς ἐγένοντο δύο ἐκδόσεις, ἡ πρώτη ἔχουσα ἐκτὸς τῶν ἑλληνικῶν κειμένων καὶ τὴν λατινικὴν αὐτῶν μετάφρασιν, καὶ ἡ δευτέρα ἔχουσα μόνον τὴν λατινικὴν μετάφρασιν ἐν 85 τόμοις. Τῆς λατινικῆς σειρᾶς ἐξεδόθη ὑπὸ τοῦ Migne λεπτομερὴς πίναξ τῶν περιεχομένων ἐν 4 τόμοις, τῆς δὲ ἑλληνικῆς ὑπὸ τοῦ μητροπολίτου Λαρίσης Δωροθέου Σχολαρίου ὑπὸ τὴν ἐπιγραφὴν «Κλεὶς τῆς Πατρολογίας καὶ τῶν Βυζαντινῶν συγγραφέων» (Ἀθῆναι 1879) καὶ ἔπειτα ὑπὸ ἄλλων. 2) «Scripturae sacrae cursus completus ex commentariis omnium perfectissimis usque habitis». Περιέχει ἐν 28 τόμοις ἑρμηνευτικὰ ὑπομνήματα ἀρχαιότερα καὶ νεώτερα εἰς ὅλα τὰ βιβλία τῆς ἁγίας Γραφῆς. 3) «Collection integrale universelle des orateurs». Περιέχει ἐν 102 τόμοις λόγους ἐκλεκτοὺς Γάλλων ἱεροκηρύκων, ἰδίᾳ τῶν τριῶν τελευταίων αἰώνων. 4) «Démostrations évangéliques». Περιέχει ἐν 20 τόμοις διάφορα ἀπολογητικὰ ἔργα. 5) «Encyclopédie théologique». Περιέχει ἐν 66 τόμοις σειρὰν ἐγκυκλοπαιδικῶν λεξικῶν ἀναφερομένων εἰς ὅλους τοὺς κλάδους τῆς θεολογίας καὶ τῶν ὁπωσδήποτε συγγενῶν αὐτῇ ἐπιστημῶν, φιλοσοφίας, ἱστορίας καὶ φυσικῶν ἐπιστημῶν. 6) «Theologiae cursus completus». Περιέχει ἐν 28 τόμοις διάφορα ἔργα δογματικοῦ καὶ ἠθικοῦ ἰδίᾳ περιεχομένου. 7) «Summa aurea de lauditis B. Mariae». Περιέχει ἐν 13 τόμοις συλλογὴν ἔργων ἀρχαιοτέρων καὶ νεωτέρων, ἀναφερομένων εἰς τὴν Θεοτόκον. κ. ι. δ.

*Ἰάκωβος Μὶνι.*

**μίνα** (ἡ)· ὑπόνομος, ὑπόρυγμα· || ὑπόνομος μετὰ γομώσεως ἐκρηκτικῆς πρὸς ἀνατίναξιν· || μεταφ., ὑπονόμευσις τῆς θέσεως, τῆς ἡσυχίας τινὸς διὰ λόγων ἢ ἔργων (ἰταλ. mina).

— **μίνα τῆς μπαρούτης** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῶν πυρπολητῶν τοῦ Ἀγῶνος, σημαίνων φρεάτιον ἠνεωγμένον εἰς τὴν πρύμνην τοῦ πυρπολικοῦ, ὄπισθεν τοῦ «μετεριζιοῦ τῆς γούμενας». Εἰς τὸ φρεάτιον τοῦτο ἀπέθετεν, ἐπιτυγχανούσης τῆς ἐμπλοκῆς τοῦ πυρπολικοῦ, σωρὸν ἀνημμένων ἀνθράκων ὁ κυβερνήτης, διὰ τῆς *μίζας* πρὸς μετάδοσιν τοῦ πυρὸς διὰ τοῦ «λουκιοῦ τῆς μπαρούτης» καὶ τῆς «μίνας τῆς φωτιᾶς» εἰς τὰς ἐν τῷ κύτει τοῦ πυρπολικοῦ ὕλας. σ. ε. λ.

— **μίνα τῆς φωτιᾶς** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῶν πυρπολητῶν τοῦ Ἀγῶνος, σημαίνων ἄνοιγμα (φρεάτιον) μικρὸν τοῦ καταστρώματος τοῦ πυρπολικοῦ ὑπὸ τὸ πρόστεγον. Πλῆρες εὐφλέκτων ὑλῶν ἐπικοινωνουσῶν πρὸς τὰς ἐν τῷ κύτει, συνεκοινώνει διὰ τοῦ «λουκιοῦ τῆς μπαρούτης» πρὸς τὴν «μίναν τῆς μπαρούτης». Οὕτω, τιθεμένου τοῦ πυρὸς εἰς τὴν τελευταίαν διὰ τῆς *μίζας*, μετεδίδετο τοῦτο διὰ τῆς ἐν τῷ ὀχετῷ τοῦ καταστρώματος πυρίτιδος εἰς τὴν «μίναν τῆς φωτιᾶς». σ. ε. λ.

**μίνα** (ἡ) (Mina) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *περιαλλοκαυλοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἀναρριχητικάς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν, εἶναι ἡ *μίνα ἡ λοβωτὴ* (Mina lobata), ἀναρριχητικὴ πόα ἰθαγενὴς τοῦ Μεξικοῦ, καλλιεργουμένη πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης ὡς κοσμητικὸν διὰ τὰ ὡραῖα ἄνθη της. δ. ν. π.

**Μίνα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν τῇ Μαυριτανίᾳ Καισαρηνσίᾳ, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Μασσαισυλίων, ἐπὶ ὁμωνύμου τινὸς ποταμοῦ (νῦν Oued - Mina). Σήμερον καλεῖται Relizane, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς. α. θ. σ.

— **Μίνα**, ἢ ***Μῆνα*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Οἰτύλου τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται 3 ½ ὥρας νοτιοανατολικῶς τῆς Ἀρεοπόλεως καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 252. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης πλείστους περὶ τὸ χωρίον συνοικισμούς, τοὺς ἑξῆς: *Ἀγγειαδάκι(ον)*, *Ἅγιος Γεώργιος*, *Βάμβακα*, *Βρίκιον*, *Ἔρημος*, *Καλοῦμι*, *Καρήνεια* ἢ *Καρύτεια*, *Κότραφα*, *Κοτσιφᾶ*, *Κούτρελα*, *Κριτσελί*, *Λάκκος* καὶ *Πολεμίτα*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 1.089. χ. δ.

— **Μίνα, *Ρὰς-ἐλ*** — *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία ἀκρωτηρίων τῆς Συρίας.—1) Ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Ἀντιοχείας (πλάτ. 36°08′ Β., μῆκ. 35°55′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2632: Gulf of Iskenderum to Markhab) ἀμέσως πρὸς Β. τῆς Σελευκείας.—2) Ἑτέρου ΒΑ. τῆς νήσου *Ρουὰδ* (βλ. λ. *Ἄραδος*) σχηματίζοντος καὶ λιμενίσκον.—3) Τοῦ σχηματίζοντος τὸν λιμένα τῆς Τριπόλεως (πλάτ. 34°27′ Β., μῆκ. 35°49′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2633: Markhab to Ras En Nakura). σ. ε. λ.

**Μινάγαρα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις παράλιος τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς (*Πτολεμ.* Ζ, α, 17, Περίπλ. Ἐρυθρ. 38) ἐν τῷ Γαγγιτικῷ κόλπῳ, καὶ ἑτέρα τῆς Ἰνδοσκυθίας ἀπὸ ἀνατολῶν τοῦ Ναμάδα ποταμοῦ. Ἀμφοτέρων ἡ ταυτότης ἀγνοεῖται. σ. ε. λ.

**Μινάγια** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς Μεθώνης καὶ διαιρεῖται εἰς δύο συνοικίας, *Ἄνω* καὶ *Κάτω Μινάγια*, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 288. χ. δ.

**μιναδόρος** (ὁ)· ὁ εἰδικὸς ἐργάτης πρὸς κατασκευὴν μίνας, ὑπονόμου (ἰταλ. minatore).

**Μιναία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Εὐφορωτάτη χώρα τῆς ΝΔ. Εὐδαίμονος Ἀραβίας (νῦν Ὑεμένης), κατοικουμένη ὑπὸ τῶν Μιναίων, ἑνὸς τῶν μεγίστων καὶ ἰσχυροτάτων λαῶν τῆς Ἀραβίας (*Στράβ.* XVI, 768). Πόλις αὐτῶν ἀναφέρεται τὰ Κάρνα ἢ Κάρνανα (νῦν Κὰρν-ἀλ-Μαναζίλ). α. θ. σ.

**Μιναῖοι** (οἱ), καὶ ***Μειναῖοι, Μηναῖοι, Μινναῖοι*** *[Ἀρχ.]*. Εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων καὶ ἰσχυροτέρων ἀραβικῶν λαῶν, κατοικῶν κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους τὴν δυτικὴν παραλίαν τῆς Εὐδαίμονος Ἀραβίας, ὁ ὁποῖος διεξῆγε σημαντικὸν ἐμπόριον ἐγχωρίων προϊόντων, ἰδίως μύρων καὶ λιβανωτοῦ. Τοῦ λαοῦ τούτου παραφυάδες ἢ ὑπήκοοι ἦσαν οἱ ὑπὸ Πτολεμαίου μνημονευόμενοι *Μοκρῖται* ἢ *Μοκορέται*, οἱ *Μανῖται* καὶ οἱ *Δωρηνοὶ* ἢ *Δωσαρηνοί*. Πρωτεύουσα τῶν Μιναίων ἦτο ἡ πόλις Κάρνα ἢ Κάρνανα (νῦν Κὰρν-ἀλ-Μαναζίλ), τῶν δὲ Μοκριτῶν ἡ Μακοράβα. ν. α.

**Μίναρα** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν χωρίον εἰς τὰς Α. ὑπωρείας τοῦ Ἀντικράγου ἐν Λυκίᾳ, κατέχον τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας καὶ ἀξιολόγου πόλεως *Πίναρα*, ἧς σῴζονται τὰ ἐρείπια. Ἕδρα ἄλλοτε ἐπισκοπῆς τῆς μητροπόλεως Μύρων.

**Μιναρὲ-τσιφλὶκ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Σιταγροὶ* (βλ. λ.). χ. δ.

**μιναρὲς** (ὁ) (ἀραβ. ἐκ τοῦ *νοὺρ*=φῶς, τὸ μέρος ὁπόθεν ἐκπέμπεται φῶς, φάρος). Ὑψηλός, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον λεπτὸς πύργος τῶν τζαμίων (μουσουλμανικῶν τεμενῶν), ἀπολήγων εἰς κορυφὴν σχήματος κωνικοῦ ἢ ἄλλου. Εἰς τὸ ὑπὲρ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ κτηρίου ὑπάρχει κυκλικὸς ἢ ἄλλου σχήματος ἐξώστης, ὁμοιάζων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον πρὸς κιονόκρανον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐξέρχεται ὁ μουεζζίνης (κράχτης), ὅπως καλέσῃ πεντάκις τῆς ἡμέρας τοὺς πιστοὺς εἰς προσευχήν. Τὰ μικρὰ τζαμία ἔχουσιν ἕνα μόνον μιναρέν, τὰ μεσαίας τάξεως δύο καὶ τὰ μεγάλα τέσσαρας ἢ καὶ ἕξ. Οἱ μικροὶ εὐκτήριοι οἶκοι δὲν ἔχουσι μιναρέδες. Ἐκεῖ ὁ μουεζζίνης καλεῖ τοὺς πιστοὺς ἱστάμενος ἐνώπιον τῆς θύρας. Οἱ μιναρέδες θεωροῦνται ὑπό τινων ὡς ἀπομίμησις τῶν κιόνων, ἐπὶ τῶν ὁποίων διῃτῶντο οἱ στυλῖται. ν. μ.

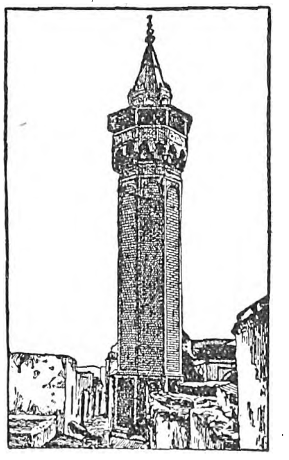
*Μιναρές.*

**μινάρω**· ἀνοίγω μίναν, ὀρύσσω ὑπόνομον, ὑπόρυγμα, ὑπονομεύω· || παρασκευάζω ὑπόνομον μετὰ γομώσεως πρὸς ἔκρηξιν· || μεταφ., ὑπονομεύω, ὑποσκάπτω (ἰταλ. minare).

**Μίνας *Ζεράες*** (Minas Geraes) *[Γεωγρ.]*. Μία ἐκ τῶν 20 πολιτειῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὴν Βραζιλιανὴν ὁμοσπονδίαν, κειμένη μεσογείως εἰς τὸ Α. τμῆμα τῆς χώρας, μεταξὺ τῶν πολιτειῶν Μπάχια πρὸς Β., Γκόγιας πρὸς Δ, Σὰν Πάουλο πρὸς Ν., Ρίο ντὲ Ἰανέϊρο πρὸς ΝΑ. καὶ Ἐσπιρίτο Σάντο πρὸς Α. Ἔχει ἔκτασιν 593.810 τ. χλμ., πληθυσμὸν (1929) 7.410.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ρίο ντὰς Βέλχας πόλιν *Μπέλλο Ὀριζόντε* (κάτ. 55.563).

Ἡ πολιτεία, σχήματος τετραπλεύρου, ἔχει μέσον μῆκος 900 χλμ ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ μέσον πλάτος 750 χλμ. ἀπὸ Α. πρὸς Δ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς καλύπτεται ὑπὸ ἐκτεταμένου ὑψιπέδου, μέσου ὕψους ἀπὸ 500 μέχρι 1000 μ., τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖ τὸ Α. τμῆμα τῆς κεντρικῆς ὀροσειρᾶς τῆς Βραζιλίας. Τὸ ὀροπέδιον τοῦτο διακόπτεται καθ᾽ ὅλον τὸ μῆκος αὐτοῦ ἀπὸ Β. πρὸς Ν. ὑπὸ παραλλήλων ὀροσειρῶν, αἱ ὁποῖαι ἀνυψοῦνται κλιμακηδὸν ἀπὸ τῶν μεσογείων πρὸς τὴν παραλίαν, ἐκ δυσμῶν δηλαδὴ πρὸς ἀνατολάς. Σπουδαιότεραι τῶν ὀροσειρῶν τούτων εἶναι αἱ ἑξῆς ἐκ Δ.: *Σιέρρα Παράναν*, *Σιέρρα ντὲ Σὰν Μάρκος*, *Σιέρρα ντὲ Μάττα ντὰ Κόρντε*, *Σιέρρα ντὸ Ἐσπινάσο* (κορυφαὶ *Ἰτακολοῦμι* 1752 μ., καὶ *Ἰταμπὲ* 1823 μ.) καὶ *Σιέρα ντὸ Μὰρ* (παραλιακὴ ὀροσειρά), ἀκολουθοῦσα τὴν διεύθυνσιν τῆς παραλίας τοῦ Ἀτλαντικοῦ εἰς ἀπόστασιν 100—150 χλμ. Πρὸς ΝΑ. τὸ ὀροπέδιον στηρίζεται ἐπὶ τῆς *Σιέρρα ντὸ Μαντικέϊρα*, ἡ ὁποία ὑψοῦται εἰς τὸ σημεῖον ὅπου ἑνοῦνται τὰ ὅρια τῶν πολιτειῶν Μίνας Ζεράες, Σὰν Πάουλο καὶ Ρίο ντὲ Ἰανέϊρο. Ἡ κορυφὴ τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης (ὄρος *Ἰτατιάϊα* 2713 μ.), εἶναι ἡ ὑψηλοτέρα τῆς Βραζιλίας. Τὸ ἔδαφος ἀρδεύεται ὑπὸ πολυαρίθμων μεγάλων ποταμῶν, ὧν ἄλλοι μὲν διευθύνονται πρὸς Α. ἐκβάλλοντες κατ᾽ εὐθεῖαν πρὸς τὸν Ἀτλαντικὸν (*Σὰν Φρανσῖσκο*, *Πάρντο*, *Μουκούρυ* κλπ.), ἄλλοι δὲ πρὸς ΝΔ. Σπουδαιότεροι ἐκ τῶν τελευταίων τούτων εἶναι οἱ *Παραναΰμπα* καὶ *Ρίο Γκράντε*, οἱ ὁποῖοι συνενούμενοι σχηματίζουσι τὸν *Ρίο Παράνα*. Τὸ μεγαλύτερον τμῆμα τῆς χώρας καλύπτεται ὑπὸ ἀπεράντων βοσκῶν. Αἱ κοιλάδες τῶν ποταμῶν καὶ αἱ ἀνατολικαὶ κλιτύες τῶν ἀνατολικῶν ὀροσειρῶν καλύπτονται ὑπὸ ὡραίων καὶ μεγάλων δασῶν. Τὸ κλῖμα εἶναι θερμότατον εἰς τὰς περιοχὰς τῶν παρθένων δασῶν, εὔκρατον δὲ καὶ ὑγιεινὸν ἐπὶ τῶν ὑψηλοτέρων ὑψιπέδων. Εἴς τινα μάλιστα σημεῖα κατὰ τὰς ἐποχὰς τοῦ χειμῶνος καθίσταται πολλάκις παγερόν. Σπουδαιότερα προϊόντα τῆς πολιτείας εἶναι τὰ κτηνοτροφικὰ (βοῶν, προβάτων καὶ χοίρων) καὶ τὰ ἐκ τῆς ἐκμεταλλεύσεως τοῦ ὑπεδάφους, τὸ ὁποῖον ἐγκλείει χρυσόν, ἀδάμαντας (τὰ κυριώτερα ἀδαμαντωρυχεῖα κεῖνται περὶ τὴν πόλιν Ντιαμαντίνα), μαγνήσιον, γαιάνθρακας, σίδηρον κλπ. Ἡ γεωργία, ἡ ὁποία ἀκμάζει εἰς τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς χώρας, ὅπου ἡ πρωτεύουσα καὶ αἱ λοιπαὶ μεγάλαι πόλεις, ἔχει κυριώτερα προϊόντα τὸν καφέν, τὴν σάκχαριν, τὸν καπνόν, τοὺς κυάμους, τὴν ὄρυζαν κλπ. Αἱ βιομηχανίαι ἀσχολοῦνται κυρίως μὲ τὴν κατεργασίαν τῶν ἐν τῇ χώρᾳ πραγομένων γεωργικῶν καὶ κτηνοτροφικῶν προϊόντων. Αἱ συγκοινωνίαι περιορίζονται εἰς τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς πολιτείας, τὸ ὁποῖον συνδέεται ἀπ᾽ εὐθείας διὰ μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς μετὰ τοῦ Ρίου Ἰανεΐρου, ἐνῷ ὁλόκληρος σχεδὸν ἡ λοιπὴ χώρα ἐξυπηρετεῖται μόνον διὰ βατῶν ὁδῶν. Οἱ κάτοικοι εἶναι κατὰ τὰ 40 % περίπου λευκοί, 23 % νέγροι καὶ 36 % μιγάδες, σῴζεται δὲ ἐπίσης καὶ μία ἀγρία φυλὴ Ἰνδῶν, οἱ Μποτοκοῦντος.

Ἡ χώρα τῆς Μίνας Ζεράες ἐγένετο γνωστὴ τῷ 1573, ὁπότε ἀνεκαλύφθησαν τὰ ἀδαμαντωρυχεῖα καὶ χρυσωρυχεῖα αὐτῆς. Οἱ Πορτογάλοι ἔσπευσαν τότε νὰ καταλάβωσιν αὐτήν, ἀλλ᾽ οἱ ἰθαγενεῖς Μινέϊρος, ἀντέταξαν κρατερὰν ἀντίστασιν καὶ ὑπετάγησαν μόνον κατόπιν μακροχρονίων πολέμων, τῷ 1709. Βραδύτερον ἐσημειώθησαν πολλαὶ σοβαραὶ ἐπαναστάσεις (1788—1792, 1822 καὶ 1842). Σήμερον ἡ πολιτεία διοικεῖται ὑπὸ προέδρου (presidente), ἀποστέλλει δὲ εἰς τὴν ὁμοσπονδιακὴν βουλὴν 37 ἀντιπροσώπους. Μέχρι τοῦ 1897, πρωτεύουσα αὐτῆς ἦτο τὸ *Οὖρο Πρέτο*. Ἐκτὸς τῆς πρωτευούσης ἄλλοι μεγάλοι δῆμοι τῆς πολιτείας εἶναι οἱ ἑξῆς: *Ἀρασσουάχυ* (κάτ. 85.663), *Μπαρμπασένα* (90.000), *Καραγγκόλα* (87.000), *Καρατίνγκα* (137.000), *Κουρβέλλο* (76.000), *Ντιαμαντίνα* (70.000), *Σὰν Μιγκουὲλ ντὲ Γκουανχάνες* (96.000), *Τεοφίλο Ὀττόνι* (163.000) κλπ. χ. δ.

**Μίνας** (Minas) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐρουγουάης, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας. Κεῖται 112 χλμ. κατ᾽ εὐθεῖαν καὶ 128 διὰ σιδηροδρόμου Β. ΒΑ. τοῦ Μοντεβίδεο, εἰς δὲ τὰ περίχωρα αὐτῆς κεῖνται λατομεῖα μαρμάρου καὶ γρανίτου. Ἱδρύθη τῷ 1784 καὶ ἔχει κατ. (1926) 14.000. Ἡ ἐπαρχία κεῖται εἰς τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς χώρας καὶ ἔχει καλλιεργείας σιτηρῶν καὶ κτηνοτροφίαν. Ἔκτασις 12.485 τ. χλμ. Κάτ. (1929) 96.235. χ. δ.

**Μίνασα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Πισιδίᾳ, γνωστὴ ἐκ τῶν συμμαχικῶν αὐτῆς νομισμάτων τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων (*Head*-*Σβορώνου*, Ἱστορ. τῶν νομισμ. τ. Β, σ. 268). α. θ. σ.

**Μινατίακον** (Minatiacum) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βελγικῆς Γαλλίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ρήμων, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀπὸ Δουρικορτόρας (νῦν Reims) εἰς Βάγακον (νῦν Bavay) ὁδοῦ. Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐπέχει σήμερον ἡ Nizy-le-Compte. α. θ. σ.

**Μίνγκ.** Κινεζικὴ δυναστεία διατηρήσασα τὸν θρόνον ἀπὸ τοῦ 1368 μέχρι τοῦ 1644. Γενάρχης αὐτῆς ὑπῆρξεν ὁ *Τσοὺ-Γιουὰν-Τσάγκ*, ὅστις, γενόμενος αὐτοκράτωρ ὑπὸ τὸ ὄνομα Χὸγκ-Γιού, ἐπέτυχε τὴν ἕνωσιν τῆς χώρας, ἵδρυσε δὲ δύο νέας μεγάλας πόλεις, τὸ Νανκὶν καὶ τὴν Καϊφεγκ. Ὁ υἱὸς τούτου *Γιὰγκ-Λό*, τρίτος εἰς τὴν σειρὰν τῶν αὐτοκρατόρων τῆς δυναστείας, μετέφερε τὴν πρωτεύουσαν εἰς τὸ Πεκῖνον, τὸ ὁποῖον ἐκαλλώπισε καὶ πολυειδῶς προήγαγε. Τῷ 1644 ὁ ἐπαναστάτης Λὶ-Τσοὺ-Τσὲγκ ἐκήρυξεν ἔκπτωτον τὸν κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην αὐτοκράτορα τῆς δυναστείας τῶν Μίνγκ, οἱ δὲ Μαντσοὺ ἐπέτυχον τότε ν᾽ ἀνέλθουν αὐτοὶ εἰς τὸν θρόνον τῆς Κίνας. Οἱ ἀπόγονοι τῶν Μίνγκ, ἐπὶ κεφαλῆς πιστῶν εἰς αὐτοὺς στρατιωτικῶν δυνάμεων, ἐξηκολούθουν νὰ διεξάγουν ἐμφύλιον πόλεμον πρὸς τοὺς Μαντσοὺ μέχρι

Digitized by Google

τοῦ 1692, ὁπότε κατενικήθησαν ὑπὸ τούτων, ὁ δὲ ἀρχηγός των ηὐτοκτόνησεν. —Ω.

**Μινγκόττι** (Mingotti), ***Ρηγίνα,*** τὸ γένος *Βαλεντίνι.* Ἰταλὶς ἀοιδός, γεννηθεῖσα ἐν Νεαπόλει ἐκ γονέων Αὐστριακῶν (1728—1807). Τὰ πρῶτα μαθήματα ᾄσματος ἔλαβεν εἰς τὴν μονὴν τῶν Οὐρσουλινῶν τοῦ Γκλάτς. Τὰς σπουδάς της συνεπλήρωσε μετὰ τὸν γάμον της μὲ τὸν Μινγκόττι, διευθυντὴν τοῦ μελοδράματος τῆς Δρέσδης. Τῷ 1752 μετέβη εἰς Μαδρίτην, ἔνθα ἔψαλλεν ὑπὸ τὸν Φαρινέλλι, μὲ φήμην ὁλονὲν αὔξουσαν. Οἱ θρίαμβοί της ἐσυνεχίσθησαν ἐν Παρισίοις, Λονδίνῳ κ.λ. μέχρι τῆς στιγμῆς καθ' ἣν ἐγκατεστάθη ἐν Μονάχῳ (1763). Τὰ τελευταῖά της ἔτη διῆλθεν ἐν Νώϋμπουργκ ἐπὶ τοῦ Δουνάβεως. Γ. Σ.

**Μὶνγκ-τσέ,** ἢ ***Μίγκιος,*** ἢ ***Μέγκιος.*** Περίφημος φιλόσοφος τῆς Κίνας (372—289 π. Χ.), θεωρούμενος ὑπὸ τῶν ὁμοεθνῶν του ὡς *Γιά-σέγκ,* τουτέστιν ὡς δεύτερος ἅγιος παρὰ τὸν Κομφούκιον, τοῦ ὁποίου τὴν διδασκαλίαν διέδωκε καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ἐπικράτησιν αὐτῆς. Ὁ Μίγκιος διήγαγε τὸν βίον ὡς περιοδεύων διδάσκαλος ἀνὰ τὰς διαφόρους αὐλὰς τῶν ἡγεμόνων, ἡ δὲ σημασία αὐτοῦ ἔγκειται κατὰ πρῶτον λόγον οὐχὶ εἰς τὴν διάδοσιν καὶ τὴν ἐκλαΐκευσιν τοῦ ἠθικοῦ συστήματος τοῦ Κομφουκίου, ἀλλ' εἰς τὴν κατὰ τὸ πνεῦμα καὶ τὰς ἀνάγκας τῆς ἐποχῆς του διαμόρφωσιν τῆς κομφουκιανῆς ἠθικῆς, τουτέστιν εἰς τὴν δημοκρατοποίησιν αὐτῆς. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν νομοταγῆ Κομφούκιον ἀπαιτεῖ ὁ Μὲνγκ-τσὲ τὴν ἔκπτωσιν τῆς παρακμασάσης δυναστείας χάριν νέου καὶ ἰσχυροῦ ἡγεμονικοῦ γένους. Ἡ αὐθεντία καὶ τὸ κῦρος τοῦ ἡγεμόνος δὲν θεωρεῖται ὑπ' αὐτοῦ ὥς τι ἀπρόσβλητον καὶ ἱερόν, ὡς ὑπὸ τοῦ ἀριστοκρατικοῦ Κομφουκίου· τὸ σπουδαιότατον ἐν τῷ κράτει εἶναι δι' αὐτὸν οὐχὶ ὁ ἡγεμών, ἀλλ' ὁ λαός. Ὁ τελευταῖος οὗτος κέκτηται τὸ δικαίωμα νὰ ἀνατρέπῃ τὸν ἡγεμόνα, ὁσάκις οὗτος ἀποδεικνύεται ἀνάξιος κυβερνήτης καὶ ἐστερημένος τῆς ἀρετῆς. Διότι διὰ τῆς τοιαύτης διαγωγῆς ἀπώλεσε τὴν ἐντολήν, τὴν ὁποίαν ἔλαβε παρὰ τοῦ θεοῦ. Ἡ ἠθικὴ διδασκαλία τοῦ Μιγκίου στηρίζεται ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῆς φυσικῆς καὶ πρωταρχικῆς ἀγαθότητος τοῦ ἀνθρώπου καὶ κορυφοῦται εἰς τὸν ἀνθρωπισμόν, ὅστις περιλαμβάνει ἐν ἑαυτῷ τέσσαρας ἐπὶ μέρους ἀρετάς: τὴν δικαιοσύνην, τὴν εὐλάβειαν, τὴν νομιμοφροσύνην καὶ τὴν δεξιότητα. Τὸν ἀνθρωπισμὸν τοῦτον ἔχει καθῆκον νὰ καλλιεργῇ καὶ νὰ προάγῃ ὁ ἄνθρωπος, ἀποβλέπων εἰς ἱστορικὰ πρότυπα, τῶν ὁποίων πρώτιστον ὁ Κομφούκιος. Ν. Λ.

**Μίνδαρος**: Χρηστὸς καὶ γενναῖος Σπαρτιάτης, ὅστις κατὰ τὸ 411 π. Χ. ἀντικατέστησεν ὡς ναύαρχος τοῦ στόλου τῶν Λακεδαιμονίων τὸν νωθρὸν Ἀστύοχον. Κατὰ τὸν Ἰούλιον τοῦ 411, διακόψας ἐξ ὑπερηφανίας τὰς πρὸς τὸν ὕπουλον Τισσαφέρνην διαπραγματεύσεις του περὶ συνενώσεως τοῦ στόλου του μετὰ τοῦ φοινικικοῦ, ἀπέπλευσεν ὁ Μίνδαρος ἐκ Μιλήτου πρὸς τὸν Ἑλλήσποντον μετὰ 73 πλοίων, μὲ τὸν σκοπόν, κατόπιν συνεργασίας του μὲ τὸν σατράπην Φαρνάβαζον, ν' ἀποσπάσῃ ἀπὸ τῶν Ἀθηναίων τὰς παρὰ τὸν Ἑλλήσποντον ἑλληνικὰς πόλεις. Πρὶν ἢ ὅμως ἑνωθῶσι μετ' αὐτοῦ αἱ διεσπαρμέναι μοῖραι τῶν Πελοποννησίων, αἵτινες εἶχον διαταχθῆ ὑπ' αὐτοῦ νὰ σπεύσουν πρὸς συνάντησίν του, ἠναγκάσθη ὑπὸ τῶν στρατηγῶν τοῦ στόλου τῶν Ἀθηναίων Θρασυβούλου καὶ Θρασύλλου νὰ συνάψῃ τὴν μεγάλην παρὰ τὴν Ἄβυδον ναυμαχίαν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐνίκησαν οἱ Ἀθηναῖοι, ἂν καὶ ὁ στόλος τοῦ Μινδάρου ἦτο πολυαριθμότερος. Ἡ πρώτη αὕτη μεγάλη νίκη τῶν Ἀθηναίων μετὰ τὴν ἐν Σικελίᾳ πανωλεθρίαν των ἀνεπτέρωσε τὰς ἐλπίδας των ὅτι ἡ πόλις των ἦτο δυνατὸν καὶ πάλιν ν' ἀναλάβῃ τὸ ἀρχαῖον μεγαλεῖόν της. Ταύτην ἐπηκολούθησε δευτέρα μετὰ τὴν ἄφιξιν ἐπικουριῶν πρὸς τὸν Μίνδαρον ὑπὸ τὸν Δωριέα, ἀλλὰ καὶ αὕτη ἀπέβη ὑπὲρ τῶν Ἀθηναίων, διότι διαρκούσης τῆς ναυμαχίας ἔφθασε μὲ 18 πλοῖα ὁ Ἀλκιβιάδης καὶ ἐνέπνευσε τὸν τρόμον εἰς τὰ πληρώματα τῶν πελοποννησιακῶν τριήρων, αἵτινες διεσώθησαν, πλὴν 30 συλληφθεισῶν, καταφυγοῦσαι εἰς τὰς μικρασιατικὰς ἀκτάς, κατεχομένας ὑπὸ τοῦ στρατοῦ τοῦ Φαρναβάζου. Καταστρεπτικωτέρα ὅμως καὶ τῶν δύο προρρηθεισῶν παρὰ τὴν Ἄβυδον ναυμαχιῶν ἀπέβη ἡ παρὰ τὴν Κύζικον κατὰ τὸν Φεβρουάριον τοῦ 410, κατὰ τὴν ὁποίαν 38 τριήρεις περιῆλθον εἰς τοὺς Ἀθηναίους καὶ ἄπειρα λάφυρα, ἔπεσε δὲ γενναίως μαχόμενος καὶ ὁ Μίνδαρος. Τὸ μέγεθος τῆς συμφορᾶς τοῦ στόλου τῶν Λακεδαιμονίων περιεγράφη λακωνικώτατα εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ ἐπιστολέως Ἱπποκράτους ἀποσταλεῖσαν ἀναγγελίαν τῆς ἥττης τοῦ στόλου καὶ τοῦ θανάτου τοῦ Μινδάρου πρὸς τὰς ἀρχὰς τῆς Σπάρτης, ἔχουσαν οὕτως «Ἔρρει τὰ κᾶλα. Μίνδαρος ἀπεσσύα. Πεινῶντι τὤνδρες. Ἀπορίομες τί χρὴ δρᾶν» (*Ξενοφ.* Ἑλλ. Ι 1.23). ΚΑΨ.

**μινδέλιος** ***βαθμὶς*** (Mindeleiszeit) *[Γεωλογ.]*. Ἡ τρίτη ἐκ τῶν τεσσάρων γεωλογικῶν βαθμίδων, εἰς τὰς ὁποίας ὑποδιαιρεῖται ἡ παλαιοτεταρτογενὴς ὑποδιάπλασις τῆς τεταρτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Παρουσιάζεται καθαρὰ ἰδίᾳ ἐπὶ τῶν Ἄλπεων, ἀντιστοιχοῦσα πρὸς τὴν δευτέραν διλούβιον ἐξάπλωσιν τῶν παγετώνων ἐπὶ τῶν ὀρέων τούτων. Οἱ σωροὶ κορημάτων τῶν παγετώνων τούτων ἐδημιούργησαν τὸ νεώτερον τῶν κορημάτων ἐπικάλυμμα τῶν Ἄλπεων. Γ. Κ. Γ.

**Μίνδλερ** (Mindler), ***Ἰωσὴφ-Μαξιμιλιανός.*** Γεννηθεὶς τῷ 1808 ἐν Βέρτιγκεν τῆς Βαυαρίας, ἠκολούθησε μετὰ τὰς γυμνασιακὰς αὐτοῦ σπουδὰς νομικὰς ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Ἐρλάγγης καὶ τοῦ Μονάχου. Μετέχων δὲ καὶ αὐτὸς τοῦ ἐνθουσιασμοῦ, ὁ ὁποῖος ἐπεκράτει ἐν Βαυαρίᾳ ὑπὲρ τῆς Ἑλλάδος, ἐγκατέλειψε τῷ 1833 τὰς σπουδάς του καὶ κατετάχθη ἐθελοντὴς εἰς τὸ ἐλαφρὸν ἱππικόν, εἰς τὸ ὁποῖον πρότερον εἶχεν ἐκτελέσει τὴν στρατιωτικήν του θητείαν, τοῦ στρατοῦ τοῦ συνοδεύσαντος τὸν βασιλέα Ὄθωνα, κατερχόμενον εἰς τὴν Ἑλλάδα. Χάρις εἰς τὰς πολλὰς αὐτοῦ γνώσεις καὶ τὴν ἄλλην του μόρφωσιν ἀμέσως ἀπὸ τοῦ 1834, ἀνθυπίλαρχος τότε ὤν, προσελήφθη ὡς γραμματεὺς τῆς ἀντιβασιλείας, βραδύτερον δὲ μετετέθη εἰς τὴν ἀρχικαγκελλαρίαν καὶ τῷ 1837 εἰς τὴν γραμματείαν τοῦ ἀνακτοβουλίου. Κατὰ τὴν μεταπολίτευσιν τοῦ 1843 εὑρίσκετο ὑπηρετῶν εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Στρατιωτικῶν, καίτοι δὲ ἦτο κεκηρυγμένος ὑπὲρ τῆς παραχωρήσεως συνταγματικοῦ πολιτεύματος καὶ περὶ αὐτοῦ εἶχε συνηγορήσει καὶ παρὰ τῷ βασιλεῖ, δὲν ἐδέχθη νὰ παραμείνῃ ἐν Ἑλλάδι, ὅπως τῷ ἐπροτάθη, θεωρῶν ἑαυτὸν ὑποχρεωμένον νὰ παρακολουθήσῃ τοὺς ἀναχωροῦντας συστρατιώτας του, καὶ κατὰ τὴν ἀναχώρησίν του εἰς ἀμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του τῷ ἀπένειμεν ὁ βασιλεὺς τὸ παράσημον τοῦ Σωτῆρος. Ἐπανελθὼν εἰς τὸ Μόναχον παρῃτήθη τοῦ στρατεύματος καὶ ἀνέλαβε πολιτικὴν ὑπηρεσίαν, διορισθεὶς διευθυντὴς δημοσίων ἔργων. Ὠθούμενος ὅμως πάντοτε ἐκ τῶν φιλελληνικῶν αἰσθημάτων καὶ ἐπιθυμῶν καὶ νέας ἐκδουλεύσεις νὰ προσφέρῃ εἰς τὴν χώραν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐβασίλευεν ὁ υἱὸς τοῦ βασιλέως του, κατέγινε κατὰ τὰς ὥρας τῆς σχολῆς του εἰς τὴν μεταφορὰν εἰς τὴν ἑλληνικὴν γνῶσσαν τοῦ στενογραφικοῦ συστήματος τοῦ Γκαμπελσμπέργκερ, τὸ ὁποῖον παρὰ τοῦ ἐφευρέτου εἶχε διδαχθῆ. Κάτοχος ὢν ἐκ τῶν γυμνασιακῶν του σπουδῶν τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς καὶ ἐκμαθὼν τελείως κατὰ τὰ ἔτη τῆς ἐν Ἑλλάδι στρατιωτικῆς του ὑπηρεσίας τὴν νεοελληνικήν, κατώρθωσε νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὸ δυσχερὲς ἔργον καὶ τυχὼν ἀδείας παρὰ τῆς βαυαρικῆς κυβερνήσεως, ἥτις καὶ παρετάθη μέχρι τοῦ θανάτου του, ἐπανῆλθε τῷ 1856 εἰς Ἀθήνας καὶ διωρίσθη καθηγητὴς τῆς στενογραφίας ἐν τῇ συσταθείσῃ τότε ἕδρᾳ διδασκαλίας τοῦ μαθήματος ἐν τῷ πολυτεχνείῳ. Τὴν ἐφαρμογὴν τοῦ συστήματος τῆς ἑλληνικῆς στενογραφίας ἐπέστεψε πλήρης ἐπιτυχία, πολλοὶ δὲ ἐκ τῶν κατὰ τὰ ἔτη ἐκεῖνα φοιτητῶν τοῦ πανεπιστημίου, ἰδίως τῆς νομικῆς, ἐξέμαθον καὶ ἐφήρμοσαν αὐτὴν εἰς τὰς μελέτας των καὶ βραδύτερον κατὰ τὴν ἄσκησιν τοῦ ἐπαγγέλματός των. Ἐξ αὐτῶν τέσσαρες ἐκ τῶν κατοικούντων ἐν Ἀθήναις, οἱ Ἰω. Μίνδλερ, Ἀντών. Μηλιαράκης, Γ. Βλάχος καὶ Ν. Οἰκονόμου, συνεκρότησαν ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ καθηγητοῦ των τὸ συσταθὲν τὸ πρῶτον στενογραφικὸν γραφεῖον τῷ 1862 ἐν τῇ ἐθνοσυνελεύσει, τὸ ὁποῖον ἤρχισε τηροῦν ἐστενογραφημένα πρακτικά.

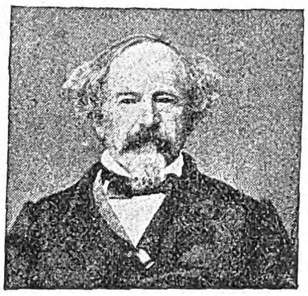

*Ἰωσὴφ Μίνδλερ.*

Ὁ Ἰωσὴφ Μίνδλερ διετέλεσε καὶ διδάσκαλος τῆς νεοελληνικῆς τοῦ πρίγκιπος τῆς Βαυαρίας Ἀδαλβέρτου, ὁ ὁποῖος κατὰ τὸ ἐπιχειρηθὲν ὑπ' αὐτοῦ τῷ 1857 ταξίδιον εἰς Αἴγυπτον καὶ Κωνσταντινούπολιν, διελθὼν ἐξ Ἀθηνῶν, προσέλαβεν αὐτὸν ὡς διαγγελέα. Ἀπέθανε τῷ 1868, οἱ δὲ ἐν τῇ βουλῇ στενογράφοι μαθηταί του μετὰ τοῦ νεωτέρου συναδέλφου των Ἀνδρέου Ἀγγελοπούλου Ἀθανάτου, ἀνήγειραν εἰς ἔνδειξιν εὐγνωμοσύνης καὶ εἰς μνήμην αὐτοῦ μαρμαρίνην προτομήν του, κοσμοῦσαν τὴν αἴθουσαν τῆς διευθύνσεως τοῦ στενογραφικοῦ γραφείου τῆς βουλῆς.

Ἐκ τοῦ γάμου (1840) τοῦ Ἰωσὴφ Μίνδλερ μετὰ τῆς *Ἑλένης Λιάκη Ρενιέρη* ἐγεννήθησαν τὰ ἑξῆς τέκνα:

*Ἰωάννης.* Οὗτος διεδέχθη τὸν πατέρα εἰς τὴν διεύθυνσιν τοῦ στενογραφικοῦ γραφείου τῆς βουλῆς, ἐσυνέχισε καὶ τὴν ἄλλην κοινωνικὴν καὶ ἐθνικὴν δρᾶσίν του εἰς διάφορα κοινωφελῆ ἔργα, μετέσχε δὲ εἰς τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1868, εἰς τὸ σῶμα τοῦ στρατηγοῦ Ἰω. Ζυμπρακάκη.

*Ἐμμανουήλ.* Διεκρίθη ὡς μηχανικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, εἰς τὸ ὁποῖον κατετάχθη μετὰ τὸ πέρας τῶν ἐν Γερμανίᾳ σπουδῶν του.

*Δημήτριος.* Γεωπόνος σπουδάσας ἐν Γερμανίᾳ καὶ ἐφαρμόσας τὰς γνώσεις του εἰς διάφορα ἐν Ἑλλάδι μεγάλα κτήματα, τυχὼν δὲ ἀργυρῶν μεταλλίων διὰ τοὺς ὑπ' αὐτοῦ ἐκτεθέντας οἴνους καὶ ἔλαια εἰς τὴν ἔκθεσιν τῶν Ὀλυμπίων τοῦ 1875.

*Γεώργιος.* Ἀριστοῦχος τοῦ Ὠδείου εἰς τὸ βιολοντσέλον, ὑπάλληλος τῆς Ἐθνικῆς τραπέζης.

*Μᾶρκος.* Διευθυντὴς τοῦ στενογραφικοῦ γραφείου τῆς βουλῆς, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1860. Περατώσας ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις πανεπιστημίῳ τὰς νομικὰς αὐτοῦ σπουδάς, ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς νομικῆς τῷ 1880. Τῷ 1882 διωρίσθη δικηγόρος καὶ τῷ 1885 πάρεδρος παρὰ τῷ πρωτοδικείῳ Ἀθηνῶν. Τῷ 1896 προήχθη εἰς πάρεδρον παρὰ τῷ Ἐφετείῳ τῶν Ἀθηνῶν, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τῆς καταργήσεως τοῦ θεσμοῦ. Μετέσχεν εἰς τὴν ἵδρυσιν καὶ λειτουργίαν τῶν πλείστων ἐν Ἀθήναις συστηθέντων μουσικῶν σωματείων, ὢν δὲ ἐκ τῶν πρώτων μαθητῶν καὶ ἀποφοίτων τοῦ Ὠδείου Ἀθηνῶν μετεῖχεν ὡς τακτικὸς ἐκτελεστὴς εἰς τὰς πρώτας αὐτοῦ συναυλίας. Ἰδίᾳ ὅμως συνετέλεσε πολὺ εἰς τὴν ἐπέκτασιν τοῦ ἀθλητισμοῦ ἐν Ἑλλάδι, διατελέσας ἀπὸ τῆς συστάσεως τοῦ Συνδέσμου τῶν ἑλληνικῶν γυμναστικῶν καὶ ἀθλητικῶν σωματείων μέλος τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου αὐτοῦ καὶ ἐπὶ μακρὰ ἔτη πρόεδρος, μέχρι τῆς ἀποχωρήσεώς του κατὰ τὸ 1928, ὅτε καὶ ἀνεκηρύχθη ἐπίτιμος πρόεδρος τοῦ συνδέσμου. Συγχρόνως ἐπεδόθη ἀπὸ τοῦ 1910, ὅτε εἰσήχθη ὁ προσκοπισμὸς ἐν Ἑλλάδι, εἰς τὴν καλλιέργειαν καὶ ἐπέκτασιν αὐτοῦ, συντόνως ἐργασθεὶς ὡς ἀρχηγὸς ὁμάδος ναυτοπροσκόπων καὶ προσκόπων καὶ μέλος τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου. —Ω.

**Μινερὰλ ντὲ Κατόρθε** (Mineral de Catorce) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Μεξικοῦ (βλ. λ. *Κατόρθε*).

**Μινέρβα** (λατιν. Minerva καὶ ἀρχαιότ. Menerva) *[Θρησκειολ.]*. Ἰταλικὴ θεά, ἀντίστοιχος πρὸς τὴν ἑλληνικὴν Ἀθηνᾶν. Ἡ πρώτη λατρεία αὐτῆς ἀπαντᾷ παρὰ τοῖς Σαβίνοις, μνημονεύεται δὲ παλαιότατος αὐτῆς ναὸς εἰς τὸ σαβινικὸν Orvinium. Εἰς τὴν Ρώμην ἡ ἀρχικὴ λατρεία τῆς θεᾶς ταύτης ἐμφανίζεται εἰς τὴν ἐν τῷ Καπιτωλίῳ λατρευομένην τριάδα τοῦ Διός, τῆς Ἥρας καὶ τῆς Ἀθηνᾶς (Jupiter—Juno—Minerva). Ν. Α.

**«Μινέρβα»** (Minerva). Ἐπιστημονικὴ ἐπετηρίς, ἐκδιδομένη τακτικῶς ἀπὸ τοῦ ἔτους 1898—κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη ἐν Στρασβούργῳ, ἔπειτα δὲ ἐν Βερολίνῳ—καὶ περιέχουσα κατ' ἀλφαβητικὴν σειρὰν τὰς σημαντικωτέρας πληροφορίας περὶ τῶν ἐπιστημονικῶν ἐν τῷ κόσμῳ ἱδρυμάτων καὶ τοῦ προσωπικοῦ αὐτῶν. Γ. Ι. Β.

**Μινέρβα** (Torre Minerva) *[Γεωγρ.]*. Διεθνής, ἀπὸ τῆς τοποθεσίας του, ὀνομασία τοῦ φάρου, ὅστις ἐγείρεται κατὰ τὸ ΝΑ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Νεαπόλεως (πλάτ. 40°34′ Β., μῆκ. 14°20′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1728: Gulf of Naples), τὸ ἀκρωτήριον Καμπανέλλα. Διέσωσε προφανῶς ἡ τοποθεσία τὴν ὀνομασίαν, ἣν εἶχεν ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου (ἀρχ. Ἀθήναιον) ναοῦ τῆς θεοῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μινερβίνη.** Πρώτη σύζυγος τοῦ Μεγάλου Κωνσταντίνου, ἣν οὗτος ἐνυμφεύθη περὶ τὸ 303, ὅτε ἦτο ἁπλοῦς Ρωμαῖος στρατηγός. Ἐκ τοῦ γάμου ἐκείνου ἐγεννήθη ὁ πρῶτος υἱὸς τοῦ Κωνσταντίνου *Κρίσπος.* Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του Κωνσταντίου (τῷ 306), ὅτε ὁ Κωνσταντῖνος ἀνηγορεύθη ὑπὸ τοῦ στρατοῦ αὐτοκράτωρ τῆς Δύσεως (τὴν 25 Ἰουλίου 306), οὗτος διεζεύχθη τὴν Μινερβίνην καὶ τῷ 307 ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα τοῦ αὐτοκράτορος Μαξιμιανοῦ ***Φαῦσταν.*** Ν. ΚΛΣ

**Μινέρβιο** (cap Minervio) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς βορείου Κορσικῆς (πλάτ. 42°54′ Β., μῆκ. 9°19′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1131: Corsica) κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς χερσονήσου τοῦ Κάπο-Κόρσο (ἀρχ. Ἱερόν). Σ. Ε. Λ.

**μινέττης** (ὁ) (Minette) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα πυριγενὲς μορφῆς φλεβοειδοῦς, ἀνῆκον εἰς μάγμα γρανιτοδιοριτικόν. Συνίσταται ἀπὸ ὀρθόκλαστον καὶ βιοτίτην, περιέχει δὲ συγχρόνως καὶ διοψίδιον, ὁπότε καλεῖται αὐγιτικὸς μινέττης. Ἡ παρουσία τῆς κεροστίλβης ὡς ὀρυκτολογικοῦ συστατικοῦ εἶναι μᾶλλον σπανία. Ὁ ὀλιβίτης καὶ τὰ προϊόντα μετουσιώσεως αὐτοῦ σχηματίζουν ἰδίας παραλλαγὰς τοῦ πετρώματος. Ἐμφανίζεται ἰδίως εἰς τὰ Βόσγια, ἐπίσης δὲ καὶ εἰς τὸν Μέλανα Δρυμόν, τὴν Σιλεσίαν κ. ἀ. Γ. Β.

**—μινέττης** (ὁ) (Minette) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ λειμωνίτου στιφρὰν καὶ πολλάκις μὲ ἱστὸν φολιθικόν, ἀπαντῶσαν εἰς τὸς ἀποθέσεις τοῦ Luxemburg καὶ Lothringen. Γ. Β.

**μινέττο** (τό), δημοτ., ἡ πρᾶξις τοῦ αἰδοιολείκτου, λεσβιασμὸς (ἡ λέξις προφανῶς ἰταλική, ἀγνώστου



Digitized by Google

ἐτυμολογίας· ἴσως ἐκ τοῦ γαλλικοῦ minette=γαλῆ, διὰ τὸ κατ᾽ ἐξοχὴν γνώρισμα τῆς γαλῆς, τοῦ λείχειν).

**Μινεφθᾶ.** Φαραὼ τῆς Αἰγύπτου βλ. λ. *Μενεφθᾶ.*

**μίνθα** (ἡ) (mentha) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *μίνθη.*

**μινθαδιένια** (τὰ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Γνήσια τερπένια τοῦ τύπου $C_{10}H_{16}$. Ἅπαντα χαρακτηρίζονται ὡς διυδρο-π-κυμόλια, ἐξαιρέσει τοῦ καρθεστρενίου καὶ σιλθεστρενίου, τὰ ὁποῖα εἶναι διϋδρο-μ-κυμόλια. Εἶναι δυνατὰ εἰς δεκατέσσαρας ἰσομερεῖς μορφάς, ὧν αἱ σπουδαιότεραι εἶναι τὰ *τερπινένια, τὰ φελλανδρένια,* τὸ *λιμονένιον* κλπ. Σ. Γ.

**μινθάνιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Κυκλικὸς ὑδρογονάνθραξ (ἑξαϋδροκυμόλιον) τοῦ τύπου

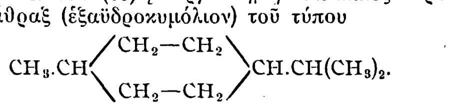

Διακρίνονται τρεῖς ἰσομερεῖς μορφαὶ τὸ ο-, μ- καὶ π-μινθάνιον, ἐξ ὧν παρεσκευάσθησαν μόνον τὰ δύο τελευταῖα. Ἀποτελεῖ τὸν βασικὸν ὑδρογονάνθρακα τῶν τερπενῶν, δὲν ἀπαντᾷ ἐν τῇ φύσει, ἀλλὰ παρεσκευάσθη συνθετικῶς δι᾽ ἀναγωγῆς τοῦ κυμολίου παρουσίᾳ νικελίου, Ἄχρουν ὑγρόν, εὐχαρίστου ὀσμῆς, βράζον εἰς 167°. Σ. Γ.

**μινθανόλη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μινθόλη.*

**μινθανόναι** (αἱ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Τερπενικαὶ ἑνώσεις τοῦ τύπου $C_{10}H_{18}O$. Εἶναι δυναταὶ δύο ἰσομερεῖς

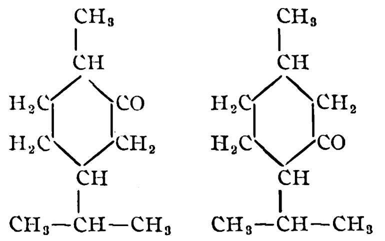

ἐξ ὧν ἡ πρώτη καλεῖται *καρβομινθόνη* (βλ. λ.) καὶ ἡ δευτέρα *μινθόνη* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**μινθέλαιον** (τὸ) *[Χημ.]*. Αἰθέριον ἔλαιον λαμβανόμενον δι᾽ ἀποστάξεως τῶν ἀνθοφόρων βλαστῶν διαφόρων εἰδῶν τῆς *μίνθης* (κοιν. *μέντας*). Ἔχει ἰσχυράν, εὐχάριστον χαρακτηριστικὴν ὀσμήν, ἐλαιώδη σύστασιν καὶ εἶναι ὡς πρόσφατον ἄχρουν, καθιστάμενον βαθμηδὸν διὰ τῆς παρόδου τοῦ χρόνου πρασινοκίτρινον. Ἔχει γεῦσιν καυστικὴν καὶ πικράν. Εἶναι εὐδιάλυτον εἰς καθαρὰν πυκνὴν ἀλκοόλην καὶ δυσδιάλυτον εἰς ἀραιοτέραν. Ὡς κύριον συστατικὸν περιέχει τὴν μινθόλην καὶ παρ᾽ αὐτὴν μινθόνην, διάφορα τερπένια κλπ. Ἡ παραγωγὴ τούτου γίνεται εἰς τοὺς τόπους τῆς καλλιεργείας τῆς μίνθης καὶ δὴ κατὰ τὸν μῆνα Αὔγουστον. Ὡς τόποι δὲ παραγωγῆς χαρακτηρίζονται κυρίως ἡ Ἀμερική, ἡ Ἰαπωνία καὶ ἡ Ἀγγλία. Χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν σακχαροπλαστικήν, εἰς τὴν ποτοποιίαν, εἰς τὴν φαρμακευτικὴν πρὸς κάλυψιν τῆς δυσαρέστου ὀσμῆς καὶ γεύσεως διαφόρων φαρμάκων, κέκτηται δὲ καὶ ἐλαφρὰν ἀντισηπτικὴν καὶ ἀναληπτικὴν ἰδιότητα.

Ἰδιαίτερον εἶδος μινθελαίου εἶναι τὸ ἐκ μίνθης τῆς πρασίνης ἐξαγόμενον, ὅπερ περιέχει κυρίως καρβόνην καὶ εἰς μικρότερα ποσὰ φελλανδρένιον, λιμονένιον κλπ. Χρησιμοποιεῖται πρὸς ἀρωματισμὸν ὀδοντοπαστῶν, τῆς ἀμερικανικῆς μαστίχης τοῦ μασήματος κλπ. Σ. Γ.

**μινθένιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Κυκλικὸς ὑδρογονάνθραξ πτωχότερος τοῦ *μινθανίου* κατὰ δύο ἄτομα ὑδρογόνου. Ἔχει τὸν τύπον

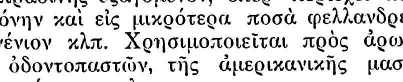

καὶ παρουσιάζεται εἰς πλείονα ἰσομερῆ. Περιέχεται εἰς διάφορα αἰθέρια ἔλαια καὶ εἶναι ὑγρὸν βράζον εἰς 167°. Δύναται νὰ παρασκευασθῇ συνθετικῶς διὰ βρασμοῦ τῆς μινθόλης μετ᾽ ἀραιοῦ θειικοῦ ὀξέος ἢ ὀξαλικοῦ ὀξέος. Σ. Γ.

**μινθενόλη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τῆς *τερπινεόλης* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**μινθενόναι** (αἱ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Τερπενικὰ σώματα τοῦ τύπου $C_{10}H_{16}O$. Εἶναι δυναταὶ δεκατέσσαρες ἰσομερεῖς μορφαί, ἐξ ὧν γνωσταὶ εἶναι αἱ ὀκτώ. Τινὲς ἐξ αὐτῶν ἀνευρέθησαν εἰς διάφορα αἰθέρια ἔλαια. Σπουδαιοτέρα εἶναι ἡ *πουλεγόνη* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**μίνθη** (ἡ) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *χειλανθῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, εὐώδεις καὶ δριμείας γεύσεως (βλ. καὶ *ἡδύοσμος*).

**Μίνθη** (ἡ ***Μίνθα,*** ἡ ***Μένθη***) *[Μυθολ.]*. Νύμφη τοῦ Ἅδου, ἐπικαλουμένη, ὡς θυγάτηρ τοῦ Κωκυτοῦ, καὶ *Κωκυτὶς* νύμφη, καὶ πολλάκις τοῦ Πλούτωνος, θυγάτηρ δὲ τῆς Πειθοῦς. Ἡ Περσεφόνη (ἡ μήτηρ αὐτῆς Δήμητρα) ἕνεκα ζηλοτυπίας κατεξέσχισεν αὐτήν, ὁ δὲ Πλούτων μετέβαλεν εἰς τὸ ὁμώνυμον φυτὸν *μίνθη*, τὸ ὁποῖον κατ᾽ ἀρχὰς ἀνεφύη εἰς τὴν Τριφυλίαν τῆς Μεσσηνίας ἐν τῇ περιοχῇ τῆς πόλεως Λεπρέου, ὅπου ὑπῆρχεν ἄλσος πρὸς τιμήν της, καθὼς καὶ ναὸς τῆς Δήμητρος. Ἐκ τοῦ φυτοῦ τούτου ἔλαβε τὸ ὄνομα καὶ τὸ παρακείμενον ὄρος. Ν. Α.

**Μίνθη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Πελοποννήσου, κατὰ τὰ ΝΑ. τῆς Τριφυλίας ἐν Ἤλιδι, παρὰ τὰ ἀρκαδικὰ μεθόρια, ἀποτελοῦν δυτικὴν προέκτασιν τοῦ ὄρους Λυκαίου. Ὠνομάσθη δὲ οὕτως ἀπὸ τῆς νύμφης *Μίνθης* (βλ. λ.) καὶ ἦτο κέντρον λατρείας τοῦ Ἅδου, τοῦ ὁποίου ὑπῆρχε ἱερὸν τιμώμενον ὑπὸ τῶν Μακιστίων, καθὼς καὶ ἄλσος τῆς Δήμητρος ὑπερκείμενον τοῦ Πυλιακοῦ πεδίου (*Στράβ.* VIII, 344). Σήμερον καλεῖται *Ἄλβαινα.* Α. Θ. Σ.

— **Μίνθη** *[Γεωγρ.]*. Νεώτερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Ἄλβαινα* (βλ. λ.). Κάτ. (1928) 821. Χ. Δ.

**μινθόλη,** ἡ ***καμφορὰ τῆς μίνθης,*** ἡ ***π-μινθανόλη-3*** (Menthol) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἡ ἁπλουστέρα μονοσθενὴς ἀλκοόλη ἡ δυναμένη νὰ προέλθῃ ἐκ τοῦ *μινθανίου.* Ἔχει τὸν τύπον

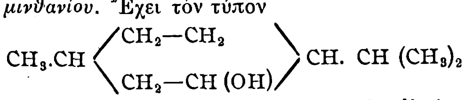

Ἀποτελεῖ τὸ κύριον συστατικὸν τοῦ αἰθερίου ἐλαίου διαφόρων εἰδῶν ἡδυόσμου, ἰδίως δὲ ἡδυόσμου τοῦ πιπερώδους (κοιν. *μέντας*) καὶ ἡδυόσμου τοῦ ἀρουραίου. Ἡ μινθόλη ἔχει ἰδιάζουσαν ἰσχυρὰν ὀσμὴν μέντας, γεῦσιν εὐχάριστον ἀναψυκτικήν, τήκεται εἰς 43°, βράζει εἰς 212° καὶ εἶναι ἀριστεροστρόφος. Ἐν τῇ πράξει λαμβάνεται ἐκ τοῦ αἰθερίου ἐλαίου τῆς μέντας διὰ ψύξεως καὶ διηθήσεως. Χρησιμοποιεῖται ὡς ἀντισηπτικόν, ἀναισθητικὸν καὶ ἀρωματικόν. Σ. Γ.

**μινθόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτω ἁπλῶς ἡ ἑτέρα τῶν δύο ἰσομερῶν *μινθανονῶν* (βλ. λ.). Ἀπαντᾷ εἰς τὸ αἰθέριον ἔλαιον τῆς μίνθης, τῆς ἡδυόσμου τοῦ γληχωνοειδοῦς κλπ. Ἄχρουν ὑγρὸν ὀσμῆς μίνθης, εἰδικοῦ βάρους 0,896 (20°). Βράζει εἰς 206—208° καὶ εἶναι διαλυτὴ εἰς τὸν αἰθέρα, τὴν ἀλκοόλην, τὸν πετρελαϊκὸν αἰθέρα, τὸ χλωροφόρμιον καὶ εἰς τὰ λιπαρὰ καὶ αἰθέρια ἔλαια. Ὅταν εἰς διάλυμα μινθόνης ἐν χλωροφορμίῳ προστεθῇ βρώμιον, παρέχεται διβρωμομινθόνη, ἥτις κατὰ τὴν θέρμανσιν μετὰ κινολεΐνης παρέχει θυμόλην. Μετὰ ὑδροξυλαμίνης παρέχει ὀξίμην τηκομένην εἰς 58°. Μινθόνη δύναται νὰ παρασκευασθῇ συνθετικῶς διὰ θερμάνσεως κιτρονελλάλης μετ᾽ ἀνυδρίτου τοῦ ὀξικοῦ ὄξέος. Σ. Γ.

**μινθοφαινόλη** (ἡ) (Menthol-phenol) *[Φαρμ.]*. Σκεύασμα λαμβανόμενον διὰ συντήξεως 1 μ. φαινόλης μετὰ 3 μ. μινθόλης. Ὑγρὸν ἄχρουν ἀρωματικῶς ὄζον, σχεδὸν ἀδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν γλυκερίνην, εὐδιάλυτον εἰς τὴν ἀλκοόλην, τὸν αἰθέρα καὶ τὸ χλωροφόρμιον. Λόγῳ τῶν ἰσχυρῶν αὐτῆς ἀντισηπτικῶν καὶ ἀναλγητικῶν ἰδιοτήτων χρησιμοποιεῖται εἰς πυκνὰ διαλύματα ἐπὶ πληγῶν ἐξ ἐγκαυμάτων, εἰς ἀραιὰ δὲ εἰς ὀδοντοπλύματα. Μῖγμα αὐτῆς 3—5° μετὰ θερμοῦ ὕδατος δύναται νὰ χρησιμεύσῃ καὶ διὰ μικρὰς ἐπεμβάσεις ὡς τοπικὸν ἀναισθητικόν. Κ. Γ. Μ.

**Μίνια** *[Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὴ πόλις τῆς Ἄνω Αἰγύπτου. Κάτ. 30.000. Ἔχει ἀξιόλογον ἑλληνικὴν κοινότητα μετὰ σχολῆς μικτῆς καὶ ναοῦ τοῦ Τιμίου Προδρόμου. Ἐν αὐτῇ ἑδρεύει ὁ μητροπολίτης Πτολεμαΐδος. Εἶναι ἡ ἀρχαία *Χιβονοῦ.* Γ. Λ. Α.

**Μινιάκ** (Mignac). Γάλλος φιλέλλην, λοχαγὸς τῶν οὐσσάρων τοῦ στρατοῦ τοῦ Ναπολέοντος, κατελθὼν εἰς τὴν Ἑλλάδα μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Ἐπαναστάσεως καὶ καταταχθεὶς εἰς τὸ σῶμα τῶν φιλελλήνων τοῦ στρατηγοῦ Νόρμαν. Φονεύσας ἐν μονομαχίᾳ τὸν Γερμανὸν ὑπολοχαγὸν Χόβε, εἶχε καταστῇ ἀντικείμενον περιφρονήσεως καὶ ἀποστροφῆς δι᾽ ὅλους τοὺς ἐν Ἑλλάδι Γερμανούς. Κατὰ τὴν φονικὴν ὅμως μάχην τοῦ Πέτα ἐθαυμάσθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του. Τραυματισθεὶς κατὰ τὴν προέλασιν τῶν Τούρκων εἰς τὸν πόδα, ἔστη στηρίζων τὰ νῶτα ἐπὶ ἑνὸς δένδρου καὶ ἀντεμετώπισεν ἐπὶ μακρὸν τοὺς ἀντιπάλους του, μέχρις ὅτου, θραυσθείσης τῆς σπάθης του, ἐπλήγη ἐκ τῶν ὄπισθεν καὶ κατέπεσε νεκρός. Χ. Δ.

**Μινιάρ** (Mignard), ***Νικόλαος.*** Γάλλος ζωγράφος καὶ χαλκογράφος (1606—1668). Ἐσπούδασε κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ἐν τῇ γενετείρᾳ του πόλει Troyes, μετὰ ταῦτα δ᾽ ἐν Φονταινεμπλώ. Βραδύτερον μετέβη εἰς Λυών, καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ρώμην. Ἐνταῦθα παρέμεινεν ἐπὶ διετίαν, εἶτα δ᾽ ἐγκατεστάθη εἰς Ἀβινιόν, τῷ δὲ 1660 μετέβη εἰς Παρισίους, κατὰ πρόσκλησιν Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ΄, καὶ ἐξετέλεσε τὰς προσωπογραφίας τῶν μελῶν τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας καὶ μεγιστάνων τῆς αὐλῆς. Ἐπὶ πλέον ἐξετέλεσε, διαταγῇ τοῦ Λουδοβίκου, διακοσμήσεις ἐν τοῖς ἀνακτόροις τοῦ Κεραμεικοῦ. Τῷ 1663 ὠνομάσθη μέλος καὶ τῷ 1664 καθηγητὴς τῆς ἐν Παρισίοις σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται αἱ προσωπογραφίαι τοῦ δουκὸς Le Harcourt, «Ἡ ἁγία οἰκογένεια» καὶ «Ἡ μεταφορὰ τοῦ σταυροῦ». Ι. Μ. Π.

—**Μινιάρ** (Mignard), ***Παῦλος.*** Γάλλος ζωγράφος (1639—1691), δευτερότοκος υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Διέμεινεν ἐπὶ μακρὸν ἐργαζόμενος ἐν Ἀγγλίᾳ. Τῷ 1672 ἐγένετο μέλος τῆς παρισινῆς Ἀκαδημίας τῆς ζωγραφικῆς. Ι. Μ. Π.

— **Μινιάρ** (Mignard), ***Πέτρος.*** Γάλλος ζωγράφος (1610—1695). Κατ᾽ ἀρχὰς ἐσπούδασεν εἰς Bourges καὶ εἰς τὸ Fontainebleau, μετὰ ταῦτα δ᾽ εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ ὀνομαστοτάτου κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους καλλιτέχνου Σίμωνος Βουέ, τοῦ ὁποίου τάχιστα ἐκέρδισε τὴν εὔνοιαν καὶ τὴν ἀγάπην. Ἐνῷ δὲ ὁ Βουὲ ἐσκέπτετο νὰ τὸν καταστήσῃ γαμβρόν του καὶ νὰ τὸν ἐγκαταστήσῃ ὁριστικῶς πλησίον του, ὁ Μινιὰρ τρέφων ἄλλα σχέδια ἀνεχώρησε τῷ 1635 εἰς Ρώμην, ἔνθα συνήντησε τὸν παλαιὸν συμμαθητήν του Ντυφρενουᾶ καὶ μετέβη μετ᾽ αὐτοῦ εἰς Βενετίαν, ὅπου ἤρχισε νὰ ἐκτελῇ τὴν σειρὰν ἐκείνην τῶν «Παρθένων», αἵτινες κατέστησαν γνωσταὶ ὑπὸ τὴν ἐπωνυμίαν «mignardes». Ὁ Μινιὰρ ἐπεσκέφθη πλείστας πόλεις τῆς Ἰταλίας, ἐν αἷς τὴν Βολωνίαν, τὴν Πάρμαν, τὴν Μάντουαν, τὴν Μοδέναν, παρέμεινεν ὅμως κατὰ τὸ πλεῖστον ἐν Ρώμῃ, ἔνθα ἀπέκτησεν ὑψηλὰς γνωριμίας καὶ ἐπεφορτίσθη μὲ σπουδαίας παραγγελίας. Μεταξὺ ἄλλων ἐξετέλεσε τὰς προσωπογραφίας τῆς οἰκογενείας τοῦ ἐκεῖ πρέσβεως τῆς Γαλλίας de Lionne, εἶτα δὲ τῶν παπῶν Οὐρβανοῦ τοῦ Η΄, Ἰννοκεντίου τοῦ Ι΄ καὶ Ἀλεξάνδρου τοῦ Ζ΄. Ἐν Ρώμῃ εὑρισκόμενος ἐξεπόνησεν ἐπὶ πλέον, χάριν τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ Ρισελιέ, καρδιναλίου τῆς Λυών, ἀντίγραφα τῶν διακοσμήσεων τοῦ Ἀννίβα Καρράτσι ἐν τῷ Φαρνεσιανῷ παλατίῳ. Μετὰ εἰκοσιτετραετῆ διαμονὴν ἐν Ἰταλίᾳ, ὁ Μινιὰρ ἀνεχώρησε διὰ Παρισίους, ἀλλ᾽ ἐσταμάτησεν ἐν Ἀβινιόν, ὅπου εὑρίσκετο ὁ ἀδελφός του Νικόλαος. Ἀσθενήσας ἐπικινδύνως ἠναγκάσθη νὰ παρατείνῃ τὴν ἐνταῦθα διαμονήν του. Κατὰ τὸ διάστημα αὐτὸ ἐξετέλεσε τὸν «Ἅγιον Βερὰν καταβάλλοντα τὸν δράκοντα» καὶ συνηντήθη διὰ πρώτην φορὰν μὲ τὸν Μολιέρον. Ἀναρρώσας τελείως κατέλιπε τὴν Ἀβινιὸν καὶ μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐξετέλεσε τὴν προσωπογραφίαν Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ΄, ἥτις περιέβαλε τὸ ὄνομά του διὰ λαμπρᾶς αἴγλης. Ἡ βασιλομήτωρ ἔσπευσε νὰ τὸν ὀνομάσῃ ἐπίσημον ζωγράφον της, τοῦ ἀνέθηκε δὲ τὴν διακόσμησιν τοῦ θόλου τοῦ Val-de-Grâce· τὴν διακόσμησιν ταύτην, ἣν ὁ Μινιὰρ ἐξετέλεσε τῇ βοηθείᾳ τοῦ Ντυφρενουᾶ, ὕμνησε δι᾽ ὡραίων στίχων ὁ Μολιέρος. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ὁ καλλιτέχνης οὗτος κατέστη διάσημος. Τὰ ἐξοχώτερα μέλη τῆς παρισινῆς ἀριστοκρατίας τοῦ παρήγγειλαν τὰς προσωπογραφίας των. Ἀνέλαβε τὴν διακόσμησιν τῶν μικρῶν διαμερισμάτων τῶν Βερσαλλιῶν, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ Λεμπρέν, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν ἀπηνὴς ἀντίπαλος, ὠνομάσθη διαδοχικῶς ἰδιαίτερος ζωγράφος τοῦ βασιλέως καὶ διευθυντὴς τῆς γοβελινείου ταπητουργίας, ἐν μιᾷ δ᾽ ἡμέρᾳ κατέλαβεν ἅπαντα τὰ ἐν τῇ ἀκαδημίᾳ τῆς ζωγραφικῆς ἀξιώματα, ἀνυψωθεὶς ἀπὸ ἁπλοῦ μέλους εἰς διευθυντὴν ταύτης. Ὑπῆρξε παραγωγικώτατος. Ἀπέθανε πάμπλουτος καὶ πλήρης δόξης, ἥτις ξενίζει σήμερον τοὺς μελετῶντας τὸ ἔργον. Πράγματι, ὁ Μινιάρ, παρά τινας ἀρετάς του, παρά τινα ἐλαφρὰν χάριν καὶ γλυκύτητα, τὴν ὁποίαν διαχέει εἴς τινα ἔργα του, εἶναι ξηρός, συμβατικὸς καὶ ἄνευ ζωῆς. Μολονότι ἐκαλλιέργησε διαδοχικῶς πλείστους κλάδους τῆς ζωγραφικῆς, ἀπὸ τῶν θρησκευτικῶν σκηνῶν μέχρι τῶν προσωπογραφιῶν, δὲν κατώρθωσεν ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ν᾽ ἀρθῇ ἄνω τοῦ ἐπιπέδου ἑνὸς δεξιοτέχνου, ἐνῷ ἡ ἐπίδρασις κακῶν ἰταλικῶν σχολῶν εἶναι ἱκανῶς ἐμφανής. Μεταξὺ τῶν πολυπληθῶν ἔργων, ἅτινα κατέλιπε, ἀναφέρομεν ἐνταῦθα τὰ ἀκόλουθα: «Ἡ Παρθένος μὲ τὴν σταφυλήν», «Ὁ Ἰησοῦς ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ Γολγοθᾶ», «Ἴδε ὁ ἄνθρωπος», «Ἡ ἀπολοφυρομένη Παρθένος», «Ὁ ἅγιος Λουκᾶς ζωγραφῶν τὴν Παρθένον», «Ἡ ἁγία Καικιλία», «Ἡ πίστις», «Ἡ ἐλπίς», «Ὁ Ποσειδῶν προσφέρων τὰ πλούτη του εἰς τὴν Γαλλίαν», προσωπογραφίαι τοῦ δελφίνου, τῆς συζύγου του καὶ τῶν τέκνων του, τῆς κυρίας ντε Μαιντνόν, τοῦ Πέτρου Μινιὰρ (Λοῦβρον)· «Ὁ Βάκχος, εἷς ποταμὸς καὶ μία ναϊὰς» (Ἀμιένη)· «Δύο παιδία θωπεύοντα ἀμνόν», προσωπογραφίαι (Ἀβινιόν)· «Τὸ ἔαρ», «Τὸ φθινόπωρον», «Μία κυρία τῆς αὐλῆς» (Μπεζανσόν)· «Προσωπογραφία Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ΄», «Προσωπογραφία ἀγνώστου» (Μπορντώ)· «Ἡ Παρθένος καὶ ὁ Ἰησοῦς» (Μόναχον)· «Ἅγιος Ἀντώνιος ὁ ἐρημίτης», «Ἡ ἁγία οἰκογένεια» (Βιέννη). Ι. Μ. Π.

—**Μινιάρ** (Mignard), ***Πέτρος.*** Γάλλος ζωγράφος (1638—1725), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ ἐπισήμου ζωγράφου τῆς βασιλίσσης Μαρίας-Θηρεσίας καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς παρισινῆς Ἀκαδημίας τῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Ι. Μ. Π.

Digitized by Google

**μινιατούρα** (ἡ) (γαλλ. miniature, ἰταλ. miniatura)· ἡ μικρογραφία, ἡ μινιογραφία.

**Μινιὲ** (Mignet), ***Φραγκῖσκος - Αὔγουστος-Μάριος***. Γάλλος ἱστορικὸς (1796—1884). Ἐσπούδασε νομικὰ εἰς τὴν γενέθλιον πόλιν του, τὸ Αἴξ, μετὰ τοῦ Θιέρσου, μεθ' οὗ συνεδέθη διὰ διαρκοῦς φιλίας. Μεταβὰς εἰς Παρισίους διεκρίθη ὡς δημοσιογράφος φιλελευθέρων ἀρχῶν καὶ κυρίως διὰ τὰς ἐπιθέσεις του ἐναντίον τῶν Βουρβώνων. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 διωρίσθη ἀρχειοφύλαξ τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ ἔκτοτε ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας. Ἐγένετο ἰσόβιος γραμματεὺς τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν, καὶ κατόπιν μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Νεώτατος ἐδημοσίευσε τὸ «Ἐγκώμιον τοῦ Καρόλου» καὶ τὸ «Δοκίμιον περὶ τῶν θεσμῶν τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου», βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Κυρίως ὅμως διεκρίθη διὰ τῆς δημοσιεύσεως τῆς «Ἱστορίας τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως» (1824), ἔργου συνοπτικοῦ ἀλλὰ διακρινομένου διὰ τὴν βαθύτητα καὶ ἀκρίβειαν τῆς παρατηρήσεως. Κατόπιν ἀφωσιώθη εἰς τὴν μελέτην τοῦ ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἐδημοσίευσε: «Διαπραγματεύσεις σχετικὰς μὲ τὴν διαδοχὴν τῆς Ἱσπανίας» (1836—1844), «Ἀντώνιος Πέρες καὶ Φίλιππος Β'» (1845), «Μαρία Στουάρτ» (1851), «Κάρολος Ε'» (1854), «Ἀντιζηλία τοῦ Φραγκίσκου Α' καὶ Καρόλου Ε'» (1875), διαφόρους συλλογὰς «Ἱστορικῶν ἐγκωμίων» καὶ βιογραφίας τῶν συγχρόνων του. Ι. Μ. Π.

**Μίνικο** *[Γεωγρ.]*. Νησίον τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ ἀνοίγματος τοῦ κόλπου τῆς Σύμης (πλάτ. 36° 36' 40" Β., μήκ. 28° 02' 15" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: Gulf of Kos, Doris and Symi), 2 1/2 μίλλ. Α. ΒΑ. τοῦ ἀκρωτηρίου Νοριὰ ἢ Βολπέ. Σ. Ε. Λ.

**μίνιμουμ** (λ. λατ. minimum, οὐδ. ὑπερθ. τοῦ parvus=μικρός)· τὸ ἐλάχιστον, τὸ ἐλάχιστον δυνατὸν ὅριον «τὸ μίνιμουμ τῆς παραγωγῆς», «κάθε ἄνθρωπος ἔχει ἕνα μίνιμουμ ἀντοχῆς», ἀντίθ. *μάξιμουμ* (maximum), «τὸ μίνιμουμ καὶ τὸ μάξιμουμ τῶν διεκδικήσεων τῆς ἐργατικῆς τάξεως».

**μινιογραφία** (ἡ). Ὁ ὅρος οὗτος χρησιμοποιεῖται ἐνίοτε ἀντὶ τοῦ ὅρου *μιλτογραφία*, ἐξ ἀφορμῆς τοῦ γεγονότος ὅτι πρὸς γραφήν, κυρίως δὲ πρὸς διακόσμησιν χειρογράφων μετεχειρίζοντο ἄλλοτε ὡς χρωστικὴν οὐσίαν τὸ μίνιον, ὅπερ ἀποδίδει λαμπρὸν ἐρυθρὸν καὶ ἐλαφρῶς πορτοκαλλόχρουν χρῶμα. Ι. Μ. Π.

**μίνιον** (τό), ἢ *μίνιον μολύβδου*, ἢ *κιννάβαρι μολύβδου* ἢ *ἐρυθρὸν τοῦ μολύβδου*, ἢ *ἐρυθρὸν ὀξείδιον τοῦ μολύβδου* *[Χημ.]*. Ἐρυθρὸν χρῶμα παραγόμενον δι' ἐπανειλημμένης πυρώσεως ἐν τῷ ἀέρι καὶ εἰς θερμοκρασίαν 450° περίπου λεπτότατα λειοτριβημένου ὀξειδίου τοῦ μολύβδου (τοῦ Massicot καὶ ὄχι τοῦ λιθαργύρου). Ἡ πύρωσις συνεχίζεται μέχρις ὅτου τὸ κίτρινον ὀξείδιον τοῦ μολύβδου μετατραπῇ εἰς ζωηρὰν ἐρυθρὰν κόνιν. Τὸ μίνιον τοῦ μολύβδου (τὸ σύνηθες, δηλαδή, τὸ κοινὸν μίνιον) δὲν πρέπει νὰ συγχέηται πρὸς τὸ μίνιον τοῦ σιδήρου, τὸ ὁποῖον εἶναι ὀξείδιον τοῦ σιδήρου (αἱματίτης). Ἐξαιρετικὴ καὶ καλὴ ποιότης μινίου (τὸ mine orange ἢ rouge de Paris) παρασκευάζεται διὰ πυρώσεως λευκοῦ τοῦ μολύβδου ἢ ἀνθρακικοῦ μολύβδου. Τὸ μίνιον εἶναι βαρεία, ἐρυθρά, εἰς τὸ ὕδωρ ἀδιάλυτος κόνις καὶ ἀποτελεῖται χημικῶς ἐκ μείγματος ὀξειδίου τοῦ μολύβδου καὶ ὑπεροξειδίου τοῦ μολύβδου, τὸ ὁποῖον δύναται νὰ θεωρηθῇ καὶ ὡς ἅλας τοῦ ὑποθετικοῦ ὀρθομολυβδικοῦ ὀξέος, $Pb_3O_4$ καὶ περιέχει 90,7 % μόλυβδον καὶ 9,3 % ὀξυγόνον. Κατὰ τὴν περίχυσιν διὰ νιτρικοῦ ὀξέος τὸ μίνιον χρώννυται φαιόν, ἀποχωριζομένου τοῦ ὑπεροξειδίου τοῦ μολύβδου καὶ συγχρόνως σχηματιζομένου διαλυτοῦ νιτρικοῦ μολύβδου. Ἀντιθέτως διὰ νιτρικοῦ ὀξέος παρουσίᾳ σακχάρου ἢ ὀξαλικοῦ ὀξέος τὸ μίνιον διαλύεται τελείως. Τὸ μίνιον χρησιμοποιεῖται ἐν ἀναμείξει μετὰ λινελαίου πρὸς συγκόλλησιν μετάλλων μετ' ὑάλου, πρὸς ἔμφραξιν ρωγμῶν ὡς καὶ πρὸς στεγανοποίησιν συνδέσμων σιδηρῶν σωλήνων. Τὸ μίνιον εἶναι δηλητηριῶδες, ὡς ὅλα τὰ ἅλατα τοῦ μολύβδου, καὶ δέον νὰ χρησιμοποιῆται προσεκτικῶς. Σ. Γ.

— *[Τεχν.]* Τὸ *μίνιον* χρησιμοποιεῖται ὡς ὑπόστρωμα λόγῳ τῆς μεγάλης καλυπτικῆς ἰδιότητός του, ἰδίως κατὰ τὸν ἐλαιοχρωματισμὸν σιδήρων ἢ καὶ ξύλων, διὰ νὰ προφυλαχθοῦν ἀπὸ τὴν ὀξείδωσιν. Τὸ ἐρυθρὸν χρῶμά του εἶναι σκοτεινότερον ἢ φωτεινότερον, ἀναλόγως τοῦ τρόπου τῆς παρασκευῆς του. Τὸ πορτοκαλλόχρουν μίνιον, ὀνομαζόμενον ὑπὸ τῶν ἐλαιοχρωματιστῶν *παρισινόν*, ἔχει μεγαλυτέραν καλυπτικὴν δύναμιν. Μινίου χρῆσις γίνεται εἰς τὴν ὑελουργίαν ὡς καὶ εἰς τὴν κεραμικὴν διὰ τὴν κατασκευὴν τῶν ἐπιχρισμάτων. Οἱ ζωγράφοι ἀποφεύγουν τὴν χρῆσιν τοῦ μινίου εἰς τοὺς πίνακάς των, διότι εἰς ἐλευθέραν ἐπιφάνειαν ὀξειδοῦται λευκαινόμενον, ὀξειδώνει δὲ καὶ τὰ ἄλλα μεταλλικὰ χρώματα. Χρῆσις τοῦ μινίου δὲν γίνεται εἰς τὰς νωπογραφίας (fresca), οὔτε εἰς τοὺς ὑδροχρωματισμούς, διότι δὲν ἑνοῦται μὲ τὴν ἄσβεστον. Σ. Ξ.

**μινιὸν** (γαλλ. mignon, —onne ἐκ τοῦ κελτ. min =μικρόν), λεπτός, μικροκαμωμένος, εὐπαθής.

—**«Μινιὸν»** (Mignon). Μελόδραμα τοῦ Ἀμβρ. Τομὰ εἰς 3 πράξεις, ἐπὶ λιμπρέττου τῶν Μπαρμπιὲ καὶ Καρρέ, ἀναβιβασθὲν τὸ πρῶτον τῷ 1866 ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Κωμικοῦ μελοδράματος τῶν Παρισίων. Ἡ ὑπόθεσις τοῦ ἔργου, ληφθεῖσα ἐκ τοῦ «Βίλχελμ Μάϊστερ» τοῦ Γκαῖτε, παρουσιάζει τὴν Μινιὸν καταφθάνουσαν μετὰ τῶν ἀτσιγγάνων καὶ ἀρνουμένην νὰ χορεύσῃ τὸν χορὸν τῶν αὐγῶν. Ὁ κύριός της θέλει νὰ τὴν τιμωρήσῃ δι' αὐτὸ καὶ ἑτοιμάζεται νὰ τὴν κτυπήσῃ, ὁπότε ἐπεμβαίνει ὁ Βίλχελμ Μάϊστερ, ὅστις καὶ ἐξαγοράζει τὴν μικράν. Εἰς τὴν δευτέραν πρᾶξιν εὑρισκόμεθα εἰς τὴν ἔπαυλιν, ὅπου πρόκειται οἱ ἠθοποιοὶ νὰ παραστήσωσιν. Ἡ πρωταγωνίστρια Φιλίνα, ἡ ὁποία θέλει νὰ προσελκύσῃ τὸν Βίλχελμ Μάϊστερ, ἀντιλαμβάνεται ὅτι εἰς τὴν ψυχὴν τῆς Μινιὸν ἔχει ἐπίσης γεννηθῆ μυστικὸν αἴσθημα πρὸς τὸν ἐλευθερωτήν της καὶ τὴν ἐμπαίζει, μέχρι τοῦ σημείου ὥστε ἐκείνη ζητεῖ ν' αὐτοκτονήσῃ. Σῴζεται ὅμως ἀπὸ τὸν Λοτάριον, ἕνα γέροντα ἡμιπαράφρονα, ὅστις πλανᾶται ἀνὰ τὸν κόσμον εἰς ἀναζήτησιν τῆς κόρης του, ἧς ἀπώλεσε τὰ ἴχνη. Ὁ Λοτάριος, διὰ νὰ ἐκδικηθῇ τὴν μικρὰν διὰ τοὺς ἐμπαιγμοὺς τῆς Φιλίνας, θέτει πῦρ εἰς τὴν αἴθουσαν ὅπου λαμβάνει χώραν ἡ παράστασις. Ἡ Μινιὸν κινδυνεύει καὶ αὐτὴ νὰ χαθῇ, σῴζεται ὅμως ἀπὸ τὸν Βίλχελμ Μάϊστερ, ὅστις εἰσορμᾷ εἰς τὰς φλόγας. Κατὰ τὴν τρίτην πρᾶξιν ὁ Βίλχελμ Μάϊστερ ἔχει ὁδηγήσει τὴν Μινιὸν εἰς Ἰταλίαν, ἵνα ἀναρρώσῃ. Ὁ Λοτάριος τοὺς ἀκολουθεῖ καὶ εἰς μίαν στιγμὴν ἀνακτᾷ τὸ λογικόν του καὶ ἀναγνωρίζει εἰς τὸ πρόσωπο τῆς Μινιὸν τὴν κόρην ἣν ἀνεζήτει. Ἐξ ἄλλου ὁ Βίλχελμ ἀντιλαμβάνεται τὸ πρὸς αὐτὸν αἴσθημα τῆς νεαρᾶς κόρης καὶ τὸ ἔργον τελειώνει διὰ τῶν εὐτυχῶν γάμων τῶν ἡρώων.

Ἡ «Μινιὸν» ὑπῆρξεν ἡ μεγαλυτέρα ἐπιτυχία τόσον τοῦ Τομὰ ὅσον καὶ τοῦ Κωμικοῦ μελοδράματος τῶν Παρισίων. Ἀναβιβασθεῖσα τῷ 1866, ἠρίθμει ἤδη τῷ 1894 τὴν χιλιοστὴν παράστασιν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου τούτου. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ὡραίων σελίδων τοῦ ἔργου τούτου περίφημος ἔχει παραμείνει ἡ ᾠδία: «Ξεύρεις τὴν χώραν, ὅπου ἀνθεῖ ἡ πορτοκαλλέα». Γ. Σ.

**Μίνιος** (πορτογ. Minho, προφ. *Μίνιου*, ἱσπ. Miño, προφ. *Μίνιο*) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰβηρικῆς χερσονήσου. Πηγάζων ἐκ τῶν βορειοδυτικῶν κλιτύων τῶν Κανταβρικῶν ὀρέων, ῥέει πρὸς ΝΔ. Χρησιμεύει κατὰ τὸν κάτω αὐτοῦ ροῦν ὡς σύνορον τῆς Ἱσπανίας καὶ Πορτογαλίας καὶ ἐκβάλλει κατόπιν εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανόν. Ἔχει μῆκος 275 χλμ. καὶ εἶναι πλωτὸς μόνον ὑπὸ μικρῶν πλοίων ἐπὶ μήκους 50 χλμ. μέχρι τῆς Σαλβατιέρρα. Ἐκ τῶν παραποτάμων του σπουδαιότερος εἶναι ὁ *Σίλ*. Τὸ βορειότατον τμῆμα τῆς Πορτογαλίας ἀποτελεῖ τὴν ὁμώνυμον ἀρχαίαν ἐπαρχίαν (κάτ. 1.304.461), ἧς πρωτεύουσα εἶναι τὸ *Πόρτο*. Γ. Ι. Β.

**μινίσπερμον** (τὸ) (Minispermum) *[Βοτ.]* βλ. *μηνίσπερμον*.

**μινιστέριον** (τό)· τὸ ὑπουργεῖον (κατὰ τοὺς πρώτους χρόνους τοῦ ἑλληνικοῦ κράτους, ἐκ τοῦ λατ. ministerium).

**μινίστρ, *χάρτης*** — (papier ministre). Χάρτης ἐπιστολικός, ἐκλεκτῆς ποιότητος, χρώματος λευκοῦ καὶ σχήματος πολὺ μεγαλυτέρου τοῦ συνήθους ἐπιστολικοῦ χάρτου. Ἡ χρῆσις αὐτοῦ ἐπιβάλλεται, ὅταν ἡ ἐπιστολὴ ἀπευθύνεται εἰς ἐπίσημα πρόσωπα. Ὁ χάρτης αὐτὸς διπλώνεται εἰς δύο μόνον, τιθέμενος ἐντὸς μεγάλου φακέλου. Τ. Δ.

**μινίστρος** (ὁ) (λατιν. minister, γαλλ. ministre)· ὁ ὑπουργός (λέξις πεπαλαιωμένη).

**Μὶν-Κιάνγκ** (Min-Kiang) *[Γεωγρ.]*. Δύο ποταμοὶ τῆς Κίνας: —1) Ὁ πρῶτος πηγάζει ἐκ τῶν ὀρέων Γιούνγκ-Λίνγκ, ῥέει μὲ κατεύθυνσιν πρὸς Δ. ΝΔ., διασχίζει τὴν ἐπαρχίαν Φοὺ-Κιὲν καὶ ἐκβάλλει μετὰ ροῦν 800 χλμ. παρὰ τὴν πόλιν Φοὺ-Τσέου, παρὰ τὴν Β. ἔξοδον τοῦ στενοῦ τῆς Φορμόζας. Ἐπὶ μῆκος 30 χλμ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν του εἶναι πλωτὸς εἰς μεγάλα ἀτμόπλοια. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ ἐκβολή του φράσσεται ὑπὸ προσχωσιγενῶν ὑφάλων, ὁ εἴσπλους δυσχεραίνεται κατὰ τὴν ἀμπώτιδα. Ὁ Γάλλος ναύαρχος Κουρμπέ, εἰσπλεύσας τῷ 1884 τὸν ποταμόν, ἐβομβάρδισε τὴν πόλιν Φοὺ-Τσέου. Πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Μὶν-Κιάνγκ ἀναδύεται ἡ μικρὰ νησὶς Βοὺ-φού.

—2) Ἀριστερὸς παραπόταμος τοῦ ἄνω ροῦ τοῦ μεγίστου τῶν σινικῶν ποταμῶν Γιάνγκ-τσὲ-Κιάνγκ (Κυανοῦ), διαρρέων ἀπὸ Β. πρὸς Ν. τὴν μεγάλην ἐπαρχίαν τῆς κεντρικῆς Κίνας Σὲ-Τσουὲν καὶ συμβάλλων παρὰ τὴν πόλιν Σουΐ-Τσού. Ὡς ἐκ τοῦ μεγέθους αὐτοῦ θεωρεῖται ὑπὸ τῶν Κινέζων ὡς ὁ κύριος ἄνω βραχίων τοῦ Γιάνγκ-τσέ. Χ. Δ.

**Μινκόφσκι** (Minkowski), ***Ἑρμάνος***. Γερμανὸς μαθηματικὸς (1864—1909), διδάξας ἐν Καινιξβέργῃ, Γοττίγκῃ καὶ Ζυρίχῃ. Ἐδημοσίευσεν: «Οἱ κατὰ προσέγγισιν ἀριθμοὶ τοῦ Διοφάντου. Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν θεωρίαν τῶν ἀριθμῶν» (1907), «Γεωμετρία τῶν ἀριθμῶν» (1896) κλπ. —Ω.

—**Μινκόφσκι** (Minkowski), ***Ὀσκάρ***. Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Alexoten παρὰ τὸ Κόβνον τῆς Ρωσίας τῷ 1858. Μαθητὴς καὶ βοηθὸς τοῦ Naunyn, ἐγένετο τῷ 1891 ἔκτακτος καθηγητὴς εἰς Στρασβοῦργον καὶ τῷ 1900 ἐκλήθη διευθυντὴς τοῦ παθολογικοῦ τμήματος τοῦ δημοτικοῦ νοσοκομείου Κολωνίας. Συνειργάσθη εἰς τὰ συγγράμματα διαιτητικῆς, παθολογίας καὶ θεραπευτικῆς τῶν Leyden, Nothnagel, Liebreich καὶ Lubarsch. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρομεν τὰ ἑξῆς: «Einfluss der Leberextirpation auf den Stofwechsel» (1885), «Untersuchungen über den Diabetes mellitus nach Extirpation des Pankreas» (1893), «Untersuchungen zur Physiologie und Pathologie der Harnsäure» (1898). Ἡ μέθοδος Naunyn-Minkowski ἀφορᾷ τὴν ἐξερεύνησιν τοῦ νεφροῦ διὰ διατάσεως τοῦ κόλου ὑπὸ ἀεριούχου διακλυσμοῦ. Ο. Ρ.

**Μίνκωφ**, ***Σβετοσλάβ***. Σύγχρονος Βούλγαρος διηγηματογράφος. Ἐξέδωκε συλλογὴν διηγημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ γαλάζια χρυσάνθεμα» (1923) καὶ «Ὡρολόγι» (1924). Διακρίνεται διὰ τὴν ζωηρὰν φαντασίαν του. Τ. Β.

**μινμπάρ**, καὶ ***μινμπέρ***. Ἄμβων εἰς τὰ μουσουλμανικὰ τεμένη, ὅπου ἀνερχόμενος δι' ὀλίγων βαθμίδων ὁ ἰμάμης κατὰ τὰς Παρασκευὰς καὶ τὰς ἑορτὰς τῶν μπαϊραμίων ἀναγινώσκει τὸν χουτμπέ, ἤτοι διάφορα ῥητὰ τοῦ Κορανίου μετὰ θρησκευτικῶν παραινέσεων, καὶ τὴν ὑπὲρ τοῦ ἡγεμόνος τῆς χώρας (κυρίως τοῦ χαλίφου) προσευχήν. Ν. Μ.

**Μιννάγαρα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν ΒΑ. ἐντὸς τοῦ Γάγγου Ἰνδιῶν, ἐν τῇ Ἰνδοσκυθίᾳ, ἐπὶ τοῦ δέλτα τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, πρὸς νότον τῶν Πατάλων (νῦν Brahmanabat), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου καὶ ἄλλων. Ἦτο σημαντικώτατον κέντρον ἐμπορίου, διατελέσασα πρωτεύουσα τοῦ Ἰνδοπάρθου βασιλέως Γονδοφάρη κατὰ τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα. Ἡ θέσις αὐτῆς δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένη, ταυτίζεται δὲ ὑπό τινων τῶν νεωτέρων πρὸς τὴν νῦν Tatta. Α. Θ. Σ.

**Μιννεάπολις** (Minneapolis, προφ. *Μινιάπολις*) *[Γεωγρ.]*. Ἡ μεγίστη τῶν πόλεων τῆς πολιτείας Μιννεσότα ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ συμπολιτείᾳ, πρωτεύουσα τῆς κομητείας Χέννεπιν. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μισσισσιπῆ μικρὸν μετὰ τοὺς καταρράκτας τοῦ Σαὶντ Ἄντονυ καὶ κατέναντι τῆς πόλεως Ἅγιος Παῦλος (Saint Paul), πρωτευούσης τῆς πολιτείας, ἀποτελοῦσα σήμερον μετ' αὐτῆς ὡς ἐκ τῆς μεγάλης γειτονίας μίαν πόλιν. Κάτ. (1928) 455.900, καταγόμενοι ἐξ ὅλων σχεδὸν τῶν χωρῶν τῆς Εὐρώπης, ἰδίως δὲ Σουηδοί, Νορβηγοὶ καὶ Γερμανοί. Ἡ πόλις εἶναι ἐκτισμένη εἰς ὕψος 270 περίπου μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν καὶ ἔχει ὡραίαν ρυμοτομίαν, κατὰ τὸ σύστημα τῶν διασταυρουμένων καθέτων καὶ παραλλήλων ὁδῶν, μὲ πολλὰς εὐρείας δενδροφύτους λεωφόρους καὶ ἐκτεταμένα πάρκα, ὧν μεγαλύτερον τὸ Minnehaha Park ἐκτάσεως 3.800 πλέθρων. Περὶ τὴν πόλιν καὶ ἐντὸς αὐτῆς εὑρίσκονται πλεῖσται γραφικαὶ μικραὶ λίμναι. Οἱ μικροὶ καταρράκται τοῦ Minnehaha Park ἐγένοντο διεθνῶς γνωστοὶ διὰ τοῦ ὀνομαστοῦ «Ποιήματος τοῦ Χιαβάθα» τοῦ Λογκφέλλω. Ἐκ τῶν κτηρίων τῆς πόλεως διακρίνονται δύο καθεδρικοὶ ναοί, τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μιννεσότα, τὸ στάδιον, περιλαμβάνον 50.000 θεατῶν, ἡ σχολὴ τῶν Καλῶν τεχνῶν κλπ. Ὁ Μισσισσιπῆς, τοῦ ὁποίου τὸ πλάτος κυμαίνεται παρὰ τὴν Μιννεάπολιν περὶ τὰ 400 μ., εἶναι ἐζευγμένος δι' εἴκοσι γεφυρῶν, ὧν αἱ 8 τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν.

Πλεῖστα ἀνώτερα ἐκπαιδευτικὰ καὶ ἐπιστημονικὰ ἱδρύματα, φιλανθρωπικαὶ ὀργανώσεις καὶ ἄλλα πνευματικὰ κέντρα λειτουργοῦσιν ἐν τῇ πόλει. Ἀναφέρομεν μεταξὺ αὐτῶν τὸ πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1868 καὶ ἔχον σήμερον 11.477 φοιτητάς, ἡ σχολὴ φυσικῶν καὶ χειρουργῶν, ἡ ἰατρικὴ σχολή, τὰ ἀνώτερα ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα τῶν εἰς διαφόρους ἐθνότητας ἀνηκόντων κατοίκων τῆς πόλεως (Νορβηγῶν, Γερμανῶν κτλ.), ἡ σχολὴ μουσικῆς, τὸ ᾠδεῖον δραματικῆς τέχνης, ἡ δημοσία βιβλιοθήκη (180.000 τόμ.), ἡ ἀκαδημία τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, ἡ ἑταιρία τῶν καλῶν τεχνῶν. Ὡς συγκοινωνιακὸν κέντρον ἡ Μιννεάπολις εἶναι σπουδαιότατος κόμβος σιδηροδρομικῶν γραμμῶν πρὸς τὴν Μιλουώκη, τὸ Σικάγον καὶ τὰς λοιπὰς μεγάλας πόλεις τῶν πέριξ πολιτειῶν, ἔχει δὲ καὶ ἀξιόλογον κίνησιν τοῦ ποταμοῦ ναυτιλιακὴν κίνησιν. Ἡ ἐμπορικὴ καὶ βιομηχανικὴ κίνησις αὐτῆς εἶναι ἐργαστία. Τὴν πρώτην θέσιν κατέχει ἡ ἀλευροβιομηχανία, ἡ μεγαλυτέρα ἐν τῷ κόσμῳ. Ὑπάρχουσι ἐπίσης πλεῖστα μεγάλα πριονιστήρια, ἐργοστάσια εἰδῶν κιγγαλερίας, λινελαίου, τροφίμων, ἐνδυμάτων κτλ. Ἡ μεγάλη ἀνάπτυξις τῆς βιομηχανίας ὀφείλεται εἰς τὴν χρησιμοποίησιν τῆς κινη-

Digitized by Google

τηρίου δυνάμεως τῶν καταρρακτῶν τοῦ Σαὶν Ἄντονυ διὰ τεραστίων ἐγκαταστάσεων λειτουργουσῶν ἀπὸ τοῦ 1915. Κύριον εἶδος τοῦ ἐμπορίου εἶναι τὰ σιτηρά, πεντήκοντα δὲ τεράστιοι ἐκφορτωτῆ-σίτου λειτουργοῦσι πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον. Ἡ πόλις ἱδρύθη τῷ 1850 συγχρόνως μετὰ τοῦ Ἁγίου Παύλου εἰς ἀπόστασιν 16 χλμ. ἀπ' αὐτῆς. Χ. Δ.

**Μιννεζαΐνγκερ** (γερμ. Minnesaenger). Ὄνομα δι' οὗ ἐν Γερμανίᾳ ἐχαρακτήριζον κατὰ τὸν ΙΒ' καὶ ΙΓ' αἰῶνα τοὺς ποιητὰς-μουσικούς, κυρίως τοῦ ἔρωτος. Οἱ μιννεζαΐνγκερ εἶναι οἱ ἀντίστοιχοι τῶν τρουβαδούρων ἢ τῶν ραψῳδῶν τῆς Προβηγκίας καὶ τῆς ἄλλης δυτικῆς Εὐρώπης, τῶν ὁποίων τὸν λυρισμὸν φαίνεται ὅτι ἐμιμήθησαν. Ἔχει σωθῆ μέγας ἀριθμὸς τῶν ᾀσμάτων τῶν ἀοιδῶν τούτων, μετὰ τῆς ποιήσεως καὶ τῆς μουσικῆς των, ἧς ἡ μελέτη μόλις ἐπ' ἐσχάτων ἤρχισε νὰ συστηματοποιῆται. Τὰ ᾄσματα ταῦτα ἐξετελοῦντο συνοδείᾳ ἁρπανέττας ἢ βιέλλας καὶ εἶχον μεγάλην ρυθμικὴν ποικιλίαν. Τὰ ἀρχαιότερα ἐρωτικὰ ᾄσματα ἀπετελοῦντο ἐκ μιᾶς στροφῆς διαιρουμένης εἰς τρία μέρη, βραδύτερον δὲ ἐκ δύο ἢ περισσοτέρων στροφῶν. Εἴδη τοῦ ἐρωτικοῦ ᾄσματος εἶναι τὸ ᾆσμα τῆς ἡμέρας (Tagelied), διάλογος περιγράφων τὸν χωρισμὸν τῶν ἐρωτευμένων, τὰ ἀποφθέγματα (Spruch), ἡ ᾠδὴ (Leich) καὶ τὸ χωρικὸν ᾆσμα (höfische Dorfspoesie). Κατὰ τὴν παράδοσιν ἐλάμβανον συχνάκις ἀγῶνες μινναιζαΐνγκερ· εἷς τούτων φαίνεται ὅτι ὑπῆρξεν ὁ τῆς Βάρτμπουργκ, ὁ ἀπαθανατισθεὶς ὑπὸ τοῦ Βάγνερ ἐν τῷ «Τανχόϋζερ». Οἱ μιννεζαΐνγκερ ἦσαν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εὐγενεῖς, ἱππόται, ἐνίοτε δὲ καὶ βασιλεῖς. Οἱ γνωστότεροι ἐκ τούτων εἶναι οἱ: αὐτοκράτωρ Ἑρρῖκος ΣΤ' (ΙΒ' αἰών), δοὺξ Ἑρρῖκος Δ' τῆς Βρεσλαυΐας (ΙΓ' αἰών), ὁ βασιλεὺς Βέντσελ τῆς Βοημίας, ὁ Κονραδῖνος, Βάλτερ φὸν ντὲρ Φογκελβάϊντε, Ἑρρῖκος φὸν Μόρουνγκεν, Φρειδ. φὸν Χάουζεν. Σπέρφογκελ, Οὔλριχ φὸν Λίχτενσταϊν κτλ. Εἰδικὰς μελέτας ἐπὶ τῶν μιννεζαίνγκερ ἔχουν κάμει οἱ Παῦλος Ροῦνγκε καὶ Οὖγος Ρίμαν, ἐπὶ δὲ τοῦ συστήματος τῆς σημειογραφίας ἠσχολήθη ὁ Γεώργ. Μύνστερ. Γ. Σ.—Γ. Ι. Β.

**Μιννεσότα** (Minnesota, προφ. *Μιννισότα*) *[Γεωγραφ.]*. Μία τῶν 48 πολιτειῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὴν Βορειομερικανικὴν ὁμοσπονδίαν, κειμένη μεσογείως εἰς τὸ παρὰ τὰ Καναδικὰ σύνορα βόρειον τμῆμα τῆς χώρας, μεταξὺ τῶν παραλλήλων 43°30'—49° 23' 55" Β. πλάτους καὶ τῶν μεσημβρινῶν 89° 29—97° 15' Δ. μήκους Γκρήνουϊτς. Ὁρίζεται πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ Καναδᾶ (πολιτεῖαι Μανιτόμπα καὶ Ὀντάριο), πρὸς Α. ὑπὸ τῆς Οὐΐσκονσιν, πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Ἀϊόβα καὶ πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Βορείου καὶ Νοτίου Δακότας, διασχίζεται δὲ ἀπὸ Β. πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ ἄνω ροῦ τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ βρέχεται κατὰ τὸ ΒΑ. ἄκρον αὐτῆς ὑπὸ τῆς Ἄνω λίμνης (Superior). Ἡ ἔκτασίς της εἶναι 219.317 τετρ. χλμ., δηλαδὴ διπλασία τῆς Ἑλλάδος, ὁ δὲ πληθυσμὸς αὐτῆς 2.566.000 κατοίκων (ἀπογρ. 1930). Πρωτεύουσαν ἔχει τὸν *Ἅγιον Παῦλον* (κάτ. 271.200).

Τὸ ἔδαφος τῆς πολιτείας εἶναι πεδινὸν καὶ λοφῶδες, παρουσιάζον μέσον ὕψος 300 περίπου μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, ἡ δὲ ὑψηλοτέρα κορυφή του δὲν ὑπερβαίνει τὰ 520 μ. Μικρὰ ἔξαρσις τοῦ ἐδάφους, τὸ Missabey hills καὶ τὸ Heights of land, διαχωρίζει τὴν λεκάνην τοῦ Μισσισσιπῆ ἀπὸ τῆς τοῦ τοῦ Οὐΐνιπεγκ καὶ τῆς περιοχῆς τῶν μεγάλων λιμνῶν. Πρὸς Δ. δευτέρα λοφοειρά, *Μέγα δάσος*, καλουμένη, χωρίζει ἐπίσης τὰς λεκάνας τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ τοῦ παραποτάμου αὐτοῦ Μιννεσότα. Τὸ ΒΑ. τμῆμα τῆς πολιτείας καλύπτεται ὑπὸ δασῶν ἐκ κωνοφόρων δένδρων καὶ μεγάλης ἐκτάσεως. Πρὸς τὰ νότια δ' αὐτῆς ἄρχονται αἱ ἀπέραντοι στεππώδεις περιοχαὶ τῆς Β. Ἀμερικῆς, αἱ γνωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Πραιρὶ* (Prairie), ὅπου ἀκμάζει ἡ μεγάλη κατ' ἀγέλας κτηνοτροφία. Χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ ἀνὰ τὴν πολιτείαν ὁλόκληρον διασπορὰ πλήθους μικρῶν καὶ μεγάλων λιμνῶν, τῶν ὁποίων ὁ ἀριθμὸς ὑπολογίζεται εἰς 10.000 περίπου. Σπουδαιότεραι τούτων εἶναι ἡ *Λίμνη τῶν δασῶν* (Lake of the Woods), ἡ *Ρέϊνυ* καὶ ἡ τοῦ *Σταυροῦ* (Cross), παρὰ τὴν καναδικὴν μεθόριον, ἡ *Ἐρυθρὰ λίμνη* (Red Lake) ἐκχυνομένη εἰς τὸν Ἐρυθρὸν ποταμόν, ἡ *Αϊτάσκα* περὶ τὰς πηγὰς τοῦ Μισσισσιπῆ, αἱ ἄνευ ὁρατῆς ἐκροῆς λίμναι *Λῆτς* καὶ *Μάϊλλ* κλπ. Κύριοι ποταμοὶ τῆς πολιτείας εἶναι ὁ *Μισσισσιπῆς*, πηγάζων ἐντὸς τῆς Μινεσότας καὶ διασχίζων ὁλόκληρον τὸ ἔδαφός της ἀπὸ Β. πρὸς ΝΑ., ὁ παραπόταμος τούτου *Μινεσότα*, ἐξ οὗ ἔλαβε τὸ ὄνομα ἡ πολιτεία, ὁ *Ἐρυθρὸς* (Red) ποταμὸς καὶ ὁ *Ἅγιος Σταυρὸς* (Sainte Croix), ἅπαντες πλωτοί. Τὸ κλῖμα εἶναι ἐντελῶς ἠπειρωτικόν, δριμὺ κατὰ τὸν χειμῶνα, ὁπότε πήγνυνται αἱ λίμναι καὶ θερμὸν κατὰ τὸ θέρος. Ἡ μέση θερμοκρασία τοῦ Ἁγίου Παύλου, πρωτευούσης τῆς πολιτείας, κυμαίνεται εἰς τοὺς +6° Κελσίου μὲ ἀνωτάτην +38° καὶ κατωτάτην —30°. Χαρακτηριστικὸν εἶναι ὅτι ὁ Μισισσιπῆς εἰς τὸ πλάτος τῆς Βενετίας πήγνυται ἐπὶ 120—170 ἡμέρας κατ' ἔτος. Κύρια προϊόντα τῆς πολιτείας εἶναι τὰ γεωργικά, ἰδίᾳ δὲ ὁ ἀραβόσιτος, ὁ σῖτος καὶ ἡ βρόμη, εἰς τῶν ὁποίων τὴν καλλιέργειαν ἀπασχολοῦνται οἱ ἡμίσεις σχεδὸν τῶν κατοίκων (ὑπάρχουν 188.231 ἀγροκτήματα μὲ ἔκτασιν 121.666 τετρ. χλμ.). Ἡ κτηνοτροφία περιλαμβάνει 843.000 ἵππους, 4.413.000 βοῦς, 499.000 πρόβατα καὶ 3.528.000 χοίρους, ἁλιεία δὲ διενεργεῖται εἰς τὴν Superior καὶ τὰς ἄλλας μικροτέρας λίμνας.

Ὁ ὀρυκτὸς πλοῦτος ἐπίσης εἶναι σημαντικός, μὲ κύρια προϊόντα τὸν ἐρυθρὸν αἱματίτην, τὸν γρανίτην καὶ τὸν ἀσβεστόλιθον. Τὰ σιδηροῦχα κοιτάσματα τοῦ Μέζαμπι εἶναι τὰ πλουσιώτερα τοῦ κόσμου, κεῖνται δὲ ἐντὸς τῆς δασώδους περιοχῆς τῆς πρὸς Δ τῆς λίμνης Superior. Τέλος ἄλλο ἀξιόλογον προϊὸν τῆς πολιτείας εἶναι ἡ οἰκοδομήσιμος ξυλεία, ἐξαγομένη εἰς μεγάλας ποσότητας ἐκ τῶν ἀπεράντων δασῶν τῶν βορείων τῆς χώρας περιοχῶν. Μεγάλως ἐνισχύει τὴν προαγωγὴν τῆς βιομηχανίας ἡ χρησιμοποίησις τῶν ἀφθόνων ρεόντων ὑδάτων καὶ ἰδίως τῶν καταρρακτῶν τοῦ Σαὶντ Ἄντονυ, παρὰ τὰς δύο μεγάλας πόλεις *Ἅγιον Παῦλον* καὶ *Μιννεάπολιν*, αἱ ὁποῖαι συγκεντροῦσι τὸ τρίτον περίπου τοῦ πληθυσμοῦ τῆς πολιτείας. Ἄλλο ἄξιον λόγου κέντρον εἶναι τὸ *Ντιουλοὺθ* (120.000 κάτ.), ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τῆς λίμνης Superior, σπουδαιότατος λιμὴν διὰ τὴν ναυσιπλοΐαν τοῦ συγκροτήματος τῶν λιμνῶν Superior, Μίτσιγκαν κλπ. Αἱ συγκοινωνίαι ἐκτὸς τῶν διὰ τῆς ὑγρᾶς ὁδοῦ (μέσῳ τῶν ποταμῶν καὶ τῶν λιμνῶν), ἐξυπηρετοῦνται ἐπίσης ὑπὸ μεγάλων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν μήκους 15.367 χλμ., κέντρον ἐχουσῶν τὴν Μιννεάπολιν καὶ διευθυνομένων ἐκεῖθεν πρὸς τὸ Ντιουλοὺθ τὸ ΒΔ τμῆμα τῆς χώρας, τὴν κεντρικὴν περιοχὴν κλπ.

—*[Ἱστορ.]* Πρῶτος ἐξηρεύνησε τὴν περιοχὴν τῆς Μιννεσότα ὁ Γάλλος Γκρεϋζολὸν ντὺ Λὺτ (1678), μετ' αὐτὸν δὲ ὁ Π. Χέννεπιν (1679). Τῷ 1689 ὁ Περρὸ κατέλαβεν αὐτὴν ἐξ ὀνόματος τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας καὶ ἵδρυσε φρούριον παρὰ τὴν λίμνην Πεπίν, διαρρεομένην ὑπὸ τοῦ Μισσισσιπῆ. Δύο ἄλλα φρούρια ἀνηγέρθησαν μετ' ὀλίγον ὑπὸ τοῦ Λὲ Συὲρ παρὰ τὰς συμβολὰς τῶν ποταμῶν Μιννεσότα (1700) καὶ Ἅγιος Σταυρὸς (1695) μετὰ τοῦ Μισσισσιπῆ. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην μόνοι οἱ κυνηγοὶ τῶν γουναρικῶν ἐπεσκέπτοντο τὴν χώραν. Τῷ 1803 ἡ Μιννεσότα προσηρτήχη μετὰ τῆς ὑπολοίπου Λουϊζιάνας ὑπὸ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, πολλαὶ δὲ ἀποστολαὶ ἐπέμφθησαν πρὸς ἐξερεύνησιν αὐτῆς· μία ἐκ τούτων ὑπὸ τὸν Σούλκραφτ ἀνεκάλυψε τῷ 1832 τὰς πηγὰς τοῦ Μισσισσιπῆ. Ἐν τῷ μεταξύ, γαλλικῆς καταγωγῆς Καναδοὶ ἀποίκιζον, βραδέως κατ' ἀρχάς, διάφορα σημεῖα τῆς χώρας καὶ ἤρχισαν κτιζόμεναι αἱ σημεριναὶ μεγάλαι αὐτῆς πόλεις. Τῷ 1849 τὸ ἀμερικανικὸν κογκρέσσον ὠνόμασε τὴν Μιννεσότα διαμέρισμα (territory), περιλαμβάνον 5.000 λευκῶν καὶ ἐκτεινόμενον μέχρι τοῦ Μισσουρῆ. Τέλος τὴν 11 Μαΐου 1858 ἀνεκηρύχθη εἰς ὁμόσπονδον πολιτείαν μὲ τὰ σημερινὰ αὐτῆς ὅρια, καταταχθεῖσα 32α κατὰ σειρὰν ἀρχαιότητος. Ἐπανάστασις τῶν Ἰνδιῶν Σιοὺ ἐκδηλωθεῖσα μετ' ὀλίγον (1862) ἐστοίχισε τὴν ζωὴν 700 λευκῶν. Σήμερον ἡ πολιτεία διαρκῶς ἀναπτυσσομένη, κατοικεῖται ὑπὸ μωσαϊκοῦ ἀποίκων ἐξ Εὐρώπης, Σκανδιναυῶν, Γερμανῶν, Βρεττανῶν, Γάλλων κτλ. Ἐκτὸς δὲ τῶν λευκῶν ἀριθμοῦνται ἐπίσης 8.761 Ἰνδοὶ καὶ 8.809 Νέγροι. Ἡ Μιννεσότα ἀποστέλλει εἰς τὸ ὁμοσπονδιακὸν κογκρέσσον 10 ἀντιπροσώπους, διοικεῖται δὲ ὑπὸ κυβερνήτου τετραετοῦς θητείας καὶ δύο σωμάτων, γερουσίας ἐξ 67 μελῶν καὶ βουλῆς ἐξ 131 μελῶν, ἐκλεγομένων διὰ καθολικῆς ψηφοφορίας ὑπὸ τῶν συμπληρωσάντων τὸ 21ον ἔτος τῆς ἡλικίας των. Ὑποδιαιρεῖται εἰς 87 κομιτείας καὶ ἔχει (1924) 9.443 δημοσίας σχολὰς μὲ 550.000 μαθητῶν, 9 ἀνώτερα κολλέγια καὶ ἓν πανεπιστήμιον ἐν Μιννεαπόλει. Χ. Δ.

**Μίννι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μάννι*.

**Μινομίνι** (Menominee) *[Γεωγρ.]*. Βιομηχανικὴ πόλις τῆς πολιτείας Μίτσιγκαν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἐκτισμένη παρὰ τὸν ὁμώνυμον ποταμόν. Κάτ. 8.900. Π. Γ. Λ.

**Μινομίνι** (οἱ) (Menominee). Ὀλιγάριθμος ἰνδικὴ φυλὴ τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, σύμμαχος τῶν Σιού. Τοὺς ὠνόμαζον «ἀγρίους τῆς βρόμης», διότι βάσις τῆς τροφῆς των ἦτο ἡ βρόμη, ἄλλοτε δὲ καὶ «λευκοὺς Ἰνδούς», διότι τὸ χρῶμά των εἶναι ἐλαφρῶς μόνον μελαψόν. Οἱ Μινομίνι φημίζονται διὰ τὴν καλλονήν των, τὴν εὐφυΐαν των καὶ τὰ πατριαρχικά των ἤθη. Π. Γ. Λ.

**Μίνορ** (Minor), **Ἰάκωβος**. Αὐστριακὸς φιλόλογος (1855—1912). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς γερμανικῆς φιλολογίας ἐν τῇ ἐπιστημονικῇ καὶ φιλολογικῇ ἀκαδημίᾳ τοῦ Μιλάνου, τῷ 1884 ἐν Πράγᾳ καὶ εἶτα ἐν Βιέννῃ. Ἔγραψε διαφόρους μελέτας ἐπὶ τῆς γερμανικῆς φιλολογίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Ὁ Βάϊσσε» (1880), «Τὰ ἐπὶ τοῦ πεπρωμένου βασιζόμενα δράματα καὶ οἱ κυριώτεροι ἀντιπρόσωποι τῶν τοιούτων δραμάτων» (1883), «Ἡ γερμανικὴ φιλολογία ἐν Βιέννῃ καὶ τῇ Κάτω Αὐστρίᾳ», «Ὁ Σίλλερ, ὁ βίος του καὶ τὰ ἔργα του», «Μετρικὴ τῆς νεο-ορεινῆς γερμανικῆς» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**μινόρε** (minore) *[Μουσ.]*· βλ. *ἐλάσσων*.

**Μινὸτ ὕφαλος** (Minot 's Ledge) *[Γεωγρ.]*. Σκόπελος τοῦ δυτικοῦ Ἀτλαντικοῦ, προσκείμενος εἰς τὴν ἀκτὴν τῆς Μασσαχουσέτης, ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Βοστώνης καὶ εἰς 31 μίλ. Α.ΝΑ. τοῦ φερωνύμου λιμένος. Ἀναδύει 25 πόδας κατὰ τὰς ἀμπώτιδας καὶ μόλις 3½ πόδ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν κατὰ τὰς πλημμυρίδας τῶν συζυγιῶν. Ἐπ' αὐτοῦ (πλάτ. 42° 20' Β., μήκ. 70°45' Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 1227: Boston and approaches, Ναυτιλ. ὁδηγ. East coast of U.S.' Pilot, ἐκδ. 1922, I, 293) φάρος μέγιστος, ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τοῦ κόσμου.

Ὁ φωτισμὸς τῆς ὑφάλου, ἧς ἡ ὕπαρξις ἐξημίου τὴν ναυτικὴν κίνησιν τῆς Βοστώνης λόγῳ τῶν κινδύνων τῶν προσγειούντων, ἀπησχόλει ἀκάρπως τοὺς μηχανικοὺς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Πρῶτος ὁ W. S. Swift ἐπέτυχεν ὁριστικὴν μελέτην, καὶ τῷ 1848 ἐτέθη εἰς λειτουργίαν ὁ φάρος, οὗ τὸ μηχάνημα καὶ ἡ κατοικία τῶν φαροφυλάκων ἡδράζοντο ἐπὶ ἐξώστου, ὃν ὑπεβάσταζον, εἰς ὕψος 20 μετρ. ὑπὲρ τὸν βράχον, ἐξ σιδηραῖ στῆλαι. Ἐλειτούργησε δὲ μέχρι τῆς 16ης Ἀπριλίου 1851, ὁπότε κυκλὼν θερίσας τήν τε παράλιον καὶ τὴν ἐνδόχωραν τῆς Μασσαχουσέτης, κατέρριψε τὸν φάρον εἰς τὸν ὠκεανόν, κατακόψας τὰς στήλας του σύρριζα, τῶν φαροφυλάκων εὑρόντων σκληρὸν θάνατον. Ὁ στρατηγὸς Μπάρναρντ τῷ 1855 ἀνέλαβε τὴν κατασκευὴν νέου φάρου ἐπὶ τῶν θεμελιώσεων τοῦ παλαιοῦ τοῦ Swift, μετὰ ἑξαετίαν δὲ ὑπερνικηθεισῶν τῶν μεγίστων δυσχερειῶν, ἐτέθη εἰς λειτουργίαν ὁ φάρος, ἐκπέμπων ὡς χαρακτηριστικὸν ἀναγνωρίσεώς του τὸν ἀριθμὸν 143, δηλαδὴ μίαν ἔκλαμψιν ἐναλλασσομένην πρὸς τετράδα ἐκλάμψεων καὶ ταύτην πρὸς τριάδα, τοῦ συνόλου τούτου ἐπαναλαμβανομένου ἀνὰ πᾶν ἥμισυ λεπτόν. Σ. Ε. Λ.

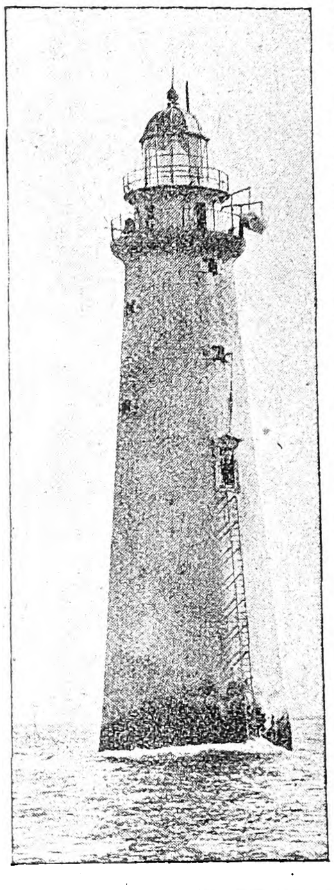

*Ὁ φάρος Μινὸτ ὡς ἐξετελέσθη ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Μπάρναρντ.*

**Μινοῦ** *[Μυθολ.]*. Τοπικὸς θεὸς τοῦ φαραωνικοῦ νομοῦ Κμινοῦ τῆς ἄνω Αἰγύπτου. Ἐπειδὴ εἷς τῶν τίτλων τοῦ θεοῦ ἦτο *Πεχριροῦ* ἢ *Πεχρσοῦ*, οἱ Ἕλληνες διέκριναν τὸ ὄνομα *Περσεὺς* καὶ ἐταύτισαν αὐτὸν πρὸς τὸν Ἕλληνα ἡμίθεον. Πανaιγυπτίου τιμῆς ἀπέλαυεν ἡ ἐπέτειος λιτανεία του. Ἤδη εἰς τὰς ἀναθηματικὰς στήλας τῆς ΙΑ' δυναστείας γίνεται ἐπίκλησις τοῦ θεοῦ· Ἀπέλαυσεν ἰδιαιτέρας λατρείας ὑπὸ τῶν φαραὼ Μοντουχοτποῦ Β' καὶ Γ', οἵτινες ἔκτισαν ναοὺς πρὸς τιμήν του. Γ. Λ. Λ.

**μινουέττο** (τὸ) (minuetto) *[Μουσ.]*· βλ. *μενουέττο*.

**Μινουκιανός**. Ἀθηναῖος ρήτωρ υἱὸς τοῦ Νικαγόρου, ἀκμάσας περὶ τὸ 260 μ. Χ. ἐπὶ αὐτοκράτορος Γαλλιηνοῦ καὶ διατελέσας διδάσκαλος τοῦ Γενεθλίου. Ἐσώθη ὑπὸ τὸ ὄνομά του μικρὸν ρητορικὸν σύγγραμμα «Περὶ ἐπιχειρημάτων», τὸ ὁποῖον κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἦτο μέρος ἐκτενεστέρου συγγράμματος ἀναφερομένου εἰς τὴν λογικήν. Ὁ Σουΐδας ἀποδίδει εἰς αὐτὸν καὶ ἄλλα ἔργα: «Τέχνη ρητορική», «Προγυμνάσματα» καὶ «Λόγοι διάφοροι», ἀλλὰ δὲν εἶναι βέβαιον ἂν τὰ ἔργα ταῦτα εἶναι τοῦ ἰδίου ἢ ἄλλου τινὸς ἀρχαιοτέρου συνωνύμου. Ν. Λ.

**Μινούκιος** (Minucius). Ὄνομα ρωμαϊκοῦ γένους (Minucia ἢ Minutia gens), ἀνήκοντος κατὰ μέγα μέρος εἰς τὴν τάξιν τῶν πληβείων, πλὴν τῆς ἀρχαιοτέρας παραφυάδος τῶν *Αὐγουρίνων*, οἱ ὁποῖοι ὑπῆρξαν πατρίκιοι. Μεταξὺ τῶν πληβείων μελῶν τοῦ γένους πλεῖστοι διεκρίθησαν ἐπὶ αἰῶνας, ἀνελθόντες εἰς ὑψηλὰ ἀξιώματα, καὶ δὴ οἱ *Ροῦφοι* καὶ οἱ *Θέρμοι*. Τὴν ἐπισημότητα τοῦ ὀνόματος τῶν Μινουκίων δεικνύει καὶ ἡ φερώνυμος πύλη τῆς πόλεως Minucia Porta. Ν. Λ.

Digitized by Google

—**Μινούκιος *Φήλιξ*** (Marcus Minucius Felix). Λατῖνος ἀπολογητὴς τοῦ Χριστιανισμοῦ, καταγόμενος πιθανώτατα ἐκ βορείου Ἀφρικῆς καὶ ζῶν ἐν Ρώμῃ κατὰ τὰ τέλη τοῦ Β´ καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Γ´ αἰῶνος. Ἐθνικὸς ὢν καὶ ἐξασκῶν τὸ ἐπάγγελμα τοῦ συνηγόρου, ἐξετίμησε τὴν χριστιανικὴν διδασκαλίαν, διὸ προσῆλθεν εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ ἔγραψεν ἀπολογίαν ὑπὲρ αὐτοῦ, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὀκτάβιος», ἐν μορφῇ διαλόγου μεταξὺ τοῦ ἐθνικοῦ Καικιλίου καὶ τοῦ Χριστιανοῦ Ὀκταβίου. Ὁ Καικίλιος προβάλλει τὰς συνήθεις κατὰ τῶν Χριστιανῶν κατηγορίας ἐπὶ ἀθεΐᾳ, ἐχθρότητι κατὰ τῆς πολιτείας καὶ οἰδιποδείοις μίξεσι καὶ θυεστείοις δείπνοις· ἐπιπροσθέτως δὲ κατηγορεῖ αὐτούς, διότι προσκυνοῦν κεφαλὴν ὄνου καὶ αἰδοῖα ἱερέων. Ἀπαντῶν ὁ Ὀκτάβιος ἀποκρούει τὰς κατηγορίας ταύτας, χαρακτηρίζων αὐτὰς ὡς συκοφαντίας, καταφέρεται κατὰ τοῦ πολυθεϊσμοῦ καὶ ἐξαίρει τὴν χριστιανικὴν πίστιν καὶ ἠθικήν. Ὁ ὡς διαιτητὴς παριστάμενος κατὰ τὴν συζήτησιν Μινούκιος χαρακτηρίζει τὸν Ὀκτάβιον ὡς νικητὴν καὶ αὐτὸς ὁ Καικίλιος ἀναγνωρίζει τοῦτο.

Ἡ ἀπολογία αὕτη, τὴν ὁποίαν ὁ Μινούκιος ἔγραψεν εἰς μνήμην τοῦ θανόντος φίλου του Ὀκταβίου πρὸς τὴν οἰκογένειάν του, θεωρεῖται ὡς μία τῶν ἐπιτυχεστέρων ἀπολογιῶν τῆς ἀρχαίας Ἐκκλησίας ἀπὸ ἀπόψεως περιεχομένου καὶ ὕφους, ὁ δὲ Renan χαρακτηρίζει ταύτην ὡς τὸν ἀδάμαντα τῆς ἀπολογητικῆς φιλολογίας. Ὁ Μινούκιος γράφων τὴν ἀπολογίαν ταύτην εἶχεν ὑπ' ὄψει ἰδίως τὸ σύγγραμμα τοῦ Κικέρωνος «De natura deorum» καὶ τὸν Ἀπολογητικὸν τοῦ Τερτυλλιανοῦ. Ἐκ τοῦ Ἱερωνύμου γνωρίζομεν ὅτι ὁ Μινούκιος ἔγραψε καὶ ἕτερον διάλογον «Περὶ πεπρωμένου ἢ κατὰ μαθηματικῶν», ὅστις ἀπωλέσθη. Τὸ κείμενον τοῦ «Ὀκταβίου» εὕρηται ἐν Migne («Patrologia latina» 3, 239—376) καὶ ἐν ἐκδόσει Ἀκαδημίας Βιέννης ὑπὸ C. Halm 1867 καὶ ὑπὸ J. P. Waltzing (Λειψίᾳ 1912).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἐκτὸς τῶν σχετικῶν ἐν πατρολογίαις καὶ ἐγκυκλοπαιδείαις πρβλ. *P. Monceaux*, «Histoire littéraire de l' Afrique chrétienne» (1, Paris 1901, σ. 462—508).—*G. Meyer*, «Minucius Felix und Tertullian» (ἐν Philologus 1927, σ. 67—83).—*Δ. Σ. Μπαλάνου*, «Πατρολογία» (Ἀθῆναι 1930, σ. 198—199).

Δ. Σ. Μ.

**Μινουσίνσκ(ι)** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας, ἐν τῇ Σιβηρίᾳ. Κάτ. 20.000 περίπου. Ἔχει μουσεῖον (ἱδρυθὲν τῷ 1877) μετὰ βιβλιοθήκης (100.000 τόμ.) καὶ σημαντικὴν παραγωγήν. Εἰς τὴν περιφέρειαν ὑπάρχουσι κοιτάσματα ἄνθρακος, ἅλατος, καὶ σιδήρου.

Γ. Ι. Β.

**μινοῦτο** (τό)· λεπτὸν τῆς ὥρας· || φρ. «'ς τὸ μινοῦτο», ἄλλως «'ς τὴ στιγμή», «'ς τὸ λεπτό», «ἑτοιμάζομαι 'ς τὸ μινοῦτο»· || κατὰ τὴν κοινὴν ναυτικὴν γλῶσσαν ὀνομασία τοῦ *ἀμμωτοῦ* (βλ. λ.).

**Μινούτολι** (Minutoli), ***Ἐρρῖκος***. Ἑλβετὸς ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1772 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1846. Τῷ 1820 ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν ἀρχαιολογικῆς ἀποστολῆς εἰς Αἴγυπτον, ἀποτέλεσμα τῆς ὁποίας ἦτο ἡ συγγραφὴ τοῦ ἔργου του «Ταξίδιον εἰς τὸν ναὸν τοῦ Διὸς Ἄμμωνος καὶ εἰς Ἄνω Αἴγυπτον». Μελέτη αὐτοῦ περὶ κατασκευῆς καὶ χρήσεως τῆς χρωματιστῆς ὑάλου παρὰ τοῖς ἀρχαίοις ἐξεδόθη τῷ 1837.

Β. Δ. Θ.

**μινσατώριον** (τό)· βλ. λ. *μητατωρίκιον*.

**Μίνσκ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας, ἄλλοτε πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου κυβερνείου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1920 πρωτεύουσα τοῦ σοβιετικοῦ κράτους τῆς Λευκῆς Ρωσίας. Κάτ. 123.613. Ἀποτελεῖ σιδηροδρομικὸν δεσμὸν μεταξὺ Βαρσοβίας καὶ Μόσχας. Τὸ Μίνσκ ὑπῆρξε μία τῶν ἀρχαιοτέρων ρωσικῶν πόλεων, ἀνήκουσα εἰς τὴν ἡγεμονίαν τοῦ Κιέβου, κατελήφθη τὸν ΙΓ´ αἰῶνα ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων τῆς Λιθουανίας καὶ τὸν ΙΕ´ ὑπὸ τῶν Πολωνῶν, περιληφθεῖσα ἀλληλοδιαδόχως εἰς τὰς ἡγεμονίας Πολότσκ καὶ τοῦ Σμόνεσκ, διετέλεσε δ' ἐπί τινα χρόνον πρωτεύουσα ὁμωνύμου παλατινάτου. Ἀνεκτήθη ὑπὸ τῶν Ρώσων τῷ 1656, καὶ κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ μεγάλου Ναπολέοντος εἰς Ρωσίαν (1812) κατελήφθη ἐπί τινας μῆνας ὑπὸ τῶν Γάλλων. Κυριώτερα προϊόντα εἶναι τὰ δέρματα, τὰ ὑφάσματα καὶ οἱ πῖλοι. Ἡ Μίνσκ, ἐν ᾗ ἀνέκαθεν ὑφίσταντο πλεῖστα θρησκευτικὰ καὶ ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα, ἦτο ἕδρα ὀρθοδόξου ἀρχιεπισκοπικῆς. Ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν σοβιετιστῶν ἱδρύθη μπολσεβικικὸν πανεπιστήμιον, διατηροῦνται δὲ μουσεῖα, θέατρον καὶ ἐγκατεστάθη ραδιογραφικὸς σταθμός.

Πρὸ τῆς ρωσικῆς ἐπαναστάσεως τὸ *κυβερνεῖον Μίνσκ* εἶχεν ἔκτασιν 91.407 τετρ. χιλμ. καὶ 2.992.443 κατοίκους, ἐκ τῶν ὁποίων ἡ πλειονότης ἦσαν Ρῶσοι ὀρθόδοξοι. Ἐν αὐτῇ ἠριθμοῦντο 886 ἐκκλησίαι ὀρθόδοξοι, 204 καθολικαί, 6 προτεσταντικαί, 9 τζαμία καὶ πλεῖσται συναγωγαὶ καὶ ἰουδαϊκοὶ εὐκτήριοι οἶκοι.

Θ. Β.

**Μίνσκι, *Νικόλαος-Μαξίμοβιτς***. Ρῶσος ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1860. Τὸ πραγματικόν του ὄνομα ἦτο *Νικόλαος Βιλάγγιν*, ἀλλὰ τὸ δηλοῦν τὸν γενέθλιον τόπον του ψευδώνυμόν του ἔκαμεν ὥστε νὰ λησμονηθῇ τὸ ὄνομά του. Τὰ πρῶτα ποιήματά του, δημοσιευθέντα τῷ 1879, ἐπροξένησαν ἀγαθὴν ἐντύπωσιν. Τὸ κύριον προσὸν τῆς ποιήσεως τοῦ Μίνσκι εἶναι ἡ ἤρεμος καὶ ἀντικειμενικὴ σκέψις καὶ ἡ καθαρότης τῆς ἐκφράσεως. Δὲν παρουσιάζει αὕτη οὐδὲν τῆς περιόδου τῆς παρακμῆς καὶ τοῦ συμβολισμοῦ, ὅστις ἐκ Γαλλίας εἶχεν εἰσέλθει εἰς τὴν ρωσικὴν ποίησιν κατὰ τὴν τελευταίαν εἰκοσαετίαν τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Ὁ Μίνσκι κυρίως εἰπεῖν δὲν εἶναι λυρικός, ἀλλὰ πλαστικὸς καὶ ἐπικὸς ποιητής, τὰ τοιαῦτα δὲ ποιήματά του εἶναι ἁπλᾶ καὶ φυσικά. Μεταξὺ αὐτῶν διακρίνονται: «Αἱ λευκαὶ νύκτες», «Τὸ τραγούδι τῆς πατρίδος», «Εἰς ξένην ἑορτήν» καὶ πλεῖστα ἄλλα, πολλάκις ἐκδοθέντα. Μεταβὰς εἰς Πετρούπολιν μετέσχε τοῦ φιλολογικοῦ κύκλου τοῦ ἀντιπαλαίοντος κατὰ τῶν συμβολιστῶν τῆς Μόσχας, τῶν ἀποτελούντων τὸν λεγόμενον κύκλον τῶν «Ἀργοναυτῶν», ἐδημοσίευσε δὲ πλείστας αἰσθητικὰς μελέτας εἰς τὸ περιοδικὸν «Νέα ὁδός» καταπολεμῶν τὸν συμβολισμόν.

Θ. Β.

**μίνσωρ**, ἢ ***μινσουράτωρ***. Ἐλέγετο ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ὁ ἀξιωματικὸς τοῦ ἐπιτελείου ὁ ἐπιφορτισμένος ἐν ἐκστρατείᾳ τὴν ἐκλογὴν τοῦ καταλλήλου ἐδάφους διὰ τὴν ἐγκατάστασιν τοῦ στρατοπέδου, καθὼς καὶ τὴν χάραξιν τούτου.

Ν. ΚΛΣ

**Μιντάνο** (Mindano) *[Γεωγρ.]*. Ἡ δευτέρα εἰς ἔκτασιν καὶ σπουδαιότητα τῶν Φιλιππίνων νήσων. Ἔχει ἔκτασιν 36.290 τετρ. μιλλίων καὶ εἶναι ἐπιμήκης, τοῦ πλάτους αὐτῆς μὴ ὑπερβαίνοντος τὰ 300 μέτρα. Ὀρεινὴ καὶ ἡφαιστειογενής, ἔχει δύο ὑψηλὰς κορυφάς, τὴν τοῦ *Ἄπο* (10.312 ποδ.) καὶ τὴν τοῦ Μαλιτάγκ (8.562 ποδ.). Ποταμοὺς ἔχει τὸν *Ἄγκουσον* καὶ τὸν *Ρίο-Γκράντε*, οἵτινες καὶ σχηματίζουν πολλὰς μικρὰς λίμνας. Τὸ κλῖμά της εἶναι θερμόν. Οἱ καταστρεπτικώτεροι τῶν σεισμῶν ἐγένοντο τῷ 1897, ὅτε καὶ κατεστράφη ἡ πόλις Ζαγκοάμπα, ἥτις ἀνῳκοδομήθη βραδύτερον. Τὰ κυριώτερα προϊόντα της εἶναι ἡ κάνναβις καὶ ξυλεία. Κάτ. 510.000, τὸ πλεῖστον Μαλαῖοι.

Π. Γ. Λ.

**Μιντγιὰν** (Midyan, ἢ Madian) *[Γεωγρ.]*. Τὸ ΒΔ. τμῆμα τῆς Ἀραβικῆς χερσονήσου, ἐκτεινόμενον ἄλλοτε ἀπὸ τῶν παραλίων τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Περσικοῦ κόλπου. Εἶναι ἡ χώρα, εἰς τὴν ὁποίαν κατῴκουν οἱ Ναβαταῖοι καὶ ἐν μέρει οἱ Μιναῖοι, πετρώδης πρὸς Β. (Πετραία Ἀραβία ἢ Χάζρ), ἀμμώδης δὲ πρὸς Ν. Σήμερον ἡ γεωγραφικὴ ὀνομασία *Μιντγιὰν* ἔχει στενοτέραν ἔννοιαν, περιλαμβάνουσα τὴν χώραν τὴν ἐκτεινομένην κατὰ μῆκος τῆς Ἐρυθρᾶς ἀπὸ τῆς Παλαιστίνης μέχρι τῆς Χετζάζης, καὶ εἰδικώτερον ἀπὸ τοῦ κόλπου τοῦ Ἀκάμπα μεχρι τοῦ Ουάδι - Χούμς. Κυριωτέρα αὐτῆς πόλις εἶναι ἡ ἐπὶ τῆς παραλίας *Ἐλ - Ουέτζχ*, ἥτις μεθ' ὁλοκλήρου τοῦ Μιντγιὰν ἐξηρτᾶτο κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ´ αἰῶνος ἐκ τῆς Αἰγύπτου, ἀλλὰ προσηρτήθη κατόπιν εἰς τὴν Τουρκίαν ὡς ὑποδιοίκησις τοῦ νομοῦ Χετζάζης, σήμερον δὲ ἀνήκει εἰς τὸ βασίλειον τῆς Χετζάζης. Ἔχει ἐπιφάνειαν 25.000 τετρ. χιλμ. καὶ περίπου 20.000 κατ. Εἶναι χώρα ὀρεινή, διασχιζομένη ἀπὸ σειρὰς ὀρέων, τῶν ὁποίων σπουδαιότερον εἶναι τὸ Δζεμπὲλ - ἰ - Τεχάμα, ὑψηλοτέρα δὲ κορυφὴ τὸ παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ κόλπου τοῦ Ἀκάμπα Δζεμπὲλ-ἐλ - Χὰρπ (2.240 μ.). Μερικὰ ἐκ τῶν ὀρέων εἶναι ἐσβεσμένα ἡφαίστεια, γενικῶς δ' ἀποτελοῦνται ἐκ γρανίτου καὶ πορφυρίτου. Μεταλλικὸν ἀνεκμετάλλευτον πλοῦτον ἔχει πολὺν ἡ χώρα, ἀποτελούμενον ἐκ σιδήρου, θείου, ἀργύρου, χαλκοῦ, εἴς τινα δὲ μέρη καὶ χρυσοῦ. Τῶν μεταλλείων τούτων ἐγίνετο ἐκμετάλλευσις κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους.

Ν. Μ.

**Μιντγιὰτ** (Midyat) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Μαρντίν. Κάτ. 3.918 (1927). Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς εἶχε καὶ 2000 Ἕλληνας, προσφυγόντας εἰς Ἑλλάδα, ὡς καὶ 500 Ἀρμενίους σφαγέντας. Εἶναι πόλις ἀρχαία, σπουδαιοτάτη κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν Σελευκιδῶν. Τῆς παλαιᾶς ὅμως πόλεως, καταστραφείσης κατὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Σασανιδῶν τῆς Περσίας, δὲν σῴζονται ἴχνη. Εἰς ἀπόστασιν 17 χλμ. σῴζεται μοναστήριον ἐκ 40 κελλίων λελαξευμένον ἐντὸς βράχου, ὅπου λέγεται ὅτι κατέφευγον οἱ Χριστιανοὶ διωκόμενοι ὑπὸ τῶν Περσῶν.

Ἡ ὑποδιοίκησις *Μιντγιὰτ* ἔχει ἐπιφάνειαν 2.610 τετρ. χλμ. καὶ 31.945 (1927) κατ., ἐξ ὧν οἱ περισσότεροι Κοῦρδοι καὶ Τουρκομᾶνοι. Πρὸ τοῦ 1923 ὑπῆρχον καὶ περὶ τοὺς 500 Ἕλληνες, προσφυγόντες εἰς Ἑλλάδα, πρὸς δὲ καὶ 10.000 Ἀρμένιοι.

Ν. Μ.

**Μίντγκαρντ** (Midgard) *[Σκανδ. Μυθολ.]*. —1) Τὸ κεντρικώτερον μέρος πολλῶν κόσμων, ἤτοι τὸ μέρος τὸ ὁποῖον χρησιμεύει ὡς διαμονὴ τῶν ἀνθρώπων. Εἶναι δὲ τὸ μέρος τοῦτο δίσκος περιβαλλόμενος ὑπὸ βαθυτάτης θαλάσσης, προστατευόμενος ἐναντίον τῶν ἐπιθέσεων τῶν γιγάντων ὑφ' ὑψηλοῦ τείχους. Κατὰ συνεκδοχήν, ποιητικὴ ὀνομασία τῆς γῆς.

— 2) Πελώριος ὄφις, τέκνον τοῦ γίγαντος Λόκι καὶ τῆς γίγαντος Ἀνγκερμπόντα, περιβάλλων διὰ τοῦ σώματός του τὴν γῆν. Συμβολίζει τὴν καταστρεπτικὴν δύναμιν τοῦ ὠκεανοῦ.

Γ. Ι. Β.

**Μίντελμπουργκ** (Middelburg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας ἐπὶ τῆς νήσου Βάλχερεν. Κάτ. 19.000 περίπου. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουσι πολλὰ λαμπρὰ παλαιὰ οἰκοδομήματα, μαρτυροῦντα περὶ τῆς ἀκμῆς, τὴν ὁποίαν εἶχεν ἄλλοτε ἡ πόλις (μέχρι τέλους τοῦ ΙΗ´ αἰῶνος). Ἡ πόλις ἤρχισε παρακμάζουσα μετὰ τὸν πόλεμον πρὸς τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν γαλλικὴν κατοχήν, καταστραφέντος τοῦ ἐκτεταμένου αὐτῆς μετὰ τῶν Ἀνατολικῶν καὶ Δυτικῶν Ἰνδιῶν ἐμπορίου, ἀνέλαβε δὲ πάλιν ἐν μέρει ἀπὸ τῆς κατασκευῆς (1876) τῆς διώρυγος Βάλχερεν καὶ τῆς ἱδρύσεως διαφόρων ἐργοστασίων.

Γ. Ι. Β.

**Μίντελφαρτ** (Middelfart) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν ἐν τῇ νήσῳ Φρονίᾳ τῆς Δανίας. Κάτ. 8.000 περίπου.

Γ. Ι. Β

**Μίντεν** (Minden) *[Γεωγρ.]*. Βιομηχανικὴ πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Βεστφαλίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμης Ἀννοβέρου - Μπίλεφελντ. Κάτ. 27.200 περίπου. Ἔχει παλαιότατον γοτθικὸν ναὸν καὶ διάφορα δημόσια οἰκοδομήματα, σιγαροποιεῖα, ὑαλοποιεῖα, ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, σιδηροχυτήρια, σιδηροδρομικὰ μηχανοστάσια κλπ.

Γ. Ι. Β.

**Μίντεντορφ, *Ἀλέξανδρος-Θεόδωρος ντὲ***—. Ρῶσος φυσιολόγος καὶ περιηγητής, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1815 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1894. Ἐσπούδασεν εἰς διάφορα πανεπιστήμια τῆς Γερμανίας, ἐπιστρέψας δὲ εἰς Ρωσίαν διωρίσθη τῷ 1839 καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Κιέβου. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐταξίδευσεν εἰς Λαπωνίαν, ὁπόθεν ἀπεκόμισε σπουδαιοτάτας παρατηρήσεις, ἰδίως ὀρνιθολογικάς. Ἀπεστάλη εἶτα ὑπὸ τῆς ἀκαδημίας εἰς Σιβηρίαν πρὸς ἐπιστημονικὰς μελέτας καὶ ἐπιστρέψας μετὰ τετραετίαν ἐξελέγη μέλος τῆς ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως καὶ διαρκὴς γραμματεὺς αὐτῆς, πρὸς δὲ διωρίσθη σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας. Ἔκτοτε ἐξετέλεσε τέσσαρας ἄλλας ἐπιστημονικὰς περιηγήσεις καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἐπιστημονικὰ συγγράμματα γερμανιστί.

Θ. Β.

**μιντέρι** (τό)· βλ. *μεντέρι*.

**Μιντιλόγλι** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Πατραϊκοῦ κόλπου, 1 $^1/_2$ ὥραν πρὸς ΝΔ. τῶν Πατρῶν, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πατρῶν—Κάτω Ἀχαΐας, καὶ ἔχει καλλιεργείας σταφιδαμπέλων, ἐλαίων καὶ σιτηρῶν. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.738. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Νεζερίτικα*.

Χ. Δ.

**μιντινέττα** (ἡ)· ἐπωνυμία ἐν Παρισίοις (γαλλ. midinette) τῶν νεαρῶν ἐργατριῶν, προελθοῦσα ἐκ τοῦ ὅτι αὗται ἐξέρχονται ἐκ τῶν ἐργαστηρίων καὶ τῶν καταστημάτων των τὴν μεσημβρίαν (γαλλ. midi). Μὲ λογοπαικτικὴν διάθεσιν ἡ λέξις ὑποσημαίνει τὰς ἀρκουμένας εἰς ἓν λιτὸν μεσημβρινὸν γεῦμα (dînette à midi) ἐργατρίας (ραπτρίας, ὑπαλλήλους καταστημάτων κλπ.). Ἀντιπροσωπευτικὸς τύπος τῆς παρισινῆς μιντινέττας, ἥτις εἶναι ἐκτάκτως συμπαθὴς ἐν τῇ γαλλικῇ λογοτεχνίᾳ, εἶναι ἡ Μιμὴ Πινσόν.

**Μίντλεσεξ** (Middlesex) *[Γεωγρ.]*. Ἡ μικροτέρα μετὰ τὴν Λοῦτλαντ τῶν κομιτειῶν τῆς Ἀγγλίας, ἀλλὰ καὶ ἡ σημαντικωτέρα, ὡς περιλαμβάνουσα τὸ μεγαλύτερον τμῆμα τῆς μητροπόλεως τοῦ Λονδίνου. Διαιρεῖται εἰς ἓξ διαμερίσματα τά: τοῦ Ἔντμοντον, Ὄσσουλστον, Κύρ, Αἴλγουόρθ, Ἔλθορυ καὶ Σπελθούρν. Κάτ. 2.639.765. Πολλαὶ διώρυγες διασχίζουν τὴν κομιτείαν, ἐξ ὧν ἡ Grand-Junction διασχίζει τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς κομιτείας καὶ ἑνοῦται μὲ τὸν Τάμεσιν εἰς Μπρέντφορντ. Εἶναι μέγα σιδηροδρομικὸν κέντρον. Πρὸ τῆς ρωμαϊκῆς εἰσβολῆς ἡ κομιτεία τοῦ Μίντλεσεξ κατῳκεῖτο ὑπὸ τῶν Τρινομπάντι.

Π. Γ. Λ.

**Μίντλεσμπορω** (Middlesborough) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης. Κάτ. 39.300. Εἶναι σημαντικὸν σιδηρουργικὸν κέντρον τῆς Γιορκσάϊρ.

Π. Γ. Λ.

**Μίντλετον** (Middletown) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Λαγκασάϊρ τῆς Ἀγγλίας. Κάτ. 28.000. Ἔχει βιομηχανίας μετάξης, βάμβακος, χυτήρια χάλυβος καὶ χημικῶν προϊόντων.

Π. Γ. Λ.

**Μίντλετον** (Middleton), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος δραματουργός, γεννηθεὶς τῷ 1570 ἐν Λονδίνῳ. Ἔγραψε κυρίως κωμῳδίας. Τὸ ἔργον του «Κυνήγι στὸ σκάκι» ἐπαίχθη κατ' ἐπανάληψιν ἀπὸ τῆς σκηνῆς.

**Μιντλόθιαν** (Midlothian) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα μὲ τὸ ὁποῖον ὑποδηλοῦται συχνὰ ἡ κομιτεία τοῦ *Ἐδιμβούργου*. Τὸ ὄνομα τοῦτο ἀπηθανάτισεν ὁ Ουάλτερ Σκὼτ εἰς τὸ μυθιστόρημά του «Ἡ καρδιὰ τοῦ Μιντλόθιαν», τὸ ὁποῖον μετεφράσθη εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ φυλακὴ τοῦ Ἐδιμβούργου».

Π. Γ. Λ.

Digitized by Google

**Μιντλτάουν** (Middletown) *[Γεωγρ.]*.—1) Πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Μίντλεσεξ τῆς 'Αμερικῆς. Κάτ. 24.422.

— 2) Πόλις τῆς κομιτείας Μπῶτλερ τῆς 'Αμερικῆς. Κάτ. 29.843. Εἶναι κέντρον πλουσίας γεωργικῆς περιφερείας, εἰς τὴν ὁποίαν καλλιεργοῦνται καπνός, σῖτος καὶ ἰνδικὸς ἀραβόσιτος.

— 3) Παρεδρία τῆς κομιτείας Ντόφιν τῆς 'Αμερικῆς.

**Μίντορο** (Mindoro) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν Φιλιππίνων, νοτίως τῆς Λουζόν, ἐκτάσεως 3.850 τετρ. μιλλίων. Εἶναι ὀρεινή, ἡ δὲ ὑψηλοτέρα της κορυφὴ εἶναι ἡ τοῦ Χαλαὸν (8.850 πόδ.). Πρωτεύουσα ἡ *Καλαπάου*. Κατοικεῖται ὑπὸ ἡμιαγρίων φυλῶν. Κάτ. 30.000. Π. Γ. Λ.

**Μιντού**, ἢ ***Μιντοὺρ*** (Midou ἢ Midour) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας πηγάζων ἐν Γκέρς. Διασχίζει τὸν νομὸν Λάντ καὶ ἑνοῦται μετὰ ροῦν 105 χλμ. μετὰ τοῦ Ντούζ, μεθ' οὗ σχηματίζει τὸν *Μιντούζ*. Χ. Δ.

**Μιντοὺζ** (Midouze) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας, σχηματιζόμενος τὸ παρὰ Μὸν-ντὲ-Μαρσὰν διὰ τῆς ἑνώσεως τῶν ποταμῶν Ντοὺζ καὶ Μιντοὺ καὶ συμβάλλων μετὰ ροῦν 43 χλμ. εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ 'Αντούρ. Χ. Δ.

**Μιντοῦρναι** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. 'Ιταλικὴ πόλις ἐν Λατίῳ ἐγγὺς τῆς θαλάσσης πρὸς τὴν ἐκβολὴν τοῦ Λείριος (ταν. Γκαριλιᾶνο) καὶ κατὰ τὴν δεξιὰν αὐτοῦ ὄχθην, εἰς ἀπόστασιν 80 σταδίων ἀπό τε τῶν Φορμίων (εἰς σύγχρονον θέσιν Mola) καὶ Σινουέσσης (Rocca di Monte Dragone), ἐντὸς δὲ ἱεροῦ δάσους, διὰ τὸ ὁποῖον οἱ ἐντόπιοι ᾐσθάνοντο θαθεῖαν εὐλάβειαν (*Στράβ.* Ε, 233 καὶ 237, Teubner)· καὶ δὲν ἀναφέρει μὲν ὁ Στράβων τὴν θεότητα εἰς ἣν τὸ ἄλσος ἦτο ἀφιερωμένον, ἀλλὰ γνωρίζομεν ἄλλοθεν ὅτι ἦτο αὕτη ἡ Marica, νύμφη ἥτις κατὰ τὸν Βιργίλιον (Αἰν. 7, 146) ὑπῆρξεν ἡ μήτηρ τοῦ Λατίνου. 'Εγγύτατα τῆς 'Αππίας ὁδοῦ κειμένη, εἶχε πέριξ της εὐρείας ὑπονόμους, ἀγούσας εἰς τὴν πεδιάδα καὶ χρησιμευούσας αἱ μὲν ὡς ὑδραγωγεῖα, αἱ δὲ ὡς διέξοδοι λαθραῖαι. 'Αναφέρεται πλειστάκις εἰς τοὺς λατινικοὺς πολέμους τοῦ Δ' π. Χ. αἰῶνος, ἀπῳκίσθη δὲ ὑπὸ τῶν Ρωμαίων τῷ 296, χαρακτηριζομένη ὡς ἀποικία ἐπὶ αὐτοκρατορίας, δι' ὃ καὶ «Μιντοῦρναι κολωνία» τὴν ἀναγράφει ὁ Πτολεμαῖος (Γ, α, 63, Nobbe). Εἰς τὴν πρὸ αὐτῆς ἀβαθῆ παραλίαν (*Πλούταρχ.* Μαρ. 37 καὶ ἑξ.) ἐξώκειλε τὸ πλοῖον τοῦ Μαρίου. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος εἶχε κατασκαφῆ ἀποστᾶσα (125 π. Χ.). Ἴχνη αὐτῆς ἀνεγνωρίσθησαν εἰς τοποθεσίαν 1 ½ χιλ. ἔνδον τῆς ἐκβολῆς τοῦ Καριλιάνο, ὅπου τὸ σύγχρονον χωρίον *Μιντοῦρνο* (Minturno: πλάτ. 41° 14' Β., μηκ. 13° 44' 'Αν., χάρτ. ἀγγλ. 1841: Civita Vecchia to Naples) τοῦ κόλπου τῆς Γαέτας. Σ. Ε. Λ.

**Μιντουρνήσια** *ἕλη* (Paludes Minturnenses) *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἕλη σχηματιζόμενα περὶ τὴν πόλιν τῶν *Μιντουρνῶν* ὑπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Λείριος (νῦν Γκαριλιάνο). Α. Θ. Σ.

**Μινυάδες** *[Μυθολ.]*. Αἱ τρεῖς θυγατέρες τοῦ *Μινύου*, *'Αλκαθόη* ἢ *'Αλκιθόη*, *Λευκίππη* καὶ *'Αρσίππη*, αἵτινες ἐπειδὴ κατεφρόνησαν τὸν Βάκχον μετεμορφώθησαν ὑπὸ τοῦ 'Ερμοῦ εἰς νυκτερίδας. Α. Θ. Σ.

**μινυαδίδαι** (οἱ) (Minyadidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια κοιλεντερωτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀκτινίων*, περιλαμβάνουσα ἀνθόζῳα ἐλευθέρως νηχόμενα ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Τὰ πολυάριθμα γένη τῆς οἰκογενείας ἀπαντῶσιν εἰς τὰς περισσοτέρας θαλάσσας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**Μινύαι** (οἱ) *['Αρχ.]*. 'Αρχαιότατον ἔθνος τῆς ἠπειρωτικῆς 'Ελλάδος, ἀκμάσαν πρὸ τῶν Μυκηναίων καὶ ἴσως μετὰ τοὺς Λέλεγας. Ἔχομεν Μινύας τοῦ 'Ορχομενοῦ τῆς Βοιωτίας, οἱ ὁποῖοι ἐγκατεστάθησαν ἐκεῖ πολεμήσαντες ἴσως πρὸς τοὺς προϋπάρχοντας (*Παυσ.* 9, 36, 4) ἐν Βοιωτίᾳ Φλεγύας, καὶ Μινύας 'Αργοναύτας τῆς ἐν Θεσσαλίᾳ 'Ιωλκοῦ. Προφανῶς ἡ παράδοσις θεωρεῖ τοὺς τελευταίους ἀποκεχωρισμένους τῶν πρώτων, νεώτεροι ὅμως ἐρευνηταὶ παραδέχονται ὅτι ὑπάρχει μεταξὺ αὐτῶν στενὴ σχέσις, καθ' ὅτι καὶ οἱ μὲν καὶ οἱ δὲ εἶναι ἴσως φῦλα πελασγικά, τοὐλάχιστον σύγχρονα τῶν Πελασγῶν καὶ συνεπῶς προελληνικά. 'Εκ τῶν ἀρχαιολογικῶν ὅμως ἐρευνῶν οὐδὲν τὸ ἀσφαλὲς προκύπτει σχετικῶς. Καὶ ὅτι μὲν οἱ Μινύαι ἤκμασαν πολὺ πρὸ τῶν Τρωϊκῶν, τοῦτο πιστοποιεῖται ὑπὸ τοῦ 'Ομήρου, ὁ ὁποῖος τὸν βοιωτικὸν 'Ορχομενόν, ἔν τε τῇ 'Ιλιάδι καὶ τῇ 'Οδυσσείᾳ, ἀποκαλεῖ *Μινύειον*, ἐν ἀντιδιαστολῇ προφανῶς πρὸς τὸν 'Ορχομενὸν τῆς 'Αρκαδίας, ἐνῷ τοὺς κατοίκους τῆς χώρας ἀποκαλεῖ Βοιωτούς. Εἶναι ὅμως ἀξιοπερίεργον ὅτι ὁ Ὅμηρος πέραν τοῦ Μινυείου 'Ορχομενοῦ οὐδένα κάμνει λόγον περὶ Μινυῶν, τοὺς ὁποίους ἀγνοεῖ ἐντελῶς· ἀναφέρει μάλιστα ἐπανειλημμένως τὸν υἱὸν — ὀρθότερον θὰ ἦτο ἀπόγονον—τοῦ ὑποτιθεμένου Μινύου 'Ιάσονος **Εὔνηον**, ἀνάσσοντα ἐν Λήμνῳ κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον ('Ιλιάδ. Η, 467 καὶ Ψ 41 ἑφ.), χωρὶς κατὰ τὴν συνήθειάν του νὰ λέγῃ τίνων ἀνάσσει, ὅπως π. χ. εὐθὺς περαιτέρω (Ψ, 86), προκειμένου περὶ τοῦ βασιλέως τῶν Λελέγων Ἄλτεω, ἐπάγεται «ὃς Λελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει». 'Εκ τοῦ 'Ηροδότου ὅμως, ὁ ὁποῖος ἀναφέρει τοὺς 'Ορχομενίους Μινύας, μανθάνομεν (Δ' 145—149) ὅτι οἱ ἐν Λήμνῳ Μινύαι, ἀπόγονοι τῶν 'Αργοναυτῶν Μινυῶν, ἐκδιωχθέντες ἐκεῖθεν ὑπὸ τῶν Πελασγῶν μετέβησαν εἰς Λακεδαίμονα, ὅπου ἐγένοντο δεκτοὶ ὑπὸ τῶν Λακεδαιμονίων καὶ ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν χώραν. 'Εκδιωχθέντες ὅμως ὑπ' αὐτῶν κατόπιν, ἄλλοι μὲν ἠκολούθησαν τὸν Θήραν εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ὀνομασθεῖσαν ὁμώνυμον νῆσον, οἱ πλεῖστοι δὲ μετηνάστευσαν εἰς Τριφυλίαν, ὅπου ἐκδιώξαντες τοὺς ἰθαγενεῖς Παρωρεήτας καὶ Καύκωνας ἔκτισαν τὰς πόλεις Λέπρεον, Μάκιστον, Φρίξας, Πύργον, Ἔπιον καὶ Νούδιον. 'Αλλὰ πιθανώτερον θεωρεῖται ὅτι οἱ εἰς Σπάρτην μεταβάντες Μινύαι δὲν προήρχοντο ἐκ Λήμνου ἀλλ' ἐξ 'Ορχομενοῦ, ἐκδιωχθέντες ἐκεῖθεν ὑπὸ τῶν ἐπιδραμόντων ἐξ Ἄρνης Βοιωτῶν, πιεσθέντων πιθανῶς καὶ τούτων ὑπὸ τῶν ἐκ Θεσπρωτίας κατελθόντων Θεσσαλῶν. Πάντως, ἐκ τῶν ἀνωτέρω καταφαίνεται ὅτι οἱ Μινύαι ἦσαν ἓν τῶν μᾶλλον δρασάντων ἐθνῶν ἐν 'Ελλάδι κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τῆς δευτέρας π. Χ. χιλιετηρίδος ἢ καὶ ἀκόμη ἐνωρίτερον. Ὑπὸ πολλῶν τῶν νεωτέρων ἐρευνητῶν πιστεύεται ὅτι οἱ Μινύαι προῆλθον ἐξ 'Ανατολῆς ὑπάρχουν μάλιστά τινες, ἐν οἷς καὶ ὁ Dörpfeld, οἵτινες φρονοῦσιν ὅτι οἱ Μινύαι τῆς ἀργοναυτικῆς ἐκστρατείας μετέβησαν εἰς τὴν Νότιον 'Αφρικὴν πρὸς ἀναζήτησιν χρυσοῦ καὶ ὅτι ἐξ αὐτῶν ἔμαθον οἱ 'Αχαιοὶ καὶ οἱ ποιηταὶ αὐτῶν ὅτι ἡ 'Αφρικὴ εἶναι περιπλεύσιμος. Κατὰ τὴν θεωρίαν ταύτην οἱ Μινύαι προήρχοντο ἐκ Φοινίκης καὶ ἐγκατεστάθησαν κυρίως ἐν Βοιωτίᾳ, ὁπόθεν ἵδρυσαν συνοικισμοὺς καὶ εἰς πολλὰ ἄλλα μέρη τῆς ἀνατολικῆς Μεσογείου. Πρὸς μίαν τοιαύτην θεωρίαν συμφωνοῦν τὰ ἀναμφισβήτητα πλούτη τὰ ὁποῖα συνεσώρευσαν οἱ Μινύαι εἰς τὸν 'Ορχομενὸν καὶ περὶ ὧν ὁ Παυσανίας (9, 36, 4) λέγει: «Πρόσοδοι δ' ἐγίνοντο τῷ Μινύᾳ τηλικαῦται μέγεθος ὡς ὑπερβαλέσθαι τοὺς πρὸ αὐτοῦ πλούτῳ· θησαυρόν τε ἀνθρώπων ὧν ἴσμεν Μινύας πρῶτος ἐς ὑποδοχὴν χρημάτων ᾠκοδομήσατο». 'Ο Εὐστάθιος ταυτίζων (Ζ 184) τοὺς κατοίκους τῆς Λυκίας Μυλίας πρὸς τοὺς Μινύας λέγει ὅτι «οὗτοι Μινύαι ἀπὸ τοῦ Μίνωος ἐκαλοῦντο».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *O. Müller*, Orchomenos (1848). — *Bulle*, Orchomenos (1907). — *Fiemen*, Kret. myk. Kultur (1924).— *Dörpfeld - Rüter*, Homers Odyssee (I. σ. 261).

Κ. ΓΕΡΟΓΙΑΝΝΗΣ

**μινυακός**, *—ή, —όν* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μινύας, ὁ τῶν Μινυῶν: «μινυακὰ ἀγγεῖα».

— ***μινυακὰ ἀγγεῖα***. Ἡ συμβατικὴ αὕτη ὀνομασία ἐδόθη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Bulle (1907) εἰς ἓν εἶδος μονοχρώμων, μελανοφαίων ἢ κιτρινωπῶν, ἀστιλβώτων ἀγγείων ἐκ τεφροῦ πηλοῦ, εὑρεθέντων εἰς τὰς ὑπὸ τοῦ Furtwängler καὶ αὐτοῦ διενεργηθείσας ἀνασκαφὰς ἐν 'Ορχομενῷ τῆς Βοιωτίας τῷ 1903 καὶ 1905. Παρόμοια ἀγγεῖα εἶχον εὑρεθῆ ὑπὸ τοῦ Schlieman ἐν 'Ορχομενῷ τῷ 1881, ὠνομάσθησαν δὲ τότε ὑπ' αὐτοῦ *λυδικά*, ὡς ὁμοιάζοντα πρὸς τὰ ὑπ' αὐτοῦ κληθέντα λυδικὰ ἀγγεῖα, τὰ εὑρεθέντα ἐν ἀφθονίᾳ καὶ ποικιλίᾳ σχημάτων εἰς τὰς ἀνασκαφὰς τῆς Τροίας. 'Επικρατοῦντα σχήματα τῶν μινυακῶν ἀγγείων εἶναι τὰ τοῦ κύλικος ἢ κανθάρου μετὰ ταπεινῆς βάσεως καὶ κρατηριδίου μεθ' ὑψηλῆς κοίλης βάσεως, εἶναι δὲ ἀλλὰ τροχήλατα καὶ ἄλλα χειροποίητα. Τόσον δὲ ἡ ὄψις των ὅσον καὶ τὰ γωνιώδη σχήματά των ὑπονοοῦν ὅτι ἐγένοντο κατ' ἀπομίμησιν ἀγγείων ἐκ μετάλλου. Τεχνικῶς εἶναι ἐκ τῶν ἀρίστων προϊόντων τῆς προϊστορικῆς κεραμεικῆς, ἀλλ' ὑστεροῦν πολὺ ἀπὸ καλλιτεχνικῆς ἀπόψεως· σπουδαῖον ὅμως προσὸν αὐτῶν εἶναι ὅτι εἶναι λίαν εὐδιάκριτα. Εὑρίσκονται εἰς τὰ μυκηναϊκὰ στρώματα, ἀλλὰ καὶ βαθύτερον αὐτῶν, ἐξ οὗ συνάγεται ὅτι ἀνήκουν εἰς τὸν χαλκοῦν αἰῶνα (2000 καὶ πλέον π. Χ.). Τὸ δὲ γεγονὸς ὅτι πλὴν τοῦ 'Ορχομενοῦ εὑρέθησαν καὶ εἰς ἄλλα μέρη τῆς Στερεᾶς 'Ελλάδος, εἰς τὴν Θεσσαλίαν, τὴν Πελοπόννησον καθὼς καὶ εἰς τὰς Κυκλάδας, καθιστᾷ ἀβέβαιον ὅτι τὰ προϊόντα ταῦτα τῆς κεραμεικῆς ἀνήκουν εἰς τὰς Μινύας τοῦ 'Ορχομενοῦ. Καὶ ὁ μὲν εἰδικῶς περὶ αὐτῶν πραγματευθεὶς E. J. Forsdyke (1914) νομίζει ὅτι τὰ μινυακὰ ἀγγεῖα εἶναι προϊόντα φυλῆς, ἡ ὁποία ἦλθεν εἰς 'Ελλάδα ἐκ Τροίας, ἐνῷ ἄλλοι μετ' αὐτὸν ἐρευνηταὶ παραδέχονται μᾶλλον ὅτι ὀφείλονται εἰς λαὸν μεταναστεύσαντα κατὰ τὸ τέλος τῆς τρίτης χιλιετηρίδος π. Χ. ἐκ τῶν παραδουναβίων χωρῶν εἰς Φωκίδα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Wace* and *Thompson*, Prehistoric Thessaly.— *A. R. Burn*, Minoans Philistines and Greeks (σ. 36 ἑφ.).

Κ. Γ.

**Μινύας** *[Μυθολ.]*. Ὁ ὑποτιθέμενος γενάρχης τοῦ ἐν 'Ελλάδι προϊστορικοῦ ἔθνους τῶν *Μινυῶν*, ὁ ὁποῖος συνδέεεται μὲ τὸν ἐν 'Ορχομενῷ τῆς Βοιωτίας τάφον τοῦ Μινύου καὶ τὸν αὐτόθι θησαυρὸν Μινύου (*Παυσ.* 9.36,4). 'Ελατρεύετο ἐν 'Ορχομενῷ τῆς Βοιωτίας, πρὸς τιμήν του δ' ἐτελοῦντο αὐτόθι ἑορταί, τὰ *Μινύεια*. Φαίνεται ὅτι ἦτο ἄγνωστος εἰς τὸν Ὅμηρον, ὁ ὁποῖος ὅμως ἀναφέρει τὸν 'Ορχομενὸν ὡς ἕδραν τοῦ βασιλέως τῆς Βοιωτίας 'Αμφίονος ('Οδυσσ. λ. 283) ἀποκαλῶν αὐτὸν ἁπλῶς *Μινύειον*. Ὁ Μινύας μυθολογεῖται (*Παυσ.* 9.36.4) υἱὸς τοῦ Χρύσου καὶ ἔγγονος τοῦ Ποσειδῶνος, ἐνῷ ἄλλαι πηγαὶ συνδέουν αὐτὸν μὲ τὸν φωκικὸν μῦθον τοῦ Κεφάλου καὶ τὸν ὀνομάζουν πατέρα τῆς συζύγου τοῦ Κεφάλου Κλυμένης. 'Αναφέρεται δὲ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων καὶ πλῆθος ἄλλων γενεαλογιῶν, αἱ ὁποῖαι ὑπερβαίνουν τὰ ὅρια τῆς βοιωτικῆς αὐτοῦ πατρίδος. Κ. Γ.

**Μινυὰς** *[Μυθολ.]*· βλ. *Μινυάδες*.

**Μινύειος**, ἢ ***Μινυήιος*** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. — 1) Μικρὸς ποταμὸς τῆς Ἤλιδος ἐν Τριφυλίᾳ, ὅστις πηγάζων ἀπὸ τοῦ ἀρκαδικοῦ ὄρους Λαπίθου (νῦν βουνὰ Καϊάφα καὶ Σμέρνα) ἐκβάλλει παρὰ τὸ Σαμικόν. Κατὰ τὸν Στράβωνα (Η, 348) καὶ Παυσανίαν (Ε. 6, 2) εἶναι ὁ κατόπιν μετονομασθεὶς *Ἄνιγρος* ποταμός. Παραπόταμος αὐτοῦ ἀναφέρεται ὁ *'Ιάρδανος*, μετονομασθεὶς καὶ οὗτος, ὡς ἀναφέρει ὁ Παυσανίας (Ε. 5,9) *'Ακίδας*. —2) Παραπόταμος τοῦ Πηνειοῦ ἐν Θεσσαλίᾳ, ὁ μετὰ ταῦτα *'Ορχομενός*. Α. Θ. Σ.

**Μινυΐα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ Πτολεμαῖον (Ε. β, 31) ὀνομασία τῆς *Μινώας* τῆς 'Αμοργοῦ. Σ. Ε. Λ.

**μινυογραφία** (ἡ)· βλ. *μινιογραφία*.

**μίνυον** (τό)· βλ. *μίνιον*.

**μινυρίζω**· ἐκβάλλω φωνὴν σιγανήν, κελαδῶ, ψάλλω ἡσύχως· || κλαυθμυρίζω, μουρμουρίζω.

**μινύρισμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μινυρίζειν, κελάδημα σιγανόν, ἤρεμον· || κλαυθμύρισμα, θρηνώδης φωνή.

**Μίνυτος** *[Μυθολ.]*. Εἷς τῶν υἱῶν τοῦ 'Αμφίονος καὶ τῆς Νιόβης, φονευθεὶς μετὰ τῶν ἀδελφῶν του ὑπὸ τοῦ 'Απόλλωνος, ἐνῷ ἐθήρευον ἐπὶ τοῦ Κιθαιρῶνος. Α. Θ. Σ.

**μινχὰ** (λ. ἑβρ.=δῶρον). 'Ονομασία τῆς μεσημβρινῆς προσευχῆς τῶν ἐν τῇ διασπορᾷ 'Ισραηλιτῶν, ἥτις δὲν εἶναι ὑποχρεωτική. Α. Ε. Μ.

**Μινύα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. 'Ονομασία πολλῶν ἀρχαιοτάτων πόλεων, ὧν αἱ πλεῖσται ἔλαβον τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ βασιλέως τῆς Κρήτης Μίνωος. Τοιαῦται πόλεις ὑπῆρξαν ἐν Κρήτῃ, Δήλῳ, 'Αμοργῷ, Πάρῳ, Σίφνῳ, ἐν τῷ μυχῷ τοῦ Σαρωνικοῦ, ἐν τῇ Λακωνίᾳ, εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Συρίας, ἐν Σικελίᾳ, 'Αραβίᾳ, ἧς οἱ πολῖται ἐκαλοῦντο *Μινωῖται*, καὶ ἀλλαχοῦ. Σ. Ε. Λ.

— **Μινώα** *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος κειμένη πρὸ τῆς Νισαίας, τοῦ ἐπινείου τῶν ἀρχαίων Μεγάρων. Κατὰ τὸν Θουκυδίδην, ἡ νῆσος αὕτη ἔκειτο πλησίαν τῆς Νισαίας, συνδεομένη μετ' αὐτῆς διὰ γεφύρας ἐπὶ ἕλους. 'Επὶ τῆς νήσου ταύτης οἱ Μεγαρεῖς ἔκτισαν φρούριον. Τὴν αὐτὴν πληροφορίαν δίδει καὶ ὁ Παυσανίας, περιγράφων ταύτην ὡς νῆσον. Τοὐναντίον ὁ Στράβων θεωρεῖ τὴν Μινώαν ἀκρωτήριον, λέγων ὅτι «μετὰ δὲ τὰς Σκειρωνίδας πέτρας ἄκρα πρόκειται Μινώα ποιοῦσα τὸν ἐν τῇ Νισαίᾳ λιμένα». 'Εκ τῆς ἀντιθέσεως ταύτης τῶν ἀρχαίων συγγραφέων προέκυψε μεγάλη ἀρχαιολογικὴ συζήτησις. Κατ' ἄλλους μὲν ἡ ἀρχαία Μινώα πρέπει νὰ ἦτο ἡ πλησιεστέρα ἐκ τῶν δύο νησίδων, αἵτινες εὑρίσκονται ἀπέναντι τῆς βραχώδους χερσονήσου τῆς ἀκτῆς τῶν Μεγάρων. Ἡ ἐσωτέρα ὅμως αὕτη νησὶς ἀπέχει περὶ τὰ 200 μέτρα ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου μὲ βάθος τῶν ὑδάτων 7 μέτρων καὶ συνεπῶς δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ ἡνοῦτο διὰ γεφύρας μὲ τὴν ἀκτήν. 'Επὶ πλέον οὔτε ἐπὶ τῆς νησῖδος ταύτης, οὔτε ἐπὶ τῆς χερσονήσου εὑρέθησαν ἴχνη ἀρχαίων μνημείων. Κατ' ἄλλους πάλιν ἡ Μινώα πρέπει νὰ ἦτο τὸ σημερινὸν ἀκρωτήριον *Τιχώ*, τὸ ὁποῖον ὅμως εὑρίσκεται περαιτέρω πρὸς ἀνατολάς, κατὰ τὴν εἴσοδον τοῦ στενοῦ τῆς Σαλαμῖνος, καὶ δὲν ἀνταποκρίνεται πρὸς τὸ μῆκος τῆς περιγραφῆς τοῦ Θουκυδίδου. Εὐλογωτέραν παρατήρησιν ἔκαμεν ὁ Spratt, φρονῶν ὅτι ἡ Μινώα ἦτο ὁ βραχώδης λόφος, ὅστις φέρει νῦν ἐπὶ τῆς κορυφῆς του ἠρειπωμένον φρούριον καὶ ὅστις ἐγείρεται παρὰ τὴν θάλασσαν νοτίως τῶν Μεγάρων, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἀπέχει περὶ τὸ ἓν γεωγραφικὸν μίλλιον, ἀπόστασιν δηλαδή, συμφωνοῦσαν πρὸς τὴν περιγραφὴν τοῦ Θουκυδίδου. Κατὰ τὸν Spratt, ὁ λόφος οὗτος ἦτο ἀρχικῶς νησίς, κατέληξε δὲ νὰ μεταβληθῇ πρῶτον εἰς χερσόνησον καὶ τέλος εἰς λόφον διὰ τῆς προσχώσεως τῶν δύο ῥεόντων ἑκατέρωθεν τῆς βάσεως αὐτοῦ ποταμῶν, τῶν ὁποίων αἱ ξηραὶ κοῖται εἶναι εἰσέτι εὐδιάκριτοι. Εἰς ἐπίρρωσιν τῆς παρατηρήσεως ταύτης ἦλθον εἰς φῶς πολλὰ λείψανα τῆς ἀρχαίας τοποθεσίας ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τοῦ λόφου, ἐν οἷς τέσσαρες μεγάλοι σωροὶ ἐρειπίων, ἴσως λείψανα ναῶν, καὶ θεμέλια μεγάλων κτισμάτων, μεταξὺ τῆς βάσεως τοῦ λόφου κατὰ τὴν βορείαν του πλευρὰν καὶ τῆς ἀντικρυνῆς ὄχθης τῆς ξηρᾶς

Digitized by Google

κοίτης τοῦ ἄλλοτε ποταμοῦ, τὰ ὁποῖα θεωρεῖ ὁ Spratt ὡς τὰ λείψανα τῆς γεφύρας τῆς συνδεούσης ἄλλοτε τὴν νησῖδα μετὰ τῆς ἀκτῆς, τοσούτῳ μᾶλλον καθ' ὅσον διακρίνονται κατὰ τὸ νοτιοανατολικὸν ἄκρον τοῦ λόφου καὶ λείψανα ἀρχαίου μώλου. Οἱ παραδεχόμενοι τὴν Μινώαν ὡς χερσονησῖδα ταυτίζουν αὐτὴν πρὸς τὴν ἄκραν *Ἅγιος Γεώργιος* (πλάτ. 37° 58' 10'' Β., μῆκ. 23° 20' 50 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1657 : Gulf of Athens), ἣν ἐπιστέφουν ἀρχαῖά τινα λείψανα. Β. Δ. Θ.

—**Μινώα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Δύο πόλεις τῆς ἀρχαίας Κρήτης, τῶν ὁποίων ἡ μὲν πρώτη τοποθετεῖται εἰς τὴν βορείαν παραλίαν της νήσου, παρὰ τὰ Χανιά, ἡ δὲ ἄλλη εἰς τὴν βορείαν παραλίαν τῆς ἀνατολικῆς Κρήτης, παρὰ τὴν ἀρχαίαν πόλιν Ἰστρῶνα. Ν.Ε.Π.

—**Μινώα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Σικελίας, ἡ μετὰ ταῦτα *Ἡράκλεια* (βλ. λ.). Α.Θ.Σ.

—**Μινώα** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀρχαία πόλις τῶν Φιλισταίων ἐν Παλαιστίνῃ, ἡ σημερινὴ *Γάζα* (βλ.λ.).

—**Μινώα Ἀμοργοῦ** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀναφέρεται ὑπὸ Στεφάνου τοῦ Βυζαντίου, τοῦ Πτολεμαίου (Ε, β, 31) καὶ τοῦ Σταδιασμοῦ τῆς Μεγάλης θαλάσσης (282). Ταυτίζεται πρὸς τὸν σύγχρονον λιμένα *Βαθὺ* (βλ. λ.). Σ.Ε.Λ.

—**Μινώα Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Φρούριον τῆς ἐπὶ τοῦ Μυρτῴου πελάγους λακωνικῆς ἀκτῆς, ἐπὶ χερσονησῖδος μεταξὺ Δηλίου καὶ Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς (*Στραβ.* Η, 368). Σ.Ε.Λ.

—**Μινώα Πάρος** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Μία τῶν ὀνομασιῶν, κατὰ Στέφανον τὸν Βυζάντιον, τῆς νήσου Πάρου. Σ.Ε.Λ.

—**Μινώα Σίφνου** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀναφέρεται ὑπὸ Στεφάνου τοῦ Βυζαντίου, προσθέτοντος ὅτι ἐν τῷ λιμένι ὑφίστατο καὶ πηγὴ ὕδατος φερώνυμος. Κατά τινας, ὁ λιμὴν ἦτο εἰς τὸ νότιον τῆς Σίφνου ἄκρον, σχηματιζόμενος ὑπὸ τῆς νήσου καὶ τῆς νησῖδος Κιτριανῆς· ἐκεῖ δὲ ὑπάρχει καὶ ἡ πηγὴ καὶ ἀρχαῖα ἴχνη. Σ.Ε.Λ.

— **Μινώας, τέως δῆμος** — [*Γεωγρ.*]. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Ἰρίας* καὶ *Τολοῦ*, μὲ ἕδραν τὸ Τολό. Ἐκτείνεται κατὰ μῆκος τῆς Α. παραλίας τοῦ Ἀργολικοῦ κόλπου, περιλαμβάνει δὲ καὶ τὰς νησῖδας *Δασκαλειό, Ρόδι, Πλατειὰ* καὶ *Ὑψηλή*. Ἠρίθμει 900 περίπου κατ. Ὁ δῆμος Μινώας ἀπετελέσθη ἐκ προσφύγων Κρητῶν. Χ. Δ.

**μινωικός,—ή, —όν** ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν Μίνωα, ὁ τοῦ Μίνωος: «μινωικὴ περίοδος».

—**μινωϊκὸς πολιτισμός.** Ὠνομάσθη οὕτω ὁ πολιτισμὸς ὁ ἀναπτυχθεὶς ἐν Κρήτῃ κατὰ τὴν μακραίωνα ἐποχήν, τῆς ὁποίας κέντρον, οὕτως εἰπεῖν, ἀποτελεῖ ἡ βασιλεία τοῦ Μίνωος (2800—1400 π. Χ. περίπου) καὶ ὅστις, μεταδοθεὶς βαθμηδὸν ἀνὰ τὴν Μεσόγειον, συνέβαλεν, ὁμοῦ μετὰ τοῦ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασίν του προαχθέντος *μυκηναϊκοῦ*, εἰς τὴν θαυμαστὴν ἄνθησιν τοῦ ὅλου ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ.

— [ΑΡΧΑΙΟΛ.] Ἐνταῦθα θέλουσιν ἐξετασθῆ μόνον τὰ ἐπιστημονικὰ προβλήματα περὶ τῆς καταγωγῆς, τῆς ἀναπτύξεως, τῆς ἐξαπλώσεως καὶ τῶν ἰδιαιτέρων χαρακτηριστικῶν τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ ἐν σχέσει πρὸς τοὺς ἄλλους τοιούτους. Ἀπὸ γενικωτέρας ἀπόψεως γίνεται διαπραγμάτευσις τοῦ θέματος ἐν τοῖς ἄρθροις *Αἰγαῖος πολιτισμός, Κνωσός* καὶ *Κρήτη*, λεπτομερείας δὲ περὶ ἑκάστου τοπικοῦ κέντρου εὑρίσκει ὁ ἀναγνώστης εἰς τὰ οἰκεῖα τοπωνυμικὰ ἄρθρα (λ. χ. *Γιούχτας, Γουρνιά, Ἴσοπατα, Ζαφὲρ Παπούρα* κ.λ.π.).

*Α') Καταγωγή.* Ὅτι ὁ πρωτόγονος νεολιθικὸς πολιτισμὸς τῆς νήσου ἐξελίσσεται ὁμαλῶς εἰς τὸν πρῶτον *πρωτομινωϊκόν*, δὲν ὑπάρχει ἀμφιβολία. Ἡ λεγομένη «*ὑπονεολιθικὴ ἐποχή*», καὶ ἡ πρώτη περίοδος τῆς πρωτομινωϊκῆς (περὶ τὸ 3500—3000 π. Χ. ἢ καὶ ὀλίγον ὑστερώτερον) δεικνύουσι τὴν βαθμιαίαν ἐξέλιξιν τῆς νεολιθικῆς κεραμεικῆς εἰς τὴν τῆς πρώτης ἐποχῆς τοῦ χαλκοῦ καὶ ἐπὶ τῇ βάσει τῆς αὐτῆς τεχνικῆς. Τὰ μετ' ἐντρίπτων στιλπνῶν γραμμῶν ἀγγεῖα τῆς συλλογῆς Πύργου (πρωτομινωϊκὰ 1) πρέπει ἴσως νὰ θεωρηθῶσιν ὡς περαιτέρω ἀνάπτυξις τῆς «στολιδωτῆς» νεολιθικῆς τεχνοτροπίας (Rippled Ware)· τελευταῖαι δ' ἔρευναι ἀπέδειξαν ὅτι καὶ ὁ (πρωτομινωϊκὸς 2) «κηλιδωτὸς» ῥυθμὸς βασιλικῆς (Mottled-ware) εἶναι καὶ οὗτος νεολιθικὴ κληρονομία.

Ἐν τούτοις, προϊούσης τῆς πρωτομινωϊκῆς περιόδου ὁ ρυθμὸς καὶ ἡ τέχνη ἀποκτῶσιν ἐντὸς ὀλίγων μόνον γενεῶν τοιαύτην ὁρμὴν ἐξελίξεως καὶ τόσον ραγδαίαν πρόοδον, ὥστε εἶναι προφανὲς ὅτι μία ἔξωθεν ἐπίδρασις ἔδωκε τὴν σύντονον ταύτην ὤθησιν πρὸς τὰ ἐμπρός. Ἡ ἀνακάλυψις ποικίλων ἔργων πρωτομινωϊκῆς ἐποχῆς, ἤτοι ὡρισμένων πηλίνων καὶ λιθίνων ἀγγείων, εἰδωλίων λιθίνων ἢ μαρμαρίνων, ἰδιαίτατα ὅμως τῆς πολυτίμου σειρᾶς τῶν σφραγίδων ἐξ ἐλεφαντόδοντος ἢ στεατίτου, ὑποδεικνύουσιν ὄντως ἰσχυρὰν ἐξωτερικὴν ἐπίδρασιν. Ἐν τούτοις δὲν εἶναι πάντες οἱ λόγιοι σύμφωνοι ὡς πρὸς τὴν διεύθυνσιν, ἐξ ἧς ἔρχεται ἡ ἐπίδρασις αὕτη. Τινὲς ἀποβλέπουσιν εἰς τὴν Ἀνατολήν, ἰδιαιτέρως εἰς τὴν «χεττιτικὴν» περιοχήν, προσπαθοῦντες ἰδίως εἰς τὸ νὰ ἑρμηνεύσωσιν ἐκεῖθεν ὁλόκληρον τὴν σειρὰν τῶν σφραγίδων. Ἐν τούτοις ἡ ἐκ τῆς περιοχῆς ἐκείνης θεμελιώδης ἐπίδρασις δὲν φαίνεται δυνατή. Μόνον ἐμμέσως ἤσκει ἐπιδράσεις ἐπὶ τὴν Κρήτην ἡ περιοχὴ ἐκείνη καὶ ὁ βαβυλωνιακὸς πολιτισμός, καὶ δὴ εἰς ἐποχὴν σχετικῶς προκεχωρημένην.

Ἄλλη ὑπόθεσις, ἥτις εἶναι καὶ ἡ μᾶλλον ἀπίθανος, εἶναι ὅτι ἡ ἀνάπτυξις τοῦ πρωΐμου μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ δέον νὰ συνδεθῇ πρὸς ἐπιδράσεις ἐκ τῆς βορείας περιοχῆς τῶν βαλκανικῶν παραδουναβίων πολιτισμῶν. Ἀλλ' ἡ βεβαιοτάτη πασῶν τῶν ἐπιδράσεων εἶναι ἡ αἰγυπτιακή, ἥτις οὐ μόνον σαφὴς καταφαίνεται ἐπὶ τῶν μνημείων, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῶν γεωγραφικῶν συνθηκῶν ἑρμηνεύεται καλύτερον πάσης ἄλλης. Ἡ ἐπίδρασις αὕτη, βασιζομένη ἐπὶ τῆς πυκνῆς ἐπικοινωνίας, εἶναι ἔκδηλος ἤδη ἀπὸ τῆς προδυναστικῆς αἰγυπτιακῆς περιόδου, ἧς ἀγγεῖα λίθινα εὑρέθησαν ἐν Κρήτῃ. Ἐξακολουθεῖ εἶτα ζωηροτέρα ἐπὶ τῆς πρωτομινωϊκῆς ἐποχῆς, διαρκεῖ δὲ καὶ κατόπιν ἐπὶ τῆς μεσομινωϊκῆς καὶ ὑστερομινωϊκῆς περισσότερον καὶ ἐπιμονώτερον πάσης ἄλλης. Ἡ γεωγραφικὴ θέσις τῆς Κρήτης, κειμένης ἐν τῷ κέντρῳ τῆς ἀνατολικῆς Μεσογείου, ἑρμηνεύει καὶ τὴν σποραδικὴν ἐμφάνισιν ρευμάτων ἐξ ἄλλων πολιτισμῶν, οὐχὶ ὅμως τόσον σπουδαίων ὡς τὸ ἐξ Αἰγύπτου.

*Β') Ἀνάπτυξις.* Ὁ χαρακτὴρ τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ εἶναι τοιοῦτος, ὥστε εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς δεικνύει ὅτι δὲν πρόκειται νὰ ἀποβῇ μία δουλικὴ μίμησις ξένων στοιχείων, ὅπως βραδύτερον ὁ φοινικικὸς πολιτισμός. Ἡ προϊοῦσα ἀνάπτυξις τῆς τέχνης δεικνύει ὅτι ἀκολουθεῖ ἰδίας ὁδοὺς καί, μολονότι λαμβάνει συχνότατα τὰς πρώτας παρορμήσεις ἔξωθεν, οὐδέποτε ἀκολουθεῖ ταύτας κατὰ γράμμα, οὐδὲ κἂν ἵσταται πολὺ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τούτων. Ὁλόκληρος ἡ ἀνάπτυξις τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ βασίζεται ἐπὶ τῆς μινωϊκῆς ἰδιοσυγκρασίας, αἱ δὲ πρόοδοι εἰς τὰ σχήματα καὶ τὴν τεχνικὴν τῆς κεραμεικῆς, εἰς τὴν ἐξέλιξιν τῆς κομψοτεχνίας καὶ τὴν γένεσιν τῆς ἀρχιτεκτονικῆς εἶναι καθαρῶς ἐντόπια δημιουργήματα καὶ ἀκολουθοῦν ἐν τῇ ἀναπτύξει των τὴν ἰδιότυπον κατεύθυνσιν τοῦ κρητικοῦ πολιτισμοῦ. Ἡ ἀνάπτυξις αὕτη τῆς τέχνης διῃρέθη, ἐπὶ τῇ βάσει κυρίως τῆς κεραμεικῆς, ὡς συμβαίνει πάντοτε σχεδὸν ἐν τῇ ἀρχαιολογικῇ ἐπιστήμῃ, εἰς τρεῖς μεγάλας περιόδους, διανεμομένας χρονικῶς ὡς ἑξῆς, κατόπιν ἀκριβεστέρων ἐρευνῶν:

*Πρωτομινωϊκὴ* (ΠΜ) 3300—2100 π. Χ.

*Μεσομινωϊκὴ* (ΜΜ) 2100—1550.

*Ὑστερομινωϊκὴ* (ΥΜ) 1550—1300, ἴσως καὶ 1200 εἴς τινας περιφερείας.

Ἑκάστην τῶν περιόδων τούτων ὑποδιαιρεῖ εἰς τρεῖς ἄλλας ὁ Evans, ἀλλ' ἐπειδὴ ἡ μέθοδος αὕτη δὲν συμβιβάζεται πάντοτε πρὸς τὰ πράγματα, τὸ σύστημά του ἤγειρεν ἀντιρρήσεις καὶ διαμαρτυρίας ὡς φέρον δυσκολίας. Ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον φαίνεται καθαρῶς ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ κεραμεικοῦ ὑλικοῦ εἶναι ὅτι: ἐντὸς τῆς ΠΜ περιόδου διακρίνονται δύο ἐποχαί, μία τῆς ἀχρώμου καπνιστῆς κεραμεικῆς (ἔντριπτος διακόσμησις τῆς συλλογῆς Πύργου) καὶ μία τῆς γραπτῆς κεραμεικῆς. Μεταξὺ τῶν δύο ἵσταται ὡς μεταβατικὴ ἡ συλλογὴ τῶν «κηλιδωτῶν» ἀγγείων (συλλογὴ Βασιλικῆς). Ἐντὸς τῆς ΜΜ περιόδου φαίνονται ἐπίσης καθαρῶς δύο ἐποχαί, μία ἡ τῆς ἀκμαίας πολυχρωμίας τῶν καμαραϊκῶν ἀγγείων καὶ ἑτέρα, ἡ παρουσιάζουσα τὴν παρακμὴν ταύτης καὶ τὴν χρῆσιν λευκοῦ χρώματος μόνον. Ἡ ὑστερομινωϊκὴ τέλος ἐποχὴ παρουσιάζει τέσσαρας σαφεῖς περιόδους ἐξελίξεως: τὴν τῆς φυτικῆς διακοσμήσεως, δι' ἧς ἀρχίζει ἡ περίοδος· τὴν τῆς θαλασσίας ζωϊκῆς καὶ φυτικῆς, τοῦ λεγομένου «θαλασσίου ρυθμοῦ» (marin style). Ἀμφότεραι αὗται αἱ περίοδοι εἶναι αἱ τοῦ λεγομένου νατουραλισμοῦ, ἀντιπροσωπεύουσαι τὴν χρυσῆν ἐποχὴν τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ. Κατόπιν τούτων ἀκολουθεῖ ἡ σχηματοποιοῦσα περίοδος τοῦ ἀνακτορικοῦ ρυθμοῦ καὶ τέλος ἡ ὑστάτη φάσις τοῦ τελικοῦ ἐκφυλισμοῦ.

Ἡ ΠΜ ἐποχὴ ἀγνοεῖ ἀκόμη τὰ μεγάλα ἀνάκτορα, ὑπάρχουσιν ὅμως ἤδη μεμονωμένα μεγάλα οἰκοδομήματα. Εἰς τὴν θέσιν, ὅπου βραδύτερον ὑψώθη τὸ ἀνάκτορον τῆς Κνωσοῦ, ὑπῆρχον πλεῖονα τοιαῦτα οἰκοδομήματα. Ἡ μεταλλουργία ἀναπτύσσεται μὲ σταθερὸν βῆμα, ἡ δὲ ἀγγειοπλαστικὴ πολλαπλασιάζει τὰ σχήματα τῶν ἀγγείων, ἐφ' ὧν ἀρχίζει νὰ συστηματοποιῆται ἡ ζωγραφικὴ δια-

*Τυπικὸν ἀγγεῖον τῆς ΠΜ περιόδου.*

κόσμησις. Τὰ κοσμήματα εἶναι μόνον γραμμικά, καὶ ἰδίως εὐθύγραμμα τοιαῦτα.

Ἡ ΜΜ ἐποχὴ σημειοῦται διὰ τῆς θεμελιώσεως τῶν μεγάλων ἀνακτόρων. Ἡ κεραμεικὴ ἀσμενίζει ἤδη εἰς τὴν συστηματικὴν πολυχρωμίαν, ἥτις φαίνεται νὰ ἀνεπτύχθη ἐκ τοῦ συρμοῦ τῶν πολυχρώμων λιθίνων ἀγγείων τῆς προηγουμένης ἐποχῆς. Μεγάλως ἀναπτύσσεται ἡ πολυχρωμία αὕτη περὶ τὸ μέσον τῆς ἐποχῆς, διότι συνδυάζει ὁμοῦ καὶ τὴν καμπυλόσχημον διακόσμησιν (ρόδακες, πλοχμοί, ἕλικες, περίπλοκα κοσμήματα «ὀροφῆς»). Τὰ μοτίβα τῆς διακοσμήσεως ταύτης ἐξελίσσονται νῦν εἰς τὸ ἀνώτατον σημεῖον, εἰς τὸ ὁποῖον ἔφθασάν ποτε ἐν Κρήτῃ. Παραλλήλως ἡ τεχνικὴ προοδεύει τόσον πολύ, ὥστε ἐμφανίζονται τὰ περίφημα «ᾠοκέλυφα», ἀγγεῖα, μὲ τοιχώματα λεπτότατα ὡς τὸ κέλυφος ᾠοῦ. Μεγάλην ὤθησιν λαμβάνει ἐπίσης καὶ ἡ σφραγιδογλυφία, ἔτι δέ, περὶ τὸ τέλος τῆς ἐποχῆς, ἡ τεχνικὴ τῶν μικρῶν ἀναγλύφων ἐκ παντοίων ὑλῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ἡ διὰ πρώτην φορὰν ἐμφανιζομένη φαγεντιανή. Εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν ἀνακτόρων σημειοῦνται, διαρκούσης τῆς ἐποχῆς ταύτης, μερικαὶ καταστροφαί, σπουδαιοτάτη τῶν ὁποίων εἶναι ἡ περὶ τὸ τέλος τῆς περιόδου ριζικὴ καταστροφὴ ἐν Κνωσῷ καὶ Φαιστῷ. Ἐπὶ τῶν ἐρειπίων κτίζονται ἀμέσως ἢ σχεδὸν ἀμέσως τὰ νέα ἀνάκτορα, τὰ ὁποῖα κυρίως περισῴζονται σήμερον.

Ὁμοῦ μετὰ τῆς κτίσεως τῶν νέων τούτων ἀνα-

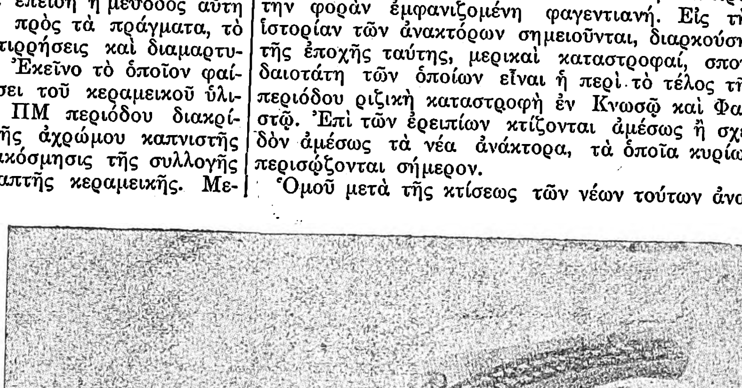

*Τυπικὸν ἀγγεῖον τῆς ΜΜ περιόδου.*

κτόρων σημειοῦται καὶ ἡ ἔναρξις τῆς «*Νέας ἐποχῆς*», ἥτις κατὰ τὴν πρώτην της περίοδον εἶναι τὸ ἀπόγειον τοῦ κρητικοῦ πολιτισμοῦ ἀπὸ ἀπόψεως ἀκμῆς τῆς τέχνης, πολιτικῆς δυνάμεως καὶ εὐμαρείας. Ἡ ἔναρξις τῆς ἐποχῆς ταύτης δὲν συμπίπτει ἀκριβῶς πρὸς τὴν ἔναρξιν τῆς ΥΜ περιόδου, ἀλλ' εἶναι κατά τι προγενεστέρα, περιλαμβάνουσα καὶ τὸ τέλος τῆς ΜΜ τοιαύτης. Διαρκεῖ ἕνα

Digitized by Google

καὶ ἥμισυν αἰῶνα, ἀπὸ τοῦ 1600 μέχρι τοῦ 1450 π. Χ. Πρωτίστη ἐκδήλωσις τῆς περιόδου ταύτης εἶναι ἡ τοιχογραφία, ἥτις κατακαλύπτει νῦν τοὺς τοίχους οἰκιῶν καὶ ἀνακτόρων, ἔτι δὲ τὸ κεχρωσμένον ἀσβέστινον ἀνάγλυφον. Ἀμφότερα ταῦτα τὰ εἴδη τῆς τέχνης ἀντιπροσωπεύουν τὴν μεγίστην δύναμιν τοῦ καλλιτέχνου πρὸς ζωντανὴν παράστασιν τῆς φύσεως. Τὰ θέματα λαμβάνονται ἐκ τοῦ περιβάλλοντος ζωϊκοῦ καὶ φυτικοῦ κόσμου καὶ ἐκ τῆς καθημερινῆς ζωῆς. Πᾶσαι σχεδὸν αἱ λοιπαὶ ἐκδηλώσεις τῆς τέχνης ὑφίστανται τὴν ἐπίδρασιν τῆς τοιχογραφίας.

Περὶ τὸ 1450 ἡ τέχνη εἰσέρχεται εἰς νέον στάδιον, κατὰ τὸ ὁποῖον ἐπιζητεῖται μᾶλλον ἡ συμμετρικὴ ἐμφάνισις τῶν γραμμῶν. Νῦν θέλγει περισσότερον ἡ ἀψυχοτέρα γραμμικὴ ἐμφάνισις τῶν μοτίβων ἢ ἡ ἀπεικόνισις τῆς παλλούσης ζωῆς. Ἐν τούτοις τὸ σύνολον σχεδὸν τῶν μοτίβων τούτων βασίζεται ἀκόμη ἐπὶ τοῦ ζωϊκοῦ κόσμου τῆς προκατόχου περιόδου. Ἐπειδὴ ἐμφανίζονται ἐν τῇ ἀγγειογραφίᾳ καὶ τύποι γνωστοὶ ἐκ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς διακοσμήσεως τῶν ἀνακτόρων, ἡ περίοδος αὕτη ἀπεκλήθη τοῦ «Ἀνακτορικοῦ ρυθμοῦ». Τοιοῦτον θέμα εἶναι κυρίως ἡ ἐπὶ τῶν ἀγγείων ἐμφάνισις τῶν ἀπέναντι ἀλλήλων τοποθετημένων ἡμίσεων ροδάκων, γνωστῶν ἐκ ζωφόρων τῆς Κνωσοῦ καὶ τῆς Τίρυνθος. Ἂν καὶ ἡ ἀπόλυτος κανονικότης τῶν μοτίβων τούτων εἶναι ἀπαραίτητον στοιχεῖον τῆς καλλιτεχνικῆς ἐντυπώσεως, ἐν τούτοις οἱ ἀγγειογράφοι, ἔχοντες τὴν προγενεστέραν συνήθειαν τὴν ὁποίαν οὐδέποτε θὰ ἐγκαταλίπωσι καὶ κατόπιν, ζωγραφοῦν δι᾿ ἐλευθέρας καὶ ταχείας χειρός. Τὰ ἔργα των διὰ τοῦτο οὐδέποτε παρουσιάζουν τὴν ἀμφιπλεύριον συμμετρίαν καὶ δίδουν τὴν ἐντύπωσιν προχείρων σχεδιασμάτων. Τὸ κατατηξίτεχνον καὶ λεπτολόγον τῆς ἀνατολικῆς καὶ αἰγυπτιακῆς τέχνης μένει διὰ παντὸς ξένον εἰς τὸ ταχύβουλον πνεῦμα τῆς μινωϊκῆς ἰδιοσυγκρασίας.

*Ρυθμὸς χλωρίδος τῆς Ὑστερομινωϊκῆς περιόδου (Δικταῖον Ἄντρον).*

*Θαλάσσιος ρυθμὸς Ὑστερομινωϊκῆς περιόδου (Παλαίκαστρο).*

Μετὰ τὸ 1400 ἡ τέχνη, συντελούσης, φαίνεται, καὶ τῆς πολιτικῆς ἀκαταστασίας καὶ παρακμῆς, βαίνει μὲ βήματα γοργὰ εἰς τὸν ἀρξάμενον ἤδη κατήφορον τῆς ὄχι πλέον ἐξελίξεως, ἀλλὰ πολὺ περισσότερον ἀποσυνθέσεως. Τὰ σῳζόμενα ἔργα μᾶς δεικνύουν ὅτι δὲν ὑπάρχει πλέον καλλιτεχνικὸν πνεῦμα, ἀλλ᾿ ἁπλῆ βιομηχανικὴ προχειροτεχνία. Πᾶν ὅ,τι ἀπεικονίζεται τώρα δὲν ἀντιστοιχεῖ οὔτε πρὸς τὸ θέλγητρον τῆς φύσεως, οὔτε πρὸς τὴν ἄψυχον ἁρμονίαν τῶν γραμμῶν. Εἶναι ἁπλῶς μία παλαιὰ ἕξις, ἥτις καθίσταται ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν περισσότερον συμβατικὴ καὶ καταντᾷ τέλος μηχανικὸν ἔργον εἰς τὰ ἐργαστήρια χειρωνάκτων πτωχῶν καὶ ταπεινῶν.

***Γ΄) Ἐξάπλωσις.*** Ὁ μινωϊκὸς πολιτισμός, διαρκούσης τῆς ἀναπτύξεώς του καὶ ἰδίως τῆς περιόδου τῆς μεγαλυτέρας ἀκμῆς του, ἑπόμενον ἦτο νὰ ἐπιδράσῃ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐπὶ τὰς πέριξ χώρας. Ἐνίοτε ἡ ἐπίδρασις αὕτη, ἀκολουθοῦσα τὰς διὰ μέσου βαρβαρικῶν χωρῶν εἰσδυούσας ὁδοὺς τοῦ ἐμπορίου, φθάνει μέχρι μακροτάτων χωρῶν τῆς Κεντρικῆς Εὐρώπης, ἂν καί, φυσικῷ τῷ λόγῳ, μεμονωμένη καὶ ἐξησθενημένη.

Ἤδη κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς καμαραϊκῆς πολυχρωμίας (περὶ τὸ 1900—1800 π. Χ.) ἐξάγονται ἀγγεῖα τῆς τεχνοτροπίας ταύτης κατὰ μεγάλας ποσότητας εἰς Αἴγυπτον, ἔνθα ἀνευρίσκονται εἰς συνοικισμοὺς ἢ τάφους τῆς 12ης δυναστείας. Περὶ τοὺς αὐτοὺς χρόνους τὸ ἀκμαιότατον καὶ ἰσχυρότατον κέντρον τῶν Κυκλάδων, ἡ πόλις τῆς Φυλακωπῆς ἐν Μήλῳ, ὑφίσταται τοσαύτην τὴν ἐπίδρασιν τῆς κρητικῆς τέχνης, ὥστε πολλοὶ νὰ ὁμιλῶσι περὶ μινωϊκῆς ἀποικίας ἐνταῦθα. Τὸ ἀνάκτορον τὸ ὁποῖον ἀνεκαλύφθη αὐτόθι, κοσμεῖται διὰ τοιχογραφιῶν τῆς τελευταίας ΜΜ ἐποχῆς, γενομένων διὰ χειρὸς Κρητὸς καλλιτέχνου. Εἰς τὴν Αἴγιναν ἐπίσης ἀνεκαλύφθησαν ἐπ᾿ ἐσχάτων σημεῖα τῆς ἐπιδράσεως τοῦ καμαραϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ἀλλ᾿ ὁ τόπος, εἰς τὸν ὁποῖον περὶ τὸ τέλος τῆς ΜΜ ἐποχῆς εἰσβάλλει ὁμαδικῶς καὶ αἰφνιδίως ὁ μινωϊκὸς πολιτισμός, εἶναι ἡ Πελοπόννησος, καὶ δὴ αἱ Μυκῆναι. Δὲν καθωρίσθησαν ἀκόμη ἐντελῶς τὰ ἴδια τοπικὰ καὶ τὰ ἔξωθεν εἰσελθόντα στοιχεῖα εἰς τὸν παλαιότατον «μυκηναϊκὸν» πολιτισμόν, ὅστις ἀντιπροσωπεύεται ἐν τοῖς περιφήμοις βασιλικοῖς τάφοις τῆς ἀκροπόλεως Μυκηνῶν. Ὁπωσδήποτε εἶναι ἀναμφισβήτητον ὅτι τὸν κυριώτατον πλοῦτον τοῦ πολιτισμοῦ τούτου ἀντιπροσωπεύουσιν εἴτε γνησίως μινωϊκὰ ἔργα, εἴτε ἐντόπια τοιαῦτα, γενόμενα κατὰ πρότυπα ἐκείνων. Ὁ πολιτισμὸς οὗτος, ὅστις βαθμηδὸν ἐξαπλοῦται κύκλῳ καθ᾿ ὅλην τὴν παραλιακὴν Πελοπόννησον (χωρὶς ὅμως νὰ εἰσδύσῃ καὶ ἐνδότερον εἰς τὰς ἀρκαδικὰς χώρας), ἔτι δ᾿ εἰς τὴν Στερεὰν Ἑλλάδα, βαθμηδὸν δὲ πανταχοῦ σχεδὸν τῶν ἑλληνικῶν χωρῶν, ἀναπτύσσεται περαιτέρω καὶ εἶναι γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα «*μυκηναϊκὸς πολιτισμός*». Ἐν τούτοις μέχρι τῶν τελευταίων ἡμερῶν τῆς ζωῆς του φέρει τὴν σφραγῖδα καταγωγῆς ἐκ τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ, δι᾿ ὃ καὶ χαρακτηρίζεται ἐν τῷ συνόλῳ της ἡ περίοδος ἀπὸ 1600—1250 π. Χ. ὡς «*Κρητομυκηναϊκὸς πολιτισμός*».

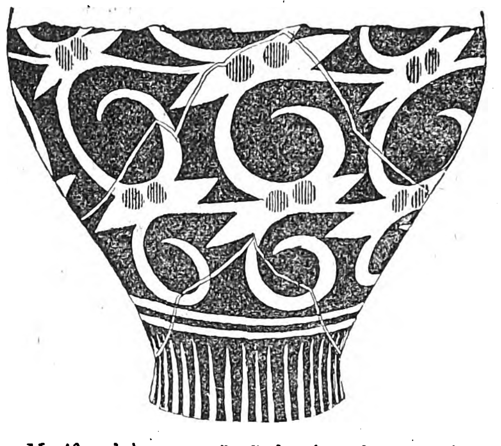

*Μοτίβον ἐπὶ καμαραϊκοῦ ἀγγείου, ἐπαναλαμβανόμενον ἐπὶ κυάθου.*

[Ἐκ Hal-Tarxien (Μάλτα).]

Μεμονωμένας ἐπιδράσεις τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ καὶ μάλιστα πολὺ παλαιὰς (ἤδη ἀπὸ τοῦ 2.000 π. Χ.) συναντῶμεν εἰς τὴν Μάλταν. Ἐπίσης ἡ παράδοσις, συνδυαζομένη πρὸς ὡρισμένα φαινόμενα, μᾶς πείθει, ὅτι βραδύτερον δέχονται ἡ Κύπρος καὶ ἡ Αἴγυπτος πυκνὰς ἐπιδράσεις ἐκ Κρήτης. Ὁ δὲ κρητομυκηναϊκὸς πολιτισμὸς τέλος τυγχάνει σὺν τῷ χρόνῳ τοιαύτης ἐξαπλώσεως, οἵαν οὐδεὶς τῶν προϊστορικῶν πολιτισμῶν ἐπέτυχε. Τὰ ἴχνη του συναντῶνται ποῦ μὲν ἁπτὰ καὶ ἄφθονα, ποῦ δὲ ἐμμεσώτερον ἐμφανιζόμενα, ἀπὸ τῆς Σικελίας καὶ Κάτω Ἰταλίας μέχρι τῶν μικρασιατικῶν παραλίων, τῆς Συρίας καὶ Παλαιστίνης, καὶ ἀπὸ μέσης Εὐρώπης μέχρις Αἰγύπτου καὶ ἔτι νοτιώτερον, ὡς φαίνεται, μέχρι τῆς Νουβίας. Ἡ πρὸς βορρᾶν ἐξάπλωσις τῶν ἐπιδράσεων τοῦ κρητομυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ, ἥτις ἐν πάσῃ περιπτώσει δὲν εἶναι καὶ τόσον ἁπτή, ἑρμηνεύεται ὡς διείσδυσις διὰ τῆς Ἰλλυρίας καὶ Ἀδριατικῆς κατὰ μῆκος τῆς ὁδοῦ, δι᾿ ἧς τὸ ἤλεκτρον τῆς Βαλτικῆς ἔφθανεν εἰς τὴν Ἑλλάδα.

***Δ΄) Ἰδιαίτερα χαρακτηριστικά.*** Μία θεμελιώδης ἰδιότης, ἥτις ἀμέσως διακρίνει τὸν μινωϊκὸν πολιτισμὸν ὡς ριζικῶς διάφορον ἀπὸ τοῦ αἰγυπτιακοῦ, εἶναι ὅτι οὐδεμίαν κλίσιν αἰσθάνεται πρὸς τὸ μνημειῶδες. Ἐνῷ ὁ Αἰγύπτιος ἓν κυριώτατον στοιχεῖον τῆς ἐπιβολῆς του στηρίζει εἰς τὰς κολοσσικὰς ἐμφανίσεις τῆς ἀρχιτεκτονικῆς του ἢ τῆς πλαστικῆς του, ὁ Κρὴς εἰς μὲν τὸν πρῶτον κλάδον οὐδέποτε ὑπερβαίνει τὰ ὅρια, ἅτινα μία σεμνὴ καὶ ἀναπαυτικὴ ἀρχιτεκτονικὴ ἀπαιτεῖ, εἰς δὲ τὸν δεύτερον κλάδον ἀπηξίωσεν ὅλως νὰ ἀσχοληθῇ. Μόνον πολὺ μικρὰ περίοπτα πλαστικὰ ἔργα κατέχομεν ἐκ τῆς μινωϊκῆς Κρήτης. Τὸ ποιόν των ὅμως μᾶς δεικνύει ὅτι ὁ καλλιτέχνης κατεῖχεν ὅλας τὰς μεγάλας ἰδιότητας τῆς τέχνης του, μόνον δ᾿ ἐξ ἀντιπαθείας δὲν ἠσχολήθη ποτὲ μὲ τὴν μνημειώδη πλαστικήν. Οὕτως ἡ κρητικὴ τέχνη χαρακτηρίζεται γενικῶς σήμερον ὡς διαπνεομένη ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ πνεύματος, ὑφ᾿ οὗ καὶ ἡ ἰαπωνική, ὡς ἡ μικρογραφικὴ κατ᾿ ἐξοχὴν τέχνη τῆς προϊστορικῆς Μεσογείου.

Ἕτερον θεμελιῶδες χαρακτηριστικὸν τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ εἶναι ὅτι ἀποτελεῖ τέλειον τύπον δημοκρατίας ἐν τῇ τέχνῃ. Πολιτικῶς φαίνεται ὅτι ὁ δυνάστης τῆς Κνωσοῦ ἦτο συγχρόνως μέγιστος πολιτικὸς καὶ θρησκευτικὸς ἄρχων, βασιλεὺς - ἀρχιερεὺς κατὰ τὸν ἱεροκρατικὸν τύπον τοῦ αἰγυπτιακοῦ καὶ τῶν ἀνατολικῶν πολιτισμῶν. Ἐν τούτοις, ἐνῷ ἐν Αἰγύπτῳ ἡ τέχνη εἶναι κυριώτατα αὐλικὴ καὶ ἐμπνέεται κυριώτατα ἐκ τῶν αὐλικῶν θεμάτων, ἐν Κρήτῃ οὐδαμῶς ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ αὐλικοῦ περιβάλλοντος. Δὲν ἔχομεν οὔτε ἓν ἔργον, τὸ ὁποῖον νὰ μᾶς ἀπεικονίζῃ τὸν βίον, τὰς συνηθείας, τὰς ἀσχολίας, τὴν πολεμικὴν ἢ ἄλλην δραστηριότητα τῶν μινωϊκῶν μοναρχῶν. Ἐπὶ τοῦ σημείου τούτου ἀκριβῶς ἡ μινωϊκὴ τέχνη ὡς ἱστορικὸν δοκουμέντον εἶναι μηδαμινή. Ἐν Αἰγύπτῳ ὁ τάφος ἑνὸς «βεζίρου» ἢ ἄλλου μεγιστᾶνος παριστᾷ κατὰ προτίμησιν τὴν αὐλικὴν τούτου ζωὴν καὶ τὰς ἐργασίας ἃς οὗτος ἐξετέλει ἐν ὀνόματι τοῦ φαραώ. Ἐν Κρήτῃ ἡ «οἰκία τῶν τοιχογραφιῶν» τῆς Κνωσοῦ, ἥτις ἀναμφιβόλως ἦτο ἐνδιαίτημα προκρίτου κατοικοῦντος παρὰ τὸ ἀνάκτορον, μᾶς παρέχει ἀκριβῶς τὸν ἀντίθετον χαρακτῆρα τῆς τέχνης: Εἰκονίζεται μόνον ἡ φύσις, ἔμψυχος καὶ ἄψυχος, σπουδάζεται μόνον ἡ ἐμφάνισις τῆς παλλούσης ζωῆς καὶ ἀποτυποῦνται σκηναὶ κατὰ τὸν χαρακτῆρα συγγενεῖς πρὸς τὴν ἀλεξανδρινὴν ρωπογραφίαν (genre). Ὁ καλλιτέχνης εἶναι ἀπολύτως ἐλεύθερος εἰς τὰ θέματά του. Τὸ ἀτομικὸν τάλαντον οὐδένα ἱεροκρατικὸν ἢ ἄλλον περιορισμὸν ὑφίσταται, τείνει δὲ πρὸς μοναδικὸν σκοπὸν τὴν ἐμφάνισιν τῆς φύσεως ὑπὸ ζωντανήν, στιγμιότυπον μορφήν. Τοῦτο εἶναι πάλιν ἕτερον κύριον χαρακτηριστικὸν τῆς κρητικῆς τέχνης. Ὁ καλλιτέχνης ἐργάζεται μὲ ταχεῖαν χεῖρα καὶ πάντοτε ὑπὸ τὴν ἀχαλίνωτον ἐπιρροὴν τῆς πρώτης ζωηρᾶς ἐντυπώσεως. Διὰ τοῦτο τὰ ἔργα του πάλλουν ἀπὸ ζωὴν ἐν τῷ συνόλῳ των, χωρὶς νὰ εἶναι ποτὲ μελετημένα εἰς τὰς λεπτομερείας. Ἄνθη ἑνὸς φυτοῦ συνδέονται πρὸς φύλλωμα ἑνὸς ἑτέρου, κλάδοι καὶ βλαστοὶ ἀναρριχῶνται ἢ κρέμανται ἀπὸ βράχων κατὰ τρόπον ἀνύπαρκτον ἐν τῇ φύσει, ζῷα ἢ ἀνθρώπιναι μορφαὶ βρίθουσι σφαλμάτων καὶ ἀτελειῶν ἐν ταῖς λεπτομερείαις. Ἐν τούτοις ἡ συνολικὴ ἐντύπωσις εἶναι πάντοτε ζωντανὴ καὶ πλήρης κινήσεως. Ἀρκοῦν πολλάκις ὀλίγαι φευγαλέαι γραμμαὶ τοῦ χρωστῆρος, διὰ νὰ δώσῃ ὁ τεχνίτης τὴν ἐντύπωσιν τῆς δροσερᾶς πνοῆς εἰς τὸ ἔργον του μὲ δύο-τρία καλαμοειδῆ ἢ μὲ ἕνα κλάδον κισσοειδοῦς φυτοῦ. Ἰδοὺ ὁ λόγος, διὰ τὸν ὁποῖον ἀπεκάλεσαν τὴν μινωϊκὴν τέχνην προϊστορικὸν ἰμπρεσσιονισμόν. Ὁ ὅρος ἐν τούτοις δὲν εἶναι καὶ πολὺ ἐπιτυχής, διότι, ἂν τὸ ἀποτέλεσμα φαίνεται ὅμοιον, ἡ ἱστορικὴ γένεσις εἰς τὰς δύο τέχνας εἶναι ἐντελῶς διαφορετική.

*Ἀγγεῖον μετὰ παραστάσεως δελφίνων ἐντὸς τῆς θαλάσσης.*

[Ἐκ τῆς νησῖδος Ψείρας.]

Ἡ διακοσμητικὴ τάσις τῆς μινωϊκῆς τέχνης, ὡς ἐπίσης ἡ ἰδιαιτέρα χαρὰ διὰ τὴν πολυχρωμίαν, πράγματα ὀφειλόμενα τὸ μὲν εἰς ἱστορικοὺς λόγους, τὸ δὲ εἰς τὴν ἁπλοϊκὴν καλλιτεχνικὴν ἀντίληψιν, ἐνυπάρχουσι καὶ κατὰ τὴν ὑψίστην ἀκμὴν τοῦ «νατουραλισμοῦ», προσδίδοντα οὕτω εἰς τὴν τέχνην πάντοτε μίαν ὡρισμένην δόσιν συμβατισμοῦ. Οὕτως ὁ καλλιτέχνης ζωγραφίζει τοὺς βράχους περιγράφων ποικιλοχρώμους γραμμὰς τὴν μίαν ἐντὸς τῆς ἄλλης δίκην ὑψομετρικῶν καμπύλων. Τὰ φύλλα ἑνὸς κισσοειδοῦς φυτοῦ τὰ παριστᾷ ἐναλλὰξ πράσινα καὶ κυανᾶ, προσθέτων καὶ ἀπὸ ἕνα κίτρινον πυρῆνα. Τοῦ φαίνεται λίαν πεζὸν νὰ παραστήσῃ τὴν θάλασσαν ἁπλῶς μὲ κυανοῦν χρῶμα καὶ προτιμᾷ εἴτε νὰ γεμίσῃ τὸ φόντο του μὲ τολύπας ὑδατίνων ἀφρῶν καὶ παφλασμῶν, εἴτε νὰ καταφύγῃ εἰς ἓν συμβατικὸν δικτυωτὸν κόσμημα. Προσθέτει καὶ πυκνὰς στιγμάς, διὰ νὰ ἀπεικονίσῃ τὰς λαμπρὰς ἀντανακλάσεις τοῦ θερινοῦ ἡλίου. Παρ᾿ ὅλα ταῦτα γνωρίζει πάντοτε νὰ ἀποτυπώνῃ δυνατὴν πνοὴν ζωῆς, εἶναι δὲ πραγματικῶς ἀξιοθαύμαστον, πῶς μὲ ταχείας περιγραμματικὰς γραμμὰς κατορθώνει εἰς τὰς λεγομένας μικρογραφικὰς τοιχογραφίας νὰ παριστάνῃ ὄχι ἁπλῶς κίνησιν καὶ ζωήν, ἀλλ᾿ ἀκόμη καὶ τὰ ἀνθρώπινα συναισθήματα.

Ἡ πολυμέρεια τῆς τέχνης, πάντοτε ἐντὸς τοῦ πλαισίου τῆς εἰδικωτέρας ζωϊκῆς καὶ φυτικῆς φύ-

Digitized by Google

σεως, ἥτις ἀποτελεῖ τὸ ρεπερτόριον τοῦ καλλιτέχνου, εἶναι ἐκπληκτική. Ἀνεξήγητος ἀκόμη εἶναι ἡ μοναδικὴ εἰς τοὺς ἀρχαίους πολιτισμοὺς τάσις, ὅπως ἀναζητῶνται τὰ πλέον ἀπροσδόκητα μοτίβα ἀπὸ τὸν βυθὸν τῆς θαλάσσης. Μαλάκια, φυκοειδῆ, κοραλλιοειδῆ, σπόγγοι, θαλάσσιοι βράχοι καὶ ποικίλα ὄστρεα, πάντα ταῦτα γίνονται ὑποκείμενον τοῦ τολμηροῦ χρωστῆρος. Πραγματικαὶ θαλασσογραφίαι, μὲ δελφῖνας καὶ ἄλλους ἰχθῦς νηχομένους ἢ μὲ τοὺς ταχεῖς δακτυλοπτέρους (χελιδονόψαρα), περιφερομένους πρὸς πᾶσαν διεύθυνσιν ἐντὸς τοῦ στοιχείου των, κοσμοῦν τὰ ἀνάκτορα τῆς Κνωσοῦ καὶ τῆς Φυλακωπῆς. Ἐκ τῆς μεγάλης τέχνης τὰ θαλάσσια μοτίβα μεταφέρονται εἰς τὴν μικροτεχνίαν καὶ τὴν ἀγγειογραφίαν, ἥτις νῦν παράγει ἔξοχα δείγματα τῆς παλαιοτάτης μικρογραφικῆς τέχνης, ἥτις ἤκμασεν εἰς τὴν Μεσόγειον. Τοὺς δακτυλοπτέρους, ἐπὶ τὸ διακοσμητικώτερον πάντοτε παριστανομένους, χρησιμοποιεῖ νῦν ὁ σφραγιδογλύφος διὰ τὰς σφραγῖδάς του, ὁ ἐπιπλοποιὸς διὰ τὰς πυξίδας καὶ ἄλλα σκεύη του, ὁ τορευτὴς διὰ τὴν ἐμπαιστικὴν διακόσμησιν τῶν ἐγχειριδίων του. Οἱ βωμοὶ τῆς θεότητος διακοσμοῦνται μὲ παντοίας παραστάσεις θαλασσίων ὄντων ἐκ φαγεντιανῆς, ὁμοίαν δὲ ἀνάγλυφον διακόσμησιν ἐφαρμόζει ἐνίοτε καὶ ὁ ἀγγειοπλάστης διὰ τὰ κεραμεικά του προϊόντα.

Ὁ θεμελιώδης διακοσμητικὸς χαρακτὴρ τῆς τέχνης καὶ ἡ ἀσυγκράτητος φαντασία, ἡ ἐργαζομένη ἀπὸ μνήμης, δὲν σταματοῦν οὔτε πρὸ τῶν ζωϊκῶν ὄντων. Ὁ τεχνίτης παράγει τέρατα ὄχι μόνον ἑκουσίως, ἀλλὰ καὶ ἀκουσίως του. Μία σειρὰ σφραγισμάτων ἐκ Ζάκρου μᾶς παρέχει τὰς πλέον αὐθαιρέτους καὶ παραδόξους ἐμφανίσεις ζωϊκῶν μελῶν συνηνωμένων ἐπὶ τὸ αὐτό. Ἀλλὰ καὶ ἐκτὸς ἀπὸ αὐτὰ τὰ τέρατα, ὁ τεχνίτης δὲν ἀκριβολογεῖ ποτὲ καὶ ὅταν πρόκειται νὰ παραστήσῃ φύσιν. Ματαίως θὰ ἀναζητήσῃ ὁ ζῳολόγος νὰ ταυτίσῃ ἐπακριβῶς τὸ εἶδος τοῦ «κυανοῦ πτηνοῦ» ἐπὶ μιᾶς τοιχογραφίας. Ἴσως ὁ τεχνίτης εἶχεν εἰς τὴν φαντασίαν του ἀγρίας περιστεράς, ἀλλὰ μόνον εἰς τὴν φαντασίαν του. Τὰ περαιτέρω δὲν τὸν ἐνδιαφέρουν. Ὁ Αἰγύπτιος συνάδελφός του θὰ σπουδάσῃ πρῶτον ἐκ τοῦ φυσικοῦ τὸν φυλετικὸν τύπον ἑνὸς Ἀσιάτου προτοῦ τὸν ζωγραφήσῃ. Θὰ συγκρατήσῃ ἐπιμελῶς εἰς τὴν μνήμην του τὰς χαρακτηριστικὰς στάσεις ἑνὸς ἀγριμαίου ἢ θὰ μελετήσῃ δι᾽ ἐπιμελοῦς αὐτοψίας τὸ περίγραμμα καὶ τὸ πτέρωμα ἑνὸς ἔποπος, τὸν ὁποῖον

*Δακτυλόπτεροι (χελιδονόψαρα).*
[1=Ἐκ τοιχογραφίας (Φυλακωπή). 2=Ἐκ χρυσοῦ (Βαφειό).]

θὰ παραστήσῃ ἐπὶ τοιχογραφίας ἐν Beni-Hassan. Ἐργάζεται μὲ ὑπομονὴν καὶ προσθέτει μὲ μικρολόγον προσοχὴν κάθε λεπτομέρειαν, τὴν ὁποίαν ἠδυνήθη νὰ παρατηρήσῃ. Ὁ ταχυδακτυλουργικὸς μινωϊκὸς καλλιτέχνης παρεισάγει εἰς μίαν ζῳφόρον περδίκων ἓν αὐτοσχέδιον δενδρύλλιον καὶ ἐπ᾽ αὐτοῦ ζωγραφίζει μὲ περισσοτέραν εὐχέρειαν παρὰ εὐσυνειδησίαν ἓν κίτρινον πτηνόν, τὸ ὁποῖον ἐφοδιάζει καὶ μὲ πλούσιον λόφιον. Δὲν εἶναι οὔτε συκοφάγος οὔτε ἔποψ. Οὕτως εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν μᾶς παρουσιάζεται ἡ σπουδαιολόγος ἀκαδημαϊκὴ τέχνη, εἰς τὴν δευτέραν ἡ ζωηρὰ καὶ ἀτίθασος ἰμπρεσσιονιστικὴ πνοή. Ἐκεῖ γεννᾶται περισσοτέρα προσοχή· ἐδῶ, ἰσχυροτέρα ἐντύπωσις.

Τοιαύτας θεμελιώδεις ἰδιότητας ἔχουσα ἡ τέχνη, τόσον νεωτεριστικὴ οὖσα καὶ σχεδὸν εἰπεῖν νευρική, εἶναι ἑπόμενον ὅτι ἔπρεπε νὰ ἐξελιχθῇ ραγδαίως. Τὸ αὐτὸ συμβαίνει καὶ βραδύτερον μὲ τὴν ἑλληνικὴν τέχνην. Οὕτω, μετὰ ἑκατὸν ἐτῶν

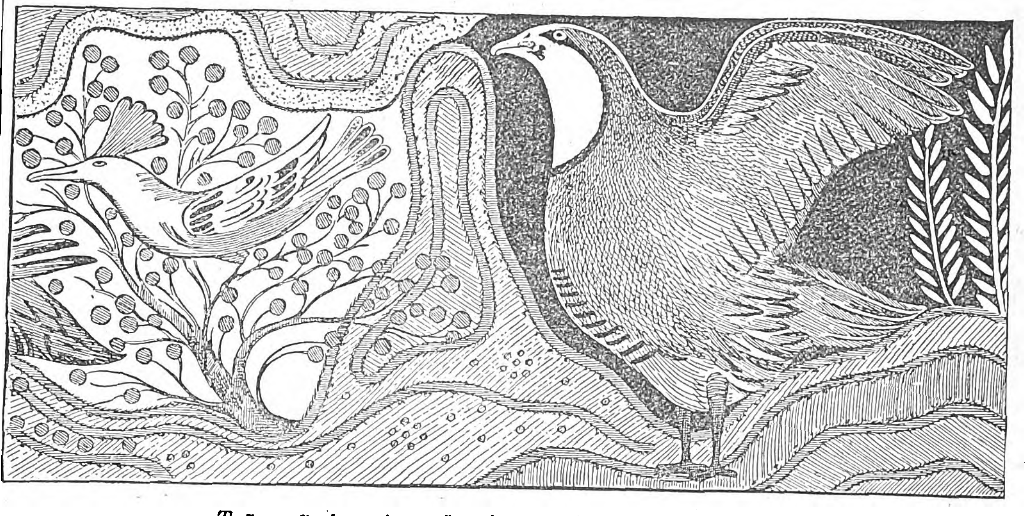

*Τμῆμα τῆς ζῳοφόρου, ἥτις ἐκόσμει τὸν ξενῶνα τῆς Κνωσοῦ.*

περίπου μεσουράνημα, ἀρχίζει ἡ μινωϊκὴ τέχνη νὰ μεταπίπτῃ εἰς τὰς ἀψυχοτέρας διακοσμητικὰς τάσεις τοῦ ἀνακτορικοῦ ρυθμοῦ καὶ κατόπιν νὰ ἐκφυλισθῇ, ὡς ἐμνημονεύθη ἤδη ἀνωτέρω.

Καθ᾽ ὅλην τὴν δισχιλιετῆ περίοδον τοῦ βίου του, καὶ οὐχὶ μόνον κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ μεσουρανήματός του, ὁ κρητικὸς πολιτισμὸς διαπνέεται ἀπ᾽ ἄκρου εἰς ἄκρον ἀπὸ ἓν χαρακτηριστικὸν πνεῦμα προόδου, ἡμερότητος καὶ εὐθυμίας. Οὐδαμοῦ ἀπολύτως ἐμφανίζονται αἱ αἱμοχαρεῖς σκηναί, αἱ τόσον προσφιλεῖς καὶ εἰς τὸν μυκηναϊκὸν ἔτι πολιτισμόν, τὸν κατ᾽ εὐθεῖαν ἀπόγονον τοῦ μινωϊκοῦ. Τὸ πνεῦμα τῆς διαρκοῦς εἰρήνης, τὸ ὁποῖον προσφυῶς ἐκλήθη Pax minoica ὑπὸ τοῦ Evans, ἀντικατοπτρίζεται καὶ ἐν τῇ τέχνῃ. Οὐδέποτε φαίνεται ὅτι συνεκλόνησαν πολεμικαὶ περιπέτειαι τὸν μακραίωνα πολιτισμόν, περιπέτειαι αἵτινες ἤθελον ἀσφαλῶς ἐμπνεύσει καὶ τὴν τέχνην. Αἱ παραδόσεις περὶ τοῦ νεωτέρου Μίνωος, ὅστις ἐθεωρεῖτο σκληρὸς καὶ ριψοκίνδυνος κατακτητής, ἀσφαλῶς πρέπει νὰ ἀνάγωνται εἰς ἐποχὴν πολὺ μεταγενεστέραν. Κατὰ τὸ μεσουράνημα τοῦ κρητικοῦ πολιτισμοῦ δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ δράσωσι τοιούτου τύπου δυνάσται, χωρὶς νὰ ἔχωμεν ἀνάλογον ἀντανάκλασιν ἐπὶ τὴν τέχνην.

Οὕτως, ἐνῷ ὁ αἰγυπτιακὸς πολιτισμὸς μᾶς παρουσιάζει εἰς τὴν τέχνην του ὁλόκληρον τὴν φοβεράν του συντηρητικότητα, τὴν ἀμείλικτον ἀκαμψίαν καὶ τὸ πνεῦμα τῆς αὐστηρᾶς του ἐθιμοτυπίας· ἐνῷ οἱ ἀνατολικοὶ πολιτισμοὶ μᾶς κατέλιπον τὴν κυρίαρχον πνοὴν τῆς πολυταράχου καὶ ἐνίοτε θηριώδους πολεμικῆς ζωῆς, ὁ μινωϊκὸς πολιτισμός, ὡς μία εἰρηνιστικὴ ὄασις τοῦ χαλκοῦ αἰῶνος, μᾶς παρουσιάζει τὴν παίζουσαν καὶ εὔθυμον τέχνην του, τέχνην ἡμερότητος καὶ εἰδυλλίου. Ἡ γενικὴ πνοή της προδίδει πολιτισμὸν φιλοπαίγμονα καὶ εὐαίσθητον, μεστὸν ἐξηυγενισμένων ἀπολαύσεων τῆς ζωῆς, ἐν μιᾷ λέξει πολιτισμὸν μὲ ἀνθρωπιστικὰς τάσεις ἀγνώστους ἄλλως εἰς τὰς προϊστορικὰς κοινωνίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Γενικώτερα βιβλία περὶ μινωικοῦ πολιτισμοῦ ἀναγράφονται εἰς τὰ ἄρθρα *Κνωσὸς* καὶ *Κρήτη*. Εἰδικώτερον τὰ θέματα τοῦ παρόντος ἄρθρου πραγματεύονται τὰ ἔργα: *A. von Salis*, Kunst der Griechen [8] 1923.—*G. Rodenwaldt*, Kunst der Antike (Propylaeen Verlag).—*B. Schweitzer*, Altkretische Kunst ἐν τῷ περιοδικῷ «Die Antike», τόμ. 2, 291 ἑξ.—*Σπ. Μαρινᾶτος*, δύο ἄρθρα ἐν τῷ περιοδικῷ «Cahiers d' Art», 1931. Συμπληρωματικῶς πρβλ. τὸ ἄρθ. Kreta τοῦ Karo ἐν Realencyclopaedie der Klassischen Altumswissenschaft.—*J. Charbonneau*, Art Égéenne. 1930.

ΣΠ. Ν ΜΑΡΙΝΑΤΟΣ

**μινωῒς** (ἡ) (Minoa) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων λεπιδοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *γεωμετριδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους ψυχὰς ἀπαντώσας πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μινῷος**, *—α, —ον· ἄλλως μινωϊκὸς* (βλ. λ.): «μινῴα περίοδος».

**Μίνως.** Βασιλεὺς τῆς Κρήτης, υἱὸς τοῦ Διὸς καὶ τῆς Εὐρώπης. Τὴν ἀρχὴν ἔλαβεν ἀπ᾽ εὐθείας παρὰ τοῦ Διός, κατ᾽ ἄλλους ὅμως παρὰ τοῦ Ἀστερίωνος, εἰς τὸν ὁποῖον ὁ Ζεὺς ἔδωκεν ὡς σύζυγον τὴν Εὐρώπην. Ὁ Ἀστερίων οὗτος ἴσως εἶναι αὐτὸς ὁ *Ἀστέριος* ἢ *Ἀστερίων Ζεύς*. Ὁ Μίνως εἶχεν ἀδελφοὺς ἐκ τοῦ Διὸς τὸν Ραδάμανθυν καὶ τὸν Σαρπηδόνα. Τούτων ὁ τελευταῖος, νικηθεὶς ὑπὸ τοῦ Μίνωος, ὅστις διὰ θαύματος ἀπέδειξε τὴν ὑπεροχήν του, ἔφυγεν εἰς Μ. Ἀσίαν. Ὁ Μίνως ἔσχε πολλὰ τέκνα, τῶν ὁποίων τὰ περισσότερα ἐκ τῆς νομίμου συζύγου του Πασιφάης (τὸν *Κατρέα, Δευκαλίωνα, Γλαῦκον, Ἀνδρόγεων, Ἀκακαλλίδα, Ἀριάδνην, Φαίδραν, Ξενοδίκην*), ἀλλὰ καὶ ἐξ ἄλλων, ὅπως τῶν νυμφῶν Παρίας, Δεξιθέας καὶ Φρονίας, ἠράσθη δ᾽ ἐπίσης καὶ τῆς Βριτομάρτιος καὶ τῆς Ἐριβοίας. Αἱ ἀπιστίαι τοῦ Μίνωος πρὸς τὴν σύζυγον ἠνάγκασαν αὐτὴν νὰ μεταχειρισθῇ μαγικὸν μέσον, δι᾽ οὗ ἀπέθνῃσκον εἰς τὴν ἀγκάλην του αἱ πλησιάζουσαι αὐτῷ, μόνον δὲ ἐχίδνας, σκορπίους καὶ παρόμοια τέρατα ἐτεκνοποίουν. Ἐκ τοῦ κακοῦ τούτου τὸν ἀπήλλαξεν ἡ Πρόκρις διὰ τεχνάσματος. Ὁ Μίνως ἐθεωρεῖτο καὶ ὡς εἰσηγητὴς τῶν παιδικῶν ἐρώτων ἐν Κρήτῃ, διὰ τοῦ ἔρωτός του πρὸς τὸν Μίλητον καὶ τὸν Θησέα, εἰς ὃν ἔδωκε τὴν Φαίδραν. Ἔζησε 3 γενεὰς πρὸ τῶν τρωϊκῶν, ἀφοῦ ἦτο πάππος τοῦ Ἰδομενέως, υἱοῦ τοῦ Δευκαλίωνος. Ἡ γέννησις τοῦ Μινωταύρου ὑπὸ τῆς γυναικός του ἦτο ἀποτέλεσμα ἐκδικήσεως τοῦ Ποσειδῶνος, διότι δὲν ἐθυσίασε τὸν ὡραῖον ταῦρον, ὃν ἔλαβε παρ᾽ αὐτοῦ δι᾽ ἐπικλήσεως, ἀλλ᾽ ἄλλον ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ὁ Ποσειδῶν ἐνέπνευσεν ἀθέμιτον ἔρωτα εἰς τὴν Πασιφάην πρὸς τὸν ταῦρον, ὃν εἶχε καταλάβει μανία, καὶ ἐκ τούτου προῆλθεν ὁ Μινώταυρος. Ὁ Μίνως ἐκυριάρχει της Κρήτης ὁλοκλήρου, ἥτις ἦτο ἑκατόμπολις, ἔχων ὡς ἕδραν τὴν Κνωσόν. «Βασιλεύτατος γένοιτο θνητῶν βασιλήων, κατὰ τὸν Ἡσίοδον, καὶ πλείστων ἤνασσε περικτιόνων ἀνθρώπων Ζηνὸς ἔχων σκῆπτρον». Ἵδρυσε πολλὰς πόλεις, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὴν Κνωσόν, Φαιστὸν καὶ Κυδωνίαν, ἐκυριάρχει καὶ ἔξω τῆς Κρήτης (αἱ νῆσοι τῶν Κυκλάδων ἦσαν ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν τῶν υἱῶν του καὶ ἐκαλοῦντο Μινωΐδες), ἐλέγετο ἐφευρέτης ἐλαφροῦ πλοιαρίου, τῆς ἐπακτηρίδος, καὶ ἐκάθηρε τὴν θάλασσαν ἐκ τῶν πειρατῶν. Αἱ Ἀθῆναι (τὰς ὁποίας προσέβαλε, διότι ὑπῆρξαν αἴτιοι τοῦ φόνου τοῦ υἱοῦ του Ἀνδρόγεω, τὸν ὁποῖον εἶχον ἀποστείλει κατὰ τοῦ ταύρου τοῦ Μαραθῶνος) ἦσαν ὑποτελεῖς εἰς αὐτόν. Ἐπίσης προσέβαλε τὰ Μέγαρα, τὰ ὁποῖα κατέλαβε διὰ προδοσίας τῆς κόρης τοῦ βασιλέως Νίσου, Σκύλλας, ἥτις ἠράσθη τοῦ Μίνωος. Ὁ Μίνως ἐθεωρεῖτο καὶ μέγιστος νομοθέτης· ἐλέγετο ὅτι τοὺς νόμους ἐλάμβανε κατὰ 9 ἔτη (οὕτω ἑρμηνεύουν τό: ἐννέωρος βασίλευε) ἐν σπηλαίῳ τῆς Ἴδης παρὰ τοῦ Διός. Εἰς αὐτὸν ἀπεδίδετο ἡ δωρικὴ νομοθεσία. Ἡ διοίκησίς του καθόλου ἦτο ἠπία καὶ εἰς ἄκρον δικαία, διὸ ἐθεωρήθη ὡς εἷς τῶν 3 κριτῶν τοῦ Ἅδου μετὰ τοῦ Ραδαμάνθυος καὶ τοῦ Αἰακοῦ.

*Ὁ Μίνως ἐπὶ νομίσματος τῆς Γόρτυνος.*

Αἱ σχέσεις αὐτοῦ πρὸς τὸν Δαίδαλον, τὸν καλλιτέχνην, τὸν ὁποῖον οἱ Ἀθηναῖοι ἐθεώρησαν Ἀθηναῖον μεταβάντα εἰς Κρήτην, συνδέονται μὲ τὴν ἐκπολιτιστικήν του ἐπίδρασιν. Ὁ Δαίδαλος κατεσκεύασε δι᾽ αὐτὸν τὸν λαβύρινθον, ἵνα ἐγκλεισθῇ ἐντὸς αὐτοῦ ὁ Μινώταυρος. Ἀλλ᾽ ὅταν ὁ Μίνως ἔμαθεν ὅτι ὁ καλλιτέχνης ἐβοήθησε τοὺς ἀθεμίτους ἔρωτας τῆς γυναικός του Πασιφάης πρὸς τὸν ταῦρον, κατασκευάσας ὁμοίωμα χαλκοῦν δαμάλεως, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ἐνεκλείσθη ἡ Πασιφάη, ἐνέκλεισεν αὐτὸν ἐν τῷ λαβυρίνθῳ, ὁπόθεν ἐδραπέτευσε μετὰ τοῦ υἱοῦ Ἰκάρου διὰ τεχνητῶν πτερύγων. Μὲ τὸν μῦθον αὐτὸν τοῦ Δαιδάλου συνδέεται καὶ τὸ τέλος τοῦ Μίνωος. Καταδιώξας διὰ τῶν πλοίων του τὸν Δαίδαλον, ὅστις κατέφυγεν εἰς Σικελίαν, ἐφιλοξενήθη ὑπὸ τοῦ ἐκεῖ βασιλέως Κωκάλου. Οὗτος, ἀντὶ νὰ παραδώσῃ τὸν Δαίδαλον, ἔρριψε τὸν φιλοξενούμενον Μίνωα εἰς ζέον λουτρὸν παρα-



Digitized by Google

σκευασθὲν ὑπὸ τῶν θυγατέρων του καὶ τὸν ἐθανάτωσεν. Οἱ ὀπαδοί του δὲν ἠδυνήθησαν νὰ φύγουν ἐκ Σικελίας, καθ' ὅτι τὰ πλοῖα των ἐκάησαν ὑπὸ τοῦ Κωκάλου, καὶ ἵδρυσαν ἐκεῖ πόλιν μὲ τὸ ὄνομα Μινώα πρὸς τιμὴν τοῦ βασιλέως των, τὸν ὁποῖον ἔθαψαν ἐκεῖ. Ὁ τάφος οὗτος τοῦ Μίνωος ἐλέγετο ὅτι κατεστράφη κατὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ Ἀκράγαντος καὶ ὅτι τὰ ὀστᾶ του μετεφέρθησαν εἰς Κρήτην, ὅπου βραδύτερον ὁ τάφος του ἐθεωρήθη ὡς τάφος τοῦ Διός.

Ἐνωρὶς ἐπεκράτησεν ἡ γνώμη ὅτι ὑπῆρξαν δύο βασιλεῖς μὲ τὸ ὄνομα Μίνως. Ὁ δεύτερος Μίνως ἐθεωρήθη ὡς υἱὸς τοῦ Λυκάστου, υἱοῦ τοῦ Μίνωος καὶ τῆς Ἰτώνης. Ἡ διάκρισις αὕτη ἐγένετο, διότι ὑπῆρχον γεγονότα μὴ συμβιβαζόμενα μὲ τὸν χαρακτῆρα τοῦ ἀγαθοῦ Μίνωος, ὅστις καὶ κριτὴς τῶν νεκρῶν διὰ τὴν δικαιοσύνην του ἐγένετο. Διὸ ὡς θαλασσοκράτωρ καὶ ὡς ὑποτάξας τοὺς Ἀθηναίους ἐθεωρήθη ὁ δεύτερος Μίνως. Ἕτερος λόγος τοῦ διχασμοῦ τούτου ἦτο ἡ ἐπιθυμία τῶν Δωριέων τῆς Κρήτης νὰ ἀναγάγουν τὴν γενεαλογίαν των μέχρι τοῦ Μίνωος, πρᾶγμα ὄχι δυνατὸν μὲ τὸν ἕνα Μίνωα, ἀφοῦ οὔτε οἱ δύο δὲν ἐξαρκοῦν διὰ νὰ καλύψουν ὅλον τὸν χρόνον. Ἐξ ἄλλου ὁ Δαίδαλος εἶναι γνωστὸν ὅτι ἤκμασε τὸν Ζ' αἰῶνα, ἐνῷ ὁ Μίνως τρεῖς γενεὰς πρὸ τῶν τρωϊκῶν.

Ἡ ἱστορικὴ ἀλήθεια, ἡ κρυπτομένη ὄπισθεν τῶν περὶ τοῦ Μίνωος μύθων, εἶναι φανερά· πολὺ δὲ ἐναργεστέρα ἐγένετο διὰ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ὡς ἱστορικὸν πρόσωπον ἐθεωροῦν τὸν Μίνωα καὶ ὁ Ἡρόδοτος καὶ ὁ Θουκυδίδης. Οἱ μυθολόγοι ἀναζητοῦν φυσικὴν ἐξήγησιν τῶν μύθων, δεχόμενοι τὸν Μίνωα ὡς ἐκπροσώπησιν τοῦ Ἡλίου ἢ τῆς Σελήνης· ἄλλοι θεωροῦν τὸν Μίνωα ὡς μορφὴν ταυροκεφάλου θεότητος ταυτίζοντες αὐτὸν πρὸς τὸν Μινώταυρον. Μετὰ τὰς νεωτέρας ἀνακαλύψεις οὐδὲν τούτων θεωρεῖται πιθανόν, οὔτε ἡ συσχέτισις τοῦ Μίνωος μὲ τὸν Manu τῶν Ἰνδιῶν. Μίνως δύναται πολὺ καλὰ νὰ εἶναι τίτλος τῶν βασιλέων-ἱερέων τῆς Κνωσοῦ, ἀποδοθεὶς κυρίως εἰς ἕνα αὐτῶν ὑπὸ τῶν μεταγενεστέρων (ὅπως ὁ τίτλος φαραὼ εἰς τὴν Παλαιὰν Διαθήκην), εἰς τὸν ὁποῖον ἀπεδόθησαν γεγονότα ἄλλων φερόντων τὸν αὐτὸν τίτλον. Ἡ σχέσις τοῦ Μίνωος μὲ ἱερὰ πρόσωπα (Πασιφάη, Ἀριάδνη (=πανίερος) Ζεύς· εἰς τὸν τάφον του ὑπῆρχεν ἱερὸν τῆς Ἀφροδίτης κατὰ τὴν παράδοσιν) εἶναι σύμφωνος πρὸς τὸν θρησκευτικὸν χαρακτῆρα τῶν βασιλέων τῆς Κνωσοῦ. Ἡ ἐπέκτασις τῆς κυριαρχίας διὰ τοῦ ναυτικοῦ ἐπὶ Μίνωος θεωρεῖται νῦν ἱστορικὸν γεγονός, ἀφοῦ τὴν μινωϊκὴν ἐπίδρασιν συναντῶμεν μέχρις Ἰβηρίας. Τὸ ὅτι εἶχε δικαστικὴν ἐξουσίαν προερχομένην ἐξ αὐτῆς τῆς ἱερατικῆς του ἰδιότητος ἦτο ἀρκετὸν διὰ νὰ γεννήσῃ τὴν ἰδέαν τοῦ κριτοῦ τοῦ Ἅδου καὶ ἡ νομοθεσία του δὲν φαίνεται ἀπίθανος κατόπιν τῆς εὑρέσεως τοῦ ἐπὶ πηλίνων πινακίδων λογιστικοῦ (ὡς φαίνεται) ἀρχείου τῆς Κνωσοῦ. Οἱ περὶ σκληρότητος αὐτοῦ μῦθοι βεβαίως προῆλθον ἐκ ζηλοφθονίας τῶν Ἀθηναίων καὶ τοῦ σωβινισμοῦ των, λόγῳ τοῦ ὁποίου δὲν ἤθελον νὰ ἀναγνωρίσουν τὴν κυριαρχίαν τοῦ Μίνωος. Ἡ ἐκστρατεία του εἰς Σικελίαν δὲν στερεῖται ἱστορικῆς βάσεως, δεδομένου ὅτι πολλὰ σχετικὰ μὲ τὸν μινωϊκὸν πολιτισμὸν εὑρέθησαν ἐκεῖ. Ἡ εἰσαγωγὴ κασσιτέρου καὶ λιπαρίτου εἰς Κρήτην καὶ αἱ σχέσεις μὲ τὴν Αἴγυπτον δεικνύουν τὴν θαλασσοκρατορίαν τοῦ Μίνωος. Ὁ W. Ridgeway ὑπεστήριξε τὴν περίεργον θεωρίαν ὅτι ὁ Μίνως ὡς Ἀχαιὸς (ἀφοῦ καὶ ὁ Ἰδομενεὺς εἶναι Ἀχαιὸς) εἶναι ὄχι ὁ ἱδρυτὴς ἀλλ' ὁ καταστροφεὺς τοῦ λεγομένου μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ, ἐλθὼν ἐκ Παλαιστίνης. Οἱ περὶ τὸν Μίνωα μῦθοι ἐχρησίμευ-

*Ὁ Ραδάμανθυς, ὁ Μίνως καὶ ὁ Αἰακὸς ὡς κριταὶ τοῦ Ἅδου.*
[Παράστασις ἐπὶ ἀγγείου τῆς Κανώσης.]

σαν ὡς ἀντικείμενον λογοτεχνικῶν ἔργων καὶ ἀπεικονίσεων. Ὁ Ἐπιμενίδης ἔγραψε ποίημα περὶ Μίνωος καὶ Ραδαμάνθυος, ὁ Ἱππόστρατος ἐπίσης. Εἰς τὸν Πλάτωνα ἀπεδόθη διάλογος «Μίνως». Οἱ τραγικοὶ μετεχειρίσθησαν ἐπίσης τοὺς μύθους περὶ Μίνωος. Οὕτω ὁ Αἰσχύλος ἔγραψε: «Κρῆσσας», ὁ Σοφοκλῆς «Μάντεις» ἢ «Πολύϊδον», «Δαίδαλον», «Καμικίους», ὁ Εὐριπίδης «Κρῆτας». Οἱ κωμικοὶ ποιηταὶ ἐπίσης· ὁ Ἀριστοφάνης ἔγραψε «Κώκαλον» καὶ «Δαίδαλον» καὶ ἄλλοι δέ, ὡς ὁ Ἄλεξις, ὁ Ἀντιφάνης, ὁ Πλάτων, ὁ Εὔβουλος, ὁ Νικοχάρης, ὁ Ἀναξίλας, ὁ Ἀπολλοφάνης ἔγραψαν δράματα μὲ σχετικὴν πρὸς τὸν Μίνωα ὑπόθεσιν. Ἐκ τῶν Λατίνων ὁ Accius ἔγραψε «Minos» ἢ «Minotauros». Παραστάσεις τοῦ Μίνωος ὑπάρχουσιν εἰς νομίσματα Κνωσοῦ, Γόρτυνος, Ἱεραπύτνης καὶ Φαιστοῦ. Ὡς κριτὴς παρίσταται εἰς ἀγγεῖον ἐκ Κανώσης, μετὰ τοῦ Θησέως δὲ καὶ τοῦ Μινωταύρου παρίσταται εἰς ἀνάγλυφα σαρκοφάγων. Ν. Ε. Π.

**«Μίνως».** Εἰδησεογραφικὴ ἐφημερὶς ἐν Πάτραις, ἱδρυθεῖσα τὴν 15ην Ὀκτωβρίου 1841. Ἐξεδίδετο ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν μέχρι τοῦ 1876. —Π.

**Μινώταυρος** *[Μυθολ.]*. Μυθικὸν τέρας ἐν Κρήτῃ, γεννηθὲν ἐκ τῆς Πασιφάης, συζύγου τοῦ Μίνωος, καὶ ἑνὸς ταύρου. Κατὰ τὸν μῦθον ὁ Μίνως ἐπεκαλέσθη τὸν Ποσειδῶνα νὰ τοῦ στείλῃ ζῷον πρὸς θυσίαν διὰ νὰ φανῇ ἡ δύναμίς του· τὸ ἀποσταλὲν ὑπὸ τοῦ Ποσειδῶνος ζῷον ἦτο μέγας καὶ ὡραῖος ταῦρος, ἀντὶ τοῦ ὁποίου ὁ Μίνως ἐθυσίασεν ἄλλον ταῦρον, διαφυλάξας αὐτὸν διὰ τὴν ἀγέλην του. Ὁ Ποσειδῶν ἐξοργισθεὶς διὰ τοῦτο ἐνέβαλε μανίαν εἰς τὸ ζῷον καὶ ἔρωτα εἰς τὴν Πασιφάην πρὸς αὐτό, ἱκανοποιηθέντα διὰ τεχνάσματος τοῦ Δαιδάλου, ὅστις κατεσκεύασε χαλκῆν δάμαλιν, ἐντὸς τῆς ὁποίας ἐγκλεισθεῖσα ἡ Πασιφάη ἐμίγη μετὰ τοῦ ζῴου. Ἐκ τῆς ἑνώσεως ταύτης ἐγεννήθη

*Ἡ πάλη τοῦ Θησέως καὶ τοῦ Μινωταύρου.*
[Ἔργον τοῦ Barye ἐν τῷ Μουσείῳ τοῦ Λούβρου]

τέρας, τὸ ὁποῖον ἔφερε τὸ ὄνομα *Ἀστέριος* ἢ *Ἀστερίων*, ἀλλὰ διὰ τὴν μορφήν του ἐπεκλήθη Μινώταυρος. Τοῦτο ἐνέκλεισεν ὁ Μίνως εἰς λαβύρινθον κατασκευασθέντα ὑπὸ τοῦ Δαιδάλου. Ἡ τροφὴ τοῦ τέρατος αὐτοῦ συνίστατο εἰς ἑπτὰ νέους καὶ ἑπτὰ νεάνιδας, οἱ ὁποῖοι ἀπεστέλλοντο ἐξ Ἀθηνῶν ὡς φόρος ἐπιβληθεὶς εἰς τὴν πόλιν ταύτην ὑπὸ τοῦ Μίνωος. Οἱ νέοι οὗτοι κατ' ἄλλους μὲν ἐξελέγοντο διὰ κλήρου, κατ' ἄλλους δὲ ὑπ' αὐτοῦ τοῦ Μίνωος. Κατὰ τὴν δευτέραν ἢ τρίτην ἀποστολὴν τῶν νέων, συναπεστάλη τῇ αἰτήσει του ὁ Θησεύς, ὁ υἱὸς τοῦ βασιλέως Αἰγέως, ὅστις κατώρθωσε, τῇ βοηθείᾳ τῆς θυγατρὸς τοῦ Μίνωος Ἀριάδνης, νὰ φονεύσῃ τὸ τέρας διὰ ξίφους ἢ ῥοπάλου καὶ νὰ ἀπελευθερώσῃ τοὺς νέους. Εἰς τὴν Κρήτην χοροὶ συνεδέοντο πρὸς τὴν παράδοσιν ταύτην καλούμενοι *ταῦροι* καὶ *λαβύρινθοι* (οἵτινες φαίνεται νὰ ἦσαν ἀνάλογοι πρὸς τὸν ἐν Δήλῳ *γέρανον*).

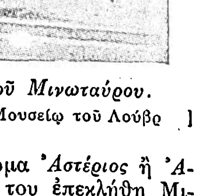

*Ὁ Μινώταυρος ἐπὶ νομίσματος τῆς Κνωσοῦ.*

Ἀπὸ τῶν ἀρχαίων ἤδη χρόνων ἔγιναν πολλαὶ ἀπόπειραι ἑρμηνείας τοῦ μύθου τοῦ Μινωταύρου, τῶν ὁποίων ἀναφέρομέν τινας. Ὁ Ἀριστοτέλης ὑπεστήριξεν ὅτι οἱ νέοι ἦσαν αἰχμάλωτοι τοῦ βασιλέως, χρησιμοποιούμενοι εἰς ἐργασίας σκληράς. Ἄλλοι εἶπον ὅτι ἐλαμβάνοντο ἐξ Ἀθηνῶν, διὰ νὰ χρησιμεύσουν ὡς βραβεῖα εἰς ἀγῶνας καὶ ὅτι εἷς ἐκ τῶν ἀγωνιστῶν, ὀνόματι Ταῦρος, ἔλαβε τὸ τοιοῦτον βραβεῖον καὶ λόγῳ τῆς σκληρότητός του μετεχειρίσθη πολὺ κακῶς τοὺς νέους καὶ τὰς νεάνιδας. Περισσότερον εὐημεριστικὴ εἶναι ἡ ἑρμηνεία τοῦ Παλαιφάτου. Κατ' αὐτήν, ἡ Πασιφάη ἠγάπησε τὸν Ταῦρον, ὅστις ἦτο εἷς τῶν ἀκολούθων τοῦ Μίνωος· τὸ ἐκ τῶν σχέσεών του γεννηθὲν τέκνον

*Ἀγγεῖον μὲ τὴν παράστασιν τῆς πάλης Θησέως καὶ Μινωταύρου.*
[Μουσεῖον Λούβρου.]

ὁ Μίνως, λόγῳ τῆς φυσικῆς ἠπιότητός του, δὲν ἐφόνευσεν, ἀλλ' ἀπέστειλεν ὡς βοσκὸν εἰς τοὺς ἀγρούς. Λόγῳ τοῦ ἀπειθαρχήτου ὅμως χαρακτῆρός του τὸ τέκνον τοῦτο ἐφυλακίσθη, ἀλλὰ δραπετεῦσαν κατέφυγεν εἰς σπήλαιον ἐκτεταμένον καὶ σκολιόν, ὅπου ὁ Μίνως ἔστελλε τοὺς ἐγκληματίας. Οἱ νεώτεροι μυθολόγοι συνεσχέτισαν τοὺς περὶ Μινωταύρου μύθους μὲ φυσικὰ φαινόμενα καὶ ἐθεώρησαν τὸν Μινώταυρον ὡς τὴν Σελήνην ἢ τὸν Ἥλιον διατρέχοντα τοὺς σκολιοὺς δρόμους τοῦ ἐνάστρου οὐρανοῦ (λαβυρίνθου). Ὁ Hoeck συσχετίζει τὸν Μινώταυρον μὲ τὸν Κρόνον, ὁ δὲ Preller μὲ τὸν Ἀστέριον Δία. Ἄλλοι δέχονται ὅτι οἱ μῦθοι οὗτοι προῆλθον ἐκ λατρείας ταυροκεφάλου θεότητος, εἰς ἣν προσεφέροντο ἀνθρωποθυσίαι. Ὅταν ἦλθεν ἐποχὴ ὑψηλοτέρου πολιτισμοῦ, καθ' ἣν τὴν πρὸς θεοὺς ἀνθρωποθυσίαν ἐθεώρουν ὡς ἀνευλαβῆ καὶ αἰσχρὰν πρᾶξιν, προέκυψεν ὁ μῦθος περὶ ταυροκεφάλου τέρατος.

Ἀφ' ὅτου ἡ ἀρχαιολογία κατέστησε πολὺ πιθανὴν τὴν ὑπόθεσιν ὅτι ὁ λαβύρινθος εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ Κνωσός, αἱ ἑρμηνεῖαι αὗται ἐγκατελείφθησαν: Ἡ ταυροκεφαλή, τὸ βουκράνιον ὡς ἱερὸν σύμβολον, τοῦ ὁποίου ὅμως ἀγνοοῦμεν ἀκόμη τὴν ἀκριβῆ ἔννοιαν, εἶναι συχνὸν ἐν τῷ μινωϊκῷ πολιτισμῷ. Αἱ ταυρομαχίαι ἐν Κνωσῷ ἀπετέλουν μέρος τῆς λατρείας τῆς θεότητος, ὡς φαίνεται, καὶ τὸ ὅτι εἰς αὐτὰς ἐλάμβανον μέρος νέοι καὶ νεάνιδες καθιστᾷ πιθανὸν τὸ ὅτι ὡς τοιοῦτοι ταυρομάχοι ἐχρησίμευον πολλάκις καὶ αἰχμάλωτοι (ἀφοῦ μάλιστα αἱ ταυρομαχίαι ἦσαν λίαν ἐπικίνδυνοι, ὅπως δεικνύουν πολλαὶ παραστάσεις φόνου κατὰ ταυρομαχίαν). Οἱ ἐπισκεπτόμενοι τὴν Κνωσόν, τὸν πολυδαίδαλον αὐτὸν λαβύρινθον αἰθουσῶν, διαδρόμων καὶ ὀρόφων, βλέποντες καὶ τὰς ἀφθόνους τοιχογραφίας ταυρομαχιῶν καὶ ταύρων εἰς τοὺς τοίχους τοῦ ἀνακτόρου, ἀκούοντες τοὺς μυκηθμοὺς ἴσως τῶν εἰς περιφράγματα κρατουμένων ζῴων καὶ ἀκούοντες τὰς περὶ φόνων ἐν ταυρομαχίαις διηγήσεις, δὲν ἦτο δύσκολον νὰ σχηματίσουν εἰς τὴν φαντασίαν τὸν μῦθον περὶ Μινωταύρου κατατρώγοντος νέους καὶ νέας. Μὲ τὴν λατρείαν τῆς θεότητος ἐν Κρήτῃ συνεδέοντο καὶ τερατόμορφοι δαίμονες οὐχὶ σπανίως ταυροκέφαλοι, ἀλλὰ δὲν φαίνεται πιθανὸν νὰ συνετέλεσαν οὗτοι εἰς τὴν γένεσιν τοῦ μύθου περὶ Μινωταύρου. Τοιαύτας παραστάσεις ἔχομεν ἐπὶ τῶν σφραγισμάτων τοῦ Ζάκρου· ἕτερον σφράγισμα ἐκ Κνωσοῦ, τὸ ὁποῖον ὁ Evans καλεῖ νεαρὸν Μινώταυρον, καὶ ἄλλα σχετικά, ἔχουν ἀναλόγους παραστάσεις δαιμόνων. Παραστάσεις εἰς μεταγενέστερα μνημεῖα εἶναι αἱ ἐπὶ κρητικῶν νομισμάτων. Ἐπὶ ἐτρουσκικῆς ἐπίσης κάλπης παρίσταται ἡ γέννησις τοῦ Μινωταύρου. Δύο χαλκᾶ ἀγαλμάτια παριστάνοντα τὸν Μινώταυρον προέρχονται τὸ ἓν ἐκ Κρήτης καὶ τὸ ἕτερον ἐξ Ὀλυμπίας. Συχνοτέρα ὅμως εἶναι ἡ παράστασις τῆς πάλης Μινωταύρου καὶ Θησέως ἰδίως ἐπὶ ἀναγλύφων μετοπῶν καὶ ἀγγείων (οὕτω ἐκ Θησείου ἀνάγλυφος μετόπη καὶ ἐκ κύλικος ἐρυθρομόρφου τοῦ μουσείου τῆς Φλωρεντίας). Ἐπίσης εἰς τὴν λογοτεχνίαν ἐχρησιμοποιήθη τὸ θέμα τοῦ Μινωταύρου· οὕτω ὁ Εὐριπίδης ἔγραψε «Θησέα». Ν. Ε. Π.

— **Μινώταυρος.** Ἕλλην ἐπιγραμματοποιὸς (βλ. λ. *Λεόντιος ὁ σχολαστικός*).

**Μινῶτος.** Ὄνομα ἀρχαιοτάτης ἐνετικῆς οἰκογενείας. Ταύτης διεκρίθησαν πλεῖστα μέλη, ἐν οἷς ὁ Λουκᾶς, συμμετασχὼν εἰς τὴν κατάληψιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Λατίνων καὶ τιμη-

Digitized by Google

θεὶς διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος τῶν νήσων Τήνου καὶ Μυκόνου, ὁ *Μᾶρκος*, διορισθεὶς βάϊλος τῆς Βενετίας ἐν Κωνσταντινουπόλει, ὁ *Ἰωάννης Φαντῖνος*, προσπαθήσας νὰ ἐξεγείρῃ ἐν Εὐρώπῃ σταυροφορίαν κατὰ τῆς Τουρκίας μὲ ἐπὶ κεφαλῆς τὸν Ἐρρῖκον Δ', βασιλέα τῆς Γαλλίας. Κλάδος τοῦ οἴκου τούτου ἐγκατασταθεὶς ἐν Μεθώνῃ ἐνεγράφη μεταξὺ τῶν εὐγενῶν τῆς πόλεως ταύτης, κατὰ δὲ τὴν πολιορκίαν αὐτῆς ὑπὸ Βαγιαζὴτ (1498) ἐφονεύθη ὁ *Γουλιέλμος Μινῶτος*. Τούτου ἡ σύζυγος μετὰ τοῦ ἑπταετοῦς τέκνου της *Γεωργίου* κατέφυγε, πρὸ τῆς πολιορκίας, εἰς Κεφαλληνίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ζάκυνθον, ὅπου ὁ Γεώργιος ἐγένετο ὁ γενάρχης τῆς νῦν ἐν Ζακύνθῳ ὁμωνύμου οἰκογενείας, ἐγγραφείσης ἐν τῇ Χρυσοβίβλῳ τῶν εὐγενῶν τῆς νήσου τῷ 1570. Ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης διεκρίθησαν ὁ *Γεώργιος*, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1537 καὶ διαπρέψας εἰς τοὺς Βενετικοὺς πολέμους κατὰ τῶν Τούρκων (1568, 1570 καὶ 1571), καὶ ὁ *Γουλιέλμος*, φονευθεὶς ἐν Κριμαίᾳ τῷ 1855. Λ. Χ. Ζ.

— **Μινώτου, *Μαρία*.** Ἑλληνὶς λογία, τὸ γένος Γιαννοπούλου, γεννηθεῖσα τῷ 1903 ἐν Ζακύνθῳ. Ἔτυχε κλασσικῆς μορφώσεως, διδαχθεῖσα κατ' οἶκον ὑπὸ τοῦ Δὲ Βιάζη, καὶ ἐξέμαθε τὰς κυριωτέρας τῶν εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν. Ἐταξίδευσεν εἰς Ἰταλίαν καὶ ἀπὸ τοῦ 1930 ἐγκατεστάθη ἐν Ἀθήναις. Τὸ πρῶτον ἐνεφανίσθη διὰ δύο διαλέξεων («Ἡ Ἑπτανησία» καὶ ἡ «Γυναικεία βιοτεχνία Ζακύνθου») κατὰ τὸ ἐν Ἀθήναις Α' Συνέδριον τοῦ Συνδέσμου Γυναικῶν, κατόπιν ἐξέδωκε μετάφρασιν τῆς «Ποιητικῆς Τέχνης» τοῦ Ὁρατίου μετὰ σημειώσεων καὶ σχολίων καὶ ἵδρυσεν ἐν Ζακύνθῳ τὸ περιοδικὸν «Εὔα Νικήτρια» (1921—1923), βραδύτερον δὲ (1927) τὴν «Ἰόνιον Ἀνθολογίαν». Ἄλλα ἔργα της εἰς αὐτοτελῆ βιβλία εἶναι: «Αἱ γυναῖκες εἰς τὴν Ἰταλικὴν Ἀναγέννησιν» (1922), ἡ εἰς πεζὸν μετὰ προλόγου καὶ σχολίων μετάφρασις τῶν «Χαρίτων» τοῦ Οὔγου Φωσκόλου (1923), καὶ ἡ συλλογὴ ἠθογραφικῶν διηγημάτων «Ζακυθινὰ Ἀγριολούλουδα» (1929). Ὑπὸ τὴν ἐπιμέλειάν της ἐπίσης ἐξεδόθησαν λευκώματα ἀναμνηστικὰ τοῦ Φωσκόλου (1927) καὶ τοῦ Γερ. Μαρκορᾶ (1930). Τ. Α.

**μίξα** (ἡ)· βλ. *μύξα*.

**μιξέλλην,** —*ηνος* (ὁ, ἡ)· βάρβαρος μεμιγμένος Ἕλλησι· *μιξέλληνες* καλοῦνται οἱ βάρβαροι, οἵτινες ἔφερον αἷμα ἑλληνικὸν ἐξ ἐπιγαμίας, ἀλλ' ὅμως παρέμενον βάρβαροι.

**μίξιμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μεμιγμένος, ὁ κεκραμένος, ὁ μὴ ἁγνός, ὁ μὴ γνήσιος· || ἐπὶ νομισμάτων, ὁ ὑπόχαλκος, κίβδηλος.

**μῖξις,** —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ *μιγνύειν*, ἀνάμιξις, ἕνωσις, ἀνακάτωμα: «προβλήματα μίξεως»· || σωματικὴ μῖξις, συνουσία.

— *[Μουσ.]* —1) Ὅρος ἐν χρήσει ἐν τῇ ἀρχαίᾳ ἑλληνικῇ μουσικῇ, σημαίνων ἐν μὲν τῇ μελοποιίᾳ τὴν κατὰ τοὺς κανόνας τῆς τέχνης συνένωσιν τῶν φθόγγων, γενῶν, ἁρμονιῶν, τόνων καὶ τόπων, ἐν δὲ τῇ ρυθμοποιίᾳ τὴν ἔντεχνον συμπλοκὴν τῶν διαφόρων ρυθμικῶν ποδῶν καὶ σχημάτων.

—2) Διὰ τοῦ ὅρου *μῖξις* (γαλλ. mixture ἢ mutation), ἢ καὶ *συστοιχία μίξεως*, χαρακτηρίζονται ἐν τῷ ἐκκλησιαστικῷ ὀργάνῳ αἱ συστοιχίαι αἱ ἔχουσαι δι' ἕκαστον φθόγγον περισσοτέρους σωλῆνας συνηχοῦντας. Ἡ μῖξις προῆλθεν ἐκ τῆς ἀνάγκης τοῦ τεχνητοῦ πλουτισμοῦ τῶν σωλήνων τοῦ ὀργάνου δι' ἁρμονικῶν φθόγγων, οἵτινες σχεδὸν ἐλλείπουσιν ἐξ αὐτῶν. Αἱ συστοιχίαι μίξεως, ἐν συνδυασμῷ μὲ ἄλλας συστοιχίας, ἐπαυξάνουν τὴν ἔντασιν καὶ τὴν διαύγειαν τοῦ ἤχου. Αἱ κυριώτεραι συστοιχεῖαι μίξεως εἶναι αἱ ἑξῆς: *αὐλὸς πέμπτης, ἔρρινος, τρίτη, τετάρτη, ἑβδόμη, κύμβαλον, πλήρης-συστοιχία, κορνέττα*. Ἐν τῇ ἐνορχηστρώσει *μῖξις* λέγεται ἡ ἐκτέλεσις μέλους ἢ φθόγγου τινός, ἐν ταυτοφωνίᾳ ὑπὸ περισσοτέρων ὀργάνων διαφόρου χροιᾶς. Ν. Α. Χ.—Γ. Σ.

— **μίξεως *προβλήματα*.** Καλοῦνται τὰ προβλήματα τῆς στοιχειώδους ἀριθμητικῆς, εἰς τὰ ὁποῖα γίνονται πράξεις (αἱ τέσσαρες θεμελιώδεις) ἐπὶ συγκεκριμένων ἀριθμῶν μετρούντων ποσότητας μιγνυομένων ἀντικειμένων καὶ τιμὰς αὐτῶν (ἐμπορικὰς ἀξίας). Τὰ προβλήματα ταῦτα εἶναι δύο εἰδῶν. Εἰς τὰ τοῦ πρώτου εἴδους δίδεται ἡ ἀξία τῶν μιγνυομένων πραγμάτων ὡς καὶ ἡ ποσότης ἑκάστου αὐτῶν καὶ ζητεῖται ἡ ἀξία τῆς μονάδος τοῦ μίγματος. Εἰς τὰ δευτέρου εἴδους προβλήματα δίδεται ἡ τιμὴ τῆς μονάδος ἑκάστου τῶν μιγνυομένων πραγμάτων, ὡς καὶ ἡ ποσότης καὶ ἀξία τῆς μονάδος τοῦ μίγματος καὶ ζητοῦνται τὰ ποσὰ τὰ ὁποῖα πρέπει νὰ ληφθῶσιν ἐξ ἑκάστου μιγνυομένου πράγματος.

Πρὸς λύσιν προβλήματος τοῦ α' εἴδους προσθέτομεν τὰς ἀξίας τῶν ἀναμιχθέντων ἐμπορευμάτων καὶ διαιροῦμεν διὰ τοῦ ἀθροίσματος τῶν ποσοτήτων αὐτῶν, ὅτε εὑρίσκομεν τὴν ἀξίαν τῆς μονάδος.

Παράδειγμα προβλήματος β' εἴδους: Παντοπώλης ἔχει δύο εἴδη βουτύρου· τοῦ πρώτου εἴδους ἡ ὀκᾶ ἀξίζει δρχ. 120, τοῦ δὲ δευτέρου 70, θέλει δὲ νὰ κατασκευάσῃ μῖγμα ἐξ αὐτῶν 50 ὀκάδων, οὗτινος ἡ ὀκὰ νὰ στοιχίζῃ δραχ. 80· τίνας ποσότητος πρέπει νὰ λάβῃ ἀπὸ τὸ α' βούτυρον καὶ β'; Ἀφαιροῦμεν ἀπὸ 120 τὸ 80 καὶ τὸ 70 ἀπὸ τοῦ 80 καὶ εὑρίσκομεν τοὺς ἀριθμοὺς 40 καὶ 10. Ἔχομεν εἶτα τὴν ἰσότητα $1 \times 40 = 4 \times 10$, ὅθεν συμπεραίνομεν ὅτι πρέπει νὰ ληφθῇ ἀπὸ τὸ β' ποσότης τετραπλασία τῆς ποσότητος τοῦ α'. Ὥστε πρέπει ὁ ἀριθμὸς 50 τῶν ὀκάδων τοῦ μίγματος νὰ μερισθῇ εἰς δύο μερίδια, ὥστε τὸ ἓν νὰ εἶναι τετραπλάσιον τοῦ ἄλλου, ἤτοι 40 καὶ 10. Ν. Γ.

**μιξίτης** (ὁ) (Mixit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀρσενικικὸν ἅλας τοῦ χαλκοῦ μετὰ βισμουθίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶνε $[AsO_4]_5\ B_1\ Cu_{10}\ [OH]_8 \cdot 7H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα, ἀπαντᾷ δὲ εἰς ἰνώδη συσσωματώματα. Ἔχει σκληρότητα 3—4, εἰδικὸν βάρος 3,79 καὶ χρῶμα σμαραγδοπράσινον ἕως κυανότεφρον. Εὑρίσκεται ἐπὶ ὤχρας βισμουθίου εἰς Joachimsthal, ἐπίσης δὲ καὶ εἰς τὸ Schwarzwald. Γ. Β.

**μιξοβάρβαρος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ βαρβάροις μεμιγμένος· *μιξοβάρβαροι* καλοῦνται οἱ Ἕλληνες οἵτινες ἐξ ἐπιγαμίας ἔφερον αἷμα βαρβαρικόν, ἀλλ' ὅμως παρέμενον Ἕλληνες· || ἐπὶ τῆς γλώσσης, ἡ μὴ γνησία ἑλληνική, ἡ πλήρης βαρβαρισμῶν.

**μιξογενὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ ἐκ μίξεως γενόμενος, ὁ προερχόμενος ἐκ μίξεως διαφόρων γενῶν.

**μιξόδια** (τὰ) (κοιν. *μιξούδια*) *[Ναυτ.]*. Μικρὸς ὀχετὸς τομῆς τριγωνικῆς πρὸς διοχέτευσιν τῶν ὑδάτων τοῦ κύτους καὶ συγκέντρωσιν αὐτῶν εἰς μέρος αὐτοῦ ἐπιτρέπον εὐχερῆ τὴν ἐκεῖθεν ἐξάντλησιν. Πλείονα τοῦ ἑνὸς μιξόδια κατασκευάζονται ἑκατέρωθεν τοῦ ἐσωτροπίου, ἰδίως εἰς τὰ ξύλινα πλοῖα. Σ. Ε. Λ.

**μίξοδος** (ἡ) *[Ἀκτογρ.]*. Ἡ παρ' ἀρχαίοις ὀνομασία τοῦ ἔχοντος χοιράδας καὶ μεταξὺ αὐτῶν πλώϊμον πόρον *διαύλου* (βλ. λ.).

**μιξολύδιος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μικτὸς λύδιος ρυθμὸς (ὄνομα μουσικῆς ἁρμονίας).

— **μιξολύδιον *διαπασῶν*** *[Ἀρχ. Μουσ.]*. Τὸ πρῶτον εἶδος τῶν διαπασῶν συστημάτων τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς, ἔχον πρῶτον ἐπὶ τὸ ὀξὺ τὸν τόνον καὶ ἐκτεινόμενον ἀπὸ τῆς ὑπάτης ὑπάτων (ζω τῆς μέσης· $si_1$) μέχρι τῆς παραμέσης (ζω τῆς νήτης· $si_2$). Ν. Α. Χ.

**μιξοπάρθενος** (ἡ) (γαλλ. demi-vierge)· νεᾶνις, ἥτις, καίτοι ἀπὸ τυπικῆς φυσιολογικῆς ἀπόψεως διατελεῖ παρθένος, δὲν εἶναι ἐν τούτοις οὐσιαστικῶς τοιαύτη λόγῳ ἐνδόσεως εἰς ἐκτρόπους ἱκανοποιήσεις τοῦ γενετησιακοῦ. Ἡ λέξις ἐδημιουργήθη ὑπὸ τοῦ Μαρσὲλ Πρεβό, ὅστις εἰς τὸ ὁμώνυμον ψυχολογικὸν μυθιστόρημά του («Demi-vierges», 1894) χαρακτηρίζει οὕτω τὰς νεάνιδας, αἵτινες προέρχονται καὶ εἰς τὰς τολμηροτέρας ἀκόμη ἐρωτικὰς σχέσεις, προσέχουσαι μόνον εἰς τὴν διατήρησιν τοῦ τυπικοῦ γνωρίσματος τῆς φυσιολογικῆς παρθενίας.

**μιξοπόλιος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ οὐχὶ ἐντελῶς πολιός, κοιν. *ψαρός*.

**Μιξόρρουμα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἁγίου Βασιλείου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 220. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ παράγει ἔλαιον, οἶνον, σιτηρὰ καὶ κηπευτὰ προϊόντα. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Φρατl*, *Ἁγιὰ-Πελαγιὰ* καὶ *Λαμπηνή*. Ε. Γ.

**μιξόσαυρος** (ὁ) (Mixosaurus Baur). *[Παλαιοζ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μιξοσαυριδῶν ἰχθυοσαυρίων* ἑρπετῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα ἦσαν σχετικῶς μικρά, μέχρις ἑνὸς μέτρου μήκους, καὶ ἔφερον οὐραῖον ἄκρον. Τὰ ἐμπρόσθια ἄκρα των ἦσαν σημαντικῶς μεγαλύτερα τῶν ὀπισθίων. Τὸ κρανίον δυσαναλόγως μέγα ἐν σχέσει πρὸς τὸ ὅλον μῆκος τοῦ σώματός των, οἱ ὀφθαλμοὶ μεγάλοι καὶ οἱ ὀδόντες ἐντὸς φατνίων πυκνῶς παρακειμένων. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς μέσης τριασίου ὑποδιαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς τὰς Νοτίους Ἄλπεις καὶ τὴν Σπιτσβέργην. Γ. Κ. Γ.

**μιξοσόλοικος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μετὰ σολοικισμῶν ἀνάμικτος, ὁ περιέχων σολοικισμούς.

**Μιοβίδοβιτς** (Miowidovitch). Αὐστριακὸς φιλέλλην, ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ, κατελθὼν ἅμα τῇ ἐνάρξει τῆς Ἐπαναστάσεως εἰς τὴν Ἑλλάδα. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Πέτα, μετέχων τοῦ σώματος τῶν φιλελλήνων τοῦ στρατηγοῦ Νόρμαν, καθ' ἣν ἐφονεύθη ἡρωϊκῶς μαχόμενος. Χ. Δ.

**Μιολλὶς** (Miollis), ***Κάρολος-Φραγκῖσκος-Μελχιὸρ-Μπιενβενύ***. Γάλλος κληρικὸς (1753—1843). Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν κατέλιπε τὴν Γαλλίαν, ἐγένετο ἐφημέριος ἐν Μπρινιὸλ καὶ τῷ 1805 ἐπίσκοπος τῆς Ντίνι. Κατέστη ὀνομαστὸς διὰ τὴν φιλανθρωπίαν του, ἐχρησίμευσε δὲ εἰς τὸν Β. Οὐγκὼ ὡς πρότυπον διὰ τὸν ἐπίσκοπον Μυριὴλ τοῦ μυθιστορήματός του «Ἄθλιοι». Χ. Δ.

— **Μιολλὶς** (Miollis), ***Σέξτιος-Ἀλέξανδρος-Φραγκῖσκος***, *κόμις* —. Γάλλος στρατηγὸς (1759—1828). Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν ἦτο λοχαγός, ἠσπάσθη τὰς ἀρχὰς αὐτῆς, μετέσχε τῶν παρὰ τὴν ἰταλικὴν μεθόριον ἐπιχειρήσεων καὶ προήχθη εἰς στρατηγὸν (1794). Διακριθεὶς κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Μαντούης (1797), ἐγένετο διοικητὴς αὐτῆς. Κατόπιν κατέλαβε τὴν Δαλματίαν (1807) καὶ τὴν Ρώμην (1808) καὶ παρέμεινεν ἐν αὐτῇ διοικητὴς μέχρι τῆς πτώσεως τοῦ Ναπολέοντος, Κατὰ τὸ ἑκατονθήμερον διωρίσθη διοικητὴς τοῦ Μέτς, μετὰ δὲ τὴν μάχην τοῦ Βατερλὼ ἀπεσύρθη τῆς ὑπηρεσίας. Χ. Δ.

**Μιομὰντρ** (Miomandre), ***Φρανσὶ ντὲ***—. Γάλλος μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1880. Ἔγραψε διάφορα μυθιστορήματα πλήρη ζωηρᾶς φαντασίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Τὰ ταξίδια ἑνὸς ἀταξιδεύτου», «Ἡ καλύβα τοῦ ἔρωτος» κ. ἄ.

**Μιοννὲ** (Mionnet), ***Θεόδωρος-Ἐδμόνδος***. Γάλλος νομισματολόγος (1770—1842). Ἐσπούδασε νομικά, ἀλλὰ ταχέως ἐπεδόθη εἰς νομισματικὰς μελέτας. Προσληφθεὶς εἰς τὸ νομισματικὸν μουσεῖον τῶν Παρισίων (Cabinet des médailles), ἠσχολήθη ἀπὸ τοῦ 1806 εἰς τὴν κατάταξιν τῶν νομισμάτων καὶ τὴν σύνταξιν τοῦ καταλόγου. Ὁ κατάλογος οὗτος («Description de médallles antiques grecques et romaines», 1806—1813, τόμ. 1—7, β' ἔκδ. 1837 καὶ «Supplément» τόμ. 1—9), εἶναι τὸ σπουδαιότερον ἔργον τοῦ Μιοννέ, χρήσιμον καὶ μέχρι σήμερον εἰς τοὺς νομισματολόγους ἕνεκα τοῦ πλούτου τῆς συλλογῆς καὶ τοῦ πλήρους εὑρετηρίου τύπων. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Catalogue d' une collection d'empreintes» (1800), «De la rareté et du prix des médailles romaines» (1815, γ' ἔκδ. 1847), «Atlas de géographie numismatique» (1838), «Poids des médailles grecques». Τῷ 1830 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Ε. Β.-Χ.

**Μιὸ ντὲ Μελιτὸ** (Miot de Melito), ***Ἀνδρέας-Φραγκῖσκος***, *κόμις* —. Γάλλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1762—1841). Κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν ὑπηρέτησεν εἰς διαφόρους ἀνωτάτας δημοσίας θέσεις καὶ τῷ 1795 ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Φλωρεντίαν, ὅπου ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ Ναπολέοντος καὶ συνεδέθη διὰ στενῆς φιλίας μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἰωσήφ. Τῷ 1796 ἀπεστάλη εἰς Κορσικὴν ὡς ὀργανωτὴς τῆς τότε ἐκκενωθείσης ὑπὸ τῶν Ἄγγλων νήσου. Τῷ 1814 ὠνομάσθη κόμις τοῦ Μελιτό, ὑπεστήριξε δὲ τὸν Ναπολέοντα κατὰ τὸ ἑκατονθήμερον. Μετέφρασε τὸν Ἡρόδοτον (1822) καὶ τὸν Διόδωρον Σικελιώτην (1835) καὶ ἐγένετο (1835) μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου. Κατέλιπεν ἀπομνημονεύματα εἰς τρεῖς τόμους, δημοσιευθέντα τῷ 1858. Χ. Δ.

**Μιοὺ** (Miou) *[Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῶν προσγείων τῆς Μασσαλίας (πλάτ. 43° 12' Β., μῆκ. 5° 31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3414: Approaches to Marseille) ἐν τῷ κόλπῳ τοῦ Κασσὶς (Cassis). Σ. Ε. Λ.

**Μιοῦλοκ** (Mulock), ***Ντάϊνα-Μαρία***. Οἰκογενειακὸν ὄνομα τῆς Ἀγγλίδος συγγραφέως *Κραὶκ* (βλ. λ.)·

**Μιοὺρ** (Mure), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος φιλόλογος (1799—1860). Μετὰ τὰς ἐν Ἀγγλίᾳ, Σκωτίᾳ καὶ Γερμανίᾳ πανεπιστημιακὰς σπουδάς του ἐπεσκέφθη (1838) τὴν Ἑλλάδα χάριν ἀρχαιολογικῶν καὶ τοπογραφικῶν μελετῶν, χωρὶς νὰ παραμελήσῃ ἐν τῇ μελέτῃ του ταύτῃ καὶ τὴν νεωτέραν Ἑλλάδα καὶ τὴν ἱστορίαν αὐτῆς. Τὰς ἐκ τῆς ἐπισκέψεως ταύτης ἐντυπώσεις του περιέλαβεν εἰς τὸ καλὸν βιβλίον του «Ἡμερολόγιον ταξιδίου ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα καὶ τὰς Ἰονίους νήσους, μετὰ παρατηρήσεων εἰς τὴν νεωτέραν ἱστορίαν της, τὴν σημερινήν της κατάστασιν καὶ τὰς κλασσικάς της ἀρχαιότητας», δημοσιευθὲν εἰς δύο τόμους ἐν Λονδίνῳ τῷ 1842. Τὸ κυριώτερον (ἀλλ' ἀτυχῶς ἀτελὲς) ἐκ τῶν ἐπιστημονικῶν ἔργων του εἶναι ἡ πεντάτομος «Κριτικὴ ἱστορία τῆς γλώσσης καὶ τῆς φιλολογίας τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος» (ἐν Λονδίνῳ 1850—1857), ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπραγματεύθη περὶ τῶν ποιητῶν (ἐξαιρουμένων τῶν δραματικῶν) καὶ συγγραφέων (πλὴν τῶν ρητόρων) τῶν μέχρι τοῦ 380 π. Χ. — Π.

**Μίους** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μεγίστη στομαλίμνη τῆς Ἀζοφικῆς πρὸς τὸ μέσον τῆς βορείας παραλίας τοῦ κόλπου τοῦ Ταϊγανίου. Τοῦ «ἐκρήγματος» αὐτῆς (πλάτ. 47°07' ½ Β., μῆκ. 38°30' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: Sea of Azov) φρασσομένου ὑπὸ τῶν ἰλύων ἃς κυλινδεῖ ὁ φερώνυμος μέγας ποταμὸς (ἀρχ. *Πορίτης*), θέλει αὕτη μεταβληθῇ σὺν τῷ χρόνῳ εἰς εὐρεῖαν λίμνην. Σ. Ε. Λ.

**μὶρ** (λ. ρωσ.=*κόσμος*). Ὀνομασία τῆς πρωτογόνου ἀγροτικῆς κοινότητος, ἥτις ἀπαντᾷ εἰς τοὺς σλαβικοὺς λαούς, Πολωνούς, Σέρβους ἰδίᾳ ὅμως τοὺς Ρώσους. Κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην, τὸ μὶρ εἶναι μικρὰ κοινωνία, ὀργάνωσις κομμουνιστικὴ πολλῶν οἰκογενειῶν, προερχομένων ἀπὸ τοῦ

Digitized by Google

αὐτοῦ γενάρχου, μὲ κοινὴν ἰδιοκτησίαν καὶ οἰκονομίαν καὶ κοινὴν ὑλικὴν καὶ ἠθικὴν ὑπόστασιν. Εἰς αὐτὸ ἡ ἰδιοκτησία τῆς γῆς εἶναι ὁμαδική, οἱ ἀγροὶ ἀνήκουν εἰς τὸ σύνολον τοῦ μίρ, ἡ χρῆσις των ὅμως εἶναι ἀτομική. Κατὰ καιροὺς (κατ' ἔτος ἢ κατὰ τριετίαν) ἐγίνετο ἀναδασμὸς τῶν ἀγρῶν καὶ τῶν λειμώνων τοῦ μὶρ μεταξὺ τῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες τὸ ἀπήρτιζον. Κατὰ τὸν ἀναδασμὸν κατεβάλλετο προσπάθεια, ὅπως τηρηθῇ ἡ ἀρχὴ τῆς ἰσότητος, πρὸς πραγματοποίησιν τῆς ὁποίας κατέφευγον πολλάκις εἰς διαφόρους πολυπλόκους μεθόδους. Οὕτως, ἂν ἡ ἔκτασις τοῦ μὶρ ἦτο διαφόρου ποιότητος, κάθε ποιότης διενέμετο χωριστὰ καὶ ἡ κάθε οἰκογένεια ἐλάμβανε λωρίδα γῆς ἐξ ἑκάστης ποιότητος. Ἐπὶ τσαρικοῦ καθεστῶτος ἐν Ρωσίᾳ ἡ φορολογία ἐβασίζετο ἐπὶ τοῦ μίρ, ὅπου ὑπῆρχε τοῦτο· τὸ μὶρ ὁλόκληρον ἐπλήρωνεν εἰς τὸ δημόσιον τὸν φόρον του καὶ ἠγγυᾶτο διὰ τ' ἀποτελοῦντα αὐτὸ μέλη. Ἡ ὕπαρξις τῶν μὶρ εἰς τὴν Ρωσίαν, λόγῳ τοῦ κομμουνιστικοῦ των χαρακτῆρος, ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς πολλοὺς ἀναμορφωτὰς τῆς ρωσικῆς κοινωνίας, ὡς ὁ Γέρτσεν, ὁ Λαβρὼφ καὶ ὁ Λένιν, νὰ νομίζουν ὅτι ἡ μεταβολὴ αὐτῆς εἰς σοσιαλιστικὴν εἶναι εὐκολωτάτη, ὡς πρὸς τὸ ἀγροτικόν της καθεστώς. Ἡ πολιτικὴ ὀργάνωσις τοῦ μὶρ εἶναι δημοκρατία εἰς τὴν πλέον λαϊκὴν αὐτῆς μορφήν. Ἐπὶ κεφαλῆς τῆς δημοκρατίας ταύτης εὑρίσκετο ὁ ἀρχηγὸς τῶν συνηνωμένων οἰκογενειῶν, ὁ γενάρχης ἢ ὁ γηραιότερος τῶν υἱῶν του. Ἡ δικαιοδοσία του ἦτο εὐρυτάτη. Ἡ συνέλευσις τῶν μελῶν τῆς οἰκογενείας ἦτο κυρίαρχον σῶμα, ἡ γνώμη ὅμως τοῦ ἀρχηγοῦ ἦτο ἰδιαιτέρως σεβαστή. Εἰς τὰς συνελεύσεις καὶ συζητήσεις μετεῖχον καὶ αἱ ὕπανδροι γυναῖκες, αἱ δὲ ἀποφάσεις ἐλαμβάνοντο διὰ βοῆς καὶ διὰ παμψηφίας ἢ πλειοψηφίας τοὐλάχιστον. Εἰς τὴν προπολεμικὴν Ρωσίαν τὰ μὶρ εἰς ὡρισμένας ἐπαρχίας ἀπετέλουν τὰ 60 % τῶν ἀγροτικῶν ἐγκαταστάσεων. Ἐκεῖ ὅπου δὲν ὑπῆρχον κολλῆγοι, οἱ περισσότεροι ἐσχημάτιζον τὰ μὶρ καὶ ἡ ἐλαχίστη μερὶς ἀπετελεῖτο ἀπὸ κουλάκους (εὐπόρους καὶ ἀνεξαρτήτους ἀγρότας). Ὁ Παγκόσμιος πόλεμος ἐπέδρασε διαλυτικῶς ἐπὶ τῶν μίρ, ἐνισχυθείσης τῆς τάσεως πρὸς ἀποχωρισμόν. Ἀλλὰ μετὰ τὴν μπολσεβικικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1917 ἡ κατάστασις μετεβλήθη· ἡ σοβιετικὴ κυβέρνησις περιεφρούρησε τὰ μὶρ καὶ τὰ περισσότερα ἐξ αὐτῶν μετετράπησαν εἰς κολχὸζ καὶ σοβχὸζ (κολλεκτιβιστικὴ οἰκονομία), ἐνισχυθέντα ὑπὸ τοῦ κράτους. Τὴν κολλεκτιβιστικοποίησιν τῶν ἀγροτῶν, ἣν ἀνέλαβεν ἡ σοβιετικὴ κυβέρνησις, ἐντατικῶς ἰδίως ἀπὸ τοῦ 1928, τὴν διηυκόλυναν κατὰ μέγα μέρος τὰ μίρ. Α. Ε. Μ.

**μίρ·** λέξις περσικὴ παραγομένη ἐκ τῆς ἀραβικῆς *ἐμίρ* (=ἡγεμών, ἀρχηγός), ἐν χρήσει δὲ ἐν τῇ τουρκικῇ ὡς πρῶτον συνθετικὸν εἰς τὰ *μιραλάϊ* (=συνταγματάρχης), *μιραχὸρ* (=σταβλάρχης, *ἐμιραχούριος* παρὰ Χαλκοκονδύλῃ), *μιρ-ι-λιβᾶ* (=ὑποστράτηγος) κτλ. Ν. Μ.

**Μίρα** (Mira) *[Ἀστρον.]*. Λατινικὴ ἐπωνυμία τοῦ πρώτου κατὰ σειρὰν ἀνακαλύψεως μεταβλητοῦ ἀστέρος μακρᾶς περιόδου, ὅστις εἰς τοὺς χάρτας τοῦ Beyer φέρεται ὡς ο *Κήτους*, ὑπὸ δὲ τοῦ Hevelius ἐκλήθη *Θαυμάσιος τοῦ Κήτους* (Mira Ceti) διὰ τὸ πρωτοφανὲς τῶν περιοδικῶν μεταβολῶν τῆς λάμψεως αὐτοῦ. Σ. Π.

**μιραβιλίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν θειικὸν ἅλας τοῦ νατρίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Na_2SO_4 . 10 H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα. Ἔχει σκληρότητα $1^1/_2$—2, εἰδικὸν βάρος 1,4—1,5, εἶναι ἄχρουν καὶ διαλύεται εὐκόλως εἰς τὸ ὕδωρ. Ἀπαντᾷ παρὰ τὸ Logrono ἐναλλασσόμενος μὲ μαγειρικὸν ἅλας, εἰς αὐτοτελῆ κοιτάσματα ἐν Σικελίᾳ, Καυκάσῳ κ.ἄ., ὡς νεοσχηματισμὸς εἰς τὰ ἁλατοῦχα κοιτάσματα τῶν Ἄλπεων κτλ. Γ. Β.

**Μιράγκον** *[Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων νῆσος τῶν θεσσαλικῶν Σποράδων πρὸ τοῦ λιμένος τῆς Σκιάθου (πλάτ. 39°08'10'' Β., μήκ. 23°30'30'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2072: Scopelos group), ὃν σχηματίζει μετὰ τῶν νησίδων Ζογριά, Ζογριάκι καὶ Ἀρχιάκι συμπροφυλάττουσα αὐτόν. Ὑπὸ τῶν ξένων ἀναφέρεται ὡς *Marengo*. Σ. Ε. Λ.

**Μιραμάρε** (Miramare). Ἀνάκτορον ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Τεργέστης, εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. ΒΔ. τῆς πόλεως, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τεργέστης—Νάμπρε—Σίνα. Ἐκτίσθη ἐπὶ βράχου, παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Γκρινιάνο, τῷ 1854—1856. Ἀνῆκε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν ἀρχιδοῦκα τῆς Αὐστρίας Μαξιμιλιανόν. Ἐν αὐτῷ ὑπεγράφη τὴν 10 Ἀπριλίου 1864 μεταξὺ τοῦ Ναπολέοντος τοῦ Γ' καὶ τοῦ Μαξιμιλιανοῦ ἡ συμφωνία περὶ ἱδρύσεως τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Μεξικοῦ καὶ τῆς ἀναλήψεως τοῦ στέματος ὑπὸ τοῦ Μαξιμιλιανοῦ. Μετὰ τὴν θάνατον τοῦ Μαξιμιλιανοῦ τὸ ἀνάκτορον τοῦτο περιῆλθεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα τῆς Αὐστρίας. Εἶναι νορμανδικῆς κατὰ τὸ πλεῖστον ἀρχιτεκτονικῆς, περιβάλλεται ἀπὸ ξηρᾶς ὑπὸ ὡραίου καὶ εὐρέος πάρκου, ἔχει πλουσίαν βιβλιοθήκην καὶ θαυμάσιον μουσεῖον. Μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον περιῆλθεν εἰς τὴν κατοχὴν τῆς ἰταλικῆς κυβερνήσεως, ἡ ὁποία μετέβαλεν αὐτὸ εἰς μουσεῖον. Μ. Δ. Β.

**Μιραμὸν** (Miramon), *Μιχαήλ*. Μεξικανὸς πολιτικὸς (1832—1867). Υἱὸς Βεαρνοῦ μετανάστου, ἦτο μαθητὴς τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς τοῦ Chapultepec, ὅταν ἐξερράγη, τῷ 1847, ὁ μεταξὺ Μεξικοῦ καὶ Ἡν. Πολιτειῶν πόλεμος. Μετασχὼν αὐτοῦ ἐτραυματίσθη, συνεπλήρωσε δὲ τὰς σπουδάς του μετὰ τὴν εἰρήνην καὶ ἐγένετο ἀξιωματικὸς τῷ 1852. Ἀναμιχθεὶς ἔκτοτε ἐνεργῶς εἰς τοὺς αἱματηροὺς πολιτικοὺς ἀγῶνας, οἵτινες συνετάρασσον τότε τὴν πατρίδα του, καὶ ταχθεὶς μὲ τὸ κόμμα τῶν κληρικοφρόνων δὲν ἐβράδυνε νὰ γίνῃ ἀρχηγὸς αὐτοῦ. Τῷ 1859 ἐκλήθη εἰς τὴν προεδρίαν τῆς Μεξικανικῆς δημοκρατίας, ἐβάδισε δὲ τότε κατὰ τῆς Βέρα-Κρούθ, ὅπου εἶχε τὸ στρατηγεῖόν του ὁ Σουαρέζ, ἀρχηγὸς τοῦ φιλελευθέρου κόμματος. Δὲν κατώρθωσεν ὅμως νὰ κυριεύσῃ τὴν πόλιν καὶ κατόπιν σειρᾶς ἐναλλασσομένων ἐπιτυχιῶν καὶ ἀποτυχιῶν ὑπέστη, τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1860, ὁριστικὴν ἧτταν, ἥτις τὸν ἠνάγκασε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν χώραν. Καταφυγὼν εἰς Ἀβάναν καὶ κατόπιν εἰς Εὐρώπην, εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς παρεμβάσεως τῆς Γαλλίας, Ἀγγλίας καὶ Ἱσπανίας εἰς Μεξικόν, ὅπου ἐπανῆλθεν ἀκολουθῶν τὸν νέον αὐτοκράτορα Μαξιμιλιανόν. Τῷ 1866 ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν μεγάλου τμήματος τῶν αὐτοκρατορικῶν στρατιωτικῶν δυνάμεων, ἡττήθη ὅμως ὑπὸ τοῦ δημοκράτου στρατηγοῦ Ἐσκομπέντο καὶ ἐνεκλείσθη μετὰ τοῦ Μαξιμιλιανοῦ εἰς τὴν πόλιν Κουερέταρο, τὴν ὁποίαν ὑπερήσπισεν ἀπεγνωσμένως. Ἀλλὰ συνελήφθη ἐν τέλει αἰχμάλωτος, κατὰ Μάϊον τοῦ 1867, καὶ ἐτυφεκίσθη τὸν ἑπόμενον μῆνα. —Ω.

**Μιραμπὲλ** (Mirabel), *Ἀνδρέας*. Γάλλος ἑλληνιστής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1900. Ἀποφοιτήσας τῆς ἐν Παρισίοις Σχολῆς ἀνατολικῶν γλωσσῶν, ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἐν Ἀθήναις Γαλλικῆς σχολῆς καὶ κατόπιν διεδέχθη τὸν Ψυχάρην ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς νεοελληνικῆς τῆς ὡς ἄνω σχολῆς, ὅπου διδάσκει νεοελληνικὴν γραμματικήν, φιλολογίαν καὶ πολιτισμὸν ἀπὸ τῶν βυζαντινῶν χρόνων μέχρι τῆς σήμερον, ὡς καὶ γλωσσολογίαν, διαλεκτολογίαν καὶ ἑρμηνείαν νεοελληνικῶν κειμένων. Ἐκτὸς πολλῶν ἄρθρων καὶ διατριβῶν, ἐδημοσίευσε «Τὰ Μανιάτικα», σύγγραμμα περιλαμβάνον ἐκτεταμένην λαογραφικὴν ἔρευναν τοῦ τόπου καὶ γλωσσολογικὴν περιγραφὴν τῆς διαλέκτου τῆς Μάνης. Τ. Α.

**μιραμπέλλα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῶν φυτῶν *προύμνη* καὶ *μυροβάλανος*.

**Μιραμπέλλο** (Mirabello) *[Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων λιμὴν τοῦ ἰταλικοῦ ναυσταθμου τῆς Σπέτζια, ἄλλοτε ἐμπορικὸς (πλάτ. 44° 06' Β., μήκ. 9° 49' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 155: Gulf of Spezzia) καὶ ἤδη χρησιμεύων διὰ τὴν ὅρμισιν τῶν τορπιλλικῶν σκαφῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μιραμπῶ** (Mirabeau), ***Βίκτωρ - Ρικεττί***, *μαρκήσιος ντὲ—*. Γάλλος οἰκονομολόγος (1715—1789), πατὴρ τοῦ μεγάλου κοινοβουλευτικοῦ ῥήτορος τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως. Κατήγετο ἐξ ἀρχαίας οἰκογενείας τῆς Φλωρεντίας, ἥτις ἠναγκάσθη λόγῳ τῶν ἐμφυλίων ἐν Ἰταλίᾳ πολέμων νὰ ἐκπατρισθῇ καὶ νὰ ἐγκατασταθῇ τὸν ΙΔ' αἰῶνα εἰς Προβηγκίαν. Ὁ Βίκτωρ Μιραμπῶ ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἀξιωματικός, μετέσχε δὲ πλείστων ἐκστρατειῶν, εἰς μίαν τῶν ὁποίων ἐτραυματίσθη. Βραδύτερον ἐγκατέλιπε τὸ στρατιωτικὸν στάδιον καὶ ἀφωσιώθη εἰς τὰς οἰκονομικὰς ἐπιστήμας, συνέγραψε δὲ πλεῖστα ἔργα, ἐκ τῶν ὁποίων «Ὁ φίλος τῶν ἀνθρώπων» (1755) τὸν κατέστησε διάσημον. Ἀπὸ τοῦ 1757 ἐγένετο ἐνθουσιώδης ὀπαδὸς τοῦ Quesnay καὶ ἠκολούθησε τὰς ἀρχὰς τῆς φυσιοκρατικῆς σχολῆς. Τὰ δημοσιευθέντα συγγράμματά του εἶναι πολυάριθμα, γραμμένα εἰς ὕφος ἰδιόρρυθμον. Ἀλλὰ καίτοι ἐδίδασκε τὴν φιλανθρωπίαν, τὴν ἀγάπην καὶ τὴν ἐλευθερίαν, αὐτὸς κατέστη τύραννος τῆς οἰκογενείας του, ἐχωρίσθη ἀπὸ τῆς συζύγου του καὶ προεκλήθη ἐκ τούτου σκανδαλώδης δίκη, παραταθεῖσα ἐπὶ εἴκοσιν ἔτη. Ἰδίως ἔτρεφε μῖσος κατὰ τοῦ υἱοῦ του, τοῦ ὁποίου ἡ ὑπεροχὴ ἠπείλει τὴν ἐξάλειψιν τῆς φήμης του, ἐπέτυχε δὲ κατ' ἐπανάληψιν τὴν ἐγκάθειρξιν τούτου εἰς τὰς φυλακάς. Τὰ ἄριστα τῶν ἔργων αὐτοῦ, πλὴν τοῦ προαναφερθέντος, εἶναι: «Γεωργικὴ φιλοσοφία» (1763, τόμ. 3), «Τὰ οἰκονομικὰ» (1769, τόμ. 2), «Οἰκονομικαὶ ἐπιστολαὶ» (1772), «Ἐπιστολαὶ περὶ νομολογίας» (1755, τόμ. 3) κτλ. Θ. Β.

**—Μιραμπῶ** (Mirabeau), ***Γαβριὴλ - Ὁνόριος - Ρικεττί***, *κόμης ντὲ —*. Γάλλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Μπινιὸν τῷ 1749 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1791. Τὸ παιδίον τοῦτο, ὅπερ ἔμελλε νὰ καταστῇ ὁ μέγιστος τῶν Γάλλων ῥητόρων, ἐγεννήθη ἔχον τὸν μὲν πόδα συνεστραμμένον, τὴν δὲ γλῶσσαν πεπεδημένην. Κατὰ τὴν ἔκφρασιν τοῦ πατρός του, ἦτο τερατῶδες κατά τε τὸ σῶμα καὶ τὸ ἦθος. Εἰς ἡλικίαν τριῶν ἐτῶν προσεβλήθη ὑπὸ ἱλαρᾶς, ἥτις, λόγῳ κακῆς θεραπείας, ἀφῆκεν ἐπὶ τοῦ προσώπου του στίγματα ἐπαυξάνοντα τὴν φυσικὴν του ἀσχημίαν. Παρὰ ταῦτα ὅμως συχνάκις ἡ μορφὴ τοῦ νεαροῦ Μιραμπώ, ἐξαπτομένη ὑπὸ τῶν συγκινήσεων, κατώπτριζε τὴν προνομιοῦχον αὐτοῦ διάνοιαν καὶ τὴν ψυχικήν του καλωσύνην. Ὁ πατήρ του, ὅστις οὐδεμίαν ἔτρεφε πρὸς αὐτὸν στοργὴν καὶ ἐθεώρει ὅτι τὸ πνεῦμά του ἔρρεπε πρὸς τὸ κακόν, ἀνέθεσεν ἐν ἀρχῇ τὴν ἀνατροφήν του εἰς τὸν δικηγόρον Πουασσῶν, ὅταν δὲ συνεπλήρωσε τὸ δέκατον πέμπτον ἔτος, ἐπεμελήθη τὴν παίδευσιν αὐτοῦ ὁ ἀκαδημαϊκὸς ντὲ Σάμπρ Σιγκραί. Ἐν τέλει εἰσήχθη εἰς τὸ λύκειον τοῦ ἀββᾶ Σοκὰρ ἐν Παρισίοις, ὅπου ἐδιδάχθη τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν λατινικήν, πρὸς δὲ τὴν ἀγγλικήν, τὴν ἰταλικήν, τὴν γερμανικήν, τὴν ἱσπανικήν, τὰ μαθηματικὰ μέχρι τοῦ διαφορικοῦ λογισμοῦ, ἰχνογραφίαν, μουσικήν, ἱππασίαν, ξιφομαχίαν, χορὸν καὶ ναυτικὰς ἀσκήσεις.

Γαβριὴλ Μιραμπώ.

Ὁ πατήρ του, ἐκλέξας δι' αὐτὸν τὸ στρατιωτικὸν στάδιον ὡς μέσον σωφρονισμοῦ, τὸν κατέταξεν εἰς τὸ ἱππικόν. Ὁ Μιραμπὼ κατέγινε τότε ἐπὶ πέντε ὁλόκληρα ἔτη εἰς τὴν σπουδὴν τῆς στρατηγικῆς, καταβροχθίζων πάντα τὰ γαλλικὰ καὶ τὰ ξένα στρατιωτικὰ συγγράμματα, τῷ δὲ 1768 προήχθη εἰς τὸν βαθμὸν ἀμίσθου ὑπολοχαγοῦ. Ἀλλὰ τὸ αὐτὸ ἔτος δραπετεύσας ἐκ τοῦ τάγματός του καὶ μεταβὰς εἰς Παρισίους συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη εἰς τὸ φρούριον Ρέ. Ζητήσας νὰ μετάσχῃ τῆς ἐκστρατείας εἰς Κορσικήν, ἠλευθερώθη καὶ ἀπεστάλη ἐκεῖ, διακριθεὶς διὰ τὰς στρατιωτικὰς ἀρετάς του. Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν προήχθη εἰς ταγματάρχην τῶν δραγόνων, βραδύτερον δὲ εἰσήχθη εἰς τὴν αὐλὴν τῶν Βερσαλλιῶν, ὅπου ὁ μέλλων μέγας ῥήτωρ τῆς ἐπαναστάσεως συνεδέθη μὲ τοὺς σημαίνοντας αὐλικοὺς τῆς ἐποχῆς ἐκείνης καὶ διέπρεπε μεταξὺ αὐτῶν. Τῷ 1772 ἐνυμφεύθη τὴν Μαρίαν ντὲ Κοβέ, παρ' ἧς οὐδεμίαν ἔλαβε προῖκα, φύσει δὲ σπάταλος περιέπεσεν εἰς χρέη καὶ καταδιωκόμενος ὑπὸ τῶν δανειστῶν του ἀπελύθη ἐκ τοῦ στρατοῦ, ἐξωρίσθη εἰς Μανόσκαν καὶ ἐκλείσθη ἔπειτα εἰς τὸ φρούριον Ἴφ. Στερηθεὶς τῆς ἐλευθερίας του ἐπὶ δύο ἔτη, συνέθεσεν εἰς τὴν φυλακὴν τὸ δριμὺ σύγγραμμά του «Δοκίμιον δεσποτισμοῦ», τὸ ὁποῖον ἐδημοσιεύθη ἀνωνύμως. Ἐκεῖθεν μετεφέρθη εἰς τὸ φρούριον Ζοὺξ τῷ 1776. Διὰ τῆς εὐφυΐας του ὅμως καὶ τῆς γοητευτικῆς εὐγλωττίας του ἐκέρδισε τάχιστα τὴν συμπάθειαν τοῦ διοικητοῦ τοῦ φρουρίου, ὅστις ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ διαμένῃ εἰς τὴν πόλιν Πονταλιέ. Ἐκεῖ ἐσχετίσθη μετὰ νέας καὶ ὡραίας γυναικός, τῆς Σοφίας ντὲ Ρουφαὶ ντὲ Μονιέ, συζύγου τοῦ προέδρου τοῦ οἰκονομικοῦ συμβουλίου τῆς πόλεως, τὴν ὁποίαν ὁ μετὰ τοῦ Μιραμπὼ δεσμὸς κατέστησε περιώνυμον. Ἀλλ' ὁ ἔρως αὐτὸς ἐξαπέλυσε κατὰ τῆς κεφαλῆς του νέας θυέλλας· ἡ οἰκογένεια τῆς Σοφίας, ὁ σύζυγός της καὶ ὁ πατὴρ τοῦ Μιραμπὼ ἐστράφησαν κατ' αὐτοῦ καὶ ἐζήτουν τὴν καταδίωξίν του, οὕτω δὲ ἠναγκάσθη νὰ δραπετεύσῃ μετὰ τῆς μαρκησίας Μονιέ, κατ' ἀρχὰς εἰς Ἑλβετίαν καὶ ἔπειτα εἰς Ὁλλανδίαν. Κατεδικάσθη τότε ἐρήμην ἐπὶ βιαίᾳ ἀπαγωγῇ.

Ἡ ζωὴ τοῦ Μιραμπὼ ἐν Ὁλλανδίᾳ ὑπῆρξε θλιβερὰ καὶ ἀθλία· ὅπως κερδίζῃ τὰ πρὸς συντήρησιν αὐτοῦ καὶ τῆς συντρόφου του, ἠναγκάσθη νὰ διαθέσῃ τὴν γραφίδα του εἰς τοὺς βιβλιοπώλας καὶ συνέθετε φιλολογικὰ ἔργα μὲ τὴν ὑπογραφὴν Σαὶν-Ματιέ. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ πατήρ του τὸν κατήγγειλεν ὡς μολύνοντα τὴν συζυγικήν του κοίτην. Ἐκ τούτου προεκλήθη δεινὸς ἀγὼν μεταξὺ πατρὸς καὶ υἱοῦ, οἱ δὲ δημοσιευθέντες ἀμφοτέρωθεν λίβελλοι προεκάλεσαν μέγα σκάνδαλον. Εἶχεν ἀποφασίσει τότε ν' ἀπέλθῃ μετὰ τῆς συντρόφου του εἰς Ἀμερικήν, πρὸς ἀναζήτησιν ἐπαρκεστέρων πόρων ζωῆς, προτοῦ ὅμως πραγματοποιηθῇ τὸ σχέδιόν των ἐζητήθη ἡ ἔκδοσις αὐτῶν καὶ τὴν 19 Μαΐου 1777 συνελήφθησαν εἰς Ἀμβέρσαν καὶ μετήχθησαν εἰς Γαλλίαν, ὅπου ἡ μὲν ντὲ Μονιὲ ἐκλείσθη εἰς σωφρονιστικὸν ἵδρυμα, ὁ δὲ Μιραμπὼ εἰς τὸν πύργον τῶν Βενσέν. Εἰς τὸν πύργον δὲ αὐτὸν ἐγράφησαν αἱ «Πρὸς τὴν Σοφίαν» περίφημοι ἐπιστολαί του. Ἐκεῖ ἐπίσης μετέφρασε τὸν Ὅμηρον, τὸν Ὀβίδιον, τὸν Τίβουλλον, τὸν Κάτουλλον, τὸν Τάκιτον, τὸν Βοκκάκιον, τὰ διηγήματα τοῦ Jean Second καὶ πλεῖστα ἄλλα. Εἰς τὴν φυλακὴν ἐπίσης ἐκείνην συνέγραψε τὰ ἔργα του περὶ τῶν «Διαταγῶν καθείρξεως καὶ φυλακῶν τοῦ κράτους» καὶ τὰ «Περὶ τοῦ ὑπουργείου τοῦ δουκὸς d'Aiguillon» ὑπομνήματα. Εἰς τὰ συγγράμματα ταῦτα ὑπερήσπιζε τὴν δικαιοσύνην, τὴν ἀστικὴν

Digitized by Google

ἐλευθερίαν καὶ ἐκηρύσσετο κατὰ τοῦ δεσποτισμοῦ, ἐπραγματεύετο δὲ ταυτοχρόνως πολιτικὰ ζητήματα καὶ προέτεινε διοικητικὰ σχέδια, οἷα τὴν ἀποπεράτωσιν τοῦ Λούβρου καὶ τὴν συγκρότησιν μουσείου, τὴν εὔρυνσιν τῶν ὁδῶν τῶν Παρισίων κτλ. Μετὰ τεσσαράκοντα ὀκτὼ μηνῶν κάθειρξιν ἀφέθη ἐλεύθερος, ἀπαλλαγεὶς ἅμα καὶ τῆς ἐπὶ βιαίᾳ ἀπαγωγῇ καταδίκης. Ἀπῆλθε δὲ τότε εἰς Λονδῖνον πρὸς ἀναζήτησιν τύχης, συνοδευόμενος ὑπό τινος Ὁλλανδῆς, ἥτις εἶχε διαδεχθῆ τὴν Σοφίαν. Ἐκεῖ ἐδημοσίευσεν ἕτερον σύγγραμμα, τὰς «Considérations sur l'ordre de Cincinatus». Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν ἔθεσε τὴν ἰδιοφυΐαν του εἰς τὴν διάθεσιν τραπεζιτῶν καὶ ἐπιχειρηματιῶν, κατὰ τὴν περίοδον δὲ ταύτην ἔγραψε τὰ βιβλία του περὶ «Προεξοφλητικοῦ τόκου» καὶ περὶ τῆς «Ἱσπανικῆς τραπέζης», καὶ ὅταν ἠγέρθη τὸ ζήτημα τῆς ἐπιχειρήσεως τῶν ὑδάτων τῶν Παρισίων, περιῆλθεν εἰς δεινὸν ἀγῶνα πρὸς τὸν διάσημον θεατρικὸν συγγραφέα Μπωμαρσαί. Ὁ Κάρολος Κολόν, διακρίνας τὰς ἱκανότητάς του, ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν μυστικήν τινα ἀποστολὴν εἰς Βερολῖνον. Ἀλλ' ὁ βασιλεὺς Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος, ἀνησυχῶν ἐκ τῆς εἰς τὸ κράτος του παραμονῆς ἑνὸς τόσον ἐπιφόβου ἀπεσταλμένου, διέταξεν αὐτὸν ν' ἀπέλθῃ ἐκ Πρωσσίας. Κατὰ τὸ εἰς Γερμανίαν ταξίδιόν του ἔγραψε τὰς πρὸς τὸν Καλλιόστρον καὶ Λαβατὲρ ἐπιστολάς, εἰς τὰς ὁποίας κατεπολέμει τὴν ἀγυρτείαν τοῦ μὲν καὶ τὸν φιλοσοφικοκαβαλιστικὸν Χριστιανισμὸν τοῦ ἑτέρου.

Ὅταν ὁ Μιραμπὼ ἐπέστρεψεν εἰς Παρισίους, τῷ 1787, εἶχε συγκληθῆ ἡ Συνέλευσις τῶν προκρίτων (Assemblée des notables), ὅπως νομιμοποιηθῶσιν οἱ ἐπιβληθησόμενοι φόροι, ἐδημοσίευσε δὲ τότε τὸ περίφημον σύγγραμμά του «Dénonciation de l'agiotage», δι' οὗ προσέβαλε μετὰ σφοδρότητος τὸν Νέκκερ. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΣΤ' διέταξε τὴν φυλάκισιν αὐτοῦ εἰς τὸ φρούριον τοῦ Σωμύρ. Ἐκεῖθεν ὁ Μιραμπὼ ἐδημοσίευσε τὴν συνέχειαν τῆς χρηματιστικῆς καταγγελίας του καὶ τὴν «Περὶ τῆς πρωσσικῆς μοναρχίας» συγγραφήν του, ἐν τῇ ὁποίᾳ κατεδεικνύετο ἡ εὐρυτάτη αὐτοῦ πολυμάθεια καὶ ἀνεπτύσσοντο τὸ πρῶτον αἱ ὑπ' αὐτοῦ τεθεῖσαι νέαι πολιτικαὶ ἰδέαι.

Ἔκτοτε ἄρχεται τὸ πολιτικὸν στάδιον τοῦ Γαβριὴλ Μιραμπώ· αἱ πολυάριθμοι συγγραφαί του, οἱ λίβελλοι αὐτοῦ, οἱ πλήρεις ἐναργείας καὶ ἀκαταμαχήτου λογικῆς, κατέστησαν τὸ ὄνομά του διάσημον καὶ ἐπίφοβον. Ἡ ἀμέσως τότε δημοσιευθεῖσα «Μυστικὴ ἱστορία τῆς κυβερνήσεως τοῦ Βερολίνου», εἰς τὴν ὁποίαν μετὰ θάρρους ἀπεκάλυψε τὰ τεχνάσματα καὶ τοὺς μυστικοὺς πόρους τῶν ξένων ἡγεμόνων, προεκάλεσε καταπληκτικὴν ἐντύπωσιν. Τὸ διπλωματικὸν σῶμα ἐζήτησεν ἱκανοποίησιν καὶ τὸ ἔργον τοῦτο τοῦ Μιραμπὼ ἐκάη δημοσίως διὰ τῆς χειρὸς τοῦ δημίου. Αὕτη ὑπῆρξεν ἡ τελευταία ἐχθρικὴ κατ' αὐτοῦ ἐκδήλωσις. Ἀπὸ τῆς ἡμέρας δ' ἐκείνης ἄρχεται ἡ νέα του πολιτικὴ ζωή, ἀξία τῆς μεγαλοφυΐας του, εἰς τὴν ὁποίαν εἶχον προετοιμάσει αὐτὸν αἱ μελέται του, τὰ ἔργα του καὶ ἡ ἀκαταπόνητος δραστηριότης του. Εἰς αὐτὸν ἀνῆκε νὰ ὑπαγορεύῃ τοὺς νόμους καὶ ν' ἀγορεύῃ ὡς κυρίαρχος, ὅτε προεκηρύχθησαν αἱ ἐκλογαὶ τῆς Γενικῆς Συνελεύσεως τῶν Τάξεων, πᾶσαι αἱ κατ' αὐτοῦ κατηγορίαι, πᾶσαι αἱ καταδίκαι του, ὅλα τὰ ἐρωτικά του σκάνδαλα ἤχθησαν εἰς τὴν δημοσιότητα, ὅπως τοῦ ἀποκλείσουν τὸ στάδιον τῆς πολιτικῆς δράσεως, καθ' ὅσον πάντες ἐθεώρουν αὐτὸν ἐπίφοβον καὶ παράτολμον. Καταψηφισθεὶς ὑπὸ τῆς τάξεως τῶν εὐγενῶν, ἐξελέγη ὑπὸ τῆς τρίτης τοιαύτης εἰς τὰς πόλεις τῆς Μασσαλίας καὶ τῆς Αἴξ. Ἐδέχθη τὴν ἐκλογὴν τῆς τελευταίας, διῆλθεν ἐν θριάμβῳ τὴν Προβηγκίαν καὶ ἐνεφανίσθη εἰς Βερσαλλίας. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τῶν συνεδριάσεων τῆς Συνελεύσεως ἡ εἴσοδός του εἰς τὴν αἴθουσαν προεκάλεσεν ἐλαφρὸν θόρυβον, τὸν ὁποῖον τὸ βλέμμα του καὶ ἡ ἐπιβλητικὴ στάσις κατεσίγασαν ἀμέσως. Ἡ ἐνεργητικότης αὐτοῦ ἐδείχθη ἀπὸ τῶν πρώτων συνεδριάσεων, ὅτε, κατὰ τὴν ἐγερθεῖσαν συζήτησιν μεταξὺ τῆς τρίτης τάξεως καὶ τῶν δύο ἑτέρων, τῆς ἀριστοκρατίας καὶ τοῦ κλήρου, ἐπρότεινεν ὅπως οἱ συνελθόντες ὀνομασθῶσιν ἀντιπρόσωποι τοῦ λαοῦ. Κατὰ δὲ τὴν συνεδρίασιν τῆς 23 Ἰουνίου, καθ' ἣν ὁ βασιλεὺς ἀπήγγειλε τὸν ἐναρκτήριον λόγον, μεθ' ὕφους δὲ κυριαρχικοῦ διέταξε τὴν συνέλευσιν νὰ παραδεχθῇ τὰς μεταρρυθμίσεις του, ἄλλως ἠπείλησεν ὅτι ἔμελλε νὰ προβῇ εἰς διάλυσιν αὐτῆς, ὁ Μιραμπώ, ὡς ἀπῆλθεν ὁ βασιλεύς, ὁ δὲ κλῆρος καὶ οἱ εὐγενεῖς ὑπέκυψαν, λύων τὴν σιωπὴν ἀνεφώνησε πρὸς τοὺς ἀντιπροσώπους: «Ζητῶ νὰ περιβληθῆτε τὴν νομοθετικήν σας ἐξουσίαν καὶ νὰ περιφρουρηθῆτε ἐντὸς τῆς ἱερότητος τοῦ ὅρκου σας. Ὁ ὅρκος οὗτος δὲν μᾶς ἐπιτρέπει νὰ χωρισθῶμεν, ἂν μὴ περατώσωμεν τὸ Σύνταγμα». Καὶ ὅτε πάλιν ὁ ἐπὶ τῶν βασιλικῶν τελετῶν αὐλικὸς μετέβη καὶ ἐπανέλαβε τὴν διαταγὴν τοῦ βασιλέως, ὁ Μιραμπὼ εἶπεν εἰς αὐτόν: «Ὕπαγε νὰ εἴπῃς εἰς τὸν κύριόν σου ὅτι εὑρισκόμεθα ἐδῶ κατ' ἐντολὴν τοῦ λαοῦ καὶ μόνη ἡ βία τῆς λόγχης θέλει μᾶς ἐκβάλει». Τῇ προτάσει του δὲ ἡ Συνέλευσις ἐψήφισε τὸ ἀπαραβίαστον τῶν πληρεξουσίων.

Ὁ λαὸς ἐπὶ τέλους εὗρε τὸν ῥήτορά του καὶ διὰ τῆς ἐνεργείας αὐτοῦ συνεζήτησεν ὡς ἐξουσία πρὸς ἐξουσίαν μετὰ τῆς βασιλείας τὰ μεγάλα του ζητήματα. Ἡ ὤθησις ἐδόθη καὶ ὁ φόβος κατέλαβε τὴν αὐλήν. Ἐκλήθησαν τότε ξένα στρατεύματα, ἀλλ' ἡ ἐπανάστασις ἐχώρει μεγάλοις βήμασιν, ἡ δὲ Βαστίλλη, τὸ ἀρχαῖον αὐτὸ μνημεῖον τῆς ἀπολυταρχίας, ἔπεσε πρὸ τῶν λογχῶν τοῦ λαοῦ. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΣΤ' ἐζήτησεν ἐξηγήσεις παρὰ τῆς συνελεύσεως, αὕτη δὲ ἀπεφάσισε ν' ἀποστείλῃ πρὸς αὐτὸν πρεσβείαν, ὅπως τοῦ παραστήσῃ ὅτι πᾶσα ἐπιμονή του ἤθελεν ἐπιφέρει ἀθεράπευτα δυστυχήματα. Τότε ὁ Μιραμπὼ ἐμποδίζων τοὺς βουλευτὰς ἑτοίμους νὰ ἐξέλθωσιν, εἶπε: «Νὰ εἰπῆτε εἰς τὸν βασιλέα ὅτι τὰ πλήθη αὐτὰ τῶν ξένων στρατευμάτων, τὰ ὁποῖα μᾶς περιστοιχίζουν, ἐπεσκέφθησαν χθὲς καὶ πρίγκιπες καὶ πριγκίπισσαι, καὶ αὐλικοὶ καὶ αὐλικαί· τὰ ἐκολάκευσαν καὶ τὰ ἐπλήρωσαν δώρων, καθ' ὅλην δὲ τὴν νύκτα οἱ ξένοι αὐτοὶ δορυφόροι κραιπαλοῦντες ἐπροφήτευον διὰ τῶν ἀσεβῶν ᾀσμάτων των τὴν δούλωσιν τῆς Γαλλίας καὶ τὴν καταστροφὴν τῆς Ἐθνικῆς Συνελεύσεως· νὰ τοῦ εἰπῆτε ὅτι ἐντὸς τῶν ἀνακτόρων του, οἱ αὐλικοί του ἐχόρευον παιανιζούσης τῆς βαρβάρου ἐκείνης μουσικῆς καὶ ὅτι τοιαύτη ὑπῆρξε καὶ ἡ παραμονὴ τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου». Τὴν στιγμὴν ἐκείνην ἠγγέλθη ὅτι ὁ βασιλεὺς ἤρχετο εἰς τὴν Συνέλευσιν, ἡ δὲ περὶ τούτου εἴδησις διέθεσεν ὑπὲρ αὐτοῦ τοὺς πληρεξουσίους, προτιθεμένους νὰ τὸν ἐπευφημήσωσιν. «Ἂς ἀφήσωμεν, ἐκραύγασεν ὁ Μιραμπώ, νὰ μᾶς φανερώσῃ πρῶτον ὁ βασιλεὺς τοὺς σκοπούς του. Κατηφὲς σέβας ἁρμόζει εἰς τὴν πρώτην ὑποδοχὴν τοῦ μονάρχου παρὰ τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ δυστυχοῦντος λαοῦ. Ἡ σιωπὴ τῶν λαῶν εἶναι τὸ μάθημα τῶν βασιλέων».

Τὰ γεγονότα ἐξειλίσσοντο ῥαγδαίως· αἱ ἐπαρχίαι ἐξηγείροντο, ὁ δὲ Μιραμπὼ εὑρίσκετο ἐν τῇ πρώτῃ γραμμῇ. Κεραυνοβολῶν διὰ τῆς ῥητορικῆς του πᾶν πρόσκομμα, ἐπεβάλλετο εἰς τὴν βασιλείαν, ἣν προσέβαλλε, καὶ εἰς τὴν συνέλευσιν, τὴν ὁποίαν ἠλέκτριζεν. Εἶναι δυσχερὲς νὰ παρακολουθήσῃ τις βῆμα πρὸς βῆμα τὰ ἐνεργητικὰ κινήματα, εἰς ἃ ἐπρωτοστάτησεν ὁ Μιραμπώ, ἐπισύρων πρὸς ἑαυτὸν πάσας τὰς διανοίας διὰ τοῦ ἐνθουσιασμοῦ, τὸν ὁποῖον ὁ λόγος του ἀνύψου εἰς τὸ κατακόρυφον. Εἰσελθὼν εἰς τὸν πολιτικὸν ῥόλον καὶ ἐνθυμούμενος τὰς καταδιώξεις ἃς ὑπέστη, ἠγωνίζετο κατὰ πάσης αὐθαιρεσίας, ἡ δὲ βασιλεία ὑπῆρξεν ἡ πρώτη τοιαύτη ἣν συνήντησεν εἰς τὸν δρόμον του, ἀλλὰ δὲν ἤθελε ν' ἀνατρέψῃ αὐτήν. Ὅταν ἤρξαντο αἱ περὶ τοῦ Συντάγματος συζητήσεις, ἐδήλωσεν ὅτι ἠθέλησε ν' ἀπαλλάξῃ τὴν μοναρχίαν ἀπὸ τῆς διαφθορᾶς, ἀλλ' οὐχὶ καὶ νὰ ὁδηγήσῃ τὴν χώραν εἰς καταστροφάς. Βραδύτερον τὸν κατηγόρησαν ὅτι ἐπωλήθη εἰς τὴν αὐλήν, ἄλλοι δὲ ὅτι ἐγένετο πράκτωρ τοῦ δουκὸς τῆς Ὀρλεάνης, ἀλλ' ἤρκεσεν εἷς λόγος του νὰ συντρίψῃ τοὺς κατηγόρους. Ὑπερήσπισε τὰ βασιλικὰ δικαιώματα κατὰ τοῦ Λαμέθ, τοῦ Ροβεσπιέρρου καὶ ἄλλων καὶ μάλιστα κατὰ τὸν Μπαρνάβ, ὅστις ἐφέρετο εἰς τὰς ὁδοὺς ἐν θριάμβῳ. Ἀπαθὴς ὁ Μιραμπὼ ἀπήντα πρὸς αὐτόν: «Καὶ ὅμως πρό τινων ἡμερῶν ἤθελον νὰ περιαγάγουν καὶ ἐμὲ ἐν θριάμβῳ, ἤδη δὲ κραυγάζουν εἰς τὰς ὁδοὺς «ἡ μεγάλη προδοσία τοῦ Μιραμπώ». Δὲν ἔχω χρείαν τοῦ μαθήματος τούτου, ὅπως διδαχθῶ ὅτι μικρὸν ἀπέχει τὸ Καπιτώλιον τῆς Ταρπηΐας πέτρας, ἀλλὰ τὰ ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω κτυπήματα δὲν θὰ μ' ἐμποδίσουν ν' ἀκολουθήσω τὸν δρόμον τοῦ δικαίου καὶ τῆς λογικῆς». Ἠδυνήθη νὰ παρασύρῃ τὴν συνέλευσιν, ἥτις ἐψήφισεν, ὅπως ὁ βασιλεὺς διατηρήσῃ τὸ δικαίωμα νὰ διοικῇ τὸν στρατόν. Τότε συνήφθησαν αἱ πρῶται μετὰ τοῦ βασιλέως σχέσεις του, διεπραγματεύετο δὲ μετ' αὐτοῦ, διότι ἤθελεν, ἀφοῦ ἐχρημάτισεν εἷς τῶν πρωτουργῶν τῶν μεταρρυθμίσεων, νὰ παγιώσῃ αὐτὰς δεσμεύων τὰς φατρίας. Σκοπός του ἦτο, οὐχὶ νὰ παραδώσῃ τὴν ἐπανάστασιν εἰς τὴν αὐλήν, ἀλλὰ νὰ καταστήσῃ τὴν αὐλὴν προσήλυτον τῆς ἐπαναστάσεως. Ἡ ὑποστήριξις, ἣν ὑπέσχετο, περιωρίζετο ἐντὸς τοῦ Συντάγματος. Ἔσφαλεν ὅμως, διότι τὴν ἐπώλησεν. Ἕνεκα τῶν δυσθεραπεύτων ἀναγκῶν του, ἐδέχετο χρήματα, ὡς ἀπεκαλύφθη βραδύτερον, κατὰ τὴν διάρρηξιν τοῦ σιδηροῦ κιβωτίου τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Τοῦτο ἠμαύρωσε τὴν δόξαν αὐτοῦ.

Ὁ τελευταῖος λόγος, τὸν ὁποῖον ἐξεφώνησεν ὁ Μιραμπὼ εἰς τὴν συνέλευσιν, ἦτο ὁ ἐναντίον τοῦ νόμου τοῦ καταγινώσκοντος πολιτικὸν θάνατον καὶ δήμευσιν τῆς περιουσίας τῶν μεταναστευόντων. Κηρύξας ὅτι οὐδένα ὅρκον ἤθελε τηρήσει πρὸς τοὺς ἐπιδιώκοντας δικτατωρίαν, κατέληξεν εἰπὼν ὅτι ἡ εὔνοια τοῦ λαοῦ, ἣν ἐζήτει, δὲν ἦτο κάλαμος σαλευόμενος ὑπὸ τοῦ ἀνέμου. «Θέλω, εἶπε, νὰ τὴν ῥιζώσω βαθέως εἰς τὴν γῆν, καὶ βάσεις αὐτῆς νὰ εἶναι ἡ δικαιοσύνη καὶ ἡ ἐλευθερία».

Ὁ Μιραμπὼ δὲν ἀπέλαυσεν ἐπὶ πολὺ τὴν περίοδον ταύτην τῆς δόξης· ὁ θάνατος ἐντὸς ὀλίγων ἡμερῶν κατέλυσε τὸν ὑπὸ τοσούτων παθῶν καὶ ἀγώνων ἐξησθενημένον ὀργανισμόν του. Ἡ ἀπώλειά του ἐθρηνήθη ὡς κοινὴ συμφορά· οἱ κάτοικοι τῶν Παρισίων ἠκολούθησαν κατὰ μάζας τὴν κηδείαν του, ἡ Γαλλία ὁλόκληρος ἐπενθηφόρησε καὶ ὁ νεκρός του ἐτάφη εἰς τὸ Πάνθεον. Μετὰ τὴν ἀποκάλυψιν ὅμως τῶν ἐγγράφων τοῦ σιδηροῦ κιβωτίου τοῦ Λουδοβίκου ἐγνώσθησαν αἱ μετὰ τῆς αὐλῆς σχέσεις του, διὰ ψηφίσματος δὲ τῆς Συνελεύσεως τὴν 21 Σεπτεμβρίου 1794, ἀπεσύρθη ὁ νεκρὸς αὐτοῦ ἐκ τοῦ Πανθέου καὶ ἀπετέθη εἰς τὸ νεκροταφεῖον τῆς Ἁγίας Αἰκατερίνης τοῦ προαστείου τοῦ Σαὶν-Μαρσέλ. Αἱ προσπάθειαι αὐτοῦ ὅπως καὶ τὸν θρόνον ἐνισχύσῃ καὶ τὴν ἐπανάστασιν στερεώσῃ, ἀπεγύμνωσαν αὐτὸν τοῦ κλέους τῶν γεγονότων, τῶν ὁποίων ὑπῆρξεν ὁ μέγας ἀθλητής. Ἀλλὰ τοῦ ἀπέμεινεν ἀσάλευτος ἡ δόξα τοῦ μεγίστου τῶν ῥητόρων τῆς Γαλλίας.

Θ. ΒΕΛΛΙΑΝΙΤΗΣ

—**Μιραμπὼ** (Mirabau), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Γάλλος ἀκαδημαϊκὸς (1675—1760). Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατόν, βραδύτερον δὲ περιεβλήθη τὸ μοναχικὸν σχῆμα καὶ ἀφωσιώθη εἰς τὴν φιλολογίαν. Μετέφρασε τὴν «Ἐλευθερωθεῖσαν Ἱερουσαλὴμ» τοῦ Τάσσου καὶ «Ρολάνδον τὸν Μανιώδη» τοῦ Ἀριόστο. Γενόμενος μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, διετέλεσεν ἰσόβιος αὐτῆς γραμματεύς. Μεταξὺ πλείστων ἄλλων ἔργων του τὸ σπουδαιότερον εἶναι τὸ «Περὶ γενέσεως καὶ ἀρχαιότητος τον κόσμου», ἐκδοθὲν τῷ 1751 ἐν Λονδίνῳ εἰς 4 τόμους. Θ. Β.

**Μιρὰν-*Σὰχ*** (***Μιρζᾶ-Δζελὰλ-ἐτ-ντίν***). Τρίτος υἱὸς τοῦ Ταμερλάνου, γεννηθεὶς τῷ 1368. Ζῶντος τοῦ πατρός του διετέλεσε διοικητὴς διαφόρων ἐπαρχιῶν, ἔλαβε δὲ μέρος καὶ εἰς τὴν μάχην τῆς Ἀγκύρας. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ταμερλάνου ἐπολέμησεν ἐπί τινα καιρὸν ἐναντίον τοῦ ἐν Ἀζερμπαϊτζὰν ἡγεμονεύοντος Τουρκομάνου Καραϊουσοὺφ Καρακογιουνλοῦ. Ἐφονεύθη εἴς τινα μάχην τῷ 1408. Ὁ υἱός του Σουλτὰν Χαλὶλ διεδέχθη τὸν Ταμερλᾶνον ἐν τῇ διακυβερνήσει τοῦ μεγάλου κράτους του. Ἐκ τοῦ Μιρὰν-Σὰχ κατάγεται ἡ ἐν Δελχὶ ἡγεμονεύσασα δυναστεία τῶν Γκιουργκιάν.

Ν. Μ.

—**Μιρὰν *Χουσεῖν Νιζὰμ-Σάχ.*** Ἡγεμὼν τῆς ἐν Νιζὰμ τοῦ Δεκκὰν (Ἰνδοστὰν) κυβερνησάσης δυναστείας τῶν Νιζαμασαχάν. Ἀνῆλθε τὸν θρόνον τῷ 1588 μετὰ τὸν φόνον τοῦ πατρός του Μουρταζᾶ. Ἐφονεύθη μετά τινας μῆνας. Ν. Μ.

**Μιράντα.** Ἑλληνὶς ἠθοποιός, πρωτότοκος θυγάτηρ τῆς Κυβέλης Θεοδωρίδου καὶ τοῦ Μήτσου Μυράτ, γεννηθεῖσα τῷ 1904. Ἠσπάσθη τὸ ἐπάγγελμα τῶν γονέων της καὶ ἀφοῦ ἐτελειοποιήθη ἐν Παρισίοις, ἀνῆλθε τὸ πρῶτον τὴν σκηνὴν ἐν Ἀθήναις τῷ 1919, ὑποδυθεῖσα ἕνα τῶν πρώτων ῥόλων εἰς τὰς «Δύω Λεονώρας» τοῦ Paul Lindau. Ἔκτοτε, ὑπὸ τὰς ὁδηγίας πάντοτε τῆς μητρός της, ὑπεδύθη ἐπιτυχῶς πλείστους ὅσους ῥόλους, διακριθεῖσα ἰδίως εἰς τὸ «Μελτεμάκι» τοῦ Π. Χὸρν καὶ «Δεσποινὶς δικηγόρος» τοῦ Θ. Συναδινοῦ. Ἐπίσης ἐπιτυχίαν εἶχε καὶ εἰς «Τὴν ἡδονὴν τῆς τιμιότητος» τοῦ Πιραντέλλο.

Ν. Ι. Λ.

**Μιράντα** (Miranda), ***Φραγκῖσκος.*** Στρατηγὸς ἐκ Βενεζουέλας, γεννηθεὶς τῷ 1752 εἰς Καρακὰς καὶ ἀποθανὼν τῷ 1816 εἰς Κάδιξ (τῆς Ἱσπανίας). Ἀπὸ τῆς νεανικῆς του ἡλικίας ἀφωσιώθη εἰς τὴν ἰδέαν τῆς ἀπελευθερώσεως τῆς πατρίδος του, μετέσχε δὲ πρὸς τοῦτο τοῦ ἱσπανικοῦ σώματος, τὸ ὁποῖον μετέβη εἰς βοήθειαν τοῦ Ροσαμπὼ εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Βραδύτερον περιῆλθε τὴν Εὐρώπην προπαγανδίζων ὑπὲρ τοῦ ἰδίου πατριωτικοῦ του πόθου. Εὑρισκόμενος ἐν Γαλλίᾳ τῷ 1792, ἐπέτυχε θέσιν ἀρχηγοῦ μονάδος ἐν τῷ στρατῷ τοῦ Ντυμουριὲ καὶ μετέσχε τῆς κατακτήσεως τοῦ Βελγίου. Προαχθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν ὑποστρατήγου, ἐξεπόρθησε κατὰ Νοέμβριον ἰδίου ἔτους τὴν Ἀμβέρσαν, ἀντικατέστησε δὲ κατὰ Ἰανουάριον 1793 τὸν Βαλὰνς εἰς τὴν ἀρχηγίαν τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων. Μετὰ τὸν πανικὸν ὅμως τῆς Αἲξ-λὰ-Σαπέλ, μολονότι κατώρθωσε νὰ διαφύγῃ τὴν αἰχμαλωσίαν δι' ἐπιτυχοῦς ὑποχωρήσεως, παρεπέμφθη εἰς δίκην ἐνώπιον τῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Καὶ ἠθωώθη μέν, κατόπιν μακρᾶς διαδικασίας, ἀλλ' ἐφυλακίσθη ἐκ νέου κατόπιν, ἐλευθερωθεὶς δὲ μετά τινα χρόνον περιελήφθη βραδύτερον εἰς τὰς προγραφὰς καὶ ἠναγκάσθη νὰ δραπετεύσῃ εἰς Ἀγγλίαν. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν τῷ 1801, συνελήφθη ὑπὸ κατηγορίαν προδοσίας, ἀπηλλάγη ὅμως μετ' οὐ πολὺ καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Λονδῖνον. Ἐκεῖθεν μετέβη τῷ 1806 εἰς Ἀμερικήν, διὰ νὰ διευθύνῃ δύο ἐκστρατείας ἐναντίον τῆς ἱσπανικῆς κυβερνήσεως τῆς Βενεζουέλας. Αἱ ἀπόπειραι ὅμως ἐκεῖναι ἀπέτυχον καὶ ὁ Μιράντα ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Εὐρώπην. Τῷ 1810 ἐπανῆλθεν εἰς Καρακὰς συνοδεύων τὸν *Μπολιβὰρ* (βλ. λ.), ὅστις εἶχεν ὑψώσει τὴν σημαίαν τῆς ἐπαναστάσεως καὶ διωργάνωσεν ἐκεῖ τὴν ἐπαναστατικὴν κυβέρνησιν. Ἀλλὰ τῷ 1812 περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν Ἱσπα-

*Φραγκῖσκος Μιράντα.*

Digitized by Google

νῶν, οἵτινες τὸν ἐνέκλεισαν εἰς τὰς φυλακὰς τοῦ Κάδιξ, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ὁ Μιράντα θεωρεῖται δικαίως ὡς εἷς τῶν πρωταγωνιστῶν καὶ ἡρώων τοῦ ὑπὲρ ἀνεξαρτησίας ἀγῶνος τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς. —Ω.

**Μιράντολα** (Mirandola) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Μοδένης, παρὰ τὴν διώρυγα τὴν ἑνοῦσαν τὸν ποταμὸν Σέκκιο πρὸς τὸν Πὼ ντὶ Βόλανο. Κάτ. 18.958. Κεῖται ἐπὶ διακλαδώσεως τῆς γραμμῆς Μοδένης—Μιλάνου—Βριντησίου, ἔχει ὡραίαν μητρόπολιν καὶ ἄλλας ἐνδιαφερούσας παλαιὰς ἐκκλησίας, παλαιὸν φρούριον, βιβλιοθήκην, μετεωρολογικὸν σταθμὸν κ.τ.λ. Εἶναι σημαντικὸν γεωργικὸν κέντρον, ἔχει βιομηχανίαν μετάξης καὶ παράγει ἄφθονον ὄρυζαν. Ἄλλοτε ἦτο φέουδον τοῦ οἴκου Πίκο, γενόμενον τῷ 1619 δουκᾶτον καὶ προσαρτηθὲν τῷ 1711 εἰς τὸ δουκᾶτον τῆς Μοδένης. Μ. Δ. Β.

**Μιράντολα, *Πίκο ντέλλα*** —· βλ. λ. *Πίκο* ντέλλα Μιράντολα.

**Μιραφλόρες** (Miraflores), ***δὸν Μανουὲλ Πάντο, μαρκήσιος ντὲ*** —. Βλ. λ. *Πάντο* Φερνάντεθ ντὲ Πινέντο Μαθέα ὁ Ντάβιλα.

**Μιραφλόρες** (Miraflores), ***Καρτούχα ντὲ Νουέστρα Σενιόρα ντὲ*** —. Περίφημος μονὴ τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ παλαιᾷ Καστίλλῃ. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Μποῦργκος καὶ ἱδρύθη τῷ 1441 ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Β'. Κατ' ἀρχὰς εἶχε κτισθῇ ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἑρρίκου Γ' εἰς ἐξοχικὸν ἀνάκτορον, εἰς ὡραιοτάτην θέαν, ἐν τῷ μέσῳ τεραστίου ἀνθῶνος, ἐξ οὗ καὶ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα. Βραδύτερον ὁ υἱὸς τοῦ Ἑρρίκου Γ' Ἰωάννης Β' μετέβαλεν αὐτὸ εἰς μοναστήριον, ὅπερ σὺν τῷ χρόνῳ ἐπλουτίσθη καὶ δι' ἄλλων κτηρίων καὶ διὰ πολλῶν πινάκων ὀνομαστῶν ζωγράφων καὶ ἀγαλμάτων, μετὰ πλουσίας βιβλιοθήκης. Τὸ κύριον κτήριον εἶναι ὡραίας ἀρχιτεκτονικῆς γοτθικοῦ ῥυθμοῦ καὶ ἀποτελεῖ ἓν τῶν χαρακτηριστικωτέρων δειγμάτων τῆς ἱσπανικῆς ἀρχιτεκτονικῆς τοῦ ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνος. Μ. Δ. Β.

**μιραχὸρ** (ὁ). Ὁ σταβλάρχης τῶν βασιλέων τῆς Περσίας καὶ τῶν σουλτάνων τῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ λ. *ἐμιραχόρ*).

**μιρβάνας *ἔλαιον*.** Ἐμπειρικὴ ὀνομασία τοῦ *νιτροβενζολίου* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**Μίργκοροντ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐκρανίας ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πολτάβας-Κιέβου. Κάτ. 21.000 περίπου. Ἔχει βιοτεχνικὴν σχολήν. Γ. Ι. Β.

**Μιρδῖται** (οἱ). Φυλὴ ἀλβανικὴ κατοικοῦσα εἰς τὴν βόρειον Ἀλβανίαν, καθολικοὶ τὸ θρήσκευμα, ὑπαγόμενοι πάλαι (*Π. Ἀραβαντινοῦ, Χρονογραφία* τ. Α', σ. 183) εἰς τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ Γεωργίου Σκεντέρμπεη. Καὶ μετὰ τὸν θάνατον τούτου οἱ Μιρδῖται προσεπάθησαν νὰ διατηρήσουν τὴν ἀνεξαρτησίαν των καὶ ἀντέστησαν κατὰ τῶν Τούρκων καὶ τῶν ἐκτουρκισθέντων ὁμόρων των Γκέκηδων, ἀλλ' ἠναγκάσθησαν νὰ ὑποταχθοῦν διατηρήσαντες προνόμιά τινα, ὡς τὴν ἀπαλλαγὴν ἐκ τοῦ χαρατσίου, τὸ ἐλευθέρως ὁπλοφορεῖν καὶ τὸ ἀκωλύτως ἐκτελεῖν τὰ τῆς θρησκείας των ὑπὸ τὸν πάπαν. Οἱ ἀρχηγοί των, ἀνάγοντες τὴν καταγωγήν των μέχρι τοῦ Σκεντέρμπεη, ἀσκοῦν μεγάλην ἐπιρροὴν ἐν Ἀλβανίᾳ. Οἱ Μιρδῖται εἶναι μετὰ τῶν Μαλισσόρων οἱ μαχιμώτεροι καὶ ἀνδρειότεροι τῶν Ἀλβανῶν. Ἀποτελοῦνται ἀπὸ διαφόρους πατριάς, αἱ ὁποῖαι εἶναι ἡνωμέναι ὑπὸ ἕνα κληρονομικὸν ἀρχηγὸν Prenk καλούμενον, ἐκ τῆς οἰκογενείας Bid-doda. Παρ' αὐτοῖς ἰσχύει εἰσέτι τὸ ἔθιμον τῆς ἐκδικήσεως τοῦ αἵματος (vendetta), καθ' ὃ ὁ φονεύων ὀφείλει νὰ φονευθῇ ὑπὸ τῶν συγγενῶν τοῦ φονευθέντος ἢ τινος ἀνήκοντος εἰς τὴν πατριάν. Ἡ φιλοξενία θεωρεῖται νόμος ἠθικός, ὁ δὲ λόγος τιμῆς, ἡ μπέσα, δεσμὸς ἠθικὸς ἀπαράβατος. Ἐπίσης ὑπάρχει παρ' αὐτοῖς καὶ τὸ ἔθιμον τῆς ἀδελφοποιίας. Ἀνέρχονται εἰς 20 χιλ. Χ. Ι. Σ.

**Μίρεβελτ** (Mierevelt), ***Μιχαήλ***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος ἐκ Ντέλφτ (1567—1641). Ἐσπούδασεν ἐν Οὐτρέχτῃ καὶ εἰργάσθη ἐν τῇ πατρίδι του χωρὶς οὐδέποτε νὰ ταξιδεύσῃ εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Κυριώτεραι προσωπογραφίαι του εἶναι «Ὁ πρίγκιψ τῆς Ὀράγγης», «Ὁ Γουλιέλμος ὁ Σιωπηλός», ἀποκείμεναι ἐν Ἄμστερνταμ, κ. ἄ. Χ. Δ.

**«Μιρεΐγ»** (Mireille). Μελόδραμα τοῦ Καρ. Γκουνώ, ἐπὶ λιμπρέττου τῶν Μπαρμπιὲ καὶ Καρρέ, ἀναβιβασθὲν τὸ πρῶτον τῷ 1864 ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Λυρικοῦ θεάτρου τῶν Παρισίων. Ἡ ὑπόθεσις, ληφθεῖσα ἐκ τοῦ περιφήμου ἔργου τοῦ *Μιστράλ* (βλ. λ.), ἔχει ὡς ἑξῆς: Ἡ Μιρεΐγ, κόρη τοῦ πλουσίου κτηματίου Ραμόν, ἀγαπᾷ τὸν Βενσάν, υἱὸν πτωχοῦ καλαθοποιοῦ. Εἰς τοῦτον ἡ νεαρὰ κόρη ὁμολογεῖ τὸ αἴσθημά της, ἀλλ' ἔχει πολλοὺς μνηστῆρας, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ὁ Οὐρίας, ὅστις, ἀντιλαμβανόμενος τὸν ἔρωτα τῶν δύο νέων, πληγώνει διὰ προδοσίας τὸν Βενσάν. Τὸ τέλος του ὅμως εἶναι κακόν, διότι διασχίζων διὰ λέμβου τὸν Ροδανὸν πνίγεται. Ὁ Βενσὰν ὁδηγηθεὶς εἰς τὸ Σπήλαιον τῆς Νεράϊδας, παρὰ τῇ μαγίσσῃ Ταβάν, ἀναλαμβάνει ἐκ τῆς πληγῆς καὶ παρακαλεῖ τὸν πατέρα του νὰ ζητήσῃ ἀπὸ τὸν Ραμὸν τὴν χεῖρα τῆς κόρης του. Ὁ πλούσιος κτηματίας ὅμως μένει ἀνένδοτος καὶ ἡ Μιρεΐγ φεύγει ἐκ τῆς οἰκίας της. Διερχομένη τὴν Καμάργην τῇ παρουσιάζονται ὡς ὀπτασίαι αἱ τρεῖς ἅγιαι Μαρίαι καὶ τῇ ἀποκαλύπτουν ὅτι πρέπει νὰ θυσιασθῇ ἐπὶ τῆς γῆς, ἵνα κερδίσῃ τὴν εὐτυχίαν εἰς τοὺς οὐρανούς. Ἡ Μιρεΐγ ἀποθνήσκει εἰς τὴν ἀγκάλην τοῦ Βενσὰν καὶ τῶν γονέων της.

Ἡ «Μιρεΐγ», κατὰ τὴν πρώτην της ἐμφάνισιν, εἶχε μετρίαν ἐπιτυχίαν, ὀφειλομένην ἴσως εἰς τὴν ἔλλειψιν δράσεως τοῦ λιμπρέττου. Ὑποστᾶσα πλείστας ὅσας μεταβολὰς καὶ προσθαφαιρέσεις, κατώρθωσε νὰ παραμείνῃ ὡς ἓν τῶν δημοφιλεστέρων γαλλικῶν ἔργων. Εἰδικῶς ἡ πρώτη πρᾶξις τοῦ μελοδράματος τούτου, μὲ τὸν εἰδυλλιακόν του χαρακτῆρα, θεωρεῖται ἀληθινὸν ἀριστούργημα. Γ. Σ.

**Μιρεκοὺρ** (Mirecourt), ***Εὐγένιος ντὲ*** —. Γάλλος δημοσιολόγος, παιδαγωγὸς καὶ διευθυντὴς οἰκοτροφείου (1812—1880). Τὸ πραγματικὸν του ὄνομα ἦτο *Κάρολος - Ἰωάννης - Βαπτιστὴς - Ζακὼ* (Jacquot). Ἐπέσυρε τὴν προσοχὴν τῶν συγχρόνων του, δημοσιεύσας τὸ «Ἐργοστάσιον μυθιστορημάτων, οἶκος Ἀλεξάνδρου Δουμᾶ καὶ Σιας» (1845), διὰ τὸ ὁποῖον κατεδικάσθη εἰς ἑξάμηνον φυλάκισιν ἐπὶ δυσφημήσει. Κατόπιν ἐδημοσίευσε σειρὰς βιογραφιῶν τῶν συγχρόνων του, λόγῳ δὲ τῶν καταδιώξεων ἃς ὑπέστη, ἠναγκάσθη νὰ ἐκπατρισθῇ. Πλὴν τῶν ἄνω ἐδημοσίευσεν: «Ἡ Λωρραίνη» (1839—1840), «Αἱ ἐξομολογήσεις τῆς Μαριὸν Ντελόρμ» (1848—1852), «Ἀπομνημονεύματα τῆς Νινὸν ντὲ Λανκλὼ» (1854), «Λεξικὸν τῶν καθολικῶν ἐπιστημῶν» (1865), «Σύγχρονος ἱστορία» (1866—1867) κλπ. Ι. Μ. Τ.

**μιρζᾶ** (ὁ)· λέξις ἀραβικῆς προελεύσεως (ἀρχικῶς *ἐμὶρ - ζαντὲ*=υἱὸς ἀρχηγοῦ ἢ πρίγκιπος) ἐν χρήσει παρὰ τοῖς νεωτέροις Πέρσαις ἀπὸ τῆς εἰσβολῆς τοῦ Ταμερλάνου εἰς Περσίαν. Τιθεμένη μετὰ τὸ ὄνομα σημαίνει *βασιλόπαις* (υἱὸς τοῦ σάχου), π. χ. Ἀχμὲτ - Μιρζᾶ. Πρὸ τοῦ κυρίου ὀνόματος εἶναι τίτλος διδόμενος εἴς τινας βαθμούχους (πρεσβευτὰς καὶ ἄλλους), π. χ. Μιρζᾶ Μοχσὶν χάν. Ν. Μ.

**Μιρζανῆ** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Χαλδίας τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 17 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν. Ε. Ι. Χ.

**Μιρζαποὺρ** (Mirzapour) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγη, ἀνήκουσα διοικητικῶς εἰς τὴν ἐπαρχίαν τοῦ Μπεναρές. Ἔχει ἀνεπτυγμένας βιομηχανίας, ὀρειχαλκουργίας καὶ ταπήτων. Κάτ. 33.000. Π. Γ. Λ.

**Μιρζεύσκης,** ἢ ***Μιρτσιέφσκη*** (Mirziewsky). Πολωνὸς φιλέλλην. Ὑπηρέτησεν ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Ναπολέοντος, τὸν ὁποῖον καὶ εἶχεν ἀκολουθήσει κατὰ τὴν εἰς τὴν Ἔλβαν ἐξορίαν του. Κατελθὼν εἰς τὴν Ἑλλάδα κατετάγη εἰς τὸ σῶμα τῶν φιλελλήνων τοῦ στρατηγοῦ Νόρμαν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ πρώτου λόχου. Κατὰ τὴν μάχην τοῦ Πέτα ἀπεσύρθη μετὰ ὀλίγων ἄλλων Πολωνῶν εἰς τὴν στέγην τῆς ἐκκλησίας, ἐκεῖ δὲ ἔπεσε μαχόμενος πρὸς πολλαπλασίους ἐχθρούς. Χ. Δ.

**μιρίκι** (ἡ) *[Ζωολ.]*. Ἰθαγενὴς ὀνομασία ὑπὸ τῶν Βραζιλιανῶν τοῦ πιθήκου *ἀτελής*.

**μιρικίνα** (ἡ) *[Ζωολ.]*. Οὕτω καλοῦσιν οἱ ἰθαγενεῖς τῆς Ἀμερικῆς τὸ ζῶον *νυκτοπίθηκος*.

**μιρ - ἰ - μιράν.** Λέξις σύνθετος ἀραβικὴ μὲ κατάληξιν πληθυντικοῦ περσικήν, σημαίνουσα «ἀρχηγὸς τῶν ἀρχηγῶν». Ἦτο ἐπὶ σουλτανικοῦ καθεστῶτος τῆς Τουρκίας πολιτικὸς βαθμὸς ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸν ὑποστρατήγου καὶ συνεπαγόμενος τὸν τίτλον πασᾶ (ἄνευ ἱππουρίδος), ἄνευ τοῦ τίτλου «ἐξοχότης» (χαζρὲτ λερί). Ν. Μ.

**Μιριμπὲλ** (Miribel), ***Μαρία - Φραγκῖσκος - Ἰωσὴφ ντὲ*** —. Γάλλος στρατηγὸς (1831—1893). Μετέσχε τῶν πολέμων τῆς Κριμαίας, τῆς Ἰταλίας καὶ τοῦ Μεξικοῦ, ὅτε δ' ἐξερράγη ὁ Γαλλοπρωσσικὸς πόλεμος (1870), ἦτο στρατιωτικὸς ἀκόλουθος ἐν Πετρουπόλει. Ἐπιστρέψας τότε εἰς Γαλλίαν, μετέσχε τοῦ πολέμου ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ. Τῷ 1875 προήχθη εἰς στρατηγὸν καὶ διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου. Εἰς τὴν θέσιν ταύτην ὑπηρέτησεν ἔκτοτε ἐπανειλημμένως μέχρι σχεδὸν τοῦ θανάτου του, ἐπιδείξας μεγάλην ὀργανωτικὴν ἱκανότητα. Χ. Δ.

**Μίρις** (Miéris), ***Γουλιέλμος βὰν*** —. Ὁλλανδὸς ζωγράφος, υἱὸς τοῦ *Φρὰντς Μίρις*, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Λεῦντε (1662—1747). Ἐμαθήτευσε πλησίον τοῦ πατρός, εἰργάσθη δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον ἐφ' ὅσων καὶ ἐκεῖνος θεμάτων. Ὡς καλλιτέχνης εἶναι ἀναμφισβητήτως κατώτερος τοῦ πατρός του κατά τε τὴν ζωηρότητα τῆς ἐκφράσεως καὶ τὴν ἐντέλειαν τοῦ σχεδίου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Σαπουνόφουσκες», «Ἔμπορος θηραμάτων», «Ἡ μαγείρισσα» (Λοῦβρον), «Μπακάλικο», «Νεαρὰ μητέρα», «Ἡ Σωσάνα μεταξὺ τῶν δύο γερόντων» (Μουσεῖον Χάγης), «Ἔμπορος πουλερικῶν» (Μουσεῖον Ἄμστερνταμ), «Ἰωσὴφ καὶ Πετεφρῆς», «Ἡ ἀναχώρησις τῆς Ἄγαρ», «Νεᾶνις λιπόθυμος» (ἀντίγραφον τοῦ ὁμοίου πίνακος τοῦ πατρός του), «Ὁ ἀστρολόγος», «Παλαίμαχος ἐπαιτῶν» (Μουσεῖον Ἄμστερνταμ). «Ἔμπορος ἀστακῶν» (Μουσεῖον Ἀμβέρσης), «Μικροὶ μουσικοὶ» (Πινακοθήκη Μονάχου), «Νεᾶνις φέρουσα κάνιστρον πλῆρες καρπῶν», «Κοιμωμένη Νύμφη» (Μουσεῖον Μίντελμπουργκ), «Τυροπῶλις», (Μουσεῖον Κάσσελ), «Γυναῖκα χύνουσα κρασὶ εἰς τὸ ποτήριον βιολιστοῦ», «Μητέρα καὶ κόρη», κτλ. Ι. Μ. Π.

—**Μίρις** (Miéris), ***Ἰωάννης βὰν*** —. Ὁλλανδὸς ζωγράφος, υἱὸς τοῦ *Φρὰντς Μίρις* τοῦ πρεσβυτέρου (1660—1690). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ πατρός του καὶ διεκρίθη μὲν ὡς ἱκανὸς καλλιτέχνης, ἀλλὰ δὲν ἠδυνήθη νὰ δώσῃ ὅλον τὸ μέτρον τῶν δυνάμεων του, ἐπειδὴ ὑπῆρξε βραχύβιος. Ἐξειργάσθη σκηνὰς ἐκ τοῦ καθημερινοῦ βίου. Ι. Μ. Π.

—**Μίρις** (Miéris), ***Φράντς***. Υἱὸς τοῦ *Γουλιέλμου Μίρις*, καλλιτέχνης καὶ ἐπιστήμων, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Λεῦντε (1689—1763). Ἐξέμαθε τὴν ζωγραφικὴν πλησίον τοῦ πατρός του, ἀλλ' ἠσχολήθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὴν ἀρχαιολογίαν τῶν Κάτω Χωρῶν, συγγράψας μεταξὺ ἄλλων: «Ἱστορίαν καὶ ἐκκλησιαστικὰς ἀρχαιότητας τῶν ἐπὶ ἡνωμένων ἐπαρχιῶν» (1726), ἔτι δὲ «Ἱστορίαν τῶν πριγκίπων τῶν οἴκων τῆς Βαυαρίας, τῆς Βουργουνδίας καὶ τῆς Αὐστρίας, ὅσοι ἐξουσίασαν τὰς Κάτω Χώρας» (1739). Ι. Μ. Π.

—**Μίρις** (Miéris) ***Φρὰντς βὰν*** —, ἐπιλεγόμενος ὁ *πρεσβύτερος*. Ὁλλανδὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Ντέλφτ τῷ 1635 καὶ ἀποθανὼν ἐν Λεῦντε τῷ 1681. Ἐμαθήτευσε διαδοχικῶς παρὰ τῷ Abr. Toornvliet, τῷ G. Dov καὶ τῷ Tempel. Νεώτατος διεκρίθη ὡς ἱκανώτατος καλλιτέχνης. Ἐργασθεὶς ἀκαταπονήτως παρήγαγε μακρὰν σειρὰν ἔργων, διὰ τῶν ὁποίων κατηριθμήθη μεταξὺ τῶν ὀνομαστῶν ἐκείνων Ὁλλανδῶν διδασκάλων, ὅσοι ἐξ ἑνὸς ἐπεισοδίου τῆς καθημερινῆς ζωῆς ἢ ἑνὸς ἁπλοῦ θέματος «ἐσωτερικοῦ» ἐδημιούργησαν ἀληθῆ ἀριστουργήματα. Τὰ σημαντικώτερα χαρακτηριστικὰ τῆς τέχνης του εἶναι ἡ χάρις καὶ ἡ ζωηρότης τῆς ἐκφράσεως, ἔτι δ' ἡ ἀπόδοσις τοῦ θελητικοῦ ἐκείνου ὕφους τῆς οἰκειότητος, ὅπερ καθιστάνει τόσον ἰδιότυπον καὶ τόσον ἐνδιαφέρουσαν τὴν παλαιὰν ὁλλανδικὴν τέχνην. Εἰς πλεῖστα μουσεῖα τῆς Εὐρώπης εὕρηνται πολυπληθῆ ἔργα τοῦ Μίρις, ἐξ ὧν τὰ κυριώτερα: «Ἡ πωλήτρια τῶν μεταξωτῶν», πίναξ ἐκτελεσθεὶς χάριν τοῦ Αὐστριακοῦ ἀρχιδουκὸς Λεοπόλδου Γουλιέλμου (Μουσεῖον Βιέννης), «Νεᾶνις λιπόθυμος» (Πινακοθήκη Μονάχου), «Προσωπογραφία ἀνδρός», «Τὸ τσάϊ», «Φλαμανδικὴ οἰκογένεια» (Λοῦβρον), «Ὁ καπνιστής», «Ἱππότης παίζων μὲ κυνάριον», «Νεαρὰ μήτηρ θηλάζουσα», «Ἡ λαχανοπῶλις», «Ἱππότης προσφέρων τὸν βραχίονά του πρὸς κυρίαν», «Νεαρὸς εὐπατρίδης εἰς καπηλεῖον» (εἰς διαφόρους ἀγγλικὰς συλλογάς), «Παίκτρια βαρβίτου» (μουσεῖον Ἄμστερνταμ), «Προσωπογραφία τοῦ καθηγητοῦ Schul», «Παιδί, ποῦ κάμνει σαπουνόφουσκες» (μουσεῖον Χάγης), «Γυνὴ γράφουσα ἐπιστολήν», 2 προσωπογραφίαι τοῦ καλλιτέχνου, «Μάθημα μουσικῆς», «Γανωτὴς ἐξετάζων τρυπημένην χύτραν» κτλ. Ι. Μ. Π.

**μιρὶς** (ἡ) (Miris) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων ἡμιπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *καψιδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους ἔντομα μὲ σῶμα ἐπίμηκες, κεφαλὴν μικράν, κεραίας μακρὰς καὶ πράσινον χρωματισμόν. Αἱ μιρίδες εἶναι φυτόβιοι κόρεις ἰθαγενεῖς τῶν εὐκράτων καὶ θερμῶν χωρῶν τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**Μίρκος.** Πρίγκιψ τοῦ Μαυροβουνίου (1879—1918). Ἦτο υἱὸς τοῦ βασιλέως Νικολάου τοῦ Α' καὶ τῆς Μιλένας Βούκοβιτς. Συνεζεύχθη τῷ 1902 τὴν Νατα λίαν, θυγατέρα τοῦ Σέρβου ἀξιωματικοῦ Ἀλεξάνδρου Κωνσταντίνοβιτς, προσωπικοῦ ἐχθροῦ τοῦ βασιλέως τῆς Σερβίας Ἀλεξάνδρου. Προσαρτηθέντος τοῦ Μαυροβουνίου εἰς τὴν Σερβίαν τὰ δικαιώματα τοῦ υἱοῦ τοῦ Μίρκου πρίγκιπος *Μιχαὴλ* ἐπὶ τοῦ θρόνου σχολάζουσι. Γ. Ι. Β.

**μιρμίδι** (τό), (ἰδιωμ.)· λεπτὴ χρυσῆ κλωστὴ διὰ κέντημα ἰδίως τουρκικῶν τζεβρέδων. Ι. Δ. Μ.

**Μίρκοβιτς, *Γ. Β.*** Βούλγαρος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Σλίβεν τῷ 1826. Ἐδιδάχθη τὸ πρῶτον τὰ ἑλληνικὰ γράμματα εἰς τὰ σχολεῖα τῆς πατρίδος του καὶ ἐφοίτησε κατόπιν εἰς τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἀκαδημίαν Κιέβου καὶ ἔπειτα εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ Μομπελιέ. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του ἔλαβε μέρος εἰς πολλὰ ἐπαναστατικὰ κινήματα κατὰ τῶν Τούρκων. Πλὴν τῶν ἰατρικῶν του συγγραμμάτων καὶ μιᾶς μελέτης του περὶ τῶν Οὐνιτῶν, μετέφρασε καὶ συγγράμματα τῶν Β. Οὐγκώ, Λαμαρτίνου καὶ Ἀλλὰν Καρδέκ. Τ. Β.

Digitized by Google

**Μίρμπαχ-Χὰρφ** (Mirbach-Harff), ***Γουλιέλμος, κόμις*—.** Γερμανὸς διπλωμάτης (1871—1918). Διετέλεσε πρεσβευτὴς ἐν Ἀθήναις 1915—1917, ἀπελαθεὶς ὑπὸ τῶν Συμμάχων μετὰ τῶν πρεσβευτῶν καὶ διπλωματικῶν ἀντιπροσώπων τῆς Αὐστρίας, Βουλγαρίας καὶ Τουρκίας. Τῷ 1917 ἐτοποθετήθη ὡς πρεσβευτὴς ἐν Βουκουρεστίῳ, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τῆς 26 Ἀπριλίου 1918, ὅτε μετατεθεὶς μετέβη εἰς Μόσχαν, ὅπου ἐδολοφονήθη ὑπὸ ἐπαναστατῶν. Γ. Ι. Β.

**Μιρμπὲλ** (Mirbel), ***Κάρολος - Φραγκῖσκος ντὲ*** —, ἐπιλεγόμενος *Μπρισσὼ-Μιρμπὲλ* (Brisseau-Mirbel). Διακεκριμένος Γάλλος βοτανικὸς (1776-1854). Ἀπὸ τοῦ 1798 κατέλαβε διαδοχικῶς διαφόρους ἕδρας διδασκαλίας τῆς βοτανικῆς ἐν Γαλλίᾳ, τῷ δὲ 1806 προσελήφθη εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Λουδοβίκου Βοναπάρτου, βασιλέως τῆς Ὁλλανδίας. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν τῷ 1808, διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον καὶ μέλος τοῦ ἰνστιτούτου. Ὑπηρέτησε κατόπιν εἰς διαφόρους ἀνωτέρας θέσεις τῆς διοικήσεως, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀποσυρθεὶς τῷ 1820 ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὰς ἐπιστημονικάς του ἐργασίας. Μεγάλου ἐνδιαφέροντος ὑπῆρξαν αἱ μελέται του περὶ τοῦ ἱστοῦ τῶν φυτῶν καὶ τῆς ἐξελίξεως τῶν ὀργάνων των, εἰς αὐτὰ δὲ ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις τῆς φύσεως τοῦ φυτικοῦ κυττάρου. Διάσημος ἰδίως κατέστη ὁ Μιρμπὲλ διὰ τοῦ ἔργου του «Ἐγχειρίδιον φυτικῆς ἀνατομίας καὶ φυσιολογίας» (1803). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης καὶ ἄλλα περισπούδαστα συγγράμματα, ἐν οἷς: «Φυσικὴν ἱστορίαν τῶν φυτῶν κατατεταγμένων κατ' οἰκογενείας» (1802—1826, εἰς 18 τόμους), «Στοιχεῖα βοτανικῆς καὶ φυτικῆς φυσιολογίας» (1815) μὲ θαυμασίαν ἰδιόχειρον αὐτοῦ εἰκονογράφησιν, καθὼς καὶ πληθὺν ὅλην μελετῶν καὶ ἄρθρων εἰς τὰ ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς του. —Ω.

**Μιρμπὼ** (Mirbeau), ***Ὀκτάβιος.*** Γάλλος φιλόλογος, γεννηθεὶς εἰς Trévières τῷ 1850 καὶ ἀποθανὼν εἰς Παρισίους τῷ 1917. Ἡ οἰκογένειά του ἦτο νορμανδικῆς καταγωγῆς. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ λύκειον τῶν Vannes, τὸ διευθυνόμενον τότε ὑπὸ ἰησουϊτῶν, τοῦτο δὲ καὶ περιγράφει βραδύτερον εἰς τὸ ἔργον του «Sébastien Roch». Ὁ Μιρμπὼ ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς θεατρικὸς κριτικός, συνεργασθεὶς εἰς διαφόρους ἐφημερίδας· ἐγένετο δὲ γνωστὸς ἐκ τοῦ περὶ «Ἠθοποιοῦ» δριμυτάτου κατὰ τῶν ἠθοποιῶν ἄρθρου του, ὅπερ τὸν ἠνάγκασε νὰ ἀποσυρθῇ ἀπὸ τὴν ἐφημερίδα «Figaro». Τότε ὁ Μιρμπὼ ἵδρυσε μετ' ἄλλων τὸ ἑβδομαδιαῖον σατιρικὸν φύλλον «Les Grimaces», τὸ ὁποῖον ἐστρέφετο κυρίως ἐναντίον τῶν δημοκρατικῶν, λόγῳ δὲ τῆς βιαιότητος τῆς πολεμικῆς του πολλάκις ἠναγκάσθη νὰ μονομαχήσῃ μετὰ διαφόρων σημαινόντων προσώπων σατιριζομένων εἰς τὸ φύλλον τοῦτο. Ἀλλὰ τὸ ἀνήσυχον καὶ θυελλῶδες πνεῦμά του δὲν ἠδύνατο νὰ διατηρήσῃ ἐπὶ πολὺ τὰς αὐτὰς ἰδέας. Οὕτως ὁ Μιρμπὼ ἐμφανίζεται ἐκ περιτροπῆς ὡς βασιλόφρων, καθολικός, μιλιταριστής, ἀντικληρικός, ἰντερνασιοναλιστής, ἀναρχικός, καὶ τέλος, κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, ὡς ἔνθερμος πατριώτης.

Ὡς τεχνοκριτικὸς κατεφέρθη ἐναντίον ὅλων τῶν ἐπισήμως ἀνεγνωρισμένων ταλάντων καὶ ὑπεστήριξε μετὰ πείσματος τοὺς νεοεμφανισθέντας τότε ἰμπρεσσιονιστὰς καὶ φουτουριστάς, προσπαθῶν πάντοτε νὰ εὑρίσκεται μεταξὺ τῶν πρωτοπόρων. Παρ' ὅλας του τὰς ὑπερβολὰς ταύτας, εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ τιμὴ ὅτι πρῶτος ἀνεκάλυψε καὶ παρουσίασεν εἰς τὸ κοινὸν καλλιτέχνας ὡς τὸν Rodin, τὸν Cezanne καὶ τὸν Maeterlinck.

Ὁ Μιρμπὼ ἀπέμεινε κατὰ βάθος δημοσιογράφος, ἔγραψεν ὅμως πλεῖστα ὅσα ἔργα, τὰ ὁποῖα διακρίνει βαθεῖα νατουραλιστικὴ διάθεσις· ἀρέσκεται περισσότερον καὶ ἀπὸ αὐτὸν τὸν Zola εἰς τὴν περιγραφὴν τῶν εἰδεχθῶν πλασμάτων καὶ τῶν ἠθικῶν ἀσχημιῶν, Τοιοῦτος ἐμφανίζεται εἰς τὰ μυθιστορήματά του: «Le Calvaire» (1886), ἔργον ἰσχυρὸν καὶ εἰλικρινές, κατατασσόμενον εἰς τὴν πρώτην σειρὰν μεταξὺ τῶν λεγομένων μυθιστορημάτων ἀναλύσεως, «L' Abbé Jules» (1888), «La Famille Carmettes» (1888) καὶ «Sébastien Roch» (1890), ὅπου ὑποστηρίζει ὅτι ἡ εὐσπλαγχνία ταπεινώνει τὸν ἄνθρωπον καὶ διαιωνίζει τὴν δυστυχίαν του, ἀντὶ νὰ τὴν ἀνακουφίζῃ. Βαθμηδὸν τὰ ἔργα του καταντοῦν ἐκθέσεις προσωπικῶν ἐντυπώσεων ἢ ὕβρεις ἐναντίον κοινωνικῶν θεσμῶν, ὡς τά: «Le Jardin des Supplices» (1898), «Le Journal d' une femme de chambre» (1900) καὶ «Les Vingt et un jours d'un neurasthénique» (1901). Τὰς αὐτὰς ἰδέας καὶ τὴν αὐτὴν ρεαλιστικὴν διάθεσιν ἐπανευρίσκομεν καὶ εἰς τὰ θεατρικά του ἔργα: «Les Mauvais Bergers» (1897), «L' Épidémie» (1898), «Vieux Ménages» (1900), «Le Portefeuille», «Les Scrupules (1902), καὶ «Le Foyer» (1908), ὅπερ, παρ' ὅλον τὸν δημιουργηθέντα περὶ αὐτὸ θόρυβον, δὲν ἐσημείωσε μεγάλην ἐπιτυχίαν, ἀκριβῶς ἕνεκα τῶν ὑπερβολῶν του. Ὡς τὸ καλύτερον θεατρικὸν ἔργον του θεωρεῖται ἡ κωμῳδία «Les Affaires sont les Affaires» (1903), μὲ τὴν ὁποίαν ὁ συγγραφεὺς πλησιάζει πρὸς τὸν τέλειον τύπον τῆς μολιερικῆς κωμῳδίας. Συλλογὴ τῶν σατιρικῶν κωμῳδιῶν του ἐδημοσιεύθη τῷ 1904 ὑπὸ τὸν τίτλον «Farces et Moralités». Ἐπίσης ἔγραψε σειρὰν διηγημάτων δημοσιευθέντων εἰς τὸν «Figaro» καὶ συγκεντρωθέντων εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Lettres de ma chaumière» (1885), ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις ἐκ τοῦ Βελγίου, «La 628—E8» (1907) καὶ «Dingo» (1912). Εἰς τὴν ἑλληνικὴν μετεφράσθησαν τὸ μυθιστόρημά του «Ἡμερολόγιον μιᾶς καμαριέρας» (μετάφρ. *Γ. Σημηριώτη* 1924) καὶ ἡ κωμῳδία του «Les Affaires sont les Affaires», παρασταθεῖσα ὑπὸ τὸν τίτλον ὁ «Χρηματιστής». Ι. Ο.

**Μιρόβριγχ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο ἀναφέρονται ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. II, 4) δύο πόλεις τῆς Ἱσπανίας:

—1) Ἐν τῇ Βαιτικῇ (νῦν Ἀνδαλουσία) πρὸς Ν. τοῦ ποταμοῦ Ἄνα (νῦν Γουαδιάνα), ἡ νῦν Capilla.

—2) Ἐν τῇ Λουσιτανίᾳ, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Οὐεττόνων, πρὸς Ν. τοῦ Δούρου ποταμοῦ, ἡ νῦν Ciudad-Rodrigo, ΝΔ. τῆς Σαλαμαγκας παρὰ τὰ πορτογαλικὰ μεθόρια. Α. Θ. Σ.

**Μιροπόλιε** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Κούρσκ. Κάτ. 16.500. Γ. Ι. Β.

**Μὶρς** (Miersch), ***Κάρολος - Ἀλέξανδρος.*** Γερμανὸς βιολιστὴς (γεννηθεὶς τῷ 1865), μέλος τῆς ὀρχήστρας τῆς Βοστώνης ὑπὸ τὸν Nims, μουσικοδιδάσκαλος ἐν Ἄμπερντην κλπ. Ἀπὸ τοῦ 1894—1898 διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ βιολίου καὶ διευθυντὴς ὀρχήστρας τοῦ Ὠδείου Ἀθηνῶν, μεθ' ὃ ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Γ. Σ.

**Μὶρ-σὰχ-Μεχμὲτ** *[Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν ὡραιοτέρων προαστείων τῆς ἀσιατικῆς ὄχθης τοῦ Βοσπόρου τῆς διοικήσεως Βέϊκος (Νυμφαίου).

**Μίρτσεα** (Mircea), ὁ ἐπιλεγόμενος ***Μέγας.*** Ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας (1387—1418). Ἦτο υἱὸς τοῦ Ράδου Β', διεδέχθη δὲ τὸν ἀδελφόν του Δάν. Τῷ 1389 ἐδήλωσεν ὑποταγὴν εἰς τὸν βασιλέα τῆς Πολωνίας Λαδίσλαον καὶ τῷ 1391 εἰς τοὺς Τούρκους, συμμαχήσας ὅμως μετ' ὀλίγον μετὰ τοῦ Σιγισμούνδου, βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας, μετέσχε τῆς ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος τούτου διοργανωθείσης ἀτυχοῦς ἐκστρατείας ἐναντίων τῶν Τούρκων. Μετὰ τὴν μάχην τῆς Νικοπόλεως, καθ' ἣν ὁ Βαγιαζὴτ Α' κατέσφαξε τὸν συμμαχικὸν στρατὸν (28 Σεπτεμβρίου 1396) κατώρθωσε νὰ σώσῃ τὴν ἀπειλουμένην χώραν του καὶ νὰ ὑπερασπίσῃ τὸν θρόνον του, τὸν ὁποῖον κατὰ τὴν ἀπουσίαν του εἶχε σφετερισθῆ ὁ υἱός του Βλαδισλαῦος. Βραδύτερον μετὰ τὴν σύλληψιν τοῦ Βαγιαζὴτ ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὰς πρὸς διαδοχὴν τοῦ τουρκικοῦ θρόνου ἔριδας καὶ κατώρθωσε νὰ ἀνακηρυχθῇ σουλτᾶνος ὁ μικρότερος υἱὸς τοῦ Σουλεϊμὰν Α', Μουσᾶ (1406). Ὅτε μετ' ὀλίγον ὁ Μουσᾶ ἀνετράπη, ὁ διάδοχος καὶ ἀδελφὸς αὐτοῦ Μωάμεθ Α' ἠθέλησε νὰ ἐκδικηθῇ τὸν Μίρτσεα, διότι ἐφιλοξένησε τὸν ἔκπτωτον σουλτᾶνον, παρ' ὅλην δὲ τὴν ἀντίστασιν, τὴν ὁποίαν κατώρθωσε νὰ ἀντιτάξῃ οὗτος ὑποστηριζόμενος καὶ ὑπὸ τῶν Πολωνῶν, ἠναγκάσθη νὰ ὑποταγῇ διὰ δευτέραν φορὰν εἰς τοὺς Τούρκους. Συμφώνως πρὸς τὴν συνομολογηθεῖσαν συνθήκην (1411) ὁ Μίρτσεα παρέμενε μὲν ἀπόλυτος κύριος τῆς χώρας του, ἠναγκάσθη ὅμως νὰ πληρώνῃ φόρον ὑποτελείας. Νέα ἀποτυχοῦσα ἀνάμιξις αὐτοῦ εἰς τὰ τοῦ τουρκικοῦ θρόνου, καθ' ἣν ὑπεστήριξε τὸν Μουσταφᾶν, ἐστοίχισεν εἰς αὐτὸν τὴν πρόσθετον ὑποχρέωσιν νὰ ἀποστέλλῃ ἐτησίως εἰς τὸν σουλτᾶνον 100 νέους διὰ τὸ σῶμα τῶν γενιτσάρων. Χάρις εἰς τὴν μεγάλην δραστηριότητά του ἐπέτυχε ν' ἀποκτήσῃ ἐπιρροὴν ἐπὶ τῶν διαφόρων Βουλγάρων δεσποτῶν τῆς Δοβρουτσᾶς καὶ δικαιώματα ἐπὶ τῶν ἀκτῶν τοῦ Εὐξείνου. Προσηγορεύετο τότε «μέγας βοεβόδας, δεσπότης τῆς Οὐγγροβλαχίας, δοὺξ τοῦ Ἀμλάοχ καὶ τῶν Φαγκάρας (ἐν Τρανσυλβανίᾳ), βᾶνος τοῦ Σεβερίνου, ἄρχων τῶν δύο ὀχθῶν τοῦ Δουνάβεως, μέχρι τῆς θαλάσσης, καὶ τῆς πόλεως Σιλιστρίας». Ἐπωφεληθεὶς τῆς διαμάχης μεταξὺ τῶν δύο γαμβρῶν τοῦ Λουδοβίκου Α', κατώρθωσε νὰ καταστήσῃ τὴν ὑποτέλειάν του μόνον κατ' ὄνομα τοιαύτην, μέχρι δὲ τοῦ θανάτου του κατώρθωσε, λόγῳ τῆς μεγάλης διπλωματικότητος, δι' ἧς ἦτο πεπροικισμένος, καὶ τῆς μεγάλης δυνάμεώς του, νὰ παραμείνῃ σχεδὸν ἀνεξάρτητος καὶ σεβαστὸς δι' ὅλους τοὺς γείτονάς του. Χ. Δ.

**Μιρχόντ.** Διάσημος Πέρσης ἱστορικὸς ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἐν Μπάλχ τοῦ Ἀφγανιστάν. Προστατευόμενος ὑπὸ τοῦ ἐμίρου Ἀλῆ-Σχτίρ, βεζύρου τοῦ σουλτάνου Χουσεῒν-Μπαχαδούρ, ἐκλήθη εἰς Χεράτ καὶ ἐφιλοξενήθη εἰς μονήν, ὅπου ἐπεδόθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν μελέτην καὶ συνέγραψε μέγα ἱστορικὸν ἔργον, ἐπιγραφόμενον «Ραουζὰτ-ἀλ-Σαφὰ» («Κῆπος Ἁγνείας»). Πρόκειται περὶ εὐρυτάτης συνθέσεως, ἡ ὁποία περιλαμβάνει πρόλογον, εἰσαγωγήν, τὴν ἱστορίαν τῆς δημιουργίας τοῦ κόσμου, τὴν τῶν πατριαρχῶν, τῶν προφητῶν, τῶν ἀρχαίων βασιλέων τῆς Περσίας, τῶν χαλιφῶν καὶ τῶν διαφόρων μουσουλμανικῶν δυναστειῶν, αἵτινες ἐβασίλευσαν τότε ἐν Ἀσίᾳ. Ὁ Μιρχὸντ ἀπέθανε τῷ 1498, ἐν ἡλικίᾳ 66 ἐτῶν. Τ. Δ.

**μὶς** (ἡ) (miss, πληθ. misses)· ἀγγλικὴ λέξις σημαίνουσα δεσποινίς. Χρησιμοποιεῖται ἀδιακρίτως εἰς ὅλας τὰς κοινωνικὰς τάξεις. προτασσομένη πάντοτε τοῦ ὀνόματος ἢ τοῦ ἐπωνύμου. Ἐν Ἑλλάδι ἡ λέξις μίς, προτασσομένη πολλάκις ὀνόματος, σημαίνει Ἀγγλίδα παιδαγωγόν. Ἡ λέξις *μὶς* προτασσομένη τοῦ γεωγραφικοῦ ὀνόματος πόλεως ἢ χώρας ἀποτελεῖ εἰς τοὺς διαγωνισμοὺς τῶν καλλιστείων τὸν τίτλον τῆς νεάνιδος, ἥτις ἀνεκηρύχθη ἐν αὐταῖς ὡς ὡραιοτάτη πασῶν. «Μὶς Ἀθῆναι», «Μὶς Ἑλλάς», «Μὶς Εὐρώπη», «Μὶς Ὑφήλιος» (βλ. λ. *καλλιστεῖον*).

**Μὶς** (Misch), ***Γεώργιος.*** Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1878. Τῷ 1911 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν Μαρβούργῳ καὶ τῷ 1919 ἐν Γοτίγγῃ. Συνέγραψε διάφορα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἱστορία τῆς αὐτοβιογραφίας» (Ι. «Ἡ ἀρχαία ἐποχή» 1907), «Διαμόρφωσις τῆς προσωπικότητος» (1910), «Ἡ ἰδέα τῆς φιλοσοφίας τῆς ζωῆς ἐν τῇ θεωρίᾳ τῶν πνευματικῶν ἐπιστημῶν» (1924), «Ἡ ὁδὸς πρὸς τὴν φιλοσοφίαν, ἤτοι φιλοσοφικὸν ἀλφάβητον» (1926) κ. ἄ. —Ω.

**Μίσα** *[Μυθολ.]*. Μυστικὴ θεότης, ἀνήκουσα εἰς τὴν ἐλευσινιακὴν λατρείαν, γνωστὴ ἐξ ἐπιγραφῶν καὶ μὲ τὸ ὄνομα *Μίση Κόρη*. Κατὰ τὸν Ἁρποκρατίωνα καὶ τὸν Σουΐδαν, ἡ Μίσα ἢ ἄλλως καὶ *Νίσα* ἦτο θυγάτηρ τοῦ Δυσαύλου καὶ τῆς Βαυβοῦς, ἀδελφὴ δὲ τῆς Πρωτνόης. Κατὰ τὸν ὀρφικὸν ὅμως ὕμνον, ἡ Μίσα ἀνῆκε καὶ εἰς τοὺς κύκλους τῆς Κυβέλης, τῆς Ἴσιδος, ἔτι δὲ καὶ τῆς Ἀφροδίτης. Ὁ Tümpel φρονεῖ ὅτι ἡ θεότης αὕτη ἦτο ἀρσενοθήλεια καὶ ἀνῆκε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν κύκλον τῆς φρυγικῆς Μεγάλης Μητρός. Β. Δ. Θ.

**μισαδελφία** (ἡ)· τὸ κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ μῖσος, ἀντίθ. *φιλαδελφία*.

**μισάζω**· ἀντὶ *μεσάζω* (βλ. λ.)· κατὰ παρετυμολογίαν πρὸς τὸ *μισός*.

**Μισαήλ.** Ἑβραϊκὸν κύριον ὄνομα, ὅπερ ἔφερε πρὸς τοῖς ἄλλοις καὶ εἷς τῶν ἐκ βασιλικοῦ γένους καταγομένων τριῶν παίδων, οἵτινες ὁμοῦ μετὰ τοῦ Δανιὴλ ἀνετράφησαν ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Ναβουχοδονόσορος, ἐν Βαβυλῶνι, καὶ διὰ τὴν ἐμμονήν των εἰς τὴν πάτριον πίστιν ἐρρίφθησαν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρός, ἐξ ἧς ἐξῆλθον σῷοι καὶ ἀβλαβεῖς. Τὸ ὄνομα τοῦτο ἐκχαλδαϊσθὲν ἐγένετο *Μισάχ*. Π. Ι. Μ.

**—Μισαήλ, *Ἀποστολίδης.*** Μητροπολίτης Ἀθηνῶν (βλ. λ. *Ἀποστολίδης* Μισαήλ).

**Μισαηλίδης, *Εὐαγγελινός.*** Ἕλλην δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Κολόῃ (Κούλᾳ) τῆς ἐπαρχίας Φιλαδελφείας, μικρὸν πρὸ τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Εὐαγγελικῇ σχολῇ Σμύρνης καὶ ἐπί τινα χρόνον ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν, μεθ' ὅ, ἐλθὼν εἰς Σμύρνην, ἤρξατο τοῦ δημοσιογραφικοῦ σταδίου, ἐκδοὺς, χάριν τῶν τουρκοφώνων Μικρασιατῶν, εἰς τουρκικὴν γλῶσσαν διὰ στοιχείων ἑλληνικῶν τὸ περιοδικὸν «Μεκτέπι φουνούνι σαρκηγὲ» (=ἐπιστημῶν ἀνατολικὴ σχολή) καὶ μετὰ ταῦτα τὴν ἑβδομαδιαίαν ἐφημερίδα «Σιὰρκ» (=Ἀνατολή). Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἵδρυσε τῷ 1850 τὴν τουρκόφωνον «Ἀνατολήν», χάριν τῶν Μικρασιατῶν. Ἐδημοσιογράφησεν ἐπὶ τεσσαρακονταετίαν· καὶ ἐπὶ πλέον μετέφρασε χάριν τῶν Μικρασιατῶν διὰ τοῦ αὐτοῦ συστήματος γραφῆς διάφορα χρήσιμα ἑλληνικὰ βιβλία, ἐν οἷς καὶ τὸ «Ταμεῖον ὀρθοδοξίας» τοῦ Θεοφίλου Καμπανίας. Ἀπέθανε τῷ 1890. Ὁ υἱός του *Χριστόφορος* (1853—1923) ἐξηκολούθησε τὴν ἔκδοσιν τῆς «Ἀνατολῆς» καὶ ἔγραψε ποιήματά τινα καὶ κωμειδύλλια, ἐν οἷς: «Πρωταπριλιὰ» (1896), «Γαμβρὸς τῆς Τυρινῆς» (1900), «Ἡ δύναμις τοῦ ὅρκου». Μ. Ι. Γ.

**—Μισαηλίδης, *Μισαήλ.*** Πρωτοψάλτης Σμύρνης. Ἐξέδωκε «Νέον θεωρητικὸν» (Ἀθῆναι 1900), ἐν ᾧ διατυποῦνται αἱ περὶ τῆς ἡμετέρας μουσικῆς καὶ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς γνῶμαι αὐτοῦ, ὧν πολλαὶ εἶναι ἐσφαλμέναι. Ἀπεβίωσεν ἐν Σμύρνῃ τῷ 1906. Ν. Α. Χ.

**Μισαΐκωφ, *Κωνσταντῖνος.*** Βούλγαρος ἀγωνιστὴς (1807—1880). Ἐφοίτησεν εἰς ἑλληνικὰ σχολεῖα τοῦ Μοναστηρίου καὶ τῶν Ἀθηνῶν καὶ ἐσπούδασεν ἰατρικὴν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πίζης. Εἰργάσθη ὑπὲρ τοῦ βουλγαρικοῦ στοιχείου ἐν Μακεδονίᾳ, κατεδιώχθη ὅμως ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν καὶ ἀπέθανεν ἐξόριστος ἐν Φιλιππουπόλει. Τ. Β.

**μισακάρης** (ὁ)· ἀντὶ *μεσακάρης* (βλ. λ.) κατὰ παρετυμολογίαν πρὸς τὸ *μισός*.

**Μισακλάντων** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ περιφερείᾳ Γαλιαίνης τῆς ἐπαρχίας Ροδοπόλεως τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 60 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες προσέφυγον εἰς Ἑλλάδα τῷ 1923. Ε. Ι. Χ.

Digitized by Google

**Μισαλάρ,** ἢ ***Μουσαλὰρ*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 524. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Τσιαμπασλάρ.* χ. Δ.

**μισαλληλία** (ἡ)· τὸ κατὰ τῶν ἄλλων μῖσος, τὸ πρὸς ἀλλήλους μῖσος, ἀντίθ. *φιλαλληλία.*

**μισαλλοδοξία** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μισαλλόδοξος, τὸ μῖσος κατὰ τῶν ἀλλοδόξων, κατὰ τῶν ἀλλοθρήσκων.

**μισαλλόδοξος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μισῶν τοὺς ἀλλοδόξους, τοὺς ἀλλοθρήσκους.

**μισανθρωπία** (ἡ)· τὸ κατὰ τῶν ἀνθρώπων μῖσος, τὸ ν' ἀποφεύγῃ τις τοὺς ἀνθρώπους ὡς ἐχθρούς του· || καθόλου, μισαλληλία.

— *[Ψυχοπαθολ.]* Μισάνθρωποι γίνονται ὡρισμένοι μελαγχολικοί, οἵτινες θεωροῦντες αὑτοὺς δυστυχεῖς, συνεπείᾳ ἀδίκου ἐναντίον των καταφορᾶς τῶν ἀνθρώπων, ἀνεξαρτήτως φύλου. Ἡ συνδρομὴ καλεῖται μισανθρωπικὸν παραλήρημα ἢ μισανθρωπικὴ μελαγχολία. π. ζ.

**μισάνθρωπος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ μισῶν τοὺς ἀνθρώπους, ὁ ἀποφεύγων τοὺς ἀνθρώπους ὡς ἐχθρούς του· || καθόλου, μισάλληλος.

**μισανοίγω,** καὶ *μισοανοίγω*· δημοτ., ἀνοίγω ὀλίγον, οἱονεὶ κατὰ τὸ ἥμισυ: «μισάνοιξα τὴν πόρτα καὶ κοίταξα»· || καὶ ἐπὶ τῶν φυτῶν καὶ ἀνθέων: «τὰ ἀμπέλια εἶναι μισανοιγμένα» ἤρχισαν νὰ βλαστάνουν.

**μισανοικτός,** —*ή*, —*ό*, καὶ *μισοανοικτός*· κατὰ τὸ ἥμισυ ἠνοιγμένος: «ἔχει τὰ μάτια του μισοανοικτά».

**Μισαουώκυ** (Mishawakee) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ Ἰνδιάνας παρὰ τὴν λίμνην Μίτσιγκαν. Ἔχει βιομηχανίας ἐλαστικῶν καὶ αὐτοκινήτων. Κάτ. 15.200. π. Γ. Λ.

**Μισαρὶς ἄκρα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία τοῦ ἀνατολικοῦ ἄκρου τοῦ προσχωματικοῦ βέλους *Ἀχιλλέως δρόμος* τῆς Σαρματίας τῆς ἐν Εὐρώπῃ (*Πτολεμ.* Γ, ε, 8). Κατὰ τὸν Στράβωνα (Ζ, γ, 19) καὶ τὸν Περίπλουν τοῦ ἀνωνύμου (§ 58) ὠνομάζετο *Ταμυρακὶς* καὶ *Ταμυράκη*. Εἶναι ἡ σύγχρονος *Βασσαλσκάγια* (πλάτ. 46° 22′ Β., μῆκ. 31° 33′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2380: South approaches to Kherson), ἀνατολικὴ ἐσχατιὰ τοῦ προσχωματικοῦ βέλους Τένδρα τῆς Χερσῶνος. Σ. Ε. Λ.

**μισγάγκεια** (ἡ). Ἡ γραμμὴ τῆς ροῆς τῶν ὑδάτων, ἥτις σχηματίζεται ἐκ τῆς συναντήσεως τῶν δύο ἑκατέρωθεν πλευρῶν τῆς κοιλάδος, διαγράφουσα τὸν πυθμένα αὐτῆς. Ὑπονοεῖ δὲ ἡ μισγάγκεια ἀνίσους κλίσεις πλευρῶν, ὁπότε καὶ εὑρίσκεται πρὸς τὴν πλευρὰν τῆς ταχυτέρας κλίσεως, δι' ὃ καὶ διαφέρει τῆς *συναγκείας*, ἁπαντώσης συνήθως ἐν μέσῃ κοιλάδι καὶ ἐχούσης ἴσης κλίσεως πλευράς. Σ. Ε. Λ.

**μίσγω**· μιγνύω, ἀναμιγνύω, ἀνακατώνω, κοιν. *σμίγω.*

**μισειαστὴς** (ὁ), καὶ ***ἡμισειαστής***· ὁ ἐπὶ ἡμισείᾳ μερίδι καλλιεργητής, μορτίτης.

**Μισὲλ** (Michel), ***Ἀνδρέας.*** Γάλλος τεχνοκρίτης (1853—1925). Διετέλεσεν ἐπιμελητὴς τοῦ μουσείου τοῦ Λούβρου, ἐλεύθερον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν (1918) καὶ καθηγητὴς ἐν τῷ Γαλλικῷ Κολλεγίῳ τῶν Παρισίων. Συνειργάσθη ὡς τεχνοκρίτης εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων», διηύθυνε τὴν ἔκδοσιν ἑπτατόμου «Ἱστορίας τῆς Τέχνης» (1905—1923) καὶ ἐδημοσίευσε πλείστας αὐτοτελεῖς κριτικὰς πραγματείας. Τὰς κριτικάς του διακρίνει μεγάλη ὀξυδέρκεια καὶ βαθεῖα γνῶσις τῆς ἱστορίας. Χ. Δ.

— **Μισὲλ** (Michel) ***Γεώργιος,*** Γάλλος ζωγράφος (1763—1843). Ἐπεδόθη εἰς τὴν τοπιογραφίαν, ἀκολουθήσας ἰδίᾳ τὰς τάσεις τῶν μεγάλων Ὁλλανδῶν τοπιογράφων καὶ ἐπιδείξας σπουδαίας προσωπικὰς ἀρετὰς ἐν τῇ σπουδῇ καὶ τῇ ἀποδόσει τῆς φύσεως. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Τοπίον», «Τρεῖς μύλοι τῆς Μονμάρτρης», «Ζῷα ποτιζόμενα» κλπ. Ι. Μ. Π.

— **Μισὲλ** (Michel), ***Λουΐζα.*** Γαλλὶς ἐπαναστάτις, γεννηθεῖσα τῷ 1830 ἐν Βρονκούρ. Ἠγωνίσθη ἀπὸ τὴν ἀρχὴν τοῦ σταδίου της ἐναντίον τῆς μοναρχίας μετὰ μεγάλου θάρρους. Τῷ 1865 κατέλιπε τὴν ἐπαρχίαν καὶ ἐγκατεστάθη ὡς διδασκάλισσα ἐν Παρισίοις, ὅπου ἔμεινεν ἐπὶ τετραετίαν, γράφουσα στίχους καὶ συνεργαζομένη εἰς διαφόρους ἐφημερίδας. Τῷ 1869 ἀναμειγνύεται ἐνεργῶς εἰς τὴν ἐπαναστατικὴν κίνησιν καὶ βραδύτερον μετέχει τῆς Κομμούνας τῶν Παρισίων τῷ 1871. Συλληφθεῖσα μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς Κομμούνας κατεδικάσθη εἰς ἐκτοπισμὸν καὶ παρέμεινεν ἐπὶ διετίαν ἐν Νέᾳ Καληδονίᾳ ὡς ἐξόριστος. Τῷ 1880 ἀφέθη ἐλευθέρα κατόπιν τῆς γενικῆς ἀμνηστίας καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν, ὅπου τῷ 1883 ἀνεμείχθη εἰς νέας ταραχὰς καὶ συλληφθεῖσα κατεδικάσθη εἰς πενταετῆ φυλάκισιν καὶ δεκαετῆ ἐξορίαν. Τῷ 1895 ἐπιστρέψασα ἐκ Λονδίνου, ὅπου εἶχε καταφύγει μετὰ τὴν ἔξοδόν της ἐκ τῆς φυλακῆς, ἐξηκολούθησε τὴν δρᾶσίν της, προπαγανδίζουσα διὰ διαλέξεων τὰς ἰδέας της. Ἀπέθανεν ἐν Τουλῶνι τῷ 1904. Θ. Π.

— **Μισὲλ** (Michel) ***Ροβέρτος.*** Γάλλος γλύπτης (1720—1785). Ὁ καλλιτέχνης οὗτος, ἐνωρὶς ἐκπατρισθείς, διήγαγε τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ἐν Ἱσπανίᾳ, ἐγκατασταθεὶς τῷ 1740 ἐν Μαδρίτῃ, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Διετέλεσε καθηγητὴς καὶ εἶτα διευθυντὴς τῆς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ διασήμου καλλιτεχνικῆς ἀκαδημίας τοῦ Ἁγίου Φερδινάνδου καὶ ἐξετέλεσεν ἄκρως ἐνδιαφέροντα ἔργα, ἐν οἷς: «Ὁ ἅγιος Φερδινάνδος καὶ ἡ ἁγία Βαρβάρα», «Ὁ ἅγιος Φίλιππος ντὲ Νέρι» καὶ ὁ ἱππικὸς ἀνδριὰς Φιλίππου τοῦ Ε' (ἅπαντα ἐν Μαδρίτῃ). Ι. Μ. Π.

—**Μισὲλ** (Michel), ***Φραγκῖσκος-Ξαβιέρος.*** Γάλλος σοφὸς (1809—1887). Ἐγένετο γνωστὸς δι' ἐκδόσεων μεσαιωνικῶν γαλλικῶν ἔργων καὶ ἐστάλη πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως τῷ 1833 εἰς Ἀγγλίαν καὶ τῷ 1837 εἰς Σκωτίαν. Τῷ 1846 ἐγένετο τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βορδώ. Ἀπὸ τοῦ 1834 μέχρι τοῦ 1842 ἐξέδωκε πολυάριθμα ἔργα γραφέντα ἀπὸ τοῦ ΙΑ' μέχρι τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, εἰς γαλλικήν, ἀγγλικὴν καὶ σαξωνικὴν γλῶσσαν. Ἐκ τῶν ἐκδόσεων τούτων σπουδαιότεραι εἶναι αἱ ὑπὸ τοὺς ἑξῆς τίτλους: «Chronique anglo-normande» (1834—1840, τ. 3), «Chronique des ducs de Normandie» (1837—1844), «Théatre Français au moyen âge», «Histoire des ducs de Normandie et des rois d'Angleterre» (1840), τὰ ποιήματα: «Mélusine», «Gérard de Roussillon», «Roman de la Rose», «La chanson de Roland» κτλ. Ἐπίσης μετέφρασεν ἐκ τῆς ἀγγλικῆς τὰ ἔργα τοῦ Goldsmith καὶ τοῦ Shakespeare καὶ ποιήματά τινα τοῦ Tennyson. Πρωτότυπα ἔργα του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Histoire des races maudites de la France et de l'Espagne» (Paris 1847, τ. 2), «Recherches sur le commerce, la fabrication et l'usage des étoffes de soie, d'or et d' argent en Occident pendant le moyen âge» (1852—1854, τ. 2), «Les Écossais en France et les Français en Ecosse» (1862, τ. 2), «Histoire des hôtelleries, cabarets, hôtels garnis» μετὰ τοῦ E. Fournier (1851—1854, τ. 2), «Études de philologie comparée sur l'argot» (1856), «Le pays basque» (1857), «Histoire du commerce et de la navigation à Bordeaux» (1867—1871, τ. 2). Θ. Π.

**Μισελὲ** (Michelet), ***Ἰούλιος.*** Γάλλος ἱστορικὸς (1798—1874). Εἰσαχθεὶς ὑπὸ τῆς οἰκογενείας του εἰς τὸ κολλέγιον Καρλομάγνου, προσείλκυσε ταχέως τὴν προσοχὴν τῶν καθηγητῶν του, τῷ δὲ 1819 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς φιλολογίας, ὑποβαλὼν δύο ἐναισίμους διατριβάς, τὴν μὲν περὶ Πλουτάρχου, τὴν δὲ περὶ Λωκίου. Τῷ 1821 προσελήφθη ὑφηγητὴς εἰς τὸ λύκειον τοῦτο, μετὰ δύο δ' ἔτη ὡς καθηγητὴς τῆς ἱστορίας εἰς τὸ ἐκπαιδευτήριον Σαὶντ - Μπάρμπ, οὗτινος ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν. Ὁ Μισελὲ συνέθεσε πρὸς χρῆσιν τῶν μαθητῶν τὸν «Χρονολογικὸν πίνακα τῆς συγχρόνου ἱστορίας». Καίτοι αἱ ἀνάγκαι τῆς ζωῆς τῷ ἐπέβαλον νὰ δεχθῇ τὴν θέσιν τοῦ καθηγητοῦ τῆς ἱστορίας, κυρίως ὅμως ἠσχολεῖτο εἰς τὴν φιλοσοφίαν, μεταφράσας μεταξὺ ἄλλων καὶ τὴν «Φιλοσοφίαν τῆς ἱστορίας» τοῦ Βίκο, εἰς ἣν προέταξε μακρὰν μελέτην περὶ τοῦ συγγραφέως. Ὅταν τῷ 1826 ἀνασυνεστήθη ἡ «École normale», κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς ἀρχαίας ἱστορίας, τότε δὲ συνέγραψε τὴν «Ρωμαϊκὴν ἱστορίαν», τῆς ὁποίας τὸ ἀφορῶν τὴν δημοκρατικὴν περίοδον τμῆμα ἐδημοσιεύθη τῷ 1831, θαυμασθὲν διὰ τὸ ὑπέροχον ὕφος τῆς γλώσσης.

Ἰούλιος Μισελέ.

Ἡ ἐπανάστασις τοῦ 1830 ἤνοιξε νέον στάδιον εἰς τὸν Μισελέ. Ἀμέσως μετὰ τὴν ἔκρηξιν αὐτῆς ἐδημοσίευσε τὴν «Εἰσαγωγὴν εἰς τὴν παγκόσμιον ἱστορίαν», εἰς ἣν ἐκθέτει τὰς φιλελευθέρας πολιτικὰς καὶ φιλοσοφικὰς του ἀρχὰς καὶ παρουσιάζει τὸν Χριστιανισμόν, τὴν Μεταρρύθμισιν καὶ τὴν Ἐπανάστασιν ὡς τοὺς τρεῖς κυριωτέρους σταθμοὺς τῆς ἱστορίας τῆς ἐλευθερίας τοῦ ἀνθρώπου. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο διωρίσθη διευθυντὴς τῶν ἐθνικῶν ἀρχείων, ἀνεπλήρωσε δὲ ἐπὶ διετίαν (1834—1835) τὸν Γκυϊζὼ εἰς τὴν Σορβώνην. Τῷ 1838 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ διεδέχθη τὸν Ντονοὺ εἰς τὸ Γαλλικὸν Κολλέγιον ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς ἱστορίας καὶ τῆς ἠθικῆς. Ἤδη ἀπὸ τοῦ 1831 ἤρξατο συγγράφων τὴν «Ἱστορίαν τῆς Γαλλίας», ἥτις ὑπῆρξε τὸ κύριον αὐτοῦ ἔργον. Ἐπὶ μίαν δεκαετίαν ἐργαζόμενος, ἐξε περάτωσεν τοὺς ἓξ μόνον τόμους αὐτῆς. Τὸ κάλλος τοῦ λόγου καὶ αἱ φιλελεύθεραι ἰδέαι τοῦ Μισελὲ προσείλκυον ἄπειρον πλῆθος ἀκροατῶν εἰς τὰ μαθήματά του, ἀπεκαλεῖτο δὲ ἀπόστολος τῶν νέων ἰδεῶν. Ἐκ τῶν μαθημάτων τούτων προῆλθε τὸ κατὰ τῶν Ἰησουϊτῶν σύγγραμμά του, συντεθὲν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Edgard Quinet, καὶ τὸ μικρὸν ἀριστούργημα «Le peuple», τὸ ὁποῖον προεκάλεσε γενικὴν συγκίνησιν. Τὰ ἐπαναστατικὰ γεγονότα τοῦ 1848 ἠνάγκασαν αὐτὸν νὰ ἀφιερωθῇ εἰς τὴν συγγραφὴν τῆς «Ἱστορίας τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως», ἥτις ἐξεδόθη εἰς 7 τόμους καὶ ἀπετέλεσε μετὰ τῆς ἀπὸ τοῦ 1855 ἐπαναληφθείσης ἐκδόσεως τῆς «Ἱστορίας τῆς Γαλλίας» 24 τόμους.

Ἡ ἐπανάστασις τοῦ 1848 ἐγέννησεν εἰς τὸν Μισελὲ τὴν ἐλπίδα τῆς πραγματοποιήσεως τῶν δημοκρατικῶν ἰδεωδῶν του, ἀλλ' ἡ ἀντίδρασις τοῦ 1849 ὑπεχρέωσεν αὐτὸν νὰ διακόψῃ τὰς παραδόσεις του εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας, ἀρνηθεὶς δὲ νὰ ὁρκισθῇ πίστιν εἰς τὸν πρίγκιπα Λουδοβῖκον-Ναπολέοντα ἀπελύθη ἐκ τῶν Ἐθνικῶν ἀρχείων. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐδημοσίευσε τὸν «Δημοκρατικὸν θρῦλον τοῦ Βορρᾶ» καὶ τὴν «Μάρτυρα Πολωνίαν». Ἦλθε τότε εἰς δεύτερον γάμον μετὰ γυναικὸς καλλιεργούσης ἐπίσης τὰ γράμματα, ἥτις συνειργάσθη μετ' αὐτοῦ εἰς τὴν ἔκδοσιν τῶν τελευταίων ἔργων του: «Τὸ πτηνόν», «Τὰ ἑρπετά», «Τὸ ἔντομον», «Ὁ ἔρως», «Ἡ θάλασσα», «Ἡ γυνὴ» κ.ἄ. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθη ἡ «Ἱστορία τοῦ ΙΘ' αἰῶνος», τὰ δὲ ἅπαντα αὐτοῦ τῷ 1893—1899 εἰς 40 τόμους καὶ τῷ 1897—1903 εἰς 47 τόμους. Θ. Β.

—**Μισελὲ** (Micheler), ***Ἰωσὴφ-Ἀλφρέδος.*** Γάλλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1861. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διῴκησε τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1916 τὴν 10ην στρατιάν, μετέσχε τῆς μάχης τοῦ Σὸμ, εἶτα δὲ διῴκησε τὴν 1ην καὶ τὴν 5ην στρατιάν. Θ.Β.

—**Μισελὲ** (Michelet), ***Ἀθηναῒς Μιαλαρέ,*** *χήρα*— Γαλλὶς συγγραφεὺς (1826—1899). Διατελοῦσα διδασκάλισσα ἐν Βιέννῃ εἰς τὸν οἶκον τοῦ πρίγκιπος Ἐστερχάζυ, συνῆψεν ἀλληλογραφίαν μετὰ τοῦ Ἰουλίου *Μισελὲ* (βλ. λ.), ὅστις ἐνυμφεύθη αὐτὴν τῷ 1849. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της ἀφωσιώθη εἰς τὴν ἔκδοσιν τῶν ἔργων αὐτοῦ. Θ. Β.

**Μισὲλ-Λεβὺ** (Michel-Lévy), ***Αὔγουστος.*** Γάλλος γεωλόγος (1844—1911), διαπρέψας ἰδιαιτέρως εἰς τὴν πετρογραφίαν. Ὑπηρέτησεν ὡς γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῶν ὀρυχείων καὶ διηύθυνε τὰς ἐργασίας τοῦ καταρτισμοῦ τοῦ γεωλογικοῦ χάρτου τῆς Γαλλίας. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Φ. Φουκὲ συνέγραψε: «Σύστασις τῶν ὀρυκτῶν καὶ τῶν πετρωμάτων» (1882) καὶ ἄλλα ἔργα. —Ω.

**μισελευθερία** (ἡ)· τὸ μῖσος πρὸς τὴν ἐλευθερίαν.

**Μισελλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας συνοικισμοῦ *Δρυάδα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μισέλλην,** —*ηνος* (ὁ, ἡ)· ὁ μισῶν τοὺς Ἕλληνας ἢ τὰ τῶν Ἑλλήνων ἀλλοδαπός, ὁ ἐχθρὸς τῶν Ἑλλήνων, ἀντίθ. *φιλέλλην.*

**μισελληνικός,** —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μισέλληνα, ὁ τοῦ μισέλληνος, ἀντίθ. *φιλελληνικός*: «μισελληνικὴ πολιτική».

**μισελληνισμὸς** (ὁ)· τὸ κατὰ τῶν Ἑλλήνων μῖσος, ἀντίθ. *φιλελληνισμός.*

**μισεμὸς** (ὁ), ἢ ***μισσεμός***· δημοτ., ἀπομάκρυνσις ἀπὸ τῆς πατρίδος, ἀποδημία, κοιν. *ξενιτειά.*

**μισενίτης** (ὁ) (Misenit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀποτελοῦν κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ὄξινον θειικὸν ἅλας τοῦ καλίου $KHSO_4$. Ἀπαντᾷ εἰς ἐπανθήματα λευκὰ μεταξώδους λάμψεως ἐντὸς ἡφαιστειακῶν τόφφων τοῦ Grotte εἰς τὸ ἀκρωτήριον Miseno παρὰ τὴν Νεάπολιν. Παρασκευάζεται καὶ τεχνητῶς, ὁπότε ἐμφανίζεται δίμορφος, κρυσταλλούμενος εἰς τὸ τριγωνικὸν καὶ τὸ μονοκλινὲς σύστημα. Γ. Β.

**Μισέος** *[Γεωγρ.]*. Νησὶς ἐν τῷ Δωδεκανησιακῷ Αἰγαίῳ, βυθισθεῖσα καὶ ἀποτελέσασα ὕφαλον βελόν (πλάτ. 37° 15′ 50″ Β., μῆκ. 26° 44′ 30″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1574: Patmos, Arki and Lipso), 2½ μίλλ. ΝΔ. τοῦ μέσου τῆς Λειψοῦς. Σ. Ε. Λ.

**μισερεύω**· δημοτ., κάμνω τινὰ μισερόν, ἀνάπηρον, ἄλλως *σακατεύω*: «τοῦ 'δωσε μιὰ 'ς τὸ κεφάλι καὶ τὸν ἐμισέρεψε».

**μισερός,** —*ή*, —*ό*· δημοτ., ὁ οἱονεὶ κατὰ τὸ ἥμισυ ὑπάρχων, ὁ μὴ ἄρτιος, ἀτελής, ἀνάπηρος, κοιν. *σακάτης*: «ἔχει ἕνα παιδί, κι' αὐτὸ μισερό· τὸ ἕνα του πόδι εἶναι πιασμένο».

**μισευμὸς** (ὁ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς ἐπισήμου γλώσσης τῶν ναυμάχων τοῦ Ἀγῶνος, σημαίνων τὸν ἔκπλουν ἀλλὰ καὶ πάσας τὰς πρὸς ἔκπλουν ἐργασίας καὶ χειρισμούς, ὧν ἡ ἀπαρχὴ ἐγίνετο ἅμα τῇ ὑποστολῇ τοῦ *σινιάλου τοῦ μισευμοῦ* (= ἀπαρτικοῦ σήματος). Σ. Ε. Λ.

**μισεύω,** ἢ ***μισσεύω***· δημοτ., ἀπομακρύνομαι τῆς πατρίδος μου, ἀποδημῶ, κοιν. *ξενιτεύομαι*: «μίσεψε μακριὰ 'ς τὰ ξένα» (ἐκ τοῦ λατ. mitto—missum).

**Μισηνόν,** ἢ ***Μισηνοὶ*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Καμπανίᾳ, ἀποικία Ἑλλήνων ἐκ

Digitized by Google

Κύμης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ἀκρωτηρίου (νῦν Capo Miseno) μετὰ λαμπροῦ λιμένος. Ἐπὶ Αὐγούστου ἐγένετο ναύσταθμος τῆς ναυτικῆς μοίρας τοῦ Τυρρηνικοῦ πελάγους (classis Misenensis). Πέριξ αὐτῆς ὑπῆρχον μεγαλοπρεπεῖς ἐπαύλεις, μεταξὺ τῶν ὁποίων διεκρίνοντο ἡ τοῦ Λουκούλλου, τοῦ Μαρίου καὶ τοῦ ῥήτορος Ἀντωνίου. Ἐνταῦθα ἐξωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ὀδοάκρου ὁ Ρωμύλος Αὐγουστύλος, ὁ τελευταῖος αὐτοκράτωρ τῆς Ρώμης. Τὰ ἐρείπια αὐτῆς σῴζονται παρὰ τὴν σημερινὴν πόλιν Μιζένο (Miseno). Α. Θ. Σ.

— Μισηνόν, ἡ *Μίσηνον* [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἀκρωτήριον τοῦ Τυρρηνικοῦ πελάγους, πλησίον τῆς Κύμης, τῶν Βαίων, τῆς Ἀχερουσίας λίμνης καὶ τῶν λιμνοθαλασσῶν Λοκρίνου καὶ Ἀόρνου, αἵτινες καθίστων αὐτὸ χερσονησίζον. Ἀπετέλει τὸ ΒΔ. κέρας τοῦ Κρατῆρος κόλπου (τῆς Νεαπόλεως), ὃν σχηματίζει μετὰ τοῦ Ἀθηναίου ἄκρου (νῦν Καμπανέλλα). Ὀφείλει τὴν ὀνομασίαν της εἰς τὸν *Μισηνόν* (βλ. λ.). Εἶναι τὸ σημερινὸν *κάπο Μιζένο*. Σ. Ε. Λ.

**Μισηνὸς** [*Μυθολ.*]. Υἱὸς τοῦ Αἰόλου, ἑταῖρος τοῦ Ὀδυσσέως ἢ ἀκόλουθος τοῦ Ἕκτορος, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου ἠκολούθησε τὸν Αἰνείαν ὡς σαλπιγκτὴς ἢ ναύκληρος. Καυχηθεὶς ὅτι ἦτο ἀνώτερος τῶν ἐναλίων θεῶν εἰς τὴν μουσικήν, ἐπνίγη ὑπὸ τῶν Τριτώνων εἰς τὴν θάλασσαν. Οἱ Τρῶες ἀνασύραντες τὸ πτῶμά του ἔθαψαν αὐτὸ ἐν Καμπανίᾳ ἐπὶ ἀκρωτηρίου, ὅπερ ἔλαβε τὸ ὄνομά του. Α. Θ. Σ.

**μίσης** (ὁ) (Misy) [*Ὀρυκτολ.*]. Ὀρυκτὸν θειικὸν ἅλας τοῦ σιδήρου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Fe_2[FeOH]_2[SO_4]_5 \cdot 18H_2O$, ἀποτελεῖ δὲ παραλλαγὴν τοῦ κοπιαπίτου εἰς συσσωματώματα λεπιδώδη λεπτὰ ἕως ἀλοιφώδη μὲ χρῶμα θειοκίτρινον καὶ λάμψιν μαργαριτώδη. Ἀπαντᾷ εἰς Rammelsberg παρὰ τὸ Harz. Γ. Β.

**μισητός**, *—ή, —όν*· ὁ μισούμενος, ὁ ἀπεχθής, ἀντίθ. *ἀγαπητός*: «εἰς τὸν τόπον του εἶναι μισητός».

**μισθαρνία** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μίσθαρνος, ἡ ἔννοια τῆς ἐργασίας ὡς ἐμπορεύματος, ἀσχέτως πρὸς τοὺς ἄλλους ὅρους ὑφ' οὓς διατελεῖ εἴτε ὁ προσφέρων τὴν ἐργασίαν, εἴτε ὁ ζητῶν αὐτήν, ἐργασία τὴν ὁποίαν προσφέρει τις ἀποβλέπων ἀποκλειστικῶς εἰς τὸν μισθόν, εἰς τὴν ἀμοιβήν.

—[*Ἐγκυκλ.*] Καλεῖται *μισθαρνία* τὸ σημερινὸν κρατοῦν σύστημα ἐργασίας, καθ' ὃ ὁ κάτοχος δυνάμεως πρὸς ἐργασίαν (ἐργάτης) μισθώνει ταύτην εἰς τὸν κάτοχον τῶν μέσων τῆς παραγωγῆς (ἐργοδότην) ἐπὶ παραγωγικῷ σκοπῷ. Κατὰ τὴν σύμπραξιν ταύτην μεταξὺ ἐργάτου καὶ ἐργοδότου ὁ μὲν ἐργάτης μισθώνει τὴν δύναμίν του ἐργασίας διὰ νὰ ζήσῃ καὶ ἐνδιαφέρεται νὰ τὴν πωλήσῃ ὅσον τὸ δυνατὸν ἀκριβώτερον καὶ δι' ὅσον τὸ δυνατὸν ὀλιγώτερον χρόνον ἡμερησίας ἐργασίας, ὁ δὲ ἐργοδότης τὴν ἀγοράζει οἱονεὶ ὡς ἐμπόρευμα πρὸς παραγωγὴν ἄλλων ἐμπορευμάτων καὶ προσπαθεῖ νὰ τὴν πληρώσῃ ὅσον τὸ δυνατὸν εὐθηνότερον καὶ δι' ὅσον τὸ δυνατὸν μεγαλύτερον χρόνον ἡμερησίας ἐργασίας. Ἡ προσωπικὴ ἐργασία τοῦ ἐργάτου ἀποξενοῦται οὕτω ἀπ' αὐτοῦ κατὰ τὴν μίσθωσιν καὶ διὰ τοῦτο ὁ ἐργοδότης κατὰ τὸν καθορισμὸν τοῦ ἡμερομισθίου δὲν ἐνδιαφέρεται διὰ τὸ πρόσωπον, τὸ ὁποῖον παρέχει τὴν ἐργασίαν, ἀλλὰ διὰ τὸ ποσὸν τοῦ ἐμπορεύματος-ἐργασίας, ὅπερ ὁ ἐργάτης θὰ τῷ παράσχῃ ἐντὸς μιᾶς ἐργασίμου ἡμέρας, καὶ διὰ τὴν χαμηλὴν τιμὴν αὐτοῦ. Κατὰ τὸν K. Marx καὶ τὸν ἐπιστημονικὸν ἐν γένει σοσιαλισμόν, ὁ ἐργοδότης ἀγοράζων παρὰ τοῦ ἐργάτου τὴν δύναμίν του ἐργασίας διὰ μίαν ἡμέραν, πληρώνει εἰς αὐτὸν τὴν ἀνταλλακτικὴν ἀξίαν τοῦ ἐμπορεύματος-ἐργασίας, ὅπερ ὅμως ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ παράγῃ ἐντὸς μιᾶς ἐργασίμου ἡμέρας οὐ μόνον τὰ ἔξοδα ἀναπαραγωγῆς του (τὴν ἀνταλλακτικήν του ἀξίαν), ἀλλὰ καὶ πλέον τούτων, ὅπερ ὑπὸ μορφὴν ὑπερεργασίας πλέον ἐνσαρκοῦται εἰς τὰ παραγόμενα ἐμπορεύματα καὶ ἀποτελεῖ τὴν πηγὴν κέρδους τοῦ ἐργοδότου, τὴν ὑπεραξίαν, ἐπὶ τῆς ἀπαλλοτριώσεως τῆς ὁποίας ἐκ μέρους τοῦ κεφαλαιούχου στηρίζεται ὁλόκληρον τὸ κεφαλαιοκρατικὸν καθεστώς. Περὶ τὴν ὑπερεργασίαν ταύτην τοῦ ἐργάτου στρέφεται ὡς περὶ πόλον ὁ σοβῶν κοινωνικὸς ἀγών, ὁ ὁποῖος λαμβάνει διαφόρους μορφὰς ἀπὸ τῆς ἁπλῆς προσπαθείας πρὸς ἐπίτευξιν μεγαλυτέρου ἡμερομισθίου καὶ ὀλιγωτέρων ὡρῶν ἐργασίας, μέχρι τῆς ἀπεργίας καὶ τῆς κοινωνικῆς ἐπαναστάσεως. Θ. Π.

**μίσθαρνος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἐργαζόμενος, ὁ ἀναλαμβάνων ὑπηρεσίαν τινά, ἀποβλέπων ἀποκλειστικῶς εἰς τὸν μισθόν, εἰς τὴν ἀμοιβὴν τὴν ὁποίαν θὰ λάβῃ, ἀδιαφορῶν δὲ διὰ τὴν ἠθικὴν βάσιν τῆς ἐργασίας: «μίσθαρνα ὄργανα τῆς τυραννίας, — τῆς χαρτοπαιξίας».

**μισθαρνῶ** (*—έω*)· εἶμαι μίσθαρνος.

**Μισθὴ** [*Γεωγρ.*]. Κωμόπολις ἐν τῷ νομῷ Ἰκονίου, ΝΑ. τῆς Νίγδης (βλ. *Μίσθιον* [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]).

**Μίσθιον** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Γαλατίᾳ, ΝΑ. τῆς Καισαρείας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. V. 4, 9). Κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους (Συνέκδ. 675, 3), ὡς μία τῶν 18 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Λυκαονίας, εἰς δὲ τὰ ἐκκλησιαστικὰ χρονικὰ τοῦ Θ' αἰῶνος ὡς ἕδρα ἀρχιεπισκοπῆς. Σήμερον καλεῖται *Μίσθι* καὶ *Μισθὴ* ΝΑ. τῆς Νίγδης, ἐν τῷ σαντζακίῳ τῆς Νίγδης τοῦ νομοῦ Ἰκονίου, ἀριθμοῦσα μέχρι τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς 5.000 Ἑλλήνων, τῶν ὁποίων πλεῖστοι καταφυγόντες εἰς τὴν Ἑλλάδα ἐγκατεστάθησαν ἐν Ἰάνᾳ καὶ Αἰσύμῃ τῆς ἐπαρχίας Ἀλεξανδρουπόλεως τοῦ νομοῦ Ἕβρου. Οἱ κάτοικοί της ἔζων εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν εἰς πρωτογόνον κατάστασιν δίκην τρωγλοδυτῶν ἐντὸς ὑπογείων οἰκιῶν, ἀλλ' ἦσαν ἀγαθοὶ καὶ φιλόφρονες. Ἀκόμη μέχρι τῶν τελευταίων ἐτῶν δὲν εἶχον οἰκίας ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τοῦ ἐδάφους. ἡ δὲ ἐκκλησία της, κτισθεῖσα τῷ 1840, ἦτο περίφημος καθ' ὅλην τὴν Καππαδοκίαν διὰ τὸ μέγεθος καὶ τοὺς 12 θόλους της. (Πρβλ. *Παντ. Κοντογιάννη*, Γεωγρ. τῆς Μ. Ἀσίας, σελ. 151.) Α. Θ. Σ.

**μίσθιος**, *—α, —ον*· ὁ ἐπὶ μισθῷ ἐργαζόμενος, μισθωτός, ὑπηρέτης· || ***μίσθιον*** (τό)· ὡς οὐσ., τὸ ἐπὶ μισθῷ παρεχόμενον ἢ λαμβανόμενον, οἷον οἰκία, ἀγρός, ἐργοστάσιον, ὑποζύγιον κττ.

**μισθοδοσία** (ἡ)· ἡ δόσις, ἡ πληρωμὴ μισθοῦ· || ὁ μισθός, αἱ συμπεφωνημέναι ἀποδοχαί.

**μισθοδότης** (ὁ)· ὁ δίδων, ὁ παρέχων μισθόν: «τὸ κράτος εἶναι ὁ μισθοδότης τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων».

**μισθοδοτικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μισθοδότην ἢ τὴν μισθοδοσίαν: «μισθοδοτικαὶ καταστάσεις».

**μισθοδοτῶ** (*—έω*)· εἶμαι μισθοδότης, δίδω, παρέχω μισθόν: «οἱ μισθοδοτούμενοι ἐκ τοῦ δημοσίου ταμείου, —ἐξ εἰδικῶν πόρων».

**μισθολόγιον** (τό)· ὁ κατάλογος τῶν μισθῶν μιᾶς ἑκάστης τάξεως ὑπαλλήλων καὶ ὑπηρετῶν: «τὸ μισθολόγιον τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων, —τῶν δικαστικῶν, — τῶν ἀξιωματικῶν».

**μισθὸς** (ὁ)· ἡ ἀμοιβὴ δι' ὑπηρεσίαν τινά, ἀντιμισθία, ἰδίᾳ ἡ χρηματικὴ ἀμοιβή: «μηνιαῖος—, ἐτήσιος μισθός», «μισθὸς δικαστικός, —στρατιωτικός», «ἐπὶ μισθῷ τμηματάρχου, — διευθυντοῦ»· || φρ. «ἄξιος ὁ μισθός σου» εἰς ἐλεοῦντα «ἀξία νὰ εἶναι ἡ ἀμοιβή σου»· || «ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν οὐρανοῖς» ἡ ἀμοιβή σας μεγάλη νὰ εἶναι μετὰ θάνατον. Β. Φ.

— [ΠΟΛΙΤ. ΟΙΚΟΝ.-ΕΡΓΑΤ. ΔΙΚ.] *Μισθὸς* εἶναι κάθε εἰσόδημα, τὸ ὁποῖον λαμβάνει ὁ ἐργαζόμενος ὡς ἀντάλλαγμα τῆς ἐργασίας του, τὸν ὁποῖον παρέχει εἰς ἕτερον πρόσωπον.

***Ι) Ἔννοια τοῦ μισθοῦ.—Μισθωτὴ ἐργασία.*** Ὁ μισθὸς ἀποτελεῖ τὴν ἀποζημίωσιν, τὴν ὁποίαν ὁ ἐργοδότης προσφέρει εἰς τὸν ἐκμισθωτὴν ὑπηρεσιῶν (τὸν ἐργάτην ἢ τὸν ὑπάλληλον) διὰ τὴν ἐργασίαν, τὴν ὁποίαν οὗτος τῷ παρέχει ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἐργατικῆς συμβάσεως. Ἐὰν ἠδύνατο νὰ λεχθῇ ὅτι ὁ ὑπάλληλος ἢ ὁ ἐργάτης «πωλοῦν» τὴν ἐργασίαν των, ὁ μισθὸς ἢ τὸ ἡμερομίσθιον εἶναι ἀκριβῶς ἡ τιμὴ τῆς ἐργασίας ταύτης. Ὁ μισθὸς ἀποτελεῖ οὐσιῶδες στοιχεῖον τῆς ἐργατικῆς σχέσεως. Ἄνευ μισθοῦ σύμβασις ἐργασίας δὲν ὑφίσταται. Ὁ δὲ μισθὸς εἶναι εἰς τὴν σύμβασιν ἐργασίας—do ut facias—τὸ ἀντιστάθμισμα τοῦ ἐπιτελεσθέντος ἔργου.

Ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας ἐμφανίζεται ὑπὸ δύο διαφορετικὰς μορφάς, αἱ ὁποῖαι ἀνταποκρίνονται εἰς δύο ἐντελῶς διακεκριμένας οἰκονομικὰς καταστάσεις. Οὕτω ὁ αὐτοτελὴς παραγωγὸς ἢ ὁ ἐπιχειρηματίας δὲν πωλοῦν τὴν ἐργασίαν των. Πωλοῦν τὸ προϊὸν τὸ προερχόμενον ἐκ τῆς ἐνεργουμένης παρ' αὐτῶν ἐκμεταλλεύσεως. Ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας αὐτῶν συνίσταται εἰς τὸ «κέρδος». Ἡ πλειονότης ὅμως τῶν ἐκ τῆς ἐργασίας ἀποζώντων προσώπων δὲν ἐργάζονται αὐτοτελῶς, ἀλλὰ προσφέρουν τὴν ἐργασίαν των εἰς ἕτερον πρόσωπον ἔναντι ἀμοιβῆς, τὴν ὁποίαν λαμβάνουν παρ' αὐτοῦ. Τὸ ἀντίτιμον τῆς ἐργασίας των ταύτης ἀποτελεῖ τὸν μισθόν.

Ἡ ἔννοια «μισθὸς» περιλαμβάνει ὑπὸ τὴν εὐρυτέραν αὐτῆς σημασίαν τὴν ἀμοιβὴν τῆς ἐργασίας ἐν γένει, εἴτε σωματικὴ εἶναι αὕτη εἴτε διανοητική· ἐπομένως εἰς τὴν εὐρεῖαν ἔννοιαν τοῦ μισθοῦ δύναται να ὑπαχθοῦν καὶ αἱ ἀμοιβαὶ τῶν δικηγόρων, τῶν ἰατρῶν, τῶν καλλιτεχνῶν κ.λ.π. Ἀλλ' ἡ μορφὴ ἐκείνη τῆς ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας, ἥτις ἐμφανίζει ἀπέραντον ἐνδιαφέρον λόγῳ τοῦ πρωτεύοντος αὐτῆς ῥόλου ἐν τῇ καθόλου οἰκονομικῇ καὶ κοινωνικῇ ζωῇ, καὶ τῆς ὁποίας τὰ προβλήματα ἐρευνῶνται συντόμως ἐνταῦθα, εἶναι ὁ μισθὸς τῶν ἐργατῶν καὶ ὑπαλλήλων, τῶν μισθωτῶν, καὶ εἰδικώτερον τῶν καλουμένων ἡμερομισθίων ἐργατῶν.

Τὸ σύστημα τῆς μισθωτῆς ἐργασίας, ὑπὸ τὴν σημερινὴν αὐτοῦ μορφὴν τῶν δύο ἀντιτιθεμένων παραγόντων, ἐργάτου καὶ ἐργοδότου, δὲν εἶναι φαινόμενον, τὸ ὁποῖον ἀνέκαθεν ὑφίσταται ἐν τῇ οἰκονομικῇ ὀργανώσει τῆς ἀνθρωπότητος. Εἰς τὰς πρωτογόνους κοινωνίας καὶ εἰς τὸ πατριαρχικὸν σύστημα μισθὸς δὲν ὑπῆρχε. Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα δὲ ἡ δεσπόζουσα μορφὴ τῆς ἐργασίας ἦτο ἡ δουλεία. Αἱ καθαρῶς χειρωνακτικαὶ καὶ ὑπηρετικαὶ ἐργασίαι διεξήγοντο ὑπὸ τῶν δούλων, καθόσον ἐθεωροῦντο ἀπασχολήσεις μὴ ἐπιτρεπόμεναι εἰς ἐλευθέρους ἀνθρώπους. Ὁ δοῦλος εἰργάζετο ἄνευ μισθοῦ, ἐκτελῶν ἄνευ τινὸς ἀμοιβῆς τὰς θελήσεις τοῦ κυρίου του, ὁ ὁποῖος ἐδαπάνα μόνον διὰ τὴν συντήρησίν του. Ὁ δοῦλος δηλαδὴ ἀπετέλει διὰ τὸν κύριόν του ἓν κεφάλαιον, ὅπως ἀκριβῶς τὰ ὑποζύγια. Ἐκ παραλλήλου ὅμως πρὸς τὸ ἐπικρατοῦν κατὰ τὴν ἀρχαιότητα σύστημα τῆς δουλείας καὶ τῆς οἰκογενειακῆς ἢ οἰκιακῆς βιομηχανίας, ὡρισμέναι ἐργασίαι ἐξετελοῦντο ὑπὸ ἐλευθέρων τεχνιτῶν, αἱ ὁποῖαι συχνάκις ἐκληρονόμουν τὸ ἐπάγγελμά των ἀπὸ τοὺς προγόνους των καὶ τὸ μετεβίβαζον εἰς τοὺς ἀπογόνους αὐτῶν. Οἱ τεχνῖται οὗτοι μάλιστα συνηνοῦντο συνήθως εἰς ἑνώσεις, τὸ δὲ σύστημα τῶν συλλόγων τῶν τεχνιτῶν τῆς Ρώμης (collegia) δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ἡ πρωτόγονος ἐμφάνισις τῶν ἐπαγγελματικῶν ἑνώσεων, αἵτινες εἰς μεταγενεστέραν ἐποχὴν ἤκμασαν ὑπὸ τὴν μορφὴν τῶν ἀδελφοτήτων καὶ τῶν συντεχνιῶν.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ μεσαίωνος, πρὸς μέγα τμῆμα τῆς ὁποίας συμπίπτει ἡ καλουμένη φεουδαλικὴ ἐποχή, ὁπότε κατεῖχε πρωτεύουσαν θέσιν ἡ γεωργία, ἡ διὰ λογαριασμὸν ἄλλου ἐργασία ἐμφανίζεται κυρίως ὑπὸ τὴν μορφὴν τῆς δουλοπαροικίας. Καὶ εἰς τὸ καθεστὼς δὲ τῆς δουλοπαροικίας ὁ μισθὸς ἦτο ἐπίσης ἄγνωστος. Δὲν ὑφίστατο σύμβασις ἐργασίας μεταξὺ τοῦ κυρίου καὶ τοῦ δουλοπαροίκου. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ὅμως ταύτην ἤρχισε νὰ δημιουργῆται ἐκ παραλλήλου μία ἰδία τάξις ἐλευθέρων βιοτεχνῶν καὶ ἐμπόρων. Οἱ τεχνῖται τοῦ αὐτοῦ ἐπαγγέλματος συνηνοῦντο χάριν ἀλληλοβοηθείας καὶ ἀμοιβαίας προστασίας μεταξύ των καὶ ἐσχηματίσθησαν οὕτως αἱ «συντεχνίαι», τῶν ὁποίων ἡ ὀργάνωσις διείπετο ὑπὸ κανονισμῶν καθοριζόντων ἐν λεπτομερείᾳ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῶν ἐπαγγελματικὴν ἱεραρχίαν καὶ τὰ καθήκοντα καὶ δικαιώματα (οἰκονομικὰ καὶ μὴ) τῶν τριῶν διακεκριμένων ἀπ' ἀλλήλων τάξεων τεχνιτῶν, ἤτοι τῶν μαθητευομένων (apprentis), τῶν συντρόφων (compagnons) καὶ τῶν μαστόρων (maîtres). Εἰς τὸ σύστημα τοῦτο τῆς συντεχνιακῆς βιομηχανίας, ἕνεκα τῶν εἰδικῶν ὅρων οἵτινες τὸ διεῖπον, δὲν ὑφίστατο ἀκόμη σχέσις ἐργάτου πρὸς ἐργοδότην, καίτοι βεβαίως οἱ σύντροφοι ἐπληρώνοντο ἀπὸ τὸν μάστορην.

Αἱ συντεχνίαι, αἱ ὁποῖαι ἐπὶ μακρὸν ἐκράτησαν τὸ μονοπώλιον τῆς κατασκευῆς καὶ πωλήσεως τῶν προϊόντων, παρέμειναν ὡς κυριαρχοῦσα μορφὴ τῆς ὀργανώσεως τῆς ἐργασίας μέχρι τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, ὅτε κατηργήθησαν (βλ. λ. *ἐργασίας ἐλευθερία*). Ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἤδη ἀρχίσει νὰ μεταβάλλεται ἡ οἰκονομικὴ ζωή. Ἡ διάνοιξις νέων ἐμπορικῶν ὁδῶν, ἡ ἵδρυσις νέων ἀγορῶν, ἡ ἔναρξις διαρκῶς αὐξούσης διεθνοῦς ἐμπορικῆς ἐπικοινωνίας, ἡ δημιουργία τῶν συγχρόνων μεγάλων κρατῶν κατέστησαν ἐντελῶς ἀνεπαρκῆ τὴν φεουδαλικὴν ἢ τὴν συντεχνιακὴν ὀργάνωσιν τῆς βιομηχανίας καὶ τὴν χειροτεχνίαν.

Ἡ ἐν τῷ μεταξὺ ὀργανωθεῖσα συστηματοποίησις τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῆς ἀτομικῆς ἰδιοκτησίας, ἡ ἀλλαγὴ τῶν μεθόδων τῆς παραγωγῆς, ἡ *ἐπέμβασις τοῦ κεφαλαίου ἐν τῇ παραγωγῇ*, ὑπῆρξαν αἱ αἰτίαι αἱ ὁποῖαι ὡδήγησαν τὸν πρότερον ἀνεξάρτητον παραγωγὸν πρὸς τὴν ὁδὸν τῆς ἐμμίσθου ἐργασίας. Ἔκτοτε ἐγεννήθη τὸ σύστημα τοῦ *μισθοῦ* καὶ ἤρχισεν ἀναπτυσσομένη ἡ ἐργατικὴ τάξις. Εἶναι δὲ ἡ *μισθωτὴ ἐργασία* (salariat) τὸ οἰκονομικὸν ἐκεῖνο καθεστώς, καθ' ὃ ὁ ἄνθρωπος, διὰ νὰ προσπορισθῇ τὰ πρὸς τὸ ζῆν, ὀφείλει νὰ ἐργασθῇ διὰ λογαριασμὸν ἑτέρου ἀνθρώπου, ὁ ὁποῖος κέκτηται τὴν γῆν ἢ τὰ μηχανήματα καὶ τὰς ὑπὸ κατεργασίαν πρώτας ὕλας.

Τὸ σύστημα τῆς μισθωτῆς ἐργασίας προσέλαβε τὴν ἀνάγλυφον αὐτοῦ μορφὴν κατὰ τὴν νεωτέραν ἐποχήν, ὑπὸ τὸ καλούμενον καπιταλιστικὸν καθεστώς, καθ' ὃ ἡ παραγωγή, διὰ τῆς ἀναπτύξεως εἰς ὑπέρτατον βαθμὸν τοῦ μεγάλου ἐμπορίου καὶ τῆς μεγάλης βιομηχανίας, ἀπέβη καθαρῶς κεφαλαιοκρατική. Ἡ κεφαλαιοκρατικὴ ὀργάνωσις τῆς παραγωγῆς συνετέλεσεν εἰς τὴν ἀέναον πλήθυνσιν τοῦ καλουμένου προλεταριάτου, δηλαδὴ τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων, οἵτινες ἀποζοῦν ἀποκλειστικῶς καὶ μόνον ἐκ τῆς ἀμοιβῆς τῆς εἰς ἕτερον πρόσωπον—τὸν ἐργοδότην—παρεχομένης ἐργασίας των, ἐκ τοῦ μισθοῦ.

Ὁ μισθὸς εἶναι τὸ μερίδιον, τὸ ὁποῖον λαμβάνει ἡ μισθωτὴ ἐργασία, ὡς εἷς τῶν συντελεστῶν τῆς παραγωγῆς, δεδομένου δὲ ὅτι τοῦτο κατὰ κανόνα προκαταβάλλεται, θεωρεῖται ὡς τὸ προαφαιρούμενον ὑπὸ τοῦ ἐργάτου μέρος τῶν κερδῶν ἐκ τῶν ἀγαθῶν, εἰς τὴν παραγωγὴν τῶν ὁποίων οὗτος συμμετέχει. Κατὰ τὴν ἄποψιν ταύτην ὁ ἐργάτης εἶναι ὁ συνεταῖρος, ὅστις λαμβάνει ἐκ τῶν προτέρων τὸ μέρος, τὸ ὁποῖον θὰ τοῦ ἀνῆκεν



Digitized by Google

ἐκ τῶν ἀποτελεσμάτων τῆς ἐπιχειρήσεως. Ἀλλ' ἀναγνωρίζεται γενικῶς ὅτι τὸ μερίδιον, τὸ ὁποῖον λαμβάνει ἡ μισθωτὴ ἐργασία, εἶναι μικρότερον ἐκείνου, τὸ ὁποῖον λαμβάνει ὁ ἕτερος συντελεστὴς τῆς παραγωγῆς, τὸ κεφάλαιον.

***II) Εἴδη μισθοῦ.*** Δύο εἶναι κυρίως αἱ μορφαί, ὑφ' ἃς παρέχεται ὁ ἐργατικὸς μισθός:

α') *Μισθὸς εἰς χρῆμα,* ὅταν καταβάλλεται ὑπὸ τὴν μορφὴν χρηματικοῦ ποσοῦ, καὶ

β') *Μισθὸς εἰς εἶδος,* ὅταν ἀποτελῆται ἐξ ἄλλης μορφῆς παροχῶν, οἷον τροφὴ ἢ κατοικία· προϊόντα, ἐξ ἐκείνων ἅτινα παρήγαγεν ἢ κατειργάσθη ὁ ἐργάτης («Produce wages», σύστημα εὐρέως διαδεδομένον ἄλλοτε)· ἐμπορεύματα (Truck-System) κ.τ.τ.

Ἡ κυριαρχοῦσα μορφὴ ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας εἶναι σήμερον ὁ *μισθὸς εἰς χρῆμα.* Ἡ πληρωμὴ τοῦ μισθοῦ εἰς εἶδος ἐλάμβανε χώραν κατὰ τὴν προκαπιταλιστικὴν ἐποχήν, ἐφηρμόζετο δὲ κυρίως εἰς τὴν καλουμένην περίοδον τῆς φυσικῆς οἰκονομίας. Καὶ σήμερον ὅμως ὁ μισθὸς εἰς εἶδος ἔχει διατηρηθῆ ὑπὸ τὴν μορφὴν παρακολουθημάτων τοῦ μισθοῦ εἰς χρῆμα. Τοιαῦται παροχαὶ εἰς εἶδος, αἱ ὁποῖαι πολλάκις ἀποτελοῦν καὶ τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ μισθοῦ, παρατηροῦνται συνήθως εἰς τοὺς γεωργικοὺς ἐργάτας, τοὺς ὑπηρέτας, τὸ προσωπικὸν τῶν καταστημάτων εἰδῶν διατροφῆς κλπ. Ψέγεται ὅμως γενικῶς τὸ σύστημα τῆς πληρωμῆς τῶν μισθῶν «εἰς ἐμπορεύματα» (Truck-system). Τὸ σύστημα τοῦτο κατεδείχθη ὅτι ἀποτελεῖ μέσον ἐκμεταλλεύσεως τῶν ἐργατῶν ἐκ μέρους τῶν ἐργοδοτῶν, οἱ ὁποῖοι τείνουν νὰ χορηγοῦν εἰς αὐτοὺς ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἀνεπαρκεῖς ποιοτικῶς καὶ ποσοτικῶς, πολλάκις δὲ καὶ οὐχὶ χρησίμους παροχάς, ἐκ τῶν ὁποίων μάλιστα ἐπιδιώκουν κέρδη. Ἕτερον κακὸν τοῦ συστήματος τούτου εἶναι ὅτι περιορίζει καὶ τὴν ἐν τῇ καταναλώσει ἐλευθερίαν τοῦ μισθωτοῦ, τὸν ὁποῖον ἐπίσης φέρει καὶ εἰς ἀδυναμίαν νὰ ἐνεργήσῃ ἀποταμίευσίν τινα.

Ἰδιάζοντα τρόπον ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας ἀποτελεῖ τὸ σύστημα τῶν φιλοδωρημάτων (pourboires). Ἐνῷ κατὰ κανόνα ὁ μισθὸς καταβάλλεται παρὰ τοῦ ἐργοδότου, εἴς τινα ἐπαγγέλματα (ὑπάλληλοι καφενείων, ἑστιατορίων, ξενοδοχείων, κουρείων, ταξιθέται θεάτρων κτλ.) ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας δὲν βαρύνει τὸν κύριον τῆς ἐπιχειρήσεως, ἀλλ' ἔχει καθιερωθῆ νὰ πληρώνεται ἐν μέρει ἢ καὶ ἐν ὅλῳ παρὰ τοῦ κοινοῦ. Τὰ φιλοδωρήματα κατ' ἀρχὰς ἦσαν ἐντελῶς προαιρετικά. Ἡ συνήθεια ὅμως τὰ κατέστησε σὺν τῷ χρόνῳ ὑποχρεωτικὰ διὰ τὸν πελάτην, καθορισθεισῶν μάλιστα καὶ διαφόρων διαβαθμίσεων αὐτῶν κατὰ ἐπαγγέλματα (π. χ. 10 % προκειμένου περὶ ὑπαλλήλων καφενείων καὶ ἑστιατορίων, 15 % προκειμένου περὶ ξενοδοχείων ὕπνου, κλπ.). Οὕτω τὸ «pourboire» εἶναι σήμερον εἰς πλεῖστα ἐπαγγέλματα ἀπαραίτητον τοῦ κανονικοῦ μισθοῦ στοιχεῖον, εἴς τινας δὲ περιπτώσεις ἀποτελεῖ τοῦτο καὶ ὁλόκληρον τὸν μισθόν.

***III) Τρόποι πληρωμῆς τοῦ μισθοῦ.*** Οἱ βασικοὶ καὶ ἁπλούστεροι τύποι, ὑφ' οὓς χορηγεῖται ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας, εἶναι: α) *ἡ ἀμοιβὴ κατὰ χρόνον·* καὶ β) *ἡ ἀμοιβὴ κατ' ἔργον* (κατ' ἀποκοπήν).

*Ὁ μισθὸς κατὰ χρόνον* προσδιορίζεται ἀπὸ τὴν χρονικὴν διάρκειαν τῆς χρησιμοποιήσεως τοῦ μισθωτοῦ. Ὁ ἐργάτης ἢ ὑπάλληλος πωλεῖ εἰς τὸν ἐργοδότην τὴν ἐργασίαν του ἔναντι συμπεφωνημένης τιμῆς διὰ μίαν καθωρισμένην χρονικὴν περίοδον, χωρὶς νὰ παίζῃ ἰδιάζοντα ρόλον ἡ ποσότης τῆς παραγομένης κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐργασίας. Ἡ σημασία ἡ ἀποδιδομένη εἰς τὸ ἀποτέλεσμα τῆς ἐργασίας εἶναι εἰς τὸ σύστημα τοῦτο δευτερεύουσα. Ἔχομεν οὕτω ἐνταῦθα τὴν ἀμοιβὴν κατ' ἔτος (συνήθως εἰς τὴν γεωργίαν), τὴν ἀμοιβὴν κατὰ μῆνα (κυρίως εἰς τοὺς ὑπαλλήλους) καὶ τέλος τὴν ἀμοιβὴν καθ' ἡμέραν (ἡμερομίσθιον, εἰς τοὺς ἐργάτας) ἢ καὶ καθ' ὥραν (ὡρομίσθιον, εἰς τοὺς ἐργάτας). Ὁ χρονικὸς μισθὸς ἔχει τὰ μειονεκτήματα ὅτι δὲν λαμβάνει ὑπ' ὄψιν τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἐργασίας, δὲν ὑποκινεῖ εἰς αὔξησιν τῆς παραγωγικότητος, ἀλλ' ἀπεναντίας, ἕνεκα τοῦ ὅτι τίθενται ἐν ἴσῃ μοίρᾳ ὅλοι οἱ ἐργάται, καταστρέφει τὸν καλὸν ἐργάτην καὶ ἐπιβραβεύει τὸν ὀκνηρόν. Τὸ σύστημα ὅμως τοῦτο προτιμᾶται ὑπὸ τῶν ὠργανωμένων ἐργατῶν, λόγῳ τῆς καθιερουμένης ἰσότητος καὶ ἕνεκα τοῦ ὅτι δὲν προκαλεῖ ὑπερκόπωσιν τοῦ ἐργάτου, οὔτε τὸν ὠθεῖ εἰς ὑπερπαραγωγήν, γνωρίζει δὲ ὁ ἐργάτης ἐκ τῶν προτέρων τί ἀκριβῶς πρόκειται νὰ λάβῃ.

Ἡ *ἀμοιβὴ κατ' ἀποκοπήν,* ἢ «μὲ τὸ κομμάτι», μετρεῖται ἀναλόγως τῆς ποσότητος τοῦ παραχθέντος παρὰ τοῦ μισθωτοῦ ἔργου, χωρὶς νὰ ἔχῃ σημασίαν τινὰ ὁ χρόνος, ὅστις ἀπῃτήθη πρὸς ἐκτέλεσιν τοῦ ἔργου τούτου. Βεβαίως ἐν τῷ καθορισμῷ καὶ τοῦ μισθοῦ τούτου λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν ὁ συνήθως ἀπαιτούμενος χρόνος ἐργασίας. Ἡ ἀμοιβὴ κατ' ἀποκοπὴν δύναται νὰ συμφωνῆται ἢ μὲ ἕκαστον ἐργάτην κεχωρισμένως, ἢ ὁ ἐργοδότης παρέχει εἰς ὁμάδα ἐργατῶν ἐργολαβικῶς τὴν ἐργασίαν ἔναντι τιμήματος διανεμομένου μεταξὺ αὐτῶν, ὁπότε ἔχομεν τὸν καλούμενον *«συλλογικὸν μισθόν».* Τὸν μισθὸν κατ' ἀποκοπήν, εἰς ὅσας περιπτώσεις εἶναι δυνατὸν νὰ ἐφαρμοσθῇ, προτιμοῦν οἱ ἐργοδόται (μολονότι πολλάκις ἐνέχει τὸν κίνδυνον νὰ θυσιασθῇ ἡ ποιότης εἰς τὴν ποσότητα), διότι αὐξάνει τὴν φιλεργίαν καὶ ἑπομένως τὴν παραγωγικότητα τοῦ ἐργάτου καὶ συντελεῖ εἰς τὴν ἐξοικονόμησιν χρόνου ἐργασίας καὶ τὴν μείωσιν τῶν ἐξόδων ἐκ τῆς χρήσεως τῆς ἐργατικῆς δυνάμεως, ἁπλοποιεῖ δὲ καὶ τὴν ἐποπτείαν. Ἀντιθέτως, τὸ σύστημα τοῦτο προεκάλεσεν ἀνέκαθεν τὴν πολεμικὴν τῶν σοσιαλιστῶν (ἐστηλίτευσεν αὐτὸ ἰδίᾳ ὁ Karl Marx, ὁ ὁποῖος τὸ ἐχαρακτήρισεν ὡς τὴν μορφὴν μισθοῦ τὴν ἀνταποκρινομένην σαφέστατα εἰς τὴν κεφαλαιοκρατικὴν ὀργάνωσιν τῆς παραγωγῆς), διότι ἔχει ὡς συνέπειαν τὴν αὔξησιν τῶν ὡρῶν ἐργασίας, τὴν μείωσιν τῆς τιμῆς τῶν ἐργατικῶν μισθῶν, τὴν ὑπερκόπωσιν τοῦ ἐργάτου, ἔτι δὲ καὶ τὴν δημιουργίαν ἀνεργίας (ὡς ὑποκινοῦν τὸν ἐργατικὸν καὶ ἱκανὸν ἐργάτην νὰ κάμνῃ τὴν ἐργασίαν πλειόνων καὶ ἀποστεροῦν οὕτω ἄλλους ἐργάτας τῆς εὐκαιρίας τῆς ἐργασίας).

Τὸ σύστημα τῆς κατ' ἀποκοπὴν ἀμοιβῆς ἀποβαίνει σκληρότερον ἰδίᾳ προκειμένου περὶ ἐργατῶν ἐργαζομένων κατ' οἶκον, οἱ ὁποῖοι, ὄντες ἀπομεμονωμένοι μεταξύ των, εὑρίσκονται περισσότερον ἐκτεθειμένοι εἰς τὸ καλούμενον sweating system, τὸ «σύστημα τῶν μισθῶν τῆς πείνης». Συνηθέστατα ἡ ἐκμετάλλευσις τῶν τοιούτων ἐργατῶν αὐξάνει διὰ τῆς παρεμβολῆς, μεταξὺ αὐτῶν καὶ τοῦ κυρίως ἐργοδότου, μεσιτῶν, οἱ ὁποῖοι δημιουργοῦν συναγωνισμὸν καὶ παντοειδεῖς καταχρήσεις. Συναφὴς δὲ μορφὴ ἐκμεταλλεύσεως τοῦ ἐργάτου εἶναι τὸ σύστημα τῆς ἐμπορείας τῆς ἐργασίας, τῆς ὑπεργολαβίας, καθ' ὃ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐργασίας ἀναλαμβάνει ἔναντι τοῦ ἐργοδότου ἐργολαβικῶς εἷς τεχνίτης, ὁ ὁποῖος εἶτα τὴν μεταβιβάζει εἰς ἄλλους ἐργάτας (marchandage). Τοὺς ἐργάτας τούτους, τοὺς ὁποίους στρατολογεῖ μεταξὺ τῶν κατ' οἶκον ἐργαζομένων, τῶν πλέον δυστυχῶν καὶ τῶν ἀνέργων, πληρώνει συνήθως μὲ τὸ κομμάτι ἢ μὲ πολὺ μικρὸν ἡμερομίσθιον, κερδοσκοπῶν οὕτω ἐπὶ τῆς τιμῆς τῆς ἐργασίας καὶ συντελῶν εἰς ἀληθῆ ἐξευτελισμὸν τῶν ἐργατικῶν μισθῶν.

***IV) Θεωρίαι περὶ διαμορφώσεως τοῦ μισθοῦ.*** Τὸ ποσὸν τῶν μισθῶν δὲν εἶναι σταθερόν, ἀλλ' ὑφίσταται διαρκῶς διακυμάνσεις. Ἡ ἔρευνα τῶν νόμων, οἱ ὁποῖοι διέπουν τὰ τῆς διαμορφώσεως τῶν μισθῶν, ἀπησχόλησεν ὅλας ἀνεξαιρέτως τὰς οἰκονομικὰς σχολάς, πλεῖσται δ' ὅσαι θεωρίαι ἀνεπτύχθησαν ἐν σχέσει μὲ τὰ αἴτια, ἅτινα προσδιορίζουν τὸ ποσὸν τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ καὶ τὰ ὁποῖα προκαλοῦν ἄλλοτε τὴν πτῶσιν καὶ ἄλλοτε τὴν ὕψωσιν αὐτοῦ. Ἐν τῇ ἐρεύνῃ τοῦ προβλήματος τούτου—ἀποτελοῦντος ἓν τῶν σπουδαιοτέρων καὶ πλέον δυσχερῶν προβλημάτων της πολιτικῆς οἰκονομίας—τὸ προέχον ζήτημα δὲν ἀφορᾷ τοὺς λόγους, ἕνεκα τῶν ὁποίων σημειοῦται ἑκάστοτε μεταβολὴ τῆς τιμῆς τῆς ἐργασίας, ἀλλὰ τὸ πῶς κατ' ἀρχὴν δημιουργεῖται ἡ ἀξία αὐτῆς. Ἐὰν βεβαίως θεωρήσῃ τις τὴν ἐργασίαν ὡς «ἐμπόρευμα», τότε καὶ ἐπ' αὐτῆς ἐφαρμόζεται ἡ γενικὴ θεωρία τῆς ἀξίας, καθ' ἣν σπουδαιότατον ρόλον ἐν τῇ διαμορφώσει τῆς τιμῆς κέκτηται ὁ νόμος τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως. Μὲ τὴν διαφορὰν ὅμως ὅτι ἡ ἐργασία δὲν δύναται νὰ ἐκληφθῇ ὡς ἁπλοῦν ἐμπόρευμα. Ἐπὶ κοινῶν ἐμπορευμάτων, ὅταν ἡ προσφορὰ ὑπερβαίνῃ τὴν ζήτησιν, δύναται νὰ γίνῃ ἐναποθήκευσις αὐτῶν, ἐν ἀναμονῇ αὐξήσεως τῆς τιμῆς των. Ἐνῷ ἡ ἐργασία δὲν εἶναι δεκτικὴ ἀποθηκεύσεως, ὁ δὲ χρόνος καθ' ὃν ἀδρανεῖ, ὁ χρόνος ἀνεργίας, ἔχει καταστρεπτικὰς διὰ τὸν ἐργάτην συνεπείας. Δὲν δύναται βεβαίως ν' ἀναβάλῃ κανεὶς τὴν διατροφήν του διὰ τὴν ἐπαύριον. Τὸ κοινὸν ἐμπόρευμα δύναται ἐπίσης νὰ πωληθῇ—τοῦτο δὲ συμβαίνει πολλάκις—καὶ μὲ ζημίαν. Ἀπ' ἐναντίας ἡ ἐργασία δὲν ἀποτελεῖ τι κεχωρισμένον τοῦ ἀνθρώπου· ὁ ἐργάτης προσφέρει ἑαυτόν, εἶναι δὲ φυσικὸν τὸ ἡμερομίσθιόν του νὰ μὴ δύναται νὰ κατέλθῃ κάτω τοῦ ἐλαχίστου ἐκείνου ὁρίου, τὸ ὁποῖον θὰ ἐξασφαλίσῃ εἰς αὐτὸν τὰ στοιχειώδη ἔξοδα τῆς συντηρήσεώς του.

Διὰ μέγαν ἀριθμὸν οἰκονομολόγων τῶν παλαιοτέρων σχολῶν, ὁ μισθὸς τῶν ἐργατῶν κανονίζεται ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως. Ὁ δὲ Ἄγγλος οἰκονομολόγος Cobden ὡς ἑξῆς περιέγραψε τὴν λειτουργίαν τοῦ νόμου τούτου ἐν τῷ καθορισμῷ τῶν ἐργατικῶν μισθῶν. «Τὰ ἡμερομίσθια ὑψοῦνται πάντοτε, ὁσάκις δύο ἐργοδόται τρέχουν ὄπισθεν ἑνὸς ἐργάτου, καὶ πίπτουν πάντοτε, ὁσάκις δύο ἐργάται τρέχουν ὄπισθεν ἑνὸς ἐργοδότου». Τὴν πλήρη ἐφαρμογὴν τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως ἐν τῇ διαμορφώσει τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ παρεδέχετο ἡ σχολὴ τῶν φυσιοκρατῶν, ὡς καὶ ὁ ἱδρυτὴς τῆς φιλελευθέρας κλασσικῆς σχολῆς Adam Smith. Ὡς ἐμπόρευμα θεωρεῖ ἐπίσης τὴν ἐργασίαν καὶ «ἡ θεωρία τοῦ ὀρειχαλκίνου νόμου», ἡ ἀποκληθεῖσα οὕτως ὑπὸ τοῦ Γερμανοῦ σοσιαλιστοῦ Lassalle. Ἡ θεωρία αὕτη, ἡ ὁποία καλεῖται ἐπίσης θεωρία τοῦ «φυσικοῦ μισθοῦ», ἢ θεωρία τοῦ κόστους τῆς παραγωγῆς, ἔχει ὡς ἀφετηρίαν τὴν θεωρίαν τοῦ Μάλθου, ἀνεπτύχθη δὲ καὶ ὑπὸ τοῦ Adam Smith καὶ διετυπώθη σαφῶς ἐν τέλει ὑπὸ τοῦ Ricardo. «Ἡ ἐργασία, λέγει ὁ τελευταῖος οὗτος, ἔχει, ὅπως ὅλα τὰ λοιπὰ ἀγαθὰ ποῦ ἀγοράζονται καὶ πωλοῦνται, τὴν «φυσικήν» της καὶ τὴν «ἀγοραίαν» της τιμήν. Ἡ φυσικὴ τιμὴ εἶναι ἐκείνη ποῦ εἶναι κατὰ μέσον ὅρον ἀναγκαία διὰ τὴν συντήρησιν τῶν ἐργατῶν καὶ τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν, χωρὶς ὁ ὁλικὸς αὐτῶν ἀριθμὸς νὰ αὐξάνῃ ἢ νὰ ἐλαττοῦται. Ἑπομένως ἡ φυσικὴ ἀξία τῆς ἐργασίας ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς τιμῆς τῶν εἰδῶν διατροφῆς καὶ τῶν ἀγαθῶν τῶν ἀναγκαίων ἢ χρησίμων διὰ τὴν συντήρησιν τοῦ ἐργάτου καὶ τῆς οἰκογενείας του». Ὅπως ἡ τιμὴ τῶν ἐμπορευμάτων καθορίζεται ἐπὶ τῇ βάσει τῆς παραγωγικῆς δαπάνης, οὕτω, κατὰ τὴν θεωρίαν ταύτην, καὶ τὸ ποσὸν τοῦ ἐργατικοῦ ἡμερομισθίου τείνει νὰ κανονισθῇ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν στοιχειωδῶν ἀναγκῶν τοῦ ἐργάτου, τῶν δαπανῶν τῆς συντηρήσεώς του. Τὸ ποσὸν τῶν ἀγαθῶν, τὸ ὁποῖον χρειάζεται ὁ ἐργάτης διὰ νὰ ζήσῃ στοιχειωδῶς αὐτὸς καὶ ἡ οἰκογένειά του, ἀποτελεῖ διὰ τὸ ὑπ' αὐτοῦ προσφερόμενον ἐμπόρευμα, τὴν «ἐργασίαν», τὸ παραγωγικὸν κόστος. Ἐπὶ τῇ βάσει δὲ τῶν ἐξόδων διατροφῆς καὶ συντηρήσεως τοῦ ἐργάτου, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν τὴν παραγωγικὴν δαπάνην τοῦ ἐμπορεύματος «ἐργατικὴ δύναμις», καθορίζεται καὶ τὸ ποσὸν τοῦ ἡμερομισθίου. Ὁ μισθὸς ὅμως βαίνει διαρκῶς μειούμενος. Ἡ δὲ ἐλάττωσις τοῦ ἡμερομισθίου μέχρι τοῦ ἐλαχίστου ἐκείνου ὁρίου τοῦ ἀπαραιτήτου εἰς τὸν μισθωτὸν διὰ νὰ μὴ ἀποθάνῃ τῆς πείνης, εἶναι κατὰ τὴν θεωρίαν ταύτην ἀναπόφευκτος. Συντελεῖ εἰς τοῦτο ἡ διαρκὴς αὔξησις τοῦ πληθυσμοῦ, ἥτις δημιουργεῖ ἀπαύστως μεγαλύτερον ἀριθμὸν ἐργατικῶν χειρῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ ἀνταγωνισμὸς καθίσταται σκληρός. Ἡ ἕνεκα τοῦ ἀνταγωνισμοῦ τούτου μείωσις τοῦ ἡμερομισθίου μέχρι τοῦ φυσικοῦ τούτου κατωτάτου ὁρίου, τὸ ὁποῖον μοιραίως εἶναι καὶ τὸ μέγιστον, δι' οὐδενὸς μέσου δύναται ν' ἀνακοπῇ. Κατὰ τὴν ἀπαισιόδοξον ταύτην θεωρίαν, τίποτε δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ γίνῃ διὰ τὴν βελτίωσιν τῶν συνθηκῶν τῆς ἐργατικῆς τάξεως.

Ἑτέρα θεωρία, ἐπὶ μακρὸν κυριαρχήσασα ἐν τῇ οἰκονομικῇ ἐπιστήμῃ καὶ ἰδίᾳ ἐν Ἀγγλίᾳ (ἀνεπτύχθη ἐκτενέστερον ὑπὸ τοῦ John Stuart Mill, ὅστις ὅμως βραδύτερον τὴν ἐγκατέλιπεν), εἶναι ἡ «θεωρία τοῦ κεφαλαίου τῶν μισθῶν» (wages fund). Καὶ ἡ θεωρία αὕτη παραδέχεται τὴν ἐφαρμογὴν τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως ἐν τῇ διαμορφώσει τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ. Κατ' αὐτήν, προσφορὰ εἶναι οἱ ἐργάται δεδομένης χώρας, οἱ ὁποῖοι διὰ νὰ ζήσουν προσφέρουν τοὺς βραχίονάς των, καὶ ζήτησις εἶναι τὰ κεφάλαια τῆς χώρας ταύτης, τὰ ὁποῖα ζητοῦν τοποθέτησιν. Ἡ σχέσις μεταξὺ τῶν δύο τούτων στοιχείων —ἐργατικῆς τάξεως καὶ κεφαλαίου— προσδιορίζει τοὺς μισθούς. Διὰ νὰ καταστῇ παραγωγικὸν τὸ κυκλοφοροῦν εἰς ἑκάστην χώραν κεφάλαιον, πρέπει ἀναγκαίως ἓν τμῆμα αὐτοῦ νὰ διατεθῇ διὰ τὴν κινητοποίησιν ἐργατικῶν χειρῶν. Οὕτω κάθε ἐπιχειρηματίας, ἐπιθυμῶν τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν κεφαλαίων του, κατανέμει ἐκ τῶν προτέρων αὐτὰ εἰς τοὺς διαφόρους παράγοντας, ἀπὸ τοὺς ὁποίους θὰ προέλθῃ τὸ κόστος τῶν προϊόντων του (ἐργατικαὶ χεῖρες, πρῶται ὕλαι, ἀπόσβεσις μηχανημάτων, γενικὰ ἔξοδα). Τὸ σύνολον τοῦ ποσοῦ, τὸ ὁποῖον διαθέτουν ἅπαντες οἱ ἐπιχειρηματίαι δεδομένης χώρας διὰ τὴν ἀμοιβὴν τῆς ἐργασίας, ἀποτελεῖ τὸ καλούμενον «κεφάλαιον τῶν μισθῶν», τὸ ὁποῖον ἀνήκει εἰς τὸ σύνολον τῆς ἐργατικῆς τάξεως τῆς χώρας ταύτης, διανέμεται δὲ μεταξὺ τῶν μισθωτῶν. Ὡς συνέπεια τῆς ἐν λόγῳ θεωρίας προκύπτει ὅτι ἐν ἑκάστῃ χώρᾳ δημιουργεῖται εἷς μέσος ὅρος μισθῶν καὶ ἡμερομισθίων, ἐξαρτώμενος ἐκ τοῦ ποσοῦ τοῦ κεφαλαίου τῶν μισθῶν καὶ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἀπασχολουμένων εἰς τὴν ἐργασίαν ἐργατῶν. Ἐὰν ἑπομένως συμβῇ, ὥστε ἓν τμῆμα τῆς ἐργατικῆς τάξεως νὰ ἐπιτύχῃ δι' ἑαυτὸ αὔξησιν τοῦ μέσου ὅρου τῶν ἡμερομισθίων, τότε ἡ αὔξησις αὕτη δὲν δύναται νὰ γίνῃ εἰμὴ εἰς βάρος τῶν λοιπῶν ἐργατῶν. Ἑτέρα ἐπίσης συνέπεια τῆς θεωρίας ταύτης εἶναι ὅτι, ἐφόσον ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐργατῶν αὐξάνει, τὸ μερίδιον ἑκάστου ἐπὶ τοῦ κεφαλαίου τῶν μισθῶν ἐλαττοῦται αὐτομάτως, καὶ τἀνάπαλιν. Δηλαδὴ εἰς κάθε χώραν τὰ ἡμερομίσθια αὐξάνουν ἢ ἐλαττοῦνται, ὅταν μεταβάλλεται ἕκαστος τῶν δύο παραγόντων, «ἐργατικὴ τάξις» καὶ «κεφάλαιον τῶν μισθῶν».

Κατ' ἄλλην θεωρίαν, «τὴν θεωρίαν τῆς παραγωγικότητος τῆς ἐργασίας», ἡ ἀξία τῆς ἐργασίας, τὸ ἡμερομίσθιον, κανονίζεται ἀναλόγως τῆς παραγωγικότητος τοῦ ἐργάτου, ὡς τοῦτο συμβαίνει καὶ μὲ τοὺς ἑτέρους δύο συντελεστὰς τῆς παραγωγῆς, τὴν φύσιν καὶ τὸ κεφάλαιον. Ὅσον παραγωγικώτερος εἶναι ὁ ἐργάτης ἢ ὅσον χρησιμωτέρα ἀποβαίνει ἡ ἐργασία αὐτοῦ, τόσον τὸ ἡμερομίσθιόν του εἶναι μεγαλύτερον. Κατὰ τὸν Leroy-Beaulieu: «εἰς ἕκαστον εἶδος ἐργασίας ὁ μισθὸς τείνει νὰ ρυθμισθῇ ἐπὶ τῇ βάσει τῆς παραγωγικότητος τῆς ἐργασίας τοῦ ἐργάτου. Διὰ δὲ τῆς λέξεως παραγωγικότης δέον νὰ νοῆται ἡ ποσότης τῶν ἱκανοποιήσεων, τὰς

Digitized by Google

ὁποίας, συμφώνως πρὸς τὰς ἀνάγκας ἢ τὰς διαθέσεις τῆς κοινωνίας,παράγει ἕκαστον εἶδος ἐργασίας».

Εἰς συμπλήρωσιν τῆς θεωρίας τῆς παραγωγικότητος τῆς ἐργασίας ἀνεπτύχθη ἡ «θεωρία τῆς ἐλαχίστης παραγωγικότητος», καθ' ἣν τὴν τιμὴν τῆς ἐργασίας μιᾶς κατηγορίας ἐργατῶν προσδιορίζει ἡ ἐλαχίστη παραγωγικότης τοῦ ἑνὸς ἐξ αὐτῶν, τοῦ τελευταίου ἐργάτου, λαμβανομένης βεβαίως ἐκ παραλλήλου ὑπ' ὄψει τῆς ἀφθονίας ἢ τῆς σπανιότητος τῶν ἐργατικῶν χειρῶν.

Κατὰ τὴν περὶ «φυσικοῦ μισθοῦ» θεωρίαν τοῦ Γερμανοῦ οἰκονομολόγου Von Thünen, ὁ φυσικὸς μισθός, ὁ ὁποῖος προκύπτει ἐκ σειρᾶς μαθηματικῶν ὑπολογισμῶν, ἐκφράζεται διὰ τοῦ τελικοῦ τύπου $\sqrt{a.p}$, εἰς ὃν τὸ a ἀντιπροσωπεύει τὰ μέσα συντηρήσεως τὰ ἀναγκαῖα διὰ μίαν ἐργατικὴν οἰκογένειαν μετὰ δύο τέκνων, τὸ δὲ p ἐκφράζει τὸ προϊὸν τῆς ἐργασίας ἑνὸς ἐργάτου ἐργαζομένου μὲ ἓν δεδομένον κεφάλαιον. Τοῦ γινομένου τὸ ὁποῖον προκύπτει ἐκ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν ἐξόδων συντηρήσεως a ἐπὶ τῆς ἀξίας τοῦ προϊόντος p ἐξάγεται ἡ τετραγωνικὴ ῥίζα, ἡ ὁποία μᾶς δίδει τὸν φυσικὸν μισθόν. «Ἐπειδὴ δὲ—λέγει ὁ Thünen—ἔχομεν $a : \sqrt{ap} = \sqrt{a.p} : p$ προκύπτει ὅτι ὁ φυσικὸς μισθὸς εἶναι ὁ μέσος ἀνάλογος ἀριθμὸς μεταξὺ τῶν ἀναγκῶν τοῦ ἐργάτου καὶ τοῦ προϊόντος τῆς ἐργασίας του, ἤτοι ὁ μισθὸς ὑπερβαίνει τὰς ἀνάγκας κατὰ τὴν αὐτὴν ἀναλογίαν καθ' ἣν τὸ προϊὸν τῆς ἐργασίας ὑπερβαίνει τὸν μισθόν». Ἡ θεωρία αὕτη τοῦ Thünen ἀποβλέπει εἰς τὴν ὀργάνωσιν «ἰδανικῶν» οἰκονομικῶν σχέσεων, παραγνωρίζει δὲ τὴν ὑφισταμένην πραγματικότητα καὶ ἕνεκα τούτου οὐ μόνον δὲν ἐξηγεῖ τὰ αἴτια προσδιορισμοῦ τοῦ μισθοῦ, ἀλλ' ἐχαρακτηρίσθη καὶ ὡς ἀνεφάρμοστος.

Κατὰ τὸν Karl Marx, ὁ ἐργοδότης δὲν πληρώνει εἰς τὸν ἐργάτην τὴν πραγματικὴν «ἀξίαν» τῆς ἐργασίας του. Τὸ δὲ κέρδος τὸ ὁποῖον ὁ ἐργοδότης ἀποκομίζει, ἐκ τῆς χρησιμοποιήσεως τῆς ξένης ἐργασίας (ἐκμεταλλευόμενος τὴν ὑπερεργασίαν) ἀποτελεῖ τὴν καλουμένην «ὑπεραξίαν», δηλαδὴ τὴν μὴ πληρωθεῖσαν ἐργασίαν. Κατὰ τὴν «θεωρίαν τοῦ *Karl Marx*», ἡ ἀξία τῆς ἐργασίας βασίζεται πάλιν ἐπὶ τῆς ἐργασίας, διαμορφοῦται δὲ λαμβανομένων ὑπ' ὄψιν τῶν δαπανῶν, αἱ ὁποῖαι ἀπαιτοῦνται ἐν ἑκάστῃ χώρᾳ διὰ τὴν δημιουργίαν αὐτῆς (τῆς ἐργασίας) καὶ διὰ τὴν διαιώνισίν της. Ὁ ἄνθρωπος—λέγει σχεδὸν κατὰ λέξιν,ὁ Karl Marx—διὰ νὰ συντηρηθῇ, νὰ ζήσῃ καὶ νὰ ἀνανεωθῇ, ἔχει ἀνάγκην μιᾶς ὡρισμένης ποσότητος ἀγαθῶν. Ὁ χρόνος ἐργασίας, ὁ ἀναγκαῖος διὰ τὴν παραγωγὴν τῶν ἀγαθῶν τούτων, παριστᾷ ἀκριβῶς τὸν χρόνον ἐργασίας τὸν ἀναγκαῖον διὰ τὴν παραγωγὴν τῆς «ἐργατικῆς δυνάμεως». Ἑπομένως ἡ ἀξία τῆς ἐργατικῆς δυνάμεως ἰσοδυναμεῖ πρὸς τὴν ἀξίαν τῶν ἀγαθῶν τῶν ἀναγκαίων διὰ τὴν συντήρησιν καὶ διαιώνισιν τοῦ κτήτορος αὐτῆς, τοῦ ἐργάτου. «Ἡ ἀνθρωπίνη ἐνέργεια (ἐργατικὴ δύναμις)—γράφει ὁ ἴδιος περαιτέρω—ὑλοποιεῖται μόνον διὰ τῆς ἐκδηλώσεώς της καὶ ἐκδηλοῦται μόνον διὰ τῆς ἐργασίας. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐργασίας καταναλίσκεται μία ὡρισμένη ποσότης μυῶν, νεύρων καὶ ἐγκεφάλου, ἥτις δέον νὰ ἀποκατασταθῇ εἰς τὸ ἄτομον. Μεγαλυτέρα καταβολὴ ἐνεργείας ἀπαιτεῖ μεγαλυτέραν κατανάλωσιν τροφίμων. Ἐὰν ὁ κάτοχος τῆς ἐργατικῆς δυνάμεως ἐργασθῇ σήμερον, ὀφείλει τὴν ἐπαύριον νὰ ἐπαναλάβῃ τὴν αὐτὴν λειτουργίαν ὑπὸ τοὺς αὐτοὺς ὅρους δυνάμεως καὶ ὑγείας. Ἡ ποσότης τῶν τροφίμων δέον συνεπῶς νὰ ἐπαρκῇ ὅπως διατηρήσῃ τὸ ἐργαζόμενον ἄτομον εἰς τὴν φυσιολογικὴν αὐτοῦ κατάστασιν. Καὶ αὐταὶ αἱ φυσικαὶ ἀνάγκαι, ὡς π.χ. τροφή, ἐνδυμασία, θέρμανσις, κατοικία κλπ., διαφέρουσιν ἀναλόγως τῶν κλιματικῶν καὶ λοιπῶν φυσικῶν ἰδιοτήτων τῆς χώρας. Ἐξ ἄλλου, ὁ κύκλος τῶν λεγομένων ἀπαραιτήτων ἀναγκῶν, ὡς καὶ ὁ τρόπος τῆς ἱκανοποιήσεως τῶν ἀναγκῶν τούτων, ἀποτελοῦσιν ἱστορικὸν μᾶλλον προϊόν, ἐξαρτώμενον ὡς ἐκ τούτου κατὰ μέγα μέρος ἐκ τοῦ ἐν τῇ χώρᾳ ἰσχύοντος ἐπιπέδου πολιτισμοῦ, ἀφ' ἑτέρου δέ, κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον ἐκ τοῦ ὑπὸ ποίας συνθήκας, ἤτοι ἐπὶ τῇ βάσει τίνων συνηθειῶν καὶ ἀπαιτήσεων, διεμορφώθη ἐν τῇ χώρᾳ ἡ τάξις τῶν ἐλευθέρων ἐργατῶν. Κατ' ἀντίθεσιν συνεπῶς πρὸς ὅλα τὰ ἄλλα ἐμπορεύματα, ὁ προσδιορισμὸς τῆς ἀξίας ἐργασίας περιλαμβάνει τὸ ἱστορικὸν καὶ τὸ ἠθικὸν στοιχεῖον». Ὁ μέσος ὅρος τῶν ἀγαθῶν τῶν ἀπαιτουμένων διὰ τὴν καθ' ἡμέραν συντήρησιν τῆς «ἐργατικῆς δυνάμεως», ἐκφράζεται διὰ τοῦ τύπου $365\,A+52\,B+4\,\Gamma+$ κλπ., ἔνθα

$A =$ τὰ ἀνανεούμενα καθ' ἑκάστην ἡμέραν ἀγαθά,
$B =$ τὰ ἀγαθὰ τὰ ἀνανεούμενα καθ' ἑβδομάδα,
$\Gamma =$ τὰ ἀγαθὰ τὰ ἀνανεούμενα κατὰ τρίμηνον κλπ.

Ἡ περὶ τῆς ἀξίας τῆς ἐργασίας θεωρία τοῦ Marx ἐχαρακτηρίσθη ὑπὸ πλείστων συγγραφέων ὡς ταυτολογία, διότι δὲν καθορίζει οὗτος καὶ τὴν ἀξίαν τῆς δευτέρας ταύτης ἐργασίας, ἤτοι τῆς ἐμπεριεχομένης εἰς τὰ ἀγαθά, τὰ ὁποῖα θεωρεῖ ἀπαραίτητα διὰ τὴν συντήρησιν καὶ ἀνανέωσιν τῆς «ἐργατικῆς δυνάμεως».

Παραλλήλως πρὸς τὰς ἀνωτέρω, ἀνεπτύχθη καὶ πληθὺς ἄλλων θεωριῶν, αὐτοτελῶν ἢ χρησιμοποιουσῶν μέρος τῶν ἀπόψεων τῶν ἄλλων (Rodbertus, Philippovich, Brentano κλπ.).

Εἰς τὰς πλείστας τῶν ἀναπτυχθεισῶν θεωριῶν δύναται ν' ἀνεύρῃ τις καὶ μεῖζον ἢ ἔλασσον ποσοστὸν ἀληθείας. Οὕτως, ὁ νόμος τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως ἔπαιζε πρωτεύοντα, τὸν κύριον, ῥόλον ἐν τῷ καθορισμῷ τοῦ ἡμερομισθίου εἰς παλαιοτέρας ἐποχάς. Κατὰ κανόνα δὲ ἐφηρμόζετο εἰς βάρος τῶν ἐργατῶν. Διότι οἱ ἐργοδόται, οἱ ὁποῖοι δὲν ἐνδιεφέροντο παρὰ διὰ τὴν μείωσιν τῶν ἡμερομισθίων, ἦσαν ἐλεύθεροι ν' ἀπαιτοῦν περισσοτέρας ὥρας ἐργασίας καὶ νὰ χρησιμοποιοῦν εἰς τὰ ἐργοστάσιά των γυναῖκας καὶ παιδία, τῶν ὁποίων ὁ ἀνταγωνισμὸς ἀπέβαινεν εἰς βάρος τῶν ἀνδρῶν ἐργατῶν. Ἐν τῷ καθορισμῷ ὅμως τοῦ ποσοῦ τοῦ ἡμερομισθίου δὲν ὑπάρχει πλέον σήμερον ἀπόλυτος ἐλευθερία τῶν δύο συμβαλλομένων—ἐργάτου καὶ ἐργοδότου. Διότι ἔγινε σὺν τῷ χρόνῳ κατανοητὸν ὅτι τὸ ζήτημα τῆς ἀμοιβῆς τῆς ἀνθρωπίνης ἐργασίας εἶναι κεφαλαιώδους σημασίας καὶ ἐνδιαφέρει αὐτὸ τοῦτο τὸ κοινωνικὸν σύνολον, Τὸ δὲ κράτος, πρὸς πρόληψιν ἀδικιῶν εἰς βάρος τοῦ ἐργάτου, αἱ ὁποῖαι θὰ εἶχον δυσμενεῖς συνεπείας δι' ὁλόκληρον τὴν κοινωνίαν, ἤρχισε νὰ ἐπεμβαίνῃ εἰς τὴν κατάρτισιν τῆς ἐργατικῆς συμβάσεως διὰ τῆς θεσπίσεως μέτρων προστατευτικῶν τῆς ἐργασίας (ὀκτάωρον, ἀπαγόρευσις ἐργασίας γυναικῶν καὶ ἀνηλίκων, φραγμοὶ εἰς τὴν μετανάστευσιν, ἐξασφάλισις ἐλαχίστου ὁρίου ἡμερομισθίου, ἀσφάλισις ἀνεργίας, ἀναγκαστικὴ διαιτησία κλπ.). Τὰ μέτρα ταῦτα ἀνάγονται εἰς ὑποχρεωτικὰς νομικὰς διατάξεις, τὰς ὁποίας ὀφείλουν νὰ σεβασθοῦν ἀμφότερα τὰ συμβαλλόμενα μέρη. Σήμερον δ' ἔχει πλέον τύχει διεθνοῦς υἱοθετήσεως ἡ ὑψηλὴ ὄντως κοινωνικὴ ἀρχή, ἡ περιληφθεῖσα καὶ εἰς τὰς συνθήκας τῆς εἰρήνης, καθ' ἣν «ἡ ἐργασία δέον νὰ μὴ θεωρῆται ἁπλῶς ὡς ἐμπόρευμα ἢ ἀντικείμενον ἐμπορίας». Ἐκ παραλλήλου δὲ πρὸς τὴν διαμόρφωσιν τῶν ἀντιλήψεων τούτων οἱ ἐργάται, κατανοήσαντες σὺν τῷ χρόνῳ ὅτι ἀποτελοῦν ἰδίαν ἰσχυροτάτην τάξιν, συνηνώθησαν εἰς ἐπαγγελματικάς, ἔτι δὲ καὶ πολιτικάς, ὀργανώσεις καὶ ἀπέκτησαν σήμερον τὸ δικαίωμα νὰ συζητοῦν καὶ νὰ ἐπιβάλλουν πολλάκις τοὺς ὅρους ἐργασίας.

Αἱ ὀξύτεραι διαμάχαι μεταξὺ ἐργατῶν καὶ ἐργοδοτῶν, τὸ μεγαλύτερον ποσοστὸν τῶν κηρυσσομένων ἀπεργιῶν ἢ τῶν λὸκ-ἄουτ, ὡς κυριωτέραν ἀφορμὴν ἔχουν τὴν τιμὴν τῆς ἐργασίας. Σύνηθες ἀποτέλεσμα τῶν τοιούτων διενέξεων εἶναι αἱ «συλλογικαὶ συμβάσεις ἐργασίας», αἱ ὁποῖαι, συναπτόμεναι μεταξὺ τῶν ἐπαγγελματικῶν ὀργανώσεων τῶν ἐργατῶν καὶ ἐργοδοτῶν, διαγράφουν διὰ τοὺς μεμονωμένους ἐργάτας καὶ ἐργοδότας τοὺς ὑποχρεωτικοὺς ὅρους τῆς ἐργατικῆς συμβάσεως (βλ. λ. *ἐργασίας σύμβασις*). Τ' ἀνωτέρω καταδεικνύουν ὅτι ὁ «νόμος τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως» ἔπαυσε νὰ παρουσιάζῃ ἐν τῷ πεδίῳ τοῦ καθορισμοῦ τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ τὴν ἀκαμψίαν, τὴν ὁποίαν ἐκέκτητο ἄλλοτε.

Οὐδεμία ἐξ ὅλων τῶν ἀναπτυχθεισῶν ἀνωτέρω θεωριῶν περὶ διαμορφώσεως τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ ἠδυνήθη νὰ ἐξηγήσῃ μονομερῶς καὶ ἀδιαμφισβητήτως τὰ αἴτια προσδιορισμοῦ τοῦ ποσοῦ τῆς ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας. Σήμερον δὲ εἶναι γενικῶς σχεδὸν παραδεδεγμένον ὅτι διὰ τὸν προσδιορισμὸν τοῦ ποσοῦ τῶν ἐργατικῶν μισθῶν ἐπιδροῦν πολλαπλοῖ παράγοντες, οἷον : ὁ νόμος τῆς ποοσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως, ὁ νόμος τῆς ἐλαχίστης παραγωγικότητος, τὸ ἐπίπεδον τῶν ἀναγκῶν τοῦ ἐργάτου, ἡ ἠθικὴ καὶ πνευματικὴ πρόοδος τῆς ἐργατικῆς τάξεως, αἱ μηχανικαὶ πρόοδοι, τὰ διάφορα προστατευτικὰ μέτρα τοῦ κράτους, ἡ σωματειακὴ ὀργάνωσις τῶν ἐργατῶν, αἱ κοινωνικαὶ συνθῆκαι, τὰ ἔθιμα, ἡ κατανάλωσις κλπ.

***V) Δίκαιος μισθός.*** Ἐκ παραλλήλου μὲ τὴν ἀναζήτησιν τῶν νόμων, οἵτινες προσδιορίζουν τὸν ἐργατικὸν μισθόν, ἀπετέλεσεν ἀντικείμενον ἐρεύνης καὶ ἓν ἄλλο ζήτημα, τὸ πρόβλημα τοῦ «*δικαίου μισθοῦ*». Ποῖον δηλαδὴ μερίδιον εἶναι δίκαιον νὰ λάβῃ ἕκαστος τῶν δύο παραγόντων—ἐργασία καὶ κεφάλαιον—, οἵτινες ἐν ἑκάστῃ ἐπιχειρήσει ἀπαραιτήτως δέον νὰ συνεργασθῶσι διὰ τὴν παραγωγὴν τῶν προϊόντων.

Ἡ ἀναζήτησις τοῦ τρόπου τῆς δικαιοτέρας κατανομῆς τῶν καρπῶν τῆς ἐργασίας, ἡ ἐξεύρεσις καὶ πληρωμὴ εἰς τὸν ἐργάτην τῆς ἀκριβοῦς ἀξίας τῆς ἐργασίας του, ἀπησχόλησε σοβαρῶς τὰ διάφορα κοινωνικοοικονομικὰ συστήματα, τὰ ὁποῖα ἐπεζήτησαν τὴν συνδιαλλαγὴν τῶν δύο ἀντιθέτων τάσεων, τοῦ ἐργοδότου ἀφ' ἑνός, ἐπιδιώκοντος νὰ προσπορισθῇ τὸ μάξιμουμ τῆς παραγωγῆς μὲ τὸ μίνιμουμ τοῦ μισθοῦ, καὶ τοῦ ἐργάτου ἀφ' ἑτέρου, ὁ ὁποῖος φυσικὸν εἶναι νὰ ἐπιδιώκῃ τὸ μάξιμουμ τοῦ μισθοῦ μὲ τὸ μίνιμουμ τῆς προσπαθείας. Ἐν τῇ ἐρεύνῃ τοῦ προβλήματος τοῦ δικαίου μισθοῦ δὲν κυριαρχεῖ ἡ οἰκονομικὴ ἄποψις. Τὸ ζήτημα τοῦτο ἐξετάζεται περισσότερον ἀπὸ τῆς κοινωνικῆς του πλευρᾶς, ἰδιαιτέρως δὲ λαμβάνονται ὑπ' ὄψιν αἱ ἀνάγκαι τοῦ ἐργάτου.

Πολυάριθμοι εἶναι αἱ ἀναπτυχθεῖσαι ἀπόψεις ἐπὶ τοῦ ζητήματος «ὁποῖος πρέπει νὰ εἶναι ὁ ἐργατικὸς μισθός». Ἐθεωρήθη οὕτω: Ὅτι ἡ δικαιοσύνη ἀπαιτεῖ, ὅπως ὑπάρχῃ ἰσοτιμία μεταξὺ τῶν ἀμοιβαίων παροχῶν ἐργάτου καὶ ἐργοδότου, μεταξὺ τῆς παρασχεθείσης ἐργασίας καὶ τοῦ πληρωθέντος μισθοῦ, ὅτι δηλαδὴ δίκαιον εἶναι νὰ λάβῃ ὁ ἐργάτης τὸ ἰσότιμον τῆς ἀξίας, τὴν ὁποίαν ἐναπέθεσεν εἰς τὸ προϊόν. Ὅτι ἐξ ἄλλου εἶναι δίκαιον νὰ ἐξασφαλισθῇ διὰ τὸν ἐργάτην ἓν ἐλάχιστον ὅριον ἡμερομισθίου, τὸ ὁποῖον νὰ ἐπαρκῇ εἰς τὰς συνήθεις ἀνάγκας τῆς ζωῆς του. Ὅτι εἶναι ἐπίσης δίκαιον τὸ ἐργατικὸν ἡμερομίσθιον νὰ ἐπαρκῇ εἰς μίαν μέσην κοινωνικὴν ζωὴν τοῦ ἐργάτου καὶ νὰ τοῦ παρέχῃ τὰ μέσα τῆς ἀναπτύξεως τῆς οἰκογενείας του, νὰ αὐξάνῃ δὲ διαρκῶς, ἀναλόγως τῆς ὑπερτιμήσεως τῆς ζωῆς καὶ τῆς ἀναπτύξεως τῶν ἀτομικῶν καὶ κοινωνικῶν ἀναγκῶν τοῦ ἐργάτου (salaire vital). Ὡσαύτως ὅτι εἶναι δίκαιον ν' ἀναγνωρισθῇ ἐπηυξημένος μισθὸς διὰ τοὺς οἰκογενειάρχας, ὁ ὁποῖος νὰ αὐξάνῃ ἀναλόγως πρὸς τὰ οἰκογενειακὰ αὐτῶν βάρη (οἰκογενειακὸς μισθός). Ὅτι τέλος ὁ μισθὸς τότε μόνον δύναται νὰ θεωρηθῇ ἐπαρκής, ὅταν ἐκτὸς τῆς μετρίας συντηρήσεως, τὴν ὁποίαν δέον ν' ἀσφαλίζῃ εἰς τὸν ἐργάτην, ἐπιτρέπῃ συγχρόνως εἰς αὐτὸν νὰ σχηματίσῃ καὶ μικρόν τι κεφάλαιον πρὸς ἀντιμετώπισιν διαφόρων ἐκτάκτων κινδύνων.

Ὁ Πάπας Λέων ὁ ΙΓ' εἰς τὴν περὶ ἐργατῶν ἐγκύκλιόν του («Rerum Novarum») διεκήρυξεν ὅτι «ἀποτελεῖ νόμον φυσικῆς δικαιοσύνης τὸ ὅτι ὁ μισθὸς δὲν πρέπει νὰ εἶναι ἀνεπαρκὴς διὰ τὴν συντήρησιν ἐγκρατοῦς καὶ τιμίου ἐργάτου». Ὁ δὲ Γάλλος οἰκονομολόγος Joseph Garnier ἐχαρακτήριζεν ὡς ἐπαρκῆ τὸν μισθὸν ἐκεῖνον, ὁ ὁποῖος θὰ παρεῖχεν εἰς τὸν μισθωτόν: 1) τὰ μέσα τῆς ζωῆς εἰς τὸ περιβάλλον εἰς τὸ ὁποῖον εὑρίσκεται χωρὶς νὰ ἀνέλθῃ ἢ νὰ κατέλθῃ εἰς τὴν κοινωνικὴν κλίμακα· 2) τὰ μέσα τῆς διατηρήσεως καὶ ἀνανεώσεως τῶν ἐργαλείων του ἐὰν κέκτηται τοιαῦτα· 3) τὰ μέσα τῆς ἀποσβέσεως τοῦ κεφαλαίου τοῦ ὑπὲρ αὐτοῦ δαπανηθέντος παρὰ τῶν γονέων του (μὲ τὸ ὁποῖον κεφάλαιον θὰ ἀναθρέψῃ καὶ αὐτὸς τὰ τέκνα του, τὰ ὁποῖα θὰ τὸν ἀντικαταστήσουν βραδύτερον ἐν τῇ κοινωνίᾳ)· 4) τὴν δυνατότητα ἀποταμιεύσεως πρὸς ἐξοικονόμησιν τῶν μέσων ζωῆς, ὅταν ἕνεκα γήρατος ἢ ἄλλων λόγων θὰ παύσῃ ἐργαζόμενος· 5) ἓν περίσσευμα, μὲ τὸ ὁποῖον θὰ βελτιώσῃ τὴν κατάστασίν του καὶ θὰ προαχθῇ κοινωνικῶς.

Ἐζητήθη ἐπίσης ὁ περιορισμὸς τῶν ὑψηλῶν μισθῶν, ὁ καθορισμὸς ἑνὸς «ἀνωτάτου ὁρίου μισθῶν», ὑπεστηρίχθη δ' ὁμοίως ἡ ἀρχὴ τῆς ἰσότητος τῶν μισθῶν δι' ὅλους τοὺς ἐργάτας, ἀνεξαρτήτως τῶν προσόντων των, τῶν ἱκανοτήτων των καὶ τῆς παραγωγικότητός των. Ἐπίσης ἡ ἀρχή: «δι' ἴσην ἐργασίαν ἴσος μισθός», ἀποβλέπουσα κυρίως εἰς ἐξομοίωσιν τοῦ ἡμερομισθίου ἀδιακρίτως φύλου δι' ἐργασίαν ἴσης ἀξίας, ἥτις περιελήφθη καὶ εἰς τὸ ἄρθρον 427 τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν (βλ. λ. *ἐργασίας* διεθνὴς ὀργάνωσις). Ὑπεστηρίχθη ἀκόμη ἡ ἀρχὴ «εἰς ἕκαστον ἐργάτην συμφώνως πρὸς τὰς ἱκανότητάς του, εἰς ἕκαστον συμφώνως πρὸς τὰς ἀνάγκας του». Τέλος δὲ αἱ ἐπαναστατικαὶ σοσιαλιστικαὶ σχολαὶ ζητοῦν τὴν κατάργησιν τῶν μισθῶν καὶ ἡμερομισθίων ὑπὸ τὴν σημερινὴν αὐτῶν μορφὴν διὰ τῆς καταργήσεως τῶν ἐργοδοτῶν καὶ τῆς παραδόσεως τῶν ἐργαλείων τέχνης εἰς αὐτονόμους ἐργατικὰς ὁμάδας.

Ὁ Karl Marx, ὅστις θεωρεῖ τὴν ἐργασίαν ὡς τὸν μόνον δημιουργὸν πάσης οἰκονομικῆς ἀξίας, ζητεῖ νὰ περιέρχεται εἰς τὸν ἐργαζόμενον ἀκέραιον τὸ προϊὸν τῆς ἐργασίας αὐτοῦ. Φρονεῖ ὅμως ὅτι, πρὸ πάσης διανομῆς εἰς τοὺς ἐργαζομένους τοῦ μεριδίου των ἐκ τοῦ προϊόντος τοῦ προελθόντος ἐκ τῆς ἐργασίας αὐτῶν, πρέπει ν' ἀφαιρῆται ἐκ τοῦ ὁλικοῦ ποσοῦ τῶν ὑπὸ τῆς κοινωνίας παραγομένων προϊόντων: 1) ὅ,τι χρειάζεται διὰ τὴν ἀντικατάστασιν τῶν ἀχρηστευομένων μέσων παραγωγῆς· 2) ὅ,τι ἀπαιτεῖται διὰ τὴν ἐπέκτασιν τῆς παραγωγῆς· 3) ἡ ἀναγκαία ἀποταμίευσις πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ ἀντιμετωπισθοῦν ἐνδεχόμεναι κρίσεις καὶ ἀτυχήματα (π. χ. κακὴ ἐσοδεία κ.λ.π.)· 4) τὰ γενικὰ ἔξοδα τοῦ κοινωνικοῦ συνόλου (γενικαὶ ἀνάγκαι τῆς κοινωνίας, δαπάναι συντηρήσεως τῶν ἀναπήρων κ.λ.π.). Τὸ ἀπομένον μετὰ τὴν ἀφαίρεσιν τῶν ποσῶν τούτων ὑπόλοιπον δέον νὰ διανέμεται μεταξὺ τῶν ἐργαζομένων.

Ἐπὶ τοῦ ζητήματος τούτου τοῦ «δικαίου μισθοῦ», δηλαδὴ τῆς δικαιοτέρας κατανομῆς τοῦ ἐθνικοῦ εἰσοδήματος εἰς τοὺς συντελεστὰς τῆς παραγωγῆς, κεῖται *ὁλόκληρον τὸ κοινωνικὸν πρόβλημα*. Μὲ τὸ ζήτημα τῆς καλυτέρας κατανομῆς τῶν καρπῶν τῆς ἐργασίας συνδέεται τὸ ζήτημα τῆς καταργήσεως τῆς δυστυχίας τῶν ἐργαζομένων μαζῶν καὶ τῆς εὐρυτέρας συμμετοχῆς πάντων εἰς τὰ ἀγαθὰ τοῦ πολιτισμοῦ. Εἶναι δὲ πάντως παραδεκτὸν σήμερον ὅτι τὸ σύστημα τῆς ἐμμίσθου ἐργασίας ἐξελίσσεται ἀπαύστως πρὸς κατεύθυνσιν εὐνοοῦσαν τὴν ἐργασίαν τῆς ὁποίας τὸ μερίδιον ἐν τῇ κατανομῇ τῶν ἀγαθῶν γίνεται διαρκῶς μεγαλύτερον.

***VI) Συστήματα καθορισμοῦ τοῦ μισθοῦ.*** Αἱ δύο βασικαὶ μορφαὶ ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας, ἡ ἀμοιβὴ κατὰ χρόνον καὶ ἡ ἀμοιβὴ κατ' ἀποκοπήν,

Digitized by Google

κατεδείχθη ὅτι παρεῖχον ἔδαφος εἰς ἑκατέρωθεν ἐκμεταλλεύσεις, οὕτω δὲ ἤρχισαν κυρίως ἀπὸ τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος νὰ συμπληροῦνται δι᾽ ἄλλων συστημάτων. Τὰ συστήματα ταῦτα, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον πολύπλοκα, ὡς βάσιν εἶχον τὴν ὑποκίνησιν τοῦ ζήλου τῶν μισθωτῶν πρὸς μεγαλυτέραν παραγωγήν, τὴν ὁποίαν παρακολουθεῖ ἀνάλογος τοῦ μισθοῦ αὔξησις. Διὰ τὸν καθορισμὸν δ᾽ ἑκάστοτε τοῦ μισθοῦ τὰ συστήματα ταῦτα τὴν μείζονα σημασίαν δὲν ἀποδίδουν εἰς τὸν χρόνον, ἀλλ᾽ εἰς ἄλλον τινὰ παράγοντα, τὴν καταβαλλομένην παρὰ τοῦ ἐργάτου προσπάθειαν, ἡ ὁποία ὑπολογίζεται ἐν σχέσει μὲ τὴν παραγωγικότητα, τὴν διάρκειαν καὶ τὸ δυσχερὲς τῆς ἐργασίας.

Ἀνεπτύχθη οὕτως ἐν πρώτοις τὸ *σύστημα τοῦ «μισθοῦ μετὰ βραβείων»*, κατὰ τὸ ὁποῖον πρὸς τόνωσιν τῆς φιλεργίας τοῦ ἐργάτου χορηγεῖται εἰς αὐτόν, ἐκτὸς τοῦ παγίου μισθοῦ, καὶ ἓν ἐπιμίσθιον μεταβλητόν, ὑπολογιζόμενον εἴτε ἐπὶ τῇ βάσει τῆς παραγωγικότητος αὐτοῦ εἴτε ἐπὶ τῆς ποιοτικῆς βελτιώσεως τοῦ παραχθέντος ἔργου, εἴτε ἐπὶ τῆς ἐξοικονομήσεως χρόνου (σύστημα Rowan), εἴτε ἐπὶ τῆς οἰκονομίας πρώτων ὑλῶν, εἴτε ἕνεκα μακρᾶς ὑπηρεσίας, καλῆς διαγωγῆς, ἀποφυγῆς δυστυχημάτων κλπ.

Συναφὲς εἶναι τὸ *σύστημα τοῦ «προοδευτικοῦ μισθοῦ»*, καθ᾽ ὃ παραχωρεῖται εἰς τοὺς ἐργάτας, τῶν ὁποίων ἡ παραγωγὴ ὑπερβαίνει ἐντὸς ὡρισμένου χρονικοῦ διαστήματος μίαν καθωρισμένην μέσην ἀπόδοσιν, πλὴν τοῦ βασικοῦ μισθοῦ καὶ πρόσθετος ἀμοιβή, αὐξανομένη προοδευτικῶς ἀναλόγως τοῦ παραγομένου ἔργου.

Κατὰ τὸ *σύστημα τοῦ «μεταβλητοῦ μισθοῦ»* ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας καθορίζεται ἑκάστοτε ἐκ τῆς τιμῆς τοῦ παραγομένου προϊόντος, παρακολουθοῦσα τὰς αὐξομειώσεις τούτου (π. χ. ἐν Ἀγγλίᾳ τὸ σύστημα Sliding Scale, τὸ ὁποῖον ἐφηρμόσθη ἐκεῖ εἰς τὰς μεταλλευτικὰς καὶ μεταλλουργικὰς ἐπιχειρήσεις).

Παρεμφερὲς εἶναι τὸ σύστημα, καθ᾽ ὃ ὁ μισθὸς μεταβάλλεται ἑκάστοτε ἀναλόγως τῆς ἀκριβείας τῆς ζωῆς, παρακολουθοῦν τὰς αὐξομειώσεις τοῦ τιμαρίθμου, πρὸς τὸν ὁποῖον ἑκάστοτε προσαρμόζεται (*σύστημα τιμαριθμικῶν μισθολογικῶν κλιμακίων*).

Ἴδιον σύστημα εἶναι τὸ *σύστημα τῶν οἰκογενειακῶν ἐπιδομάτων*. Τὸ ἐπιμίσθιον, τὸ ὁποῖον κατὰ τὸ σύστημα τοῦτο παρέχεται εἰς τὸν οἰκογενειάρχην ἐργάτην, ἀναλόγως τῶν οἰκογενειακῶν αὐτοῦ βαρῶν, εἶναί τι ἔξω τοῦ μισθοῦ, συνήθως δὲ δὲν βαρύνει ἀμέσως τοὺς ἐργοδότας, ἀλλὰ χορηγεῖται παρὰ τῶν «ταμείων συμψηφισμοῦ», τὰ ὁποῖα συντηροῦνται ἐξ εἰσφορῶν τῶν ἐργοδοτῶν.

Πολυάριθμα ἐξ ἄλλου εἶναι τὰ συστήματα, τὰ ὁποῖα ἀνεπτύχθησαν μὲ βάσιν τὴν *συμμετοχὴν τοῦ ἐργάτου εἰς τὰ κέρδη* τῆς ἐπιχειρήσεως (συμμετοχὴ εἰς τὰ κέρδη μετὰ ἢ ἄνευ ὡρισμένου μισθοῦ, μετὰ ἢ ἄνευ συμμετοχῆς εἰς τὴν διοίκησιν, ἔκδοσις ἐργατικῶν μετοχῶν κλπ.). Τὸ σύστημα τῆς συμμετοχῆς εἰς τὰ κέρδη ἀκολουθεῖται εἰς εὐρυτέραν κλίμακα προκειμένου περὶ τοῦ ἀνωτέρου προσωπικοῦ τῶν ἐπιχειρήσεων.

Ἐπίσης ἡ *συνεταιριστικὴ ὀργάνωσις τῆς παραγωγῆς* (συνεργατικαὶ) προτείνεται ὡς σύστημα ἐπιτυγχάνον τὴν καλυτέραν ἀμοιβὴν τῆς ἐργασίας, διότι ὁ ἐργάτης-συνεταῖρος, πλὴν τοῦ μισθοῦ του, ἔχει κατ᾽ ἔτος καὶ συμπληρωματικὸν εἰσόδημα, τὸ μέρισμα, τὸ ὁποῖον ἀντιστοιχεῖ εἰς τὴν συνεταιρικήν του μερίδα.

Ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῶν βραβείων ἀναλόγως τῆς παραγωγῆς βασίζεται καὶ τὸ ὑπὸ τοῦ Ἀμερικανοῦ μηχανικοῦ Taylor ἀναπτυχθὲν σύστημα. Διὰ τοῦ συστήματος τούτου, τὸ ὁποῖον βασίζεται ἐπὶ τῆς ἐπιστημονικῆς ὀργανώσεως τῆς ἐργασίας, τῆς ὀρθολογιστικῆς ὀργανώσεως (rationalisation) τῆς παραγωγῆς, ἐπιδιώκεται ἡ μεγαλυτέρα δυνατὴ ἀπόδοσις τοῦ ἀνθρωπίνου παράγοντος, τοῦ ἐργάτου, ὁ ὁποῖος συμμετέχει ἐμμέσως εἰς τὰ κέρδη τὰ πραγματοποιούμενα παρὰ τοῦ ἐργοδότου ἐκ τῆς προσπαθείας του ταύτης. Τὸ *σύστημα Taylor* ἔχει ὡς ἀποτέλεσμα σημαντικὴν ἐξοικονόμησιν χρόνου καὶ ἐργασίας, ἤτοι τὸ «ἀνώτατον ὅριον ἀποδόσεως μὲ τὴν ἐλαχίστην προσπάθειαν καὶ ἐντὸς τοῦ ἐλαχίστου χρόνου». Τὸ ἀποτέλεσμα τοῦτο ἐπιτυγχάνει ἡ ἐπιστημονικὴ ὀργάνωσις τῆς παραγωγῆς, χρησιμοποιούσης τὰ πλέον σύγχρονα διδάγματα τῆς μηχανικῆς εἰς τὴν ἐσωτερικὴν διαρρύθμισιν τῶν ἐργοστασίων καὶ ἡ προσαρμογὴ ἑκάστου ἐργάτου εἰς ἀπασχολήσεις, αἱ ὁποῖαι προσιδιάζουν εἰς τὰς ἰδιαιτέρας αὐτοῦ ἱκανότητας.

Ὡς συνέπεια τοῦ τεϋλορισμοῦ ἀνεπτύχθη ἡ θεωρία τοῦ *«συγχρόνου μισθοῦ»* (salaire moderne), ὅστις καθορίζεται ὄχι ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ χρόνου ἐργασίας, ἢ τοῦ παραχθέντος ἔργου, ἀλλ᾽ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ κόπου, τῆς προσπαθείας τῆς ἀναπτυσσομένης κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐργασίας παρὰ τοῦ ἐργάτου. Ἡ θεωρία αὐτη, ἐκφραζομένη δι᾽ ἀλγεβρικῆς ἐξισώσεως, ἐπιδιώκει νὰ ἐπιτύχῃ ἓν ἰσοζύγιον μεταξὺ τῆς ὡριαίας παραγωγικότητος καὶ τοῦ ὡριαίου μισθοῦ, μεταξὺ τῶν μαθηματικῶς λαμβανομένων παραγόντων «ταχύτης τῆς παραγωγῆς» καὶ «ταχύτης τῆς πληρωμῆς».

Κατὰ τὰ τελευταῖα ταῦτα ἔτη πολλοὺς ἔσχεν ὀπαδοὺς ἡ θεωρία τῶν *«ὑψηλῶν μισθῶν»*, ὑποστηριχθεῖσα ἰδίᾳ ὑπὸ τοῦ Ἀμερικανοῦ βιοη· μηχάνου αὐτοκινήτων Henry Ford. Συνδέεται δὲ ἡ θεωρία αὕτη πρὸς τὸ σύστημα ὀργανώσεως τῆς παραγωγῆς, τὸ ἐπικληθὲν *«φορδισμός»*, ὅπερ ἐπιδιώκει τὴν αὔξησιν τῆς ἀποδόσεως τῆς ἐργασίας διὰ τῆς ἐπιστημονικῆς ὀργανώσεως τῆς ἐκμεταλλεύσεως. Ἡ ἐπιτυχία τοῦ ἐφαρμοσθέντος ἐν τῇ ἐπιχειρήσει τοῦ Ford συστήματος ὑπῆρξε πρωτοφανής. Ἐπετεύχθη δηλαδὴ δι᾽ αὐτοῦ αὔξησις τῆς παραγωγῆς καὶ καταπληκτικὴ ἐλάττωσις τῆς παραγωγικῆς δαπάνης, αἵτινες ἐπέτρεψαν σημαντικὴν ὕψωσιν τῶν μισθῶν. Οὕτω, ὡς ἀναφέρει ὁ Ford εἰς τὸ βιβλίον του «Ἡ ζωή μου καὶ τὸ ἔργον μου», τὸ ἐλάχιστον ἡμερομίσθιον εἰς τὴν ἐπιχείρησίν του εἶναι 6 δολλάρια (300 σημεριναὶ δραχμαί).

Τὸ σύστημα τῶν ὑψηλῶν μισθῶν ἐφηρμόσθη κυρίως εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς, ὀφείλεται δὲ εἰς τὴν παρατηρηθεῖσαν ἐκεῖ αὔξησιν τῆς παραγωγῆς καὶ τὴν αὔξησιν τῆς ἀποδόσεως τῶν ἐργατῶν. Οἱ ὀπαδοὶ τοῦ συστήματος τούτου θεωροῦν τὰ ὑψηλὰ ἡμερομίσθια ὡς οὐσιώδη ὅρον προόδου ἐν τῇ οἰκονομικῇ ζωῇ, λόγῳ τοῦ ὅτι αὐξάνουν τὴν ἀγοραστικὴν δύναμιν τοῦ μεγαλυτέρου τμήματος τοῦ πληθυσμοῦ καὶ συντελοῦν εἰς τὴν διαρκῆ αὔξησιν τῆς παραγωγῆς.

Ὁ μέγας ἀριθμὸς τῶν προτεινομένων μεθόδων καθορισμοῦ τῶν μισθῶν καταδεικνύει ὅτι τὸ ζήτημα τοῦτο εἶναι τὸ βασικώτερον καὶ δυσκολώτερον πρόβλημα, τὸ ὁποῖον δημιουργοῦν αἱ βιομηχανικαὶ σχέσεις, δεδομένου ὅτι ἐκ τοῦ καθορισμοῦ τοῦ μισθοῦ ἐξαρτᾶται οὐ μόνον ἡ εὐημερία τῆς βιομηχανίας, διὰ τὴν ὁποίαν συνηθέστατα τὸ μεγαλύτερον ποσοστὸν τοῦ κόστους τῶν προϊόντων της εἶναι ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας, ἀλλὰ καὶ ἡ βελτίωσις τοῦ ἐπιπέδου τῆς ζωῆς τῶν ἐργατῶν. Παρὰ τὴν πληθὺν ὅμως τῶν διαφόρων μισθοδοτικῶν συστημάτων, πολλὰ τῶν ὁποίων εἴς τινας χώρας ἔχουν εὐρεῖαν διάδοσιν, οὐδὲν ἐξ αὐτῶν ἐπέτυχε μέχρι τοῦδε νὰ γενικευθῇ, ἐνῷ ἐπὶ μακρὸν ἐκυριάρχησε, δεσπόζει δὲ ἔτι καὶ σήμερον εἰς τὰς πλείστας τῶν ἐπιχειρήσεων, τὸ σύστημα τῆς κατὰ χρόνον ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας, τὸ «ἡμερομίσθιον».

***VII) Διακυμάνσεις τοῦ μισθοῦ.*** Τὸ ποσὸν τῶν ἐργατικῶν μισθῶν κυμαίνεται ἀπαύστως. Ὁ Charles Gide, στηριζόμενος εἰς πληθὺν στατιστικῶν, εὑρίσκει ὅτι οἱ ἐργατικοὶ μισθοὶ ὑπερεδιπλασιάσθησαν κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος. Σήμερον δὲ τὰ ἡμερομίσθια παρουσιάζουν γενικῶς σπουδαίαν αὔξησιν ἐν σχέσει μὲ τὰ προπολεμικὰ τοιαῦτα, ἡ δὲ διαφορὰ ἀποβαίνει σημαντικὴ ἐὰν γίνῃ σύγκρισις μὲ τὰ καταβαλλόμενα πρὸ ἑνὸς περίπου αἰῶνος.

Διὰ τὴν σύγκρισιν ταύτην ὡς καὶ διὰ τὴν σύγκρισιν τῶν ἡμερομισθίων τῶν διαφόρων κρατῶν καὶ διὰ πᾶσαν στατιστικὴν ἐπὶ τοῦ μισθοῦ ἔρευναν γίνεται διάκρισις τοῦ *«ὀνομαστικοῦ μισθοῦ»*, τοῦ ἐκφραζομένου εἰς χρῆμα, ὅστις, μεταπολεμικῶς ἰδίᾳ, ὑπέστη μεγάλας διακυμάνσεις ἕνεκα τῆς πτώσεως τοῦ νομίσματος, ἀπὸ τὸν *«πραγματικὸν μισθόν»*, ὑπολογιζόμενον ἐν σχέσει μὲ τὸ κόστος τῆς ζωῆς (τὸ ὁποῖον κατὰ κανόνα καθορίζεται λαμβανομένου ὑπ᾽ ὄψιν τῶν τιμῶν ὡρισμένου ἀριθμοῦ τροφίμων καὶ ἄλλων εἰδῶν λαϊκῆς καταναλώσεως) καὶ ἐκφράζοντα τὸ ποσὸν τῶν χρησίμων ἀγαθῶν, τὰ ὁποῖα ἑκάστοτε δύναται νὰ προσπορίσῃ εἰς τὸν μισθωτόν. Τὸ ποσὸν δὲ τῆς ἱκανοποιήσεως, τὸ ὁποῖον παρέχει ὁ μισθός, καλεῖται καὶ *«ἀγοραστικὴ δύναμις τοῦ μισθοῦ»*. Αἱ διακυμάνσεις τοῦ πραγματικοῦ μισθοῦ δὲν ἐμφανίζουν τὰς αὐτὰς σημαντικὰς διαφοράς, τὰς ὁποίας παρουσιάζουν αἱ μεταβολαὶ τοῦ ὀνομαστικοῦ τοιούτου· ἡ στατιστικὴ ἐν τούτοις ἔρευνα ἀποδεικνύει ὅτι καὶ οἱ πραγματικοὶ μισθοὶ ηὐξήθησαν. Ἀλλ᾽ ἡ αὔξησις αὐτη τῶν ἐργατικῶν μισθῶν, ἡ παρατηρηθεῖσα ἰδίᾳ μεταπολεμικῶς, ἐὰν διέψευσε τὰς προβλέψεις τοῦ Ricardo καὶ τοῦ Lassalle, δὲν ἐβελτίωσεν ὅμως αἰσθητῶς τὴν οἰκονομικὴν κατάστασιν τῆς ἐργατικῆς τάξεως, ἕνεκα τοῦ ἀενάου πολλαπλασιασμοῦ τῶν ἀνθρωπίνων ἀναγκῶν, πρᾶγμα ὅπερ ἀποτελεῖ τὴν ἀναπόφευκτον συνέπειαν τῆς προόδου τοῦ πολιτισμοῦ.

Πολλοὶ ἀπὸ τοὺς ζητοῦντας νὰ ἑρμηνεύσουν τὴν διαπιστουμένην αὔξησιν τῶν ἐργατικῶν μισθῶν, τὴν ἀποδίδουν κυρίως εἰς τὴν σὺν τῷ χρόνῳ ἀναπτυχθεῖσαν καὶ ἀποκτήσασαν ἐξαιρετικὴν πλέον δύναμιν συνδικαλιστικὴν ὀργάνωσιν τῶν ἐργατῶν. Διαπιστοῦν δὲ οὗτοι ὅτι αὐξήσεις μισθῶν παρατηροῦνται ἀκριβῶς κατὰ τὰς περιόδους τῆς ἐντατικωτέρας συνδικαλιστικῆς δράσεως.

Ἡ ἔρευνα τῶν διακυμάνσεων τοῦ ποσοῦ τῶν ἐργατικῶν μισθῶν γίνεται διὰ τῆς ἐξευρέσεως ἑνὸς μέσου αὐτῶν ὁρίου, λαμβανομένων ὑπ᾽ ὄψει ὅλων τῶν ἀπειροπληθῶν ποικιλιῶν καὶ συστημάτων μισθῶν. Διότι, ὡς γνωστόν, τὸ ποσὸν τοῦ μισθοῦ δὲν εἶναι τὸ αὐτὸ δι᾽ ὅλας τὰς ἐργασίας, ἀλλὰ διαφέρει καὶ κατ᾽ εἶδος ἐργασίας. Δέον δὲ νὰ μὴ λησμονῆται ὅτι δὲν ὑπάρχει ἓν μόνον εἶδος ἐκδηλώσεως τῆς ἐργατικῆς δυνάμεως, ἀλλ᾽ ἄπειρα. Ἐκεῖνο δὲ τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖ τὸ ἀντικείμενον ἀνταλλαγῆς εἰς ἑκάστην εἰδικὴν περίπτωσιν δὲν εἶναι ἡ ἐργασία, ἡ «ἐργατικὴ δύναμις» ἐν γένει, ἀλλ᾽ ἡ ἐργασία ὡρισμένου εἴδους. Ἕνεκα λοιπὸν τῶν εἰδικοτήτων τῆς ἐργασίας παρατηροῦνται καὶ ἄπειροι ποικιλίαι μισθῶν. Οἱ εἰδικευμένοι ἐργάται, οἵτινες κέκτηνται ἰδιαιτέραν φυσικὴν ἢ ἐπίκτητον ἐπιτηδειότητα διὰ τὴν ἐκτέλεσιν ὡρισμένου εἴδους ἐργασίας, ἀμείβονται κατὰ κανόνα καλύτερον τῶν μὴ εἰδικευμένων ἐργατῶν. Παρατηροῦνται ὅμως διαφοραὶ μισθοῦ ἀκόμη καὶ προκειμένου περὶ ἐργασιῶν τῆς αὐτῆς φύσεως, τῆς αὐτῆς ἐπαγγελματικῆς εἰδικότητος, ὀφειλόμεναι εἰς ποικίλα αἴτια (ἀτομικαὶ διαφοραὶ ἐργασίας, ἱεραρχία, ἐπιτηδειότης, ἱκανότης, πεῖρα, οἰκονομικὴ εὐημερία μιᾶς ἐπιχειρήσεως, εὐμενέστεροι ὅροι ὑγιεινῆς καὶ ἀσφαλείας τῶν ἐργατῶν εἰς ἑτέραν ἐπιχείρησιν κτλ.). Διαφοραὶ μισθῶν δι᾽ ἐργασίας τῆς αὐτῆς φύσεως παρατηροῦνται ἐπίσης καὶ ἀπὸ τόπου εἰς τόπον. Μεταξὺ τῶν διαφόρων τούτων δέον νὰ σημειωθῇ καὶ ἡ ἀνισότης τῶν μισθῶν μεταξὺ ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν καὶ ἀνηλίκων, τῶν ὁποίων οἱ μισθοὶ διὰ τὸ αὐτὸ εἶδος ἐργασίας εἶναι κατὰ κανόνα μικρότεροι τῶν μισθῶν τῶν ἀνδρῶν. Ἀπότομοι διακυμάνσεις μισθῶν παρατηροῦνται ἑκάστοτε ἐπ᾽ ἀφορμῇ σοβαρῶν πολιτικῶν γεγονότων, οἷον πόλεμοι, οἰκονομικαὶ κρίσεις κλπ.

***VIII) Στατιστικαὶ μισθοῦ.*** Αἱ πολύπλοκοι καὶ πολυάριθμοι μέθοδοι ἀμοιβῆς τῆς ἐργασίας καὶ αἱ ἄπειροι ποικιλίαι καὶ διαφοραὶ τῶν μισθῶν ἀποτελοῦν διὰ τὴν στατιστικὴν τῶν μισθῶν δυσυπέρβλητα ἐμπόδια, ἡ δὲ κατάρτισις ἀκριβοῦς στατιστικῆς μισθῶν εἶναι ἔργον δυσχερέστατον.

Εἰς ἀρκετὰ κράτη (μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ εἰς τὴν Ἑλλάδα) δὲν ἔχει εἰσέτι συστηματοποιηθῆ ἡ στατιστικὴ ἔρευνα τῶν μισθῶν. Ἡ σοβαρότης ὅμως τοῦ ζητήματος τούτου συνετέλεσεν, ὥστε νὰ καθιερωθῶσιν εἰς τὰ περισσότερα τῶν κρατῶν, ἰδίᾳ ἀπό τινων ἐτῶν, ἐπιστημονικαὶ μέθοδοι πρὸς στατιστικὴν μελέτην τῶν προβλημάτων τοῦ μισθοῦ, ἀναγνωρισθείσης γενικῶς πλέον τῆς ἀνάγκης, ὅπως ἐρευνᾶται ἀπὸ ὅλας αὐτῆς τὰς ἐκφάνσεις ἡ ἀνθρωπίνη ζωὴ καὶ ἰδίᾳ οἱ τοιαύτης σπουδαιότητος ἀνθρώπινοι θεσμοί, ὡς τὸ σύστημα τῆς ἐμμίσθου ἐργασίας.

Τὴν διεθνῆ στατιστικὴν ἔρευναν ἐπὶ τῶν ἐργατικῶν μισθῶν εἶχεν ἤδη ἀπὸ ἐτῶν ἐγκαινιάσει τὸ ὑπουργεῖον Ἐργασίας τῆς Ἀγγλίας. Τὸ ἔργον τοῦτο, τὸ ὁποῖον ἐκρίθη ὅτι ἐνέχει ἐξαιρετικὴν σημασίαν, δεδομένου ὅτι διὰ τῆς ἐργατικῆς στατιστικῆς διευκολύνεται ἡ μελέτη τῶν προβλημάτων τῆς ἐργασίας ἀπὸ διεθνοῦς ἀπόψεως, ἀνέλαβεν ἀπὸ τῆς συστάσεώς του νὰ συνεχίσῃ καὶ νὰ συστηματοποιήσῃ τὸ Διεθνὲς Γραφεῖον Ἐργασίας (βλ. λ. *ἐργασίας* διεθνὴς ὀργάνωσις). Τῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ γραφείου τούτου συνῆλθον μέχρι τοῦδε τέσσαρες ἐπίσημοι διεθνεῖς συνδιασκέψεις στατιστικῶν τῆς ἐργασίας, αἱ ὁποῖαι ἔθεσαν τὰς βάσεις πρὸς συντονισμένην διεξαγωγὴν τοῦ σχετικοῦ στατιστικοῦ ἔργου εἰς τὰ διάφορα κράτη ὑπὸ ὁμοιομόρφους γενικὰς κατευθύνσεις. Κατὰ τὴν τελευταίαν ἐκ τῶν συνδιασκέψεων τούτων, συνελθοῦσαν ἐν Γενεύῃ τὸν Μάϊον τοῦ 1931, ἐξητάσθη ἀκριβῶς τὸ ζήτημα τῆς βελτιώσεως τῶν μεθόδων τῶν ἀκολουθουμένων μέχρι σήμερον ὑπὸ τοῦ Διεθνοῦς Γραφείου Ἐργασίας διὰ τὴν σύγκρισιν τῆς ἀγοραστικῆς δυνάμεως τῶν μισθῶν τῶν διαφόρων χωρῶν. Καθωρίσθησαν δὲ κατ᾽ αὐτὴν αἱ τεχνικαὶ λεπτομέρειαι τῆς σχετικῆς ἐργασίας καὶ αἱ ἀκολουθητέαι μέθοδοι ἐρεύνης τῶν προβλημάτων τοῦ μισθοῦ. Εἰς πλεῖστα κράτη ἔχουν ἤδη ἀπὸ ἐτῶν ἀρχίσει ὀργανούμεναι ἔρευναι ἐπὶ τῶν οἰκογενειακῶν προϋπολογισμῶν τῆς ἐργατικῆς τάξεως, ἐσυστηματοποιήθη δὲ ἐκ παραλλήλου καὶ ἡ παρακολούθησις τῶν διακυμάνσεων τῶν ποσῶν τῶν ὀνομαστικῶν καὶ τῶν πραγματικῶν μισθῶν.

Τὸ ἐπὶ τοῦ μισθοῦ στατιστικὰ δεδομένα τῶν διαφόρων κρατῶν συγκεντρώνει ἀνελλιπῶς τὸ Διεθνὲς Γραφεῖον Ἐργασίας, τὸ ὁποῖον καὶ δημοσιεύει τακτικῶς διεθνεῖς συγκριτικοὺς στατιστικοὺς πίνακας μισθῶν. Οὕτω καθ᾽ ἑξάμηνον δημοσιεύει πίνακας τῶν ὀνομαστικῶν μισθῶν ἀφ᾽ ἑνὸς καὶ ἀφ᾽ ἑτέρου τῶν λιανικῶν τιμῶν τῶν εἰδῶν πρώτης ἀνάγκης εἰς τὰ διάφορα κράτη. Παραθέτομεν ἐνταῦθα (πίναξ Α΄) τὸν πλέον πρόσφατον τοιοῦτον πίνακα, ληφθέντα ἐκ τῆς «Revue Internationale du Travail» τοῦ μηνὸς Μαΐου 1931.

Μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον οἱ μισθοὶ ὑπέστησαν καταπληκτικὰς μεταβολάς, ὀφειλομένας ἰδίᾳ εἰς τὴν αὔξησιν τῆς τιμῆς τῶν εἰδῶν πρώτης ἀνάγκης καὶ τὴν νομισματικὴν ἀστάθειαν, εἰς ὅλα δὲ τὰ κράτη τοῦ κόσμου, τόσον τὰ ἐμπόλεμα ὅσον καὶ τὰ οὐδέτερα, παρετηρήθη, ἰδίᾳ ἀπὸ τοῦ ἔτους 1914 μέχρι τοῦ 1919, σημαντικὴ αὔξησις τῶν ὀνομαστικῶν μισθῶν. Ὁ παρατιθέμενος πίναξ (Β΄) δεικνύει τὰς κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη μεταβολὰς τοῦ γενικοῦ ἐπιπέδου τῶν μισθῶν εἰς διάφορα κράτη. Τὸν πίνακα τοῦτον κατηρτίσαμεν ἐκ πλειόνων πινάκων, δημοσιευομένων εἰς τὸ τεῦχος τοῦ Ἰουλίου 1930 τῆς «Revue Internationale du Travail». Δέον ὅμως νὰ σημειωθῇ ὅτι, ἕνεκα τῆς διαφορᾶς τῶν ἀκολουθουμένων ὑπὸ τῶν διαφόρων κρατῶν μεθο-

Digitized by Google

δων ὑπολογισμοῦ (ἀλλοῦ οἱ μισθοὶ ὑπολογίζονται καθ' ὥραν, ἀλλοῦ καθ' ἑβδομάδα ἢ κατ' ἔτος, ἀλλοῦ περιλαμβάνονται καὶ αἱ ἐργάτριαι κλπ.) δὲν θὰ εἶναι ἀπολύτως ἀκριβὴς ἡ σύγκρισις τῶν διακυμάνσεων τοῦ ὀνομαστικοῦ μισθοῦ μεταξὺ τῶν διαφόρων κρατῶν.

Ἡ ἐκ τοῦ ὡς ἀνωτέρω πίνακος ἐμφαινομένη αὔξησις τῶν ὀνομαστικῶν μισθῶν δὲν παρατηρεῖται καὶ προκειμένου περὶ τῶν πραγματικῶν τοιούτων, οἵτινες ὅμως ὑφίστανται ἐπίσης διὰ μέσου τοῦ χρόνου διαρκεῖς διακυμάνσεις. Ἐκ πλειόνων στατιστικῶν πινάκων, δημοσιευομένων εἰς τὸ αὐτὸ ὡς ἄνω τεῦχος τῆς «Revue Internationale du Travail», κατηρτίσαμεν ἕτερον πίνακα (Γ'), δεικνύοντα τὰς διακυμάνσεις τοῦ πραγματικοῦ μισθοῦ εἰς διάφορα κράτη.

Τὸ οἰκονομικὸν ὅμως ἐπίπεδον τῆς ἐργατικῆς τάξεως δὲν εἶναι τὸ αὐτὸ καὶ εἰς τὰς διαφόρους χώρας. Οἱ πραγματικοὶ μισθοὶ τῶν διαφόρων κρατῶν παρουσιάζουν σημαντικὰς μεταξὺ των διαφοράς. Οὕτω ἡ ἀγοραστικὴ δύναμις τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ ἐν Ἀγγλίᾳ δύναται νὰ λεχθῇ ὅτι εἶναι σχεδὸν διπλασία ἐν συγκρίσει πρὸς ἄλλας εὐρωπαϊκὰς ἐπικρατείας, ἐν Ἀμερικῇ δὲ πάλιν εἶναι σχεδὸν διπλασία τῆς ἐν Ἀγγλίᾳ. Παραθέτομεν συγκριτικὸν πίνακα (Δ') τοῦ τιμαρίθμου τῶν πραγματικῶν μισθῶν διαφόρων κρατῶν κατὰ Ἰούλιον 1930, δημοσιευθέντα εἰς τὸ τεῦχος τοῦ Ὀκτωβρίου 1930 τῆς «Revue Internationale du Travail». Ἐν αὐτῷ ἡ σύγκρισις γίνεται μὲ βάσιν τὴν Ἀγγλίαν, τῆς ὁποίας ἡ ἀγοραστικὴ δύναμις τῶν μισθῶν θεωρεῖται 100, καὶ εἰς δύο σειράς, τὴν μίαν ἐπὶ τῇ βάσει μόνον τῶν εἰδῶν διατροφῆς καὶ τὴν ἑτέραν ἐπὶ τῇ βάσει καὶ ἄλλων τινῶν εἰδῶν πρώτης ἀνάγκης.

Αἱ ἐλλείψεις αἱ παρατηρούμεναι εἰς τοὺς ἐν λόγῳ πίνακας ὀφείλονται εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι εἶναι περιωρισμένος ἀκόμη ὁ ἀριθμὸς τῶν κρατῶν, τὰ ὁποῖα συγκεντρώνουν κατὰ τρόπον ἀκριβῆ καὶ συστηματικὸν τὰ ἀναγκαῖα ἐπὶ τῶν μισθῶν δεδομένα.

***IX) Νομικὴ προστασία τοῦ μισθοῦ.*** Ὁ μισθὸς ἀποτελεῖ ἀντικείμενον εἰδικῆς νομικῆς προστασίας, ἔκδηλοι δὲ εἶναι οἱ λόγοι οἱ ἐπιβάλλοντες τὴν εἰδικὴν ταύτην ὑπὲρ τοῦ μισθοῦ πρόνοιαν. Ὁ μισθωτὸς ὡς μόνον κεφάλαιόν του διαθέτει τὴν δύναμιν αὐτοῦ, τῆς ὁποίας ἡ καθημερινὴ ἀμοιβὴ—τὸ ἡμερομίσθιον—ἀποτελεῖ τὸν μόνον δι' αὐτὸν πόρον ζωῆς. Ἐὰν ὁ ἐργάτης χάσῃ τὸ μοναδικὸν τοῦτο εἰσόδημα, κινδυνεύει ν' ἀποθάνῃ τῆς πείνης. Δεδομένου ἄρα ὅτι ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας του κέκτηται τοιαύτην σημασίαν, ἐνέχουσα χαρακτῆρα διατροφῆς, ἐθεωρήθη κυρίως ἀπὸ μιᾶς περίπου πεντηκονταετίας ὅτι ἦτο ἐπιβεβλημένον ὅπως τὸ δίκαιον θεσπίσῃ εἰδικὰ μέτρα προστασίας τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ ἀπὸ τῶν διαφόρων κινδύνων, οἱ ὁποῖοι τὸν ἀπειλοῦν. Ἐνῷ δὲ πρότερον τὰ τῆς ἐκμισθώσεως ὑπηρεσιῶν διείποντο ὑπὸ τῶν διατάξεων τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου, ὁ ὁποῖος ἄφινεν ἀπόλυτον ἐλευθερίαν εἰς τὸν ἐργάτην καὶ τὸν ἐργοδότην κατὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς *ἐργατικῆς συμβάσεως* (βλ.λ.), πρᾶγμα ὅπερ προεκάλει ἀδικίας εἰς βάρος τοῦ

## ΠΙΝΑΞ Α'. ΠΟΣΟΝ ΤΩΝ ΩΡΙΑΙΩΝ ΜΙΣΘΩΝ ΚΑΤΑ ΙΑΝΟΥΑΡΙΟΝ 1931.

| Βιομηχανίαι καὶ Ἐπαγγέλματα | Γερμανία | Βέλγιον | Καναδᾶς | Δανία | Ἱσπανία | Αὐστρία | Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | Γαλλία | Ἀγγλία | Ἰρλανδία | Ἰταλία | Λεττονία | Ὁλλανδία | Πολωνία | Πορτογαλία | Σουηδία | Γιουγκοσλαβία | Ἐσθονία |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *Οἰκοδομικαὶ ἐργασίαι* | Μάρκα | Φράγκα | Δολλάρ. | Κορῶν. | Πεσέται | Σελήν. | Δολλάρ. | Φράγκα | Σελ. Π. | Σελ. Π. | Λιρέται | Λὰτ | Φλωρίν. | Ζλότυ | Σκοῦδα | Κορῶν. | Δηνάρ. | Κορῶν. |
| Κτίσται | 1,54 | 6,75 | 1,25 | 2,38 | 1,50 | 1,68 | 1,93 | 6,50 | 1 8½ | 1 10¼ | 2,99 | 0,79 | 1,03 | 1,75 | 2,50 | 3,17 | 8,00 | 0,34 |
| Ξυλουργοὶ κουφωμάτων | 1,55 | 7,00 | 0,90 | 2,02 | 1,65 | 1,60 | 1,65 | 6,25 | 1 8½ | 1 10 | 3,08 | 0,63 | 0,91 | 1,54 | 2,50 | 2,82 | 8,87 | 0,41 |
| Μολυβδουργοὶ | 1,70 | 7,00 | 1,05 | 1,77 | 1,50 | 1,30 | 1,65 | 6,50 | 1 8½ | 1 10¼ | 3,22 | 0,93 | — | — | 2,38 | 2,17 | — | 0,40 |
| Ἐλαιοχρωματισταὶ | 1,49 | 6,50 | 0.70 | 1,90 | 1,56 | 1,90 | 1,65 | 6,50 | 1 7½ | 1 9½ | 2,94 | 0,73 | — | 1,59 | 2,50 | 2,99 | 6,00 | 0,40 |
| Ἐργάται σιδηρῶν κατασκευῶν | — | — | 1,00 | — | 1,50 | 1,56 | 1,93 | 6,50 | 1 6½ | 1 8½ | — | 0,80 | — | 1,64 | 2,50 | 1,68 | — | — |
| Τεχνῖται μπετὸν-ἀρμὲ | 1,54 | 6,75 | } 0,45 | — | 1,62 | 1,56 | 1,65 | 6,50 | 1 3½ | 1 4 | 3,36 | 0,80 | 0.89 | — | 1,50 | 1,99 | 7,26 | — |
| Βοηθοὶ | 1,27 | 5,25 | | 1,78 | 1,00 | 1,29 | 1,03 | 5,50 | 1 3½ | 1 4 | 2,35 | 0,48 | 0,84 | 0,95 | 1,38 | 1,99 | 3,00 | 0,29 |
| *Μηχανικαὶ κατασκευαὶ* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Ἐφαρμ. καὶ τορνευταὶ | } 1,25 | 6,40 | } 0,65 | 1,68 | 1,50 | 1,24 | 0,73 | 6,30 | 1 4 | 1 6¾ | 3,22 | 0,75 | 0,87 | 2,17 | 2,50 | 1,54 | 9,00 | 0,51 |
| Χῦται (εἰς ἄμμον) | | 6,92 | | 1,91 | 1,50 | 1,20 | — | 6,50 | 1 4 | 1 6¾ | 2,85 | 0,76 | 0,87 | 2,05 | 2,50 | 1,74 | 12,00 | 0,43 |
| Προτυποποιοὶ | | 6,87 | 0,80 | 1,87 | 1,50 | 1,45 | 0,88 | 8,00 | 1 5 | 1 6¾ | — | 0,75 | 0,87 | — | 2,50 | 1,63 | 14,00 | 0,49 |
| Βοηθοὶ | 0,82 | 4,78 | 0,45 | 1,32 | 1,00 | 0,88 | 0,51 | 4,30 | 0 11½ | 1 2 | 2,07 | 0,59 | 0,66 | 0,93 | — | 1,28 | 3,50 | 0,30 |
| *Ἐπίπλωσις* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Λεπτουργοὶ | — | 7,05 | — | 1,53 | 1,50 | } 1,40 | 0,61 | 6,75 | 1 9 | 1 10 | 3,40 | 0,62 | 0,78 | — | 2,38 | 1,47 | 7,34 | 0,43 |
| Ταπετσιέρηδες | 1,38 | — | — | 1,62 | 1,65 | | 0,83 | — | 1 9 | 1 10 | 4,23 | 0,84 | 0,78 | — | 2 38 | 1,57 | 8,00 | 0,55 |
| Λουστραδόροι | — | — | — | — | 1,59 | — | 0,58 | — | 1 8½ | 1 10 | 3,40 | — | — | — | 2,38 | 1,47 | 7,50 | 0,50 |
| *Τυπογραφία* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Στοιχειοθέται διὰ χειρὸς | 1,22 | 6,90 | } 0,78 | 1,83 | 1,53 | } 1,47 | 1,32 | 6,60 | 1 10¼ | 1 9 | 3,54 | 1,19 | 0,75 | 2,50 | 2,50 | 1,6[illegible] | 10,85 | 0,60 |
| Στοιχειοθέται μηχανῆς | 1,46 | 7.15 | | 1,83 | 2,08 | | 1,32 | — | 2 1 | 1 10¼ | 3,83 | 1,99 | 0,84 | 3,50 | — | 1,80 | 11,93 | 0,73 |
| Μηχανικοὶ | 1,22 | 6,90 | | 1,78 | 2,12 | 1,62 | 1,32 | 6,85 | 2 2¼ | 1 9 | 3,54 | — | 0,75 | — | 2,50 | 1,60 | 10,85 | 0,66 |
| Βιβλιοδέται | 1,44 | 6,84 | 0,71 | 1,82 | 1,31 | 1,37 | 1,05 | 5,35 | 1 8 | 1 9 | 3,03 | 1,14 | 0,75 | 1,70 | 2,50 | 1,40 | 10,85 | 0.50 |
| Βοηθοὶ | 1,07 | — | — | 1,39 | 0,81 | 0,95 | — | — | 1 5¾ | 1 1¼ | 2,74 | 0'61 | 0,61 | 1,19 | 1,88 | 1,20 | 4,86 | 0,40 |
| *Ἠλεκτρικ. ἐγκαταστάσεις* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Ἠλεκτροτεχνῖται | 1,53 | 6,80 | 0,80 | 1,53 | 1,50 | 1,40 | — | 6,50 | 1 10½ | 1 10 | 4.60 | 0,65 | — | 3,10 | 2,50 | 1,98 | 14,00 | 0,45 |
| *Μεταφοραὶ* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Ὁδηγοὶ τροχιοδρόμων καὶ λεωφορείων | 1,44 | — | } 0,51 | 1,37 | 0,81 | } 1,76 | 0,74 | — | 1 7¼ | 1 3¼ | — | — | 0.90 | 1,47 | 3,13 | 1,72 | 7,50 | 0,16 |
| Εἰσπράκτορες τροχιοδρ. καὶ λεωφορείων | 1,29 | — | | 1,37 | 0,81 | | 0,74 | — | 1 6¼ | 0 10¾ | — | — | 0,83 | 1,47 | — | 1,72 | — | 0,35 |
| Ὁδηγοὶ φορτηγῶν αὐτοκινήτων | 1,40 | — | 0,49 | 1,24 | 1,50 | 1,46 | — | — | 1 6 | 1 5 | — | — | — | — | 3.13 | 1,53 | 6,50 | 0,53 |
| Ἡνίοχοι | 1,14 | — | 0,35 | 1,07 | 1,25 | 1,00 | — | — | 1 2½ | 1 1½ | — | 0,50 | — | — | 2,25 | 1,38 | — | 0,34 |
| Ἀχθοφ. σιδηροδρόμων | 0,97 | — | 0,50 | — | 1,00 | — | — | — | 0 11¾ | 1 0 | — | 0,40 | — | — | 1,88 | 1,47 | — | 0,30 |
| Ἐργάται γραμμῆς (σιδ.) | 1,00 | — | 0,45 | — | 0,64 | — | — | — | 1 0 | 0 11½ | 3,40 | 0,10 | — | — | 1,50 | 1,60 | 4,[illegible]0 | 0,27 |
| *Βιομηχ. εἰδῶν διατροφῆς* | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Ἀρτεργάται | 1,25 | 7,00 | 0,46 | 1,52 | 1,44 | 1,60 | 0,93 | — | 1 3½ | 1 9¼ | | 0,83 | 0,75 | 2,37 | — | 1,64 | 5,00 | 0,29 |

## ΠΙΝΑΞ Β'. ΤΙΜΑΡΙΘΜΟΙ ΤΩΝ ΟΝΟΜΑΣΤΙΚΩΝ ΜΙΣΘΩΝ ΕΙΣ ΔΙΑΦΟΡΑ ΚΡΑΤΗ

| Ἔτη | Ἀγγλία | Αὐστραλία | Γαλλία | Γερμανία | Δανία | Ἑλβετία | Ἐσθονία | Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | Ἰαπωνία | Καναδᾶς | Νέα Ζηλανδία | Πολωνία | Ρουμανία | Σουηδία | Τσεχοσλοβακία | Φινλανδία |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Προπολεμ. | 100 | 100 | 100 | 100 | 100 | 100 | — | 100 | — | 100 | 100 | — | 100 | 100 | 100 | 100 |
| 1920 | — | 148 | — | — | 376 | 209 | — | — | — | 198 | 146 | — | — | — | 784 | 811 |
| 1921 | — | 175 | 400 | — | 371 | 214 | — | 217 | — | 191 | 159 | — | — | 373 | 970 | 969 |
| 1922 | — | 175 | — | — | 283 | 206 | — | — | — | 182 | 154 | — | — | 268 | 1.009 | 1.044 |
| 1923 | — | 171 | — | — | 267 | 198 | 100 | 221 | — | 183 | 151 | — | 1.838 | 253 | 886 | 1.145 |
| 1924 | — | 177 | 440 | 106 | 283 | 204 | 90.9 | 229 | — | 184 | 154 | 119.2 | 2.109 | 258 | 895 | 1.188 |
| 1925 | 196 | 177 | 474 | 129 | — | 205 | 99.3 | 229 | — | 180 | 157 | 126.9 | 2.316 | 265 | 907 | — |
| 1926 | 196 | 189 | 583 | 138 | 273 | 207 | 97.9 | 230 | 100 | 181 | 158 | 73 5 | 2.490 | 268 | 918 | 1 285 |
| 1927 | 196 | 190 | 585 | 146 | 261 | 207 | 102.4 | 233 | 101.9 | 184 | 159 | 100 | 2.714 | 270 | 923 | 1 335 |
| 1928 | 194½ | — | 600 | 157 | 255 | 201 | 108.7 | 233 | 105.1 | 188 | 160 | 109 6 | 2.748 | 273 | 968 | — |
| 1929 | 194 | 194 | 720 | 163 | 257 | — | 112.2 | 238 | 103.7 | 193 | 165 | 119 5 | — | 283 | — | — |
| 1930 | — | — | — | 164 | — | — | — | 243 | 102 8 | — | — | 121.0 | — | — | — | — |

## ΤΙΜΑΡΙΘΜΟΙ ΤΩΝ ΠΡΑΓΜΑΤΙΚΩΝ ΜΙΣΘΩΝ ΕΙΣ ΔΙΑΦΟΡΑ ΚΡΑΤΗ

### ΠΙΝΑΞ Γ'. ΠΡΟΠΟΛΕΜΙΚΩΣ (Βάσις 100) ΚΑΙ ΜΕΤΑΠΟΛΕΜΙΚΩΣ

| Ἔτη | Νότιος Ἀφρική | Αὐστραλία | Ἐσθονία | Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | Γερμανία | Πολωνία | Σουηδία | Τσεχοσλοβακία |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Προπολεμικῶς | 100 | 100 | — | 100 | 100 | — | 100 | 100 |
| 1920 | 90 | 96 | — | 122 | — | — | 115 | — |
| 1921 | 112 | 114 | — | 131 | — | — | 127 | — |
| 1922 | 101 | 119 | — | 128 | — | — | 114 | — |
| 1923 | 101 | 112 | 100 | 138 | — | — | 120 | 127 |
| 1924 | 101 | 116 | 91.8 | 142 | — | 127.2 | 123 | 128 |
| 1925 | 101 | 114 | 92 8 | 138 | 96 | 109.7 | 125 | 125 |
| 1926 | 103 | 113 | 92 4 | 137 | 103 | 97.7 | 130 | 128 |
| 1927 | 102 | 116 | 97.5 | 142 | 105 | 100 | 130 | 124 |
| 1928 | 103 | 118 | 87.1 | 144 | 107 | 107 8 | 132 | 130 |
| 1929 | — | — | 95.9 | 147 | 110 | 115.0 | 137 | — |
| 1930 | — | — | — | — | — | 122.0 | — | — |

### ΠΙΝΑΞ Δ'. ΚΑΤΑ ΙΟΥΛΙΟΝ 1930 (Βάσις Ἀγγλία=100)

| Κράτη | Τιμάριθμος τῶν μισθῶν ἐν σχέσει πρὸς τὰ τρόφιμα | Τιμάριθμος τῶν μισθῶν ἐν σχέσει πρὸς τὰ τρόφιμα θέρμανσιν, φωτισμὸν καὶ καθαριότητα |
|---|---|---|
| Ἀγγλία | 100 | 100 |
| Ἱσπανία | 43 | 40 |
| Ἰταλία | 45 | 39 |
| Σερβία | 49 | 45 |
| Αὐστρία | 50 | 48 |
| Πολωνία | 66 | 61 |
| Γερμανία | 74 | 73 |
| Ὁλλανδία | 84 | 82 |
| Ἰρλανδία | 95 | 93 |
| Σουηδία | 109 | 109 |
| Δανία | 115 | 113 |
| Καναδᾶς | 157 | 155 |
| Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | 188 | 190 |

Digitized by Google

ἐργάτου, σήμερον ἔχουν τεθῆ ὑπὸ τῆς νομοθεσίας ἄπειροι περιορισμοὶ ἐν τῇ συνάψει τῆς συμβάσεως αὐτῆς. Τὸ σπουδαιότερον τμῆμα τοῦ ἐργατικοῦ δικαίου ἀφορᾷ τὴν προστασίαν τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ, περιλαμβάνει δὲ πλῆθος ὑποχρεωτικῶν κανόνων, τῶν ὁποίων ἡ τυχὸν παράβασις ἐκ μέρους τοῦ ἐργοδότου συνεπάγεται συνήθως οὐ μόνον ἀστικὰς ἀλλὰ καὶ ποινικὰς συνεπείας.

Ἡ τοιαύτη νομικὴ προστασία, ἡ ὁποία ἀποβλέπει ἀμέσως εἰς τὸν μισθόν, ἀνάγεται κυρίως: 1) Εἰς προστασίαν τοῦ μισθοῦ ἔναντι τοῦ ἐργοδότου, περιλαμβάνουσαν εἰδικώτερον: α) τὸν καθορισμὸν τοῦ ὁρίου τοῦ μισθοῦ, β) τὸν τρόπον πληρωμῆς, γ) τὸν τόπον πληρωμῆς καὶ δ) τὸν χρόνον πληρωμῆς. 2) Εἰς προστασίαν τοῦ μισθοῦ ἔναντι τῶν πιστωτῶν τοῦ ἐργοδότου. 3) Εἰς προστασίαν τοῦ μισθοῦ ἔναντι τῶν πιστωτῶν τοῦ ἐργάτου· καὶ 4) Εἰς προστασίαν τοῦ μισθοῦ ἐντὸς τῆς ἐργατικῆς οἰκογενείας.

Ἡ μείζονος σημασίας νομικὴ προστασία τοῦ μισθοῦ ἀφορᾷ τὴν ἐξασφάλισιν εἰς τὸν ἐργάτην ἑνὸς ἐλαχίστου ὁρίου ἡμερομισθίου. Αἱ συνέπειαι ἐκ τῆς πληρωμῆς ἀνεπαρκῶν μισθῶν εἶναι καταστρεπτικαὶ ὄχι μόνον διὰ τὴν ἐργατικὴν τάξιν, ἀλλὰ καὶ δι᾽ αὐτὸ τοῦτο τὸ κοινωνικὸν σύνολον, τὴν εὐημερίαν καὶ τὴν εἰρήνην τοῦ ὁποίου ἐπηρεάζουν. Τὸ δικαίωμα ὅθεν ἀλλὰ καὶ τὸ καθῆκον τοῦ κράτους ὅπως ἐπέμβη καὶ ἐγγυηθῇ εἰς τὸν ἐργάτην ἓν ἐλάχιστον ὅριον ἡμερομισθίου δὲν ἀμφισβητεῖται σήμερον. Τοῦτο ἄλλως τε ἐγένετο διεθνῶς παραδεκτὸν διὰ τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν (βλ. λ. *ἐργασίας* διεθνὴς ὀργάνωσις), ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπισήμως ἀναγνωρίζεται ὅτι μεταξὺ τῶν ἐπειγούσης φύσεως μέτρων τῶν δυναμένων νὰ καταργήσουν τὰς αἰτίας τῆς δυστυχίας τῆς ἀνθρωπότητος εἶναι καὶ «ἡ ἐξασφάλισις εἰς τοὺς ἐργάτας ἡμερομισθίου ἐγγυωμένου εἰς αὐτοὺς προσήκοντας ὅρους, ζωῆς, ὡς ἀντιλαμβάνονται ταύτην ἐν τῇ ἐποχῇ καὶ τῇ χώρᾳ αὐτῶν». Ἡ ἀρχὴ τοῦ ἐλαχίστου ὁρίου ἡμερομισθίου καθιερώθη νομικῶς τὸ πρῶτον ἐν Αὐστραλίᾳ καὶ Νέᾳ Ζηλανδίᾳ. Σήμερον ὅμως εἰς τὴν ἐργατικὴν νομοθεσίαν πλείστων κρατῶν περιελήφθησαν διατάξεις σκοποῦσαι νὰ ἐμποδίσουν τὴν πτῶσιν τῶν ἐργατικῶν μισθῶν κάτω ἑνὸς ἐλαχίστου ὁρίου, εἴς τινα μάλιστα κράτη τὸ ἐλάχιστον τοῦτο ὅριον ἔχει κατοχυρωθῆ καὶ διὰ συνταγματικῆς διατάξεως. Τὸ δὲ 1928 ἐψηφίσθη ἐν Γενεύῃ διεθνὴς σύμβασις ἐργασίας, «περὶ μεθόδων καθορισμοῦ ἐλαχίστου ὁρίου ἀντιμισθίας» ἡ ὁποία ἐκυρώθη μέχρι τοῦδε παρὰ ὀκτὼ κρατῶν. Συγχρόνως, κατὰ τὴν αὐτὴν συνδιάσκεψιν, ἐψηφίσθη καὶ διεθνὴς σύστασις, ἀφορῶσα τὴν ἐφαρμογὴν τῶν μεθόδων καθορισμοῦ ἐλαχίστου ὁρίου μισθῶν.

Ἑτέρα οὐσιώδης προστασία τοῦ μισθοῦ ἀνάγεται εἰς τὴν νομικὴν ὑποχρέωσιν τοῦ ἐργοδότου, ὅπως καταβάλλῃ τὸν μισθὸν εἰς χρῆμα. Αἱ πλεῖσται νομοθεσίαι σήμερον, πρὸς πρόληψιν τῶν εἰς βάρος τοῦ ἐργάτου καταχρήσεων τῶν παρατηρηθεισῶν εἰς τὸ κληθὲν Truck-System, περὶ οὗ ἐγένετο μνεία ἀνωτέρω, δὲν ἐπιτρέπουν τὴν καταβολὴν τοῦ μισθοῦ εἰς εἶδος, ἀλλ᾽ ἐπιβάλλουν τὴν πληρωμὴν αὐτοῦ εἰς χρῆμα. Πᾶσαν ἀντίθετον συμφωνίαν τὴν κηρύσσουν ἄκυρον.

Ἐπίσης ἡ κανονικότης τῆς πληρωμῆς τοῦ μισθοῦ, ἀπὸ τὸν ὁποῖον καὶ μόνον περιμένει ὁ ἐργάτης νὰ ζήσῃ, κέκτηται σπουδαίαν δι᾽ αὐτὸν σημασίαν καὶ ἕνεκα τούτου ἡ προστατευτικὴ νομοθεσία τοῦ μισθοῦ περιέχει εἰδικὰς διατάξεις ἀφορώσας τὸν χρόνον πληρωμῆς τῶν ἡμερομισθίων. Εἶναι προφανὲς ὅτι ἡ κατ᾽ ἀραιὰ καὶ ἀκανόνιστα χρονικὰ διαστήματα καταβολὴ τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ ἢ ἡ καθυστέρησις αὐτοῦ ἀναγκάζουν τὸν ἐργάτην νὰ καταφεύγῃ εἰς μικροπιστώσεις, αἱ ὁποῖαι ἀποτελοῦν πηγὴν καταχρήσεων εἰς βάρος του. Ὑποχρεοῦται ὅθεν ὁ ἐργοδότης νὰ καταβάλλῃ εἰς τὸν ἐργάτην κανονικῶς καὶ ἐντὸς τῆς συμφωνηθείσης προθεσμίας ἢ τῆς κατ᾽ ἔθιμον καθιερωμένης τοιαύτης τόσον τὸν μισθόν του ὅσον καὶ τὰ τυχὸν ὀφειλόμενα εἰς αὐτὸν παρεπόμενα τοῦ μισθοῦ.

Ἐπίσης ὁ ἐργοδότης δὲν δικαιοῦται νὰ ἐνεργῇ τὴν πληρωμὴν τοῦ μισθοῦ εἰς οἵους τόπους αὐτὸς θέλει. Ἡ πληρωμὴ τῶν μισθῶν ἀπαγορεύεται νὰ ἐκτελῆται εἰς τόπους, οἱ ὁποῖοι ἐκθέτουν τὸν ἐργάτην εἰς τὸν πειρασμὸν νὰ ἐνεργήσῃ διαφόρους προμηθείας ἢ νὰ σπαταλήσῃ μέρος τοῦ μισθοῦ του (πρατήρια, καπηλεῖα κλπ.).

Ὁ ἐργατικὸς μισθὸς πρέπει νὰ καταβάλλεται ἀκέραιος, πρέπει δηλαδὴ νὰ εἶναι ἀπηλλαγμένος ὁ ἐργάτης τῶν διαφόρων κινδύνων, οἱ ὁποῖοι δύνανται νὰ τὸν στερήσουν τοῦ ὅλου ἢ καὶ μέρους τοῦ μισθοῦ του. Ὁ ἐργοδότης δὲν ἔχει δικαίωμα νὰ ἐνεργῇ κρατήσεις, νὰ ἐπιβάλλῃ πρόστιμα ἢ νὰ συμψηφίζῃ τὸν μισθὸν πρὸς ὀφειλόμενα αὐτῷ παρὰ τοῦ ἐργάτου. Κρατήσεις ἢ πρόστιμα δύναται νὰ ἐπιβάλλῃ μόνον ὁπόταν καὶ ὅπως ὁ νόμος ὁρίζει. Οὕτω δύναται νὰ ἐνεργῇ τὰς κρατήσεις τὰς προωρισμένας διὰ τὰ ἱδρύματα τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων, ὑποκείμενος ὡς πρὸς τὴν κανονικὴν ἀπόδοσιν αὐτῶν εἰς τὸν ἔλεγχον τοῦ κράτους. Ἐπίσης δύναται νὰ ἐπιβάλλῃ πρόστιμα ὑπὸ τὰς κάτωθεν ὅμως προϋποθέσεις: 1) Ὅτι ὑπάρχει ἐγκεκριμένος παρὰ τῆς ἁρμοδίας ἀρχῆς κανονισμὸς τοῦ ἐργοστασίου, καθορίζων τὴν ἔκτασιν τῶν ἐπιβαλλομένων προστίμων καὶ τὴν τηρητέαν διαδικασίαν. 2) Ὅτι τὸ πρόστιμον δὲν θὰ δύναται νὰ ὑπερβῇ ἓν ἀνώτατον ὅριον. 3) Ὅτι τὰ ἐπιβαλλόμενα πρόστιμα δὲν θὰ περιέλθουν εἰς τὸν ἐργοδότην, ἀλλ᾽ εἰς ἔργα κοινωνικῆς προνοίας ὑπὲρ τῶν ἐργατῶν· καὶ 4) Ὅτι θὰ ὑπάρχῃ δημοσιότης τῶν ἐπιβαλλομένων προστίμων. Ὁ ἐργοδότης δὲν ἔχει ἐπίσης δικαίωμα νὰ παρακρατῇ τὸ σύνολον τοῦ μισθοῦ ὑπὸ τὴν μορφὴν τῶν προκαταβολῶν.

Ὁ μισθὸς προστατεύεται ἐπίσης ἔναντι τῶν δανειστῶν τοῦ ἐργοδότου, οἱ ὁποῖοι δὲν ἔχουν δικαίωμα νὰ θέσουν χεῖρα ἐπὶ τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ ὀφειλομένων ἐργατικῶν μισθῶν, δι᾽ οὓς ἀναγνωρίζεται δικαίωμα προτεραιότητος.

Ὡσαύτως ὁ δεδουλευμένος μισθὸς τοῦ ἐργάτου δὲν εἶναι ὀρθὸν νὰ διατρέχῃ τὸν κίνδυνον ν᾽ ἀπολεσθῇ ἐν περιπτώσει πτωχεύσεως ἢ καταστροφῆς τοῦ ἐργοδότου. Ἕνεκα τούτου θεωρεῖται ὡς ἀπαίτησις προνομιοῦχος, προτιμωμένη ὅλων τῶν ἄλλων ἔναντι τοῦ ἐργοδότου, προστατευομένη δηλαδὴ οὕτω εἰς τὴν περίπτωσιν πτωχεύσεως αὐτοῦ.

Τὸ ἡμερομίσθιον ὡς τὸ μόνον μέσον τῆς διατροφῆς τῆς ἐργατικῆς οἰκογενείας θὰ ἀπέβαλλε τὴν ἀποστολήν του, ἐὰν ἦτο ἐκτεθειμένον εἰς τὴν ἐπιδρομὴν τῶν δανειστῶν τοῦ ἐργάτου καὶ εἰς τὸν κίνδυνον τῆς κατασχέσεως ἐκ μέρους αὐτῶν. Δι᾽ ὃ καὶ ἡ νομοθεσία προασπίζει τὸ μεγαλύτερον τοὐλάχιστον μέρος τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ, κηρύσσουσα αὐτὸ ἀκατάσχετον, τόσον ἔναντι τοῦ ἐργοδότου, ὅσον καὶ ἔναντι οἱουδήποτε τρίτου.

Ἐπίσης ἡ νομοθεσία θέτει περιορισμοὺς εἰς τὸ δικαίωμα τοῦ ἐργάτου, ὅπως ἐκχωρήσῃ τὸ ὅλον ἢ μέρος τοῦ ἡμερομισθίου του. Οἱ περιορισμοὶ οὗτοι παρεμποδίζουν τὸν ἐργάτην νὰ δημιουργήσῃ ἀμφιβόλου ἀνάγκης χρέη εἰς βάρος τοῦ γλίσχρου καὶ μοναδικοῦ εἰσοδήματός του, τὸ ὁποῖον προορίζεται διὰ τὴν διατροφὴν αὐτοῦ καὶ τῆς οἰκογενείας του.

Τέλος καὶ ἐντὸς τῶν κόλπων τῆς ἐργατικῆς οἰκογενείας προστατεύεται ὁ μισθὸς τῆς συζύγου ἢ τοῦ ἀνηλίκου τέκνου, ἔναντι τοῦ τυχὸν ἐπιλήσμονος τῶν οἰκογενειακῶν ὑποχρεώσεων συζύγου ἢ πατρὸς καὶ ἐν γένει ἔναντι τῶν καταχρήσεων τῶν προσώπων, ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν τῶν ὁποίων τυχὸν τελεῖ ὁ μισθωτός.

Ἑτέρα οὐσιώδης προστασία τοῦ μισθοῦ ἀφορᾷ τὴν ἐξασφάλισιν σχετικῆς σταθερότητος εἰς τὴν ἐν τῇ ἐργασίᾳ ἀπασχόλησιν τοῦ μισθωτοῦ. Οὕτω ὁ ἐργοδότης δὲν δικαιοῦται νὰ ἀποπέμψῃ ἀποτόμως τὸν μισθωτὸν ἐκ τῆς ἐργασίας καὶ νὰ τὸν στερήσῃ ἄνευ συνεπειῶν τῶν ἐκ ταύτης προσόδων, ἐκ τῶν ὁποίων ἐξαρτᾶται ἡ ὕπαρξις αὐτοῦ. Ὑποχρεοῦται νὰ τὸν προειδοποιήσῃ καὶ νὰ καταβάλλῃ εἰς τὸν ἀπολυόμενον τὸν μισθὸν χρονικοῦ τινος διαστήματος, τὸ ὁποῖον θὰ ἐπιτρέψῃ εἰς αὐτὸν νὰ ἐξεύρῃ νέαν ἀπασχόλησιν.

Ὁ ἐργατικὸς μισθὸς προστατεύεται ἐπίσης διὰ τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων καὶ ἔναντι τῶν διαφόρων φυσικῶν καὶ οἰκονομικῶν κινδύνων (ἀσθένεια, γῆρας, ἀναπηρία, θάνατος, ἀτύχημα ἐργασίας), οἱ ὁποῖοι μοιραίως ἀπειλοῦν κάθε ἄνθρωπον, σοβαρώτερον δὲ τοὺς ἐκ μόνης τῆς ἐργασίας των ἀποζῶντας μισθωτούς. Ἀλλ᾽ ὁ ἐργατικὸς μισθὸς ἀπειλεῖται ἀκόμη ἀπὸ ἕνα ἴδιον κίνδυνον καθαρῶς ἐπαγγελματικῆς μορφῆς, τὸν κίνδυνον τῆς ἀνεργίας, ἀπὸ τὸν ὁποῖον προασπίζεται διὰ τῆς ἀσφαλίσεως τῆς ἀνεργίας. Ἡ «ἀσφάλισις ἀνεργίας», ἀποτελοῦσα ἴδιον κλάδον τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων, κέκτηται ἰδιάζουσαν σημασίαν ἐν τῇ προστατευτικῇ νομοθεσίᾳ τοῦ μισθοῦ, λόγῳ τῆς ἐμμέσου ἐπιδράσεως, τὴν ὁποίαν ἀσκεῖ ἐπὶ τῆς διαμορφώσεως τοῦ ποσοῦ τῶν μισθῶν τοῦ συνόλου τῆς ἐργατικῆς τάξεως. Ἡ ἀσφάλισις ἀνεργίας περιορίζει σημαντικῶς τὴν εἰς βάρος τοῦ ἐργάτου λειτουργίαν τοῦ νόμου τῆς προσφορᾶς καὶ τῆς ζητήσεως ἐν τῷ καθορισμῷ τοῦ μισθοῦ, καθόσον διὰ τῆς χορηγήσεως ἐπιδομάτων εἰς τοὺς ἀνέργους ἀνακόπτεται ἡ κάτω ἑνὸς ἐλαχίστου ὁρίου πτῶσις τῶν ἐργατικῶν μισθῶν.

Ἄπειροι εἶναι ἐπίσης αἱ διατάξεις τῆς ἐργατικῆς νομοθεσίας αἱ ἀφορῶσαι *ἐμμέσως* τὸν ἐργατικὸν μισθὸν (γραφεῖα εὑρέσεως ἐργασίας, χρονικὰ ὅρια ἐργασίας, ἑβδομαδιαία ἀνάπαυσις, ἀπαγόρευσις ἐργασίας γυναικῶν καὶ ἀνηλίκων, ὑποχρεωτικὴ διαιτησία κλπ.).

Τὸ ζήτημα τῆς προστασίας τῶν ἐργατικῶν μισθῶν προσέλαβε πλέον διεθνῆ σημασίαν. Διὰ τὴν ἐξασφάλισιν ἑνὸς ἱκανοποιητικοῦ ὁρίου μισθῶν καὶ τὴν καταπολέμησιν τῶν δυσμενῶν συνθηκῶν τῆς ἐργατικῆς τάξεως συντονίζονται αἱ ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς προστατευτικῆς νομοθεσίας τῆς ἐργασίας προσπάθειαι τῶν διαφόρων κρατῶν. Ἡ ἀντιμετώπισις τῆς ἀνεργίας, ἡ ρύθμισις τῶν ζητημάτων τῆς μεταναστεύσεως, ἡ προσπάθεια πρὸς ἐξύψωσιν τοῦ οἰκονομικοῦ ἐπιπέδου τῆς ἐργατικῆς τάξεως τῆς ὑδρογείου ἀποτελοῦν σήμερον ἀντικείμενα ἐπισήμου διεθνοῦς μερίμνης. Δύναται δὲ νὰ σημειωθῇ ἐνταῦθα ὅτι αἱ παρατηρούμεναι μεταξὺ τῶν διαφόρων κρατῶν οὐσιώδεις διαφοραὶ τῶν μισθῶν ἐθεωρήθησαν παρά τινων ἐπιζήμιαι διὰ τὴν παγκόσμιον οἰκονομίαν καὶ ὡς μία τῶν αἰτιῶν τοῦ φαινομένου τῆς ἀνεργίας, ἐπροτάθη δὲ ὁ καθορισμὸς ἑνιαίου δι᾽ ἅπαντα τὰ κράτη ποσοῦ μισθῶν διὰ διεθνοῦς συμφωνίας.

***X) Ὁ μισθὸς ἐν Ἑλλάδι.*** Περὶ τῶν διακυμάνσεων τοῦ μισθοῦ ἐν Ἑλλάδι, τόσον τοῦ ὀνομαστικοῦ ὅσον καὶ τοῦ πραγματικοῦ, δὲν ὑπάρχουν στατιστικαὶ πληροφορίαι. Περιέχονται μὲν εἴς τινας ἐκθέσεις ἐπιθεωρητῶν ἐργασίας ἀπὸ τοῦ 1920 καὶ ἐντεῦθεν ἀριθμοί τινες ἀναγόμενοι εἰς τοὺς ὀνομαστικοὺς μισθοὺς τῶν βιομηχανιῶν μερικῶν μόνον περιφερειῶν, ἀλλὰ δὲν ὑφίσταται εἰσέτι παρ᾽ ἡμῖν ὠργανωμένη «στατιστικὴ ἐργασίας» καὶ ἑπομένως οὐδὲ ἀκριβὴς στατιστικὴ μισθῶν. Πάντως ἐπὶ τῶν στοιχείων τούτων βασιζόμενός τις δύναται νὰ συμπεράνῃ ὅτι ἡ ἀμοιβὴ τῆς ἐργασίας ἐν Ἑλλάδι ἦτο καὶ εἶναι διὰ τὸ σύνολον σχεδὸν τῶν ἐπαγγελματικῶν εἰδικοτήτων κατωτέρα τῆς ἀμοιβῆς ἡ ὁποία παρέχεται εἰς τοὺς μισθωτοὺς τῶν μεγάλων βιομηχανικῶν χωρῶν. Ὑποστηρίζεται

## ΠΙΝΑΞ 1. ΚΑΤΑΤΑΞΙΣ ΤΩΝ ΜΙΣΘΩΤΩΝ ΚΑΤΑ ΤΡΟΠΟΝ ΑΜΟΙΒΗΣ

| Κατηγορίαι ἐπαγγελμάτων | Ἀμφοτέρων τῶν φύλων | | | | | Ἄρρενες | | | | | Θήλεις | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Ἐν ὅλῳ | Πληρωνόμενοι κατὰ μῆνα | Πληρωνόμενοι καθ᾽ ἡμέραν ἢ ὥραν | Πληρωνόμενοι κατ᾽ ἀποκοπὴν ἢ τεμάχιον | Μὴ δηλώσαντες τρόπον ἀμοιβῆς | Ἐν ὅλῳ | Πληρωνόμενοι κατὰ μῆνα | Πληρωνόμενοι καθ᾽ ἡμέραν ἢ ὥραν | Πληρωνόμενοι κατ᾽ ἀποκοπὴν ἢ τεμάχιον | Μὴ δηλώσαντες τρόπον ἀμοιβῆς | Ἐν ὅλῳ | Πληρωνόμενοι κατὰ μῆνα | Πληρωνόμενοι καθ᾽ ἡμέραν ἢ ὥραν | Πληρωνόμενοι κατ᾽ ἀποκοπὴν ἢ τεμάχιον | Μὴ δηλώσαντες τρόπον ἀμοιβῆς |
| *I. Μαθητεύομενοι* | 23.373 | 5.611 | 12.228 | 1.104 | 4.430 | 19.954 | 5.365 | 10.395 | 1.013 | 3.181 | 3.419 | 246 | 1.833 | 91 | 1.249 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 120 | 1 | 116 | — | 3 | 119 | 1 | 115 | — | 3 | 1 | — | 1 | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 20.422 | 3 638 | 11.621 | 1.002 | 4 161 | 17.078 | 3.414 | 9.820 | 911 | 2.933 | 3.314 | 224 | 1.801 | 91 | 1.198 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 150 | 91 | 34 | 5 | 17 | 150 | 94 | 34 | 5 | 17 | — | — | — | — | — |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 2.681 | 1.878 | 457 | 97 | 249 | 2.607 | 1.856 | 426 | 97 | 228 | 74 | 22 | 31 | — | 21 |
| *II. Ἐργάται* | 201 704 | 52.060 | 118.740 | 22.983 | 7.921 | 162 371 | 48.917 | 89.710 | 17.243 | 6.501 | 39.333 | 3.143 | 29.030 | 5.740 | 1.420 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 7.544 | 320 | 6.120 | 622 | 482 | 6.921 | 314 | 5.519 | 616 | 475 | 620 | 6 | 601 | 6 | 7 |
| 2. Βιομηχανία | 133.232 | 18.375 | 95.046 | 14.455 | 5 356 | 97.891 | 16.995 | 67.740 | 9.009 | 4.147 | 35 341 | 1.380 | 27.306 | 5.446 | 1.209 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 22.089 | 6.909 | 10.379 | 4.351 | 450 | 2 .862 | 6.743 | 10.323 | 4 351 | 445 | 227 | 166 | 56 | — | 5 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 38.839 | 26.456 | 7.195 | 3.555 | 1.633 | 35.694 | 24.865 | 6.128 | 3.267 | 1 434 | 3.145 | 1.591 | 1.067 | 288 | 199 |
| *III. Ὑπάλληλοι* | 35.980 | 33.252 | 1.593 | 600 | 535 | 31.155 | 28.752 | 1.337 | 589 | 477 | 4.825 | 4.500 | 256 | 11 | 58 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 257 | 222 | 25 | 3 | 7 | 245 | 214 | 21 | 3 | 7 | 12 | 8 | 4 | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 7.46· | 6 805 | 438 | 96 | 126 | 6.587 | 5 998 | 379 | 93 | 117 | ·78 | 807 | 59 | 3 | 9 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 2.989 | 2.875 | 66 | 22 | 26 | 2.897 | 2.783 | 66 | 22 | 26 | 92 | 92 | — | — | — |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 25.269 | 23.350 | 1.064 | 979 | 376 | 21.426 | 19.757 | 871 | 471 | 327 | 3.843 | 3.598 | 193 | 8 | 49 |
| *IV. Σύνολον μισθωτῶν* | 261.057 | 90.923 | 132 561 | 24.687 | 12.886 | 213.480 | 83.034 | 101.442 | 18.845 | 10.159 | 47.577 | 7.889 | 31.119 | 5 842 | 2.727 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 7.921 | 543 | 6.261 | 625 | 492 | 7.288 | 529 | 5 655 | 619 | 485 | 633 | 14 | 606 | 6 | 7 |
| 2. Βιομηχανία | 161.119 | 28.818 | 107 105 | 15.553 | 9.643 | 121.556 | 26.407 | 77.939 | 10.013 | 7.197 | 39.563 | 2.411 | 29.166 | 5.540 | 2.446 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 25.228 | 9.878 | 10.479 | 4.378 | 498 | 24.909 | 9.620 | 10.423 | 4.378 | 488 | 319 | 258 | 56 | — | 5 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 66.789 | 51.684 | 8.716 | 4.131 | 2.258 | 59.727 | 46.478 | 7.425 | 3.835 | 1.989 | 7.082 | 5.206 | 1.291 | 296 | 289 |

Digitized by Google

## ΠΙΝΑΞ 2. ΚΑΤΑΤΑΞΙΣ ΤΩΝ ΜΙΣΘΩΤΩΝ ΚΑΤΑ ΠΟΣΟΝ ΗΜΕΡΗΣΙΑΣ ΑΜΟΙΒΗΣ

| Κατηγορίαι ἐπαγγελμάτων. | Σύνολον μισθωτῶν | Μέση ἡμερησία ἀμοιβὴ εἰς δραχμὰς (1) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 0–9 | 10–14 | 15–19 | 20–24 | 25–29 | 30–34 | 35–39 | 40–44 | 45–49 | 50–54 | 55–59 | 60–64 | 65–69 | 70–74 | 75–79 | 80–89 | 90–99 | 100-119 | 120-139 | 140-159 | 160-179 | 180-199 | 200 δρχ. καὶ ἄνω | Μὴ δηλωθεῖσα |
| *Ἀμφοτέρων τῶν φύλων* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| I. Μαθητευόμενοι | 23.373 | 4 340 | 3.483 | 3.364 | 3.220 | 1.664 | 1.634 | 775 | 832 | 312 | 284 | 82 | 136 | 33 | 29 | 10 | 33 | 10 | 10 | 1 | 2 | 2 | 1 | — | 3.116 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 120 | 1 | 6 | 15 | 3 | 16 | 16 | 9 | 6 | 2 | 5 | 4 | 7 | 2 | 4 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 4 |
| 2. Βιομηχανία | 20.422 | 4.078 | 3.150 | 3.023 | 2.683 | 1.373 | 1.313 | 587 | 639 | 218 | 208 | 52 | 90 | 13 | 13 | 7 | 19 | 9 | 8 | 1 | — | 2 | 1 | — | 2.935 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 150 | 4 | 7 | 8 | 14 | 23 | 27 | 9 | 10 | 7 | 5 | 7 | 4 | — | 2 | 1 | 2 | 1 | 2 | — | 1 | — | — | — | 16 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 2.681 | 257 | 320 | 318 | 500 | 252 | 278 | 170 | 177 | 85 | 66 | 19 | 35 | 18 | 10 | 2 | 12 | — | — | — | 1 | — | — | — | 161 |
| II. Ἐργάται | 201.704 | 1.832 | 4.453 | 8.400 | 15.681 | 12.338 | 13.599 | 9.141 | 15.185 | 10.808 | 13.134 | 7.924 | 16.020 | 6.390 | 8.062 | 4.940 | 12.412 | 6.261 | 14 545 | 5 256 | 2.168 | 1 167 | 533 | 1.312 | 10.143 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 7 544 | 18 | 80 | 134 | 395 | 337 | 439 | 339 | 882 | 937 | 891 | 425 | 626 | 306 | 321 | 143 | 311 | 182 | 284 | 134 | 55 | 14 | 14 | 38 | 289 |
| 2. Βιομηχανία | 133. 32 | 1.233 | 3.221 | 6.736 | 11 537 | 9.752 | 9 430 | 6 009 | 9.170 | 6.475 | 9.3 5 | 5.523 | 10 626 | 4.432 | 5 665 | 3.266 | 7 960 | 3.716 | 6.355 | 2.945 | 1 219 | 770 | 325 | 842 | 6.630 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 22.089 | 19 | 76 | 80 | 391 | 281 | 570 | 632 | 806 | 648 | 856 | 595 | 1 216 | 777 | 650 | 887 | 2.009 | 1.577 | 6 589 | 1.394 | 619 | 205 | 107 | 212 | 893 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 38.839 | 562 | 1.07 | 1.450 | 3 358 | 1.968 | 3.160 | 2.161 | 4.327 | 2 748 | 1.992 | 1.381 | 3.552 | 875 | 1.426 | 644 | 2.132 | 836 | 1 317 | 783 | 275 | 178 | 87 | 220 | 2.331 |
| III. Ὑπάλληλοι | 35.980 | 153 | 456 | 611 | 1.354 | 649 | 1.144 | 631 | 2.041 | 1.298 | 831 | 692 | 2.603 | 543 | 904 | 441 | 3.123 | 1.227 | 3.221 | 3 549 | 1.985 | 1.774 | 1.032 | 5 068 | 650 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 257 | — | 1 | — | 3 | 4 | 4 | — | 2 | 2 | 4 | 2 | 7 | 3 | 2 | 6 | 18 | 11 | 29 | 35 | 18 | 27 | 10 | 63 | 6 |
| 2. Βιομηχανία | 7.465 | 8 | 28 | 53 | 156 | 76 | 159 | 79 | 296 | 205 | 160 | 124 | 475 | 97 | 173 | 54 | 665 | 242 | 758 | 749 | 411 | 448 | 242 | 1.661 | 146 |
| 3. Μεταφορὰ-συγκοινωνία | 2.989 | — | 1 | 3 | 12 | 4 | 10 | 11 | 16 | 17 | 19 | 19 | 43 | 25 | 42 | 30 | 115 | 153 | 371 | 454 | 348 | 303 | 231 | 709 | 53 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 25.269 | 145 | 426 | 155 | 1.183 | 565 | 971 | 541 | 1.727 | 1.074 | 648 | 547 | 2.078 | 418 | 687 | 351 | 2.325 | 821 | 2.063 | 2.311 | 1.208 | 996 | 549 | 2.635 | 445 |
| IV. Σύνολον μισθωτῶν | 261.057 | 6.325 | 8.392 | 12.375 | 20.255 | 14.651 | 16.377 | 10 547 | 18.058 | 12 418 | 14.249 | 8 698 | 18.759 | 6.966 | 8.995 | 5.391 | 15.568 | 7.498 | 17.776 | 8.806 | 4.155 | 2.943 | 1.566 | 6.380 | 13.909 |
| 1. Μεταλλεῖα-ὀρυχεῖα | 7.921 | 19 | 87 | 149 | 421 | 357 | 459 | 348 | 890 | 941 | 900 | 431 | 640 | 311 | 327 | 149 | 329 | 143 | 313 | 169 | 73 | 41 | 24 | 101 | 299 |
| 2. Βιομηχανία | 161.119 | 5.3 9 | 6.399 | 9.512 | 14 376 | 11.201 | 10.902 | 6.675 | 10.105 | 6.898 | 9.753 | 5 699 | 11.191 | 4.542 | 5.851 | 3.327 | 8 644 | 3 967 | 7.121 | 3.695 | 1.630 | 1.220 | 568 | 2.503 | 9.711 |
| 3. Μεταφορὰ—συγκοινωνία | 25.2 8 | 23 | 84 | 91 | 417 | 308 | 607 | 652 | 832 | 672 | 8 0 | 621 | 1.263 | 802 | 694 | 918 | 2.126 | 1.731 | 6.962 | 1.848 | 968 | 508 | 338 | 921 | 962 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 66.789 | 964 | 1.822 | 2.328 | 5.041 | 2.785 | 4.409 | 2.872 | 6.231 | 3 907 | 2.706 | 1.947 | 5.665 | 1.311 | 2.123 | 997 | 4.469 | 2.657 | 3.380 | 3.094 | 1.484 | 1 174 | 636 | 2.855 | 2.937 |
| *Ἄρρενες* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| I. Μαθητευόμενοι | 19.954 | 3.726 | 2.983 | 2.718 | 2.870 | 1.533 | 1.539 | 749 | 797 | 305 | 279 | 82 | 136 | 33 | 29 | 10 | 33 | 10 | 10 | 1 | 2 | 2 | 1 | — | 2 106 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 119 | 1 | 6 | 15 | 22 | 16 | 16 | 9 | 6 | 2 | 5 | 4 | 7 | 2 | 4 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 4 |
| 2. Βιομηχανία | 17.078 | 3.470 | 2.664 | 2.387 | 2 348 | 1.248 | 1.222 | 563 | 606 | 211 | 204 | 52 | 90 | 13 | 13 | 7 | 19 | 9 | 8 | 1 | — | 2 | 1 | — | 1.940 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 150 | 4 | 7 | 8 | 14 | 23 | 27 | 9 | 10 | 7 | 5 | 7 | 4 | — | 2 | 1 | 2 | 1 | 2 | — | 1 | — | — | — | 16 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 2.607 | 251 | 306 | 308 | 486 | 246 | 274 | 168 | 175 | 85 | 65 | 19 | 35 | 18 | 10 | 2 | 12 | — | — | — | 1 | — | — | — | 146 |
| II. Ἐργάται | 162.371 | 1.251 | 2.311 | 3.143 | 6.940 | 4.733 | 8.312 | 6 384 | 12.848 | 9.765 | 12.269 | 7.546 | 15.671 | 6.288 | 7.945 | 4.891 | 12.305 | 6.229 | 14 470 | 5 237 | 2.159 | 1.165 | 529 | 1.307 | 8.673 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 6.924 | 18 | 66 | 74 | 194 | 19 | 338 | 308 | 870 | 928 | 877 | 420 | 25 | 306 | 321 | 143 | 311 | 132 | 284 | 134 | 55 | 14 | 14 | 38 | 264 |
| 2. Βιομηχανία | 97 891 | 705 | 1.229 | 1 785 | 3 576 | 2.702 | 4.656 | 3.559 | 7.200 | 5.602 | 8.684 | 5.223 | 10.396 | 4.360 | 5.589 | 3 233 | 7.900 | 3.702 | 6.319 | 2.932 | 1.215 | 769 | 325 | 841 | 5.389 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 21.8 2 | 17 | 70 | 66 | 330 | 2 0 | 548 | 592 | 801 | 646 | 848 | 591 | 1.213 | 775 | 646 | 884 | 2 005 | 1.574 | 6.579 | 1.393 | 619 | 205 | 107 | 212 | 891 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 35 694 | 511 | 946 | 1 218 | 2 840 | 1.591 | 2.770 | 1.925 | 3.977 | 2.5 9 | 1.860 | 1.312 | 3.437 | 847 | 1.389 | 631 | 2.089 | 821 | 1 288 | 778 | 270 | 177 | 83 | 216 | 2.129 |
| III. Ὑπάλληλοι | 31.155 | 131 | 375 | 479 | 975 | 465 | 805 | 470 | 1.534 | 991 | 649 | 553 | 2.180 | 419 | 762 | 349 | 2.648 | 947 | 2.876 | 3.304 | 1.859 | 1.738 | 1.021 | 5.029 | 596 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 245 | — | 1 | — | 2 | 3 | 2 | — | 1 | — | 3 | 2 | 6 | 2 | 2 | 6 | 17 | 11 | 29 | 34 | 18 | 27 | 10 | 63 | 6 |
| 2. Βιομηχανία | 6.587 | 5 | 13 | 32 | 82 | 41 | 94 | 4 | 201 | 148 | 124 | 98 | 382 | 82 | 152 | 45 | 600 | 219 | 678 | 727 | 376 | 432 | 237 | 1.646 | 127 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 2.897 | — | 1 | 3 | 12 | 4 | 9 | 11 | 14 | 13 | 17 | 16 | 40 | 19 | 39 | 28 | 104 | 146 | 357 | 429 | 344 | 300 | 231 | 707 | 53 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 21.426 | 126 | 36 | 444 | 879 | 417 | 700 | 413 | 1.318 | 830 | 505 | 437 | 1.752 | 316 | 569 | 270 | 1 927 | 571 | 1.812 | 2.114 | 1.121 | 979 | 543 | 2.613 | 410 |
| IV. Σύνολον μισθωτῶν | 213.480 | 5.108 | 5 669 | 6.340 | 10.785 | 6.731 | 10.656 | 7.603 | 15.179 | 11.061 | 13.197 | 8.181 | 17.987 | 6.740 | 8 736 | 5.250 | 14.986 | 7.186 | 15.356 | 8.542 | 4.020 | 2.905 | 1.551 | 6.336 | 11.375 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 7.288 | 19 | 73 | 89 | 2 8 | 209 | 356 | 317 | 877 | 930 | 885 | 426 | 638 | 310 | 327 | 149 | 32 | 143 | 313 | 168 | 73 | 41 | 24 | 101 | 274 |
| 2. Βιομηχανία | 12 .556 | 4. 80 | 3.906 | 4 204 | 6. 06 | 3.991 | 5.972 | 4.168 | 8. 07 | 5.961 | 9 012 | 5.373 | 10.868 | 4.455 | 5 754 | 3.285 | 8.519 | 3.930 | 7.005 | 3 660 | 1.591 | 1.203 | 563 | 2.487 | 7.456 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 24 909 | 21 | 78 | 77 | 356 | 277 | 584 | 612 | 825 | 666 | 870 | 614 | 1.257 | 794 | 687 | 913 | 2.111 | 1.721 | 6.938 | 1.822 | 964 | 505 | 338 | 919 | 960 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 59.727 | 888 | 1.612 | 1 970 | 4.205 | 2.2 4 | 3.744 | 2.506 | 5.470 | 3.504 | 2.430 | 1.768 | 5.224 | 1.181 | 1.968 | 903 | 4.028 | 1.392 | 3.100 | 2.892 | 1.392 | 1.156 | 626 | 2.829 | 2.685 |
| *Θήλεις* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| I. Μαθητευόμενοι | 3.419 | 614 | 500 | 646 | 350 | 131 | 95 | 26 | 35 | 7 | 5 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 1.010 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 1 | — | — | — | 1 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 3 344 | 608 | 486 | 636 | 335 | 125 | 91 | 24 | 33 | 7 | 4 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 995 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 74 | 6 | 14 | 10 | 14 | 6 | 4 | 2 | 2 | — | 1 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 15 |
| II. Ἐργάται | 39.333 | 581 | 2.142 | 5.257 | 8.741 | 7.605 | 5.287 | 2.757 | 2 337 | 1.043 | 865 | 378 | 349 | 102 | 117 | 49 | 107 | 32 | 75 | 19 | 9 | 2 | 4 | 5 | 1.470 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 620 | — | 14 | 60 | 201 | 147 | 101 | 31 | 12 | 9 | 14 | 5 | 1 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 25 |
| 2. Βιομηχανία | 85 341 | 528 | 1 992 | 4.951 | 7.961 | 7 0 0 | 4.774 | 2.450 | 1.970 | 873 | 711 | 300 | 230 | 72 | 76 | 33 | 60 | 14 | 36 | 13 | 4 | 1 | — | 1 | 1.241 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 227 | 2 | 6 | 14 | 61 | 31 | 22 | 40 | 5 | 2 | 8 | 4 | 3 | 2 | 4 | 3 | 4 | 3 | 10 | 1 | — | — | — | — | 2 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 3.145 | 51 | 130 | 232 | 518 | 377 | 8 0 | 236 | 350 | 159 | 132 | 69 | 115 | 28 | 37 | 13 | 43 | 15 | 29 | 5 | 5 | 1 | 4 | 4 | 202 |
| III. Ὑπάλληλοι | 4.825 | 22 | 81 | 132 | 379 | 184 | 339 | 161 | 507 | 307 | 182 | 139 | 423 | 124 | 142 | 92 | 475 | 280 | 345 | 245 | 126 | 36 | 11 | 39 | 54 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 12 | — | — | — | 1 | 1 | 2 | — | 1 | 2 | 1 | — | 1 | 1 | — | — | 1 | — | — | 1 | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 878 | 3 | 15 | 21 | 74 | 35 | 65 | 33 | 95 | 57 | 36 | 26 | 93 | 15 | 21 | 9 | 65 | 23 | 80 | 22 | 35 | 16 | 5 | 15 | 19 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 92 | — | — | — | — | — | 1 | — | 2 | 4 | 2 | 3 | 3 | 6 | 3 | 2 | 11 | 7 | 14 | 25 | 4 | 3 | — | 2 | — |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 3.843 | 19 | 66 | 1 1 | 304 | 148 | 271 | 128 | 409 | 244 | 143 | 110 | 326 | 102 | 118 | 81 | 398 | 250 | 251 | 197 | 87 | 17 | 6 | 22 | 85 |
| IV. Σύνολον μισθωτῶν | 47.577 | 1.217 | 2.723 | 6.035 | 9.470 | 7.920 | 5.721 | 2.944 | 2.879 | 1.357 | 1.052 | 517 | 772 | 226 | 259 | 141 | 582 | 312 | 420 | 264 | 135 | 38 | 15 | 44 | 2.534 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 633 | — | 14 | 60 | 203 | 148 | 103 | 31 | 13 | 11 | 15 | 5 | 2 | 1 | — | — | 1 | — | — | 1 | — | — | — | — | 25 |
| 2. Βιομηχανία | 39 563 | 1 139 | 2.493 | 5.608 | 8.370 | 7.210 | 4.9 0 | 2.507 | 2.098 | 937 | 751 | 326 | 323 | 87 | 97 | 42 | 125 | 37 | 116 | 35 | 39 | 17 | 5 | 16 | 2.255 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 319 | 2 | 6 | 14 | 61 | 31 | 23 | 40 | 7 | 6 | 10 | 7 | 6 | 8 | 7 | 5 | 15 | 10 | 24 | 26 | 4 | 3 | — | 2 | 2 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κ.λ.π.) | 7.062 | 76 | 210 | 353 | 836 | 531 | 665 | 366 | 761 | 403 | 276 | 179 | 441 | 130 | 155 | 94 | 441 | 265 | 280 | 202 | 92 | 18 | 10 | 26 | 252 |

(1) Περιλαμβανομένης καὶ τῆς ἀξίας τῆς εἰς εἶδος ἀμοιβῆς.

## ΠΙΝΑΞ 3. ΚΑΤΑΤΑΞΙΣ ΤΩΝ ΜΙΣΘΩΤΩΝ ΚΑΙ ΜΕΣΗ ΗΜΗΡΕΣΙΑ ΑΜΟΙΒΗ ΚΑΘ' ΗΛΙΚΙΑΝ

| Κατηγορίαι ἐπαγγελμάτων | Ἐν ὅλῳ | | 10–14 ἐτῶν | | 15–19 ἐτῶν | | 20–24 ἐτῶν | | 25–29 ἐτῶν | | 30–34 ἐτῶν | | 35–39 ἐτῶν | | 40–44 ἐτῶν | | 45–49 ἐτῶν | | 50–54 ἐτῶν | | 55–59 ἐτῶν | | 60–64 ἐτῶν | | 65–69 ἐτῶν | | 70 ἐτ. καὶ πλέον | | Μὴ δηλ. ἡλικ. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. | Ἀριθ. μισθωτῶν | Μέσον ἡμερομίσθ. |
| *Ἀμφοτέρων τῶν φύλων* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| *I. Μαθητευόμενοι* | 23.373 | 20 | 5 417 | 14 | 16.212 | 21 | 1 194 | 41 | 224 | 37 | 56 | 39 | 12 | 35 | 11 | 34 | 6 | 54 | 7 | 22 | 4 | 49 | 2 | 17 | — | — | 1 | 40 | 227 | 19 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 120 | 32 | 6 | 22 | 103 | 31 | 10 | 41 | 1 | 70 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 20.422 | 19 | 4 549 | 13 | 11.374 | 20 | 1.034 | 30 | 189 | 36 | 48 | 37 | 12 | 35 | 9 | 35 | 5 | 52 | 7 | 22 | 4 | 49 | 2 | 17 | — | — | — | — | 169 | 17 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 159 | 35 | 12 | 23 | 83 | 31 | 33 | 4 | 4 | 40 | 2 | 53 | — | — | — | — | 1 | 64 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 15 | 29 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 2 681 | 29 | 850 | 19 | 1.652 | 27 | 117 | 133 | 30 | 43 | 6 | 54 | — | — | 2 | 32 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 1 | 40 | 28 | 27 |
| *II. Ἐργάται* | 201 704 | 57 | 5 154 | 19 | 48.979 | 33 | 31.095 | 51 | 28 952 | 66 | 21 509 | 71 | 16.881 | 75 | 13 241 | 74 | 11.116 | 73 | 8 997 | 72 | 5.938 | 70 | 3.745 | 65 | 1.940 | 60 | 1.151 | 56 | 3.006 | 66 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 7.544 | 54 | 61 | 21 | 1 283 | 36 | 1.004 | 51 | 1.061 | 55 | 859 | 60 | 723 | 61 | 590 | 60 | 614 | 62 | 459 | 62 | 375 | 62 | 240 | 60 | 145 | 52 | 73 | 56 | 57 | 47 |
| 2. Βιομηχανία | 133 232 | 54 | 3.229 | 17 | 36.302 | 32 | 22 890 | 50 | 8.691 | 64 | 13 026 | 69 | 10.079 | 73 | 6.908 | 70 | 6.579 | 70 | 5.387 | 69 | 3.502 | 66 | 2.228 | 62 | 1.122 | 57 | 663 | 55 | 1.626 | 64 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 22.089 | 85 | 20 | 29 | 856 | 47 | 1.651 | 70 | 3.318 | 83 | 3 566 | 89 | 3.183 | 90 | 2.510 | 93 | 2.132 | 90 | 1 705 | 90 | 1.111 | 91 | 670 | 82 | 324 | 74 | 186 | 70 | 907 | 78 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 38 839 | 53 | 1 844 | 23 | 10.538 | 34 | 5.550 | 49 | 5 822 | 67 | 4 058 | 65 | 2.946 | 67 | 2.233 | 69 | 1.791 | 70 | 1.446 | 67 | 950 | 62 | 607 | 58 | 349 | 58 | 229 | 46 | 416 | 51 |
| *III. Ὑπάλληλοι* | 35.980 | 121 | 525 | 17 | 5 426 | 38 | 6 627 | 71 | 6.944 | 116 | 4 938 | 141 | 3 217 | 171 | 2.312 | 196 | 1.858 | 207 | 1.444 | 207 | 957 | 203 | 536 | 176 | 275 | 161 | 137 | 123 | 784 | 167 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 257 | 168 | — | — | 3 | 34 | 19 | 92 | 47 | 11 | 38 | 174 | 28 | 182 | 25 | 221 | 22 | 234 | 18 | 249 | 26 | 138 | 10 | 166 | 9 | 189 | 10 | 120 | 2 | 429 |
| 2. Βιομηχανία | 7.465 | 156 | 28 | 18 | 757 | 46 | 1.277 | 83 | 1 412 | 141 | 1.169 | 180 | 776 | 204 | 564 | 227 | 470 | 247 | 391 | 228 | 241 | 224 | 126 | 192 | 71 | 181 | 45 | 149 | 135 | 224 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 2.989 | 167 | 1 | 20 | 49 | 50 | 160 | 101 | 480 | 131 | 443 | 157 | 349 | 164 | 322 | 188 | 276 | 187 | 285 | 197 | 158 | 213 | 103 | 229 | 30 | 195 | 13 | 218 | 320 | 180 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 25 269 | 104 | 496 | 17 | 4.617 | 36 | 5.171 | 67 | 5.005 | 107 | 3 288 | 125 | 2.064 | 160 | 1.401 | 185 | 1.090 | 194 | 747 | 199 | 532 | 194 | 297 | 151 | 165 | 145 | 69 | 88 | 327 | 128 |
| *IV. Σύνολον τῶν μισθωτῶν* | 261.057 | 62 | 11.096 | 17 | 70 617 | 31 | 38 916 | 54 | 36.120 | 76 | 26 503 | 84 | 20 110 | 90 | 15.564 | 92 | 12 980 | 93 | 10.448 | 91 | 6 899 | 88 | 4.283 | 79 | 2.215 | 72 | 1.289 | 63 | 4.017 | 83 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 7.921 | 57 | 67 | 21 | 1.389 | 36 | 1.033 | 52 | 1.109 | 58 | 897 | 65 | 751 | 66 | 615 | 67 | 636 | 68 | 477 | 69 | 401 | 87 | 250 | 64 | 154 | 60 | 83 | 64 | 59 | 60 |
| 2. Βιομηχανία | 161.119 | 54 | 7.806 | 1 | 51.433 | 29 | 25.201 | 51 | 20.292 | 69 | 14.24 | 78 | 10.867 | 82 | 8 481 | 80 | 7 054 | 82 | 5 788 | 80 | 3 747 | 76 | 2.356 | 69 | 1.193 | 64 | 708 | 61 | 1.950 | 71 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 25.228 | 64 | 33 | 27 | 988 | 46 | 1.184 | 72 | 3.802 | 89 | 4.011 | 96 | 3.482 | 97 | 2.832 | 104 | 2 409 | 101 | 1.990 | 105 | 1 269 | 106 | 773 | 102 | 354 | 84 | 199 | 80 | 1.242 | 104 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 66.789 | 71 | 3 190 | 21 | 16.807 | 34 | 10.838 | 58 | 10.917 | 85 | 7.352 | 92 | 5.010 | 105 | 3.636 | 114 | 2.881 | 117 | 2.193 | 112 | 1 482 | 109 | 904 | 89 | 514 | 86 | 299 | 56 | 766 | 83 |
| *Ἄρρενες* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| *I. Μαθητευόμενοι* | 19.954 | 21 | 4.400 | 14 | 14.046 | 21 | 1.044 | 43 | 196 | 39 | 41 | 45 | 7 | 42 | 5 | 52 | 4 | 72 | — | — | 3 | 55 | 1 | 20 | — | — | 1 | 40 | 206 | 19 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 119 | 32 | 6 | 22 | 102 | 31 | 10 | 41 | 1 | 70 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 17.078 | 19 | 3.549 | 13 | 12.261 | 20 | 888 | 31 | 161 | 38 | 33 | 43 | 7 | 42 | 3 | 66 | 3 | 74 | — | — | 3 | 55 | 1 | 20 | — | — | — | — | 169 | 17 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 150 | 35 | 12 | 23 | 83 | 31 | 33 | 48 | 4 | 40 | 2 | 53 | — | — | — | — | 1 | 64 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 15 | 29 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 2.607 | 29 | 833 | 19 | 1 600 | 27 | 113 | 137 | 30 | 43 | 6 | 51 | — | — | 2 | 32 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 1 | 40 | 22 | 28 |
| *II. Ἐργάται* | 162 371 | 64 | 3.379 | 21 | 31.013 | 38 | 24.023 | 56 | 26.253 | 69 | 19.739 | 75 | 15.016 | 80 | 11.315 | 81 | 9 728 | 79 | 7.778 | 79 | 5.276 | 75 | 3 283 | 71 | 1 753 | 63 | 1.032 | 59 | 2.783 | 69 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 9.924 | 56 | 35 | 23 | 965 | 40 | 898 | 54 | 1.036 | 56 | 828 | 61 | 697 | 62 | 569 | 61 | 583 | 64 | 445 | 63 | 363 | 68 | 232 | 61 | 142 | 53 | 72 | 56 | 51 | 47 |
| 2. Βιομηχανία | 97.891 | 63 | 1.558 | 18 | 19.274 | 39 | 16 401 | 57 | 16.360 | 68 | 11.612 | 74 | 8.608 | 80 | 6.362 | 80 | 5 475 | 78 | 4 426 | 78 | 2.980 | 73 | 1.864 | 70 | 971 | 62 | 560 | 61 | 1.440 | 68 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 21.862 | 85 | 20 | 29 | 855 | 47 | 1.644 | 70 | 3 301 | 83 | 3.548 | 89 | 3.101 | 91 | 2 475 | 94 | 2.092 | 91 | 1.669 | 91 | 1.092 | 2 | 659 | 83 | 318 | 75 | 185 | 70 | 903 | 78 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 35.694 | 54 | 1 766 | 23 | 9.919 | 34 | 5.080 | 50 | 5.556 | 68 | 3 751 | 67 | 2.610 | 71 | 1.909 | 75 | 1.573 | 75 | 1.238 | 3 | 841 | 66 | 528 | 62 | 322 | 60 | 15 | 47 | 386 | 63 |
| *III. Ὑπάλληλοι* | 31.155 | 129 | 484 | 17 | 3 953 | 37 | 4.744 | 74 | 6 049 | 116 | 4 676 | 144 | 3.110 | 174 | 2.254 | 199 | 1.828 | 209 | 1.428 | 208 | 954 | 204 | 531 | 176 | 274 | 161 | 137 | 123 | 733 | 173 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 245 | 174 | — | — | 2 | 26 | 14 | 106 | 44 | 121 | 37 | 178 | 27 | 177 | 25 | 221 | 22 | 234 | 18 | 249 | 25 | 142 | 10 | 166 | 9 | 189 | 10 | 120 | 2 | 429 |
| 2. Βιομηχανία | 6.587 | 168 | 21 | 19 | 467 | 48 | 925 | 90 | 1 284 | 146 | 1.118 | 183 | 758 | 206 | 556 | 229 | 462 | 249 | 390 | 229 | 241 | 224 | 124 | 194 | 71 | 181 | 45 | 149 | 125 | 236 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 2.897 | 170 | 1 | 20 | 41 | 47 | 135 | 104 | 452 | 133 | 428 | 158 | 343 | 165 | 318 | 189 | 272 | 188 | 285 | 197 | 158 | 213 | 103 | 229 | 30 | 195 | 13 | 218 | 318 | 181 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 21.426 | 111 | 462 | 17 | 3.443 | 35 | 3 670 | 69 | 4.269 | 105 | 3.098 | 127 | 1.982 | 63 | 1 355 | 188 | 1.072 | 196 | 735 | 201 | 530 | 195 | 294 | 151 | 164 | 145 | 69 | 88 | 288 | 135 |
| *IV. Σύνολον τῶν μισθωτῶν* | 213.480 | 69 | 8 263 | 17 | 49 012 | 33 | 29 811 | 58 | 32 493 | 78 | 24.456 | 88 | 18.133 | 96 | 13.574 | 101 | 11.560 | 100 | 9.206 | 99 | 6 233 | 95 | 3.815 | 86 | 2 027 | 76 | 1 170 | 67 | 3 722 | 86 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 7.2·8 | 60 | 41 | 23 | 1.069 | 39 | 922 | 55 | 1.081 | 59 | 865 | 66 | 724 | 67 | 594 | 68 | 610 | 70 | 463 | 70 | 388 | 68 | 242 | 65 | 151 | 61 | 82 | 64 | 56 | 61 |
| 2. Βιομηχανία | 121.556 | 63 | 5 128 | 15 | 32 002 | 32 | 18.214 | 57 | 17.805 | 73 | 12 763 | 83 | 9.373 | 90 | 6.921 | 92 | 5.940 | 91 | 4 816 | 90 | 3 224 | 84 | 1.989 | 78 | 1.042 | 70 | 605 | 68 | 1.734 | 75 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 24.903 | 95 | 33 | 27 | 979 | 46 | 1.812 | 72 | 3.757 | 89 | 3.978 | 96 | 3 444 | 98 | 2.793 | 105 | 2.365 | 102 | 1 954 | 106 | 1.250 | 107 | 762 | 107 | 348 | 85 | 198 | 80 | 1.236 | 104 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 52.727 | 73 | 3 061 | 21 | 14 962 | 33 | 8.863 | 59 | 9.855 | 84 | 6.850 | 94 | 4.592 | 111 | 3.266 | 122 | 2.645 | 124 | 1.973 | 121 | 1.371 | 116 | 822 | 94 | 486 | 89 | 285 | 57 | 696 | 86 |
| *Θήλεις* | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| *I. Μαθητευόμεναι* | 3.419 | 16 | 1.017 | 12 | 2 166 | 17 | 150 | 24 | 28 | 26 | 15 | 23 | 5 | 25 | 6 | 20 | 2 | 19 | 7 | 22 | 1 | 30 | 1 | 13 | — | — | — | — | 21 | 17 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 1 | 20 | — | — | 1 | 20 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 3.344 | 16 | 1.000 | 12 | 2.113 | 17 | 146 | 24 | 28 | 26 | 15 | 23 | 5 | 25 | 6 | 20 | 2 | 19 | 7 | 22 | 1 | 30 | 1 | 13 | — | — | — | — | 20 | 17 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 74 | 18 | 17 | 15 | 52 | 19 | 4 | 24 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 1 | 10 |
| *II. Ἐργάται* | 39 333 | 28 | 1.775 | 16 | 17.966 | 25 | 7 072 | 32 | 2.699 | 33 | 1.770 | 30 | 1 865 | 32 | 1.926 | 30 | 1.388 | 29 | 1.219 | 28 | 662 | 27 | 462 | 26 | 187 | 24 | 119 | 22 | 233 | 36 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 620 | 27 | 26 | 19 | 31 | 25 | 106 | 26 | 25 | 31 | 31 | 34 | 26 | 29 | 21 | 36 | 26 | 31 | 14 | 37 | 12 | 31 | 8 | 27 | 3 | 25 | 1 | 25 | 3 | 40 |
| 2. Βιομηχανία | 35.341 | 27 | 1.671 | 16 | 17.028 | 25 | 6.489 | 31 | 2.331 | 32 | 1 414 | 28 | 1.471 | 31 | 1.546 | 29 | 1.104 | 28 | 961 | 27 | 522 | 25 | 364 | 24 | 151 | 23 | 103 | 21 | 186 | 36 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 227 | 36 | — | — | 1 | 40 | 7 | 24 | 17 | 45 | 18 | 28 | 32 | 37 | 35 | 41 | 40 | 33 | 36 | 35 | 19 | 45 | 11 | 35 | 6 | 28 | 1 | 33 | 4 | 24 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 3.145 | 35 | 78 | 20 | 619 | 31 | 470 | 40 | 326 | 43 | 807 | 39 | 336 | 34 | 324 | 35 | 218 | 34 | 208 | 33 | 109 | 30 | 79 | 33 | 27 | 30 | 14 | 27 | 30 | 32 |
| *III. Ὑπάλληλοι* | 4 825 | 68 | 41 | 16 | 1.473 | 38 | 1.883 | 63 | 895 | 112 | 262 | 100 | 107 | 101 | 58 | 93 | 30 | 109 | 16 | 83 | 3 | 42 | 5 | 100 | 1 | 100 | — | — | 51 | 76 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 1 | 53 | — | — | 1 | 50 | 5 | 52 | 3 | 66 | 1 | 42 | 1 | 48 | — | — | — | — | — | — | 1 | 34 | — | — | — | — | — | — | — | — |
| 2. Βιομηχανία | 878 | 66 | 7 | 15 | 290 | 42 | 352 | 66 | 128 | 88 | 51 | 109 | 18 | 120 | 8 | 83 | 8 | [illegible] | 4 | 119 | — | — | 2 | 93 | — | — | — | — | 10 | 69 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 92 | 102 | — | — | 8 | 64 | 25 | 87 | 28 | 105 | 15 | 131 | 5 | 107 | 4 | 120 | 4 | 134 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | 2 | 65 |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | 3 848 | 68 | 34 | 16 | 1.174 | 37 | 1.501 | 62 | 736 | 117 | 195 | 96 | 82 | 97 | 46 | 92 | 18 | 95 | 12 | 71 | 2 | 46 | 3 | 104 | 1 | 100 | — | — | 39 | 79 |
| *IV. Σύνολον τῶν μισθωτῶν* | 47.577 | 31 | 2 833 | 15 | 21.605 | 25 | 9.105 | 38 | 3.622 | 53 | 2.047 | 39 | 1.977 | 35 | 1.980 | 32 | 1.420 | 31 | 1.242 | 29 | 666 | 27 | 468 | 26 | 188 | 25 | 119 | 22 | 295 | 41 |
| 1. Μεταλλεῖα - ὀρυχεῖα | 683 | 27 | 26 | 19 | 320 | 25 | 111 | 27 | 28 | 85 | 32 | 34 | 27 | 30 | 21 | 36 | 26 | 31 | 14 | 37 | 13 | 31 | 8 | 27 | 3 | 25 | 1 | 25 | 3 | 40 |
| 2. Βιομηχανία | 39 [illegible] | 27 | 2 678 | 1 | 10 431 | 24 | 6.087 | 33 | 2.487 | 35 | 1 480 | 31 | 1.494 | 32 | 1 560 | 29 | 1.114 | [illegible] | 972 | 27 | 523 | 25 | 367 | 24 | 151 | 23 | 103 | 21 | 216 | 36 |
| 3. Μεταφορὰ - συγκοινωνία | 319 | 65 | — | — | [illegible] | [illegible] | 32 | 73 | 45 | 82 | 33 | 75 | [illegible] | 48 | [illegible] | 49 | 44 | 42 | [illegible] | 35 | [illegible] | 45 | 11 | 35 | 6 | 28 | 1 | 33 | 6 | [illegible] |
| 4. Ἐμπόριον (μετὰ τῆς πίστεως κλπ.) | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 418 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 111 | [illegible] | 82 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 14 | [illegible] | 70 | [illegible] |

Digitized by Google

ὅμως ὅτι τὴν ἐπὶ ἔλασσον ταύτην διαφορὰν ἰσοφαρίζει ἡ ἠλαττωμένη ἐν σχέσει μὲ τοὺς ἐργάτας ἄλλων χωρῶν ἀπόδοσις τοῦ Ἕλληνος ἐργάτου. Ἐκ τῆς αὐτῆς πηγῆς πληροφοριῶν προκύπτει ὅτι οἱ ὀνομαστικοὶ μισθοὶ τοῦ ἔτους 1923 ηὐξήθησαν ἐν συγκρίσει πρὸς τοὺς μισθοὺς τοῦ ἔτους 1914 κατ' ἀναλογίαν ποικίλλουσαν ἀπὸ τοῦ διπλασίου καὶ ἡμίσεως μέχρι τοῦ δεκαπλασίου. Ἡ τοιαύτη τάσις πρὸς αὔξησιν τῶν μισθῶν ἐπετάθη κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη. Ἡ αὔξησις μάλιστα τῶν ὀνομαστικῶν μισθῶν, παρακολουθοῦσα κατὰ πόδας τὴν αὔξησιν τοῦ κόστους τῆς ζωῆς, ἀνύψωσεν εἴς τινας περιπτώσεις καὶ τὴν ἀγοραστικὴν δύναμιν τῶν σημερινῶν μισθῶν, ἐὰν γίνῃ σύγκρισις τούτων πρὸς τοὺς πραγματικοὺς μισθοὺς τοῦ ἔτους 1914.

Ἀλλὰ τὰ συμπεράσματα ταῦτα ἐμφανίζοντα ἀντιλήψεις μελετητῶν ἀναχωρούντων ἐξ ἀτομικῶν κριτηρίων καὶ ἐλλιπῶν στοιχείων, μολονότι ἡ ὀρθότης των δὲν τυγχάνει ἀμφισβητήσιμος, δὲν παρέχουν βεβαίως τὴν ἀσφάλειαν καὶ τὴν ἀκρίβειαν τῆς ἐνδελεχοῦς στατιστικῆς ἐργασίας, δεδομένου ὅτι ἐλλείψει σχετικῆς κρατικῆς βοηθείας δὲν φαίνεται νὰ ἠκολουθήθη ἡ ἀπαραίτητος ἐκείνη μεθοδικότης, ἡ ὁποία ἀπαιτεῖται προκειμένου περὶ τῆς στατιστικῆς ἐρεύνης τοῦ μισθοῦ. Μόλις τὴν 4 Σεπτεμβρίου 1930 ἐνηργήθη ἡ πρώτη ἐν Ἑλλάδι ἀπογραφὴ τῶν μισθωτῶν τῶν ἐμπορικῶν καὶ βιομηχανικῶν ἐπιχειρήσεων, ἡ ὁποία, μεταξὺ ἄλλων, θὰ παράσχῃ στοιχεῖα περὶ τοῦ ποσοῦ τῶν ὀνομαστικῶν μισθῶν κατὰ ἐπάγγελμα, φῦλον καὶ ἡλικίαν, περὶ τοῦ τρόπου πληρωμῆς τῶν μισθῶν κλπ. Τὰ συγκεντρωθέντα ὅμως στοιχεῖα ἐκ τῆς ἀπογραφῆς ταύτης δὲν ἔτυχον εἰσέτι πλήρους ἐπεξεργασίας. Παραθέτομεν ἐνταῦθα τοὺς τρεῖς μέχρι τοῦδε καταρτισθέντας στατιστικοὺς πίνακας τοὺς δημοσιευθέντας εἰς τὸ μηνιαῖον δελτίον τῆς Γενικῆς Στατιστικῆς Ὑπηρεσίας τῆς Ἑλλάδος τοῦ μηνὸς Ἀπριλίου 1931. Ἐκ τούτων ὁ εἷς (πίναξ 1) δεικνύει τὸν τρόπον πληρωμῆς τῶν μισθῶν ἐν Ἑλλάδι. Ἐν τῷ ἑτέρῳ (πίναξ 2) κατατάσσονται οἱ μισθωτοὶ εἰς μισθολογικὰς κλίμακας. Τέλος ὁ τρίτος (πίναξ 3) ἐμφανίζει τὴν μέσην ἡμερησίαν ἀμοιβὴν τῶν Ἑλλήνων μισθωτῶν καθ' ἡλικίαν. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν προστατευτικὴν νομοθεσίαν τοῦ μισθοῦ, ἀκολουθεῖ αὕτη καὶ ἐν Ἑλλάδι κατὰ τὸ πλεῖστον τὰς ἀνωτέρω ἐκτεθείσας χαρακτηριστικὰς γραμμάς, αἱ ὁποῖαι διέπουν τὴν προστατευτικὴν νομοθεσίαν τοῦ μισθοῦ τῶν βιομηχανικῶν κρατῶν. Οὕτω καὶ ἐν Ἑλλάδι προστατεύεται ὁ μισθὸς ἐναντίον τῶν τυχὸν ὑπερβασιῶν τοῦ ἐργοδότου (ἀκανόνιστον τῆς πληρωμῆς, πληρωμὴ εἰς εἶδος, κρατήσεις, πρόστιμα κλπ.), ἐναντίον τῶν πιστωτῶν τοῦ ἐργοδότου (προνόμια τοῦ μισθοῦ), ἐναντίον τῶν πιστωτῶν τοῦ ἐργάτου (ἀκατάσχετον), τέλος ἐντὸς τῆς ἐργατικῆς οἰκογενείας (μισθὸς ἐγγάμου γυναικὸς ἢ ἀνηλίκου ἐργάτου).

Δὲν ὑφίστανται ὅμως παρ' ἡμῖν διατάξεις καθορίζουσαι ἐλάχιστον ὅριον ἡμερομισθίων, πλὴν προκειμένου περὶ κατηγοριῶν τινων δημοσίων ἔργων καὶ κρατικῶν προμηθειῶν, ἐνεργουμένων διὰ δημοπρασίας, ὁπότε συνήθως εἰς τοὺς ὅρους διακηρύξεως τῆς δημοπρασίας περιλαμβάνεται εἰδικὴ ὑποχρέωσις διὰ τὸν ἐργολάβον ὅπως καταβάλῃ εἰς τοὺς διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐργασίας ταύτης χρησιμοποιηθησομένους παρ' αὐτοῦ ἐργάτας ἓν ἐλάχιστον ὅριον ἡμερομισθίου (π. χ. προκειμένου περὶ προμηθειῶν ἀρβυλῶν τοῦ στρατοῦ κλπ.). Ἐπίσης ἐπὶ τῶν εἰδῶν τῶν ὑπαγομένων εἰς τὴν διατίμησιν καθορίζεται (νόμος 3860) τὸ ὅριον τῶν ἡμερομισθίων πρὸς ἀποφυγὴν αἰσχροκερδείας εἰς βάρος τῶν ἐργατῶν καὶ ὑπαλλήλων (προσωπικὸν ξενοδοχείων ὕπνου, μυλεργάται κλπ.). Ὁ θεσμὸς τῆς ἀσφαλίσεως ἀνεργίας δὲν ἔχει εἰσέτι εἰσαχθῆ παρ' ἡμῖν.

Αἱ κυριώτεραι διατάξεις τῆς ἐργατικῆς μας νομοθεσίας αἱ ἀφορῶσαι τὸν μισθὸν εἶναι αἱ ἑξῆς:

*Νόμος ΔΛ'* «περὶ πληρωμῆς τῶν ἡμερομισθίων τῶν ἐργατῶν καὶ περὶ τῶν μισθῶν τῶν ὑπηρετῶν καὶ ὑπαλλήλων».

*Β. Διάταγμα τῆς 14 Σεπτεμβρίου 1912* «περὶ ἐκτελέσεως τοῦ Νόμου ΔΛ'».

*Νόμος 2112 (τοῦ 1920)* «περὶ ὑποχρεωτικῆς καταγγελίας τῆς συμβάσεως ἐργασίας ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων».

*Β. Διάταγμα τῆς 16 Ἰουλίου 1920* «περὶ ἐπεκτάσεως τοῦ νόμου 2112 καὶ ἐπὶ τῶν ἐργατῶν τεχνιτῶν καὶ ὑπηρετῶν».

*Νόμος 3514* «περὶ θέσεως τῶν ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων ἐν περιπτώσει στρατεύσεως».

*Νόμος 4694* «περὶ ἀπαγορεύσεως τῆς ἐκχωρήσεως καὶ κατασχέσεως τῶν ἡμερομισθίων ἐργατῶν κλπ. καὶ τῶν μισθῶν τῶν ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων κλπ.».

Ἐπίσης ὑπάρχουσι καὶ διάφοροι ἄλλαι διατάξεις ἀφορῶσαι προστασίαν τοῦ ἐργατικοῦ μισθοῦ (π. χ. δικονομικὴ προστασία, ἐξασφάλισις τῶν φιλοδωρημάτων, ἐξασφάλισις ηὐξημένης ἀμοιβῆς τῶν ὑπερωριῶν, ὑποχρεωτικὴ πρόσληψις ἐφέδρων, ὑποχρεωτικὴ πρόσληψις χημικῶν κλπ.), αἱ ὁποῖαι εὑρίσκονται ἐγκατεσπαρμέναι εἰς διαφόρους νόμους.

Ὅλως εἰδικαὶ διατάξεις ἰσχύουσιν ἐπὶ τῶν μισθῶν τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Herkner - Δ. Καλιτσουνάκι*, Τὸ ἐργατικὸν ζήτημα.—*Γ. Χαριτάκη*, Ἐγχειρίδιον θεωρίας τῆς κοινωνικῆς οἰκονομίας (Παραδόσεις).—*Γ. Χαριτάκη*, Ἡ Ἑλληνικὴ Βιομηχανία 1927. Ἐκθέσεις τοῦ προσωπικοῦ ἐπιθεωρήσεως ἐργασίας ἐπὶ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν ἐργατικῶν νόμων ἐτῶν 1921 καὶ ἐντεῦθεν. — *Ι. Ιουρνάκη*, Διεθνὴς μεταναστευτικὴ κίνησις καὶ μεταναστευτικὴ πολιτική.—*Ch. Gide*. Ἀρχαὶ Πολιτικῆς Οἰκονομίας (μετάφρασις καὶ σημειώσεις Σ. Κορώνη).—*Π. Κανελλοπούλου*, Κάρολος Μάρξ.—*Κλ. Φιλαρέτου*, Αἱ μέθοδοι συστηματικῆς παραγωγῆς (περιοδικὸν «Ἔργα» ἔτους 1926).—*Θ. Χαριτάκη*, Ἡ ἐπιστήμη τῆς ὀργανώσεως τῆς ἐργασίας (περιοδικὸν «Ἔργα» ἔτους 1926).—*Ι. Λ. Ζάρρα*, «Ὁ θεσμὸς τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων».—*Ι. Λ. Ζάρρα - Μ. Ν. Κρητικοῦ*, «Ἐργατικὴ καὶ Κοινωνικὴ Νομοθεσία».—*Truchy*, Cours d' Economie Politique.—*Ch. Cornélissen*, Théorie du Salaire et du Travail salarié.—*Schloss - Rist*, Les modes de remunérations du Travail.—*Yovanovitch*, Le rendement optimum du Travail.—*F. Bayle*, Les hauts Salaires.—*L. Bertrand*, La remunération du Travail en regimes capitaliste, cooperatif, socialiste.—*Bureau International du Travail*: L'organisation scientifique du travail en Europe. - Methodes dc Fixation des salaires minima.—*P. Pic*. Traité élémentaire de Législation industrielle.—*Capitant et Cuche*, Precis de Legislation industrielle.—*J. Girard*, Éléments de Legislation ouvrière.—*G. Scelle*, Le droit ouvrier. ΙΩ. Λ. ΖΑΡΡΑΣ

—*[Διοικητ. Δίκ.]* Ὁ *μισθὸς* τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων χορηγεῖται ἀφ' ἑνὸς μὲν πρὸς τὸ συμφέρον τοῦ κράτους, ἀφ' ἑτέρου δὲ πρὸς τὸ συμφέρον τοῦ ὑπαλλήλου ἐπιτυγχάνων τὴν ἐπάρκειαν τῶν ἀναγκαίων αὐτῷ ἀγαθῶν καὶ τὴν ἀξιοπρεπῆ αὐτοῦ διαβίωσιν· ἄρχεται ἀπὸ τῆς ἐγκαταστάσεως τοῦ ὑπαλλήλου, ἥτις συμπίπτει προκειμένου περὶ τῶν ἐν τῇ πρωτευούσῃ διοριζομένων ὑπαλλήλων μετὰ τοῦ ὅρκου, οὐχὶ ὅμως καὶ προκειμένου περὶ τῶν λοιπῶν, οἵτινες ὀφείλουσι νὰ εἰδοποιήσωσιν ἁρμοδίως τὰς ἀρχὰς περὶ τῆς ἐγκαθιδρύσεώς των· ὁ μισθὸς καταβάλλεται παρ' ἡμῖν ἀπὸ τοῦ 1929 εἰς τὴν ἀρχὴν ἑκάστου μηνός. Δι' εἰδικοῦ νόμου δύναται νὰ ὁρισθῇ ἐπιμίσθιον, ὅπερ νὰ λαμβάνῃ διὰ πρόσθετον αὐτοῦ ὑπηρεσίαν ὁ ὑπάλληλος, δὲν δύναται ὅμως νὰ ὑπερβῇ τὸν ὀργανικόν του μισθόν.

Ἡ ἐκχώρησις ἢ κατάσχεσις τοῦ μισθοῦ τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων δὲν ἐπιτρέπεται· κατ' ἐξαίρεσιν μόνον προκειμένου περὶ τῆς ὑποχρεώσεως τοῦ ὑπαλλήλου πρὸς διατροφὴν συζύγου, ἀνιόντων καὶ κατιόντων ἐπιτρέπεται ἡ κατάσχεσις τοῦ $^1/_4$, τοῦ ἡμίσεος δὲ προκειμένου περὶ τῶν ἀπαιτήσεων τοῦ δημοσίου κατὰ τοῦ ὑπαλλήλου, τῶν ἕνεκεν κυρίως ἐλλειμμάτων προερχομένων. Ἡ ἀπαίτησις τοῦ ὑπαλλήλου διὰ τοὺς μισθοὺς αὐτοῦ παραγράφεται μετὰ διετίαν, ἀφ' ἧς ἐγεννήθησαν, μετὰ πενταετίαν δὲ ἐὰν ἀνεγνωρίσθησαν ὑπὸ τοῦ δημοσίου (π. χ. ἐξεδόθη σχετικὸν ἔνταλμα)· παύει δὲ ὁ μισθὸς διὰ τῆς λύσεως τῆς ὑπαλληλικῆς σχέσεως, ἤτοι διὰ τοῦ θανάτου τοῦ ὑπαλλήλου, τῆς παύσεως ἢ παραιτήσεως αὐτοῦ.

Ἐάν τις ἀναλάβῃ ὑπηρεσίαν πρὸ τῆς δημοσιεύσεως τοῦ διορισμοῦ τοῦ ἐνεργηθέντος ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς ἐκτελεστικῆς ἐξουσίας ἢ τῶν ὑπουργῶν, δὲν μισθοδοτεῖται εἰμὴ ἀπὸ τῆς δημοσιεύσεως.

Ὁ μισθὸς δὲν εἶναι στοιχεῖον τῆς ὑπαλληλικῆς σχέσεως, διότι καὶ οἱ οὐδόλως μισθοδοτούμενοι ἄμισθοι πρόξενοι, δικηγόροι, συμβολαιογράφοι εἶναι ὑπάλληλοι.

**μισθοφορία** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μισθοφόρος, ἡ ἐπὶ μισθῷ ὑπηρεσία.

**μισθοφορικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μισθοφόρους, ὁ τῶν μισθοφόρων: «μισθοφορικὸς στρατός».

**μισθοφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ προσφέρων ὑπηρεσίας ἐπὶ μισθῷ· || εἰδικώτερον, ὁ ἀξιωματικὸς ἢ ὁπλίτης ὁ ὑπηρετῶν ἀντὶ μισθοῦ εἰς στρατὸν ξένης ἐθνικότητος.

—*[Ἐγκυκλ.]* Ἡ χρησιμοποίησις ξένων μισθοφορικῶν στρατευμάτων ἐσυνηθίζετο ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος, ἰδίως εἰς τὰς οἰκονομικῶς εὐημερούσας χώρας. Οὕτω, ὅταν οἱ Πέρσαι ἐπεχείρησαν τὰς ἐναντίον τῆς Ἑλλάδος ἐπιδρομάς των, εἶχον μεταξὺ τῶν στρατιωτικῶν των δυνάμεων πολυάριθμα στίφη μισθοφόρων, προσελκυομένων ἐκ τῆς ἀμοιβῆς ἀφ' ἑνὸς καὶ ἐκ τῆς ἐλπίδος ἀφ' ἑτέρου τῆς λαφυραγωγίας. Τὸ παράδειγμά των ἐμιμήθησαν καὶ οἱ Ἀθηναῖοι κατὰ τοὺς μετέπειτα πολέμους των, καθ' οὓς ἐνίσχυον τὸν στρατὸν αὐτῶν δι' ἐμμίσθων ἐθελοντῶν, καθὼς ἐπίσης καὶ ἄλλοι ἐκ τῶν Ἑλλήνων, ὅπως οἱ Φωκαεῖς κατὰ τὸν ἱερὸν πόλεμον κλπ. Ἀλλὰ καὶ ἔξω τῆς χώρας μετέβαινον ἐνίοτε ὁμάδες Ἑλλήνων μισθοφόρων εἰς ἐνίσχυσιν ξένων στρατῶν, ὡς συνέβη, ἐπὶ παραδείγματι, μὲ τοὺς *μυρίους* τοὺς διαπεραιωθέντας εἰς Ἀσίαν, ἵνα πολεμήσουν παρὰ τὸ πλευρὸν Κύρου τοῦ Νεωτέρου.

Ἀπὸ παλαιοτάτης ἐξ ἄλλου ἐποχῆς καὶ μέχρι τοῦ τέλους τῆς ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας οἱ Γαλάται, ὠθούμενοι ὑπὸ τοῦ πόθου τῶν περιπετειῶν καὶ τοῦ ἀφθόνου κέρδους, διέτρεχον τὰς διαφόρους χώρας, προσφέροντες τὰς πολεμικάς των ὑπηρεσίας εἰς πάντα ἔχοντα ἀνάγκην αὐτῶν καὶ προσφέροντα ἱκανοποιητικὴν ἀνταμοιβήν. Μέγαν ἀριθμὸν τοιούτων Γαλατῶν μισθοφόρων εἶχον ἐν τοῖς ἄλλοις χρησιμοποιήσει οἱ Καρχηδόνιοι κατὰ τὴν πρώτην αὐτῶν ἐκστρατείαν ἐναντίον τῆς Ρώμης, διὰ ν' ἀπαλλαγῶσι δ' ἀπ' αὐτῶν μετὰ τὴν ἧττάν των εὑρέθησαν εἰς τὴν ἀνάγκην ν' ἀνοίξουν νέον ἐσωτερικὸν πόλεμον πρωτοφανοῦς ἀγριότητος (βλ. κατωτ. *μισθοφόρων πόλεμος*). Οἱ Ρωμαῖοι δὲν ἐδέχοντο μισθοφόρους μέχρι τοῦ 213 π. Χ., ὁπότε, ὡς ἀναφέρει ὁ Τῖτος Λίβιος, περιελήφθησαν εἰς τὸν ρωμαϊκὸν στρατὸν 300 ἐθελονταὶ ἐκ τῶν εὐγενεστέρων οἰκογενειῶν, μὲ τὴν ἐλπίδα ὅτι θὰ ἐπετύγχανον νὰ προσελκύσουν εἰς λιποταξίαν τοὺς ὑπηρετοῦντας εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Ἀννίβα πολυαρίθμους συμπατριώτας των. Ὀλίγον βραδύτερον ὅμως, κατὰ τὸν β' καρχηδονικὸν πόλεμον, τὰ ἐν Ἱσπανίᾳ ρωμαϊκὰ στρατεύματα ἀπετελοῦντο κατὰ μέγα μέρος ἀπὸ μισθοφόρους, οἵτινες ἐλιποτάκτησαν εὐθὺς ἀπὸ τῆς πρώτης μάχης καὶ ἐγένοντο ἀφορμὴ μεγάλων ἀπωλειῶν διὰ τοὺς Ρωμαίους. Πανταχοῦ σχεδὸν ἄλλως τε, ὅπου ἐχρησιμοποιήθησαν μισθοφόροι ἐν τῇ ἀρχαιότητι, ἡ παρουσία των εἶχεν οἰκτρὰ ἀποτελέσματα, ἢ ὅμοια πρὸς τὸ ἀνωτέρω, ἢ τοῦ τύπου τῶν ἐν Καρχηδόνι συμβάντων.

Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ μεσαίωνος ἡ Γαλλία, ἡ Ἱσπανία, ἡ Ἰταλία καὶ ἡ Γερμανία ἐχρησιμοποίουν σταθερῶς μισθοφόρους, οἵτινες ὑπήκουον εἰς τοὺς ἰδικούς των μόνον ἀρχηγοὺς καὶ οἱ ὁποῖοι, ὅταν μετὰ τὸ τέλος τοῦ πολέμου, ἢ καὶ πολλάκις διαρκοῦντος αὐτοῦ, δὲν ἱκανοποιοῦντο ἐκ τῆς ἀμοιβῆς των, ἐξετρέποντο εἰς λεηλασίας ἢ καὶ μεθίσταντο πρὸς τὸν ἐχθρόν. Αἱ ὁμάδες αὗται, ποικίλης κατὰ τόπους καὶ κατ' ἐποχὰς συνθέσεως καὶ διοικήσεως, ἔπαιξαν οὐχὶ ἀσήμαντον ρόλον ἐν τῇ ἐξελίξει τῶν ἱστορικῶν γεγονότων τῶν χρόνων ἐκείνων. Ἐν Γερμανίᾳ κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἐσχηματίσθησαν σώματα ἀποτελούμενα ἀναμὶξ ἐκ τακτικῶν στρατευμάτων καὶ μισθοφόρων, παρεχωροῦντο δὲ ταῦτα ὑπὸ τῶν ἰδίων των ἡγεμόνων εἰς ἄλλας χώρας ἐπὶ μισθῷ. Τοιαῦτα μισθοφορικὰ τάγματα ἐχρησιμοποίησεν εὐρέως καὶ ἡ Ἀγγλία περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος κατὰ τὸν ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας πόλεμον τῆς Β. Ἀμερικῆς. Περισσότερον τῶν ἄλλων διετηρήθησαν ἐν Εὐρώπῃ οἱ Ἑλβετοὶ μισθοφόροι, χρησιμοποιηθέντες ὑπὸ τῆς Γαλλίας μέχρι τοῦ 1830, καθὼς καὶ παρ' ἄλλων κρατῶν, ἰδίως τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1859 ὅμως οἱ εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ βασιλέως τῆς Νεαπόλεως Ἑλβετοὶ διελύθησαν ἀφ' ἑαυτῶν κατόπιν ταραχῶν, τὰς ὁποίας ἐδημιούργησαν εἰς τὸ στρατόπεδον, ἀπὸ δὲ τῆς καταλήψεως τῶν Δύο Σικελιῶν ὑπὸ τῶν Γαριβαλδινῶν τῷ 1860 ἐξηφανίσθησαν οὗτοι τελειωτικῶς ἀπὸ τὴν νότιον Ἰταλίαν. Ἐφεξῆς μόνον ὁ πάπας ἦτο ἠναγκασμένος, διὰ νὰ διατηρήσῃ τὴν πολιτικὴν ἰσχὺν αὐτοῦ, νὰ προσφεύγῃ εἰς τὴν ὑποστήριξιν ξένων μισθοφόρων, μεταξὺ τῶν ὁποίων εὑρίσκοντο καὶ πολλοὶ Ἑλβετοί. Ἀλλ' ἀφ' ἧς ἡ κυριαρχία του κατέρρευσε τῷ 1870, ἠναγκάσθη καὶ οὗτος νὰ διαλύσῃ τὸν μικρὸν μισθοφορικὸν στρατόν του, ἐκτὸς ἐλαχίστων ἀνδρῶν, οἵτινες ἀποτελοῦσι καὶ σήμερον ἔτι τὴν φρουρὰν τοῦ Βατικανοῦ. —Ω.

***Ἐν τῷ βυζαντινῷ στρατῷ.*** Τὸ Βυζάντιον, συνεχίσαν ἐν τῇ Ἀνατολῇ τὴν Ρωμαϊκὴν αὐτοκρατορίαν, ἐφήρμοσε, πλὴν τῶν ἄλλων, καὶ τὸ σύστημα τῶν μισθοφορικῶν καὶ τῶν συμμαχικῶν στρατῶν, τὸ ὁποῖον ἐκείνη ἐφήρμοσε κατὰ τὴν περίοδον τῆς στρατιωτικῆς αὐτῆς παρακμῆς καὶ τὸ ὁποῖον συνετέλεσεν εἰς τὴν ἐξάρθρωσίν της καὶ ἐπετάχυνε τὴν πτῶσίν της. Εὐτυχῶς τὸ Βυζάντιον, κατιδὸν τὸν μέγιστον κίνδυνον ὃν διέτρεχεν αὐτὴ ἡ ὕπαρξις τῆς αὐτοκρατορίας ἐκ τῆς παρουσίας τῶν μαχίμων μὲν ἀλλ' ἀγρίων καὶ πάσης ἠθικῆς βάσεως ἐστερημένων μισθολογικῶν στρατευμάτων, ἔσπευσεν (ἀπὸ τοῦ ΣΤ' αἰῶνος) νὰ περιορίσῃ σημαντικῶς τὴν δύναμιν αὐτῶν καὶ ἀφ' ἑτέρου νὰ ὀργανώσῃ στρατὸν ἐθνικὸν ἐξ ὑπηκόων μόνον καὶ δὴ Χριστιανῶν ἀποκλειστικῶς ἀποτελούμενον, συγχρόνως δὲ νὰ διαμορφώσῃ ἴδιον ἐντελῶς στρατιωτικὸν σύστημα (στρατολογίαν, ὀργάνωσιν, ὁπλισμόν, τακτικὴν) καὶ νὰ συντάξῃ τοὺς ἐνδόξους ἐκείνους στρατούς, διὰ τῶν ὁποίων διεξήγαγε πάσας τὰς ἐκστρατείας τῆς λαμπροτέρας περιόδου τῆς αὐτοκρατορίας (δηλαδὴ ἀπὸ τοῦ ΣΤ' μέχρι τοῦ ΙΑ' αἰῶνος) καὶ οἵτινες ἀπετέλεσαν τὴν βάσιν, ἐφ' ἧς διεμορφώθησαν οἱ στρατοὶ ὅλων τῶν κρατῶν τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ τῶν νεωτέρων χρόνων.

Κατὰ τὴν ἔνδοξον ἐκείνην περίοδον τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας ὑπῆρχον καὶ ξένα στοιχεῖα ἐν τοῖς στρατοῖς αὐτῆς, ἀλλ' ἐν ἐλαχίστῃ ἀναλογίᾳ, ἦσαν δὲ ταῦτα οἱ λεγόμενοι *σύμμαχοι* (βλ. λ.) καὶ οἱ *μισθοφόροι*. Οἱ μισθοφόροι ἦσαν ξένοι, οἵτινες προσήρχοντο καθ' ὁμάδας καὶ ἢ κατετάσσοντο ὡς ἄτομα ἐπὶ μισθῷ εἰς τὸν βυζαντινὸν στρατὸν καὶ συνεχωνεύοντο μετὰ τῶν πάσης ἄλλης προελεύσεως ἀνδρῶν εἰς τὰ διάφορα εἰδικὰ τάγματα (τῶν φοιδεράτων κ. λ.) ἢ ἀπετέλουν ἴδια σώματα τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς καὶ τοῦ στρατοῦ ἐν γένει τοῦ ὀργανωμένου ὑπὸ τῆς κεντρικῆς κυβερνήσεως.

Οἱ διάφοροι βάρβαροι λαοί, ἑλκυόμενοι ἐκ τοῦ πλούτου τῆς αὐτοκρατορίας, συνέρρεον εἰς τὸ Βυζάντιον, προσφέροντες τὴν ὑπηρεσίαν των, ὀλιγώτεροι μὲν ἐν εἰρήνῃ, περισσότεροι δ' ἐν πολέμῳ. Δὲν ὑπῆρχεν ἔθνος τοῦ τότε γνωστοῦ κόσμου, τὸ ὁποῖον νὰ μὴν ἔδωσε χιλιάδας ἀνδρῶν εἰς τὸ Βυζάντιον. Ἀπὸ τῶν Σκανδιναυϊκῶν χωρῶν καὶ τῶν Βρεττανικῶν νήσων μέχρι τῶν ἐρήμων τῆς Ἀφρικῆς καὶ ἀπὸ τῆς Ἰβηρικης χερσονήσου μέχρι τῆς Περσίας καὶ τῶν πέραν τῆς Κασπίας χωρῶν ἔσπευ-



Digitized by Google

δον ἀθρόοι νὰ καταταχθῶσιν εἰς τὸν **στρατὸν** τοῦ Βυζαντίου. Πάντες ὅμως οὗτοι ἀπετέλουν ἐλαχίστην μόνον μερίδα τοῦ ὅλου βυζαντινοῦ στρατοῦ. Βραδύτερον ἀπὸ τοῦ ΙΑ´ αἰῶνος, ὁ ἀριθμὸς τῶν ξένων ἐκείνων στοιχείων ἀρχίζει νὰ γίνεται μεγαλύτερος, ἀπὸ τοῦ ΙΔ´ δὲ αἰῶνος ἀποτελοῦν σημαντικὸν μέρος τοῦ στρατοῦ τῆς αὐτοκρατορίας. Εἶναι ἡ περίοδος τῆς στρατιωτικῆς αὐτῆς παρακμῆς. Τότε ἐνεφανίσθησαν τὰ στίφη τῶν Ἀλανῶν, τῶν Καταλάνων καὶ λοιπῶν μισθοφόρων κακούργων, τῶν στρατευμάτων δηλαδὴ ἐκείνων, ἅτινα ἐπὶ τοσοῦτον συνετέλεσαν εἰς τὴν ἐπιτάχυνσιν τῆς πτώσεως τῆς αὐτοκρατορίας, ἐπενεγκόντα τὸ κακὸν τὸ ὁποῖον προβλέπων ὁ βασιλεὺς Μαυρίκιος, ὁ βασιλεύσας ἀπὸ 582—602, ἔγραφεν ἐν τῷ «Στρατηγικῷ» αὐτοῦ: «Συνετὸς ἡγεμὼν ὁ μὴ εἰσάγων εἰς τὴν ἑαυτοῦ χώραν συμμαχίαν (δηλαδὴ στρατεύματα ξένων) πλέον τῆς οἰκείας δυνάμεως, μήποτε ξυμφρονήσασα καὶ τοὺς κεκτημένους διώξασα, αὐτὴ τῆς χώρας κρατήσῃ».

Ν. ΚΛΣ

— **Μισθοφόρων *πόλεμος*** *['Ιστορ.]*. Τὸ ἴδιον ἔτος κατὰ τὸ ὁποῖον ἐτερματίσθη ὁ πρῶτος καρχηδονικὸς πόλεμος (241 π. Χ.), οἱ Καρχηδόνιοι, κατεξηντλημένοι οἰκονομικῶς, δὲν ἦσαν εἰς θέσιν νὰ καταβάλουν τοὺς μισθοὺς τῶν συμπολεμησάντων μετ' αὐτῶν πολυαρίθμων μισθοφορικῶν στρατευμάτων. Τότε οἱ μισθοφόροι οὗτοι, κατὰ τὸ πλεῖστον Γαλάται, Ἱσπανοί, Λιγούριοι, Ἕλληνες καὶ Ἀφρικανοί, συναποτελέσαντες δύναμιν 25.000 περίπου ἀνδρῶν, ἐβάδισαν ἐναντίον τῆς Καρχηδόνος. Ἡ στασιαστικὴ αὐτὴ ἐνέργεια εὗρεν εὐμενῆ ἀπήχησιν μεταξὺ τῶν ὑποτεταγμένων εἰς τοὺς Καρχηδονίους ἀφρικανικῶν λαῶν, οἵτινες ἔσπευσαν νὰ ἑνωθοῦν μὲ τοὺς ἐπαναστάτας, μετὰ τόσου δ' ἐνθουσιασμοῦ, ὥστε αἱ γυναῖκες εἰσέφερον εὐχαρίστως ὅλα των τὰ κοσμήματα, διὰ νὰ συμβάλουν εἰς τὰς δαπάνας τοῦ πολέμου. Δύο πόλεις μόνον, ἡ Ὑτίκη καὶ ἡ Ἵππακρα, ἀπέμενον πισταὶ εἰς τοὺς δυνάστας. Οἱ στασιασταί, τῶν ὁποίων ὁ στρατὸς εἶχεν ἤδη αὐξηθῆ εἰς 70.000, τὰς ἐπολιόρκησαν ἀμφοτέρας καὶ ἐνίκησαν τοὺς Καρχηδονίους κατὰ τὴν πρώτην, πρὸ τῶν τειχῶν τῆς Ὑτίκης, συναφθεῖσαν μάχην. Ἀλλ' ἡ ἐπιτυχία των ὑπῆρξε πρόσκαιρος· διότι ὁ Ἀμίλκας, ὁ ἐπικληθεὶς Βάρκας, εἰς τὸν ὁποῖον οἱ Καρχηδόνιοι εἶχον ἐν τῷ μεταξὺ ἀναθέσει τὴν ἀρχηγίαν, ἀφαιρέσαντες αὐτὴν ἀπὸ τοῦ Ἀννίβα, ἐπέτυχε νὰ ἐξολοθρεύσῃ μέρος τοῦ στρατοῦ τῶν ἐπαναστατῶν καὶ ν' ἀνακτήσῃ τὰς ὑπὸ τούτων καταληφθείσας προκεχωρημένας θέσεις. Οἱ μισθοφόροι, μανιώδεις διὰ τὴν ἧτταν των ἐκείνην, ἐφόνευσαν τότε ὅλους ἀνεξαιρέτως τοὺς αἰχμαλώτους των, μετὰ σκληρότητος δὲ ἀπαραδειγματίστου ἀπέκοπτον τὰς χεῖράς των, κατέθραυον τὰ ὀστᾶ των καὶ τοὺς ἐνεταφίαζον ζῶντας ἀκόμη, ὁρκιζόμενοι νὰ κάμουν τὸ ἴδιον καὶ εἰς κάθε ἄλλον περιερχόμενον εἰς τὰς χεῖράς των Καρχηδόνιον. Ἐν τῷ μεταξὺ καὶ ἡ Ὑτίκη καὶ ἡ Ἵππακρα ἐστασίασαν ἐπίσης καὶ αἱ ἐν αὐταῖς καρχηδονικαὶ φρουραὶ κατεσφάγησαν. Οἱ ἐπαναστάται, ἐνθαρρυνθέντες, ἐστράφησαν πλέον κατ' αὐτῆς ταύτης τῆς πρωτευούσης. Ὁ Ἀμίλκας ὅμως ἐπέτυχε δι' ἐνέδρας νὰ τοὺς προσελκύσῃ εἰς θέσεις, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἦτο ἀδύνατον νὰ διαφύγουν. Καθηλωθέντες ἐκεῖ ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας, ἐβασανίζοντο ὑπὸ τῆς πείνης τόσον, ὥστε, ἀφοῦ ἔφαγον τοὺς αἰχμαλώτους πρῶτον καὶ τοὺς δούλους, ἤρχισαν κατόπιν νὰ τρώγωνται καὶ οἱ ἴδιοι μεταξύ των. Ἀπελπισθέντες τότε ἐπρότειναν εἰς τὸν Ἀμίλκαν νὰ συνθηκολογήσουν, πράγματι δ' ἐκεῖνος ἀπεδέχθη νὰ διαπραγματευθῇ μαζί των εἰρήνην, ἀλλὰ πρὸς τὸν σκοπὸν καὶ μόνον νὰ συλλάβῃ τοὺς πρὸς τοῦτο προσελθόντας εἰς τὸ στρατόπεδόν του ἀρχηγούς.

Οἱ ἐπαναστάται δοκιμάσαντες μίαν φορὰν ἀκόμη νὰ ἐπιτεθοῦν, κατενικήθησαν ἐν τέλει εἰς τὴν συγκροτηθεῖσαν μάχην ὑπὸ τῶν Καρχηδονίων, οἵτινες ἐφόνευσαν ἐξ αὐτῶν πλείονας τῶν 40.000. Ὁ Ἀμίλκας μετὰ τοῦ Ἀννίβα ἐπροχώρησαν τότε πρὸς τὸ ἀρχικὸν ὁρμητήριον τῶν στασιαστῶν, τὴν Τύνιδα, ὅπου εὑρίσκοντο δύο ἐκ τῶν ἀρχηγῶν των ἐπὶ κεφαλῆς ἱκανῶν ἀκόμη δυνάμεων. Τὸν ἕνα τούτων συνέλαβεν αἰχμάλωτον ὁ Ἀννίβας καὶ τὸν κατέσφαξεν. Ὁ ἕτερος ὅμως ἐπέτυχε νὰ αἰχμαλωτίσῃ καὶ αὐτὸς τὸν Ἀννίβαν, ὑποστάντα τὴν ἰδίαν τύχην. Ἀλλ' εἰς ἑπομένην μάχην κατενικήθη οὗτος ὑπὸ τοῦ Ἀμίλκα καὶ συνελήφθη ὁμοῦ μετὰ τῶν ὑπολοίπων στασιαστῶν, ἐκ τῶν ὁποίων οὐδεὶς ἐπέζησεν.

Οὕτως ἐτερματίσθη, διαρκέσας ἐπὶ τρία ἔτη καὶ τέσσαρας μῆνας, ὁ ἀπιστεύτως αἱματηρὸς αὐτὸς πόλεμος, τοῦ ὁποίου αἱ σκληρότητες ἐπροκάλεσαν, καὶ ὑπὸ τὰ ἤθη ἀκόμη τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, τὴν φρίκην καὶ τὴν βδελυγμίαν τῶν λαῶν. Εἶχε δ' ἐπὶ πλέον ὁ πόλεμος οὗτος τὸν ἀντίκτυπόν του καὶ ἐν Κορσικῇ, ὅπως οἱ ἐκεῖ εὑρισκόμενοι μισθοφόροι, ἐκδικούμενοι τὴν ἐξόντωσιν τῶν συναδέλφων των, ἔσφαξαν τὸν Καρχηδόνιον ἀρχηγόν των Μπόσταρ καὶ ὅλους τοὺς συμπατριώτας του. Οἱ κάτοικοι τῆς νήσου τότε ἐπωφελήθησαν τῆς περιστάσεως, διὰ ν' ἀπαλλαγῶσι τῆς παρουσίας καὶ Καρχηδονίων καὶ μισθοφόρων, ἀνακηρύξαντες τὴν Κορσικὴν ἀνεξάρτητον καὶ καλέσαντες εἰς βοήθειάν των τοὺς Ρωμαίους. Ἡ ὑπόθεσις δ' αὕτη ὑπῆρξεν ἡ πραγματικὴ ἀφορμὴ τοῦ μετέπειτα β´ καρχηδονικοῦ πολέμου.

—Ω.

**μισθῶ** (—όω), *ἀόρ. ἐμίσθωσα —ἐμισθώθην, παθ. μετχ. μεμισθωμένος*· παρέχω τι ἐπὶ μισθώματι, ἐπὶ ἐνοικίῳ, ἐκμισθῶ, ἄλλως *ἐνοικιάζω*: «μισθῶ τὴν οἰκίαν, — τὸν ἀγρόν, — τὸ ἐργοστάσιον»· ‖ προσλαμβάνω ἐπὶ μισθῷ: «ἐμίσθωσε δολοφόνους», «ἐμισθώθη ὑπηρέτης».

**μίσθωμα** (τό)· τὸ παρεχόμενον χρηματικὸν ποσὸν διὰ τὴν μίσθωσιν, ἡ συμφωνηθεῖσα ἀμοιβή, τὸ ἐνοίκιον: «τὸ μηνιαῖον μίσθωμα», «τὸ μίσθωμα τῆς οἰκίας, —τοῦ κτήματος, —τοῦ ἐργοστασίου».

— *['Αστ. Δίκ.]* Καλεῖται *μίσθωμα* (merces, pensio) τὸ χρηματικὸν ἀντάλλαγμα, ὅπερ ὑποχρεοῦται νὰ παράσχῃ ἐπὶ μὲν μισθώσεως πράγματος ὁ μισθωτὴς εἰς τὸν ἐκμισθωτήν, ἐπὶ δὲ μισθώσεως ἔργου ὁ ἐκμισθωτὴς εἰς τὸν μισθωτήν. Ἐπὶ μισθώσεως ἐργασίας τὸ χρηματικὸν ἀντάλλαγμα, ὅπερ ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται ὅπως παράσχῃ εἰς τὸν ἐκμισθωτήν, καλεῖται εἰδικῶς *μισθὸς* (βλ. καὶ λ. *μίσθωσις, μισθός, ναῦλος*).

Δ. Φ. Π.

**μισθώνω**· δημοτ. τύπος τοῦ *μισθῶ* (βλ. λ.).

**μίσθωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ *μισθοῦν*, ἡ ἐπὶ μισθῷ ἢ μισθώματι παροχή: «μίσθωσις οἰκίας, — ἀγροῦ», «μίσθωσις ἐργατῶν, — ὑπηρεσιῶν».

—[ΑΣΤ. ΔΙΚ.] Καλεῖται *μίσθωσις* (Locatio conductio) κατὰ τὸ παρ' ἡμῖν ἰσχῦον ρωμαϊκὸν δίκαιον ἡ σύμβασις, διὰ τῆς ὁποίας τὸ μὲν ἓν μέρος ὑποχρεοῦται νὰ παράσχῃ εἰς τὸ ἕτερον τὴν χρῆσιν ἢ τὴν χρῆσιν καὶ τὴν κάρπωσιν πράγματος ἢ δικαιώματός τινος διά τινα χρόνον, ἢ ἐργασίαν, ἢ τὸ ἀποτέλεσμα μιᾶς ἐργασίας, τὸ δ' ἕτερον μέρος ὑποχρεοῦται νὰ παράσχῃ εἰς ἀντάλλαγμα χρήματα (Εἰσ. 3,24.—Π.19,2.—Κ.4,65).

Γενικῶς παρατηροῦμεν ὅτι:

Α. Ὡς ἐν τῷ ὁρισμῷ ἐμφαίνεται, ἡ μίσθωσις διακρίνεται εἰς:

1) μίσθωσιν πράγματος (Locatio conductio rei),

2) μίσθωσιν ἐργασίας (Locatio conductio operarum)· καὶ

3) μίσθωσιν ἔργου (Locatio conductio operis).

Ὁ νομικὸς χειρισμὸς ἑκάστου εἴδους εἶναι ἐν πολλοῖς διάφορος, ἕνεκα δὲ τοῦ λόγου τούτου εἰς τὰς νεωτέρας νομοθεσίας ἀποφεύγεται ἡ ὑπαγωγὴ τῶν τριῶν τούτων εἰδῶν εἰς κοινὴν νομικὴν ἔννοιαν. Οὕτω, ὁ γερμανικὸς κῶδιξ ρυθμίζει ἕκαστον εἶδος ὡς ὅλως κεχωρισμένον τύπον συμβάσεως, ὑπὸ ἴδιον ἕκαστον ὄνομα, καὶ δὴ τὸ πρῶτον εἶδος ὑπὸ τὸν ὅρον *μίσθωσις* (Miete.—Γερμ. Κ. § 535 καὶ ἑπ.), τὸ δεύτερον εἶδος ὑπὸ τὸν ὅρον *σύμβασις ἐργασίας* (Dienstvertrag. — Γερμ. Κ. § 611 καὶ ἑπ.) καὶ τὸ τρίτον εἶδος ὑπὸ τὸν ὅρον *σύμβασις ἔργου* (Werkvertrag.—Γερμ. Κ. § 631 καὶ ἑπ. Πρβλ. ἐν τούτοις Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1708 καὶ 1711).

Περαιτέρω ἡ μίσθωσις πράγματος διακρίνεται κατὰ τὸν αὐτὸν ὁρισμὸν εἰς: α) μίσθωσιν μὲ ἀντικείμενον τὴν χρῆσιν πράγματός τινος· καὶ β) μίσθωσιν μὲ ἀντικείμενον τὴν χρῆσιν καὶ κάρπωσιν πράγματος ἢ δικαιώματός τινος.

Καὶ τὸ πρῶτον μὲν τῶν μερικωτέρων τούτων εἰδῶν περιλαμβάνεται ὑπὸ τὸν ὅρον «μίσθωσις πράγματος» ὑπὸ στενὴν σημασίαν, περὶ ἧς κυρίως θὰ πραγματευθῶμεν ἐν τῷ λήμματι τούτῳ, τὸ δ' ἕτερον μερικώτερον εἶδος ὑπὸ τὸν ὅρον «πάκτωσις», περὶ ἧς γίνεται λόγος εἰς τὰ σχετικὰ λήμματα (βλ. λ. *ἐπίμορτος καλλιέργεια, πάκτωσις)*. Γενικῶς ἡ πάκτωσις ρυθμίζεται ὑπὸ τῶν κανόνων τῆς μισθώσεως πράγματος, ἐν τοῖς καθ' ἕκαστον ὅμως ὑπάρχουσι παραλλαγαί τινες, οὕτως ὥστε ἐν ταῖς νεωτέραις νομοθεσίαις δημιουργεῖται ἴδιον κεφάλαιον περὶ αὐτῆς (Γερμ. Κ. § 581 καὶ ἑπ. Πρβλ. καὶ Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1763 καὶ ἑπ.).

Παρ' ἡμῖν ἰσχύουσιν ὡς γενικὸν δίκαιον οἱ ὁρισμοὶ τοῦ ρωμ. δικαίου ἐπὶ τῶν σημείων τούτων. Ἐν τῷ καταρτιζομένῳ σχεδίῳ ἀστικοῦ κώδικος, καθ' ἃ ἐν τῷ διαγράμματι αὐτοῦ τοῦ 1930 ἀναφέρεται, «ἡ μίσθωσις ὑπηρεσιῶν εἶναι τὸ κεφάλαιον, ὅπερ θέλει ἔχει νέαν μορφήν, ἐν πολλοῖς δὲ καὶ οὐσίαν νέαν ἐν σχέσει πρὸς τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον, τὸν ἰόνιον καὶ τὸν σαμιακὸν κώδικα», ἡ δὲ πάκτωσις «θέλει διατυπωθῆ εἰς εἰδικὰ ἄρθρα».

Β. Οἱ Ρωμαῖοι ἐχρησιμοποίησαν διὰ τὴν ὑποδήλωσιν τῆς ἐννοίας τῆς μισθώσεως τοὺς ὅρους: locare (τοποθετῶ, ἐκθέτω) καὶ conducere (συνάγω, ὁδηγῶ). Τοῦτο ἐξηγεῖται πιθανῶς ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ μίσθωσις πράγματος ἐνεφανίσθη ἀρχικῶς ἐπὶ κτηνῶν καὶ δούλων. Ὁ ἰδιοκτήτης ἐκθέτει τούτους εἰς τὴν ἀγορὰν πρὸς ἐκμίσθωσιν (locat), ὁ δ' ἔχων ἀνάγκην αὐτῶν ὁδηγεῖ τούτους μεθ' ἑαυτοῦ (conducit). Οὕτω, ἐπὶ τῆς μισθώσεως πράγματος, ὁ παρέχων τὴν χρῆσιν καλεῖται locator (ἐκμισθωτής), ὁ δὲ λαμβάνων ταύτην conductor (μισθωτής). Ἀνάλογόν τι συνέβαινεν ἐπὶ τοῦ ἐλευθέρου ἐργάτου, ὅστις προσέφερεν ἑαυτὸν δι' ὑπηρεσίαν. Καὶ ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ὁ ἐργάτης καλεῖται locator (ἐκμισθωτής), ὁ δ' ἔχων ἀνάγκην τῆς ὑπηρεσίας του καὶ ὁδηγῶν τοῦτον μεθ' ἑαυτοῦ conductor (μισθωτής). Ἀντιθέτως ὅμως ἐπὶ τῆς μισθώσεως ἔργου, φαίνεται ὅτι συνήθως ὁ ἐπιθυμῶν τὸ ἔργον ἐξέθετε τὰ ὑλικὰ εἰς τὴν ἀγορὰν (locat), ὁ δὲ δυνάμενος νὰ κατασκευάσῃ τοῦτο μετέφερε μεθ' ἑαυτοῦ εἰς τὸ ἐργαστήριόν του ταῦτα (conducit). Οὕτω ἐπὶ τῆς μισθώσεως ἔργου ὁ καταβάλλων τὰ χρήματα ἐργοδότης εἶναι locator (ἐκμισθωτής), ὁ δὲ ἀναλαμβάνων ἐπὶ τῷ ἀνταλλάγματι τούτῳ τὴν κατασκευὴν τοῦ ἔργου εἶναι ὁ conductor (μισθωτής).

I) ΜΙΣΘΩΣΙΣ ΠΡΑΓΜΑΤΟΣ (ὑπὸ στενὴν σημασίαν).

Οὕτω καλεῖται ἡ σύμβασις, δι' ἧς ὁ εἷς τῶν συμβαλλομένων, καλούμενος ἐκμισθωτὴς (locator), ὑποχρεοῦται νὰ παράσχῃ εἰς τὸν ἕτερον, καλούμενον μισθωτὴν (conductor), διὰ χρόνον τινὰ τὴν χρῆσιν πράγματός τινος, ὅπερ **καλεῖται *μίσθιον***, ἀντὶ χρηματικοῦ ποσοῦ, ὅπερ **καλεῖται** μίσθωμα (merces, pensio).

Α. Γενικῶς παρατηροῦμεν:

1) Ἡ μίσθωσις πράγματος διακρίνεται: α) τοῦ *χρησιδανείου,* καθ' ὅσον ἐν τούτῳ ἡ παροχὴ τῆς χρήσεως γίνεται ἄνευ ἀνταλλάγματος· β) τοῦ *ἐντόκου δανείου,* καθ' ὅσον ἐν τούτῳ ὁ ὀφειλέτης δὲν ὑποχρεοῦται εἰς ἐπιστροφὴν αὐτῶν τούτων τῶν ἀντικειμένων τοῦ δανείου, ἀλλ' ἑτέρων πραγμάτων τῆς αὐτῆς ποσότητος καὶ ποιότητος· γ) τῆς *ἀγοραπωλησίας,* καθ' ὅσον ἐν ταύτῃ ὁ πωλητὴς ὑποχρεοῦται εἰς τὴν παροχὴν ἀνενοχλήτου νομῆς τοῦ πράγματος καὶ οὐχί, ὡς ὁ ἐκμισθωτὴς ἐν τῇ μισθώσει, τῆς χρήσεως ἁπλῶς αὐτοῦ· καὶ δ) τῆς *ἐπικαρπίας* καὶ τῶν λοιπῶν ἐν γένει προσωπικῶν δουλειῶν, καθ' ὅσον αὗται ἀποτελοῦσιν ἐμπράγματα δίκαια, ἐνῷ ἡ διὰ τῆς μισθώσεως δημιουργουμένη σχέσις εἶναι ἐνοχική.

2) Ἀντικείμενον τῆς μισθώσεως δύναται νὰ εἶναι πᾶν πρᾶγμα ἀκίνητον ἢ κινητὸν μὴ ἀναλωτὸν (βλ. λ. *πρᾶγμα*). Τὸ μίσθιον δὲν ἀπαιτεῖται ν' ἀνήκῃ κατὰ κυριότητα εἰς τὸν ἐκμισθωτήν, δὲν δύναται ὅμως ν' ἀνήκῃ εἰς τὸν μισθωτήν, ἐκτὸς ἂν οὗτος διετέλει ἐν γνώσει ὅτι μισθώνει ἴδιον ἑαυτοῦ πρᾶγμα (πρβλ. Π. 19, 2, 9, 6).

Αὐτὸ τοῦτο τὸ μίσθιον δύναται ὁ μισθωτὴς νὰ ἐκμισθώσῃ εἰς τρίτον (ἐκτὸς ἂν τοῦτο ἀπηγορεύθη ἐν τῇ συμβάσει), ὅτε ὑφίσταται *ὑπομίσθωσις* (sublocatio) (βλ. λ.).

3) Ἡ μίσθωσις καταρτίζεται δι' ἁπλῆς συμφωνίας μεταξὺ τῶν μερῶν ἐπὶ τοῦ μισθίου καὶ τοῦ μισθώματος (solo consensu), οὐδενὸς ἰδιαιτέρου συστατικοῦ τύπου ἀπαιτουμένου (πρβλ. Π. 19, 2, 2, πρ. Ὡς πρὸς τὰς ἀλλοδαπὰς νομοθεσίας βλ. Γερμ. Κ. §§ 566 καὶ 581. Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1714).

Β. *Μισθωτικὴ σχέσις.* Ἡ ἐκ τῆς μισθώσεως δημιουργουμένη μεταξὺ τῶν μερῶν σχέσις καὶ ἡ ἐκ ταύτης ἀπορρέουσα ἔμμεσος σχέσις τοῦ μισθωτοῦ πρὸς τὸ μίσθιον, καλεῖται μισθωτική. Δυνάμει ταύτης ὁ μισθωτὴς ἀποκτᾷ δικαίωμα χρήσεως τοῦ πράγματος, ὅπερ δικαίωμα ἀποτελεῖ ἁπλῆν κατοχήν. Ἑπομένως ὁ μισθωτὴς κατὰ τὸ ρωμ. δίκαιον δὲν ἀποκτᾷ ἐμπράγματον δικαίωμα ἐπὶ τοῦ πράγματος, οὐδὲ νομὴν ἐπ' αὐτοῦ. Οὕτω ἡ ὑπὸ τοῦ νόμου παρεχομένη προστασία τοῦ μισθωτοῦ εἶναι ἐν πολλοῖς ἐλλιπής. Ἐπὶ τοῦ σημείου τούτου παρατηροῦμεν κυρίως τὰ ἑξῆς:

1) Ὁ τοιοῦτος ὑπὸ τοῦ νόμου χειρισμὸς τῆς μισθωτικῆς σχέσεως ὀφείλεται κυρίως εἰς λόγους ἱστορικούς. Ἐν Ρώμῃ οἰκίας (insulas) κυρίως ἐμίσθουν οἱ πένητες, καθ' ὅσον οἱ πλούσιοι Ρωμαῖοι κατῴκουν εἰς ἰδιοκτήτους τοιαύτας. Τὸ ἀστικὸν ἑπομένως κράτος τῆς Ρώμης οὐδόλως ἐνδιεφέρετο ὅπως προστατεύσῃ πλήρως τὸν μισθωτήν, ἡ δὲ ρωμαϊκὴ νομοθεσία οὐδὲν δικαίωμα ἄμεσον ἐπὶ τοῦ πράγματος ἀνεγνώρισεν εἰς τὸν μισθωτήν, καὶ τοῦτο ἵνα κυρίως καθίσταται εὐχερὴς ἡ ἔξωσις αὐτοῦ καὶ ἡ πώλησις τοῦ μισθίου. Ἡ νομοθεσία αὕτη δὲν μετεβλήθη καὶ ὅταν μεταγενεστέρως εἰσέρρευσεν εἰς τὴν Ρώμην μέγας ἀλλοδαπὸς πληθυσμός, καταστήσας ἐπιτακτικὴν τὴν μείζονα προστασίαν τοῦ μισθωτοῦ, ὅστις δὲν ἐξηκολούθει νὰ εἶναι πάντοτε ὁ πένης πληβεῖος, φαίνεται δ' ὅτι τὰ ἑκάστοτε ἀναφυόμενα σχετικὰ ζητήματα ἔλυεν ἐν πνεύματι ἐπιεικείας ὁ πραίτωρ, εἶτα δὲ ὁ ἡγεμών.

2) Τὰ κύρια νομικὰ ἐπακόλουθα τῆς ἁπλῶς ἐνοχικῆς ἰδιότητος τῆς μισθωτικῆς σχέσεως, ἅτινα ἐμφανίζουσιν ἀτελῆ πως τὴν ὑπὸ τοῦ νόμου παρεχομένην ταύτῃ προστασίαν, εἶναι τὰ ἑξῆς:

α) Ὁ μισθωτὴς ὡς ἁπλοῦς κάτοχος καὶ οὐχὶ νομεὺς τοῦ μισθίου στερεῖται τῶν παραγγελμάτων τῆς νομῆς, τῆς condictio possessionis, καὶ κατὰ κανόνα τοῦ δικαιώματος, ὅπως αἰτήσηται τὴν προσωρινὴν ρύθμισιν τῆς νομῆς. Ἀμφισβητεῖται ἂν παρὰ ταῦτα δύναται ὁ μισθωτὴς νὰ κινήσῃ τὸ παράγγελμα περὶ βίας (πρβλ. Π. 43,16,1,9), πλὴν ἡ κρατοῦσα γνώμη δὲν δέχεται τοῦτο (πρβλ. Π. 43,16,1,10. ΑΠ. 21/1925).

β) Ὁ μισθωτής, ὡς μὴ κεκτημένος ἐμπράγματον δικαίωμα ἐπὶ τοῦ πράγματος, στερεῖται τῶν actiones negatoria, confessoria, communi dividundo, finium regundorum, ex lege Aquilia καὶ τῆς condictio furtiva, ἔτι δὲ τῆς προστασίας τοῦ ἄρθρου 19 τοῦ ἐν ἰσχύϊ Συντάγματος (βλ. λ. *ἰδιοκτησία, κυριότης ἀρνητικὴ ἀγωγή, **δουλεῖαι**, διανομή, μικταὶ ἀγωγαί, ὅρια,* ***Ἀκουΐλιος νόμος, κλοπή***).

Digitized by Google

γ) Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον ὁ ἀγοραστής, καταστὰς κύριος τοῦ μισθίου, δύναται νὰ διεκδικήση παρὰ τοῦ μισθωτοῦ τὸ πρᾶγμα ὡς ἰσχυρότερος αὐτοῦ καὶ οὕτω ν' ἀποβάλῃ τὸν μισθωτὴν ἀπὸ τῆς κατοχῆς τοῦ πράγματος. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ὁ μισθωτὴς ἔχει δικαίωμα ἀποζημιώσεως κατὰ τοῦ ἐκμισθωτοῦ, δυνάμενος νὰ προσεπικαλέσῃ αὐτὸν εἰς τὴν σχετικὴν μεταξὺ τοῦ νέου κυρίου καὶ αὐτοῦ δίκην (πρβλ. Πολιτ. Δικ. ἄρθ. 69), ὅπερ δικαίωμα δὲν δύναται νὰ θεωρηθῇ ἀρκοῦσα ἱκανοποίησις διὰ τὸν μισθωτήν, ἀφοῦ οὗτος πάντως ἀπόλλυσι τὴν χρῆσιν τοῦ μισθίου καὶ ἐφ' ὅσον κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς κατὰ τοῦ ἐκμισθωτοῦ ἀποφάσεως ἐνδέχεται ὁ τελευταῖος οὗτος νὰ μὴ κέκτηται ἱκανὴν περιουσίαν. Ἡ ἀποζημίωσις ἄλλως τε αὕτη δὲν δύναται νὰ ὑπερβῇ τὸ διπλάσιον τοῦ μισθώματος ὁλοκλήρου τοῦ χρόνου τῆς μισθώσεως (πρβλ. Κ. 7,47,1. Ἐφ. Ἀθ. 274/1920. Κατὰ τὴν ἀπόφασιν Ἐφ. Ἀθ. 510/1915. ὅριον ἀποτελεῖ τὸ διπλάσιον οὐχὶ τοῦ μισθώματος ἀλλὰ τῆς ἀξίας τοῦ μισθίου).

Τὸ γεγονὸς ὅτι ὁ ἀγοραστὴς καταστὰς κύριος τοῦ πράγματος δύναται ν' ἀποβάλῃ τῆς κατοχῆς αὐτοῦ τὸν μισθωτὴν ἐκφράζεται διὰ τοῦ νομικοῦ ρητοῦ: «ἡ πώλησις λύει τὴν μίσθωσιν»· ἡ τοιαύτη ὅμως ἔκφρασις εἶναι ἥκιστα προσφυής, καθόσον ἡ ἀπὸ τοῦ μισθίου ἀποβολὴ τοῦ μισθωτοῦ ἀποτελεῖ ἁπλῆν ἐπιγενομένην ἀδυναμίαν τῆς παροχῆς τοῦ ἐκμισθωτοῦ πταίσματι αὐτοῦ, ἡ δὲ τοιαύτη ἀδυναμία γεννᾷ τὴν πρὸς ἀποζημίωσιν ὑποχρέωσιν τοῦ ἐκμισθωτοῦ (βλ. κατωτέρω ΙΔ).

δ') Ἐν περιπτώσει δυστροπίας τοῦ ἐκμισθωτοῦ ὅπως παράσχῃ τὴν χρῆσιν τοῦ πράγματος, ἡ ἐκτέλεσις τῆς κατ' αὐτοῦ ἀποφάσεως δὲν δύναται νὰ χωρήσῃ φυσικῶς, ἀδυνάτου ὄντος κατὰ νόμον τοῦ ἀμέσου καταναγκασμοῦ εἰς ὑλικὴν ἐκτέλεσιν τῆς συμβάσεως. Ἀντὶ ταύτης ὁ μισθωτὴς θ' ἀρκεσθῇ εἰς τὸ *διαφέρον* (βλ. λ.). Ἄλλως θὰ εἶχε τὸ πρᾶγμα, ἐὰν ἐκ τῆς μισθώσεως ἐτίκτετο ἐμπράγματον δικαίωμα ἐπὶ τοῦ πράγματος (πρβλ. Π. 19,2, 9 πρ. Α. Π. 148/1927. Πολιτ. Δικ. ἄρθ. 880 ἐδ. 3).

3) Τὴν μειονεκτικὴν ταύτην θέσιν τοῦ μισθωτοῦ καὶ πακτωτοῦ κολάζουσί πως αἱ κατωτέρω κυρίως διατάξεις τοῦ ἰσχύοντος παρ' ἡμῖν δικαίου:

α') Ὁ μισθωτὴς ἀγροτικοῦ κτήματος κέκτηται κατ' ἐξαίρεσιν τὸ περὶ βίας παράγγελμα, ὁ δὲ μισθωτὴς δημοσίου ἀκινήτου τὸ interdictum de loco publico fruendo, πρὸς ἀπόκρουσιν τῆς παρενοχλήσεως αὐτοῦ ἐν τῇ χρήσει τοῦ μισθίου (πρβλ. Π. 43, 9, 1).

β') Ὁ μισθωτὴς ἐν περιπτώσει βιαίας ἀποβολῆς του ἀπὸ τοῦ μισθίου καὶ ἀπουσίας τοῦ ἐκμισθωτοῦ δύναται νὰ αἰτήσηται τὴν προσωρινὴν ρύθμισιν τῆς νομῆς (πρβλ. Π. 43,24,11 καὶ 12. Βασ. 50, 3, 60, Α. Π. 95/1869. Ταῦτα ἐὰν δεχθῶμεν χωροῦντα τὰ προσωρινὰ μέτρα καὶ ἐπὶ βιαίας ἀπωλείας τῆς νομῆς).

γ') Ὁ μισθωτὴς ἀγροτικοῦ κτήματος κέκτηται κατὰ τῶν φθειρόντων καὶ ἀφαιρούντων τοὺς καρποὺς τοῦ μισθίου τὴν actio ex lege Aquilia in factum (βλ. λ. *Ἀκουΐλιος νόμος*. Πρβλ. Π. 9, 2, 27, 14. Α. Π. 215/1906. Ἐφ. Ἀθ. 2005/1906).

δ') Ἐπὶ ἐπικειμένου κινδύνου παρέχεται ἀσφάλεια τῷ μισθωτῇ (πρβλ. Π. 39, 2, 13,5).

ε') Κέκτηται ὁ μισθωτὴς καὶ κατὰ τοῦ κυρίου τὸ δικαίωμα ἀμύνης, ἔτι δὲ τὴν ἀγωγὴν τοῦ φόβου, τὴν τοῦ δόλου καὶ τὴν περὶ κλοπῆς κατὰ τρίτων (Π. 4, 2, 21, 4, Ἐφ. Ἀθ. 111/1915).

στ') Δύναται ὁ μισθωτὴς νὰ αἰτήσεται παρὰ τοῦ ἐκμισθωτοῦ ἐπὶ ἀπειλῇ ἀποζημιώσεως τὴν ἐκχώρησιν πασῶν τῶν ἀγωγῶν, ὧν αὐτὸς στερεῖται, κρατεῖ δ' ἡ γνώμη ὅτι χωρεῖ ἐκχώρησις καὶ αὐτῆς ταύτης τῆς νομῆς παρακλητικῶς, ὅτε ὁ μισθωτὴς δύναται νὰ ποιῆται χρῆσιν τῶν παραγγελμάτων κατὰ τρίτων (πρβλ. Π. 43, 16, 1. Π. 41, 2, 10, 1).

ζ') Ἐὰν συνεπείᾳ ἐνδίκου μέσου ἐξαφανισθῇ ἀπόφασις περὶ ἐξώσεως ἐκτελεσθεῖσα, διατάσσεται δι' ἀποφάσεως τοῦ αὐτοῦ δικαστηρίου τοῦ ἐκδικάσαντος τὸ ἔνδικον μέσον, κατ' αἴτησιν τοῦ μισθωτοῦ ὑποβαλλομένην καὶ διὰ τῶν προτάσεων, ἡ ἐπανεγκατάστασις αὐτοῦ εἰς τὸ μίσθιον, τῆς περὶ τούτου διατάξεως ἐκτελουμένης καὶ κατὰ παντὸς ἕλκοντος τὰ δικαιώματά του ἐκ τοῦ ἐκμισθωτοῦ, τοῦ μισθωτοῦ δικαιουμένου εἰς ἀνόρθωσιν πάσης ἄλλης ζημίας. Νόμος 3239 τῆς 8/20 Δεκεμβρίου 1924. Καὶ πρὸ τοῦ νόμου τούτου ἡ νομολογία ἐδέχετο τὴν ἐπανεγκατάστασιν ἐν τῇ περιπτώσει τῆς δι' ἐνδίκου μέσου ἐξαφανίσεως ἐκτελεσθείσης ἐξωστικῆς ἀποφάσεως (πρβλ. νόμον ΒΧΗ' Ἐφ. Κερκύρας 19/1918).

η') Εἰς τοὺς τοπικοὺς κώδικας (Ἰόνιον, Σαμιακὸν καὶ Κρητικὸν) ἰσχύει ἡ ἀρχὴ ὅτι ἡ ἀγοραπωλησία δὲν λύει τὴν μίσθωσιν, ὑπὸ τὴν ἔννοιαν ὅτι ὁ ἀγοραστὴς καταστὰς κύριος τοῦ μισθίου δὲν δύναται ν' ἀποβάλῃ ἐξ αὐτοῦ τὸν μισθωτήν.

θ') Τέλος εἰς τὰ προσωρινῆς ἰσχύος νομοθετικὰ διατάγματα περὶ ἐνοικιοστασίου καὶ εἰς τὸν προσωρινῶς ἰσχύοντα νόμον 4784 «Περὶ ρυθμίσεως ἐν γένει τῶν μισθώσεων ἐπὶ παντὸς εἴδους ἀστικῶν ἀκινήτων» (ἄρθρ. 56, ἀριθ. 2) ὡρίσθη ὅτι διὰ τῆς ἐκουσίας ἢ ἀναγκαστικῆς ἐκποιήσεως τοῦ μισθίου δὲν λύεται ἡ παρατεινομένη (διὰ τοῦ ἐνοικιοστασίου) μίσθωσις, ὡς καὶ ἡ μήπω λήξασα, συνωμολογημένη δὲ πρὸ τῆς 1' Απριλίου 1925, καὶ ἂν ἔτι ὑπὸ τῶν μερῶν ὡρίσθη ἄλλως, ἐφόσον διαρκεῖ τὸ ἐνοικιοστάσιον. Ἡ διάταξις αὕτη ἀναστέλλει ἐπὶ ὡρισμένων περιπτώσεων τὸν κανόνα, καθ' ὃν ἡ πώλησις λύει τὴν μίσθωσιν ὑπὸ τὴν ρηθεῖσαν ἔννοιαν αὐτοῦ (βλ. λ. *ἐνοικιοστάσιον*).

4) Εἰς τὰς νεωτέρας νομοθεσίας καταβάλλεται προσπάθεια, ὅπως ἡ προστασία τοῦ μισθωτοῦ καταστῇ ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον πλήρης. Οὕτω κατὰ τὸν γερμανικὸν κώδικα (§§ 868 καὶ 571 ἐπ.) ἀφ' ἑνὸς μὲν ὁ μισθωτὴς εἶναι νομεὺς καὶ δὴ ἄμεσος, ἔχων καὶ αὐτὸς παρὰ τὸν ἐκμισθωτὴν—ἔμμεσον νομέα—τὰς ἀγωγὰς τῆς νομῆς καὶ μάλιστα ὑπερισχύων ὡς νομεὺς καὶ αὐτοῦ τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἐπὶ ἀπαλλοτριώσεως τοῦ μισθίου ὁ νέος κύριος νόμῳ λαμβάνει τὴν θέσιν τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ὑπεισερχόμενος εἰς τὰ ἐκ τῆς μισθώσεως δικαιώματα καὶ ὑποχρεώσεις αὐτοῦ, προϋποτιθεμένου ὅτι ἔχει ἤδη λάβει χώραν ἡ παροχὴ τῆς χρήσεως τοῦ μισθίου τῷ μισθωτῇ. Ἐν Γαλλίᾳ ὁ μισθωτὴς δὲν εἶναι νομεύς, ἀλλ' ἁπλῶς κάτοχος, μὴ προστατευόμενος μὲ τὰς ἀγωγὰς τῆς νομῆς. Ἐξ ἄλλου ὅμως, ἐν περιπτώσει ἀπαλλοτριώσεως τοῦ μισθίου, ὁ νέος κύριος δὲν δύναται κατὰ κανόνα νὰ ἐξώσῃ τὸν μισθωτὴν ὑπεισερχόμενος εἰς τὴν θέσιν τοῦ ἐκμισθωτοῦ (γαλλικὸς κῶδιξ ἀρθ. 1743 ἐν συνδυασμῷ μὲ τὸν νόμον τῆς 23 Μαΐου 1855).

Παρ' ἡμῖν, ἡ ἀνάγκη τῆς πληρεστέρας προστασίας τοῦ μισθωτοῦ ἀνεγνωρίσθη, ἡ δ' ἀναγνώρισις αὕτη ἐξεδηλώθη εἰς τὰ ἄρθρα 565 καὶ 1618 κυρίως τοῦ νομοσχεδίου ἀστικοῦ κώδικος τοῦ 1874, ὡς καὶ εἰς τὰ κατὰ τὰ ρηθέντα προσωρινῆς ἰσχύος νομοθετικὰ διατάγματα περὶ ἐνοικιοστασίου καὶ τὸν νόμον 4784. Ἡ τελευταία πρὸς σύνταξιν ἀστικοῦ κώδικος ἐπιτροπή, ἐν τῷ διαγράμματι τοῦ 1930, ἀναγράφει ὅτι λόγοι στοιχειώδους προστασίας τοῦ μισθωτοῦ ἐπιβάλλουν τὴν υἱοθέτησιν τῆς ἀρχῆς ἐπί τε ἀκινήτων καὶ κινητῶν μισθίων ὅτι ἡ ἀγορὰ δὲν διασπᾷ τὴν μίσθωσιν, ὑπὸ τὴν ἔννοιαν δηλαδὴ ὅτι ὁ ἀποκτήσας τὸ μίσθιον ἀγοραστὴς δὲν δύναται ν' ἀποβάλῃ τῆς κατοχῆς τοῦ μισθίου τὸν μισθωτήν. Διὰ τῆς ἀρχῆς ταύτης ἡ θέσις τοῦ νέου κυρίου δὲν εἶναι ἁπλῶς παθητική, διότι οὗτος δὲν θὰ ὑποχρεοῦται μόνον ν' ἀνέχηται τὸν μισθωτὴν ἐν τῇ κατοχῇ τοῦ μισθίου, ὅπερ θὰ συνέβαινεν ἐὰν ὁ μισθωτὴς ἀνεγνωρίζετο ἁπλῶς ὡς φορεὺς ἐμπραγμάτου δικαίου, ἀλλὰ πέραν τούτου ὁ νέος κύριος θὰ ὑπεισέρχεται εἰς τὰ δικαιώματα καὶ τὰς ὑποχρεώσεις τοῦ ἐκμισθωτοῦ (obligatio ex lege). Εἶναι ἀληθὲς ὅτι εἰς τὰ συμβόλαια ἀγοραπωλησίας διὰ παρεπομένου συμφώνου ὁρίζεται συνήθως ὅτι ὁ ἀγοραστὴς δέον ν' ἀνεχθῇ τὸν μισθωτὴν ἐν τῇ μισθώσει, ἐκχωροῦνται δ' εἰς αὐτὸν καὶ πάντα τὰ ἐκ τῆς μισθώσεως δικαιώματα τοῦ ἐκμισθωτοῦ πωλητοῦ. Ἡ τοιαύτη ὅμως συνήθεια δὲν αἴρει τὴν ἀνάγκην τῆς νομοθετικῆς ρυθμίσεως τοῦ ζητήματος.

Παρὰ τὴν ἐν ταῖς νεωτέραις νομοθεσίαις πληρεστέραν πως προστασίαν τοῦ μισθωτοῦ δὲν θίγεται ἡ ἐνοχικὴ ἰδιότης τῆς μισθωτικῆς σχέσεως.

γ. ***Περιεχόμενον.*** Ἐκ τῆς μισθώσεως πράγματος γεννῶνται ἀμοιβαίως δικαιώματα καὶ ὑποχρεώσεις τῶν μερῶν. Ἕκαστον τούτων εὐθύνεται διὰ πᾶσαν ἀμέλειαν, ἤτοι διὰ δόλον, βαρεῖαν καὶ ἐλαφρὰν ἀμέλειαν, ὡς ὠφελούμενον ἐκ τῆς συμβάσεως. Ἐν τοῖς καθ' ἕκαστον τὰ δικαιώματα καὶ αἱ ὑποχρεώσεις τῶν μερῶν ρυθμίζονται ὑπὸ τῆς συμβάσεως. Ἐλλείψει εἰδικῶν ταύτης ὁρισμῶν ἰσχύουσι κατὰ τὸ παρ' ἡμῖν ἰσχῦον δίκαιον κυρίως τὰ ἑξῆς:

1) Ὁ ἐκμισθωτὴς ὑποχρεοῦται:

Νὰ παραδώσῃ εἰς τὸν συμφωνηθέντα χρόνον τὴν χρῆσιν τοῦ μισθίου καὶ νὰ διατηρῇ τοῦτο καθ' ὅλον τὸν χρόνον τῆς μισθώσεως εἰς κατάστασιν ἀνάλογον διὰ τὴν δι' ἣν ἐμισθώθη χρῆσιν (πρβλ. Γερμ. Κ. § 536. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1719). Ἐκ τῆς ἀρχῆς ταύτης ἕπονται κυρίως τὰ ἑξῆς:

α') Ἐὰν τὸ μίσθιον ἔχῃ νομικὸν ἐλάττωμα, ὡς π. χ. ἐὰν ὁ ἐκμισθωτὴς δὲν εἶχε δικαίωμα μισθώσεως αὐτοῦ, λόγῳ δὲ τοῦ ἐλαττώματος τούτου ὁ μισθωτὴς ἀπεβλήθη τῆς χρήσεως, δικαιοῦται οὗτος ἀποζημιώσεως, ἐὰν καὶ ἐφ' ὅσον διετέλει ἐν ἀγνοίᾳ τοῦ ἐλαττώματος· ἄλλως δὲν δικαιοῦται μὲν ἀποζημιώσεως, δὲν ὑποχρεοῦται ὅμως ἐξ ἄλλου εἰς τὴν καταβολὴν τοῦ μισθώματος (πρβλ. Π. 19, 2, 15, 1. Γερμ. Κ. § 541. Ἐφ. Ἀθ. 1181/1896).

β') Ἐὰν τὸ πρᾶγμα ἔχῃ κατὰ τὸν χρόνον τῆς μισθώσεως κεκρυμμένα ἐλαττώματα διακωλύοντα τὴν δι' ἣν ἐξεμίσθωσε χρῆσιν αὐτοῦ, ἢ ἐνεφανίσθησαν τοιαῦτα ἐλαττώματα διαρκοῦντος τοῦ χρόνου τῆς μισθώσεως, ὁ μισθωτὴς δύναται νὰ ὑπαναχωρήσῃ τῆς συμβάσεως ἢ νὰ αἰτήσηται ἀνάλογον μείωσιν τοῦ μισθώματος. Ἐὰν ὅμως ὁ ἐκμισθωτὴς ἐγνώριζε τὰ πραγματικὰ τοῦ πράγματος ἐλαττώματα καὶ δολίως ἀπεσιώπησε ταῦτα, ἢ ἐὰν σιωπηρῶς ἢ ρητῶς ὑπεσχέθη τὴν ἀνυπαρξίαν τοιούτων ἢ ὑπεσχέθη ἰδιότητας, ἃς δὲν ἔχει τὸ μίσθιον, εὐθύνεται εἰς τὸ *διαφέρον* (βλ. λ.) (πρβλ. Π. 2,225, 2. Π. 19, 2,19, 1. Γερμ. Κ. § 537. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1721. Ἐφ. Ἀθ. 119/1913 καὶ 187/1909 καὶ 2033/1896).

γ') Ἐὰν ἡ παροχὴ τῆς χρήσεως τοῦ μισθίου ἦτο ἀρχικῶς ἀπολύτως ἀδύνατος, οὐδεμία γεννᾶται ἐκ τῆς μισθώσεως ὑποχρέωσις τῶν μερῶν· ἐὰν δὲ σχετικῶς διὰ τὸν ἐκμισθωτὴν ἀδύνατος, ὑποχρεοῦται οὗτος εἰς τὸ διαφέρον. Ἐὰν διαρκοῦντος τοῦ χρόνου τῆς μισθώσεως κατέστη ἡ παροχὴ ἀδύνατος πταίσματι τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ὑποχρεοῦται πάλιν οὗτος εἰς τὸ διαφέρον, ἐὰν δὲ ἡ τοιαύτη ἀδυναμία ἐπῆλθεν ἐκ τῆς τύχης, ἀπαλλάσσεται μὲν πάσης ὑποχρεώσεως ἔναντι τοῦ μισθωτοῦ, δὲν δικαιοῦται ὅμως νὰ αἰτήσηται παρ' αὐτοῦ τὸ μίσθωμα, ἤτοι τὰ τυχηρὰ φέρει ὁ ἐκμισθωτὴς (periculum est locatoris), (πρβλ. Π. 19, 2, 27, Π. 19, 2, 30, 1. Α.Π. 269/1902. Ἐφ. Ἀθ. 165/1911, ΑΠ. 370/1894, ΑΠ. 26/1878. Γερμ. Κ. § 323 ἐπ. 542. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1722).

δ') Ὁ ἐκμισθωτὴς ὑποχρεοῦται νὰ φέρῃ τὰς δαπάνας τοῦ μισθίου, αἵτινες ἀπαιτοῦνται, ὅπως τοῦτο καθίσταται καὶ διατηρῆται κατάλληλον διὰ τὴν χρῆσιν δι' ἣν ἐξεμισθώθη. Ἐὰν αἱ δαπάναι ἐγένοντο ὑπὸ τοῦ μισθωτοῦ, ὑποχρεοῦται ὁ ἐκμισθωτὴς νὰ καταβάλῃ ταύτας τῷ μισθωτῇ, ἐφ' ὅσον πρόκειται περὶ δαπανῶν ἀναγκαίων ἢ ὠφελίμων, ἐὰν κατὰ τὴν σύμβασιν ἀπητοῦντο διὰ τὴν συμφωνηθεῖσαν χρῆσιν. Ἐφ' ὅσον ὅμως πρόκειται περὶ δαπανῶν πολυτελῶν, ὁ μισθωτὴς ἁπλῶς ἔχει τὸ δικαίωμα τῆς ἀφαιρέσεως (jus tollendi). Πρὸς ἀπόληψιν τῶν ἀναγκαίων καὶ τῶν ἐπωφελῶν δαπανῶν, κέκτηται ὁ μισθωτὴς δικαίωμα συμψηφισμοῦ αὐτῶν πρὸς ἰσόποσον μέρος τοῦ μισθώματος, ἔτι δὲ παρακατασχέσεως τοῦ μισθίου (jus retentionis), ὅπερ ὅμως τελευταῖον δικαίωμα δὲν δύναται νὰ ἐνασκηθῇ ἐν δίκῃ περὶ ἐξώσεως. Τὰ λοιπὰ τυχὸν βάρη τοῦ μισθίου, οἷον τοὺς φόρους κλπ., φέρει ὁ ἐκμισθωτὴς (πρβλ. Π. 19, 2, 61. Π. 19, 2, 55, 1. —Γερμ. Κ. 546/547 καὶ 556. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1720. Ἐφ. Ἀθ. 355/1922. Ἐφ. Πατρῶν 65/1919).

Πρὸς ἐκτέλεσιν τῶν ὑποχρεώσεών του ὁ ἐκμισθωτὴς ἐνάγεται ὑπὸ τοῦ μισθωτοῦ διὰ τῆς actio conducti.

2) Ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται:

α') Νὰ καταβάλῃ εἰς τὸν ἐκμισθωτὴν τὸ συμφωνηθὲν μίσθωμα μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ συμφωνηθέντος χρόνου (postnumerando) καὶ δὴ καὶ ἂν ἔτι ὑπαιτιότητι αὐτοῦ δὲν ἔκαμε χρῆσιν τοῦ μισθίου. Ἐν τῇ τελευταίᾳ ὅμως ταύτῃ περιπτώσει, ἐὰν ὁ ἐκμισθωτὴς συναινέσει τοῦ μισθωτοῦ ἐξεμίσθωσεν εἰς ἄλλον τὸ μίσθιον, ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται εἰς τὴν καταβολὴν μόνον τοῦ τυχὸν ὑπολοίπου τοῦ μισθώματος. Κατὰ ταῦτα ἐπὶ τῆς μισθώσεως ὁ ἐκμισθωτὴς ὑποχρεοῦται εἰς παροχὴν πρὸ τῆς παροχῆς τοῦ μισθωτοῦ. Συνήθεις εἶναι ἐξ ἄλλου ἐν ταῖς συναλλαγαῖς αἱ συμφωνίαι περὶ πληρωμῆς τοῦ μισθώματος κατὰ βραχέα χρονικὰ διαστήματα, οἷον κατὰ μῆνα, καὶ δὴ κατὰ τὴν ἔναρξιν ἑκάστου τοιούτου χρονικοῦ διαστήματος. Τὸ μίσθωμα δέον νὰ συνίσταται εἰς χρήματα, ἐκτὸς ἐπὶ τῆς ἐπιμόρτου καλλιεργείας, ὅτε ὁ μισθωτὴς παρέχει ἀντὶ χρημάτων μέρος τῶν καρπῶν τοῦ μισθίου κτήματος (βλ. λ. *πάκτωσις* καὶ *ἐπίμορτος καλλιέργεια*). Ἐὰν ὡς ἀντάλλαγμα τῆς παροχῆς τῆς χρήσεως πράγματός τινος συνεφωνήθη ἄλλο τι ἐκτὸς χρημάτων, κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ὑπάρχει *ἀνώνυμον συνάλλαγμα* (βλ. λ.). Ἡ περὶ μισθωμάτων ἀξίωσις, ἐπὶ μὲν κινητοῦ μισθίου παραγράφεται μετὰ δύο ἔτη, ἐπὶ δὲ ἀκινήτου τοιούτου μετὰ 5 ἔτη (πρβλ. Π. 19, 2, 15, 1. Π. 19, 2, 35, 1. Π. 19, 2, 30, 1. Γερμ. Κ. 551. 6. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1728 ἀρ. 2. Ἐφ. Ἀθ. 1810/1902. Ἐφ. Ἀθ. 51/1925. Νόμ. ΓΥΛΓ', ἄρθρ. 1, ἐδ. 6 καὶ ἄρθ. 2).

β') Νὰ μεταχειρίζεται τὸ μίσθιον κατὰ τρόπον σύμφωνον πρὸς τὸν ὑπὸ τῆς συμβάσεως ὡρισμένον καὶ ν' ἀποδώσῃ αὐτὸ κατὰ τὴν λῆξιν τῆς μισθώσεως εἰς οἵαν κατάστασιν παρέλαβεν αὐτό, λαμβανομένης βεβαίως ὑπ' ὄψει τῆς ἐκ τῆς συνήθους καὶ κανονικῆς χρήσεως φθορᾶς. Διὰ πᾶσαν πέραν τῆς τοιαύτης χρήσεως φθορὰν ἢ βλάβην, ὡς καὶ διὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ μισθίου, εὐθύνεται, ἐκτὸς ἐὰν ἀποδείξῃ ὅτι ἡ τοιαύτη βλάβη ἢ καταστροφὴ ἐπῆλθεν ἐκ τύχης. Κατ' ἐξαίρεσιν εὐθύνεται καὶ διὰ τὰ τυχηρά, ἐὰν ἀνέλαβε τοιαύτην ὑποχρέωσιν, ὡς καὶ ἐὰν ὑπερέβη τὰ ὅρια τῆς συμπεφωνημένης χρήσεως, ὅτε ὑπάρχει κλοπὴ χρήσεως (fur usus). Σημειωτέον ὅτι κατὰ τὴν δίκην περὶ ἀποδόσεως τοῦ μισθίου δὲν δύναται ὁ μισθωτὴς νὰ προτείνῃ τὴν ἔνστασιν τῆς κυριότητος (πρβλ. Π. 19, 2, 11. Π. 19, 2, 11, 1. Γερμ. Κ. 548, 550, 556. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1728 ἀριθ. 1 καὶ 1729 ἐπ. Α.Π. 193/1878. Ἐφ. Ἀθ. 1804/1896 καὶ 1161/1911). Πρὸς ἐκτέλεσιν τῶν ὑποχρεώσεών του ὁ μισθωτὴς ἐνάγεται διὰ τῆς actio locati (ὡς πρὸς τὸ δικαίωμα ἐξώσεως τοῦ μισθωτοῦ διὰ συντόμου διαδικασίας τοῦ νόμου ΒΧΗ' κλπ. βλ. λ. *ἔξωσις*. Ὡς πρὸς τὴν ἀναγκαστικὴν παράτασιν ληξασῶν μισθώσεων καὶ εἰδικωτέραν προσωρινὴν ρύθμισιν τούτων, ὡς καὶ ὡρισμένων μήπω ληξασῶν τοιούτων, βλ. λ. *ἐνοικιοστάσιον* καὶ πρβλ. νόμον 4784 τοῦ 1930. Ὡς πρὸς τὸ προνόμιον δὲ τοῦ ἐκμισθωτοῦ ἐπὶ τῶν εἰσκομισθέντων βλ. λ. *ἐνέχυρον* καὶ πρβλ. Πολιτ. δικ. ἄρθ. 941 § 4. Γερμ. Κ. § 559 καὶ Ἐφ. Ἀθ. 503/1895 καὶ 433/1900.

Digitized by Google

Τέλος, ὡς πρὸς τὸ δικαίωμα τοῦ ἐκμισθωτοῦ κατασχέσεως τῶν ἄλλως ἀκατασχέτων οἰκιακῶν σκευῶν καὶ ἐπίπλων τοῦ μισθωτοῦ βλ. λ. *κατάσχεσις* καὶ πρβλ. Πολιτ. δικ. ἄρθρ. 885 ἀριθ. 8 καὶ νόμον ΓΥΙΘ' τοῦ 1909 ἄρθ. 1. ἀριθ. 1).

Δ. *Λῆξις*. Ἡ μίσθωσις πράγματος λήγει:

1) Λήξαντος τοῦ χρόνου αὐτῆς. Ἐὰν μετὰ τὴν πάροδον τοῦ χρόνου τούτου ὁ μισθωτὴς ἐξακολουθήσῃ παραμένων ἐν τῷ μισθίῳ, ὁ δ' ἐκμισθωτὴς ἀνεχθῇ τοῦτο, χωρεῖ σιωπηρὰ *μεταμίσθωσις* ἢ *ἀναμίσθωσις* (βλ. τὰς λ. Πρβλ. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1737. Ὡς πρὸς τὴν ἀναγκαστικὴν παράτασιν τῶν μισθώσεων βλ. λ. *ἐνοικιοστάσιον* καὶ πρβλ. νόμον 4784 τοῦ 1930).

2) Ἐν περιπτώσει ἀμοιβαίας συναινέσεως τῶν μερῶν, ἢ ἐν περιπτώσει ἐξόδου διαλυτικῆς αἱρέσεως, ὑφ' ἣν συνέστη ἡ μίσθωσις, ὡς ἐπὶ παραδείγματι ἡ ἐν τῷ μισθωτηρίῳ συμφωνία νὰ θεωρῆται λελυμένη ἡ μίσθωσις ἐπὶ παραβάσει ὅρου τινός, ἔτι δὲ καταστροφῆς τοῦ μισθίου ἢ ἀποκτήσεως τῆς κυριότητος αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ μισθωτοῦ (Π. 18, 3, 6. Π. 18, 3, 7. Π. 19, 2, 9, 1. Γαλλ. Κ. 1741. Α.Π. 61/1915).

3) Ἐν περιπτώσει καταγγελίας αὐτῆς, ἥτις δύναται νὰ συμβῇ:

α') Ὑφ' ἑκατέρου τῶν μερῶν, ἐὰν ἡ μίσθωσις δὲν συνέστη δι' ὡρισμένον χρόνον. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ δὲν ἀπαιτεῖται εἰδικὸς λόγος λύσεως τῆς μισθώσεως, οὐδὲ τήρησις προθεσμίας τινός, ἐκτὸς ἐὰν ὑπάρχῃ διάφορος συμφωνία ἢ ἔθιμον.

β') Ἐὰν τοὐναντίον συνεφωνήθη ὡρισμένος χρόνος, χωρεῖ καταγγελία πρὸ τοῦ πέρατος αὐτοῦ, ὑπὸ μὲν τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ἐὰν ὁ μισθωτὴς ποιῆται κακὴν χρῆσιν τοῦ μισθίου, ἐὰν δυστροπῶν δὲν καταβάλλῃ ἐμπροθέσμως τὸ μίσθωμα, ἐπὶ ἀπροόπτου ἀνάγκης τοῦ ἐκμισθωτοῦ ὡς καὶ ἐπὶ ἀναποδράστου ἀνάγκης ἐπισκευῆς τοῦ μισθίου· ὑπὸ δὲ τοῦ μισθωτοῦ, ἐπὶ ἀναποδράστου ἀνάγκης ἐπισκευῆς τοῦ μισθίου, ἄνευ τῆς ὁποίας διακωλύεται ἡ χρῆσις αὐτοῦ, ὡς καὶ ἐπὶ ἐπικειμένου κινδύνου (πρβλ. Βασ. 20, 1, 65. Κ. 465,3 νόμ. ΒΧΗ' ἄρθ. 1 καὶ Ν. Δ. 19/3/1923. Π/19, 2/54, 1. Π. 19. 2, 30, πρ. Π. 19, 2, 19, 5. Π. 19, 2, 58 πρ. Π. 19, 2, 27. Γερμ. Κ. § 542 ἐπ. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1724, 1729, 1736. Ἐφ. Θεσσ. 95/1920. Ἐφ. Ἀθ. 811/191. 1Α. Π. 212/1904. Α. Π. 234/1855).

Κατὰ ταῦτα ἡ μίσθωσις δὲν λύεται διὰ τοῦ θανάτου ἑνὸς ἢ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν (πρβλ. Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1742), οὐδὲ διὰ τῆς ἀγοραπωλησίας. Εἴρηται ὅτι ὁ κανών, καθ' ὃν ἡ ἀγοραπωλησία λύει τὴν μίσθωσιν, ἔχει μόνον τὴν ἔννοιαν ὅτι ὁ ἀγοραστὴς καταστὰς κύριος τοῦ μισθίου δύναται ν' ἀποβάλῃ τῆς χρήσεως αὐτοῦ τὸν μισθωτήν. Παρὰ ταῦτα ὅμως ἡ μίσθωσις διαρκεῖ, καθ' ὅσον ὁ τελευταῖος οὗτος ἔχει κατὰ κανόνα δικαίωμα ἀποζημιώσεως κατὰ τοῦ ἐκμισθωτοῦ.

ΙΙ) ΜΙΣΘΩΣΙΣ ΕΡΓΑΣΙΑΣ (Locatio conductio operarum).

Οὕτω καλεῖται ἡ σύμβασις, δι' ἧς ὁ εἷς συμβαλλόμενος, καλούμενος *ἐκμισθωτὴς* (locator), ὑποχρεοῦται νὰ παράσχῃ πρὸς τὸν ἕτερον, καλούμενον *μισθωτὴν* (conductor), ἀντὶ χρηματικοῦ τινος ποσοῦ, καλουμένου *μισθοῦ* (βλ.λ.), ὑπηρεσίαν τινά, ἰδίαν ἢ ἀλλοτρίαν. Ὡς πρὸς τὴν ἔννοιαν τῆς ὁμαδικῆς ἢ συλλογικῆς καλουμένης συμβάσεως ἐργασίας βλ. λ. *ἐργατικὸν δίκαιον* (πρβλ. Γερμ. Κ. § 611 ἐπ. Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1779 ἐπ.).

Ἐν τῷ ρωμαϊκῷ δικαίῳ ἡ μετὰ τοῦ κυρίου συνομολογουμένη ἐργασία δούλου ἐθεωρεῖτο μίσθωσις πράγματος καὶ οὐχὶ ἐργασίας· ἐπειδὴ δ' ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ μίσθωσις ἐργασίας ἐξετείνετο μόνον ἐπὶ τῶν βαναύσων ἐργασιῶν, ἀφ' ἑτέρου δ' αἱ βάναυσοι αὗται ἐργασίαι κατὰ κανόνα παρείχοντο ὑπὸ δούλων, ἡ μίσθωσις ἐργασίας ἐν τῷ ρωμαϊκῷ δικαίῳ δὲν ἐκέκτητο σπουδαίαν σημασίαν, δι' ὃ καὶ ἡ ρύθμισίς της ἀπέμεινε κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἀτελής. Ἐν τῷ συγχρόνῳ δικαίῳ τοὐναντίον ἡ μίσθωσις ἢ ἄλλως *σύμβασις ἐργασίας* ἀποτελεῖ μίαν τῶν κυριωτέρων συμβάσεων κεφαλαιώδους κοινωνικῆς σημασίας, οὕτω δ' ἡ ρύθμισίς της ἀπετέλεσεν ἓν τῶν κυριωτέρων μελημάτων τοῦ συγχρόνου νομοθέτου, δημιουργηθείσης τῆς καλουμένης ἐργατικῆς ἢ κοινωνικῆς νομοθεσίας, ἐμφανισθείσης κυρίως τὸ πρῶτον κατὰ τὸν παρελθόντα αἰῶνα ἐν Ἀγγλίᾳ, μετοχετευθείσης δὲ κατόπιν εἰς τὰ βιομηχανικὰ κράτη καὶ ὑστερώτερον παρ' ἡμῖν, ἔνθα ἰσχύουσι πλῆθος νεωτέρων ἐργατικῶν νόμων (περὶ τούτων πάντων βλ. λ. *ἐργασία, ἐργασίας σύμβασις, ἐργατικὴ νομοθεσία, κοινωνικὴ πολιτική, κοινωνικὴ νομοθεσία, ἐργατικὸν δίκαιον*. Πρβλ. νεωτάτους νόμους, ὡς π.χ. ὁ νόμος 4486 τῆς 5/10 Μαρτίου 1930 περὶ τροποποιήσεως τοῦ νόμου 3502 περὶ χρονικῶν ὁρίων ἐργασίας εἰς τὰ καταστήματα, ὁ νόμος 4558 τῆς 19/26 Ἀπριλίου 1930 περὶ τροποποιήσεως καὶ συμπληρώσεως τοῦ νόμου 2112 περὶ ὑποχρεωτικῆς καταγγελίας τῆς συμβάσεως ἐργασίας ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων κλπ.).

Ἐν τῷ καταρτιζομένῳ παρ' ἡμῖν σχεδίῳ ἀστικοῦ κώδικος λαμβάνεται ὡς ἀφετηρία τῆς ρυθμίσεως τῆς μισθώσεως ἐργασίας τὸ προσχέδιον νόμου, ὅπερ ἐξεπονήθη κατὰ τὸ 1913 ὑπὸ τοῦ τότε εἰς τὸ ὑπουργεῖον Ἐθνικῆς Οἰκονομίας λειτουργοῦντος ἀνωτάτου συμβουλίου ἐργασίας, ἀποτελουμένου ἐξ ἴσου ἀριθμοῦ ἀντιπροσώπων ἐργατῶν καὶ ἐργοδοτῶν, ὅπερ προσχέδιον εἶχεν ὡς βάσιν τὸν ἑλβετικὸν κώδικα. Περαιτέρω ἡ ἐπιτροπὴ θὰ διατηρήσῃ τὸ πνεῦμα τῆς εἰδικῆς κοινωνικῆς νομοθεσίας ἡμῶν καὶ τοῦ ἄρθρου 23 τοῦ συμφώνου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὸ 13ον τμῆμα τῆς Συνθήκης Βερσαλλιῶν, προσπαθοῦσα ὅπως ἀπονεμηθῇ ἡ δέουσα διὰ τοῦ ἀστικοῦ δικαίου προστασία εἰς τὰς ἀσθενεστέρας τάξεις ἐργατῶν, ὑπαλλήλων κλπ.

Ἐνταῦθα πραγματευόμεθα τὸ θέμα κυρίως ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου, ἰσχύοντος καὶ παρ' ἡμῖν ὡς συνεπληρώθη καὶ ἐτροποποιήθη ὑπὸ τῆς νεωτέρας νομοθεσίας.

Α. Γενικῶς παρατηροῦμεν:

1) Ἡ μίσθωσις ἐργασίας διακρίνεται τῆς *ἐντολῆς* (βλ. λ.), καθ' ὅσον ἀντικείμενον ταύτης εἶναι ὡρισμένη ἢ ὡρισμέναι ὑπηρεσίαι παρεχόμεναι ὑπὸ τοῦ ἐντολοδόχου ἄνευ ἀνταλλάγματος.

2) Ἀντικείμενον τῆς μισθώσεως ἐργασίας ἦσαν κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον μόνον αἱ βάναυσοι ἐργασίαι (operae illiberales). Μόνον ἐπ' αὐτῶν ὁ ἐκμισθωτὴς-ἐργάτης ἠδύνατο νὰ ἐναγάγῃ τὸν μισθωτὴν-ἐργοδότην διὰ τῆς actio locati διὰ τὴν παροχὴν τοῦ μισθοῦ. Ἐὰν τοὐναντίον συνεφωνήθη παροχὴ ὑπηρεσιῶν ἐλευθερίων (operae liberales), ὡς π. χ. ἡ διδασκαλία, ἡ ἐργασία τοῦ δικηγόρου, τοῦ ἰατροῦ κτλ., ἡ τοιαύτη συμφωνία δὲν ἐθεωρεῖτο μίσθωσις ἐργασίας, ἀλλ' ἀπετέλει σύμφωνον γυμνόν, nudum pactum, ἐξ οὗ οὐδεμία ἀγωγὴ ἐτίκτετο ἂν δὲν περιεβάλλετο τὸν τύπον τῆς *ἐπερωτήσεως* (stipulatio, βλ. λ.). Μεταγενεστέρως, διὰ τῆς ἐξαιρετικῆς διαδικασίας (extraordinaria cognitio) κατέστη δυνατὴ ἡ διὰ δικαστικῆς ὁδοῦ ἐπιδίωξις τοῦ χρηματικοῦ ἀνταλλάγματος τῶν τοιούτων ὑπηρεσιῶν, ὅπερ ὅμως ἀντάλλαγμα δὲν ἐκαλεῖτο *μισθὸς* (merces) ἀλλ' *ἀμοιβὴ* (honorarium, salarium, πρβλ. Π. 50, 13), ἰδιαιτέρως δέ τινες συμβάσεις ὑπηρεσιῶν οὐχὶ βαναύσων ἀνεγνωρίσθησαν ὡς ἀνώνυμα συναλλάγματα τίκτοντα ἀγωγήν, τὴν actio praescriptis verbis, μετὰ τὴν παροχὴν τῆς ὑπηρεσίας, ὡς π. χ. τοῦτο συνέβη ἐπὶ τῆς μεσιτείας (πρβλ. Π. 50, 14). Παρὰ τὰς μεταβολὰς ταύτας καὶ ἐν τῷ ἐξειλιγμένῳ ρωμαϊκῷ δικαίῳ δὲν ἠδύνατο νὰ ἐπιδιωχθῇ δι' ἀγωγῆς ἡ ἀμοιβὴ διὰ τὴν διδασκαλίαν τῆς φιλοσοφίας (Π. 50, 13, 1, 4) καὶ τὴν τῆς νομικῆς ἐπιστήμης (Π. 50, 13 1, 5).

Παρ' ἡμῖν σήμερον καὶ ἡ σύμβασις παροχῆς ἐλευθερίων ἐργασιῶν, λόγῳ τῆς ἐπικρατήσεως τῆς ἀρχῆς τοῦ ὑποχρεωτικοῦ τῶν συμβάσεων, τίκτει ἀγωγὴν καὶ ἐν γένει ἀποτελεῖ μίσθωσιν ἐργασίας, διεπομένην κατ' ἀρχὴν ὑπὸ τῶν αὐτῶν κανόνων ὡς πᾶσα τοιαύτη μίσθωσις (Γερμ. Κ. 611 ἐδ. 2. Πρβλ. ἐν τούτοις Ἐφ. Ἀθ. 1711/1895). Κατ' ἐξαίρεσιν, εἴς τινας περιπτώσεις, λόγῳ τῆς ὑφῆς τῆς ὑπηρεσίας, συνυφαίνονται καὶ ἐπὶ τῆς μισθώσεως ἐλευθερίων ἐργασιῶν κανόνες τῆς ἐντολῆς καὶ δὴ ὡς πρὸς τὴν καταγγελίαν, ἐπιτρεπομένην εἰς ἑκάτερον τῶν μερῶν ἐν ταῖς περιπτώσεσι ταύταις καὶ πρὸ τῆς παρόδου ἔτι τοῦ συμφωνηθέντος χρόνου (πρβλ. καὶ Γερμ. Κ. §§ 622, 627, 675).

3) Καὶ ἡ μίσθωσις ὑπηρεσιῶν, ὡς σύμβασις solo consensu συναπτομένη, καταρτίζεται ἀτύπως (βλ. ἐξαίρεσιν ἐπὶ δυτῶν ἐν νόμῳ ΓΧΙΖ' τοῦ 1910).

Β. *Περιεχόμενον*. Ὡς ἐν τῇ μισθώσει πράγματος, καὶ ἐνταῦθα γεννῶνται ἀμοιβαίως δικαιώματα καὶ ὑποχρεώσεις τῶν μερῶν, ἕκαστον τῶν ὁποίων, ὡς ὠφελούμενον ἐκ τῆς συμβάσεως, εὐθύνεται διὰ πᾶσαν ἀμέλειαν. Ἐν τοῖς καθ' ἕκαστον τὰ δικαιώματα καὶ αἱ ὑποχρεώσεις τῶν μερῶν ρυθμίζονται ὑπὸ τῆς συμβάσεως, ἧς σιωπώσης ἰσχύουσι κατὰ τὸ παρ' ἡμῖν δίκαιον κυρίως τὰ ἑξῆς:

1) Ὁ ἐκμισθωτὴς ὑποχρεοῦται:

α) Νὰ παρέχῃ καθ' ἅπαντα τὸν μισθωτικὸν χρόνον τὴν συμφωνηθεῖσαν ἐργασίαν καὶ δὴ κατὰ κανόνα προσωπικῶς, τοῦ μισθωτοῦ μὴ ὄντος ὑποχρέου ν' ἀνεχθῇ τὴν ὑπηρεσίαν ταύτην παρεχομένην ὑπὸ ἀντικαταστάτου, ἐκτὸς ἂν τοῦτο εἶναι σύνηθες εἰς τὰς συναλλαγὰς ἐπὶ ὁμοίων ἢ ἀναλόγων περιπτώσεων. Βοηθοὺς ὅμως κατὰ κανόνα δύναται νὰ προσλάβῃ ὁ ἐκμισθωτής, ἐκτὸς ἐὰν τὸ τοιοῦτον ἀπηγορεύθη ἐν τῇ συμβάσει, εἴτε διὰ ρήτρας εἰδικῆς, εἴτε ἐκ τῆς φύσεως τῆς συμφωνηθείσης ἐργασίας. Ὡς πρὸς τὴν εὐθύνην τοῦ ἐκμισθωτοῦ διὰ τὰς πράξεις τῶν τυχὸν ἀντικαταστατῶν του καὶ βοηθῶν του, ἐὰν μὲν ἀπηγορεύετο ἡ πρόσληψις τοιούτων, ἡ εὐθύνη αὕτη εἶναι πλήρης, ἄλλως περιορίζεται μόνον δι' ἣν περίπτωσιν ὁ ἐκμισθωτὴς οὗτος διετέλει ἐν πταίσματι περὶ τὴν ἐκλογὴν τῶν προσώπων (culpa in eligendo) ἢ περὶ τὴν παρακολούθησιν τῆς ἐργασίας αὐτῶν (culpa in custodiendo) (βλ. λ. *πρόστησις*. Πρβλ. Π. 19, 2, 25, 7. Γερμ. Κ. 613. Ἐφ. Ἀθ. 129/1923).

β) Ἐπὶ ἀδυναμίας παροχῆς ἐφαρμόζονται οἱ κανόνες τῶν *ἀδυνάτων παροχῶν* (βλ. λ.). Εἰδικώτερον παρατηροῦμεν ὅτι, ἐὰν ἡ ἐκτέλεσις τῆς ἐργασίας ἀπαιτῇ εἰδικότητα καὶ γνώσεις ἐλλειπούσας παρὰ τῷ ἐκμισθωτῇ (ὑποκειμενικὴ ἢ σχετικὴ ἀρχικὴ ἀδυναμία), ὁ τελευταῖος οὗτος, ἀναλαβὼν παρὰ ταῦτα τὴν παροχήν, εὐθύνεται εἰς τὸ διαφέρον. Ἐὰν ἡ ἐκτέλεσις τῆς παροχῆς κατέστη ἐπιγενομένως ἀδύνατος, ὁ ἐκμισθωτὴς εὐθύνεται εἰς τὸ διαφέρον, ἐὰν ἡ ἀδυναμία ἐπῆλθε πταίσματι αὐτοῦ, ἀπαλλάσσεται δὲ ἐὰν αὕτη ἐπῆλθεν ἐκ τύχης. Ἐν τῇ τελευταίᾳ ὅμως ταύτῃ περιπτώσει ἀπαλλάσσεται καὶ ὁ μισθωτὴς τῆς παροχῆς τοῦ μισθοῦ, ὅπερ σημαίνει ὅτι καὶ ἐνταῦθα τὸν κίνδυνον τῶν τυχηρῶν φέρει ὁ ἐκμισθωτὴς (periculum est locatoris). (πρβλ. Π. 19, 2, 9, 5. Π. 9, 2, 27, 29. Πολιτ. Δικ. ἄρθρ. 882. Ἐξαίρεσιν νόμου 1234).

Ὁ μισθωτὴς ἐνάγει τὸν ἐκμισθωτὴν πρὸς ἐπιδίωξιν τῶν κατ' αὐτοῦ ἀξιώσεών του διὰ τῆς actio conducti.

2) Ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται:

α) Νὰ καταβάλῃ τὸ χρηματικὸν ἀντάλλαγμα τῆς ἐργασίας, ἤτοι τὸν μισθὸν καὶ δὴ μετὰ τὸ πέρας τοῦ συμφωνηθέντος χρόνου (postnumerando), ἐκτὸς ἐναντίας συμφωνίας.

Συνήθεις ὅμως εἶναι αἱ διάφοροι συμφωνίαι δι' ὧν ἡ καταβολὴ τοῦ μισθοῦ καθορίζεται καθ' ὡρισμένα χρονικὰ διαστήματα, ὡς λ. χ. κατὰ μῆνα καὶ δὴ ἅμα τῇ ἐνάρξει ἢ ἅμα τῇ λήξει ἑκάστου χρονικοῦ διαστήματος. Ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται εἰς τὴν καταβολὴν τοῦ μισθοῦ καὶ ἂν ἔτι δὲν ἔκαμε χρῆσιν τῆς προσφερθείσης συμφώνου τῇ συμβάσει ἐργασίας, ἐκτὸς ἂν ἡ τοιαύτη ἄρνησις τῆς ἀποδοχῆς τῆς ἐργασίας ἦτο κατὰ τὴν φύσιν τῆς συμβάσεως δεδικαιολογημένη, ὡς π.χ. ἐὰν ἐξ εὐλόγου αἰτίας ὁ μισθωτὴς ἀπώλεσε τὴν ἐμπιστοσύνην του πρὸς τὸν ἐκμισθωτὴν δικηγόρον. Ἐπίσης ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται εἰς τὴν καταβολὴν τοῦ μισθοῦ, καὶ ἂν ἡ παροχὴ τῆς ἐργασίας ὑπαιτιότητι αὐτοῦ κατέστη ἀδύνατος. Ἐν ταῖς περιπτώσεσιν ὅμως ταύταις, καὶ ἀναλόγως τῆς φύσεως τῆς συμβάσεως, δύναται ὁ μισθωτὴς ν' ἀφαιρέσῃ ἐκ τοῦ μισθοῦ πᾶν ὅ,τι ὁ ἐκμισθωτὴς ὠφελήθη ἐκ τῆς μὴ ἐκτελέσεως τῆς ἐργασίας ἢ ἄλλοθεν ἐκέρδισεν ἢ δολίως ἀπέφυγε νὰ κερδίσῃ. Κατὰ κανόνα ὁ μισθωτὴς δὲν ὑποχρεοῦται νὰ δεχθῇ τὴν ἐργασίαν τοῦ ἐκμισθωτοῦ, καίπερ συμφώνως τῇ συμβάσει προσφερομένην· ἐὰν ὅμως ὁ μισθὸς συνεφωνήθη κατ' ἀποκοπήν, ὁ μισθωτὴς ὑποχρεοῦται νὰ μὴ στερῇ τὸν μισθωτὴν τῆς δυνατότητος τῆς παροχῆς ὑπ' αὐτοῦ τῆς ἐργασίας. Ἐν τῷ ρωμαϊκῷ δικαίῳ ὁ μισθὸς ἔδει νὰ ᾖ ἐξ ἀρχῆς καθωρισμένος, ἄλλως, ὡς καὶ ἐὰν ἀντὶ μισθοῦ ὡρίσθη ὡς ἀντάλλαγμα παροχὴ οὐχὶ χρηματική, ἡ σχέσις ἀπετέλει ἀνώνυμον συνάλλαγμα. Σήμερον, λόγῳ τοῦ ὑποχρεωτικοῦ τῶν συμβάσεων ἐπιτρέπεται ν' ἀφεθῇ ὁ καθορισμὸς τοῦ μισθοῦ εἰς τὴν ἀγαθὴν κρίσιν τρίτου, ὡς καὶ νὰ συμφωνηθῇ μισθὸς ἀναλόγως τῆς παραγωγῆς τοῦ ἐκμισθωτοῦ (κατ' ἀποκοπήν). Γενικῶς ἡ παροχὴ ὑπηρεσιῶν τίκτει δικαίωμα ἀποζημιώσεως κατ' ἀρχὴν βάσει τῶν ἀρχῶν περὶ ἀδικαιολογήτου πλουτισμοῦ, εἰδικῶς δ' ἐπὶ ἐργασιῶν συνήθως ἐπ' ἀμοιβῇ παρεχομένων, βάσει συμβάσεως σιωπηρᾶς, ὅτε ἐνίοτε ἡ ἀμοιβὴ καθορίζεται ὑπὸ τοῦ νόμου, ὡς π.χ. ἐπὶ ἰατρικῆς ἢ δικηγορικῆς ἀμοιβῆς. Εἶναι βέβαιον δυνατὸν αἱ ὑπηρεσίαι νὰ παρασχεθῶσιν ἐπὶ σκοπῷ ἐλευθεριότητος, ἡ τοιαύτη ὅμως δωρεὰ δὲν τεκμαίρεται, ἀλλὰ δέον ν' ἀποδειχθῇ ὑπὸ τοῦ ἐπικαλουμένου αὐτὴν μισθωτοῦ. Ὁ μισθὸς δὲν ὑπόκειται κατὰ κανόνα εἰς κατάσχεσιν, συμψηφισμὸν ἢ ἐκχώρησιν, ἐκτὸς προκειμένου περὶ διατροφῆς· μετὰ παρέλευσιν τριμήνου ἀπὸ τῆς καθυστερήσεως ἄρχεται τόκος ὑπερημερίας καὶ ἄνευ ὀχλήσεως, παραγράφεται δὲ τέλος ἡ περὶ μισθοῦ ἀπαίτησις, ὡς καὶ ἡ περὶ δαπανῶν τοῦ ἐκμισθωτοῦ μετὰ δύο ἔτη, οὐχὶ ὅμως καὶ ἡ περὶ εὐλόγου ἀποζημιώσεως (βλ. καὶ λ. *μισθός*. Πρβλ. Π. 50. 17. [illegible] Π. 19, 2, 19, 9. Π. 19, 2, 38 πρ. Ν.Δ. τῆς 23 Ἀπρ. 1924. Νόμος 4694. Νόμος 4548 ἄρθ. 24. Νόμος [illegible] Γερμ. Κ. §§ 612, 614 ἐπ. Ν. Δ. 5/20 Μαΐου 192[illegible] περὶ δικηγόρων ἄρθ. 82 καὶ ἐπ. Ἐφ. Ἀθ. 2136/189[illegible] Νόμος ΓΥΛΓ' ἄρθ. 1 ἐδ. 7 ἐπ. καὶ 746/1892. Α.Π. 243/1893. Α. Π. 337/1910. Ἐφ. Ἀθ. 326/1920. Ἐφ. Ἀθ. 476/1922. Α. Π. 176/1909. Ἐφ. Ἀθ. 19[illegible] Ἐφ. Ἀθ. 137/1921).

β) Ὁ μισθωτὴς εὐθύνεται διὰ πᾶσαν ζημίαν πταίσματι αὐτοῦ προερχομένην εἰς τὸν ἐκμισθωτήν, ὑποχρεούμενος νὰ λαμβάνῃ πᾶν μέτρον προστασίας τῆς ὑγείας τοῦ ἐκμισθωτοῦ καὶ προλήψεως ἀτυχημάτων. Καὶ ἄνευ δὲ πταίσματος εὐθύνεται ὁ μισθωτὴς εἰς ὡρισμένας περιπτώσεις καὶ ὑπὸ ὡρισμένους ὅρους (βλ. περὶ τούτων τὰς λ. *οἱονεὶ ἀδίκημα, ἐπαγγελματικὸς κίνδυνος, ἐργατικὸν ἀτύχημα, ἐργατικὸν δίκαιον, ἐργασίας σύμβασις*).

Ὁ ἐκμισθωτὴς ἐνάγει τὸν μισθωτὴν πρὸς ἐκτέλεσιν τῶν ὑποχρεώσεών του διὰ τῆς actio locati.

Γ. *Λῆξις*. Ἡ μίσθωσις ἐργασίας περατοῦται λήξαντος τοῦ συμφωνηθέντος χρόνου, καταστάσης ἐκ τύχης ἀδυνάτου τῆς παροχῆς τῆς ἐργασίας [illegible] τέλος διὰ τῆς *καταγγελίας* (βλ. λ. ὡς καὶ λέξεις [illegible] *ἐργατικὸν δίκαιον, ἐργασίας σύμβασις*. Πρβλ. νόμους 2112, 4558 καὶ Ν. Δ. τῆς 16 Ἰουλίου 1920).

Digitized by Google

III. ΜΙΣΘΩΣΙΣ ΕΡΓΟΥ (ἐργολαβία) (Locatio conductio operis).

Οὕτω καλεῖται ἡ ἀμφοτεροβαρὴς σύμβασις, δι' ἧς τὸ ἓν μέρος, ὁ μισθωτὴς (*ἐργολάβος*, conductor ἢ redemptor operis) ὑποχρεοῦται νὰ κατασκευάσῃ ἔργον τι, τὸ δ' ἕτερον μέρος, ὁ *ἐκμισθωτὴς* (*ἐργοδότης*, locator operis), νὰ παράσχῃ εἰς αὐτὸν χρήματα ὡς ἀνταλλάγματα. (πρβλ. Π. 29, 2, 2, 1. Π. 19, 2, 13, 1. Π. 19, 2, 25, 7. Γερμ. Κ. § 631 καὶ ἑπ. Γαλλ. Κ. ἄρθρ. 1787 ἑπ.).

Α. Γενικῶς παρατηροῦμεν:

1) Χαρακτηριστικὸν πρὸς διάκρισιν τῆς μισθώσεως ἔργου ἀπὸ τῆς μισθώσεως ἐργασίας εἶναι κυρίως οὐχὶ ἡ ὑποχρέωσις τοῦ ἐργοδότου ἀλλὰ ἡ τοιαύτη τοῦ ἐργάτου.

Ἐὰν δῆλον ὅτι ὁ ἐργάτης ἀνέλαβε νὰ παράσχῃ ἐργασίαν καὶ παρέσχε ταύτην συμφώνως πρὸς τοὺς ὅρους τῆς συμβάσεως, ἢ ἂν ἀνέλαβεν οὗτος ν' ἀποδώσῃ τὸ ὑπὸ τοῦ ἐργοδότου ἀναμενόμενον ἀποτέλεσμα τῆς ἐργασίας. Ὡς πρὸς τὸ χρηματικὸν ἀντάλλαγμα, τοῦτο εἶναι δυνατὸν καὶ ἐπὶ τῆς συμβάσεως ἐργασίας νὰ καθορίζηται οὐχὶ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ χρόνου τῆς παροχῆς ἐργασίας, ἀλλὰ κατὰ τὰ ἑκάστοτε παραγόμενα μέρη τοῦ ἔργου (μισθὸς κατ' ἀποκοπήν, «μὲ τὸ κομμάτι») καὶ ἀντιθέτως καὶ ἐπὶ τῆς μισθώσεως ἔργου εἶναι δυνατὸν νὰ καθορίζηται τὸ χρηματικὸν ἀντάλλαγμα, εἴτε εἰς συνολικὴν ἀμοιβὴν (πρβλ. Π. 19,2,36) εἴτε κατὰ μέτρον, βάρος ἢ χρόνον.

2) Ἐὰν ὁ ἐργολάβος κατεσκεύασε τὸ ἔργον ἐξ ἰδίων ὑλικῶν, πρόκειται ἀγοραπωλησία ἐλπίδος (emptio rei speratae). Ἐὰν ἐν τούτοις τὴν μὲν κυρίαν ὕλην παρέσχεν ὁ ἐργοδότης, τὰ δὲ ταύτης παρεπόμενα ὁ ἐργολάβος, δὲν θίγεται ὁ χαρακτὴρ τῆς ἐργολαβίας. Συγκεκριμένως, ἐπὶ κατασκευῆς οἰκοδομῆς δι' ὑλικῶν τοῦ ἐργολάβου ἐπὶ γηπέδου ὅμως μὴ ἀνήκοντος αὐτῷ, πρόκειται ἐργολαβία καὶ οὐχὶ ἀγοραπωλησία (πρβλ. Γερμ. Κ. § 651. Ἐμπ. Γερμ. Κ. § 381 ἐδ. 2 καὶ 406 ἐδ. 2. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1787. Π. 18, 1, 20).

3) Ἐὰν διὰ τὴν κατασκευὴν ἑνὸς ἔργου ἢ τὴν ἐκτέλεσιν μιᾶς πράξεως τὸ ἕτερον μέρος εἰς οὐδὲν χρηματικὸν ἀντάλλαγμα ὑποχρεοῦται, πρόκειται περὶ δωρεᾶς ἢ ἐντολῆς.

4) Ἡ σύμβασις καταρτίζεται ὡς καὶ τὰ λοιπὰ εἴδη τῆς μισθώσεως δι' ἁπλῆς συμφωνίας τῶν μερῶν (solo consensu), μὴ ἀπαιτουμένου οὐδενὸς συστατικοῦ τύπου.

Β. *Περιεχόμενον*. Αἱ ἑκατέρωθεν ἐκ τῆς συμβάσεως ὑποχρεώσεις ἔχουσιν ὡς ἀκολούθως:

1) Ὁ μισθωτὴς ἐργολάβος ὑποχρεοῦται νὰ κατασκευάσῃ τὸ ἔργον συμφώνως πρὸς τοὺς ὅρους τῆς συμβάσεως καὶ νὰ τὸ παραδώσῃ εἰς τὸν ἐκμισθωτὴν ἐργοδότην κατὰ τὸν ἐν τῇ συμβάσει καθορισθέντα χρόνον (πρβλ. Γερμ. Κ. § 633 ἐδ. 1, 636). Δὲν ὑποχρεοῦται εἰς προσωπικὴν ἐργασίαν (πρβλ. Π. 19,2,48 πρ.), ἐφ' ὅσον βεβαίως δὲν ὡρίσθη ἄλλως ἐν τῇ συμβάσει ἢ δὲν ἐξάγεται ἄλλως ἐκ τοῦ ἐν γένει πνεύματος αὐτῆς, ὡς π.χ. ἐπὶ κατασκευῆς εἰκόνος ὑπὸ ζωγράφου. Ὡς ὠφελούμενος ἐκ τῆς συμβάσεως εὐθύνεται δι' omnis culpa, οὐ μόνον διὰ τὰ πταίσματα αὐτοῦ ἀλλὰ καὶ διὰ τὰ τῶν προσώπων του. Ἐὰν τὸ πρᾶγμα ἔχῃ ἐλαττώματα, ὁ ἐκμισθωτὴς ἔχει δικαίωμα ὅπως ζητήσῃ τὴν βελτίωσιν αὐτοῦ (Γερμ. Κ. § 633 ἐδ. 2), ἐὰν δὲ αὕτη δὲν γίνῃ ἐντὸς εὐλόγου προθεσμίας ἢ τοιαύτης ὁρισθείσης ἐν τῇ συμβάσει, δικαιοῦται εἰς ὑπαναχώρησιν ἢ μείωσιν τοῦ μισθώματος, ἔτι δ' ἐν περιπτώσει πταίσματος τοῦ ἐργολάβου ἢ τῶν προσώπων αὐτοῦ εἰς τὸ διαφέρον (πρβλ. Γερμ. Κ. § § 634,635,636). Ἡ ἐλαττωματικότης τοῦ πράγματος δημιουργεῖ ἐνίοτε καὶ ποινικὰς εὐθύνας τοῦ ἐργολάβου (πρβλ. ποιν. ν. ἄρθ. 603. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1797).

2) Ὁ ἐκμισθωτὴς ἐργοδότης ὑποχρεοῦται:

α) Νὰ καταβάλῃ τὸν συμφωνηθέντα μισθὸν μετὰ τὴν κατασκευὴν καὶ παραλαβὴν τοῦ ἔργου (postnumerando), ἐκτὸς ἐὰν συνεφωνήθη διάφορος ὁ χρόνος τῆς πληρωμῆς, οἷον κατὰ τμήματα καὶ ἀναλόγως τῆς προόδου τοῦ ἔργου κλπ. Ὁ μισθὸς δέον ν' ἀποτελῆται ἀπὸ χρήματα, ἄλλως ὑπάρχει ἀνώνυμον συνάλλαγμα κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον. Ὁ μισθὸς εἶναι καταβλητέος καὶ ἐὰν ἄλλως τὸ ἔργον δὲν κατεσκευάσθη ὑπαιτιότητι τοῦ ἐργοδότου, παρακωλύσαντος φερ' εἰπεῖν παρὰ τὴν σύμβασιν τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ ἔργου. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ἐκ τοῦ μισθοῦ ἀφαιροῦνται αἱ δαπάναι εἰς ἃς θὰ προέβαινεν ὁ ἐργολάβος ἐὰν ἐξετέλει τὸ ἔργον (πρβλ. Π. 19, 2, 19, 9. Γερμ. Κ. § 649). Ἐν περιπτώσει τυχαίας καταστροφῆς τοῦ ἔργου μισθὸς δὲν ὀφείλεται καὶ ἂν ἔτι τὸ ἔργον κατεσκευάσθη καλῶς, οὕτως, ὥστε θὰ παρελαμβάνετο ὑπὸ τοῦ ἐργοδότου. Τοὐναντίον μισθὸς ὀφείλεται ἐν μέρει ἢ ὁλόκληρος ἐὰν τὸ ἔργον ἐν μέρει ἢ ἐν ὅλῳ κατεστράφη ἐκ λόγων ἀνωτέρας βίας, οὓς κατὰ τὴν κανονικὴν τροχιὰν δὲν ἠδύνατο οὐδείς, οὔτε ὁ ἐργοδότης, ν' ἀποφύγῃ, π. χ. ἐπὶ σεισμῶν. Ἐπίσης ὀφείλεται ἡ ἀμοιβή, ἐὰν ἡ τυχαία καταστροφὴ ὀφείλεται εἰς αἴτια ἐγκείμενα εἰς τὴν ὑποχρέωσιν τοῦ ἐργοδότου, ὡς π. χ. εἰς τὰ ὑπ' αὐτοῦ παρασχεθέντα ὑλικὰ κλπ. (πρβλ. Π. 19, 2. 62. Π. 19, 2, 59. 19, 2, 36, ἐν τούτοις Π. 19, 2, 60, 3. Πρβλ. καὶ Γερμ. Κ. § § 644, 645, 646).

β) Νὰ παράσχῃ εἰς τὸν ἐργολάβον τὰ εἰς τὴν διάθεσίν του ἀναγκαῖα μέσα πρὸς κατασκευὴν τοῦ ἔργου καὶ δὴ ἐγκαίρως, ὡς π. χ. ἐπὶ κατασκευῆς εἰκόνος ἐξ ἄλλης εἰκόνος.

γ) Νὰ παραλάβῃ ἐγκαίρως τὸ ἔργον, ἐφ' ὅσον τοῦτο κατεσκευάσθη συμφώνως πρὸς τὴν σύμβασιν. Παραλαμβάνων τὸ ἔργον ἐγκρίνει αὐτό, ἐκτὸς ἐὰν μετὰ τὴν παραλαβὴν ἀνεκάλυψεν ἐλαττώματα, ἅπερ ἀπέδειξεν ἀδιάγνωστα ἢ ὁ ἐργολάβος δολίως ἀπεσιώπησεν, ἐπιτυχὼν οὕτω τὴν ἔγκρισιν (πρβλ. Γερμ. Κ. § 640.—ΑΠ. 61/1899).

Γ. *Λῆξις*. Κυρίως λήγει ἡ μίσθωσις ἐκτελεσθέντος καὶ παραληφθέντος τοῦ ἔργου ἢ καταστάσης ἀδυνάτου ἐκ τύχης τῆς κατασκευῆς αὐτοῦ, ὡς π. χ. ἐπὶ θανάτου τοῦ μισθωτοῦ (πρβλ. Γαλλ. Κ. ἄρθ. 1795 καὶ 1796).

Ἐκτὸς τῶν γενικῶν λόγων ἡ μίσθωσις λύεται καὶ μονομερῶς διὰ τῆς καταγγελίας. Ὁ ἐκμισθωτὴς δικαιοῦται νὰ ὑπαναχωρήσῃ τῆς συμβάσεως: 1) Ἐὰν τὸ ἔργον πρόκειται νὰ ἀπαιτήσῃ δαπάνας πολὺ μείζονας τῶν προϋπολογισθεισῶν καὶ ἂν ἔτι ἄνευ προσθέτου ἀμοιβῆς ἀναλαμβάνῃ νὰ ἐκτελέσῃ τὸ ἔργον ὁ ἐργολάβος. 2) Ἐὰν βραδύνῃ νὰ παράσχῃ τὸ ἔργον ὁ ἐργολάβος, ἐφ' ὅσον ἡ μὴ ἐμπρόθεσμος παράδοσις ἐτέθη ἐν τῇ συμβάσει ὡς λόγος λύσεως τῆς συμβάσεως, ἢ ἐὰν ἐκ τῆς φύσεως τῶν πραγμάτων προκύπτῃ τοιοῦτόν τι ὡς π. χ. ἐπὶ κατασκευῆς ἐνδυμάτων προωρισμένων δι' ὡρισμένην ἡμέραν. 3) Ἐὰν τὸ ἔργον φέρῃ ἐλαττώματα τοιαῦτα, ὥστε νὰ καθιστοῦν αὐτὸ ἄχρηστον διὰ τὸν κατὰ τὴν σύμβασιν σκοπὸν τοῦ ἐργοδότου.

Δ. *Εἰδικαὶ περιπτώσεις*.

1) Ἐὰν τὸ παραγγελθὲν ἔργον δύναται νὰ κατασκευασθῇ συμφώνως πρὸς τοὺς ὅρους τῆς συμβάσεως καὶ ἐξ ἄλλων ὑλικῶν καὶ οὐχὶ τῶν παρασχεθέντων καὶ τοῦτο ἐπιτρέπῃ ἢ ἔγκειται ἐν τῇ ἐννοίᾳ τῆς συμβάσεως, ὁ ἐργολάβος καθίσταται κύριος τοῦ χορηγηθέντος ὑλικοῦ φέρων καὶ τὸν κίνδυνον τῆς καταστροφῆς. Ἡ τοιαύτη περίπτωσις καλεῖται ἀνώμαλος μίσθωσις ἔργου (locatio conductio operis irregularis) (Π. 19, 2, 31).

2) Εἶδος τῆς μισθώσεως ἔργου εἶναι καὶ ἡ σύμβασις, δι' ἧς ὁ ἐργοδότης ἀναθέτει εἰς τὸν ἐργολάβον τὴν πώλησιν πράγματος καὶ συμφωνεῖται ν' ἀποδώσῃ οὗτος εἰς ἐκεῖνον εἴτε τὸ πρᾶγμα εἴτε τὴν διατίμησιν αὐτοῦ (aestimatio, Trödelvertrag). Κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον δὲ ἡ σύμβασις αὕτη ἀπετέλει ἀνώνυμον συνάλλαγμα καλούμενον εἰδικῶς contractus aestimatorius (Π. 19, 3, 1 πρ.). Ὁ κίνδυνος τοῦ πράγματος φέρεται ἅμα τῇ παραδόσει εἰς τὸν μισθωτὴν καὶ δὴ ἐὰν οὗτος ἀνέλαβε τὴν πώλησιν δι' ὄφελός του (πρβλ. Π. 19, 3, 1, 1 καὶ 19, 5, 17,1).

3) Ἡ μεταφορὰ προσώπων ἢ πραγμάτων διὰ ξηρᾶς ἢ διὰ θαλάσσης ἀποτελεῖ ὡσαύτως εἶδος μισθώσεως ἔργου, τὴν καλουμένην σύμβασιν μεταφορᾶς, εἰδικῶς ρυθμιζομένην ὑπὸ τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου (πρβλ. ἐμπ. νόμον ἄρθρ. 95 κ. ἑπ.· βλ. λ. *μεταφορά, ναύλωσις* καὶ πρβλ. λ. *ρόδιος νόμος περὶ χύσεως*).

4) Ἐργολαβία συναπτομένη μετὰ τοῦ δημοσίου. Αὕτη ρυθμίζεται ὑπὸ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 26/12/1923, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἐκτὸς τῶν συστημάτων τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου (ἐνοχικὸν δίκαιον), κυρίως τὰ ἔργα: *Degenkolb*, Platzrecht und Miete (1867). — *Burckhardt*, Zur Geschichte der locatio conductio (1889).—*Niendorff*, Miete (1914).—*Mittelstein*, Die Miete (1913).—*Borcherdt*, Mietrecht (1912).—*Zirndorfer*, Miete von Wohnungs- usw Räumen (1913). —*Hachenburg*, Dienst-und Werkvertrag im Bg. (1898).—*Lotmar*, Der Arbeitsvertrag (τόμ. 1, 1902· τόμ. 2, 1908).—*G. Rümelin*, Dienstvertrag und Werkvertrag (1905). — *Hoeniger*, Wehrle, Arbeitsrecht.—*Riezler*. Werkvertrag (1900).—*O. v. Gierke*, Die Wurzeln des Dienstvertrags (ἐν τῷ Berliner Festgabe für Brunner 1914).—*H. Eyraud*, Vente et louage (1904).—*Guillouard*, Traité du louage (1891).—*Baudry-Lacantinerie* et *Wahl*, Du contrat de louage (1907).— *Cornil*, Dn lonage de services ou contrat de travail (1895).—*Hubert-Valleroux*, Le contrat de travail (1895).—*Pascaud*, Le contrat de travail au point de vue économique et juridique (1903).—*Martini*, La notion du contrat de travail (1912).—Νέοι πανδέκται, *Ν. Κουντουριώτου*, εἰς λ. *μίσθωσις*. —*Ἰω. Οἰκονομίδου*, Ἑρμηνεία τοῦ περὶ ἐξώσεως τῶν δυστροπούντων μισθωτῶν νόμου ΒΧΗ΄ κλπ. (1927). —*Δημ. Φ. Παπαμήτρου*, Νομοθετικαὶ ἀπόψεις ἐπὶ τῆς μισθωτικῆς σχέσεως (ἐν «Δικαιοσύνῃ» 1925, σελ. 238, ὅπου καὶ βιβλιογραφία).

Δ. Φ. ΠΑΠΑΜΗΤΡΟΣ

— [ΕΚΚΛ. ΔΙΚ.] Τὸ νὰ γίνωνται ἀλλοτρίων κτημάτων μισθωταὶ ἢ πακτωνάριοι οἱ ἐπίσκοποι, πρεσβύτεροι καὶ διάκονοι, ἀπαγορεύει ὁ κανὼν 16 τῆς ἐν Καρθαγένῃ συνόδου. Κατὰ τῶν τοῦτο δὲ πραττόντων κληρικῶν καὶ μοναχῶν ἀπειλεῖ ὁ κανὼν 3 τῆς ἐν Χαλκηδόνι συνόδου ἐπιτίμια. Καὶ ὁ Ἰουστινιανὸς διὰ τῆς νεαρᾶς 133 (κεφ. 6) ἀπαγορεύει τοῖς παντὸς βαθμοῦ κληρικοῖς καὶ τοῖς μοναχοῖς νὰ γίνωνται ὑπὲρ ἑαυτῶν ἢ ὑπὲρ τῆς ἐκκλησίας αὐτῶν ἢ μονῆς μισθωταὶ δημοσίων προσόδων ἢ ἀλλοτρίων κτημάτων ἀγροτικῶν, ἐπιτρέπων μόνον τὴν μίσθωσιν τῶν κτημάτων τῶν ἐκκλησιῶν αὐτῶν ἀδείᾳ τοῦ ἐπισκόπου καὶ οἰκονόμου. Κατὰ τῶν παραβατῶν ἀπειλεῖ, ἐὰν ἐπίσκοποι μὲν ὦσι, τὴν ὑπὲρ τῶν ἑαυτῶν ἐκκλησιῶν ἀπώλειαν πάσης τῆς ὁπωσδήποτε καὶ ὁποτεδήποτε κτηθείσης ὑπ' αὐτῶν περιουσίας, ἐὰν δὲ οἰκονόμοι καὶ λοιποὶ κληρικοί, ποινὴν χρηματικὴν ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου ὁριζομένην ὑπὲρ τῆς ἐκκλησίας αὐτῶν.

Καὶ παρ' ἡμῖν ἡ ἱερὰ σύνοδος ἐπανέλαβε τὴν ἀπαγόρευσιν τῆς ὑπὸ κληρικῶν καὶ μοναχῶν μισθώσεως δημοσίων προσόδων, ὡς καὶ ἀγροτικῶν κτημάτων, ἀπειλήσασα τοῖς παραβάταις αὐστηρὰς πνευματικὰς ποινάς, ὡς καὶ τῆς ὑπὸ μοναχῶν μισθώσεως κτημάτων τῶν μονῶν αὐτῶν. Τὴν ὑπὸ τῶν μοναχῶν μίσθωσιν κτημάτων ἀπηγόρευσε καὶ τὸ ἄρθρον 135 τοῦ Κρητικοῦ καταστατικοῦ, ἀπειλῆσαν κατὰ τῶν παραβατῶν περιορισμὸν ἐν τῷ σωφρονιστηρίῳ τῶν κληρικῶν.

[Βλ. *Κ. Μ. Ράλλη* «Ποινικὸν δίκαιον τῆς Ὀρθοδόξου Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας» (Ἀθῆναι 1907, σελ. 442—445 καὶ *τοῦ αὐτοῦ* «Ἐγχειρίδιον Ἐκκλησ. δικαίου» (τεῦχ. α' 1927, σελ. 137—138)]. Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

— **μίσθωσις *οἴκου*** [*Ἀρχ. Δίκ.*] Ὁ ἐπίτροπος, ἀντὶ νὰ διαχειρισθῇ ὁ ἴδιος τὴν πατρικὴν περιουσίαν τοῦ ἀνηλίκου, ἠδύνατο νὰ μισθώσῃ αὐτήν, ἐὰν ὁ διαθέτης δὲν ἀπηγόρευε διαρρήδην ἐν τῇ διαθήκῃ αὐτοῦ τὴν τοιαύτην τῆς περιουσίας διάθεσιν· ἡ τοιαύτη μίσθωσις ἐκαλεῖτο *μίσθωσις οἴκου*. Ἀντικείμενον τῆς μισθώσεως εἶναι ὁ οἶκος, τουτέστις ἡ περιουσία τοῦ ἐπιτροπευομένου, κινητὴ καὶ ἀκίνητος. Ὁ νόμος ὥριζεν ὅτι ἡ μίσθωσις οἴκου ἔδει νὰ ἐγίνετο δημοσίᾳ καὶ ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν τοῦ ἄρχοντος, ὡς ἐὰν ἐπρόκειτο περὶ κρατικῆς περιουσίας ἢ ἱερῶν κτημάτων. Ὁ ἐπίτροπος, μὴ δυνάμενος νὰ κανονίσῃ ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ μισθωτοῦ τὰ τῆς μισθώσεως, ἐζήτει ἵνα ὁ ἄρχων μισθώσῃ πᾶσαν τὴν οὐσίαν τοῦ ἀνηλίκου τῷ πλειοδοτοῦντι, ὑπέβαλλε δὲ καὶ λεπτομερῆ κατάστασιν τῆς περιουσίας αὐτοῦ (ἀπογραφή). Κατὰ τὴν δημοπρασίαν παρίσταντο καὶ οἱ ἡλιασταί, οἵτινες ἐπενέβαινον ἐνταῦθα ὄχι μόνον ὡς μάρτυρες ἀλλὰ καὶ ὡς ἐλεγκταὶ καὶ ὅπως λύωσι πᾶσαν κατὰ τὴν δημοπρασίαν προκύπτουσαν διαφοράν. Ὡς πρὸς τὸν μισθωτὴν παρατηροῦμεν ὅτι καὶ πλείονες τοῦ ἑνὸς τοιοῦτοι ἠδύναντο νὰ συμμισθώσωσι τὴν περιουσίαν τοῦ ἀνηλίκου, καὶ ὁ ἴδιος δὲ ὁ ἐπίτροπος δὲν ἀπηγορεύετο νὰ γίνῃ μισθωτής, ὑποχρεούμενος εἰς πᾶσαν οἵαν καὶ οἱ λοιποὶ μισθωταὶ ἐγγύησιν, πλὴν ὅτι ὤφειλε μόνον τὰ παρ' αὐτοῦ εἰσπραχθέντα εἰσοδήματα ἢ καρπούς, ἐνῷ πᾶς ἄλλος μισθωτὴς ὤφειλεν ἐν πάσῃ περιπτώσει ὡρισμένην περιοδικὴν πρόσοδον.

Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς μισθώσεως ὁ μισθωτὴς ἀποβαίνει τρόπον τινὰ ὁ ἀντιπρόσωπος τοῦ ἀνηλίκου, ὅσον ἀφορᾷ τὴν ὑπὸ μίσθωσιν περιουσίαν, ἀσκῶν οὗτος τὰς σχετικὰς ἀγωγὰς τοῦ ἐπιτροπευομένου. Οἱ μισθούμενοι τὴν περιουσίαν τοῦ ὀρφανοῦ ὤφειλον νὰ παρέχωσιν ἀσφάλειαν (ἀποτίμημα) δι' αὐτὴν καὶ νὰ ὑποθηκεύωσι τὰ ἴδια αὐτῶν κτήματα, ὁ δὲ ἄρχων ἀπέστελλεν ἀποτιμητάς, ἵνα ἐκτιμήσωσι τὴν περιουσίαν ταύτην καὶ ἐξακριβώσωσι ἐὰν ἦτο ἰσότιμος τῇ τοῦ ὀρφανοῦ. Ὁ μισθωτὴς τὸ διὰ τῆς ὑποθήκης ἐπὶ τῶν κτημάτων του σκοπούμενον ἠδύνατο νὰ ἐπιτύχῃ καὶ διὰ τῆς πράσεως ἐπὶ λύσει. Ὁ ἀνήλικος, ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ἐξασφαλίσεων, ἐπροστατεύετο καὶ διὰ προσωπικῶν ἀγωγῶν κατὰ τοῦ μισθωτοῦ. Οὕτω κατὰ τὸν χρόνον τῆς ἀνηλικιότητος αὐτοῦ ἠδύνατο νὰ ἐγείρῃ τὴν κακώσεως γραφήν, ἐνήλικος δὲ γενόμενος τὴν μισθώσεως δίκην (βλ. κατωτ.). Ὁ μισθωτὴς ἀποκαθίστα ἀπ' εὐθείας τὸν ἐπιτροπευόμενον, ἐνήλικον καθιστάμενον, εἰς τὴν περιουσίαν του, ἄνευ παρεμβάσεως τοῦ ἐπιτρόπου. Α. Ν. Φ.

— **μισθώσεως *δίκη*** [*Ἀρχ. Δίκ.*]. Δίκη ἣν εἰσῆγεν ὁ ἐκμισθωτής, ὅπως ἀναγκάσῃ τὸν μισθωτὴν εἰς ἐκτέλεσιν τῶν ἐκ τῆς συμβάσεως τῆς μισθώσεως ὑποχρεώσεών του. Ἐπὶ μισθώσεως οἴκου ὁ ἀνήλικος γενόμενος ἐνήλικος ἠδύνατο νὰ ἐγείρῃ τὴν μισθώσεως δίκην κατὰ τοῦ μισθωτοῦ τοῦ μὴ ἐκπληρώσαντος τὰς ἐκ τῆς συμβάσεως τῆς μισθώσεως ὑποχρεώσεις του, ἀλλὰ καὶ κατὰ τοῦ ἐπιτρόπου τοῦ μὴ διαχειρισθέντος ἐπικερδῶς τὴν περιουσίαν τοῦ ὀρφανοῦ ἢ ἀμελήσαντος νὰ καταβάλῃ τὴν προσήκουσαν δι' αὐτὴν φροντίδα. Ἦτο δὲ ἡ μισθώσεως δίκη δημοσία ἢ ἰδιωτική. Α.Ν.Φ.

**μισθωτήριον** (τό)· τὸ ἔγγραφον, τὸ συμβόλαιον τὸ περιέχον τοὺς ὅρους τῆς μισθώσεως.

**μισθωτὴς** (ὁ)· ὁ ἐκμισθούμενός τι, ὁ λαμβάνων ἐπὶ καταβολῇ μισθώματος τὸ δικαίωμα τῆς χρήσεως πράγματός τινος, ὡς οἰκίας, καταστήματος, ἀγροῦ κττ., ἄλλως *ἐνοικιαστὴς* (ἀντίθ. *ἐκμισθωτής*)· || ὁ παρέχων ἐπὶ μισθῷ ὑπηρεσίας εἴς τινα.

— [*Ἀστ. Δίκ.*] Καλεῖται *μισθωτὴς* (conductor): α΄) Ἐπὶ μισθώσεως πράγματος (ὑπὸ στενὴν σημασίαν) ὁ ἐκ τῶν συμβαλλομένων δικαιούμενος νὰ ποιῆται ἐπί τινα χρόνον χρῆσιν πράγματός τινος καὶ ὑποχρεούμενος ὅπως παράσχῃ εἰς τὸν ἕτερον συμβαλλόμενον, ἤτοι τὸν *ἐκμισθωτήν*, ὡς ἀντάλλαγμα χρήματα.

β΄) Ἐπὶ μισθώσεως ἐργασίας, ὁ ἐκ τῶν συμβαλλομένων δικαιούμενος ὅπως δέχεται καὶ ποιῆται χρῆσιν τῆς ὑπηρεσίας τοῦ ἑτέρου συμβαλλομένου,

Digitized by Google

ἤτοι τοῦ ἐκμισθωτοῦ, ὑποχρεούμενος δὲ ὅπως παράσχῃ αὐτῷ ὡς ἀντάλλαγμα χρήματα. Καὶ

γ') Ἐπὶ μισθώσεως ἔργου, ὁ ἐκ τῶν συμβαλλομένων ὑποχρεούμενος εἰς κατασκευὴν ἔργου τινὸς καὶ δικαιούμενος ὅπως ὡς ἀντάλλαγμα λάβῃ παρὰ τοῦ ἑτέρου συμβαλλομένου, ἤτοι τοῦ ἐκμισθωτοῦ, χρήματα.

(Βλ. λ. *μίσθωσις, ἐκμισθωτής, πάκτωσις, ναύλωσις*).

Δ. Φ. Π.

**μισθωτικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μισθωτὴν ἢ τὴν μίσθωσιν: «μισθωτικοὶ δροι».

**μισθωτός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐπὶ μισθῷ ἐργαζόμενος ἢ προσληφθεὶς εἰς ὑπηρεσίαν τινά.

**Μισία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἐν Ἀσίᾳ Ἀλβανίας (νῦν Δαγεστάν), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ἀλβάνου καὶ Κασίου. Ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος. Α.Θ.Σ.

**μισιακός,** *—ή, —ό*· δημοτ., ὁ κατὰ τὸ ἥμισυ ἀνήκων εἴς τινα, ἄλλως *κολληγιακός*: παροιμ. «τὸ μισιακὸ βόιδι τὸ τρώει ὁ λύκος».

**Μίσιγκαν** (Michigan) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μίτσιγκαν*.

**Μισιόνες** (Misiones) *[Γεωγρ.]*. Διοικητικὴ περιοχὴ τῆς Ἀργεντινῆς, λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἐκ τῶν ἱεραποστολῶν (missiones), αἵτινες ἐκγατεστάθησαν εἰς τὰ ἐδάφη ἐκεῖνα τῷ 1631. Κατέχει ἔκτασιν 62.100 τετρ. χλμ. Κάτ. ἄνω τῶν 130.000. Π. Γ. Λ.

**Μίσιος, *Μιχαήλ*.** Ἕλλην δικαστικὸς ἀνελθὼν μέχρι τοῦ ἀξιώματος τοῦ ἀρεοπαγίτου. Ἐγεννήθη ἐν Ἠπείρῳ τῷ 1874 καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ Πανεπιστημίου Ἀθηνῶν. Ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης ἐπὶ δικτατωρίας Παγκάλου, κατὰ δὲ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1923 ἐξελέγη πληρεξούσιος Ἰωαννίνων, ἐπανεκλεγεὶς τῷ 1928, ὅτε καὶ ἀπέθανε.

**Μισιρῆ, *Ἔμπου - σ - Σουούτ—*.** Αἰγύπτιος ποιητὴς (βλ. λ. *Ἔμπου - σ - Σουούτ* Μισιρῆ).

**Μισίρι** (τὸ) *[Γεωγρ.]*. Ἡ *Αἴγυπτος*, ἐκ τοῦ *Μίσρ*, ἀραβικοῦ ὀνόματος τῆς Αἰγύπτου.

**Μισίρια** *[Γεωγρ.]*. Εἷς ἐκ τῶν 14 συνοικισμῶν τῶν συγκροτούντων τὸν δῆμον Ρεθύμνης τοῦ νομοῦ Κρήτης. Κάτ. 215 (1928). Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐπὶ τουρκοκρατίας οἱ κάτοικοι ἦσαν κατὰ τὸ πλεῖστον Τοῦρκοι. Ἦτο ἕδρα εἰρηνοδικείου διὰ τὸ ἀνατολικὸν διαμέρισμα της ἐπαρχίας Ρεθύμνης. Ε. Γ.

**Μισιρλόγλου, *Ἀναστάσιος - Συμεών*.** Ἕλλην ἰατρὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Πανόρμῳ τῆς Προποντίδος τῷ 1888. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν ἐν Ἀθήναις καὶ ἐν Παρισίοις. Κατέλαβε διαδοχικῶς τὰς θέσεις ἐσωτερικοῦ ἰατροῦ, ἐπιμελητοῦ καὶ εἶτα ἀρχιχειρουργοῦ τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐθνικῶν ἑλληνικῶν νοσοκομείων. Τῷ 1921, κατὰ τὴν μικρασιατικὴν ἐκστρατείαν, ἐξελέγη ἀρχηγὸς τοῦ Κυανοῦ σταυροῦ καὶ ἀπεστάλη εἰς Σμύρνην, παραμείνας ἐκεῖ μέχρι τέλους τῶν στρατιωτικῶν ἐπιχειρήσεων. Ἀναγκασθεὶς κατόπιν νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Κωνσταντινούπολιν, μετέβη εἰς Ρουμανίαν, ὅπου διέμεινεν ἐπὶ ἓν καὶ ἥμισυ ἔτος. Τῷ 1923 ἐκλεγεὶς πληρεξούσιος Καβάλλας εἰς τὴν Δ' συντακτικὴν συνέλευσιν, κατῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα, ὅπου ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν μετέσχε τῆς ἱδρύσεως τοῦ ὑπὸ τὸν Γ. Κονδύλην Ἐθνικοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος καὶ τὸν Μάρτιον τοῦ 1925 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Ὑγιεινῆς, Προνοίας καὶ Ἀντιλήψεως ἐν τῇ κυβερνήσει Μιχαλακοπούλου, ἐν τῇ ὁποίᾳ παρέμεινε μέχρι τῆς ἀνατροπῆς αὐτῆς ὑπὸ τοῦ κινήματος Παγκάλου. Ἔκτοτε, ἐγκατασταθεὶς εἰς Θεσσαλονίκην, διηύθυνε κατὰ σειρὰν τὰ χειρουργικὰ καὶ γυναικολογικὰ τμήματα τοῦ νοσοκομείων Καλαμαριᾶς, ρωσικοῦ, δημοτικοῦ καὶ κεντρικοῦ προσφυγικοῦ. Ἀπὸ τοῦ 1928 διατελεῖ βουλευτὴς Θεσσαλονίκης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1927 πρόεδρος τοῦ Ἀντιφυματικοῦ συνεδέσμου. Ἐδημοσίευσεν ἐπιστημονικὰς ἐργασίας εἰς διάφορα περιοδικά: («Ἱπποκράτης», «Δελτίον βιολογικοῦ τμήματος Ἑλλην. Φιλ. συλλόγου Κωνσταντινουπόλεως», «Ἑλληνικὴ ἰατρική»), ἐξέδωκε δύο ποιητικὰς συλλογὰς «Πόθοι καὶ Δάκρυα» (Ἀθῆναι 1904), «Φθινοπωρινὲς μελαγχολίες» (Κωνσταντινούπολις 1914) καὶ ἔγραψε διάφορα διηγήματα καὶ ποιήματα εἰς περιοδικὰ καὶ ἡμερολόγια. Μ. Δ. Β.

**Μίσις** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις ἀρμενική, κειμένη ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας Μοψουεστίας, πρὸς Α. τῶν Ἀδάνων καὶ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Πυράμου (Τζιχὰν σοῦ). Παρ' αὐτῷ σῴζεται μεγάλη πεντάτοξος γέφυρα, ἱδρυθεῖσα ὑπὸ Κωνσταντίου καὶ συμπληρωθεῖσα βραδύτερον ὑπὸ Ἰουστινιανοῦ.

**Μισισιπῆς** (Mississipi) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Β. Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μισσισσιπῆς*).

**Μισιτζῆς, *Δημοσθένης*.** Εἷς ἐκ τῶν ἀρίστων παιδαγωγῶν καὶ θεατρικῶν συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του, γεννηθεὶς εἰς τὸ Βαθὺ τῆς Σάμου περὶ τὸ 1840 ἐκ γονέων ἀσήμων. Παιδευθεὶς ἐν Σάμῳ καὶ Κωνσταντινουπόλει, ἐγένετο ἔξοχος διδάσκαλος καὶ παιδαγωγός. Ἡ φήμη του ἦτο μεγάλη καὶ διὰ τοῦτο προσεκλήθη εἰς τὴν Φιλιππούπολιν πρὸς ἀναδιοργάνωσιν τῶν δημοτικῶν σχολείων τῆς πόλεως ἐκείνης (1878), ὅπου καὶ εἰσήγαγε τὸ νέον ἐκπαιδευτικὸν σύστημα ἀντὶ τοῦ τέως ἀλληλοδιδακτικοῦ καὶ μετέβαλε τὴν κεντρικὴν ἀλληλοδιδακτικὴν σχολὴν τῆς Ἁγίας Παρασκευῆς εἰς πρότυπον τετρατάξιον δημοτικὸν σχολεῖον. Ὡς θεατρικὸς συγγραφεὺς παρέδωκεν εἰς τὴν σκηνὴν καὶ ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς: «Ὁ Βελισσάριος ἢ ἡ κακία καὶ ἡ ἀρετή» (1870), «Ὁ ἐκδικούμενος ὑπηρέτης» (1871), «Ὁ Φιάκας» (1877), «Ὁ ἀπηλπισμένος σύζυγος» (1882), «Ὁ δοὺξ τῆς Βλαχίας» (1881). Ἔγραψεν ἐπίσης τὴν «Ἀνθοδέσμην τῶν παίδων» (1885), ποιήματα διὰ τὰ σχολεῖα. Ἀπέθανεν ἐν Κωνσταντινουπόλει. Ν. Ι. Ζ.

**Μίσκα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Νερόμυλος* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μίσκολτς** (Miskolc) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ Μπόρσοντ. Κεῖται ΒΑ. τῆς Βουδαπέστης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. 60.000. Ἔχει θέατρον, διάφορα ἐργοστάσια κλπ. Γ. Ι. Β.

**Μίσκουϊ,** ***Ρίο*—** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ν. Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μαμορέ*).

**Μισλὲν** (Michelin), ***Ἀνδρέας-Ἰούλιος*.** Γάλλος μηχανικὸς καὶ βιομήχανος (1853—1931). Εἶναι γνωστὸς ὡς βιομήχανος καὶ κατασκευαστὴς σκελετῶν ἐκ σιδήρου καὶ εἰδῶν ἐκ καουτσούκ, ἰδίως δὲ ἐλαστικῶν αὐτοκινήτων, ἱδρύσας πρὸς τοῦτο μεγάλα ἐργοστάσια ἐν Κλερμὸν-Φερρὰν τῆς Γαλλίας. Ἐχρημάτισε πρόεδρος τῆς Ἀεροναυτικῆς Λέσχης τῆς Γαλλίας. Μ. Δ. Β.

**Μίσνα** *[Ἰουδ. Φιλολ.]*. Ἡ λέξις αὕτη, ἥτις ἀποδίδεται ὑπὸ τῶν ἐκκλησιαστικῶν πατέρων διὰ τοῦ *δευτέρωσις* (βλ. λ.), καὶ ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὸν ἔγγραφον νόμον, δηλοῖ ἐν τῇ μεταβιβλικῇ ἑβραϊκῇ φιλολογίᾳ κυρίως τὸ μεμαθημένον (καὶ δὴ τὸ δι' ἐπαναλήψεως μεμαθημένον), ἔπειτα δὲ καὶ τὸ περιεχόμενον ἁπάσης τῆς ραββινικῆς προφορικῆς διδασκαλίας, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὴν *Μίκρα*, ἥτις λέξις δηλοῖ τὴν ἁγίαν Γραφὴν καὶ τὴν σπουδὴν αὐτῆς. Εἰδικώτερον δὲ *Μίσνα* ἐν τῇ μνημονευθείσῃ φιλολογίᾳ σημαίνει ὁλόκληρον τὸ περιεχόμενον τοῦ μέχρι τέλους τοῦ Β' μ. Χ. αἰῶνος διαμορφωθέντος νόμου τῆς παραδόσεως, ὡς καὶ τὸ περιεχόμενον τῆς διδασκαλίας ἑκάστου διδασκάλου τῆς ἐποχῆς ἐκείνης (τῶν λεγομένων Τανναϊτῶν) καὶ κατ' ἐξοχὴν τὴν ὑπὸ τοῦ ραββίνου Γιεχουδὰ Χανασεὶ συγκροτηθεῖσαν καὶ μετά τινων προσθηκῶν καὶ ἀλλοιώσεων διασωθεῖσαν μέχρις ἡμῶν συλλογὴν ραββινικῆς προφορικῆς διδασκαλίας. Ἡ Μίσνα αὕτη διαιρεῖται εἰς 6 τάξεις, τὰς λεγομένας ἑβραϊστὶ Σεδαρείμ, ὧν ἑκάστη πάλιν ἀναφερομένη εἰς ὡρισμένον ἔδαφος τῆς ζωῆς ὑποδιαιρεῖται εἰς 60 πραγματείας (Μασσικτὼθ) κλπ.: α) *Σεραείμ* (=σποραί), περιέχει διατάξεις ἀναφερομένας εἰς τὴν καλλιεργίαν τῆς γῆς· β) *Μωέδ* (=ἑορταί)· γ) *Νασείμ* (=γυναῖκες), περιέχει νόμους σχετικοὺς πρὸς τὸν γάμον· δ) *Νεζικείμ* (=βλάβαι) ἢ *Γεσινὼθ* (=ἰάσεις), εἶδος ἀστικοῦ καὶ ποινικοῦ δικαίου· ε) *Κωδασείμ* (=ἅγια), ἀναφέρεται εἰς τὴν ἐν τῷ ναῷ λατρείαν, περιέχει δὲ καὶ νόμους περὶ τῶν τροφῶν· καὶ στ') *Τεχαρὼθ* (=καθάρσεις). Τὸ ὑλικὸν τῆς Μίσνα, ὅπερ στηρίζεται ἐπὶ τοῦ Μιδράς, δὲν εἶναι κατατεταγμένον ἐν αὐστηρᾷ συστηματικῇ τάξει, πόρρω δὲ ἀπέχει τοῦ νὰ εἶναι καθαρῶς θρησκευτικοῦ περιεχομένου καὶ εἶναι μᾶλλον εἶδος ἰουδαϊκοῦ πανδέκτου. Ἡ Μίσνα εἶναι γεγραμμένη ἐν τῇ μεταβιβλικῇ ἑβραϊκῇ γλώσσῃ, ἥτις διεμορφώθη ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀραμαϊκῆς καὶ περιέχει καὶ οὐκ ὀλίγας ἑλληνικὰς καὶ λατινικὰς λέξεις. Ἐξεδόθη δὲ τὸ πρῶτον ἐν Νεαπόλει τῆς Ἰταλίας τῷ 1492, καὶ ἔκτοτε μετεφράσθη λατινιστί, γερμανιστὶ κ.λ.π. Ἡ ἀρίστη κριτικὴ ἔκδοσις αὐτῆς μεθ' ὑπομνημάτων εἶναι ἡ ὑπὸ τῶν Γερμανῶν Beer καὶ Holtzmann, ἀπὸ τοῦ 1912 ἀρξαμένη καὶ μέχρι σήμερον συνεχιζομένη. Π. Ι. Μ.

**Μισνία** (Misnia) *[Γεωγρ.]*. Νεολατινικὸς ὅρος τῆς πρῴην μαρκίας τῆς Σαξωνίας *Μάϊσσεν* (Meissen).

**μισο—**· θέμα τοῦ ἐπιθ. *μισὸς* ὡς πρώτου συνθετικοῦ πρὸς δήλωσιν τοῦ ἡμίσεος ἢ τοῦ ἀτελοῦς καθὰ τοῦ *ἡμι—*, συντίθεται δὲ συνήθως μετὰ παθ. μετοχῆς: *μισοβρασμένος* (ἡμίεφθος), *μισοκουρεμένος, μισομουσκεμένος, μισοντυμένος, μισοξυρισμένος, μισοπεθαμένος* (ἡμιθανής), *μισοπνιγμένος, μισοσκοτωμένος, μισοσπασμένος, μισοτελειωμένος* (ἡμιτελής), *μισοτσακισμένος, μισοχαλασμένος, μισοψημένος* (ἡμίοπτος)· ‖ *μισοπάλαβος, μισόστραβος, μισότρελλος*. Β.Φ.

**Μισὸ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς Ρηνείας (Μεγάλης Δήλου) κατὰ τὸ ΝΔ. τοῦ ἰσθμοῦ της (πλάτ. 37°23' Β., μῆκ. 25°15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1815: Tinos, Mykoni, Rhenea, Delos). Ἔχει βάθη 8—15 ὀργ., ἀλλ' εἶναι λόγῳ χοιράδων δυσχεροῦς πως εἴσπλου. Σ. Ε. Λ.

**«Μισοβάρβαρος».** Παλαιοτάτη ἐφημερὶς ἐν Ἑρμουπόλει, ἐκδιδομένη ἑλληνιστὶ καὶ ἰταλιστί. Σῴζεται αὐτῆς ἐν τῇ Βιβλιοθήκῃ τῆς Βουλῆς ἐν φύλλον ὑπὸ ἡμερομηνίαν 20 Ὀκτωβρίου 1837, ἄνευ ἐνδείξεως ἔτους ἱδρύσεως. —Π.

**μισόγυμνος,** *—η, —ον*· δημοτ., ὁ κατὰ τὸ ἥμισυ γυμνός, ὁ μὴ ἐντελῶς ἐνδεδυμένος, ἄλλως *μισοντυμένος*.

**μισογύνης** (ὁ)· ὁ μισῶν τὰς γυναῖκας ἐκ διανοητικῆς, ψυχολογικῆς ἢ γενετησιακῆς ἀφορμῆς.

**μισογυνία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ *μισογύνου*.

— *[Ψυχοπαθ.]* Ἡ *μισογυνία* γένεσιν ἔχει τὴν ἀποτυχίαν εἰς τὰς ἐρωτικὰς ἢ συζυγικὰς σχέσεις μετὰ γυναικὸς ἣν ὑπερηγάπα ὁ μισογύνης. Ὑπάρχουσιν ὅμως καί τινες ἠθικολόγοι ἢ θρῆσκοι, οἵτινες μισοῦσι τὴν γυναῖκα ὡς αἴτιον τῆς διαφθορᾶς καὶ διώκουσιν αὐτήν. Ἀλλὰ καὶ τότε, βαθύτερον ἐξεταζόμενος ὁ μισογύνης, εἶναι σαδιστὴς με ἰσχυρὰν τὴν ἐπιθυμίαν τῆς γυναικός, ἧς ἐπιθυμίας ὁ φόβος ἐπικρατήσεως ὠθεῖ εἰς τὰς κατὰ τῶν γυναικῶν πράξεις, ἵνα διωχθῇ ἡ libido, ἣν φοβεῖται ὁ ἔχων αὐτὴν ἐν διεγέρσει. Ἐντεῦθεν αἱ περιπτώσεις διωκτῶν τῆς ἀνηθικότητος καὶ ἐν ταῖς ἀθωοτέραις μορφαῖς αὐτῆς ὑπὸ προσώπων διαπραττόντων αἴσχη διαφθορᾶς ἐν στιγμαῖς ἐκρήξεως παροξυσμοῦ (ὑπερισχύσεως τῆς libido). Τ. Α. ΖΗΙ

**μισοδρομῆς**· ἐπίρρ. δημοτ., εἰς τὸ μέσον τοῦ δρόμου, ἄλλως *μισοστρατῆς*: «ἀπόμεινε μισοδρομῆς» δὲν ἔφθασεν εἰς τὸ τέρμα.

**Μισόκαμπος** *[Γεωγρ.]*. Ὅρμος ἀναπεπταμένος τῆς ΝΑ. ἀκτῆς τῆς Σάμου, ἁπλούμενος ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Γλύκορα τοῦ λιμένος Τηγάνι μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Ψηλὴ (πλάτ. 37° 42' 30" Β. μῆκ. 27° 02' 20" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1530: Samos Boghaz). Ἔχει ὡραῖον ψαμμαθῶνα ἐπὶ 2 μίλια ἁπλούμενον. Ἀποτελεῖ τμῆμα τῆς Β. πλευρᾶς τοῦ στενοῦ τῆς Μυκάλης. Σ. Ε. Λ.

**μισόκλειστος,** *—η, —ο*· ὁ κατὰ τὸ ἥμισυ κλεισμένος, ὁ μὴ ἐντελῶς κλεισμένος: «ἄφησε τὸ παράθυρο μισόκλειστο».

**μισοκλείω,** καὶ ***μισοκλείνω***· παθ. μετχ. *μισοκλεισμένος*· δημοτ., κλείω κατὰ τὸ ἥμισυ, οὐχὶ ἐντελῶς: «μισόκλεισε τὴν πόρτα», «ἔχει τὰ μάτια του μισοκλεισμένα».

**μισοκοίλι** (τό)· ἰδιωματ., τὸ ἥμισυ τοῦ κοιλοῦ (βλ. λ.) ὡς μέτρον χωρητικότητος, ἄλλως *μίκοιλο*.

**μισολάγυνο** (τό)· ἰδιωματ., μέτρον χωρητικότητος οἴνου ($2^1/_2$ λίτραι).

**μισὸ-μέντζο** *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *καρτίνι*.

**Μισὸν** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Μακεδονίας ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Ἱερισσοῦ (πλάτ. 40° 26' Β., μῆκ. 23° 52' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1086: Gulf of Kassandra to Thassos and Lemnos)· ἀντικρύζων τὸ μέσον τοῦ στομίου τοῦ κόλπου. Σ. Ε. Λ.

**Μισὸν** (Michon), ***Ἰωάννης-Ἱππόλυτος*.** Γάλλος συγγραφεύς, δημοσιολόγος, θεολόγος, ἀρχαιολόγος καὶ ἱδρυτὴς τῆς ἐπιστήμης τῆς γραφολογίας (1806—1881). Ἐγένετο μοναχὸς καὶ διηύθυνε διάφορα θεολογικὰ σχολεῖα. Φιλελευθέρων ἀρχῶν ἐχαιρέτησε μετ' ἐνθουσιασμοῦ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848. Διηύθυνε τὸν «Θρησκευτικὸν τύπον» καὶ τὸν «Εὐρωπαῖον», ἀπαγορευθέντα ὑπὸ τῆς αὐτοκρατορίας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ ἐπανάστασις καὶ ὁ κλῆρος» (1858), «Ἡ ἀνακαίνισις τῆς Ἐκκλησίας» (1860), «Βίος τοῦ Ἰησοῦ» (1865). Ἀνωνύμως ἐξέδωκε διάφορα ἀντιθρησκευτικὰ μυθιστορήματα. Ι. Μ. Τ.

**μισόξενος** (ὁ, ἡ), *—ον*· ὁ μισῶν τοὺς ξένους, ξενηλάτης, ἀντίθ. *φιλόξενος*.

**μισοπεθαμένος** (ὁ)· βλ. λ. *ἡμιθανής*.

**μῖσος,** *—ους* (τό)· ἀποστροφή, ἀπέχθεια, ἐπιθυμία νὰ πάθῃ τις κακόν: «ἔχει μῖσος κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ του», «τοὺς χωρίζει ἄσπονδον μῖσος», «τρέφει μῖσος ἄγριον κατὰ τῶν ἐχθρῶν του».

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὸ *μῖσος* ὑπάγεται εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ἀντιπαθητικῶν συναισθημάτων καὶ θεωρεῖται συνήθως ὡς τὸ ἀντίθετον τῆς ἀγάπης. Ὁ μισῶν πρόσωπόν τι αἰσθάνεται ἰσχυρὰν ἀντιπάθειαν πρὸς αὐτὸ καὶ ἐπιθυμεῖ τὸ κακόν του. Βασικὸν χαρακτηριστικὸν τοῦ μίσους εἶναι ἡ διάρκειά του ὡς συναισθήματος. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν γέννησίν του, τοῦτο ἄλλοτε μὲν ὀφείλεται εἰς συγκεκριμένους λόγους (ζημία ἠθικὴ καὶ ὑλικὴ προξενηθεῖσα ὑπὸ τοῦ μισουμένου), ἄλλοτε δὲ εἶναι ἄγνωστοι οἱ λόγοι ἢ τοὐλάχιστον παραμένουν εἰς τὸ ὑποσυνείδητον, μὴ ἀνερχόμενοι εἰς τὴν συνείδησιν. Εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην ἐμφανίζεται αὐτομάτως ὡς ἁπλῆ ἀντιπάθεια καὶ ταχύτατα ἐξελίσσεται εἰς ἔντονον μῖσος, ἄνευ ἀποχρῶντος λόγου. Ἀπὸ ἀπόψεως πάλιν ἐκδηλώσεως, ἄλλοτε μὲν παραμένει παθητικὴ ἔφεσις πρὸς βλάβην τοῦ μισουμέ-

Digitized by Google

νου, ἄλλοτε δὲ λαμβάνει ἐνεργητικὴν μορφὴν καὶ ἐκδηλοῦται ὡς πρᾶξις ἀμέσου ἢ ἐμμέσου κακοποιήσεως (ὑλικῆς ἢ ἠθικῆς) τοῦ μισουμένου. Ἡ ἔντασις τοῦ συναισθήματος τούτου ἐξαρτᾶται πρῶτον ἐκ τῆς αἰτίας του (ὑποκειμενικὴ ἐκτίμησις τῆς παρὰ τοῦ μισουμένου προξενηθείσης ζημίας) καὶ ἔπειτα ἐκ τοῦ συναισθήματος τὸ ὁποῖον ὑποκαθιστᾷ. Ὅσον ἰσχυρότερον εἶναι τὸ εἰς μῖσος μετατρεπόμενον συναίσθημα, τόσον ἰσχυρότερον εἶναι καὶ τὸ μῖσος. Οὕτω διάφορος εἶναι ἡ ἔντασις τοῦ μίσους ὅπερ ὑποκαθιστᾷ τρωθέντα συναισθήματα φιλίας, ἢ ἀγάπης ἢ ἔρωτος. Ἔρως μεταβαλλόμενος εἰς μῖσος δίδει μεγίστην ἔντασιν εἰς τὸ νέον συναίσθημα. Θ. Π.

**μισός,** *—ή, —ό*· δημοτ., ἥμισυς, τὸ ἕτερον τῶν δύο ἴσων μερῶν τῆς αὐτῆς μονάδος: «μισὸ ψωμί», «μισὴ ὥρα»· || φρ. «ἀπόμεινε μισὸς ἀπὸ τὴν ἀρρώστια» κατέστη ἰσχνός, ἀδύνατος· || τὸ θηλ. *μισὴ* μετὰ τοῦ *μία* ἀπαγγέλλεται ὡς μία λέξις: «μιά μιση ὀκᾶ, — ὥρα»· || ὁμοίως μετὰ τοῦ ἀρσενικοῦ *ἕνα(ς)* καὶ τοῦ οὐδ. *ἕνα* οἱ τύποι *μισυς* καὶ *μισυ*: «ἐνά μισυς χρόνος», «ἐνά μισυ ποδάρι» καὶ κατ' ἀφομοίωσιν: «ἀνάμισυς—ἀνάμισυ»· || φρ. «μισὸ καὶ μισὸ» ἐξ ἡμισείας: «τὸ κρασί του ἔχει νερὸ μισὸ καὶ μισὸ» ἢ «τὸ γάλα τὸ νερώνει μισὸ καὶ μισό»· || ***μισὰ*** (τά)· ὡς οὐσ., τὸ ἥμισυ μέρος: «τὰ μισὰ τῆς χιλιάδας», «ἔμεινε 'ς τα μισὰ τοῦ δρόμου»· || μεταφ., ἀνάπηρος, ἐλαττωματικός, μὴ ἄρτιος: «ἔχασε τὸ χέρι του κι' ἔμεινε μισὸς ἄνθρωπος». Β. Φ.

**μισοσαράκοστο** (τό)· δημοτ., ἀντὶ *μεσοσαράκοστο*· τὸ μέσον τῆς μεγάλης Τεσσαρακοστῆς, τῶν πρὸ τοῦ Πάσχα νηστειῶν.— Ἐπίρρ. ***μισοσαράκοστα*** ἢ ***μεσοσαράκοστα***· ἐν τῷ μέσῳ τῆς Τεσσαρακοστῆς.

**μισόστρατα,** καὶ ***μισοστρατῆς***· ἐπίρρ., εἰς τὸ μέσον τῆς στράτας, τῆς πορείας, ἄλλως *μισοδρομῆς*.

**μισοτελειώμένος** (ὁ)· βλ. λ. *ἡμιτελής*.

**μισοτιμῆς**· ἐπίρρ. δημοτ., εἰς τὸ μέσον τῆς τιμῆς, πολὺ κατωτέρω τῆς πραγματικῆς ἀξίας: «ἐπώλησε τὸ σπίτι του μισοτιμῆς».

**μισότρελλος,** *—η, —ο*· δημοτ., ὁ μὴ φρόνιμος, ὁ ὀλίγον τρελλός, ἄφρων, ἀσύνετος.

**μισότριβος,** *—η, —ο*· δημοτ. ὁ μὴ ἐντελῶς τετριμμένος, ὁ μὴ ὅλως ἐφθαρμένος, ὁ ἀντέχων ἔτι, ἄλλως *μισοτριμμένος, μισολειωμένος*: «φόρεμα μισότριβο», «μισότριβα παποῦτσα»· || μεταφ. *μισότριβη* (ἡ)· γυνὴ μέσης ἡλικίας, συνήθως ἐπὶ κακῆς σημασίας: «κυνηγάει τὶς μισότριβες».

**Μισούα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νουμιδίας ἐπὶ τῆς ΒΑ. παραλίας τῆς Ζευγιτανῆς (Β. Τύνις), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. V, 3, 2) πρὸς Ἀν. τῆς Κάρπης ἢ Καρπίδος (νῦν Ζεμπὲλ-Γκουρμπές), ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπεῖχε περὶ τὰ 250 στάδια. Ὑπὸ τοῦ Προκοπίου (Βανδ. Πόλ. I 14) ἀναφέρεται ὡς ἐπίνειον τῶν Καρχηδονίων, εἰς δὲ τὰ ἐκκλησιαστικὰ χρονικὰ τῶν πρώτων χριστιανικῶν αἰώνων μνημονεύεται ἐπίσκοπος αὐτῆς Missuensis. Τὰ ἐρείπια αὐτῆς ἀναγνωρίζονται ἐν τῇ νῦν Sidi-Daout-on-Nebi. Α. Θ. Σ.

**Μισούλαμοι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς, κατοικῶν κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. V, 3, 6) ἐν Νουμιδίᾳ παρὰ τὰ μεθόρια τῆς Μαυριτανίας Καισαρηνσίας πρὸς Ν. τοῦ Αὐρασίου ὄρους. Α. Θ. Σ.

**μισοφέγγαρο** (τό)· δημοτ., ἡ *ἡμισέληνος* (βλ. λ.)· | εἶδος ἑλληνικῆς *δαντέλλας* (βλ. λ.).

**μισοφόρι** (τδ)· δημοτ., ἀντὶ *μεσοφόρι* (βλ. λ.), φουστάνι γυναικὸς φορούμενον ἔσω τοῦ κυρίως φορέματος: «τρίζει τὸ μεταξωτὸ μισοφόρι».

**μισοφημένος,** *—η, —ο*· ὁ οὐχὶ ἐντελῶς ψημένος, μίοπτος: «τρώει τὸ κρέας μισοψημένο».

**Μισπὰ** (Mizpa) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Παλαιστίνης, ἐν Ἰουδαίᾳ, πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς Ἱερουσαλήμ, πολλάκις μνημονευομένη ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ ἰουδαϊκοῦ λαοῦ, μετὰ τὸν Σολομῶντα. Σήμερον καλεῖται Nébi-Samwil. Α. Θ. Σ.

**Μισραΐμ.** Ἑβραϊκὴ ὀνομασία τῆς *Αἰγύπτου*, ἀναφερομένη εἰς τὴν ἑβραϊκὴν ἱστορίαν κυρίως κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν φαραώ.

— **Μισραΐμ** ***δόγμα*** (Rite de Misraïm) *[Τεκτον.]*. Τεκτονικὸν δόγμα, ἀποκαλούμενον καὶ *Αἰγυπτιακόν*. Κατὰ τὸν Clavel φαίνεται ὅτι συνέστη ἐν Μιλάνῳ τῷ 1805, τῷ δὲ 1815 ἱδρύθη ἐν Παρισίοις ἡ πρώτη κατὰ τὸ δόγμα τοῦτο ἐργαζομένη στοά, ὑπὸ τὸ ὄνομα «Arc-en-ciel». Τὸ δόγμα τοῦ Μισραΐμ περιλαμβάνει 90 βαθμούς, διαιρουμένους εἰς 4 σειρὰς καὶ 17 κλάσεις. Ἐκ τῶν 90 βαθμῶν οἱ 33 πρῶτοι εἶναι συμβολικοί, οἱ ἑπόμενοι 33 φιλοσοφικοί, ἀκολουθοῦν δὲ 11 μυστικοὶ καὶ 13 καββαλιστικοί, οἱ πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν στηριζόμενοι ἐπὶ τῶν **αἰγυπτιακῶν μυστικῶν τελετουργιῶν** καὶ τοῦ ἀρχαίου συστήματος μυήσεων. Τὸ δόγμα τοῦτο φέρεται καὶ σήμερον κανονικῶς λειτουργοῦν ἐν Ἀγγλίᾳ, Αἰγύπτῳ, Ἀμερικῇ καὶ ἀλλαχοῦ. [*Marc Bedarride*, «De l'Ordre Maçonnique de Misraïm» (1835).] Η. Π. Γ.

**Μισράτα, *Ρὰς-ἐλ*—**(ἢ *Μεσράτα*) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον καὶ πόλις τῆς Τριπολίτιδος. Τὸ ἀκρωτήριον εἶναι τὸ ΒΔ. κέρας τοῦ κόλπου Γιοὺν-ἀλ-Καμπρὶτ (τῆς Μεγάλης Σύρτεως). Ὀνομαζόμενον ὑπὸ τῶν Ἰταλῶν Misurata καὶ ἔχον ἄκραν ὀνομαζομένην *Ρὰς Ζορούγκ* (πλάτ. 32° 22′ Β., μῆκος 15° 13′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 246: Ras Makhabez to Benghazi), ταυτίζεται ἡ μὲν πρὸς τὸ *Τρίκρον* ἄκρον, τὸ δὲ πρὸς τὰς *Κεφαλὰς* (*Πτολ.* Δ, γ, 13, ἔκδ. Nobbe). Σχηματίζεται δὲ μεταξὺ τῶν δύο ἄκρων ἐπίνειον, *Μισράτα* ὡσαύτως ὀνομαζόμενον, νομοθετικῶς ὑπὸ τοῦ Ἰταλικοῦ κράτους καθωρισμένον διὰ τὴν ἐξαγωγὴν προϊόντων. Ἡ πόλις *Μισράτα* ἔχουσα 14.000 (1924) κατ. καὶ κειμένη 12 χιλ. ἔνδον καὶ ΝΔ. τοῦ ἀκρωτηρίου, εἶναι ἐξευρωπαϊσμένη πόλις ἐν μέσῳ φοινικώνων καὶ ἐλαιώνων. Ἐξαγωγὴ καμηλότριχος, ἐρίων, φοινίκων, ἐλαίου. Εἰς τὸν Πευτιγγεριανὸν χάρτην σημειοῦται ὡς Tubacti municip., εἰς δὲ τὸ Ἀντωνινιανὸν ὁδοιπορικὸν ἀναφέρεται ὡς Thebunte. Σ. Ε. Λ.

**«Μισραχῆ».** Ἑβραϊκὴ λέξις σημαίνουσα «τὸ φῶς ἐξ αὐτοῦ». Ὠνομάσθη δὲ οὕτω ἑβραϊκὴ ὀργάνωσις, ἱδρυθεῖσα ἐν Πολωνίᾳ τῷ 1893 ἀπὸ τὸν ραββῖνον Σαμουὴλ Μπέλμπερ ὑπὲρ τῆς διατηρήσεως τῆς θρησκείας τοῦ Μωϋσῆ καὶ τῆς ἑβραϊκῆς γλώσσης. Ἡ ὀργάνωσις αὕτη μετὰ τὴν ἐμφάνισιν τοῦ Σιωνισμοῦ διελύθη, ἀπορροφηθεῖσα ἀπὸ τὸ Σιωνιστικὸν κίνημα. Ἀργότερον, ὅταν εἰς τὰς σιωνιστικὰς τάξεις ἐνεφανίσθησαν οἱ λεγόμενοι πολιτικοὶ σιωνισταί, οἱ συντηρητικοὶ σιωνισταὶ συνέπηξαν νέαν ὀργάνωσιν ὑπὸ τὸ αὐτὸ ὄνομα «Μισραχῆ». Ἡ τῷ 1902 ἐπανιδρυθεῖσα «Μισραχῆ», ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ ραββίνου Ἰσαὰκ Ρέϊνς, ἀπετέλεσεν ἔκτοτε τὴν ὀρθόδοξον σιωνιστικὴν παράταξιν, εἰς δὲ τὰ σιωνιστικὰ συνέδρια ἠγωνίσθη εἰς τὴν δημιουργίαν τῆς ἐθνικῆς ἑβραϊκῆς ἑστίας. Εἰς τὸ ΣΤ′ Παγκόσμιον Σιωνιστικὸν Συνέδριον τοῦ 1903 ἡ παράταξις τῶν μισραχιστῶν ἀπετελεῖτο ἀπὸ 100 περίπου ἀντιπροσώπους. Τῷ 1904 ἡ ὀργάνωσις συνεκάλεσεν εἰς Πρέσμπουργκ συνδιάσκεψιν, ἡ ὁποία καὶ συνέταξε τὸ πρόγραμμα τῶν μισραχιστῶν. Τῷ 1911 οἱ μισραχισταὶ κατώρθωσαν νὰ ἐπιβάλουν εἰς τὴν σιωνιστικὴν ὀργάνωσιν ψήφισμα, κατὰ τὸ ὁποῖον ὁ ἐπίσημος Σιωνισμὸς δὲν θὰ ἐπεχείρει τίποτε τὸ ἀντιβαῖνον εἰς τὸν νόμον τοῦ Μωϋσέως, τὰς παραδόσεις καὶ τὰς δοξασίας τῶν Ἑβραίων. Ἡ διάδοσις ἐπίσης τῆς ἀρχαίας ἑβραϊκῆς γλώσσης, ἡ δημοσίευσις περιοδικῶν καὶ ἐφημερίδων εἰς τὴν γλῶσσαν τῆς Ἱερᾶς Βίβλου εἶναι ἔργον κατὰ μέγα μέρος ἀποκλειστικὸν τῶν μισραχιστῶν. Ὁ ραββῖνος Μαΐρ Μπέρλιν ἐπεχείρησε τῷ 1914 περιοδείαν ἀνὰ τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς, ὅπου ἵδρυσε πολυάριθμα τμήματα τῆς ὀργανώσεως. Τῷ 1920 συνῆλθεν εἰς Ἄμστερνταμ νέα συνδιάσκεψις τῶν μισραχιστῶν, ἔκτοτε δὲ ἀναδιωργανώθη ἡ ὀργάνωσις ἐπὶ νέων σταθερῶν καὶ διεθνῶν βάσεων. Σχετικῶς μὲ τὴν ἐθνικὴν ἑστίαν τῶν Ἑβραίων οἱ μισραχισταὶ ἔχουν ὡς σύνθημα τὴν ἐπιστροφὴν εἰς τὴν Παλαιστίνην, ὅπερ θεωρεῖται ταυτόσημον μὲ τὴν ἐπιστροφὴν τῶν Ἑβραίων εἰς τὸν νόμον τοῦ Μωϋσέως. Α.Ε.Μ.

**Μισσὰ** (Missa), ***Ἐδμόνδος-Ἰωάννης-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος συνθέτης (1861—1910), πρῶτον βραβεῖον τῆς Ρώμης τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων (1881). Εἰργάσθη τόσον εἰς τὸ σοβαρὸν ὅσον καὶ εἰς τὸ ἐλαφρὸν θέατρον, δώσας εἰς μὲν τὸ πρῶτον τὰ μελοδράματα: «Λυδία», «Ὁ δειλὸς ἱππότης», «Ἡ πριγκίπισσα Ναγκάρα», «Ντινά», «Νινὸν τοῦ Λανκλό», «Μπαμπέτ», «Μυγκέτ» κτλ. εἰς δὲ τὸ ἐλαφρὸν πλείστας ὀπερέττας, μεταξὺ τῶν ὁποίων «Ἡ ὡραία Σοφία» (1888) κτλ. Γ. Σ.

**Μισσάλε *ρωμαϊκὸν*** (Missale romanum). Λειτουργικὸν βιβλίον τῆς παπικῆς Ἐκκλησίας, περιέχον κυρίως τὴν ἱερὰν λειτουργίαν. Αἱ παρατηρούμεναι διαφοραὶ ἐν τῇ λατρείᾳ κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐγέννησαν ἐν τῇ Δύσει τὴν ἀνάγκην τῆς ὁμοιομορφίας. Ἡ τοιαύτη ἐπιθυμία ἐξεδηλώθη περισσότερον εἰς τὴν ἐν Τριδέντῳ σύνοδον, ἥτις καὶ ἀνέθηκεν εἰς τὸν πάπαν τὴν σύνταξιν καὶ ἔκδοσιν ἑνιαίου λειτουργικοῦ. Πράγματι ὁ πάπας Πίος ὁ Ε′ ἐξέδωκε τῷ 1570 τὸ «Missale romanum». Πᾶσαι αἱ Ἐκκλησίαι, αἱ ὁποῖαι ἀπὸ 200 ἐτῶν ἐστεροῦντο ἰδίου λειτουργικοῦ, ὑπεχρεοῦντο νὰ παραλάβωσι καὶ ἀποδεχθῶσι τὸ Missale, καθὼς καὶ τὸ ρωμαϊκὸν βρεβιάριον (1568). Ἀμφότερα τὰ βιβλία ταῦτα ὑπέστησαν μεταγενεστέρως, καὶ δὴ ὑπὸ τῶν παπῶν Πίου Ι′ καὶ Βενεδίκτου ΙΕ′, διαφόρους τροποποιήσεις καὶ βελτιώσεις. Τὸ ρωμαϊκὸν Μισσάλε διαιρεῖ τὴν λειτουργίαν εἰς 41 μέρη ἢ 8 τελετουργικὰς ὁμάδας: 1) Τὴν προπαρασκευὴν ἐπὶ τῶν βαθμίδων τοῦ θυσιαστηρίου. 2) Τὴν εἰσαγωγὴν εἰς τὴν λειτουργίαν (Introitus καὶ δοξολογία). 3) Τὰς ἀναγνώσεις (Ἀπόστολος—Εὐαγγέλιον—Πιστεύω). 4) Τὴν δι' εὐχῶν **προπαρασκευὴν** τῆς καθαγιάσεως τῶν τιμίων δώρων, ὑμνῳδίας, θυμίασιν κλπ. 5) Τὸ τρισάγιον μετὰ τοῦ ὡσαννά. 6) Τὴν μετουσίωσιν, ἢ καθαγίασιν τῶν δώρων, ἥτις συντελεῖται οὐχὶ διὰ τῆς παρ' ἡμῖν ἐν χρήσει ἰδίας καθαγιαστικῆς εὐχῆς, ἀλλὰ διὰ τοῦ «Hoc est corpus meum κλπ.» (=τοῦτό ἐστι τὸ σῶμά μου κλπ.). Προσέτι τὴν ἐπίδειξιν πρὸ τοῦ λαοῦ τῶν καθαγιασθέντων δώρων καὶ τὸ Πάτερ ἡμῶν μετά τινων ἄλλων εὐχῶν. 7) Τὴν κοινωνίαν τῶν λειτουργῶν καὶ λαϊκῶν· καὶ 8) Τὸν ἐπίλογον, τὴν ἀπόλυσιν (ite, missa est) κλπ. Ἡ πορεία αὕτη τῆς λειτουργίας εἰς τὰ οὐσιώδη αὐτῆς διατηρεῖται πάντοτε ἡ αὐτή. Τινὰ ἐν τούτοις μέρη τῆς λειτουργίας μεταβάλλονται ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῆς ἑορτῆς καὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ἡμερολογίου. Δ. Ν. ΜΩΡΑΪΤΗΣ

**Μισσιεσὺ** (Missiessy), ***Ἐδουάρδος-Ἰάκωβος*** Burgues, *κόμις ντὲ*—. Διαπρεπὴς Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν εἰς Τουλὼν (1756—1837). Διακεκριμένως ὑπηρετήσας κατὰ τὸν ἐναντίον τῆς Ἀμερικῆς πόλεμον (1776—1783), ὑπηρέτησε μετὰ τοῦ αὐτοῦ ζήλου τοὺς στόλους τῆς ἐπαναστάσεως, τῆς ὑπατείας καὶ τῆς αὐτοκρατορίας ὡς πλοίαρχος (1792) καὶ ἀντιναύαρχος (1793), ἐν τῷ στόλῳ τῆς Μεσογείου, καὶ ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ναυτικῶν καὶ ὡς ναυτικὸς νομάρχης τῆς Χάβρης. Ἀρχηγὸς τοῦ στόλου τοῦ Ροσφόρτ, διετάχθη ν' ἀποπλεύσῃ διὰ τὰς Ἀντίλλας πρὸς συνένωσιν μετὰ τοῦ στόλου τοῦ Βιλλνὲβ καὶ πρὸς ἀπαλλαγὴν τῆς Μάγχης ἀπὸ τοῦ στόλου τοῦ Νέλσωνος, ὅστις θὰ ἐτρέπετο πρὸς δίωξίν των, ἀφίνων ἐλεύθερον τὸν διάπλουν πρὸς Ἀγγλίαν εἰς τὸν στρατὸν τῆς Βουλώνης. Διασπάσας τὸν ἀποκλεισμὸν εὑρέθη ἐν τῷ Ἀτλαντικῷ ὑπὸ σφοδροτάτην κακοκαιρίαν, ἀναγκασθεὶς νὰ ὑπομείνῃ 13 ἡμέρας ἐν ἀναμονῇ βεβιασμένῃ (Ἰανουάρ. 1805). Ἐπαναλαβὼν τὸν πλοῦν του καὶ μὴ εὑρὼν εἰς Ἀντίλλας τὸν γαλλικὸν στόλον, βιασθέντα νὰ ἐπαναπλεύσῃ εἰς Γαλλίαν, ἐπήνεγκε μεγάλας βλάβας εἰς τὰς ἐκ τῶν Ἀγγλικῶν Ἀντιλλῶν Ἀντίγκοα, Μοντσεράτ, Μπαρμπάδος καὶ Ἅγιον Χριστόφορον, διέλυσε τὴν πολιορκίαν τοῦ Ἁγίου Δομίγκου καὶ ἀφοῦ ἀνεφοδίασε τὴν Γουαδελούπαν καὶ τὴν Μαρτινίκαν ἐπανέπλευσεν εἰς Γαλλίαν, ὅπου εὑρέθη πρὸ δυσμενείας τοῦ Ναπολέοντος, θεωρήσαντος καὶ αὐτόν, ἀδίκως, ἀνατροπέα τῶν μεγαλεπηβόλων σχεδίων του. Ἀνακληθεὶς εἰς ἐνέργειαν (1808), ἐναυάρχησε τοῦ στόλου τοῦ Ἐσκῶ, προσενεγκὼν μεγίστην βοήθειαν εἰς τὴν ἄμυναν τῆς Ἀμβέρσης. Προσχωρήσας εἰς τοὺς Βουρβώνους ἅμα τῇ παλινορθώσει των, ἐγένετο (1814) μεγαλόσταυρος τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς καὶ ναυτικὸς νομάρχης τῆς Τουλῶνος, ἀποστρατευθεὶς τῷ 1832. Ὑπῆρξε καὶ ἄριστος ναυτικὸς συγγραφεὺς πλείστων συγγραμμάτων, ὧν προέχει ἡ «Ναυτικὴ τακτικὴ καὶ σημάνσεις ἡμέρας, νυκτὸς καὶ ὁμίχλης, ἐπ' ἀγκύρᾳ ἢ ὑπὸ τὰ ἱστία» (1827). Σ. Ε. Λ.

**Μισσιεσὺ** (Darse de Missiessy) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων πολεμικὸς λιμὴν ἐν τῷ ναυστάθμῳ τῆς Τουλῶνος (πλάτ. 43°07′ Β., μῆκ. 5°56′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 151: Toulon), φερώνυμος τοῦ ἐνδόξου Γάλλου ναυάρχου. Σ. Ε. Λ.

**μισσιονάριοι** (οἱ) (missionarii). *Μισσιονάριοι* καλοῦνται οἱ ἱεραπόστολοι, οἱ ὑπὸ χριστιανικῶν Ἐκκλησιῶν, ἰδίᾳ τῆς διαμαρτυρομένης ἢ δυτικῆς, ἀποστελλόμενοι πρὸς κήρυξιν καὶ διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ παρὰ τοῖς ἑτεροθρήσκοις, ἐνίοτε δὲ καὶ παρὰ τοῖς ἑτεροδόξοις. Κ. Ι. Δ.

**Μισσισσιπῆς** (Mississipi εἰς τὴν γλῶσσαν τῶν Ἀλγκονκίνων Ἰνδῶν σημαίνει «πατὴρ τῶν ὑδάτων») *[Γεωγρ.]* Ὁ μεγαλύτερος ἀπὸ πάσης ἀπόψεως ποταμὸς τῆς Β. Ἀμερικῆς καὶ ἐκ τῶν πρώτων τοῦ κόσμου, κατέχων ἀπὸ ἀπόψεως συγκοινωνιακῆς χρησιμότητος τὴν πρώτην θέσιν, ἀπὸ ἀπόψεως μήκους τὴν πρώτην ἐπίσης, ἐὰν ληφθῇ τὸ μῆκός του ἐν συνεχείᾳ ἀπὸ τῶν πηγῶν τοῦ παραποτάμου του Μισσουρὶ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Μισσισσιπῆ (6970 χιλμ.), ἀπὸ ἀπόψεως δὲ ὄγκου κυλιομένων ὑδάτων τὴν τετάρτην (μέσος ὅρος 18,800 κυβ. μ. κατὰ δευτερόλεπτον), ἐρχόμενος μετὰ τοὺς Ἀμαζόνιον, Κόγγον καὶ Γιὰνγκ-Τσὲ-Κιάνγκ (Κυανοῦν). Ἡ ἀπέραντος λεκάνη του καλύπτει τὸ ἥμισυ σχεδὸν τοῦ ἐδάφους τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, συγκεκριμένως δὲ ὁλόκληρον τὴν μεταξὺ τῶν Βραχωδῶν ὀρέων (Rocky Mountains) πρὸς Δ. καὶ τῶν Ἀλλεγανείων πρὸς Α. ἔκτασιν. Τὰ πρὸς Β. ὅρια τῆς λεκάνης καθορίζουσιν αἱ παρὰ τὴν καναδικὴν μεθόριον πολυάριθμοι βορειοαμερικανικαὶ λίμναι. Ἡ ἔκτασις τῆς ὑπ' αὐτοῦ καὶ τῶν παραποτάμων του ἀρδευομένης χώρας ἀνέρχεται εἰς 3.250.000 τ. χλμ., ὧν τὰ 1.370.000 τ. χλμ. ἀνήκουσιν εἰς τὴν λεκάνην τοῦ μεγάλου παραποτάμου αὐτοῦ Μισσουρί. Ἐν γενικαῖς γραμμαῖς ὁ Μισσισσιπῆς ἀποτελεῖται ἐκ τοῦ κεντρικοῦ βραχίονός του, ἔχοντος κατεύθυνσιν ἀπὸ Β. πρὸς Ν., μῆκος δὲ 3.694 χλμ., καὶ ἐκ τῶν τριῶν μεγάλων παραποτάμων του, τοῦ μακροτάτου (3.765 χλμ.), *Μισσουρὶ* (δεξιοῦ), τοῦ πολυΰδρου *Ὀχάϊο* (ἀριστεροῦ) καὶ τοῦ *Ἀρκανσὰς* (δεξιοῦ). Ἐκτὸς τῶν τριῶν ἀνωτέρω μεγάλων παραποτάμων ὑπερπεντήκοντα ἄλλοι, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ

Digitized by Google

ἧττον ἀξιόλογοι, ποταμοὶ σχηματίζουσι τοὺς δευτερεύοντας πλοκάμους αὐτοῦ.

Ὁ κεντρικὸς βραχίων τοῦ Μισσισσιπῆ πηγάζει παρὰ τὴν 47° Β. πλάτους ἐκ τῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ Μιννεσότα μικρᾶς λίμνης Ἀϊτάσκα εἰς ὕψος 460 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Ἔχει κατ' ἀρχὰς πλάτος 4 περίπου μ. καὶ βάθος 60 ἑκατοστῶν, ῥέει δὲ ὀφιοειδῶς διὰ μέσου περιοχῆς καλυπτομένης ὑπὸ παγώνων, οἱ ὁποῖοι ἔχουσιν ἐκσκάψει ἀπειρίαν μικρῶν λιμνῶν καὶ ἀμφιταλαντεύεται μεταξὺ τῆς Ἄνω λίμνης (Superior) καὶ τοῦ Οὐδσωνείου κόλπου. Δίδει τότε τὴν ἐντύπωσιν μικροῦ ῥύακος ἄνευ μεγάλου μέλλοντος, ὁ ὁποῖος κινδυνεύει ἀπὸ στιγμῆς εἰς στιγμὴν νὰ ἐξαφανισθῇ ἐντὸς τῆς πλήρους ὑδάτων χώρας τὴν ὁποίαν διασχίζει. Ἀνευρίσκων τέλος μικρὰν κλίσιν τοῦ ἐδάφους, καλυπτομένην ὑπὸ πυκνῶν δασῶν, στρέφεται πρὸς Ν. καὶ ῥέει ταχύς, δεχόμενος πλῆθος μικρῶν παραποτάμων, μέχρι τῶν πρὸ τῆς Μιννεαπόλεως, μεγάλης οἰκονομικῆς σπουδαιότητος, καταρρακτῶν τοῦ Σαίντ-Ἄντονυ ὕψους 6 μ.

Ἀπὸ τῆς Μιννεαπόλεως τὸ ὑψόμετρόν του ἔχει κατέλθει εἰς 242 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, καθίσταται δὲ εὐρὺς μέχρι 400 μ. καὶ εἶναι πλωτὸς εἰς μεγάλα πλοῖα μέχρι τῶν ἐκβολῶν του, ἐπὶ μήκους 3.115 χλμ. Μετὰ τὴν πόλιν ταύτην ἀπαντᾷ τὸν ἐγγὺς κείμενον Ἅγιον Παῦλον, πρωτεύουσαν τῆς Μιννεσότας, 128 δὲ χλμ.. ἀπ' αὐτοῦ διασχίζει τὴν λίμνην Πέπιν, μήκους 40 καὶ πλάτους 5 χλμ., καὶ ῥέει πρὸς Ν. ἐν μέσῳ χθαμαλῶν ὄχθων, ἐξυπηρετουσῶν πλείστας πλουσίας πόλεις (Λὰ Κρός, Ντέβενπορτ, Κέοκακ κλπ.), δεχόμενος διαρκῶς νέους καὶ ὁλονὲν μεγαλυτέρους παραποτάμους *(Μιννεσότα, Ἅγιον Σταυρόν, Ποταμὸν τῶν Μοναχῶν, Οὐΐσκονσιν, Ρὸκ Ρίβερ* καὶ *Ἰλλινόϊς)*. Ὁ τελευταῖος οὗτος πηγάζων ἐγγὺς τῆς λίμνης Μίτσιγκαν, ἀκολουθεῖ τὴν Δ. παραλίαν αὐτῆς εἰς ἀπόστασιν 10 χλμ ἐπὶ μήκους 100 περίπου χλμ., συλλέγων τὰ πλημμυρίζοντα ὕδατά της. Ἔχει ἤδη πλάτος 2.500 περίπου μ., ὅτε παρὰ τὸ Ἄλτον φθάνει ἐκ δεξιῶν ὁ μέγας παραπόταμος Μισσουρί, πηγάζων ἐκ τῶν Βραχωδῶν ὀρέων καὶ διασχίζων χώραν μᾶλλον ἀνώμαλον τοῦ κυρίου ποταμοῦ. Ὁ Μισσουρὶ ἐθεωρήθη πολλάκις παλαιότερον ὡς ὁ κύριος βραχίων τῆς μεγάλης βορειομερικανικῆς ἀρτηρίας, καὶ τοῦτο ἀφ' ἑνὸς μὲν διότι τὸ μέχρι τῆς συμβολῆς μῆκός του (3.765 χλμ.), εἶναι διπλάσιον τοῦ τοῦ Μισσισσιπῆ, ἀφ' ἑτέρου δὲ διότι κατὰ τὰς ἐποχὰς τῶν πλημμυρῶν τὰ κυλιόμενα ὑπὸ τοῦ ἐκ τῶν ὀρέων ἐρχομένου βραχίονος ὕδατα εἶναι πολλαπλάσια τοῦ ἀπὸ τῶν λιμνῶν. Εἰς τὸ σημεῖον τῆς συμβολῆς, κειμένον ἐπὶ ὑψομέτρου 122 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, ὁ ταχὺς καὶ πλήρης ἰλύος Μισσουρὶ ταράσσει τὴν κοίτην τοῦ διαυγοῦς καὶ ἠρέμου Μισσισσιπῆ, καθιστῶν τὸ ῥεῦμα σκοτεινὸν καὶ βορβορῶδες καὶ αὐξάνον τὴν ὡραίαν ταχύτητά του εἰς 7 χλμ. Μικρὸν μετὰ ταῦτα ἀπαντᾷ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης ἡ ὡραία καὶ πλουσία πόλις τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου, σπουδαιότατος ἐμπορικὸς λιμήν. Τὸ ῥεῦμά του ἔχει λάβει ἤδη ἐκ νέου τὴν ἤρεμον ὄψιν του καὶ ἡ ἀτμοπλοϊκὴ κίνησις ἐπ' αὐτοῦ αὐξάνει διαρκῶς. Παρὰ τὸ τριακοσιοστὸν ἀπὸ τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου χιλιόμετρον φθάνει, παρὰ τὴν πόλιν Κάϊρον (ὑψόμετρον 82 μ.), ὁ *Ὀχάϊο* μήκους 1.600 χλμ., κατὰ πολὺ δηλαδὴ βραχύτερος τοῦ Μισσουρί, ἀλλὰ πολὺ σπουδαιότερος αὐτοῦ ἀπὸ οἰκονομικῆς ἀπόψεως καὶ διπλασίως ἰσχυρὸς εἰς ποσότητα ὑδάτων.

Πηγάζει οὗτος ἐκ τῶν Ἀλλεγανείων ὀρέων, διασχίζει τὰς πλουσιωτάτας εἰς μεταλλεῖα καὶ καλλιεργημένας ἐκτάσεις πολιτείας Κέντουκυ, Ὀχάϊο καὶ Βιργινίας καὶ ἐξυπηρετεῖ τὰς μεγάλας βιομηχανικὰς πόλεις Πίττσμπουργκ, Κινκιννάτι, Λουϊσβίλλ, Ἤβανσβιλλ κλπ. Μετὰ τὸ Κάϊρον ὁ Μισσισσιπῆς, πλατυνόμενος μέχρι 3.200 μ., ῥέει ἡσύχως ἐπὶ σχεδὸν ἐπιπέδου ἐδάφους, ἡ δὲ μὲ χθαμαλὰς ὄχθας κοίτη του καθίσταται ἐξαιρετικῶς ἀσταθής, μετατοπιζομένη εἰς διάφορα σημεῖα καὶ δημιουργοῦσα πολλὰς ἑλώδεις καὶ νοσηρὰς περιοχάς, διελαυνομένας ὑπὸ νεφῶν ἐξ ἀνωφελῶν κωνώπων. Αἱ πόλεις εἶναι διαρκῶς ἀραιότεραι, ὁ δὲ διάπλους μονότονος, ὅσον εἰς οὐδὲν ἄλλο σημεῖον τῆς ἀπεράντου λεκάνης του. Εἷς μόνον παραπόταμος ἔρχεται ἐξ ἀριστερῶν, ὁ *Γιάτσω*, ἄγων τὰ ὕδατα τῆς πεδιάδος, ἐνῷ ἡ δεξιὰ ὄχθη διακόπτεται διαρκῶς ὑπὸ μεγάλων καὶ ὁρμητικῶν παραποτάμων ἀπὸ τῶν Βραχωδῶν ὀρέων κατερχομένων. Σπουδαιότεροι τούτων εἶναι ὁ **Ἀρκανσάς**, ἐρχόμενος ἀπὸ τοῦ Σάουθερν Πὰρκ καὶ ὁ **Ἐρυθρὸς** (Red River), πηγάζων ἐκ τοῦ βορείου Τεξάς. Ὁ τελευταῖος οὗτος παραπόταμος, διασχίζων χώραν καλυπτομένην ὑπὸ ἐκτεταμένων δασῶν, ἀποσπᾷ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν πλημμυρῶν μεγάλους κορμοὺς δένδρων, τοὺς ὁποίους παρασύρων μέχρι τοῦ Μισσισσιπῆ καλύπτει τὸ ῥεῦμα αὐτοῦ καὶ δυσχεραίνει σημαντικῶς τὴν ναυσιπλοΐαν. Πρὸς διευκόλυνσιν κατεσκευάσθησαν εἰδικαὶ παράπλευροι τεχνηταὶ διώρυγες, ὁπόθεν διέρχονται τὰ ἀτμόπλοια. Μικρὸν πρὸ τοῦ κυρίου δέλτα ἐκφεύγουσιν ἐκ δεξιῶν τῆς κυρίας ἀρτηρίας, ἡ ὁποία λαμβάνει κατεύθυνσιν πρὸς ΝΑ. πολλαὶ παραφυάδες «bayous» καλούμεναι, αἵτινες διευθύνονται πρὸς Ν. καὶ ἐκβάλλουσι μεμονωμένως εἰς τὸν Μεξικανικὸν κόλπον. Σπουδαιότεραι τούτων εἶναι αἱ *Ἀτσαφαλάγια, Λὰ Φούρς, Πλάκεμιν* κλπ. Παρὰ τὴν πόλιν Νέαν Ὀρλεάνην, 145 χλμ. πρὸ τῆς ἐκβολῆς, ὁ Μισσισσιπῆς διασπώμενος εἰς πολλοὺς βραχίονας σχηματίζει τὸ εἰς τὸν Μεξικανικὸν κόλπον παρὰ τὴν 29° Β. πλάτους ἐκβάλλον δέλτα του, τοῦ ὁποίου κυριώτερα καὶ μᾶλλον συχναζόμενα ὑπὸ τῶν πλοίων στόμια εἶναι τὸ βόρειον, τὸ νότιον καὶ τὸ νοτιοδυτικόν.

Ὁ κυρίως Μισσισσιπῆς ἐὰν ἐστερεῖτο τῶν πολυαρίθμων καὶ πολυθορύβων παραποτάμων του, θὰ ἦτο ἐκ τῶν μᾶλλον ἠρέμων ποταμῶν τοῦ κόσμου, διότι διέρχεται διὰ χώρας ἀπολύτως πεδινῆς καὶ μὴ προσβαλλομένης ὑπὸ καταιγίδων καὶ ἄλλων μετεωρολογικῶν ἀνωμαλιῶν. Ἡ μεγάλη μετεωρολογικὴ ἀστάθεια τῶν ὑπὸ τῶν δεξιῶν παραποτάμων, καὶ μάλιστα τοῦ Μισσουρί, τοῦ Ἀρκανσὰς καὶ τοῦ Ἐρυθροῦ, διασχιζομένων περὶ τὰ Βραχώδη ὄρη χωρῶν καὶ ἡ ὑπὸ τῶν κυκλώνων μαστιζομένη περιοχὴ τοῦ ἀριστεροῦ Ὀχάϊο, ἀσκοῦσι μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς κανονικότητος τῆς κοίτης καὶ τοῦ ῥεύματος τοῦ κυρίου βραχίονος, ὅστις κατὰ τὸν κάτω ῥοῦν αὐτοῦ προξενεῖ ἀνυπολογίστους ζημίας διὰ τῶν ἐκχειλιζόντων ὑδάτων του, τὰ ὁποῖα πολλάκις καλύπτουν ἐκτάσεις 60.000 τ. χλμ., ἀπογυμνοῦντα ἐντελῶς τὰς καλλιεργείας. Ἀπὸ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἤδη μεγάλαι προσπάθειαι καταβάλλονται ἐκ μέρους τῆς ἀμερικανικῆς κυβερνήσεως πρὸς ἀποτροπὴν αὐτῶν διὰ τῆς κατασκευῆς μεγάλων ἀντιπλημμυρικῶν ἔργων. Σπουδαιότερα τούτων εἶναι τὰ περατωθέντα τῷ 1916, τῶν ὁποίων ἡ δαπάνη ἀνῆλθεν εἰς 27 ἑκατομμύρια ἀγγλικῶν λιρῶν. Τὰ ὕδατα τοῦ Μισσισσιπῆ ὀγκοῦνται ὑπερμέτρως δὶς τοῦ ἔτους, κατὰ τὴν περίοδον τῶν μεγάλων φθινοπωρινῶν βροχῶν καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνοίξεως, ὁπότε τήκονται οἱ πάγοι. Τότε ἡ στάθμη τῶν ὑδάτων του ἀνέρχεται πολλάκις κατὰ 15 μέτρα μεταξὺ τῆς συμβολῆς τοῦ Ὀχάϊο καὶ τοῦ ὀχυροῦ Ἄνταμ, κατὰ 4 μ. δὲ παρὰ τὰς ἐκβολὰς καὶ περὶ τὴν Νέαν Ὀρλεάνην.

Ἡ λεκάνη τοῦ Μισσισσιπῆ εἶναι ἐκ τῶν εὐφορωτέρων, κάλλιστα ἐκμεταλλευομένων καὶ πλουσιωτέρων χωρῶν τοῦ κόσμου, ἐκ τοῦ λόγου δὲ τούτου αὐξάνει σημαντικῶς καὶ ἡ συγκοινωνιακὴ χρησιμότης τοῦ ἐκτεταμένου πλωτοῦ δικτύου του, τὸ ὁποῖον συμπληροῦται διὰ δύο τεχνητῶν διωρύγων, ὧν ἡ μὲν μία, ἡ τοῦ Σικάγου, ἑνώνει τὴν λίμνην τοῦ Μίτσιγκαν μετὰ τοῦ παραποτάμου Ἰλλινόϊς, ἡ δὲ ἄλλη, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα Καρραντολέ, τὴν ἐγγὺς τῆς Νέας Ὀρλεάνης μικρὰν λίμνην Πόντσερτρον μετὰ τοῦ κάτω ῥοῦ τοῦ κυρίου ποταμοῦ παρὰ τὴν κεφαλὴν τοῦ δέλτα. Μέσῳ τῆς διώρυγος τοῦ Σικάγου τίθενται εἰς ἐπικοινωνίαν οἱ μεγάλοι βιομηχανικοὶ λιμναῖοι καὶ ποτάμιοι λιμένες τῶν ἀνατολικῶν ἐπαρχιῶν μετὰ τῶν λιμένων τοῦ κυρίως ποταμοῦ καὶ ἐκεῖθεν μετὰ τῶν μεγάλων γεωργικῶν καὶ κτηνοτροφικῶν κέντρων τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν. Ἡ λεκάνη τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ τῶν παραποτάμων αὐτοῦ περιλαμβάνει 21 πολιτείας τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, ὁ δὲ κύριος βραχίων αὐτοῦ χρησιμεύει ὡς σύνορον τῶν πρὸς Δ. κειμένων πολιτειῶν Μιννεσότας, Ἀϊόβας, Μισσουρί, Ἀρκανσὰς καὶ Λουϊζιάνας, ἀπὸ τῶν πρὸς Α. Οὐΐσκονσιν, Ἰλλινόϊς, Κέντουκυ, Τέννεσση καὶ Μισσισσιπῆ.

Οἱ Εὐρωπαῖοι ἐπεσκέφθησαν τὸ πρῶτον τὸν Μισσισσιπῆν κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, οὐδὲν ὅμως ἦτο περὶ αὐτοῦ γνωστὸν μέχρι τοῦ 1673, ὁπότε δύο ἰησουῖται, οἱ Λουδοβῖκος Ζολιὲ καὶ Ἰάκωβος Μαρκέττ, ἀνέπλευσαν τὸν ποταμὸν μέχρι τῆς συμβολῆς τοῦ Ἀρκανσάς. Ἐπίσης τῷ 1681—1682 ὁ Λὰ Σὰλ ἐξηρεύνησε τὰς ὄχθας αὐτοῦ. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην πολλοὶ Γάλλοι ἤρχισαν νὰ ἐγκαθιστῶσιν ἀποικίας κατὰ μῆκος τῶν ὄχθων τοῦ κάτω ῥοῦ αὐτοῦ ἐν Λουϊζιάνᾳ. Διὰ τῆς συνθήκης τοῦ 1763 καθιεροῦτο ἡ κοινὴ ἰδιοκτησία τοῦ ποταμοῦ μεταξὺ τῶν Γάλλων καὶ τῶν Βρεττανῶν. Βραδύτερον ὅμως προεκλήθησαν ἔριδες ὅσον ἀφορᾷ τὸ δικαίωμα τῆς ναυσιπλοΐας, αἱ ὁποῖαι ἔληξαν μόνον τῷ 1803, ὁπότε αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι ἠγόρασαν τὴν Λουϊζιάναν, ἔκτοτε δὲ ὁλόκληρος ἡ λεκάνη τοῦ Μισσισσιπῆ ἀνήκει εἰς τὴν Βορειοαμερικανικὴν ὁμοσπονδίαν.

Χ. ΔΑΣΚΑΛΑΚΗΣ

— **Μισσισσιπῆ** ***πολιτεία*** (συντετμημένη ὀνομασία Miss.) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν 48 πολιτειῶν τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, ἐκτεινομένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ κατωτάτου ῥοῦ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ μεταξὺ τῶν παραλλήλων 30°13′—35° Β. πλάτους καὶ τῶν μεσημβρινῶν 88°11′—91°41′ Δ. μήκους Γκρήνουϊτς. Περιβάλλεται ὑπὸ τῶν πολιτειῶν Ἀλαμπάμα πρὸς Α., Τέννεσση πρὸς Β., Ἀρκανσὰς πρὸς ΒΔ. καὶ Λουϊζιάνας πρὸς Δ. καὶ ΝΔ., διὰ διαδρόμου δὲ προεκτεινομένου πρὸς τὸ ΝΑ. τμῆμα αὐτῆς κατέρχεται πρὸς τὴν θάλασσαν (Μεξικανικὸς κόλπος) ἀνατολικῶς τοῦ δέλτα τῆς ἐκβολῆς τοῦ Μισσισσιπῆ. Ἔχει ἔκτασιν 121.375 τ. χλμ., πληθυσμὸν (1928) 1.790.618 καὶ πρωτεύουσαν τὴν μικρὰν πόλιν *Τζάκσον* (κάτ. 2.114). Ἡ παραλία τῆς πολιτείας μήκους 85 μιλλ. εἶναι χθαμαλὴ καὶ ἀμμώδης, περιβαλλομένη ὑπὸ νησίδων, αἵτινες χωρίζουσιν αὐτὴν ἀπὸ τῆς ἀνοικτῆς θαλάσσης. Δάση κυπαρίσσων καλύπτουσι τὰς ἐπὶ τῆς παραλίας ἑλώδεις ἐκτάσεις. Τὸ ἔδαφος εἶναι ἐντελῶς ἐπίπεδον, ἐγγὺς δὲ τῶν ὄχθων τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ τοῦ παραποτάμου του Γιάτσω ἐκτείνονται εὐφορώταται προσχωσιγενεῖς ἐκτάσεις καὶ μόνον κατὰ τὸ ΒΑ. ἄκρον τῆς χώρας ὑψοῦνται λοφοσειραί τινες, τῶν ὁποίων τὸ ὕψος δὲν ὑπερβαίνει τὰ 400 μ. Αἱ ὄχθαι τῶν ποταμῶν προστατεύονται ὑπὸ ἀντιπλημμυρικῶν ἔργων, ὄπισθεν ὅμως αὐτῶν ἐκτείνονται εἰς πολλὰ σημεῖα μεγάλα καὶ ἀνθυγιεινὰ ἕλη, εἰς τὰ ὁποῖα ζῶσι πολυάριθμα σαυροειδῆ καὶ ὄφεις. Ἐκτὸς τοῦ Γιάτσω οἱ λοιποὶ παραπόταμοι τοῦ Μισσισσιπῆ εἶναι μικροῦ λόγου ἄξιοι. Τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς πολιτείας ἀποσπᾶται τῆς λεκάνης τοῦ Μισσισσιπῆ, ἀποστέλλει δὲ τὰ ὕδατά του, διὰ τοῦ Τόμπιγκμπη εἰς τὸν κόλπον τοῦ Μομπὶλ τῆς Ἀλαμπάμας. Ἡ πολιτεία εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου γεωργικὴ καὶ κτηνοτροφική, ἔχουσα ἀπεράντους καλλιεργημένας ἐκτάσεις καὶ βοσκάς, ἀπασχολούσας τὰ τέσσαρα πέμπτα τοῦ πληθυσμοῦ, ὡς καὶ πολλὰ δάση κωνοφόρων δένδρων, ἐγκατεσπαρμένα τῆδε κἀκεῖσε ἐντὸς τῆς πεδιάδος. Κύρια προϊόντα εἶναι ὁ βάμβαξ, τὸ ζαχαροκάλαμον καὶ ὁ ἀραβόσιτος, εἰς δευτέραν δὲ μοίραν ἔρχονται τὰ σιτηρά, ὁ καπνὸς κλπ. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω προϊόντων ἐξάγεται ἐπίσης εἰς μεγάλην ποσότητα οἰκοδομικὴ ξυλεία. Κυριώτεραι πόλεις τῆς πολιτείας εἶναι ἡ *Βίκσμπουργκ*, σπουδαῖος ποτάμιος λιμὴν τοῦ Μισσισσιπῆ, καὶ οἱ λιμένες [illegible] καὶ *Πασκαγκούλα* ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Μεξικανικοῦ κόλπου. Ἡ βιομηχανία περιορίζεται εἰς τὴν κατεργασίαν τῶν ἐγχωρίων προϊόντων. Ἡ συγκοινωνία ἐκτὸς τῆς μέσῳ τοῦ ποταμοῦ διεξαγομένης ἐξυπηρετεῖται ἐπίσης δι' ἀρτίου δικτύου σιδηροδρομικῶν γραμμῶν μήκους 6.922 χλμ. (1925).

— *[Ἱστορ.]* Τὴν χώραν ἐπεσκέφθησαν τὸ πρῶτον τῷ 540 οἱ Ἱσπανοὶ τοῦ Ἐρνάντο ντὲ Σότο. Βραδύτερον (1682) κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Λὰ Σὰλ ἐξ ὀνόματος τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ ὠνομάσθη ὑπ' αὐτοῦ *Λουϊζιάνα*. Τῷ 1700 ὁ Ἰμπερβὶλ ἵδρυσεν ἐπὶ τῆς παραλίας τὴν πόλιν *Μπιλόξι*, τῷ δὲ 1716 ὁ Μπιενβὶλ τὴν Φὸρ *Ροζαλί*, καλουμένην σήμερον *Νάτσεθ*. Κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1729 ἐξεγερθέντες οἱ Ἰνδοὶ τῆς φυλῆς Νάτσεθ κατέσφαξαν τοὺς ἀποίκους, τέλος ὅμως ὁ Μπιενβὶλ κατώρθωσε νὰ καταβάλῃ αὐτούς. Βραδύτερον (1763) ἡ Α. Λουϊζιάνα περιῆλθεν εἰς τὴν Βρεττανικὴν τότε Γεωργίαν. Τῷ 1798 ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ κογκρέσσου τὸ «*Διαμέρισμα τοῦ Μισσισσιπῆ*», περιλαμβάνον τὰς σημερινὰς πολιτείας Μισσισσιπῆ καὶ Ἀλαμπάμας, αἱ ὁποῖαι ἱδρύθησαν τῷ 1817. Κατὰ τὸν μεταξὺ βορείων καὶ νοτίων ἐμφύλιον πόλεμον ἡ πολιτεία ἐτάχθη μὲ τοὺς νοτίους καὶ ἐγένετο θέατρον αἱματηρῶν μαχῶν. Οἱ βόρειοι κατέλαβον τὴν Μπιλόξι (Δεκέμβριος [illegible]) καὶ τὸ Βίσκσμπουργκ (Ἰούλιος 1863) ἡ δὲ [illegible] τοῦ Μισσισσιπῆ ἀπώλεσε τὰ δικαιώματά της [illegible] πολιτείας, ἀνακτήσασα αὐτὰ μόνον τὴν 25 Φεβρουαρίου 1870.

[illegible]

**μισσισσιπιάνιος** ***ὑποδιάπλασις*** (Mississippian) *[Γεωλογ.]*. Ὀνομασία διδομένη εἰς τὴν κατωτέραν λιθανθρακοφόρον ὑποδιάπλασιν τῆς λιθανθρακοφόρου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ. Ὑποδιαιρεῖται εἰς τρεῖς σειρὰς ἐκ τῶν κάτω πρὸς τὰ ἄνω, τὴν *οὐωβερλιάνιον*, τὴν *μεραμεκάνιον* καὶ τὴν *[illegible]στεράνιον*.

[illegible]

**Μισσουρὶ** (Missouri) *[Γεωγρ.]*. Πολιτεία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Βορείου Ἀμερικῆς κειμένη μεταξὺ τῆς 36° καὶ 40° 30′ βορ. πλάτους καὶ 91° 20′ καὶ 96° 50 δυτ. μήκους. Ἔκτασις [illegible] τετρ. χλμ., κάτ. 3.293.000. Ἔχει μεγάλα δάση καὶ διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Μισσουρὶ καὶ Μισσισσιπῆ, ὡς καὶ ὑπὸ πολλῶν παραποτάμων.

Κυριωτέρα πηγὴ πλούτου τῆς χώρας εἶναι τὰ μεταλλουργικὰ προϊόντα αὐτῆς, σίδηρος, ἄνθραξ, μόλυβδος, ἀντιμόνιον, ψευδάργυρος, ἀρσενικόν, νίτρον καὶ ἅλας. Κύρια γεωργικὰ προϊόντα εἶναι [illegible] καπνός, τὸ λίνον, παντοειδεῖς σπόροι, ὁ βάμβαξ καὶ τὰ γεώμηλα. Ἔχει ἐπίσης ἀνεπτυγμένην κτηνοτροφίαν. Κυριώτεραι πόλεις τῆς πολιτείας εἶναι ὁ *Ἅγιος Λουδοβῖκος*, ἡ *Τζέφερσον*, [illegible] *Χάννιμπαλ*, *Ἰντεπέντενς*, *Λέξιγκτον* καὶ [illegible] *Σίτυ*. Ἐν αὐτῇ λειτουργοῦν 39 πανεπιστήμια.

[illegible]

— **Μισσουρὶ** (Missouri) *[Γεωγρ.]*. Μέγας ποταμὸς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, ὅστις διαρρέων τὴν ὁμώνυμον πολιτείαν συνενοῦται κατόπιν μετὰ τοῦ *Μισσισσιπῆ*. Αἱ πηγαὶ [illegible] ἀνακαλυφθεῖσαι ὑπὸ τῶν Λούϊς καὶ Κλὰρκ [illegible] τὸ 1805, εὑρίσκονται εἰς τὰ Βραχώδη ὄρη, [illegible] τίζουσαι δύο βραχίονας συγκεντροῦντας [illegible] ὕδατα τὰ κατερχόμενα ἐκ τῶν ὀρέων ἐκείνων [illegible] ταξὺ 42° καὶ 48° βορ. πλάτους. Εἰς τὸν [illegible] ἐκ τῶν βραχιόνων, τὸν κυρίως Μισσουρί, [illegible] οἱ ποταμοὶ *Τζέφερσον*, *Μάδισσον* καὶ *Γκέλετεν*. [illegible] τὸν ἄνω ῥοῦν αὐτοῦ ὁ ποταμὸς διακόπτεται [illegible] πολλῶν καταρρακτῶν, ἐν οἷς οἱ καλούμενοι [illegible] *λοι καταρράκται τοῦ Μισσουρί*, οἵτινες εἶναι οἱ [illegible] γαλύτεροι τοῦ κόσμου μετὰ τοὺς τοῦ Νιαγάρα [illegible] ἕτερος τῶν βραχιόνων τοῦ Μισσουρί, ἀποκαλ[illegible]

Digitized by Google

νος *Γιέλλοου-Στόουν* (=Κιτρινόπετρας), μετὰ διαδρομὴν 1700 περίπου χλμ. συνενοῦται μετὰ τοῦ κυρίως Μισσουρὶ εἰς 48° 10' βορ. πλάτους καὶ 106° νοτ. μήκους. Εἰς τὸ σημεῖον τοῦτο ὁ Μισσουρὶ ἔχει πλάτος 1000 μέτρων. Οἱ κυριώτεροι παραπόταμοί του εἶναι ὁ *Γιέλλοου - Στόουν*, ὁ *Τσαγιέν*, ὁ *Λευκὸς Ποταμός*, ὁ *Λαπλάτ*, ὁ *Κάνσας*, ὁ *Ὀσέτζ*. Τὸ λεκανοπέδιον τὸ ὁποῖον διαρρέει ὁ ποταμὸς περικλείεται πρὸς Δ. καὶ πρὸς Ν. ὑπὸ τῶν Βραχωδῶν Ὀρέων, πρὸς Α. καὶ Ν. ὑπὸ τῶν ὀρέων τοῦ Ὀζέρκ, πρὸς Β. ὑπὸ διαφόρων ὑψωμάτων καὶ ἔχει μῆκος 2500 χλμ. ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ 1000 χλμ. ἀπὸ Α. πρὸς Δ. Ἡ ποταμοπλοΐα εἶναι λίαν ἀνεπτυγμένη, αἱ δὲ κυριώτεραι δυσχέρειαι αὐτῆς εἶναι οἱ καταρράκται καὶ ἡ ταχύτης τοῦ ρεύματος τοῦ ποταμοῦ. Εἰς τὸ σημεῖον, ἀπὸ τὸ ὁποῖον ἐκχύνεται ἐκ τῶν Βραχωδῶν Ὀρέων εἰς τὴν κοιλάδα, παρουσιάζει πρωτοφανὲς θέαμα. Καταπίπτει μὲ ταχύτητα 9 χλμ. ἐκ δύο ὑψικορύφων βράχων ἐπιμήκων ὕψους 300 μέτρων πρὸς τὰ κάτω, μὲ ἕνα παταγώδη καὶ συνεχῆ παφλασμόν. Εἰς τὸ σημεῖον τοῦτο τὰ ὕδατά του ἔχουν βάθος 160 μέτρων. Οἱ δύο οὗτοι γιγαντιαῖοι βράχοι, διὰ τῶν ὁποίων ἐκχύνεται ὁ Μισσουρί, ἀπεκλήθησαν ὑπὸ τοῦ Κλὰρκ Πύλαι τῶν Βραχωδῶν Ὀρέων. Ὁ Μισσουρὶ ἔχει μῆκος 7.000 χλμ., ἐξ ὧν μόνον 4.150 εἶναι πλώϊμα. Τὰ δάση του, οἱ καταρράκται, τὰ τοπία, διὰ τῶν ὁποίων ἑλίσσεται, ἀποτελοῦν γραφικὴν εἰκόνα ἐκ τῶν σπανιωτέρων εἰς τὸν κόσμον. Π. ΛΟΥΚΑΤΟΣ

**μισσουρίτης** (ὁ) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα πυριγενὲς πλουτώνιον. Ἀποτελεῖται ἀπὸ αὐγίτην, ὀλιβίνην, βιοτίτην καὶ λευκίτην, περιέχει δὲ συγχρόνως καὶ ἀπατίτην καὶ σιδηροξείδια. Εἶναι πέτρωμα χονδροκοκκῶδες ὁμοιόμορφον, μὲ χρῶμα ὑπότεφρον καὶ ἀπαντᾷ ἐντὸς τῶν σχιστολίθων τοῦ κρητιδικοῦ τοῦ Highwood Mountains κ. ἀ. Γ. Β.

**Μιστασίνι** (Mistassini) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη λίμνη τοῦ Καναδᾶ παρὰ τὸν ὅρμον τοῦ Οὔδσων. Ἔχει μῆκος 160 χλμ. καὶ παρουσιάζει γραφικωτάτην θέαν μὲ τὰς νησῖδάς της. Π. Γ. Λ.

**μιστέλιον** (τὸ) *[Οἰνολ.]*. Γλεῦκος τοῦ ὁποίου ἡ ζύμωσις ἔχει διακοπῆ διὰ προσθήκης ὡρισμένης ποσότητος οἰνοπνεύματος καθαροῦ. Εἶναι δηλαδὴ ἀπομίμησις γλυκέος οἴνου. Διακρίνομεν *φυσικὸν* μιστέλιον, ὅταν τὸ γλεῦκος προέρχεται ἐκ νωπῶν σταφυλῶν, τοῦτο δὲ εἶναι τὸ ὑπὸ τοῦ διεθνοῦς συνεδρίου τῆς Γενεύης ὡς πραγματικὸν μιστέλιον καθοριζόμενον, καὶ *τεχνητόν*, ὅταν τὸ γλεῦκος παρασκευάζεται δι' ἐκχυλίσεως ξηρᾶς σταφίδος. Τὸ φυσικὸν μιστέλιον παρασκευάζεται εἰς λίαν θερμὰ κλίματα, ὅπου αἱ σταφυλαὶ ὑπερωριμάζουσιν εὐκόλως καὶ ἀποκτῶσι σάκχαρον περισσότερον τῶν 15° Βέ (ὡς λ. χ. εἰς Πάρον, Σαντορίνην, Σάμον κλπ.). Εἰς τὸ τοιοῦτον γλεῦκος προστίθεται ἀμέσως ἡ ἀνάλογος ποσότης οἰνοπνεύματος καὶ οὕτως ἐμποδίζεται ἡ ζύμωσις. Τὸ δὲ τεχνητὸν παρασκευάζεται δι' ἀμέσου προσθήκης οἰνοπνεύματος εἰς τὸ ἀνάλογον πυκνότητος ἐκχύλισμα τῆς σταφίδος.

Ἡ Ἑλλὰς λόγῳ τοῦ κλίματός της παράγει τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ εἰς τὴν διεθνῆ ἀγορὰν φερομένου μιστελίου, ἕτεραι δὲ παραγωγοὶ χῶραι εἶναι ἡ Ἱσπανία, ἡ Τουρκία, τὸ Ἀλγέριον κλπ. Τὸ μιστέλιον χρησιμοποιεῖται πρὸς ἀπομίμησιν φυσικῶν γλυκέων οἴνων (Porta, Madera, Xeres, Malaga κλπ.), ὡς καὶ πρὸς παρασκευὴν τονωτικῶν φαρμακευτικῶν οἴνων. Σ. Γ.

**Μίστι** (Misti) *[Γεωγρ.]*. Ἡφαίστειον τοῦ μεσημβρινοῦ Περοῦ, ὑψούμενον ἄνωθι τῆς πόλεως Ἀρεκίπα, εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. ΒΔ αὐτῆς. Εἶναι ἐσβεσμένον ἀπὸ αἰώνων. Πρῶτος ἀνῆλθεν εἰς τὸν κρατῆρά του κατὰ τὸ 1858 ὁ Βέντελ. Ἔχει ὕψος 5.640 μέτρων, ἡ δὲ ὑποχθόνιος δρᾶσίς του ἐξακολουθεῖ καὶ σήμερον. Π. Γ. Λ.

**μίστικον** (τὸ) (κοιν. *μίστικο*, γαλλ. mistique, ἀγγλ. xebeck) *[Ναυτ.]*. Ἐκλιπὼν τύπος ἐπακτίου καὶ πειρατικοῦ πλοιαρίου τῆς Μεσογείου, χωρητικότητος 60—80 τόννων, τοῦ ὁποίου ἡ μὲν πρῷρα ἦτο ἄλλοτε φαλκωτή, ὡς ἡ τῶν μεγάλων πλοίων, καὶ ἄλλοτε ὀρθή, ὡς ἡ τῶν λέμβων, ἡ δὲ πρύμνη πάντοτε στρογγυλευμένη ὡς ἡ τῶν μεγάλων ἱστιοφόρων. Εἶχεν ἐξαρτισμὸν ἀποτελούμενον ἐκ τριῶν ἱστῶν μετὰ λατινίων ἢ τραπεζοειδῶν ἱστίων, τοῦ ἀκατίου ἱστοῦ φέροντος ἀκάτιον καὶ δολώνιον ἀφαιρετὰ διὰ τὴν οὐριοδρομίαν. Ὁ ὁπλισμὸς των ἀπετελεῖτο ἀπὸ 6 ἕως 10 πυροβόλα μικρὰ καταστρώματος, προβάλλοντα τὰς προτομάς των ἀπὸ θυρίδων τοῦ δρυφάκτου. Τὸ ὀξύπλουν τῶν μιστίκων καὶ τὸ εὐχείριστον καθίστων αὐτὰ θαυμάσια πλοῖα διὰ καταδρομὴν ἢ ὑπηρεσίας ἐπειγούσης φύσεως. Πλεῖστα τοιαῦτα πλοῖα ὑπῆρχον κατὰ τὸν Ἀγῶνα, χρησιμοποιηθέντα ὡς πολεμικὰ καὶ εἰς τὰς ἐναντίον τῶν μικρασιατικῶν παραλίων ἐπιδρομάς· ἡ θλιβερωτάτη δὲ διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ ναυτικοῦ ἐπίθεσις κατὰ τοῦ βρικίου «Παναγιώτης» ἐγένετο διὰ δύο μεγίστων μιστίκων (5 Νοεμβρίου 1827). Εἰς τὸν πίνακα τῶν πλοίων τῶν ἀπαρτιζόντων τὸν ἑλληνικὸν βασιλικὸν στόλον κατὰ τὴν εἰς Ἑλλάδα ἄφιξιν τοῦ βασιλέως Ὄθωνος ἓν μόνον μίστικον ἀναφέρεται, ὁ «Εὔπλους». Παραλλαγὴ ἐλαφρὰ τοῦ μιστίκου ἦτο τὸ *σεμπέκι*. Σ. Ε. Λ.

**Μιστράκι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Φαλάνθης (Πανιορῶν) τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 116. Χ. Δ.

**μιστρὰλ** (ὁ) (mistral ἢ maestral). Ὀνομασία προβηγκιανοῦ ἀνέμου ἐξαιρετικῆς σφοδρότητος, πνέοντος δὲ συνήθως μεταξὺ Β. καὶ ΒΔ. κατὰ τὰ μεγάλα τοῦ χειμῶνος ψύχη. Καὶ εἰς μὲν τὴν ξηρὰν ἐκριζώνει δένδρα, εἰς δὲ τὸν κόλπον τῆς Λυὼν ὅπου ἐκχέεται ἀπολωματίζει τὰ ἱστία τῶν μὴ λαβόντων τὰς δεούσας προφυλάξεις ἱστιοφόρων. Ἐνίοτε δὲ συνοδεύεται ὑπὸ ὄμβρου, ὅστις πήγνυται ὡς μαστίχη ἅμα τῇ προσκρούσει τῆς σταγόνος ἐπὶ κρυστάλλου ἢ ὑελοπίνακος. Ὁ Στράβων (Δ, 192) ὀρθότατα τὸν ὀνομάζει *μελαμβόρειον πνεῦμα* λόγῳ τῆς *μελανίας*, ἥτις τὸν συνοδεύει, οἱ δὲ ναυτικοί μας, ἀπὸ τοῦ κόλπου ὃν ἀναστατώνει, *Λυωνάτσαν* ἢ *Λυωνάδαν*. Σ. Ε. Λ.

**Μιστρὰλ** (Mistral), **Φρειδερῖκος**. Διάσημος Προβηγκιανὸς ποιητής, γεννηθεὶς εἰς Maillane, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Ροδανοῦ, τῷ 1830 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1914. Ὁ πατήρ του, Φραγκῖσκος Μιστράλ, καταγόμενος ἐκ παλαιοτάτης οἰκογενείας ἐγκατασταθείσης ἐν Προβηγκίᾳ ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' ἤδη αἰῶνος, ἦτο γαιοκτήμων, ἀφιερωμένος εἰς τὴν καλλιέργειαν τῆς γῆς. Εἰς ἡλικίαν 55 ἐτῶν, ἐνῷ ἐπέβλεπε τοὺς ἐργάτας του εἰς τοὺς ἀγρούς, συνήντησε τὴν ὡραιοτάτην κόρην Ἀδελαΐδα Πουλινέ, τὴν ὁποίαν ἠγάπησε καὶ ἐνυμφεύθη, ἐκ τῆς ἑνώσεως δὲ ταύτης ἐγεννήθη ὁ ποιητής. Ἡ νεαρὰ μήτηρ ἀνέθρεψε τὸν υἱόν της μετὰ μεγάλης τρυφερότητος, ἐν μέσῳ παναρχαίων παραδόσεων καὶ ἠθῶν. Τὴν παιδικὴν ἡλικίαν διῆλθεν ὁ Μιστρὰλ μεταξὺ τῶν ἀγροτῶν τῆς πατρίδος του, ἡ δὲ πρώτη γλῶσσα, τὴν ὁποίαν ἤκουσε καὶ ὡμίλησεν, ἦτο ἡ προβηγκιανή. Διὰ τοῦτο δὲ κάποτε, ἀκούων νὰ ὁμιλοῦν ἐνώπιόν του τὴν γαλλικήν, ἠρώτησε μὲ ἀπορίαν: «Διατί ὁ κύριος αὐτὸς δὲν ὁμιλεῖ καθὼς ἐμεῖς;». «Διότι αὐτὸς εἶναι εὐπατρίδης, τοῦ ἀπήντησαν. «Τότε δὲν θέλω νὰ γίνω ποτέ μου εὐπατρίδης», συνεπέρανε μὲ τόνον περιφρονητικόν. Εἰς ἡλικίαν 10 ἐτῶν ἐστάλη εἰς τὸ σχολεῖον διὰ νὰ συμπληρώσῃ τὴν μόρφωσίν του, μετὰ πολλῆς δὲ δυσκολίας κατώρθωσε νὰ ὑποφέρῃ τὴν στέρησιν τῆς ἀνεξαρτησίας του καὶ τῆς κατὰ φύσιν ζωῆς: «Ὅσον ἀφορᾷ τὴν πνευματικήν μου ἀνάπτυξιν, ἔγραφε βραδύτερον, ὑπὲρ τὴν διάπλασιν τῆς νεαρᾶς ποιητικῆς ψυχῆς μου, ἐδιδάχθην βεβαίως πολὺ περισσότερα πράγματα κατὰ τὴν ἐλευθέραν παιδικήν μου ἡλικίαν παρὰ μεταξὺ τῶν τοίχων τοῦ σχολείου». Ἡ στέρησις αὐτὴ τῆς ἐλευθερίας ἐπλημμύρησε τὴν ψυχήν του ἀπὸ τὴν νοσταλγίαν τῶν βουνῶν καὶ τῶν πεδιάδων τῆς πατρίδος του καὶ ἐμεγάλωσε τὴν βαθεῖαν πρὸς αὐτὴν ἀγάπην τοῦ ποιητοῦ, ὅστις ὡς μόνην του παρηγορίαν εἶχε τοὺς παλαιοὺς Προβηγκιανοὺς τρουβαδούρους, εἰς οὓς ἐπανεύρισκε τὰς ἀγαπητὰς εἰς αὐτὸν εἰκόνας τοῦ ἀγροτικοῦ βίου καὶ τὴν προσφιλῆ γλῶσσάν του. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν σπουδῶν του εἰς Avignon ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ καθηγητοῦ Ἰωσὴφ Ρουμανίλ, ὅστις ἔγραφε στίχους εἰς τὸ προβηγκιανὸν ἰδίωμα. Ὁ Ρουμανὶλ διέγνωσε πάραυτα τὴν ποιητικὴν φλέβα τοῦ νεαροῦ Μιστρὰλ καὶ τὸν παρεκίνησε νὰ γράψῃ στίχους εἰς τὴν μητρικήν του γλῶσσαν. «Μόλις μοῦ ἔδειξε, γράφει ὁ Μιστρὰλ διὰ τὰ ποιήματα τοῦ Ρουμανὶλ εἰς τὸν πρόλογον τῶν «Χρυσῶν Νησιῶν», τὰ ὡραῖα αὐτὰ ἀγριολούλουδα μὲ τὴν ἐαρινήν νεότητά των, ἡ καρδία μου ἐσκίρτησε καὶ ἀνέκραξα: Ἰδοὺ ἡ αὐγή, τὴν ὁποίαν ἡ ψυχή μου ἀνέμενε, διὰ ν' ἀφυπνισθῇ καὶ ἀντικρύσῃ τὸ φῶς». Τοιουτοτρόπως ὁ Μιστρὰλ συλλαμβάνει τὴν ἰδέαν τῆς ἀναγεννήσεως τῆς γλώσσης καὶ τοῦ παλαιοῦ πολιτισμοῦ τῆς Προβηγκίας καὶ φιλοδοξεῖ νὰ συγγράψῃ τὸ ἔργον, τὸ ὁποῖον θ' ἀνυψώσῃ τὸ φθῖνον καὶ περιφρονημένον προβηγκιανὸν ἰδίωμα, τὸ χρησιμοποιούμενον μόνον πρὸς ἐμπαιγμόν. Πρὸς τοῦτο ἤρχισε μελετῶν μετὰ πάθους τὰ παλαιὰ προβηγκιανὰ βιβλία, διὰ νὰ ἐπιτύχῃ τὴν κάθαρσιν τῆς γλώσσης ἀπὸ τῶν διαφόρων ξενικῶν στοιχείων καὶ τὴν ὀρθογραφικὴν αὐτῆς μεταρρύθμισιν, ἐπὶ τῇ βάσει της ἐθνικῆς παραδόσεως. Ἐπανελθὼν εἰς Maillane, γράφει εἰς τὴν προβηγκιανὴν τὸ ποίημά του «Li meissoun» («Οἱ θερισμοί» 1848), τοῦ ὁποίου ἀποσπάσματα μόνον ἐδημοσίευσε βραδύτερον ὁ ποιητὴς εἰς τὴν συλλογήν του «Χρυσᾶ Νησιά», καθὼς καὶ εἰς τὴν ἀνθολογίαν τῶν Προβηγκιανῶν ποιητῶν «Li Prouvençalo» (1852).

*Φρειδερῖκος Μιστράλ.*

Οὕτως, ὀλίγον κατ' ὀλίγον, τίθεται ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁμάδος ἐκείνης τῶν ἀναμορφωτῶν τῆς Προβηγκίας τῶν ἐπιζητούντων γενικώτερον τὴν γλωσσικήν, φιλολογικὴν καὶ κοινωνικὴν ἀναγέννησιν τῆς μεσημβρινῆς Γαλλίας καὶ ἔτι πλέον, τὸν συνασπισμὸν ὅλων τῶν ρωμανικῶν λαῶν. Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο εἶχεν ὡς βοηθοὺς τὸν Ρουμανίλ, τὸν Κρουσιγιὰ καὶ ἄλλους ποιητὰς γράφοντας εἰς τὴν λεγομένην γλῶσσαν τοῦ oc· πρὸς ἐπίτευξιν δὲ τοῦ σκοποῦ του ἵδρυσε καὶ τὴν ἐφημερίδα «Armana Prouvençau», τὴν ὁποίαν καὶ διηύθυνε μετὰ τοῦ Ρουμανὶλ ἐπὶ μακρὰ ἔτη. Εἰς τοὺς συνεργάτας του αὐτοὺς ὁ Μιστρὰλ ἔδωκε τὸ μυστηριῶδες ὄνομα felibres. Τὴν λέξιν ταύτην εἶχε συναντήσει εἰς παλαιὸν θρησκευτικὸν ποίημα τῆς πατρίδος του, ἠγνόει δὲ τί ἀκριβῶς ἐσήμαινε καὶ διὰ τοῦτο τὴν ἐπροτίμησε. Πράγματι, ἐντὸς ὀλίγου ἐπληρώθη βαθυτάτης καὶ σχεδὸν συμβολικῆς ἐννοίας. Ἀλλὰ τὸ ὄνειρον τῆς νεότητος τοῦ Μιστρὰλ ἦτο νὰ δημιουργήσῃ ποιητικὸν ἔργον, εἰς τὸ ὁποῖον ν' ἀντικατοπτρίζωνται ἡ φύσις καὶ τὰ ἔθιμα τῆς γενεθλίου του χώρας. Ὅτε δέ, μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του, ἐπανῆλθεν εἰς τὰ πατρικὰ κτήματα, ἐλεύθερος πλέον καὶ οἰκονομικῶς ἀνεξάρτητος, ἡ κατεύθυνσις ἣν ἔπρεπε νὰ λάβῃ παρουσιάσθη αὐθορμήτως ἐνώπιόν του. Ἡ Προβηγκία μὲ τὰς φυσικὰς καλλονάς της, μὲ τὴν ποικιλωτάτην καὶ σημαντικὴν ἱστορίαν της, μὲ τοὺς εἰδωλολατρικούς, τοὺς χριστιανικοὺς καὶ τοὺς σαρακηνοὺς θρύλους της, μὲ τὸν κατ' ἐξοχὴν ἀγροτικὸν καὶ πατριαρχικὸν βίον της, ὡμίλησε κατ' εὐθεῖαν εἰς τὴν ψυχὴν τοῦ ποιητοῦ, καὶ ἡ πραγματοποίησις τοῦ ὀνείρου του συνετελέσθη εἰς 12 ᾄσματα τοῦ μεγάλου εἰδυλλιακοῦ ἔπους του «Μιρέϊγ» («Mirèio», 1859), τὸ ὁποῖον ἔδειξε διὰ μιᾶς ὅλην τὴν μεγάλην ποιητικὴν ἀξίαν τοῦ Μιστράλ. Ἡ «Μιρέϊγ», τὸ ὡραιότερον εἰδύλλιον τῆς νεωτέρας λογοτεχνίας, εἶναι ἡ ἐρωτικὴ ἱστορία μιᾶς πλουσίας χωρικῆς καὶ ἑνὸς πτωχοῦ νέου, εἰς τὸν γάμον τῶν ὁποίων ἀντιτίθενται οἱ γονεῖς τῆς κόρης. Ἀλλ' ἡ ἀξία τοῦ ποιήματος δὲν ἔγκειται εἰς τὴν ὑπόθεσίν του· πέριξ αὐτῆς ζῇ ὁλόκληρος ὁ προβηγκιανὸς κόσμος μὲ τὰς παραδόσεις καὶ τοὺς πόθους του. Ὅταν παρουσίασαν τὸ μεγαλειῶδες τοῦτο ποίημα εἰς τὸν Λαμαρτῖνον, τοσοῦτον οὗτος ἐνεθουσιάσθη, ὥστε τοῦ ἔπλεξε λαμπρὸν ἐγκώμιον εἰς μίαν ἀπὸ τὰς φιλολογικὰς ὁμιλίας του: «Μέγας ἐπικὸς ποιητὴς ἐγεννήθη. Ἀληθὴς ὁμηρικὸς ποιητὴς εἰς τοὺς χρόνους μας· ποιητὴς γεννηθείς, ὅπως οἱ ἄνθρωποι τοῦ Δευκαλίωνος, ἀπὸ ἕνα χάλικα τοῦ Crau· ποιητὴς πρωτόγονος εἰς τὴν παρακμάζουσαν ἐποχήν μας· ποιητὴς Ἕλλην εἰς Avignon· ποιητὴς δημιουργῶν γλῶσσαν ἐξ ἑνὸς ἰδιώματος, ὡς ἐδημιούργησεν ὁ Πετράρχης τὴν ἰταλικήν· ποιητής, ὅστις μεταβάλλει μίαν χυδαίαν διάλεκτον εἰς κλασσικὴν γλῶσσαν πλήρη εἰκόνων καὶ ἁρμονίας, θέλγουσαν τὴν φαντασίαν καὶ τὴν ἀκοήν. Μάλιστα, τὸ ἐπικὸν ποίημά σου—καταλήγει ἀπευθυνόμενος πρὸς τὸν ποιητὴν—εἶναι ἀριστούργημα· τί πλέον τούτου δύναμαι νὰ εἴπω; Δὲν προέρχεται ἐκ τῆς Δύσεως, ἀλλ' ἐκ τῆς Ἀνατολῆς· θὰ ἔλεγέ τις ὅτι, κατά τινα νύκτα, μία ἐκ τῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου, μία ἐπιπλέουσα Δῆλος, ἀποσπασθεῖσα τοῦ ἑλληνικοῦ συγκροτήματός της, ἦλθε καὶ προσεκολλήθη εἰς τὴν γῆν τῆς μυρωμένης Προβηγκίας, φέρουσα μεθ' ἑαυτῆς ἕνα τῶν θείων ἀοιδῶν τοῦ οἴκου τοῦ Μελησιγενοῦς». Ἀλλ' ὁ Λαμαρτῖνος, ἀποκαλῶν τὸν Μιστρὰλ Ὅμηρον καὶ Βιργίλιον τῆς Προβηγκίας, δὲν ἐξηπατήθη ὡς πρὸς τὸ μέλλον τοῦ ποιητοῦ· μὲ προφητικὴν δύναμιν προβλέπει αὐτὸ καὶ λέγει: «Ἐγράφατε τὸ ἀριστούργημά σας. Τίποτε δὲν θὰ πηγάσῃ πλέον ἀπὸ σᾶς ἀνώτερόν του ἢ καὶ ἁπλῶς ἴσον του. Ἐπιστρέψατε εἰς τοὺς ἀγρούς σας... καὶ εἰς τὸ ἑξῆς σκεφθῆτε μόνον πῶς θὰ δημιουργήσετε τὸ ἄλλο ἀριστούργημά σας: τὴν ὡραίαν ζωήν». Ἡ «Μιρέϊγ» ἀπέμεινε πράγματι τὸ πρωτοτυπώτερον ἔργον τοῦ Μιστράλ, πλῆρες ἁπλότητος, δυνάμεως καὶ μεγαλοπρεπείας· ἐπήγασε κατ' εὐθεῖαν ἀπὸ τὴν καρδίαν τοῦ ποιητοῦ καὶ ἦτο, ὅπως ὁ ἴδιος ἔλεγεν, αὐτὴ αὕτη ἡ ψυχή του, τὸ ἄνθος τῆς ζωῆς του.

Ἀκολουθῶν πάντοτε τὴν αὐτὴν ὁδὸν καὶ ἐπιδιώκων τὴν πραγματοποίησιν τῶν ἰδεωδῶν του, ἔγραψε τὸ ἐπίσης ἐκ 12 ᾀσμάτων ἀποτελούμενον ποίημα «Calendau» (1867), εἰς τὸ ὁποῖον ψάλλει τὴν ὀρεινὴν καὶ παράλιον Προβηγκίαν, ὅπως εἰς τὸ προηγούμενον τὴν πεδινήν. Τὸ ποίημα τοῦτο καταντᾷ συμβολικόν: Πρόκειται περὶ μιᾶς μυστηριώδους γυναικός, ἡ ὁποία ἔζη ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ Ἐστερὲλ καὶ ἐθεωρεῖτο ὑπὸ τῶν κατοίκων ὡς ἡ Νεράϊδα τοῦ τόπου. Ταύτην ἠγάπησε νεαρὸς ἁλιεὺς μετὰ τόσου πάθους, ὥστε, μὴ δυνάμενος νὰ ζῇ μακράν της, ἐπιχειρεῖ τὰ πάντα διὰ νὰ κερδίσῃ τὴν καρδίαν της καὶ τὴν ἐλευθερώσῃ ἀπὸ τὰς χεῖρας τοῦ ἐλεεινοῦ τυχοδιώκτου καὶ σκληροῦ συζύγου της. Ὁ πτωχὸς ἁλιεὺς εἶναι ὁ Προβηγκιανὸς ἥρως, ἡ Ἐστερέλλα, αὐτὴ αὕτη ἡ Προβηγκία, καὶ ὁ σκληρὸς αὐτῆς δυνάστης, ἡ Γαλλία. Τὸ ποίημα τοῦτο δὲν παρουσιάζει τὴν αἰσθηματικὴν ἁπλότητα καὶ τὴν καθαρὰν ἰδεολογίαν τῆς «Μιρέϊγ»· ἀλλὰ καὶ ἐνταῦθα εὑρισκόμεθα ἐνώπιον με-



Digitized by Google

γαλοπρεποῦς περιγραφῆς τῆς Προβηγκίας, μὲ τὰ ἀπέραντα τοπία της, τὰς παραδόσεις, τὰς νοσταλγικὰς ἀναμνήσεις τοῦ παρελθόντος της. Ἡ γλῶσσά του εἶναι πλουσιωτέρα, ποικιλωτέρα καὶ ζωηροτέρα. Ὁ ποιητὴς ἐπεξειργάζετο ταυτοχρόνως καὶ τὸ μέγα ἔργον του, τὸ λεξικὸν τῆς προβηγκιανῆς γλώσσης («Lou Tresor dòu felibrige»). Ἀπὸ τὸν παλαιὸν τοῦτον γλωσσικὸν θησαυρὸν πλουτίζει ὁ Μιστρὰλ τὸ λεξιλόγιόν του, χωρὶς ἐν τούτοις νὰ ἐμφανίζεται ἡ γλῶσσά του ὡς τεχνητὸν δημιούργημα· διότι ἔχει τὴν δύναμιν νὰ μεταδίδῃ νέαν ζωὴν εἰς τοὺς λησμονημένους τύπους, τοὺς ὁποίους παραλαμβάνει ἀπὸ τὸ παρελθόν, καὶ νὰ τοὺς μεταβάλλῃ εἰς ζώσας λέξεις. Ἀλλὰ καὶ ἡ τέχνη του εἰς τὸ ποίημα τοῦτο εἶναι μᾶλλον ὥριμος, ὁ στίχος του ἁρμονικώτερος καὶ ῥωμαλεώτερος, αἱ εἰκόνες του ζωηρότεραι, ἡ χρησιμοποίησις τοῦ ἐπιθέτου τεχνικωτάτη. Ἐν τούτοις τὸ ἔπος τοῦτο, λόγῳ τῆς εὐρύτητός του καὶ τοῦ ἐγκυκλοπαιδικοῦ του φόρτου, ἔτι δὲ καὶ λόγῳ τῆς συνήθους περιφρονήσεως τῶν Γάλλων πρὸς τὰς διαλέκτους, δὲν ἐξῆλθε τῶν στενῶν ὁρίων τῆς χώρας, ἐν τῇ ὁποίᾳ καὶ διὰ τὴν ὁποίαν ἐγράφη.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ φελιβριανὴ ἰδέα εἶχε κάμει μεγάλας προόδους, οἱ δὲ πληθυνθέντες ὀπαδοί της ἵδρυσαν τὴν πρὸς μελέτην τῶν ῥωμανικῶν γλωσσῶν ἑταιρείαν, εἰς τὸ καταστατικὸν τῆς ὁποίας ἀνεφέρετο ὅτι αὕτη σκοπὸν εἶχε νὰ διατηρήσῃ εἰς τὴν Προβηγκίαν τὸ χρῶμά της, τὴν ἐλευθερίαν τῆς ζωῆς της, τὴν ἐθνικὴν τιμήν της, τὴν ὡραιότητά της. Ἐπὶ κεφαλῆς τῆς κινήσεως ταύτης εὑρίσκετο πάντοτε ὁ Μιστράλ. Ἡ δρᾶσις τῆς ἑταιρείας ταύτης τοσοῦτον ἐπεξετάθη, ὥστε ἐντὸς ὀλίγου νὰ προκληθῇ ὁμοία κίνησις εἰς τὴν Καταλωνίαν, ὅπου ἱδρύθη ὁμοίας φύσεως ἑταιρεία, ἀποστείλασα πρὸς τὴν Προβηγκίαν ἀργυροῦν κύπελλον, τὸ ὁποῖον ἔκτοτε ἐθεωρεῖτο ἐν αὐτῇ ὡς σκεῦος ἱερόν. Διὰ τὸ κύπελλον τοῦτο ὁ Μιστρὰλ ἔγραψε τὸ ποίημά του «La coupo santo», τὸ ὁποῖον ἔλαβε διὰ τὴν Προβηγκίαν σημασίαν σχεδὸν ἐθνικοῦ ὕμνου. Βραδύτερον δέ, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον «Guy de Mountpavoun», ἐκήρυξε τὴν ἕνωσιν τῶν λατινικῶν λαῶν, Γαλλίας, Ἱσπανίας, Ἰταλίας καὶ Ρουμανίας, πρὸς ἀντιμετώπισιν τῆς διαρκῶς αὐξανομένης ἰσχύος τῶν Γερμανῶν καὶ τῶν Σλάβων. Ὑπὸ τὰς ἰδέας αὐτάς, αἵτινες ἄλλωστε πληροῦσιν ὁλόκληρον τὸν βίον τοῦ ποιητοῦ, ἐγράφησαν καὶ τὰ λυρικὰ ποιήματά του, τὰ ἐκδοθέντα τῷ 1875 ὑπὸ τὸν τίτλον «Χρυσᾶ νησιά» («Lis Isclo d' or»)· μεταξὺ τούτων ὑπάρχουν ἀληθινὰ ἀριστουργήματα, ὡς τά: «Lou Porto aigo» («Ὁ νεροκουβαλητής»), «Lou Rèino Jano», ᾠδὴ πρὸς τὴν βασίλισσαν Ἰωάνναν, διὰ τὴν ὁποίαν βραδύτερον ἔγραψε καὶ τὴν ὁμώνυμον τραγῳδίαν, καὶ τὸ περιφημότερον ἴσως τῶν λυρικῶν ποιημάτων του «Lou Blad de Luno» («Τὸ σιτάρι τῆς Σελήνης»), εἰς τὸ ὁποῖον ὁ ποιητὴς ἀναπτύσσει ὅλην τὴν δεξιοτεχνίαν του.

Τὰ ὑπόλοιπα ἔργα τοῦ Μιστρὰλ οὐδὲν προσθέτουν εἰς τὴν ποιητικήν του ἀξίαν. Τὸ ἀφηγηματικὸν ποίημά του «Nerto» (1884) εἶναι ἐλαφρότερον ἱπποτικὸν ἔπος, τοῦ ὁποίου ἡ ὑπόθεσις ἐλήφθη ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς Προβηγκίας. Τὸ ποίημα τοῦτο, λόγῳ τοῦ ἰδιαιτέρου θελγήτρου καὶ τῆς χαρακτηριζούσης αὐτὸ λεπτότητος, ἐγένετο ἀφορμὴ νὰ συγκριθῇ ὁ ποιητὴς πρὸς τὸν Ἀριόστον, ἀφοῦ διὰ τὰ προηγούμενα ἔργα του παρελήφθη πρὸς τὸν Ὅμηρον, τὸν Θεόκριτον καὶ τὸν Λόγγον. Τῷ 1890 ἐδημοσίευσε τὴν τραγῳδίαν «Lou Rèino Jano» («Ἡ βασίλισσα Ἰωάννα»), ἡ ὁποία ὡς θεατρικὸν μὲν ἔργον δὲν ἔχει μεγάλην ἀξίαν, διαπνέεται ὅμως βαθύτατα ἀπὸ τὰς περὶ ἑνώσεως τῶν λατινικῶν λαῶν ἰδέας τοῦ ποιητοῦ. Τῷ 1897 παρουσίασε τὸ ἐπικοσυμβολικὸν ἐπίσης ποίημά του «Lou Pouèmo dòu Rose» («Τὸ ποίημα τοῦ Ροδανοῦ»), θεωρούμενον ὡς ἓν ἐκ τῶν κυριωτέρων ἔργων του, διά τε τὴν βαθύτητα καὶ τὴν εὐρύτητα τῆς σκέψεώς του, ὡς καὶ διὰ τὴν καὶ πλήρη δυνάμεως στιχουργίαν του. Εἶναι τὸ ἔργον τῆς ὡρίμου ἡλικίας τοῦ ποιητοῦ, καλυπτόμενον ἀπὸ τὰ νέφη τῆς μελαγχολίας καὶ τοῦ μυστηρίου.

Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἐκδώσει τὸ μνημειῶδες ἔργον του «Tresor dòu Felibrige» (1877—1866, τ. 2), δηλαδὴ λεξικὸν τῆς προβηγκιανῆς γλώσσης, ἐν τῷ ὁποίῳ διέσωσεν ὅλον τὸν βαθμηδὸν ἐξαφανιζόμενον πλοῦτον τῶν ἰδιωμάτων τοῦ Oc. Ἀλλὰ τὸ ὡραιότερον ἔργον τοῦ ποιητοῦ εἶναι ἡ δρᾶσίς του διὰ τὴν ἐξύψωσιν τῆς Προβηγκίας, ἡ δημιουργήσασα τὴν ἀποκεντρωτικὴν κίνησιν καθ᾿ ὅλην τὴν Γαλλίαν. Ὁ Μιστρὰλ ἔγραψε καὶ ἄλλα ἔργα, μικροτέρας ὅμως ἀξίας: «Discours e dicho» (Πεζοὶ λόγοι»), συλλογὴν λυρικῶν παραινετικῶν ποιημάτων, τὰ ἀπομνημονεύματά του κ. ἄ. Ἐβραβεύθη ἐπανειλημμένως ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, τῷ δὲ 1904 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου Nobel.

Ἐν Ἑλλάδι μεταφράσεις τινὲς τῶν ποιημάτων τοῦ Μιστρὰλ ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ Ἰ. Πολέμη, Ἡλ Βουτιερίδη, Στ. Δάφνη καὶ Κ. Παλαμᾶ (αἱ πρῶται 5 στροφαὶ τῆς «Μιρέϊγ» εἰς τὸ ἔργον του «Ξανατονισμένη μουσική»).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ *Ripert*, La Renaissance Provençale (1913). —*Aurouze*, Histoire critique de la Renaissance méridionale au XIX siecle (Avignon, 1907). —*Constans*, Mistral et son oeuvre (Avignon, 1906). —*Lefèvre*, Fr. Mistral, bibliographie mistralienne (1903). —*Lamartine*, Cours familier de littérature, 40ème entretien littéraire. —*G. Paris*, Penseurs et Poëtes (1896). —*Welter*, Mistral der Dichter des Provence. —*Τοῦ αὐτοῦ*, La versification de Mistral (1918).

Ι. ΟΙΚΟΝΟΜΙΔΗΣ

**Μιστρᾶς** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μυστρᾶς*.

**Μιστριώτειον** *ποιητικὸν διαγώνισμα*. Ἱδρύθη εἰς μνήμην τοῦ κατὰ τὸ 1916 ἀποβιώσαντος καθηγητοῦ τῶν ἑλληνικῶν γραμμάτων *Γεωργ. Μιστριώτου* ὑπὸ τῶν θυγατέρων αὐτοῦ. Γλῶσσα τῶν ποιημάτων, λυρικῶν ἢ δραματικῶν, ὁρίζεται ἡ ἀκραιφνὴς καθαρεύουσα. Ἐτελέσθη μέχρι τοῦδε ἅπαξ, τῷ 1922, βραβευθέντος τοῦ λυρικοῦ ποιήματος «Ἀφροδίτη καὶ Ἄδωνις» τοῦ Κ. Μέκκιου. Δ. Α. Δ.

**Μιστριώτης, *Γεώργιος Κ.*** Ἕλλην φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Τριπόλει τῷ 1840. Τὰς γυμνασιακὰς σπουδὰς διήνυσεν ἐν Ἀθήναις καὶ τῷ 1858 ἐνεγράφη εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου. Φοιτητὴς ὢν μετέσχε δὶς τοῦ Ροδοκανακείου ἀγῶνος, βραβευθεισῶν τῶν πραγματειῶν του: «Περὶ τοῦ καθ᾿ Ὅμηρον πολιτεύματος τῶν ἡρωϊκῶν χρόνων» (1861) καὶ «Περὶ τοῦ καθ᾿ Ὅμηρον οἰκιακοῦ βίου τῶν Ἑλλήνων» (1863). Ἀποσταλεὶς εἰς Γερμανίαν ὡς ὑπότροφος τοῦ κράτους, ἐδιδάχθη παρὰ τῷ Böckh καὶ ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῷ 1867. Ἐπανελθὼν εἰς Ἑλλάδα ἐγένετο ὑφηγητὴς (1868) διὰ τῆς διατριβῆς «Ἱστορία τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν» (1867) καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας. Τῷ 1875 προήχθη εἰς τακτικὸν καθηγητὴν τοῦ αὐτοῦ μαθήματος. Πρύτανις ἐχρημάτισε τῷ 1891—1892. Διετέλεσεν ἐπὶ πλέον πρόεδρος τοῦ «Ἑλληνικοῦ Διδασκαλικοῦ Συλλόγου», τῆς «Φιλεκπαιδευτικῆς Ἑταιρείας», τῆς «Ἑταιρείας τῶν Φίλων τοῦ Λαοῦ», τῆς «Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας», τῆς «Ἑταιρείας πρὸς διδασκαλίαν τῶν ἀρχαίων ἑλληνικῶν δραμάτων». Ὡσαύτως εἰσηγητὴς ποιητικῶν καὶ φιλολογικῶν διαγωνισμάτων καὶ συνεργάτης τῆς Τεργεσταίας «Κλειοῦς». Ὑπέρμαχος τῆς καθαρευούσης, ἀντετάχθη ὀξέως διὰ λόγων, δημοσιευμάτων καὶ λαϊκῶν ἔτι διεγέρσεων κατὰ τῆς δημοτικιστικῆς κινήσεως τῆς ἐποχῆς του. Τῷ 1910 ὠνομάσθη ἐπίτιμος καθηγητής, ἀλλὰ καὶ πάλιν ἐξηκολούθει νὰ διδάσκῃ μέχρι τοῦ 1916, ὅτε ἀπεβίωσε. Ἐξέδωσε σειρὰν Ἑλλήνων συγγραφέων, περιλαμβάνουσαν τὴν «Ἰλιάδα» τοῦ Ὁμήρου, πάσας τὰς τραγῳδίας τοῦ Σοφοκλέους, τὸν «Προμηθέα Δεσμώτην» τοῦ Αἰσχύλου, τὴν «Μήδειαν», τὴν «Ἰφιγένειαν ἐν Ταύροις», τὸν «Ἱππόλυτον» καὶ τὴν «Ἑκάβην» τοῦ Εὐριπίδου, τὸν «Φαίδωνα», «Γοργίαν», «Πρωταγόραν», «Ἀπολογίαν Σωκράτους», «Κρίτωνα», «Λάχην», «Χαρμίδην» καὶ «Μενέξενον» τοῦ Πλάτωνος, ὁλόκληρον τὸν Θουκυδίδην, τὰ «Ἑλληνικά» καὶ τὰ «Ἀπομνημονεύματα» τοῦ Ξενοφῶντος. Πλὴν τούτων ἐξέδωκε τὸ δεύτερον ἐπηυξημένην τὴν «Ἱστορίαν τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν», «Ἑλληνικὴν γραμματολογίαν ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων μέχρι τῆς ὑπὸ τῶν Τούρκων ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως» (Ἀθῆναι 1894, 1897) εἰς δύο τόμους καὶ «Ρητορικοὺς Λόγους» εἰς ἕξ. Δ. Α. Δ.

*Γεώργιος Μιστριώτης.*

**Μίσυνος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος ἐν τῇ Σύρτει τῆς Κυρήνης (*Πτολεμ.* Δ, γ, 46), ὀνομασθεῖσα προφανῶς ἀπὸ τοῦ μύχητος «τοῦ φυομένου περὶ Κυρήνην, ὃ καλοῦσι μισύ» (*Θεοφρ.* Ἱστορ. φυτ. 1, 6, 13). Κατὰ τὸν Σταδιασμὸν ὠνομάζετο *Σκοπελίτης*, ἀπέχουσα τῆς ἀκτῆς 15 στάδια καὶ ἔχουσα σχῆμα ... Εἶναι ἡ σύγχρονος βραχονησὶς *Χαμοὺδ* (πλάτ. 30°57' Β., μήκ. 20°08' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 246: Ras Makhabez to Benghazi). Σ. Ε. Λ.

**Μισυρλῆς, *Δημήτριος Μ.*** Φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1884 ἐν Σέρραις. Περατώσας τὰς σπουδάς του εἰς τὸ ἐν Ἀθήναις πανεπιστήμιον, ὑπηρέτησεν ὡς καθηγητὴς καὶ γυμνασιάρχης εἰς διάφορα γυμνάσια τῆς Μακεδονίας καὶ κατὰ τὸ 1928 ἐξελέγη ὑπὸ τῶν ἐκπαιδευτικῶν λειτουργῶν τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως ἐκπαιδευτικὸς σύμβουλος. Ἐδημοσίευσε διαφόρους μελέτας, ἐν αἷς: «Ἡ ἐκπαιδευτικὴ ἐκδρομὴ τῶν Ἑλλήνων καθηγητῶν εἰς Ἑλβετίαν καὶ ἡ ἐκπαίδευσις ἐν Ἑλβετίᾳ» (1925), «Ἡ γυναικεία ἐκπαίδευσις ἐν Ἑλβετίᾳ» (1926), «Ἡ ἐκπαιδευτικὴ μεταρρύθμισις ἐν Πολωνίᾳ» τοῦ M. Friedländer (1929) καὶ «Ἡ κοινὴ ἀγωγὴ τῶν δύο φύλων ἐν Εὐρώπῃ καὶ Ἀμερικῇ» ὑπὸ Helse Hildebrand (1930) κ.ἄ. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλλην. Ἐγκυκλοπαιδείας». —Ω.

**Μισυρλί** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Μικροποταμιὰ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μίσχος** (ὁ). Καλεῖται τὸ κυλινδρικόν, ἡμικυλινδρικὸν ἢ καὶ πολυγωνικὸν φυτικὸν μόριον, ὅπερ συνδέει τὸ πλάτυσμα τῶν φύλλων μετὰ τῶν κλάδων τοῦ φυτοῦ. Δ. Ν. Π.

**Μίσχος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Σώστου τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς, ἔχον ταχ. γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 734. Χ. Δ.

**μισῶ** (*—έω*)· αἰσθάνομαι μῖσος κατά τινος, ἀποστρέφομαι, ἐχθαίρω: «τὸν ἐμίσησεν ἡ ψυχή μου».

**Μισὼ** (Michaux), ***Ἀνδρέας***. Γάλλος βοτανικὸς καὶ ἐξερευνητὴς (1746—1802). Ἀπὸ τοῦ 1779 μέχρι τοῦ 1781 ἐταξίδευσεν ἀνὰ τὴν Ἀγγλίαν, τὴν Ὠβέρνην, τὰ Πυρηναῖα καὶ τὴν Ἱσπανίαν καταρτίζων φυτολογικὰς συλλογάς. Τῷ 1782, ἐντολῇ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως, μετέβη εἰς Περσίαν, ἣν ἐξηρεύνησεν ἐπὶ διετίαν ἀπὸ τῆς θαλάσσης τῶν Ἰνδιῶν μέχρι τῆς Κασπίας, καὶ ἐπανελθὼν ἐκόμισεν εἰς Γαλλίαν πλουσίαν συλλογὴν ἰθαγενῶν περσικῶν φυτῶν καὶ σπόρων. Ἀμέσως κατόπιν ἀπεστάλη εἰς Βόρειον Ἀμερικήν, ἐδημιούργησε δὲ εἰς Νέαν Ὑόρκην καὶ Τσάρλεστον δύο φυτώρια, τῶν ὁποίων τὰ προϊόντα ἀπεστέλλοντο εἰς Γαλλίαν. Ἐπὶ δωδεκαετίαν ὅλην διέτρεξε τὰς ἀνεπαρκῶς ἀκόμη γνωστὰς βορειοαμερικανικὰς χώρας, καταναλώσας ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν μεγάλην πατρικήν του περιουσίαν. Τῷ 1797 ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν κατεστραμμένος οἰκονομικῶς, ἀλλὰ πλουσίως πληροφορημένος ἐπὶ τῆς ὅλης βορειοαμερικανικῆς χλωρίδος. Τὸ ἑπόμενον ἔτος συνώδευσε τὸν πλοίαρχον Baudin κατὰ τὴν ἐξερευνητικὴν αὐτοῦ ἀποστολὴν εἰς Αὐστραλίαν, παραμείνας δὲ ἐπὶ ἑξάμηνον εἰς τὴν Νῆσον τῆς Γαλλίας ἐξετέλεσεν ἐκεῖ νέας φυτολογικὰς ἐξερευνήσεις. Μεταβὰς κατόπιν εἰς Μαδαγασκάρην, ἀπέθανε σχεδὸν ἀμέσως ἐκ πυρετῶν. Ὁ Μισὼ ἐξέδωκε δύο ἔργα: «Ἱστορία τῶν δρυῶν τῆς Βορείου Ἀμερικῆς» (1801) καὶ «Βορειοαμερικανικὴ χλωρίς» (1803).

Ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Φραγκῖσκος-Ἀνδρέας* (1770—1855), συνοδεύσας τὸν πατέρα του εἰς Ἀμερικήν, ἐδημοσίευσεν ἔκθεσιν περὶ τῶν ἐξερευνήσεών του (1803) καὶ «Ἱστορίαν τῶν δασικῶν δένδρων τῆς Βορείου Ἀμερικῆς» (1810—1813, εἰς 4 τόμ.). —Ω.

—**Μισὼ** (Michaud), ***Ἰωσὴφ-Φραγκῖσκος***. Γάλλος δημοσιολόγος καὶ ἱστορικὸς (1767—1839). Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν ὑπέστη καταδιώξεις λόγῳ τῶν φιλοβασιλικῶν φρονημάτων του, κατόπιν ὅμως συνεφιλιώθη μετὰ τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος, τῇ ὑποστηρίξει τοῦ ὁποίου ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἐξέδωκε: «Νεωτέρα βιογραφία» (1806—1807), «Ἱστορία τῶν σταυροφοριῶν» (1811—1822) εἰς 5 τόμους, «Βιβλιοθήκη τῶν σταυροφοριῶν» (1822), «Ἀπομνημονεύματα διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς Γαλλίας» (1836—1844), κ. ἄ. Ι. Μ. Τ.

**Μίταου** (Mitau, λιθουαν. Ielgawa, προφ. Ἰέλγκαβα) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λιθουανίας, πρωτεύουσα τῆς περιφερείας Σέμγκαλλεν. Κεῖται ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Κουρλανδικοῦ ποταμοῦ Ἄα, Ν. ΝΔ. τῆς Ρίγας, μετὰ τῆς ὁποίας συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. 28.500. Ἔχει ἀρχαῖον πύργον, μουσεῖον μετὰ βιβλιοθήκης, νοσοκομεῖα καὶ διάφορα ἄλλα ἄσυλα, σημαντικὴν βιομηχανίαν λίνου καὶ δερμάτων καὶ διεξάγει ἐμπόριον δημητριακῶν καὶ ξυλείας. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τοῦ γερμανικοῦ στρατοῦ. Μετὰ τὴν ἀνακωχὴν περιῆλθεν εἰς τοὺς Μπολσεβίκους καὶ τὴν 18 Μαρτίου 1919 κατελήφθη ὑπὸ τῶν λιθουανικῶν στρατευμάτων. Γ. Ι. Β.

**μιτάρι** (τό). Ἐξάρτημα ὑφαντικοῦ ἱστοῦ πρὸς ἕλξιν κατὰ τὴν ὕφανσιν μέρους κλωστῶν τοῦ στη-

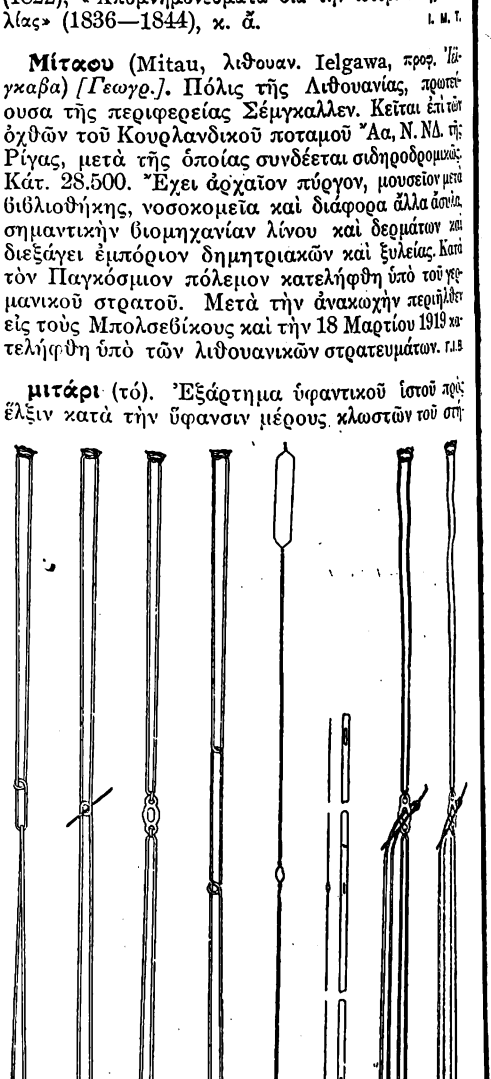

*Διάφοροι τύποι μιταρίων.*

μονος πρὸς τὰ ἄνω ἢ κάτω καὶ ἐνίοτε καὶ πρὸς τὰ πλάγια πρὸς τὸν σκοπὸν σχηματισμοῦ διόδου, μέσον αὐτῶν, τῆς κερκίδος (σαΐτας) καὶ παρεμβολὴν τῆς κρόκης. Τὰ μιτάρια κατασκευάζονται συνήθως ἐκ νημάτων ἐστριμμένων καὶ ἀντοχῆς ἢ ἐκ λεπτῶν συρμάτων εἰς μήκη ποικίλλοντα συνήθως

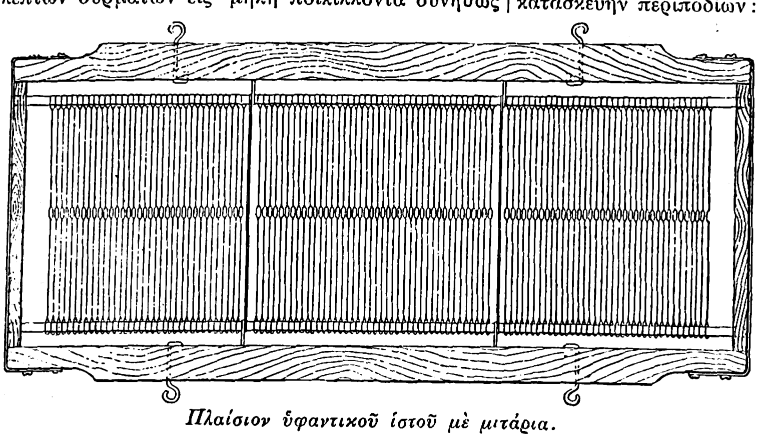

*Πλαίσιον ὑφαντικοῦ ἱστοῦ μὲ μιτάρια.*

ἀπὸ 20—40 ἑκατοστῶν τοῦ μέτρου. Εἰς τὸ κέντρον αὐτῶν σχηματίζεται κρίκος, διὰ τοῦ ὁποίου περνῶμεν (μιτώνομεν) τὰς κλωστὰς τοῦ στήμονος. Μιτάρια ὑπάρχουν διαφόρων τύπων καὶ συνθέσεων, ἀναλόγως τῆς ὕλης καὶ τοῦ εἴδους πρὸς ὕφανσιν.

Τὰ μιτάρια τοποθετοῦνται καθέτως ἢ πολλὰ ὁμοῦ εἰς πλαίσια ἐπιμήκη, ἀνάλογα πρὸς τὸ πλάτος τοῦ πρὸς ὕφανσιν στήμονος ἢ κατὰ σώματα ἐξαρτώμενα ἐκ τῶν γάντζων τῶν βελονῶν τῆς ὑφαντικῆς μηχανῆς Jacquard. κ. β. φ.

**μιτάρωμα** (τὸ)· δημοτ., τὸ πέρασμα τοῦ στημονιοῦ ἀπὸ τὰ μιτάρια.

**Μιτάτ·** βλ. *Μιτχάτ.*

**Μιτάτα** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κυθήρων τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 373. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Αὐλέμων*. χ. δ.

**Μιτάτοβα** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ εἰς *Ἀγραπιδοῦλαν* μετονομασθέντος συνοικισμοῦ τῆς κοινότητος Βαρσόβης τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 26. χ. δ.

**μιτᾶτον** (τὸ) *[Βυζαντ.]*· βλ. λ. *μητᾶτον.*

**μιτατορίκιον** (τὸ) *[Λειτουργ.]*· βλ. λ. *μητατωρίκιον.*

**μιτατώριον** (τὸ) *[Λειτουργ.]*· βλ.λ. *μητατωρίκιον.*

**Μίτ-Γάμρ** *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Αἰγύπτου ἐπὶ τῆς ἀπὸ Καΐρου εἰς τὴν διώρυγα τοῦ Σουὲζ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Ἡ αὐτόθι ἑλληνικὴ κοινότης διατηρεῖ σχολὴν μικτὴν καὶ ναὸν τῶν Ταξιαρχῶν. Κάτ. 12.000 περίπου. Γ. Λ. Α.

**Μιτζέλα, *Παλαιὰ*** — *[Γεωγρ.].* Παλαιὸν χωρίον κατὰ τὸν ΙΗ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος) ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τοῦ Πηλίου κείμενον, μεταξὺ τῶν σημερινῶν χωρίων Πουρὶ καὶ Βένετο. Παλαιότερον ἢ μᾶλλον κατὰ τὴν πρώτην περίοδον τῆς ἱδρύσεως του ὠνομάζετο *Μουντζέλλες*. Κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' εἶχε πλουτήσει πολὺ λόγῳ τῆς ἐπιδόσεως τῶν κατοίκων της εἰς τὴν ναυτιλίαν. Κατὰ τὸ 1821 πλεῖστοι ὅσοι Μιτζελιῶται καραβοκυραῖοι ἔλαβον μέρος εἰς τὴν Ἐπανάστασιν, διὰ τὸν λόγον δὲ τοῦτον οἱ Τοῦρκοι ἔκαυσαν τὸ χωρίον (πιθανῶς τῷ 1827). Μετὰ τὴν σύστασιν τοῦ ἑλληνικοῦ βασιλείου οἱ πλεῖστοι τῶν ἐκπατρισθέντων Μιτζελιωτῶν (κυρίως οἱ καραβοκυραῖοι) ἔλαβον τὴν ἰδέαν καὶ ἵδρυσαν εἰς τὴν μεσημβρινὴν παραλίαν τοῦ Παγασιτικοῦ κόλπου νέον συνοικισμόν, ὃν ὠνόμασαν *Νέαν Μιτζέλαν* (1834). Ὁ συνοικισμὸς οὗτος εἶτα μετωνομάσθη πρὸς τιμὴν τῆς πρώτης βασιλίσσης Ἀμαλίας *Ἀμαλιούπολις* (βλ. λ.). Τὸ πυρποληθὲν χωρίον ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις τῷ 1843 ἐπώλησεν εἰς ἰδιώτας καὶ ἔκτοτε μετὰ τῆς κτηματικῆς του περιφερείας (κυρίως δασώδους) ἀποτελεῖ ἰδιόκτητον τσιφλίκιον, ὑπαγόμενον εἰς τὴν κοινότητα Πουρίου τῆς ἐπαρχίας Βόλου. Κάτ. (1928) 14. Γ. Κ. ΚΟΡ.

**Μίτο** *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς ἐπαρχίας Χίτατσι, τῆς μεσημβρινῆς Ἰαπωνίας, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας Κὲν-Ντ-Ἰμπαράκι εἰς ἀπόστασιν 110 χλμ. ΒΑ. τοῦ Τόκιο, ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Νάκα-Γκάβα. Κάτ. 39.010. Σημαντικὸν ἐμπορικὸν κέντρον. Π. Γ. Λ.

**Μιτόπολις** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Φαρῶν καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 250. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Περιστέρα*, ἔχει δὲ κατ. (1928) 510. χ. δ.

**μίτος** (ὁ)· εἶδος νήματος κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον παχέος, ὁποῖον τὸ χρησιμοποιούμενον πρὸς κατασκευὴν περιποδίων: «μίτος γιὰ κάλτσες», «μίτος χοντρός, —ψιλός, — χρωματιστός»· ‖ καθόλου, τὸ νῆμα, πρβλ. *δίμιτο παννί*· ‖ φρ. «ὁ μίτος τῆς Ἀριάδνης» μέσον πρὸς εὕρεσιν διεξόδου· ‖ μεταφ. «ὁ μίτος τῶν ἰδεῶν του» ὁ εἱρμός, ἡ συνέχεια.

**μιτοχόνδριον** (τό), ἢ ***χονδριόσωμον.*** Ὀνομάζονται οὕτω κόκκοι, ἑνούμενοι σπανιώτερον μὲν εἰς βραχείας κοκκώδεις ἶνας, συνήθως δὲ εἰς παχέα καὶ λεῖα ραβδία καὶ νήματα, ἀπαντῶντες ἐντὸς τοῦ πρωτοπλάσματος τῶν κυττάρων τῶν περισσοτέρων φυτῶν καὶ ζῴων. Εἰς τὰ φυτικὰ κύτταρα θεωροῦνται ὑπό τινων ὡς πρόδρομοι τοῦ σχηματισμοῦ τῶν χρωματοφόρων, ἄλλοι δὲ ἀποδίδουν εἰς ταῦτα σημασίαν διὰ τὰ φαινόμενα τῆς κληρονομικότητος. Φαίνεται ἐπίσης ὅτι ἔχουν σχέσιν μὲ τὴν ἐναλλαγὴν τῶν ὑλῶν ἐντὸς τοῦ κυττάρου. Πάντως ἡ σημασία των δὲν εἶναι εἰσέτι καθωρισμένη ἐπαρκῶς. Θ. ΒΛ.

**μίτρα** (ἡ) *[Ἀρχ.].* Μακρὰ ταινία ἐξ ὑφάσματος, δέρματος ἢ μετάλλου, χρησιμεύουσα ἢ ὡς ζώνη τῆς ὀσφύος ἢ ὡς διάδημα τῆς κόμης. Ἡ μίτρα, ὡς ζώνη, εἶναι γνωστὴ ἀπὸ τῶν ὁμηρικῶν χρόνων. Ἐφέρετο ἀμέσως ἐπὶ τοῦ σώματος καὶ μάλιστα πέριξ τῶν μαλακῶν μερῶν τῆς κοιλίας καὶ ἐχρησίμευεν ὡς τὸ μοναδικὸν μέσον προφυλάξεως τῶν πολεμιστῶν. Ἐπὶ μυκηναϊκῶν ἀγγείων, ὡς π.χ. ἐπὶ τοῦ ἑνὸς τῶν χρυσῶν ποτηρίων τοῦ Βαφειοῦ καὶ τοῦ ξίφους μὲ τὴν χρυσῆν ἔνθετον παράστασιν κυνηγίου λεόντων, οἱ κυνηγοί, γυμνοί, φέρουσι μόνον λεπτὴν καὶ μακρὰν ταινίαν ὑφάσματος τετυλιγμένην πολλάκις πέριξ τῆς ὀσφύος. Οὕτω παρίσταται ἡ μίτρα, ὡς ζώνη, καὶ κατὰ τοὺς ἀρχαϊκοὺς χρόνους, ὡς δεικνύουσι τοῦτο πολλὰ ἀρχαϊκὰ χάλκινα εἰδώλια ἐκ τῶν ἀνασκαφῶν τῶν Δελφῶν καὶ τῆς Ὀλυμπίας. Ἡ χρῆσις τῆς μίτρας ὡς ζώνης φαίνεται ὅτι διετηρήθη μέχρι τοῦ 500 π. Χ. Ἐνίοτε ἡ ἐκ δέρματος μίτρα ἦτο πεποικιλμένη κατὰ τὰ ἄκρα δι' ἁλύσεως.

*Μίτρα-ζώνη κατὰ τὴν ἀρχαϊκὴν περίοδον.*

[Χάλκινον εἰδώλιον.]

Ἡ μίτρα ὡς ταινία τῆς κόμης, ἦτο τὸ μέσον, δι' οὗ ἄνδρες καὶ γυναῖκες ἐστερέωνον τὴν κόμην. Καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἡ μίτρα ἦτο τὸ ἀποκλειστικὸν κόσμημα τῆς κόμης διὰ τὰς θεὰς καὶ τὰς γυναῖκας. Οἱ κατάλογοι ἀναθημάτων εἰς θεότητας ἀναφέρουσι πολλὰς μίτρας. Μίτραν κυρίως ἔφερον ἡ Σαμία Ἥρα, ἡ Δημήτηρ καὶ ἡ Κόρη καὶ μάλιστα ὁ θηλυπρεπὴς θεὸς Διόνυσος καὶ τὰ μέλη τοῦ θιάσου του. Ἀργότερον διὰ τῆς μίτρας ἐστέφοντο οἱ ἀθληταὶ νικηταί. Ἐκ τῶν σχετικῶν παραστάσεων ἐπὶ μνημείων συνάγεται ὅτι ἡ μίτρα ἦτο ταινία ἐκ λινοῦ ἢ ἄλλου ὑφάσματος, πλατεῖα καὶ μακρά. Ἐκ τῶν τετραγώνων ἢ συνήθως ἐστρογγυλευμένων ἄκρων αὐτῆς ἐκφύονται ταινίδια ποικίλου ἀριθμοῦ καὶ διαστάσεως, τὰ ὁποῖα δενόμενα ἐχρησίμευον πρὸς συγκράτησιν τῆς ταινίας. Χαρακτηριστικὴν εἰκόνα τῆς μίτρας παρέχει παράστασις ἐπὶ ὑδρίας τοῦ μουσείου Νεαπόλεως, ἐφ' ἧς ἡ Ὠρείθυια καταδιώκεται καθ' ἣν στιγμὴν ἠτοιμάζετο νὰ θέσῃ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς της στενὴν ταινίαν. Εὐνόητον ὅτι ἡ μίτρα αὐτὴ ἐκοσμεῖτο διὰ διαφόρων θεμάτων, εἴτε κεντημένων εἴτε ζωγραφημένων. Ἡ κλασσικὴ μίτρα ἀπέβη τὸ κύριον διάδημα τῆς κεφαλῆς καὶ τὸ σύμβολον τῆς κυριαρχίας, διότι τὸ στέμμα τοῦ μεγάλου βασιλέως τῆς Περσίας, ἤτοι ἡ τιάρα ἢ ἀσιατική, προσηλοῦτο ἐπὶ τῆς κεφαλῆς διὰ μίτρας. Β. Δ. Θ.

— *[Τελετουργ.]* *Μίτρα* εὕρηται ἐν τῇ ἐκκλησιαστικῇ χρήσει εἰς δήλωσιν τοῦ παρὰ τῶν ἐπισκόπων φερομένου μεγαλοπρεποῦς τῆς κεφαλῆς καλύμματος, τοῦ προσλαβόντος τὸ σχῆμα τῆς παλαιᾶς κιδάρεως. Ἀποτελεῖ αὐτὴ κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, πολλῷ μεταγενέστερον ἄμφιον, μηδεμιᾶς σαφοῦς καὶ ἀναντιλέκτου μαρτυρίας ἀπαντώσης πρὸ τοῦ Γ' αἰῶνος, ἐξ ἧς νὰ ἐμφαίνεται ὅτι οἱ ἐπίσκοποι ἔφερον ὡς ἄμφιον τῆς λειτουργικῆς αὐτῶν ἀμφιέσεως κάλυμμά τι ἐν τῇ κεφαλῇ. Καὶ ὁμιλεῖ μὲν ὁ Πολυκράτης (παρ' *Εὐσεβ.*, Ἐκκλ. Ἱστορ. Ε, 24) περὶ τοῦ ἀποστόλου Ἰωάννου, ὅτι «ἐγεννήθη ἱερεὺς τὸ πέταλον πεφορεκώς», καὶ ὁ Ἐπιφάνιος (Αἱρεσ. XXIX, 4) περὶ ἀδελφοθέου τοῦ Ἰακώβου, ὅτι «καὶ τὸ πέταλον ἐπὶ κεφαλῆς ἐξῆν αὐτῷ φέρειν», ἀλλ' ἐὰν δὲν ἐκλάβωμεν ταῦτα ὡς ἀλληγορικῶς εἰρημένα, καθὼς πολλοὶ ἐξεδέχθησαν, πρόκειται ἀσφαλῶς περὶ χρήσεως τοῦ παρὰ τοῖς ἀρχιερεῦσι τῶν Ἰουδαίων πετάλου προνομιακῶς καὶ παροδικῶς ὑπὸ τῶν δύο ἀποστόλων γενομένης. Ἀλληγορικῶς εἰρημένοι ἐθεωρήθησαν καὶ οἱ ὑπὸ τοῦ Εὐσεβίου εἰς τοὺς ἐν Τύρῳ ἐπισυναχθέντας ἐπισκόπους λόγοι («ὦ φίλου Θεοῦ ἱερεῖς, οἱ... τὸν οὐράνιον τῆς δόξης στέφανον περιβεβλημένοι» Ἐκκλ. Ἱστορ. Ι, 4), καὶ οἱ ὑπὸ τοῦ Γρηγορίου τοῦ Ναζιανζηνοῦ ἐν τῷ λόγῳ του εἰς ἑαυτὸν καὶ τὸν πατέρα του (*Migne*, 35, 829) «διὰ τοῦτο χρίεις ἀρχιερέα καὶ... περιτίθης τὴν κίδαριν». Ὁ Τερτυλλιανὸς ἐξ ἄλλου, μαρτυρῶν ἐμμέσως περὶ τῆς συγχρόνου του πράξεως, βεβαιοῖ ὅτι οὐδεὶς πατριάρχης, πρότερον, οὐδὲ ἀπόστολος ἢ εὐαγγελιστὴς ἢ ἐπίσκοπος ἔπειτα προσέρχεται ἐστεμμένος (coronatus, De corona 10).

*Ἐπισκοπικὴ μίτρα.*

Πρώτη σαφὴς μαρτυρία ἐν μὲν τῇ Δύσει ἀπαντᾶται κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα, ὁπότε Λέων ὁ Θ' ἐπέθηκεν ἐν Ρώμῃ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς τοῦ ἀρχιεπισκόπου τῆς Trèves Eberhard, τῷ 1049, τὴν ρωμαϊκὴν μίτραν, χορηγήσας εἰς αὐτὸν τὸ δικαίωμα ἵνα καὶ αὐτὸς καὶ οἱ διάδοχοι αὐτοῦ φέρωσι ταύτην (Epistola 3, *Migne* Λατιν. Πατρολ. 143, σελ. 595). Ἐν δὲ τῇ Ἀνατολῇ ἤδη κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα σαφῶς ὁ Βαλσαμὼν μαρτυρεῖ ὅτι κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν πάπαν ὁ πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως δὲν κατεστέφεται «τῷ τῆς βασιλείας λώρῳ», ἤτοι τῷ βασιλικῷ διαδήματι (*Migne* 138, 1029)· μετέπειτα δὲ καὶ ὁ Συμεὼν Θεσσαλονίκης βεβαιοῖ ὅτι «ἀπερικαλύπτῳ τῇ κεφαλῇ οἱ τῆς Ἀνατολῆς ἱεράρχαι πλὴν τοῦ τῆς Ἀλεξανδρείας τὴν ἱερουργίαν τελοῦσι» (Περὶ ναοῦ. κεφ. 45. *Migne* 155, 716). Μολονότι δὲ ἀπὸ τοῦ 1557 ὁ Κωνσταντινουπόλεως Ἰωάσαφ Β' παρακαλεῖ τὸν τσάρον καὶ τῷ κατασκευάσῃ μίτραν, τῷ 1585 Ρῶσος ἀπεσταλμένος ἐν Κωνσταντινουπόλει βλέπει συλλειτουργοῦντας τοὺς τρεῖς πατριάρχας, Κωνσταντινουπόλεως, Ἀντιοχείας καὶ Ἀλεξανδρείας, μόνον δὲ τὸν τελευταῖον μιτροφοροῦντα (*Χρυσ. Παπαδοπούλου*, Περὶ μιτροφορίας τοῦ ἐπισκόπου, ἐν «Πανταίνῳ» τόμ. Δ' 295). Ἡ ὁριστικὴ ἐπικράτησις τῆς μιτροφορίας παρὰ τοῖς οἰκουμενικοῖς πατριάρχαις ἐγένετο μετὰ τὸ 1621, ὅτε Κύριλλος ὁ Λούκαρις μετατεθεὶς ἐκ τοῦ ἀλεξανδρινοῦ θρόνου διετήρησε τὴν ἐκεῖ ἔφερε μίτραν. Διετηρήθη ἐν τούτοις τὸ κατ' ἀρχὰς ὡς ἀποκλειστικὸν προνόμιον τοῦ πατριάρχου, διὸ καὶ ὁ Σινᾶ Λαυρέντιος καθαιρεῖται, ἐπειδὴ ἐφόρει μίτραν (*Ἀθ. Ὑψηλάντου*, Τὰ μετὰ τὴν ἅλωσιν (1870), σελ. 129). Ἀλλὰ τῷ 1644 παρέχεται τῷ Φιλαδελφείας, τῷ δὲ 1679 καὶ τῷ Ζακύνθου καὶ Κεφαλληνίας τὸ δικαίωμα τοῦ μιτροφορεῖν. Κατὰ τὸν Ρομπότην, περιηγητὴς Ρῶσος περιελθὼν τὴν Ἀνατολὴν κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα μαρτυρεῖ ὅτι οἱ ἐπίσκοποι δὲν ἔφερον μίτραν (Λειτουργική, σελ. 206). Τὰς ὑπὸ τῶν Ρώσων ἀρχιμανδριτῶν φερομένας μίτρας ὁ αὐτὸς Ρομπότης θεωρεῖ ὡς καλυμμαύχια πολυτελῆ, τοιαῦτα δὲ χρυσοκέντητα καλυμμαύχια σῴζονται καὶ ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις Βυζαντινῷ μουσείῳ, μαρτυροῦντα τὴν πιθανὴν προέλευσιν τοῦ σημερινοῦ σχήματος τῆς ἀρχιερατικῆς μίτρας. Π. Ν. Τ.

— *[Χειρουργ.]* *Μίτρα* καλεῖται ἐπίδεσμος διὰ τριγώνου ὀθονίου ἢ ταινίας μακρᾶς καὶ πλατείας, ἐφαρμοζόμενος ἐπὶ τραυμάτων ἢ βλαβῶν κατὰ τὴν κεφαλήν. Ι. Π.

— ***μίτρα καπνοδόχων.*** Ἐπίθεμα κατεσκευασμένον οὕτως, ὥστε νὰ παρεμποδίζῃ τὴν ἐντὸς τῆς καπνοδόχου εἴσοδον τῆς βροχῆς, ἐπιτρέπον συγχρόνως καὶ τὴν ἔξοδον τοῦ καπνοῦ ἐξ αὐτῆς. Χρησιμοποιεῖται εἰς παντὸς εἴδους καπνοδόχους, οἰκιῶν, ἀτμομηχανῶν, ἀτμοπλοίων κτλ. Ἐνίοτε κατασκευάζεται οὕτως, ὥστε ἡ ἔξοδος τοῦ καπνοῦ νὰ εἶναι δυνατὴ κατὰ μίαν μόνον διεύθυνσιν, ὁπότε ἡ μίτρα πρέπει νὰ εἶναι πάντοτε ἐστραμμένη κατὰ τὴν ἀντίθετον διεύθυνσιν ἐκείνης, ἐξ ἧς προέρχεται ἑκάστοτε ὁ ἄνεμος. Εἰς τὰ πλοῖα χρησιμοποιοῦνται συνήθως μὴ περιστρεπταὶ μίτραι, ἐπιτρέπουσαι τὴν ἔξοδον τοῦ καπνοῦ καθ' ὅλας τὰς διευθύνσεις. Γ. Θ. Κ.

**Μίτρα** *[Θρησκειολ.].* Ὁ ἕτερος τῶν μεγάλων θεῶν τῆς βεδικῆς θρησκείας, προστάτης τοῦ δικαίου καὶ τῆς τάξεως, κληροδοτηθεὶς εἰς τὴν θρησκείαν τῶν Ἰνδῶν ὑπὸ τῆς παλαιοτέρας θρησκείας τῶν Ἀρίων, ἐξ ἧς παρελήφθη καὶ ὑπὸ τῶν Περσῶν (βλ. λ. *Μίθρας*). Διὰ τοῦτο αἱ κοιναὶ ἰδιότητες τῶν δύο τούτων θεῶν· διότι καὶ ὁ ἰνδικὸς Μίτρα εἶναι, ὡς ὁ περσικὸς Μίθρας, θεὸς τοῦ φωτός, τοῦ ἡλίου καὶ τοῦ οὐρανοῦ, ἐπόπτης τῆς δικαιοσύνης καὶ τῆς ἱερότητος τῶν συνθηκῶν. Ἴσως μάλιστα τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ τούτου ἔχει

Digitized by Google

σχέσιν πρὸς τὴν ρίζαν *Mi*, ἥτις σημαίνει φιλίαν καὶ συμφωνίαν. Ὁ Μίτρα κέκτηται τὴν δύναμιν, ὡς ὁ στενῶς μετ' αὐτοῦ συνδεδεμένος Βαρούνα, νὰ προκαλῇ τὴν *Μαγιά*, τὴν ἀπατηλὴν φαντασιοπληξίαν, καὶ νὰ ἐνεργῇ θαύματα, συγγενὴς κατὰ ταῦτα πρὸς τὴν πολυάριθμον ὁμάδα τῶν *Ἀδιτύας*, φωτεινῶν θεοτήτων, αἰτίων τῆς ἀπάτης ἐν ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνθρώπων. Ν. Ι. Λ.

**μίτρα** (ἡ) (Mitra) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων γαστεροπόδων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κτενοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *λιτινιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα ἐνιαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζῳολ.]* Τοῦ γένους τούτου λείψανα ἀπολιθωμένα συναντῶνται ἄφθονα πολλαχοῦ ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ.

Ἐν Ἑλλάδι ἀπολιθωμένα λείψανα μιτρῶν εὑρέθησαν: α') ἐντὸς ὀλιγοκαινικῶν μαργῶν παρὰ τὴν Καλαμπάκαν· β') ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἑλβετίου (Πας μεσογειακῆς) βαθμῖδος τῆς μειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Μολίτσα ποταμοῦ τῆς Ἠπείρου τὰ εἴδη *μίτρα* ***scrobiculata*** καὶ *μίτρα* ***cf. goniophora***· γ') ἐντὸς τῶν πλειοκαινικῶν στρωμάτων τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου τὰ εἴδη *μίτρα* ***ebenus*** καὶ *μίτρα* ***Partschi***· δ') ἐντὸς τῶν νεογενῶν στρωμάτων τοῦ Ληξουρίου Κεφαλληνίας τὰ εἴδη ***plicatula, phillipiana, cupressina*** καὶ ***juniperus***· ε') ἐντὸς τῶν τεταρτογενῶν ἀποθεμάτων τῶν νήσων Στροφάδων τὰ εἴδη *μίτρα* ***lutescens*** καὶ *μίτρα* ***tricolor***. Γ. Κ. Γ.

**Μίτροβιτς**, ***Μιλοράντ***. Σέρβος λυρικὸς ποιητὴς (1867—1907). Ἔγραψεν ἱστορικὸν δρᾶμα ὑπὸ τὸν τίτλον «Λάζαρος Μπράνκοβιτς» καὶ τὸ ἔπος «Ἡ ἀπελευθέρωσις τοῦ Βελιγραδίου», ἅτινα ὅμως ἔμειναν ἡμιτελῆ.

**μιτροειδὴς** (ὁ, ἡ), —ές (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μίτραν, ὁ ἔχων σχῆμα μίτρας: «*μιτροειδὴς βαλβίς*».

— μιτροειδὴς ***βαλβὶς*** *[Ἀνατομ.]* βλ. λ. *διγλώχιν* βαλβίς.

**μιτροφόρος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ φορῶν μίτραν.

**μιτροφόρος** (ἡ) (Mitrophora) *[Βοτ.]*. Γένος μυκήτων τῆς οἰκογενείας τῶν *μικρομυκητιδῶν*, περιλαμβάνον μικροὺς μύκητας εἰς δασώδεις ἐκτάσεις συνήθως φυομένους. Ἐκ τῶν πολλῶν εἰδῶν τοῦ γένους, ἅτινα ἀπαντῶνται πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης, ἐδώδιμα εἶναι ἡ *μιτροφόρος ἡ ἐδώδιμος* (Mitrophora edulis), *μιτροφόρος ἡ ἐξαισία* (Mitrophora deliciosa) καὶ *μιτροφόρος ἡ παχύπους* (Mitrophora crassipes). Δ. Ν. Π.

**Μίτσελ** (Mitchell), ***Ἔλεν Πόρτερ***. Αὐστραλὶς ἀοιδός, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μέλμπα* Νέλη (βλ. λ.).

—**Μίτσελ** (Mitchell), ***Πέτρος Τσάλμερς***. Ἄγγλος βιολόγος καὶ ζῳολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1864. Ἐσπούδασεν ἐν Ἄμπερντην, Ὀξφόρδη, Βερολίνῳ καὶ Λειψίᾳ. Ἀπὸ τοῦ 1888 μέχρι τοῦ 1891 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς ἀνατομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης καὶ κατόπιν ἐδίδαξε βιολογίαν ἐν τῷ Νοσοκομείῳ τοῦ Λονδίνου. Εἶναι μέλος τῆς «Ζῳολογικῆς Ἑταιρείας» τῆς Ἀγγλίας, τῆς ὁποίας τῷ 1903 ἐγένετο γραμματεύς, καὶ τῆς «Βασιλικῆς ἐπιστημονικῆς ἑταιρείας». Ἐχρημάτισεν ὡσαύτως μέλος τῆς ἐπιτροπῆς ἁλιείας καὶ τῆς ἐπιτροπῆς μελετῶν ἐπὶ τῆς ἀσθενείας τοῦ ὕπνου, δημοσιεύσας ἐνδιαφερούσας μελέτας. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς διάφορα νοσοκομεῖα, ὅπου προέβη εἰς σημαντικὰς μελέτας. Ἔγραψε: «Βιολογία» (1894), «Τὸ βιολογικὸν πρόβλημα τῆς σήμερον» (1896), «Ἡ φύσις τοῦ ἀνθρώπου» (1904), «Ἡ παιδικὴ ἡλικία τῶν ζῴων» (1912), «Ἡ ἐξέλιξις καὶ ὁ πόλεμος» (1915) καὶ πλείστας διατριβάς. Μ. Δ. Β.

**Μίτσελσον** (Michelson), ***Ἀλβέρτος Ἀβραάμ***. Ἀμερικανὸς φυσικὸς (βλ. λ. *Μίκελσον*).

**Μίτσερλιχ** (Mitscherlich), ***Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς χημικὸς (1794—1863). Τῷ 1821 ἐγένετο καθηγητὴς εἰς τὸ Βερολῖνον. Ἀνεκάλυψε τὸν ἰσομορφισμὸν καὶ τὸν διμορφισμόν, τὸ σεληνικὸν ὀξύ, τὸ ὑπερμαγγανικὸν ὀξὺ κλπ. Συνέγραψεν «Ἐγχειρίδιον χημείας» κλπ. Ἠσχολήθη μὲ τὴν ἔρευναν τοῦ θειϊκοῦ ὀξέος καὶ ἐγένετο ἀφορμὴ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ βενζολίου καὶ πολλῶν ἄλλων ἑνώσεων, καταστὰς οὕτω ἱδρυτὴς τῆς μεγίστης βιομηχανίας τῶν χρωμάτων τῆς πίσσης καὶ τῶν τεχνητῶν ἀρωματικῶν ὑλῶν. Ἐπίσης ἠσχολήθη πολὺ μὲ τὰ φαινόμενα τῶν ζυμώσεων, ὡς καὶ εἰς γεωλογικὰς ἐρεύνας. Σ. Γ.

**Μίτσιγκαν** (Michigan) *[Γεωγρ.]*. Πολιτεία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς. Τὰ ἐδάφη αὐτῆς ἀποτελοῦνται ἐκ δύο διακεκριμένων χερσονήσων, μεταξὺ τῆς 41° 40' καὶ τῆς 47° 30' βορ. πλάτ. καὶ τῆς 82° 20' καὶ 90° 10' δυτικοῦ μήκους. Ἔμβαδὸν 146.202 τ. χλμ. Κάτ. 2.810.000. Πρωτεύουσα *Λάνσιγκ*. Ἡ ἄνω χερσόνησος συνορεύει ἀπὸ βορρᾶ καὶ δυσμῶν μὲ τὴν Ἄνω Λίμνην, ἀπὸ ἀνατολῶν δὲ μὲ τὴν λίμνην Μίτσιγκαν καὶ τὴν περιφέρειαν Βίσκονσιν, Ἀγρία εἰς τὴν γενικήν της ἄποψιν, ἔχει ποικιλίαν ἐδάφους, ὅπερ ἀλλοῦ μὲν εἶναι ἄγονον καὶ ἀμμῶδες, ἀλλοῦ δὲ τελματῶδες καὶ ἀλλοῦ ὀρεινόν. Τὸ κλῖμα εἶναι ψυχρόν. Ἡ καλλιέργεια τῶν ἐδαφῶν δὲν εἶναι ἐκτεταμένη, ἡ δὲ ἁλιεία καὶ τὸ ἐμπόριον δερμάτων ἀποτελοῦν τὰς δύο κυριωτέρας πλουτοπαραγωγικὰς της πηγάς. Ἡ κάτω χερσόνησος, ἡ κυρίως Μίτσιγκαν, περιβρέχεται ἀπὸ τὴν λίμνην Μίτσιγκαν ἀπὸ δυσμῶν, ἀπὸ ἀνατολῶν δὲ καὶ ἀπὸ βορρᾶ ὑπὸ τῶν λιμνῶν Χουρὸν-Σαὶν-Κλαὶρ καὶ Ἔρι. Διαρρέεται ὑπὸ τοῦ Μεγάλου ποταμοῦ, τοῦ Ἁγίου Ἰωσὴφ καὶ τοῦ Σαγκινάβ, ἐκ τῶν ὁποίων οἱ πρῶτοι ἐκβάλλουν εἰς τὴν λίμνην Μίτσιγκαν καὶ ὁ τρίτος εἰς τὴν Χουρόν. Εὐφορωτάτη, παράγει παντὸς εἴδους δημητριακά. Ἐπίσης ἔχει πλούσια κοιτάσματα μετάλλων, κυρίως δὲ σιδήρου. Οἱ χειμῶνες εἶναι μακροὶ καὶ δριμεῖς, ἀλλ' ἡ ἀτμοσφαῖρα εἶναι ὑγρὰ καὶ γενικῶς τὸ κλῖμα γλυκύτερον τῶν ἄλλων ἀνατολικῶν περιφερειῶν. Ἡ κτηνοτροφία ἐπίσης εἶναι πολὺ ἀνεπτυγμένη. Ἔχει ἀνεπτυγμένας βιομηχανίας βαμβακουργίας καὶ σιδηρουργίας. Αἱ κυριώτεραι πόλεις τῆς πολιτείας εἶναι: *Λάνσιγκ, Ντετρόϊτ, Μονρόε, Τεκουμσέχ, Ἅγιος Ἰωσὴφ* καὶ *Ἂν Ἄρμπορ*. Ἡ Μίτσιγκαν ἀνεκαλύφθη καὶ κατῳκήθη ὑπὸ τῶν Γάλλων, οἵτινες ἔκτισαν τὴν πόλιν Ντετρόϊτ κατὰ τὸ 1670. Τῷ 1763 τὰ ἐδάφη αὐτὰ περιῆλθον εἰς τὴν Μεγάλην Βρεττανίαν, τῷ δὲ 1836 ἀπετέλεσε μίαν τῶν πολιτειῶν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Π. Γ. Λ.

**Μίτσιγκαν** (Michigan) ***λίμνη*** *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν πέντε μεγάλων βορειοαμερικανικῶν λιμνῶν, αἵτινες συγκοινωνοῦσαι πρὸς ἀλλήλας ἐκχύνουσι τὰ πλεονάζοντα ὕδατά των διὰ τοῦ ποταμοῦ Ἅγιος Λαυρέντιος. Καταλαμβάνει τὸ ΝΔ. τμῆμα αὐτῶν καὶ εἶναι ἡ μόνη ἀνήκουσα ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὸ ἔδαφος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Περιβάλλεται ὑπὸ τῶν πολιτειῶν Οὐΐσκονσιν πρὸς Δ., Μίτσιγκαν πρὸς Β. καὶ Α. καὶ Ἰνδιάνας καὶ Ἰλλινόϊς πρὸς Ν. Ἔχει σχῆμα στενόμακρον καὶ κατεύθυνσιν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. Ἔχει ἔκτασιν 118.812 τετρ. χλμ., μέγιστον μῆκος 512 καὶ πλάτος 104, τὸ μέσον δὲ βάθος αὐτῆς κυμαίνεται περὶ τὰ 200 μ. Αἱ ὄχθαι τῆς βορείας παραλίας της σχηματίζουσι δύο βαθυτάτους κόλπους, τὸν *Πράσινον* (Green Bay) πρὸς Δ. καὶ τὸν *Τράβερση* πρὸς Α. Ἐπίσης εἰς τὸ βόρειον τμῆμα ἀναδύονται πλεῖσται νησῖδες: ἡ *Μπῆβερ*, ἡ *Οὐάσινγκτων*, ἡ *Βόρειος* καὶ *Νότιος Μανίτου* κλπ. Κυριώτεροι ἐκ τῶν ἐκβαλλόντων εἰς τὴν Μίτσιγκαν ποταμῶν εἶναι οἱ: *Μάνιστη, Μούσκεγκον, Μενόμινη, Φὸξ* κλπ. Ἡ διὰ τὴν ναυσιπλοΐαν σημασία τῆς Μίτσιγκαν ηὔξησε κατόπιν τῆς κατασκευῆς τῆς μεγάλης διώρυγος τοῦ Σικάγου, ἡ ὁποία ἑνώνει τὴν λίμνην μετὰ τοῦ Μισσισιπῆ. Κυριώτεροι λιμναῖοι λιμένες τῆς Μίτσιγκαν εἶναι τὸ *Σικάγον*, τὸ *Μιλουόκη*, τὸ *Μάνιστη*, τὸ *Σεμπόϋγκαν*, τὸ *Ἐσκανάμπα*, τὸ *Μίτσιγκαν*, τὸ *Τράβερση Σίτυ* κλπ. Ἐκτὸς τῆς συγκοινωνιακῆς χρησιμότητός της ἡ Μίτσιγκαν ἔχει καὶ πλεῖστα ἄξια λόγου ἁλιευτικὰ πεδία, ἀποδίδοντα μεγάλας ποσότητας σολωμῶν καὶ ἄλλων ἰχθύων. Χ. Δ.

**Μιτσικέλι** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἠπείρου, κείμενον ΒΑ. τῶν Ἰωαννίνων (ὑψ. 1800 μ.). Ἀρχεται ἀπὸ τοῦ Δρίσκου καὶ φθάνει μέχρι τῆς Νεμέρτσικας, ἀπὸ τῆς ὁποίας διαχωρίζεται διὰ τοῦ αὐχένος Δέμα (ὑψ. 800 μ.). Ἐκ τοῦ Μιτσικελίου πηγάζουν πολλαὶ πηγαί, διὰ τοῦ ὕδατος τῶν ὁποίων τροφοδοτεῖται ἡ λίμνη τῶν Ἰωαννίνων. Ἡ δυτική του πλευρά, ἡ ἀπέναντι τῶν Ἰωαννίνων, εἶναι ἐντελῶς γυμνή, ἡ δὲ βορεία δασωμένη. Ὄπισθεν αὐτοῦ βορείως ἐκτείνεται ἡ ἐπαρχία τοῦ Ζαγορίου. Εἰς ἀμφοτέρους τοὺς πρόποδας κεῖνται ἀρκετὰ χωριά, ἐξ ὧν τὰ τῶν βορείων εἶναι κατάφυτα καὶ κατάρρυτα. Ἡ ὑψηλοτέρα του κορυφὴ κεῖται ἄνωθεν τοῦ χωρίου Λυγγιάδες, ἀπέναντι ἀκριβῶς τῶν Ἰωαννίνων. Χ. Ι. Σ.

**μιτσικόρουδα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐν Κύπρῳ ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *νάρκισσος* (βλ.λ.).

**μιτσινῖγοι** (οἱ). Λέγονται οὕτω ὑπὸ τῶν Κρητῶν παλαιά τινα πολεμικὰ ὅπλα ἐμπροσθογεμῆ, μακρότατα, μετὰ πυριτολίθου. Ὠνομάσθησαν οὕτω διότι, κατὰ τὴν παράδοσιν, διένειμεν αὐτὰ εἰς τοὺς Κρῆτας ὁ Ἑνετὸς ναύαρχος Μοτσενῖγος κατὰ τὴν πρώτην ἐπανάστασιν τῶν Κρητῶν (τῷ 1692) ὑπὸ τὸν Ἰωάννην Μαχαιριώτην ἐναντίον τῆς τουρκοκρατίας. Ν. ΚΛΣ

**Μιτσίνσκι** (Micinski), ***Θαδδαῖος***. Πολωνὸς ποιητὴς (1873—1919). Ἔγραψε λυρικὰς συνθέσεις καὶ δραματικὰ ἔργα. Ἐκ τῶν πρώτων ἀναφέρεται ἰδιαιτέρως ἡ συλλογή του «Μέσα εἰς τὴν ὁμίχλην τῶν ἄστρων» (1902), διαπνεομένη ἀπὸ ρωμαντικὸν συμβολισμόν, ἐκ τῶν δευτέρων δὲ τὰ ἔργα «Πρίγκιψ Ποτέμκιν» (1907), «Μαρκῖνος Λούβα» κ. ἄ. —Ω.

**Μιτσίσλαος** (Mieczyslaw). Ὄνομα διαφόρων βασιλέων καὶ δουκῶν τῆς Πολωνίας (βλ. λ. *Μικίσλαος*).

**Μίτσκεβιτς** (Mickiewicz), ***Ἀδάμ***. Μέγας Πολωνὸς ποιητὴς (1798—1855). Ἐσπούδασε φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βίλνας, ἦτο δὲ φοιτητὴς ἀκόμη, ὅταν ἤρχισε συνθέτων τὰ πρῶτά του ποιήματα. Διορισθεὶς τῷ 1819 καθηγητὴς εἰς Κόβνο, ἐδημοσίευσε κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐκεῖ παραμονῆς του δύο θαυμασίας μπαλλάντας,—«Switez» καὶ «Switezianka»,—εἰς τὰς ὁποίας χρησιμοποιεῖ τὸ ὑλικὸν ἑνὸς τοπικοῦ μύθου, διὰ νὰ πλάσῃ ἐξ αὐτοῦ θελκτικῆς ἐμπνεύσεως καὶ δεξιοτεχνίας δημιουργήματα. Ἐπιστρέψας ἐπ' ἀδείᾳ εἰς Βίλναν παρέμεινεν ἐπὶ ἔτος ὁλόκληρον μεταξὺ τῶν παλαιῶν του συμμαθητῶν καὶ φίλων. Ἀρχίζει τότε νὰ μελετᾷ μετὰ πάθους τοὺς Ἄγγλους ποιητάς, τὸν Βύρωνα ἰδίως, καὶ τοὺς Γερμανοὺς κατόπιν. Τῷ 1822 ἐκδίδει τὸν πρῶτον τόμον τῶν ποιημάτων του, εἰς τοῦ ὁποίου τὸν πρόλογον ἐκθέτει μετὰ σαφηνείας καὶ τόλμης τὸ φιλολογικόν του πρόγραμμα· ὁ Μίτσκεβιτς ἐκφράζει ἐν αὐτῷ τὸν θαυμασμόν του πρὸς τὴν ἑλληνικὴν φιλολογίαν, θεωρῶν αὐτὴν ὡς τὴν τελειοτέραν ἐκδήλωσιν ὅλων τῶν πνευματικῶν δυνάμεων τοῦ ἀνθρώπου, καὶ ἐπικρίνει ἀνεπιφυλάκτως τοὺς Λατίνους καὶ Γάλλους ποιητάς, τῶν ὁποίων τὰ ἔργα εὑρίσκει συμβατικά, παθὼς καὶ ὅλην τὴν ἀπομιμουμένην τούτους πανευρωπαϊκὴν λογοτεχνίαν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος· ἐπιμένει τέλος ἐπὶ τῆς ἀνάγκης τοῦ νὰ δημιουργηθῇ μία ἐθνικὴ πολωνικὴ ποίησις «ἥτις ἐπιδρῶσα ἐπὶ τοῦ χαρακτῆρος ἑνὸς ὁλοκλήρου λαοῦ νὰ δυνηθῇ νὰ ἐπιτελέσῃ τὴν ἀποστολήν της».

*Ἀδὰμ Μίτσκεβις.*

Τοὺς στίχους ἐν τούτοις τῶν πρώτων συνθέσεών του διακρίνει μεγάλη πρωτοτυπία, αἰσθητὴ δὲ εἶναι ἡ ἐπ' αὐτῶν ἐπίδρασις τοῦ Σίλλερ, τοῦ Γκαῖτε καὶ τοῦ Μπυρζέ. Ἐπανελθὼν εἰς Κόβνο, ἐξέδωκε τῷ 1823 δευτέραν συλλογὴν ποιημάτων του, ἐν τῇ ὁποίᾳ περιλαμβάνονται τὸ 2ον καὶ 4ον μέρος τῶν «Dziady», ποιητικοῦ ἔργου ἀκαθορίστου μορφῆς, προσομοιάζοντος κάπως πρὸς λυρικὸν δρᾶμα τοῦ τύπου τοῦ «Φάουστ». Εἰς τὸ ἔργον του αὐτὸ ὁ ποιητὴς ἑρμηνεύει τὴν στοργήν του πρὸς τοὺς ἀδυνάτους καὶ τοὺς δυναστευομένους καὶ τὸ μῖσός του πρὸς τοὺς τυράννους, ἐνῷ ταυτοχρόνως μᾶς δίδει ἀνάγλυφον τὴν ψυχικὴν ἀπεικόνισιν ἑνὸς νέου ποῦ εἶναι ἐρωτευμένος τρελλὰ καὶ χωρὶς ἐλπίδα. Εἶναι μία σειρὰ διαλόγων, μονολόγων, τραγουδιῶν, χωρὶς σχεδὸν σύνδεσμον μεταξύ των, ἀλλὰ μὲ συχνοὺς ὑπερόχους πτερυγισμούς. Τὸ 1ον μέρος τῶν «Dziady» ἐδημοσιεύθη βραδύτερον, τὸ δὲ 3ον ἀφιερωμένον εἰς τοὺς συμμαθητάς του, εἰς τοὺς «μάρτυρας τῆς ἐθνικῆς πολωνικῆς ὑποθέσεως», περιγράφει τὰς καταπιέσεις καὶ τὰς ὑπερβασίας, ἃς ἡρωϊκῶς ὑπέστατο ἡ φιλόπατρις ἐκείνη νεολαία, τῆς ὁποίας ἀρχηγὸς ἦτο ὁ Θωμᾶς Τσάν. Εἰς τὸν δεύτερον τόμον περιλαμβάνεται ἐπίσης τὸ ποίημά του «Grazyna», κλασσικοῦ ἀπολύτως τύπου, ἐμπνευσμένον ἀπὸ ἕνα λιθουανικὸν μῦθον, μὲ ἡρωΐδα νεαρὰν κόρην θυσιαζομένην διὰ τὸ συμφέρον τῆς πατρίδος της. Ἀλλ' ἡ πολιτικὴ τῆς «Ἱερᾶς Συμμαχίας» εἶχεν ἀρχίσει τὴν ἐποχὴν ἐκείνην νὰ κατισχύῃ ἐπὶ τῶν κυβερνήσεων τοῦ τσάρου Ἀλεξάνδρου Α', ὅστις μέχρι τότε ἐθεωρεῖτο φιλελεύθερος ἡγεμών, καὶ αἱ διάφοροι ἑνώσεις τῶν Πολωνῶν σπουδαστῶν ἤρχισαν νὰ καταδιώκωνται. Ὁ Μίτσκεβιτς συνελήφθη ὁμοῦ μὲ πολλοὺς ἐκ τῶν φίλων του καὶ ἐρρίφθη ἐπὶ πεντάμηνον εἰς τὰς φυλακὰς τῆς Βίλνας. Ἡ καθειρξίς του ἐκείνη ἐτόνωσε καὶ ἤνδρωσε περισσότερον τὸν χαρακτῆρα τοῦ ποιητοῦ καὶ τὸν ἔκαμε τρόπον τινὰ νὰ ἐννοήσῃ καλύτερον τὸν ὑψηλόν του προορισμόν. Ἐκτοπισθεὶς κατόπιν εἰς Ρωσσίαν, ἐγκατεστάθη ἐν ἀρχῇ εἰς Πετρούπολιν (1824), ὕστερον εἰς Ὀδησσὸν (1825) καὶ τέλος εἰς Μόσχαν, ὅπου ὁ πρίγκιψ Γκαλιτσίν, γενικὸς διοικητὴς τῆς πόλεως, ἔδωκεν εἰς αὐτὸν θέσιν τινὰ εἰς τὰ γραφεῖά του. Ἐδῶ ἀρχίζουν διὰ τὸν ποιητὴν αἱ ἀθλιότητες τῆς ἐξορίας: χωρὶς περιουσίαν, μὲ μόνον πόρον τοὺς καρποὺς τῆς ἐργασίας του, πίπτει ὑπὸ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν βιβλιοπωλῶν καὶ τῶν ἐφημερίδων, παλαίων διαρκῶς κατὰ τῶν δυσχερειῶν τοῦ βίου. Δημοσιεύει ἐντούτοις ἐν Μόσχᾳ ἕνα τόμον «Σοννέτων», ἐκ τῶν ὁποίων τὰ πλεῖστα ἔχουν ὡς θέμα τὸν ἔρωτα, ἀλλ' ἕνα ἔρωτα ὀλιγώτερον παράφορον καὶ περισσότερον μελαγχολικὸν παρ' ὅσον εἰς τοὺς «Dziady». Τὰ ὑπόλοιπα, ἐμπνευσμένα ἀπὸ ἕνα ταξίδι του εἰς τὴν Κριμαίαν, χρησιμοποιοῦν ὅλας τὰς πηγὰς συγκεντρωμένης τέχνης διὰ νὰ δώσουν εἰς ἀναγλύφους εἰκόνας τὰς φυσικὰς καλλονὰς τοῦ τόπου ἐκείνου καὶ τὰς ἐξ αὐτῶν ἐντυπώσεις τοῦ θεατοῦ. Εὑρισκόμενος εἰς Μόσχαν ὁ Μίτσκεβιτς γνωρίζεται μὲ πολλοὺς Ρώσους ποιητὰς καὶ λογίους τῆς ἐποχῆς του, συνδέεται δὲ διὰ φιλίας μὲ τὸν τόσον προώρως ἐκλιπόντα ποιητὴν Ποῦσκιν, μὲ τὸν ὁποῖον τὸν ἑνώνει στενὴ συγγένεια σκέψεως καὶ ἐμπνεύσεως· καὶ οἱ δύο εἶχον τὸν ἴδιον ἔρωτα διὰ τὴν ἐλευθερίαν καὶ τὸν

Digitized by Google

ἴδιον θαυμασμὸν διὰ τὸν Βύρωνα. Ἡ διαμονή του εἰς Μόσχαν σημειοῦται μὲ τὴν παραγωγὴν ἑνὸς ἀκόμη ἀριστουργήματος, τοῦ «Κονράνδου Βάλλενροντ», ἐκδοθέντος τῷ 1827 ἐν Πετρουπόλει. Τὸ ποίημα τοῦτο, τοῦ ὁποίου τὸ θέμα εἶναι εἰλημμένον ἀπὸ τὴν ἐλάχιστα γνωστὴν κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἱστορίαν τῆς Λιθουανίας τοῦ ΙΣΤ′ αἰῶνος, ἔχει κύριον ἥρωα ἕνα Λιθουανόν, ὅστις γίνεται ἱππότης τοῦ τάγματος τῶν Τευτόνων, ὅταν δὲ κατόπιν ἔφθασε νὰ γίνῃ καὶ ἀρχηγὸς αὐτοῦ, τὸ προδίδει καὶ τὸ ἄγει εἰς τὴν καταστροφήν, ἐκδικούμενος τὰ δεινά, τὰ ὁποῖα εἶχεν ὑποστῇ ἡ πατρίς του ἀπὸ τοὺς βαρβάρους ἐκείνους ἐπιδρομεῖς. Ὑπὸ τὴν ἀλληγορίαν τοῦ μύθου διαφαίνεται σαφῶς ἡ Πολωνία, ἀναμένουσα τὴν στιγμήν, καθ' ἣν θὰ δυνηθῇ νὰ λάβῃ ἐκδίκησιν ἀπὸ τοὺς τυράννους της. Χάρις ἐν τούτοις εἰς ἐπιτηδείαν διατύπωσιν τοῦ προλόγου, κατωρθώθη ὥστε τὸ πραγματικὸν περιεχόμενον τοῦ ἔργου νὰ διαφύγῃ τὴν προσοχὴν τῆς ρωσικῆς λογοκρισίας. Διὰ πρώτην φορὰν τὸ πατριωτικὸν πολωνικὸν αἴσθημα ἐξεφράσθη μετὰ τόσης θέρμης καὶ τόσης τολμηρότητος, ὅσης εἰς τὸ ποίημα τοῦτο, τοῦ ὁποίου περικοπαί τινες, ὑπερόχου πράγματι λυρισμοῦ, ἐκράτησαν ἔκτοτε τὴν θέσιν μυστικοῦ ἐθνικοῦ ὕμνου τῆς Πολωνίας μέχρι τῆς ἀπελευθερώσεως αὐτῆς.

Ἀπὸ τοῦ 1829 ὁ Μίτσκεβιτς ἐγκαταλείπει τὴν Ρωσίαν καὶ ταξιδεύει εἰς Γερμανίαν, ὅπου ἐγνωρίσθη μὲ τὸν Γκαῖτε, εἰς Ἰταλίαν τῆς ὁποίας ἐπισκέπτεται τὰς κυριωτέρας πόλεις, καὶ εἰς Ἑλβετίαν· παραμένει ἀρκετοὺς μῆνας εἰς τὸ μέγα δουκᾶτον τοῦ Πόζεν καὶ τέλος ἐγκαθίσταται εἰς τὴν Δρέσδην. Ἐκεῖ συνθέτει μεταξὺ ἄλλων τὸ 3ον μέρος τοῦ «Dziady» καὶ τὸ ποίημά του «Πρὸς τοὺς φίλους Μοσχοβίτας». Τῷ 1832 μεταβαίνει εἰς Παρισίους, ὅπου εὑρίσκει πλείστους ὅσους θαυμαστὰς καὶ φίλους. Ἐκδίδει ἐκεῖ τὸ «Βιβλίον τοῦ πολωνικοῦ ἔθνους», ἐκθέτων ἐν αὐτῷ τὰς ἀντιλήψεις του περὶ τῶν πεπρωμένων καὶ τῆς ἀποστολῆς τῆς πατρίδος του καὶ καταφερόμενος κατὰ τῶν ἡγεμόνων τῆς Εὐρώπης ὅλης, τοὺς ὁποίους βλέπει ἐχθροὺς τῆς πολωνικῆς ὑποθέσεως. Τῷ 1834 περατώνει τὸ ἔργον του «Ὁ κὺρ Θαδαῖος», σύνθεσιν μεγάλης πνοῆς, ἀνοίγουσαν νέους ὁρίζοντας εἰς τὴν πολωνικὴν ποίησιν. Ὁ ρωμαντισμὸς εἶχεν ἐξάψει τὰς φαντασίας καὶ δημιουργήσει ἕνα πλαστὸν κόσμον ἀπὸ χιμαιρικοὺς ἥρωας, ὁμιλοῦντας ὡραίαν πάντοτε καὶ συχνὰ ἀκατάληπτον γλῶσσαν. Εἰς τὸν «Κὺρ Θαδαῖον» τοῦ Μίτσκεβιτς ἡ νεφελώδης ρέμβη ἀντικαθίσταται ἀπὸ τὴν διεισδυτικὴν παρατήρησιν τῆς ζωῆς, μέχρι τῶν ἐλαχίστων αὐτῆς λεπτομερειῶν, καὶ τὰ φανταστικὰ ἢ ὑπεράνθρωπα πρόσωπα ἐξαφανίζονται, διὰ νὰ δώσουν τὴν θέσιν των εἰς ὄντα ὑπαρκτά, ποῦ δὲν κάμνουν τίποτε τὸ ὑπερβολικόν, χωρὶς νὰ εἶναι διὰ τοῦτο καὶ ὀλιγώτερον ἐνδιαφέροντα. Ὁ «Κὺρ Θαδαῖος» δὲν εἶναι ἔπος ἐν τῇ κυρίᾳ ἐννοίᾳ τῆς λέξεως, ἀλλ' οὔτε καὶ ἁπλοῦν εἰδύλλιον εἶναι· μετέχον καὶ τοῦ ἑνὸς καὶ τοῦ ἄλλου εἴδους, ἀποτελεῖται ἀπὸ μίαν σειρὰν ζωντανῶν διηγήσεων, εἰς τὰς ὁποίας ἡ βαθεῖα αἴσθησις τῶν καλλονῶν τῆς φύσεως, ἡ μαγευτικὴ περιγραφικότης, ἡ χάρις τοῦ ἐναλλὰξ σοβαροῦ καὶ παιγνιώδους διαλόγου, ὁ γενικῶς συμπαθὴς χαρακτὴρ τῶν προσώπων καὶ ἡ διαθέουσα τὸ ὅλον ἔργον πατριωτικὴ πνοὴ δίδουν ὅλα μαζὶ ἕνα σύνολον τελειότητος ποῦ δὲν ἔχει ἴσως τὸ ὅμοιόν του εἰς τὴν ποιητικὴν παραγωγὴν κανενὸς τόπου. Νυμφευθεὶς τῷ 1834 ἐν Παρισίοις ὁ ποιητὴς εὑρέθη ἐνώπιον σοβαρωτέρων τώρα βιοτικῶν δυσχερειῶν καὶ ἠναγκάσθη νὰ γράφῃ γαλλιστὶ εἰς διάφορα περιοδικά, ἐνῷ συγχρόνως ἐπεδίδετο εἰς τὴν συγγραφὴν ἑνὸς ἱστορικοῦ δράματος. Τὸ ἔργον του ὅμως τοῦτο, παρὰ τὰς ἐπαινετικὰς περὶ αὐτοῦ κρίσεις τοῦ Ἀλφρέδου ντὲ Βινὺ καὶ τῆς Γεωργίας Σάνδης, δὲν ἀνεβιβάσθη ὑπὸ τοῦ θεάτρου τῆς Πύλης τοῦ Ἁγίου Μαρτίνου, διὰ τὸ ὁποῖον προωρίζετο. Ἀποκαρδιωμένος δια τὴν ἀποτυχίαν αὐτὴν ὁ Μίτσκεβιτς ἐπεδόθη εἰς ἱστορικὰς μελέτας καὶ ἐξέδωκε, γαλλιστὶ τὸ πρῶτον τῷ 1867, τὸ ἔργον του: «Οἱ πρῶτοι αἰῶνες τῆς ἱστορίας τῆς Πολωνίας», τὸ ὁποῖον, ἂν καὶ δὲν διακρίνεται δι' ἀπόλυτον ἱστορικὴν ἀκρίβειαν λόγῳ τῆς τότε ἀνεπαρκείας τῶν πηγῶν, ἔχει ὅμως ἄλλα πρώτης τάξεως προτερήματα, εὐφυᾶ κατάταξιν καὶ συσχέτισιν τῶν γεγονότων, ἐξαίρετον ἐπιτυχίαν χαρακτηρισμοῦ προσώπων καὶ πραγμάτων καὶ ἔκτυπον περιγραφικότητα. Ἀλλ' αἱ αὐξάνουσαι ὁλονὲν βιοτικαὶ δυσχέρειαι τὸν ἠνάγκασαν ν' ἀναζητήσῃ οἱονδήποτε σταθερὸν βιοποριστικὸν ἐπάγγελμα, τῷ προσέφεραν δὲ τότε καὶ ἀπεδέχθη τὴν ἕδραν τῆς λατινικῆς φιλολογίας εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Λωζάννης (1839). Μετὰ ἓν ἔτος ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους διωρίσθη καθηγητὴς τῶν σλαυϊκῶν γλωσσῶν καὶ λογοτεχνιῶν εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Τὰ μαθήματά του ἐκεῖνα ἐσημείωσαν ἐπὶ ἀρκετὸν χρόνον ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν καὶ προεκάλεσεν λίαν ἐπαινετικὰς κρίσεις ἐκ μέρους τῶν Γάλλων. Ἀλλ' οἱ συμπατριῶταί του ἤρχισαν νὰ τὸν κατηγοροῦν ὡς πανσλαυϊστήν, ὡς διακοσμοῦντα τὰ ἱστορικὰ δεδομένα μὲ χρωματισμοὺς τῆς ἰδίας αὐτοῦ φαντασίας καὶ ὡς ἀναμιγνύοντα πολὺ τὴν θρησκείαν εἰς τὴν ἱστορίαν, τὴν ὁποίαν ἱστορίαν ἐνεφάνιζεν οὐχὶ πράγματι ὁποία εἶναι, ἀλλ' ὅπως κατ' αὐτὸν ἔπρεπε νὰ εἶναι. Τὸ ἀληθὲς ἦτο ὅτι ἀπὸ τοῦ 1843 ὁ Μίτσκεβιτς εἶχε γίνῃ ἐνθουσιώδης ὀπαδὸς τῶν διδασκαλιῶν τοῦ Τοβιάνσκι, περιέργου μυστικιστοῦ, ὅστις ἰσχυρίζετο ὅτι θ' ἀναζωογονήσῃ τὸν Χριστιανισμὸν καὶ θὰ ἐξαγνίσῃ δι' αὐτοῦ τὰ κράτη καὶ τὰ ἔθνη, καθὼς ἐπίσης καὶ τὴν κοινωνίαν, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπέσχετο τὴν ἔλευσιν νέου Μεσσίου. Μετὰ τὴν ἀπέλασιν τοῦ Τοβιάνσκυ ἐκ Γαλλίας, ὁ Μίτσκεβιτς δὲν ἐδίστασε νὰ μετατρέψῃ τὴν ἕδραν τοῦ μαθήματος τῶν σλαυϊκῶν γλωσσῶν ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας εἰς βῆμα μεσσιανισμοῦ (βλ. λ. *μεσσιανισμὸς* καὶ *Βρόνσκυ*), ἐδίδασκε δ' ἀπ' αὐτοῦ σοσιαλιστικὰς καὶ ἀνθρωπιστικὰς θεωρίας, ἀσχέτους ὅλως πρὸς τὴν φιλολογίαν, συνοδευομένας προσθέτως μὲ δριμείας ἐπικρίσεις εἰς βάρος τῶν εὐρωπαϊκῶν κυβερνήσεων καὶ μὲ ἐκδηλώσεις ἐξ ἄλλου ἀληθοῦς λατρείας πρὸς τὸν Ναπολέοντα Α′. Ἡ κυβέρνησις τοῦ Λουδοβίκου - Φιλίππου ἀνησυχήσασα ἐν τέλει ὑπέδειξεν εἰς τὸν Μίτσκεβιτς νὰ παραιτηθῇ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον καὶ ἔπραξεν οὗτος (1844).

Ὅταν ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις τοῦ Μιλάνου κατὰ τῆς Αὐστρίας, ὁ Μίτσκεβιτς ἔσπευσε ν' ἀναχωρήσῃ εἰς Ρώμην, ὅπου κατήρτισε τὸν πυρῆνα πολωνικῆς λεγεῶνος, ἥτις ἐπολέμησε ἀνδρείως ἐν Λομβαρδίᾳ κατὰ τῶν Αὐστριακῶν. Τῷ 1852 κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου κατεῖχεν ἐν Γαλλίᾳ θέσιν βιβλιοθηκαρίου, τὴν ὁποίαν ἐγκατέλιπε διὰ νὰ μεταβῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ἀφωσιώθη εἰς τὸν καταρτισμὸν πολωνικῶν λεγεώνων κατὰ τῶν Ρώσων. Ἀλλ' ἠσθένησε τῷ 1855 ἐκ χολέρας, ἐκ τῆς ὁποίας καὶ ἀπέθανεν. Ὁ νεκρὸς αὐτοῦ μετεκομίσθη εἰς Παρισίους καὶ ἐνεταφιάσθη εἰς Μονμορανσύ, μεταξὺ τῶν τάφων πολλῶν ἄλλων διακεκριμένων συμπατριωτῶν του. Τῷ 1890 ὅμως μετεφέρθη θριαμβευτικῶς εἰς Κρακοβίαν καὶ ἀπετέθη εἰς τὰς κρύπτας τοῦ Wawel, παρὰ τοὺς νεκροὺς τῶν μεγαλυτέρων ἡρώων καὶ βασιλέων τῆς Πολωνίας. Τῷ 1898, ἐπὶ τῇ συμπληρώσει ἑκατονταετηρίδος ἀπὸ τῆς γεννήσεώς του, ἐτελέσθησαν ἐν Πολωνίᾳ μεγάλαι ἑορταί, ἐστήθησαν δὲ πρὸς τιμὴν αὐτοῦ δύο μνημεῖα, εἰς Κρακοβίαν τὸ ἓν καὶ εἰς Βαρσοβίαν τὸ ἄλλο.

Τὰ ποιήματα τοῦ Μίτσκεβιτς μετεφράσθησαν εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Εὐρύτης διανοίας, ἐξαιρετικὴ συνθετικὴ ἱκανότης, βαθεῖα καὶ λεπτοτάτη αἴσθησις τῆς φύσεως, γλῶσσα καὶ ὕφος ἀσυγκρίτου διαυγείας, δυνάμεως καὶ γλυκύτητος, εἶναι τὰ προέχοντα προσόντα τοῦ ἔργου του. Ἀλλ' ὑπὲρ πάντα ταῦτα, τὴν μεγάλην δύναμιν τῆς ἰδιοφυΐας του ἀποτελεῖ τὸ ἔνθουν πατριωτικὸν αἴσθημα, ἀπὸ τὸ ὁποῖον τὸ ἔργον του πάλλεται ἀπ' ἄκρου εἰς ἄκρον. Ἀναμφισβήτητον εἶναι ὅτι ἡ ποίησις τοῦ Μίτσκεβιτς συνέτεινεν εἰς τὴν διατήρησιν τοῦ ἱεροῦ πυρὸς τῆς πρὸς τὴν πατρίδα ἀγάπης μεταξὺ τῶν Πολωνῶν τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος, δι' ὃ καὶ δικαίως ἐδόθη εἰς αὐτὸν ὁ τίτλος τοῦ ἐθνικοῦ ποιητοῦ τῆς Πολωνίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Th. Ziemba*, «Ἀδὰμ Μίτσκεβιτς» (Κρακοβία 1886).—*H. Biegeleisen*, «Ὁ κὺρ - Θαδαῖος» κριτικὴ ἔκδοσις (Κρακοβία 1887).—*Marie Gorecka* «Ἀναμνήσεις περὶ τοῦ Ἀδὰμ Μίτσκιεβιτς». — *K. Zieleniecki*, «Ὁ Ἀδὰμ Μίτσκεβιτς καὶ ὁ Πούσκιν ἐν Ὀδησσῷ» (Bibl. Warszawska. 1857, τ. Γ′). «Μεσσιανισταὶ καὶ Σλαυόφιλοι» (Κρακοβία 1888).—*L. Mickiewitz* (υἱοῦ τοῦ ποιητοῦ), «Ὁ Ἀδὰμ Μίτσκεβιτς, ἡ ζωὴ καὶ τὸ ἔργον του» (Παρίσιοι 1888). Γ. Ζ.

**Μιτσοακὰν** (Michoacán, ἡ πλήρης ὀνομασία εἶναι Michoacán de Ocampo) *[Γεωγρ.]*. Πολιτεία τῆς Μεξικανικῆς ὁμοσπονδίας, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Εἰρηνικοῦ μεταξὺ τῶν παραλλήλων 17° 53′—20° 33′ Β. πλάτους καὶ τῶν μεσημβρινῶν 99° 57′—103° 43′ Δ. μήκους Γκρήνουϊτς, καὶ περιοριζομένη ὑπὸ τῶν πολιτειῶν Γκουερρέρο πρὸς ΝΑ., Μεξικὸν πρὸς ΒΑ., Κουερετάρο καὶ Γκουαναχουάτο πρὸς Β. καὶ Χαλίσκο καὶ Κολίμα πρὸς Δ. Ἔχει ἔκτασιν 60.083 τ. χλμ., πληθυσμὸν (1921) 939.849 κατ., καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Μορέλια* (κάτ. 31.148), παλαιότερον δὲ τὴν *Τέπικ*. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς ἐκτείνεται ἐπὶ τῶν κλιτύων τῶν κατερχομένων ἀπὸ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Ἀναχουὰκ πρὸς τὴν παραλίαν τοῦ Εἰρηνικοῦ. Ἡ χώρα διασχίζεται ὑπὸ καταφύτων καὶ πολυύδρων κοιλάδων, διακόπτεται δὲ ὑπὸ μικρῶν βουνοσειρῶν καὶ λοφοσειρῶν. Ὑψηλότεραι κορυφαὶ εἶναι τὰ ὄρη *Πατάμπαν* (3.750 μ.) πρὸς ΒΔ. καὶ *Τανσιτάρο* (3.859 μ.) πρὸς Β., πλεῖστα δὲ ἡφαίστεια ὑψοῦνται εἰς διάφορα σημεῖα τῆς χώρας. Ἡ παραλία εἶναι ἀμμώδης καὶ ἀλίμενος, ἄνευ προεξοχῶν καὶ κολπώσεων, ἓν δὲ μόνον ἀκρωτήριον, τὸ Τεχουπάν, προεξέχει εἰς τὸ Δ. τμῆμα αὐτῆς. Οἱ ποταμοὶ εἶναι πολυάριθμοι, ἀρδεύοντες ἄριστα τὸ ἔδαφος τῆς πολιτείας, οὐδεὶς ὅμως ἐξ αὐτῶν εἶναι πλωτός. Σπουδαιότερος τούτων εἶναι ὁ καθορίζων τὸ μετὰ τῆς πολιτείας Γκουερρέρο ὅριον *Ρίο ντὲ λὰς Μπάλσας* καὶ ὁ *Ρίο Λέρμα*, ἐκβάλλων εἰς τὴν παρὰ τὴν ΒΔ. μεθόριον λίμνην Τσαπάλα. Ὁ πληθυσμὸς περιλαμβάνει πολλοὺς μιγάδας καὶ Ἰνδοὺς τῶν φυλῶν Ταράσκας, Ναχουάτκα, Τσιτσιμέκος κλπ. Τὸ ὑπέδαφος ἐγκλείει πλεῖστα μεταλλεύματα ἀργύρου, χαλκοῦ, μολύβδου, ὑδραργύρου, σιδήρου καὶ ὀρυχεῖα γαιάνθρακος. Ἐπίσης τὸ ἔδαφος εἶναι κατάλληλον διὰ πάσης φύσεως καλλιεργείας, ἀπὸ τῶν τροπικῶν προϊόντων (κακάου, ζαχαροκαλάμου, καφέ, ἰνδικοῦ, βάμβακος), τὰ ὁποῖα βλαστάνουσιν εἰς τὰς ἐγγὺς τῆς παραλίας θερμὰς ζώνας, μέχρι τῶν προϊόντων τῶν εὐκράτων ζωνῶν (σιτηρῶν, λαχανικῶν, ἑσπεριδοειδῶν κλπ.), τὰ ὁποῖα βλαστάνουσιν ἐπὶ τοῦ πρὸς Β. ὑψιπέδου. Αἱ συγκοινωνίαι εἶναι ἀτελεῖς, ἐξυπηρετούμεναι ὑπὸ ὀλίγων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, ἀνὰ τὸ Β. τμῆμα μόνον ἐκτεινομένων. Λιμένες ἄξιοι λόγου ἐλλείπουσι παντελῶς. Ἡ βιομηχανία εἶναι μικρά, ἐπίσης δὲ τὸ ἐμπόριον εἶναι, ἐλλείψει ἀρτίων συγκοινωνιῶν, περιωρισμένον. Ἡ Μιτσοακὰν ἀποτελεῖ πολιτείαν τῆς ὁμοσπονδίας ἀπὸ τοῦ 1824. Χ. Δ.

**Μιτσοτάκης,** ***Ἰωάννης Γ.*** Ἐγεννήθη ἐν Χαλέπᾳ Χανίων κατὰ τὸ 1816. Ἤκουσε μαθήματα φιλολογίας ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ καὶ ἐχρημάτισε διδάσκαλος ἐν Βραΐλᾳ καὶ εἶτα γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐσωτερικῶν τῆς Ἑλλάδος καὶ βραδύτερον γραμματεὺς τοῦ ἐν Χανίοις γενικοῦ προξενείου τῆς Ἑλλάδος. Ἐν ἔτει 1863 διωρίσθη ὑποπρόξενος τῆς Ρωσίας ἐν Ἡρακλείῳ Κρήτης, διατελέσας ὡς τοιοῦτος ἐπὶ τριάκοντα τρία ἔτη. Κατὰ τὴν μεγάλην κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866 ὑπῆρξεν ἐν Ἡρακλείῳ ὁ πολύτιμος σύνδεσμος μεταξὺ τῶν ἐν Ἀθήναις καὶ Σύρῳ ἐπαναστατικῶν ἐπιτροπῶν καὶ τῶν ἐπαναστατῶν τῶν δώδεκα ἀνατολικῶν ἐπαρχιῶν τῆς νήσου, ἐργασθεὶς μετ' ἄλλων εἰς τὴν ὀργάνωσιν καὶ ὑποστήριξιν ἐν αὐταῖς τῆς ἐπαναστάσεως. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ἐπαναστάσεως ἐξηκολούθει παραμένων σθεναρὸς συνήγορος τῶν καταδυναστευομένων Χριστιανῶν. Ἀπεβίωσεν ἐν Ἡρακλείῳ τῷ 1896. † Ρ. Α. Τ.

***Μίτταγκ-Λέφφλερ*** (Mittag - Leffler), ***Γκόστα.*** Σουηδὸς μαθηματικὸς (1846—1927). Ἐδίδαξεν ἐν ἀρχῇ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἔλσιγκφορς καὶ κατόπιν εἰς τὸ τῆς Στοκχόλμης, ὑπῆρξε δὲ μέλος τῆς Σουηδικῆς ἀκαδημίας καὶ πολλῶν ξένων ἐπιστημονικῶν σωματείων. Πολλὴν φήμην ἀπέκτησε διὰ τὰς σημαντικὰς μαθηματικὰς ἐργασίας του καὶ ἰδίως διὰ τὰς ἐρεύνας αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεωρίας τῶν συναρτήσεων, τὴν ὁποίαν ἐπλούτισε καὶ δι' ἑνὸς θεωρήματος φέροντος τὸ ὄνομά του. Τῷ 1882 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Acta mathematica», πολλαὶ δ' ἐξ ἄλλου μελέται του ἔχουσι δημοσιευθῇ εἰς τὰ πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῆς Στοκχόλμης καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων. —Ω.

**Μίτταϊς** (Mitteis). —1) ***Λουδοβῖκος.*** Γερμανὸς νομομαθὴς (1859—1921), καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου ἐν Βιέννῃ (1895), Πράγᾳ (1897) καὶ ἐν Λειψίᾳ, ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἔγραψεν: «Ἡ διδασκαλία περὶ ἀντιπροσωπείας κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον, ἐν σχέσει μὲ τὸ αὐστριακὸν» (1885), «Δίκαιον κράτους καὶ λαϊκὸν δίκαιον εἰς τὰς ἀνατολικὰς ἐπαρχίας τῆς Ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας» (1891). «Ἐκ τῶν ἑλληνικῶν παπύρων» (1900), «Ἱστορία τῆς ἐμφυτεύσεως ἐν τῇ ἀρχαιότητι» (1901), «Περὶ τριῶν νέων χειρογράφων τοῦ συριορρωμαϊκοῦ κώδικος» (1905), «Ἑλληνικὰ μνημεῖα ἐκ τῆς ἐν Λειψίᾳ συλλογῆς παπύρων (1906), «Ρωμαϊκὸν ἀστικὸν δίκαιον μέχρι τῶν χρόνων τοῦ Διοκλητιανοῦ» (1908). «Στοιχεῖα τῆς παπυρολογίας» (1912, τ. 2).

— 2) ***Ἐρρῖκος.*** Γερμανὸς νομικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1889. Καθηγητὴς ἐν Κολωνίᾳ καὶ Ἀϊδελβέργῃ, ἔγραψε: «Νομικαὶ συνέπειαι τῆς ὑπερημερίας τοῦ δανειστοῦ» (1913), «Οἰκογενειακὸν δίκαιον (1923), «Ἐνεχυρόγραφα καὶ χρεόγραφα» (1924). Θ. Κ.

**Μιττβάϊντα** (Mittweida) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, ἐν Σαξωνίᾳ. Κεῖται Β. τῆς πόλεως Κέμνιτς, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς, ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Σόπαου. Ἔχει περίπου 19.300 κατ., πολυτεχνεῖον, πρακτικὸν γυμνάσιον, ἐμπορικὴν καὶ ἐπαγγελματικὴν σχολήν, ὑφαντουργεῖα, κλωστήρια, ἐργοστάσια δερμάτων, σιδηρικῶν εἰδῶν κλπ. Γ. Ι. Β.

**Μίττελαντ,** ***διῶρυξ*** (Mittelandkanal = Μεσογειακὴ διῶρυξ) *[Γεωγρ.]*. Διῶρυξ τῆς Γερμανίας, μήπω περατωθεῖσα, μήκους 850 χλμ., συνδέουσα τὴν διώρυγα Δορτμούνδης - Ἔμς, καὶ διὰ ταύτης τὸν γερμανικὸν Ρῆνον μετὰ τῶν ποταμῶν Βέζερ, Ἔλβα καὶ Ὄδερ. Διὰ τῆς διώρυγος ταύτης θὰ ἐξυπηρετῆται ἡ συγκοινωνία τῶν ἀνατολικῶν γεωργικῶν περιοχῶν τῆς Γερμανίας μετὰ τῶν δυτικῶν βιομηχανικῶν περιοχῶν αὐτῆς. Ἡ ἰδέα τῆς κατασκευῆς διώρυγος ἑνούσης τὸν Ρῆνον, Βέζερ καὶ Ἔλβαν χρονολογεῖται ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ναπολέοντος (1811), αἱ πρῶται δὲ προσπάθειαι ἀπὸ τοῦ ἔτους 1856. Γ. Ι. Β.

**Μίττερμάγερ** (Mittermaier), ***Κάρολος - Ἰωσὴφ - Ἀντώνιος.*** Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ διαπρεπὴς νομοδιδάσκαλος (1787—1867). Καθηγητὴς ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Βόννης καὶ Ἀϊδελβέργης, ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν, ἐγένετο κατ' ἐπανάληψιν βουλευτὴς καὶ πρόεδρος τῆς συνελεύσεως τῆς Βάδης, ἡγήθη τοῦ συντηρητικοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος, καὶ μέλος τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ κοινοβουλίου τῆς Φραγκφούρτης (1848). Ἀποσυρθεὶς

Digitized by Google

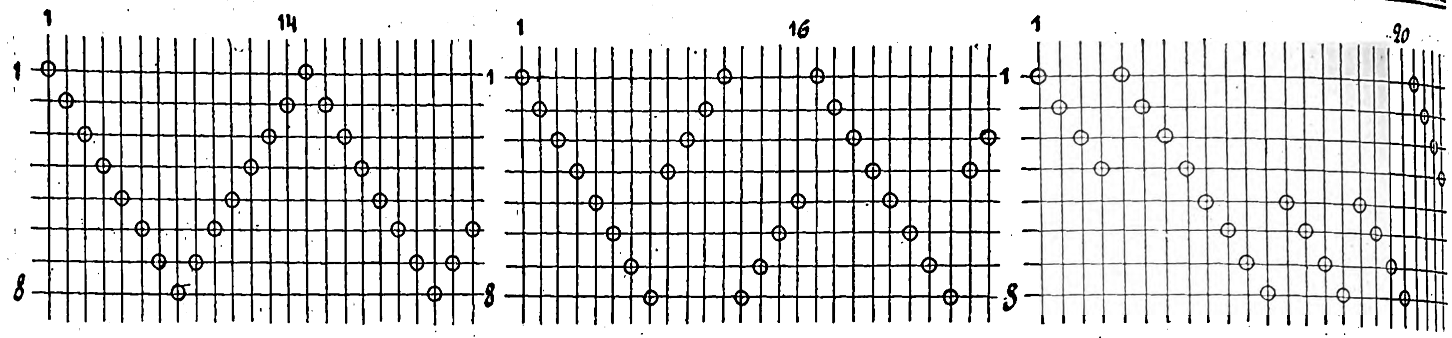


*Σύνθετα καὶ παράγωγα μιτώματα εἰς 8 μιτάρια.*

τότε τῆς πολιτικῆς ἀφωσιώθη εἰς τὰς ἐπιστημονικάς του μελέτας. Ἐκ τῶν ἔργων του σπουδαιότερα εἶναι: «Ἐγχειρίδιον τῆς ποινικῆς διαδικασίας» (1810), «Ἀρχαὶ τοῦ κοινοῦ γερμανικοῦ ἰδιωτικοῦ δικαίου» (1821), «Ἡ θεωρία τῆς ἀποδείξεως ἐν τῇ ποινικῇ δίκῃ» (1821), «Ἡ γερμανικὴ ποινικὴ δικονομία» (1840), «Ἡ προφορικὴ διαδικασία, ἡ ἔγκλησις, ἡ δημοσιότης καὶ τὰ ὁρκωτὰ δικαστήρια» (1845), «Ἡ ἀγγλική, ἡ σκωτικὴ καὶ ἡ βορειοαμερικανικὴ ποινικὴ δικονομία» (1851), «Ἡ ποινὴ τοῦ θανάτου» (1862), ἐν ᾧ ἔργῳ κηρύσσεται ὑπὲρ τῆς καταργήσεως τῆς ἐσχάτης τῶν ποινῶν. Θ. Κ.

**Μιτχὰτ *πασᾶς, Ἀχμέτ*.** Εἷς τῶν σπουδαιοτέρων πολιτικῶν ἀνδρῶν τῆς νεωτέρας ἱστορίας τῆς Τουρκίας, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1822 καὶ στραγγαλισθεὶς τῷ 1884. Νεώτατος εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Ὑψηλῆς Πύλης ὡς κατώτερος γραμματεὺς τῆς μεγάλης βεζυρείας. Τῷ 1851 ἐγένετο πρῶτος γραμματεὺς τοῦ μετζλίσι -βαλᾶ, ἤτοι τοῦ ἀνωτάτου συμβουλίου τῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ Τανζιμάτ. Καταδείξας κατόπιν μέγα θάρρος ἐν τῇ ἀποκαλύψει διαφόρων καταχρήσεων τῆς οἰκονομικῆς ὑπηρεσίας εἰς τὰς ἐπαρχίας, ἐφείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ διασήμου μεγάλου βεζύρου Ρεσὶτ πασᾶ, ὅστις διώρισεν αὐτὸν εἰς ἐμπιστευτικὴν θέσιν ἐν τῷ ἀνωτάτῳ συμβουλίῳ τῆς ἐπικρατείας. Διακριθεὶς κατόπιν κατὰ τὴν καταστολὴν τῆς λῃστείας εἰς τοὺς εὐρωπαϊκοὺς νομοὺς τῆς Τουρκίας καὶ ὑποβαλὼν σχέδιον διοικητικῶν μεταρρυθμίσεων, διωρίσθη γενικὸς διοικητὴς Δουνάβεως, ὡς ἀπεκαλεῖτο τότε διοικητικῶς ἡ Βουλγαρία. Τῷ 1858 ἀπεστάλη χάριν μελετῶν εἰς Παρισίους, Λονδῖνον, Βιέννην καὶ Βρυξέλλας. Τῷ 1860, προβιβασθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ πασᾶ διωρίσθη διοικητὴς Νύσσης (τῆς Σερβίας), ἀποτελούσης τότε μέρος τῆς Βουλγαρίας. Ἐπιτυχὼν ἐκεῖ, ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ νὰ ἐκπονήσῃ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν Φουὰτ πασᾶ καὶ Ἀαλῆ πασᾶ τὸν περὶ διοικήσεως τῶν βιλαετίων τουρκικὸν νόμον. Τῷ 1866 διωργάνωσε τὸ συμβούλιον τῆς ἐπικρατείας, κατόπιν δὲ ἀπεστάλη ὡς γενικὸς διοικητὴς εἰς Βαγδάτην, ὅπου ἡ διοίκησίς του ἀνέγραψε πλείστας ὅσας μεταρρυθμίσεις καὶ ἐπιτυχίας. Τῷ 1871 ἐπανελθὼν εἰς Κωνσταντινούπολιν ἐξέθεσεν εἰς τὸν σουλτᾶνον τοὺς κινδύνους τῆς πολιτικῆς τοῦ μεγάλου βεζύρου Μαχμοὺτ Νεδὶμ πασᾶ, ἀντιπράττοντος κατὰ τῆς εἰσαγωγῆς μεταρρυθμίσεων ἐν Τουρκίᾳ. Ὁ σουλτᾶνος ἀνέθεσε τότε τὸ βεζυρικὸν ἀξίωμα εἰς τὸν Μιτχὰτ πασᾶν. Ἀλλ' ὁ ἀνεξάρτητος χαρακτήρ αὐτοῦ ἀπήρεσεν εἰς τὴν σουλνανικὴν αὐλήν. Μετὰ τρεῖς μῆνας ἐπαύθη καὶ ἐστάλη ὡς γενικὸς διοικητὴς εἰς Θεσσαλονίκην, κατόπιν δὲ ἀνακληθεὶς ἰδιώτευεν ἐν Κωνσταντινουπόλει μέχρι τοῦ 1875. Ἦτο ἡ ἐποχὴ τῆς πρώτης νεοτουρκικῆς κινήσεως ἐν Τουρκίᾳ, ἀγωνιζομένης ἐναντίον τῆς ἀπολυταρχίας τοῦ σουλτάνου καὶ ὑπὲρ τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ συνταγματικοῦ καθεστῶτος. Ὁ Μιτχὰτ ἦτο εἷς τῶν προμάχων τῆς κινήσεως ταύτης, διατελῶν εἰς ἐπικοινωνίαν καὶ μετὰ τοῦ τότε πρεσβευτοῦ τῆς Ἀγγλίας ἐν Κωνσταντινουπόλει sir Henry Elliot, ἐπεζήτει ὅμως νὰ συγκρατήσῃ αὐτήν, φρονῶν ὅτι ἔπρεπε νὰ ἐξελιχθῇ βαθμιαίως. Ἀλλ' ἡ συστηματικὴ ἀντίπραξις τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ καὶ τῶν περὶ αὐτὸν ἀντιδραστικῶν ἐπέσπευσαν τὰ γεγονότα. Τῷ 1876 ἐπῆλθε συνεννόησις μεταξὺ τοῦ Μιτχὰτ πασᾶ, ὄντος ὑπουργοῦ ἄνευ χαρτοφυλακίου, τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν Χουσεῒν Ἀβνὶ πασᾶ καὶ τοῦ σεϊχουλισλάμου Χαϊρουλλὰχ ἐφέντη. Ὁ τελευταῖος οὗτος ἐξέδωκε φετβᾶν (ἱερονομικὴν ῥήτραν), καθ' ὃν ὁ ἀρχηγὸς τῶν πιστῶν, ὅστις ἐμφανίζει συμπτώματα διανοητικῆς διαταράξεως, ἀγνοεῖ τὰς ὑποθέσεις τοῦ κράτους καὶ χρησιμοποιεῖ τὰς δημοσίας προσόδους διὰ τὰ προσωπικά του ἔξοδα, ὑπερβαίνοντα τὰς δυνάμεις τοῦ ἔθνους, ἐπιτρέπεται νὰ ἐκθρονισθῇ. Ὡπλισμένοι μὲ τὸν φετβᾶν τοῦτον οἱ ὑπουργοὶ ἀπεφάσισαν νὰ ἐκθρονίσωσι τὸν σουλτᾶνον καὶ ἀνέθεσαν τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ σχεδίου εἰς τὸν Μιτχὰτ πασᾶν καὶ εἰς τὸν ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν. Πρὸς τοῦτο εἶχεν ὁρισθῇ ἡ 31 Μαΐου, ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μιτχὰτ εἰδοποιήθη ὑπὸ μιᾶς τῶν γυναικῶν τοῦ σουλτανικοῦ χαρεμίου, ὅτι ὁ σουλτᾶνος ἐπληροφορήθη τὰ τῆς συνωμοσίας. Ἀπεφασίσθη τότε νὰ ἐκτελεσθῇ τὸ σχέδιον 24 ὥρας προηγουμένως. Τὴν νύκτα τῆς 30 πρὸς τὴν 31 Μαΐου ὁ Χουσεῒν Ἀβνὶ πασᾶς, ἀφοῦ προηγουμένως ἔλαβεν ὅλα τὰ κατάλληλα μέτρα εἰς τὸν στρατὸν καὶ τὸν στόλον καὶ διέταξε νὰ περικυκλωθῶσι τὰ ἀνάκτορα τοῦ Δολμᾶ Μπαγτσὲ ὑπὸ τῶν μαθητῶν τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς, εἰσελθὼν εἰς τὰ ἀνάκτορα καὶ παρουσιασθεὶς εἰς τὸν σουλτᾶνον, ἀνεκοίνωσεν εἰς αὐτὸν τὴν ἐκθρόνισίν του, ἐνῷ συγχρόνως ὁ διάδοχος Μουράτ, ὁδηγηθεὶς εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Στρατιωτικῶν, ὡρκίζετο καὶ ἐγκαθίστατο ὡς σουλτᾶνος. Ὁ Ἀβδοὺλ Ἀζίζ, ἀκούσας τοὺς ἐπὶ τῇ ἀναρρήσει τοῦ νέου σουλτάνου τὴν στιγμὴν ἀκριβῶς ἐκείνην ῥιπτομένους κανονιοβολισμούς, ὑπέκυψε. Μετεφέρθη εἰς τὰ παλαιὰ ἀνάκτορα τοῦ Σαράϊ-Μπουρνοῦ καὶ κατόπιν εἰς ἓν παράκτιον ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς ὄχθης τοῦ κάτω Βοσπόρου μέγαρον, ὅπου τὴν 5 Ἰουνίου εὑρέθη νεκρός, κατά τινας μὲν αὐτοκτονήσας, κατ' ἄλλους δὲ δολοφονηθείς.

*Ἀχμὲτ Μιτχὰτ πασᾶς*

Μετὰ τὴν ἀνάρρησιν τοῦ Μουρὰτ ὁ Μιτχὰτ πασᾶς διωρίσθη μέγας βεζύρης καὶ ἠσχολεῖτο εἰς τὸ ἔργον τῶν μεταρρυθμίσεων, ὅτε ὁ νέος σουλτᾶνος παρουσίασε συμπτώματα διανοητικῆς διαταράξεως. Ἐπειδὴ δὲ ἡ κατάστασίς του δὲν ἐβελτιοῦτο, ἐδέησε νὰ καταβιβασθῇ ἐκ τοῦ θρόνου καὶ ν' ἀναβιβασθῇ ὑπὸ τύπον προσωρινότητος ὁ ἀδελφός του Ἀβδοὺλ Χαμὶτ ὁ Β' (1 Σεπτεμβρίου 1876), ἀναλαβὼν τὴν ὑποχρέωσιν νὰ παραχωρήσῃ ἀμέσως τὸ Σύνταγμα. Ὁ Χαμὶτ ἐφάνη κατ' ἀρχὰς ὅτι τηρεῖ τὴν ὑποχρέωσίν του. Τὸ Σύνταγμα ἐδημοσιεύθη ἐπιδεικτικῶς (23 Δεκεμβρίου 1876) κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς συνδιασκέψεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως, καθ' ἣν συνεζητοῦντο μετὰ τῶν ἀντιπροσώπων τῶν μεγάλων εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων αἱ εἰς τὴν εὐρωπαϊκὴν Τουρκίαν εἰσακτέαι μεταρρυθμίσεις. Μετ' ὀλίγον ὅμως ὁ Χαμὶτ ἀπεκάλυψε τὰς πραγματικὰς προθέσεις του. Διέλυσε τὴν βουλήν, ἔπαυσε τὸν Μιτχὰτ πασᾶν καὶ κατεδίκασεν αὐτὸν εἰς ὑπερορίαν, ὡς δῆθεν συνένοχον εἰς τὴν δολοφονίαν τοῦ Ἀβδοὺλ Ἀζίζ. Ὁ Μιτχὰτ ἔφυγε τότε εἰς Εὐρώπην. Διέμεινεν ἐπί τινα καιρὸν εἰς Λονδῖνον μελετῶν τοὺς ἀγγλικοὺς πολιτικοὺς θεσμούς. Τῷ 1878 ὁ σουλτᾶνος, ὅπως ἀποφύγῃ τὰ ἐν Εὐρώπῃ δημοσιεύματα τῶν ὀπαδῶν του Μιτχάτ, ἀνεκάλεσεν αὐτὸν εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ διώρισεν αὐτὸν γενικὸν διοικητὴν Συρίας καὶ κατόπιν Σμύρνης, μετ' ὀλίγον δέ, τὸν Μάϊον τοῦ 1881, ἀπέστειλεν ἐκεῖ ἔμπιστόν του στρατηγόν, ὅπως τὸν συλλάβῃ ἢ φονεύσῃ. Ὁ Μιτχὰτ πασᾶς κατέφυγεν εἰς τὸ προξενεῖον τῆς Γαλλίας. Ὁ πρόξενος ὅμως, λαβὼν ὁδηγίας τοῦ πρέσβεώς του, ἐκάλεσε τὸν Μιτχὰτ νὰ φύγῃ, μεθ' ὃ οὗτος παρεδόθη εἰς τὰς τουρκικὰς ἀρχὰς καὶ ἀπεστάλη εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἐκεῖ ἐδικάσθη ὑπὸ ἐκτάκτου δικαστηρίου, συνελθόντος εἰς τὰ ἀνάκτορα τοῦ Γιλδίζ, καὶ κατεδικάσθη μετὰ ἑπτὰ ἄλλων εἰς θάνατον ἐπὶ τῇ κατηγορίᾳ συνενοχῆς εἰς τὴν δῆθεν δολοφονίαν τοῦ Ἀβδοὺλ Ἀζίζ. Ἡ δίκη αὕτη ἐθεωρήθη ὡς σκηνοθεσία, βασιζομένη ἐπὶ πλαστῶν ἐγγράφων καὶ ψευδῶν μαρτυρικῶν καταθέσεων. Συνεπείᾳ τοῦ ἐνδιαφέροντος, τὸ ὁποῖον ἐπέδειξεν ἡ ἀγγλικὴ κυβέρνησις ὑπὲρ τοῦ Μιτχάτ, ἡ θανατικὴ αὐτοῦ ποινὴ ἐμετριάσθη εἰς ἰσόβιον ἐξορίαν, καὶ ὁ ἀτυχὴς πολιτικὸς ἀνὴρ ἀπεστάλη εἰς τὴν μεσόγειον πόλιν τῆς Ἀραβίας Ταΐφ, ὅπου τὴν 8 Μαΐου 1884 ἐστραγγαλίσθη ὑπὸ ἀνθρώπων τοῦ σουλτάνου Χαμίτ.

Ὁ Ἀχμὲτ Μιτχὰτ πασᾶς ἦτο πολιτικὸς διακριθεὶς κυρίως διὰ τὸν ἀκέραιον χαρακτῆρα καὶ τὴν τιμιότητά του, ἐπίσης δὲ καὶ διὰ τὰς ἀκραιφνῶς φιλελευθέρας ἰδέας του. Βεβαιοῦται ὅτι μία τῶν πολιτικῶν πεποιθήσεών του ἦτο καὶ ἡ ἀνάγκη τῆς συνεργασίας τῶν Τούρκων μετὰ τοῦ ἑλληνικοῦ στοιχείου τῆς Τουρκίας. Τὰ σχέδιά του ἐναυάγησαν ὡς ἐκ τοῦ ἀτυχήματος τὸ ὁποῖον ὑπέστη ὁ σουλτᾶνος Μουρὰτ ὁ Ε', μεθ' ὃν ἀνῆλθε τὸν θρόνον ὁ Ἀβδοὺλ Χαμὶτ ὁ Β', καταδιώξας συστηματικῶς τὸν Μιτχὰτ καὶ τὰς ἰδέας του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ali Haidar Midhat*, The Life of Midhat pasha (London 1903). Τοῦ βιβλίου τούτου, γραφέντος ὑπὸ τοῦ υἱοῦ τοῦ Μιτχὰτ πασᾶ, ὑπάρχει καὶ μεταγενεστέρα τουρκικὴ ἔκδοσις. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**μίτωμα** (τό). Τὸ πέρασμα εἰς *μιτάρια* τῶν κλωστῶν ἑνὸς στήμονος καθ' ὡρισμένην τάξιν ἢ ῥυθμόν. Τὰ μιτώματα διακρίνονται εἰς βασικοὺς ῥυθμοὺς καὶ εἰς συνθέτους ἢ παραγώγους τούτων διὰ συνδυασμῶν τῶν βασικῶν καὶ χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν ὑφαντικὴν ἀναλόγως τῶν τεχνικῶν ἀναγκῶν τοῦ ὑφάσματος ὡς καὶ διὰ τὴν ἐμφάνισιν ἐπ' αὐτοῦ διακοσμητικῶν σχεδίων μεγάλης ποικιλίας. Τὰ κύρια μιτώματα εἶναι τέσσαρα: τὸ συνεχές, τὸ ἀντίστροφον, τὸ πηδηκτό, τὸ εἰς 2 ἢ περισσότερα σώματα. Τὰ μιτώματα συνήθως ἀναπαριστῶμεν δι' ἑνὸς κύκλου ἢ στίγματος πρὸς σήμανσιν τοῦ περάσματος μιᾶς κλωστῆς, τοποθετουμένων εἰς τὴν ἀντίστοιχον διασταύρωσιν τῶν καθέτων γραμμῶν, αἵτινες ὑποδηλοῦν τὰς κλωστὰς ἑνὸς στήμονος μὲ τὰς ὁριζοντίους, αἵτινες ὑπονοοῦν τὰ μιτάρια κατὰ τάξιν σειρᾶς τοποθετημένα πρὸ τοῦ ὑφαντοῦ. Κ. Β. Φ.

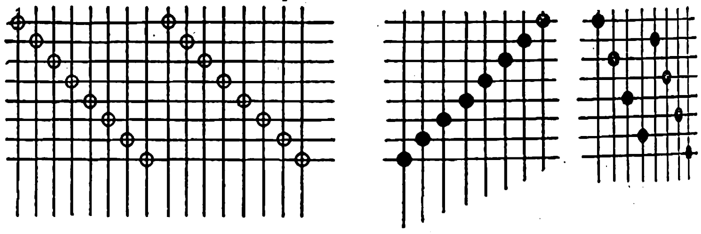

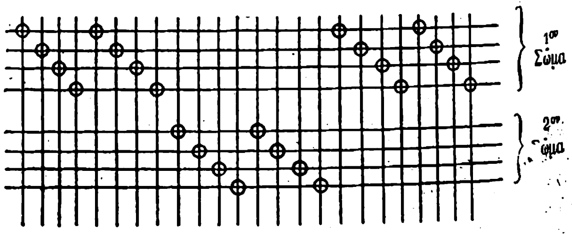


*Τὰ τέσσαρα κύρια μιτώματα.*

**μίτωσις,**—*εως* (ἡ), ἢ καὶ ***μιτωτικὴ πυρηνοτομία***, ἢ ***μιτωτικὸς μερισμός***, ἢ ***ἔμμεσος πυρηνοτομία***, ἢ ***καρυοκίνησις***. Καλεῖται οὕτω ὁ ἔμμεσος μερισμὸς τοῦ πυρῆνος, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν ἄμεσον τοιοῦτον, διότι κατ' αὐτὸν λαμβάνουν χώραν ἐντὸς τοῦ πυρῆνος ὡρισμέναι διεργασίαι, τῶν ὁποίων σκοπὸς εἶναι νὰ κατατμηθῇ ἡ πυρηνικὴ μᾶζα ὅσον τὸ δυνατὸν ἀκριβέστερον εἰς δύο ἡμίση. Χαρακτηριστικὸν τῶν διεργασιῶν τούτων εἶναι κίνησις τῆς πυρηνικῆς οὐσίας (ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα καρυο*κίνησις*) καὶ σχηματισμὸς ἀτρακτοειδῶν ἰνῶν (ἐξ οὗ τὸ ὄνομα μίτωσις, μιτωτικὸς μερισμὸς κλπ.). Θ. ΒΛ.

**Μίτωφ, *Ἀντώνιος*.** Βούλγαρος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1862 ἐν Στάρᾳ Ζαγορᾷ. Ἐπεράτωσε τὰς σπουδάς του εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν Τεχνῶν τῆς Φλωρεντίας καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς σχολῆς Καλῶν Τεχνῶν τῆς Σόφιας. Τὰ πλεῖστα τῶν θεμάτων του εἶναι εἰλημμένα ἐκ τοῦ βουλγαρικοῦ ὑπαίθρου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων πινάκων του διακρίνονται οἱ ἑξῆς: «Τὸ παζάρι στὴ Σόφια», «Γυφτοπούλα στὸ παζάρι», «Πωλητές», «Βρύση στὴν Πλέβνα». Τ. Β.

**Μιχαέλις** (Michaelis), ***Ἀδόλφος***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος (1835—1910). Διαμείνας ἐπὶ πολὺ ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Ἑλλάδι καὶ μελετήσας τὰς ῥωμαϊκὰς καὶ ἑλληνικὰς ἀρχαιότητας, συνέγραψε πλείστας ἀρχαιολογικὰς διατριβὰς περὶ τῆς ἐν γένει ἀρχαίας τέχνης. Ἀπὸ τοῦ 1878 μέχρι τοῦ 1907 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ

Digitized by Google

τοῦ Στρασβούργου. Κυριώτερα τῶν ἔργων καὶ διατριβῶν αὐτοῦ εἶναι: «Die Bildnisse des Dimostenes» (1858), «Über den jetziger Zustand der Akropolis von Athen» (1861), «Das Parthenon» (1870), «Geschichte des Deutschen Archaeol. Instituts 1829—1879» (1879), «Die Archaeologische Gesellschaft in Athen» (1887), «Antikenmuseen in Griechenland einst und jetzt.» (1888), «Altattische Kunst» (1893), «Führer durch das archaeologische Museum der Kaiser-Wilhelms-Universität» (1897), «Tabulae arcem Athenarum illustantes» (1901), «Die Bestimmung der Räume des Erechtheion» (1902), «Ἀρχαῖος νεώς. Die alten Athenatempel der Akropolis von Athen» (1902). Εἰς τὰς ἀνωτέρω ἀρχαιολογικὰς ἐργασίας τοῦ Μιχαέλις προσθετέα καὶ ἡ ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθεῖσα συμπληρωματικὴ ἔκδοσις τῆς «Ἱστορίας τῆς τέχνης» τοῦ Springer. Β. Δ. Θ.

— **Μιχαέλις** (Michaelis), ***Ἰωάννης - Δαυΐδ.*** Γεννηθεὶς ἐν Χάλλῃ τῷ 1717, ἐγένετο τῷ 1750 τακτικὸς καθηγητὴς τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν ἐν Γοττίγγῃ, ἀσχοληθεὶς ἰδίᾳ εἰς τὰ συριακά. Ἐνδιαφερόμενος καὶ διὰ πρακτικὰ ζητήματα, ἀναφερόμενα εἰς τὸ σχολεῖον καὶ τὴν Ἐκκλησίαν, ἀνέπτυξε διὰ τῆς ἱστορικῆς κριτικῆς ὀρθολογιστικὴν ἀντίληψιν περὶ τοῦ Χριστιανισμοῦ, οὕτινος κατεπολέμει ἰδίᾳ τὸν δογματισμόν. Ἐτελεύτησε τῷ 1791. Ὁ Μιχαέλις ἔγραψεν ἔργα, ὧν ἄξια μνείας εἶναι τὰ ἑξῆς: «Σκέψεις ὡς πρὸς τὴν διδασκαλίαν τῆς Ἁγίας Γραφῆς περὶ ἁμαρτίας καὶ ἱκανοποιήσεως» (1748, β' ἔκδ. 1779), «Ἐγχειρίδιον τῆς δογματικῆς θεολογίας» (1760, μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικὴν τῷ 1787), «Γερμανικὴ μετάφρασις τῆς Παλαιᾶς καὶ Καινῆς Διαθήκης μετὰ παρατηρήσεων» (1769—1792), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὰ βιβλία τῆς Καινῆς Διαθήκης» (1750, δ' ἔκδ. 1788), «Μωσαϊκὸν δίκαιον» (1770—1775) καὶ «Συμπληρώματα εἰς τὰ ἑβραϊκὰ λεξικά» (1786). Κ. Ι. Δ.

— **Μιχαέλις** (Michaelis), ***Σόφους.*** Δανὸς ποιητὴς γερμανικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1865. Κατ' ἀρχὰς ἐχρημάτισε περιοδεύων δημοσιογράφος, εἶτα δὲ διευθυντὴς τοῦ ὑπὸ Ἰουλίου Λάγκες ἐκδιδομένου περιοδικοῦ «Τέχνη». Παρορμηθεὶς ὑπὸ τοῦ Δανοῦ κριτικοῦ Γεωργίου Μπράντες, ἐπεδόθη εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ ἔγραψε ποιήματα, διηγήματα, μυθιστορήματα καὶ θεατρικὰ ἔργα. Ποιητικὰ ἔργα του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ποιήματα» (1888), «Σειρῆνες» (1898), «Ἡ ἑορτὴ τῆς ζωῆς» (1900), «Οἱ Φοίνικες» (1904), «Κυανῆ βροχή» (1913), «Ρωμαϊκὴ ἄνοιξις» (1921). Ἐκ τῶν διηγημάτων καὶ μυθιστορημάτων του ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἄμπελαι» (Äbelö), ἱστορικὸν μυθιστόρημα (1895), τὸ ἐπίσης ἱστορικὸν τῆς ναπολεοντείου ἐποποιίας μυθιστόρημα «Τὸ ἔτος 1812», «Ὁ αἰώνιος ὕπνος» (1912), «Ὁ Χόλτεμκοχ καὶ ἄλλα (πολεμικὰ) διηγήματα» (1918), «Τὸ πλοῖον τοῦ Οὐρανοῦ» (1921). Θεατρικὰ δὲ ἔργα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁ ἰατρὸς» (μὲ ὑπόθεσιν ἐκ τῶν Ρώσων ἀναρχικῶν τοῦ 1906), «Ὁ ἐπαναστατικὸς γάμος» (1906), ὅπερ ἐμουσικοποιήθη ὡς μελόδραμα ὑπὸ τοῦ Ντ' Ἀλμπέρ, «Εἰς τὴν Ἁγίαν Ἑλένην» (1911), «Ὁ ἀνὴρ τῆς Ἔλβας» (1926). Μετέφρασε δὲ τὸν «Παρσιφάλ», τὸν «Φάουστ» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

— **Μιχαέλις - Στάνγκελαντ** (Michaelis - Stangeland), ***Καρίνα.*** Δανὶς συγγραφεὺς (1872) καὶ σύζυγος τοῦ ποιητοῦ καὶ συγγραφέως *Σόφου Μιχαέλις*, καὶ εἶτα τοῦ διπλωμάτου *Στάνγκελαντ*. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε μουσικήν, κατόπιν ὅμως ἐπεδόθη εἰς τὴν λογοτεχνίαν, γράψασα μυθιστορήματα καὶ διηγήματα ἔχοντα ὡς θέματα κοινωνικὰ προβλήματα, ἰδίως τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὸν γάμον καὶ τὴν γυναῖκα. Ἐκ τῶν ἔργων της τὰ ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς «Ἡ ἐπικίνδυνος ἡλικία» (1910), ἔργον παγκοσμίου φήμης, «Τὸ παιδὶ» (1902), «Ἡ τύχη τῆς Οὔλλας» (Δανιστὶ Lillemoor, 1902), «Ἡ μικρὰ ψεύτρα» (1925), «Θῦμα πολέμου» (1926), «Αὐστρία» (1917) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μιχαήλ.** Ἑβραϊκὸν κύριον ὄνομα (=τίς ὡς ὁ θεός;), ὅπερ φέρουσιν ἐν τῇ Βίβλῳ εἷς ἀρχάγγελος καὶ διάφορα πρόσωπα τῆς Π. Διαθήκης. Ἡ ἰδέα περὶ τοῦ ἀρχαγγέλου Μιχαὴλ καὶ δὴ ὡς προστάτου τοῦ ἰουδαϊκοῦ λαοῦ στηρίζεται ἐπὶ τοῦ βιβλίου τοῦ Δανιὴλ (ι' 13, 20 καὶ δὴ ιβ' 1). Κατὰ παλαιὰν ἰουδαϊκὴν παράδοσιν προφορικήν, ἥτις περιελήφθη εἴς τε τὴν ἀπόκρυφον Ἀνάληψιν τοῦ Μωϋσέως καὶ εἰς τὴν κανονικὴν ἐπιστολὴν τοῦ ἀποστόλου Ἰούδα (στίχ. 9), ὁ ἀρχάγγελος Μιχαήλ, ἀμφισβητῶν μετὰ τοῦ διαβόλου τὸ σῶμα τοῦ Μωϋσέως, εἶπε πρὸς αὐτὸν «Ἐπιτιμήσαι σοι Κύριος» (πρβ. καὶ *Ζαχαρίου* γ' 2). Ἐν τινι δὲ ὁράματι τῆς Ἀποκαλύψεως τοῦ Ἰωάννου (ιβ' 7—8) περιγράφεται μία πάλη τοῦ Μιχαὴλ καὶ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ πρὸς τὸν δράκοντα καὶ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ, ἧς ἀποτέλεσμα ὑπῆρξεν ἡ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ εἰς τὴν γῆν ἀποβολὴ τοῦ δράκοντος, ὅστις εἶναι ὁ διάβολος. Ἐπὶ τῇ βάσει δὲ τοῦ χωρίου τούτου καὶ τοῦ Δανιὴλ (ιβ' 1). ὁ Μιχαὴλ θεωρεῖται ὡς προστάτης τοῦ νέου Ἰσραήλ, τῆς Ἐκκλησίας τοῦ Χριστοῦ. Ἡ δὲ σύγκρισις τῆς ἐν τῷ εἰρημένῳ χωρίῳ τῆς Ἀποκαλύψεως πάλης τοῦ Μιχαὴλ μετὰ τοῦ δράκοντος πρὸς τὴν μεταξὺ Μαρδοὺκ καὶ Τιαμὰτ τοῦ βαβυλωνιακοῦ μύθου πρὸς ἀπέχει τοῦ νὰ ἀποδεικνύῃ τὴν ταυτότητα τοῦ Μιχαὴλ πρὸς τὸν Μαρδούκ. Ὁ Μιχαὴλ εἶναι λαϊκὸς ἅγιος τῶν Γερμανῶν (βλ. καὶ λ. *ἄγγελος*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *W. Lueken*, «Michael» (1898).—*Bousset*, «Der Antichrist» (1895).—*Wiegand*, «Der Erzengel Michael in der bilden den Kunst» (1886). Π. Ι. Μ.

ΒΑΣΙΛΕΙΣ, ΗΓΕΜΟΝΕΣ, ΠΡΙΓΚΙΠΕΣ

ΒΟΥΛΓΑΡΙΑΣ

— **Μιχαὴλ** ***Σισμάν.*** Δεσπότης τοῦ Βιδδινίου (1320—1323) καὶ εἶτα ἡγεμὼν τῆς Βουλγαρίας (1323—1330). Ἦτο υἱὸς τοῦ δεσπότου τοῦ Βιδδινίου Στρασιμὶρ Σισμάν, ὃν καὶ διεδέχθη ἀποθανόντα τῷ 1320, ὅτε καὶ ἐνυμφεύθη τὴν Νέδαν, ἀδελφὴν τοῦ ἡγεμόνος τῶν Σέρβων Στεφάνου Γ' Οὐρώς, τῷ δὲ 1323, ἀποθανόντος τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βουλγαρίας Γεωργίου Τέρτερη Γ' ἐξελέγη ὑπὸ τῶν Βουλγάρων ἡγεμὼν αὐτῶν. Ἡ Βουλγαρία διετέλει τότε εἰς πόλεμον πρὸς τοὺς Βυζαντινούς, οἵτινες καὶ ἐπολιόρκουν τὴν Φιλιππούπολιν. Ὁ Μιχαὴλ προσλαβὼν τότε Κομάνους, Οὔγγρους καὶ Βλάχους ἐπικούρους, εἰσέβαλεν εἰς τὸ βυζαντινὸν ἔδαφος, καὶ ἀφοῦ κατέλαβε μικρά τινα κάστρα (τὴν Κόψιν κτλ.), ἐγκατεστάθη ἐπὶ τῆς ὀρεινῆς περιοχῆς τῆς ΒΔ. Θράκης, μὴ τολμῶν νὰ ἀντιμετωπίσῃ τὸν βυζαντινὸν στρατόν, ὅστις ὑπὸ τὸν Ἀνδρόνικον Παλαιολόγον ἐστρατοπέδευσεν εἰς Ἀδριανούπολιν, μὴ θέλων νὰ ἐμπλακῇ εἰς τοὺς κινδύνους τῶν ὀρεινῶν ἐπιχειρήσεων.

Τὸ ἐπιὸν ἔτος (1324) ὁ Μιχαήλ, ἐπωφελούμενος τῆς ἀδρανείας τοῦ Ἀνδρονίκου, κατῆλθεν εἰς τὴν δυτικὴν Θράκην μέχρι Τραϊανουπόλεως, ἐνῷ ὁ Ἀνδρόνικος μετεστάθμευεν εἰς Διδυμότειχον. Καὶ καθ' ὃν χρόνον ἐπέκειτο ἡ συνάντησις τῶν δύο στρατῶν, ὁ Μιχαήλ, μεταγνούς, διεμήνυσεν εἰς τὸν Ἀνδρόνικον ὅτι ἐντὸς ὀλίγου θὰ γίνωσιν ἀδελφοὶ καὶ ἀμέσως ἀπῆλθεν εἰς Βουλγαρίαν, ἔνθα διεζεύχθη τὴν Νέδαν καὶ ἐνυμφεύθη τὴν Θεοδώραν, χήραν τοῦ ἀποθανόντος ἡγεμόνος Σφενδοσθλάβου καὶ ἀδελφὴν τοῦ Ἀνδρονίκου.

Μετ' ὀλίγον (1327) ἐλάμβανον νέαν ὀξύτητα αἱ ἔριδες μεταξὺ τοῦ νέου Ἀνδρονίκου καὶ τοῦ πάππου του Ἀνδρονίκου Β', καὶ τότε ὁ Μιχαὴλ κατῆλθε μετὰ τῆς Θεοδώρας εἰς Θράκην καὶ ἐφιλοξενήθη παρὰ τῷ ἀδελφῷ ταύτης Ἀνδρονίκῳ εἰς Διδυμότειχον. Ἐκεῖ προσέφερε τὴν συνδρομήν του εἰς τὸν Ἀνδρόνικον, ἐὰν οὗτος ὑπέσχετο νὰ τὸν ἀμείψῃ, ἐν περιπτώσει ἐπιτυχίας, διὰ γενναίου χρηματικοῦ ποσοῦ καὶ διὰ τῆς ἐκχωρήσεως θρακικῶν τινων πόλεων, ἀλλὰ συγχρόνως διεμήνυε φιλίαν καὶ πρὸς τὸν γέροντα βασιλέα Ἀνδρόνικον Β' καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ τρισχιλίους ἱππεῖς ὡς ἐπικουρίαν κατὰ τοῦ ἐγγόνου του Ἀνδρονίκου. Ταῦτα γνωσθέντα τῷ νέῳ Ἀνδρονίκῳ ἐψύχρανον τὰ μετὰ τοῦ Μιχαὴλ σχέσεις του.

Τὸ ἐπιὸν ἔτος (1328), ἀποθανόντος τοῦ Ἀνδρονίκου Β', διεδέχθη αὐτὸν ὁ νέος Ἀνδρόνικος (ὁ Γ'), καὶ τότε ὁ Μιχαήλ, ἀξιῶν ὡς σύζυγος τῆς Θεοδώρας νὰ λάβῃ μέρος τῶν βυζαντινῶν χωρῶν, ἐστράτευσε πάλιν εἰς Θράκην, ἔχων συμμάχους του πολυαρίθμους Τατάρους, ἀλλ' ἐπὶ τῇ προσεγγίσει τοῦ Ἀνδρονίκου Γ', ἄγοντος τὰ βυζαντινὰ στρατεύματα, ἀπῆλθε πάλιν εἰς Βουλγαρίαν. Μετὰ 2 μῆνας ἐπανελθὼν ἐκυρίευσε μικρόν τι κάστρον, ὅτε ἠπειλήθη νέος πρὸς τοὺς Βυζαντινοὺς πόλεμος, ὃν ἀπεσόβησεν ἡ ἐπέμβασις τῆς μητρὸς τοῦ Ἀνδρονίκου Γ'. Ὁ Μιχαὴλ ἐπέστρεψε τὸ καταληφθὲν κάστρον καὶ ὑπέγραψε μετὰ τοῦ Ἀνδρονίκου ἰσόβιον συμμαχίαν.

Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ ἡγεμὼν τῶν Σέρβων Στέφανος Γ', βαρέως φέρων τὴν ἀπομπὴν τῆς ἀδελφῆς του Νέδας, παρεσκευάζετο νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τοῦ Μιχαήλ, ὅστις ἔσπευσε νὰ ζητήσῃ τὴν συνδρομὴν τοῦ Ἀνδρονίκου τοῦ Γ', καὶ τῷ 1330 ἀμφότεροι εἰσέβαλον εἰς Σερβίαν, ὁ μὲν Ἀνδρόνικος διὰ Πελαγονίας, ὁ δὲ Μιχαὴλ βορειότερον. Ὁ Στέφανος προετίμησε νὰ βαδίσῃ πρῶτον κατὰ τῆς φάλαγγος τοῦ Μιχαήλ, ἣν συνήντησεν ἐστρατοπεδευμένην εἰς Βελεμούσδιον (τὸ νῦν Κιουστεντήλ), καὶ ἀφοῦ προῆλθεν εἰς ἀπατηλὰς πρὸς τὸν Μιχαὴλ διαπραγματεύσεις, ἐπετέθη αἰφνιδιαστικῶς τὴν 28 Ἰουνίου 1328 κατὰ τοῦ βουλγαρικοῦ στρατοῦ καὶ διεσκόρπισεν αὐτόν. Ὁ Μιχαὴλ φεύγων ἔπεσεν ἀπὸ τὸν ἵππον του καὶ δεινῶς τραυματισθεὶς ᾐχμαλωτίσθη καὶ μετ' ὀλίγον ἐξέπνευσεν. Ν. ΚΛΣ

ΒΥΖΑΝΤΙΟΥ

— **Μιχαὴλ Α'** ***ὁ Ραγκαβές.*** Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (811—813). Γόνος ἐπιφανοῦς οἰκογενείας τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἔλαβε σύζυγον τὴν Προκοπίαν, θυγατέρα τοῦ γενικοῦ λογοθέτου Νικηφόρου. Μετὰ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάρρησιν τούτου, ὁ Μιχαὴλ προσελήφθη εἰς τὴν βασιλικὴν αὐλὴν ὡς κουροπαλάτης, ὡς τοιοῦτος δὲ ἠκολούθησε τὸν πενθερόν του εἰς τὴν τελευταίαν ἀτυχῆ κατὰ τῶν Βουλγάρων ἐκστρατείαν, καθ' ἥν, φονευθέντος τοῦ Νικηφόρου (25 Ἰουλίου 811) καὶ τραυματισθέντος ἀνιάτως τοῦ υἱοῦ του Σταυρακίου, ἡ φρουρὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἡ σύγκλητος ἀνηγόρευσαν βασιλέα τὸν Μιχαὴλ καὶ ὁ πατριάρχης Νικηφόρος ἔστεψεν ἀμέσως αὐτὸν ἐν τῷ ναῷ τῆς τοῦ Θεοῦ Σοφίας τὴν 2 Ὀκτωβρίου 811. Τὴν 12 Ὀκτωβρίου ὁ βασιλεὺς Μιχαὴλ ἔστεψε βασίλισσαν τὴν σύζυγόν του Προκοπίαν, μετὰ τινας δὲ μῆνας προσέλαβεν ὡς συμβασιλέα τὸν υἱόν του Θεοφύλακτον.

Ὁ Μιχαὴλ Α' ἦτο θερμὸς ὀπαδὸς τῶν μεταρρυθμίσεων, ἐν τούτοις ἅμ' ὡς ἀνέλαβε τὴν ἀρχὴν ἐδείχθη ἐντελῶς διάφορος. Πτοηθεὶς ἐκ τοῦ πλήθους καὶ τῆς ἐπιμονῆς τῶν ἀντιδραστικῶν (μοναχῶν κλ.), προσεχώρησεν εἰς τὰς ἀρχὰς αὐτῶν, ἐπὶ πλέον δὲ διὰ νὰ τοὺς εὐχαριστήσῃ διεμοίρασεν αὐτοῖς ἀφειδῶς τὸ χρῆμα τοῦ δημοσίου ταμείου καὶ ἐν τέλει ἐγένετο τυφλὸν αὐτῶν ὄργανον, θεσπίσας νόμον τιμωροῦντα θανάτῳ πάντα ἑτεροδοξοῦντα. Ἐξ ἴσου ἀσθενὴς καὶ ἐνδοτικὸς ἐδείχθη καὶ εἰς τὰ ἐξωτερικὰ ζητήματα, πολιτευθεὶς ταπεινῶς πρὸς τὸν πάπαν καὶ ἀναγνωρίσας εἰς τὸν Κάρολον τὸν Μέγαν τὸν τίτλον τοῦ αὐτοκράτορος. Τὸν Ἰούνιον 812, ἐκστρατεύσας κατὰ τῶν Βουλγάρων, οἵτινες ἐδῄουν τὴν Βόρειον Θράκην, ἠρκεῖτο νὰ καταπονῇ τὸν στρατὸν εἰς ματαίας μετακινήσεις, διότι δὲν ἐτόλμα νὰ ἀντιμετωπίσῃ τὸν ἐχθρόν. Ὁ στρατὸς ἐξετράπη εἰς δεινὰς κατὰ τοῦ Μιχαὴλ ὕβρεις, οὗτος δέ, ἐπανελθὼν εἰς Κωνσταντινούπολιν, προσεπάθησε διὰ δώρων καὶ παραινέσεων νὰ καταπραΰνῃ τὴν κατ' αὐτοῦ ἀγανάκτησιν, ἐνῷ οἱ Βούλγαροι ἐδῄουν τὴν Θράκην καὶ τὴν Μακεδονίαν, τὴν δὲ 1 Νοεμβρίου 812 ἐξεπόρθουν, κατόπιν μακρᾶς πολιορκίας, τὴν ὀχυρὰν Μεσημβρίαν. Τοῦτο γνωσθὲν ἐν Κωνσταντινουπόλει μετά τινας ἡμέρας, ἐξηνάγκασε τὸν Μιχαὴλ νὰ προβῇ εἰς σοβαρὰς πολεμικὰς προπαρασκευάς, κατὰ Φεβρουάριον δὲ τοῦ 813 ἐστράτευεν ἐναντίον τῶν Βουλγάρων, ἄγων στρατεύματα ἐκλεκτὰ καὶ πολυάριθμα. Ἀλλ' οὐδὲ τὴν φορὰν ταύτην κατέστη ἱκανὸς νὰ χρησιμοποιήσῃ αὐτά. Ὅταν ἔφθασεν εἰς Ἀδριανούπολιν, ἐπληροφορήθη ὅτι ὁ βουλγαρικὸς στρατὸς ἐμαστίζετο ὑπὸ λοιμοῦ, καὶ ἀμέσως ἔσπευσε νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἵνα κοσμήσῃ διὰ πλακῶν ἀργύρου τὸν τάφον τοῦ πατριάρχου Ταρασίου, εἰς τὰς εὐχὰς τοῦ ὁποίου ἀπέδωσεν ὁ Μιχαὴλ τὴν ἐνσκήψασαν παρὰ τοῖς Βουλγάροις ἐπιδημίαν.

Μετ' ὀλίγον οἱ Βούλγαροι ἀρχίζουν πάλιν τὰς ἐπιδρομάς των καὶ ὁ Μιχαὴλ Α' συγκεντρώνει καθ' ὅλον τὸν χειμῶνα 812—813 ἰσχυρὰς ἐν Κωνσταντινουπόλει δυνάμεις, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὁποίων ἵστανται στρατηγοὶ πεπειραμένοι καὶ γενναῖοι (Ἰωάννης Ἀπλάκης, Λέων ὁ Ἀρμένιος, Μιχαὴλ ὁ Τραυλὸς κλ.), καὶ τέλος, ἀρχομένου τοῦ ἔαρος (12 Μαΐου 813), ἐκκινεῖ ἐκ Κωνσταντινουπόλεως φέρων μεθ' ἑαυτοῦ τὴν βασίλισσαν Προκοπίαν, ἡ παρουσία τῆς ὁποίας προκαλεῖ τὴν γενικὴν ἀγανάκτησιν. Ἀλλὰ καὶ μὲ τοσοῦτον στρατὸν οὐδὲν κατώρθωσεν. Ἀρκούμενος καὶ πάλιν εἰς ἀσκόπους ἀνὰ τὴν Θράκην μετασταθμεύσεις, ἔδωσε τὸν καιρὸν εἰς τοὺς Βουλγάρους νὰ εἰσβάλωσιν εἰς τὸ βυζαντινὸν ἔδαφος καὶ νὰ στρατοπεδεύσωσιν οὐ μακρὰν τοῦ βυζαντινοῦ στρατοῦ. Ὁ Μιχαὴλ ἀποσύρεται πάλιν εἰς Ἀδριανούπολιν, παρὰ τὰς διαμαρτυρίας τῶν στρατηγῶν του, καὶ ἐκεῖθεν ἀρχίζει ἐκ νέου τὰς συνήθεις αὐτῷ μετακινήσεις ὑπὸ τοῦ φοβεροῦ καύσωνα τοῦ Ἰουνίου, μέχρις οὗ οἱ στρατηγοὶ Ἰωάννης Ἀπλάκης καὶ Λέων, ἀγανακτήσαντες, ἐπετέθησαν τὴν 22 Ἰουνίου αὐτοβούλως κατὰ τῶν ἐχυρῶς στρατοπεδευσάντων Βουλγάρων. Ἅμα τῇ ἐνάρξει τῆς μάχης ὁ Μιχαήλ, ὑπὸ τρόμου καταληφθείς, ἔσπευσε νὰ διατάξῃ γενικὴν ὑποχώρησιν καὶ συγχρόνως ἔδωσε τὸ παράδειγμα τῆς φυγῆς, τραπεὶς ἐσπευσμένως εἰς Ἀδριανούπολιν καὶ καταλιπὼν εἰς χεῖρας τῶν Βουλγάρων ἁπάσας τοῦ στρατοῦ τὰς ἀποσκευάς. Ἐν Ἀδριανουπόλει, τρέμων ἐκ τοῦ φόβου, ἐσκέφθη νὰ παραιτηθῇ τοῦ θρόνου, προέτρεψε δὲ τὸν στρατηγὸν Λέοντα νὰ ἀναγορευθῇ βασιλεὺς καὶ εἶτα ἀπῆλθεν ἐν σπουδῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἔνθα ἐπανελάμβανε τὴν περὶ παραιτήσεως ἀπόφασίν του, παρὰ τὰς διαμαρτυρίας τῆς φιλοδόξου συζύγου του Προκοπίας. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ ἐν Ἀδριανουπόλει στρατός, ἀναγορεύσας βασιλέα τὸν στρατηγὸν Λέοντα, ἐβάδισε κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, καὶ εἰσελθὼν ἀκωλύτως ἐν αὐτῇ τὴν 10 Ἰουλίου, ἀνεβίβασε τὴν ἐπομένην ἐπὶ τοῦ θρόνου τὸν νέον βασιλέα, ἐνῷ ὁ Μιχαήλ, ἡ σύζυγός του καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ἐκείροντο μοναχοί. Ὁ Μιχαὴλ ἐπέζησε 32 ἔτη ἀπὸ τῆς ἐκθρονίσεώς του, ἀποθανὼν τῷ 845. Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Β'** ***ὁ Τραυλός.*** Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (820—829). Ἐγεννήθη ἐκ γονέων εὐτελῶν ἐν Ἀμορίῳ τῆς Μ. Ἀσίας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Η' αἰῶνος. Ὑπηρετῶν ὡς ἀνώτερος ἀξιωματικὸς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ τῷ 803, ὅτε ἐστασίασε κατὰ τοῦ Νικηφόρου Α' ὁ στρατηγὸς Βαρδάνιος, δὲν ἠθέλησε νὰ συνταχθῇ αὐτῷ, δι' ὃ καὶ ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος, προαχθεὶς εἰς ἀνώτερα ἀξιώματα, ἅτινα διετήρησε καὶ ἐπὶ τοῦ Μιχαὴλ Α' Ραγκαβὲ (811—813). Μετὰ τὴν ἐκραγεῖσαν (813) στάσιν κατὰ τοῦ Μιχαὴλ Α' ὁ Μιχαὴλ Β' ἐτάχθη μετὰ τῶν στασιαστῶν καὶ ὑπεστήριξεν ἐκθύμως τὴν εἰς τὸν θρόνον ἄνοδον τοῦ φίλου του στρατηγοῦ Λέοντος τοῦ Ἀρμενίου. Ὁ Λέων προήγαγε τὸν Μιχαὴλ εἰς πατρίκιον καὶ διώρισεν αὐτὸν ἀρχηγὸν τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς. Παρ' ὅλα ταῦτα ὁ Μιχαήλ,

Digitized by Google

εἴτε διότι ἐφθόνησε τὴν τύχην τοῦ παλαιοῦ συναδέλφου του, εἴτε διότι ἔσχεν ἄλλους λόγους δυσαρεσκείας ἐναντίον του, ἐξύφανε τῷ 820 συνωμοσίαν ἵνα καταλάβῃ τὸν θρόνον. Ἀνακαλυφθεὶς κατεδικάσθη εἰς θάνατον, ἀλλὰ τῇ παρακλήσει τῆς βασιλίσσης ἡ ποινὴ δὲν ἐξετελέσθη, καὶ ὁ Μιχαὴλ ἐφυλακίσθη σιδηροδέσμιος ἐν τοῖς βασιλικοῖς παλατίοις, ἐκεῖθεν δὲ διά τινων φίλων του αὐλικῶν ἐπέτυχε νὰ συνεννοηθῇ μετὰ τῶν ἐν τῇ πόλει συνωμοτῶν, οἵτινες κατώρθωσαν, μεταμφιεσθέντες εἰς ἱερεῖς, νὰ εἰσέλθωσι περὶ τὸν ὄρθρον τῆς 26 Δεκεμβρίου εἰς τὸ παλάτιον καὶ νὰ δολοφονήσωσι τὸν Λέοντα ἐντὸς τῆς ἀνακτορικῆς ἐκκλησίας, μεθ' ὃ ἐξαγαγόντες ἐκ τῆς φυλακῆς τὸν Μιχαὴλ ἀνεβίβασαν αὐτόν, φέροντα εἰσέτι τὰ δεσμά του, ἐπὶ τοῦ βασιλικοῦ θρόνου.

Καταλαβὼν οὕτω τὴν ἀρχὴν ὁ Μιχαὴλ Β', ἐπελήφθη μετὰ δραστηριότητος τῆς ἐσωτερικῆς εἰρηνεύσεως τῆς χώρας, ἣν ἐτάρασσεν εἰσέτι τὸ ζήτημα τῶν μεταρρυθμίσεων καὶ δὴ ἡ κατάργησις τῆς προσκυνήσεως τῶν εἰκόνων. Ἀπαίδευτος ὢν καὶ μὴ ἐννοῶν οὔτε τὰς μεταρρυθμίσεις οὔτε τὰ ὑπὲρ οὔτε τὰ κατὰ τῆς εἰκονολατρείας ἐπιχειρήματα, ἀπέφυγε νὰ ταχθῇ ὑπὲρ οὐδετέρας τῶν ἀντιμαχομένων μερίδων καὶ ἐπεζήτησε τὴν γαλήνην διὰ τῆς ἀνοχῆς καὶ τῶν μὲν καὶ τῶν δέ· ἀνεκάλεσεν ἐκ τῆς ἐξορίας τοὺς εἰκονολάτρας καὶ συγχρόνως ἐξέδωκε θέσπισμα ἀπαγορεῦον πᾶσαν περὶ τῶν εἰκόνων δημοσίαν συζήτησιν καὶ διατάσσον «σιγῇ βαθείᾳ τῆς τῶν εἰκόνων μνήμης ἕνεκα ἐμπολιτεύεσθαι τὸ σύνολον». Τοιαύτην ἀκολουθῶν πολιτικήν, δὲν ἠθέλησε νὰ μεταβάλῃ τὸ ἐν τοῖς πατριαρχείοις καθεστώς, ὥστε, ὅταν ἀπέθανεν (821) ὁ εἰκονομάχος πατριάρχης Θεόδοτος Α' ὁ Μελισσηνός, ἀντικατέστησεν αὐτὸν διὰ τοῦ ἐπίσης εἰκονομάχου Ἀντωνίου Α'. Τοῦτο προεκάλεσε τὴν δυσαρέσκειαν τῶν ὀπαδῶν τῆς εἰκονολατρείας, οἵτινες, ἐπωφεληθέντες τῆς μετ' ὀλίγον ἐκραγείσης μεγάλης στάσεως τοῦ στρατηγοῦ Θωμᾶ, ἔσπευσαν νὰ ἐνισχύσωσι κατὰ τὸ δυνατὸν αὐτόν.

Ὁ Μιχαὴλ Β' μετὰ διετεῖς ἀγῶνας ἐπέτυχε νὰ καταστείλῃ (τῷ 823) τὴν φοβερὰν ἐκείνην ἀνταρσίαν καὶ νὰ τιμωρήσῃ ἀγρίως τόν τε ἀρχηγὸν αὐτῆς καὶ τοὺς κυριωτέρους τῶν ὀπαδῶν του· ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως οἱ Ἄραβες, ἐπωφελούμενοι τοῦ μακροῦ ἐκείνου ἐμφυλίου σπαραγμοῦ, ἐδῄουν τὰ ἑλληνικὰ παράλια, τῷ δὲ 823 κατώρθωσαν νὰ καταλάβωσι τὴν Κρήτην. Πρὸς ἀνάκτησιν αὐτῆς ὁ Μιχαὴλ ἐξέπεμψε τρεῖς ἐκστρατείας: τῷ 825 ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Φωτεινόν, τῷ 826 ὑπὸ τὸν Κρατερὸν καὶ τῷ 827 ὑπὸ τὸν Ὡορύφαν· καὶ δὲν κατώρθωσε μὲν νὰ ἀνακτήσῃ τὴν νῆσον, ἀλλ' ἐπέτυχε νὰ περιορίσῃ τὰς ἀνὰ τὸ Αἰγαῖον ἀραβικὰς ἐπιδρομάς. Ἀλλ' αἱ περιπέτειαι ἐκεῖναι ἔσχον θλιβερὰς συνεπείας καὶ εἰς τὰς πλέον ἀπομεμακρυσμένας ἐπαρχίας τῆς αὐτοκρατορίας. Τῷ 825 ἐστασίασεν ἐν Σικελίᾳ ὁ στρατηγὸς Εὐφήμιος, ὥστε ἐδέησε νὰ ἀποσταλῇ ἰσχυρὰ ἐκεῖ δύναμις ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Φωτεινόν, ἵνα ἐπαναφέρῃ τὴν τάξιν. Τῆς νέας ταύτης ἀνταρσίας ἐπωφεληθέντες οἱ Ἄραβες, ἐπέδραμον κατὰ τῆς Σικελίας καὶ ἐδῄωσαν μέγα αὐτῆς μέρος· ἀφ' ἑτέρου ἐστασίασαν οἱ ἐν Δαλματίᾳ, ἐξεδίωξαν τὰς βυζαντινὰς ἀρχὰς καὶ ἐκήρυξαν τὴν ἀνεξαρτησίαν των. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐξηκολούθουν ἐν Κωνσταντινουπόλει αἱ ἔριδες περὶ τὸ ζήτημα τῶν εἰκόνων, τὸ ὁποῖον δὲν ἔπαυε νὰ ὑποδαυλίζῃ ἐπιτηδείως ἡ Ῥώμη. Πρὸς κατάπαυσιν αὐτοῦ ὁ Μιχαὴλ Β' ἀπέστειλε τῷ 824 πρέσβεις πρὸς τὸν αὐτοκράτορα τῆς Δύσεως Λουδοβῖκον Α' (813—830) καὶ δι' αὐτοῦ ἐπέτυχε νὰ περισταλῶσιν αἱ παπικαὶ μηχανορραφίαι. Ὁ Μιχαὴλ Β', μετὰ τὸν θάνατον τῆς πρώτης αὐτοῦ συζύγου, ἐνυμφεύθη τῷ 823 τὴν Εὐφροσύνην, θυγατέρα τοῦ Κωνσταντίνου ΣΤ'. Ἀπέθανε τῷ 829, καταλιπὼν τὸν θρόνον εἰς τὸν ἐκ τοῦ πρώτου γάμου υἱόν του Θεόφιλον.

Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Γ' ὁ *Μέθυσος*.** Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (842—867), υἱὸς τοῦ Θεοφίλου (829—867) καὶ τῆς Θεοδώρας, γεννηθεὶς τῷ 839. Διεδέχθη τὸν πατέρα του ἀποθανόντα τὴν 20 Ἰανουαρίου 842. Τριετὴς τότε ὤν, ἐπετροπεύετο ὑπὸ τῆς βασιλίσσης μητρός του, ἐχούσης ὡς συνεπιτρόπους τὸν ἀδελφόν της Βάρδαν, τὸν θεῖόν της Μανουὴλ καὶ τὸν λογοθέτην Θεόκτιστον. Εἰδικῶς τὴν ἀνατροφήν του ἀνέλαβεν ὁ Βάρδας, ὅστις σκοπίμως παρημέλησεν αὐτήν, παραδοὺς αὐτὸν εἰς αἰσχίστους παιδαγωγοὺς καὶ γύναια, ἡ μετὰ τῶν ὁποίων ἀναστροφὴ ὑπέθαλψε καὶ ἐνεθάρρυνε τὰς ἀγενεστέρας ὁρμὰς τοῦ παιδός. Τοιαύτη ὑπῆρξεν ἡ ἔκλυσις τῶν ἠθῶν αὐτοῦ, ὥστε ἡ μήτηρ του ἐθεώρησεν ἐπιβεβλημένον νὰ νυμφεύσῃ αὐτόν, ἐννεαετῆ μόλις ὄντα, μετὰ τῆς Εὐδοκίας Δεκαπολιτίσσης, ἵνα τὸν ἀποτρέψῃ ἀπὸ τὰς μετὰ τῶν ἄλλων γυναικῶν σχέσεις του. Ἀφ' ἑτέρου ὅμως παρ' οὐδενὸς ἐλαμβάνετο φροντὶς ἵνα ἀπομακρυνθῶσιν ἐκ τῆς βασιλικῆς αὐλῆς οἱ διάφοροι σάτυροι, πρὸς τοὺς ὁποίους ὁ Μιχαὴλ Γ' ἐσκόρπιζεν ἀφειδῶς τὸ δημόσιον χρῆμα. Εἶναι ἀνεκδιήγητοι οἱ ἐμπαιγμοὶ τῆς θρησκείας, αἱ ὕβρεις κατὰ τῆς ἐναρέτου μητρός του Θεοδώρας, κατὰ τοῦ πατριάρχου καὶ κατὰ παντὸς ἱεροῦ καὶ ὁσίου, ἃς διέπραττεν οὗτος χάριν ἀστεϊσμοῦ μετὰ τῶν περὶ αὐτὸν σατύρων.

Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ ἐν Πελοποννήσῳ Σλάβοι στασιάσαντες ἐλεηλάτουν τὴν χώραν καὶ ἠπείλουν νὰ καταλάβωσι πάσας τὰς ἐκεῖ πόλεις. Καὶ ὑπετάγησαν μὲν οὗτοι ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Θεοκτίστου Βρυεννίου, ἀλλ' ἀφ' ἑτέρου ἀπετύγχανον οἰκτρῶς αἱ κατὰ τῶν Ἀράβων τῆς Κρήτης ἀποσταλεῖσαι ἐκστρατεῖαι, καθ' ὃν χρόνον αἱ μὲν ἐν Καλαβρίᾳ καὶ Ἀπουλίᾳ (Ν. Ἰταλίᾳ) βυζαντιναὶ κτήσεις κατελαμβάνοντο ὑπὸ τῶν Φράγκων, ἡ δὲ Σικελία ὑπὸ τῶν Ἀράβων καὶ τέλος αἱ μικρασιατικαὶ ἐπαρχίαι ἐδῃοῦντο ὑπὸ τῶν Παυλιανιτῶν καὶ τῶν συμμάχων των Ἀράβων. Παρ' ὅλας τὰς φοβερὰς ἐκείνας θυέλλας, αἵτινες ἔτυπτον τὴν αὐτοκρατορίαν, ὁ Μιχαὴλ ἐξηκολούθει τὰ ὄργιά του, ὁ δὲ πανίσχυρος Βάρδας περὶ ἑνὸς καὶ μόνου ἐφρόντιζε, πῶς νὰ θέσῃ ἐκποδὼν τοὺς πάντας, ἵνα ἐξασφαλίσῃ εἰς χεῖράς του πᾶσαν τὴν ἐξουσίαν. Καὶ δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐπιτύχῃ τοῦ σκοποῦ του. Ἀφοῦ ἐδολοφόνησε τὸν χρηστὸν λογοθέτην Θεόκτιστον καὶ ἐξηνάγκασε τὴν Θεοδώραν νὰ ἀπέλθῃ ἐκ τῶν παλατίων μετὰ τῶν θυγατέρων της (856), ἔπεισε τὸν Μιχαὴλ νὰ διατάξῃ ἵνα καρῶσιν αὗται μοναχαὶ διὰ τῆς βίας καὶ περιορισθῶσιν εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦ Καριανοῦ. Ἐν τέλει μὴ ἀνεχόμενος τὰς ἐπιτιμήσεις τοῦ πατριάρχου Ἰγνατίου τοῦ Ραγκαβέ, ἐπέτυχε καὶ τούτου τὴν ἐκθρόνισιν (857), ἀλλὰ συγχρόνως προεκάλεσε τὴν ἐπέμβασιν τοῦ πάπα Νικολάου, ἐξ ἧς ἐγεννήθησαν ὀξύταται ἔριδες μεταξὺ Βατικανοῦ καὶ πατριαρχείου, αἵτινες ἀπέληξαν εἰς τὸ μεταξὺ τῆς Ἀνατολικῆς καὶ τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας σχίσμα.

Μετὰ τὴν ἐκτόπισιν ὅλων τῶν ἀντιζήλων του, ὁ Βάρδας ἐπεχείρησε μετὰ τοῦ Μιχαὴλ τὴν πρώτην κατὰ τῶν Ἀράβων τῆς Μεσοποταμίας ἐκστρατείαν, καθ' ἣν οἱ Βυζαντινοὶ ἡττήθησαν οἰκτρῶς παρὰ τὰ Σαμόσατα καὶ ὑπεχώρησαν ἐν ἀταξίᾳ, καταλιπόντες πάσας αὐτῶν τὰς ἀποσκευὰς εἰς χεῖρας τῶν πολεμίων. Τῷ 859 ὁ Μιχαὴλ νέαν ἐπεχείρησε ἐκστρατείαν κατὰ τῶν εἰσβαλόντων εἰς Μικρὰν Ἀσίαν Ἀράβων. Συναντήσας τοὺς πολεμίους παρὰ τὸ Κελλάριον τῆς Δαζιμωνίτιδος, ἡττήθη καὶ ὑπεχώρησεν εἰς τὸ παρακείμενον ὄρος Ἀντζῆς καὶ τέλος ἐσώθη χάρις εἰς τὴν ἀνδρείαν τοῦ στρατηγοῦ Μανουήλ. Τῷ 862 οἱ Ἄραβες νέαν ἐπεχείρησαν ἐκστρατείαν κατὰ τῶν βυζαντινῶν χωρῶν. Κατ' αὐτῶν ὁ Μιχαὴλ ἔπεμψε τὸν στρατηγὸν Πετρωνᾶν, ὅστις, συναντήσας τοὺς πολεμίους πρὸς Δ. τοῦ Ἅλυος ποταμοῦ, κατενίκησεν αὐτούς, φονεύσας καὶ τὸν ἀρχηγὸν αὐτῶν Ἄμερ. Τῷ 865 ὁ Μιχαὴλ ἀπεφάσισε νὰ ἐκστρατεύσῃ πάλιν κατὰ τῶν Ἀράβων, ἐκωλύθη ὅμως ὑπὸ τῆς ἐπιδρομῆς τῶν Ῥώσων. Οὗτοι κατελθόντες μετὰ πολυαρίθμων πλοίων μέχρι τοῦ Βοσπόρου προσέβαλον τὴν Κωνσταντινούπολιν, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον κατεστράφησαν σχεδὸν πάντες ἐκ τῆς ἐνσκηψάσης σφοδρᾶς τρικυμίας.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἤρχισε νὰ δύῃ ὁ ἀστὴρ τοῦ πανισχύρου Βάρδα. Ὑποβλέπων οὗτος τὸν Μακεδόνα Βασίλειον, ὃν ὁ Μιχαὴλ εἶχε πρό τινος προσλάβει ὡς πρωτοστράτορα καὶ εἶτα (865) ὡς παρακοιμώμενον, ἀπεφάσισε νὰ θέσῃ καὶ αὐτὸν ἐκποδών, ὅπως καὶ προηγουμένως τοὺς ἄλλους ἀντιζήλους του, ἀλλ' ἀπέτυχεν. Ὁ Βάρδας ἐφονεύθη κατὰ διαταγὴν τοῦ Μιχαὴλ (866), ὅστις τότε υἱοθέτησε τὸν Βασίλειον καὶ μετὰ ἕνα μῆνα (27 Μαΐου) τὸν προσέλαβε συμβασιλέα, στέψας αὐτὸν πανηγυρικῶς ἐν τῷ ναῷ τῆς τοῦ Θεοῦ Σοφίας ὑπὸ τὰς εὐλογίας τοῦ πατριάρχου Φωτίου.

Ἤδη, ἀντὶ τοῦ Βάρδα, ὁλόκληρος ἡ βασιλικὴ ἐξουσία περιῆλθεν εἰς τὰς χεῖρας τοῦ Βασιλείου, ὁ δὲ Μιχαὴλ ἐξηκολούθει, ὡς καὶ πρίν, τὰς ἀσχημοσύνας του, ἕνεκα τῶν ὁποίων προυκαλοῦντο σοβαραὶ προστριβαὶ μεταξὺ τῶν δύο συμβασιλέων. Ὁ Μιχαὴλ δυσαρεστηθεὶς κατὰ τοῦ Βασιλείου ἐξύβρισε καὶ ἠπείλησεν αὐτόν, ἐν τέλει δὲ ἀπεφάσισε νὰ προσλάβῃ καὶ ἄλλον συμβασιλέα, ἕνα πρώην ἐρέτην τοῦ βασιλικοῦ δρόμωνος, τὸν Βασιλικῖνον, ἄρτι προαχθέντα, διὰ τὸ κάλλος καὶ μόνον αὐτοῦ, εἰς πατρίκιον. Ἀλλὰ δὲν ἐπρόλαβε νὰ πραγματοποιήσῃ τὴν ἀπόφασίν του ἐκείνην, διότι, προλαβὼν ὁ Βασίλειος, ἐδολοφόνησεν αὐτὸν τὴν 23 Σεπτεμβρίου 867.

Ν. ΚΛΣ

—**Μιχαὴλ Δ' ὁ *Παφλαγών*.** Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1034—1041). Ἀνὴρ ταπεινῆς καταγωγῆς, ἀπαίδευτος καὶ ἀνίκανος, ἀνῆλθεν εἰς τὸν ἐνδοξότερον καὶ ἰσχυρότερον τῆς Οἰκουμένης θρόνον ἁπλῶς καὶ μόνον διότι ἦτο ὡραῖος καὶ ἠγαπήθη ὑπὸ μιᾶς ἐρωτομανοῦς γραίας, τῆς αὐτοκρατείρας Ζωῆς τῆς Πορφυρογεννήτου (1028—1050), εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ὁποίας εἰσῆλθεν ὡς ἁπλοῦς θεράπων ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του, τοῦ εὐνούχου Ἰωάννου, ὅστις ἦτο πραιπόσιτος καὶ εἶτα ὀρφανοτρόφος καὶ πανίσχυρος κυβερνήτης ἐπὶ Ῥωμανοῦ Γ', συζύγου τῆς Ζωῆς. Ἡ Ζωή, ἐρασθεῖσα μανιωδῶς τοῦ ὡραίου αὐτῆς θεράποντος, ἀπεφάσισε νὰ νυμφευθῇ αὐτὸν καὶ ἐν συνεννοήσει μετὰ τοῦ εὐνούχου Ἰωάννου ἐδολοφόνησε τὸν σύζυγόν της Ῥωμανόν, τὴν 11 Ἀπριλίου 1034, τὴν ἰδίαν δ' ἑσπέραν ἐτέλεσε τὸν γάμον αὐτῆς μετὰ τοῦ Μιχαὴλ καὶ ἀνηγόρευσεν αὐτὸν βασιλέα.

Ἡ αὐτοκρατορία ἀντεμετώπιζε τότε σοβαρωτάτας ἐξωτερικὰς ἀνωμαλίας. Οἱ στόλοι τῶν ἐν Σικελίᾳ καὶ Βορ. Ἀφρικῇ Ἀράβων ἐδῄουν τὰ βυζαντινὰ παράλια, οἱ Πετσενέγοι ἐλεηλάτουν τὰς εὐρωπαϊκὰς ἐπαρχίας, εἰς ἐπίμετρον δὲ ἐστασίαζον οἱ Βούλγαροι καὶ οἱ Σέρβοι, καθὼς καὶ ὁ ὑποτελὴς ἐμίρης τοῦ Χαλεπίου καὶ ὁ τῆς Ἀβασγίας ἡγεμὼν Παγκράτιος. Ἀπέναντι τῶν κινδύνων ἐκείνων ὁ Μιχαὴλ παντελῶς ἠπράκτει, τὴν δὲ βασιλικὴν ἐξουσίαν ἐχειρίζετο ὁλόκληρον ὁ ἀδελφός του, ὅστις ὅμως περὶ ἑνὸς κυρίως ἐφρόντιζε: πῶς νὰ ἐξασφαλίσῃ ἑαυτὸν καὶ τὸν ἀδελφόν του ἀπὸ τῶν παλιμβούλων διαθέσεων τῆς αὐτοκρατείρας, καὶ πρὸς τοῦτο ταύτην μὲν παντοιοτρόπως περιώριζε, τὰ δὲ ἀνώτατα στρατιωτικὰ ἀξιώματα ἐνεπιστεύθη εἰς τοὺς ἀδελφούς του καὶ λοιποὺς συγγενεῖς αὐτοῦ, οὓς προεχειρίσατο ἐκ τοῦ μηδενὸς εἰς ἀρχιναυάρχους καὶ ἀρχιστρατήγους. Ἐσῴζοντο ὅμως εἰσέτι πλεῖστοι ἐκ τῶν παλαιμάχων στρατηγῶν τῶν ἐνδόξων στρατιῶν τοῦ Βασιλείου Β', οἷοι ὁ ναύαρχος Κ. Χαγές, ὅστις συνέτριψεν ἐπανειλημμένως τοὺς ἐπιδραμόντας εἰς τὸ Αἰγαῖον ἀραβικοὺς στόλους, ὁ στρατηγὸς Γ. Μανιάκης, ὅστις ἐνίκησε τοὺς Ἄραβας τῆς Σικελίας καὶ ἀνέκτησε τὴν νῆσον, ὁ στρατηγὸς Δυρραχίου Β. Συναδηνός, ὅστις ἀντεμετώπισε δραστηρίως τοὺς ἐπαναστατήσαντας Βουλγάρους. Αἱ αὐλικαὶ ῥαδιουργίαι δὲν ἀφῆκαν τούτους νὰ φέρωσιν εἰς πέρας τὸ ἔργον των. Διαβληθέντες οὗτοι ὅτι ἐμελέτων ἀνταρσίαν, καθῃρέθησαν, ἀντικατασταθέντες ὑπὸ ἐντελῶς ἀπείρων στρατηγῶν, οἷοι οἱ Στέφανος, Δοκειανός, Πεδιαδίτης, Δερμοκαΐτης κλπ., ἐξ αἰτίας τῶν ὁποίων ἅπασα ἡ Σικελία καὶ ἡ Κάτω Ἰταλία ἀπωλέσθησαν, πλὴν ὀλίγων τινῶν παραλίων πόλεων, οἱ Σέρβοι παρέμειναν ἀνεξάρτητοι, οἱ δὲ Βούλγαροι κατῆλθον μέχρι τῶν τειχῶν τῆς Θεσσαλονίκης, μέχρις οὗ (1041) ἐξεδιώχθησαν καὶ ὑπετάγησαν πάλιν ὑπὸ τοῦ Ἀλουσιάνου. Ἐν τῷ μέσῳ τῶν περιπετειῶν ἐκείνων ὁ βασιλεὺς Μιχαὴλ Δ', πάσχων ἐξ ἐπιληψίας καὶ ἐπὶ πλέον προσβληθεὶς ὑπὸ ὑδρωπικῆς νόσου, ἀπέθανε τὴν 10 Δεκεμβρίου 1041 καὶ ἐτάφη εἰς τὴν μονὴν τῶν Ἁγ. Ἀναργύρων (βλ. καὶ λ. *Ἀλουσιᾶνος, Ζωή, Ἰωάννης* ὀρφανοτρόφος, *Μανιάκης Γ.*)

Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Ε', ὁ *Καλαφάτης*.** Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1041—1042). Ἦτο υἱὸς τοῦ πατρικίου καὶ ναυάρχου Στεφάνου, τοῦ ἐπιλεγομένου Καλαφάτου, ἐκ τοῦ γάμου αὐτοῦ μετὰ τῆς Μαρίας, ἀδελφῆς τοῦ αὐτοκράτορος Μιχαὴλ Δ' τοῦ Παφλαγόνος (1034—1041). Τῷ 1034 προήχθη εἰς καίσαρον ὑπὸ τοῦ θείου του Μιχαὴλ Δ' καί, ὡς φαίνεται, ἀνέπτυξε δραστηριότητα καὶ εὐφυΐαν εἰς τὰς ἀνατεθείσας αὐτῷ ὑπηρεσίας, ὥστε, ὅταν ἀπέθανεν ὁ Μιχαὴλ Δ' (1041), ἡ αὐτοκράτειρα Ζωὴ υἱοθέτησεν αὐτὸν καὶ ἀμέσως τὴν ἐπομένην (11 Δεκεμβρίου 1041) τὸν ἔστεψε βασιλέα, συγχρόνως δ' ἀπεμάκρυνεν ἐκ τῆς αὐλῆς καὶ ἐξώρισεν εἰς τὰς ἐπαρχίας ἅπαντας τοὺς θείους του.

Ἐν ἀρχῇ ὁ Μιχαὴλ Ε' ἐφέρετο εὐλαβῶς πρὸς τὴν εὐεργέτιδα αὐτοῦ Ζωὴν καὶ ἐπέτυχε τὴν συγκατάθεσιν αὐτῆς, ἵνα ἀνακληθῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν ὁ ἐκ τῶν θείων του Κωνσταντῖνος καὶ νὰ ἀπονεμηθῇ αὐτῷ ὁ τίτλος τοῦ νωβιλισσίμου. Συγχρόνως ὅμως, φοβούμενος τὸ παλίμβουλον τοῦ χαρακτῆρός της, ἐπεζήτει εὐκαιρίαν ἵνα θέσῃ αὐτὴν ἐκποδών, ἀλλὰ πρὶν ἢ προβῇ εἰς οἱανδήποτε ἐνέργειαν ἐθεώρησεν ἀναγκαῖον νὰ βολιδοσκοπήσῃ τὰς διαθέσεις τοῦ λαοῦ καὶ πρὸς τοῦτο ἀνήγγειλεν ὅτι τὴν Κυριακὴν τοῦ Θωμᾶ (1042) θὰ μετέβαινεν ἐν πομπῇ εἰς τὸν ναὸν τῶν Ἁγ. Ἀποστόλων. Αἱ ὁδοὶ δι' ὧν θὰ διήρχετο ὁ βασιλεὺς διεκοσμήθησαν ὑπὸ τῶν κατοίκων διὰ πέπλων καὶ ἄλλων ὑφασμάτων χρυσοΰφῶν καὶ διὰ χρυσῶν καὶ ἀργυρῶν σκευῶν, τὰ δὲ πλήθη ὑπεδέχθησαν διὰ θερμοτάτων εὐφημιῶν τὸν διερχόμενον αὐτοκράτορα φέροντα τὸν βασιλικὸν διάδημα καὶ ἀκολουθούμενος ὑπὸ τῆς συγκλήτου καὶ τῶν αὐλικῶν αὐτοῦ. Μεθυσθεὶς ἐκ τῆς ἐνθουσιώδους ὑποδοχῆς ἧς ἔτυχεν ἐκ μέρους τοῦ λαοῦ, ἀπεφάσισεν ὁ Μιχαὴλ ἅμ' ὡς ἐπέστρεψεν εἰς τὸ παλάτιον, νὰ ἐκτελέσῃ τὴν ἀπόφασίν του, δι' ὃ καὶ ἀμέσως διεμήνυσε τῷ πατριάρχῃ νὰ μεταβῇ εἰς τὴν ἐν τῷ Βοσπόρῳ μονήν του, ἔνθα ἐσκόπευε νὰ ἐπισκεφθῇ αὐτὸν τὴν ἐπομένην, συγχρόνως δὲ τῷ ἀπέστειλε τέσσαρας λίτρας χρυσοῦ διὰ τὰ τῆς ὑποδοχῆς ἔξοδα. Τὴν ἰδίαν ἐκείνην ἑσπέραν διέταξε τὴν σύλληψιν τῆς Ζωῆς καὶ τὴν μεταφορὰν αὐτῆς εἰς Πρίγκηπον, ἔνθα βίᾳ ἐκάρη αὕτη μοναχή. Ἀμέσως μετὰ τοῦτο συνέταξε διάγγελμα πρὸς τὸν λαόν, ἐν ᾧ ἔγραφεν ὅτι, ἐπειδὴ ἡ αὐτοκράτειρα ἐφάνη κακόνους πρὸς αὐτόν, τὴν ἐξώρισε καθὼς καὶ τὸν ὁμόφρονα αὐτῆς πατριάρχην, ἐν τέλει δὲ ὑπέσχετο πλεῖστα ἀγαθὰ πρὸς τὸν λαόν, ἐὰν τηρήσῃ τὴν πρὸς αὐτὸν εὔνοιαν. Τὸ διάγγελμα ὁ λαὸς ὑπεδέχθη δυσαρέστως. Τὰ πλήθη ἔδραμον εἰς τὸν ναὸν τῆς τοῦ Θεοῦ Σοφίας, ὑβρίζοντα τὸν αὐτοκράτορα καὶ ἀπαιτοῦντα τὴν ἐπάνοδον τῆς Ζωῆς. Συγχρόνως οἱ συγκλητικοὶ μετὰ τῶν ἄλλων τῆς πόλεως ἀρχόντων, ἀκολουθούμενοι ὑπὸ τοῦ λαοῦ, μετέβησαν εἰς τὴν μονὴν τοῦ Πετρίου, παρέλαβον τὴν ἐκεῖ μονάζουσαν Θεοδώραν (ἀδελφὴν τῆς Ζωῆς), ἔφερον αὐτὴν εἰς τὸν ναὸν τῆς τοῦ Θεοῦ Σοφίας, ἐνέδυσαν αὐτὴν τὴν βασιλικὴν ἁλουργίδα καὶ τὴν ἀνευφήμουν βασίλισσαν σὺν τῇ Ζωῇ, μετὰ τοῦτο δέ, κυκλώσαντες τὰ παλάτια, ἠξίουν νὰ καθαιρεθῇ ὁ αὐτοκράτωρ.

Digitized by Google

Ὁ Μιχαήλ, πτοηθεὶς ἐκ τῆς ἐξεγέρσεως τοῦ λαοῦ, ἔσπευσε νὰ ἐπαναφέρῃ τὴν Ζωήν, ἣν ἐνδύσας πάλιν διὰ τῶν βασιλικῶν ἐνδυμάτων παρουσίασεν εἰς τὸν λαόν, φρονῶν ὅτι οὕτω θὰ κατηύναζε τὴν ὀργήν του. Ἀλλὰ τὰ πλήθη ἀδυσώπητα ἐπέμενον ἀποδοκιμάζοντα, λιθοβολοῦντα καὶ τοξεύοντα αὐτόν, καὶ τότε οὗτος ἀπογνοὺς ἀπεφάσισε ν' ἀπέλθῃ εἰς τὴν μονὴν τοῦ Στουδίου καὶ νὰ καρῇ μοναχός, ἀλλ' ἀνεχαιτίσθη ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς σωματοφυλακῆς του.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ Ζωή, συγκαλέσασα τοὺς συγκλητικούς, ηὐχαρίστησεν αὐτοὺς καὶ ἐζήτησε τὴν γνώμην των περὶ τοῦ πρακτέου. Εἰς ἀπάντησιν ἠξίωσαν πάντες νὰ καθαιρεθῇ καὶ τυφλωθῇ ὁ Μιχαήλ. Ἡ Ζωὴ ἐδίσταζε νὰ διατάξῃ τοῦτο, ἀλλ' ἡ ἀδελφή της Θεοδώρα, ἔξαλλος ἐκ τῆς ὀργῆς, διέταξε τὸν νέον ἔπαρχον Καμπανάρην νὰ ἐξορύξῃ τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τε Μιχαὴλ καὶ τοῦ θείου του, τοῦ νωβιλισσίμου Κωνσταντίνου, οἵτινες ἐν τῷ μεταξὺ εἶχον καταφύγει διά τινος πλοιαρίου εἰς τὴν μονὴν τοῦ Στουδίου. Ὁ λαὸς ἀποσπάσας ἐκεῖθεν αὐτούς, τοὺς ἔσυρεν ἀπὸ τῶν ποδῶν διὰ μέσου τῆς πόλεως μέχρι τῆς θέσεως Σίγμα, ἔνθα ἀπετύφλωσεν ἀμφοτέρους. Μετὰ τοῦτο ὁ μὲν Μιχαὴλ ἐξωρίσθη εἰς τὴν μονὴν τῶν Ἐλεγμῶν, οἱ δὲ συγγενεῖς του εἰς διαφόρους μακρὰν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπαρχίας. Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ ΣΤ'** ὁ ***Στρατιωτικός***. Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1056—1057). Ἐξ ἀφανοῦς οἰκογενείας τοῦ Βυζαντίου, ὑπηρέτησεν ἐπὶ μακρὸν εἰς τὸν στρατὸν καὶ τιμηθεὶς διὰ τοῦ τίτλου τοῦ πατρικίου παρέμενεν ὡς ἀπόμαχος ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1056, ὅτε, ἀποθανούσης τῆς Θεοδώρας καὶ παραμείναντος τοῦ θρόνου ἄνευ διαδόχου, ἐξελέγη αὐτοκράτωρ ὑπὸ τῶν ἐν τῇ αὐλῇ καὶ αὐθημερὸν ἀνηγορεύθη τοιοῦτος, μολονότι ἦτο ἐντελῶς ἀπαίδευτος καὶ ἄπειρος τῶν πραγμάτων, πρὸς δὲ προβεβηκὼς λίαν τὴν ἡλικίαν. Εἰς τὴν ἐκλογὴν αὐτοῦ προέβησαν οἱ αὐλικοί, «ἵνα σχῆμα μόνον καὶ ὄνομα αὐτὸς ἔχῃ τῆς βασιλείας, αὐτοὶ δὲ διεξάγωσιν ὡς βούλονται τὰ κοινὰ καὶ πάντων τυγχάνωσι κύριοι», κατὰ τὸν Κεδρηνόν. Τὴν ἐπομένην τῆς ἀναρρήσεώς του εἰς τὸν θρόνον Θεοδόσιός τις, νομίζων ἑαυτὸν ἀδικούμενον, διότι, πρωτεξάδελφος ὢν τοῦ ἀποθανόντος Κωνσταντίνου Θ' τοῦ Μονομάχου (1042—1055), παρηγκωνίσθη τοῦ θρόνου, ὥπλισε τοὺς συγγενεῖς του, τοὺς ὑπηρέτας του καὶ τινας τῶν γειτόνων του καὶ ὥρμησε κατὰ τῶν παλατίων, ἵνα καταλάβῃ τὸν θρόνον· ἀποκρουσθεὶς ὅμως ὑπὸ τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς καὶ τῶν προσδραμόντων ναυτῶν τοῦ στόλου, ἐγκατελείφθη ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν του καὶ κατέφυγεν ἱκέτης μετὰ τοῦ υἱοῦ του εἰς τὸν ναὸν τῆς τοῦ Θεοῦ Σοφίας, ἔνθα συλληφθεὶς ἐξωρίσθη εἰς Πέργαμον.

Οἱ αὐλικοί, ἀποθρασυνθέντες ἐκ τῆς εὐκόλου ἐκείνης νίκης, ἐσυνέχισαν τὴν προκλητικὴν αὐτῶν ἔναντι τῆς στρατιωτικῆς μερίδος στάσιν των καὶ προσηνέχθησαν τόσον βαναύσως πρὸς προσελθόντας ἵνα χαιρετίσωσι τὸν νέον αὐτοκράτορα στρατηγοὺς τῆς Ἀνατολῆς, ὥστε δυσαρεστηθέντες οὗτοι (Ἰσαάκιος Κομνηνός, Νικηφόρος Βρυέννιος, Κατακαλὼν Κεκαυμένος κλ.) συνῆλθον ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ὤμοσαν τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ Μιχαήλ, μεθ' ὃ ἀπελθόντες εἰς Μ. Ἀσίαν καὶ συνεννοηθέντες μετ' ἄλλων ἐκεῖ συναδέλφων των, ἀνηγόρευσαν ἐν Κασταμῶνι (τὴν 8 Ἰουλίου 1507) αὐτοκράτορα τὸν στρατηγὸν Ἰσαάκιον Κομνηνὸν καὶ εἶτα συγκεντρώσαντες τὰς δυνάμεις των ἐβάδισαν κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Νικήσαντες παρὰ τὴν Νίκαιαν τὸν αὐτοκρατορικὸν στρατόν, προήλασαν εἰς Νικομήδειαν, ἔνθα ἐδέχθησαν τοὺς ἀπεσταλμένους τοῦ Μιχαήλ, προτείνοντος συμβιβασμὸν πρὸς τοὺς ἐπαναστάτας. Αἱ προτάσεις ἀπερρίφθησαν καὶ ὁ Ἰσαάκιος μετὰ τῶν ὀπαδῶν του ἔφθασαν εἰς τὴν ἔναντι τῆς Κωνσταντινουπόλεως μικρασιατικὴν ἀκτήν, ὅτε οἱ ἐν τῇ πρωτευούσῃ ἄρχοντες, πρωτοστατοῦντος τοῦ πατριάρχου Μιχαὴλ Α' τοῦ Κηρουλαρίου (1043—1059), συναγείραντες τὸν λαόν, ἀνεγνώρισαν ὡς βασιλέα τὸν Ἰσαάκιον καὶ διεμήνυσαν τούτῳ μὲν νὰ ἐπισπεύσῃ τὴν εἰς Κωνσταντινούπολιν ἄφιξίν του, εἰς δὲ τὸν αὐτοκράτορα Μιχαὴλ ΣΤ' νὰ ἐξέλθῃ τῶν παλατίων. Ὁ Μιχαὴλ βλέπων ἑαυτὸν ἐγκαταλειπόμενον ὑπὸ πάντων, μεταβὰς εἰς τὴν οἰκίαν του ἐκάρη μοναχὸς τὴν 30 Αὐγούστου 1057, τὴν δ' ἐπομένην οἱ στασιασταὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ κατέλαβον ἀμαχητὶ τὰ παλάτια, ἔνθα τὴν ἐπομένην (1 Σεπτεμβρίου) ἐδέχθησαν θριαμβευτικῶς τὸν νέον βασιλέα Ἰσαάκιον Α' (βλ. λ. *Κομνηνοί*). Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Ζ'** ***Δούκας ὁ Παραπινάκιος***. Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1071—1078). Ἦτο πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Κωνσταντίνου Ι' Δούκα (1059—1067) καὶ τῆς Εὐδοκίας. Νήπιος ἔτι ὤν, ἐστέφθη συμβασιλεὺς ὑπὸ τοῦ πατρός του καὶ τέλος δεκαετὴς περίπου διεδέχθη αὐτὸν ἀποθανόντα κατὰ Μάϊον 1067. Ἐπετροπεύετο ὑπὸ τῆς μητρός του, ἥτις μετά τινας μῆνας, νυμφευθεῖσα τὸν στρατηγὸν Ρωμανὸν Διογένην, ἀνηγόρευσεν αὐτὸν αὐτοκράτορα τὸν Ἰανουάριον 1068 καὶ τῷ παρέδωκε πᾶσαν τὴν βασιλικὴν ἀρχήν.

Κατὰ τὸ φθινόπωρον 1071, γνωσθείσης ἐν Κωνσταντινουπόλει τῆς ὑπὸ τῶν Τούρκων αἰχμαλωσίας τοῦ αὐτοκράτορος Ρωμανοῦ, οἱ ἐν Κωνσταντινουπόλει φίλοι τοῦ Δούκα, πρωτοστατοῦντος τοῦ καίσαρος Ἰωάννου Δούκα, ἀνηγόρευσαν αὐτοκράτορα τὸν Μιχαὴλ καὶ συγχρόνως ἐξώρισαν τὴν Εὐδοκίαν εἰς τὴν ὑπ' αὐτῆς ἐν Προποντίδι ἱδρυθεῖσαν ἱερὰν μονὴν τῆς Πιπερούς, καὶ βίᾳ ἔκειραν αὐτὴν μοναχήν. Μετ' ὀλίγον ἐλήφθη εἰς Κωνσταντινούπολιν ἡ εἴδησις ὅτι ὁ Ρωμανός, ἐλευθερωθεὶς ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Ἀλπ-Ἀρσλάν, ἤρχετο νὰ διεκδικήσῃ τὸν θρόνον του. Ὁ Μιχαὴλ Ζ', θορυβηθείς, ἔπεμψεν ἐπανειλημμένως στρατεύματα, ἅτινα συνέλαβον καὶ ἐτύφλωσαν τὸν Ρωμανόν.

Ὁ Μιχαήλ, ἀναλαβὼν τὴν ἀρχήν, προσέλαβεν ὡς λογοθέτην τοῦ δρόμου τὸν εὐνοῦχον Νικηφόρον (τὸν Νικηφορίτζην λεγόμενον), ὅστις ἀπομακρύνας διὰ τῶν διαβολῶν του ἐκ τῶν ἀνακτόρων πάντας τοὺς συγγενεῖς καὶ φίλους τοῦ αὐτοκράτορος, κατέστη πανίσχυρος κυβερνήτης καὶ ὡς τοιοῦτος μυρίας διέπραττεν ἀδικίας καὶ καταχρήσεις. Συνέπεσε δὲ τὸ ἔτος ἐκεῖνο σιτοδεία, ἧς ἐπωφεληθεὶς ὁ Νικηφορίτζης ἐπώλει εἰς τὸν λαὸν τὸν σῖτον ἀντὶ ἑνὸς νομίσματος τὸν μέδιμνον καὶ τοῦτον ἐλλιπῆ, «παρὰ πινάκιον», ἐκ τούτου δὲ καὶ τὸ προσωνύμιον τοῦ Μιχαήλ. Ἡ ἔλλειψις τοῦ σίτου καὶ ὁ ἐνσκήψας λοιμὸς προεκάλεσαν δεινὰς κατὰ τοῦ Μιχαὴλ δυσαρεσκείας, ἃς ἐπέτεινεν ἡ ἐπιδρομὴ τῶν Τούρκων, οἵτινες θεωρήσαντες λελυμένας τὰς συνθήκας, ἃς συνωμολόγησεν ὁ ὑπ' αὐτῶν ἀπελευθερωθεὶς Ρωμανὸς Δ', εἰσέβαλον εἰς Μικρὰν Ἀσίαν καὶ κατελάμβανον τὰς ἐκεῖ χώρας. Τὴν κατάστασιν ἐπεδείνωσαν αἱ ἐπανειλημμέναι ἧτται τῶν κατ' αὐτῶν ἀποσταλέντων στρατευμάτων καὶ ἡ ἀνταρσία τοῦ Φράγκου Ρουσιλίου ἢ Οὐρσιλίου καὶ τέλος ἡ ἐπανάστασις τῆς Βουλγαρίας, καθὼς καὶ ἡ ἐπιδρομὴ τῶν Χρωβατῶν (Κροατῶν) εἰς Ἰλλυρίαν καὶ τῶν Νορμανδῶν, οἵτινες, συμπληρώσαντες τὴν κατάκτησιν τῆς Κάτω Ἰταλίας διὰ τῆς ἁλώσεως καὶ τῆς Βάριος, ἤρχισαν τὰς ἐπιδρομὰς αὐτῶν εἰς τὰ ἀλβανικὰ παράλια. Κατὰ τούτων ἀπεστάλη ὁ στρατηγὸς Δαμιανὸς Δαλασσηνός, ὅστις ἡττήθη κατὰ κράτος ὑπὸ τῶν Βουλγάρων καὶ τῶν συμμάχων αὐτῶν Σέρβων. Ἀποσταλεὶς εἶτα ὁ στρατηγὸς Νικηφόρος Βρυέννιος, κατώρθωσε νὰ εἰρηνεύσῃ τὰς χώρας ἐκείνας, καθυποτάξας τοὺς Βουγάρους καὶ ἐκδιώξας τοὺς τε Σέρβους καὶ τοὺς Χρωβάτας καὶ τοὺς Νορμανδούς. Ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἄλλαι θύελλαι ἐξερράγησαν. Ὁ ἐν Δρίστρᾳ (τῇ νῦν Σιλιστρίᾳ) τῆς Βουλγαρίας στρατηγὸς Νέστωρ, δυσαρεστηθεὶς διὰ τὴν καθυστέρησιν τῶν μισθῶν τῶν στρατευμάτων του, ἀπῄτησε τὴν καθαίρεσιν τοῦ Νικηφορίτζη, μὴ ἱκανοποιηθείσης δὲ τῆς αἰτήσεώς του ὑπὸ τοῦ Μιχαήλ, ἐστασίασε καὶ προσλαβὼν συμμάχους τοὺς ἀγρίους Πατσινάκας, ἐδῄου τὴν Μακεδονίαν καὶ τὴν Θράκην μέχρι τῶν προαστείων τῆς Κωνσταντινουπόλεως, καθ' ὃν χρόνον οἱ κάτοικοι αὐτῆς ἀπέθνησκον σωρηδὸν ἐκ τοῦ λοιμοῦ, ὥστε πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν ἔμενον ἄταφοι.

Ἀπέναντι τῶν συμφορῶν αὐτῶν ὁ Μιχαὴλ ἔμενεν ἀνάλγητος «καὶ περὶ λόγους ἠσχόλητο καὶ ἰάμβους συντιθέναι πρὸς τοῦ Ψελλοῦ ἐδιδάσκετο»· ὡς νὰ μὴ ἤρκουν δὲ ὅλα τὰ ἀνωτέρω, ἀπεφάσισε, κατὰ συμβουλὴν τοῦ Νικηφορίτζη, νὰ καθαιρέσῃ καὶ τὸν δαφνοστεφῆ στρατηγὸν τοῦ Δυρραχίου Νικηφόρον Βρυέννιον, ἐνῷ συγχρόνως ποικιλοτρόπως περιεφρόνει τὸν ἀδελφὸν ἐκείνου Ἰωάννην Βρυέννιον, καθὼς καὶ τὸν γενναῖον στρατηγὸν Βασιλάκιον. Ταῦτα ἐξηνάγκασαν τὸν Νικηφόρον Βρυέννιον νὰ στασιάσῃ, νὰ ἀναγορευθῇ αὐτοκράτωρ καὶ νὰ γίνῃ ἐντὸς ὀλίγου κύριος πασῶν τῶν εὐρωπαϊκῶν ἐπαρχιῶν, ἀπὸ Δυρραχίου μέχρις Ἀδριανουπόλεως καὶ αὐτῆς τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ἀλλὰ συγχρόνως ἐστασίαζεν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ ἕτερος στρατηγός, ὁ Νικηφόρος Βοτανειάτης, ὅστις νικηφόρος ἐστρατοπέδευσεν εἰς τὰς ἔναντι τοῦ Βυζαντίου πόλεις Χαλκηδόνα καὶ Χρυσόπολιν καὶ ἐγένετο κύριος τῶν στενῶν τοῦ Βοσπόρου. Τότε ἐξερράγη καὶ ἐν Κωνσταντινουπόλει σοβοῦσα γενικὴ κατὰ τοῦ Μιχαὴλ ἀγανάκτησις. Πρόκριτοι καὶ λαὸς τῆς πρωτευούσης, λαβόντες τὰ ὅπλα τὴν Κυριακὴν τοῦ Λαζάρου (1078), ἐπετέθησαν κατὰ τῶν βασιλικῶν παλατίων, κατέβαλον τὴν φρουρὰν αὐτῶν, ᾐχμαλώτισαν τὸν Μιχαὴλ καὶ ἐξηνάγκασαν αὐτὸν καὶ τὴν αὐτοκράτειραν Μαρίαν νὰ καρῶσι μοναχοί. Τὴν μεθεπομένην εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν εὐφημούμενος ὁ νέος αὐτοκράτωρ Νικηφόρος Γ' Βοτανειάτης.

Μετά τινα χρόνον ὁ Μιχαὴλ προεχειρίσθη μητροπολίτης Ἐφέσου, ἀλλὰ μεταμεληθεὶς ἐπανῆλθε μετ' ὀλίγον εἰς τὴν τοῦ Μανουὴλ μονήν, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ὁ Μιχαὴλ Ζ' ἐκ τοῦ γάμου του μετὰ τῆς Μαρίας ἐγέννησεν ἕνα υἱόν, τὸν Κωνσταντῖνον, ὃν παιδίον ἔτι ἐμνήστευσε μετὰ τῆς θυγατρὸς τοῦ ἡγεμόνος τῶν ἐν τῇ Κάτω Ἰταλίᾳ Νορμανδῶν Ροβέρτου Γισκάρδου. Ὁ Ἀλέξιος Α' Κομνηνὸς καταλαβὼν τὸν θρόνον τῷ 1081 ἐμνήστευσεν αὐτὸν μετὰ τῆς θυγατρός του Ἄννης, ἐκ τούτου δὲ λαβὼν ἀφορμὴν ὁ Ροβέρτος ἐπεχείρησε τῷ 1081 τὴν κατὰ τοῦ Βυζαντίου μεγάλην ἐκστρατείαν του (βλ.λ. *Κομνηνοὶ* καὶ *Ροβέρτος*). Ν.ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Η'** ***Παλαιολόγος***. Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1261—1282) (βλ. *Παλαιολόγος*).

— **Μιχαὴλ Θ'** ***Παλαιολόγος***. Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (1295—1320) (βλ. λ. *Παλαιολόγος*).

***[Ἠπείρου]***

— **Μιχαὴλ Α'** ***Ἄγγελος Κομνηνός***, ὁ ἱδρυτὴς τοῦ δεσποτάτου τῆς Ἠπείρου. Ἦτο νόθος υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ καὶ σεβαστοκράτορος Ἰωάννου Ἀγγέλου καὶ διεκρίνετο ἐκ νεαρᾶς ἡλικίας διὰ τὸ ὀξὺ τοῦ χαρακτῆρός του καὶ τὴν φιλοδοξίαν του. Δυσαρεστηθεὶς κατὰ τοῦ ἐξαδέλφου του, αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου Ἀλεξίου Γ' Ἀγγέλου (1195—1203), ἐστασίασεν ἐν Καρίᾳ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας καὶ ἡττηθεὶς ὑπὸ τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων κατέφυγε παρὰ τῷ σουλτάνῳ τοῦ Ἰκονίου (1199), παρὰ τοῦ ὁποίου λαβὼν στρατεύματα εἰσέβαλεν εἰς τὸ βυζαντινὸν ἔδαφος καὶ ἐδῄωσεν ἀγρίως τὰς περὶ τὸν Μαίανδρον χώρας, ἐν τέλει δὲ πιεζόμενος ὑπὸ τοῦ ἐκστρατεύσαντος ἐναντίον του Ἀλεξίου συνεβιβάσθη πρὸς αὐτὸν καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἐκεῖ διετέλει τῷ 1204, ὅτε οἱ βάρβαροι τῆς Δ' σταυροφορίας ἐξεπόρθησαν τὴν πόλιν καὶ διεμέλισαν τὴν Βυζαντινὴν αὐτοκρατορίαν. Ἡ Θεσσαλονίκη μετὰ τῆς Θεσσαλίας καὶ λοιπῆς Ἑλλάδος ἐδόθη τότε εἰς τὸν Βονιφάτιον μαρκήσιον τοῦ Μομφερράτου, ὅστις συζευχθεὶς τὴν χήραν τοῦ Ἰσαακίου Β' Ἀγγέλου Μαργαρίταν ἐβάδισε πρὸς κατάληψιν τῶν ἐπιδικασθεισῶν αὐτῷ χωρῶν, ἔχων παρ' αὐτῷ καὶ τὸν νεαρὸν Μανουήλ, υἱὸν τοῦ Ἰσαακίου Β' Ἀγγέλου καὶ τῆς Μαργαρίτας, ὃν ἐπεδείκνυεν εἰς τοὺς ἑλληνικοὺς πληθυσμοὺς ἵνα ἑλκύσῃ τὴν ἐμπιστοσύνην των. Ὁ Μιχαήλ, πιστεύσας ὅτι ὄντως ὁ Βονιφάτιος ἐσκόπει νὰ ἀνορθώσῃ τὸ βυζαντινὸν κράτος διὰ τοῦ νεαροῦ Μανουήλ, συνετάχθη αὐτῷ, μετ' ὀλίγον ὅμως, ἐννοήσας τὴν ἀπάτην ἀντέστη εἰς τὴν ξένην κατάκτησιν καὶ μεταβὰς εἰς Ἤπειρον ἵδρυσε τὸ ἐκεῖ δεσποτάτον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἡγεμόνευσε μέχρι τοῦ 1214, ὅτε ἐδολοφονήθη ἐπὶ τῆς κλίνης του (βλ. λ. *Ἤπειρος*, τόμ. ΙΒ', σ. 334). Ν. ΚΛΣ

— **Μιχαὴλ Β'** ***Ἄγγελος Κομνηνὸς Δούκας***. Δεσπότης τῆς Ἠπείρου (1230—1271). Ἦτο υἱὸς τοῦ προηγουμένου Μιχαὴλ Α' ἐκ τοῦ δευτέρου αὐτοῦ γάμου μετά τινος στενῆς συγγενοῦς του, ἐξ οὗ καὶ *νόθος* ἐκαλεῖτο. Τὸ πρῶτον αὐτοῦ ὄνομα ἦτο *Κωνσταντῖνος*, μετωνομάσθη δὲ βραδύτερον εἰς *Μιχαήλ*. Τῷ 1214, ὅτε ἐδολοφονήθη ὁ πατήρ του, ὁ θρόνος τοῦ δεσποτάτου τῆς Ἠπείρου κατελήφθη ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ ἐκείνου Θεοδώρου, ὁ δὲ Μιχαὴλ ἀπῆλθεν εἰς Πελοπόννησον, ἔνθα συνεδέθη διὰ φιλίας μετὰ τῶν κρατούντων τὴν χώραν Φράγκων. Μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν (1230) καὶ ἐκτύφλωσιν τοῦ θείου του Θεοδώρου, δεσπότου τῆς Ἠπείρου καὶ αὐτοκράτορος Θεσσαλονίκης, ὑπὸ τῶν Βουλγάρων, ὁ Μιχαὴλ ἔσπευσεν εἰς Ἤπειρον καὶ ἀνεκηρύχθη δεσπότης αὐτῆς, ἔχων ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν του τὴν Ἤπειρον, τὴν Ἀλβανίαν, τὴν Αἰτωλοακαρνανίαν, τὴν Κέρκυραν καὶ μέρος τῆς Θεσσαλίας, ἐκ τῶν ὑπολοίπων δὲ χωρῶν μέρος μὲν περιῆλθεν εἰς τοὺς Βουλγάρους, μέρος δὲ παρέμεινεν ὑπὸ τὸ κράτος τῆς Θεσσαλονίκης, ἔνθα αὐτοκράτωρ ἀνεκηρύχθη ὁ νεώτερος τοῦ Θεοδώρου ἀδελφὸς Μανουὴλ (1230—1240). Μετὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ τελευταίου τούτου (τῷ 1240) κατέλαβε καὶ τὸ ὑπόλοιπον τῆς Θεσσαλίας, καθὼς καὶ τμῆμα τῆς ἀνατολικῆς Ἑλλάδος μέχρι τοῦ Παρνασοῦ. Δὲν διετήρησεν ὅμως ἐπὶ πολὺ τὰς ἐκτεταμένας ἐκείνας χώρας ὑπὸ τὸ σκῆπτρόν του, διότι μέρος μὲν αὐτῶν (ἀπὸ Δυρραχίου μέχρις Αὐλῶνος) ἔδωσεν ὡς προῖκα εἰς τὸν ἡγεμόνα τῆς Σικελίας Μαμφρέδον, λαβόντα ὡς σύζυγον τὴν θυγατέρα τοῦ Μιχαὴλ Ἑλένην, μέρος δὲ (δηλαδὴ ἡ ΒΔ. Μακεδονία) κατελήφθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Νικαίας Ἰωάννου Γ' Βατάτζη, πρὸς ὃν περιῆλθεν εἰς ἀτυχῆ πόλεμον συμμαχῶν μετὰ τοῦ Μαμφρέδου καὶ τοῦ ἑτέρου γαμβροῦ του (συζύγου τῆς θυγατρός του Μαρίας) πρίγκιπος τοῦ Μορέως Γουλιέλμου Βιλεαρδουΐνου (1259).

Ὁ Μιχαὴλ ἀπέθανε τῷ 1271, καταλιπὼν τὴν Ἤπειρον μετὰ τῆς Αἰτωλοακαρνανίας καὶ τῶν νήσων Ἰθάκης καὶ Κεφαλληνίας εἰς τὸν πρεσβύτερον υἱόν του Νικηφόρον, τὰς δὲ λοιπὰς χώρας (ἀπὸ τοῦ Ὀλύμπου μέχρι τοῦ Παρνασοῦ) εἰς τὸν νόθον υἱόν του Ἰωάννην. Ν. ΚΛΣ

***[Πόντου]***

— **Μιχαὴλ** ***Κομνηνός***, βασιλεὺς τοῦ Πόντου· βλ. λ. *Κομνηνοί*.

ΜΑΥΡΟΒΟΥΝΙΟΥ

— **Μιχαήλ.** Πρίγκιψ καὶ ἐπίδοξος διάδοχος τοῦ Μαυροβουνίου, υἱὸς τοῦ πρίγκιπος Μίρκου, γεννηθεὶς ἐν Ποδγορίτσᾳ τῷ 1908. Μετὰ τὴν ἕνωσιν τοῦ Μαυροβουνίου μετὰ τῆς Σερβίας (Νοέμβριος 1918) ἡ μαυροβουνιωτικὴ δυναστεία, ἂν καὶ κηρυχθεῖσα ἔκπτωτος, οὐδαμῶς παρῃτήθη τῶν ἐπὶ τοῦ θρόνου δικαιωμάτων της. Θανόντος τὴν 1 Μαρτίου 1921 τοῦ βασιλέως Νικολάου Α', ἀνεκηρύχθη διάδοχος ὁ πρίγκιψ Δανιήλ, τούτου δέ, παραιτηθέντα τὴν 7 Μαρτίου ἰδίου ἔτους, διεδέχθη ὁ πρίγκιψ Μιχαήλ. Θ. Κ.



Digitized by Google

ΡΟΥΜΑΝΙΑΣ

— **Μιχαήλ.** Βασιλεὺς καὶ διάδοχος τῆς Ρουμανίας. Υἱὸς τοῦ βασιλέως τῆς Ρουμανίας Καρόλου Β' καὶ τῆς πριγκιπίσσης τῆς Ἑλλάδος Ἑλένης, θυγατρὸς τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου, ἐγεννήθη τὴν 25 Ὀκτωβρίου 1921 (π.ἡ.). Ὅτε ὁ πατὴρ αὐτοῦ, διάδοχος τότε, παρῃτήθη τῶν ἐπὶ τοῦ θρόνου δικαιωμάτων του (συνεπείᾳ τοῦ ἐκραγέντος σκανδάλου τῶν ἐρώτων αὐτοῦ μετὰ τῆς Μάγδας Λουπέσκο), ἡ ἐθνοσυνέλευσις διὰ τῆς συντακτικῆς αὐτῆς πράξεως τῆς 4 Ἰανουαρίου 1926 ἀπεδέχθη τὴν παραίτησιν καὶ ἀνεκήρυξε τὸν Μιχαὴλ διάδοχον τῆς Ρουμανίας. Κατὰ τὸν θάνατον τοῦ πάππου αὐτοῦ, βασιλέως Φερδινάνδου Α' (20 Ἰουλίου 1927), ὁ Μιχαὴλ ἀνεκηρύχθη βασιλεὺς τῆς Ρουμανίας, ὑπὸ τριμελῆ ἀντιβασιλείαν, ἕνεκα τῆς ἀνηλικιότητος αὐτοῦ. Ἀλλὰ τὴν 6 Ἰουνίου 1930 ὁ τέως διάδοχος Κάρολος ἐπανῆλθεν εἰς Ρουμανίαν, ἐγκρίσει τῆς ὑπὸ τὸν Μανίου κυβερνήσεως, ἡ δὲ συγκληθεῖσα ἐθνοσυνέλευσις τῆς 8 ἰδίου μηνὸς ἠκύρωσε τὴν πρᾶξιν τῆς 4 Ἰουανουαρίου 1926, σχεδὸν διὰ παμψηφίας (486 κατὰ 10 ψήφων) καὶ ἀνεκήρυξεν αὐτὸν μὲν βασιλέα, ὑπὸ τὸ ὄνομα Κάρολος Β', τὸν δὲ τέως βασιλέα Μιχαὴλ μέγαν δοῦκα τῆς Γιούλια Ἄλμπα καὶ διάδοχον τοῦ θρόνου.

Θ. Κ.

ΣΕΡΒΙΑΣ

— **Μιχαὴλ' *Ὀβρένοβιτς*.** Σέρβος ἡγεμών, γεννηθεὶς ἐν Κραγιούγεβατς τῷ 1825. Δεύτερος υἱὸς τοῦ ἡγεμόνος Μιλός, εὑρίσκετο ἐν Βλαχίᾳ, ὅτε ἀπεβίωσεν ὁ ἀδελφός του Μιλὰν Ὀβρένοβιτς (1839). Κληθεὶς εἰς Σερβίαν, ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ θρόνου τὸν Μάρτιον τοῦ 1840, ἀλλὰ δὲν ἠδυνήθη νὰ ἀντιμετωπίσῃ τὰς κομματικὰς ἐρίδας, ἕνεκα τοῦ πονηροῦ ῥόλου τῆς μητρός του ἐν τῇ κυβερνήσει, καὶ τῷ 1842, πιεσθεὶς ὑπὸ ἐπαναστατικοῦ κινήματος, ἠναγκάσθη νὰ καταλίπῃ τὴν ἐξουσίαν. Ἔκτοτε ἔζη ἐν Βιέννῃ, Βερολίνῳ καὶ Βλαχίᾳ. Τῷ 1858 ἐπέστρεψεν εἰς Σερβίαν μετὰ τοῦ πατρὸς του Μιλὸς καὶ τῷ 1860 τὸν διεδέχθη εἰς τὴν ἐξουσίαν. Κατὰ τὴν δευτέραν ταύτην βασιλείαν εἰσήγαγε μεταρρυθμίσεις τινὰς εἰς τὸ Σύνταγμα καὶ τὸν στρατὸν καὶ διὰ τῆς διπλωματικῆς ὁδοῦ ἠλευθέρωσε τὴν χώραν ἀπὸ τὰ τουρκικὰ στρατεύματα (1867). Τῷ 1868 ἐδολοφονήθη ἐν Τοπτσιδερὲ παρὰ τὸ Βελιγράδιον, τὸν διεδέχθη δὲ ὁ ἐξάδελφός του Μιλάν, ὃν εἶχεν υἱοθετήσει, ὡς ἄτεκνος.

Τ. ΒΑΦΕΙΑΔΗΣ

ΠΑΤΡΙΑΡΧΑΙ ΜΗΤΡΟΠΟΛΙΤΑΙ, ΕΠΙΣΚΟΠΟΙ

— **Μιχαήλ, *Ἀλεξανδρείας*** πατριάρχης. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται δύο πατριάρχαι τῆς Ἀλεξανδρείας (βλ. λ. *Ἀλεξάνδρεια [Ἐκκλ. Ἱστορ.]*).

— **Μιχαήλ, *Ἀντιοχείας*** πατριάρχης. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται πέντε πατριάρχαι τῆς Ἐκκλησίας Ἀντιοχέων ἀπὸ τοῦ 870—1567. Ὁ Α' εἶναι ὁ 88ος τὴν σειρὰν καὶ ἐπατριάρχευσεν ἀπὸ τοῦ 870—890 ἐπὶ τῆς βασιλείας Βασιλείου Α' τοῦ Μακεδόνος καὶ ἐποίμανε καλῶς τὸν θρόνον του ἐπὶ τῆς ἀραβοκρατίας, ὡς ἀναφέρει ὁ Κωνστάντιος Α' ἐν τῷ ἔργῳ του: «Ἐλάσσονες συγγραφαί», ἐκδοθεῖσαι ὑπὸ Θ. Ἀριστοκλέους (Κωνσταντινούπολις 1866 σ. 117—144).

— **Μιχαήλ, *Κωνσταντινουπόλεως*** πατριάρχης. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται οἱ κάτωθι τέσσαρες οἰκουμενικοὶ πατριάρχαι:

— ***Μιχαὴλ Α' ὁ Κηρουλάριος.*** Οὗτος εἶναι γνωστὸς ἐν τῇ ἱστορίᾳ, διότι ἐπ' αὐτοῦ συνετελέσθη τὸ σχίσμα τῆς δυτικῆς ἀπὸ τῆς ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας. Ἤδη ἀπὸ τοῦ Φωτίου αἱ μεταξὺ τῶν δύο Ἐκκλησιῶν σχέσεις ἦσαν ψυχραὶ καὶ χαλαραί, καίτοι μεταξὺ τῶν ἐπεκράτει ἐπικοινωνία καὶ συνεργασία ἐπὶ διαφόροις ζητήμασιν· ἀλλ' ἡ δυτικὴ ἀπὸ τοῦ πάπα Νικολάου ἐνεπλάτυνε τὴν ὁδὸν τῶν καινοτομιῶν καὶ ἐσπούδαζε μονοκρατορίαν ἐπὶ πάσης τῆς Ἐκκλησίας. Αἱ καινοτομίαι αὗται διεδίδοντο οὐ μόνον καθ' ἅπασαν τὴν Δύσιν, ἀλλὰ καὶ ἐν αὐτῇ τῇ Ἀνατολῇ, τοῦτο δὲ ἠνάγκασε τὸν Μιχαὴλ Κηρουλάριον, ἀνελθόντα ἐπὶ τὸν πατριαρχικὸν θρόνον τῷ 1043, οὐ μόνον νὰ περιορίσῃ αὐτὰς μεταξὺ τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει διαβιούντων δυτικῶν, ἀλλὰ καὶ κοινῶς μετὰ τοῦ ἀρχιεπισκόπου Βουλγαρίας Λέοντος νὰ καυτηριάσῃ αὐτὰς ἐν ἐπιστολῇ πρὸς τὸν ἐν Ἀπουλίᾳ ἐπίσκοπον Τρανῶν Ἰωάννην, ὑπὸ τὸ βυζαντινὸν κράτος τότε τελοῦντα. Παρὰ τῷ Τραυίας ὑπῆρχε τότε ἀπεσταλμένος τοῦ πάπα Λέοντος τοῦ Γ' ὁ Οὐμβέρτος, ἀνὴρ φιλόδοξος καὶ θιασώτης τῶν παπικῶν ἀξιώσεων, ὅστις μεταγλωττίσας αὐτὴν εἰς τὸ ἑλληνικὸν ἀπέστειλε πρὸς τὸν πάπαν, οὗτος δέ, ἀπαντῶν πρὸς τὸν Κηρουλάριον, ἀντὶ νὰ ἀνασκευάσῃ τὰς ὑπ' αὐτοῦ φερομένας καινοτομίας, ἐπέσειε τὸ κράτος καὶ τὸ προνόμιον τοῦ παπικοῦ θρόνου, κατηγορεῖ τοῦ πατριάρχου ἀφροσύνην καὶ πρὸς ἐμπέδωσιν τοῦ ἀλαθήτου τοῦ πάπα παρῆγεν ὡς μέσον τὸ πρὸς τὸν Σίλβεστρον νόθον ἔγγραφον τοῦ Μ. Κωνσταντίνου καὶ ἐπὶ τέλους ἠπείλει αὐτὸν ὅτι θέλει συμπεριλάβει εἰς τὴν οὐρὰν τοῦ δράκοντος τοῦ συγκατασπάσαντος μεθ' ἑαυτοῦ τὸ τρίτον μέρος τῶν ἀστέρων τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ μεθ' ὅλον τὸ ἀπότομον καὶ ὑβριστικὸν τῆς ἐπιστολῆς, ὁ Κηρουλάριος ἀνταπήντησεν ἠπίως, ὁ δὲ αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος ὁ Μονομάχος (1042—1054), ἔχων ἀνάγκην τοῦ πάπα πρὸς ἐξασφάλισιν τῶν κτήσεων αὐτοῦ ἐν τῇ Κάτω Ἰταλίᾳ ἀπὸ μέρους τῶν Νορμανδῶν, ᾐτήσε παρ' αὐτοῦ τὴν ἀποστολὴν πρεσβείας. Ὁ Λέων ἀπέστειλε τότε τὸν Οὐμβέρτον καὶ ἐπιστολὴν πρός τε τὸν αὐτοκράτορα καὶ τὸν Κηρουλάριον, κατηγορῶν τοῦ τελευταίου ὡς ποιουμένου χρῆσιν τοῦ τίτλου Οἰκουμενικὸς καὶ σκοποῦντος νὰ ὑποτάξῃ ὑφ' ἑαυτὸν τὸν Ἀλεξανδρείας καὶ Ἀντιοχείας. Ὁ Οὐμβέρτος μετὰ τῆς συνοδείας αὐτοῦ παρουσιασθεὶς εἰς τὸν αὐτοκράτορα, ἐκτὸς τῆς πρὸς αὐτὸν ἐπιστολῆς ἐνεχείρισε καὶ πραγματείαν κατὰ τῶν ἑλληνικῶν ἐθίμων, ἐμφανισθεὶς δὲ καὶ πρὸς τὸν Κηρουλάριον δὲν ἀπέδωκε τὸν συνήθη χαιρετισμόν, ἀλλ' ἐνεχείρισε μόνον τὴν ἐπιστολὴν τοῦ Λέοντος καὶ ἀπῆλθεν. Ἐντεῦθεν ὁ Κηρουλάριος ἀπέφυγε τὴν μετ' αὐτοῦ κοινωνίαν, ἐνῷ ὁ αὐτοκράτωρ, ἐλπίζων παρὰ τοῦ πάπα βοήθειαν, περιεποιεῖτο τὸν Οὐμβέρτον, ἠνάγκασε μάλιστα τὸν μοναχὸν Νικήταν τὸν Στηθᾶτον, ἵνα κατακαύσῃ τὴν κατὰ τῶν Λατίνων συγγραφήν αὐτοῦ. Ἀλλ' ὁ Οὐμβέρτος μετὰ τῆς συνοδείας αὐτοῦ ἐκμανεὶς καὶ θρασυνθεὶς ἐκ τῆς στάσεως τοῦ Κηρουλαρίου, τῇ 16 Ἰουλίου 1054 εἰσελθὼν εἰς τὸν ναὸν τῆς Ἁγίας Σοφίας κατέθηκεν ἐπὶ τῆς ἁγίας Τραπέζης ἀφορισμὸν κατὰ τοῦ πατριάρχου καὶ τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, ἐν ᾧ κατεδικάζοντο ὡς Σιμωνιακοί, Βαλέσιοι, Ἀρειανοί, Δονατισταί, Σεβηριανοί, Νικολαΐται, Πνευματομάχοι, Μανιχαῖοι καὶ Ναζωραῖοι, ἐκτινάξας δὲ τὸν κονιορτὸν τῶν ποδῶν αὐτοῦ ἀνέκραξεν: «ὁ Κύριος κρινέτω τὰ μεταξὺ ἡμῶν». Ὁ Μιχαὴλ ἅμα τῇ γνώσει τοῦ τολμήματος συγκαλεῖ τὴν περὶ αὐτὸν σύνοδον, ἀπαιτεῖ δὲ παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος, ἵνα μεταπέμψῃ τοὺς Ρωμαίους τοποτηρητάς. Ὁ αὐτοκράτωρ δὲν ἠθέλησε νὰ ἐκβιάσῃ τοὺς πρεσβευτὰς διὰ τὸ ὀφφίκιον τῆς πρεσβείας, ἡ σύνοδος ὅμως συνέταξε τότε σημείωμα, ἐν ᾧ ἀναθέματι καθυπέβαλε τόν τε ἀφορισμὸν καὶ τοὺς γράψαντας ἢ συναινοῦντας αὐτῷ. Οὕτω συνετελέσθη τὸ μεταξὺ τῶν δύο Ἐκκλησιῶν σχίσμα. [Πρβλ. Ἀλήθειαν Οἰκουμεν. Ἐκκλησίας.—*Δημητρακοπούλου*, Ὀρθόδ. Ἑλλάδα.—*Schröckh*, K. Gesch. (τόμ. 24).—*Gieseler*, K. Gesch. (τόμ. 2,1).—*Φ. Βαφείδου*, Ἐκκλ. Ἱστορ. (τόμ. Β', σελ. 64)].

† Η. Φ. Β.

— ***Μιχαὴλ Β' ὁ Κουρκούας** ἢ **Ὀξείτης**.* Ἐκάρη μοναχὸς ἐν τῇ οὐ μακρὰν τῶν Πριγκιποννήσων νησίδι Ὀξείᾳ, ἐθεωρεῖτο δὲ ἐκ τῶν λογίων, ἐφ' ᾧ καὶ προεχειρίσθη πατριάρχης (1143—1146). Ἀλλ' ἐπειδὴ τὴν Ἐκκλησίαν ἐπλήρουν θρησκευτικαὶ τῶν λειψάνων τῶν Βογομίλων ἔριδες, ὁ Μιχαὴλ Β', μεμνημένος τῆς μοναχικῆς ἀπραγμοσύνης, παρῃτήθη καὶ ἀπελθὼν ἐμόνασεν ἰσοβίως ἐν τῇ Ὀξείᾳ, καταλιπὼν «Κατήχησίν» τινα. [Πρβλ. *Μ. Γεδεών*, Πατριαρχ. Πίνακες 352 καὶ *Α. Μηλιαράκη*, Ἄνδρος-Κέως 175.]

Μ. Ι. Γ.—Τ. Ε. Ε.

— **Μιχαὴλ Γ' ὁ *Ἀγχιάλου*.** Οὗτος ἀπὸ σακελλαρίου τῆς Μ. Ἐκκλησίας καὶ πρωτεκδίκου εἰς τὸν πατριαρχικὸν θρόνον ὑψωθεὶς (1169—1177), ἦτο λογιώτατος, διὸ καὶ «ὕπατος τῶν φιλοσόφων» ὠνομάσθη. Μεταξὺ τῶν ἀξίων μνείας πράξεών του εἶναι ἡ κατάργησις τῆς ἑορτῆς τοῦ «κλήδονος» καὶ ἡ ματαίωσις τῆς μετὰ τὸ ἐπὶ Μιχαὴλ Κηρουλαρίου (1054) σχίσμα ἀποπειραθείσης, τῷ 1170, ὑπὸ τοῦ Μανουὴλ Κομνηνοῦ ἑνώσεως τῶν Ἐκκλησιῶν.

Τ. Ε. Ε.

— **Μιχαὴλ Δ' ὁ *Αὐτωρειανός*.** Οὗτος ἐκλεγεὶς ἐν ἡμέραις πονηραῖς, ὅτε ἡ Κωνσταντινούπολις εἶχε καταληφθῆ ὑπὸ τῶν Φράγκων, ἐπατριάρχευσεν ἐν τῇ ἕδρᾳ τῆς αὐτοκρατορίας Νικαίᾳ ἀπὸ τοῦ 1206 μέχρι τοῦ 1213, ὅτε καὶ ἀπέθανεν, ἐργασθεὶς δραστηρίως ὑπὲρ τῆς χειμαζομένης Ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας καὶ στέψας αὐτοκράτορα τὸν Θεόδωρον Λάσκαριν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Βυζαντ. Χρονικά, Πετρουπόλεως. Δ' 161.—Ἀκροπολίτης 13, Ἐφρ. στ. 10241.—*Μ. Ι. Γεδεών*, Πατριαρχικοὶ πίνακες σ. 351, 365, 378.—*Σ. Π. Λάμπρου*, Ν. Ἑλληνομνήμων τόμ. Ζ' 134, Η' 6, ΙΣΤ' 394, 474, ΙΗ' 389 καὶ ΙΘ' 62.

Μ. Ι. Γ.—Τ. Ε. Ε.

— **Μιχαὴλ ὁ *Κλεόβουλος, Σάρδεων*** μητροπολίτης. Ἐγεννήθη ἐν Ἀδριανουπόλει τῷ 1848. Μετὰ τὰ πρῶτα ἐν τῇ πατρίδι γράμματα ἀπῆλθεν εἰς Ἰωάννινα παρὰ συγγενεῖ τινι καὶ ἀποπερατώσας αὐτόθι τὰ ἐγκύκλια μαθήματα ἐν τῇ Ζωσιμαίᾳ, ἐνεγράφη ἐν τῇ θεολογικῇ σχολῇ Χάλκης, ἧς ἀποφοιτήσας τῷ 1871 ἐδίδαξεν ἐπί τινα χρόνον ἐν χωρίοις τῆς Θρᾴκης καὶ εἶτα ἐν τῇ ἐν Χάλκῃ σχολῇ (1884—1888). Εὐπορήσας μετέβη πρὸς εὐρυτέρας σπουδὰς εἰς Γερμανίαν τῷ 1878 καὶ ἐπανακάμψας εἰς Κωνσταντινούπολιν διωρίσθη, μετὰ τὸν Γρηγόριον Παλαμᾶν, διευθυντὴς τῆς Μεγάλης τοῦ Γένους Σχολῆς τῷ 1888. Ἐπὶ δεκαετίαν διευθύνας, μετετέθη ὡς διευθυντὴς τῆς θεολογικῆς σχολῆς Χάλκης (1898—1901), ὅτε προήχθη ὑπὸ Ἰωακεὶμ τοῦ Γ' εἰς μητροπολίτην Σάρδεων ἐπὶ ψιλῷ ὀνόματι καὶ ἐκλήθη πάλιν ὡς σχολάρχης τῆς πατριαρχικῆς Ἀκαδημίας μέχρι τοῦ θανάτου του (23 Φεβρουαρίου 1918). [Πρβλ. *Τ. Ε. Εὐαγγελίδου*, ἐν «Θρᾳκικοῖς» Ἀθ. 1931, σ. 159—160.]

Τ. Ε. Ε.

— **Μιχαήλ, *Συνάδων*** ἀρχιεπίσκοπος. Ἤκμασεν ἐπὶ τῆς βασιλείας Λέοντος τοῦ Ἀρμενίου (813—820). Ἐκ νεαρᾶς ἡλικίας καρεὶς μοναχός, ἀνεδείχθη ἐν παιδείᾳ. Ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Ταρασίου ἐχειροτονήθη ἀρχιερεύς, λαβὼν τὴν ἐν Φρυγίᾳ ἐπαρχίαν Συνάδων. Ἐκραγείσης τῆς εἰκονομαχίας, ἠγέρθη ἀντιμέτωπος τῆς κατὰ τῆς προσκυνήσεως τῶν εἰκόνων διαταγῆς. Ὁ Λέων τὸν ἔστειλεν εἰς ἐξορίαν (815), ὅπου καὶ ἀπέθανε περὶ τὸ 820. Ἡ Ἐκκλησία τιμᾷ τὴν μνήμην του τῇ 23 Μαΐου. Βίος τοῦ ὁμολογητοῦ εὕρηται ἐν τῷ ἁγιορειτικῷ κώδικι 1181. Θεόδωρος ὁ Στουδίτης ἐγκωμιάζει τὰς ἀρετάς του (*Migne*, ΥΘ' στ. 1312).

Μ. Ι. Γ.—Τ. Ε. Ε.

ΑΛΛΑ ΙΣΤΟΡΙΚΑ ΠΡΟΣΩΠΑ

— **Μιχαήλ.** Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Λέοντος Ε' (813—820), παρὰ τοῦ ὁποίου διωρίσθη «κόμης τῶν ἐξκουβιτώρων», δηλαδὴ ἀρχηγὸς τοῦ σώματος τῆς ἀνακτορικῆς φρουρᾶς τοῦ ἐπιφορτισμένου τὴν φρούρησιν τοῦ ἐσωτερικοῦ τῶν βασιλικῶν παλατίων.

Ν. ΚΑΣ

— **Μιχαήλ.** Στρατηγὸς Βυζαντινός, υἱὸς τοῦ λογοθέτου Ἀναστασίου. Μολονότι ξένος ἐντελῶς πρὸς τὸν στρατόν, διωρίσθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου Θ' τοῦ Μονομάχου στρατηγὸς Δυρραχίου καὶ ἀπεστάλη τῷ 1042 μετὰ 60 χιλ. ἀνδρῶν κατὰ τῶν ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Στεφάνου ἐπαναστατησάντων ἀπὸ τοῦ 1040 Σέρβων. Εἰσβαλὼν ὁ Μιχαὴλ εἰς Σερβίαν ἐδῄωσε τὴν χώραν πυρπολήσας, ἄνευ τινὸς ἀντιστάσεως, τὰ ἀνὰ τὰς πεδιάδας χωρία· κατὰ τὴν ἐπάνοδόν του ὅμως, διερχόμενος μεθ' ὁλοκλήρου τῆς φάλαγγος αὐτοῦ τὰς ὀρεινὰς διόδους τοῦ Μαυροβουνίου, χωρὶς νὰ λάβῃ τὰ ἐπιβαλλόμενα τῆς ἀσφαλείας μέτρα, ἐνέπεσεν εἰς φοβερὰν ἐνέδραν τῶν ἐπαναστατῶν, καθ' ἣν ἀπώλεσε τὸ πλεῖστον μέρος τῆς στρατιᾶς του, περὶ τὰς 40 χιλ. ἀνδρῶν καὶ 7 στρατηγούς, καὶ τέλος συντετριμμένος ἔφθασεν εἰς Δυρράχιον μετὰ τῶν λειψάνων τοῦ στρατοῦ του. Ἔκτοτε δὲν ἐγένετο πλέον λόγος περὶ αὐτοῦ.

Ν. ΚΑΣ

— **ιχαήλ.** Κρὴς βιβλιογράφος ἐκ Κυδωνίας ἀκμάσας τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Βιβλία ὑπ' αὐτοῦ γραφέντα εὕρηνται ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Ἐσκωριάλ.

ΕΡ. Ν.

— **Μιχαὴλ *Ἀναστάσιος*.** Πεπαιδευμένος ἀνὴρ γεννηθεὶς ἐν Φιλιππουπόλει. Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ αἰῶνος ἔμενεν ἐν Μόσχᾳ. Ἔγραψε, χάριν τῶν ἐν Ρωσίᾳ Ἑλλήνων, γραμματικὴν τῆς ρωσικῆς διαλέκτου, ἐκδοθεῖσαν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ τῷ 17.., καί, μετ' ὀλίγον, «Νύκτα καὶ ἡμέραν Ρωσίας», μικρὸν βιβλίον ἀφηγούμενον τὴν ἠθικὴν καὶ κοινωνικὴν κατάστασιν τῶν Ρώσων ἐπὶ τῆς εἰδωλολατρείας καὶ τὴν εἰς τὸν Χριστιανισμὸν προσέλευσιν αὐτῶν.

Μ. Ι. Γ.

— **Μιχαὴλ *Βασίλειος*.** Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Βασιλείου Β' τοῦ Βουλγαροκτόνου (976—1025). Συμμετέσχεν εἰς τὰς τελευταίας ἐκστρατείας τούτου ἐναντίον τῶν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ Τούρκων.

Ν. ΚΑΣ

— **Μιχαὴλ ὁ *ἐκτομίας*.** Ἀνὴρ λόγιος, τοῦ ΙΒ' αἰῶνος, εἷς τῶν θεραπόντων τῆς συζύγου Ἀλεξίου τοῦ Κομνηνοῦ· διωρίσθη καὶ παιδαγωγὸς τοῦ Γρηγορίου, υἱοῦ τοῦ Θεοδώρου Γαβρᾶ.

Μ. Ι. Γ.

— **Μιχαὴλ ὁ *Ἰταλικός*.** Βυζαντινὸς κληρικός, διδάσκαλος τῆς ρητορικῆς καὶ φιλοσοφίας, ἀκμάσας ἐπὶ Ἰ. Κομνηνοῦ. Τῷ 1142 ἐγένετο ἐπίσκοπος Φιλιππουπόλεως, ὡς τοιοῦτος δέ, ἀποκτήσας τὴν ἐμπιστοσύνην καὶ φιλίαν τοῦ Γερμανοῦ αὐτοκράτορος Κονράδου, κατώρθωσε νὰ διασώσῃ τὴν ἕδραν του ἀπὸ τῆς ἐπιδρομῆς τῶν σταυροφόρων. Κατέλιπεν ἐπιστολάς, λόγους καὶ ποικίλα σχεδιάσματα διατηρούμενα εἰς κώδικας τῶν Παρισίων, Ἐσκωριάλ, Βονωνίας κ. ἄ., προδίδοντα τὴν εὐρυμάθειαν τοῦ συγγραφέως περὶ τὰ ζητήματα τῆς φιλοσοφίας, θεολογίας, ἱστορίας, γραμματικῆς, ρητορικῆς, ἀστρονομίας, ἰατρικῆς κ. ἄ. Αἱ ἐπιστολαί του ἐγράφησαν πρὸς μέλη τῆς αὐτοκρατορικῆς οἰκογενείας καὶ ἐπιφανεῖς ἄνδρας διαφόρους, ὡς οἱ Ι. Κομνηνός, Α. Κομνηνός, Νικηφόρος Βρυέννιος, Εἰρήνη σύζυγος Ἀλεξίου τοῦ Α' κ. ἄ. Τὰ σχεδιάσματα αὐτοῦ, τινὰ ὑπὸ μορφὴν διαλόγων, στρέφονται περὶ θέματα σοφιστικῆς, λογοτεχνίας κ. ἄ., οἱ δὲ λόγοι εἶναι πανηγυρικοὶ πρὸς τὸν αὐτοκράτορα κ. ἄ. Ἀπέθανε πρὸ τοῦ 1166. [Πρβλ. *M. Treu*, Michael Italikos (ἐν Byzant. Zeitschrift 1895).] —π.

— **Μιχαὴλ *Κιοσὲς*** (Σπανὸς ἢ Ὀξυγένειος). Ἕλλην ἀρνησίθρησκος, ὅστις φρούραρχος τυγχάνων τοῦ ἐν Βιθυνίᾳ φρουρίου Χερμεγγίων, θέσεως ὀχυρωτάτης, παρέδωκεν αὐτὸ εἰς τὸν Σουλτᾶνον Ὀσμὰν (1299—1326) καὶ κατέστη φίλος καὶ πιστότατος αὐτοῦ σύμβουλος, ὡς γινώσκων τὴν βυζαντινὴν νοοτροπίαν, κατὰ τὸν ἱστορικὸν Χάμμερ, τὰ μέγιστα συντελέσας εἰς τὸ ὀθωμανικὸν μεγαλεῖον καὶ εἰς τὴν κατάληψιν τῆς ὅλης Βιθυνίας ὑπὸ τῶν Τούρκων. Ἐκ τοῦ Μιχαὴλ τούτου κατάγονται οἱ ἐν τῇ τουρκικῇ ἱστορίᾳ διαβόητοι *Μιχάλογλου*, οἵτινες ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἐντεῦθεν διέπρεψαν ἐπὶ μεγίστῳ πλούτῳ καὶ δυνάμει.

— **Μιχαὴλ *σύγκελλος*.** Σύγκελλος παρὰ τῷ Ἱεροσολύμων Θωμᾷ (808—820). Εἶναι ἄγνωστον ἂν διεδέχθη αὐτὸν εἰς τὸν πατριαρχικὸν θρόνον, γνωστὸν ὅμως ὅτι μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Θωμᾶ ἦλθεν

Digitized by Google

εἰς Κωνσταντινούπολιν ἔν τινι μονῇ καὶ διετέλει ἐν φιλικῇ σχέσει πρὸς Θεόδωρον τὸν Στουδίτην, πρὸς ὃν σῴζονται καὶ ἐπιστολαὶ αὐτοῦ. Ἕνεκα τοῦ ὑπὲρ τῶν εἰκόνων ζήλου αὐτοῦ καὶ τῆς συνεργασίας μετὰ τοῦ Στουδίτου καὶ τοῦ πατριάρχου Νικηφόρου, ὑπέφερε πολλὰ ὁ Μιχαὴλ ἐπὶ Θεοφίλου (829—842), μετ᾽ ἄλλων δὲ πολλῶν ἐξορισθεὶς ἐρρίφθη εἰς τὰς φυλακάς. Ἀνακληθεὶς ὑπὸ Μιχαὴλ καὶ Θεοδώρας, ἠρνήθη τὸν προταθέντα αὐτῷ πατριαρχικὸν θρόνον, ἐζήτησε δὲ καὶ ἔλαβε τὴν μονὴν τῆς Χώρας, ἀνακτήσασαν πάντα τὰ ὑπὸ τῶν εἰκονομάχων δημευθέντα κτήματα αὐτῆς. Ἀπεβίωσε τῷ 846 ἢ 847 ὀγδοηκοντούτης. Εἰς τὸν Μιχαὴλ ἀποδίδονται διάφορα συγγράμματα, ἀλλ᾽ ἀμφίβολα. Ἔργον αὐτοῦ μετὰ βεβαιότητος εἶναι: ὁ «Λίβελλος περὶ τῆς ὀρθοδόξου πίστεως» καὶ ἡ «Μέθοδος περὶ τῆς τῶν λόγων συντάξεως»· αὐτὸς μετέφρασεν εἰς τὸ ἑλληνικὸν καὶ ἐπιστολὴν τοῦ πατριάρχου Θωμᾶ κατὰ Ἀρμενίων αἱρετικῶν περὶ τῆς Δ΄ Οἰκουμενικῆς συνόδου. Ἐπίσης θεωρεῖται ὡς ὁ πρῶτος ἄριστος μελοποιὸς τῶν Οἴκων, ὃν ἐμιμήθησαν καὶ μεταγενέστεροι συνθέται ὕμνων, ἐγκωμίων, μουσουργημάτων τοῦ Μαθηταρίου καὶ μαθημάτων τοῦ Κρατηματαρίου. † Η. Φ. Β.—Ν. Α. Χ.

**Μιχαὴλ Ἄγγελος** ***Μπουοναρρότι*** (Michelaguiolo Buonarroti). Εἷς τῶν μεγίστων καλλιτεχνῶν τοῦ κόσμου, ἀρχιτέκτων, γλύπτης, ζωγράφος καὶ ποιητής. Ἐγεννήθη τὴν 6 Μαρτίου 1475 παρὰ τὴν Φλωρεντίαν, εἰς τὸ Καπρέζε τοῦ Καζεντίνου. Ὁ πατήρ του ἦτο δήμαρχος εἰς τὸ Καπρέζε καὶ εἰς τὸ Κιούζι. Ἡ μήτηρ του ἀπέθανεν ἐνωρίς, καταλιποῦσα τοῦτον ἑξαετῆ ἐν τῷ μέσῳ τεσσάρων ἄλλων ἀδελφῶν, τοῦ *Λεονάρδου*, τοῦ *Μπουοναρρότο*, τοῦ *Ἰωάννου Σίμωνος* καὶ τοῦ *Σιγισμόνδου*. Τὰ παιδία ἐχρειάζοντο προστασίαν, οἱ δὲ συγγενεῖς τὰ παρέδωσαν εἰς φιλικὰς οἰκογενείας. Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἐτοποθετήθη εἰς τὴν οἰκίαν ἑνὸς λιθοξόου, εἰς τὸ Σεττινιάνο. Βραδύτερον ἐστάλη εἰς τὸ σχολεῖον, ἀλλὰ δὲν εὕρισκεν ἐνδιαφέρον εἰς τὰ διδασκόμενα μαθήματα· ἐπεδίδετο δὲ μόνον μετὰ πάθους εἰς τὸ σχέδιον. Δεκατριετὴς εἰσῆλθεν ὡς μαθητευόμενος εἰς τὸ ἐργαστήριον διασήμου Φλωρεντινοῦ καλλιτέχνου, τοῦ Ντομένικο Γκιρλαντάγιο, ἡ δὲ ἐπιτυχία του ἐν τῷ ἐργαστηρίῳ τούτῳ ὑπῆρξε τοσοῦτον πρώιμος καὶ προφανής, ὥστε σφοδρὰ ζηλοτυπία κατετάραξε τὸν ἐπιφανῆ του διδάσκαλον. Μετὰ πάροδον ἑνὸς ἔτους ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος κατέλιπε τὸ ἐργαστήριον τοῦ Γκιρλαντάγιο καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν σχολὴν τῆς πλαστικῆς τὴν ἱδρυθεῖσαν ὑπὸ τοῦ Λαυρεντίου τῶν Μεδίκων. Δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐπισύρῃ τὴν προσοχὴν τοῦ ἡγεμόνος, ὅστις τὸν ἐπλήρωσε τιμῶν καὶ τὸν εἰσήγαγεν εἰς τὸν λαμπρὸν ἐκεῖνον κύκλον, ἐν τῷ ὁποίῳ μεγάλοι φίλοι τῆς πλατωνικῆς φιλοσοφίας, ὡς ὁ Ἄγγελος Πολιτιανός, κατεδαπάνων τὸ διαλεκτικόν των μέθυ εἰς λεπτὰς διαστίξεις ἐννοιῶν καὶ ἀνυψοῦντο διὰ καταπλησσούσης πολυμαθείας καὶ διεισδυτικωτάτου αἰσθητηρίου εἰς τὰ λαμπρά, κρυστάλλινα ἐπίπεδα τοῦ ἑλληνικοῦ πνεύματος. Ἐκεῖ ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, συναστρεφόμενος τοιούτους ἀνθρώπους, ζῶν μέσα εἰς τὰς ἀπηχήσεις τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς ἀρχαιότητος, μελετῶν τὰ κατάλοιπα τῆς κλασσικῆς τέχνης, ὅσα οἱ Μέδικοι μετὰ πάθους καὶ ἁδροτάτης πολλάκις δαπάνης πανταχόθεν συνέλεγον, ᾐσθάνθη τὴν ἁρμονικὴν ὡραιότητα τῆς λιτῆς γραμμῆς, ἥτις, ἐν τούτοις, τόσον ὀλίγον ἥρμοζεν εἰς τὸ ταραχῶδες πνεῦμά του καὶ εἰς τὸν φρενήρη καλπασμὸν τῆς ἀτιθάσου του φαντασίας. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον αἱ πρῶται πλαστικαὶ δημιουργίαι τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, π. χ. τὸ ἀνάγλυφον τῆς μάχης Κενταύρων καὶ Λαπιθῶν, ὅπερ ἀπόκειται ἐν τῇ Casa Buonarroti, ἐν Φλωρεντίᾳ, παρὰ τὰ ἰδιάζοντα εἰς τὴν προσωπικότητα τοῦ καλλιτέχνου χαρακτηριστικά, φέρουν ἐμφανῆ τὴν ἐπίδρασιν τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος. Ἀρχαιολάτρης κατὰ τὴν πρώτην ταύτην περίοδον τοῦ καλλιτεχνικοῦ του σταδίου, ἀλλ᾽ ὄχι ἀρχαιομανής. Ἦτο τόσον ρωμαλέον καὶ πηγαῖον τὸ τάλαντόν του, ὥστε οὐδέποτε παρεσύρθη ἀπὸ σχολάς, ἀπὸ προκαθωρισμένας κατευθύνσεις, ἀπὸ τάσεις κειμένας ἔξω τῆς προσωπικότητός του. Τὸ θυελλῶδές του πνεῦμα, μέσα εἰς τὸ ὁποῖον ὅμοια μὲ τεράστια διηνεκῶς ἀνακυκλούμενα καὶ ἀνακυλινδούμενα κύματα ἐκόχλαζον τὰ σφοδρότερα πάθη καὶ αἱ ζωηρότεραι ἐξάρσεις, ἔμεινε πάντοτε μονῆρες καὶ μοναδικόν. Δύναταί τις, χωρὶς τὸν κίνδυνον νὰ περιπέσῃ εἰς ὑπερβολήν, νὰ ὑποστηρίξῃ ὅτι οὐδεμία ἄλλη καλλιτεχνικὴ φυσιογνωμία ἐμφανίζεται τόσον αὐθύπαρκτος, αὐθυπόστατος καὶ αὐτενεργός. Εἰς τὴν Φλωρεντίαν ἄλλωστε τῶν Μεδίκων ὑπῆρχε τόπος δι᾽ ὅλας τὰς ἀναβάσεις, διὰ τὰ μετεωρίσματα εἰς πᾶσαν ἀπρόσιτον κορυφήν· ἐφαίνετο νὰ μὴ ὑπάρχῃ τόπος διὰ τὰς μετριότητας. Ἡ εἰδωλολατρεία ἀνεζωογονεῖτο μέσα εἰς τὰς ψυχάς, αἱ ὁποῖαι ἐποτίζοντο μὲ τὰ ἀείζωα νάματα τοῦ κλασσικισμοῦ· ἀλλὰ συγχρόνως, ὑπὸ τὸν μεγαλειώδη θόλον τοῦ καθεδρικοῦ της ναοῦ, τῆς περιφήμου Ἁγίας Μαρίας τῶν Ἀνθέων, ἤστραπτε καὶ ἐβρόντα καὶ συνεκύκα τὰς βεβαρημένας συνειδήσεις ὁ καταρρακτώδης, προφητικός, πλούσιος εἰς ζοφερὰς φαντασμαγορίας λόγος τοῦ μοναχοῦ Σαβοναρόλα. Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ᾐσθάνθη ἐπὶ βραχυχρονικὸν διάστημα ἑαυτὸν ἀλληλοδιαδόχως ἀποσπώμενον πρὸς τὴν μίαν ἢ πρὸς τὴν ἄλλην κατεύθυνσιν. Ἐξεπόνει ταυτοχρόνως περίπου τὴν «Μάσκαν τοῦ γελῶντος φαύνου» καὶ τὴν «Παρθένον εἰς τὴν κλίμακα» (ἀνάγλυφον ἀποκείμενον ἐν τῇ Casa Buonarroti)· ἔβλεπε τὸν ἀδελφόν του Λεονάρδον ἀπαρνούμενον τὰ ἐγκόσμια καὶ καταριθμούμενον εἰς τὸ τάγμα τῶν δομινικανῶν μοναχῶν· καὶ ἐνῷ ὁ Σαβοναρόλας ἔκαιεν εἰς τὰς πλατείας τὰ ἀρχαῖα χειρόγραφα, ὡς ἀποκυήματα δαιμονικῆς φαντασίας, αὐτὸς κατεσκεύαζε τὸν «Κοιμώμενον Ἔρωτα», ὅστις ἐξελαμβάνετο ὡς δημιούργημα τῆς ἀρχαίας τέχνης, τὸν μέγαν «Ἔρωτα», τὸν «Μεθυσμένον Βάκχον» καὶ τὸν «Θνήσκοντα Ἄδωνιν»· βραδύτερον δ᾽ ὅτε ὁ Σαβοναρόλας ὑφίστατο τὸν οἰκτρὸν ἐπὶ τῆς πυρᾶς θάνατον, ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἠδιαφόρει. Ἐν τῷ μέσῳ ὅλων αὐτῶν τῶν θυελλῶν ὁ καλλιτέχνης καταλείπει τὴν Φλωρεντίαν καὶ ἐγκαθίσταται εἰς τὴν Βενετίαν. Μετὰ ταῦτα ἐπισκέπτεται τὴν Βολωνίαν, κατὰ τὴν ἄνοιξιν δὲ τοῦ 1495 ἐπιστρέφει εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ἐξ ἧς μετ᾽ ὀλίγον μεταβαίνει εἰς τὴν Ρώμην. Κατὰ τὸ μαρτύριον τοῦ Σαβοναρόλα ἐκπονεῖ τὴν «Pietà», τὸ μεγαλούργημα τοῦτο τοῦ μεγαλοπρεποῦς, συγκεκρατημένου ἄλγους, ὅπερ κοσμεῖ τὸν Ἅγιον Πέτρον τῆς Ρώμης. Εἶναι τὸ ἔργον, ὅπερ ἀποδεικνύει, κατὰ τὴν παρατήρησιν τοῦ Ρομαὶν Ρολλάν, ὅτι «ἡ θλῖψις κατέλαβε πλέον τὴν ψυχὴν τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου«. Εἶναι ἡ ἀγωνιώδης ὀδύνη, ἀπὸ τὴν ὁποίαν οὐδέποτε θ᾽ ἀπαλλαγῇ καθ᾽ ὅλον τὸν μακρότατον βίον του. Εἶναι ἡ γόνιμος ὀδύνη τῆς μεγαλοφυΐας. Κατὰ τὸ 1501 ἐπιστρέφει εἰς τὴν Φλωρεντίαν καὶ κατασκευάζει τὸν κολοσσικὸν «Δαυΐδ», ὅστις ἀνατείνει σήμερον τὴν θείαν του γυμνότητα ἐν τῇ κεντρικῇ αἰθούσῃ τῆς Φλωρεντινῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Ἄλλοτε εὑρίσκετο τοποθετημένος εἰς τὴν πλατεῖαν τῆς Σινιορίας, ἐνώπιον τοῦ Palazzo Vecchio. Ἀλλ᾽ ἡ ἀγριότης καὶ ἡ ἀκαλαισθησία φανατικοῦ ὄχλου κατ᾽ ἀρχάς, ἡ ἐπίδρασις τῶν καιρικῶν μεταβολῶν μετὰ ταῦτα ἔθεσαν εἰς μέγαν κίνδυνον τὴν ὕπαρξίν του· τῷ 1873 ἐχρειάσθη νὰ γίνῃ ἡ σημερινή του τοποθέτησις, ἥτις ἀναντιρρήτως δὲν εἶναι ἰδεώδης. Παρὰ τὴν δημιουργίαν τοῦ «Δαυΐδ», κατὰ τὴν ἀπὸ τοῦ 1501 μέχρι τοῦ 1505 διαμονὴν τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου ἐν Φλωρεντίᾳ ἔχομεν νὰ σημειώσωμεν τὴν ἐπικὴν μάχην, ἥτις ἐδόθη μεταξὺ τοῦ τιτᾶνος τούτου τῆς νεωτέρας τέχνης καὶ τοῦ ἑτέρου ἐκείνου τιτᾶνός της, τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι, ἐν τῇ διακοσμήσει τῆς αἰθούσης τοῦ συμβουλίου τῆς Σινιορίας. Κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς διακοσμήσεως ταύτης, εἰς μὲν τὸν Λεονάρδον ἐδόθη ὡς θέμα ἡ ἀπεικόνισις τῆς μάχης τοῦ Ἀγκιάρι, εἰς δὲ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον ἡ ἀπεικόνισις τῆς μάχης τῆς Κασσίνας. Περὶ τῆς γιγαντομαχίας ταύτης, μὲ τὴν ὁποίαν κλείει ἡ πρώτη περίοδος τοῦ καλλιτεχνικοῦ σταδίου τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, οὐδὲν δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν, διότι ὁ διαρρεύσας χρόνος ἐξηφάνισεν ἀμφότερα τὰ ἔργα. Κατὰ τὸν Μάρτιον τοῦ 1505 ἄρχεται ἡ δευτέρα περίοδος τῆς δημιουργικῆς προσπαθείας τοῦ ὑπερφυοῦς καλλιτέχνου· εἶναι, ὅπως τὴν ὀνομάζει ὁ Ρομαὶν Ρολλάν, «ἡ ἡρωϊκὴ περίοδος τοῦ βίου του». Ἰούλιος ὁ Β΄, ὁ μέγας πάπας, καλεῖ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον εἰς τὴν Ρώμην. Ἀπὸ τῆς προσκλήσεως ταύτης ἄρχεται ὁ τραχύς, ἀδυσώπητος ἀγὼν μεταξὺ τῶν δύο αὐτῶν ἰσχυρῶν ἀνθρώπων, ὅστις ἐπρόκειτο νὰ λήξῃ μόνον διὰ τοῦ θανάτου τοῦ πρώτου. Ὁ Ἰούλιος Β΄ ἔχει μεγάλα σχέδια κατὰ νοῦν· ἀλλ᾽ εἶναι πνεῦμα ἀνήσυχον, ὀξὺ καὶ εὐεπίφορον συγχρόνως, εὐερέθιστον καὶ πολυσχιδές· ὑφίσταται ἐπιδράσεις, ὑπακούει ἐνίοτε εἰς εἰσηγήσεις ἀντιπάλων τοῦ μεγάλου καλλιτέχνου, ὡς ὁ Μπραμάντε, καὶ συχνάκις παλινῳδεῖ. Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ ἀντιπροσωπεύει τὴν εὐθύτητα, τὴν αὐτοπεποίθησιν, τὸ ἀπηνὲς μεγαλεῖον· μολονότι οὐδέποτε σβέννυται μέσα εἰς τὴν καρδίαν του ὁ ὀφειλόμενος πρὸς τὸ πρόσωπον τοῦ πάπα σεβασμός, συχνάκις διὰ ταραχωδῶν, ἐσπευσμένων ἐκ Ρώμης ἀναχωρήσεων, δι᾽ ἀτέγκτων ἀρνήσεων, δι᾽ ἐπιστολῶν προδιδουσῶν σφοδρὰς ψυχικὰς ἐκρήξεις, τίθεται ἀντιμέτωπος τῆς παντοδυνάμου προσωπικότητος τοῦ πάπα· εἶναι μία ἄλλη τιτανομαχία αὐτή, διεξαγομένη περὶ τὴν ἐκτέλεσιν τοῦ ἐπιταφίου μνημείου Ἰουλίου τοῦ Β΄, εἰς τὴν ὁποίαν δὲν γνωρίζει τις ἀκριβῶς τί νὰ θαυμάσῃ: τὸν ὑπὲρ τῆς τέχνης ἔρωτα τοῦ πάπα ἢ τὴν ἀδάμαστον ἐν τῷ συνόλῳ της θέλησιν τοῦ καλλιτέχνου. Λήγοντος τοῦ ἔτους 1506, ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος συνεφιλιώθη μὲ τὸν πάπαν· ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ καὶ ἀντὶ τοῦ ἐπιταφίου μνημείου, εἰς τὴν κατασκευὴν τοῦ ὁποίου τόσον ἀντέδρασαν οἱ ἀντίζηλοι, ἐχρειάσθη, κατ᾽ ἐντολὴν τοῦ πάπα, νὰ κατασκευάσῃ ἕνα χαλκοῦν ἀνδριάντα του, ὅστις ἐπρόκειτο νὰ τοποθετηθῇ πρὸ τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Πετρωνίου τῆς Βολωνίας. Ἡ ἐκτέλεσις τοῦ ἔργου τούτου, τὸ ὁποῖον μὲ προφανῆ ἀπροθυμίαν ἀνέλαβεν ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, ἀπῄτησεν ἐπώδυνον προσπάθειαν. Ἐστήθη τέλος κατὰ Φεβρουάριον τοῦ 1508 πρὸ τοῦ Ἁγίου Πετρωνίου· ἀλλὰ κατὰ τὸ 1511 κατεστράφη ὑπὸ τῆς ἀντιπάλου τοῦ πάπα μερίδος τῶν Μπεντιβόλι, ὁ δ᾽ Ἀλφόνσος τῆς Ἔστης ἠγόρασε τὰ τεμάχιά του, διὰ νὰ κατασκευάσῃ τηλεβόλον, δεδομένου ὅτι ὁ ἀνδριὰς ἦτο ὀρειχάλκινος.

Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ρώμην. Καὶ τότε ὁ πάπας ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν ἐγχείρημα δυσχερέστατον, τοσούτῳ μᾶλλον, ὅσῳ ὁ καλλιτέχνης δὲν ἀνεγνώριζεν εἰς ἑαυτὸν τὴν ἱκανότητα ζωγράφου, ἀλλὰ γλύπτου μόνον. Τὸ ἐγχείρημα τοῦτο, εἰς ὃ ἐξεδηλώθη ἐν ὅλῳ τῷ μεγαλείῳ καὶ τῇ εὐρύτητί της ἡ πλαστικὴ μεγαλοφυΐα τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ ὅπερ ἀποτελεῖ οἱονεὶ ἑρμαφρόδιτον μεγαλούργημα, τὸν μυστικὸν ὑμέναιον τῆς ζωγραφικῆς καὶ τῆς πλαστικῆς, εἶναι ἡ διακόσμησις τοῦ Σιξτείου παρεκκλησίου τοῦ Βατικανοῦ, τῆς περιφήμου Capella Sixtina. Τὸ τεράστιον τοῦτο ἔργον, ὅπερ ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος συνεπλήρωσεν ἐν διαστήματι τεσσάρων ἐτῶν, ἐφαίνετο ὅτι τὸν ἐπλήρου ἀπὸ ἄφθιτον δόξαν, ἀλλὰ καὶ ὅτι τὸν συνέτριβε συγχρόνως. «Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, γράφει ὁ Ρολλάν, ἐξῆλθεν ἀπὸ τὸ ἡράκλειον αὐτὸ κατόρθωμα, δοξασμένος καὶ συντετριμμένος». Ἐπὶ πολὺν χρόνον μετὰ ταῦτα, μᾶς πληροφορεῖ ὁ παλαιὸς ἱστοριογράφος τῆς ἰταλικῆς τέχνης Βαζάρι, ἐπειδὴ εἶχε συνηθίσει νὰ εἶναι ἐστραμμένος πρὸς τὸν θόλον τοῦ Σιξτείου παρεκκλησίου, δὲν ἠδύνατο ν᾽ ἀναγνώσῃ μίαν ἐπιστολὴν ἢ νὰ παρατηρήσῃ ἓν ἀντικείμενον, χωρὶς νὰ τὸ θέσῃ πλαγίως καὶ ὑπεράνω τῆς κεφαλῆς του, διὰ νὰ τὸ ἴδῃ καλύτερον. Εἰς ἓν δ᾽ ἐκ τῶν ποιημάτων του αὐτὸς ὁ ἴδιος ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος παραπονεῖται διὰ τὰ σωματικὰ δεινά, ἅτινα τοῦ προσεπόρισεν ἡ ἐπίπονος αὐτὴ προσπάθεια.

Διὰ τὴν διακόσμησιν τοῦ Σιξτείου παρεκκλησίου ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος κατέφυγεν εἰς τὴν Παλαιὰν Διαθήκην καὶ εἰς τὴν ἀλληγορίαν. Εὗρεν ἐκεῖ τὰς τιτανικὰς μορφάς, αἱ ὁποῖαι τοῦ ἐχρειάζοντο διὰ ν᾽ ἀποδώσῃ τὰ ὑπέροχα συναισθήματα, τὰ ὁποῖα συνεκλόνουν ἐκ βάθρων τὴν ψυχήν του. «Ὁ Ἱερεμίας» «Ἡ περσικὴ Σίβυλλα», «Ὁ Ἰεζεκιήλ», «Ἡ Σίβυλλα τῆς Ἐρυθραίας», «Ὁ Ἰωήλ», «Ὁ Ζαχαρίας», «Ἡ δελφικὴ Σίβυλλα», «Ὁ Ἡσαΐας», «Ἡ Κυμαία Σίβυλλα», «Ὁ Δανιήλ», «Ἡ λιβυκὴ Σίβυλλα», «Ὁ Ἰωνᾶς», «Ὁ χαλκοῦς ὄφις», «Ὁ Ἀχασβῆρος, ἡ Ἐσθὴρ καὶ ὁ Ἀμάν», «Ὁ Δαβὶδ καὶ ὁ Γολιάθ», «Ἡ Ἰουδεὶθ», «Ὁ Θεὸς χωρίζων τὸ φῶς ἀπὸ τοῦ σκότους», «Ἡ δημιουργία τοῦ ἡλίου, τῆς σελήνης καὶ τῶν φυτῶν τῆς γῆς», «Ἡ δημιουργία τῶν ἰχθύων καὶ τῶν πτηνῶν», «Ἡ δημιουργία τοῦ ἀνθρώπου», «Ἡ δημιουργία τῆς Εὔας», «Τὸ προπατορικὸν ἁμάρτημα», «Ἡ δίωξις τοῦ Ἀδὰμ καὶ τῆς Εὔας ἐκ τοῦ ἐπιγείου παραδείσου», «Ἡ θυσία τοῦ Νῶε», «Ὁ κατακλυσμὸς καὶ «Ἡ μέθη τοῦ Νῶε» εἶναι τὰ πανάρχαια, βαρυσήμαντα κοσμογονικὰ θέματα, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, μακρὰν πάσης προϋποθέσεως, προκαταλήψεως, παραδόσεως ἢ προκαθωρισμένης κατευθύνσεως. ἐδημιούργησεν ἕνα παράδοξον, ἐντελῶς ἰδιότυπον καὶ ἰδικόν του ρωμαλέον κόσμον, ἕνα σύνολον μεγαλειώδους ἰσχύος, ἐν ᾧ ὁ μεγαλοφυὴς καλλιτέχνης ἐπραγματοποίησε καὶ ἐξεδήλωσε τὸ παράτολμον ζωϊκὸν καὶ κοσμολογικὸν ἰδεῶδές του. Αἱ μορφαὶ αὗται δὲν ἀποπνέουν τὴν αἰσθηματικὴν ἐκείνην κατάνυξιν, τὴν τόσῳ οἰκείαν καὶ προσφιλῆ εἰς ἄλλους καλλιτέχνας τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως· ἀποτελοῦν τὴν δοξολόγησιν τοῦ ἐν ὑψίστοις Θεοῦ διὰ μέσου τοῦ δημιουργήματός του, διὰ μέσου τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος, παλλομένου ἀπὸ ἐνέργειαν, ζωήν, ἔκφρασιν ἰσχύος καὶ εἰς αὐτὰς τὰς μᾶλλον ἀγωνιώδεις στιγμάς του. Εἰς τὰς συνθέσεις αὐτὰς δὲν ὑπάρχουν λιποψυχίαι, ἀδυναμίαι, ταπεινώσεις· ὑπάρχουν μόνον ὑψηλοί, ἡρωϊκοὶ στοχασμοί, ἐκπεφρασμένοι διὰ τέχνης τολμηροτάτης, ἐξόχως πλαστικῆς καὶ ἐν πάσῃ περιπτώσει ἀπολύτως μοναδικῆς. Ἐπὶ πλέον ὑπάρχει μία ζοφερά, τιτανικὴ θλῖψις, ἐκείνη ἡ ὁποία ἠνάγκαζε τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον νὰ γράψῃ βραδύτερον τοιούτους στίχους:

Sol' io ardento all'ombra mi rimango,
Quand' el sol de suo razi el mondo spoglia,
Ogni altro per piaciere, e io per doglia,
Prostrato in terra, mi lamento e piangho.

[Μόνος, φλέγομαι μέσ' στὴ σκιά, ὅταν ὁ ἥλιος παίρνῃ τὶς ἀκτῖνές του ἀπὸ τὸν κόσμο· ὅλοι οἱ ἄλλοι ἀνασαίνουν· καὶ μόνο ἐγώ, ξαπλωμένος χάμω, γεμᾶτος θλίψη, στενάζω καὶ κλαίω.]

*Μιχαὴλ Ἄγγελος.*
[Ἔργον τοῦ Santarelli.]

Digitized by Google

Εἶναι χαρακτηριστικόν, ὅτι καθ' ἣν ἐποχὴν ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος διεκόσμει τὸ Σίξτειον παρεκκλήσιον ὁ Ραφαὴλ ἐξετέλει τὰς περιφήμους τοιχογραφίας τῶν Stanze τοῦ Βατικανοῦ εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ παρεκκλησίου τούτου. Εἴκοσιν ἔτη μετὰ ταῦτα ὁ μεγαλοφυὴς καλλιτέχνης συνεπλήρωσε τὴν σειρὰν ταύτην τῶν διακοσμητικῶν του συνθέσεων διὰ τῆς «Ἐσχάτης κρίσεως», μεγαλοπρεπεστάτης συλλήψεως, ἥτις παρὰ τὰς ἐπανειλημμένας ἀνακαινίσεις καὶ μεταλλαγάς, τὰς ὁποίας ἐπὶ διαφόρων παπῶν ὑπέστη, δὲν ἔχασε σχεδὸν τίποτε ἀπὸ τὸ ἀκαταμέτρητον θέλγητρόν της. Εἰς αὐτὴν κυρίως τὴν σύνθεσιν ἀποκαλύπτεται κατὰ τρόπον βιβλικῶς μεγαλήγορον ἡ δαντικὴ ἔμπνευσις τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ἐν τῷ συνόλῳ της δεικνύει τὸ ἀκρότατον ὅριον, εἰς ὃ δύναται νὰ φθάσῃ ἡ ἀντικατάστασις τῆς ἐσωτερικῆς οὐσίας τοῦ θέματος διὰ τοῦ προσωπικοῦ ἰδεώδους τοῦ καλλιτέχνου. Ὁ πάπας Ἰούλιος Β' ἀπέθανε καὶ ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος καταφυγὼν εἰς τὴν Φλωρεντίαν ἐπανῆλθεν εἰς τὸ παλαιὸν προσφιλές του ὄνειρον: τὴν κατασκευὴν τοῦ ἐπιταφίου μνημείου Ἰουλίου τοῦ Β', ὅπερ διὰ συμβολαίου ἀνέλαβε νὰ περατώσῃ ἐντὸς ἑπταετίας, ἀρχομένης ἀπὸ τῆς 6ης Μαρτίου 1513, ἡμέρας τῆς ὑπογραφῆς τοῦ συμβολαίου. Ὁ διαρρεύσας χρόνος εἶχε συντελέσει εἰς τὴν ἀναθεώρησιν μερικῶν ἀπόψεων τοῦ καλλιτέχνου ἐπὶ τῶν διαστάσεων καὶ τῶν διακοσμητικῶν μορφῶν τούτου. Τὸ ἐφαντάζετο ἤδη πολὺ μεγαλοπρεπέστερον καὶ ὑπελόγιζε νὰ τὸ διακοσμήσῃ διὰ τριάκοντα δύο ἀγαλμάτων· ἀλλὰ δὲν κατώρθωσε νὰ τὸ ἀποπερατώσῃ· συνεχεῖς διενέξεις, ἡ μέχρι ψυχώσεως ἐξικνουμένη ἀποστροφή του πρὸς τοὺς συνεργάτας καὶ ἡ ἐπιθυμία του νὰ ἐξεργάζεται καὶ τὴν μικροτέραν λεπτομέρειαν τῶν κλασσικῶν δημιουργημάτων του διὰ τῶν ἰδίων του χειρῶν, ἡ ἄφθαστος ψυχική του λεπτότης καὶ ἡ θλῖψις, ἡ ὁποία ἐνεφώλευε μονίμως εἰς τὴν καρδίαν του, τὸν ἠμπόδισαν νὰ ἐργασθῇ συνεχῶς καὶ μετ' ἀόκνου ζήλου εἰς τὸ μεγαλειῶδες τοῦτο ἐγχείρημα· μένουν τοὐλάχιστον «Ὁ Μωϋσῆς», ἀποκείμενος εἰς τὸν ἐν Ρώμῃ ναὸν τοῦ Ἁγίου Πέτρου in Vincoli, καὶ «Οἱ σκλάβοι» τοῦ μουσείου τοῦ Λούβρου, ἔργα, τὰ ὁποῖα, κατά τινα ἔκφρασιν, ἀποτελοῦν τὴν καλυτέραν ἐπίτευξιν ἰσορροπίας μεταξὺ τῶν παθῶν του καὶ τῆς θελήσεώς του. Ὁμοίως δὲν ἐπερατώθη καὶ τὸ ἐν Φλωρεντίᾳ παρεκκλήσιον τῶν Μεδίκων, ὅπερ ὀλίγῳ βραδύτερον ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἀνέλαβε νὰ κατασκευάσῃ· ἐξεπόνησε μόνον τὰς δύο κόγχας, ἔνθα εὑρίσκονται τὰ ἀγάλματα τοῦ Ἰουλιανοῦ καὶ τοῦ Λαυρεντίου τῶν Μεδίκων καθημένων, μετὰ δύο συμπλεγμάτων ἀνακεκλιμένων ἐπὶ τῶν σαρκοφάγων τῶν δύο τούτων ἡγεμόνων· εἶναι τὰ περιλάλητα συμπλέγματα τῆς Ἑσπέρας καὶ τῆς Αὐγῆς, τῆς Ἡμέρας καὶ τῆς Νυκτός. Ὡς παρατηρεῖ ὁ S. Reinach, «οἱ καθήμενοι πρίγκιπες δὲν ἀποτελοῦν προσωπογλυφίας, ἀλλὰ προσωποποιήσεις τῆς τεθλιμμένης δυνάμεως· θὰ ἔλεγέ τις ὅτι εἶναι δύο προφῆται κατελθόντες ἐκ τοῦ θόλου τοῦ Σιξτείου παρεκκλησίου· τόσον ὁμοιάζουν πρὸς αὐτοὺς κατὰ τὴν ρώμην, τὴν περισυλλογὴν καὶ τὴν αὐστηρότητα τῆς ἐκφράσεως».

Τὸ διάστημα ἀπὸ τοῦ 1520 μέχρι τοῦ 1527 ὑπῆρξε πλῆρες ἀπογοητεύσεων διὰ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον. Δὲν κατώρθωσεν οὔτε ἓν ἔργον ν' ἀποπερατώσῃ, οὔτε ἓν σχέδιον νὰ πραγματοποιήσῃ· καὶ ἐξ αὐτῶν ἀκόμη τῶν ὀλίγων ἐκτελεσθέντων ἀγαλμάτων τοῦ παρεκκλησίου τῶν Μεδίκων δὲν εἶχεν ἀκόμη οὔτε ἓν συμπληρωθῆ. Τῷ 1527 ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις. «Ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος εὑρέθη εἰς τὴν πρώτην γραμμὴν τῶν ἐπαναστατησάντων Φλωρεντίνων κατὰ τὰς ἡμέρας τῆς ἐθνικῆς καὶ δημοκρατικῆς ἀφυπνίσεως, αἵτινες ἠκολούθησαν τὴν ἀναγγελίαν τῆς καταλήψεως τῆς Ρώμης ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Καρόλου Κουίντου καὶ τὴν ἐκδίωξιν τῶν Μεδίκων. Ὁ ἴδιος ἄνθρωπος, ὅστις εἰς τοὺς ὁμαλοὺς καιροὺς συνίστα εἰς τοὺς ἰδικούς του ν' ἀποφεύγουν τὴν πολιτικὴν καθὼς τὴν πανώλη, εὑρίσκετο εἰς τοιαύτην κατάστασιν ὑπερδιεγέρσεως, ὥστε δὲν ἐφοβεῖτο οὔτε τὴν μίαν οὔτε τὴν ἄλλην. Ἔμεινεν εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ὅπου ὑπῆρχε καὶ ἡ πανώλης καὶ ἡ ἐπανάστασις» (*Romain Rolland*, Vie de Michel-Ange, σελ. 88). Διακριθεὶς ἐν τῇ ἀμύνῃ τῆς πόλεως ἐτιμήθη ἀλληλοδιαδόχως διὰ διαφόρων ἀξιωμάτων καὶ τὴν 6ην Ἀπριλίου τοῦ 1527 ὠνομάσθη governatore generale καὶ procuratore τῶν ὀχυρωμάτων τῆς πόλεως. Κατὰ τοὺς ἑπομένους δὲ μῆνας ἐπεσκέφθη τὰς πλησίον πόλεις, ἵνα ἐπιθεωρήσῃ τὴν ἄμυνάν των. Ἀλλ' οἱ διωχθέντες Μέδικοι, μένεα πνέοντες κατ' αὐτοῦ, προητοίμαζον τὸν ὄλεθρόν του. Καὶ θὰ ἐφονεύετο ἐξ ἅπαντος, ὡς καὶ ὁ ἴδιος εἰς μίαν ἐπιστολήν του ὁμολογεῖ, ἂν δὲν ἐπρόφθανε νὰ σωθῇ εἰς τὴν Φερράραν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Βενετίαν. Βραδύτερον ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ἀλλὰ κατὰ τὴν παράδοσιν τῆς πόλεως εἰς τὸν παπικὸν κομισσάριον (1530) ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος διέτρεξεν ἐκ δευτέρου τὸν κίνδυνον ν' ἀποκεφαλισθῇ, ἐσώθη δὲ μόνον χάρις εἰς τὴν στοργήν, τὴν ὁποίαν, παρὰ τὴν ἀνταρσίαν του, ᾐσθάνετο πρὸς αὐτὸν Κλήμης ὁ Ζ'. Ἀφιερώθη τότε εἰς τὴν ἀποπεράτωσιν τοῦ παρεκκλησίου τῶν Μεδίκων, τοὺς ὁποίους τόσον λυσσωδῶς εἶχε πολεμήσει· τοῦτο ἐξηγεῖ διὰ τίνα λόγον δὲν ἀναγνωρίζει τις τοὺς Μεδίκους εἰς τ' ἀγάλματά των: ὁ εἷς εἶναι ἡ Δρᾶσις, ὁ ἕτερος ὁ Στοχασμός. Διὰ τοῦτο ἀκριβῶς ὁ Λαυρέντιος Μέδικος εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ὡς «Il Pensieroso». Ἀποτελεῖ τὸν διάμεσον τύπον μεταξὺ τοῦ γοτθικοῦ «Στοχαστοῦ» τῆς Παναγίας τῶν Παρισίων καὶ τοῦ «Στοχαστοῦ» τοῦ Ροντέν. Εἰς τὰς ὑπολοίπους μορφάς, τῆς Νυκτός, τῆς Ἑσπέρας κλπ., ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος ἀπετύπωσεν ὅλην τὴν θλῖψιν, ἥτις διακατεῖχε τὴν ψυχήν του. Ἡ θλῖψις αὕτη μετεμορφώθη βραδύτερον εἰς ἄλλο ἰσχυρότατον, καταλυτικὸν πάθος: τὴν φιλίαν του πρὸς τὸν Τομμάζο ντέϊ Καβαλιέρι, τὸν νεανίαν, ὅστις ἐξεπροσώπει διὰ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον τὸ ἄκρον ἄωτον τῆς ἀνθρωπίνης εὐμελείας· καὶ προγενεστέρως ὁ καλλιτέχνης ἐνόμισεν ὅτι ἀνεῦρε τὰ πρότυπα τοῦ αἰσθητικοῦ του ἰδεώδους εἰς τὸν Γεράρδον Περίνι, τὸν Φέμπο ντὶ Πότζιο, τὸν Τσεκῖνο ντέϊ Μπράτσι, ἀλλ' ἡ φιλία του πρὸς τὸν Καβαλιέρι, ἥτις ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς παρεξηγήσεις καὶ ὑπαινιγμοὺς ἐναντίον τῆς ἠθικότητος τοῦ καλλιτέχνου, προσέλαβε τὸν χαρακτῆρα περιπαθοῦς λατρείας, ἐκδηλουμένης καὶ διὰ στίχων καὶ ἡγεμονικῶν δώρων εἰσέτι· ἡ φιλία αὐτὴ ἤγγισε τὰ ὅρια ἀληθοῦς παροξυσμοῦ διὰ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον κατὰ τὰ ἔτη 1533 καὶ 1534. Τῷ 1535 ἐγνώρισε τὴν Βιττόρια Κολόννα, καταγομένην ἐκ μιᾶς τῶν παλαιοτέρων καὶ εὐγενεστέρων οἰκογενειῶν τῆς Ἰταλίας, σύζυγον τοῦ μαρκησίου τῆς Πεσκάρας Φερράντε Φραντσέσκο ντ' Ἀβάλος, τοῦ νικητοῦ τῆς Παβίας. Ἡ Βιττόρια Κολόννα δὲν ἦτο ὡραία· εἶχε κάτι τὸ ἀνδροπρεπὲς εἰς τὴν μορφὴν καὶ εἰς τὴν ἔκφρασιν, ἡ δὲ ψυχή της ἦτο πλήρης εὐγενῶν αἰσθημάτων καὶ τὸ πνεῦμά της ἀνερριπίζετο ὡς ἄσβεστος φλὸξ ἀπὸ τοὺς πνέοντας κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους ἰδεαλιστικοὺς ἀνέμους. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της ἀφιερώθη εἰς τὴν θρησκείαν, διετήρει ὅμως ἀλληλογραφίαν μὲ τὰ ἐπιφανέστερα πνεύματα τῶν χρόνων της καὶ αὐτὴ ἡ ἰδία ἔγραφε σονέττα, τὰ ὁποῖα τὴν κατέστησαν διάσημον. Ὁ δεσμός της μὲ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον ὡμοίαζε μὲ μυστικὴν ἐπικοινωνίαν ψυχῶν, τὴν ὁποίαν δὲν ἤρχετο νὰ ταράξῃ κανεὶς βέβηλος στοχασμός. Ἡ Κολόννα ἐγκατεβίωνεν ἐν τῇ ἠρεμίᾳ τοῦ μοναστηρίου· καὶ ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, ὁσάκις τὴν ἐπεσκέπτετο, ᾐσθάνετο ν' ἀνοίγωνται εἰς τὸ πνεῦμά του νέοι ὁρίζοντες: οἱ οὐρανοὶ τῆς ἁγνῆς πίστεως, τοὺς ὁποίους εἶχεν ἀποκλείσει ἀπὸ τὰ βλέμματά του ἡ λατρεία τοῦ σφριγῶντος σώματος· διὰ τοῦτο εἰς τὰ ἀνήκοντα εἰς τοὺς χρόνους τούτους σχέδια τῆς Ἀναστάσεως, ἅτινα εὑρίσκονται εἰς τὸ Λοῦβρον καὶ εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον, εὑρίσκομεν περισσότερον χριστιανικὸν αἴσθημα καὶ περισσοτέραν γαλήνην. Ἐλέχθη ὅτι ὁ Καβαλιέρι καὶ ἡ Κολόννα ἀλληλοσυνεπληροῦντο μέσα εἰς τὴν ψυχὴν τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ ἐπροσωποποίουν τὸ διπλοῦν, ἑρμαφρόδιτον ἰδεῶδές του, τὸν ἀνδρόγυνον ἐκεῖνον, ὅστις φαίνεται διὰ μέσου ὁλοκλήρου τοῦ ἔργου του καταλείπων βαθέα ἴχνη.

Μετὰ τὸν θάνατον τῆς Βιττόρια Κολόννα (1547), ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, ὅστις ᾐσθάνθη βαθύτατα τὸ πλῆγμα τοῦτο, ἐστράφη εἰλικρινέστερον καὶ ζωηρότερον ἢ ἄλλοτε πρὸς τὸν Θεόν. Αὐτός, ὅστις εἶχεν ἀναγάγει εἰς τοιαύτην περιωπὴν τὴν ἀνατομικὴν σπουδὴν τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος καὶ καθ' ὅλον του τὸν βίον εἰργάσθη διὰ νὰ λαμπρύνῃ, μὲ τὴν θαυμασίαν αἴγλην τῆς τέχνης του, τὴν ἡγεμονικὴν ἰσχύν, τὴν παπικὴν ἐξουσίαν καὶ ὑπὲρ πάντα τὴν ἐξαισίαν ὡραιότητα τῆς σαρκός, ἐξηντλημένος πλέον ἀπὸ τὰς ταραχώδεις ἐξελίξεις μακροῦ βίου, πληγωμένος εἰς τὴν ἀγάπην του, ἀηδιασμένος ἀπὸ τὴν χαμέρπειαν τῶν ἀνθρώπων, αἰσθάνεται τὸ πνεῦμά του ν' ἀνατείνεται πρὸς τὸν Θεόν. Ἀναλαμβάνει νὰ ἐπιστεγάσῃ τὴν ἐργασίαν του διὰ τῆς συμπληρώσεως τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Πέτρου. Ὁ ναὸς αὐτὸς εἶναι, βεβαίως, πάντοτε τὸ μέγα σύμβολον τῆς παπικῆς παντοδυναμίας, ἀλλ' εἶναι συγχρόνως καὶ ὁ μεγαλοπρεπὴς οἶκος τοῦ Θεοῦ· ὑπὸ τὴν διπλῆν ταύτην ἔννοιαν τὸν ἐννοεῖ ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος καὶ ἀποφασίζει νὰ ὑψώσῃ ὑπεράνω τοῦ μνημειώδους τούτου οἰκοδομήματος τὸν φλωρεντινὸν θόλον τοῦ Μπρουνελλέσκι, ὑποστάντα ἤδη τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀκαταμετρήτου προσωπικότητός του. Εἰς τὸν ναὸν τοῦτον, προσκληθεὶς ὑπὸ Λέοντος τοῦ Ι', εἶχεν ἤδη ἐργασθῆ ὁ Ραφαὴλ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Φρὰ Τζιοκόντο καὶ τοῦ Τζ. ντὰ Σαγκάλλο. Τὸν Ραφαὴλ θανόντα διεδέχθη ὁ Μπαλ. Περούντζι, τοῦτον δὲ ὁ Ἀντώνιος ντὰ Σαγκάλλο καὶ τοῦτον ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος, διευθύνας τὰς ἐργασίας τῆς οἰκοδομήσεως τοῦ ναοῦ τούτου μέχρι τοῦ θανάτου του. Εἶναι θαυμασία ἡ ἀνάτασις τοῦ θόλου τοῦ Ἁγίου Πέτρου εἰς ὕψος ἐνενήκοντα πέντε μέτρων, συμπληροῦντος διὰ τῆς ἐλαφρότητος, τῆς χάριτος, τῆς κομψότητος, ἀλλὰ καὶ τοῦ ἐπιβάλλοντος μεγαλείου του, τὴν ὅλην ἁρμονικὴν διάταξιν τοῦ τε ὑπ' αὐτὸν οἰκοδομήματος καὶ τῶν περὶ αὐτὸν μνημείων. Ἀπὸ τοῦ ὕψους του δεσπόζει τῆς αἰωνίας πόλεως, ὁρώμενος δ' ἐξ ἀπόπτου μέρους, ἐπὶ παραδείγματι ἀπὸ τῶν κήπων τοῦ Πίντσιο, φαίνεται ὡς ἀπολιθωθεῖσα μελῳδικὴ στροφὴ προσευχῆς κατευθυνομένη πρὸς τὸν ἐν οὐρανοῖς Θεόν.

Μετὰ τὸν θόλον τοῦ Ἁγίου Πέτρου, συμπληρωθέντα ὑπὸ ἑτέρων καλλιτεχνῶν, καὶ τὴν «Ἐσχάτην κρίσιν», ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος οὐδὲν ἄλλο ἐξόχως σημαντικὸν ἐπετέλεσεν. Ἦτο ἄλλως τε πολὺ γέρων. Καὶ ἐφ' ὅσον τὰ ἔτη παρήρχοντο, τόσον περισσότερον ᾐσθάνετο τὴν ἀνάγκην τῆς οἰκιακῆς καὶ οἰκογενειακῆς στοργῆς. Κατῴκησεν εἴς τινα οἰκίαν ἐν Ρώμῃ, παρὰ τὴν ἀγορὰν τοῦ Τραϊανοῦ, καὶ ἠσχολεῖτο εἰς μικρά τινα ἔργα, περιβαλλόμενος ἀπὸ τοὺς βοηθούς του καὶ τοὺς προσφιλεῖς του συντρόφους, τὰ οἰκόσιτα ζῷά του. Ἔβλεπεν ἡμέρᾳ τῇ ἡμέρᾳ τὸν θάνατον ν' ἁρπάζῃ ὅλους ὅσους εἶχεν ἀγαπήσει, καὶ ἡ μόνωσις ἐγίνετο μεγαλυτέρα γύρω του. Δὲν τὸν ἐτάρασσον πλέον ἐνθουσιασμοί. Ἀλλ' ἐντός του ἔμενεν ἀκόμη τόση τρυφερότης, τοιαύτη ἀπέραντος καλωσύνη, ὥστε, ὅταν, καταλιπὼν προσκαίρως τὴν Ρώμην, εὑρέθη ἀνάμεσα εἰς τὰ φθινοπωρινὰ δάση τοῦ Σπολέτο, ἔγραφεν εἰς τὸν Βαζάρι:

«Pace non si trova senon ne boschi» [Ἡ γαλήνη μονάχα στὰ δάση βρίσκεται.]

Μολονότι καθημερινῶς καταβαλλόμενος ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον σωματικῶς, δὲν ἔπαυσε νὰ σχεδιάζῃ, νὰ συνθέτῃ, νὰ ἐκπονῇ ἔργα, ὡς ἡ ἡμιτελὴς Pietà τοῦ παλατίου Ροντανίνι. Τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1564, εἰς ἡλικίαν ἐνενήκοντα περίπου ἐτῶν, ἀπῆλθεν εἰς τὴν αἰωνίαν γαλήνην, τὴν ὁποίαν τόσον εἶχεν ἐπιθυμήσει. Παρὰ τὴν κλίνην τῆς ἀγωνίας του εὑρίσκοντο ὁ μαθητής του Δανιὴλ ντὲ Βολτέρρα, ὁ Διομήδης Λεόνι, οἱ ἰατροὶ Φρειδερῖκος Ντονάτι καὶ Γεράρδος Φιντελίσσιμι, ὁ ὑπηρέτης του Ἀντώνιος ντὲ Φραντσέζε καὶ ὁ Τομμάζο ντέϊ Καβαλιέρι, πάντοτε ἀφωσιωμένος εἰς τὴν μεγαλοφυΐαν, ἡ ὁποία τὸν ἐθαύμαζεν. Πεντήκοντα ἐννέα ἔτη μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του Μιχαὴλ Ἀγγέλου τοῦ νεωτέρου οἱ στίχοι, τοὺς ὁποίους ἔγραψε κατὰ τὸ διάστημα τῆς ἐργώδους ζωῆς του, πλήρεις ἐξαισίων ἀπηχήσεων τοῦ πνεύματος καὶ τῆς καρδίας του, ὑπὸ τὸν τίτλον: «Rime di Michelaguiolo Buonarroti, raccolte da Michelaguiolo suo nipote, Giunti, Firenze 1623», τῷ δὲ 1863 ἐγένετο καθαρῶς ἱστορικὴ ἐπανέκδοσίς των, ἐν Φλωρεντίᾳ ὁμοίως, ὑπὸ τοῦ Cesare Guasti. Εἰκόνας ἔργων τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου βλ. ἐν λ. *Ἀνάγεννησις* (τ. Δ', σ. 452 καὶ 453), *Βατικανὸν* (τ. ΣΤ', σ. 824, 825) καὶ *Σίξτειον* παρεκκλήσιον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Gaetano Milanesi*, Le Lettere di Michel Angelo Buonarroti, pubblicate con Ricordi ed i Contratti artistici (Firenze, 1875).—*Giorgio Vasari*, Vite degli architetti, pittori e scultori (1550, 1568).—*Ascanio Condivi*, Vita di Michel Angelo Buonarroti (Roma, 1553).—*Paolo Giovio*, Michaelis Angeli vita (Modena, 1781).—*Richard Duppa*, The Life and literary vorks of M. A. B. (London, 1807).—*Quatremère de Quincy*, Histoire de la vie et des ouvrages de M. A. B. (Paris, 1835).—*H. Grimm*, Das Leben Michelangelos (1900).—*C. Heath Wilson*, Life and works of M. B. (London, 1876).—*John Addington Symmonds*, The Life of M. A. B. (London, 1893).—*Carl Justi*, Michelangelo (Leipzig, 1900).—*Cor. Ricci*, Michelangelo (Firenze, 1901).—*E. Steinmann* et *Wittkower*, Michelangelo Bibliographie (Leipzig, 1927· περιλαμβάνει πᾶν ὅ,τι ἐγράφη περὶ Μιχαὴλ Ἀγγέλου ἀπὸ τοῦ 1510 μέχρι τοῦ 1926).—*R. Rolland*, Vie de Michel Ange (Paris, 12η ἔκδοσις).—*F. Knapp*, Michelangelo (Stuttgart 1906· ὁλόκληρον τὸ ἔργον τοῦ καλλιτέχνου εἰς φωτοτυπίας).

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μιχαηλίδης, *Εὐγένιος*.** Ἕλλην ἀραβομαθής, γεννηθεὶς ἐν Ἱεροσολύμοις τῷ 1885. Ἀποφοιτήσας τῆς Θεολογικῆς Σχολῆς τοῦ Σταυροῦ (1909), ἐσπούδασε κατόπιν ἀραβικὴν φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Ζάχλε τοῦ Λιβάνου, λαβὼν τὸ δίπλωμα τοῦ διδάκτορος τῷ 1911. Ἔκτοτε ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας ἀραβιστὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ναζὶπ Μιχαὴλ Σαάτη* ἢ ἑλληνιστὶ εἰς περιοδικὰ τῆς Συρίας, Αἰγύπτου, Παλαιστίνης καὶ Ἀθηνῶν. Ἀπὸ τοῦ 1927 διευθύνει τὸν «Ἐκκλησιαστικὸν Φάρον» τῆς Ἀλεξανδρείας. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων τὰ ἑξῆς: «Ὁ μεταρρυθμιστὴς Ἄλυ Ἄβδ Ἀλ-Ράζικ καὶ τὸ ἔργον του περὶ τοῦ Χαλιφάτου» (1926), «Τὸ πρόσωπον τοῦ Ἰησοῦ κατὰ τὸ Κοράνιον» (1930), «Σελεύκιος Ἀλεξανδρείας καὶ τὰ χρονικά του», «Τί ὀφείλουν οἱ Ἄραβες ἐκ τῆς ἀραβικῆς φιλολογίας», «Ἡ ἀραβικὴ εἰς τὴν ἑλληνικὴν σκέψιν», «Ἡ Παλαιστίνη ἐν τῇ ἀραβικῇ φιλολογίᾳ», «Τὰ κυριώτερα αἴτια τῆς ἠθικο-πνευματικῆς ἀφυπνίσεως τῆς Αἰγύπτου κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα», «Ἐθνικὴ ἱστορία τῆς Ἐκκλησίας Ἱεροσολύμων». Γ. Λ. Α.

—**Μιχαηλίδης, *Κίμων*.** Ἕλλην λογογράφος, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ τῷ 1864 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1917. Ἀποφοιτήσας τῆς Εὐαγγελικῆς Σχολῆς Σμύρνης, κατ' ἀρχὰς μὲν ἐπεδόθη εἰς τραπεζιτικὰς ἐργασίας, εἶτα δ' ἐλθὼν εἰς Ἀθήνας, ἀφωσιώθη εἰς τὴν φιλολογίαν καὶ ἐδημοσίευσε: «Σελίδες ἡμερολογίου» (1891), «Σὰν ζωὴ καὶ σὰν παραμύθι» (1901), πρὸς δὲ εἰς περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας διάφορα φιλολογικὰ ἄρθρα. Ἀπὸ τοῦ 1900 μέχρι τοῦ 1915 ἐξέδιδε τὸ φιλολογικὸν εἰκονογραφημένον περιοδικὸν «Παναθήναια», εἰς τὸ ὁποῖον ἐδημοσίευσε μικρὰ διηγήματα καὶ κριτικὰς περὶ φιλολογίας καὶ καλῶν τεχνῶν. Μεταβιβάσας τὸ περιοδικόν του εἰς τὸν Γεώργιον Βλάχον, ἠσχολεῖτο εἰς τὴν ὀργάνωσιν διαρκοῦς καλλιτεχνικῆς ἐκθέσεως, ὅτε ἐπελθὼν αἰφνιδίως ὁ θάνατος διέκοψε τὴν ὡραίαν αὐτοῦ προσπάθειαν. Θ. Ι.

Digitized by Google

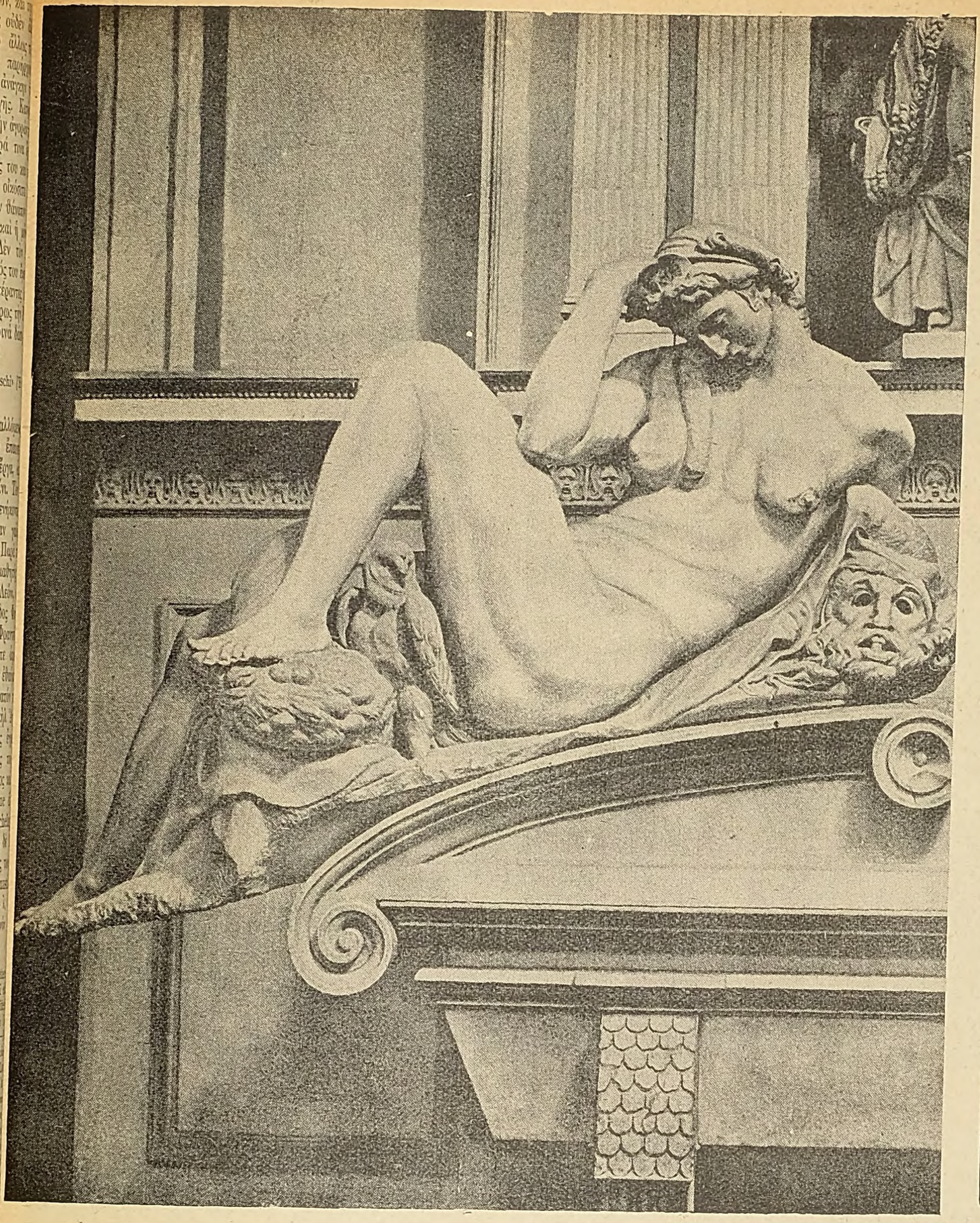

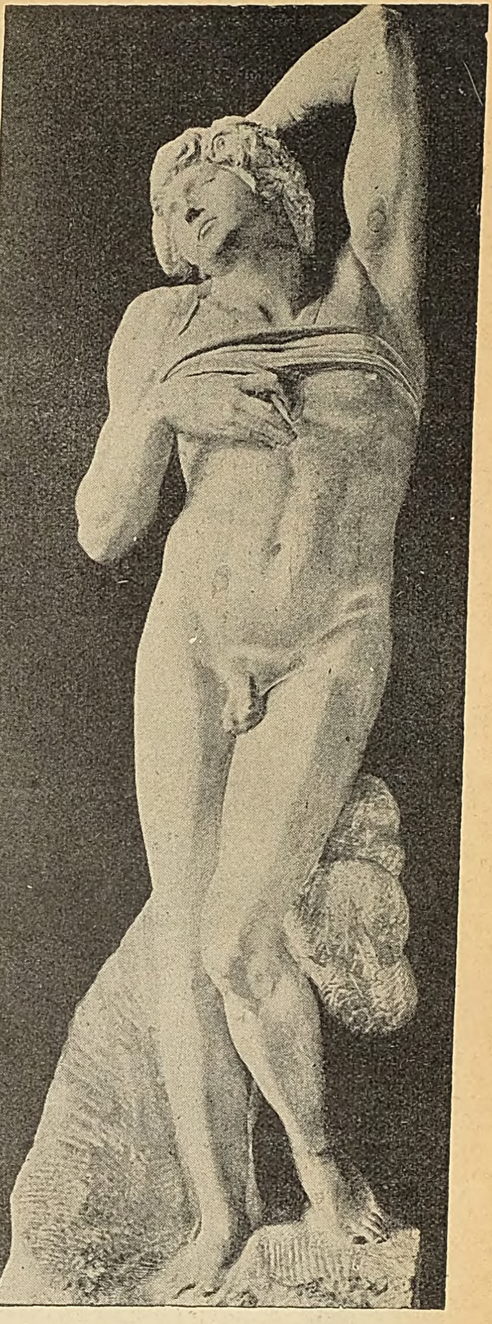

1) Ἡ νύχτα (ἐκ τοῦ μνημείου τοῦ Ἰουλίου τῶν Μεδίκων, Φλωρεντία). 2) Ὁ σκλάβος (Μουσεῖον Λούβρου, Παρίσιοι).

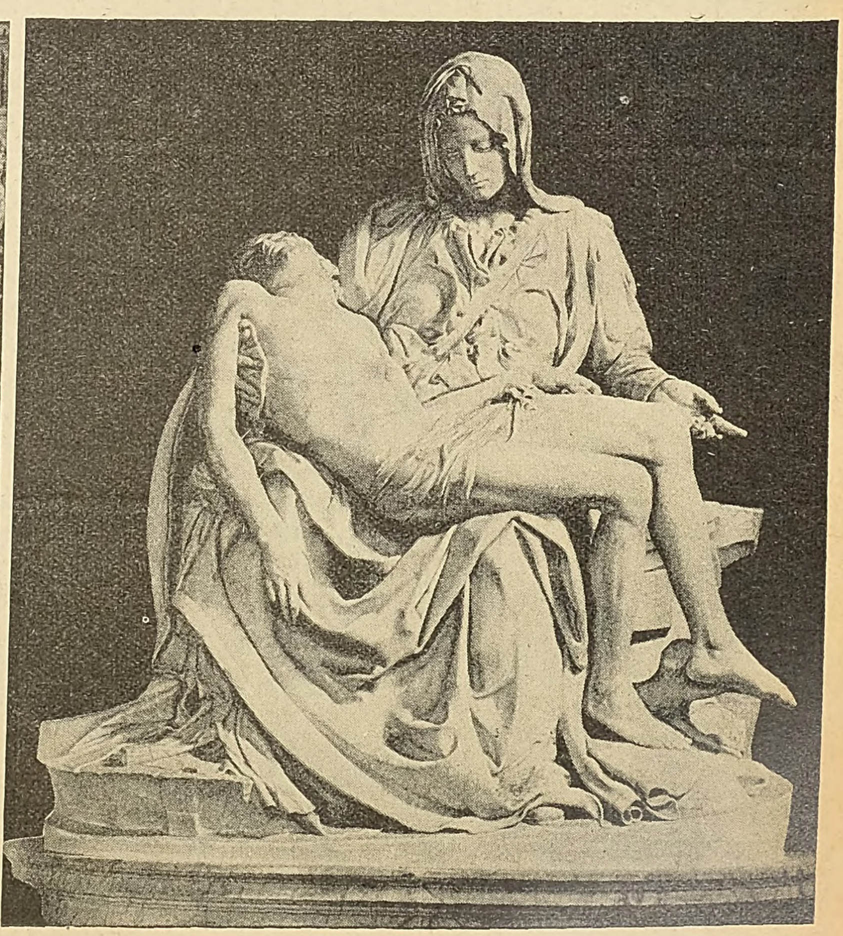

1) Ὁ Μωϋσῆς (Ἅγιος Πέτρος, Ρώμη). 2) Pietà (Ἅγιος Πέτρος, Ρώμη).

Digitized by Google

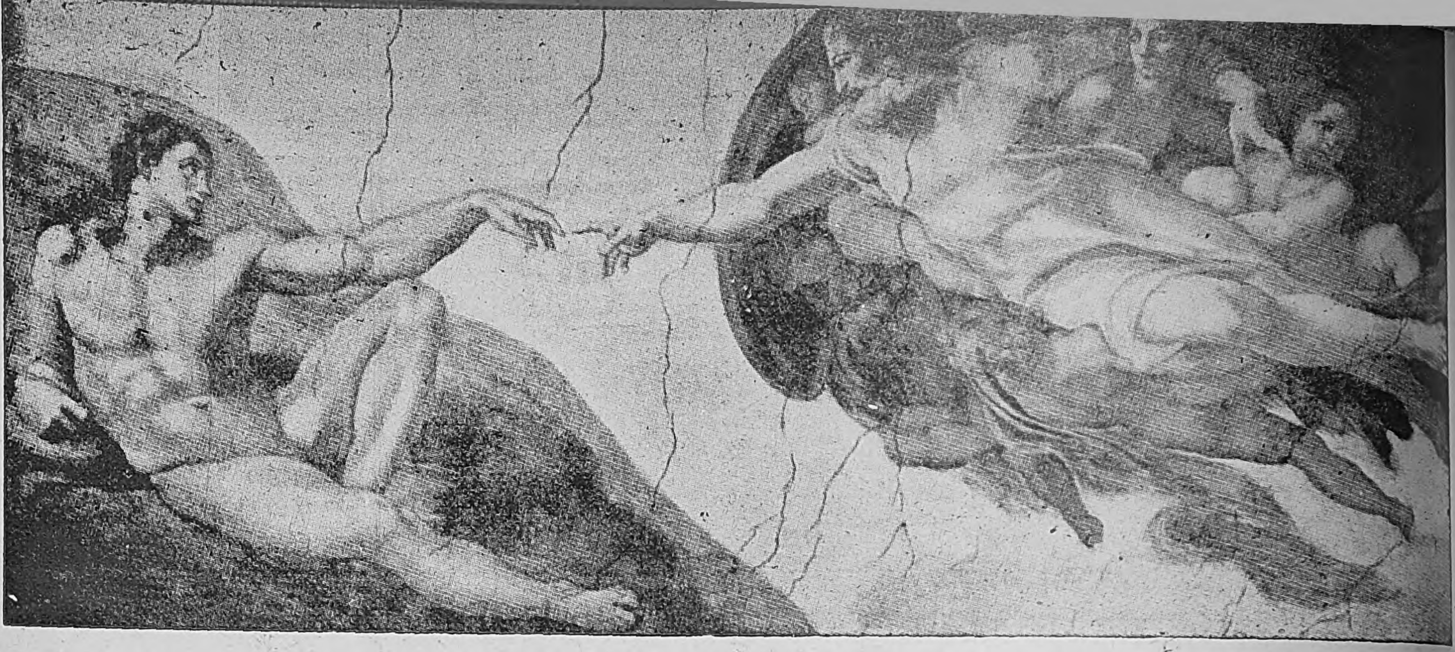

Ἡ δημιουργία τοῦ ἀνθρώπου (τοιχογραφία ἐν τῷ Σιξτείῳ παρεκκλησίῳ).

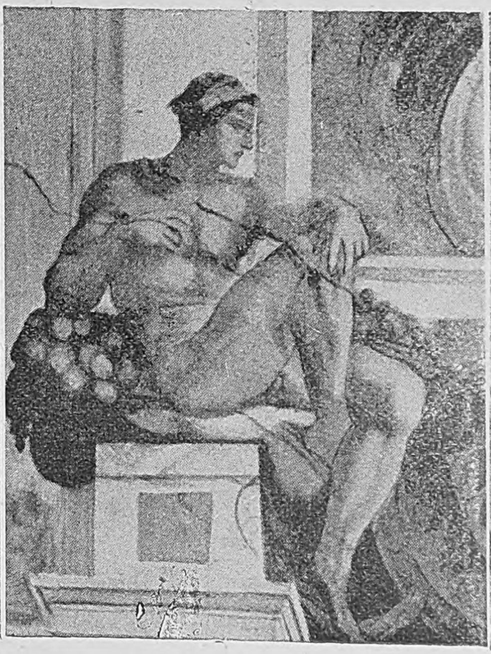

1) Ἡ Περσικὴ Σίβυλλα. 2) Μορφὴ συνοδεύουσα τὴν παράστασιν τοῦ Ἱερεμίου. 3) Ἡ Κυμαία Σίβυλλα.

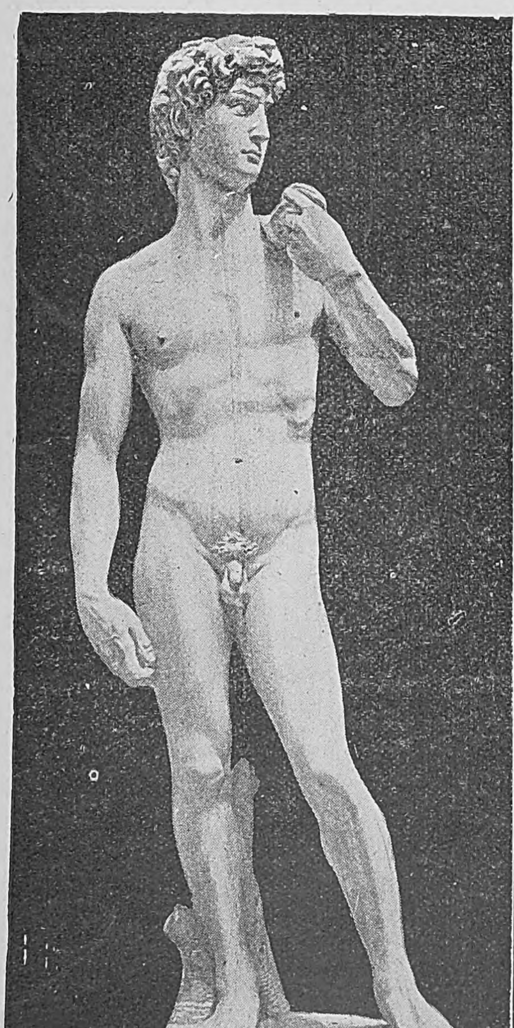

1) Ὁ Δαβὶδ (Ἀκαδημία Φλωρεντίας). 2) Ἡ Παναγία τῶν Βρυγῶν (Βρύγαι). 3) Ἡ Νίκη (Μουσεῖον Φλωρεντίας)

Digitized by Google

1) Ἐρυθραία Σίβυλλα (ἀπόσπασμα). 2) Δελφικὴ Σίβυλλα (ἀπόσπασμα). 3) Κυμαία Σίβυλλα (ἀπόσπασμα).

1) Ἡ Ἐρυθραία Σίβυλλα. 2) Ὁ προφήτης Ἰεζεκιήλ. 3) Ἡ Λιβυκὴ Σίβυλλα.

Τρεῖς μορφαὶ συνοδεύουσαι τὰς παραστάσεις τῶν προφητῶν Ἱερεμία, Ἠσαΐα καὶ Ἰωήλ.

Digitized by Google

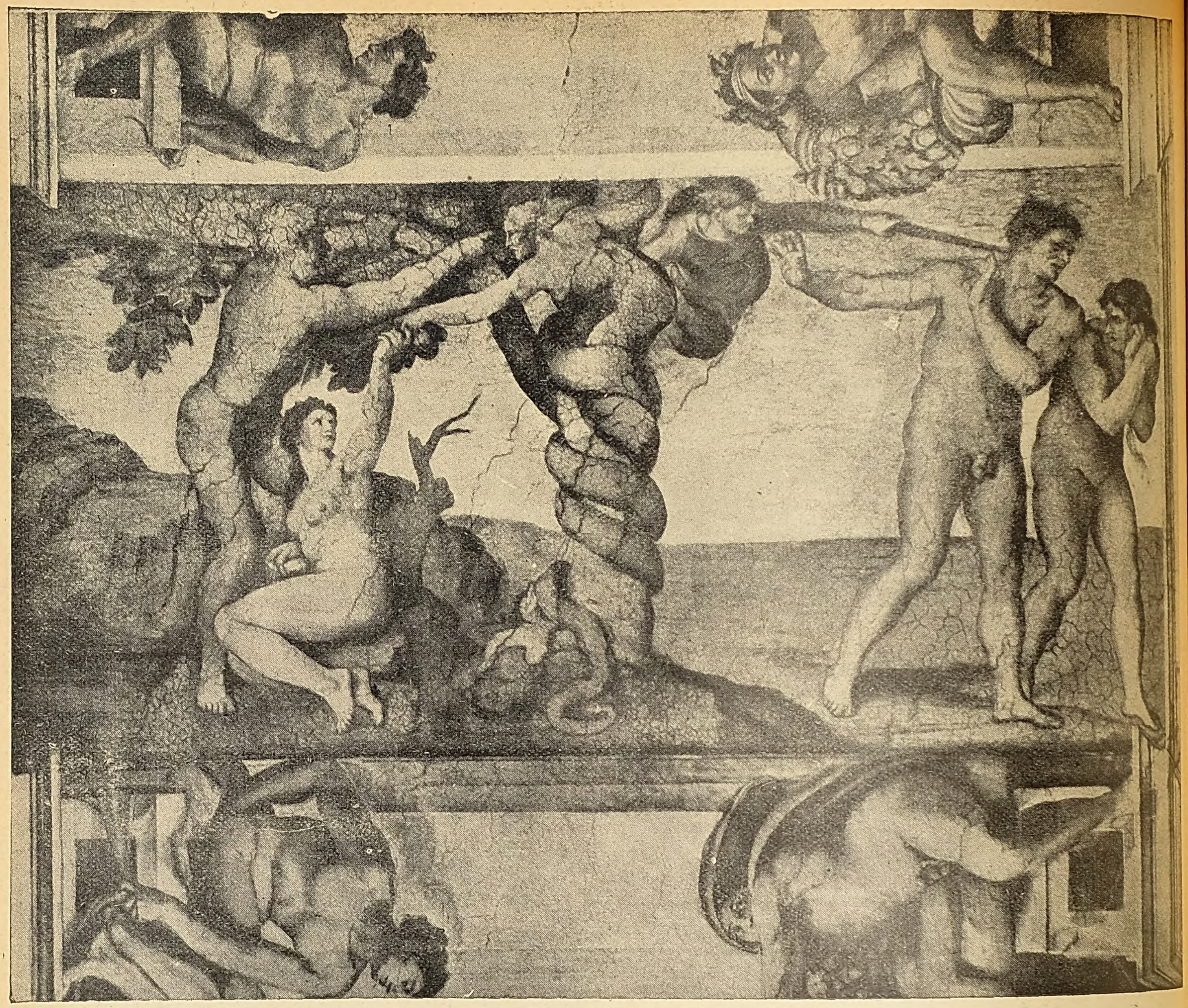

Τὸ προπατορικὸν ἁμάρτημα (τοιχογραφία ἐν τῷ Σιξτείῳ παρεκκλησίῳ).

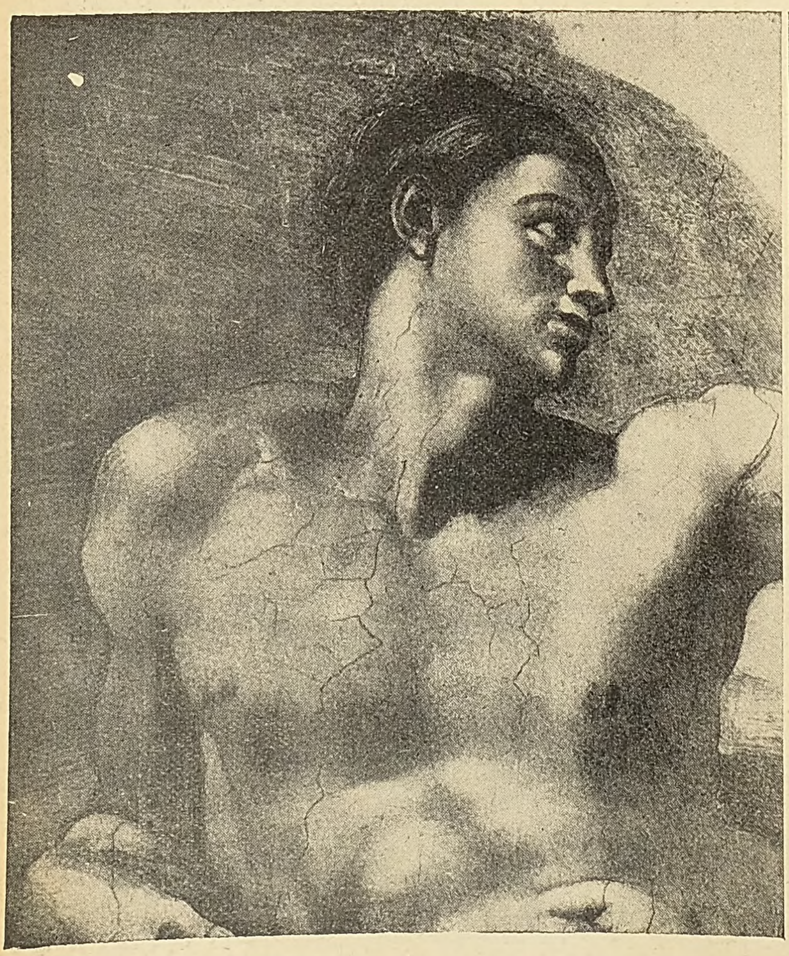

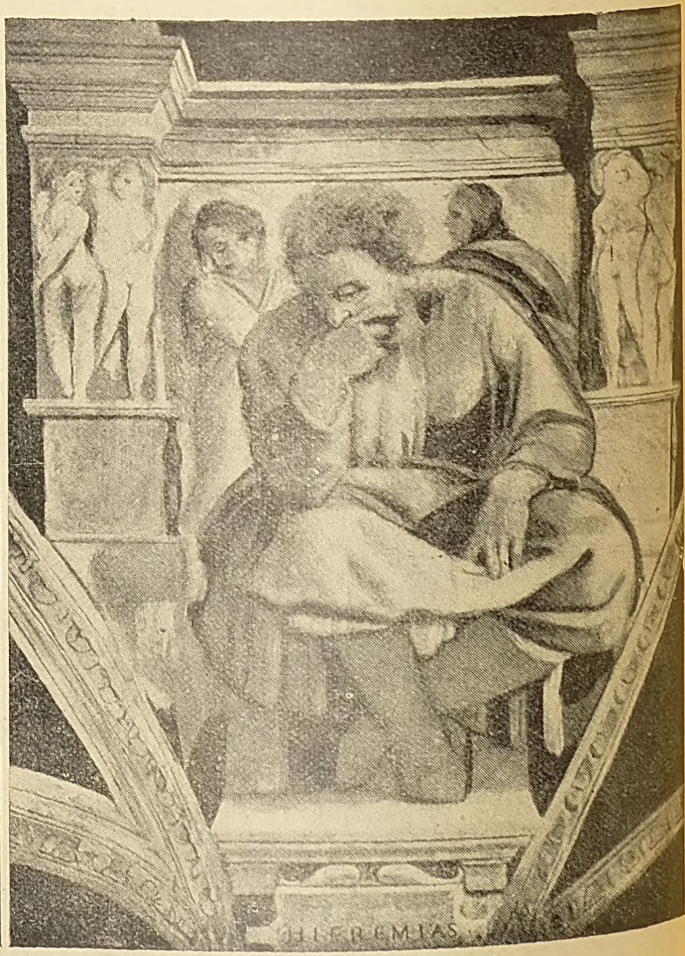


1) Ὁ Ἀδὰμ ἐκ τῆς «Δημιουργίας τοῦ Ἀνθρώπου» (Σίξτειον παρεκκλήσιον). 2) Ὁ προφήτης Ἱερεμίας (Σίξτειον παρεκκλήσιον).

Digitized by Google

— **Μιχαηλίδης, *Κλεάνθης*.** Ἕλλην λόγιος ἐκ Μυτιλήνης, γνωστὸς ὑπὸ τὸ φιλολογικὸν ψευδώνυμον *Ἐφταλιώτης* Ἀργύρης (βλ. λ.).

— **Μιχαηλίδης, *Νικόλαος Ἀντ.*** Ἰατρὸς μικροβιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1879. Περατώσας τὰς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ ἰατρικὰς σπουδὰς μετέβη εἰς Γαλλίαν καὶ Γερμανίαν, ἔνθα ἐχρημάτισε μαθητὴς τοῦ ἰνστιτούτου Παστὲρ καὶ τῶν καθηγητῶν Μπέριγκ καὶ Βάσσερμαν. Ἐπιστρέψας ἐξ Εὐρώπης διωρίσθη κατ' ἀρχὰς μὲν ἐπιμελητὴς τῆς ἀστυκλινικῆς τοῦ πανεπιστημίου, εἶτα δὲ εἰδικὸς μικροβιολόγος τοῦ νοσοκομείου Α. Συγγροῦ, ἔνθα ὑπηρετεῖ ἐπὶ εἰκοσαετίαν. Τῷ 1928 ἐξελέγη ὑπὸ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς παμψηφεὶ ὑφηγητὴς τοῦ μαθήματος τῆς ὑγιεινῆς καὶ μικροβιολογίας, εἶναι δὲ ὁ πρῶτος ὅστις κατέλαβε τὴν ἕδραν ταύτην. Συνέγραψε πολλὰς πρωτοτύπους ἐργασίας, ὧν κυριώτεραι εἶναι, γερμανιστὶ μέν: «Περὶ μορφῆς τινος τοῦ βακτηρίου τῆς φυματιάσεως, μὴ χρωματιζομένης κατὰ Ziehl» καὶ «Περὶ ἐπιδράσεως τῆς ὀποθεραπείας ἐν τῇ ἀντιδράσει Βάσσερμαν», γαλλιστὶ δέ: «Περὶ τῆς ἀντιγονικῆς δυνάμεως τῆς χολῆς» καὶ «Περὶ ἀμοιβαδογενοῦς κυστίτιδος». Ἀπέδειξεν ὅτι ἡ νόσος *τσανάκι*, ἡ ἐνδημοῦσα ἐν Ὕδρᾳ, εἶναι καλααζάρ, ἀνευρὼν ἐπὶ τόπου τὸ εἰδικὸν παράσιτον εἰς τὸν ὀπὸν τοῦ σπληνὸς παιδίων πασχόντων ἐκ τῆς νόσου ταύτης. Συνέγραψεν ἐπὶ πλέον δίτομον «Ἐργαστηριακὴν διαγνωστικήν», ἥτις εἶναι τὸ πρῶτον ἐκδοθὲν ἑλληνικὸν σύγγραμμα εἰς τὴν εἰδικότητα ταύτην. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». —Ω.

—**Μιχαηλίδης, *Κριναῖος Παῦλος*.** Κύπριος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Πάφῳ τῷ 1903. Ἐκπαιδευθεὶς ἐν τῷ γυμνασίῳ Λευκωσίας, ἠκολούθησε κατόπιν φιλολογικὰς σπουδὰς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν. Διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ ἐπιστημονικοῦ περιοδικοῦ «Ἡ διάλεξις» καὶ κατόπιν ἐτράπη ὁριστικῶς εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, γενόμενος ἀρχισυντάκτης τοῦ «Ἀθλητικοῦ τύπου». Τὸ ἀπὸ τοῦ 1923 καὶ μέχρι σήμερον ἀνέκδοτον ποιητικὸν αὐτοῦ ἔργον εὑρίσκεται ἐγκατεσπαρμένον εἰς πλεῖστα περιοδικά, ἐν οἷς τὸ τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Τ. Α.

— **Μιχαηλίδης-Νουάρος *Γ. Μ.*** Φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Καρπάθῳ τῆς Δωδεκανήσου τῷ 1879. Ἀποφοιτήσας τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου (1902), εἰργάσθη ὡς καθηγητὴς ἐν Κρήτῃ καὶ ἐν τῷ Ροβερτείῳ λυκείῳ Κωνσταντινουπόλεως, ὡς γυμνασιάρχης ἐν Λευκωσίᾳ Κύπρου, ὡς διευθυντὴς τῆς Ἀμπετείου σχολῆς Καΐρου καὶ γενικὸς ἐπιθεωρητὴς καὶ διευθυντὴς τῆς Παιδείας Σμύρνης κατὰ τὴν ἑλληνικὴν κατοχήν. Συνέγραψε: «Περὶ Σαπφοῦς», «Τὰ σχολεῖα τῆς ἐργασίας», «Τὰ προβλήματα τοῦ διδασκάλου», «Νομικὰ ἔθιμα Δωδεκανήσου», «Δημοτικὰ τραγούδια τῆς Καρπάθου» καὶ μετέφρασε τὰς σατίρας καὶ τὰς ἐπιστολὰς τοῦ Ὁρατίου. —Ω.

**Μιχαήλιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Οὕτω μετωνομάσθη ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ἡ ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ θρᾳκικοῦ Βοσπόρου τοποθεσία *Ἑστίαι* ἢ *Ἀνάπλους* τῶν ἀρχαίων, ἀπὸ τοῦ ναοῦ τοῦ Ἀρχαγγέλου Μιχαήλ, οἰκοδομηθέντος κατὰ τὴν παράδοσιν ὑπὸ Κωνσταντίνου τοῦ Μεγάλου, πράγματι ὅμως ὑπὸ τοῦ Ἰουστινιανοῦ (*Προκ.* Περὶ Κτισμ. Ι, 3, 14—18). Μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Τούρκων ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, τῷ 1453, μετωνομάσθη *Ἀρναούτ-κιόϊ (Μέγα Γεῦμα)*. Α. Θ. Σ.

**Μιχαήλοβσκι, *Μιχαήλ*.** Ρῶσος κριτικός, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἐσπούδασε φιλοσοφίαν ἐν Πετρουπόλει, ἀπὸ δὲ τοῦ 1884 ἤρξατο δημοσιεύων κριτικὰς μελέτας εἰς διάφορα περιοδικά. Ὅτε, ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Σοπενχάουερ, τοῦ Νίτσε, τοῦ Μπωντελαὶρ καὶ τοῦ Βερλαίν, ἐδημιουργήθη ἐν Ρωσίᾳ ἡ σχολὴ τῆς «παρακμῆς», δι' ἧς ἐζητεῖτο ἡ πλήρης ἀνανέωσις τῆς ρωσικῆς τέχνης, ὁ Μιχαήλοβσκι ἐγένετο ὁ ἀρχηγὸς τῆς φιλελευθέρας κριτικῆς, ὁμιλῶν ἐξ ὀνόματος τοῦ ἰδεαλισμοῦ. Ἐδημοσίευσε τότε τὴν μακρὰν κριτικὴν μελέτην του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ρωσικὴ ἀντανάκλασις τοῦ γαλλικοῦ συμβολισμοῦ», δι' ἧς ἐχαρακτήριζεν αὐτὸν «ὡς ἀσθενικὸν ὕφος, διανοητικὸν καὶ ἠθικόν, ὅπερ εἰς τινας κατέστη ψυχοπάθεια καὶ ἀληθὴς τσαρλατανισμός. Οἱ συμβολισταὶ ὑπῆρξαν προϊόντα καταπιεστικῆς ἐποχῆς, τὰ ὁποῖα ἡ πρώτη πνοὴ τῆς ἐλευθερίας ἐσάρωσεν ὡς ἄχρηστα στοιχεῖα ἀπὸ τὸν περίβολον τῆς ρωσικῆς φιλολογίας». Ὑπὸ τοιοῦτο πνεῦμα διεξήγαγε τὸν πολυχρόνιον ἀγῶνά του ὁ Μιχαήλοβσκι. Θ. Β.

— **Μιχαήλοβσκι, *Νικολάϊ Κωνσταντίνοβιτς*.** Ρῶσος δημοσιολόγος καὶ κριτικὸς (1849—1904), εἷς τῶν κυριωτέρων θεωρητικῶν τῶν λεγομένων «Ναρόντνικι» (=λαϊκῶν). Ἡ συγγραφικὴ αὐτοῦ δρᾶσις κορυφοῦται κυρίως μεταξὺ τοῦ 1870 καὶ 1890. Τῷ 1880 ἔγραψε διαφόρους προκηρύξεις τοῦ ἐπαναστατικοῦ τρομοκρατικοῦ κόμματος «Νορόντνα Βόλια» (=κόμμα τῆς λαϊκῆς ἐλευθερίας), ὡς καὶ τὴν «ἀνοικτὴν ἐπιστολὴν τῆς ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς» τοῦ κόμματος τούτου πρὸς τὸν τσάρον Ἀλέξανδρον Γ', διὰ τῆς ὁποίας ἐζητεῖτο ἡ παραχώρησις ἀστικῶν πολιτικῶν ἐλευθεριῶν καὶ ἡ σύγκλησις συντακτικῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Διετέλεσεν ἐπίσης μόνιμος συντάκτης τοῦ περιοδικοῦ «Πατριωτικὰ Χρονικά», τοῦ ἐκδιδομένου ὑπὸ τοῦ Νεκράσσωφ, βραδύτερον δὲ ἀρχισυντάκτης τοῦ μηνιαίου «Ὁ ρωσικὸς πλοῦτος», τὸ ὁποῖον διεξήγαγε σφοδρὸν ἀγῶνα ἐναντίον τῶν Ρώσων μαρξιστῶν. Θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν ἱδρυτῶν τοῦ σοσιαλεπαναστατικοῦ κόμματος, εἰς τὴν δεξιὰν πτέρυγα τοῦ ὁποίου καὶ ἀνῆκεν. Ὡς φιλόσοφος καὶ κοινωνιολόγος ὑπῆρξεν ἐκλεκτικός, συνδυάζων ἰδίως στοιχεῖα τῆς θετικῆς φιλοσοφίας τοῦ Κὸντ καὶ τῆς ἐξελιξιαρχίας τοῦ Σπένσερ μετά τινος δειλοῦ ὑποκειμενισμοῦ. Κυρίως ὅμως ὁ Μιχαήλοβσκι ὑπῆρξεν ἱδρυτὴς μιᾶς «ὑποκειμενικῆς κοινωνιολογίας» καὶ τῆς «θεωρίας τῆς ἱστορικῆς προόδου», ἥτις ἐθεώρει ὡς κυρίους παράγοντας τῆς κοινωνικῆς ἐξελίξεως τὰς «κριτικῶς σκεπτομένας προσωπικότητας». Ἰδεῶδες αὐτοῦ εἶναι ἡ ἀφηρημένη «πολυμερῶς—ἁρμονικῶς ἐξελιχθεῖσα προσωπικότης». Πολέμιος τῶν Ρώσων μαρξιστῶν, κατηγορεῖ αὐτοὺς ὡς παραγνωρίσαντας τὴν ἰδιομορφίαν τῆς ρωσικῆς πραγματικότητος καὶ τοὺς ἀποφασιστικοὺς παράγοντας τοῦ ρωσικοῦ ἐπαναστατικοῦ κινήματος, φρονῶν ὅτι ἡ Ρωσία, χάρις εἰς τὴν ὕπαρξιν μιᾶς πρωτογόνου «ἀγροτικῆς κοινότητος», τῆς λεγομένης *Ὀμπστσόνα* ἢ τοῦ *Μίρ*, θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ φθάσῃ ἀπ' εὐθείας εἰς τὸν σοσιαλισμόν, παρατρέχουσα τὴν ἐνδιάμεσον φάσιν τῆς καπιταλιστικῆς ἐξελίξεως. Ἡ ἄποψις αὐτὴ ἐπολεμήθη ἰδίως ὑπὸ τοῦ Λένιν καὶ τοῦ Πλεχάνωφ. Ἔγραψε: «Τί εἶναι πρόοδος» (1869), «Ἡ θεωρία τοῦ Δαρβίνου καὶ ἡ κοινωνιολογία» (1870), «Ὁ ἀγὼν διὰ τὴν ἀτομικότητα» (1875) κ.ἄ. Ἡ ἔκδοσις τῶν ἀπάντων του ἐγένετο ἐν Πετρουπόλει ἀπὸ τοῦ 1909—1913 εἰς 10 τόμους. Ι. Ι.

— **Μιχαήλοβσκι.** —1) ***Νικόλαος*.** Βούλγαρος συγγραφεὺς (1818—1892). Ἐσπούδασεν ἐν Ἀθήναις καὶ Μόσχᾳ ἱστορίαν καὶ φιλολογίαν. Ἐν τῇ πατρίδι του εἰργάσθη ὡς διδάσκαλος κατὰ τῆς ἑλληνικῆς ἐπιδράσεως εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν ζήτημα. Εἰς τὴν βουλγαρικὴν λογοτεχνίαν προσέφερε σημαντικὰς ὑπηρεσίας διὰ τῶν ἐργασιῶν του ἐπὶ τῆς γλώσσης τῶν διδακτικῶν βιβλίων. Μετέφρασεν ἐπὶ πλέον πλεῖστα ἔργα ἐκ τῆς ἑλληνικῆς καὶ γαλλικῆς φιλολογίας.—2) ***Στογιάν*.** Βούλγαρος σατιρικὸς ποιητής, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Γαλλίᾳ. Ἐπανελθὼν εἰς Βουλγαρίαν ἐγένετο δικαστικὸς ὑπάλληλος, ἔπειτα δημοσιογράφος, διδάσκαλος καὶ καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Σόφιας. Ἤδη ἀσχολεῖται εἰς συγγραφικὰς μόνον μελέτας. Τὸ κυριαρχοῦν στοιχεῖον ἐν τῇ ποιήσει αὐτοῦ εἶναι τὸ νοητικόν. Ἐκ τῶν ἔργων του ἄλλα μὲν διακρίνονται διὰ τὴν ἀπαισιόδοξον διάθεσίν των, ὡς τὰ «Novissima verba» (1889—1890), «Τὸ ποίημα τοῦ κακοῦ» (1889) καὶ τὰ «Φιλοσοφικὰ σονέτα» (1893), ἄλλα δὲ διὰ τὴν πολιτικὴν σάτιραν, ὡς τά: «Βιβλίον τοῦ βουλγαρικοῦ ἔθνους» (1897), «Βεζιρλίκι», καὶ «Ἀπ' τὴν καταστροφὴ στὴν ἄβυσσο». Ἔγραψεν ἐπὶ πλέον ἐπιγράμματα καὶ μύθους, θεωρεῖται δὲ ὡς ὁ θεμελιωτὴς τοῦ βουλγαρικοῦ μύθου. Τ. Β.

**Μιχαήλωφ, *Γιορντάν*.** Βούλγαρος λογοτέχνης καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1860. Ἔγραψε χιουμοριστικὰ διηγήματα, μίαν μπαλλάνταν εἰς πεζὸν καὶ τρίπρακτον τραγῳδίαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Draga». Τ. Β.

— **Μιχαήλωφ, *Μιχαὴλ Ἰλαριόνοβιτς*.** Ρῶσος συγγραφεὺς (1826—1869). Ὁ πατήρ του, μεγάλης παιδείας ἀνήρ, καὶ ἡ μήτηρ του, Κιρκασία πριγκίπισσα Οὐράκοβα, ἀνέθρεψαν αὐτὸν ἐπιμελῶς. Ἀπὸ τοῦ 1845 ἤρξατο δημοσιεύων ποιήματα εἰς περιοδικά, μεταβὰς δὲ εἰς Πετρούπολιν τῇ 1852 συνειργάζετο ταυτοχρόνως εἰς τὰ δύο καλύτερα περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς, τὸν «Σύγχρονον» καὶ τὰς «Πατριωτικὰς σημειώσεις». Εἰς τὰ περιοδικὰ ταῦτα ἐδημοσίευσεν τὰ διηγήματά του: «Ἡ παραμάννα», «Ὁ Ἀδὰμ Ἀδάμοβιτς», «Ἡ κεντήστρα», «Τὰ γαλανὰ ματάκια», «Τὸ ἐλεύθερο πουλί», «Ὁ Ἀφρικανός», «Τὸ χωριὸ καὶ ἡ πόλις», πολυάριθμοι μελέται δημοσιολογικοῦ χαρακτῆρος, ἐν αἷς: «Γεώργιος Ἔλιοτ», «Στούαρτ Μίλλ» καὶ πολλαὶ μεταφράσεις ποιητῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ Προμηθεὺς Δεσμώτης» τοῦ Αἰσχύλου, «Ἡ Ἀντιγόνη» τοῦ Σοφοκλέους καὶ τὸ «Ὄνειρον τοῦ δεσμώτου» τοῦ Λογκφέλλω. Ἀπὸ τοῦ 1858 μέχρι τοῦ 1861 ὁ Μιχαήλωφ διέτριψεν ἐν Παρισίοις, Λονδίνῳ καὶ Βερολίνῳ, ὅπόθεν ἐδημοσίευσε σειρὰν μελετῶν περὶ τῆς ἐν Εὐρώπῃ καταστάσεως. Ἐπιστρέψας εἰς Ρωσίαν (1861) συνελήφθη διὰ πολιτικοὺς λόγους καὶ ἀποσταλεὶς εἰς τὰ κάτεργα τῆς Σιβηρίας ἀπέθανεν ἐκεῖ, φέρων τὰς ἁλύσεις τοῦ πολιτικοῦ κατάδικου. Ὁ Μιχαήλωφ θαυμάζεται διὰ τὰς μεταφράσεις τῶν Ἑλλήνων τραγικῶν καὶ τῶν «Ἀσμάτων» τοῦ Χάϊνε. Θ. Β.

— **Μιχαήλωφ, *Πάντσο*.** Σύγχρονος Βούλγαρος λογοτέχνης. Ἐνεφανίσθη τῷ 1919 καὶ ἐξέδωκε τὰς συλλογὰς διηγημάτων: «Γιορτὴ στὸ παρεκκλήσι» (1923), «Κάτω ἀπ' τὴ γῆ» (1924) καὶ «Μικρὰ διηγήματα» (1927). Ὅλον του τὸ ἔργον διαπνέεται ἀπὸ βαθύτατον ἀνθρωπιστικὸν πνεῦμα. Τ. Β.

**Μιχαίας.** Τὸ ἑβραϊκὸν τοῦτο ὄνομα φέρουσι διάφοροι Ἰσραηλῖται ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ δύο προφῆται. Ἐκ τούτων ὁ μὲν εἰς ἔδρασεν ἐν τῷ βασιλείῳ τῆς Σαμαρείας ἐπὶ Ἀχαάβ, ὅστις καὶ τὸν ἐτιμώρησεν, ὡς προφητεύσαντα δυσάρεστα εἰς αὐτὸν (Γ' Βασιλειῶν κβ' 8 ἑξ.), ὁ δὲ ἕτερος ἤκμασεν ἐν Ἱερουσαλὴμ ἐπὶ Ἰωάθαμ, Ἄχαζ καὶ Ἐζεκίου, ἄρα ὑπῆρξε σύγχρονος τοῦ Ἡσαΐου (Η' αἰών). Ὁ τελευταῖος οὗτος προφήτης, οὗτινος σῴζεται καὶ σύγγραμμα μικρόν, εἶναι ἐκ τῶν λεγομένων ἐλασσόνων προφητῶν. Τὸ βιβλίον αὐτοῦ ἀποτελεῖται ἐκ 4 μερῶν, ἐξ ὧν ἐν μὲν τῷ πρώτῳ (κεφ. α'—γ') ὁ λόγος εἶναι περὶ τῆς διαφθορᾶς τοῦ λαοῦ καὶ ἰδίᾳ περὶ τῆς κοινωνικῆς ἀδικίας, ἐν δὲ τῷ δευτέρῳ (κεφ. δ'—ε') περιέχονται παρήγοροι προφητεῖαι, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ἡ προφητεία περὶ τῆς ἐν Βηθλεὲμ γεννήσεως τοῦ Μεσσίου (ε' 1—3, πρβ. καὶ *Ματθ.* β' 6), ἐν τῷ τρίτῳ (κεφ. στ') ἐλέγχεται ἡ πρὸς τὸν Ἰαβὲ ἀπιστία καὶ ἀγνωμοσύνη τοῦ λαοῦ, καὶ τέλος ἐν τῷ τετάρτῳ (κεφ. ζ') ἐκφράζεται πάλιν ἡ ἐλπὶς περὶ σωτηρίας τοῦ ὑπολοίπου τοῦ λαοῦ καὶ ἀναγνωρίσεως τῆς δυνάμεως τοῦ Ἰαβὲ καὶ ὑπὸ τῶν ἐθνῶν. Τοῦ βιβλίου τούτου, ὅπερ καὶ ἀπὸ καθαρῶς λογοτεχνικῆς ἀπόψεως ἔχει ἱκανὴν ἀξίαν, ἀμφισβητεῖται ὑπό τινων, ἄνευ ἀποχρῶντος λόγου, ἡ φιλολογικὴ ἑνότης. Ὁ Sievers προσεπάθησε νὰ ἀνεύρῃ καὶ ἐνταῦθα μέτρα, ἐπίσης δὲ καὶ ἄλλοι τινές.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Τὰ κυριώτατα τῶν νεωτέρων ὑπομνημάτων εἰς τὸν Μιχαίαν εἶναι τὰ τῶν *L. Reinke* (1874), *J. M. P. Smith* (1912), *Lindblom* (1931). Βλ. καὶ λ. *Δωδεκαπρόφητον*. Π. Ι. Μ.

**Μιχαλάκε** (Mihalache), ***Ἰων.*** Ρουμᾶνος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1882. Καταγόμενος ἐκ πτωχῆς οἰκογενείας χωρικῶν, ἐχρημάτισε κατ' ἀρχὰς δημοδιδάσκαλος, διακριθεὶς ὡς ὁ κύριος ὀργανωτὴς τῆς ὁμοσπονδίας τῶν Ρουμάνων δημοδιδασκάλων, τῆς ὁποίας ἐγένετο πρόεδρος. Τῷ 1914 εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἵδρυσε τὸ κόμμα τῶν χωρικῶν (Τσάρανιστ), κατ' ἀρχὰς μὲν ἐν Βεσσαραβίᾳ, κατόπιν δὲ ἐπεξέτεινε τὴν ὀργάνωσιν αὐτοῦ καὶ εἰς τὰς λοιπὰς ἐπαρχίας τῆς χώρας. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1919, τὸ κόμμα τῶν χωρικῶν ἐκέρδισε τριάκοντα ἕδρας ἐν τῇ βουλῇ, ὁ δὲ Μιχαλάκε προσελήφθη ὡς ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας ἐν τῇ κυβερνήσει τοῦ συνασπισμοῦ τοῦ Βάϊντα Βοϊβόντ. Τῷ 1928, συνεργασθεὶς μὲ τὸ κόμμα τῶν ἐθνικοαγροτικῶν, ἐγένετο καὶ πάλιν ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας ἐν τῷ ὑπουργείῳ τοῦ Μανίου. Μετὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1931, κατόπιν τῆς παραιτήσεως τοῦ Μανίου ἐκ τῆς ἀρχηγίας τοῦ κόμματος τῶν ἐθνικοαγροτικῶν, ὁ Μιχαλάκε ἀνέλαβε τὴν ἡγεσίαν καὶ τῶν δύο συνεργαζομένων κομμάτων, τοῦ ἐθνικοαγροτικοῦ καὶ τῶν χωρικῶν. Μ. Δ. Β.

**Μιχαλακέας, *Γαλάνης*.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Μάνης (βλ. λ. *Γαϊτανάρος* Γαλάνης).

**Μιχαλακόπουλος, *Ἀνδρέας*.** Ἕλλην πολιτευτής, νομομαθὴς καὶ οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Πάτραις τῷ 1880. Μετὰ τὸ πέρας τῶν γυμνασιακῶν του σπουδῶν ἐξεδήλωσε τὴν ἐπιθυμίαν ν' ἀκολουθήσῃ τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, ἐνῷ ὁ πατὴρ του τὸν προώριζε διὰ τὸ δικηγορικόν. Εἰσελθὼν εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον τῶν Εὐελπίδων, ἠναγκάσθη ν' ἀποχωρήσῃ κατὰ τὸ δεύτερον ἔτος τῶν σπουδῶν του, λόγῳ τοῦ ἐπισυμβάντος θανάτου τοῦ πατρός του καὶ τῶν βαρῶν συντηρήσεως πολυμελοῦς οἰκογενείας. Πρὸς διατήρησιν τοῦ δικηγορικοῦ γραφείου τοῦ πατρός του, ἐνεγράφη εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, ἧς, μετὰ τετραετίαν, ἀνηγορεύθη ἀριστοῦχος διδάκτωρ. Μετὰ συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν του ἐν Εὐρώπῃ, ἐπανέκαμψεν εἰς τὴν γενέτειραν καὶ ἤρχισεν ἀσκῶν τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, εἰς ὃ ταχέως ἀνεδείχθη, ἔχων κυρίως ἀντίπαλον εἰς τὰ ποινικὰ καὶ τὰ πολιτικὰ δικαστήρια τὸν Δ. Γούναρην.

Παραλλήλως πρὸς τὴν πρακτικὴν ἄσκησιν, ἠσχολήθη καὶ μὲ τὴν ἐπιστημονικὴν καὶ θεωρητικὴν τῆς νομικῆς ἐπιστήμης μελέτην, καρπὸς τῆς ὁποίας ὑπῆρξαν πολλαὶ διατριβαὶ καὶ γνωμοδοτήσεις του δημοσιευθεῖσαι εἰς τὰ εἰδικὰ περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς, ὡς αἱ περὶ χαρτοσημάνσεως ἐγγράφων, συστάσεως ἐνεχύρου παρὰ τραπεζιτῶν καὶ ἐμπόρων, μετατροπῆς τῆς συμφωνηθείσης χρήσεως τοῦ μισθίου, ὑποθηκευμένου τρίτου διὰ λογαριασμὸν τοῦ ὀφειλέτου καὶ ἀπαγορεύσεως πλειοδοτῶν κ. ἄ.

Ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῆς ἰδιαιτέρας του πατρίδος εἰς τὴν Ἀναθεωρητικὴν βουλὴν τοῦ 1910, ταχθεὶς ὑπὸ τὴν σημαίαν τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων, εἰς τὰς τάξεις τοῦ ὁποίου κατέλαβεν ἀμέσως ἐπίλεκτον θέσιν, διακριθεὶς ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τοῦ κοινοβουλίου. Ἡ κατὰ τὸ 1911 εἰσήγησίς του ἐπὶ τοῦ κανονισμοῦ τῆς βουλῆς ἐνεποίησε πολλὴν ἐντύπωσιν.

Διὰ πρώτην φορὰν ἔγινεν ὑπουργὸς τὸν Μάϊον 1911, θέσας εἰς τὸ ἀρτιπαγὲς τότε ὑπουργεῖον τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας τὰς βάσεις τῆς τόσον ἔκτοτε ἐξελιχθείσης κρατικῆς κοινωνικῆς πολιτικῆς. Οὕτως εἰσηγήθη κατὰ τὸ 1913 τὴν ρύθμισιν τοῦ θεσμοῦ τῶν ἀνωνύμων ἑταιρειῶν, τῆς ἐμπορικῆς καὶ γεωργικῆς ἐκπαιδεύσεως, τὰ περὶ συνεταιρισμῶν,



Digitized by Google

περὶ ἐργατικῆς καὶ κοινωνικῆς προνοίας, περὶ εὐθύνης πρὸς ἀποζημίωσιν τῶν ἐξ ἀτυχήματος ἐργασίας παθόντων ἐργατῶν καὶ ὑπαλλήλων κ. ἄ. Ὅταν, κατὰ τὴν ἐνώπιον τῆς βουλῆς ψήφισιν τοῦ περὶ ἐργατικῆς καὶ κοινωνικῆς προνοίας νομοθετήματος, τοῦ ὁποίου δὲν ὑπῆρξε μόνον ὁ θεωρητικὸς εἰσηγητής, ἀλλὰ καὶ ὁ τὴν πρακτικὴν ἐφαρμογὴν του αὐτοπροσώπως ἐπιστατήσας, ἠκούσθησαν διαμαρτυρίαι κατὰ τῆς ἐπεμβατικῆς τοῦ κράτους πολιτικῆς πρὸς ῥύθμισιν οἰκονομικῶν ἢ ἐργατικῶν διαφορῶν καὶ σχέσεων, ὁ Ἀ. Μιχαλακόπουλος ἀμυνόμενος τῆς ἀπόψεώς του, ἔλεγεν ἐπὶ λέξει: «Ὅταν μοὶ εἴπητε ὅτι ἡ ἐπέμβασις, ἡ σκόπιμος, ἡ ρυθμιστική, τοῦ κράτους, εἶναι ὑπέρβασις κατὰ τῆς ἐλευθερίας, δύναμαι νὰ ἀπαντήσω εἰς ὑμᾶς: ὄχι· εἶναι ἀπόδοσις ἐλευθερίας, εἶναι ἀπολύτρωσις πολλάκις ἀπὸ ἀπάνθρωπα δεσμά, τὰ ὁποῖα τὸ κοινωνικὸν συναίσθημα καὶ ἡ κοινωνικὴ δικαιοσύνη δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἀνεχθῇ. Ἀρκεῖ ἡ ἐπέμβασις τῆς πολιτείας νὰ εἶναι συμβιβάζουσα τὰ ἀντικρούομενα συμφέροντα, ρυθμιστική· ἀρκεῖ νὰ ἐπεκτείνηται ὅπου ἡ ἀνάγκη, ὄχι μόνον τοῦ δι-

Ἀνδρέας Μιχαλακόπουλος.

καίου, ἀλλὰ καὶ τοῦ ἀνθρωπισμοῦ τὸ ἐπιβάλλει». Συμπληρῶν τὸ ἔργον του εἰσηγήθη κατὰ Μάϊον τοῦ 1914 τὴν ρύθμισιν τοῦ ζητήματος τῆς ἀγροτικῆς ἀσφαλείας, τοῦ τῶν ἀπαλλοτριώσεων πρὸς δημοσίαν ὠφέλειαν, τῶν δικαστικῶν ἐπιτροπῶν καὶ τῶν ἐκτάκτων δικαστηρίων, τοῦ τῆς ψευδοῦς καταμηνύσεως κ. ἄ.

Εἰς τὴν κυβέρνησιν, τὴν ὁποίαν ἐσχημάτισεν ὁ Ἐλ. Βενιζέλος μετὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ Μαΐου 1915 ἀνέλαβε καὶ πάλιν τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργείου τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας, τὸ ὁποῖον διετήρησε μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου ἰδίου ἔτους, ὁπότε συμμερισθεὶς τὰς ἐπὶ τῆς πολιτικῆς τοῦ στέμματος ἀντιλήψεις τοῦ ἡγέτου τῶν φιλελευθέρων, τὸν ἠκολούθησεν εἰς τὸ κίνημα τῆς Θεσσαλονίκης (1916), μετὰ δὲ τὴν ἐπικράτησιν τούτου ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ νεοϊδρυθέντος ὑπουργείου τῆς Γεωργίας (15/6/1917 μέχρι 19/2/1918) καὶ ἐπί τι διάστημα προσωρινῶς τοῦ τῶν Στρατιωτικῶν. Παραμείνας εἶτα ὑπουργὸς ἄνευ χαρτοφυλακίου ἀνέλαβε καὶ πάλιν τὸ ὑπουργεῖον τῆς Γεωργίας κατ' Αὔγουστον τοῦ 1920. Εἰς τὴν κυβέρνησιν Βενιζέλου 1924 (Ἰανουάριος) ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν.

Ἀκολούθως, ὡς ἐκ τῆς ἐξελίξεως, ἣν ἔλαβον τὰ πολιτικὰ πράγματα τῆς χώρας, συνεπείᾳ τῆς ἀποχῆς τοῦ ἀρχηγοῦ τῶν φιλελευθέρων ἐκ τῆς πολιτικῆς, προῆλθεν εἰς τὴν ἵδρυσιν ἰδίου κόμματος, τοῦ τῶν συντηρητικῶν φιλελευθέρων κατ' ἀρχάς, τῶν συντηρητικῶν δημοκρατικῶν κατόπιν ἐπονομασθέντος, τὴν 8ην δὲ Ὀκτωβρίου ἐσχημάτισε κυβέρνησιν, εἰς ἣν ἐκράτησε δι' ἑαυτὸν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Στρατιωτικῶν καὶ τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1925 προσωρινῶς τὸ τῶν Ἐξωτερικῶν.

Ἡ δρᾶσίς του ὡς πρωθυπουργοῦ ἐστράφη κυρίως περὶ τὸ οἰκονομικὸν πρόβλημα, διὰ τῆς ἀσκήσεως ἐπιστημονικῆς συναλλαγματικῆς πολιτικῆς καὶ προπαρασκευῆς τῶν καταλλήλων συνθηκῶν πρὸς σταθεροποίησιν τοῦ ἐθνικοῦ νομίσματος. Ἐκ τῶν ἀγορευσεῶν του τῆς περιόδου ταύτης μνημονευτέαι αἱ ἐπὶ τῆς ἐξωτερικῆς πολιτικῆς καὶ τοῦ ζητήματος τῶν μειονοτήτων (28/1/1925), ἐπὶ τῆς στρατιωτικῆς πολιτικῆς (7/2/1925), τοῦ θεσμοῦ τῆς γερουσίας (13/2/1925) κ. ἄ. Τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1925 εἰσηγήθη σχέδιον νόμου περὶ ὀργανισμοῦ τοῦ στρατεύματος, κατὰ Μάρτιον (18ην) ἀντιμετώπισεν ἰσχυρῶς ἐργατικὴν ἀπεργίαν καὶ κατὰ Ἰούνιον (15ην) ἐξέθεσεν ἐνώπιον τῆς βουλῆς τὰς γνώμας του περὶ τῆς ἀκολουθητέας οἰκονομικῆς πολιτικῆς καὶ τοῦ προκριτέου ἐκλογικοῦ συστήματος. Τὴν 26ην Ἰουνίου 1925 παρητήθη τῆς ἀρχῆς κατόπιν στρατιωτικοῦ κινήματος τοῦ Θ. Παγκάλου. Ἀνατραπείσης, κατ' Αὔγουστον τοῦ 1926, τῆς δικτατορίας καὶ διενεργηθεισῶν ἐκλογῶν ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως Κονδύλη, ἐσχηματίσθη οἰκουμενικὴ κυβέρνησις ὑπὸ τὸν Ἀλ. Ζαΐμην, ἧς μετέσχεν ὡς ἀρχηγὸς τῶν συντηρητικῶν δημοκρατικῶν, ἀναλαβὼν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν (4 Ὀκτωβρίου 1926), τὸ ὁποῖον διετήρησε καὶ κατὰ τήν, μετὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1928 διαδεχθεῖσαν τὴν οἰκουμενικήν, κυβέρνησιν Βενιζέλου, γενόμενος καὶ ἀντιπρόεδρος αὐτῆς, παρὰ τὴν διατήρησιν τῆς κομματικῆς του αὐτοτελείας. Ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν πλειστάκις ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἑλλάδα εἰς τὸ συμβούλιον τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν καὶ εἰς συνέδρια τοῦ ἐξωτερικοῦ, ἐπεσκέφθη δὲ καὶ τὴν Αἴγυπτον (1930).

Ἐκτὸς τῶν δημοσιευθεισῶν τῷ 1908 προτάσεών του ἐπὶ ζητημάτων ἀφορώντων τὰ κτήματα τῆς Μανωλάδος τοῦ τότε διαδόχου Κωνσταντίνου, ἐξεδόθησαν καὶ τέσσαρες οἰκονομολογικαὶ μελέται του: ἡ «περὶ τῶν συνεταιρισμῶν καὶ τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης» (1916), ἡ «περὶ σταθεροποιήσεως τοῦ νομίσματος» (1926), ἡ «περὶ τοῦ γαλλικοῦ φράγκου καὶ τῶν ἐκ τῆς κρίσεώς του διδαγμάτων» (1926) καὶ ἡ «περὶ τῶν ζητημάτων Μακεδονίας καὶ Θράκης ἀπὸ οἰκονομικῆς καὶ διοικητικῆς ἀπόψεως» (1929). Ἀνάλυσις τῶν δημοσιονομικῶν του ἀπόψεων εὕρηται ἐν τῇ «περὶ νομισματικῆς σταθεροποιήσεως» συγγραφῇ τοῦ Ξ. Ζολώτα, τῇ «περὶ προληπτικοῦ ἐλέγχου τῶν δημοσίων δαπανῶν» μελέτῃ τοῦ Π. Δερτιλῆ καὶ τῇ «περὶ νομισματικῆς ἐξυγιάνσεως» τοῦ Δ. Θ. Γεωργιάδου. Δ. Θ. Γ.

— **Μιχαλακόπουλος, Δοσίθεος.** Διδάσκαλος τοῦ Γένους (βλ. λ. *Δοσίθεος ὁ Μιχαλακόπουλος*).

**Μιχαλέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Δεμεστίχων τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 34. Χ. Δ.

**Μιχαλὶτς** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας (*Μιχαλίκιον* κατὰ τὸν Χαλκοκονδύλην) πρωτεύουσα σαντζακίου τοῦ βιλαετίου Προύσης, ἐκτισμένη ἐπὶ ὑψώματος δυτικῶς τῆς Ἀρτυνίας ἢ Ἀπολλωνίας λίμνης, ἐφ' οὗ σῴζονται ἐρείπια τῆς ἀρχαίας *Μιλητοπόλεως*. Πρὸ τῆς κατὰ τὸ 1922 γενομένης ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν, εἶχεν 8.000 κατοίκους, ὧν 7.000 περίπου ἦσαν Ἕλληνες. Εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ. ἐπὶ τοῦ Ρυνδάκου ποταμοῦ ἔκειτο τὸ πάλαι τὸ *Λοπάδιον*, ὅπου τὸ σημερινὸν χωρίον *Οὐλουμπάδ*, ἰσχυρὸν φρούριον, ἀνεγερθὲν ὑπὸ Ἀλεξίου Κομνηνοῦ πρὸς προάσπισιν τῆς Προύσης κατὰ τῶν Τούρκων. Παρὰ τὸ Οὐλουμπὰδ δὲ κατ' Αὔγουστον τοῦ 1922 ἐπήχθησαν ἐπὶ τοῦ Ρυνδάκου δύο γέφυραι, δι' ὧν διῆλθε τὸ γ' ἑλληνικὸν σῶμα στρατοῦ, ὑποχωροῦν ἐκ Προύσης πρὸς Πάνορμον καὶ τὴν χερσόνησον τῆς Κυζίκου. Ν. Κ. Σ.

**Μιχαλιτσᾶτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ληξουρίου τῆς ἐπαρχίας Πάλης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 121. Χ. Δ.

**Μιχαλίτσι(ον)** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Χέρσου (Καλίνδριας ἢ Κιλιντίρ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μιχάλοβον*. Κάτ. (1928) 53.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται πρὸς Δ. τῶν Πραμάντων, ἐγγὺς τοῦ ροῦ τοῦ Ἀράχθου, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 408.

—3) Χωρίον τοῦ δήμου Πρεβέζης τῆς ἐπαρχίας Νικοπόλεως τοῦ νομοῦ Πρεβέζης. Κατ. (1928) 308. Χ. Δ.

**Μιχάλοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Μιχαλίτσιον* (βλ. λ.).

**Μιχαλόπουλος, Ἀλέξανδρος.** Τακτικὸς καθηγητὴς τῆς θεωρητικῆς μηχανολογίας ἐν τῷ Ἐθνικῷ Μετσοβίῳ πολυτεχνείῳ ἀπὸ τοῦ 1917, τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνωτάτης γεωπονικῆς σχολῆς ἀπὸ τοῦ 1920 καὶ καθηγητὴς ἐν τῇ σχολῇ ἀνωτέρας τεχνικῆς ἐκπαιδεύσεως ἀξιωματικῶν μηχανικοῦ ἀπὸ τοῦ 1925. Ἐγεννήθη τῷ 1882 ἐν Πτέρῃ τοῦ Αἰγίου, ὅπου διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα· ἐσπούδασε κατόπιν ἐν Ἀθήναις τυχὼν διπλώματος μηχανολόγου ἀπὸ τὸ πολυτεχνεῖον καὶ μαθηματικοῦ ἀπὸ τὸ πανεπιστήμιον. Τῷ 1909, κατόπιν διαγωνισμοῦ, ἀπεστάλη δαπάναις τοῦ πολυτεχνείου, εἰς Βερολῖνον, σπουδάσας ἐπὶ τετραετίαν εἰς πολυτεχνεῖον αὐτοῦ νομικὴν καὶ εὐρύνας τὰς σπουδάς του εἰς τὴν μηχανολογίαν καὶ τὴν μηχανικήν. Αἱ ἐργασίαι του ἀναφέρονται εἰς τὴν θερμοδυναμικὴν καὶ τὴν θεωρίαν τῶν μηχανῶν. Ὑπηρέτησεν εἰς ὅλους τοὺς ἀπὸ τοῦ 1912 πολέμους. Διευθυντὴς τοῦ κλάδου ἐφηρμοσμένων ἐπιστημῶν καὶ συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». —ς.

— **ιχαλόπουλος, Ζήσιμος.** Ἔμπορος ἐξ Ἰθάκης, μεταναστεύσας εἰς Ρωσίαν μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Σπυρίδωνος* καὶ κατόπιν ἐγκατασταθεὶς εἰς Κωνσταντινούπολιν. Παρέσχε πολλὰς ὑπηρεσίας εἰς τὴν πατρίδα του κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821. Ἀπέθανεν ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1831.

— **ιχαλόπουλος, Μιχαήλ.** Ἕλλην δημοσιογράφος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Χανίοις Κρήτης τῷ 1851 καὶ ἀποβιώσας ἐν Ἀθήναις τῷ 1928. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ διδασκαλείῳ Ἀθηνῶν καὶ κατόπιν ἐπὶ δύο ἔτη φιλολογίαν, μεθ' ὃ ἐδίδαξεν ἐπί τινα χρόνον εἰς τὸ γυμνάσιον Ἀδριανουπόλεως. Τῷ 1888 ἐγένετο διευθυντὴς τῆς συντάξεως τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐφημερίδος «Νεολόγος», ἐργασθεὶς μέχρι τῆς παύσεως αὐτῆς (1897). Εἶτα διωρίσθη διευθυντὴς τῆς εἰς Ταταῦλα κεντρικῆς ἑλληνικῆς σχολῆς καὶ τῷ 1900 ἀρχισυντάκτης τῆς ἐφημερίδος «Ταχυδρόμος». Ἐχρημάτισεν ἀνταποκριτὴς διαφόρων ἑλληνικῶν ἐφημερίδων καὶ ἐξέδωκε: «Θησαυρὸς βιωτικῆς σοφίας» (τ. α' 1901), «Ἀγωγὴ καὶ ἐκπαίδευσις» (Ἀθῆναι 1922) «Τὸ Ἅγιον Ὄρος» (Νέα Ὑόρκη 1913, ἐκδ. «Ἀτλαντίδος»). Μ. Ι. Γ.

**Μιχαρὲς** (Mijarès) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰσπανίας, ὁ ἀρχαῖος *Λέσυρος* (βλ. λ.).

**Μίχας, Ἀθανάσιος Π.** Ἐγεννήθη εἰς τὸ Λεωνίδιον τῷ 1892. Ἐγγραφεὶς εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου, ἀνηγορεύθη τῷ 1912 διδάκτωρ κατόπιν ἐναισίμου διατριβῆς του «Περὶ προστατευτικοῦ συστήματος καὶ ἐλευθέρας συναλλαγῆς». Συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Μονάχῳ, Βερολίνῳ, Χαϊδελβέργῃ, Βολωνίᾳ καὶ Ρώμῃ. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Ἑλλάδα, ἐγένετο δημοσιογράφος, εἰργάσθη εἰς τὴν «Ἀκρόπολιν» καὶ διετέλεσεν ἐπὶ δεκαετίαν πολιτικὸς συντάκτης καὶ ἀρχισυντάκτης ἀθηναϊκῶν ἐφημερίδων καὶ ἀνταποκριτὴς ἐπαρχιακῶν, τοῦ ἔξω ἑλληνισμοῦ καὶ εὐρωπαϊκῶν ἐφημερίδων. Ἵδρυσε μετ' ἄλλων τὴν «Ἕνωσιν Ἑλλήνων Λογοτεχνῶν». Εἶναι ἤδη γενικὸς γραμματεὺς τῆς «Ἑνώσεως Ἑλληνικῶν Τραπεζῶν».

Ἐξέδωκε τά: «Ἀπομνημονεύματα κόρης», «Νῖνα καὶ ἄλλα διηγήματα», «Ἀναμνήσεις ἀπὸ τὴν Γερμανίαν», «Ὁ τοκογλύφος ποῦ ρουφάει τὸ αἷμα τοῦ γεωργοῦ», «Τὸ σπίτι μὲ τὸ ἀέτωμα, καὶ ἄλλα διηγήματα», «Τὸ βιβλίο τῆς Ἡδονῆς καὶ τοῦ Θανάτου», «Εἴκοσι χρόνια δημοσιογράφος».

Ἡ σύζυγος αὐτοῦ *Ἔβετ (Εὐανθία) Μίχα*, τὸ γένος Μαρκέτου, ἐγεννήθη τῷ 1892 ἐν Ἀργοστολίῳ. Ἐπιδοθεῖσα εἰς τὴν μουσικὴν ἐσπούδασεν εἰς τὸ Ὠδεῖον Ἀθηνῶν, εἰς Παρισίους καὶ εἰς τὸ Μόναχον, λαβοῦσα δίπλωμα τῆς Μουσικῆς αὐτοῦ Ἀκαδημίας. Ἐδίδαξεν εἰς τὸ «Ἑλληνικὸν Ὠδεῖον» ἐπὶ δεκαετίαν, μεθ' ἣν ἀποχωρήσασα ἵδρυσε σχολὴν ἀριστοτεχνῶν τοῦ πιάνου (Meisterschule). —α.

**Μιχᾶτα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἐπανωχωρίου τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 77. Χ. Δ.

**μιχελία** (ἡ) (Michelia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μαγνολιοειδῶν*, περιλαμβάνον δενδρύλλια ἢ καὶ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Ἰνδοκίνας. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ἡ *μιχελία ἡ εὐώδης* (Michelia odorata), ἧς ὁ φλοιός, τὰ φύλλα καὶ τὰ ἄνθη εἶναι ἀρωματικὰ καὶ ποικίλως χρήσιμα. Δ. Ν. Π.

**Μιχελιδάκης, Ἀντώνιος Μιχ.** Κρὴς πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἡρακλείῳ τῷ 1844. Τὴν ἐγκύκλιον παίδευσιν ἔλαβεν ἐν τῷ γυμνασίῳ Σύρου, κατόπιν δὲ ἐνεγράφη ἐν τῇ φιλοσοφικῇ σχολῇ τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1866, διακόψας τὰς σπουδάς του, ἐπεδόθη μετ' ἄλλων εἰς τὴν ὀργάνωσιν τοῦ κινήματος ἐν ταῖς ἀνατολικαῖς ἐπαρχίαις τῆς νήσου. Παρὰ τὸ νεαρὸν τῆς ἡλικίας του ἀπεστάλη πληρεξούσιος εἰς τὴν γενικὴν ἐπαναστατικὴν συνέλευσιν τῶν Κρητῶν. Ὑποστὰς τὰς κακουχίας τριῶν ἐτῶν ἐπαναστατικῆς ζωῆς, κατέθεσεν ἐκ τῶν τελευταίων τὰ ὅπλα. Τῷ 1871 τῷ ἀνετέθη ἡ διεύθυνσις τοῦ ἐν Ἡρακλείῳ ἀρτισυστάτου «Κρητικοῦ Γυμνασίου». Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1878 ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος καὶ εἰς αὐτήν, ὑποβαλὼν ὡς πρόεδρος τῆς γενικῆς ἐπαναστατικῆς συνελεύσεως ὑπόμνημα εἰς τὸ ἐν Βερολίνῳ συνέδριον, δι' οὗ οἱ Κρῆτες ἐξήτουν τὴν προσάρτησιν τῆς νήσου εἰς τὴν Ἑλλάδα, μετ' ἄλλων δὲ ἀντιπροσώπων τῆς συνελεύσεως διεπραγματεύθη τὸν γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Σύμβασις τῆς Χαλέπας» καταστατικὸν χάρτην τῆς νήσου. Τὸ στάδιόν του ὡς πολιτικοῦ ἄρχεται τῷ 1879, ὅτε ἡ ἐπαρχία του Πεδιάδος ἀπέστειλεν αὐτὸν πληρεξούσιον εἰς τὴν γενικὴν συνέλευσιν. Ἔκτοτε ὁ Ἀντώνιος Μιχελιδάκης ἐξελέγετο ἀνελλιπῶς ὑπὸ τῶν ἐπαρχιωτῶν του πληρεξούσιος. Ἀρχηγὸς τοῦ ἐν Κρήτῃ ἐθνικοῦ κόμματος, ἐγένετο πρόεδρος τῶν κρητικῶν βουλῶν τοῦ 1901, 1903, 1905 ὡς καὶ τῆς Β' συν-

Digitized by Google

τακτικῆς συνελεύσεως (1906) καὶ τῆς βουλῆς τοῦ 1907. Ὅτε τῷ 1908 ἡ βουλὴ τῶν Κρητῶν ἐκήρυξε τὴν ἕνωσιν τῆς νήσου μετὰ τῆς Ἑλλάδος καὶ διώρισεν ἐκτελεστικὴν ἐπιτροπήν, ὁ Μιχελιδάκης ἐγένετο πρόεδρος αὐτῆς. Κατὰ τὸ 1911, διαμορφωθείσης ἐν Κρήτῃ ἐπαναστατικῆς καταστάσεως, λόγῳ τῆς παρατεινομένης ἐκκρεμότητος τοῦ κρητικοῦ ζητήματος, ἐξελέγη οὗτος καὶ πάλιν πρόεδρος τῆς συγκροτηθείσης ἐπαναστατικῆς συνελεύσεως, ὡς καὶ τῆς κατὰ τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1912 ἐκλεγείσης «Προσωρινῆς ἐπαναστατικῆς κυβερνήσεως», ἥτις κατ' Ὀκτώβριον τοῦ αὐτοῦ ἔτους παρέδωκε τὴν διοίκησιν τῆς νήσου εἰς τὸν ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως διορισθέντα γενικὸν διοικητὴν αὐτῆς Στ. Δραγούμην. Ὅτε τῷ 1915 ἐσχημάτισε κυβέρνησιν ὁ Στ. Σκουλούδης, ἐδόθη αὐτῷ τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐκκλησιαστικῶν καὶ τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως. Βασιλόφρων ἐκ πεποιθήσεων, ἀπηλάθη τῷ 1916 εἰς Μυτιλήνην. Ἐπανελθὼν εἰς Ἡράκλειον ἔπαυσεν ἀναμιγνυόμενος εἰς τὴν πολιτικήν. Ἀπεβίωσεν ἐν Ἡρακλείῳ τῇ 31 Ἰανουαρίου 1923.

*Ἀντώνιος Μιχελιδάκης,*

Ὁ Μιχελιδάκης ὑπῆρξε πρότυπον Χριστιανοῦ, πολίτου καὶ οἰκογενειάρχου, λάτρις τῆς φύσεως καὶ φλογερὸς πατριώτης. Ὡς τοιοῦτος ὑπῆρξεν ἡ ἐνσάρκωσις τῆς πολιτικῆς ἠθικῆς. † Χ. Α. Τ.

—**Μιχελιδάκης, *Σταυρούλης*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1855 ἐν τῷ χωρίῳ Πρασσᾶς. Διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του κατὰ τὰς ἐπαναστάσεις τοῦ 1878 καὶ 1889. Ἀπὸ τοῦ 1894 περιφερόμενος ἀνὰ τὰ ὄρη μετ' ὀλίγων συντρόφων του ἐτρομοκράτει τοὺς Τούρκους τῆς ἐπαρχίας Ρεθύμνης διὰ τῶν τολμηρῶν αὐτοῦ ἐπιδρομῶν εἰς τὰ τουρκικὰ χωρία. Ἐφονεύθη τὴν 23 Αὐγούστου 1896. Ν. ΚΛΣ

**Μιχελοδημητράκης, *Γεώργιος*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1821 εἰς τὸ χωρίον Κρεβατᾶ. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1869, ἐκλεγεὶς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας τοῦ Βιάννου, συμμετέσχεν εἰς τὰς ἀνὰ τὰς ἀνατολικὰς ἐπαρχίας τῆς νήσου πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις, καθ' ἃς διεκρίθη εἰς πλείστας μάχας. Ἀπέθανεν ἐν τῷ χωρίῳ του τῷ 1876. Ν. ΚΛΣ

**Μιχή,** ἢ *Μιχόϊ [Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Δύμης καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτοικοι (1928) 397. Χ. Δ.

**Μιχιέλι** (Micheli). Εὐγενὴς ἐνετικὸς οἶκος (βλ. *Μικέλι*).

**μιχμανδάρ.** Ἀξίωμα παρὰ τῇ αὐλῇ τῶν σουλτάνων. Ὁ μιχμανδὰρ ἐφρόντιζε διὰ τὴν παρουσίασιν τῶν ξένων ἐνώπιον τῶν σουλτάνων. Μεταξὺ τῶν ἐπισημοτάτων ἀναφέρεται ἐπὶ τοῦ σουλτάνου Μουράτ, περὶ τὸ 1427, ὁ *Σεΐχί*, ἰατρὸς σοφὸς καὶ ποιητής, ὅστις ὡρίσθη ἐπὶ τῆς ὑποδοχῆς τοῦ γηραιοῦ ἡγεμόνος τοῦ Κερμιάν, ἥτις ὑπῆρξε μεγαλοπρεπεστάτη. Ν. Δ. Λ.

**Μιχόϊ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας (βλ. *Μιχή*). Χ. Δ.

**Μίχου, *Ἀρτέμιος*.** Ἀγωνιστὴς ἐξ Ἰωαννίνων καὶ στρατηγὸς (1803—1873). Ὑπηρέτησεν εἰς τὰ ἄτακτα σώματα διαρκοῦντος τοῦ Ἱεροῦ Ἀγῶνος καὶ εἰς τὸ τακτικὸν τὸ ὀργανωθὲν ὑπὸ τοῦ Ροδίου. Ἔλαβε μέρος εἰς διαφόρους μάχας εἰς τὴν Δυτικὴν Ἑλλάδα, ἠγωνίσθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου καὶ ἀκολουθήσας κατόπιν τὸν στρατάρχην Δ. Ὑψηλάντην ἐπολέμησε γενναιότατα, ἐπανειλημμένως τραυματισθείς. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν κατετάγη εἰς τὸν τακτικὸν στρατὸν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ πεζικοῦ, προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. Φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου καὶ διατελῶν διοικητὴς τοῦ ἐν Ναυπλίῳ 5ου τάγματος πεζικοῦ, συμμετέσχε τῆς κατὰ τοῦ Ὄθωνος ἐπαναστάσεως τοῦ 1862, μετὰ τὴν ὁποίαν ὑπηρέτησεν ὡς ἐπιθεωρητὴς τοῦ στρατοῦ καὶ εἶτα ὡς ἀρχηγὸς τῆς χωροφυλακῆς. Ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν (1862, 1863) καὶ συνέγραψε τὰ ἐνδιαφέροντα «Ἀπομνημονεύματα τῆς δευτέρας πολιορκίας τοῦ Μεσολογγίου», ὡς καὶ σημειώσεις ἐπὶ τῶν πολεμικῶν γεγονότων τοῦ Ἀγῶνος κατὰ τὰ τελευταῖά του ἔτη. Χ. Γ. Ε.—Ν. Θ. Κ.

**μιχρ.** Λέξις περσική, σημαίνουσα ἥλιος καὶ ἀπαντῶσα ὡς πρῶτον συνθετικὸν κυρίων ὀνομάτων. Ν. Μ.

**μιχράπ** (ἀραβ.)· μέρος τοῦ τζαμίου ἐπέχον τόπον «ἱεροῦ». Ἐνώπιον αὐτοῦ προσεύχεται ὁ ἰμάμης.

**Μλάδεν** (Mladen)· βλ. λ. *Βλάδεν*.

**Μλαντένωφ, *Στεφάν*.** Βούλγαρος γλωσσολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1880. Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Βιέννης, Πετρουπόλεως, Πράγας καὶ Κρακοβίας. Ἤδη (1931) εἶναι καθηγητὴς τῆς γλωσσολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Σόφιας καὶ διατελεῖ μέλος πολλῶν ἀκαδημιῶν τοῦ ἐξωτερικοῦ. Ἔγραψεν: «Ἀρχαῖα γερμανικὰ στοιχεῖα εἰς τὰς σλαβικὰς γλώσσας», «Δοκίμιον γεωγραφικοῦ λεξικοῦ τῆς Βουλγαρίας», «Θεωρίαι περὶ τῆς συγγενείας τῶν εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν», «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν γενικὴν γλωσσολογίαν», «Ἱστορία τῆς βουλγαρικῆς γλώσσης» γερμανιστί. Τ. Β.

**Μλγιὲτ** *[Γεωγρ.]*. Σλαβονικὴ ὀνομασία τῆς Ἀδριατικῆς νήσου *Μέλεντα*. Σ. Ε. Λ.

**mm** (=συμβολικὴ παράστασις τοῦ χιλιοστομέτρου). Τὸ πρῶτον *m* δηλοῖ ὅτι πρόκειται περὶ τοῦ χιλιοστοῦ τῆς μονάδος, ἥτις παρίσταται διὰ τοῦ ὑπολοίπου τῆς συμβολικῆς παραστάσεως. Τὸ δεύτερον *m* καθορίζει τὴν μονάδα, ἧς πρόκειται νὰ ληφθῇ τὸ χιλιοστόν, εἶναι δέ, ὡς γνωστόν, τὸ m σύμβολον τῆς μονάδος μέτρον. Γ. Θ. Κ.

**mm Hg.** Σύμβολον τιθέμενον κατόπιν ἀριθμοῦ καὶ σημαῖνον πίεσιν ἐκπεφρασμένην εἰς χιλιοστὰ ὑδραργυρικῆς στήλης. Πρέπει κυρίως νὰ ἀκολουθῆται ἀπὸ ἀριθμὸν σημαίνοντα τὴν θερμοκρασίαν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐμετρήθη τὸ ὕψος τῆς ὑδραργυρικῆς στήλης. Οὕτω π. χ. πίεσις 700 mm Hg 17°C. σημαίνει πίεσιν ἴσην πρὸς τὸ βάρος στήλης ὑδραργύρου ὕψους 700 χιλιοστομέτρων, μετρηθέντος ὑπὸ θερμοκρασίαν 17 βαθμῶν Κελσίου. Ἡ συνήθης ἀτμοσφαιρικὴ πίεσις 760 mm Hg 0°C ἰσοδυναμεῖ πρὸς πίεσιν 1033 γραμμαρίων ἀνὰ τετραγωνικὸν ἑκατοστόν. Πίεσις ἑνὸς χιλιογράμμου ἀνὰ τετραγωνικὸν ἑκατοστὸν ἰσοδυναμεῖ πρὸς 735,5 mm Hg 0°C ἢ πρὸς 737,4 mm Hg 15°C. Γ. Θ. Κ.

**μνᾶ** (ἡ) *[Ἀρχ.]*. Μία τῶν διαιρέσεων τοῦ μετρικοῦ συστήματος τῶν σημιτικῶν λαῶν καὶ τῶν Ἑλλήνων. Τὸ ὄνομα αὐτῆς εἶναι σημιτικῆς προελεύσεως. Οἱ Ἀσσύριοι καὶ οἱ Βαβυλώνιοι εἶχον δύο μετρικὰ συστήματα, τὸ βαρὺ καὶ τὸ ἐλαφρόν, μὲ βάσιν τὸ τάλαντον. Ἡ μνᾶ ἦτο τὸ $^1/_{60}$ τοῦ ταλάντου, διῃρεῖτο δὲ εἰς 60 *σίκλους* καὶ ἐζύγιζεν εἰς μὲν τὸ βαρὺ σύστημα 1009, 20 γρ., εἰς δὲ τὸ ἐλαφρὸν 504.60 γραμμάρια. Ἐκ τῶν δύο τούτων μετρικῶν κανόνων προῆλθον τὰ διάφορα μετρικὰ συστήματα τῶν λαῶν τῆς Ἀσίας, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ παρέλαβον οἱ Ἕλληνες, προσαρμόσαντες αὐτὰ εἰς τὰ τοπικὰ μετρικὰ συστήματά των καὶ τὰ νομίσματα. Ἡ ἑλληνικὴ μνᾶ διαιρεῖται εἰς 100 *δραχμάς*, οὕτω δ' ἔχομεν: ἓν τάλαντον=60 μνᾶς ἢ 6000 δραχμάς, μία μνᾶ = $^1/_{60}$ τοῦ ταλάντου ἢ 100 δραχμάς. Ὁ στατήρ, ἤτοι τὸ δίδραχμον, ἰσοδυνάμει πρὸς τὸ $^1/_{50}$ τῆς μνᾶς, ἐνίοτε δὲ ἡ *διπλῆ μνᾶ* ἐκαλεῖτο καὶ *στατήρ*. Ἡ μνᾶ εἰς τὸ αἰγινητικὸν σύστημα κατὰ τὸν Ζ' αἰῶνα εἶχε βάρος 637 γρ., εἰς δὲ τὸ εὐβοϊκόν, συμφώνως πρὸς τὰ νομίσματα τῆς Εὐβοίας καὶ τῶν Ἀθηνῶν, 873 γρ.

Ἐκ τῆς χρήσεως τῶν διαφόρων μετρικῶν συστημάτων, προέκυψαν πλεῖσται παραλλαγαί, ὄχι μόνον κατὰ τόπους, ἀλλὰ καὶ κατὰ ἐποχάς. Εἰς μόνας τὰς Ἀθήνας οἱ μετρικοὶ διακρίνουν ἑπτὰ μνᾶς διαφόρου βάρους, αἱ ὁποῖαι πάλιν ὑπέστησαν μὲ τὴν πάροδον τοῦ χρόνου μεταβολάς. Οὕτω ἡ μνᾶ ἡ πρὸ τοῦ Σόλωνος εἶχεν 73 δραχμάς, ἤτοι 637,29 γρ. Ἀργότερα εὑρίσκομεν μνᾶν 436,50 γρ., ἥτις εἰς τοὺς χρόνους τοῦ Ἀριστοτέλους ἐκαλεῖτο *ἀττικὴ μνᾶ*. Ἡ πρὸ τοῦ Σόλωνος μνᾶ ἐκαλεῖτο *ἐμπορική*, κατὰ τὸν Β' δὲ π. Χ. αἰῶνα εἶχεν 138 δραχμὰς εὐβοϊκοῦ κανόνος, ἤτοι 601,68 γραμ. Κατὰ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν εὑρίσκομεν καὶ τὴν *ἀγοραίαν μνᾶν*, βάρους 654,90 γρ. Ἐκ τῶν σῳζομένων ἀττικῶν σταθμίων δύο φέροντα τὴν ἐπιγραφὴν ΔΙΜΝΟΥΝ ζυγίζουν 1559 καὶ 1310,25 γρ., ἄλλα δὲ μὲ τὴν ἐπιγραφὴν ΣΤΑΤΗΡ (ἤτοι δύο μναῖ) ζυγίζουν ἀπὸ 1.422,50 μέχρι 883,02 γρ. Εἰς τὴν Χίον ἔχομεν μνᾶν βάρους 562 γρ., εἰς τὴν Κύζικον 596, εἰς τὴν Τέων 852,60 καὶ ἄλλην 940,80 γρ., ὁμοίαν δὲ καὶ εἰς τὴν Νάξον. Ἐκ τῆς ρωμαϊκῆς ἐποχῆς ὑπάρχουν: 1) μνᾶ βάρους 16 οὐγκιῶν ἢ $1^1/_3$ ρωμαϊκῆς λίτρας (436,50 γρ.) 2) ἑτέρα 18 οὐγκιῶν ἢ $1^1/_2$ ρωμαϊκῆς λίτρας (491,20 γρ.), καλουμένη καὶ *ἰταλικὴ μνᾶ* 3) μνᾶ 20 οὐγκιῶν 545,80 γραμμαρίων 4) ἑτέρα 24 οὐγκιῶν ἢ δύο ρωμαϊκῶν λιτρῶν (654,90 γρ.), ἤτοι ἴση πρὸς τὴν ἀρχαίαν ἀγοραίαν μνᾶν. Ε. Β.-Χ.

**Μνασάλκας.** Ἀρχαῖος ἐλεγειακὸς ποιητὴς ἐκ τοῦ δήμου Πλαταιῶν τῆς Σικυωνίας, γράψας πολλὰ καὶ ἀξιόλογα ἐπιγράμματα, ἐκ τῶν ὁποίων δεκαὲξ ἐσώθησαν ἐν τῇ «Ἑλληνικῇ Ἀνθολογίᾳ». Ὁ Συρακόσιος ποιητὴς Θεοδωρίδας (229 π.Χ.) ἀναφέρει τὸν Μνασάλκαν ὑπὸ τὴν τιμητικὴν προσωνυμίαν «Πλαταΐδας ἐλεγοποιός». Ν. Α.

**Μνασέας,** ἢ *Μνασίας*. Ἀρχαῖος μαθηματικὸς γεωγράφος, καταγόμενος ἐκ Πατρῶν, ἐκ τῶν κορυφαίων τοῦ Ἐρατοσθένους μαθητῶν. Καὶ ὡς ἔργα μὲν αὐτοῦ ἀναφέρονται: «Περὶ Ἀσίας», «Περὶ Εὐρώπης», «Περὶ Λιβύης», «Περὶ χρησμῶν», «Περιηγήσεις» «Περίπλους», εἰς πλείονα τῶν δύο βιβλίων ἕκαστον. Ἐκ τῶν ὀλίγων ἐν τούτοις ἀποσπασμάτων τῶν ἐν τῇ συλλογῇ Müller περιληφθέντων (Fragmenta Historicorum Graecorum) δὲν προκύπτει βαθύτης ἐπιστημοσύνης αὐτοῦ, ὡς περιγραφικοῦ γεωγράφου τοὐλάχιστον. Σ. Ε. Λ.

— **Μνασέας.** Ἀρχαῖος Ἕλλην ἰατρός, ὀπαδὸς τῆς μεθοδικῆς σχολῆς, ζήσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Α' μ.Χ. αἰῶνος. Οὗτος κατέλεξε νόσους τινὰς εἰς τὴν μεμειγμένην κατάστασιν (βλ. *μεθοδικὴ σχολή*), ὡς π.χ. τὸν λήθαργον (*Cael. Aurel.* ac. II, 5). Τὴν ἐκ συστάσεως παράλυσιν ἐκάλει *παράλειψιν*. Πολλῆς τιμῆς ἐτύγχανε τὸ ἔμπλαστρον αὐτοῦ (Ε. Μνασέα). Κατὰ Σωρανὸν (ΙΙ 7) οὗτος μετὰ τοῦ Ἡροφίλου ἐθεώρουν τὴν ἔμμηνον κάθαρσιν εἰς τινας μὲν τῶν γυναικῶν ὠφέλιμον, εἰς δ' ἄλλας τινὰς βλαβεράν. ΑΡ. Π. Κ.

**μνασίον** (τὸ) *[Ἀρχ.]*. Μέτρον μετρήσεως ξηρῶν προϊόντων (βλ. λ. *διμέδιμνον*).

**Μνάσιππος.** Λακεδαιμόνιος. Οὗτος, ναύαρχος ὢν τοῦ πελοποννησιακοῦ στόλου, κατὰ τὸ 374 π.Χ., ἔπλευσε μετὰ στόλου 60 πλοίων καὶ ἱκανοῦ στρατοῦ πρὸς κατάληψιν τῆς Κερκύρας. Ἀποβιβασθεὶς εἰς τὴν νῆσον ἠρήμωσε τοὺς ἀγροὺς καὶ τὰς ἐπ' αὐτῶν ἐπαύλεις καὶ τοὺς οἰνῶνας (*Ξεν.* Ἑλλ. VI. 2. 6) καὶ μετὰ ταῦτα ἐπολιόρκησε τὴν πόλιν ἀπὸ ξηρᾶς καὶ θαλάσσης. Οἱ Κερκυραῖοι, εἰς δεινὴν κατάστασιν τότε εὑρεθέντες, ἐζήτησαν τὴν βοήθειαν τῶν Ἀθηναίων, οἱ ὁποῖοι καὶ ἔστειλαν ἐσπευσμένως πρὸς αὐτοὺς 600 πελταστὰς ὑπὸ τὸν Κτησικλέα, ὅστις καὶ κατώρθωσε μετ' αὐτῶν νὰ εἰσέλθῃ εἰς τὴν πόλιν, καὶ διέταξαν τὸν ναύαρχον Τιμόθεον ἐν ἀρχῇ, καὶ τὸν Ἰφικράτη μετὰ ταῦτα, διότι ὁ πρῶτος ἐβράδυνεν εἰς τὴν συγκρότησιν τῶν πληρωμάτων τοῦ ἐξ 60 πλοίων στόλου, νὰ πλεύσῃ πρὸς τὴν νῆσον. Πρὸ τῆς ἀφίξεως ὅμως τοῦ ἀθηναϊκοῦ στόλου οἱ Κερκυραῖοι ὑπὸ τῆς πείνης πιεζόμενοι ἠναγκάσθησαν νὰ κάμουν ἀπεγνωσμένην ἔξοδον, κατὰ τὴν ὁποίαν, εὑρόντες τοὺς πλείστους τῶν πολιορκητῶν διεσπαρμένους πρὸς λείαν, ἐπέτυχον καὶ αὐτὸν τὸν Μνάσιππον νὰ φονεύσωσι. Μετὰ τὸν θάνατον τούτου ὁ ἐπιστολιαφόρος (ὑποναύαρχος) τοῦ πελοποννησιακοῦ στόλου Ὑπερμένης ἐπεβίβασεν εἰς τὰ πλοῖα τὸν στρατὸν του, πολλὰ ἀνδράποδα καὶ πολλὰ λάφυρα καὶ ἀπῆλθεν εἰς Λευκάδα πρὸ τοῦ εἰς Κέρκυραν κατάπλου τοῦ ἀθηναϊκοῦ ὑπὸ τὸν Ἰφικράτη στόλου. ΚΑΨ.

**μνάσις** (ἡ) *[Ἀρχ.]*· βλ. λ. *διμέδιμνον*.

**Μνασύριον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλισμα τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Ρόδου, βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου *Θοαντίου* καὶ τοῦ λιμένος τῆς *Λίνδου* (*Στράβ.* ΙΔ, 655). Ταυτότης μήπω ἐξηκριβωμένη. Σ. Ε. Λ.

**μνεία** (ἡ)· ἐνθύμησις, ὑπόμνησις, ἀναφορά, τὸ νὰ ἀναφέρῃ τις τὸ ὄνομά τινος: «εὐφήμως μνεία», «ἔκαμε —, ἐποιήσατο μνείαν τοῦ ὀνόματός σου», «ἐγένετο μνεία».

**Μνείακον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Φρούριον τῆς Θράκης, κείμενον ΝΔ. τῆς Ἀδριανουπόλεως, ἐπὶ τοῦ Ἄρδα ποταμοῦ, πρὸς Β. τοῦ χωρίου Ἐφραὶμ (νῦν Φερύγιον), τὸ μόνον μετὰ τῶν Σερρῶν καὶ Μελενίκου μὴ περιελθὸν εἰς τοὺς Βουλγάρους τῷ 1255 κατὰ τὴν ἐπιδρομὴν τοῦ ἡγεμόνος αὐτῶν Μιχαήλ. Α. Θ. Σ.

**Μνεῦϊς** *[Αἰγ. Μυθολ.]*. Ὁ ἱερὸς βοῦς ὁ ἐνέχων τὴν ψυχὴν τοῦ Ρᾶ, ἓν τῶν ἐπισημοτέρων ἱερῶν ζῴων τῆς φαραωνικῆς Αἰγύπτου. Ὁ φαραὼ τῆς Α' δυναστείας Κακόου ἀνεκήρυξεν αὐτὸν θεὸν τῆς Ἡλιουπόλεως, ὅπως τὸν Ἆπιν τῆς Μέμφιδος καὶ τὸν Μένδην τῆς Μένδητος. Γ. Λ. Α.

**μνῆμα** (τό)· πᾶν ὅ,τι λαμβάνει ὕπαρξιν εἰς μνήμην τινός, μνημεῖον, στήλη || ἰδίᾳ τὸ ἐπὶ τοῦ τάφου ἱδρυμένον, καὶ αὐτὸς ὁ τάφος: «μὴν πατᾷς ἀπάνω 'ς τὸ μνῆμα γιατὶ δὲν χάμνει» || δημοτ., *μνήματα* (τά)· τὸ νεκροταφεῖον.

**Μνῆμα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Εὐβοίας κατὰ τὴν βόρεια τοῦ Εὐρίπου πρόσγεια (πλάτ. 38° 34' Β., μῆκ. 23° 32" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1556: Gulf of Volo with the Oreos and Talanta Channels), βόρειον κέρας τοῦ κολπίζοντος ὅρμου τῶν Πολιτικῶν. Φάρος «Ἄγκα» λευκῶν ἐκλάμψεων 12 μιλ. (1915) πρὸς προφύλαξιν ἀπὸ τῶν μυρμήκων Γαϊδάρος τῆς κατέναντι Βοιωτικῆς ἀκτῆς. Σ. Ε. Λ.

**Μνήματα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ΒΑ. ἀκτῆς τῆς Σύρου (πλάτ. 38° 27' 50" Β., μῆκ. 24° 57' 20" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1542: Syra island), βόρειον ἄκρον τοῦ ὅρμου Λουλᾶ ἢ Τόμαν, ὀνομαζόμενον οὕτω διὰ τὴν πληθὺν τῶν προϊστορικῶν ἐν αὐτῷ τάφων. Ἀνώνυμον εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην, ἀναφέρεται εἰς τὸν χάρτην «Νῆσος Σύρος» τοῦ Ν. Κοτσοβίλλη (Ἑρμούπολις 1892). Σ. Ε. Λ.

Digitized by Google

**μνημεῖον** (τό)· κατασκεύασμα, ἵδρυμα εἰς μνήμην τινός: «τὸ μνημεῖον τοῦ Φιλοπάππου,—τοῦ Λυσικράτους», «χορηγικὸν μνημεῖον»· ‖ μεγαλοπρεπὴς τάφος, μνῆμα, μαυσωλεῖον: «τὸ μνημεῖον τοῦ Μαυσώλου» τὸ ἄλλως *Μαυσώλειον*· ‖ πᾶν ὅ,τι διεσώθη ἐκ τῆς ἀρχαιότητος, τὸ μαρτυροῦν ἀρχαῖον βίον, λείψανον τῆς ἀρχαιότητος: «τὰ ἐν Ἀθήναις—, ἐν Ρώμῃ μνημεῖα», «ἦλθεν εἰς Ἀθήνας πρὸς ἐπίσκεψιν τῶν μνημείων», «ὁ Παρθενὼν εἶναι τὸ κάλλιστον τῶν ἀρχαίων μνημείων»· ‖ «μνημεῖα λόγου» τὰ συγγράμματα τῆς ἀρχαιότητος: «ὁ Πλάττων εἶναι τὸ κάλλιστον λογοτεχνικὸν μνημεῖον τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας»· ‖ καθόλου, πᾶν ὅ,τι κεῖται εἰς ἀνάμνησιν, λατ. monumentum: «μνημεῖον ἀρετῆς,—γενναιότητος, —φιλανθρωπίας».

— *[Πολιτ. Δικον.]* Εἰς τὰ κατὰ τὴν πολιτικὴν δικονομίαν ἀποδεικτικὰ μέσα κατατάσσονται καὶ τὰ *μνημεῖα*, δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ (ἄρθρα 384, 394 καὶ 408 πολ. δικ.). Καὶ δημόσια μὲν θεωροῦνται τὰ γενόμενα ὑπὸ τὸ κῦρος τῆς ἀρχῆς, ἅτινα καὶ θεωροῦνται ὡς δημόσια ἔγγραφα, ἰδιωτικὰ δέ, ἐν οἷς κατατάσσονται καὶ τὰ σκύταλα, τὰ λοιπά, θεωρούμενα ὡς ἰδιωτικὰ ἔγγραφα. Ἑπομένως ὡς μνημεῖα νοοῦνται, νομικῶς, τὰ μὴ διὰ γραφῆς, ἀνθρώπινα ἔργα, δι' ὧν ὑπομιμνήσκονται πράξεις καὶ συμβάντα τοῦ παρελθόντος. Τῶν μνημείων ἡ ὕπαρξις ἀποδεικνύει μόνον τὴν ἀνέγερσιν, οὐχὶ δὲ καὶ τὸ πρόσωπον καὶ τὸν σκοπὸν τῆς ἀνεγέρσεως. Σ. Α. Χ.

— **μνημεῖα *ἱστορικὰ*** *[Νομ.]*· βλ. λ. *ἱστορικὰ* μνημεῖα.

**Μνημεῖον *ἄκρον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Μαρμαρικῆς (*Πτολεμ.*, ἔκδοσις Nobbe, σ. 84), ἴσως τὸ αὐτὸ πρὸς τὸ Γλαυκὸν ἄκρον (*Πτολ.* Δ, ε, 7), τὸ παρὰ τὸ σύγχρονον Ἀμπουσίρ. Σ. Ε. Λ.

**μνημειώδης** (ὁ, ἡ),—*ες* (τό)· ὁ οἱονεὶ μνημείου δίκην ὑπάρχων, περιφανής, ἔκτακτος: «μνημειώδης λόγος», «ἔργον μνημειῶδες».

**μνήμη** (ἡ)· ἡ δύναμις, ἡ ἱκανότης τοῦ ἀναμιμνήσκεσθαι, ἄλλως *μνημονικόν*: «ἔχει ἰσχυρὰν μνήμην», «ἐξησθένησεν ἡ μνήμη του ἕνεκα τοῦ γήρατος»· ‖ φρ. «ἀπὸ μνήμης» ἄλλως «ἀπὸ στήθους», κοιν. *ἀπέξω*, ἀντίθ. «ἀπὸ γραπτοῦ»: «ὁμιλεῖ ἀπὸ μνήμης»· ‖ ἀνάμνησις, ἐνθύμησις: «αἰωνία αὐτοῦ ἡ μνήμη», «δωρεὰ εἰς μνήμην τοῦ πατρός του», «ἡ μνήμη τοῦ παρελθόντος».

— *[Ψυχολ.]* Κατὰ τὴν σύγχρονον πειραματικὴν ψυχολογίαν, «μνήμη εἶναι ἡ δεξιότης περὶ τὸ ἐντυποῦν ἐν τῇ συνειδήσει ἀντιλήψεις καὶ παραστάσεις προερχομένας ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου ἢ ἐκ τοῦ ἡμετέρου ὀργανισμοῦ, διαφυλάττειν αὐτὰς ἐν αὐτῇ καὶ μετὰ βραχὺν ἢ μακρὸν χρόνον ἀναζωογονεῖν καὶ ἀναπλάττειν αὐτάς». Ἡ μνήμη εἶναι μία ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ψυχικῶν δεξιοτήτων, διότι ἀποτελεῖ βάσιν κάθε προόδου καὶ διότι δι' αὐτῆς γίνεται κτῆμα τοῦ ἀνθρώπου πᾶσα γνῶσις. Ἄνευ αὐτῆς τὰ γεγονότα θὰ ἦσαν ἐφήμεροι διαδοχικαὶ ἐμφανίσεις στερούμεναι ἑνότητος. Διὰ τῆς μνήμης ἐξασφαλίζεται ἡ ἑνότης τοῦ ψυχικοῦ βίου, διότι διασῴζονται τὰ παρῳχημένα καὶ κατακτῶνται τὰ ἑκάστοτε νέα, συνδέοντα τὰ ἀεὶ προσκτώμενα πρὸς ἄλληλα καὶ πρὸς τὰ παλαιά. Ἡ μνήμη ἀποτελεῖ τὴν ἀσφαλεστέραν βάσιν τῆς διαμορφώσεως καὶ ἐξελίξεως ὅλων τῶν ψυχικῶν δεξιοτήτων, διότι εἶναι ὁ ἀφειδὴς προμηθευτὴς αὐτῶν. Ἄνευ αὐτῆς δὲν θὰ ὑπῆρχεν οὔτε νόησις, οὔτε φαντασία, οὔτε συναίσθημα, οὔτε καὶ τὰ προϊόντα τῶν δεξιοτήτων τούτων, αἱ ἐπιστῆμαι καὶ αἱ τέχναι. Μεγάλη εἶναι ἡ σημασία τῆς μνήμης καὶ ἀπὸ παιδαγωγικῆς ἀπόψεως, διότι εἰς αὐτὴν κατὰ μέγα μέρος ἀπευθύνεται ἡ ἀγωγὴ καὶ ἡ διδασκαλία

*Λειτουργίαι τῆς μνήμης.* Ἡ μνήμη τελεῖ εἰς στενοτάτην σχέσιν πρὸς ἄλλα ψυχικὰ φαινόμενα καὶ ἰδίᾳ τὸν συνειρμὸν καὶ τὴν ἀνάπλασιν, διὸ καὶ πολλοὶ παλαιότεροι ψυχολόγοι ἐταύτιζον αὐτὴν πρὸς ταῦτα. Κατὰ τὴν παλαιὰν ψυχολογίαν «μνήμη εἶναι ἡ μετὰ πάροδον χρόνου ἀμετάβλητος ἀνάπλασις παραστάσεων». Ἡ νεωτέρα ὅμως ψυχολογικὴ ἔρευνα, μεταβαλοῦσα τὴν ἐκδοχὴν ταύτην, θεωρεῖ τὴν μνήμην ὡς λειτουργίαν τριμερῆ, ἀποτελουμένην ἐκ τῆς λειτουργίας τοῦ *ἐντυπώνειν* ἢ *ἀπομνημονεύειν* παραστάσεις ἐν τῇ συνειδήσει, ἐκ τῆς λειτουργίας τοῦ *διατηρεῖν* τὸ διὰ τῆς ἐντυπώσεως προσληφθὲν ἐν τῇ συνειδήσει καὶ ἐκ τῆς λειτουργίας τοῦ *ἀναπλάσσειν* ἢ *ἀναδημιουργεῖν* τὸ ἐντυπωθέν. Αἱ δύο πρῶται λειτουργίαι διαφεύγουν τὴν ἀντίληψιν ἡμῶν, προδίδουν δὲ τὴν ὕπαρξίν των διὰ τῆς εὐκολίας τῆς ἀναπλάσεως. Ἐπίσης ἡ νεωτέρα ψυχολογικὴ ἔρευνα δὲν θεωρεῖ τὸ ἀμετάβλητον τῆς ἀναπλάσεως τῶν παραστάσεων (πίστις) ἀπαραίτητον στοιχεῖον τῆς μνήμης, διότι, ὡς ἀπεδείχθη, αἱ παραστάσεις εἰσερχόμεναι εἰς τὴν συνείδησιν (ἐντυπώσεις) δὲν τηροῦν αὐτοτέλειαν οὔτε παραμένουν ὡς εἰσῆλθον, ἀλλ' ἀναλύονται εἰς στοιχεῖα καὶ κατόπιν ὑφίστανται νέας συνδέσεις, μείξεις καὶ συγχωνεύσεις, ἀκόμη καὶ μετατροπὰς τῇ ἐπεμβάσει τῆς νοήσεως καὶ τῆς φαντασίας, οὕτως ὥστε ἐπανερχόμεναι εἰς τὴν συνείδησιν διὰ τῆς ἀναπλάσεως παραλλάσσουν τῆς ἀρχικῆς ἐντυπώσεως. Αἱ ἀλλοιώσεις αὗται τῶν παραστάσεων ἐν τῇ ψυχῇ εἶναι τόσον μεγαλύτεραι, ὅσον περισσότερον χρονικὸν διάστημα παρέρχεται ἀπὸ τῆς στιγμῆς τῆς ἐντυπώσεως μέχρι τῆς στιγμῆς τῆς ἀναπλάσεως. Ἀλλὰ καὶ ἐλάχιστος ἀκόμη χρόνος ἂν μεσολαβήσῃ μεταξὺ ἐντυπώσεως καὶ ἀναπλάσεως, πάλιν ἐπέρχεται ἀλλοίωσίς τις, ὅπως ἀπέδειξαν σχετικὰ πειράματα διαφόρων ψυχολόγων.

*1. Λειτουργία τοῦ ἐντυπώνειν.* Ἡ μνημονικὴ λειτουργία, ἡ καλουμένη ἐντύπωσις, ἥτις ἀποτελεῖ τὴν πρώτην ἐκ τῶν τριῶν λειτουργιῶν τῆς μνήμης, διακρίνεται, ἀναλόγως τοῦ τρόπου, καθ' ὃν τελεῖται, καὶ τοῦ εἴδους τῆς ἀπομνημονευτέας ὕλης, εἰς τρεῖς κατηγορίας: ἐποπτικήν, μηχανικὴν καὶ κριτικήν. α) Ἡ *ἐποπτικὴ ἐντύπωσις* (ἄλλως *ἐντύπωσις* ἢ *ἀπομνημόνευσις διὰ παρατηρήσεως*) ἀφορᾷ ἀντικείμενα ὑποπίπτοντα εἰς τὰς πέντε αἰσθήσεις καὶ ἰδίᾳ τὴν ὅρασιν (μορφαί, σχήματα, χρώματα κλπ.). β) Ἡ *μηχανικὴ ἐντύπωσις* (ἄλλως *ἐντύπωσις* ἢ *μάθησις διὰ συνειρμοῦ*) ἀναφέρεται εἰς γνώσεις, ἃς ἔχομεν δι' ἀναγνώσεως ἢ διὰ γλωσσικῆς ἀντιλήψεως λέξεων καὶ συμβόλων, χωρὶς κατανόησιν καὶ ἐξεύρεσιν τῆς λογικῆς σχέσεως τῶν τμημάτων τοῦ ἀπομνημονευτέου ὅλου, εἴτε διὰ λόγους ἀντικειμενικοὺς (διότι φύσει ἀποκλείει τὴν κατανόησιν ἡ ἀπομνημονευτέα ὕλη: ξένα ὀνόματα, λέξεις ξένης γλώσσης, χρονολογίαι, ἀριθμοὶ κλπ.), εἴτε διὰ λόγους ὑποκειμενικοὺς (διότι δὲν δυνάμεθα ἡμεῖς νὰ κατανοήσωμεν: ἀποστήθισις προσευχῶν εἰς ἀρχαίαν ἑλληνικὴν κλπ.). γ) Ἡ *κριτικὴ ἐντύπωσις* (ἄλλως *ἐντύπωσις* ἢ *μάθησις λογική*) ἀναφέρεται εἰς γνώσεις τελούσας εἰς λογικὸν εἱρμὸν πρὸς ἀλλήλας, εἱρμόν, ὅστις λαμβανόμενος ὑπ' ὄψιν κατὰ τὴν ἀπομνημόνευσιν, ἀποτελεῖ ἄριστον μέσον πρὸς συγκράτησιν τῶν παραστάσεων. Τὸ εἶδος τοῦτο τοῦ ἐντυπώνειν εἶναι τὸ σπουδαιότερον καὶ χρησιμοποιεῖται ὅσον τὸ δυνατὸν περισσότερον, ὁσάκις ἐπιτρέπει ἡ ἀπομνημονευτέα ὕλη, ὑπὸ τῶν ἐνηλίκων καὶ τῶν μορφωμένων. Νόθον μορφὴν κριτικῆς ἐντυπώσεως ἀποτελεῖ ἡ *ἀγχίνους* λεγομένη μνήμη. Κατὰ ταύτην, ὅταν ἔχωμεν νὰ ἐντυπώσωμεν ὕλην, ἥτις ἀπομνημονεύεται ἐποπτικῶς ἢ μηχανικῶς, μὴ ἀρκούμενοι εἰς τὴν πίστιν τῆς τοιαύτης ἀπομνημονεύσεως ἀναζητοῦμεν ἐνίσχυσιν εἰς τεχνητὰς σχέσεις καὶ ἐξωτερικὰς ὁμοιότητας ἢ παρετυμολογίας. Π.χ. παρομοιάζομεν τὸ σχῆμα τῆς Πελοποννήσου πρὸς σχῆμα φύλλου πλατάνου ἢ ἐνθυμούμεθα τὴν ὀρθογραφίαν τῆς λέξεως Μυτιλήνη, ἔχοντες ἐν τῷ νῷ ὅτι τὰ ι ἀναφέρονται ἐν τῇ λέξει κατὰ σειρὰν ἀντίθετον ἐκείνης, ἣν ἔχουν ἐν τῷ ἀλφαβήτῳ κλπ.

*2. Λειτουργία τοῦ διατηρεῖν.* Ἡ μνημονικὴ λειτουργία τοῦ διατηρεῖν ἀναλόγως τοῦ χρονικοῦ διαστήματος, καθ' ὃ συγκρατεῖται ἢ πρόκειται νὰ συγκρατηθῇ τὸ ἀπομνημονευθὲν διακρίνεται εἰς ἄμεσον, παροδικὴν καὶ διαρκῆ. α) Κατὰ τὴν *ἄμεσον* προβάλλεται ἡ ἐπὶ βραχύτατον χρόνον δι' ὡρισμένον σκοπὸν διατήρησις μιᾶς παραστάσεως. Πρὶν ἀκόμη ἀπαλειφθῇ τὸ ἐρέθισμα τελεῖται ἡ ἀνάπλασις, οὐδενὸς διαστήματος παρεμπίπτοντος μεταξὺ ἐντυπώσεως καὶ ἀναπλάσεως. Οὕτω ἀναγινώσκομεν τὴν ἐπιγραφὴν καταστήματός τινος οὐχὶ διὰ νὰ διατηρήσωμεν ἐν τῇ μνήμῃ τὰ γράμματο τῆς ἐπιγραφῆς, ἀλλὰ διὰ νὰ ἀντιληφθῶμεν ἂν εἶναι δυνατὸν νὰ πωλῇ τὸ εἶδος τὸ ὁποῖον θέλομεν ν' ἀγοράσωμεν. β) Κατὰ τὴν *παροδικὴν* διατηροῦμεν ἐπί τι μόνον διάστημα παράστασίν τινα, μετὰ τὴν πάροδον τοῦ ὁποίου δυνάμεθα νὰ τὴν λησμονήσωμεν. Οὕτω διατηροῦμεν ἐν τῇ μνήμῃ παροδικὴν ἐρώτησίν τινα, μέχρις ὅτου λάβωμεν ἀπόκρισιν εἰς ταύτην. γ) Η *διαρκὴς* ἀπομνημόνευσις εἶναι ἡ κατ' ἐξοχὴν *μνήμη*. Κύριον γνώρισμα ταύτης εἶναι ὅτι ἡ ἀνάπλασις δὲν τελεῖται ἅμα τῇ ἐντυπώσει, ἀλλὰ βραδύτερον, ὅτε αἱ πρότεραι ἐντυπώσεις ἠφανίσθησαν. Σκοπὸς τῆς ἀπομνημονεύσεως, κατ' αὐτήν, εἶναι ὄχι ἡ παροδική, ἀλλ' ἡ ἐπὶ μακρὸν χρόνον συγκράτησις τῆς ἐντυπώσεως. Εἰς τοῦτο συντελεῖ ἀφ' ἑνὸς ἡ πρόθεσις καὶ ἀφ' ἑτέρου ἡ ἐπανάληψις.

*3. Λειτουργία τοῦ ἀναπλάσσειν.* Ἀνάπλασις εἶναι ἡ ἐν τῇ συνειδήσει ἀναδημιουργία παραστάσεων. Ἡ αἰτία τῆς ἀναδημιουργίας ταύτης δὲν εἶναι πλήρως ἐξηκριβωμένη, ἐκ παλαιοτάτου δὲ χρόνου οἱ ὀπαδοὶ τῶν διαφόρων σχολῶν διαφωνοῦσι περὶ τούτου. Καὶ κατά τινας μὲν τὰ αἴτια εἶναι καθαρῶς φυσιολογικά, κατ' ἄλλους μόνον ψυχολογικὰ καὶ κατ' ἄλλους φυσιολογικὰ ταυτοχρόνως καὶ ψυχολογικά. Ἀφορμὴν εἰς τὴν ἀνάπλασιν παρέχει ἑκάστοτε ἄλλη παράστασις, μεθ' ἧς συνείρεται ἡ ἀναπλασσομένη. Οἱ νόμοι ἢ τρόποι συνειρμοῦ καὶ ἀναπλάσεως τῶν παραστάσεων εἶναι τέσσαρες: τῆς *ὁμοιότητος*, τῆς *ἀντιθέσεως*, τοῦ *συγχρονισμοῦ* καὶ τῆς *διαδοχῆς*, οἱ ὁποῖοι ὑπὸ τῶν νεωτέρων ἀνήχθησαν εἰς δύο: τῆς *ὁμοειδείας* καὶ τῆς *συναφείας*. Κατὰ τὸν τρόπον τῆς *ὁμοειδείας*, ὅμοιαι παραστάσεις ἀναπλάσσουν ἀλλήλας. Ὅμοιαι εἶναι οὐ μόνον αἱ αὐταί, ἀλλὰ καὶ αἱ ἀντίθετοι παραστάσεις, ὡς ἔχουσαι καὶ ὅμοια γνωρίσματα. Κατὰ τὸν τρόπον τῆς *συναφείας* συνείρονται καὶ ἀναπλάσσονται ὑπ' ἀλλήλων παραστάσεις συνυπάρξασαι ἐν τῇ συνειδήσει ὁπωσδήποτε.

***Ἐξέλιξις τῆς μνήμης.*** Κατὰ τὰ πρῶτα 4 ἔτη τῆς ζωῆς τοῦ ἀνθρώπου, ἡ μνήμη εἶναι ἀσθενεστάτη. Ἀπὸ τοῦ 5ου ἔτους ἄρχεται ἡ ἐνίσχυσις τῆς λειτουργίας ταύτης, ἀλλὰ καὶ τότε δὲν δύνανται νὰ διατηρηθοῦν συνεχῆ γεγονότα. Παρὰ τὴν περὶ τοῦ ἀντιθέτου κρατοῦσαν γνώμην, οἱ ἐνήλικες ὑπερτεροῦν εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς λειτουργίας τῆς μνήμης καὶ κατὰ τὴν ταχύτητα τοῦ ἐντυπώνειν καὶ κατὰ τὸ ποσὸν τοῦ διατηρεῖν καὶ κατὰ τὴν ἔκτασιν τοῦ ἀναπλάσσειν. Προϊούσης τῆς ἡλικίας αὐξάνει ἡ δεξιότης τοῦ μανθάνειν, ἀλλ' ἐλαττοῦται ἡ δεξιότης τοῦ διατηρεῖν τὰ μεμαθημένα. Οἱ παῖδες μανθάνουν δυσχερέστερον τῶν ἐνηλίκων, ἀλλὰ καὶ δυσχερῶς λησμονοῦν. Ἡ ὑπεροχὴ τῶν ἐνηλίκων, ὡς πρὸς τὴν δεξιότητα τοῦ μανθάνειν, ὀφείλεται εἰς τὸν λόγον ὅτι οὗτοι εὐχερέστερον κατανοοῦν καὶ συγκεντρώνουν τὴν προσοχήν των.

Ὅσον ἀφορᾷ τὴν σχέσιν εὐφυΐας καὶ μνήμης ὑπάρχει μεγάλη ἀμφισβήτησις. Κατὰ τὴν σήμερον κρατοῦσαν γνώμην, μνήμη καὶ εὐφυΐα δὲν ἀνταγωνίζονται, ἀλλὰ συνυπάρχουν συνήθως. Οἱ εὐφυέστεροι εἶναι καὶ οἱ εὐκολώτερον ἀπομνημονεύοντες, ἀλλά, ταυτοχρόνως, ἔλλειψις μνήμης δὲν συνεπάγεται καὶ ὑστέρησιν ὡς πρὸς τὴν εὐφυΐαν. Ἡ μνήμη ἵνα θεωρηθῇ τελεία πρέπει νὰ ἔχῃ τὰς ἑξῆς πέντε ἀρετάς: εὐκολίαν κατὰ τὴν ἐντύπωσιν, πίστιν (ἀκρίβειαν κατὰ τὴν ἀνάπλασιν), διάρκειαν, εὐρύτητα ἢ ἔκτασιν καὶ ἑτοιμότητα ἢ προθυμίαν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Offner*, Das gedächtnis (Βερολῖνον 1913). —*J. Sigmar*. Das Gedächtnis (Πάντερμπορν 1924).—*Δ. Μωραΐτου*. Ψυχολογία, συνταχθεῖσα συμφώνως πρὸς τὰ νεώτατα πορίσματα τῆς ἐπιστήμης (Ἀθῆναι 1926).—*Π. Ἀρτύπα*. Ἡ μνήμη καὶ ἡ ἐνίσχυσις αὐτῆς, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν νεωτάτων πορισμάτων τῆς ἐπιστήμης (1930). Θ. Π.

— *[Ψυχοπ.]* Εἰς τὴν ψυχιατρικὴν διακρίνομεν τὰς ἑξῆς διαταραχὰς τῆς μνήμης:

1) *Ὑπερμνησίαν*, ἤτοι αὔξησιν αὐτῆς ὑπερφυσικήν, ὡς παρατηρεῖται ἐπὶ μανίας ἢ προϊούσης παραλύσεως, εἰς ἣν ἡ ἐνίσχυσις τῆς παλαιᾶς μνήμης συνυπάρχει μετ' ἐλαττώσεως τῆς προσφάτου.

2) *Δυσμνησίαν*, ἤτοι δυσχερῆ ἀνάπλασιν ἢ ἠλαττωμένην, ἐπὶ μελαγχολίας, ἀρχομένων ἀνοιῶν, μικρονοίας κττ.

3) *Ἀμνησίαν*, ἤτοι ἀπώλειαν τῆς μνήμης, ἥτις παρατηρεῖται ἐπὶ ἀνοιῶν, καὶ δὴ τῆς προϊούσης παραλύσεως, πρεσβυτικῆς ἀνοίας κττ.

4) *Παραμνησίαν*, ἤτοι διάφορον ἐντόπισιν τῆς παραστάσεως, τὴν λεγομένην *ψευδῆ ἀναγνώρισιν*.

5) *Παροδικὴν ἀπώλειαν*, ἐπὶ ὑστερίας, ἐπιληψίας κατὰ τὰς προσβολὰς αὐτῶν.

6) *Ἀπώλειαν τῆς προσηλώσεως τῶν ἐντυπώσεων* καὶ τῆς ἀνακλήσεως αὐτῶν, τῆς ἀμέσου, ἥτις ἔχει ὡς ἀποτέλεσμα σύγχυσιν διανοητικήν.

7) *Ἀμνησίαν* τῶν λεγομένων *διπλῶν προσωπικοτήτων*, ἤτοι τῶν ἀτόμων ἐκείνων, ἅτινα περιπίπτοντα εἰς δευτέραν κατάστασιν, εἰς ἣν οὐδὲν ἐκ τῆς πρώτης ἐνθυμοῦνται, ὅταν ἐπανέλθωσιν εἰς τὴν πρώτην οὐδὲν ἐνθυμοῦνται ἐκ τῆς δευτέρας.

Ἕτεραι διαταραχαὶ τῆς μνήμης ἐπέρχονται συνεπείᾳ διαταραχῶν τῆς φαντασίας, καὶ δὴ τῆς καλουμένης *μυθομανίας*. Αὗται εἶναι ἐνσυνείδητοι ἢ ἀσυνείδητοι, ἀλλὰ καὶ αἱ ἐνσυνείδητοι γίνονται εἶτα ἀσυνείδητοι, συνεπείᾳ διαταραχῶν ἐντοπίσεως χρονικῆς τῶν ἀνακαλουμένων παραστάσεων. Τ. Α. Ζ.

**Μνήμη** *[Μυθολ.]*. —1) Ἡ αὐτὴ μὲ τὴν *Μνημοσύνην* (βλ. λ.). —2) Μία τῶν τριῶν Μουσῶν (*Παυσ.* IX. 29.3), αἵτινες ἐκαλοῦντο Μελέτη, Μνήμη καὶ Ἀοιδή. Εἰς τὰς τρεῖς ταύτας Μούσας ἐτέλεσαν πρῶτοι θυσίαν καὶ ὠνόμασαν τὸν Ἑλικῶνα ἱερὸν ὄρος αὐτῶν οἱ καὶ κτίσται τῆς πατρίδος τοῦ Ἡσιόδου Ἄσκρης υἱοὶ τοῦ Ἀλωέως Ἐφιάλτης καὶ Ὦτος. Μετὰ τούτους, ἐλθὼν εἰς Θεσπιὰς ὁ Μακεδὼν Πίερος ὥρισε τὰς Μούσας εἰς ἐννέα (βλ. λ. *Μοῦσαι*). Πιθανώτατα τὰ ὀνόματα τῶν τριῶν εἰρημένων Μουσῶν εἶναι ἐπινοήματα ἀνθρώπων τῶν μεταγενεστέρων τῶν κλασσικῶν χρόνων, οἵτινες δι' αὐτῶν ἠθέλησαν νὰ ὑποδηλώσουν τὴν διαίρεσιν τῆς τέχνης τῶν ῥαψῳδῶν εἰς ἐπινόησιν (Μελέτην), μνήμην (Μνήμην) καὶ ᾠδὴν (Ἀοιδήν). Κατά τινας ποιητὰς ἡ Μνήμη ἦτο ἡ ἐχθρὰ τῆς Λήθης. Κ.Α.Γ.

**μνημόμετρον** (τό)· ὄργανον χρησιμοποιούμενον πρὸς ἔρευναν (μέτρησιν) τῆς μνήμης.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἐκλήθη *μνημόμετρον* τὸ ὑπὸ τοῦ ἐν Βουδαπέστῃ καθηγητοῦ Ransbourg ἐπινοηθὲν εἰδικὸν ὄργανον πρὸς πειραματικὴν ἔρευναν τῆς μνήμης καὶ τῶν συναφῶν αὐτῇ ψυχικῶν λειτουργιῶν. Τὸ ὄργανον τοῦτο παρέχει εἰς τὸ ὑποκείμενον τοῦ πειράματος σειρὰν ὀπτικῶν ἐρεθισμάτων (χρώματα, ἀριθμοί, συλλαβαί, λέξεις) διαδοχικῶς καὶ ἐπὶ ὁριζόμενον ὑπὸ τοῦ πειραματιστοῦ χρονικὸν διάστημα, ἐν θυρίδι, ἡ ὁποία ὑπάρχει πρὸς τοῦτο εἰς τὴν ἄνω προσθίαν ἐπιφάνειαν τοῦ ὀργάνου. Μετὰ τὴν προβολὴν τῶν παραστάσεων τούτων ὑποβάλλονται σχετικαὶ ἐρωτήσεις ὑπὸ τοῦ πειραματιστοῦ εἰς τὸ ὑποκείμενον τοῦ πειράματος, δι' ὧν ἐξακριβοῦνται αἱ ἀρεταὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ, ἀναλόγως τῶν ἀπαντήσεων. Θ. Π.

**μνημονεῖα** (τὰ) *[Ἀρχ.]*. Ἡ λέξις ἀπαντᾷ εἰς πτολεμαϊκοὺς παπύρους καὶ σημαίνει ἀρχεῖα δη-

Digitized by Google

μοτικά, εἰς τὰ ὁποῖα κατετίθεντο συμβόλαια πολιτῶν πάσης φύσεως, ἐγγραφόμενα εἰς εὑρετήριον.

**μνημονευτικός,** *—ή, —όν*˙ ὁ ἐπιτήδειος, ὁ ἱκανὸς νὰ μνημονεύῃ, νὰ ἐνθυμῆται.

— **μνημονευτικὴ** ***ἰατρικὴ σχολὴ*** *['Ιστορ. 'Ιατρ.]*˙ βλ. λ. *ἐμπειρικὴ* ἰατρικὴ σχολή.

**μνημονεύω,** *ἀόρ. ἐμνημόνευσα— ἐμνημονεύθην*˙ κάμνω μνείαν τινός, ἀναφέρω τὸ ὄνομα ἐν τοῖς μνημοσύνοις ἢ ἐν τῇ λειτουργίᾳ, ἐπὶ τοῦ ἱερέως˙ || καθόλου, ἀναφέρω: «ἐμνημονεύθησαν χωρία ἐκ τοῦ Πλάτωνος», «ἡ μνημονευθεῖσα πρᾶξις» ἀντὶ τοῦ κακῶς λεγομένου «ἡ μνησθεῖσα πρᾶξις»˙ || ἀναμιμνήσκομαι, ἐνθυμοῦμαι.

**μνημονικὴ** (ἡ), ἢ ***μνημοτεχνικὴ*** (Mnemotechnik). Καλεῖται οὕτω ἡ τέχνη τῆς ἐνισχύσεως τῆς μνήμης διὰ διαφόρων μέσων. Περὶ τὴν μνημονικὴν διέτριψαν ἔκπαλαι πολλοί, ὅπως ὁ ποιητὴς Σιμωνίδης, οἱ σοφισταί, ὁ 'Αριστοτέλης, ὁ J. Bruno, ὁ Leibnitz καὶ ἄλλοι. 'Εννοεῖται ὅτι πολλάκις αἱ ἐπινοηθεῖσαι σχετικαὶ μέθοδοι εἶναι πλέον περίπλοκοι τῆς ἀπομνημονευτέας ὕλης. Συνηθέστερος τρόπος, ὑποκειμενικὸς πάντοτε, εἶναι ὁ διὰ τῆς ἀγχίνου λεγομένης μνήμης, καθ' ἣν ἀναζητοῦμεν ἐνίσχυσιν εἰς τεχνητὰς σχέσεις καὶ ἐξωτερικὰς ὁμοιότητας καὶ παρετυμολογίας. Π. χ. παρομοιάζομεν τὸ σχῆμα τῆς 'Ιταλίας πρὸς ὑπόδημα, ἢ ἐνθυμούμεθα ὅτι ὁ Κάρολος ὁ Μέγας ἀπέθανε τῷ 814 ἐκ τῆς φράσεως: «θάνατος ἀνδρὸς (8) ἀγαθοῦ καὶ ἐν πολέμῳ (1=δόρυ) καὶ ἐν εἰρήνῃ (4=ἄροτρον)». —Ω.

**μνημονικὸν** (τό)˙ ἡ ἱκανότης τῆς μνήμης, ἡ εὐχέρεια περὶ τὴν ἀνάπλασιν παραστάσεων, ἄλλως *ἐνθυμητικόν*: «ἔχει μνημονικὸν» ἢ «— καλὸν μνημονικόν».

**μνημονικός,** *—ή, —όν*˙ ὁ δεξιός, ὁ ἱκανὸς εἰς τὴν ἀνάμνησιν, ὁ ἔχων ἰσχυρὰν μνήμην, ἀντίθ. *ἐπιλήσμων*: «εἶναι μνημονικώτατος˙ ἐνθυμεῖται τὰ γεγονότα μὲ τὰς λεπτομερείας των»˙ || ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μνήμην, ὁ τῆς μνήμης˙ || *μνημονικὸν* (τό)˙ ὡς οὐσ. (βλ. λ.).—'Επίρρ. ***μνημονικῶς.***

— **μνημονικὰ** ***ποιήματα.*** 'Εκλήθησαν οὕτω ποιήματα, τὰ ὁποῖα ἀποβλέπουν ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν ἀπομνημόνευσιν γνώσεων, λόγῳ τῆς ἰδιότητος, ἣν ἔχει ὁ ἔμμετρος λόγος ν' ἀπομνημονεύηται εὐκολώτερον τοῦ πεζοῦ. Τὰ μνημονικὰ ποιήματα ἦσαν συνηθέστατα κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς καὶ μεταβυζαντινοὺς χρόνους καὶ εἶχον παντοῖον περιεχόμενον (γραμματικά, ἱστορικά, ἐκκλησιαστικὰ κλπ.). Τοιαῦτα ποιήματα εἶχον καὶ παλαιότεραι γραμματικαὶ τῆς ἑλληνικῆς, ἰδίᾳ δὲ τῆς λατινικῆς γλώσσης, ἐν αἷς καὶ ἡ τοῦ Σεμιτέλου, εἰς τὴν ὁποίαν οἱ περισσότεροι κανόνες καὶ αἱ ἐξαιρέσεις ἀνεφέροντο ἐμμέτρως πρὸς εὐκολωτέραν ἀποστήθισιν. —Ω.

— **μνημονικοὶ** ἢ ***παραστατικοὶ τύποι*** *[Ψυχολ.]*. 'Αναλόγως τοῦ εἴδους τῶν ἐν τῇ συνειδήσει παραστάσεων καὶ τοῦ τρόπου, καθ' ὃν γίνεται ἡ πρόσκτησις αὐτῶν, διακρίνομεν παρὰ τοῖς ἀνθρώποις τρεῖς θεμελιώδεις μνημονικοὺς τύπους: ὀπτικόν, ἀκουστικὸν καὶ κινητικόν. 'Ο *ὀπτικὸς* τύπος ἀπομνημονεύει εὐκολώτερον διὰ τῆς ὀπτικῆς ὁδοῦ, ἡ πλειονότης δὲ τῶν ἐν τῇ συνειδήσει παραστάσεών του προῆλθον ἐκ τῆς ὁράσεως. 'Ο *ἀκουστικὸς* τύπος μανθάνει τι καλύτερον ὅταν ἀκούσῃ τι, συγκρατεῖ δὲ μᾶλλον τὰς διὰ τῆς ἀκοῆς κτηθείσας παραστάσεις, αἱ ὁποῖαι καὶ πλεονάζουν ἐν τῇ συνειδήσει αὐτοῦ. 'Ο *κινητικός,* τέλος, τύπος διακρίνεται εἰς ἀρθρωτικὸν κινητικὸν καὶ εἰς γραφικὸν κινητικόν, ὧν ὁ μὲν ἐντυπώνει καλύτερον ὕλην τινα γλωσσικήν, ἂν προφέρῃ αὐτήν, διατηρεῖ δὲ καὶ ἀναπλάσσει τὰς κατὰ τὴν προφορὰν αὐτῆς γενομένας γλωσσικὰς κινήσεις, ὁ δὲ ἐντυπώνει καλύτερον ὕλην τινὰ ἂν προβῇ εἰς τὰς πρὸς γραφὴν αὐτῆς ἐνδεικνυομένας κινήσεις καὶ τούτων τὰς εἰκόνας διατηρεῖ καὶ ἀναπλάσσει βραδύτερον. 'Ο μνημονικὸς τύπος εἰς ὃν ἀνήκει ἕκαστον ἄτομον ἐξαρτᾶται ἀφ' ἑνὸς μὲν ἐκ καθαρῶς φυσιολογικῶν λόγων, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἐκ τῆς ἀσκήσεως. Διὰ τῆς ἀσκήσεως οὐ μόνον ἐνισχύεται ἡ φυσιολογικὴ μνημονικὴ προδιάθεσις πρὸς τύπον τινά, ἀλλὰ καὶ ἀλλοιοῦται πολλάκις αὕτη (ὅταν ἡ ἄσκησις εἶναι ἀντίθετος πρὸς τὴν προδιάθεσιν). Εἰς τοῦτο ἐν μέρει ὀφείλεται καὶ ἡ σπάνις ἀμιγῶν μνημονικῶν τύπων, ἐνῷ συνηθέστατοι εἶναι οἱ μεικτοὶ (*ὀπτικοακουστικός, ὀπτικοκινητικός, ἀκουστικοκινητικός, ὀπτικοακουστικοκινητικὸς* κλπ.). —Ω.

**μνημοσύνη** (ἡ)˙ τὸ γνώρισμα τοῦ μνήμονος, ἡ ἀνάμνησις, ἐνθύμησις, ἀντίθ. *λησμοσύνη*.

—**Μνημοσύνη** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Οὐρανοῦ καὶ τῆς Γαίας. 'Εκ ταύτης καὶ τοῦ Διός, συνελθόντος μετ' αὐτῆς ἐπὶ ἐννέα νύκτας εἰς τὰ ὄρη τῆς Πιερίας, ἐγεννήθησαν αἱ ἐννέα Μοῦσαι. Κατὰ τὸν Πίνδαρον ὁ Ζεὺς συνῆλθε μετ' αὐτῆς κατὰ παράκλησιν τῶν θεῶν τοῦ 'Ολύμπου, διὰ νὰ δημιουργήσῃ θείας δυνάμεις ἱκανὰς ν' ἀνυμνήσουν τὴν κατὰ τῶν Τιτάνων νίκην τοῦ Διὸς καὶ τὴν μετὰ τὴν νίκην του του ταύτην κρατήσασαν ἐν τῷ κόσμῳ τάξιν καὶ ἁρμονίαν. Κατὰ τὴν παράδοσιν λοιπὸν ταύτην ἡ Μνημοσύνη εἶναι ἡ ἀνάμνησις τῆς νίκης τοῦ Διὸς κατὰ τὴν τιτανομαχίαν. 'Αλλὰ προφανῶς ἡ Μνημοσύνη εἶναι ἡ προσωποποίησις τῆς μνήμης, ἰδιότητος ἀπαραιτήτου διὰ τοὺς ποιητὰς καὶ ἀοιδοὺς πρὸ τῆς εὑρέσεως ἢ διαδόσεως τῆς γραφῆς. 'Η Μνημοσύνη ἐτιμᾶτο ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ποιητῶν καὶ ἐλατρεύετο πολλαχοῦ τῆς ἀρχαίας 'Ελλάδος, καὶ ἰδίως ἐν 'Αθήναις, ἔνθα καὶ ἄγαλμα αὐτῆς ὑπῆρχεν ἐν ταῖς μεταξὺ τῶν πυλῶν τοῦ ἄστεως καὶ τοῦ Κεραμεικοῦ στοαῖς, παρὰ τὸ ἄγαλμα τοῦ Διός, 'Αθηνᾶς τῆς Παιωνίας, Διονύσου τοῦ Μελπομένου, τῶν Μουσῶν, τοῦ 'Απόλλωνος τοῦ Εὐβουλίδου καὶ τοῦ 'Ακράτου, δαίμονος διονυσιακοῦ, καὶ ἐν Λεβαδείᾳ, ἔνθα, παρὰ τὴν πηγὴν τῆς Λήθης, ἐκ τοῦ ὕδατος τῆς ὁποίας ἔπινον οἱ κατερχόμενοι εἰς τὸ μαντεῖον τοῦ Τροφωνίου διὰ νὰ λησμονήσωσι πάσας τὰς ἐπιγείους φροντίδας των, ἔκειτο ἡ πηγὴ τῆς Μνημοσύνης, ἐκ τοῦ ὕδατος τῆς ὁποίας ἔπινον οἱ ἀνερχόμενοι ἐκ τοῦ μαντείου, οἵτινες παρεδίδοντο εἰς τοὺς οἰκείους των ὑπὸ τῶν ἱερέων, ἀφοῦ πρότερον ἐκαθίζοντο ὑπ' αὐτῶν εἰς τὸν θρόνον τῆς Μνημοσύνης καὶ ἐρωτώμενοι ἐμνημόνευον ὅσα εἶδον εἰς τὸ ἄδυτον τοῦ μαντείου. Κατὰ τὴν λατρείαν τῆς Μνημοσύνης ἐτελοῦντο καὶ ἄναιμοι θυσίαι εἰς αὐτὴν ἐξ ὕδατος, γάλακτος καὶ μέλιτος. 'Εκ τῶν ἀγαλμάτων τῆς Μνημοσύνης, ἥτις ἀπεικονίζετο καὶ εἰς τὴν «'Αποθέωσιν τοῦ 'Ομήρου» τοῦ Πριηνέως 'Αρχελάου, ἐσώθη τὸ εἰς τὸ Βατικανὸν ἀποκείμενον, τὸ ὁποῖον εἶναι πολὺ καλῆς τέχνης. ΚΑΨ.

**μνημόσυνον** (τό)˙ μνημεῖον, μνῆμα˙ || θρησκευτικὴ τελετὴ εἰς μνήμην ἀποθανόντος.

— *['Εκκλ.]* Κατὰ τὴν ἁγίαν Γραφὴν ὑπάρχει σχέσις τῶν ἐν τῇ μέσῃ καταστάσει εὑρισκομένων ψυχῶν τῶν τεθνεώτων πρὸς ἀλλήλας καὶ πρὸς τὰς ψυχὰς τῶν ἐπὶ γῆς ζώντων. Οὕτω οἱ ἐπὶ τῆς γῆς κάμπτομεν γόνυ μετὰ τῶν νεκρῶν (Φιλ. 2,10), οἵτινες δὲν θὰ τελειωθῶσιν ἄνευ ἡμῶν ('Εβρ. 11; 40), οἱ δὲ νεκροί, ἔχοντες γνῶσιν τῆς πορείας τῆς σωτηρίας τῶν ἐπὶ τῆς γῆς, χαίρουσιν ἐπὶ τῇ προόδῳ αὐτῆς (*'Ιωάν.* 8,56, 'Αποκ. 12,10) καὶ ζητοῦσι τὴν κρίσιν καὶ ἐκδίκησιν τοῦ Θεοῦ ('Αποκ. 6,9). 'Ο πλούσιος τοῦ Εὐαγγελίου μνημονεύει τῶν ἐπὶ τῆς γῆς ἀδελφῶν αὐτοῦ (*Λουκ.* 6,23) καὶ ὁ Στέφανος θνήσκων βλέπει εἰς τὸν οὐρανὸν τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ καὶ τὸν Χριστὸν ἑστῶτα ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ (Πράξ. 7, 55). 'Η σχέσις δ' αὕτη τῶν νεκρῶν πρὸς τοὺς ζῶντας καὶ τῶν ζώντων πρὸς τοὺς νεκροὺς δὲν εἶναι σχέσις τοῦ καθ' ἕκαστον μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῦ ὅλου, οὕτως ὥστε ἡ θριαμβεύσασα 'Εκκλησία συνδέεται καὶ ἑνοῦται μετὰ τῆς στρατευομένης (*Μαρτ.* Πολυκ. 17, 1. 18, 2. *Μαρτ.* 'Ιγν. 64). 'Επὶ τῆς σχέσεως ταύτης στηρίζεται τὸ δυνατὸν καὶ ὠφέλιμον τῆς προσευχῆς τῶν νεκρῶν ὑπὲρ τῶν ζώντων καὶ τῶν ζώντων ὑπὲρ τῶν νεκρῶν.

Αἱ εὐχαὶ τῶν ζώντων ὑπὲρ τῶν νεκρῶν στηρίζονται ἐπί τε τῆς ἁγίας Γραφῆς (Β' Μακ. 12,43) καὶ τῆς ἱερᾶς Παραδόσεως. Ἤδη ὁ Τερτυλλιανὸς (De exh. cast. 11. De monog. 10. De con. mil. 3), ὁ Κυπριανὸς (Epist. 1,39.3,12) καὶ ὁ Αὐγουστῖνος (Ench. 110) δέχονται ὅτι διὰ τῆς προσευχῆς, τῆς εὐχαριστίας καὶ τῶν ἔργων ἐλεημοσύνης βοηθοῦνται αἱ ψυχαὶ τῶν νεκρῶν, ἐκ δὲ τῶν «'Αποστολικῶν Διαταγῶν» (6, 30. 8, 41) καὶ τῶν λειτουργιῶν γίνεται δῆλον ὅτι ἀρχαιοτάτη ἦτο ἡ συνήθεια τοῦ εὔχεσθαι τοὺς ζῶντας ὑπὲρ τῶν νεκρῶν. Τὴν συνήθειαν ταύτην ἐπικυροῦσι καὶ ἀρχαιόταται ἐπιγραφαὶ χριστιανικῶν τάφων, ἐν αἷς οἱ νεκροὶ ἐπικαλοῦνται ὑπὲρ ἑαυτῶν τὰς εὐχὰς τῶν ζώντων. Κατὰ τὸν 'Ιωάννην τὸν Δαμασκηνόν, αὐτοὶ οἱ ἀπόστολοι ἐθέσπισαν «ἐπὶ τῶν ἀχράντων μυστηρίων μνήμην ποιεῖσθαι τῶν πιστῶς κοιμηθέντων» (Περὶ τῶν ἐν πίστει κεκοιμημένων κεφ. 3), τοῦτο δὲ διδάσκουσι καὶ ὁ Διονύσιος ὁ 'Αρεοπαγίτης, ὁ Γρηγόριος ὁ Ναζιανζηνὸς (κεφ. 5), ὁ Χρυσόστομος (κεφ. 6) καὶ ὁ Γρηγόριος ὁ Νύσσης (κεφ. 7). Κατ' αὐτὸν αἱ εὐχαὶ τῶν ζώντων ὠφελοῦσι τοὺς ἐν πίστει κοιμηθέντας, ἰδίως ἐὰν παρ' αὐτοῖς ὑπῆρχε τάσις πρὸς τὸ ἀγαθὸν μὴ πραγματωθεῖσα ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ αὐτοὺς τοὺς εὐχομένους, διότι «πολλαπλασίονα δίδωσιν ὁ Θεὸς καὶ τῷ ὑφ' οὗ προσάγονται» (κεφ. 18) καὶ «ἐπαυξάνει ἡ φιλαδελφία, καθίσταται βεβαία ἡ τῆς ἀναστάσεως ἐλπίς, κρατύνεται ἡ πρὸς τὸν Θεὸν εὐχὴ καὶ πλατύνεται ἡ εὐεργεσία πρὸς τοὺς πένητας» (κεφ. 23 καὶ 24). 'Εν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἀνατολικὴν 'Εκκλησίαν, ἡ δυτική, δεχομένη τὸ καθαρτήριον πῦρ, ἐκλαμβάνει ἄλλως τὴν ἐπενέργειαν τῶν μνημοσύνων. Κ. Ι. Δ.

—*['Εκκλ. Δίκ.]* *Μνημόσυνα* τελοῦνται ὑπὸ τῶν ἀρχιερέων καὶ ἱερέων ὑπὲρ πάντων τῶν ἐν Κυρίῳ κεκοιμημένων ὀρθοδόξων Χριστιανῶν, καὶ μόνον ὑπὲρ αὐτῶν. Διὸ ἀπαγορεύεται ἡ τέλεσις αὐτῶν: α) ὑπὲρ τῶν μὴ Χριστιανῶν, καὶ ὑπὲρ τῶν κατηχουμένων ἄρα˙ β) ὑπὲρ ἑτεροδόξων Χριστιανῶν, ἂν καὶ ἐνίοτε ἐπιτρέπει ἡ 'Εκκλησία τὴν ὑπὲρ αὐτῶν τέλεσιν μνημοσύνων (οὕτως ἡ ἡμετέρα ἱερὰ σύνοδος διὰ τῆς ἀπὸ 12 Μαρτίου 1913 ἐγκυκλίου ἐνετείλατο τὴν κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς κηδείας τοῦ ὡς ὀρθοδόξου κηδευθέντος βασιλέως τῶν 'Ελλήνων Γεωργίου τοῦ Α', διαμαρτυρομένου ὄντος, τέλεσιν ἐπιμνημοσύνων ὑπὲρ αὐτοῦ δεήσεων)˙ γ) ὑπὲρ τῶν ἀφωρισμένων˙ δ) ὑπὲρ τῶν αὐτοχείρων. Δύναται ὅμως ἡ 'Εκκλησία ἐξ ἐπιεικείας νὰ ἐπιτρέψῃ τὰ ὑπὲρ αὐτῶν μνημόσυνα, ἐὰν οὗτοι ἐπεδείξαντο εἰλικρινῆ πρὸ τοῦ θανάτου αὐτῶν μεταμέλειαν διὰ τὸ πλημμέλημα. Δὲν ἀπαγορεύεται ὅμως ἡ τέλεσις μνημοσύνων: α) ὑπὲρ τῶν ἐν παραφροσύνῃ ἢ καθόλου καταστάσει ἀποκλειούσῃ τὴν τοῦ λογικοῦ χρῆσιν ἑαυτοὺς ἀποκτεινάντων˙ β) ὑπὲρ ὧν δὲν δύναται νὰ βεβαιωθῇ ἐὰν ηὐτοκτόνησαν ἐν παραφροσύνῃ καὶ γ) ὑπὲρ ὧν δὲν εἶναι δῆλον ἂν ὁ θάνατος ἐπῆλθεν ἐξ αὐτοχειρίας. Τέλος ἀπαγορεύεται ἡ τέλεσις μνημοσύνων ὑπὲρ τῶν ἐν μονομαχίᾳ ἢ κατ' ἀκολουθίαν τῶν ἐξ αὐτῆς τραυμάτων τελευτησάντων. Μνημόσυνα τελοῦνται καὶ ὑπὲρ πάντων καθόλου τῶν ἐν Κυρίῳ κεκοιμημένων, μάλιστα κατὰ τὴν θείαν λειτουργίαν, ὡς καὶ καθ' ὡρισμένας ἡμέρας τοῦ ἔτους, ὡς κατὰ τὸ Σάββατον τῆς 'Απόκρεω, τὸ μετ' αὐτὴν τῆς Τυροφάγου, εἴτε ὀνομαστὶ ὑπὲρ ἑκάστου τῶν κεκοιμημένων καὶ δὴ τῇ ἀπὸ τοῦ θανάτου τρίτῃ ἡμέρᾳ, τῇ ἐνάτῃ, τῇ εἰκοστῇ, τῇ τεσσαρακοστῇ, μετὰ μῆνας τρεῖς, μετὰ ἕξ, μετ' ἐνιαυτόν, ἔτι δὲ καὶ ἐν πάσῃ ἄλλῃ ἡμέρᾳ, πλὴν τῆς Μεγάλης τεσσαρακοστῆς, καθ' ἣν μόνον κατὰ τὰ Σάββατα καὶ τὰς Κυριακὰς δύνανται ταῦτα νὰ τελεσθῶσι. Πρὸς τὴν τῶν μνημοσύνων τέλεσιν δύναται καὶ ἐκ τῶν προτέρων νὰ ὁρισθῇ ἡμέρα καὶ δή: α) ἅπαξ τοῦ ἔτους˙ οὕτως ὁ πατριάρχης Σωφρόνιος ὁ Β' ὥρισε κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1779 ἵνα τῇ Κυριακῇ τῆς 'Ορθοδοξίας γίγνωνται ἐράνῳ κοινῷ τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐνδημούντων ἀρχιερέων κόλυβα ὑπὲρ τῶν κεκοιμημένων ἀρχιερέων πατριαρχῶν δι' ἐννέα σινίων. 'Η ἡμετέρα ἱερὰ σύνοδος διὰ τῆς ἀπὸ 8 Φεβρουαρίου 1913 ἐγκυκλίου ἐνετείλατο τὴν τέλεσιν μνημοσύνων ὑπὲρ τῶν ὑπὲρ πίστεως καὶ πατρίδος κατὰ ξηρὰν καὶ κατὰ θάλασσαν ἐν τῷ ἑλληνικῷ 'Αγῶνι ἀγωνισαμένων καὶ πεσόντων τῇ ἑκάστου ἔτους τρίτῃ Κυριακῇ τῆς Μεγάλης τεσσαρακοστῆς, τῇ τῆς Σταυροπροσκυνήσεως˙ ἢ β) τῆς ἑβδομάδος˙ ἢ γ) ἅπαξ τῆς ἑβδομάδος ἐν ὡρισμένῃ ἡμέρᾳ καὶ ἅπαξ τοῦ ἔτους τῇ ἐπετείῳ τοῦ θανάτου ἡμέρᾳ˙ ἢ δ) καθ' ἑκάστην ἡμέραν˙ ἢ ε) ἐφ' ἅπαξ κλπ.

Οἱ πιστοὶ δὲν ὑποχρεοῦνται νὰ φοιτῶσιν εἰς τὸν ναὸν κατὰ τὴν ἐν αὐτῷ τέλεσιν τῶν μνημοσύνων, τῆς φοιτήσεως αὐτῶν οὔσης προαιρετικῆς. Δύναται ὅμως νὰ ἐπιβληθῇ τοιαύτη ὑποχρέωσις εἰς ὡρισμένας τάξεις ἀνθρώπων διὰ κανονισμῶν καὶ μοναστηριακῶν τυπικῶν. [Πρβλ. *Κ. Μ. Ράλλη*, Περὶ τῶν μνημοσύνων κατὰ τὸ δίκαιον τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς 'Εκκλησίας (1916)]. Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**μνημόσυνος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)˙ ὁ ἀναμνηστικός, ὁ προκαλῶν ἀνάμνησιν, ὁ εἰς μνήμην τελούμενος.

**μνημοτεχνικὴ** (Mnemotechnik)˙ βλ. λ. *μνημονική*.

**μνημοῦρι** (τό)˙ δημοτ., μνῆμα, τάφος (ἐκ τοῦ λατ. memorium,—*μεμοῦρι*, κατὰ σύμφυρσιν πρὸς τὸ *μνῆμα*).

**μνήμων,** *—ονος* (ὁ, ἡ),*—ον* (τό)˙ ὁ ἐνθυμούμενος εὐκόλως, μνημονικός, ἀντίθ. *ἐπιλήσμων*: μνήμων τῶν ἐνεργειῶν, ὧν ἔτυχε»˙ || *μνήμονες*˙ ὡς οὐσ., ἐλέγοντο παλαιότερον οἱ συμβολαιογράφοι.

— *['Αρχ.]* 'Εκαλοῦντο *μνήμονες* ὑπάλληλοι τῶν ἀρχαίων ἑλληνικῶν πολιτειῶν, ἐπιφορτισμένοι νὰ ἐγγράφωσι καὶ φυλάττωσι τὰς δημοσίας καὶ ἰδιωτικὰς πράξεις, ὡς αἰτήσεις ἰδιωτῶν, ἀποφάσεις δικαστηρίων κλπ. Οἱ μνήμονες, ἄρα, ἦσαν τρόπον τινὰ ἀρχειοφύλακες˙ ἐπειδὴ δὲ συνήθως τὰ ἀρχεῖα εὑρίσκοντο ἐντὸς τῶν ναῶν, οἱ μνήμονες ἐκαλοῦντο ἄλλως καὶ *ἱερομνήμονες*. Εἰδικῶς, οἱ μνήμονες ὠνομάζοντο *γραμματεῖς, δημοσιοφύλακες, τεθμοφύλακες, ῥητροφύλακες*, ἀναλόγως τῶν ἐγγράφων, τὰ ὁποῖα ἐφύλασσον. Οἱ μνήμονες ἦσαν ἄλλοτε τρεῖς, ἄλλοτε πέντε καὶ ἄλλοτε δέκα. 'Εν 'Αλικαρνασσῷ ἦσαν δύο, ἐτησίως ἐκλεγόμενοι. 'Εν Κερκύρᾳ ὁ μνήμων ἦτο πρόεδρος τριῶν *διαιτητῶν*. 'Εν Κρήτῃ ὁ δικαστὴς μετὰ τοῦ μνήμονος μαρτυροῦσι τὴν καταδικαστικὴν ἀπόφασιν, ἐνώπιν δ' ἀμφοτέρων τούτων ὤφειλεν ὁ ζητήσας διαζύγιον σύζυγος νὰ ὑποβάλῃ ἀγωγὴν χρηματικῆς ἀποζημιώσεως. Τέλος, ἐν Σικελίᾳ οἱ μνήμονες ἔχουσι θρησκευτικὸν χαρακτῆρα. Β. Δ. Θ.

— *['Εγκυκλ.]* Διὰ τοῦ ὑπ' ἀριθμὸν 67 ψηφίσματος, τῆς 11 Φεβρουαρίου 1830, τοῦ 'Ι. Καποδιστρίου καθιερώθη ὁ θεσμὸς τῶν *μνημόνων* εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ ἐπὶ τουρκοκρατίας καὶ μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἰσχύοντος θεσμοῦ τῶν *νοταρίων* (βλ. λ.). Οἱ μνήμονες οὗτοι ἦσαν ἰσόβιοι δημόσιοι ἀξιωματικοί, ἐκλεγόμενοι ὑπὸ τοῦ ἐπαρχιακοῦ συμβουλίου ἢ τῆς δημογεροντίας, ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ διοικητοῦ, τῆς ἐκλογῆς αὐτῶν ἐπικυρουμένης ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως. Διὰ νὰ ἐκλεγῇ τις μνήμων, ἔπρεπε νὰ εἶναι κτηματίας, ἐπὶ πλέον δὲ ὤφειλε νὰ καταβάλῃ ἐγγύησιν ὅτι ἤθελεν ἐκτελεῖ τιμίως καὶ εὐσυνειδήτως τὰ καθήκοντά του, ἅτινα ἦσαν οἷα τὰ τοῦ σημερινοῦ συμβολαιογράφου. 'Απηγορεύετο εἰς τὸν μνήμονα νὰ μετέρχεται τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν ἄλλῃ ἢ ἐν ᾗ ἐτάχθη περιφερείᾳ, ὡς καὶ νὰ μετέρχεται συνηγορικάς, διοικητικάς, δικαστικὰς καὶ

Digitized by Google

ἀστυνομικὰς πράξεις. Τὸ ψήφισμα τοῦτο ἐδημοσιεύθη τὴν 26 Μαρτίου 1830 εἰς τὴν «Γενικὴν ἐφημερίδα τῆς Ἑλλάδος» (ἔτος Ε', ἀριθ. 25). Οἱ μνήμονες ἀντικατεστάθησαν βραδύτερον ἐπὶ Ὄθωνος (διὰ τοῦ Διατάγματος περὶ «ὀργανισμοῦ τῶν δικαστηρίων καὶ συμβολαιογράφων» τῆς 16 Ὀκτωβρίου 1834) ὑπὸ τῶν *συμβολαιογράφων* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μνήμων.** Ἕλλην ἰατρὸς ἐκ Σίδης, ζήσας κατὰ τοὺς χρόνους Πτολεμαίου τοῦ Εὐεργέτου, καὶ ὁ ὁποῖος πρῶτος ἠσχολήθη σπουδαίως μὲ τὴν μελέτην τῶν ἰατρικῶν συγγραμμάτων τοῦ Ἱπποκράτους. Εἰς αὐτὸν ἀποδίδονται τὰ κριτικὰ σχόλια εἰς τὸν Ἱπποκράτην καὶ ἡ πρώτη τοῦ συγγραφέως τούτου κριτικὴ ἔκδοσις, ἥτις ὅμως ἀπωλέσθη ἐνωρίς, ἀφοῦ καὶ αὐτὸς ὁ Γαληνὸς μόνον ἐξ ἀκοῆς τὴν ἐγνώριζεν. Ν. Α.

**Μνήσαρχος.** —1) Ἐκ Σάμου, υἱὸς τοῦ Εὔφρονος καὶ πατὴρ τοῦ φιλοσόφου Πυθαγόρου. Ὑπῆρξε δακτυλιογλύφος, ἔζησε δὲ κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΣΤ' καὶ ἀρχὰς τοῦ Ε' π. Χ. αἰῶνος. Παρὰ τοῦ Ἰαμβλίχου (Βίος Πυθαγόρου) φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μνήμαρχος*. —2) Υἱὸς τοῦ Πυθαγόρου καὶ ἔγγονος τοῦ ἀνωτέρω, μνημονευόμενος ὑπὸ Ἰαμβλίχου ὡς διάδοχος τοῦ Ἀρισταίου εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς σχολῆς τῶν πυθαγορείων, καὶ ὡς ἀποθανὼν νέος ἔτι. —3) Πατὴρ τοῦ τραγικοῦ Εὐριπίδου. Ν. Α.

**Μνῆσθος,** ἢ ***Μνῆσος*** *[Μυθολ.]*. Εἷς τῶν εὐγενῶν Παιόνων, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀχιλλέως κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον (Ἰλιάδ. Φ, 210). Α. Θ. Σ.

**Μνησίθεος** ὁ ***Ἀθηναῖος***. Ἰατρός, ὀπαδὸς τῆς δογματικῆς σχολῆς, ζήσας περὶ τὸ τέλος τῆς Δ' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος ἐν Ἀθήναις, ὅπου καὶ ἐτάφη, «ἱκανός, κατὰ Γαληνόν, *πάντα τὰ τῆς τέχνης καὶ οὐδενὸς δεύτερος*», ἰδίᾳ δ' ἀσχοληθεὶς περὶ τὴν ἀνατομικὴν (*Γαλ.* XV, 136. *Ὀρειβ.* II, 23). Μελετητὴς τῶν ἱπποκρατικῶν δοξασιῶν (*Ἱππ. Littré* I, 77), ἠσχολήθη καὶ περὶ τὰς δυνάμεις τῶν τροφῶν («*περὶ τῶν ἐδεσμάτων*» *Γαλ.* VI, 645) καὶ τῶν ἐν τοῖς φυτοῖς μορίων, παραδεχόμενος ἑτέρας μὲν δυνάμεις ἐν ταῖς ῥίζαις, ἑτέρας δ' ἐν τοῖς καυλοῖς, φύλλοις, καρποῖς καὶ σπέρμασιν (αὐτ. 457). Οὗτος μετὰ τοῦ Θεοφράστου καὶ τοῦ Ἀριστοτέλους ὠνόμαζε τὴν μὲν γευστὴν δύναμιν *χυμόν*, τὴν δὲ πεφθεῖσαν *χυλὸν* (αὐτ. XI, 450). Ἐγένετο μεταξὺ τῶν πρώτων, οἵτινες ἠθέλησαν νὰ μορφώσωσιν ἴδιον νοσολογικὸν σύστημα ἐπὶ τῇ βάσει λεπτολόγου διαιρέσεως τῶν νόσων. Ἀνῆκε μεταξὺ τῶν ἰατρῶν, οἵτινες μετεχειρίζοντο τὴν φλεβοτομίαν πρὸς θεραπευτικὸν σκοπὸν (*Γαλ.* XI, 163). Οὗτος ἐδόξαζεν ὅτι ὁ ἐλέφας ἐστερεῖτο χοληδόχου κύστεως (αὐτ. II, 569). Τὸ ὄνομα τοῦ Μνησιθέου ἀναφέρεται ἐπὶ ἀναθηματικοῦ ἀναγλύφου μετὰ τοῦ Ἐπεύχους καὶ Διακρίτου, τῶν υἱῶν τοῦ Διεύχους (Bull. corr. héllenique II, 88). ΑΡ. Π. Κ.

— **Μνησίθεος** ὁ ***Κυζηκηνός***. Ἄγνωστον πότε ζήσας, φέρεται ὡς συγγραφεὺς κεφαλαίου περὶ κράμβης (*Ὀρειβ.* I, 278). ΑΡ. Π. Κ.

**μνησικακία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μνησικάκου, ἡ ἀνάμνησις τοῦ κακοῦ τὸ ὁποῖον ἔπαθέ τις καὶ ἡ ἐπιθυμία πρὸς ἐκδίκησιν.

**μνησίκακος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἐνθυμούμενος τὸ κακὸν τὸ ὁποῖον ἔπαθε καὶ ἐπιδιώκων ἐκδίκησιν, ἐκδικητικός, ὁ μὴ συγγνωμονικός.

**μνησικακῶ** (*—έω*)· εἶμαι μνησίκακος, ἐπιδιώκω ἐκδίκησιν διὰ κακὸν τὸ ὁποῖον ἔπαθον.

**Μνησικλῆς.** Ὁ περίφημος ἀρχιτέκτων τῶν Προπυλαίων τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν, τὰ ὁποῖα ἤρχισαν, κατὰ Φιλόχορον (παρ' Ἁρποκρατίωνι), κατὰ τὸ 437 π. Χ. καὶ ἐπερατώθησαν, κατὰ Ἡλιόδωρον καὶ Πλούταρχον, μετὰ πενταετίαν, ἤτοι τῷ 432 π. Χ. Ὁ Μνησικλῆς, ἄρα, ἤκμασε κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τῆς Ε' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος. Εἶναι περίεργον ὅτι οὐδὲν ἄλλο ἔργον ἀναφέρεται ποιήσας ὁ μέγας οὗτος ἀρχιτέκτων, ἀλλὰ περιεργότερον ἀκόμη εἶναι ὅτι οὐδὲν εἶναι γνωστὸν ἐκ τοῦ βίου αὐτοῦ. Κατά τινα ἐπιγραφὴν ἐπὶ ἐπιστυλίου εὑρεθέντος κάτωθεν τῶν Προπυλαίων, ὁ Μνησικλῆς φέρεται ὡς υἱὸς Ἐπικράτου καὶ καλεῖται Οἰναῖος. Ἡ ἐπιγραφὴ ὅμως αὕτη, μεταγενεστέρα τῶν χρόνων τοῦ Περικλέους, ἴσως νὰ ἀναφέρηται εἰς νεώτερον ὁμώνυμον αὐτοῦ. Τὰ Προπύλαια τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν, μὲ τὸν καλλιτεχνικώτατον συνδυασμὸν τοῦ δωρικοῦ καὶ τοῦ ἰωνικοῦ ῥυθμοῦ καὶ τὴν συμμετρικὴν συσσωμάτωσιν τῶν ἀπαρτιζόντων ταῦτα διαφόρου σκοπιμότητος μερῶν, θεωροῦνται ἀρχιτεκτονικῶς ἄρτιον ἔργον ὡς ὁ Παρθενών, δικαίως δ' ὡς ἐκ τούτου ὁ Μνησικλῆς κατατάσσεται μεταξὺ τῶν μεγάλων ἀρχιτεκτόνων τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ κόσμου καὶ θεωρεῖται ὡς ἀνήκων εἰς τὸ περιβάλλον τοῦ Ἰκτίνου. Β. Δ. Θ.

**Μνησίλοχος.** Υἱὸς τοῦ τραγικοῦ Εὐριπίδου καὶ τῆς Χοιρίλης. Ὑπῆρξε πιθανῶς ὑποκριτὴς εἰς τὰ ἔργα τοῦ πατρός του, συνεργασθεὶς μετ' αὐτοῦ εἰς τὴν σύνταξιν καὶ διδασκαλίαν τῶν δραμάτων του. Ἡ μαρτυρία ὅτι καὶ αὐτὸς ἔγραψε δρᾶμα «Φαρμακοπώλην» θεωρεῖται ἀμφίβολος. Ν. Α.

**Μνησιμάχη** *[Μυθολ.]*. Μυθικὸν πρόσωπον, θυγάτηρ τοῦ Δεξαμενοῦ, βασιλέως ἐν Ὠλένῳ τῆς Ἀχαΐας. Ταύτης ἠράσθη ὁ Κένταυρος Εὐρυτίων, μὴ γενόμενος δὲ δεκτὸς ἀνήρπασεν αὐτήν, ἀλλὰ καταδιωχθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους ἐφονεύθη, ἡ δὲ Μνησιμάχη ἀπεδόθη εἰς τὸν πατέρα της. Ἡ ἁρπαγὴ τῆς Μνησιμάχης εἰκονίζεται ἐπὶ δύο ἐρυθρομόρφων ἀγγείων. Ν. Α.

**Μνησίμαχος.** Ἕλλην κωμικὸς ποιητὴς ἐν Ἀθήναις τῆς μεσαίας ἀττικῆς κωμῳδίας. Δράματα τούτου ἀναφέρει ἐκ τοῦ Ἀθηναίου ὁ Σουΐδας (*Φαβρ.* Ἑλλ. Βιβλ. τ. II, σ. 470).

**Μνησιπόλεμος.** Ἕλλην ἱστορικός, ζήσας ἐν τῇ αὐλῇ Ἀντιόχου τοῦ Μεγάλου καὶ ἐξόχως ὑπ' αὐτοῦ τιμώμενος. Συνέγραψεν ἱστορικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «*Ἱστορίαι*». Ὁ Ἐπίνικος ἀποδίδει εἰς αὐτὸν καὶ μίαν κωμῳδίαν. Ν. Α.

**Μνῆσις.** Μία ἀπὸ τὰς πολλὰς ἐρωμένας Πτολεμαίου Β' τοῦ Φιλαδέλφου, ἡ ὁποία ἦτο αὐλητρίς. Ὁ Πολύβιος λέγει ὅτι ἡ οἰκία της εἰς τὴν Ἀλεξάνδρειαν ἦτο μία τῶν ὡραιοτέρων ἰδιωτικῶν οἰκοδομῶν τῆς πόλεως.

**Μνησίστρατος.** Ἕλλην φιλόσοφος ἐκ Θάσου, μαθητὴς τοῦ Πλάτωνος. Παρεδέχετο τὴν ἡδονὴν ὡς πνευματικὴν ἀπόλαυσιν, ὡς περίπου οἱ ἐπικούρειοι.

**μνηστεία** (ἡ)· τὸ μνηστεύεσθαι, ἡ ἀμοιβαία ὑπόσχεσις γάμου μεταξὺ ἀνδρὸς καὶ γυναικός· ‖ ὁ χρόνος καθ' ὃν διατελεῖ τις ἐν μνηστείᾳ: «*εἰς τὸν καιρὸν τῆς μνηστείας μου*».

— *[Νομ.] Μνηστεία* καλεῖται ἡ περὶ συνάψεως γάμου ἀμοιβαία ὑπόσχεσις τῶν μελλονύμφων, ἥτις ὅμως δὲν ἀποτελεῖ ἀναγκαίαν προϋπόθεσιν τοῦ γάμου. Ἡ μνηστεία συνάπτεται διὰ τῆς τῶν μελλονύμφων συναινέσεως. Αὕτη παρέχεται ἄνευ πανηγυρικοῦ τινος τύπου ῥητῶς καὶ δι' ἁπλῆς ἔτι κατανεύσεως, ὡς καὶ σιωπηρῶς, ἔτι δὲ καὶ δι' ἀντιπροσώπου. Ἀπαιτεῖται δὲ καὶ ἡ συναίνεσις τῶν ἐχόντων τοὺς μνηστευομένους ὑπεξουσίους. Ἀποστέργοντος τοῦ ὑπεξουσίου μνηστεία δὲν συνάπτεται, μὴ ἀναπληρούσης τῆς τοῦ πατρὸς συναινέσεως τὴν τοῦ ὑπεξουσίου υἱοῦ, ὅστις οὐδὲ λόγον τῆς ἀρνήσεως αὐτοῦ ὀφείλει, ἐνῷ τῆς ὑπεξουσίας θυγατρὸς ἡ σιωπὴ λογίζεται ὡς συναίνεσις, οὐδὲ δύναται αὕτη ν' ἀντείπῃ, ἂν μὴ τὸ ὑπὸ τοῦ πατρὸς προτεινόμενον πρόσωπον εἶναι ἀνάξιον καὶ αἰσχρόν. Τὴν αὐτοτελῆ καὶ ἀνεξάρτητον τοῦ γάμου ἱερολογίαν τῆς μνηστείας ἀπηγόρευσε παρ' ἡμῖν ἤδη τῷ 1834 ἡ ἱερὰ σύνοδος δι' ἐγκυκλίων αὐτῆς, ἐγκρίσει τῆς κυβερνήσεως ἐκδοθεισῶν. Κατὰ τὸ ἄρθρον 69 τοῦ νῦν ἰσχύοντος καταστατικοῦ νόμου τῆς αὐτοκεφάλου Ἐκκλησίας τῆς Ἑλλάδος, ἡ κεχωρισμένως τοῦ γάμου ἱερολογηθεῖσα μνηστεία κηρύσσεται πνευματικῶς ἄκυρος ὑπὸ τῆς ἁρμοδίας πνευματικῆς ἀρχῆς, ὁ δὲ τελέσας τὴν ἱερολογίαν ἱερεὺς ὑποβάλλεται εἰς ποινὴν ἀργίας ἑνὸς ἔτους μετὰ στερήσεως τοῦ ἡμίσεος τοῦ μισθοῦ αὐτοῦ.

Ἡ μνηστεία δέον νὰ εἶναι ἀπηλλαγμένη βίας, πλάνης καὶ δόλου, ἅτινα ἐλαττώματα ἐπιδρῶσιν ἐπὶ τῆς μνηστείας, ὡς καὶ ἐπὶ γάμου. Κωλύεται δι' οὓς λόγους καὶ ὁ γάμος, ἀργούντων μόνον τῶν κωλυμάτων τῆς ἀνηβότητος (διὸ ὁ συμπληρώσας τὸ ἕβδομον τῆς ἡλικίας ἔτος ἄνηβος, ἐφ' ὅσον ἔχει συνείδησιν τῶν πραττομένων, ἔγκυρον συνάπτει μνηστείαν) καὶ τοῦ πενθίμου ἐνιαυτοῦ.

Ἡ μνηστεία προσομοιάζει πως πρὸς τὸν γάμον, καθόσον οἱ μεμνηστευμένοι: α) ὀφείλουσιν ἀμοιβαίαν πρὸς ἀλλήλους πίστιν, β) δὲν δύνανται νὰ μαρτυρῶσιν ὁ εἷς ὑπὲρ τοῦ ἑτέρου ἐνώπιον δικαστικῆς ἀρχῆς, τῆς μνηστείας ἀποτελούσης λόγον ἐξαιρέσεως, γ) τὸ πρὸς τὸν μνηστῆρα εἰς προῖκα δοθὲν ἢ ὑποσχεθὲν ἀκίνητον ἀδιατίμητον εἶναι ὡς καὶ ἐπὶ γάμου ἀναπαλλοτρίωτον, δ) δὲν δύνανται οἱ μεμνηστευμένοι πρὸ τῆς λύσεως τῆς ὑφισταμένης μνηστείας νὰ συνάψωσι νέαν, διότι αὕτη λογίζεται προσβάλλουσα τὰ χρηστὰ ἤθη. Τοὐναντίον δὲν ἰσχύουσι παρ' ἡμῖν αἱ διατάξεις τοῦ ῥωμαϊκοῦ δικαίου, καθ' ἃς: α) ἡ μνηστὴ ἀπέλαυεν ὑπὲρ τῆς προικὸς προνομίου ἐπὶ τῆς περιουσίας τοῦ μνηστῆρος, διότι τὰ τῆς κατατάξεως τῶν δανειστῶν ῥυθμίζουσιν παρ' ἡμῖν ὑπὸ τῶν ἄρθρων 940, 941 καὶ 994 τῆς πολιτικῆς δικονομίας ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὰ ἄρθρα 48 καὶ 49 τοῦ περὶ ὑποθηκῶν νόμου, καὶ β) ἡ διάταξις, καθ' ἣν ὁ μνηστὴρ ἠδύνατο νὰ ἀσκήσῃ τὴν περὶ ὕβρεως ἀγωγὴν ὑπὲρ τῆς μνηστῆς, διότι παρ' ἡμῖν ἡ μήνυσις ἐνεργεῖται ὑπὸ τοῦ παθόντος ἢ τοῦ νομίμου αὐτοῦ ἀντιπροσώπου ἐπὶ ἐγκλήσει.

Ἡ μνηστεία ἐπιρρωννύνεται: 1) Διὰ τοῦ ἀρραβῶνος, ὅστις α') συνίσταται εἰς χρήματα ἢ ἄλλα πράγματα, ὧν ἐνσωμάτων ὄντων μετατίθεται ἡ κυριότης εἰς τὸν λήπτην, ὅστις ὑποχρεοῦται εἰς ἀπόδοσιν αὐτῶν τελεσθέντος τοῦ γάμου· β') χρησιμεύει ὡς ἀπόδειξις τῆς τελεσθείσης μνηστείας, ἅμα δὲ καὶ ὡς ποινὴ ἀδικαιολογήτου λύσεως αὐτῆς, ὅτε τὸν ἀρραβῶνα ἀποβάλλει ὁ δούς, ἢ ἀποδίδει ὁ λαβὼν τὸ διπλάσιον ἢ καὶ μείζω τοῦ διπλασίου, ἂν τοῦτο ῥητῶς συνεφωνήθη ὑπὸ τῶν συμβαλλομένων. Τοὐναντίον ὁ ἀρραβὼν ἀναλαμβάνεται ὑπὸ τοῦ δόντος· ἀποδίδοται δ' ἁπλοῦς ὑπὸ τοῦ λαβόντος ἐν περιπτώσει μὴ ὑπαιτίου λύσεως τῆς μνηστείας καὶ διὰ τοῦ θανάτου τοῦ μνηστῆρος ἢ τῆς μνηστῆς, διὰ τῆς ἐπιλογῆς τοῦ μοναχικοῦ βίου ὑπὸ τοῦ ἑτέρου αὐτῶν καὶ ὁσάκις μετὰ τὴν μνηστείαν ἤθελε δημιουργηθῆ κώλυμα γάμου, ἢ ἂν κατὰ τὴν σύναψιν αὐτῆς ὑπάρχῃ εὔλογος αἰτία μονομεροῦς λύσεως, ἄγνωστος τῷ ἑτέρῳ· γ') τελεσθέντος τοῦ γάμου ἀναλαμβάνεται, εἰς πρόγαμον δωρεὰν μεταβαλλόμενος, μόνον ἐν ᾗ περιπτώσει τοῦτο ἤθελε συμφωνηθῆ ῥητῶς. 2) Διὰ ποινικῆς ῥήτρας, ἥτις α') καταβάλλεται ἐν περιπτώσει αὐθαιρέτου λύσεως τῆς μνηστείας· β') διαφέρει τοῦ ἀρραβῶνος, διότι δὲν δίδεται εἰς χεῖρας, ἀλλὰ συμφωνεῖται· γ') συνίσταται εἰς ποσόν, ὅπερ κατὰ μὲν τὸ ἰουστινιάνειον δίκαιον δὲν ἠδύνατο νὰ ὑπερβῇ τὸ τετραπλάσιον τοῦ ἀρραβῶνος, κατὰ δὲ τὴν «Ἐκλογὴν» τῶν Ἰσαύρων ἠδύνατο νὰ εἶναι καὶ μεῖζον.

Ἡ μνηστεία δύναται νὰ δώσῃ ἀφορμὴν πρὸς δωρεὰν μνηστείας, ἥτις α') δίδεται ὑπό τινος τῶν μνηστήρων ἢ ὑπὸ τρίτου· β') λογίζεται γενομένη ὑπὸ τὴν προϋπόθεσιν τῆς τοῦ γάμου τελέσεως· γ') παραμένει εἰς τὸν δωρεοδόχον ἐὰν τελεσθῇ ὁ γάμος, ἂν δὲ μὴ τελεσθῇ ὁ γάμος ἐξ ὑπαιτιότητος τοῦ μεμνηστευμένου ἢ τοῦ τὴν πατρικὴν ἐπ' αὐτοῦ ἀσκοῦντος ἐξουσίαν, τὸ μὲν δοθὲν δὲν ἀναλαμβάνεται, τὸ δ' ὑποσχεθὲν ζητεῖται παρὰ τοῦ πρὸς ὃν ἡ ὑπόσχεσις ἢ τῶν κληρονόμων αὐτοῦ, τὰ δὲ πρὸς αὐτὸν δωρηθέντα εἰς τοὺς αὐτοὺς ἀποδίδονται. Ματαιωθέντος τοῦ γάμου διὰ τοῦ θανάτου τοῦ ἑτέρου τῶν μεμνηστευμένων, ἐὰν ἡ μνηστεία δὲν ἐπεσφραγίσθη διὰ φιλήματος τοῦ μνηστῆρος πρὸς τὴν μνηστήν, τὰ δοθέντα ἀναλαμβάνονται ἑκατέρωθεν καὶ ὑπὸ τῶν κληρονόμων αὐτῶν, γενομένου δὲ φιλήματος τῶν μὲν ὑπὸ τοῦ μνηστῆρος δωρηθέντων τὸ ἥμισυ παρακρατεῖ ἡ μνηστὴ ἢ οἱ κληρονόμοι αὐτῆς, τοῦ ἑτέρου ἡμίσεος ἀποδιδομένου εἰς τὸν μνηστῆρα ἢ τοὺς κληρονόμους αὐτοῦ, τὰ δ' ὑπὸ τῆς μνηστῆς δωρηθέντα ἄνευ διακρίσεως ἀποδίδονται αὐτῇ καὶ τοῖς κληρονόμοις αὐτῆς.

Τὸ ἂν τὸ δοθὲν ἐδόθη ὡς ἀρραβών, ἢ ὡς δωρεὰ μνηστείας, εἶναι, ὡς εἰκός, ζήτημα πραγματικόν. Ἡ μνηστεία ἐπιβάλλει εἰς τοὺς μνηστευθέντας τὴν ὑποχρέωσιν τῆς μὴ ἀθετήσεως τῆς πρὸς σύναψιν γάμου ὑποσχέσεως. Καὶ δὲν δύναται μὲν ὁ ἐξ ἰδίας ὑπαιτιότητος ἀθετήσας τὴν ὑπόσχεσιν πρὸς τέλεσιν τοῦ γάμου νὰ ἐξαναγκασθῇ πρὸς τοῦτο, ὀφείλει ὅμως νὰ ἀνορθώσῃ τὴν ζημίαν τοῦ ἑτέρου. Λύεται: I) Ἀζημίως καὶ δὴ 1) Αὐτοδικαίως α') διὰ τοῦ θανάτου τοῦ ἑτέρου τῶν μνηστήρων, β') διὰ τῆς ἐπιλογῆς τοῦ μοναχικοῦ βίου ὑπὸ τοῦ ἑτέρου τῶν μεμνηστευμένων, γ') διὰ τῆς ἐπελεύσεως κωλύματος πρὸς γάμον. 2) Μονομερῶς δι' εὔλογον αἰτίαν καὶ δή, δι' ἀδικαιολόγητον ἀναβολὴν τοῦ γάμου πέρα διετίας ἐπὶ παρόντων καὶ τριετίας ἐπὶ ἀπόντων, διὰ διαφορὰν δόγματος ἢ θρησκεύματος, διὰ παράβασιν τῆς πρὸς τὸν μνηστῆρα πίστεως τῆς μνηστῆς ἢ ἀσώτου βίου τοῦ μνηστῆρος, διὰ παραφροσύνην ἢ δι' ἄλλην νόσον ἀνίατον ἢ καὶ ἀνυπόφορον. II) Οὐχὶ ἀζημίως ἐν περιπτώσει αὐθαιρέτου μονομεροῦς λύσεως αὐτῆς, δημιουργουμένης ὑποχρεώσεως πρὸς ἀποζημίωσιν διὰ δαπάνας ἀναγκαίας πρὸς τὴν σύστασιν τῆς μνηστείας, ἐφ' ὅσον δὲν περιέχεται ἐν αὐταῖς σκοπὸς ἐλευθεριότητος. Κ. Μ. ΡΑ...

— *[Ἠθικ.]* Ἡ μνηστεία ὡς ἀμοιβαία ὑπόσχεσις συνάψεως γάμου ἀποσκοπεῖ ἐξ ἠθικῆς ἀπόψεως τὴν γνωριμίαν τῶν μελλόντων νὰ συνάψωσι γάμον, οὕτως ὥστε ὁ γάμος αὐτῶν νὰ μὴ εἶναι ἀποτέλεσμα τυφλοῦ πάθους καὶ ἐπιπολαίας ἀποφάσεως. Κατὰ τὸν χρόνον τῆς μνηστείας παρέχεται ἡ εὐκαιρία εἰς τοὺς μέλλοντας νὰ συνάψωσι γάμον, ὅπως γνωρίσωσι κάλλιον ἀλλήλους καὶ πεισθῶσι περὶ τοῦ δυνατοῦ ἢ μὴ τῆς μετ' ἀλλήλων συμβιώσεως. Οὕτως ἐξασφαλίζεται κατὰ τὸ δυνατὸν ἡ ἁρμονικὴ συμβίωσις τῶν μελλόντων νὰ συνάψωσι γάμου κοινωνίαν καὶ ἀποφεύγονται τὰ διαζύγια. Ἐκ τοῦ ἠθικοῦ τούτου σκοποῦ τῆς μνηστείας προκύπτει ὅτι αὕτη δὲν πρέπει νὰ διαλύεται ἄνευ ἀποχρῶντος λόγου, οὐδὲ νὰ παρατείνεται ἐπὶ μακρόν, τοσούτῳ μᾶλλον καθ' ὅσον ἡ παράτασις αὕτη συνεπάγεται ἠθικοὺς κινδύνους. Κ. Ι.

— *[Τελετουργ.]* Ἡ ἱερολογία τῆς μνηστείας (ἀρραβῶνος) προηγεῖται τῆς τελετῆς τοῦ γάμου, καὶ γίνεται ὡς ἑξῆς: Ὁσάκις ὁ γάμος τελεῖται εἰς τὸν ναόν, θέτει ὁ ἱερεὺς τὰ δακτυλίδια εἰς τὸ δεξιὸν μέρος τῆς ἁγίας Τραπέζης. Ὁ ἀνὴρ ἵσταται ἐκ δεξιῶν καὶ ἡ γυνὴ ἐξ ἀριστερῶν, κρατοῦντες ἕκαστος ἀνὰ μίαν λευκὴν λαμπάδα, διὰ τῶν ὁποίων ὁ ἱερεὺς προηγουμένως ηὐλόγησεν αὐτοὺς ἐν σχήματι σταυροῦ. Ὁ ἱερεὺς κατόπιν θυμιᾷ καὶ λέγει τὰ εἰρηνικά, ὡς καί τινα εὐχήν, διὰ τῆς ὁποίας δέεται τοῦ Θεοῦ νὰ εὐλογήσῃ τὸ ζεῦγος τῶν μελλονύμφων, ὡς ηὐλόγησε τὸν Ἰσαὰκ καὶ τὴν Ῥεβέκκαν. Ἀκολουθεῖ ἡ εὐλογία τῶν δακτυλίων καὶ ἡ σπουδαιοτέρα τελετουργικὴ πρᾶξις τοῦ ἀρραβῶνος, καθ' ἣν ὁ ἱερεὺς μὲ τὸν χρυσοῦν δακτύλιον, τὸν ὁποῖον ὑποτίθεται ὅτι προσφέρει ἡ μνηστή, κάμνει τὸ σημεῖον τοῦ σταυροῦ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς

Digitized by Google

τοῦ ἀνδρός, λέγων: «ἀρραβωνίζεται ὁ δοῦλος τοῦ Θεοῦ.... τὴν δούλην τοῦ Θεοῦ....», ὅταν δὲ ἀπαγγέλλῃ τὸ ὄνομα τῆς γυναικός, κάμνει καὶ ἐπ' αὐτῆς τὸ σημεῖον τοῦ σταυροῦ. Τοῦτο ἐπαναλαμβάνει τρὶς μὲ τὴν ἐπισφράγισιν «εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Πατρὸς καὶ τοῦ Υἱοῦ...», ἔπειτα δὲ θέτει τὸν δακτύλιον εἰς τὴν δεξιὰν χεῖρα τοῦ ἀνδρός. Ἀκολούθως λαμβάνει τὸν ἀργυροῦν δακτύλιον τὸν προοριζόμενον διὰ τὴν γυναῖκα καὶ λέγει τὰ αὐτά, ἀρχόμενος ἀπὸ τῆς γυναικός, τέλος δὲ θέτει τοῦτον εἰς τὴν δεξιὰν χεῖρα τῆς μνηστευομένης. Κατόπιν ὁ ἀνάδοχος (κουμπάρος ἢ σύντεκνος), ὁ ὁποῖος λαμβάνεται ὡς μάρτυς καὶ συνεργὸς τῶν τελουμένων, ἀνταλλάσσει τρεῖς φορὰς τοὺς δακτυλίους καὶ ὁ ἱερεὺς συμπλέκει τὰς χεῖρας τῶν μνηστευομένων. Εἶτα ἀπαγγέλλει σχετικήν τινα εὐχήν, ἥτις ἀποτελεῖ τὴν ἐπισφράγισιν τῆς ἱερολογίας τοῦ ἀρραβῶνος. Κατὰ τὸ τυπικόν, πρέπει ἡ τελετὴ τοῦ ἀρραβῶνος νὰ γίνεται εἰς τὸν νάρθηκα, τοῦ δὲ γάμου εἰς τὸν κυρίως ναόν· ἡ διάταξις ὅμως αὕτη δὲν ἐφαρμόζεται πλέον. Ἐπίσης ἡ συμπλοκὴ τῶν χειρῶν γίνεται σήμερον κατὰ τὴν τελετὴν τοῦ γάμου ἢ τοῦ στεφανώματος. Δ. Ν. Μ.

—*[Ἐθιμοτ.]* Ἀπαγορευομένης τῆς μεθ' ἱερολογίας μνηστείας πρὸ τοῦ γάμου, τὸ ἐθιμοτυπικὸν ταύτης ταυτίζεται μὲ τὴν τελετὴν τοῦ γάμου. Ἡ πρὸ τοῦ γάμου μνηστεία εἶναι συνήθως κοσμικὴ δεξίωσις καὶ τὰ κατ' αὐτήν, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ τὸ ἔνδυμα, ὁρίζουσιν ὡς διὰ πᾶσαν τοιαύτην δεξίωσιν ἡ ὥρα καὶ ἡ εὐρύτης τῶν προσκλήσεων. Ἐν τούτοις ἁρμόζει ἰδιαιτέρως εἰς τὴν μνηστὴν ἡ λευκὴ ἐσθὴς καὶ ὄχι ἄλλο κόσμημα ἀπὸ μαργαριτάρια. Ὡς δὲ καὶ διὰ τὸ μυστήριον τοῦ γάμου, αἱ λοιπαὶ κεκλημέναι δέον νὰ φέρουν κατὰ προτίμησιν καὶ ἐκ λεπτότητος χρωματιστὰς καὶ ὄχι λευκὰς ἐσθῆτας, διὰ ν' ἀναδεικνύεται περισσότερον ἡ μνηστή. Οἱ δακτύλιοι ἀρραβῶνες εἶναι ἁπλοῖ χρυσοῖ κρίκοι· φέρουν ἐσωτερικῶς ὁ μὲν τοῦ μνηστῆρος τὸ ὄνομα τῆς μνηστῆς καὶ ὁ τῆς μνηστῆς τὸ ὄνομα τοῦ μνηστῆρος· ἦσαν δὲ παλαιότερα λεπτοί, κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἁδρότεροι καὶ εἶναι τώρα πάλιν μᾶλλον λεπτοί. Ἐν ἐλλείψει παρανύμφου τοὺς ἀνταλλάσσει εἷς τῶν γονέων, φέρονται δὲ εἰς τὸν τέταρτον δάκτυλον τῆς ἀριστερᾶς χειρός, διότι κατὰ κοινὴν δοξασίαν συνδέεται οὗτος δι' εἰδικῆς ἰνὸς μετὰ τῆς καρδίας. Τ. Δ.

— *[Λαογρ.]* Ἡ ἀμοιβαία ὑπόσχεσις γάμου *(ἀρραβὼν ἢ μνηστεία)*, κατὰ τὰ ἐπικρατοῦντα παρὰ τοῖς λαοῖς ἔθιμα, πιστοῦται κατὰ κανόνα δι' ἀνταλλαγῆς δακτυλίου, ὅστις ἀποτελεῖ τὸ κύριον αὐτῆς στοιχεῖον, δι' ὃ καὶ συνεκδοχικῶς οὗτος ἐπεκράτησε νὰ καλεῖται ἀρραβών. Τὸ ἔθιμον τοῦ δακτυλίου εἶναι παλαιότερον τῆς χριστιανικῆς θρησκείας καὶ ἦτο σύνηθες καὶ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις λαοῖς. Ἐν τῇ ἀκολουθίᾳ τοῦ ἀρραβῶνος τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας, ἐν εὐχῇ τοῦ ἱερέως, διαφαίνεται προσπάθεια πρὸς ἐξεύρεσιν συμβολικῆς ἐννοίας τῶν δακτυλίων συμφώνως πρὸς τὴν ἁγίαν Γραφήν, ἀλλὰ τὰ φερόμενα ἐξ αὐτῆς παραδείγματα εἶναι ἐξεζητημένα καὶ ἄσχετα πρὸς ἄλληλα, διότι ἐν ἄλλοις μὲν τούτων ὁ δακτύλιος δίδεται ὡς σύμβολον δυνάμεως καὶ ἐξουσίας (Ἰωσήφ, Δανιήλ), ἐν ἄλλῳ ὡς σύμβολον ἀναγνωρίσεως (Θάμαρ) καὶ ἐν ἄλλῳ πρὸς στολισμὸν (ὁ τοῦ ἀσώτου υἱοῦ). Παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ρωμαίοις, οἵτινες ἔσχον ἐπίσης τὴν συνήθειαν τοῦ δακτυλίου ὡς μνήστρου (anulus pronubus), ἔδιδεν αὐτὸν ὁ μνηστὴρ εἰς τὴν μνηστήν.

Ἡ μνηστεία γίνεται σήμερον τῇ ἀμοιβαίᾳ συναινέσει τῶν ἐνδιαφερομένων νέων. Εἰς παλαιοτέραν ὅμως ἐποχήν, ἡ ὑπόσχεσις ἐδίδετο κυρίως μεταξὺ τῶν γονέων, διότι ἡ ἐκλογὴ τῆς συζύγου ἢ τοῦ συζύγου δὲν ἀπετέλει δικαίωμα τῶν νέων, ἀλλὰ τῶν γονέων, καὶ ἠδύνατο νὰ γίνῃ καὶ πρὸ τῆς ἐνηλικιώσεως τῶν τέκνων. Συνήθως ὁ πατὴρ τοῦ νέου ἀπέστελλεν εἰς τὴν οἰκογένειαν τῆς νέας προξενήτριαν (ἥτις εἴς τινα μέρη τῆς Ἀνατολῆς πρὸς δήλωσιν τῆς ἀποστολῆς της ἔφερε διάφορα ὑποδήματα εἰς τοὺς πόδας). Αὕτη διεβίβαζε τὴν πρότασιν περὶ γάμου ἐξυμνοῦσα τὸν νέον, καὶ ἂν ἡ πρότασις ἐγίνετο δεκτή, ἀπεστέλλοντο ἀντιπρόσωποι τῆς οἰκογενείας τοῦ νέου, οἱ ὁποῖοι συνεζήτουν τὰ τῆς προικὸς καὶ προητοίμαζον τὰ τοῦ ἀρραβῶνος. Κατόπιν μετέβαινον οἱ συγγενεῖς τοῦ νέου μετὰ τῶν στενοτέρων συγγενῶν, κατήρτιζον τὸ προικοσύμφωνον, συνῆπτον τὸν ἀρραβῶνα καὶ ἀντήλλασσον δῶρα (χρήματα, κοσμήματα κ.τ.τ. ἔδιδεν ὁ γαμβρός, καὶ μανδήλια μεταξωτὰ εἰς ὅλον τὸ συμπεθεριὸ ἡ νύμφη). Ἐπίσημον τεκμήριον τοῦ ἀρραβῶνος ἀπετέλει ὁ δακτύλιος (καλούμενος κατὰ τόπους: *δακτυλίδι, ἀρραβῶνας, σημάδι, βέρα, βεργέττα, βοῦλλα, παρόλα, νισάνι κλπ.*), ὅστις συνοδεύετο πολλάκις καὶ ὑπὸ νομισμάτων μέχρι 1000 γροσίων.

Ἡ μνηστεία ἐγίνετο, ὅπως καὶ σήμερον, ἄνευ ἱεροτελεστίας, διὰ τοῦτο καὶ ἐκαλεῖτο *μικρὴ ἀρραβῶνα*, ἐνῷ ἡ δι' ἱεροτελεστίας, ἥτις ἐγίνετο εὐθὺς πρὸ τῆς γαμηλίου ἱεροτελεστίας ἢ ὀλίγας ἡμέρας πρὸ αὐτῆς, ἐκαλεῖτο *μεγάλη ἀρραβῶνα*. Ἐνιαχοῦ οἱ δακτύλιοι, οἵτινες προσεφέροντο ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ, ἐτίθεντο ἐπὶ ἄρτου. Ὁ γαμβρὸς μετὰ τὴν δόσιν τῆς ὑποσχέσεως εἰσήγετο ἐπισήμως εἰς τὴν οἰκίαν τῆς μνηστῆς, ἀφοῦ ἐπάτει ἐπὶ σιδήρου τοποθετημένου εἰς τὸ κατώφλιον. Μετὰ τὴν μνηστείαν, ἀντὶ νὰ ἐπακολουθήσῃ στενοτέρα γνωριμία μεταξὺ τῶν μεμνηστευμένων, τοὐναντίον ἦτο ἀπηγορευμένη κάθε συνάντησις, καὶ τοιουτοτρόπως ἤροντο αἱ δυνατότητες τῆς ἐκπληρώσεως τοῦ ἠθικοῦ σκοποῦ τῆς μνηστείας, ὅστις συνίσταται εἰς τὴν πρὸ τοῦ γάμου ἀλληλογνωριμίαν τῶν ἐνδιαφερομένων καὶ τὴν ἐξακρίβωσιν τοῦ ἂν δύνανται νὰ συζήσωσιν ὡς κοινωνικὰ ὄντα. Ἡ μνηστεία διήρκει πολλάκις ἐπὶ μῆνας καὶ ἔτη, ὁσάκις μάλιστα συνέβαινε νὰ εἶναι ἀνήλικοι οἱ μνηστευθέντες. Ἡ μνηστεία διελύετο ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας κατὰ τὰ κρατοῦντα νόμιμα, τὰ ὁποῖα ἀπέρρεον ἐκ τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου καὶ τῶν σχετικῶν διατάξεων Λέοντος τοῦ Σοφοῦ καὶ Ἀλεξίου τοῦ Κομνηνοῦ. [Πρβλ. *Ν. Γ. Πολίτου, Λαογραφικὰ σύμμεικτα τόμ. Β'*, σ. 224 κ. ἑξ.] — Ω.

**μνήστευσις**, *—εως (ἡ)*· ἡ ἐνέργεια τοῦ μνηστεύειν, μνηστεία, ἀρραβώνιασμα.

**μνηστευτικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μνηστείαν, ὁ τῆς μνηστείας.

**μνηστεύω**, *ἀόρ. ἐμνήστευσα—ἐμνηστεύθην, παθ. μετχ. μεμνηστευμένος*· ἀρχ., ζητῶ γυναῖκα εἰς γάμον, ἄλλως *μνῶμαι*· || *παθ. μνηστεύομαι*· ἀρραβωνίζομαι, ὑπόσχομαι ἐπισήμως γάμον: «μνηστεύομαι τὴν θυγατέρα τοῦ τάδε»· || ἀλληλοπαθῶς: «ἐμνηστεύθησαν», «οἱ μεμνηστευμένοι».

**μνηστή** (ἡ), θηλ. τοῦ *μνηστήρ*, ἡ μεμνηστευμένη γυνή, κοιν. *ἀρραβωνιαστική*: «πηγαίνω 'ς τὴ μνηστή μου».

**μνηστήρ**, *—ῆρος* (ὁ), θηλ. *μνηστὴ* (ἡ)· ὁ μεμνηστευμένος, κοιν. *ἀρραβωνιαστικός*: «τὰ δῶρα τοῦ μνηστῆρος πρὸς τὴν μνηστήν»· || ὁ ζητῶν γυναῖκα εἰς γάμον: «οἱ μνηστῆρες τῆς Ἀγαρίστης, — τῆς Πηνελόπης»· || καθόλου, ὁ ἐπιδιώκων νὰ ἐπιτύχῃ ἀξίωμά τι: «οἱ μνηστῆρες τοῦ θρόνου, — τῆς καθηγεσίας, — τοῦ ὑπουργείου».

**Μνηστὴρ** (Mnester). Περίφημος Ρωμαῖος μῖμος, εἷς τῶν εὐνοουμένων τοῦ Καλιγούλα, ἀγαπηθεὶς παρὰ τῆς Μεσσαλίνας ἐπὶ Κλαυδίου καὶ ἀποκρούσας τὰς προτάσεις της διὰ νὰ μὴ ἐξοργίσῃ τὸν Κλαύδιον. Ἀλλ' ὁ αὐτοκράτωρ ἐπὶ τῇ καταγγελίᾳ τῆς Μεσσαλίνας διέταξε νὰ ραβδισθῇ ὁ Μνηστήρ, ὅπως ἐξαναγκασθῇ νὰ ἐνδώσῃ εἰς τὴν ἐπιθυμίαν τῆς συζύγου του. Βραδύτερον ἐφονεύθη μετὰ τῆς Μεσσαλίνας. Τ. Δ.

**μνηστήριος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μνηστῆρα, ὁ τοῦ μνηστῆρος: «μνηστήρια δῶρα».

**μνῆστρον** (τό)· τὸ σύμβολον τῆς μνηστείας, ὁ δακτύλιος τοῦ ἀρραβῶνος· || πληθ. *μνῆστρα*· τὰ ἀνταλλασσόμενα μεταξὺ τῶν μνηστήρων δῶρα.

— *[Ἐγκυκλ.]* *Μνῆστρα* καλοῦνται γενικῶς τὰ δῶρα, τὰ ὁποῖα ἀνταλλάσσονται μεταξὺ τῶν μελλονύμφων κατὰ τὴν μνηστείαν, εἰδικώτερον δὲ τὰ δακτυλίδια, τὰ ὁποῖα θεωροῦνται ὡς σημεῖα ἀμοιβαίας ὁμολογίας. Ἄλλοτε οἱ δακτύλιοι οὗτοι ἦσαν χρυσοῦς μὲν διὰ τὸν ἄνδρα (προσφερόμενος ὑπὸ τῆς γυναικός), ἀργυροῦς δὲ διὰ τὴν γυναῖκα (διδόμενος ὑπὸ τοῦ ἀνδρός). Ὁ Συμεὼν Θεσσαλονίκης ἔχει τὴν γνώμην ὅτι οὗτοι πρέπει νὰ εἶναι σιδηροῦς (εἰς ἔνδειξιν στερρότητος) διὰ τὸν ἄνδρα καὶ χρυσοῦς (εἰς ἔνδειξιν ἁπαλότητος καὶ καθαρότητος) διὰ τὴν γυναῖκα. Σήμερον ὅμως κατασκευάζονται συνήθως ἀμφότεροι ἐκ χρυσοῦ καὶ φέρουσιν ἐσωτερικῶς κεχαραγμένα μὲ μικρὰ γράμματα τὰ ὀνόματα τῶν μνηστευομένων. Ἡ συνήθεια τῶν μνήστρων ἢ δακτυλίων εἶναι πολὺ παλαιά, τὴν εἶχον δὲ πρὸ τῶν Χριστιανῶν καὶ οἱ Ἰουδαῖοι καὶ οἱ ἐθνικοί. Ὁ Πλαῦτος, κατὰ τὸν Β' π. Χ. αἰῶνα, ἀναφέρει ὅτι ὁ μνηστήρ, διδων ὑπόσχεσιν γάμου, παρεῖχεν ὡς δῶρον σιδηροῦν τινα δακτύλιον (Miles gloriosus IV, 1, 11). Ἡ συνήθεια τοῦ ἁπλουστάτου καὶ ἄνευ πολυτίμων λίθων σιδηροῦ δακτυλίου ἐξηκολούθησεν ἐν Ρώμῃ ἐπὶ πολὺν χρόνον καὶ μετὰ τὴν ἐπικράτησιν ἀλλαχοῦ τοῦ ἐθίμου τῆς δωρεᾶς χρυσοῦ δακτυλίου. Τὸ ἔθιμον τοῦτο παρὰ τοῖς Χριστιανοῖς, ὡς φαίνεται ἐκ τοῦ Τερτυλλιανοῦ (Ἀπολογητικός, κεφ. 6) ἐπεκράτησε κατὰ τὸν Β' αἰῶνα· ὁ δακτύλιος ὅμως τοῦ ἀρραβῶνος δὲν φαίνεται νὰ εἶχε παρὰ τοῖς ἀρχαίοις τὴν ἀξίαν καὶ σπουδαιότητα, ἣν τῷ ἀπέδωσαν οἱ μεταγενέστεροι. Μεταξὺ τῶν ὀλίγων εὑρεθέντων ἀρχαίων χριστιανικῶν δακτυλίων συγκαταλέγεται καὶ βυζαντινός τις δακτύλιος τῶν μέσων τοῦ Ε' αἰῶνος, εὑρεθεὶς ἐν Ἀθήναις καὶ παριστῶν τοὺς δύο συζύγους. Δ. Ν. Μ.

**Μνίζος** (τουρκ. *Ἀγιάς*) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Ἀγκύρας, κειμένη ἐπὶ τῆς κλιτύος ὄρους ὑψηλοῦ, 750 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν καὶ 45 χλμ. πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς Ἀγκύρας. Πόλις ἀκμάζουσα ἄλλοτε διὰ τὸ ἐν αὐτῇ ἐμπόριον τοῦ τιφτικίου, ἤτοι τοῦ ἐρίου τῶν αἰγῶν τῆς Ἀγκύρας, ὧν τὰ ποίμνια παρ' αὐτὴν ἦσαν ἄλλοτε πολυάριθμα.

**μνίον** (τὸ) (Mnium) *[Βοτ.]*. Γένος βρυοφύτων τῆς οἰκογενείας τῶν *βρυοειδῶν*, περιλαμβάνον ἀρκετὰ εἴδη φυόμενα εἰς ὑγροὺς τόπους καὶ παρὰ τὴν βάσιν τοῦ κορμοῦ διαφόρων δένδρων. Δ. Ν. Π.

**μνῷται** (οἱ), ἢ *μνῶται [Ἀρχ.]*. Οὕτως ἐκαλοῦντο ἐν Κρήτῃ οἱ δημόσιοι δοῦλοι, οἱ δοῦλοι τοῦ κράτους, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς ἰδιωτικούς, οἵτινες ἐλέγοντο *κλαρῶται* ἢ *ἀφαμιῶται* καὶ *Fοικεῖς*. Ἡ τάξις τῶν δημοσίων δούλων ἐλέγετο καὶ *μνῴα* ἢ *μνοΐα*. Τὴν λέξιν ἐτυμολογοῦν ἄλλοι ἐκ τοῦ μένω καὶ ἄλλοι ἐκ τοῦ μινωΐα. Ἄγνωστον ἂν οἱ μνῷται εἶχον τόσα δικαιώματα, ὅσα οἱ Fοικεῖς τῶν ἐν τῷ κώδικι τῆς Γόρτυνος ἀναφερόμενοι, οἱ ὁποῖοι διαφόρως πρὸς τοὺς ἐν Λακωνίᾳ εἵλωτας μόνον πολιτικῶν δικαιωμάτων ἐστεροῦντο, ἔχοντες τὸ δικαίωμα τοῦ συνάπτειν γάμον, κληρονομεῖν καὶ τὸ τῆς ἰδιοκτησίας. Ν. Ε. Π.

**Μοαλὶτς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀγκυροβόλιον τῆς νοτίου ἀκτῆς τῆς Προποντίδος (πλάτ 40°24' Β., μῆκ. 28°31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), 18 μίλλια δυτικῶς τῶν Μουδανιῶν καὶ πρὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Μοαλὶτς ἢ Σουσουρλοῦ τσάϊ (ἀρχ. *Ρύνδακος*). Σ. Ε. Λ.

**«Μο'αλλακάτ»**, ἢ **«Μου'αλακάτ»**, ἢ **«Ἄλ-μου' αλλακάτ»** («Τὰ ἀνηρτημένα»). Συλλογὴ ἑπτὰ ἀραβικῶν ποιημάτων τῆς προϊσλαμικῆς (τῆς πρὸ τοῦ Ζ' μ. Χ. αἰῶνος) ἐποχῆς, οὕτω κληθέντα, διότι παρέμενον, ὡς λέγεται, ἀνηρτημένα ἐπὶ τῶν παραπετασμάτων τῆς Καάβας ἐν Μέκκᾳ. Κατὰ τὴν ὑπὸ ὀλίγων μόνον Ἀράβων ἱστορικῶν ἀναφερομένην φήμην ταύτην, τὰ «Ἀνηρτημένα» ποιήματα ἦσαν γεγραμμένα διὰ χρυσῶν γραμμάτων εἰς κοπτικὴν γραφήν. Ἀλλ' οἱ κυριώτεροι Ἄραβες ἱστορικοὶ θεωροῦσιν ἀνυπόστατον τὴν φήμην, δεδομένου ἄλλωστε ὅτι κατὰ τὴν προμωαμεθανικὴν περίοδον τὰ ἀραβικὰ ποιήματα, πλὴν ἴσως ἐπιστολῶν εἰς στίχους, δὲν ἐγράφοντο, ἀλλὰ μετεδίδοντο διὰ ζώσης φωνῆς ὑπὸ ραψῳδῶν, ὡς ἀρχικῶς καὶ τὰ ὁμηρικὰ ἔπη. Ἄλλοι ἀρνοῦνται ὅτι οὔτε κἂν εἰς τὴν προϊσλαμικὴν ἀραβικὴν ποίησιν ἀνάγεται ἡ «Μο'αλλακάτ» ἀλλ' εἶναι ἔργον μεταγενέστερον ἢ συγγραφὴ κατ' ἐκλογὴν παλαιῶν ποιημάτων ὑπὸ ραψῳδοῦ τινος. Ν. Μ.

**Μοαούγια** *ἔμπν Ἀμπού Σοφιάν*. Ἦτο διοικητὴς τῆς Συρίας, ὅταν τῷ 655 (35 Ἐγ.), ἀνεγνωρίσθη καλίφης ὁ γαμβρὸς τοῦ προφήτου Ἀλῆς ἔμπν Ἀμποῦ Τάλλεμπ. Ὁ Μοαούγια ὡς καὶ ὁ πλησίον του μένων πορθητὴς τῆς Ἀλεξανδρείας Ἄμρ ἔλ Ἄας δὲν ἀνεγνώρισαν τὸν Ἀλῆν. Συνεκεντρώσας ὅθεν ἰσχυρὰς δυνάμεις ἐβάδισε κατὰ τοῦ νέου καλίφου ἑδρεύοντος ἐν Κούφᾳ. Μετὰ πολλοὺς ἀγῶνας συνεφωνήθη τέλος νὰ διαμοιράσωσι τὸ κράτος, ὥστε νὰ ὑπάρχωσι δύο ταυτοχρόνως καλίφαι, ἐπειδὴ δὲ κατὰ τὴν διαιτησίαν ἡδικήθη ὁ Ἀλῆς, ἐπανελήφθη ὁ ἀγών. Τρεῖς φανατικοὶ ἀπεφάσισαν τότε, χάριν τῆς γενικῆς εἰρήνης, νὰ δολοφονήσουν τὸν Ἀλῆν, τὸν Ἄμρ καὶ τὸν Μοαούγιαν. Ὁ Ἀλῆς ἐφονεύθη, ἀλλ' ὁ Μοαούγια ἐτραυματίσθη μόνον, ἀντὶ δὲ τοῦ Ἄμρ ἐφονεύθη ὁ γραμματεύς του. Ἐκ τῶν υἱῶν τοῦ Ἀλῆ ὁ Χάσσαν ἀνεκηρύχθη ὑπὸ τῶν κατοίκων τῆς Κούφας καλίφης εἰς διαδοχὴν τοῦ πατρός, ἀλλὰ παρῃτήθη χάριν τῆς εἰρήνης, ὁ δὲ Χουσσὲν ἀπέθανεν οἰκτρῶς. Κύριος τῆς αὐτοκρατορίας ἀπέμεινεν ὁ Μοαούγια, γενόμενος ἱδρυτὴς τῆς δυναστείας τῶν Ὀμμαϊαδῶν. Μετὰ τὸν Ἀλῆ ἐξέλιπεν ἡ σειρὰ τῶν «νομίμων καλιφῶν». Ὁ Μοαούγια κατήργησε τὸ αἱρετὸν τοῦ καλίφου ὑπὸ τοῦ λαοῦ καὶ ὥρισε διάδοχόν του τὸν υἱόν του Γιαζίτ. Ἐγκατασταθεὶς εἰς Κούφαν διώρισε διοικητὴν τῆς Αἰγύπτου τὸν Ἄμρ ἔλ Ἄας. Τὸ 50ὸν ἔτος τῆς βασιλείας του κατέλαβε δι' αἰγυπτιακῶν στρατευμάτων τὴν Κυρηναϊκὴν καὶ ἔκτισε τὴν Κερουὰν ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας Κυρήνης. Ἀπέθανεν 73 ἐτῶν εἰς Δαμασκόν. Γ. Λ. Α.

—**Μοαούγια** *ἔμπν Γιαζίτ*. Ἔγγονος τοῦ προηγουμένου. Θανόντος ἐκείνου, ὁ υἱὸς τοῦ Ἀλῆ καὶ τῆς Φατιμᾶς, Χουσσέν, καὶ ὁ Ἀβδουλλὰχ ἔμπν Ζομπεῒρ ἠρνήθησαν ν' ἀναγνωρίσουν τὸν Γιαζίτ, ἐπιμένοντες εἰς τὴν αἱρετὴν ἀνάδειξιν τοῦ καλίφου. Ἀλλ' ὁ Γιαζὶτ προλαβὼν τὸν μὲν Χουσσὲν ἐφόνευσε διὰ δολοφόνων του, ἐναντίον δὲ τοῦ Ἀβδουλλὰχ ἔστειλε στρατὸν ἐκ 12 χιλ. ἀνδρῶν, ὅστις ἐξεπόρθησε τὴν Μεδίναν, κατέσφαξε τοὺς κατοίκους καὶ ἐπυρπόλησε τὴν πόλιν, εἶτα δέ, ἐπειδὴ ἡ Μέκκα ἀνεκήρυξεν ἐν τῷ μεταξὺ καλίφην τὸν Ἀβδουλλάχ, ἐβάδισε κατὰ τῆς ἁγίας πόλεως. Ἐκαίετο ἤδη ἡ Καάμπα, ὅταν ἠγγέλθη ὁ θάνατος τοῦ Γιαζὶτ προελθὼν ἐκ τῶν καταχρήσεων. Τὸν διεδέχθη ὁ υἱὸς τοῦ Μοαούγιας (684), ὅστις ὅμως μετά τινας ἡμέρας ἀπέθανε καὶ ἀπέμεινε καλίφης ὁ Ἀβδουλλάχ. Γ. Λ. Α.

**Μοασάδχ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ Στράβωνα ὀνομασία τῆς πόλεως *Μασάδα* (βλ. λ.).

**μοατζίρης** (ὁ), ἢ *μοχατζίρης* (ἀραβ. *μοχατζίρ*, ὅπερ ἐκ τοῦ *χιτζρέτ = μετανάστευσις*)· μετανάστης, πρόσφυξ· ἄνθρωπος ἐνδεής.

**Μοάτσος** (βλ. λ. *Μουάτσος*).

**Μοβίλα** (Movila), **Γαβριήλ**. Ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας, ἀναχθεὶς εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦτο τῷ 1618 τῇ συνδρομῇ τῶν βογιάρων. Ἐξεθρονίσθη τῷ 1620 ὑπὸ τῶν Τούρκων. Κ. Μ. Μ.

Digitized by Google

—**Μοβίλα** (Movila), *Ἱερεμίας*. Ἡγεμὼν τῆς Μολδαυίας (1595—1606). Κατήγετο ἐξ ἀρχαίας μολδαυϊκῆς οἰκογενείας, ἐγκατεστάθη δὲ εἰς τὴν ἀρχὴν ὑπὸ τοῦ μεγάλου καγκελλαρίου τῆς Πολωνίας Ζαμοῦσκι, ἀντικαταστήσας τὸν Στέφανον Ραζβάν. Ὑπῆρξεν ἀφωσιωμένος εἰς τοὺς Πολωνοὺς προστάτας του καὶ πιστὸς ὀπαδὸς τῶν πολιτικῶν των συμφερόντων. Κατὰ τὸ 1596 ὑπέστη τὴν ἐπίθεσιν τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας Μιχαὴλ τοῦ Γενναίου, καὶ μετὰ τέσσαρα ἔτη νέαν ἐπίθεσιν, ἐκδιωχθεὶς τῆς ἕδρας του. Κατὰ τὸ τέλος τοῦ ἰδίου ἔτους ἀποκατεστάθη πάλιν εἰς τὴν ἀρχήν, παραμείνας μέχρι τοῦ θανάτου του. Γ. Ι. Β.

**Μογγολία.** Χώρα τῆς Κεντρικῆς Ἀσίας, κειμένη κατὰ τὸ ΒΑ. αὐτῆς τμῆμα, μεταξὺ τῆς Σιβηρίας, τῆς Μαντζουρίας, τῆς Κίνας καὶ τοῦ Τουρκεστάν. Ἡ Μογγολία, ἥτις ἀπετέλει ἄλλοτε μικρὸν μόνον τμῆμα τοῦ ἀπεράντου κράτους τῶν Μογγόλων (βλ. κατωτ. *[Ἱστορ.]*), περιῆλθεν ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος διαδοχικῶς ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Ρώσων, τῶν Τούρκων καὶ τῶν Περσῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1644 ὑπὸ τοὺς Κινέζους, ὑφ' οὓς καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1921. Καθωρίζετο δὲ τότε ἡ χώρα: πρὸς Β. μὲν ὑπὸ τῶν σιβηρικῶν ρωσικῶν κυβερνείων τοῦ Τόμσκ, τοῦ Γιενισέϊσκ καὶ τῆς Ἰρκούτσκης· πρὸς Α. ὑπὸ τῆς Μαντζουρίας καὶ τῆς κινεζικῆς ἐπαρχίας Λιάο-Τούγκ· πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς κυρίως Κίνας (ἐπαρχίαι Πὲ-τσὶ-λί, Σὰν-σί, Σὲν-σί, Κὰν-σοῦ) καὶ τοῦ κινεζικοῦ Τουρκεστὰν (Χσὶν-σὶν καὶ Τιὰν-σὰν-πὲ-λού)· πρὸς Δ. δὲ ὑπὸ τῶν σιβηρικῶν ἐπαρχιῶν Σεμιρετσνὲκ καὶ Σεμιπαλατίνσκ. Ἐκ τοῦ ἐδάφους της τούτου μέγα πρὸς Ν. τμῆμα (τὸ ἀποτελοῦν τὴν λεγομένην Ἐγγὺς Μογγολίαν) διεμοιράσθη ἀπὸ τοῦ 1912 μεταξὺ τῶν ἡμιαυτονόμων τότε κινεζικῶν ἐπαρχιῶν Τζεχόρ, Τζαχάλ, Σουϊγιουὰν καὶ Κανσοῦ, τὸ δὲ ὑπόλοιπον (Ἄπω Μογγολία) ἀπετέλεσε τὰς δύο νεοσυστάτους δημοκρατίας, τῆς *Μογγολίας* καὶ τῆς *Τάννου-Τούβα* (βλ. κατωτ. *[Πολιτ. Γεωγρ.]*).

—[ΦΥΣ. ΓΕΩΓΡ.] Ἡ Μογγολία ἐν τῷ συνόλῳ της διακρίνεται εἰς τρεῖς μεγάλας περιοχάς, διαφερούσας μεταξύ των ὄχι μόνον κατὰ τὴν φύσιν τοῦ ἐδάφους, ἀλλὰ καὶ κατὰ τὸ κλῖμα, τὴν χλωρίδα καὶ τὴν πανίσκην αὐτῶν. Ἡ πρώτη, καταλαμβάνουσα τὸ κεντρικὸν καὶ νότιον τμῆμα τῆς χώρας, ἀποτελεῖται ἀπὸ τὴν πετρώδη ἔρημον *Γκόμπι*, τὴν ὁποίαν ὀνομάζουν ἐπίσης καὶ *Μογγολικὴν Σαμό*. Ἡ δευτέρα, πρὸς τὰ ΒΑ., ἀπαρτίζεται ἐξ ἀθροίσματος πολλῶν ὀροσειρῶν, αἵτινες ἐκπορεύονται πᾶσαι ἀπὸ τοῦ συγκροτήματος τῶν Ἀλταΐων ὀρέων καὶ ἀκολουθοῦσι παράλληλον μεταξύ των κατεύθυνσιν ἀπὸ ΒΔ. πρὸς ΝΑ. Ἡ τρίτη, τέλος, κατέχουσα τὸ ΝΑ. τῆς χώρας τμῆμα, περιλαμβάνει τὰ δύο ὀρεινὰ συγκροτήματα τοῦ Μεγάλου Κίγκαν καὶ τοῦ Ἴνσαν, καθὼς καὶ πολυαρίθμους δευτερευούσας ὀροσειράς, ἀποσπωμένας ἀπὸ τούτων καὶ προχωρούσας πρὸς τὰ Ν. καὶ πρὸς τὰ Α. Ἡ τελευταία αὐτὴ περιοχή, ἐν τῇ ὁποίᾳ σχηματίζονται πολλαὶ καλλιεργήσιμοι κοιλάδες, ἀποτελεῖ οὕτως εἰπεῖν τὴν μεταβατικὴν βαθμῖδα μεταξὺ τῶν μογγολικῶν ἐρήμων καὶ τῶν μεγάλων πεδιάδων τῆς Μαντζουρίας καὶ τῆς Κίνας.

***Ὄρη.*** Τὸν ὀρεογραφικὸν κόμβον τῆς Μογγολίας ἀποτελεῖ ἡ ἀνατολικὴ ἄκρα τῶν Ἀλταΐων *(Μέγα Ἀλτάϊ)*, ἐπὶ τῆς ὁποίας ὑψοῦται ἡ γιγαντιαία κορυφὴ τοῦ *Κάνας*. Ἐκ τοῦ ὄγκου τούτου ἀποσπᾶται ἡ ὀροσειρὰ τοῦ *Μογγολικοῦ Ἀλτάϊ*, ἐκτεινομένη, ἀπὸ ΒΔ. πρὸς ΝΑ. μέχρι 83° 28' ἀνατ. μήκους καὶ 48°30' βορ. πλάτους. Μέχρι τοῦ λαιμοῦ *Οὐλὰν-Νταμπὰ* (91°23' ἀνατ. μῆκος, 47°10' βορ. πλάτος) σύγκειται ἐξ ὑψηλοτάτων ὀρέων κεκαλυμμένων ὑπὸ αἰωνίων χιόνων, περαιτέρω δὲ σχηματίζει κατὰ σειρὰν τὰ ὄρη *Ἀλτάϊν-Νουρού, Καργκάϊν-Μπαρούν* καὶ *Μπουρχὰν-Οὐλά*, ὅπου ἡ κορυφὴ *Νταμπὰ* (ὕψους 2.820 μ.).

Ἡ ὀροσειρὰ *Ἰοντὶν - Οὐλὰ* ἀρχίζει ἀπὸ Δ. δι' ὄρους ὕψους 4.000 μ., τοῦ *Ἰκὲ-Μπόγκντο*, καὶ τελειώνει πρὸς Α. μὲ τὴν κορυφὴν *Ντζασακτοὺ-Μπόγκντο* (4.300 μ.), τὴν ὑψηλοτέραν τοῦ συγκροτήματος τῶν Ἀλταΐων.

Ἀπὸ τοῦ ὄγκου τῶν Ἀλταΐων ἀποσπῶνται ἐπίσης πρὸς ΒΑ. τὰ *Σαγιανικὰ ὄρη* (ὑψηλότερα κορυφὴ *Ἀλτάϊν-Τσιτσίκ*, 3.335 μ.), ἀπὸ τῶν ὁποίων ἐκπορεύονται ἄλλαι διακλαδώσεις παράλληλοι πρὸς τὸ Μογγολικὸν Ἀλτάϊ. Μεταξὺ τῶν δύο τούτων συγκροτημάτων καὶ κατὰ τὴν θέσιν τῆς κοινῆς των ἀφετηρίας κεῖται ἡ μεγάλη λίμνη Οὔμπσα-Νόρ. Πλησίον ταύτης ἀρχίζει ἡ ὀροσειρὰ *Ταννοΰλα* (ἀπὸ τῆς διαβάσεως *Τσαπτὰν-Νταμπά*, ὕψος 3.218 μ.), ἥτις διευθυνομένη κατ' ἀρχὰς πρὸς ΒΑ. καὶ εἶτα πρὸς ΝΑ., χθαμαλοῦται περαιτέρω καὶ τερματίζεται μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Σελένγκα καὶ τοῦ παραποτάμου του Ἐκὲ-Γκόλ. Μετὰ τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης συναντῶνται τὰ ὄρη *Χαγκάϊ*, τῶν ὁποίων ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ *Μπογκντὸ-Οὐλὰ* σκεπάζεται ἀπὸ αἰωνίας χιόνας.

Ἡ μεσημβρινὴ πλευρὰ τοῦ Χαγκάϊ, ἀντικρύζουσα τὸ Μογγολικὸν Ἀλτάϊ, ἀποτελεῖται ἀπὸ εὐρέα ἄνδηρα, κατερχόμενα δι' ἐλαφρῶν κλιτύων πρὸς παμμεγίστην πετρώδη πεδιάδα, ἐν τῇ ὁποίᾳ ὑπάρχουν πολυάριθμοι λίμναι ὑφαλμύρου ὕδατος. Ἡ πετρώδης αὕτη πεδιὰς ἀποτελεῖ τὴν δίοδον, δι' ἧς ἡ ἔρημος Γκόμπι ἐπικοινωνεῖ μὲ τὰ δύο ὀροπέδια τῆς δυτικῆς Μογγολίας, τὸ τοῦ Κόμπντο καὶ τὸ τῆς λίμνης Οὔμπσα-Νόρ. Τὸ πρῶτον, ἔχον μέγιστον ὕψος 1300 μ., διαιρεῖται διὰ πολυαρίθμων μικρῶν διακλαδώσεων τῶν ὀρέων Ἀλτάϊ καὶ Χαγκάϊ εἰς ἄθροισμα μικροτέρων ὀροπεδίων, ἐχόντων εἰς τὸ κέντρον των ἀνὰ μίαν ἕκαστον μικρὰν λίμνην ὑφαλμύρου ὕδατος. Τὰ ὀροπέδια τοῦ εἴδους τούτου καλοῦνται ὑπὸ τῶν Μογγόλων ντάλα.

Πρὸς τὰ Β. τῆς χώρας εὑρίσκεται ἡ ὀροσειρὰ *Κεντέϊ*, τῆς ὁποίας αἱ διακλαδώσεις κεῖνται κατὰ τὸ πλεῖστον ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τῆς Σιβηρίας. Προεκτείνεται ὅμως ἡ ὀροσειρὰ αὕτη καὶ πρὸς Δ. ὑπὸ τοῦ ὄρους *Γκούντου*, εἰς τοῦ ὁποίου τοὺς πρόποδας εἶναι ἐκτισμένη ἡ ἱερὰ τῶν Μογγόλων πόλις Οὔργκα.

Τὸ Α. τῆς Μογγολίας τμῆμα διασχίζεται ὑπὸ τοῦ ὀρεινοῦ συγκροτήματος τοῦ *Μεγάλου Κίνγκαν*, χωρίζοντος τὸ ὀροπέδιον τοῦ Γκόμπι ἀπὸ τὴν περιοχὴν τῶν χαμηλῶν στεππῶν, αἵτινες συνδέονται πρὸς τὰς γονίμους πεδιάδας τῆς Μαντζουρίας. Τούτου δὲ αἱ διακλαδώσεις ἑνοῦνται εἰς ἕτερον πρὸς τὰ ΝΔ. συγκρότημα ὀρέων, τὸ *Ἴνσαν*, συνεχιζόμενον νοτιώτερα διὰ σειρᾶς χθαμαλῶν βουνῶν καὶ λόφων, ἀποσβεννυμένης ἐν τέλει ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ Ἀλασάν.

Πρὸς τὰ Δ. τέλος τῆς χώρας, μεταξὺ τῶν ὀρέων Τιὰν-Σὰν τῆς Κίνας καὶ τῶν Ἀλταΐων, ὑψοῦνται

τὰ μεμονωμένα ὄρη *Ταρμπαγκατάϊ*, ἀσύνδετα τόσον πρὸς τὸ ἕν, ὅσον πρὸς τὸ ἄλλο ὀρεογραφικὸν σύστημα.

***Ποταμοὶ** καὶ **λίμναι.*** Οἱ ἄνεμοι εἰς τὴν Μογγολίαν χάνουν τὴν ὑγρότητά των ἐπὶ τῶν ὀρέων, τῶν πανταχόθεν σχεδὸν περιβαλλόντων τὴν χώραν, ἥτις καὶ δὲν ἔχει διὰ τοῦτο ἀξιολόγους ποταμούς, παρεκτὸς μόνον εἰς τὸ ΒΔ. τμῆμά της. Ἐκεῖ σχηματίζονται δύο μεγάλοι ποταμοὶ τῆς Σιβηρίας, ὁ *Γιεννισέϊ* καὶ ὁ *Σελένγκα*. Ἐκ τούτων ὁ δεύτερος, παραρρέων ἐν ἀρχῇ τὰ βόρεια μογγολικὰ σύνορα, εἰσχωρεῖ κατόπιν εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Ἄπω Μογγολίας, εἶναι δὲ πλωτὸς καὶ δι' ἀτμοπλοίων ἔτι ἐπὶ ἱκανοῦ μήκους τῆς διαδρομῆς αὐτοῦ. Παραλλήλως σχεδὸν πρὸς τοῦτον ῥέει ὁ *Ὄρχον*, ἕτεροι δὲ ἀξιοσημείωτοι ποταμοὶ ἐν τῇ Ἄπω Μογγολίᾳ εἶναι: ὁ *Βέλκεμ*, ὁ *Μέλας Ἰρτίς*, ὁ *Τές*, ὁ *Κόμπντο*, ὁ *Ὀνόν*, ὁ *Σάπχιν* καὶ ὁ σημαντικώτερος τῶν ἄλλων *Κερουλέν*, τοῦ ὁποίου τὸ μῆκος ὑπερβαίνει τὰ 1000 χιλιόμετρα· εἰς δὲ τὴν Ἐγγὺς Μογγολίαν: οἱ *Χουάν, Χουὰν-Χό, Σιλιάο* κ. ἄ.

Λίμναι ἐν τῇ κυρίᾳ ἐννοίᾳ τῆς λέξεως δὲν ἀπαντῶνται ἐν Μογγολίᾳ. Ὑπάρχουσι μόνον ἐκτεταμέναι συσσωρεύσεις ὑφαλμύρου ὕδατος εἰς τὰ κέντρα τῶν λεκανοειδῶν ὀροπεδίων, τῶν καλουμένων ντάλα. Ποικίλλει δὲ κατὰ πολὺ ἡ ἔκτασις τῶν τελμάτων τούτων ὄχι μόνον ἀπὸ ἐποχῆς εἰς ἐποχήν, ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἔτους εἰς τὸ ἄλλο, μὲ τάσεις δὲ πρὸς πλήρη αὐτῶν ἀποξήρανσιν. Μεγαλυτέρα ἐκ τῶν λιμνῶν εἶναι ἡ *Οὔμπσα-Νόρ*, κειμένη παρὰ τὴν θέσιν, ὅπου ἑνοῦνται τὰ Ἀλτάϊα μετὰ τῶν Σαγιανικῶν ὀρέων καὶ ἐκτεινομένη εἰς μῆκος 70 περίπου χιλμ. ἐπὶ 60 χιλμ. πλάτους. Ἐν τῇ Ἄπω Μογγολίᾳ εὑρίσκονται δύο ἀκόμη μεγάλαι λίμναι, ἡ *Καρασοῦ* καὶ ἡ *Ντούργκας*, συγκοινωνοῦσαι μεταξύ των, καὶ ἄλλαι μικρότεραι, ὡς ἡ *Τέλλι* καὶ ἡ *Ὀρόκ*, ἐν δὲ τῇ Ἐγγὺς Μογγολίᾳ ἡ *Οὐλάν*, ἡ *Σάχο* κτλ.

***Κλῖμα.*** Τὸ κλῖμα τῆς χώρας εἶναι ἠπειρωτικόν, χαρακτηρίζεται δὲ ἀπὸ τὴν μέχρις ὑπερτάτου βαθμοῦ φθάνουσαν ὑγρασίαν τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ τὴν τεραστίαν διαφορὰν θερμοκρασίας μεταξὺ ἡμέρας καὶ νυκτός, ἀνερχομένην ἐνίοτε καὶ μέχρι 40 βαθμῶν ἑκατονταβάθμου. Μεγάλη ἐπίσης εἶναι ἡ διαφορὰ θερμοκρασίας μεταξὺ θέρους καὶ χειμῶνος· ἐν Οὔργκᾳ π.χ. ἡ μέση θερμότης τοῦ μηνὸς Ἰουλίου κυμαίνεται περὶ τοὺς 19°, ἡ δὲ τοῦ Ἰανουαρίου περὶ τοὺς —26° (κάτω τοῦ μηδενός), ἐνῷ τὰ ἄκρα ὅρια διὰ τοὺς ἰδίους τούτους μῆνας φθάνουν εἰς +34° καὶ —48°, παρουσιάζοντα δηλαδὴ πτῶσιν μέχρις 82 βαθμῶν ἀπὸ τοῦ θέρους εἰς τὸν χειμῶνα! Ἡ μέση θερμοκρασία τοῦ ἔτους περιστρέφεται περὶ τὸ 0 εἰς τὰ πεδινὰ μέρη καὶ περὶ τοὺς —3° εἰς τὰ ὀροπέδια. Κατὰ τοὺς χειμερινοὺς μῆνας δὲν βρέχει ποτὲ ἐν Μογγολίᾳ· ἀντιθέτως κατὰ τὸ θέρος βρέχει συχνότατα, ἀλλὰ τόσον ὀλίγον, ὥστε μόλις ὑγραίνεται ὁ κονιορτὸς τοῦ ἐδάφους. Τὸ ἐτήσιον ὕψος βροχῆς ἐν τῇ χώρᾳ δὲν ὑπερβαίνει ἐν τῷ συνόλῳ του τὰ 200 χιλιοστόμετρα.

***Χλωρὶς καὶ πανίσκη.*** Ἡ χλωρὶς τῆς Μογγολίας εἶναι ἡ τῶν στεππῶν τῆς Κεντρικῆς Ἀσίας, ἀποτελουμένη κατὰ μέγα μέρος ἀπὸ φυτὰ στρυχνοειδῆ, πολυγωνοειδῆ, χηνοποδίδας καὶ ἀρτεμισίας. Εἰς τὰ βόρεια ὀρεινὰ μέρη ὑπάρχουν δάση ἐλατῶν, πευκῶν καὶ κέδρων, εἰς τὰ ὄρη ὅμως τῶν ΒΔ. περιοχῶν ἡ δασικὴ βλάστησις εἶναι ἀραιοτέρα, καὶ αὕτη δὲ μόνον ἐπὶ τῶν βορείων αὐτῶν κλιτύων, τῶν ἀντικρυζουσῶν τὴν Σιβηρίαν, ὁπόθεν πνέουν ἄνεμοι ποιᾶς τινος ὑγρότητος. Εἰς τὰ ὄρη Ἴνσαν (νοτιανατολικὰ σύνορα τῆς χώρας) συναντῶνται, ἐπὶ τῶν βορείων αὐτῶν κλιτύων καὶ μέχρις ὕψους 1.600 μέτρων, μεγάλα δάση ποικίλων δένδρων. Εἰς τὰς κοιλάδας ὑπάρχει ἄφθονος ἀλπικὴ βλάστησις. Ἀντιθέτως καθ' ὅλην τὴν μεγάλην ἔρημον τοῦ Γκόμπι ἡ χλωρὶς εἶναι ἀφαντάστως πτωχή· μόνον εἰς τὰς πρὸς Β. καὶ τὰς πρὸς ΝΔ. περιοχὰς ὑπάρχουν καλαὶ βοσκαί· εἰς τὰς στέππας ὅμως ἡ χλόη εἶναι σχεδὸν ἀνύπαρκτος. Ἐκεῖνα ποὺ χαρακτηρίζει ἰδίως τὸ Γκόμπι εἶναι ἡ ἀπόλυτος ἀπουσία δένδρων καὶ θάμνων. Γεωργία δὲν ὑπάρχει σχεδὸν ἐν Μογγολίᾳ, διότι, παρεκτὸς τῆς ἀνυπαρξίας τοῦ ἐδάφους αὐτῆς, οἱ λαοὶ οἵτινες τὴν κατοικοῦν εἶναι ἐν τῷ συνόλῳ των σχεδὸν νομάδες. Οὕτω ἐκ τῶν καλλιεργησίμων φυτῶν δὲν συναντῶνται παρὰ μόνον ἡ κριθή, ἡ κέχρος, ὁ ἀραβόσιτος, ὁ σῖτος καὶ ὀλίγα τινα λαχανόδη.

Ὁ ζωϊκὸς κόσμος τῆς χώρας συγγενεύει πρὸς τὸν παλαιοαρκτικὸν καὶ τὸν ἀνατολικὸν τύπον. Τὰ ἄγρια ζῷα τῶν ὀρέων εἶναι τὰ αὐτὰ περίπου πρὸς τὰ τοῦ Θιβὲτ καὶ τῶν Ἰμαλαΐων, ἀναφέρομεν δὲ ὡς χαρακτηριστικὰ μεταξὺ τούτων ἓν εἶδος πιθήκου μὲ μακρὸν τρίχωμα, τὴν ἄρκτον τῶν Ἰμαλαΐων (ursus torquatus), εἴδη τινα ἀγρίων ἵππων καὶ ἡμιόνων κλπ. Ὑπάρχουν ἐπίσης ἀγριόχοιροι, ἀντιλόπαι, ἔλαφοι καὶ ἄγρια πρόβατα. Τὸ σύνολον τῶν ἐν Μογγολίᾳ ἰθαγενῶν θηλαστικῶν δὲν ὑπερβαίνει τὰ 50. Τὰ κατοικίδια καὶ κτηνοτροφικὰ ζῷα εἶναι ἀντιθέτως ἄφθονα, ἀποτελοῦντα τὸν μόνον σχεδὸν πλοῦτον τῶν κατοίκων· κυριώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι τὰ πρόβατα, οἱ βόες, αἱ κάμηλοι, οἱ ἵπποι καὶ οἱ κύνες. Πτηνὰ συναντῶνται ἐλάχιστα, ἀνήκοντα πάντα εἰς τὸν ἀνατολικὸν τύπον καὶ κατὰ τὸ πλεῖστον διαβατικά. Μεταξὺ τῶν ἀμφιβίων ἡ γιγάντιος σαλαμάνδρα τοῦ Κουκονὸρ συγγενεύει πρὸς τὴν τῆς Ἰαπωνίας, ὁ δὲ δενδοδάκτυλος ὁμοιάζει πρὸς τὸν ἀμερικανικόν. Εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Γκόμπι τὰ ἑρπετὰ εἶναι ἄφθονα. Τὰ ἐνῷ ἀντιθέτως ἐλάχιστα εἶναι τὰ θηλαστικά. Τὰ τελευταία ταῦτα εἶναι ἠναγκασμένα, ὅπως καὶ οἱ ἄνθρωποι τῆς ἐρήμου, νὰ διανύωσι μεγάλας ἀποστάσεις πρὸς ἀνεύρεσιν τροφῆς· ἔχουν ἄλλως τε ἐθισθῆ νὰ νηστεύουν ἐπὶ μακρὸν καὶ νὰ τρώγουν κατὰ κόρον ὅταν παρουσιάζεται εὐκαιρία. Εἴδη τινα μικρῶν θηλαστικῶν τῆς ἐρήμου δὲν πίνουν ὕδωρ, ἀρκούμενα νὰ τρώγουν χυμώδη φυτὰ κατὰ τὸ θέρος καὶ νὰ λείχουν τὴν χιόνα κατὰ τὸν χειμῶνα.

***Ὀρυκτὸς πλοῦτος.*** Τὸ ἔδαφος τῆς Μογγολίας

Digitized by Google

περιλαμβάνει κοιτάσματα γαιανθράκων, καθὼς ἐπίσης καί τινα μεταλλεύματα, ἐν οἷς καὶ χρυσοῦ, ἔτι δὲ καὶ πολυτίμους λίθους. Ἀλλ' ὁ ὀρυκτὸς πλοῦτος τῆς χώρας εἶναι ἀκόμη κατὰ τὸ πλεῖστον ἀνεξερεύνητος, εἰς ἐλαχίστην δ' ἐξ ἄλλου κλίμακα γίνεται ἡ ἐκμετάλλευσις τῶν γνωστῶν μεταλλείων. Εἰς τὸ Γκόμπι ὑπάρχουσι πλούσια κοιτάσματα ἅλατος καὶ σόδας, ἀλλαχοῦ δὲ νίτρου καὶ μαγνησίας, προερχόμενα ἐκ τῶν ἀποθεμάτων, ἅτινα σχηματίζουν τὰ ὑφάλμυρα ὕδατα εἰς τὰς λίμνας καὶ τὰ ἕλη. Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ ποταμοῦ Σελένγκα συναντῶνται πλούσια στρώματα γραφίτου.

—[ΟΙΚΟΝΟΜ. ΓΕΩΓΡ.] Ἡ Μογγολία, ἐστερημένη σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου γεωργίας, εἶναι χώρα ἐξαιρετικῶς πτωχή. Μόνος ἄξιος λόγου πόρος ἐν αὐτῇ ἀπομένει ἡ κτηνοτροφία, ἀσκουμένη ἐν μεγάλῃ κλίμακι ὑπὸ τῶν νομαδικῶν πληθυσμῶν, ἀλλὰ χωρὶς ἱκανοποιητικὰς ἀποδόσεις, λόγῳ ἀφ' ἑνὸς τῆς ξηρότητος τοῦ ἐδάφους καὶ τῆς ἀτελείας ἀφ' ἑτέρου τῶν μεταφορικῶν μέσων. Μέχρι πρό τινος αἱ συγκοινωνίαι τῆς χώρας ἐξυπηρετοῦντο ἀποκλειστικῶς δι' ἵππων καὶ καμήλων, μόνον δ' ἐπ' ἐσχάτων ἤρχισαν εἰσαγόμενα αὐτοκίνητα, διὰ τὰ ὁποῖα ἄλλως τε δὲν ὑπάρχουσι κατάλληλοι συγκοινωνιακαὶ ἀρτηρίαι. Ἐν τῇ Ἄπω Μογγολίᾳ ὑπάρχει διακλάδωσις τοῦ ὑπερσιβηρικοῦ σιδηροδρόμου, φθάνουσα μόνον μέχρι τῆς πρωτευούσης Οὔργκα, κατὰ δὲ τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς χώρας (τὴν Ἐγγὺς Μογγολίαν) διακλάδωσις τῆς ἀπὸ Τιὲν-Τσὶν εἰς Πεκῖνον σιδηροδρ. γραμμῆς, σταματῶσα ὅμως εἰς Κάλγκαν καὶ Σουΐγιουάν, ἔξω δηλαδὴ τοῦ καθ' αὐτὸ μογγολικοῦ ἐδάφους. Ἐπ' ἐσχάτων λειτουργεῖ ἐναέριος ταχυδρομικὴ συγκοινωνία μετὰ τῆς Οὔργκα, ὑφίστανται δὲ ἀπὸ ἐτῶν τηλεγραφικαί τινες γραμμαὶ μεταξὺ τῶν κυριωτέρων κέντρων τῆς χώρας.

Τὸ ἐμπόριον εὑρίσκεται παλαιόθεν ἐξ ὁλοκλήρου σχεδὸν εἰς χεῖρας τῶν Κινέζων, κατὰ τὰ τελευταῖα ὅμως ἔτη ἱδρύθη ἡ λεγομένη «Κεντρικὴ Λαϊκὴ Μογγολικὴ Ἑταιρεία» μὲ τὸν σκοπὸν τῆς ἐθνικοποιήσεως αὐτοῦ. Ἡ ἐξαγωγὴ συνίσταται ἰδίως εἰς κτήνη, λίπη, ἔρια καὶ δέρματα. Κυριώτερα δὲ εἴδη εἰσαγωγικοῦ ἐμπορίου εἶναι τὰ ἄλευρα, ὁ καπνός, ἡ σάκχαρις, τὰ μεταλλικὰ ἀντικείμενα κλπ.

Αἱ συναλλαγαὶ ἐν Μογγολίᾳ ἐξακολουθοῦν ἀκόμη νὰ γίνωνται ἐν μέρει διὰ τοῦ παλαιοῦ μέσου τῆς εἰς εἶδος ἀνταλλαγῆς τῶν προϊόντων, κυκλοφοροῦσιν ἐν τούτοις ἐν τῇ χώρᾳ καὶ ἀργυρᾶ νομίσματα, ρωσικὰ καὶ κινεζικά, ἡ δὲ συσταθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1921 Ἐθνικὴ Μογγολικὴ Τράπεζα ἔχει ἤδη ἐκδώσει ἴδια μεταλλικὰ καὶ χάρτινα νομίσματα.

—[ΠΟΛΙΤ. ΓΕΩΓΡ.] Ὡς προανεφέρθη, ἐκ τοῦ ἐδάφους τῆς Μογγολίας τὸ νότιον αὐτοῦ τμῆμα *(Ἐγγὺς ἢ Ἔσω Μογγολία)* προσηρτήθη ἀπὸ τοῦ 1912, ἐπὶ κινεζικῆς κατοχῆς, εἰς τὰς ὁμόρους ἐπαρχίας τῆς Κίνας, τὸ δὲ ὑπόλοιπον ἀπετέλεσε βραδύτερον (βλ. κατωτ. *[Ἱστορ.]*) τὰ δύο κατωτέρω κράτη:

Α') ***Μογγολικὴ δημοκρατία*** *(Μπουγκοῦντε Ναϊραμταχοῦ Μογγὸλ Ἀρὰντ Ὅλος = Δημοκρατία τοῦ* Μογγολικοῦ λαοῦ).

Τὸ ἔδαφος αὐτῆς περιλαμβάνει τὴν λεγομένην *Ἄπω ἢ Ἔξω Μογγολίαν*, παρεκτὸς τοῦ πρὸς τὸ Β. ἄκρον τμήματος αὐτῆς (τοῦ ἐκεῖθεν τῶν ὀρέων Τάννου-Ὅλα). Ἔκτασις: 1.525.700 τετρ. χιλιόμετρα. Πληθυσμός: 670.000 κατοίκων, ἐξ ὧν 7.000 Κινέζοι καὶ 90.000 Ρῶσοι.

Ἡ σημερινὴ Μογγολία ἀποτελεῖ «σοβιετικὴν σοσιαλιστικὴν δημοκρατίαν», τῆς ὁποίας ἀνωτάτη ἀρχὴ εἶναι τὸ Μέγα Χουρουλδάν, εἶδος βουλῆς ἐξ 95 μελῶν, ἐκλεγομένων ἐπὶ μονοετεῖ θητείᾳ ὑπὸ τῶν ἐπαρχιακῶν συνεδρίων καὶ τῶν κοινοτικῶν καὶ στρατιωτικῶν συμβουλίων. Τὸ Μέγα Χουρουλδὰν ἐκλέγει ἐκ τῶν μελῶν αὐτοῦ 30μελῆ ἐπιτροπὴν («Μικρὸν Χουρουλδάν»), ἥτις ἐκτελεῖ τὰς ἀποφάσεις τοῦ πρώτου, δημοσιεύει τοὺς νόμους καὶ ἀσκεῖ ἐν ὀνόματί του τὴν ἐξουσίαν, ἑτέρα δ' ἐπιτροπὴ ἐκ 5 τούτου μελῶν ἀποτελεῖ τὴν ἀνωτάτην μόνιμον διοικητικὴν καὶ δικαστικὴν ἀρχὴν τῆς χώρας. Τὸ Μικρὸν Χουρουλδὰν ἐκλέγει ἐπίσης καὶ τὸ ὑπουργικὸν συμβούλιον ἀποτελούμενον ἐκ 13 μελῶν. Δικαίωμα ψήφου κατὰ τὰς ἐκλογὰς τῶν συμβουλίων, ὑπὸ τῶν ὁποίων ἐκλέγονται τὰ μέλη τοῦ Μεγάλου Χουρουλδάν, ἔχουσι πάντες οἱ ἐργαζόμενοι πολῖται, ἀδιαφόρως φύλου, οἱ συμπληρώσαντες ἡλικίαν 18 ἐτῶν.

Ἡ σημαία τῆς δημοκρατίας εἶναι ἐρυθρά, ἔχουσα ἐν τῷ μέσῳ αὐτῆς τὸ ἐθνόσημον (ἀποτελούμενον ἀπὸ τὴν σανσκριτικὴν λέξιν «Σογιούνμπα»=ὁ τὰ πάντα συντηρῶν καὶ ἄνθος λωτοῦ). Ἡ ἐκκλησία εἶναι χωρισμένη ἀπὸ τοῦ κράτους, ἐπικρατοῦσα δὲ θρησκεία εἶναι ὁ λαμαϊσμός.

Ἡ χώρα διαιρεῖται εἰς 5 ἐπαρχίας (αἴμὰκ) καὶ ἓν διαμέρισμα (κοσσογκόλ). Πρωτεύουσαν ἔχει τὴν παλαιὰν ἱερὰν πόλιν τῶν Μογγόλων *Οὔργκα*, καλουμένην σήμερον *Οὐλὰν - Μπουτὸρ - Χότο*, πληθυσμὸν δὲ 30.000 κατοίκων. Ἄλλαι σημαίνουσαι πόλεις εἶναι ἡ *Κόβδο* (σημερ. ὄνομα *Τσουργκαλαντοῦ*) μὲ 6.000 κατοίκους, ἡ *Οὐλιαζουτάϊ* (κάτ. 4.000), *Ἀλταμπουλὰκ* (κάτ. 6.000), *Μπουλουντοχόϊ, Ταλαμπουλίκ, Καρανιὸς* κτλ.

Ἡ δημοκρατία διατηρεῖ ὀλιγάριθμον στρατὸν ἐκ πυροβολικοῦ καὶ ἀεροπλάνων. Ἡ στράτευσις εἶναι ὑποχρεωτική.

Ἐν Οὔργκᾳ λειτουργεῖ ἓν σχολεῖον μέσης ἐκπαιδεύσεως, περὶ τὰ 100 δὲ σχολεῖα στοιχειώδους ἐκπαιδεύσεως καθ' ὅλην τὴν χώραν. Ἐφημερὶς ἐκδίδεται μία, ρωσική, ἡ «Σάργια» (=Αὐγή).

Β') ***Δημοκρατία τῆς Τάννου - Τούβα.***

Αὕτη περιλαμβάνει τὴν περιοχὴν τὴν ἐκτεινομένην ἀπὸ τῶν βορείων κλιτύων τῆς ὀροσειρᾶς Τάννου - Ὅλα μέχρι τῶν Σαγιαννικῶν ὀρέων καὶ τῆς λίμνης Κόζο - Γκιόλ. Ἔκτασις: 165.000 τετρ. χιλιόμετρα. Κάτοικοι: 65.000 περίπου, ἐξ ὧν 50.000 ἐντόπιοι Τούβας (μογγολιστὶ *Οὐριανχάϊ*), ὀλίγοι ἄλλοι Μογγόλοι, 12.000 Ρῶσοι καί τινες Κινέζοι.

Πολίτευμα: «Σοβιετικὴ σοσιαλιστικὴ δημοκρατία», μὲ ἀνωτάτην ἀρχὴν τὸ Μέγα Χουρουλδάν, τοῦ ὁποίου τὰ μέλη ἐκλέγονται διὰ καθολικῆς ψηφοφορίας τῶν κατοίκων ἀμφοτέρων τῶν φύλων τῶν συμπληρωσάντων ἡλικίαν 22 ἐτῶν, ἐξαιρουμένων μόνον τῶν οἰκογενειῶν τῶν παλαιῶν φυλάρχων καὶ τῶν ἀνωτέρων κληρικῶν. Τὸ Μέγα Χουρουλδὰν ἐκλέγει ἐκ τῶν μελῶν αὐτοῦ 30 μέλη ὡς ἐκτελεστικὴν ἐπιτροπὴν *(Μικρὸν Χουρουλδάν)*, ἀσκοῦσαν ἐν ὀνόματί του τὴν ἐξουσίαν. Ὑπὸ τούτου ἐκλέγεται ἡ κυβέρνησις, ἀποτελουμένη ἐκ 5 μελῶν.

Πρωτεύουσα: *Χὲμ - Μπέλντερ* (Χιμπιλλντούρ, ἢ Κράσνι-Κίζυλ=ἐρυθρὰ πόλις, ἄλλοτε ὀνομαζομένη *Μπιελοτσάρσκ*).

Τὰ ρωσικὰ χωρία τοῦ κράτους ἡνώθησαν ἀπὸ τοῦ 1922 εἰς μίαν ἐργατικὴν κοινότητα, ἀπολαμβάνουσαν αὐτονομίας εἰς τὰς ἐσωτερικὰς αὐτῆς ὑποθέσεις καὶ διοικουμένην ὑπὸ μονίμου ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις ἐκλέγεται ὑπὸ τῶν ρωσικῶν ἀγροτικῶν συμβουλίων.

—[ΕΘΝΟΓΡ.] Ἡ μογγολικὴ φυλὴ εἶναι διακεχυμένη ἐπὶ μεγάλου τμήματος τῆς Ἀσίας, ἀλλὰ τὸ ὄνομα τῶν *Μογγόλων* δίδεται κυρίως εἰς τοὺς νομαδικοὺς λαοὺς τοὺς ζῶντας ἐν τῇ κεντρικῇ τῆς Ἀσίας περιοχῇ καὶ εἰδικώτερον εἰς τὸ ἔδαφος τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ τῆς Σιβηρίας, τῆς Μαντζουρίας, τῆς κυρίως Κίνας καὶ τοῦ Τουρκεστάν. Καὶ ἐπὶ τῶν χωρῶν ὅμως τούτων τῶν γειτνιαζουσῶν πρὸς τὴν Μογγολίαν ἀπαντῶνται καὶ σήμερον ἔτι φῦλά τινα Μογγόλων, ἐνιαχοῦ μὲν διατηροῦντα τὸν ἰδιάζοντα αὐτῶν ἀνθρωπολογικὸν καὶ ἐθνογραφικὸν χαρακτῆρα ἀλώβητον ἢ ἐλαφρῶς παρηλλαμένον, ἀλλαχοῦ δὲ ριζικῶς ἠλλοιωμένα ἐκ τῆς μείξεώς των πρὸς τοὺς ἐπιτοπίους πληθυσμούς. Καὶ ἐν αὐτῇ ταύτῃ ἄλλως τε τῇ Μογγολίᾳ μόνον μεταξὺ τῶν Χάλχας, τῶν κατοικούντων τὰς βορείας τῆς χώρας περιοχάς, ἀπαντᾶται ἀμιγὴς ὁ ἀρχικὸς φυλετικὸς τύπος (βλ. λ. *φυλαί*). Ἀντιθέτως οἱ νότιοι Μογγόλοι ἔχουν σχεδὸν ἐξομοιωθῆ πρὸς τοὺς Κινέζους, τόσον κατὰ τὰ φυσικὰ αὐτῶν γνωρίσματα ὅσον καὶ κατὰ τὰ ἤθη καὶ τὴν ἀμφίεσιν.

Οἱ Μογγόλοι διαιροῦνται εἰς δύο κυρίας κατηγορίας: τοὺς *Ἀνατολικοὺς* ἢ *κυρίως Μογγόλους* καὶ τοὺς *Δυτικοὺς* ἢ *Καλμούχους*. Χωρίζονται δὲ πάλιν οἱ κυρίως Μογγόλοι εἰς δύο μεγάλας ὑποδιαιρέσεις, τοὺς *Τσακὰρ* καὶ τοὺς *Χάλχας*, καὶ εἰς ἓν ἄθροισμα πολλῶν ὀλιγαριθμοτέρων φύλων, μεταξὺ τοῦ ὁποίου οἱ *Χοτσίδαι*, οἱ *Σουννίδαι*, οἱ *Ναϊμὰν* κλπ. Οἱ Τσακὰρ κατοικοῦσι τὴν Ἐγγὺς Μογγολίαν (τὸ νότιον δηλαδὴ τμῆμα τῆς χώρας), οἱ δὲ Χάλχας τὴν Ἄπω (βόρειον) Μογγολίαν κατὰ μῆκος τῶν νοτίων Σιβηρικῶν συνόρων· τὰ διάφορα δὲ φῦλα τοῦ τρίτου ἀθροίσματος συναντῶνται ἰδίως εἰς τὴν ἔρημον Γκόμπι καὶ τὰς ἐγγὺς πρὸς αὐτὴν περιοχάς. Οἱ Δυτικοὶ πάλιν Μογγόλοι ἢ Καλμοῦχοι ὑποδιαιροῦνται εἰς τοὺς *Χόχοτ*, κατοικοῦντας εἰς τὸ Θιβὲτ καὶ τὸ διαμέρισμα τοῦ Κουκοὺ-νόρ, τοὺς *Κεραΐτας*, τοὺς *Τσόρος*, τοὺς *Μπουριάτας* κλπ. Τμήματά τινα τῶν Δυτικῶν Μογγόλων ζῶσι σήμερον ἐν τῇ μεσημβρινῇ Ρωσίᾳ μεταξὺ τοῦ Βόλγα καὶ τοῦ Ντὸν καὶ εἰδικώτερον εἰς Ἀστραχάν. Εἰς τοὺς Δυτικοὺς ἐπίσης Μογγόλους ἀνήκουν τέσσαρα φῦλα ζῶντα νομαδικῶς εἰς τὸ Ἀφγανιστάν, καθὼς καὶ οἱ Μπουριᾶται οἱ ἐγκατασταθέντες ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος εἰς τὰς περὶ τὴν λίμνην Βαϊκάλην, ἐπὶ ρωσικοῦ ἐδάφους, κοιλάδας τῶν ποταμῶν Σελέγκα, Ὄνον καὶ Οὐντά, ὑπολογιζόμενοι εἰς 250.000 περίπου.

Ὅλα τὰ μογγολικὰ ταῦτα φῦλα ζῶσιν ἀπὸ ἀμνημονεύτων χρόνων βίον νομαδικόν, χωρὶς ποτὲ σχεδὸν νὰ δοκιμάσουν νὰ καλλιεργήσουν τὸ ἀλατοπαγὲς καὶ ἀκατάλληλον πρὸς γεωργίαν ἔδαφος τῆς χώρας των. Τὸ μεγαλύτερον ἄλλως τε τμῆμα τοῦ πληθυσμοῦ δὲν εἶχε ποτὲ μόνιμον ἐγκατάστασιν. Τρέφοντες ἀγέλας προβάτων καὶ ἵππων, πλανῶνται διαρκῶς πρὸς ἀναζήτησιν βοσκῆς ἐντὸς τῶν ἀπεράντων αὐχμηρῶν πεδιάδων, φέροντες μεθ' ἑαυτῶν πᾶν ὅ,τι ἔχουν, μηδὲ τῶν οἰκιῶν των ἐξαιρουμένων—σκηνῶν ἢ καλυβῶν κατὰ κανόνα—, τὰς ὁποίας στήνουν προχείρως εἰς μίαν θέσιν, διὰ νὰ τὰς μεταφέρουν τὴν ἐπαύριον ἐπὶ τροχῶν εἰς ἄλλην περιοχήν.

Ὁλόκληρον τὸ μογγολικὸν ἔθνος διηρεῖτο μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ παρόντος αἰῶνος εἰς 26 ὁμάδας (αἴμάκ), τῶν ὁποίων ἡ κοινωνικὴ καὶ πολιτειακὴ ὀργάνωσις ἐνεφάνιζε (μέχρι τοῦ 1921, ὁπότε ἐπεκράτησεν ἐν Μογγολίᾳ ὁ μολσεβικισμός) μεγάλας ἀναλογίας πρὸς τὸ φεουδαρχικὸν σύστημα. Ἐπὶ κεφαλῆς ἑκάστου αἴμὰκ ὑπῆρχεν εἷς πρίγκιψ, ἔχων ἐξουσίαν ἐπὶ καθωρισμένου ἐδάφους, ἐντὸς τοῦ ὁποίου οἱ ὑπήκοοί του περιεπλανῶντο μετὰ τῶν ποιμνίων των. Οἱ πρίγκιπες ἦσαν καὶ στρατιωτικοὶ ἀρχηγοὶ τῶν ὁμάδων, οἱ δὲ λοιποὶ εὐγενεῖς εἶχον βαθμοὺς ἀξιωματικῶν. Οἱ ἄρρενες πολῖται ἐλογίζοντο πάντες στρατεύσιμοι ἀπὸ τοῦ 16ου μέχρι τοῦ 60οῦ ἔτους τῆς ἡλικίας των καὶ ὑπεχρεοῦντο νὰ προσέρχωνται εἰς πᾶσαν πρόσκλησιν τοῦ ἀρχηγοῦ μετὰ τοῦ ἵππου των (ὅλοι οἱ Μογγόλοι στρατιῶται ἦσαν ἀποκλειστικῶς ἱππεῖς) καὶ μετὰ τοῦ ὁπλισμοῦ των.

Ὁλόκληρος σχεδὸν ὁ μογγολικὸς πληθυσμὸς ἀνήκει σήμερον εἰς τὴν βουδιστικὴν λαμαϊκὴν θρησκείαν. Οἱ ἱερεῖς των εἶναι ἐξαιρετικῶς πολυάριθμοι, εἰς παλαιοτέρους δὲ χρόνους, κατὰ τὰς βεβαιώσεις τοὐλάχιστον περιηγητῶν τινων, ὁ κλῆρος ἀπετέλει τὸ τρίτον τοῦ ὅλου πληθυσμοῦ. Ὁ ἀρχηγὸς τοῦ λαμαϊτικοῦ κλήρου τῆς Μογγολίας ἑδρεύει ἐν Οὔργκᾳ καὶ φέρει τὸν τίτλον *Γκουέγκεν-Οὐτουκτοὺ* (=ζῶν Βούδας). Ὁ ἱεράρχης οὗτος ἀπήλαυε μεγάλων τιμῶν, μεγίστη δὲ ἦτο ἡ ἐπίδρασις αὐτοῦ ἐπὶ τῶν πολιτικῶν πραγμάτων τῆς χώρας. Τὰ δικαιώματά του ὅμως ἐπὶ τῆς διοικήσεως κατηργήθησαν ἤδη διὰ τοῦ Συντάγματος τοῦ 1924.

Κατὰ τὸν μεσαίωνα, ἀλλὰ καὶ τώρα ἀκόμη κατὰ τὸ πλεῖστον, ὁ γάμος ἐν Μογγολίᾳ ἐγίνετο δι' ἀγορᾶς τῆς γυναικός. Ἐπετρέπετο δὲ νὰ ἔχῃ ἕκαστος Μογγόλος ὁσασδήποτε γυναῖκας ἤθελε, ἤρκει μόνον νὰ ἠδύνατο νὰ τὰς συντηρήσῃ. Νόμιμος ὅμως ἐθεωρεῖτο ἐξ αὐτῶν ἡ πρώτη, μόνον δὲ τὰ ἐκ ταύτης τέκνα εἶχον δικαίωμα διαδοχῆς καὶ κληρονομίας.

[Βλ. καὶ λ. *Μογγολικὴ γλῶσσα*].

—[ΙΣΤΟΡ.] Ἡ ἱστορία τῆς Μογγολίας καὶ τοῦ μογγολικοῦ λαοῦ ἐν τῇ ἀρχαιότητι εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου ἀσαφὴς καὶ ἀκαθόριστος. Αἱ ὑπάρχουσαι συναφεῖς πηγαί, περιλαμβάνουσαι μυθολογικὰς μόνον παραδόσεις, οὐδεμίαν παρέχουσι βάσιν πρὸς ἐπιστημονικὰ συμπεράσματα. Βεβαιωμένον μόνον εἶναι ἐξ ἀνασκαφῶν ὅτι αἱ νότιαι τῆς Μογγολίας περιοχαὶ κατῳκοῦντο ἀπὸ τῶν προϊστορικῶν χρόνων, φαίνεται δὲ ὅτι εἰς ἐποχὴν ἀπέχουσαν κατὰ τρεῖς χιλιετηρίδας ἀπὸ τῆς γεννήσεως τοῦ Χριστοῦ διεξήγετο μέσῳ τῆς χώρας ταύτης ἀξιόλογος ἐμπορικὴ ἐπικοινωνία μεταξὺ τῆς Κίνας καὶ τῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν. Βέβαιον ἐπίσης θεωρεῖται ὑπὸ τῶν περισσοτέρων ἐρευνητῶν ὅτι κοινὴ ὑπῆρξεν ἡ ἀφετηρία καταγωγῆς τοῦ μογγολικοῦ λαοῦ πρὸς τὸν τουρκικόν, ἢ ὅτι τοὐλάχιστον ἐπῆλθεν εἰς ἀρχαιοτάτους χρόνους στενὴ τούτων μεῖξις, ἐγγίζουσα, ἂν μὴ φθάνουσα τὴν ἀφομοίωσιν.

Ἡ καθ' αὐτὸ ἱστορία τοῦ μογγολικοῦ λοῦ ἄρχεται ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ *Δζεγκὶζ-χὰν* (βλ. λ.), ἀπὸ τοῦ τέλους δηλαδὴ τοῦ ΙΒ' μ.Χ. αἰῶνος. Ὁ μέγας οὗτος κατακτητής, ἀφοῦ κατώρθωσεν, ἀπὸ τοῦ 1188 μέχρι τοῦ 1193, δι' ἀλλεπαλλήλων νικῶν νὰ κατασυντρίψῃ πάντας τοὺς ἀντιπάλους του ἀρχηγοὺς τῶν ἐν Μογγολίᾳ διαφόρων φυλῶν καὶ ν' ἀναγνωρισθῇ αὐτοκράτωρ (μέγας χὰν) ὄχι μόνον τῶν Μογγόλων, ἀλλὰ καὶ ὅλων τῶν ἐν Ἀνατολῇ Τούρκων, ἤρχισεν ἐφαρμόζων τὰ μεγαλεπήβολα αὐτοῦ σχέδια πρὸς κατάκτησιν τοῦ κόσμου ὅλου. Ἡ βόρειος Κίνα πρῶτον καὶ κατόπιν τὸ Τουρκεστὰν ὑποτάσσονται ὑπὸ τὸ σκῆπτρόν του, ἐπακολουθεῖ δὲ ἡ ραγδαία ἐπαλληλία τῶν θριάμβων του εἰς τὸ Ἰράν, εἰς τὴν Περσίαν εἰς τὰς περὶ τὴν Κασπίαν χώρας καὶ εἰς τὸν Καύκασον, ἡ συντριβὴ τῆς μεγάλης ρωσικῆς στρατιᾶς εἰς τὴν Κάλκαν, τῶν Βουλγάρων κατόπιν εἰς τὴν Κάμα κλπ. Μετὰ τὸν θάνατόν του (1225) τὸ ὑπ' αὐτοῦ δημιουργηθὲν ἀπέραντον κράτος διενεμήθη εἰς τοὺς υἱούς του, τεταγμένους ὅμως ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν ἑνὸς ἐξ αὐτῶν, τοῦ Ἰγιετάϊ, ὅστις διετήρησε τὸν τίτλον τοῦ μεγάλου χάν, ἑδρεύων ἐν Καρακορούμ τῆς κυρίως Μογγολίας, ἐνῷ οἱ ἄλλοι ἀνελάμβανον τὴν ἡγεμονίαν τῶν διαφόρων ὑποτεταγμένων χωρῶν. Ἐσυνεχίσθησαν τότε αἱ μογγολικαὶ κατακτητικαὶ ἐκστρατεῖαι, μὲ ἀποτέλεσμα τὴν καθυπόταξιν τῆς ὑπολοίπου Κίνας καὶ τοῦ χαλιφάτου τοῦ Βαγδατίου, τὴν ἅλωσιν τῆς Μόσχας (1337) καὶ τὴν δῄωσιν τῶν μέχρις αὐτῆς καὶ περὶ αὐτὴν ἐπαρχιῶν. Ὁ σουλτᾶνος τοῦ Ἰκονίου ἐξηναγκάζετο ν' ἀναγνωρίσῃ τὴν ἐπικυριαρχίαν τοῦ μεγάλου χὰν καὶ νὰ γίνῃ φόρου ὑποτελὴς εἰς τὸ κράτος τῶν Μογγόλων, οἵτινες συνεχίζοντες τὴν κατακτητικήν των δρᾶσιν εἰσέβαλον τῷ 1240 εἰς Πολωνίαν, δῃοῦντες καὶ καταστρέφοντες τὰς πόλεις αὐτῆς, τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος εἰς Σιλεσίαν. Ἐκεῖ συνήντησαν συγκεντρωμένην ἀντίστασιν ἐκ μέρους τῶν ἡνωμένων στρατῶν τῶν Γερμανῶν πριγκίπων, τῶν Πολωνῶν καὶ τῶν Σιλεσίων, τοὺς ὁποίους ἐν τούτοις κατώρθωσαν ἐν τέλει νὰ κατανικήσουν εἰς τὴν πολύνεκρον μάχην τοῦ Βόλστατ. Ἀλλ' αἱ κατ' αὐτὴν ἀπώλειαι τῶν Μογγόλων ὑπῆρξαν τεράστιαι. Ὑπὸ τὴν πίεσιν τῆς γενικῆς ἐναντίον των ἐχθρότητος τοῦ πληθυσμοῦ τῶν δῃωθέντων ἐδαφῶν, οἱ ἐπιδρομεῖς ἠναγκάσθησαν νὰ στραφῶσι πρὸς τὰ ὀπίσω διὰ μέσου τῆς Μοραβίας καὶ τῆς Οὐγγαρίας, καταστρέφοντες καὶ λεηλατοῦντες πάντοτε. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Ἰγιετάϊ ἀπέθανε, προέ-



Digitized by Google

κυψαν δὲ τότε ἐμφύλιοι μεταξὺ τῶν Μογγόλων ἀγῶνες καὶ τὰ ἐν Εὐρώπῃ στρατεύματά των ἐπέστρεψαν εἰς τὴν χώραν των. Μετέπειτα τὸ κράτος τῶν Μογγόλων ἤρχισε παρακμάζον, συντελούσης εἰς τοῦτο τῆς κατανομῆς του εἰς τοὺς διαφόρους ἀπογόνους τῶν υἱῶν τοῦ Δζεγκὶζ-χάν. Κατὰ τὸ 1368 οἱ Κινέζοι κατώρθωσαν ν' ἀποδιώξουν ἐκ τῆς χώρας των τοὺς κατακτητάς, ἐνωρίτερον δὲ εἶχον σχηματισθῆ διάφορα ἀνεξάρτητα κράτη εἰς τὸ Τουρκεστάν, τὴν Σιβηρίαν, τὴν Ρωσίαν, τὴν Περσίαν καὶ ἀλλαχοῦ. Κατὰ τὴν ἰδίαν ὅμως ἐκείνην ἐποχὴν ὁ ἐκ θηλυγονίας ἀπὸ τοῦ Δζιγκὶζ-χὰν καταγόμενος Τιμοὺρ-Λέγκ, ὁ ἀποκληθεὶς *Ταμερλάνος*, κατορθώσας ν' ἀναδειχθῇ φύλαρχος ἐν ἀρχῇ εἰς τὸ Κὲτς καὶ αὐτοκράτωρ βραδύτερον (1370), ἐπέτυχε νὰ καθυποτάξῃ ἐκ νέου τὰς πλείστας τῶν προτέρων μογγολικῶν κτήσεων· κατέκτησεν ἐν πρώτοις ὅλην τὴν πρὸς Δ. τῆς Κασπίας θαλάσσης Ἀσίαν, εἰσβαλὼν δ' εἶτα εἰς τὴν Περσίαν ὑπεδούλωσεν αὐτὴν ὁλόκληρον, μεθ' ὃ ἐστράφη κατὰ τῆς νοτίου Ρωσίας, ὅπου ἐλεηλάτησε καὶ κατέστρεψε τὸ Ἀζώφ. Ἐκεῖθεν ἐτράπη κατὰ τῶν Ἰνδιῶν καὶ νικήσας τὸν Μωάμεθ Δ' πρὸ τοῦ Δελχὶ ἐκυρίευσεν ὁλόκληρον τὸ Ἰνδοστάν. Ἀπέσπασε κατόπιν τὴν Συρίαν ἀπὸ τοῦ σουλτάνου τῆς Αἰγύπτου, ἐκεῖθεν ἐπορεύθη κατὰ τῆς Βαγδάτης, τὴν ὁποίαν κατέστρεψεν, ἐνίκησε τὸν Βαγιαζὴτ ἐν Ἀγκύρᾳ καὶ ἀφήρεσε παρ' αὐτοῦ τὴν Μικρὰν Ἀσίαν ὅλην. Βαδίζων δὲ κατόπιν πρὸς ἀνάκτησιν τῆς Κίνας ἀπέθανε καθ' ὁδὸν τῷ 1405. Ὅ,τι ὅμως συνέβη μὲ τὸν Δζιγκὶζ-χὰν ἐπανελήφθη καὶ μὲ τὸν Ταμερλάνον. Οἱ διάδοχοί του κατένειμαν ἐπίσης τὸ κράτος του, τὸ ὁποῖον ἤρχισε νὰ διαλύεται ραγδαίως καὶ ἔπαυσεν ἐξ ὁλοκλήρου ὑφιστάμενον μετὰ τὸν φόνον τοῦ δισεγγόνου του Ἀμποῦ-Σεὶδ (1468). Ἔκτοτε ἡ δυναστεία τῶν Τιμοὺρ διετηρήθη μόνον ἐν Τζαγατάϊ. Ἐκεῖθεν ὁρμώμενος ὁ ἐκ τῶν ἀπογόνων τοῦ Ταμερλάνου Μπαμπὲρ ἐπέτυχε τῷ 1505 νὰ ἱδρύσῃ νέον κράτος ἐν Ἰνδοστάν. Ἡ νέα αὐτὴ μογγολικὴ δυναστεία τῶν Ἰνδιῶν διετηρήθη μέχρι τοῦ 1806, ὅτε ἐπεκράτησαν αὐτόθι οἱ Ἄγγλοι. Ἐκ τῶν λοιπῶν μογγολικῶν δυναστειῶν ἡ τῆς Κίνας εἶχε καταλυθῆ, ὡς προανεφέρθη, ἀπὸ τοῦ 1368 ὑπὸ τῶν Μίνγκ, ἡ τῆς Περσίας ἀπὸ τοῦ 1422, ἡ δὲ τοῦ Κιπτσὰκ (τῆς περιοχῆς τῆς περιλαμβανομένης ἀπὸ τῶν κασπιανῶν στεππῶν μέχρι τοῦ Δνειπέρου) ἀπὸ τοῦ 1400· ἐκ τῆς τελευταίας ταύτης εἶχον προσκαίρως διατηρηθῆ δύο τοπικοὶ κλάδοι, ὁ τοῦ Καζὰν μέχρι τοῦ 1502 καὶ ὁ τοῦ Ἀστραχὰν μέχρι τοῦ 1554.

Βραδύτερον ἡ Κίνα ἐπέτυχεν ἀπὸ τοῦ 1644 νὰ καθυποτάξῃ τὴν κυρίως Μογγολίαν, ἣν καὶ διετήρησεν, ὑπὸ τὴν δυναστείαν τῶν Μαντζοῦ, μέχρι τοῦ 1912. Ἐκραγείσης κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο τῆς κινεζικῆς ἐπαναστάσεως, ἡ Ἄπω Μογγολία, ὑποκινήσει τῶν Ρώσων, ἀνεκήρυξεν ἑαυτὴν ἀνεξάρτητον, ἀνακατελήφθη ὅμως ἐκ νέου ὑπὸ κινεζικοῦ στρατοῦ, μετὰ τὴν ρωσικὴν καταστροφήν, ἀπὸ τοῦ 1918—1919. Τῷ 1920 κατελήφθη ὑπὸ ρωσικοῦ (λευκοῦ) στρατοῦ, τὸν ὁποῖον ὅμως οἱ μπολσεβίκοι ἐβοήθησαν τοὺς Μογγόλους νὰ ἐκδιώξουν κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος. Τότε ἡ χώρα ἐκηρύχθη καὶ πάλιν ἀνεξάρτητος καὶ τὸ μὲν βορειότατον τμῆμα αὐτῆς ἀπετέλεσε τὴν «*Σοβιετικὴν σοσιαλιστικὴν δημοκρατίαν Τάννου-Τούβα*», τὸ δὲ ὑπόλοιπον μέρος τὴν «*Ἐθνικὴν Δημοκρατίαν τῆς Μογγολίας*», ἥτις τὴν 24 Μαΐου 1924 μετετράπη εἰς «*Σοβιετικὴν Δημοκρατίαν τοῦ Μογγολικοῦ λαοῦ*» (βλ. ἀνωτ. *[Πολιτ. Γεωγρ.]*). Γ. Ζ.

**μογγολικός**, *—ή, —όν* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μογγόλους, ὁ τῶν Μογγόλων: «μογγολικὴ φυλή, — γλῶσσα».

**— Μογγολικὴ** (ἡ) *[Γλωσσολογ.]*. Καλοῦμεν οὕτω τὴν γλῶσσαν τὴν ὁμιλουμένην ὑπὸ τῶν διαφόρων μογγολικῶν φυλῶν, ἤτοι: 1) Τῶν κυρίως Μογγόλων, τῶν κατοικούντων εἰς τὴν Μογγολίαν. 2) Τῶν Βουριατῶν, κατοικούντων περὶ τὴν μεγάλην λίμνην Βαϊκάλην. 3) Τῶν Καλμούκων, ἐγκατεστημένων ἐν Ρωσίᾳ παρὰ τὸ Ἀστραχάν, καθὼς καὶ ἐν τῇ Καυκασίῳ Ρωσίᾳ. 4) Ὑπὸ τῶν ἐν Ἀφγανιστὰν ἐγκαθιδρυθέντων μογγολικῶν φύλων. Διὰ δὲ καὶ ἡ μογγολικὴ γλωσσικὴ ὁμοφυλία περιλαμβάνει τὴν κυρίως μογγολικήν, τὴν βουριατικήν, τὴν καλμουκικὴν καὶ τὴν ἐν Ἀφγανιστὰν μογγολικήν. Πάντες οἱ λαλοῦντες τὴν μογγολικὴν δὲν φαίνεται (κατὰ τοὺς καλυτέρους ὑπολογισμοὺς) νὰ ὑπερβαίνουν τὰ 3.000.000, ἐκ τῶν ὁποίων 190.000 περίπου ἐν Ρωσίᾳ καὶ 518.000 ἐν Ἀφγανιστάν. Αἱ μογγολικαὶ γλῶσσαι ἀνήκουν εἰς τὴν οὐραλοαλταϊκὴν λεγομένην γλωσσικὴν ὁμοεθνίαν, εἰς τὴν ὁποίαν, πλὴν τούτων, περιλαμβάνονται καὶ αἱ διάφοροι τουρκικαὶ καὶ τογγουζικαὶ γλῶσσαι. Κοινὸν γνώρισμα τούτων εἶναι ἡ καλουμένη «*φωνηεντικὴ ἁρμονία*» (harmonie vocalique, Vokalharmonie), τὴν ὁποίαν παρατηροῦμεν καὶ εἰς τὰς φιννοουγγρικὰς γλώσσας, αἱ ὁποῖαι ἄλλοτε κατελέγοντο μετὰ τῶν οὐραλοαλταϊκῶν γλωσσῶν εἰς μίαν καὶ τὴν αὐτὴν γλωσσικὴν ὁμοεθνίαν. Ὁ γραμματικὸς διάκοσμος τῶν μογγολικῶν γλωσσῶν εἶναι πολὺ ἁπλοῦς. Οἱ ἀριθμοὶ τῶν ὀνομάτων εἶναι δύο (ὁ ἑνικὸς καὶ ὁ πληθυντικός), γένη τούτων δὲν διακρίνονται, οἱ δὲ διάφοροι τύποι καὶ τὰ παράγωγα σχηματίζονται μόνον διὰ ἐπιθεμάτων (προθήματα καὶ ἐνθήματα, οἷα παρατηροῦμεν εἰς ἄλλας γλώσσας, εἶναι ἄγνωστα σχεδὸν εἰς τὰς τῶν μογγολικῶν λαῶν). Ἀντιθέτως ἡ κλίσις τῶν ὀνομάτων παρουσιάζει ἀρκετὴν πολυτυπίαν. Αἱ πτώσεις τούτων εἶναι: ἡ γενική, ἡ αἰτιατική, ἡ δοτική-τοπική, ἡ ἀφαιρετική, ἡ ὀργανική, ἡ περιοριστικὴ (limitativus) καὶ ἡ τῆς συνεργείας (cooperativus). Τὸ ἐθνικὸν ἀλφάβητον τῶν Μογγόλων ἐσχηματίσθη ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ Οὐϊγορικοῦ, εἰσαχθέντος παρὰ τοῖς Μογγόλοις ὑπὸ τοῦ Τατατόγγα κατὰ τὰς ἀρχὰς πιθανῶς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος μ. Χ. Ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1269 μ. Χ. μέχρι τῶν μέσων περίπου τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἔγινε χρῆσις (ἐν τῇ ἐπισήμῳ γραπτῇ γλώσσῃ) πολυπλόκου τινὸς ἀλφαβήτου, τοῦ λεγομένου «ντουρμπαϊτζὶν», σχηματισθέντος ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ θιβετικοῦ ἀλφαβήτου καὶ ἀποτελουμένου ἐκ 41 γραμμάτων, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ 9 παρίστων τὰ διάφορα φωνήεντα τῆς μογγολικῆς γλώσσης, τὰ δὲ ὑπόλοιπα τὰ σύμφωνα αὐτῆς. Ἀλλ' ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἐπανῆλθεν εἰς τὴν χρῆσιν τὸ λεχθὲν ἐθνικὸν ἀλφάβητον τῶν Μογγόλων, τὸ ὁποῖον χρησιμοποιεῖται ἀκόμη καὶ σήμερον καὶ τὸ ὁποῖον παραληφθὲν παρὰ τῶν Μαντζοῦ (τῶν αὐτοχθόνων τῆς Μαντζουρίας) ἐχρησιμοποιήθη (μεταρρυθμισθὲν καταλλήλως) πρὸς γραφὴν τῆς ἐθνικῆς γλώσσης των.

Τελειοποίησιν τοῦ μογγολικοῦ ἀλφαβήτου ἀποτελεῖ τὸ καλμουκικὸν ἀλφάβητον, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ Zaya Pandita προσέθεσε κατὰ τὸ 1648 μ. Χ. διάφορα διακριτικὰ σημεῖα ὡρισμένων στοιχείων, καθὼς καὶ νέα τινὰ γράμματα πρὸς ἀκριβεστέραν ἀπόδοσιν τῶν φθόγγων τῆς καλμουκικῆς γλώσσης. Τὸ παλαιότερον γραπτὸν μνημεῖον τῆς μογγολικῆς γλώσσης ἀποτελεῖ ἐπιγραφὴ σύντομος (ἐκ πέντε μόνων στίχων ἀποτελουμένη), γραφεῖσα ἐπὶ τῶν χρόνων τοῦ Δζιγκὶζ-χὰν καὶ ἔναποκειμένη ἤδη ἐν τῷ Ἀσιατικῷ μουσείῳ τῆς Πετρουπόλεως. Ἡ δὲ μογγολικὴ φιλολογία, ἥν δὲν διακρίνει μεγάλη πρωτοτυπία, ἀποτελεῖται κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπὸ διάφορα ἱστορικὰ κείμενα (περιλαμβανόμενα εἰς τὴν «Μυστικὴν ἱστορίαν τῶν Μογγόλων» ἐξ 75 κεφαλαίων, γραφεῖσαν τῷ 1240 μ. Χ.), ἀπὸ ποικίλας μεταφράσεις βουδικῶν κειμένων, ἐκ τινων διδακτικῶν, ἰατρικῶν καὶ νομικῶν συγγραμμάτων, πρὸς δὲ καὶ ἐκ δημωδῶν τινων ᾀσμάτων (κυρίως ἐπικῶν). Τὸ πρῶτον ἔντυπον βιβλίον τῶν Μογγόλων ἐδημοσιεύθη κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος μ. Χ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἡ ῥηθεῖσα παλαιοτάτη μογγολικὴ ἐπιγραφὴ ἡρμηνεύθη καὶ μετεφράσθη ὑπὸ τοῦ *J. Schmidt*, ὑπὸ τοῦ Banzarow καὶ τοῦ Pozdnieew. Εὔχρηστοι γραμματικαὶ τῆς Μογγολικῆς εἶναι ἡ τοῦ *G. Soulié* (γαλλιστί, ἐκδοθεῖσα ἐν Παρισίοις 1903), ἡ τῶν *Vitale* καὶ *de Sercey* (ἐν Πεκίνῳ 1897) κ. λ. Ἀξία συστάσεως περιγραφὴ τῆς μογγολικῆς γραμματολογίας εἶναι ἡ τοῦ *Laufer*, «Skizze der mongolischen Literatur» (ἐν Keleti Szemle 1907).

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

**— μογγολικὴ κηλὶς** *[Ἀνθρωπολογ.]*. Τοπικὸς μελανισμός, ἤτοι παροδικὴ κατὰ κανόνα ἐμφάνισις ὑποκυάνου κηλῖδος ἐκ τῆς ἀποθέσεως ἀφθονωτέρας χρωστικῆς ἐν αὐτῷ τῷ χορίῳ τοῦ δέρματος (μεγάλα χρωματοφόρα κύτταρα), κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν συνήθη αἰτίαν τῆς χρώσεως τοῦ ἀνθρώπου ἐκ τῆς χρωστικῆς τῆς ἐπιδερμίδος μόνον.

Ἡ *μογγολικὴ κηλὶς* καλεῖται καὶ *παροδικὴ κηλὶς* καὶ *ἱερὰ κηλὶς* καὶ *ἰαπωνικὴ κηλὶς* καὶ *κηλὶς τοκετοῦ* καὶ *κυανῆ κηλὶς τῶν νεογνῶν* κτλ. Ἀπαντᾷ εἴτε σχετικῶς περιωρισμένη καὶ ὑπὸ διαφόρους μορφάς, κυκλική, νεφροειδής, γωνιώδης, λοβιοειδὴς κτλ., καὶ δὴ κατὰ τὴν ἱεροκοκκυγολυτιαίαν χώραν, ἀπὸ μεγέθους δὲ ὀλίγων χιλιοστομέτρων μέχρι διαμέτρου πολλῶν ἑκατοστομέτρων, εἴτε ἐκτεταμένη εἰς τὴν ράχιν, ἀλλὰ σπανιώτερον καὶ εἰς ἄλλα μέρη τοῦ σώματος, τὴν κεφαλὴν καὶ τὸ πρόσωπον, τὸν τράχηλον, τὰ ἄκρα κτλ. (Ἐσκιμῶοι, Ἰάπωνες). Ἐν τούτοις, δὲν γνωρίζομεν ἂν πρόκειται εἰς ὅλας ταύτας τὰς περιπτώσεις περὶ τῆς μογγολικῆς κηλῖδος πράγματι, ἢ ἄλλων μελανωτέρων χρώσεων τοῦ δέρματος.

Ἡ μογγολικὴ κηλὶς ἐκλήθη οὕτως, ὡς απαντῶσα συχνότερον εἰς τὰ νεογνὰ τῶν μογγολοειδῶν φυλῶν καθόλου καὶ κατ' ἐξοχὴν τῆς ἰαπωνικῆς. Εἶναι γνωστὸν ὅμως σήμερον ὅτι ἀπαντᾷ καὶ ἀλλαχοῦ. Ὡς πρὸς τὴν συχνότητα τῆς χαρακτηριστικῆς ἰαπωνικήν, φέρουν τὴν κηλῖδα 99.5 τοῖς % κατὰ τὸ α' ἔτος τὰ παιδία τῶν Ἰαπώνων καὶ 3 τοῖς % ἀκόμη καὶ κατὰ τὸ 13ον τῆς ἡλικίας. Εἰς τοὺς ἄλλους μογγολικοὺς καὶ μογγολοειδεῖς λαούς, εἶναι ὀλιγώτερον συχνὴ (Ἀνναμῖται, Ἐσκιμῶοι, κτλ., εἰς τοὺς Μαλαίους καὶ τὰς διαφόρους φυλὰς τῆς Ὠκεανίας, τοὺς Ἀμερικανοϊνδοὺς ἀκόμη καὶ τοὺς μιγάδας τῆς Ἀμερικῆς). Ἀλλὰ ἡ κηλὶς τῆς ράχεως περετηρήθη εἰς ἄλλην ἄλλοτε συχνότητα καὶ εἰς τὰς λευκὰς φυλὰς (0,5 τοῖς % περίπου). Συχνότερον ὅμως ἀπαντῶσι κύτταρα χρωματοφόρα διάσπαρτα τοὐλάχιστον κατὰ τὴν χώραν ταύτην (Adachi), ὥστε ἡ ἔλλειψις καθαρᾶς κηλῖδος ὀφείλεται εἰς τὴν γενικὴν ἥσσονα ἀνάπτυξιν τῆς χρωστικῆς εἰς τοὺς λευκούς. Τὰ χρωματοφόρα κύτταρα ἀποτελοῦσιν ὀπισθοδρομικὸν χαρακτηριστικὸν τοῦ ἀνθρώπου καθόλου, ἀφοῦ τὰ κύτταρα ταῦτα τοῦ χορίου εὑρίσκονται ἀφθονώτερα εἴς τινας πιθήκους. Πάντως ἡ αἰτία τῆς ἐμφανίσεως τῆς κηλῖδος μᾶς διαφεύγει. Ἡ κηλὶς αὐτή, ὑπάρχουσα ἤδη κατὰ τὴν ἔξοδον τῶν νεογνῶν, ἐμφανίζει ὀλίγον μετὰ τὸν τοκετὸν τὴν μείζονα αὐτῆς ἔντασιν, κυανῆ ἢ ὑποκύανος, βαθμηδὸν δὲ κλίνει πρὸς τὸ φαιόν. Ἐλαττουμένη δὲ μετὰ καιρόν, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν αὔξησιν τῆς γενικῆς ὀρφνότητος τοῦ σώματος μὲ τὴν πρόοδον τῆς ἡλικίας, ἡ τοπικὴ αὕτη μελάγχροια ἐξαλείφεται κατὰ τὸ 2—5 ἔτος, σπανιώτατα παραμένουσα καθ' ὅλην τὴν ζωὴν (Σαμοάναι). Ἡ χρῶσις αὐτῆς ὁτὲ μὲν εἶναι ὁμογενής, σαφῶς περιοριζομένη τῆς τοῦ πέριξ δέρματος, ἄλλοτε δ' ἐλαττοῦται βαθμηδὸν ἐκ τοῦ κέντρου πρὸς τὴν περιφέρειαν. Ἡ κηλὶς δύναται νὰ ἐμφανισθῇ καὶ ὀλίγον βραδύτερον τοῦ τοκετοῦ.

Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**— μογγολικὴ πτυχὴ** *[Ἀνθρωπολ.]*. Πτυχὴ τοῦ δέρματος τοῦ ἄνω βλεφάρου, καλύπτουσα τὸν ἔσω κανθὸν καὶ τὴν ἐγκανθίδα, μηνοειδῶς μεταβαίνουσα εἰς τὸ κάτω βλέφαρον. Ἐὰν αὕτη εἶναι συνέχεια ἁπλῶς τῆς πτυχῆς, ἥτις σχηματίζεται κατὰ πλάτος τοῦ ἄνω βλεφάρου (τῆς «καλυπτηρίου πτυχῆς») εἰς πάντας σχεδὸν τοὺς ἀνθρώπους, ἢ εἶναι ὅλως ἰδιόρρυθμος πτυχὴ ἀνεξάρτητος ταύτης, δὲν εἶναι σαφῶς ἐξηκριβωμένον. Πάντως ἐπὶ ὑπάρξεως τῆς μογγολικῆς πτυχῆς, ἡ ἀναδίπλωσις ἄρχεται μακρὰν τοῦ κανθοῦ καὶ ὡς καλυπτήριος πτυχή, ἥτις κεῖται, ὄχι ὅπως εἰς τοὺς λοιποὺς ἀνθρώπους ὑψηλά, χανομένη ὑπὸ τὸ χεῖλος τοῦ κόγχου, ἀλλὰ χαμηλά, πολλάκις προέχουσα τοῦ ἐλευθέρου χείλους, καθ' ὅλον ἢ μέρος τοῦ πλάτους του. Ἡ πτυχὴ αὕτη καλεῖται *μογγολική*, ὡς ἐκ τῆς τυπικῆς ἐμφανίσεως αὐτῆς ἐπὶ τῶν μογγολικῶν καὶ μογγολοειδῶν φυλῶν κατ' ἐξοχὴν (μογγολικὸς ὀφθαλμός). Καλεῖται δὲ καὶ *βλεφαροχειλικὴ* πτυχὴ (plica marginalis) καὶ *ρινικὴ* κλπ. Ἴσως πρέπει νὰ εἶναι συνώνυμος καὶ μὲ τὴν λέξιν *ἐπίκανθος*, δι' ἧς χαρακτηρίζεται συνήθως ἡ ἀτομικὴ παρουσία ὁμοίας πτυχῆς καὶ ἐπὶ τῶν λευκῶν καὶ ἄλλων φυλῶν (κατά τινας παθολογικῶς). Ἐδώσαμεν δὲ τὸ ὄνομα *ἐπιβλέφαρον*, εἰς τὴν ἀσυνήθη ἀνάπτυξιν τῆς ἁπλῆς καλυπτηρίου ἀναδιπλώσεως ἣν ἀνεφέραμεν, εἴτε καθ' ὅλον τὸ πλάτος τούτου, ὁπότε δὲν ἀποτελεῖ τὴν κυρίαν ἀνωμαλίαν ἡ κάλυψις καὶ τοῦ ἔσω κανθοῦ, εἴτε καὶ μόνον κατὰ τὴν ἐξωτερικὴν μοῖραν τοῦ βλεφάρου, ὁπότε οὐδεμίαν ἔχει σχέσιν μὲ τὸν ἔσω κανθόν, μένοντα ἐλεύθερον.

Ἡ αἰτία τοῦ σχηματισμοῦ τῆς μογγολικῆς πτυχῆς δὲν εἶναι σαφῶς καθωρισμένη· πιθανῶς πρόκειται περὶ ἀταβιστικῆς καταστάσεως, παραμονῆς εἰς κατωτέραν τῆς διαπλάσεως βαθμῖδα. Τὸ ἐπιβλέφαρον ἔχει σχέσιν μὲ τὴν κατάφυσιν τῶν ἰνῶν τοῦ ἀνυψωτῆρος τοῦ ἄνω βλεφάρου μυός, διάφορον ἑκάστοτε, ὑψηλὰ ἐπὶ ὑψηλῆς πτυχῆς καὶ χαμηλὰ ἐπὶ ἐπιβλεφάρου, ὑποβοηθεῖ ὅμως καὶ ἡ ἀνάπτυξις τοῦ λίπους καὶ τὸ ἀραιότερον τοῦ ὑποδορίου ἱστοῦ, ἐπὶ τοῦ τελευταίου. Τοιοῦτο χαρακτηριστικὸν ἐπιβλέφαρον, καὶ δὴ ἐξωτερικὸν ἢ μέσον, εὑρίσκομεν ἐπὶ τῶν Ὀττεντότων καὶ Μπουσμάνων καὶ Πυγμαίων κλπ. τῆς Ἀφρικῆς.

Ἡ μογγολικὴ πτυχὴ κυρίως εἶναι ἡ αἰτία τῆς λοξότητος τῶν ὀφθαλμῶν τῶν Μογγόλων. Ἡ λοξότης εἶναι δηλαδὴ κατὰ τὸ πλεῖστον φαινομενική. Εἶναι ὅμως καὶ πραγματική, καθ' ὅσον τὸ σημεῖον συναντήσεως τῶν εὐθειῶν, αἵτινες διέρχονται διὰ τῶν δύο κανθῶν ἑκάστου ὀφθαλμοῦ, κεῖται ἐγκαρσίως ἢ κατέρχεται κατὰ τὴν μεσοκογχικὴν χώραν. Ἡ λοξότης αὕτη, πραγματικὴ καὶ ἐκ τῆς μογγολικῆς πτυχῆς, εὑρίσκεται καὶ ἀμυδρὰ ἔστω καὶ εἰς τὰς πλέον ἀπομακρυνθείσας (μειχθείσας) μογγολοειδεῖς φυλάς, καὶ ἀποτελεῖ τὸ κύριον χαρακτηριστικὸν ἀνιχνεύσεως τῆς βασικῆς φυλετικῆς προελεύσεως.

Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**— μογγολικὴ ἢ κιτρίνη φυλή.** Μία τῶν ἀνθρωπίνων *φυλῶν* (βλ. λ.), ἐκ τῶν κυρίων διακριτικῶν τῆς ὁποίας εἶναι τὸ κιτρινόχρουν τοῦ δέρματος καὶ ἡ λοξότης τῶν ὀφθαλμῶν.

**μογγολισμὸς** (ὁ). Σύμφυτος διανοητικὴ ἐξασθένησις, σχετικῶς μεγάλη, συνοδευομένη ὑπὸ φυσικῆς καταστάσεως τοιαύτης, ὥστε τὰ πάσχοντα ἄτομα προσομοιάζουσι τὴν φυσιογνωμίαν, καὶ σωματικὴν ἀνάπτυξιν, πρὸς μογγόλους. Ἐπὶ πλέον ἀπὸ ἀπόψεως σωματικῆς, παρατηρεῖται παρ' αὐτοῖς ὑποτυπώδης διαμόρφωσις τῶν γεννητικῶν ὀργάνων, ὑπερευκινησία τῶν ἀρθρώσεων, ὑποτονία, θερμοκρασία κατωτέρα τῆς συνήθους, κυκλοφορία οὐχὶ φυσιολογική. Ἡ διανοητικὴ ἐξασθένησίς των φθάνει μέχρις ἰδιωτείας· εἶναι ἀπαθεῖς ἀδιάφοροι, καὶ ἐμφανίζουσι μιμητισμόν. Αἰτιολογία ἄγνωστος.

—Ω.

**Μογγολίων ναὸς** *[Βυζαντ.]*. Ναὸς ἐν Κωνσταντινουπόλει, παρὰ τὴν νῦν Μεγάλην τοῦ Γένους Σχολήν, κτισθεὶς ἐπ' ὀνόματι τῆς Θεοτόκου τῆς ἐπικαλουμένης τῶν *Μογγολίων*, ἢ κοινότερον *Μουχλίου*, ὑπὸ τῆς Μαρίας, νόθου θυγατρὸς Μιχαὴλ τοῦ Παλαιολόγου, συζύγου χάνη τινὸς τῆς Ταταρίας (Μογγολίας), περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Τὸν ναὸν τοῦτον Μωάμεθ ὁ Πορθητὴς παρεχώρησεν εἰς τὸν ἀρχιτέκτονα Χριστοδούλου, κτίσαντα τὸ μεγαλοπρεπὲς ὁμώνυμον αὐτοῦ τζαμίον.

Α. Θ. Σ.

Digitized by Google

**Μογγόλος** (ὁ)· ὁ ἀνήκων εἰς τὴν μογγολικὴν φυλήν· || ὁ κατοικῶν τὴν Μογγολίαν.

—**Μογγόλων, *δυναστεία*·** βλ. λ. *Μογγολία* καὶ *Κίνα*.

**Μογγολφιέροι** (Montgolfier), ***ἀδελφοὶ*—**. Γάλλοι βιομήχανοι καὶ διάσημοι ἐφευρέται.

— 1) ***Ἰωσὴφ - Μιχαήλ.*** Πρεσβύτερος τῶν δύο ἀδελφῶν, γεννηθεὶς εἰς Ἀννοναὶ τῷ 1740 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1810. Φύσις ἀνήσυχος καὶ ἀνυπότακτος, ἐγκατέλιπεν εἰς ἡλικίαν 13 ἐτῶν τὸν οἶκον τοῦ πατρός του, ἐργοστασιάρχου χαρτοποιίας, καὶ διέμενεν ἐπὶ καιρὸν εἰς παραλίους τόπους, ἀποζῶν ἐκ τῆς ἁλιείας ὀστράκων, τὰ ὁποῖα ἐπώλει περιερχόμενος τὰ ἑστιατόρια καὶ ποτοπωλεῖα. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἐπιτύχει νὰ κατασκευάσῃ χημικάς τινας οὐσίας ἰδικῆς του συνθέσεως καὶ πωλῶν αὐτὰς εἰς τοὺς χωρικοὺς ἐδημιούργησεν ἐκ τούτου νέον, ἀσήμαντον πάντως, πόρον ζωῆς. Μεταβὰς βραδύτερον εἰς Παρισίους ἐπεδίωξε τὴν γνωριμίαν διαφόρων σοφῶν ἐπιστημόνων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης καὶ ἐπέτυχε πράγματι νὰ συνάψῃ σχέσεις μέ τινας ἐξ αὐτῶν χάρις εἰς τὴν ἔμφυτον εὐφυΐαν καὶ τὸ ἐρευνητικὸν πνεῦμά του. Ὁ πατήρ του τότε τὸν ἐκάλεσεν εἰς Ἀννοναί, ὅπου καὶ παρέμεινεν ἐπί τινα χρόνον βοηθῶν αὐτὸν εἰς τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐργοστασίου του. Ἀλλ' ὁ νεαρὸς Μογγολφιέρος ἤθελε νὰ ἐπιφέρῃ εἰς τὰς χαρτοποιητικὰς ἐγκαταστάσεις νεωτεριστικὰς μετατροπάς, ἰδικῆς του κατὰ τὸ πλεῖστον συλλήψεως, ἐνῷ ὁ πατήρ του δὲν ἤθελε ν' ἀπομακρυνθῇ τῶν παλαιῶν μεθόδων. Δι' ὃ καὶ ὁ Ἰωσὴφ τὸν ἐγκατέλιπεν ἐκ νέου καί, συνεταιρισθεὶς μὲ τὸν ἀδελφόν του Στέφανον, ἵδρυσε δύο νέα ἐργοστάσια χαρτοποιίας, τὸ ἓν εἰς Βουαρὸν καὶ τὸ ἄλλο εἰς Μπωζαί. Οἱ δύο ἀδελφοὶ ἐπέτυχον τότε ν' ἁπλουστεύσουν τὰς μεθόδους βιομηχανίας τοῦ κοινοῦ χάρτου καὶ νὰ τελειοποιήσουν τὴν κατασκευὴν ἄλλων ἐκλεκτῶν ποιοτήτων, αὐτοὶ δὲ πρῶτοι παρήγαγον τὸν «περγαμηνὸν» λεγόμενον χάρτην καὶ ἄλλας ἀκόμη πολυτελεῖς ποικιλίας. Ταυτοχρόνως ἐπεδίδοντο, ἐν συνεργασίᾳ πάντοτε, εἰς ἐρεύνας ἐπὶ διαφόρων ἐπιστημονικῶν προβλημάτων καὶ εἰς ἐπινοήσεις ποικίλων μορφῶν. Ἀλλ' ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον ἀπησχόλησεν ἰδίως τὴν ἐφευρετικότητα τῶν δύο ἀδελφῶν καὶ κατέστησεν αὐτοὺς ἐνδόξους ὑπῆρξεν ἡ σκέψις νὰ ἐναποθηκεύσουν τὸν ἀπὸ ἀνημμένης ἑστίας ἀναδιδόμενον καπνὸν ἐντὸς ἐλαφροῦ περιβλήματος, τὸ ὁποῖον ἡ ἀνυψωτικὴ τοῦ καπνοῦ δύναμις θὰ συμπαρέσυρεν εἰς τὰ ὕψη. Πράγματι δὲ ἐπέτυχον νὰ κατασκευάσουν τὴν περίφημον ἀεροσφαῖράν των, ἥτις ἀνυψώθη τὴν 5 Ἰουνίου 1783 εἰς Ἀννοναὶ ὑπὸ τὴν ἔκπληξιν καὶ τὰ χειροκροτήματα τοῦ συγκεντρωθέντος διὰ νὰ παρακολουθήσῃ τὸ πείραμα πλήθους (βλ. λεπτομερείας καὶ εἰκόνας ἐν λ. *ἀεροπλοΐα*). Ἡ πρώτη ἐκείνη ἐπιτυχία διήγειρεν ἀληθῆ ἐνθουσιασμὸν καθ' ὅλην τὴν Γαλλίαν, ἐπηκολούθησαν δ' ἀμέσως κατόπιν ὅμοιαι ἐπιτυχεῖς ἀνυψώσεις εἰς Παρισίους καὶ Βερσαλλίας. Εἰς μίαν ἐξ αὐτῶν, γενομένην τὴν 21 Νοεμβρίου ἰδίου ἔτους, ὁ Πιλᾶτρ ντὲ Ροζιέ, ὁ Σὰρλ καὶ οἱ ἀδελφοὶ Ρομπὲρ ἀνῆλθον εἰς τὸν ἀέρα ἐντὸς λέμβου ἐξηρτημένης ἀπὸ τὴν μογγολφιέριον σφαῖραν, ὁ ἴδιος δὲ ὁ Ἰωσὴφ Μογγολφιέρος ἐλάμβανε μέρος εἰς τὸ μεθεπόμενον ἐκ τῶν πρώτων τούτων ἐναερίων ταξιδίων. Οἱ δύο ἀδελφοὶ ἐξηκολούθησαν συνεργαζόμενοι, ἀλλ' ἄνευ σημαντικοῦ ἀποτελέσματος, ἐπὶ τοῦ προβλήματος τῆς πηδαλιουχήσεως τοῦ ἀεροστάτου. Εὐτυχέστεροι ἐν τούτοις ὑπῆρξαν ἐπὶ ἄλλων ἐπιστημονικῶν καὶ τεχνικῶν ἐρευνῶν των (περὶ ὧν βλ. κατωτ.). Ὁ Ἰωσὴφ Μογγολφιέρος ἀπέθανε τῷ 1810 εἰς τὰ λουτρὰ τοῦ Balaruc, ὅπου εἶχε μεταβῆ πρὸς θεραπείαν ἡμιπληγίας.

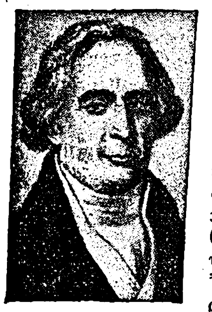

*Ἰωσὴφ Μογγολφιέρος.*

— 2) ***Ἰάκωβος-Στέφανος*** (1745—1799). Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καί, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν πρεσβύτερον ἀδελφόν του, ὑπῆρξεν ἐπιμελέστατος μαθητής. Γενόμενος ἀρχιτέκτων, ἐγκατέλειψε βραδύτερον τὸ στάδιον τοῦτο, διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν χαρτοποιίαν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐπήνεγκεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του, πολλὰς σημαντικὰς τελειοποιήσεις, περὶ ὧν ἐγένετο ἀνωτέρω λόγος. Μετὰ τὴν πρώτην ἐν Ἀννοναὶ ἀνύψωσιν τοῦ κατασκευασθέντος ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν ἀεροστάτου, ὁ Στέφανος μετέβη εἰς Παρισίους κατ' Αὔγουστον 1783, ὅπου ἐπανέλαβε τὸ πείραμα ἐπὶ παρουσίᾳ τῶν μελῶν τῆς ἀκαδημίας καὶ τῆς αὐλῆς. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως εἶχεν οὗτος διορισθῆ νομάρχης ἐν τῇ ἰδιαιτέρᾳ του πατρίδι, ἀλλὰ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς τρομοκρατίας διεβλήθη καὶ κατηγγέλθη κατ' ἐπανάληψιν, ἐσώθη δὲ μόνον χάρις εἰς τὴν ἀφοσίωσιν τῶν ἐργατῶν του. Ἐκ τῶν δοκιμασιῶν ἐκείνων τοῦ ἀπέμεινε σοβαρὰ καρδιακὴ πάθησις, ἐκ τῆς ὁποίας ἀπέθανε τῷ 1799.

Ἐκτὸς τῆς ἐπινοήσεως τοῦ ἀεροστάτου, εἰς τοὺς ἀδελφοὺς Μογγολφιέρους ὀφείλεται ἡ ἐφεύρεσις τοῦ ἀλεξιπτώτου (1784), ἐπίσης δὲ τοῦ ὑδραυλικοῦ κριοῦ (1792), μιᾶς εὐφυεστάτης συσκευῆς διὰ τὴν ξήρανσιν τῶν καρπῶν ἐν ψυχρῷ, ἑνὸς ἀνεμιστῆρος διὰ τὴν ἐν ψυχρῷ ἐπίσης ἀπόσταξιν, ἑνὸς νέου τύπου ὑδραυλικοῦ πιεστηρίου καὶ ἄλλαι.

Μετὰ τὰ ἐπιτυχῆ πειράματα τοῦ ἀεροστάτου των οἱ ἀδελφοὶ ἐξελέγησαν μέλη τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἀπενεμήθη δὲ ὑπὸ τοῦ βασιλέως εἰς μὲν τὸν Στέφανον τὸ παράσημον τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, εἰς τὸν Ἰωσὴφ σύνταξις 1.000 φράγκων καὶ εἰς τὸν πατέρα των τίτλος εὐγενείας. Ἐπὶ πλέον ἐχορηγήθησαν εἰς αὐτοὺς 40.000 φράγκα διὰ τὰς δαπάνας τῶν πειραμάτων των. Ὁ Βοναπάρτης βραδύτερον, ἐκτιμῶν τὴν μεγάλην πολεμικὴν χρησιμότητα τοῦ ἀεροστάτου, ἥτις εἶχεν ἤδη διαπιστωθῆ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Fleury τῷ 1794, ἐπαρασημοφόρησεν ἐκ νέου τοὺς Μογγολφιέρους, διώρισε δὲ βραδύτερον τὸν ἐπιζῶντα Ἰωσὴφ διευθυντὴν τοῦ Μουσείου τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων. Τῷ 1807 ὁ ἴδιος ἐξελέγη μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου εἰς τὸ τμῆμα τῆς γενικῆς φυσικῆς. —Ω.

*Ἰάκ. Μογγολφιέρος.*

**Μογγός.** Στρατηγὸς Βυζαντινός. Ἦτο υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ Ἀνδρονίκου καὶ νεανίας ἔτι ὢν προσεχώρησε τῷ 976 μετὰ τῶν ἀδελφῶν του καὶ τοῦ πατρός του εἰς τὸ στασιαστικὸν ἐν Μ. Ἀσίᾳ κίνημα τοῦ στρατηγοῦ Βάρδα Σκληροῦ κατὰ τοῦ ἄρτι ἀνελθόντος εἰς τὸν θρόνον Βασιλείου Β'. Μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Σκληροῦ καὶ τὴν φυγὴν αὐτοῦ παρὰ τῷ Ἄραβι σουλτάνῳ τῆς Βαγδάτης, ὁ Μογγὸς καὶ οἱ ἀδελφοί του ἐξηκολούθησαν τὴν ἀνταρσίαν μέχρι τοῦ 980, ὅτε ἀμνηστευθέντες ὑπετάγησαν τῷ βασιλεῖ. Ἔκτοτε ὑπηρέτησε πιστῶς τὸν Βασίλειον Β', καὶ τῷ 1016, διαρκοῦντος τοῦ κατὰ τῶν Βουλγάρων πολέμου, ἀπεστάλη ὑπὸ τούτου μετὰ ἰσχυροῦ στόλου καὶ στρατοῦ κατὰ τῶν ἐν τῇ μεσημβρινῇ Ρωσίᾳ Χαζάρων καὶ κατώρθωσε, τῇ συνδρομῇ τοῦ ἡγεμόνος τῶν Ρώσων Βλαδιμίρου, νὰ ἐξαναγκάσῃ τὸν ἡγεμόνα τῶν Χαζάρων Γεώργιον Τζοῦλον νὰ ὑποταχθῇ εἰς τοὺς Βυζαντινοὺς (βλ. καὶ *Βάρδας Σκληρός*). Ν. ΚΛΣ

**Μογιὰντ** (Moyade) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν προσγείων τῆς Μασσαλίας (πλάτ. 43° 11' Β, μῆκ. 5° 24' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3414: Approaches to Marseille). Περιστοιχίζεται ἀπὸ τὰς βραχονησῖδας Μογιαντόν. Σ. Ε. Λ.

**μογιαρθρία** (ἡ) (mogiarthrie). Ὅρος δι' οὗ καθορίζεται ἐν τῇ ψυχοπαθολογίᾳ ἡ δυσχέρεια τῆς ἀρθρώσεως τῶν λέξεων (ἐκ τοῦ *μόγις* καὶ *ἀρθροῦν*). Μ. Ν. Κ.

**μογιγραφία** (ἡ) (mogigraphie). Ὅρος ἀναφερόμενος εἰς τὸν καλούμενον σπασμὸν τῶν συγγραφέων, χαρακτηριζόμενον ὑπὸ τονικῶν σπασμῶν διακεκομμένων καὶ ἐκδηλουμένων μόνον κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς γραφῆς, διὰ κινήσεων ἑκουσίων ἢ ἀκουσίων ἐντοπιζομένων εἰς τοὺς συνεργικῶς ἐνεργοῦντας μῦς τῶν δακτύλων (ἐκ τοῦ *μόγις* καὶ *γράφειν*). Μ. Ν. Κ.

**μογιλαλία** (ἡ) (mogilalie). Ὅρος ἐκσημαίνων τὴν ἀδυναμίαν ἢ τὸ ἀκατόρθωτον τῆς ἀρθρώσεως συλλαβῶν τινων (ἐκ τοῦ *μόγις* καὶ *λαλεῖν*). Μ. Ν. Κ.

**Μογίλας.**—1) ***Πέτρος.*** Ἀνὴρ παλαιᾶς Μολδαβικῆς οἰκογενείας, ἀναγομένης μέχρι τῶν Βυζαντινῶν χρόνων. Ἤκμασε κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα καὶ ἦτο ἐκ τῶν λογιωτέρων τῆς ἐποχῆς του. Ἐκάρη μοναχός, εἰς ἀρχιμανδρίτην δὲ χειροτονηθεὶς διὰ τὴν παιδείαν του, προεχειρίσθη εἶτα μητροπολίτης Κιέβου. Ὡς ἐκ τῆς κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην δημιουργηθείσης προσηλυτιστικῆς τάσεως τῆς καθολικῆς καὶ προτεσταντικῆς Ἐκκλησίας, θέλων νὰ διατυπώσῃ καθαρωτέραν τὴν διδασκαλίαν τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας συνέταξε πλεῖστα συγγράμματα θρησκευτικὰ καὶ λειτουργικά, ἔγραψε δὲ τὸ «Λειτουργιάριον» (1629) καὶ τὴν «Ὀρθόδοξον ὁμολογίαν», ἥτις μετὰ διασκευὴν ὑπὸ τοῦ Κρητὸς θεολόγου Μελετίου Συρίγου καὶ ἔγκρισιν ὑπὸ τῶν πατριαρχείων ἐξεδόθη τῷ 1642. Αὕτη ἀνέδειξεν αὐτὸν καὶ κατέστη ἓν τῶν σπουδαιοτέρων συμβολικῶν βιβλίων τῆς Ἐκκλησίας. —2) ***Γεώργιος.*** Ἀδελφὸς τοῦ Ἱερεμίου ἡγεμόνος τῆς Μολδαβίας ὑφ' οὗ καὶ προήχθη εἰς ἐπίσκοπον Ραδαούτζι καὶ εἶτα εἰς μητροπολίτην Μολδοβλαχίας, τῷ 1588. [Πρβ. *E. Picot* παρὰ *E. Legrand,* «Bibliographie Héllénique» τόμ. Δ', σ. 104 ἑξ. Ἐν σ. 120 ἡ γενεαλογία τῶν Μογίλα ἀπὸ τοῦ 1554.] Τ. Ε. Ε.

**μόγις**· ἐπίρ., μετὰ κόπου, μόλις (ἀρχ.).

**μογιφωνία** (ἡ) (mogiphonie). Οὕτω καθορίζεται διαταραχὴ τῆς ἐκφωνήσεως, εἰδικῶς παρατηρουμένη εἰς τοὺς ἐπαγγελματίας τῆς φωνῆς (ἀοιδούς, ἱεροκήρυκας, ψάλτας, διδασκάλους κλπ.). Συνίσταται δ' αὕτη εἰς ἀδυναμίαν ἢ ἐξασθένησιν φωνητικὴν ταχέως αὐξανομένην, παρακολουθουμένην δὲ ὑπὸ ὀδυνηροῦ αἰσθήματος συσφίγξεως ἢ συστολῆς φαρυγγικῆς, ἥτις παράγεται μόνον κατὰ τὴν ἐπαγγελματικὴν ἄσκησιν τῆς φωνῆς. Ἡ μογιφωνία συμπίπτει ἀνατομικῶς πρὸς τὴν χαλάρωσιν τῶν φωνητικῶν χορδῶν. Οἱ τοιοῦτοι πάσχοντες χαρακτηρίζονται ὡς λαρυγγόφωνοι (ἡ λέξις ἐκ τοῦ *μόγις* καὶ *φωνή*). Μ. Ν. Κ.

**Μογκάδας, *Ματθαῖος*·** βλ. λ. *Μονκάτα* Ματθαῖος.

**Μογλενὰ** (τὰ καὶ ἡ) *[Γεωγρ.]*. Εὔφορος περιοχὴ τῆς ἑλληνικῆς Μακεδονίας, ἀνήκουσα νῦν εἰς τὸν νομὸν Πέλλης καὶ κατέχουσα τὴν πρὸς τὸ ὄρος Βόραν κλειστὴν κοιλάδα, ἡ ὁποία ἀρδεύεται ὑπὸ πολυαρίθμων ρυάκων ἀποτελούντων τὸν Μογλενίτικον ποταμόν. Τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι κυρίως μεσαιωνικόν· πάλαι ἐκαλεῖτο *Ἀλμωπία* (ἐξ οὗ καὶ τὸ σημερινὸν ὄνομα τῆς ἐπαρχίας ταύτης), κατὰ δὲ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐκαλεῖτο συνήθως *Καρατζόβα*, ἐκλήθη δὲ τὸ πρῶτον μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν της *Ἐνωτία* (ἐξ ὁμωνύμου κώμης). Πρὸ τῶν Βαλκανικῶν πολέμων καὶ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν διεκρίνετο ἐκ τοῦ ἐν αὐτῇ ἐπικρατοῦντος πληθυσμοῦ εἰς *Βουλγαρομογλενὰ* καὶ *Βλαχομογλενά*. Καὶ τὰ μὲν πρῶτα κατῳκοῦντο κατὰ μέγα μέρος ὑπὸ Πομάκων, τὰ δὲ Βλαχομογλενὰ ὑπὸ ἐκμωαμεθανισθέντων Κουτσοβλάχων, ἀποτελούσης τῆς περιοχῆς ταύτης λίαν ἐνδιαφέρον πεδίον ἀπὸ ἐθνολογικῆς καὶ γλωσσικῆς ἀπόψεως. Κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας φαίνεται ὅτι εἶχον ἐνταῦθα ἐποικισθῆ ὑπὸ Βυζαντινῶν πολυάριθμοι Πετσενέγοι, ἐφέρετο δὲ καὶ ἐκκλησιαστικὴ διοίκησις ὑπὸ τὸ ὄνομα τῶν Μογλενῶν, διατηρουμένη μέχρι σήμερον (ἐπισκοπὴ *Μογλενῶν, καὶ Φλωρίνης*). Βλ. καὶ *Ἐνωτίας ἐπαρχία*. Ι. Σ. Σ.

**Μογλενίτικος *ποταμὸς*** (ἢ ***Μογλενίτσας***) *[Γεωγραφ.]*. Ποταμὸς τῆς ἑλληνικῆς Μακεδονίας, ἀποτελούμενος κατ' ἀρχὰς ἐκ διαφόρων ποταμίων κατερχομένων ἐκ τοῦ ὄρους Βόρα (ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀλμωπίας ἢ Μογλενῶν) καὶ ἀκτινοειδῶς συμβαλλόντων ἐν τῇ πεδιάδι τῆς ἐπαρχίας ταύτης, ἥτις καθίσταται ἐκ τῆς ὑπὸ τούτων ἀρδεύσεως εὐφορωτάτη. Ἐκ τῆς πεδιάδος ταύτης (ὑψόμ. 134) ἐξέρχεται ὁ ποταμὸς διὰ στενῆς κοιλάδος πρὸς τὴν πεδιάδα τῆς Καμπανίας ἢ Θεσσαλονίκης καὶ τροφοδοτεῖ κατὰ μέγα μέρος τὴν λίμνην Λουδίαν (Γιαννιτσῶν, ὑψόμ. 8). Παλαιότερον φαίνεται ὅτι συνέβαλεν εἰς τὸν Μογλενίτικον καὶ ὁ Ἐδεσσαῖος (Βόδας), ἀποτελῶν τὸν παρ' ἀρχαίοις καλούμενον Ροιδίαν ποταμόν. Ι. Σ. Σ.

**Μογοστόκος** *[Ἀρχ.]*. Ἐπίκλησις τῆς θεᾶς Ἀρτέμιδος ὡς προστατρίας τῶν τοκετῶν (βλ. λ. *Λοχεία*).

**Μογουλιώτισσα *Παναγία*·** βλ.λ. *Μαγουλιώτισσα* Παναγία.

**Μογουντίακον** (Mogontiacum) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς Ἄνω Γερμανίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ρήνου, παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Μοίνου (νῦν Main), ἐπὶ στρατηγικωτάτης θέσεως. Ἁπλοῦς κελτικὸς συνοικισμὸς κατ' ἀρχάς, ὠνομάσθη Moguntiacum ἀπὸ τοῦ ἐπ' αὐτοῦ ἱδρυθέντος φρουρίου ὑπὸ τοῦ Δρούσου τῷ 13 μ.Χ., χρησιμεύσαντος ὡς βάσεως τῶν ἐν Γερμανίᾳ ἐπιχειρήσεων αὐτοῦ. Καταστραφεῖσα ὑπὸ τῶν Βανδάλων καὶ Οὔννων τῷ 406 μ. Χ., ἀνηγέρθη ἐπὶ Δαγοβέρτου Β' (674—679), ἤκμασε δὲ ἀφ' ὅτου Κάρολος ὁ Μέγας (768—771) ἵδρυσεν αὐτόθι ἀρχιεπισκοπήν. Ὑπῆρξε πατρὶς τοῦ Γουτεμβεργίου. Σήμερον καλεῖται *Μαγεντία* (Mainz). Α. Θ. Σ.

**μογχικίτης** (ὁ) (Monchiquit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν λαμπροφυρικῶν φλεβικῶν πετρωμάτων, χρώματος σκοτεινοφαίου μέχρι μέλανος, βασαλτικῆς ὄψεως, ἱστοῦ ὑποκρυσταλλικοῦ μέχρις ὑελοφυρικοῦ, συνιστάμενον ἐξ ὑελώδους θεμελιώδους μάζης, ἡ ὁποία ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἶναι πλουσία εἰς μικρολίθους ἀμφιβολίτου καὶ ἐκ πορφυριτικῶν κρυστάλλων βιοτίτου, ἀμφιβόλου, αὐγίτου καὶ προσθέτως καὶ ὀλιβίνου. Οἱ μογχικῖται παρουσιάζονται ὁμοῦ μετὰ τῶν καμπτονιτῶν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς Maine, New Hampshire, Vermont, Μασσαχουσσέτην, New Jersey, Νέαν Ὑόρκην καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μόδα** (ἡ)· παροδικὴ συνήθεια τοῦ ἐνδύεσθαι ἢ κοσμεῖσθαι συμφώνως πρὸς ἀτομικήν τινα καλαισθησίαν ἢ ἰδιοτροπίαν, νεωτερισμός, κοιν. *συρμός*: «φόρεμα—, καπέλλο τῆς μόδας», «παρακολουθεῖ τὴ μόδα», «πέρασε ἡ μόδα του» (ἰταλ. moda).

—*[Κοινωνιολ.] Μόδα* ἢ *συρμὸς* καλεῖται ὁ ἑκάστοτε τρόπος τῆς ζωῆς, ἰδίᾳ δὲ τῆς ἐνδυμασίας καὶ τοῦ στολισμοῦ τοῦ ἀνδρὸς καὶ τῆς γυναικὸς ἐν δεδομένῃ τινὶ κοινωνίᾳ. Ἡ μόδα ἐκδηλοῦται ὡς ἀποτέλεσμα τοῦ ἐνστίκτου τῆς κοσμήσεως ἰδίᾳ, τὸ ὁποῖον εἶναι πρωταρχικώτερον, καὶ ἀπὸ τὸ ἔνστικτον τῆς αἰδοῦς καὶ τὴν συνήθειαν τοῦ ἐνδύεσθαι. Ὁ πρωτόγονος ἄνθρωπος πρὶν ἢ αἰσθανθῇ

Digitized by Google

τὴν αἰδῶ ἢ τὴν πρακτικὴν ἀνάγκην τοῦ νὰ καλύψῃ τὴν γυμνότητά του διὰ δερμάτων ἢ ὑφασμάτων, ἐπεζήτησε νὰ κοσμήσῃ ἑαυτὸν διαφοροτρόπως. Ὅπως πιστοποιοῦν καὶ σύγχρονοι ἀκόμη παρατηρήσεις ἐπὶ ἀγρίων λαῶν, ὁ χρωματισμός, αἱ οὐλαί, ἡ διάστιξις, αἱ διατρήσεις χειλέων, ὤτων κλπ., αἱ ταινίαι, αἱ ζῶναι, οἱ δακτύλιοι, αἱ πόρπαι, τὰ ἐνώτια κλπ. εἶναι τὰ μέσα, τὰ ὁποῖα καὶ σήμερον ἀκόμη χρησιμοποιοῦν οἱ ἄγριοι διὰ νὰ στολισθοῦν. Ὁ πρωτόγονος ἄνθρωπος δὲν ἐγνώριζεν ἀκόμη πῶς νὰ χρησιμοποιήσῃ τὰ δέρματα τῶν ζῴων, τὰ ὁποῖα ἐφόνευε, διὰ νὰ προφυλαχθῇ ἀπὸ τοῦ ψύχους, δὲν εἶχε καμμίαν ἰδέαν τοῦ τί εἶναι ὕφασμα, ἦτο ἐκτεθειμένος εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ἀνέμου, τῆς βροχῆς, τοῦ καύσωνος, τοῦ ψύχους· ἐν τούτοις ἐκόσμει τὴν κεφαλήν του διὰ πτερῶν, τὸν λαιμόν του διὰ κογχυλίων, τὸν βραχίονά του δι' ὀστῶν ἢ ἐστρογγυλευμένων χαλίκων συνηνωμένων διὰ κλωστῆς, διεπέρα τὴν ῥῖνά του μὲ ἀκάνθας ἰχθύων, ἐτρύπα τὰ ὦτά του καὶ ἠλλοίωνε τὸ πρόσωπόν του, καὶ ταῦτα ἀπετέλουν κυρίως φροντίδα ὄχι τοῦ θήλεος ἀλλὰ τοῦ ἄρρενος. Ἡ κοσμητικὴ αὕτη ἀνάγκη, ἡ ὁποία ὑπηγόρευε τὰς πράξεις ταύτας, φαίνεται ὅτι ὠφείλετο εἰς τὴν ἐπιθυμίαν, ὅπως ὁ οὕτω κοσμούμενος καταστῇ φοβερὸς εἰς τοὺς ἐχθροὺς καὶ ἐπαγωγὸς εἰς τὸν ἔρωτα.

Χαρακτηριστικὸν τῆς μόδας τῶν πεπολιτισμένων λαῶν εἶναι ἡ ἀστασία. Ἡ ἀστασία αὕτη δὲν ἀφορᾷ εἰμὴ μόνον τὰ ἐνδύματα καὶ τὰ κοσμήματα, τὰ ὁποῖα ὑπάγονται εἰς τὴν δικαιοδοσίαν τῆς μόδας. Ἀντιθέτως αἱ ἐθνικαὶ ἢ τοπικαὶ ἐνδυμασίαι αἱ στρατιωτικαὶ στολαὶ καὶ τὰ ἱερατικὰ ἄμφια ἐξελίσσονται βραδύτατα, διότι ἔχουν ἀποκτήσει ἱστορικὸν χαρακτῆρα καὶ ἀποτελοῦν πλέον παράδοσιν. Ἕτερον χαρακτηριστικόν, συγγενὲς τοῦ πρώτου, εἶναι τὸ παράλογον. Ἡ μόδα στερεῖται λογικῆς, μεταβάλλεται οὐχὶ κατὰ τρόπον λογικόν, ὑπακούουσα εἰς τὴν χρησιμότητα ἢ εἰς ἄλλον τινὰ ὁμαδικὸν σκοπόν, ἀλλὰ κατὰ τρόπον ὅλως ἄλογον. Διὰ τοῦτο καὶ δὲν δύναται νὰ γίνῃ λόγος περὶ ἐξελίξεως τῆς μόδας, ἀλλὰ περὶ αὐθαιρέτου μεταβολῆς. Τρίτον σπουδαῖον χαρακτηριστικὸν τῆς μόδας εἶναι ἡ τυραννικὴ ἐπιβολή της. Αἱ ἐφευρέσεις τῆς μόδας καὶ ἂν εἶναι ἐνοχλητικαὶ ἢ ἐκκεντρικαὶ ἐπιβάλλονται. Ὁ κομψευόμενος δὲν πρέπει νὰ τὰς συζητῇ, ἀλλ' ἁπλῶς νὰ ὑποτάσσεται εἰς αὐτὰς καὶ μάλιστα ὅσον τὸ δυνατὸν ταχύτερον. Τελευταῖον χαρακτηριστικὸν τῆς μόδας ἀποτελεῖ τὸ γεγονὸς ὅτι αὕτη οὐδέποτε εἶναι γελοία κατὰ τὴν στιγμὴν τοῦ λανσαρίσματος καὶ τῆς τηρήσεώς της· ἀποβαίνει τοιαύτη ὀλίγον χρόνον ἀφοῦ ἐγκαταλειφθῇ διὰ νὰ υἱοθετηθῇ ἄλλη. Τὰ γενικὰ λοιπὸν χαρακτηριστικὰ τῆς μόδας εἶναι: διηνεκὴς ἀστασία, ἡνωμένη μὲ τυραννικὴν ἐπιβολήν, καὶ ἀμέλεια τῶν νόμων τῆς λογικῆς καὶ τοῦ γελοίου.

Κάθε γεγονός, τὸ ὁποῖον κατατάσσεται εἰς τὰς ἐκδηλώσεις τῆς μόδας, δὲν δύναται νὰ εἶναι ἀτομικόν· πρέπει νὰ ἔχῃ ὁμαδικὸν χαρακτῆρα, νὰ εἶναι κοινωνικόν. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον ἡ μόδα δέον νὰ θεωρῆται ὡς καθαρῶς κοινωνικὸν φαινόμενον, τὸ ὁποῖον ἔχει καὶ τὰ αἴτιά του (ὅπως ὅλα τὰ κοινωνικὰ φαινόμενα) εἰς τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν καὶ εἰς τὴν κοινωνικὴν συμβίωσιν. Οὕτω εἰς ἐκ τῶν κυριωτέρων λόγων τῆς ὑπάρξεως τοῦ κοινωνικοῦ τούτου φαινομένου εἶναι ἡ κοινωνικὴ διάκρισις. Ὑπαρχούσης τῆς διακρίσεως ταύτης, ὁ κατώτερος μιμεῖται τὸν ἀνώτερόν του εἰς τὴν ἐνδυμασίαν ἢ διὰ νὰ τοῦ ἐπιδείξῃ σέβας ἢ διὰ νὰ διεκδικήσῃ κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον τὴν ἰσότητα, τὴν ὁποίαν ἄλλως δὲν δύναται νὰ ἐπιτύχῃ. Βασιλεύς τις καλύπτει τὸν λαιμόν του διὰ πλατέος περιλαιμίου ὅπως ἀποκρύψῃ οὐλὰς ἢ χοιράδας. Οἱ αὐλικοί του τὸν μιμοῦνται εἰς ἔνδειξιν σεβασμοῦ καὶ οἱ ἄλλοι ὑπήκοοι, οἵτινες ἀγνοοῦν τὴν ἀδυναμίαν τοῦ βασιλέως, μιμοῦνται τοὺς αὐλικοὺς διὰ νὰ ἐξισωθοῦν πρὸς αὐτούς. Οὕτω εἰς τὰς ἐπὶ τῆς ἱεραρχίας στηριζομένας κοινωνίας αἱ ἀνωτεροιτάξεις δίδουν τὰ παράδειγμα οἱασδήποτε μόδας, αἱ δὲ κατώτεραι τάξεις μιμοῦνται ἐκεῖνο, τὸ ὁποῖον ἔρχεται ἐκ τῶν ἄνω, διὰ νὰ δείξουν ὅτι δύνανται νὰ ἐξισωθοῦν μὲ τοὺς ἀνωτέρους των· οὗτοι πάλιν, διὰ νὰ διακρίνωνται, ἐγκαταλείπουν τὴν προηγουμένην μόδαν καὶ ἐνστερνίζονται ἄλλην, ἥτις μὲ τὴν σειράν της γίνεται πάλιν ἀντικείμενον μιμήσεως ἐκ μέρους τῶν κατωτέρων καὶ οὕτω καθ' ἑξῆς.

Ἀλλ' ἡ κυριαρχία τῆς μόδας εἶναι ἐξ ἴσου ἰσχυρὰ καὶ εἰς τὰς δημοκρατικὰς κοινωνίας, ὅπου ἡ ἱεραρχία εἶναι μειωμένη εἰς τὸ ἐλάχιστον. Ἐκτὸς λοιπὸν τοῦ λόγου τῆς κοινωνικῆς διακρίσεως θὰ ὑπάρχουν καὶ ἄλλοι. Οἱ λόγοι οὗτοι εἶναι φύσεως οἰκονομικῆς, κοινωνικῆς καὶ ψυχολογικῆς. Μεταξὺ τῶν λόγων τῶν καθαρῶς οἰκονομικῆς φύσεως πρέπει ν' ἀναφέρωμεν τὸ ἀπλοῦν καὶ πρόδηλον συμφέρον τοῦ ἐμπόρου ἢ τοῦ ῥάπτου, οἵτινες ἀλλάσσουν τὴν μόδαν, διὰ νὰ ἐκκαθαρίσουν παρακαταθήκας ἐμπορευμάτων ἢ νὰ ἔχουν νέας ζητήσεις ἐκ μέρους τῶν πελατῶν των. Ἔπειτα αἱ μεγάλαι νεώτεραι ἐφευρέσεις, ὁ τηλέγραφος, τὸ τηλέφωνον, ὁ ἀσύρματος, οἱ σιδηρόδρομοι, τ' αὐτοκίνητα, τ' ἀεροπλάνα καὶ αἱ ταχεῖαι πρόοδοι τοῦ βιομηχανισμοῦ εἰς ὅλας τὰς μορφάς του ἐξηγοῦν τὴν ὑπερβολικὴν ἀνάπτυξιν καὶ διάδοσιν τῆς μόδας. Ἰδίᾳ ὁ βιομηχανισμός, ὅστις ηὔξησε τὴν παραγωγὴν ἐπὶ ζημίᾳ τῆς στερεότητος τῶν παραγομένων ἀντικειμένων, διηυκόλυνε τὴν παγκόσμιον ἐξάπλωσιν τῆς μόδας.

Ἕτερος λόγος, ἴσως ὁ πλέον θεμελιώδης λόγος τῆς κυριαρχίας τῆς μόδας, πανάρχαιος καὶ βαθύτατα ζωϊκός, εἶναι τὸ ἐρωτικὸν ἔνστικτον, τὸ libido κατὰ τὸν Freud. Ὁ πρωτόγονος ἄνθρωπος, ἂν διαστίζεται, ἂν σχηματίζῃ οὐλὰς καὶ ἂν ζωγραφίζῃ τὸ σῶμά του, τὸ πράττει πρὸ πάντων διὰ ν' ἀρέσῃ εἰς τὸν ἔρωτα καὶ ἔπειτα διὰ νὰ καταστῇ φοβερὸς εἰς τὰ ὄμματα τῶν ἐχθρῶν του. Ὁ γενετήσιος λόγος φαίνεται σπουδαιότερος τοῦ πολεμικοῦ. Τὸ αὐτὸ συμβαίνει καὶ μὲ τὸν σημερινὸν πεπολιτισμένον ἄνθρωπον, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι, ἐνῷ παρὰ πρωτογόνοις ὁ ἀνὴρ ἦτο ἐκεῖνος, ὅστις ἐστολίζετο περισσότερον, σήμερον εἰς τὴν γυναῖκα κυρίως ἐμφανίζεται ἐντονώτερος ὁ πόθος, ὅπως ἐνεργῇ κατὰ τὰς ὑπαγορεύσεις τῆς μόδας. Ἡ μανία τοῦ νὰ εἶναί τις chic ἐλαττοῦται μὲ τὴν κατάπτωσιν τῆς γενετησίου ὁρμῆς, δηλαδὴ μὲ τὴν ἡλικίαν (οἱ ἡλικιωμένοι ἀκολουθοῦν γενικῶς τὴν μόδαν ὀλιγώτερον ἀπὸ τοὺς νέους), οὐχὶ σπανίως δὲ καὶ μὲ τὴν ἐπιτυχίαν τοῦ ποθουμένου, τὴν ἀπόκτησιν δηλαδὴ συζύγου.

Μετὰ τὸ γενετήσιον ἔνστικτον ἕτερος εὐνοϊκὸς διὰ τὴν μόδαν παράγων συνίσταται εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι αἱ πλούσιαι θήλειαι πρὸ πάντων εἶναι ἀργαὶ καὶ ἄπρακτοι. Ἡ ἀπραξία, ἡ ἀργία, ἡ νωχέλεια καὶ ἡ ματαιοδοξία, τὴν ὁποίαν γεννᾷ ὁ πλοῦτος, εἶναι ἰσχυροὶ σύμμαχοι τῆς μόδας. Παράγωγος τῆς καταστάσεως ταύτης εἶναι καὶ ἡ ματαιόδοξος ἀντιζηλία μεταξὺ τῶν ἀνθρώπων. Αἱ κομψευόμεναι γυναῖκες θέλουν νὰ συντρίψουν τὰς ὁμοίας των μὲ τὴν κομψότητά των, οἱ δὲ ἄνδρες ἐπιθυμοῦν νὰ ἐπιδεικνύουν τὰ πλούτη των καὶ τὴν ἰσχύν των ἐπὶ τῶν ὤμων τῶν γυναικῶν των.

Ἔπειτα σπουδαῖον λόγον ἀποτελοῦν καὶ τὰ παράγωγα ἐκ τῆς ἱκανοποιήσεως τῶν ἀπαιτήσεων τῆς μόδας συναισθήματα, τὰ ὁποῖα ἐν τῷ συνόλῳ των ἔχουν χαρακτῆρα χαρᾶς. Ὁ ἄνθρωπος, ὅστις φέρει νέον ἔνδυμα ἢ τουαλέτταν, συναισθανόμενος ὅτι ἱκανοποιεῖ διὰ τῆς μόδας ὅλους τοὺς ἀνθρωπίνους λόγους, οἱ ὁποῖοι τὴν προκαλοῦν, αἰσθάνεται εἶδός τι εὐχαριστήσεως, ἥτις ἐκδηλοῦται διὰ ῥοδαλοῦ καὶ ζωηροῦ προσώπου, λάμποντος βλέμματος, ἱλαρᾶς ἐκφράσεως καὶ καθ' ὅλου τάσεως πρὸς κίνησιν καὶ δρᾶσιν. Τὴν ἔντασιν (παρόρμησιν) ταύτην ἐπιζητοῦν διὰ τῆς τουαλέττας των ἀσυναισθήτως αἱ κομψευόμεναι καὶ οἱ κομψευόμενοι.

Τελευταίαν αἰτίαν τῆς κυριαρχίας τῆς μόδας ἀποτελεῖ ἡ ὑποβολή, ἥτις σχηματίζει κύκλον ἐν τῇ πορείᾳ της. Ἡ ὑποβολὴ αὕτη ἐμφανίζεται ὡς ὑποβολὴ τῆς κοινωνίας ἐπὶ τοῦ ἀτόμου, τοῦ ἀτόμου ἐπὶ ἑαυτοῦ του καὶ τοῦ ἀτόμου ἐπὶ τῆς κοινωνίας. Ἡ κοινωνία ὑποχρεώνει τὸ ἄτομον εἰς τὴν συμμόρφωσιν καὶ τὴν ἅμιλλαν· τὸ ἄτομον αὐθυποβάλλεται ἀναλόγως τῆς ἐξωτερικῆς του ἐμφανίσεως καὶ λαμβάνει ἀνάλογον ὕφος καὶ στάσιν καὶ ἡ κοινωνία ὑποβάλλεται ἐκ μέρους τοῦ ἀτόμου, κρίνουσα ἀναλόγως τῆς ἐξωτερικῆς ἐμφανίσεως καὶ ὄχι τῆς πραγματικότητος. Ἡ τριπλῆ αὕτη ὑποβολή, τὴν ὁποίαν δύναται εὐκόλως νὰ διαπιστώσῃ κάθε προσεκτικὸς παρατηρητής, εἶναι εἷς ἐκ τῶν σπουδαίων λόγων τῆς κυριαρχίας τῆς μόδας. Ἡ δύναμίς της εἶναι τόσον μεγάλη, ὥστε πολλάκις, πρὸς ἱκανοποίησιν τοῦ πόθου συμμορφώσεως, αἱ γυναῖκες ἰδίως νὰ καταφεύγωσιν εἰς μέσα ὄχι πάντοτε ἔντιμα.

Σκοπὸς τῆς μόδας δὲν εἶναι ἡ ὡραιότης, τὸ κάλλος καθ' ἑαυτό, ἀλλ' ἡ κομψότης. Τὸ ἀληθὲς κάλλος ὑπὸ τὴν καθαρῶς αἰσθητικὴν σημασίαν τῆς λέξεως, δὲν εἶναι κτῆμα τῆς μόδας. Ὁ κοινωνικὸς σκοπὸς αὐτῆς εἶναι νὰ κρύψῃ τὴν ἀσχημίαν, νὰ διορθώσῃ τὴν δυσμορφίαν, νὰ παρασκευάσῃ τῇ βοηθείᾳ τεμαχίων τινῶν ὑφάσματος μίαν πλάνην, ἓν ψεῦδος, διὰ νὰ καταστήσῃ ὑποφερτὴν τὴν ζωήν μας. Τὰ συναισθήματα, τὰ ὁποῖα γεννᾷ ἡ θέα ἑνὸς κομψῶς ἐνδεδυμένου, εἶναι συναισθήματα καλλιτεχνικά· αἱ ἐπ' αὐτοῦ κρίσεις μας (ἐπιδοκιμαστικαὶ ἢ ἀποδοκιμαστικαὶ) εἶναι καλλιτεχνικῆς φύσεως, διότι ἀφοροῦν ἓν κατασκεύασμα τέχνης, ὅπως ὅλα τὰ ἄλλα. Ἡ μόδα ἔχει χαρακτηριστικά τινα τῶν καλῶν τεχνῶν· εἶναι ψεῦδος, τέχνασμα μὲ ψυχολογικὸν σκοπόν· μεταμορφώνει τὴν ὕλην, τὴν ὁποίαν τῆς παρέχει ἡ φύσις, ὅπως γεννήσῃ ἐν ἡμῖν αἰσθήματα καλλιτεχνικῆς φύσεως, τὰ ὁποῖα ὅμως δὲν εἶναι καθαρῶς ἀφιλοκερδῆ καὶ διὰ τοῦτο δὲν εἶναι καθαρῶς καλλιτεχνικά. Ἡ μόδα δὲν δύναται νὰ συγκαταλεχθῇ μεταξὺ τῶν ὡραίων τεχνῶν· ἡ θέσις της ἀσφαλῶς εἶναι ὑπεράνω μὲν τῶν καθαρῶς κοσμητικῶν τεχνῶν, ἀλλ' ὑπὸ τὰς καλὰς τέχνας. [Πρβλ. ***Mustoxidi***, Qu'est-ce que la mode? (Paris 1920). —***Alain***, Système des Beaux-Arts (ἔκδ. 4η Paris 1926) σ. 64 κ. ἑξ.] Θ. Π.

— *[Ἱστορ.]* Εἰς τὴν μόδαν ἔθυσαν ὄχι ὀλίγον οἱ Ἕλληνες καὶ Ῥωμαῖοι τῆς ἀρχαιότητος. Εἰς τὴν Γαλατίαν κατακτηθεῖσαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων ἀνευρίσκομεν ὅλους τοὺς συρμούς των. Ἐπὶ τοσοῦτον μάλιστα μετεφυτεύθη ἐκεῖ ἡ πολυτέλειά των, ὥστε οἱ βάρβαροι, οἱ νέοι κατακτηταὶ τῆς χώρας ταύτης, ὑπετάχθησαν ἀμέσως ὑπὸ τὸν ζυγὸν τῆς μόδας. Καθ' ὅλους τοὺς μεροβιγγείους χρόνους οἱ ἀριστοκράται ἐκ τῶν Φράγκων δὲν διατηροῦσιν ἐκ τῶν ἰδίων συρμῶν ἢ μόνον τὴν μακρὰν κόμην, ἡ ὁποία ἦτο ἔμβλημα τοῦ ἀριστοκρατικοῦ των γένους· κατὰ τὰ λοιπὰ ἡ ἐμφάνισις αὐτῶν συμμορφοῦται μὲ τοὺς ῥωμαϊκοὺς ἢ βυζαντινοὺς συρμούς. Ἡ ποικιλία καὶ ὁ πλοῦτος τῶν τελευταίων ἦτο ὄντως ἀμύθητος. Ἡ βυζαντινὴ ἐπίδρασις ἐγένετο ἀκόμη μεγαλυτέρα ἐπὶ Καρλομάγνου μὲ καταπληκτικὴν ἐμφάνισιν εὐανθῶν χρωμάτων εἰς βαρύτιμα ὑφάσματα. Μετ' οὐ πολὺ καταφθάνουσιν εἰς τὴν κεντρικὴν Εὐρώπην τὰ ἀνατολικὰ ὑφάσματα, τὰ μεταξωτὰ τὰ εἰσαγόμενα πολυεξόδως ἀπὸ τὰς Ἰνδίας, ἀπὸ τὴν Ἀραβίαν καὶ τὴν Ἱσπανίαν. Ἐμφανίζονται μὲ ἐσπαρμένα ἐπάνω των ἄνθη ἢ ἀστέρας χρυσοῦς, μὲ ῥητὰ χρυσοκέντητα τοῦ Κορανίου, τὰ ὁποῖα παραμένοντα ἀκατανόητα ἐξελήφθησαν μᾶλλον ὡς κοσμήματα, καὶ βραδύτερον ἀπεκλήθησαν ἀραβουργήματα. Ἡ ἐπίδρασις τῆς Ἀνατολῆς ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς μόδας εἶναι πλήρης μετὰ τὰς σταυροφορίας. Τότε αἱ γυναῖκες τοῦ συρμοῦ ἐμφανίζονται φέρουσαι, ὡς αἱ Ἀνατολίτισσαι, χειρίδας πλατείας, σχιστὰς καὶ μακρὰς μέχρι τοῦ ἐδάφους. Τὰ ὑποδήματα μὲ τὸ ἀνεσυρμένον ὀγκῶδες ἄκρον δὲν εἶναι ἢ τὸ ὀθωμανικὸν ὑπόδημα ὑπερβολικῶς ἐκπεφρασμένον, χάρις εἰς ἰδιοτελῆ φαντασιοπληξίαν τοῦ Foulques le Réchin, ὅστις ἀπέκρυπτεν οὕτω τὰ ἐξογκώματα τῶν στρεβλῶν ποδῶν του. Ἡ βασιλεία τῶν ἀνατολικῶν συρμῶν συνεπήγετο σχῆμα ἐνδύματος πλατὺ καὶ ἄνετον. Δὲν ἐβράδυνεν ἡ μεταλλαγὴ εἰς σχῆμα ὅλως ἀντίθετον. Οἱ κομψευόμενοι ἔφερον ἐνδύματα στενὰ καὶ κοντὰ καὶ αἱ γυναῖκες διὰ νὰ ἔχουν χειρίδας ὑποτυπούσας πιστότερα τοὺς βραχίονάς των, τὰς περιέδενον σφικτά. Ἀλλ' ὅταν ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ θρόνου ὁ Κάρολος ὁ Ζ΄, ἐπειδὴ εἶχε σκέλη στρεβλά, τὸ ἔνδυμα ἐγένετο καὶ αὖθις μακρόν. Ἐπὶ Καρόλου Η΄ ἡ γαλλικὴ μόδα ἰταλίζει, ἀκόμη δὲ περισσότερον ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΒ΄ καὶ ἐπὶ Φραγκίσκου Α΄. Ὁ τραυματισμὸς εἰς τὴν κεφαλὴν τοῦ τελευταίου τούτου κατὰ τὴν διεξαγωγὴν ἱπποτικοῦ ἀγωνίσματος ἐξαναγκάσας αὐτὸν νὰ κείρῃ τὴν κόμην, ἐγένετο αἰτία τοῦ συρμοῦ τῶν πολὺ κοντῶν μαλλιῶν. Ὁ Ἑρρῖκος Β΄ εἶχεν εἰς τὸν λαιμὸν οὐλὴν ἀρκετὰ ἐκθεῖαν· διὰ ν' ἀποκρυβῇ αὕτη, ἐπενοήθησαν αἱ ὀγκώδεις τραχηλιαὶ (fraises). Ἐπὶ Καρόλου Θ΄ ἐπῆλθε μικρὰ ἀντίδρασις μὲ τάσεις πρὸς τοὺς αὐστηροὺς γερμανικοὺς συρμούς, λόγῳ τοῦ γάμου τοῦ βασιλέως τούτου μὲ τὴν Ἐλισάβετ τὴν Αὐστριακήν· ἀλλ' ὑπῆρξε βραχεῖα, καὶ ἡ Ἰταλία ἐκυριάρχησε καὶ πάλιν, χάρις εἰς τὴν ἐλαφρὰν ὕλην τῶν καριῶν τῆς τιμῆς τῆς Αἰκατερίνης τῶν Μεδίκων. Χάρις ἐπίσης εἰς τὸν Ἑρρῖκον Γ΄, ὅστις δὲν ἠρκεῖτο νὰ ῥυθμίζῃ τὸ σχῆμα τῶν ἐνδυμασιῶν, ὅτε μὲν πλατὺ καὶ ἄλλοτε στενόν, ἀλλ' εἰργάζετο καὶ ὁ ἴδιος εἰς τὴν κατασκευήν των, ἐμβαπτίζων ἰδιοχείρως εἰς τὴν κόλλαν τὰς ὀγκώδεις τραχηλιὰς καὶ ἐκτελῶν πλατείας ἐντομὰς εἰς τὸ ἔνδυμα. Αἱ γυναῖκες ἔφερον ὀγκώδεις στεφάνους (vertugadins ἢ λογοπαικτικῶς vertugardiens=φύλακας ἀρετῆς) ὑπὸ τὴν ἐσθῆτά των, διὰ νὰ παρουσιάζῃ αὕτη μέγαν ὄγκον. Νέαι μεταβολαὶ ἐπῆλθον ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ΄. Αἱ γυναῖκες ἐπὶ τῆς βασιλείας του ἀρχίζουν ν' ἀποκαλύπτουν τὸ στέρνον, ἀλλ' ὅμως φέρουν ἁδρὰ περιδέραια καὶ τραχηλιὰς ὕψους 0,35 μ. Οἱ ἄνδρες τρέφουν μύστακα καὶ μικρὰν δέσμην τριχῶν εἰς τὸν πώγωνα. Βραδύτερον ἤρχισεν ἡ μόδα τῆς φενάκης ἢ προσθέτου κόμης. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ΄ ὁ ὄγκος της ἦτο ὑπερβολικός. Ἄλλαι μεταβολαὶ ἐπῆλθον ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΕ΄, καὶ ἀπὸ τοῦ 1725 ἤρχισεν ἡ μίμησις τῶν ἀγγλικῶν συρμῶν. Οὐχ ἧττον ὑπερίσχυον πάντοτε οἱ γαλλικοί. Ἡ Γαλλικὴ Ἐπανάστασις ἐπανέφερε τὴν ἀρχαίαν ἐσθῆτα, τὸ διευθυντήριον τὰς φαινομηρίδας· ἡ δὲ πρώτη αὐτοκρατορία ἐξηκολούθησε καθορίζουσα τὴν ὀσφὺν ὑπὸ τοὺς μαστούς. Κατὰ τὴν δευτέραν αὐτοκρατορίαν ἀνεφάνησαν τὰ κρινολίνα. Ἔκτοτε ἡ μόδα ὑφίσταται ῥαγδαίας καὶ ῥιζικὰς μεταβολάς. Αἱ ἐσθῆτες, μὲ αὐτάς, ἀπὸ μακροτάτων ἀνῆλθον μέχρι τοῦ γόνατος, καὶ ἐθυσιάσθη εἰς τὴν μόδαν καὶ αὐτὴ ἡ γυναικεία κόμη. Διὰ τὴν γυναικείαν μόδαν τὸ σύνθημα δίδεται ἐκ Παρισίων· διὰ τὴν ἀνδρικήν, κατὰ πολὺ συντηρητικωτέραν, ἐκ Λονδίνου. τ. λ.

**Μοδὰ λιμὴν** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῶν ἐν τῇ Προποντίδι μικρασιατικῶν προσγείων τοῦ Βοσπόρου, σχηματιζόμενος νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου Μοδὰ-μπουρνοῦ καὶ βορείως τοῦ Φενὰρ-μπουρνοῦ (πλάτ. 40°58' Β., μῆκ. 29°02' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224 Sea of Marmara). Εἶναι ἡ Colpusa τοῦ Πλινίου (V, 43, 2 Didot). Ἐν αὐτῷ εἶχε προσορμισθῆ διὰ ῥυμουλκίας τὸ «Γκαῖμπεν» ὑπὸ τῶν συμμάχων καὶ συγκεντρωθῆ ὁ στόλος τοῦ *Βράγκελ* μετὰ τὴν ἀτυχοῦς ἐκβάσεως ἀντεπανάστασίν του. σ. ε.

**Μοδὰ-μπουρνοὺ** *[Γεωγρ.]*.—1) Τὸ ἀκρωτήριον *Ἀκρίτας* τῆς Χαλκηδόνος, ἐφ' οὗ ὑπῆρχεν ὁ ναὸς τῆς Ἀφροδίτης. Ἐπ' αὐτοῦ ὑπάρχει πηγή, καλουμένη Ἁγίασμα τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου, ἐκ τῆς ἄλλοτε παρ' αὐτὴν ἐκκλησίας τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου, ἐν ᾗ

ἐστέφθη τῷ 602 ὁ αὐτοκράτωρ Φωκᾶς. Σήμερον εἶναι ἓν τῶν πλουσιωτέρων καὶ εὐκραεστέρων προαστείων τῆς Χαλκηδόνος.

— 2) Ἀκρωτήριον τῆς χερσονήσου τῆς Κυζίκου, καθ' ὃ ἡ ἀνατολικὴ αὐτῆς ἐσχατιὰ (πλάτ. 40°27'15" Β., μῆκ. 28°02'00" Αν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ΒΑ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Περάμου. Σ. Ε. Λ.

**μοδαρὰ** (ἡ)· ἰδιωμ. Κρήτ., καλεῖται οὕτω ὑπὸ τῶν ποιμένων ἡ νωπὴ μυζήθρα, μόλις ἐξαχθῇ ἐκ τοῦ τυπίου. Ι. Δ. Μ.

**Μοδάτσος**· βλ. λ. *Μουάτσος.*

**Μόδδερ ρίβερ** (Modder river) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μόντερ ρίβερ.*

**μοδελλίδαι** (οἱ) (Modellidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἑτερομερῶν*, περιλαμβάνουσα μικροῦ, γενικῶς, μεγέθους κανθάρους πανταχοῦ τῆς γῆς ἀπαντῶντας. Ἐκ τῶν πολλῶν γενῶν γνωστότερα εἶναι ἡ *μοδέλλα* καὶ ἡ *μοδελλίστενα* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μοδελλίστενα** (ἡ) (Modellistena) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μοδελλιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 100 εἴδη, ἐξ ὧν τὰ 20 ἀπαντῶσιν ἐν Εὐρώπῃ. Γνωστότερον εὐρωπαϊκὸν εἶδος εἶναι ἡ *μοδελλίστενα ἡ φαιὰ* (Modellistena cinerea), ἥτις ἔχει ἀρκετὸν μέγεθος, σῶμα ἐπίμηκες καὶ εὐρύ, προθώρακα πλατύτατον καὶ κοιλίαν ἀπεστρογγυλωμένην, ἀπολήγουσαν εἰς αἰμηρὸν τριγωνικὸν τέρετρον. Αἱ κεραῖαί της εἶναι λεπτόταται καὶ ἐπιμήκεις καὶ οἱ πόδες μετρίου μεγέθους τελευτῶσιν εἰς ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις. Ὁ γενικὸς χρωματισμὸς εἶναι σκοτεινῶς φαιός. Δ. Ν. Π.

**μοδέλλο** (τό)· βλ. λ. *μοντέλλο.*

**Μοδερᾶτος *ἐκ Γαδείρων.*** Ἕλλην φιλόσοφος τῆς νεοπυθαγορείου σχολῆς, ζήσας κατὰ τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα. Ὑπεστήριζεν ὅτι οἱ παλαιοὶ πυθαγόρειοι, ἀδυνατοῦντες ἀκόμη νὰ ἐκφράζουν σαφῶς τὰ διανοήματά των διὰ λέξεων, ἐχρησιμοποίουν τοὺς ἀριθμοὺς ὡς σύμβολα. Ἡρμήνευεν ἐπίσης τὸν πυθαγορισμὸν κατὰ ἐντελῶς αὐθαίρετον τρόπον καὶ ἰσχυρίζετο ὅτι ἀνεύρισκεν εἰς αὐτὸν ὅλας τὰς βραδύτερον ὑπὸ τῶν ἄλλων φιλοσόφων ὑποστηριχθείσας γνώμας, αἱ ὁποῖαι εἰς τὰ ὄμματά του δὲν ἦσαν παρὰ δάνειοι ἐκ τοῦ Πυθαγόρου. Ὑπὸ τοῦ Vacherot καὶ τοῦ Ravaisson θεωρεῖται πρόδρομος τῆς ἀλεξανδρινῆς σχολῆς, ἅτε πρῶτος ἐπιχειρήσας νὰ παραγάγῃ τὴν ὕλην ἢ τὴν ποσότητα ἐκ τῆς θείας ἀρχῆς. Ἡ γνώμη ὅμως αὕτη στηρίζεται ἐπὶ ἑρμηνείας χωρίου τινὸς τοῦ Σιμπλικίου, τοῦ ὁποίου τὴν ἀνακρίβειαν ἀπέδειξεν ὁ E. Zeller.

**μοδεράτωρ** (ὁ) (Moderator=κυβερνήτης, ἁρμοστής, διοικητής) *[Βυζαντ.]*. Τὸν τίτλον τοῦτον ἔφερον οἱ διοικηταὶ δύο ἐπαρχιῶν τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας, πρὸ τῆς εἰς θέματα διαιρέσεως αὐτῆς (πρὸ τοῦ Η' αἰῶνος), ὅτε οἱ διοικηταὶ ὠνομάσθησαν στρατηγοί. Τὸν τίτλον τοῦ μοδεράτωρος ἀπαντῶμεν τὸ πρῶτον κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΣΤ' αἰῶνος ἐπὶ Ἰουστινιανοῦ Α' (527—565), ὅτε οὗτος ἥνωσε τὸν Ἑλενόποντον μετὰ τοῦ Πολεμωνιακοῦ Πόντου εἰς μίαν ἐπαρχίαν, τὸν διοικητὴν τῆς ὁποίας ὠνόμασε *μοδεράτωρα* «ὃν ἄν τις ἁρμοστὴν καλέσειεν τῇ συνήθει (δηλαδὴ τῇ ἑλληνικῇ) χρώμενος γλώττῃ» (Νεαρὰ κη'). Βραδύτερον διὰ τῆς ρβ' νεαρᾶς αὐτοῦ ὁ Ἰουστινιανὸς ἔδωσε τὸν αὐτὸν τίτλον καὶ εἰς τὸν διοικητὴν τῆς Ἀραβίας, ἐνῷ οἱ τῶν λοιπῶν ἐπαρχιῶν διοικηταὶ ἔφερον τὸν τίτλον τοῦ πραίτωρος ἢ τοῦ κόμιτος ἢ τοῦ ἀνθυπάτου ἢ τοῦ ὀρδιναρίου (βλ. λ. *θέμα*). Ν. ΚΛΣ

**μοδερνισμὸς** (ὁ)· βλ. *μοντερνισμός.*

**μοδέρνος,** *—α, —ο*· βλ. *μοντέρνος.*

**Μοδεστῖνος** (Modestinus), ***Ἐρένιους.*** Ὁ ἔσχατος τῶν δοκίμων Ρωμαίων νομοδιδασκάλων, ὁ πέμπτος ἐκ τῶν ἐννέα τοῦ ἀναφορικοῦ νόμου τοῦ αὐτοκράτορος Θεοδοσίου Β', ἀκμάσας κατὰ τὸν Γ' αἰῶνα. Εἰς τὴν ὑψίστην αὐτοῦ περιωπὴν ἔφθασεν ἐπὶ αὐτοκράτορος Ἀλεξάνδρου Σεβήρου (222—235), ὅτε καὶ ἐγένετο ὕπατος μετὰ τοῦ Πρόβου. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τά: «Libri VI excusationum», ἐξ οὗ μέγα μέρος περιελήφθη ἑλληνιστὶ καὶ εἰς τοὺς πανδέκτας, τὰ «Libri IX differentiarum», «Libri X regularum», «Libri XII Pandectarum». Εἰς τοὺς Πανδέκτας ἀντιπροσωπεύεται διὰ 345 χωρίων. Εἰς τὸν Μοδεστῖνον ἀνήκει ὁ ἀριστοτεχνικὸς καὶ βαθὺς ὁρισμὸς τοῦ γάμου, ὡς: «ἑνώσεως ἀνδρὸς καὶ γυναικός, συμπληρώσεως τοῦ βίου παντός, θείου καὶ ἀνθρωπίνου δικαίου κοινωνίας». Ὁ ὁρισμὸς οὗτος ὑπῆρξε προφητικὸς τῆς μετέπειτα ὑπὸ τοῦ Χριστιανισμοῦ διαμορφωθείσης ἠθικῆς ἐννοίας τοῦ γάμου. Τῶν ἔργων τοῦ Μοδεστίνου ἐγένετο ἔκδοσις μετὰ σχολίων ὑπὸ J. Leet, ἐν Γενεύῃ, καὶ Brekmann, ἐν Leyde (1709). Θ. Κ.

**Μόδεστος.** Πατριάρχης Ἱεροσολύμων (632—634). Ὅτε οἱ Πέρσαι ὑπὸ τὸν Χοσρόην τὸν Β' εἰσέβαλον εἰς Παλαιστίνην, κυριεύσαντες δὲ αὐτὴν κατέστρεψαν τὰ Ἱεροσόλυμα τῷ 619 καὶ ἀπήγαγον τὸν τότε πατριάρχην Ζαχαρίαν αἰχμάλωτον καὶ τὰ ὄργανα τῶν τιμίων παθῶν τοῦ Σωτῆρος, ὁ Μόδεστος ἦτο ἡγούμενος τῆς ἱερᾶς μονῆς τοῦ Ἀββᾶ Θεοδοσίου· ἐσώθη δὲ τῆς σφαγῆς κρυβεὶς ἐντὸς βράχου. Τῶν Περσῶν ἀπελθόντων ἐνεφανίσθη ὁ Μόδεστος ἐν τῇ κατεστραμμένῃ πόλει καὶ ἐγένετο πρεσβύτερος τῆς Ἁγίας Ἀναστάσεως καὶ τοποτηρητὴς τοῦ ἀποστολικοῦ θρόνου. Διὰ συνδρομῶν τῶν Χριστιανῶν καὶ τοῦ πατριάρχου Ἀλεξανδρείας Ἰωάννου τοῦ Ἐλεήμονος, ἀποστείλαντος 1000 ἐργάτας καὶ χρήματα, ἀπεφάσισε νὰ ἀνεγείρῃ τὰ ἐρείπια τῶν ναῶν, ἔχων συνεπίκουρον τὸν μοναχὸν Ἀντίοχον Στρατήγιον. Ὁ βασιλεὺς Ἡράκλειος νικήσας τῷ 627 τοὺς Πέρσας ἠλευθέρωσε καὶ τὸν αἰχμάλωτον πατριάρχην Ζαχαρίαν, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου (632) προήχθη εἰς πατριάρχην ὁ Μόδεστος, πολλὰ ἐπιτελέσας ἔργα ἐπὶ τῆς βραχείας πατριαρχείας του.

[*Χρυσοστόμου Παπαδοπούλου*, Ἱστορία τῆς Ἐκκλησίας Ἱεροσολύμων, Ἱεροσ. 1910, σ. 241 ἑξ.] Τ. Ε. Ε.

— **Μόδεστος *Ἀνταῖος.*** Ἐπώνυμος ἄρχων τῆς Σύρου ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Μάρκου Αὐρηλίου (180—191 μ. Χ.), διαδεχθεὶς τὸν Αἴλιον Μιλιώνιον Σκύμνον. Ἐπὶ τῶν ἡμερῶν τῆς ἀρχοντίας τοῦ Ἀνταίου ἐγένετο ὁ μέγας διωγμὸς τῶν Χριστιανῶν, οἱ δὲ Σύριοι ἠναγκάσθησαν τότε νὰ ἀποκαλῶσι τὸν αὐτοκράτορα τῆς Ρώμης κύριον τῶν Συρίων, πρὸς ἀποφυγὴν τοῦ διωγμοῦ. ΣΤ. Χ. ΤΣ.

**Μόδεστος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μελίας (Τσουλάρ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Σαρχανλάρ*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 217. Χ. Δ.

**Μοδέστου *Κινστέρνα*** *[Βυζαντ.]*. Μία τῶν 19 ἐν Κωνσταντινουπόλει κινστερνῶν, κειμένη οὐ μακρὰν τῆς μονῆς Μυρελαίου (νῦν Βουδροὺμ-Τζαμισὶ) παρὰ τὴν Βλάγκαν, ἐν τῇ συνοικίᾳ Λαλελῆ-Χαμάμ. Α. Θ. Σ.

**μόδι** (τό)· δημοτ., μέτρον χωρητικότητος καρπῶν, ἤδη ἐκλιπόν: «πόσα μόδια ἔσπειρες;» (ἐκ τοῦ λατ. modius ἢ modium).

**Μόδι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Λοκρίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 1 ½ ὥραν πρὸς Β. τῆς Τιθορέας (Βελίτσης) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 808.

—2) Χωρίον τῆς κοινότητος Νέας Μαδύτου (Στρολόγγου) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 227.

—3) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κυδωνίας τοῦ νομοῦ Χανίων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται τρίωρον πρὸς Δ. τῶν Χανίων, πλησίον τῆς παραλίας τοῦ κόλπου τῆς Κυδωνίας, διαιρεῖται εἰς δύο συνοικισμούς, *Ἐπάνω* καὶ *Κάτω Μόδι*, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 286. Χ. Δ.

**Μόδι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς νήσου Σύρου (βλ. λ. *Μῶδι*).

**Μοδιάνα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β.Δ. παραλίας τῆς Εὐδαίμονος Ἀραβίας, ἐπὶ τοῦ Ἀραβικοῦ κόλπου (Ἐρυθρᾶς θαλάσσης), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου. Σήμερον καλεῖται Kolla-Moillah. Α. Θ. Σ.

**Μοδικία** (Modicia) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἰταλίας, ἐν τῇ Πέραν τοῦ Πάδου Γαλλίᾳ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λάμπρου, πρὸς Β. τῶν Μεδιολάνων, ἀναφερομένη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν βασιλέων τῶν Ὀστρογότθων καὶ Λομβαρδῶν, τῶν ὁποίων ἦτο ἡ θερινὴ διαμονή. Θεοδώριχος ὁ Μέγας (454—526) ἔκτισεν ἐνταῦθα ἀνάκτορα, ἡ δὲ Θεοδελίνδη, σύζυγος τοῦ Αὐθαρίου, τῷ 598 μητροπολιτικὸν ναὸν ἐπ' ὀνόματι τοῦ ἁγίου Ἰωάννου, ἀνακαινισθέντα κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα, ἔνθα πλὴν καὶ ἄλλων ἔργων τέχνης σῴζεται καὶ τὸ σιδηροῦν στέμμα τῶν βασιλέων τῆς Λομβαρδίας. Σήμερον καλεῖται *Μόντσα* (Monza). Α. Θ. Σ.

**μοδιόλη** (ἡ) (Modiola) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πεταλοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυτιλιδῶν*, περιλαμβάνον μυτίλους μὲ κόγχην ᾠοειδοεπιμήκη, διωγκωμένην κατὰ τὸ πρόσθιον αὐτῆς τμῆμα, μὲ θυρίδας ἀνισομεγέθεις. Γνωστὰ περὶ τὰ 60 εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς πάντα τὰ ἁλμυρὰ ἢ γλυκέα ὕδατα τῆς γῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μοδιόλη ἡ κομψὴ* (Modiola elegans), ἥτις δὲν ὑπερβαίνει τὸ μῆκος τῶν 7 ἑκατοστομέτρων, φέρει κόγχην μελανὴν μετὰ ἰωδοκυανῶν ἀποχρώσεων καὶ λεπτῶς ὀδοντωτὴν κατὰ τὴν περιφέρειάν της. Ἀπαντᾷ εἰς πλείστας εὐρωπαϊκὰς θαλάσσας. Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοζῳολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα τοῦ γένους τούτου εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς δεβονίου τοῦ παλαιοζωϊκοῦ ἄχρι σήμερον. Ἐν Ἑλλάδι ἀπολιθωμένα λείψανα εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν μειοκαινικῶν κογχυλιοπαγῶν ἀσβεστολίθων τῶν λατομείων τῆς χερσονήσου τοῦ Πειραιῶς (τοῦ εἴδους *μοδιόλη barbata*) καὶ ἐντὸς τῶν ὑποπλειοκαινικῶν στρωμάτων τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου τοῦ αὐτοῦ εἴδους, ὡς καὶ λείψανα ἑτέρου μὴ δυναμένου νὰ προσδιορισθῇ. Γ. Κ. Γ.

**μόδιος** (ὁ) (λατ. modius) *[Ἀρχ.]*. Ρωμαϊκὸν μέτρον διὰ στερεὰ ἀντικείμενα καὶ μάλιστα διὰ σιτηρά. Ἴσα ἐδύνατο πρὸς τὸ ἕκτον τοῦ μεδίμνου καὶ περιεῖχε 16 sextarios, ἤτοι λίτρας περίπου 8 ¾. Ἐπίσης ἡ λέξις σημαίνει καὶ τὸ οἰκιακὸν σκεῦος τοιαύτης χωρητικότητος, εἰς ἣν ἔννοιαν ἐχρησιμοποίησεν αὐτὴν καὶ ὁ Ἰησοῦς Χριστὸς (*Ματθ.* ε' 15 κλπ.). Π. Ι. Μ.

**μοδίστρα** (ἡ)· δημ., ράπτρια γυναικείων ἐνδυμάτων (ἐκ τοῦ ἰταλ. modista).

**μοδιστράδικο** (τό)· δημοτ., τὸ ἐργαστήριον τῆς μοδίστρας, ραφεῖον γυναικείων ἐνδυμάτων.

**Μοδόκαι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Σκυθικὸς λαὸς τῆς Ἀσιατικῆς Σαρματίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου, πρὸς Ν τῶν Ἀλανῶν, καὶ κατοικῶν μεταξὺ τοῦ μέσου ροῦ τῶν ποταμῶν Ρᾶ (Βόλγα) καὶ Δάϊκος (Οὐράλη). Α.Θ.Σ.

**Μόδοννος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς ΝΑ. παραλίας τῆς Ἰβερνίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου, ὅστις διαρρέων τὴν χώραν τῶν Μαναπίων, ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἰβερνικὸν Ὠκεανὸν πρὸς Β. τοῦ Ἱεροῦ ἀκρωτηρίου παρὰ τὴν πόλιν Μαναπίαν. Σήμερον καλεῖται Slaney. Α. Θ. Σ.

**μόδος** (ὁ)· ἰδιωμ. Κρήτ., τρόπος, ὅρος, συμφωνία (ἐκ τοῦ λατ. modus)· φρ.: «αὐτὸς ὁ ἄνθρωπος εἶναι τοῦ μόδου του» εἶναι ἰδιότροπος. Ι. Δ. Μ.

**Μοδούνγα** (Modunga) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἀνατολικῆς παραλίας τῆς Μαυριτανίας Καισαρηνσίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου μεταξὺ τοῦ Ἰκοσίου καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σέρβητος ποταμοῦ. Ἀκαθόριστος ἡ θέσις αὐτῆς. Α. Θ. Σ.

**Μοδούρα** (Modura) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν ἐντὸς τοῦ Γάγγου ΝΑ. Ἰνδιῶν, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Πανδιόνων κατὰ τὴν Ν. ἄκραν τοῦ Ἰνδοστάν, οὐ μακρὰν τῆς θαλάσσης, ἀπέναντι τῆς νήσου Ταπροβάνης, πρωτεύουσα τοῦ βασιλείου Πανδίονος. Σήμερον καλεῖται *Μαδούρα*. Α. Θ. Σ.

**Μοδούττου *ἐμπόριον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὴ πόλις τῆς ΒΔ. παραλίας τῆς νήσου Ταπροβάνης ἐπὶ τοῦ Κολχικοῦ κόλπου, ἀπέναντι τῆς νήσου Περιμούλας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου. Σήμερον καλεῖται Mantotte, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς. Α. Θ. Σ.

**Μόδρα** (τά), ἢ ***Μοδρηνὴ*** (τουρκ. *Μουδουρλοῦ*) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Κασταμονῆς, ἐν Βιθυνίᾳ. Κάτ. 5.000. Κεῖται ἐν μέσῳ κήπων ὀπωροφόρων δένδρων καὶ ἀρδεύεται ὑπὸ τοῦ Γάλλου ποταμοῦ. Παρὰ τὰ Μόδρα ὑπάρχουσι θειοῦχοι καὶ σιδηροῦχοι θερμοπηγαί. Ἦτο πρότερον ἕδρα ἐπισκοπῆς, ἀλλὰ μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Ὀσμὰν κατάληψιν αὐτῆς, τῷ 1289, ἐξέλιπεν ἐξ αὐτῆς πᾶν ἴχνος χριστιανικόν.

**Μόε** (Moe), ***Γαῖργκεν Ἰνγκεμπρέτσεν.*** Νορβηγὸς ποιητὴς καὶ λαογράφος (1815—1882). Ἐγένετο ἰδίως γνωστὸς διὰ τῆς ὑπ' αὐτοῦ συνταχθείσης «Συλλογῆς λαϊκῶν ᾀσμάτων», ἰδίως τῆς «Συλλογῆς νορβηγικῶν μύθων», ἣν ἐξέδωκε μετὰ τοῦ Ἄσμπγιερνσεν. Τῷ 1880 ἐγένετο ἐπίσκοπος Χριστιανουπόλεως. Ἔγραψεν ἐπίσης λόγους, ποιήματα καὶ παιδικὰ βιβλία. Τὰ «Ἅπαντά» του (Samlede Skrifter) ἐξεδόθησαν τῷ 1877 ἐν Χριστιανίᾳ εἰς 2 τόμους. Γ. Ι. Β.

**Μοὲζ *ἐλ Μανσούρ.*** Φατιμίδης χαλίφης τῆς Αἰγύπτου (931—976), οὗτινος τὸ ἀρχικὸν ὄνομα ἦτο *Ἀμποὺ Τεμὶμ Μαάδ*. Διεδέχθη τὸν πατέρα του Ἀμποὺ Ταχὶρ ἐλ Μανσούρ, ἡγεμόνα τῆς Τύνιδος, καὶ ἐβασίλευσεν ἀπὸ τοῦ 953 μέχρι τοῦ 976. Εὐθὺς μετὰ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάρρησίν του ἐκινδύνευσεν ἐκ μέρους τοῦ χαλίφου τῆς Κορδούης Ἀβδερραχμάν, ὅστις ἐκδικούμενος τὰς ἐναντίον τῶν παραλίων του πειρατικὰς ἐπιδρομὰς τῶν Τυνησίων ἡτοιμάζετο νὰ ἐκστρατεύσῃ ἐναντίον του. Ἐσώθη ὅμως χάρις εἰς τὸν ἐναντίον τοῦ Ἀβδερραχμὰν κηρυχθέντα ὑπὸ τῶν Χριστιανῶν ἡγεμόνων τῆς Ἱσπανίας πόλεμον. Μετὰ ἑξαετίαν κατώρθωσε διὰ τοῦ ἑλληνικῆς καταγωγῆς στρατηγοῦ του Δζωχὰρ ἢ Δζουχὰρ νὰ καταλάβῃ ὁλόκληρον σχεδὸν τὸ Μαρόκκον. Ἀσφαλισθεὶς οὕτω ἐκ δυσμῶν, ἀπεφάσισε νὰ ἐκστρατεύσῃ εἰς Αἴγυπτον, τὴν ὁποίαν 4 ἤδη προκάτοχοί του ἡγεμόνες τῆς Τύνιδος δὲν εἶχον κατορθώσει νὰ καταλάβωσι. Αἱ περιστάσεις ἦσαν εὐνοϊκαί, διότι λόγῳ τῶν διχογνωμιῶν τῶν μεγι-

Digitized by Google

στάνων ἐπεκράτει μεγάλη ἀναρχία καθ' ὅλην τὴν χώραν. Ὁ ἀνώτερος βαθμοῦχος Γιακοὺπ ἴδν Κιλλίς, Ἑβραῖος ἐξωμότης, ἐλθὼν πρὸς τὸν Μοὲζ ἔπεισεν αὐτὸν νὰ ἐπισπεύσῃ τὴν μελετωμένην ἐκστρατείαν, ὑποσχόμενος τὴν συνδρομὴν τῶν ἐντοπίων. Οὕτω τὴν 5 Φεβρουαρίου 969 ὁ στρατηγὸς Δζωχὰρ ἐκίνησεν ἐκ Μεχδίας καὶ ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος κατέλαβεν ὁλόκληρον τὴν χώραν, ἐπεκταθεὶς καὶ πρὸς τὴν Συρίαν, ἥτις ἦτο ὑποτελὴς εἰς τὴν Αἴγυπτον. Ὁ Μοὲζ ἐγκατασταθεὶς ἐν Αἰγύπτῳ ἔκτισε τὸ *Κάϊρον* καὶ τὸ πανεπιστήμιον Ἐλ Ἀζχάρ, ἠσχολήθη μὲ εἰρηνικὰ ἔργα καὶ γενικῶς κατέλιπε μνήμην ἀγαθοῦ μονάρχου. Μετὰ μικρὸν ἀπώλεσε τὰς δυτικὰς ἐπαρχίας τοῦ κράτους του (Λιβύην κλπ.). Μετὰ τὸν θάνατόν του ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ὁ υἱὸς αὐτοῦ Ἀζὶζ-ἔμπν-Μοὲζ, τὴν πραγματικὴν ὅμως ἐξουσίαν ἤσκει ὁ στρατηγὸς Δζωχὰρ (βλ. λ. *Αἴγυπτος* τ. Β', σ. 588 γ' καὶ ἑπ.). Γ. Λ. Α.

**Μόερ** (Van-Moer), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής, Βὰν—.*** Βέλγος ζωγράφος (βλ. λ. *Βὰν-Μόερ*).

**Μοέρο,** ἢ ***Μουέρου*** (Moero ἢ Mweru) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Κεντρικῆς Ἀφρικῆς, κειμένη πρὸς Δ. τῆς λίμνης τῆς Ταγκανίκας. Ἔχει ἔκτασιν 5.000 τετρ. χλμ., μῆκ. 150 χιλ., ἡ δὲ στάθμη τῶν ὑδάτων αὐτῆς κεῖται εἰς ὕψος 869 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Εἰς τὸ Ν. τμῆμα αὐτῆς ἐκβάλλει ὁ ποταμὸς Λοναπούλα, πρὸς Β. δὲ ἐκρέει διὰ τοῦ ποταμοῦ Λουβού. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1867 ὑπὸ τοῦ ἐξερευνητοῦ Λίβιγκστον. Πρὸς Α. τῆς λίμνης ἐκτείνονται μεγάλα ἕλη, ὅπου ζῶσιν εἰς μεγάλας ἀγέλας ἐλέφαντες. Ἡ κοίτη αὐτῆς διαρκῶς περιορίζεται, τείνουσα νὰ ἀποξηρανθῇ. Ἡ συγκοινωνία ἐντὸς τῆς Μοέρο διενεργεῖται σήμερον δι' ἀκάτων. Χ. Δ.

**Μοετὰζ** ***ἔμπν Μουταουακκέλ.*** Υἱὸς τοῦ πατροκτόνου Ἀββασίδου καλίφου Μουντάσσερ ἔμπν Μουταουακκέλ. Ἐρρίφθη εἰς τὰς φυλακὰς μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του ἐλ Μοῦγετ ὑπὸ τοῦ διαδεχθέντος τὸν πατέρα των θείου των Ἄχμετ, βασιλεύσαντος ὑπὸ τὸ ὄνομα Μοστάϊν μπ' Ἰλλάχ. Μετὰ τετραετίαν (866) ἐκθρονισθέντος τοῦ Ἄχμετ ἀνηγορεύθη ὁ Μοετὰζ ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἐλ Μοετὰζ μπ' Ἰλλάχ*, ὅστις ἐξώρισε τὸν θεῖόν του καὶ διὰ τοῦ ἐμπίστου του Σαῒτ τὸν ἐδολοφόνησεν εἰς τὸν δρόμον τῆς ἐξορίας. Μετὰ τετραετῆ βασιλείαν, τῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ αὐλάρχου Σάλεχ, ἐξηναγκάσθη εἰς παραίτησιν, ἐρρίφθη εἰς τὴν φυλακὴν καὶ ἀπέθανεν ἐκ πείνης ἓξ ἡμέρας κατόπιν. Γ. Λ. Α.

**Μόζα** (Meuse) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς καὶ διαμέρισμα τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Μόσας*).

**Μοζαμβίκη** (Mozambique, πορτογαλ. Colonia de Moçambique) *[Γεωγρ.]*. Πορτογαλικὴ ἀποικία ἐν τῇ Ἀν. Ἀφρικῇ, ἧς τὸ ἐπίσημον ὄνομα, εἶναι, ἀπὸ τοῦ 1891, *Διοίκησις τοῦ ἐλευθέρου κράτους τῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς*. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ, ἀπὸ τοῦ ὅρμου Ντελαγκόα, πρὸς Ν., μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Ντελγκάντο, πρὸς Β., ἔναντι τῆς νήσου Μαδαγασκάρης, μεθ' ἧς σχηματίζει τὸν πορθμὸν *Μοζαμβίκης*. Ὁρίζεται πρὸς Α. ὑπὸ τοῦ Τράνσβαλ καὶ τῆς Ροδεσίας καὶ πρὸς Β. ὑπὸ τῆς λίμνης Νυάσσης καὶ ἄλλων ἀγγλικῶν ἀποικιῶν, ἀφ' ὧν χωρίζεται διὰ τοῦ ποταμοῦ Ροβούμα. Ἐμβ. 1.108.800 τ. χλ., κάτ. 3.120.000 (1920), ἐξ ὧν 10.000 λευκοί, 1.100 Ἀσιᾶται καὶ μιγάδες, καὶ οἱ λοιποὶ ἰθαγενεῖς, Κάφροι ἢ Μπαντού, καί τινες Ζουλού. Τὸ ἔδαφος, χθαμαλὸν καὶ τελματῶδες κατὰ τὴν παραλίαν, ὑψοῦται βαθμηδὸν εἰς ὀροπέδιον, μὲ ὑψηλότερον σημεῖον πρὸς Β. τὸ ὄρος *Ναμούλι* (2.280 μ.). Παράγει σακχαροκάλαμον, ὄρυζαν, καφέν, κικινέλαιον, σήσαμον, βάμβακα, ῥῆον, εἰς δὲ τὸ ὑπέδαφος ἀνευρίσκονται σίδηρος, χαλκὸς καὶ χρυσός. Κύριοι ποταμοὶ εἶναι ὁ *Ζαμπέζης* καὶ ὁ *Σίρε*, πρὸς Β. δὲ οἱ *Πούγκωος* καὶ *Ροβούμα*, πλωτοὶ μέχρι τῆς ἐκβολῆς, ὁ δὲ Ζαμπέζης μέχρι Τετέ. Λίμνη ἡ *Νυάσσα*. Τὸ κλῖμα εἶναι θερμότατον (μέση ἐτησία θερμοκρασία 26°), λίαν δὲ ἀνθυγιεινὸν εἰς τὴν παράκτιον χώραν ἕνεκα τῶν ἑλῶν. Εἰς τὰ δάση ὑπάρχουν πολλὰ ἄγρια θηρία, λέοντες, λεοπαρδάλεις, ὕαιναι, ἐλέφαντες, ρινοκέρωτες, ἱπποπόταμοι, ἀντιλόπαι, βούβαλοι, εἰς δὲ τοὺς ποταμοὺς κροκόδειλοι καὶ γιγαντιαῖαι χελῶναι. Τέσσαρες σιδηροδρομικαὶ γραμμαὶ συνδέουσι τὴν χώραν καὶ μετὰ τῶν ὁμόρων ἀγγλικῶν ἀποικιῶν, συνολικοῦ μήκους 450 χλμ. Τῷ 1925 ὑπῆρχον 22.640 χλμ. τηλεγραφικῶν γραμμῶν, 1.527 τηλεφωνικῶν καὶ 18 σταθμοὶ ἀσυρμάτου. Πρωτεύουσα καὶ κυριώτερος λιμὴν εἶναι ἡ πόλις *Λουρένσου Μάρκες*, ἄλλοι δὲ λιμένες *Σοφάλα, Μπεῖρα, Κουϊλιμάνε.*

Ἡ Μοζαμβίκη διαιρεῖται διοικητικῶς εἰς τὴν ὁμώνυμον διοίκησιν ὑπὸ ὕπατον ἁρμοστήν, ὑποδιαιρουμένην εἰς πέντε νομούς, καὶ εἰς τὰς δυνάμει πολυετῶν μισθώσεων ἀνεξαρτήτως διοικουμένας ἐδαφικὰς περιοχὰς τῆς ἑταιρείας Μοζαμβίκης καὶ τῆς ἑταιρείας Νυάσσης.

— *[Ἱστορ.]* Πιθανῶς πρῶτοι ἐμπορικῶς ἐκμεταλλευθέντες τὴν Μοζαμβίκην ὑπῆρξαν οἱ Φοίνικες. Κατὰ τοὺς μεταγενεστέρους χρόνους ἐπεκράτησαν οἱ Ἄραβες, οἵτινες, ὡς δείκνυται ἐκ τῶν ἐρειπίων φρουρίων, εὑρεθέντων εἰς τὰς μεταλλοφόρους περιοχάς, εἶχον ἰσχυρὰν ὀργάνωσιν. Οἱ Πορτογάλοι ἀπεβιβάσθησαν εἰς τὴν χώραν περὶ τὸ τέλος τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἐκυριάρχησαν δέ, καταβαλόντες τοὺς Ἄραβας, τῷ 1507. Τῷ 1565 ἐπεξέτειναν τὴν κατοχὴν αὐτῶν κατὰ τὸν ἀνάρρουν τοῦ Ζαμπέζη, ἀλλὰ τῷ 1698 ἀπεκρούσθησαν ὑπὸ τῶν Ἀράβων μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Ντελγκάντο, ὅπερ καὶ διετήρησαν ὡς ἀπώτατον ὅριον πρὸς Β. Τῷ 1889 ἡ Ἀγγλία ἀπέσπασε διάφορα ἐδάφη καὶ δὴ τὸ χρυσοφόρον τῆς Μόνικα. Τῷ 1919, διὰ τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν, προσετέθη εἰς τὴν Μοζαμβίκην ἡ περιοχὴ ἡ λεγομένη *Τρίγωνον Κιόνγκα.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Negreiros*, «Le Mozambique» (1904).— *H. Meyer*, «Das Portugiesische Kolonialreich» (1918).

— **Μοζαμβίκη** (Mozambique) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ κράτους τῆς Μοζαμβίκης, πρώην πρωτεύουσα αὐτοῦ, κειμένη ἐπὶ στενῆς κοραλλιογενοῦς νήσου, μήκους 7 χλμ., ἐγγύτατα τῆς ἀκτῆς. Κάτ. 7.000 (1921). Μετὰ τὴν κατοχὴν (1508) ἡ πόλις ὠχυρώθη διὰ πολλῶν φρουρίων, ἐξ ὧν σημαντικώτερον τὸ καὶ σήμερον σωζόμενον τοῦ Ἁγίου Σεβαστιανοῦ. Ἡ πόλις παρήκμασεν ἐμπορικῶς μετὰ τὴν μεταφορὰν τῆς πρωτευούσης εἰς Λουρένσου Μάρκες. Θ. Κ.

**Μοζάραβες** (οἱ) (ἰσπαν. Mozárabe). Οὕτω καλοῦνται συνολικῶς οἱ ἀφομοιωθέντες Ἄραβες οἱ μὴ ὄντες ἀραβικῆς καταγωγῆς. Οὕτως ὠνόμαζον οἱ Μουσουλμᾶνοι Ἄραβες ἐν Ἱσπανίᾳ τοὺς Χριστιανοὺς τοὺς ἀνήκοντας εἰς τὰς ἐν τῷ κράτει αὐτῶν κοινότητας, ὡς ἐν Κορδούῃ, Σεβίλλῃ, Τολέδῳ κτλ. Ἐκ τούτου καὶ τὸ τυπικὸν τῆς λειτουργίας τῶν Χριστιανῶν τοῦ Τολέδου καλεῖται μοζαραβικόν. Ν. Μ.

**μοζαραβικός,**—*ή,*—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μοζάραβας, ὁ τῶν Μοζαράβων: «μοζαραβικὴ λειτουργία».

—**μοζαραβικὴ** ***λειτουργία.*** Καλεῖται οὕτω λειτουργία ἐπικρατοῦσα ἀπὸ τοῦ Ε' αἰῶνος ἐν Ἱσπανίᾳ, ἥτις διαφέρουσα τῆς λειτουργίας τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας ὁμοιάζει πρὸς τὴν τῆς ἀνατολικῆς. Ἡ λειτουργία αὕτη ὠνομάζετο κατ' ἀρχὰς *γοτθική*, ἐκ τῶν Γότθων τῶν καταλαβόντων τὴν Ἱσπανίαν, ἔπειτα δέ, κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν Ἀράβων κατάκτησιν τῆς Ἱσπανίας, *μοζαραβική*, ἐκ τοῦ ὀνόματος δι' οὗ ἐκάλουν οἱ κατακτηταὶ Ἄραβες τοὺς κατακτηθέντας Ἱσπανούς. Πότε ἀκριβῶς καὶ πῶς ἦλθεν εἰς τὴν Ἱσπανίαν ἡ λειτουργία αὕτη, δὲν γνωρίζομεν. Ἡ ἐπικρατοῦσα γνώμη εἶναι ὅτι οἱ κατὰ τὸν Ε' αἰῶνα καταλαβόντες τὴν Ἱσπανίαν Γότθοι ἔφερον αὐτὴν ἐκ τῆς Ἀνατολῆς. Πάντως ἡ λειτουργία αὕτη εἶναι ἀνατολικῆς καταγωγῆς, ὑποστᾶσα ἔπειτα ἐν Ἱσπανίᾳ μεταβολάς. Ἡ λειτουργία αὕτη, εἰσελθοῦσα εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ἐξετόπισε τὴν δυτικὴν λειτουργίαν καὶ ἐπεκράτησε μέχρι τοῦ ΙΑ' αἰῶνος, ὅτε, ἐπὶ Ἀλεξάνδρου τοῦ Β' καὶ Γρηγορίου τοῦ Ζ', ἤρχισε νὰ εἰσάγηται πάλιν ἡ δυτικὴ λειτουργία. Ὅτε ὅμως τῷ 1088 σύνοδος ἀπεφάσισε τὴν ἐκβολὴν τῆς λειτουργίας καὶ ἐκ Τολέδου, οἱ κάτοικοι τοῦ Τολέδου ἀντέστησαν. Τέλος ἀπεφασίσθη νὰ λυθῇ τὸ ζήτημα διὰ διπλῆς θείας κρίσεως, διὰ μονομαχίας καὶ διὰ τῆς κρίσεως τοῦ πυρός. Ἀμφότεραι αἱ κρίσεις αὗται ἀπέβησαν ὑπὲρ τῆς μοζαραβικῆς λειτουργίας, ὁ δὲ Ἀλφόνσος ὁ ΣΤ' διέταξε νὰ τελῶνται ἀμφότεραι αἱ λειτουργίαι. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ὁ Φραγκίσκος Ξιμένης κατέβαλε μεγάλας προσπαθείας περὶ ἐπικρατήσεως τῆς λειτουργίας ταύτης, ἧς ἐποιήσατο καὶ νέαν ἐπιδιωρθωμένην ἔκδοσιν. Κ. Ι. Δ.

**Μόζαρτ** (Mozart), ***Βόλφγκανγκ-Ἀμεδαῖος.*** Μέγας Αὐστριακὸς μουσικός, γεννηθεὶς ἐν Σαλτσβούργῳ τῆς Αὐστρίας τῷ 1756 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βιέννῃ τῷ 1791. Ἀνῆκεν εἰς μουσικὴν οἰκογένειαν· ὁ πατήρ του *Λεοπόλδος* (1919—1787) εἶχεν ἔλθει εἰς Σαλτσβοῦργον ἐξ Ἄουγκσμπουργκ, ἵνα σπουδάσῃ εἰς τὸ πανεπιστήμιον, κατόπιν ὅμως ἐπεδόθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν μουσικήν. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του ἀξιόλογος εἶναι ἡ «Μέθοδος βιολίου», ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων καὶ συστηματικωτέρων εἰς τὸ εἶδος της. Ἐκ τοῦ γάμου του μὲ τὴν Ἄνναν-Μαρίαν Πέρτλ, ὁ Λεοπόλδος Μόζαρτ εἶχεν ἀποκτήσει ἑπτὰ τέκνα, ἐξ ὧν ἐπέζησαν μόνον ὁ *Βόλφγκανγκ* καὶ ἡ κατὰ πέντε ἔτη πρεσβυτέρα του ἀδελφὴ *Μαρία-Ἄννα*, διακεκριμένη ἐπίσης κλειδοκυμβαλίστρια καὶ σύντροφός του εἰς τὰς καλλιτεχνικὰς περιοδείας.

Εἰς ἡλικίαν τεσσάρων μόλις ἐτῶν ὁ Μόζαρτ, πρὶν ἀκόμη γνωρίσῃ τοὺς μουσικοὺς νόμους, ἠρέσκετο νὰ αὐτοσχεδιάζῃ ἐπὶ τοῦ κλειδοκυμβάλου μικρὰ τεμάχια, φθάσας μέχρι τοῦ σημείου νὰ παίξῃ ὁλόκληρον κοντσέρτο ἰδικῆς του ἐμπνεύσεως. Εἰς ἡλικίαν πέντε καὶ ἡμίσεος ἐτῶν ἔλαβε μέρος εἰς παράστασιν λυρικῆς τινος κωμῳδίας, παιχθείσης ἐν τῇ μεγάλῃ αἰθούσῃ τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Σαλτσβούργου. Ὑπὸ τὴν σοφὴν διδασκαλίαν τοῦ πατρός του, ὁ νεαρὸς Μόζαρτ ἐδιδάσκετο κλειδοκύμβαλον καὶ σύνθεσιν, ὡς πρὸς τὸ βιολίον δὲ ὑπῆρξε σχεδὸν αὐτοδίδακτος. Ἓξ μῆνες ἤρκεσαν εἰς αὐτόν, ἵνα κατορθώσῃ νὰ παίξῃ ἐνώπιον τοῦ πρίγκιπος ἐκλέκτορος τῆς Βαυαρίας ὁλόκληρον κοντσέρτο βιολίου. Ὁ Μόζαρτ ἦτο μόλις ἑξαετής, ὅτε ὁ πατήρ του, παραλαβὼν αὐτὸν καὶ τὴν ἀδελφήν του, ἤρχισε τὰς καλλιτεχνικὰς ἀνὰ τὴν Εὐρώπην περιοδείας. Μετὰ μικρὰν διαμονὴν ἐν Μονάχῳ μετέβησαν τῷ 1762 εἰς Βιέννην. Τὸ παιδίον-φαινόμενον προεκάλει πανταχοῦ κατάπληξιν καὶ ἐνεθουσίαζε τὸ αὐτοκρατορικὸν ζεῦγος. Μετ' ὀλίγον ὅμως ἠσθένησε καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1763 ἠναγκάσθησαν νὰ ἐπανέλθωσιν εἰς Σαλτσβοῦργον. Τὸν Ἰούνιον τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἤρχισεν ἡ δευτέρα καὶ μεγαλυτέρα περιοδεία εἰς Μόναχον, Ἄουγκσμπουργκ, Στουττγάρτην, Μάνγχαϊμ, ἔνθα ὁ Βόλφγκανγκ ἔγραψε τὴν πρώτην του σονάταν, καὶ Παρισίους. Ἐν τῇ τελευταίᾳ πόλει διέμειναν ἀπὸ τοῦ Νοεμβρίου 1763 μέχρι τοῦ Ἀπριλίου 1764. Χάρις εἰς τὴν προστασίαν τοῦ βαρώνου Μελχιὸρ Γκρὶμμ ἠνοίχθησαν εἰς αὐτοὺς αἱ θύραι τῶν ἀνα-

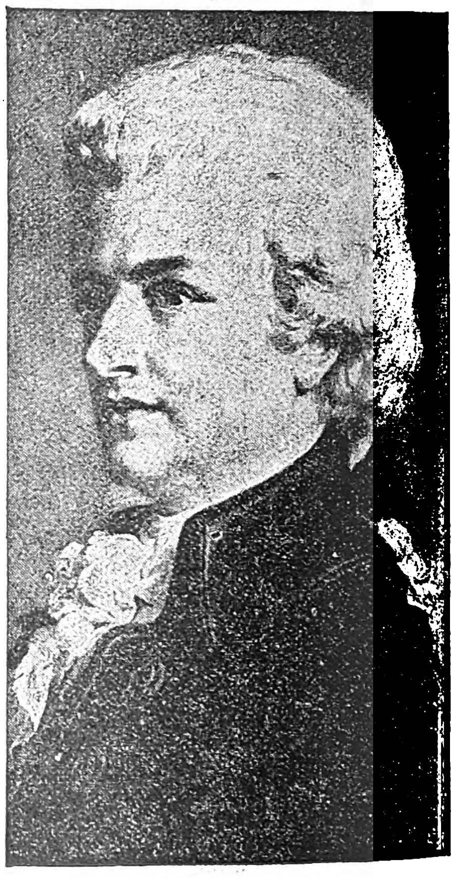

*Ἀμεδαῖος Μόζαρτ.*

κτόρων καὶ τῶν ἀριστοκρατικωτέρων αἰθουσῶν. Ἐνταῦθα ὁ νεαρὸς Μόζαρτ ἐξέδωκε τὰς πρώτας του σονάτας διὰ βιολίον καὶ κλαβικύμβαλον. Μετ' ὀλίγον ἡ μουσικὴ οἰκογένεια εὑρίσκεται ἐν Λονδίνῳ, ἔνθα ἡ παραμονή της παρατείνεται ἐπὶ δεκαπεντάμηνον. Αἱ συναυλίαι διαδέχονται ἀλλήλας καὶ τὸ παιδίον-φαινόμενον προκαλεῖ πάντοτε κατάπληξιν. Κάμνει τὴν γνωριμίαν πολλῶν καλλιτεχνῶν, ἐν οἷς καὶ τοῦ Ἰωάννου-Χριστιανοῦ Μπάχ, ὅστις τοῦ παραδίδει μαθήματα μεγίστης σημασίας διὰ τὴν μελλοντικὴν ἐξέλιξιν τοῦ ταλάντου του. Τὸν Αὔγουστον 1765 ἡ οἰκογένεια Μόζαρτ ἐγκατέλειψε τὴν Ἀγγλίαν, περιώδευσε τὴν Ὁλλανδίαν, καὶ κατόπιν θριαμβευτικῶν συναυλιῶν εἰς διαφόρους πόλεις τῆς Γαλλίας καὶ Γερμανίας ἐπανῆλθεν εἰς Σαλτσβοῦργον. Ἐνταῦθα ἀναμένει τὸν Μόζαρτ νέα περίοδος ἐργασίας. Γράφει πλεῖστα «ντιβερτιμέντα», ἐμβατήρια, μενουέτα κτλ. κατὰ παραγγελίαν τοῦ ἀρχιεπισκόπου καὶ τῶν ἐρασιτεχνῶν, τὰ ὁποῖα ἀποδεικνύουν δεξιότητα καὶ τεχνικὴν ἐνορχηστρώσεως μοναδικὴν διὰ παιδίον ἐν δεκαετές. Τελειοποιεῖται συνεχῶς ὑπὸ τὸν πατέρα του καὶ περὶ τὰ τέλη Νοεμβρίου 1766 συνθέτει, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μιχαὴλ Χάϋδν, τὸ πρῶτόν του ὀρατόριον «Die Schuldigkeit des ersten Gebots» («Τὸ καθῆκον τῆς πρώτης ἐντολῆς»)· γράφει ἐπίσης κατὰ παραγγελίαν τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Σαλτσβούργου τὴν λατινικὴν κωμῳδίαν «Ἀπόλλων καὶ Ὑάκινθος». Μετ' ὀλίγον ἡ οἰκογένεια ἀναχωρεῖ ἐκ νέου διὰ τὴν Βιέννην, ἀλλὰ τὸ κοινὸν ἀδιαφορεῖ τὴν φορὰν ταύτην καὶ αἱ οἰκονομικαὶ δυσχέρειαι ἀποθαρρύνουν τοὺς καλλιτέχνας. Τῇ συστάσει τοῦ αὐτοκράτορος κατορθώνει ὁ Μόζαρτ νὰ γράψῃ κατὰ παραγγελίαν θεατρικοῦ ἐπιχειρηματίου τὸ τρίπρακτον κωμικὸν μελόδραμα «La Finta semplice» («Ἡ φαινομενικῶς ἀφελής»), τὸ ὁποῖον ὅμως δὲν ἐπαίχθη λόγῳ τῶν ραδιουργιῶν τῶν ζηλοφθόνων. Ἀντιθέτως, τὸ μονόπρακτον μελοδραμάτιόν του, εἰς γερμανικὴν γλῶσσαν, «Βαστιανὸς καὶ Βαστιανή», γραφὲν περὶ τὴν αὐτὴν

Digitized by Google

**ἐποχήν, εἶχε καλυτέραν τύχην** (1768). Κατὰ τὴν **περίοδον ταύτην** τῆς ἐν Βιέννῃ παραμονῆς του ὁ **Μόζαρτ ἔγραψεν** ἐπίσης δύο θρησκευτικὰ ἔργα **διὰ χορῳδίαν καὶ** ὀρχήστραν, ἓν «Veni Sancte Spiritus», **μίαν** «Βραχεῖαν λειτουργίαν» καὶ ὡραιο**τάτην συμφωνίαν** εἰς ρε. Εἰς ὅλας αὐτὰς τὰς **παιδικὰς συνθέσεις** του διαφαίνεται ὁ παρατη**ρητικός** του **χαρακτὴρ** καὶ ἡ περιέργεια πρὸς **μάθησιν**, ἥτις τὸν ὤθει εἰς τὸ νὰ ἐπιλαμβάνη**ται** ὅλων **τῶν** τύπων τῆς μουσικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. **Τὸν** Δεκέμβριον 1769 ἐπεχείρησαν καλλιτεχνικὴν **περιοδείαν** εἰς Ἰταλίαν, ἥτις διήρκεσε πλέον τοῦ **ἔτους.** Ἐπεσκέφθησαν **τὴν** Μαντούην, τὴν Βερώ**ναν, τὸ** Μιλᾶνον **καὶ τὴν** Βολωνίαν, ἔνθα ὁ νεαρὸς μουσουργὸς εἶχε τὸ **εὐτύχημα** νὰ ἀκούσῃ τὰ **πολύτιμα μαθήματα** τοῦ πατρὸς Μαρτίνι. Αἱ πε**ριοδεῖαι συνεχίζονται** εἰς Παδούην, Νεάπολιν καὶ **Ρώμην, ἔνθα** ὁ Μόζαρτ ἐπαρασημοφορήθη ὑπὸ **τοῦ πάπα.** Κατὰ τὴν ἐν Ἰταλίᾳ παραμονήν του ὁ **δεκατετραετὴς** ἔφηβος ἐνώπιον τῶν μεγαλυτέρων μουσικοδιδασκάλων δίδει δείγματα τῆς δεξιοτεχνίας καὶ τοῦ ταλάντου του, κάμνει αὐτοσχεδιασμούς, παίζει καταπληκτικὰς φυγὰς ἐπὶ δεδομένου θέματος. Ταυτοχρόνως δὲ ποτίζεται μὲ τὰ νάματα τῆς ἰταλικῆς μελῳδίας, ἥτις θέλει ἀποτελέσει βραδύτερον τὴν γοητείαν τῆς τέχνης του. Κατὰ τὴν δευτέραν ἐν Μιλάνῳ διαμονήν του (Δεκέμβριος 1770), ὁ Μόζαρτ ἀνεβίβασε μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας τὸ μελόδραμά του «Μιθριδάτης βασιλεὺς τοῦ Πόντου» κατὰ ἰταλικὴν διασκευὴν τοῦ «Μιθριδάτου» τοῦ Ρακίνα. Τὸ ἔργον περιέχει ἀξιόλογον εἰσαγωγὴν καὶ μέγαν ἀριθμὸν μελῳδιῶν, δυῳδιῶν κλπ., γεγραμμένων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς τὸν τύπον τῆς *ἄρια ντὰ κάπο*. Μετὰ βραχεῖαν περιοδείαν εἰς Μπρέσιαν, Βενετίαν, Βερώναν κλπ. ὁ Μόζαρτ ἐπανέρχεται εἰς Σαλτσβοῦργον (Μάρτιος 1771), ἔνθα γράφει τὸ ὀρατόριον «La Betulia liberata» καὶ κατ' Αὔγουστον τοῦ αὐτοῦ ἔτους μεταβαίνει ἐκ νέου μετὰ τοῦ πατρός του εἰς Μιλᾶνον, ἵνα ἀναβιβάσῃ τὸ μπαλλέττο-σερενάτα «Ascanio in Alba». Τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ περιλαμβάνει 33 τεμάχια, συνετέθη ἐντὸς δύο ἑβδομάδων καὶ περιέχει πλείστας γοητευτικὰς χορῳδίας, γεγραμμένας μετὰ μεγάλης τέχνης. Ὁ «Ἀσκάνιο», παιχθεὶς ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῶν γάμων τοῦ ἀρχιδουκὸς Φερδινάνδου μετὰ τῆς Βεατρίκης τῆς Μοδένας, ἐσημείωσε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν καὶ ἐπεσκίασεν ὅλα τὰ κατὰ τὴν περίοδον ἐκείνην ἐκτελεσθέντα ἔργα.

Τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1771 ὁ Μόζαρτ ἐπανέρχεται εἰς Σαλτσβοῦργον, τὴν ἡμέραν ἀκριβῶς τοῦ θανάτου τοῦ ἀρχιεπισκόπου καὶ προστάτου του Σιγισμόνδου, οὗτινος ὁ διάδοχος Ἱερώνυμος τοῦ Κολλορέντο οὐδὲν ἐνδιαφέρον δεικνύει διὰ τὴν τέχνην. Γράφει ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς ἐνθρονίσεώς του (1772) ἓν μονόπρακτον μελόδραμα κατὰ τὸν Μεταστάσιον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ ὄνειρον τοῦ Σκιπίωνος» («Il Sogno di Scipione»). Εἶναι ἡ ἀπαρχὴ τῆς νέας περιόδου τοῦ Μόζαρτ, ἀλλὰ καὶ ἡ θλιβερωτέρα περίοδος τῆς ζωῆς του. Ἡ ἀμοιβή του ὡς μουσικοῦ τῆς αὐλῆς καὶ τῆς μητροπόλεως δὲν ὑπερβαίνει τὰ 25 φράγκα μηνιαίως, διὰ τὰ ὁποῖα εἶναι ὑποχρεωμένος νὰ ὑφίσταται πλείστας ταπεινώσεις. Ἡ θέσις του εἶναι μεταξὺ τῶν ὑπηρετῶν, μετὰ τῶν ὁποίων συντρώγει εἰς κοινὸν ἑστιατόριον. Ἐξανίσταται, ἀλλὰ μὲ τοῦτο ἐξάπτει ἔτι περισσότερον τὴν μῆνιν τοῦ ἀρχιεπισκόπου, ὅστις τὸν ὑβρίζει, ἐνῷ ὁ γραμματεύς του τὸν ἐκδιώκει διὰ λακτισμάτων. Ἡ μόνιμος θέσις τῷ ἐπιτρέπει ἐν τούτοις νὰ ἐργάζηται συνεχῶς. Γράφει διὰ τὸ Μιλᾶνον τὸ μελόδραμα «Lucio Silla» (1772), ἔργον κατέχον ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ νεανικῇ παραγωγῇ τοῦ Μόζαρτ, διὰ δὲ τὸ Μόναχον τὸ ἰταλικὸν κωμικὸν μελόδραμα «La Finta Giardiniera» (1775). Εἰς τὴν αὐτὴν περίοδον ἀνήκουσιν ἐπίσης πλεῖσται συμφωνίαι, λειτουργίαι, κοντσέρτα, ἡ μουσικὴ διὰ τὸν «Βασιλέα Θάμον» κ. ἄ. Μετ' ὀλίγον, ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς ἐν Σαλτσβούργῳ ἀφίξεως τοῦ ἀρχιδουκὸς Μαξιμιλιανοῦ, συνθέτει τὸ μελόδραμα «Il Re pastore» («Ὁ βασιλεὺς ποιμήν»), ἐπὶ στίχων τοῦ Μεταστασίου. Τὰ περισσότερα ἔργα τῆς περιόδου ταύτης εἶναι μὲν κομψά, ἀλλ' ἁπλούστατα καὶ στερούμενα βάθους, θ' ἀπετέλουν δὲ σκιὰν ἐν τῇ δημιουργίᾳ τοῦ Μόζαρτ, ἐὰν δὲν συνωδεύοντο ταυτοχρόνως ὑπό τινων συνθέσεων ἀληθινῆς μουσικῆς ἀξίας: τῆς σονάτας δι' ἔγχορδα καὶ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, μιᾶς σερενάτας, ἑνὸς ντιβερτιμέντο, τριῶν κοντσέρτων διὰ βιολίον εἰς σολ, εἰς ρε καὶ εἰς λα, ἐξαιρετικῆς ὡραιότητος.

Κατὰ τὴν ἐν Σαλτσβούργῳ διαμονήν του ὁ Μόζαρτ οὐδ' ἐπ' στιγμὴν ἔπαυσεν ἐπιζητῶν τὴν βελτίωσιν τῆς θέσεώς του. Κατορθώνει νὰ τύχῃ ἀδείας, ἵνα ἀναχωρήσῃ εἰς καλλιτεχνικὴν περιοδείαν, ἀλλ' ἄνευ τοῦ πατρός του. Μεταβαίνει μετὰ τῆς μητρός του εἰς Μόναχον, ἐκεῖθεν εἰς Ἄουγκσμπουργκ καὶ κατόπιν εἰς Μάγχαϊμ (1777). Ἡ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ διαμονή του ὑπῆρξεν ὠφελιμωτάτη, διότι τῷ ἐδόθη εὐκαιρία νὰ γνωρίσῃ τὴν καλυτέραν ὀρχήστραν τῆς Γερμανίας καὶ οὕτω νὰ βελτιώσῃ τὴν ἐνορχήστρωσίν του. Ἐν Μάγχαϊμ χρονολογεῖται ἐπίσης ἡ πρώτη του ἐρωτικὴ περιπέτεια μὲ τὴν Ἀλοϋσίαν Βέμπερ, ἀοιδὸν διάσημον ἤδη, παρὰ τὴν νεαρωτάτην ἡλικίαν της. Θέλει νὰ τὴν νυμφευθῇ, ἀλλ' ἡ ἄρνησις τοῦ πατρός του τὸν ἀναγκάζει νὰ πνίξῃ τὸ αἴσθημά του. Συνεχίζει μετὰ τῆς μητρός του τὸ ταξίδιόν του εἰς Παρισίους. Τὴν φορὰν ὅμως ταύτην δὲν εὗρηκεν ἐν τῇ γαλλικῇ πρωτευούσῃ τὴν ἀναμενομένην ὑποδοχήν· τὸ μόνον ὅπερ κατώρθωσεν ἦτο νὰ παιχθῇ μία συμφωνία του εἰς ρε, δι' ἧς σημειοῦται ἀληθὴς μεταβολὴ τοῦ ὕφους τοῦ Μόζαρτ, ἓν miserere, καὶ νὰ λάβῃ παραγγελίαν διὰ τὸ μπαλλέττο «Petits riens». Εἰς ἐπίμετρον ὁ Μόζαρτ εἶχε τὴν ἀτυχίαν νὰ χάσῃ ἐν Παρισίοις τὴν μητέρα του (Ἰούλιος 1778). Ἀποτεθαρρημένος ἐπανέκαμψεν εἰς Σαλτσβοῦργον, ἔνθα τῷ 1779 ὠνομάσθη ὀργανοκρούστης τῆς αὐλῆς. Ἀναθεωρεῖ τὴν μουσικὴν τοῦ δράματος «Θάμος», γράφει τὸ μελόδραμα «Ζαΐς» καὶ ἐπιλαμβάνεται τῆς συνθέσεως τοῦ «Ἰδομενέως», μελοδράματος παραγγελθέντος αὐτῷ ἐκ Μονάχου. Τὸ ἔργον τοῦτο, παιχθὲν ἐν τῇ βαυαρικῇ πρωτευούσῃ (1781), ἐπροκάλεσεν ἀκράτητον ἐνθουσιασμὸν καὶ ἐπέβαλε τὸν Μόζαρτ ὡς ἕνα τῶν πρώτων δραματικῶν συνθετῶν τῆς Γερμανίας. Εἶναι μελόδραμα μὲ πλούσια χορικά, τεμάχια συνόλου, πομπώδη ἐμβατήρια, μπαλλέττα κλ., κρᾶμα ἰταλικῶν καὶ γαλλικῶν στοιχείων, καὶ φέρει σαφῆ ἴχνη ἐπιδράσεως τοῦ Γκλούκ. Ὡς ὕφος, ἐξ ἄλλου, ἀνήκει εἰς τὴν μεταβατικὴν περίοδον τοῦ συνθέτου, σημειοῖ τὸ τέρμα τῆς νεανικῆς του τεχνοτροπίας καὶ προαναγγέλλει τὰ ἐπὶ θύραις σκηνικά του ἀριστουργήματα. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1781 ὁ Μόζαρτ, θραύσας πάντα δεσμὸν μὲ τὸν ἀρχιεπίσκοπον Σαλτσβούργου, ἐγκαθίσταται ἐν Βιέννῃ παρὰ τῇ οἰκογενείᾳ Βέμπερ. Ἓν ἔτος ἀργότερον, ἡ Κωνσταντία, ἀδελφὴ τῆς Ἀλοϋσίας, ἐγένετο σύζυγός του. Κατὰ τὴν τελευταίαν ταύτην δεκαετίαν τῆς ζωῆς του (1781—1791) παρήγαγε τὰ κάλλιστα τῶν ἀριστουργημάτων του. Ἐντολῇ τοῦ αὐτοκράτορος ἔγραψε τῷ 1871 τρίπρακτον κωμικὸν μελόδραμα: «Ἡ ἀπαγωγὴ ἐκ τοῦ σεραγίου» (ἢ «Βελμόντης καὶ Κωνσταντία»), ἔργον ἐμπνευσμένον ἀπὸ τὸν πρὸς τὴν μνηστήν του ἔρωτα. Παρὰ τὰς ἀντιδράσεις τῶν κακοβούλων τὸ ἔργον τοῦτο ἐθριάμβευσε καὶ ἐπαίχθη εἰς πλείστας πόλεις τῆς Γερμανίας. Δι' αὐτοῦ δὲ καὶ τοῦ μετὰ δεκαετίαν παιχθέντος «Μαγευμένου αὐλοῦ», ὁ Μόζαρτ θὰ ἠδύνατο νὰ θεωρηθῇ ὡς ὁ ἱδρυτὴς τοῦ ἐθνικοῦ γερμανικοῦ μελοδράματος. Δυστυχῶς τὰ ἐξαιρετικὰ φωνητικὰ προσόντα, ἅτινα ὁ συνθέτης ἐζήτει ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ, καθίστων δυσεπίτευκτον τὴν ἱκανοποιητικὴν ἀναβίβασίν του. Ὁ ρόλος αἴφνης τοῦ βαθυφώνου ἀπαιτεῖ ἔκτασιν ἀπὸ τοῦ βαθέος ρε μέχρι τοῦ ὀξέος φα, ὁ τῆς Μπλὸντ ἀπὸ τοῦ βαθέος λα μέχρι τοῦ ὀξέος μι, ὁ τῆς Κωνσταντίας φωνητικὴν εὐλυγισίαν ἀφάνταστον.

Τῷ 1786 ἐπαίχθη ἐν Βιέννῃ ἓν ἐκ τῶν ἀριστουργημάτων τοῦ Μόζαρτ, «Οἱ γάμοι τοῦ Φιγκαρῶ», ἐπὶ ἰταλικοῦ λιμπρέττου τοῦ ντὰ Πόντε, ὅστις ἐλθὼν εἰς ρῆξιν μὲ τὸν Σαλιέρι προσέφερε τὸ ποίημά του πρὸς μελοποίησιν εἰς τὸν Αὐστριακὸν μουσουργόν. Ὁ Σαλιέρι καὶ οἱ ὀπαδοί του προσεπάθησαν νὰ ἐμποδίσουν τὴν ἀναβίβασιν τοῦ ἔργου, ἐρραδιούργησαν παρὰ τῷ αὐτοκράτορι καὶ μετῆλθον πᾶν μέσον, ἵνα προκαλέσουν τὴν ἀποτυχίαν τοῦ ἀριστουργήματος. Τὸ κοινὸν ὅμως, καταληφθὲν ὑπὸ φρενίτιδος ἐζήτει τὴν ἐπανάληψιν ὅλων τῶν τεμαχίων καὶ προέβαινεν εἰς ἐκδηλώσεις ἐνθουσιασμοῦ. Ἡ ἐπιτυχία τῶν «Γάμων τοῦ Φιγκαρῶ» μετεβλήθη εἰς ἀληθῆ θρίαμβον τὰς ἀρχὰς τοῦ 1787 ἐν Πράγᾳ καὶ προεκάλεσε τὴν παραγγελίαν πρὸς τὸν Μόζαρτ ἑνὸς ἄλλου μελοδράματος, τοῦ «Δὸν Ζουὰν» ἐπὶ στίχων ἐπίσης τοῦ ντὰ Πόντε. Ἀνεβιβάσθη τὸ πρῶτον ἐν Πράγᾳ τὴν 29 Ὀκτωβρίου 1787, ἡ δὲ ἐπιτυχία του ὑπῆρξε μοναδική, ἐνῷ ἀντιθέτως ἐν Βιέννῃ παρῆλθε σχεδὸν ἀπαρατήρητον. Ἀποθανόντος ἐν τῷ μεταξὺ τοῦ Γκλούκ, ὁ Μόζαρτ ὠνομάσθη (1787) συνθέτης τῆς αὐτοκρατορικῆς αὐλῆς, μὲ ἐτήσιον ἐπίδομα 800 φλωρινίων, ὅπερ ἦτο τὸ μόνον ἀσφαλὲς εἰσόδημα δι' αὐτὸν καὶ τὴν οἰκογένειάν του. Αἱ πρὸς πλήρωσιν τῶν ἀναγκῶν γραφόμεναι ἐν τῷ μεταξὺ συνθέσεις του ἐτίθεντο εἰς ἥσσονα μοῖραν ἄλλων, ὧν οὔτε μνεία γίνεται κἂν σήμερον, καὶ ἐπληρώνοντο εἰς ἐξευτελιστικὰς τιμάς. Κατ' Ἀπρίλιον τοῦ 1789 ὁ Μόζαρτ συνώδευσε τὴν πρίγκιπα Λιχνόβσκυ εἰς Βερολῖνον, ἐκεῖ δὲ ὁ βασιλεὺς Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος Β' τῷ προσέφερε τὴν θέσιν τοῦ μουσικοῦ διευθυντοῦ τῆς αὐλῆς ἐπὶ ἀντιμισθίᾳ 3.000 ταλλήρων. Ὁ Μόζαρτ ὅμως ἀπεποιήθη, ἵνα μὴ φανῇ ἀγνώμων πρὸς τὸν «καλόν του αὐτοκράτορα» καὶ ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἀγαπητήν του Βιέννην. Μετ' ὀλίγον (1790) ἀνεβίβαζεν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, κατὰ παραγγελίαν τοῦ αὐτοκράτορος, τὸ κωμικὸν μελόδραμα «Ἔτσι κάνουν ὅλες» (Cosi fan tutte), ἐπὶ στίχων τοῦ ντὰ Πόντε. Τὸ ἔργον, λόγῳ τοῦ κακοῦ λιμπρέττου, εἶχε μετρίαν ἐπιτυχίαν. Εἰς ἐπίμετρον ἀπέθανε μετ' ὀλίγον ὁ αὐτοκράτωρ Ἰωσὴφ Β', ὁ δὲ διάδοχός του οὐδὲν ἐνδιαφέρον ἔδειξε διὰ τὴν μουσικήν. Καὶ οὕτως ἐχάθη ἡ εὐκαιρία, ὅπως ὁ μουσουργὸς βελτιώσῃ τὴν θέσιν του. Συστηματικῶς ὁ Μόζαρτ ἀπεκλείετο ἀπὸ πᾶσαν ἐπίσημον τελετήν, συνεχῶς δὲ διεβάλλετο ὑπὸ τῶν ζηλοφθόνων. Δανείζεται ἵνα ἐπιχειρήσῃ καλλιτεχνικὸν ταξίδιον, ἀλλ' ἐπανέρχεται ἐξ αὐτοῦ πτωχὸς καὶ κατεστραμμένος. Τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1791 ἀναβιβάζει ἐν Πράγᾳ τὸ μελόδραμά του «Τίτος», ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς στέψεως Λεοπόλδου τοῦ Β'. Κατὰ τὸ ταξίδιον πρὸς τὴν βοημικὴν πρωτεύουσαν ἦτο μελαγχολικός· εἶχε λάβει ἤδη πρὸ ὀλίγου παραγγελίαν νὰ γράψῃ ἓν «Ρέκβιεμ», τὸ ὁποῖον προῃσθάνετο ὅτι θὰ συνέθετε διὰ τὸν ἑαυτόν του. Καὶ ὅμως εὑρίσκει ἀκόμη τὴν δύναμιν νὰ γράψῃ τὸ τελευταῖον θεατρικόν του ἀριστούργημα «Τὸν μαγευμένον αὐλὸν» («Die Zauberflöte»), ἐπὶ στίχων τοῦ Σικανέντερ. Τὸ ἔργον, παιχθὲν ἐν Βιέννῃ τὴν 30 Σεπτεμβρίου 1791, εἶχεν ἐπιτυχίαν ἄνευ προηγουμένου. Ἐντὸς δεκατριῶν μηνῶν ἐπαίχθη ἑκατοντάκις. Ἡ μουσικὴ ἀξία τοῦ Μόζαρτ εἶχε τέλος ἀναγνωρισθῇ, ἀλλ' ἦτο πλέον ἀργά, διότι ὁ ἔνδοξος μουσουργὸς εἶχεν ἤδη ἀποβιώσει τὴν 5 Δεκεμβρίου τοῦ 1791, ἀφίνων ἡμιτελὲς τὸ «Ρέκβιεμ», ὅπερ συνεπλήρωσεν ὁ μαθητής του Συσμάϋερ. Ἡ κηδεία του ὑπῆρξεν ἁπλῆ καὶ πτωχική· λόγῳ τοῦ κακοῦ καιροῦ οἱ ὀλίγοι φίλοι, οἱ παρακολουθοῦντες τὴν κηδείαν, ἐγκατέλειψαν τὸν νεκρὸν εἰς τὸ μέσον τῆς ὁδοῦ, οὐδεὶς δ' ἐξ αὐτῶν παρευρέθη κατὰ τὴν ταφήν. Τὸ σῶμά του ἐρρίφθη εἰς κοινὸν τάφον, εἰς τρόπον ὥστε οὐδεὶς γνωρίζει σήμερον ποῦ ἀκριβῶς ἐτάφη μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας μουσικὰς ἰδιοφυΐας τῶν αἰώνων. Τῷ 1842 ἱδρύθη ἐν Σαλτσβούργῳ, ἐν τῇ οἰκίᾳ ἐν ᾗ ἐγεννήθη ὁ μουσουργός, τὸ «Μουσεῖον Μόζαρτ»· ἀφ' ἑτέρου τὸ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει ᾠδεῖον φέρει τὸν τίτλον «Μοζαρτέουμ» (Mozarteum), ἀπό τινος δέ, κατ' Αὔγουστον ἑκάστου ἔτους, λαμβάνουσι χώραν ἐν τῇ πόλει, ἐν ᾗ εἶδε τὸ φῶς, αἱ πρὸς τιμήν του ἑορταί, καθ' ἃς ἐκτελοῦνται τὰ ὡραιότερα τῶν ἔργων του.

Ὁ Μόζαρτ δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς εἷς τῶν πρωτοπόρων τοῦ γερμανικοῦ μελοδράματος καὶ συνεχιστὴς τῆς παραδόσεως τοῦ Γκλούκ, οὗτινος τὴν τέχνην ἐτελειοποίησε, χάρις εἰς τὴν ὑπερτέραν τέχνην, μεθ' ἧς χειρίζεται τὰς φωνὰς καὶ τὰ φωνητικὰ σύνολα, τὴν αὐθόρμητον μελῳδίαν του, τὴν ἐπιμεμελημένην ἐνορχήστρωσιν, καὶ τέλος τὸ μοναδικὸν δῶρον, ὅπερ ἐκέκτητο, τοῦ νὰ περιβάλλῃ μὲ ἀφάνταστον χάριν καὶ κομψότητα, καὶ νὰ μεταβάλλῃ εἰς μουσικὰ ἀριστουργήματα καὶ τὰς μεγαλυτέρας ἀνοησίας τῶν λιμπρέττων του.

Ἄλλο χαρακτηριστικὸν τῆς ἰδιοφυΐας τοῦ Μόζαρτ εἶναι ἡ εὐκολία, μεθ' ἧς προσηρμόζετο εἰς τὸ ὕφος ἑκάστης σχολῆς. Πᾶσαι αἱ χῶραι, ἐξ ὧν διῆλθεν, ἐπέδρασαν κατά τι ἐπὶ τῆς τέχνης του. Ἀλλὰ κυρίως ἡ μουσική του γλῶσσα, ἐν τοῖς ἔργοις τῆς ὡριμότητος, εἶναι κρᾶμα ἰταλικῆς μελῳδικότητος καὶ γερμανικῆς βαθύτητος. Εἰδικώτερον ἐπέδρασεν ἐπ' αὐτοῦ ἡ σχολὴ τῆς Μαγχάϊμ, ἧς ἴχνη εὑρίσκομεν πρωτίστως ἐν ταῖς 41 συμφωνίαις του. Ἐν τοῖς ἔργοις τούτοις ὁ Μόζαρτ ἀκολουθεῖ ἀρχικῶς τὰ πρότυπα τοῦ Στάμιτς, τοῦ Ἰω. Χριστ. Μπάχ, εἶτα τοῦ Χάϋδν, ἀλλ' ἐν τέλει εὑρίσκει τὸν δρόμον του. Εὐρύνει τὴν ἀνάπτυξιν, πλουτίζει τὴν θεματικὴν ἐπεξεργασίαν, τελειοποιεῖ τὴν μορφήν. Ἐκ τῶν συμφωνιῶν του αἱ περιφημότεραι εἶναι αἱ τρεῖς τελευταῖαι: ἡ 39η εἰς μι ὕφ., ἡ 40ὴ εἰς σολ ἔλασσον καὶ ἡ 41η εἰς ντο μεῖζον. Εἰς τὸν Μόζαρτ ὀφείλεται ἐπίσης ἡ ὁριστικὴ μορφὴ τοῦ *κοντσέρτου*, ἐν τῷ ὁποίῳ ὁ συνθέτης εὑρίσκει ἴδιον τύπον, ἀπαράμιλλον εἰς ἰσορροπίαν μεταξὺ τοῦ ὀργάνου *σόλο* καὶ τῆς ὀρχήστρας καὶ εἰς μελῳδικὸν πλοῦτον. Τὰ κοντσέρτα ταῦτα χωρίζονται εἰς κατηγορίας ὡς ἑξῆς: 6 κοντσέρτα διὰ βιολίον, 6 τεμάχια διὰ βιολίον-σόλο, ἓν «κοντσερτόνε» διὰ δύο βιολία, ἓν κοντσέρτο διὰ βαρύαυλον, ἓν διὰ πλαγίαυλον καὶ ἅρπαν, δύο διὰ πλαγίαυλον, τέσσαρα διὰ κέρας, ἓν δι' εὐθύαυλον, 25 διὰ κλειδοκύμβαλον, ἓν διπλοῦν κοντσέρτο διὰ δύο κλειδοκύμβαλα, ἓν τριπλοῦν κοντσέρτο διὰ τρία κλειδοκύμβαλα.

Ὁ Μόζαρτ ἔγραψε 45 σονάτας καὶ παραλλαγὰς διὰ κλαβικύμβαλον ἢ κλειδοκύμβαλον, ἀφ' ἧς ἐγνώρισε τὸ ὄργανον τοῦτο, καὶ διὰ βιολίον καὶ κλειδοκύμβαλον. Ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ παραγωγῇ τοῦ Μόζαρτ κατέχουσιν ἐπίσης τὰ 31 κουαρτέττα του. Ἐκ τούτων τὰ ὡραιότερα εἶναι τὰ ἓξ συντεθέντα ἐν Βιέννῃ (1784—1785) καὶ ἀφιερωθέντα εἰς τὸν Χάϋδν. Ὁ γηραιὸς μουσουργός, ἀκούσας τὰ κουαρτέτα ταῦτα, ἔγραψεν εἰς τὸν πατέρα τοῦ Μόζαρτ: «Δηλῶ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ καὶ ὡς τίμιος ἄνθρωπος ὅτι ὁ υἱός σας εἶναι ὁ μεγαλύτερος μουσικὸς ἐξ ὅσων γνωρίζω». Ἐν ταῖς 15 λειτουργίαις του ὁ Μόζαρτ παρουσιάζει πολύμορφον τεχνοτροπίαν μὲ ἐναλλασσομένας τάσεις κοσμικότητος καὶ θρησκευτικότητος. Ἡ θρησκευτικὴ ὅμως τεχνικὴ ὑπερισχύει ἐν τέλει ἐν αὐτῷ, ἐν τῇ ἡμιτελεῖ λειτουργίᾳ εἰς ντὸ ἔλασσον (1782—1783), ἔργῳ διακρινομένῳ διὰ τὴν δραματικήν του ἔκφρασιν, τὴν θαυμαστὴν ἀντιστικτικὴν ἐπεξεργασίαν καὶ τὸν ὑπέροχον χειρισμὸν τῶν φωνητικῶν συνόλων. Τὸ πασίγνωστον «Ave verum» διὰ τετράφωνον χορόν, ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον καὶ ὀρχήστραν ἐγχόρδων εἶναι ἴσως ἡ θειοτέρα ἐξ ὅλων τῶν προσευχῶν.

Ὁ Μόζαρτ ὑπῆρξεν ἡ ἐνσάρκωσις αὐτῆς τῆς μουσικῆς. Ἔζησε μόνον τριάκοντα πέντε ἔτη, καὶ ὅμως ἐκληροδότησεν εἰς τὸν κόσμον ἀπειρίαν ἀριστουργημάτων. Δὲν ἐπεζήτησε νὰ δημιουργήσῃ ἰδίους τύπους, καὶ ὅμως τὰ πάντα εἰς τὰς χεῖράς του μεταμορφοῦνται.

Digitized by Google

Ἠριθμήθησαν μέχρι τοῦδε 582 αὐθεντικαὶ συνθέσεις τοῦ Μόζαρτ, περιληφθεῖσαι εἰς τὴν κριτικὴν ἔκδοσιν τοῦ οἴκου Μπράιτκόπφ καὶ Χαίρτελ τῆς Λειψίας (1876—1883). Ἐκτὸς τούτων ὑπάρχουσι καί τινες ἀμφιβόλου γνησιότητος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Otto Jahn*, W. A. Mozart. —*Wyzewa*, La Jeunesse de Mozart (1905). —*Wyzeva* et *Saint-Foix*, W. A. Mozart, sa vie musicale et son oeuvre (1911). —*Niemtschek*. Leben des K. K. Kapellmeisters W. G. Mozart (1798).—*Oulibicheff*, Nouvelle biographie de Mozart (1843). —*Nottembohm*, Mozartiana (1880). —*Dent*, Mozart's Opera, a critical study (1913). —*Curzon*, Essai de bibliographie Mozartine. —*Curzon*, Mozart. —*Nohl*, Die Zauberflöte; Mozart's Leben. —*Pohl*, Mozart und Haydn in London (1867). Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**Μοζέβιους** (Mosewius), ***Ἰωάννης-Θεόδωρος***. Διακεκριμένος Γερμανὸς μουσικὸς (1788—1858). Ἀρχικῶς ἦτο ἀοιδός, εἶτα δὲ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς μουσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ καὶ ἱδρυτὴς περιφήμου «κουαρτέττου» ἐν Βρεσλαυΐᾳ. Εἰς τὸν Μοζέβιους ὀφείλεται ἐπίσης ἡ ἵδρυσις ἐν τῇ πόλει ταύτῃ τῆς «Ἀκαδημίας ᾄσματος», ἥτις συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν εὑρεῖαν διάδοσιν τῆς κλασσικῆς μουσικῆς ἐν τῇ περιοχῇ ἐκείνῃ τῆς Γερμανίας. Ἐκτὸς πολυαρίθμων συνθέσεων ὁ Μοζέβιους ἔγραψε καὶ διάφορα θεωρητικὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Περὶ τῆς ἐκτελέσεως τοῦ ὀρατορίου Παῦλος» (1836), «Ὁ Ἰω. Σεβ. Μπὰχ εἰς τὰς ἐκκλησιαστικὰς του καντάτας καὶ τὰ χορικά» (1845), «Ἡ Ἀκαδημία ᾄσματος τῆς Βρεσλαυΐας» (1850) κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μόζελ** (Mosel), ***Ἰγνάτιος-Φραγκῖσκος φόν***—. Αὐστριακὸς μουσουργὸς (1772—1844). Ὑπῆρξεν ὑποδιευθυντὴς τῶν θεάτρων τῆς αὐλῆς, διὰ τὰ ὁποῖα ἔγραψε μελοδράματά τινα: «Ἡ δοκιμασία διὰ τοῦ πυρός» (1811), «Σαλέμ», «Κῦρος καὶ Ἀστυάγης» (1818) κ. ἄ. Φαίνεται ὅτι ὁ Μόζελ ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος μεταχειρισθεὶς ειδικὴν ράβδον (baguette), διὰ τὴν διεύθυνσιν τῆς ὀρχήστρας. Ἐκτὸς τῶν μελοδραμάτων συνέθεσεν: εἰσαγωγάς, ψαλμούς, ὕμνους κ.τ.λ. καὶ ἐξέδωκε τὰ ἱστορικὰ καὶ αἰσθητικὰ ἔργα: «Περὶ τῆς ζωῆς καὶ τῶν ἔργων τοῦ Ἀντωνίου Σαλιέρι» (1827), «Περὶ τῆς πρωτοτύπου παρτιτούρας τοῦ «Ρέκβιεμ» τοῦ Μόζαρτ» (1829), «Ἱστορία τῆς βιβλιοθήκης τῆς αὐλῆς τῆς Βιέννης» (1835), «Ἡ μουσικὴ ἐν Βιέννῃ κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας» (1818) κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μοζέλλας** (Moselle) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ΒΑ. Γαλλίας καὶ τῆς Δ. Γερμανίας (Ρηνανίας), ἀριστερὸς παραπόταμος τοῦ Ρήνου. Πηγάζει παρὰ τὸν αὐχένα τοῦ Μπυσσὰν τῶν μεσημβρινῶν Βοσγίων, διαρρέει τὰς πόλεις Ἐπινάλ, Τούλ, Φρουάρ, Μέτς, Τιονβὶλλ καὶ Τρέβ, εἶναι δὲ πλωτὸς ἀπὸ τῆς συμβολῆς του μέχρι τῆς πόλεως Φρουάρ. Κυριώτερος παραπόταμός του εἶναι ὁ δεξιὸς *Μέρτ*. Χ. Δ.

— *[Διεθν. Δίκ.]* Διὰ τῶν ἀπὸ 24 Μαρτίου 1815 ἰδιαιτέρων κανονισμῶν» περὶ τῆς ἐλευθέρας ναυσιπλοΐας, οἵτινες ἐπισυνήφθησαν εἰς τὴν συνθήκην τοῦ συνεδρίου τῆς Βιέννης τῆς 9 Ἰουνίου 1815, ὡρίσθη ὅτι ἡ περὶ ἐλευθέρας ναυσιπλοΐας, τῆς αὐτῆς ἡμερομηνίας, θεσπισθέντες κανόνες περὶ *Ρήνου* ἰσχύουσιν ἐξ ἴσου καὶ δι' ἄλλους τινὰς ποταμούς, ἤτοι τὸν *Μοζέλλαν*, τὸν *Νέκαρ*, τὸν *Μάϊν* καὶ τὸν *Μόσαν*. Οὕτω πως καθιερώθη ἡ διεθνοποίησις τῶν ποταμῶν αὐτῶν, οἱ ὁποῖοι κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην διέσχιζον τὰς χώρας διαφόρων πολιτειῶν, ἐφαρμοζομένων ἐπ' αὐτῶν κατ' ἀναλογίαν τῶν περὶ Ρήνου ἰσχυόντων κανόνων. Ἡ περὶ εἰρήνης συνθήκη τῆς Φραγκφούρτης τῆς 10 Μαΐου 1871 ὥριζεν ἐν ἄρθρῳ 5 ὅτι αἱ συμβαλλόμεναι πολιτεῖαι, Γαλλία καὶ Γερμανία, ἀπολαύουσιν «ἴσης ἐλευθερίας» καθ' ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μοζέλλα ἐλευθεροπλοΐαν. Ἡ διάταξις αὕτη ἴσχυσε μέχρι τῆς ἐνάρξεως τῆς ἰσχύος τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν τῆς 28 Ἰουνίου 1919, διὰ τοῦ ἄρθρου 362 τῆς ὁποίας ὑπεχρεώθη ἡ Γερμανία νὰ μὴ προβάλῃ ἀντίστασίν τινα εἰς οἱανδήποτε πρότασιν προερχομένην ἐκ μέρους τῆς «Κεντρικῆς Ἐπιτροπῆς» τοῦ Ρήνου, διὰ τῆς ὁποίας θὰ ἐπιδιώκηται ἡ ἐπέκτασις τῆς δικαιοδοσίας αὐτῆς καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μοζέλλα, καθόσον ἀφορᾷ τὴν ἔκτασιν αὐτοῦ ἀπὸ τῶν γαλλολουξεμβουργικῶν συνόρων μέχρι τοῦ Ρήνου, ὑπὸ τὴν ἐπιφύλαξιν ὅτι εἰς τοῦτο ἤθελε συγκατατεθῆ καὶ τὸ Λουξεμβοῦργον. Η. Γ. Κ.

— **Μοζέλλα νομὸς** *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Γαλλίας ἐν Λωρραίνῃ. Ἔχει ἔκτασιν 6,227 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 655.215 κατ., πρωτεύουσαν τὸ *Μὲτς* καὶ ὑποδιαιρεῖται εἰς 9 ἐπαρχίας, 35 δήμους καὶ 758 κοινότητας. Ὁ νομὸς οὗτος ὑφίστατο καὶ πρὸ τοῦ Γαλλοπρωσσικοῦ πολέμου τοῦ 1870, μικρὸν δὲ τμῆμα αὐτοῦ καταλειφθὲν διὰ τῆς συνθήκης τῆς Φραγκφούρτης εἰς τὴν Γαλλίαν συνεχωνεύθη μετὰ τοῦ νομοῦ Μὲρτ καὶ Μοζέλλα, εἰς ὃν καὶ παραμένει ἔκτοτε. Χ. Δ.

**Μόζεν** (Mosen), ***Ἰούλιος***. Γερμανὸς ποιητὴς (1803—1867). Κατ' ἀρχὰς νομικός, εἶτα διευθυντὴς τοῦ ἐν Ὀλδεμβούργῳ θεάτρου, ἔγραψε ποιήματα, ἔπη, μυθιστορήματα καὶ δράματα. Ἐκ τῶν «Ποιημάτων» του τινά, ὡς: «Οἱ τελευταῖοι δέκα τοῦ τετάρτου συντάγματος», «Ὁ Ἀνδρέας Χόφερ», «Ὁ σαλπιγκτὴς τοῦ Κάτσμπαχ»,κατέστησαν λαϊκᾴσματα. Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων του ἀξιόλογα εἶναι τὰ δράματα: «Ἔρρῖκος ὁ Ὀρνιθοθήρας» (1836), «Ὁ αὐτοκράτωρ Ὄθων ὁ Γ'» (1842), «Ὁ δοὺξ Βερνάρδος» καὶ τὰ πεζὰ ποιήματά του, ὡς αἱ «Εἰκόνες» («Bilder» 1846, τόμ. 2). Τὰ «Ἅπαντά» του ἐξεδόθησαν τῷ 1880 ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του εἰς 6 τόμους. Γ. Ι. Β.

**Μόζερ** (Moser), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος***. Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ δημοσιολόγος (1701—1785). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς νομικῆς ἐν Τυβίγγῃ, πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς Φραγκφούρτης, ἐπὶ τοῦ Ὀδέρου. Τῷ 1759 συνελήφθη ὑπὸ τοῦ Καρόλου Εὐγενίου ὡς συγγραφεὺς ἀνωνύμου λιβέλλου στρεφομένου ἐναντίον τοῦ τελευταίου, ἀπολυθεὶς μετὰ πέντε ἔτη τῇ μεσολαβήσει Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου. Ἔκτοτε, καὶ ἰδίως ἀπὸ τοῦ ἔτους 1770, κατέγινε συγγράφων. Τὰ σημαντικώτερα τῶν ἔργων του, ἀνερχομένων εἰς 500 τόμους, εἶναι τὰ ἑξῆς: «Γερμανικὸν δημόσιον δίκαιον» (1737—1754. τόμ. 50), «Νέον γερμανικὸν δημόσιον δίκαιον» (τόμ. 21, 1766—1775 καὶ συμπλήρωμα 1781—1782, τόμ. 2) κλπ. Ὁ Μόζερ ἀποκαλεῖται πατὴρ τοῦ γερμανικοῦ δημοσίου δικαίου. Γ. Ι. Β.

**Μόζετιχ-Μόρχωφ** (Mosetig-Moorhof), ***Ἀλβέρτος, ἱππότης φόν*** —. Αὐστριακὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Τεργέστῃ τῷ 1838. Ἀνηγορεύθη διδάκτωρ ἐν Βιέννῃ τῷ 1861. Τῷ 1866 ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς χειρουργικῆς, τῷ 1871 ἀρχιχειρουργὸς καὶ τῷ 1875 ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς. Ἔγραψε: «Σύγγραμμα ἐγχειρητικῆς τεχνικῆς» (Βιέννη 1886, 1889), «Μαθήματα χειρουργικῆς τοῦ πολέμου» (1887) κλπ. Ὡς *νόμος τοῦ Μόζετιχ* δηλοῦται ὁ ἀφορισμὸς καθ' ὃν ὁ ἱστός, εἰς ὃν ἀναπτύσσεται νεοπλασία τις, φέρει τὸν τύπον τοῦ ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ εἰς κατάστασιν ἐμβρυώδη ἢ καὶ εἰς τελείαν ἀνάπτυξιν. Ὡς *θεραπευτικὴ* δὲ *ἀγωγὴ τοῦ Μόζετιχ* θεωρεῖται ἡ δι' ἐνέσεων 3—6 γραμμαρίων ἐκ διαλύσεως 1 : 500 κυανοῦ τοῦ μεθυλίου θεραπεία πρὸς καταπολέμησιν τοῦ καρκίνου. Ο. Ρ.

**μόθακες** (οἱ) *[Ἀρχ.]*· βλ. *μόθων*.

**Μοθιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Εἷς ἐκ τῶν 6 συνοικισμῶν τῶν ἀποτελούντων τὴν κοινότητα *Γλῶσσαν* τῆς ἐπαρχίας Κισάμου τοῦ νομοῦ Χανίων Κρήτης, μὲ 121 κατοίκους καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**μόθων**, —*ωνος* (ὁ)· (ἀρχ.) εἶδος ἀκολάστου ὀρχήσεως μὲ σκιρτήματα τῶν ποδῶν πρὸς τὰ ὀπίσω, κατὰ τὰ ὁποῖα καμπτόμενοι οἱ πόδες ἥπτοντο τῆς πυγῆς· || ἀναίσχυντος, αὐθάδης καὶ κακοήθης ἄνθρωπος· || δαίμων, ἐκ τῶν πονηρῶν, προστάτης τῆς ἀναιδείας. Ε. Γ.

— *[Ἀρχ.]* Ἐκαλοῦντο *μόθωνες* ἢ *μόθακες* παῖδες εἱλώτων νεοδαμωδῶν ἢ καὶ νόθοι Σπαρτιατῶν, ἐκ μητρὸς οἰκοσίτου ἐκ τῶν εἱλώτων, ἀνατρεφόμενοι εἰς οἴκους ἐλευθέρων πολιτῶν τῆς Σπάρτης καὶ κατὰ τὰς σπαρτιατικοὺς νόμους, ὥστε νὰ ἀποβαίνωσι «μάλα εὐειδεῖς καὶ τῶν ἐν τῇ πόλει καλῶν (=τῆς πειθαρχίας) οὐκ ἄπειροι». Ἀπηλευθεροῦντο ἔπειτα, ἀλλὰ πιθανῶς οὐχὶ μὲ πλήρη δικαιώματα. Τινὲς ταυτίζουσι τοὺς μόθακας πρὸς τοὺς *ἀφέτας*. Οὗτοι ὅμως ἦσαν δοῦλοι ἀπελεύθεροι· «πολλάκις οἱ Λακεδαιμόνιοι ἠλευθέρωσαν δούλους· οὓς μὲν ἀφέτας ἐκάλεσαν, οὓς δὲ ἀδεσπότους, οὓς δὲ ἐρυκτῆρας» (*Ἀθήν*. 271). Ἀναφέρονται τοιοῦτοι ὑπηρετοῦντες ἐν τῷ στόλῳ, δεσποσιοναῦται καλούμενοι. Δι' υἱοθεσίας ἐγίνοντο γνήσιοι πολῖται. Διαπρεπεῖς Σπαρτιᾶται ἐκ τῶν μοθάκων ἦσαν ὁ Καλλικρατίδας, Γύλιππος καὶ Λύσανδρος (*Αἰλιαν*., Ποικ. Ἱστ. ΙΒ', 43). Ε. Γ.

**Μοθώνη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἕτερος τύπος τῆς πόλεως *Μεθώνη* (βλ. λ.).

**Μοθωνιός, Νικόλαος**. Ἀγωνιστὴς ἐκ Μεθώνης (βλ. λ. *Γεωργακόπουλος* Νικόλαος).

**μοιάζω** (δισυλλάβως)· δημοτ. τύπος τοῦ *ὁμοιάζω* (βλ. λ.).

**Μοϊκανοὶ** (οἱ) (Mohicans ἢ Mohegans). Φυλὴ Ἐρυθροδέρμων τῆς Β. Ἀμερικῆς τῆς οἰκογενείας τῶν Ἀλγκονκίνων, ἧς σῴζονται σήμερον ἐλάχιστοι ἀντιπρόσωποι ἐν Κοννέκτικατ. Εἶναι φιλήσυχος λαὸς καὶ ἔζησαν πάντοτε εἰρηνικῶς μετὰ τῶν Εὐρωπαίων. Ἐγένοντο κυρίως γνωστοὶ διὰ τοῦ περιφήμου μυθιστορήματος τοῦ Φένιμορ Κοῦπερ «Ὁ τελευταῖος τῶν Μοϊκανῶν». Χ. Δ.

**Μοῖνος** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γερμανίας (βλ. λ. *Μάϊν*).

**μοῖρα** (ἡ)· μέρος τὸ ὁποῖον ἀνήκει εἴς τινα, τὸ μεμερισμένον τινί: «ἡ νόμιμος μοῖρα» τὸ νομίμως ἀνῆκον εἴς τινα ἐκ κληρονομίας· || παροιμ. «ἡ μοῖρα τοῦ λέοντος», ὅταν τὸ μερίδιον τινος εἶναι ἀσυγκρίτως ἀνώτερον ἀπὸ τὰ μερίδια τῶν ἄλλων, μεθ' ὧν διανέμεταί τι (ἐκ τοῦ αἰσωπείου μύθου ὄνος, λέων καὶ ἀλώπηξ)· || μεταφ., τιμή, ἀξία: φρ. «ἐν ἴσῃ μοίρᾳ» εἰς τὴν αὐτὴν ἐκτίμησιν, «ἐν μείζονι μοίρᾳ» εἰς μεγαλυτέραν ἐκτίμησιν: «δὲν θέτομεν πάντας εἰς ἴσῃ μοίρᾳ» ἢ «— εἰς ἴσην μοῖραν», «οἱ παλαιοὶ συνεργάται θὰ τεθῶσιν ἐν μείζονι μοίρᾳ ἢ οἱ νεώτεροι» || στρατιωτικὴ μονάς, τμῆμα στρατοῦ ἢ στόλου: «μοῖρα νοσοκόμων, — αὐτοκινήτων», «μοῖρα θωρηκτῶν, — ἐλαφρῶν σκαφῶν»· || μαθημ. τὸ $^1/_{360}$ τῆς περιφερείας: «γωνία —, τόξον ὀγδοήκοντα μοιρῶν»· || μεταφ., ὅ,τι εἰς ἕκαστον εἶναι πεπρωμένον νὰ συμβῇ, ἡ τύχη ἑκάστου, ἄλλως *ριζικό*, *γραφτό*: «εἶναι τῆς μοίρας του νὰ κάμνῃ καλὸ καὶ νὰ βρίσκῃ κακό», «τό 'χει ἡ μοῖρά του νὰ...», «μαύρη σου μοῖρα κι' ἂν σὲ πιάσω», «ἡ καλή του μοῖρα ποῦ βρέθηκα ἐκεῖ καὶ τὸν γλύτωσα»· || «καλὴ μοῖρα» εὐχὴ πρὸς κόρην: «καλὴ μοῖρα νἄχῃς»· || *Μοῖραι* (αἱ)· αἱ καθορίζουσαι τὸν βίον τοῦ ἀνθρώπου ἅμα τῇ γεννήσει του, εἶναι δὲ τρεῖς, ἤδη ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος (βλ. κατωτ.).

—*[Ἀρχ. Θρησκειολ.]* Ἐκαλεῖτο *Μοῖρα* ἡ θεότης ἡ διανέμουσα εἰς ἕκαστον τῶν ἀνθρώπων τὰ ἀγαθὰ καὶ τὰ κακὰ τοῦ βίου του ἀπὸ τῆς γεννήσεώς του μέχρι τοῦ θανάτου του. Πρὶν ἢ ὅμως προσωποποιηθῇ ἡ «μοῖρα» εἰς μίαν ἢ τρεῖς θεότητας τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας ἦτο, ὡς ἐμφανίζεται παρ' Ὁμήρῳ, ἡ ἀφῃρημένη ἰδέα τοῦ πεπρωμένου, ἐκδηλουμένη μὲ τὰς λέξεις «αἶσα» καὶ «μοῖρα», αἵτινες ἐσήμαινον τὸν ἴσον μερισμόν. Ἦσαν δηλαδὴ ἡ αἶσα καὶ ἡ μοῖρα τὸ κρᾶμα τῶν ἀγαθῶν καὶ τῶν κακῶν, ἅτινα συναπετέλουν τὴν ὕπαρξιν ἑκάστου ἀνθρώπου, τὸ σύνολον τῆς ζωῆς του μὲ τὰς ἀλληλοδιαδόχους χαρὰς καὶ λύπας της. Ἐπειδὴ δὲ ἡ δύναμις τῆς ἀφῃρημένης ταύτης ἰδέας τῆς εἱμαρμένης, τῆς τυφλῆς, κωφῆς καὶ ἀμειλίκτου, εἰς τὴν ὁποίαν ἔκλινον πάντες τὴν κεφαλήν, ἐφαίνετο προσκόπτουσα καὶ περιορίζουσα τὴν ἰσχὺν καὶ ἐλευθερίαν ἑνὸς προσωπικοῦ θεοῦ, τοῦ Διός, οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες ἐνηρμόνισαν τὸν ἀναλλοίωτον αὐτὸν νόμον τῆς ἀνθρωπίνης ὑπάρξεως, τὸν νόμον τοῦ πεπρωμένου, μὲ τὴν παντοδύναμον θέλησιν τοῦ Διός, πλάσαντες τὸν μῦθον ὅτι ὁ Ζεὺς εἶναι ὁ Μοιραγέτης θεός, ὁ διευθύνων τὴν Μοῖραν καὶ ὁρίζων τὸ πεπρωμένον πάσης ἀνθρωπίνης ὑπάρ-

*Αἱ τρεῖς Μοῖραι ἐπὶ ἀρχαίου ἀναγλύφου.*

ξεως. Περιβληθεῖσα μυθολογικὴν μορφήν, ἡ ἰδέα τῆς μοίρας ἐνεφανίσθη ἐν ἀρχῇ μὲν ὡς μία μόνη προσωπικὴ θεότης, βραδύτερον δὲ ὡς τρεῖς χωρισταὶ ἀλλήλων θεότητες, ὑπὸ τὰ ὀνόματα *Κλωθώ*, *Λάχεσις* καὶ *Ἄτροπος* (βλ. λ.), αἵτινες ἄλλοτε μὲν ἐλέγοντο θυγατέρες τῆς Νυκτὸς (*Ἡσιόδου Θεογ.* 217), ἄλλοτε δὲ τοῦ Διὸς καὶ τῆς Μοίρας (*Ἀπολλ.* I.3.1.) ἢ Θέμιδος. Ἡ Κλωθὼ μὲ τὴν ἠλακάτην καὶ ἄτρακτόν της ἐκφράζει τὸ νῆμα τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς, ἡ Λάχεσις, ἡ ἀπεικονιζομένη σύρουσα κλῆρον, τὸν λαχόντα εἰς ἕκαστον ἄνθρωπον κλῆρον τῆς ζωῆς, καὶ ἡ ἐκτυλίσσουσα κύλινδρον ἐπὶ σφαίρας τοῦ κόσμου Ἄτροπος, τὴν ἀδυσώπητον ἀνάγκην τῆς εἱμαρμένης.

Αἱ Μοῖραι, παρευρισκόμεναι, ἐκ τῆς ἀσκήσεως τοῦ ἔργου των, κατὰ τὴν γέννησιν, τοὺς γάμους καὶ τὸν θάνατον ἑκάστου ἀνθρώπου, ἤρχοντο εἰς σχέσεις καὶ συνειργάζοντο μετὰ τῶν θεοτήτων, αἵτινες παρευρίσκοντο ἐπίσης εἰς τὰ κυριώτερα ταῦτα τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς συμβάντα. Οὕτως ἡ θεὰ τοῦ τοκετοῦ Εἰλείθυια καὶ ἡ Οὐρανία Ἀφροδίτη, ἥτις ἐν Ἀθήναις ἐνομίζετο ὡς ἡ πρεσβυτάτη τῶν Μοιρῶν, ἦσαν πάρεδροι αὐτῶν κατὰ τὴν γέννησιν ἑκάστου ἀνθρώπου. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον εὑρίσκοντο εἰς σχέσιν αἱ Μοῖραι καὶ μὲ τὸν δημιουργὸν τοῦ ἀνθρώπου Προμηθέα. Οἱ μεμνηστευμένοι πρὸ τῆς ἑνώσεώς των ἐτέλουν θυσίαν, ὄχι μόνον εἰς τὰς Μοίρας, ἀλλὰ καὶ τὴν Τελείαν Ἥραν, προστάτιδα τοῦ γάμου, καὶ τὴν Ἄρτεμιν. Ὁμοίως αἱ Μοῖραι εὑρίσκοντο εἰς σχέσεις μὲ τὰς Ἐρινῦς, αἵτινες ἦσαν ἐπίσης μοιραῖαι θεότητες, καὶ τὰς Κῆρας, θεότητας τοῦ θανάτου, καὶ τὴν Τύχην, ἥτις καὶ ἀδελφὴ αὐτῶν ὑπό τινων ἐθεωρεῖτο. Ἔχουσαι αἱ Μοῖραι παρὰ τοῦ Μοιραγέτου Διὸς τὴν ἐντολὴν νὰ ἐπιβλέπουν τὴν τάξιν τῶν πραγμάτων ἀπό τε φυσικῆς καὶ ἠθικῆς ἀπόψεως, εὑρίσκοντο εἰς σχέσεις μὲ τὰς Ὥρας, αἵτινες ἐπροσωποποίουν τὴν κανονικὴν διαδοχὴν τῶν ἐποχῶν τοῦ ἔτους, τὸν ἀναλλοίωτον αὐτὸν φυσικὸν νόμον, καὶ τὴν Εὐνομίαν, Δίκην καὶ Εἰρήνην, θυγατέρας τῆς Τάξεως καὶ τοῦ Νόμου.

Τὴν σχέσιν τῶν Μοιρῶν πρὸς πλείστας ἄλλας θεότητας ἐπιμαρτυροῦσι καὶ τὰ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων συγγραφέων μνημονευόμενα ἔργα τέχνης, εἰς τὰ ὁποῖα ἀπεικονίζοντο αὗται μετ' ἄλλων θεῶν. Οὕτως ἀπεικονίζοντο αὗται μετὰ τῶν Ὡρῶν μὲν ὑπε-

Digitized by Google

ἐπάνω τῆς κεφαλῆς τοῦ ἀγάλματος τοῦ Διὸς ἐν τῷ Ὀλυμπιείῳ τῶν Ἀθηνῶν (*Παυσ.* I. 40, 4) καὶ ἐν τῷ θρόνῳ τοῦ Ἀμυκλαίου Ἀπόλλωνος ἐν Ἀμύκλαις τῆς Λακωνικῆς, μετὰ τοῦ Διὸς Μοιραγέτα καὶ Ἀπόλλωνος Μοιραγέτα δὲ ἐν τῷ ἐν Δελφοῖς ναῷ τοῦ Ἀπόλλωνος. Εἰς τὰς Μοίρας πιστεύεται ὅτι ἀνήκουν καὶ τὰ τρία ἀκέφαλα ὡραῖα ἀγάλματα γυναικῶν τοῦ ἀνατολικοῦ ἀετώματος τοῦ Παρθενῶνος, ἀποκείμενα νῦν ἐν τῷ Βρεττανικῷ Μουσείῳ. Πλεῖσται δὲ παραστάσεις τῶν Μοιρῶν κοσμοῦσι καὶ τὰς πλευρὰς ἀρχαίων σαρκοφάγων, βωμῶν καὶ ἀναγλύφων, ἐκ τῶν ὁποίων ἀρίστη εἶναι ἡ τοῦ ἐν Μαδρίτῃ ἀναγλύφου.

Ἡ λατρεία τῶν Μοιρῶν ἦτο λίαν διαδεδομένη εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλλάδα. Οὕτως ἐλατρεύοντο αὗται ἐν Κορίνθῳ, ἔνθα τὰ ἀγάλματα αὐτῶν δὲν ἦσαν φανερά, ἐν Σικυῶνι, ἔνθα ὁ βωμὸς αὐτῶν ἔκειτο ἐντὸς δάσους ἐκ πρίνων, ἐν τῇ ἱερᾷ Ἄλτει της ἀρχαίας Ὀλυμπίας, ἔνθα ὑπῆρχεν ἐπιμήκης βωμὸς αὐτῶν, ἐν Θήβαις, ἔνθα ὑπῆρχεν ἱερὸν αὐτῶν, καὶ ἀλλαχοῦ. ΚΑΨ.

— *[Φιλοσοφ.]* Βλ. *εἱμαρμένη*.

— *[Λαογρ.]* Κατὰ τὰς δοξασίας τοῦ νέου, ὅπως καὶ τοῦ ἀρχαίου, ἑλληνικοῦ λαοῦ, γίνεται διάκρισις μεταξὺ τῆς ἀτομικῆς ἑκάστου *μοίρας* (τῶν πεπρωμένων του δηλαδὴ) καὶ τῶν δαιμόνων ἢ θεῶν *Μοιρῶν*, αἱ ὁποῖαι καθορίζουν ἀπὸ τῆς γεννήσεως τοῦ ἀνθρώπου τὸν βίον αὐτοῦ, τὴν μοῖράν του ἢ τὸ πεπρωμένον του. Οὕτω συχνὰ εἰς παραμύθια καὶ παραδόσεις γίνεται λόγος περὶ δυστυχῶν ἀνθρώπων, οἱ ὁποῖοι, ὡσεὶ ἔχοντες ἀπολέσει τὴν μοῖράν των, ἐξῆλθον εἰς ἀναζήτησίν της καὶ ἐταξίδευσαν πρὸς τοῦτο εἰς τὴν ἄκραν τοῦ κόσμου, ἀλλὰ καὶ περὶ τριῶν γυναικῶν, τῶν Μοιρῶν, αἱ ὁποῖαι καθορίζουν κατ᾿ αὐθαίρετον βούλησιν τὰ πεπρωμένα τῶν ἀνθρώπων. Κατὰ σχετικὰς παραδόσεις, αἱ τρεῖς αὗται *Μοῖραι* εἶναι τρεῖς ἀδελφαί, γραῖαι, ἀθάνατοι, μὲ μεγάλους ὀδόντας, εὐέξαπτοι, κατοικοῦν εἰς τὴν ἄκραν τοῦ κόσμου ἐντὸς μεγαλοπρεποῦς καὶ πλουσίου παλατίου, περιπατοῦν ὁμοῦ πάντοτε καὶ κεκαλυμμέναι καὶ κατὰ τὴν τρίτην ἢ πέμπτην ἢ ἑβδόμην ἡμέραν ἀπὸ τῆς γεννήσεως τοῦ νεογνοῦ εἰσέρχονται εἰς τὸν κοιτῶνα τῆς λεχοῦς, συνήθως τὴν νύκτα, ὁπότε αὕτη κοιμᾶται, καὶ «μοιραίνουν» τὸ παιδί, δηλαδὴ καθορίζουν τὰ τῆς μελλούσης αὐτοῦ ζωῆς. Εἰσερχόμεναι εἰς τὸ δωμάτιον τῆς λεχοῦς, ὅπου καὶ τὸ νεογνόν, φέρουν λευκὰ διακόσμητα ἐνδύματα, κορῶναν, περιδέραια ἐκ μαργαριτῶν καὶ κρατοῦν ἡ πρώτη ψαλίδα, ἡ δευτέρα ἄτρακτον καὶ ἡ τρίτη ρόκαν μὲ λινάρι καὶ διὰ τῶν ὀργάνων τούτων καθορίζουν τὸ ποσὸν τῆς ζωῆς τοῦ νεογνοῦ. Συνήθως κρατοῦν καὶ μέγα βιβλίον, εἰς τὸ ὁποῖον ἀναγράφουν τὰ πεπρωμένα. Κατὰ τὸ «μοίραμα» ἡ φέρουσα τὴν ρόκαν γνέθει, ἡ ἄλλη μὲ τὴν ἄτρακτον τυλίσσει τὴν κλωστὴν («κάθε τυλιξιὰ εἶναι κ᾿ ἕνας χρόνος»), ἡ δὲ τρίτη, ὅταν κρίνῃ ὅτι ἐτελείωσε τὸ μοίραμα, κόπτει τὴν κλωστὴν διὰ τῆς ψαλίδος. Ἂν ἡ κλωστὴ κοπῇ πρὶν ἢ τελειώσῃ τὸ μοίραμα, αἱ Μοῖραι σταματοῦν τὸ ἔργον των καὶ ἀπέρχονται. Ἐπειδὴ πιστεύεται ὅτι αἱ Μοῖραι ἔχουν εὐέξαπτον καὶ ὀξύθυμον χαρακτῆρα, διὰ τοῦτο συνηθίζουν νὰ τοποθετοῦν κατὰ τὴν τρίτην ἢ πέμπτην ἢ ἑβδόμην ἀπὸ τῆς γεννήσεως ἡμέραν, εἰς τὸ δωμάτιον τοῦ νεογνοῦ, τράπεζαν μὲ τρία καθίσματα καὶ διάφορα μειλίγματα («μέλι καὶ τρεῖς καρδιὲς ἀπὸ μύγδαλα καὶ τρία κουταλάκια, τρία ποτήρια νερὸ καὶ τρία βαγιόλια») καὶ «κάνουν ὅ,τι μποροῦν γιὰ νὰ εὐχαριστήσουν τὰς Μοίρας καὶ καλομοιράνουν τὸ παιδί». Ἐνιαχοῦ πιστεύεται ὅτι αἱ Μοῖραι ἐπιφαίνονται ὡς «μεγάλη καυτερὴ καὶ παρδαλὴ μῦγα», ἡ ὁποία ἐπικάθηται ἐπὶ τῆς μύτης τοῦ νεογνοῦ. Ἂν εἰς τὸν χρωματισμόν της πλεονάζῃ τὸ ἐρυθρὸν ἢ τὸ λευκὸν χρῶμα, τότε τοῦτο ὑποδηλοῖ μελλοντικὴν εὐτυχίαν τοῦ νεογνοῦ, ἂν δὲ τὸ μαῦρον ἢ κυανοῦν, δυστυχίαν. Ἡ μῦγα αὕτη ἔχει τὴν ἰδιότητα, ἐπικαθημένη ἐπὶ τῆς μύτης τοῦ νεογνοῦ, νὰ τὴν καίῃ καὶ διὰ τοῦτο παρατηροῦν κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τὴν μύτην αὐτοῦ, συμπεραίνοντες ἐκ τοῦ μεγέθους τοῦ καυσίματος τὴν τύχην του. Ἂν ἡ μύτη ἔχει καῇ πολύ, τοῦτο σημαίνει ὅτι τὸ παιδίον θὰ δοκιμάσῃ πολλὰς πικρίας εἰς τὴν ζωήν του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ν. Γ. Πολίτου*, Παραδόσεις τ. Α΄, σ. 559—564.— *Σ. Κυριακίδου*, Ἑλληνικὴ λαογραφία Α΄ (1923), σελ. 198—199.

Θ. Π.

— *[Μαθημ.]* Καλεῖται *μοῖρα* τὸ $^1/_{360}$ τῆς περιφερείας τοῦ κύκλου ἢ τὸ ἄνοιγμα τῆς ἀντιστοίχου ἐπικέντρου γωνίας καὶ ἀποτελεῖ τὴν μονάδα μετρήσεων τοῦ ἀνοίγματος τῶν γωνιῶν ἢ τῶν ἀντιστοίχων αὐταῖς τόξων. Σύμβολον τῆς μοίρας εἶναι μηδενικόν, μικρότερον τοῦ ἀριθμοῦ τοῦ παριστῶντος τὸ ἄνοιγμα τῆς γωνίας, τιθέμενον δεξιὰ καὶ ἄνω αὐτοῦ ($1^o$). Ἡ μοῖρα διαιρεῖται εἰς $60'$ καὶ ἕκαστον πρῶτον εἰς $60''$. Ἡ ἔχουσα ἄνοιγμα $90^0$ γωνία καλεῖται ὀρθή. Δεδομένου ὅτι εἰς κύκλον ἔχοντα ἀκτῖνα τὴν μονάδα τοῦ μήκους ἡ γωνία μιᾶς μοίρας ἀντιστοιχεῖ εἰς τόξον $\frac{2\pi}{360^0}$, γωνία μ μοιρῶν ἐκφράζεται ὑπὸ τοῦ ἀριθμοῦ $\frac{2\pi.\mu}{360^0}$.

Εἰς τὴν ἀστρονομίαν διὰ μοιρῶν μετροῦνται αἱ γωνίαι τοῦ πλάτους, ἀποκλίσεως ὕψους καὶ ἀζιμουθίου, τῶν ἀστέρων εἰς τὰ ἀντίστοιχα συστήματα συντεταγμένων, αἱ δὲ γωνίαι τοῦ μήκους, ὀρθῆς ἀναφορᾶς καὶ ὡρικαὶ μετροῦνται εἰς ὥρας, τῆς ὥρας ἀποτελούσης τὸ $^1/_{24}$ τῆς περιφερείας καὶ ἀντιστοιχούσης πρὸς $15^0$. — Ω.

— *[Στρατ.]* *Μοῖρα* καλεῖται ἡ μονάς, τοῦ πυροβολικοῦ, τῶν συζυγαρχιῶν, τῶν νοσοκόμων, τῶν τραυματιοφορέων, ἡ ἰσότιμος τῷ τάγματι, μέχρις ἐσχάτων δὲ καὶ τῶν ἀεροπλάνων (βλ. λ. *σμῆνος* [Ἀεροπλ.]).

*Μοῖρα πυροβολικοῦ* εἶναι ἀνέκαθεν τὸ ἄθροισμα δύο ἢ τριῶν πυρβολαρχιῶν, οὖσα πάντοτε ἡ τακτικὴ μονὰς τοῦ πυροβολικοῦ. Ἀπὸ τῆς ἀρχῆς ὅμως τοῦ παρόντος αἰῶνος καὶ ἰδίως διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (1914—1918), ἡ μοῖρα, ἐξακολουθοῦσα νὰ εἶναι πάντοτε ἡ τακτικὴ μονὰς τοῦ πυροβολικοῦ, κατέστη ἐπὶ πλέον ἡ μικροτέρα μονὰς τοῦ πυροβολικοῦ ἡ ἔχουσα αὐτοτέλειαν, ἅτε διαθέτουσα προσωπικὸν ἀναγνωρίσεως καὶ προσανατολισμοῦ, παρατηρήσεως, διαβιβάσεως (τηλεφώνων, ἀσυρμάτου κτλ.), συνδέσμου μετὰ τοῦ πεζικοῦ κτλ.

*Μοῖρα συζυγαρχιῶν* εἶναι ἄθροισμα δύο ἢ τριῶν συζυγαρχιῶν.

*Μοῖρα νοσοκόμων* εἶναι ἄθροισμα δύο ἕως τεσσάρων λόχων νοσοκόμων.

*Μοῖρα τραυματιοφορέων* εἶναι ἄθροισμα τριῶν ἢ τεσσάρων οὐλαμῶν, ἕκαστος τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται ἐξ ἀριθμοῦ τινος τραυματιοφορέων καὶ νοσοκόμων.

Κατὰ τὴν πρὸ τῶν Βαλκανικῶν πολέμων 1912—1913 ἐποχήν, ἐχρησιμοποιεῖτο πολλάκις παρ᾿ ἡμῖν ὁ ὅρος *μοῖρα στρατοῦ*, ὡς μετάφρασις τοῦ γαλλικοῦ corps d' armée, ἢ τοῦ γερμανικοῦ Korps der armee, ἀλλ᾿ ὁ ὅρος οὗτος δὲν ἐπεκράτησε· δι᾿ αὐτὸ ἀπὸ τῆς, μετὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους, διὰ πρώτην φορὰν ὀργανώσεως ἐν Ἑλλάδι τῆς μεγάλης ταύτης μονάδος, ἐδόθη εὐθὺς ἀμέσως τὸ ὄνομα *σῶμα στρατοῦ*. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— *[Ναυτ.]* Καλεῖται *μοῖρα* (γαλλ. καὶ ἀγγλ. division) τμῆμα στόλου ἀπαρτιζόμενον ὑπὸ πλειόνων πλοίων καὶ διοικούμενον ὑπὸ γενικοῦ ἀξιωματικοῦ (ὑποναυάρχου συνήθως) ἢ καὶ ὑπὸ πλοιάρχου ἔχοντος εἰδικὸν διορισμόν, δικαιουμένου δὲ καὶ ὑποχρεουμένου διὰ τοῦτο εἰς ἔπαρσιν τοῦ μοιραρχικοῦ διακριτικοῦ του ἐπὶ τῆς μοιραρχίδος του. Καὶ συνήθως μὲν συγκροτοῦνται αἱ μοῖραι ἐξ ὁμογενῶν πλοίων (θωρηκτὴ μοῖρα», «μοῖρα εὐδρόμων»), δύναται ὅμως καὶ νὰ ἀποτελῆται μοῖρά τις ἐκ πλοίων ἀνομοίων, εἴτε πρὸς μεμονωμένην ἐνέργειαν, εἴτε, ἐν εἰρήνῃ, πρὸς ἐκτέλεσιν γυμνασίων («μοῖρα γυμνασίων»). Πλοῖα ὅμως ὑπὸ ἀρχικυβερνήτην ἐν πλῷ μὴ ὄντα μοίραρχον, ἀλλὰ ἐξουσιοδοτημένον ὅπως ἡγῆται προκειμένου περὶ γενικῶν κινήσεων, ἐν γυμνασίοις, δὲν ἀποτελοῦσι *μοῖραν* ἀλλὰ *συμμορίαν* («συμμορία ἀτμομυοδρομώνων» 1902—1904). Παλαιότερον εἶχον σιωπηρῶς ἐπικρατήσει αἱ ὀνομασίαι «Μαύρη Μοῖρα» διὰ τὴν μοῖραν τῶν ἀτμομυοδρομώνων καὶ «Λευκὴ Μοῖρα» διὰ τὴν τῶν τότε θωρηκτῶν, ἀπὸ τοῦ χρώματος τῶν πλοίων. Σ. Ε. Λ.

— *[Βοτ.]* Καλεῖται *μοῖρα* τὸ σύνολον τῶν ἀγγειωδῶν καὶ ἠθμωδῶν δεσμίδων τοῦ φυτοῦ.

— **μοῖρα νόμιμος** *[Νομ.]*· βλ. *νόμιμος* μοῖρα.

**Μοῖρα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τῶν Πατρῶν καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 355. Χ. Δ.

**Μοιραγένης.** Μακεδὼν αὐλικὸς ἐπὶ Πτολεμαίων Φιλοπάτορος καὶ Ἐπιφανοῦς. Ἐπειδὴ ἦτο οἰκεῖος τοῦ Ἀδαίου, ἀντιθέτου ὄντος τοῦ Ἀγαθοκλέους, τοῦ παντοδυνάμου κηδεμόνος τοῦ Ἐπιφανοῦς, ὁ τελευταῖος διέταξε τὸν γραμματέα του Νικόστρατον νὰ συλλάβῃ τὸν Μοιραγένη καὶ θανατώσῃ μετὰ βασάνων ὡς συνωμοτοῦντα μετὰ τοῦ Τληπολέμου. Ἐνῷ ὅμως ὁ Μοιρογένης ἀνέμενε τὴν βάσανον, οἱ δήμιοι, ἐκ τῆς ἀνεξηγήτου φυγῆς τοῦ κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν παρισταμένου Νικοστράτου, νομίσαντες ὅτι κινδυνεύει ἡ τυραννὶς τοῦ Ἀγαθοκλέους, ἀφῆκαν τὸν Μοιραγένη νὰ φύγῃ γυμνὸς ὅπως ἦτο. Οὗτος προσέτρεξεν εἰς τὸ στρατόπεδον τῶν Μακεδόνων, ἠγόρευσε πρὸς αὐτοὺς καὶ τοὺς παρέσυρεν εἰς ἐπανάστασιν. Ὁ λαὸς ἠκολούθησε τοὺς Μακεδόνας καὶ κατεσπάραξε κυριολεκτικῶς τὴν οἰκογένειαν τοῦ Ἀγαθοκλέους εἰς τὸ Γυμνάσιον, ὅπου τὴν ἔσυρεν. Γ. Λ. Α.

**μοιράδιον** (τό)· μερίδιον.

**μοιράζω,** *ἀόρ. ἐμοίρασα—ἐ)μοιράστηκα*, παθ. μετχ. *μοιρασμένος*· δημοτ., χωρίζω εἰς μοίρας, εἰς μέρη, διαμοιράζω, διανέμω: «μοιράζω τὴν περιουσίαν, —τὰ χρήματα», «ποιὸς θὰ μοιράσῃ τὴν πίττα», «μοιράζουν κόλλυβα, τρέξε νὰ πάρῃς»· || ἀμεταβ. «μοίρασαν τὴν κληρονομιά τους μὲ ὁμόνοια», «ἐμοιράσαμε μὲ λαχνὸ» διενειμάμεθα τὴν κοινὴν περιουσίαν· || καὶ παθ. «μοιραστήκαμε τὰ κληρονομικά μας», «τὰ μοιραζόμαστε;», «ἔλα νὰ τὰ μοιραστοῦμε τὰ δικά μου βάσανα».

**μοιραίνω,** ἀόρ. *ἐμοίρανα*· ὁρίζω τὴν μοῖραν, τὸ πεπρωμένον τινός: «ἦρθαν οἱ Μοῖρες νὰ μοιράνουν τὸ παιδί».

**μοιραῖος,** *—α, —ον*· ὁ τῆς μοίρας, ὁ ὑπὸ τῆς μοίρας λαβὼν ὕπαρξιν, ὁ οἱονεὶ προωρισμένος καὶ ἀναπόφευκτος: «μοιραῖον κακόν, —δυστύχημα»· || «ὁ μοιραῖος ἄνθρωπος» ὁ ὑπὸ τῆς μοίρας πρὸς τὸ κακόν τινος ἢ καὶ πρὸς τὸ ἰδικόν του ἐμφανισθείς· || ***μοιραῖον*** (τό)· ὡς οὐσ., τὸ ἀναπόφευκτον κακόν: «οὐδεὶς δύναται νὰ ἀποφύγῃ τὰ μοιραῖα», «ἦτο μοιραῖον καὶ ἔπρεπε νὰ τὸ πάθωμεν»· || τὸ ὑπὸ τῆς μοίρας προωρισμένον: «ἦτο μοιραῖον νὰ τὸν συναντήσω εἰς τὸν δρόμον τῆς ζωῆς μου». — Ἐπίρρ. ***μοιραίως***.

**Μοιράκια** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται $1^1/_2$ ὥραν νοτιοανατολικῶς τοῦ Κριεκουκίου, παρὰ τὴν δεξιὰν τοῦ Ἀλφειοῦ ὄχθην καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 386. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Λιναριὰ* (Γκορτζιὰ) καὶ *Σαρατζῆ Χάνια*. Χ. Δ.

**Μοιραλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Στρογγυλὸν* (βλ. λ.).

**Μοίρανα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 408. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Βέννα, Πελαγία* καὶ *Σαλμώνη*. Χ. Δ.

**μοιραρχία** (ἡ)· ἐκαλεῖτο οὕτω παρ᾿ ἡμῖν κατὰ τὰς χρονικὰς περιόδους 1833—1906 καὶ 1918—1922 ἡ μονὰς τῆς χωροφυλακῆς ἑκάστου νομοῦ τοῦ κράτους. Ν. Θ. Κ.

**μοιραρχικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μοιραρχίαν, ὁ τῆς μοιραρχίας: «μοιραρχικὴ διαταγή», «μοιραρχικὸν σῆμα».

—**μοιραχικὸν** *[Ναυτ.]*. Τὸ διακριτικὸν σῆμα τοῦ μοιράρχου πλοιάρχου. Ἐπαίρεται εἰς τὸ ἐπίμηλον τοῦ πρωραίου ἱστοῦ τῆς μοιραρχίδος καὶ εἰς τὸ στηλίδιον τῆς πρώρας τῆς λέμβου, τῆς ὁποίας ὁ μοίραρχος ἐπιβαίνει ἐπισήμως. Κατὰ τὸ ἐπίσημον τεῦχος «Σημαῖαι καὶ διακριτικὰ σήματα 1930», τὸ ἑλληνικὸν μοιραρχικὸν εἶναι τὸ *ἐπίσημον* (βλ. λ.) ψαλιδισμένον ὡς χελιδονουρὰ ἀπὸ τῶν ἐλευθέρων ἀρτήσεως ἄκρων του μέχρι τοῦ κέρατος τοῦ σταυροῦ. Σ. Ε. Λ.

**μοιραρχίς,** — *ίδος* (ἡ). Τὸ πλοῖον οὗ ἐπεβαίνει μοίραρχος πλοίαρχος, τοῦ ὁποίου διὰ τοῦτο φέρει καὶ τὸ διακριτικὸν σῆμα (βλ. *μοιραρχικόν*). Σ. Ε. Λ.

**μοίραρχος** (ὁ)· ὁ διοικητής, ὁ ἀρχηγὸς μοίρας.

—*[Ναυτ.]* Ὁ διοικῶν *μοῖραν* πλοίων, ὅταν φέρῃ ὡς τοιοῦτος ἀρχηγὸς βαθμὸν πλοιάρχου. Ἐπιβαίνει τῆς *μοιραρχίδος*, διακρινομένης τῶν ἄλλων πλοίων ἀπὸ τοῦ *μοιραρχικοῦ*. Ἐὰν δὲ ὁ μοίραρχος εἶναι συγχρόνως καὶ κυβερνήτης τῆς μοιραρχίδος του, μὴ ὑπάρχοντος ἰδιαιτέρου κυβερνήτου τῆς σημαίας, τότε εἴθισται νὰ ὀνομάζεται *κομμοδόρος*. Σ. Ε. Λ.

—*[Στρατ.]* *Μοίραρχος* καλεῖται ἐν μὲν τῇ χωροφυλακῇ ὁ ἀξιωματικὸς τοῦ σώματος τούτου ὁ φέρων βαθμὸν ἰσότιμον τοῦ λοχαγοῦ, συνεπῶς ἀποτελεῖ βαθμόν, ἐν δὲ τῷ πυροβολικῷ ὁ διοικῶν μοῖραν πυροβολικοῦ, συνεπῶς δὲν ἀποτελεῖ βαθμὸν ἀλλ᾿ ὀνομασίαν τοῦ οἱουδήποτε βαθμοῦ ἀξιωματικοῦ τοῦ πυροβολικοῦ, τοῦ διοικοῦντος μοῖραν. Ν. Θ. Κ.

**Μοιρασάνη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Μόρφη* (βλ. λ.).

**μοιρασιὰ** (ἡ)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μοιράζειν, μοίρασμα, διανομή: «πιαστήκανε ᾽ς τὴ μοιρασιά».

**μοίρασμα** (τό)· δημοτ., ἄλλως *μοιρασιὰ* (βλ. λ.): «τὸ μοίρασμα τῶν χαρτιῶν», «ἔκαμα λάθος ᾽ς τὸ μοίρασμα».

**μοιραστὴς** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἀναλαβὼν νὰ μοιράσῃ, νὰ κατανείμῃ: «ποιὸς εἶναι μοιραστής;» ἐπὶ τῶν παιγνιοχάρτων.

**Μοιρεΐκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Βραχνεΐκων (Ἁγίου Βασιλείου) τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 81. Χ. Δ.

**Μοῖρες** *[Γεωγρ.]*. Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας Καινούργιου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 553. Ἔχει εἰρηνοδικεῖον, τηλεγραφεῖον, οἰκονομικὴν ἐφορείαν, σταθμὸν χωροφυλακῆς καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐπὶ τουρκοκρατίας καὶ ἐπὶ τῆς αὐτονομίας ἀπετέλει κέντρον, συνεκροτεῖτο δὲ ἑβδομαδιαία ἐμπορικὴ ἀγορὰ (πα-



Digitized by Google

ζάρι) τῶν ὁμόρων ἐπαρχιῶν. Εἰς τὴν κοινότητα ἀνήκουν καὶ τὰ χωρία *Καπαριανὰ* καὶ *Ἅγιος Ἀντώνιος*. Ε. Γ.

**μοιριγκία** (ἡ) (Moehringia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *καρυοφυλλοειδῶν* ἢ *καρυοφυλλιδῶν*, περιλαμβάνον ἐνιαυσίους ἢ πολυετεῖς πόας, λεπτοφυεῖς, μὲ φύλλα μικρὰ καὶ ἄνθη καταλημτικά, κατὰ κῦμα διατεταγμένα. Γνωστὰ 12 εἴδη, φυόμενα εἰς τὰς θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μοιριθηριίδαι** (οἱ) (Moeritheriidae) *[Παλαιοζῳολ.]* Οἰκογένεια ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *προβοσκιδωτῶν* θηλαστικῶν. Ὁ ὀδοντικὸς τύπος τῶν ζῴων τούτων ἦτο $\frac{3.\ 1.\ 3.\ 3.}{2.\ 0.\ 3.\ 3.}$ Τὸ κρανίον των ἦτο χθαμαλόν, σχεδὸν ἐπίπεδον. Τὰ ζῷα ταῦτα, τὰ ὁποῖα θεωροῦνται ὡς οἱ πρόδρομοι τῶν σημερινῶν προβοσκιδωτῶν, ἐμφανίζονται, ἀπολιθωμένα, τὸ πρῶτον ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἀνωτέρας ἠωκαίνου σειρᾶς τοῦ καινοζῳϊκοῦ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἐξαφανίζονται ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ κατὰ τὴν μετέπειτα ὀλιγόκαινον ὑποπερίοδον. Διὰ τῆς κατασκευῆς τοῦ κρανίου των καὶ διὰ τοῦ ἀριθμοῦ καὶ τῆς συστάσεως τῶν ὀδόντων των ἀποτελοῦν τὴν μετάβασιν ἐκ τῶν σειρήνων εἰς τὰ προβοσκιδωτὰ καὶ δεικνύουν καθαρώτατα ὅτι αἱ δύο αὗται τάξεις ἔχουν κοινὴν τὴν καταγωγήν. Γ. Κ. Γ.

**μοιριθήριον** (τὸ) (Moeritherium Andrews) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μοιριθηριιδῶν προβοσκιδωτῶν* θηλαστικῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον τοὺς κοπτῆρας τῆς κάτω σιαγόνος σμιλοειδεῖς καὶ πρὸς τὰ ἐμπρὸς κατευθυνομένους, ἐνῷ οἱ κοπτῆρες καὶ οἱ κυνόδοντες τῆς ἄνω σιαγόνος ἦσαν σχεδὸν καθέτως τοποθετημένοι. Ὁ δεύτερος κοπτὴρ ἑκάστης σιαγόνος ἦτο μεγεθυσμένος, καὶ ὁ τῆς ἄνω σιαγόνος ἐπιπροσθέτως κεκαμμένος καὶ ὡμοίαζε πρὸς ὀγκώδη χαυλιόδοντα. Ἔφερον βραχεῖαν προβοσκίδα καὶ ἡ στέγη τοῦ κρανίου των ἦτο σχεδὸν τελείως ἐπίπεδος.

*Κρανίον τοῦ μοιριθηρίου Lyonsi.*
[Ἐκ στρωμάτων τοῦ Φαγιούμ τῆς Αἰγύπτου.]

Λείψανα τῶν ζῴων τούτων εὑρέθησαν ἀπολιθωμένα ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἀνωτέρας ἠωκαίνου καὶ τῆς ὀλιγοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζῳϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

**Μοῖρις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς ἀρχαίας Αἰγύπτου ἐν Φαγιούμ, πρὸς Δ. τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Νείλου παρὰ τὴν πόλιν Ἀρσινόην. Ὁ Ἡρόδοτος (Β' 149) ἀναφέρει ὅτι ἐξεσκάφη αὕτη εἰς τὰ πέριχωρα τοῦ Λαβυρίνθου ὑπὸ τοῦ φαραὼ Μοίριδος, τοῦ ὁποίου φέρει τὸ ὄνομα, ὅτι εἶχε περιφέρειαν 3.600 σταδίων, βάθος 50 περίπου ὀργυιῶν, φράκτας τεχνητούς, διώρυγας ἐκκενώσεως καὶ πληρώσεως χρησιμευούσας πρὸς προστασίαν ἀπὸ τῶν πλημμυρῶν τοῦ Νείλου καὶ ὅτι ἐκοσμεῖτο ὑπὸ δύο πυραμίδων ἐγειρομένων ἐντὸς αὐτῆς, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἀνυψοῦντο δύο ἀγάλματα τοῦ Μοίριδος καὶ τῆς συζύγου του. Ἐκτὸς τοῦ Ἡροδότου ἀναφέρουσιν αὐτὴν ὁ Στράβων (ΙΖ', 37) καὶ ὁ Πτολεμαῖος (Δ', 20 καὶ 36). Τὸ ζήτημα τοῦ ἂν ἡ λίμνη ἦτο τεχνητὴ ἠμφεσβητήθη ὑπὸ τῶν νεωτέρων αἰγυπτιολόγων καὶ κυρίως ὑπὸ τοῦ Μασπερώ. Εἶναι ἡ σημερινὴ *Μπιρκὲτ-Καροὺν* καὶ παρουσιάζει διαστάσεις μικροτέρας τῶν παρ' Ἡροδότῳ ἀναφερομένων. —Π.

**Μοῖρις.** Φαραὼ τῆς ΙΒ' δυναστείας, τὸν ὁποῖον ὁ μὲν Μασπερὼ θεωρεῖ φανταστικόν, ὁ δὲ Σαμπολιὼν Φιζεὰς ταυτίζει πρὸς τὸν *Θούθμωσιν Γ'* (βλ. λ.).

— **Μοῖρις.** Ἕλλην γραμματικός, ἐπιλεγόμενος Ἀττικιστής, ἀκμάσας κατὰ τὸν Β' μ. Χ. αἰῶνα ἐπὶ Ἀδριανοῦ. Ἔγραψεν «Ἀττικὰς λέξεις», λεξικὸν μετρίας ἐκτάσεως τῶν παρὰ συγγραφεῦσιν ἰδίως ἐν χρήσει ἀττικῶν ἐκφράσεων, ἀναφερόμενον παρὰ τοῦ Φωτίου. —Ω.

**μοιρογνωμόνιον** (τό). Γεωμετρικὸν ὄργανον χρησιμεῦον εἰς τὴν μέτρησιν τοῦ ἀνοίγματος τῶν γωνιῶν. Ἔχει σχῆμα ἡμικυκλίου καὶ φέρει ἐπὶ τῆς ἄντυγος διαιρέσεις εἰς μοίρας ἢ βαθμοὺς ἀπὸ $0^o$—$180^o$ ἢ ἀπὸ $0^\beta$ —$200^\beta$, ἐπὶ δὲ τῆς διαμέτρου σημειοῦται τὸ κέντρον. Κατασκευάζεται ἐκ μετάλλου ἢ κερατίνης. Πρὸς μέτρησιν τοῦ ἀνοίγματος γωνίας, τοποθετεῖται τὸ κέντρον τοῦ μοιρογνωμονίου ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς γωνίας, ἡ δὲ ἀκτὶς αὐτοῦ ἡ διερχομένη διὰ τῆς ἀρχῆς τῶν μετρήσεων ($0^o$ ἢ $0^\beta$) ἐπὶ τῆς μιᾶς πλευρᾶς τῆς γωνίας. Ὁ ἀριθμὸς τῶν μοιρῶν τῆς διαιρέσεως τοῦ μοιρογνωμονίου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου πίπτει ἡ ἑτέρα τῆς γωνίας πλευρά, δίδει τὸ ἄνοιγμα αὐτῆς εἰς μοίρας ἢ βαθμούς. —Ω.

**μοιρόγραφτο** (τό)· δημοτ., τὸ γραμμένον ἀπὸ τὴν μοῖραν, τὸ πεπρωμένον.

**Μοιροκλῆς.** Ῥήτωρ Ἀθηναῖος, ἀρχηγὸς τῆς ἀντιμακεδονικῆς μερίδος ἐν Ἀθήναις, τοῦ ὁποίου τὴν παράδοσιν, ὁμοῦ μετὰ τῶν ἄλλων ἀντιμακεδόνων ἀρχηγῶν, ἐζήτησεν ὁ Μ. Ἀλέξανδρος τῷ 345 π. Χ. μετὰ τὴν καταστροφὴν τῶν Θηβῶν. Διὰ τῆς μεσολαβήσεως ὅμως τῶν Ἀθηναίων ἐχορηγήθη αὐτῷ συγγνώμη πλὴν δύο, τῶν ὁποίων ὁ Ἀλέξανδρος ἀπῄτησε τὴν ἐξ Ἀθηνῶν ἀπομάκρυνσιν (*Ἀρρ. Ἀνάβ. Α'*, 10, 4). Α. Θ. Σ.

**μοιροκρατία** (ἡ)· τὸ νὰ πρεσβεύῃ τις τὴν μοῖραν, τὸ πεπρωμένον.

—*[Φιλοσ.]* Καλεῖται *μοιροκρατία* (fatalismus) ἡ ἀντίληψις ἐκείνη, καθ' ἣν τὸ πᾶν εἶναι μοιραῖον, δηλαδὴ ἀναπόφευκτον, οὐδὲν δὲ μηχάνευμα, οὐδεμία προσπάθεια δύναται νὰ ἐμποδίσῃ ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον μέλλει νὰ συμβῇ, οὔτε νὰ παραγάγῃ ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον δὲν μέλλει νὰ συμβῇ.

Ἡ μοιροκρατία εἶναι συχνὰ συνέπεια τῆς πίστεως ἐπὶ τὴν παντοδυναμίαν τοῦ Θεοῦ ἢ τὴν παντογνωσίαν του, ὅπως παρὰ τοῖς Μωαμεθανοῖς, ὁπότε καλεῖται *θεολογικὴ μοιροκρατία*: ἂν τὰ πάντα ἀπόκεινται εἰς τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ, οὐδὲν δύναται νὰ συμβῇ ἄλλως ἢ ὡς ἠθέλησεν οὗτος· ἂν ὁ Θεὸς γνωρίζῃ τὸ μέλλον, ἀνάγκη ὅπως καὶ πρὸ τῆς μεταβολῆς του εἰς παρόν, τὸ μέλλον εἶναι τοιοῦτον οἷον τὸ γνωρίζει ὁ Θεός.

Ἡ ἄτεγκτος ἀναγκαιότης, ὑφ' ἣν τὰ πάντα ὑπείκουν, θεωρεῖται πολλάκις ὡς ἀνωτέρα καὶ αὐτῆς τῆς θεότητος. Τὴν ἀντίληψιν ταύτην τῆς ἀνάγκης, ἥτις ἐκαλλιεργήθη ὑπὸ τῆς κλασσικῆς λογοτεχνίας καὶ ἔχει ὅλα τὰ χαρακτηριστικὰ τῆς μοιροκρατίας, ἐκάλεσαν *ἀρχαίαν μοιροκρατίαν*.

Μοιροκρατικὴ εἶναι ὡσαύτως καὶ ἡ περὶ *προορισμοῦ* (praedestinatio) ἠθικὴ θεολογικὴ διδασκαλία. Ἂν τὸ πᾶν ἀπόκειται εἰς τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ, ἂν τὸ πᾶν προνοῆται αἰωνίως ὑπ' αὐτοῦ, τότε καὶ αἱ πράξεις τῶν ἀνθρώπων εἶναι ἠθελημέναι καὶ προεγνωσμέναι ὑπὸ τοῦ Θεοῦ πρὶν ἢ ἐκτελεσθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, ἐξ οὗ γεννᾶται τὸ συμπέρασμα ὅτι ἄλλος ἄνθρωπος ἔχει προορισθῇ νὰ εἶναι ἐνάρετος, καὶ ἑπομένως νὰ σωθῇ, καὶ ἄλλος ἁμαρτωλός, καὶ ἑπομένως νὰ κολασθῇ. Ἡ ἀτομική του θέλησις οὐδὲν ἰσχύει διὰ τὴν ἠθικήν του τελείωσιν.

Μοιροκρατίαν τέλος θεωροῦν καὶ τὴν στωϊκὴν ἀντίληψιν, καθ' ἥν, ἂν ὁ Θεὸς ταυτίζεται μετὰ τοῦ κόσμου, ἡ ἀναγκαιότης τῶν φαινομένων τοῦ κόσμου ταυτίζεται μετὰ τῆς φύσεως τοῦ Θεοῦ *(στωϊκὴ μοιροκρατία)*.

Ἡ μοιροκρατία διαφέρει τῆς *αἰτιοκρατίας* (determinismus). Ἡ μοιροκρατία συνίσταται εἰς τὸ ἀντιλαμβάνεσθαι τὰ γεγονότα ὡς ἀναγκαῖα, ἀλλὰ κατὰ μίαν δύναμιν ἀνωτέραν καὶ κυριαρχοῦσαν ἐπ' αὐτῶν. Εἶναι ὑπερβατικὴ ἀναγκαιότης. Οἱ μοιρολάτραι, σχεδὸν ὅλοι, παραδέχονται ἐλευθερίαν τινὰ βουλήσεως, ἀλλὰ τὴν θεωροῦν ἀνίσχυρον. Ὁ Λάϊος δύναται νὰ ἐπιχειρήσῃ τὴν θανάτωσιν τοῦ Οἰδίποδος, ὅπως ἐμποδίσῃ τὴν ἐκπλήρωσιν τοῦ χρησμοῦ· ὁ χρησμὸς εἶναι μοιραῖον νὰ πραγματοποιηθῇ, ὁ,τιδήποτε καὶ ἂν πράξῃ. Ὁ Μουσουλμᾶνος στρατιώτης δύναται νὰ ριφθῇ εἰς τὴν μάχην ἢ νὰ τραπῇ εἰς φυγήν· ἂν εἶναι πεπρωμένον (κισμέτ) νὰ φονευθῇ, θὰ φονευθῇ, ὁ,τιδήποτε καὶ ἂν πράξῃ. Ὁ στωϊκὸς αἰσθάνεται ἑαυτὸν ἐλεύθερον ὅπως ὑποχωρήσῃ ἢ ἀντισταθῇ εἰς τὸ πεπρωμένον του· ἐν τούτοις θὰ τὸ ὑποστῇ, ὁ,τιδήποτε καὶ ἂν πράξῃ. Ἐνῷ ἡ αἰτιοκρατία οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ ἡ ἀρχὴ τῆς αἰτιότητος: τὰ αὐτὰ αἴτια παράγουν τὰ αὐτὰ ἀποτελέσματα· ἡ ἀναγκαιότης ἐνταῦθα δὲν εἶναι ὑπερβατική, ἀλλὰ συγχωνεύεται μετὰ τῆς φύσεως τῶν πραγμάτων. — Ω.

**μοιρολατρεία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μοιρολάτρου, ἡ λατρεία τῆς μοίρας, τὸ νὰ πρεσβεύῃ τις ὅτι ἡ μοῖρα εἶναι ἐν τῷ κόσμῳ τὸ αἴτιον πάσης εὐτυχίας ἢ δυστυχίας, ὅτι ὁ ἄνθρωπος δὲν εἶναι ὑπεύθυνος δημιουργὸς τῶν συνθηκῶν ὑπὸ τὰς ὁποίας εὑρίσκεται, ἄλλως *μοιροκρατία* (βλ. λ.).

**μοιρολάτρης** (ὁ)· ὁ οἱονεὶ λατρεύων τὴν μοῖραν, ὁ πρεσβεύων τὴν μοῖραν, τὸ πεπρωμένον ἐν τῇ ζωῇ τοῦ ἀνθρώπου, ὁ ἀποδίδων εἰς τὴν μοῖράν του πᾶν ὅ,τι πάθῃ ἢ ἀπολαύσῃ.

**μοιρολατρικός, —ή, —όν**· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μοιρολατρείαν, ὁ τῆς μοιρολατρείας: «ἡ μοιρολατρικὴ ἀντίληψις τοῦ λαοῦ».—Ἐπίρρ. **μοιρολατρικῶς.**

**μοιρολόγι** (τό)· τὸ ᾆσμα τὸ ἀναφερόμενον εἰς τὴν μοῖραν, εἰς τὰ μοιραῖα κακὰ καὶ μάλιστα εἰς τὸν θάνατον, θρηνητικὸν ᾆσμα εἰς ἀποθανόντα: «ξαδέρφες πρωτοξάδερφες τὰ μοιρολόγια λένε», «ἐγὼ κι' ἂν ἐτραγούδησα γιὰ μοιρολόγι τὸ 'πα».

—*[Λαογρ.]* Τὰ *μοιρολόγια*, ὡς θρηνητικὰ ᾄσματα, εἶναι εὐρύτατα διαδεδομένα εἰς ὅλους σχεδὸν τοὺς κατὰ φύσιν λαούς, συνδέονται δὲ καὶ στενῶς πρὸς τὴν παγκόσμιον λατρείαν τῶν νεκρῶν. Ὑπὸ τὴν μᾶλλον πρωτόγονον μορφήν των ἀποτελοῦνται συνήθως ἀπὸ μίαν ἐπιφωνηματικὴν φράσιν, ἡ ὁποία διαρκῶς ἐπαναλαμβάνεται. Βαθμηδὸν ὅμως ἡ φράσις αὕτη, ἡ ὁποία ἐν τῇ ὀδύνῃ τῆς ἀπωλείας τοῦ προσφιλοῦς προσώπου ἐξέφραζεν ὅλην τὴν ἀπελπισίαν τῶν ἐπιζώντων, ἀντικατεστάθη ὑπὸ μακροτέρων περιγραφῶν καὶ θρήνων περὶ τῆς τύχης τῶν ἀπορφανιζομένων, ἀλλὰ καὶ τοῦ νεκροῦ, ὅστις ἐφεξῆς θὰ διέμενεν εἰς τὰ κρυερὰ βασίλεια τοῦ Ἅδου, καὶ ἐπαίνων αὐτοῦ. Τοιουτοτρόπως, ὀλίγον κατ' ὀλίγον, ἐκ τῆς ὀδύνης τοῦ θανάτου ἐδημιουργήθησαν ὁλόκληρα θρησκευτικὰ ποιήματα μὲ καλλιτεχνικὴν πολλάκις πνοὴν ὑψηλήν. Ἡ πρόοδος αὕτη ἐδημιούργησε καὶ ἰδιαιτέραν τάξιν ἀνθρώπων, γυναικῶν ἰδίως, τῶν *μοιρολογιστριῶν* (βλ. λ.), αἱ ὁποῖαι ἔργον εἶχον νὰ μοιρολογοῦν ἐμμέτρως τοὺς τεθνεῶτας ἐπ' ἀμοιβῇ. Αὗται προικισμέναι μὲ ἰδιαιτέραν στοιχουργικὴν εὐχέρειαν καὶ στηριζόμεναι ἐπὶ τῆς πείρας τοῦ παρελθόντος, εἶχον ἀποθησαυρισμένα εἰς τὴν μνήμην των πολυάριθμα μοιρολόγια καὶ θρηνητικοὺς στίχους, τοὺς ὁποίους διεσκεύαζον ἀναλόγως τῶν περιστάσεων, δημιουργοῦσαι καὶ νέους αὐτοσχεδίους κατὰ τὴν στιγμὴν τοῦ θρήνου. Ἀλλὰ ὅπως καὶ ἡ πεῖρα, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐστηρίζοντο αἱ ἐξ ἐπαγγέλματος μοιρολογίστριαι ἦτο κατ' ἀρχὰς δημιούργημα αὐτοσχέδιον τῶν ὑπὸ τῆς ὀδύνης τοῦ θανάτου ἀμέσως πληγέντων, οὕτω καὶ κατόπιν ὅλαι σχεδὸν αἱ γυναῖκες τοῦ λαοῦ, χωρὶς νὰ εἶναι μοιρολογίστριαι, εἶναι ἱκαναὶ εἰς στιγμὰς ὑπερτάτης ὀδύνης νὰ ἀφήσουν νὰ ἐκχυθοῦν εἰς θρηνῳδες παραλήρημα παθητικώτατα πολλάκις μοιρολόγια.

Δείγματα μοιρολογίων καὶ μοιρολογιστρίας ἐν Ἑλλάδι ἔχομεν ἤδη ἀπὸ τῶν ὁμηρικῶν χρόνων. Παρὰ τὸν νεκρὸν τοῦ Ἕκτορος παρακαθίζονται «ἀοιδοί», «θρήνων ἔξαρχοι», αἱ ὁποῖαι θρηνοῦν «στονόεσσαν ἀοιδήν», αἱ δὲ γυναῖκες «ἐπιστενάχονται». Τοῦ «γόου» ἐξάρχει ἡ λευκώλενος Ἀνδρομάχη «Ἕκτορος ἀνδροφόνοιο κάρη μετὰ χερσὶν ἔχουσα», ταύτην δὲ διαδέχονται ἡ Ἑκάβη καὶ ἡ Ἑλένη. Ἡ παρ' Ὁμήρῳ περιγραφὴ τῆς ταφῆς τοῦ Ἕκτορος ἀπεικονίζει πιστῶς ὅ,τι καὶ σήμερον ἀκριβῶς γίνεται, οἱ δὲ γόοι τῶν γυναικῶν, καὶ ὡς πρὸς τὴν ἔκφρασιν καὶ ὡς πρὸς τὰ ἐκφραζόμενα, ἀντιστοιχοῦν πληρέστατα πρὸς ὅ,τι καὶ σήμερον μοιρολογοῦν αἱ γυναῖκες. Τὸ ἔθιμον διετηρήθη καθ' ὅλην τὴν ἀρχαιότητα, δὲν ἔπαυσε δὲ καὶ κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς χρόνους, ἐκ τῶν ὁποίων ἄλλως τε προέρχεται καὶ ἡ λέξις *μοιρολόγι(ν)*, διὰ τὰ θρηνητικὰ ἐν γένει ᾄσματα. Κατὰ τοὺς χρόνους ἐπίσης τῆς τουρκοκρατίας ἦτο ἀκμαιότατον, οἱ δὲ περιηγηταὶ τῶν χρόνων ἐκείνων συχνότατα τὸ ἀναφέρουν καὶ τὸ περιγράφουν. Σήμερον εἰς τὰς πόλεις δὲν ἀκούεται πλέον (ἔχει ἐπανέλθει εἰς τὴν πρωτόγονον μορφὴν τῶν θρηνητικῶν ἐπιφωνήσεων), μόνον δ' εἰς τὰ χωρία καλλιεργεῖταί πως καὶ οὐχὶ πανταχοῦ ἐξ ἴσου.

Τὰ πλεῖστα τῶν μοιρολογίων εἶναι αὐτοσχέδια καὶ λησμονοῦνται συνήθως ἀμέσως· μερικὰ ὅμως, τὰ ὁποῖα φαίνεται ἔκαμαν ἰδιαιτέραν ἐντύπωσιν, διατηροῦνται, ὑπάρχει δὲ καὶ ἀρκετὸς θησαυρὸς τοιούτων ἐκ παραδόσεως, τὸν ὁποῖον διαφυλάττουν καὶ πλουτίζουν διαρκῶς καὶ ἐξ ἐπαγγέλματος μοιρολογίστριαι. Ἐκ τῶν μοιρολογίων ἄλλα περιορίζονται εἰς τὴν ἔκφρασιν τοῦ ἀπεριγράπτου πόνου, τὸν ὁποῖον αἰσθάνονται αἱ θρηνοῦσαι διὰ τὴν στέρησιν προσώπου προσφιλοῦς, ἄλλα περιγράφουν μὲ τὰ ζοφερώτερα χρώματα τὴν φρικτὴν μοῖραν τοῦ ἀποθανόντος, ὁ ὁποῖος θὰ εἶναι καταδικασμένος νὰ διαμένῃ εἰς «τὰ τάρταρα τῆς γῆς, τὰ κρυοπαγωμένα, στὸν Ἅδη τὸν ἀραχνιασμένο» κλπ., ἄλλα τέλος διεκτραγῳδοῦν τὰς θλίψεις καὶ τὰ δεινά, τὰς στερήσεις καὶ τὴν καταφρόνια, τὰ ὁποῖα περιμένουν τὴν ἀπορφανιζομένην οἰκογένειαν. Πολλὰ ἔχουν τὴν μορφὴν διαλόγου πρὸς τὸν τεθνεῶτα, ἄλλα διὰ ποιητικωτάτων μεταφορῶν καὶ ἀλληγοριῶν θρηνοῦν τὴν σκληρὰν ἀπώλειαν, τὸ δὲ κατ' ἐξοχὴν χαρακτηριστικὸν αὐτῶν γνώρισμα εἶναι, κατὰ τὸν Fauriel, ἡ ὁρμητικὴ ἔξαρσις καὶ ἡ δραματικὴ δύναμις τῆς ἐκφράσεως. Ἰδιαιτέραν κατηγορίαν ἐντὸς τῶν μοιρολογίων ἀποτελοῦν ἐκεῖνα, εἰς τὰ ὁποῖα ἀσχέτως πρὸς τὸν νεκρὸν περιγράφεται γενικῶς ὁ κάτω κόσμος καὶ ὁ στυγερὸς βίος τῶν νεκρῶν, ἔπειτα δὲ ὁ φρικτὸς νεοελληνικὸς Χάρος καὶ τὰ φρικτὰ ἔργα του. Ἔπειτα πολλὰ διηγηματικὰ τραγούδια, ἀναφερόμενα εἰς τὸν θάνατον νέων ἢ νεανίδων, ἐχρησίμευσαν διὰ τὴν ὁμοιότητα τῆς ὑποθέσεως καὶ τῆς ψυχικῆς διαθέσεως ὡς μοιρολόγια. Εἰς ὅλα ταῦτα ἐπικρατεῖ ἡ παλαιὰ περὶ τῆς ζωῆς καὶ τοῦ θανάτου ἀντίληψις καὶ ὄχι ἡ χριστιανική. Ὁ ἐπάνω κόσμος εἶναι ὁ καλός, ὁ κάτω εἶναι ἀποτρόπαιος, στυγερὰ δὲ ἡ μοῖρα τῶν ἀποθαμένων, οἱ ὁποῖοι εἶναι ὑποχρεωμένοι νὰ ζοῦν ἐκεῖ χωρὶς καμμίαν τέρψιν καὶ μὲ διαρκῆ λύπην εἰς τὴν ψυχήν, ἐνθυμούμενοι τὰ ἀγαθὰ τοῦ ἐπάνω κόσμου.

Ἰδιόρρυθμα ἐντελῶς εἶναι τὰ μοιρολόγια τῆς Μάνης, ὅπου διατηρεῖται ἀκμαῖον εἰσέτι τὸ ἔθιμον. Ἐκεῖ μόλις ἀποθάνῃ κανεὶς εἴτε παρὼν εἴτε ἐν τῇ ξένῃ, ὅλαι αἱ γυναῖκες τοῦ χωρίου «θὰ πᾶν στὸ κάθισμα», «στὸ μοιρολόγι». Κάθηνται κυκλοτερῶς κατὰ γῆς καὶ ἀρχίζουν ἓν εἶδος διαλόγου, εἰς

Digitized by Google

τὸν ὁποῖον τονίζουν εἰς στίχους ὅ,τι ἀκριβῶς θὰ εἶχον νὰ εἴπουν καὶ εἰς πεζόν. Αἱ συγγενεῖς ἐπαινοῦν τὰς ἀρετὰς τοῦ ἀποθανόντος, διηγοῦνται τὰ τοῦ θανάτου του, πρὸ πάντων ἐὰν ἀπέθανε φονευθείς, καὶ ὁμιλοῦν περὶ ἐκδικήσεως, αἱ δὲ παριστάμεναι, λαμβάνουσαι καὶ αὐταὶ μέρος κατὰ διαδοχὴν εἰς τὸ μοιρολόγι, παρηγοροῦν, συμβουλεύουν ἢ λαμβάνουν ἀφορμὴν νὰ διηγηθοῦν τὰς ἰδίας συμφορὰς καὶ νὰ ἐνθυμηθοῦν τοὺς ἰδικούς των νεκρούς. Τὰ μοιρολόγια ταῦτα εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον πεζὰ στιχουργήματα εἰς ὀκτασυλλάβους. Δὲν ἀνευρίσκει κανεὶς εἰς αὐτὰ τὰς λυρικὰς ἐξάρσεις τοῦ πόνου, τὰς ὁποίας εὑρίσκει εἰς τὰ ἄλλα. Ἐν τούτοις, ὑπάρχουν καὶ μεταξὺ αὐτῶν ἀριστουργήματα, μὲ ἔντονον δραματικὸν χαρακτῆρα. Εἰς τὴν Μάνην τὸ μοιρολόγι εἶναι τὸ κατ' ἐξοχὴν τραγοῦδι, καὶ διὰ τοῦτο συνέβη καὶ τὸ παράδοξον νὰ δώσῃ τὸ ὄνομά του εἰς ὅλα τὰ τραγούδια. [Πρβλ. *Σ. Π. Κυριακίδου*, Αἱ γυναῖκες εἰς τὴν λαογραφίαν σ. 56 κ. ἑξ., *Τοῦ αὐτοῦ*, Ἑλληνικὴ λαογραφία Α (1923), σ. 63 κ. ἑξ.] —Ω.

**μοιρολογίστρα** (ἡ)· ἡ ᾄδουσα τὸ μοιρολόγι, ἡ ἐξ ἐπαγγέλματος θρηνῳδός, ἡ συνήθως αὐτόκλητος ἢ καὶ προσκαλουμένη νὰ κλαύσῃ τὸν νεκρόν· || μεταφ., ὁ ἀπαισιόδοξος, ὁ πάντοτε περὶ δυστυχημάτων ὁμιλῶν, ὁ νέα δυστυχήματα φοβούμενος.

— *[Λαογρ.]* Καλοῦνται *μοιρολογίστρες* αἱ ἐξ ἐπαγγέλματος θρηνῳδοί, αἱ ὁποῖαι ἀναλαμβάνουν κατὰ τὴν κηδείαν νὰ ψάλουν ἀντὶ ἀμοιβῆς τὰ νενομισμένα διὰ τὸν νεκρὸν *μοιρολόγια* (βλ. λ.). Ἡ συνήθεια αὐτὴ τῶν ἐξ ἐπαγγέλματος θρηνῳδῶν εἶναι τόσον γενικὴ παρὰ τοῖς λαοῖς, ὅσον καὶ ἡ συνήθεια τοῦ θρηνεῖν τὸν νεκρόν. Παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἰνδοῖς μοιρολογίστριαι ἐχόρευον καὶ ἐθρήνουν περὶ τὸν νεκρόν, τύπτουσαι τὸ στῆθος καὶ τοὺς μηρούς. Παρὰ Βαβυλωνίοις, ὡσαύτως, ἄνδρες καὶ γυναῖκες μὲ ἱερεῖς ἐπὶ κεφαλῆς αὐτῶν ἐθρήνουν κατὰ τὰς κηδείας. Παρ' Αἰγυπτίοις τὸ ἔργον τοῦτο ἐξεπλήρουν γυναῖκες, αἱ ὁποῖαι ἐχόρευον περὶ τὸν νεκρόν, ἐνῷ συγχρόνως ἐθορύβουν καὶ ἐκίνουν δαιμονιωδῶς κλάδους, διὰ νὰ ἐμποδίσουν τὰ κακὰ πνεύματα ἀπὸ τοῦ νὰ εἰσέλθουν εἰς τὸ λείψανον τοῦ ἀποθανόντος. Εἰς τὸν Ὅμηρον παρὰ τὸν νεκρὸν τοῦ Ἕκτορος παρακαθίζονται «ἀοιδοί», «θρήνων ἔξαρχοι», αἵτινες θρηνοῦν «στονόεσσαν ἀοιδήν», καὶ αἱ γυναῖκες «ἐπιστενάχονται». Τοῦ «γόου» ἐξάρχει ἡ Ἀνδρομάχη, κρατοῦσα εἰς χεῖρας της τὴν κεφαλὴν τοῦ τεθνεῶτος, ταύτην δὲ διαδέχονται ἡ Ἑκάβη καὶ ἡ Ἑλένη. Παρὰ Ρωμαίοις ὡσαύτως ὑπῆρχον μοιρολογίστριαι καλούμεναι praeficae. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐν Ἑλλάδι, ἰδίᾳ ἐπὶ τουρκοκρατίας, ἤκμαζε τὸ ἐπάγγελμα τῶν μοιρολογιστριῶν, ὅπως βεβαιοῦν σχετικαὶ περιγραφαὶ περιηγητῶν. Σήμερον ὅμως εὑρίσκεται ἐν ὑποχωρήσει καὶ μόνον ἐν Μάνῃ διατηρεῖται. —Ω.

**μοιρολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ λέγων τὴν μοῖραν, τὴν τύχην, ὁ προλέγων τὰ μέλλοντα.

**μοιρολογῶ** (*—έω*)· λέγω μοιρολόγι, θρηνῳδῶ, κλαίω τὸν νεκρόν, ἀρχ. *μύρομαι* (τινὲς παράγουσιν ἐκ τοῦ *μύρομαι*, ὅθεν γράφουσι *μυρολογῶ*, *μυρολόγι* κτλ.).

**μοιρονομία** (ἡ)· ἡ εἰς μοίρας διαίρεσις γωνιομετρικῶν ὀργάνων κττ.

**μοιρονόμιον** (τό). Οὕτως ἀπεδόθη εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὁ κυκλικὸς *βερνιέρος*, ὄργανον, ἐφαρμοζόμενον ἐπὶ τῶν γωνιομετρικῶν ὀργάνων καὶ χρησιμεῦον εἰς τὴν ἀκριβεστέραν μέτρησιν τῶν γωνιῶν. Τὸ μοιρονόμιον σύγκειται ἀπὸ κυκλικὸν τομέα, ὁμόκεντρον πρὸς τὴν εἰς μοίρας διῃρημένην ἄντυγα τοῦ γωνιομετρικοῦ ὀργάνου, ἐφ' οὗ εἶναι ἐφηρμοσμένον, καὶ δύναται διὰ βραχίονος κοχλιωμένου ἐπὶ τοῦ κέντρου καμ υλότητος τοῦ ὀργάνου, νὰ ὀλισθαίνῃ ἐπὶ τῆς ἄντυγος αὐτοῦ. Ὁ κυκλικὸς οὗτος τομεὺς ἀντιστοιχεῖ πρὸς ν—1 διαιρέσεις τῆς ἄντυγος τοῦ ὀργάνου διῃρημένας εἰς ν ἴσα μέρη· ἑκάστη ἑπομένως διαίρεσις τοῦ μοιρονομίου εἶναι μικροτέρα κατὰ $\frac{1}{\nu}$ τῆς ἀντιστοίχου διαιρέσεως τοῦ ὀργάνου. Προκειμένης μετρήσεως γωνίας, τοποθετοῦμεν τὸ μοιρονόμιον οὕτως, ὥστε τὸ μηδὲν αὐτοῦ νὰ συμπέσῃ μὲ τὴν διαίρεσιν τῆς ἄντυγος τὴν δεικνύουσαν τὸ ἄνοιγμα τῆς γωνίας, καὶ ἔστω ὅτι εὑρίσκεται μεταξὺ τῆς 20ῆς καὶ 21ης μοίρας. Ἀναγινώσκομεν τὴν διαίρεσιν τοῦ μοιρονομίου, ἥτις ἀντιστοιχεῖ ἐπακριβῶς πρός τινα διαίρεσιν τῆς ἄντυγος, καὶ ἥτις ἔστω ἡ 6η· τότε τὸ ἄνοιγμα τῆς γωνίας ἰσοῦται πρὸς $20^o$ σὺν $\frac{6}{\nu}$ τῆς μοίρας. Ἡ κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον γινομένη μέτρησις δίδει προσέγγισιν εἰς τὴν ἀκρίβειαν 1/ν (βλ. καὶ λ. *βερνιέρος*).

**Μοιρόπουλος**, ***Εὐάγγελος***. Πρωταθλητὴς τῆς Ἑλλάδος εἰς τὸν δρόμον 400 μέτρων μετ' ἐμποδίων μὲ χρόνον 56''3/5 καὶ ἄριστος δρομεὺς τῶν 110 μέτρων μετ' ἐμποδίων. Ἐγεννήθη τῷ 1905 εἰς Γεράνιον τῆς Σπάρτης καὶ ἐπεδόθη εἰς τὸν ἀθλητισμὸν ἀπὸ τοῦ 1920, κατορθώσας συντόμως νὰ καταλάβῃ πρωτεύουσαν θέσιν. Μετέσχε τῶν Ὀλυμπιακῶν ἀγώνων τοῦ 1928 εἰς τὸ Ἄμστερνταμ ὡς μέλος τῆς ἐθνικῆς ἀθλητικῆς ὁμάδος τῆς Ἑλλάδος. Ἀπετέλεσε πάντοτε μέλος εἰς τὰς κατὰ καιροὺς ἐθνικὰς ἀθλητικὰς ὁμάδας καὶ κατήγαγε πολλὰς νίκας. Δ. ΚΑΡ.

**Μοίρους** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 870. Χ. Δ.

**μοιροχάρτι** (τό)· ἰδιωμ., τὸ βιβλίον τῆς μοίρας, τὸ γραφτό, τὸ πεπρωμένον. Ι. Δ. Μ.

**Μοισία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ἀν. Εὐρώπης, ὁριζομένη πρὸς Β. ὑπὸ τῆς Δακίας διὰ τοῦ Δουνάβεως ποταμοῦ, πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Μακεδονίας καὶ Θράκης, πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Ἰλλυρίας καὶ τοῦ κάτω ροῦ τοῦ Δρίνου καὶ Σαύου, καὶ πρὸς Α. ὑπὸ τοῦ Εὐξείνου Πόντου. Διαρρέεται ὑπὸ πολυαρίθμων παραποτάμων τοῦ Δουνάβεως, τοῦ Δρίνου, Μάργου (Μοράβα), Κίμβρου (Ζιβρίτσα ἢ Ζίβρα) καὶ ἄλλων, τὸ δὲ ἔδαφος αὐτῆς πρὸς μὲν τὰ Δ. εἶναι ὀρεινότατον, πρὸς τὰ Α. ἀπὸ τοῦ Δουνάβεως μέχρι τοῦ Αἵμου πεδινὸν καὶ εὐφορώτατον, πρὸς δὲ τὰ ΝΑ. κατὰ τὴν Μικρὰν Σκυθίαν (Δοβρουτσᾶ) ἑλωδέστατον.

Ἀρχαῖοι αὐτῆς κάτοικοι ἀναφέρονται οἱ Τριβαλλοί, κατοικοῦντες τὰ Δ. αὐτῆς, οἱ Πευκῖνοι, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Δουνάβεως, οἱ Κρόβυζοι πρὸς Ν. καὶ ἄλλοι, πάντες θρακικῆς καταγωγῆς. Μετὰ τῶν Τριβαλλῶν ἀνεμίχθησαν ἀργότερον καὶ κελτικὰ φῦλα, ὅπως οἱ Σκορδίσκοι, οἱ Ταυρίσκοι, οἱ Βόϊοι καὶ ἄλλοι.

Οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες δὲν ἐγνώριζον ἐπακριβῶς τὴν Μοισίαν, οἱ δὲ γεωγράφοι ἐθεώρουν αὐτὴν ὡς Θράκην, τῆς ὁποίας ἡ γεωγραφικὴ ἔννοια παρήλλασσε κατὰ διαφόρους ἐποχάς. Καλύτερον ἐγνώσθη μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Ρωμαίων κατάκτησιν τῆς Μακεδονίας τῷ 168 π.Χ. καὶ τὴν ὑποταγὴν τῶν Σκορδίσκων τῷ 135 π.Χ. ὑπὸ τοῦ Ρωμαίου Μ. Κοσκωνίου, ἰδίως δὲ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Αὐγούστου, ὁπότε ἡ χώρα ἀνεκηρύχθη ρωμαϊκὴ ἐπαρχία. Ἀργότερον οἱ Μοισοὶ ἐπολεμήθησαν ὑπὸ τοῦ Κουρίωνος τῷ 75 π. Χ., τελικῶς δὲ καθυπετάχθησαν ὑπὸ Μ. Λικινίου Κράσσου τῷ 29—28 π.Χ. Κατ' ἀρχὰς διῳκεῖτο αὐτοτελῶς. Ἐπὶ Βεσπασιανοῦ ὅμως καὶ τοῦ διαδόχου αὐτοῦ διῃρέθη εἰς δύο τμήματα: Τὴν *Ἄνω Μοισίαν* (Moesia Superior) πρὸς Δ., μεταξὺ τῶν ποταμῶν Δρίνου καὶ Κίμβρου, περιλαμβάνουσαν τὴν προπολεμικὴν περίπου Σερβίαν, μὲ πρωτεύουσαν τὴν Σαρδικὴν (Σόφιαν), καὶ τὴν *Κάτω Μοισίαν* (Moesia Inferior) πρὸς Α., μεταξὺ τοῦ Κίμβρου καὶ τοῦ Εὐξείνου Πόντου, τὴν προπολεμικὴν περίπου Βουλγαρίαν, μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μαρκιανούπολιν, ἥτις ἀργότερον προσετέθη εἰς τὴν ἐπαρχίαν τῆς Θράκης. Ἀπὸ τοῦ Διοκλητιανοῦ διῃρέθη ὁλόκληρος ἡ Μοισία εἰς πέντε ἐπαρχίας, ἐξαρτωμένας ἐκ τῆς ἐπαρχίας (Praefectura) τοῦ Ἰλλυρικοῦ. α') Τὴν κυρίως *Μοισίαν* πρὸς Δ. μὲ πρωτεύουσαν τὸ Βιμινάκιον (Κοστολάτς). β') Τὴν *Ριπαίαν Δακίαν* (Dacia Ripensis) πρὸς Β. ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Δουνάβεως, μὲ τὴν Ρατιαρίαν (νῦν Ἀρτσάρ). γ') Τὴν *Ἔσω Δακίαν* (Dacia Mediterranea) ἢ *Δαρδανίαν* πρὸς Ν., μὲ πρωτεύουσαν τὴν Σαρδικήν. δ') Τὴν *Κάτω Μοισίαν* πρὸς Α., μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μαρκιανούπολιν· καὶ ε') Τὴν *Μικρὰν Σκυθίαν* (Scythia Minor) πρὸς Α., μὲ πρωτεύουσαν τοὺς Τόμους. Κυριώτεραι πόλεις αὐτῆς ἦσαν: Ἐν μὲν τῇ Ἄνω Μοισίᾳ τὸ Βιμινάκιον (Κοστολάτς), τὸ Σιγγίδουνον (Βελιγράδιον) καὶ ἄλλαι, ἐν δὲ τῇ Κάτω Μοισίᾳ, τὸ Δορόστολον (Σιλίστρια), οἱ Τόμοι (Κωνστάντζα), ἡ Ὀδησσὸς (Βάρνα), ἡ Νικόπολις πρὸς Ἴστρον καὶ ἄλλαι.

Αἱ ἀπὸ τοῦ Γ' μ. Χ. αἰῶνος ἐπιδρομαὶ τῶν βαρβάρων, Γαλατῶν, Βισιγότθων, Ἀλανῶν καὶ ἄλλων, μεγάλας ἐπέφερον καταστροφὰς εἰς τὴν χώραν, μετὰ πολλῶν δὲ δυσχερειῶν κατώρθωσε νὰ συγκρατήσῃ αὐτὰς ὁ Ἰουστινιανός, ὁπότε περὶ τὸ 679 ἐγκατεστάθησαν Σλάβοι καὶ Βούλγαροι. Α. Θ. Σ.

**Μοισοί** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Θρακικὸς λαός, κατοικῶν τὴν μεταξὺ τοῦ Δουνάβεως καὶ τοῦ Αἵμου χώραν, τὴν ἀπ' αὐτῶν κληθεῖσαν *Μοισίαν* (βλ. λ.). Εἶχον κοινὰ τὰ ἤθη καὶ ἔθιμα μετὰ τῶν λοιπῶν Θρακῶν καὶ ἐθεωροῦντο ὡς θεοσεβεῖς καὶ δικαιότατοι, τρώγοντες μέλι, γάλα καὶ τυρόν, ἀπέχοντες «ἐμψύχων δι' εὐσέβειαν». Ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου ἀναφέρονται ὡς ἀγχέμαχοι πολεμισταὶ καὶ σύμμαχοι τῶν Τρώων. Διαπεραιωθέντες εἰς ἀρχαιοτάτην ἐποχὴν εἰς Μ. Ἀσίαν, κατῴκησαν τὴν μεταξὺ Τρῳάδος καὶ Βιθυνίας χώραν, ἥτις ἀπ' αὐτῶν ἐκλήθη *Μυσία*, οἱ δὲ κάτοικοι *Μυσοί*. Α. Θ. Σ.

**μοιχαλίς**, *—ίδος* (ἡ)· ἡ μοιχευομένη ὕπανδρος γυνή, καθόλου ἡ πόρνη· || ἀρσ. *μοιχός* (βλ. λ.).

**μοιχεία** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μοιχεύειν, ἡ παράβασις τῆς συζυγικῆς πίστεως εἴτε ὑπὸ τοῦ ἀνδρὸς εἴτε ὑπὸ τῆς γυναικός: «κατηγγέλθη ἐπὶ μοιχείᾳ».

— *[Ἐκκλ.]* *Μοιχεία* εἶναι ἡ παράβασις τῆς συζυγικῆς πίστεως, ἡ προερχομένη ἐκ τῆς σαρκικῆς μίξεως τοῦ ἑτέρου τῶν συζύγων μετὰ τρίτου προσώπου. Ἤδη ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ θεωρεῖται ἡ μοιχεία μέγα παράπτωμα, τιμωρουμένη διὰ τῆς ποινῆς τοῦ θανάτου τοῦ τε μοιχεύσαντος καὶ τῆς μοιχευθείσης (Λευϊτ. 20, 10. Ἰεζ. 16, 38. Δαν. 36 ε'), ἐκτὸς ἐὰν ἡ μοιχευθεῖσα δὲν ὑπήγετο εἰς τὴν τάξιν τῶν ἐλευθέρων, ὅτε αὐτὴ μὲν ἐκολάζετο σωματικῶς, ὁ δὲ μοιχὸς ὑπεχρεοῦτο νὰ προσφέρῃ θυσίαν (Λευϊτ. 19, 20 ἑ.) Ἐν τῇ Καινῇ Διαθήκῃ, ἐν ᾗ ὁ γάμος θεωρεῖται μυστήριον, ἡ μοιχεία, ὡς παράβασις τῆς συζυγικῆς πίστεως, ἣν οἱ ἐρχόμενοι εἰς γάμου κοινωνίαν ὑπεσχέθησαν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, θεωρεῖται μεγάλη ἁμαρτία, ἀποκλείουσα ἀπὸ τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν (Α' Κορ. 6, 9) καὶ διαλύουσα τὸν γάμον (*Ματθ.* 5, 32). Κ. Ι. Δ.

— *[Ποιν. Δίκ.]* Βλ. λ. *ἠθῶν βλάβη*.

— *[Κανον. Δίκ.]* Βλ. λ. *ἠθῶν πλημμελήματα*.

— *[Ἀστ. Δίκ.]* Κατὰ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον ἡ ἀθέμιτος σχέσις μετ' ἐγγάμου γυναικὸς θεωρεῖται *μοιχεία*, ἐνῷ τοιαύτη σχέσις ἀνδρὸς ἐγγάμου πρὸς γυναῖκα ἐλευθέραν λογίζεται *πορνεία*. Τὸ κολάζον τὴν μοιχείαν ἄρθρον 286 τοῦ ποινικοῦ νόμου θεωρεῖ ὡς μοιχὸν καὶ τὸν μεθ' οἱασδήποτε γυναικὸς συνευρεθέντα ἔγγαμον ἄνδρα, παρὰ τοῦτο ὅμως δὲν φαίνεται γενικῶς ἐπεκτεινόμενον ἐπὶ τοῦ ἀνδρὸς τὸ κώλυμα γάμου, ὅπερ καθιεροῖ τὸ ρωμαϊκὸν δίκαιον εὐρύτερον διὰ τὴν γυναῖκα. Κατὰ τὰς διατάξεις αὐτοῦ ὁ γάμος μεταξὺ τῶν μοιχῶν ἀπαγορεύεται. Ἀπαγορεύεται ἐπίσης ὁ γάμος μεταξὺ τῆς μοιχαλίδος καὶ οἱουδήποτε τρίτου, οὐχὶ ὅμως ὁ μεταξὺ μοιχοῦ καὶ τρίτης. Ἡ μοιχεία θεωρεῖται διαπραττομένη καὶ ἐν ἀκύρῳ γάμῳ, πρὶν ἡ ἀπαγγελθῇ ἡ ἀκυρότης δικαστικῶς, ὡς καὶ ἐν μνηστείᾳ, ἔνθα ὅμως ὁ γάμος τῆς ἀπίστου μνηστῆς μετὰ τρίτου δὲν ἀπαγορεύεται. Τὸ κώλυμα ἐπέρχεται καὶ κατὰ κανόνα ἀπὸ τῆς καταδικαστικῆς ἀποφάσεως, ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τῆς ἀσκήσεως τῆς ποινικῆς ἀγωγῆς ὡς πρὸς τὸν κατηγορηθέντα.

Ἡ μοιχεία συνιστᾷ δι' ἀμφοτέρους τοὺς συζύγους, καὶ λόγον διαζεύξεως, κατὰ τὸν σχετικὸν νόμον 2228. Πλήρης ὅμως ἰσότης καὶ διὰ τοῦ νόμου τούτου δὲν ἐπέρχεται ὡς πρὸς ἀμφότερα τὰ φῦλα, δυναμένου τοῦ δικαστηρίου, ἂν συντρέχουν ἐξαιρετικοὶ λόγοι, ὧν ἡ στάθμισις ἐπαφίεται εἰς τὴν κρίσιν του, ν' ἀπορρίψῃ τὴν περὶ διαζεύξεως ἀγωγὴν ἐν περιπτώσει μοιχείας τοῦ ἀνδρός. Εἶναι ἀπαράδεκτος ἡ ἀγωγὴ τοῦ συζύγου, ὅστις συνήνεσεν εἰς τὴν μοιχείαν τοῦ ἑτέρου. Θ. Ι. ΑΝΔΡΕΑΔΗΣ

**μοιχεύω**· γίνομαι μοιχός, συνέρχομαι μετὰ γυναικὸς ὑπάνδρου.

**μοιχικός**, *—ή*, *—όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μοιχείαν, ὁ τῆς μοιχείας: «μοιχικὴ κλίνη» || ὁ ρέπων εἰς τὴν μοιχείαν.

**μοίχιος**, *—α*, *—ον*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μοιχὸν ἢ τὴν μοιχείαν: «μοίχιον τέκνον» τὸ ἐκ μοιχείας συλληφθέν.

**μοιχογέννητος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ γεννηθεὶς ἐκ μοιχείας, μοίχιος: «μοιχογέννητον τέκνον».

**μοιχός** (ὁ)· ὁ παραβαίνων τὴν συζυγικὴν πίστιν ἀνήρ, ὁ συνερχόμενος μετὰ ὑπάνδρου γυναικός· || θηλ. *μοιχαλίς* (βλ. λ.).

**Μόκα** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Μόκκα*.

— **Μόκα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεσόγειος πόλις τῆς Πετραίας Ἀραβίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. V, 16, 4), πιθανῶς τὸ νῦν χωρίον Μ' Kaur. Α. Θ. Σ.

**μοκασσῖνος** (ὁ) *[Ζῳολ.]*. Τοπικὴ ὀνομασία τοῦ ἑρπετοῦ *τριγωνοκέφαλος* (βλ. λ.).

**Μοκάτα** *[Γεωγρ.]*. Σημερινὴ ὀνομασία τοῦ ἐν Παλαιστίνῃ μικροῦ ποταμοῦ *Κισῶν* (βλ. λ.).

**Μοκάτταμ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος πρὸς Α. τοῦ Καΐρου ὕψους 200 μ. Ἐπὶ τῆς ὑψηλοτέρας τοῦ κορυφῆς διακρίνεται τὸ τζαμίον Ζιγιουσι, κτισθὲν τῷ 1085 ὑπὸ τοῦ ἐμίρου Βέτρ ἐλ Γκεμαλί. Λέγουν ὅτι ἔκτισεν ἐκεῖ τὸν τάφον του, διὰ νὰ δυναται καὶ μετὰ θάνατον νὰ βλέπῃ τοὺς εἰς τὴν κοιλάδα 7 τάφους τῶν εὐνοουμένων του γυναικῶν. Εἰς τὸ Ν. ἄκρον τοῦ ὀροπεδίου εἶναι τὰ ἐρείπια ἀρχαίου τουρκικοῦ φρουρίου, συνδεομένου μὲ τὴν ἀκρόπολιν διὰ στενῆς γεφύρας. Ἐπὶ τοῦ ΝΑ. ὄγκου οἱ Ἄγγλοι ἔστησαν στήλην ἀναμνηστικὴν τῆς ἐκεῖθεν γενομένης παρατηρήσεως τῆς διαβάσεως τῆς Ἀφροδίτης ἐνώπιον τοῦ δίσκου τοῦ Ἡλίου τῷ 1784. Γ. Λ. Α.

**Μοκὲλ** (Mockel), ***Ἀλβέρτος***. Γάλλος ποιητὴς καὶ κριτικὸς βελγικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἵδρυσε καὶ διηύθυνεν ἐπὶ ἑπταετίαν τὴν ἐπιθεώρησιν «Ἡ Βαλλωνία», ὅπου ὑπερήσπισε τὰς ἀρχὰς τῆς σχολῆς τοῦ συμβολισμοῦ. Ἐξέδωκεν εἰς

Digitized by Google

βιβλία διαφόρους μελέτας ἀφιερωμένας εἰς τοὺς ποιητὰς τῆς σχολῆς ταύτης, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Φιλολογικοὶ λόγοι» (1894), «Αἰμίλιος Βεράρεν» (1895, 1918), «Στέφανος Μαλλαρμὲ» (1899), «Κάρολος Βὰν Λεμπὲργ» (1904). Μεταξὺ τῶν ποιητικῶν συλλογῶν του: «Λάμψεις» (1902), «Ἡ στεῖρα φλόγα» (1923), «Ἡ ἀθάνατη φλόγα» (1924). Ι. Μ. Τ.

**Μοκὲν-Ζαντὸν** (Moquin-Zandon), ***Ὁράτιος-Βενέδικτος-Ἀλφρέδος***. Γάλλος φυσιοδίφης, γεννηθεὶς εἰς Μομπελλιὲ τῷ 1804 καὶ ἀποθανὼν εἰς Παρισίους τῷ 1863. Ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας εἰς τὴν Μασσαλίαν, εἶτα τῆς βοτανικῆς εἰς τὴν Τουλούζην καὶ τέλος τῆς ἰατρικῆς καὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας εἰς Παρισίους, ὑπῆρξε δὲ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν καὶ τῆς Ἰατρικῆς Ἀκαδημίας. Μεταξὺ τῶν πολλῶν συγγραμμάτων του ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Στοιχεῖα τερατολογίας τῶν φυτῶν» (Paris 1841) καὶ «Φυσικὴ ἱστορία τῶν γηΐνων καὶ ποταμίων μαλακίων τῆς Γαλλίας» (Paris 1855). Δ. Ν. Π.

**Μοκερὼ** (Mocquereau), ***Ντὸμ Ἀνδρέας***. Γάλλος ἱστοριοδίφης καὶ παλαιογράφος τῆς μουσικῆς, γεννηθεὶς τῷ 1849. Καλὸς μουσικός, ἀφ' ἧς εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τοῦ Ἁγίου Βενεδίκτου τοῦ Σολέσμ, ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τοῦ γρηγοριανοῦ ᾄσματος. Καρπὸς τῶν μελετῶν του ὑπῆρξεν ἡ ἔκδοσις τοῦ συγγράμματος «Μουσικὴ παλαιογραφία» (1889), ἔργου μνημειώδους. Ὁ Μοκερὼ προσεπάθησεν ἐπίσης νὰ λύσῃ τὸ ζήτημα τῆς γρηγοριανῆς ῥυθμικῆς ἐν τῷ συγγράμματι «Ὁ μουσικὸς γρηγοριανὸς ἀριθμὸς ἢ γρηγοριανὴ ῥυθμικὴ» (1908), ὅπερ ἐγένετο δεκτὸν μετὰ πολλῶν ἐπιφυλάξεων καὶ εὗρε πλείστους πολεμίους. Ὁ Μοκερὼ ἔγραψεν ἐπίσης: «Τὸ γρηγοριανὸν ᾆσμα, ὁ σκοπός του, τὰ μέσα του καὶ τὰ χαρακτηριστικά του», «Μικρὸν ἐγχειρίδιον ψαλμῳδίας», «Ἡ ῥωμαϊκὴ ψαλμῳδία καὶ ὁ λατινικὸς τονισμὸς» (1895), «Μέθοδοι γρηγοριανοῦ ᾄσματος» (1899) κ. τ. λ. Γ. Σ.

**μοκίλεια** (ἡ) (Moquilea) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν ***ῥοδοειδῶν***, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν νοτίων χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν 20 περίπου εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ἡ *μοκίλεια ἡ χρήσιμος* (Moquilea utilis), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Βραζιλίας, τοῦ ὁποίου ὁ φλοιὸς τοῦ κορμοῦ περιέχει ἀρκετὴν ποσότητα πυριτικοῦ ὀξέος καὶ χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν τοῦ Περοῦ ἰδίως, πρὸς κατασκευὴν πηλίνων σκευῶν, ἅτινα ἀντέχουσιν εἰς τὸ πῦρ ὡς τὰ χάλκινα τοιαῦτα. Πρὸς κατασκευὴν τούτων μιγνύουσι τὸ πυριτικὸν ὀξὺ τοῦ φλοιοῦ τοῦ φυτοῦ μετ' ἀργίλλου. Δ. Ν. Π.

**Μόκιστα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριχωνίδος τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται παρὰ τὴν ΒΑ. παραλίαν τῆς λίμνης Τριχωνίδος πρὸς Α. τοῦ Ἀγρινίου, μεθ' οὗ συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 587. Χ. Δ.

**Μόκκα** *[Γεωγρ.]*. Ὀχυρὰ πόλις τῆς ΝΔ. Ἀραβίας ἐν Ὑεμένῃ (Εὐδαίμων Ἀραβία), μετὰ λιμένος ἐπὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης, ὀνομαστὴ διὰ τὴν ἐξαγωγὴν τοῦ περιφήμου καφὲ τῆς Ὑεμένης, τοῦ καλουμένου «μόκκα». Ἄλλοτε ἐκ τοῦ λιμένος αὐτῆς ἐξήγοντο περὶ τὰς 24.000 σάκκων καφὲ ἀφ' ὅτου ὅμως τὸ ἐμπόριον τοῦτο μετετοπίσθη εἰς Ἄδεν καὶ Χοδεΐδαν, ἡ πόλις παρήκμασεν, ἀριθμοῦσα σήμερον περὶ τοὺς 6.000 κατ. Α. Θ. Σ.

— **μόκκα**. Καλεῖται οὕτω ὁ περίφημος καφὲς τῆς Ὑεμένης (βλ. *Μόκκα [Γεωγρ.]*).

**Μοκοβίνα** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον ἐν τῇ περιφερείᾳ Μαργαριτίου τῆς Ἠπείρου, κατοικούμενον ὑπὸ Τουρκαλβανῶν.

— 2) Ἑλληνόφωνον χωρίον τῆς Λάκκας Ὀλύτσικας τῆς Ἠπείρου.

**Μοκοντιακὸν** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἄνω Γερμανίας, ἡ ἄλλως καλουμένη *Μογουντιακὸν* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μόκραινη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Βαρικὸν* (βλ. λ.) Χ. Δ.

**Μόκρον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Λειβαδερὸν* (βλ. λ.).

**Μοκρὸς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται πλησίον τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Στρυμόνος, ΒΑ. τῆς Δράμας, καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 233. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Λευδράκια* (Κράνιστα), *Καστανόχωμα* (Ζερνοβίτσα), *Μυρσινερὸν* (Πεπελίς), *Νεοτοχώρι* (Χανδήρ-κιοϊ) καὶ *Χαράδρα* (Ραζενίκ). Χ. Δ.

**Μόκρουμ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Δαλματίας, ἡ σημερινὴ *Μακάρσκα* (βλ. λ.).

**Μοκτάδι**, ***Βιαμριλλάχ***. Ἀββασίδης καλίφης, βασιλεύσας ἐν Βαγδάτῃ ἀπὸ τοῦ 1075—1094. Γ. Λ. Α.

**Μοκταδίρ**, ***Ἀλῆ ἐλ —***. 18ος Ἀββασίδης καλίφης τῆς Βαγδάτης, διαδεχθεὶς δεκατριετὴς τὸν ἀδελφόν του *Μοκταφί*, τῷ 908 μ. Χ. Ἐβασίλευσε μέχρι τοῦ 932 καὶ ἐγένετο ὁ τελευταῖος τῆς ἐνδοξοτάτης του δυναστείας. Ἅμα τῇ ἀναρρήσει του ἀντεμετώπισεν ἀνταπαιτητὰ τοῦ θρόνου του. Ὁ υἱὸς τοῦ καλίφου Ζοβεῒρ ἐλ Μοτὸζ (866—869) Ἀβδάλλας συνεκέντρωσε πολλοὺς ὀπαδούς του, ἐπανεστάτησαν δὲ καὶ τὰ στρατεύματα τῆς Βαγδάτης ὑπὸ τὸν Ἄραβα Χουσὲν μπὲν Χαντᾶν καὶ ἀνεκήρυξαν τοῦτον ὑπὸ τὸ ὄνομα ἐλ Μορτάδι. Ἀλλ' ἡ ἀνακτορικὴ φρουρὰ ἔμεινε πιστὴ εἰς τὸν Μοκταδίρ. Ἐπὶ κεφαλῆς ταύτης ὁ εὐνοῦχος Μουνὶς διεσκόρπισε τοὺς ὀπαδοὺς τοῦ ἀνταπαιτητοῦ καὶ συνέλαβε τοῦτον αἰχμάλωτον. Οὕτως ὁ Ἀβδάλλα ἐλ Μορτάδι, βασιλεύσας μίαν μόνην ἡμέραν, ἐθανατώθη τὴν ἐπαύριον (17 Δεκ. 908). Εἰς ἀμοιβὴν ὁ ἐλ Μουνὶς ἔλαβε τὸν τίτλον Ἐμὶρ ἀλ Ὀμρᾶ (ἀρχιεμίρης) καὶ ἀνέλαβε τὴν πραγματικὴν ἀρχήν. Ἔκτοτε δὲν ἀνέκτησαν οἱ Ἀββασίδαι τὴν κοσμικὴν ἐξουσίαν, διατηρήσαντες μέχρι τοῦ ΙΓ' αἰῶνος μόνον τὴν πνευματικήν. Γ. Λ. Α.

**Μοκταφί**, ***Ἀλῆ — μπ' Ἰλλάχ***. 17ος Ἀββασίδης καλίφης τῆς Βαγδάτης, διαδεχθεὶς τὸν πατέρα του Μοταδὶδ (902). Ἅμα τῇ ἀναρρήσει του ἀπηλευθέρωσε τὰ θύματα τοῦ αἱμοχαροῦς πατρός του, ὅστις εἶχε κατασκευάσει φρικώδεις φυλακάς. Τοῦτο τῷ προσεπόρισε τὴν ἀγάπην τοῦ λαοῦ, ἀλλ' ἀφέθη νὰ διευθύνεται ἀπὸ τοὺς ὑπουργούς του ἐλ Κασίμ, ἐλ Ἀμπὰς ἐλ Φατίκ, ὅστις ἦτο καὶ ἀπελεύθερός του, ἐθυσίασεν ὅμως τὸν ἐξαίρετον ἐλ Μπάντρ, τὸν εὐνοούμενον τοῦ πατρός του. Ἐβασίλευσεν 6 ἔτη. Ὡς διάδοχόν του ἤθελε τὸν ἀδελφόν του Τζαφάρ, 13 ἐτῶν τότε, ἀλλὰ δὲν ἐπρόφθασε νὰ τὸν ἀνακηρύξῃ, τὸν ἀνεκήρυξαν ὅμως οἱ ὑπουργοί του ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἐλ Μοκταδίρ*. Γ. Λ. Α.

— **Μοκταφί, *Μωχάμμετ — Διαμριλλάχ***. Ἀββασίδης καλίφης, βασιλεύσας ἀσήμως ἀπὸ τοῦ 1136 —1160 ἐν Βαγδάτῃ.

**Μοκχηρὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Μαρμαρικῇ, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. IV, 5, 13) οὐ μακρὰν τῆς θαλάσσης, παρὰ τὸν Μικρὸν Πετράντα. Σήμερον ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν καλεῖται Magharat. Α. Θ. Σ.

**Μὸλ** (Moll)· βλ. *Μόλλ*.

**Μὸλ** (Moles), ***Ἀρνὼ ντὲ—***. Γάλλος ὑελογράφος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καταγόμενος ἐν Σαὶν Σεβὲρ τῆς Λάνδης. Εἰργάσθη ἐν Τουλούζῃ ὅπου ἐξετέλεσε καὶ πολλὰς ζωγραφίας καὶ γλυπτά. Κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὰ περίφημα ὑαλοστάσια τῆς μητροπόλεως τοῦ Ὤς. Χ. Δ.

— **Μὸλ** (Mohl), ***Ἰούλιος***. Γερμανὸς ἀνατολιστὴς (1800—1879). Ἐγκατασταθεὶς ἀπὸ τῆς νεότητος αὐτοῦ εἰς Παρισίους, ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν καὶ ἐδημοσίευσεν: «Ἀποσπάσματα σχετικὰ πρὸς τὴν θρησκείαν τοῦ Ζωροάστρου» (1829), μεταφράσεις κινεζικῶν θρησκευτικῶν βιβλίων καὶ τοῦ περσικοῦ «Σὰχ Ναμὲ» (1838). Ἐγένετο μέλος τῆς γαλλικῆς ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν (1844) καὶ καθηγητὴς τῆς περσικῆς γλώσσης εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας (1847). Ὑπῆρξε γραμματεὺς καὶ εἶτα πρόεδρος τῆς Ἀσιατικῆς Ἑταιρείας, αὐτὸς δὲ ἔδωκε τὰ σχέδια τῶν ἀνασκαφῶν τῆς Μπόττα ἐν Νινευῇ. —Ω.

— **Μὸλ** (Mohl), ***Οὖγος***. Γερμανὸς βοτανικὸς (1805—1872). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Τυβίγγης καὶ εἶτα βοτανικὴν ἐν Μονάχῳ. Τῷ 1832 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς φυσιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βέρνης καὶ τῷ 1835 τῆς βοτανικῆς ἐν Τυβίγγῃ. Αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ προήγαγον πάντας τοὺς κλάδους τῆς βοτανικῆς, ἀλλ' ἰδίᾳ ἐγένετο περίφημος διὰ τῶν ἐρευνῶν του περὶ φυτικοῦ κυττάρου καὶ πρωτοπλάσματος. Ἔγραψε: «Περὶ τῶν πόρων τοῦ φυτικοῦ κυττάρου» (1828) «Περὶ ἀνατομίας καὶ φυσιολογίας τῶν φυτῶν» (1834), «Μικρογραφία ἢ περὶ χρήσεως τοῦ μικροσκοπίου» (1846), «Στοιχεῖα ἀνατομίας καὶ φυσιολογίας τοῦ φυτικοῦ κυττάρου» (1851) κ. ἄ. Ἀπὸ τοῦ ἔτους 1843—1872 ἐξέδιδε μετὰ τοῦ Σλέχτενταλ τὴν «Βοτανικὴν Ἐφημερίδα». Γ. Ι. Β.

— **Μὸλ** (Mol), ***Πέτρος φὰν ντὲρ—***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1599—1650), μαθητὴς τοῦ Ρούμπενς, τὸν ὁποῖον ἐμιμήθη. Εἶναι εἷς τῶν δώδεκα ἱδρυτῶν τῆς Βασιλικῆς ἀκαδημίας ζωγραφικῆς τῆς Γαλλίας. Σῴζονται πλεῖσται προσωπογραφίαι του προσωπικοτήτων τῆς αὐλῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ', ἐν οἷς καὶ τοῦ Μαζαρίνου. Χ. Δ.

— **Μὸλ** (Mohl), ***Ροβέρτος***. Γερμανὸς πολιτειολόγος (1799—1875). Ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ δημοσίου δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Τυβίγγης καὶ κατόπιν τῆς Αἰδελβέργης καὶ ἐχρημάτισε βουλευτής, μέλος τοῦ κοινοβουλίου τῆς Φραγκφούρτης (1848), ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης (1848—1849), βουλευτὴς καὶ πρόεδρος τῆς πρώτης βουλῆς τῆς Βάδης (1857), πρεσβευτὴς τῆς Βάδης ἐν Μονάχῳ (1867—1871) καὶ βουλευτὴς εἰς τὸ Ράϊχσταγ (1874). Ἔγραψε: «Δημόσιον δίκαιον τοῦ βασιλείου τῆς Βυρτεμβέργης» (1829—1831), «Τὸ γερμανικὸν ἀστυνομικὸν σύστημα» (1834, 3. τ.), «Ἐγκυκλοπαιδεία τῶν πολιτικῶν ἐπιστημῶν» (1859), «Δημόσιον δίκαιον, διεθνὲς δίκαιον καὶ πολιτικὴ» (1860—1869), «Ἱστορία καὶ φιλολογία τῶν πολιτικῶν ἐπιστημῶν», «Ἡ εὐθύνη τῶν ὑπουργῶν εἰς τὰς μοναρχίας», «Τὸ γερμανικὸν δημόσιον δίκαιον» (1873) κ. ἄ. Θ. Κ.

**μόλα** *[Ναυτ.]*. Κέλευμα τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ *ἔα* τῆς ἐπισήμου τοιαύτης. Ἐκ τούτου δέ: *τίρα-μόλα*, ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ *μέθελκε*, *ἔγια μόλα*, *ἔγια λέσσα*, *μόλα μπάντου* (ἐκ τοῦ ἰταλ. molla in bando=ἔα) ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ *ἔα πάντῃ*, καὶ *μόλα κάβο* πρὸς τὸ *ἔα τὸ πρυμνήσιον*. Σ. Ε. Λ.

**Μόλα ντὶ Μπάρι** (Mola di Bari) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μπάρι. Κάτ. 15.455. Κεῖται ἐπὶ τῆς Ἀδριατικῆς θαλάσσης καὶ ἔχει καλὸν λιμένα, ὁ ὁποῖος ἦτο σημαντικώτατος διὰ τὸ ἐμπόριον μετὰ τῆς Ἀνατολῆς κατὰ τὸν παρελθόντα αἰῶνα. Ἔχει ὡραίαν ἐκκλησίαν νορμανδικῆς ἐποχῆς καὶ ἐργοστάσια ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μολὰ ἀντασσὶ** *[Γεωγρ.]*. Τριὰς νήσων τῆς Προποντίδος: *Ἅϊ Ἀνδρέας* (πλάτ. 40° 27′ 45″ Β., μῆκ. 28° 04′ 15″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara) ἔχουσα φάρον. *Μίξα* καὶ *Ἅϊς Γεώργης* μετὰ τῆς ὑφάλου *Ἄγρια Πέτρα*, προσκειμένων τῇ ἀνατολικῇ ἀκτῇ τῆς χερσονήσου τῆς Ἀρτάκης, 1½ μίλλ. Α.ΝΑ τοῦ ἀκρωτηρίου Καψάλα. Σ. Ε. Λ.

**Μολάδι** *[Γεωγρ.]*. Νησίον τοῦ Σαρωνικοῦ μεταξὺ Σοφικοῦ Αἰγίνης καὶ Σαλαμῖνος (πλάτ. 37° 48′ 50″ Β. μῆκ. 23° 17′ 20″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1514: Aegina and Methana). Εἶναι ἡ ἀνατολικωτέρα ἐν τῇ συστάδι τῶν Διαπορίων, εὑρισκομένη μεταξὺ νησίων Ἁγίου Ἰωάννου καὶ Ὑψηλῆς καὶ εἰς 7½ μίλλ. Δ.ΒΔ τοῦ λιμένος Αἰγίνης. Σ. Ε. Λ.

**Μολαὶ** (Molay), ***Ἰάκωβος ντὲ—***. Ὁ τελευταῖος μέγας μάγιστρος τῶν Ναΐτῶν (1243—1314). Εἰσελθὼν εἰς τὸ τάγμα τῶν Ναΐτῶν περὶ τὸ 1265, διεκρίθη ἐν Παλαιστίνῃ καὶ ἐξελέγη μέγας μάγιστρος αὐτοῦ τῷ 1298. Ἀναγκασθεὶς ν' ἀποσυρθῇ εἰς Κύπρον μετὰ τοῦ τάγματός του, ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος τοῦ Ε' τῷ 1306 ἢ 1307, ὅπως ἐν κοινῇ συσκέψει λάβουν ἀποφάσεις περὶ τῆς τύχης τοῦ τάγματός του. Καίτοι ὅμως μετέβη εἰς Γαλλίαν καὶ συνήντησε τὸν πάπαν εἰς τὸ Πουατιέ, ὅπου τῷ ἐδόθησαν μεγάλαι ὑποσχέσεις περὶ τῆς ἀναγνωρίσεως τοῦ τάγματός του, ἐν τούτοις τὴν 13 Ὀκτωβρίου συνελήφθη ὁμοῦ μετὰ τῶν ὀπαδῶν του κατὰ διαταγὴν τοῦ βασιλέως Φιλίππου τοῦ Ὡραίου. Ὑποβληθεὶς εἰς βασανιστήρια ἠναγκάσθη νὰ ὁμολογήσῃ, κατὰ τὰς βεβαιώσεις τῶν ἐξεταστῶν του, πολλὰ τῶν ἐγκλημάτων, διὰ τὰ ὁποῖα κατηγοροῦντο οἱ Ναΐται, ἀλλὰ κατόπιν ἀπηρνήθη τὰς ὁμολογίας του ταύτας καὶ ἐτιμωρήθη διὰ τοῦ ἐπὶ τῆς πυρᾶς θανάτου, ἐν Παρισίοις. Μ. Δ. Β.

**Μολάοι** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Πελοποννήσου, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται εἰς τὰς ὑπωρείας τοῦ ὄρους Κούρκουλα (914 μ.) παρὰ τὸ ΒΔ. ἄκρον μικρᾶς πεδιάδος, ἐν ᾗ καλλιεργοῦνται οἱ δημητριακοὶ καρποί, ἡ οἰνοφόρος ἄμπελος, ἡ ἐλαία, ὁ βάμβαξ, ἡ ἀμυγδαλῆ, ἡ συκῆ καὶ τὰ ἑσπεριδοειδῆ. Ἀπέχει τῆς Μονεμβασίας 6 ὥρας περίπου καὶ συνδέεται μετ' αὐτῆς δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Ἐπίσης ἄλλαι ἁμαξιτοὶ ὁδοὶ διευθύνονται ἐκεῖθεν πρὸς τὸν ἐν τῷ Λακωνικῷ μικρὸν λιμένα τῆς Ἐλαίας καὶ πρὸς τὰς Κροκεάς, μέσῳ τῶν ὁποίων συγκοινωνεῖ μετὰ τοῦ Γυθείου καὶ τῆς Σπάρτης. Εἶναι τὸ μόνον ἀξιόλογον κέντρον τοῦ Β. τμήματος τῆς ἐπαρχίας καὶ ἔχει πταισματοδικεῖον, εἰρηνοδικεῖον, οἰκονομικὴν ἐφορείαν (β' τάξεως), ταμεῖον (γ' τάξεως), ὑποθηκοφυλακεῖον, ὑποδιοίκησιν χωροφυλακῆς Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον, πλῆρες ἑξατάξιον γυμνάσιον καὶ δημοτικὰ σχολεῖα. Ἐπίσης ἔχει ὑποκαταστήματα τῶν τραπεζῶν Ἐθνικῆς, Ἀθηνῶν καὶ Ἰονικῆς, διεξάγει δὲ τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ ἐμπορίου τῆς ἐπαρχίας, τὸ ὁποῖον διοχετεύεται ἐκεῖθεν πρὸς τὴν Σπάρτην καὶ τὸ Γύθειον δι' αὐτοκινήτων. Κάτ. (1928) 2.173. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Γκαγκανιά*. Πρὸ τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ περὶ δήμων καὶ κοινοτήτων νόμου ἦτο πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Ἀσωποῦ. Χ. Δ.

**μολάρω**, καὶ ***μολαίρω***, καὶ ***μολαίρνω***, ἀόρ. *ἐμολάρα* καὶ *ἐμολάρισα*, παρακ. παθ. μετχ. *μολαρισμένος*· δημοτ., ἀφίνω ἐλεύθερον, χαλαρώνω, ἰδίᾳ παρὰ τοῖς ναυτικοῖς: «μολάρω τὸ σχοινί, —τὰ κουπιά, —τὴ μοῦδα» (ἰταλ. mollare).

Digitized by Google

**Μολάση** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 197. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Καλονέρι (Ρεσούλιανη)*. Χ. Δ.

**μολαταῦτα,** καὶ *μολοντοῦτο*· ἐπίρρ. ὅμως, ἐν τούτοις (ἀποδίδεται εἰς τὸ *μολονότι*: «μολονότι ἦτο ἄρρωστος, μολαταῦτα κατώρθωσε νὰ ἐργασθῇ»· || καὶ συνήθως ἐννοουμένου τοῦ *μολονότι*: «εἶχε πυρετὸ ὅλη νύχτα, μολαταῦτα τὸ πρωῒ ἐπῆγε 'ς τὴ δουλειά» ἢ «— μολοντοῦτο ἐπῆγε 'ς τὴ δουλειά».

**Μολάϋν** (Molyn), ***Πέτρος***, ὁ ἐπιλεγόμενος ὁ πρεσβύτερος. Ὁλλανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς πρὸ τοῦ 1600 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1661. Τῷ 1616 εἰσῆλθεν εἰς τὴν συντεχνίαν τῶν ζωγράφων τοῦ Ἅαρλεμ, τῷ δὲ 1633 ἐξελέγη κοσμήτωρ αὐτῆς. Ἦτο ἐπιδέξιος τοπιογράφος, πολλὰ δὲ ἔργα του σῴζονται εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου. Εἰργάσθη ἐπίσης διὰ νιτρικοῦ ὀξέος (ἀκουαφόρτε), οἱ δὲ πίνακές του τοῦ εἴδους τούτου εἶναι περιζήτητοι. Ὁ υἱός του *Ἰωάννης Μολάϋν ὁ νεώτερος* (1637—1701), ζωγράφος ἐπίσης, διεκρίθη ὡς ἀπεικονιστὴς σκηνῶν κυνηγίου. Χ. Δ.

**μολγούλη** (ἡ) (Molgula) *[Ζῳολ.]*. Γένος χιτωνοφόρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀσκοζῴων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀσκιδιδῶν*, περιλαμβάνον θαλάσσια ζῳάρια, ἀπαντῶντα κυρίως εἰς τὰς θαλάσσας τῶν χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Δ. Ν. Π.

**Μολδάβας,** ἢ ***Μολδαύας*** (Moldova) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ρουμανίας ἐν Μολδαβίᾳ, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Σερέτ, ἀρχόμενος ἐκ τῶν Α. Καρπαθίων ἐν Βουκοβίνᾳ καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Σερέτ, παρὰ τὴν πόλιν Ρομάν, μετὰ ροῦν 190 χλμ.

— **Μολδάβας,** ἢ ***Μολδαύας*** (γερμ. Moldau, τσεχ. Bltava). Παραπόταμος τοῦ Ἔλβα ἐν Βοημίᾳ, μήκους 425 χλμ., ἀρδεύων ἔκτασιν 30.840 τ. χλμ. Σχηματίζεται ἐν τῷ Βοημικῷ Δρυμῷ, ρέει πρὸς ΝΑ. καὶ ἀφοῦ διέλθῃ τὸν λεγόμενον Τοῖχον τοῦ Διαβόλου, διαρρέει καθέτως τὸ λεκανοπέδιον τοῦ Μπουντβάϊς, διέρχεται κάτωθεν τῆς Πράγας καὶ ἐπαναχύνεται εἰς τὸν Ἔλβαν, παρὰ τὸ Μελνίκ. Εἶναι πλωτὸς ἀπὸ τοῦ Στέχοβιτς (παρὰ τὴν Πράγαν) μέχρι τοῦ Μελνίκ. Ἀπὸ τοῦ 1919 ἐδιεθνοποιήθη τὸ τμῆμα ἀπὸ Πράγας μέχρι τῆς ἐκβολῆς. Θ. Κ.

**Μολδαβία,** ἢ ***Μολδαυΐα*** (ρουμαν. Moldova, ρωσ. Moldawija) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ρουμανίας, ὀνομασθεῖσα οὕτως ἐκ τοῦ ποταμοῦ Μολδάβα. Κεῖται μεταξὺ Βεσσαραβίας, Βουκοβίνας, Τρανσυλβανίας, Βλαχίας καὶ Δοβρουτσᾶς. Ἐμβαδὸν 38.058 τ. χλμ. Κάτ. 2.337.000, ἐξ ὧν 200.000 Ἰσραηλῖται, πολλοὶ Ἕλληνες καὶ οἱ λοιποὶ Ρουμᾶνοι (Μολδαβοί). Δυτικῶς τοῦ ποταμοῦ Σερὲτ ἡ χώρα εἶναι δασοσκεπὴς καὶ ὀρεινή, ἀνατολικῶς δέ, μέχρι τοῦ ποταμοῦ Προύθου, σχηματίζεται χθαμαλὸν ὀροπέδιον πλάτους 60—90 χλμ. Εἰς τὸ νότιον τμῆμα, πλησίον τοῦ Δουνάβεως, ὑπάρχει ἡ μεγάλη λίμνη *Μπρατέσου*. Ἡ χώρα παράγει γεωργικὰ καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα, πετρέλαια, ὀρυκτὸν ἅλας καὶ ἐξάγει δημητριακὰ καὶ ξυλείαν. Διασχίζεται ὑπὸ δύο μεγάλων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν Ἑρζεγοβίνης—Βουκουρεστίου καὶ Ἰασίου—Γαλαζίου. Ἡ Μολδαβία διαιρεῖται εἰς 13 νομούς, πρωτεύουσα δ' αὐτῆς τὸ *Ἰάσιον*.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ *Μολδαβία* κατείχετο παλαιόθεν ὑπὸ τῶν Τατάρων, οἱ δὲ ἐν αὐτῇ Ρουμᾶνοι ἦσαν ἀνίσχυροι, ὅπως ἀντιδράσουν κατὰ τοῦ κατακτητοῦ. Βραδύτερον, ἐπιτυχόντες τὴν βοήθειαν τῶν Οὔγγρων, ἐπαναστάτησαν τῷ 1343 καὶ ἠδυνήθησαν νὰ ἐκδιώξουν τοὺς Τατάρους. Ἀλλὰ τούτους διεδέχθησαν εἰς τὴν κυριαρχίαν τῆς χώρας οἱ Οὖγγροι ὑπὸ τὸν ἡγεμόνα των Δράγος. Μετὰ ἑξαετίαν ὁ λαὸς ὑπὸ τὸν Ρουμᾶνον βοεβόδαν *Μπογδὰν* ἠδυνήθη νὰ ἀνατρέψῃ τὸν Σάς, διάδοχον τοῦ Δράγος καὶ οὕτω ἐγκατεστάθη ἰθαγενὴς ἡγεμονία ἐν τῇ χώρᾳ. Ὁ Μπογδὰν ἐστερέωσεν ἰσχυρῶς τὴν ἡγεμονίαν αὐτοῦ, ὠνόμασε δὲ ἐκ τοῦ ὀνόματός του τὴν χώραν *Μπογδανίαν*. Ὁ διάδοχος αὐτοῦ Λάτσκο (1365—1373), θελήσας νὰ ἐπιβάλῃ βιαίως τὸν καθολικισμόν, ἀνετράπη ὑπὸ τῶν ἐξεγερθέντων ὀρθοδόξων, τότε δὲ ἱδρύθη αὐτόθι ἡ πρώτη ὀρθόδοξος ἐπισκοπή, ὑπὸ τὴν αἰγίδα τοῦ πατριαρχείου τῆς Ἀχρίδος. Τὸν Λάτσκο διεδέχθη ὡς ἡγεμὼν ὁ Κόστεκ Μούσα, καὶ τοῦτον ὁ υἱὸς αὐτοῦ Πέτρος Α' (1375—1391), ὅστις, διὰ τοῦ γάμου του μετὰ τῆς ἀδελφῆς τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας Βλαδισλάου Ζαγγελόν, ἀνεγνώρισε τὴν πολωνικὴν ἐπικυριαρχίαν ἐπὶ τμήματος τῆς χώρας. Ἵνα ἀντιδράσῃ κατὰ τῆς ἐπικινδύνως ἐξαπλουμένης πολωνικῆς ἐπιρροῆς, ὁ ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας Μίρτσεα ἐπιτυγχάνει τῷ 1400, ὅπως ἀναβιβάσῃ εἰς τὸν θρόνον τὸν ἔγγονον τοῦ Μούσα Ἀλέξανδρον Α' τὸν Καλόν, ἀναδειχθέντα μέγαν ἡγεμόνα. Ἐν τέλει ὁ διάδοχος αὐτοῦ Στέφανος ὁ Μέγας (1457—1504) ἀπήλλαξεν ὁριστικῶς τὴν Μολδαβίαν τῆς ἐπιρροῆς τῆς Πολωνίας καὶ τῆς Οὐγγαρίας, νικήσας δὲ τοὺς Τούρκους ἐπεξέτεινε τὰ ὅρια τοῦ κράτους αὐτοῦ. Ὁ υἱὸς αὐτοῦ Μπογδὰν ὁ Γ' (1504—1517) ἠναγκάσθη νὰ ἀναγνωρίσῃ τὴν ἐπικυριαρχίαν τῆς Τουρκίας καὶ νὰ καταβάλλῃ φόρον ὑποτελείας. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα οἱ Τοῦρκοι παρεχώρησαν ἐσωτερικῶς αὐτοδιοίκησιν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1712 ἤρχισαν νὰ διορίζωσιν ὡς ἡγεμόνας τῆς χώρας Φαναριώτας ἐκ Κωνσταντινουπόλεως, ἐξαγοράζοντας τὸ ἀξίωμα. Ἀλλὰ μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ὑπὸ τὸν Ὑψηλάντην, τὴν ὁποίαν ἐβοήθησαν οἱ Φαναριῶται ἡγεμόνες, ἡ Τουρκία ἐξέλεγε τὸν ἡγεμόνα ἐκ τῶν ἰθαγενῶν, τοιοῦτοι δὲ διετέλεσαν ἔκτοτε ὁ Ἰωάννης Στούρτζας (1822—1828), ὁ Μιχαὴλ Στούρτζας (1834—1842), ὁ Γρ. Γκίκας. Ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας τοῦ τελευταίου ἐξερράγη ὁ Κριμαϊκὸς πόλεμος, κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὁποίου ἡ Μολδαβία κατελήφθη ἀρχικῶς ὑπὸ τῶν Ρώσων καὶ μετέπειτα ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν μέχρι τοῦ 1859. Τὸ συνέδριον τῶν Παρισίων τοῦ 1856 προσήρτησεν εἰς τὴν Μολδαβίαν τμῆμα τῆς Βεσσαραβίας καὶ ἀνεγνώρισε τὴν ἀνεξαρτησίαν αὐτῆς, τῷ δὲ 1859, διὰ τῆς ἐκλογῆς τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας Ἀλεξάνδρου Ἰωάννου Α' τοῦ Κούζα καὶ ὡς ἡγεμόνος τῆς Μολδαβίας, ἡνώθησαν αἱ δύο ἡγεμονίαι, δύο δ' ἔτη βραδύτερον ἡνώθησαν ἀμφότεραι ὁριστικῶς μετὰ τῆς Ρουμανίας. Θ. Κ.

—**Μολδαβίας *δημοκρατία*** (κατὰ σύντμησιν *A. M. S. S. R.) [Γεωγρ.]*. Αὐτόνομος σοσιαλιστικὴ σοβιετικὴ δημοκρατία ἐντὸς τοῦ σοβιετικοῦ κράτους τῆς Οὐκρανίας, ἀποτελοῦσα τμῆμα τῆς σοβιετικῆς Ρωσίας. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Δνειστέρου καὶ ἔχει ἐμβαδὸν 7.835 τ. χλμ. καὶ κατ. 567.306, ἐξ ὧν 48.5 Οὐκρανοὶ καὶ 30.1 Ρουμᾶνοι. Πρωτεύουσα μέχρι τοῦ 1928 ἦτο ἡ *Μπάλτα*, ἔκτοτε δὲ ἡ πόλις *Μπιρσούλα* (κάτ. 9.973), κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κιέβου-Ὀδησσοῦ. Κύρια προϊόντα τῆς χώρας εἶναι ὁ σῖτος καὶ ὁ ἀραβόσιτος, ἀνεπτυγμένη δὲ τυγχάνει καὶ ἡ κτηνοτροφία. Ἡ δημοκρατία ἀνεκηρύχθη τῷ 1924, σχηματισθεῖσα ἐκ τμημάτων τοῦ κυβερνείου Ὀδησσοῦ, δὲν ἀνεγνωρίσθη δὲ ὑπὸ τῆς Ρουμανίας. Θ. Κ.

**Μολὲ** (Molé), ***Λουδοβῖκος-Ματθαῖος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1781—1855). Διὰ τῆς μελέτης του «Essais de morale et de politique» (1806) προεκάλεσε τὴν προσοχὴν τῆς διοικήσεως ἐπὶ τῶν χρόνων τῆς αὐτοκρατορίας, ἡ ὁποία ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν πλεῖστα ἀνώτερα ὑπουργήματα. Μετὰ τὸ ἑκατονθήμερον μετέσχε τῆς βουλῆς τῶν ὁμοτίμων καὶ ἐψήφισε τὴν θανατικὴν καταδίκην τοῦ στρατάρχου Νέϋ. Διετέλεσεν ἀκολούθως ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν (1817—1818) καὶ ἔπαιξε σπουδαῖον ἐν τῇ βουλῇ ρόλον. Τῷ 1836 ἐσχημάτισε κυβέρνησιν ὑποστηριζομένην ὑπὸ τῆς δεξιᾶς τοῦ κέντρου, τῷ δὲ 1837 κυβέρνησιν συμβιβασμοῦ, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπεκλείσθησαν οἱ ἀρχηγοὶ τῶν κομμάτων· ἀνετράπη ὅμως μετ' ὀλίγον ὑπὸ τῶν Γκιζό, Θιέρσου καὶ Μπαρό, οἱ ὁποῖοι ἐθεώρησαν τὴν πολιτικήν του ἐπηρεαζομένην ὑπὸ τοῦ βασιλέως. Τῷ 1840 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἔκτοτε δὲ ἡ πολιτική του δρᾶσις περιωρίσθη σημαντικῶς. Χ. Δ.

—**Μολὲ** (Molé), ***Ματθαῖος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1584—1656), χρηματίσας ἐπὶ μακρὸν πρόεδρος τοῦ γαλλικοῦ παρλαμέντου. Ὁ πατήρ του *Ἐδουάρδος* εἶχε προκαλέσει τὴν προκήρυξιν τοῦ παρλαμέντου (1593), ἡ ὁποία ἀπηγόρευε τὴν μεταβίβασιν τοῦ γαλλικοῦ στέμματος εἰς ξένους πρίγκιπας καὶ πριγκιπίσσας. Ὁ Ματθαῖος Μολὲ ἔπαιξε σπουδαιότατον ρόλον κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Σφενδόνης, καθ' ἣν ὑπερήσπισε πάντοτε τὴν βασιλείαν, παρ' ὅλην τὴν ἀντίδρασιν τῶν περὶ αὐτόν. Μετὰ τὴν σύλληψιν τῶν Μπλανμενὶλ καὶ Μπρουσσέλ, ἀνετέθη εἰς τὸν Μολὲ νὰ φροντίσῃ διὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν των, ἀποτυχὼν ὅμως εἰς τοῦτο κατηγορήθη σφοδρότατα ὑπὸ τοῦ λαοῦ ὡς προδότης καὶ ποικιλοτρόπως καθυβρίσθη ὑπ' αὐτοῦ, ἐνῷ διήρχετο διὰ τῶν ὁδοφραγμάτων. Μετὰ τὴν ἧτταν τῶν στρατευμάτων τῆς Σφενδόνης ὑπέγραψε μετὰ τῆς αὐλῆς τὴν συνθήκην τοῦ Ρυέϊγ (1649), ἡ ὁποία ἔθεσε τέρμα εἰς τὴν ἐξέγερσιν ταύτην. Βραδύτερον (1651) διωρίσθη σφραγιδοφύλαξ, ἀλλ' ἠρνήθη τὸ ὑπούργημα τοῦτο διὰ νὰ μὴ καταστῇ ἐμπόδιον εἰς τὴν συμφιλίωσιν τῶν ἀντιμαχομένων. Ὅτε ὅμως, μετ' ὀλίγον, ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' ἀνεκηρύχθη ἐνῆλιξ, ἀνέλαβε τὰ καθήκοντα τοῦ σφραγιδοφύλακος, παραμείνας τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του. Κατέλιπε διδακτικώτατα ἀπομνημονεύματα, δημοσιευθέντα ὑπὸ τῆς Ἑταιρείας τῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας (1855). Χ. Δ.

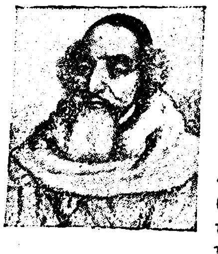

*Ματθαῖος Μολέ.*

— **Μολὲ** (Molé), ***Φραγκῖσκος-Ρενέ.*** Περίφημος Γάλλος ἠθοποιὸς (1734—1802), ἐπὶ τεσσαρακονταετίαν ὅλην ἐργασθεὶς καὶ ἐπιτυχὼν εἰς ὅλα τὰ εἴδη τοῦ δραματολογίου. Τῷ 1761 ἐξελέγη ἑταῖρος τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας, κατὰ δὲ τὸ 1795 μέλος τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου. Ἔγραψε δὲ μονόπρακτον κωμειδύλλιον ὑπὸ τὸν τίτλον «Quiproquo» (1781), ἀναβιβασθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας, ἐγκώμια εἰς διαφόρους ἠθοποιοὺς καὶ ἀπομνημονεύματα ἐκδοθέντα μετὰ τὸν θάνατόν του. Ν. Ι. Λ.

**μόλεμα** (τό)· δημοτ., μόλυνσις: «ἀπὸ μόλεμα τὸ 'παθε τὸ σπυρί».

**μολεμένος,**—*η,* —*ο*· δημοτ., παθ. μετχ. τοῦ *μολεύω*· ὁ παθὼν μόλυνσιν, ὁ εἰς ὃν μετεδόθη νόσος τις: «ἐκεῖ μέσα εἶναι ὅλοι μολεμένοι».

**Μολὲν** (Molène) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Ἀτλαντικοῦ ἐν Βρετάνῃ τῆς Γαλλίας, κειμένη μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Ἅγιος Ματθαῖος καὶ τῆς νήσου Οὐεσσάν. Κάτ. 600, τὸ πλεῖστον ἁλιεῖς. Χ. Δ.

**Μόλεναρ** (Molenaer), ***Ἰωάννης - Μίνσεν.*** Ὁλλανδὸς ζωγράφος ἐξ Ἅαρλεμ (1600—1668). Ἦτο μαθητὴς τοῦ Φρὰνκ Χάλς, εἰς τὰ πρῶτα δὲ ἔργα του μιμεῖται αὐτὸν μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Βραδύτερον ἀπὸ τοῦ 1650 ἤλλαξε τεχνοτροπίαν, τὰ ἔντονα δὲ καὶ διαυγῆ χρώματα τῶν πρώτων πινάκων του διαδέχονται σκοτεινοὶ καὶ διαφανεῖς χρωματισμοί, ὁμοιάζοντες τὴν ὑπὸ τοῦ Ρέμπραντ ἐπηρεασμένην τέχνοτροπίαν τοῦ φὰν Ὄσταντ. Ἐζωγράφησε ρωπογραφίας, τοπία, ἀγροτικὰς σκηνὰς κλπ., κάλλιστον δ' ἔργον του θεωρεῖται πίναξ παριστῶν οἰκογενειακὴν σκηνὴν μὲ τεσσαράκοντα πρόσωπα, σῳζόμενος ἐν Ἄμστερνταμ. Χ. Δ.

**Μολεντζικὸν** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Ἀργιθέας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 281. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Κρανιές, Μαρτιντζικὸν* ἢ *Ματιντζικόν, Φτέρη* καὶ *Χαλβάνια*. Χ. Δ.

**Μολὲς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μεγάλη λιμνοθάλασσα τῆς ΒΔ. Ἀζοφικῆς (πλάτ. 46° 33' Β., μῆκ. 35° 26' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: Sea of Azov) μήκους 14 μιλ. καὶ πλάτους 5, μεταξὺ τῶν λιμένων Γενίτσεσκ καὶ Ὀμπιτόσνα, δεχομένη τὸν ροῦν φερωνύμου ποταμοῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μόλεσχος** (Moleschott), ***Ἰάκωβος - Ἀλβέρτος - Βιλλεβρόρδος.*** Ἰταλὸς φυσιοδίφης, ὁλλανδικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1822 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ρώμῃ τῷ 1893. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἀϊδελβέργης, τοῦ ὁποίου καὶ ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῷ 1845 ἐξήσκησε τὸ ἐπάγγελμά του ἐπὶ διετίαν ἐν Οὐτρέχτῃ, καὶ κατόπιν ἐπανῆλθεν εἰς Ἀϊδελβέργην, ὅπου ἐδίδαξε μέχρι τοῦ 1854 τὴν φυσιολογικὴν χημείαν, τὴν ἀνατομίαν καὶ τὴν ἀνθρωπολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐξεδηλώθη σφοδρὸς ὑπέρμαχος τοῦ ὑλισμοῦ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον τὸν ἠνάγκασε νὰ παραιτηθῇ τῆς θέσεώς του, νὰ φύγῃ ἐκ Γερμανίας καὶ νὰ ἐγκατασταθῇ ἐν Ζυρίχῃ (1856), ὅπου διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας ἐν τῷ Πολυτεχνείῳ. Τῷ 1861, καταλιπὼν τὴν Ζυρίχην, μετέβη εἰς Τουρῖνον, ὅπου, ἀσκῶν τὴν ἰατρικήν, ἐδίδασκε ταυτοχρόνως καὶ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ. Ἐξιταλισθεὶς λόγῳ τῆς μακρᾶς ἐν Ἰταλίᾳ παραμονῆς του, ἐκλήθη τῷ 1878 εἰς Ρώμην ὡς καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας. Ἐκτὸς σπουδαίων ὑπομνημάτων ἐπὶ ζητημάτων τῆς ἰατρικῆς χημείας καὶ τῆς φυσιολογίας, δημοσιευθέντων εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθεῖσαν κατὰ τὸ 1856 ἐπιστημονικὴν ἐπιθεώρησιν: «Untersuchungen zur Naturlehre des Menschen und der Thiere» καὶ εἰς διαφόρους ἄλλας συλλογὰς καὶ ἐπιστημονικὰ περιοδικά, ὁ Μόλεσχοτ ἐξέδωκε καὶ τὰ κάτωθι ἔργα: «Kritische Betrachtung von Liebig's Theorie der Pflanzenerährung» (Harlen 1845), «Physiologie der Nahrungsmittel» (Darmstadt 1850, β' ἔκδ. Giessen 1859), «Der Kleislauf der Lebens» (1852, ε' ἔκδ. Giessen 1887), «Licht und Leben» (Francfort 1856, γ' ἔκδ. 1879), «Kleine Schriften» (Giessen 1880—1887, τ. 2), «K. R. Darvin» (Giessen 1883) κ. ἄ. Ὁ Μόλεσχοτ εἶναι εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἐκπροσώπων τοῦ μηχανικοῦ ὑλισμοῦ κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα. —Ω.

*Ἰάκωβος Μόλεσχοτ.*

**μολεύω,** *ἀόρ. ἐ)μόλεψα—ἐ)μολεύτηκα, παρακ. παθ.* μετχ. *μολεμένος*· κάμνω τινὰ νὰ μολυνθῇ, μεταδίδω νόσημά τι: «ἔπαθε πρῶτα ἡ μάννα, κι' ὕστερα μόλεψε τὰ παιδιά της» ἢ «—μολευτήκανε τὰ παιδιά της».

**μολωχτὸς** *[Ζῳολ.—Κυνηγ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ πτηνοῦ *κορυδαλλὸς ὁ βραχυδάκτυλος*, ἄλλως *μουλωχτίνα, λαγιαχτῆρα, χαμοκυλάδα*. Εἶναι μικρότερος τοῦ ἀγροτικοῦ κορυδαλλοῦ καὶ διαφορετικώτερος αὐτοῦ κατὰ τὸν χρωματισμόν, προσομοιάζοντα πρὸς τὸν τῆς γῆς. Ἐμφανίζεται εἰς τὴν Ἑλλάδα τελευτῶντος τοῦ Μαρτίου ἢ ἀρχομένου τοῦ Ἀπριλίου μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τῶν ἄλλων εἰδῶν

Digitized by Google

τῶν κορυδαλλῶν κατὰ μεγάλα πλήθη διασπειρόμενα πανταχοῦ, κυρίως εἰς τὰς παραλίους πεδιάδας, ἀγαπᾷ τοὺς καλλιεργημένους ἀγρούς, ἰδίως δὲ συχνάζει εἰς τὰς δι' αὐτῶν χαρασσομένας διαβάσεις ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων ἢ ὑποζυγίων τερπόμενος νὰ κυλίηται εἰς τὴν ἄμμον ἢ τὸ χῶμα αὐτῶν, ὅθεν καὶ τὸ κοινόν του ὄνομα *χαμοκυλάδα*. Φωλεοποιεῖ ἐν Ἑλλάδι κατασκευάζων τὴν φωλεάν του ἐκ φυτικῶν ἰνῶν μὲ λευκὸν ἐπίστρωμα χνοὸς ἐκ τῶν σπόρων ἀκάνθης τινὸς προερχόμενον, ἐν ᾗ τίκτει 4—5 ἐπιμήκη πως ᾠὰ ἐρυθρόφαια πρὸς τὸ καφέγαλα μὲ ἁβρότατα στίγματα. Τὸ κελάδημα τοῦ μολυχτοῦ εἶναι ὑπέροχον καὶ περιπαθές. Κατ' αὐτὸ τὸ θέρος, ὅτε ὅλα τὰ πτηνὰ σιγοῦν, καταφεύγοντα εἰς σκιερὰ καὶ δροσερὰ καταφύγια, ἀνέρχεται εἰς τὰ αἰθέρια ὕψη καὶ χωρὶς κἂν νὰ φαίνεται τονίζει μὲ τὸ γλυκύτατον κελάδημά του ὕμνον πρὸς τὸν δημιουργὸν τοῦ φωτὸς καὶ τῆς ζωῆς· τὸ αὐτὸ δὲ πράττει καὶ μὲ τὴν ἀνατολὴν ἢ τὴν δύσιν τοῦ ἡλίου. Κατὰ τὴν λαϊκὴν παράδοσιν κατέχεται τοσοῦτον ὑπὸ τῆς μανίας ν' ἀνέρχεται εἰς τὰ ὕψη καὶ νὰ κελαδῇ εἰς αὐτά, ὥστε καταλαμβάνεται ὑπὸ λύσσης, θνήσκει καὶ πίπτων εἰς τὴν γῆν μεταδίδει τὴν λύσσαν εἰς τοὺς κύνας, ἐάν τις ἤθελε φάγει αὐτόν. Προτοῦ νὰ ἐπέλθῃ ἡ νέκρωσις τῆς φύσεως, τελευτῶντος τοῦ Αὐγούστου ἢ ἀρχομένου τοῦ Σεπτεμβρίου, καταλείπει τὴν ἑλληνικὴν γῆν μετὰ τῶν νεοσσῶν του, χωρῶν πρὸς εὐχειμέρους τόπους. Ἡ σμικρότης του προστατεύεται ὑπὸ τῶν κειμένων ἐν Ἑλλάδι περὶ θήρας διατάξεων, ἀλλ' ἡ κατὰ πλήθη διαβίωσίς του καὶ τὸ τρυφερὸν καὶ εὔγευστον τοῦ κρέατός του δελεάζουσι πολλάκις τοὺς Ἕλληνας κυνηγοὺς εἰς παράβασιν τοῦ νόμου. Φ. Δ. Γ.

**Μολίβαι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Νομαδικὸς λαὸς τῆς Αἰθιοπίας, κατοικῶν μεταξὺ τοῦ Νείλου καὶ τοῦ Ἀραβικοῦ κόλπου (Ἐρυθρᾶς θαλάσσης), πρὸς Β. τῆς Αὐξώμης, περὶ τὸν νῦν ποταμὸν Mareb ἐν Ἀβησσυνίᾳ. Α. Θ. Σ.

**Μολίβια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Τοποθεσία τῆς παραλίου τοῦ Θεσσαλικοῦ Ἀγιοκάμπου, νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου Δερματᾶς. Σ. Ε. Λ.

**Μολιβώδης νῆσος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μία τῶν περὶ τὴν Σαρδηνίαν νήσων (*Πτολ.* Γ, γ, 8). Εἶναι αἱ διὰ διαύλου τανῦν χωριζόμεναι πλούσιαι εἰς γαληνίτην νῆσοι *Σαν Πιέτρο* καὶ *Σάντ' Ἀντιόκο* (πλάτ. 39° 09' Β., μήκ. 8° 13' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 161a: Sardinia southern portion). Ἀπαντᾷ καὶ ἡ γραφὴ *Μολυβώδης*. Σ. Ε. Λ.

**Μολιέρος** (Molière), **Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Ποκελὲν** (Poquelin), ἐπιλεγόμενος —. Ὁ περιφανέστερος τῶν Γάλλων κωμῳδιογράφων, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1622 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τὴν 17 Φεβρουαρίου 1673. Ὁ πατήρ του, *Ἰωάννης Ποκελῖνος*, ἦτο θαλαμηπόλος τῆς βασιλικῆς αὐλῆς, ἡ μήτηρ του ἐκαλεῖτο *Μαρία Κρεσσέ*. Μέχρις ἡλικίας δεκατεσσάρων ἐτῶν ὁ Μολιέρος μόλις ἐγνώριζεν ὀλίγην ἀνάγνωσιν καὶ γραφήν, εἰς οὐδὲν ἄλλο ἀσχολούμενος παρὰ νὰ συχνάζῃ εἰς τὰς παρὰ τὴν Νέαν Γέφυραν τῶν Παρισίων ἐκτελουμένας ἐκ τοῦ προχείρου ὑπὸ σαλτιμπάγκων φάρσας, νὰ παρακολουθῇ ἀδιαλείπτως τὰς πρὸ τῶν εἰσόδων τῶν τότε θεάτρων παριστανομένας κωμικὰς σκηνὰς (parades) καὶ νὰ εἰσχωρῇ λάθρᾳ εἰς τὰ κατὰ τὰς πανηγύρεις τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου καὶ Ἁγίου Γερμανοῦ πηγνύμενα πρόχειρα παραπήγματα, ἐν οἷς ἐξετελοῦντο ἐκ τοῦ προχείρου διάφορα κωμικὰ παίγνια. Ἀλλὰ καὶ ὁ ἐκ μητρὸς πάππος του, Λουδοβῖκος Κρεσσέ, φιλοθεάμων εἰς ἄκρον, συχνότατα ὡδήγει τὸν νεαρὸν θεατρόφιλον εἰς τὸ Βουργουνδικὸν μέγαρον, τὸ πρῶτον δηλονότι ἐπίσημον θέατρον τῆς Γαλλίας, ἐν ᾧ ἐδίδοντο τότε ὑπὸ ἠθοποιῶν ἐξ ἐπαγγέλματος τὰ ὡραιότερα τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἔργα. Ἔκτοτε χρονολογεῖται ἡ μεγάλη πρὸς τὸ θέατρον κλίσις του, ἥτις δὲν τὸν ἐγκατέλειψε καὶ ὅταν, κατόπιν πολλῶν παρακλήσεών του, ἐπέτυχε παρὰ τοῦ πατρός του νὰ εἰσαχθῇ εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Κλερμόν, τὸ μετέπειτα Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου, ἐν ᾧ, διαμείνας ἐπὶ μίαν πενταετίαν, διεκρίνετο πάντοτε μεταξὺ τῶν συμμαθητῶν του, ἀλλὰ καὶ κρυφίως κατεγίνετο περὶ τὴν μελέτην καὶ μετάφρασιν τῶν Λατίνων κωμῳδιογράφων. Ἀποπερατώσας τὰς ἐν τῷ κολλεγίῳ σπουδάς του (1642),

*Ὁ Μολιέρος εἰς τὸν ῥόλον τοῦ Σγαναρέλλου.*

μετὰ μεγάλης του λύπης ἠναγκάσθη, τῇ ἐπιμόνῳ ἀπαιτήσει τοῦ πατρός του, νὰ τὸν διαδεχθῇ εἰς ἣν θέσιν κατεῖχε παρὰ τῷ Λουδοβίκῳ ΙΓ' ὡς θαλαμηπόλος καὶ ν' ἀκολουθήσῃ τὸν βασιλέα εἰς τὸ περίφημον ταξίδιον τῆς Ναρβόνης. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους τῷ 1643, καθ' ἣν ἐποχὴν δηλονότι ἐπεκράτει τὸ ἰταλικὸν θέατρον μὲ τὰς ἐκ τοῦ προχείρου κωμῳδίας του καὶ τὰς φάρσας του, καὶ μὴ δυνάμενος ν' ἀντιστῇ εἰς τὴν ἀκαταμάχητον ἕλξιν ἣν ἤσκει ἐπ' αὐτοῦ ἡ σκηνή, συνεταιρίσθη μετ' ἄλλων ὁμηλίκων του καὶ κατήρτισε θίασον ὑπὸ τὴν διεύθυνσίν του, τὸν ὁποῖον καὶ ὠνόμασε: «Τὸ ἐπιφανὲς θέατρον» (L'illustre théâtre). Τὴν αὐτὴν ἐποχήν, διὰ νὰ μὴ ἀτιμάσῃ τὸ πατρικόν του ὄνομα *Ποκελέν*, ἀνερχόμενος τὴν σκηνήν, τὸ ἀντήλλαξε μὲ τὸ τοῦ *Μολιέρου*. Τὸ «Ἐπιφανὲς θέατρον», ἀφοῦ ἔδωσεν ἀρκετὰς παραστάσεις, μὴ δυνηθὲν νὰ ἀντεπεξέλθῃ εἰς τὰ πολλὰ ἔξοδα, ἐχρεοκόπησε καὶ ὁ Μολιέρος, μὴ δυνάμενος νὰ ἐκτελέσῃ τὰς ὑποχρεώσεις του, ἐφυλακίσθη κατὰ τὸν Αὔγουστον τοῦ 1645 εἰς τὸ Chatelet. Ὅταν, μετὰ καιρόν, ἀπεφυλακίσθη δι' ἐγγυήσεως, ἀνεχώρησεν ἐκ Παρισίων, διὰ νὰ ἐπανέλθῃ μετά τινα ἔτη ἐπιφανὴς πλέον. Μετὰ τὴν ἐκ Παρισίων ἀναχώρησίν του τὰ ἴχνη αὐτοῦ χάνονται ἐπὶ πολλὰ ἔτη. Τὸ μόνον γνωστὸν εἶναι ὅτι εἶχε μεθ' ἑαυτοῦ ἠθοποιούς τινας τοῦ «Ἐπιφανοῦς θεάτρου»: τὸν de Parc, ὅστις ἐπωνο-

*Ἰωάννης Μολιέρος.*
[Προσωπογραφία τοῦ Μινιάρ.]

μάζετο Gros-René, τὰς δύο Béjart καὶ τὴν ἀδελφήν των Μαγδαληνήν, ἥτις ὑπῆρξε καὶ ἐρωμένη του. Ἔπαιζαν τότε τραγῳδίας, κωμῳδίας καὶ φάρσας, κατὰ τὰς ἀνάγκας τῆς στιγμῆς καὶ τὰς ἀπαιτήσεις τῶν θεατῶν. Κατὰ τὸ διάστημα αὐτὸ ἔγραψε τὴν τραγῳδίαν του «Ἡ Θηβαΐς», τῆς ὁποίας οὐδὲ ἴχνος ἐσώθη. Τὸν Μολιέρον τὸν εὑρίσκομεν μετὰ βεβαιότητος εἰς Νάντην τῷ 1648, κατόπιν εἰς Βορδώ, ὅπου ἔπαιξε τὴν «Θηβαΐδα» του, καὶ τέλος εἰς Λυών, ὅπου ἔγραψε καὶ ἔπαιξε τὴν πρώτην «κανονικήν», ὡς τὴν ὀνομάζει ὁ Βολταῖρος, κωμῳδίαν του «Ὁ ἀπερίσκεπτος» (L' étourdi), τῆς ὁποίας τὴν ὑπόθεσιν καὶ πολλὰς σκηνὰς ἐδανείσθη ἀπὸ τὴν «Angelica» τοῦ Φαβρικίου ντὲ Φορνάρις, τὸν «Inavvertito» τοῦ Νικολὸ Μπαρμπιέρι καὶ τὴν «Emilia» τοῦ Λουδοβίκου Γκρότο, ἥτις καὶ αὐτὴ ἦτο ἀπομίμησις τοῦ «Ἐπιδίκου» τοῦ Πλαύτου. Ὁ Μολιέρος δηλαδὴ διὰ τὴν σύνθεσιν τῆς πρώτης του κανονικῆς κωμῳδίας μετεχειρίσθη τὸν συμφυρμὸν (contaminatio) τῶν Λατίνων, τουτέστι τὴν συγχώνευσιν δύο ἢ περισσοτέρων κωμῳδιῶν εἰς μίαν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐμελέτησε, καθ' ὃν χρόνον ἐσπούδαζεν ἐν τῷ κολλεγίῳ. Τὴν ἐποχὴν αὐτὴν ὁ Μολιέρος δὲν εἶχεν ἀκόμη συνείδησιν ἑαυτοῦ. Ἥρπαζε δεξιὰ καὶ ἀριστερά, ἐμιμεῖτο ὅ,τι τοῦ ἤρεσκεν, ἐστιχούργει ὅπως τοῦ ἤρχετο καλύτερα. Πάντως ἀπὸ τοῦ πρώτου του αὐτοῦ ἔργου ἐφάνη ὁ μέλλων μέγας κωμῳδιογράφος. Ἡ δευτέρα, κατὰ χρονολογικὴν σειράν, κανονικὴ κωμῳδία του εἶναι «Τὸ ἐρωτικὸν πεῖσμα», ἣν ἔγραψεν ἐν Béziers τῷ 1656 κατ' ἀπομίμησιν τῆς ἰταλικῆς κωμῳδίας «L' interesse» τοῦ Nicolo Secchi, τῆς ἐπίσης ἰταλικῆς κωμῳδίας «L' amoroso sdegno» τοῦ Braccioli καὶ τῆς ἰσπανικῆς «Ὁ σκύλλος τοῦ κηπουροῦ» τοῦ Λόπε δὲ Βέγα. Κυρίως ὅμως τὴν βασικὴν ἰδέαν τῆς κωμῳδίας του ὀφείλει ὁ Μολιέρος εἰς τὸν Ὁράτιον καὶ τὴν θαυμασίαν αὐτοῦ ᾠδὴν «Donec gratus eram tibi», τῆς ὁποίας ὡραιοτάτην καὶ πλήρη ἀπομίμησιν παρενέβαλε καὶ μετὰ 14 ἔτη (1670) ἐν τῇ κωμῳδίᾳ του «Les amants magnifiques». Πρὶν ἢ γράψῃ τὰς ἀνωτέρω δύο κωμῳδίας του, ὁ Μολιέρος, καθ' ὃν χρόνον περιήρχετο τὰς ἐπαρχίας, ἔγραψε κατ' ἀπομίμησιν τῶν ἐκ τοῦ προχείρου ἰταλικῶν κωμῳδιῶν καὶ τὰς ἑξῆς ἐννέα μικρὰς φάρσας: «Ὁ ἐρωτευμένος ἰατρός», διὰ τὴν ἀπώλειαν τῆς ὁποίας ἐξέφρασε τὴν λύπην του ὁ Μπουαλώ, ὅστις ἔτυχε νὰ τὴν ἴδῃ παριστανομένην, «Οἱ τρεῖς ἐπίζηλοι ἰατροί», «Ὁ δάσκαλος», «Ὁ αὐτοσχεδιαστής», «Gorgibus dans le sac», «Le grand Benêt de fils», «La casaque», «Ὁ ἱπτάμενος ἰατρὸς» καὶ «Ἡ ζηλοτυπία τοῦ Μουντζούρη», ἐξ ὧν δὲν σῴζονται παρὰ αἱ δύο τελευταῖαι μόνον.

Μετὰ τὸ Béziers, ὁ Μολιέρος περιῆλθεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη τὸ Languedoc. Ἐν τῷ μεταξύ, κατὰ περιόδους, ἐπεσκέφθη πολλάκις καὶ κρυφίως τοὺς Παρισίους, ἕως οὗ τέλος κατώρθωσε, διὰ τοῦ παλαιοῦ του συμμαθητοῦ πρίγκιπος ντὲ Κοντί, νὰ παρουσιασθῇ εἰς τὴν βασιλομήτορα καὶ τὸν ἀδελφὸν τοῦ βασιλέως καὶ δι' αὐτῶν νὰ λάβῃ τὴν ἄδειαν νὰ δίδῃ θεατρικὰς παραστάσεις ἐνώπιον τοῦ νεαροῦ τότε βασιλέως, ὅστις καὶ ἀνήγειρεν ἐπὶ τούτῳ ἴδιον θέατρον ἐν τῷ παλαιῷ ἀνακτόρῳ τοῦ Λούβρου, ἐν ᾧ ὁ Μολιέρος, πρὸς μεγάλην ἀπελπισίαν τῶν ἠθοποιῶν τοῦ βασιλέως, ἔπαιξε τὴν τραγῳδίαν τοῦ Κορνηλίου ὁ «Νικομήδης», μετὰ τὸ τέλος τῆς ὁποίας ἐζήτησε τὴν ἄδειαν νὰ παίξῃ καὶ τὴν ἀπολεσθεῖσαν μικρὰν φάρσαν του «Ὁ ἐρωτευμένος ἰατρός», ὅπερ καὶ τοῦ ἐπετράπη. Τόσον ἐνεθουσιάσθη ἐξ αὐτῆς ὁ βασιλεύς, ὥστε μετ' ὀλίγον τοῦ ἐπέτρεψε νὰ παίζῃ ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ Petit-Bourbon, ἐναλλὰξ μετὰ τοῦ παριστάνοντος τότε ἐν αὐτῷ ἰταλικοῦ θιάσου. Ἐν τῷ θεάτρῳ αὐτῷ ἤρχισε τὰς παραστάσεις του ὁ Μολιέρος διὰ τοῦ «Ἀπερισκέπτου» καὶ τοῦ «Ἐρωτικοῦ πείσματος». — Τοσοῦτον δὲ αἱ ἐν αὐτῷ ἐπιτυχίαι του ἐτάραξαν τοὺς ἀντιπάλους του ἠθοποιοὺς τοῦ βασιλέως, ὥστε δύο μῆνας μετὰ τὴν ἐν τῷ Petit-Bourbon ἐγκατάστασίν του, κατώρθωσαν διὰ ῥαδιουργιῶν νὰ δοθῇ διαταγὴ πρὸς κατεδάφισιν τῆς αἰθούσης. Διαταγῇ ἐν τούτοις τοῦ βασιλέως, εἰς ὃν παρεπονήθη ὁ Μολιέρος, ἐδόθη εἰς αὐτὸν ἡ αἴθουσα τοῦ Palais-Royal. Ἐξασφαλίσας ἐφεξῆς τὴν προστασίαν τοῦ βασιλέως καὶ δι' αὐτῆς τὴν εὔνοιαν τῶν αὐλικῶν, ἔγραψε τῷ 1659 τὰς «Γελοίας κομψευομένας» (Les précieuses ridicules), δι' ὧν ἐσατίριζε τὴν ἐπιτήδευσιν τῶν τρόπων καὶ τῆς γλώσσης τῶν θαμώνων τοῦ μεγάρου Ραμπουγιέ. Τὸ ἑπόμενον ἔτος 1660 ἔγραψε καὶ ἐδίδαξε τὸν «Σγαναρέλλον ἢ κατὰ φαντασίαν κερατᾶν», ἐν ᾗ παρέλαβε τὴν ἰδέαν μιᾶς σκηνῆς ἐκ τοῦ «Jodelet duelliste» τοῦ Σκαρὸν· μετ' αὐτήν, πρὸς ψυχαγωγίαν ἰδίως τῆς αὐλῆς, τὸν «Δὸν Γκαρσίαν τῆς Ναβάρρας», ἐν ᾗ ἀνέπτυξε τὸ αὐτὸ μὲ τὴν ἀνωτέρω κωμῳδίαν θέμα, ἀλλ' ἄνευ ἐπιτυχίας· κατόπιν παρέστησε τὴν 24 Ἰουνίου 1661 «Τὸ σχολεῖον τῶν συζύγων», κωμῳδίαν, τῆς ὁποίας ἡ μεγάλη ἐπιτυχία τὸν ἀπεζημίωσε διὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ «Δὸν Γκαρσία», ἀλλὰ καὶ ἐξησφάλισεν ἐς ἀεὶ τὴν φήμην του· εἶτα ἔγραψε τοὺς «Ἐνοχλητικοὺς» (Les facheux), ἥτις εἶναι σάτιρα μᾶλλον ἢ κωμῳδία, ἐν ᾗ ἕκαστος εἶδε τὴν εἰκόνα τοῦ πλησίον του. Σημειωτέον ὅτι ἡ τελευταία αὕτη κωμῳδία εἶναι ἡ πρώτη κατὰ χρονολογικὴν σειρὰν τῶν δεκατεσσάρων «μετὰ παραστατικῶν χορῶν κωμῳδιῶν» (comédies-ballets), ἃς κατόπιν ἔγραψε.

Τὸ ἑπόμενον ἔτος ὁ Μολιέρος ἐνυμφεύθη μίαν τῶν ἠθοποιῶν τοῦ θιάσου του, τὴν Ἀρμάνδην Μπεζάρ, ἣν οἱ σύγχρονοί του πάντες συμφωνοῦν ὅτι τὴν χαρακτηρίζει ἐν τῇ ἑπομένῃ περικοπῇ τοῦ «Ἀρχοντοχωριάτη» του (Le bourgeois gentilhomme): «Ἔχει μικρὰ μάτια, ἀλλὰ πλήρη πυρός, μεγάλο τὸ στόμα, ἀλλ' ὅταν μειδιᾷ εἶναι μαγεία, μικρὸν τὸ ἀνάστημα, ἀλλ' εὐκίνητον καὶ εὔχαρι, ἔχει λεπτὸν τὸ πνεῦμα καὶ ἁβρότατον κτλ.». Τὴν οὕτως ἀπεικονιζομένην γυναῖκα τὴν ἠγάπησε περιπαθῶς, πλὴν ὑπῆρξεν ἐξ αὐτῆς δυστυχέστατος. Ἐζήλευε καὶ εἶχε δικαίας πρὸς τοῦτο ἀφορμάς, καθόσον δὲν εὗρεν ἐν αὐτῇ οὔτε πίστιν, οὔτε ἀγάπην, ἀλλ' οὐδὲ καὶ σέβας, οὔτε κἂν πρὸς τὸ ἔνδοξον αὐτοῦ ὄνομα, τὸ ὁποῖον παρῄτησεν εὐθὺς μετὰ τὸν θάνατόν του, ὑπανδρευθεῖσα ἄσημόν τινα ἠθοποιόν. Ἐκ τῆς συζύγου του αὐτῆς ὁ Μολιέρος ἀπέκτησε δύο υἱούς, τὸν πρῶτον τῶν ὁποίων ἐβάπτισεν ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' μετὰ τῆς Ἑρριέττης τῆς Ἀγγλίας, καὶ μίαν θυγατέρα, ἥτις καὶ μόνη ἐπέζησε τοῦ πατρός της. Μετὰ τὸν γάμον του ἐδίδαξε, τὴν 26 Δεκεμβρίου 1662, «Τὸ σχολεῖον τῶν γυναικῶν», κωμῳδίαν δι' ἧς ἐγκαινιάζετο ἐν τῷ γαλλικῷ θεάτρῳ ἡ μεγάλη ψυχολογικὴ κωμῳδία, ἐπιτυχοῦσα καὶ αὐτὴ ὅπως «Τὸ σχολεῖον τῶν συζύγων», πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν τοῦ συνεχώρησαν οἱ πολυπληθεῖς ἀντίπαλοί του, οἵτινες καὶ τοῦ ἐπετέθησαν λάβροι. Εἰς αὐτοὺς ἀπήντησε διὰ δύο ἀλληλοδιαδόχων ἔργων του, τῆς «Κριτικῆς τοῦ σχολείου τῶν γυναικῶν» (1 Ἰουνίου 1663), καὶ τοῦ «Αὐτοσχεδιάσματος τῶν Βερσαλλιῶν» (14 Ὀκτωβρίου 1663), τὰ ὁποῖα ἦσαν κυρίως δραματικοὶ διάλογοι παρὰ κωμῳδίαι. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἔγραψε τὸν «Βίαιον γάμον», μονόπρακτον φάρσαν, τὴν «Princesse d'Élide», κωμῳδίαν μετὰ παραστατικῶν χορῶν, τῷ 1665 τὸν «Δὸν Ζουάν», τὴν πρώτην του κωμῳδίαν χαρακτήρων, καὶ τὸν «Ἔρωτα ἰατρόν». Τῷ 1666 ἔδωσε τὴν θαυμασίαν κωμῳδίαν του «Ὁ Μισάνθρωπος», κατὰ τὴν πρώτην παράστασιν τῆς ὁποίας τὸ κοινὸν ἔμεινεν ἐντελῶς ψυχρόν.

Digitized by Google

σάνθρωπος» εἶναι αὐτὸς ὁ Μολιέρος, εἶναι ἡ ζῶσα διαμαρτυρία χρηστοῦ ἀνδρὸς ἀσχάλλοντος κατὰ τῶν ἀτασθαλιῶν τῆς κοινωνίας. Ἐμφανίζων ἀπὸ σκηνῆς τὴν εὐγενῆ καὶ γενναίαν ψυχὴν τοῦ Παλαίμονος ἀντιπαλαίουσαν πρὸς τὴν κουφότητα καὶ τὴν ἀπιστίαν γυναικὸς ἐρωτοτροπούσης πρὸς πάντας τοὺς περὶ αὐτήν, ὁ Μολιέρος διηγεῖτο τὴν ἰδίαν αὐτοῦ ἱστορίαν, ἤνοιγε τὴν ἰδίαν αὐτοῦ καρδίαν. Μετά τινας παραστάσεις ἐν τούτοις τὸ νέον ἔργον τοῦ Μολιέρου ἐπέτυχε. Μετὰ τὸν «Μισάνθρωπον» ἔδωσε τὸν «Ἀκούσιον ἰατρόν», μίαν ἀπὸ τὰς ὡραιοτέρας φάρσας του, τὴν «Mélicerte», μετριώτατον ποιμενικὸν ἔργον, γραφὲν διά τινα ἑορτὴν τῆς αὐλῆς, τὸν «Σικελικὸν ἢ τὸν ἔρωτα ζωγράφον» καὶ μετ' αὐτὸν τὸ ἀριστούργημά του, τὸν «Ταρτοῦφόν» του, τοῦ ὁποίου ὁ βασιλεὺς ἤκουσεν ἐν Βερσαλλίαις τὰς τρεῖς πράξεις, αἵτινες ἐπροξένησαν εἰς αὐτὸν καὶ τοὺς αὐλικοὺς βαθυτάτην ἐντύπωσιν. Διὰ τῆς κωμῳδίας του αὐτῆς ὁ Μολιέρος δὲν ἐσατίριζε τὰ ἐλαττώματα τῆς κοινωνίας, ὅπως ἐν τῷ «Μισανθρώπῳ» του, οὐδὲ τὰς γελοιότητας αὐτῆς ὅπως ἐν τοῖς «Ἐνοχλητικοῖς». Δι' αὐτῆς ἐπετίθετο λαῦρος κατὰ τῶν ψευδευλαβῶν, οἵτινες καὶ ἐκίνησαν πάντα λίθον ν' ἀπαγορευθῇ ἡ ἀπὸ σκηνῆς διδασκαλία της, ὅπερ καὶ ἐπέτυχον, ἐνῷ ἐν τῷ μεταξὺ ἐπαίζετο ἄλλη τις ἀνόσιος κωμῳδία, ὁ «Scaramouche ermite»: «Θὰ ἐπεθύμουν νὰ μάθω, εἶπεν ὁ βασιλεὺς ἐξερχόμενος τῆς παραστάσεως, διατὶ οἱ σκανδαλιζόμενοι τοσοῦτον ἀπὸ τὴν κωμῳδίαν τοῦ Μολιέρου, δὲν λέγουν τίποτε περὶ τοῦ «Scaramouche»; —Διότι, ἀπεκρίθη ὁ μέγας Κονδέ, ὁ μὲν «Scaramouche» ἐμπαίζει τὰ ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ τὴν θρησκείαν, διὰ τὰ ὁποῖα δὲν ἐνδιαφέρονται ποσῶς οἱ κύριοι αὐτοί, διὰ δὲ τῆς κωμῳδίας τοῦ Μολιέρου ἐμπαίζονται αὐτοί, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν μποροῦν ν' ἀνεχθοῦν». Τέλος, μετὰ πολλὰς περιπετείας, ὁ βασιλεὺς ἐπέτρεψε τὴν παράστασιν τοῦ «Ταρτούφου», ἥτις καὶ ἐδόθη τὴν 5 Αὐγούστου 1667. Ἐν τούτοις, τὴν ἐπομένην, κατὰ διαταγὴν τοῦ προέδρου τοῦ Παρλαμέντου, ἀπηγορεύθη ἐκ νέου ἡ παράστασις. Μετὰ τὸν «Ταρτοῦφον», ἐδίδαξε τὸν μὲν Ἰανουάριον τοῦ 1668 τὸν «Ἀμφιτρύωνα» κατ' ἀπομίμησιν τῆς ὁμωνύμου κωμῳδίας τοῦ Πλαύτου, τὸν δὲ Σεπτέμβιον τοῦ αὐτοῦ ἔτους τὸν «Φιλάργυρον», διὰ τὸν ὁποῖον ὁ Γκαῖτε εἶπεν, ἀπαντῶν τρόπον τινὰ εἰς τὰς ἐπικρίσεις τοῦ Σλέγκελ, ὅτι «εἶναι κατ' ἐξοχὴν μέγα ἔργον, ἐνέχον ὑψίστην τραγικότητα». Τὸ αὐτὸ ἔτος ἔγραψε τὸν «Γεώργιον Θαυδῖνον», τῷ 1669 τὸν «Ἀγαθόπουλον» (Monsieur de Pourceaugnac), τῷ 1670 τὸν «Ἀρχοντοχωριάτην» (Le bourgois gentilhomme), τῷ 1677 τὰς «Πανουργίας τοῦ Σκαπίνου», τὸ αὐτὸ ἔτος τὴν «Κόμισσαν ντ' Ἐσκαρμπανιᾶ», τῷ 1672 τὸ τελευταῖόν του ἀριστούργημα, τὰς «Λογίας γυναῖκας» καὶ τέλος τὸν «Κατὰ φαντασίαν ἀσθενῆ», κατὰ τὴν τετάρτην παράστασιν τοῦ ὁποίου (17 Φεβρουαρίου 1673) καὶ ἀπέθανε. Τὴν ἑσπέραν ἐκείνην ὁ Μολιέρος, ὅστις ἀπὸ μακροῦ χρόνου εἶχε προσβληθῇ ὑπὸ στηθικοῦ νοσήματος, ἦτο πολὺ ἀσθενὴς καὶ πολλοὶ τὸν ἀπέτρεπον νὰ παίξῃ. «Ἀδύνατον, ἀπεκρίθη· ὑπάρχουν πενῆντα πτωχοὶ ἐργάται ποῦ δὲν ἔχουν παρὰ τὸ μεροδούλι τους διὰ νὰ ζήσουν· τί θὰ γίνουν ἂν δὲν παίξω;» Καὶ ἔπαιξε. Ἀλλ' ἦτο τόσον ἐξηντλημένος, ὥστε προφέρων τὴν λέξιν juro (ὀμνύω) κατελήφθη ὑπὸ σφοδρῶν σπασμῶν, τοὺς ὁποίους προσεπάθησε νὰ μετατρέψῃ εἰς μειδίαμα. Μετὰ τὴν παράστασιν, κακῶς ἔχων, μετεφέρθη οἴκαδε κατεχόμενος ὑπὸ σφοδροῦ βηχός, καθ' ὃν καὶ ἐξέπνευσε τὴν δεκάτην ἑσπερινὴν ὥραν εἰς ἡλικίαν πεντήκοντα καὶ ἑνὸς ἐτῶν. Ἡ ἐκκλησιαστικὴ ἀρχή, μνησικακήσασα ἠρνήθη τὴν ἐκκλησιαστικὴν κηδείαν εἰς τὸ λείψανόν του, ἀλλ' ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ', εἰς ὃν προσέτρεξεν ἡ χήρα του, παρήγγειλεν εἰς τὸν ἀρχιεπίσκοπον τῶν Παρισίων νὰ ἐπιτρέψῃ τὴν θρησκευτικὴν ταφήν, ἥτις καὶ ἐγένετο, ἀλλὰ διὰ νυκτὸς καὶ ἄνευ οὐδεμιᾶς πομπῆς. Πλῆθος ὅμως λαοῦ συνώδευσε τὸν νεκρὸν μέχρι τοῦ τάφου του. Τῷ 1817 τὰ ὀστᾶ του μετεκομίσθησαν ἐν πομπῇ εἰς τὸ κοιμητήριον τοῦ Πὲρ-Λασαίζ, τῷ δὲ 1778 ἡ Γαλλικὴ Ἀκαδημία ἐτοποθέτησεν ἐν τῇ μεγάλῃ τῶν συνεδριάσεων αὐτῆς αἰθούσῃ τὴν προτομήν του.

Τὸ ἔργον τοῦ Μολιέρου, ποικιλώτατον καὶ εὐρύτατον, δὲν ἦτο βεβαίως καθ' ὁλοκληρίαν νέον. Ἐδανείσθη ὁ ποιητής του ὑποθέσεις καὶ σκηνὰς καὶ ἀπὸ τὸν Τερέντιον καὶ ἀπὸ τὸν Πλαῦτον καὶ ἀπὸ τοὺς Ἱσπανοὺς κωμῳδιογράφους καὶ ἀπὸ τὴν ἐκ τοῦ προχείρου, ἀλλὰ καὶ γραπτὴν ἰταλικὴν κωμῳδίαν, καὶ ἀπὸ τὸν Ραμπελαί, τὸν Ροτροῦ, τὸν Σκαρρόν, τὸν Συρανὸ ντὲ Μπερζερὰκ καὶ ἄλλους. Ἀλλὰ δὲν τὰς ἐμιμεῖτο ἁπλῶς, ὡς τὸν κατηγόρησαν· τὰς ἀνέπτυσσε, τὰς συνεπλήρου διὰ τῆς ἀφθάστου φαντασίας του, ἔδιδεν εἰς αὐτὰς ἴδιον ὅλως χρῶμα καὶ ἐδημιούργει χαρακτῆρας τοσοῦτον ἐντελεῖς, ὥστε τινὲς τούτων παρέμειναν τυπικοὶ καὶ παροιμιώδεις, κατέστησαν δὲ τὸν δημιουργόν των ἕνα τῶν ἐξοχωτέρων ποιητῶν ὅλων τῶν αἰώνων, καὶ οὐχὶ μόνον τοῦ αἰῶνος τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'. Ὁ Μολιέρος, ἐξ ἄλλου, πρὶν ἢ γίνῃ διάσημος ποιητής, διεκρίθη ὡς ἠθοποιός, χωρὶς ἐν τούτοις νὰ ἐπιτυγχάνῃ ἐν τῇ τραγῳδίᾳ, ἂν καὶ εἶχε τὴν ἀδυναμίαν ν' ἀγαπᾷ τοὺς τραγικοὺς ῥόλους· ἦτο ὅμως ὑπέροχος ἐν τῇ κωμῳδίᾳ. «Ἦτο, ἔγραφε σύγχρονός τις περὶ αὐτοῦ, κωμικὸς ἀπὸ κεφαλῆς μέχρι ποδῶν· τὰ πάντα ἐν αὐτῷ ὡμίλουν, καὶ τὸ βάδισμα, καὶ τὸ μειδίαμα, καὶ ἡ ῥιπὴ τοῦ βλέμματος, καὶ ἡ κίνησις τῆς κεφαλῆς, λέγοντα εἰς τὸν θεατὴν ἐν μιᾷ καὶ μόνῃ σκηνῇ περισσότερα, παρ' ὅσα ἐπὶ ὁλόκληρον ὥραν ὁ δεινότατος τῶν ῥητόρων».

Τὸ ἔργον τοῦ Μολιέρου, σχεδὸν ὁλόκληρον, μετεφράσθη εἰς τὴν ἑλληνικήν. Πρῶτος ὁ Κ. Κοκκινάκης μετέφρασεν ἐμμέτρως τὸν «Ταρτοῦφον» τῷ 1815, ὃν καὶ ἐξέδωκεν ἐν Βιέννῃ ἐκ τοῦ τυπογραφείου τοῦ Ἰωάν. Βαρθ. Τσβεκίου. Τὸ ἴδιον ἔργον μετέφρασε κατόπιν ἐμμέτρως καὶ ὁ Ἰ. Ἰσιδ. Σκυλίσσης, ἐκδώσας αὐτὸ ἐν Σμύρνῃ τῷ 1851. Ἡ νέα αὕτη μετάφρασις, καίτοι καλυτέρα ὑπὸ πολλὰς ἐπόψεις τῆς τοῦ Κοκκινάκη, δὲν δύναται οὐχ ἧττον νὰ θεωρηθῇ ἐπιτυχὴς καὶ διὰ τὸ ἀνώμαλον τοῦ λεκτικοῦ της καὶ διὰ τὴν ἐν πολλοῖς, ὡς μὴ ὤφελεν, ἀλλοίωσιν τοῦ πρωτοτύπου. Ὀλίγα ἔτη ὕστερον, τῷ 1871, ὁ Σκυλίσσης ἐξέδωκε καὶ πάλιν τὸν «Ταρτοῦφον» ἐπιδιωρθωμένον, μετὰ τοῦ «Φιλαργύρου» καὶ τοῦ «Μισανθρώπου» ὑπὸ τὸν κοινὸν τίτλον: «Μολιέρου ἄριστα ἔργα», ἐν Τεργέστῃ. Μετὰ τὴν πρώτην ἔκδοσιν τοῦ Σκυλίσση, μετέφρασε τὸν «Ταρτοῦφον» εἰς πεζὸν λόγον καὶ ὁ Ι.Μ.Ρ., συντομεύσας αὐτὸν εἰς τρεῖς πράξεις, χάριν τῶν Ἑλλήνων ἠθοποιῶν, «μὴ ἀρεσκομένων εἰς μακρὰ καὶ ἔμμετρα δράματα». Τῷ 1816 μετέφρασε καὶ ἐξέδωκεν ἐν Βιέννῃ τὸν «Φιλάργυρον» ὁ Κ. Οἰκονόμου ὁ ἐξ Οἰκονόμων, ὃν καὶ ἐξέδωκεν ἐκ δευτέρου τῷ 1835 ἐν Σμύρνῃ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἑξηνταβελώνης», ὑφ' ὃν καὶ ἐπαίχθη ἀπὸ τῆς ἐν Ἀθήναις σκηνῆς τῷ 1836. Τῷ 1827 ὁ Κ. Κυριακὸς Ἀριστέας μετέφρασεν εἰς «τὴν καθομιλουμένην ἡμῶν διάλεκτον», τὸν «Γεώργιον Δανδῖνον ἢ τὸν Ἐντροπιασμένον σύζυγον». Τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Γεώργιος Δαντῖνος ἢ Ὁ προδοθεὶς σύζυγος» μετέφρασαν καὶ ἐξέδωσαν ἐν Ἀθήναις, τῷ 1858, οἱ Π. Ψ. καὶ Λ. Γ. Λ. Ἐκ τῶν δύο αὐτῶν μεταφράσεων ἡ πρώτη ἀνεβιβάσθη ἐπὶ σκηνῆς ἐν Ἀθήναις τῷ 1837. Τῷ 1834 ὁ Κ. Ράμφος μετέφρασε καὶ ἐξέδωκεν ἐν Αἰγίνῃ τὸν «Κατὰ φαντασίαν ἀσθενῆ». Πολλὰς ἁμαρτίας εἶχεν ἐν Ἑλλάδι ὁ «Monsieur de Pourceaugnac». Τὴν κωμῳδίαν αὐτὴν μετέφρασε τῷ 1848 ἀνώνυμός τις ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ κύριος Γουρουνάκης». Δύο ἔτη κατόπιν, τῷ 1850, ἄλλος τις μετριοφρόνως κρυπτόμενος ὑπὸ τὰ ἀρχικὰ στοιχεῖα τοῦ ὀνόματός του Α. Π. Ο. τὴν μετέφρασεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ κύριος Πουρσονιακός». Τὴν μετάφρασιν αὐτήν, τῷ 1863, ὁ θιασάρχης Ἰ. Ν. Κούγκουλης «παρέφρασε καὶ διεσκεύασε διὰ τὴν ἑλληνικὴν σκηνὴν» ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Σκαμπαρδόνιος». Ἐν τῷ μεταξὺ ἄλλος τις «διεσκεύασε» τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Σκαπετουράκης». Τέλος, τὰς δύο ἀνωτέρω παραφράσεις «μετέφερεν εἰς τὰ καθ' ἡμᾶς ἤθη καὶ ἔθιμα» ὁ θιασάρχης Π. Σούτσας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀγαθόπουλος ὁ Ξηροχωρίτης». Ὑπὸ τὸν τίτλον αὐτὸν ἡ πολυπαθὴς κωμῳδία τοῦ Μολιέρου, ἀλλοιωθεῖσα ἐν πολλοῖς ὑπὸ τῶν διαφόρων μεταφραστῶν της, ἐπαίχθη ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν ἀπὸ τῆς ἑλληνικῆς σκηνῆς. Τῷ 1847 ἐξεδόθησαν ἐν Κωνσταντινουπόλει «Αἱ πανουργίαι τοῦ Σκαπίνου, κωμῳδία μεταφρασθεῖσα ἐκ τοῦ γαλλικοῦ μέ τινας παραλλαγὰς ἁρμοδίας ἐπὶ τοῦ κειμένου». Τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν μετέφρασε καὶ ἐξέδωκεν ἐν Κεφαλληνίᾳ τῷ 1853 ὁ Ὄθων Σ. Πυλαρινὸς καὶ τέλος τῷ 1863 ἐν Σύρῳ ὁ Ἰ. Ν. Κούγκουλης ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Πεταλούδας», ἐξέδωκε δὲ ταύτην ἐκ νέου τῷ 1876 ἐν Σύρῳ ὁ Ἰ. Χούμης ὑπὸ τὸν τίτλον «Αἱ πανουργίαι τοῦ Σκαπίνου». Τῷ 1835 ὁ Π. Λεγκάρδος μετέφρασε καὶ ἐξέδωκε τὸν «Ἀμφιτρύωνα». Τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν ἐξέδωκε τῷ 1877 ὁ Κ. Βασιλειάδης ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Ἀμφιτρύων ἢ Οἱ ἔρωτες τοῦ Διὸς» καὶ τέλος τὸ αὐτὸ ἔτος ἐν Σύρῳ ὁ Ἰ. Γ. Φραγκιᾶς, τοῦ ὁποίου ἡ θαυμασία ἔμμετρος μετάφρασις παίζεται μέχρι τῆς σήμερον ἀπὸ τῆς ἑλληνικῆς στηνῆς. Τῷ 1858 μετέφρασε καὶ ἐξέδωσεν ἐν Ἀθήναις ὁ Δ. Ἰ. Λάκων τὰς «Précieuses ridicules» ὑπὸ τὸν τίτλον «Αἱ κερατσίτσαι», αἵτινες καὶ πολλάκις ἐδιδάχθησαν ἀπὸ τῆς ἑλληνικῆς σκηνῆς. Τῷ 1843 ὁ Θ. Ὀρφανίδης μετέφρασε τὸν «Ἀκούσιον ἰατρόν», ἐκδοθέντα κατόπιν τῷ 1863 ἐν Ἀθήναις. Τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν μετέφρασε καὶ ὁ G. Wyndham εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν ὑπὸ τὸν ἑξῆς τίτλον: «Μολιέρου, ὁ πρὸς βίαν ἰατρός, μεταπέφρασται εἰς τὴν ἑλλάδα φωνὴν τὴν ἀρχαίαν, προστέθεινται δέ, ἐν αἷς περὶ τῆς νεοελληνίδος πολλά, σημειώσεις. Ἐν Παρισίοις 1875». Τῷ 1867 ὁ Ἀριστοτέλης Π. Πέππας μετέφρασε καὶ ἐξέδωκε τὸν «Bourgeois gentilhomme» ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ κομψευόμενος χωριάτης», ὃν διεσκεύασε μετά τινα ἔτη ὁ θιασάρχης Π. Σούτσας, μετονομάσας αὐτὸν εἰς «Ἀρχοντοχωριάτην». Τὴν αὐτὴν κωμῳδίαν καὶ ὑπὸ τὸν αὐτὸν ἑλληνικὸν τίτλον μετέφρασε πρὸ δεκαετίας ὁ ποιητὴς Ἰωάννης Πολέμης. Παρ' ἀνωνύμων μετεφράσθησαν τῷ 1862 «Ὁ ἔρως ἰατρός», τῷ 1874 «Τὸ σχολεῖον τῶν γυναικῶν» καὶ τῷ 1879 «Ὁ ἱπτάμενος ἰατρός». Τῷ 1876 ὁ Ἀλ. Γ. Σκαλίδης μετέφρασε τὸν «Δὸν Ζουὰν» καὶ τὸν «Σγαναρέλλον», τοῦ ὁποίου νέαν μετάφρασιν ἔμμετρον καὶ ὁμοιοκατάληκτον ἔκαμε τῷ 1891 ὁ Ν. Ἰ. Λάσκαρης ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁ κατὰ φαντασίαν κερατᾶς». Τέλος τῷ 1912 ὁ Ν. Ποριώτης μετέφρασε «Τὰ ἐρωτικὰ πείσματα».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. — *Jules Loiseleur*, Les points obscurs de la vie de Molière (Paris 1887). — *Émile Fageet*, Dix-huitième siècle (Paris 1890).— *Victor Fournel*, La comedie. — *Chardon*, Nouveaux documents sur la vie de Molière (1886—1905). — *B. Mattews*, Molière, his life and his works (1910). — *Ferdinard Brunetière*, Les époques du théâtre français; Études critiques, I καὶ IV. — *René Doumic*, La querelle du Tartuffe. — *Bethge*, Zur Technic Moliere's, ἐν τῇ «Zeitschrift für neufranzösische Sprache und Litteratur» (Βερολῖνον 1899) σ. 252—306.— *Jules Claretie*, Molière, sa vie et ses oeuvres (Paris 1874).—*Auguuste Ehrhard*, Les comédies de Molière en Allemagne (Paris 1888). — *P. Fischmann*, Molière als Schauspieldirector. Zeitschrift für neufranzösische κτλ. (1906), σ. 1—55. — *Gustave Lanson*, Molière et la farce, ἐν τῇ «Revue de Paris» (1 Μαΐου 1901).— *Abel Lefranc*, La vie et les ouvrages de Molière. — *E. Martinenche*, Molière et le théâtre espagnol (Paris 1906).— *Louis Moland*, Molière, sa vie et ses ouvrages (1887).— *Τοῦ αὐτοῦ*, Molière et la comédie italienne (Paris 1867). — *E. Rigal*, La comédie de Molière, l' homme dans l' œuvre, ἐν τῇ «Revue d' Histoire litteraire» (Paris 1904).— *Francisque Sarcey*, Molière et la comédie classique, ἐν τοῖς «Quarante ans de théâtre» (1900). — *J. J. Weiss*, Molière (Paris 1900)—. *G. Michaut*, La jeunesse de Molière (1922).— *Τοῦ αὐτοῦ*, Les débuts de Molière (1923). — *Τοῦ αὐτοῦ*, Les luttes de Molière (1925). Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**Μολίζε** (Molise) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ ἐπαρχία τοῦ βασιλείου τῆς Νεαπόλεως, ἧς τὸ μεγαλύτερον τμῆμα ἀποτελεῖ νῦν τὸν νομὸν τοῦ Καμπομπάσσο. Τὸ ὄνομα τοῦτο ὁμοῦ μετὰ τοῦ τῶν Ἀβρουζίων (Abruzze-e-Molise) φέρει σήμερον ἡ πρὸς τὸ κεντρικοανατολικὸν τμῆμα τῆς Ἰταλίας μεγάλη περιφέρεια, ἀποτελουμένη ἀπὸ τοὺς πέντε νομοὺς Ἀκουΐλα ντ' Ἀμπροῦτσο, Καμπομπάσσο, Κιέτι, Πεσκάρα καὶ Τέραμο. Μ. Δ. Β.

**Μολὶκ** (Molique), ***Βερνάρδος.*** Διάσημος Γερμανὸς βιολιστὴς (1802—1869). Υἱὸς μουσικοῦ, ὅστις ὑπῆρξε καὶ ὁ πρῶτος διδάσκαλός του, ἐτελειοποιήθη ἐν Μονάχῳ ὑπὸ τὸν Ροβέλλι. Μετὰ διετῆ συμμετοχὴν ἐν τῇ ὀρχήστρᾳ τοῦ θεάτρου «Ἀν ντὲρ Βὶν» τῆς Βιέννης ἐπανελθὼν εἰς Μόναχον, διεδέχθη τὸν καθηγητήν του Ροβέλλι ὡς κορυφαῖος βιολιστὴς τῆς αὐλῆς. Τῷ 1822 ἤρχισε τὰ καλλιτεχνικά του ταξίδια, εἰς πλείστας πόλεις τῆς Εὐρώπης, ἅτινα ἐστερέωσαν τὴν φήμην του. Ἀπὸ τοῦ 1826 μέχρι τοῦ 1849 ὁ Μολὶκ διετέλεσε κορυφαῖος βιολιστὴς τῆς αὐλῆς τῆς Στουττγάρτης, θέσιν ἣν ἐγκατέλειψε τῷ 1849, ἵνα ἐγκατασταθῇ ἐν Λονδίνῳ, ἔνθα διέπρεψεν ὡς δεξιοτέχνης, μέλος κουαρτέττου καὶ καθηγητής. Αἱ συνθέσεις του, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον διὰ βιολίον, ἀποτελοῦνται ἐξ 6 κοντσέρτων καὶ ἑνὸς κοντσερτίνου διὰ τὸ ὄργανον τοῦτο, ἐξ ἑνὸς κοντσέρτου διὰ βιολοντσέλλον· 8 κουαρτέττων· μιᾶς συμφωνίας· δύο λειτουργιῶν, ἑνὸς ὀρατορίου κτλ. Γ. Σ.

**Μόλικας,** ἢ ***Σμολίτσας*** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ Θυάμιδος (κοιν. Καλαμᾶ), ποταμοῦ τῆς Ἠπείρου, πηγάζων ἐκ τῶν βορείως τῆς κοιλάδος Δωδώνης κειμένων ὑψωμάτων τῆς Ὀλύτσικας καὶ συμβάλλων μὲ τὸν Θύαμιν ἀπὸ τὸ χωρίον Σούλι. Χ. Ι. Σ.

**Μολιμένος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Νησίον τοῦ κόλπου τῆς Ἀμφίσσης (πλάτ. 38° 24′ 30″ Β., μῆκ. 22° 24′ 45″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1600: Gulf of Corinth), πρακτικὸν σύνορον μεταξὺ τῶν λιμένων *Ἰτέας* καὶ *Γαλαξειδίου*. Σ. Ε. Λ.

**Μολὶν** (Molin) ***Ἰωάννης - Πέτρος.*** Σουηδὸς γλύπτης (1814—1873). Ἐσπούδασεν ἐν Στοκχόλμῃ, τῷ δὲ 1845 ἐπεσκέφθη τὴν Ρώμην καὶ τοὺς Παρισίους. Ἀξιολογώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι σύμπλεγμα ἐκ βρούντζου κοσμοῦν τὸν κῆπον τοῦ Ἐθνικοῦ μουσείου τῆς Στοκχόλμης (1859), τὰ ἀγάλματα τῆς προσόψεως τοῦ αὐτοῦ μουσείου καὶ εἷς ὀρειχάλκινος ἀνδριὰς τοῦ Καρόλου ΙΒ' τῆς Σουηδίας ἐν Στοκχόλμῃ.

— **Μολὶν** (Molin), ***Πέλλε.*** Σουηδὸς ποιητὴς (1864—1896). Ἐσπούδασεν ἐν τῇ καλλιτεχνικῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Στοκχόλμης, εἶτα δὲ ἀποσυρθεὶς εἰς βόρειον Σουηδίαν ἔζησεν ἀφανὴς ὡς κυνηγὸς καὶ ἁλιεὺς καὶ ἀπέθανεν ἐν Μπόνται. Ἔγραψε ποιήματα καὶ διηγήματα, εἰς τὰ ὁποῖα περιγράφεται μετὰ πολλῆς δυνάμεως ἡ μεγαλοπρεπὴς φύσις τοῦ βορρᾶ. Τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐδημοσίευσε τῷ 1897 ὁ Γκέγιερσταμ ὑπὸ τὸν τίτλον «Adalens poesi». Χ. Δ.

**Μολίν,** ***Ἤστ*** — (East Molin) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Ἤστ* Μολίν).

**Μολίνα** (Molina), ***Λουδοβῖκος.*** Ἐγεννήθη τῷ 1535 ἐν Ἱσπανίᾳ καὶ ἀπέθανε τῷ 1600. Τῷ 1553 εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν, γενόμενος ἔπειτα καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν Evora καὶ τῷ 1592 ἐν Μαδρίτῃ. Τῷ 1588 ἐξέδωκε τὸ ἔργον αὐτοῦ «Συμφωνία τῆς ἐλευθέρας βουλήσεως πρὸς τὰ δῶρα τῆς χάριτος», ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπὸ μορφὴν ὑπομνήματος εἰς διάφορα σχετικὰ χωρία, εἰλημμένα ἐκ τῆς «Summa» τοῦ Θωμᾶ τοῦ Ἀκινάτου, ἀναπτύσσει τὴν ἑαυτοῦ διδασκαλίαν περὶ τῆς σχέσεως τῆς θείας χάριτος πρὸς τὴν ἀνθρωπίνην ἐλευθερίαν. Στηριζόμενος ἐπὶ τῶν σχετικῶν ἀποφάσεων τῆς συνόδου τοῦ Τριδέντου καὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Θωμᾶ τοῦ Ἀκινάτου, προσεπάθησε νὰ συνενώσῃ τὸν αὐγουστινισμὸν μετὰ τοῦ πελαγιανισμοῦ. Κατ' αὐτὸν **ἡ θεία χάρις** εἶναι βοήθεια τοῦ Θεοῦ πρὸς τὴν

Digitized by Google

ἐλευθέραν βούλησιν τοῦ ἀνθρώπου, ὅπως τὸ ὑπ' αὐτῆς ἀρξάμενον ἔργον ἀποβῇ σωτήριον. Ἡ θεία πρόγνωσις εἶναι ἡ αἰτία πάντων καὶ ἑπομένως καὶ τῶν ἐλευθέρων πράξεων τοῦ ἀνθρώπου, ἀλλὰ μόνον ἐν τῇ μορφῇ τῆς συνεργίας (concursus divinus simultanens). Προορισμὸς δὲν ὑπάρχει, ἀλλὰ μόνον gratia praeviniens. Ὁ Θεὸς διὰ τῆς scientia media προγνωρίζει πάντα τὰ δυνατὰ καὶ μέλλοντα νὰ συμβῶσιν, ἐπὶ τῇ βάσει δὲ τῆς προγνώσεως ταύτης προορίζει ἄνευ ἄρσεως τῆς ἐλευθερίας τὸ μέλλον. Τὴν διδασκαλίαν τοῦ Μολίνα ἐπολέμησαν μετὰ σφοδρότητος οἱ δομινικανοί, ὑπερησπίσθησαν δὲ πολλοὶ τῶν ἰησουϊτῶν. Ἡ ὑπὸ τοῦ Κλήμεντος τοῦ Η' συσταθεῖσα ἐπιτροπὴ (congregatio de auxiliis gratiae) δὲν ἐπεράτωσε τὴν περὶ τοῦ συστήματος τοῦ Μολίνα κρίσιν αὐτῆς, τῷ δὲ 1611 ἀπηγορεύθη πᾶσα περαιτέρω περὶ τοῦ συστήματος αὐτοῦ συζήτησις. Κ. Ι. Δ.

— **Μολίνα** (Molina), ***Τίρσο ντὲ*** —. Ψευδώνυμον τοῦ Ἱσπανοῦ ποιητοῦ *Τέλλεθ* (βλ. λ.).

**Μολινάρι** (Molinari), ***Γουσταῦος ντὲ*** —. Βέλγος οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Lüttich (1819—1912). Τὸ πλεῖστον τῆς ζωῆς του διῆλθεν ἐν Γαλλίᾳ. Ἐκ νεαρᾶς ἡλικίας ὑπέρμαχος τῆς φιλελευθέρας σχολῆς, πρῶτος αὐτὸς ὑπέδειξε τὴν ἀνάγκην τῆς πρὸς τὸν σκοπὸν ἐξισώσεως μεταξὺ προσφορᾶς καὶ ζητήσεως ἐργασίας ἱδρύσεως ειδικῶν γραφείων, ὠργανωμένων κατ' ἀναλογίαν πρὸς τὰ ἐμπορικὰ χρηματιστήρια. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Βέλγιον. Ἐπανελθὼν μετὰ τὸ 1870 εἰς Παρισίους διετέλεσεν ἀρχισυντάκτης τῆς «Ἐφημερίδος τῶν Συζητήσεων» καὶ μετὰ ταῦτα διευθυντὴς τοῦ «Journal des Économistes». Κατέλιπε πλῆθυν συγγραμμάτων: «Cours d'économie politique» (1855), «Questions d'économie politique et de droit public» (1861), «Les lois naturelles de l'économie politique», «La morale économique» (1888), «Comment se résoudra la question sociale». Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**μολινία** (ἡ) (Molinia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς. Ἐκ τῶν ὀλίγων εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ἡ *μολινία ἡ κυανῆ* (Molinia coerulea), πολυετὴς πόα ἀπαντῶσα πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης καὶ παρ' ἡμῖν εἰς τὰ ὀρεινὰ μέρη τῆς Κερκύρας, Θεσσαλίας καὶ Ἠπείρου. Θεωρεῖται ὡς ἐπιβλαβὲς νομευτικὸν εἰς τὰ κατοικίδια ζῷα καὶ κυρίως εἰς τοὺς ἵππους, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνθήσεώς του. Εἰς τὴν Ἀγγλίαν ἐκ τοῦ φυτοῦ τούτου κατασκευάζουσι χάρτην. Δ. Ν. Π.

**Μολινιὲ** (Molinier), ***Αὔγουστος***. Γάλλος ἱστορικὸς (1851—1904). Ἐδημοσίευσεν ἐν ἀρχῇ ἐνδιαφέρον ἔργον ἐπὶ τῆς ἱστορίας τοῦ Λαγκεντόκ, βραδύτερον δὲ ἄλλας μελέτας, ἀναφερομένας ἰδίως ἐπὶ τῆς μεσαιωνικῆς ἱστορίας τῶν Γάλλων. Ἀπὸ τοῦ 1902 ἤρχισεν ἐκδίδων τὸ ἔργον «Πηγαὶ τῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας κατὰ τὸν μεσαίωνα», οὗτινος ἐπρόλαβε νὰ δημοσιεύσῃ μέχρι τοῦ θανάτου του 6 τόμους καὶ τοῦ ὁποίου ἡ ἔκδοσις συνεχίζεται ἔκτοτε παρ' ἄλλων. —Ω.

**μολινισμὸς** (ὁ). Ἡ περὶ τῆς σχέσεως τῆς θείας χάριτος πρὸς τὴν ἀνθρωπίνην ἐλευθερίαν θεωρία τοῦ *Μολίνα* (βλ. λ.). Κ. Ι. Δ.

**Μολῖνο** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Ῥόδου χθαμαλὸν καὶ ἀμμῶδες, ἀποτελοῦν τὴν Β. τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιὰν (πλάτ. 36° 27' Β., μηκ. 28° 16' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1667: Rhodos island), ὀνομαζόμενον δὲ οὕτω διὰ τὴν πληθὺν τῶν ἐπιστεφόντων αὐτὸ ἀνεμομύλων. Ὑπὸ τῶν Τούρκων ὀνομάζεται *Κοὺμ Μπουρνοῦ* (=ἀμμώδης ἄκρα) καὶ ἔχει φάρον. Σ. Ε. Λ.

**Μολῖνος** (Da Molin). Ὄνομα ἰσχυρᾶς ἐνετικῆς οἰκογενείας, ἧς πολλὰ μέλη ἔδρασαν ἐν Κρήτῃ εἴτε ὡς ἁρμοσταὶ καὶ ἀνώτεροι στρατιωτικοὶ ὑπάλληλοι ἐν τῇ νήσῳ, εἴτε ὡς ἔποικοι αὐτῆς. Ἐκ τῶν τελευταίων τούτων πολλοὶ ἐξελληνισθέντες συμμετέσχον εἰς τὰς ἐναντίον τῆς Ἐνετοκρατίας ἐπαναστάσεις τῶν Κρητῶν. Ἐπιφανέστερα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης ἐν Κρήτῃ ἀναφέρονται:

***Ἀνδρέας***. Ἐνετὸς ἁρμοστὴς τῆς Κρήτης (1287—1290).

***Γερόλαμος***. Ἐνετὸς ἁρμοστὴς τῆς Κρήτης (1469—1472).

***Γεώργιος***. Ἐκ τῶν ἐξελληνισθέντων Ἐνετῶν ἐν Κρήτῃ ἐποίκων. Συμμετασχὼν εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1362, ἐξελέγη μέλος τοῦ τριακονταπενταμελοῦς συμβουλίου τοῦ ἀναλαβόντος τὴν διοίκησιν τῆς κηρυχθείσης τότε κρητικῆς δημοκρατίας ὑπὸ τὴν σημαίαν τοῦ Ἁγίου Τίτου. Συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν Ἐνετῶν τῷ 1364 ἐκαρατομήθη.

***Γιαννάκης***. Συγγενὴς τῶν Καλλεργῶν, συμμετέσχεν εἰς τὴν ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τούτων ἐπανάστασιν τῶν Κρητῶν κατὰ τῆς Ἐνετοκρατίας (1365). Συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν Ἐνετῶν ἐκαρατομήθη αὐτός τε καὶ ἅπασα ἡ οἰκογένειά του.

***Δομένικος***. Ἐνετὸς προβλεπτὴς ἐν Κρήτῃ κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1365.

***Κορέσιος***. Ἐνετὸς ἀξιωματικὸς ἐν Κρήτῃ κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1365, καθ' ἣν συλλαβὼν τοὺς ἀρχηγοὺς αὐτῆς Ἀλέξιον καὶ Ἰωάννην Καλλέργας κατέσφαξεν αὐτοὺς καθὼς καὶ τὰς συζύγους καὶ τὰ τέκνα των.

***Λουδοβῖκος***. Σύμβουλος τοῦ ἁρμοστοῦ Κρήτης Πέτρου Μοροζίνη (1364—1366).

***Μᾶρκος***. Ἐνετὸς ἁρμοστὴς τῆς Κρήτης (1345—1347).

***Φραγκῖσκος***. Ἐνετὸς ἄρχων ἐν Χανίοις τῷ 1570, ὅτε ἐξερράγη ἡ ὑπὸ τὸν Γεώργιον Καντανολέον ἐπανάστασις, καθ' ἥν, ἐπωφεληθεὶς τοῦ ἔρωτος τῆς θυγατρός του Σοφίας πρὸς τὸν Κωνσταντῖνον Καντανολέον (υἱὸν τοῦ Γεωργίου) καὶ προσποιηθεὶς ὅτι ἐδέχετο τὸν μετ' ἐκείνου γάμον, κατώρθωσε διὰ δόλου νὰ ἐξοντώσῃ τοὺς ἐπαναστάτας (βλ. λ. *Καντανολέος*). Ν. ΚΛΣ

—**Μολῖνος** (Molinos), ***Μιχαήλ***. Γεννηθεὶς τῷ 1628 ἐν Ἱσπανίᾳ, ἤρξατο ἀπὸ τοῦ 1664 δρῶν ἐν Ῥώμῃ ὡς ἐξομολογητὴς καὶ διακρινόμενος διὰ τὴν πρὸς τὸν μυστικισμὸν κλίσιν αὐτοῦ. Ἐν τῷ ἔργῳ αὐτοῦ «Πνευματικὸς ὁδηγός», ἐκδοθέντι τῷ 1675, περιέλαβε τὴν μυστικὴν αὐτοῦ διδασκαλίαν, ἥτις κατ' ἀρχὰς ἐγένετο εὐμενῶς δεκτὴ ὑπὸ τοῦ πάπα Ἰννοκεντίου τοῦ ΙΑ', εὗρεν ὅμως σφοδροτάτην ἀντίδρασιν παρὰ τοῖς δομινικανοῖς καὶ ἰησουΐταις, ἕνεκα τῆς ὁποίας ἠναγκάσθη ὁ Ἰννοκέντιος νὰ παύσῃ ὑποστηρίζων αὐτόν. Τέλος ταῖς ἐνεργείαις τούτων ἐφυλακίσθη ὁ Μολῖνος ἐπὶ δύο ἔτη, μετὰ παρέλευσιν τῶν ὁποίων τῷ 1687 δι' ἀποφάσεως τοῦ ἱεροδικαστηρίου ἐκηρύχθη αἱρετικός, ἀναθεματισθεισῶν 68 θέσεων ἐκ τῆς διδασκαλίας του. Τότε ἠναγκάσθη ὁ Μολῖνος ἐπισήμως ν' ἀποκηρύξῃ τὴν διδασκαλίαν του, μετὰ τὴν ἀποκήρυξιν τῆς ὁποίας περιωρίσθη διὰ βίου ἔν τινι μονῇ, ἐν ᾗ καὶ ἐτελεύτησε τῷ 1696. Τὸ ἀνωτέρω ἔργον του μετεφράσθη ὑπὸ τοῦ Francke εἰς τὴν λατινικὴν καὶ ὑπὸ τοῦ Arnold εἰς τὴν γερμανικήν, ἀναγινωσκόμενον ἔν τε τῷ πρωτοτύπῳ καὶ ταῖς μεταφράσεσιν ἀπλήστως. Κ. Ι. Δ.

**Μολίονες** (οἱ) *[Μυθολ.]*. Οἱ δίδυμοι Γίγαντες *Εὔρυτος* καὶ *Κτέατος*, οἵτινες εἶχον δύο κεφαλὰς ἡνωμένας εἰς ἓν σῶμα. Εἶχον γεννηθῆ, ὡς ἐλέγετο, ἐξ ἀργυροῦ ᾠοῦ καὶ ἦσαν παῖδες τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ μυθικοῦ βασιλέως τῶν Ἐπειῶν ἢ Ἠλείων Αὐγείου Ἄκτορος, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐπεκαλοῦντο καὶ *Ἀκτορίδαι*, ἢ τοῦ Ποσειδῶνος καὶ τῆς Μολιόνης, ἀπὸ τῆς ὁποίας καὶ συνήθως *Μολίονες* ἢ *Μολιονίδαι* ἐκαλοῦντο (κατὰ παραλλαγὴν τοῦ μύθου ἡ Μολιόνη ἦτο ἀδελφὴ τοῦ Αὐγείου). Ὅτε ὁ Ἡρακλῆς ἐξεστράτευσε κατὰ τοῦ Αὐγείου, διότι εἶχεν ἀρνηθῆ οὗτος νὰ δώσῃ εἰς τὸν ἥρωα τὸ δέκατον τῶν ποιμνίων του, κατὰ τὴν συμφωνίαν των, μετὰ τὴν κάθαρσιν τῶν σταύλων του, οἱ Μολίονες ἦσαν, κατὰ διαταγὴν τοῦ θείου των, οἱ στρατηγοὶ τῶν Ἠλείων, οἵτινες ἐπωφεληθέντες ἐκ τῆς ἀσθενείας τοῦ Ἡρακλέους ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ στρατεύματός του καὶ πολλοὺς ἐφόνευσαν. Ἐξεδικήθη ὅμως ὁ ἥρως, φονεύσας τοὺς δύο Μολίονας ἐν Κλεωναῖς, ὅτε οὗτοι εἶχον ἀποσταλῆ ὑπὸ τοῦ Αὐγείου νὰ τελέσουν θυσίαν εἰς τὸν Ποσειδῶνα κατὰ τὴν ἑορτὴν τῶν Ἰσθμίων.

Ὁ μῦθος τῶν υἱῶν τοῦ Ἄκτορος εἶναι παραλλαγὴ τοῦ μύθου τῶν Ἀλωαδῶν (ἀλωνιστῶν). Εἶναι αἱ δύο εἰκόνες τῆς βροντῆς καὶ τῆς ἀστραπῆς, τῶν δύο ἀλληλενδέτων οὐρανίων τεράτων, ἅτινα, ἂν καὶ διαφέρουν μεταξύ των, φαίνονται ἀποτελοῦντα, οὕτως εἰπεῖν, ἓν φοβερὸν τέρας. Κατὰ ταῦτα ἡ νίκη τοῦ Ἡρακλέους κατὰ τῶν Μολιόνων εἶναι νέα παραλλαγὴ τοῦ θριάμβου τοῦ ἡλιακοῦ ἥρωος κατὰ τῶν δυνάμεων τῆς καταιγίδος. ΚΑΨ.

**Μολιόνη** *[Μυθολ.]*. Ἀδελφὴ τοῦ Αὐγείου, σύζυγος τοῦ Ἄκτορος, γεννήσασα ἐκ τοῦ Ποσειδῶνος τὸν Εὔρυτον καὶ Κτέατον (βλ. *Μολίονες*). Α.Θ.Σ.

**μόλις** ἐπίρ. τροπ. καὶ χρον. καὶ σύνδ. χρον., μετὰ δυσκολίας, μετὰ κόπου· «μόλις καὶ μετὰ βίας», «μόλις κατώρθωσα νὰ εὕρω ὀλίγα χρήματα», «μόλις δύναται νὰ βαδίσῃ» || πρὸ μικροῦ, πρὸ ὀλίγου, ἐντὸς ὀλίγου χρονικοῦ διαστήματος: «μόλις ἔφθασα», «τώρα μόλις ἐξῆλθε» || εὐθὺς ὡς: «μόλις πάρῃς τὸ γράμμα μου νὰ μοῦ ἀπαντήσῃς», «μόλις αἰσθανθῇς πόνους, νὰ μὲ εἰδοποιήσῃς».

**Μόλις** (Molisch), ***Χάνς***. Γερμανὸς βοτανικός, γεννηθεὶς τῷ 1856. Τῷ 1909 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ φυσιολογικοῦ ἰνστιτούτου τῆς Βιέννης. Κυριώτερα συγγράμματά του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Λαμπυρίζοντα φυτά» (1913), «Μικροχημεία τῶν φυτῶν» (1913), «Φυσιολογία τῶν φυτῶν» (1917) καὶ «Ἀνατομία τῶν φυτῶν» (1920). Δ.Ν.Π.

—**Μόλις** (Molisch) ***ἀντίδρασις*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἀντίδρασις τῶν λευκωμάτων, ἐπιτελουμένη διὰ προσθήκης εἰς διάλυμα λευκώματος σταγόνων ἀλκοολικοῦ διαλύματος α-ναφθόλης καὶ πυκνοῦ θειικοῦ ὀξέος. Παρουσίᾳ λευκώματος ἀναφαίνεται ἰσγινέρυθρος χροιά, ἥτις κατὰ τὴν ἀραίωσιν καθίσταται πρασίνη. Σ. Γ.

**Μόλιστα** *[Γεωγρ.]*. Ἄθροισμα τριῶν συνοικισμῶν τῆς ἐπαρχίας Κονίτσης τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, κειμένων τετράωρον πρὸς Β. τῆς Κονίτσης. Ἀποτελεῖται ἐκ τῆς κυρίως *Μολίτσης* ἢ Μεσαρ... (κάτ. 219), τοῦ *Μοναστηρίου* (Μποστίφαρι, κάτ. 1..) καὶ τοῦ *Γαναδιοῦ* (κάτ. 251), ὑποδιαιρεῖται δὲ εἰς δύο κοινότητας: *Μολίστης* (ἥτις περιλαμβάνει τὰ δύο πρῶτα χωρία) καὶ *Γαναδιοῦ* (ὁμώνυμον χωρίον). Ἐπὶ τουρκοκρατίας ἡ Μόλιστα εὐημέρει λόγῳ τῶν ταξιδίων τῶν κατοίκων της εἰς Ρουμανίαν ἰδίως καὶ διετήρει ἀξιόλογα σχολεῖα, ὡς τὴν Σπυρίδώνειον σχολὴν καὶ παρθεναγωγεῖον. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον, ταχυδρομεῖον καὶ τηλεφωνεῖον. Παρ' αὐτὴν κεῖται ἡ *μονὴ Μολίστης*, τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι τῶν *Εἰσοδίων τῆς Θεοτόκου*, ἐν ᾗ κατὰ παράδοσιν εὑρίσκεται εἰκὼν τοῦ εὐαγγελιστοῦ Λουκᾶ. Χ. Δ.—Χ. Ι. Σ.

**Μολιτὸρ** (Molitor), ***Γαβριὴλ-Ἰωάννης-Ἰωσήφ, κόμις***—. Γάλλος στρατάρχης (1770—1849). Τῷ 1791 κατετάχθη ὡς ἐθελοντὴς καὶ ἐπολέμησεν εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Ρήνου. Προαχθεὶς εἰς στρατηγὸν (1799), μετέσχε τῆς ὑπὸ τὸν Μασσενὰ ἐκστρατείας εἰς Ἑλβετίαν καὶ τῆς ὑπὸ τὸν Μορὼ ἐν τῷ Ρήνῳ. Τῷ 1805 ἐν Ἰταλίᾳ ἐνίκησε παρὰ τὸ Καλντιέρο τὸν ἀρχιδοῦκα Κάρολον. Μετὰ τὴν συνθήκην τοῦ Πρεσβούργου ἐγένετο διοικητὴς τῆς Δαλματίας, ὁπόθεν ἐξετόπισε τοὺς Ρώσους (180.). Διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος διοικητὴς τῆς Πομμερανίας (1807), μετέσχε τῆς «Μεγάλης Στρατιᾶς» (1809) διακριθεὶς εἰς Ἔσσλιγκ καὶ Βαγκράμ, διωρίσθη διοικητὴς τῶν Ἀνσεατικῶν πόλεων (181.) καὶ γενικὸς διοικητὴς τῆς Ὀλλανδίας (1811), τὴν ὁποίαν ὑπερήσπισε γενναίως τῷ 1812 καὶ μετέσχε τοῦ ὑπὸ τὸν Μακντονὰλντ ἐν Γαλλίᾳ μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ αὐτοκράτορος πολέμου. Κατὰ τὰς Ἑκατονθήμερον διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος διοικητὴς τῆς φρουρᾶς τῆς Ἀλσατίας. Ἀπὸ τῆς μάχης τοῦ Βατερλὼ ἔμεινεν ἐν ἀποστρατείᾳ μέχρι τοῦ 1818, κατὰ δὲ τὴν εἰς Ἱσπανίαν ἐκστρατείαν (1823) διῴκει ἓν σῶμα στρατοῦ. Μετὰ τὴν ἐκστρατείαν ταύτην ἔλαβε τὴν στρατάρχικὴν ῥάβδον καὶ ἐγένετο ὁμότιμος, διοικητὴς τοῦ Μεγάρου τῶν Ἀπομάχων (1847) καὶ ἀνώτερος ταξιάρχης τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς (1848). Χ. Ι.

— **Μολιτὸρ** (Molitor), ***Φρὰνς-Ἰωσήφ***. Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1779 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1860. Τὰς σπουδάς του ἤρχισεν ἐν Bingen καὶ Aschaffenbourg καὶ τὰς συνεπλήρωσεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Μαγεντίας καὶ τοῦ Μαρβούργου. Παρηκολούθησε τὸ φιλοσοφικὸν κίνημα τῆς ἐποχῆς του, ἐνεθουσιάσθη μὲ τὴν περὶ ταυτότητος διδασκαλίαν τοῦ Σέλιγγ καὶ συνέγραψεν, ὑπὸ τὴν ἐπιρροὴν τούτου τελῶν, τὸ ἔργον: «Ideen zu einer Künstlichen Dynamik der Geschichte» (Φραγκφούρτη 1805). Ἀλλὰ κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἡ φιλοσοφία τοῦ Σέλιγγ ὑφίστατο βαθεῖαν ἀλλαγήν. Ὁ Μολιτὸρ δὲν ἠκολούθησε τὸν διδάσκαλόν του ἐν τῇ ἐξελίξει του, ἀλλ' ἐτράπη πρὸς τὴν μυστικὴν θεοσοφίαν τοῦ Baader. Ἀποζῶν ἐξ ἰδιωτικῶν παραδόσεων, ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐκμάθησιν τῆς ἑβραϊκῆς γλώσσης καὶ κατόπιν εἰς τὴν μελέτην τῆς καββάλας καὶ τοῦ «Ταλμούδ». Ἐπηρεασμένος ὑπὸ τοῦ Baader ἔγραψε τὸ ἔργον «Ueber den Wendepunkt des Antiken u. Modernen» (Φραγκφούρτη 1805). Μετὰ μακροχρόνιον μελέτην καὶ περισυλλογὴν ἐδημοσίευσε τὸν πρῶτον τόμον τοῦ θεμελιώδους ἔργου του: «Philosophie des Geschichte oder über die Tradition» (Φραγκφούρτη 1824), τοῦ ὁποίου ὁ τέταρτος τόμος ἐδημοσιεύθη τῷ 1853 μετὰ δευτέρας καὶ βελτιωμένης ἐκδόσεως τοῦ πρώτου. Τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ παρέμεινεν ἡμιτελές, σκοπεῖ ν' ἀποδείξῃ ὅτι ἄνευ τῆς ἰουδαϊκῆς καββάλας τὸ ἔργον τῆς χριστιανικῆς Ἐκκλησίας παραμένει ἀτελές. Μόνον οἱ Ἰουδαῖοι παρέμειναν κάτοχοι τῆς ἀληθοῦς παραδόσεως, ἐνῷ ὁ Χριστιανισμὸς εἶναι Ἰουδαϊσμὸς συσκοτισμένος ὑπὸ γενοῦς μυστικισμοῦ. Διὰ ν' ἀποκτήσῃ πλήρη καθαρότητα, πρέπει ν' ἀντλήσῃ ἐκ τῆς καββάλας τὸν ἀνώτερον αὐτῆς μυστικισμόν. —Ι.

**Μολίων** *[Μυθολ.]*. Εἷς ἐκ τῶν Τρώων, ἡνίοχος τοῦ Θυμβραίου, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον (Ἰλ. Λ, 322). Α.Θ.Σ.

**Μὸλλ** (Moll) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀμβέρσης. Ἔχει βιομηχανίαν ὑφασμάτων, δερμάτων καὶ χρωμάτων. Κάτ. 8.780. Χ. Ι.

**Μὸλλ** (Moll), ***Βροῦνο***. Γερμανὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1885. Ἐπεδόθη ἰδιαιτέρως εἰς τὴν μελέτην τῶν δημοσίων οἰκονομικῶν, διατελεῖ δὲ ἀπὸ τοῦ 1922 καθηγητὴς τῆς δημοσίας οἰκονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας. Ἐκ τῆς δράσεώς του ἀξία ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι ἡ ἵδρυσις ἐν Λειψίᾳ τοῦ «Ἀρχείου τοῦ ... ὡς παραρτήματος τοῦ πανεπιστημίου «Ἀρχεῖον τοῦ προϋπολογισμοῦ», τὰς δημοσιεύσεις τοῦ ὁποίου ἐκδίδει ὑπὸ τὸν τίτλον «Beiträge zur Finanzkunde». Ἐπιμελείᾳ τοῦ Μὸλλ δημοσιεύεται περιοδικῶς ἐκτὸς τούτων καὶ ἡ σειρὰ «Probleme des Geld- und Finanzwesens». Ἔγραψε: «Zur Geschichte der Vermögenssteuern» (1911), «Die englisch-amerikanischen Verm gensteuern» (1912), «Logi...

Digitized by Google

des Geldes» (1916, 2α ἔκδ. 1922), «Probleme der Finanzwissenschaft (1924). Α. Α. Τ.

**Μολλᾶ Ἰμπραὴμ** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Λιμὴν κατὰ τὴν ΝΔ. ἄκραν τῆς Σάμου (πλάτ. 37° 42′ Β., μήκ. 27° 03′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1878: Port of Tigani) παρὰ τὸν ὅρμον Μισόκαμπος. Σ. Ε. Λ.

— **Μολλᾶ Χουνκιάρ.** Δερβίσης, ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἐρτογρούλ, ἱδρυτὴς τοῦ δερβισικοῦ τάγματος τῶν *Μεβλεβήδων*, ὅπερ ἐτιμᾶτο πολὺ ὑπὸ τῶν Τούρκων σουλτάνων.

**μόλλειοι ἀδένες** [*Ἀνατομ.*]· βλ. λ. *βλεφαρικοὶ ἀδένες*.

**Μόλλερ** (Moller), ***Γεώργιος***. Γερμανὸς ἀρχιτέκτων (1784—1852). Ὑπῆρξεν εἷς ἀπὸ τοὺς σημαντικωτέρους Γερμανοὺς ἑρμηνευτὰς τῆς γερμανικῆς μεσαιωνικῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ εἷς ἀπὸ τοὺς κυριωτέρους παράγοντας τῆς καθόλου καλλιτεχνικῆς ἐν Γερμανίᾳ κινήσεως κατὰ τὸ α′ ἥμισυ τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος. Διετέλεσεν ἀρχιτέκτων τῆς αὐλῆς τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Ἔσσης καὶ γενικὸς διευθυντὴς τῶν δημοσίων οἰκοδομῶν ἐν Ἔσσῃ-Δαρμστάττῃ, καὶ συνέγραψε: «Μνημεῖα τῆς γερμανικῆς ἀρχιτεκτονικῆς» (1815—1831), «Τὸ πρωτότυπον σχεδιάγραμμα τῆς μητροπόλεως τῆς Κολωνίας» (1816—1837), «Ὑπομνήματα ἀναφερόμενα εἰς τὴν σπουδὴν τῶν κατασκευῶν» (1833—1834) κλπ. Ι. Μ. Π.

—**Μόλλερ** (Moller) *Θεόδωρος-Ἀντώνοβιτς φὸν*—. Ρῶσος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Κρονστάνδῃ τῷ 1812 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1896. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Πετρουπόλεως, τῆς ὁποίας ἐγένετο καθηγητὴς τῷ 1857. Ἐξετέλεσε πλείστους πίνακας θρησκευτικῶν θεμάτων, ὁ ἄριστος τῶν ὁποίων εἶναι ἡ «Γέννησις τοῦ Χριστοῦ», εὑρισκόμενος εἰς τὴν πινακοθήκην τοῦ μουσείου τοῦ Ἐρμιτάζ. Θ. Β.

**Μολλιὲρ** (Mollière), ***Ἀλέξανδρος***. Γάλλος φιλέλλην ἀξιωματικός, καταταχθεὶς μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Ἐπαναστάσεως εἰς τὸ τακτικὸν τοῦ Φαβιέρου καὶ πολεμήσας εἰς πλείστας μάχας. Μετέχων τοῦ ὑπὸ τὸν Φαβιέρον ἐγχειρήματος πρὸς ἀνεφοδιασμὸν διὰ πυρίτιδος τῶν ἐν τῇ Ἀκροπόλει πολιορκουμένων (Δεκέμβριος 1826), ἔσωσε μετὰ τριῶν ἄλλων συντρόφων του ἀπὸ τῆς συλλήψεως τὸν εἰς ἀμφοτέρους τοὺς πόδας τραυματισθέντα Φραγκῖσκον Ρομπέρ, μετακομίσας αὐτὸν ἐντὸς τῆς Ἀκροπόλεως. Χ. Δ.

**Μολλιέρος**· βλ. *Μολιέρος*.

**Μόλλισον** (Mollison), ***Θεόδωρος***. Σύγχρονος Γερμανὸς ἀνθρωπολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1874 ἐν Στουττγάρδῃ. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Δρέσδῃ ἀπὸ τοῦ 1911, εἶτα ἐν Ἀϊδελβέργῃ (1912), ἐν Μπρεσλάου (1918), καὶ τῷ 1926 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀνθρωπολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου καὶ διευθυντὴς τοῦ αὐτόσε ἀνθρωπολογικοῦ ἰνστιτούτου, διαδεχθεὶς τὸν διάσημον Ρ. Μάρτιν. Ὁ Μόλλισον εἰργάσθη ἰδίως εἰς τὸ τεχνικὸν μέρος τῆς ἀνθρωπομετρικῆς, πλουτίσας ταύτην διὰ πολλῶν ἐργαλείων, ἐξ ὧν σημειοῦμεν: τὸν ὁριζόντιον κρανιοστάτην, τὸ κυκλόμετρον κλπ. Ἰδίᾳ δὲ τὸ πρακτικώτατον «πρόσθετον γωνιόμετρον» διὰ τὴν λῆψιν τῶν διαφόρων γωνιῶν τῆς κεφαλῆς κλπ. Ἐπίσης μεγάλη εἶναι ἡ συμβολὴ αὐτοῦ εἰς τὸ φωτογραφικὸν μέρος, μελετήσας ἐπιστημονικῶς τὴν λῆψιν τῶν φωτογραφιῶν ἐν τῇ ἀνθρωπολογίᾳ. Εἰργάσθη εἰς τὴν ὀστεολογίαν, εἰς τὰ ζητήματα τῆς ὁρολογικῆς συγγενείας τῶν ἀνθρωποειδῶν καὶ τοῦ ἀνθρώπου, εἰς τὸ πρόβλημα τῆς καταγωγῆς τοῦ ἀνθρώπου κλπ., ἐδημοσίευσε δὲ πλῆθυν σχετικῶν μελετῶν, ὡς περὶ τῆς χρησιμότητος τῆς φωτογραφίας διὰ τὰς ἀναλογίας τοῦ σώματος, περὶ τῶν ἐνδείξεων συγγενείας ἀνθρωποειδῶν καὶ ἀνθρώπων κλπ., ὡς καὶ ἀνθρωπολογικὰ ἄρθρα ἐν τῇ «Kultur der Gegenwart». Ἐκδίδει τὸν «Anthropologischer Anzeiger». Ι. Γ. Κ.

**μολλούγινον** (τὸ) (Mollugo) [*Βοτ.*]. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *πορτουλαριδῶν*, περιλαμβάνον χαμηλὰς πόας ἐτησίας μὲ φύλλα βασικὰ ἐναλλασσόμενα καὶ ἄνθη κατὰ κῦμα διατεταγμένα. Γνωστὰ περὶ τὰ 30 εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς χώρας τοῦ παλαιοῦ κόσμου καὶ ὧν ἀξιολογώτερον εἶναι τὸ *μολλούγινον τὸ λεπτοφυὲς* (Mollugo elegans). Δ. Ν. Π.

**μολλωχτός**· βλ. *μουλλωχτός*.

**Μολμέντι** (Molmenti), ***Πομπήϊος-Γεράρδος***. Ἰταλὸς συγγραφεὺς (1852—1928). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Παδούης νομικὰ καὶ κατ' ἀρχὰς ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ἐν Βενετίᾳ, ὅπου βραδύτερον ἐδίδαξεν ἐν τῷ λυκείῳ Φοσκαρίνι ἰταλικὴν φιλολογίαν. Τῷ 1899 ἀφιερώθη εἰς τὴν πολιτικὴν ἐκλεγεὶς βουλευτής. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐξ ὧν διακρίνονται τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοῦ παλαιοῦ ἰδιωτικοῦ βίου καὶ μεγαλείου τῆς Βενετίας καὶ αἱ κριτικαί του μελέται. Μεταξὺ τούτων εἶναι: «Κάρολος Γκολντόνι καὶ Τζορτζόνε» (1878), «Αἱ συνωμοσίαι ἐν Βενετίᾳ κατὰ τὸν ΙΘ′ αἰῶνα» (1881), «Ἰταλικὲς ἱστορίες» (1882), «Ἡ ἱστορία τοῦ ἰδιωτικοῦ βίου ἐν Βενετίᾳ ἀπὸ τῶν ἀρχῶν αὐτῆς μέχρι τῆς πτώσεως τῆς δημοκρατίας» (1884), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τοῦ βασιλικοῦ βενετικοῦ ἰνστιτούτου, «Μελέται καὶ ἔρευναι τῆς ἱστορίας καὶ τῆς τέχνης» (1893), «Ἡ δόγισσα τῆς Βενετίας» (1884), «Βενετία, νέαι μελέται ἱστορίας καὶ τέχνης» (1897), «Τὸ ἀνάκτορον τῶν δογῶν καὶ ἡ βιβλιοθήκη τοῦ Ἁγίου Μάρκου» (1899), «Τὰ πολιτικὰ κόμματα ἐν Ἰταλίᾳ» (1905) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μόλναρ** (Molnar), ***Φράντς***. Οὔγγρος μυθιστοριογράφος καὶ θεατρικὸς συγγραφεύς, ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων συγχρόνων λογοτεχνῶν, γεννηθεὶς τῷ 1878. Ὅ,τι διακρίνει τὰ ἔργα του καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ἀνάδειξιν αὐτοῦ, εἶναι κυρίως ἡ ἰδιόρρυθμος τεχνοτροπία, τὸ χιουμοριστικὸν τοῦ διαλόγου καὶ ἡ βαθεῖα ψυχολογικὴ ἀνάλυσις. Ἐκ τῶν θεατρικῶν του ἔργων ἐπιτυχέστερος ὑπῆρξεν ὁ «Διάβολος» (1907, παιχθεὶς καὶ ἐν Ἑλλάδι ὑπὸ τῆς «Ἐλευθέρας Σκηνῆς»), «Ὁ Σωματοφύλαξ» (1917), «Παιγνίδι εἰς τὸ παλάτι» (1927), ὁ δραματικὸς θρῦλος «Λίλιομ» (3η ἔκδ. 1922). Ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του ἄριστον εἶναι «Τὰ παιδιὰ τῆς ὁδοῦ Παύλου» (1910) μὲ θέμα τὴν μαθητικὴν ζωήν. Θ. Κ.

**Μόλο** (Molo). —1) *Χάνς, φὸν* —. Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1878. Ἔγραψεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Χὰνς Χὰρτ* τὰ μυθιστορήματα: «Τὸ ἅγιον πῦρ» (1909), «Μουσικοὶ ἔρωτες» (1910), «Τὸ σπίτι τῶν Τιτάνων» (1913).

—2) ***Βάλτερ, φὸν*** —. Γερμανὸς συγγραφεύς, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1880. Ἀνεδείχθη κυρίως διὰ τοῦ ἔργου του «Τὸ μυθιστόρημα τοῦ Σίλλερ», ὅπερ ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν. Ἄλλα ἔργα του: «Περὶ τὴν ἀνθρωπότητα», «Ἡ πόλις τῶν Τιτάνων», «Τὸ μυθιστόρημα τοῦ λαοῦ μου» (1911—1914), «Φρειδερῖκος», «Λουΐζα», «Ὁ λαὸς ἀγρυπνεῖ» (1918—1822), «Τὶλλ Λαοὺζεμπουμς» (1918), «Μπαλλάντα τῆς ζωῆς» (1924). Θ. Κ.

**μολοβρὸς** (ὁ) (Molobrus) [*Ζῳολ.*]. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν*, τῆς οἰκογενείας τῶν *ἰκτεριδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ ἢ καὶ μετρίου μεγέθους πτηνά, μὲ σῶμα εὔρωστον, κεφαλὴν μετρίου μεγέθους, ῥάμφος κωνικὸν καὶ βραχύ, ἐλαφρῶς κυρτὸν κατὰ τὸ ἄκρον του καὶ οὐρὰν εὐθεῖαν καὶ ὀξύληκτον. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Ἀμερικὴν καὶ τρεφόμενα ἐξ ἐντόμων καὶ καρπῶν. Δ. Ν. Π.

**μολογάω**· βλ. λ. *ὁμολογῶ*.

**Μολόγκα** [*Γεωγρ.*]. Ἀριστερὸς παραπόταμος τοῦ Βόλγα. Ἔχει τὰς πηγὰς αὐτοῦ ἐν τῷ ρωσικῷ κυβερνείῳ Τβέρ, χύνεται δὲ εἰς τὸν Βόλγαν παρὰ τὴν ὁμώνυμον πόλιν Μολόγκα. Ἔχει μῆκος 588 χλμ. καὶ εἶναι πλωτὸς ἐπὶ 140 χλμ. καὶ τὸ ἔαρ ἐπὶ 300 χλμ. (μέχρι τοῦ Πέστοβο). Παραπόταμοι αὐτῆς εἶναι ἐκ δεξιῶν ὁ Ὄσενι καὶ ὁ Βολτσίνα, ἐξ ἀριστερῶν δὲ ὁ Τσαγκόντοστσα. Γ. Ι. Β.

**Μολόεις** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ποτάμιον τῆς Βοιωτίας, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Ἀσωποῦ, ῥέων ἐγγὺς τῶν Πλαταιῶν (*Ἡρόδ.* Θ, 57). Χ. Δ.

**μόλοκος** (ὁ) [*Βοτ.*]. Ἑτέρα κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μαλάχη ἡ στρογγυλόφυλλος*.

**μολονότι**· σύνδ. ἐναντιωματικός, ἂν καί, καίτοι: «μολονότι ἦτο ἄρρωστος, ἐν τούτοις εἰργάσθη ὅσον ἠδυνήθη» (ἐκ τοῦ *μ' ὅλον ὅτι*).

**Μολοντόφσκη.** Πολωνὸς φιλέλλην, κατελθὼν εἰς τὴν ἀγωνιζομένην Ἑλλάδα ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς Ἐπαναστάσεως. Λαβὼν μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Πέτα, ἐφονεύθη τῇ 4 Ἰουλίου 1822 μετὰ τοῦ Μερτσιέφσκη.

**μόλορχος** (ὁ) (Molorchus) [*Ζῳολ.*]. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυτοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κεραμβυκιδῶν*, περιλαμβάνον κανθάρους μικροῦ μεγέθους μὲ σῶμα ἐπίμηκες, κεφαλὴν ἐπιμήκη, κεραίας λεπτὰς καὶ μακρὰς καὶ χρῶμα σκοτεινόν. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα ἐν Εὐρώπῃ καὶ ἐπὶ διαφόρων φυτῶν ἐνδιαιτώμενα. Δ. Ν. Π.

**Μόλος** [*Μυθολ.*]. —1) Κατὰ τὴν ὁμηρικὴν παράδοσιν υἱὸς τοῦ Δευκαλίωνος καὶ πατὴρ τοῦ Μηριόνου, ἐπομένως ἔγγονος τοῦ Μίνωος καὶ ἀδελφὸς τοῦ Ἰδομενέως. Κατ' ἄλλην δὲ παράδοσιν ὁ Δευκαλίων καὶ ὁ Μόλος εἶναι ἀδελφοί. Πιθανῶς ἦτο ἄρχων τῆς Λύκτου.

—2) Υἱὸς τοῦ Ἄρεως καὶ τῆς Δημονίκης, ἀδελφὸς τοῦ Θεστίου. Ε. Γ.

**Μολὸς** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Σωτήριος ναυαγοσωστικὸς σταθμὸς τῆς εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς (ἀνατ. Θρᾴκης, Σαλμηδησσοῦ) τοῦ Εὐξείνου, εἰς τὰ πρόσγεια τοῦ Βοσπόρου (πλάτ. 41°45″ Β., μήκ. 28°54′45″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), διαθέτων σχοινοβόλους πυραύλους. Σ. Ε. Λ.

**Μολοσσία**, ἡ ***Μολοττία***, ἡ ***Μολοσσὶς*** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἡ ὑπὲρ τὴν Θεσπρωτίαν καὶ Χαονίαν ἐνδοχώρα τῆς Ἠπείρου, ἡ ὁποία ὡς σύνορα εἶχε πρὸς μὲν τὴν Μακεδονίαν τὴν περιοχὴν τῶν Ἀτιντάνων (ἡ ὁποία εἰς τοὺς χρόνους τοῦ Πελοποννησιακοῦ πολέμου διετέλει ὑπὸ τὸν Μολοσσὸν βασιλέα) πρὸς βορρᾶν τὴν Παραυαίαν εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Αὔα ἢ Ἀώου καὶ πρὸς τὴν Θεσσαλίαν τὴν Ἀθαμανίαν εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Ἰνάχου παρὰ τὴν Πίνδον καὶ νοτιώτερον τὴν Τυμφαίαν, φθάνουσαν μέχρι τοῦ ἄκρου τῆς κοιλάδος τοῦ Πηνειοῦ. Τὸ καλύτερον μέρος τῆς Μολοσσίας ἀπετέλει τὸ περὶ τὴν λίμνην Παμβῶτιδα (σημερινὴν λίμνην τῶν Ἰωαννίνων) εὔφορον λεκανοπέδιον, εἰς τὸ βόρειον ἄκρον τοῦ ὁποίου πρέπει νὰ ζητηθῇ ἡ παλαιὰ ἕδρα τοῦ βασιλείου τῶν Μολοσσῶν Πασσαρών, ἐνῷ ἡ πρὸς νότον καὶ παρὰ τὰς ὑπωρείας τοῦ ὄρους Τομάρου κειμένη Δωδώνη εὑρίσκετο ἀρχικῶς ἐπὶ θεσπρωτικοῦ ἐδάφους καὶ ὑπῆρξεν ἡ πρώτη πρὸς νότον κατάκτησις τῶν Μολοσσῶν. Βραδύτερον κατέλαβον οἱ Μολοσσοὶ καὶ ὁλόκληρον τὴν κοιλάδα τοῦ Ἀράχθου, ὁ ὁποῖος κατὰ τὰς ἐκβολάς του εἰς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον ἐσχημάτισε βαθμηδὸν διὰ προσχώσεων κατὰ μέγα μέρος ἑλώδη ἀλλὰ λίαν εὔφορον πεδιάδα.

Ἡ Μολοσσία ἀπετέλεσεν ἰδιαίτερον βασίλειον, ἱδρυθέν, ὡς ὑποτίθεται, ὑπὸ τοῦ Νεοπτολέμου, υἱοῦ τοῦ Ἀχιλλέως, ἀποικήσαντος ἐκ Θεσσαλίας εἰς Ἤπειρον, καὶ διατηρηθὲν μέχρι τοῦ 235 π. Χ. Κ. Δ. Γ.

**Μολοσσοὶ** (οἱ), ἢ ***Μολοττοὶ*** [*Ἐθνολ.*]. Ἑλληνικὸν φῦλον, ἓν τῶν δεκατεσσάρων ἅτινα κατῴκουν τὴν *Ἤπειρον* (βλ. λ. τ. ΙΒ′, σ. 326—330) κατὰ τὴν ἀρχαίαν ἐποχήν, διαδραματίσαν σπουδαῖον ῥόλον εἰς τὴν ἱστορίαν της, ἰδίως ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ Δ′ π. Χ. αἰῶνος, ὅτε ἐκυριάρχησε τῶν ἄλλων ἐθνῶν.

**μολοσσὸς** (ὁ)· εἶδος μεγάλου κυνὸς ποιμενικοῦ, ὀνομασθέντος οὕτω ἐκ τοῦ ἐθνικοῦ *Μολοσσὸς* διὰ τὴν ἐκ τῆς Μολοσσίας καταγωγήν του (βλ λ. *κύων*).

— **μολοσσὸς** (ὁ) [*Ζῳολ.*]. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *χειροπτέρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *χειρομηλιδῶν*, περιλαμβάνον νυκτερίδας μετρίου μεγέθους μὲ οὐρὰν περιελισσομένην περὶ ἑαυτὴν καὶ χρῶμα φαιομελανόν. Οἱ μολοσσοὶ τρέχουσιν εὐκολώτατα ἐπὶ τῆς γῆς καὶ ἵπτανται εὐχερῶς. Τρέφονται ἐκ διαφόρων ἐντόμων. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, κατοικοῦντα εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς γῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μολοσσὸς ὁ νυκτονόμος* (Molossus nyctonomus). Οὗτος ἀπαντᾷ εἰς τὴν Μαλαισίαν καὶ ἔχει ἀρκετὸν μέγεθος καὶ χρῶμα βαθὺ φαιόν. Δ. Ν. Π.

**μολοσσὸς** (ὁ) [*Ἀρχ. Μουσ.*]. Ρυθμικὸς πούς ἑξάσημος τοῦ δευτέρου εἴδους, συγκείμενος ἐκ τριῶν μακρῶν (δισήμων) χρόνων καὶ ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸ μέτρον τῶν 3/2 τῆς εὐρωπαϊκῆς μουσικῆς. Ν. Α. Χ.

**Μολοσσὸς** [*Μυθολ.*]. Υἱὸς τοῦ Πύρρου (Νεοπτολέμου) καὶ τῆς Ἀνδρομάχης, ἔγγονος τοῦ Ἀχιλλέως, μυθολογούμενος, βασιλεὺς τῆς Ἠπείρου, ἀπὸ τὸν ὁποῖον ὑποτίθεται ὅτι ἔλαβε τὸ ὄνομα τὸ ἔθνος τῶν Μολοσσῶν (*Στράβ.* 7, 326, *Παυσ.* 1, 11). Κ. Δ. Γ.

**μολότοιχο** (τό)· δημοτ., εἶδος περιφράγματος ἀγροῦ ἐκ χώματος συσσωρευομένου, ἄλλως *τράφος* (βλ. λ.).

**Μολοῦκαι, νῆσοι** [*Γεωγρ.*]. Σύμπλεγμα νήσων τοῦ Ἀσιατικοῦ Ἀρχιπελάγους ἐν τῷ Εἰρηνικῷ ὠκεανῷ, κείμενον ἐπὶ τοῦ ἰσημερινοῦ (2°18′ βορ.—4°6′ νοτ. πλάτους καὶ 124—131° δυτ. μήκους) καὶ ὁριζόμενον ἀπὸ Α. ὑπὸ τῆς Νέας Γουϊνέας, ἀπὸ Ν. ὑπὸ τῆς νήσου Τιμὸρ καὶ ἀπὸ Δ. ὑπὸ τῆς νήσου Κελέβης. Αἱ νῆσοι ἀνήκουσι πᾶσαι εἰς τὴν Ὁλλανδίαν, διακρίνονται δὲ εἰς δύο ὁμάδας: τῆς βορείας Μολούκας, περιλαμβανούσης τὰς νήσους *Χαλμαχίρα* (ἢ *Τζιλολό*), *Τερνάτε, Τιντόρε, Μπατσιάν, Ὄμπι, Σοῦλα, Μαγκοῦλα* κλπ., καὶ τὰς νοτίους Μολούκας, ἀποτελουμένης ἐκ τῶν νήσων *Ἀμποΐνα, Τσέραμ, Μπούρου, Μπάντα*, καὶ πολλῶν μικροτέρων περὶ αὐτὰς νησίδων. Παρεκτὸς τῶν ἀνωτέρω περιλαμβάνονται ἐνίοτε ὑπὸ τὸ ὄνομα τῶν Μολούκων καὶ ἄλλαι τινὲς νοτίως καὶ νοτιοανατολικῶς αὐτῶν κείμεναι νῆσοι. Ἡ συνολικὴ ἔκτασις τῶν κυρίως Μολούκων ὑπολογίζεται εἰς 61.270 τετρ. χλμ., ὁ δὲ πληθυσμός των εἰς 450.000 κατοίκων.

Τὸ ἔδαφος τῶν νήσων εἶναι γενικῶς ὀρεινόν, εἰς τὰς πλείστας αὐτῶν ἡφαιστειογενές. Ἀπὸ πετρογραφικῆς ἀπόψεως αἱ Μολοῦκαι συγγενεύουν πρὸς τὴν Κελέβην, συνιστάμεναι ὅπως καὶ ἐκείνη ἀπὸ ἀζωϊκοὺς καὶ παλαιοζωϊκοὺς σχιστολίθους. γρανίτας κλπ.· δυτικῶς ὅμως τῆς Χαλμαχίρα κυριαρχοῦσιν οἱ ἡφαιστειογενεῖς σχηματισμοί. Ἡ κυρία γραμμὴ τῆς ἡφαιστειογενοῦς διαπλάσεως φαίνεται ἀποτελοῦσα συνέχειαν τῆς Ἰάβας καὶ τῆς Σόνδης μὲ κατεύθυνσιν πρὸς τὰς νήσους Μπάντα, Ἀμποΐναν καὶ Μπούρου, εἰς τὴν ὁποίαν εὑρίσκεται ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ τοῦ συμπλέγματος τῶν Μολούκων, τὸ *Κοννόνγκ* (ὕψ. 3.000 μ.)· ἡφαίστειά τινα διατηροῦνται ἀκόμη ἐν ἐνεργείᾳ εἰς τὴν Τερνάτε, τὴν Μπάντα καὶ τὴν Τιντόρε.



Digitized by Google

Ἡ γονιμότης τοῦ ἐδάφους ποικίλλει πολὺ κατὰ τὰς διαφόρους νήσους, μεταξὺ τῶν ὁποίων πλεονεκτεῖ ἰδίως ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης ἡ Μπούρου. Αἱ κυριώτεραι καλλιέργειαι εἶναι ἡ τοῦ ἀρωματικοῦ καρυοφύλλου (γαρυφάλλου) καὶ τοῦ μοσχοκαρύου, ἐξ ὧν ἡ πρώτη εὐδοκιμεῖ ἰδίως εἰς τὴν Ἀμποΐναν καὶ τὰς περὶ αὐτοῦ νησῖδας, ἡ δὲ δευτέρα εἰς τὰς νήσους Μπάντα καὶ τὰς νοτίως τῆς Τσέραμ κειμένας. Καλλιεργοῦνται ἐπίσης μεθ' ἱκανοποιητικῆς ἀποδόσεως ὁ καφές, τὸν ἰνδικόν, ἡ ὄρυζα, ὁ καπνός, ἡ κανέλλα καὶ οἱ παγοφοίνικες, τῶν ὁποίων οἱ καρποὶ ἀποτελοῦσι τὴν κυριωτέραν τροφὴν τῶν ἰθαγενῶν.

Ἡ πανίσκη τῶν Μολούκων μετέχει τοῦ χαρακτῆρος τῆς Αὐστραλίας ἀφ' ἑνὸς καὶ τοῦ Ἀσιατικοῦ ἀρχιπελάγους ἀφ' ἑτέρου. Τὰ θηλαστικὰ εἶναι ἐν αὐταῖς ὀλιγάριθμα καὶ ἀνομοιομόρφως κατανεμημένα. Οὕτω εἰς τὰς βορείας νήσους ἀπαντῶνται κυνοπίθηκοι, ἐνῷ εἰς τὰς νοτίας οὐδὲν εἶδος πιθήκου ζῇ. Ἐνδιαιτᾶται ἐπίσης ἐν αὐταῖς ὁ ἀγριόχοιρος τῆς Νέας Γουϊνέας, μαρσιποφόρων δὲ ὑπάρχουσι διάφορα εἴδη καὶ συγκεκριμένως ὁ luscus. Τὰ πτηνὰ εἶναι πολυάριθμα, μεταξὺ δὲ τούτων ἰδίως ἐν ἀφθονίᾳ τὰ παραδείσια, οἱ ψιττακοὶ καὶ τὰ κολύβρια. Τὸ ἀρχιπέλαγος εἶναι ἐξ ἄλλου πλουσιώτατον εἰς ἔντομα, ἰδίως ψυχάς, μεγάλου ἀναστήματος καὶ θαυμασίων χρωματισμῶν.

Ὁ ὀρυκτὸς πλοῦτος τῶν νήσων εἶναι μικρᾶς μόνον σημασίας, περιλαμβάνων κοιτάσματά τινα ψευδαργύρου, γαιάνθρακας καὶ πετρελαιοπηγὰς εἰς τὴν Τσέραμ, ἐπίσης γαιάνθρακας καὶ φλέβας τινὰς χρυσοῦ εἰς τὴν Μπατσιάν, ἄργιλλον ἐδώδιμον περὶ τὴν Ἀμποΐναν κλπ.

Μολονότι τὸ σύμπλεγμα τῶν Μολούκων ἱππεύει τὸν ἰσημερινόν, τὸ κλῖμα δὲν εἶναι ἐξαιρετικῶς θερμὸν εἰς ὅλας τὰς νήσους, εἶναι δὲ ἰδιαιτέρως ὑγιεινὸν καὶ εὐκραὲς εἰς τὴν Ἀμποΐναν. Εἰς τὸ βόρειον τμῆμα τοῦ ἀρχιπελάγους αἱ ἐποχαὶ ἐμφανίζουν πολλὴν ποικιλίαν, εἰς δὲ τὸ μεσημβρινὸν ἡ περίοδος τῶν βροχῶν διαρκεῖ ἀπὸ τοῦ Μαΐου μέχρι τοῦ Ὀκτωβρίου.

Αἱ Μολοῦκαι, ἀποτελοῦσαι τὸ κέντρον τῆς παραγωγῆς των, τόσον χρησιμοποιουμένων ἐν τῇ μαγειρικῇ, ἀρωματικῶν ἀρτυμάτων, ἔπαιξαν σπουδαῖον ἐμπορικὸν ρόλον ἤδη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς καθ' ἣν ἐκυριάρχουν τῶν νήσων Ἄραβες. Ἀφ' ἧς περιῆλθον ὑπὸ τὴν κυριότητα τῶν Ὀλλανδῶν, περιώρισαν οὗτοι τὴν παραγωγὴν τῶν καρυοφύλλων καὶ μοσχοκαρύων, διὰ νὰ διατηρῶσιν εἰς ὑψηλὰ ἐπίπεδα τὰς τιμὰς αὐτῶν, ἐπέτρεψαν δὲ τὴν καλλιέργειάν των μόνον εἰς τὴν Ἀμποΐναν διὰ τὰ πρῶτα καὶ τὴν Μπάντα διὰ τὰ δεύτερα. Ἀπὸ τοῦ 1863 ὅμως ἀφέθη ἐλευθέρα ἡ ἐκμετάλλευσις τῶν δένδρων τούτων, σημαντικὴ δὲ εἶναι ἤδη ἡ ἐξαγωγικὴ ἐμπορικὴ κίνησις τόσον ἐπὶ τῶν καρπῶν αὐτῶν ὅσον καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων προϊόντων τῶν νήσων, συγκεντρουμένη ἰδίας εἰς Τερνάτε, Ἀμπουΐναν καὶ Μπάντα.

Οἱ ἰθαγενεῖς κάτοικοι τῶν Μολούκων εἶναι γνωστοὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἀλφοῦρος* ἢ *Ἀναφοῦρος*, φαίνεται δὲ ὅτι εἶναι λαὸς αὐτόχθων, ἀνήκων εἰς τὴν ὁμάδα τῶν ἰνδονησιακῶν φυλῶν. Οἱ κάτοικοι ὅμως τῶν παραλίων εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον παλαιοὶ ἄποικοι ποικίλων προελεύσεων (Ἰαβαῖοι, Ἄραβες, Κινέζοι κ.λ.π.) μειχθέντες μετὰ τῶν ἰθαγενῶν.

Ἐκ τῶν Εὐρωπαίων πρῶτοι ἀπεβιβάσθησαν εἰς τὰς Μολούκας οἱ Πορτογάλοι τῷ 1512, ἐγκατεστάθησαν δὲ οὗτοι εἰς Ἀμποΐναν, τὸ πρῶτον τῷ 1521, καὶ εἶτα ὁριστικῶς τῷ 1580, ἀφοῦ ἐπέτυχον ἐν τῷ μεταξὺ νὰ παραιτηθῇ ὁ Κάρολος Κουΐντος πάσης ἐπὶ τῶν νήσων τούτων ἀξιώσεώς του ἐπ' ἀντάλλάγματι 350.000 δουκάτων. Οἱ Ὀλλανδοὶ ὅμως ἀφήρεσαν τὴν Ἀμποΐναν ἀπὸ τῶν Πορτογάλων καὶ διὰ τῆς συμφωνίας τῆς 23ης Φεβρουαρίου 1605 ἡ «Ὀλλανδικὴ Ἑταιρεία τῶν Ἰνδιῶν» ἔλαβεν ὑπὸ τὴν κατοχήν της πάσας τὰς νήσους. Μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς ἑταιρείας αἱ Μολοῦκαι ὅπως καὶ αἱ λοιπαὶ εἰς τὴν κατοχήν της νῆσοι περιῆλθον εἰς τὸ ὀλλανδικὸν κράτος, κυβερνῶνται δ' ἔκτοτε κατὰ μεικτὸν σύστημα, δι' Ὀλλανδῶν δηλαδὴ ὑπαλλήλων μετὰ συμμετοχῆς ἀντιπροσώπων τοῦ ἐντοπίου πληθυσμοῦ.

Πρωτεύουσα εἶναι ἡ *Ἀμποΐνα*, ἕδρα τοῦ Ὀλλανδοῦ διοικητοῦ τῆς νήσου, μὲ πληθυσμὸν 12.500 κατοίκων.

Ὁ ὅλος ἀριθμὸς τῶν εἰς τὰς Μολούκας διαμενόντων Εὐρωπαίων δὲν ὑπερβαίνει τοὺς 3.500. Γ. Ζ.

**μολουκκία** (ἡ) (Moluccella) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *χειλανθῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη ἀπαντῶντα ἐν Ἀσίᾳ καὶ τὰς παρὰ τὴν Μεσόγειον χώρας. Ἀξιολογώτερα ἐκ τῶν εἰδῶν εἶναι ἡ *μολουκκία ἡ ἀκανθώδης* (Moluccella spinosa) καὶ ἡ *μολουκκία ἡ λεία* (Moluccella laevis), ἀπαντῶντα πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης καὶ παρ' ἡμῖν, εἴς τινα μέρη, ὡς αὐτοφυῆ. Καλλιεργοῦνται ὡς κοσμητικά. Δ. Ν. Π.

**Μολόχ.** Ἐπικρατεστέρα ἐν τῇ Γραφῇ ἀπόδοσις τοῦ *Μολέχ*, θεοῦ τῶν Ἀμμωνιτῶν. Τὸ ὄνομά του σημαίνει βασιλεύς, ἀπεδόθη δὲ καὶ ὡς *Μελχός*, *Μελχόμ*, *Μελχόλ*, *Μολχόλ*, *Μολχὸμ* κτλ. Ὡς θεὸς τῶν Ἀμμωνιτῶν ὁ Μολόχ, εἶχε καὶ ἰδίους ἱερεῖς διὰ τὴν λατρείαν του, ἀλλ' οὐδεμία διασῴζεται πληροφορία περὶ τοῦ τρόπου, καθ' ὃν οὗτοι τὸν ἐτίμων. Ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς εἰδωλολατρείας παρὰ τῷ Ἰσραὴλ γνωρίζομεν ὅτι τοῦ προσέφερον ἀνθρώπινα θύματα καὶ ἰδίως παιδία. Ὑπάρχουν παραδείγματα βασιλέων, οἱ ὁποῖοι ἔσχον τὴν σκληρότητα νὰ θυσιάσουν τὰ ἴδια αὐτῶν τέκνα εἰς τὸν ἀπαιτητικὸν θεόν, ὅπως ὁ Ἀχὰζ βασιλεὺς τοῦ Ἰούδα καὶ ὁ ἔγγονός του Μανασῆς. Αἱ θυσίαι αὗται ἐγίνοντο ἐν Τοφὲθ εἰς τὴν κοιλάδα τῆς Γεέννης (Γκεεννόμ), τὸ γεγονὸς δὲ τοῦτο, ἤδη ἀπὸ τῶν χρόνων τοῦ Σωτῆρος, ἔγινεν ἀφορμὴ ὥστε τὸ ὄνομα τῆς κοιλάδος ταύτης, μετατραπὲν εἰς γέεννα, νὰ σημαίνῃ τὴν κόλασιν. Παραλλήλως ὁ Μολὸχ ἐλατρεύετο καὶ ἐπὶ βωμοῦ, τὸν ὁποῖον τῷ εἶχε στήσει ὁ Σολομών, γενόμενος εἰδωλολάτρης, ἐπὶ τοῦ ὄρους τοῦ Σκανδάλου, νοτιοανατολικῶς τῆς Ἱερουσαλήμ. Ὁ Σοφονίας κατηγορεῖ τοὺς Ἰουδαίους, διότι ὡρκίζοντο ταυτοχρόνως εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Μολὸχ καὶ τοῦ Ἰεχωβᾶ καὶ μᾶς πληροφορεῖ ὅτι οὗτοι ἀπένεμον τιμὰς εἰς τὸν θεὸν τῶν Ἀμμωνιτῶν. Μετὰ τὴν βαβυλωνιακὴν αἰχμαλωσίαν, δὲν ἀνευρίσκονται πλέον ἴχνη τῆς λατρείας τοῦ Μολὸχ παρ' Ἰουδαίοις. Κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην ὁ Μολὸχ ἦτο προσωποποίησις τοῦ θεοποιημένου ἡλίου, ὅπως ὁ φοινικικὸς Βάαλ. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον προφανῶς τοῦ προσέφερον ἀνθρώπινα θύματα, τὰ ὁποῖα ἔκαιον πρὸς τιμήν του. Ὁ Μολὸχ κατ' ἄλλους μὲν ἑρμηνευτὰς ἔφερε κεφαλὴν ἀνθρώπου, κατ' ἄλλους δὲ ταύρου. Κατὰ Διόδωρον τὸν Σικελιώτην (20, 14) ὁ Χρόνος, ὁ Μολὸχ τῶν Καρχηδονίων, ἀπεικονίζετο εἰς χάλκινον κοῖλον ἄγαλμα, μὲ βραχίονας τεταμένους, τὸ ὁποῖον ἔκαιεν εἰς τὸ ἐσωτερικόν του, δι' ἐναποτεθειμένου πυρός, τὰ παιδία, τὰ ὁποῖα τοῦ προσέφερον. —Ω.

**μολὸχ** (ὁ) (Moloch) *[Ζωολ.]*. Γένος ἑρπετῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαύρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγαμιδῶν*, περιλαμβάνον σαύρας ἰθαγενεῖς τῆς Νέας Ὀλλανδίας. Μοναδικὸν γνωστὸν εἶδος τοῦ γένους τούτου εἶναι ὁ *μολὸχ ὁ ἀκανθώδης* (Moloch spinosus). Οὗτος ἔχει μῆκος 20 περίπου ἑκατοστομέτρων, κεφαλὴν μικρὰν καὶ στενήν, σῶμα εὐρύτερον περὶ τὸ μέσον τοῦ μήκους του καὶ ἀρκετὰ πεπλατυσμένον, οὐρὰν ἀρκετὰ μακράν, ἀπεστρογ-

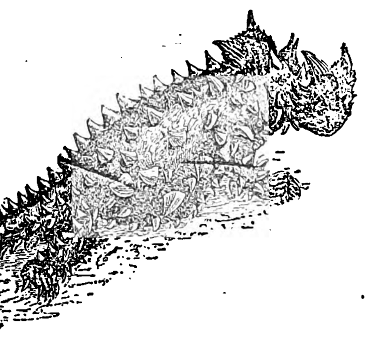

*Μολὸχ ὁ ἀκανθώδης.*

γυλωμένην καὶ κολοβὴν κατὰ τὸ ἄκρον της. Ἐπὶ τοῦ λαιμοῦ φέρει κύρτωσιν κεκαλυμμένην ὑπὸ ἀκανθῶν. Ὁ κορμὸς ἐπίσης φέρει αἰχμηρὰς ἀκάνθας κατὰ τόπους. Παρὰ τὴν κεφαλὴν φέρει δύο ἰσχυρὰς ἀκάνθας ἐν εἴδη κεράτων. Ἡ κοιλία καὶ ἡ κάτω ἐπιφάνεια τῆς οὐρᾶς καλύπτονται ὑπὸ κερατοειδῶν πλακῶν. Ὁ γενικὸς χρωματισμός του εἶναι φαιοκαστανός. Κατὰ μῆκος τῆς ράχεως καὶ τῶν πλευρῶν φέρει ἀνώμαλον ὠχροκίτρινον ταινίαν. Κατοικεῖ τὰς ὑγρὰς καὶ ἐρημικὰς ἐκτάσεις τῆς Νέας Ὀλλανδίας. Δὲν ἐπιτίθεται κατὰ τῶν ζῴων καὶ τοῦ ἀνθρώπου καὶ οὐδεμίαν ἀντίστασιν φέρει συλλαμβανόμενος. Δ. Ν. Π.

**μολόχα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μαλάχη ἡ ἀγροδίαιτος*.

— **μολόχα** ***ἄγρια*** (ἡ). Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λαβατερία ἡ θουριγγιανή*.

— **μολόχα** ***ἥμερη***. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀλκέα ἡ ὑπέρυθρος*.

— **μολόχα** ***μικρά***. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μαλάχη ἡ μικρανθής*.

— **μολόχα** ***τοῦ λόγγου***. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μαλωπὴ ἡ μαλαχοειδής*.

**Μολόχα** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Δολόπων καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 325.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ἄνω ροῦ τοῦ Ἀλιάκμονος καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Γκινόσιον*. Κάτ. (1928) 226. Χ. Ι.

**Μολοχὰθ** (Molochath) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἀφρικῆς, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. IV, 1,7) μεταξὺ τῶν μεσογείων πόλεων τῆς Μαυριτανίας Τιγγιτανῆς (Μαρόκου), ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ (νῦν Μουλούγια). Ἴσως εἶναι ἡ νῦν Tabrida, ὅπου σῴζονται ἐρείπια ἀρχαίας πόλεως. Α. Θ. Σ.

— **Μολοχὰθ** (Molochath) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Μαυριτανίᾳ, ὅστις πηγάζων ἀπὸ τοῦ ὄρους Ἄτλαντος καὶ χωρίζων τὴν Μαυριτανίαν Τιγγιτανὴν ἀπὸ τῆς Μαυριτανίας Καισαρηνσίας, ἐκβάλλει εἰς τὴν Μεσόγειον Θάλασσαν, πρὸς Ἀν. τοῦ Μεταγωνίου ἀκρωτηρίου (νῦν Cap dell' Agua), ἀπέναντι τῶν νήσων Ζαφαρίν. Τὸ μῆκος αὐτοῦ εἶναι 520 χλμ., μέχρι δὲ τοῦ 1830 ἀπετέλει τὸ σύνορον τοῦ Μαρόκου καὶ τῆς Ἀλγερίας. Σήμερον καλεῖται *Μουλούγια*. Α. Θ. Σ.

**μολόχη** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μαλάχη ἡ στρογγυλόφυλλος*.

**μολόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *γεράνιον τὸ κονδυλόρριζον*.

**μολπαδία** (ἡ) (Molpadia) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐχινοζῴων τῆς οἰκογενείας τῶν *μολπαδιιδῶν*, περιλαμβάνον ὁλοθούρια μικροῦ σχετικῶς μήκους, ἀπαντῶντα εἰς πλείστας θαλάσσας τῆς γῆς. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μολπαδία ἡ βόρειος* (Molpadia borealis), ἀπαντῶσα εἰς τὴν Βόρειον θάλασσαν. Δ. Ν. Π.

**μολπαδιίδαι** (οἱ) (Molpadidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐχινοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ὁλοθουρίων*, περιλαμβάνουσα ἐλάχιστα γένη ὁλοθουρίων, ἐκ τῶν ὁποίων γνωστότερον εἶναι ἡ *μολπαδία* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μολπὴ** (ἡ)· ᾠδή, ᾆσμα μετὰ χοροῦ πρὸς τιμὴν θεοῦ (ἀρχ.)· || καθόλου ᾆσμα, τραγούδημα.

**Μόλτκε** (Moltke), ***Χέλμουτ-Κάρολος-Βερνάρδος***, *κόμης φὸν* —. Πρῶσσος στρατάρχης, γεννηθεὶς τῷ 1800 ἐν Πάρσιγχ (τοῦ Μεκλεμβούργου-Σβέριν) καὶ ἀποθανὼν τῷ 1891 ἐν Βερολίνῳ. Ἦτο υἱὸς τοῦ *Φρειδερίκου-Φιλίππου-Βίκτωρος φὸν Μόλτκε*, ἀποστράτου Πρώσσου λοχαγοῦ καὶ κατόπιν ὑποστρατήγου ἐν Δανιμαρκίᾳ. Σπουδάσας εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τῆς Κοπεγχάγης, ὑπηρέτησεν ὡς Δανὸς ἀξιωματικὸς ἐπί τινα χρόνον, μεθ' ὅ, κατόπιν ἐξετάσεων, κατετάχθη μὲ τὸν βαθμὸν ἀνθυπολοχαγοῦ εἰς τὸ 8ον σύνταγμα πεζικοῦ τῆς Πρωσσίας καὶ συνεπλήρωσε τὴν ἐκπαίδευσίν του, παρακολουθήσας ἀπὸ τοῦ 1823 μέχρι τοῦ 1826 μαθήματα εἰς τὴν γενικὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1822 ἐτοποθετήθη εἰς τὸ γενικὸν ἐπιτελεῖον τοῦ στρατοῦ, προήχθη δὲ εἰς λοχαγὸν τῷ 1835. Ὡς λοχαγὸς ἐταξίδευσεν εἰς Τουρκίαν, εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ὁποίας προσελήφθη ἀδείᾳ τοῦ πρωσσικοῦ κράτους, ἐχρησιμοποιήθη δὲ εἰς τοπογραφικὰς ἐργασίας, ὀχυρώσεις ἐν Ρουχτσούκ, Σιλιστρίᾳ, Βάρνᾳ καὶ Σούμλᾳ καὶ βραδύτερον ἐν Δαρδανελλίοις καὶ εἰς τὴν διοργάνωσιν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ. Συμμετασχὼν τότε τῆς τουρκικῆς ἐκστρατείας κατὰ τῶν Κούρδων, ἐπέδειξε προσωπικὴν ἀνδρείαν καὶ ἐθελοθυσίαν σπανίαν, διὰ μεγίστων δὲ κινδύνων διεπίστωσεν ὅτι ὁ ποταμὸς Εὐφράτης ἦτο πλωτός, διελθὼν πρὸς τοῦτο ἐπὶ προχείρου σχεδίας τριακοσίους καταρράκτας τοῦ ποταμοῦ τούτου. Λαβὼν τέλος μέρος εἰς τὴν κατὰ τοῦ Ἰμπραΐμ πασᾶ ἐν Συρίᾳ ἐκστρατείαν συνώδευσεν ὡς σύμβουλος τὸν Τοῦρκον ἀρχιστράτηγον Χαφὶς-πασᾶν, ὅστις ὅμως μὴ ἀκολουθήσας τὰς συμβουλὰς αὐτοῦ ἡττήθη ἐν Νισὶμπ (24 Ἰουνίου 1839).

*Στρατάρχης Χέλμουτ-Κάρολος-Βερνάρδος φὸν Μόλτκε.*

Τῷ 1840 ἀπετέλεσε μέρος τοῦ ἐπιτελείου τοῦ 4ου σώματος τοῦ πρωσσικοῦ στρατοῦ, ὁπόθεν τῷ 1845 ἐχρησιμοποιήθη ἐν Ρώμῃ ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ πάσχοντος καὶ διαμένοντος ἐν Ἰταλίᾳ πρίγκιπος Ἑρρίκου τῆς Πρωσσίας, ἔνθα ἐπιπροσθέτως κατεγίνε μὲ τὴν τοπογράφησιν τῆς πέριξ τῆς Ρώμης περιοχῆς, παρασχὼν μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἱστορικὴν καὶ ἀρχαιολογικὴν ἐξερεύνησιν τοῦ τμήματος τούτου τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1855 φέρων βαθμὸν συντα-

Digitized by Google

ματάρχου ἐχρησιμοποιήθη ὡς πρῶτος ὑπασπιτὴς τοῦ πρίγκιπος Φρειδερίκου-Γουλιέλμου, τοῦ κατόπιν αὐτοκράτορος Φρειδερίκου Γ', μεθ' οὗ επεσκέφθη τὴν Ρωσίαν, Ἀγγλίαν καὶ Γαλλίαν. Τῷ 1856 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον καὶ τῷ 1858 ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ. Τῷ 1864, κατὰ τὸν κατὰ τῆς Δανιμαρκίας πόλεμον, ἐχρησιμοποιήθη ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου παρὰ τῷ ἀρχιστρατήγῳ Φρειδερίκῳ Καρόλῳ, τῷ δὲ 1866 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ τοῦ πεζικοῦ διηύθυνε τὰς ἐπιχειρήσεις εἰς τὸν κατὰ τῆς Αὐστρίας πόλεμον, ὡς καὶ τῷ 1870—1871, κατὰ τὴν κατὰ τῆς Γαλλίας ἐκστρατείαν, καθ' ἣν ἐφήρμοσε τὸ παρ' αὐτοῦ προετοιμασθὲν καὶ ἐγκριθὲν σχέδιον ἐπιστρατεύσεως καὶ συγκεντρώσεως καὶ κατέστη ὁ ὁδηγὸς σύμβουλος τῶν ἐπιχειρήσεων. Λόγῳ τῶν περιλάμπρων διὰ τὴν Πρωσσίαν ἀποτελεσμάτων τῆς ἐκστρατείας ἐκείνης ὁ Μόλτκε ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος καὶ τοῦ σταυροῦ καὶ ἀστέρος τοῦ σπανιώτατα ἀπονεμομένου παρασήμου «τῆς ἀξίας», ἱδρυθέντος παρὰ τοῦ Μεγάλου Φρειδερίκου, καθὼς καὶ πλείστων ἄλλων, τὴν δὲ 16 Ἰουνίου 1871 προήχθη εἰς στρατάρχην. Τὸ κράτος διὰ τὰς ὑπηρεσίας αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ 1868 τῷ ἐδώρησε τὸ ἐν Σβάϊδνιτς (Schweidnitz) κτῆμα Κραϊζάου (Kreisau), ὅπερ κατέστη ἡ νέα κοιτὶς τῆς οἰκογενείας Μόλτκε καὶ ἔνθα ἐτάφη μετὰ τῆς συζύγου του.

Ὁ Μόλτκε ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου ἐγένετο ὁ διδάσκαλος πλειάδος ἀξιωματικῶν ἐκπαιδευθέντων δι' ὑγιῶν ἀρχῶν τῆς πολεμικῆς ἐπιστήμης, εἴτε ἐπὶ τοῦ χάρτου ἢ εἰς τὰ ἐπιτελικὰ ταξίδια, εἰς ἃ διεξήγοντο ὑποθετικαὶ ἐκστρατεῖαι. Ἐξέλεγε πρὸς δοκιμασίαν ἁπλᾶ θέματα, σύμφωνα πρὸς τὴν φύσιν αὐτὴν τοῦ πολέμου, ἀπῄτει δὲ λύσεις προερχομένας ἐξ ὑγιοῦς κρίσεως μεθ' ἁπλοῦ τρόπου ἐνεργείας καὶ κατόπιν ἀπῄτει τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ληφθείσης ἀποφάσεως μετὰ ἀποφασιστικότητος. Κατὰ τὴν κριτικὴν ἐξέθετε τὴν γνώμην αὐτοῦ διὰ τρόπου ἀπομείναντος κλασσικοῦ, διὰ συντόμου κατηγορηματικῆς καὶ πειστικῆς φρασιολογίας, εἰς ἣν ἑκάστη λέξις ἀπέλειπεν ἀνεξάλειπτον ἐντύπωσιν, χωρὶς νὰ προσβάλῃ οὐδενὸς τὴν φιλοτιμίαν. Ἓν τῶν ἀξιωμάτων αὐτοῦ ἦτο, ὅτι ἕκαστος λαμβάνων διαταγήν τινα δέον νὰ καθορίσῃ ἐν ἀρχῇ καλῶς τὴν τακτικὴν κατάστασιν, εἶτα δὲ νὰ ἐπιδιώξῃ τὸν σκοπὸν αὐτοῦ δι' οἱουδήποτε ἤθελε μέσου, ἀλλὰ διὰ τρόπου φέροντος ἐν συνεργασίᾳ τὴν μονάδα, ἣν διοικεῖ πρὸς τὰς λοιπὰς φιλίας δυνάμεις. Οὕτω τὸ ἐπιτελεῖον κατέστη τὸ φυτώριον ἀξιωματικῶν μορφωμένων, μὲ ἀνεπτυγμένην κρίσιν, ἀξίων δι' ἀνωτέραν διοίκησιν.

Ἓν τῶν σπουδαιοτέρων ἔργων τοῦ ἐπιτελείου κατέστη ἡ πρόβλεψις πασῶν τῶν πιθανῶν πολεμικῶν ἐπιχειρήσεων καὶ ὁ καταρτισμὸς ἀναλόγων σχεδίων ἐκστρατείας. Τὸ ζήτημα τῆς ἐπιστρατεύσεως καὶ στρατηγικῆς συγκεντρώσεως, ἐξαρτώμενον ἐκ τῆς πολεμικῆς ἐνεργείας καὶ προθέσεως τοῦ ἐχθροῦ, ἀπῄτει τὴν γνῶσιν τῆς διπλωματικῆς, στρατιωτικῆς καὶ πολιτικῆς καταστάσεως τῆς Εὐρώπης ὁλοκλήρου. Ἐκ τῆς βαθείας μελέτης ταύτης ἀπέρρεον δι' ἑκάστην ὑπὸ μελέτην ἐκστρατείαν αἱ βάσεις τοῦ σχεδίου ἐπιχειρήσεων καὶ αἱ προτάσεις τοῦ ἐπιτελάρχου πρὸς τὸν ἀρχιστράτηγον πρὸς ἔγκρισιν. Ἐπηκολούθει εἶτα ἡ σύνταξις τῆς προετοιμασίας τῆς ἀποφασισθείσης στρατηγικῆς ἐνεργείας εἰς ὅλας αὐτῆς τὰς λεπτομερείας, ἤτοι τὸ σχέδιον ἐπιστρατεύσεως καὶ συγκεντρώσεως. Ἔλεγε δὲ ὅτι «τὰ περὶ τὴν ἀρχικὴν συγκέντρωσιν τοῦ στρατοῦ λάθη δυσκόλως εἶναι δυνατὸν νὰ ἐπανορθῶσι καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν μιᾶς ἐκστρατείας».

Ἡ μελέτη τῶν σχεδίων ἐκστρατείας τοῦ στρατάρχου Μόλτκε δεικνύει ἐναργῶς δι' ὁποίας βαθείας παρατηρητικότητος καὶ μεγαλοφυΐας ἐπεξειργάζετο ταῦτα. Ἀριστοτεχνικῶς διεξέρχεται τό τε πολιτικὸν καὶ τὸ στρατηγικὸν μέρος. Εἶχε πάντοτε ὑπ' ὄψιν αὐτοῦ τοὺς ὑψίστους πολιτικοὺς σκοπούς, οὓς ἐθεώρει διὰ τῆς θετικῆς αὐτοῦ μεγαλοφυΐας πραγματοποιησίμους, διότι πάντοτε ἦσαν ἐν συμφωνίᾳ πρὸς τὰ διατιθέμενα παρὰ τοῦ κράτους μέσα δι' ἑκάστην πολεμικὴν ἐπιχείρησιν. Ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ ἐκτελέσει τῶν σχεδίων αὐτοῦ. ἅτινα λόγῳ τῆς θελήσεως καὶ τῶν πράξεων τοῦ ἐχθροῦ μεταλλάσσονται ἀπὸ στιγμῆς εἰς στιγμήν, ἡ ἀπόφασίς του ἐπέδρα σωστικῶς, οὐχὶ μόνον ἐπὶ τῆς μάχης ἢ ἐκστρατείας, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς μελλούσης τύχης τοῦ γερμανικοῦ κράτους καὶ τῆς γερμανικῆς ἑνότητος.

Ὁ Μόλτκε κατὰ τὰς ἐκστρατείας τοῦ 1866 καὶ 1870 εἶχε στιγμὰς δράσεως, ἐξ ὧν ἐξηρτήθη ἡ τύχη τῆς Γερμανίας. Κατὰ τὸ 1866 διὰ τῆς ἐγκαίρου διακοπῆς τῆς ἐκστρατείας, τῇ βοηθείᾳ τοῦ πρίγκιπος Βίσμαρκ, ἀπέφυγε διμέτωπον πόλεμον εἰς Αὐστρίαν καὶ Ρῆνον (διότι ἡ Γαλλία ἤρξατο κινουμένη), παρ' ὅλας τὰς ἀντιδράσεις τοῦ περὶ τὸν βασιλέα αὐλικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ κύκλου. Κατὰ δὲ τὸ 1870 θὰ ἔλεγέ τις ὅτι ἐπήγαζον ἀπὸ μαντικῆς δυνάμεως αἱ διαταγαί, τὰς ὁποίας ἐξέδιδεν ἐν μέσῳ τῶν ἀβεβαίων καὶ ἀντιφατικῶν εἰδήσεων περὶ τοῦ ἐχθροῦ, ἐν μέσῳ ξένης χώρας καὶ ἐχθρικοῦ πληθυσμοῦ κηρύξαντος πόλεμον ἐξοντώσεως κατὰ τοῦ ἐπιδρομέως.

Καίτοι ὑπερβὰς μετὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1870 τὸ 70ὸν ἔτος τῆς ἡλικίας αὐτοῦ, διετήρησεν ἐπὶ 17 ὅλα ἔτη μετὰ πλήρους ἐνεργητικότητος τὴν ἀρχηγίαν τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, μόνον δὲ κατὰ τὰ ἓξ τελευταῖα ἔτη ἀντικατεστάθη εἰς τὰ δευτερευούσης σημασίας ζητήματα παρὰ τοῦ στρατηγοῦ κόμιτος φὸν Βαλδερζέ. Ἀπὸ τοῦ 1871 διήρχετο τὸ θέρος εἰς τὴν παρ' αὐτοῦ οἰκοδομηθεῖσαν ἀπὸ τοῦ 1868 ἔπαυλιν εἰς Κραϊζάου, παρὰ τὸ Γκέρλιτς, διευθύνων τὴν καλλιέργειαν τοῦ κτήματος καὶ φροντίζων πατρικῶς διὰ τὴν ὑγείαν καὶ ἐκπαίδευσιν τῶν χωρικῶν. Ἀπὸ τοῦ 1867 ἦτο ἀντιπρόσωπος τοῦ κοινοβουλίου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1872 μέλος τῆς ἀνωτέρας βουλῆς τῶν εὐγενῶν, ἔνθα οἱ λόγοι αὐτοῦ ἠκούοντο ὡς χρησμοὶ διά τε τὴν διοργάνωσιν τοῦ στρατοῦ καὶ τὴν ἐν γένει θέσιν τοῦ στρατοῦ ἐν τῇ πολιτείᾳ τῶν νεωτέρων κρατῶν. Τὴν 24 Ἀπριλίου 1891 εὑρισκόμενος ἐν τῷ ἐν Βερολίνῳ κρατικῷ μεγάρῳ, ἐν ᾧ κατῴκει τιμῆς ἕνεκεν, διῆλθε τὴν ἡμέραν ὅλην καλῶς, μετὰ δὲ τὸ δεῖπνον ἤκουσε μουσικήν, ὅτε αἴφνης ἔπεσεν ἀπὸ τῆς ἕδρας αὐτοῦ ἀφήνων ἐλαφρὸν στεναγμόν. Ὁ Μόλτκε εἶχεν ἀποθάνει.

Ὁ στρατάρχης Μόλτκε δὲν ἦτο μόνον εἷς τῶν ἐξοχωτέρων στρατηλατῶν τῶν νεωτέρων χρόνων, ἀλλὰ κατεῖχε περίβλεπτον θέσιν ὡς συγγραφεύς. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι «Ἐπιστολαὶ ἐπὶ τῆς καταστάσεως καὶ τῶν ἐν Τουρκίᾳ γεγονότων κατὰ τὰ ἔτη 1835—1839», «Ὁ Ρωσοτουρκικὸς πόλεμος ἐν τῇ Εὐρωπαϊκῇ Τουρκίᾳ τοῦ 1828—1829», «Ἡ Ἰταλικὴ ἐκστρατεία τοῦ 1859». Συμμετέσχεν ἐπίσης εἰς τὴν σύνταξιν ἐν τῷ μεγάλῳ ἐπιτελείῳ τῶν ἱστοριῶν τῶν πολέμων τοῦ 1866 κατὰ τῆς Αὐστροουγγαρίας καὶ τοῦ 1870—1871 κατὰ τῆς Γαλλίας. Ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐπιστολαὶ ἐκ Ρωσίας» ἐδημοσιεύθησαν αἱ πρὸς τὴν σύζυγον αὐτοῦ γραφεῖσαι ἐπιστολαὶ κατὰ τὸ 1887 καὶ 1893.

Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ στρατάρχου ἐδημοσιεύθησαν παρὰ τοῦ Μεγάλου Ἐπιτελείου τὰ «Στρατιωτικὰ ἔργα τοῦ Μόλτκε» (1911). Ν. Ι. Κ.

***Ὁ Μόλτκε ὡς στρατηγὸς καὶ ὡς ἄνθρωπος.*** Ὁ Μόλτκε ὑπῆρξε φυσιογνωμία ὅλως ἐξαιρετική, ὄχι μόνον τῆς γερμανικῆς ἀλλὰ καὶ τῆς καθόλου στρατιωτικῆς ἱστορίας. Ὑπῆρξεν ὀργανωτής, διδάσκαλος καὶ ὁδηγὸς τοῦ στρατοῦ ἐν πολέμῳ. Τὸ ἦθος αὐτοῦ καθ' ὅλον του τὸν βίον ὑπῆρξεν ἄμεμπτον. Ἠθικὸς καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν τῆς λέξεως, εὐγενής, μελετηρὸς καὶ αὐστηρὸς τηρητὴς τοῦ καθήκοντος δὲν παρεξέκλινε ποτὲ τοῦ κατὰ συνείδησιν πρέποντος. Εὐθὺς πρὸς τοὺς ἀνωτέρους του, αὐστηρὸς καὶ προστατευτικὸς πρὸς τοὺς κατωτέρους, διῴκησε πάντοτε τὰς ὑπ' αὐτοῦ ὑπηρεσίας μὲ ἀντικειμενικότητα, ἀπροσωποληψίαν, εὐθύτητα καὶ στοργήν. Οὐδέποτε ἐχαρίσθη πρὸς οὐδένα ἕνεκα λόγων συμπαθείας. Ὡδήγησε τὸν στρατὸν ἐν εἰρήνῃ καὶ ἐν πολέμῳ ὡς ἐκτελεστὴς καὶ μόνον τῆς εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορός του ἀνατεθείσης ἐντολῆς. Καὶ ἐνῷ ὑπηρέτησεν ὑπ' αὐτὸν ὡς ὑποτεταγμένος καί, κατὰ συνθήκην, ὡς ἐκτελεστὴς τῶν σχεδίων καὶ τῶν διαταγῶν του, εἰς τὴν πραγματικότητα τὰ σχέδια καὶ αἱ διαταγαὶ ἦσαν προϊόντα τῆς ἰδίας αὐτοῦ ἐμπνεύσεως, μελέτης καὶ ἐργασίας. Ἐν τούτοις οὐδέποτε ἐσκέφθη νὰ ταπεινώσῃ τὸν ἱεραρχικῶς αὐτοῦ ἀνώτερον, τὸν ὑπὸ τοῦ ἔθνους θεωρούμενον ἀρχηγὸν τοῦ στρατοῦ, ἀλλ' ὑπεδούλωνε, φαινομενικῶς πάντοτε, τὴν ἔμπνευσιν καὶ τὴν σκέψιν του εἰς τὴν δῆθεν σκέψιν καὶ ἔμπνευσιν τοῦ αὐτοκράτορος, ἵνα διὰ τοῦ τρόπου τούτου ἐπιτύχῃ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν σχεδίων αὐτοῦ, τοῦ ἱεραρχικῶς κατωτέρου, ὑπὸ στρατηγῶν καὶ ἀρχηγῶν κατὰ πλάσμα τοὐλάχιστον ἀνωτέρων του. Ἡ δύναμις τοῦ χαρακτῆρός του, ἡ καθυποτάξασα αὐτὸν εἰς τὴν διοίκησιν ἀνθρώπων ψυχικῶς, διανοητικῶς καὶ ἠθικῶς κατωτέρων του, ὑπῆρξεν ἡ χαρακτηρίζουσα αὐτὸν ἀρετή. Εἰς μίαν μόνην ἀπέβλεψε σκέψιν, πῶς ὁ πρωσσικὸς στρατὸς νὰ νικήσῃ καὶ νὰ νικήσῃ ὡς ἓν καὶ ὁμοιογενὲς ὄργανον τῆς κυριαρχικῆς θελήσεως τοῦ πρωσσικοῦ ἔθνους, τοῦ ὑπὸ τοῦ ἀγαθοῦ αὐτοῦ βασιλέως ἐκπροσωπουμένου. Ἐνδεικτικὸν δὲ τῆς τοιαύτης ψυχικῆς αὐτοῦ ἀρετῆς ὑπῆρξεν ὅτι, παρ' ὅλην τὴν μεγάλην αὐτοῦ ἡλικίαν, ἔμεινε σεβαστὸς εἰς τὴν ἐκτίμησιν τοῦ γερμανικοῦ στρατοῦ, διότι μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς γερμανικῆς ἑνότητος διετηρήθη ἐπὶ μακρὸν χρόνον ὡς ὁ ἀνώτατος πραγματικὸς ἄρχων καὶ ὁδηγὸς τοῦ νεαροῦ γερμανικοῦ στρατοῦ. Τίποτε δὲν ἠδυνήθη νὰ κλονίσῃ τὴν σταθερότητα τοῦ χαρακτῆρός του· αἱ λοιδορίαι, αἱ συκοφαντίαι καὶ αἱ ἐπιβουλαὶ συνετρίβοντο ἐπὶ τοῦ στερεοῦ βράχου τῆς ἀρετῆς του. Ἐτελεύτησε πλήρης ἡμερῶν μὲ τὴν ἱκανοποίησιν ὅτι ἡ πολυμάθεια αὐτοῦ, τὸ ὀργανωτικὸν πνεῦμα, ἡ μέθοδος τῆς διδασκαλίας του, τὸ αὐστηρὸν τοῦ ὕφους καὶ ἡ ἐπιβολὴ τοῦ χαρακτῆρός του ἐδημιούργησαν τὸ ἰσχυρότατον τῆς συγχρόνου ἡμῶν ἐποχῆς ὄργανον τῆς ἰσχύος τοῦ μεγάλου γερμανικοῦ κράτους, τὸν πρωσσικὸν πρῶτον καὶ τὸν γερμανικὸν ἔπειτα στρατόν.

Μαθητὴς τοῦ Ναπολέοντος εἰς τὰς θεωρίας καὶ στρατηγικάς του μεθόδους, κατενίκησεν ἀκριβῶς ἐκείνους, οἵτινες, ἐνῷ εἶχον προχείρους τὰς στρατηγικὰς ἀρχὰς καὶ μεθόδους τοῦ μεγάλου αὐτῶν συμπατριώτου, τὰς ἐγκατέλειψαν καὶ τὰς ἐλησμόνησαν εἰς βλάβην αὐτῶν τούτων τῶν ἐθνικῶν των συμφερόντων.

Ὁ Μόλτκε, φυσιογνωμία ἐξαιρετική, ἐπιβλητικὴ καὶ ἑλκύουσα πρὸς παραδειγματισμόν, θὰ μείνῃ ἐσαεὶ ὡς ἓν ἐκ τῶν σπανίων παραδειγμάτων τελείου καὶ ὀρθοφρονοῦντος στρατιωτικοῦ, μετριόφρονος καὶ ὑποτακτικοῦ, μὴ θελήσαντος ποτὲ ν' ἀμαυρώσῃ τὸ γόητρον τοῦ ἱεραρχικῶς ἀνωτέρου του—ἐνῷ ὡς ἐκ τῆς ἠθικῆς αὐτοῦ ὑπεροχῆς ἦτο τοῦτο καὶ εὔκολον καὶ δίκαιον —, ἀποδείξαντος δὲ ὅτι τὰ ἔθνη εὐοδοῦνται καὶ οἱ στρατοὶ νικῶσιν, ὅταν οἱ ἀποτελοῦντες αὐτοὺς παράγοντες γνωρίζουν νὰ ὑποτάσσουν τὸ ἴδιον αὐτῶν συμφέρον καὶ τὴν ἀξιοπρέπειαν ἀκόμη αὐτῶν, εἰς τὸ συμφέρον καὶ τὴν ἀξιοπρέπειαν τοῦ συνόλου τοῦ ἔθνους. Β. Δ.

— **Μόλτκε** (Moltke), ***Χελμοὺτ-Ἰωάννης-Λουδοβῖκος φὸν*** —. Πρῶσσος στρατηγός, ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου, δευτερότοκος υἱὸς τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ Ἀδόλφου, γεννηθεὶς τῷ 1848 ἐν Γκέρσδορφ τοῦ Μεκλεμβούργου καὶ ἀποθανὼν τῷ 1916 ἐν Βερολίνῳ. Γενόμενος τῷ 1870 ἀξιωματικός, διῴκησεν ἀπὸ τοῦ 1902—1904 τὴν μεραρχίαν τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς, ἐτοποθετήθη δὲ τῷ 1904 ὑπαρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου καὶ προήχθη τῷ 1906 εἰς ἀρχηγὸν αὐτοῦ. Ὁ Μόλτκε κατήρτισε τὸ σχέδιον ἐπιστρατεύσεως καὶ συγκεντρώσεως τοῦ 1912—1913, μὴ ἀποδεχθεὶς ὅμως τὰς προτάσεις τοῦ τότε τμηματάρχου τοῦ τμήματος ἐπιχειρήσεων Λούδενδορφ (Ludendorff). Παρεδέχθη κατὰ βάσιν τὸ σχέδιον τοῦ Σλίφεν (Schlieffen), τουτέστι τὴν διάθεσιν τῶν περισσοτέρων δυνάμεων κατὰ τῆς Γαλλίας καὶ τὴν προέλασιν μεθ' ἰσχυρᾶς δεξιᾶς πτέρυγος διὰ Βελγίου πρὸς περίσφιγξιν τοῦ ἐχθροῦ, ὅπως καταγάγῃ ἀποφασιστικὸν κτύπημα, καθ' ὃν χρόνον ἡ ἀριστερὰ πτέρυξ, στηριζομένη ἐπὶ τῶν φρουρίων τῆς Ἀλσατίας καὶ Λωρραίνης, θὰ διετήρει στρατηγικὴν ἄμυναν. Κατὰ τῆς Ρωσίας ἔδει νὰ διατεθῶσι μόνον αἱ ἀπολύτως ἀναγκαῖαι δυνάμεις, ἐγκαταλειπομένης ἐν ἀνάγκῃ τῆς Ἀνατολικῆς Πρωσσίας μέχρι τοῦ Βιστούλα.

*Στρατηγὸς Χελμοὺτ-Ἰωάννης-Λουδοβῖκος φὸν Μόλτκε.*

Ὁ Μόλτκε πρὸς ἄμυναν τῆς Ἀλσατίας καὶ Λωρραίνης κατὰ τὸ 1914 ἐνίσχυσε τὸν ἐκεῖ στρατὸν ἐπὶ ζημίᾳ τῶν διατεθέντων εἰς τὴν δεξιὰν πτέρυγα δυνάμεων, ἐπιδράσας μεγάλως εἰς τὸ νὰ μὴ ἐκτελεσθῇ ἡ προέλασις μεθ' ὅσης ἔδει ἰσχύος καὶ συντελέσας ἐξ ἄλλου εἰς τὸ ν' ἀποκτήσουν αἱ μεγάλαι μονάδες ἐλευθερίαν δράσεως ἄνευ ὁρίου. Ἐπὶ τῇ εἰδήσει δὲ τῆς εἰσόδου τῶν Ρώσων ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Πρωσσίᾳ ἀπέσπασε δύο σώματα στρατοῦ ἐκ τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τοῦ κατὰ τῆς Γαλλίας στρατοῦ. Ἐξ ὅλων τῶν ἄνω λόγων εὑρέθη ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Μάρνη ἐν μειονότητι ἀριθμητικῇ καὶ ἄνευ οὐδεμιᾶς ἐφεδρείας.

Παρὰ τὴν γενικὴν εὐνοϊκὴν κατάστασιν τῶν γερμανικῶν ἐπιχειρήσεων ἐν Γαλλίᾳ, ὁ Μόλτκε δὲν διετήρησε τὴν ἀναγκαίαν ἰσχὺν πρὸς καθοδήγησιν καὶ ἐποπτείαν τούτων, οὕτω δὲ μεταξὺ 1ης καὶ 2ας γερμανικῆς στρατιᾶς ἐδημιουργήθη κενὸν διάστημα, εἰς ὃ ὁ ἀπὸ Παρισίων ὁρμηθεὶς γαλλικὸς στρατὸς ἐνήργει δι' ἰσχυρᾶς ἀντεπιθέσεως. Ὁ ἀποσταλεὶς παρὰ τοῦ Μόλτκε ἀντισυνταγματάρχης Χὲντς (Hentsch) εἶχεν ἐξουσίαν νὰ διατάξῃ, ὡς ἐντολοδόχος τῆς ἀνωτέρας διοικήσεως, τὴν ὀλεθρίαν διὰ τοὺς Γερμανοὺς ὀπισθοχώρησιν, ἥτις καὶ ἐξετελέσθη.

Ὁ Μόλτκε τὴν 14 Σεπτεμβρίου 1914 παρέδωκε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἐπιτελείου εἰς τὸν ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν φὸν Φαλκενχάϊν (von Falkenhayn), περιορισθεὶς εἰς τὰ καθήκοντα τοῦ ἀντιπροσώπου τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου ἐν τῷ ἐσωτερικῷ, μέχρι τοῦ θανάτου αὐτοῦ. Ἡ σύζυγός του Ἐλίζα ἐξέδωκε τῷ 1922 «Ἀναμνήσεις τοῦ στρατηγοῦ Χελμοὺτ φὸν Μόλτκε, ἐπιστολαὶ καὶ ἔγγραφα». Ν. Ι. Κ.

**Μόλτσα** (Molza), ***Φραγκῖσκος-Μαρία.*** Ἰταλὸς ποιητὴς καὶ διηγηματογράφος (1489—1544). Τέσσαρα ἔτη μετὰ τὸν γάμον του (1512) ἐγκατέλειψε τὴν σύζυγόν του καὶ τὰ τρία τέκνα του καὶ μετέβη εἰς Ρώμην, ὅπου λίαν ταχέως ἀπέκτησε φήμην διακεκριμένου ποιητοῦ καὶ πολυμαθοῦς μεταξὺ τοῦ κύκλου τῶν γραμμάτων τῆς αὐλῆς τοῦ πάπα Λέοντος Ι'. Χάρις εἰς τὸ ποιητικὸν τάλαντόν του ἔτυχε τῆς ὑποστηρίξεως τοῦ καρδιναλίου

Digitized by Google

Ἱππολύτου τῶν Μεδίκων, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου περιῆλθεν εἰς ἐσχάτην ἔνδειαν. Βραδύτερον περιέθαλψεν αὐτὸν ὁ καρδινάλιος Ἀλέξανδρος Φαρνέζε. Ὁ Μόλτσα ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων λυρικῶν ποιητῶν τοῦ αἰῶνός του, γράψας πλεῖστα ἐρωτικὰ ποιήματα ἀπευθυνόμενα ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς περιφήμους ἑταίρας ἢ κυρίας τῆς ἀνωτάτης κοινωνίας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι αἱ περίφημοι στροφαὶ «Νύμφη τοῦ Τιβέρεως», τὰ «Διηγήματα» κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Βοκκακίου, ἡ ποιητικὴ συλλογὴ «Ρίμες» καὶ αἱ «Ἐλεγεῖαι» εἰς λατινικὴν γλῶσσαν. Ἡ πλήρης ἔκδοσις τῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Poesie volgari e latine» ἐγένετο τῷ 1747—1754, τῶν δὲ «Διηγημάτων» του τῷ 1863. Μ. Δ. Β.

**Μολτσάνωφ, *Μιχαήλ.*** Ρῶσος ἀπατεὼν παρουσιασθεὶς ὡς τσάρος (βλ. λ. *Δημήτριος*, ψευδοτσάρος τῆς Ρωσίας).

**Μόλτσερ** (Moltzer), ***Ἐρνέστος.*** Ὁλλανδὸς φιλόλογος καὶ ἱστορικὸς (1836—1895). Καθηγητὴς ἐν Γκρόνιγκεν καὶ Οὐτρέχτῃ (1882) ἔγραψε: «Περὶ τῆς μεσαιωνικῆς ὁλλανδικῆς δραματικῆς ποιήσεως» (1875), μετὰ δὲ τὸν Βίνκελ ἐξέδωκε τὴν «Βιβλιοθήκην τῆς ὁλλανδικῆς λογοτεχνίας». Θ. Κ.

**μολυβδάδες** (οἱ) *[Λαογρ.]*. Χυτὰ ἐκ μολύβδου δοχεῖα πρὸς ἐναπόθεσιν ρακῆς (βλ. λ. *γύψος*).

**μολυβδαζωτίδιον** (τὸ) *[Χημ.]*· βλ. *μολύβδου ἑνώσεις*.

**μολύβδαινα** (ἡ)· τεμάχιον μολύβδου ἀνηρτημένον πλησίον τοῦ ἀγκίστρου ἢ εἰς τὴν βάσιν τῶν δικτύων χάριν τῆς εἰς τὸ ὕδωρ καταβυθίσεως, ἄλλως *μολυβήθρα*· || σφαῖρα μολυβδίνη, τὴν ὁποίαν ἔρριπτον διὰ τῆς χειρὸς χάριν γυμναστικῆς (ἀρχ.): «μολύβδαιναι χερμάδιοι»· || τὸ μέταλλον *μολυβδαίνιον* (βλ. λ.)· || εἶδος μέλανος γραφιτούχου ὀρυκτοῦ ἢ μίγματος γραφίτου καὶ ἀργίλλου, δι' ὧν κατασκευάζονται τὰ μολυβδοκόνδυλα (plombagine).

—*[Ἁλιευτ.]* Καλεῖται *μολύβδαινα* τὸ ἐκ μολύβδου κωνικὸν βαρύδιον, τὸ ὁποῖον προσδένεται εἰς τὸ ἄκρον τῆς *καθετῆς* (ἀρχ. ὁ *καθέτης*), τοῦτο μὲν ὅπως ἡ *μεσσηνέζα*, ἐφ' ἧς εἶναι προσδεδεμένα τὰ ἀγκίστρια, κρατῆται, δι' ἕλξεως τῆς καθετῆς ἀπὸ τῆς χειρὸς τοῦ ἁλιεύοντος, κατακορύφως τεταμένη, τοῦτο δὲ ὅπως ἀντιλαμβάνεται ὁ ἁλιεὺς ἐὰν τὸ ἄκρον τῆς καθετῆς ἐπακουμβᾷ εἰς τὸν βυθόν. Ἐπίσης, ἕκαστον τῶν τεμαχίων φύλλου μολύβδου μήκους 3—4 ἑκατοστῶν, τὰ ὁποῖα, περιβάλλοντα κυλινδρικῶς διὰ κάμψεώς των τὸ κάτω λῶμα (ἀμπάσο γραντί) τῶν μανωμένων δικτύων, καθιστῶσι ταῦτα κατακόρυφα ὡς τοῖχος ὑπὲρ τὸν βυθόν, τοῦ μὲν ἄνω λώματος ἀνωθουμένου ὑπὸ τῶν φελλῶν, τοῦ δὲ κάτω ἐπακουμβῶντος τὸν βυθὸν καὶ παρακολουθοῦντος τὴν διαμόρφωσίν του χάριν εἰς τὰς μολυβδαίνας. Σ. Ε. Λ.

— *[Ἀρχ. Γυμν.]* Ἐκαλεῖτο *μολύβδαινα* σφαῖρα μολυβδίνη, διὰ τῆς ὁποίας οἱ ἀρχαῖοι ἀθληταὶ ἐγύμναζον τοὺς ὤμους καὶ τὰ ἄνω ἄκρα, ἐκτελοῦντες διαφόρους κινήσεις, ἀναλόγους πρὸς τὰς διὰ τῶν ἁλτήρων ἐκτελουμένας. Ἐχρησιμοποιοῦντο ἐπίσης καὶ διὰ τὴν ἐκγύμνασιν τῶν πυγμάχων.

**μολύβδαινα** (ἡ) (Plumbago) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μολυβδαινοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἢ καὶ θάμνους ἰθαγενεῖς τῶν θερμῶν καὶ εὐκράτων τῆς γῆς χωρῶν. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μολύβδαινα ἡ εὐρωπαϊκὴ* (Plumbago europaea), πόα πολυετὴς ἐνέχουσα φαρμακευτικὰς ἰδιότητας καὶ ἀπαντῶσα καὶ παρ' ἡμῖν ἰδίως ἐν Κεφαλληνίᾳ, ὅπου εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὰ ὀνόματα *ἀγριομαρούλι* ἢ *λεπιδόχορτο*. *Μολύβδαινα ἡ ἀκρωτηριανὴ* (Plumbago capensis), ἰθαγενὴς θάμνος ἀναρριχητικὸς καὶ λίαν κοσμητικὸς τῶν περὶ τὸ ἀκρωτήριον τῆς Καλῆς Ἐλπίδος χωρῶν, καλλιεργούμενος πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης πρὸς κόσμον ὡς καὶ παρ' ἡμῖν, ὅπου εἶναι γνωστὸς ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *πλούμπαγο*. *Μολύβδαινα ἡ λαρπέντειος* (Plumbago Larpentii), ἰθαγενὴς πόα τῆς Κίνας, καλλιεργουμένη πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μολυβδαινικὴ ὤχρα** (Molybdänocker), ἡ ***μολυβδίτης*** (Molybdit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ὀξείδιον τοῦ μολυβδαινίου $M_0O_3$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα, εὑρίσκεται δὲ συνήθως εἰς ἰνώδη, ἀκτινοειδῆ ἢ καὶ γεώδη συσσωματώματα. Εἶναι ἀλαμπὲς ἕως μεταξώδους λάμψεως καὶ ἔχει χρῶμα ὑπόλευκον ἕως κίτρινον. Ἀπαντᾷ μετὰ μολυβδαινίτου εἰς τὴν Σαξωνίαν, τὴν Σουηδίαν καὶ τὴν Νορβηγίαν. Γ. Β.

**μολυβδαίνιον** (τὸ) *[Χημ.]*. Χημικὸν στοιχεῖον ἀτομικοῦ βάρους 96. Ἔχει σύμβολον *Mo* καὶ ἀνήκει εἰς τὴν ὁμάδα τοῦ χρωμίου. Ἐν καθαρᾷ καταστάσει ἔχει χρῶμα ἀργυρόλευκον καὶ ὑφίσταται εὐκόλως τὰς διαφόρους μηχανικὰς κατεργασίας. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 10,2, τήκεται εἰς 2600° περίπου καὶ βράζει εἰς 3500° περίπου. Δὲν ἔχει μαγνητικὰς ἰδιότητας. Τὸ μολυβδαίνιον ἀπαντᾷ ἐν τῇ φύσει μόνον ὑπὸ τὴν μορφὴν ἑνώσεων αὐτοῦ ἐξ ὧν μεγαλυτέραν σημασίαν ἔχουσιν ὁ *μολυβδαινίτης* $MoS_2$ καὶ ὁ *βουλφενίτης* $Pb\ MoO_4$. Τὸ μέταλλον ἐξάγεται ἐκ τῶν μεταλλευμάτων (κυρίως τοῦ μολυβδαινίτου) διὰ φρύξεως καὶ ἀκολούθου ἀναγωγῆς δι' ἄνθρακος τοῦ σχηματιζομένου ὀξειδίου. Συνήθως ὅμως παρασκευάζεται ὄχι τὸ καθαρὸν μέταλλον, ὅπερ μικρὰν μόνον βιομηχανικὴν σημασίαν ἔχει, ἀλλὰ ὑπὸ μορφὴν κραμάτων, ἐξ ὧν τὸ σπουδαιότερον εἶναι τὸ μετὰ σιδήρου, ὅπερ μεγίστην ἔχει σημασίαν εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν εἰδικῶν χαλύβων.

Ὁ μολυβδαινίτης ἐπὶ μακρὸν ἐθεωρεῖτο καὶ ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς γραφίτης καὶ μόλις τῷ 1778 ἀπεμονώθη ἐξ αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ Σέλε τὸ τριοξείδιον τοῦ μολυβδαινίου, χαρακτηρισθὲν ὑπὸ τοῦ ἰδίου ὡς ὀξείδιον ἰδίου νέου μετάλλου. Τὸ μέταλλον ἀπεμονώθη ἐν καθαρᾷ καταστάσει τῷ 1782 ἐκ τοῦ ὀξειδίου ὑπὸ τοῦ Hjelm. Τὸ μολυβδαίνιον ἀνιχνεύεται ποιοτικῶς διὰ σειρᾶς λίαν εὐπαθῶν ἀντιδράσεων, ὡς λ. χ. ἡ κυανῆ χρῶσις δι' ἐξατμίσεως μετὰ πυκνοῦ $H_2SO_4$ καὶ ἀφέσεως πρὸς ψῦξιν, ἡ ζωηρὰ κιτρίνη χρῶσις κατὰ τὴν ὀξείδωσιν δι' ὑπεροξειδίου τοῦ ὑδρογόνου ἐν ὀξίνῳ διαλύματι κλπ. Ποσοτικῶς δὲ προσδιορίζεται διὰ διαφόρων μεθόδων, ὡς λ. χ. χρωμομετρικῶν, ὀγκομετρικῶν, σταθμικῶν, ἠλεκτρολυτικῶν κλπ.

Ἡ κυρία χρησιμοποίησις τοῦ μολυβδαινίου (ἄνω τῶν 80% τῆς ὅλης καταναλώσεως) γίνεται εἰς τὴν βιομηχανίαν τοῦ χάλυβος καὶ δὴ τῶν δι' εἰδικὰς χρήσεις τοιούτων. Σχετικῶς μικρὰν σημασίαν ἔχει ἐπίσης ἡ χημικὴ χρησιμοποίησις τοῦ μολυβδαινίου πρὸς παρασκευὴν τοῦ μολυβδαινικοῦ ἀμμωνίου, ὅπερ χρησιμεύει πρὸς προσδιορισμὸν τοῦ φωσφόρου καὶ τοῦ ἀρσενικοῦ. Τὸ μολυβδαίνιον περαιτέρω χρησιμοποιεῖται δι' ἠλεκτροτεχνικοὺς σκοποὺς καὶ κυρίως πρὸς παρασκευὴν ἠλεκτρικῶν λαμπτήρων. Εἰς τὴν πρᾶξιν χρησιμοποιοῦνται ἐπίσης διάφορα κράματα τοῦ μολυβδαινίου μετὰ διαφόρων ἄλλων μετάλλων, ὡς λ. χ. τὸ μολυβδαίνιον-χαλκός, τὸ μολυβδαίνιον-κάδμιον-ψευδάργυρος, τὸ μολυβδαίνιον-ὑδράργυρος, τὸ μολυβδαίνιον-βόριον, τὸ μολυβδαίνιον-ἀργίλλιον, τὸ μολυβδαίνιον-νικέλιον, τὸ μολυβδαίνιον-βολφράμιον, τὸ μολυβδαίνιον-χρώμιον, τὸ μολυβδαίνιον-κοβάλτιον κλπ.

Τὸ μολυβδαίνιον σχηματίζει πολλὰς ἑνώσεις, εἰς τὰς ὁποίας ἐμφανίζει σθένος ἀπὸ 2 ἕως 8. Οὕτως εἰς τὰς ἁλογονούχους ἑνώσεις καὶ ὀξυχλωριούχους ἐμφανίζεται ὡς 3-, 4-, 5- καὶ 6-ατομικόν, εἰς τὴν σταθερωτάτην του ὀξυγονοῦχον ἕνωσιν $MoO_3$ ὡς ἑξατομικὸν καὶ εἰς τὰς θειούχους του ἑνώσεις $MoS_2$ καὶ $MoS_4$ ὡς τετρατομικὸν καὶ ὀκτατομικόν.

Αἱ σπουδαιότεραι ἐκ τῶν ἑνώσεων τοῦ μολυβδαινίου εἶναι: Τὸ *τριοξείδιον τοῦ μολυβδαινίου* $MoO_3$, ὅπερ μετὰ τῶν ἀλάτων του ἀποτελεῖ τὴν τεχνικῶς σπουδαιοτάτην ἕνωσιν τοῦ μολυβδαινίου. Μὲ τὸ ὄνομα τοῦτο δηλοῦται τόσον τὸ τριοξείδιον αὐτὸ τοῦτο, ὅσον καὶ ὁ ὑδρίτης του. Τὸ ἀγοραῖον μολυβδαινικὸν ὀξὺ περιέχει πάντοτε ἀμμωνίαν καὶ ἀντιστοιχεῖ συνήθως εἰς τὸν τύπον

$$NH_3.3Mo_3+{}^1/_2H_2O.$$

Τὸ τριοξείδιον τοῦ μολυβδαινίου εἶναι λευκὴ κόνις ὁμοιάζουσα πρὸς τὸν τάλκην. Εἶναι δυσδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ ἐν ψυχρῷ καὶ εὐδιάλυτος ἐν θερμῷ. Τὸ ὑδατικὸν διάλυμα αὐτοῦ ἐρυθραίνει τὸν χάρτην τοῦ ἡλιοτροπίου. Τὸ τριοξείδιον τοῦ μολυβδαινίου σχηματίζει διαφόρους ὑδρίτας καὶ ἑνοῦται μετ' ἀνοργάνων καὶ ὀργανικῶν ὀξέων εἰς σύμπλοκα ὀξέα, ὧν σπουδαιότερον εἶναι τὸ ὑπὸ τοῦ Berzelius ἀνακαλυφθὲν φωσφορομολυβδαινικὸν ὀξὺ $H_3PO_4.12\ MoO_3+12\ H_2O$, τὸ ὁποῖον χρησιμεύει ὡς ἀντιδραστήριον τῶν ἀλκαλοειδῶν. Τεχνικῶς πολὺ μεγαλυτέραν σημασίαν ἔχουσι τὰ μετὰ μετάλλων ἅλατα τοῦ μολυβδαινικοῦ ὀξέος, ὧν σπουδαιότερον εἶναι τὸ *μολυβδαινικὸν ἀμμώνιον*, ὅπερ χρησιμοποιεῖται διὰ τὸν προσδιορισμὸν τοῦ φωσφόρου εἰς τὸν σίδηρον καὶ τὸν χάλυβα.

Τὸ *διοξείδιον τοῦ μολυβδαινίου* $MoO_2$ εἶναι ἐρυθροφαία στίλβουσα κόνις ἢ κρύσταλλοι ἀδιάλυτοι εἰς τὸ ὕδωρ.

Ὁπωσδήποτε σχετικὴν σημασίαν ἔχουσιν ἀκόμη τὸ *μολυβδαινικὸν ὀξείδιον τοῦ μολυβδαινίου* $Mo_8O_8$ καὶ τὸ *πενταχλωριοῦχον μολυβδαίνιον* $Mo\ Cl_5$. Σ. Γ.

**μολυβδαινιοχάλυψ** (ὁ)· κρᾶμα χάλυβος μετὰ *μολυβδαινίου* (βλ. λ.).

— *[Μεταλλ.]* Οἱ *μολυβδαινιοχάλυβες* εἶναι τάξις πολυμελῶν ταχυχαλύβων, χρωμιοβολφραμιούχων καὶ χρωμιοβολφραμιοβαναδιούχων ἢ κοβαλτιούχων (περιεχόντων ἄνθρακα 0,30 ἕως 0,70 %, χρώμιον 1,5 ἕως 6, βολφράμιον 7 ἕως 20, καὶ ὀλίγον βανάδιον ἢ ἐνίοτε μολυβδαίνιον ἢ κοβάλτιον). Εἶναι λίαν δύσθραυστοι, ἀντέχοντες εἰς κραδασμούς, καὶ χρησιμεύουν διὰ κατασκευὴν ἐργαλείων κατεργασίας μετάλλων, βαλβίδων μηχανῶν κτλ., δυνάμενων νὰ ἐργασθῶσι μὲ μεγάλην ταχύτητα καὶ εἰς θερμοκρασίαν μᾶλλον ὑψηλήν, χωρὶς νὰ κινδυνεύσωσι ν' ἀπολέσωσι τὴν σκληρότητα αὐτῶν ἕνεκα τῆς ἐκ τῆς τριβῆς ἢ ἄλλης παραγομένης ἀνυψώσεως τῆς θερμοκρασίας. Εἰδικά τινα κράματα τοῦ μολυβδαινίου ἔχουσιν ἔτι μεγαλυτέραν σκληρότητα, εἶναι δὲ ταῦτα κατάλληλα διὰ τὴν κατεργασίαν διὰ κοπῆς καὶ αὐτοῦ τοῦ φαιοῦ χυτοσιδήρου· τοιοῦτος εἶναι ὁ *στελλίτης* καὶ τὰ ὅμοια αὐτοῦ, περιέχων 36 % χρωμίου, 34 % κοβαλτίου, 12 % βολφραμίου, 10 % μολυβδαινίου καὶ 8 % σιδήρου (ὑπάρχει καὶ παραλλαγὴ ἄνευ μολυβδαινίου, ἀντικαθισταμένου ἁπλῶς ὑπὸ σιδήρου, ὅστις φθάνει τότε τὰ 18 % ἐν ὅλῳ). Ὁ στελλίτης ὑπερτερεῖται εἰς σκληρότητα μόνον ὑπὸ μείγματος ἀνθρακούχων μετάλλων, τοῦ *βίδια* (γερμ. Widia=wie Diamant=σκληρὸς ὡς ὁ ἀδάμας). Ἐν γένει τὸ μολυβδαίνιον παρέχει λίαν σκληρὰ καὶ δύσθραυστα κράματα, καθιστάμενα ἔτι σκληρότερα δι' ἐπαζώσεως. Τοιαῦτα κράματα, ὡς ὁ στελλίτης, καὶ μίγματα, ὡς τὸ βίδια, χάριν οἰκονομίας κατασκευάζονται εἰς μικρὰ τεμάχια προσκολλώμενα ἐπὶ βάσεως χαλυβδίνης. Θ. Κ.

**μολυβδαίνω**· ἐπιχρίω διὰ μολυβδαίνης, ἤτοι γρανίτου, ὡς π. χ. διὰ γαλβανοστεγίαν. Θ. Κ.

— **μολυβδαινίου *κυανοῦν*** *[Χημ.]*· βλ. κυανοῦν μολυβδαινίου.

**μολυβδαινίτης** (ὁ) (Molybdänit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν θειοῦχον μολυβδαίνιον $MoS_2$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν σύστημα καὶ ἀπαντᾷ σπανίως μὲν εἰς ἑξαγωνικοὺς πίνακας, συνήθως δὲ εἰς φυλλώδη, λεπιδοειδῆ καὶ ἐνίοτε στιφρὰ συσσωματώματα. Εἰς λεπτότατα φυλλάρια εἶναι εὔκαμπτος ἀλλ' ὄχι ἐλαστικός. Παρουσιάζει σκληρότητα 1-1 ¹/₂, εἰδικὸν βάρος 4,7—4,8, λάμψιν ἰσχυρῶς μεταλλικὴν καὶ χρῶμα μολυβδότεφρον ἕως κυανότεφρον. Ἀποτελεῖ σπουδαιότατον μετάλλευμα τοῦ *μολυβδαινίου* (βλ. λ.), ἐμφανίζεται δὲ πολλαχοῦ, ἀλλ' εἰς μικρὰ πάντοτε ποσά. Ἀπαντᾷ συνήθως ἐντὸς γρανιτῶν καὶ γρανιτικῶν γνευσίων εἰς Riesengebirge, τὴν νότιον Νορβηγίαν, τὴν Νορβηγίαν, τὸν Καναδᾶν κ. ἀ., καθὼς καὶ ἐντὸς φλεβῶν βολφραμιτούχων καὶ κασσιτερούχων μεταλλευμάτων εἰς τὰ Erzgebirge, τὴν Κορνουαλλίαν, τὴν νοτιοδυτικὴν Ἰσπανίαν κ. ἀ. Γ. Β.

**μολυβδαινοειδῆ** (τὰ) (Plumbaginaceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυλεδόνων*, περιλαμβάνουσα πόας καὶ θάμνους πανταχοῦ σχεδὸν τῆς γῆς ἀπαντῶντας. Ἐκ τῶν κυριωτέρων γενῶν τῆς οἰκογενείας, ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον, ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *ἀρμερία*, *μολύβδαινα* καὶ *στατικὴ* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μολυβδίασις** (ἡ) (Saturnisme) *[Ἰατρ.]*. Οὕτω καλεῖται ἡ διὰ τοῦ μολύβδου καὶ τῶν παραγώγων αὐτοῦ τοξικὴ δηλητηρίασις τοῦ ὀργανισμοῦ. Ὁ μόλυβδος καὶ τὰ συνθετικὰ αὐτοῦ κατέχουσι τὴν πρώτην θέσιν μεταξὺ τῶν μετάλλων ἐκείνων, ἅτινα εἶναι ἱκανὰ νὰ ἐπιφέρωσιν εἰς τὸν ὀργανισμὸν νοσηρὰ καὶ ἐπιβλαβῆ ἀποτελέσματα. Ἀπορροφούμενος ὁ μόλυβδος εἰς γενναίας δόσεις προκαλεῖ ὀξέα συμβάματα ταχέως θανατηφόρα· ἄλλοτε, ἐπερχόμενος κατὰ μικρὰς δόσεις εἰς τὸν ὀργανισμόν, ἐπιφέρει διὰ μακροῦ βαθείας ἀλλοιώσεις τῶν ἱστῶν, τουτέστι τὴν *χρονίαν μολυβδίασιν*. Τὰ ἐκ τοῦ μολύβδου συμβάματα ἦσαν γνωστὰ ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων, περιεγράφησαν δὲ καὶ ἐσπουδάσθησαν σαφέστερον ὑπὸ τῶν νεωτέρων ἐπιστημόνων.

Συμβάματα ἐκ μολυβδιάσεως παρατηροῦνται κυρίως εἰς τοὺς χειριζομένους τὸν μόλυβδον ἐργάτας, ἤτοι εἰς τοὺς κατασκευαστὰς ψιμυθίου (ἀνθρακικὸς μόλυβδος), τοὺς ναστοχαρτοποιοὺς καὶ ναστοχαρτοπώλας, τοὺς κοσμηματογράφους οἰκιῶν, τοὺς ὑελουργούς, τοὺς τυπογράφους κλπ. Παρατηροῦνται δ' ὡσαύτως καὶ εἰς τὰ ἄτομα ἐκεῖνα ἅτινα πίνουσιν ὕδατα παραμένοντα ἐντὸς μολυβδίνων δοχείων ἢ ἐντὸς σωλήνων ἐκ μολύβδου, ἅτινα τρώγουσιν ἄρτον ἑψηθέντα ἐντὸς κλιβάνου θερμανθέντος διὰ ξύλων χρωματισμένων δι' ἀνθρακικοῦ μολύβδου (στουπέτσι), ἅτινα καταναλίσκουσιν οἴνους κατεργασθέντας διὰ λιθαργύρου ἢ διατετηρημένα τρόφιμα (κονσέρβες) ἐντὸς κυτίων ἐσωτερικῶς κεκολλημένων διὰ μολύβδου κλπ.

Τὸ καταφανέστερον καὶ χαρακτηριστικώτερον σημεῖον τῆς μολυβδιάσεως εἶναι ὁ ἐκ μολύβδου κολικός, ὅστις ἐμφανίζεται ἀποτόμως κατόπιν προδρόμων τινῶν τῶν πεπτικῶν διαταραχῶν. Τὸ ἐκ τούτου ἄλγος εἶναι ἔντονον, συνεχές, μετ' ἐξάρσεων σπασμωδικῶν, ἐντόνων, ζωηρῶν, ἐκ τοῦ ὁποίου ἀποβαίνει ἡ ὄψις τοῦ πάσχοντος γριπώδης, χαρακτηριστική· τὸ ἄλγος τοῦτο εἶναι ἰδιαίτατα αἰσθητὸν πέριξ τῆς ὀμφαλικῆς χώρας, κατευνάζεται δ' ἐνίοτε δι' εὐρείας καὶ βαθείας πιέσεως τῆς χώρας ταύτης. Ἡ κοιλία δ' ἄλλωστε κατὰ τὴν στιγμὴν ταύτην εἶναι σκληρά, συνεσπασμένη, καὶ ἡ δυσκοιλιότης ἔμμονος, σχεδὸν πάντοτε ὁλική. Εἰς τὰ σημεῖα ταῦτα δέον νὰ προστεθῇ ἡ ὑποκύανος παρυφὴ τῶν οὔλων, ἡ κακοσμία τῆς ἀποπνοίας τοῦ στόματος, ἡ ἀνορεξία, ἡ ἰσχυρὰ ἀναιμία, ἡ σμίκρυνσις καὶ ἡ βραδύτης τοῦ σφυγμοῦ· ἀκολούθως ἡ τοπικὴ ἀναισθησία ἢ τοὐναντίον ἡ ὑπεραισθησία τοῦ δέρματος, διαταραχαὶ τῆς ὁράσεως, παραλύσεις τῶν

Digitized by Google

ἐκτατήρων μυῶν τῶν χειρῶν, μυϊκαὶ διαταραχαί, ὁ τρόμος τῶν χειρῶν, διαταραχαὶ δυσπνοϊκαὶ πολλάκις σοβαραὶ (τὸ μολυβδιασικὸν ἆσθμα), τοφώδη ἐναποθέματα τῶν ἀρθρώσεων καὶ παραμορφώσεις αὐτῶν, αἵτινες προκαλοῦσι τὴν μολυβδιασικὴν ἀρθρίτιδα ἢ ποδάγραν, ἐνίοτε δὲ καὶ λευκωματουρίαν ὀφειλομένην εἰς διάμεσον νεφρίτιδα· τέλος δὲ ἐμφανίζονται καὶ ἐγκεφαλικὰ συμβάματα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον βαρέα, ἤτοι κεφαλαλγία, ὕπνος ταραχώδης, ἀϋπνία, παραλήρημα, ψευδαισθησίαι, σπασμοί, προσβολαὶ ἀποπληξίας καὶ τὸ κῶμα. Εἰδικῶς παρατηροῦνται μολυβδιασικαὶ παραλύσεις τῶν ἐκτατήρων μυῶν τοῦ ἀντιβραχίου χαρακτηριστικαί, ἐξαιρέσει τοῦ μακροῦ ὑπτιαστοῦ μυός, παραλύσεις βραχιόνιοι, περονιακαί, καθολικαί, καὶ παραλύσεις τῶν ἐκτατήρων μυῶν τοῦ ὀφθαλμοῦ.

Ἡ μολυβδίασις εἶναι συνηθέστατα ἰατή. Ἀναγράφεται πρὸς τοῦτο ἡ διὰ γάλακτος δίαιτα, τὸ θειικὸν νάτριον ἢ μαγνήσιον καί τινα καθαρτικὰ χολαγωγά, τὰ θειοῦχα λουτρά, κλπ. Εἰς τὰς περιπτώσεις, ἐν αἷς τὸ ἐπάγγελμα ἐπιβάλλει τὸν χειρισμὸν οὐσιῶν μολυβδοφόρων, ἡ μετρία χρῆσις τοῦ ἰωδιούχου καλίου φαίνεται ἀσκοῦσα προληπτικήν τρόπον τινὰ ἐνέργειαν.

***Προφύλαξις***. Ὁ ἀγὼν κατὰ τῆς μολυβδιάσεως ἐφείλκυσε τὴν προσοχὴν τῶν κατὰ καιροὺς κυβερνήσεων, ἐν Γαλλίᾳ ἰδίως, ἔνθα τῷ 1902 καθωρίσθησαν τὰ ἀκόλουθα: 1) Διατάγματα καὶ κανονισμοὶ περὶ τῶν μέτρων τῶν ἀφορώντων εἰς τὰ χρώματα, τὰ ἐκ μολύβδου φύλλα περιτυλίγματος, τὰ ἀγγεῖα, τὰ κεραμεικὰ σκεύη, τὰ κυτία διατετηρημένων τροφίμων, τοὺς ἀγωγοὺς σωλῆνος τοῦ ὕδατος. 2) Αἱ βιομηχανίαι ἐν αἷς κατεργάζεται ὁ μόλυβδος ἐθεωρήθησαν ὡς ἀνθυγιειναί. Ἡ ὑγιεινὴ τοῦ ἐργαστηρίου πρὸ παντὸς πρέπει νὰ διαπνέηται ὑπὸ τῆς θεμελιώδους ἀνάγκης, ὅπως ἀποβάλλῃ τοὺς μολυβδοφόρους κονιορτούς· ὁ ἀερισμὸς δέον νὰ εἶναι ἄφθονος καὶ ὁ ἀὴρ νὰ ἀνανεῶται ἀδιαπαύστως· δέον νὰ ἐγκατασταθῶσι μηχανήματα ἀναρροφητικὰ ὑπεράνω τῶν ἐπικινδύνων ζωνῶν, εἰς τὰς ὁποίας κατεργάζεται ὁ μόλυβδος ἐν ξηρᾷ κόνει. Ἡ κονιοποίησις τοῦ μολύβδου, τὸ κοσκίνισμα καὶ ἡ λεπτοποίησις δέον νὰ γίνωνται μηχανικῶς ἐντὸς μηχανημάτων καὶ συσκευῶν ἑρμητικῶς κεκλεισμένων. Ἡ ἐφαρμογὴ τῶν μέτρων τούτων παρέσχεν ἐξαίρετα ἀποτελέσματα.

Ἀλλὰ μεγίστη φροντὶς δέον νὰ δοθῇ εἰς τὴν ἀτομικὴν ὑγιεινὴν τοῦ ἐργάτου. Ὁ ἐργάτης πρέπει νὰ ἔχῃ τὰ ἐνδύματα τῆς πόλεως κατ' ἰδίαν ἀπὸ τῶν ἐνδυμάτων του τῆς ἐργασίας καὶ ἐν προφυλάξει ἀπὸ πάσης ἐπαφῆς πρὸς τὸν μόλυβδον. Δέον νὰ ἀπαιτῆται παρὰ τοῦ ἐργάτου λεπτομερὴς καὶ ἐπιμελὴς καθαρισμὸς καὶ εὐτρεπισμὸς τῶν χειρῶν, τοῦ προσώπου καὶ τοῦ σώματος αὐτοῦ. Οἱ ἐκμισθωταὶ τῆς ἐργασίας ὑποχρεοῦνται νὰ ἔχωσι νιπτῆρας ἐφωδιασμένους δι' ὅλων τῶν χρειωδῶν καὶ λίαν ἐπαρκεῖς κατ' ἀριθμόν, καθὼς καὶ ἑστιατόρια, εἰς τὰ ὁποῖα νὰ γευματίζωσιν οἱ ἐργάται. Ἀπαγορεύεται εἰς πάντα ἐργάτην νὰ λαμβάνῃ οἱανδήποτε τροφὴν ἐντὸς τοῦ ἐργαστηρίου. Κανονισμοὶ δὲ αὐστηρότατοι ἐκωδικοποίησαν τὰς διατάξεις ταύτας. Ὁ νόμος τῆς 25 Ὀκτωβρίου 1919 ἐν Γαλλίᾳ συγκατέλεξε τὴν μολυβδίασιν μεταξὺ τῶν ἐπαγγελματικῶν νόσων, εἰς ἃς ἐφαρμόζεται ἡ νομοθεσία περὶ τυχαίων συμβαμάτων ἐν τῇ ἐργασίᾳ (accidents du travail). Οὕτω τὸ ἐκ μολυβδιάσεως προσβληθὲν ἄτομον πρέπει νὰ δηλώσῃ τὴν κατάστασιν αὐτοῦ κατὰ τὸ διάστημα τῆς δεκαπενθημερίας ἀπὸ τῆς παύσεως τῆς ἐργασίας· ἡ δήλωσις θὰ γίνῃ πρὸς τὸν δήμαρχον ἢ τὸν πρόεδρον τῆς κοινότητος, ὅστις θὰ ἀπευθύνῃ τὴν περὶ τούτου καταγγελίαν ὅπου δεῖ· δέον δὲ νὰ συμπληρωθῇ ἡ δήλωσις αὕτη δι' ἰατρικοῦ πιστοποιητικοῦ ὑποδεικνύοντος τὴν φύσιν τῆς νόσου καὶ τὰ πιθανὰ ἐπακόλουθα ταύτης.

Ἡ θεραπεία τοῦ κολικοῦ τοῦ μολύβδου, ὑποδειχθεῖσα ὑπὸ μοναχῶν Ἰταλῶν, ἐνεργεῖται ὡς ἀκολούθως: Τὴν πρώτην ἡμέραν χορηγεῖται καθαρκτικὸν (φύλλα σέννης μετὰ σεραπίου νερατζίων)· τὴν δευτέραν ἡμέραν καθαρκτικὸν πάλιν ἠπιώτερον· τὴν τρίτην ἡμέραν κλύσμα καθαρτικόν. Πρὸς καταπράϋνσιν τοῦ πόνου ἐνεργοῦμεν ἐνέσεις μορφίνης. Ἡ δίαιτα δὲ περιορίζεται μόνον εἰς τὴν διὰ γάλακτος διατροφὴν καὶ τὸν ἐξ ὀσπρίων ζωμόν. Ἡ ἀνάρρωσις ἀπαιτεῖ τὴν ἐπὶ πολὺ μακρὸν χρόνον αὐστηρὰν ἐπιτήρησιν τῆς διαίτης (βλ. καὶ λ. *ἀντίδοτα*). Μ. Ν. Κ.

**μολυβδικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐκ μολύβδου, μολύβδινος.

**μολύβδινος,** *—η, —ον*· ὁ ἐκ μολύβου συνιστάμενος ἢ κατεσκευασμένος, κοιν. *μολυβένιος*.

**μολυβδίς,** *—ίδος* (ἡ)· μικρὸς μόλυβδος, τεμάχιον μολύβδου ὡς βάρος χρησιμοποιούμενον, ἄλλως *μολύβδαινα*, κοιν. *μολυβήθρα*· || καθόλου, βάρος χάριν καταδύσεως: «μολυβδίδες ράχεως» τὰ ἐπὶ τῆς ράχεως τοῦ δύτου ἀνηρτημένα βάρη· || ἡ στάθμη τῶν κτιστῶν, ἡ σταφύλη· || ἡ μολυβδογραφίς, κοιν. *μολυβοκόντυλο*· || τὸ ἐκ γραφίτου ραβδίον τὸ περιεχόμενον εἰς τὰ μολυβδοκόνδυλα.

—*[Ἐγκυκλ.]* Καλοῦνται *μολυβδίδες* βάρη ἐκ μολύβδου καμπυλωμένα πρὸς τὰ ἔσω, ὅπως ἐφαρμόζωσιν ἐπὶ τῆς ράχεως καὶ τοῦ θώρακος τῶν δυτῶν, ἀρτώμενα ἀπὸ τῶν ὤμων των καὶ χρησιμεύοντα ὡς ἕρματα καὶ διὰ τὴν κατακόρυφον αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ πυθμένος ἰσορροπίαν. Βοηθεῖται δὲ ὁ προορισμός των ὑπὸ τῶν ἐπίσης ἡρματισμένων ὑποδυμάτων καταδύσεως. Σ. Ε. Λ.

**μολυβδίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*· βλ. λ. *μολυβδαινικὴ ὤχρα*.

**μολυβδόβουλλον** (τό). Ἐκλήθησαν *μολυβδόβουλλα*, ἀδοκίμως, τὰ ἔγγραφα τὰ ἔχοντα ἐξηρτημένην κάτωθεν διὰ μηρύνθου σφραγῖδα ἐκ μολύβδου, ὅπως *ἀργυρόβουλλα*, τὰ ἔχοντα σφραγῖδα ἀργυρᾶν, καὶ *χρυσόβουλλα*, τὰ ἔχοντα σφραγῖδα χρυσῆν (βλ. λ. *σφραγῖδες ἀργυραῖ*, *σφραγῖδες* μολύβδινοι καὶ *σφραγῖδες* χρυσαῖ).

**μολυβδογραφίς,** *—ίδος* (ἡ)· ἡ ἐκ μολύβδου γραφίς, κοιν. *μολυβοκόντυλο*.

**μολυβδοειδὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μόλυβδον.

**μολυβδοθάλαμος** (ὁ). Μεγάλος θάλαμος, ἐπενδεδυμένος τελείως ἐσωτερικῶς διὰ φύλλων μολύβδου. Χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν βιομηχανίαν τοῦ *θειικοῦ ὀξέος* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**μολυβδόκομμι** (τὸ) (Bleigummi) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ κολλοειδὲς μεῖγμα ἐνύδρου φωσφορικοῦ ἀργιλλίου καὶ ἐνύδρου φωσφορικοῦ μολύβδου, εἰς τὸ ὁποῖον ἡ περιεκτικότης εἰς ὀξείδιον τοῦ μολύβδου κυμαίνεται ἀπὸ 10 ἕως 78,22%. Ἐμφανίζεται ὑπὸ μορφὴν βοτρυοειδῆ, νεφροειδῆ ἢ κελυφώδη, παρουσιάζει δὲ θραυσμὸν κογχώδη, σκληρότητα 4—$4^1/_2$, εἰδικὸν βάρος 4—5, λάμψιν στεατώδη καὶ χρῶμα κιτρινόλευκον, ὑποπράσινον καὶ ὑποκίτρινον ἕως ἐρυθρότεφρον. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Huelgoet τῆς Βρετάνης, εἰς τὸ Cumberland κ. ἄ. Γ. Β.

**μολυβδοκονδυλιὰ** (ἡ)· κονδυλιὰ διὰ μολυβδίδος.

**μολυβδοκόνδυλον** (τό)· κονδύλιον γραφῆς, ἀρχικῶς ἐκ μολύβδου ἀποτελούμενον, εἶτα δὲ ἐκ γραφίτου.

—*[Ἐγκυκλ.]* Γνωστὸν εἶναι ὅτι κατὰ τοὺς ἀρχαίους ἑλληνικοὺς χρόνους οἱ γραφεῖς ἐχρησιμοποίουν τεμάχια μολύβδου καταλήγοντα εἰς ἀκίδα διὰ νὰ σύρουν, τῇ βοηθείᾳ ξυλίνου κανόνος, εὐθείας γραμμὰς (χαράκια) ἐπὶ τῶν περγαμηνῶν καὶ παπύρων, πρὸς ἐπιτυχίαν κανονικῆς γραφῆς. Καὶ ὅμως τὸ ἁπλούστατον αὐτὸ πρακτικὸν μέσον ἦτο ἄγνωστον κατὰ τὸν ΣΤ′ μ. Χ. αἰῶνα ἐν Εὐρώπῃ, ὅπου διὰ ἴδιον σκοπὸν ἐγίνετο τότε χρῆσις αἰχμηρῶν σιδηρῶν ραβδίων, διὰ τῶν ὁποίων δὲν ἐγράφοντο ἀλλ' ἐχαράσσοντο αἱ γραμμαί. Μόλις δὲ ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ Ζ′ αἰῶνος αἱ σιδηραῖ αἰχμαὶ ἀντικατεστάθησαν διὰ ραβδίων μολύβδου καταληγόντων εἰς ἀκίδα.

Μετὰ τὴν διάδοσιν τῆς χαρτοποιίας ἐν Εὐρώπῃ (Ι′ αἰών) δὲν ἐβράδυναν νὰ προσέξουν τὴν ἰδιότητα, ἣν ἔχει ὁ γραφίτης ν' ἀφήνῃ συρόμενος ἐπὶ τοῦ χάρτου φαιὰν καὶ στίλβουσαν γραμμήν, ἐσκέφθησαν δὲ τότε ν' ἀντικαταστήσουν διὰ τοῦ ὀρυκτοῦ τὰ ἐκ μολύβδου κονδύλια· ἐπειδὴ ὅμως ὁ γραφίτης εἶναι λίαν εὔθραυστος καὶ ρυπαίνει ἐξ ἄλλου τὰς χεῖρας τοῦ γράφοντος, ἐδοκίμασαν νὰ τὸν καταστήσουν στερεότερον καὶ εὐχρηστότερον, περικλείοντες αὐτὸν ἐντὸς μικρῶν ξυλίνων κυλίνδρων. Οὕτω ἐγεννήθη ἐν Ἀγγλίᾳ κατὰ τοὺς μὲν ἢ ἐν Γερμανίᾳ κατ' ἄλλους ἡ βιομηχανία τῶν σημερινῶν μολυβδοκονδύλων. Ἡ ἐποχὴ τῆς πρώτης ἐμφανίσεώς των εἶναι ἀκαθόριστος, βέβαιον ὅμως εἶναι ὅτι ὑπῆρχον ταῦτα πρὸ τοῦ ΙΣΤ′ αἰῶνος, ὅτι δὲ ἡ χρῆσίς των ἐγενικεύθη ἰδίως ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΗ′. Ἀπὸ τοῦ 1795 ἡ κατασκευή των εἶχεν ἤδη τελειοποιηθῆ χάρις εἰς ἐφεύρεσιν τοῦ Γάλλου Ν. Conté, ὅστις, διὰ νὰ προσδώσῃ μεγαλυτέραν στερεότητα εἰς τὸν γραφίτην, ἐσκέφθη ν' ἀναμείξῃ αὐτὸν μὲ λεπτότατα κονιοποιημένην ἄργιλλον, ἐπιτυχὼν ἐξ ἄλλου διὰ τοῦ μέσου τούτου νὰ κατασκευάσῃ μολυβδίδας ποικίλης, ἀναλόγως τοῦ προορισμοῦ των, σκληρότητος.

Σήμερον ἡ βιομηχανία τῶν μολυβδοκονδύλων ἀκολουθεῖ, ἐν γενικαῖς γραμμαῖς, τὰ ἑξῆς στάδια: Διὰ νὰ κατασκευασθῶσιν ἐν πρώτοις αἱ μολυβδίδες (μίνες), ὁ γραφίτης καὶ ἡ ἄργιλλος πολτοποιοῦνται κεχωρισμένως, οἱ δὲ σχηματιζόμενοι πολτοί, ἀφοῦ ἀφαιρεθῇ τελείως τὸ ὕδωρ καὶ γίνῃ πλήρης αὐτῶν ξήρανσις, κονιοποιοῦνται διὰ λειοτριβήσεως. Γίνεται τότε ἡ ἀνάμιξις τῶν δύο κόνεων, κατὰ διαφόρους ἀναλογίας, ἀντιστοίχως πρὸς τὴν σκληρότητα, ἥτις πρόκειται νὰ δοθῇ εἰς τὰς μολυβδίδας. Διὰ μολυβδίδας κοινῆς χρήσεως γίνεται συνήθως ἀνάμιξις δύο μέχρι τριῶν μερῶν γραφίτου μεθ' ἑνὸς μέρους ἀργίλλου. Τὸ μεῖγμα τοῦτο τῶν δύο κόνεων, μετὰ προσθήκην ὕδατος, ὑποβάλλεται εἰς τὴν θέρμανσιν, μέχρις ὅτου ἀποτελεσθῇ πυκνὸς ἑνιαῖος πολτός, ἀπολύτως ὁμοιομερής, ὅστις κατόπιν χύνεται ἐπὶ μεταλλίνων πλακῶν, ἐπὶ τῶν ὁποίων ὑπάρχουσιν ἐσκαμμέναι παράλληλοι ἡμικυλινδικαὶ αὔλακες, διαμέτρου 1—2 χιλιοστῶν συνήθως. Ἐπ' αὐτῶν τοποθετοῦνται ὅμοιαι πλάκες, μὲ ἀντιστοίχους ἐκ τῶν κάτω αὔλακας καὶ πιέζονται ἐπὶ τῶν ἄλλων ἰσχυρῶς διὰ κοχλιῶν. Μετὰ τὴν ξήρανσιν τῶν σχηματιζομένων οὕτω μολυβδίδων, ἀποσπῶνται αὗται ἀπὸ τοὺς τύπους καὶ ὑποβάλλονται εἰς θέρμανσιν ἐντὸς κλειστῶν δοχείων, τῶν ὁποίων τὰ διάκενα πληροῦνται μὲ κόνιν ἀνθράκων· κανονίζεται δὲ ὁ βαθμὸς τῆς θερμάνσεως ταύτης ἀναλόγως τῆς σκληρότητος, ἥτις πρόκειται νὰ δοθῇ εἰς τὰς μολυβδίδας. Ἡ ἐπένδυσις αὐτῶν κατόπιν διὰ τοῦ ξυλίνου περιβλήματος γίνεται ὡς ἀκολούθως: Χρησιμοποιοῦνται ξύλα λεύκης ἢ ἄλλων δένδρων, ἰδίᾳ ἐρυθρᾶς κέδρου, ἐκ τῶν ὁποίων δι' εἰδικῶν μηχανημάτων κόπτονται ἐπίπεδοι πλάκες, φέρουσαι παραλλήλους λεπτὰς ἡμικυλινδρικὰς ἐνσκαφάς, ὅμοιαι δηλαδὴ περίπου πρὸς τὰς μεταλλίνας πλάκας, δι' ὧν ἐγένετο ἡ χύσις τῶν μολυβδίδων. Ἀφ' οὗ μία πλὰξ ἐπιχρισθῇ διὰ καταλλήλου κολλητικῆς οὐσίας, εἰδικὸν μηχάνημα ἐνθέτει εἰς ἑκάστην τῶν αὐλάκων αὐτῆς ἀνὰ μίαν μολυβδίδα, εἶτα δὲ τοποθετεῖται ἐπὶ τῆς πλακὸς ταύτης ἄλλη ὁμοία (μὲ τὰς αὔλακας πρὸς τὰ κάτω), ἥτις πιεζομένη διὰ πιεστηρίου συγκολλᾶται ἐπὶ τῆς πρώτης. Τὸ ἑνιαῖον τότε ζεῦγος τῶν ξυλίνων πλακῶν διέρχεται δι' εἰδικοῦ κοπτικοῦ μηχανήματος, χωρίζοντος τὸ ὅλον εἰς κυλινδρικὰ ἢ πολυγωνικὰ ραβδία. —Ρ.

**μολυβδομηνίτης** (ὁ) (Molybdomenit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ σεληνικὸν ἅλας τοῦ μολύβδου, ἀπαντᾷ δὲ εἰς φυλλάρια μὲ λάμψιν μαργαριτώδη ὡς σύνδρομον ὀρυκτὸν τοῦ χαλκομηνίτου τῆς Cachenta. Γ. Β.

**μολυβδόνεφρος** (ὁ) (Breiniere) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ κυρίως κολλοειδῆ ἕνωσιν ἀντιμονικοῦ μολύβδου ἐνύδρου, ἐμφανίζεται δὲ νεφροειδές, ὀζῶδες, συμπαγὲς ἢ γεῶδες. Παρουσιάζει σκληρότητα 4, εἰδικὸν βάρος 4,6—5 καὶ χρῶμα λευκόν, κίτρινον, φαιόν, τεφρὸν ἢ ὑποπράσινον. Ἀπαντᾷ ὡς προϊὸν ἀποσαθρώσεως τῶν θειοαντιμονιωδῶν ἁλάτων τοῦ μολύβδου εἰς τὸ Nertschinsk, Lostwithiel τῆς Κορνουαλίας κ.ἄ. Γ. Β.

**μολύβδοξος** (ὁ)· βλ. *μολύβδου* ἑνώσεις καὶ *ὀξικοῦ* ὀξέος ἅλατα.

**μολυβδοξύστης** (ὁ)· ἐργαλεῖον διὰ ξύσιμον τῶν μολυβδίδων.

**μόλυβδος** (ὁ)· τὸ μαλακώτερον τῶν μετάλλων, κοιν. *μολύβι*: «καίει ὡς ζέων μόλυβδος», «μολύβδου βαρύτερος».

—[ΧΗΜ.] Ὁ *μόλυβδος* (χημικὸν σύμβολον *Pb*) εἶναι μέταλλον ἀτομικοῦ βάρους 207,20. Εἰς πρόσφατον τομὴν εἶναι κυανόλευκον, τελειοτάτης μεταλλικῆς στιλπνότητος, εἰς τὸν ἀέρα ὅμως καθίσταται ταχύτατα κυανότεφρον, ἀμαυρούμενον ἰσχυρῶς. Ἔχει πολὺ μικρὰν σκληρότητα καὶ ἀποτελεῖ οὕτω τὸ μαλακώτερον τῶν συνήθων βαρέων μετάλλων. Ἐπὶ τῆς ἰδιότητος αὐτῆς βασίζεται ἐν μέρει ἡ εὔκολος αὐτοῦ ἐπεξεργασία. Κόπτεται εὐκόλως διὰ μαχαίρας καὶ χαράσσεται διὰ τοῦ ὄνυχος, ἐπισυρόμενον δὲ ἐπὶ τοῦ χάρτου ἀφήνει φαιὰν γραμμήν. Δι' ἐπανειλημμένης ἀνατήξεως ἐν τῷ ἀέρι ὁ μόλυβδος καθίσταται σκληρότερος καὶ εὔθραυστος λόγῳ προσμίξεως αὐτοῦ μετὰ τῶν σχηματιζομένων ὀξειδίων του. Ἡ σκληρότης τοῦ μολύβδου προκαλεῖται κυρίως ὑπὸ τοῦ θείου, ἀντιμονίου καὶ ἀρσενικοῦ, ὡς καὶ τοῦ χαλκοῦ καὶ σιδήρου, ὅταν ταῦτα ἰδίως εἶναι συγχρόνως ἡνωμένα μετὰ θείου. Ὁ μόλυβδος δύναται εὐκόλως νὰ μετατραπῇ εἰς λεπτὰ φύλλα καὶ ἐν θερμῇ καταστάσει δύναται εὐκόλως νὰ πιεσθῇ διὰ κοίλων κυλίνδρων καὶ νὰ λάβῃ τὴν μορφὴν σωλῆνος. Δύναται ἐπίσης εὐχερῶς νὰ μετατραπῇ εἰς σύρμα, ὅπερ ὅμως δὲν ἔχει σημαντικὴν ἀντοχὴν ἕλξεως. Ὁ μόλυβδος ἔχει πυκνότητα κατὰ τοσοῦτον μεγαλυτέραν, ὅσον μεγαλυτέρα εἶναι ἡ καθαρότης του. Τήκεται εἰς 327° καὶ βράζει εἰς 1525°, εἶναι δὲ κακὸς ἀγωγὸς τῆς θερμότητος καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, ὡς φαίνεται ἐκ τοῦ κατωτέρω συγκριτικοῦ πρὸς τὸν ἄργυρον πίνακος.

| | ἄργυρος | μόλυβδος |
|---|---|---|
| Ἀγωγιμότης διὰ θερμότητα εἰς 12°...... | 100 | 8,5 |
| » δι' ἠλεκτρισμὸν εἰς 12°..... | 100 | 10,7 |

Εἰς τὸν ξηρὸν ἀτμοσφαιρικὸν ἀέρα τὸ μέταλλον παραμένει ἀμετάβλητον, εἰς τὸν ὑγρὸν ὅμως ὀξειδοῦται καὶ λίαν ταχέως μάλιστα, ἀλλὰ μόνον ἐπιφανειακῶς, ὥστε παραμένει μονίμως σχετικῶς ἀνθεκτικόν. Εἰς τὸ καθαρὸν ὕδωρ σχηματίζει συνεργίᾳ τοῦ ὀξυγόνου τοῦ ἀέρος ὑδροξείδιον, τὸ ὁποῖον εἶναι ὀλίγον διαλυτὸν εἰς τὸ ὕδωρ καὶ ἑπομένως δὲν προφυλάσσει τὸν μόλυβδον. Ὅταν τὸ ὕδωρ ὅμως, ὡς συνήθως συμβαίνει, περιέχῃ ἀνθρακικὸν ὀξὺ καὶ θειικὰ ἅλατα, τότε σχηματίζονται τὰ ἀντίστοιχα ἅλατα τοῦ μολύβδου, τὰ ὁποῖα ἔχουν μικρὰν διαλυτότητα καὶ ἑπομένως σχηματίζουν ἐπ' αὐτοῦ ἓν συγκρατούμενον ἐπίστρωμα. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον μολύβδινοι σωλῆνες δύνανται καλῶς νὰ χρησιμοποιηθῶσι διὰ σύνηθες ὕδωρ χρήσεως, οὐχὶ

Digitized by Google

ὅμως καὶ δι' ἀπεσταγμένου ὕδωρ. Διὰ θερμάνσεως τοῦ μολύβδου παρουσίᾳ ἀέρος εἰς τὴν θερμοκρασίαν τῆς ἐρυθροπυρώσεως λαμβάνεται τὸ ὀξείδιον τοῦ μολύβδου, τὸ ὁποῖον διὰ μακροτέρας θερμάνσεως εἰς θερμοκρασίαν μὴ ὑπερβαίνουσαν τοὺς 300° μετατρέπεται εἰς *μίνιον*. Ὁ μόλυβδος εἰς τεμάχια ἢ μεγάλας μάζας δὲν προσβάλλεται ὑπὸ τοῦ ὑδροχλωρικοῦ ἢ ψυχροῦ θειικοῦ ὀξέος, ἀντιθέτως ὅμως θερμὸν θειικὸν ὀξὺ τὸν προσβάλλει. Ὡς καλύτερον διαλυτικὸν μέσον τοῦ μολύβδου χρησιμοποιεῖται θερμὸν ἀραιὸν νιτρικὸν ὀξύ, τὸ ὁποῖον δὲν πρέπει νὰ περιέχῃ ὑδροχλωρικὸν ἢ θειικὸν ὀξύ. Ὁ μόλυβδος ἐπίσης προσβάλλεται ὑπὸ τοῦ ὑδροφθορίου, ἐπειδὴ ὅμως τὸ σχηματιζόμενον ἐπίστρωμα τοῦ φθοριούχου χαλκοῦ συγκρατεῖται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας, προφυλάσσει ἀπὸ τῆς περαιτέρω προσβολῆς· διὰ τὸν λόγον τοῦτον εἶναι δυνατὴ ἡ εἰς μολύβδινα δοχεῖα διατήρησις ὑδροφθορίου.

Αἱ σπουδαιότεραι προσμίξεις (ἀκαθαρσίαι) τοῦ μολύβδου τοῦ ἐμπορίου εἶναι τὸ ἀντιμόνιον, ὁ χαλκός, τὸ βισμούθιον, ὁ σίδηρος, ὁ ἄργυρος, ὁ ψευδάργυρος, τὸ νικέλιον, τὸ κάδμιον, τὸ ἀρσενικόν, τὸ κοβάλτιον, τὸ μαγγάνιον καὶ ἐκεῖναι αἱ ὁποῖαι ἐπηρεάζουν τὴν μαλακότητα τοῦ μολύβδου, ὅταν εἶναι εἰς αἰσθητὰς ποσότητας, εἶναι τὸ θεῖον, τὸ ἀντιμόνιον, τὸ ἀρσενικόν, ὁ χαλκὸς καὶ ὁ ψευδάργυρος. Τὸ ἀντιμόνιον καὶ τὸ ἀρσενικὸν καθιστῶσι τὸν μόλυβδον εὔθραυστον, σκληρὸν καὶ εὐκολώτερον τηκόμενον.

Τὸ διὰ τὴν παραλαβὴν τοῦ μολύβδου σπουδαιότερον ὀρυκτὸν εἶναι ὁ *γαληνίτης* (PbS), καθόσον ὅλα τὰ ἄλλα ὀρυκτὰ τοῦ μολύβδου ἀπαντῶσιν εἰς σχετικῶς μικρὰ ποσὰ καὶ δὲν δύνανται νὰ ἔχωσι βιομηχανικὴν σημασίαν.

Ἡ βιομηχανικὴ παραλαβὴ τοῦ μολύβδου ἐκ τῶν ὀρυκτῶν καὶ μολυβδούχων ἐκκαμινευμάτων γίνεται ἀποκλειστικῶς σχεδὸν διὰ ξηρᾶς ὁδοῦ. Ὑγραὶ μέθοδοι κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους εἰσήχθησαν εἰς μεμονωμένα ἐργοστάσια διὰ τὴν κατεργασίαν δυσκόλως κατεργαζομένων ὀρυκτῶν, ἐνῷ ἠλεκτρολυτικαὶ μέθοδοι, καίτοι ἐπροτάθησαν, μέχρι τοῦδε οὐδόλως εἰσήχθησαν εἰς τὴν πρᾶξιν. Ὡς ἤδη ἐλέχθη, τὸ σπουδαιότερον ὀρυκτὸν τοῦ μολύβδου εἶναι ὁ γαληνίτης (θειοῦχος μόλυβδος)· ὁ ἀνθρακικὸς μόλυβδος, ὁ θειικὸς μόλυβδος καὶ τὰ παρόμοια ὀρυκτὰ ἀπαντῶσιν εἰς μικρὰ ποσὰ καὶ ὅταν ἐξάγωνται τοιαῦτα ἐκ τῶν μεταλλείων φέρονται ὁμοῦ μετὰ τοῦ θειούχου μολύβδου, θεωρούμενα μεταλλουργικῶς ὡς φρυχθεὶς γαληνίτης. Ἐκκαμινεύεται δὲ ὁ γαληνίτης κατὰ τὰς ἀκολούθους τέσσαρας κυρίας μεθόδους:

1) Μετατρέπεται δι' ἀτελοῦς φρύξεως εἰς ἓν μῖγμα ἐκ θειούχου μολύβδου, ὀξειδίου τοῦ μολύβδου καὶ θειικοῦ μολύβδου καὶ εἶτα ἡ θερμοκρασία ἀναβιβάζεται ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε τὸ ὀξείδιον τοῦ μολύβδου καὶ ὁ θειικὸς μόλυβδος διασπῶσι τὸν θειοῦχον μόλυβδον, σχηματιζομένου μεταλλικοῦ μολύβδου καὶ θειώδους ὀξέος.

2) Ὁ γαληνίτης διὰ πλήρους φρύξεως, μετατρέπεται κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς ὀξείδιον τοῦ μολύβδου, τὸ ὁποῖον εἶτα ὑποβάλλεται εἰς ἀναγωγικὴν τῆξιν ἐν ἀναμίξει μετὰ κὼκ ἢ ξυλάνθρακος.

3) Ὁ γαληνίτης διασπᾶται εἰς ὑψηλὴν θερμοκρασίαν διὰ μεταλλικοῦ σιδήρου, σχηματιζομένου ἀφ' ἑνὸς μεταλλικοῦ μολύβδου καὶ ἀφ' ἑτέρου θειούχου σιδήρου.

4) Ἑτέρας νεωτέρας μεθόδου γίνεται χρῆσις, ὅταν πρόκειται περὶ πτωχῶν εἰς μόλυβδον μεταλλευμάτων, ἅτινα ἔχουσι μεγάλην ποσότητα πυριτικοῦ ὀξέος. Κατ' αὐτὴν ὁ θειοῦχος μόλυβδος καὶ ὁ θειικὸς μόλυβδος διὰ θερμάνσεως ἀφίπτανται καὶ ἡ ἀφιπταμένη κόνις διὰ καταλλήλου κατεργασίας συντήκεται ἀναγωγικῶς.

Ὁ καθ' ὅλους τοὺς ἀνωτέρω τρόπους λαμβανόμενος μόλυβδος ἀποτελεῖ μὲν κατάλληλον ὕλην διὰ τὴν παραλαβὴν ἐξ αὐτοῦ τοῦ *ἀργύρου*, ἀλλὰ δὲν εἶναι ἀκόμη καθαρός, περιέχων διαφόρους προσμίξεις. Ἐκ τῶν προσμίξεων τούτων αἱ πλεῖσται, ὡς τὸ ἀρσενικόν, τὸ ἀντιμόνιον, ὁ κασσίτερος, ὁ ψευδάργυρος, τὸ νικέλιον, τὸ κοβάλτιον, ὁ σίδηρος καὶ τὸ θεῖον ἀπομακρύνονται δι' ὀξειδωτικῆς τήξεως τοῦ μολύβδου καὶ μόνον ὁ χαλκὸς καὶ τὸ βισμούθιον δὲν ἀπομακρύνονται κατ' αὐτήν, διότι ἡ συγγένειά των πρὸς τὸ ὀξυγόνον εἶναι μικροτέρα τῆς τοῦ μολύβδου. Ἀντιθέτως, ὁ χαλκὸς ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ σχηματίζῃ μετὰ τοῦ μολύβδου ἓν κρᾶμα δυστηκτότερον τοῦ καθαροῦ μολύβδου, τὸ ὁποῖον κατὰ τὴν τῆξιν τοῦ μετάλλου συλλέγεται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας ὡς ἄτηκτος μᾶζα, ἥτις καὶ ἀπομακρύνεται. Ἡ ἀπομάκρυνσις τοῦ χαλκοῦ δύναται ἐπίσης νὰ ἐπιτευχθῇ καὶ κατ' ἄλλους τρόπους πλὴν τοῦ ἀνωτέρω. Τὸ βισμούθιον τέλος ἀπομακρύνεται δι' ἄλλων εἰδικῶν μεθόδων. Τέλος καθαρισμὸς τοῦ μολύβδου δύναται νὰ ἐπιτευχθῇ καὶ δι' ἠλεκτρικῶν μεθόδων.

Μεγίστη χρῆσις τοῦ μολύβδου γίνεται διὰ παρασκευὴν χρωμάτων, καὶ ἰδιαιτέρως τοῦ λευκοῦ τοῦ μολύβδου (βλ. *μολύβδου χρώματα*). Ἑτέρα χρησιμοποίησις αὐτοῦ γίνεται ὑπὸ τὴν μορφὴν *φύλλων μολύβδου* πρὸς ἐπένδυσιν θαλάμων, πύργων, δοχείων κ.λ.π. τῆς χημικῆς βιομηχανίας, ἅτινα θέλομεν νὰ εἶναι ἀνθεκτικὰ εἰς ὀξέα καὶ ἀτμοὺς ὀξέων (ὡς λ. χ. εἰς τὴν βιομηχανίαν τοῦ θειικοῦ ὀξέος κ.λ.π.). Σπουδαιοτάτη εἶναι ἡ χρησιμοποίησις τοῦ μολύβδου εἰς τὴν κατασκευὴν τῶν ἠλεκτρικῶν συσσωρευτῶν καὶ πρὸς ἐπένδυσιν ἠλεκτρικῶν καλωδίων, εἰς τὰς χρήσεις δὲ ταύτας ὀφείλεται ἡ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη μεγίστη αὔξησις τῆς καταναλώσεως τοῦ μετάλλου τούτου. Ἐπίσης σωλῆνες ἐκ μολύβδου χρησιμοποιοῦνται κυρίως εἰς τὰς οἰκίας διὰ τοὺς ἀγωγοὺς τοῦ ὕδατος, ὡς καὶ εἰς τὴν βιομηχανίαν διὰ τὸν αὐτὸν σκοπόν. Ἐπειδὴ τὰ ὀργανικὰ ὀξέα διαλύουσι τὸν μόλυβδον, διὰ τοῦτο δὲν πρέπει οὗτος νὰ χρησιμοποιῆται διὰ μαγειρικὰ σκεύη καὶ γενικῶς διὰ δοχεῖα παρασκευῆς καὶ διατηρήσεως τροφίμων. Παλαιότερον ἐχρησιμοποιεῖτο ἀρκετὸς μόλυβδος διὰ τὴν κατασκευὴν πλακῶν στεγάσεως οἰκημάτων, σήμερον ὅμως ἀντικατεστάθη εἰς τὴν χρῆσιν αὐτὴν δι' ἄλλων ὑλῶν. Ἐπίσης μεγάλαι ποσότητες μολύβδου χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν σκαγίων, καθ' ἣν προστίθεται καὶ μικρὰ ποσότης ἀρσενικοῦ (οὐχὶ πλέον τοῦ 0,35 %) πρὸς αὔξησιν τῆς σκληρότητος καὶ ἐπίτευξιν σφαιροποιήσεως κατὰ τὴν πτῶσιν τῶν σταγόνων τοῦ ὑγροῦ μετάλλου. Ὁ μόλυβδος τέλος χρησιμοποιεῖται διὰ παρασκευὴν διαφόρων κραμάτων.

Διὰ τὴν ἀνίχνευσιν τοῦ μολύβδου ὑπάρχουσι μέθοδοι πυροχημικαὶ καὶ ὑγροχημικαί. Οὕτω τὰ ἅλατα αὐτοῦ μιγνυόμενα μετὰ σόδας καὶ πυρούμενα ἐπὶ ἄνθρακος διὰ καμινευτῆρος αὐλοῦ παρέχουσι μεταλλικὸν σφαιρίον ἐλατὸν μετὰ κιτρίνου ἐπανθήματος ἐξ ὀξειδίου τοῦ μολύβδου. Τὰ ἅλατα τοῦ μολύβδου περαιτέρω παρέχουσι τὰς κάτωθι ὑγροχημικὰς ἀντιδράσεις:

α) Διὰ καυστικοῦ καλίου ἢ νατρίου, παρέχουσι λευκὸν ὑδροξείδιον τοῦ μολύβδου διαλυτὸν ἐν περισσείᾳ τοῦ ἀντιδραστηρίου.

β) Δι' ἀμμωνίας, παρέχουσιν ἐπίσης ὑδροξείδιον, μὴ διαλυτὸν ὅμως ἐν περισσείᾳ.

γ) Δι' ὑδροθείου, καθιζάνεται μέλας θειοῦχος μόλυβδος, διαλυτὸς εἰς βράζον ἀραιὸν νιτρικὸν ὀξύ.

δ) Δι' ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος ἐκ πυκνῶν διαλυμάτων καθιζάνεται λευκὸς κρυσταλλικὸς χλωριοῦχος μόλυβδος διαλυτὸς εἰς πολὺ βράζον ὕδωρ.

ε) Δι' ἰωδιούχου καλίου καθιζάνεται κίτρινος ἰωδιοῦχος μόλυβδος.

στ) Διὰ θειικοῦ ὀξέος καθιζάνεται λευκὸς θειικὸς μόλυβδος.

ζ) Διὰ χρωμικοῦ καὶ διχρωμικοῦ καλίου καθιζάνεται κίτρινος χρωμικὸς μόλυβδος κ.λ.π.

Ὁ ποσοτικὸς προσδιορισμὸς τοῦ μολύβδου γίνεται κατὰ διαφόρους μεθόδους, ἀναφερομένας εἰς τὰ εἰδικὰ συγγράμματα τῆς ἀναλυτικῆς χημείας.

***Μολύβδου κράματα.*** Ὁ μόλυβδος σχηματίζει μετὰ διαφόρων ἄλλων μετάλλων κράματα, ὧν κατωτέρω ἀναφέρομεν τὰ σπουδαιότερα. Ὁ σκληρὸς μόλυβδος, ἀποτελῶν τὸ μέταλλον τῶν τυπογραφικῶν στοιχείων, συνίσταται ἐκ μολύβδου καὶ ἀντιμονίου (βλ. *ἀντιμονίου κράματα*). Πρὸς ἐπίτευξιν μείζονος σκληρότητος καὶ ἥσσονος εὐθραυστότητος, προστίθεται εἰς τὸ κρᾶμα καὶ κασσίτερος. Ἐσχάτως παρασκευάζονται κράματα καὶ διὰ προσθήκης εἰς τὸν μόλυβδον νατρίου, βαρίου, ἀσβεστίου, στροντίου ἢ λιθίου, δι' ὧν αὐξάνεται ἡ σκληρότης τοῦ μολύβδου. Τοιαῦτα κράματα εἶναι ὁ λευκὸς ὀρείχαλκος (1,5 % Na), τὸ μέταλλον Can, τὸ μέταλλον Lurgi κ. λ. π.

Ὁ μόλυβδος εἶναι σημαντικὴ προσθήκη εἰς τὰ κράματα τοῦ κασσιτέρου. Οὕτω λαμβάνονται τὰ κράματα διὰ παιγνίδια (40—50 % Pb), διὰ κοσμήματα θεάτρου (30—40 % Pb) κ. λ. π. Ὅταν ὅμως τὰ ἐκ κραμάτων κασσιτέρου ἀντικείμενα ἔρχωνται εἰς ἐπαφὴν μὲ φαγητὰ ἢ ποτά, δὲν πρέπει νὰ περιέχωσιν αἰσθητὴν ποσότητα μολύβδου πρὸς ἀποφυγὴν δηλητηριάσεων.

Ἕτερον ἐπίσης σημαντικὸν κρᾶμα τοῦ μολύβδου εἶναι τὸ μετὰ κασσιτέρου εἰδικῶς διὰ τὴν συγκόλλησιν τῶν μετάλλων παρασκευαζόμενον.

***Μολύβδου χρώματα.*** Τὰ χρώματα τοῦ μολύβδου ἀνήκουσιν εἰς τὰ ἀρχαιότερον γνωστὰ ἀνόργανα χρώματα. Οὕτω τὸ λευκὸν τοῦ μολύβδου ἀναφέρεται ἤδη ὡς ψιμύθιον εἰς κωμῳδίαν τοῦ Ἀριστοφάνους καὶ ὁ Θεόφραστος κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα π. Χ. περιέγραψε τὴν παρασκευὴν αὐτοῦ δι' ἐπιδράσεως ὄξους ἐπὶ μολύβδου. Τὸ μίνιον ἦτο ἐπίσης γνωστὸν εἰς τὴν ἀρχαιότητα καὶ μόνον τὰ κίτρινα καὶ ἐρυθρὰ χρωμικὰ ἢ ἀντιμονικὰ χρώματα τοῦ μολύβδου, ὡς καὶ τὰ μελανὰ τοῦ ὑποξειδίου αὐτοῦ εἶναι τῆς τελευταίας ἐποχῆς. Τὰ λευκὰ χρώματα τοῦ μολύβδου εἶναι ἀνθρακικά, θειικὰ ἢ ὑδροχλωρικὰ ἅλατα αὐτοῦ, τὰ ὀξείδια εἶναι ὑποκίτρινα ἢ ἐρυθρά, τὸ δὲ ὑποξείδιον μελανότεφρον. Τὰ ἄλλα χρώματα τοῦ μολύβδου, ἐπειδὴ εἶναι χρωμικὰ ἅλατα, ἀναφέρονται μεταξὺ τῶν χρωμάτων τοῦ *χρωμίου* (βλ. λ.).

Τὸ σπουδαιότερον ἐκ τῶν λευκῶν χρωμάτων εἶναι τὸ *λευκὸν τοῦ μολύβδου* (βλ. λ. *λευκός*). Περαιτέρω ἔχομεν τὸ καλούμενον *λευκὸν τοῦ ἀργύρου*, ὅπερ εἶναι *ὁ οὐδέτερος ἀνθρακικὸς μόλυβδος* (βλ. κατωτ. *μολύβδου ἅλατα*) καί τινα ἄλλα ἅλατα, ὡς *ὁ οὐδέτερος* καὶ *βασικὸς θειικὸς μόλυβδος* κλπ.

Περαιτέρω κέκτηνται μικρὰν σημασίαν ὡς ...τρινα χρώματα μολύβδου τὸ *ὀξείδιον τοῦ μολύβδου*, ὅπερ ἀπαντᾷ ὑπὸ δύο μορφάς, τὸν λιθάργυρον καὶ τὸ *massicot*, καὶ τὸ ἐπιτεταρτοξείδιον τοῦ μολύβδου, ὅπερ εἶναι τὸ γνωστὸν *μίνιον* (βλ. λ.). Πλὴν τῶν ἀνωτέρω χρωμάτων τοῦ μολύβδου ἔχουσι μικράν τινα χρησιμοποίησιν καὶ ἄλλα ἅλατα τοῦ μολύβδου.

***Μολύβδου ἐνώσεις.*** Ἐνταῦθα θὰ ἀναφέρωμεν τὰς σπουδαιοτέρας τῶν ἐνώσεων τοῦ μολύβδου, αἱ ὁποῖαι ἔχουσι βιομηχανικὴν ἢ ἐπιστημονικὴν σημασίαν.

1) *Ἀζίδιον ἢ ἀζωτίδιον τοῦ μολύβδου*, $Pb(N_3)_2$. Ἀποτελεῖ ἀχρόους στιλπνὰς βελόνας, αἵτινες κατ' ὄψιν ὁμοιάζουν πρὸς τὸν χλωριοῦχον μόλυβδον. Καὶ δι' ἠπιωτάτης ἔτι θερμάνσεως ἐκρήγνυται μετὰ μεγίστης ὁρμῆς, δι' ὃ καὶ φυλάσσεται προφυλακτικῶς ὑπὸ τὸ ὕδωρ. Πρὸς παρασκευήν αὐτοῦ καθιζάνεται διάλυμα νατριαζιδίου ἢ ἀμμωνιαζιδίου δι' ὀξικοῦ μολύβδου. Χρησιμοποιεῖται πρὸς πλήρωσιν καψυλίων ὁμοῦ μετ' ἄλλων ἐκρηκτικῶν ὑλῶν.

2) *Ἀνθρακικὸς μόλυβδος.* α') Οὐδέτερος ἀνθρακικὸς μύλυβδος, $PbCO_3$. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν φύσιν ὑπὸ μορφὴν λευκῶν διαφανῶν καλῶς ἐσχηματισμένων ρομβικῶν κρυστάλλων ὡς ὀρυκτὸν *ψιμυθίτης* ἢ *κερουσίτης*. Πρὸς τεχνικὴν παρασκευὴν καθιζάνεται διάλυμα νιτρικοῦ ἢ ὀξικοῦ μολύβδου διὰ περισσείας ἀνθρακικοῦ ἀλκαλίου, κάλλιον ἀνθρακικοῦ ἀμμωνίου, ἢ διοχετεύεται ἀνθρακικὸν ὀξὺ εἰς ἀραιὸν ψυχρὸν διάλυμα ὀξικοῦ μολύβδου, ἢ κατὰ διαφόρους ἄλλας μεθόδους. Ἓν μέρος ἀνθρακικοῦ μολύβδου διαλύεται εἰς 23... μέρη ὕδατος, ἤτοι εἶναι πρακτικῶς ἀδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ. Εὐκολώτερον διαλυτὸς εἶναι παρουσίᾳ ἁλάτων τοῦ ἀμμωνίου καὶ εἰδικῶς χλωριούχου ἀμμωνίου, ὡς ἀκόμη καὶ δι' ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Διὰ ψυχροῦ ὕδατος δὲν μεταβάλλεται, διὰ θερμοῦ ὅμως μετατρέπεται εἰς βασικὸν ἅλας. Διὰ θερμάνσεως διασπᾶται εἰς ἀνθρακικὸν ὀξὺ καὶ ὀξείδιον μολύβδου. Τέλος, ἀξιοσημείωτος εἶναι ἡ ἰδιότης τῆς λαιβουλόζης νὰ κρατῇ αὐτόν, παρουσίᾳ σόδας, ἐν διαλύσει. Ὁ οὐδέτερος ἀνθρακικὸς μόλυβδος φέρεται εἰς τὸ ἐμπόριον ὡς χρῶμα λευκὸν βαφῆς ὑπὸ τὸ ὄνομα *λευκὸν τοῦ ἀργύρου*, ἀλλὰ δὲν ἔχει τεχνικὴν σημασίαν. β') Βασικὸς ἀνθρακικὸς μόλυβδος (βλ. λ. *λευκὸν* μολύβδου καὶ ἀνωτέρω *μολύβδου χρώματα*).

3) *Ἀντιμονιακὸς μόλυβδος* ἢ *κίτρινον* τῆς Νεαπόλεως (βλ. *ἀντιμονιακὰ ὀξέα* ἐν λ. *ἀντιμόνιον*).

4) *Ἀρσενικικὸς μόλυβδος.* Ἅλας τοῦ ἀρσενικικοῦ ὀξέος (βλ. λ. *ἀρσενικόν*).

5) *Βορικὸς μόλυβδος* $Pb(BO_2)_2 . H_2O$. Ἀποχωρίζεται ὡς λευκὸν ἵζημα κατὰ τὴν ἀνάμιξιν ψυχρῶν πυκνῶν διαλυμάτων νιτρικοῦ μολύβδου καὶ βόρακος. Εἶναι δυσδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν ... κοόλην καὶ εὐκολώτερον διαλυτὸς εἰς ἀραιὸν ὀξικὸν καὶ νιτρικὸν ὀξύ. Διὰ τοῦ ὕδατος ὑδρολύεται... σχηματιζομένων τῶν ἁλάτων:

$$2\,PbO\ \ 3\,B_2O_3 + 4\,H_2O$$
$$PbO .\ 2\,B_2O_3 + 4\,H_2O$$
$$PbO .\ 3\,B_2O_3$$

Ταῦτα τήκονται κατὰ τὴν θέρμανσιν εἰς ἀχρόους ἢ ἀσθενῶς κιτρίνας ἰσχυρῶς φωτοθλαστικὰς ὑάλους. Ἐπίσης διὰ συντήξεως βορικοῦ ὀξέος μετ' ὀξειδίου τοῦ μολύβδου κατ' ἐπιθυμητὰς ἀναλογίας προκύπτουν ὕαλοι, τῶν ὁποίων ἡ σκληρότης αὐξάνεται μὲ τὴν αὔξουσαν περιεκτικότητα εἰς βόρ... Ὁ βορικὸς μόλυβδος εἶναι κατάλληλος πρὸς παρασκευὴν ἐλαιοχρωμάτων, ἅτινα παρουσιάζουσι μεγάλην ἀντοχὴν εἰς τὸ θαλάσσιον ὕδωρ καὶ εἰς ... συγχρόνου ἐπιδράσεως ἀέρος, δι' ὃ καὶ χρησιμοποιοῦνται ταῦτα πρὸς βαφὴν πλοίων, γεφυρῶν κλπ.

6) *Θειικὸς μόλυβδος.* α') Κανονικὸς θειικὸς μόλυβδος, $PbSO_4$. Ἀπαντᾷ ὡς *ἀγγλεζίτης* ἐν τῇ φύσει, ἐπίσης δὲ εἰς ὡραίους κρυστάλλους εἰς τοὺς μολυβδοθαλάμους τῆς βιομηχανίας τοῦ θειικοῦ ὀξέος. Παρασκευάζεται διὰ καθιζήσεως διαλυτῶν ἁλάτων τοῦ μολύβδου (νιτρικοῦ ἢ ὀξικοῦ) διὰ θειικοῦ ὀξέος. Ἀποτελεῖ λεπτοκρυσταλλικὴν κόνιν καὶ εἶναι λίαν δυσδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ. Μικραὶ ποσότητες θειικοῦ μολύβδου, ὡς μέσον ἀραιώσεως τοῦ χρωμικοῦ μολύβδου, ὡς ὑπόστρωμα τῶν λιθογραφικῶν χρωστικῶν λακκῶν καὶ χρωμάτων τῆς πίσσης κλπ. Αὐτὸς καθ' ἑαυτὸν μόνος, λόγῳ τῆς μικρᾶς καλυπτικῆς ἱκανότητος, δὲν χρησιμοποιεῖται ὡς χρῶμα· ὅταν ὅμως εἰς ἐναιωρημένον ἐν ὕδατι θειικὸν μόλυβδον προστεθῇ ὑδροξείδιον βαρίου καὶ διοχετευθῇ ἀνθρακικὸν ὀξύ, τότε λαμβάνεται λευκὸν καλυπτικὸν χρῶμα. Τὸ μέγιστον μέρος τοῦ ὡς παραπροϊόντος λαμβανομένου θειικοῦ μολύβδου χρησιμοποιεῖται πρὸς παραλαβὴν μολύβδου ἢ ἄλλων ... ἐκ θειικῶν αὐτοῦ. Ὁ Riedel παρασκευάζει ἐκ θειικοῦ μολύβδου καὶ μαγνησίου κόνιν ἀστραπιαίου φωτισμοῦ πρὸς λῆψιν φωτογραφιῶν κατὰ τὴν νύκτα. β') Βασικὸς θειικὸς μόλυβδος. Ἡ ἕνωσις $PbSO_4 . PbO$ ἀπαντᾷ εἰς τὴν φύσιν ὡς ὀρυκτὸν *λαναρκίτης*, εἶναι δὲ λευκὴ κρυσταλλικὴ κόνις λαμβανομένη δι' ἐπιδράσεως ἀμμωνίας ἐπὶ θειικοῦ μολύβδου ἢ δι' ἀναταράξεως τούτου μετ' ὀξειδίου τοῦ μολύβδου καὶ ὕδατος.

Digitized by Google

7) *Θειοῦχος μόλυβδος ἢ γαληνίτης* Εἶναι τὸ σπουδαιότερον ὀρυκτὸν τοῦ μολύβδου, ἐξ οὗ καὶ ἐξάγεται οὗτος βιομηχανικῶς. Ἀποτελεῖ σκοτεινοτέφρους κανονικοὺς κρυστάλλους ἰσχυρᾶς μεταλλικῆς λάμψεως. Εἶναι καλὸς ἀγωγὸς τοῦ ἠλεκτρισμοῦ. Τεχνητῶς παρασκευάζεται ὡς θειοῦχος μόλυβδος διὰ θερμάνσεως μολύβδου εἰς ἀτμοὺς θείου, ἐκ θείου καὶ ὀξειδίου τοῦ μολύβδου, δι' ἀναγωγῆς τοῦ θειικοῦ μολύβδου δι' ἄνθρακος, διὰ καταβυθίσεως ἁλάτων τοῦ μολύβδου δι' ὑδροθείου κλπ. Ἡ τελευταία αὕτη ἀντίδρασις εἶναι λίαν εὐπαθὴς καὶ χρησιμοποιεῖται συνηθέστατα διὰ τὴν ἀνίχνευσιν τῶν ἑνώσεων τοῦ μολύβδου. Εἰς τὸν σχηματισμὸν αὐτὸν ἀκριβῶς ὀφείλεται καὶ ἡ ἀμαύρωσις τῶν ἐκ λευκοῦ τοῦ μολύβδου ἐλαιοχρωμάτων, ἰδίως ἐντὸς τῶν οἰκιῶν καὶ κυρίως τῶν ἀποχωρητηρίων.

8) *Μολυβδικὸν ἀσβέστιον*, $Ca_2 Pb O_4$. Βαρεῖα σαρκόχρους ἕως κιτρινέρυθρος κόνις, ἀδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ. Πρέπει νὰ προφυλάσσεται ἀπὸ τῆς ὑγρασίας καὶ τοῦ ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Μετὰ 4 μορίων ὕδατος σχηματίζει ὑδρίτην. Πρὸς παρασκευὴν αὐτοῦ θερμαίνεται ἄσβεστος ἢ ὑδροξείδιον τοῦ ἀσβεστίου μετὰ ὀξειδίου τοῦ μολύβδου (μινίου ἢ καὶ ἀνθρακικοῦ μολύβδου) εἰς τοιαύτην ἀναλογίαν, ὥστε νὰ ἀντιστοιχῇ 1 ἄτομον μολύβδου πρὸς 2 ἄτομα ἀσβεστίου. Χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν πυρείων ἀσφαλείας.

9) *Νιτρικὸς μόλυβδος*, $Pb (NO_3)_2$. Κρυσταλλοῦται καλῶς ἐκ μὲν καθαροῦ ὕδατος εἰς πορσελλανοειδεῖς θολοὺς κρυστάλλους λόγῳ παραγομένης μικρᾶς ποσότητος βασικοῦ ἅλατος, ἐκ δὲ ἀσθενῶς νιτρικοῦ διαλύματος εἰς τελείως διαφανεῖς. Εἶναι εὐδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ καὶ δυσδιάλυτος εἰς τὴν ἀλκοόλην. Κατὰ τὴν θέρμανσιν διασπᾶται, ἐκλυομένου ὀξυγόνου καὶ ὀξειδίων τοῦ ἀζώτου καὶ ἀπομένει τελικῶς ὀξείδιον τοῦ μολύβδου. Παρασκευάζεται διὰ διαλύσεως μολύβδου ἢ ὀξειδίου τοῦ μολύβδου εἰς θερμὸν ἀραιὸν νιτρικὸν ὀξύ. Χρησιμοποιεῖται πρὸς παρασκευὴν ἄλλων ἁλάτων τοῦ μολύβδου, εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν πυρείων.

10) *Μόλυβδος ὀξικός* (βλ. *ὀξικοῦ ὀξέος ἅλατα*).

11) *Μολύβδου ὀξείδια*. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ὀξειδίων τοῦ μολύβδου εἶναι:

α') Τὸ *ὑποξείδιον* τοῦ μολύβδου ($Pb_2 O$), μελανὴ κόνις λαμβανομένη διὰ θερμάνσεως ὀξαλικοῦ μολύβδου εἰς 250—300° ἐν ἀποκλεισμῷ τοῦ ἀέρος. Ἐσχάτως ἠμφεσβητήθη δι' ἰσχυρῶν ἐπιχειρημάτων τὸ ἑνιαῖον τῆς ἑνώσεως αὐτῆς.

β') Τὸ *ὀξείδιον* τοῦ μολύδου (PbO) ἢ *λιθάργυρος* ἢ *μασσικότ*, ὅπερ δύναται νὰ παρασκευασθῇ εἰς διαφόρους μορφάς. Τὸ *κίτρινον* ὀξείδιον προκύπτει διὰ βρασμοῦ τοῦ ὑδροξειδίου τοῦ μολύβδου μετὰ νατρορρύματος (10%), ὡς κιτρινοπρασίνη κρυσταλλινικὴ κόνις, ἥτις διὰ τριβῆς καθίσταται κιτρινόφαιος. Ἐὰν θερμανθῇ αὕτη εἶτα εἰς 620°, τότε μετὰ τὴν ψῦξιν καθίσταται πάλιν ἀνοικτοκιτρίνη. Ἡ κιτρίνη μορφὴ εἶναι ἑπομένως εἰς 620° σταθερὰ καὶ εἰς συνήθη θερμοκρασίαν ἀσταθής. Ἀμφότερα τὰ προϊόντα δεικνύουσι τὴν ἰδίαν διαλυτότητα καὶ ἀγωγιμότητα καὶ πρέπει νὰ θεωρηθῶσιν ὡς ἓν ἑνιαῖον σῶμα. Τὸ *ἐρυθρὸν* ὀξείδιον τοῦ μολύβδου λαμβάνεται διὰ βρασμοῦ ὑδροξειδίου τοῦ μολύβδου μετὰ πυκνοῦ ἀλκαλίου. Εἶναι ἀνθεκτικώτερον καὶ ὀλιγώτερον διαλυτὸν τῆς κιτρίνης μορφῆς. Ὡς προϊόντα τοῦ ἐμπορίου διακρίνονται σαφῶς ὁ *λιθάργυρος* καὶ τὸ *massicot* καὶ κέκτηνται ὄχι μόνον διάφορον τρόπον παρασκευῆς, ἀλλ' ἀκόμη, εἰς ὡρισμένας περιπτώσεις, καὶ διάφορον χημικὴν συμπεριφοράν. Ὁ λιθάργυρος εἶναι κρυσταλλικός, ἐνῷ τὸ massicot εἶναι ἄμορφον. Ὁ λιθάργυρος χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν παρασκευὴν τοῦ μινίου. Τὸ ὀξείδιον τοῦ μολύβδου χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν ὑαλουργίαν, εἰς τὴν κεραμεικήν, εἰς τὴν παρασκευὴν ἄλλων ἑνώσεων τοῦ μολύβδου καὶ μικρὰ ποσὰ εἰς τὴν παραγωγὴν βερνικίων καὶ ἐμπλάστρων.

γ') Τὸ ὑδροξείδιον τοῦ μολύβδου, $Pb(OH)_2$. Καθιζάνεται ἐκ τῶν διαλυμάτων τῶν ἁλάτων τοῦ μολύβδου διὰ προσθήκης ἀλκαλίων ὡς λευκὸν ὀγκῶδες ἴζημα. Κατὰ τὴν ἠρεμίαν ἐν θερμῷ διηθηθέντος διαλύματος λιθαργύρου ἐν καλλιρρύματι ἀποχωρίζεται ἡ ἕνωσις $2PbO.H_2O$ εἰς ἰσχυρῶς φωτοθλαστικοὺς στίλβοντας κρυστάλλους. Τὸ ὑδροξείδιον τοῦ μολύβδου εἶναι λευκὴ μικροκρυσταλλικὴ κόνις κυανοῦσα τὸν ἐρυθρὸν χάρτην τοῦ ἡλιοτροπίου. Εἰς τοὺς 130° παρέχει ὕδωρ μετ' αἰσθητῆς ταχύτητος μεταπῖπτον εἰς ὀξείδιον τοῦ μολύβδου. Ἔχει συγχρόνως ἀσθενῆ βασικὸν καὶ ἀσθενῆ ὄξινον χαρακτῆρα καὶ διαλύεται ὡς ἐκ τούτου εἰς περίσσειαν ἰσχυρῶν ἀλκαλίων. Μετὰ χλωριούχου στροντίου, μετὰ χλωριούχου ἀσβεστίου καὶ συγχρόνως ὀξειδίου τοῦ ἀσβεστίου σχηματίζει διπλᾶ ἅλατα. Περαιτέρω ἔχει τὴν ἱκανότητα νὰ ἑνοῦται μετὰ πολυαρίθμων ὀργανικῶν ὑδροξυλιούχων σωμάτων, ὡς γαλακτικοῦ, μηλικοῦ, τρυγικοῦ ὀξέος, γλυκερίνης καὶ καλαμοσακχάρου πρὸς συμπλόκους ἑνώσεις.

δ') Τὸ ἐπιτεταρτοξείδιον τοῦ μολύβδου, $Pb_3 O_4$. Τοῦτο εἶναι τὸ *μίνιον* (βλ. λ.).

ε') Τὸ ὑπεροξείδιον τοῦ μολύβδου, $PbO_2$. Ἀπαντᾷ ἐν τῇ φύσει ὡς ὀρυκτὸν (Σκωτία), κρυσταλλούμενον εἰς ἑξαγωνικὰ πρίσματα. Τὸ φυσικὸν ὑπεροξείδιον τοῦ μολύβδου εἶναι φαιὰ ἢ τεφρὰ κρυσταλλικὴ κόνις, τὸ δὲ τεχνητὸν φαιά. Εἰς τὸ ὕδωρ εἶναι ἐκτάκτως δυσδιάλυτον. Εἰς τὸ φῶς ἢ δι' ἠπίας θερμάνσεως μεταπίπτει εἰς ὀξυγόνον καὶ μίνιον, δι' ἰσχυροτέρας δὲ θερμάνσεως εἰς ὀξείδιον τοῦ μολύβδου. Μετ' εὐκόλως καιομένων ὑλῶν, ὡς ὁ ἐρυθρὸς φωσφόρος ἢ τὸ θεῖον, συντριβόμενον προκαλεῖ ἀνάφλεξιν, μετὰ κιτρίνου δὲ φωσφόρου ἔκρηξιν. Τὸ ὑπεροξείδιον τοῦ μολύβδου ἔχει ἐπαμφοτερίζοντα χαρακτῆρα, ἑνούμενον μετ' ὀξέων ἢ μετὰ βάσεων. Χρησιμοποιεῖται εἰς διαφόρους ὀξειδωτικὰς δράσεις. Ἡ μεγαλυτέρα χρησιμοποίησις τούτου γίνεται εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν σουηδικῶν πυρείων ἀσφαλείας, ὅπου τοῦτο, ὁμοῦ μετὰ τοῦ νιτρικοῦ μολύβδου, ἀποτελεῖ τὸ μέσον τὸ παρέχον τὸ πρὸς καῦσιν ὀξυγόνον. Περαιτέρω χρησιμεύει πρὸς παρασκευὴν ἠλεκτροδίων, ὑπεδείχθη πρὸς καθαρισμὸν τοῦ οἰνοπνεύματος καὶ χρησιμοποιεῖται πρὸς ὀξείδωσιν ὀργανικῶν ὑλῶν καὶ παρασκευὴν χρωμάτων (ὡς τὸ πράσινον τοῦ μαλαχίτου). Ὁμοίως χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν ἀνάλυσιν, διότι ἔχει τὴν ἰδιότητα νὰ ἀπορροφᾷ πλήρως τὸ διοξείδιον τοῦ ἀζώτου, τὸ θειῶδες ὀξύ, τὸ χλώριον, τὸ βρώμιον, τὸ ὑδροχλωρικὸν καὶ ὑδροβρωμικὸν ὀξύ.

12) *Πυριτικὸς μόλυβδος*. Δι' ἀναμίξεως διαλύματος ὑδροϋάλου μετὰ διαλυμάτων ἁλάτων τοῦ μολύβδου, ὡς καὶ διὰ συντήξεως ὀξειδίου τοῦ μολύβδου μετὰ πυριτικοῦ ὀξέος, παρασκευάζονται διάφορα ἅλατα, τὰ ὁποῖα φέρονται ὑπὸ τὸ περιληπτικὸν ὄνομα πυριτικὸς μόλυβδος. Ὡς ἑνιαία ἕνωσις ἀπεμονώθη μόνον τὸ ἅλας $PbSiO_3$, ἐνῷ τὰ ἄλλα θεωροῦνται μᾶλλον ὡς στερεὰ διαλύματα ὀξειδίου τοῦ μολύβδου, πυριτικοῦ ὀξέος καὶ ὡρισμένων πυριτικῶν μολύβδων. Τὰ πτωχότερα εἰς μόλυβδον εἶναι καθαρῶς λευκά, μὲ αὐξάνουσαν δὲ περιεκτικότητα εἰς μόλυβδον καθίστανται κίτρινα ἕως φαιά. Σπουδαιότερα τῶν καθαρῶν πυριτικῶν μολύβδων εἶναι τὰ διπλᾶ πυριτικὰ ἅλατα τοῦ μολύβδου καὶ ἀλκαλίων, τὰ ὁποῖα ἔχουσι διαφορωτάτας συστάσεις καὶ παίζουν σπουδαιότατον ρόλον εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν κρυστάλλων, τῶν ἐμαγιὲ καὶ τῶν ἐφυαλωμάτων. Αἱ διὰ μολύβδου αὗται ὕαλοι παρουσιάζουν μεγίστην φωτοθλαστικότητα, προσλαμβάνουν εὐκόλως διάφορα μεταλλοξείδια καὶ χρησιμοποιοῦνται πρὸς ἀπομίμησιν τῶν πολυτίμων λίθων.

13) *Ρητινικὸς μόλυβδος*. Παρασκευάζεται διὰ καταβυθίσεως ρητινικοῦ νατρίου δι' ἅλατός τινος τοῦ μολύβδου ἢ διὰ συντήξεως ὀξειδίου τοῦ μολύβδου μετὰ κολοφωνίου. Εἰς τὴν πρώτην περίπτωσιν περιέχει αἰσθητὰς ποσότητας ὕδατος. Καλὸς ρητινικὸς μόλυβδος εἶναι τελείως διαλυτὸς εἰς χλωροφόρμιον καὶ εἰς θερμὸν τερεβινθέλαιον. Προστίθεται εἰς τὰ ἐλαιοχρώματα πρὸς ἐπιτάχυνσιν τῆς ξηράνσεως (στεγνωτικόν).

14) *Χλωριοῦχος μόλυβδος*. Διακρίνομεν:

α') Τὸν οὐδέτερον χλωριοῦχον μόλυβδον, $PbCl_2$, ὅστις ἀπαντᾷ ἐν τῇ φύσει καὶ ἀποτελεῖ λευκοὺς μεταξοστίλπνους ρομβικοὺς κρυστάλλους. Παρασκευάζεται διὰ κατεργασίας ὀξειδίου τοῦ μολύβδου μετὰ ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος ἢ διὰ καθιζήσεως διαλυτοῦ τινος ἅλατος τοῦ μολύβδου διὰ διαλύματος μαγειρικοῦ ἅλατος. Χρησιμοποιεῖται ὑπὸ μορφὴν πάστας διὰ τὴν βιομηχανίαν τοῦ χρωμικοῦ μολύβδου.

β') Τὸ ὀξυχλωρίδιον τοῦ μολύβδου. Βασικὰ χλωρίδια τοῦ μολύβδου ἀπαντῶσιν ἐν τῇ φύσει εἰς κυμαινομένην σύστασιν. Παρασκευάζεται τεχνητῶς καὶ χρησιμοποιεῖται ὡς λευκὸν χρῶμα, ὡς καὶ πρὸς παρασκευὴν τοῦ κιτρίνου τοῦ Kassel κλπ.

15) *Χρωμικὸς μόλυβδος*. Διακρίνομεν:

α') Τὸν οὐδέτερον χρωμικὸν μόλυβδον, $PbCrO_4$. Οὗτος ἀπαντᾷ ὡς ὀρυκτὸν εἰς μονοκλινεῖς σκοτεινοκιτρίνους κρυστάλλους, τεχνητῶς δὲ παρασκευάζεται διὰ καθιζήσεως διαλυμάτων ἁλάτων τοῦ μολύβδου διὰ χρωμικοῦ ἢ διχρωμικοῦ καλίου ὡς ἄμορφον πορτοκαλλοκίτρινον διὰ μακροτέρας διαμονῆς κρυσταλλούμενον εἰς ὑπέρυθρον τόνον. Εἶναι σπουδαῖον κίτρινον χρῶμα, λίαν δηλητηριῶδες ὅμως.

β) Τὸν διχρωμικὸν μόλυβδον $PbCr_2O_7$. Ἐρυθρόφαιοι κρύσταλλοι, παρασκευαζόμενοι δι' ἐπιδράσεως χρωμικοῦ ὀξέος ἐπὶ χρωμικοῦ μολύβδου ἢ ὀξειδίου τοῦ μολύβδου.

γ) Τοὺς βασικοὺς χρωμικοὺς μολύβδους, οἵτινες εἶναι διαφόρων συστάσεων, ὡς

$$2PbO.\,CrO_3,\ 3PbO.\,CrO_3.$$

Χρησιμοποιοῦνται ὡς πολύτιμα ἀνόργανα χρώματα (χρώματα χρωμίου, ἐρυθρὸν χρωμίου κλπ.).

16) *Μολύβδου ἑνώσεις μετ' ἀλκυλίων* (ὀργανικαί). Ὁ μόλυβδος μετ' ἀλκυλίων ἑνοῦται πάντοτε ὡς τετρασθενής, ἐνῷ εἰς τὰς ἀνοργάνους ἑνώσεις του αἱ σταθερώτεραι εἶναι αἱ τοῦ δισθενοῦς. Αἱ σπουδαιότεραι τῶν ὀργανικῶν του τούτων ἑνώσεων εἶναι τὸ *μολυβδοτετραμεθύλιον* $Pb(CH_3)_4$, ὅπερ βράζει εἰς 110°, καὶ τὸ *μολυβδοτεταιθύλιον* $Pb(C_2H_5)_4$, ὅπερ εἶναι ἄχρουν βαρὺ ὑγρόν, βράζον ὑπὸ ἠλαττωμένην πίεσιν (15 χλσμ.) εἰς 83°. Προστίθεται εἰς μικρὰν ποσότητα (1 : 1000) εἰς τὴν βενζίνην τῶν μηχανῶν ἐσωτερικῆς καύσεως, πρὸς ἀποφυγὴν τῶν προώρων ἀναφλέξεων, ὑπὸ τὸ ὄνομα Antiknock ἢ Antiklopfruithel. Παρασκευάζεται δι' ἐπιδράσεως μαγνησιοαιθυλοβρωμιδίου ἐπὶ χλωριούχου μολύβδου ἢ αἰθυλαλογονιδίου ἐπὶ κράματος μολύβδου καὶ νατρίου.

***Μολύβδου δένδρον***. Κρυσταλλικὴ μᾶζα ἔχουσα τὸ σχῆμα δένδρου. Παράγεται δι' ἐμβαπτίσεως ράβδου ψευδαργύρου εἰς διάλυμα ὀξικοῦ μολύβδου. Χρησιμοποιεῖται διὰ παιδικὰ μαγικὰ παίγνια.

***Μολύβδου ὄξος*** ἢ *μολύβδοξος*. Εἶναι βασικὸς ὀξικὸς μόλυβδος (βλ. *ὀξικοῦ ὀξέος ἅλατα*).

Σ. ΓΑΛΑΝΟΣ

— [ΜΕΤΑΛΛΟΥΡΓ.] Τὰ μεταλλεύματα μολύβδου εἶναι δύο εἰδῶν, ὀξειδωμένα (ἀνθρακικὰ καὶ θειικὰ) καὶ ἔνθεια ἐκ γαληνίτου, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον καθαροῦ, συνοδευομένου πολλάκις ὑπὸ πλείστων παραμείξεων, ὡς σφαλερίτου, σιδηροπυρίτου, χαλκούχων πυριτῶν, ἀρσενικούχων καὶ ἀντιμονιούχων ἑνώσεων, ἀργύρου μετ' ὀλίγου χρυσοῦ, ἑνώσεων νικελίου, κοβαλτίου, βισμουθίου, ὡς καὶ χαλαζίου, ἀσβεστίτου, δολομίτου, βαρυτίνης, ἀνθρακικοῦ σιδήρου, ψευδαργύρου (σμιθσονίτου ἢ καλαμίνας) κτλ.

Τὰ πρῶτα, πολὺ ὀλιγώτερον διαδεδομένα τῶν δευτέρων, ἐξ ὧν προέρχονται δι' ὀξειδώσεως, συναντῶνται ἐν συνοδείᾳ μετ' αὐτῶν εἰς τὸ ἄνω μέρος τῶν κοιτασμάτων, εὑρισκόμενον εἰς τὴν ζώνην ὀξειδώσεως διὰ κυκλοφορίας ἐπιφανειακῶν ὑδάτων (σιδηροῦν ἐπικάλυμμα, chapeau de fer) καὶ εἰς κοιτάσματα ἀντικαταστάσεως ἀσβεστολίθων, ὡς π. χ. εἰς τὸ Λαύρειον. Ἀνάγονται δὲ εὐκόλως διὰ συντήξεως εἰς φρεατοειδεῖς καμίνους (βλ. κατωτ.) καὶ ὡς συλλιπάσματα μετὰ τῶν θειούχων. Εἰς τὰ μικτὰ μεταλλεύματα δύνανται νὰ καταταχθῶσιν ὡς πηγαὶ μολύβδου καὶ αἱ μολυβδοῦχοι σκωρίαι ἀτελεστέρας ἐκκαμινεύσεως ἀρχαιοτέρων κατεργασιῶν, ὡς καὶ αἱ ἐκβολάδες διαλογῆς μεταλλευμάτων (π. χ. ἐν Λαυρείῳ).

Τῶν ἐνθείων μεταλλευμάτων, ἀναλόγως τοῦ πλούτου καὶ τῆς συνθέσεως αὐτῶν, γίνεται κατεργασία διὰ τῶν ἑξῆς τριῶν μεθόδων: 1) φρύξεως καὶ ἀντιδράσεως, 2) φρύξεως καὶ ἀναγωγῆς, 3) τήξεως καὶ κατακρημνίσεως διὰ τοῦ σιδήρου, ὡς καὶ διὰ τοῦ συνδυασμοῦ αὐτῶν.

Ἡ μέθοδος *φρύξεως καὶ ἀντιδράσεως* (κατάλληλος διὰ καθαρὰ καὶ πλούσια μεταλλεύματα, περιέχοντα ὀλίγον πυρίτιον, ὡς διὰ γαληνίτας λίαν ἀργυρούχους, διότι δὲν παρουσιάζει ἀπωλείας εἰς ἄργυρον) στηρίζεται ἐπὶ τῶν ἑξῆς δύο ἀντιδράσεων:

$2PbO+PbS=3Pb+SO_2$, εἰς 500° (μερικὴ φρύξις).
$PbS+PbSO_4=2Pb+2SO_2$, εἰς 800° (ἀντίδρασις).

Ἡ κατεργασία αὕτη γίνεται ἰδίως εἰς φλογοβόλους καμίνους, σπανιώτερον εἰς καμίνους χαμηλῆς ἑστίας, εἰς τὰς ὁποίας γίνεται μερικὴ φρύξις, παράγεται ὀξείδιον τοῦ μολύβδου καὶ θειικὸς μόλυβδος, δι' ἀνοίγματος τῶν θυρῶν ἵνα γίνῃ ὀξείδωσις τοῦ γαληνίτου, καὶ κατόπιν κλείονται αἱ θύραι, ἐνισχύεται ἡ πυρὰ καὶ γίνεται ἡ ἀντίδρασις. Ἐὰν ὑπάρχῃ πυριτικὸν ὀξύ, σχηματίζεται εὔτηκτος πυριτικὸς μόλυβδος, ὅστις σκωριοποιεῖται καὶ δὲν ἀντιδρᾷ ἐπὶ τοῦ θειούχου μολύβδου, δημιουργῶν ἀπωλείας.

Ἡ μέθοδος *φρύξεως καὶ ἀναγωγῆς* περιλαμβάνει τὴν ὅσον τὸ δυνατὸν τελειοτέραν φρῦξιν τοῦ ἐνθείου μεταλλεύματος εἰς ὀξείδιον καὶ τὴν ἀναγωγικὴν τῆξιν αὐτοῦ διὰ τοῦ ἄνθρακος συμφώνως πρὸς τὰς δύο θεμελιώδεις ἀντιδράσεις:

$PbS+3O=PbO+SO_2$ (πλήρης φρῦξις).
$PbO+C=Pb+CO_2$ (ἀναγωγικὴ τῆξις).

Ἡ ἀναγωγὴ ἀρχίζει εἰς 530° καὶ ἐπιταχύνεται εἰς 700°. Ἡ μέθοδος αὕτη εἶναι σήμερον ἡ κυριωτέρα, θὰ περιγραφῶσι δὲ κατωτέρω αἱ χρησιμοποιούμεναι συσκευαί.

Ἡ μέθοδος *τήξεως καὶ κατακρημνίσεως διὰ τοῦ σιδήρου* στηρίζεται εἰς τὴν ἀντίδρασιν:

$$PbS+Fe=Fe\,S+Pb$$

σχηματίζεται δὲ ἰδίως κατ' αὐτὴν σύντηγμα ἐνθείου μολύβδου καὶ σιδήρου (matte). Κατ' αὐτὴν γίνεται χρῆσις ἰδία φρεατοκαμίνων. Ἡ μέθοδος αὕτη (ἥτις ἐχρησιμοποιεῖτο διὰ λίαν ἀργυροῦχα μεταλλεύματα, διότι δὲν χάνεται ὁ ἄργυρος ὡς κατὰ τὴν φρῦξιν αὐτῶν, ἢ περιέχοντα χαλκόν, διότι τότε δίδει σύντηγμα χαλκοῦχον, κατάλληλον διὰ περαιτέρω κατεργασίαν), ἔχει ὡς καὶ ἡ πρώτη μικρὰν σημασίαν σήμερον, ἀλλ' αἱ ἀντιδράσεις αὐτῶν παρουσιάζονται παρεμπιπτόντως κατὰ τὴν φρῦξιν καὶ ἀναγωγικὴν τῆξιν.

***Φρῦξις τοῦ γαληνίτου***. Ἡ φρῦξις τοῦ γαληνίτου δὲν δύναται νὰ γίνῃ ἀφ' ἑαυτῆς, ὡς ἡ τῶν σιδηροπυριτῶν, ἐκτὸς ἐὰν ὑπάρχῃ πολὺ μεγάλη ἀναλογία αὐτῶν εἰς τὸ μετάλλευμα, ἀλλ' ἔχει ἀνάγκην θερμάνσεως. Αἱ μὲν παλαιότεραι μέθοδοι ἐχρησιμοποίουν ἀποκλειστικῶς φλογοβόλους καμίνους, ἢ ἐνίοτε καὶ σωροὺς ἢ εἰδικὰς φρεατοειδεῖς χαμηλὰς καμίνους (Kiln), αἱ δὲ νεώτεραι, ἐκτὸς τῶν φλογοβόλων καμίνων, καὶ στρόμβους ἢ τραπέζας μετατροπῆς διὰ ρεύματος ἀέρος. Αἱ φλογοβόλοι κάμινοι, πολλάκις μεγάλου μήκους καὶ μάλιστα ἐνίοτε μὲ δάπεδον διατεταγμένον εἰς διαδοχικοὺς δρόμους, παρουσιάζουσι ὑπὸ πολλὰς μορ-

Digitized by Google

φάς, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων εἶναι ἡ κάμινος συνεχοῦς πτυαρισμοῦ. Εἰς αὐτὴν τὸ μετάλλευμα εἰσάγεται εἰς τὸ πλέον μεμακρυσμένον ἀπὸ τῆς ἑστίας σημεῖον καὶ ὁδεύει διαδοχικῶς διὰ πτυαρισμοῦ ἐνεργουμένου διὰ τῶν πλευρικῶν θυρῶν μέχρι τοῦ θερμοτέρου μέρους. Ἡ

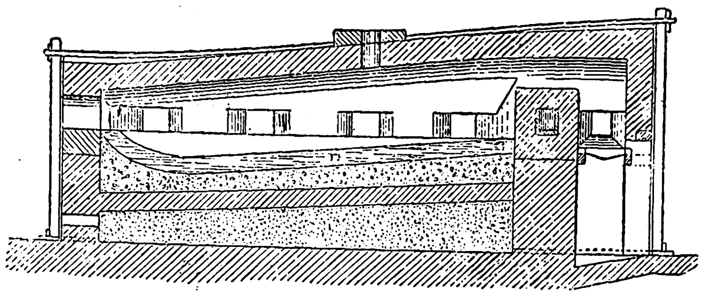

*Φλογοβόλος κάμινος κατεργασίας γαληνίτου διὰ φρύξεως καὶ ἀντιδράσεως.*

κάμινος αὐτὴ ἐτελειοποιήθη διὰ τῆς χρήσεως τῶν ἑξῆς μηχανικῶν μέσων διὰ τὴν μετατόπισιν τῆς πρὸς φρύξιν οὐσίας: 1) Τὸ δάπεδον εἶναι σταθερόν, ἡ δὲ μετατόπισις τοῦ μεταλλεύματος γίνεται διὰ μηχανικῶν κινητῶν σκαλεύθρων, συνήθως περιστρεφομένων (στρογγύλη κάμινος Merton, λειτουργοῦσα παρὰ τῇ γαλλικῇ ἑταιρείᾳ μεταλλείων Λαυρείου) ἢ δι' ἀτέρμονος ἁλύσεως· τὰ σκάλευθρα ψύχονται ἐσωτερικῶς διὰ κυκλοφορίας ὕδατος. 2) Περιστρέφεται τὸ δάπεδον τῆς καμίνου καὶ τὰ σκάλευθρα μένουσι σταθερά· αἱ οὐσίαι ὀξειδούμεναι ἀκολουθοῦν σπειροειδῆ διαδρομὴν ἐκ τοῦ κέντρου πρὸς τὴν περιφέρειαν (κάμινος Heberlein, λίαν ἐν χρήσει). 3) Καθίσταται κινητὴ ὅλη ἡ κάμινος περὶ ἄξονα ὁριζόντιον (κάμινος Bruckner) ἢ ἐλαφρῶς κεκλιμένον (κάμινος Oxland, ἐν Λαυρείῳ), ὡς γίνεται εἰς τὰς περιστροφικὰς καμίνους τῆς σιμεντοποιίας· εἰς τὰς καμίνους ταύτας τὸ θειῶδες ἀέριον ἀπάγεται μετὰ τῶν καυσαερίων εἰς τὴν ἀτμοσφαῖραν. Γίνεται ἐπίσης χρῆσις καμίνων κλειστῶν χωρῶν (four à moufle), αἵτινες ἔχουσι τὸ πλεονέκτημα ὅτι δύναται νὰ συλλεγῇ τὸ θειῶδες ἀέριον, ἐπ' ὠφελείᾳ τῆς ὑγείας καὶ τῆς βλαστήσεως τῆς περιοχῆς ὅπου τὸ ἐργοστάσιον, πρὸς παραγωγὴν θειικοῦ ὀξέος (κάμινος Delplace, Hasenclever μετ' ἀνασκαλίσεως διὰ μηχανικῶν σκαλέθρων καὶ Spielet μετὰ περιστροφικῶν δαπέδων ὡς ἡ κάμινος Heberlein).

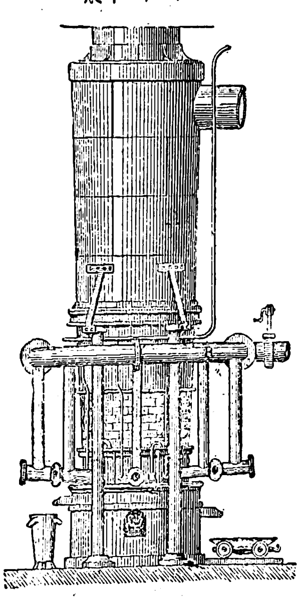

*Κάμινος Φράϊμπεργκ.*

Ἡ φρύξις τοῦ γαληνίτου διὰ τῶν μεθόδων τούτων δὲν εἶναι ποτὲ πλήρης. Ἐπὶ ἀρχικῆς ἀναλογίας 14 ἕως 18% θείου, παραμένουν εἰσέτι περὶ τὰ 8%, ἅτινα κατὰ τὴν ἀναγωγὴν ἐν φρεατοκαμίνῳ γίνονται αἴτια παραγωγῆς ἀναλόγου ποσότητος συντήγματος θειούχου μολύβδου καὶ σιδήρου ἔχοντος ἀνάγκην ἐκ νέου φρύξεως καὶ ἀναγωγικῆς τήξεως ἐπὶ μειώσει τῆς ἀναλογίας παραγωγῆς μο-

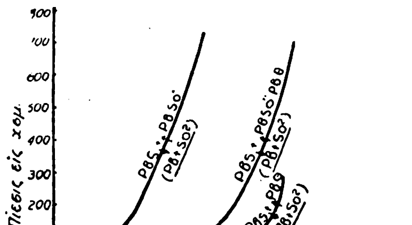


*Καμπύλαι ἰσορροπίας ἀντιδράσεων κατὰ τὴν φρῦξιν τοῦ γαληνίτου.*

λύβδου. Αἱ μέθοδοι ὅμως ἀναγωγῆς διὰ τοῦ στρόμβου ἢ τῆς τραπέζης μετατροπῆς (convestisseurs), διαδοθεῖσαι βαθμηδὸν ἀπὸ τοῦ 1897, ἐπιτρέπουσι τὸν ὑποβιβασμὸν τῆς ἀναλογίας θείου εἰς 3% καὶ τὴν παραγωγὴν συντήγματος κατὰ τὴν ἀναγωγὴν μόνον 1,5%. Ἡ φρύξις εἰς αὐτὰς γίνεται διὰ ρεύματος ἀέρος, προσφυσωμένου ἢ ἀπορροφουμένου διὰ μέσου τῆς μάζης. Ἡ πρώτη ἐφαρμογὴ τοῦ μέσου τούτου ἐγένετο ἐν Ἰταλίᾳ εἰς τὰ διάσημα χυτήρια μολύβδου τῆς Πετρουζόλας, παρὰ τὴν Γένουαν, διὰ τῆς μεθόδου Huntigton Heberleîn, ἥτις διεδόθη ἔκτοτε, ἐφαρμοζομένη ἤδη πολλαχοῦ, ὡς π. χ. ἐν Φρεϊβέργῃ τῆς Σαξωνίας, ἐν τῇ νέᾳ καμινείᾳ τῆς γαλλικῆς ἑταιρείας τοῦ Λαυρείου κλπ. Ἡ μέθοδος αὐτὴ ἀπαιτεῖ μίαν πρώτην φρῦξιν τοῦ γαληνίτου ὡς ἄνω ἐξετέθη ἐν ἀναμίξει μετ' ἀσβέστου 15% ἕως 20% καὶ πυριτικοῦ ὀξέος 5 ἕως 12% καὶ τὴν τελικὴν φρῦξιν ἐντὸς στρόμβων περιεχόντων μέχρι 15 τόνων μεταλλεύματος, διὰ προσφυσήσεως ἀέρος ἐπὶ πολλὰς ὥρας μετὰ τὴν φρῦξιν διὰ καταλλήλου γερανογεφύρας, ἵνα συντριβῇ ἡ φρυγεῖσα μᾶζα πίπτουσα ἀφ' ὑψηλοῦ ἐπὶ καταλλήλου δαπέδου. Κατὰ τὴν μέθοδον Savelsberg, κατάλληλον ὅμως μόνον διά τινα μεταλλεύματα, δὲν γίνεται ἡ προκαταρκτικὴ φρῦξις ἀλλὰ φορτώνεται προηγουμένως εἰς τὸν στρόμβον ποσότης πεπυρωμένων ἀνθράκων. Κατὰ τὴν μέθοδον μετατροπῆς δι' ἀπορροφήσεως, ἐφευρεθεῖσαν ὑπὸ τῶν Dwiht καὶ Lloyd εἰς τὰς Ἡν. Πολιτείας τῷ 1907, τελειοποιηθεῖσαν δὲ ὑπὸ τοῦ Γερμανοῦ von Schlippenbach τῷ 1910, γίνεται χρῆσις ἀναρροφητικοῦ ρεύματος ἀέρος διὰ μέσου τοῦ μεταλλεύματος τοποθετημένου ἐπὶ καταλλήλων τραπεζῶν ἐν εἴδει ἀτέρμονος ταινίας ἢ περιστρεφομένου δίσκου, ἢ ἐπὶ περιστρεφομένων κυλίνδρων. Τὰ δὲ ἀέρια, τῶν ὁποίων ποικίλλει ἡ περιεκτικότης εἰς θειῶδες ἀέριον, συλλέγονται κατὰ τὴν περίοδον, καθ' ἣν εἶναι ἀρκετὰ πλούσια πρὸς μετατροπὴν τούτου εἰς θειικὸν ὀξύ. Προηγεῖται τῆς κατεργασίας πρώτη φρῦξις ὡς κατὰ τὴν μέθοδον Huntigton - Heberlein, πολλάκις δὲ γίνονται τρεῖς φρύξεις, μία ἐν καμίνῳ, μία ἐν στρόμβῳ καὶ μία εἰς τραπέζας μετατροπῆς. Αἱ τράπεζαι μετατροπῆς ἀπεβησαν ἡ οἰκονομικωτέρα μέθοδος φρύξεως.

*Ἀναγωγικὴ τῆξις.* Ἐφαρμόζεται εἴτε εἰς μεταλλεύματα ἄφρυκτα, εἴτε εἰς πεφρυγμένα, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον, ὡς ἄνω. Διὰ τὰ ἄφρυκτα, ἡ ἁπλῆ ἀναγωγικὴ τῆξις ἐφαρμόζεται ὄχι μόνον εἰς τὰ ὀξειδωμένα ἀλλὰ καὶ εἰς τὰ θειοῦχα, ὅταν τὸ παραγόμενον σύντηγμα (βλ. κατωτ.) δὲν ὑπερβαίνῃ τὰ 5%, διὰ καταλλήλου ἀναμίξεως μετὰ σιδηρούχων συλλιπασμάτων, ὁπότε ἐπεμβαίνει πλὴν τοῦ ἄνθρακος καὶ ὁ σίδηρος, καταλήγων εἰς σκωρίαν σιδηροῦχον καὶ σύντηγμα, ὡς καὶ αἱ δράσεις μεταξὺ ὀξειδωμένων καὶ θειούχων ἑνώσεων τοῦ μολύβδου. Ἡ κατεργασία γίνεται εἰς πάσας τὰς περιπτώσεις σπανίως εἰς φλογοβόλους καμίνους καὶ εἰς καμίνους χαμηλῆς ἑστίας, μετὰ παρειῶν ψυχομένων δι' ὕδατος, ὡς εἰς τὴν σκωτικὴν μέθοδον καταχρησιμοποιουμένην, ἀλλὰ ὑπὸ τοῦ σιδήρου, ἐν χρήσει εἰσέτι ὀλίγον ἐν Ἀμερικῇ. Ἐπίσης αἱ φρεατοειδεῖς χαμηλαὶ κάμινοι μετὰ προσφυσήσεως ἀέρος, ὧν ἡ χρῆσις εἶναι ἀρχαιοτάτη, ἐτελειοποιήθησαν βαθμηδόν. Κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ἐπεκράτουν εἰσέτι στρογγύλαι φρεατοειδεῖς κάμινοι ἀρκούντως ὑψηλαί, ὡς αἱ κάμινοι Pilz τῆς Φρεϊβέργης, αἵτινες ἐλειτούργησαν μέχρι τοῦ 1917 εἰς Ἐργαστήρια τῆς ἑλληνικῆς ἑταιρείας μεταλλουργείων Λαυρείου καὶ μέχρι τοῦ 1908 παρὰ τῇ γαλλικῇ ἑταιρείᾳ τοῦ Λαυρείου ἐν Κυπριανῷ, διαδεχθεῖσαι τὰς πρώτας ἐν Λαυρείῳ μικροτέρας ἱσπανικὰς καμίνους. Τὰ τότε καμινευόμενα μεταλλεύματα ἐν Λαυρίῳ, ἰδίως τὰ ἐκβολαδικά, ἦσαν ἀρκούντως ὀξειδωμένα, ὥστε νὰ ἀρκῇ ἁπλῆ σύντηξις ἀναγωγικὴ αὐτῶν ἄνευ φρύξεως, τῇ προσθήκῃ μόνον σιδηρούχου συλλιπάσματος. Ἤδη διεδόθησαν βαθμηδὸν ἀπὸ τοῦ 1870 αἱ κάμινοι μετὰ ὑδατίνου ἐπενδύτου (wates-jacket), ὅμοιαι πρὸς τὰς χρησιμοποιουμένας διὰ τὴν τῆξιν τοῦ χαλκοῦ, ὧν αἱ παρειαὶ εἰς τὸ κάτω μέρος ἀποτελοῦνται ἐκ μεταλλίνου ἐπενδύτου ψυχομένου διὰ κυκλοφορίας ὕδατος. Αἱ κάμινοι αὗται ἔλαβον σχῆμα ὀρθογωνίου διατομῆς, ἵνα καταστῇ δυνατὸν ν' αὐξηθῇ ἡ χωρητικότης των χωρὶς νὰ αὐξηθῇ ἡ ἀπόστασις τῶν ἔναντι ἀλλήλων ἀκροφυσίων. Οὕτω κατωρθώθη αὔξησις τῆς παραγωγῆς τῶν καμίνων, εἰς ἃς, ἐνῷ πρότερον ἐφορτώνοντο κατὰ εἰκοσιτετράωρον ὀλίγαι δεκάδες τόννων γομώσεων (ἤτοι οὐσιῶν πρὸς τῆξιν), ἤδη φορτώνονται 300 καὶ 400 τόννοι. Ἐκ τὰς καμίνους ταύτας παράγονται τρεῖς ἢ τέσσαρες διάφοροι οὐσίαι, διαχωριζόμεναι κατὰ σειρὰν πυκνότητος, ἤτοι (ἀρχῆς γινομένης ἐπὶ τῶν ἐλαφροτέρων): 1) Σκωρία, συνθέσεως 2 ἕως 3 μερῶν πυριτικοῦ σιδήρου 2 FeO, $SiO_2$ καὶ 1 ἕως 4 μερῶν πυριτικοῦ ἀσβεστίου 2 CaO, $SiO_2$, περιέχουσα τοσοῦτον ὀλιγώτερον μόλυβδον, ὅσον εἶναι ὀλιγωτέρα ἡ εἰς θεῖον περιεκτικότης τῆς γομώσεως· ἀπαγομένη αὕτη εἰς χυτοσιδηρᾶ δοχεῖα, ἀπορρίπτεται διὰ βαγονίων εἰς σωροὺς (ὡς οἱ μεγάλοι λόφοι σκωριῶν εἰς Ἐργαστήρια καὶ εἰς Κυπριανὸν τοῦ Λαυρείου), ἢ κονιοποιεῖται δι' ἐξακοντίσεως αὐτῆς ἐντὸς ρεύματος ὕδατος (ὡς εἰς τὴν νέαν καμινείαν τοῦ Λαυρείου). 2) Κατόπιν, πολλάκις ἐνδιάμεσον ἀρσενικοῦχον σύντηγμα, τὸ καλούμενον σπάϊς (speiss), κατεργαζόμενον διὰ τὴν παραγωγὴν ἀρσενικοῦ καὶ διὰ τὰ περιεχόμενα μέταλλα (ὡς ἤδη ἐν τῇ γαλλικῇ ἑταιρείᾳ Λαυρείου) μετὰ τῶν καπνῶν περὶ ὧν κατωτέρω. 3) Σύντηγμα θειοῦχον μολύβδου καὶ σιδήρου (matte) μετ' ἄλλων χρησίμων μετάλλων, χαλκοῦ κτλ. 4) Μόλυβδος ἀκατέργαστος. Ὁ ἀποχωρισμὸς τῶν οὐσιῶν τούτων, αἵτινες συγκεντροῦνται εἰς τὸ κάτω μέρος τῆς καμίνου, τὸ χωνευτήριον, γίνεται ὡς ἑξῆς εἰς τὰς νέας καμίνους: ὁ μὲν μόλυβδος ἀποσύρεται, δι' ἀγωγοῦ ἐν εἴδει ἀνεστραμμένου σίφωνος, εἰς χοάνην εὑρισκομένην ἔμπροσθεν τῆς καμίνου (σύστημα Arents) καὶ χύνεται εἰς χελώνας ἀκατεργάστου μολύβδου, τὰ δὲ ὑπόλοιπα προϊόντα ρέουσιν ἐντὸς κινητοῦ χωνευτηρίου, κειμένου ἐπίσης ἔμπροσθεν τῆς καμίνου, τοῦ καλουμένου προχωνευτη-

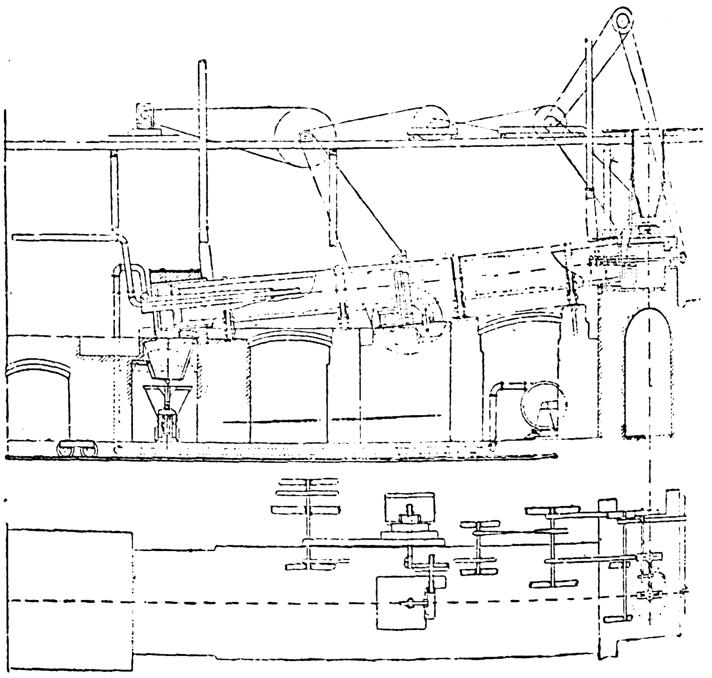

*Κάμινος φρύξεως Oxland.*

ρίου, ὅπου ἀποχωρίζονται κατὰ πυκνότητα. Οἱ καπνοὶ τῶν καμίνων τούτων, ὡς καὶ πάσης καμίνου φρύξεως ἢ ἄλλης κατεργασίας μεταλλεύματος μολύβδου, περιέχουσι διαφόρους κόνεις ὡς καὶ προϊόντα εὐκόλως ἐξαερώσιμα, οἷα τὰς ἀρσενικούχους καὶ ψευδαργυρούχους ἑνώσεις, ἔχουσι δὲ πολλάκις μεγάλην ἀναλογίαν μολύβδου, περιέχοντες ἐξ ἄλλου καὶ θειῶδες ὀξύ. Λόγῳ τῶν βλαβερῶν ἰδιοτήτων αὐτῶν, ὡς καὶ τῆς ἀνάγκης συλλογῆς τῶν σχετικῶν πολυτίμων κόνεων (καλουμένων καπνῶν) κατασκευάζονται μακρότατοι ἀγωγοὶ ἐν εἴδει ἐπιμήκους θαλάμου (μήκους μέχρι 1200 μ. ἐν Λαυρείῳ) ἐκβάλλοντες ἐπὶ παρακειμένων ἀρκούντως ἀπομεμακρυσμένων λόφων, ὅπου οἱ καπνοδόχοι. Αἱ ἐναποτιθέμεναι κόνεις ἀφαιροῦνται ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν μετ' ἰδιαιτέρων προφυλάξεων ἐκ τῶν θαλάμων καὶ πλινθοποιοῦνται πρὸς ἀνάτηξιν εἰς τὴν κάμινον ἢ συντήκονται εἰς μικρὰς φλογοβόλους καμίνους καὶ προστίθενται εἰς τὰ σπαῖς πρὸς περαιτέρω κατεργασίαν. Ἡ γόμωσις τῶν καμίνων περιέχει, ἐκτὸς τῆς ἀπαιτουμένης ἀναλογίας κώκ, τὰ μεταλλεύματα, πεφρυγμένα ἢ μή, καὶ συλλιπάσματα, ἰδίως σιδηροῦχα μεταλλεύματα, ἀσβεστολιθικὰ κλπ. πρὸς παραγωγὴν τῆς καταλλήλου σκωρίας. Ἡ περιεκτικότης τῆς γομώσεως εἰς μόλυβδον εἶναι ποικίλη, μεγάλη διὰ πλούσια μεταλλεύματα, κατερχομένη κάτω τῶν 10% διὰ πτωχά. Ἐκ τοῦ περιεχομένου της μόνον τὰ 85—90% συλλέγονται εἰς τὸν ἀκατέργαστον μόλυβδον, τὸ δὲ ὑπόλοιπον μεταβαίνει εἰς τὰς σκωρίας καὶ χάνεται, ἢ εἰς τὰ ἐνδιάμεσα προϊόντα, ἀνακτώμενον ἐν μέρει. Κατὰ τὰς παλαιὰς μεθόδους φρύξεως εἰς φλογοβόλους καμίνους μόνον, λόγῳ τῆς σημαντικῆς ἀναλογίας εἰς θεῖον, παρήγετο μεγάλη ἀναλογία συντηγμάτων, τὰ ὁποῖα ἀπῄτουν νέαν φρῦξιν καὶ τῆξιν. Αἱ νέαι μέθοδοι ἠλάττωσαν τὴν ἀναλογίαν ταύτην κατὰ

Digitized by Google

πολύ, συγχρόνως δὲ ἠλάττωσαν τὸν ἀριθμὸν τῶν καμίνων μικρᾶς περιεκτικότητος. Οὕτως ἄλλοτε ἐν Λαυρείῳ ὑπῆρχον 8 ἢ 10 φρεατοειδεῖς στρογγύλαι κάμινοι, ἐνῷ ἤδη ἀρκεῖ πρὸς ἀντικατάστασιν αὐτῶν μία μόνον μεθ' ὑδατίνου ἐπενδύτου καὶ μία ὡς ἐφεδρική, ἐπελθούσης πολλαπλῆς οἰκονομίας κατεργασιῶν καὶ ἐργατικῶν.

Ὁ ψευδάργυρος, ὅστις συνοδεύει ὑπὸ μορφὴν

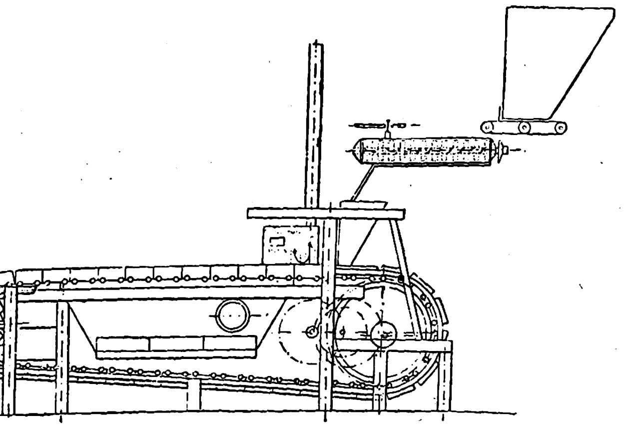

*Τράπεζα μετατροπῆς.*

σφαλερίτου ἢ σμιθσονίτου (καλαμίνας) τόσον συχνὰ τὸν μόλυβδον, ὄχι μόνον σκωριοποιεῖται ἐν μέρει καὶ ἐν μέρει ἀπόλλυται εἰς τοὺς καπνούς, ἀλλὰ παρασύρει καὶ μόλυβδον καὶ ἄργυρον, δι' ὃ πρέπει νὰ ἀποχωρίζεται διὰ μεταλλοπλυσίας ὅσον τὸ δυνατὸν καλύτερον.

Ὁ ὡς ἀνωτέρω παραγόμενος ἀκατέργαστος μόλυβδος περιέχει ξένας οὐσίας καὶ μεταξὺ ἄλλων τὰ πολύτιμα μέταλλα τοῦ μεταλλεύματος (τὸν ἄργυρον δηλαδὴ μετὰ τοῦ ὑπάρχοντος χρυσοῦ), δι' ὃ ὑφίσταται νέας κατεργασίας: τὴν κάθαρσιν καὶ τὴν ἀπαργύρωσιν.

Ἡ *κάθαρσις* γίνεται δι' ἁπλῆς τήξεως εἰς χαμηλὴν θερμοκρασίαν. Κατ' αὐτὴν ὁ μὲν περιεχόμενος χαλκὸς συγκεντροῦται εἰς ἐξαφρίσματα καὶ ἀφαιρεῖται κατόπιν, ὑψουμένης τῆς θερμοκρασίας, ἐκ δὲ τῶν λοιπῶν περιεχομένων τὸ ἀρσενικόν, τὸ ἀντιμόνιον, ὁ κασσίτερος, ὁ ψευδάργυρος, ὁ σίδη-

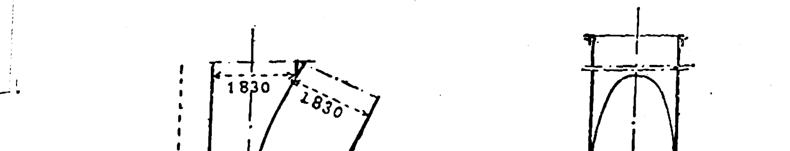


*Κάμινος ὑδατίνων ἐπενδύσεων (Λαυρείου).*

ρος καὶ τὸ θεῖον, ὡς εὐκολώτερον ὀξειδούμενα τοῦ μολύβδου, ἀφαιροῦνται ὑπὸ μορφὴν ὀξειδίων στερεῶν ἐπιπλεόντων.

Μετὰ τὴν κάθαρσιν γίνεται ἡ *ἀπαργύρωσις* διὰ τῶν μεθόδων τοῦ Πάττινσον καὶ κυπελλώσεως καὶ ἰδίως τοῦ Πάρκες (ψευδαργύρωσις καὶ ἀπόσταξις) (βλ. λ. *ἄργυρος*). Εἰς τὸ Λαύρειον ἐγίνετο ἐπί τινα χρόνον ὑπὸ μικρὰν κλίμακα κάθαρσις καὶ ψευδαργύρωσις διὰ τὴν παραγωγὴν καθαροῦ μολύβδου ἐγχωρίας καταναλώσεως, ἀλλ' αὕτη δὲν ἐπεκρά-τησε, γινομένη ἤδη ἐν Μασσαλίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ.

Διὰ τὴν κάθαρσιν καὶ ἀπαργύρωσιν χρησιμοποιοῦνται ἐπίσης διάφοροι ἠλεκτρολυτικαὶ μέθοδοι, μεταξὺ τῶν ὁποίων καλυτέρα φαίνεται ἡ τοῦ Betts, διὰ διαλύματος ὑδροφθοριοπυριτικοῦ μολύβδου ὡς ἠλεκτρολύτου μετὰ προσθήκης ὀλίγης πηκτῆς (ζελατίνης). Δὲν παρουσιάζονται κατ' αὐτὴν ἀπώλειαι σημαντικαὶ εἰς μόλυβδον καὶ σχεδὸν οὐδεμία εἰς πολύτιμα μέταλλα, κατορθοῦται δ' ἐπίσης καὶ καλὴ κάθαρσις μολύβδου ἀπὸ τοῦ βισμουθίου.

***Κοιτάσματα μολύβδου.*** Τὰ κοιτάσματα μολύβδου ἀνήκουσιν εἰς τὴν σπουδαίαν τάξιν τῶν κοιτασμάτων σφαλερίτου, γαληνίτου καὶ σιδηροπυρίτου μετὰ τῶν συνοδευόντων αὐτὰ μετάλλων καὶ τῶν ὠξειδωμένων μορφῶν αὐτῶν, τῶν ὁποίων γίνεται ἐκμετάλλευσις πρὸς παραγωγὴν μολύβδου καὶ ἀργύρου, ψευδαργύρου καὶ σιδηροπυρίτου. Ἀναλόγως δὲ τῆς περιεκτικότητος καὶ τῶν τιμῶν, τὸ ἓν ἢ τὸ ἕτερον τῶν μετάλλων κατέχει τὴν σπουδαιοτέραν θέσιν. Σημειωτέον ὅτι εἰς τὴν ἀρχαιότητα ὁ ψευδάργυρος, ὅστις ἐξαεροῦται εἰς τὰς χαμηλὰς ἑστίας ἢ τὰς φρεατοκαμίνους, ἦτο διὰ τοῦτο ἄγνωστος, δι' ὃ παρέμειναν πολλάκις τὰ πλούσια ψευδαργυροῦχα μέρη τῶν κοιτασμάτων ἀνεκμετάλλευτα ἢ ἀπερριμένα εἰς τὰς ἐκβολάδας (ὡς π. χ. εἰς τὸ Λαύρειον). Ὁ καθαρὸς γαληνίτης περιέχει 86,6% μόλυβδον, ἀλλὰ καὶ μεταλλεύματα πολὺ πτωχότερα εἶναι ἐκμεταλλεύσιμα, ἀρκεῖ μετὰ πλύσιν καὶ ἐμπλουτισμὸν νὰ εἶναι ἐπαρκὴς ἡ ἀναλογία πρὸς ἐκκαμίνευσιν ὑπὸ τὰς ἑκάστοτε ἰσχυούσας συνθήκας. Οὕτω ἀναλογία τῆς γομώσεως 8% εἰς μόλυβδον εἶναι σήμερον ἀρκετή. Ὁ ἐμπλουτισμὸς διὰ πλύσεως τοῦ γαληνίτου εἶναι ἀρκετὰ εὔκολος λόγῳ τῆς μεγάλης αὐτοῦ πυκνότητος (7,5), ἐπὶ πλέον δὲ λόγῳ τῆς μαλακότητος αὐτοῦ τὰ λεπτόκοκκα μέρη τοῦ μεταλλεύματος εἶναι καὶ πλουσιώτερα. Ἐννοεῖται ὅτι ταῦτα, ὅταν εἶναι ἀνάγκη, πλινθοποιοῦνται πρὸς καμίνευσιν δι' ὑγράνσεως καὶ πιέσεως.

Τὰ κοιτάσματα σφαλερίτου, γαληνίτου καὶ πυρίτου παρουσιάζονται ὑπὸ μορφήν: 1) μαγματικὴν ἢ περιμαγματικὴν καὶ ἐπαφῆς ἐκ πνευματολύσεως· 2) ὑπὸ μορφὴν φλεβῶν κυκλοφορίας μεταλλοφόρων ὑδάτων· καὶ 3) ὑπὸ μορφὴν κυκλοφορίας μεταλλοφόρων ὑ δ ά τ ω ν καὶ μετατροπῆς ἀσβεστολίθου (μετασωματώσεις).

1) Μεταξὺ τῶν πρώτων ἀναφέρομεν τὰ κοιτάσματα εἰς τὴν περιφέρειαν γρανιτῶν πολλάκις μετὰ κασσιτέρου τῆς Κορνουάλλης καὶ τῆς Φρεϊβέργης, μικρᾶς ὅμως πάντα σημασίας. Ἐπίσης τὰ κοιτάσματα ἐπαφῆς μετ' ἀσβεστολίθων τοῦ τ ύ π ο υ τῶν κοιτασμάτων σιδήρου τοῦ Βανάτου, ὡς τὰ τῆς Μπάλιας Μαδὲν καὶ Μπάλιας Καραϊδὶν, ἐν Μυσίᾳ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, τὰ ὁποῖα εἶχεν ἀνεύρει καὶ ἀναπτύξει ἡ ἑλληνικὴ ἑταιρεία μεταλλουργείων τοῦ Λαυρείου πρὶν ἢ τὰ ἐκχωρήσῃ εἰς γαλλικὴν ἑταιρείαν, τὰ τοῦ ρωσικοῦ Τουρκεστὰν καὶ τῆς Τρανσβαϊκαλίας. Ἐμφανίζονται ἐπίσης καὶ εἰς ἐμποτισμοὺς ἐντὸς κρυσταλλοσχιστωδῶν ἐ δ α φ ῶ ν, ὡς εἰς Ὄμμεβεργ ἐν Σουηδίᾳ κτλ. Ἡ μορφὴ αὕτη ἔχει σχετικῶς μικρὰν σημασίαν.

2) Εἰς τὴν δευτέραν μορφὴν τῶν φλεβῶν κυκλοφορίας θερμῶν μεταλλοφόρων ὑδάτων ἐκ τῶν κάτω (per ascensum) ἀνήκουσι πλεῖστα σπουδαῖα καὶ διάσημα τυπικὰ κοιτάσματα. Τὰ κοιτάσματα ταῦτα λαμβάνουσι μορφὴν φλεβῶν ἐφ' ὅσον τὰ περιβάλλοντα ἐδάφη δὲν εἶναι ἀσβεστολιθικά, ὁπότε ὑπάγονται εἰς τὴν ἑπομένην κατηγορίαν. Αἱ φλέβες σχηματίζονται ὑπὸ μορφὴν συγκριμάτων εἰς τὰς παρειὰς διαφόρων χασμάδων τῶν ἐδαφῶν, προερχομένων ἐκ ῥηγμάτων μεταπτώσεων καὶ διατεταγμένων πολλάκις εἰς ὁλοκλήρους περιφερείας κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον κανονικῶς εἰς πεδία παραλλήλων καὶ καθέτων πρὸς ἄλληλα ῥηγμάτων, προερχόμενα ἐκ τεκτονικῶν ἐνεργειῶν, ὡς καθιζήσεων, πτυχώσεων, μεταπτώσεων, συμπιέσεων καὶ στρέψεων τῶν στρωμάτων. Πολλάκις μέρος μόνον τῶν ῥηγμάτων ὑπέστη τὴν ἐναπόθεσιν μεταλλεύματος, τὰ δὲ ἄλλα ῥήγματα, δημιουργηθέντα ἐπιγενῶς, ὑπέστησαν διάφορον ἐναπόθεσιν ἢ οὐδεμίαν. Αἱ φλέβες αὗται ἔχουσι πάχη ποικιλώτατα, διατυποῦται δὲ πολλάκις τὸ πάχος αὐτῶν εἰς ἀνηγμένον πάχος γαληνίτου, ἤτοι πάχος ὅπερ θὰ κατεῖχε ὁ περιεχόμενος γαληνίτης εἰς τὴν φλέβα ἐὰν ἦτο ἀπηλλαγμένος τῶν συνοδευόντων αὐτὸν ὀρυκτῶν· «ἀνηγμένον πάχος» ὀλίγων ἑκατοστομέτρων ἀρκεῖ ὅπως ἡ φλὲψ εἶναι ἐκμεταλλεύσιμος. Εἰς τὰς φλέβας ταύτας παρουσιάζονται πολλάκις ἀλλοιώσεις τῶν ἀρχικῶς ἐναποτεθέντων συγκριμάτων διὰ κυκλοφορίας ἐπιφανειακῶν ὑδάτων ἐκ τῶν ἄνω (per descensum), ἐκ τῶν ὁποίων προῆλθον ὀξειδώσεις καὶ μεταβολὴ τῶν μεταλλευμάτων εἰς ἀνθρακικά.

α') Μεταξὺ τῶν κοιτασμάτων τούτων ἀναφέρομεν τὰ τῆς παλαιοζωϊκῆς ἐποχῆς τῆς Μεγάλης Βρετανίας (νῆσος τοῦ Μάν, Ἀγγλεσέη, Οὐαλλία καὶ Κάρδιγκαν-σάϊρ), τὰ τῆς γαλλικῆς Βρετάνης (ὡς τοῦ Πονπεὰν κτλ.) καὶ ἰδίως τὰ σπουδαιότατα, ὑπὸ ἔποψιν παραγωγῆς, τῆς ἰβηρικῆς Μεσέτας εἰς τὴν Σιέρραν Μορέναν τῆς Ἱσπανίας (ὡς τὰ τῆς Λιναρές, Πεναρρόγιας κτλ.), ἅτινα, ἀναγόμενα εἰς τὴν φοινικικὴν ἐποχήν, κατέστησαν κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα τὴν Ἱσπανίαν τὸν κυριώτατον παραγωγὸν μολύβδου. Σπουδαιότατα ἐπίσης εἶναι τὰ τῆς αὐτῆς, ὡς φαίνεται γεωλογικῆς ἐποχῆς κοιτάσματα τοῦ Μπρόκιν Χὶλλ τῆς Νέας Νοτίας Οὐαλλίας τῆς Αὐστραλίας, ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τοῦ 1882.

β) Μεταξὺ τῶν κοιτασμάτων τῆς ἑρκυνίου ὀροσειρᾶς, σχηματισθέντων διὰ ῥηγμάτων τῆς νεοζωϊκῆς ἐποχῆς, ἀναφέρομεν τὰ τοῦ Κέντρου, Μέλανος Ὄρους καὶ Μορβὰν τῆς Γαλλίας (ὡς τὰ τοῦ Πονζιμπώ), τῶν Βοσγίων καὶ Μέλανος Δρυμοῦ καὶ ἰδίως ἐν Γερμανίᾳ τὰ τοῦ Χάρτς, ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τοῦ 1220 μ. Χ. τοὐλάχιστον, καὶ δὴ τὰ τῆς Κλάουσταλ, τοῦ Σὰνκτ Ἀνδρέασβεργ καὶ τοῦ Ραμμελσβεργ, ἐν συναφείᾳ μετὰ τῶν γρανιτῶν τοῦ Ὄκερταλ, τοῦ Μπρόκκεν καὶ Ράμβεργ, ἐντὸς ἐδαφῶν παλαιοζωϊκῶν διακοπτομένων ὑπὸ φλεβῶν (ντάϊκ, Dykes) μικρογρανίτου καὶ ἐκχύσεων διαβάσου. Τὰ κοιτάσματα ταῦτα, ὧν ἡ παραγωγὴ σήμερον εἶναι σχετικῶς μικρά, ἔχουσιν ἐν τούτοις ἱστορικὴν σημασίαν, διότι, ὡς καί τινα τῶν ἑπομένων (Σαξωνίας καὶ Βοημίας), συνετέλεσαν μεγάλως πρὸς σπουδὴν τοῦ σχηματισμοῦ τῶν μεταλλοφόρων κοιτασμάτων. Τὰ τῆς Φρεϊβέργης ἐν Σαξωνίᾳ, ἅτινα παρουσιάζονται εἰς πεδίον ῥηγμάτων (στόκβερκ, Stockwerk), ἀνήκουσιν εἰς τὴν ζώνην τῶν Ἐρτζγκεμπίργκε (ὄρη μεταλλευματοφόρα) τῆς Σαξωνίας, ἐν συνοδείᾳ κασσιτέρου, κοβαλτίου καὶ ἀργύρου, εἶναι δὲ ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τοῦ 1162 μ.Χ. Διάσημα ἐπίσης ἱστορικῶς μᾶλλον εἶναι τὰ τοῦ Πρζίβραμ ἐν Βοημίᾳ πλησίον τῶν προηγουμένων. Ἐπίσης εἰς τὴν αὐτὴν ἡλικίαν ὑπάγονται τὰ τῶν στεππῶν τῆς Κιργισίας τοῦ ρωσικοῦ Ἀλτάϊ καὶ τοῦ Ἰενισσέη.

γ) Μεταξὺ τῶν φλεβῶν νεοζωϊκῆς ἐποχῆς σημασίαν ἔχει μεγάλην ἡ εἰς τὰ νότια τῆς Ἱσπανίας περιφέρεια τῆς Καρθαγένης οὐχὶ μακρὰν τῆς Λιναρές. Μικροτέραν σημασίαν ἔχουσιν αἱ περιφέρειαι τῶν Πυρηναίων, τῶν δυτικῶν Ἄλπεων, τῆς Λιγουρίας καὶ Τοσκάνης. Τέλος ὑπάρχουσι καὶ κοιτάσματα τῆς αὐτῆς προελεύσεως ἐγκατεσπαρμένα ἐντὸς ψαμμιτῶν, ὡς τὰ τοῦ Ἄϊφελ ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἀλσατίᾳ, Κόμμερν κτλ.

3) Ἡ τρίτη κατηγορία κοιτασμάτων, προερχομένων ἐκ κυκλοφορίας θερμῶν ὑδάτων καὶ μετατροπῆς ἀσβεστολίθων, ἔχει ἔτι μεγαλυτέραν σημασίαν ὑπὸ ἔποψιν παραγωγῆς. Ἐν λ. *Λαύρειον* ἐξετέθησαν ἀρκετὰ περὶ τοῦ τρόπου τοῦ σχηματισμοῦ αὐτῶν· κατωτέρω ἀπαριθμοῦμέν τινα ἐκ τούτων. Τοιαῦτα εἶναι τὰ τοῦ Σάλα ἐν Σουηδίᾳ, μικρᾶς σημασίας, λίαν σημαντικὰ δὲ τὰ τοῦ Εὔρηκα τῆς Νεβάδας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν παρὰ τὴν διάσημον φλέβα ἀργύρου τοῦ Κομστόκ, ἧς ἡ ἀνακάλυψις τόσην ἐπίδρασιν ἔσχεν ἐπὶ τῆς τιμῆς τοῦ μετάλλου τούτου. Ἀναφέρομεν ἐπίσης τὰς τῶν Πεννίνων ὀρέων καὶ Οὐαλλίας, τὰ τοῦ Μισισσιπῆ (Ζόπλιν, Γαλένα κτλ.) καὶ Μισσουρῆ ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ τὰ τοῦ Μεξικοῦ. Μορφὴν φλεβὸς στρωματοειδοῦς παρουσιάζουσι τὰ ἑπόμενα: τῆς Λαϊδβιλλ (Leadville=μολυβδόπολις), τοῦ Κολοράδου, ἀνακαλυφθέντα τῷ 1874, μεγίστης σημασίας, τῆς Ἰούτας παρὰ τὴν Μεγάλην Ἁλμυρὰν Λίμνην καὶ τοῦ Βουλγὰρ Μαδὲν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Τὰ ἑπόμενα κοιτάσματα εἶναι μᾶλλον ψευδαργυροῦχα, ἐνῷ τὰ προηγούμενα ἦσαν μᾶλλον μολυβδοῦχα. Τοιαῦτα εἶναι τὰ τοῦ Σαντάνδερ καὶ Πίκος τῆς Εὐρώπης τῶν Ἀστουριῶν, τὰ σημαντικὰ τοῦ Βελγίου εἰς Παλαιὸν Ὄρος (Vieille montagne) καὶ Σμάλγραφ παρὰ τὴν Ὁλλανδίαν καὶ τὴν Πρωσσίαν, τῆς Ρηνανίας καὶ Βεστφαλίας (Στόλβεργ κτλ.), τῆς Βάδης, τὰ τῆς νοτίου Σαρδηνίας (περιφέρεια τοῦ Ἰγγλεζιέντε, Μοντεπόνι, Μαλφιδάνο κτλ.), ἐν ἐκμεταλλεύσει ἐπίσης ἀπὸ ἀρχαιο-



Digitized by Google

τάτης ἐποχῆς καὶ ποικίλης μορφῆς μεταλλειογενείας· τὰ τῶν διαμερισμάτων τοῦ Γκὰρ καὶ Ἑρὼλτ τῆς Νοτίου Γαλλίας, τῶν Ἄλπεων παρὰ τὴν λίμνην τοῦ Κώμου καὶ τὴν Καρνιόλην, τοῦ Ραίβλ ἐν Καρινθίᾳ, τὰ λίαν σημαντικὰ τῆς ἄνω Σιλεσίας, ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, τοῦ Λαυρείου ἐν Ἀττικῇ, τῆς Θάσου (μετ' ὀλίγου χαλκοῦ), τῆς Σίφνου, Ἀντιπάρου, τῆς Λεβέδου πρὸς νότον τῆς Σμύρνης, ὡς καὶ τοῦ Ἀλγερίου καὶ τῆς Τύνιδος.

***Στατιστικὴ τῆς παραγωγῆς.*** Τὰ κυριώτερα μεταλλευτικὰ κέντρα παραγωγῆς μολύβδου ἦσαν πρὸ τοῦ 1914, καὶ εἶναι ἀκόμη καὶ σήμερον, τὰ ἐν τῷ κατωτέρω πίνακι, ἐν τῷ ὁποίῳ ἡ ἀξία τῆς παραγωγῆς τῶν μεταλλευμάτων σημειοῦται εἰς ἑκατομμύρια μάρκων χρυσῶν:

| | |
|---|---|
| 1) Μπρόκιν Χίλλ | 76.6 |
| 2) Μισσουρὶ (Κάνσας) | 46.5 |
| 3) Σχόσον (Ἰδάχο Ἡ. Π.) | 40.0 |
| 4) Σιέρρα Μορένα (Ἱσπανία) | 31.6 |
| 5) Ζούτα (Η. Π.) | 30.0 |
| 9) Μεξικὸν | 23.1 |
| 7) Λαΐδβιλλ (Η.Π.) | 22.0 |
| 8) Καρθαγένη (Ἱσπανία) | 8.3 |
| 9) Ἰγγλεζία (Ἰταλία) | 6.6 |
| 10) Ἄνω Σιλεσία | 6.1 |
| 11) Περιοχὴ Ἀΐφφελ | 6.0 |
| 12) Μαζάρρον (Καρθαγένη) | 6.0 |
| 13) Τασμανία | 5.7 |
| 14) Καναδᾶς | 5.5 |
| 15) Κρηΐδα (Κολοράδον) | 5.0 |
| 16) Λαύρειον | 4.0 |
| 17) Χάρτζ | 3.8 |
| 18) Βορεία Ἀγγλία | 3.7 |
| 19) Κόμμερν (Βεστφαλία) | 3.3 |
| 20) Καρινθία | 3.2 |
| Ὑπόλοιπα | 25.1 |
| Σύνολον | 361.7 ἑκατ. μάρκα |

Ἐκ τῶν κοιτασμάτων μολύβδου τὰ τῆς τρίτης κατηγορίας (μετατροπῆς ἀσβεστολίθων) παρέχουσι τὸ $^1/_2$ τῆς ἀξίας τῆς ὅλης παραγωγῆς, τὰ τῆς δευτέρας (φλέβας) τὸ $^1/_3$ καὶ τὰ ὑπόλοιπα τὸ $^1/_6$.

Ἡ εἰς τόννους παραγωγὴ μολύβδου ἦτο: τῷ 1880 τόννοι 303.000, τῷ 1890 τ. 650.000 (ὧν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι παρήγαγον τὰ 25% καὶ ἡ Γερμανία τὰ 16 %), τῷ 1900 τ. 849.000, τῷ 1910 τ. 1.111.000, τῷ 1913 τ. 1.185.000, τῷ 1920 τ. 919.600, τῷ 1923 τ. 1.184.900 καὶ τῷ 1927 τ. 1.662.600, αὔξουσα δηλαδὴ διαρκῶς, μὲ διακοπὴν μόνον κατὰ τὴν περίοδον τοῦ πολέμου 1914—1918. Εἰς τὴν παραγωγὴν τοῦ μολύβδου ἡ Ἱσπανία, ἥτις κατεῖχε τὴν πρώτην θέσιν μέχρι τοῦ 1900, ὑπολείπεται ἤδη ἔναντι τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἡ παραγωγὴ τοῦ μετάλλου τούτου κατανέμεται ὡς ἑξῆς μεταξὺ τῶν κυριωτέρων χωρῶν:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Ἀμερικ. | Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι | 40 | % περίπου |
| | Μεξικὸν | 11 | » » |
| | Καναδᾶς | 4 | » » |
| | Ἀργεντινὴ | 3 | » » |
| Εὐρώπης | Ἱσπανία | 10 | » » |
| | Γερμανία | 7 | » » |
| | Βέλγιον | 3 | » » |
| | Μεγάλη Βρεττανία | 1,2 | » » |
| | Γαλλία | 1,2 | » » |
| | Ἰταλία | 1,1 | » » |
| | Ἑλλὰς | 0,5 | » » |
| | Ὑπόλοιπος Εὐρώπη | 1,3 | » » |
| Ἄλλων ἠπείρων | Ροδεσία | 2 | » » |
| | Ἰνδίαι | 4 | » » |
| | Ἰαπωνία | 0,8 | » » |
| | Αὐστραλία | 10 | » » |

Ἡ τιμὴ τοῦ μολύβδου, παρακολουθοῦσα τὰς γενικὰς διακυμάνσεις τῶν περιόδων κρίσεως καὶ εὐπραγίας, ποικίλλει κατὰ καιρούς, συνηθέστερον μεταξὺ ὁρίων 250 καὶ 500 δραχ. χρυσῶν κατὰ τόννον. Οὕτω τῷ 1868 ἦτο δραχ. χρ. 500, τῷ 1874 δ. χ. 530, τῷ 1885 δ. χ. 280, τῷ 1888 δ. χ. 354, τῷ 1894 δ. χ. 250, τῷ 1906 δ. χ. 475, τῷ 1910 δ. χ. 325, τῷ 1912 δ. χ. 398, τῷ 1920 δ. χ. 950, τῷ 1921 δ. χ. 600, τῷ 1925 δ. χ. 750, τῷ 1927 δ. χ. 600, τῷ 1931 δ. χ. 250. Αἱ τιμαὶ δίδονται συνήθως εἰς λίρας Ἀγγλίας ἐν Λονδίνῳ κατὰ τόννον ἀγγλικὸν (1016 χγρ.). [Βλ. καὶ λ. *μεταλλεῖον*.]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Guillet*, Métallurgie Général (Παρίσιοι 1921). — *Fourment et Guillet* Métallurgie du Plomb, du Nickel et du Cobalt (Παρίσιοι, 1926).—*Prost*, Métallurgie des métaux autres que le fer (Παρίσιοι, 1924). [Βλ. καὶ λ. *μεταλλεῖον* (Βιβλιογρ.).]

Θ. ΧΑΡΙΤΑΚΗΣ

— [ΝΑΥΤ.] Καλεῖται *μόλυβδος* (κοιν. μολύβι τοῦ σκαντάγιου, γαλ. le plomb de sond, ἀγγλ. the lead) κωνικὸν κατασκεύασμα ἐκ μολύβδου, ἔχον μικρὰν τὴν διάμετρον βάσεως ὡς πρὸς τὸ ὕψος του. Πρὸς τὴν κορυφήν του ἔχει πόρπην, ἧς ὁ μίσχος διαπερᾷ τὸ σῶμα κατὰ τὸν ἄξονά του, ἡ δὲ βάσις του εἶναι κεκοιλασμένη πρὸς ἔνθεσιν λίπους. Προσδενόμενος εἰς τὸ ἄκρον τοῦ *βολιδοσχοίνου* (βλ. λ.) ἀποτελεῖ μετ' αὐτοῦ τὴν *βολίδα*, τὴν εἰς τὰς ναυτικὰς βυθομετρήσεις χρησιμοποιουμένην.

Ὁ ὅρος «ποντίσατε τὴν (δεῖνα) ἄγκυραν ὡς μόλυβδον βολίδος» σημαίνει τὸ ποντίζειν τὴν ἄγκυραν ταύτην ὅταν τοῦ πλοίου ὄντος ἠγκυροβολημένου δι' ἄλλης ἀγκύρας σύρῃ αὐτήν· ἀφίνεται δὲ ὁ κατοχεὺς τῆς οὕτω ποντιζομένης ἀγκύρας ἀνοικτός, πρὸς αὐτόματον παρέασιν τῆς ἁλύσεώς της, ἐφόσον τὸ πλοῖον σύρει τὴν ἄλλην, πρὸς ἐξίσωσιν τῶν ἀμμάτων, ὁπότε κλειομένου τοῦ κατοχέως εὑρίσκεται τὸ πλοῖον ἐπὶ δύο ἀγκυρῶν ὑπὸ ἴσα ἐκτάματα. Σ. Ε. Λ.

— **μόλυβδος αὐτοφυὴς** (Blei) Pb *[Ὀρυκτολ.]*. Ἀπαντᾷ ὡς ὀρυκτὸν εἰς τὴν φύσιν, εἰς κρυστάλλους τοῦ κυβικοῦ συστήματος, μεγέθους 4 ἑκατοστ. μὲ ἕδρας ἑξαεδρικὰς καὶ ὀκταεδρικάς, παρὰ τὸ Pajsberg καὶ Langbanshyttan, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὅμως εἰς φύλλα καὶ κοκκία, καθὼς καὶ εἰς τριχοειδεῖς καὶ νηματοειδεῖς ἐμφανίσεις. Ἔχει σκληρότητα $1^1/_2$, εἰδικὸν βάρος 11,4 καὶ χρῶμα μολυβδότεφρον ἕως ὑπόμαυρον. Ἐμφανίζεται ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω τόπων καὶ εἰς τὸ Jakobsberg ἐν Σουηδίᾳ, ἀπολελυμένοι δὲ κόκκοι αὐτοῦ εὑρίσκονται εἰς τὰ χρυσοφόρα προσχωματικὰ στρώματα τοῦ Siebenbürgen, τῶν Οὐραλίων, τοῦ Altai καὶ τῆς Κορέας. Γ. Β.

— **μόλυβδος θειικὸς** *[Ὀρυκτολ.]*· βλ. λ. *μολυβδύαλος*.

**μολυβδοσάκχαρον** (τὸ) *[Χημ.]*. Ὁ οὐδέτερος ὀξικὸς μόλυβδος (βλ. *ὀξικοῦ ὀξέος ἅλατα*). Σ. Γ.

**μολυβδοσκέπαστος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ διὰ στρώματος μολύβδου κεκαλυμμένος, ἐπενδεδυμένος.

**Μολυβδοσκεπάστου** ***μονὴ*** *[Γεωγρ.]*. Ἀξιόλογος βυζαντινὴ μονὴ σταυροπηγιακή, κειμένη παρὰ τὸ χωρίον Δεπαλίτσα τῆς ἐπαρχίας Πωγωνίου τῆς Ἠπείρου καὶ τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι τῶν Ἁγίων Ἀποστόλων. Ἡ μονὴ αὕτη ἐκτίσθη ἐκ βάθρων, ὡς βεβαιοῦται ἐξ ἐπιγραφῆς σῳζομένης ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Κωνσταντίνου τοῦ Πωγωνάτου (668—685), ὅτε οὗτος ἐπιστρέφων ἐκ τῆς ἐκστρατείας του κατὰ τῆς Σικελίας, διελθὼν ἐξ Ἠπείρου διέμεινεν εἰς τὴν πόλιν Σεσάρνηθον. Ἀργότερον ἡ μονὴ αὕτη ἐπεσκευάσθη ὑπὸ Ἀνδρονίκου τοῦ Κομνηνοῦ ὡς καὶ κατὰ τὸ 1521. Ἡ τοιχογραφία διατηρεῖται καλῶς, ὁ δὲ ρυθμός της εἶναι τελείως βυζαντινός. Ἡ μονὴ αὕτη ἐχρησίμευσεν ὡς πρῶτος καθεδρικὸς ναὸς τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Πωγωνιανῆς καὶ κυρίως ἀπὸ τοῦ 1788—1863, ὁπότε κατηργήθη ἡ ἀρχιεπισκοπή. Ὡς ἔχει σήμερον ὁ ναός, ἐκτίσθη ἐν ἔτει 1298 ὑπὸ Πάνου Σακελλαρίου ἐπὶ ἀρχιεπισκόπου Πωγωνιανῆς Παχωμίου, ἱστορήθη δὲ τὸ δεύτερον κατὰ τὸ 1578. Χ. Ι. ΣΟΥΛΗΣ

**μολυβδοσκωρία** (ἡ)· ἡ σκωρία τοῦ μολύβδου, τὸ κατὰ τὴν τῆξιν τοῦ μολύβδου ἀφαιρούμενον ἔλκυσμα.

**μολυβδοσφράγιστος** (ὁ, ἡ),*—ον* (τό)· ὁ ἐσφραγισμένος διὰ μολύβδου, ὁ φέρων μολυβδίνας σφραγῖδας.

**μολυβδοσωλήν,***—ῆνος* (ὁ)· σωλὴν ἐκ μολύβδου, μολύβδινος.

**μολυβδουργεῖον** (τό)· τὸ ἐργαστήριον τοῦ μολυβδουργοῦ.

**μολυβδουργία** (ἡ)· ἡ τέχνη τοῦ μολυβδουργοῦ, ἡ κατεργασία τοῦ μολύβδου.

**μολυβδουργὸς** (ὁ)· ὁ κατεργαζόμενος τὸν μόλυβδον.

**μολυβδουργῶ** (*—έω*)· εἶμαι μολυβδουργός.

**μολυβδοῦχος** (ὁ, ἡ),*—ον* (τό)· ὁ ἔχων, ὁ περιέχων μόλυβδον: «μολυβδοῦχον μετάλλευμα».

**μολυβδοχοεῖον** (τὸ)· κατάστημα ὅπου χύνεται ὁ μόλυβδος.

**μολυβδοχοΐα** (ἡ)· ἡ τέχνη τῆς χύσεως τοῦ μολύβδου.

**μολυβδόχρους** (ὁ, ἡ),*—ουν* (τό)· ὁ ἔχων χροιὰν μολύβδου.

**μολυβδύαλος** (ὁ) (Bleiglas) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν καλούμενον καὶ *ἀγγλεσίτης* ἢ *ἀγγλεζίτης* ὡς καὶ *βιτριόλιον τοῦ μολύβδου*. Χημικῶς εἶναι θειικὸν μόλυβδος $PbSO_4$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα ὡς ἰσόμορφον πρὸς τὸν βαρύτην εἰς κρυστάλλους μορφῆς πρισματικῆς, πινακοειδικῆς ἢ καὶ πυραμιδικῆς, ἀπαντᾷ δὲ καὶ εἰς ψευδομορφώσεις κατὰ γαληνίτην. Εἶναι εὔθραυστον, ἔχει θραυσμὸν κογχώδη, σκληρότητα 3, εἰδικὸν βάρος 6,12—6,35, λάμψιν ἀδαμαντοειδῆ ἕως στεατώδη καὶ χρῶμα λευκόν, ὑπότεφρον, κίτρινον, φαιόν, πράσινον ἢ κυανοῦν. Ἀπαντᾷ συνήθως μὲ ὤχραν λειμωνίτου ἐντὸς μεταλλευμάτων γαληνίτου παρὰ τὸ Clausthal Zellerfeld, καθὼς καὶ εἰς τὴν Σαρδηνίαν, Ἱσπανίαν καὶ ἀλλαχοῦ. Ἐν Ἑλλάδι δὲ ἐντὸς τῆς βαρυτούχου φλεβὸς τῆς Μυκόνου μὲ γαληνίτην καὶ κερουσίτην, εἰς δευτερογενεῖς κρυστάλλους ἐπὶ λειμωνιτούχου μάζης εἰς τὰ κοιτάσματα τοῦ Λαυρείου, ἐπίσης δὲ καὶ εἰς τὰς κοιλότητας τῶν σκωριῶν, προϊόντων παλαιῶν ἐκκαμινεύσεων, αἱ ὁποῖαι εὑρίσκονται ἐντὸς τῆς θαλάσσης τοῦ ὅρμου Βρυσάκια τοῦ Λαυρείου. Γ. Β.

**μολυβδῶ** (*—όω*)· καλύπτω, ἐπενδύω διὰ μολύβδου, σκεπάζω διὰ μολυβδίνου στρώματος, μολυβώνω· || μεταβάλλω εἰς μόλυβδον.

**μολυβδώδης** (ὁ, ἡ), *—ες* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μόλυβδον, μολυβδοειδής.

**μολυβδώνω**· βλ. *μολυβδῶ*.

**μολύβδωσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ διὰ μολύβδου ἐπικάλυψις, ἐπένδυσις.

**μολυβδωτός,** *—ή, —όν*· ὁ διὰ μολύβδου ἐσκεπασμένος, μολυβωτός.

—**μολυβδωτὰ** ***βλήματα*** *[Πυροβ.]*. Οἱ πρῶτοι τύποι τῶν διὰ τὰ ηὐλακισμένα πυροβόλα κατασκευασθέντων βλημάτων, ἅτινα, διαδεχθέντα τὰ μετὰ πτερυγίων βλήματα τῶν ραβδωτῶν πυροβόλων, περιεβάλλοντο διὰ χιτωνίου ἐκ μολύβδου πρὸς σφήνωσίν των ἐν τοῖς αὐλακίοις, ὅπως κατόπιν τὰ μετὰ χαλκίνων ζωνῶν σφηνώσεως βλήματα. Σ.Ε.Λ.

**μολυβένιος,** *—α, —ο*· δημοτ., ὁ κατεσκευασμένος ἀπὸ μολύβι, μολύβδινος.

**μολυβήθρα** (ἡ)· τεμάχιον μολύβδου ὡς βάρος ὁρμιᾶς, δικτύου κττ., *μολύβδαινα*· || τὸ βαρύδιον τῆς στάθμης τῶν κτιστῶν· || τὸ βάρος τῶν κρεμαστῶν λαμπτήρων, οἱ ὁποῖοι ἀνέρχονται καὶ κατέρχονται· || τοῦ κανδηλίου ἡ συσκευὴ ἐφ' ἧς τοποθετεῖται τὸ ἐλλύχνιον, ἄλλως ***κανδηλήθρα***.

**μολύβι** (τό)· δημοτ., μόλυβδος: παροιμ. «ὁ ἄνθρωπος εἶναι γλυκὸς σὰν τὸ μέλι καὶ βαρὺς σὰν τὸ μολύβι»· || τὸ μολυβοκόντυλο: «γράφω μὲ τὸ μολύβι».

**μολυβοκόντυλο** (τό)· κοντύλι ἀπὸ μολύβι, μολυβδοκόνδυλον, ἄλλως *μολύβι*.

**Μόλυβος** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς νήσου Λέσβου, καλουμένη ἐπισήμως *Μήθυμνα* (βλ. λ.) ἀπὸ τῆς παρ' αὐτὴν ἀρχαίας πόλεως. Π.Κ.Π.

— **Μόλυβος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὕφορμος ἐν τῷ Β.ΒΔ. μυχῷ τοῦ Τορωναίου κόλπου τῆς Χαλκιδικῆς (πλάτ. 40°15' 20" Β., μῆκ. 23°23' 40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1085: Negrepont to Gulf of Kassandra), πιθανῶς ἡ *Μηκύβερνα* τῶν ἀρχαίων. Ἀνώνυμος ἐν τῷ ἀγγλικῷ χάρτῃ. Σ. Ε. Λ.

— **Μόλυβος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτηριάζουσα χερσονησὶς σχηματίζουσα τὴν ΒΔ. τῆς Λέσβου ἐσχατιὰν (πλάτ. 39° 22' 30" Β., μῆκ. 26° 10' 30" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Mytileni island and gulfs of Adramyti and Chandarli) καὶ διαχωρίζουσα τὴν κόλπωσιν τῆς Μηθύμνης ἀπὸ τὸν δίαυλον τοῦ Μουζελίμ. Σ. Ε. Λ.

— **Μολύβου** ***κόρφος*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. *Μηθύμνης κόλπωσις*.

**μολυβύς,** *—ειά, —ύ*· δημοτ., ὁ ἔχων τὸ χρῶμα τοῦ μολύβδου, τεφρός, μολυβδόχρους.

**Μολυβώδης** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος παρὰ τὴν Σαρδηνίαν (βλ. λ. *Μολιβώδης*). Σ. Ε. Λ.

**Μολύκρεια,** καὶ ***Μολύκρειον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἦτο ἡ ἐσχάτη πρὸς δυσμὰς πόλις τῆς Λοκρίδος τῶν Ὀζολῶν, παρὰ τὰ ὅρια τῆς Αἰτωλίας, εἰς τὴν ὁποίαν καὶ περιῆλθε βραδύτερον. Ἔκειτο παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Ἀντίρριον, τὸ ὁποῖον ἐκ ταύτης ἐκαλεῖτο καὶ *Μολύκριον Ρίον*. Ἦτο πολίχνη ὀχυρὰ καὶ εἶχεν, ὡς ἐκ τῆς θέσεώς της παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, ἀξίαν λόγου στρατηγικὴν σημασίαν, ἰδίως διὰ ναυτικὰς ἐπιχειρήσεις, ὡς ἔχουσα πολὺ καλὸν λιμένα, ἀφιερωμένον εἰς τὸν Ποσειδῶνα. Ἦτο ἀποικία τῶν Κορινθίων, ἀπὸ τῶν ὁποίων περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἀθηναίους κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον καὶ κατὰ τὸν Γ' π. Χ. αἰῶνα εἰς τοὺς Αἰτωλούς. Κατὰ τὸ 426 π. Χ., ὅτε ὁ στρατηγὸς τῶν Ἀθηναίων Δημοσθένης εὑρίσκετο ἐν Ναυπάκτῳ, τὸ Μολύκρειον κατελήφθη ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ τῶν Λακεδαιμονίων Εὐρυλόχου (*Θουκ.* III, 102). ΚΑΨ.

**Μολύκρειον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ναυπακτίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τοῦ Ἀντιρρίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 210. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἅγιος Γεώργιος, Βελβίνα* καὶ *Πλατανίτσα*. Χ. Δ.

**Μολύκριον** ***Ρίον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον ἐν μεθορίοις τῆς Αἰτωλίας καὶ τῆς Λοκρίδος τῆς τῶν Ὀζολῶν, ἀρχὴ ἐκ δυσμῶν τοῦ Κρισσαίου (*Στράβ.* Η, 335 Teubner) ἢ τοῦ Δελφικοῦ (*Σκύλ. Καρυαν.* 35) κόλπου, δηλαδή, κατὰ τὴν σύγχρονον γεωγραφικὴν ἀντίληψιν, τῆς Β. κολπουμένης ἀκτῆς τοῦ Κορινθιακοῦ. Ὠνομάζετο δὲ ἀπὸ τῆς ἀρχαίας πόλεως *Μολυκρείας* (νῦν *Γαυρολίμνης*) ἐγγύτατα καὶ ΝΑ. τῆς ὁποίας ἔκειτο (*Πτολεμ.* Γ, ιε', 3 Nobbe). Ὀνομαζόμενον καὶ *Ἀντίρριον* (*Στράβ.* Θ, 390 Teubner) μετωνομάσθη τὸν μεσαίωνα *Κάστρο τῆς Ρούμελης* ἢ *Νεόκαστρον* ἀπὸ τοῦ ἐπ' αὐτοῦ φρουρίου «ὅπερ ἠδάφισαν οἱ Βένετοι, διὰ τῶν συνθηκῶν ὅπου ἐτέλεσαν μὲ τοὺς Τούρκους ἐν ἔτει 1701» (*Μελετ.* Γεωγρ. παλ. καὶ νέα ἐκδ. Ἐνετ. 1807: Β, 309), ἀλλ'

Digitized by Google

ὅπερ ἐπανήγειραν οἱ Τοῦρκοι. Νῦν ἐπανέλαβε τὴν ἀρχαίαν του ὀνομασίαν *Ἀντίρριον* (πλάτ. 38°19′40″ Β., μῆκ. 21°45′10″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 427 : Entrance to the Gulf of Corinth). Σ. Ε. Λ.

**μόλυνσις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μολύνειν, μετάδοσις παθογόνου μικροβίου : «δοθιὴν —, ἀπόστημα ἐκ μολύνσεως».

*—[Παθολ.]* Βλ. *μολυσματικαὶ* νόσοι.

**μολυντήρι** (τὸ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἑρπετοῦ *σαύρα ἡ ἡμιδάκτυλος*.

**μολυντικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἐπιφέρων, ὁ προξενῶν μόλυνσιν.

**μολύνω,** *ἀόρ. ἐμόλυνα—ἐμολύνθην, παθ.* μετχ. *μεμολυσμένος*· μεταδίδω μικρόβιον νοσογόνον : «ἐμόλυνε τὸ παιδί της μὲ τὰ φιλήματα», «μὴ ἐγγίζῃς τὸν δοθιῆνα, διότι θὰ μολυνθῇς»· || «ἐμολύνθη ἡ ἀτμοσφαῖρα ἐκ τῶν θνησιμαίων» ἐπληρώθη μικροβίων· || μεταφ., μεταδίδω νοσηρὰς ἰδέας, διαφθείρω τινὰ ψυχικῶς : «ἐμόλυνε τὴν κοινωνίαν μὲ τὰς ἀνατρεπτικὰς ἰδέας του».

**μολυσίτης** (ὁ) (Molysit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν. Ἀποτελεῖ τριχλωριοῦχον ἕνωσιν τοῦ σιδήρου $FeCl$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν σύστημα, ἔχει χρῶμα κίτρινον ἕως φαιόν, ἀπαντᾷ δὲ εἰς τὸν Βεζούβιον ὡς ὀρυκτὸν προερχόμενον ἐκ τῶν ἀτμίδων αὐτοῦ. Γ. Β.

**Μολυσκὸς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μακεδονίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν συγγραφέων μεταξὺ τῶν πόλεων τὰς ὁποίας κατέλαβε τῷ 1259 ὁ σεβαστοκράτωρ Ἰωάννης, ἀδελφὸς Μιχαὴλ τοῦ Παλαιολόγου, εἰς τὸν κατὰ Μιχαὴλ τοῦ Β′, δεσπότου τοῦ δυτικοῦ βασιλείου, πόλεμον. Ἄγνωστος πόλις καὶ ἀκαθόριστος. Α. Θ. Σ.

**μόλυσμα** (τό)· τὸ μέσον διὰ τοῦ ὁποίου μολύνεταί τις, οἷον βόθρος, ὑπόνομος, θνησιμαῖόν τι· || μεταφ., ὁ μολύνων, ὁ διαφθείρων : «αὐτὸς εἶναι μόλυσμα τῆς κοινωνίας».

**μολυσματικαὶ** *νόσοι*. Διὰ τοῦ ὅρου *μόλυνσις* νοεῖται κυρίως ἡ ἁπλῆ μετάδοσις νοσηροῦ τινος παράγοντος ἀπὸ ἀνθρώπου ἢ ζῴου πάσχοντος εἰς ἄνθρωπον ὑγιᾶ, χωρὶς νὰ προκαλέσῃ αὕτη καὶ γενικὴν τοῦ ὀργανισμοῦ ἀντίδρασιν. Ἂν ὅμως ἡ μετάδοσις τοῦ παθογόνου αἰτίου συνοδευθῇ καὶ ὑπὸ γενικῆς τοῦ ὀργανισμοῦ ἀντιδράσεως, τότε καλεῖται *λοίμωξις*. Ἐντεῦθεν *μολυσματικαὶ νόσοι* καλοῦνται αἱ δυνάμεναι νὰ μεταδοθῶσιν ἀπ' εὐθείας ἐκ τοῦ πάσχοντος εἰς τοὺς περὶ αὐτόν, ἤτοι αἱ δυνάμεναι νὰ προκαλέσωσι μόλυνσιν ἢ καὶ λοίμωξιν. Τοιαῦται νόσοι εἶναι ἡ ὀστρακιά, ἡ διφθερῖτις, ὁ ἐξανθηματικὸς τῦφος, ἡ πανώλης, τὸ ἐρυσίπελας, ἡ γρίππη κλπ. Σ. Γ. Σ.

**μολυσματικός,** *—ή, —όν*· ὁ δυνάμενος νὰ μολύνῃ, νὰ μεταδοθῇ, μεταδοτικός, κολλητικός : «μολυσματικὴ νόσος»· ἄλλως *λοιμική*.

— **μολυσματικὸν** ***κηρίον*** *[Παθολ.]*· βλ. λ. *κηρίον*.

**μολυτὴς** (ὁ) (Molytes coronatus) *[Ζῳολ.]*. Ἔντομον κολεόπτερον τῆς οἰκογενείας τῶν *κουρκουλιονιδῶν* μήκους 10—14 χιλιοστ., χρώματος μέλανος στίλβοντος. Αἱ προνύμφαι του καταστρέφουν τὰς ῥίζας τῶν καρότων. Ε. Τ. Ε.

**Μολφετᾶτα** ***Χαλκερὶ*** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς Κεφαλληνίας (βλ. λ. *Χαλκερὶ* Μολφετᾶτα). Χ. Δ.

**Μολφέττα** (Molfetta) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μπάρι. Κάτ. 45.707. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Φότζια—Βρινδησίου, ἔχουσα καλὸν λιμένα ἐπὶ τῆς Ἀδριατικῆς θαλάσσης. Ἐν αὐτῇ σῴζονται ἐρείπια τοῦ ἀρχαίου τείχους, εἶναι δὲ ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει βυζαντινοῦ ῥυθμοῦ ναὸν τοῦ ΙΒ′ αἰῶνος, ἱερατικὴν σχολήν, μουσεῖον, βιβλιοθήκην, μεσαιωνικὸν φρούριον, ἐν τῷ ὁποίῳ εἶχε συλληφθῇ ὁ Ὄθων τῆς Βρουνσβίκης κατὰ τὸν ΙΕ′ αἰῶνα κτλ. Εἶναι πόλις ἐμπορικὴ καὶ βιομηχανική, μὲ ἐξαγωγὴν οἴνων, ἐλαίου, σάπωνος, σιτηρῶν, ἰχθύων κτλ. Τῷ 988 κατεστράφη ὑπὸ τῶν Σαρακηνῶν, ἀνοικοδομηθεῖσα βραδύτερον. Ἔχει ἐπίσης σημαντικὰ ναυπηγεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μολώφ,** ***Γιαννάκη***. Σύγχρονος Βούλγαρος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1882. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ γεωργικὸν ἰνστιτοῦτον τῆς Μόσχας καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ ἀγρονομικοῦ ἰνστιτούτου τῆς Σόφιας. Τῷ 1923 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας καὶ τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας, ἐπὶ δὲ τῆς κυβερνήσεως Λιάπτσεφ διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Τ. Β.

**Μολὼχ** *[Μυθολ.]*· ***βλ. λ.*** *Μολόχ*.

**μολωχτός,** *—ή, —ό*· ἀντὶ *μουλλωχτὸς* (βλ. λ.).

**Μομέμφις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἀρχαίας Αἰγύπτου. Παρ' αὐτὴν τῷ 569 π. Χ. ὁ Ἄμασις συνέτριψε τὸν Ἀπρίην καὶ κατέλαβε τὸν θρόνον. Εἰς τὴν ἰδίαν πεδιάδα ὁ Ψαμμίτιχος Α′ μετὰ τῶν Καρῶν καὶ Ἰώνων, τοὺς ὁποίους εἶχε στρατολογήσει εἰς τὰ ἕλη τοῦ Δέλτα, συνέτριψε συνησπισμένους τοὺς ἄλλους πρίγκιπας τῆς Αἰγύπτου καὶ συνεκέντρωσεν εἰς χεῖράς του πᾶσαν τὴν ἐξουσίαν τῆς χώρας. Γ. Λ. Α.

**μομία** (ἡ)· πτῶμα, ἰδίᾳ ἀνθρώπου, διατηρούμενον διὰ βαλσαμώσεως ἢ *ταριχεύσεως* (βλ. λ.), κοιν. *μούμια* : «μομία αἰγυπτιακὴ» (ἐκ τῆς ἀραβ. λ. moumia).

*—[Αἰγυπτιολ.]* Οἱ ἀρχαῖοι Αἰγύπτιοι, συμφώνως πρὸς τὰς δοξασίας αὐτῶν περὶ τῆς μετὰ θάνατον τύχης τοῦ ἀνθρώπου, ἐπεζήτησαν τρόπον ταριχεύ-

*Ἡ μομία τοῦ Τοὺτ-Ἀνχ-Ἀμών.*

σεως τοῦ νεκροῦ, ἐπέτυχον δ' εἰς τοῦτο τόσον πολύ, ὥστε αἱ ἀνακαλυπτόμεναι ἑκάστοτε μομίαι προξενοῦν ἔκπληξιν διὰ τελείαν των διατήρησιν. Κατὰ τὸν Ἡρόδοτον (Β, 85) ὁ νεκρός, ἀφοῦ προηγουμένως τὸν ἐθρήνουν οἱ οἰκεῖοί του, ἐκομίζετο πρὸς ταρίχευσιν. Οἱ ταριχευταί, οἵτινες ἀπετέλουν ἰδίαν συντεχνίαν, ἐπεδείκνυον εἰς τοὺς συγγενεῖς ὑποδείγματα ξύλινα νεκρῶν καὶ ἠρώτων αὐτοὺς κατὰ ποῖον ὑπόδειγμα θέλουν νὰ ταριχευθῇ ὁ νεκρός των. Μετὰ τὴν συμφωνίαν οἱ μὲν ἐπισκέπται ἀνεχώρουν, οἱ δὲ ταριχευταὶ προέβαινον εἰς τὴν ταρίχευσιν ὡς ἑξῆς : κατὰ πρῶτον διὰ σιδηροῦ ἐργαλείου ῥαμφώδους ἐξῆγον διὰ τῶν ῥωθώνων τὸν ἐγκέφαλον, ἔπειτα διήνοιγον διὰ μαχαίρας ἀπὸ λίθον αἰθιοπικὸν τὴν κοιλίαν, ἐξῆγον τὰ σπλάγχνα, τὴν ἔπλυνον μὲ ἐρυθρὸν οἶνον καὶ τὴν ἐκαθάριζον μὲ ἀρωματικά. Κατόπιν ἐγέμιζον τὴν κοιλίαν μὲ σμύρναν ἀμιγῆ, τετριμμένην κανέλ-

τουν ὄρθιον εἰς τὸν τοῖχον τῆς νεκρικῆς κατοικίας. Ἐκτὸς ὅμως τοῦ τρόπου τούτου, ὅστις ἦτο ὁ πολυτελέστερος, ὑπῆρχον καὶ δύο ἄλλοι ἀκόμη, ὀλιγώτερον δαπανηροί. Τὰς γυναῖκας τῶν ἐπιφανῶν ἀνδρῶν, ὡς καὶ τὰς πολὺ ὡραίας, δὲν τὰς παρέδιδον ἀμέσως πρὸς ταρίχευσιν, ἀλλὰ μετὰ παρέλευσιν τριῶν ἢ τεσσάρων ἡμερῶν, καὶ τοῦτο διὰ νὰ μὴ τὰς μοιχεύσουν οἱ ταριχευταί. Διότι εἶχε συλληφθῇ ταριχευτὴς διαπράττων τὴν ἀσέλγειαν ταύτην. Ἐὰν δέ τις Αἰγύπτιος ἢ ξένος ἤθελεν εὑρεθῇ νεκρός, ἁρπαγεὶς ὑπὸ κροκοδείλων ἢ πνιγεὶς εἰς τὸν ποταμόν, οἱ κάτοικοι ὑπεχρεοῦντο νὰ τὸν ταριχεύσουν καὶ νὰ τὸν θάψουν εἰς ἱερὸν τάφον· μόνον δὲ εἰς τοὺς ἱερεῖς τοῦ Νείλου ἐπετρέπετο νὰ τὸν ἐγγίσουν. Ἐκ τῶν πληροφοριῶν τούτων τοῦ Ἡροδότου αἱ νεώτεραι ἀρχαιολογικαὶ ἔρευναι διεπίστωσαν καὶ τὰ ἑξῆς : Ἐξήγοντο οἱ βολβοὶ τῶν ὀφθαλμῶν καὶ ἐτίθεντο εἰς τὰς κόγχας τεχνητοὶ ἐκ σμάλτου. Ἡ κόμη διετηρεῖτο. Ἐντὸς τῆς κοιλίας ἔθετον ἐκτὸς τῶν ἄλλων καὶ ῥινίσματα ἀρωματικῶν ξύλων, κοσμήματα καὶ ἀγαλμάτια θεῶν ἐκ πολυτίμων ἢ κοινῶν μετάλλων, ἢ ἐκ λίθου σκληροῦ ἢ πορσελλάνης. Ἐνίοτε ἀντὶ ν' ἀποξηράνουν τὸ σῶμα εἰς νίτρον εἰσῆγον εἰς πάσας τὰς φλέβας διὰ μεθόδων πολυπλοκωτάτων καὶ δαπανηροτάτων χημικὴν σύνθεσιν ὑγράν, ἡ ὁποία διετήρει τὸ σῶμα καὶ πολλάκις καὶ αὐτὴν τὴν ἐλαστικότητα τῶν μελῶν του. Τὰ ἐξαγόμενα ἐντόσθια ἔπλυνον κεχωρισμένως εἰς ζέουσαν ἄσφαλτον, περιετύλισσον κατόπιν ἰδιαιτέρως τὸν ἐγκέφαλον, τὴν καρδίαν, τὸ ἧπαρ καὶ τὰ ἔντερα, καὶ τὰ ἐνέθετον εἰς 4 λαγύνους, εἰς τὰς ὁποίας ἔχυνον ῥευστὴν ἄσφαλτον. Τὰ ἀγγεῖα ταῦτα ἐλέγοντο *κανοπικά*, ἦσαν δὲ πήλινα, μαρμάρινα, ἀλαβάστρινα, ἢ ἐκ γρανίτου καὶ εἶχον σχῆμα κυκλικῆς τομῆς, ὠγκωμένα πρὸς τ' ἄνω καὶ στενούμενα πρὸς τὰ κάτω (βλ. λ. *Αἴγυπτος*, τ. Β′, σ. 562). Τὸ σῶμα περιετυλίσσετο διὰ ταινιῶν τόσον καλῶς, ὥστε ἀπετυποῦντο ἐπ' αὐτῶν αἱ ἀνωμαλίαι τῆς ἐπιφανείας, καὶ κατόπιν δι' ὑφάσματος συνεχοῦς. Εἰς πολυτελεῖς ταριχεύσεις παρετηρήθησαν ἐνίοτε οἱ ὄνυχες τῶν χειρῶν καὶ τῶν ποδῶν ἐπιχρυσωμένοι, πλάκες χρυσοῦ ἐπὶ τῶν ὀφθαλμῶν καὶ τοῦ στόματος ἢ καὶ ὁλόκληρον τὸ πρόσωπον ἐπιχρυσωμένον. Βασιλικαὶ μομίαι εὑρέθησαν ἐπιχρυσωμέναι καθ' ὅλον τὸ σῶμα, ἄλλαι δὲ ἐντὸς πρώτου φερέτρου ἐκ χρυσοῦ ἀναπαριστῶντος τὸ σχῆμα τοῦ σώματος. Πρὶν ἀρχίσῃ ἡ περιτύλιξις, αἱ χεῖρες τῶν μὲν ἀνδρῶν διετίθεντο κατὰ μῆκος τοῦ σώματος, τῶν δὲ γυναικῶν ἐσταυρωμέναι ἐπὶ τῆς κοιλίας. Εἴς τινας μομίας εὑρέθησαν δακτύλιοι εἰς τοὺς δακτύλους, περιδέραια περὶ τὸν λαιμόν, ποικίλα κοσμήματα, ἀγαλμάτια, διάφορα περίαπτα. Ἐντὸς τοιούτων φερέτρων ἀνευρέθησαν πάπυροι, πολλάκις μακρότατοι καὶ καλλιτεχνικώτατοι, περιέχοντες τὸ «βιβλίον τῶν νεκρῶν». Εἰς δὲ τοὺς μεταγενεστέρους χρόνους, τοὺς ἑλληνορρωμαϊκούς, ὅτε ἀπωλέσθη ἡ ἔννοια τῶν πραγμάτων καὶ ἀπέμεινεν ἡ συνήθεια, ἐτίθετο πᾶν εἶδος παπύρου γεγραμμένου. Εἰς τοιούτους δὲ παπύρους ἀνευρέθησαν οἱ

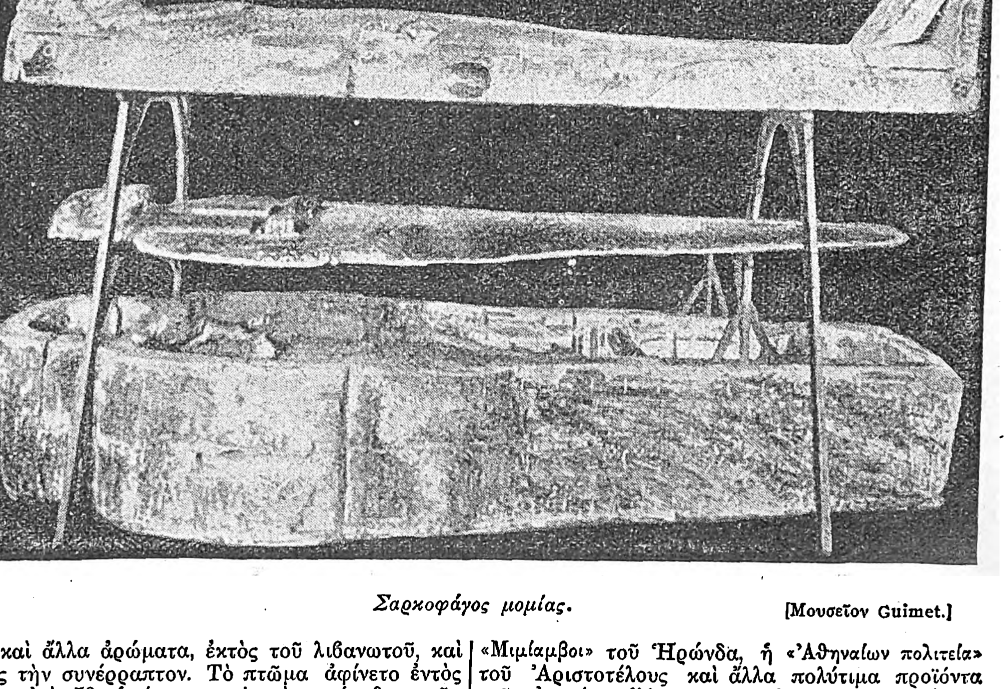

*Σαρκοφάγος μομίας.* [Μουσεῖον Guimet.]

λαν καὶ ἄλλα ἀρώματα, ἐκτὸς τοῦ λιβανωτοῦ, καὶ τέλος τὴν συνέρραπτον. Τὸ πτῶμα ἀφίνετο ἐντὸς νίτρου ἐπὶ 70 ἡμέρας, μετὰ τὴν πάροδον τῶν ὁποίων, ἀφοῦ ἔλουον τὸν νεκρόν, περιετύλισσον ὅλον τὸ σῶμα μὲ σινδόνα ἐρυθράν. Οἱ συγγενεῖς παραλαμβάνοντες τὸν νεκρὸν ἔθετον τὸ πτῶμα ἐντὸς φερέτρου, κατέθετον ἐντὸς αὐτοῦ κοσμήματα, τὸ ἐσκέπαζον καὶ τέλος τὸ ἐτοποθέ-

«Μιμίαμβοι» τοῦ Ἡρώνδα, ἡ «Ἀθηναίων πολιτεία» τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ ἄλλα πολύτιμα προϊόντα τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ πνεύματος. Ἡ συνήθεια τῆς ταριχεύσεως ἐξηκολούθησε μέχρι τοῦ Δ′ αἰῶνος μ. Χ. Εἰς τὰ μουσεῖα τῆς Αἰγύπτου, τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀμερικῆς ὑπάρχουν αἱ μομίαι πολλῶν βασιλέων, βασιλισσῶν, πριγκίπων, μεγιστάνων, ἱερέων, ἱερειῶν, διαφόρων τεχνιτῶν καὶ

Digitized by Google

ἀνθρώπων τοῦ λαοῦ. Οἱ πτωχοὶ ἐθάπτοντο εἰς κοινὰς τάφρους, ἀνευρίσκονται δὲ σήμερον εἰς μέγα πλῆθος καὶ χρησιμεύουν εἰς τοὺς Ἄραβας ὡς καύσιμος ὕλη. Ἄλλοτε ἐγίνετο ἐξαγωγὴ μομιῶν εἰς τὴν Γαλλίαν πρὸς κατασκευὴν χρωμάτων. Οἱ πτωχοὶ παρέδιδον συχνάκις τὸν νεκρόν νὰ ταριχευθῇ ἐπὶ πιστώσει καὶ ὅταν ηὐπόρουν τὸν παρελάμβανον. Διὰ τοῦτο οἱ ταριχευταὶ ἀπεθήκευον τὰς μομίας ταύτας τῶν πτωχῶν καὶ διὰ νὰ τὰς ἐπανευρίσκουν ἐξήρτων ἀπὸ τοῦ λαιμοῦ των πινακίδα ξυλίνην ἀναγράφουσαν τὸ ὄνομα τῆς ἐνυποθήκου μομίας. Γ. Λ. ΑΡΒΑΝΙΤΑΚΗΣ

**Μομινὺ** (Momigny), ***Ἱερώνυμος-Ἰωσήφ.*** Διακεκριμένος Γάλλος μουσικοθεωρητικὸς (1762—1838), δημιουργὸς τῆς θεωρίας τῆς «μουσικῆς φράσεως». Ἐξέδωκεν ἐν Παρισίοις: «Πλῆρες ἐγχειρίδιον ἁρμονίας καὶ συνθέσεως κατὰ νέαν θεωρίαν», «Ἡ μόνη ἀληθὴς θεωρία τῆς μουσικῆς» κ. ἄ. Γ. Σ.

**μομιοποίησις,** —εως (ἡ)· ἡ μεταβολὴ πτώματος εἰς μομίαν, ταρίχευσις νεκροῦ (βλ. λ. *ταρίχευσις*).

**μομιοποιῶ** (—*έω*)· μεταβάλλω πτῶμα εἰς μομίαν, ταριχεύω νεκρόν.

**Μόμμιος** (Mummius). Πληβεία οἰκογένεια τῆς ἀρχαίας Ρώμης, σπουδαιότερα μέλη τῆς ὁποίας εἶναι τὰ ἑξῆς:

*Λούκιος.* Ὑπῆρξε δήμαρχος κατὰ τὸ 187 μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Κοΐντου καὶ ὑπεστήριξε τοὺς Σκιπίωνας κατὰ τοῦ Κάτωνος. Τῷ 177 ὑπῆρξε στρατηγὸς καὶ κατόπιν ἐκυβέρνησε τὴν Σαρδηνίαν.

*Λούκιος Ἀχαϊκός.* Υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 154 ἐξελέγη στρατηγὸς καὶ ἔλαβεν ὡς ἐπαρχίαν τὴν Ἱσπανίαν, ὅπου ὑπέταξε τοὺς Λουζιτανούς, τελέσας διὰ τὸ κατόρθωμά του τοῦτο θρίαμβον. Τῷ 146 ὡς ὕπατος συνεπλήρωσε τὴν κατάκτησιν τῆς Ἑλλάδος διὰ τῆς νίκης τῆς Λευκοπέτρας καὶ τῆς καταστροφῆς τῆς Κορίνθου. Ἐκ τῆς «ἀφνειοῦ» ταύτης πόλεως ἀπεκόμισε πλουσιωτάτην λείαν, τῆς ὁποίας δὲν φαίνεται νὰ ὑπωψιάζετο καὶ τὴν ἀξίαν ἐξ ὁλοκλήρου. Διηγοῦνται τὸ ἑξῆς χαρακτηριστικὸν τῆς καλλιτεχνικῆς του ἀδαημοσύνης: ὅταν μετεφέροντο διὰ τῶν πλοίων εἰς Ἰταλίαν τὰ γλυπτικὰ ἢ ζωγραφικὰ καλλιτεχνήματα τῆς Κορίνθου, ὁ Μόμμιος συνίστα εἰς τοὺς πλοιάρχους νὰ τὰ προσέχουν, διότι ἐν περιπτώσει ἀπωλείας κανενὸς πίνακος ἢ ἀγάλματος θὰ τοὺς ὑποχρέωνε νὰ τὸ ἀναπληρώσουν δι' ἄλλου! Ἔμεινεν ἐν Ἑλλάδι ὡς ἀνθύπατος καὶ διερρύθμισε τὰ τῆς ὀργανώσεως τῆς νέας ἐπαρχίας. Μολονότι διεκρίνετο ἐπὶ σεβασμῷ τῶν ἑλληνικῶν θεῶν καὶ δικαιοσύνῃ, ἐν τούτοις τὸ ὄνομά του παρέμεινεν ἐν τῇ ἱστορίᾳ ὡς ταυτόσημον ἀγροίκου, ἀμορφώτου καὶ χυδαίου κατακτητοῦ. Ἐπιστρέψας εἰς Ρώμην ἐτέλεσε μεγαλοπρεπῆ θρίαμβον. Τῷ 142 ὑπῆρξε τιμητὴς μετὰ Σκιπίωνος τοῦ Ἀφρικανοῦ.

*Σπούριος.* Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, ὅλως ἀντιθέτου χαρακτῆρος, μορφωμένος καὶ εὐγενής. Ὑπῆρξε φίλος τοῦ Σκιπίωνος καὶ τοῦ κόμματος τῶν εὐγενῶν, συνέθεσε δὲ σατίρας καὶ ἐπιστολάς, αἱ ὁποῖαι ἀπωλέσθησαν. — Ω.

**Μομολέττο** (Momoletto). Τὸ καλλιτεχνικὸν ὄνομα, ὑφ' ὃ παρέμεινε γνωστὸς ὁ διάσημος εὐνοῦχος ἀοιδὸς τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος *Μιχαὴλ Ἀλμπερτίνι* (Albertini). Ὁ Μομολέττο ὑπῆρξεν ὁ εὐνοούμενος ἀοιδὸς τῆς αὐλῆς τοῦ Κάσσελ, ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου τοῦ ὁποίου ἐδρέψεν ἐπίσης δάφνας καὶ ἡ ἀδελφή του *Ἰωάννα,* ἡ ἐπονομαζομένη «La Romanina». Γ. Σ.

**μομορδική** (ἡ) (Momordica) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *κολοκυνθοειδῶν,* περιλαμβάνον εἴδη τινὰ τῶν τροπικῶν χωρῶν, ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον διὰ τὰ μεγάλα, ὡραῖα ἄνθη των καὶ τὸν ἐδώδιμον καρπόν των. Δ. Ν. Π.

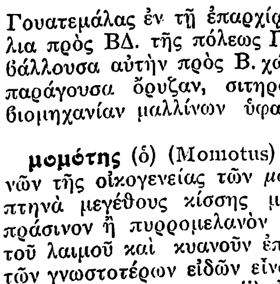

*Μομορδική.*

**Μομοστενάνγκο** (Momostenango) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γουατεμάλας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Τοτονικαπάν, 66 μίλλια πρὸς ΒΔ. τῆς πόλεως Γουατεμάλας. Ἡ περιβάλλουσα αὐτὴν πρὸς Β. χώρα εἶναι εὐφορωτάτη, παράγουσα ὄρυζαν, σιτηρά, ὄσπρια κλπ. Ἔχει βιομηχανίαν μαλλίνων ὑφασμάτων. Κάτ. 18.000. Χ. Δ.

**μομότης** (ὁ) (Momotus) *[Ζῳολ.].* Γένος πτηνῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μομοτιδῶν,* περιλαμβάνον πτηνὰ μεγέθους κίσσης μὲ πτέρωμα σκοτεινῶς πράσινον ἢ πυρρομελανὸν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς καὶ τοῦ λαιμοῦ καὶ κυανοῦν ἐπὶ τῶν πτερύγων. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μομότης ὁ λεσσότιος* (Momotus Lessonii), ἰθαγενὴς τοῦ Μεξικοῦ. Τρέφεται ἐξ ἐντόμων, μικρῶν πτηνῶν καὶ ἑρπετῶν. Δ. Ν. Π.

**μομοτίδαι** (οἱ) (Momotidae) *[Ζῳολ.].* Οἰκογένεια πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀναρριχητικῶν,* περιλαμβάνουσα εὐμεγέθη πτηνά, μὲ σῶμα ἁδρόν, ράμφος ἰσχυρὸν καὶ μὲ τὸ ἄκρον τῆς ἄνω σιαγόνος ὀδοντωτόν. Αἱ πτέρυγες εἶναι βραχεῖαι καὶ ἡ οὐρὰ μακροτάτη. Γνωστότερον γένος τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *μομότης* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**Μομπάζα,** ἢ ***Μομπάζ*** (Mombasa ἢ Mombaz) *[Γεωγρ.].* Σπουδαιότατος λιμὴν τῆς ἀνατολικῆς παραλίας τῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ βρεττανικῇ ἀποικίᾳ Κένυα, κείμενος 250 περίπου χλμ. Β. τῆς Ζανζιβάρης, ἐπὶ μικρᾶς ὁμωνύμου κοραλλιογενοῦς νησῖδος, ἐγγύτατα τῆς παραλίας κειμένης. Ἡ νησὶς ἔχει μῆκος 5 περίπου χλμ. καὶ πλάτος 3, ὁ δὲ πορθμὸς ὁ χωρίζων αὐτὴν ἀπὸ τῆς ἠπειρωτικῆς παραλίας ἔχει εὖρος 800 μ. Ἡ πόλις εἶναι ἐκτισμένη εἰς τὸ βάθος εὐρέος κόλπου καὶ ἔχει δύο ὡραίους φυσικοὺς λιμένας. Κάτ. (1927) 39.824. Τὴν Μομπάζα ἐπεσκέφθη τὸ πρῶτον ὁ Βάσκο ντὲ Γκάμα (1498). Τῷ 1505 ὁ Φραγκῖσκος Ἀλμεΐντα κατέλαβεν αὐτήν, κατέστη δ' ἔκτοτε μέχρι τοῦ 1631 πρωτεύουσα τοῦ ἐν Ἀφρικῇ πορτογαλικοῦ κράτους καὶ περιεβλήθη ὑπὸ ὀχυρῶν φρουρίων (1593—1595). Περιελθοῦσα ἀκολούθως εἰς διαφόρους ἰθαγενεῖς ἡγεμόνας, κατέστη κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα κτῆσις τοῦ σουλτάνου τῆς Ζανζιβάρης. Τῷ 1890 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, ὑπὸ τοὺς ὁποίους παραμένει ἔκτοτε. Χ. Δ.

**Μόμπερτ** (Mombert), ***Ἀλφρέδος.*** Γερμανὸς ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1872 ἐν Καρλσρούῃ. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἐξήσκησε κατόπιν ἐπί τινα χρόνον τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου (1900—1906) ἐν Χαϊδελβέργῃ, ὅπου καὶ ἐξακολουθεῖ νὰ διαμένῃ, διάγων σχεδὸν μονήρη βίον. Ὑποστὰς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Νίτσε, ἐνεφανίσθη ὡς ἐκπρόσωπος τοῦ νεωτέρου συμβολισμοῦ. Κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡμέρα καὶ νύξ» (1894), «Ἡ Δημιουργία» (1897), «Ἡ ἄνθησις τοῦ χάους» (1905), «Τὸ πνεῦμα - ἥλιος» (1905), «Αἰὼν» (λυρικοδιθυραμβικὴ τριλογία, 1907—1911), «Ὁ ἥρως τῆς Γῆς» (1919), κ. ἄ. Τὰ τελευταῖα τῶν ἔργων του διακρίνονται διὰ τὴν πλουσίαν εἰς εἰκόνας γλῶσσάν των καὶ τοὺς πλήρεις μυστικοπαθείας καὶ θεοσοφικῆς ἐμπνεύσεως ὁραματισμούς. Γ. Ε. Κ.

**Μομπὶλ** (Mobile) *[Γεωγρ.].* —1) Ποταμὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς, σχηματιζόμενος διὰ τῆς συνενώσεως τῶν ποταμῶν Ἀλαμπάμα καὶ Τόμβιγκμπη ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Ἀλαμπάμας. Ρέει ἐπὶ μῆκους 38 μιλ. μὲ κατεύθυνσιν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ ἐκβάλλει παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ ὁμωνύμου κόλπου. —2) Κόλπος τῆς Β. Ἀμερικῆς δεξιᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸν μέγαν Μεξικανικὸν κόλπον, εἰς ὃν ἐκβάλλει ὁ ὁμώνυμος ποταμός. Ἔχει βάθος 27 μιλ. καὶ πλάτος 8. —3) Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Ἀλαμπάμα, πρωτεύουσα ὁμωνύμου κομιτείας. Κεῖται παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ ὁμωνύμου κόλπου, ἐγγὺς τῆς δεξιᾶς ὄχθης τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Μομπίλ, 135 μίλ. πρὸς Α.ΒΑ. τῆς Νέας Ὀρλεάνης, ἐξυπηρετεῖται δὲ ὑπὸ τῶν σιδηροδρόμων Λουΐσβιλλ, Νασβὶλλ καὶ ἄλλων γραμμῶν. Ἱδρύθη τῷ 1699 ὑπὸ τῶν Γάλλων καὶ ἦτο πρωτεύουσα τῆς Λουιζιάνας. Τῷ 1763 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, βραδύτερον δὲ (1780—1813) περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἱσπανούς. Εἶναι σήμερον μία τῶν σπουδαιοτέρων ναυτικῶν βάσεων τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Κατὰ τὸν μεταξὺ βορείων καὶ νοτίων ἐμφύλιον πόλεμον, ἐναυλόχει ἐν αὐτῷ ναυτικὴ μοῖρα τῶν νοτίων (1864), τὴν ὁποίαν εἰσελθὼν εἰς τὸν λιμένα κατέστρεψεν ὁ ναύαρχος τῶν βορείων Φάρραγκουτ. Ἔχει ἀξιόλογον ναυτικὸν νοσοκομεῖον τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ στόλου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, πολλὰ ἀνώτερα ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα, ἐν οἷς καὶ ἰατρικὴν σχολήν, καὶ εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου. Ἐξάγει βάμβακα, ξυλείαν, ρητίνην, ἄλευρα, σιτηρὰ καὶ βαμβακέλαιον. Ἔχει ναυπηγεῖα, ἀλευρομύλους, κλωστήρια βάμβακος, ξυλουργεῖα κτλ. Κάτ. 60.000. Χ. Δ.

**Μομποὺργ** (Mombourg), ***μέθοδος τοῦ —.*** Ἡ ὑπὸ τοῦ Γερμανοῦ ἰατροῦ (1908) *Μομποὺργ* χρησιμοποιηθεῖσα μετ' ἐπιτυχίας μέθοδος εἰς τὰς αἱμορραγίας τῆς ὑστεροτοκίας διὰ περιδέσεως τῆς κοιλίας τῇ βοηθείᾳ σωλῆνος ἐλαστικοῦ ἐκ καουτσούκ. Ὑπεδείχθη ἀρχικῶς διὰ τὰς ἐγχειρήσεις τῆς πυέλου καὶ τὰς ἐπὶ τῶν μηρῶν. Ἐφαρμόζεται δ' ἐπιτυχῶς εἰς τὰς αἱμορραγίας τῆς μήτρας μετὰ τὴν ὑστεροτοκίαν ὡς ἀκολούθως: Ὁ ἐλαστικὸς σωλὴν εἰς διπλοῦν δέον νὰ σφίγγηται περὶ τὴν ὀσφύν, βραδέως, ἀλλ' ἡ περίσφιξις δι' αὐτοῦ ἐν τέλει πρέπει νὰ εἶναι ἀρκούντως ἰσχυρά, μέχρις οὗ ἐξαφανισθῶσι τελείως αἱ σφύξεις τῆς μηριαίας ἀρτηρίας. Ἡ ἐκ τῆς τοιαύτης περισφίγξεως προκύπτουσα ἀρτηριακὴ ἀναιμία ἐν τῇ μήτρᾳ ἐπιφέρει γενικῶς ἰσχυροτάτην συστολὴν ταύτης, ἥτις ἐπακολουθεῖ εἰς τὴν προηγηθεῖσαν ἀτονίαν αὐτῆς· μετὰ παρέλευσιν εἴκοσιν ἕως τριάκοντα λεπτῶν τῆς ὥρας δυνάμεθα νὰ ἀφαιρέσωμεν τὸν περισφίγγοντα τὴν κοιλίαν ἐλαστικὸν σωλῆνα, ὁπότε ἡ μήτρα παραμένει συνεσταλμένη καὶ οὕτως ἡ αἱμορραγία καταπαύεται. Ὅταν ἡ αἱμορραγία προέρχηται ἐκ ρήξεως τοῦ αὐχένος ἢ τῆς μήτρας, ἡ πρόσκαιρος αὕτη αἱμοστασία ἡ διὰ τοῦ ἐλαστικοῦ σωλῆνος ἐπιτυγχανομένη παρέχει τὸν κατάλληλον χρόνον, ὅπως μεταφερθῇ ἡ πάσχουσα εἰς κλινικήν. Σκοπὸς τῆς μεθόδου ταύτης εἶναι ἡ ἰσχυρὰ πίεσις τῆς κοιλιακῆς ἀορτῆς. Μ. Ν. Κ.

**Μόμμσεν** (Mommsen), ***Αὔγουστος*** Γερμανὸς ἀρχαιοδίφης καὶ φιλόλογος (1821—1913). Ἔγραψε: «Συμβολὴ εἰς τὴν μέτρησιν τοῦ χρόνου ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν Ρωμαίων» (1859), «Ἑορταὶ τῆς πόλεως τῶν Ἀθηνῶν ἐν τῇ ἀρχαιότητι» (1898), «Χρονολογίαι καὶ ἔρευναι διὰ τὸ χρονομετρικὸν σύστημα τῶν Ἑλλήνων» (1883) κ. ἄ. Θ. Κ.

— **Μόμμσεν** (Mommsen), ***Θεόδωρος.*** Γερμανὸς ἀρχαιοδίφης καὶ ἱστορικός, γεννηθεὶς τῇ 30 Νοεμβρίου 1817 ἐν Garding τοῦ τότε δανικοῦ Schleswig ἐκ πατρὸς ἱερέως καὶ ἀποθανὼν τῇ 1 Νοεμβρίου 1903 ἐν Βερολίνῳ. Ἐσπούδασεν ἐν Κιέλῳ (1838—1843) φιλολογίαν καὶ νομικά, περιῆλθε δὲ τῷ 1844—1847, τῇ ἀρωγῇ τῆς ἐν Βερολίνῳ Πρωσσικῆς Ἀκαδημίας, τὴν Ἰταλίαν καὶ Γαλλίαν πρὸς ἀρχαιολογικὰς μελέτας. Τῷ 1848 ἵδρυσεν ἐν Rendsburg καὶ διηύθυνε τὴν ἐφημερίδα «Schleswig-holsteinische Zeitung», τὸ φθινόπωρον δὲ τοῦ αὐ-

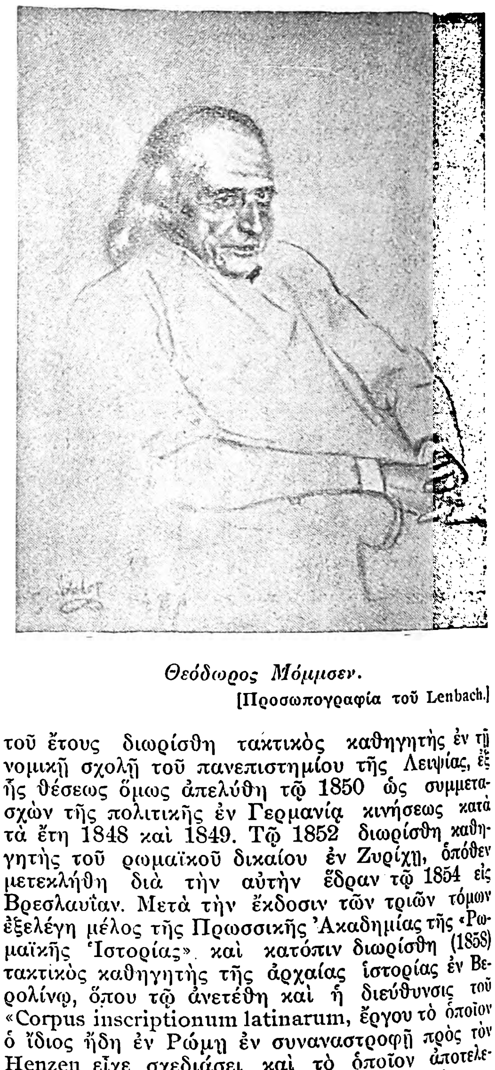

*Θεόδωρος Μόμμσεν.*
[Προσωπογραφία τοῦ Lenbach.]

τοῦ ἔτους διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῇ νομικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Λειψίας, ἐξ ἧς θέσεως ὅμως ἀπελύθη τῷ 1850 ὡς συμμετασχὼν τῆς πολιτικῆς ἐν Γερμανίᾳ κινήσεως κατὰ τὰ ἔτη 1848 καὶ 1849. Τῷ 1852 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου ἐν Ζυρίχῃ, ὁπόθεν μετεκλήθη διὰ τὴν αὐτὴν ἕδραν τῷ 1854 εἰς Βρεσλαυΐαν. Μετὰ τὴν ἔκδοσιν τῶν τριῶν τόμων ἐξελέγη μέλος τῆς Πρωσσικῆς Ἀκαδημίας τῆς «Ρωμαϊκῆς Ἱστορίας» καὶ κατόπιν διωρίσθη (1858) τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἱστορίας ἐν Βερολίνῳ, ὅπου τῷ ἀνετέθη καὶ ἡ διεύθυνσις τοῦ «Corpus inscriptionum latinarum, ἔργου τὸ ὁποῖον ὁ ἴδιος ἤδη ἐν Ρώμῃ ἐν συναναστροφῇ πρὸς τὸν Henzen εἶχε σχεδιάσει καὶ τὸ ὁποῖον ἀποτελεσματικῶς ὑπεστήριξεν ὁ περίφημος Ἰταλὸς ἐπιγραφικὸς Borghesi. Ἀπὸ τοῦ 1873 μέχρι τοῦ 1895 ἐχρημάτισε καὶ γραμματεὺς (Ständiger Sekretar) τῆς ἐν Βερολίνῳ Ἀκαδημίας, ἀνέλαβε δὲ ἀργότερον καὶ τὴν διεύθυνσιν μέρους τῶν «Monumenta Germaniae historica», τῶν «Auctores antiquissimi», καὶ ἐξέδωκεν ἀπὸ τοῦ 1894 καὶ ἑξῆς τὰ «Chronica minora» (Saec. IV, V, VI καὶ VII). Τὸ κυριώτατον καὶ εἰς πλείστας γλώσσας (ἑλληνιστὶ ἐν μέρει ἐν τῇ Βιβλιοθήκῃ Μαρασλῆ ὑπὸ *Σ. Κ. Σακελλαροπούλου*) μεταφρασθὲν ἔργον του «Ρωμαϊκὴ Ἱστορία» («Römische Geschichte», τόμ. 1—3 ἐν Λειψίᾳ 1854—1855, 9η ἔκδ. ἐν Βερολίνῳ 1902—1904, ὁ 5ος τόμος ἐξεδόθη τὸ πρῶτον ἐν Βερολίνῳ τῷ 1885 εἰς 5ην δὲ ἔκδοσιν τῷ 1905. Ὁ 4ος τόμος περιλαμβάνων τοὺς αὐτοκρατορικοὺς χρόνους δὲν ἐξεδόθη) ἔτυχε μεγάλης προσοχῆς ἕνεκα τῆς ζωηρότητος τῆς παραστάσεως καὶ τῆς πρωτοτυπίας καὶ τόλμης τῶν ἐν αὐτῷ ἰδεῶν, ἐπεκρίθη ὅμως καὶ ἐν πολλοῖς διὰ τὴν ἄδικον κρίσιν ἐξεχόντων προσώπων τῆς ρωμαϊκῆς ἱστορίας καὶ διὰ τὴν ὑπὲρ τὸ δέον προσαρμογὴν τῆς ρωμαϊκῆς ἱστορίας εἰς τὰ πράγματα καὶ συνθήκας τοῦ νεωτέρου κόσμου καὶ βίου, οὕτως ὥστε πολλάκις νὰ φαίνηται ὅτι ἐκ τούτων ὁρμᾶται διὰ τὴν κρίσιν τῶν ἀρχαίων πραγμάτων (ἐκτενῆ ἑτέραν κρίσιν βλ. παρὰ *Otto Hirschfeld,* Kleine Schriften ἐν Βερολίνῳ 1913, σελ. 926—930). Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «De collegiis et sodaliciis Romanorum» (Κίελον 1843), «Αἱ ρωμαϊκαὶ

Digitized by Google

φυλαὶ ἐν διοικητικῇ σχέσει» (Altona 1844), «Ὀσκικαὶ μελέται» (Βερολῖνον 1845, προσθῆκαι 1846), «Αἱ διάλεκτοι τῆς Κάτω Ἰταλίας» (ἐν Λειψείᾳ 1850), βιβλίον ὅπερ καὶ ὁ ἴδιος ἐπέκρινε μετὰ ταῦτα, ἀλλὰ τὸ ὁποῖον παραμένει πολλοῦ λόγου ἄξιον καὶ διὰ τὰς γραμματικὰς καὶ διὰ τὰς ἱστορικὰς παρατηρήσεις, «Corpus inscriptionum Neapolitanarum» (1851), ἔργον τὸ ὁποῖον μετὰ τὴν νέαν ἐπεξεργασίαν ἐν τῷ Corpus κατέστη περιττόν, «Inscriptiones Confoederationis helveticae» (Ζυρίχη 1854), «Inscriptiones regni neapolitani latinae» (ἐν Λειψίᾳ 1852), «Über der Chronographen vom Jahre 354» (1850), «Das Edikt Diokletians de pretiis rerum venalium vom Jahre 301» (1851, προσθῆκαι 1852), «Ἡ ρωμαϊκὴ χρονολογία μέχρι τοῦ Καίσαρος» (Βερολῖνον 1858, β' ἔκδ. 1859), «Die Rechtsfrage zwischen Cäsar und dem Senat» (Βρεσλαυΐα 1857), «Ἱστορία τῆς ρωμαϊκῆς νομισματικῆς» (1860), Römische Forshungen» (1ος τόμ. β' ἔκδ. Βερολῖνον 1865, 2ος τόμ. 1879), «Die Stadtrechte der latinischen Gemeinden Salpensa und Malaca» (Λειψία 1855), «Die Chronik des Cassiodorus Senator vom Jahre 519 nach Chr. (1861), «Über die Zeitfolge der Verordnungen Diokletians nnd seiner Mitregenten» (Βερολῖνον 1861), «Zwei Sepulkralreden aus der Zeit Augustus und Hadrians» (1864), ἡ ἔκδοσις τῶν καλουμένων «Βατικανίων ἀποσπασμάτων τοῦ προϊουστινιανείου δικαίου» (Βόννη 1861), «Res gestae divi Augusti ex monumentis Ancyrano et Apolloniensi» (Βερολῖνον 1865, β' ἔκδ. 1883), «Digesta Iustiniani Augusti» (1866—1870, ἐπανατυπωθὲν πολλάκις), «Die Ortlichkeit der Varusschlacht» (1885), κ. ἄ. Ἰδιαιτέρας ὅλως σημασίας εἶναι τὸ «Römisches Staatsrecht» (Α' μέρος τοῦ μετὰ τοῦ *Marquardt* ἐκδοθέντος «Handbuch der römischen Altertümer» τόμ. 1 καὶ 2 Λειψία 1871—1876, γ' ἔκδ. 1887—1888 εἰς τόμ. 3). Ἐν τῷ «Systematisches Handbuch der deutschen Rechts Wissenschaftt» τοῦ Binding ἐξεδόθη «Abriss des römischen Staatsrechtes» (1893) καὶ «Römisches Strafrecht» (1899), Μετὰ τοῦ Krüger καὶ Studemund ἐξέδωκε «Collectio librorum juris antejustinianini» (τόμ. 1—3, Βερολῖνον 1877—1890), μετὰ μόνου δὲ τοῦ Studemund «Analecta Liviana» (Λειψία 1873). Τέλος μετὰ τοῦ P. Meyer ἤρχισε νέαν ἔκδοσιν τοῦ «Codex Theodosianus» (τόμ. Α', Βερολῖνον 1905).

Ὁ μέγας οὗτος ἐρευνητὴς καὶ πολυγραφώτατος ἐπιστήμων ἐνέκρυπτεν ἐν ἑαυτῷ καὶ ποιητικὸν χάρισμα, τὸ ὁποῖον ἐξεδήλωσε καὶ εἰς ποιήματα τῷ 1843· συζητουμένου τοῦ ζητήματος τοῦ Schleswig-Holstein. Κατὰ τὸ 1879 μετέφρασεν εἰς τὴν γερμανικὴν μετὰ τοῦ γαμβροῦ του Οὐλερίχου φὸν Βιλαμόβιτς δέκα ποιήματα τοῦ Carducci. Διὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν καὶ πολιτικὴν ἕνωσιν τῆς Ἰταλίας ἔδειξε ζωηρὸν ἐνδιαφέρον καὶ εἶχε συνδεθῆ μὲ ἐξέχοντας πολιτικοὺς τῆς Ἰταλίας, ὡς τὸν Quintino Sella καὶ τὸν πιστὸν εἰς τὸ Βατικανὸν μείναντα Giambattista Rossi.

Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν οἱ λόγοι καὶ τὰ ἄρθρα του («Reden und Aufsätze» Βερολῖνον 1905) καὶ τὰ «Gesammelte Schriften» (1905—1909, τόμ. 7).

Ὡς μέλος τῆς πρωσσικῆς βουλῆς (Abgeordneten Laus, 1873—1882) καὶ δὴ τοῦ κόμματος τῶν φιλευθέρων κατεπολέμει μετὰ τοῦ Virchow τὴν πολιτικὴν τοῦ Βίσμαρκ, διὸ καὶ κατεδιώχθη ποινικῶς ὑπ' αὐτοῦ, ἀλλ' ἡ ἐπιβληθεῖσα ὑπὸ τοῦ δικαστηρίου ποινὴ ἐχαρίσθη εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ Βίσμαρκ. Κατὰ τὴν ἀποτέφρωσιν τῆς ἐπαύλεώς του (12 Ἰουλίου 1880) ἐγένοντο παρανάλωμα τοῦ πυρὸς πλὴν τῶν βιβλίων καὶ πολλῶν χειρογράφων τοῦ Μόμμσεν καὶ παλαιὰ χειρόγραφα ξένων βιβλιοθηκῶν, ἐν οἷς καὶ τὰ «Getica» τοῦ ἱστορικοῦ τοῦ ΣΤ' αἰῶνος Jordanis.

Ὁ Μόμμσεν ἦτο ἐπίτιμος πολίτης τῆς Ρώμης (1896) καὶ τοῦ Charlottenburg (1897). Τῷ 1902 ἔλαβε καὶ τὸ βραβεῖον Νόμπελ διὰ τὰς φιλολογικὰς ἐργασίας του. Τῇ 1 Νοεμβρίου 1909 ἀπεκαλύφθη πανηγυρικῶς ἄγαλμά του ἐν τῷ προαυλίῳ τοῦ ἐν Βερολίνῳ πανεπιστημίου, εἰς τὸν διάδρομον δὲ τοῦ Φιλολογικοῦ φροντιστηρίου (Institut für Altertumskunde) ὑπάρχει ἐντετοιχισμένη καὶ χαλκίνη προτομή του μετὰ μακρᾶς λατινικῆς ἐπιγραφῆς, ἱδρυθεῖσα δαπάναις Γουλιέλμου τοῦ Β'.

Ρηξικέλευθος ἐν τῇ συλλήψει τῶν προβλημάτων τῆς ἱστορίας καὶ ἀρχαιολογίας ὑπὸ γενικωτάτην ἔποψιν, καὶ πρωτοπόρος ἐν τῇ δημιουργίᾳ νέων ἀντιλήψεων τοῦ ἱστορικοῦ βίου παραγνωριζουσῶν πολλάκις τὰς ἐπισφαλεῖς πηγάς, ἀπαράμιλλος δὲ ὀργανωτὴς μεγάλων ἐπιστημονικῶν ἐπιχειρήσεων, ἀποτελεῖ ὁ Μόμμσεν διὰ τοὺς χρόνους μάλιστα καθ' οὓς ἔζησε περίβλεπτον καὶ μοναδικὸν παράδειγμα μεγάλου καὶ πολυμερεστάτου λογίου καὶ ἐπιστήμονος, ἀναντιρρήτως δὲ εἶναι εἷς τῶν μεγίστων ἐπιστημόνων καὶ λογίων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, τοῦ ὁποίου ἡ ἐπίδρασις θὰ παραμείνῃ διαρκὴς ἐν τῇ ἐπιστήμῃ. Ὁ ἴδιος εἶπέ που «Οἱ συνήθεις ἄνθρωποι βλέπουσι τοὺς καρποὺς τῶν πράξεών των. Ὁ σπόρος τὸν ὁποῖον μεγαλοφυεῖς ἄνδρες σπείρουν φυτρώνει βραδέως».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Λεπτομερῆ κατάλογον τῶν ἔργων καὶ διατριβῶν τοῦ Μόμμσεν. βλ. ἐν τῷ βιβλίῳ «Theodor Mommsen als Schriftsteller. Ein Verzeichnis seiner Schriften von *Karl Zangemeister*, im Auftrage der Königlichen Bibliothek bearbeitet und fortgevetzt von *Emil. Jacobs* (Βερολῖνον 1905). Ὡς πρὸς τὸν βίον αὐτοῦ πρβλ. Theodor Mommsen. Eine biographische Skizze von *Ludo Moritz Hartmann* (ἐν Γόθᾳ 1908). Ὡς πολιτικὸν καὶ δημοσιογράφον ἐξετάζει αὐτὸν ἐκτενῶς ὁ *Carl Gehrcke* «Theodor Mommsen als Schleswig-Holsteinischer Publizist» (Βρεσλαυΐα 1927).—*Otto Hirschfeld*, «Gedächtnisrede» ἐν ταῖς «Abh. der Preussischen Akademie» 1904 σελ. 1025—1060) καὶ ἐν τοῖς «Kleine Schriften» τοῦ αὐτοῦ (σελ. 931—965).—*Ulrich von Wilamowitz* «Ausprache gehalten am 30 November 1917 im Institut für Altertumskunde» (ἐν τῷ περιοδικῷ Sokrates» τοῦ Otto Schroeder, 1918 σελ. 1—10).

Ι. ΚΑΛΙΤΣΟΥΝΑΚΙΣ

—**Μόμμσεν** (Mommsen), ***Τύχων***. Γερμανὸς φιλόλογος (1819—1900), ἀδελφὸς τοῦ *Αὐγούστου Μόμμσεν*. Ἐδημοσίευσε κριτικὴν ἔκδοσιν καὶ μετάφρασιν τοῦ Πινδάρου, κριτικὴν ἔκδοσιν τοῦ ἔργου «Ρωμαῖος καὶ Ἰουλιέττα» τοῦ Σαίξπηρ καὶ συνέγραψεν: «Ἡ τέχνη τοῦ μεταφράζειν (1886), «Συμβολαὶ εἰς τὴν διδασκαλίαν τῶν ἑλληνικῶν προθέσεων» (1895). Θ. Κ.

—**Μόμμσεν** (Mommsen), ***Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς νομικὸς (1818—1892). Καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Γοτίγγης (1864), πρόεδρος τοῦ ἐφετείου τοῦ Βερολίνου (1868), ἔγραψε: «Συμβολαὶ εἰς τὸ δίκαιον τῶν ἐνοχῶν» (1855), «Σχέδιον γερμανικοῦ νόμου περὶ κληρονομικοῦ δικαίου» (1876). Θ. Κ.

**Μομπελλιὲ** (Montpellier)· βλ. λ. *Μονπελλιέ*.

***Μομτσίλ, βοϊβόδα.*** Βούλγαρος ἥρως τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἀναφερόμενος εἰς πολλὰ δημοτικὰ ᾄσματα. Ὑπηρέτει ὡς ἁπλοῦς ἐν ἀρχῇ στρατιώτης ἐν ἑλληνικῇ ὑπηρεσίᾳ, γενόμενος δὲ βραδύτερον ἀρχηγὸς ὁμάδος παλληκαριῶν, συνεμάχησε πρὸς τὸν Ἰωάννην Καντακουζηνόν, προσέλαβε τὸν τίτλον τοῦ σεβαστοκράτορος καὶ ἐγένετο ἀνεξάρτητος δεσπότης ἐν Ροδόπῃ, μὲ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν Περιθεόριον. Τῷ 1345 προδοθεὶς ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Καντακουζηνοῦ, πρὸς ὃν εἶχεν ἔλθει εἰς ρῆξιν. Εἰς τὰ δημώδη ᾄσματα ἐξαίρεται κυρίως ὁ τραγικός του θάνατος, κατόπιν προδοσίας τῆς συζύγου του, εἰς δὲ τὰς παραδόσεις ἀναφέρεται μὲ τὸ ἐπώνυμον «Μαῦρος Ἀράπης». Τ. Β.

**Μομτσίλωφ**, ***Ἰβάν***. Βούλγαρος συγγραφεὺς (1819—1869). Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια Ἀθηνῶν καὶ Ὀδησσοῦ ἱστορίαν καὶ φιλολογίαν, εἰδικευθεὶς εἰς τὴν σλοβενικὴν φιλολογίαν. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Γραμματικὴ τῆς παλαιοβουλγαρικῆς γλώσσης» (Βιέννη 1865), «Λεξικὸν τῆς παλαιοβουλγαρικῆς» (Βιέννη 1865) καὶ «Νεοβουλγαρικὴ γραμματικὴ» (1868). Τ. Β.

**Μομφερράτη,** ἢ ***Μονφερράτο*** (Monteferrato ἢ Monferrato) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ μαρκιωνία καὶ εἶτα δουκᾶτον τῆς Β. Ἰταλίας. Ἐξετείνετο ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τοῦ σημερινοῦ νομοῦ Ἀλεξανδρείας καὶ τμήματος του Κουνέο (Κόνι). Κατ' ἀρχὰς περιελάμβανε μόνον τὴν κατὰ μῆκος τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Πάδου χώραν ἀπὸ τοῦ Τουρίνου μέχρι τοῦ Καζάλε, βραδύτερον ὅμως ἐπεξετάθη ἐπὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Ταννάρο καὶ τῶν Ἀπεννίνων καὶ ὑποδιῃρέθη εἰς *Ἄνω καὶ Κάτω Μομφερράτην*. Καὶ ἡ μὲν πρώτη ἐξετείνετο ἐπὶ τῆς μεταξὺ τοῦ Ταννάρο καὶ τῶν Ἀπεννίνων περιοχῆς, ἡ δὲ δευτέρα ἀπὸ τοῦ Ταννάρο μέχρι τοῦ Πάδου. Ἡ μαρκιωνία τῆς Μομφερράτης ἱδρύθη κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα. Περιῆλθε δὲ εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν Ἀλεδραμιδῶν, ἐξ ἧς προῆλθεν ὁ πολλαπλῶς δράσας *Μομφερρατικὸς οἶκος* (βλ. λ.), ἀκμάσας μέχρι τοῦ 1305, ὁπότε ἡ μαρκιωνία περιῆλθεν εἰς ἕνα κλάδον τοῦ οἴκου τῶν Παλαιολόγων. Μέχρι τοῦ 1533 ἔμεινεν ἀνεξάρτητος, ἀκολούθως δὲ περιῆλθεν εἰς τὸν ἄρχοντα ἐν Μαντούῃ οἶκον τῶν Γοντσάγων, πιστὸν θεράποντα τοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου Ε', ὅστις χάριν αὐτῶν προήγαγε τὴν μαρκιωνίαν τῆς Μομφερράτης εἰς δουκᾶτον. Ὅτε τῷ 1627, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Βικεντίου Β', ἔληξεν ὁ ἄρρην κλάδος τῆς οἰκογενείας ταύτης, αἱ κατακτητικαὶ βλέψεις τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας Καρόλου-Ἐμμανουὴλ προεκάλεσαν πόλεμον διὰ τὴν διαδοχὴν τῆς Μαντούης, ὅστις ἔληξε διὰ τῆς διασπάσεως τοῦ δουκάτου τῆς Μομφερράτης, συμφώνως τῇ συνθήκῃ τοῦ Τσεράνο (1631). Τῷ 1713 ἡ Σαβοΐα, κατόπιν τοῦ περὶ διαδοχῆς πολέμου τῆς Ἱσπανίας, προσήρτησε καὶ τὸ ἐναπομένον εἰς τὴν Μάντουαν τμῆμα τῆς Μομφερράτης. Χ. Δ.

— **Μομφερράτης,** ἢ ***Μόντης Φερράτης οἶκος***· βλ. *Μομφερρατικὸς οἶκος*.

**Μομφερρατικὸς *οἶκος*.** Ἐπίσημος μεσαιωνικὴ οἰκογένεια Φράγκων ἡγεμόνων τῆς ἐν τῇ Β. Ἰταλίᾳ ὁμωνύμου μαρκιωνίας, ἀκμάσασα ἀπὸ τοῦ ΙΑ' αἰῶνος μέχρι τοῦ 1305. Κατήγετο ἔκ τινος παλαιᾶς εὐγενοῦς οἰκογενείας τῶν Ἀλεδραμιδῶν), πολλὰ δὲ μέλη της διεκρίθησαν κατὰ τοὺς χρόνους τῶν σταυροφοριῶν ἐν Ἀνατολῇ. Σπουδαιότεροι ἀντιπρόσωποι τοῦ Μομφερρατικοῦ οἴκου εἶναι οἱ ἑξῆς:—1) *Γουλιέλμος Γ'* (ἀποθ. 1188), πιστὸς ὑπήκοος τοῦ Φρειδερίκου Βαρβαρόσσα, θεμελιωτὴς τοῦ μεγαλείου τῆς Μομφερράτης.—2) *Κορράδος* (βλ. λ.), υἱὸς καὶ διάδοχος τοῦ προηγουμένου.—3) *Βονιφάτιος Γ'* (1154—1207), εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς τετάρτης σταυροφορίας, βασιλεὺς τῆς Θεσσαλονίκης (βλ. λ. *Βονιφάτιος Γ'* Μομφερρατικός).—4) *Γουλιέλμος ΣΤ' ὁ Μέγας* (ἀποθ. 1292), εἷς ἐκ τῶν διασημοτέρων μισθοφόρων (condottieri) τοῦ ΙΓ' αἰῶνος.—5) *Ἰωάννης* (ἀποθ. 1305), υἱὸς τοῦ προηγουμένου, τελευταῖος ἄρρην γόνος τῆς οἰκογενείας τῶν Μομφερρατικῶν. Ἀπ' αὐτοῦ ἡ μαρκιωνία περιῆλθεν εἰς ἕνα κλάδον τοῦ οἴκου τῶν Παλαιολόγων, ὅστις ἦρξεν ἐν Μομφερράτῃ μέχρι τοῦ 1533. Χ. Δ.

**Μομφερρᾶτος.** Ὄνομα οἰκογενείας ἰταλικῆς προελεύσεως, ἥτις ἐγκατεστάθη ἐν Κεφαλληνίᾳ πρὸ τοῦ 1566. Ἦτο ἐγγεγραμμένος ἐν τῇ Χρυσῇ Βίβλῳ, ἐπρέσβευον δὲ τὰ μέλη αὐτῆς μέχρι τοῦ ΙΘ' αἰῶνος τὸ καθολικὸν δόγμα. Γ. Δ.

— **Μομφερρᾶτος,** ***Ἀριστοτέλης***. Ἰατρὸς σπουδάσας ἐν τοῖς πανεπιστημίοις Βουκουρεστίου, Βερολίνου καὶ Παρισίων. Ἐξήσκησε τὸ ἐπάγγελμά του ἐν Βραΐλᾳ τῆς Ρουμανίας, ἐχρημάτισε δὲ καὶ ἰδιαίτερος ἰατρὸς τῆς ρουμανικῆς αὐλῆς. Συνέγραψε πολλὰ ἔργα ἑλληνιστὶ καὶ γαλλιστί. Π. Κ. Π.

— **Μομφερρᾶτος,** ***Ἀνδρέας***. Ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1862. Προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ, διῴκησε πεδινὴν πυροβολαρχίαν παρὰ τῷ στρατῷ Θεσσαλίας. Τῷ 1908, ὢν ταγματάρχης, ἀπεστάλη εἰς Κρήτην ὡς ἀρχηγὸς τῆς πρὸς ὀργάνωσιν τῆς αὐτόθι χωροφυλακῆς καὶ πολιτοφυλακῆς ἑλληνικῆς ἀποστολῆς. Μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Θεσσαλονίκης (Ὀκτώβριος 1912) μετεκλήθη ἐκεῖθεν μετὰ τοῦ σώματος τῆς χωροφυλακῆς Κρήτης καὶ διωρίσθη ἀρχηγὸς τῆς χωροφυλακῆς τῆς μακεδονικῆς πρωτευούσης. Ἐπικειμένου τοῦ Ἑλληνοβουλγαρικοῦ πολέμου 1913, φέρων δὲ τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, ἐτοποθετήθη ἀρχηγὸς τοῦ πυροβολικοῦ τῆς 6ης μεραρχίας καὶ ὡς τοιοῦτος συμμετέσχε τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ πολέμου ἐκείνου. Μετὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους ἐτοποθετήθη διοικητὴς τοῦ ἐν Θεσσαλονίκῃ 5ου συντάγματος πεδινοῦ πυροβολικοῦ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1915 ἀρχηγὸς πυροβολικοῦ τοῦ 3ου σώματος στρατοῦ. Κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 1917—1920 παρέμεινεν ἐκτὸς τοῦ στρατεύματος. Ἀνακληθεὶς τῷ 1920 εἰς τὴν ἐνέργειαν καὶ προαχθεὶς εἰς ὑποστράτηγον, ἐτοποθετήθη ἀρχηγὸς τῆς στρατιᾶς Θρᾴκης, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τοῦ Ἀπριλίου 1922, ὁπότε, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντιστρατήγου, προσελήφθη ὡς ἀρχηγὸς τοῦ στρατιωτικοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου. Ἀπεστρατεύθη τὸν Ὀκτώβριον 1922.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μομφερρᾶτος,** ***Ἀντώνιος.*** Ἐπιφανὴς Ἕλλην νομοδιδάσκαλος, δικηγόρος καὶ πολιτευτής, γεννηθεὶς τῷ 1852 ἐν Ναυπλίῳ, ἔνθα ἐδιδάχθη καὶ τὰ ἐγκύκλια γράμματα. Τῷ 1868 ἐνεγράφη εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου καὶ τῷ 1874 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ, μεθ' ὃ ἤσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Πεπροικισμένος ὑπὸ κρίσεως λεπτοτάτης καὶ εὐφυΐας σπανίας, χειριστὴς δὲ δεξιὸς τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης καὶ κάτοχος πολλῶν ξένων γλωσσῶν, ἐνέκυψεν εἰς τὴν μελέτην τῆς φιλοσοφίας καὶ ἱστορίας τοῦ δικαίου, ἠσχολήθη μετ' ἐξαιρετικοῦ διαφέροντος περὶ τὸ βυζαντινὸν καὶ ἐκκλησιαστικὸν ἐν γένει δίκαιον, κατέγινεν εἰς ἐρεύνας τῶν ἐπιχωρίων νομικῶν ἐθίμων καὶ τῶν περὶ δικαίου ἰδεῶν καὶ παραδόσεων τοῦ ἑλληνικοῦ λαοῦ, ἀποτέλεσμα δὲ τῶν ἐπιμόνων τούτων μελετῶν καὶ ἐκζητήσεων ὑπῆρξεν ὀγκώδης καὶ σοβαρωτάτη συγγραφικὴ ἐργασία. Ἐχρημάτισε μέλος τῆς ἐν Βερολίνῳ «Internationale Vereinigung für vergleichende Rechts, Wissenschaft und volks Wirtschafts lehre», μέλος τοῦ συμβουλίου καὶ ἔφορος τῶν ἀρχείων τῆς «Ἱστορικῆς καὶ ἐθνολογικῆς ἑταιρείας τῆς Ἑλλάδος» κλπ. Τῷ 1898 ἔλαβε μέρος εἰς τὸ ὑπουργεῖον Ἀλ. Ζαΐμη ὡς ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης, τῷ 1899 ἐξελέγη βουλευτὴς Κραναίας καὶ τῷ 1902 ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῆς Παιδείας ἐν τῇ κυβερνήσει Α. Ζαΐμη. Τῷ 1911 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τοῦ ἀστικοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν καὶ νομικὸς σύμβουλος αὐτοῦ. Τῷ 1916 ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν ἐπὶ κυβερνήσεως Ἀλ. Ζαΐμη καὶ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ θέσιν του μετὰ τὴν παραίτησιν τῆς κυβερνήσεως. Τῷ 1918 ἀπηλλάγη τῆς ὑπηρεσίας διὰ λόγους ὀφειλομένους εἰς τὰς τότε κρατούσας πολιτικὰς ἀνωμαλίας. Ἀποκατασταθεὶς εἰς τὴν θέσιν τοῦ καθηγητοῦ τῷ 1920, ἀπεχώρη-

*Ἀντώνιος Μομφερρᾶτος.*

Digitized by Google

σεν ὡριστικῶς ἐξ αὐτῆς τῷ 1923 λόγῳ ὁρίου ἡλικίας. Ἀπεβίωσε τὸ ἑπόμενον ἔτος (1924).

Τὸ συγγραφικὸν ἔργον τοῦ Μομφερράτου κατέχει σπουδαίαν θέσιν ἐν τῇ παρ' ἡμῖν νομικῇ φιλολογίᾳ. Πλὴν τῶν διατριβῶν καὶ κριτικῶν μελετῶν, ὡς ἡ περὶ «Μακεδονιανείου δόγματος» (ἐν περιοδ. δικηγ. Συλλόγου Ἀθηνῶν), «Περὶ οἱονεὶ καλτισιανῆς καὶ φαβιανῆς ἀγωγῆς» (ἐν Νομ. ἐφημ. Μπαλάνου, 1885), «Περὶ σιωπηρᾶς ἀναμισθώσεως» (αὐτόθι), «Περὶ θανατικῆς ποινῆς» (ἐν «Ἐφημερίδι» Κορομηλᾶ), «Περὶ ἀνωνύμων ἑταιρειῶν» (αὐτόθι), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν χρονολογικὴν ἐξέτασιν καὶ νομικὴν μελέτην τῆς ἐπιγραφῆς τῆς ἐν Κρήτῃ πόλεως Γόρτυνος» (ἐν «Ἀττ. Ἡμερολ.» τόμ. ΚΕ), «Συλλογὴ Ἀθηναϊκῶν προικοσυμφώνων παλαιῶν νοταρίων Ἀθηνῶν μετὰ τῆς ἱστορίας τῶν νοταρίων (ἐν «Μνημείοις ἱστορ. Ἀθηναίων» *Δ. Καμπούρογλου* τόμ. Γ'), Κριτικὴ μελέτη περὶ τῆς ὑπὸ τοῦ J. B. Pitra γενομένης ἐκδόσεως τῶν ποιημάτων Δημητρίου ἀρχιεπισκόπου πάσης Βουλγαρίας τοῦ Χωματιανοῦ, δημοσιευθεῖσα ἐν τοῖς «Βυζαντινοῖς χρονικοῖς» τῆς Πετρουπόλεως (1895) κ. ἄ., ὁ Μομφερρᾶτος ἐδημοσίευσε καὶ τὰς ἑξῆς ἐργασίας: «Περὶ προγαμιαίας δωρεᾶς» (ἐβραβεύθη ἐν τῷ Α' Σγουτείῳ διαγωνισμῷ 1884), «Κληρονομικὸν δίκαιον τῶν κληρικῶν καὶ μοναχῶν ἐν Ἑλλάδι καὶ Τουρκίᾳ» (ἐβραβεύθη ἐν τῷ Β' Σγουτείῳ διαγωνισμῷ 1890), «Ἰβραῒμ Α', Τουρκικαὶ μελέται τοῦ ΙΖ' αἰῶνος», Ecloga Leonis et Constantini» (μετὰ λατινικῶν σχολίων κλπ. 1887), «Εὑρετήριον καὶ πρόλογος τῆς βακτηρίας τῶν ἀρχιερέων» (ἐξ ἀνεκδότου χειρογράφου 1890), «Ἐνοχικὸν δίκαιον τῶν Ρωμαίων καὶ τῶν Βυζαντινῶν κατὰ τὴν ἐν Ἑλλάδι ἰσχύν του» (1902), «Ἐγχειρίδιον Ἀστικοῦ Δικαίου» (1914), «Περὶ ἐπιτροπείας καὶ κηδεμονίας» (ἐξεδόθη ὡς παράρτημα τῆς ἐπιστημονικῆς ἐπετηρίδος τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, 1916), «Ὁ γάμος ἐν τῷ Ἑλληνικῷ, Ρωμαϊκῷ καὶ Ἐκκλησιαστικῷ δικαίῳ» καὶ «Περὶ ἱδρύσεως εἰδικῆς ἕδρας τοῦ Μουσουλμανικοῦ δικαίου ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ» (ἅτινα ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1924 ἐν τῇ ἐπιστημονικῇ ἐπετηρίδι της νομικῆς σχολῆς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν (τεῦχ. 1, τ. Α, σελ. 85—96 καὶ 97—99).

—Ω.

— **Μομφερρᾶτος, *Δημήτριος*.** Ἕλλην νομικὸς διαπρέψας ἐν Ρουμανίᾳ, ἔνθα ἐχρημάτισε νομικὸς σύμβουλος πολλῶν ἱδρυμάτων. Π. Κ. Π.

— **Μομφερρᾶτος, *Ἰωσήφ*.** Εἷς τῶν πρώτων ριζοσπαστῶν τῆς Κεφαλληνίας, ἐκ τῶν ἐντονώτερον ἀγωνισθέντων διὰ τὴν ἕνωσιν τῆς Ἑπτανήσου μετὰ τῆς Ἑλλάδος, γεννηθεὶς ἐν Κεφαλληνίᾳ τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1888. Ἐσπούδασε νομικά, κατόπιν δὲ ἐξέδωκε τὴν «Ἀναγέννησιν» (1849), διὰ τῆς ὁποίας ὑπερήσπισε τὰς ριζοσπαστικάς του ἀρχὰς καὶ ἐχρημάτισεν ἐπανειλημμένως βουλευτὴς εἰς τὴν Ἰόνιον βουλήν. Κατεδιώχθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων διὰ τὰς ἀρχάς του, ἐφυλακίσθη (1849) καὶ ἐξωρίσθη (1857). Μετὰ τὴν ἕνωσιν ἐξελέγη πληρεξούσιος εἰς τὴν Β' ἐν Ἀθήναις ἐθνικὴν συνέλευσιν καὶ βουλευτὴς εἰς τὴν α' βουλευτικὴν περίοδον. Γ. Δ.

— **Μομφερρᾶτος, *Φραγκῖσκος*,** *ἱππότης* —. Γαιοκτήμων ἐν Βραΐλᾳ τῆς Ρουμανίας, καταγόμενος ἐκ Κεφαλληνίας. Διέθεσε πολλὰ χρηματικὰ ποσὰ ὑπὲρ τοῦ ἑλληνικοῦ στοιχείου, ἐτιμήθη δὲ διὰ πολλῶν παρασήμων καὶ εἰδικῶν ἀξιωμάτων. Π. Κ. Π.

**μομφὴ** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μέμφεσθαι, κατηγορία, παράπονον, ψόγος: «εἶναι ἄξιος μομφῆς».

**Μὸν** (Mohn), ***Ἐρρῖκος*.** Νορβηγὸς μετεωρολόγος, γεννηθεὶς εἰς τὸ Bergen (1835—1916). Τῷ 1861 προσελήφθη ὡς παρατηρητὴς εἰς τὸ ἀστεροσκοπεῖον τοῦ πανεπιστημίου τῆς Χριστιανίας, καὶ τῷ 1866 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς Μετεωρολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τούτῳ καὶ συγχρόνως διευθυντὴς τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθέντος κεντρικοῦ μετεωρολογικοῦ ἰνστιτούτου τῆς Νορβηγίας, μέχρι τοῦ 1913. Ἐδημοσίευσε πλείστας μετεωρολογικὰς ἐργασίας καί τινας ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων. Μετὰ τοῦ μαθηματικοῦ Guldeberg ἠσχολήθη εἰς τὴν δυναμικὴν τῆς ἀτμοσφαίρας, ἐπεκτείνας τὰς ἐρεύνας αὐτοῦ ἰδιαιτέρως ἐπὶ τῶν θυελλῶν. Ἀπὸ τοῦ 1876—1878 διηύθυνεν ἐπιστημονικὴν ἀποστολὴν πρὸς μελέτην τῆς Βορείου θαλάσσης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1882—1883 διηύθυνε τὸν περίφημον σταθμὸν τοῦ Bossekop. Εἰς τὴν πρωτοβουλίαν τοῦ Μὸν ὀφείλεται ἡ ἵδρυσις τῶν μετεωρολογικῶν σταθμῶν ἐν τῇ Βορείῳ Εὐρώπῃ. Ὑπῆρξεν ἐπίτιμος διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας τοῦ πανεπιστημίου τῆς Οὐψάλης καὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀξφόρδης. Αἱ ἐργασίαι του γενικῶς ἀναφέρονται εἰς τὴν ἀστρονομίαν, φυσικήν, γεωδαισίαν καὶ μετεωρολογίαν. Τῷ 1883 συνέγραψε καὶ ἐγχειρίδιον μετεωρολογίας («Grunzuge der Meteorologie»), ἐδημοσίευσε δὲ καὶ τὰς μετεωρολογικὰς παρατηρήσεις τῶν διαφόρων πολικῶν ἀποστολῶν, τὴν μετεωρολογίαν καὶ ὠκεανογραφίαν τοῦ Βορείου Ἀτλαντικοῦ κτλ. Θ. Θ. Φ.

**Μόνα,** ἢ ***Μῶννα*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Ἀλουΐωνος τῆς Βρεττανικῆς (Ἀγγλίας) ἀπ' ἀνατολῶν τῆς Ἰουερνίας (Ἰρλανδίας), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Β, β, 12). Περιῆλθεν εἰς τοὺς Ρωμαίους κατὰ τὴν κατάκτησιν τῆς Βρεττανίας. Εἶναι ἡ σύγχρονος νῆσος Anglesey (*Schader*: Atlas Geogr. Moderne G, h) τῆς Ἰρλανδικῆς θαλάσσης, χωριζομένη ἀπὸ τοῦ Κάρναβον διὰ τοῦ στενοτάτου πορθμοῦ τοῦ Μέναϊ. Σ. Ε. Λ.

**Μοναβία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Ἰουερνικοῦ ὠκεανοῦ, ἡ ἄλλως *Μοννάουδα*. Σ. Ε. Λ.

**Μονάγκας** (Monagas) *[Γεωγρ.]*. Ὁμόσπονδος πολιτεία τῆς νοτιοαμερικανικῆς δημοκρατίας τῆς Βενεζουέλας ἐν τῷ ΒΑ. τμήματι αὐτῆς. Τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς πολιτείας εἶναι βουνῶδες ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸ ἀνατολικόν, τὸ ὁποῖον εἶναι ἐντελῶς πεδινὸν καὶ εὔφορον, ὡς ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀρδευόντων αὐτὸ ὑδάτων. Εἰς πολλὰ σημεῖα σχηματίζει ἀβαθεῖς λίμνας. Ἔχει ἔκτασιν 28.900 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 68,765 κατοίκους καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Ματουρὶν* (κάτ. 5.041). Χ. Δ.

**μοναγκὼν** (ὁ) *[Ἀρχ.]*. Πολεμικὸν μηχάνημα πρὸς ἐκσφενδόνησιν λίθων. Ὠνομάζετο οὕτω, διότι οἱ λίθοι ἐξεσφενδονίζοντο διὰ τῆς βιαίας κινήσεως τοῦ ἑνὸς μόνον ἀγκῶνος. Β. Δ. Θ.

**Μονάγρι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς νήσου Κύπρου ἐν τῷ διαμερίσματι Κοιλανίου τῆς ἐπαρχίας Λεμεσοῦ. Κάτοικοι 254.

**Μοναγρούλι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς νήσου Κύπρου ἐν τῷ διαμερίσματι καὶ τῇ ἐπαρχίᾳ Λεμεσοῦ. Κάτ. 350.

**μονάδελφα *φυτὰ*** *[Βοτ.]*. Καλοῦνται τὰ φυτά, ἅτινα φέρουσιν ἄνθη, ὧν οἱ στήμονες εἶναι συνηνωμένοι καθ' ὅλον αὐτῶν τὸ μῆκος ἢ μόνον κατὰ τὴν βάσιν των. Δ. Ν. Π.

**μοναδελφία** (ἡ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται ἡ περίπτωσις τοῦ ἄνθους, ὅπερ φέρει συμφυεῖς στήμονας ἢ καθ' ὅλον αὐτοῦ τὸ μῆκος ἢ κατὰ τὴν βάσιν του.

**μοναδικός,** *—ή, —όν*· ὁ οἱονεὶ ἀποτελῶν μονάδα, ὁ μόνος εἰς τὸ εἶδός του: «μοναδικὸν παράδειγμα φιλοπατρίας» || ἐξαιρετικός, ἔκτακτος: «μοναδικὸς ἄνθρωπος».

— **μοναδικὸν *τρῆμα*** *[Ἀνατομ.]*. Τρῆμα ἐπὶ τοῦ πυθμένος τοῦ ἔσω ἀκουστικοῦ πόρου, κείμενον ἐπὶ τοῦ κάτω ἔξω βοθρίου αὐτοῦ, χρησιμεῦον πρὸς δίοδον τοῦ νεύρου τῆς ὀπισθίας *ληκύθου*. Ι. Π.

**μοναδικότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μοναδικοῦ, τὸ νὰ ἀποτελῇ τις μονάδα.

**μοναδιστὴς** (ὁ)· ὁ ἀποδεχόμενος τὸ δόγμα τῆς μοναδικῆς ὑποστάσεως τοῦ θεοῦ, ὁ ἀπαρνούμενος τὸ δόγμα τῆς Ἁγίας Τριάδος.

**μοναδολογία** (ἡ) *[Φιλοσ.]*. Ἡ περὶ μονάδων διδασκαλία (βλ. λ. *μονὰς* καὶ *Λεΐβνίτιος*).

**μοναζίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν δημήτριον $CePO_4$, καλούμενον καὶ *τουρνερίτης* ἢ *ἐμερίτης*. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα εἰς κρυστάλλους πινακοειδεῖς ἢ πρισματικούς, ἀπαντᾷ δὲ συνήθως καὶ ὑπὸ μορφὴν ψαμμιδικῶν κοκκίων. Εἶναι εὔθραυστον, παρουσιάζει θραυσμὸν κογχώδη, σκληρότητα $5—5^1/_2$, εἰδικὸν βάρος 4,9—5,3 καὶ ἔχει λάμψιν στεατώδη καὶ χρῶμα ἐρυθρὸν ἕως ἐρυθρόφαιον, ἰδίως δὲ κιτρινόφαιον καὶ φαιότεφρον. Περιέχει μέχρι 70% σπανίας γαίας, ἰδίως τῆς σειρᾶς τοῦ δημητρίου καὶ τοῦ ὑττερίου, εἶναι δὲ πλούσιος εἰς λανθάνιον καὶ θόριον ($^1/_2$—19%), καθὼς καὶ εἰς μεσοθόριον, προϊὸν διασπάσεως ἐκ ραδιενεργείας τοῦ θορίου. Περιέχει ἀκόμη καὶ ἥλιον. Εὑρίσκεται εἰς ρωγμὰς πυριτικῶν πετρωμάτων, καθὼς καὶ ἐντὸς γρανιτῶν καὶ ὀφθαλμογνευσίων ὡς σπάνιον ὀρυκτολογικὸν συστατικὸν αὐτῶν εἰς Frössnitzalpe, Riesengebirge, Nöterö τῆς Νορβηγίας κ. ἄ. καὶ εἰς δευτερογενῆ κοιτάσματα ἐκ προσχώσεων προερχομένων ἐξ ἀποσαθρώσεως τῶν γρανιτῶν καὶ γνευσίων. Γ. Β.

**μονάζω**· μένω, ζῶ μόνος: «μονάζει εἰς τὴν ἔρημον» || εἶμαι μοναχός: «μονάζει εἰς τὸ Ἅγιον Ὄρος».

**μοναιθυλίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *γλυκερίνης* παράγωγα.

**Μοναῒτ-Κοφοῦ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Φαραωνικὴ πόλις τοῦ νομοῦ Κνουμοῦ (Ἑρμουπολίτου), μεταξὺ Νείλου καὶ τοῦ πρὸς Α. Μπάχρ-Γιοῦσσεφ. Ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ Φαραὼ Κουφοῦ (Χέοπος) καὶ ἤκμασε μέχρι τῆς ΙΒ' δυναστείας, ὅτε καὶ ἐγένετο ἡ κοιτὶς ἐπιτοπίου δυναστείας. Οἱ τάφοι τῶν φεουδαρχῶν της πριγκίπων ἀνεκαλύφθησαν εἰς Βένι-Χάσσαν. Γ. Λ. Α.

**μονάκανθος** (ὁ) (Monacanthus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἰχθύων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλεκτογνάθων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σκληροδερμιδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους ἰχθῦς μὲ σῶμα ἀκανονίστως τετραγωνικόν, κεφαλὴν παμμεγίστην ἀπολήγουσαν εἰς ὀξὺ ρύγχος καὶ ὀφθαλμοὺς μικρούς.

*Μονάκανθος ὁ κηλιδωτός.*

Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μονάκανθος ὁ κηλιδωτὸς* (Monacanthus maculatus), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος 60 περίπου ἑκατοστομέτρων καὶ ἔχει χαλκοπράσινον χρῶμα μετὰ μελανῶν κηλίδων ἐπὶ τῆς ράχεως. Δ. Ν. Π.

**Μονακὸ** (Monaco) *[Γεωγρ.]*. Ἀνεξάρτητος ἡγεμονία τῆς Εὐρώπης ὑπὸ τὴν γαλλικὴν προστασίαν. Κεῖται ἐπὶ τῆς λεγομένης γαλλικῆς Ριβιέρας, μεταξὺ τοῦ γαλλικοῦ νομοῦ τῶν Παραθαλασσίων Ἄλπεων καὶ τῆς Μεσογείου θαλάσσης, εἰς ἀπόστασιν 14 χλμ. πρὸς Α. τῆς Νικαίας καὶ περικλείεται πρὸς Β. μὲν ὑπὸ τῶν ὑψωμάτων τῆς Τουρμπὶ καὶ πρὸς Δ. ὑπὸ τοῦ ὄρους Τὲτ-ντὲ-Σιὲν ὕψους 573 μ. Ἔχει μῆκος 3,5 χλμ. καὶ πλάτος ποικίλλον μεταξὺ 1 καὶ 1,5 χλμ. Ἡ ἐπιφάνεια αὐτοῦ εἶναι 16,15 τ. χλμ., ὁ δὲ πληθυσμὸς 24.927. Ἀποτελεῖται ἀπὸ τὴν πρωτεύουσαν *Μονακὸ* καὶ τὰς πρὸς Α. συνεχομένας πρὸς ταύτην πόλεις *Λὰ-Κονταμὶν* (βλ. λ.) καὶ *Μόντε-Κάρλο*. Τὸ κλῖμα εἶναι ἐξαίρετον καὶ γλυκύτατον. Ἡ μέση θερμοκρασία κατὰ τὸν χειμῶνα κυμαίνεται μεταξὺ 10° καὶ 12°, κατὰ δὲ τὸ θέρος μεταξὺ 24° καὶ 25°. Σπανίως τὸ θερμόμετρον κατέρχεται κάτω τοῦ 0°. Ἡ γλυκύτης αὕτη τοῦ κλίματος εὐνοεῖ τὴν καλλιέργειαν ἑσπεριδοειδῶν καὶ τὴν παραγωγὴν ἀφθόνων πορτοκαλλίων, λεμονίων, βανανῶν, σταφυλῶν κλπ. Ἔχει ἀρκετὰ ἀνεπτυγμένην βιομηχανίαν, συνισταμένην εἰς τὴν παραγωγὴν ἀρωμάτων, οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν, καλλιτεχνικῶν ἀγγείων, κονσερβῶν τροφίμων, ζύθου καὶ σοκολάτας. Ἡ ἐξαγωγὴ περιλαμβάνει πάντα τὰ ἀνωτέρω εἴδη παραγωγῆς, ἡ δὲ εἰσαγωγὴ κυρίως εἴδη πολυτελείας. Ἀπὸ τοῦ 1865 τὸ Μονακὸ εὑρίσκεται εἰς τελωνειακὴν καὶ ταχυδρομικὴν ἕνωσιν μετὰ τῆς Γαλλίας, αἱ δὲ εἰσπράξεις τῶν τελωνείων γίνονται ὑπὸ Γάλλων τελωνειακῶν ὑπαλλήλων. Αἱ εἰσπράξεις γίνονται διὰ λογαριασμὸν τῆς Γαλλίας, ἡ ὁποία καταβάλλει εἰς τὸ Μονακὸ ἐφ' ἅπαξ ὡρισμένον ποσὸν πρὸς ἀποζημίωσιν. Τὸ Μονακὸ ἀνήκει εἰς τὴν λατινικὴν νομισματικὴν ἕνωσιν καὶ ἔχει ἴδια χρυσᾶ καὶ ἀργυρᾶ νομίσματα.

Οἱ κάτοικοι τοῦ Μονακὸ δὲν ὑπόκεινται εἰς φορολογίαν. Τὰ ἔξοδα τοῦ προϋπολογισμοῦ καλύπτονται ἐκ τοῦ δικαιώματος τῆς ἐνοικιάσεως, τὸ ὁποῖον πληρώνει ἡ ἐκμεταλλευομένη τὸ καζῖνον τοῦ Μόντε-Κάρλο ἑταιρεία. Ὁ κυριώτερος ὅμως πλοῦτος τῆς χώρας προέρχεται ἐκ τῆς βιομηχανίας τῶν ξένων, ἡ ὁποία εἶναι εἰς ὕψιστον βαθμὸν ἀνεπτυγμένη. Λόγῳ τοῦ ἠπιωτάτου κλίματος ἐπισκέπτονται τὴν ἡγεμονίαν καθ' ὅλας τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους, ἰδίως δὲ κατὰ τὸν χειμῶνα, ὑπὲρ τὰ 2 ἑκατομμύρια ξένων ἐξ ὅλων τῶν μερῶν τοῦ κόσμου. Εἰς τὴν συρροὴν ταύτην συντελεῖ τὰ μέγιστα καὶ τὸ ἐν Μόντε-Κάρλο ὑπάρχον περίφημον καζῖνον τυχηρῶν παιγνιδίων, καθὼς καὶ τὸ μοναδικὸν εἰς τὸ εἶδός του ὠκεανογραφικὸν μουσεῖον τῆς πόλεως τοῦ Μονακό.

Τὸ Μονακὸ ἀποτελεῖ συνταγματικὴν ἡγεμονίαν καὶ κυβερνᾶται ἐπὶ τῇ βάσει Συντάγματος ψηφισθέντος τὴν 5 Ἰανουαρίου 1911 καὶ τροποποιηθέντος τὴν 18 Νοεμβρίου 1917. Τὸ πολίτευμα αὐτοῦ εἶναι συνταγματικὴ μοναρχία, κληρονομικὴ τοῦ οἴκου τῶν Γκουαγιὸν ντὲ Ματινιὸν-Γκριμάλντι, δυναμένη εἰς περίπτωσιν ἐκλείψεως τῶν ἀρρένων ἀπογόνων νὰ μεταβιβασθῇ καὶ εἰς τοὺς ἀπογόνους τοῦ θήλεος κλάδου. Αἱ ἀρχαὶ τῆς χώρας εἶναι: 1) ὁ ἡγεμών, ὁ ὁποῖος ἔχει τὸ δικαίωμα τῆς διαλύσεως τοῦ ἐθνικοῦ συμβουλίου· 2) τὸ ἐθνικὸν συμβούλιον, ἀποτελούμενον ἀπὸ 12 μέλη συμπληρώσαντα τὸ 25 ἔτος τῆς ἡλικίας των καὶ ἐκλεγόμενα διὰ 4 ἔτη ὑπὸ 30 ἐκλεκτόρων, ὧν οἱ 9 ἐκλέγονται ὑπὸ τοῦ κοινοτικοῦ συμβουλίου ἐκ τῶν μελῶν αὐτοῦ καὶ οἱ 21 διὰ γενικῆς ψηφοφορίας· τὸ συμβούλιον τοῦτο ἔχει τὴν νομοθετικὴν ἐξουσίαν, δὲν δύνανται δὲ νὰ ἐπιβληθοῦν φόροι ἄνευ τῆς συγκαταθέσεώς του· 3) τὸ συμβούλιον τῆς ἐπικρατείας, τοῦ ὁποίου πρόεδρος εἶναι ὁ πρωθυπουργός, ὁ ὁποῖος διευθύνει ἐπίσης καὶ τὰς ὑπηρεσίας τῆς δικαιοσύνης· 4) τὸ κυβερνητικὸν συμβούλιον (ἢ ἡ κυβέρνησις), ἀποτελούμενον ἀπὸ 3 συμβούλους ὑπὸ τὴν προεδρίαν ἑνὸς πρωθυπουργοῦ, ἐξαρτώμενον ἐκ τῆς ἐμπιστοσύνης τοῦ ἡγεμόνος. Πρὸ τοῦ Συντάγματος τοῦ 1911 τὸ πολίτευμα τῆς χώρας ἦτο ἀπόλυτος μοναρχία. Ὁλόκληρος ἡ ἡγεμονία ἀποτελεῖ μίαν μόνον κοινότητα μεθ' ἑνὸς δημάρχου αἱρετοῦ καὶ κοινοτικοῦ συμβουλίου ἐκ 15 μελῶν συμπληρωσάντων τὸ 25 ἔτος τῆς ἡλικίας των, ἐκλεγομένων διὰ 3 ἔτη διὰ καθολικῆς καὶ ἀπ' εὐθείας ἐκλογῆς. Τὸ κοινοτικὸν συμβούλιον δύναται νὰ διαλυθῇ ὑπὸ τοῦ πρωθυπουργοῦ. Ἡ σημαία τοῦ Μονακὸ ἀποτελεῖται ἐκ δύο ἰσομερῶν ταινιῶν, ἐρυθρᾶς καὶ λευκῆς, τοποθετημένων ὁριζοντίως, τῆς πρώτης ἐπὶ τῆς δευτέρας. Ἡ ἡγεμονία ἔχει ἓν μόνον παράσημον, τοῦ

Digitized by Google

1) Γενικὴ ἄποψις τοῦ Μονακὸ (δεξιά), τῆς Λὰ-Κονταμὶν (εἰς τὸ μέσον) καὶ τοῦ λιμένος Μόντε-Κάρλο (ἀριστερά). 2) Ὁ λιμὴν τοῦ Μονακὸ καὶ τὸ Μόντε-Κάρλο.

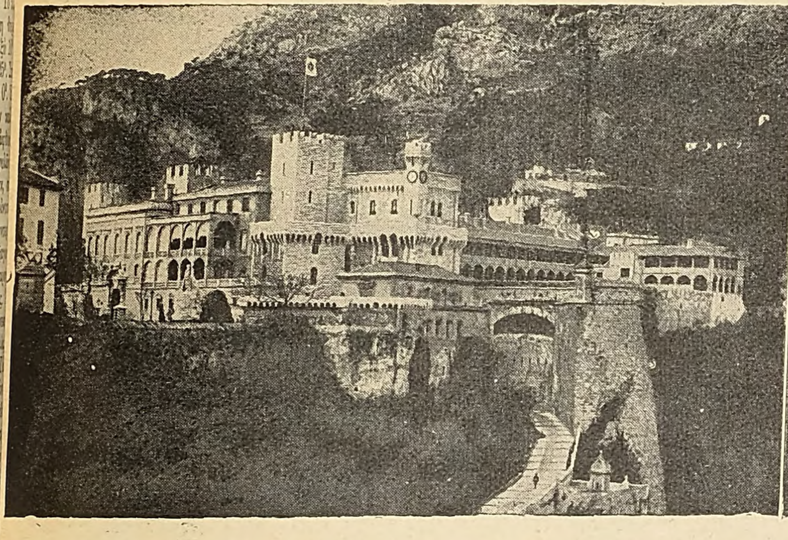
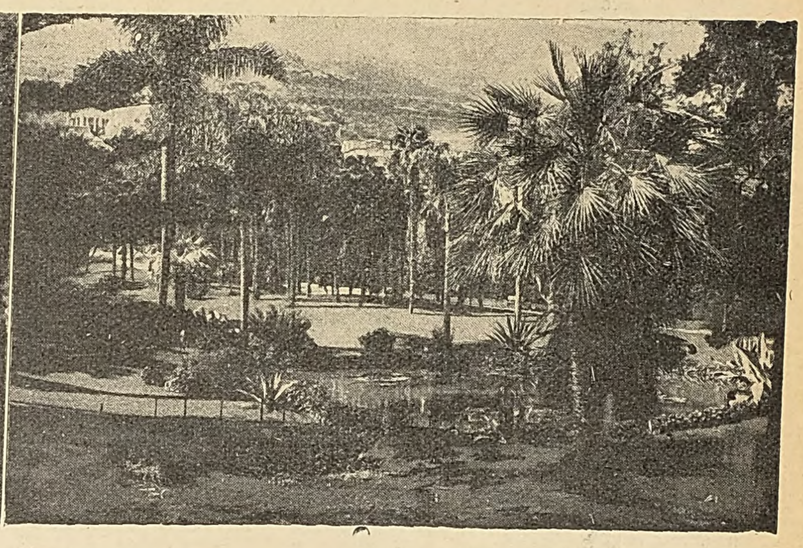

1) Τὸ ἀνάκτορον τοῦ ἡγεμόνος ἐν Μονακό. 2) Ἡ «μικρὴ ἀφρική» τοῦ πάρκου τοῦ Μόντε-Κάρλο.

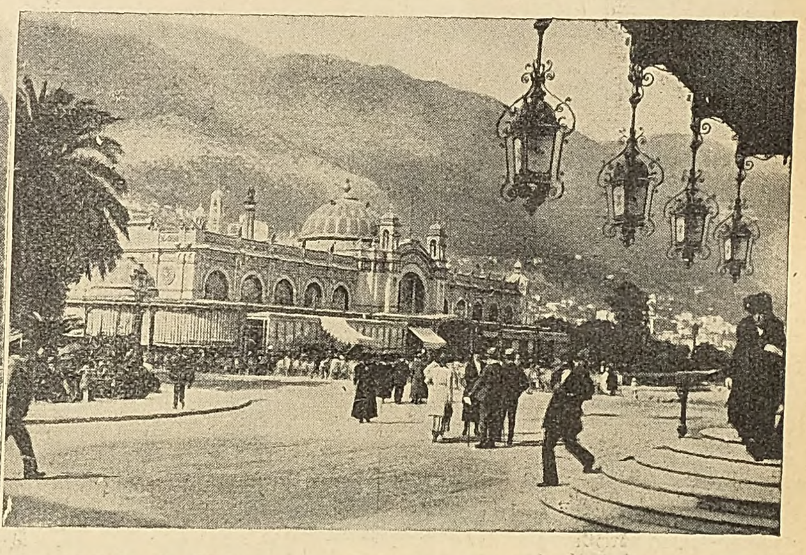

1) Ἡ πρόσοψις τοῦ καζίνου τοῦ Μόντε-Κάρλο καὶ ὁ πρὸ αὐτοῦ κῆπος τοῦ Καφὲ-ντὲ-Παρί. 2) Τὸ πρὸ τοῦ καζίνου τοῦ Μόντε-Κάρλο Καφὲ-ντὲ-Παρί.

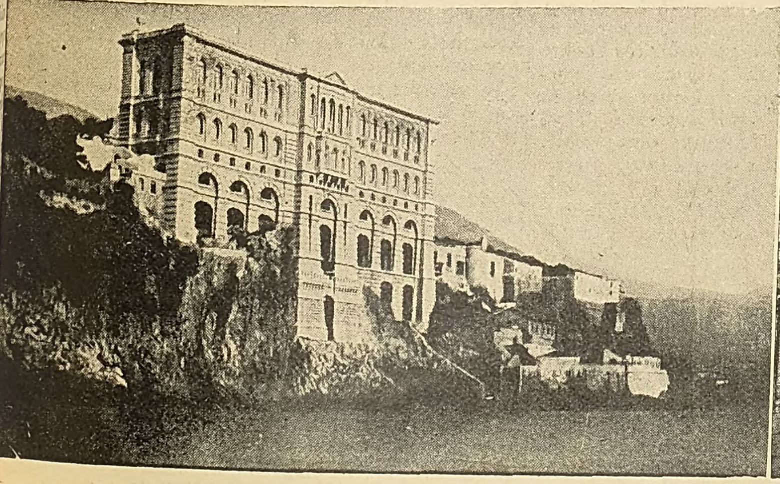
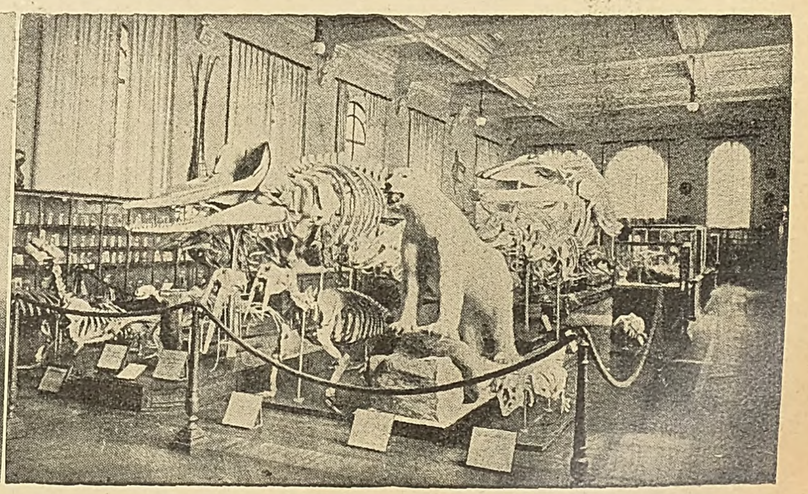

1) Τὸ Ὠκεανογραφικὸν μουσεῖον τοῦ Μονακό. 2) Ἡ αἴθουσα τῶν σκελετῶν τῶν τεραστίων θαλασσίων ζῴων τοῦ Ὠκεανογραφικοῦ μουσείου.

Digitized by Google

Ἁγίου Καρόλου, ἱδρυθὲν τῷ 1858. Ἐν Μονακὸ ἐκδίδονται δύο ἑβδομαδιαῖαι ἐφημερίδες: «Ἡ ἐφημερὶς τοῦ Μονακὸ» (ἐπίσημος) καὶ «Ὁ μικρὸς ἀγγελιαφόρος» (καθολική). Ἐν Μόντε-Κάρλο ἐκδίδεται ἡ «Λὰ Γκαζὲτ ντὲ Μονακὸ» τὸν μὲν χειμῶνα καθημερινῶς, τὸ δὲ θέρος ἅπαξ τῆς ἑβδομάδος. Αἱ ἔνοπλοι δυνάμεις ἀποτελοῦνται ἀπὸ 3 ἀξιωματικοὺς καὶ 82 ἀστυφύλακας καραβινιέρους. Ὁ πληθυσμὸς εἶναι κατὰ τὸ ἥμισυ περίπου ἰταλικῆς καταγωγῆς, τὸ δ' ἕτερον ἥμισυ εἶναι κατὰ πλειοψηφίαν γαλλικῆς καταγωγῆς, μετὰ δύο χιλιάδων περίπου ἄλλων παντοειδῶν ξένων, κατανεμομένων μεταξὺ τῶν Γερμανῶν, Ἄγγλων, Ἑλβετῶν, Βέλγων, Αὐστριακῶν. Οἱ παλαιοὶ αὐτόχθονες κάτοικοι τοῦ Μονακό, καλούμενοι *Μονεγάσκοι* (Monégasques), ἀνέρχονται εἰς 1.500 περίπου.

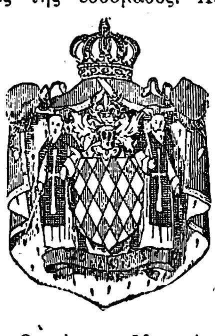

*Θυρεὸς τοῦ Μονακό.*

Ἡ ὁμώνυμος *πρωτεύουσα* τοῦ Μονακὸ κεῖται ἐπὶ βραχώδους προεξοχῆς μήκους 800 μ. καὶ ὕψους 58 μ., ἡ ὁποία ἀποτελεῖ τὸν Ν. βραχίονα τοῦ λιμένος. Κάτ. 2.085. Ἡ πόλις αὕτη ἔχει διατηρήσει ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὴν μεσαιωνικήν της ὄψιν, μὲ τὰ παλαιά της τείχη, ἅτινα κοσμοῦνται εἰσέτι διά τινων ἀχρήστων τηλεβόλων τῆς ἐποχῆς Λουδοβίκου ΙΔ'. Ἡ περὶ αὐτὴν βραχώδης παραλία δὲν εἶναι προσιτή, πλὴν τοῦ Β. πρὸς τὸν λιμένα τμήματος, ὅπου κατεσκευάσθη ἡ προκυμαία τῶν ἐμπορευμάτων καὶ ὅπου καταλήγει σιδηροδρομικὸς βραχίων, φθάνων μέχρις ἐκεῖ δι' ὑπογείου σήραγγος, διανοιχθείσης κάτωθεν τοῦ βράχου τοῦ Μονακό. Ἡ ἄνοδος εἰς τὴν πόλιν τοῦ Μονακὸ γίνεται διὰ κλιμακωτῶν ὁδῶν καὶ δι' ἀνωφερικῆς περιφερικῆς ὁδοῦ, διασχιζομένης καὶ ὑπὸ τροχιοδρόμου. Τὸ Μονακὸ περικλείει ἀξιόλογα κτήρια, ἀποτελοῦντα τὸ ἀντικείμενον συνεχῶν ἐπισκέψεων πολυπληθῶν ξένων. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: Τὸ ἀνάκτορον τοῦ πρίγκιπος, ὅπερ ἀποτελεῖ σύνολον οἰκοδομῶν πολλῶν αἰώνων καὶ πολλῶν ῥυθμῶν. Ἡ πρόσοψις καὶ οἱ τέσσαρες πύργοι του εἶναι ἀραβικῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ χρονολογοῦνται ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ἐκ τῶν ὡραιοτέρων τμημάτων αὐτοῦ εἶναι ἡ μεγάλη κλῖμαξ, θεωρουμένη ἰσαξία πρὸς τὴν τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Φονταινεμπλώ, ἡ μεγαλοπρεπὴς ἐσωτερικὴ αὐλὴ καὶ αἱ πολυτελέσταται αἴθουσαι, κεκοσμημέναι διὰ νωπογραφιῶν τοῦ Ἀννίβα Καράτσι, τοῦ Ὁράτιου ντὲ Φερράρι, τοῦ Καρλόνε, τοῦ Λουκᾶ Καμπιάζο κτλ. Πρὸ τοῦ ἀνακτόρου ὑπάρχει θαυμασία πλατεῖα κεκοσμημένη δι' ἀγαλμάτων καὶ συνεχόμενος ὡραῖος κλιμακωτὸς κῆπος. Ἡ μητρόπολις τοῦ Ἁγίου Νικολάου εἶναι ὡραῖον οἰκοδόμημα βυζαντινοῦ ῥυθμοῦ, ἀνακαινισθὲν τῷ

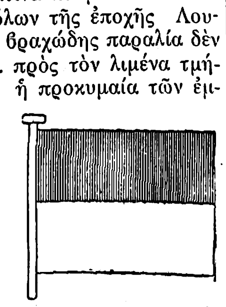

*Σημαία τοῦ Μονακό.*

1884—1887 ἐπὶ σχεδίου τοῦ Λενορμὰν καὶ περικλεῖον τοὺς τάφους τῶν πριγκήπων τοῦ Μονακό. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει τὸ ἀνθρωπολογικὸν μουσεῖον. Μεταξὺ τοῦ μουσείου τούτου καὶ τοῦ ὠκεανογραφικοῦ εὑρίσκονται οἱ περίφημοι «κῆποι τοῦ Ἁγίου Μαρτίνου», ὀνομαστοὶ διὰ τὰ ἐξωτικὰ των δένδρα καὶ ἄνθη καὶ τὴν τροπικὴν ὀργιώδη βλάστησιν, καθὼς καὶ τὴν περίεργον κλιμακωτὴν κατασκευήν των ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω τοῦ Ν. τμήματος τοῦ βράχου. Τὸ ὠκεανογραφικὸν μουσεῖον εἶναι ὡραῖον οἰκοδόμημα ὀφειλόμενον εἰς τὸν ἀρχιτέκτονα Ντελαφορτρὶ καὶ ἐκτισμένον πρὸς τὸ ΝΑ. τμῆμα τοῦ βράχου παρὰ τὴν θάλασσαν. Ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος τοῦ Μονακὸ πρίγκιπος Ἀλβέρτου Α' καὶ ἐγκαινιάσθη τῷ 1910, περιέχει δὲ τὴν μοναδικὴν εἰς τὸ εἶδος της συλλογὴν ὠκεανογραφικῶν ἐργαλείων, χρησιμοποιηθέντων διὰ τὴν ἐξερεύνησιν τοῦ ὠκεανοῦ, ὡς καὶ σκελετῶν τεταριχευμένων ἰχθύων κτλ., τὰ ὁποῖα ἀνεῦρεν ὁ πρίγκιψ Ἀλβέρτος Α' καὶ οἱ συνεργάται του κατὰ τὰς πολυαρίθμους ὠκεανογραφικὰς των ἐξερευνήσεις. Τὸ ὑπόγειον τμῆμα τοῦ μουσείου τούτου καταλαμβάνει τὸ περίφημον ἐνυδρεῖον, πλουσιώτατον εἰς ἰχθῦς καὶ θαλάσσια ζῷα ἐν γένει παντὸς εἴδους, καθὼς καὶ τὸ ἐργαστήριον ἐξερευνήσεως τῶν βαθειῶν θαλασσῶν. Ἕτερα ἐνδιαφέροντα οἰκοδομήματα εἶναι τὸ κυβερνητικὸν μέγαρον, τὸ λύκειον καὶ τὸ Διεθνὲς Ἰνστιτοῦτον τῆς Εἰρήνης.

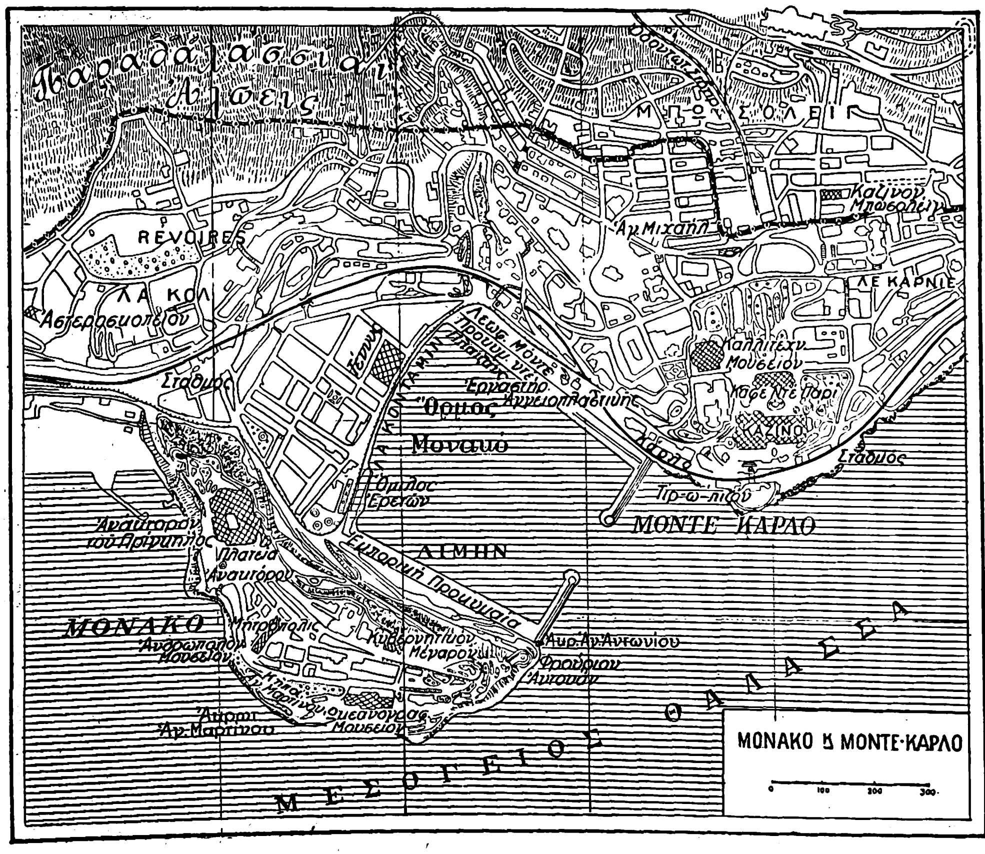


Ὁ λιμὴν τοῦ Μονακὸ ἔχει σχῆμα πεταλοειδές, ἐπὶ τῶν τριῶν δὲ αὐτοῦ πλευρῶν εὑρίσκονται πρὸς τὸν Ν. βραχίονα ἡ πόλις τοῦ Μονακό, εἰς τὸ βάθος ἡ πόλις Λὰ - Κονταμὶν καὶ πρὸς τὸν ΒΑ. βραχίονα τὸ Μόντε-Κάρλο. Ἡ πόλις εὑρίσκεται ἐπὶ τοῦ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μασσαλίας—Γενούης.

— *[Ἱστορ.]* Τὸ Μονακὸ εἶναι πόλις ἀρχαιοτάτη, ἡ δὲ ἵδρυσις αὐτοῦ ἀνάγεται εἰς τοὺς Φοίνικας, οἵτινες ἐπὶ τοῦ βράχου, ὅπου ἐγείρεται σήμερον ἡ πόλις, εἶχον κτίσει ναὸν ἀφιερωμένον εἰς τὸν θεὸν Μελκὰρθ ἢ Μελικέρτην ἢ Ἡρακλέα, προστάτην τῆς Τύρου, καλούμενον Μόνοικον, ὡς μὴ σχετιζόμενον πρὸς τὴν λατρείαν τῆς θεᾶς Ἀστάρτης. Κατὰ τὴν μυθολογικὴν παράδοσιν, ἀναφερομένην ἀπὸ τὸν Διονύσιον τὸν Ἁλικαρνασσέα, τὸν Διόδωρον τὸν Σικελιώτην καὶ ἄλλους ἀρχαίους συγγραφεῖς, ὁ ναὸς οὗτος ἐκτίσθη εἰς τὸ σημεῖον τοῦτο, διότι λέγεται ὅτι ἐν αὐτῷ ἐστάθμευσεν ὁ Ἡρακλῆς μεταβαίνων εἰς τὴν Ἱσπανίαν ὅπως καταβάλῃ τὸν Γηρυόνην. Ἐκ τοῦ ὀνόματος τούτου προῆλθε βραδύτερον καὶ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως, τοῦ λιμένος καὶ τῆς περιοχῆς (Herculis Monoeci portus). Κατ' ἄλλους ἡ ὀνομασία *Μονακὸ* προῆλθεν ἐκ τοῦ στρατοπέδου τὸ ὁποῖον εἶχον ἐγκαταστήσει ἐκεῖ οἱ Μασσαλιῶται πρὸς ἄμυναν αὐτῶν ἀπὸ τῶν Λιγυρίων, μετασχηματίσαντες τὸν ἀρχαῖον ναὸν εἰς φρούριον. Ἐκ τοῦ φρουρίου τούτου, παραμείναντος ἐπὶ μακρὸν ὡς τοῦ μόνου κτηρίου (μόνος οἶκος) ἐπὶ τοῦ ἀποκρήμνου βράχου, φαίνεται ὅτι ὠνομάσθη κατόπιν καὶ ἡ περὶ αὐτὸ ἱδρυθεῖσα μικρὰ πόλις. Ὁ Βιργίλιος ἀναφέρει ἤδη εἰς τὸ Δ' βιβλίον τῆς Αἰνειάδος τὸ φρούριον τοῦτο ὡς Monoeci arx, ἐξ οὗ ὡρμήθη ὁ Καῖσαρ κατερχόμενος ἀπὸ τὰς Ἄλπεις, ὅπως καταβάλῃ τὸν Πομπήϊον. Ὁ Ἀντωνῖνος, ὁ Στράβων, ὁ Πλίνιος καὶ ὁ Τάκιτος ἀναφέρουν τὴν πόλιν ταύτην ὡς Monoeci arx καὶ Herculis Monoeci Portus. Μετὰ τοὺς Ἕλληνας τῆς Μασσαλίας, οἵτινες καταλαβόντες τὴν φοινικικὴν ταύτην πόλιν εἶχον μεταβάλει τὸν λιμένα της εἰς ἕνα τῶν κυριωτέρων ναυτικῶν σταθμῶν τῆς περιοχῆς, ἡ πόλις περιῆλθεν εἰς τοὺς Ρωμαίους, ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῶν ὁποίων διεδραμάτισε σημαντικὸν μέρος κατὰ τοὺς πολέμους τῆς δημοκρατίας καὶ τῆς αὐτοκρατορίας. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς εἶχεν αὔξηθῆ σημαντικῶς, ἐξυπηρετεῖτο ὑπὸ τῆς παρ' αὐτὴν διερχομένης Αὐρηλιανῆς ὁδοῦ καὶ ἀπέλαυεν ὡρισμένων προνομίων. Κατὰ τὸν Α' αἰῶνα μ. Χ. προσῆλθεν εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ ὑπέφερε κατόπιν σκληρῶς ἐκ τῶν βαρβαρικῶν ἐπιδρομῶν. Τῷ 640 περιελήφθη εἰς τῷ βασιλείῳ τῆς Λομβαρδίας καὶ κατόπιν ἀπετέλεσε μέρος τοῦ βασιλείου τῆς Ἀρελάτης. Βραδύτερον ὅμως τὸ Μονακό, μεθ' ὁλοκλήρου τῆς λιγυρικῆς ἀκτῆς, περιῆλθεν εἰς τοὺς Σαρακηνούς. Κατὰ τοὺς ἀγῶνας τοὺς ὁποίους διεξήγαγεν ἐναντίον τῶν νέων τούτων ἐπιδρομέων ὁ Γουλιέλμος Α' ὑποκόμης τῆς Μασσαλίας, κόμης τῆς Ἀρελάτης καὶ ἡγεμὼν μεγάλου τμήματος τῆς Προβηγκίας, ὑπεστηρίχθη ὑπὸ τοῦ Γενουησίου ἄρχοντος Γιβελίνου Γκριμάλντι, πρὸς τὸν ὁποῖον παρεχώρησε τῷ 980, τὸ παρὰ τῶν Ἀράβων ἀνακτηθὲν τμῆμα τῆς χώρας, τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ Φρέζους καὶ Σαὶν - Τροπέ. Κατὰ τὴν παράδοσιν, ὁ πατὴρ τοῦ Γκριμάλντι τούτου, καταγόμενος ἐκ τοῦ Γκριμοάλδου, υἱοῦ τοῦ Πιπίνου ντ' Ἑριστάλ, δουκὸς τῆς Αὐστρασίας καὶ τῆς Βραβάντης, θεωρεῖται ὁ πρῶτος ἡγεμὼν τοῦ Μονακό, τὸ ὁποῖον κατέλαβεν ἀπὸ τοὺς Σαρακηνοὺς τῷ 920 ἢ 962 ἢ 968. Εἰς τὸν Γκριμοάλδην τοῦτον ἀνάγει τὴν καταγωγήν της ἡ σήμερον ἡγεμονεύουσα ἐν Μονακὸ δυναστεία. Κατὰ τὸν ΙΑ' καὶ ΙΒ' αἰῶνα ὅμως ἡ ἱστορία τοῦ Μονακὸ παραμένει λίαν σκοτεινή, τὸ δὲ ὄνομα τῶν Γκριμάλντι ἐξαφανιζόμενον κατὰ τὰ τέλη τοῦ Ι' αἰῶνος ἀναφαίνεται ἐκ νέου τῷ 1162. Φαίνεται ὅτι κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην τὸ φρούριον τοῦ Μονακὸ εἶχε κατεδαφισθῆ, οἱ δὲ Γκριμάλντι ἐκτοπισθῆ. Τῷ 1174 ὁ αὐτοκράτωρ Φρεδερῖκος Α' ἐδώρησε τὸ Μονακὸ εἰς τὴν Γένουαν, τὴν δὲ δωρεὰν ταύτην ἀνενέωσεν ὁ Ἐρρῖκος Δ' τῷ 1191 καὶ ὁ Φρειδερῖκος Β' τῷ 1220. Κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα οἱ Γκριμάλντι κατώρθωσαν νὰ ἐπανέλθουν εἰς τὸ Μονακό, ὅπερ ὀχυρωθὲν κατέστη ἓν τῶν ἐπιφοβωτέρων φρουρίων, ὅπερ ἀντέστη γενναίως κατὰ παντὸς ἐπιδρομέως καὶ ἰδίως τῶν ἀντιπάλων τῶν Γκριμάλντι οἰκογενειῶν τῆς Γενούης Ντόρια καὶ Σπίνολα. Ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἤτοι ἀπὸ τοῦ Ραϊνιέρου Β' (1303—1329) ἡ κυριαρχία τῶν Γκριμάλντι ἐπὶ τοῦ Μονακὸ καθίσταται σχεδὸν συνεχής. Τῷ 1346 ὁ Κάρολος Γκριμάλντι ἐπηύξησε τὰ ἐδάφη τῆς ἡγεμονίας του διὰ τῆς καταλήψεως τῆς Μαντόν, τῆς Ροκεμπρὺν καὶ τῆς Καστιγιόν. Τῷ 1450 οἱ Γκριμάλντι ἐτέθησαν ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς Ἱσπανίας καὶ ἐπολέμησαν γενναίως κατὰ τῶν Τούρκων καὶ τῶν Γάλλων. Τῷ 1506—1507 ἐπολιορκήθη στενῶς ὑπὸ τῶν Γενουησίων, ἀλλ' ἀντέστη γενναίως ἐπὶ 102 ἡμέρας. Τῷ 1641 περιῆλθεν ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς Γαλλίας, κατὰ δὲ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν προσηρτήθη εἰς τὴν γαλλικὴν δημοκρατίαν τῷ 1793 ὑπὸ τὸ ὄνομα *Φρούριον Ἡρακλέους* (Fort-Hercule). Διὰ τῆς συνθήκης τῶν Παρισίων τοῦ 1814 τὸ Μονακὸ παρεχωρήθη εἰς τὸν νόμιμον διάδοχον τοῦ οἴκου τῶν Γκριμάλντι πρίγκιπα Ὀνωρᾶτον Δ', κατὰ τὴν ἐπιστροφὴν ὅμως τοῦ Ναπολέοντος ἡ ἡγεμονία κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καὶ διὰ τῆς συνθήκης τῆς Βιέννης τοῦ 1815 παρεχωρήθη ὡς προτεκτορᾶτον εἰς τὸ βασίλειον τῆς Σαρδηνίας μέχρι τοῦ 1860, ὁπότε, κατόπιν τῆς προσαρτήσεως τῆς κομιτείας τῆς Νικαίας εἰς τὴν Γαλλίαν, ἡ ἡγεμονία ἐγένετο ἀνεξάρτητος. Τῷ 1865 ἡνώθη τελωνειακῶς μὲ τὴν Γαλλίαν. Τῷ 1861 ὁ ἡγεμὼν τοῦ Μονακὸ Κάρολος Γ' παρεχώρησεν εἰς τὴν Γαλλίαν τὴν Ροκεμπρὺν καὶ τὴν Μαντόν, ἐπὶ ἀποζημιώσει 4.000.000 φράγκων. Ἀπὸ τῆς 17 Σεπτεμβρίου 1918 περιῆλθεν ἐκ νέου ὑπὸ τὴν γαλλικὴν προστασίαν. Κατὰ τὴν ἐπελθοῦσαν συμφωνίαν ἡ συγκατάθεσις τῆς Γαλλίας εἶναι ἀπαραίτητος διὰ τὴν σύναψιν συνθηκῶν καὶ διὰ τὴν διακανονισμὸν τῆς διαδοχῆς τοῦ θρόνου (βλ. καὶ *Μονακό, ἡγεμονικὸς οἶκος τοῦ*—). Μ. Δ. Β.

— **Μονακό, *ἡγεμονικὸς οἶκος τοῦ* —.** Πριγκιπικὸς οἶκος καταγόμενος ἐκ τῆς οἰκογενείας τῶν πατρικίων Γκριμάλντι τῆς Γενούης καὶ ἡγεμονεύσας τοῦ Μονακὸ ἀπὸ τοῦ Ι' αἰῶνος μέχρι σήμερον, μὲ μικρὰς μόνον διακοπάς (βλ. καὶ *Μονακό [Ἱστορ.]*). Ὁ τελευταῖος ἄρρην γόνος τῷ 1731 ἀπεβίωσε τῶν Γκριμάλντι *Ἀντώνιος* ἀπέθανε ἄνευ ἄρρενος διαδόχου, ἕνεκα δὲ τούτου ἡ διαδοχὴ τοῦ θρόνου περιῆλθεν εἰς τὴν θυγατέρα αὐτοῦ *Λουΐζαν - Ἱππολύτην*, ἡ ὁποία τῷ 1715 εἶχε νυμφευθῆ τὸν Ἰάκωβον Φραγκῖσκον Λεονάρδον τοῦ Τοριννὶ Ὀ Γκουαγιὸν ντὲ Ματινιόν, κόμητα τοῦ Τοριννί, ὅστις, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πενθεροῦ του, ἔλαβε τὸ ὄνομα τῶν *Γκριμάλντι* καὶ ἐγένετο ὁ κληρονόμος τῆς ἡγεμονίας. Οἱ κατόπιν ἡγεμόνες τοῦ

Digitized by Google

νακὸ ἕλκουν τὴν καταγωγήν των ἐξ αὐτοῦ καὶ φέρουν τὸ ὄνομα τῶν πριγκίπων τοῦ Γκουαγιὸν ντὲ Ματινιὸν - Γκριμάλντι. Οἱ κυριώτεροι τῶν πριγκίπων τοῦ Μονακὸ εἶναι οἱ ἑξῆς: —1) *Γκριμάλντι Δ'*, ἀποθανὼν τῷ 1218. Ὑπῆρξε ναύαρχος τοῦ στόλου τῶν σταυροφόρων, ὁ ὁποῖος κατέλαβε τὴν Δαμιέττην καὶ ἀπέθανε κατὰ τὴν ἐκστρατείαν. —2) *Λανφράνκο* ἢ *Φραγκῖσκος,* ἀποθανὼν τῷ 1273 ἢ 1293. Ἀνῆκεν εἰς τοὺς Γουέλφους, ἐπολέμησε τὸν αὐτοκράτορα Φρειδερῖκον Β' καὶ ὑπῆρξεν ὁ τρόμος τῶν Γιβελίνων, γενόμενος τῷ 1265 κυβερνήτης τῆς Προβηγκίας καὶ ἀνακτήσας τὸ Μονακὸ ἀπὸ τοὺς Γενουηνσίους. —3) *Ρανιέρος Β'*, ἀποθανὼν τῷ 1330. Ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν βασιλέα τῆς Γαλλίας Φίλιππον τὸν Ὡραῖον, ὁ ὁποῖος ὠνόμασεν αὐτὸν ναύαρχον τῆς Γαλλίας καὶ παρεχώρησεν εἰς αὐτὸν τὰ φέουδα τῆς Κάνι καὶ Βιλλανουέβα. Κατὰ τὴν ἀπουσίαν του εἶχον καταλάβει τὸ Μονακὸ οἱ Σπίνολα, τοὺς ὁποίους ἐπιστρέψας ἐξεδίωξε.—4) *Κάρολος Α'*, ὁ ἐπικαλούμενος *Μέγας*. Συνῆψε συνθήκην μὲ τοὺς Ντόρια καὶ Σπίνολα, κατόπιν τῆς ὁποίας ὁ οἶκος Γκριμάλντι παρέμεινεν ὁριστικῶς κύριος τοῦ Μονακό, καὶ διετέλεσε ναύαρχος τῆς Γενούης καὶ τῆς Γαλλίας, πολεμήσας τοὺς Ἄγγλους καὶ τοὺς Καταλανούς. Ἀπέθανε τῷ 1363. —5) *Ὀνωρᾶτος Α'* (1518—1581). Ὑπηρέτησε τὸν Κάρολον Ε', ἔλαβε μέρος εἰς τὴν κατάληψιν τῆς Λὰ Γκολὲτ καὶ τῆς Τύνιδος (1535) εἰς τὴν ἄμυναν τῆς Μάλτας (1535) καὶ εἰς τὴν ναυμαχίαν τῆς Ναυπάκτου (1571). — 6) *Ὀνωρᾶτος Β'* (1594—1662). Τῷ 1617 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος καὶ τῷ 1641 συνῆψε μυστικὴν συμμαχίαν μὲ τὸν βασιλέα τῆς Γαλλίας Λουδοβῖκον ΙΓ', κατόπιν τῆς ὁποίας ἐπετέθη διὰ νυκτὸς κατὰ τῆς ἐν Μονακὸ ἱσπανικῆς φρουρᾶς, τὴν ὁποίαν ἐξεδίωξε καὶ ἔθεσε τὴν ἡγεμονίαν ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς Γαλλίας: Ὁ Λουδοβῖκος ΙΓ' ἀντήμειψεν αὐτὸν μὲ πολλὰς τιμάς, τοῦ ἔδωσε δὲ τὸν τίτλον τοῦ ὁμοτίμου τῆς Γαλλίας καὶ τὸ δουκᾶτον τοῦ Βαλεντινουά.—7) *Ὀνωρᾶτος Γ'*, ἀποθανὼν τῷ 1701. Ἔλαβε μέρος εἰς τοὺς πολέμους κατὰ τῆς Ὁλλανδίας, συνέταξε τῷ 1678 τὰ «Statuti del Principato de Monaco» καὶ τῷ 1699 ἐχρημάτισε πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ. —8) *Ἀντώνιος*. Διεκρίθη εἰς τὰς πολιορκίας τῆς Φίλιππσμπουργκ καὶ τῆς Ναμούρ. Ἀπέθανε τῷ 1731 ἄνευ ἄρρενος διαδόχου καὶ τὸν διεδέχθη ἡ θυγάτηρ του Λουΐζα - Ἱππολύτη. Μετ' αὐτοῦ ἐσβέσθη ὁ ἄρρην κλάδος τοῦ οἴκου τῶν Γκριμάλντι, συνεχισθεὶς ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ του, πρίγκιπος τοῦ Γκουαγιὸν ντὲ Ματινιόν. —9) *Ὀνωρᾶτος Ε'* (1778—1841). Ἐκυβέρνησε τὴν χώραν εἰρηνικῶς, ἀναδιωργάνωσε τὰς ὑπηρεσίας, κατεσκεύασεν ὁδοὺς καὶ προσεπάθησε νὰ αὐξήσῃ τὴν παραγωγήν.—10) *Φλορεστὰν* (1785—1856). Διεδέχθη τὸν ἀδελφόν του Ὀνωρᾶτον Ε', ἀποθανόντα ἄτεκνον, καὶ διεκρίθη διὰ τὴν διοργάνωσιν τῶν σχολείων καὶ τὴν παραχώρησιν τῆς ἐλευθερίας τοῦ ἐμπορίου. Τὸ ἐπαναστατικὸν ρεῦμα τοῦ 1848 προὐκάλεσεν ἰσχυρὰν ἐξέγερσιν ἐν τῇ ἡγεμονίᾳ, ἰδίως δὲ ἐν Μαντόν, ἡ ὁποία ἐκηρύχθη ἐλευθέρα πόλις. Τῶν ταραχῶν τούτων ἐπωφεληθέντες οἱ Πεδεμόντιοι κατέλαβον τὴν Μαντὸν καὶ τὴν Ρόκεμπρυν, τὰς ὁποίας ὅμως ὑπεχρεώθησαν νὰ ἐγκαταλείψουν μετὰ τὴν καταστροφήν, ἣν ὑπέστησαν ἐν Νοβάρᾳ. —11) *Κάρολος Γ'* (1818—1889). Εἶναι ὀνομαστὸς ὡς παραχωρήσας εἰς ἀνώνυμον ἑταιρείαν τὸ προνόμιον τῶν λουτρῶν καὶ τοῦ καζίνου τοῦ Μόντε - Κάρλο, τὸ ὁποῖον βραδύτερον ἀπετέλεσε τὴν σημαντικωτέραν ἐπιχείρησιν καὶ τὸν μοναδικὸν πόρον τῆς ἡγεμονίας. Ἐπ' αὐτοῦ αἱ πόλεις Μαντὸν καὶ Ρόκεμπρυν περιῆλθον εἰς τὴν Γαλλίαν. —12) *Ἀλβέρτος Α'* (1848—1922) (βλ. λ. *Ἀλβέρτος Α'*, ἡγεμὼν τοῦ Μονακό). —13) *Λουδοβῖκος Β'*, γεννηθεὶς τῷ 1870. Διεδέχθη εἰς τὸν θρόνον τὸν ἀποθανόντα πατέρα του Ἀλβέρτον Α' τῷ 1922. Μ. Δ. Β.

**μονάκριβος,** *—η, —ο*· ὁ μόνος καὶ ἀκριβὸς (προσφιλής), χαρακτηριστικὸν μονογενοῦς τέκνου: «πάντρεψε τὴ μονάκριβή της κόρη».

**μονακτινελλίδαι** (οἱ) (Monactinellidae) *[Ζωολ.]*. Κατηγορία σπόγγων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πυριτοσπόγγων*, περιλαμβάνουσα σπόγγους διαφόρου μεγέθους μὲ σκελετὸν βελονοειδῆ πυριτικῆς συστάσεως. Ἀπαντῶσιν εἰς πλείστας θαλάσσας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μονακτινελλιδῶν* εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς καμβρίου τοῦ παλαιοζωϊκοῦ. Τὰ λείψανα ταῦτα εἶναι κυρίως μοναξονικαὶ βελόναι, αἱ ὁποῖαι εὑρίσκονται συχνὰ κατὰ μεγάλα πλήθη ἐντὸς διαφόρων στρωμάτων (π. χ. κερατολίθων τῶν Ἄλπεων). Σπανίως εὑρίσκονται τέλειοι συνημολογημένοι σκελετοί. Ἂν αἱ βελόναι ἔχουν ἰδιαιτέραν χαρακτηριστικὴν μορφήν, δύνανται νὰ χρησιμεύσουν ὡς βάσις προσδιορισμοῦ τοῦ γένους τῶν σπόγγων, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνήκουν. Γ. Κ. Γ.

**μοναλκυλυδραζῖναι** (αἱ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὀργανικαὶ ἑνώσεις λαμβανόμεναι ἐκ τῆς *ὑδραζίνης* δι' ἀντικαταστάσεως ἑνὸς ὑδρογόνου ὑπ' ἀλκυλίου. Ἔχουσι τὸν γενικὸν τύπον $RNH.NH_2$. Σ. Γ.

**Μοναλντέσκι** (Monaldeschi) *Ἰωάννης ντὲ —*. Καταγόμενος ἐξ ἰταλικῆς οἰκογενείας τοῦ Ὀρβιέτο, εἰσῆλθε νέος εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Χριστίνης, βασιλίσσης τῆς Σουηδίας, ἐγένετο ἀρχισταβλάρχης, συνώδευσεν αὐτὴν εἰς τὰς μετὰ τὴν παραίτησίν της περιοδείας καὶ συνέζησε μετ' αὐτῆς ἐρωτικῶς. Κατὰ τὴν ἐν Γαλλίᾳ διαμονήν της ἡ Χριστίνα διέταξε νὰ θανατωθῇ εἰς τὰ ἀνάκτορα τοῦ Φονταινεμπλὼ (1657) ὑπὸ τὴν πρόφασιν τῆς προδοσίας. Τὸ ἔγκλημα ἀπεδόθη εἰς ζηλοτυπίαν. Κατά τινας ὁ Μοναλντέσκι εἶχε συντάξει λίβελλον ἐναντίον τῆς εὐεργέτιδος καὶ ἐρωμένης του. Τ. Δ.

**Μονάλντι** (Monaldi). Φιλέλλην Ἰταλός, κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα καὶ λαβὼν μέρος εἰς τὴν παρὰ τὴν Ἄρταν μάχην, ἐν ᾗ αἰχμαλωτισθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐφονεύθη τῇ 20 Ἰουλίου 1822. Τ. Ε. Ε.

**Μόναλος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Β. Σικελίας, ἐκβάλλων κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. Γ, 4, 2) μεταξὺ τῶν πόλεων Ἀλαίσης (νῦν Pittineo) καὶ Κεφαλοιδίου (νῦν Cefalu). Ἄγνωστος ἄλλοθεν. Α. Θ. Σ.

**μόνανδρος** (ἡ) (Aphelandra) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀκανθοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἀειθαλεῖς, ἰθαγενεῖς τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν 50 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος καὶ ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον, γνωστότερα εἶναι ἡ *μόνανδρος ἡ στικτὴ* (Aphelandra punctata) καὶ *μόνανδρος ἡ ὀξύφυλλος* (Aphelandra acutifolia), καλλιεργούμεναι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης ὡς κοσμητικὰ φυτά. Δ. Ν. Π.

**μονανθῆ** (τὰ) *[Βοτ.]*. Καλοῦνται τὰ φυτά, ἅτινα φέρουσιν ἓν καὶ μόνον ἄνθος.

**μονανθὴς** (ὁ) (Monanthes) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σαρκοφυλλιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὸ Μαρόκκον καὶ τὰς Καναρίους νήσους. Δ. Ν. Π.

**μονανθία** (ἡ) (Monanthia) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων ἡμιπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κόρεων* τῆς οἰκογενείας τῶν *λεπτοποδιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 20 εἴδη, διαδεδομένα εἰς ὁλόκληρον τὴν γῆν. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μονανθία ἡ πεποικιλμένη* (Monanthia ornata), ἥτις ἔχει μικρὸν μῆκος, σῶμα πεπλατυσμένον ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω καὶ ᾠοειδές, κεφαλὴν μικρὰν καὶ τριγωνικήν, προθώρακα τριγωνικὸν κατὰ τὸ πρόσθιον τμῆμά του καὶ τετραγωνικὸν κατὰ τὸ ὀπίσθιον, κοιλίαν ἐπιμήκη καὶ ἀπεστρογγυλωμένην, κεραίας παχείας καὶ ἀρκετὰ ἐπιμήκεις καὶ πόδας λεπτοτάτους. Ὁ χρωματισμός της εἶναι μελανοκυανοῦς μετὰ χρυσολεύκων στιγμάτων καὶ ποικιλμάτων ἐπὶ τῆς ἄνω ἐπιφανείας τοῦ σώματος. Ἐνδιαιτᾶται κυρίως ἐπὶ φυτῶν. Δ. Ν. Π.

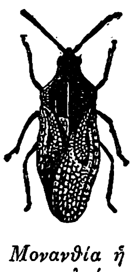

*Μονανθία ἡ πεποικιλμένη.*

**μοναξιὰ** (ἡ)· τὸ νὰ μένῃ, νὰ ζῇ τις μόνος, μόνωσις: «τὸν ἔλειωσε ἡ μοναξιά»· || ὁ τόπος ὅπου δύναταί τις νὰ διαμένῃ μόνος, ἡ ἐρημία: «εἶναι μοναξιὰ καὶ φοβοῦμαι».

**μονάξων** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Λέγεται ἐπὶ τῶν κρυστάλλων καὶ ἐν γένει τῆς κρυσταλλικῆς ὕλης, εἰς τὴν ὁποίαν κατὰ μίαν μόνον ὡρισμένην διεύθυνσιν προσπίπτουσα ἡ φωτεινὴ ἀκτὶς δὲν ὑφίσταται διπλῆν διάθλασιν, ἐνῷ καθ' οἱανδήποτε ἄλλην ὑπόκειται εἰς τὸ φαινόμενον τοῦτο. Ἡ διεύθυνσις αὕτη καλεῖται ὀπτικῶς *ἄξων*. Ὁ χαρακτηρισμὸς οὗτος ἀποδίδεται εἰς τὴν ἀνισότροπον κρυσταλλικὴν ὕλην, εἰς τὴν ὁποίαν καὶ μόνην παρατηρεῖται τὸ φαινόμενον τῆς διπλῆς διαθλάσεως, διότι εἰς τὴν ἰσότροπον κρυσταλλικὴν ὕλην δὲν παρατηρεῖται διπλῆ διάθλασις. Ἀλλ' ἡ ἀνισότροπος κρυσταλλικὴ ὕλη δὲν εἶναι μόνον μοναξονική· εἶναι καὶ διαξονική, ὅταν παρουσιάζῃ δύο ὀπτικοὺς ἄξονας, ἤτοι δύο ὡρισμένας διευθύνσεις, καθ' ἃς προσπίπτουσα ἡ φωτεινὴ ἀκτὶς ἐπὶ τῆς ὕλης ταύτης δὲν ὑφίσταται διπλῆν διάθλασιν. Μοναξονικὴ εἶναι ἡ ἀνισότροπος ὕλη, ἡ ὁποία κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ἑξαγωνικὸν καὶ τὸ τετραγωνικὸν σύστημα, διαξονικὴ ἡ κρυσταλλουμένη εἰς τὸ ρομβικόν, μονοκλινὲς καὶ τρικλινές. Εἰς τοὺς μονάξονας κρυστάλλους ὁ ὀπτικὸς ἄξων συμπίπτει πρὸς τὸν κυριώδη κρυσταλλογραφικὸν ἄξονα. Εἰς τοὺς διάξονας κρυστάλλους εἷς ἐκ τῶν κρυσταλλογραφικῶν ἀξόνων διχοτομεῖ τὴν γωνίαν, τὴν ὁποίαν σχηματίζουν οἱ δύο ὀπτικοὶ ἄξονες. Γ. Β.

**Μονάοιδα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Ἰουερνικοῦ ὠκεανοῦ, ἡ ἄλλως *Μοννάουδα* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**μοναρδία** (ἡ) (Monarda) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *χειλανθῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, ἀρωματικὰς ἢ κοσμητικάς, ἰθαγενεῖς τῶν βορείων τῆς Ἀμερικῆς χωρῶν. Ἐκ τῶν 10 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ εἶδος, γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *μοναρδία ἡ δίδυμος* (Monarda didyma), *μοναρδία ἡ στικτὴ* (Monarda maculata) καὶ *μοναρδία ἡ συριγγώδης* (Monarda fistulosa). Ἅπαντα εἶναι κοσμητικὰ καὶ ἀρωματικά. Τὸ πρῶτον παρέχει ἐκ τοῦ ἀφεψήματος τῶν φύλλων του φαρμακευτικὸν εἶδος τείου, τὰ δὲ ἄλλα δύο χρησιμοποιοῦνται εἰς τὴν μυρεψικήν. Δ. Ν. Π.

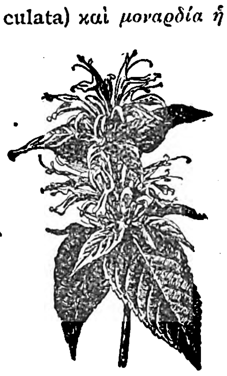

*Μοναρδία.*

**Μοναρίνα** *[Ἀρχ. Γεωγραφ.]*. Νῆσος τοῦ Ἰουερνικοῦ ὠκεανοῦ, ἡ ἄλλως *Μοννάουδα* (βλ. λ.).

**μονάρμενον** *πλοῖον* *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *μονόστηλον*.

**μονάρχης** (ὁ)· ὁ μόνος ἄρχων, ὁ ἀνώτατος ἄρχων τῆς πολιτείας, βασιλεύς, αὐτοκράτωρ: «ἀγαθὸς —, δίκαιος μονάρχης».

**μονάρχης** (ὁ) (Monarches) *[Ζωολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀναρριχητικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *δρυκολαπτιδῶν*, περιλαμβάνον ἱκανοῦ μεγέθους δρυκολάπτας. Ἐκ τῶν κυριωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μονάρχης ὁ ποικιλόχρους* (Monarches variegatus), ὅστις ἔχει μῆκος περὶ τὰ 30 ἑκατοστόμετρα, κεφαλὴν ἀρκετὰ μεγάλην, ἀπολήγουσαν εἰς μετρίου μεγέθους κωνικὸν ράμφος, σῶμα εὔρωστον, πτέρυγας μετρίου μήκους καὶ ὀξυλήκτους, οὐρὰν μακροτάτην, πόδας λεπτοὺς καὶ μακροὺς καὶ χρῶμα μελανοκυανοῦν κατὰ τὴν ράχιν μὲ λευκοαργυρώδεις ἀκανονίστους κηλῖδας ἐπὶ τῶν πλευρῶν, τοῦ λαιμοῦ καὶ τοῦ ἀνωτέρου τμήματος τῶν πτερύγων καὶ κοιλίαν ὑπόλευκον. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Ὠκεανίαν. Δ. Ν. Π.

*Μονάρχης.*

**μοναρχία** (ἡ)· ἡ ἀρχὴ τοῦ ἑνὸς καὶ μόνου ἄρχοντος· || τὸ πολίτευμα, καθ' ὃ ἄρχει εἷς μόνος, ὁ μονάρχης· || καθόλου, κράτος μοναρχικόν.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ὑπὸ τὴν λέξιν *μοναρχία* νοοῦμεν ἀφ' ἑνὸς μὲν τὴν πολιτείαν, τῆς ὁποίας τὸ πολίτευμα εἶναι μοναρχικόν, ἀφ' ἑτέρου δὲ καὶ ἰδίως αὐτὸ τοῦτο τὸ μοναρχικὸν πολίτευμα. Ὑπὸ τὴν ἔννοιαν ταύτην μοναρχία εἶναι τὸ πολίτευμα ἐκεῖνο, καθ' ὃ φορεὺς τῆς πολιτικῆς ἐξουσίας ἢ ἀνώτατον ὄργανον τῆς πολιτείας εἶναι ἓν φυσικὸν πρόσωπον, ὁ μονάρχης.

Ἡ μοναρχία εἶναι τὸ ἀρχαιότατον τῶν πολιτευμάτων, καὶ ἂν ἐξαιρέσῃ τις τοὺς ἀρχαίους γερμανικοὺς λαούς, οἱ ὁποῖοι ὡς πρῶτον πολίτευμα ἐγνώρισαν τὴν δημοκρατίαν, πάντες σχεδὸν οἱ λοιποὶ λαοὶ ἐκυβερνήθησαν κατ' ἀρχὰς μοναρχικῶς. Τοῦτο τοὐλάχιστον μαρτυρεῖ ἡ ἱστορία, τόσον τῶν Ἀνατολικῶν λαῶν καὶ τῶν Αἰγυπτίων, ὅσον τῶν Ἑλλήνων καὶ Ρωμαίων. Παρὰ τοῦ Ἀριστοτέλους μανθάνομεν ὅτι ὑπῆρχον ἐν τῇ ἀρχαιότητι πέντε διάφορα εἴδη μοναρχικοῦ πολιτεύματος: α') Ἡ βασιλεία τῶν ἡρωϊκῶν χρόνων, ἐλευθέρως ἀναγνωρισθεῖσα καὶ περιωρισμένη εἰς ὡρισμένας ἁρμοδιότητας, καθότι ὁ βασιλεὺς εἶναι στρατηγός, δικαστὴς καὶ τῶν πρὸς τοὺς θεοὺς κύριος. β') Ἡ βαρβαρικὴ βασιλεία, ἀπόλυτος, κληρονομικὴ καὶ ἔχουσα ὡς βάσιν τὸν νόμον. γ') Ἡ αἰσυμνητεία βασιλεία, ἡ ὁποία ἦτο τυραννὶς αἱρετή· δ') Ἡ λακωνική, ἡ ὁποία ἦτο κυρίως στρατηγία κληρονομικὴ καὶ ἰσόβιος· καὶ τέλος ε') Ἡ παμβασιλεία, καθ' ἣν ὁ βασιλεὺς ἦτο κύριος τῶν πάντων καὶ ἤσκει τὴν ἀνωτάτην ἐξουσίαν ἐφ' ὅλων τῶν ὑποθέσεων. Ἡ μοναρχία ἐξηκολούθησε νὰ εἶναι τὸ κρατοῦν πολίτευμα μέχρι τῆς ΣΤ' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος, ὅτε, βαθμηδόν, εἴτε λόγῳ τῶν ἰδίων της λαθῶν, εἴτε λόγῳ τοῦ αὐξανομένου αἰσθήματος τῆς ἐλευθερίας παρὰ τῷ λαῷ, ἤρχισε νὰ παραμερίζεται, ἀφίνουσα τὴν θέσιν της εἰς τὴν δημοκρατίαν. Μόλις κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ Χριστιανισμοῦ ἤρχισε πάλιν ν' ἀναφαίνεται καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ μεσαίωνος ἐπεβλήθη καθ' ὅλην τὴν γραμμήν. Εἰς τὴν νέαν της ἐπικράτησιν συνέτειναν ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ ἐκ τῶν συνεχῶν πολέμων δημιουργία ἰσχυρῶν κρατῶν καὶ ἡ κατ' αὐτοὺς ἀνάδειξις μεγάλων ἀνδρῶν, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ Ἐκκλησία. Ὑπὸ τὴν ἠθικὴν δύναμιν καὶ προστασίαν τῆς τελευταίας ὁ μονάρχης κατέστη ὁ ἀπόλυτος κυρίαρχος ἐν τῇ πολιτείᾳ, ὁ «ἐλέῳ Θεοῦ βασιλεύς», ὁ «ἐπὶ τῆς γῆς ἐκλεκτὸς τοῦ Θεοῦ», ὁ ὁποῖος ἀσκεῖ τὴν ἀνωτάτην ἐξουσίαν ἐν τῇ πολιτείᾳ, οὐχὶ συμφώνως πρὸς τὰς ἀνάγκας τοῦ λαοῦ, ἀλλὰ κατὰ τὰς ἐμπνεύσεις τῆς θείας προνοίας, ἀπέναντι τῆς ὁποίας εἶναι καὶ μόνον ὑπεύθυνος. Ὑπὸ τὴν ἀπόλυτον ταύτην μορφὴν διετηρήθη ἡ μοναρχία μέχρι τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ὅτε ἡ ἀναγεννωμένη ἑλληνικὴ φιλοσοφία ἤρχισε νὰ διασείῃ τὰ θεμέλιά της. Οἱ φιλόσοφοι τῆς ἐποχῆς τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ αἱ ἐπα-



Digitized by Google

κολουθήσασαι μεγάλαι λαϊκαὶ ἐπαναστάσεις ἐπετάχυναν τὴν πτῶσίν της, καὶ εἰς ἄλλας μὲν πολιτείας κατηργήθη παντελῶς, εἰς ἄλλας δὲ οὐσιωδῶς περιωρίσθη.

Ἡ σημερινὴ ἐπιστήμη διακρίνει διαφόρους ὑποδιαιρέσεις τῆς μοναρχίας, βάσιν ἔχουσα εἴτε τὴν διαφορὰν τοῦ τρόπου τῆς καταλήψεως τοῦ θρόνου, εἴτε τὴν διαφορὰν τοῦ εἴδους τῆς κυβερνήσεως. Ὑπὸ τὴν πρώτην ἔποψιν ὑποδιαιρεῖται ἡ μοναρχία εἰς *κληρονομικὴν* καὶ *αἱρετήν*, ὑπὸ τὴν δευτέραν δὲ εἰς *ἀπόλυτον* ἢ *ἀπεριόριστον* καὶ εἰς *περιωρισμένην*. *Κληρονομικὴ* εἶναι ἐκείνη ἡ μοναρχία, καθ' ἣν τὸ στέμμα περιέρχεται διαδοχικῶς μεθ' ἑκάστην χηρείαν τοῦ θρόνου εἰς τὰ μέλη τῆς ἰδίας οἰκογενείας, ἀδιάφορον ἂν διὰ τὴν τοιαύτην πλήρωσιν τοῦ θρόνου καλοῦνται μόνον τὰ ἄρρενα μέλη, ἢ κατὰ πρῶτον λόγον τὰ ἄρρενα καὶ κατὰ δεύτερον τὰ θήλεα, καὶ ἀδιάφορον ἂν προτιμῶνται οἱ κατ' εὐθεῖαν τῶν ἐκ πλαγίου συγγενῶν. *Αἱρετὴ* δὲ μοναρχία εἶναι ἐκείνη, καθ' ἣν ὁ μονάρχης ἐκλέγεται ἐξ ὡρισμένων ὀργάνων τῆς πολιτείας μεθ' ἑκάστην χηρείαν τοῦ θρόνου. Ὁ τοιοῦτος αἱρετὸς μονάρχης ἔχει τὴν ἰσοβιότητα καὶ τὸ ἀνεύθυνον τοῦ κληρονομικοῦ, καθίσταται δὲ κυρίαρχος, ὡς καὶ ὁ κληρονομικός, διὰ μόνης τῆς πράξεως τῆς ἐκλογῆς του. Ἐκ τῶν δύο τούτων εἰδῶν τῆς μοναρχίας τὸ πρῶτον εἶναι τὸ συνηθέστερον. Ἐξ ἄλλου, *ἀπόλυτος* μοναρχία εἶναι ἐκεῖνο τὸ μοναρχικὸν πολίτευμα, καθ' ὃ ὁ μονάρχης εἶναι ὁ ἀποκλειστικὸς φορεὺς τῆς πολιτικῆς ἐξουσίας, τὸ μόνον ἄμεσον ὄργανον τοῦ κράτους· συγκεντρώνει ἐν ἑαυτῷ ὁλόκληρον τὴν πολιτικὴν ἐξουσίαν, χωρὶς νὰ περιορίζεται ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς ἐξουσίας ταύτης ὑφ' οἱουδήποτε νομικοῦ περιορισμοῦ. Ἡ τοιαύτη μοναρχία εἶναι ταυτόσημος πρὸς τὴν δεσποτείαν, ὁ δὲ μονάρχης, ὡς μὴ δεσμευόμενος ὑπὸ περιορισμοῦ τινος, κυβερνᾷ κατὰ βούλησιν καὶ συνήθως ἄνευ Συντάγματος, ὅπου δὲ ὑπάρχει τοιοῦτο εἶναι δημιούργημα αὐτοῦ τοῦ ἰδίου καὶ ἐκφράζει τὴν ἀποκλειστικὴν θέλησίν του, ὅπως καὶ τὰ λοιπὰ ὄργανα τοῦ κράτους εἶναι ὄργανα τῆς ἀπολύτου θελήσεώς του καὶ μόνον μὲ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν διαταγῶν του ἐμπεπιστευμένα. Ἀπόλυτος μοναρχία ἦτο ἡ Ἑλλὰς ἐν τῇ πρώτῃ περιόδῳ τῆς βασιλείας τοῦ Ὄθωνος, ἀπὸ τοῦ 1833 μέχρι τοῦ 1843. Σήμερον τὸ εἶδος τοῦτο τῆς μοναρχίας σχεδὸν ἐξέλιπεν, ἀντικατασταθὲν ἢ ὑπὸ τῆς δημοκρατίας ἢ ὑπὸ τῆς περιωρισμένης μοναρχίας. Ἡ *περιωρισμένη* μοναρχία ἔχει κοινὸν γνώρισμα μὲ τὴν ἀπόλυτον ὅτι καὶ ἐν ἐκείνῃ, ὅπως καὶ ἐν ταύτῃ, ἡ πολιτικὴ ἐξουσία κεῖται εἰς τὰς χεῖρας ἑνὸς μόνον προσώπου, τοῦ μονάρχου, οὗτος ὅμως ἐν τῇ περιωρισμένῃ μοναρχίᾳ, ἵνα ἐγκύρως ἀσκήσῃ τὴν πολιτικὴν ἐξουσίαν, ἰδίᾳ ἐπὶ νομοθετικῶν ζητημάτων, ἔχει ἀνάγκην τῆς συνεργασίας ὡρισμένων προσώπων, τῶν ὁποίων ἡ γνώμη ὁτὲ μὲν φέρει συμβουλευτικὸν χαρακτῆρα, ὁτὲ δὲ ἐπιτακτικόν. Οὕτω, ὁ μονάρχης ἐν τῇ περιωρισμένῃ μοναρχίᾳ, καίτοι φορεὺς τῆς πολιτικῆς ἐξουσίας, περιορίζεται κατὰ τὴν ἐνάσκησιν ταύτης. Τὸ εἶδος τοῦ περιορισμοῦ εἶναι ἀδιάφορον διὰ τὴν ἔννοιαν τῆς περιωρισμένης μοναρχίας, ἔχει ὅμως σημασίαν διὰ τὰς περαιτέρω ὑποδιαιρέσεις αὐτῆς. Τοιαῦται ὑποδιαιρέσεις εἶναι ἡ *φεουδαλικὴ* μοναρχία, ἡ *συνταγματικὴ* καὶ ἡ *κοινοβουλευτικὴ* μοναρχία.

α') Ἡ *φεουδαλικὴ* μοναρχία εἶναι ἡ πρώτη μορφὴ τῆς περιωρισμένης μοναρχίας καὶ ἀνεφάνη κατὰ τὸν μεσαίωνα πρὸς συμβιβασμὸν τῆς μεταξὺ τοῦ μονάρχου καὶ τοῦ λαοῦ ὑπαρχούσης ἀντιθέσεως. Ὁ μονάρχης καὶ ὁ λαὸς ἕδρων κατ' ἀρχὰς ἐν τῷ κράτει ὡς ἀνεξάρτητοι ἀπέναντι ἀλλήλων δυνάμεις, ὧν αἱ ἀμοιβαῖαι σχέσεις ἐρρυθμίζοντο διὰ συνθήκης. Δυνάμει τῆς συνθήκης ταύτης ἵστατο παραπλεύρως τοῦ μονάρχου συμβούλιον προσώπων, τὸ ὁποῖον εἰς πολλὰς κυβερνητικὰς πράξεις, καὶ ἰδίως προκειμένης ἐπιβολῆς φόρου, εἶχε παρὰ τῷ μονάρχῃ ψῆφον συμβουλευτικὴν ἢ ἐπιτακτικήν. Ἡ σύνθεσις τοῦ συμβουλίου τούτου ἦτο διάφορος εἰς τὰ διάφορα κράτη καὶ κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχάς, καὶ ἀπετελεῖτο εἴτε ἀπὸ τὴν τάξιν τῶν κληρικῶν, εἴτε τῶν ἱπποτῶν, εἴτε τῶν φεουδαρχῶν, εἴτε τῶν στρατηγῶν, εἴτε καὶ ἀπὸ τὴν τάξιν τῶν ἀγροτῶν. Ἐπίσης διάφορος ἦτο καὶ ἡ δύναμις αὐτοῦ ἀπέναντι τοῦ στέμματος, διότι ἄλλοτε ὑπερεῖχον αἱ τάξεις, ἄλλοτε δὲ τὸ στέμμα. Ἡ σχέσις τῶν τάξεων τούτων πρὸς τὸν μονάρχην δὲν ἦτο σχέσις ὀργάνου κράτους πρὸς ἕτερον ὄργανον, ἀλλὰ σχέσις δύο ἐξ ἴσου πρωτογενῶν καὶ ἐξ ἴσου ἀνεξαρτήτων ὑποκειμένων δικαίου, ρυθμισθεῖσα διὰ συνθήκης. Ὅπως δὲ ὁ μονάρχης, οὕτω καὶ αἱ ἑνώσεις τῶν τάξεων ἐνήργουν ἐν τῷ κράτει ἐξ ἰδίου δικαίου καὶ ὡς ἀντιπρόσωποι τῶν συμφερόντων τῆς τάξεως, τὴν ὁποίαν ἀντεπροσώπευον. Ἦσαν κράτος ἐν κράτει, καὶ ὅπως ἠδύναντο νὰ συνθηκολογοῦν μετὰ τοῦ μονάρχου, οὕτως ἠδύναντο καὶ νὰ πολεμοῦν. Εἶχον ἰδίαν διοίκησιν, ἰδίᾳ στρατιωτικὴν καὶ οἰκονομικὴν ὀργάνωσιν, ἐνίοτε δὲ καὶ ἰδίους ἀντιπροσώπους παρὰ ταῖς ξέναις αὐλαῖς. Ἡ φεουδαλικὴ μοναρχία, κυριαρχήσασα γενικῶς ἐν Εὐρώπῃ κατὰ τὸν μεσαίωνα, ἐξέλιπε βαθμηδόν, τεθεῖσα ἐκποδὼν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, καὶ παρεχώρησε τὴν θέσιν της εἰς τὴν συνταγματικὴν μοναρχίαν.

β') Ἡ *συνταγματικὴ* μοναρχία, ἀναπτυχθεῖσα καὶ ἐξελιχθεῖσα κυρίως ἐν Ἀγγλίᾳ, παριστᾷ τὸν τύπον ἑνιαίου κράτους, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν φεουδαλικὴν μοναρχίαν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ὁ μονάρχης καὶ αἱ τάξεις μὲ τὰ πρωτογενῆ καὶ αὐθύπαρκτα δικαιώματά των ἐχώριζον τὸ κράτος εἰς δύο ἡμίση. Αἱ τάξεις αὗται μετεμορφώθησαν σὺν τῷ χρόνῳ εἰς ὄργανα τῆς πολιτείας, δρῶντα ὄχι πλέον αὐτοδυνάμως, ἀλλ' ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ Συντάγματος, τὸ ὁποῖον ρητῶς κανονίζει τὴν ἁρμοδιότητα καὶ αὐτῶν καὶ τοῦ μονάρχου. Ἐν τῇ συνταγματικῇ μοναρχίᾳ καθιερώθη ἡ ἀρχὴ ὅτι ὁ μονάρχης ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς πολιτικῆς ἐξουσίας περιορίζεται ὑπὸ τοῦ καταστατικοῦ χάρτου τῆς πολιτείας, τοῦ Συντάγματος, ἀδιάφορον ἂν τοῦτο συνετάγη ὑπὸ τοῦ μονάρχου τῇ συνεργασίᾳ καὶ τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ λαοῦ, εἴτε παρεχωρήθη ὑπὸ μόνου τοῦ μονάρχου. Ὁ περιορισμὸς δὲ τοῦ μονάρχου ἔγκειται ἐν τούτῳ, ὅτι ὡρισμένας λειτουργίας τῆς πολιτείας δὲν ἀσκεῖ μόνος, ἀλλὰ τῇ συνεργασίᾳ ἄλλων ὀργάνων καὶ δὴ τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ λαοῦ καὶ τῶν ὑπουργῶν. Παρὰ τῷ μονάρχῃ, ὅστις ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι τὸ πρῶτον ἄμεσον ὄργανον τοῦ κράτους, ἵστανται καὶ ἄλλα ἄμεσα ὄργανα τοῦ κράτους, τὰ ὁποῖα ἀρύονται τὰ δικαιώματά των ἀπ' εὐθείας ἐκ τοῦ Συντάγματος. Τὰ ὄργανα ταῦτα, προκειμένων ἰδίᾳ νομοθετικῶν ζητημάτων, ἔχουν ἀπέναντι τοῦ μονάρχου ἐπιτακτικὴν ψῆφον καὶ ἀσκοῦν γενικῶς ἔλεγχον ἐπὶ τῆς ὅλης διοικήσεως. Ἐν τῇ συνταγματικῇ μοναρχίᾳ ἰσχύει ὡς θεμελιώδης βάσις ἡ ἀρχὴ καθ' ἥν, ἵνα αἱ κυβερνητικαὶ πράξεις τοῦ μονάρχου ἔχουν νομικὴν ἰσχύν, πρέπει νὰ συνοδεύωνται πάντοτε μὲ τὴν ὑπογραφὴν τοῦ ἁρμοδίου ὑπουργοῦ, καλύπτοντος δι' αὐτῆς τὸ ἀνεύθυνον τοῦ μονάρχου καὶ ἀναλαμβάνοντος τὴν εὐθύνην τῶν κυβερνητικῶν πράξεων. Ἡ ἐκλογὴ τῶν ὑπουργῶν εἶναι δικαίωμα τοῦ μονάρχου, οἱ ὑπουργοὶ ὅμως εἶναι ὑπεύθυνοι διὰ τὰς πράξεις των ἀπέναντι τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ λαοῦ. Ὅπως περιωρίσθη ὁ μονάρχης ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς νομοθετικῆς ἐξουσίας καὶ τῆς ἐκτελεστικῆς, οὕτω περιωρίσθη καὶ ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς διοικητικῆς ἐξουσίας. Ἡ δικαιοσύνη, ἡ ὁποία ἀπενέμετο ὑπὸ ὀργάνων τοῦ μονάρχου καὶ κατ' ἐπιταγὴν αὐτοῦ, κατέστη ἤδη αὐτοτελὴς καὶ ἀνεξάρτητος, ἀνεγνωρίσθη δ' ἐπίσης ὡς ἀρχὴ ἐν τῇ συνταγματικῇ μοναρχίᾳ ἡ ὕπαρξις ἀνεξαρτήτων ἀπὸ τοῦ μονάρχου δικαστηρίων. Παρ' ὅλους ἐν τούτοις τοὺς περιορισμοὺς τούτους, ἐξακολουθεῖ ὁ μονάρχης νὰ ἔχῃ ὑπερέχουσαν θέσιν ἀπέναντι τῆς λαϊκῆς ἀντιπροσωπείας καὶ νὰ εἶναι τὸ ἀνώτατον ὄργανον τοῦ κράτους, ἔχων, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν λαϊκὴν ἀντιπροσωπείαν, τῆς ὁποίας τὰ δικαιώματα ρητῶς ὑπὸ τοῦ Συντάγματος ὁρίζονται, ὄχι μόνον ἐκεῖνα τὰ δικαιώματα τὰ ὁποῖα ὑπὸ τοῦ Συντάγματος ἀνεγνωρίσθησαν αὐτῷ, ἀλλὰ καὶ πᾶν ἄλλο δικαίωμα, τὸ ὁποῖον ρητῶς δὲν ἐδόθη τῇ ἀντιπροσωπείᾳ τοῦ λαοῦ. Ὑπάρχει δηλαδὴ τεκμήριον ὑπὲρ τῆς ἁρμοδιότητος τοῦ μονάρχου. Ὑπὸ συνταγματικὴν μοναρχίαν ἐκυβερνήθη ἡ Ἑλλὰς ἀπὸ τοῦ 1844 μέχρι τοῦ 1863, ἡ Ἀγγλία μέχρι τοῦ 1841 καὶ τὰ πλεῖστα κράτη τοῦ παλαιοῦ γερμανικοῦ ὁμοσπονδιακοῦ κράτους μέχρι τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου.

γ') Τελευταῖον εἶδος περιωρισμένης μοναρχίας, ἀλλὰ μᾶλλον κατ' ὄνομα μοναρχία, εἶναι ἡ *κοινοβουλευτική*, ἄλλως λεγομένη «*δημοκρατικὴ βασιλεία*» ἢ «*βασιλευομένη δημοκρατία*». Αὕτη παρουσιάζει τὴν τελευταίαν ἐξέλιξιν τοῦ μοναρχικοῦ πολιτεύματος καὶ διεμορφώθη τὸ πρῶτον ἐν Ἀγγλίᾳ, ἰδίᾳ ἀπὸ τῆς πτώσεως τῆς κυβερνήσεως Melbourne. Κατὰ τὰ ἄλλα ταυτιζομένη, ἡ κοινοβουλευτικὴ μετὰ τῆς συνταγματικῆς μοναρχίας, ἔχει ἓν χαρακτηριστικόν, τὸ ὁποῖον μεταβάλλει οὐσιωδῶς τὴν μοναρχικὴν μορφὴν τοῦ πολιτεύματος, καὶ τόσον, ὥστε νὰ ὑπερισχύῃ ἐν αὐτῷ καταφανῶς ἡ δημοκρατικὴ ἀρχή. Καὶ τὸ χαρακτηριστικὸν τοῦτο εὑρίσκει τις εἰς τὴν θέσιν τῶν ὑπουργῶν ἀπέναντι τοῦ κοινοβουλίου, ἡ ὁποία θέσις ἀπαιτεῖ καὶ ὡρισμένην ἐνέργειαν ἐκ μέρους τοῦ μονάρχου. Ἐνῷ δηλαδὴ ὁ μονάρχης ἐν τῇ συνταγματικῇ μοναρχίᾳ ἐλευθέρως ἐκλέγει τοὺς ὑπουργοὺς καὶ ἄνευ οὐδενὸς περιορισμοῦ, ἵνα ἐπομένως οἱ ὑπουργοὶ διατηρήσουν τὰς θέσεις των, ἔχουν ἀνάγκην τῆς ἀποκλειστικῆς ἐμπιστοσύνης τοῦ μονάρχου, ἐδῶ εἶναι ὑποχρεωμένος, κατὰ τὴν ἐκλογὴν τῶν ὑπουργῶν, νὰ λαμβάνῃ ὑπ' ὄψει τὴν γνώμην τοῦ κοινοβουλίου καὶ μάλιστα τοῦ πλειοψηφοῦντος ἐν αὐτῷ κόμματος. Τὸ ἑκάστοτε ἐν τῷ κοινοβουλίῳ πλειοψηφοῦν κόμμα καὶ ἰδίᾳ ὁ ἀρχηγὸς του ἐπιβάλλει εἰς τὸν μονάρχην τὸν διορισμὸν ὡρισμένων προσώπων ὡς ὑπουργῶν, οἱ ὁποῖοι δὲν ἔχουν ἀνάγκην τῆς ἐμπιστοσύνης τοῦ μονάρχου, ἀλλὰ τῆς ἀποκλειστικῆς ἐμπιστοσύνης τοῦ κοινοβουλίου, ἀπέναντι τοῦ ὁποίου εἶναι καὶ ὑπεύθυνοι. Ἀπὸ νομικῆς τυπικῆς ἀπόψεως ἡ θέσις τοῦ μονάρχου δὲν μεταβάλλεται ἐν τῇ κοινοβουλευτικῇ μοναρχίᾳ. Ἐξακολουθεῖ καὶ ἐν ταύτῃ νὰ εἶναι ὁ ἀνώτατος ἄρχων, νὰ διορίζῃ καὶ νὰ παύῃ τοὺς ὑπουργοὺς καὶ τοὺς ἄλλους ὑπαλλήλους, νὰ μετέχῃ τῆς νομοθετικῆς ἐξουσίας καὶ νὰ ἀντιτίθεται εἰς ἀντισυνταγματικὰς πράξεις τῆς κυβερνήσεως. Ἀπὸ πολιτικῆς ὅμως οὐσιαστικῆς ἀπόψεως ἡ θέσις τοῦ μονάρχου εἶναι τελείως παθητική, τῆς ἀνωτάτης ἐξουσίας ἀσκουμένης πραγματικῶς ὑπὸ τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου καὶ ἰδίως ὑπὸ τοῦ προέδρου αὐτοῦ. Ἐν τῇ κοινοβουλευτικῇ μοναρχίᾳ ὁ μονάρχης δὲν συμμετέχει πράγματι εἰς τὴν κυβέρνησιν τῆς πολιτείας, ἀλλ' ἐκτελεῖ τὰς θελήσεις τῶν ὑπουργῶν, ἐφ' ὅσον οὗτοι ἀπολαύουν τῆς ἐμπιστοσύνης τοῦ κοινοβουλίου· «βασιλεύει ἀλλὰ δὲν κυβερνᾷ». Ἡ μετάπτωσις αὕτη τοῦ μοναρχικοῦ πολιτεύματος, ἡ ὁποία παρατηρεῖται ἐν τῇ κοινοβουλευτικῇ μοναρχίᾳ, ἐξηγεῖται κυρίως ἐκ τῆς ἐπαναστατικῆς προελεύσεως τοῦ εἴδους τούτου τοῦ πολιτεύματος. Ὁ λαὸς ἐπανεστάτησε κατὰ τοῦ μονάρχου καὶ κατήρτισε μόνος τὸν τρόπον τῆς κυβερνήσεώς του, ὥρισε δὲ εἰδικῶς τὴν ἁρμοδιότητα τοῦ μονάρχου, ὃν ἀνεγνώρισεν ὡς παράγοντα τοῦ πολιτεύματος, ὡς ὄργανον τοῦ κράτους, χωρὶς ὅμως νὰ παραχωρήσῃ αὐτῷ τὴν ἀνωτάτην ἐξουσίαν, ἣν ἐπεφύλασσεν αὐτῷ τῷ ἰδίῳ. Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν συνταγματικήν, ἐπικρατεῖ ἐν τῇ κοινοβουλευτικῇ μοναρχίᾳ ἡ ἀρχὴ τῆς λαϊκῆς κυριαρχίας· ἐδῶ ὑπάρχει τεκμήριον ὑπὲρ τῆς ἁρμοδιότητος τοῦ λαοῦ καὶ ὄχι τοῦ μονάρχου, ὅστις ἔχει ἐκεῖνα μόνον τὰ δικαιώματα, τὰ ὁποῖα ρητῶς ἀνεγνωρίσθησαν αὐτῷ ὑπὸ τοῦ Συντάγματος, τὸ ὁποῖον Σύνταγμα δὲν εἶναι ἔργον τοῦ μονάρχου ἢ τούτου καὶ τοῦ λαοῦ, ἀλλ' ἔργον ἀποκλειστικῶς τοῦ λαοῦ. Κοινοβουλευτικὴ μοναρχία ἦτο ἡ Ἑλλὰς κατὰ τὸ Σύνταγμα τοῦ 1864, σήμερον δὲ σχεδὸν ἅπαντα τὰ μὴ καθαρῶς δημοκρατικὰ κράτη τῆς Εὐρώπης (βλ. *κοινοβουλευτισμός, πολίτευμα*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ν. Ν. Σαριπόλου*, «Συνταγματικὸν δίκαιον» (τόμ. I, 1912, σελ. 60 ἑπ.). — *Χ. Γ. Σγουρίτσα*, «Τὸ δημοψήφισμα ἐν τῇ Δημοκρατίᾳ» (1929, σελ. 4 ἑπ.). — *W. v. Calker*, «Die Staatlichen Herrschaftsformen» (ἐν Handbuch der Politik, τόμ. I 1920, σελ. 150 ἑπ.). — *Ed. Hubrich*, «Die Staatsformen, Souveräne, halb-und nichtsouveräne Staaten» (ἐν H. d. P. τ. I, σελ. 64 ἑπ.). — *G. Jellinck*, «Allgemeine Staatslehre» (1920, σελ. 660 ἑπ.). — *R. Schmidt*, «Allg. Staatslehre» (τόμ. I, 1901, σελ. 259 ἑπ., τ. II, 1903, σελ. 520 ἑπ.). — *A. Esmein*, «Éléments de droit constitutionnel» (τόμ. I, 1921, σελ. 69 ἑπ. 155 ἑπ.). — *L. Duguit*, «Traité de droit constitutionnel» (τόμ. II, 1923, σελ. 606 ἑπ.). — *J. Barthelemy*, «Traité élémentaire de droit constitutionnel» (1926, σελ. 52). Χ. Γ. ΣΓΟΥΡΙΤΣΑΣ

**μοναρχιανοὶ** (οἱ). Ἡ περὶ τοῦ τριαδικοῦ τοῦ Θεοῦ διδασκαλία, ἡ περιεχομένη ἐν τῇ Καινῇ Διαθήκῃ, ἀνεπτύχθη βαθμηδὸν ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας διὰ τῆς ἀποκρούσεως τῶν σχετικῶν ἑτεροδιδασκαλιῶν. Τινὲς δηλαδὴ ἐν τῇ ἀναπτύξει τῆς περὶ τοῦ τριαδικοῦ Θεοῦ διδασκαλίας, θέλοντες νὰ συμβιβάσωσι τὴν μονοθεΐαν (μοναρχίαν) πρὸς τὴν περὶ τριάδος διδασκαλίαν, περιέπεσαν εἰς πλάνας κληθείσας ἀντιτριαδικὰς ἢ μοναρχιανὰς (μοναρχικάς). Τῶν μοναρχιανῶν τούτων οἱ μὲν ἀκολουθοῦντες τοὺς Ἐβιωνίτας ἠρνοῦντο τὴν θεότητα τοῦ Χριστοῦ, δεχόμενοι αὐτὸν ὡς ψιλὸν ἄνθρωπον *(δυναμικοὶ μοναρχιανοί)*, οἱ δὲ δεχόμενοι τὴν θεότητα τοῦ Χριστοῦ ἠρνοῦντο τὴν ὑποστατικὴν διάκρισιν αὐτοῦ, ταυτίζοντες τὸν Λόγον μετὰ τοῦ Πατρὸς *(τροπικοὶ μοναρχιανοί)*. Εἰς τοὺς πρώτους ἀνήκουσιν οἱ Ἄλογοι, ὁ Θεόδοτος ὁ Σκυτεύς, ὁ Θεόδοτος ὁ Τραπεζίτης, ὁ Ἀρτέμων καὶ ὁ Παῦλος ὁ Σαμοσατεύς, εἰς τοὺς δευτέρους ὁ Πραξέας, ὁ Νοητός, ὁ Βήριλλος καὶ ὁ Σαβέλλιος. Κ. Ι. Δ.

**μοναρχικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μονάρχην, ὁ τοῦ μονάρχου: «μοναρχικὴ διοίκησις» «μοναρχικὸν κράτος»· || ὁ ἀσπαζόμενος τὴν μοναρχίαν ὡς πολίτευμα, ὁ ὀπαδὸς τῆς μοναρχίας, ἀντίθ. δημοκρατικός.—Ἐπίρρ. ***μοναρχικῶς***.

**μόναρχος.** Κατὰ τὸν Πίνδαρον καὶ Διονύσιον τὸν Ἁλικαρνασσέα, *μόναρχος* ἐκαλεῖτο γενικῶς ὁ συγκεντρῶν ἀπόλυτον τὴν πολιτικὴν ἐξουσίαν ἑνὸς τόπου. Τοιοῦτοι μόναρχοι ἦσαν οἱ *βασιλεῖς*, κληρονομικοὶ ἄρχοντες, ἔχοντες κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον περιωρισμένην ἐξουσίαν· οἱ *αἰσυμνῆται*, κυρίαρχοι ἐκλεγόμενοι ὑπὸ τοῦ λαοῦ ἢ ἰσοβίως ἢ ἐπὶ ὡρισμένον χρόνον, καὶ οἱ *τύραννοι* ἢ σφετερισταὶ τῆς ἀρχῆς. Κατ' ἐπιγραφὰς ὅμως, *μόναρχος* ἐκαλεῖτο εἰδικῶς ὁ ἐπώνυμος ἄρχων τῆς νήσου Κῶ. Κατά τινα σχετικὴν ἐπιγραφὴν εὑρεθεῖσαν ἐν Καλύμνῳ φαίνεται ὅτι ὁ ἐπώνυμος ἄρχων τῆς Κῶ ἦτο κατὰ τοὺς ἀρχαϊκοὺς χρόνους ὁ κύριος καὶ οἱονεὶ ἀπόλυτος ἄρχων τῆς νήσου· κατὰ τοὺς ὑστερωτέρους ὅμως χρόνους ἀπέβη θρησκευτικὸς λειτουργός. Β. Δ. Θ.

**μοναρχῶ** *(—έω)*· εἶμαι μονάρχης, ἀσκῶ τὰ δικαιώματα τοῦ μονάρχου.

**μονάς,** *—άδος* (ἡ)· ἓν αὐτοτελὲς ὅλον κατὰ φύσιν ἢ συνθήκην λαμβανόμενον· οἷον εἷς ἄνθρωπος, ἓν ζῷον, εἷς λαός, μία χώρα· || οἱαδήποτε *ἀριθμητικὴ μονάς*, πῆχυς, ὀργυιά, κυβικὸν μέτρον, χιλιόγραμμον, ὀκᾶ κτλ.· || *νομισματικὴ μονάς*, δραχμή, δολλάριον, λίρα κτλ.· || *στρατιωτικὴ μονάς*, σύνολον στρατιωτῶν ἢ τμῆμα στρατοῦ ἀναλαμβάνον τὴν ἐκτέλεσιν ἀποστολῆς τινος.

— *[Μαθημ.]* Καλεῖται *μονὰς* ὁ μικρότερος θετικὸς ἀκέραιος ἀριθμός, διὰ τῆς ἐπαναλήψεως τοῦ ὁποίου γεννῶνται οἱ φυσικοὶ ἀριθμοί. Διὰ τοῦτο

Digitized by Google

ἡ μονὰς εἶναι διαιρέτης παντὸς ἀκεραίου ἀριθμοῦ. Πᾶς ἀριθμὸς πολλαπλασιαζόμενος ἢ διαιρούμενος μὲ τὴν μονάδα δὲν μεταβάλλεται, δηλαδὴ εἶναι

$$\alpha \times 1 = \alpha$$

$$\text{καὶ } \frac{\alpha}{1} = \alpha$$

ἐπίσης ἡ μονὰς ὡς ἐκθέτης δυνάμεως δὲν μεταβάλλει τὸν ἀριθμόν· ἤτοι εἶναι $\alpha^1 = \alpha$

Ἐν τῇ ἀριθμητικῇ καλεῖται ἐπίσης *μονὰς* ὄχι μόνον ἡ προειρημένη τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν, ἀλλὰ καὶ πᾶς μικρότερος ἀριθμός, ἐξ οὗ δι' ἐπαναλήψεως γίνονται ἄλλοι ἀριθμοί. Οὕτω ἔχομεν τὰς *κλασματικὰς μονάδας*, π. χ. $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{7}$ κ. ο. ἑ. Ὁμοίως τὴν *ἀρνητικὴν μονάδα* —1 καὶ τὴν *φανταστικὴν* i. Εἰς τὰ σώματα τῶν ἀλγεβρικῶν ἀριθμῶν πᾶς ἀριθμὸς ἀκέραιος ε λέγεται *μονάς*, ἐὰν ὁ ἀντίστροφος αὐτοῦ $\frac{1}{\varepsilon}$ εἶναι καὶ αὐτὸς ἀκέραιος. Οὕτω οἱ ἀριθμοὶ $(1+\sqrt{2})$ καὶ $(1-\sqrt{2})$, $(-1+\sqrt{2})$ καὶ $(-i-\sqrt{2})$ θεωροῦνται ὡς μονάδες ἐν τῷ σώματι τῆς τετραγωνικῆς ρίζης τοῦ 2.

Τέλος, εἰς τοὺς ἰδεώδεις ἀριθμοὺς ἔχομεν τὸν «μοναδικὸν» ἰδεώδη, ὅστις εἶνε κύριος ἰδεώδης, ἔχων στοιχεῖον μονάδα τοῦ σώματος. Σημειοῦται δὲ διὰ τοῦ συμβόλου ⊕ (*E. Landau*, «Θεωρία ἀριθμῶν»).

Εἰς τὴν πρακτικὴν ἀριθμητικὴν διὰ τοὺς συμμιγεῖς ἀριθμοὺς ἔχομεν διαφόρους μονάδας: μήκους, ἐκτάσεως, ὄγκου, βάρους, χρόνου, νομισμάτων. Αἱ συνηθέστεραι εἰς τὴν λογιστικήν: α) Διὰ τὰ μήκη· διὰ μὲν τὰ μικρὰ τὸ γαλλικὸν μέτρον ἢ ὁ ἑλληνικὸς πῆχυς, διὰ τὰς μεγάλας δὲ ἀποστάσεις τὸ χιλιόμετρον. β) Διὰ τὰς ἐκτάσεις τὸ τετραγωνικὸν μέτρον καὶ τὰς μεγάλας τοιαύτας τὸ στρέμμα. γ) Διὰ τοὺς ὄγκους τὸ κυβικὸν μέτρον. δ) Διὰ τὰ μικρὰ βάρη τὸ χιλιόγραμμον καὶ διὰ τὰ μεγάλα ὁ τόννος. ε) Διὰ τὸν χρόνον· διὰ μὲν τὰς μεγάλας ταχύτητας τὸ δεύτερον λεπτὸν (1″) καὶ διὰ τὰς συνήθεις ἡ ὥρα. στ) Διὰ τὰ νομίσματα, τὸ γαλλικὸν φράγκον ἢ χρυσῆ δραχμή, ἡ λίρα καὶ τὸ δολλάριον.

Εἰς τὴν μηχανικὴν ἔχουσι διαφόρους μονάδας, ταχύτητος, δυνάμεων, τὰ παραγόμενα ἔργα κλπ.

Ν. Γ.

— *[Βιολογ.]* Ὡς βιολογικὴ *μονὰς* θεωρεῖται γενικῶς τὸ *κύτταρον* (βλ. λ.), διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν ὑπάρχουν μονοκύτταροι ὀργανισμοί, ἀφ' ἑτέρου δὲ καὶ οἱ πολυκύτταροι τοιοῦτοι ἀρχίζουν τὴν διάπλασίν των ἀπὸ ἑνὸς καὶ μόνου κυττάρου, τὸ ὁποῖον εἶναι τὸ γονιμοποιηθὲν ᾠοκύτταρον. Ἐν τούτοις, ἐπειδὴ τὸ κύτταρον ἀποτελεῖ ἤδη μίαν πολύπλοκον ὀργάνωσιν, πολλοὶ ἀνεζήτησαν ἐντὸς τοῦ κυττάρου ἄλλας μικροτέρας βιολογικὰς μονάδας, χωρὶς ὅμως νὰ δυνηθῶσι νὰ προσδιορίσωσι τοιαύτας. Οὕτω ὠνόμασαν θεωρητικῶς τὰς ὑποθετικὰς ταύτας μικροτέρας τοῦ κυττάρου βιολογικὰς μονάδας *βιοφόρα*, ἄλλοι *βιτούλια*, κ. ἀ. ἄ. Ὁ Σὰξ ἐθεώρησεν ὡς μονάδας, ἰδίως εἰς τὰ πολυπύρηνα κύτταρα, τὸν πυρῆνα μετὰ τμήματος τοῦ πρωτοπλάσματος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου οὗτος κυριαρχεῖ, εἰς τὰς ὁποίας ἔδωκε τὸ ὄνομα *ἐνεργίδες*. Ἔναντι ὅλων τῶν ὑποθέσεων τούτων τὸ κύτταρον παραμένει εἰσέτι ἡ μόνη ἑνιαία ὠργανωμένη γνωστὴ βιολογικὴ μονάς.

Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

— *[Φυσ.]* Ἐν τῇ φυσικῇ καλεῖται *μονὰς* ἡ ποσότης ἡ χρησιμεύουσα πρὸς μέτρησιν ἄλλων ὁμοειδῶν ποσοτήτων, ἤτοι ποσοτήτων τοῦ αὐτοῦ μεγέθους, π. χ. μονὰς δυνάμεως, μονὰς ταχύτητος κτλ. Ὡς μονὰς δύναται νὰ ληφθῇ οἱαδήποτε ποσότης ἐκ τοῦ ὑπ' ὄψει μεγέθους. Ὁ ἀριθμὸς ὁ χαρακτηρίζων τὸ μέγεθος ποσότητος τινός, καὶ ὁ ὁποῖος συνήθως προτάσσεται τῆς ὀνομασίας τῆς μονάδος (π. χ. 3 μέτρα, 8,5 χιλιόγραμμα κττ.), δηλοῖ πόσας φορὰς ἡ μονὰς αὕτη περιέχεται εἰς τὴν ποσότητα. Εἰς τὴν φυσικὴν αἱ μονάδες τῶν φυσικῶν μεγεθῶν δὲν εἶναι ἀνεξάρτητοι ἀλλήλων, ὡς θὰ ἠδύναντο νὰ εἶναι, ἀλλὰ συνδέονται μεταξύ των διὰ διαφόρων σχέσεων, σχηματίζονται δὲ ὅλαι ἐκ τῶν λεγομένων *βασικῶν μονάδων* (βλ. *μετρικὰ συστήματα*). Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὰς βασικὰς μονάδας, αἱ ἐξ αὐτῶν σχηματιζόμεναι λέγονται *παράγωγοι μονάδες*.

Πρὸς ἀποφυγὴν δυσχρήστων ἀριθμῶν (πολὺ μεγάλων ἢ πολὺ μικρῶν), χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν μέτρησιν ποσοτήτων τοῦ αὐτοῦ φυσικοῦ μεγέθους περισσότεραι τῆς μιᾶς μονάδες, δεκαδικὰ συνήθως πολλαπλάσια καὶ ὑποπολλαπλάσια τῆς κυρίας μονάδος τοῦ φυσικοῦ μεγέθους (βλ. λ. *μέτρον [Ἐγκυκλ.]*). Τὰ ὀνόματα τῶν πολλαπλασίων καὶ ὑποπολλαπλασίων αὐτῶν σύγκεινται ἐκ συμβολικοῦ τινος προθέματος καὶ τοῦ ὀνόματος τῆς κυρίας μονάδος.

*Πίναξ συμβολικῶν ὀνομασιῶν καὶ γραφῶν τῶν πολλαπλασίων καὶ ὑπολλαπλασίων τῶν μονάδων*

| *Λόγος πρὸς τὴν κυρίαν μονάδα* | *Συμβολικὸν πρόθεμα* | | | *Παραδείγματα* | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | *Διεθνῶς* | *Ἑλληνιστὶ* | *Συγκεκομμένως* | | | |
| $10^{-9}=\frac{1}{1.000.000.000}$ | Nano— | Νανο— | N | Nm | Nv | Ngr |
| $10^{-6}=\frac{1}{1.000\ 000}$ | Micro— | Μικρο— | μ | μm | μv | μgr |
| $10^{-3}=\frac{1}{1.000}$ | Milli— | Χιλιοστο— | m | mm | mv | mgr |
| $10^{-2}=\frac{1}{100}$ | Centi— | Ἑκατοστο— | c | cm | cv | cgr |
| $10^{-1}=\frac{1}{10}$ | Deci— | Δεκατο— | d | dm | dv | dgr |
| $10^{-0}=1$ | — | — | — | Μέτρον (m) | Βὸλτ (v) | Γραμμάριον (gr) |
| $10^{-1}=10$ | Deca— | Δεκα— | D | Dm | Dv | Dgr |
| $10^{-2}=100$ | Hecto— | Ἑκατο— | H | Hm | Hv | Hgr |
| $10^{-3}=1.000$ | Kilo— | Χιλιο— | K | Km | Kv | Kg (ἀντὶ Kgr) |
| $10^{-6}=1.000.000$ | Mega— | Μεγα— | M | Mm | Mv | Mgr |
| $10^{-9}=1.000.000.000$ | Giga— | Γίγα— | G | Gm | Gv | Ggr |

Ἐκ τῶν διὰ τῶν συμβολικῶν προθεμάτων σχηματιζομένων παραγώγων τῶν κυρίων μονάδων μεγέθους τινός, δὲν εἶναι πάντοτε ἅπασαι ἐν χρήσει.

***Διαίρεσις τῶν μονάδων.*** Μονάς τις δύναται νὰ προκύπτῃ διὰ συνδυασμοῦ ἄλλων μονάδων, ὁπότε ὀνομάζεται *σύνθετος*. Π. χ. ἡ μονὰς ταχύτητος $\frac{m}{sec}$ (μέτρον ἀνὰ 1″), ἡ μονὰς ἠλεκτρικῆς ἐντάσεως $\frac{\text{Coulomb}}{h}$ (κουλὸμ ἀνὰ ὥραν), ἡ μονὰς ἔργου Kgcm (χιλιόγραμμον ἐπὶ ἑκατοστόμετρον) κττ. εἶναι σύνθετοι μονάδες. Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς αὐτάς, μονάδες, διὰ τὴν δήλωσιν τῶν ὁποίων χρησιμοποιεῖται ἴδιον ὄνομα (π. χ. γραμμάριον, δευτερόλεπτον, βὸλτ κτλ.), ὀνομάζονται *ἁπλαῖ* μονάδες. Ἡ διάκρισις αὕτη τῶν μονάδων εἰς ἁπλᾶς καὶ συνθέτους ἐννοεῖται ὅτι εἶναι ἐπιφανειακὴ καὶ ἀναφέρεται μόνον εἰς τὴν ὀνομασίαν, ἐφ' ὅσον εἶναι δυνατὸν νὰ δοθῇ εἰς τὰς συνθέτους μονάδας ἴδιον ὄνομα (π. χ. 1 ἔργιον=1 γραμμάριον δυνάμεως ἐπὶ 1 ἑκατοστόν, 1 βὰττ=1 joule ἀνὰ 1″ κ. ο. κ.), καὶ ἀντιστρόφως εἶναι ἀπαραίτητος διὰ τὸν ὁρισμὸν πλείστων ἁπλῶν μονάδων ἡ χρῆσις ἄλλων τοιούτων, ἁπλῶν ἢ μή. Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν διαίρεσιν ταύτην, ἡ διαίρεσις τῶν μονάδων εἰς *βασικὰς* καὶ *παραγώγους* (βλ. *μετρικὰ* συστήματα) ἀναφέρεται ὄχι εἰς τὴν ὀνομασίαν ἀλλὰ εἰς τὴν οὐσίαν τῶν μονάδων. Κυριώτεραι ἐν χρήσει ἁπλαῖ μονάδες διαφόρων φυσικῶν μεγεθῶν, ἐκτὸς τῶν ἠλεκτρικῶν (βλ. *ἠλεκτρικαὶ μονάδες*), καὶ τῶν μονάδων μήκους, ἐπιφανείας καὶ ὄγκου (βλ. *μέτρον*) εἶναι αἱ ἑξῆς:

α) *Δευτερόλεπτον* (sec) κυρία μονὰς τοῦ χρόνου (ὁρισμὸν βλ. εἰς λ. *μετρικὰ* συστήματα). Πολλαπλάσια αὐτοῦ: πρῶτον λεπτὸν (min)=60 sec, ὥρα (h)=60 min=3600 sec. Ὑποπολλαπλάσια κατὰ τὸν ἀνωτέρω πίνακα.

β) *Γραμμάριον μάζης* (gr), κυρία μονὰς μάζης (ὁρισμὸν βλ. εἰς λ. *μετρικὰ* συστήματα). Πολλαπλάσια καὶ ὑποπολλαπλάσια αὐτοῦ κατὰ τὸν ἀνωτέρω πίνακα.

γ) *Δύνη* (dyn), κυρία μονὰς δυνάμεως, ἴση πρὸς δύναμιν, ἥτις ἐφαρμοζομένη ἐπὶ μάζης ἴσης πρὸς ἓν γραμμάριον μάζης μεταδίδει εἰς αὐτὴν ἐπιτάχυνσιν ἑνὸς ἑκατοστομέτρου ἀνὰ τετράγωνον δευτερολέπτου: $1 \text{ δύνη} = \frac{1 \text{ cm. gr}}{\text{sec}^2}$. Πολλαπλάσια: γραμμάριον δυνάμεως=981 δύναι· χιλιόγραμμον δυνάμεως=1000 γραμμάρια δυνάμεως=981.000 δύναι· τόννος = 1000 χιλιόγραμμα δυνάμεως = 1.000.000 γραμμάρια δυνάμεως=981.000.000 δύναι.

δ) *Ἔργιον* (erg), κυρία μονὰς ἔργου καὶ ἐνεργείας, ἴση πρὸς τὸ ἔργον τὸ παραγόμενον ὑπὸ δυνάμεως μιᾶς δύνης, κατὰ τὴν μετάθεσιν τοῦ σημείου ἐφαρμογῆς αὐτῆς κατὰ ἓν ἑκατοστόμετρον: 1 ἔργιον = 1 dyn. 1 cm. Πολλαπλάσια: τζάουλ (Joule)=10.000.000 ἔργια· χιλιογραμμόμετρον (kgm) =98.100.000 ἔργια.

ε) *Θερμὶς* (cal), κυρία μονὰς ποσότητος θερμότητος, ἴση πρὸς τὴν ἀπαιτουμένην ποσότητα θερμότητος διὰ τὴν ἀνύψωσιν τῆς θερμοκρασίας ἑνὸς γραμμαρίου ὕδατος, ἀπὸ $14^{\circ},5$ C. εἰς $15^{\circ},5$ C. Πολλαπλάσια: μεγάλη θερμὶς ἢ χιλιοθερμὶς (kcal)=1000 cal. Σχέσις θερμίδων πρὸς μονάδας ἔργου καὶ ἐνεργείας: 1 χιλιογραμμόμετρον=2,342 cal, 1 cal =0,4269 kgm, 1 cal=4,1842 joules.

στ') *Βὰττ* (w), κυρία μονὰς ἰσχύος, ἴση πρὸς τὸ πηλίκον ἑνὸς joule δι' ἑνὸς δευτερολέπτου. Πολλαπλάσια καὶ ὑποπολλαπλάσια κατὰ τὸν ἀνωτέρω πίνακα, ἐξ ὧν σπουδαιότερον τὸ *χιλιόβαττον* ἢ *κιλοβὰττ* (kw)=1000 βάττ. Ἕτερον πολλαπλάσιον ὁ ἵππος (HP ἢ PS)=736 βάττ.

Διὰ πολλαπλασιασμοῦ τῶν ἀνωτέρω μονάδων ἰσχύος ἐπὶ μονάδας χρόνου, προκύπτουν σύνθετοι μονάδες ἔργου, ἐν μεγάλῃ χρήσει εἰς τὰς τεχνικὰς ἰδίως ἐπιστήμας. Τοιαῦται εἶναι ὁ *ὡριαῖος ἵππος* (HPh ἢ PSh), γινόμενον ἑνὸς ἵππου ἐπὶ μίαν ὥραν, τὸ *ὡριαῖον κιλοβὰττ* (kwh) γινόμενον ἑνὸς κιλοβὰττ ἐπὶ μίαν ὥραν κ. ἄ.

Γ. Θ. Κ.

— *[Στρατηγ.—Τακτ.] Μονὰς* καλεῖται ἓν ἕκαστον τῶν ὀργανικῶν τμημάτων, εἰς ἃ στρατός τις ὑποδιαιρεῖται. Ὁ εἰς παλαιοτέρας ἐποχὰς διδόμενος ὁρισμός: «μονὰς καλεῖται πᾶν ἄθροισμα ἀνδρῶν τεταγμένων ὑπὸ ἑνιαῖον διοικητήν», δὲν εἶναι σήμερον ὁ ἁρμόζων, καθ' ὅσον ὁ στρατὸς δὲν ἀποτελεῖται σήμερον ἐξ ἀθροίσματος ἀνδρῶν, ἀλλ' ἐξ ἀθροίσματος πολεμικῶν μηχανημάτων (αὐτομάτων ὅπλων διὰ τὸ πεζικὸν καὶ ἱππικόν, πυροβόλων διὰ τὸ πυροβολικόν).

Ἀπὸ ἀπόψεως ὀργανικῆς συνθέσεως, αἱ μονάδες τοῦ στρατοῦ χωρίζονται εἰς *μικρὰς* καὶ εἰς *μεγάλας*. ***Μικρὰ μονὰς*** καλεῖται πᾶσα ὀργανικὴ ὑποδιαίρεσις ἑνὸς ἑκάστου ὅπλου, δηλαδὴ πᾶσα μονὰς ἀποτελουμένη ἀποκλειστικῶς ἐκ τμημάτων ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ ὅπλου. Ὑπὸ τοὺς ὅρους τούτους, ἡ ἀνωτέρα *μικρὰ* μονὰς εἶναι σήμερον τὸ σύνταγμα δι' ὅλα τὰ ὅπλα, ἐξαιρέσει τοῦ ἱππικοῦ, εἰς ὃ εἶναι ἡ ταξιαρχία.

Μέχρι τοῦ 1915 ἡ ταξιαρχία ἦτο ἡ ἀνωτέρα μικρὰ μονὰς καὶ διὰ τὸ πεζικόν, ἀλλ' ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἔπαυσεν ὑφισταμένη τοιαύτη μονὰς εἰς τὸ ὅπλον τοῦτο. *Μεγάλη μονὰς* καλεῖται τὸ ὀργανικῶς συγκεκροτημένον ἄθροισμα μικρῶν μονάδων ἐξ ἑκάστου τῶν διαφόρων ὅπλων, καὶ ἐκ βοηθητικῶν ὑπηρεσιῶν, δηλαδὴ μονὰς ἀποτελουμένη ἐκ πάντων τῶν ὅπλων καὶ ἐξ ἁπασῶν τῶν ὑπηρεσιῶν. Ὑπὸ τοὺς ὅρους τούτους ἡ κατωτέρα *μεγάλη* μονὰς εἶναι ἡ μεραρχία. Ἐπειδὴ αἱ μεγάλαι μονάδες ἀποτελοῦνται ἐκ διαφόρων ὅπλων, δι' αὐτὸ καλοῦνται *μικταὶ μονάδες*, ὑπὸ τὸ ὄνομα δὲ τοῦτο ἐφέροντο κατὰ τὰς παλαιοτέρας ἐποχάς, σήμερον ὅμως ὁ ὅρος οὗτος ἐγκατελείφθη. Μεγάλαι μονάδες εἶναι σήμερον ἡ μεραρχία, τὸ σῶμα στρατοῦ, ἡ στρατιά, ἡ μεραρχία ἱππικοῦ, τὸ σῶμα ἱππικοῦ. Σχετικῶς πρὸς τὴν μεραρχίαν, ὀφείλομεν νὰ εἴπωμεν ὅτι κατελέχθη ἐν Γαλλίᾳ μεταξὺ τῶν μεγάλων μονάδων μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον (1914—1918), ἐνῷ προπολεμικῶς ἡ μεραρχία δὲν ἐθεωρεῖτο ὡς μεγάλη μονάς. Παρὰ τοῖς προπολεμικοῖς γερμανικοῖς κανονισμοῖς δὲν καθωρίζετό τι τὸ σαφὲς σχετικῶς πρὸς τὸ ζήτημα τοῦτο, πάντως ὅμως τὸ πνεῦμα ἦτο ὅτι ἡ μεραρχία ἐθεωρεῖτο ὡς μεγάλη μονάς. Παρ' ἡμῖν ἡ μεραρχία ἐθεωρεῖτο πάντοτε ὡς μεγάλη μονάς.

Ἀπὸ ἀπόψεως μαχητικῆς ἀποστολῆς, αἱ μονάδες τοῦ στρατοῦ χωρίζονται εἰς *στρατηγικὰς* καὶ εἰς *τακτικάς*. *Στρατηγικὴ μονὰς* καλεῖται ἡ μεγάλη μονὰς ἡ περιλαμβάνουσα ἅπαντα τὰ μαχητικὰ καὶ βοηθητικὰ στοιχεῖα, τὰ δυνάμενα νὰ προσδώσωσι πλήρη τὴν αὐτοτέλειαν τῆς ἐν λόγῳ μονάδος. Δυνατὸν εἰπεῖν ὅτι ἡ στρατηγικὴ μονὰς εἶναι εἷς πλήρης μικρὸς στρατός, δυνάμενος νὰ δράσῃ ὁπουδήποτε διὰ τῶν ἰδίων του μόνον δυνάμεων καὶ μέσων, ἐντὸς τῆς σφαίρας τῆς στρατηγικῆς ἐνεργείας. Ἅπαντα τὰ κράτη δὲν ἔχουσιν ἀποδεχθῆ τὴν ἰδίαν μεγάλην μονάδα ὡς στρατηγικήν. Ἐν Ἑλλάδι, μέχρι τῶν Βαλκανικῶν πολέμων 1912—1913, ἡ στρατηγικὴ μονὰς ἦτο ἡ μεραρχία, μετὰ δὲ τοὺς πολέμους ἐκείνους καθωρίσθη τὸ σῶμα στρατοῦ. Τὰ μεγάλα κράτη ἔχουσιν ὡς στρατηγικὴν μονάδα τὴν στρατιάν, ὑπὸ τὸ πνεῦμα δὲ τοῦτο ἐξεφράζοντο οἱ προπολεμικοὶ κανονισμοὶ (γερμανικὸς τοῦ 1908 καὶ γαλλικὸς τοῦ 1913), χωρὶς ὅμως νὰ δίδωσι σαφῶς καὶ τὸ ὄνομα· ὁ μεταπολεμικὸς ὅμως γαλλικὸς κανονισμὸς τοῦ 1921 εἶναι κατηγορηματικώτατος ἐπὶ τοῦ ζητήματος τούτου. Ἐν τούτοις δὲν πρέπει νὰ ὑπονοῆται ὅτι ἡ στρατηγικὴ μονὰς χρησιμοποιεῖται πάντοτε ὡς αὐτοτελὲς ὄργανον στρατηγικῆς ἐνεργείας, καθ' ὅσον στρατηγική τις μονάς, συμπαρατασσομένη μετ' ἄλλων ὁμοίων της, ἀποτελεῖ μέρος ἀνωτέρας μονάδος. Π. χ. κατὰ τὸν Ρωσσοϊαπωνικὸν πόλεμον 1904—1905 οἱ Ἰάπωνες, καὶ κατὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους 1912—1913 οἱ Βούλγαροι καὶ οἱ Σέρβοι, εἶχον ὡς στρατηγικὴν μονάδα τὴν μεραρχίαν, ἀλλὰ τοῦτο δὲν ἠμπόδιζε τὸ νὰ συγκεντροῦται ἑκάστοτε ἀριθμός τις μεραρχιῶν πρὸς συγκρότησιν στρατιᾶς, ὁπότε ἡ μονὰς ἡ δρῶσα ἐν τῇ σφαίρᾳ τῆς στρατηγικῆς ἐνεργείας δὲν ἦτο ἡ μεραρχία, ἀλλ' ἡ στρατιά, ἡ δὲ μεραρχία ἔδρα ἐντὸς τοῦ τακτικοῦ πλαισίου, χωρὶς ὅμως μὲ τοῦτο νὰ ἔπαυεν ἡ μεραρχία οὖσα στρατηγικὴ μονάς. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912 συνεκροτήθη, διὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς Κορυτσᾶς, τμῆμα στρατιᾶς ἐκ τριῶν μεραρχιῶν, συνεπῶς ἐν τῇ

Digitized by Google

σφαίρᾳ τῆς στρατηγικῆς ἐνεργείας ἔδρασε τὸ τμῆμα στρατιᾶς, ἑκάστη δὲ μεραρχία ἔδρασεν ἐντὸς τοῦ τακτικοῦ πλαισίου, χωρὶς ὅμως ἡ μεραρχία νὰ παύσῃ ἀποτελοῦσα τὴν στρατηγικὴν μονάδα τοῦ τότε ἑλληνικοῦ στρατοῦ.

*Τακτικὴ μονὰς* καλεῖται ἡ μικροτέρα *μικρὰ* μονάς, ἡ δυναμένη νὰ διεξαγάγῃ μάχην (ἀγῶνα) ἐντὸς τῆς σφαίρας τῆς τακτικῆς ἐνεργείας· τοιαύτη δ' εἶναι τὸ τάγμα, ἡ μοῖρα πυροβολικοῦ, ἡ ἴλη. Ὁ εἰς παλαιὰς ἐποχὰς διδόμενος ὁρισμός: «τακτικὴ μονὰς εἶναι ἡ μικρὰ μονὰς ἡ δυναμένη νὰ διοικηθῇ ἐν τῇ μάχῃ διὰ τῆς φωνῆς τοῦ ἡγήτορος», δὲν εἶναι σήμερον ὁ ἁρμόζων, διότι σήμερον οὐδεμία μονάς, οὐδ' ἡ μικροτέρα (π.χ. διμοιρία), διοικεῖται ἐν τῇ μάχῃ διὰ τῆς φωνῆς τοῦ ἡγήτορός της.

*Μονὰς πορείας* καλεῖται ἡ μονὰς ἡ πορευομένη χωρὶς νὰ ἐπηρεάζηται ἐκ τῆς πορείας τῆς προπορευομένης μονάδος· δηλαδὴ ἡ μονὰς ἐντὸς τῆς ὁποίας ἐντοπίζεται κατὰ τὰς πορείας ἡ ἐπιμήκυνσις. Τοιαύτη μονὰς εἶναι τὸ τάγμα, ἡ πυροβολαρχία, ἡ ἴλη (βλ. λ. *πορεία [Στρατ.]*).

*Μονὰς πυρὸς* καλεῖται ὁ δι' ἕκαστον εἶδος πυροβόλων ὁρισθείς, κατὰ συνθήκην, ἀριθμὸς βλημάτων· συνήθως 300 κατὰ πυροβόλον διὰ τὸ ἐλαφρὸν πυροβολικόν, 100 κατὰ πυροβόλον διὰ τὸ βαρὺ πυροβολικόν. Ὁ ὅρος οὗτος εἰσήχθη εἰς τὴν γαλλικὴν στρατιωτικὴν φρασιολογίαν κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον 1914—1918, ἵνα δι' αὐτοῦ δηλοῦται, εἴτε προκαταβολικῶς ὁ ἀπαιτούμενος, εἴτε κατόπιν ὁ καταναλωθεὶς ἀριθμὸς βλημάτων ὑφ' ἑκάστης μονάδος πυροβολικοῦ· συνεπῶς εἰσήχθη καὶ παρ' ἡμῖν κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν ἐποχήν.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

—*[Φιλοσ.]* Ἡ *μονὰς* ἐν τῇ ἐννοίᾳ τῆς ἑνότητος εὕρηται παρὰ Πυθαγόρᾳ, Ἀριστοτέλει, Εὐκλείδει κ. ἄ., ὁ δὲ Πλάτων καλεῖ *μονάδας* τὰς ἰδέας· ἐνῷ ὁ Συνέσιος ὀνομάζει τὸν θεὸν «μονάδα μονάδων». Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους χρῶνται τῷ ὅρῳ Νικόλαος μὲν ὁ Κουζανός, ἵνα χαρακτηρίσῃ δι' αὐτοῦ τὰ καθ' ἕκαστον ὄντα, ἅπερ ἀντικατοπτρίζουσι τὸ σύμπαν, ὁ δὲ Ἰ. Βροῦνος, ἵνα δηλώσῃ δι' αὐτοῦ τὸ ἐλάχιστον, τὸ ἁπλοῦν, τὸ ἐκεῖνον, ὅπερ ἀπόκειται κατ' αὐτὸν τοῖς οὖσιν ὡς οὐσία αὐτῶν. Βραδύτερον χρησιμοποιεῖ τὸν ὅρον ὁ H. More ἐν τῇ σημασίᾳ τῶν ἐμψύχων στοιχείων τῶν ὄντων, ὁ δὲ Γκασσένδι νοεῖ ὑπ' αὐτὸν τὰ δι' αἰσθήσεως κατ' αὐτὸν πεπροικισμένα ἄτομα, ἐξ ὧν ἀποτελεῖται ὁ κόσμος. Οὕτω προπαρασκευάζεται ἡ περὶ μονάδων θεωρία τοῦ *Λεΐβνιτίου* (βλ. λ.), ὅστις εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τῆς συστηματικῆς *μοναδολογίας*. Τὴν μονάδα ὅμως τοῦ φιλοσόφου τούτου δυνάμεθα νὰ νοήσωμεν, ἐὰν ἀντιπαραβάλωμεν τὴν μοναδολογίαν αὐτοῦ τὸ μὲν πρὸς τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Καρτεσίου, ὅστις θεωρεῖ τὰ στοιχεῖα τοῦ ὑλικοῦ κόσμου ὡς ὅλως ἐν παθητικῇ καταστάσει τελοῦντα, τὸ δὲ πρὸς τὴν ἀτομικὴν θεωρίαν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ὁποίαν διδάσκει ὁ Λεΐβνίτιος ὅτι πᾶν τὸ ἐν χώρῳ εἶναι ἀπείρως μεριστόν, τὸ δὲ πρὸς τὸν πανθεϊσμόν, ὁ ὁποῖος δέχεται μίαν μόνην οὐσίαν. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ συστήματα ταῦτα ἐκδέχεται ὁ Γερμανὸς φιλόσοφος τὸ σύμπαν συγκείμενον ἐξ ἁπλῶν, δυναμικῶν τὴν οὐσίαν, ἀΰλων στοιχείων, οἱονεὶ μεταφυσικῶν σημείων, κέντρων δυνάμεως ἱκανῶν πρὸς βιώματα. Εἶναι λοιπὸν αἱ μονάδες αὐτοῦ ψυχοειδῆ ὄντα, ἐντελέχειαι, ζωϊκαὶ ἀρχαί, ψυχαὶ ἐν τῇ εὐρυτάτῃ τῆς λέξεως σημασίᾳ. Διαιροῦνται δὲ αἱ μονάδες αὗται, αἵτινες μόνον ποιοτικὰς ἰδιότητας κέκτηνται, εἰς ἀνωτέρας καὶ κατωτέρας καὶ ἀποτελοῦσιν ἱεραρχικὸν σύστημα, τελοῦσαι ὑπὸ ὑψίστην τινὰ μονάδα, τὸν θεόν. Ἡ πρὸς ἀλλήλας σχέσις καὶ τάξις εἶναι ἰδανική, ρυθμιζομένη ὑπὸ προδιατεταγμένης ἁρμονίας, ἥτις καθιστᾷ περιττὴν τὴν ἐπ' ἀλλήλας ἐπίδρασιν, τὴν ὁποίαν ὁ Λεΐβνίτιος ἀπορρίπτει. Ἑκάστη τῶν μονάδων τούτων ἀντικατοπτρίζει κατ' ἴδιον τρόπον καὶ ἀναλόγως πρὸς τὴν ἰδίαν αὐτῆς ἄποψιν τὸ σύμπαν, εἶναι τρόπον τινὰ «συγκεντρωμένον σύμπαν». Κατὰ τὸν βαθμὸν τῆς σαφηνείας, μεθ' ἧς τελεῖται ἡ ἀντικατόπτρισις αὕτη, τὴν κατωτάτην θέσιν κατέχουσιν αἱ σωματικαὶ μονάδες, τελοῦσαι εἰς εἶδός τι λήθαργου, τὴν δὲ ἀνωτάτην ὁ θεός, ὅστις παριστᾷ τὰ πάντα ἐν ἑαυτῷ μεθ' ὑψίστης σαφηνείας. Ἐκ τῆς συνθέσεως τῶν μονάδων ἀποτελεῖται τὸ σύμπαν, τὰ σώματα καὶ οἱ ὀργανισμοί, οἱ ὁποῖοι διέπονται, ὡς τινες δέχονται, ὑπὸ ἰδίων πνευματικῶν μονάδων. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν Λεΐβνίτιον ἀρνεῖται μετ' αὐτὸν ὁ Χρ. Βόλφ εἰς τὰς σωματικὰς μονάδας τὴν δύναμιν τῆς ἀντιλήψεως καὶ τοῦ αἰσθήματος. Βραδύτερον ἐκδέχεται ὁ Γκαῖτε διάφορα εἴδη ψυχικῶν μονάδων ἢ ἐντελεχειῶν, ὡς καὶ κοσμικὰς μονάδας. Αἱ κατώτεραι ὑπακούουσι, κατὰ τὸν μέγαν ποιητήν, εἰς ἀνωτέρας μονάδας, αἵτινες ἕλκουσιν ἐντὸς τοῦ ἰδίου αὐτῶν κύκλου πάσας τὰς προσεγγιζούσας αὐταῖς. Ἐπὶ τῆς ἐννοίας τῆς μονάδος ἐβάσισαν ἔπειτα τὴν φιλοσοφίαν αὐτῶν καὶ ἄλλοι πολλοὶ καὶ οἱ Ἕρβαρτος καὶ Lotze, σύνθεσιν δὲ τῆς μοναδολογίας πρὸς τὴν κριτικὴν φιλοσοφίαν καὶ τὴν φαινομενολογίαν ἐπεχείρησε κατὰ τοὺς χρόνους ἡμῶν ὁ Mahnue. Ἐπίσης τὴν μοναδολογίαν ἐχρησιμοποίησεν ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ τοῦ πολιτισμοῦ ὁ Sauer, κατὰ τὸν ὁποῖον ὁ πολιτισμὸς σύγκειται ἐξ ἀπείρως μικρῶν καὶ εἰς στενὴν σχέσιν πρὸς ἄλληλα διατελούντων ἀξιολογικῶν ἀτόμων ἢ μονάδων. Τέλος ὡς μονάδες δύνανται νὰ ἐκληφθῶσι καὶ τὰ μεταφυσικὰ στοιχεῖα τῆς πραγματικότητος, τὰ ὁποῖα ἡ βουλησιαρχικὴ φιλοσοφία δέχεται ὡς σχετικῶς αὐτοτελεῖς συμπυκνώσεις τῆς κοσμικῆς συνειδήσεως.

Ν. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**μονὰς** (ἡ) (Monade) *[Ζῳολ.]*. Γένος *πρωτοζῴων* τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μαστιγωτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *κερκομονιδῶν*, περιλαμβάνον ἁπλουστάτους θαλασσίους ὀργανισμούς. Ἔχουσι σῶμα φοειδὲς ἢ ἐπίμηκες καὶ φέρουν ἓν κύριον καὶ δύο προσαρτηματικὰ μαστίγια. Ὁ πυρὴν κατέχει τὸ κέντρον τοῦ σώματος. Γνωστὰ πολυπληθῆ εἴδη, ἐλευθέρως νηχόμενα ἢ ἐπὶ στερεῶν ὑποθεμάτων προσκεκολλημένα.

Δ. Ν. Π.

**Μοναστεράτσε** (Marina di Monasterace) *[Γεωγραφ.]*. Ἐπίνειον τῆς ἐπὶ τοῦ Σικελικοῦ πελάγους ἀκτῆς τῆς Καλαβρίας, 1 μίλλ. νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου Κάπο Στύλο (πλάτ. 38°26' 46" Β., μηκ. 16°34' 46" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 198: Polykastro to Santa Maria di Leuca). Εἶναι τὸ *Κοκύνθιον* τῶν ἀρχαίων τὸ παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Κόκυνθος τοῦ Πολυβίου.

Σ. Ε. Λ.

**Μοναστὴρ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Χερσόνησος μικρά, 2 ½ μιλλ. μήκους, ἀποφυομένη ἀπὸ τῆς ἀκτῆς τῆς Τύνιδος, 9 μίλ. ἀνατολικῶς τῶν Σούσσων. Σχηματίζεται δὲ μεταξὺ αὐτῆς καὶ τῶν νήσων Κουριὰτ κόλπος φερώνυμος (Gulf of Monastir). Ἐπὶ τῆς χερσονησίδος, ἐν τῷ μέσῳ φοινικώνων, ἐλαιώνων καὶ ἀμπελώνων, κεῖται ἡ ὡραία καὶ ἐμπορικωτάτη ἐξηυρωπαϊσμένη φερώνυμος πολίχνη (πλάτ. 35°46' Β., μηκ. 10°50' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1159: Susa to Mahedia). Ἡ μὲν χερσόνησος εἶναι ἡ *Ρουσπίνα* τοῦ Πτολεμαίου (Δ, γ, 6 Nobbe), ἡ δὲ πόλις ἡ *Ἀδρούμητις Κολωνία* (αὐτόθι), ἣν ὅμως ἄλλοι ταυτίζουν πρὸς τὰ *Σοῦσσα*.

Σ. Ε. Λ.

**—Μοναστὴρ-'Αγξῆ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος ὑγειονομικῆς ἐπιθεωρήσεως τῶν ἀπὸ Εὐξείνου πρὸς διάπλουν τοῦ Βοσπόρου πλοίων (πλάτ. 40°10' ½ Β., μηκ. 29°05' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2401: The Bosporus), ἐγγὺς τοῦ ἀκρωτηρίου Ἀνατολὶ Καβάκ.

Σ. Ε. Λ.

**Μοναστηράκι** *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ ἐκκλησία καὶ παλαιὰ μονὴ τῶν Ἀθηνῶν ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου πλατείας παρὰ τὸν σιδηρ. σταθμὸν Α. Π. ἐν τῇ διασταυρώσει τῶν ὁδῶν Ἑρμοῦ—Ἀθηνᾶς, Πλούτωνος, Πανδρόσου καὶ Ἡφαίστου, μεταξὺ τῶν ὁποίων σχηματίζεται καὶ ἡ συνοικία *Μοναστηρακίου*, ἀποτελοῦσα τμῆμα τῆς συνοικίας Πλάκας. Ἡ ἐκκλησία αὕτη, τιμωμένη εἰς τὴν μνήμην τῆς *Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου*, εἶναι βυζαντινὸν κτίσμα, κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην τοῦ ΙΒ' αἰῶνος. Κατὰ τὰ ἔτη τῆς Τουρκοκρατίας καὶ πολὺ μετὰ τὴν Ἐπανάστασιν, ἀπετέλει Μετόχιον τῆς παρὰ τὸν Ὑμηττὸν μονῆς Καρέα. Εἰς τὸ Μοναστηράκι ἐνεκλείοντο πρὸς ἔκτισιν ποινῆς περιορισμοῦ αἱ παρεκτρεπόμεναι καλογραῖαι, αἱ ὁποῖαι κατεγίνοντο εἰς τὴν χειροτεχνίαν, ἰδίως διὰ τῶν «ἐργαλειῶν» ποὺ ὑπῆρχον ἐπὶ τούτῳ εἰς τὰ πολυάριθμα κελλία. Ὁ περιτοιχισμένος περίβολος μετὰ τῶν κελλίων κατεῖχεν εὐρυτάτην ἔκτασιν, ὅτε τὸ μέρος ἐκεῖνο ἀπετέλει ἓν ἐκ τῶν ἄκρων τῆς πόλεως. Μέρος τῆς μάνδρας τοῦ Μοναστηρακίου ὑφίστατο μέχρι τριακονταετίας, ὅτε ἐγένοντο καὶ ἐπιδιορθώσεις τινὲς εἰς τὸ κτήριον τοῦ ναοῦ καὶ ἰσοπέδωσις τοῦ ἐδάφους, σχηματισθείσης καὶ τῆς πλατείας.

Δ. Α. Λ.

**Μοναστηράκι(ον)** *[Γεωγρ.]*. —1) Κώμη τῆς ἐπαρχίας Βονίτσης καὶ Ξηρομέρου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 1 ½ ὥραν νοτιοανατολικῶς τῆς Βονίτσης, παράγει ὄσπρια, σιτηρά, ἔλαιον καὶ βελανίδια καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.541.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται δύο ὥρας νοτιοδυτικῶς τοῦ χωρίου Ἄγραφα καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 497.

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Μυκηνῶν (Χαρβατίου) τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Πρίφτανι*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατοίκους (1928) 232.

— 4) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται δίωρον πρὸς ΝΔ. τῆς Κοντοβαζαίνης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐν αὐτῷ σῴζεται ὁ πύργος τοῦ περιωνύμου Λαλιώτη φίλου τοῦ Κολοκοτρώνη Ἀλῆ Φαρμάκη. Κάτ. (1928) 549. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Πελέκι* (Μπουκοβίνα).

— 5) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 3 τέταρτα πρὸς Β. τῆς Δράμας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Δράνοβον*. Κάτ. (1928) 676.

— 6) Χωρίον τῆς κοινότητος Φερρῶν τῆς ἐπαρχίας Ἀλεξανδρουπόλεως τοῦ νομοῦ Ἕβρου. Κάτ. (1928) 196.

— 7) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Σχοινιᾶς τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 33.

— 8) Χωρίον τῆς κοινότητος Χρυσουπόλεως (Σαπαίων, Σαρῆ-Σαμπὰν) τῆς ἐπαρχίας Νέστου τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ρεσὴτ-Βέη*. Κάτ. (1928) 286.

— 9) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καταρράχου τῆς ἐπαρχίας Σάμης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 77.

— 10) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Παχειᾶς Ἄμμου τῆς ἐπαρχίας Ἱεραπέτρας τοῦ νομοῦ Λασηθίου. Κάτ. (1928) 81.

— 11) Χωρίον τῆς κοινότητος Διαβολιτσίου τῆς ἐπαρχίας Μεσσήνης τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 314.

— 12) Χωρίον τῆς κοινότητος Μεγαπλατάνου (Μπιζόβου) τῆς ἐπαρχίας Ἀλμωπίας (Ἐνωτίας) τοῦ νομοῦ Πέλλης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μοναστηρτζίκ*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ 310 (1928) κατ.

—13) Χωρίον (κοιν. *Μανιστηράκι*) τῆς ἐπαρχίας Ἀμαρίου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. 306 (1928). Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐπὶ βυζαντινῶν χρόνων ἦτο τιμάριον τῆς εὐγενοῦς οἰκογενείας Βαρούχα, σῴζονται δὲ καὶ κτήρια τῆς βυζαντινῆς καὶ ἐνετικῆς ἐποχῆς. Ἡ πρώτη ἐπὶ τουρκοκρατίας ἑλληνικὴ σχολὴ Ἀμαρίου ἐλειτούργησεν ἐνταῦθα. Πρὸ τοῦ θεσμοῦ τῶν κοινοτήτων ἦτο πρωτεύουσα ὁμωνύμου δήμου.

—14) Χωρίον τῆς κοινότητος Κερκίνης (Μπουτκόβου) τῆς ἐπαρχίας Σιντικῆς (Σιδηροκάστρου) τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ντελῆ-Χασάν*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 322.

—15) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωρίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τοῦ Κλήματος Εὐπαλίου καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 386. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Μαγούλα* καὶ *Μαραθέα*.

Χ. Δ.—Ε. Γ.

**μοναστήριον** (τό)· ὁ τόπος ὅπου μονάζουσιν, ὅπου διάγουσι τὸν βίον οἱ μοναχοί, ἄλλως μονή.

—*['Ιστορ.]* Βλ. λ. μοναχικὸς βίος.

—*[Κανον. Δίκ.]* Καλοῦνται *μοναστήρια* ἢ *μοναὶ* τόποι ἐν οἷς ἀσκοῦνται οἱ μοναχοί. Διαιροῦνται δὲ τὰ μοναστήρια:

***Ι.*** Ὡς ἐκ τοῦ φύλου τῶν ἐν αὐτοῖς ἀσκουμένων, εἰς μοναστήρια *ἀνδρῶν* καὶ μοναστήρια *γυναικῶν*. Πρὸς τοῖς τοιούτοις μοναστηρίοις ὑπῆρχον καὶ *κοινὰ* μοναστήρια, ἅτινα ἀπηγόρευσεν ὁ Ἰουστινιανός, βραδύτερον δὲ καὶ ὁ κανὼν κ' τῆς Ζ' Οἰκουμενικῆς συνόδου. Παρ' ἡμῖν τὰ περὶ μοναστηρίων τῶν ἀνδρῶν ὁριζόμενα ἰσχύουσι καὶ ὡς πρὸς τὰ τῶν γυναικῶν.

***ΙΙ.*** Ὡς ἐκ τοῦ εἰς ὃν ὑπάγονται ἀρχιερέως, εἰς *ἐπαρχιακὰ* ἢ *ἐνοριακὰ* καὶ εἰς *πατριαρχικὰ* ἢ *σταυροπηγιακά*.

1) Τὰ ἐπαρχιακὰ ἢ ἐνοριακὰ ὑπάγονται τῷ ἐπιχωρίῳ ἐπισκόπῳ, οὗ καὶ τὸ μνημόσυνον γίνεται κατὰ τὰς ἐν αὐτοῖς ἱεροτελεστίας καὶ ὅστις δίδει τὴν πρὸς ἵδρυσιν τοιούτων μοναστηρίων ἄδειαν καὶ χειροτονεῖ πρεσβυτέρους καὶ διακόνους ἐκ τῶν ἐν αὐτοῖς μοναχῶν.

2) Τὰ δὲ πατριαρχικὰ ἢ σταυροπηγιακὰ ὑπάγονται τῷ οἰκείῳ πατριάρχῃ. Καλοῦνται δὲ τὰ τοιαῦτα μοναστήρια σταυροπηγιακά, διὰ τὴν κατὰ τὴν ἔναρξιν τῆς οἰκοδομίας αὐτῶν πῆξιν ἐν τῷ θεμελίῳ σταυροῦ, ὑπὸ τοῦ πατριάρχου πεμπομένου. Δικαίωμα πρὸς ἵδρυσιν σταυροπηγίων ἔχει ὁ πατριάρχης ἐν πάσαις ταῖς ἐπισκοπαῖς τοῦ κλίματος αὐτοῦ.

Ἐν τοῖς σταυροπηγιακοῖς μοναστηρίοις: Α') Μνημονεύεται κατὰ τὰς ἱερὰς ἀκολουθίας τὸ ὄνομα οὐχὶ τοῦ ἐπιχωρίου ἐπισκόπου, ἀλλὰ τὸ τοῦ πατριάρχου. Β') Τὴν ἐποπτείαν τῆς μοναστηριακῆς διοικήσεως καὶ τὴν ἄσκησιν τῆς πειθαρχικῆς ἐξουσίας καὶ τὴν κατ' αὐτὴν ἐπιβολὴν ποινῶν ἔχει οὐχὶ ὁ ἐπιχώριος ἀρχιερεύς, ἀλλ' ὁ εἰς ὃν ὑπάγονται ταῦτα πατριάρχης, ὅστις ὅμως δύναται νὰ ἀναθέσῃ τὴν ἄσκησιν τῶν τοιούτων δικαιωμάτων εἰς ἔξαρχον. Γ') Αἱ χειροτονίαι πρεσβυτέρων καὶ διακόνων ἐν αὐτοῖς καὶ δὴ ἐν Ἁγίῳ Ὄρει γίνονται κατὰ πρότασιν τῆς μοναστηριακῆς ἀρχῆς. Οὐδεὶς δ' ἀρχιερεὺς ἐπιτρέπεται νὰ τελέσῃ ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἱεροπραξίαν, ἂν μὴ προσαγάγῃ ἔγγραφον τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχείου δηλωτικὸν τοῦ ἀκωλύτου τῆς ἱεροπραξίας, καὶ ἂν μὴ ἔχῃ ἄδειαν τῆς ἱερᾶς κοινότητος ἢ τινος μονῆς. Ἡ ὑπό τινος μονῆς εἰς Ἅγιον Ὄρος πρόσκλησις ἀρχιερέως γίνεται διὰ τῆς ἱερᾶς κοινότητος. Δ') Οἱ ἡγούμενοι τῶν σταυροπηγιακῶν μοναστηρίων γράφουσιν ἀπ' εὐθείας τῷ ᾧ ὑπόκεινται πατριάρχῃ. Ε') Τὰ σταυροπηγιακὰ μοναστήρια ὀφείλουσι νὰ παρέχωσιν ἐτησίως τῷ ἀφ' οὗ ἐξαρτῶνται πατριαρχείῳ πρὸς δήλωσιν ὑποταγῆς ποσότητα χρημάτων ἢ ἄλλων

Digitized by Google

πραγμάτων, ὡς ἐλαίου ἢ κηροῦ, ἢ τυροῦ. Ὁ ἐπιχώριος ἀρχιερεὺς οὐδεμίαν δύναται νὰ αἰτῆται παροχήν. *Βασιλικὰ* μοναστήρια ἦσαν τὰ ἱδρυόμενα ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν αὐτοκρατόρων, οἵτινες διὰ χρυσοβούλλων ἀπήλλασσον τὰ κτήματα τῶν τοιούτων μοναστηρίων παντὸς φόρου πρὸς τὸ κράτος καὶ ἐξέδιδον ἰδίους κανονισμούς, ἐξαίροντας τὴν προνομιακὴν θέσιν αὐτῶν. Καὶ τῶν τοιούτων μοναστηρίων τὴν ἐποπτείαν εἶχεν οὐχὶ ὁ ἐπιχώριος ἐπίσκοπος, ἀλλ' ὁ πατριάρχης, ὅστις κατὰ πρότασιν τῆς μοναστηριακῆς ἀδελφότητος καθίστα τὸν ἡγούμενον καὶ ἐχειροτόνει τοὺς ἱερομονάχους τῆς μονῆς. Συνήθως ὁ πατριάρχης ἀνέθετε τὴν ἐποπτείαν τῶν βασιλικῶν μονῶν, καθάπερ καὶ τὴν τῶν σταυροπηγιακῶν, εἰς ἰδίους ἐξάρχους. Αἱ ἐν Ἁγίῳ Ὄρει μοναί, πᾶσαι πατριαρχικαὶ καὶ σταυροπηγιακαὶ οὖσαι, ὑπάγονται τῇ πνευματικῇ δικαιοδοσίᾳ τῆς Μεγάλης τοῦ Χριστοῦ Ἐκκλησίας.

***III.*** *Ὡς ἐκ τοῦ τρόπου τοῦ βίου τῶν μοναχῶν*, εἰς *κοινόβια καὶ ἰδιόρρυθμα*.

1) Κοινόβια καλοῦνται τὰ μοναστήρια, ἐν οἷς οἱ μοναχοὶ ζῶσι κοινῶς, λαμβάνουσιν ἐκ τῆς μονῆς τὰ τοῦ ἱματισμοῦ καὶ τὰ τῆς ὑποδήσεως, εἴτε εἰς εἶδος εἴτε εἰς χρήματα, καὶ συνεσθίουσι πάντες ἐν τῇ αὐτῇ τραπέζῃ. Ἰδίαν περιουσίαν ἐν τοῖς κοινοβίοις δὲν ἔχουσιν οἱ μοναχοί, ἀλλὰ πανθ' ὅσα κτῶνται περιέρχονται τῇ μονῇ. Ὑπερμεσοῦντος τοῦ Κ' αἰῶνος λεπτομερῶς ἐρρύθμισε τὰ τῶν κοινοβίων Θεόδωρος ὁ Στουδίτης, εἶτα δ' ὁ ἀκολουθήσας ταῖς διατάξεσιν αὐτοῦ Ἀθανάσιος, ὁ ἱδρυτὴς τῆς ἐν Ἁγίῳ Ὄρει Λαύρας (οὗ τὸ τυπικὸν ἐγένετο ὑπόδειγμα καὶ ταῖς λοιπαῖς ἐν Ἁγίῳ Ὄρει μοναῖς), βραδύτερον δ' ἔτι ὁ αὐτοκράτωρ Νικηφόρος διὰ τοῦ χρυσοβούλλου αὐτοῦ. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἐκ τῶν εἴκοσι σταυροπηγιακῶν μοναστηρίων κοινόβιά εἰσι τὰ ἕνδεκα καὶ δή, τὰ Διονυσίου, Κουτλουμουσίου, Ζωγράφου, Καρακάλλου, Σίμωνος Πέτρας, Ἁγίου Παύλου, Ξενοφῶντος, Γρηγορίου, Ἐσφιγμένου, Ρωσικοῦ καὶ Κασταμονίτου. Ἐκ δὲ τῶν δώδεκα σκητῶν αἱ τέσσαρες καὶ δή, ἡ τῆς τοῦ Ἁγίου Παντελεήμονος (Ρωσικοῦ) ἐπ' ὀνόματι τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου (Βογορόδιτσα), ἡ τῆς τοῦ Παντοκράτορος ἐπ' ὀνόματι τοῦ προφήτου Ἠλιού, ἡ τῆς Μεγίστης Λαύρας ἐπ' ὀνόματι τοῦ Τιμίου Προδρόμου καὶ ἡ τῆς τοῦ Βατοπεδίου ἐπ' ὀνόματι τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου. Ἐν Κρήτῃ πᾶσαι αἱ μοναί εἰσι κοινόβιοι.

2) Ἰδιόρρυθμά εἰσι τὰ μοναστήρια, ἐν οἷς οἱ μοναχοὶ δύνανται νὰ ἔχωσιν ἰδίαν περιουσίαν, ἀργούσης τῆς ἀρχῆς τῆς ἀκτησίας, παρασκευάζουσι δὲ τὴν τροφὴν αὐτῶν ἐν τοῖς ἰδίοις κελλίοις ἕκαστος, μόνον κατὰ τὰς Κυριακὰς συνεσθίοντες ἐν τῇ αὐτῇ τραπέζῃ. Παρ' ἡμῖν ἐν τοῖς ἰδιορρύθμοις μοναστηρίοις, ἀλλ' ὡς εἰκὸς καὶ ἐν τοῖς κοινοβίοις, ἡ προμήθεια τῶν πρὸς διατροφὴν καὶ θέρμανσιν τῶν μοναχῶν, τῶν δοκίμων καὶ παντὸς τοῦ προσωπικοῦ τῆς μονῆς, ὡς καὶ τῶν πρὸς συντήρησιν τῶν διὰ τὰς ὑπηρεσίας τῆς μονῆς ἀναγκαίων κτηνῶν γίνεται εἰς εἶδος κατὰ τὸν χρόνον τῆς συγκομιδῆς τῶν καρπῶν δι' ὅλον τὸ ἔτος. Αἱ τοιαῦται προμήθειαι, ὡς καὶ τὰ ἐναποθηκευόμενα προϊόντα ἀναγράφονται ἐν τῷ βιβλίῳ ἀποθήκης, φυλάσσονται δ' ὑπὸ τοῦ, κατὰ πρότασιν τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου καθισταμένου, μοναστηριακοῦ οἰκονόμου, ὅστις καὶ διανέμει αὐτὰς ἀναλόγως, ἐποπτεύοντος τοῦ ἡγουμένου. Διὰ τὰς λοιπὰς (πλὴν τῆς τροφῆς) βιοτικὰς ἀνάγκας τῶν μοναχῶν παρέχεται παρ' ἡμῖν κατὰ μῆνα εἰς αὐτοὺς ὡρισμένον χρηματικὸν ἐπίδομα, ὅπερ ποικίλλει κατὰ λόγον τοῦ ἀξιώματος καὶ τῆς μονῆς καὶ ὅπερ δύναται μετὰ εἴκοσι πέντε ἀπὸ τῆς κουρᾶς ἔτη νὰ αὐξηθῇ, ἀλλ' οὐδέποτε πέρα τοῦ διπλασίου, εἰς ὡρισμένην δὲ περίπτωσιν καὶ νὰ περισταλῇ. Αἱ ὡς πρὸς τὰς ὀφειλομένας εἰς τοὺς μοναχοὺς παροχὰς ἔριδες λύονται ὑπὸ τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου, ἐπὶ προσφυγῇ δ' ὑπὸ τοῦ ἁρμοδίου ἐπισκόπου ἀνεκκλήτως.

Τὰ ἰδιόρρυθμα μοναστήρια ἀπαντῶσιν ἤδη κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα καὶ δὴ τὸ πρῶτον ἐν Ἁγίῳ Ὄρει. Νῦν ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἐκ μὲν τῶν εἴκοσι σταυροπηγιακῶν μονῶν ἰδιόρρυθμοί εἰσιν αἱ ἐννέα καὶ δή, αἱ Μεγίστης Λαύρας, Βατοπεδίου, Ἰβήρων, Χιλιανδαρίου, Παντοκράτορος, Ξηροποτάμου, Δοχειαρίου, Φιλοθέου καὶ Σταυρονικήτα, ἐκ δὲ τῶν δώδεκα σκητῶν αἱ ὀκτὼ καὶ δή, ἡ τῆς Μεγίστης Λαύρας ἐπ' ὀνόματι τῆς Ἁγίας Ἄννης, ἡ τῆς αὐτῆς μονῆς ἐπ' ὀνόματι τῆς ἁγίας Τριάδος (τῶν Καυσοκαλυβίων), ἡ τῆς τοῦ Βατοπεδίου ἐπ' ὀνόματι τοῦ ἁγίου Δημητρίου, ἡ τῆς τῶν Ἰβήρων ἐπ' ὀνόματι τοῦ Τιμίου Προδρόμου, ἡ τῆς τοῦ Κουτλουμουσίου ἐπ' ὀνόματι τοῦ ἁγίου Παντελεήμονος, ἡ τῆς τοῦ ἁγίου Παύλου ἐπ' ὀνόματι τῆς Θεοτόκου (Νέα σκήτη), ἡ τῆς αὐτῆς μονῆς ἐπ' ὀνόματι τοῦ ἁγίου Δημητρίου (Λάκκου) καὶ ἡ τῆς τοῦ Ξενοφῶντος ἐπ' ὀνόματι τοῦ Εὐαγγελισμοῦ τῆς Θεοτόκου.

Περὶ τῆς μετατροπῆς κοινοβίου εἰς ἰδιόρρυθμον καὶ τἀνάπαλιν ἀποφαίνεται ἡ ἁρμοδία ἐκκλησιαστικὴ ἀρχή. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει κοινόβιος μονὴ δὲν ἐπιτρέπεται νὰ μετατραπῇ εἰς ἰδιόρρυθμον. Ἰδιόρρυθμος ὅμως μετατρέπεται εἰς κοινόβιον δι' ἀπολύτου πλειονοψηφίας τῶν πρὸ ἑξαετίας τυχόντων τῆς κουρᾶς ἀδελφῶν τῆς μονῆς, λαμβανομένης ἀποφάσεως αὐτῆς, κυρουμένης ὑπὸ τῆς ἱερᾶς κοινότητος, ἥτις γνωρίζεται ὑπ' αὐτῆς τῷ οἰκουμενικῷ πατριαρχείῳ πρὸς τὴν τοῦ σιγιλλίου ἔκδοσιν.

Τὰ μοναστήρια διαιροῦνται ἔτι:

*I.* Εἰς *αὐτοτελῆ καὶ ὑποτεταγμένα* (μετόχια).

Κατὰ τὸ νῦν παρ' ἡμῖν ἰσχῦον δίκαιον, δυνάμει τοῦ ἀπὸ Μαΐου 1930 νόμου ἀριθ. 4684, αἱ ὀλιγωτέρους τῶν τριῶν μοναχῶν ἔχουσαι μοναὶ συγχωνεύονται πρὸς ἄλλας μονὰς τῆς ἰδίας μητροπόλεως, ἐχούσας μεγαλύτερον ἀριθμὸν μοναχῶν, ὁριζομένας δ' ὑπὸ τοῦ οἰκείου ἱεράρχου. Δύναται ὅμως οὗτος νὰ ὁρίσῃ ὡς κυρίαν μονὴν τὴν τοὺς ὀλιγωτέρους μοναχοὺς ἔχουσαν μονήν, ἐφ' ὅσον αὕτη ἔχει ἱστορικὴν ἢ προσκυνηματικὴν σημασίαν. Μητρόπολις ὅμως ἔχουσα μίαν μόνην μονὴν διατηρεῖ αὐτήν, ὁσοσδήποτε καὶ ἂν ᾖ ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐν αὐτῇ μοναχῶν. Ἡ συγχωνευομένη μονὴ ἀποβάλλει τὴν νομικὴν αὐτῆς προσωπικότητα καὶ καθίσταται μετόχιον τῆς μεθ' ἧς συνεχωνεύθη μονῆς, εἰς ἣν περιέρχεται αὐτοδικαίως ἡ περιουσία αὐτῆς καὶ ἧς καθίστανται μέλη αὐτοδικαίως οἱ μοναχοὶ καὶ οἱ δόκιμοι τῆς συγχωνευομένης μονῆς. Τὰ τῆς διοικήσεως τοῦ μετοχίου καὶ τὰ τῆς λειτουργίας τοῦ ναοῦ αὐτοῦ ὁρίζονται ὑπὸ τοῦ οἰκείου ἱεράρχου. Ἐντὸς τριῶν μηνῶν ἀπὸ τῆς δημοσιεύσεως τοῦ ἀνωτέρω 4684 νόμου, ἕκαστος μητροπολίτης ὤφειλε ν' ἀναφέρῃ εἰς τὴν διαρκῆ ἱερὰν σύνοδον τὰς κατὰ τὰ εἰρημένα ἐπενεκτέας μεταβολὰς καὶ νὰ ὁρίσῃ τὰς διατηρητέας καὶ συγχωνευτέας μονὰς δι' ἐκθέσεως ἠτιολογημένης. Ἡ δὲ διαρκὴς ἱερὰ σύνοδος ὤφειλεν ἐντὸς μηνὸς ἀπὸ τῆς λήξεως τῆς ἐκθέσεως νὰ ζητήσῃ παρὰ τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας καὶ τῶν Θρησκευμάτων τὴν ἔκδοσιν περὶ τῆς συγχωνεύσεως προεδρικοῦ διατάγματος. Ἐὰν μητροπολίτης τις δὲν θὰ συνεμορφοῦτο πρὸς τὰ εἰρημένα, ἡ διαρκὴς ἱερὰ σύνοδος θὰ προέβαινεν αὐτεπαγγέλτως ἐντὸς μηνὸς ἀπὸ τῆς ἐκπνεύσεως τῆς τριμήνου προθεσμίας εἰς τὸν καθορισμὸν τῶν συγχωνευτέων καὶ διατηρητέων μονῶν. Τῆς περὶ συγχωνεύσεως διατάξεως ἐξαιροῦνται αἱ κατὰ τὴν κρίσιν τῆς ἱερᾶς συνόδου ἱστορικαὶ μοναί. Αἱ εἰς τὴν συγχωνευομένην μονὴν ἀφορῶσαι δίκαι συνεχίζονται παρὰ τῆς εἰς ἣν αὕτη συνεχωνεύθη μονῆς ἰδίῳ αὐτῆς ὀνόματι. Ἐν Κρήτῃ, κατὰ τὸ ἀπὸ 8 Ἰουλίου 1930 διάταγμα, τῶν λοιπῶν μονῶν διαλυομένων διατηροῦνται αἱ ἑξῆς: 1) Ἐν μὲν τῷ νομῷ Χανίων αἱ μοναί: α') Ἁγίας Τριάδος, πρὸς ἣν συγχωνεύεται ἡ τοῦ Γουβερνέτου καὶ β') Κυρίας Γωνιᾶς. 2) Ἐν τῷ νομῷ Ρεθύμνης ἡ μονὴ τοῦ Ἀρκαδίου. 3) Ἐν τῷ Ἡρακλείου αἱ μοναὶ Ἁγίου Γεωργίου Ἐπανωσήφη καὶ Ἀγκαράθου. 4) Ἐν τῷ νομῷ Λασηθίου ἡ μονὴ Τοπλοῦ—Σητείας. Ἡ ἐν τῷ νομῷ Ἡρακλείου μονὴ Ἀπεζανῶν θὰ χρησιμεύσῃ ὡς σωφρονιστήριον τῶν κληρικῶν. Διατηροῦνται ὡσαύτως αἱ γυναικεῖαι μοναὶ Παληανῆς τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου καὶ Κορακιῶν τοῦ νομοῦ Χανίων. Ἐπιτρέπεται ὅμως μετ' ἀπόφασιν τοῦ κεντρικοῦ ἐποπτικοῦ συμβουλίου, ἐρειδομένην ἐπὶ προτάσεως τοῦ οἰκείου τοπικοῦ συμβουλίου, νὰ καταργηθῇ ἡ μονὴ Κορακιῶν καὶ νὰ τοποθετηθῶσιν αἱ ἐν αὐτῇ βιοῦσαι μοναχαὶ εἰς τὴν ἐν Ἡρακλείῳ διατηρουμένην μονὴν Παληανῆς.

Τῶν διαλυομένων μονῶν οἱ μοναχοὶ μετατίθενται εἰς τὰς διατηρουμένας, κατ' ἐκλογὴν αὐτῶν καὶ ἔγκρισιν τοῦ οἰκείου ἐπισκόπου, λογίζονται δὲ ἀπὸ τῆς εἰσόδου αὐτῶν μοναχοὶ τῆς διατηρουμένης μονῆς, ἔχοντες οἷα καὶ οἱ ἐν αὐτῇ ἀσκούμενοι μοναχοὶ δικαιώματα καὶ καθήκοντα. Ἡ κινητὴ περιουσία τῶν διαλυομένων μονῶν, ἐὰν μὲν κατὰ τὴν κρίσιν τῶν τοπικῶν συμβουλίων εἶναι ἀναγκαία εἰς τὰς διατηρουμένας μονάς, δίδεται εἰς αὐτάς, προτιμωμένης ἐκείνης εἰς ἣν μετετέθησαν οἱ μοναχοὶ τῆς διαλυθείσης μονῆς, ἄλλως ἐκποιεῖται ὡς καὶ ἡ λοιπὴ μοναστηριακὴ περιουσία. Ἡ κινητὴ καὶ ἀκίνητος περιουσία τῆς ἐν Ἀμαρίῳ μονῆς Ἀσωμάτων περιέρχεται εἰς τὴν ἐν αὐτῇ γεωργικὴν σχολήν.

Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἐκεῖ κυριάρχων 23 μονῶν δὲν ἐπιτρέπεται νὰ γίνῃ αὔξησις ἢ μείωσις. Ἀπαγορεύεται δ' ἡ μετατροπὴ σκητῶν εἰς μονάς, ἢ κελλίων εἰς σκήτας, ἢ καλυβῶν εἰς κελλία, καὶ πᾶσα καθόλου μεταβολὴ τῶν διοικητικῶν καὶ ἱεραρχικῶν καθόλου σχέσεων τῶν κυριάρχων μονῶν πρὸς τὰ ἐξαρτήματα αὐτῶν, ὧν ἡ περιοχὴ καὶ τὰ παραρτήματά εἰσιν ἀναφαίρετα καὶ ἀναπαλλοτρίωτα κτήματα τῶν κυριάρχων μονῶν, πάντες δ' οἱ μοναχοὶ τῶν ἐξαρτημάτων, ἤτοι σκητῶν, κελλίων, καλυβῶν, ἡσυχαστηρίων καὶ καθισμάτων, λογίζονται ἀδελφοὶ τῆς κυριάρχου μονῆς. Ὀφείλουσι δὲ τὰ ἐξαρτήματα νὰ καταβάλλωσι τῇ κυριάρχῳ αὐτῶν μονῇ τὰ ἑκάστοτε ὁριζόμενα καὶ ἀναλογικῶς κατανεμόμενα ὑπὸ τῆς ἱερᾶς κοινότητος δοσίματα.

***II.*** Εἰς τηροῦντα αὐστηρῶς τὸ *ἄβατον* καὶ μή. Εἰς τὰ μοναστήρια τῶν ἀνδρῶν ἀπαγορεύεται ἡ εἴσοδος καὶ εἰσαγωγή: 1) Γυναικῶν, μάλιστα δὲ τὸ νὰ καθεύδωσιν αὗται ἐν τοῖς μοναστηρίοις τῶν ἀνδρῶν. Κατ' ἐξαίρεσιν ἐπιτρέπεται ἡ εἴσοδος γυναικῶν εἰς τὰ τῶν ἀνδρῶν μοναστήρια, οὐχὶ δ' ὅμως καὶ εἰς τὰ ἐν Ἁγίῳ Ὄρει καὶ καθόλου εἰς τὴν χερσόνησον αὐτοῦ, ὡς καὶ εἰς τὰ λοιπὰ αὐστηρῶς τηροῦντα τὸ ἄβατον μοναστήρια: α') πρὸς περίθαλψιν νοσοῦντος μοναχοῦ καὶ β') πρὸς ἀκρόασιν τῆς θείας λειτουργίας κατὰ τὰς Κυριακὰς καὶ δεσποτικὰς ἡμέρας. 2) Νέων ἀγενείων καὶ υἱῶν, ἀδελφῶν καὶ καθόλου συγγενῶν ὄντων, ἔτι καὶ πρὸς ἐκπαίδευσιν, ὡς καὶ πρὸς πᾶσαν ἐργασίαν, ὡς οἰκοδομικήν. 3) Εὐνούχων. 4) Παντὸς θήλεος ζῴου. 5) Ἀνθρώπων ἀγνώστων καὶ ὑπόπτων. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει πᾶς ὁ προσερχόμενος ἐκεῖ, πλὴν τῶν περιοίκων προσκυνητῶν, ὀφείλει νὰ ἐμφανισθῇ τῇ ἱερᾷ ἐπιστασίᾳ, ἵνα τύχῃ τῆς ἀδείας τῆς ἐπισκέψεως τῶν μονῶν καὶ ἐξαρτημάτων. Ἀπαγορεύεται δ' ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἡ ἐγκαταβίωσις ἑτεροδόξων ἢ σχισματικῶν.

Εἰς τὰ μοναστήρια τῶν γυναικῶν ἀπαγορεύεται ἡ εἴσοδος εἰς τοὺς ἄνδρας καὶ εὐνούχους ἔτι ὄντας. Ἀπαγορεύεται δὲ καὶ αὐτὸς ὁ ἐνταφιασμὸς ἀνδρῶν ἐν γυναικείῳ μοναστηρίῳ. Κατ' ἐξαίρεσιν ἐπιτρέπεται ἡ εἴσοδος ἀνδρῶν: α') πρὸς ἐπίσκεψιν μοναζουσῶν συγγενῶν, ἀλλὰ καὶ τοῦτο ὑπὸ περιορισμούς· β') ἰατρῶν πρὸς θεραπείαν νοσούσης μοναχῆς· γ') ἱερέων πρὸς τέλεσιν τῆς θείας λειτουργίας καὶ τῶν λοιπῶν ἱεροτελεστιῶν, ἐξομολόγησιν, μετάδοσιν τῆς θείας κοινωνίας ἢ χρίσιν ἐλαίῳ νοσουσῶν μοναζουσῶν· δ') ἐπισκόπων· ε') ἐργατῶν πρὸς ἐκτέλεσιν οἰκοδομικῆς ἢ ἄλλης ἐργασίας, ἣν δὲν θὰ ἠδύναντο νὰ ἐκτελέσωσιν αἱ μονάζουσαι· στ') ἀποκρισιαρίων, γεγηρακότων καὶ εὐνούχων, εἰ δυνατόν, ὄντων, καὶ προνοουμένων (τῆς μονῆς), ἀλλὰ καὶ τοῦτο ὑπὸ διαφόρους περιορισμούς· ζ') κομιστῶν τῶν ἀναγκαίων ταῖς μοναζούσαις· η') ἀνδρῶν πρὸς τὸ φέρειν τὸ φέρετρον καὶ ὀρύττειν τὸν τάφον καὶ καθόλου πρὸς ἐνταφιασμὸν τελευτησάσης μοναχῆς· θ') πρὸς σφράγισιν τοῦ κελλίου τῆς τελευτησάσης μοναχῆς. Ἕτερον θέμα, καθ' ὃ κατ' ἐξαίρεσιν ἐπιτρέπεται ἡ εἴσοδος ἀνδρῶν εἰς γυναικεῖον μοναστήριον, εἶναι ἡ ἑορτὴ τούτου.

***III.*** Εἰς *κτητορικὰ* καὶ μὴ (βλ. *Κτητορικὸν δίκαιον*).

***IV.*** Εἰς μονὰς μεθ' *ὡρισμένου ἀριθμοῦ* μοναχῶν καὶ μή.

***Διατάξεις περὶ τῆς περιουσίας τῶν μοναχῶν.*** Παρ' ἡμῖν ὁ μοναχός, πρὸς τῇ ἀπολήψει τοῦ εἰρημένου χρηματικοῦ ἐπιδόματος, δύναται νὰ ἔχῃ: α') Ὡρισμένον ἀριθμὸν ζῴων, ἐφ' ὧν ἔχει κατὰ πάντα τὸν βίον τὴν κάρπωσιν, ἐπιτρεπομένης αὐτῷ καὶ τῆς ἐκποιήσεως αὐτῶν καὶ τῶν προϊόντων αὐτῶν. β') Τὴν κατὰ πάντα τὸν βίον ἐπικαρπίαν τοῦ ἡμίσεος τῆς αὐτῷ μὲν ἐπαγομένης, τῇ μονῇ δὲ περιερχομένης κληρονομίας, κληροδοσίας ἢ δωρεᾶς. γ') Τὰ ἰδίῳ καμάτῳ κτηθέντα. Ἐν Κρήτῃ ὁ μοναχὸς τῶν ἰδίῳ καμάτῳ κτωμένων ἔχει τὴν κάρπωσιν, τῆς κυριότητος αὐτῶν περιερχομένης τῇ μονῇ. Ἐν Σάμῳ ὁ μοναχὸς δύναται νὰ ἔχῃ πρὸς τοῖς πρὸς τὴν συντήρησιν παρεχομένοις, μόνον τὰ ἐκ τοῦ περιτραχηλίου καὶ τοῦ ἐργοχείρου εἰσπραττόμενα. δ') Τὴν προσωπικὴν καὶ ἀποκλειστικὴν κατὰ πάντα τὸν βίον κάρπωσιν τριῶν μέχρι πέντε στρεμμάτων μοναστηριακῆς γῆς, διδομένης αὐτῷ πρὸς τὴν δι' ἰδίων ἐξόδων καλλιέργειαν, ὑπὸ τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου, τῇ ἐγκρίσει τοῦ ἁρμοδίου ἐπισκόπου. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ὁ μοναχὸς διὰ τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἀνεγέρσεως ἢ ἐπισκευῆς κτηρίου ἐπὶ ἰδιοκτησίας τῆς μονῆς γινομένης ἀδείᾳ τῆς μοναστηριακῆς ἀρχῆς οὐδὲν κτᾶται δικαίωμα, ἂν μὴ ἄλλως ὁρισθῇ διὰ συμβάσεως.

Εἰς τὴν μονὴν περιέρχεται αὐτοδικαίως:

α') Πᾶσα ἡ περιουσία τῶν ὑφισταμένων τὴν κουρὰν μοναχῶν μετ' ἀφαίρεσιν τῆς ὑπὲρ τῶν ἀναγκαίων κληρονόμων νομίμου μοίρας, ἀπὸ τῆς κουρᾶς ἐκείνων ἀπαιτητῆς καθισταμένης. Ἐκ τῆς τοιαύτης περιουσίας τοῦ μοναχοῦ, ἣν κτᾶται ἡ μονὴ οἱονεὶ ὡς καθολικὸς διάδοχος, ἀφαιροῦνται πρῶτον τὰ χρέη, εἶτα δ' ἡ νόμιμος μοῖρα τῶν τυχὸν ὑπαρχόντων ἀναγκαίων κληρονόμων. Εὐθύνεται δ' ἡ μονὴ διὰ τὰ χρέη οὐχὶ πέρα τοῦ ἐνεργητικοῦ· μὴ ἐξαρκοῦντος ἄρα τοῦ παρ' αὐτῇ τοιούτου, εὐθύνονται οἱ ἀναγκαῖοι κληρονόμοι. Ἐν Κρήτῃ κατὰ τὴν κουρὰν παρόντος τοῦ ἡγουμένου καὶ τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου ἐπὶ τῷ ἐρωτήματι τοῦ ἐπισκόπου πρὸς τὸν δόκιμον ἂν ἐκ τῆς ἑαυτοῦ περιουσίας προτίθεται νὰ διαθέσῃ τι ὑπὲρ τῶν συγγενῶν αὐτοῦ, ὑποδεικνύοντος ἅμ' αὐτῷ τὰς περὶ τῆς περιουσίας τῶν μοναχῶν κανονικὰς διατάξεις, ὁ δόκιμος ποιεῖται δήλωσιν περὶ τῆς περιουσίας, ἣν εἰσφέρει τῇ μονῇ, καταγραφομένης ἐν τῷ κτηματολογίῳ αὐτῆς. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἡ ἀκίνητος περιουσία παντὸς Ἁγιορείτου μοναχοῦ περιέρχεται τῇ μονῇ, ἐφ' ὅσον οὗτος πρὸ τῆς κουρᾶς αὐτοῦ ἐξεχώρησε ταύτην ἐγγράφως αὐτῇ.

β') Πᾶσα κληρονομία, κληροδοσία καὶ δωρεὰ ἐπαχθεῖσα τῷ μοναχῷ μετὰ τὴν εἰς τὴν μονὴν κατάταξιν αὐτοῦ. Ἀλλὰ τοῦ ἡμίσεος τῆς οὕτω περιελθούσης τῇ μονῇ περιουσίας τὴν ἐπικαρπίαν

Digitized by Google

ἔχει κατὰ πάντα τὸν βίον ὁ ὑπὲρ οὗ ἡ κληρονομία, ἢ ἡ κληροδοσία, ἢ ἡ δωρεὰ μοναχός. Μὴ ἀποδεχομένου δ' αὐτοῦ τὴν κληρονομίαν, ἢ τὴν κληροσίαν, δύναται νὰ δεχθῇ ἀντ' αὐτοῦ ἡ μονή, ὅτε ὅμως ἀποβάλλει ἐκεῖνος ὑπὲρ ταύτης τὴν ἐπικαρπίαν τοῦ ἡμίσεος. Διὰ τὰ χρέη τῆς δεκτῆς γενομένης κληρονομίας δὲν εὐθύνεται ἡ μονὴ πέρατοῦ κεφαλαίου τῆς εἰσπραχθείσης ἐνεργητικῆς περιουσίας.

γ') Ἡ περιουσία ἣν ἐκέκτητο ὁ μοναχὸς κατὰ τὸν χρόνον τῆς ὁριστικῆς ἀποχωρήσεως ἐκ τῆς μονῆς τῆς μετανοίας αὐτοῦ, κατατάξεως δ' αὐτοῦ ἐν ἑτέρᾳ μονῇ. Τὴν περιουσίαν δηλαδὴ ταύτην ἀποβάλλει ὑπὲρ ἐκείνης. Ἐν Κρήτῃ ὁ καταλιπὼν τὴν ἐν ᾗ ἐκάρη μονήν, εἰς ἄλλην δ' ἀπελθὼν μοναχός, ἀρνούμενος δὲ νὰ στοιχήσῃ τῇ περὶ ἐπανόδου εἰς ἐκείνην διαταγῇ τοῦ ἡγουμένου, οὐδὲν δικαιοῦται νὰ λάβῃ τῶν ἐκ τῆς ἐργασίας αὐτοῦ κτηθέντων πρὸ τῆς ἀναχωρήσεως αὐτοῦ ἐκ τῆς μονῆς τῆς μετανοίας, εἰς ἣν ταῦτα προσκυροῦνται. Ὁ δι' εὔλογον ὅμως αἰτίαν ἀπελθὼν τῆς μονῆς μοναχὸς λαμβάνει μεθ' ἑαυτοῦ τὴν μετὰ τὴν ἀπόκαρσιν κτηθεῖσαν περιουσίαν ἐν τῇ μονῇ τῆς μετανοίας αὐτοῦ, εἰς ἣν ἐναπομένει μόνη ἡ περιουσία, ἣν μοναχὸς γενόμενος εἰσεκόμισεν. Ἐν Σάμῳ ὁ ἄνευ εὐλόγου αἰτίας καταλιπὼν τὴν μονὴν τῆς μετανοίας αὐτοῦ, καὶ εἰς ἄλλην, ἄνευ ἀδείας τῆς ἐπιτροπείας, ἀπελθὼν μοναχὸς στερεῖται ἐπὶ ἕνα μῆνα τοῦ μισθοῦ αὐτοῦ, ἂν δ' ἐξακολουθῇ ἀρνούμενος νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν μονὴν αὐτοῦ ἀποβάλλεται αὐτῆς ὁριστικῶς.

Ὁ μοναχὸς δὲν δύναται νὰ διαθέσῃ διὰ διαθήκης, ἀλλ' οὐδὲ διὰ πράξεων ἐν ζωῇ χαριστικῶς τὴν μετὰ τὴν κατάταξιν αὐτοῦ ἐν τῇ μονῇ ὁπωσδήποτε κτηθεῖσαν, αὐτῷ δ' ἀνήκουσαν περιουσίαν. Μόνον τὴν χρῆσιν ἐφ' ὅρου ζωῆς τοῦ κελλίου αὐτοῦ ἐπιτρέπεται νὰ διαθέσῃ ὑπὲρ τοῦ ὑποτακτικοῦ αὐτοῦ, ὄντος ἢ γενομένου μοναχοῦ. Ἐν Κρήτῃ ὅμως καὶ τοῦτο περιέρχεται τῇ μονῇ.

Πᾶσα ἡ λοιπὴ περιουσία τοῦ τελευτήσαντος μοναχοῦ περιέρχεται κληρονομικῷ τίτλῳ κατὰ τὸ ἥμισυ τῇ τῆς μετανοίας ἢ ἐγκαταβιώσεως αὐτοῦ μονῇ, κατὰ δὲ τὸ ἕτερον ἥμισυ τῷ διαδεξαμένῳ τὸ γενικὸν ἐκκλησιαστικὸν ταμεῖον ὀργανισμῷ διοικήσεως τῆς ἐκκλησιαστικῆς περιουσίας. Ἐν Κρήτῃ τοῦ ἀδιαθέτου τελευτήσαντος μοναχοῦ λαμβάνουσι τὰ μὲν τυχὸν ὑπάρχοντα νόμιμα τέκνα τὴν νόμιμον αὐτῶν μοῖραν, ἡ δὲ μονὴ τὴν λοιπὴν περιουσίαν αὐτοῦ· τέκνων δὲ μὴ ὄντων, πᾶσα περιουσία ἣν εἶχε κατὰ τὴν εἰς τὴν μονὴν εἴσοδον ἢ ἐκτήσατο μετὰ τὴν ἀπόκαρσιν ἐκ κληρονομίας ἢ ἄλλως, ἀνήκει τῇ μονῇ, ᾗ περιέρχεται ἡ ἐν τῷ κελλίῳ τοῦ τελευτήσαντος μοναχοῦ εὑρεθεῖσα κινητὴ περιουσία.

Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει πᾶσα ἡ μετὰ τὴν κουρὰν κτηθεῖσα περιουσία τοῦ μοναχοῦ περιέρχεται τῇ μονῇ αὐτοῦ, ὁπωσδήποτε καὶ ἂν ἤθελεν ἀποβιώσει οὗτος ἄνευ ἀπολυτηρίου τῆς μονῆς αὐτοῦ. Διὰ τὰ χρέη τῶν μοναχῶν τὰ συναφθέντα ἄνευ ἐγγράφου ἀδείας τῆς μονῆς δὲν εὐθύνεται αὕτη.

***Μοναχῶν διαιρέσεις.*** Οἱ μοναχοὶ διαιροῦνται:

Α') Εἰς *κεχειροτονημένους* (ἱερομονάχους, ἱεροδιακόνους) καὶ μή. Ἀρχαιότερον πρὸς τὴν αὐστηρὰν τήρησιν τοῦ ἀσκητικοῦ βίου, δὲν ἐχειροτονοῦντο εἰς διακόνους ἢ ἱερεῖς οἱ μοναχοί, μετέβαινον δ' εἰς τὸν πλησιέστερον ναὸν πρὸς ἀκρόασιν τῶν ὑπὸ τοῦ ἐφημεριακοῦ κλήρου τελουμένων ἱερῶν ἀκολουθιῶν. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ὅμως καθ' ἣν ἤρχισαν νὰ ἀνεγείρωνται ναοὶ καὶ ἐν τοῖς μοναστηρίοις, ἱερεὺς πρὸς τέλεσιν τῶν ἐν αὐτοῖς ἱερῶν ἀκολουθιῶν προυχειρίζετο ὁ τῆς μονῆς πνευματικὸς ἢ καὶ ὁ ἡγούμενος, εἶτα δὲ καὶ ἄλλοι τοῦ μοναστηρίου μοναχοί.

Β') Εἰς *ρασοφόρους, μικροσχήμους* καὶ *μεγαλοσχήμους.*

1) Ρασοφόροι καλοῦνται ἐκεῖνοι, εἰς οὕς, μετὰ τὴν ἐν τῷ μοναστηρίῳ γενομένην δοκιμασίαν ἀξίους κριθέντας, παρέχεται ἄνευ δόσεως ἐπαγγελίας τὸ ράσον, ἤτοι τὸ μοναχικὸν περίβλημα δι' ἰδίας ἐκκλησιαστικῆς τελετῆς ἐν τῷ ναῷ ὑπὸ τοῦ ἡγουμένου τοῦ μοναστηρίου, παρόντων καὶ τῶν λοιπῶν ἀδελφῶν. Οἱ ρασοφόροι ὀφείλουσι νὰ τηρῶσι τὰς μοναστικὰς διατάξεις καὶ τὰς ἐκ τῆς ἐπαγγελίας ὑποχρεώσεις, καίπερ μὴ δόντες τοιαύτην. Ἡ τοιαύτη ὅμως ὑποχρέωσις ἔχει χαρακτῆρα ἁπλῶς ἠθικόν, οὐχὶ δὲ καὶ νομικόν, διὸ ὁ ρασοφόρος δύναται νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὸν κατὰ κόσμον βίον.

2) Μικρόσχημοι καλοῦνται ἐκεῖνοι, οἵτινες κατὰ τὴν κουρὰν περιβάλλονται τὸ μοναχικὸν σχῆμα καὶ ὑπισχνοῦνται τὴν κατὰ πάντα τὸν βίον τήρησιν αὐστηρᾶς ἐγκρατείας, ὑπακοῆς καὶ ἀκτησίας. Οἱ μικρόσχημοι ὀφείλουσι νὰ ἐγκαρτερῶσιν ἐν τῷ μοναχικῷ βίῳ κατὰ πᾶσαν τὴν ζωὴν αὐτῶν.

3) Μεγαλόσχημοι ἢ «μοναχοὶ τοῦ ἀγγελικοῦ σχήματος» καλοῦνται ἐκεῖνοι, οἵτινες δι' ἰδίας ἐκκλησιαστικῆς τελετῆς ἐν τῷ μοναστηριακῷ ναῷ ἐπαναλαμβάνουσιν αὐστηρότερον ἔτι τὴν τῶν μικροσχήμων ἐπαγγελίαν· περιβάλλονται δὲ τὸ κουκούλιον ἀντὶ τοῦ παρακαμηλαυχίου καὶ τὸν διὰ σταυρῶν πεποικιλμένον ἀνάλαβον ἢ παραμανδύαν. Οἱ μεγαλόσχημοι ὀφείλουσι νὰ διανύωσι τὸν βίον ἐν αὐστηρᾷ νηστείᾳ καὶ ἀδιαλείπτῳ προσευχῇ. Ἡ ἰδιότης τοῦ μεγαλοσχήμου δίδεται μόνον εἰς τοὺς μοναχοὺς ἐκείνους, οἵτινες ἐπὶ τριακονταετίαν διεκρίθησαν διὰ τὴν ἀπαρέγκλιτον τήρησιν τῶν μοναχικῶν κανόνων. Γάμον δύνανται νὰ συνάψωσι μόνον οἱ ρασοφόροι, οὐχὶ δ' οἱ μικρόσχημοι καὶ οἱ μεγαλόσχημοι, εἰς οὓς μόνον ἀφορᾷ τὸ ἀνατρεπτικὸν ἀπολύτου καὶ δημοσίας τάξεως κώλυμα πρὸς γάμον ἐκ τῆς ὁμολογίας τῆς παρθενίας (περὶ τῶν ἐκκλησιαστικῶν ποινῶν, αἵτινες ἐπιβάλλονται εἰς τὰς μοναστρίας τὰς παραβιαζούσας τῆς ἁγνείας τὴν ἐπαγγελίαν διὰ πορνικῆς ὁμιλίας ἢ συνάψεως γάμου βλ. λ. *ἠθῶν πλημμελήματα [Κανον. Δίκ.]* ἐν τ. ΙΒ', σελ. 184).

Ἐν τῇ ρωμαϊκῇ Ἐκκλησίᾳ κατὰ τὸν κανόνα 1058 τοῦ κώδικος τοῦ κανονικοῦ δικαίου ἀπαγορεύεται ὁ γάμος εἰς τοὺς δόντας τὴν ἁπλῆν ἐπαγγελίαν (votum simplex): α') τῆς παρθενίας (votum virginitatis), δι' ἧς ἀπαγορεύεται πᾶν τὸ παραβιάζον τὴν παρθενίαν, β') τῆς τελείας ἁγνείας (votum perfectae castitatis), δι' ἧς ἐπιβάλλεται ἀποχὴ ἀπὸ πάσης σαρκικῆς ὁμιλίας θεμιτῆς τε (συζυγικῆς) καὶ ἀθεμίτου (abstinentia ab omni delectatione venerea sine externa sive interna, sive licita [scil. conjugalis] sive illicita, γ') τοῦ μὴ συνάψαι γάμον (votum non nubendi) καὶ δ') τοῦ ἀσπασθῆναι τὸν μοναχικὸν βίον (votum amplectendi statum religiosum).

Κατὰ τὸν κανόνα 1073 τοῦ αὐτοῦ κώδικος ἡ σύναψις γάμου διὰ παραβιάσεως τῶν πανηγυρικῶν ἐπαγγελιῶν (vota solemnia) καθίστησι τὸν γάμον ἄκυρον, τῶν δ' ἁπλῶν ἐπαγγελιῶν (vota simplicia) μόνον ἐν τοῖς ὑπὸ τοῦ ἀποστολικοῦ θρόνου ρητῶς ὁριζομένοις θέμασιν.

[Πρβλ. *Κ. Μ. Ράλλη*, «Περὶ τῆς τῶν μονῶν διαιρέσεως κατὰ τὸ δίκαιον τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας» (ἐν Ἀθήναις 1924).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «Ἐγχειρίδιον τοῦ Ἐκκλησιαστικοῦ δικαίου» (τεῦχ. Α' 1927, σελ. 171—198).] Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

— *[Ἱστορ.]* Βλ. λ. *μοναχικὸς* βίος.

**μοναστηριακός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς μοναστήρια, ὁ τῶν μοναστηρίων: «μοναστηριακὴ περιουσία», «μοναστηριακὰ ζητήματα».

**— μοναστηριακὰ ἢ ἐκκλησιαστικὰ κτήματα** *[Νομ.]*. Τὸ ζήτημα τῆς διαχειρίσεως καὶ γενικῶς τῆς διαθέσεως τῶν πόρων ἐκ τῶν ἐκκλησιαστικῶν ἢ μοναστηριακῶν κτημάτων ἀπησχόλησε τὴν ἑλληνικὴν διοίκησιν ἀπὸ τῶν πρώτων μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν χρόνων. Ἐπὶ Καποδιστρίου ἡ Δ' ἐν Ἄργει ἐθνοσυνέλευσις, διὰ ψηφίσματος τῆς 2 Αὐγούστου 1829, ἐθέσπισε τὴν ἀρχὴν ὅτι τὰ εἰσοδήματα διαφόρων θρησκευτικῶν ἱδρυμάτων καὶ μοναστηρίων προσδιορίζονται ὑπὲρ τῆς ἐκπαιδεύσεως τοῦ κλήρου καὶ δι' ἄλλους κοινωφελεῖς σκοπούς. Βραδύτερον, ἐπὶ τῆς μοναρχίας, ὁ Μάουρερ ἐδημοσίευσε τὸ βασιλικὸν διάταγμα τῆς 25 Σεπτεμβρίου 1833 «Περὶ τῶν ἐν τῷ βασιλείῳ μοναστηρίων», διὰ τοῦ ὁποίου ἐφηρμόζετο ἡ ἐπὶ τοῦ Καποδιστρίου καθιερωθεῖσα ἀρχή. Κατ' αὐτὸ τὰ ἠρημωμένα καὶ ἐγκαταλελειμμένα μοναστήρια καὶ μοναστηριακὰ κτήματα θὰ κατελαμβάνοντο διὰ λογαριασμὸν τοῦ δημοσίου, ὅπως χρησιμεύσουν πρὸς βελτίωσιν τῶν ἐκκλησιαστικῶν καὶ τῆς ἐκπαιδεύσεως. Ἐπίσης κατηργοῦντο αἱ ἔχουσαι κάτω τῶν 6 μοναχῶν μοναί, μετατιθεμένων τῶν ἐν αὐταῖς μοναχῶν εἰς τὰς διατηρουμένας. Ἡ διαχείρισις τῶν ἐκ τῶν κτημάτων τούτων προσόδων ἀνετέθη εἰς τὴν γραμματείαν (ὑπουργεῖον) τῶν Ἐκκλησιαστικῶν, ἱδρύετο δὲ συγχρόνως δυνάμει τῶν βασιλικῶν διαταγμάτων τῆς 19ης Αὐγούστου καὶ 25ης Σεπτεμβρίου 1833 ἐκκλησιαστικὸν ταμεῖον, τοῦ ὁποίου αἱ πρόσοδοι θὰ διετίθεντο διὰ τὴν βελτίωσιν τῆς Ἐκκλησίας καὶ τῆς παιδείας. Βραδύτερον, ἐπειδὴ αἱ πρόσοδοι τοῦ ταμείου τούτου δὲν ἐπήρκουν διὰ τὸν σκοπὸν διὰ τὸν ὁποῖον προωρίσθησαν, ὁ ὀργανισμὸς αὐτοῦ ἐτροποποιήθη ὑπὸ τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος τῆς 1/13 Δεκεμβρίου 1834 (Ἐφημ. Κυβ. ἀρ. 41 τῆς 21 Δεκεμβρίου 1834). Κατ' αὐτὸ τὸ ἐκκλησιαστικὸν ταμεῖον ὑπήγετο εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Οἰκονομικῶν, τὸ ὁποῖον ἐτήρει τοὺς λογαριασμοὺς αὐτοῦ εἰς ἴδια χωριστὰ βιβλία. Περαιτέρω ρηταὶ διατάξεις σειρᾶς ὅλης νόμων ἀφορώντων τὴν διανομὴν γαιῶν καὶ φυτειῶν, τῶν ἐθνικῶν κτημάτων (ἰδίᾳ οἱ ΤΠΣΤ' τοῦ 1871, ΥΛΑ' (1871) ΒΥΠΑ' (1897) καὶ ΣΟΖ', 1855), ἐφαρμόζονται καὶ ἐπὶ τῶν ἐκκλησιαστικῶν κτημάτων. Ἡ καθιερουμένη ὑπὸ τῶν νεαρῶν 111 καὶ 131 τεσσαρακονταετὴς παραγραφὴ τῶν ἐκκλησιῶν καὶ τῶν εὐαγῶν ἱδρυμάτων, ἐξηκολούθει ὑφισταμένη καὶ ὑπὲρ τῶν κτημάτων τῶν διαλυθεισῶν μονῶν, ὡς συνάγεται ἐκ τοῦ βασιλικοῦ διατάγματος (νόμου ἰσχὺν ἔχοντος) τῆς 29 Ἀπριλίου 1843, ὅστις ὁρίζει ὅτι τὰ κτήματα ταῦτα διετήρουν τὸν χαρακτῆρά των ὡς ἐκκλησιαστικῶν (ἄρθρ. 1). Ὁ νόμος ΓΧΞ' τῆς 24 Μαρτίου 1910 κατήργησε τὴν μακροπρόθεσμον ταύτην παραγραφήν, περιορίσας αὐτὴν εἰς τριακονταετῆ. Τῷ 1917, ἀπὸ τῆς συστάσεως τοῦ ὑπουργείου Γεωργίας, ἡ διοίκησις τῶν εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Οἰκονομικῶν ὑπαγομένων μοναστηριακῶν κτημάτων ὑπήχθη εἰς αὐτὸ καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1925, ὅπότε συνεστήθη ἡ «Ἀεροπορικὴ ἄμυνα» (Ν. Δ. 26 Ἀπριλίου 1925).

Ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἀκίνητον περιουσίαν τῶν ἐν λειτουργίᾳ μονῶν, αὕτη κατελέγετο εἰς τὰ μοναστηριακὰ κτήματα, ἡ διαχείρισις δὲ αὐτῶν ἐρρυθμίσθη διὰ τοῦ ἰσχὺν νόμου ἐπέχοντος διατάγματος τῆς 28 Ἰουλίου 1858 «Περὶ κανονισμοῦ μοναστηρίων». Τῷ 1909 διὰ τοῦ νόμου ΓΥΙΔ' (3414) ἱδρύθη τὸ Γενικὸν *ἐκκλησιαστικὸν* ταμεῖον (βλ. λ.), εἰς τὸ ὁποῖον ὑπήχθησαν μεταξὺ ἄλλων καὶ τὰ περισσεύματα ἐκ τῆς ἐτησίας διαχειρίσεως τῶν περιουσιῶν τῶν λειτουργουσῶν ἐν τῷ κράτει μονῶν. Διαφωνία προκληθεῖσα κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ὅσον ἀφορᾷ τὴν ὑπὸ τῆς Ἀεροπορικῆς Ἀμύνης διαχείρισιν ὡρισμένων μοναστηριακῶν περιουσιῶν, ἐρρυθμίσθη διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τῆς 4 Νοεμβρίου 1926, «Περὶ ἀποδόσεως εἰς τὴν Ἐκκλησίαν τῶν περιελθόντων εἰς τὴν Ἀεροπορικὴν Ἄμυναν κτημάτων». Διὰ τοῦ νομοθετικοῦ διατάγματος τούτου προβλέπεται ἡ διάθεσις μέρους ἐκ τῶν μοναστηριακῶν κτημάτων πρὸς ἀποκατάστασιν ἀκτημόνων καλλιεργητῶν κλπ. (Τὰ ἰσχύοντα ἐπὶ τῆς ἀπαλλοτριώσεως τῶν ἐκκλησιαστικῶν κτημάτων βλ. λ. *ἀπαλλοτριώσεις.*) Τὰ τῆς διαχειρίσεως τῆς μοναστηριακῆς καὶ ἐκκλησιαστικῆς περιουσίας διέπονται σήμερον ὑπὸ τοῦ νεαροῦ νόμου 4684 (Ἐφ. Κυβ. φύλλ. 150 τῆς 9—10 Μαΐου 1930) «Περὶ διοικήσεως καὶ διαχειρίσεως τῆς ἐκκλησιαστικῆς περιουσίας καὶ περὶ συγχωνεύσεως τῶν μικρῶν μονῶν», δι' οὗ κατηργήθη τὸ «Γενικὸν Ἐκκλησιαστικὸν Ταμεῖον» τοῦ νόμου ΓΥΙΔ' καὶ ἱδρύθη ὑπὸ τὴν ἐπωνυμίαν «Αὐτόνομος ὀργανισμὸς διοικήσεως τῆς ἐκκλησιαστικῆς περιουσίας», εἰς τὸν ὁποῖον περιέρχεται ἡ σημερινὴ περιουσία τῶν μονῶν, ἡ ἐκποιηθεῖσα ἢ ἀπαλλοτριωθεῖσα τοιαύτη καὶ ἄλλοι πόροι (βλ. λ. *Ὀργανισμὸς* Διοικήσεως τῆς Ἐκκλησιαστικῆς περιουσίας). [Πρβλ. *Ἰ. Παναγιωτοπούλου* «Κῶδιξ νομοθεσίας δημοσίων κτημάτων» (1919).] Χ. Δ.

**—μοναστηριακὴ σφραγὶς** *[Ἐκκλησ. Δικ.].* Μοναστηριακὴ σφραγίς: 1) Εἶναι τὸ ὄργανον πρὸς σφράγισιν τῶν ὑπὸ τῆς μονῆς ἐκδιδομένων ἐγγράφων. Ἀρχαιότερον αἱ μοναὶ δὲν ἐποιοῦντο χρῆσιν σφραγίδων, καθ' ὅσον τὰ ἔγγραφα αὐτῶν μόνον ὑπεγράφοντο ὑπὸ τῶν μοναστηριακῶν πατέρων. Ἀπὸ τοῦ ΙΑ' αἰῶνος ἐγίνετο χρῆσις σφραγῖδος μολυβδίνης ἐν εἴδει ναμίσματος κάτωθεν τοῦ ἐγγράφου διὰ νήματος λινοῦ ἀπῃωρημένης καθ' ὃν τρόπον αἱ αὐτοκρατορικαὶ ἐν τοῖς χρυσοβούλλοις καὶ αἱ πατριαρχικαὶ ἐν τοῖς σιγιλλίοις. Ἕνα περίπου αἰῶνα βραδύτερον δὲν ἐγίνετο πλέον χρῆσις τῆς τοιαύτης μολυβδίνης σφραγῖδος, ἴσως διὰ τὸ δυσχερὲς τῆς κατασκευῆς καὶ τῆς προμηθείας, τῶν ἐγγράφων τῶν μονῶν μάλιστα δὲ τῶν ἁγιορειτικῶν μόνον ὑπογραφομένων ὑπὸ τῶν μοναστηριακῶν πατέρων, βραδύτερον δ' ἔτι ἤρξατο ἡ χρῆσις κηροβούλλου σφραγῖδος διὰ τῆς ἐν τῇ προμετωπίδι τοῦ ἐγγράφου ἀποτυπώσεως τῆς σφραγῖδος ἐπὶ κηροῦ, καθ' ὃν τρόπον γίνεται νῦν δι' ἱσπανικοῦ κηροῦ σφράγισις. Ἀπὸ μεσοῦντος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος δὲν ἐγίνετο πλέον τῆς τοιαύτης κηροβούλλου σφραγῖδος, εἰσαχθείσης τῆς χρήσεως σφραγῖδος ἐντύπου.

2) Εἰκονίζει συνήθως τὰ ἱερὰ γεγονότα τὰ ἀφορῶντα εἰς τὸν βίον τοῦ Σωτῆρος ἢ τῆς Θεοτόκου, εἰς ὧν τὴν ἀνάμνησιν αἱ μοναὶ εἶναι ἱδρυμέναι, ἢ τὸν οὗ τὸ ὄνομα φέρουσι μάρτυρα ἢ ἅγιον, ἢ ἁγίους, ἢ αὐτὸν τὸν Σωτῆρα, ἢ πρὸς τῷ οὗ τὸ ὄνομα φέρουσι ἁγίῳ καὶ ἕτερον ἅγιον ἢ πρὸς τῇ Θεοτόκῳ καὶ ἅγιόν τινα. Παρ' ἡμῖν ἡ μοναστηριακὴ σφραγίς, ἧς μόνης γίνεται ὑπηρεσιακὴ χρῆσις, φέρει νῦν ἐν τῷ μέσῳ μὲν τὸν σταυρόν, κύκλῳ δέ, πρὸς ἀποφυγὴν συγχύσεως διὰ τὴν ὕπαρξιν πλειόνων ὁμωνύμων μονῶν (ὡς λ. χ. τῶν Ταξιαρχῶν), τὸ ὄνονα τῆς μονῆς καὶ τὸν τόπον ἐν ᾧ αὕτη κεῖται. Ἡ δὲ οὐχὶ πρὸς ὑπηρεσιακὴν χρῆσιν, ἀλλὰ πρὸς κόσμον τῶν μοναστηριακῶν ἐγγράφων δευτέρα σφραγὶς ἔχει τὴν εἰκόνα τοῦ ἁγίου αὐτῶν ἐντέχνως γεγλυμμένην ἐπὶ μιᾶς μόνης πλακός. Ἐν Κρήτῃ αἱ μοναὶ ἔχουσι σφραγῖδα φέρουσαν ἐν τῷ μέσῳ τὴν εἰκόνα τοῦ ἁγίου αὐτῶν, κύκλῳ δὲ τὸ ὄνομα αὐτῶν. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἡ σφραγὶς τῶν σκητῶν φέρει πρὸς τῷ τῆς σκήτης ὀνόματι καὶ τὸ τῆς κυριάρχου μονῆς, ἡ δ' ἱερᾶς κοινότητος φέρει ἐν τῷ μέσῳ τὴν εἰκόνα τῆς Θεοτόκου «ἡ πλατυτέρα», κύκλῳ δὲ τὴν ἐπιγραφήν: «σφραγὶς τῆς ἱερᾶς κοινότητος τοῦ Ἁγίου Ὄρους Ἄθω».

3) Δέον νὰ ὑπάρχῃ παρ' ἡμῖν ἐν πάσῃ διατηρουμένῃ μονῇ, ἀλλ' οὐχὶ καὶ ἐν τοῖς μετοχίοις αὐτῆς, διότι διὰ τῆς ὑπὸ τὴν κυρίαρχον μονὴν ὑπαγωγῆς, ἀπέβαλον ταῦτα τὴν αὐθυπαρξίαν αὐτῶν. Τοὐναντίον κέκτηνται ἰδίαν σφαγῖδα τὰ ἐν Βλαχίᾳ μετόχια τοῦ Παναγίου Τάφου καὶ τοῦ Σινᾶ καὶ τοῦ Ἄθω, ὡς καὶ αἱ ἁγιορειτικαὶ σκῆται.

4) Εἶναι εἴτε ἄτμητος, εἴτε εἰς τμήματα διῃρημένη, οὖσα διμερὴς ἢ τριμερής, ὡς παρ' ἡμῖν, ἢ τετραμερής. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἡ σφραγὶς τῶν σκητῶν εἶναι τριμερὴς ἢ τετραμερής, τῆς δ' ἱερᾶς κοινότητος τετραμερής. Τινὲς τῶν μονῶν ὡς καὶ τῶν ἐν Ἁγίῳ Ὄρει σκητῶν ἐκέκτηντο πλείονας σφραγῖδας. Ἑκάστη σκήτη ἔχει μίαν μόνην ἀναγνωρισμένην παρὰ τῆς κυριάρχου μονῆς σφραγῖδα. Αἱ παρ' ἡμῖν μοναί, πρὸς τῇ τριμερεῖ μοναστηριακῇ σφραγῖδι, ἧς μόνης γίνεται ὑπηρεσιακὴ χρῆ-

Digitized by Google

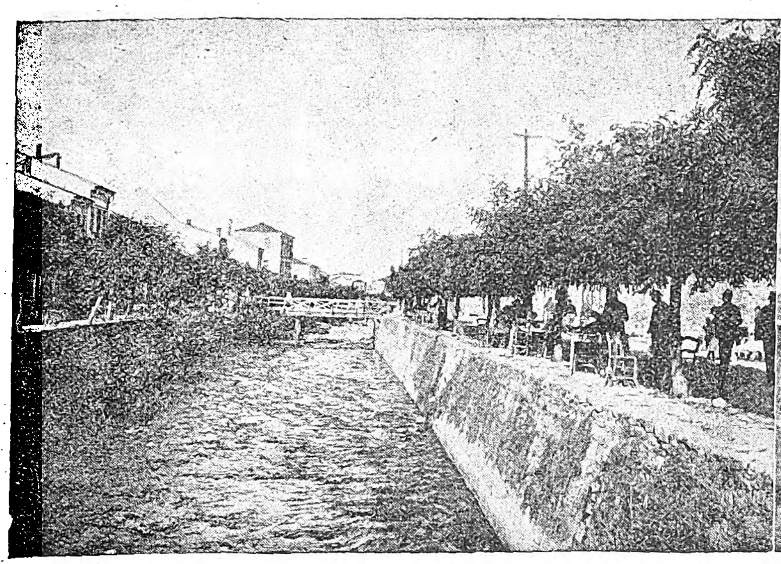

*Ὁ ποταμὸς Δραγόρας.*

*Μία ὁδὸς τοῦ Μοναστηρίου.*

σις, κέκτηνται πρὸς κόσμον μόνον τῶν ἐπισήμων ἐγγράφων καὶ δευτέραν σφραγῖδα, ἐστερημένην ὅμως νομικῆς ἀξίας.

5) Χρησιμεύει πρὸς σφράγισιν τῶν ὑπὸ τῶν μονῶν ἐκδιδομένων ἐγγράφων. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει σφραγίζεται ἡ ἀλληλογραφία τῆς ἱερᾶς κοινότητος ὑπὸ τῆς ἱερᾶς ἐπιστασίας, τὰ δ' ἔγγραφα τῶν μονῶν διὰ τῆς σφραγῖδος τῆς μονῆς. Διὰ δὲ τῆς σφραγῖδος τῆς σκήτης μόνον τὰ ἀνταλλασσόμενα μετὰ τῆς κυριάρχου μονῆς ἔγγραφα καὶ τὰ ἀφορῶντα εἰς ἐλέη καὶ βοηθήματα ἐν Ἁγίῳ Ὄρει.

6) Διαφυλάσσεται: Α) Ἄτμητος μὲν οὖσα ὑφ' ἑνὸς μόνον καὶ δὴ τοῦ ἡγουμένου, ἡ δὲ τῆς σκήτης ὑπὸ τοῦ δικαίου αὐτῆς. Β) Πολυμερὴς δ' οὖσα ὑπὸ πλειόνων πατέρων καὶ δή: α') Τὸ μὲν ἓν τμῆμα τῆς διμεροῦς μοναστηριακῆς σφραγῖδος ὑπὸ τοῦ ἡγουμένου, τὸ δ' ἕτερον ὑπὸ τοῦ ἐπιτρόπου, ἢ β') Ὑπὸ πατέρων ἰσαρίθμων πρὸς τὰ ἐξ ὧν αὕτη ἀπαρτίζεται τμήματα, ὡς ἐν Κρήτῃ, ἀρχαιότερον δὲ καὶ παρ' ἡμῖν ἐν τῷ παλαιῷ κράτει. Ἡ σφραγὶς τῶν ἁγιορειτικῶν μονῶν διαφυλάσσεται ἐν μὲν τοῖς κοινοβίοις ὑπὸ τοῦ ἡγουμένου καὶ τῆς ἐπιτροπείας, ἐν δὲ τοῖς ἰδιορρύθμοις ὑπὸ τῆς διοικούσης ἐπιτροπείας. Τῆς τετραμεροῦς σφραγῖδος τῆς ἱερᾶς κοινότητος ἕκαστος τῶν ἐπιστατῶν κρατεῖ ἀνὰ ἓν τμῆμα. Παρ' ἡμῖν, ἀρχαιότερον, τῆς τριμεροῦς μοναστηριακῆς σφραγῖδος τὸ μὲν ἓν μέρος διεφυλάσσετο ὑπὸ τοῦ ἡγουμένου, τὰ δ' ἄλλα δύο ὑπὸ τῶν δύο μοναστηριακῶν συμβούλων. Καὶ ἐν Κρήτῃ ἕκαστον τῶν μελῶν τοῦ συμβουλίου τῆς μονῆς διαφυλάσσει ἓν τῶν τριῶν τμημάτων, ἐξ ὧν ἀπαρτίζεται ἡ μοναστηριακὴ σφραγίς. γ') Ὑπὸ πατέρων ἰσαρίθμων πρὸς τὰ ἐξ ὧν ἀπαρτίζεται ἡ μοναστηριακὴ σφραγὶς τμήματα μετὰ μόνης τῆς διαφορᾶς ὅτι τὸ ἐν τούτων μετὰ τοῦ συσφίγγοντος τὸ ὅλον δεσμοῦ διαφυλάσσει εἷς τῶν τριῶν διοικητῶν, ἑκάτερος δὲ τῶν λοιπῶν ἀνὰ ἓν τμῆμα, ὡς παρ' ἡμῖν νῦν τοῦ ἡγουμένου διαφυλάσσοντος τὸ ἓν τῶν τριῶν τμημάτων μετὰ τοῦ συσφίγγοντος τὸ ὅλον δεσμοῦ, τῶν δὲ δύο ἑτέρων τμημάτων τῆς σφραγῖδος ὑφ' ἑκατέρου τῶν δύο μοναστηριακῶν συμβούλων. δ') Ὑπὸ ἰσαρίθμων πρὸς τὰ τμήματα τῆς μοναστηριακῆς σφραγῖδος μοναστηριακῶν πατέρων, ὑπὸ πάντων τῶν συγκοινοβιατῶν ἐκλεγομένων, τοῦ ἡγουμένου διαφυλάσσοντος μόνον τῆς σφραγῖδος τὴν λαβήν. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει, ἐν περιπτώσει ἀπουσίας ἐπιστάτου τινός, ἀνατίθεται τὸ τμῆμα τῆς σφραγῖδος αὐτοῦ εἴς τινα τῶν ἀντιπροσώπων τῆς ἐμπιστοσύνης αὐτοῦ, οὐδέποτε ὅμως εἰς συνεπιστάτην αὐτοῦ· ἐν περιπτώσει δ' ἀπουσίας πάντων τῶν ἀντιπροσώπων εἰς τὸν ἀρχιγραμματέα.

7) Χρησιμεύει πρὸς σφράγισιν τῶν μοναστηριακῶν ἐγγράφων, γινομένην ὑπ' ἐκείνων εἰς οὓς ἀνήκει ἡ τῆς μοναστηριακῆς σφραγῖδος διαφύλαξις. Οὕτω παρ' ἡμῖν ἡ τριμερὴς μοναστηριακὴ σφραγὶς τίθεται ἐπὶ τῶν ὑπὸ τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου ἐκδιδομένων ἐγγράφων δι' ἑνώσεως τῶν τριῶν ταύτης τμημάτων, παρόντων καὶ τῶν τριῶν τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου μελῶν, μεθ' ὃ διαλύεται αὖθις ἡ σφραγίς, τοῦ μὲν ἡγουμένου διαφυλάσσοντος, καθάπερ ἤδη εἴρηται, τὸ ἓν τῶν τριῶν τμημάτων αὐτῆς μετὰ τοῦ συσφίγγοντος τὸ ὅλον δεσμοῦ, ἑκατέρου δὲ τῶν λοιπῶν δύο μελῶν τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου ἀνὰ ἓν τῶν ἑτέρων δύο τμημάτων τῆς σφραγῖδος. Τὸ δὲ τυχὸν μειοψηφοῦν μέλος τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου οὔτε τὴν ὑπογραφὴν αὐτοῦ (ἣν δὲν δύναται νὰ ἀντικαταστήσῃ ἡ ἐπίθεσις σφραγῖδος), οὔτε τὴν ἐπίδοσιν τοῦ ὑπ' αὐτοῦ διαφυλασσομένου τμήματος τῆς σφραγῖδος δύναται νὰ ἀρνηθῇ, δικαιούμενον μόνον νὰ δηλώσῃ τὴν γνώμην αὐτοῦ ἐν τοῖς πρακτικοῖς καὶ τῇ προϊσταμένῃ ἀρχῇ, ὅτε αὕτη ἀποφασίζει ὁριστικῶς. Ἐν Ἁγίῳ Ὄρει τὰ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀποφάσεων τῆς ἱερᾶς κοινότητος ἀποστελλόμενα ἔγγραφα σφραγίζονται ὑπὸ τῶν ἐπιστατῶν διὰ τῆς κοινῆς σφραγῖδος· δὲν δύνανται δ' οὗτοι ἤ τις αὐτῶν νὰ ἀρνηθῇ τὴν σφράγισιν.

8) Μὴ τιθεμένη ἐπὶ τῶν σφραγιστέων ἐγγράφων ἐπακολούθημα ἔχει τὴν ἀκυρότητα αὐτῶν. Οὕτω, παρ' ἡμῖν ἡ παράλειψις διὰ τῆς τριμεροῦς μοναστηριακῆς σφραγῖδος σφραγίσεως τῶν ὑπὸ τοῦ μοναστηριακοῦ συμβουλίου ἐκδιδομένων ἐγγράφων ὀφείλομεν νὰ δεχθῶμεν ὅτι ἐπακολούθημα ἔχει τὴν ἀκυρότητα αὐτῶν, κἂν ταῦτα ἐσφραγίσθησαν διὰ τῆς δευτέρας σφραγῖδος τῆς ἐχούσης ἐγκεχαραγμένην τὴν εἰκόνα τοῦ ἁγίου τῆς μονῆς. [Πρβλ. τὸ ἀπὸ 9/21 Φεβρουαρίου 1835 Β. Δ. καὶ ἄρθρ. Δ' καὶ Ε' τοῦ ἀπὸ 28 Ἰουλίου 1858 Β.Δ. «περὶ κανονισμοῦ τῶν μοναστηρίων», Καταστατικοῦ τῆς ἐν Κρήτῃ ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας ἀπὸ 20 Δεκεμβρίου 1900 ἄρθρ. 113 καὶ Καταστατικοῦ χάρτου τοῦ Ἁγίου Ὄρους ἄρθ. 25, 27, 30, 31, 90 καὶ 172.—*Κ. Μ. Ράλλη*, «Περὶ τῶν μοναστηριακῶν σφραγίδων κατὰ τὸ δίκαιον τῆς ὀρθοδόξου ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας» (1914).] Κ. Μ. Ρ.

**— μοναστηριακὸν *ζήτημα*.** Τὸ μεταξὺ τῆς ὀρθοδόξου ἑλληνικῆς Ἐκκλησίας καὶ τῆς μολδοβλαχικῆς κυβερνήσεως προκῦψαν ζήτημα ἐκ τῆς κατασχέσεως τῶν ἐν Ρουμανίᾳ μοναστηριακῶν κτημάτων. Τὰ κτήματα ταῦτα, ἅτινα ἀπετέλουν τὸ πέμπτον περίπου τοῦ ρουμανικοῦ ἐδάφους, κατεσχέθησαν ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος Ἀλεξάνδρου Κούζα (1820—1873) πρὸς ἀνόρθωσιν τῆς οἰκονομικῆς καταστάσεως τῆς χώρας. Τὰ μοναστήρια, εἰς ἃ ἀνῆκον τὰ δημευθέντα κτήματα, εἶχον ταχθῆ ὑπὸ τῶν ἀφιερωτῶν ὑπὸ τὴν προστασίαν τῶν Ἐκκλησιῶν Κωνσταντινουπόλεως, Ἀντιοχείας καὶ Ἱεροσολύμων καὶ τῆς ἀδελφότητος τοῦ Ἁγίου Ὄρους (βλ. λ. *Κούζας*). Κ. Μ. Ρ.

**— Μοναστηριακὸν *συμβούλιον*.** Καλεῖται οὕτω παρ' ἡμῖν ἡ ἐκ τοῦ ἡγουμένου καὶ δύο συμβούλων ἀποτελουμένη ἀρχή, ἥτις διοικεῖ καὶ διαχειρίζεται τὴν περιουσίαν τῶν ἐν τῷ κράτει διατηρουμένων μονῶν. Τὸ μοναστηριακὸν συμβούλιον δηλοῦται παρ' ἡμῖν καὶ διὰ τοῦ ὅρου *ἡγουμενοσυμβούλιον* (βλ. λ. *ἡγούμενος*). Κ. Μ. Ρ.

**— μοναστηριακὸς *κῶδιξ*** *[Ἐκκλ. Δίκ.]*· βλ. λ. *κῶδιξ μοναστηριακός*.

**Μοναστήριον (*Βιτώλια*)** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοδυτικῆς Μακεδονίας, ἀνήκουσα εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν (ἐν τῷ θανάτῳ τοῦ Βαρδάρη), 13 χιλιόμ. ἀπὸ τῶν ἑλληνικῶν συνόρων. Κεῖται ἐπὶ εὐρέος καὶ κλειστοῦ ὁμωνύμου ὀροπεδίου καὶ εἰς τοὺς ΒΑ. πρόποδας τοῦ ὄρους Βαρνοῦντος ἢ Περιστερίου. Διασχίζεται ὑπὸ τοῦ ἐκ τοῦ ὄρους τούτου κατερχομένου ποταμοῦ Δραγόρα (Ὑδραγόρου), παραποτάμου τοῦ Ἐριγῶνος, ὅστις σχηματίζει διάφορα ἕλη ἐν τῷ ὀροπεδίῳ, καθιστῶν ὅμως τοῦτο εὔφορον, καὶ ἐξέρχεται διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Μοριχόβου εἰς τὸν Ἀξιόν. Ἡ πόλις ἀριθμεῖ 32.527 κατοίκους (1921) καὶ εἶναι κέντρον τῆς κατὰ τὴν περιφέρειαν αὐτῆς ἀσκουμένης γεωργίας καὶ κτηνοτροφίας, ἔχουσα καὶ μικρὰν βιομηχανίαν (βυρσοδεψεῖα, ταπητουργεῖα καὶ ὑφαντουργεῖα).

Ἡ πόλις ἤκμασεν ἄλλοτε σημαντικῶς (βλ. κατωτ. *[Ἱστορ.]*) καὶ σήμερον ὅμως διατηρεῖ εἰσέτι τὴν ἐμπορικὴν καὶ στρατηγικὴν σημασίαν της. Διὰ ταύτης διέρχεται ὁδὸς ἐκ Θεσσαλονίκης καὶ Δυρραχίου (ὡς τὸ πάλαι ἡ δι' Ἡρακλείας Ἐγνατία ὁδός), ἄλλη δὲ ἄγει εἰς τὴν περιοχὴν τῶν μεγάλων λιμνῶν, τὴν Κορυτσᾶν καὶ Ἰωάννινα, καὶ ἑτέρα πρὸς τὸν Περλεπὲν—Βελεσσά. Σιδηροδρομικὴ ἔτι γραμμὴ ἐκ τῆς Θεσσαλονίκης διὰ Φλωρίνης φθάνει εἰς Μοναστήριον (206 χιλιόμ.), καὶ ἑτέρα νέα γραμμὴ συνδέει τὴν πόλιν διὰ τοῦ Περλεπὲ μετὰ τῶν Βελεσσῶν, δι' ἧς διέρχεται ἡ γραμμὴ Θεσσαλονίκης — Βελιγραδίου καὶ λοιπῆς Εὐρώπης.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ πόλις ἀναφέρεται ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ἱστορικῶν καὶ χρονογράφων ὑπὸ τὸ ὄνομα *Βουτέλιον* μετὰ τὸν Ι' αἰῶνα καὶ φαίνεται ὅτι ἐκτίσθη κατὰ τοὺς χρόνους τῆς αὐτόθι βουλγαροκρατίας, κατὰ τὸν Θ' ἢ Ι' αἰῶνα, πλησίον τῆς κατεστραμμένης τότε ἀρχαίας *Ἡρακλείας τῆς Λυγκηστίδος*, καλουμένης καὶ *Πελαγονίας*, ὄνομα ὅπερ κατελείφθη εἰς τὴν ἐπαρχίαν καὶ διετηρήθη ἐν τῷ τίτλῳ τῶν κατὰ καιροὺς ἀρχιερέων τῆς πόλεως («ὁ Πελαγονίας μητροπολίτης ὑπέρτιμος καὶ ἔξαρχος πάσης ἄνω Μακεδονίας»). Ὁ υἱὸς τοῦ βασιλέως των Βουλγάρων Σαμουὴλ εἶχεν ἐνταῦθα τὰ ἀνάκτορα αὐτοῦ, ἅτινα ὁ αὐτοκράτωρ τῆς Κωνσταντινουπόλεως Βασίλειος ὁ Βουλγαροκτόνος, γενόμενος κύριος τῶν χωρῶν τούτων, ἐπυρπόλησε (1015). Κατὰ τοὺς ἀγῶνας τῶν Βυζαντινῶν αὐτοκρατόρων κατὰ τῶν σταυροφόρων, τῶν ὁποίων ἐπωφελούμενοι οἱ Σέρβοι προσεπάθουν νὰ καταλάβουν ἐπαρχίας τοῦ κράτους, ἡ Πελαγονία ὑπῆρξε τὸ κέντρον στρατιωτικῶν ἐπιχειρήσεων μεταξὺ τῶν Κομνηνῶν καὶ τῶν Σέρβων, καθ' ἃς ἡ πόλις καὶ ἡ ἐπαρχία ὑπέστησαν πολλὰ δεινά.

Ἡ *Πελαγονία* ὑπέκειτο ἐκκλησιαστικῶς εἰς τὴν δικαιοδοσίαν τῆς ἀρχιεπισκοπῆς Ἀχρίδος μέχρι τῆς κατὰ τὸ 1767 καταλύσεως τοῦ αὐτοκεφάλου τῆς ἀρχιεπισκοπῆς ταύτης, ἔκτοτε δὲ περιῆλθε μετὰ τῶν λοιπῶν, εἰς τὴν ἐξουσίαν τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχικοῦ θρόνου, διατελέσασα μέχρις ἐσχάτων μητρόπολις.

Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος τὸ Μοναστήριον ἦτο μετρία κώμη, ἀλλὰ κατὰ τὰ τέλη τοῦ αἰῶνος τούτου εἶχε 30—40 χιλ. κατοίκων καὶ ἐθεωρεῖτο ὡς δευτέρα πόλις τῆς Μακεδονίας· ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς ἦτο διαφόρων ἐθνικοτήτων (12—13 χιλ. Τοῦρκοι, ἢ ἰθαγενεῖς Μουσουλμάνοι, 8—9 χιλ. Ἕλληνες βλαχόφωνοι, 6—7 χιλ. Βούλγαροι καὶ Σέρβοι καὶ 4 χιλ. Ἰουδαῖοι), εὑρισκομένων πρὸς ἀλλήλους εἰς ζωηρὸν ἀνταγωνισμὸν λόγῳ τῆς διαμφισβητήσεως τῆς Μακεδονίας μεταξὺ τῶν Ἑλλήνων, Σέρβων καὶ Βουλγάρων· ἀφ' ἑτέρου ἦτο τὸ κέντρον τῆς ρουμανικῆς προπαγάνδας τῆς περιοχῆς. Εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ' αἰῶνος ὁ πληθυσμός του ηὐξήθη αἰσθητῶς, ἀνελθὼν εἰς 45 χιλ. κατ., ὧν ὑπερεῖχον ἀριθμητικῶς οἱ Μουσουλμάνοι (18 χιλ.) καὶ οἱ Ἕλληνες (14 χιλ.). Εἶχε δὲ τότε ἡ πόλις ἀξιόλογον βιομηχανίαν, βυρσοδεψεῖον, κλωστήριον, ἐριουργεῖον, ταπητουργεῖον καὶ ἐργαστήρια διὰ χρυσοποικιλτικὰ τεχνουργήματα. Εἰς αὐτὴν ἐξ ἄλλου, οὔσαν σπουδαῖον κέντρον τῆς Βορειοδυτικῆς Μακεδονίας, συνηντῶντο τὰ καραβάνια τῆς Θράκης καὶ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας μετὰ τῶν ἐκ τῆς Θεσσαλίας καὶ λοιπῆς Ἑλλάδος, ὡς καὶ τῶν ἐκ τῆς Ἀλβανίας καὶ Ἐρζεγοβίνης, ἐτελοῦντο δ' αὐτόθι μεγάλαι ἐτήσιαι πανηγύρεις, ὅπου Βούλγαροι καὶ Ἀτσίγγανοι μετέβαινον διὰ νὰ ζητήσουν τὰ γεωργικὰ καὶ βιομηχανικὰ προϊόντα τῆς περιοχῆς. Ἡ στρατιωτικὴ ἔτι πλέον σημασία τῆς πόλεως, ὡς ἐκ τῶν δι' αὐτῆς διερχομένων μεγάλων ὁδῶν, ἀγουσῶν πρὸς ὅλα τὰ σημεῖα τοῦ ὁρίζοντος, εἶχε κατανοηθῆ ὑπὸ τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως, δι' ὃ ἐχρησιμοποίει αὐτὴν ὡς κέντρον ἐπισιτίσεως καὶ πολεμικοῦ ἀνεφοδιασμοῦ, ἱδρύσασα δύο μεγάλους στρατῶνας, στρατιωτικὴν σχολὴν καὶ ἀποθήκας ὑλικοῦ πολέμου καὶ τροφίμων.

Ἐκτὸς τῶν ὡραίων δημοσίων καταστημάτων (ὧν κάλλιστον τὸ διοικητήριον), τὸ Μοναστήριον ἔχει καὶ λαμπρὰς ἰδιωτικὰς οἰκοδομάς, ὧν πολλαὶ ἀνῆκον εἰς Ἕλληνας. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς τουρκοκρατίας ἡ ἑλληνικὴ κοινότης διετήρεῖτο ἀκμαία, διατηροῦσα 17 ἐν ὅλῳ ἑλληνικὰ σχολεῖα

Digitized by Google

ἀρρένων καὶ θηλέων, εἰς ἃ ἐφοίτων 2 ½ περίπου χιλιάδες μαθητῶν, ἐδίδασκον δὲ 55 καθηγηταὶ καὶ διδάσκαλοι ἀμφοτέρων τῶν φύλων. Τὸ γυμνάσιον μὲ πλουσίαν συλλογὴν σχολικῶν ὀργάνων καὶ βιβλιοθήκην ἠρίθμει 190 μαθητὰς καὶ 11 καθηγητάς, ὑπὲρ δὲ τῆς διατηρήσεως τῶν σχολείων καὶ τῶν συσσιτίων ἐδαπανῶντο κατ' ἔτος ὑπὲρ τὰς 5 χιλ. λιρῶν. Πλὴν τῶν ἐκπαιδευτηρίων ἐλειτούργει καὶ ἑλληνικὸν νοσοκομεῖον, χρησιμεῦσαν πρὸς νοσηλείαν ἑκατοντάδων ἀσθενῶν ἔκ τε τῆς πόλεως καὶ τῶν ἐπαρχιῶν τῆς Δυτικῆς Μακεδονίας, ἐπίσης δὲ καὶ ἄσυλον οἰκογενειῶν τῆς ὑπαίθρου χώρας, ὧν τὰ χωρία ἐπυρπολήθησαν ὑπὸ τῶν βουλγαρικῶν συμμοριῶν. Προσέτι δ' ὑπῆρχον καὶ δύο σωματεῖα, ἡ «Φιλόπτωχος ἀδελφότης τῶν Κυριῶν» καὶ ὁ «Μουσικὸς σύλλογος». Ἀφ' ἧς ὅμως κατὰ τὸν Βαλκανικὸν πόλεμον τοῦ 1912 ἡ πόλις περιῆλθεν ὑπὸ τὴν κυριότητα τῶν Σέρβων, στερηθέντες οἱ Ἕλληνες τῶν προνομίων των ἀπῆλθον οἱ πλεῖστοι τούτων εἰς τὴν Ἑλλάδα.

Ἐπὶ τουρκοκρατίας τὸ Μοναστήριον (Βιτώλια) ἦτο ἕδρα σαντζακίου καὶ βιλαετίου, τὸ ὁποῖον περιελάμβανεν ὅλην τὴν Δυτικὴν Μακεδονίαν καὶ τμήματα τῆς Ἀλβανίας (τὰ σαντζάκια Μοναστηρίου, Σερβίων, Κορυτσᾶς, Ἐλβασσὰν καὶ Δίβρας). Εἶχε δὲ τὸ βιλαέτιον Βιτωλίων ἔκτασιν 28.500 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 848 χιλ. (κατ' ἄλλους 745 χιλ. κατοίκων), ὧν τὸ ἥμισυ σχεδὸν ἀπετέλουν Βούλγαροι. Ι. Σ. Σ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Α) ***Μάχη Μοναστηρίου*** (31 Ὀκτωβρίου—6 Νοεμβρίου 1912). Κατὰ τὸν Σερβοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912 (βλ. λεξ. *Βαλκανικοὶ πόλεμοι [Στρατ. ἱστορ.]*), ὁ ἡττηθεὶς εἰς Περλεπὲν τουρκικὸς στρατὸς ὑπεχώρησεν ἀνενόχλητος, τὸ τέλος Ὀκτωβρίου 1912, πρὸς τὸ λεκανοπέδιον τοῦ Μοναστηρίου, συγκεντρωθεὶς δ' ἐκεῖ (περὶ τὰς 50.000 ἄνδρες καὶ 80 πυροβόλα) ἐγκατεστάθη ἀμυντικῶς ἐπὶ τοποθεσίας ἐνισχυθείσης ἀρκετὰ διὰ τεχνητῆς ὀργανώσεως. Οἱ Σέρβοι εἶχον ἀνακόψει κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην τὰς περαιτέρω ἐπιχειρήσεις, οὐχ ἧττον ὅμως ἀνέλαβον ἐκ νέου ταύτας, ἅτε παρακληθέντες ὑπὸ τοῦ Ἕλληνος ἀρχιστρατήγου, καθ' ὅσον, ἐὰν ὁ κατὰ τῶν Σέρβων τουρκικὸς στρατὸς παρέμενεν ἀνενόχλητος ὑπ' αὐτῶν, θὰ ἠδύνατο οὗτος νὰ στραφῇ κατὰ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ· καὶ τότε ἐπηκολούθησε, κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 31 Ὀκτωβρίου—6 Νοεμβρίου 1912 (π. ἡ.), ἡ *μάχη τοῦ Μοναστηρίου*. Ἡ ἐν τῷ λεκανοπεδίῳ τοῦ Μοναστηρίου ἄμυνα ἔπρεπε νὰ γίνῃ ἀπαραιτήτως βορείως τῆς πόλεως, ἵνα προκαλύπτηται ἀφ' ἑνὸς αὕτη, ἀφ' ἑτέρου δ' ἡ πρὸς Ρέσναν ὁδός, ἤτοι ἡ δι' Ὀχρίδος πρὸς Ἀλβανίαν ἄγουσα. Ἡ ἐν λόγῳ ὅμως ἄμυνα δὲν ἀπεμακρύνετο πολὺ βορείως τοῦ Μοναστηρίου, διότι ἐπεζητεῖτο ἡ χρησιμοποίησις τῶν ἀνατολικῶς τῆς πόλεως ἑλῶν, τῶν περιοριζόντων τὸν ἀμυντέον χῶρον τῆς κοιλάδος τοῦ Ἐριγῶνος· σημειωτέον δ' ὅτι ὅ τε Ἐριγὼν καθὼς καὶ τὰ ἕλη εἶχον πλημμυρίσει, λόγῳ τῶν βροχῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, καὶ καλύψει μεγάλην ἐδαφικὴν ἔκτασιν. Δι' ὅ, ἡ ἀμυντικὴ γραμμὴ ἐστήριζε τὸ δεξιόν της ἐπὶ τῶν ἑλῶν, προὐχώρει βορείως πρὸς Τσέκριτσι (Λαγούρδι) καὶ Καραμάν, μεθ' ὃ ἐστρέφετο πρὸς Τσίρκλινα, Ξερομαρίτσα, ὑψόμετρον 1150, μέχρι Γόπες, ἤτοι ἐπὶ περιφερικῆς ἀναπτύξεως 30 περίπου χιλιομέτρων, προβάλλουσα ὡς κώλυμα βορείως καὶ βορειοδυτικῶς τὸν Σέμνιτσα, ἀνατολικῶς δὲ τὸν Ἐριγῶνα. Ἐπὶ πλέον ὠργανώθη προκεχωρημένη θέσις μεταξὺ Λόσνακο καὶ ὑψομέτρου 608 (παρὰ τὸ Βαζάρτσι), ἤτοι ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τῶν περικλειόντων πρὸς βορρᾶν τὸ λεκανοπέδιον τοῦ Μοναστηρίου, καὶ ἐξ ὧν ἐπιτηρεῖται ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ ὁδὸς Περλεπὲ—Μοναστηρίου, ἀφ' ἑτέρου δ' ἡ προσπέρασις ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἐριγῶνος. Ἡ ἀμυντικὴ αὕτη τοποθεσία πᾶν ἄλλο παρὰ ἐπλήρου τὰς ἀπολύτως ἀναγκαίας τακτικὰς ἀρχάς, διότι ἦτο δυνατὸν νὰ ὑπερκαμφθῇ νοτίως μὲν διὰ τῶν δυτικῶν ὑπωρειῶν τοῦ ὄρους Σελέσκα καὶ τῆς πεδιάδος Κένάλι, βορείως δὲ διὰ τοῦ Πρίμπιλτσι καὶ τοῦ ὄρους Βίγκλα, πρὸς δ' ἦτο μήκους ἀρκετὰ μεγάλου ἐν σχέσει πρὸς τὰς ὀλιγίστας τουρκικὰς δυνάμεις. Δέον ὅμως νὰ ὁμολογηθῇ ὅτι, ὁπουδήποτε καὶ ἂν ἐτάσσετο ἡ ἀμυντικὴ γραμμὴ ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Ἐριγῶνος, θὰ ἦτο ἀδύνατον νὰ ἐκλείψωσι τὰ σοβαρὰ ταῦτα μειονεκτήματα. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν προκεχωρημένην θέσιν Λόσνακο—608, αὕτη οὐδένα ἀπολύτως προορισμὸν ἐπλήρου, διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν αἱ διαβάσεις τῆς ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ Περλεπὲ-Μοναστηρίου καὶ αἱ διὰ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἐριγῶνος δὲν εἶναι αἱ μόναι, ἀφ' ἑτέρου δ' ἀφίσταται πολὺ ἀπὸ τῆς κυρίας γραμμῆς ἀμύνης (περὶ τὰ 20 χιλιόμετρα). Ὁπωσδήποτε ὁ τουρκικὸς στρατὸς κατενεμήθη ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, δηλαδὴ τὸ 5ον σῶμα (δύο μεραρχίαι) ἀπὸ Τσέκριτσι διὰ Καραμὰν πρὸς Τσέρκλινα, ἀποτελοῦν τὴν δεξιὰν πτέρυγα, τὸ 7ον (τρεῖς μεραρχίαι) ἀπὸ Τσέρκλινα μέχρις ὑψομέτρου 1150, ἀναλαμβάνον συγχρόνως καὶ τὴν κατάληψιν τῆς προκεχωρημένης θέσεως Λόσνακο—608, ἀποτελοῦν τοιουτοτρόπως τὸ κέντρον, τὸ 6ον (δύο μεραρχίαι) ἀπὸ 1150 μέχρι Γόπες, ἀποτελοῦν τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα, ἡ μεραρχία ἱππικοῦ προκαλύπτουσα τὸ δεξιὸν πλευρόν, καὶ τέλος δύο ἀνεξάρτητοι μεραρχίαι ὡς ἐφεδρεία. Ὁ σερβικὸς στρατὸς ἦτο ἀρκετὰ κεκοπιακὼς μετὰ τοὺς περὶ τὸν Περλεπὲν ἀγῶνας, δι' ὃ εἶχεν ἀπόλυτον ἀνάγκην σχετικῆς ἀναπαύσεως, ἐπὶ πλέον δὲ ἀνάγκην παροχῆς χρόνου διὰ τὴν ἐξασφάλισιν τοῦ ἀνεφοδιασμοῦ του, καθισταμένου δυσχολωτάτου διὰ μέσου τῶν ὀρεινῶν διαβάσεων. Ἕνεκα λοιπὸν τῶν λόγων τούτων ἡ πρὸς Μοναστήριον προέλασις ἀνελήφθη τὴν 31ην Ὀκτωβρίου. Τὸ σχέδιον τοῦ Σέρβου ἀρχιστρατήγου ἦτο ἐπίθεσις κατὰ μέτωπον καὶ ὑπερκέρασις κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρὰ τῆς τουρκικῆς τοποθεσίας, εἰς τρόπον ὥστε ν' ἀποκοπῇ ἡ ὑποχώρησις τῶν Τούρκων καὶ διὰ Ρέσνας πρὸς Ὀχρίδα καὶ διὰ Φλωρίνης πρὸς Πισοδέρι, συγχρόνως δ' ἀπόκτησις τῆς ἐπαφῆς τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ μετὰ τοῦ ἑλληνικοῦ, ἵνα ἐπιτευχθῇ τότε πλήρης ἡ κύκλωσις τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ· δι' ὃ ἡ προχώρησις τῶν διαφόρων μεραρχιῶν ἐγένετο πρὸς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας κατευθύνσεις. Τὴν 31ην Ὀκτωβρίου ἡ μεραρχία ἱππικοῦ συνήντησε τουρκικὸν ἀπόσπασμα παρὰ τὸ Δομπρομίρ, ὅπερ ἀπώθησε πρὸς τὴν γέφυραν τοῦ Νοβὰκ καὶ ᾐχμαλώτισε κατὰ τὸ πλεῖστον. Ἡ τακτικὴ μάχη ἤρχισε τὴν 2αν Νοεμβρίου, ἀλλ' ἡ ἀνάπτυξις τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ παρεκωλύετο πολὺ λόγῳ τῆς κατακλύσεως τοῦ ἐδάφους δι' ὑδάτων καὶ τῆς πλήρους τελματώσεως αὐτοῦ. Κατὰ τὴν 2αν Νοεμβρίου ἐπετεύχθη ἡ ἀπώθησις τῶν Τούρκων ἐκ τῆς προκεχωρημένης θέσεως Λόσνακο—608 καὶ ἡ κατάληψις τοῦ Τσορνμπόκ, ὁπότε ἐπηκολούθησεν ἡ ὑπὸ τῆς μεραρχίας Μοράβα - 2 ἀπώθησις ἀντεπιθέσεως τοῦ 6ου τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ καὶ ἡ κατάληψις ὑπὸ τῆς σερβικῆς ταύτης μεραρχίας τῶν Σδίνιτσε καὶ Στρέζοβο (κατὰ τὴν νύκτα 2—3 Νοεμβρίου), ἤτοι τῶν ἑκατέρωθεν τῆς βαθείας κοιλάδος τοῦ Σέμνιτσα διαβάσεων. Τὴν 3ην Νοεμβρίου, αἱ μὲν σερβικαὶ μεραρχίαι τοῦ μετώπου κατώρθωσαν τὴν προσπέρασιν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σέμνιτσα καὶ εἶτα τὴν κατάληψιν τοῦ Μόγιλα, ἡ μεραρχία Δουνάβεως τὴν προσπέρασιν, παρ' ὅλην τὴν φοβερὰν χιονοθύελλαν, ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἐριγῶνος, παρὰ τὸ Νοβάκ, ἡ δὲ μεραρχία Μοράβα - 2 τὴν ἐκδίωξιν τοῦ ἄκρου ἀριστεροῦ τῶν Τούρκων ἐκ τῆς κοιλάδος Σέμνιτσα καὶ τὴν ἀπώθησίν του πρὸς τὰ ὑψώματα Γόπες. Κατὰ τὴν νύκτα τῆς 3ης πρὸς τὴν 4ην Νοεμβρίου, δι' ἐπιτυχοῦς σερβικῆς νυκτερινῆς ἐπιθέσεως, ἐκτελεσθείσης τῇ ἀτομικῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ διοικητοῦ τῆς μεραρχίας Μοράβα - 2, κατελήφθη τὸ ὕψωμα 1150, ὁπότε ἀπεκόπη ἡ ἀριστερὰ τουρκικὴ πτέρυξ ἀπὸ τοῦ κέντρου. Τὴν 4ην Νοεμβρίου ἀπωθήθη ἀπόπειρα τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ πρὸς ἀνακατάληψιν τοῦ 1150, κατελήφθη δ' ἐπὶ πλέον ὑπὸ τῶν Σέρβων καὶ ἡ Κοτσίτσα. Ἡ μεραρχία Δουνάβεως, ὑποβοηθηθεῖσα ὑπὸ βαρέος πυροβολικοῦ, κατέλαβε τὸ Καραμάν, τὰ δὲ περὶ τὸ Τσίρκλινα τουρκικὰ στρατεύματα, μὴ δυνηθέντα ν' ἀνθέξωσιν εἰς τὸ φοβερὸν πῦρ τοῦ βαρέος σερβικοῦ πυροβολικοῦ, ἤρχισαν διασκορπιζόμενα. Διὰ νυκτερινῶν ἐπιθέσεων τῆς 4ης πρὸς τὴν 5ην Νοεμβρίου κατελήφθησαν ἡ Ξηρομαρίτσα καὶ τὸ Τσίρκλινα. Αἱ ἀπεγνωσμέναι ἐπιθέσεις τοῦ 6ου τουρκικοῦ σώματος πρὸς ἀνακατάληψιν τῆς πρὸς Ρέσναν ὁδοῦ ὑποχωρήσεως ἀπέβησαν ἄκαρποι. Τὴν 5ην Νοεμβρίου, ἅπασα σχεδὸν ἡ ἀμυντικὴ τουρκικὴ τοποθεσία εἶχε καταληφθῆ, ὁ δὲ τουρκικὸς στρατὸς ἦτο ὑπερκερωμένος, πᾶσα δὲ περαιτέρω ἀντίστασις αὐτοῦ καθίστατο ἀδύνατος· δι' ὃ ὑπὸ τοῦ πλείστου μέρους ἐγκατελείφθη ὁ περαιτέρω ἀγὼν καὶ ἐπεζητήθη ἡ ὁπουδήποτε φυγή, ἐξαιρέσει τοῦ ἀριστεροῦ τουρκικοῦ πλευροῦ (τοῦ σώματος τοῦ ἡρωϊκοῦ Τζαβὴτ πασᾶ), ὅπερ καθ' ὅλην τὴν ἡμέραν ταύτην ἐξηκολούθησεν ἀγωνιζόμενον σῶμα πρὸς σῶμα καὶ ἀμυνόμενον βῆμα πρὸς βῆμα ἀπέναντι τῶν διὰ τῆς λόγχης ἐρρωμένων σερβικῶν ἐπιθέσεων. Τὸ ἄκρον δεξιὸν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ ἐπεζήτησε τὴν πρὸς Φλώριναν φυγήν, δι' ὃ ὁ Ζεκῆ πασᾶς, μετὰ δεκάδος ταγμάτων, δύο ἱλῶν καὶ δύο πυρβολαρχιῶν, κατώρθωσεν, ὑποβοηθούμενος ὑπὸ πυκνοτάτης ὁμίχλης, νὰ διολισθήσῃ πρὸς νότον, ἀλλὰ παρὰ τὸ Μετζιτλὶ προσεβλήθη ὑπὸ τῆς σερβικῆς μεραρχίας ἱππικοῦ, ἥτις ᾐχμαλώτισεν ἀρκετούς, ἥρπασε τὰ πυροβόλα καὶ διεσκόρπισε τὸ τουρκικὸν τοῦτο στράτευμα. Τὰ συντρίμματα καὶ ὑπολείμματα αὐτοῦ κατώρθωσαν νὰ διεκφύγωσιν ὑπὸ τὸν Ζεκῆ, οὐχὶ ὅμως πλέον διὰ Φλωρίνης, διότι πρὸς τὴν κατεύθυνσιν ταύτην εἶχεν ἤδη ἀρχίσει ἡ δρᾶσις τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ, ἀλλὰ διὰ τῶν ὀρέων πρὸς Κορυτσὰν καὶ ἐκεῖθεν διὰ Λιασκοβίκι πρὸς Ἰωάννινα. Τὸ κέντρον καὶ τὸ ἀριστερὸν τῶν Τούρκων ἐπεζήτησαν τὴν πρὸς Ρέσναν φυγήν, ἀλλὰ τοῖς κατέστη ἀδύνατος, διότι οἱ Σέρβοι ἦσαν ἤδη κύριοι τῆς διαβάσεως ταύτης· δι' ὃ προσέφυγον εἰς τὴν διὰ τῶν ὀρέων φυγὴν (μέσῳ χάνι Διζαβάτ), ἀλλὰ καὶ πάλιν παρημποδίσθησαν τὴν 6ην Νοεμβρίου ὑπὸ τῶν Σέρ-

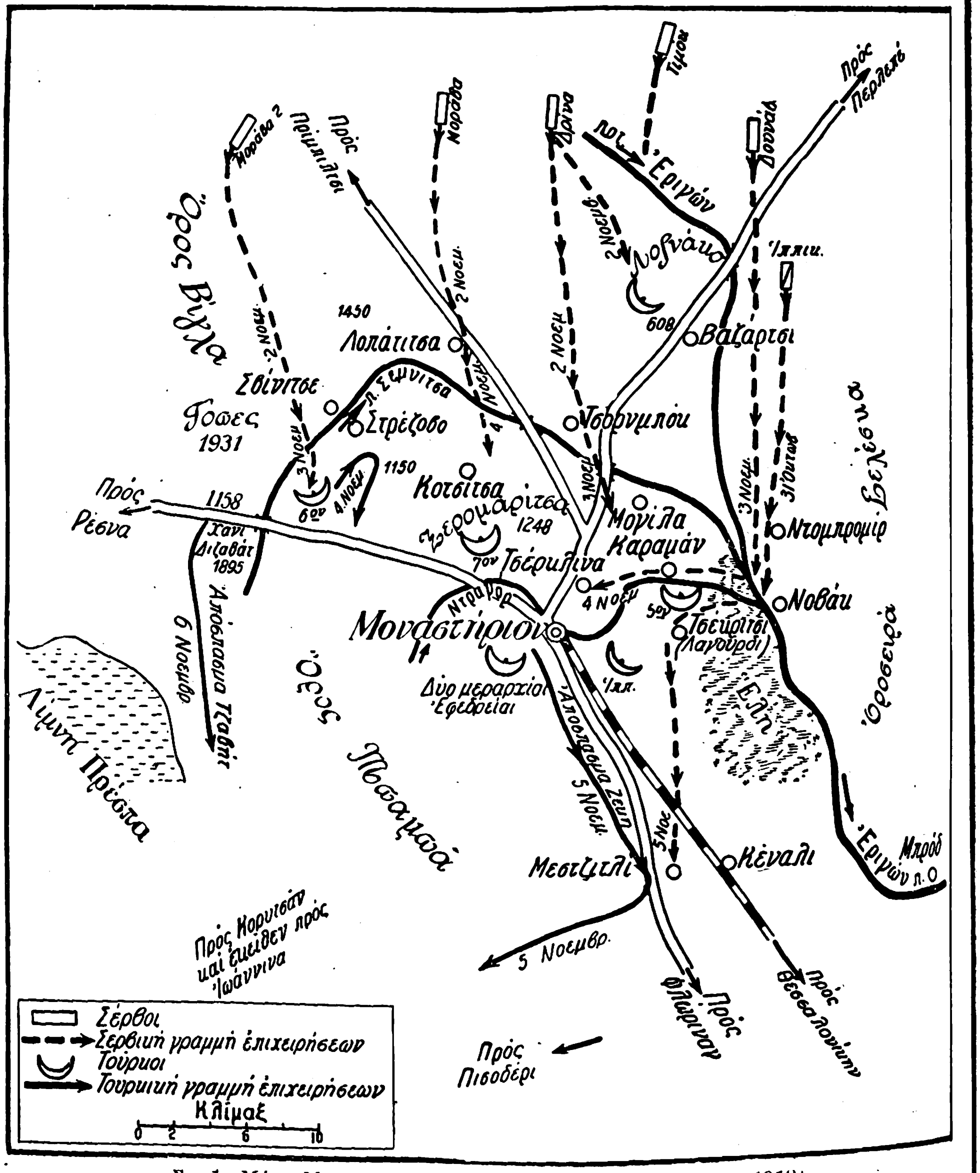


Σχ. 1. *Μάχη Μοναστηρίου (31 Ὀκτωβρίου—6 Νοεμβρίου 1912).*

Digitized by Google

βων, ὁπότε μέρος μὲν αὐτῶν κατώρθωσε νὰ διεκφύγῃ διὰ τῶν ὀρέων πρὸς Ὄχριδα, μέρος δ' ἀπωθήθη πρὸς νότον, ὅπου προσέκρουσε πρὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ.

Πάντα τὰ μὴ κατορθώσαντα νὰ διεκφύγωσι τουρκικὰ στρατεύματα παρεδόθησαν, συνθηκολογήσαντα τὸ ἀπόγευμα τῆς 5ης Νοεμβρίου. Τὴν ἐπομένην ἐγένετο ἡ ἐπίσημος κατάληψις τοῦ Μοναστηρίου καὶ ἡ ἐν αὐτῷ εἴσοδος τοῦ διαδόχου τῆς Σερβίας Ἀλεξάνδρου, τὴν δ' 7ην Νοεμβρίου ἐπίσημος ἐκεῖ ὑποδοχὴ τοῦ Ἕλληνος ἀρχιστρατήγου διαδόχου Κωνσταντίνου.

Αἱ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μοναστηρίου ἑκατέρωθεν ἀπώλειαι ἦσαν μέγισται: 7.000 Σέρβοι καὶ 10.000 Τοῦρκοι. Οἱ Σέρβοι συνέλαβον 10.000 αἰχμαλώτους καὶ 50 πυροβόλα. Περὶ τὰς 25.000 συντεταγμένου τουρκικοῦ στρατοῦ κατώρθωσαν νὰ διεκφύγωσι τῆς σερβοελληνικῆς ἠλάγρας.

Ὁ ἑλληνικὸς στρατός, εὐθὺς μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Θεσσαλονίκης, ἀνεστράφη καὶ ἔσπευσε πρὸς τὸ Ὄστροβον, ἵνα ἐκεῖθεν προφθάσῃ νὰ συμμετάσχῃ τοῦ ἀγῶνος ἐναντίον τοῦ κατὰ τῶν Σέρβων τουρκικοῦ στρατοῦ. Τὴν 6ην Νοεμβρίου ἀπεκτήθη ἡ ἐπαφὴ τοῦ σερβικοῦ ἱππικοῦ μετὰ τοῦ ἑλληνικοῦ βορείως τῆς Φλωρίνης, τὴν δ' 7ην Νοεμβρίου ἡ πλήρης ἐπαφὴ τῶν δύο στρατῶν περὶ τὴν Φλώριναν. Ἦτο ζήτημα δηλαδὴ δύο μόνον ἡμερῶν (5—7 Νοεμβρίου) τὸ νὰ προφθάσῃ ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς νὰ συνδράσῃ μετὰ τοῦ σερβικοῦ ἐντὸς τοῦ τακτικοῦ πεδίου, ὁπότε ἡ κύκλωσις τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ θὰ ἦτο πλήρης, καθ' ὅσον θὰ περιεκλείετο οὗτος ἐντὸς τοῦ ὄρους Μπαμπᾶ, ἤτοι ἐντὸς ὀρεινοῦ τετραπλεύρου, ἔχοντος πρὸς ἀνατολὰς (ἐπὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Ἐριγῶνος) τὰς ἑλληνοσερβικὰς δυνάμεις, πρὸς δυσμὰς τὴν λίμνην Πρέσπαν, πρὸς βορρᾶν (πρὸς Ρέσναν) τὸν σερβικὸν καὶ πρὸς νότον (πρὸς διάβασιν Πισοδέρι) τὸν ἑλληνικὸν στρατόν. Θὰ ἐπέφερε δὲ ἡ κύκλωσις αὕτη τὰ σπουδαῖα ἀποτελέσματα ἀφ' ἑνὸς τῆς αἰχμαλωσίας ὁλοκλήρου τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ, ἀφ' ἑτέρου τῆς ἀποφυγῆς τῶν ἐπιχειρήσεων τῶν Σέρβων πρὸς Ἀλβανίαν, τῶν Ἑλλήνων πρὸς Κορυτσάν, καὶ τῆς ἐνισχύσεως τῶν Τούρκων ἐν Ἰωαννίνοις. Ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς ἔπραξε πᾶν τὸ ἀνθρωπίνως δυνατὸν ἵνα προφθάσῃ, ἀλλὰ τοῦτο κατέστη ἀνέφικτον.

Β) ***Ἐπιχειρήσεις Μοναστηρίου*** (12 Σεπτεμβρίου —20 Νοεμβρίου 1916). Διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, τὸ Μοναστήριον, καταληφθὲν ὑπὸ τοῦ βουλγαρικοῦ ἱππικοῦ τὴν 4ην Δεκεμβρίου 1915 (ν. ἡ.), ἐξηκολούθει παραμένον ὑπὸ τὴν κατοχὴν ταύτην καθ' ὅλον τὸ μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου 1916 χρονικὸν διάστημα, ὁπότε ὁ ἐν Μακεδονίᾳ ἀνταντικὸς στρατὸς ἀνέλαβε τὴν ἐπίθεσιν κατὰ τῶν κατεχόντων αὐτὸ Βουλγάρων, διότι ὁ βουλγαρικὸς οὗτος στρατὸς (1η στρατιὰ στρατηγοῦ Μπογιατζῆεφ) ἐπεζήτησε, περὶ τὰ μέσα Αὐγούστου 1916, νὰ ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ ἀντατικοῦ στρατοῦ, ἀπωθήσας εἰς Μπάνιτσαν μίαν σερβικὴν μεραρχίαν καὶ προχωρήσας πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τῆς Φλωρίνης. Ἡ ἀνταντικὴ αὕτη ἀντεπίθεσις φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα «*Ἐπιχειρήσεις Μοναστηρίου*» (12 Σεπτεμβρίου —20 Νοεμβρίου 1916).

Τὴν 11ην Σεπτεμβρίου 1916 (ν. ἡ.) οἱ ἀνταντικοὶ (περὶ τὰς πέντε γαλλοσερβικαὶ μεραρχίαι) κα-

*Σχ. 2. Ἐπιχειρήσεις Μοναστηρίου (12 Σεπτεμβρίου—20 Νοεμβρίου 1916.*

τεῖχον τὴν ἐν τῷ σχήματι 2 ἐμφαινομένην γραμμήν, τὴν δὲ 12ην Σεπτεμβρίου ἐξώρμησεν ἡ ἐπίθεσις καὶ τὴν 18ην Σεπτεμβρίου ἔφθασε μέχρι τοῦ ὕψους Φλώρινα - Καϊμακτσαλὰν (2.525), κατόπιν δ' ὀλίγον κατ' ὀλίγον ἀπώθησε τὴν βουλγαρικὴν στρατιὰν πρὸς τὰς ἐν τῷ σχήματι 2 ἐμφαινομένας γραμμάς, καὶ τέλος, τὴν 19ην Νοεμβρίου 1916, κατέλαβε τὸ Μοναστήριον, ὅπερ ἔκτοτε δὲν ἀνακατελήφθη πλέον ὑπὸ τῶν Γερμανοβουλγάρων. Ἡ βορείως τοῦ Μοναστηρίου περιοχή, ἡ φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα τομεὺς Μοναστηρίου, ἀπηλευθερώθη πλήρως κατὰ τὴν ἀνταντικὴν ἐπίθεσιν τοῦ Σεπτεμβρίου 1918 ἐναντίον τοῦ βαλκανικοῦ γερμανοβουλγαρικοῦ μετώπου. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μοναστήριον** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Μολίστης τῆς ἐπαρχίας Κονίτσης τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μποτσίφαρι*. Κάτ. (1928) 159.

— 2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἄνω Μεριᾶς τῆς ἐπαρχίας Σύρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 88.

— 3) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κώμης τῆς ἐπαρχίας Τήνου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτοικοι (1928) 48.

— 4) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ἀριὰ* ἢ *Βαρυμπόπη*. Κάτ. (1928) 533.

— 5) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀρριανῶν τῆς ἐπαρχίας Σαπῶν τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτοικοι (1928) 64.

— **Μοναστήριον** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Χαλδίας τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 30 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες προσέφυγον εἰς Ἑλλάδα τῷ 1923. Ε. Ι. Χ.

— **Μοναστήριον, *Μέγα*** — καὶ ***Μικρὸν*** — *[Γεωγρ.]* βλ. *Μέγα* Μοναστήρι καὶ *Μικρὸ* Μοναστήρι.

— **Μοναστήρι(ον), *Νέον*** — *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δομοκοῦ τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἀπέχει δίωρον περίπου ἀπὸ τοῦ Δομοκοῦ καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Τσόμπα*. Κάτ. (1928) 789. Χ. Δ.

— **Μοναστηρίου *κόλπος*** *[Γεωγρ.]*. Ἡ κόλπωσις ἡ σχηματιζομένη μεταξὺ τῆς ΝΑ. ἀκτῆς τῆς νήσου Πόρου καὶ τῆς ΒΑ. ἀκτῆς τῆς Τροιζηνίας, διανοιγομένη δὲ μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου *Μοναστήρι* (πλάτ. 37° 29′ 55″ Β., μῆκ. 23° 29′ 40′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1657: Gulf of Athens). Ἔχουσα ὡς μυχὸν τὴν χερσόνησον τῆς Σφαιρίας, ἀφ' ἧς ἡ πόλις τοῦ Πόρου, θὰ ἐθεωρεῖτο ἡ κόλπωσις ἀμφίπυγος πρὸς τὸν δυτικῶς αὐτῆς λιμένα τοῦ Πώγωνος, ἂν δὲν ἐπεκοινώνει πρὸς αὐτὸν διὰ τοῦ πλοΐμου «Πόρου» τοῦ Γαλατᾶ, τοῦ διαχωρίζοντος τὸν Πόρον ἀπὸ τῆς πελοποννησιακῆς ἀκτῆς. Παρὰ τὸ ἀκρωτήριον *Μοναστήρι* ἡ ὡραία τῆς Καλαυρίας μονή, ἐπ' ὀνόματι τῆς *Ζωοδόχου Πηγῆς* τιμωμένη, δίδουσα τὸ ὄνομα εἴς τε τὸ ἀκρωτήριον καὶ τὸν ὅρμον. Σ. Ε. Λ.

**Μοναστηρτζίκ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Μοναστηράκι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μοναστὴς** (ὁ)· ὁ μονάζων ἐν τῇ ἐρημίᾳ, μοναχός, καλόγηρος.

**μοναστικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μοναστάς, ὁ τῶν μοναστῶν, καλογηρικός: «μοναστικὸς βίος».

**Μονάστρα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Κερπινή*. Κάτ. (1928) 378. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἄνω Καλύβια* καὶ *Πετρέϊκα*. Χ. Δ.

**Μοναστρᾶς.** Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Ἀλεξίου Α' Κομνηνοῦ (1081—1118). Συμμετέσχεν εἰς τὴν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Κανταχουζηνὸν ἐκστρατείαν κατὰ τῶν ἐν Συρίᾳ Λατίνων τῷ 1104, ὅτε, καταπολεμηθέντων τούτων, ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ Κανταχουζηνοῦ εἰς τὴν ἀνατολικὴν Κιλικίαν καὶ νικήσας τοὺς κατέχοντας τὴν χώραν Ἀρμενίους κατέλαβε τὰ φρούρια Ἄδανα, Ταρσὸν καὶ Μάμιστραν καὶ ὑπήγαγε τὴν χώραν πᾶσαν ὑπὸ τὸ Βυζάντιον. Τῷ 1106, ἀνακληθεὶς ἐκ Κιλικίας, ἀπεστάλη εἰς Ἀλβανίαν καὶ συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐκεῖ ἐπιτυχεῖς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν Νορμανδῶν. Τῷ 1115, διοικῶν τὰ ἐν Περγάμῳ βυζαντινὰ στρατεύματα, ἀπέκρουσε τὰς τουρκικὰς ἐκεῖ ἐπιδρομάς, τὸ δ' ἐπιὸν ἔτος (1116) συμμετέσχεν εἰς τὴν νικηφόρον κατὰ τοῦ σουλτάνου τοῦ Ἰκονίου ἐκστρατείαν τοῦ Ἀλεξίου Α'. Ν. ΚΛΣ

**μονατομικός**, *—ή, —όν*, ἢ ***μονοσθενὴς*** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό). Λέγεται ἐν τῇ χημείᾳ διὰ τὰ στοιχεῖα ἢ συμπλέγματα στοιχείων (ρίζας), ἅτινα ἔχουσι τὴν ἰδιότητα νὰ ἑνοῦνται μεθ' ἑνὸς ἀτόμου ὑδρογόνου ἢ ἑτέρου μονοσθενοῦς ἢ μονατομικοῦ στοιχείου, ὡς λ. χ. τὸ νάτριον, τὸ κάλιον, τὸ χλώριον, τὸ βρώμιον, τὸ κυάνιον κ. λ. π. Σ. Γ.

— **μονατομικαί**, ἢ ***μονοσθενεῖς ἀλκοόλαι*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Αἱ ἀλκοόλαι αἱ ὁποῖαι περιέχουσιν ἐν τῷ μορίῳ αὐτῶν μίαν μόνον ὑδροξυλικὴν ὁμάδα—ΟΗ, ὡς λ. χ. ἡ μεθυλική, ἡ αἰθυλικὴ κ. λ. π. Σ. Γ.

—**μονατομικὴ *κατάστασις*** *[Ἀστρον.]*. Ἡ κατάστασις ὑφ' ἣν εὑρίσκεται ἡ ὕλη ἐπὶ τῶν ἀπλανῶν, ἤτοι ἐκείνη ὑπὸ τὴν ὁποίαν τὸ μόριον ἑκάστου στοιχείου συνίσταται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου ἀτόμου. Σ. Π.

**μονάφτης** (ὁ)· ὁ ἔχων ἕνα ἀφτί, μόνωτος.

**μονάχα**· ἐπίρρ., καὶ ***μοναχὰ*** δημοτ., μόνον, ἄνευ ἄλλου: «αὐτὸ μοῦ 'δωσε μονάχα»· || «ὅλα τ' ἄλλα δικά σου, μονάχα αὐτὸ θ' ἀφήσῃς γιὰ μένα»· || πρὸ παντός: «πρόσεξε μονάχα μὴ σὲ γελάσουν».

**Μονάχη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μία τῶν ἐν τῷ «στίφει νήσων», αἵτινες πρόκεινται τῆς Ταπροβάνης (*Πτολεμ*. Ζ, δ, 11 Nobbe). Ταυτότης ἄγνωστος. Σ. Ε. Λ.

**μοναχὴ** (ἡ)· ἡ ἀπαρνηθεῖσα τὸν κοινωνικὸν βίον καὶ εἰς τὴν λατρείαν καθιερωμένη γυνή, κοιν. *καλογριά*.

**Μοναχὴ-Ἐλιὰ** *[Γεωγρ.]*. Τοποθεσία παρὰ τὸ χωρίον Ἀρμένους τῆς Κρήτης (Ἀρμενόκαμπος), ὅπου συνεκροτήθησαν πολλαὶ μάχαι κατὰ τοὺς ἀπελευθερωτικοὺς ἀγῶνας. Τῷ 1822 ἐφονεύθη ἐνταῦθα ὁ ἀρχηγὸς Δεληγιαννάκις, τῷ δὲ 1828 ἐφονεύθησαν 150 Τοῦρκοι καὶ ᾐχμαλωτίσθησαν 300 Ὀθωμανίδες καὶ παῖδες, ἀνταλλαγεῖσαι μὲ Χριστιανὰς αἰχμαλώτους. Ε. Γ.

**Μοναχήτι(ον)** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 548. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μικρολίβαδον* (Λαβανίτσα). Χ. Δ.

**μοναχικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μοναχούς, ὁ τῶν μοναχῶν, καλογηρικός: «μοναχικὸν σχῆμα, — τάγμα»· || μόνος, ἀπομεμονωμένος: «μοναχικὸ σπίτι».

—**μοναχικὸς *βίος*** *[Ἱστορ.]*. Ἤδη παρὰ τοῖς νεοπλατωνικοῖς, Φίλωνι τῷ Ἰουδαίῳ, τοῖς Ἐσσαίοις καὶ θεραπευταῖς ἀπαντῶσι πρόδρομοι τοῦ παρὰ Χριστιανοῖς *ἀσκητικοῦ* καὶ *μοναχικοῦ* βίου· ἀλλ' ἐνῷ τὰ παραδείγματα ταῦτα ἐξηγοῦνται κυρίως ἐξ ἀρχῆς δυαστικῆς ἢ καὶ λόγων ἐγωϊσμοῦ καὶ ἀλαζονείας, ὁ χριστιανικὸς μοναχικὸς βίος ἑδράζεται ἐπὶ τῆς ἠθικῆς τοῦ Εὐαγγελίου καὶ στηρίζεται ἐπὶ λελογισμένης ἐγκρατείας καὶ αὐταπαρνήσεως, ἀποβλέπων εἰς τὴν δυνατὴν τελειότητα καὶ τὴν πρὸς τὸν Θεὸν ἀγάπην· ὁ βίος οὗτος ὑπὸ τὸ ὄνομα «παρθενία», «ἄσκησις», «ἐγκράτεια», «ἁγνεία» καὶ «φιλοσοφία» ἀπαντᾷ ἤδη πρωΐμως μεταξὺ τῶν Χριστιανῶν, ἐν μέσαις ταῖς πόλεσι καὶ τοῖς χωρίοις οἰκούντων, ἕνεκα ὅμως τοῦ ἐπὶ Δεκίου διωγμοῦ βλέπομεν ὅτι οἱ τοιοῦτοι κατέφευγον εἰς τὰς ἐρήμους καὶ τὰ ὄρη, οὕτω δὲ ἐμορφώθη ὁ *μοναχικὸς* καὶ *ἀναχωρητικὸς βίος*.

Α') ***Ἐν τῇ ὀρθοδόξῳ Ἐκκλησίᾳ***. Πρῶτον παράδειγμα Χριστιανοῦ ἀναχωρητοῦ ἔχομεν *Παῦλον τὸν Θηβαῖον* ἐν Αἰγύπτῳ, ἀλλὰ κυρίως πατὴρ τοῦ μοναχικοῦ βίου εἶναι ὁ *Μέγας Ἀντώνιος*, ὅστις ἐπὶ πολλὰ ἔτη ἐν σπηλαίῳ καί τινι φρουρίῳ, μέσῳ ποικίλων ἀγώνων, ἀνέπτυξε τοιοῦτον πνεῦμα καὶ πεῖραν, ἀπέκτησε δὲ τοιαύτην ἐκτίμησιν παρά τε τοῖς ἄρχουσι καὶ τῷ λαῷ, ὥστε πολλοὶ ἐτάχθησαν ὡς *ἐρημῖται* καὶ *μοναχοὶ* ὑπὸ τὴν προστασίαν αὐτοῦ καὶ ἠσκοῦντο ἐν μεμονωμέναις κατοικίαις. Τῷ παραδείγματι τοῦ Ἀντωνίου, ὅστις καὶ κατὰ τοῦ ἀρειανισμοῦ ἐκηρύχθη καὶ πλήθη ἐθνικῶν ἐπέστρεψεν εἰς Χριστόν, ἠκολούθησαν ὁ *Ἀμνών*, συστήσας σωματεῖα μοναχῶν ἐπὶ τοῦ ὄρους τῆς Νιτρίας ἐν Αἰγύπτῳ, *Μακάριος ὁ πρεσβύτερος*, ἐν τῇ ἐρήμῳ τῆς Σκήτεως καὶ ἰδίᾳ ὁ μαθητὴς τοῦ Μεγάλου Ἀντωνίου *Παχώμιος* († 348) ἐν τῇ νήσῳ Ταβέννῃ ἐν τῷ Νείλῳ. Οὗτος τοῖς μοναχοῖς αὐτοῦ παρεῖχεν ἴδιον μοναχικὸν κανόνα, δι' οὗ ὁ ἀναχωρητικὸς βίος διωργανώθη εἰς *κοινοβιακὸν* καὶ καθ' ὃν οἱ μοναχοί, τελοῦντες ὑπὸ τὸν ἀββᾶν ἢ ἀρχιμανδρίτην καὶ ἡγούμενον, κατῴκουν ἐν τοῖς καλουμένοις κοινοβίοις, μάνδραις, μοναστηρίοις καὶ φροντιστηρίοις καὶ ἐκτὸς τῆς προσευχῆς καὶ νηστείας ἐνησχολοῦντο εἰς διάφορα ἔργα. Παρὰ τῷ ἐν Ταβέννῃ μοναστηρίῳ τούτῳ ἱδρύθησαν καὶ ἄλλα πολλά, ἐξ Αἰγύπτου δέ, τῆς κοιτίδος τοῦ μοναχικοῦ βίου, οὗτος μετεφυτεύθη καὶ εἰς τὴν Παλαιστίνην καὶ Συρίαν, Ἀρμενίαν καὶ Μικρὰν Ἀσίαν, ὡς μαρτυροῦσι τὸ ἐν Γάζῃ μοναστήριον τοῦ Ἱλαρίωνος καὶ τὰ ὑπὸ τοῦ Σεβαστείας Εὐσταθίου ἐν Ἀρμενίᾳ.

Αἱ πρῶται αὗται ἐνέργειαι ὑπὲρ τοῦ μοναχικοῦ βίου ὑπὸ τοιαύτης ἐπιτυχίας ἐστέφθησαν, ὥστε πανταχοῦ τῆς Ἀνατολῆς βλέπομεν αὐτὸν μεταφυτευόμενον, ἐφαίνετο δὲ προχεομένη ἡ θαυμασία λάμψις τοῦ Χριστιανισμοῦ, ἕνεκα τῆς ὁποίας ἀπὸ τοῦ Ε' αἰῶνος οἱ μεγάλοι πατέρες τῆς Ἐκκλησίας, ἀποβλέποντες εἰς τὰς ἀπ' αὐτοῦ μεγάλας ὠφελείας, ἐξεθείαζον αὐτὸν ὡς βίον ἰσάγγελον καὶ ἀποστολικόν. Τὰ μοναστήρια κατέστησαν οὐ μόνον καταφύγια τῶν ἐν τῷ κόσμῳ



Digitized by Google

καταδυναστευομένων, ἀλλὰ καὶ σχολεῖα καὶ φροντιστήρια τῶν κληρικῶν καὶ ὁρμητήρια τῆς ἐπιστροφῆς τῶν ἐθνικῶν· τὸ εὐτύχημα δὲ ἦτο ὅτι αὐτοὶ οἱ μεγάλοι πατέρες παρεσκευάσθησαν ἐν τῷ μοναχικῷ βίῳ καὶ εἰργάσθησαν σπουδαίως πρὸς διοργάνωσιν αὐτοῦ καὶ κατοχύρωσιν τῶν εὐγενῶν αὐτοῦ ἀρχῶν, ὡς μαρτυροῦσι τὰ ὀνόματα τοῦ Μεγάλου Βασιλείου, Γρηγορίου τοῦ Θεολόγου, τοῦ Χρυσοστόμου, Ἰσιδώρου τοῦ Πηλουσιώτου, τοῦ ἱεροῦ Νείλου καὶ ἄλλων. Ὁ Μέγας Βασίλειος οὐ μόνον ἐν τῇ ποντικῇ πόλει Ἰβόρᾳ συνέστησε μοναστήριον, ἀλλὰ καὶ διὰ τοῦ μεγάλου καὶ μικροῦ κανόνος, τὸν ὁποῖον συνέταξε, συνεδύασε τὰ προτερήματα τοῦ ἀναχωρητικοῦ καὶ κοινοβιακοῦ βίου, μετὰ τοιούτου δ' ἐνθουσιασμοῦ ἐγένετο ἀποδεκτός, ὥστε ἐπέζησε νὰ ἴδῃ 80.000 μοναχῶν, ἀκολουθούντων αὐτόν. Οὕτως εἰργάσθησαν καὶ οἱ λοιποὶ πατέρες ὑπὲρ τοῦ μοναχικοῦ βίου, συνενώσαντες τὴν θρησκευτικὴν εὐσέβειαν μετὰ τῆς θεολογικῆς ἐπιστήμης. Οἱ μοναχοὶ τὴν προσευχὴν ἐξασκοῦντες κατὰ τὰς 4 γνωστὰς ὥρας μετὰ τοῦ μεσονυκτίου καὶ τοῦ ὄρθρου καὶ ἀκολουθοῦντες ταῖς ἀρεταῖς τῆς πτωχείας, τῆς ἁγνότητος, τῆς ὑπακοῆς μετὰ τῆς νηστείας καὶ τῆς ταπεινοφροσύνης, παρεδίδοντο καὶ εἰς μελέτας θεολογικάς, ἀναγινώσκοντες τὰς ἁγίας Γραφὰς καὶ ἄλλα συγγράμματα, ὡς περὶ τούτου ἐνθουσιωδῶς διηγεῖται ὁ ἱερὸς Χρυσόστομος ἐν πολλαῖς τῶν ὁμιλιῶν αὐτοῦ (ἴδ. 69 ὁμιλ. εἰς Ματθ. καὶ 6 εἰς τὴν Α' Κορινθ.).

Ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ κοινοβιακοῦ βίου τῷ παραδείγματι τῶν ἀνδρῶν ἠκολούθησαν καὶ γυναῖκες· καὶ ἐνταῦθα δὲ τὸν πρῶτον θεμέλιον ἔθηκεν ὁ Μ. Ἀντώνιος διὰ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ, ἀκολούθως δὲ ὁ Παχώμιος ἵδρυσε καὶ γυναικεῖον μοναστήριον. Αἱ ἐν τοῖς μοναστηρίοις τῶν γυναικῶν ἀσκούμεναι ὑπὸ τὴν ἡγουμένην, ἥτις ἐλέγετο καὶ ἀμμάς, ὠνομάζοντο ἀσκήτριαι, μόναι, μοναχαί, νοννίδες, ἁγναὶ κλ.

Ἐκτὸς τοῦ κοινοβιακοῦ καὶ ἰδιορρύθμου μοναχικοῦ βίου ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἐκκλησίᾳ ἀναφέρονται καὶ ἄλλοι τύποι καὶ μορφαὶ αὐτοῦ, ὡς ὁ τῶν ἀκοιμήτων, ἀναφερομένων ἐν Κωνσταντινουπόλει ἀπὸ τοῦ 463 καὶ ὀνομασθέντων οὕτω, διότι ἡμέρας καὶ νυκτὸς ἐσχόλαζον ἀμοιβαδὸν περὶ τὴν θείαν λατρείαν· ὁμοίως ἀναφέρεται καὶ ὁ τύπος τῶν στυλιτῶν, ἐν οἷς διέπρεψεν ἐν Ἀντιοχείᾳ *Συμεὼν ὁ Στυλίτης* († 469), χιλιάδας Σαρακηνῶν ἐπιστρέψας εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ πολεμήσας τὰς αἱρέσεις τῶν νεστοριανῶν καὶ μονοφυσιτῶν, ὁ *Δανιὴλ* ἐν Κωνσταντινουπόλει († 489), *Συμεὼν ὁ νεώτερος* παρὰ τὴν Ἀντιόχειαν († 596) καὶ ἄλλοι· καίτοι δὲ καὶ κατὰ τοῦ στυλιτικοῦ τύπου ἠκούσθησαν διαμαρτυρίαι παρά τινων πατέρων τῆς Ἐκκλησίας, κυρίως ὅμως ἐπολεμήθησαν σφοδρῶς διάφοροι μοναχοὶ ἐν Αἰγύπτῳ, Συρίᾳ καὶ Μεσοποταμίᾳ, οἵτινες παραγνωρίζοντες τὴν ἀληθῆ σημασίαν τοῦ μοναχικοῦ βίου, περιέπιπτον εἰς ἀλόγους ἀσκήσεις καὶ ἐντεῦθεν εἰς ψυχικὴν ἀπελπισίαν. Τοιοῦτοι ἦσαν καὶ οἱ λεγόμενοι ἔγκλειστροι καὶ κατειργμένοι.

Ὁ παρ' ἡμῖν μοναχικὸς βίος ὑπεβλήθη σὺν τῷ χρόνῳ ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἐκκλησίᾳ καὶ εἴς τινας νομικὰς διατάξεις· οὕτω π. χ. οἱ μοναχοὶ ὤφειλον νὰ ἐκφράζωσι δημοσίᾳ τὴν ἀπόφασιν αὐτῶν καὶ καθαγιαζόμενοι δι' ἐκκλησιαστικῆς τελετῆς καὶ κειρόμενοι, ἦσαν ὑπόχρεοι μέχρι τέλους νὰ ἐμμένωσιν ἐν τῇ ὁμολογίᾳ αὐτῶν (Καν. 16 τῆς Δ' Οἰκουμ. καὶ 40 τῆς Πενθέκτης)· δὲν ἦσαν μὲν κληρικοί, κατεῖχον ὅμως μέσην τάξιν, ἐχρησίμευον δὲ ὡς ἡ γέφυρα ἡ πρὸς τὸν κλῆρον. Τὸ ἐπὶ τῶν μοναχῶν δικαίωμα τῆς ἐποπτείας ἀνῆκεν εἰς τοὺς ἐπισκόπους, ἄνευ τῆς γνώμης τῶν ὁποίων δὲν ἱδρύετο μοναστήριον (Καν. 4 τῆς Δ' Οἰκ. Συν.), ὑπὸ δὲ τοῦ Ἰουστινιανοῦ εἰσήχθησαν καὶ διατάξεις περὶ δοκιμασίας, περιουσίας καὶ διαγωγῆς τῶν μοναχῶν, ὡς καὶ ἐκλογῆς τῶν ἡγουμένων.

Ὁ μοναχικὸς βίος τῆς ἡμετέρας Ἐκκλησίας, καίτοι περιωρίσθη σημαντικῶς ἀπὸ τῆς ἐμφανίσεως τῶν Ἀράβων ἐν ταῖς ὑπ' αὐτῶν καταληφθείσαις χώραις, μυρίους δὲ διωγμοὺς ὑπέστη κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς εἰκονομαχίας, οὐδὲν ἧττον ἐξηκολούθει νὰ εἶναι ὁ κυριώτερος παράγων τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἐνεργείας καὶ κατὰ τὸν μεσαίωνα, νὰ ἐπονομάζηται πολιτεία ἰσάγγελος καὶ παράδεισος τῶν καλλικάρπων δένδρων τῶν ἀρετῶν καὶ νὰ χρησιμεύῃ τὸ καταφύγιον ἐξ ὅλων τῶν τάξεων τῆς κοινωνίας καὶ αὐτῶν τῶν ἀρχόντων καὶ τῶν βασιλέων. Τὰ πλεῖστα τῶν μοναστηρίων, ὡς ἐπὶ παραδείγματι ἡ μονὴ τοῦ Στουδίου, διεκρίνοντο οὐ μόνον διὰ τὸ ἀνεξάρτητον τοῦ χαρακτῆρος τῶν μοναχῶν καὶ τὰς μοναστικὰς τῶν ἀρετάς, ἀλλὰ καὶ διότι οὗτοι, κάτοχοι παιδεύσεως ἐπιστημονικῆς, καθίστων αὐτὰ πραγματικὰ φυτώρια τῶν γραμμάτων καὶ τῶν τεχνῶν. Ἕνεκα τῶν ἐκ τῶν αἱρέσεων διωγμῶν καὶ ἄλλων λόγων, κατέπεσέ πως ὁ μοναστικὸς βίος, διὰ τοῦτο Θεόδωρος ὁ Στουδίτης, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν κανόνων τοῦ Μ. Βασιλείου συνέταξε διαφόρους ὑποτυπώσεις, καθορίζων αὐτὸν ἀκριβέστερον. Πόσον προέκοψεν ὁ μοναχικὸς βίος κατὰ τὸν μεσαίωνα μαρτυρεῖ ἡ μεγάλη πληθὺς τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἐν τοῖς πέριξ καὶ ἀλλαχοῦ μονῶν, ὡς αἱ τῶν Ἀκοιμήτων, τοῦ Στουδίου, τῆς Περιβλέπτου, τοῦ Παντοκράτορος, τοῦ Παντεπόπτου κτλ. ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἐν ταῖς Πριγκηποννήσοις αἱ τῆς Πρώτης, Ἀντιγόνης, Χάλκης καὶ Πριγκήπου, αἱ μοναὶ τοῦ Ὀλύμπου τῆς Βιθυνίας καὶ τοῦ ὄρους Λάτρος, αἱ ἐπὶ τοῦ Βοσπόρου καὶ τοῦ Πόντου, αἱ ἐν ταῖς νήσοις, ὡς ἡ τοῦ Θεολόγου τῆς Πάτμου, ἐν Θεσσαλίᾳ αἱ τῶν Μετεώρων καὶ ἄλλων ἐν Ἠπείρῳ καὶ Μακεδονίᾳ καὶ τῇ κυρίως Ἑλλάδι ἡ τοῦ Μ. Σπηλαίου καὶ ἄλλαι πολλαί. Βεβαίως μεγάλη προκοπὴ καὶ ἐπίδοσις τοῦ μοναχικοῦ βίου παρατηρεῖται κατὰ τοὺς χρόνους τούτους, ὀφείλομεν ὅμως νὰ ὁμολογήσωμεν ὅτι καὶ κατ' αὐτὴν παρατηροῦνται πολλαὶ ἀσχημίαι μεταξὺ τῶν μοναχῶν· οὕτω Εὐστάθιος ὁ Θεσσαλονίκης, θερμὸς θιασώτης τοῦ μοναχικοῦ βίου, χαρακτηρίζει πολλοὺς τῶν μοναχῶν ὡς γεωχαρεῖς, ὑποκριτὰς κτλ., κατακρίνει δὲ τοὺς λεγομένους γυμνίτας, σιδηρουμένους καὶ ἄλλους. Ἡ διαίρεσις τῶν μοναχῶν εἰς κοινοβιάτας καὶ ἰδιορρύθμους ἰσχύει κατὰ τοὺς χρόνους τούτους, ἐκτὸς τούτου ὅμως ὁ Εὐστάθιος ἀναφέρει καὶ τοὺς μεγαλοσχήμονας, τοὺς μικροσχήμονας ἢ μανδυώτας καὶ τοὺς εἰσαγωγικούς, ὁ δὲ Συρόπουλος καὶ τοὺς σταυροφόρους.

Σημαντικὸν γεγονὸς διὰ τὸν μοναχικὸν βίον εἶναι τὸ ὅτι κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ μεσαίωνος κυρίως ἤρξατο νὰ μεταφυτεύηται ὁ βίος οὗτος καὶ ἐν τῷ Ἄθωνι καὶ νὰ προκόπτῃ σημαντικῶς. Κατὰ τὸ 924 φαίνεται ὅτι ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ρωμανοῦ ἡ μονὴ τοῦ Ξηροποτάμου, κατὰ τοὺς αὐτοὺς χρόνους ἡ τῶν Ἰβήρων καὶ τῷ 960 ἡ βασιλικὴ μονὴ τῆς Λαύρας ὑπὸ *Ἀθανασίου τοῦ Ἀθωνίτου*. Ἀπὸ τοῦ ἐπιφανοῦς τούτου ἀνδρὸς κυρίως χρονολογεῖται ἡ ἐπίδοσις τοῦ μοναχικοῦ βίου ἐν Ἄθῳ, ἡ κατάπαυσις τῶν ἐρίδων μεταξὺ ἐρημιτῶν καὶ κοινοβιατῶν καὶ ἡ διὰ τοῦ τυπικοῦ Κωνσταντίνου τοῦ Μονομάχου (1045) διοργάνωσις αὐτοῦ. Κατὰ τὸ τυπικὸν τοῦτο ἀναφέρονται 180 μικραὶ καὶ μεγάλαι κατοικίαι τῶν μοναχῶν, οἵτινες διαιροῦνται εἰς τοὺς κατὰ μόνας ἐρημίτας, τοὺς συνοικοῦντας ἀλλήλοις, τοὺς ἰδιορρύθμους καὶ τοὺς κοινοβιάτας· ἐκτὸς δὲ τῶν ἐν τοῖς μοναστηρίοις διοικουσῶν ἀρχῶν, τῶν ἡγουμένων ἐν τοῖς κοινοβίοις καὶ τῶν προϊσταμένων ἐν τοῖς ἰδιορρύθμοις, ὑπῆρχε καὶ ἡ ἀρχὴ τοῦ Πρώτου. Ἀλλὰ κυρίως ὁ Ἄθως καὶ τὰ ἐν αὐτῷ μοναστήρια προήχθησαν ὀλίγον μετὰ ταῦτα, κατέστη δὲ ἀληθῶς τὸ Ἅγιον Ὄρος ἡ ἑστία καὶ τὸ κέντρον τοῦ παρ' ἡμῖν μοναχικοῦ βίου. Τότε ἱδρύθησαν καὶ τὰ μεγάλα μοναστήρια, τοῦ Παντοκράτορος καὶ Κουτλουμουσίου ἐπὶ τῶν Κομνηνῶν, τοῦ Χιλιανταρίου ὑπὸ τοῦ Σέρβου Στεφάνου τοῦ Α' (1159—1195), τοῦ Ἐσφιγμένου, τοῦ Ρωσικοῦ (ΙΒ' αἰών), τοῦ Σίμωνος Πέτρας (1363), τοῦ Διονυσίου (1375), τοῦ Καρακάλου, τοῦ Βατοπεδίου καὶ τὰ λοιπὰ (βλ. καὶ λ. *Ἄθως*), οὕτω δὲ ἐμορφώθη καὶ συνεπήχθη ἐνταῦθα ὁ μοναχικὸς βίος, ὑπὲρ τοῦ ὁποίου, ἐκτὸς τῶν πατριαρχῶν, συνετέλεσαν καὶ οἱ αὐτοκράτορες τοῦ Βυζαντίου καὶ μάλιστα Ἀλέξιος ὁ Κομνηνός, ὁ κηρύξας τὸ Ὄρος ἀτελές. Ἐν τῷ Ὄρει ἐπιρροήν τινα ἐξήσκει καὶ ὁ ἐπίσκοπος Ἱερισσοῦ προκειμένου περὶ τῶν χειροτονιῶν, μετὰ δὲ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Λατίνων τὰ μοναστήρια ταῦτα, ὡς σταυροπήγια, ὑπήχθησαν ὑπὸ τὸν Κωνσταντινουπόλεως· κατὰ τὰ λοιπὰ διετήρησαν τὰς παλαιὰς συνηθείας, ἐπροικίσθησαν πολλαχῶς ὑπὸ τῶν αὐτοκρατόρων καὶ ἐχρησίμευον ὡς τόποι καλλιεργείας τῶν γραμμάτων, ὡς μαρτυροῦσι τὰ ὀνόματα *Γρηγορίου τοῦ Παλαμᾶ*, τοῦ *πατριάρχου Φιλοθέου*, *Νικολάου τοῦ Καβάσιλα*, τοῦ *Γρηγορᾶ* καὶ ἄλλων.

Καὶ μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων (1453) ὁ μοναχικὸς βίος τῆς ἡμετέρας Ἐκκλησίας, καὶ μεθ' ὅλας τὰς καταστροφάς, ἐξηκολούθει καὶ εἶναι ὁ κυριώτερος παράγων τῆς ἐνεργείας αὐτῆς, ἀντιλήπτωρ ἐν ταῖς θλίψεσι καὶ σύμβουλος ἐν ἀνάγκαις, τὰ δὲ διασωθέντα μοναστήρια οὐ μόνον σημεῖα χριστιανικῶν ἀρετῶν καὶ καταφύγια τῶν καταδυναστευομένων, ἀλλὰ καὶ ταμεῖα θησαυρῶν ἀνεξαντλήτων τῆς προγονικῆς παιδείας καὶ σχολεῖα πρὸς ἀναζωπύρησιν τῆς πνευματικῆς τοῦ γένους ἀναγεννήσεως. Οἱ μοναχοί, μέτοχοι πάντοτε τῶν τυχῶν τῆς Ἐκκλησίας καὶ τοῦ Γένους, ποικιλοτρόπως ἐγένοντο ἀρωγοὶ ἐν ταῖς πονηραῖς ἐκείναις ἡμέραις, ὑπὸ τὸ τριβώνιον αὐτῶν κρύπτοντες ποικίλας ἀρετὰς καὶ περιερχόμενοι πόλεις καὶ χώρας πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ἀσθενῶν ἐν τῇ πίστει, ἐμψύχωσιν τῆς πατρίου παιδεύσεως καὶ τῶν ἐθνικῶν ἰδεωδῶν καὶ ἐξάσκησιν τῆς χριστιανικῆς ἀγάπης. Δὲν δυνάμεθα βεβαίως ν' ἀρνηθῶμεν ὅτι καὶ κατὰ τοὺς χρόνους τούτους μεταξὺ τῶν μοναχῶν ὑπῆρχον πολλοὶ λησμονοῦντες τὴν ἱερὰν αὐτῶν κλῆσιν καὶ περὶ τὰ ἐφήμερα καὶ κοσμικὰ ἀσχολούμενοι, ἀλλ' ἡ Ἐκκλησία πάντοτε διαφοροτρόπως ἐπολέμει τὰς κακίας ταύτας. Καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν αὐτὴν τὰ μοναστήρια διαιροῦνται εἰς σταυροπήγια, ἐξαρτώμενα ἐκ τοῦ πατριαρχείου Κωνσταντινουπόλεως, καὶ εἰς ἐπαρχιακά· τινὰ τῶν πρώτων, ὡς τὸ τοῦ Θεολόγου ἐν Πάτμῳ, τοῦ Μ. Σπηλαίου ἐν Πελοποννήσῳ καὶ τὰ τοῦ Ἄθωνος ἐλέγοντο καὶ βασιλικά, ἀλλὰ σὺν τῷ χρόνῳ καὶ ταῦτα ὑπήχθησαν εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν σταυροπηγίων. Τὰ μοναστήρια, διαιρούμενα πάλιν εἰς ἰδιόρρυθμα καὶ κοινόβια, ὑπολείπονται μὲν κατὰ τὸν ἀριθμὸν τῶν ἐν τῇ προηγουμένῃ περιόδῳ σημειωθέντων, πλεῖστα ὅμως διατηροῦνται ἐν ταῖς χώραις τῆς τουρκικῆς αὐτοκρατορίας· ἀρκεῖ νὰ παρατηρήσωμεν ὅτι μόνον ἐν τῇ παλαιᾷ Ἑλλάδι ἐπὶ τῆς ἀντιβασιλείας ὑπῆρχον περὶ τὰ 394. Πολλὰ τῶν μοναστηρίων τούτων, καὶ δὴ τοῦ Ὄρους, τοῦ Σινᾶ, τῆς Ἱερουσαλήμ, τῆς Ἀλεξανδρείας, τῆς Ἠπείρου καὶ Θεσσαλίας εἶχον πλουσίας καὶ ἐκτεταμένας γαίας καὶ κτήματα ἐν Ρουμανίᾳ, πρὸς κυβέρνησιν τῶν ὁποίων ὑπῆρχον τὰ λεγόμενα μετόχια· δυστυχῶς πάντα ταῦτα, μετὰ πολυχρονίους ματαίους ἀγῶνας τῶν ἡμετέρων, τῷ 1862 κατεσχέθησαν ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος Κούζα, ὅμοιαι δὲ κατασχέσεις μοναστηριακῶν κτημάτων ἐγένοντο καὶ ἐν Ρωσίᾳ, μικροῦ μόνον ποσοῦ τῶν εἰσοδημάτων αὐτῶν παρεχομένου τοῖς δικαιούχοις. Σήμερον μετὰ τὸν μέγαν Παγκόσμιον πόλεμον πάντα τὰ μοναστήρια τὰ ἐν ταῖς χώραις τῆς τουρκικῆς δημοκρατίας περιῆλθον εἰς χεῖρας τῶν κρατούντων, ἄλλα μὲν καταστραφέντα, ἄλλα δὲ μεταβαλόντα προορισμόν.

Εὐτυχῶς τὰ μοναστήρια τὰ ἐν ταῖς χώραις ταῖς προσαρτηθείσαις τῷ ἑλληνικῷ κράτει διετηρήθησαν σήμερον, ὁμοῦ δὲ μετὰ τῶν ἐν τῇ παλαιᾷ Ἑλλάδι ἀποτελοῦσι σημαντικὸν ἀριθμόν, ἐνῷ ὁ μοναχικὸς βίος δὲν δυνάμεθα μὲν νὰ εἴπωμεν ὅτι διατελεῖ ἐν καταστάσει ἀνθηρᾷ, διαφυλάττει ὅμως τοὺς ἀρχαίους κανόνας καὶ παραδόσεις· πρὸς ῥύθμισιν αὐτοῦ ἐσχάτως ἐλήφθη πρόνοια καὶ μάλιστα περὶ τῆς οἰκονομικῆς τῶν μοναστηρίων καταστάσεως καὶ τῆς περιουσίας αὐτῶν. Κέντρον τοῦ μοναχικοῦ βίου παρ' ἡμῖν καὶ σήμερον εἶναι ὁ Ἄθως, τὸ Ἅγιον Ὄρος, ἐν ᾧ διατηροῦνται τὰ εἴκοσι μεγάλα μοναστήρια, βασιλικὰ καὶ σταυροπήγια, διαιρούμενα ὡς πρότερον εἰς κοινόβια καὶ ἰδιόρρυθμα καὶ κυβερνώμενα κατὰ τὰ ἀνέκαθεν ἰσχύοντα σιγίλλια καὶ τοὺς νόμους· ἐσχάτως, ἐπὶ τῇ βάσει τούτων, κατηρτίσθη νέον καταστατικόν, καθορίζον λεπτομερῶς τὰς πρὸς ἀλλήλους σχέσεις τῶν μοναχῶν καὶ μοναστηρίων, ὡς καὶ τὰς τοιαύτας πρὸς τὸ Οἰκουμενικὸν πατριαρχεῖον καὶ τὴν ἑλληνικὴν κυβέρνησιν. Ἐκτὸς τῶν μεγάλων μοναστηρίων, ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ὑπάρχουσι σήμερον καὶ πολλαὶ σκῆται καὶ κελλία, ἐξαρτώμενα ἐκ τῶν κυριάρχων μονῶν, ὡς καὶ ἐρημητήρια. Πάντων τούτων ἀνωτάτη κυβερνητικὴ ἀρχὴ εἶναι ἡ Ἱερὰ Σύναξις τῆς Κοινότητος, παρ' αὐτῇ δὲ ἡ ἐπιστασία, ἐκτελοῦσα τὰς ἀποφάσεις αὐτῆς (βλ. λ. *Ἄθως*). Προκειμένου περὶ τῆς οἰκονομικῆς καταστάσεως τοῦ Ὄρους, αὕτη οὐδέποτε ἦτο εὐάρεστος· ἐν τοῖς νεωτέροις χρόνοις αἰτία τούτου ἦτο ἡ κατάσχεσις τῶν ἐν Ρουμανίᾳ καὶ Βεσσαραβίᾳ μοναστηριακῶν κτημάτων καὶ ποικίλαι τῶν ἡμετέρων καταχρήσεις· ἐν παλαιοτέροις δὲ κυρία αἰτία ἦτο ἡ καταπίεσις τῶν κρατούντων καὶ οἱ βαρεῖς φόροι, οὓς ὑπέβαλλον οὗτοι, βεβαίως δὲ καὶ αἱ περιπέτειαι τοῦ Γένους καὶ τῆς Ἐκκλησίας, ὧν μετεῖχον πάντοτε καὶ οἱ Ἁγιορεῖται, ὡς μαρτυροῦσι τὰ ἔτη 1821 καὶ 1854. Ἐσχάτως ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως ἐγένετο, χάριν τῶν προσφύγων, κατάσχεσις τῶν ἁγιορειτικῶν μετοχίων, εὐτυχῶς ὅμως ἀπεδόθη ταῖς μοναῖς ἀνάλογος ἱκανοποίησις. Ἀλλὰ καὶ μεθ' ὅλην τὴν δυσπραγίαν οἱ ἁγιορεῖται οὐ μόνον ἐπλήρουν τὰς καθημερινὰς ἀνάγκας καὶ τὴν συνήθη αὐτοῖς φιλανθρωπίαν καὶ φιλοξενίαν, ἀλλὰ καὶ τὰ γράμματα καθόλου ὑπεστήριζον, συντελοῦντες εἰς τὴν ἔκδοσιν βιβλίων καὶ συνιστῶντες ἐν ταῖς μοναῖς σχολεῖα· μαρτύριον τούτου εἶναι οὐ μόνον ἡ πλειὰς σοφῶν καὶ λογίων Ἁγιορειτῶν καὶ τὰ προκαταρκτικὰ παρ' αὐτοῖς σχολεῖα, ἀλλὰ καὶ ἡ κατὰ τὸ 1749 ἱδρυθεῖσα περίπυστος *Ἀθωνιὰς σχολὴ* (βλ. λ.), ἐν ᾗ, ἐκτὸς πολλῶν σοφῶν, ἐδίδαξε καὶ ὁ πολὺς *Εὐγένιος ὁ Βούλγαρις*, ἔτι δὲ καὶ τὸ κατὰ τὸ 1775 συστηθὲν ἐν Λαύρᾳ τυπογραφεῖον. Ἐκτὸς τῶν γραμμάτων ἀνέκαθεν ἐν Ἁγίῳ Ὄρει ἐκαλλιεργοῦντο καὶ αἱ καλαὶ τέχναι, ἡ ἁγιογραφική, ἡ γλυπτικὴ καὶ ἡ μουσική. Καίτοι δὲ ὁ ὑπὲρ τῶν γραμμάτων ζῆλος καὶ ὁ ὀργασμὸς ἠμβλύνθη πως παρά τισιν, ἐσχάτως ὅμως ὑπὸ πάντων ἀνεγνωρίσθη ἡ ἀνάγκη τῆς παιδεύσεως, ἐλπίζεται δὲ νὰ στεφθῇ ὑπὸ ἐπιτυχίας. Πάντοτε οἱ Ἁγιορεῖται διεκρίθησαν διὰ τὴν διαφύλαξιν τῶν διατάξεων τοῦ μοναχικοῦ πολιτεύματος, αἱ ἀναφερόμεναι δὲ δυστυχῶς παρεκκλίσεις καὶ παρεκτροπαὶ διωρθοῦντο ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας. Ἐπιβλαβεστάτην μεταξὺ αὐτῶν θέσιν εἶχον αἱ ἀντικανονικαὶ καὶ φυλετικαὶ ἀξιώσεις τῶν ἐκεῖ ἀσκουμένων ἐξ ἄλλων ἐθνῶν, Ρώσων, Βουλγάρων, Σέρβων, καὶ Ρουμούνων, ἀλλὰ καὶ αὗται διὰ τῆς πολιτικῆς προσαρτήσεως τοῦ Ἄθω εἰς τὴν Ἑλλάδα πιστεύεται ὅτι ἐξέλιπον, θὰ ἐπικρατήσῃ δὲ ἡ ὀρθόδοξος καὶ κανονικὴ ὄψις τοῦ ζητήματος.

Ἐκ τοῦ ἀκμαίου μοναχικοῦ βίου καὶ τῶν πολυπληθῶν μοναστηρίων τῶν πατριαρχείων τῆς Ἀλεξανδρείας, Ἀντιοχείας καὶ Ἱεροσολύμων, κατόπιν τῶν ἀραβικῶν κατακτήσεων, λείψανα μόνον διατηροῦνται μέχρι τῆς σήμερον. Ἀκμαιότερος φαίνεται ὁ μοναχικὸς βίος ἐν ταῖς ἀπὸ τοῦ πατριαρχείου Κωνσταντινουπόλεως ἐξαρτωμέναις ἄλλοτε χώραις τῶν Βουλγάρων, Σέρβων καὶ Ρουμούνων, ὅπου μέχρι τῆς σήμερον πολλὰ καὶ πλούσια διατηροῦνται μοναστήρια, ἀκολουθοῦντα τὰ παλαιὰ τυπικά. Τοῦτο ῥητέον ἰδίᾳ περὶ τῆς ἐν Ρωσίᾳ

Digitized by Google

ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας, ἔνθα ὁ παρ' ἡμῶν μεταφυτευθεὶς μοναχικὸς βίος, καίτοι πολλαχῶς καταπιεσθεὶς ὑπὸ τῶν Τατάρων καὶ Τούρκων, περιωρίσθη δὲ ἀκολούθως ὑπὸ Πέτρου τοῦ Μεγάλου καὶ κατεδιώχθη θανασίμως τῷ 1734 ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Μύρωνος, ὑπεστηρίχθη ἀκολούθως ἐπὶ τῆς αὐτοκρατείρας Ἐλισάβετ τοσοῦτον, ὥστε ἤδη τῷ 1762 ἀναφέρονται 732 ἀνδρῷα καὶ 222 γυναικεῖα μοναστήρια, διαλάμπουσι δὲ μεταξὺ αὐτῶν αἱ τρεῖς μεγάλαι *λαῦραι*, ἡ τοῦ *Σπηλαίου* ἐν Κιέβῳ, τοῦ *Ἀλεξάνδρου Νεύσκη* ἐν Πετρουπόλει καὶ τοῦ *Τροΐσκη* ἐν Μόσχᾳ. Ἀπὸ Αἰκατερίνης τῆς Β' τὰ ἐν Ρωσίᾳ μοναστήρια διεκρίθησαν εἰς κυβερνητικὰ καὶ ἰδιωτικά, ἀλματωδῶς δ' ηὔξησεν ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν μέχρις ἐσχάτων. Καὶ ἐνταῦθα ἠκολούθουν ταῦτα τὸν κοινοβιακὸν ἢ τὸν ἰδιόρρυθμον τύπον, οἱ μοναχοὶ ἀπέλαυον πολλῶν προνομίων, πολλοὶ δὲ αὐτῶν διεκρίθησαν ἐπὶ εὐσεβείᾳ καὶ παιδεύσει. Δυστυχῶς ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν Μπολσεβίκων, καθὼς πᾶσα ἡ ἐν Ρωσίᾳ μεγάλη ὀρθόδοξος Ἐκκλησία διατρέχει τὸν μέγιστον τῶν κινδύνων, οὕτω καὶ ὁ μοναχικὸς βίος· τὰ μοναστήρια ἢ κατεστράφησαν ἢ μετετράπησαν εἰς ἄλλην χρῆσιν.

Μεγάλως ἤκμαζεν ὁ μοναχικὸς βίος ἄλλοτε καὶ παρὰ τοῖς αἱρετικοῖς, τοῖς ἀποσχισθεῖσιν ἀπὸ τῆς ἡμετέρας ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας, κατόπιν ὅμως περιωρίσθη σημαντικῶς· παρὰ τοῖς *νεστοριανοῖς* οὔτε μοναστήρια οὔτε μοναχοὶ ἀναφέρονται σήμερον· ὁμοίως, ἕνεκα τῶν ὑπὸ τῶν Τούρκων καταστροφῶν, περιωρίσθη ὁλοτελῶς ὁ μοναχικὸς βίος παρὰ τοῖς *γρηγοριανοῖς Ἀρμενίοις*, διασῳζομένου μόνον τοῦ ἐν Ἐτμιατζὶν μοναστηρίου· αὐτὸ τοῦτο συμβαίνει καὶ παρὰ τοῖς ἐν Συρίᾳ *Ἰακωβίταις*, παρ' οἷς τὰ σῳζόμενα μοναστήρια χρησιμεύουσι πρὸς κατοικίαν τοῦ πατριάρχου αὐτῶν καὶ τῶν ἐπισκόπων. Κρείσσων εἶναι ἡ κατάστασις τῶν ἐν Αἰγύπτῳ *Κοπτῶν*, παρ' οἷς διατηροῦνται τὰ ἐπίσημα μοναστήρια τοῦ ἁγίου *Ἀντωνίου, Παύλου, Μακαρίου* καὶ *Μάρκου*. Αὐστηροτάτη εἶναι ἡ δίαιτα καὶ τῶν ἐν Ἀβησσυνίᾳ μοναχῶν, οἵτινες διακρίνονται εἰς τοὺς μοναχοὺς τοῦ *Λιβάνου* καὶ τοὺς τοῦ ἁγίου *Εὐσταθίου*.

***Β') Ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ.*** Ἐν τῇ Δύσει ὁ μοναχικὸς βίος δὲν ἔσχε κατ' ἀρχὰς εὔνουν ὑποδοχήν, ὡς ἐν Ἀνατολῇ. Πρῶτος εἰσήγαγεν αὐτὸν *Ἀθανάσιος ὁ Μέγας* καὶ μετ' αὐτὸν εἰργάσθησαν ὑπὲρ αὐτοῦ ὁ ἱερὸς *Ἀμβρόσιος, Αὐγουστῖνος* καὶ *Ἱερώνυμος*. Πρῶτος ὁ Ἀμβρόσιος ἵδρυσε μοναστήριον ἐν Μεδιολάνῳ, μετ' ὀλίγον δὲ βλέπομεν τοιαῦτα καὶ ἐν Ρώμῃ καὶ ταῖς νήσοις τοῦ Δαλματικοῦ πελάγους. Σπουδαιότερον ὑπὲρ τοῦ μοναχικοῦ βίου εἰργάσθη ὁ Ἱερώνυμος, ὅστις ὑπὸ εὐσεβῶν καὶ πλουσίων γυναικῶν ἀκολουθούμενος μετέβη τῷ 385 εἰς Παλαιστίνην. Δυσκολίας ἐν τῇ Βορείῳ Ἀφρικῇ ἐδοκίμασεν ὁ ἱερὸς Αὐγουστῖνος, ἐνῷ ἐν τῇ βορείῳ Γαλλίᾳ εὐκολώτερον διεδόθη ὁ μοναχικὸς βίος διὰ τοῦ ἐπισκόπου Τουρένων *Μαρτίνου* (370), ὡς καὶ ἐν τῇ μεσημβρινῇ, ἔνθα ἐπὶ μὲν τῆς νήσου Λιρίνης ὁ *Ὁπάτος* ἵδρυσε τὸ περίφημον μοναστήριον τοῦ Λιρίνου, ὁ δὲ *Κασσιανὸς* τὸ ἔτι ἐπισημότερον ἐν Μασσαλίᾳ. Ὁ ἐν τῇ Δύσει μεταφυτευθεὶς μοναχικὸς βίος διέφερέ πως τοῦ ἐν Ἀνατολῇ, οὐ μόνον ἕνεκα τοῦ κλίματος καὶ τῆς ἐλλείψεως ὡρισμένου κανόνος, ἀλλὰ καὶ ἕνεκα τῶν βαρβαρικῶν ἐπιδρομῶν, τούτου δ' ἕνεκα περιήλθεν εἰς κατάπτωσιν. Τότε ἐνεφανίσθη *Βενέδικτος ὁ ἐκ Νουρσίας*, ὅστις συνέταξε κανόνα ἵνα ἐμπνεύσῃ ἑνότητα καὶ ἁρμονίαν μεταξὺ τῶν μοναχῶν· ὁ κανὼν οὗτος τοῦ Βενεδίκτου ἐφηρμόσθη τὸ πρῶτον ἐν τῷ μοναστηρίῳ Monte Cassino, ἐστερεῖτο αὐστηρότητος καὶ ἦν μᾶλλον φύσεως πρακτικῆς. Ἐκτὸς τοῦ Βενεδίκτου μοναχικοὺς κανόνας συνέταξαν καὶ ὁ *Κασσιόδωρος ὁ Καισαρείας* καὶ *Ἰσίδωρος ὁ Σεβίλλης*, ἀλλὰ διὰ τῆς ὑποστηρίξεως τῶν παπῶν ἐπεκράτησεν ὁ τοῦ Βενεδίκτου, εἰς τὸν ὁποῖον ἀκολούθως προσετέθησαν ὡς καθήκοντα μοναχικὰ ἡ ἐπιστημονικὴ μόρφωσις καὶ ἡ διάδοσις τοῦ Εὐαγγελίου· πράγματι δὲ ἐπὶ πολλοὺς αἰῶνας τὰ μοναστήρια τῶν Βενεδικτίνων κατέστησαν φυτώρια τῶν γραμμάτων καὶ τοῦ πολιτισμοῦ ἐν τῇ Δύσει. Ἐν Ἀφρικῇ, ἀντιθέτως, καὶ παρ' ὅλην τὴν ἐνθουσιώδη διδασκαλίαν τοῦ Αὐγουστίνου, ὁ μοναχικὸς βίος περιεφρονεῖτο, ὑποστηριζόμενος μόνον ὑπὸ τῶν κατωτέρων τάξεων.

Κατὰ τὸν μεσαίωνα ὁ μοναχικὸς βίος ἐν τῇ Δύσει διετήρησε τὸν πρότερον αὐτοῦ πρακτικὸν χαρακτῆρα. Οἱ μοναχοὶ τῆς Δύσεως ἀνετώτερον βίον ζῶντες, οὐ μόνον τὰς χέρσους τῆς Εὐρώπης χώρας ἐκαλλιέργησαν καὶ τὰς ἀγρίας ὀρδὰς τῶν βαρβάρων ἐξηνθρώπισαν, ἀλλὰ καὶ εἰς τὰ γράμματα ἐπιδοθέντες, κατέστησαν τὰ μοναστήρια, εἰς τὰ ὁποῖα κατέφευγον ἐξ ὅλων τῶν τάξεων τῆς κοινωνίας καὶ αὐτῶν τῶν ἡγεμόνων, ἑστίας τοῦ ἐπιστημονικοῦ βίου· ἐκ τῶν μοναστηρίων τούτων ἐλαμβάνοντο οἱ ἐπίσκοποι καὶ οἱ πάπαι, οἵτινες σὺν τῷ χρόνῳ κατώρθωσαν ν' ἀποσπάσωσιν αὐτὰ ἀπὸ τῆς ἐξουσίας τῶν ἐπισκόπων. Ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος μεγάλη κατάπτωσις ἐπῆλθεν ἐν τῷ μοναχικῷ βίῳ τῆς Δύσεως, τοῦτο δὲ κυρίως προῆλθεν ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι πολλὰ τῶν μοναστηρίων ἐδίδοντο ὡς ἐπικαρπία εἰς ἡγουμένους λαϊκοὺς (Abbacomites), ἐντεῦθεν δὲ ταῦτα ἐξελαϊκεύθησαν· τὸ κακὸν ἠθέλησε νὰ περιορίσῃ τῷ 817 *Βενέδικτος ὁ ἐξ Ἀνιανοῦ*, ἀλλὰ μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἡ μεταρρύθμισις ἀνεκόπη, ἕνεκα δὲ τῆς λεηλασίας τῶν μοναστηρίων ὑπὸ τῶν ἀρχόντων καὶ τῶν ἱπποτῶν, οἵτινες διηγῶντο ἐν αὐτοῖς μετὰ τῶν γυναικῶν καὶ τῶν οἰκογενειῶν των, ἔτι δὲ καὶ τῆς καταδρομῆς τῶν Νορμανδῶν, ταῦτα περιῆλθον εἰς ἀθλίαν κατάστασιν. Ἡ παρακμὴ αὕτη διήρκεσε μέχρι τοῦ Ι' αἰῶνος, ὅτε ὁ *Βέρνων* ἵδρυσε τὸ περίφημον μοναστήριον τοῦ Κλουνιακοῦ (910), ὅπερ κατ' ὀλίγον κατέστη πρότυπον τοῦ μοναχικοῦ βίου, ὑπερβαλὸν καὶ τὸ τοῦ Monte Cassino· κατὰ τὸ Κλουνιακὸν ἐρρυθμίσθησαν καὶ ἄλλα μοναστήρια, οὕτω δ' ἀπετελέσθη ὁ «Σύνδεσμος τοῦ Κλουνιακοῦ» (Congregatio Cluniacensis), κατ' αὐτὸν δ' ἐμορφώθη καὶ ὁ σύνδεσμος τοῦ Κιστερσίου (1098), ὅστις διὰ τοῦ ἡγουμένου τοῦ μοναστηρίου Κλαιρβὼ *Βερνχάρδου* τοσοῦτον ἀνυψώθη, ὥστε κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα ἠρίθμει 2.000 ἀνδρῷα καὶ 6.000 γυναικεῖα μοναστήρια· ὁμοίως συνεμορφώθησαν καὶ ἄλλοι σύνδεσμοι, ὡς τῶν Καρτουσιανῶν, Τρινιτηρίων κτλ. Τὰ μοναστήρια ταῦτα, τῶν ὁποίων τὰ μέλη διεκρίνοντο εἰς πατέρας καὶ ἀδελφούς, ἐκτὸς τοῦ ὅτι ἦσαν τὸ κυριώτερον στήριγμα τοῦ παπισμοῦ, παρέσχον καὶ πολλὰς ὑπηρεσίας εἰς τὴν Δύσιν, δὲν ἐβράδυναν ὅμως νὰ περιέλθουν εἰς κατάπτωσιν, ἕνεκα τοῦ ἐπιψόγου βίου, τὸν ὁποῖον διῆγον τὰ μέλη αὐτῶν· διὰ τοῦτο τῷ 1215 ὁ πάπας Ἰννοκέντιος Γ' περιώρισε τὸν ἀριθμὸν τῶν ταγμάτων τούτων. Καὶ ὅμως αὐτὸς οὗτος ὁ πάπας μετ' ὀλίγον ἐπέτρεψε τὴν ἵδρυσιν τῶν δύο μεγάλων ταγμάτων τῶν Ἐπαιτῶν, δηλαδὴ τῶν φραγκισκανῶν καὶ δομινικανῶν, τὰ ὁποῖα ἀληθῶς κατέστησαν οἱ κυριώτεροι μοχλοὶ τῆς ἐνεργείας τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, διότι πράγματι ἐκ τῶν ταγμάτων τούτων ἄλλοι ἀνέβαινον τὸν παπικὸν θρόνον, ἄλλοι ἐγίνοντο καθηγηταὶ τῶν πανεπιστημίων, ἄλλοι διδάσκαλοι καὶ παιδαγωγοὶ τοῦ λαοῦ καὶ ἄλλοι ἱεραπόστολοι καὶ ἱεροεξετασταί. Τὸ τάγμα τῶν φραγκισκανῶν ἱδρύθη ὑπὸ *Φραγκίσκου τοῦ ἐξ Ἀσσίσης* († 1226). Οἱ μοναχοὶ οὗτοι, οἵτινες, ἐκτὸς τῆς ἀπὸ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἱδρυτοῦ ἐπωνυμίας των, ὠνομάζοντο καὶ μικροὶ ἀδελφοὶ ἢ μινορῖται, ἔργον εἶχον τὸ κήρυγμα καὶ διεκρίνοντο διὰ τῆς λιτότητα τοῦ βίου, τὴν πτωχείαν καὶ τὴν ταπεινοφροσύνην· κατὰ τὸ 1264 οἱ φραγκισκανοὶ ἠρίθμουν 8 χιλιάδας μοναστηρίων μετὰ 200.000 μελῶν. Ὁ ἴδιος Φραγκῖσκος ἵδρυσε καὶ τὸ τάγμα τῆς Ἁγίας Κλάρας τῷ 1212. Τὸ ἕτερον ἐπαιτικὸν τάγμα τῶν δομινικανῶν, ὅπερ ὑπὸ τοῦ πάπα Ὀνωρίου ὠνομάσθη τάγμα τῶν ἱεροκηρύκων, ἀρχηγὸν εἶχε τὸν Ἱσπανὸν *Δομίνικον*. Ἀμφοτέρων τῶν ταγμάτων δόξα καὶ τιμὴ ἐγένοντο οἱ δύο μεγάλοι αὐτῶν διδάσκαλοι *Θωμᾶς ὁ Ἀκινάτης* τῶν δομινικανῶν καὶ *Βοναβεντούρας* τῶν φραγκισκανῶν, πρωΐμως ὅμως μεταξὺ αὐτῶν ἐνεφιλοχώρησαν ἔριδες καὶ φιλονικίαι, ἐπιταθεῖσαι καὶ ἕνεκα τῆς ἐν τῇ διδασκαλίᾳ ἀντιθέσεως. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐμορφώθησαν ἐν τῇ Δύσει καὶ τὰ ἱπποτικὰ τάγματα, προελθόντα ἐκ τοῦ ἐνθουσιασμοῦ τῶν σταυροφοριῶν καὶ συνδέοντα τὸν ἱπποτικὸν καὶ μοναχικὸν βίον· τοιαῦτα ἦσαν οἱ Ἰωαννῖται, οἱ Ναΐται, οἱ Γερμανοὶ ἢ Τεύτονες ἱππόται κτλ. ἀναφέρονται ἐπίσης καὶ τάγματα ἀνάμικτα ἐξ ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν, ἀλλ' ἕνεκα τῆς διαφθορᾶς αὐτῶν κατεδιώχθησαν ὑπὸ τῆς Ἱερᾶς Ἐξετάσεως.

Σημαντικῶς ἀνεπτύχθη ὁ μοναχικὸς βίος τῆς Δύσεως κατὰ τὴν ἀπὸ τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως περίοδον, καταστὰς ὁ κυριώτερος μοχλὸς κατὰ τοῦ προτεσταντισμοῦ καὶ τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας, ὁ κυριώτερος δὲ προασπιστὴς τοῦ παπισμοῦ. Ἕνεκα τῆς μεγάλης διαφθορᾶς τῆς ἐπικρατούσης παρὰ τοῖς μοναχοῖς, ἐπηνέχθησαν μὲν διάφοροι μεταρρυθμίσεις, ὡς παρὰ τοῖς φραγκισκανοῖς καὶ ἄλλοις, συνεστήθησαν ὅμως καὶ ἄλλα πολλὰ τάγματα, ὡς τὸ τῶν βαρναβιτῶν, τῶν ἀδελφῶν τοῦ Ἐλέους, τῶν εὐχιτῶν καὶ πρὸ πάντων τῶν ἰησουϊτῶν, πρὸς κραταίωσιν κυρίως τοῦ παπισμοῦ. Ἀρχηγὸς τοῦ τάγματος τῶν ἰησουϊτῶν ἐγένετο ὁ *Ἰγνάτιος Λοϋόλας*, ὅστις λαβὼν τῷ 1540 παρὰ τοῦ πάπα Ὀνωρίου τὴν ἀναγνώρισιν τοῦ τάγματος τούτου ὡς «κοινωνίας τοῦ Ἰησοῦ» (Ordo Societatis Jesu), διεκρίθη μέχρι τέλους τοῦ βίου αὐτοῦ ἐν τῷ σταδίῳ τῆς πνευματικῆς ἀσκήσεως καὶ τῷ κατὰ τῶν αἱρετικῶν ἀγῶνι. Οὐδέποτε σωματεῖον κατενόησε κάλλιον νὰ δοκιμάζῃ τοὺς ἀνθρώπους καὶ προορίζῃ ἕκαστον εἰς τὴν ἁρμόζουσαν θέσιν· πρὸ τοῦ συμφέροντος ὅμως τοῦ τάγματος τὰ πάντα ἔπρεπε νὰ περιφρονῶνται, τὴν δὲ τῆς συνειδήσεως ἐξαιρούμενα. Τὸ τάγμα εἶχε τὴν εὐτυχίαν νὰ διαθέτῃ ὑπὲρ ἐπιτυχίας τῶν σκοπῶν αὐτοῦ ἐπιστήμην, παιδείαν, τέχνην, ἐμπόριον κτλ., ἠδυνήθη δὲ διὰ τῆς διδασκαλίας καὶ τοῦ κηρύγματος νὰ ἐξασκήσῃ φοβερὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ λαοῦ, ἐπὶ τῶν εὐγενῶν καὶ τῶν ἡγεμόνων, νὰ δημιουργῇ δ' οὕτω προστάτας ἰσχυροὺς καὶ νὰ εἰσδύῃ εἰς τὰ μυστήρια τοῦ κόσμου. Τὴν δύναμιν τοῦ ταύτην οἱ ἰησουῖται ἐχρησιμοποίησαν ἰδίως πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ παπισμοῦ. Ἑβδομήκοντα ἔτη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λοϋόλα τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν ἠρίθμει 803 μοναστήρια καὶ 15.493 μέλη. Λόγον τῶν πράξεων αὐτοῦ ὤφειλε νὰ δίδῃ μόνον εἰς τὸν πάπαν, διείπετο δὲ ὑπὸ κανονισμοῦ αὐστηροτάτου· ἡ πνευματικὴ αὐτοῦ ἄσκησις, ἐκτὸς τῆς πτωχείας, τῆς ὑπακοῆς καὶ τῆς ἐγκρατείας, συνίστατο εἰς τὴν προσευχήν, τὴν μελέτην καὶ τὴν ἔρευναν τῆς συνειδήσεως. Οἱ ἰησουῖται παρεσκεύασαν καὶ ἰδιαίτερον σύστημα διδασκαλίας, τὸ μὲν ἀναπτύξαντες τὴν θεωρίαν περὶ ἀλαθήτου τοῦ πάπα καὶ τῆς ἀπολύτου ἐπὶ τοῦ κόσμου κυριαρχίας αὐτοῦ, τὸ δὲ διαστρέψαντες τὴν χριστιανικὴν ἠθικὴν διὰ τῆς διδασκαλίας ὁ «σκοπὸς ἁγιάζει τὰ μέσα», τῆς «πιθανολογίας» κτλ. Προικισθέντες ὑπὸ τῶν κατὰ καιροὺς παπῶν διὰ διαφόρων προνομίων, ἵδρυσαν πολλαχοῦ τοῦ κόσμου σωματεῖα, ὀρφανοτροφεῖα, γυμνάσια καὶ σεμινάρια, ἅτινα ἐχρησίμευον ὡς ἄλλα φυτώρια πρὸς διάδοσιν τῶν ἰδεῶν αὐτῶν, ἐδίδασκον οἱ ἴδιοι ἐν αὐτοῖς, ὡς καὶ ἐν διαφόροις πανεπιστημίοις, καὶ διεκρίθησαν ὡς ῥήτορες, καθηγηταὶ καὶ ἐπιστήμονες σοφοί· κατεδιώχθησαν ἐν τούτοις πολλάκις ὑπὸ τῶν διαφόρων κρατῶν τῆς Εὐρώπης, Γρηγόριος δὲ ὁ ΙΣΤ' ἠναγκάσθη τῷ 1845 νὰ διαλύσῃ τὸ τάγμα· μετά τινα ὅμως ἔτη ἀποκατέστη τοῦτο καὶ πάλιν. Μολονότι ὅμως καὶ αὖθις ἐκδιωχθέντες καὶ καταδιωκόμενοι, δὲν ἔπαυσαν οἱ ἰησουῖται ἐπιδρῶντες ἐπὶ παντὸς τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ καὶ κοινωνικοῦ βίου.

Ἐκτὸς τῶν ἰησουϊτῶν καὶ ἄλλα τάγματα συνεστήθησαν ἐν τῇ δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους, ὡς τὸ τῶν τραππιστῶν, τῆς Ἁγίας καρδίας κτλ., ἄλλα δὲ ἀνεκαινίσθησαν, ὡς τὰ τῶν βενεδικτίνων, καπουκίνων, δομινικανῶν, φραγκισκανῶν κτλ. Συνεστήθησαν δὲ ἐπὶ πλέον καὶ ἄλλοι ποικίλοι σύνδεσμοι, σωματεῖα καὶ σύλλογοι ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν, οἵτινες, μὴ ὑποβαλλόμενοι εἰς τοὺς μοναχικοὺς κανόνας, ἀποσκοποῦσι τὴν μόρφωσιν τοῦ λαοῦ καὶ τὴν φιλανθρωπίαν, κυρίως ὅμως τὴν ὑποστήριξιν τοῦ παπισμοῦ καὶ τῶν ἱεραποστολῶν· ἐκ τῶν ἀναριθμήτων τούτων ὀργανώσεων ἀναφέρομεν τὸν Σύνδεσμον τῆς Καρδίας τοῦ Ἰησοῦ καὶ τῆς Μαρίας, τὰ σωματεῖα τῆς Καρδίας τῆς ἁγίας Σοφίας, τοῦ Ἰωσήφ, τοῦ Ἀνδρέου κτλ., τὸ σωματεῖον τῶν ἀδελφῶν τοῦ ἐλέους κτλ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Πρβλ. *Ἀθανασίου τοῦ Μεγάλου*, Βίος τοῦ Μ. Ἀντωνίου.—*Παλλαδίου*, Λαυσαϊκόν.—*Νείλου*, Ἐπιστολαί.—*Θεοδωράτου Φιλοθέου* Ἱστορία.—*Σωκράτους* Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία. (4, 23).—*Σωζομένου* Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία (1, 12.3,14.6,28).—*Neander*, K—Geschichte (τόμ. 3).—*Möhler*, K—Gesch. (τόμ. 5).—*Gieseler*, K—Gesch. (τόμ. Α' καὶ Β').—*Gass*, in Zeitschrift f. K—Gesch. 2, 2.—*Τοῦ αὐτοῦ*, Zur Geschichte d. Athos - Klöster (Giessen 1865).—*Miklosisch* Acta (τόμ. Α').—*Θεοδώρου τοῦ Στουδίτου* παρὰ Migne (τόμ. 99).—Ἀλήθειαν τοῦ 1880 φυλλ. 9.—Ἐκκλ. Ἀλήθ. 3. 4. 5. 17, 21.—*Σκαρλάτου Βυζαντίου* Κωνσταντινούπολις (τόμ. Α' καὶ Β').—*Κωνσταντίνου τοῦ ἀπὸ Σιναίου Κωνσταντινιάδη*, Κωνσταντινούπολις 1841.—*Laaglois*, Le Mont - Athos (Paris 1867).—*Γεδεών*, Ἄθως (Κων/πολις 1885).—*Κοσμᾶ Βλάχου*, Ἡ χερσόνησος τοῦ Ἄθω.—*Μεταξάκη*, Ἅγιον Ὄρος.—*Σ. Κουρίλα*, Περὶ μοναχικοῦ βίου (Θεσσαλονίκη 1924).—*Εὐδοκίμου*. Ἡ μονὴ Ξηροποτάμου (Θεσσαλονίκη 1926).—*Meyer*, Geschich. d. Athos-Klöster.—*Ricaut*, Histoire de l' Église grecque et armenienne (Amsterd. 1710).—*Louis Petit*, Actes de l' Athos II.—*Ἰωακεὶμ Ἰβηρίτου*, Ἁγιορειτικὴ πολιτεία (Θεσσαλονίκη 1921).—*Ἰωάν. Φιλήμονος*, Δοκίμιον ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως (τόμ. 3).—*Geltzer*, Geschich. u. Weltliches (Leipg. 1900).—*Δελικάνη*, Κατάλογος περιγραφικός.—*Γ. Σωτηρίου*, Περὶ Ἄθω—Κανονισμὸς τοῦ 1875 ἐν ὀθωμανικῇ κώδιξι (τόμ. 3).—*Καλλίφρονος*, Ἐκκλησιαστικὴ ἐπιθεώρησις (περιοδ. Γ', τόμ. Β').—*Εὐσταθίου Θεσσαλονίκης*, παρὰ Migne (τόμ. 135). — *Σάθα*, Μεσαιωνικὴ βιβλοθήκη (τόμ. 3).—*Σεργίου Μακραίου*, παρὰ Σάθα.—*Miklosisch*, Acta (τόμ. 6).—*Λαμπρίδου*, Ἠπειρωτικὰ (Ἀθῆναι 1904) — *Φιλαρέτου Τσερνιγοβ.*, Ἱστορία ρωσσικῆς Ἐκκλησίας (τόμ. Β').—*Φιλαρέτου Βαφείδου*, Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία (τόμ. Α'—Γ').—*Hefele*, die Russisch - Kirche.—*Silbernagel*, Verfassung d. Kirch. des Orients.—, Nation Armenienne.—*Ἱερωνύμου*, Vita Pauli Thebanus et Hilarionis.—*Ρουφίνου*, Historia eremetica.—*Κασσιανοῦ*, Institutiones.- *Montalambert*. die Mönche d. Alendlands' (1860).—*Hilgenfeld*, in Zeitsch. f. wissensch. Theol. (21, 1).—*Kräthinger*, die Benedictiner-Orden (Heidelb. 1876).—*Nikolai*, d. Heilige Bened. v. Aniane (Köln 1866).—*Lorain*, Essai historique sur l' abbaye de Cluny (Dijon (1839). — *Rauke*, Gesch. d. Päpste seit de Reformation (Leipz. 1878).—*Hoffmann*, die Jesuiten (Manh. 1870).—*Huber*, d. Jesuiten - Orden (Berlin 1873).—*Τοῦ αὐτοῦ*, die Jesuiten - Moral.—*Pascal*, Lettres Provinciales (Paris 1656). — *Döllinger*, u. *Reusch*, Gesch. d. Moralstreitigkeiten (Nörd. 1888). — *Reusch*, Beiträge z. Gesch. d. Jesuiten - Ordens (Munst. 1894).—*Franz Neffert*, d. heilige Alfons von Liguori (Mainz 1901).—*Heimbachen*, die Orden u. Kongregationen d. Kat—Kirche (Padua 1866).—*Nippold*, die Jesuiten—Orden (Manh. 1877).—*Schulte*, d. neuere Kat—Orden und Kongregutionen (Berlin 1874).—*Werner*, die Marianische Kongregationen.—*Pfotenhauer*, die Missionen d. Jesuiten in Paraguaï (Güterl. 1890) κ.τ.λ.

† Η. ΦΙΛΑΡΕΤΟΣ ΒΑΦΕΙΔΗΣ

— *[Κανον. Δίκ.]* Βλ. λ. *μοναστήριον*.

**μοναχῖτις**, —*ιδος* (ἡ) *[Χημ.]*. Ἕτερον ὄνομα διὰ τὴν ἐκρηκτικὴν ὕλην *βιγορῖτις* (βλ. λ.).

**μοναχογυιὸς** (ὁ)· ὁ μόνος υἱός, μονογενής, ἢ τὸ μόνον ἄρρεν ἐκ πλειόνων τέκνων.

**μοναχοθυγατέρα** (ἡ)· ἡ μόνη θυγάτηρ ἐκ πλειόνων τέκνων, ἢ ἡ μονογενὴς θυγάτηρ, ἄλλως *μοναχοκόρη*.

**Μοναχοὶ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἴασμου τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 74. Χ. Δ.

**μοναχοκόρη** (ἡ)· ἡ μονογενὴς κόρη ἢ ἡ μόνη κόρη ἐκ πλειόνων τέκνων, ἄλλως *μοναχοθυγατέρα*.

**Μόναχον** (Muenchen) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς Βαυαρίας, ἡ τρίτη ὑπὸ ἔποψιν πληθυσμοῦ πό-

Digitized by Google

λις τῆς Γερμανίας. Κάτ. 680.704, ἐξ ὧν 81% καθολικοί. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ὑψιπέδου τῆς Ἄνω Βαυαρίας, εἰς ὕψος 520 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ *Ἴζαρ*, σχίζοντος τὴν πόλιν καὶ ἐξευγμένου διὰ 10 γεφυρῶν. Εἶναι ἕδρα τῆς βαυαρικῆς κυβερνήσεως, ἀρχιεπισκοπῆς, ἐφετείου καὶ 2 πρωτοδικείων. Ἡ ἀρχικὴ πόλις ἔκειτο περὶ τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον, τὴν πλατεῖαν Μαρίας καὶ τὸ δημαρχεῖον, ηὐρύνθη δὲ κατὰ τὸν ΙΔ' καὶ ΙΕ' αἰῶνα καὶ ἀπετέλεσε τὴν σημερινὴν λεγομένην παλαιὰν πόλιν (Altstadt), ἥτις ἐκτείνεται ἀνατολικῶς μέχρι τῆς πύλης τοῦ Ἴζαρ, νοτιοδυτικῶς τῆς πύλης τοῦ Ζέντλινγκερ, δυτικῶς τῆς πύλης τοῦ Καρόλου καὶ βορείως τοῦ κυβερνείου. Σὺν τῷ χρόνῳ ἡ πόλις ἐπεξετάθη, περιλαβοῦσα προάστειά τινα καὶ εὐρυτάτους χώρους, μεταβληθέντας εἰς κήπους καὶ δενδροσκεπεῖς περιπάτους. Τὰ περίχωρα εἶναι λίαν γραφικά, ἰδίως ἡ κοιλὰς τοῦ Ἴζαρ, τὰ νοτίως καὶ δυτικῶς τῆς πόλεως δάση, καὶ αἱ λίμναι *Ἄμμερ* καὶ *Στάρνμπεργκερ*, περίπου ἰσομεγέθεις, μήκους 15 χλμ. καὶ πλάτους 2—6. Τὸ Μόναχον εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων γερμανικῶν πόλεων, κεκοσμημένη διὰ λαμπρῶν ἀρχιτεκτονικῶν μνημείων καὶ καλλιτεχνικῶν θησαυρῶν. Αἱ μεγαλοπρεπέστεραι καὶ κεντρικώτεραι ὁδοὶ εἶναι αἱ: *Νοϋχάουζερ, Κάουφιγκερ, Τερέζιεν, Μαξιμιλιανοῦ* καὶ *Λουδοβίκου*. Ἐκ τῶν πολλῶν πλατειῶν ἀξιολογώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: τοῦ *Καρόλου*, τῆς *Μαρίας* μετὰ τῶν ὁμωνύμων ἐπινικείων στηλῶν, ἐξ ἐρυθροῦ μαρμάρου, εἰς ἀνάμνησιν τῆς νίκης τῶν Βάϊσσεν Μπέργκε (1620), τοῦ *Μαξιμιλιανοῦ*, ἐν τῷ μέσῳ τῆς ὁποίας ὑπάρχει τὸ θαυμάσιον ἀναβρυτήριον τῶν Βιττελσβάχων, τοῦ *Βασιλέως*, τῆς *Καρολίνας* μετὰ ὀβελίσκου, τοῦ *Ὠδείου* μετὰ τοῦ ἐφίππου ἀνδριάντος τοῦ Λουδοβίκου Α', ἡ τῶν *Βιττελσβάχων* μετὰ τοῦ μνημείου τοῦ ἐκλέκτορος Μαξιμιλιανοῦ Α' (ἔργου τοῦ Σβαντάλερ 1839), τοῦ *Μαξιμιλιανοῦ Ἰωσὴφ* μετὰ κολοσσιαίου ἀνδριάντος τοῦ βασιλέως. Ἐκ τῶν κήπων προεξάρχει ὁ *Ἀγγλικὸς* μὲ μικρὰν λίμνην ἐν αὐτῷ, κατόπιν δ' ἔρχονται ὁ *Βασιλικός*, ἡ *Τερέζιενβίζε* μετὰ τεραστίου ὀρειχαλκίνου ἀγάλματος τῆς Βαυαρίας (Bavaria) ὕψους 30 μ. (ἔργου τοῦ Σβαντάλερ), τὰ πάρκα τοῦ *πρίγκιπος Λεοπόλδου*, τῶν *Νυμφῶν*, τὸ *Λαϊκὸν* (μέχρι τοῦ 1922 ζῳολογικὸς κῆπος) κλπ. Ἐν Μονάχῳ ὑπάρχουν 57 καθολικαὶ ἐκκλησίαι, 7 εὐαγγελικαὶ καὶ μία συναγωγή. Ἐκ τῶν ναῶν ἀξιόλογοι, ὡς μνημεῖα τέχνης, εἶναι ἡ Φραουενκίρχε (1468—1488) μετὰ μαυσωλείου τοῦ αὐτοκράτορος Λουδοβίκου τοῦ Βαυαροῦ καὶ δύο πύργων ὕψους 97 μ., ὁ τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, τοῦ Ἁγίου Πνεύματος, ἡ ἑλληνικὴ ἐκκλησία τοῦ Σωτῆρος (ΙΕ' αἰών), τῶν Θεατίνων, τῶν Ἁγίων Πάντων (1826—1837, ἔργον τοῦ Κλέντσε), τῆς Ἁγίας Ἐλισάβετ, ἡ βασιλικὴ τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου. Ἐκ τῶν δημοσίων κτηρίων ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὸ παλαιὸν δημαρχεῖον, τὸ ἀνάκτορον τοῦ δουκὸς Μαξιμιλιανοῦ (πρὸ τοῦ 1600), τὸ ἀρχιεπισκοπικὸν μέγαρον, τὸ ἀρχαῖον κυβερνεῖον, τὸ ἀνάκτορον τῶν Νυμφῶν, ἡ παλαιὰ πινακοθήκη, τὸ δημοτικὸν θέατρον, ἡ ἐθνικὴ βιβλιοθήκη, ἡ γλυπτοθήκη (1816—1830, ἐπὶ σχεδίου τοῦ Κλέντσε), τὸ μέγαρον τῆς καλλιτεχνικῆς ἐκθέσεως, τὸ ἀνάκτορον τῶν Βιττελσβάχων, ἡ νέα πινακοθήκη, τὸ ἐθνικὸν μουσεῖον, τὸ πανεπιστήμιον καὶ τὸ πολυτεχνεῖον, τὸ μουσεῖον Μαξιμιλιανοῦ, ὁ κεντρικὸς σιδηροδρομικὸς σταθμός, τὸ δικαστικὸν μέγαρον, τὸ νέον δημαρχεῖον, ὁ οἶκος τῶν καλλιτεχνῶν, τὸ βουλευτήριον, τὸ γερμανικὸν μουσεῖον, ἡ ἀκαδημία τῶν πλαστικῶν τεχνῶν, τὸ στρατιωτικὸν μουσεῖον, πρὸ τοῦ ὁποίου ἀνηγέρθη τὸ μνημεῖον τῶν κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον πεσόντων 13.000 κατοίκων τοῦ Μονάχου, τὰ προπύλαια, θαυμάσιον ἔργον τοῦ Κλέντσε, μετὰ κιόνων δωρικοῦ καὶ ἰωνικοῦ ρυθμοῦ καὶ ἡ στοὰ τοῦ ἀνακτορικοῦ κήπου. Κατ' ἐντολὴν τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου, πατρὸς τοῦ Ὄθωνος τῆς Ἑλλάδος, εἰς μὲν τὴν ἐσωτερικὴν πλευρὰν τῶν τοίχων τῶν προπυλαίων ἐνεχαράχθησαν, χρυσοῖς γράμμασι, τὰ ὀνόματα τῶν ἡρώων τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως, ἐν δὲ τῇ στοᾷ ἀναπαρίστανται διὰ τοιχογραφιῶν αἱ κυριώτεραι τῶν πολεμικῶν σκηνῶν καὶ τῶν μαχῶν τῆς Ἐπαναστάσεως.

*Οἰκονομικὴ ζωή*. Τὸ Μόναχον ἔχει σπουδαίαν βιομηχανίαν, ἀντιπροσωπευομένην ὑπὸ 312 μεγάλων ἐργοστασίων μὲ 55.892 ἐργάτας, ἐξ ὧν τὰ 89 μὲ 23.000 ἐργάτας ἀσχολοῦνται εἰς τὴν κατεργασίαν τῶν μετάλλων καὶ τὴν κατασκευὴν μηχανῶν. Ἄλλα βιομηχανικὰ εἴδη εἶναι: μουσικὰ ὄργανα, ὀχήματα, κινητῆρες, αὐτοκίνητα, ἀεροπλάνα, χάρτης, χειρόκτια, τεχνητὸς καφές, ἄνθη. Ἡ ὀνομαστὴ ζυθοποιία τοῦ Μονάχου ἀποτελεῖ ἐπίσης σπουδαῖον βιομηχανικὸν κλάδον. Ἐκτάκτως ἀνεπτυγμένη εἶναι ἡ καλλιτεχνικὴ βιοτεχνία, ἧς τὰ προϊόντα εἶναι περιζήτητα· εἶναι δὲ ταῦτα ἀντικείμενα ξυλογλυπτικῆς, ζωγραφικὴ ἐπὶ ὑάλου, λιθογλυπτική, κοσμηματουργία, ἰδίᾳ θρησκευτικοῦ χαρακτῆρος κτλ. Ἡ βιβλιεκδοτικὴ ἐξ ἄλλου καὶ ἡ βιβλιοδετικὴ ἐσημείωσαν μεγίστην πρόοδον.

Τὸ Μόναχον εἶναι κέντρον πυκνοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου. Εἰς τὸν μεγαλοπρεπῆ κεντρικὸν σταθμὸν συγκεντροῦνται 12 παράλληλοι γραμμαί, ἄγουσαι εἰς Ἄουγκσμπουργ, Νύρμπεργ, Ῥέγκενσμπουργ, Πασσάου, Ἴννσμπρουκ, Λιντάου κτλ. Ὑπάρχει ἐπίσης σταθμὸς ἀεροπλάνων καὶ πομπὸς ἀσυρμάτου.

*Παιδεία καὶ μουσεῖα*. Τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μονάχου, ἐκ τῶν ἀρίστων τῆς Εὐρώπης, ἱδρύθη τῷ 1472 ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου Μαξιμιλιανοῦ ἐν Ἰνγκολστάτ, μετεφέρθη δὲ τῷ 1800 εἰς Λάντσχουτ καὶ τῷ 1826 εἰς Μόναχον. Σήμερον (1931) ἀριθμεῖ 6.830 φοιτητάς. Ἄλλα ἐκπαιδευτικὰ καὶ ἐπιστημονικὰ ἱδρύματα εἶναι: τὸ πολυτεχνεῖον, ἑνωθὲν τῷ 1922 μετὰ τῆς ἀνωτάτης ἐμπορικῆς σχολῆς (4.276 σπουδασταί), ἡ ἀκαδημία τῶν πλαστικῶν τεχνῶν, ἡ ἀκαδημία τῶν ἐπιστημῶν, ἀκαδημία τῆς μουσικῆς, φιλοσοφικὴ καὶ θεολογικὴ σχολὴ τοῦ τάγματος τῶν φραγκισκανῶν, γερμανικὴ ἀκαδημία, ἀνωτέρα ἐπαγγελματικὴ σχολὴ φωτογραφικῆς τέχνης, ἰνστιτοῦτον ψυχιατρικῆς, ἰνστιτοῦτον ὑδραυλικῶν ἔργων καὶ ἐνεργείας, πειραματικὸς σταθμὸς ἰχθυοκομίας, ἰνστιτοῦτον βοτανικόν, μετεωρολογικὸς σταθμός, ἐπιστημονικὸν ἐργαστήριον ζυθοποιίας, ἀστεροσκοπεῖον, γεωλογικὸς σταθμός, σχολὴ καλλιτεχνικῆς τυπογραφίας, σχολὴ ὑφαντουργίας. Ἡ ἐθνικὴ βιβλιοθήκη τοῦ Μονάχου, ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τοῦ δουκὸς Ἀλμπρέχτου Ε', εἶναι ἡ μεγίστη καὶ πλουσιωτέρα τῆς Γερμανίας, περιλαμβάνουσα 1.500.000 τόμους, 50.000 χειρόγραφα καὶ 16.000 ἐκ τῶν λεγομένων incunabula, ἤτοι τῶν πρὸ τοῦ 1500 ἐκτυπωθέντων βιβλίων. Ἀξιόλογοι ἐπίσης εἶναι αἱ βιβλιοθῆκαι τοῦ πανεπιστημίου (831.000 τόμοι), τοῦ πολυτεχνείου (80.000), ἡ στρατιωτικὴ (160.000), τῆς βουλῆς (100.000), τοῦ γερμανικοῦ μουσείου (97.000) καὶ τινες τῶν θρησκευτικῶν ταγμάτων. Πολύτιμοι εἶναι ὡσαύτως οἱ θησαυροὶ ἀρχαιοτήτων καὶ καλλιτεχνικῶν κειμηλίων. Ἡ παλαιὰ πινακοθήκη περικλείει πλῆθος σπανίων ζωγραφικῶν πινάκων, 1500 ἀγγεῖα καὶ 300.000 χαλκογραφίας, ἡ γλυπτοθήκη γλυπτικὰ ἔργα ρωμαϊκῆς καὶ ἑλληνικῆς τέχνης, τὸ ἐθνικὸν μουσεῖον ἔργα τέχνης ἀπὸ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων μέχρι τῆς σήμερον, τὸ γερμανικὸν μουσεῖον ἀναπαράστασιν τῆς ἐξελίξεως τῆς γερμανικῆς τεχνικῆς καὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, ἡ νέα πινακοθήκη ζωγραφικὴν ἐπὶ πορσελλάνης, ὁμοιώματα ἔργων ρωμαϊκῆς καὶ ἑλληνικῆς ἀρχιτεκτονικῆς, κοσμήματα καὶ εἰκόνας νεωτέρων ζωγράφων, ἡ νέα κρατικὴ συλλογὴ ζωγραφικῆς πίνακας μετὰ τὸ 1850. Τὸ ὑάλινον ἀνάκτορον, περιέχον πλουσίαν πινακοθήκην, κατεστράφη ἐκ πυρκαϊᾶς, σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου, τὸν Ἰούνιον τοῦ 1931, ἀποτεφρωθέντος τοῦ πλείστου μέρους τῶν ἐν αὐτῷ καλλιτεχνικῶν κειμηλίων. Ἄλλα μουσεῖα εἶναι: τῶν γραφικῶν τεχνῶν, τὸ στρατιωτικὸν μετὰ πλουσίας συλλογῆς εἰδῶν ὁπλισμοῦ καὶ ἱματισμοῦ, ἀπὸ τῶν παλαιοτέρων στρατῶν μέχρι τῶν σημερινῶν, τὸ ἱστορικόν, τὸ μουσεῖον συγκοινωνίας, τὸ μουσεῖον θεάτρου, τὸ λαογραφικόν, παλαιοντολογικόν, μεταλλειολογικόν, νομισματικόν, φυσιολογικόν, ζῳολογικόν. Ἡ περιωπή, εἰς ἣν ἔφθασαν τὰ ἐπιστημονικὰ καὶ καλλιτεχνικὰ ἱδρύματα, εἵλκυσεν εἰς τὴν πόλιν πλῆθος ξένων ἐπιστημόνων, σπουδαστῶν καὶ καλλιτεχνῶν, πρὸς ἐκπαίδευσιν καὶ τελειοποίησιν. Ἰδίᾳ ἐγένετο τὸ Μόναχον τὸ κέντρον τῶν ἐν Γερμανίᾳ σπουδαζόντων Ἑλλήνων. Ἔχει ἐπίσης βοτανικὸν κῆπον, οἶκον τυφλῶν καὶ πολλὰ νοσοκομεῖα καὶ φιλανθρωπικὰ ἱδρύματα, ὡς καὶ 9 θέατρα καὶ 2 ἱπποδρόμους.

—[*Ἱστορ.*] Τὸ *Μόναχον* ἀναφέρεται κατὰ πρῶτον τῷ 1100, ἀλλ' ἡ ἱστορία αὐτοῦ ἄρχεται ἀπὸ τοῦ 1158, ὅτε ὁ Ἑρρῖκος ὁ Λέων ἐγκατέστησεν εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ἴζαρ σταθμὸν τελωνειακὸν καὶ νομισματοκοπεῖον. Ἡ πόλις ἀνεπτύχθη ἔκτοτε ἀλματωδῶς, ὀχυρωθεῖσα τῷ 1254, μετὰ δὲ τὴν ἀνέγερσιν τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Λουδοβίκου Α' ὁ υἱὸς αὐτοῦ δοὺξ Ὄθων ὁ Ἐπιφανὴς μετέφερε τὴν ἕδραν του εἰς αὐτήν. Μετὰ τὸν θάνατον τούτου (1253) καθιερώθη ἐπισήμως τὸ Μόναχον ὡς ἕδρα τῶν δουκῶν τῆς Βαυαρίας (1255). Ἡ πόλις ἐπυρπολήθη τῷ 1327, ἀνῳκοδόμησε δὲ αὐτὴν ὁ αὐτοκράτωρ Λουδοβῖκος ὁ Βαυαρός, ἐπὶ σχεδίου ἀρχιτεκτονικοῦ καὶ ρυμοτομικοῦ, ὅπερ διετηρήθη εἰς τὰς γενικάς του γραμμὰς μέχρι τοῦ 1800. Ἀπὸ τοῦ 1550 καὶ ἐφεξῆς οἱ δοῦκες Ἀλβρέχτος καὶ Γουλιέλμος ἐκόσμησαν τὴν πόλιν διὰ λαμπρῶν οἰκοδομῶν καὶ συνεκέντρωσαν ἐν αὐτῇ καλλιτεχνικὰ κειμήλια καὶ ἔργα τέχνης ἐξ ὅλης τῆς Βαυαρίας καὶ ἀλλαχόθεν. Τῷ 1791 ηὐρύνθη ἡ πόλις διὰ τῆς κατεδαφίσεως τῶν ἐκτεταμένων ὀχυρωματικῶν ἔργων, ἅτινα εἶχον ἀνεγερθῆ κατὰ τὸν Τριακονταετῆ πόλεμον. Ἀλλὰ τὴν σημερινὴν μορφὴν καὶ λαμπρότητα καὶ τὴν ἀνάδειξιν εἰς κέντρον πνευματικὸν καὶ καλλιτεχνικόν, ὀφείλει κυρίως ἡ πόλις εἰς τὴν φιλόκαλον καὶ ἀκαταπόνητον δραστηριότητα καὶ μεγαλοδωρίαν τῶν βασιλέων Λουδοβίκου τοῦ Α' καὶ Μαξιμιλιανοῦ τοῦ Β'. Μετὰ τὴν κατάρρευσιν τῆς μοναρχίας (1918), ἡ πόλις ὑπέφερεν ἐπί τινα χρόνον ἐκ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν κομμουνιστῶν καὶ βραδύτερον ἐκ τοῦ ἐθνικιστικοῦ κινήματος τοῦ Κάππ (1920). Μετὰ τὴν καταστολὴν τοῦ κινήματος ἀνέλαβε τὴν ἀρχὴν ἀστικὴ κυβέρνησις, ἥτις προήγαγε σημαντικῶς ἔκτοτε τὴν πόλιν οἰκονομικῶς, πνευματικῶς καὶ καλλιτεχνικῶς, ἰδίᾳ διὰ τῆς ἀναπτύξεως τῆς συγκοινωνίας, τῆς τελειοποιήσεως καὶ τοῦ πλουτισμοῦ τῶν ἐπιστημονικῶν ἱδρυμάτων καὶ τῶν μουσείων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Die Chroniken der deutschen Städte (15ος τόμ. 1878). — *K. Th. v. Heigel*, Muenchens Geschichte, 1158—1806 (1882). — *F. Kronegg*, Illustrierte Geschichte der Stadt Muenchen (1900—1903).— *G. S. Wolf*, Ein Jahrhundert Muenchens, 1800—1900.— *G. Escherich*, Der Communismus in Muenchen (1921).

Θ. Κ.

**μοναχοπαίδι** (τό)· τὸ μοναχὸ παιδί, ἓν καὶ μόνον τέκνον εἴτε ἄρρεν, εἴτε θῆλυ.

**μοναχός,** *—ή, —ό* (καὶ μονάχος)· δημοτ., μόνος, ἄνευ ἄλλου: «κάθεται μοναχός», «θὰ εἴμαστε μοναχοί, δὲν θὰ μᾶς ἀκούσῃ κανείς» || μετὰ τῆς προσωπ. ἀντων. *μου, σου, του, μας, σας, των* ἢ *τους*: «τά 'φαγε ὅλα μοναχός του», «μοναχός του τὰ λέει μοναχός του τ' ἀκούει» || καὶ πρὸς δήλωσιν αὐτοπαθείας: «μοναχός του σκοτώθηκε» || «μοναχός του τὄθελε» ἀφ' ἑαυτοῦ.

— **μοναχὸς** (ὁ)· οὐσιαστ., ὁ ἀπαρνηθεὶς τὸν κοινωνικὸν βίον καὶ εἰς τὴν λατρείαν καθιερωθείς· καλόγηρος: «οἱ μοναχοὶ τοῦ Ἁγίου Ὄρους»· θηλ. *μοναχὴ* (ἡ).

— [*Ἱστορ.—Κανον. Δίκ.*] Βλ. λ. *μοναστήριον* καὶ *μοναχικὸς βίος*.

— **μοναχοὶ** ***ἐπαῖται*** [*Ἐκκλ. Ἱστορ.*]· βλ. λ. *ἐπαῖται μοναχοί*.

— **Μοναχοὶ** *μάρτυρες*. —1) Ὁ τῇ 15 Ὀκτωβρίου ἑορταζόμενος ὑποτακτικὸς μάρτυς Μοναχός. —2) Οἱ τῇ 1 τοῦ αὐτοῦ μηνὸς 36 μοναχοί.— 3) Οἱ τῇ 16 Μαΐου γεραιρόμενοι 6 μάρτυρες μοναχοί. —4) Οἱ τῇ 4 Ἰανουαρίου 12 μοναχοί. —5) Οἱ τῇ 22 Σεπτεμβρίου 26 μοναχοὶ μάρτυρες. —6) Οἱ τῇ 5 Δεκεμβρίου. —7) Οἱ τῇ 13 Μαΐου ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας τιμώμενοι μοναχοὶ τὸν καλὸν τῆς ὁσιότητος καὶ τοῦ μαρτυρίου διαγαγόντες ἀγῶνα.

Τ. Ε. Ε.

**μοναχὸς** (ὁ) [*Ζῳολ.*]. Καλεῖται οὕτως ἐνιαχοῦ παρ' ἡμῖν τὸ πτηνὸν *συκαλὶς* (βλ. λ.).

**Μονβὲλ** (Monvel), ***Ἰάκωβος-Μαρία*** Boutet ἐπιλεγόμενος—. Εἷς ἐκ τῶν διασημοτέρων ἠθοποιῶν τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου, γεννηθεὶς ἐν Λουνεβὶλ τῷ 1745 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1812. Εἰκοσιπενταετὴς εἰσῆλθεν εἰς τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν, ἧς μετὰ δύο ἔτη ἐγένετο ἑταῖρος, διδάσκων τοὺς πρώτους τραγικοὺς ρόλους τοῦ γαλλικοῦ δραματολογίου. παρὰ τὰ φυσικά του ἐλαττώματα, τὴν ἐκ τῶν ὁποίων ἐντύπωσιν κατώρθωνε νὰ ἐξουδετερώνῃ διὰ τῆς μεγάλης τέχνης του. Τῷ 1771, ἐξορισθεὶς δι' ἀγνώστους λόγους ὑπὸ τῆς ἀστυνομίας, μετέβη εἰς Σουηδίαν, ὅπου προσελήφθη ὡς ἀναγνώστης τοῦ βασιλέως, πρὸς δὲ διευθυντὴς τοῦ βασιλικοῦ δραματικοῦ θιάσου. Τῷ 1786, ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους, ἐδίδαξεν εἰς διάφορα θέατρα μέχρι τοῦ 1806, ὅτε ἀπεσύρθη τῆς σκηνῆς ἀφοσιωθεὶς εἰς τὴν δραματογραφίαν. Ἐχρημάτισεν ἐκ τῶν πρώτων καθηγητῶν τοῦ Κονσερβατουὰρ τῶν Παρισίων, πρὸς δὲ μέλος τῆς τετάρτης κλάσεως τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου. Ἦτο ὁ πατὴρ τῆς δεσποινίδος Μάρς, τῆς διασήμου ἠθοποιοῦ τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας. Ἔγραψε περὶ τὰ εἴκοσι καὶ ἓξ θεατρικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων «Les sargines», «Raoul de Créqny», «Blaise et Babet» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ἀλεξάνδρου Ντιβὰλ καὶ «Les victimes cloîtrées», τὸ ὁποῖον ἔσχε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν. Ἐκτὸς τῶν θεατρικῶν ἔργων ἔγραψε ποιήματά τινα καὶ ἓν μυθιστόρημα.

Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**Μονβουαζὲν** (Monvoasin), ***Αἰκατερίνη***· βλ. λ. *Βουαζὲν Αἰκατερίνη*.

**Μονγκαγιὰρ** (Montgaillard), ***Βερνάρδος Περσὲν*** (Percin) *ντὲ* —. Διάσημος Γάλλος ἱεροκήρυξ (1563—1628). Καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας εὐγενῶν τῆς Τουλούζης, εἰσῆλθεν εἰς ἡλικίαν 16 ἐτῶν εἰς τὸ κιστερκιανὸν ἀββαεῖον τῶν «feuillants», νεώτατος δ' ἀκόμη ἤρχισε νὰ κηρύττῃ μετὰ καταπληκτικῆς διὰ τὴν ἡλικίαν του ἐπιτυχίας εἰς Ροντὲζ καὶ Τουλούζην κατ' ἀρχὰς καὶ βραδύτερον εἰς Παρισίους. Εἶχε τότε τὴν φήμην τοῦ μεγαλυτέρου ἱεροκήρυκος, ὁ ὁποῖος ἠκούσθη ποτὲ ἐν Γαλλίᾳ. Ὁ Ἑρρῖκος Γ' προσέφερεν εἰς αὐτὸν διαδοχικῶς τὴν ἐπισκοπὴν τοῦ Ἀνζέρ, τὴν τοῦ Παμιὲ καὶ τὸ ἀββαεῖον τοῦ Μοριμόν, ἀλλ' οὐδεμίαν τῶν θέσεων τούτων ἀπεδέχθη. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ligue (συνασπισμοῦ τῶν ἐν Γαλλίᾳ καθολικῶν) ὑπεστήριξεν αὐτὴν μετὰ πάθους καὶ βιαιότητος, ὑπῆρξε δὲ ἐκ τῶν κληρικῶν ἐκείνων, οἵτινες ἐξήγειραν τοὺς Παρισινοὺς κατὰ τοῦ βασιλέως Ἑρρίκου Γ'. Μετὰ τὴν ὑποταγὴν τῶν Παρισίων κατέφυγεν εἰς Ρώμην, γενόμενος εὐμενέστατα δεκτὸς ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος Γ', ἐκεῖθεν δὲ μετέβη εἰς Ἀμβέρσαν καὶ Βρυξέλλας, ὅπου ὁ ἀρχιδοὺξ Ἀλβέρτος τῷ ἀνέθηκε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἀββαείων τῆς Νιβὲλ καὶ τοῦ Ὀρβάλ. Λέγεται ὅτι κατόπιν μιᾶς ἀσθενείας του ἔκαυσεν ὁ ἴδιος ὅλα τὰ χειρόγραφά του. Ὄντως δὲ δὲν ἔχουσι διασωθῆ παρὰ μόνον μία ἐπιστολή του πρὸς τὸν Ἑρρῖκον Γ' συντεταγμένη εἰς βιαιότατον ὕφος (1589) καὶ ὁ

Digitized by Google

ἐπικήδειος λόγος του εἰς τὸν ἀρχιδοῦκα Ἀλβέρτον (Βρυξέλλαι 1622). — Ω.

**Μονγκλὰ** (Montglat), ***Φραγκῖσκος - Κλερμὸν*** (Clermont), *μαρκήσιος ντὲ* —. Γάλλος ἱστορικός, γεννηθεὶς εἰς Τουρῖνον καὶ ἀποθανὼν τῷ 1675. Καταγόμενος ἐξ εὐγενῶν, εἰσῆλθεν εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Ναβάρρας, ὅπου ἀνῆλθεν εἰς ἀνωτέρους βαθμούς, κατόπιν δὲ μετέσχεν ὡς ἀξιωματικὸς διαφόρων ἐκστρατειῶν κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Τριακονταετοῦς πολέμου. Ἐφημίζετο διὰ τὴν μεγάλην ἐγκυκλοπαιδικήν του μόρφωσιν καὶ τὴν ἐξαιρετικήν του μνήμην. Ἀποθανὼν ἀφῆκεν «Ἀπομνημονεύματα», δημοσιευθέντα ἐν Ἀμστελλοδάμῳ τῷ 1727 (εἰς 4 τόμους), ἐν οἷς μὲ ὕφος ἀβίαστον, πολλὴν τάξιν, σαφήνειαν καὶ ἀμεροληψίαν, ἀφηγεῖται τὰ ἀπὸ τοῦ 1635 μέχρι τοῦ 1660 πολιτικὰ καὶ στρατιωτικὰ συμβάντα. — Ω.

**Μὸνγκ Λὸγκ** *[Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν τεσσάρων κρατιδίων τῶν ἀποτελούντων τὴν ἐπικράτειαν τοῦ *Θιμπῶ* (βλ. λ.).

**Μονγκολφιὲ ἀδελφοὶ** (Montgolfiers)· βλ. λ. *Μογγολφιέροι*.

**Μονγκόμερυ** (Montgomery)· βλ. λ. *Μοντγκάμερυ* καὶ *Μοντγκομερύ*.

**Μὸνγκ Τοὺγκ** *[Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν τεσσάρων κρατιδίων τῶν ἀποτελούντων τὴν ἐπικράτειαν τοῦ *Θιμπῶ* (βλ. λ.).

**Μόνγκυρ** (Monghyr) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ διαμερίσματι Μπάγκαλπουρ, τῆς διοικήσεως Μπεχὰρ καὶ Ὀρίσσα, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου κάτωθεν βραχώδους λόφου, εἰς τὸ σημεῖον ὅπου ὁ ποταμὸς ἁπλοῦται μέχρι 10 χλμ. πλάτους καὶ εἶναι κατεσπαρμένος ὑπὸ γραφικωτάτων καὶ καταφύτων νησίδων. Ὡς ἐκ τῆς ἐξόχου θέσεως καὶ τοῦ ὑγιεινοῦ κλίματός της ἡ πόλις αὕτη εἶναι πολυσύχναστος ὑπὸ τῶν ἐν Ἰνδίαις παραμενόντων Εὐρωπαίων. Παρ' αὐτὴν καὶ εἰς ἀπόστασιν 6 χλμ. κεῖνται αἱ θερμοπηγαὶ τοῦ *Σίτα Κούντ*, θερμοκρασίας 54°—59°Κ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, βιομηχανίαν καπνοῦ καὶ σιγαρέτων, ἐργοστάσια ὅπλων, ὑφαντήρια, σαπωνοποιεῖα κλπ. Καταληφθεῖσα τῷ 1195 ὑπὸ τῶν Μωαμεθανῶν, παρέμεινεν ὑπ' αὐτοὺς μέχρι τοῦ 1763, ὁπότε περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἄγγλους. Καθ' ὅλον τοῦτο τὸ διάστημα τῆς μωαμεθανοκρατίας ἦτο σπουδαῖον διοικητικὸν κέντρον, περιεβάλλετο δὲ ὑπὸ ἰσχυρῶν ὀχυρώσεων. Κάτ. 46.900.

—2) Ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν μὲ ἕδραν τὴν ὁμώνυμον πόλιν (ἔκτασις 10.155 τετρ. χλμ., κάτ. 2.132.900), ἐκτεινομένη ἑκατέρωθεν τοῦ ῥοῦ τοῦ Γάγγου ἐπὶ πεδινῆς καὶ ἐξόχως εὐφόρου χώρας, διαμορφωθείσης τὸ πλεῖστον διὰ προσχώσεων τοῦ ποταμοῦ. Καλλιεργεῖται πολλάκις δὶς τοῦ ἔτους καὶ παράγει ὄρυζαν, ἐκλεκτὸν καπνόν, ἀραβόσιτον κλπ. Χ. Δ.

**Μόνδα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Κεφαλληνίας, 3 ½ μίλ. Ν. ΝΔ. τοῦ ἀκρωτηρίου Κάπρι, ἀποτελοῦν τὴν νοτίαν τῆς νήσου ἐσχατιὰν (πλάτ. 38° 03′ 55″ Β., μήκ. 20° 48′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 203: Santa Maura, Ithaca Cephallonia). Προεκτείνεται ἐπὶ 2 μίλ. ΝΔ. ὑπὸ τῆς κινδυνωδεστάτης ὑφαλογλώσσης Κάκκαβα. Σ. Ε. Λ.

**μονδαμίνη** (ἡ). Καθαρόν, τελείως ἀπολιπανθὲν ἄμυλον ἀραβοσίτου. Χρησιμοποιεῖται πρὸς διαιτητικοὺς μᾶλλον σκοπούς. Εἶναι τελείως ἀνάλογον πρὸς τὸ *μαϊζένα*. Σ. Γ.

**Μόνδας** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*· βλ. *Μούνδας*.

**Μόνδου** ***νῆσος*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς ὑπὸ τὴν Αἴγυπτον Αἰθιοπίας, βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου τῶν Ἀρωμάτων καὶ ἐν τῷ Αὐαλίτῃ κόλπῳ (*Πτολεμ.* Δ, ζ, 39). Εἶναι ἡ σύγχρονος *Μαΐτ* (πλάτ. 11° 13′ Β., μήκ. 47° 13′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 6 b: Gulf of Aden, sheet II) ἢ *Ζεζιράτ-ἀρ-ράμπς* (=Καϋμένη) τῶν Ἀράβων. Σ. Ε. Λ.

**Μονὲ** (Monet), ***Κλαύδιος***. Ἐπιφανὴς Γάλλος ζωγράφος (1840—1916), θεωρούμενος ὡς ὁ δημιουργὸς καὶ κυριώτερος ἀντιπρόσωπος τοῦ ἐμπρεσσιονισμοῦ. Ἐζωγράφησε κατ' ἀρχὰς ἔργα ἐπηρεασμένα ἀπὸ τοὺς Κουρμπέ, Κορὸ καὶ Μανέ. Ἦσαν δὲ ταῦτα τοπία καὶ προσωπογραφίαι μετὰ μεγάλης εὐσυνειδησίας καὶ ἀκριβείας εἰργασμένα, τῶν ὁποίων σπουδαιότερον εἶναι ἡ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Βερολίνου «Γυναῖκα μὲ τὸ πράσινο φόρεμα». Ἡ μετάβασίς του ὅμως εἰς Λονδῖνον (1871) καὶ ἡ μελέτη τοῦ θαλασσογράφου Τοῦρνερ καὶ πολλῶν ἀντιπροσώπων τῆς προραφαηλικῆς σχολῆς, ἥτις μεγάλην ἐσημείου τότε ἐπιτυχίαν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἔδωσαν νέαν κατεύθυνσιν εἰς τὴν τέχνην του. Ἐκ τῆς σπουδῆς, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ φίλου του Πισσάρρο, τῶν ζωηρῶν χρωματισμῶν τῶν προραφαηλιτῶν καὶ τῆς φρεσκάδας τῶν ἔργων τοῦ Τῶρνερ, τὴν ὁποίαν οὗτος ἐπετύγχανε χρησιμοποιῶν τὰ χρώματα ἄμεικτα, κατέληξεν εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι τὰ βασικὰ χρώματα, χρησιμοποιούμενα εἰς λεπτὰς ἐναλλασσομένας γραμμάς, συνεχέοντο ἐξ ἀποστάσεως, παρέχοντα πλήρη τὴν ἐπιζητουμένην ὀπτικὴν ἐντύπωσιν. Ὁ Μονὲ ἤρχισε κυρίως ἐνδιαφερόμενος διὰ τὸ φῶς τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ τὴν ἐπίδρασιν τὴν ὁποίαν ἐξήσκει, ἀπὸ ἀπόψεως ἀποδόσεως χρώματος, ἐπὶ τῶν ἀντικειμένων κατὰ τὰς διαφόρους ὥρας τῆς ἡμέρας καὶ ἐποχὰς τοῦ ἔτους. Ἐπρέσβευεν ὅτι ἕκαστον ἀντικείμενον δὲν ἔχει ἴδιον σταθερὸν τόνον χρώματος, ἀλλ' ὅτι ἀποκτᾷ καθ' ἑκάστην στιγμὴν τῆς ἡμέρας διαφόρους ποικίλους τόνους, ἐξαρτωμένους ἐκ τοῦ διαφόρου φωτισμοῦ αὐτοῦ, ἀναλόγως τῆς ἑκάστοτε θέσεως τοῦ ἡλίου καὶ τῆς ἀτμοσφαιρικῆς καταστάσεως. Διὰ νὰ καταδείξῃ τοῦτο, ἐζωγράφησεν ὁλοκλήρους σειρὰς πινάκων (μητρόπολις τῆς Ρουένης, σταθμὸς Σαὶν Λαζὰρ κλπ.) κατὰ διαφόρους στιγμὰς τῆς ἡμέρας. Ἐργαζόμενος συνεχῶς, βελτιοῖ βαθμηδὸν τὴν τέχνην του, ἀληθῆ δὲ ἀριστουργήματα διαδέχονται τὰ πρῶτα ἁπλᾶ τοπία του. Εἰς τὰ ἔργα του, τὰ ἀπεικονίζοντα τὸν Τάμεσιν μὲ τὰς γεφύρας του, τὸν πύργον τοῦ ἀγγλικοῦ κοινοβουλίου, τὴν μητρόπολιν τῆς Ρουένης κλπ., συνδυάζονται μετὰ καταπληκτικῆς ἐπιτυχίας αἱ ἀποχρώσεις τῆς ἀτμοσφαίρας, ἡ ὁμίχλη, ὁ καπνὸς κλπ. Ἐπιτυγχάνει ἤδη εἰς τὰς ποικιλοχρώμους συνθέσεις νὰ ἐξάρῃ τεχνικώτατα τὸ δεσπόζον χρῶμα, εἰς δὲ τὰς ἐμφανῶς μονοχρώμους, τὰς λανθανούσας ποικίλας ἀποχρώσεις. Ὁ καλλιτέχνης ὅστις ὑπῆρξε μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας δόξας τῆς νεωτέρας γαλλικῆς τέχνης, παρήγαγε, μετ' ἀληθοῦς λυρισμοῦ, τὰ καταπληκτικώτερα, τὰ μᾶλλον ἐνδιαφέροντα, τὰ μᾶλλον ἐμψυχωμένα καὶ ἀρτιώτερον φωτισμένα θαλάσσια καὶ χερσαῖα τοπία. Αἱ θαλασσιναὶ ἰδίως ἀπόψεις του, ὅπως «Οἱ μύλοι τῆς Ὁλλανδίας», «Αἱ ὄχθαι τοῦ Σηκουάνα», «Ὁ κυματοθραύστης τῆς Χάβρης» κλπ., εἶναι μοναδικαὶ συλλήψεις στιγμιαίας ἐντυπώσεως τῆς ἀτμοσφαίρας, ἡ ὁποία δημιουργεῖ τὴν προσωπικότητα τοῦ τοπίου. Κατὰ τὴν ἔκθεσιν ζωγραφικῆς τῶν Παρισίων τοῦ 1877 ἐδόθη εἰς τὸν Μονὲ καὶ τοὺς ὀπαδούς του τὸ πρῶτον ἡ προσωνυμία «ἐμπρεσσιονισταί», ἐξ αἰτίας ἑνὸς πίνακός του φέροντος τὸν τίτλον «Ἐντύπωσις» («Impression»). Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ βίου του ὁ Μονὲ εἰργάσθη μακρὰν τῶν Παρισίων, ἀποστέλλων σπανίως ἔργα του εἰς τὸ Salon. Τὰ χρώματα ὅμως τῶν πινάκων του, ἀλλοιούμενα βαθμηδόν, ὡς ἐκ τῆς λεπτότητος αὐτῶν χάνουσι μέγα μέρος ἐκ τῆς ἀξίας των. Χ. Δ.

**μονέδα** (ἡ)· δημοτ., νόμισμα: «ἑλληνική—, τούρκικη μονέδα»· || φρ. «κόβει μονέδα» ἐπὶ ἀνθρώπου κερδίζοντος πολλὰ χρήματα· || «δὲν περνᾷ ἡ μονέδα σου» ἐπὶ ψευδολόγου ἢ ἀπατεῶνος (ἰταλ. moneta).

**Μονὲλ** ***κρᾶμα*** *[Μεταλλ.]*. Μεταλλικὸν κρᾶμα περιέχον νικέλιον 68—72 %, χαλκὸν 26 ἕως 31 % καὶ σίδηρον 0,5 ἕως 1,5 %, παραγόμενον δ' ἀπ' εὐθείας ὡς ἐνδιάμεσον προϊὸν κατὰ τὴν μεταλλουργίαν μεταλλευμάτων τινῶν νικελίου. Ἔχει χρῶμα λευκόν, εἶναι μαλακὸν καὶ ὅλκιμον, μεγάλης ἀντοχῆς ἐφελκυσμοῦ (ὅριον θραύσεως R=60 χγρ. κατὰ τετρ. χσμ., ὅριον ἐλαστικότητος 20 %) καὶ χρησιμεύει ἰδίως διὰ κατασκευὴν ἑλίκων, ἀντλιῶν, βαλβίδων καὶ τεμαχίων ἐν γένει ἀνθεκτικῶν καὶ ἀδιαβρώτων. Θ. Χ.

—**Μονὲλ** ***μέθοδος*** *[Μεταλλ.]*. Μέθοδος κατεργασίας τῶν μεταλλευμάτων νικελίου, ἐπινοηθεῖσα ὑπὸ τοῦ Monel (βλ. *νικέλιον* [Μεταλλουργ.]). Κατ' αὐτὴν γίνεται τελεία φρῦξις θειούχου νικελίου καὶ θειούχου χαλκοῦ, ἀναγωγὴ δὲ τούτων κατόπιν ἐν φρεατοκαμίνῳ, δίδουσα ἀπ' εὐθείας τὸ περὶ οὗ ἀνωτέρω *κρᾶμα Μονέλ*. Θ. Χ.

**μονέλυτρος** (ἡ) (Uniola) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, ἰθαγενεῖς τῆς βορείου Ἀμερικῆς. Γνωστότερον εἶδος εἶναι: *μονέλυτρος ἡ θυσανώδης* (Uniola paniculata), ἥτις εὐδοκιμεῖ εἰς ἀμμώδεις ἐκτάσεις καὶ χρησιμοποιεῖται ὡς νομευτικόν· *μονέλυτρος ἡ λεπτή* (Uniola gracilis), ἐπίσης νομευτικόν, καὶ *μονέλυτρος ἡ πλατύφυλλος* (Uniola latifolia), καλλιεργουμένη καὶ ὡς κοσμητικὸν φυτὸν συγχρόνως. Δ. Ν. Π.

**Μονεμβασία** *[Γεωγρ.]*. Ἱστορικὴ πολίχνη τῆς Πελοποννήσου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα τῆς ἐπαρχίας Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 638. Εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ νησῖδος τῆς πρὸς Β. τοῦ Μαλέα ἐκτεινομένης ἀνατολικῆς παραλίας τῆς Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς. Ἡ νησὶς αὕτη, ἥτις, κειμένη ἐγγύτατα τῆς ἠπειρωτικῆς παραλίας, συνδέεται μετ' αὐτῆς διὰ λιθίνης γεφύρας μετὰ 14 τόξων, μήκους 130 μ., ἔχει περίμετρον 2 περίπου μιλ. καὶ σχῆμα ἀπιοειδές. Εἰς τὸ μέσον αὐτῆς ὑψοῦται ὑψηλὸς βράχος, ἐφ' οὗ ἐγείρεται τὸ ὀχυρώτατον ἱστορικὸν φρούριον τῆς Μονεμβασίας. Ἐπὶ τῆς Δ. πλευρᾶς τοῦ βράχου εἶναι ἐκτισμένη ἀμφιθεατρικῶς ἡ κωμόπολις, περιβαλλομένη ὑπὸ τείχους, τὸ ὁποῖον κατέρχεται ἑκατέρωθεν ἀπὸ τοῦ φρουρίου πρὸς τὴν θάλασσαν. Σήμερον ἡ Μονεμβασία εἶναι ἕδρα εἰρηνοδικείου, ὑποτελωνείου καὶ ἀστυνομικοῦ σταθμοῦ καὶ ἔχει ἡμιγυμνάσιον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ μετὰ τῶν Μολάων καὶ χρησιμεύει ὡς κέντρον τῶν περὶ τὴν παραλίαν χωρίων. Ἐπίσης προσεγγίζουσιν εἰς αὐτὴν τὰ ἐκτελοῦντα τὸν γῦρον τῆς Πελοποννήσου ἀτμόπλοια τῆς ἀκτοπλοΐας. Ἡ Μονεμβασία εἶναι ἀλίμενος, στερεῖται δὲ πηγαίων ὑδάτων καὶ ὑδρεύεται διὰ δεξαμενῶν ὀμβρίου ὕδατος. Οἱ κάτοικοι εἶναι κυρίως γεωργοί, καλλιεργοῦντες τὴν οἰνοφόρον ἄμπελον (παράγεται ἐκλεκτὸς οἶνος γνωστὸς ἀπὸ τοῦ Μεσαίωνος ἐν τῇ Δύσει ὑπὸ τὸ ὄνομα «malvoisie» ἢ «malvasie»), τὰ σιτηρά, τὰ κρόμμυα, τὰ ὄσπρια, τὰ ὀπωροφόρα δένδρα κλπ. Κατὰ Σάββατον διεξάγεται ἑβδομαδιαία ἀγορά, τὴν δὲ Δευτέραν τοῦ Πάσχα μεγάλη ἐμποροπανήγυρις. Χ. Δ.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ *Μονεμβασία* ὑπῆρξε κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους μία τῶν σημαντικωτέρων πόλεων τῆς νοτίου Πελοποννήσου. Τὸ ὀχυρὸν τῆς θέσεως τὴν ἐπροστάτευσεν ἐκ τῶν πειρατικῶν ἐπιδρομῶν, τὸ δὲ ἐμπόριον καὶ ἡ ἐξαγωγὴ τοῦ περιφήμου οἴνου της τῇ ἐξησφάλισεν ἱκανὸν πλοῦτον. Κατὰ τὸν Φραντζῆν καὶ τὸ «Χρονικὸν τῆς Μονεμβασίας», ἡ Μονεμβασία συνῳκίσθη τὸ πρῶτον ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ αὐτοκράτορος Μαυρικίου (582—602), ἡ πληροφορία ὅμως αὕτη δὲν ἐπικυροῦται ἄλλοθεν. Ἐν πάσῃ περιπτώσει εἶναι βέβαιον ὅτι τῷ 746, ὁπότε ἠρημώθη ὑπὸ τοῦ δεινοῦ λοιμοῦ, ὅστις ἐπροξένησε πολλὰς ζημίας εἰς τὰς ἑλληνικὰς χώρας, ἦτο μία τῶν σημαντικωτέρων πόλεων τῆς Πελοποννήσου. Ἐν τοῖς πρακτικοῖς τῆς Ζ′ Οἰκουμενικῆς συνόδου (785) γίνεται μνεία τοῦ ἐπισκόπου Μονεμβασίας Πέτρου. Κατὰ τὴν πληροφορίαν δὲ «τῆς Περιηγήσεως» τοῦ ἁγίου Βιλλιβάλδου, ὁ ἅγιος οὗτος ἠναγκάσθη, ἀπερχόμενος εἰς τὴν ἁγίαν Γῆν (723) νὰ προσεγγίσῃ εἰς τὴν Μονεμβασίαν.

Βραδύτερον, κατὰ τὸν ΙΑ′ αἰῶνα, ἡ Μονεμβασία ἔγινεν ὁ στόχος πειρατικῶν ἐπιδρομῶν. Τῷ 1147 ὁ ναύαρχος τοῦ νορμανδικοῦ στόλου Γεώργιος ὁ ἐξ Ἀντιοχείας προσέβαλε τὴν πόλιν, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ ἀποσυρθῇ ἄνευ ἀποτελέσματος. Ὅτε δέ, κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ΙΓ′ ἑκατονταετηρίδος, ἡ Πελοπόννησος, μετὰ βραχεῖαν ἀντίστασιν, περιῆλθεν εἰς τὴν κυριαρχίαν τῶν Φράγκων κατακτητῶν, ἡ Μονεμβασία ἀντέστη ἐπὶ μακρὸν καὶ μόλις τῷ 1248, πολιορκηθεῖσα κατὰ γῆν καὶ θάλασσαν ὑπὸ Γουλιέλμου Β′ τοῦ Βιλλεαρδουΐνου καὶ τῶν συμμάχων του, ὑπέκυψε. Μετὰ τρία ὅμως ἔτη, ἡττηθέντος τοῦ πρίγκιπος καὶ ἀχθέντος εἰς αἰχμαλωσίαν μετὰ τῶν κυριωτέρων βαρώνων του παρὰ τὴν Πελαγονίαν, ἀνεκτήθη διὰ συνθήκης ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν.

Κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τῆς βυζαντιακῆς κυριαρχίας ἡ Μονεμβασία διετέλεσεν ἕδρα τοῦ διοικητοῦ τῶν αὐτοκρατορικῶν κτήσεων τῆς Πελοποννήσου. Κατὰ τὴν ἐποχὴν δὲ ταύτην ἐτιμήθη ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν αὐτοκρατόρων διὰ προνομίων ἐκκλησιαστικῶν καὶ ἐμπορικῶν. Διὰ χρυσοβούλλου τοῦ 1293, Ἀνδρόνικος Β′ ὁ Παλαιολόγος καθώρισε διὰ μακρῶν τὴν πνευματικὴν δικαιοδοσίαν τοῦ μητροπολίτου τῆς πόλεως, εἰς τὸν ὁποῖον, πλὴν ἄλλων, ἀπένειμε καὶ τὸν τίτλον τοῦ ἐξάρχου πάσης Πελοποννήσου. Βραδύτερον δέ, κατ' Ἰούνιον τοῦ 1301, ὁ αὐτὸς αὐτοκράτωρ ἐπεκύρωσε διὰ νέου χρυσοβούλλου τὰς κτήσεις τῆς μητροπόλεως. Οἱ Παλαιολόγοι ἔδωσαν ἰδιαιτέραν προσοχὴν καὶ εἰς τὸ ἐμπόριον τὸ διεξαγόμενον ὑπὸ τῶν Μονεμβασιωτῶν. Ἤδη ὁ Μιχαὴλ ὁ Η′ εἶχεν ἀπονείμει εἰς αὐτοὺς ἐμπορικὰ προνόμια, ἐπικυρωθέντα, τῷ 1284, ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του Ἀνδρονίκου. Ὁ τελευταῖος οὗτος, διὰ χρυσοβούλλου τοῦ 1317, ἔδωσεν εἰς τοὺς ἐμπόρους τῆς Μονεμβασίας νέα ἐμπορικὰ προνόμια, ἀφορῶντα κυρίως εἰς τὴν πληρωμὴν τοῦ κομμερκίου καὶ τῶν ἄλλων συναφῶν φόρων.

Παρ' ὅλην ὅμως τὴν αὐτοκρατορικὴν ταύτην μέριμναν, ἡ Μονεμβασία ἐγνώρισεν ἡμέρας δεινῆς δυσπραγίας. Τῷ 1292 ἐδῃώθη, μετὰ τῶν ἄλλων πελοποννησιακῶν πόλεων, ὑπὸ τοῦ Καταλάνου ναυάρχου Ρογήρου de Lluria, ὅστις ἀπήγαγε μέγαν ἀριθμὸν αἰχμαλώτων, μεταξὺ δ' ἄλλων καὶ τὸν μητροπολίτην τῆς πόλεως. Ἀλλὰ καὶ οἱ κάτοικοι αὐτοὶ ἐπεδίδοντο συνήθως εἰς πειρατικὰς πράξεις, τὰς ὁποίας διέπραττον κυρίως εἰς βάρος τῶν ἐκεῖθεν διερχομένων Βενετῶν καὶ Γενουησίων ἐμπόρων. Πολλαὶ διαμαρτυρίαι τῶν δύο τούτων ἰταλικῶν πόλεων ἀναφέρονται εἰς τοιαύτας πειρατικὰς πράξεις. Διῳκεῖτο δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον ἡ Μονεμβασία ὑπὸ ἐντοπίων ἀρχοντικῶν οἴκων, οἱ ὁποῖοι ἤρχοντο συχνὰ εἰς ῥῆξιν μὲ τοὺς κυβερνήτας τοῦ Μυστρᾶ. Οὕτω ὁ Παῦλος Μαμωνᾶς διενοήθη νὰ ἀποτινάξῃ τὴν ἐπικυριαρχίαν τοῦ δεσπότου Θεοδώρου Α′ τοῦ Παλαιολόγου καὶ νὰ ἱδρύσῃ ἴδιον κράτος. Ἀλλ' ἐξωσθεὶς τῶν κτήσεών του ὑπὸ τοῦ δεσπότου, προσέφερε τὴν πόλιν εἰς τοὺς Βενετούς. Καὶ τούτων ὅμως ἀρνηθέντων, κατέφυγε, τῷ 1395, παρὰ τῷ σουλτάνῳ, ἐν Σέρραις εὑρισκομένῳ, καὶ διεμαρτυρήθη διὰ τὴν πρᾶξιν τοῦ Θεοδώρου. Τότε ἡ Μονεμβασία κατελήφθη ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἀλλ' ἀπεδόθη, ὀλίγῳ ὕστερον, εἰς τοὺς δεσπότας τοῦ Μορέως.

Digitized by Google

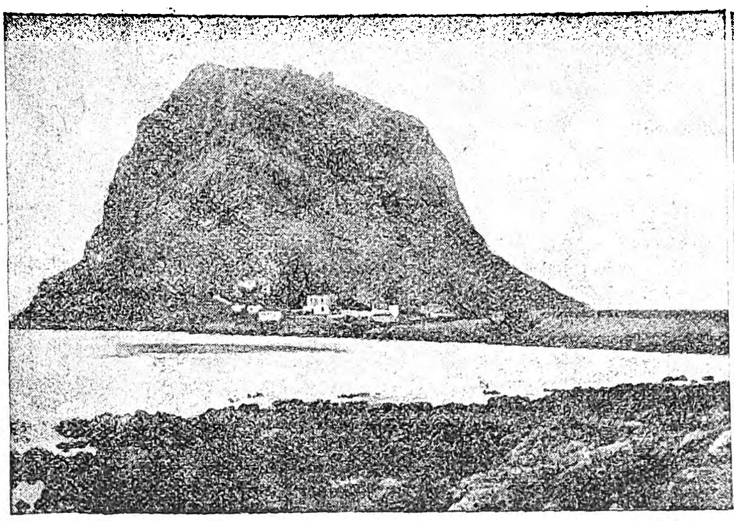

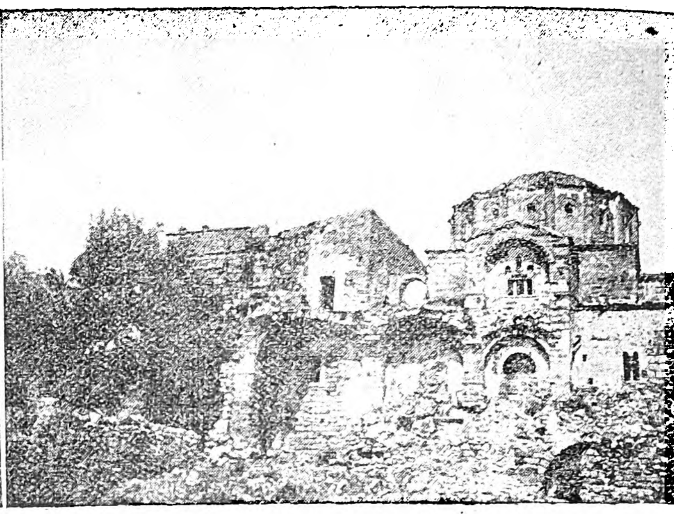

*1) Ἄποψις τῆς Μονεμβασίας. 2) Ὁ ναὸς τῆς Ἁγίας Σοφίας.*

Ὁ δεσπότης Θεόδωρος Β' ὁ Παλαιολόγος ἀπένειμεν εἰς τοὺς Μονεμβασιώτας νέα προνόμια (κατὰ Δεκέμβριον τοῦ 1442), μεταξὺ δ' ἄλλων ἐπέτρεψεν εἰς αὐτοὺς νὰ καταναλίσκουν τοὺς ἐκ κληρονομιῶν προερχομένους πόρους τοῦ δημοσίου ταμείου διὰ τὴν συντήρησιν, βελτίωσιν καὶ ἐπιδιόρθωσιν τοῦ κάστρου αὐτῶν. Τὰ προνόμια ταῦτα ἐπεκύρωσε βραδύτερον, τῷ 1450, καὶ ὁ δεσπότης Δημήτριος Παλαιολόγος, εἰς τοῦ ὁποίου τὴν κυριαρχίαν περιῆλθε, κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην, ἡ πόλις.

Τῷ 1460 ὑπετάγη ἡ Πελοπόννησος εἰς τοὺς Τούρκους καὶ κατελύθη τὸ ἑλληνικὸν δεσποτᾶτον τοῦ Μυστρᾶ. Ὁ δεσπότης Δημήτριος παρεδόθη εἰς τὸν σουλτᾶνον, οἱ δὲ Μονεμβασιῶται, οἱ ὁποῖοι ἀπέρριψαν πάσας τὰς περὶ παραδόσεως προτάσεις τοῦ κατακτητοῦ, ἀνεγνώρισαν τὴν κυριαρχίαν τοῦ Θωμᾶ Παλαιολόγου. Καὶ τούτου ὅμως καταφυγόντος εἰς Ἰταλίαν, ἐκάλεσαν ὡς κυβερνήτην τὸν Καταλᾶνον πειρατὴν καὶ τυχοδιώκτην Lope de Baldaja. Ἀλλὰ μετ' οὐ πολύ, τῇ συναινέσει τοῦ δεσπότου Θωμᾶ, ἡ Μονεμβασία περιῆλθεν εἰς τὴν κυριαρχίαν τοῦ πάπα Πίου τοῦ Β', ὁ ὁποῖος πολλὰς ἐλπίδας ἐστήριζεν εἰς αὐτὴν διὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν τοῦ βυζαντιακοῦ κράτους. Μετ' ὀλίγους ὅμως μῆνας παρεχωρήθη εἰς τοὺς Ἑνετούς, οἵτινες τὴν διετήρησαν μέχρι τοῦ 1540, ὁπότε περιῆλθεν εἰς τοὺς Τούρκους. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ἡ Μονεμβασία ἐπολιορκήθη ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν καὶ παρεδόθη τὴν 23ην Ἰουλίου 1821.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Κ. Ν. Παπαμιχαλοπούλου*, «Πολιορκία καὶ ἅλωσις τῆς Μονεμβασίας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων τῷ 1821» (Ἀθῆναι 1874).—*W. Miller*, «Monemvasia, The Journal of Hellenic Studies» (τόμ. 28, 1907).—*Ν. Α. Βέη*, «Τὸ περὶ κτίσεως τῆς Μονεμβασίας χρονικὸν» («Βυζαντὶς» τόμ. Α').—*Χρ. Δημητρίου*, «Ἡ μητρόπολις Μονεμβασίας καὶ αἱ ὑπ' αὐτὴν ὑπαγόμεναι ἐπισκοπαὶ μέχρι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος» (Θεολογίας 7 (1929), σελ. 139—151).—Παραμυθίας καὶ Φιλιατῶν *Ἀθηναγόρα*, «Ἡ μητρόπολις Μονεμβασίας» (αὐτόθι, 8 (1930), σελ. 228–252). Δ. Α. ΖΑΚΥΘΗΝΟΣ

— *[Βυζ. Τέχνη]* Ἐκ τῶν ἐκκλησιῶν τῆς *Μονεμβασίας* ἡ ἀρχαιοτέρα καὶ σπουδαιοτέρα εἶναι ἡ *Ἁγία Σοφία*, εὑρισκομένη ἐπὶ τοῦ κάστρου μεταξὺ τῶν ἐρειπίων ἐνετικῶν καὶ τουρκικῶν οἰκοδομημάτων. Ἡ Ἁγία Σοφία ἀνηγέρθη, κατὰ τὴν παράδοσιν, ἐπὶ τῶν χρόνων τοῦ αὐτοκράτορος Ἀνδρονίκου Β' Παλαιολόγου (1287—1328) καὶ εἶναι ἐκτισμένη κατὰ τὸ ὀκταγωνικὸν λεγόμενον σύστημα, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνήκουσι καὶ ἡ ἐν Ἀθήναις ἐκκλησία τῆς Σωτείρας Λυκοδήμου, αἱ ἐκκλησίαι τῆς μονῆς Δαφνίου καὶ τῆς μονῆς Ὁσίου Λουκᾶ κ. ἄ. Εἰς τὴν νοτίαν πλευρὰν ἔφερε διπλῆν ἀνοικτὴν στοάν, στηριζομένην ἐπὶ κιόνων καὶ τῆς ὁποίας λείψανά τινα διασῴζονται εἰσέτι. Τὸ μνημεῖον ἔφερε πλουσιώτατον γλυπτικὸν διάκοσμον, τοῦ ὁποίου πλεῖστα λείψανα διασῴζονται ἀκόμη. Ἐπίσης ὁλόκληρον τὸ ἐσωτερικὸν ἐκαλύπτετο ὑπὸ σπουδαιοτάτων τοιχογραφιῶν συγχρόνων πρὸς τὴν οἰκοδομὴν αὐτοῦ, ὡς δεικνύουσι τὰ ὀλίγα λείψανα τὰ ἐλθόντα εἰς φῶς μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ τουρκικοῦ ἀσβεστώματος τοῦ καλύπτοντος αὐτάς. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἑνετοκρατίας πρὸ τῆς δυτικῆς πλευρᾶς ἐκτίσθη διώροφος νάρθηξ, μετὰ δὲ τὴν ὑπὸ τῶν Τούρκων κατάληψιν τῆς πόλεως ἡ Ἁγία Σοφία μετετράπη εἰς τζαμίον.

Ἐν τῇ κάτω πόλει ἀξιολογώτερον μνημεῖον εἶναι ὁ *Ἑλκόμενος*. Ἡ νῦν διασῳζομένη ἐκκλησία ἐκτίσθη τῷ 1697, κατὰ τὴν δευτέραν δηλαδὴ περίοδον τῆς ἐνετικῆς κατοχῆς, ἀλλ' αὕτη κατέχει τὴν θέσιν πολὺ παλαιοτέρου οἰκοδομήματος, ἀναγομένου εἰς τοὺς περὶ τὸν ΙΒ' αἰῶνα χρόνους. Ἡ ἐκκλησία ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐξ εἰκόνος περιφήμου, ἐν αὐτῇ εὑρισκομένης καὶ παριστανούσης τὸν Ἰησοῦν μὲ τὰς χεῖρας δεδεμένας, ἑλκόμενον πρὸς τὸν σταυρόν. Ἡ εἰκὼν ἐν τῇ νῦν αὐτῆς μορφῇ εἶναι ἀσφαλῶς ἐπεσκευασμένη ἢ εἶναι ἴσως ἀντίγραφον παλαιοτέρας, ἀναφερομένης τὸν ΙΒ' ἤδη αἰῶνα. Πλὴν τοῦ Ἰησοῦ Ἑλκομένου, ἐν τῇ ἰδίᾳ ἐκκλησίᾳ εὑρίσκεται σπουδαιοτάτη μεγάλη εἰκὼν παριστῶσα τὴν Σταύρωσιν.

Ὁ *Ἅγιος Νικόλαος* εἶναι τρουλλωτὸς ναὸς ἀνεγερθεὶς τῷ 1703· τῶν ἰδίων δὲ χρόνων εἶναι καὶ ἡ *Παναγία Κρητική*, ὁ *Ἅγιος Στέφανος* καὶ ἡ *Ἁγία Ἄννα*, μνημεῖα ἀνεγερθέντα κατὰ τὴν ἐνετικὴν περίοδον καὶ δεικνύοντα πολλὰς ἐπιδράσεις καὶ δάνεια ἐκ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῆς ἐνετικῆς ἀναγεννήσεως.

Πλὴν τῶν ἐκκλησιῶν, σπουδαιότατα εἶναι τὰ τείχη τῆς Μονεμβασίας, δίδοντα ἐξαιρετικὴν καὶ μοναδικὴν γραφικότητα εἰς αὐτήν. Τὰ τείχη ταῦτα ἀνήκουσι κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν ἐνετικὴν καὶ τουρκικὴν περίοδον, φαίνεται ὅμως ὅτι ἔχουσι κτισθῆ ἐπὶ θεμελίων βυζαντινῶν ἤδη χρόνων. Τὰ τείχη περιβάλλουσι τὴν κάτω πόλιν, ἰδιαίτερος δὲ περίβολος ἐξαιρέτως ὀχυρὸς προστατεύει τὴν ἀκρόπολιν.

Αἱ γραφικαὶ οἰκίαι τῆς Μονεμβασίας ἀνήκουσι κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τοὺς τελευταίους τουρκικοὺς χρόνους, δὲν λείπουσιν ὅμως καὶ τοιαῦται δυνάμεναι ν' ἀναχθῶσιν εἰς τὴν ἐνετικὴν περίοδον.

Ἡ Μονεμβασία, χάρις εἰς τὸ ἐξαιρετικὸν τῆς θέσεως αὐτῆς, τὰ τείχη καὶ τοὺς γραφικοὺς δρομίσκους μὲ τὰς παλαιὰς οἰκίας, παρέχει μοναδικὸν σχεδὸν ἐν Ἑλλάδι παράδειγμα μεσαιωνικῆς πόλεως, εἰς ἣν τίποτε δὲν ἔχει μεταβληθῆ μὲ τὴν πάροδον τοῦ χρόνου. Α. Ξ.

—**Μονεμβασία** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Χερσονησίς, ἤδη, ἀπὸ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς χερσονήσου τοῦ Ἕλους ἀποφυομένη, εἰς 16 μίλλ. ΒΑ. τῆς Μαλέας ἄκρας, ἀπολήγουσα εἰς φερώνυμον ἀκρωτήριον· ἐπὶ τῆς θέσεως δὲ αὐτῆς Ληψωνᾶς, βορείως τῆς πόλεως (πλάτ. 36° 40' 49'' Β., μῆκ. 23° 03' 30'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1637 : Monemvasia) φάρος ἱδρυθεὶς τῷ 1896 καὶ οὗ τὸ σταθερὸν φῶς 5 μιλλ. ἐτροποποιήθη τῷ 1925 εἰς λευκὸν σκαρδαμύσσον 10 μιλλ. Εἶναι ἡ ἀρχαία *Μινῴα*. Σ. Ε. Λ.

—**Μονεμβασίας ἀγκυροβόλιον** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Τὸ κατὰ τὴν Β. μασχάλην τῆς χερσονησῖδος ἀγκυροβόλιον, χρήσιμον διὰ προσκαίρους ἀγκυροβολίας πλοίων ὑπ' ἀτμόν. Ἐκ τῆς περιγραφῆς τοῦ Παυσανίου (Λακων. Γ, 23, 10, Teubner) προκύπτει ὅτι τὸ ἀγκυροβόλιον εἶναι ὁ *Διὸς Σωτῆρος Λιμὴν* τοῦ Πτολεμαίου (Γ, ιστ, 10, ἔκδ. Nobbe), ἀφοῦ ἄλλωστε καὶ ὁ παλαιότερος τῶν σχολιαστῶν τοῦ Πτολεμαίου σημειοῖ, καθ' ἃ ὁ C. Muller ἀναφέρει, ἐν περιθωρίῳ παρὰ τὴν τοπωνυμίαν «τῆς Μονεμβασίας λιμὴν» (ἔκδ. Didot I 552, 13). Σ. Ε. Λ.

—**Μονεμβασίας κόλπωσις** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Κόλπωσις διανοιγομένη μεταξὺ τῆς προμνησθείσης χερσονησῖδος καὶ βορείως αὐτῆς (ΝΑ. κέρας) καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου *Κρεμμύδι* (ΒΑ. κέρας) Ἐν αὐτῇ ἡ ἄκρα Κυριακή, ἔχουσα πρὸ αὐτῆς μύρμηκας, τὸ κατὰ τὴν Β. μασχάλην τῆς χερσονησῖδος ἀγκυροβόλιον *Μονεμβασία* καὶ οἱ ὅρμοι *Παλιὰ Μονεμβασία* καὶ *Κρεμμύδι*. Τὸ ἄνοιγμά της εἶναι 2 ²/₃ μιλλ., ἡ δὲ εἴσδυσίς της 2 ½ μιλλ. Σ. Ε. Λ.

—**Μονεμβασία Παλαιὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον ἐν τῇ *κολπώσει τῆς Μονεμβασίας* (πλάτ. 36° 43' 10'' Β., μῆκ. 23° 02' 10'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1637 : Monemvasia), χωρίζον ἀμφιδύμως τὸν πρὸς δυσμάς του φερώνυμον ὅρμον ἀπὸ τοῦ πρὸς ἀνατολὰς ὅρμου Κρεμμύδι. Ἐπὶ τῆς βορείας τοῦ ἀκρωτηρίου ἄκρας, δεξιᾷ τῷ καταπλέοντι εἰς τὸ ἀγκυροβόλιον, φαρίσκος Ἄγκα αὐτόματος (1925) πρασίνων ἐκλάμψεων. Σ. Ε. Λ.

— **Μονεμβασίας Παλαιᾶς ἀγκυροβόλιον** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Σωτήριον διὰ μικρὰ πλοῖα ἀγκυροβόλιον καταφυγῆς, σχηματιζόμενον εἰς 2 ½ μίλλ. Β. τῆς Μονεμβασίας καὶ ἔσω τῆς φερωνύμου, ἐφ' ἧς ὁ φαρίσκος, ἄκρας. Εἰς τοὺς ξένους ναυτικοὺς χάρτας σημειοῦται Port Paleo. Δὲν ὑπάρχει ἐκεῖ, πλὴν σμικροτάτου συνοικισμοῦ, χωρίον, ἀλλ' εἰς 1 χλμ. δυτικῶς τοῦ μυχοῦ καὶ ἐγγὺς τῆς ἀκτῆς ὑπάρχουν ἀρχαῖά τινα λείψανα, *Παλιὰ Μονεμβάσια* ἐπίσης καλούμενα. Ἐπειδὴ δὲ παρὰ τὴν λέξιν Ἐπίδαυρος ἐν τῷ συγγράμματι τοῦ Πτολεμαίου παλαιότατοι σχολιασταὶ ἔχουν σημειώσει ἐν περιθωρίῳ «Παλαιᾶς Μονεμβασίας» καὶ «Παλαιὰ Μονεμβασία» (βλ. σχόλ. ἔκδ. Didot I, 552, 14), φαίνεται ὅτι δὲν καλοῦνται ἐσφαλμένως, ὡς παρά τινων νομίζεται, τὰ ἐρείπια τῆς Ἐπιδαύρου ὑπὸ τοῦ λαοῦ. Σ. Ε. Λ.

—**Μονεμβασίας, τέως δῆμος** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς τοῦ νομοῦ Λακωνίας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας Ἁγίου Δημητρίου, Ἁγίου Ἰωάννου, Ἁγίου Νικολάου, Βελιῶν, Δαιμονιᾶς, Ἐλίκης, Κουλεντίων, Λυρῶν, Μονεμβασίας, Νομίων, Παντανάσσης καὶ Ταλάντων, μὲ ἕδραν τὴν *Μονεμβασίαν*. Χ. Δ.

**μονέρμη** (ἡ) (Monerma) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστοειδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς καὶ εὐκράτους χώρας τῆς γῆς. Τὸ εἶδος *μονέρμη ἡ κυλινδρικὴ* (Monerma cylindrica) θεωρεῖται αὐτοφυὲς τῆς Ἑλλάδος. Δ. Ν. Π.

**Μονέσσεν** (Monessen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡν. Πολιτειῶν ἐν τῇ κομιτείᾳ Οὐεστμόρελαντ τῆς Πενσυλβανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μονονγκάελα. Ἔχει βιομηχανίαν σιδήρου καὶ λευκοσιδήρου, κεραμουργεῖα, χυτήρια, μηχανουργεῖα κλπ. Κάτ. (1920) 18.179. Χ. Δ.

**Μονέτα** (Moneta), ***Ἐρνέστος-Θεόδωρος***. Ἰταλὸς δημοσιογράφος καὶ πολιτικὸς (1833—1918). Κατ' ἀρχὰς ἀνεμείχθη εἰς τοὺς πατριωτικοὺς ἀγῶνας ὑπὲρ τῆς ἀπελευθερώσεως τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1859 κατετάχθη εἰς τὸ σῶμα τῶν Ἀλπινιστῶν καὶ κατόπιν ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐφημερίδος «Ἐλεύθερος λόγος», τὴν ὁποίαν ὅμως ἐγκατέλειψε μετ' ὀλίγον, διὰ νὰ ἀκολουθήσῃ τὸν Γαριβάλδην εἰς Σικελίαν. Τῷ 1862 εἰσῆλθεν εἰς τὸν τακτικὸν στρατὸν ὡς ταγματάρχης, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1867 ἐγκατέλειψεν ὁριστικῶς τὸ στρατιωτικὸν ἐπάγγελμα ὅπως ἐργασθῇ διὰ τὴν παγίωσιν τῆς παγκοσμίου εἰρήνης. Ἀπὸ τὸ 1867 μέχρι τοῦ 1898 διηύθυνε τὸν «Αἰῶνα» τοῦ Μιλάνου καὶ κατόπιν ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Διεθνὴς ζωή», διὰ τοῦ ὁποίου ἀφιερώθη τελείως εἰς τὸ κήρυγμα τῶν εἰρηνιστικῶν ἰδεῶν, γράφων ἀκαταπαύστως ἄρθρα καὶ ἐκδίδων διάφορα φυλλάδια ὑπὲρ τῆς διεθνοῦς εἰρήνης. Τῷ 1906 προήδρευσεν ἐν Μιλάνῳ τοῦ διεθνοῦς συνεδρίου εἰρήνης, ὅπερ εἶχε συνέλθει κατόπιν ἰδικῶν του ἐνεργειῶν καὶ προπαγάνδας, τὸ δ' ἑπόμενον ἔτος ἀπενεμήθη εἰς αὐτόν, ἐξ ἡμισείας μετὰ τοῦ Γάλλου νομομαθοῦς Λουδοβίκου Ρενώ, τὸ βραβεῖον Νόμπελ διὰ τὴν εἰρήνην. Μεταξὺ ἄλλων ἔργων ὁ Μονέτα ἐξέδωκε καὶ τὴν ἱστορικὴν πραγματείαν «Οἱ πόλεμοι, αἱ ἐπαναστάσεις καὶ ἡ εἰρήνη κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα». Μ. Δ. Β.

**μονέτσια** (ἡ)· ἰδιωμ. Κρήτ., τὰ ἐφόδια τοῦ κυνηγίου, πυρῖτις, σφαιρίδια κλπ. (λ. ἰταλ.). Ι. Δ. Μ.

**Μὸνζ** (Monge), ***Γάσπαρ***. Γάλλος μαθηματικὸς καὶ φυσικὸς (1746—1818). Ἐχρημάτισεν ἀπὸ τοῦ 1768 καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν εἰς τὴν ἐν Παρισίοις σχολὴν πολέμου, ἐδίδαξε δὲ βραδύτερον ἐν τῇ αὐτῇ σχολῇ καὶ τὸ μάθημα τῆς ὑδραυλικῆς. Τῷ 1792 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν καὶ διευθυντὴς τῶν ἐργοστασίων κατασκευῆς πυροβόλων. Μετὰ διετίαν ἵδρυσε τὴν πολυτεχνικὴν σχολήν. Τῷ 1798 ἠκολούθησε τὸν Ναπολέοντα Βοναπάρτην εἰς Αἴγυπτον, ἐποπτεύων εἰς τὴν ἐξερεύνησιν τῶν αἰγυπτιακῶν ἀρχαιοτήτων. Ἐπιστημονικῶς ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν παραστατικὴν γεωμετρίαν, τὴν ὁποίαν κατέστησεν αὐτοτελῆ ἐπιστήμην καὶ τῆς ὁποίας δικαίως θεωρεῖται πατήρ. Ἐπίσης ἠσχολήθη ἐπιτυχῶς μὲ ζητήματα διαφορικῆς γεωμετρίας. Ἔγραψε: «Traité élémentaire de

Digitized by Google

statique» (1788). «Géométrie descriptive» (1795), «Application de l'analyse à la géométrie de surfaces du premier et deuxième degré» κ. ἄ. Γ. Θ. Κ.

**Μονζελὰ** (Montgelas), *Μαξιμιλιανός, κόμις* —. Βαυαρὸς στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1860. Διῴκησε τὴν 4ην βαυαρικὴν μεραρχίαν πεζικοῦ κατὰ τὴν περίοδον 1912—1915, μετὰ τὸ τέλος δὲ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀφιερώθη εἰς τὴν προπαγάνδαν ὑπὲρ τῆς εἰρήνης καὶ κυρίως εἰς τὸ ζήτημα τῆς εὐθύνης τοῦ πολέμου, ἐξ οὗ καὶ ἐγένετο διεθνῶς γνωστὸς διὰ τῶν πολλῶν ἐπὶ τοῦ θέματος ἔργων του. Ἔγραψε: «Συμβολαὶ εἰς τὸ ζήτημα τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν» (1919), «Σχόλια ἐπὶ τοῦ βιβλίου τοῦ Καούτσκυ» (1920), «Ἔρευνα περὶ τῆς ἐκρήξεως τοῦ πολέμου» (1912), «Γαλλογερμανικαὶ συζητήσεις περὶ τῆς εὐθύνης τοῦ πολέμου» (1922), «Εἰσήγησις εἰς τὸ ζήτημα τῆς εὐθύνης τοῦ πολέμου» (1923), «Τὸ ζήτημα τῆς ἀσφαλείας» (1925) κ. ἄ. Θ. Κ.

**Μὸν-Ζενὲβρ** (Mon-Genèvre) *[Γεωγρ.]*. Αὐχὴν τῶν γαλλικῶν Ἄλπεων, ἀνοιγόμενος εἰς ὕψος 1860 μ. ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Ἄλπεων παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Ντυρὰνς καὶ ἐγγὺς τοῦ Μπριανσόν. Χ. Δ.

**Μονζὶ** (Mongie), *Ἀνατόλιος ντὲ*—. Σύγχρονος Γάλλος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1876. Ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν (1925) καὶ κατόπιν τῆς Παιδείας καὶ τῶν Δημοσίων Ἔργων (1926). Ἔχει δημοσιεύσει συγγράμματα πολιτικοῦ καὶ ἱστορικοῦ περιεχομένου, ἐν οἷς: «Εἰς τὰ σύνορα τῆς πολιτικῆς» (1913), «Εἰς τὸ Βατικανὸν» (1925) κ.ἄ. —Ω.

**μονζονιτικὴ** *ὁμὰς πετρωμάτων [Πετρογρ.]*. Αὐτοτελὴς ὁμὰς μεταξὺ τῶν πετρωμάτων τῆς ἀλκαλιούχου σειρᾶς καὶ τῆς ἀλκαλιοασβεστούχου. Ὁ κανονικὸς μαγματικὸς τύπος τῶν πετρωμάτων τῆς μονζονιτικῆς ὁμάδος χαρακτηρίζεται ἀπὸ χημικῆς ἀπόψεως ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ περιεκτικότης εἰς διοξείδιον τοῦ πυριτίου κυμαίνεται μεταξὺ 50—62%, ἡ δὲ μοριακὴ περιεκτικότης εἰς τριοξείδιον τοῦ ἀργιλλίου $Al_2O_3$ εἶναι μεγαλυτέρα τῆς τῶν ἀλκαλίων $Na_2O+K_2O$.

Τὰ ὀρυκτολογικὰ συστατικὰ τῶν πετρωμάτων τῆς ἐν λόγῳ ὁμάδος εἶναι ἐκ τῶν ἀστρίων τὸ ὀρθόκλαστον καὶ ὁ λαβραδορίτης. Εἰς τὰς βασικὰς μορφὰς αὐτῶν ἐμφανίζεται ἀντὶ τοῦ λαβροδορίτου ὁ βυτωβνίτης, εἰς δὲ τὰς ὀξίνους ὁ ἀνδεσίτης. Ἐκ τῶν ἐγχρόων ὀρυκτολογικῶν συστατικῶν περιέχουν αὐγίτην, πρασίνην κεροστίλβην καὶ βιοτίτην. Ὁ χαλαζίας λείπει καθ' ὁλοκληρίαν ἢ ὑπάρχει εἰς ἐλαχίστην ποσότητα. Ὡς ἐπουσιώδη ὀρυκτολογικὰ συστατικὰ παρατηροῦνται σιδηροξείδια, ἀπατίτης, ζιρκόνιον καὶ τιτανίτης. Τὰ πετρώματα ταῦτα ἀπαντοῦν εἰς τὸ Monzoni τοῦ νοτιοανατολικοῦ Τυρόλου, ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία αὐτῶν, εἰς τὴν Σουηδίαν κ. ἄ. Γ. Β.

**μονὴ** (ἡ)· μοναστήριον: «μονὴ τοῦ Μεγάλου Σπηλαίου, —τῆς Ἁγίας Λαύρας»· || ἀρχ. τὸ νὰ μένῃ τις ἔν τινι τόπῳ, διαμονή, παραμονή· || «αἰώνιαι μοναὶ» ὁ μετὰ θάνατον βίος: «μετέστη εἰς τὰς αἰωνίους μονὰς» ἀπέθανεν.

—*[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *μοναστήριον*.

**μονὴ** *[Ἀρχ. Μουσ.]*. Ἡ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μουσικοῦ φθόγγου μελῳδία πλειόνων τοῦ ἑνὸς χρόνων. Ἡ μονὴ ἦτο ἓν τῶν τεσσάρων παθῶν τῆς μελῳδίας τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς. Ν. Α. Χ.

**Μονὴ** *[Γεωγρ.]*. Τὰ περὶ τῶν κυριωτέρων ἑλληνικῶν μονῶν *Ἁγίας Λαύρας, Δαφνίου, Μεγάλου Σπηλαίου, Ἄθω, Μετεώρων, Χώρας* κλπ. ἄρθρα βλ. εἰς τὰς οἰκείας λέξεις.

—**Μονὴ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 443. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν Σίφωνες (κάτ. 7). Χ. Δ.

—**Μονὴ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Σελίνου τοῦ νομοῦ Χανίων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 126. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Λιβαδᾶς, Σούγια* καὶ *Κουστογέρακον*. Ε. Γ.

—**Μονὴ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Τυλίσσου τῆς ἐπαρχίας Μαλεβυζίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 330. Ν. ΚΛΣ

—**Μονὴ** *[Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων νῆσος τοῦ Σαρωνικοῦ, 3 μίλλ. νοτίως τοῦ λιμένος τῆς πόλεως Αἰγίνης, σχηματίζουσα τὸ ΝΔ. προκεχωρημένον κέρας τοῦ κολπίσκου ὅρμου τῆς Περιβόλας. Εἰς τὴν βόρειον ἀκτήν της ἔχει τὸν καλὸν λιμενίσκον *Βοδῶνι*, εἰς δὲ τὴν ΝΔ. ἄκραν (πλάτ. 37°40'54'' Β., μῆκ. 23°25'36'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1517: Aegina and Methana) λειτουργεῖ φάρος Ἄγκα, ἱδρυθεὶς τῷ 1913 καὶ ἐκπέμπων ζεῦγος ἐκλάμψεων (λευκῶν, ἐρυθρῶν καὶ πρασίνων κατὰ τομεῖς) φωτοβολίας 15 μίλλ. ἀνὰ 7½ δ.λ. Τὸ μῆκος της εἶναι ἓν μίλλιον, τὸ δὲ ὕψος της 561 πόδες.

*Μονῆς δίαυλος* (Moni pass). Τὸ μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Ἅγιος Σώζων τῆς χερσονησίδος Πέρδικα τῆς Αἰγίνης καὶ τῆς ἀνατολικῆς ἄκρας τῆς νήσου Μονῆς στενόν, πλάτους 350 μέτρων καὶ βάθους 15—19 ὀργυιῶν. Δὲν πρέπει νὰ διαπλέεται εἰ μὴ μόνον ὑπ' ἀτμὸν ἢ ὑπὸ ἰσχυρὸν ἐγκολπίαν, διότι αἱ ἀπὸ τοῦ ὀρθοπάγου Ὄρος καταχυνόμεναι ῥιπαὶ εἶναι ἐπικίνδυνοι, δυνάμεναι νὰ παρασύρουν τὸ ἱστιοφόρον πρὸς τὴν Μονήν. Σ. Ε. ΛΥΚΟΥΔΗΣ

— **Μονή, Κάτω** — *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς νήσου Κύπρου, ὑπαγόμενον εἰς τὸ διαμέρισμα Μόρφου τῆς ἐπαρχίας Λευκωσίας. Κάτ. 190. Κ. Μ. Κ.

**μονήμερος**, —η, —ο· ὁ μίαν μόνον ἡμέραν διαρκῶν, ὁ μιᾶς ἡμέρας. —Ἐπίρρ. *μονήμερα* καὶ *μονημερὶς*· ἐν μιᾷ μόνῃ ἡμέρᾳ, ἄλλως *μονομερὶς* (βλ. λ.).

**μονήρης** (ὁ, ἡ), —ες (τό)· μόνος, μεμονωμένος, ὁ μὴ εὑρισκόμενος μετ' ἄλλων, μοναχικός: «μονήρη ζῷα»· || «μονήρης βίος» ὁ κατὰ μόνας βίος· || γραμματ. «μονήρης λέξις» ἡ λέξις ἀπὸ τῆς ὁποίας δὲν παράγονται ἄλλαι: «ἡ λέξις ἀγαθὸς εἶναι μονήρης».

—**μονήρης** *βράχος [Ἀκτογρ.]*. Ὁ γεννηθεὶς παρ' ἀκτὴν ἀπορρῶγα ἐκ τῆς ἐπεξεργασίας τῆς θαλάσσης ἐπὶ τῆς ἀκτῆς καὶ ὀλίγον ἀπέχων ταύτης. Κ. Χ. Κ.

**Μονήτα** (Moneta) *[Μυθολ.]*. —1) Ἡ μήτηρ τῶν Μουσῶν Μνημοσύνη, παρὰ Λατίνοις. —2) Ἐπώνυμον τῆς Ἥρας ἐν Ῥώμῃ. Ὡς Μονήτα ἡ Ἥρα ἔσχε ναὸν ἐπὶ τῆς ῥωμαϊκῆς ἀκροπόλεως, ὅστις εἶχε καθιερωθῆ τῷ 344 π.Χ. καὶ ἐχρησίμευε πρὸς φύλαξιν τῶν πολυτίμων μετάλλων, ἐξ ὧν κατεσκευάζοντο τὰ νομίσματα. Ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τούτου ὠνομάσθησαν ἐν τῇ λατινικῇ καὶ κατόπιν καὶ ἐν ἄλλαις γλώσσαις τὰ νομίσματα (πρβλ. κοιν. *μονέδα*).

**Μονήτιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μία τῶν ὑπὸ τοῦ Στράβωνος (Δ, 207) ἀναφερομένων τεσσάρων πόλεων τῶν Ἰαπόδων ἐν Λιβουρνίᾳ, ἀπέχουσα τῆς Σενίας (νῦν Segna) περὶ τὰ 10 μίλλια, ἐν τῇ νῦν ΒΔ. Νοτιοσλαβίᾳ. Α. Θ. Σ.

**μονητίτης** *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Ca_2P_2O_7.H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ τρικλινὲς σύστημα, ἀπαντᾷ δὲ εἰς ἀκανόνιστα συσσωματώματα. Ἔχει χρῶμα κιτρινόλευκον. Γ. Β.

**Μονήτσια** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Χαλκίου τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 82. Χ. Δ.

**μονιὰ** (ἡ)· ἡ μονή, ἡ φωλεὰ ἀγρίων θηρίων.

**μονιάζω**· βλ. *μονοιάζω*.

**μονιὰς** (ὁ)· δημοτ., λύκος ὁ περί τινα τόπον διαρκῶς διαμένων.

**Μονιάτης** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς νήσου Κύπρου ἐν τῷ διαμερίσματι Κοιλανίου τῆς ἐπαρχίας Λεμεσοῦ. Κάτ. 175.

**Μόνικα**. Ἁγία τῆς ῥωμαϊκῆς Ἐκκλησίας. Ἦτο μήτηρ τοῦ ἱεροῦ Αὐγουστίνου (331—387), ἐνωρὶς δὲ παραμείνασα χήρα ἐπεδόθη ψυχῇ καὶ σώματι εἰς τὴν διαπαιδαγώγησιν τοῦ μόνου τέκνου της. Ἡ Μόνικα διὰ τὴν εὐσέβειαν καὶ τὰς ἄλλας ἀρετὰς αὐτῆς κατέστη μήτηρ παραδειγματικὴ ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ. Ἀπέθανεν ἐν τῇ παραλίῳ πόλει τῆς Ἰταλίας Ὠστίᾳ, ἔνθα καὶ ἐτάφη. Ἡ μνήμη της ἑορτάζεται τὴν 4ην Μαΐου. Τ. Ε. Ε.

**μονιλία** (ἡ) (Monilia) *[Βοτ.]*. Γένος μυκήτων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυκηδινιδῶν*, περιλαμβάνον μικρομύκητας συνήθως ζῶντας παρασιτικῶς ἐπὶ διαφόρων ζωϊκῶν ἢ φυτικῶν ὀργανισμῶν. Δ. Ν. Π.

**μονιμειοειδῆ** (τὰ) (Monimiaceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα δένδρα ἀναρριχητικὰ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, φυόμενα εἰς τὰς θερμὰς τῆς γῆς χώρας. Ἐκ τῶν πολλῶν γενῶν τῆς οἰκογενείας, ὧν τινα εἶναι ἀρωματικά, γνωστότερα εἶναι: *ἀνθόσπερμα* (Anthosperma), *δαφνόμορφος* (Daphnomorphus), *μονίμη* (Monimia) καὶ *πεῦμος* (Peumus). Δ. Ν. Π.

**μονίμη** (ἡ) (Monimia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μονιμειοειδῶν*, περιλαμβάνον τρία γνωστὰ εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν Μασκαρηνῶν νήσων. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μονίμη ἡ εὐώδης* (Monimia odorata), δένδρον ἱκανοῦ μεγέθους καλλιεργούμενον διὰ τὰ ἐκτάκτως ἀρωματικὰ φύλλα αὐτοῦ. Δ. Ν. Π.

**μονιμόλιθος** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀποτελοῦν ἀντιμονικὸν ἅλας τοῦ μολύβδου τοῦ τύπου $Pb_3Sb_2O_8$ μὲ μικρὰν περιεκτικότητα εἰς ὀξείδιον σιδήρου, μαγγανίου καὶ ἀσβεστίου. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ κυβικὸν σύστημα μὲ ἕδρας ἑξαεδρικὰς καὶ ὀκταεδρικὰς συνήθως καὶ ἔχει χρῶμα κιτρινόφαιον ἕως μαῦρον καὶ λάμψιν ἡμιμεταλλικὴν ἕως στεατώδη. Ἀπαντᾷ εἰς Pajsberg καὶ Langban. Γ. Β.

**μονιμοποίησις**, —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μονιμοποιεῖν, τὸ νὰ καταστῇ τις μόνιμος, διαρκής: «ἡ μονιμοποίησις τῶν ὑπαλλήλων».

— *[Χημ.]* *Μονιμοποίησις* καλεῖται ἡ διὰ προσθήκης ὑλῶν τινων προσπάθεια πρὸς παράτασιν τῆς διαρκείας τῆς ὀσμῆς τῶν ἀρωμάτων. Τοιαῦται ὗλαι ἦσαν γνωσταὶ ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος. Ἐξ αὐτῶν ἄλλαι εἶναι ἄοσμοι, ὡς τὸ βενζοϊκὸν βενζύλιον, τὸ φθαλικὸν αἰθύλιον κλπ., καὶ ἄλλαι ἀποτελοῦσιν αὐταὶ καθ' ἑαυτὰς ἀρώματα, ὡς ὁ μόσχος, ἡ ῥητίνη τοῦ σαντάλ, ἡ βενζόη κλπ. Σ. Γ.

**μονιμοποιῶ** (—έω)· καθιστῶ τι μόνιμον, διαρκές, ἑδραῖον.

**μόνιμος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· παραμόνιμος, διαρκής, σταθερός, ἀμετάβλητος: «εἰρήνη μόνιμος», «οἱ μόνιμοι κάτοικοι τῶν πόλεων»· || «μόνιμος ὑπάλληλος» δημόσιος ὑπάλληλος τοῦ ὁποίου ἡ θέσις δὲν ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς αὐθαιρεσίας τοῦ ὑπουργοῦ.— Ἐπίρρ. *μονίμως*.

—*μόνιμοι ὀδόντες [Ἀνατομ.]*. Ἀποτελοῦσι τὴν δευτέραν ὀδοντοφυΐαν, ἥτις ἄρχεται κατὰ τὸ 5ον ἕως 6ον ἔτος τῆς ἡλικίας, ἅμα τῇ ἐνάρξει τῆς πτώσεως τῶν νεογιλῶν ὀδόντων, καὶ περατοῦται κατὰ τὸ 12ον ἢ 13ον ἔτος, πλὴν τοῦ τελευταίου, τοῦ σωφρονιστῆρος, ὅστις φύεται μετὰ τὸ 20ὸν ἔτος (βλ. *ὀδόντες*). Ι. Π.

**Μόνιμος**. Ἕλλην φιλόσοφος ἐκ Συρακουσῶν ἀκμάσας κατὰ τὸν Δ' π. Χ. αἰῶνα. Μαθητὴς τῶν κυνικῶν φιλοσόφων Διογένους καὶ Κράτωνος, ἐτράπη περὶ τὸ τέλος τοῦ βίου του εἰς τὸν πυρρωνισμόν. Ἐκ τῶν ἔργων του οὐδὲν διεσώθη, πλὴν τῶν τίτλων τινῶν ἐξ αὐτῶν ἀναφερομένων ὑπὸ Διογένους τοῦ Λαερτίου. Ι. Φ. Δ.

**μονιμότης**, —ητος (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μονίμου, σταθερότης, ἑδραιότης: «ἡ μονιμότης τοῦ χρωματισμοῦ»· || «μονιμότης τῶν ὑπαλλήλων» (βλ. κατ.).

— *[Διοικ.]* Δυνάμει τοῦ ὑπὸ τῆς πολιτείας παρεχομένου εὐεργετήματος τῆς *μονιμότητος* εἰς τοὺς δημοσίους ὑπαλλήλους, οὗτοι, ἐξαιρέσει ὡρισμένων περιπτώσεων σαφῶς ὑπὸ τοῦ νόμου καθοριζομένων, οὔτε ἀπολύονται, οὔτε μετατίθενται, οὔτε ὑποβιβάζονται. Μόνιμοι ὑπάλληλοι εἶναι παρ' ἡμῖν οἱ τακτικοὶ διοικητικοὶ ὑπάλληλοι καὶ ἐκ τῶν δικαστικῶν ὑπαλλήλων οἱ εἰσαγγελεῖς, οἱ ἀντεισαγγελεῖς, οἱ εἰρηνοδίκαι, οἱ πταισματοδίκαι, οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ ὑπογραμματεῖς τῶν δικαστηρίων καὶ εἰσαγγελιῶν, οἱ συμβολαιογράφοι καὶ οἱ φύλακες τῶν ἀποθηκῶν καὶ μεταγραφῶν. Ἡ μονιμότης, ὅπως καὶ ἡ *ἰσοβιότης*, (βλ. λ.) παρεχωρήθησαν εἰς τοὺς ὑπαλλήλους ὑπὸ τῆς πολιτείας, ἀφ' ἑνὸς μὲν πρὸς τὸ συμφέρον αὐτῆς ταύτης τῆς πολιτείας, διότι διὰ τοῦ μέσου τούτου παρέχει τὴν δυνατότητα εἰς τοὺς ἱκανοὺς νὰ δεχθοῦν καὶ ν' ἀγαπήσουν τὸ ὑπαλληλικὸν ἐπάγγελμα, ἀφ' ἑτέρου δὲ καὶ πρὸς τὸ συμφέρον τῶν ὑπαλλήλων, διότι δι' αὐτῶν ἀσφαλίζεται ἡ ἀνεξαρτησία τῶν ὑπαλλήλων ἀπὸ πάσης κυβερνητικῆς ἢ πολιτικῆς ἐπεμβάσεως καὶ τὸ ἀνεπηρέαστον αὐτῶν ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς ὑπηρεσίας των. Διαφέρει ὅμως ἡ μονιμότης τῆς ἰσοβιότητος, διότι οἱ ἐκείνης ἀπολαύοντες δύνανται ν' ἀπολυθοῦν τῆς θέσεώς των ἐν ᾗ περιπτώσει αὕτη καταργηθῇ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν συμβαίνει διὰ τοὺς τῆς ἰσοβιότητος ἀπολαύοντας ὑπαλλήλους, οἱ ὁποῖοι ἐξακολουθοῦν νὰ εἶναι ὑπάλληλοι μὲ πλήρη τὰ ἐκ τῆς θέσεως των ταύτης δικαιώματα καὶ ἂν ἡ θέσις των καταργηθῇ. Τὴν μονιμότητα ὅπως καὶ τὴν ἰσοβιότητα τῶν δημοσίων ὑπαλλήλων ἀσφαλίζει καὶ τὸ ἡμέτερον Σύνταγμα τοῦ 1927 ἐν ἄρθροις 95 καὶ 114. Κατὰ τὸ ἄρθρον 114: «Οἱ τακτικοὶ ὑπάλληλοι ἀπὸ τοῦ διορισμοῦ αὐτῶν εἶναι μόνιμοι, ἐφ' ὅσον ὑφίστανται αἱ σχετικαὶ ὑπηρεσίαι καὶ αἱ θέσεις, πλὴν δὲ τῶν περιπτώσεων τῆς παύσεως δυνάμει δικαστικῆς ἀποφάσεως, οὔτε μετατίθενται ἄνευ γνωμοδοτήσεως, οὔτε ἀπολύονται, οὔτε ὑποβιβάζονται ἄνευ εἰδικῆς ἀποφάσεως κατὰ νόμον ὠργανωμένου συμβουλίου καὶ ἀποτελουμένου κατὰ τὰ δύο τρίτα τοὐλάχιστον ἀπὸ μονίμους ὑπαλλήλους. Κατὰ τῆς ἀποφάσεως ταύτης ἐπιτρέπεται προσφυγὴ ἐνώπιον τοῦ Συμβουλίου τῆς Ἐπικρατείας, καθὼς εἰδικώτερον ὁ νόμος ὁρίζει». Διὰ τὴν ἐκ τῆς ὑπηρεσίας ἀποχώρησιν τῶν μονίμων δημοσίων ὑπαλλήλων ἀπαιτεῖται ἡ συμπλήρωσις ὡρισμένης ἡλικίας, καθοριζομένης ἀλλοῦ μὲν ὑπὸ τοῦ Συντάγματος (ἄρθρ. 95), ἀλλοῦ δὲ ὑπὸ τῶν σχετικῶν νόμων, καὶ κυμαινομένης μεταξὺ τοῦ 65 καὶ 75 ἔτους (βλ. *δημόσιος ὑπάλληλος*).

[Προβλ. Θ. *Ἀγγελοπούλου*, «Δίκαιον τῶν πολιτικῶν ὑπαλλήλων ἐν Ἑλλάδι» (1913—1914)]. Χ. Γ. Σ.

**μόνιος** (ὁ) (Moneses) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐρεικοειδῶν*. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μόνιος ὁ μεγαλανθὴς* (Moneses grandiflora), ἰθαγενὴς πόα τῆς Εὐρώπης, καλλιεργουμένη ὡς κοσμητικὸν φυτόν. Δ. Ν. Π.

**μονιὸς** (ὁ)· ὁ κατὰ μόνας ζῶν ἀγριόχοιρος.

**Μονιοῦσκο** (Moniuszko), *Στανίσλαος*. Πολωνὸς μουσουργὸς (1819—1872). Αἱ πολυάριθμοι μελῳ-

Digitized by Google

δίαι του ἔχουσι καθαρῶς ἐθνικὸν χαρακτῆρα. Ἡ ἐπίδρασις τῆς λαϊκῆς μούσης φαίνεται ἐπίσης καὶ εἰς τὰ μελοδράματά του: «Τὸ στρατόπεδον ἐν τοῖς Ἀπεννίνοις» (1840), «Ἰδεώδες», «Λαχεῖον» (1846), «Ὁ νέος Δὸν Κιχώτης», «Χάλκα» (1847), «Φλὶς» (1858), «Ἡ κόμισσα» (1860), «Ὁ πύργος μὲ τὰ φαντάσματα» (1865), «Verbum mobile» (1861), «Παρίας» (1869), «Μπεάτα» (1872), «Μπέττυ», «Ροκιζάνα», «Γιαβνούτα». Τὰ πλεῖστα ἐκ τῶν ἀνωτέρω ἔργων ἀπετέλεσαν τὴν βάσιν τοῦ δραματολογίου τοῦ ἐθνικοῦ πολωνικοῦ μελοδράματος τῆς Βαρσοβίας. Ὁ Μονιοῦσκο ἔγραψεν ἐπίσης: 3 μπαλλέττα, καντάτας, μουσικὴν διὰ τὸν «Ἀμλέτον» καὶ τὰς «Κυράτσες τοῦ Οὐΐνδσορ» τοῦ Σαίξπηρ, τὴν εἰσαγωγὴν «Μπάζκα», πλείστας χορῳδίας κλπ. Γ. Σ.

**μόνιππος** (ὁ, ἡ), **—ον** (τό)· ἐπὶ ὀχήματος, τὸ ἐλαυνόμενον ὑπὸ ἑνὸς ἵππου: «μόνιππος ἅμαξα» ‖ *μόνιππον* (τό)· ὡς οὐσ., ἡ μόνιππος ἅμαξα.

**μονισμὸς** (ὁ). Καλεῖται ἡ κοσμοθεωρία, ἥτις ἀνάγει τὴν ποικιλίαν τῶν ἐν τῷ κόσμῳ εἰς μίαν διὰ τοῦ πνεύματος ἐνορωμένην ἑνότητα, ἢ, ἄλλως, ἥτις ἐκδέχεται μίαν μόνην ἀρχὴν τῶν ὄντων, ἀντιτιθεμένη οὕτω πρὸς τε τὴν διαρχικὴν θεωρίαν καὶ τὴν περὶ πολλότητος. Ὁ μονισμὸς ἀποτελεῖ μέσην τινὰ μεταξὺ ὑλισμοῦ καὶ πνευματοκρατίας διδασκαλίαν, αἵτινες ἀμφότεραι ἐξαίρουσιν ἑκατέρα τὴν ἑτέραν τῶν δύο κυρίων ποιοτήτων τοῦ πραγματικοῦ, ἀκριβῶς ὡς καὶ ἡ διαρχία. Ἀλλ' ἐνῷ αὕτη ἐκδέχεται δύο ἀρχὰς τῶν ὄντων κατὰ τὰς δύο ἐκείνας ἰδιότητας τοῦ πραγματικοῦ, διδάσκει ὁ μονισμός, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς αὐτήν, ὅτι μία μόνον ὑπάρχει ἀρχή, ἐξ ἧς τὰ ὄντα ἐκπηγάζουσιν. Εὕρηται δὲ ἡ περὶ μιᾶς καὶ μόνης ἀρχῆς τῶν ὄντων διδασκαλία αὕτη ἔν τε τῇ θρησκείᾳ καὶ τῇ φιλοσοφίᾳ καὶ τῇ περὶ φύσεως ἐπιστήμῃ. Μονισμόν τινα ἤδη ἀποτελεῖ ἡ περὶ δυνάμεως παράστασις τῆς θρησκείας τῶν κατὰ φύσιν λαῶν, ἔτι δὲ ἡ περὶ Ἀτοὺμ (πανθέου) αἰγυπτιακὴ διδασκαλία, καθ' ἣν οὗτος καταπαύει τὴν μεταξὺ Ὥρου καὶ Σὴθ ἔχθραν, ἀναλαμβάνων ἀμφοτέρους ἐν ἑαυτῷ, πολὺ δὲ μᾶλλον ἡ βεδικὴ καὶ ἡ βραχμανικὴ θρησκεία, ἐν τῇ ὁποίᾳ αἴρεται ἥ τε ψυχολογικὴ (σῶμα-ψυχὴ) καὶ ἡ ἠθικὴ (καλὸν-κακὸν) καὶ ἡ κοσμολογικὴ ἀντίθεσις (θεὸς-κόσμος) διὰ τῆς ταυτίσεως τοῦ ἐγὼ καὶ τοῦ κόσμου, τοῦ Βραχμὰν καὶ τοῦ Ἀτμάν. Κατ' ἐξοχὴν ῥέπουν πρὸς τὸν μονισμὸν οἱ *μυστικοὶ* (βλ. λ.), καθ' ὅσον ἡ πλήρης ἕνωσις θεοῦ καὶ ἀνθρώπου δὲν ἐπιτρέπει οὔτε τὴν ὕπαρξιν ἀτομικῆς συνειδήσεως, οὔτε ὑπερβατικὸν θεόν, ἐκτὸς τοῦ κόμου ὑπάρχοντα. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς φιλοσοφίας τῆς φύσεως ἐδιδάχθη ὁ μονισμὸς ὑπὸ τῶν πρὸ τοῦ Σωκράτους φυσιολόγων, ἀπαντᾷ δὲ καὶ ἐν ταῖς κοσμολογικαῖς θεωρίαις τῶν ὀρφικῶν καὶ ἐν τῇ Γνώσει, συνδεδεμένος μετὰ τῆς θρησκείας, τοσοῦτο μᾶλλον ὅσον ἡ κηρυσσομένη ἑνότης δὲν εἶναί τι τῇ αἰσθήσει ληπτόν, ἀλλ' ἀντικείμενον τῆς πίστεως. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους διέκρινον τὸν μονισμόν, τουτέστι τὴν ῥοπὴν πρὸς τὸ ἀνάγειν τὴν ποικιλίαν εἰς ἑνότητα ἢ ἀντιστρόφως πρὸς τὸ παράγειν καὶ ἐξηγεῖν τὴν ποικιλίαν καὶ πολλότητα ἐκ μιᾶς ἑνιαίας ἀρχῆς, εἰς διάφορα εἴδη, ὡς λ. χ. εἰς *βιολογικόν, ἠθικόν, κοινωνικὸν* καὶ *ἱστορικὸν* μονισμόν, εἰς *ἀνθρωπολογικὸν* καὶ *ψυχολογικόν*, εἰς *κοσμολογικόν*, εἰς *ὀντολογικὸν* μονισμόν. Ὅσα μέλλομεν νὰ εἴπωμεν ἐν τοῖς ἑξῆς ἀναφέρονται κυρίως εἰς τὸν ὀντολογικὸν ἢ μεταφυσικὸν μονισμόν, ὅστις εἶναι καὶ ὁ ἐν τῇ κυρίᾳ σημασίᾳ τῆς λέξεως μονισμός. Οὗτος ἐκδέχεται τὸ φυσικὸν καὶ τὸ ψυχικὸν ὡς δύο τρόπους ἐμφανίσεως ἢ ὡς δύο πλευρὰς κατ' οὐσίαν διαφόρους καὶ ἰσοτίμους καὶ πιστεύει ὅτι ἀποτελοῦσιν ἑνότητα, οὖσαι κατ' οὐσίαν ἓν καὶ τὸ αὐτό. Καὶ κατὰ μὲν τὴν σχέσιν αὐτῶν πρὸς ἀλλήλας εἶναι αἱ δύο αὗται πλευραὶ τοῦ ὄντως ὄντος παράλληλοι, κατὰ δὲ τὴν οὐσιώδη αὐτῶν ἑνότητα αἱ αὐταί. Κατὰ τὴν ἱστορικὴν ἐμφάνισιν αὐτοῦ διακρίνεται ὁ μονισμὸς οὗτος εἰς δύο μορφάς. Κατὰ τὴν μίαν ἐξ αὐτῶν πνεῦμα καὶ ὕλη εἶναι αἱ δύο πλευραὶ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ ὄντος, τὸ ὁποῖον νοεῖται ὡς ἀποτελούμενον ἐξ αὐτῶν, κατὰ δὲ τὴν ἑτέραν τὸ ἑνιαῖον ὄν, οὗ τρόποι ἐμφανίσεως εἶναι ἡ ὕλη καὶ τὸ πνεῦμα, νοεῖται ὡς διάφορον τῶν δύο τούτων τρόπων, ὑφ' οὓς ἐμφανίζεται. Ἡ πρώτη τῶν μορφῶν τούτων ὠνομάσθη *συγκεκριμένος*, ἡ δὲ δευτέρα *ἀφῃρημένος* μονισμός. Ὑπὸ τὸν πρῶτον ὑπάγεται ὁ *ἀνιμισμὸς* (βλ. λ.) τῶν κατὰ φύσιν λαῶν καὶ ὁ ὑλοζωϊσμὸς τῶν πρὸ τοῦ Σωκράτους φυσιολόγων, δικαίως δ' ἐγκατελείφθη ἤδη ἐνωρίς, ἐπειδὴ ἀδυνατεῖ νὰ ἑρμηνεύσῃ τὴν φύσιν τοῦ μεταξὺ φυσικοῦ καὶ πνευματικοῦ ὑφισταμένου συνδέσμου, ὧν κατ' οὐσίαν διαρχία ἀποκρυπτομένη διὰ καταλλήλων λέξεων καὶ ἐκφράζων τὸ αὐτό, ὅπερ καὶ ἡ διαρχία, διὰ διαφόρων ὅρων καὶ εἰκόνων. Ὁ δὲ ἀφῃρημένος μονισμὸς διχάζεται εἰς δύο κατευθύνσεις· ἐκ τούτων ἡ μὲν θεωρεῖ τὸ ὡς ἑνιαῖον νοούμενον ὄντως ὂν ὡς προσιτὸν εἰς τὴν νόησιν καὶ γνωριστόν, ἡ δὲ νομίζει αὐτὸ ὡς παντελῶς ἀγνώριστον. Κλασσικὸς ἀντιπρόσωπος τῆς πρώτης κατευθύνσεως εἶναι ὁ Σπινόζας καὶ μετ' αὐτὸν ἄλλοι τε πολλοὶ καὶ ὁ Spencer, τὴν δὲ δευτέραν ἐκπροσωποῦσι πρὸ πάντων οἱ φιλόσοφοι τῶν χρόνων τοῦ γερμανικοῦ ἰδανισμοῦ, Φίχτε, Σέλιγκ καὶ Ἕγελος. Ὁ μονισμὸς ἐν τῇ ἄκρᾳ αὐτοῦ μορφῇ, δηλαδὴ ὡς ἀπόλυτος ἀντίθεσις πρὸς τὴν πολλότητα, ἀποτελεῖ πλήρη καὶ τελείαν ἄρνησιν αὐτῆς, κηρύττων αὐτὴν ἀπατηλὴν φαντασμαγορίαν, ἀφοῦ μόνον τὸ ἓν κέκτηται πραγματικὴν ὕπαρξιν. Ἐν τῇ μετριοπαθεστέρᾳ ὅμως μορφῇ αὐτοῦ συμπεριλαμβάνει τὴν πολλότητα ἐντὸς τῆς τὰ πάντα ἐν ἑαυτῇ περικλειούσης πρωταρχικῆς ἑνότητος, ὡς λ. χ. συμβαίνει παρὰ Βρούνῳ καὶ Σλαϊερμάχερ. Τέλος τὸ Ἓν εἶναι δυνατὸν νὰ νοηθῇ οὐχὶ ὡς ἐν τῇ πολλότητι ὑπάρχον, ἀλλ' ὡς μεταφυσικὴ ἀρχὴ ὄπισθεν καὶ πέρα αὐτῆς ὑφισταμένη, ἥτις ἀνελίσσει ἐξ ἑαυτῆς τὴν πολλότητα τῶν ὄντων. Τοιαύτη μεταφυσικὴ ἀρχὴ εἶναι ἡ οὐσία παρὰ Σπινόζᾳ, ἡ ἰδέα παρ' Ἕγελῳ καὶ τὸ ἀσυνείδητον παρὰ Χάρτμαννι. Πρὸς τὴν διαρχικὴν περὶ τῶν ὄντων θεωρίαν συγκρινόμενος δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὁ μονισμὸς τὸ μὲν ὡς ἐχθρὸς τῆς παραστάσεως πρωταρχικῆς μεταφυσικῆς ἀντιθέσεως μεταξὺ δύο ἀλλήλαις ἐναντίων πρωταρχικῶν δυνάμεων τῆς ὑπάρξεως, τὸ δὲ ὡς ἐναντίος πρὸς τὴν σαφῆ διάκρισιν μεταξὺ ἐνθάδε καὶ ἐπέκεινα, τὸ δέ, τέλος, ἀντίθετος πρὸς τὴν ἀναγνώρισιν πραγματικῶν διαρχικῶν ἀντιθέσεων ἐντὸς τοῦ εἰς πολλότητα ἀνελισσομένου ὄντως ὄντος, θεωρῶν τὰς ἀτελείας, ἃς ἐμφανίζει ἡ ἐμπειρικὴ ὕπαρξις, ὡς μεταβατικὰ ἁπλῶς σημεῖα, τὰ ὁποῖα γεννῶνται ἐξ ἀνάγκης κατὰ τὴν ἀνέλιξιν τοῦ Ἑνὸς (πρβλ. τὴν παρ' Ἕγελῳ διαλεκτικὴν τῆς ἀνελισσομένης ἰδέας). Ἡ πρὸς τὴν διαρχίαν ἀντίθεσις χαρακτηρίζει καὶ τὸν λεγόμενον *φυσιοκρατικὸν* μονισμόν, ὅστις καθορίζεται ὑπὸ τῆς ἰδέας τῆς φύσεως κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸν παλαιὸν πανθεϊσμόν, ὁ ὁποῖος ἠρνεῖτο τὸν κόσμον. Ὁ μονισμὸς οὗτος, μετάβασιν πρὸς τὸν ὁποῖον ἀποτελεῖ ἤδη κατά τινα τρόπον ὁ Σπινόζας, ὑψῶν τὸ ἐν χώρῳ αἰσθητὸν εἰς ἓν τῶν ἰδιωμάτων τοῦ Ἀπείρου, ἐξοβελίζει τὴν φιλοσοφίαν τῆς φύσεως καὶ στηρίζεται μονομερῶς ἐπὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν. Ἐξαίρων τὸ ἰδανικὸν τῆς ἐπὶ τῆς μηχανοκρατίας στηριζομένης γνώσεως, πειρᾶται νὰ ἐξηγήσῃ τὴν ἑνότητα (τὸ πνεῦμα) ἐκ τῆς πολλότητος καὶ μεταβάλλεται εἰς ὑλισμόν, πρὸς ὃν ἄλλως τε ἐξ ἀρχῆς ἔχει συγγένειαν. Σαφέστατα καταφαίνεται τοῦτο ἐκ τῆς ἐννοίας τῆς ζωῆς, ἀφ' ἧς ὁρμᾶται, ἐπειδὴ οὐδεμίαν ποιεῖται διάκρισιν μεταξὺ ζωῆς ἐν βιολογικῇ ἐννοίᾳ καὶ ἱστορικοῦ καὶ πολιτιστικοῦ βίου τῶν ἀνθρώπων. Κυριώτατοι ἐκπρόσωποι αὐτοῦ κατὰ τοὺς νεωτάτους χρόνους ἐγένοντο ὁ Χαῖκελ καὶ ὁ Ὄστβαλδ, ὅστις εἶναι καὶ ὁ εἰσηγητὴς τοῦ λεγομένου *ἐνεργητισμοῦ*. Ὁ μονισμός, ὅστις οὔτε πρὸς τὸν ὑλισμὸν οὔτε πρὸς τὴν πνευματοκρατίαν δέον νὰ συγχέεται, ἐκπηγάζει ἐκ τῆς νοητικῆς καὶ τῆς αἰσθητικῆς ἀνάγκης τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς πρὸς ἀπηρτισμένην καὶ ἑνιαίαν θεωρίαν τοῦ κόσμου. Ἀλλ' ἂν ὡς ψυχολογικὴ ἀνάγκη εἶναι νοητός, δὲν πρέπει ὅμως νὰ παρορᾶται τὸ γεγονὸς ὅτι ὡς φιλοσοφικὴ θεωρία ἔχει νὰ ἀντιμετωπίσῃ δυσχερείας, τὸ μὲν λογικοῦ, τὸ δὲ ψυχολογικοῦ, τὸ δὲ ἐπιστημονικοῦ χαρακτῆρος καὶ ὅτι φέρει συνήθως τὴν μορφὴν δόγματος, τὸ ὁποῖον πειρᾶται νὰ καταστήσῃ νοητὸν οὐχὶ δι' ἐπιστημονικῶν δεδομένων, ἀλλὰ δι' εἰκόνων, αἵτινες στεροῦνται ἀποδεικτικῆς δυνάμεως.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Joh. Wendland*, Monismus in alter und neuer Zeit (1908).—*Simmel*, Hauptprobleme der Philosophie (1911).—*Külpe*, Einleitung in die Philosophie (1913).—*Richert*, Weltanschauung (1922). —*Schlung*, Die Weltanschauung im Wandel der Zeit (1925).

Ν. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**Μονίτα** *[Βυζαντ.]*. Μέγα οἰκοδόμημα ἐν τῷ Ἑβδόμῳ λόφῳ κατὰ τὰ Δ. τοῦ Βυζαντίου, χρησιμεῦον ὡς θησαυροφυλακεῖον ἢ νομισματοκοπεῖον (ἐκ τοῦ λατ. moneta). Α. Θ. Σ.

**μονιτάρου**, καὶ *ὁλομονιτάρου*· ἰδιωμ., παντελῶς, ὅλως διόλου, συλλήβδην. Δ. Ι. Μ.

**«Μονιτὲρ Γκρὲκ»** (Le Moniteur Grec). Γαλλικὴ ἐφημερίς, ἐκδιδομένη ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ 1845 μέχρι τῆς 30 Ἀπριλίου 1848.

**μονίτης** (ὁ) (Monit) *[Ὀρυκτ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι κατὰ πᾶσαν πιθανότητα

$$Ca_3P_2O_8H_2O.$$

Παρουσιάζεται εἰς κατάστασιν γεώδη μὲ χρῶμα χιονόλευκον. Γ. Β.

**μονίτωρ, —ωρος** (ὁ) (Monitor). Τύπος ἀβαθοῦς καὶ χθαμαλοῦ θωρηκτοῦ σκάφους, ἀπὸ ὀνόματος τοιούτου σκάφους οὗ δημιουργὸς ὑπῆρξεν ὁ Σουηδὸς Ἔρικσον, μελετήσας καὶ πραγματοποιήσας αὐτὸν χάριν τῶν Βορείων κατὰ τὸν Ἀνθενωτικὸν πόλεμον τῆς Ἀμερικῆς. Ἦτο σκάφος ἐπίπλατυ, ἄνευ τρόπιδος, διαστάσεων εἰς πόδας 172 μήκ., 41 ½ πλάτ., 11 βυθίσμ., ἐκτοπίσματος 776 τόννων. Ἔφερε δὲ θωράκισιν ἐκ σφυρηλάτου σιδήρου 5 δακτύλων καθ' ὕφαλον ζώνην, θωρηκτὸν κατάστρωμα 1 δακτύλου, θωρηκτὴν προφυλακτήριον καλύπτραν διὰ τὴν ἕλικα καὶ τὸ πηδάλιον, καὶ πύργον περίστρεπτον διαμέτρου 20 ποδῶν καὶ ἔχοντα θωράκισιν ἐξ ὀκτὼ στιβάδων πάχους 1 δακτύλου ἑκάστης καὶ καλῶς βλητρωμένων ἐπαλλήλως. Δύο πυροβόλα συστήματος Νταλγκρὲν διαμετρήματος 11 δακτύλων καὶ ὧν αἱ προτομαὶ προέβαλλον κατὰ τὴν πυροβόλησιν ἀπὸ δύο παραπλεύρων τοῦ πύργου θυρίδων, ἀπετέλουν τὸ τρομερὸν διὰ τὴν ἐποχήν του πυροβολικὸν αὐτοῦ.

Ἡ ἐμφάνισις τοῦ «Μονίτωρος» ἐπέφερε μεγάλην ἀναστάτωσιν, τὰ δὲ συμπεράσματα, εἰς τὰς περὶ τῆς συνθέσεως τῶν τότε στόλων ἀντιλήψεις, ὑπῆρξαν καταπληκτικά. Τὸ «Μονίτωρ» ἅμα τῇ ναυπηγήσει του (1862) εἰς τὰ ἐν τῇ νήσῳ Λὸγκ Ἄϊλανδ ναυπηγεῖα τοῦ Γκρὴν Πόϊντς ἐξέπλεε τὴν 6 Μαρτίου τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἀπὸ τοῦ λιμένος τῆς Νέας Ὑόρκης. Τὴν νύκτα τῆς 8ης κατέπλεεν εἰς Χάμπτον Ρόοδς, ὀλίγας ὥρας μετὰ τὸν καταπλήξαντα τὸν κόσμον θρίαμβον τοῦ ἀντιπάλου του ναυπηγικοῦ τέρατος, τοῦ «Μέρριμακ» (βλ. λ.) τῶν Νοτίων. Τὴν αὐγὴν τῆς ἐπομένης ἐπλησίασε τὸ «Μέρριμακ» καὶ ἤρχισε σφοδρὰ μάχη μεταξὺ αὐτῶν, διαρκέσασα μέχρι τῆς μεσημβρίας καὶ διακοπεῖσα λόγῳ ὑπερκοπώσεως τῶν ἑκατέρωθεν πληρωμάτων· ἐν

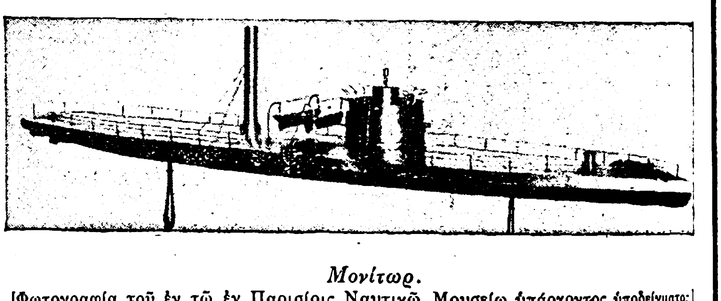

*Μονίτωρ.*

[Φωτογραφία τοῦ ἐν τῷ ἐν Παρισίοις Ναυτικῷ Μουσείῳ ὑπάρχοντος ὑποδείγματος.]

τούτοις, παρὰ τὸν μέγαν ἀριθμὸν τῶν ὀβίδων, οὐδεμία οὐσιώδης βλάβη ἐσημειώθη εἰς οὐδέτερον τῶν ἀντιπάλων, τοῦ μόνου κέρδους τῶν Βορείων ἐκ τῆς ναυμαχίας ὄντος τῆς διασώσεως τῶν φρεγατῶν «Minessota», «Reanock» καὶ «Saint Laurence» τὰ ὁποῖα θὰ κατεβύθιζε τὸ «Μέρριμακ» ἄνευ τῆς παρεμβολῆς τῆς μονομαχίας του πρὸς τὸ «Μονίτωρ» καὶ ἡ ἐξακολούθησις τοῦ ἀποκλεισμοῦ τοῦ Χάμπτον Ρόοδς. Βραχὺ ὅμως ὑπῆρξε τὸ στάδιον τοῦ «Μονίτωρος», καθ' ὅσον ῥυμουλκούμενον ἀπὸ Κάμπτον Ρόοδς εἰς Τσάρλεστον ἐβυθίσθη λόγῳ κυκλῶνος ἔξωθεν τοῦ ἀκρωτηρίου Χαττερὰς, 4 ἀξιωματικῶν του καὶ 12 ναυτῶν του μὴ δυνηθέντων νὰ διασωθῶσι (30 Δεκεμβρίου 1862).

Τὸν τύπον τοῦ μονίτωρος, τὸν ὁποῖον κατὰ καιροὺς ἠθέλησαν νὰ ἐπαναφέρουν τελειοποιημένον, ἐχρησιμοποίησαν κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον τελεσφόρως οἱ Ἄγγλοι, διὰ τὰς ἀνὰ τὰς βελγικὰς ἀκτὰς ἐπιχειρήσεις των, ναυπηγήσαντες μονίτωρας ἑνὸς πυροβόλου τῶν 17 δακτύλων. Σ. Ε. Λ.

**μονιωδακετόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον ἀλογονωμένον τῆς *ἀκετόνης* τοῦ τύπου $CH_2J.CO.CH_3$. Λίαν δυσαρέστου ὀσμῆς κιτρινωπὸν ὑγρόν. Σ. Γ.

**μονιωδιακεταλδεΰδη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τῆς *ἀκεταλδεΰδης* τοῦ τύπου $CH_2J.CHO$. Εὐκόλως ἀποσυντιθέμενον ὑγρόν. Σ. Γ.

**μονιωδοξικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τοῦ *ὀξικοῦ ὀξέος* τοῦ τύπου $CH_2J.COOH$. Ἄχρουν κρυσταλλικὸν σῶμα τηκόμενον εἰς 83°. Σ. Γ.

**Μὸνκ** (Monk ἢ Monck), ***Γεώργιος***, πρῶτος δοὺξ τοῦ ***Ἀλμπεμαρλ***. Ἄγγλος στρατηγὸς (1608–1670). Ὑπῆρξε τὸ ὀνομαστότερον πρόσωπον κατὰ τὸν πόλεμον μεταξὺ βασιλοφρόνων καὶ κοινοβουλευτικῶν, μετὰ τὸν Κρόμβελ. Ἦτο υἱὸς ἀπόρου ἀγρότου καὶ κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἐθελοντὴς εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν, λαβὼν κατ' ἀρχὰς μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Κάδιξ καὶ κατόπιν πολεμήσας ἐν Ὁλλανδίᾳ καὶ ἐν τῇ πολιορκίᾳ τῆς Μπρέντα τῷ 1637. Ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Σκωτίας, πρὸς καταστολὴν τῆς ὁποίας ἀπεστάλη μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ἐπαναστάσεως ταύτης ἀπεστάλη πρὸς καταστολὴν καὶ τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Ἰρλανδίας μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, ἀπέκτησε δὲ τοσαύτην δημοτικότητα, ὥστε βασιλόφρονες καὶ κοινοβουλευτικοὶ συνηγωνίζοντο νὰ τὸν προσελκύσουν μὲ τὸ μέρος των. Ἐπειδὴ δὲ οὗτος κατ' ἀρχὰς ἀμφεταλαντεύετο, ὁ βασιλεὺς διέταξε τὴν σύλληψίν του καὶ τὴν ἐγκάθειρξίν του ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Λονδίνου τῷ 1644, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ δύο ἔτη. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του προσεχώρησεν ὁριστικῶς εἰς τοὺς κοινοβουλευτικούς, οἵτινες ὠνόμασαν αὐτὸν στρατηγὸν καὶ διοικητὴν τῶν στρατευμάτων τοῦ Ὥλστερ ἐν Ἰρλανδίᾳ, ὁπόθεν, μετὰ περιφανεῖς νίκας, ἀπεστάλη εἰς τὴν Σκωτίαν καὶ

Digitized by Google

μετὰ τὴν νίκην τοῦ Ντένμπαρ ὠνομάσθη ὑπὸ τοῦ Κρόμβελ ἀρχιστράτηγος, κατορθώσας νὰ καθυποτάξῃ ὁλόκληρον τὴν χώραν. Τῷ 1653 ὑπῆρξεν ἐκ τῶν τριῶν ναυάρχων, οἵτινες διηύθυνον τὴν ἐκστρατείαν κατὰ τῆς Ὁλλανδίας, τῷ 1654 ὅμως ἐπέστρεψεν ἐκ νέου εἰς Σκωτίαν, ὅπου κατέστειλε τὴν νέαν ἐκεῖ ἐκραγεῖσαν ἐπανάστασιν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κρόμβελ, ἦλθεν εἰς συνεννοήσεις μὲ τοὺς βασιλόφρονας καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν παλινόρθωσιν τῆς βασιλείας, ὑποδεχθεὶς εἰς Ντοῦβρ ἐπισήμως τὸν βασιλέα Κάρολον Β΄, μετὰ τοῦ ὁποίου εἰσῆλθε θριαμβευτικῶς εἰς τὸ Λονδῖνον. Ὁ βασιλεὺς ἐπιδαψίλευσεν εἰς αὐτὸν μεγάλας τιμάς, τὸν ὠνόμασε δοῦκα τῆς Ἄλμπεμαρλ, ἰδιαίτερον σύμβουλον καὶ κυβερνήτην τοῦ Μίντλεσεξ καὶ Ντέβον. Ὁ Μὸνκ δὲν κατεχράσθη τῆς τεραστίας ἐξουσίας καὶ ἐπιρροῆς τὴν ὁποίαν συνεκέντρωνε κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην εἰς χεῖράς του, περιορισθεὶς εἰς καθαρῶς στρατιωτικὰ καθήκοντα. Τῷ 1666 ἐπολέμησεν ἐκ νέου κατὰ τῆς Ὁλλανδίας, νικήσας, ἕνα μῆνα μετὰ τὴν ἧτταν ἣν ὑπέστη ἔν τινι ναυμαχίᾳ (ἥτις διήρκεσεν ἐπὶ τέσσαρας ἡμέρας), κατὰ κράτος τοὺς ἀντιπάλους του. Τῷ 1667 ὠνομάσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν, ἀλλὰ παρῃτήθη μετ᾽ ὀλίγον ἵνα ἰδιωτεύσῃ. Ὁ Μὸνκ θεωρεῖται ἐκ τῶν ἱκανωτέρων Ἄγγλων ἀξιωματικῶν, διακριθεὶς ἰδίως ὡς ὀργανωτὴς τοῦ στρατοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μονκαλιέρι** (Moncalieri) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Πεδεμοντίῳ καὶ τῷ νομῷ τοῦ Τουρίνου. Κάτ. 10.743. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τουρίνου - Γενούης καὶ ἔχει πολλὰ ἐνδιαφέροντα μεσαιωνικὰ καὶ ἄλλα κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων ναὸν τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος, βασιλικὸν ἀνάκτορον ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχει πλουσία πινακοθήκη, μετεωρολογικὸν σταθμόν, ἰνστιτοῦτον κλπ. Ἔχει βιομηχανίαν ὑφασμάτων, φωσφόρου, ἀλεύρων καὶ ἀσβέστου. Ἐκτίσθη κατὰ τὸν ΙΒ΄ αἰῶνα ἐπὶ τῆς τοποθεσίας τῆς ἀρχαίας Testona. Παρ᾽ αὐτὴν ὑπάρχει ἀεροπορικὴ σχολὴ καὶ τὸ ἀεροδρόμιον Μιραφιόρι. Μ. Δ. Β.

**Μονκὰλμ** (Montcalm), ***Λουδοβῖκος - Ἰωσὴφ ντὲ Σαὶν-Βερὰν*** (Saint-Véran), *μαρκήσιος ντὲ —*. Γάλλος στρατηγὸς (1712—1759). Εἰσελθὼν νεώτατος εἰς τὸν στρατόν, ἐγένετο λοχαγὸς τῷ 1729 καὶ συνταγματάρχης τῷ 1743, ἐπληγώθη πεντάκις εἰς διαφόρους μάχας, προαχθεὶς δὲ τῷ 1756 εἰς στρατηγὸν τοῦ ἱππικοῦ, ἀπεστάλη εἰς Καναδᾶν διὰ νὰ ὑπεραμυνθῇ τῆς ἀποικίας ταύτης ἐναντίον τῶν Ἄγγλων. Διαθέτων ἀσθενεῖς σχετικῶς δυνάμεις ὁ Μονκάλμ, ἐκράτησεν ἐν τούτοις ἐπὶ μακρὸν ἡρωϊκὴν ἄμυναν, μέχρις οὗ ἐπολιορκήθη τῷ 1759 ἐντὸς τῆς Κεμπὲκ ὑπὸ πολυαρίθμου ἀγγλικοῦ στρατοῦ, διοικουμένου ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Βόλφ. Μετὰ δίμηνον πολιορκίαν ὁ Μονκὰλμ ἐπεχείρησεν ἔξοδον μὲ 10.000 ἄνδρας ἔναντι 30.000 τοῦ ἀντιπάλου. Κατὰ τὴν αἱματηρὰν σύρραξιν, ἥτις ἐπηκολούθησεν, ἀμφοτέροι οἱ στρατηγοὶ ἐφονεύθησαν, ἡ πόλις ὅμως περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἄγγλους. Ἐν ἔτει 1827 ἡ ἀγγλικὴ διοίκησις τοῦ Καναδᾶ ἤγειρε κοινὸν μνημεῖον εἰς τοὺς στρατηγοὺς Μονκὰλμ καὶ Βόλφ. — Ω.

**Μονκάντα, *Ματθαῖος***. Ἐπίτροπος τοῦ δουκάτου τῶν Ἀθηνῶν καὶ κληρονομικὸς στρατοπεδάρχης τοῦ Φρειδερίκου Γ΄ βασιλέως τῆς Σικελίας (1355—1376), ὅστις θὰ καθίστα τὸν Μονκάντα δυνάστην τῆς Κορίνθου καὶ τοῦ Ἄργους, ἐὰν οὗτος ἤθελε δυνηθῇ νὰ καταλάβῃ τὰς πόλεις ταύτας, ἃς κατεῖχεν ὁ οἶκος τῶν Βρυεννίων. Καὶ τῶν μὲν πόλεων ἐκείνων δὲν ἠδυνήθη ὁ Μοκάντα νὰ δεσπόσῃ, κατώρθωσεν ὅμως ν᾽ ἀποδιώξῃ τοὺς τὰς Θήβας καταλαβόντας Τούρκους τῷ 1363, ὅτε ἠπειλήθη ὑπ᾽ αὐτῶν τὸ ἐν τῇ Στερεᾷ Ἑλλάδι κράτος της ἑταιρείας τῶν Καταλωνίων.

**Μονκοντοὺρ** (Moncontour) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Βιέννης, παρὰ τὴν ὁποίαν τῷ 1569 οἱ καθολικοὶ ὑπὸ τὸν δοῦκα τῆς Ἀνδηγαυΐας, τὸν κατόπιν Ἑρρῖκον Γ΄, ἐνίκησαν τοὺς διαμαρτυρομένους τοῦ Κολινιύ. Κάτ. 720. Χ. Δ.

**Μονκορμπιὲ** (Montcorbier), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος ποιητὴς (βλ. λ. *Βιγιὸν* Φραγκῖσκος).

**Μονκρετιὲν** (Montchrétien), ***Ἀντώνιος ντὲ —***. Γάλλος οἰκονομολόγος (1576—1621). Ἰδιοκτήτης σιδηρουργείου, ἔσχεν ἐκ παραλλήλου ποιάν τινα ἐπίδοσιν ὡς ποιητὴς καὶ δραματικὸς συγγραφεύς. Κυρίως φημίζεται διὰ τὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Taité d'œconomie politique» (1615, νέα ἔκδοσις μετὰ μακρᾶς εἰσαγωγῆς ὑπὸ *Funck - Brentano* 1889) πραγματείαν του, ἐν τῇ ὁποίᾳ τὸ πρῶτον ἡ οἰκονομικὴ ἐπιστήμη φέρεται ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας. Τὸ ἔργον τοῦτο στερεῖται πρωτοτυπίας καὶ ἀποτελεῖ κυρίως ἀπάνθισμα τῶν μέχρι τῆς ἐποχῆς του διδαχθέντων. Ἐσχάτως κατεβλήθη προσπάθεια, ὅπως ὁ Μονκρετιὲν ἀναγνωρισθῇ ὡς ἱδρυτὴς τῆς οἰκονομικῆς ἐπιστήμης. Α.Α.Τ.

**Μονκρὶφ** (Moncrif), ***Φραγκῖσκος - Αὔγουστος ντὲ —***. Γάλλος συγγραφεὺς (1687 — 1770). Ἱκανὸς μουσικὸς καὶ ποιητής, κατέλαβε διαφόρους θέσεις γραμματέως πλησίον σημαινόντων προσώπων τῆς ἐποχῆς του. Ἐγένετο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἔγραψε πλεῖστα ποιήματα, μυθιστορήματα, κωμῳδίας, ἐν αἷς: «Ἡ ψευδὴς μαγεία» (1719), «Τὸ μαντεῖον τῶν Δελφῶν» (1722) κλπ. Ι. Μ. Τ.

**Μόνκτον** (Moncton) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Καναδᾶ, ἐν τῷ νομῷ τῆς Νέας Βρουνσβίκης, παρὰ τὸν ποταμὸν Πτὶ-Κοντιάκ. Κάτ. 17.488. Εἶναι σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ πόλις βιομηχανικὴ μὲ ἐργοστάσια ἀτμομηχανῶν, ἀνεμομύλους κτλ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν καὶ τὰ κεντρικὰ ἐργοστάσια τῶν ἀποικιακῶν σιδηροδρόμων. Μ. Δ. Β.

**Μονλερὺ** (Montlhéry) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σηκουάνα-Ουάζ, ἔχουσα παλαιὸν ἀκρόπυργον ὀχυροῦ ἀνακτόρου τοῦ ΙΑ΄ αἰῶνος, καταστραφέντος ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Χονδροῦ. Τῷ 1465 συνήφθη ἐν Μονλερὺ ἀμφίρροπος μάχη μεταξὺ Λουδοβίκου ΙΑ΄ καὶ τοῦ στρατοῦ τοῦ συνασπισμοῦ «Ligue du Bien public». Κάτ. 2.400. Χ.Δ.

**Μονλοζιὲ** (Montlosier), ***Φραγκῖσκος-Δομίνικος ντὲ Ρεϋνὼ*** (Reynaud), *κόμις ντὲ —*. Γάλλος δημοσιολόγος καὶ πολιτικὸς (1755—1838). Ἀποσταλεὶς εἰς τὴν συντακτικὴν ἐθνοσυνέλευσιν ὡς ἀντιπρόσωπος τῶν εὐγενῶν τῆς ἐπαρχίας του, διεκρίθη μεταξὺ τῶν πλέον ἀποφασιστικῶν καὶ ἐνεργητικῶν μελῶν τῆς δεξιᾶς. Μετὰ τὴν διάλυσιν αὐτῆς ἐγκατέλιπε τὴν Γαλλίαν, ὑπηρέτησεν εἰς τοὺς στρατοὺς τῶν πριγκίπων κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ 1792, εἶτα δέ, ἐγκατασταθεὶς ἐν Ἀγγλίᾳ, ἐξέδιδεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη τὸν «Λονδίνειον Ταχυδρόμον», ἐφημερίδα ἀντιεπαναστατικήν. Μετὰ τὴν 18ην Ὁμιχλώδους ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν, ἐξέδωκε δὲ τότε τὸν «Λονδίνειον καὶ Παρισινὸν Ταχυδρόμον». Μετὰ τὴν παῦσιν τῆς ἐφημερίδος ταύτης ἔλαβε σύνταξιν παρὰ τοῦ Βοναπάρτου, ὅστις τῷ ἀνέθηκε τὴν σύνταξιν ἄρθρων κατὰ τῆς Ἀγγλίας διὰ τὸ «Παρισινὸν Δελτίον», βραδύτερον δέ, γενόμενος αὐτοκράτωρ, τὸν ἐπεφόρτισε νὰ συγγράψῃ ἱστορικοπολιτικὸν ἔργον ἐπὶ τῆς ἐν Γαλλίᾳ μοναρχίας. Τὸ ἔργον τοῦτο, περατωθὲν μετὰ τετραετίαν, κατεσχέθη ὑπὸ τῆς λογοκρισίας, λόγῳ τῶν ἐν αὐτῷ ἐκδηλουμένων φεουδαλιστικῶν τάσεων, μόλις δὲ τῷ 1814 ἐπετράπη ἡ ἔκδοσίς του. Ὁ Μονλοζιέ, ἐπιφορτισθεὶς κατόπιν τὴν διεύθυνσιν τῆς ὑπηρεσίας πολιτικῶν πληροφοριῶν, ἐτήρησεν ἐπί τινα χρόνον προσωπικὴν ἀλληλογραφίαν μετὰ τοῦ Ναπολέοντος, ἀλλὰ τῷ 1812 ἔπαυσε νὰ ὑπηρετῇ τὴν αὐτοκρατορίαν καὶ ἐταξίδευσεν εἰς Ἰταλίαν. Ἐπανελθὼν μετὰ τὴν παλινόρθωσιν (1816), κατεπολέμησε σφοδρῶς τὴν πολιτικὴν ἣν ἠκολούθει τὸ κόμμα τῶν ὑπερβασιλοφρόνων (ultra-royalistes) καὶ ἰδίως τὴν κυβέρνησιν Villèle. Διέβλεπεν ἰδίως σοβαροὺς κινδύνους διὰ τὴν μοναρχίαν ἐκ τῆς ἀναμίξεως τῶν ἰησουϊτῶν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ δὲν ἐδίστασε νὰ ἐπιτεθῇ ἀπροκαλύπτως, τῷ 1826, κατ᾽ αὐτῶν διὰ τοῦ βιβλίου του «Περὶ ἑνὸς θρησκευτικοῦ καὶ πολιτικοῦ συστήματος, τείνοντος ν᾽ ἀνατρέψῃ τὴν θρησκείαν, τὴν κοινωνίαν καὶ τὸν θρόνον». Τὸ βιβλίον του αὐτὸ εἶχε τεραστίαν ἀπήχησιν καὶ κατέστησε δημοφιλέστατον τὸν Μονλοζιέ, ὅστις μολονότι ἀποστερηθεὶς τῆς συντάξεώς του ἐκ μέρους τῆς κυβερνήσεως, ἐσυνέχισεν ἐν τούτοις τὴν πολεμικήν του κατὰ τῶν ἰησουϊτῶν καὶ συνέβαλεν οὕτω ἐμμέσως, ὄχι μόνον εἰς τὰ συμβάντα τοῦ 1828, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830. Τῷ 1832, ἐπὶ Λουδοβίκου-Φιλίππου, εἰσῆλθεν εἰς τὴν βουλὴν τῶν ὁμοτίμων, ὅπου ὑπερημύνθη διὰ πολλῶν ἀγορεύσεών του τῆς μοναρχίας τοῦ Ἰουλίου. Ὅταν ἀπέθνησκεν, ὁ ἐπίσκοπος τοῦ Κλερμὸν τὸν ἐβίαζεν ἐπὶ τῆς ἐπιθανατίου κλίνης ν᾽ ἀποκηρύξῃ τὰ ὅσα εἶχε γράψει ἐναντίον τοῦ παπικοῦ κόμματος, ἀλλ᾽ ὁ Μονλοζιὲ ἠρνήθη μὲ τὴν συνήθη του ἐνεργητικότητα καὶ ἐξέπνευσε χωρὶς νὰ κοινωνήσῃ τῶν ἀχράντων μυστηρίων, δι᾽ ὃ καὶ δὲν ἐπετράπη νὰ κηδευθῇ ἐκκλησιαστικῶς. Μεταξὺ τῶν πολλῶν ἔργων του, παρεκτὸς τῶν προαναφερθέντων, σημειοῦμεν ἀκόμη τὰ κατωτέρω: «Δοκίμιον περὶ τῆς τέχνης τοῦ συγκροτεῖν τοὺς λαούς» (Παρίσιοι 1791), «Περὶ τῆς ἀνάγκης μιᾶς ἀντεπαναστάσεως ἐν Γαλλίᾳ» (1791), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ σχεδίου πολιτικοῦ κώδικος» (1801), «Περὶ τῆς γαλλικῆς μοναρχίας» εἰς σειρὰν 8 τόμων ἀναγομένων εἰς τὰς διαφόρους ἱστορικὰς ἐποχὰς μέχρι τοῦ 1824 (ἐκδοθέντων δὲ ἀπὸ 1814—1824), «Κατηγορίαι κατὰ τῶν ἰησουϊτῶν» (1826), «Ἀπομνημονεύματα ἐπὶ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως: ἡ ὑπατεία, ἡ αὐτοκρατορία, ἡ παλινόρθωσις» (1829, 2 τόμ.), «Περὶ τῆς παρούσης καὶ περὶ τῆς προπαρασκευαζομένης κρίσεως» (1830) κλπ. —Ω.

**Μονλὺκ** (Monluc ἢ Montluc), ***Μπλαὶζ ντὲ —***. Γασκόνος ἀξιωματικὸς (1501—1577), διακριθεὶς διὰ τὸν ἡρωϊσμόν του. Συμμετέσχεν εἰς ὅλας τὰς ἐκστρατείας ἐπὶ βασιλέως Φραγκίσκου Α΄, ἐδοξάσθη δὲ ἰδίως ἐπὶ Ἑρρίκου Β΄, ὁπότε διηύθυνε θαυμασίως τὴν ἄμυναν τῆς Σιένας (1555). Ἐπὶ τῶν θρησκευτικῶν πολέμων διῴκησε τὰ βασιλικὰ στρατεύματα ἐν Γουϊέννῃ καὶ ἐπολέμησε νικηφόρως τοὺς Οὐγενότους. Τραυματισθεὶς τότε εἰς τὸ πρόσωπον, παρέμεινεν ἐν ἀποστρατείᾳ ἐπὶ δύο ἔτη, κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ὁποίων ἔγραψε τὰ «Ἀπομνημονεύματα» του, ἐκδοθέντα τὸ πρῶτον τῷ 1592. Ἐπανελθὼν εἰς τὸν στρατὸν τῷ 1573, προήχθη τὸ ἑπόμενον ἔτος εἰς στρατάρχην. —Ω.

**Μονλυσὸν** (Montluçon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Ἀλλιέ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σέρ, 73 χλμ. ΝΔ. τοῦ Μουλέν. Ἔχει σταθμὸν τῶν σιδηροδρόμων τῆς Ὀρλεάνης καὶ βιομηχανίας ὑάλου, χημικῶν προϊόντων, χυτήρια, σιδηρουργεῖα κλπ. Κάτ. 33.800. Ἡ ἐπαρχία περιλαμβάνει 8 δήμους, διῃρημένους εἰς 93 κοινότητας καὶ ἔχει 133.600 κατ. Χ. Δ.

**Μονμάρτρη** (Montmartre) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸν προάστειον τῶν Παρισίων, συμπεριληφθὲν ἀπὸ τοῦ 1860 εἰς τὴν ἐντὸς τῶν ὀχυρώσεων περιοχὴν καὶ ἀποτελοῦν σήμερον μεγάλην συνοικίαν τῆς ΙΗ΄ περιφερείας (arrondissement). Κεῖται ἐπὶ τῶν κλιτύων ὁμωνύμου λοφίσκου, εἰς τοῦ ὁποίου τὴν κορυφὴν ἐγείρεται ὁ παλαιός, τύπου βασιλικῆς, ναὸς τοῦ Sacré-Coeur. Ἡ Μονμάρτρη ἐκτείνεται εἰς τὸ Β. τμῆμα τῆς πόλεως, τὰ δὲ πρὸς Ν. ἐπίσημα ὅρια αὐτῆς καθορίζει ἡ λεωφόρος Κλισύ. Ἔχει στενὰς ὁδοὺς καὶ παλαιὰς οἰκίας, κατέστη ὅμως παγκοσμίως γνωστὴ ὡς κέντρον εὐθύμων διασκεδάσεων. Ἐν Μονμάρτρῃ κατοικοῦσι κυρίως οἱ πολυάριθμοι καλλιτέχναι τῶν Παρισίων, γυναῖκες τοῦ ἡμικόσμου, πτωχοὶ λογοτέχναι καὶ σπουδασταὶ κλπ., δίδοντες εἰς αὐτὴν διὰ τοῦ τρόπου τῆς ζωῆς των ἐντελῶς ἰδιότυπον χαρακτῆρα. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἡ κίνησίς της ἦτο πολὺ μεγαλυτέρα τῆς σημερινῆς, ἐλειτούργουν δ᾽ ἐν αὐτῇ πλεῖστα πάσης φύσεως κέντρα διασκεδάσεων καὶ ἰδίως τὰ ὑπὸ τὸ ὄνομα «cabaret» γνωστὰ ποτοπωλεῖα. Ἰδιαιτέρως γνωστὰ κέντρα τῆς Μονμάρτρης εἶναι τὸ καμπαρὲ ὁ «Μαῦρος Γάτος», τὸ ἐπὶ τῆς λεωφόρου Κλισὺ «Μουλὲν-Ρουζ» κλπ. Μεγάλη ἀμφισβήτησις ὑπάρχει ὅσον ἀφορᾷ τὴν παραγωγὴν τοῦ ὀνόματος τῆς Μονμάρτρης. Κατ᾽ ἄλλους προῆλθεν ἐκ τοῦ mont de Mars (=ὄρος τοῦ Ἄρεως), κατ᾽ ἄλλους ἐκ τοῦ mont de Mercure (=ὄρος τοῦ Ἑρμοῦ) καὶ κατ᾽ ἄλλους τέλος ἐκ τοῦ mont de Martyrs (=ὄρος τῶν Μαρτύρων). Τὰ ὀνόματα ταῦτα δεικνύουσιν ὅτι ἡ ὕπαρξις τῆς Μονμάρτρης ἀνάγεται εἰς τὴν ἀπωτάτην ἀρχαιότητα. Ἐπὶ τοῦ λόφου τῆς Μονμάρτρης, ἔνθα πιθανῶς ὑπῆρχε ναὸς τοῦ Ἑρμοῦ, ἐμαρτύρησαν οἱ ἅγιοι Διονύσιος, Ἐλευθέριος καὶ Ρούστικος. Κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ μεσαίωνος ἀναφέρεται δίς. Τῷ 886 ὁ Κόμις Ἒντ ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ λόφου διὰ νὰ ἐμψυχώσῃ τὸ ἠθικὸν τῶν ὑπὸ τῶν Νορμανδῶν πολιορκουμένων Παρισινῶν, τῷ δὲ 977 ὁ αὐτοκράτωρ Ὄθων ἐστρατοπέδευσεν ἐπ᾽ αὐτοῦ. Βραδύτερον, κατὰ τὴν πολιορκίαν τῶν Παρισίων τοῦ 1590, ὁ βασιλεὺς Ἑρρῖκος Δ΄ διέμενεν εἰς τὸ ἐν Μονμάρτρῃ ἀπὸ τοῦ 1133 ἱδρυθὲν γυναικεῖον ἀββαεῖον. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Κομμούνας τοῦ 1871 ἡ ἐξέγερσις τοῦ ὄχλου ἐξεδηλώθη τὸ πρῶτον ἐν Μονμάρτρῃ διὰ τῆς δολοφονίας τῶν στρατηγῶν Λεκὸντ καὶ Κρεμὰν-Τομὰς (18 Μαρτίου). Τῷ 1798 ἐπὶ τῶν Δ. κλιτύων τοῦ λόφου ἱδρύθη τὸ ὁμώνυμον κοιμητήριον ἢ βόρειον νεκροταφεῖον τῶν Παρισίων. Ἐν αὐτῷ ὑπάρχουσιν οἱ τάφοι τῶν Καβαινιάκ, Π. Ντελαρός, Ἀδ. Ἀντάμ, ντὲ Βιλλεμαίν, Ὀρατ. Βερνέ, Θεοφ. Γκωτιὲ κλπ. Χ. Δ.

**Μονμερκὲ** (Monmerqué), ***Λουδοβῖκος-Ἰωάννης-Νικόλαος***. Γάλλος λογογράφος καὶ ἱστορικὸς (1780—1860). Σπουδάσας νομικὰ ἠκολούθησε τὸ δικαστικὸν στάδιον καὶ ὑπηρέτησεν ὡς δικαστὴς ἐν Παρισίοις ἀπὸ τοῦ 1811 μέχρι τοῦ 1852. Τὰς ὥρας ὅμως τῆς σχολῆς του ἀφιέρωνεν εἰς φιλολογικὰς καὶ ἱστορικὰς μελέτας, συνέγραψε δὲ πολλὰ ἀξιόλογα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἱστορικὸν σημείωμα περὶ τοῦ Μπραντὸμ» (1823), «Σημείωμα περὶ τῆς κυρίας ντὲ Μαιντενὸν» (1828), «Διάλεξις περὶ τοῦ Ἰωάννου Α΄, βασιλέως τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Ναβάρρας» (1844), «Τὸ γαλλικὸν θέατρον κατὰ τὸν μεσαίωνα» (1839) κλπ. Ἐξέδωκεν ἐξ ἄλλου, μετὰ κριτικῶν σχολίων, τὰς «Ἐπιστολὰς τῆς κυρίας ντὲ Σεβινιὲ» (1818—1819, 10 τόμοι) καὶ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Petitot «Συλλογὴν ἀπομνημονευμάτων σχετικῶν μὲ τὴν ἱστορίαν τῆς Γαλλίας» (1819—1829, 131 τόμοι). Ὁ Μονμερκὲ εἶχεν ἐκλεγῆ ἀπὸ τοῦ 1833 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ καλῶν τεχνῶν. —Ω.

**Μονμιράϊγ** (Montmirail) *[Γεωγρ.]*. Ἱστορικὴ κωμόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μάρνη, κειμένη ἐπὶ τοῦ Μικροῦ Μορέν, εἰς ἀπόστασιν 39 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἐπερναί. Κάτ. 2.340. Εἶναι σιδηροδρομικὸς σταθμός. Παρ᾽ αὐτὴν τὴν 11 καὶ 12 Φεβρουαρίου 1814 ὁ Μέγας Ναπολέων ἐνίκησε τοὺς Ρώσους καὶ τοὺς Πρώσσους. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατεστράφη ἐν μέρει ἐκ βομβαρδισμοῦ. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Γαλλίας τοῦ 1814 (βλ. λ. *Ναπολεόντειοι* πόλεμοι *[Στρατ. Ἱστορ.]*), τὸ ρωσικὸν στράτευμα τοῦ στρατηγοῦ Σάκκεν (δύο σώματα στρατοῦ καὶ ἓν σῶμα ἱππικοῦ, ἐν ὅλῳ 20.000 ἄνδρες), πορευόμενον πρὸς *Μονμιράϊγ*, κατὰ διαταγὴν τοῦ ἀρχιστρατήγου Μπλύχερ, εὑρέθη τὴν πρωΐαν τῆς 11ης Φεβρουαρίου 1814 δυτικῶς τῆς μεγάλης βαθείας χαράδρας



Digitized by Google

Ὢτ Ἐπίν, εἰς τὸν μεταξὺ τοῦ χωρίου Ὢτ Ἐπὶν καὶ τοῦ ποταμοῦ Μορὲν χῶρον, μὲ τὸ ἱππικὸν ἀνατολικῶς τῆς χαράδρας, προκαλῦπτον τὸ σῶμα τοῦτο, καθ' ὃν χρόνον τὸ πρωσσικὸν σῶμα στρατοῦ τοῦ στρατηγοῦ Ὑόρκ, πορευόμενον καὶ τοῦτο πρὸς Μονμιράϊγ, εὑρίσκετο ἀρκετὰ πρὸς τὰ ὀπίσω καὶ βορειοδυτικῶς τοῦ ρωσικοῦ σώματος (τὰ συμμαχικὰ ταῦτα στρατεύματα εὑρίσκοντο κατὰ τὴν πρωΐαν ἐκείνην ἐντελῶς κεχωρισμένα τὸ ἓν τοῦ ἄλλου). Σπεύσας τότε ὁ Ναπολέων (ἓξ μεραρχίαι καὶ τὸ ἱππικὸν τῆς φρουρᾶς, ἐν ὅλῳ 15.000 ἄνδρες), ἐντὸς τῆς πρωΐας τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας πρὸς Μονμιράϊγ, ἀνέλαβε τὴν ἐπίθεσιν κατὰ τῆς μᾶλλον προκεχωρημένης φάλαγγος (τῆς ρωσικῆς) καὶ τοιουτοτρόπως ἐπηκολούθησεν ἡ *μάχη τοῦ Μονμιράϊγ* (11 Φεβρουαρίου 1814). Ὁ Ναπολέων, ἀφοῦ ἔταξεν ὀλίγην δύναμιν πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Σατὼ Τιερρύ, ἵνα ἐπιτηρῇ τὴν ἑτέραν συμμαχικὴν φάλαγγα (τὴν πρωσσικήν), τὴν ἐκ τῆς κατευθύνσεως ταύτης ἀναμενομένην, ἐπετέθη διὰ τῆς ἐπιλοίπου δυνάμεως κατὰ τῶν Ρώσων, ἔχων τὸ σχέδιον ὅπως διὰ τοῦ δεξιοῦ (στρατάρχου Νέϋ), ὑποστηριζομένου ὑπὸ τοῦ ἱππικοῦ, ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ τῶν Ρώσων, ἵνα ὑπερκεράσῃ τὴν ρωσικὴν ταύτην φάλαγγα καὶ τοιουτοτρόπως τὴν ἀποχωρίσῃ ἀπὸ τῆς βορειοδυτικωτέρας πρωσσικῆς. Ἀφοῦ λοιπὸν κατέλαβε τὸ χωρίον Ὢτ Ἐπίν, ἤρχισεν ὑπερκερῶν τὸ ἀριστερὸν ρωσικὸν πλευρόν. Ἐξ ἄλλου ὁ Σάκκεν, ἀποβλέπων πάντοτε εἰς τὴν πρὸς Μονμιράϊγ διαρροήν του, ἐπετέθη διὰ τοῦ δεξιοῦ του πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τῶν χωρίων Μαρσαὶ καὶ Πομμεσόν, ἅτινα καὶ κατέλαβεν. Ἐπειδὴ ὅμως κατὰ τὸν χρόνον τοῦτον ἠπειλεῖτο σοβαρῶς τὸ ἀριστερόν του, δι' αὐτὸ ἀπέσυρε δυνάμεις ἐκ τοῦ κέντρου καὶ μετέφερε ταύτας εἰς τὸ ἀριστερόν. Ὁ Ναπολέων ἐπωφελήθη τότε τῆς ἐξασθενήσεως ταύτης τοῦ ἐχθρικοῦ κέντρου καὶ διὰ τῆς ἐφεδρείας ἐξετέλεσε τὴν ἀποφασιστικὴν ἐπίθεσιν πρὸς τὴν κατεύθυνσιν ταύτην (χαρακτηριστικὸς τύπος ναπολεοντείου μάχης), ἐπιτυχοῦσαν πλήρως καὶ ἐξαναγκάσασαν τοὺς Ρώσους νὰ φύγωσι προτροπάδην, ἐντὸς τοῦ ἀπογεύματος τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας, ἐν πλήρει ἀταξίᾳ πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Σατὼ Τιερρύ. Διαρκούσης τῆς μάχης, ἀνεφάνησαν οἱ Πρῶσσοι πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Φοντενέλ, ἀλλὰ συνεκρατήθησαν ὑπὸ τῶν Γάλλων μέχρις οὗ, ἰδόντες τὴν ρωσικὴν ἧτταν καὶ ἀντιληφθέντες ὅτι οὐδὲν ἠδύναντο νὰ πράξωσιν, ὑπεχώρησαν πρὸς Σατὼ Τιερρύ.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

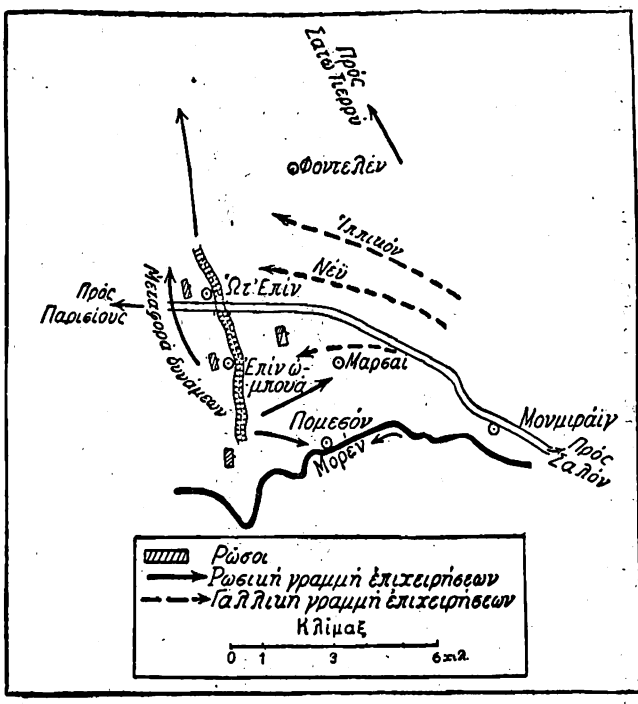


*Μάχη τοῦ Μονμιράϊγ τῆς 11ης Φεβρουαρίου 1814.*

**Μονμιράϊγ-λὲ-Μπαὶν** (Montmirail-les-Bains) *[Γεωγρ.]*. Ἰαματικαὶ πηγαὶ τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Βωκλύζ, 15 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Ὀράγγης. Τὰ ὕδατα αὐτῶν εἶναι τριῶν εἰδῶν, σιδηροῦχα, θειουχομαγνησιοῦχα καὶ θειουχοασβεστοῦχα· κατὰ τοῦ δευτέρου εἴδους χρησιμοποιοῦνται ὡς καθαρτικά.

Χ. Δ.

**Μονμορανσὺ** (Montmorency). *[Γεωγρ.]*. Γαλλικὴ πόλις ἐν τῷ νομῷ Σὲν-ἐ-Ουάζ· κάτ. 8.000 (1921). Κεῖται πλησίον λίμνης καὶ ὡραίου δάσους, τοῦ ὁποίου δεσπόζει ὁ φεουδαρχικὸς πύργος τοῦ οἴκου τῶν *Μονμορανσὺ* (βλ. λ.), ἔχει δὲ ἀφθόνους λαχανοκήπους καὶ μεγάλας ἐκτάσεις καταφύτους ἀπὸ κερασέας. Ἔχει βιομηχανίαν κεραμοποιίας, βαφεῖα, τυπογραφεῖα καὶ σιδηρουργεῖα. Ὁ ναὸς τῆς πόλεως, ὡραῖον οἰκοδόμημα γοτθικοῦ ρυθμοῦ, συνδυασμένου ἐν ταῖς λεπτομερείαις μὲ ρυθμὸν ἀναγεννήσεως, μὲ πρόσοψιν δὲ νεωτέρας τεχνοτροπίας, διατηρεῖ ἐνδιαφέροντας ζωγραφιστοὺς ὑελοπίνακας τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, καὶ περικλείει τεμάχιά τινα τῶν τάφων τῶν Μονμορανσύ, καὶ μίαν περίεργον εἰκόνα τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Ἁγίου. Ἐκ τοῦ μεγαλοπρεποῦς τάφου τοῦ Ἄννα Μονμορανσύ, ἀριστουργήματος τῆς γλυπτικῆς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, οὐδὲν διασῴζεται· τὰ ἐλάχιστα περισυλλεγέντα συντρίμματα τοῦ μνημείου τούτου ἔχουσι μεταφερθῆ εἰς τὸ Λοῦβρον. Μὲ τὴν πόλιν συνδέεται στενῶς ἡ μνήμη τοῦ Ζὰν-Ζὰκ Ρουσσώ, ὅστις διέμεινεν ἐν αὐτῇ ἀπὸ τοῦ 1756 μέχρι τοῦ 1762. Τὸ Μονμορανσύ, ἕδρα τοῦ ὁμωνύμου φεουδαρχικοῦ οἴκου ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ Ι' αἰῶνος, μετωνομάσθη τῷ 1689 εἰς *Ἀνγκιὲν* (Enghien) ἐκ τῆς ἐν Hainaut ὁμωνύμου πόλεως, παλαιᾶς κτήσεως τῶν εὐγενῶν τούτων. Τὴν νέαν της ὀνομασίαν διετήρησε μέχρι τοῦ 1793, ὁπότε μετωνομάσθη πάλιν εἰς Emile ἢ Mont-Emile, πρὸς τιμὴν τοῦ Ρουσσώ, ἐπανῆλθε δὲ τέλος εἰς τὸ ἀρχικόν της ὄνομα τῷ 1813. Ἡ ὀνομασία τοῦ Ἀνγκιὲν διετηρήθη μόνον διὰ τὴν γειτονικὴν λίμνην καὶ τὸ περὶ αὐτὴν δημιουργηθὲν προάστειον.

— ω.

**Μονμορανσὺ** (Montmorency). Εἷς τῶν διασημοτέρων γαλλικῶν φεουδαρχικῶν οἴκων, τοῦ ὁποίου τὰ μέλη διετήρησαν ἐπὶ αἰῶνας, ἀπὸ τοῦ 1327, τὸν τίτλον τῶν «πρώτων βαρώνων τῆς Γαλλίας». Τινὲς ἐκ τῶν ἀσχοληθέντων μὲ τὴν βιογραφίαν τῆς οἰκογενείας ταύτης ἀνάγουν τὴν ἀρχὴν αὐτῆς εἰς τὸν Γαλάτην Λίσβιον, συμμαρτυρήσαντα μετὰ τοῦ ἁγίου Διονυσίου τοῦ μεταδόσαντος τὸν Χριστιανισμὸν ἐν Γαλατίᾳ, ἄλλοι δὲ εἰς τοὺς χρόνους τοῦ Κλόβιος. Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι γενάρχης αὐτῆς ὑπῆρξεν ὁ *Βουσσάρδος ὁ Πωγωνάτος* (Bouchard le Barbu) αὐθέντης τοῦ *Μονμορανσύ*, ἰσχυρὸς φεουδάρχης τοῦ δουκάτου τῆς Γαλλίας, ἀποθανὼν τῷ 980. Ὁ υἱὸς τούτου *Βουσσάρδος Β'*, ἀποθανὼν τῷ 1020, ἔκτισε τὸν ἐν Μονμορανσὺ πύργον, ἀλλ' ἐπέσυρε τὴν ὀργὴν τοῦ βασιλέως Ροβέρτου, διότι ἐλήστευε τοὺς μοναχοὺς τοῦ Ἁγίου Διονυσίου. Τῷ 1060 ὁ *Ἄλβεριχ Μονμορανσὺ* ἐγένετο σταβλάρχης τοῦ βασιλέως, ὁ δὲ ἀνεψιός του *Τιμπὼ Β'* (Thibaut) τὸν διεδέχθη τῷ 1090 ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Φιλίππου Α'. Τῷ 1101 ὁ *Βουσσάρδος Δ'* ἀντέστη νικηφόρως ἐναντίον τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Χονδροῦ, ὅστις τὸν ἐπολιόρκησεν ἐν τῷ πύργῳ του, διὰ νὰ τὸν τιμωρήσῃ διὰ τὰς διαπραττομένας ὑπ' αὐτοῦ λαφυραγωγίας. Ὁ διάδοχος τούτου *Ματθαῖος Α'* ἐνυμφεύθη εἰς δεύτερον γάμον τὴν βασίλισσαν Ἀδέλαν, χήραν τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Χονδροῦ, ἀπέθανε δὲ τῷ 1160. Ὁ πέμπτος τούτου υἱός, *Ματθαῖος*, ἵδρυσε τὸν κλάδον *Μονμορανσὺ-Μαρλὺ* (Montmorency-Marly), ἐκλιπόντα τῷ 1352, μετέσχε τῶν σταυροφοριῶν μετὰ τοῦ Φιλίππου-Αὐγούστου καὶ ἐφονεύθη κατὰ τὴν κατάληψιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπὶ τετάρτης σταυροφορίας (1204).

Σημαντικὴ προσωπικότης τῆς οἰκογενείας ὑπῆρξεν ὁ *Ματθαῖος Β'*, βαρῶνος τοῦ Μονμορανσὺ (1189—1230), ὁ ἐπονομασθεὶς «Μέγας Πρωτοστράτωρ» («Grand Connétable»). Διῴκησε τὸν στρατὸν τοῦ Λουδοβίκου Η' ἐναντίον τῶν Ἀλβίγων, τοὺς ὁποίους ὑπέταξε τῷ 1226, μετὰ τὸν θάνατον δὲ τοῦ βασιλέως τούτου ὑπῆρξε τὸ σταθερώτερον στήριγμα τῆς βασιλίσσης Λευκῆς, ἥτις ἀνέλαβε τὴν ἀντιβασιλείαν. Ὁ ἴδιος διῴκει τὸν στρατὸν τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Ἁγίου εἰς διαφόρους νικηφόρους αὐτοῦ ἐκστρατείας. Ἐνυμφεύθη τρὶς καὶ ἀφῆκε πολυάριθμα τέκνα. Ἡ δευτέρα του σύζυγος ἦτο κληρονόμος τῆς κομιτείας τῶν Λαβάλ, ἐκ τούτου δὲ προῆλθε νέος τῆς οἰκογενείας κλάδος, ὁ τῶν *Μονμορανσὺ-Λαβάλ*, ἀποσβεσθεὶς τῷ 1412. Ὁ πρῶτος υἱὸς τοῦ Ματθαίου Β', *Ματθαῖος Γ'*, μετέσχε μετὰ τοῦ Λουδοβίκου Ἁγίου τῆς δευτέρας σταυροφορίας καὶ ἀπέθανεν ἐκ λοιμώδους νόσου πρὸ τῆς Τύνιδος· ὁ δεύτερος δὲ υἱός του *Ἐράρδος* ἵδρυσε τὸν κλάδον *Μονμορανσὺ-Κονφλὰν* (Montmorency-Conflans), ἐκλιπόντα τῷ 1424. Ἐκ τῶν μετέπειτα γόνων τοῦ οἴκου ὁ *Κάρολος βαρῶνος τοῦ Μονμορανσὺ* (1325—1381) μετέσχεν ὡς στρατάρχης τῆς Γαλλίας τῶν μαχῶν τοῦ Κρεσὺ καὶ τοῦ Ποατιέ. Τούτου ὁ ἔγγονος *Ἰάκωβος* ἵδρυσε τὸν κλάδον *Μονμορανσὺ Σιροζέλ* (Montmorency-Ciroselle), ὅστις ἀπεσβέσθη τῷ 1615.

Ἀπὸ τοῦ *Ἰωάννου Β' τοῦ Μονμορανσύ*, γόνου τῆς κυρίας γραμμῆς τοῦ οἴκου (1402—1447), ἐδημιουργήθησαν δύο νέοι κλάδοι. Οὗτος εἶχεν ἀποκληρώσει τοὺς ἐκ τοῦ πρώτου γάμου υἱοὺς αὐτοῦ, ὡς ταχθέντας μὲ τὸ μέρος τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας, τοῦ Καρόλου τοῦ Τρομεροῦ, ἐπέτυχε δὲ παρὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΑ' τὴν ἄδειαν νὰ καταστήσῃ κληρονόμον του τὸν ἐκ δευτέρου γάμου υἱόν του *Γουλιέλμον*. Οἱ ἀποκληρωθέντες ὅμως υἱοί του ἐκληρονόμησαν τὴν μητέρα των, κληρονόμον τῶν Νιβὲλλ καὶ Φοσσὲ τῆς Βραβάνδης καὶ ἵδρυσαν τοὺς κλάδους τῶν αὐθεντῶν τοῦ Νιβὲλ (Nivelle) καὶ τοῦ *Φοσσὲ* (Fosseux)· ὁ κλάδος τῶν Νιβὲλ ἐγκατεστάθη εἰς Κάτω Χώρας, ἐτερματίσθη δὲ κατὰ τρόπον αἱματηρὸν τῷ 1570, διὰ τοῦ ἀποκεφαλισμοῦ τοῦ τότε κόμιτος Χὸρν καὶ τοῦ ἀδελφοῦ του. Ὁ υἱὸς τοῦ Γουλιέλμου, *Ἄννας Μονμορανσὺ* (βλ. κατωτ.), ἔλαβεν, εἰς ἀντάλλαγμα τῶν μεγάλων πρὸς τὴν Γαλλίαν ὑπηρεσιῶν του, τὸν τίτλον τοῦ δουκός, τὸν ὁποῖον διετήρησαν οἱ ἐν τῇ κυρίᾳ γραμμῇ τοῦ οἴκου διάδοχοί του.

Ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ ἑφεξῆς διεκρίθησαν ἐκ τῶν μελῶν τῆς οἰκογενείας ταύτης οἱ ἑξῆς ἰδίως:

— **Μονμορανσὺ** (Montmorency) *Ἄννας*. Στρατάρχης καὶ πρωτοστράτωρ τῆς Γαλλίας (1493—1567). Ἀνετράφη ὁμοῦ μὲ τὸν κατόπιν βασιλέα Φραγκίσκον Α', διεκρίθη δὲ διὰ τὰ στρατιωτικά του προσόντα κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεζιὲρ (1521), τοῦ ὁποίου τὴν ἄμυναν διηύθυνε μετὰ τοῦ Μπαγιάρ, καὶ κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Νοβάρας (1522). Αἰχμαλωτισθεὶς ὁμοῦ μετὰ τοῦ Φραγκίσκου Α' ἐν Παυΐᾳ (1525), ἀπηλευθερώθη ἐπὶ καταβολῇ λύτρων. Ἡ ἐπιδειχθεῖσα ἐξ ἀφορμῆς τῆς αἰχμαλωσίας ταύτης ἀφοσίωσίς του πρὸς τὸν βασιλέα τὸν ἀνύψωσεν εἰς ἐξαιρετικὴν θέσιν, γενόμενος δ' ἐν ἀρχῇ διοικητὴς τῶν κρατῶν τοῦ Λανγκεντὸκ ἀπέβη κατὰ μικρὸν ὁ κυριώτερος παράγων εἰς τὰ πολιτικὰ πράγματα τῆς Γαλλίας. Ἐπεδίωξε νὰ ἑδραιώσῃ συμμαχίαν μεταξὺ τοῦ αὐτοκράτορος καὶ τοῦ πάπα, ὅταν δέ, μετὰ τὴν ἐπιτυχῆ ἄμυναν τῆς Προβηγκίας (1536), ἐτιτλοφορήθη «πρωτοστράτωρ» (connétable), ἐπροκάλεσε τὰς συναντήσεις τοῦ Φραγκίσκου Α' μετὰ τοῦ πάπα εἰς Νίκαιαν καὶ μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος εἰς Αἰγκμόρτ, καθὼς καὶ τὸ ταξίδιον τοῦ Καρόλου Κουΐντου εἰς Γαλλίαν. Ἀλλ' ὁ Φραγκῖσκος Α' δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν εἰρηνόφιλον αὐτὴν πολιτικὴν καὶ ὁ εἰσηγητὴς αὐτῆς περιῆλθε τότε ὑπὸ δυσμένειαν. Ἡ ἄνοδος τοῦ Ἑρρίκου Β' εἰς τὸν θρόνον ἐπανέφερε τὸν Ἄνναν Μονμορανσὺ εἰς τὴν προτέραν του ἰσχύν, κατανεμομένην ὅμως τώρα μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τῶν δουκῶν τῆς Γκίζης. Δὲν κατώρθωσε νὰ ἐμποδίσῃ τοὺς τελευταίους τούτους νὰ προκαλέσουν ρῆξιν μὲ τὸν Κάρολον Κουΐντον πρῶτον καὶ κατόπιν μὲ τὸν Φίλιππον Β'. Καὶ κατὰ μὲν τὴν πρώτην περίοδον τῶν ἀγώνων τούτων κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὸ Μέτς, κατὰ τὴν δευτέραν ὅμως ἡττήθη καὶ συνελήφθη ἐν Σαὶν-Κεντὲν (1557). Ἐπὶ Φραγκίσκου Β' παρέμεινε τελείως παρηγκωνισμένος, ἀλλ' ἀνέκτησε καὶ πάλιν τὴν ἐπιρροήν του ἐπὶ Καρόλου Θ'. Οἱ μετριοπαθεῖς καθολικοὶ καὶ οἱ προτεστάνται ἐστήριζον τότε ἐπὶ αὐτοῦ πᾶσαν ἐλπίδα συνδιαλλαγῆς. Ἡ καθολική του ὅμως πίστις τὸν ὤθησε νὰ εἰσέλθῃ μετὰ τοῦ Γκίζη καὶ τοῦ Σαὶντ-Ἀντρὲ εἰς τὴν τριανδρίαν καὶ νὰ πρωτοστατήσῃ εἰς τὰ ἐπακολουθήσαντα αἱματηρὰ γεγονότα. Κατὰ τὸν δεύτερον ἐμφύλιον πόλεμον ἐφονεύθη εἰς τὴν μάχην τοῦ Σαὶν-Ντενὶς (1567).

*Ἄννας Μονμορανσύ.*

Ὁ Ἄννας Μονμορανσύ, γενόμενος δοὺξ ἀπὸ τοῦ 1551, ὑπῆξεν ὁ ἰσχυρότερος καὶ πλουσιώτερος τῶν Γάλλων εὐγενῶν· ὁ ἀριθμὸς τῶν τιμαρίων του ὑπερέβαινε τὰ 600. Χαρακτὴρ τραχὺς καὶ βίαιος, ἄτεγκτος τηρητὴς τῆς πειθαρχίας, δὲν ὑπῆρξε μέγας ἀνήρ, ἀλλὰ πιστὸς μόνον καὶ πολύτιμος θεράπων τοῦ βασιλικοῦ θεσμοῦ καὶ τῆς ἐπὶ τῶν λαῶν κυριαρχίας τῶν θρόνων.

— **Μονμορανσὺ** (Montmorency) *Φραγκῖσκος*. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας, πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1530—1579). Διετέλεσε διοικητὴς τῶν Παρισίων καὶ τῆς Ἴλ-ντὲ-Φρὰνς (1556), νυμφευθεὶς δὲ μίαν νόθον θυγατέρα τοῦ Ἑρρίκου Β' (1557) ἐτιτλοφορήθη στρατάρχης (1559). Κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους ἐτήρησε μετριοπαθῆ στάσιν. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τοῦ κόμματος τῶν «πολιτικῶν», δι' ὃ καὶ ἐφυλακίσθη ἐπί τινα χρόνον εἰς τὴν Βαστίλλην ὑπὸ τῆς βασιλομήτορος.

— **Μονμορανσὺ** (Montmorancy) *Ἑρρῖκος Α'*. Πρωτοστράτωρ τῆς Γαλλίας, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1536—1614). Διεδέχθη τὸν πατέρα του εἰς τὴν διοίκησιν τοῦ Λανγκεντόκ, ἐτιτλοφορήθη δὲ στρατάρχης τῷ 1567 καὶ δοὺξ τοῦ Μονμορανσὺ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πρεσβυτέρου ἀδελφοῦ του (1579). Γενόμενος ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν «πολιτικῶν», συνεδέθη μὲ τοὺς προτεστάντας καὶ ἐπανεστάτησε τῷ 1585 ἐναντίον τοῦ Ἑρρίκου Γ'. Ὁ Ἑρρῖκος Δ' τὸν ὠνόμασε πρωτοστράτορα καὶ τὸν ἀπεμάκρυνεν ἀπὸ τὴν διοίκησιν τοῦ Λανγκεντόκ, εἰς τὴν ὁποίαν ὅμως ἐπανεγκατεστάθη ἀπὸ τοῦ 1610.

— **Μονμορανσὺ** (Montmorency) *Ἑρρῖκος Β'*. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1595—1632). Ἐπιτλο-

Digitized by Google

φορήθη μέγας ναύαρχος εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν (1612) καὶ κατόπιν ἀντικατέστησε τὸν πατέρα του εἰς τὴν διοίκησιν τοῦ Λανγκεντὸκ (1613). Ἐν ἀρχῇ ὑπηρέτησε πιστῶς τὸν Λουδοβῖκον ΙΓ' καὶ τὸν Ρισελιὲ ἐναντίον τῶν προτεσταντῶν καὶ ὠνομάσθη στρατάρχης κατόπιν τῆς νίκης του κατὰ τὴν μάχην τῆς Βεϊλλάν. Περιελθὼν ὅμως κατόπιν εἰς διάστασιν πρὸς τὸν Ρισελιέ, παρεσύρθη εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Γάστωνος τῆς Ὀρλεάνης, ὁπότε, τραυματισθεὶς καὶ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος κατὰ τὴν μάχην τοῦ Castelnaudary, κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Παρὰ τὴν ἔντονον δὲ μεσολάβησιν τῶν εὐγενῶν καὶ τοῦ λαοῦ, ὅστις τὸν ἐλάτρευεν, ὁ βασιλεὺς ἠρνήθη νὰ τοῦ δώσῃ χάριν. Γ. Ζ.

*Ἑρρῖκος Β' Μονμορανσύ.*

— **Μονμορανσὺ - Μπωζὼ** (Montmorency - Beausault)· βλ. *Μπωζώ*.

— **Μονμορανσὺ - Μπουτ'βὶλ** (Montmorency - Bouteville)· βλ. *Μπουτ'βίλ*.

**μονμουθίτης** (ὁ) (Monmouthit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα πυριγενὲς πλουτώνιον, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν ἄνευ χαλαζίου νεφελινικῶν πετρωμάτων. Συνίσταται ἀπὸ νεφελίτην μέχρι 72%, μαύρην κεροστίλβην, καγκρινίτην καὶ ἀσβεστίτην, περιέχει δὲ συγχρόνως εἰς ἐλαχίστην ποσότητα καὶ σοδάλιθον, πλαγιόκλαστον καὶ σιδηροξείδια. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Monmouth Township. Γ. Β.

**Μονμπαζὸν** (Montbazon). Οἰκογένεια Γάλλων εὐγενῶν, οἵτινες, φέροντες κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα τίτλον βαρώνου, προήχθησαν ὑπὸ τοῦ Ἑρρίκου Β' εἰς δοῦκας, ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ *Λουδοβίκου τοῦ Ροάν*, αὐθέντου τοῦ Γκεμενὲ (Guéménée).

— **Μονμπαζὸν** (Montbazon), ***Μαρία**, δούκισσα τοῦ —*. Ὡραία καὶ φιλόδοξος γυνὴ (1612—1657), θυγάτηρ τοῦ κόμιτος ντὲ Βερτὺς. Νυμφευθεῖσα ἕνα τῶν δουκῶν τοῦ Μονμπαζόν, εἰσῆλθεν ἀπὸ τοῦ 1628 εἰς τὴν γαλλικὴν αὐλήν, ὅπου ἡ καλλονή καὶ ἡ φιλαρέσκειά της ἔδωσαν ἀφορμὴν εἰς ἀτελείωτον διαδοχὴν ἐρωτικῶν σκανδάλων. Μολονότι ἀγαπωμένη θερμῶς ἀπὸ τὸν σύζυγόν της, δὲν ἐδυσκολεύετο νὰ ἐναλλάσσῃ μετ' ἀπιστεύτου εὐκολίας ἐραστάς, εἰς τὴν σειρὰν τῶν ὁποίων ἀναφέρεται ὁ δοὺξ τῆς Ὀρλεάνης, ὁ ἀδελφὸς τοῦ βασιλέως Γάστων, ὁ κόμης τοῦ Σουασσόν, ὁ δοὺξ τῆς Γκίζης, ὁ Μπωφόρ, ἰδίως δὲ ὁ γέρων δοὺξ τοῦ Λονγκεβίλλ, πρὸ καὶ κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ γάμου αὐτοῦ μετὰ τῆς ἀδελφῆς τοῦ μεγάλου Κονδέ. Ἡ ἀναίσχυντος διαγωγή της ἠνάγκασεν ἐν τέλει τὸν Λουδοβῖκον ΙΓ' νὰ τὴν ἐξορίσῃ εἰς Ροσεφὸρ (1643). Μετὰ τὸν θάνατον ὅμως τοῦ βασιλέως ἐπανελθοῦσα εἰς Παρισίους, ἀνεμείχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν ἀντιδραστικὴν κίνησιν τὴν διευθυνομένην ὑπὸ δύο ἐκ τῶν ἐραστῶν της, τοῦ δουκὸς τῆς Γκίζης καὶ τοῦ Μπωφόρ, ἐπαναλαβοῦσα δὲ τὸν σκανδαλώδη βίον της ἐγένετο ἀφορμὴ τῆς μονομαχίας, καθ' ἣν ὁ δοὺξ τῆς Γκίζης ἐφόνευσε τὸν Κολινύ, ἐραστὴν τῆς δουκίσσης τοῦ Λονγκεβίλλ. Ὁ Μαζαρῖνος τὴν ἀπέστειλε τότε καὶ πάλιν εἰς Ροσεφόρ. Ἔκτοτε ὑπῆρξεν ὅλως δευτερεύων ὁ ρόλος αὐτῆς εἰς τὰς πολιτικὰς διαμάχας τῶν παιδικῶν χρόνων τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' εἶχεν ἄλλως τε ἤδη ἐπισκιασθῆ ἀπὸ τὴν ρωμαντικὴν νύμφην της, τὴν δούκισσαν ντὲ *Σεβρέζ* (βλ. λ.). —Ω.

*Μαρία δούκισσα τοῦ Μονμπαζόν.*

**Μονμπὰρ** (Montbars ἢ Monbars). Περίφημος ἀρχηγὸς πειρατῶν ἐκ Λανγκεντὸκ τῆς Γαλλίας, ἐπιλεγόμενος διὰ τὴν ἀγριότητά του «Ἐξολοθρευτής». Ἔδρασε κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος εἰς τὰ παράλια τῆς Ἀμερικῆς, ὅπου ἐλυμαίνετο τὰς ἱσπανικὰς ἀποικίας. Ἀπαντᾷ ὡς ἥρως πολλῶν δραμάτων καὶ μυθιστορημάτων, ὧν σπουδαιότερον τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Μονμπὰρ ὁ ἐξολοθρευτὴς ἢ ὁ τελευταῖος τῶν πειρατῶν» τοῦ Ἰ. Πικενὰρ (1807). Χ. Δ.

**Μονμπαρρὲ** (Montbarrey), ***Ἀλέξανδρος - Μαρία - Ἐλεωνόρα - ντὲ Σαὶν - Μωρὶς**, κόμης καὶ εἶτα πρίγκιψ τοῦ —*. Γάλλος στρατιωτικὸς καὶ πολιτικὸς ἐκ Μπεζανσὸν (1732 — 1796). Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατόν, φθάσας μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ στρατηγοῦ καὶ διακριθεὶς εἰς πλείστας μάχας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1776 ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν (1777—1780). Κατὰ τὰς παραμονὰς τῆς ἐπαναστάσεως ἦτο διοικητὴς τῆς μεγάλης ἐπαρχίας τοῦ Χαγκενόου, μετὰ τὴν ἔκρηξιν ὅμως αὐτῆς ἐξεπατρίσθη εἰς Βέρνην (1791) καὶ κατόπιν εἰς Κωνσταντίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα. Χ. Δ.

**Μονμπελιὰρ** (Montbéliard) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας. Πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Ντούμπς, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀπὸ τοῦ Ροδανοῦ εἰς τὸν Ρῆνον διώρυγος καὶ ἀπέχουσα 64 χλμ. ἐκ Μπεζανσόν. Ἔχει ὡρολογοβιομηχανίαν, χυτήρια, ἐργοστάσια κατεργασίας δερμάτων καὶ ἐμπόριον ξυλείας. Κάτ. 10.390. Εἶναι πατρὶς τοῦ Κυβιέρου καὶ ἔχει παλαιὸν ὀχυρὸν πύργον.

Τὸ Μονμπελιὰρ (λατιν. Mons Biliardae ἢ Mons Peligardi) ἀναφέρεται ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἀπὸ τοῦ Ι' αἰῶνος ὡς ἔχον ἰσχυρὸν πύργον περιελθόντα διαδοχικῶς ἀπὸ τοῦ οἴκου τῆς Ἀλσατίας εἰς τὸν τοῦ Μονφωκὸν καὶ τῆς Βυρτεμβέργης. Βραδύτερον, κατὰ τοὺς ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνας, ἀντέστη ἐπιτυχῶς ἐναντίον τοῦ Καρόλου τοῦ Τολμηροῦ (1473), τοῦ Λουδοβίκου ΙΒ' (1513) καὶ τοῦ δουκὸς τῆς Γκίζης (1587). Κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως τὸ πριγκιπᾶτον τῆς Μονμπελιὰρ περιελάμβανεν ἐπίσης τὰς μικρὰς ἡγεμονίας Ἐρικούρ, Σαστελό, Κλερμὸν καὶ Ἰλ-ἐ-Μπλαμόν, καταληφθὲν δὲ ὑπὸ τῶν Γάλλων τῷ 1796 κατεκυρώθη διὰ τῆς συνθήκης τῆς Λουνεβίλλης. Μεταξὺ Μονμπελιὰρ καὶ Ἑρικοὺρ ὁ ἑλληνικῆς καταγωγῆς Γάλλος στρατηγὸς Βούρβαχης προσεπάθησεν ἀνεπιτυχῶς νὰ παραβιάσῃ τὴν πρωσσικὴν παράταξιν διαρκούσης τῆς πολιορκίας τοῦ Μπελφὸρ (Ἰανουάριος 1871) κατὰ τὸν Γαλλοπρωσσικὸν πόλεμον. Χ. Δ.

**Μονμπελιὰρ** (Montbéliard), ***Φιλιβέρτος** ντὲ —*. Γάλλος φυσιοδίφης (βλ. λ. *Γκενὼ* Φιλιβέρτος).

**Μὸν-Μπλὰν** (Mont-Blanc) *[Γεωγρ.]*. Ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ τῶν Ἄλπεων (βλ. λ. *Λευκὸν Ὄρος*).

**Μονμπριζὸν** (Montbrizon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Λίγηρος. Ἐξάγει σιτηρὰ καὶ εἴδη κιγκαλερίας καὶ ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν. Κάτ. 7.710. Χ. Δ.

**Μόνμωθ** (Monmouth), ***Ἰάκωβος**, δοὺξ τοῦ —*. Νόθος υἱὸς τοῦ Καρόλου Β' τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς Λουκίας Οὐώλτερς (1649—1685). Ἐσπούδασεν ἐν Γαλλίᾳ καὶ μετὰ τὴν ἀνάρρησιν τοῦ πατρός του εἰς τὸν θρόνον ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τοῦ Μόνμωθ. Τῷ 1668 ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῶν βασιλικῶν φρουρῶν, τῷ δὲ 1673 ἀπεστάλη εἰς τὴν Ὁλλανδίαν ὡς ἀρχιστράτηγος τῶν ἀγγλικῶν στρατευμάτων. Ἐν τῷ μεταξὺ, λόγῳ τῆς ὡραιότητός του καὶ τῆς ἀνδρείας του, εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην δημοτικότητα, τὴν ὁποίαν ἐπεχείρησε νὰ ἐκμεταλλευθῇ συνωμοτῶν κατὰ τοῦ βασιλέως. Συλληφθεὶς ὡς συνένοχος τῆς συνωμοσίας Ροῦσσελ καὶ Σύντνεϋ, ἔτυχε χάριτος ὑπὸ τοῦ βασιλέως πατρός του, ἐναντίον τοῦ ὁποίου ὅμως καὶ πάλιν ἐξύφανε νέαν συνωμοσίαν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Καρόλου Β' ἐγένετο ἀρχιστράτηγος ἐν Σκωτίᾳ καὶ ὁ σπουδαιότερος ἀντίπαλος τοῦ Ἰακώβου, ὑποψηφίου διαδόχου τοῦ Καρόλου. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ κατὰ τοῦ Ἰακώβου κινήματος κατέφυγεν εἰς τὴν Ὁλλανδίαν καὶ ἀπεπειράθη ἐκεῖθεν νὰ διεκδικήσῃ τὰ δικαιώματά του ἐπὶ τοῦ θρόνου, Ἀποβιβασθεὶς εἰς Λάϊμ, ὑπεστηρίχθη κατ' ἀρχὰς ὑπό τινων ὀπαδῶν, ἀλλ' ἡττηθεὶς κατόπιν εἰς τὴν μάχην τοῦ Σέντζεμουρ συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον ζητήσας ὅμως συγγνώμην, ἀφέθη ἐλεύθερος κατόπιν συναντήσεως του με τὸν βασιλέα, πρὸς τὸν ὁποῖον ἐξέφρασε δουλικὴν ὑποταγήν. Βραδύτερον, ἐπειδὴ ἀπεκαλύφθη ὅτι ἡ ὑποταγή του ἦτο πλαστὴ καὶ ὅτι ἐσχεδίαζε νέον κίνημα, ἀπεκεφαλίσθη. Μ. Δ. Β.

*Ἰάκωβος Μόνμωθ*

**Μόνμουθ** (Monmouth) *[Γεωγρ.]*. —1) Κομιτεία τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἐν Οὐαλλίᾳ. Ἔχει ἔκτασιν 1.415 τ. χλμ. καὶ 469.030 κατ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι βουνῶδες μὲ κορυφὰς 400—600 μ. ὕψους καὶ πολλοὺς μικροὺς ποταμούς, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ Οὔσκ, ὁ Ρούμνεϋ, ὁ Σέβερν, ὁ Μόνμουθ. Τὸ ὑπέδαφος αὐτῆς εἶναι ἐκ τῶν πλουσιωτέρων τῆς Ν. Οὐαλλίας εἰς γαιανθρακοφόρα στρώματα. Ἔχει ἐπίσης λίαν ἀνεπτυγμένην γεωργίαν καὶ κτηνοτροφίαν.

— 2) Πόλις τῆς Οὐαλλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου κομιτείας. Κάτ. 5.209. Ἔχει πλούσια γαιανθρακωρυχεῖα, ἐργοστάσια χημικῶν καὶ μεταλλικῶν προϊόντων καὶ παλαιὸν βασιλικὸν ἀνάκτορον, ἐν ᾧ ὁποίῳ ἐγεννήθη ὁ Ἑρρῖκος Ε'. Ὑφίστατο κατὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἐποχὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα Blestium. Ὑπὸ τῶν Γαλατῶν ἐκαλεῖτο Mynwy.

— 3) Κομιτεία τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Νέας Ὑερσέης. Ἐκτείνεται κατὰ μῆκος τοῦ Ἀτλαντικοῦ ὠκεανοῦ καὶ ἔχει 1240 τ. χλμ. ἔκτασιν καὶ 109.374 κατ. Ἔχει ἀμμώδεις παραλίας, εἰς τὰς ὁποίας ἀφθονοῦν αἱ λουτροπόλεις, ἡ κυριωτέρα τῶν ὁποίων εἶναι ἡ Λόνγκ - Μπράντς. Πρωτεύουσα αὐτῆς εἶναι ἡ *Φρῆχολντ*. Μ. Δ. Β.

**Μονμὼρ** (Montmaur), ***Πέτρος** ντὲ —*. Διάσημος Γάλλος εὐθυμολόγος (1576—1648). Εἶχε σπουδάσει φιλολογίαν καὶ διωρίσθη ἀπὸ τοῦ 1623 καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Ἀλλ' ἐκεῖνο ποὺ τὸν διέκρινεν ἦτο ἡ εὐφυολόγος καὶ καυστικὴ εἰρωνεία του, διὰ τὴν ὁποίαν ἦτο περιζήτητος ὁμοτράπεζος διαφόρων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς του. Παροιμιώδη ἀπέμειναν πολλὰ ἐπιγράμματά του εἰς βάρος τῶν λογίων τῶν χρόνων ἐκείνων, ἐν οἷς τοῦ Μπαλζάκ, τοῦ Λαμότ, τοῦ Μενὰζ καὶ ἄλλων. —Ω.

**Μὸνν** (Monn), ***Γεώργιος-Ματθαῖος***. Αὐστριακὸς συνθέτης (1717—1750) ὀργανικῆς κυρίως μουσικῆς. Ἔγραψε πλείστας συμφωνίας, σονάτας, φυγὰς κτλ., θεωρεῖται δὲ ὑπὸ τοῦ Ἄντλερ ὡς δημιουργὸς τοῦ συγχρόνου τύπου τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς, ἰδίως τῆς συμφωνίας. Γ. Σ.

**Μοννάουδα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος Ἀλουίωνος τῆς Βρεττανικῆς (Ἀγγλίας) ἀπ' ἀνατολῶν τῆς Ἰουερνίας (Ἰρλανδίας) ἐν τῷ Ἰουερνίῳ Ὠκεανῷ (Ἰρλανδικῇ θαλάσσῃ) ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Β, β, 12). Παρὰ Πλινίῳ φέρεται Monapia (4, 103), ἀπαντᾷ δὲ καὶ ἡ γραφὴ *Μοναρίνα*. Εἶναι ἡ σύγχρονος νῆσος *Μάν*, μεταξὺ τῶν ἀκτῶν τῆς Cumberland καὶ τῆς Belfast. Σ. Ε. Λ.

**Μοννὰρ** (Monnard), ***Κάρολος***. Ἑλβετὸς πολιτικὸς καὶ ἱστοριογράφος (1790—1865). Ἐσπούδασεν ἀρχαίας γλώσσας καὶ φιλολογίαν, ἐδίδαξε δὲ κατ' ἀρχὰς γαλλικὴν φιλολογίαν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Λωζάννης. Ἵδρυσε κατόπιν ἐφημερίδα ἀντιπολιτευομένην τὴν κυβέρνησιν τῶν συντηρητικῶν, ἐκλεγεὶς δὲ βουλευτὴς εἰς τὴν δίαιταν τῆς ὁμοσπονδίας διεδραμάτισε σπουδαῖον πολιτικὸν ρόλον. Αὐτός, ὁμοῦ μετὰ τοῦ Ζενεβουά, ἐπρότεινε τῷ 1838 νὰ δοθῇ ἀρνητικὴ ἀπάντησις εἰς τὴν Γαλλίαν, ζητοῦσαν τὴν ἀπὸ τοῦ ἑλβετικοῦ ἐδάφους ἔξωσιν τοῦ Λουδοβίκου - Ναπολέοντος - Βοναπάρτου. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1845 ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς καὶ ἀνέλαβε τὴν ἕδραν τῶν ρωμανικῶν γλωσσῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βόννης, ἐχρημάτισε δὲ μέχρι τοῦ θανάτου του καθηγητὴς τοῦ μέλλοντος αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Φρειδερίκου. Ὁ Μοννὰρ συνέγραψε περὶ τὰ 40 ἱστορικὰ ἰδίως ἔργα, ἐν οἷς: «Ἱστορία τῆς γαλλικῆς φιλολογίας», «Ἱστορία τῆς ἑλβετικῆς ὁμοσπονδίας», «Χρηστομάθεια τῶν Γάλλων πεζογράφων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος». —Ω.

**Μοννιὲ** (Monnier), ***Ἑρρῖκος-Μποναβεντοῦρα***. Πνευματώδης Γάλλος συγγραφεὺς καὶ ἐπιδέξιος γελοιογράφος (1805—1877). Κάλλιστον ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του εἶναι, αἱ «Λαϊκαὶ σκηναὶ» (1830). Ἀνῆλθεν ἐπίσης ἐπὶ σκηνῆς ὡς ἠθοποιὸς καὶ συνέθεσε πλεῖστα κωμειδύλλια, κομεντὶ κλπ. Ὡς σχεδιαστὴς ἐσημείωσε μεγάλην ἐπιτυχίαν, ζωγραφήσας ὑπὲρ τὰς 700 σκηνάς, δι' ὧν εἰκονογραφήθησαν βιβλία, λευκώματα κ. ἄ. ἐκδόσεις. Χ. Δ.

— **Μοννιὲ** (Monnier), ***Μάρκος***. Γάλλος συγγραφεὺς (1829—1885). Ἔγραψε τὰ θεατρικὰ ἔργα: «Ἡ εὐθεῖα γραμμή» (1854) καὶ «Θέατρον νευροσπάστων» (1871). «Ἡ Γενεύη καὶ οἱ ποιηταί της» (1874), «Γενικὴ ἱστορία τῆς νεωτέρας φιλολογίας» (1884), μυθιστορήματα, ποιήματα καὶ ἄλλα. Ι. Μ. Τ.

— **Μοννιὲ** (Monnier), ***Φίλιππος***. Ἑλβετὸς συγγραφεὺς (1864—1911). Ἔγραψε: «Τὸ Κατροτσέντο, φιλολογικὴ μελέτη περὶ τῆς Ἰταλίας τοῦ ΙΕ' αἰῶνος» (2 τόμ. 1901), «Ἡ Βενετία κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα» (1907). Διὰ τῶν δύο τούτων ἔργων του, βραβευθέντων ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἐγένετο λίαν γνωστὸς εἰς τὴν Γαλλίαν. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ρίμες μαθητοῦ» (1891), «Γραῖαι» (1895), «Νέα ἀνδρόγυνα» (1899) διηγήματα, «Κουβέντες τῆς Γενεύης» (1902), «Τὸ βιβλίον τοῦ Μπλαὶζ» (1904), «Τὸ βιβλίον τοῦ σχολείου» (1909), «Τὸ χωριό μου» (1909). Ι. Μ. Τ.

**Μὸν - ντὲ - Μαρσὰν** (Mont - de - Marsan) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Λάντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μιντούζ. Ἔχει βιομηχανίαν χημικῶν προϊόντων, ἐμπόριον ἐλαίου καὶ πωμάτων ἐκ φελλοῦ, φυτώρια κτλ. Κάτ. 12.100. Χ. Δ.

**μονο—**· θέμα τοῦ *μόνος* ὡς πρώτου συνθετικοῦ: *μονογράμματος, μονοδάκτυλος, μονόδους, μονόκερως, μονόκροτος* κτλ.

— **μονο—** *[Χημ.]*. Πρῶτον συνθετικὸν ὅρων τινῶν τῆς χημείας. Προτασσόμενον στοιχεῖον ἢ ρίζης εἰς τὴν ὀνομασίαν χημικῆς τινος ἑνώσεως, σημαίνει ὕπαρξιν ἅπαξ μόνον τοῦ ἐν λόγῳ στοιχείου ἢ ρίζης ἐν τῇ περὶ ἧς πρόκειται ἑνώσει, ὡς

λ. χ. *μονομεθυλογουανιδίνη* σημαίνει ὅτι εἶναι γουανιδίνη περιέχουσα μίαν μεθυλικὴν ὁμάδα, χρησιμοποιεῖται δὲ καὶ εἰς ὀνομασίας τάξεων, ὡς λ. χ. *μοναμῖναι* διὰ τὰς ἑνώσεις, αἵτινες ἔχουσι μίαν ἀμινικὴν ὁμάδα, *μονοσουλφονικὰ ὀξέα* ὅταν ἔχωσι μίαν σουλφονικὴν ὁμάδα κλπ. Τὸ πρόθεμα *μόνο*— εἰς τὰς ὀργανικὰς ἑνώσεις συνήθως παραλείπεται, τιθέμενον ἐκεῖ μόνον ὅπου ὑπάρχει φόβος συγχύσεως μεταξὺ πλειόνων παρομοίων ἑνώσεων. Σ. Γ.

**Μονὸ** (Monod), ***Ἀδόλφος***. Γάλλος μεταρρυθμιστὴς ἱεροκήρυξ (1802—1856). Σπουδάσας ἐν Παρισίοις καὶ Γενεύῃ, ἐγκατεστάθη ἐν ἀρχῇ εἰς Νεάπολιν τῆς Ἰταλίας ὡς ἐφημέριος τῆς γαλλικῆς κοινότητος. Ἀπὸ τοῦ 1827 διωρίσθη ἱεροκήρυξ ἐν Λυών, ἀλλὰ τὰ κηρύγματά του ἐθεωρήθησαν ὑπεράγαν τολμηρά, δι' ὃ καὶ ἀπελύθη τῆς θέσεως ταύτης τῷ 1831. Ἀπὸ τοῦ 1836 μέχρι τοῦ 1847 κατέλαβε τὰς ἕδρας τῆς ἠθικῆς, τῆς ἑβραϊκῆς ἱστορίας καὶ τῆς εἰσαγωγῆς εἰς τὴν Καινὴν Διαθήκην ἐν τῇ θεολογικῇ σχολῇ τοῦ Μοντωμπάν. Μετέπειτα ἐκλήθη ὡς ἱεροκήρυξ εἰς Παρισίους, ὅπου ἡ ἐπιτυχία του ὑπῆρξεν ἐξαιρετική· τὸ κήρυγμά του συνεκέντρωνε πάντοτε πυκνὰ πλήθη ἀκροατῶν, θελγομένων ἀπὸ τὸ κάλλος καὶ τὴν βαθύνοιαν τοῦ λόγου του. Ὁ Μονὸ θεωρεῖται εἰς ἀπὸ τοὺς μεγαλυτέρους ἱεροκήρυκας τοῦ ΙΘ' αἰῶνος.

— **Μονὸ** (Monod) ***Γαβριήλ***. Γάλλος ἱστορικὸς (1844—1912). Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του ἐταξίδευσεν εἰς Ἰταλίαν καὶ Γερμανίαν, ὅπόθεν ἐπιστρέψας διωρίσθη ἐπιμελητὴς ἐν ἀρχῇ εἰς τὴν ἐν Παρισίοις σχολὴν ἀνωτέρων σπουδῶν, τῆς ὁποίας ἐγένετο βραδύτερον διευθυντής. Τῷ 1897 ἐξελέγη ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας ἐπιγραφῶν καὶ καλῶν τεχνῶν, ὑπῆρξε δὲ μέλος πολλῶν ἀκαδημιῶν τοῦ ἐξωτερικοῦ καὶ διαφόρων ἱστοριογραφικῶν ὀργανώσεων. Διηύθυνεν ἐπί τινα χρόνον τὴν «Κριτικὴν Ἐπιθεώρησιν», ἵδρυσε δὲ ἀπὸ τοῦ 1876 μετὰ τοῦ G. Fagniez τὴν «Ἱστορικὴν Ἐπιθεώρησιν». Εἰς τόμους ἐδημοσίευσε: «Κριτικαὶ μελέται ἐπὶ τῶν πηγῶν τῆς μεροβιγκείου ἱστορίας» (1872—1885, 2 τόμ.), «Βιβλιογραφία τῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας μέχρι τοῦ 1789» (1888), «Γερμανοὶ καὶ Γάλλοι» (1872) κ.λ.π.

— **Μονὸ** (Monod), ***Κάρολος-Ἐδμόνδος***. Γάλλος χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1842. Ἐγένετο ὑφηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Ἔγραψε: «Περὶ τῶν νόσων τοῦ ὄρχεως» (1889), «Περὶ καρκίνου τοῦ μαστοῦ» (1894), «Περὶ σκωληκοειδίτιδος» (1898) κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μονὸ** (Monod) ***Φρειδερῖκος***. Γάλλος κληρικὸς καὶ μεταρρυθμιστὴς (1784—1863). Ἐσπούδασεν ἐν Γενεύῃ καὶ ἐχρημάτισε παιδαγωγὸς τοῦ πρίγκιπος Παύλου τοῦ Μεκλεμβούργου. Ἀπὸ τοῦ 1832 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις ὡς ἱερεὺς τοῦ ναοῦ τῶν μεταρρυθμιστῶν. Ἀπὸ τοῦ 1848 ἵδρυσε τὴν «ἐλευθέραν ἐκκλησίαν τῶν Παρισίων», εἶδος αἱρέσεως, ἐκλιπούσης μετὰ τὸν θάνατόν του. Ἦτο πατὴρ τοῦ διασήμου ἱεροκήρυκος *Ἀδόλφου Μονὸ* (βλ. ἀνωτ.). — Ω.

— **Μονὸ** (Monod), ***Φρειδερῖκος-Κλήμης-Κωνστάντιος-Γουσταῦος***. Γάλλος χειρουργὸς (1803—1891). Τῷ 1833 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν Παρισίοις καὶ χειρουργὸς τῶν νοσοκομείων. Ἔγραψε: «Sur les maladies des os» (1831), «Du souffle placentaire» (Epernay, 1832) κ. ἄ. Ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρονται ἐν τῇ χειρουργικῇ αἱ μέθοδοι τῆς θεραπείας τῆς *ὀνύξεως* καὶ τῶν *ὀρωδῶν συλλογῶν*. Ο. Ρ.

**μονοακετυλοαμινοαζωτολουόλιον** (τὸ) *[Ὀργαν. Χημ.]*· βλ. *ἀζωδερμίνη*.

**μονοατομικός,** *—ή, —όν*· *μονατομικὸς* (βλ. λ.).

**μονοβάμπουλον** (τὸ) *[Βυζαντ.]*. Κηροστάτης μὲ ἓν θρίγκωμα, ὅστις κατὰ τὰς ἱερὰς τελετὰς ἐτίθετο πρὸ τῆς αὐτοκρατείρας (βλ. λ. *διβάμπουλον*).

**μονοβασικός,** *—ή, —όν*· χημικὸς ὅρος ἀναφερόμενος εἰς τὰ ὀξέα, ἅτινα σχηματίζουσιν οὐδέτερα ἅλατα μεθ' ἑνὸς μόνον μονοσθενοῦς μετάλλου ἢ ἠλεκτροθετικῆς ῥίζης. Σ. Γ.

**μονοβεργίζω**· ἐπὶ τῶν κλαδευτῶν, κλαδεύω τὰ παρακλάδια καὶ ἀφίνω τὸν κεντρικὸν βλαστόν, τὴν κεντρικὴν βέργαν.

**μονοβέργισμα** (τό). Καλεῖται κοινῶς ὑπὸ τῶν δενδροκόμων ἡ κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ τὴν ἄνοιξιν ἀφαίρεσις ἀπὸ τῶν νεαρῶν ξυλωδῶν φυτῶν πάντων τῶν ἀπ' αὐτῶν φυομένων πλαγίων κλάδων, πρὸς τελείαν διαμόρφωσιν τοῦ μελλοντικοῦ δένδρου.

— *[Ἀμπελουργ.]* Βλ. λ. *κάθαρος*.

**μονόβλαστος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μονοφυὴς βλαστός.

**μονόβολον** (τὸ) *[Ἀρχ.]*. Εἶδος ἀγωνίσματος δρόμου μετὰ πηδήματος. Πιθανῶς κατ' αὐτὸ ὁ δρομεὺς ἐπήδα τὸ παρατιθέμενον ἐμπόδιον χωρὶς νὰ στηρίζεται ἐπὶ κοντοῦ. Β. Δ. Θ.

**μονοβουτυρίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἐστὴρ τῆς γλυκερίνης μεθ' ἑνὸς μορίου βουτυρικοῦ ὀξέος. Ἔχει τὸν τύπον $C_3H_5(OH)_2(O.CO.C_3H_7)$ καὶ ὡς ἀποσυντιθεμένη εὐκόλως ὑπὸ τῆς λιπάσης χρησιμοποιεῖται πρὸς μέτρησιν τῆς ἐν τῷ αἵματι περιεχομένης τοιαύτης. Σ. Γ.

**Μονόβρυση** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Νεοχωρίου τῆς ἐπαρχίας Σερρῶν τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 300. Χ. Δ.

**μονοβρωμακεταλδεΰδη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Βρωμιοπαράγωγον τῆς ἀκεταλδεΰδης τοῦ τύπου $CH_2Br.CHO$. Σ. Γ.

**μονοβρωμακετόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τῆς *ἀκετόνης* τοῦ τύπου $CH_2Br.CO.CH_3$. Εἶναι ὑγρὸν προσβάλλον τοὺς δακρυγόνους ἀδένας. Σ. Γ.

**μονοβρωμακετοξικοὶ** ***ἐστέρες*** *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *ἀκετοξικὸν ὀξύ*.

**μονοβρωμοξικὸν** ***ὀξὺ*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τοῦ ὀξικοῦ ὀξέος τοῦ τύπου $CH_2Br.COOH$. Τήκεται εἰς 50° καὶ βράζει εἰς 208°. Σ. Γ.

**Μονοβύζα** *[Μυθολ.]*. Μυθικὴ βασίλισσα, ἀναφερομένη εἰς τὰς νεοελληνικὰς παραδόσεις τῆς Ἠπείρου. Ὠνομάσθη οὕτω, διότι εἶχεν ἕνα μόνον μαστόν, ἀλλὰ τόσον ὑπερμεγέθη, ὥστε ἠναγκάζετο νὰ ρίπτῃ τοῦτον ὑπεράνω τῶν ὤμων, ἵνα μὴ ἐμποδίζεται. Εἶχεν υἱὸν Ἴουλον, ὅστις ἐπιχειρήσας νὰ κατακτήσῃ ἠπειρωτικὰς περιοχὰς ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν Ἠπειρωτῶν. Ἡ Μονοβύζα, ἐκδικουμένη τὸν θάνατον τοῦ υἱοῦ της, ἐκυρίευσε καὶ κατέστρεψε πολυαρίθμους πόλεις. Ὁ ὄλεθρος οὗτος ἔμεινε παροιμιώδης ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν «ὁ χαλασμὸς τῆς Μονοβύζας». Πιθανῶς ἱστορικὸν πυρῆνα τῶν παραδόσεων τούτων ν' ἀποτελοῦν αἱ ὑπὸ τῆς βασιλίσσης τῶν Ἰλλυριῶν Τεύτας τῷ 231 π. Χ. γενόμεναι λεηλασίαι τῆς Ἠπείρου. Θ. Π.

**Μονοβύζας** ***κάστρον*** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ἄκοβα*.

**μονογαμία** (ἡ)· ὁ μετὰ μιᾶς μόνον γυναικὸς γάμος, τὸ νὰ λαμβάνῃ τις μίαν μόνον γυναῖκα· ὑφίσταται εἴτε ὡς ἐλεύθερος κοινωνικὸς θεσμὸς (ἀντίθ. *πολυγαμία*), εἴτε ὡς προστατευόμενος ὑπὸ τοῦ νόμου (ἀντίθ. *διγαμία*).

— *[Ἠθικ.]* Ὁ Θεὸς δημιουργήσας τοὺς πρωτοπλάστους, τὸν Ἀδὰμ καὶ τὴν Εὔαν, ηὐλόγησεν αὐτοὺς εἰπών: «αὐξάνεσθε καὶ πληθύνεσθε καὶ πληρώσατε τὴν γῆν» (Γεν. 1, 27 ἑ.), οὕτω δὲ συνέστησε τὸν γάμον, καὶ δὴ ὑπὸ τύπον *μονογαμίας*, ὡς δεσμὸν ἀνδρὸς καὶ γυναικὸς ἰσόβιον καὶ ἄλυτον (Γεν. 2, 18 ἑ.). Ἡ ἐπελθοῦσα ὅμως μετὰ ταῦτα διὰ τῆς ἁμαρτίας ἠθικὴ διαφθορὰ διέστρεψε τὴν ἀρχικὴν μορφὴν τοῦ γάμου ἀπὸ μονογαμίας εἰς πολυγαμίαν καὶ ἐνίοτε πολυανδρίαν, ἀπὸ τῆς διαστροφῆς δὲ ταύτης ἐπανήγαγε τὸν γάμον εἰς τὴν ἀρχικὴν αὐτοῦ μορφὴν ἡ χριστιανικὴ θρησκεία, οὐ μόνον ἀπαγορεύσασα τὴν σύγχρονον πολυγαμίαν, ἀλλὰ δείξασα δυσμένειαν καὶ πρὸς τὴν διαδοχικὴν τοιαύτην καὶ μάλιστα ἐν τῇ ἀρχαιοτέρα ἐποχῇ. Ἡ χριστιανικὴ θρησκεία, ἀνυψώσασα τὸν γάμον εἰς μυστήριον, ἐτόνισεν ὅτι σκοπὸς αὐτοῦ ἐξ ἠθικῆς ἀπόψεως εἶναι ἡ ἀμοιβαία βοήθεια τῶν συζευγνυμένων καὶ ἡ χριστιανικὴ ἀνατροφὴ τῶν τέκνων καὶ ὅτι ὁ σκοπὸς οὗτος ἐπιτυγχάνεται τὰ μάλιστα διὰ τῆς μονογαμίας καὶ τοῦ ἀλύτου τοῦ γάμου. Κ. Ι. Δ.

— *[Ζωολ.]* Καλεῖται *μονογαμία* τὸ φαινόμενον, καθ' ὃ τὰ ζῷα ὀχεύουσι μίαν καὶ τὴν αὐτὴν θήλειαν, ἐξ οὗ καὶ καλοῦνται *μονόγαμα*, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ *πολύγαμα*, τὰ ὀχεύοντα πλείονας θηλείας. Μονόγαμα ζῷα εἶναι ἡ περιστερά, ἡ τρυγών, ὁ ὄρτυξ καὶ ἄλλα. Δ. Ν. Π.

**μονογαμικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μονογαμίαν, ὁ τῆς μονογαμίας: «μονογαμικὸς θεσμός», «μονογαμικὸς τύπος».

**μονόγαμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἐρχόμενος εἰς ἕνα μόνον γάμον, ὁ μίαν μόνην γυναῖκα λαμβάνων.

**μονογαμῶ** *(—έω)*· ἔρχομαι εἰς ἕνα καὶ μόνον γάμον, λαμβάνω μίαν μόνον γυναῖκα.

**μονογενεσία** (ἡ), ἡ ***μονογένεια*** *[Βιολ.]*. Ἡ καθ' ἕνα μόνον τρόπον, διὰ μίξεως τῶν δύο φύλων, ἀναπαραγωγὴ ζωϊκοῦ τινος εἴδους, ἤτοι ἡ ἄμεσος ἢ ἀπ' εὐθείας γενεά, κατὰ τὴν ὁποίαν τὰ ἄτομα ἀναπαράγονται μόνον δι' ἑνὸς ᾠοῦ ἢ ᾠαρίου. Τὰ τοιαῦτα ζωϊκὰ ὄντα δὲν δύνανται νὰ ἀναπαραχθῶσι πρὶν ἢ τὰ γεννητικὰ αὐτῶν μόρια ἀναπτυχθῶσιν ἐπαρκῶς. Ὁ τρόπος οὗτος τῆς ἀναπαραγωγῆς παρατηρεῖται ἐπὶ τῶν σπονδυλωτῶν, τῶν πλείστων ἐκ τῶν μαλακίων, καὶ ἐκ τῶν σκωλήκων ἐπὶ τῶν νηματοειδῶν μόνον. Μ. Ν. Κ.

**μονογενὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τό)· ὁ μόνος γεννηθείς, ὁ μὴ ἔχων ἀδελφοὺς ἢ ἀδελφάς, κοιν. *μοναχόπαιδο*.

— *[Βοτ.]* Καλεῖται *μονογενὲς* τὸ ἄνθος ὅπερ φέρει μόνον ἀνδρεῖον ὄργανον, δηλαδὴ *στήμονας*, ἢ μόνον γυναικεῖον, δηλαδὴ *ὕπερον*. Δ. Ν. Π.

**μονογενισμὸς** (ὁ). Ὅρος ἀναφερόμενος εἰς ἀνθρωπολογικὴν δοξασίαν, κατὰ τὴν ὁποίαν πᾶσαι αἱ ἀνθρώπιναι φυλαὶ ἐξ ἑνὸς μόνου ἀρχικοῦ τύπου προέρχονται. Μ. Ν. Κ.

**Μονόγισα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς Καρίας, ἔνθα ἐλατρεύετο ἡ Ἄρτεμις.

**Μονόγλωσσον** ***Ἐμπόριον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὸν ἐπίνειον τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς (*Πτολ*, Ζ, α, 2) οὐχὶ μακρὰν καὶ πρὸς ἀνατολὰς τοῦ δέλτα τοῦ Ἰνδοῦ. Ταυτότης ἄγνωστος. Σ. Ε. Λ.

**μονογονία** (ἡ)· τὸ νὰ γεννᾶται εἷς γόνος ἐν νεογνὸν καθ' ἕκαστον τοκετόν.

**μονόγραμμα** (τὸ)· γραφικὴ παράστασις, ἀποτελουμένη ἐκ συμπλέγματος δύο ἢ πλειοτέρων ψηφίων τοῦ ἀλφαβήτου· κοιν. *μάρκα*.

— *[Ἐγκυκλ.]*. Ἡ πρώτη χρῆσις τῶν *μονογραμμάτων* φαίνεται ὅτι ὑπῆρξε σύγχρονος πρὸς τὴν ἐπινόησιν τῆς γραφῆς, βέβαιον δὲ πάντως εἶναι ὅτι χρονολογεῖται ἀπὸ τῆς ἀπωτέρας ἀρχαιότητος. Ἐπὶ παλαιοτάτων νομισμάτων καὶ γλυπτῶν ἔργων τέχνης τὸ ὄνομα τοῦ ἄρχοντος ἢ τῆς πόλεως ἐπὶ τῶν μέν, ἢ τοῦ καλλιτέχνου ἐπὶ τῶν ἄλλων, ἀπεικονίζεται συνηθέστατα διὰ συμπλέγματος ψηφίων, ἄλλοτε ὑπὸ ἁπλῆν καὶ ἄλλοτε ὑπὸ καλλιτεχνικὴν διαμόρφωσιν. Καὶ εἰς σχετικῶς δὲ νεωτέρας ἐποχὰς ἀποδεικνύεται ὅτι ἐσυνηθίζετο ἡ χρῆσις τῶν μονογραμμάτων, ἥτις ἔλαβεν ἰδίως εὐρυτάτην διάδοσιν ἀπὸ τῶν πρώτων χριστιανικῶν χρόνων. Εἰς τοῦτο ἤσκησε σημαντικὴν ἐπίδρασιν τὸ γεγονὸς ὅτι ἐν τῇ ἀπεικονίσει τοῦ πάθους τῆς σταυρώσεως εἶχεν ἐπικρατήσει νὰ σημειοῦται τὸ ὄνομα τοῦ Σωτῆρος ἐπὶ τοῦ σταυροῦ διὰ συμπλέγματος δύο ἢ πλειοτέρων ψηφίων τῆς λέξεως Χριστὸς (Χ καὶ Ρ μετὰ ἢ ἄνευ C). Διὰ μονογραμμάτων ἐπίσης ἀνεγράφετο τὸ ὄνομα τῆς Θεοτόκου ἐπὶ τῶν ἁγίων εἰκόνων. Ἐντεῦθεν δὲ προῆλθε προφανῶς ἡ συνήθεια τοῦ νὰ χαράσσεται ἐπὶ τῶν χριστιανικῶν τάφων τῶν χρόνων ἐκείνων διὰ μονογράμματος καὶ μόνον τὸ ὄνομα τοῦ νεκροῦ.

Ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος ἡ συνήθεια τῶν μονογραμμάτων ἐπεξετάθη ἔτι μᾶλλον. Ἐπὶ μακρὸν οἱ βασιλεῖς ἐχρησιμοποίουν ταῦτα ἀντὶ ὑπογραφῆς, οἱ δὲ συμβολαιογράφοι καὶ ἄλλοι δημόσιοι λειτουργοὶ διὰ μονογραμμάτων ἐπίσης ὑπέγραφον τὰ ἔγγραφα καὶ τὰς ἐπισήμους πράξεις. Μικρὸν κατὰ μικρὸν ἐξ ἄλλου ἡ ἐπιτυχὴς καὶ καλαίσθητος σύνθεσις ἑνὸς μονογράμματος ἐξειλίχθη εἰς περιωπὴν καλλιτεχνικοῦ εἴδους, σῴζονται δὲ πράγματι τινὰ ἐξ αὐτῶν ἄξια τοιούτου χαρακτηρισμοῦ.

Μεγάλη χρῆσις τῶν μονογραμμάτων ἐγένετο καὶ ἐξακολουθεῖ νὰ γίνεται, ἰδίως ἐπὶ τῶν ἀσπρορούχων (ὑποκαμίσων, ρινομάκτρων κλπ.), καὶ ἐπὶ χρυσῶν καὶ ἀργυρῶν κοσμημάτων καὶ κομψοτεχνημάτων (ὡς εἰς δακτυλίους, περιδέραια, ὡρολόγια, σιγαροθήκας, λαβὰς ῥάβδων, καπνοσύριγγας, κοσμηματοθήκας κλπ.), ἐπίσης δὲ ἐπὶ βιομηχανικῶν, μεταλλίνων ἰδίως, προϊόντων, ἐπὶ τῶν ὁποίων διὰ μονογράμματος συνήθως ἀποτυποῦται τὸ ὄνομα τοῦ παράγοντος αὐτὰ ἐργοστασίου. — Ρ.

**μονόγραπτος** (ὁ) (Monograptus) *[Παλαιοζ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μονογραπτιδῶν ἀξονοφόρων γραπτολοειδῶν γραπτολιθοειδῶν κνιδοζῴων* κοιλεντερωτῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον ἁπλοῦν, ἀδιακλάδιστον ῥαβδόσωμον, κυψέλας ἐπιμήκεις καὶ στόματα προβοσκιδοειδῆ. Λείψανα ἀπολιθωμένα μονογράπτων εὑρίσκονται ἄφθονα ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἀνωτέρας σιλουρίου ὑποδιαιρέσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

*Μονόγραπτος.*

**μονογραφὴ** (ἡ)· συντετμημένη ὑπογραφὴ εἰς τὰ ἀρχικά της στοιχεῖα.

**μονογράφησις,** *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μονογραφεῖν, ἡ διὰ τῆς μονογραφῆς τινος ἐπισημείωσις, δηλοῦσα τὴν θεώρησιν τοῦ ἐγγράφου.

**μονογραφία** (ἡ). Μελέτη πραγματευομένη ἐξαντλητικῶς εἰδικόν τι ὅλως καὶ αὐτοτελὲς ζήτημα, ὅπερ ἢ ἐλάχιστα ἢ οὐδόλως ἔχει θέσιν εἰς σύγγραμμα γενικῆς φύσεως· π. χ. περὶ τῆς διαθήκης τοῦ Ἀριστοτέλους, ἢ περὶ τῆς στίξεως ἐν τοῖς ἑλληνικοῖς χειρογράφοις, ἢ περὶ τῆς δοτικῆς παρ' Ὁμήρῳ, ἢ περὶ τῆς ἐνετοκρατίας εἰς τοὺς Παξούς. Κατὰ ταῦτα ἡ μονογραφία διαφέρει τοῦ δοκιμίου καὶ τῆς *πραγματείας*, ὡς καὶ τῆς διατριβῆς, ἥτις πραγματεύεται εὐρέως ζήτημά τι, ὅπερ ἀποχωρίζει ἀπὸ εὐρύτερον κύκλον γνώσεων, πρὸς ὃν συνάπτεται ἀμέσως· π. χ. περὶ τῆς ἰδέας τοῦ καλοῦ παρὰ Πλάτωνι, περὶ τῆς ἀθεΐας τῶν ἀρχαίων σοφιστῶν, περὶ ἑλωδῶν πυρετῶν κτλ. Ι. Θ. Δ.

Digitized by Google

**μονογραφῶ** (—*έω*), *ἀόρ. ἐμονογράφησα—ἐμονογραφήθην, παρ. παθ. μετχ. μονογραφημένος*· θέτω τὴν μονογραφήν μου εἴς τι ἔγγραφον πρὸς δήλωσιν ὅτι ἐθεώρησα, ἐξήτασα αὐτό, ὑπογράφω διὰ τῆς μονογραφῆς μου: «ἐμονογραφήθη ἡ σύμβασις».

**Μονοδάκτυλον** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ὄρος ἐν τῇ «Αἰθιοπίᾳ ὑπὸ Αἴγυπτον», ἀναφερόμενον ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Δ, 7, 2) ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Τρωγλοδυτῶν. Α. Θ. Σ.

**Μονοδένδρι** *[Γεωγ.]*. — 1) Χωρίον τῆς ἐπαρχία Πατρῶν τοῦ νομοῦ 'Αχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τῶν Βραχνεΐκων, εἰς ὧν τὴν κοινότητα ὑπήγετο, ἀποσπασθὲν ἐσχάτως, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 386.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης ('Ιωαννίνων) τοῦ νομοῦ 'Ιωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 223.

—3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος χωρίου *Τριταίου* (βλ. λ.). Χ. Δ.

— **Μονοδένδρι** *[Γεωγρ.]*. 'Ακρωτήριον τῆς Μικρᾶς 'Ασίας, 18 χλμ. νοτίως τῆς Μιλήτου. Εἶναι τὸ ἀρχαῖον *Ποσείδιον*. Παρὰ τὴν παραλίαν τοῦ ἀκρωτηρίου ἐσῴζετο μέχρι τοῦ 1915 εἷς κέδρος, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα τοῦ μέρους. Α. Ε. Θ.

**Μονοδένδριον** (τό). Μυθικὸς τόπος ἀναφερόμενος εἰς τοὺς βυζαντινοὺς χρησμοὺς καὶ τὰς περὶ ἐκδιώξεως τῶν Τούρκων ἐκ τοῦ Βυζαντίου παραδόσεις. 'Αντιστοιχεῖ πρὸς τὴν *Κόκκινη* μηλιὰ (βλ.λ.) τῶν νεοελληνικῶν παραδόσεων καὶ ἀναφέρεται εἰς τὸ προφητικὸν βιβλίον τοῦ Δανιήλ, γραφὲν κατὰ τὸν ΙΔ΄ αἰῶνα, εἰς τὴν ἱστορικὴν συγγραφὴν τοῦ Δούκα καὶ εἰς τὸν περίφημον «Θρῆνον» ἐπὶ τῇ ἁλώσει τῆς Κωνσταντινουπόλεως. [Πρβλ. *Ν. Γ. Πολίτου,* Παραδόσεις τ. Α, σ. 22, τ. Β, σ. 670 κ. ἑξ.]

**μονοδιάστατος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνον διάστασιν: «μονοδιάστατον μέγεθος».

—*[Μαθημ.] Μονοδιάστατον μέγεθος* λέγεται τὸ ἔχον μίαν μόνον διάστασιν, ὡς εἶναι π.χ. ἡ γραμμὴ (εὐθεῖα ἢ καμπύλη) καὶ ὁ χρόνος. Ἐνῷ ἡ ἐπιφάνεια ἔχει δύο διαστάσεις καὶ ὁ ὄγκος τρεῖς. Ν. Γ.

**μονοδόντης** (ὁ) (Monodontus) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων γαστεροπόδων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *προσθιοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *τροχιδῶν*, περιλαμβάνον θαλάσσια ζῳάρια μὲ κόγχην περιεστραμμένην, ἄνοιγμα κόγχης ἡμικυκλικὸν καὶ πόδας ἱκανοῦ πάχους. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς τροπικὰς θαλάσσας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μονοδοντίδαι** (οἱ) (Monodontidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κητῶν*, περιλαμβάνουσα ἱκανοῦ μεγέθους κήτη. Μοναδικὸν γένος εἶναι ὁ *μονόδους* (βλ. λ.). Δ.Ν.Π.

**μονοδορὰ** (ἡ) (Monodora) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀνωνοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δενδρύλλια ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς 'Αμερικῆς. 'Εκ τῶν τριῶν εἰδῶν τοῦ γένους ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μονοδορὰ ἡ μυριστικὴ* (Monodora myristica), δένδρον μετρίου ἀναστήματος, τοῦ ὁποίου ὁ καρπὸς ὁμοιάζει πρὸς τὴν ὑδροκολοκύνθην καὶ περιέχει σπέρματα ἱκανά, ἀποδίδοντα ἀρωματικὸν ἔλαιον, δι' ὃ καὶ χρησιμοποιοῦνται πολλαχοῦ ὡς καρύκευμα. Δ. Ν. Π.

**μονόδους** (ὁ) (Monodon) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μονοδοντιδῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὸν *μονόδοντα τὸν μονόκερων* (Monodon monocerus). Οὗτος φθάνει εἰς μῆκος 5 περίπου μέτρων καὶ ἔχει κεφαλὴν μι-

*Μονόδους ὁ μονόκερως.*

κράν, σχετικῶς πρὸς τὸν ὄγκον τοῦ σώματος, ἥτις ἀπολήγει εἰς ἐπιμήκη τριγωνικὴν καὶ ἰσχυροτάτην κερατοειδῆ ἀπόφυσιν, ὀφθαλμοὺς μικροτάτους, σῶμα ὀγκῶδες καὶ ἐπίμηκες. Κερατοειδῆ ἀπόφυσιν φέρει μόνον ὁ ἄρρην, αὕτη δὲ θεωρεῖται ὡς προσαρτηματικὴ ἀπόφυσις τοῦ μέσου ὀδόντος τῆς ἄνω σιαγόνος. Ὁ χρωματισμός του εἶναι μελανόφαιος κατὰ τὴν ράχιν καὶ ὑπόλευκος κατὰ τὰς πλευρὰς καὶ τὴν κοιλίαν καὶ ποικίλλεται ὑπὸ πολυπληθῶν μελανῶν στιγμάτων. 'Απαντᾷ εἰς τὰς βορείους θαλάσσας τῆς Εὐρώπης καὶ ἁλιεύεται διὰ τὸ ἔλαιον, ὅπερ ἐκκρίνει τὸ σῶμά του καὶ ὅπερ ποικίλως χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν βιομηχανίαν. Δ. Ν. Π.

**μονόδραμα,** — *ατος* (τό). Θεατρικὸν ἔργον δι' ἓν μόνον πρόσωπον. Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος τὰ μονοδράματα μετὰ μουσικῆς ὑποκρούσεως ἦσαν τοῦ συρμοῦ· τὰ καλύτερα ἐκ τούτων ἔγραψεν ὁ *Γεώργιος Μπέντα.* Γ. Σ.

**μονόδρομος** *συνάρτησις*· βλ. λ. *συνάρτησις.*

**Μονόδρυ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Διακρίνεται εἰς *Ἄνω καὶ Κάτω Μονόδρυ,* χωριζόμενα ὑπὸ τοῦ *'Οξυλιθιώτικου* ποταμίου. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 637. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ ΝΔ. τούτου χωρίον *Κοίλη*. Ἡ κοινότης παράγει ἀραβόσιτον, ἔλαιον, οἶνον, σῦκα καὶ κάρυα. Ι. Σ. Σ.

**μονοειδὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ ἀποτελούμενος ἐξ ἑνὸς εἴδους, *ἀντίθ. πολυειδής.*

**μονοετὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ ἔχων ἡλικίαν ἑνὸς ἔτους: «μονοετὲς νήπιον»· ‖ ὁ διαρκῶν ἐπὶ ἓν ἔτος: «μονοετὴς θητεία».

— **μονοετῆ φυτὰ** *[Βοτ.]*· βλ. λ. *ἐτήσια φυτά.*

**μονόζαι** (αἱ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *μονοσακχαρῖται.*

**μονόζυγον** (τό). Ὄργανον γυμναστικὸν τοῦ γερμανοελβετικοῦ συστήματος, ἀποτελούμενον ἀπὸ δύο στερεοὺς στύλους ξυλίνους ἢ σιδηροῦς, ἐμπεπηγμένους ἢ στηριζομένους καλῶς ἐπὶ τοῦ ἐδάφους καὶ ἐζευγμένους δι' ἑνὸς σιδηροῦ κυλινδρικοῦ ζυγοῦ διαμέτρου 0,03 μ. περίπου. Εἰς τὸ μονόζυγον ἐκτελοῦνται ἐξαρτήσεις, αἰωρήσεις, στηρίγματα ὁριζόντια, πρηνῆ καὶ ὕπτια, ἀναστροφαὶ καὶ κυβιστήσεις, καθὼς καὶ ὅλη ἡ σειρὰ τῶν ἀκροβασιῶν, ἀπὸ τῶν ἁπλῶν μύλων καὶ περιαιωρημάτων μέχρι γιγαντιαιωρήματος. Τὸ μονόζυγον ἐπενοήθη ὑπὸ τοῦ Φρ. Λοῦδ Γιὰν κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος. Δ.ΚΑΡ.

*Μονόζυγον.*

**μονοθάλαμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα καὶ μόνον θάλαμον.

**μονοθεΐα** (ἡ)· ἡ πίστις εἰς ἕνα καὶ μόνον θεόν· *ἀντίθ. πολυθεΐα.*

— *[Φιλοσ.]* Βλ. λ. *μονοθεϊσμός.*

**μονοθεϊκός,** —*ή,* —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μονοθεΐαν, ὁ τῆς μονοθεΐας: «μονοθεϊκὴ θρησκεία».

**μονοθειοαιθυλενογλυκόλη** (ἡ), ἢ ***αἰθανόλη* - (1) - *θειόλη*** - (2) *['Οργ. Χημ.]*. 'Οργανικὴ ἕνωσις τοῦ τύπου $CH_2$ (OH). $CH_2$ (SH). Παρασκευάζεται δι' ἐπιδράσεως ὀξίνου θειοκαλίου KSH ἐπὶ χλωρυδρίνης $CH_2$ (OH). $CH_2$ Cl καὶ ἀποτελεῖ ἄχρουν βαρύτερον τοῦ ὕδατος ὑγρόν. Σ. Γ.

**μονοθεϊσμὸς** (ὁ)· τὸ δόγμα τῆς πίστεως εἰς ἕνα καὶ μόνον θεόν· *ἀντίθ. πολυθεϊσμός.*

—*[Φιλοσ.] Μονοθεϊσμὸς* εἶναι ἡ πίστις εἰς ἕνα καὶ μόνον θεὸν καὶ δὴ μετὰ ρητῆς ἀρνήσεως παντὸς ἄλλου, ὡς καταφαίνεται ἐξ ὅλων τῶν μεγάλων μονοθεϊστικῶν θρησκειῶν, εἰς ἃς εἶναι κοινὴ ἡ ἄρνησις αὕτη. Ὁ μονοθεϊσμός, ὅστις εἶναι ἡ κατ' ἐξοχὴν μορφὴ τοῦ *θεϊσμοῦ*, ἀντιδιαστέλλεται πρὸς μὲν τὸν *ἀθεϊσμὸν* διὰ τῆς ἀποδοχῆς τῆς ὑπάρξεως θεοῦ, πρὸς τὸν *πανθεϊσμὸν* διὰ τῆς πίστεως εἰς τὴν ὑπερβατικότητα τοῦ θεοῦ τούτου, πρὸς δὲ τὸν *διισμὸν* διὰ τῆς ἐκδοχῆς τοῦ ἑνὸς τούτου θεοῦ ὡς προσωπικοῦ, ἐνεργοῦντος αἰωνίως ἐν τῷ κόσμῳ διὰ τῆς βουλήσεως καὶ τῆς δυνάμεως αὐτοῦ. Ὁ μονοθεϊσμός, ὡς πλεῖστα ἄλλα θρησκειολογικὰ φαινόμενα, ἀποτελεῖ ὑποκείμενον ἐρεύνης καὶ τῆς φιλοσοφίας καθόλου καὶ δὴ τῆς μεταφυσικῆς καὶ τῆς δογματικῆς καὶ φιλοσοφίας τῆς θρησκείας ἰδιαιτέρως. Αἱ περὶ γενέσεως τοῦ μονοθεϊσμοῦ θεωρίαι δύνανται νὰ συνοψισθοῦν εἰς τρεῖς: Κατὰ τὴν πρώτην αὐτῶν ὁ μονοθεϊσμὸς ἀποτελεῖ τὴν ἀρχικὴν μορφὴν τῆς θρησκείας. Τὴν ἄποψιν ταύτην, ἥτις συμφωνεῖ πρὸς τὴν περὶ ἀρχικῆς ἀποκαλύψεως τοῦ θεοῦ καὶ πτώσεως διδασκαλίαν τῆς 'Εκκλησίας, ὑποστηρίζουσιν οἱ ἀρχαῖοι ἀπολογηταὶ καὶ ἐκκλησιαστικοὶ συγγραφεῖς, θεωροῦντες τὸν πολυθεϊσμὸν ἔργον τοῦ διαβόλου, πλὴν ἴσως τοῦ 'Ιουστίνου, ὡς καὶ οἱ σχολαστικοὶ τῶν μέσων αἰώνων. Πρὸς ταύτην συμφωνοῦσι βραδύτερον καὶ οἱ ὀρθολογισταὶ διὰ τῆς θεωρίας αὐτῶν περὶ φυσικῆς ἢ λογικῆς θρησκείας, κυριώτατον γνώρισμα τῆς ὁποίας εἶναι ἡ πίστις εἰς ἕνα θεόν. Οὕτω λ. χ. ὁ Βολταῖρος ἐδίδασκεν ὅτι τὸν ἀρχικὸν μονοθεϊσμὸν διέφθειρεν ἡ ἀνθρωπίνη ἀδυναμία, ὁδηγήσασα εἰς πλείονας θεούς. Ἡ θεωρία αὕτη ἀντεστράφη ὑπὸ τοῦ Hume καὶ ὀλίγον ἔπειτα ὑπὸ τοῦ Rousseau, οἵτινες ὑπεστήριζον ὅτι ἡ πρώτη καὶ παλαιοτάτη θρησκεία τῶν ἀνθρώπων ἐγένετο ὁ πολυθεϊσμὸς καὶ ἡ εἰδωλολατρεία. 'Απὸ τῆς θεωρίας ταύτης ὁρμηθεὶς ὁ A. Comte συνεκρότησε τὴν περὶ τριῶν ἐξελικτικῶν σταδίων ἐν τῇ θρησκείᾳ διδασκαλίαν αὐτοῦ, ὁ δὲ Tylor τὴν περὶ θρησκευτικῆς καθόλου ἐξελίξεως γνωστὴν θεωρίαν του, ἐν τῇ ὁποίᾳ διακρίνει τρεῖς ἐξελικτικὰς φάσεις, τὸν ἀνιμισμόν, τὸν πολυθεϊσμὸν καὶ τὸν μονοθεϊσμόν. 'Απὸ τῆς συστηματικῆς ταύτης περὶ θρησκευτικῆς ἐξελίξεως θεωρίας ἀπομακρύνεται κατ' ὀλίγον ἡ ἐπιστήμη τὸ μὲν διὰ τοῦ Renan, ὅστις ἐπίστευεν ὅτι ὁ μονοθεϊσμὸς εἶναι ἰδιότης τῶν σημιτικῶν φυλῶν, τὸ δὲ διὰ τοῦ M. Müller, ὅστις ἐδίδασκεν ὅτι ἀρχικὴ μορφὴ τῆς θρησκείας οὔτε ὁ μονοθεϊσμὸς οὔτε ὁ πολυθεϊσμὸς εἶναι, ἀλλ' ὁ *ἑνοθεϊσμὸς* (ἢ ἡ *μονολατρεία*), ἐκ τοῦ ὁποίου ἀπέρρευσεν ὅ τε μονοθεϊσμὸς καὶ ὁ πολυθεϊσμός. Ἡ ἐν τῇ θρησκείᾳ τῶν κατὰ φύσιν ζώντων λαῶν ἀνακάλυψις πίστεως εἰς ὕψιστα ὄντα ἢ εἰς ἓν ὕψιστον ὂν ὡδήγησεν εἰς τὴν ἐκ νέου ὑπὸ τῆς ἐπιστήμης ἀνάληψιν τῆς ἰδέας περὶ ἀρχικοῦ μονοθεϊσμοῦ, ἥτις ὅμως ἔδωκε πάλιν ἀφορμὴν εἰς διαφόρους ὑποθέσεις ἀναφερομένας εἰς τὴν ἐξήγησιν τοῦ πολυθεϊσμοῦ, εἰς τὴν ἑρμηνείαν διαφόρων φαινομένων ἐν ταῖς ἀνωτέραις θρησκείαις, ὡς καὶ εἰς τὸ ζήτημα τῆς προελεύσεως τοῦ μονοθεϊσμοῦ τούτου.

Ἡ ὑφισταμένη διχογνωμία ἐν τῇ ἐπιστημονικῇ ἐρεύνῃ δὲν ἠμπόδισε τὰς ἀποπείρας πρὸς νέας περὶ τοῦ μονοθεϊσμοῦ καὶ τῆς ἱστορικῆς πορείας τοῦ θρησκευτικοῦ φαινομένου θεωρίας, ὧν γνωστότεραι ἡ τοῦ Söderblom καὶ ἡ τοῦ Pettaroni. Ὁ πολυθεϊσμὸς εἶναι, κατὰ τὸν τελευταῖον τοῦτον, ἄρνησις τοῦ μονοθεϊσμοῦ· τοῦτο ὅμως, ἂν καὶ προϋποθέτει τὴν πρὸ τοῦ μονοθεϊσμοῦ ὕπαρξιν τοῦ πολυθεϊσμοῦ, δὲν σημαίνει γένεσιν ἐκείνου ἐκ τοῦ τελευταίου τούτου. Διότι ἄρνησις δὲν ἰσοδυναμεῖ πρὸς ἐξέλιξιν, ἀλλὰ πρὸς ἐπανάστασιν· οὐδὲ πρόκειται ἄλλως τε περὶ καθολικοῦ φαινομένου, ὅπερ ἐμφανίζεται ὑπὸ ὡρισμένους ὅρους καὶ κατ' ἀνάγκην, ὡς ἤθελεν ἡ ἐξελικτικὴ θεωρία, ἀλλὰ περὶ ἐξαιρετικοῦ ὅλως γεγονότος, ὅπερ συνδέεται ἀρρήκτως πρὸς ὡρισμένας προσωπικότητας ἐν τῇ ἱστορίᾳ. Τὸ γεγονὸς τοῦτο πειρᾶται νὰ ἐξηγήσῃ ὁ Pettaroni, δεχόμενος ὅτι ὁ μονοθεϊσμὸς ἀποτελεῖ μίαν τῶν θεμελιωδῶν μορφῶν τῆς θρησκευτικότητος, ἥτις ὡς τοιαύτη ὑφίσταται καὶ κατὰ τοὺς προϊστορικοὺς χρόνους ἐν τῇ ψυχῇ τῶν ἀνθρώπων. Ὡς ἱστορικὸν μὲν γεγονὸς ἀνήκει ὁ μονοθεϊσμὸς εἰς τὰς νεωτέρας μορφὰς τῆς θρησκείας, ἀλλ' αἱ πρῶται αὐτοῦ ἀρχαὶ ἀνάγονται εἰς τὴν πρωταρχικὴν μορφὴν τοῦ θρησκευτικοῦ βίου. Τὸ μόνον ἐν τούτοις ἀσφαλές, ὅπερ περιέχει ἡ συμβιβαστικὴ αὕτη θεωρία τοῦ 'Ιταλοῦ θρησκειολόγου, εἶναι ἡ διαπίστωσις ὅτι ὁ μονοθεϊσμὸς συνδέεται πρὸς ὡρισμένας προσωπικότητας, ἐκ τῶν ὁποίων τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσιν ὁ Μωϋσῆς καὶ οἱ προφῆται τοῦ 'Ισραήλ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Söderblom*, Des Werden des Gottesglaubens (β΄ ἔκδ. 1926).—*Schmidt*, Der Ursprung der Gottesidee (β΄ ἔκδ. 1926).—*Lang*, The making of Religion (γ΄ ἔκδ. 1909),—*Radin*, Monotheism among Primitive Peoples (1924). —*Pettaroni*, Dio. Formazione e sviluppo del monoteismo nella storia delle religioni (1922). Ν. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**μονοθεϊστὴς** (ὁ)· ὁ ἀσπαζόμενος τὸ δόγμα τοῦ μονοθεϊσμοῦ.

**μονοθεϊστικός,** —*ή,* —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μονοθεϊστάς, ἄλλως *μονοθεϊκὸς* (βλ. λ.).

**μονοθελῆται** (οἱ). Ἡ αἵρεσις τῶν *μονοθελητῶν* στενῶς συνδέεται πρὸς τὴν τῶν *μονοφυσιτῶν* (βλ. λ.), πιθανῶς προελθοῦσα ἐκ τῆς ἐπιθυμίας τινῶν, ὅπως εὑρεθῇ μέσον καὶ τρόπος πρὸς ἕνωσιν αὐτῶν μετὰ τῶν ὀρθοδόξων· ὡς τοιοῦτο δὲ ἐνόμιζον ὅτι δύναται νὰ χρησιμεύσῃ ἡ φράσις δύο φύσεις ἐν Χριστῷ, ἀλλὰ μία ἐνέργεια καὶ θέλησις. Τῆς ἰδέας ταύτης ἀντείχοντο ὅ τε αὐτοκράτωρ Ἡράκλειος (611—641) καὶ ὁ Κωνσταντινουπόλεως Σέργιος ὁ Α΄ (610—639), οἵτινες συνεννοήθησαν μετὰ τῶν μονοφυσιτῶν πατριαρχῶν 'Αντιοχείας 'Αθανασίου καὶ 'Αλεξανδρείας Κύρου καὶ κατώρθωσαν νὰ πείσωσιν αὐτούς, ὅπως ἀποδεχθῶσι τὴν φράσιν μία θεανδρικὴ ἐν Χριστῷ ἐνέργεια. 'Αλλ' ἐνῷ μετὰ πολλῆς ἐπιφυλάξεως ἐγίνοντο ταῦτα, δύο μοναχοί, ὁ Σωφρόνιος καὶ ὁ Μάξιμος, ζωηρῶς ἐπολέμησαν τῆς περὶ μιᾶς θελήσεως διδασκαλίαν, καταδεικνύοντες τὴν ἀντίφασιν αὐτῆς πρὸς τὰς δύο φύσεις. Ἡ ἐνέργεια αὕτη τῶν ὀρθοδόξων μοναχῶν ἠνάγκασε τὸν Σέργιον νὰ ἀπαγορεύσῃ τὴν περὶ μιᾶς θελήσεως διδασκαλίαν, ἀλλ' ὁ Σωφρόνιος ἐξηκολούθει νὰ πολεμῇ αὐτήν, μάλιστα δὲ ὅτε ἀναβὰς τὸν πατριαρχικὸν τῆς 'Ιερουσαλὴμ θρόνον οὐδένα κίνδυνον διέτρεχεν ἀπὸ μέρους τοῦ Ἡρακλείου. Οὗτος τότε, πρὸς κατασίγασιν τῆς ἔριδος, ἔχων ὑπὲρ ἑαυτοῦ, ἐκτὸς τοῦ Σεργίου, καὶ τοὺς πατριάρχας τῆς 'Αντιοχείας καὶ 'Αλεξανδρείας, ἀναμφιβόλως δὲ καὶ τὸν πάπαν Ὁνώριον, ἐξέδωκε τὴν λεγομένην ἔκθεσιν, δι' ἧς ὡς μόνην ἀληθῆ

Digitized by Google

διδασκαλίαν ἐπέβαλλε τὴν περὶ μιᾶς θελήσεως. Ἀλλὰ κατὰ τῆς ἐκθέσεως ἐξηγέρθη ὁ Μάξιμος ἐν συνεννοήσει μετὰ τοῦ πάπα Μαρτίνου τοῦ Α'. Οὕτω τὰ πράγματα ἐτραχύνθησαν, πρὸς ἐπαναφορὰν δὲ τῆς πρὸ τῆς ἔριδος καταστάσεως Κώνστας ὁ Β' ἐξέδωκε τῷ 648 τὸν λεγόμενον τύπον, ἐν ᾧ ἀπηγόρευε νὰ γίνηται λόγος περὶ μιᾶς ἢ δύο θελήσεων. Τότε ὅμως ὁ πάπας Μαρτῖνος συνεκρότησε, τῷ 649, τὴν ἐν Λατερανῷ πρώτην σύνοδον, ἐν ᾗ κατεδίκασε τόν τε τύπον καὶ τὴν ἔκθεσιν. Ἀλλ' ὁ Κώνστας συνέλαβε τότε τὸν Μαρτῖνον καὶ μὴ δυνηθεὶς νὰ θραύσῃ τὸ φρόνημα αὐτοῦ μετὰ πολλὰς κακώσεις ἐξώρισεν εἰς Χερσῶνα, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 655. Φρικωδεστέρα ἦτο ἡ τύχη τοῦ ἑτέρου τῆς ὀρθοδοξίας προμάχου, τοῦ ἱεροῦ Μαξίμου, ὅστις συλληφθεὶς ἐν Ῥώμῃ καὶ ἀπαχθεὶς εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἀφοῦ ὑπεβλήθη εἰς διαφόρους βασάνους, ἐξετμήθη τὴν γλῶσσαν καὶ τὴν δεξιὰν καὶ ἐρρίφθη εἰς τὴν χώραν τῶν Λαζῶν, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 662. Ὁ ἀγὼν ὅμως ἐξηκολούθει μεταξὺ τῶν δύο μερίδων, ὅτε Κωνσταντῖνος ὁ Πωγωνᾶτος (668—685), θέλων νὰ ἀποκαταστήσῃ τὴν εἰρήνην τῆς Ἐκκλησίας, συγκροτεῖ ἐν Κωνσταντινουπόλει τὴν Ε' Οἰκουμενικὴν σύνοδον ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ πατριάρχου Γεωργίου, ἥτις ὁμολογοῦσα ἐν τῷ ὅρῳ αὐτῆς ἕνα Χριστὸν ἐν δύο φύσεσι καὶ δύο θελήσεσι καὶ φυσικαῖς ἐνεργείαις, κατεδίκασε τοὺς αἰτίους τῆς αἱρέσεως, ὡς καὶ τὸν πάπαν Ὁνώριον. Οὕτω κατεβλήθη ὁ μονοθελητισμός· ἐπειδὴ ὅμως ἐπὶ Ἰουστινιανοῦ τοῦ Β' ἤρξατο νὰ ἐγείρῃ κεφαλήν, τῷ 692 συνεκροτήθη ἐν Κωνσταντινουπόλει ἡ Πενθέκτη ἢ Β' ἐν Τρούλλῳ σύνοδος, ἥτις, πρὸς συμπλήρωσιν τῆς Ε' καὶ ΣΤ' Οἰκουμενικῆς συνόδου, ἐπεκύρωσε τὸν ὅρον τῆς ΣΤ' καὶ συνέταξεν 102 κανόνας. Ἔκτοτε κατέπεσε τέλεον ὁ μονοθελητισμός, περιορισθεὶς μόνον ἐν γωνίᾳ τινὶ ἐπὶ τοῦ Λιβάνου, ἐν τῷ μοναστηρίῳ τοῦ Μάρωνος, ὑπὸ τὸ ὄνομα τῶν *μαρωνιτῶν* (βλ. λ.). [Πρβλ. *Φ. Βαφείδου*, «Ἐκκλ. Ἱστ.» (τόμ. Α', σ. 249).—*Hefele*, «Concil-Gesch.» (τόμ. Β').—*Döllinger*, «Papstfabeln» (1863). — *Ruckgaber*, «Die Irrlehre des Honorius» (1871) κ.ἑξ.] † Η. Φ. Β.

**μονοθελητικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μονοθελήτας, ὁ τῶν μονοθελητῶν.

**μονοθερμία** (ἡ) (Monothermie). Οὕτω καθορίζεται ἡ ταυτότης μεταξὺ τῆς πρωϊνῆς καὶ τῆς ἑσπερινῆς θερμοκρασίας πάσχοντός τινος. Ἡ ἀνωμαλία αὕτη παρετηρήθη εἰς τὰς παθήσεις τῶν χοληφόρων ὁδῶν καὶ εἰς τὰς γαστροεντερικὰς τοιαύτας. Μ. Ν. Κ.

**μονόθυρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνον θύραν, χαρακτηριστικὸν ἐπίθετον εἴδους ὀστρέων, οἷον ἡ λεπὰς (πεταλίδα).

**μονοιάζω**, *ἀόρ. ἐμόνοιασα, παθ. μετχ. μονοιασμένος*· δημοτ., εὑρίσκομαι ἐν ὁμονοίᾳ μετά τινος, εἶμαι σύμφωνος, ὁμονοῶ: «τόσα χρόνια μαλώνανε, τώρα μονοιάσανε», «ὁ σκύλλος μὲ τὴ γάτα δὲ μονοιάζουν», «εἶναι μονοιασμένα ἀδέρφια, ποτὲ δὲ μαλώνουν»· || μεταβ., κάμνω νὰ ὁμονοήσουν, συμφιλιώνω: «τοὺς μόνοιασε ἡ ἀνάγκη».

**μόνοιασμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μονοιάζω, ἀποκατάστασις ὁμονοίας.

**μονοϊδεϊσμός**, ἢ ***μονοϊδεασμὸς*** (monoïdeismus). Καλεῖται οὕτω ἡ συγκέντρωσις τῆς προσοχῆς πέριξ μιᾶς κυριαρχούσης ἰδέας, ἡ κατάστασις ἐκείνη τῆς συνειδήσεως, καθ' ἣν μία μόνον ἰδέα, ἁπλουστάτου συνήθως περιεχομένου, καταλαμβάνει τὸ πνεῦμα κατὰ τρόπον ἀποκλειστικὸν καὶ διαρκῆ.

**μονοικία** (ἡ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται τὸ φαινόμενον, καθ' ὃ ὑπάρχουν ἄνθη διγενῆ ἐπὶ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ φυτοῦ. Δ. Ν. Π.

**Μόνοικον**, ἢ ***Μόνοικος*** *[Γεωγρ.]*. Γεωργικὴ κωμόπολις τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ἕδρα ὁμωνύμου κονότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον Παλαιότερον ὠνομάζετο *Βεζνῖκον*. Κατ. (1928) 2296. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὸς *Δράνοβον* καὶ *Ζελῆ*. Χ. Δ.

**Μόνοικος** *[Μυθολ.]*. Προσωνυμία τοῦ Ἡρακλέους, πιθανὸν λόγῳ τοῦ ὅτι «μόνος οἰκεῖ», ἤτοι ἐλατρεύετο μόνος ἐν τῷ ναῷ του καὶ οὐχὶ μετ' ἄλλης θεότητος, ὡς συνέβαινε περὶ ἄλλων θεῶν (Ἀφροδίτη-Ἔρως). Ὁ Μόνοικος Ἡρακλῆς ἦτο ἐπώνυμος ἥρως τῆς ἐπὶ τῶν ἀκτῶν τῆς Λιγυρίας ἀρχαίας πόλεως καὶ τοῦ λιμένος, τὸν ὁποῖον ὁ Στράβων ὀνομάζει «λιμένα Μονοίκου», ἀκριβῶς ἔνθα κεῖται τὸ σημερινὸν *Μονακό*. Ν. Α.

— **Μονοίκου *Ἡρακλέους*** *ἱερὸν [Ἀρχ. Γεωγρ.]* βλ. *Μονοίκου* λιμήν.

— **Μονοίκου *λιμὴν*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Μασσαλιωτῶν (*Πτολεμ.* Γ, α, 2, Nobbe) ἀρχαιοτάτη, ἅτε ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Ἑκαταίου (παρὰ *Στεφ. Βυζαντίῳ*) ὡς πόλις λιγυστική: «ὁ δὲ τοῦ Μονοίκου λιμὴν ὅρμος ἐστίν, οὐ μεγάλαις οὐδὲ πολλαῖς ναυσίν, ἔχων ἱερὸν Ἡρακλέους Μονοίκου καλουμένου. Ἔοικε δὲ ἀπὸ τοῦ ὀνόματος καὶ μέχρι δεῦρο διατείνειν ὁ Μασσαλιωτικὸς παράπλους» (*Στράβ.* Δ, στ, 3, Teubner). Ἡ δυσχέρεια τῶν διὰ ξηρᾶς ἐπικοινωνιῶν του καὶ δὴ πρὸς τὴν ἐνδοχώραν παρημπόδισε τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ Μονοίκου λιμένος, ὅστις ἐχρησιμοποιεῖτο μόνον ὡς ναυτικὸς σταθμός, ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων καλούμενος Herculis Monoeci portus, ἔξω δὲ τῆς πόλεως καὶ εἰς τὸ ὑψηλότερον σημεῖον τῆς παραθεούσης τὴν παραλίαν ῥωμαϊκῆς ὁδοῦ ὑπῆρχε τρόπαιον ἀνεγερθὲν ὑπὸ Αὐγούστου καὶ ἀπαθανατίζον, ὡς ἡ ῥωμαϊκὴ ἐπιγραφή του ἱστορεῖ, τὴν καθυπόταξιν τῶν λαῶν τῶν παραθαλασσίων Ἄλπεων, δι' ὃ Tropaea Augusti (νῦν La Turbie) καὶ Τρόπαια Σεβαστοῦ (*Πτολεμ.* αὐτόθ.) ἡ θέσις ἐκλήθη (Ammian. 15, 10,9, Lucan. Phars. 1, 405. Sil. Ital. 1, 586). Εἰς τὸ Ἀντωνινιανὸν θαλασσ. ὁδοιπορ. φέρεται ὡς Hercle Manico portus (σελ. 503). Εἶναι δὲ τὸ σύγχρονον *Μονακὸ* (πλάτ. 43° 44' Β., μῆκ. 7° 26' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3220: Port Monaco). Σ.Ε.Λ.

**μονοκάβαλλοι** (οἱ)· βλ. λ. *ἀκρῖται* (τ. Γ', σ. 169γ').

**Μονοκάμινον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λιβύης, ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Μαρεώτου νομοῦ πρὸς Δ. τῆς Αἰγύπτου, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. IV, 5, 15) οὐ μακρὰν τῆς Δέρριδος ἄκρας (νῦν ἀκτὴ Δρεσιέ). Α. Θ. Σ.

**Μονοκάμπιον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Περδικίου τῆς ἐπαρχίας Ἰκαρίας τοῦ νομοῦ Σάμου. Κάτ. (1928) 142. Χ. Δ.

**μονοκαρβονικὰ** ***ὀξέα*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Τὰ ὀργανικὰ ὀξέα τὰ περιέχοντα ἐν τῷ μορίῳ αὐτῶν μόνον μίαν καρβοξυλικὴν ὁμάδα —COOH—. Σ. Γ.

**μονόκαρπα** (τὰ) *[Βοτ.]*. Καλοῦνται τὰ φυτά, ἅτινα ἅπαξ μόνον κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ βίου των καρποφοροῦσιν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ *πολύκαρπα* (ἢ *πολύτοκα*), ἅτινα καρποφοροῦσι πλειστάκις. Τὰ μονόκαρπα καλοῦνται καὶ *μονότοκα*. Δ.Ν.Π.

**μονοκαρπόφυλλος** (ἡ). Καλεῖται ἡ ᾠοθήκη τοῦ ἄνθους, ἥτις ἀποτελεῖται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου καρποφύλλου.

**Μονόκαρτον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀχυρὰ πόλις τῆς Μεσοποταμίας, κειμένη ἐπὶ τῶν μεσημβρινῶν κλιτύων τοῦ ὄρους Ἀϊσουμᾶ (νῦν Καρατζᾶ-ντάγ) καὶ μεταξὺ τῶν πόλεων Ἀμίδης (νῦν Διαρβεκὴρ) καὶ Ἐδέσσης (νῦν Οὖρφας). Ἀνακαινισθεῖσα ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Τιβερίου Β' (578—582) μετωνομάσθη *Τιβεριούπολις*. Ν. ΚΛΣ

**Μονοκαρυὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἰστιαίας (Ξηροχωρίου) τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 376. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κυπαρίσσι*. Χ. Δ.

**Μονοκαρυδιὰ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Σιδηροχωρίου (Δεμιρλῆ) τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Μουρσαλῆ*. Κάτ. (1928) 74. Χ. Δ.

**Μονοκαστάνου *μονή***. Κειμένη ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἀναφέρεται κατὰ τοὺς χρόνους Ῥωμανοῦ τοῦ Λεκαπηνοῦ, ὅτε καταφυγὼν εἰς αὐτὴν ἐκάρη μοναχὸς Ἰωάννης ὁ μυστικὸς καὶ παραδυναστεύων τῷ Ῥωμανῷ. Ἐσῴζετο μέχρι τῶν μέσων τῆς ΙΑ' ἑκατονταετηρίδος, τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι *Ἡλιοὺ τοῦ προφήτου*. Μ. Ι. Γ.

**μονοκάταρτο** (τό)· ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τὸ *μονόστηλον* (βλ. λ.) πλοῖον.

**μονοκατοικία** (ἡ)· οἰκία ἀποτελοῦσα μίαν καὶ μόνην κατοικίαν· ἀντίθ. *πολυκατοικία*.

**μονοκερκομονὰς** (ἡ) (Monocercomonas) *[Ζῳολογ.]*. Γένος πρωτοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μαστιγωτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *κερκομοναδιδῶν*, περιλαμβάνον μικροτάτους ζῳϊκοὺς ὀργανισμοὺς παρασιτικῶς ἐνδιαιτωμένους ἐπὶ διαφόρων ζῴων ἢ φυτῶν. Δ. Ν. Π.

**μονόκερως**, *—ωτος* (ὁ, ἡ)· ὁ ἔχων ἓν κέρατον, μονοκέρατος.

— *[Μυθολ.]* Περὶ τοῦ μυθολογικοῦ τούτου ζῴου ἀναφέρει πρῶτος ἐκ τῶν ἀρχαίων ὁ ἰατρὸς Κτησίας (400 π. Χ.), ὀνομάζων αὐτὸ «λευκὸν ὄνον». Ἄλλοι συγγραφεῖς, ἐν οἷς καὶ ὁ Ἀριστοτέλης, ὁ Πλίνιος καὶ ὁ Αἰλιανός, τὸ ἀποκαλοῦν «ὄνον ἰνδικόν», συμφωνοῦν δὲ πάντες ἐπὶ τοῦ ὅτι τόπος προελεύσεώς του ἦσαν αἱ Ἰνδίαι καὶ ὅτι περιεγράφετο ὡς ὁμοιάζον πρὸς ἵππον ἐν ταυτῷ καὶ ὄνον, ἀπὸ τῆς κεφαλῆς τοῦ ὁποίου προέβαλλεν ἓν καὶ μόνον εὐθὺ καὶ μακρότατον κέρας. Ὁ μονόκερως εἶχε, κατὰ τὴν παράδοσιν, σῶμα λευκόν, κεφαλὴν ἐρυθρὰν καὶ κυανοῦς ὀφθαλμούς, ἦτο δὲ ζῷον ῥωμαλέον, εὐκίνητον καὶ ὑπερήφανον. Ταξιδιῶται τινὲς ἐβεβαίουν ὅτι τὸ εἶχον συναντήσει, οὐδεὶς ὅμως ἐπίστευε σοβαρῶς εἰς τὰς βεβαιώσεις των. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐν τούτοις ἦσαν πολλοὶ οἱ πιστεύσαντες εἰς τὴν πραγματικήν του ὕπαρξιν καὶ ὁ μονόκερως ἔλαβε τὴν θέσιν συμβόλου τῆς ἀγριότητος καὶ τῆς παρθενίας. Εἰς τὸ κέρας του ἀπεδίδοντο θαυματουργοὶ ἰδιότητες, ἐξασφαλίζουσαι ἀπὸ τῆς φαρμακείας, διότι—κατὰ τὰς παραδόσεις πάντοτε—ἡ παρουσία οἱουδήποτε δηλητηρίου μετέβαλε τὸν χρωματισμόν του εἰς μελανόν. Διὰ τοῦτο ἀπὸ τοῦ ΙΔ' ἰδίως αἰῶνος πολλοὶ ἦσαν οἱ ἀπατώμενοι ἀπὸ ἐπιτηδείους ἀπατεῶνας καὶ ἀγοράζοντες κέρατα ῥινοκέρων καὶ ἄλλων ἀκόμη κοινοτέρων ζῴων ὡς προερχόμενα ἀπὸ τὸν ἀνύπαρκτον μονόκερων. —Α

**μονόκερως** (ὁ) *[Ζῳολ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ ζῴου *μονόδους* (βλ. λ.).

**Μονόκερως** *[Ἀστρον.]*. Ἐκτεταμένος ἀστερισμός, συγκείμενος ἐξ ἀμυδρῶν κατὰ τὸ πλεῖστον ἀστέρων καὶ περιλαμβανόμενος μεταξὺ τῆς Ὕδρας καὶ τοῦ Ὠρίωνος. Ἐκ τῶν ἀστέρων αὐτοῦ οἱ μᾶλλον ἀξιοσημείωτοι εἶναι ὁ *β Μονόκερω* καὶ ὁ *ε Μονόκερω*. Ἐκ τούτων ὁ πρῶτος εἶναι τριπλοῦς ἀστήρ, οὗτινος τὰ μέλη εἶναι μεγέθους 4,7—5,2 καὶ 5,6 καὶ ὁ δεύτερος διπλοῦς (4,5 καὶ 6,5). Μεταξὺ τοῦ τελευταίου τούτου καὶ τοῦ *δ Μονόκερω* εὑρίσκεται ἐνδιαφέρον ἀστρικὸν σμῆνος μετὰ τριῶν κλάδων, φερόμενον εἴς τινας ἄτλαντας τοῦ οὐρανοῦ ὑπ' ἀριθμὸν 1465 ἢ 2301. Ἄξιον λόγου εἶναι ἐπίσης τὸ ἐγγὺς τοῦ αὐτοῦ ἀστέρος ἀστρικὸν σμῆνος 1424 ἢ 2244, ὅπερ εἶναι προσιτὸν εἰς συνήθη διόπτρα, ὡς καὶ τὸ ἀστρικὸν σμῆνος 1631 ἢ 2548, ὅπερ ἀπαρτίζεται ἐκ πλήθους ἀστέρων 9ου μεγέθους περίπου. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**μονοκεφάλιος** (ὁ) (monocephalien) *[Τερατογ.]*. Τερατογονικὴ διάπλασις. Οἱ μονοκεφάλιοι εἶναι οἰκογένεια διπλῶν τεράτων, περιλαμβάνουσα πάντα τὰ διπλᾶ αὐτόσιτα τέρατα, παρ' οἷς ἡ διπλῆ κεφαλὴ δὲν ἐμφανίζει οὐδὲν ἐξωτερικὸν ἴχνος τῆς διπλῆς ὑποστάσεως, εὑρίσκεται δὲ ὑπερκειμένη δύο σωμάτων συγχεομένων κατὰ τρόπον κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον στενόν, καὶ ἐπὶ ἐκτάσεως κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλης. Οἱ μονοκεφάλιοι ἐνέχουσι δύο χαρακτηριστικά: πρῶτον, τὴν καταφανῆ μοναδικότητα τῆς κεφαλῆς, ἥτις καὶ διακρίνει ἐν γένει τοὺς μονοκεφάλους τῶν λοιπῶν αὐτοσίτων διπλῶν τεράτων· δεύτερον δὲ τὴν συγχώνευσιν τῶν δύο σωμάτων, τὸ χαρακτηριστικὸν δηλαδή, ἐξ οὗ αἱ διάφοροι μεταβολαὶ θέλουσι χρησιμεύσει ὡς βάσις τοῦ καθορισμοῦ τῶν γενῶν. Ὅταν οἱ κορμοὶ εἶναι κεχωρισμένοι κάτωθι τοῦ ὀμφαλοῦ καὶ συνηνωμένοι ὕπερθεν τούτου, ἔχομεν τὰ γένη *δεράδελφον* καὶ *θωρακόδελφον* (βλ. λ.). Ὅταν δὲ ἀπ' ἐναντίας ἡ συνένωσις τῶν κορμῶν ἐκτείνεται μέχρι κάτωθι τοῦ ὀμφαλοῦ, ἔχομεν τὰ γένη *εἰλεάδελφον* καὶ *συνάδελφον* (βλ. λ.).

Τὰ μονοκεφάλια τέρατα εἶναι ἐξαιρετικῶς σπάνια εἰς τὸ ἀνθρώπινον γένος. Ὁ I. G. Saint Hilaire ἐρευνῶν πάντα τὰ μουσεῖα τῆς Γαλλίας καὶ τοῦ Βελγίου μόνον δύο περιπτώσεις δεραδελφίας συνέλεξεν, ἐνῷ παρὰ τῷ ἀνθρώπῳ οὐδεμίαν περίπτωσιν εὗρε θωρακοδελφίας ἢ συναδελφίας. Μ.Ν.Κ.

**μονοκέφαλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν κεφαλήν.

**Μονοκκλησιὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Προβατᾶ (Γενῆ-Κιόϊ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ὀνομαζόμενον πρότερον *Καρατζᾶ-Κιόϊ*. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 427. Χ. Δ.

**μονὸκλ** (τό)· ὁ μονύελος (γαλλ. monocle).

**μονοκλινὲς** ***σύστημα*** (Monoklines System) *[Κρυσταλλογρ.]*. Ἓν ἐκ τῶν ἑπτὰ κρυσταλλογραφικῶν συστημάτων, κατὰ τὰ ὁποῖα κρυσταλλοῦνται τὰ διάφορα κρυσταλλικὰ σώματα. Καλεῖται καὶ *κλινορρομβοειδικὸν* ἢ *κλινορρομβικόν*. Χαρακτηριστικὸν τοῦ συστήματος τούτου εἶναι τρεῖς κρυσταλλογραφικοὶ ἄξονες ἄνισοι, ἐκ τῶν ὁποίων οἱ δύο, ἤτοι ὁ a καὶ ὁ c, τέμνονται ὑπὸ γωνίαν διάφορον τῆς ὀρθῆς, ὁ δὲ ἄλλος, ὁ b, εἶναι κάθετος πρὸς τὸ ἐπίπεδον αὐτῶν. Ἡ γωνία, τὴν ὁποίαν σχηματίζουν οἱ ἄξονες a καὶ c, παρίσταται διὰ τοῦ συμβόλου β καὶ εἶναι διάφορος εἰς τὰ διάφορα κρυσταλλικὰ σώματα τὰ ὁποῖα κρυσταλλοῦνται κατὰ τὸ σύστημα τοῦτο. Ἡ τιμὴ ὅμως αὐτῆς παραμένει σταθερὰ δι' ἓν καὶ τὸ αὐτὸ κρυσταλλικὸν σῶμα, χαρακτηρίζει δὲ τὴν χημικὴν σύστασιν αὐτοῦ. Κατὰ τὸν προσανατολισμὸν τῶν κρυ-

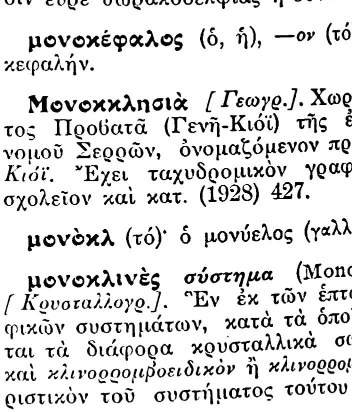


*Κρύσταλλοι μονοκλινοῦς συστήματος.*

[*Ἀριστ.: Κρύσταλλος αὐγίτου.* r=(100) πινακοειδὲς α' τάξεως. l=(010) πινακοειδὲς β' τάξεως. M=(110) πρίσμα γ' τάξεως. S=(011) πρίσμα α' τάξεως.] [*Δεξιά: Κρύσταλλος ὀρθοκλάστου.* K=(100) πινακοειδὲς α' τάξεως. M=(010) πινακοειδὲς β' τάξεως. P=(001) πινακοειδὲς γ' τάξεως. n=(021) πρίσμα α' τάξεως. x=(101) πρίσμα β' τάξεως. y=(201) πρίσμα β' τάξεως. T=(110) πρίσμα γ' τάξεως, o=(111) πυραμίς.]

Digitized by Google

στάλλων τοῦ συστήματος τούτου ὡς πρὸς τὸν παρατηρητήν, ὁ κρυσταλλογραφικὸς ἄξων c λαμβάνει πάντοτε θέσιν κατακόρυφον, ὁ ἄξων a στρέφεται πρὸς τὸν παρατηρητήν, ὁ δὲ ἄξων b εἶναι παράλληλος πρὸς αὐτόν. Χαρακτηριστικὰ κρυσταλλικὰ σχήματα τοῦ συστήματος τούτου εἶναι τὰ τρία *πινακοειδῆ*, πρώτης, δευτέρας καὶ τρίτης τάξεως, ἕκαστον τῶν ὁποίων τέμνει ἀνὰ ἕνα ἐκ τῶν κρυσταλλογραφικῶν ἀξόνων καὶ εἶναι παράλληλον πρὸς τοὺς δύο ἄλλους, τὰ τρία *πρίσματα* ὁμοίως πρώτης, δευτέρας καὶ τρίτης τάξεως, ἕκαστον τῶν ὁποίων τέμνει ἀνὰ δύο ἐκ τῶν κρυσταλλογραφικῶν ἀξόνων καὶ εἶναι παράλληλον πρὸς τὸν ὑπόλοιπον, καὶ τέλος αἱ δύο *πυραμίδες*, ἤτοι ἡ θετικὴ καὶ ἡ ἀρνητική, ἑκάστη τῶν ὁποίων τέμνει καὶ τοὺς τρεῖς κρυσταλλογραφικοὺς ἄξονας, ἀντιστοιχεῖ ὅμως ἡ μὲν θετικὴ εἰς τὴν ὀξεῖαν, ἡ δὲ ἀρνητικὴ εἰς τὴν ἀμβλεῖαν γωνίαν β. Εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα κρυσταλλοῦνται πολλὰ κρυσταλλικὰ σώματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὰ μέλη τῆς σειρᾶς τῶν μονοκλινῶν πυροξένων καὶ ἀμφιβόλων, ὡς ὁ διαλλαγής, ὁ αὐγίτης, ὁ ἀκτινόλιθος, ἡ κεροστίλβη κ.ἄ., ἐπίσης δὲ καὶ τὸ ὀρθόκλαστον. Γ. Β.

**μονόκλιτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον κλίτος.

— **μονόκλιτος** ***ἐκκλησία.*** Εἶναι ὁ ἁπλούστερος τύπος ἐκκλησίας, ἀποτελουμένης ἐξ ἑνὸς ἐπιμήκους ὀρθογωνίου διαμερίσματος, εἰς τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν τοῦ ὁποίου εὑρίσκεται ἡ ἀψὶς τοῦ ἱεροῦ βήματος. Κατὰ τὸν τρόπον τῆς στεγάσεως αἱ μονόκλιτοι ἐκκλησίαι διακρίνονται εἰς *καμαροσκεπάστους* καὶ *ξυλοστέγους*. Ἡ στέγη τῶν καμαροσκεπάστων ἀποτελεῖται ἐξ ἐπιμήκους ἡμικυλινδρικῆς καμάρας, ἡ ὁποία ἐνίοτε, κατὰ τοὺς χρόνους ἰδίᾳ τῆς τουρκοκρατίας, σχηματίζει εἰς τὰς τέσσαρας γωνίας μικρὰς κόγχας (Ἅγ. Ἀθανάσιος Ψειρῆ, Ἅγ. Ἀνάργυροι Μετοχίου Παν. Τάφου ἐν Ἀθήναις). Αἱ ξυλόστεγοι καλύπτονται ὑπὸ ξυλίνης σαμαρωτῆς στέγης, ἥτις οὐχὶ σπανίως φέρει ἐσωτερικῶς ἐπίπεδον ξυλίνην ὀροφὴν (ταβάνι). Αἱ μονόκλιτοι ἐκκλησίαι ἀμφοτέρων τῶν τύπων, οὐχὶ σπάνιαι ἤδη κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς χρόνους, ἀποβαίνουσι πολυπληθεῖς κατὰ τὴν περίοδον τῆς Τουρκοκρατίας. Α. Ξ.

**μονόκλωνος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα μόνον κλῶνα, ἕνα βλαστόν.

**μονοκόκκαλος,** *—η,* *—ο*· δημοτ., ἐκεῖνος τοῦ ὁποίου ἡ ῥάχις ἀποτελεῖται οἱονεὶ ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου ὀστοῦ, δύσκαμπτος, ἄκαμπτος.

**μονοκόμματος,** *—η,* *—ο*· μονόμοιρος, ὁ μὴ ἀποτελούμενος ἐκ μερῶν, ὁ μὴ κομματιαστός, αὐτόφυος: «κολόνα μονοκόμματη»· || μεταφ. ἐπὶ ἀνθρώπου, δύσκαμπτος: «περπατεῖ σὰν μονοκόμματος».

**μονοκονδυλιὰ** (ἡ), καὶ *μονοκοντυλιά*· ἡ διὰ μιᾶς ἀδιακόπου κινήσεως τῆς γραφίδος γραφὴ λέξεως ἢ φράσεως ἢ συνήθως ὑπογραφῆς· || μεταφ., πρόχειρος, ἀλόγιστος, ἀμελέτητος γνώμη, τὴν ὁποίαν διατυπώνει τις ἐγγράφως: «μὲ μιὰ μονοκοντυλιὰ σὲ καταδικάζουν νὰ πληρώσῃς τὰ μαλλοκέφαλά σου».

**μονοκοτυλήδονος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Ὁ ἀποτελούμενος ἐκ μιᾶς καὶ μόνης *κοτυληδόνος* (βλ. λ.).

— **μονοκοτυλήδονα** (τὰ) *[Βοτ.]*. Κατηγορία φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀγγειοσπέρμων*. Τὰ φυτὰ ταῦτα χαρακτηρίζονται ἐκ τῆς παρουσίας μιᾶς μόνον κοτυληδόνος ἐν τῷ ἐμβρύῳ των. Τὰ μονοκοτυλήδονα γενικῶς εἶναι φυτὰ ποώδη καὶ ἔχουσι ῥίζας πάντοτε δεσμώδεις, αἵτινες κατὰ τὴν νεαρὰν αὐτῶν ἡλικίαν περιβάλλονται ἀπὸ ἀσκοειδῆ μεμβρᾶναν, ἥτις καλεῖται *κολεόρριζον*. Τὰ μονοκοτυλήδονα, ἐπειδὴ ἀναπτύσσονται μετὰ τὴν διάρρηξιν τοῦ κολεορρίζου, ἐκαλοῦντο παλαιότερον καὶ *ἐνδόρριζα*. Ὁ καυλός, εἰς τὰ ξυλώδη εἴδη, εἶναι κυλινδρικὸς καὶ δὲν ἀποτελεῖται ἐκ συγκεντρικῶν στρωμάτων ξύλου καὶ φλοιοῦ, ἀλλ' ὑπὸ ἰναγγειωδῶν δεσμίδων ἀτάκτως διεσκορπισμένων ἐπὶ τῶν κυτταρικῶν ἱστῶν ἢ τῆς ἐντεριώνης ἥτις καὶ ἀποτελεῖ, εἴς τινα εἴδη, αὐτὸν τὸν καυλόν. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον σὺν τῇ παρόδῳ τῶν ἐτῶν ὁ καυλὸς δὲν αὐξάνεται πλέον κατὰ διάμετρον, ἀλλὰ καθ' ὕψος. Ὁ καυλὸς εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἁπλοῦς καὶ γυμνὸς καὶ σπανιώτερον διακεκλαδισμένος, ἔχει δὲ μορφὴν κίονος. Κατὰ τὸ ἀνώτερον αὐτοῦ ἄκρον φέρει σκιαδοειδῶς τὰ φύλλα, ἅτινα εἶναι σχεδὸν πάντοτε ἐναλλασσόμενα καὶ ἀκέραια καὶ φέρουσιν εὐθείας καὶ ἁπλᾶς νευρώσεις, σπανιώτερον δὲ διακεκλαδισμένας. Τὰ ἄνθη ἀμοιροῦσι στεφάνης καὶ φέρουσι περιάνθιον εἰς τρία ἢ ἓξ μέρη διῃρημένον, πεταλοειδοῦς σχήματος καὶ πάντοτε ἔγχρωμον. Ἡ ᾠοθήκη εἶναι γενικῶς τρίχωρος, τριγωνικὴ καὶ ἐπαναπαύεται ἐπὶ τριμεροῦς στίγματος. Ὁ καρπὸς παρουσιάζει ἀνάλογον ὑφὴν πρὸς τὴν τῆς ᾠοθήκης, ἥτις ὅμως πολλάκις ἀλλοιοῦται ἐκ τῶν διαφόρων συμφύσεων καὶ προσαρτηματικῶν φυτικῶν μορίων, ἅτινα φέρει. Ἡ βλάστησις τοῦ σπέρματος παρουσιάζει ἀξιοπαρατηρήτους ἰδιότητας. Τὸ κύριον ῥιζικὸν σύστημα, ἀφοῦ διασχίσῃ τὸ κολεόρριζον καὶ ἀπελευθερωθῇ, ἀτροφεῖ μετ' οὐ πολύ, ἀλλὰ συγχρόνως ἐκ τῶν κόμβων, οἵτινες εὑρίσκονται παρὰ τὴν βάσιν τοῦ κορμοῦ, ἀναφαίνονται ἐπιβοηθητικαὶ ῥίζαι, αἵτινες καὶ μόναι διατρέφουσι τὸ φυτόν. Τὰ μονοκοτυλήδονα ἀπαντῶσιν εἰς ὅλην τὴν γῆν, ἀλλὰ τὰ θαμνώδη τοιαῦτα ἀπαντῶσιν ἀποκλειστικῶς εἰς τὰς τροπικὰς χώρας. Ὁ Van Tieghem διῄρεσε τὰ μονοκοτυλήδονα εἰς τὰς ἑξῆς ὑποκατηγορίας: 1) *Ἀγρωστώδη* (δὲν φέρουν στεφάνην—ᾠοθήκη ἐπιφυής)· 2) *Σχινώδη* (στεφάνη σεπαλοειδὴς—ᾠοθήκη ἐπιφυής). 3) *Λειριώδη* (στεφάνη πεταλοειδὴς—ᾠοθήκη ἐπιφυής), 4) *Ἰριδώδη* (στεφάνη πεταλοειδὴς—ᾠοθήκη ὑποφυής). Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοφ.]* Τὰ φυτὰ ταῦτα πιθανὸν νὰ ἐνεφανίσθησαν τὸ πρῶτον κατὰ τὴν πέρμιον, ἴσως δὲ καὶ κατ' αὐτὴν ἔτι τὴν λιθανθρακοφόρον περίοδον τοῦ παλαιοζωϊκοῦ αἰῶνος, μετὰ βεβαιότητος ὅμως εἶναι καθωρισμένον ὅτι ἔζων κατὰ τὴν τριάσιον περίοδον τοῦ μεσοζωϊκοῦ αἰῶνος. Γ. Κ. Γ.

**μονοκούκκι** (τό)· μὲ ἕνα κουκκί, ὡς διὰ μιᾶς ψήφου: «ὅλο τὸ χωριὸ ἐψήφισε τὸν δεῖνα ὑποψήφιον μονοκούκκι», «ἐπῆρε ὅλας τὰς ψήφους μονοκούκκι».

**μονόκουρσον** (τό)· βλ. λ. *ἀκρῖται* (τ. Γ', σ. 170 α', β' καὶ 171 α').

**μονοκρατορία** (ἡ)· ἡ ἀρχή, ἡ ἐξουσία τοῦ μονοκράτορος, τὸ νὰ ἄρχῃ εἷς καὶ μόνος, μοναρχία. — *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *μοναρχία.*

**μονοκράτωρ,** *—ορος* (ὁ)· ὁ μόνος κρατῶν, ὁ εἷς καὶ μόνος ἄρχων, μονάρχης.

**μονόκροτον** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Εἰς τὸ παλαιὸν μὲν ναυτικόν, τὸ πλοῖον τὸ ἔχον ἓν ἐπίφρακτον πυροβολεῖον (γαλλ. la frégate, ἀγγλ. the frigate) οἷον ὁ *ἐπίφρακτος δρόμων* καὶ ἡ *φρεγάτα* (Ναυτ. Ὀνομ. ἄρθρ. 1372). Διὰ δὲ τὸ ναυτικὸν τῶν ἀρχαίων ὑπάρχουν πολλαὶ δόξαι: τὸ πλοῖον τὸ ἔχον ἄνδρας διὰ μίαν σειρὰν κωπῶν· κατ' ἄλλους ἕνα ἄνδρα κατὰ κώπην· καὶ κατ' ἄλλους τοὺς μᾶλλον εὑρισκομένους ἐν τῇ ἀκριβείᾳ, ἡ ναῦς ἡ ἔχουσα μίαν σειρὰν ἐρετῶν «μονόκροτος ναῦς». Σ. Ε. Λ.

**μονόκροτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἀρχ. «μονόκροτος ναῦς» ἡ διὰ μιᾶς σειρᾶς κωπῶν ἐλαυνομένη ναῦς· || ἡ ἔχουσα τοσούτους κωπηλάτας, ὥστε μόνον ἡ μία σειρὰ κωπῶν νὰ τεθῇ εἰς χρῆσιν: «διεσκεδασμένων δὲ τῶν ἀνθρώπων, αἱ μὲν τῶν νηῶν δίκροτοι ἦσαν, αἱ δὲ μονόκροτοι, αἱ δὲ παντελῶς κεναὶ» (*Ξενοφ.* Ἑλλην. 2, 1. 28)· || ***μονόκροτον*** (τὸ) ὡς οὐσιαστ. (κατὰ παράλειψιν τῆς λέξεως *πλοῖον*) βλ. λ.

**μονοκύλινδρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα κύλινδρον, ἐπὶ μηχανῶν: «μηχανὴ μονοκύλινδρος».

— **μονοκύλινδρος** ***μηχανή.*** Ἐμβολοφόρος μηχανὴ (ἀτμομηχανή, μηχανὴ ἐσωτερικῆς καύσεως, ἀντλία κτλ.) φέρουσα ἕνα μόνον κύλινδρον.

**μονοκυστίδαι** (οἱ) (Monocystidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια πρωτοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σποροζῴων*, περιλαμβάνουσα μικροτάτους ζωϊκοὺς ὀργανισμοὺς παρασιτικῶς βιοῦντας ἐπὶ διαφόρων ἐντόμων κυρίως. Κυριώτερον γένος εἶναι ἡ *μονοκύστις* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μονοκύστις** (ἡ) (Monocystis) *[Ζῳολ.]*. Γένος πρωτοζῴων τῆς οἰκογενείας τῶν *μονοκυστιδῶν*, περιλαμβάνον πολυπληθῆ εἴδη, παράσιτα ἄλλων ζῴων. Δ. Ν. Π.

**μονοκύτταρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Οὕτω καθορίζεται νόσος (κυνάγχη μονοκύτταρος) χαρακτηριζομένη ὑπὸ κυνάγχης μετὰ πυρετοῦ, ὑπερτραφείας τῶν λεμφικῶν γαγγλίων, τοῦ ἥπατος καὶ τοῦ σπληνός, καὶ ὑπὸ λευκοκυτταρωσίας συγκειμένης κυρίως ἐκ μονοπυρήνων κυττάρων. Ἡ νόσος αὕτη ἐξελίσσεται ἁπλῶς, εἶναι δὲ διαρκείας 14 μέχρι 30 ἡμερῶν. Μ. Ν. Κ.

**μονόκωπος.** Οὕτω εἴθισται νὰ καλῆται λέμβος τῶν πολεμικῶν πλοίων, ἀλλὰ καὶ τῶν φιλάθλων, ὅταν ἑκάστη κώπη αὐτῆς ἐλαύνεται ἀπὸ ἰδίου σέλματος (πάγκου) καὶ ὑπὸ ἰδίου ἐρέτου. Τοιαῦται λέμβοι εἶναι αἱ φαλαινίδες καὶ οἱ κέλητες. Τὸ ἀντίθετον *διπλόκωπος*. Σ. Ε. Λ.

**μονολατρεία,** ἢ ***ἑνοθεϊσμὸς*** *[Φιλοσ.]*. Ἐκλήθησαν οὕτω αἱ θρησκεῖαι ἐκεῖναι, αἱ ὁποῖαι, χωρὶς ν' ἀρνοῦνται τὴν ὕπαρξιν ἄλλων θεῶν, περιορίζονται εἰς τὴν λατρείαν ἑνὸς μόνον. Ὁ ὅρος *ἑνοθεϊσμὸς* ἐπροτάθη ὑπὸ τοῦ M. Müller τῷ 1860, ὁ δὲ ὅρος *μονολατρεία* ὑπὸ τοῦ A. Loisy. Ἡ ἑνοθεϊστικὴ μορφὴ θρησκείας ἀπετέλεσε κατὰ τὸν M. Müller τὸ πρωταρχικὸν στάδιον θρησκείας.

**μονολέκιθος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἐπὶ τῶν ᾠῶν, τὸ ἔχον μίαν μόνον λέκιθον, κοιν. *μονόκροκο.*

**μονολεκτικός,** *—ή,—όν*· ὁ διὰ μιᾶς μόνης λέξεως ἐκφερόμενος ἢ δηλούμενος· ἀντίθ. *περιφραστικός*: «μονολεκτικοὶ χρόνοι, — τύποι τοῦ ῥήματος». —Ἐπίρρ. ***μονολεκτικῶς.***

**μονόλεπτον** (τό). Νόμισμα χαλκοῦν τοῦ 1 λεπτοῦ. Ἐκόπησαν τοιαῦτα ἐπὶ Ὄθωνος, φέροντα τὴν προτομήν του, ἀπὸ τοῦ 1832 μέχρι τοῦ 1857 εἰς διαφόρους ἐποχάς, εἶτα δὲ ἐπὶ Γεωργίου Α' ἀπὸ τοῦ 1869—1879 εἰς διαφόρους ἐποχάς, φέροντα τὴν προτομὴν τούτου. Τ. Κ.

**μονόλεπτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἀξίαν ἑνὸς λεπτοῦ: «μονόλεπτος προσφορά»· || *μονόλεπτον* (τό)· νόμισμα (βλ. λ.).

**Μονολῆϊ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Τὸ μεταξὺ τῶν Λιχάδων νήσων καὶ τῆς εὐβοϊκῆς χερσονήσου τῶν Γιάλτρων στενόν. Σ. Ε. Λ.

**Μονολίθι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀντιγονείας (Μοράφτσης) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Ράμνα*. Κάτ. (1928) 156.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φιλιππιάδος τοῦ νομοῦ Πρεβέζης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 336. Πρότερον ὠνομάζετο *Βορδῶ*. Χ. Δ.

**μονολιθικός,** *—ή,* *—όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς μονόλιθον, ὁ οἱονεὶ μονόλιθος: «ἡ ἐκ σιδηροπαγοῦς σκιρροκονιάματος οἰκία ἀποβαίνει μονολιθική», «μονολιθικὸν μνημεῖον».

**μονόλιθος** (ὁ ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἀποτελούμενος ἐξ ἑνὸς λίθου: «μονόλιθος κίων, — οἰκία».

**Μονόλιθος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Ρόδου (πλάτ. 36° 09' Β., μῆκ. 27° 43' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1667: Rhodos island), ἡ δυτικὴ τῆς νήσου ἐσχατιά, διέχουσα τῆς Καρπάθου (Σαρίας) 23 μίλλ., καθ' ἃ παρεμβάλλεται ὁ διέκπλους τῆς Καρπάθου. Ἐγγὺς τῆς ἄκρας καὶ χωρίον *Μονόλιθος*. Σ. Ε. Λ.

— **Μονόλιθος** ***Ἀκροποτάμου*** ἢ ***Μπόμπλιανης*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 594. Χ. Δ.

**μονολογία** (ἡ)· τὸ νὰ ὁμιλῇ τις μόνος.

**μονολογικός,** *—ή,* *—όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μονόλογον, ὁ τοῦ μονολόγου.

**μονόλογος** (ὁ)· λόγος τὸν ὁποῖον λέγει τις μόνος, οἱονεὶ πρὸς ἑαυτόν, ἰδίᾳ ἐπὶ δραματικῶν ἔργων: «ὁ μονόλογος τῆς Ἠλέκτρας, — τῆς Ἀντιγόνης».

—*[Θεατρ.]* Ἡ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον μακρὰ διήγησις, ἣν κάμνει, τρόπον τινὰ καθ' ἑαυτό, ἓν οἱονδήποτε πρόσωπον σκηνικοῦ τινος ἔργου, διὰ νὰ ἐκθέσῃ πρὸς τοὺς θεατὰς τὴν ἐν γένει κατάστασιν τῆς ψυχῆς του, τὰ αἰσθήματά του, τοὺς σκοπούς του καὶ τὰ παρόμοια. Ἡ τοιούτου εἴδους ἀπὸ σκηνῆς διήγησις παρὰ τοῖς ἀρχαίοις ἐκαλεῖτο *μονῳδία*, σκοπὸς δ' αὐτῆς ἦτο ἡ δι' ἐξωτερικῶν σημείων καὶ παθητικωτάτου τρόπου ζωηρὰ ἀπεικόνισις τῆς λύπης καὶ τοῦ ἄλγους, ἅτινα κατεῖχον τὴν ψυχὴν τῶν κυρίων τοῦ δράματος προσώπων. Τοιαύτη μονῳδία εἶναι ἡ τοῦ Αἴαντος (*Σοφοκλ.* Αἴας, στ. 815 καὶ ἑφ.), ἥτις κατὰ τὸν Immermann εἶναι ἡ καλλίστη ἐξ ὅσων ἐγράφησαν. Τῶν μονῳδιῶν χρῆσιν μὲν ἔκαμον ἐν μέτρῳ ὅ τε Αἰσχύλος καὶ ὁ Σοφοκλῆς, κατάχρησιν δέ, δύναταί τις νὰ εἴπῃ, ὁ Εὐριπίδης, τὸν ὁποῖον ἐσατύρισε διὰ τοῦτο ὁ Ἀριστοφάνης, εἰπὼν ὅτι ἀνέτρεφε τὴν τραγῳδίαν μὲ μονῳδίας (*Ἀριστ.* Βάτρ. 944). Παρὰ τοῖς νεωτέροις, οἱ σπουδαιότεροι τῶν μονολόγων εἶναι οἱ ἑξῆς: ὁ τοῦ Αὐγούστου ἐν τῷ «Κίννᾳ», ὁ τοῦ Σωσίου ἐν τῷ «Ἀμφιτρύωνι» τοῦ Μολιέρου, ὁ τοῦ Ἄμλετ ἐν τῇ πρώτῃ σκηνῇ τῆς τρίτης πράξεως (To be or not to be), ὁ τοῦ Καρόλου Ε' ἐν τῷ «Ἐρνάνῃ» τοῦ Βίκτωρος Οὐγκώ, ὁ τοῦ Φιγκαρῶ τοῦ Μπωμαρσαὶ καί τινες ἄλλοι.

*Δράματα ἐν μονολόγοις* ἐκαλοῦντο ἐν Γαλλίᾳ τὰ σκηνικὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα ἔπαιζον οἱ ἠθοποιοὶ εἰς τὰ μικρὰ σανιδόπηκτα θέατρα τῶν πανηγύρεων, καθ' ἣν ἐποχὴν ἡ Ὄπερα καὶ ἡ Γαλλικὴ κωμῳδία τοὺς εἶχον ἀπαγορεύσει νὰ ἐμφανίζωνται πλέον τοῦ ἑνὸς ἀπὸ σκηνῆς. Κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἔργων αὐτῶν ἕκαστος ἠθοποιὸς ἐξήρχετο ἐπὶ σκηνῆς μὲ τὴν σειράν του καὶ ἀπήγγελλεν ἕνα μονόλογον μέχρι τοῦ πέρατος τοῦ ὅλου ἔργου, τὸ ὁποῖον πολλάκις ἀπετελεῖτο ἀπὸ δύο καὶ τρεῖς πράξεις.

*Μονόλογος* ἐπίσης καλεῖται τὸ μικρὸν ἔμμετρον ἢ πεζὸν σκηνικὸν ἔργον, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον κωμικόν, τὸ παρ' ἑνὸς μόνου ἠθοποιοῦ ἀπαγγελλόμενον. Τὰ τοιούτου εἴδους ἔργα ἐκαλοῦντο ἐν Ἱσπανίᾳ κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα *μονοπρόσωπα δράματα*. Τοιαῦτα δράματα, ἀλλὰ πολύπρακτα, ἔγραψαν παρ' ἡμῖν ὁ Σοφοκλῆς Καρύδης καὶ ὁ Πολύβιος Δημητρακόπουλος. Ν. Ι. Λ.

—*[Ψυχιατρ.]* Ἡ ὁμιλία τοῦ ἀτόμου καθ' αὑτό. Συνήθως οἱ μονόλογοι γίνονται χαμηλῇ τῇ φωνῇ καὶ εἶναι ἀκατάληπτοι. Παρατηροῦνται εἰς συγχυτικούς, καὶ ἀνοϊκὰς ἰδίᾳ καταστάσεις, εἰδικώτερον δ' εἰς τὴν σχιζοφρενίαν καὶ ἐν γένει τὰς ὀνειρικὰς

Digitized by Google

καταστάσεις. Γενικῶς οἱ μονόλογοι εἶναι βαρὺ σημεῖον. Τ. Α. ΖΗΣ

**μονολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ μόνος λέγων, ὁ πρὸς ἑαυτὸν ὁμιλῶν (ἀρχ.).

**μονολογῶ** (—έω)· λέγω μόνος, ὁμιλῶ οἱονεὶ πρὸς ἐμαυτόν.

**Μονόλοφο** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μελισσοχωρίου (Μπάλτζης) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Δαουτλῆ*. Κάτ. (1928) 130. Χ. Δ.

**μονομανὴς** (ὁ, ἡ), —ές (τό)· ὁ πάσχων μονομανίαν, ὁ κατεχόμενος ἐμμανῶς ὑπὸ ἰδέας τινός, οὕτως ὥστε αἱ πνευματικαί του δυνάμεις συσκοτίζονται.

**μονομανία** (ἡ)· εἶδος παραφροσύνης, καθ' ἣν κατέχεται τις ἐμμανῶς ὑπὸ ἰδέας τινὸς καὶ οὕτω συσκοτίζονται αἱ πνευματικαί του δυνάμεις· «πάσχει ἀπὸ μανίαν καταδιώξεως».

— *[Ψυχιατρ.] Μονομανίαι* καλοῦνται αἱ μερικαὶ εἰδικαὶ ψυχώσεις, καθ' ἃς ἄτομόν τι ἐμφανίζει ἔμμονον παραληρητικὴν καὶ ἐν γένει νοσηρὰν ἰδέαν. Εἰδικώτερον δὲ *μονομανίαι* καλοῦνται αἱ *ἔμμονοι ἰδέαι* (κατ' ἐξοχὴν) καὶ αἱ *ἰδεοληψίαι*. Ἡ πρόγνωσις καὶ ἡ θεραπεία ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ εἴδους αὐτῶν. Τ. Α. ΖΗΣ

**Μονομάτηδες**, ἢ *Μονόμματοι [Λαογρ.]*. Παρὰ τῷ ἑλληνικῷ λαῷ τὸ ὄνομα τῶν Κυκλώπων δὲν περιεσώθη, ἀντὶ τούτου ὅμως διετήρησε τὸ ἐπίθετον αὐτῶν *μονόμματος* καὶ ὑπὸ τοῦτον τὸν τύπον καὶ ὑπὸ τὸν τύπον *μονομμάτης*. Ἦτο δὲ τοῦτο εὔχρηστον καὶ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις· «τοὺς μονομμάτους Κύκλωπας» εἶπεν ὁ Αἰσχύλος (παρὰ *Στράβ*. Α, 21). Καὶ ὁ Κρατῖνος μονόμματον εἶπε τὸν Κύκλωπα (παρὰ *Φρυνίχ*. Ἐκλ. σ. 136). Σήμερον ἐνιαχοῦ πιστεύεται ὅτι εἰς μακρινήν τινα ἄγνωστον χώραν ὑπάρχει γένος ἀγρίων καὶ ἀνοσίων ἀνθρώπων, οἱ ὁποῖοι ἔχουσιν ἕνα μόνον ὀφθαλμὸν εἰς τὸ μέτωπον καὶ διὰ τοῦτο λέγονται *Μονόμματοι* ἢ *Μονομμάτηδες*. Μεταφορικῶς λέγονται οὕτω καὶ οἱ βάναυσοι βίαιοι ἄνθρωποι. Εἴς τινα παράδοσιν τῆς Γορτυνίας σῴζεται, ἀλλὰ παρηλλαγμένον σφόδρα, καὶ τὸ ἐν τῇ «Ὀδυσσείᾳ» ἐπεισόδιον τῆς τυφλώσεως τοῦ Κύκλωπος Πολυφήμου ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως. Τὸ μονόφθαλμον εἶναι χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τῶν γιγάντων καὶ εἰς μύθους ἄλλων λαῶν. Οὕτω κατὰ τοὺς γερμανικοὺς μύθους ὁ θεὸς Ὀδῖνος καὶ ὁ ἥρως Χαγᾶνος εἶναι μονόφθαλμοι. Γίγαντας μονοφθάλμους ἀναφέρουσι καὶ ρωμουνικοὶ μῦθοι καὶ οὐκρανικοὶ καὶ σερβικοί. Οἱ Λέσιοι, οἱ δαίμονες τῶν δασῶν, κατὰ τοὺς Ρωμαίους, εἶναι ἐπίσης μονόφθαλμοι. [Πρβλ. *Ν. Γ. Πολίτου*, Παραδόσεις, σ. 70—71 καὶ 752—754.]

**Μονομαχᾶτος, Γεώργιος**. Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Νικηφόρου Γ' Βοτανειάτου (1078—1081), διορισθεὶς ὑπὸ τούτου στρατηγὸς Δυρραχίου. Μετὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ Νικηφόρου Γ' ὑπὸ τοῦ Ἀλεξίου Α' Κομνηνοῦ (1081), ὁ αὐτοκράτωρ οὗτος, δυσπιστῶν πρὸς τὸν Μονομαχᾶτον, ὡς φίλον τοῦ Νικηφόρου, ἀντικατέστησεν αὐτὸν διὰ τοῦ στρατηγοῦ Γεωργίου Παλαιολόγου. Ν. ΚΛΣ

**μονομαχία** (ἡ)· μάχη, συμπλοκὴ μόνου πρὸς μόνον· «μονομαχία πυροβολικοῦ» || ἡ καθ' ὡρισμένους ὅρους ἔνοπλος πάλη δύο ἀνθρώπων· «μονομαχία διὰ ξίφους,—διὰ σπάθης,—διὰ περιστρόφου», «τὸν ἐκάλεσεν εἰς μονομαχίαν».

— [ΕΓΚΥΚΛ.] Καλεῖται *μονομαχία* ὁ ἐξ ἀμοιβαίας ἐκουσίας συναινέσεως συναπτόμενος κατ' ἔθος ἔνοπλος ἀγὼν μεταξὺ δύο ἀτόμων (ἢ καὶ ὁμάδων), ἐπιθυμούντων μὲ ἴσα ὅπλα καὶ μὲ κίνδυνον τῆς ζωῆς των νὰ λύσωσι τὴν μεταξύ των διαφορὰν ἐπὶ ζητήματος τιμῆς, αἰσθήματος ἢ καὶ ἁπλῶς συμφέροντος.

Τὸ αἴτιον τῆς γενέσεως τοῦ ἐθίμου τούτου ἀνεζητήθη εἰς τὴν ἀδυναμίαν τῶν νόμων ὅπως ἱκανοποιήσουν ἐπαρκῶς τὴν προσβληθεῖσαν τιμήν, ἀναλόγως τῆς ἠθικῆς ἀξίας τῶν ἀτόμων ἢ τῆς κοινωνικῆς τάξεως αὐτῶν. Ἐν τούτοις, ὡς θεσμὸς τὸ ἔθιμον τῆς μονομαχίας καταδικάζεται ἤδη, δι' ὃ καὶ εἰς πλεῖστα κράτη, ὡς καὶ παρ' ἡμῖν ἀπό τινων ἐτῶν, ἀπηγορεύθη ἀπολύτως ἡ μονομαχία δι' εἰδικοῦ νόμου. Τὸ μέγα ἰδίως μειονέκτημα τῆς μονομαχίας ἦτο ὅτι οἱ ὅροι τῆς διεξαγωγῆς αὐτῆς ἐκανονίζοντο συχνάκις ὑπὸ μαρτύρων ἀδαῶν, ἐξ οὗ καὶ συνηθέστατα ἐπήρχοντο ὀλιβερώτατα αἱματηρὰ ἀποτελέσματα, μὲ ὅλως δὲ ἄδικον λύσιν τῆς ὑποθέσεως τιμῆς. Ἕνεκα τούτου καὶ ἐλέχθη ὅτι εἰς μονομαχίας ἀτόπως κανονισθείσας δὲν φονεύουσι τὰ ξίφη ἢ τὰ βλήματα τῶν πιστολίων τῶν διαμαχομένων, ἀλλ' οἱ μάρτυρες.

ΙΣΤΟΡΙΑ ΤΗΣ ΜΟΝΟΜΑΧΙΑΣ. Ἀξιοσημείωτον εἶναι ὅτι πρὸς λύσιν ἀτομικῶν διαφορῶν τιμῆς δὲν μετεχειρίζοντο τὴν μονομαχίαν οὔτε οἱ ἀρχαῖοι ἡμῶν πρόγονοι οὔτε οἱ Ρωμαῖοι.

Οἱ λαοὶ οὗτοι, οἱ τόσον γενναῖοι καὶ πολεμικοί, ἐθεώρουν ἀνοίκειον νὰ ἐκπλύνουν τοιαύτην προσβολὴν εἰς τὸ αἷμα τοῦ προσβαλόντος, ὃν περιεφρόνουν. Αἱ ἡρωϊκαὶ συναντήσεις, περὶ ὧν ἀναφέρει ὁ Ὅμηρος, ἦσαν ἁπλῶς δραματικὰ ἐπεισόδια, κατὰ τὴν διεξαγωγὴν τῆς μάχης, καθ' ἣν τόση ἐγίνετο χρῆσις τῶν ἀγχεμάχων ὅπλων. Τοιαύτη, δύναταί τις νὰ εἴπῃ, ἦτο ἡ μεταξὺ Δαβὶδ καὶ Γολιὰθ πάλη, ὡς καὶ ἡ περιώνυμος μάχη μεταξὺ Ὁρατίων καὶ Κουριατῶν τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, καθ' ἣν ἐκ τῆς τάξεως τῶν ἀντιμάχων στρατῶν ἐξῆλθεν μει ὅρους ἱκανοποιήσεως. Ἐπὶ πλέον, ἀναφέρει ὅτι κατὰ τὸ 1022 μ. Χ. συνεφωνεῖτο μεταξὺ τῶν ἀνταγωνιστῶν ὁ νικητὴς νὰ λαμβάνῃ εἰς τὴν κατοχήν του τὰ ἔπιπλα, τὰς γαίας, τὴν σύζυγον καὶ τὰ τέκνα τοῦ ἡττηθέντος.

Κατὰ τὸν ΙΒ' καὶ ΙΓ' αἰῶνα ὑφίστατο ὁλόκληρος κατηγορία πολεμιστῶν, οἵτινες ἐκαλοῦντο «περιπλανώμενοι ἱππόται», καὶ τῶν ὁποίων ἐπάγγελμα, οὕτως εἰπεῖν, ἦτο νὰ ξιφουλκῶσιν εἰς πᾶσαν πε-

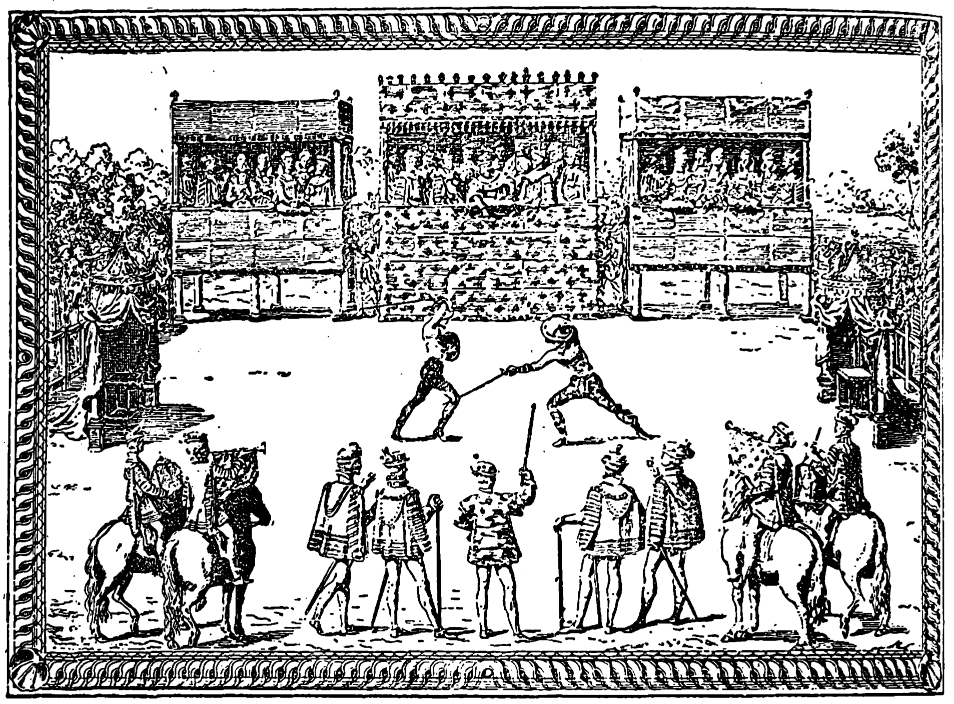

*Μονομαχία μεταξὺ Jarnac καὶ Chateigneraie* (10 Ἰουλίου 1547).

ἑκατέρωθεν ὁμὰς πολεμιστῶν, ὧν τὸ ἀποτέλεσμα τῆς συρράξεως ἔκρινε τὴν λύσιν τοῦ πολέμου. Βραδύτερον, ἐκ τῆς ἀνάγκης τοῦ τερματισμοῦ διαφορῶν μεταξὺ ὁμάδων ἢ φατριῶν διαφόρου ἰδεολογίας, προῆλθε τὸ ἔθος τῆς μονομαχίας, δι' ὃ καὶ *duellum*, εἰς τὴν λατινικήν, σημαίνει μάχη μεταξὺ δύο μερίδων, ἐν ἀντιδιαστολῇ τοῦ *bellum*, οὗτινος ἡ ἔννοια εἶναι μάχη μεταξὺ δύο ἐθνῶν.

Ἡ γένεσις τῆς μονομαχίας, ἐν τῇ παρούσῃ ἐννοίᾳ τῆς λέξεως, χρονολογεῖται ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν βαρβάρων γερμανικῶν λαῶν, οἵτινες κατέλυσαν τὴν Ρωμαϊκὴν αὐτοκρατορίαν καὶ κατέκτησαν τὴν Γαλατίαν καὶ μέρος τῆς Εὐρώπης κατὰ τὸν Ε' μ. Χ. αἰῶνα. Ὀλίγον βραδύτερον, περὶ τὸν ΣΤ' αἰῶνα, καθιερώθη νόμῳ αὕτη διὰ τοῦ κώδικος τοῦ Γονδεβαύδου, βασιλέως τῶν Βουργουνδίων, ἀπολήξασα πολὺ βραδύτερον, ἰδίᾳ περὶ τὸν Ι' μέχρι τοῦ ΙΒ' αἰῶνος, εἰς τὴν «δικαστικὴν μονομαχίαν». Διὰ ταύτης ἐλύοντο ἀκόμη καὶ θρησκευτικαὶ διαφοραὶ οὐχὶ πλέον ἀτόμων, ἀλλὰ φατριῶν, αἵτινες διὰ τῶν ἀριστέων των ἐν ὅπλοις, ἢ κληρουμένων, ἔλυον τὰς προκυπτούσας διαφορίστασιν, καθ' ὅσον ἔκρινον ὅτι, ἐάν τις ἔστω καὶ ἤγγιζε μόνον τὸν μανδύαν των, ὤφειλε νὰ ἀντιμετρηθῇ μαζί των.

Εἰς τὸν ΙΓ' αἰῶνα ἀνάγονται τὰ πρῶτα δοκίμια τοῦ κανονισμοῦ τῆς μονομαχίας, καθ' ὃν ἔδει εἰς πᾶσαν ἐκ προσωπικῆς διαφορᾶς μονομαχίαν νὰ παρίστανται, κατὰ τὸν ἀγῶνα, ἀνὰ δύο ὡρκισμένοι μάρτυρες δι' ἕκαστον τῶν ἀντιπάλων. Ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ κανονισμοῦ τούτου διεξήχθησαν αἱ περιώνυμοι μονομαχίαι τῶν ἱπποτῶν μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Κατὰ τὰς ἀνωτέρω χρονικὰς περιόδους αἱ μονομαχίαι διεξήγοντο πάντοτε διὰ τῶν παντὸς εἴδους ξιφῶν ἑκάστης ἐποχῆς, ἀπὸ τῶν μέσων ὅμως τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἤρχισαν νὰ γίνωνται καὶ μονομαχίαι διὰ πιστολίου.

Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα τὰ ἤθη τῶν λαῶν τῆς Εὐρώπης μετεβλήθησαν ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ὁριστικῆς ἐπικρατήσεως τῶν ἰδεῶν τῆς Ἀναγεννήσεως, καθ' ἃς τὴν βαναυσότητα τῶν τρόπων τοῦ συμπεριφέρεσθαι τῆς βαρβάρου ἐποχῆς τῆς ἀμαθείας, τοῦ μεσαίωνος, ἀντικατέστησεν ἡ μίμησις τῆς λεπτότητος καὶ τῆς εὐγενείας, ἥτις ἐχαρα-

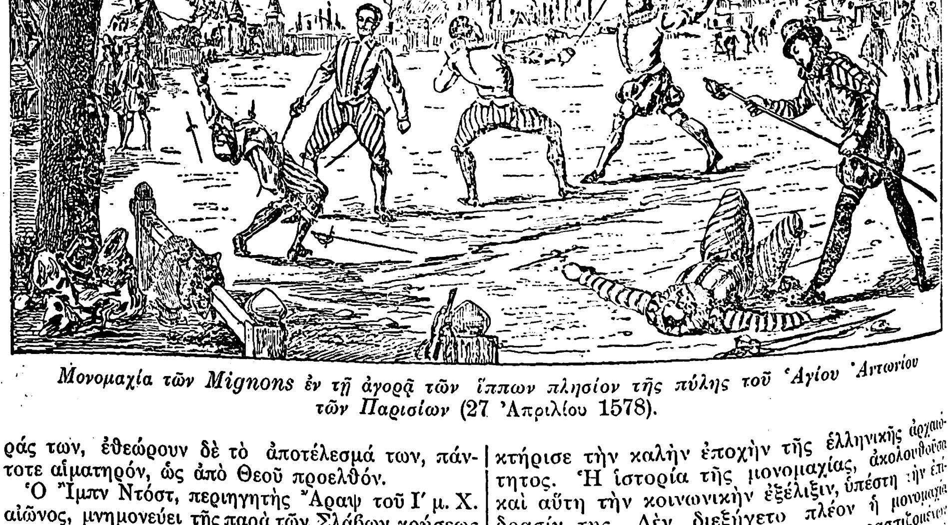

*Μονομαχία τῶν Mignons ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν ἵππων πλησίον τῆς πύλης τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου τῶν Παρισίων* (27 Ἀπριλίου 1578).

ρᾶς των, ἐθεώρουν δὲ τὸ ἀποτέλεσμά των, πάντοτε αἱματηρόν, ὡς ἀπὸ Θεοῦ προελθόν.

Ὁ Ἴμπν Ντόστ, περιηγητὴς Ἄραψ τοῦ Ι' μ. Χ. αἰῶνος, μνημονεύει τῆς παρὰ τῶν Σλάβων χρήσεως τῆς μονομαχίας. Κατὰ τοῦτον, πᾶσα ὑπόθεσις ἐκανονίζετο συμφώνως πρὸς τὴν ἀπόφασιν τοῦ πρίγκιπός των, ἀλλ' ἐὰν τὰ ἐνδιαφερόμενα μέρη δὲν ἔμενον ἱκανοποιημένα ἐκ τῆς ἀποφάσεως ταύτης, κατέφευγον εἰς τὴν μονομαχίαν, ὅτε ὁ νικητὴς ἐπέβαλλεν εἰς τὸν ἡττημένον οἵους οὗτος ἐπεθύκτήρισε τὴν καλὴν ἐποχὴν τῆς ἑλληνικῆς ἀρχαιότητος. Ἡ ἱστορία τῆς μονομαχίας, ἀκολουθοῦσα καὶ αὕτη τὴν κοινωνικὴν ἐξέλιξιν, ὑπέστη τὴν ἐπίδρασίν της. Δὲν διεξήγετο πλέον ἡ μονομαχία ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων μαχητῶν προασπιζομένων ὑπὸ πυκνοῦ θώρακος καὶ ὡπλισμένων μὲ βαρὺ δίκοπον ξίφος, τὸ τῶν μεσαιωνικῶν ἱπποτῶν, ἀλλ' ὑπ' ἀνταγωνιστῶν ἐνδεδυμένων τὰ κοινὰ τῆς πόλεως ἐνδύματα καὶ ὡπλισμένων μὲ λεπτὸν δαμασκηνὸν ξίφος. Κατὰ τὴν ἰδίαν ταύτην ἐποχὴν

Digitized by Google

λαμβάνονται ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων μέτρα πρὸς περιστολὴν τοῦ εὐρέως διαδοθέντος ἔθους τῆς μονομαχίας, ἐμφανίζεται δὲ καὶ στοιχειώδης ἀπαρχὴ συστάσεως συμβουλίων τιμῆς πρὸς κανονισμὸν τοιούτων ὑποθέσεων. Ἐν τούτοις, παρὰ τὰς ἀπαγορευτικὰς διατάξεις τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος, ἐγένοντο κατὰ τοῦτον σοβαρώταται μονομαχίαι, ἰδίᾳ μεταξὺ μελῶν τῆς ἀνωτάτης ἀριστοκρατίας τῆς ἐποχῆς. Ὡς τοιαύτας ἀναφέρομεν διασήμους τινὰς περιπτώσεις

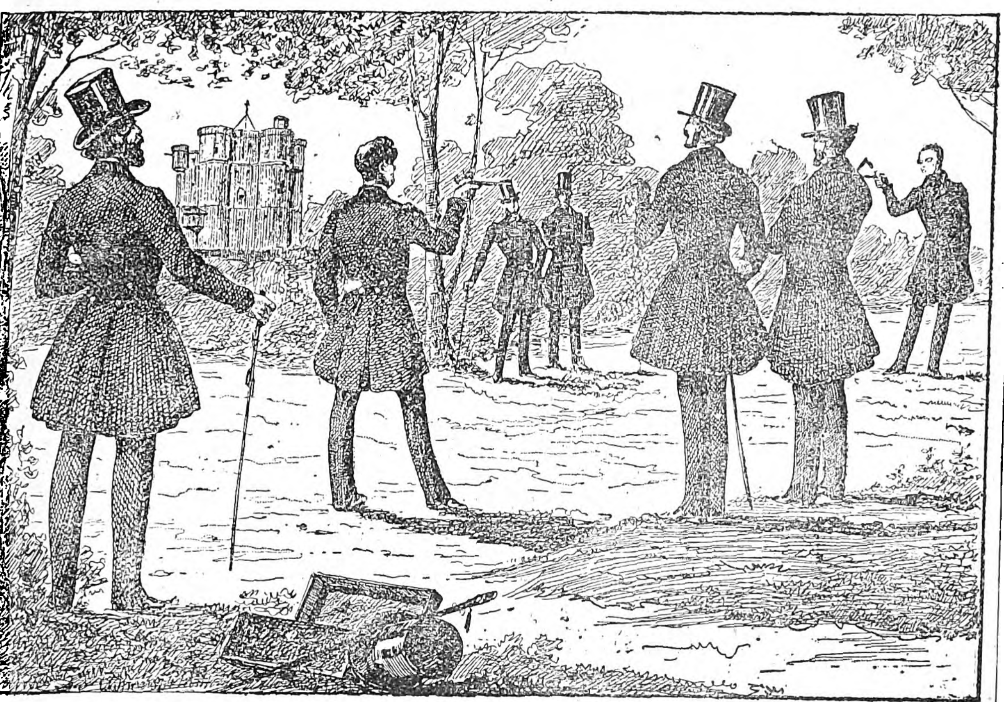

*Μονομαχία διὰ πιστολίων μεταξὺ τῶν δημοσιογράφων Armand Carrel καὶ Émile de Girardin* (22 Ἰουλίου 1836.)

ἀναγομένας εἰς τὴν Γαλλίαν, χώραν, εἰς ἣν κατ᾽ ἐξοχὴν ἠσκήθη ἡ μονομαχία. Ἐν πρώτοις τὴν ἀξιομνημόνευτον μονομαχίαν τοῦ παγκοσμίως γνωστοῦ Bayard «τοῦ ἀτρομήτου καὶ ἀμέμπτου ἱππότου», ὡς ἐπεκράτησε νὰ καλῆται οὗτος, μετὰ τοῦ Ἱσπανοῦ λοχαγοῦ don Alonzo de Soto-Maior, αἰχμαλώτου πολέμου τῶν Γάλλων. Οὗτος παρεπονεῖτο πικρῶς διὰ τὴν σκληρὰν μεταχείρισιν, εἰς ἣν ὑπεβάλλετο κατὰ τὴν αἰχμαλωσίαν του, καὶ ὡς ὑπεύθυνον ταύτης διεκήρυττε τὸν Bayard, καίτοι ἡ λεπτότης τῶν τρόπων τούτου ἦτο παγκοίνως γνωστή. Ὁ Bayard, προσβληθεὶς ἐκ τῆς ἀδίκου ταύτης μομφῆς, ἐπροκάλεσε τὸν Ἱσπανὸν λοχαγὸν εἰς μονομαχίαν, καθ᾽ ἣν ὡπλισμένοι οἱ ἀντίπαλοι μὲ ξίφος καὶ ἐγχειρίδιον, ἀνὰ ἓν εἰς ἑκατέραν χεῖρα, συνηντήθησαν ἐνώπιον τῶν μαρτύρων των εἰς τὸ πεδίον τῆς τιμῆς. Ἀποτέλεσμα τῆς μονομαχίας ταύτης ὑπῆρξεν ὁ ἐπὶ τόπου θάνατος τοῦ Ἱσπανοῦ

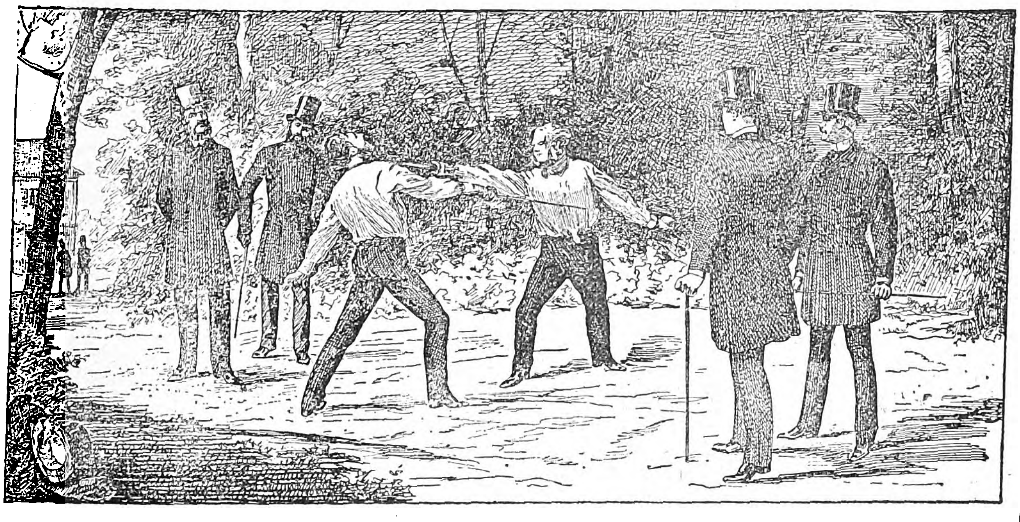

*Μονομαχία διὰ τριγωνικοῦ ξίφους μεταξὺ τοῦ προέδρου τῆς Γαλλικῆς Βουλῆς Floquet καὶ τοῦ στρατηγοῦ Boulanger* (13 Ἰουλίου 1888).

λοχαγοῦ. Ἑτέρα διάσημος μονομαχία ἐγένετο μεταξὺ τοῦ Gui Chabot ἄρχοντος τοῦ Jarnac καὶ τοῦ Chateigneraie, ἐπὶ Ἑρρίκου Β΄, διεξαχθεῖσα τὴν 10ην Ἰουλίου τοῦ 1547. Ἡ περιώνυμος αὕτη μονομαχία προεκλήθη ἐκ συκοφαντίας τοῦ ἄρχοντος τοῦ Jarnac, ὅστις ἐδυσφήμησε βαναύσως τὴν τιμὴν τῆς πενθερᾶς τοῦ Chateigneraie ἐνώπιόν του. Διεξήχθη δὲ ἡ μονομαχία αὕτη μετ᾽ ἀσυνήθους ἐπισημότητος, ἐνώπιον τοῦ βασιλέως καὶ ὁλοκλήρου τῆς αὐλῆς του. Οἱ ἀντίπαλοι, προπορευομένων κηρύκων, σαλπιγκτῶν καὶ τυμπανιστῶν, ἔφθασαν πρὸ τῆς ἐξέδρας τοῦ βασιλέως, ἐστημένης ἐπὶ τοῦ πεδίου, ἐφ᾽ οὗ ἔμελλε νὰ διεξαχθῇ ὁ αἱματηρὸς ἀγών. Ὁ ἴδιος βασιλεύς, πρὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς πάλης, ὥρκισεν ἐπὶ τοῦ ἱεροῦ εὐαγγελίου τοὺς ἀντιπάλους ὅτι θὰ τηρήσωσι κατὰ τὸν ἀγῶνα ἀπαρεγκλίτως τοὺς κεκανονισμένους ὅρους τοῦ κώδικος τῆς μονομαχίας, μεθ᾽ ὃ ἔδωκε τὸ σημεῖον τῆς ἐνάρξεως τοῦ ἀγῶνος. Κατὰ τὴν μονομαχίαν ταύτην, διεξαχθεῖσαν μὲ μακρὰν ξιφοσπάθην καὶ ἐγχειρίδιον, ἐδόθη τὸ ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς μονομαχίας καλούμενον «κτύπημα τοῦ Jarnac», ὅπερ παρέμεινεν ἀξιομνημόνευτον ὡς συνώνυμον προδοτικοῦ κτυπήματος. Διὰ τούτου ὁ ἄρχων τοῦ Jarnac ἀπέκοψε τὰς ἰγνῦς ὄπισθεν τοῦ δεξιοῦ γόνατος τοῦ Cateigneraie καὶ ἐπέφερε τὸν θάνατον τούτου. Ἀδίκως ἐν τούτοις ἐθεωρήθη τὸ κτύπημα τοῦτο, ὑπὸ μεταγενεστέρων τινῶν, ὡς προδοτικόν, διότι ἐν τῇ ἐλευθέρᾳ μονομαχίᾳ πᾶν κτύπημα διδόμενον μὲ κίνδυνον τῆς ζωῆς τοῦ δίδοντος καὶ ἐπιτυγχάνον εἶναι θεμιτόν, ἀρκεῖ ὁ δίδων τοῦτο νὰ μὴ ἀχρηστεύσῃ προηγουμένως τὸ ξίφος τοῦ ἀντιπάλου δι᾽ ἐκνόμου μέσου, ὅπερ ἐν τῇ προκειμένῃ περιπτώσει δὲν συνέβη. Μεθ᾽ ἱκανὰ ἔτη ἀπὸ τῆς μονομαχίας ταύτης, ἥτις διεξήχθη ἐντὸς περιβάλλοντος τόσης ἐπισημότητος μεταξὺ δύο μόνον ἀνταγωνιστῶν, ἐπεκράτησεν ἡ συνήθεια νὰ συνοδεύωνται οἱ κυρίως μονομαχοῦντες καὶ ὑπὸ φίλων των βοηθῶν, ἀντὶ μαρτύρων, οἵτινες καὶ οὗτοι ἐμονομάχουν συγχρόνως μεταξύ των ἐκ φιλικῆς καὶ μόνον ἀφοσιώσεως πρὸς τοὺς κυρίους ἀντιπάλους. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ αἱ μονομαχίαι αὗται τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος διεξήγοντο ἄνευ μαρτύρων.

Τοιαύτη ὑπῆρξε καὶ ἡ μεταξὺ τῶν λεγομένων «Mignons», τῶν εὐνοουμένων δηλαδὴ τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας Ἑρρίκου Γ΄. Ἡ περιώνυμος καὶ δραματικωτάτη τριπλῆ αὕτη μονομαχία ἐγένετο τὴν 27ην Ἀπριλίου τοῦ 1578 ἐπὶ τοῦ χώρου τῆς ἀγορᾶς τῶν ἵππων τοῦ προχώματος τῆς πύλης τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου τῶν Παρισίων. Οἱ κυρίως μονομαχήσαντες ἦσαν ὁ Quélus καὶ ὁ Antraguet, οἵτινες, στενοὶ ὄντες φίλοι, ἦλθον εἰς διάστασιν λόγῳ ἐρωτικῆς τινος ραδιουργίας καὶ ἀπεφάσισαν νὰ λύσουν τὴν διαφοράν των διὰ μονομαχίας, ὡπλισμένοι μὲ ξίφος καὶ ἐγχειρίδιον. Ἕκαστος τούτων συνωδεύετο ὑπὸ δύο φίλων, οἵτινες δὲν ἐπρόκειτο να χρησιμεύσωσιν ὡς μάρτυρες, ἀλλ᾽ ὡς ἀνταγωνισταί. Καὶ ὁ μὲν Quélus προσῆλθεν εἰς τὸ πεδίον τῆς τιμῆς μετὰ τῶν φίλων του Maugiron καὶ Livarol, ὁ δὲ Antraguet μετὰ τῶν ἰδικῶν του φίλων Schomberg καὶ Riberac. Ἅπαντες ἦσαν νέοι ἀπὸ μακροῦ συνδεόμενοι μεταξύ των διὰ φιλίας καὶ ἦσαν ἐπὶ πλέον ἀσφαλῶς λαμπροῦ μέλλοντος, καθ᾽ ὅσον καὶ οἱ ἓξ ἦσαν ἐκ τῶν εὐνοουμένων τοῦ βασιλέως. Ἀφιχθέντες ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς τιμῆς, ἐξιφούλκησαν καὶ ἐτέθησαν οἱ μὲν ἀντιμέτωποι τῶν δέ. Ὁ Quélus ἔναντι τοῦ Antraguet, ὁ Maugiron ἔναντι τοῦ Riberac καὶ ὁ Livarol ἔναντι τοῦ Schomberg τὴν 3ην πρωϊνὴν ὥραν. Ἐπῆλθεν ἡ σύρραξις καὶ ἐπηκολούθησε λυσσώδης ἀγὼν μέχρις ἐξοντώσεως, μηδενὸς παρουσιασθέντος κατὰ τοιαύτην ὥραν, ἵνα διακόψῃ τὸν φονικὸν τοῦτον ἀγῶνα. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς αἱματηρᾶς ταύτης συναντήσεως ὑπῆρξαν τρομερά. Ὁ Maugiron καὶ ὁ Schomberg ἐφονεύθησαν ἐπὶ τόπου. Ὁ Riberac ἀπέθανε τὴν ἐπομένην. Ὁ Livarol ἐπὶ ἓξ ἑβδομάδας ἐπάλαισε μεταξὺ ζωῆς καὶ θανάτου καὶ ἐν τέλει ἐπέζησεν, ἀλλ᾽ ἵνα φονευθῇ μετὰ ἓν ἔτος εἰς ἄλλην μονομαχίαν. Ὁ Quélus, ὁ κύριος αἴτιος τῶν μονομαχιῶν τούτων, ἐταλανίσθη ἐπὶ τριάκοντα τρεῖς ἡμέρας, μὲ τὰ δεκαεννέα τραύματα ποὺ εἶχε λάβει, καὶ ἐν τέλει ἀπέθανε. Μόνος ὁ ἀντίπαλός του Antraguet ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ αἱματηροῦ τούτου ἀγῶνος μὲ μικρὰν μόνον ἀμυχήν. Καὶ πλεῖσται δὲ ἄλλαι ἀνάλογοι μονομαχίαι ἠκολούθησαν τότε μεταξὺ ἄλλων εὐνοουμένων τοῦ βασιλέως, ἐπίσης αἱματηραί.

Κατὰ τὸν ΙΖ΄ αἰῶνα, ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ΄ τῆς Γαλλίας, αἱ μονομαχίαι ἐπολλαπλασιάσθησαν κατὰ τρόπον, ὥστε ἡ βασιλεία του νὰ κληθῇ «ἡ τῆς μονομαχίας». Μεταξὺ τῶν μονομάχων τοῦ αἰῶνος τούτου συγκαταλέγεται καὶ ὁ διαφημισθεὶς ὡς ὁ ἐπιδεξιώτερος μονομάχος τῶν αἰώνων Γάλλος εὐγενὴς Λουδοβίκος Μονμορανσύ, κόμις τοῦ Μπουτβίλ.

Κατὰ τὸν ΙΗ΄ αἰῶνα ἐγένετο ἐν Γαλλίᾳ ἐπίσης καὶ ἡ πρώτη, μεταξὺ κυριῶν τῆς ἀνωτάτης ἀριστοκρατίας, μονομαχία διὰ πιστολίου δι᾽ ἐρωτικοὺς λόγους. Διεξήχθη εἰς τὸ δάσος τῆς Βουλώνης, ἔνθα συνηντήθησαν ἡ μαρκησία de Nesle καὶ ἡ κυρία Polignac, ἀποτέλεσμα δὲ εἶχε τὸν ἐλαφρὸν τραυματισμὸν τῆς πρώτης εἰς τὸν ὦμον.

Ἐν Γαλλίᾳ κυρίως ἡ μονομαχία εἶχε τὴν μεγαλυτέραν διάδοσιν, δι᾽ ὃ καὶ μέχρι σήμερον ἀκόμη εἶναι αὕτη ἐκεῖ εἰς γενικὴν χρῆσιν παρὰ τὰς ἀπαγορευτικὰς διατάξεις τοῦ νόμου. Καὶ κατ᾽ αὐτὴν τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν, πλεῖσται ὅσαι μονομαχίαι ἐγένοντο, ἰδίᾳ μεταξὺ πολιτικῶν ἀνδρῶν. Κατὰ τοὺς μεταγενεστέρους χρόνους ἀναφέρομεν μονομαχίας τινὰς γενομένας παρὰ διασήμων ἀνδρῶν τῆς Γαλλίας, ὡς τὴν διὰ πιστολίου γενομένην μονομαχίαν μεταξὺ τῶν δημοσιογράφων Ἀρμάνδου Καρέλ, διευθυντοῦ τῆς «Ἐθνικῆς», καὶ Αἰμ. Ζιραρντέν, διευθυντοῦ τῆς ἐφημερίδος «Ὁ Τύπος». Οἱ ἀντίπαλοι ἐτοποθετήθησαν εἰς ἀπόστασιν 40 βημάτων ἀπ᾽ ἀλλήλων μὲ τὸ δικαίωμα τῆς προχωρήσεως κατὰ 10 βήματα. Ὁ Καρὲλ διέτρεξε ταχέως τὰ 10 βήματα καὶ ἐσκόπευσεν, ὁ δὲ Ζιραρντὲν ἐπροχώρησε μόνον 3 βήματα. Ὁ πυροβολισμὸς ὑπῆρξε σύγχρονος καὶ ἐκτυπήθησαν ἀμφότεροι σοβαρῶς. Ἐκ τούτων ὁ Καρὲλ ἀπέθανε μετὰ δύο ἡμέρας. Ἐπίσης ἀναφέρομεν τὴν μονομαχίαν τοῦ μετέπειτα προέδρου τῆς γαλλικῆς δημοκρατίας Θιέρσου, ἐπίσης τὴν τοῦ Γαμβέττα καὶ τὴν περιώνυμον μονομαχίαν διὰ τριγωνικοῦ ξίφους τοῦ προέδρου τῆς βουλῆς τῆς Γαλλίας Φλοκὲ μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Μπουλανζέ, διεξαχθεῖσαν εἰς Neuilly πλησίον τῶν Παρισίων, καθ᾽ ἣν ἐπληγώθη σοβαρώτατα εἰς τὸν λαιμὸν ὁ στρατηγός.

Πλεῖσται ἐπίσης μονομαχίαι κατὰ διαφόρους ἐποχὰς ἐγένοντο εἰς τὸ Βέλγιον, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Ἱσπανίαν, τὴν Πορτογαλίαν, τὴν Ἑλβετίαν, εἰς αὐτὴν τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν Ἀμερικήν, εἰς τὴν Γερμανίαν, Αὐστρίαν καὶ Οὐγγαρίαν, εἰς τὴν Νορβηγίαν, Δανίαν καὶ Σουηδίαν, εἰς τὴν Ρωσίαν, ἔνθα ἐγένοντο θύματα τῆς μονομαχίας οἱ δύο διασημότεροι ποιηταί της, ὁ Πούσκιν καὶ ὁ Λερμοντόφ, ἀξιωματικοὶ ἀμφότεροι, καὶ ἐν τέλει ἐν Ἑλλάδι, εἰς ἣν αἱ περιφημότεραι ἦσαν ἡ τοῦ Δοκοῦ μὲ τὸν λοχαγὸν Βούρβαχην, ἀνεψιὸν τοῦ Γάλλου στρατάρχου, καθ᾽ ἣν διὰ πιστολίου ἐφονεύθη ὁ δεύτερος, καὶ ἡ τοῦ Σπ. Στάη, ὑπουργοῦ τῆς Παιδείας, μετὰ τοῦ βουλευτοῦ Κ. Χατζηπέτρου, καθ᾽ ἥν, διὰ πιστολίου ἐπίσης, ἐφονεύθη ὁ δεύτερος.

Τὰ θλιβερὰ ἀποτελέσματα τῶν μονομαχιῶν, ἐξ ὧν ἐλαχίστας ἀνεφέραμεν, ἤγαγον τὰ διάφορα κράτη εἰς τὴν ἀπόφασιν τῆς διὰ νόμου καταργήσεως τῆς μονομαχίας. Ἐν τούτοις, παρὰ τὰς ἀπαγορεύσεις ταύτας, τὸ ἔθιμον τῆς μονομαχίας ἐπικρατεῖ εἰσέτι εἰς πλείστας τῆς Εὐρώπης χώρας.



Digitized by Google

ΤΕΧΝΙΚΗ. Ὁ ἀγὼν τῆς *μονομαχίας* διαφέρει οὐσιωδῶς τοῦ ἁπλοῦ ἀγῶνος *ὁπλομαχίας* (βλ. λ.) δι' οἱουδήποτε ἀγχεμάχου ὅπλου, διότι, ὡς γίνονται αἱ *συμβολαὶ* (βλ. λ.) δι' ἄσκησιν ἢ ἀγῶνα ἐπικρατήσεως, οἱ ἀνταγωνισταὶ προστατεύονται ὑπὸ τῆς εἰδικῆς περιβολῆς των ἐκ τῶν κτυπημάτων, δι' ὃ καὶ τὸ θάρρος αὐτῶν εἶναι ἀπεριόριστον. Ἀλλ' ἐν τῷ ἀγῶνι τῆς μονομαχίας συνέχει τοὺς ἀντιπάλους τὸ αἴσθημα τοῦ ἀμέσου κινδύνου κατὰ τρόπον, ὥστε ἀλλοιοῦται οὐσιωδῶς ἡ συμβολὴ τῆς μονομαχίας ἐν συγκρίσει πρὸς τὰς προαναφερθείσας. Ἕνεκα τούτου, κατὰ τοὺς νεωτέρους ἰδίᾳ χρόνους, ἐπιζητεῖται κατ' αὐτὴν τὴν ἄσκησιν ἡ ὅσον τὸ δυνατὸν προσαρμογὴ αὐτῆς πρὸς τὴν πραγματικὴν συμβολὴν τοῦ ἀγῶνος μονομαχίας.

Τὰ ἐν χρήσει σήμερον ὅπλα ἐν τῇ μονομαχίᾳ εἰσὶ δύο κυρίως, τὸ *ξίφος* καὶ τὸ *πιστόλιον*, ἀλλὰ συχνότατα προστίθενται εἰς ταῦτα ἡ *σπάθη* ἢ *ξιφολόγχη* καὶ τὸ *περίστροφον*.

Τὸ συνηθέστερον καὶ ἱπποτικώτερον ὅπλον μονομαχίας εἶναι τὸ *τριγωνικὸν ξίφος* (épée), ὅπερ διαφέρει οὐσιωδῶς τοῦ τετραπλεύρου *ξίφους ἀσκήσεως* (fleuret), οὗτινος ἡ αἰχμὴ καταλήγει εἰς κομβίον.

Κατὰ τὸν ἐν ἰσχύϊ κώδικα τῆς μονομαχίας, τὸ δικαίωμα τῆς ἐκλογῆς τῶν ὅπλων ἀνήκει εἰς τὸν προσβεβλημένον· ἐπειδὴ δὲ τὸ δικαίωμα τοῦτο ἀποτελεῖ μέγα πλεονέκτημα, καθορίζεται σαφῶς ὑπὸ τοῦ κώδικος τίς εἶναι ὁ προσβεβλημένος εἰς τὰς ποικίλας περιπτώσεις τῶν ὑποθέσεων τιμῆς. Οὕτω καθωρίσθη, ὅτι «πᾶσα λέξις, πᾶν ἔγγραφον, σχῆμα, κίνημα ἢ κτύπημα θίγοντα τὴν φιλοτιμίαν, τὴν ἁβρότητα ἢ τὴν τιμὴν ἄλλου, ἀποτελεῖ *προσβολήν*, ἥτις διακρίνεται: 1) Εἰς ἁπλῆν, παρέχουσαν εἰς τὸν προσβεβλημένον τὸ δικαίωμα μόνον τῆς ἐκλογῆς τῶν ὅπλων. 2) Τὴν μεθ' ὕβρεως, καθ' ἣν οὗτος ἐκλέγει τὰ ὅπλα καὶ τοὺς ὅρους τῆς μονομαχίας· καὶ 3) Τὴν μετ' αἰκίας προσβολήν, καθ' ἣν ἐπὶ πλέον ὁρίζει οὗτος καὶ τὴν ἀπόστασιν, ἐν ᾗ περιπτώσει ἡ μονομαχία διεξαχθῇ διὰ πιστολίου ὡς καὶ ἐν τῇ δευτέρᾳ περιπτώσει».

Εἰς διένεξιν, καθ' ἣν ἀντηλλάγησαν ὕβρεις, προσβεβλημένος εἶναι ὁ πρῶτος ὑβριζόμενος. Γενικῶς δέ, ἐπειδὴ ἀπειρία περιπτώσεων περιπλέκει ἐνίοτε τὸν καθορισμὸν τοῦ προσβεβλημένου, καθορίζουν τοῦτον, διὰ τῆς συζητήσεώς των, οἱ μάρτυρες τῶν ἀντιπάλων.

Ὅταν εἰς ὕβριν ἀπαντᾷ τις δι' αἰκίας, ὁ πληγεὶς εἶναι ὁ προσβεβλημένος, καὶ ἂν ἀκόμη οὗτος ἀνταπαντήσῃ δι' ἑτέρας, ἔστω καὶ βαρυτέρας αἰκίας. Πολλάκις ὅμως, διά τινα εἴδη ὕβρεων, εἰς ἃς ὁ προσβληθεὶς ἀπήντησε δι' αἰκίας, ἐξακολουθεῖ νὰ θεωρῆται προσβληθεὶς ὁ ὑβρισθείς. Περὶ τούτου ὅμως κρίνουν καὶ ἀποφασίζουν οἱ μάρτυρες.

Ὁ προκαλῶν ἄνευ λόγου θεωρεῖται προσβολεύς.

Διὰ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν προσβολὴν μία μόνον καὶ εἰς ἕνα ὀφείλεται ἱκανοποίησις. Ἐὰν δηλαδὴ πολλὰ ἄτομα προσβληθῶσι συγχρόνως παρ' ἑνός, ὁ κλῆρος ἀποφασίζει περὶ ἐκείνου, ὅστις θὰ ζητήσῃ ἱκανοποίησιν, ἤ, ἐὰν συγκατατίθηται ὁ προσβολεύς, ἐκλέγεται οὗτος παρὰ τῆς προσβληθείσης ὁμάδος. Ἀντιστρόφως, ἐὰν εἷς προσβληθῇ συγχρόνως ὑπὸ πολλῶν, ὁ προσβληθεὶς δικαιοῦται νὰ ἐκλέξῃ οὗτος ὡς ἀντίπαλον ἕνα ἐκ τούτων.

Ταῦτα εἰς γενικὰς γραμμὰς τὰ τοῦ κώδικος τῆς μονομαχίας.

***Τὰ πρὸ τῆς μονομαχίας.*** Μετὰ γενομένην προσβολήν, ἀνταλλάσσονται ἐπισκεπτήρια καὶ ἀποστέλλονται ὑπὸ τοῦ προσβεβλημένου, ἐντὸς 24 ὡρῶν, δύο μάρτυρες πρὸς τὸν προσβαλόντα, ἵνα ὁρίσῃ καὶ οὗτος τοὺς ἰδικούς του πρὸς κανονισμὸν τῆς ὑποθέσεώς των τιμῆς. Οὗτοι συνέρχονται εἰς καθοριζόμενον ἀπὸ κοινοῦ μέρος πρὸς συζήτησιν τῆς ὑποθέσεως. Ἐὰν ἐκ τῆς συζητήσεως ταύτης δὲν προκύψῃ συμβιβασμός, δι' ὃν συντάσσεται πρωτόκολλον ὑπὸ τῶν τεσσάρων μαρτύρων εἰς διπλοῦν, τερματίζον τὴν ὑπόθεσιν, ἀποφασίζονται τὰ τῆς μονομαχίας.

Ἐὰν ὁ προσβαλὼν ἀρνηθῇ νὰ διορίσῃ μάρτυρας καὶ νὰ δώσῃ ἱκανοποίησιν, συντάσσεται ὑπὸ τῶν μαρτύρων τοῦ προσβεβλημένου πρωτόκολλον περὶ τῆς ἀρνήσεως ταύτης, ἥν, ἀναλόγως τῶν περιστάσεων, χαρακτηρίζουσι προσηκόντως ἐν αὐτῷ. Ὁ προσβολεὺς ὁ ἀρνηθεὶς ἀδικαιολογήτως νὰ δώσῃ ἱκανοποίησιν χάνει εἰς τὸ μέλλον τὸ δικαίωμα νὰ ζητήσῃ ἱκανοποίησιν διὰ τῶν ὅπλων ὁπωσδήποτε προσβαλλόμενος, ὡς ἐπίσης καὶ ὁ προσβάλλων τοιοῦτον κηρυχθέντα ἐκτὸς τιμῆς δικαιοῦται νὰ ἀρνηθῇ νὰ μονομαχήσῃ μετ' αὐτοῦ.

Ἀποφασισθείσης τῆς μονομαχίας, δέον αὕτη νὰ περατωθῇ πάλιν ἐντὸς 24 ὡρῶν. Γενικῶς δὲ πρέπει νὰ καταβάλληται φροντίς, ὥστε πᾶσα μονομαχία νὰ περατοῦται ἐντὸς 48 ὡρῶν ἀπὸ τῆς ἀποστολῆς τῶν μαρτύρων.

Τὴν ἀπόφασιν τῆς ἐκτελέσεως τῆς μονομαχίας ἐπακολουθεῖ ἡ ὑπὸ τῶν τεσσάρων μαρτύρων σύνταξις εἰς διπλοῦν πρωτοκόλλου, δι' οὗ καθορίζονται, ῥητῶς καὶ ἐν πάσῃ λεπτομερείᾳ, οἱ ὅροι καθ' οὓς θὰ τελεσθῇ αὕτη. Συνήθης ὥρα τῆς πάλης καὶ τόπος εἶναι ἡ μετὰ μεσημβρίαν καὶ ἐρημικὸν μέρος κατάλληλον, ἐγγὺς τῆς πόλεως.

Σπουδαιοτάτη λεπτομέρεια ἐν τῇ μονομαχητικῇ εἶναι ἡ ἐκλογὴ τοῦ ἐδάφους, ἔνθα πρόκειται νὰ λάβῃ χώραν ἡ μονομαχία· πλημμελὴς ἐκλογὴ τοῦ ἐδάφους ἔγινε πολλάκις πρόξενος ἀνεπανορθώτου δυστυχήματος καὶ ὁ ὑποστὰς τὸ ἀτύχημα δὲν ὑπῆρξε κυρίως θῦμα τοῦ ἀντιπάλου του, ἀλλὰ τῆς κακῆς ἐκλογῆς τοῦ ἐδάφους, ἔνθα διεξήχθη ἡ πάλη. Τὸ καταλληλότερον πρὸς μονομαχίαν ἔδαφος εἶναι ὁδὸς σκληρά, ἐπίπεδος καὶ σύσκιος. Κατὰ προτίμησιν δέον νὰ ἐκλέγηται εὐρύχωρος δενδροστοιχία, τοὐλάχιστον τεσσάρων μέτρων πλάτους, μὲ ὁμαλὸν καὶ ὅσον τὸ δυνατὸν ὁριζόντιον δάπεδον, ἵνα καὶ οἱ ἀντίπαλοι δύνανται ἀνέτως νὰ παλαίσωσι καὶ οἱ μάρτυρες νὰ καταλάβουν ἑκατέρωθεν θέσιν. Ἀποκλείεται ἀπολύτως ἡ ἐκλογὴ ἐδάφους μὲ χάλικας, ὅπως μὴ προσκόπτωσι καὶ πίπτωσιν οἱ παλαίοντες, ἐπίσης μὲ χόρτον, ἵνα μὴ ὀλισθαίνωσιν, ἢ μὲ ἄμμον ἢ λάσπην, ἐφ' ὧν παρακωλύονται αἱ κινήσεις. Ἐπὶ πλέον τὸ ἔδαφος δὲν πρέπει νὰ εἶναι ἀνωφερὲς ἢ κατωφερές, ἵνα μὴ οἱ ἀντίπαλοι εὑρίσκωνται ὑπὸ διαφορετικὰς συνθήκας, πλεονεκτικὴν διὰ τὸν μὲν καὶ μειονεκτικὴν διὰ τὸν ἕτερον.

Ἕκαστος τῶν διαμαχομένων μεταβαίνει εἰς τὸν ὁρισθέντα τόπον συνοδευόμενος ὑπὸ τῶν μαρτύρων του καὶ ἑνὸς ἰατροῦ. Εὐθὺς ὡς συναθροισθῶσι πάντες ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς πάλης, ἐπακολουθεῖ ἡ παρὰ τοῦ διευθυντοῦ τῆς μονομαχίας καὶ τῶν μαρτύρων ἐξέτασις τῶν ὅπλων, δι' ὧν θὰ διεξαχθῇ ὁ ἀγών. Συνήθως ἡ μονομαχία γίνεται δι' ἑνὸς ἐκ τῶν ὅπλων τῶν παραδεδεγμένων παρ' ὅλων τῶν ἐθνῶν: ἢ δηλαδὴ διὰ τριγωνικοῦ ξίφους, ἢ διὰ σπάθης, ἢ διὰ πιστολίου καί, ἐξαιρετικῶς, κυρίως μεταξὺ στρατιωτικῶν, διὰ περιστρόφου τοῦ στρατοῦ. Σκοπὸς τῆς ἐξετάσεως ταύτης εἶναι ν' ἀποδειχθῇ, προκειμένου περὶ συνήθους μονομαχίας, ὅτι τὰ ὅπλα εἶσὶν ἀπολύτως ὅμοια καὶ δὲν ἐξασφαλίζεται πλεονέκτημα δι' οὐδένα τῶν ἀντιπάλων εἰς βάρος τοῦ ἄλλου. Ἐὰν ἡ μονομαχία διεξαχθῇ διὰ *τριγωνικῶν ξιφῶν*, δέον νὰ βεβαιωθῇ ὅτι τὰ ξίφη εἰσὶν ἰσοβαρῆ, ἰσομεγέθη μὲ ὁμοίας λαβὰς καὶ μὲ τὸ κέντρον τοῦ βάρους των ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ σημείου. Ἐπὶ πλέον ὅτι δὲν εἶναι κοπτερά, προκειμένου νὰ ἐνεργήσουν μόνον διὰ τῆς αἰχμῆς, οὐδ' ὀδοντωτά, ἵνα μὴ τὰ τραύματα καταστῶσι σοβαρώτερα.

Ὅταν πρόκειται περὶ μονομαχίας διὰ τῆς *σπάθης*, ἐὰν συμφωνηθῇ νὰ μὴ γίνῃ χρῆσις νύξεων, δέον νὰ χρησιμοποιηθῶσι σπάθαι ἄνευ αἰχμῆς. Συνήθως, ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει, ἀκονίζονται καλῶς, ἵνα εὐχερῶς ἐπέλθῃ τὸ ἀποτέλεσμα, αἱ κοιναὶ σπάθαι ἀσκήσεως καὶ διὰ τούτων διεξάγεται ἡ μονομαχία. Ἐὰν τοὐναντίον, τότε διεξάγεται ἡ μονομαχία διὰ *ξιφοσπαθῶν*, ὅτε αὗται ἐξετάζονται ὡς καὶ τὰ ξίφη.

Ἐὰν ἡ μονομαχία διεξαχθῇ διὰ *πιστολίων*, δέον ταῦτα ν' ἀνήκωσιν εἰς τὸ αὐτὸ ζεῦγος καὶ νὰ ὦσιν ἀπαραλλάκτως ὅμοια. Ἐὰν ὅμως πρόκειται περὶ σοβαρωτάτης ὑποθέσεως, καθ' ἣν ὁ προσβεβλημένος ἔχει τὸ δικαίωμα τῆς ἐκλογῆς τῶν ὅπλων καὶ τῶν ὅρων τῆς μονομαχίας, ὡς καὶ τὸ δικαίωμα τῆς χρήσεως ἀτομικοῦ του πιστολίου, τότε τὸ δικαίωμα τῆς χρήσεως ταύτης παραχωρεῖται καὶ εἰς τὸν ἀντίπαλόν του. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει αἱ κάννai τῶν ἀτομικῶν τούτων πιστολίων δέον νὰ μὴ ἔχωσι μεταξύ των διαφορὰν μήκους ἀνωτέραν τῶν τριῶν ἑκατοστῶν, διότι ὅσῳ μακροτέρα εἶναι ἡ κάννη, τόσῃ μεγαλυτέρα εἶναι ἡ ταχύτης τῆς βολίδος, συνεπῶς δὲ καὶ ἡ εὐθυβολία. Ἐπὶ πλέον, δέον νὰ ἀποφεύγηται, μεσολαβήσει τῶν μαρτύρων, ἡ χρῆσις ῥαβδωτῶν πιστολίων, ὧν τὰ τραύματα εἶναι σοβαρώτατα.

Τὴν ἐπιθεώρησιν τῶν ὅπλων ἐπακολουθεῖ ἡ διὰ καταλλήλου τρόπου ἐπιθεώρησις τῶν ἀντιπάλων, οἵτινες δέον νὰ μὴ φέρωσιν ἔσωθεν τῶν ἐνδυμάτων των οὐδὲν ἀντικείμενον δυνάμενον νὰ παρακωλύσῃ τὴν ἐνέργειαν τοῦ βλήματος ἢ τῆς αἰχμῆς τοῦ ξίφους. Οἱ μονομαχοῦντες δέον νὰ ἀγωνισθῶσι μὲ μόνον τὸ ὑποκάμισον καὶ μὲ χειρόκτιον, προκειμένου νὰ ἀγωνισθῶσι μὲ ξίφος ἢ σπάθην. Ἐὰν δὲ ἡ μονομαχία πρόκειται νὰ γίνῃ διὰ πιστολίου, δέον νὰ φέρωσι περισκελίδα ὀρφνήν, μέλαν χιτώνιον, μέλανα πῖλον καὶ οὐδὲν λευκὸν εἶδος ἀμφιέσεως, ἵνα μὴ παρουσιάζουν λίαν εὐδιάκριτον στόχον.

***Ἡ πάλη.*** Εἰς ἑκάστην μονομαχίαν δέον νὰ ὑπάρχῃ εἷς διευθύνων τὸν ἀγῶνα. Συνήθως ἐκλέγεται ὁ ἐκ τῶν μαρτύρων ἱκανώτερος ὁπλομάχος. Ἐὰν δὲν συγκεντροῖ οὐδεὶς ἐκ τῶν μαρτύρων τὰ προσόντα ἱκανοῦ διευθυντοῦ μονομαχίας, τότε παρακαλεῖται εἷς ἀνεγνωρισμένος τοιοῦτος, ἵνα διευθύνῃ ταύτην, τοῦθ' ὅπερ προτιμᾶται διὰ πᾶσαν μονομαχίαν, πρὸς ἀποφυγὴν περιπλοκῶν κατὰ τὴν διεξαγωγὴν ἐξ ἀπειρίας τοῦ διευθύνοντος ταύτην.

*Μονομαχία διὰ ξίφους ἢ σπάθης.* Προκειμένου νὰ διεξαχθῇ διὰ τῶν ὅπλων τούτων ἡ πάλη, ὁ διευθύνων τὴν μονομαχίαν, ὡς καὶ ἕκαστος τῶν μαρτύρων, φέρει στερεὰν εὐμεταχείριστον ῥάβδον, ἵνα ἐν ἀνάγκῃ ἐπεμβάσεως ἀναχαιτίζῃ δι' αὐτῆς ἐκνόμους κινήσεις τῶν μονομαχούντων. Εὐθὺς ὡς οἱ ἀντίπαλοι τοποθετηθῶσιν ἔναντι ἀλλήλων, ὁ διευθύνων τὴν μονομαχίαν λαμβάνει ἀπὸ τῆς αἰχμῆς τὸ ζεῦγος τῶν ξιφῶν ἢ σπαθῶν καὶ παραδίδει ἀνὰ ἓν ἢ μίαν εἰς ἕκαστον τῶν ἀντιπάλων, λέγων εἰς αὐτοὺς ὅτι ἡ πάλη θὰ ἀρχίσῃ διὰ παραγγέλματός του. Διατάσσει κατόπιν «εἰς θέσιν», ὅτε οἱ ἀντίπαλοι κάμπτονται ἐπὶ τῶν γονάτων μὲ τὰς αἰχμὰς κρατουμένας, ὑπὸ τοῦ διευθύνοντος, μακρὰν ἀλλήλων. Κατόπιν ἐγκαταλείπει οὗτος ταύτας, δίδων τὸ παράγγελμα «ἐμπρὸς κύριοι» καὶ ἡ πάλη ἄρχεται, λήγει δὲ διὰ τοῦ παραγγέλματος «ἄλτ», εὐθὺς μόλις ὁ διευθύνων ἀντιληφθῇ ἐπενεχθεῖσαν πληγήν. Μετὰ τὸ πέρας τῆς πάλης, ἐὰν οἱ λόγοι, δι' οὓς ἐγένετο ἡ μονομαχία δὲν ἦσαν ἀπολύτως σοβαροί, ἐπικρατεῖ ἡ συνήθεια ὁ νικητὴς νὰ τείνῃ πρὸς συμφιλίωσιν τὴν χεῖρα πρὸς τὸν ἡττηθέντα. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς πάλης δύναται νὰ διακόπτεται αὕτη παρὰ τοῦ διευθύνοντος μετὰ 5—10 λεπτὰ τῆς ὥρας, ἐὰν ἔχῃ τοῦτο προηγουμένως ὁρισθῇ, ἢ ἐὰν αἰτηθῇ, δι' ἀποχρῶντα λόγον, παρ' ἑνὸς τῶν διαμαχομένων. Ἐπίσης ἀπαραιτήτως διακόπτεται ἡ μονομαχία ἐν περιπτώσει ἀφοπλίσεως ἢ θλάσεως ξίφους ἢ σπάθης ἢ πτώσεως ἑνὸς τῶν ἀντιπάλων ἢ ἕνεκα πληγῆς ἢ ἐν τέλει ἕνεκα παραβιάσεως τῶν κανόνων τῆς μονομαχίας. Τότε, διὰ τοῦ παραγγέλματος «ἄλτ» τοῦ διευθύνοντος, οἱ ἀντίπαλοι ὀφείλουσιν ἀμέσως νὰ ὀπισθοχωρήσωσι, καταβιβάζοντες τὴν αἰχμήν, οὗτος δὲ τίθεται ἐν τῷ μέσῳ αὐτῶν.

*Μονομαχία διὰ πιστολίου.* Καίτοι ἡ διὰ πιστολίου μονομαχία δέον νὰ ἀποφεύγηται, διότι ἢ καταλήγει εἰς γελοῖον πολλάκις ἀποτέλεσμα ἢ εἰς ἐξόχως τραγικὸν καὶ σπανιώτατα εἰς ἐλαφρὸν τραυματισμόν, ἐν τούτοις τὸ πιστόλιον εἶναι τὸ συνηθέστερον ἐν τῇ μονομαχίᾳ μέσον, ὡς δυνάμενον νὰ χρησιμοποιηθῇ καὶ παρὰ τῶν τελείως ἀνασκήτων εἰς τὴν χρῆσιν τῶν ὅπλων. Δικαιολογεῖται δὲ ἐξ ἄλλου ἡ χρῆσις αὐτοῦ, ἐὰν πρόκειται διὰ ταύτης νὰ ἀντισταθμισθῇ τὸ μειονέκτημα τοῦ γήρατος, τῆς πολυσαρκίας καὶ τῶν φυσικῶν ἢ ἐπικτήτων ἀτελειῶν τοῦ σώματος. Ἐπειδὴ τὰ ἀποτελέσματα τῆς διὰ πιστολίων μονομαχίας δύνανται νὰ ὦσιν ἐξόχως τραγικά, δέον νὰ καταβάλληται παρὰ τῶν μαρτύρων ἐξαιρετικὴ φροντίς, ἵνα μὴ ἐξασφαλίζηται, δι' οἱονδήποτε λόγον, οὐδὲν πλεονέκτημα εἰς οὐδένα τῶν ἀντιπάλων εἰς βάρος τοῦ ἄλλου. Δι' ὃ μετ' ἐπιμελείας δέον νὰ ἐξετάζωνται, ὡς προανεφέρθη, τὰ ὅπλα καὶ ἰδίᾳ νὰ ἐπιθεωρῶνται πρὸ τῆς μονομαχίας μετὰ μεγίστης προσοχῆς οἱ ἀντίπαλοι, ὅπως βεβαιωθῇ ἀπολύτως ὅτι δὲν φέρουσιν ἐπ' αὐτῶν ἀντικείμενα δυνάμενα νὰ μηδενίσωσι τὴν εἰσδυτικὴν δύναμιν τῆς βολίδος, ὅτε ἀποκτᾶται ἄδικον πλεονέκτημα διὰ τὸν φέροντα. Τοιαύτη ἀμέλεια τῶν μαρτύρων ἐπέφερεν ἄλλοτε τὸ τόσον παρ' ἡμῖν σχολιασθὲν ἐπεισόδιον τῆς πρὸ πολλοῦ γενομένης μονομαχίας μεταξὺ τοῦ θανόντος ἰλάρχου Γεωργίου Μουρούζη καὶ ἑνὸς ἀξιωματικοῦ τῆς ὑπηρεσίας τότε τοῦ πρίγκιπος Νικολάου. Κατὰ τὴν μονομαχίαν ταύτην, καίτοι ἡ βολὶς τοῦ Μουρούζη ἔπληξε καιρίως τὸν ἀντίπαλόν του εἰς τὴν βουβωνικὴν χώραν, ἐν τούτοις, ὅλως παραδόξως, ὁ πληγεὶς οὐδόλως ἐτραυματίσθη, διότι ἡ βολὶς ἀπετράπη ἔκ τινος μεταλλικῆς σιγαροθήκης, ἣν ἔφερεν οὗτος εἰς τὸ θυλάκιον τῆς περισκελίδος του.

Ἡ διὰ πιστολίου μονομαχία γίνεται κατὰ δύο τρόπους, ἢ διὰ παραγγέλματος ἢ διὰ σκοπεύσεως. Καθ' οἱονδήποτε ὅμως τρόπον καὶ ἂν τελεσθῇ αὕτη, δέον νὰ ἐξετασθῶσιν ἡ θέσις τοῦ πιστολίου ἐν τῇ χειρὶ καὶ ἡ στάσις τοῦ σώματος κατὰ τὴν ἐνέργειαν. Ὁ σκοπευτὴς τοποθετεῖται ἔναντι τοῦ ἀντιπάλου του, ἔχει τὰ ἄκρα τῶν ποδῶν ἡνωμένα καὶ μὲ διεύθυνσιν κάθετον πρὸς τὸ σῶμα, τὴν ἐλευθέραν χεῖρα ὑψηλὰ ὄπισθεν τῆς ῥάχεως μὲ ἀνοικτὴν τὴν παλάμην καὶ ἐστραμμένην πρὸς τὰ ἔξω, τὴν δὲ ὡπλισμένην πρὸς τὰ κάτω, παράλληλον τοῦ μηροῦ μὲ τὸ στόμιον τῆς κάννης πρὸς τὴν γῆν. Γενικῶς ἡ μεταξὺ τῶν ἀντιπάλων ἀπόστασις ποικίλλει ἀπὸ 25 μέχρι 35 βημάτων. Ὁ σκοπευτὴς δράττεται τοῦ κονταχίου τοῦ ὅπλου διὰ τοῦ ἀντίχειρος καὶ τῶν τριῶν τελευταίων δακτύλων, τὸν δὲ δείκτην τοποθετεῖ κατὰ μῆκος τοῦ φυλακτῆρος τῆς σκανδάλης, ἕτοιμος νὰ στηρίξῃ τοῦτον ἐλαφρῶς ἐπὶ ταύτης εὐθὺς ὡς ἀκούσῃ τὸν διευθύνοντα νὰ φωνήσῃ «Ἕτοιμοι κύριοι;»

Μονομαχία διὰ παραγγέλματος. Τὰ πιστόλια δίδονται εἰς τοὺς ἀντιπάλους διὰ κλήρου, ἀφοῦ προηγουμένως τοποθετηθῶσιν οὗτοι, παρὰ τοῦ διευθύνοντος τὴν μονομαχίαν, ἕκαστος εἰς τὴν ὁρισθεῖσαν αὐτῷ θέσιν. Κατόπιν ὁ διευθύνων τοποθετούμενος παραπλεύρως καὶ εἰς ἴσην ἀπὸ τῶν ἀντιπάλων ἀπόστασιν, ἐρωτᾷ μεγαλοφώνως «Ἕτοιμοι κύριοι;», μὲ τὴν καταφατικὴν δ' ἀπάντησιν τῶν ἀντιπάλων παραγγέλλει: «Προσοχή—πῦρ—ἕν—δύο—τρία...» κτυπῶν τὴν ἀριστερὰν παλάμην ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ῥυθμικῶς εἰς χρόνον ἐν συνόλῳ $\frac{1}{2}$—$1\frac{1}{2}$ πρώτων λεπτῶν, συμφώνως πρὸς τὰ προαποφασισθέντα ἀναλόγως τῆς σοβαρότητος τοῦ λόγου τῆς μονομαχίας. Μὲ τὸ παράγγελμα «Προσοχὴ» οἱ ἀντίπαλοι εἰσάγουσιν ἐντὸς τοῦ φυλακτῆρος τὸν δείκτην, ἐπακουμβῶσιν αὐτὸν ἐλαφρῶς ἐπὶ τῆς σκανδάλης καὶ ὑψοῦσι τὰ πιστόλιά των ὁριζοντίως, μὲ τὸν βραχίονα ἡμιτεταμέ-

...ον, ἕκαστος ἐναντίον τοῦ ἀντιπάλου του, ἐντὸς δὲ τοῦ χρόνου τοῦ ὑπολοίπου παραγγέλματος «Πῦρ—ἕν—δύο—τρία» ὀφείλουσι νὰ πυροβολήσωσιν ἕκαστος κατὰ βούλησιν. Εὐνόητον εἶναι τὸ πλεονέκτημα τοῦ ἠσκημένου σκοπευτοῦ, ὅστις ἔχει ἀποκτήσει τὴν ἕξιν νὰ πυροβολῇ ταχέως, εὐθὺς μετὰ τὸ παράγγελμα «Πῦρ», μὲ τὸν σκοπὸν νὰ προκαταλάβῃ τὸ πῦρ τοῦ ἀντιπάλου του. Τὸ πυροβολεῖν ὅμως πρὸ τοῦ παραγγέλματος «Πῦρ» ἢ μετὰ τὸ «Τρία» θεωρεῖται ὡς ἀπόπειρα δολοφονίας. Ἐάν τις τῶν ἀντιπάλων δὲν ἐπρόλαβε νὰ πυροβολήσῃ, ἐντὸς τοῦ τακτοῦ χρόνου, τότε ἐκκενοῖ τὸ πιστόλιόν του εἰς τὸν ἀέρα, ὑψῶν αὐτὸ κατακορύφως.

*Μονομαχία διὰ σκοπεύσεως.* Κατὰ ταύτην οἱ ἀντίπαλοι τοποθετοῦνται, ὡς καὶ εἰς τὴν διὰ παραγγέλματος, εἰς ἀναπεπταμένον πεδίον, οὕτως ὥστε νὰ μὴ εὑρίσκηται οὐδεὶς τούτων ἐνώπιον δένδρου ἢ ἄλλου ἀντικειμένου, διευκολύνοντος τὴν σκόπευσιν τοῦ ἀντιπάλου. Ἐπίσης οὐδεὶς τούτων τοποθετεῖται ἔναντι τοῦ ἡλίου ἢ τοῦ ἀνέμου, ἡ δὲ γέμισις τῶν πιστολίων γίνεται παρὰ τοῦ διευθύνοντος τὴν μονομαχίαν ἐνώπιον πάντων τῶν μαρτύρων.

Ἡ διὰ σκοπεύσεως μονομαχία δύναται νὰ γίνῃ *ἐν ἠρεμίᾳ ἢ ἐν βαδίσματι.* Κατὰ τὴν πρώτην περίπτωσιν, οἱ ἀντίπαλοι δύνανται νὰ πυροβολήσωσι, σκοπεύοντες τὸν ἀντίπαλόν των, ἐντὸς τοῦ προσδιορισθέντος χρονικοῦ διαστήματος, συνήθως ἑνὸς πρώτου λεπτοῦ τῆς ὥρας. Πρὸς τοῦτο ὁ διευθύνων, κρατῶν χρονόμετρον, παραγγέλλει «Ἕτοιμοι ;... —Πῦρ», μετὰ τὴν πάροδον δὲ τοῦ ὁρισθέντος χρονικοῦ διαστήματος παραγγέλλει «Ἄλτ», ἐάν τις τῶν ἀντιπάλων δὲν ἐπυροβόλησεν εἰσέτι.

Κατὰ τὴν δευτέραν περίπτωσιν, οἱ ἀντίπαλοι τοποθετοῦνται εἰς ἀπόστασιν 40 βημάτων ἀπ' ἀλλήλων καὶ ἔχουσι τὸ δικαίωμα νὰ προχωρήσωσιν ἕκαστος ἀνὰ 10 βήματα, οὕτως ὥστε ἡ ἀπόστασις νὰ μὴ μειωθῇ ὀλιγώτερον τῶν 20 βημάτων. Τὰ ὅρια ταῦτα δείκνυνται ἐπὶ τοῦ ἐδάφους διὰ καταφανοῦς ἀντικειμένου, συνήθως διὰ λευκοῦ χειρομάκτρου. Διὰ τοῦ παραγγέλματος «Ἐμπρὸς κύριοι—πῦρ», ἕκαστος, κατὰ βούλησιν, πυροβολεῖ εἴτε προχωρῶν, εἴτε ἐκ τῆς θέσεώς του σκοπεύων τὸν προχωροῦντα ἀντίπαλόν του, πάντοτε ὅμως εἰς χρονικὸν διάστημα οὐχὶ μεῖζον τοῦ ἑνὸς πρώτου λεπτοῦ, μεθ' ὃ ὁ διευθύνων παραγγέλλει «ἄλτ».

Ἐν Ἰταλίᾳ ἰδίως, μεταχειρίζονται καὶ ἕτερον τρόπον. Οἱ ἀντίπαλοι τοποθετοῦνται ἔχοντες ἐστραμμένα τὰ νῶτα πρὸς ἀλλήλους καὶ εἰς ἀπόστασιν 15 βημάτων. Μὲ τὸ παράγγελμα «πῦρ» ἐκτελοῦσι μεταβολὴν καὶ βάλλουσι κατὰ θέλησιν ἐντὸς τοῦ προσδιορισθέντος χρονικοῦ διαστήματος, οὐχὶ ἀνωτέρου τοῦ ἑνὸς πρώτου λεπτοῦ τῆς ὥρας.

***Ἐξαιρετικαὶ μονομαχίαι.*** Πλὴν τῶν κατὰ τοὺς ἀνωτέρω τρόπους μονομαχιῶν, ἐγένοντο, κατὰ διαφόρους ἐποχάς, πλειστάκις, ἰδίᾳ ἐν Ἀμερικῇ, καὶ ἄλλαι διὰ ποικίλων ὅπλων καὶ κατὰ ποικίλους τρόπους, οἵους ἡ φονικὴ φαντασία τῶν ἀντιπάλων ἐφεύρισκε.

***Πρωτόκολλα.*** Πρὸ οἱασδήποτε μονομαχίας καὶ μετ' αὐτὴν συντάσσονται ὑπὸ τῶν μαρτύρων τῶν ἀντιπάλων πρωτόκολλα εἰς διπλοῦν, ὑπογεγραμμένα καὶ παρὰ τῶν τεσσάρων, καὶ δίδονται ἀνὰ ἓν εἰς ἕκαστον τῶν ἀντιπάλων. Τὸ πρὸ τῆς μονομαχίας συντασσόμενον διαλαμβάνει τὸ μέρος, τὴν ἡμέραν, τὴν ὥραν καὶ τοὺς ὅρους, καθ' οὓς θὰ διεξαχθῇ ἡ μονομαχία. Ἐπὶ πλέον διασαφηνίζει πάσας τὰς σχετικὰς πρὸς τὴν γενησομένην μονομαχίαν λεπτομερείας καὶ δίδεται τοῦτο εἰς τοὺς ἀντιπάλους πρὸ τῆς πάλης, ἵνα ἐγκαίρως λάβωσι γνῶσιν αὐτοῦ. Τὸ μετὰ τὴν μονομαχίαν συντασσόμενον, περὶ τοῦ ἀποτελέσματος αὐτῆς, περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ μέρος, τὴν ἡμέραν καὶ ὥραν, καθ' ἣν ἐγένετο ἡ μονομαχία καὶ ἐπὶ πλέον τὴν διάρκειαν τῆς πάλης καὶ τὸ εἶδος τῆς πληγῆς, ἐὰν ὑπῆρξε τοιαύτη. Ἐὰν οἱ λόγοι τῆς μονομαχίας ἔχουν ἐκτεθῇ διὰ τοῦ τύπου, τότε ἐπιβάλλεται ἡ παρὰ τῶν μαρτύρων δημοσίευσις τοῦ τελευταίου τούτου πρωτοκόλλου· ἐὰν ὅμως οἱ λόγοι οὗτοι ἐγιναν γνωστοὶ μόνον εἰς στενότατον κύκλον, τότε δέον νὰ ἀποφεύγηται ἡ δημοσίευσις αὐτοῦ.

***Συμβούλια τιμῆς.*** Πολλάκις δι' ὑποθέσεις τιμῆς περιπλόκους ἢ ἐξαιρετικῶς λεπτῆς φύσεως, πρὸ τῆς ἐνάρξεως οἱασδήποτε ἐνεργείας διὰ τὴν διεξαγωγὴν μονομαχίας, ὁ προσβεβλημένος δύναται, ἐὰν ἐπιθυμῇ, νὰ ἐπικαλεσθῇ τὴν περὶ τοῦ πρακτέου γνώμην συμβουλίου τιμῆς, οὗτινος τὰ μέλη ἐκλέγονται παρ' αὐτοῦ μεταξὺ ἀνδρῶν γενικῆς ἐκτιμήσεως καὶ κατεχόντων διακεκριμένας ἐν τῇ κοινωνίᾳ θέσεις, ἐντριβῶν δὲ εἰς τὰ ζητήματα ταῦτα, οὕτως ὥστε ἡ γνώμη των νὰ δύναται νὰ θεωρηθῇ σεβαστὴ παρὰ πάντων. Ἡ ἀπόφασις τοῦ συμβουλίου τούτου, ἀπαρτιζομένου συνήθως ἐκ τριῶν μελῶν, διατυποῦται εἰς εἰδικὸν ὑπογεγραμμένον παρὰ πάντων τῶν μελῶν πρωτόκολλον, ὅπερ, δικαιολογοῦν πλήρως τὴν ληφθεῖσαν ἀπόφασιν, δίδεται εἰς τὸν ἐνδιαφερόμενον, ὑποχρεούμενον νὰ συμμορφωθῇ πρὸς αὐτήν.

Πλὴν τῶν γενικῶν τούτων συμβουλίων τιμῆς, ἄλλοτε ἐν Γερμανίᾳ ἐξεδόθη αὐτοκρατορικὸν διάταγμα (2 Μαΐου 1874) «Περὶ δικαστηρίων καὶ συμβουλίων τιμῆς ἀξιωματικῶν», ὧν σκοπὸς ἦτο ἡ περιφρούρησις τῆς τιμῆς τῶν ἀξιωματικῶν καὶ ἡ ἀποφυγὴ μονομαχιῶν. Τὰ δικαστήρια καὶ τὰ συμβούλια ταῦτα τιμῆς συνεκροτοῦντο παρὰ τῆς προϊσταμένης ἀρχῆς, ἐξ ἀξιωματικῶν βαθμοῦ ἀναλόγου πρὸς τὸν βαθμὸν τοῦ ὑπὸ κρίσιν ἀξιωματικοῦ, ἡ δὲ γνωμάτευσις αὐτῶν ἦτο τελεσίδικος, ἐκτὸς ἐὰν ὁ αὐτοκράτωρ, πρὸς ὃν πᾶσαι αἱ ἀποφάσεις τούτων ὑπεβάλλοντο πρὸς ἔγκρισιν, ἀπεφάσιζεν ἄλλως. Εἰς τὰ δικαστήρια καὶ τὰ συμβούλια ταῦτα τιμῆς ὑπήγοντο οὐ μόνον πάντες, παντὸς βαθμοῦ, ἀξιωματικοὶ τοῦ ἐνεργοῦ γερμανικοῦ στρατοῦ, ἀλλὰ καὶ οἱ ἀξιωματικοὶ τῆς ἐφεδρείας, τῆς ἐθνοφρουρᾶς, οἱ ἀπόστρατοι συνταξιοῦχοι καὶ πάντες ὅσοι εἶχον τὴν ἄδειαν νὰ φέρωσι τὴν στρατιωτικὴν στολήν, παραιτηθέντες ἐκ τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ ἀξιωματικοί.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Émile Mérignac*, Histoire de l'escrime. —*A. Tavernier*, Art du duel.—*Châteauvillard*, Essai sur le duel.—*Gabr. Letainturier-Fradin*, Le duel à travers les ages.

Τ. Ι. ΚΑΡΑΚΑΛΟΣ

— [ΗΘΙΚ.] Ἡ *μονομαχία*, στηριζομένη ἰδίᾳ ἐπὶ τῆς ἰδέας τῆς θείας κρίσεως, δὲν δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς μέσον τῆς ἐκφάνσεως τοῦ δικαίου, ἐφ' ὅσον ἡ βάσις ἐφ' ἧς στηρίζεται εἶναι ψευδής. Εἶναι φανερὸν ὅτι διὰ τῆς μονομαχίας δὲν δύναται νὰ ἐκφανθῇ ἀσφαλῶς τὸ δίκαιον, οὐ μόνον διότι ἐνίοτε συμβαίνει ὁ ἀδικηθεὶς καὶ νὰ φονευθῇ, ἀλλὰ καὶ διότι ἡ δι' αὐτῆς ἐπιβαλλομένη ποινή, ὁ θάνατος, εἶναι συχνάκις ὑπερβολικὴ ἐν σχέσει πρὸς τὸ προκαλέσαν τὴν μονομαχίαν παράπτωμα. Ἡ μονομαχία ἄλλως, ὡς προελθοῦσα ἐκ τῆς ἐλλείψεως πολιτικῆς ἀρχῆς ἀποδιδούσης τὸ δίκαιον, δὲν δύναται, ὡς αὐτοδικία, νὰ ἐπιτραπῇ ἐν εὐνομουμένῃ πολιτείᾳ, ἐν ᾗ ἀπαγορεύεται πᾶσα αὐτοδικία. Ἀπέναντι τῶν ἀνωτέρω ἰσχυροτάτων ἐπιχειρημάτων κατὰ τῆς μονομαχίας οἱ ὑποστηρίζοντες ἔτι αὐτὴν οὐδὲν ἰσχυρὸν ἔχουσι νὰ ἀντιτάξωσιν ἐπιχείρημα. Ὀρθῶς ἑπομένως ἡ χριστιανικὴ Ἐκκλησία ἐκηρύχθη κατὰ τῆς μονομαχίας, πολλὰ δὲ κράτη διὰ νόμων ἀπηγόρευσαν αὐτήν.

Κ. Ι. Δ.

— [ΠΟΙΝ. ΔΙΚ.] Τὸ ἔθιμον τῆς *μονομαχίας* ἐγεννήθη περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ, ἐκεῖθεν δὲ ἐξηπλώθη εἰς τὰς πλείστας τῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν. Ἡ ψυχολογικὴ βάσις τῆς μονομαχίας δύναται νὰ ἀναζητηθῇ εἰς τὸν ματαιόδοξον πόθον, ὃν δοκιμάζει ὁ ὑβρισθεὶς ὅπως ἀποδείξῃ ὅτι οὐδεὶς δύναται νὰ θίξῃ τὴν τιμήν του ἀτιμωρητί, πόθον ὑπεκκαιόμενον ὑπ' αὐτῆς ταύτης τῆς κοινωνίας, ἥτις ἐπιδοκιμάζει τοὺς λύοντας τὰς προσωπικὰς αὐτῶν διαφορὰς διὰ τῶν ὅπλων καὶ περιφρονεῖ τὸν ἀποφεύγοντα τὴν μονομαχίαν, ὡς ἐστερημένον προσωπικῆς ἀνδρείας καὶ ἱκανὸν ν' ἀνεχθῇ παντοειδεῖς προσβολάς. Ἐκεῖ ἔνθα τὸ ἔθιμον τῆς μονομαχίας ἐπεκράτησεν, οὐδεμία λογικὴ καὶ οὐδεμία ποινὴ κατώρθωσε νὰ τὸ ἐκριζώσῃ. Αἱ πολιτειακαὶ προσταγαὶ ἠγνοήθησαν ὑπὸ τῶν δικαστηρίων ἢ μετὰ τὴν καταδίκην ἐπήρχετο ἡ χάρις. Λογικὰ ἐπιχειρήματα καὶ βίαια μέσα εἶναι ἀνίσχυρα ὅπως ἀποτρέψουν τὴν μονομαχίαν, ὅταν αὕτη ὑπαγορεύηται ἐπιτακτικῶς ὑπὸ τῆς κοινωνίας ἢ εὐρέων κύκλων αὐτῆς. Πρὸ τοῦ κοινωνικοῦ ὄγκου αἱ ἀτομικαὶ διαθέσεις ὑποχωροῦν. Οὕτως ὁ Χάϊνε, ὅστις ἔγραψε σατιρικὸν ποίημα κατὰ τῆς μονομαχίας, ἠναγκάσθη νὰ μονομαχήσῃ, ὁ δὲ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Ἑρρῖκος ὁ Δ', θεσπίσας αὐστηρὰς ποινὰς κατὰ τῆς μονομαχίας, ἐμονομάχησε δι' ἀντιπροσώπου.

Ἐν Ἑλλάδι, οὐδεὶς κοινωνικὸς καταναγκασμὸς πρὸς μονομαχίαν ὑφίσταται. Ὁ ἑλληνικὸς λαὸς δὲν νομίζει ὅτι ἔχει «ὑποχρέωσιν τιμῆς» ἄλυτον ἄλλως ἢ διὰ μονομαχίας. Ὅτε κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους εἰσεχώρησε πρὸς στιγμὴν καὶ παρ' ἡμῖν τὸ ξένον τοῦτο ἔθιμον, ὁ ἐν μονομαχίᾳ θάνατος διακεκριμένων προσώπων τῆς ἑλληνικῆς κοινωνίας ἐξήγειρεν αὐτήν. Τῆς ἐξεγέρσεως ταύτης διερμηνεῖς ὑπῆρξαν ἀμφότεροι οἱ ἐν Ἑλλάδι γράψαντες περὶ μονομαχίας *(Πανᾶς καὶ Ξένος)* μετὰ τὸν τραγικὸν θάνατον τοῦ λοχαγοῦ Βούρβαχη. Τὴν δυσμένειαν δὲ πρὸς τὴν μονομαχίαν ἐξεδήλωσεν ἡ ἑλληνικὴ κοινωνία ὀξύτερον ἰδίᾳ μετὰ τὸν ἐν μονομαχίᾳ θάνατον τοῦ πολιτευτοῦ Κ. Χατζηπέτρου.

Τὰ περὶ μονομαχίας παρ' ἡμῖν ρυθμίζονται ὑπὸ τοῦ νόμου 1592 τῆς 29 Δεκεμβρίου 1918, καταργήσαντος τὰ ἄρθρα 208—211 τοῦ ποινικοῦ νόμου. Κατὰ τὸ ἄρθρον 1 τοῦ νόμου τούτου τιμωρεῖται διὰ φυλακίσεως ἀπὸ τριῶν μηνῶν μέχρις ἑνὸς ἔτους ὁ προκαλέσας τινὰ εἰς μονομαχίαν δι' ὅπλων καὶ ὁ ἀποδεχθεὶς τὴν τοιαύτην πρόκλησιν. Ἔστω καὶ ἂν οὐδὲν ἕτερον ἐπηκολούθησεν. Ἡ πρόκλησις ἢ ἀποδοχὴ τῆς προκλήσεως πρέπει νὰ ἐγένετο σοβαρῶς, μὲ τὴν ἀπόφασιν δηλαδὴ ὅπως ἐπακολουθήσῃ μονομαχία δι' ὅπλων. Ἡ αὐτὴ ποινὴ ἐπιβάλλεται καὶ εἰς τὸν μὴ ἀποδεχθέντα μὲν τὴν πρόκλησιν, παραλιπόντα ὅμως ὅπως καταμηνύσῃ αὐτὴν εἰς τὴν ἀρχήν.

Κατὰ τὸ ἄρθρον 3 τοῦ αὐτοῦ νόμου τιμωροῦνται ὡς συναυτουργοὶ μονομαχίας οἱ μάρτυρες, ἰατροὶ καὶ ἄλλοι βοηθοὶ μονομαχίας, ὡς συνεργὸς δὲ ὁ δεχόμενος ὅπως ἀποτελέσῃ μέλος συμβουλίου τιμῆς. Ἐκεῖ ἔνθα ἡ μονομαχία ἰσχύει ὡς ἔθιμον διακρίνονται δύο εἰδῶν μάρτυρες: οἱ λεγόμενοι Kartellträger, δηλαδὴ οἱ τὴν ἐντολὴν τῆς προκλήσεως εἰς μονομαχίαν ἐκτελέσαντες, καὶ οἱ Secundanten, τουτέστι τὰ πρόσωπα ἅτινα ἐξελέγησαν ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων καὶ τῶν ὁποίων οὐσιῶδες ἔργον εἶναι νὰ ἐξασφαλίσουν κατὰ τὴν μονομαχίαν τὴν τήρησιν τῶν κανόνων καὶ τῶν συμπεφωνημένων ὅρων αὐτῆς. Ἰατροὶ εἶναι τὰ πρόσωπα τὰ κατὰ τὴν μονομαχίαν παραστάντα μὲ ἔργον νὰ παράσχουν τὰς πρώτας βοηθείας τῷ τυχὸν ἀτυχήσαντι ἐκ τῶν ἀντιπάλων. Συνεπῶς καὶ ὁ φοιτητὴς τῆς ἰατρικῆς, ὅστις παρέστη ἐν μονομαχίᾳ διὰ τὸν ὡς ἄνω σκοπόν, θεωρεῖται καὶ τιμωρεῖται ὡς ἰατρός. Ἡ τιμώρησις τῶν ἰατρῶν εἶναι νομοθετικὴ παραδρομή. Ἀφοῦ ἡ ὑπόθεσις ἔφθασε, παρὰ τὰς ἀπαγορεύσεις, μέχρι μονομαχίας, εἶναι ἀπάνθρωπον νὰ κολάζωνται οἱ ἐντεταλμένοι τὴν ἀποτροπὴν βαρέων ἀποτελεσμάτων κατὰ τὸ μέτρον τοῦ ὑπὸ τῆς ἐπιστήμης προσφερομένου δυνατοῦ. Ἄλλοι βοηθοὶ τῆς μονομαχίας εἶναι π. χ. ὁ τὰ ὅπλα δανείσας ἢ ὁ κάπηλος, ὅστις ἔθεσεν εἰς τὴν διάθεσιν τῶν μονομαχούντων τὴν αἴθουσαν αὐτοῦ. Δὲν εἶναι ὅμως «βοηθοὶ μονομαχίας» οἱ ὁδηγοὶ τῶν αὐτοκινήτων οἵτινες μετέφερον τὰ πρόσωπα τῆς μονομαχίας εἰς τὸ πεδίον τῆς τιμῆς.

Κατὰ τὸ ἄρθρον 4 τοῦ αὐτοῦ ἡμετέρου νόμου, τιμωρεῖται διὰ φυλακίσεως μέχρις 6 μηνῶν ὁ παροτρύνων τινὰ εἰς μονομαχίαν μετὰ τρίτου, εἴτε δι' ἀπειλῆς ὅτι θέλει ἐκτεθῇ εἰς τὴν περιφρόνησιν αὐτοῦ ἢ τρίτου τινός, εἴτε καθ' οἱονδήποτε ἄλλον τρόπον. Διὰ τῆς αὐτῆς ποινῆς τιμωρεῖται ὁ ἐπιδεικνύων περιφρόνησιν εἰς ἄλλον, διότι δὲν προὐκάλεσεν εἰς μονομαχίαν ἢ δὲν ἀπεδέχθη τὴν πρόκλησιν.

Κατὰ τὸ ἄρθρον 5 ἀπαγορεύεται, ἐπὶ ποινῇ φυλακίσεως ἕως τριῶν μηνῶν, ἡ καταχώρισις δημοσιεύματος ἢ εἰδήσεως ἢ σχολίου ἀναγομένου εἰς πρόκλησιν εἰς μονομαχίαν ἢ διεξαγωγὴν τοιαύτης. Ἐπιτρέπεται μόνον ἡ ἁπλῆ ἀναγγελία θανάτου ἐπελθόντος ἐν μονομαχίᾳ. Ἡ διάταξις αὕτη ἐπιθυμεῖ νὰ παρεμποδίσῃ τὴν διὰ τοῦ τύπου δημιουργίαν ψευδῶν ἡρώων. Συνεπῶς ἀφορᾷ καὶ εἰς μονομαχίας γενομένας ἐν τῷ ἐξωτερικῷ ὑπὸ ἀλλοδαπῶν.

Κατὰ τὸ ἄρθρον 2 τοῦ αὐτοῦ νόμου τιμωρεῖται διὰ φυλακίσεως τοὐλάχιστον ἑνὸς ἔτους ἡ δι' ὅπλων μονομαχία. Μονομαχία εἶναι ἀγὼν σοβαρὸς συμπεφωνημένος μεταξὺ δύο ἀνδρῶν (Zweikampf) καὶ διεξαγόμενος συμφώνως πρὸς ἑτέρωθεν (ἐκ τῆς παραδόσεως) γνωστοὺς κανόνας καὶ συμπεφωνημένους ὅρους. Συνεπῶς ἀγὼν μεταξὺ δύο γυναικῶν ἢ μεταξὺ ἀνδρὸς καὶ γυναικὸς δὲν εἶναι μονομαχία. Ὁ ἀγὼν δέον νὰ διεξάγηται δι' ὅπλων. Ὡς ὅπλα νοοῦνται τὰ συνήθως ἐν μονομαχίᾳ χρησιμοποιούμενα, ἤτοι πιστόλιον, ξίφος, σπάθη (épée, sabre). Ἐπίσης ἐν τῇ μονομαχίᾳ δέον νὰ ὑπάρχῃ καὶ ποιά τις ἰσότης μεταξὺ τῶν ἀντιπάλων. «Ὅταν ἐν μονομαχίᾳ διὰ πιστολίου ὑγιής τις φονεύῃ τὸν τυφλὸν ἀντίπαλόν του, νομικῶς καὶ ἠθικῶς πρόκειται περὶ κοινῆς δολοφονίας», λέγει ὁ Λίστ. Πρὸς τὸν τυφλὸν ἐξομοιοῦται καὶ ὁ μύωψ.

Ἐν Γερμανίᾳ κρατεῖ μεγάλη ἔρις μεταξὺ τῆς νομολογίας καὶ τῆς ἐπιστήμης ἐν σχέσει πρὸς τὸν χαρακτηρισμὸν τῶν φοιτητικῶν «μονομαχιῶν» (Mensuren). Ἡ ἔρις αὕτη ἐξακολουθεῖ ὀξυτέρα σήμερον ἐν Γερμανίᾳ καὶ Αὐστρίᾳ ἐπὶ τῇ προπαρασκευῇ τοῦ νέου ποινικοῦ κώδικος. Μονομαχία δὲν εἶναι ἡ πυγμαχία, διότι δὲν διεξάγεται δι' ὅπλων, οὔτε ἡ σπαθασκία, διότι δὲν εἶναι ἀγὼν σοβαρός, ἐπίσης οὔτε ἡ ῥαβδομαχία καὶ ἡ διὰ σιδηρῶν γρόνθων, διότι δὲν εἶναι ἀγὼν παραδεδομένος. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον δὲν εἶναι μονομαχία ἡ λεγομένη «ἀμερικανική», καθ' ἣν αὐτοκτονεῖ ὁ εἰς ὃν ἔλαχεν ὁ κλῆρος.

Ἐν τῷ αὐτῷ ἄρθρῳ 2 τοῦ νόμου θεσπίζονται καὶ τὰ ἐπιβαρυντικὰ τῆς μονομαχίας. Οὕτως ἐν § 2 ὁρίζεται ὅτι ἐπιβάλλεται φυλάκισις τοὐλάχιστον 2 ἐτῶν εἰς τοὺς τελέσαντας μονομαχίαν ὑπὸ τὸν συμπεφωνημένον ὅρον ἡ μονομαχία νὰ ἐξακολουθήσῃ μέχρι θανάτου τοῦ ἑτέρου τῶν ἀντιπάλων. Ἐν § 3 προβλέπεται ἡ περίπτωσις, καθ' ἣν ἐπῆλθεν ὡς ἀποτέλεσμα τῆς μονομαχίας θάνατος ἢ βαρεῖα σωματικὴ βλάβη. Ἐὰν τὸ ἀποτέλεσμα τοῦτο ἐπῆλθε χωρὶς νὰ εἶχε συμφωνηθῇ ἐκ τῶν προτέρων ὁ ὅρος «μέχρι θανάτου», τότε ὁ ἀποκτείνας ἢ ἐπενεγκὼν τὴν βλάβην τιμωρεῖται μὲ εἱρκτήν. Ἂν ὅμως εἶχε συμφωνηθῇ τοιοῦτος ὅρος, ἡ ποινὴ εἶναι πρόσκαιρα δεσμὰ μέχρι 15 ἐτῶν. Ἐν § 4 θεσπίζεται ὡς ἐπιβαρυντικὴ αἰτία ἐν πάσῃ μονομαχίᾳ (εἴτε μετ' ἀποτελέσματος, εἴτε ἄνευ ἀποτελέσματος) ἡ ὑπαιτιότης. Ἐπιβάλλεται δηλαδὴ ἐντὸς τῶν ποινικῶν ὁρίων τῆς περιπτώσεως αὐστηροτέρα ποινὴ εἰς ἐκεῖνον ἐκ τῶν ἀντιπάλων, ὅστις ἔγινεν αἴτιος τῆς μονομαχίας ἕνεκα βαρείας καὶ ἀδικαιολογήτου ὕβρεως ἢ ἄλλης προσβολῆς. Ὁ νόμος νοεῖ ἐνταῦθα τὸν βαρέως καὶ ἀδικαιολογήτως ὑβρίσαντα ἢ ἄλλως προσβαλόντα. Οὐδαμῶς δὲ ἀξιοῖ νὰ ἐξετασθῇ ἂν τὴν τοιαύτην ὕβριν ἔδει νὰ ἐπακολουθήσῃ ἀπαραιτήτως μονομαχία, διότι μονομαχία κατὰ νόμον οὐδέποτε ἐπιτρέπεται νὰ ἐπακολουθήσῃ.

Digitized by Google

Ὁ ἐκ τῶν ἀντιπάλων ἐκ προθέσεως παραβιάσας τοὺς γνωστοὺς αὐτῷ κανόνας ἢ ὅρους τῆς μονομαχίας καὶ ὡς ἐκ τούτου ἀποκτείνας ἢ τραυματίσας τὸν ἀντίπαλον, τιμωρεῖται κατὰ τοὺς κοινοὺς ὁρισμοὺς τοῦ ποινικοῦ νόμου. Τὰ ἄρθρα 7,8 καὶ 9 τοῦ νόμου περιέχουν δικονομικὰς διατάξεις.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Kohlrausch*, ἐν Vergl. Darst. besond. Teil 3 125 ἑπ. — *Kohut*, das Buch berühmten Duelle (1888).—*Graf Condenhore*, der Miniotam der Ehre (1902). *V. Boguslawski*, die Ehre und der Duell (1897).— *Liepmann*, Duelle und Ehre (1904).—*Fougeroux de Compigneulles*, Histoire des duels anciens et modernes (1835).—*Couchy*, Du duel consideré dans ses origines et dans l'état actuel des moeurs (1863).—*Du Verger Saint Thomas*, Nouveau code du duel (1887).— *Ξένου*, Ἡ μονομαχία καὶ τὸ δίκαιον (1882).— *Πανᾶ*, Ἡ μονομαχία (1883).— *Ἠλιοπούλου*, Σύστημα, τόμος Β΄ τεῦχος Α΄.

Χ. Ν ΤΖΩΡΤΖΟΠΟΥΛΟΣ

—[ΕΘΙΜΟΤ.] Ἡ λεπτοτέρα ἁβρότης ἐπιβάλλεται κατά τε τὴν διεξαγωγὴν τῆς *μονομαχίας* καὶ κατὰ τὰς πρὸ ταύτης συνεννοήσεις μεταξὺ ὅλων τῶν ἀμέσως ἢ ἐμμέσως μετεχόντων εἰς αὐτήν. Οἱ μάρτυρες πρός τε τὸν ἀντίπαλον τοῦ πελάτου των καὶ πρὸς τοὺς μάρτυρας αὐτοῦ δεικνύονται ἁβροὶ ὅσον καὶ ἀξιοπρεπεῖς. Τὰ ἐπισκεπτήρια, δι' ὧν ζητοῦν νὰ ὁρισθῇ ὥρα καὶ τόπος συναντήσεως, ἐγκλείονται παρ' αὐτῶν ἐντὸς φακέλου. Ἐρευνώμενοι οἱ μέλλοντες νὰ μονομαχήσουν μήπως φέρουν μετάλλινα ἢ ἄλλα ἀντικείμενα, δὲν ἐπιδεικνύουν τὴν ἐλαχίστην δυσφορίαν. Ἡ ἄρνησις τοῦ νὰ ὑποβληθοῦν εἰς τὴν ἔρευναν θεωρεῖται ὅτι ἀποτελεῖ ἄρνησιν πρὸς μονομαχίαν. Ἔνδυμα χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων ὅσον τὸ δυνατὸν ἐπισημότερον, ἀποβαλλόμενον ἀπὸ τῆς ὀσφύος καὶ ἄνω, ἐὰν πρόκειται περὶ μονομαχίας διὰ ξίφους ἢ σπάθης. Οὐδεὶς πλήττει τὸν ἀντίπαλον πεσόντα. Μετὰ τὴν μονομαχίαν δὲν εἶναι ἐπιβεβλημένη ἡ συμφιλίωσις τῶν ἀντιπάλων· ἀλλ' ὅμως ἐπιβάλλεται ὁ ἁπλοῦς διὰ τοῦ πίλου χαιρετισμός. Ἑκάτερος τῶν μονομαχούντων ὀφείλει ἐν εὐχαριστήριον γεῦμα εἰς τοὺς πελάτας του. Ὁ ἐκ τῶν ἀντιπάλων ἐπιμένων νὰ καπνίζῃ κατὰ τὴν μονομαχίαν δὲν ἀποδεικνύει γενναιότητα· ἁπλῶς ἄγνοιαν στοιχειώδους εὐπρεπείας.

Τ. Δ.

**μονομάχος** (ὁ)· ὁ μόνος πρὸς μόνον μαχόμενος, δι' ὑπόθεσιν τιμῆς, ἢ πρὸς τέρψιν τῶν θεομένων.

—[*Ἐγκυκλ.*] Ἐκαλοῦντο *μονομάχοι* (gladiatores) οἱ παρὰ τοῖς Ῥωμαίοις μονομαχοῦντες, ἐν εἰδικῷ ἀμφιθεάτρῳ ἢ τόπῳ, πρὸς τέρψιν τῶν θεατῶν, κατὰ τὴν τέλεσιν ἑορτῶν ἢ πρὸς χρηματισμὸν τῶν διοργανωτῶν τῶν ἀγώνων τούτων.

Τὸ ἄγριον ἔθος τῶν ἀγώνων τῶν μονομάχων ἀποδίδεται εἰς τοὺς Ἐτρούσκους, οἵτινες ἐτέλουν αὐτοὺς πρὸς τιμὴν τεθνεώτων, χρησιμοποιοῦντες ὡς ἀγωνιστὰς τοὺς αἰχμαλώτους καὶ τοὺς δούλους. Ἐκ τῆς Ἐτρουρίας ἡ συνήθεια μετεδόθη εἰς τὴν Καμπανίαν καὶ εἶτα εἰς τὸ Λάτιον, βραδύτερον δέ, κατὰ τὸ 264 π. Χ., ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ Βρούτου Πέρα, οἱ υἱοὶ αὐτοῦ Μᾶρκος καὶ Δέκιος εἰσήγαγον αὐτὴν καὶ εἰς τὴν Ῥώμην διὰ τῆς ἐμφανίσεως τριῶν ζευγῶν μονομάχων. Μετὰ τὴν πρώτην αὐτὴν ἀπαρχήν, μόνον κατ' ἀραιὰ διαλείμ-

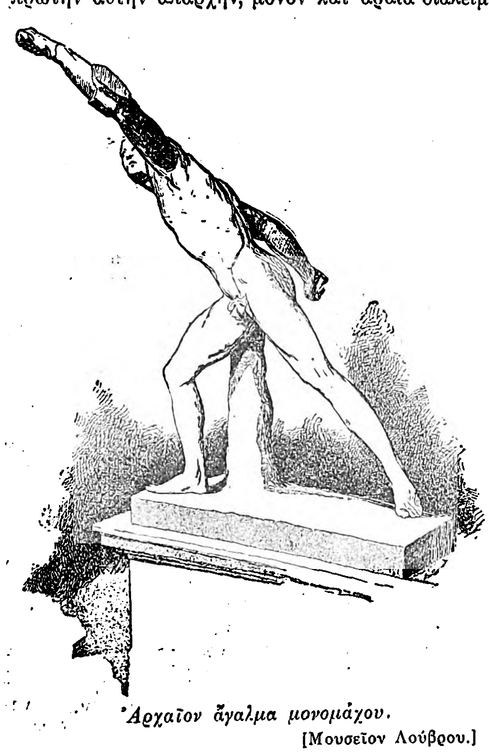

*Ἀρχαῖον ἄγαλμα μονομάχου.*
[Μουσεῖον Λούβρου.]

ματα ἐπανελήφθησαν τὰ θεάματα ταῦτα μὲ περιωρισμένον ἀριθμὸν μονομάχων, πρὸς ἐκλάμπρυνσιν νεκρωσίμων πανηγύρεων. Ὀλίγον ὅμως κατ' ὀλίγον, κατὰ τὸν Γ' καὶ Β' π. Χ. αἰῶνα, ὁ ἀριθμὸς τῶν μονομάχων ηὐξάνετο σημαντικῶς. Οὕτω τῷ 216 π. Χ. ἠγωνίσθησαν 22 ζεύγη, τῷ 200 π. Χ. εἴκοσι πέντε καὶ τῷ 183 π. Χ. ἑξήκοντα. Κατόπιν, ἰδίως μετὰ τὸ 105 π. Χ., ὁ ρωμαϊκὸς λαὸς μετὰ πάθους ἐτέρπετο εἰς τὴν θέαν τῶν ἀγριοτήτων ἐκείνων, τῶν ὁποίων ἡ συνήθεια διεδόθη τάχιστα μέχρι τῶν περάτων τῆς αὐτοκρατορίας καὶ διήρκεσεν ἐπὶ πολλοὺς αἰῶνας.

Πρόδηλον εἶναι ὅτι ἡ ρωμαϊκὴ γερουσία ἐθεώρησε τοὺς σκληροὺς τούτους ἀγῶνας ὡς μέσον ἵνα ἐξάψῃ τὸ θάρρος καὶ ἀναπτύξῃ τὴν πρὸς τὰς στρατιωτικὰς ἀσκήσεις ἔφεσιν τῶν Ῥωμαίων. Ἐπὶ πλέον δέ, πιθανώτατο, ἐθέσπισεν αὐτούς, ἵνα ἐξα-

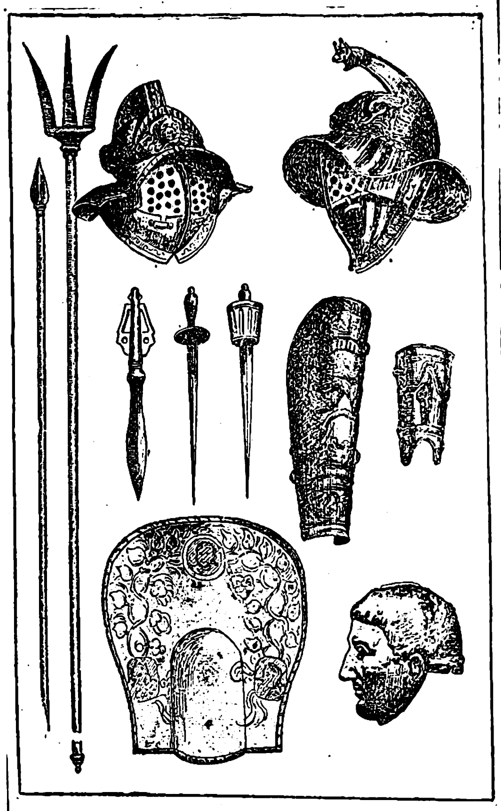

*Εἴδη στολῆς μονομάχου.*

λείψῃ τὴν ἐπιρροὴν ἣν ἤσκουν εἰσέτι οἱ εὐγενεῖς ἑλληνικοὶ ἀγῶνες, οὓς οἱ Ῥωμαῖοι, πιστοὶ εἰς τὰ ἀρχαῖα αὐτῶν ἔθιμα, ἔκριναν ὡς εὐτελεῖς καὶ ὀλεθρίους διὰ τὴν μόρφωσιν ἤθους ἀγρίου πολεμιστοῦ. Μέχρι τοῦ τέλους τῆς Ῥωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας τὸ θέαμα τῶν ἀγώνων τῶν μονομάχων ἐκαλεῖτο «munus», ἐν ἀντιδιαστολῇ πρὸς τὸ τοῦ θεάτρου ἢ τοῦ ἱπποδρομίου, ὅπερ ἐκαλεῖτο «ludi» καὶ τὸ τῶν θηριομαχιῶν «venatio». Ἐτελοῦντο δὲ σχεδὸν πάντοτε οἱ ἀγῶνες τῶν μονομαχιῶν πρὸς τιμὴν τεθνεώτων ἐπισήμων ἀνδρῶν καὶ ἀπετέλουν μέρος τῶν ἀπονεμομένων ἐπικηδείων τιμῶν. Οὕτω δι' ὁπλομαχίας ἐπιταφίου (munus funebre) οἱ πολιτικοὶ ἄνδρες, οἱ ἔνδοξοι στρατηγοὶ καὶ οἱ ἐπίσημοι, οἱ κατέχοντες τὰ ὕπατα ἀξιώματα τῆς δημοκρατίας, ἐτίμων τὴν μνήμην τῶν ἀποθανόντων γονέων των, ὡς ὁ Καῖσαρ τῷ 65 π.Χ., ὁ Τιβέριος τῷ 34 π.Χ., ὁ Γερμανικὸς καὶ ὁ Κλαύδιος τῷ 7 μ.Χ. Οἱ ἱστορικοὶ μνημονεύουν ὅτι διὰ πρώτην φορὰν ὁ Καῖσαρ ἀπέδωκε τὴν αὐτὴν τιμὴν καὶ εἰς γυναῖκα, τὴν κόρην του Ἰουλίαν, τῷ 45 π.Χ.

Ἐνίοτε οἱ ἀγῶνες ἐτελοῦντο πολλὰ ἔτη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ τιμωμένου νεκροῦ, συνήθως ὅμως ἤρχιζον εὐθὺς μετὰ τὴν νεκρώσιμον τελετὴν καὶ καθ' ἣν ὥραν τὸ σῶμα τοῦ τεθνεῶτος ἐτίθετο πρὸς καῦσιν ἐπὶ τοῦ σωροῦ τῶν ξύλων (bustum), ἐξ οὗ ἐδίδετο εἰς τοὺς μονομάχους καὶ τὸ ὄνομα «bustuarius». Κατὰ τὴν περίπτωσιν ταύτην οἱ θεαταὶ ὤφειλον νὰ παρίστανται μὲ πένθιμα ἐνδύματα, τὴν μέλαιναν τήβεννον, ἢ τὸν μανδύαν μετὰ καλύπτρας.

Ἀπὸ τοῦ 105 π.Χ., ἀφ' ἧς ἐποχῆς οἱ ἀγῶνες τῶν μονομάχων καθιερώθησαν ὡς ἐπίσημοι, οἱ ἐν τέλει ἡμιλλῶντο εἰς τὸ νὰ πολλαπλασιάζωσι τούτους καὶ νὰ ἐπαυξάνωσι τὴν λαμπρότητά των, εὐρυτάτη δὲ ὑπῆρξεν ἡ διάδοσίς των καὶ καθ' ὅλας τὰς ὑποτεταγμένας εἰς τὴν αὐτοκρατορίαν χώρας, ὡς μαρτυροῦσι πλῆθος συναφῶν γραπτῶν καὶ γλυπτῶν μνημείων. Μόνον εἰς τὴν Ἑλλάδα, ὅταν αὕτη κατεκτήθη ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων, οἱ ἀγῶνες τῶν μονομάχων οὐ μόνον δὲν προσείλκυσαν τὸ ἐνδιαφέρον τῶν Ἑλλήνων ἀλλ' ὅλως τοὐναντίον μετ' ἀποστροφῆς καὶ φρίκης ἠναγκάζοντο οἱ κατακτηθέντες νὰ παρίστανται εἰς αὐτούς.

Ἡ ὀργάνωσις καὶ τὰ ἔξοδα τοῦ ἀγῶνος κατ' ἀρχὰς ἀνελαμβάνοντο παρὰ τῶν ἐπισήμων, παρεχόντων τὸ θέαμα δωρεὰν εἰς τὸν λαὸν πρὸς τιμὴν κηδευθέντος νεκροῦ. Ἀλλ' ὀλίγον κατ' ὀλίγον οἱ ἀγῶνες τῶν μονομάχων, πολλάκις ἐν συνδυασμῷ πρὸς ἀγῶνας θηριομαχιῶν, κατέστησαν τὸ προσφιλὲς θέαμα τοῦ ρωμαϊκοῦ λαοῦ, ἤρχισαν δὲ τό ε νὰ ὀργανοῦνται καὶ ἀπὸ ἐπιχειρηματίας πρὸς κερδοσκοπίαν. Τοιοῦτος δ' ἦτο ὁ φανατισμός, μεθ' οὗ πάντες, οἱ τῆς ἀριστοκρατίας καὶ τοῦ ὄχλου, συνέρρεον εἰς τὸ ἀμφιθέατρον τῶν ἀγώνων, ὥστε ἐνίοτε οἱ διοργανωταί των δὲν κατώρθωνον νὰ λάβουν τὰ προσήκοντα μέτρα διὰ τὴν ἀσφάλειαν τοῦ ἀπειραρίθμου πλήθους τῶν θεατῶν. Ὅταν ἐπὶ παραδείγματι τῷ 27 μ.Χ. εἷς ἀπελεύθερος ὀνόματι Ἀτέλιος, ὠργάνωσε πρὸς κερδοσκοπίαν τοιούτους ἀγῶνας εἰς Φιδανίαν, πόλιν τῶν ὑπὸ τοὺς Ῥωμαίους Σαβίνων, τόσον συνέρρευσεν εἰς αὐτοὺς πλῆθος, ὥστε τὸ ξύλινον ἀμφιθέατρον, ὅπερ εἰδικῶς εἶχεν ἀνεγείρει ὁ Ἀτέλιος, κατέρρευσε διαρκούσης τῆς πάλης καί, ὡς βεβαιοῦσιν οἱ ἱστορικοί, πεντήκοντα χιλιάδες ἀνθρώπων ἠκρωτηριάσθησαν ἢ συνεθλίβησαν καὶ ὑπέκυψαν εἰς θανατηφόρα τραύματα. Ὁ Ἀτέλιος ἐξωρίσθη καὶ ἀπηγορεύθη τοῦ λοιποῦ νὰ δίδωνται τοιαῦτα θεάματα εἰς ἀμφιθέατρον, οὗτινος ἡ στερεότης νὰ μὴ εἶναι ἐκ τῶν προτέρων ἀπολύτως βεβαιωμένη. Δι' ὃ καὶ ἔκτοτε ᾠκοδομήθησαν εἰδικὰ μεγαλοπρεπῆ καὶ στερεώτατα κτήρια εἰς πλείστας τῶν μεγάλων πόλεων τοῦ Ῥωμαϊκοῦ κράτους.

Μεθ' ἕκαστον νικηφόρον πόλεμον καὶ νέαν κατάκτησιν τῶν Ῥωμαίων, τὰ ἀμφιθέατρα τῶν μονομάχων ἐπλουτίζοντο ὑπὸ νέων ἀγωνιστῶν ἐκ τῶν συλλαμβανομένων αἰχμαλώτων καὶ δούλων. Οὗτοι ὑπεχρεοῦντο νὰ μονομαχῶσι μὲ τὰ ἴδια ὅπλα των. Μετὰ τοὺς Σαμνίτας καὶ τοὺς Γαλάτας ἐνεφάνιζον εἰς τὴν κονίστραν τοὺς Θρᾷκας, τοὺς ὑποπύρρους Γερμανούς, τοὺς ἡλιοκαεῖς Μαύρους, τοὺς αἰθίοπας τῆς Ἀφρικῆς, τοὺς νομάδας τῶν στεππῶν καὶ αὐτοὺς ἀκόμη τοὺς ἐστιγμένους ἀγρίους τῆς Καληδονίας. Ἕκαστος τούτων ἔφερε τὰ ἴδια ὅπλα του, τὴν πολεμικὴν ἐνδυμασίαν του, τὴν ἐξάρτυσίν του καὶ τὰ μεταχειρίζετο κατὰ τὸν ἴδιον ἐθνικόν του τρόπον, οὕτως ὥστε ἐδημιουργοῦντο διάφοροι κατηγορίαι μονομάχων. Τὸ πλεῖστον τούτων ἐμάχοντο πεζῇ, τινὲς δὲ καὶ ἔφιπποι, οἱ καλούμενοι «ἱππεῖς» (eques), ἢ ἐξ ἅρματος, οἱ καλούμενοι «ἐσσεδάριοι» (essedarius).

Ἡ στρατολόγησις καὶ ἡ ἐκγύμνασις τῶν μονομάχων ἐγίνετο, ὡς προανεφέρθη, μεταξὺ τῶν δούλων καὶ τῶν αἰχμαλώτων ἢ ἀκόμη καὶ τῶν καταδίκων κακούργων, ἐνίοτε δὲ καὶ ἐξ αὐτῶν τῶν ἐλευθέρων πολιτῶν, προσφερομένων ἑκουσίως ἐκ φιλοδοξίας. Πλεῖστοι ἐκ τούτων, εὐτυχήσαντες κατ' ἐπανάληψιν εἰς τοὺς ἀγῶνάς των, διὰ τοῦ θάρρους των, τῆς δεξιότητος καὶ τῆς ἀνδρείας των, ἐγένοντο διάσημοι καὶ δημοφιλεῖς, ἀποκομίσαντες πλεῖστα ὀφέλη καὶ προνόμια.

Ἀπὸ τῶν χρόνων τῆς δημοκρατίας πολλοὶ πλούσιοι καὶ σημαίνοντες κατήρτιζον ὁμίλους δούλων καὶ ἐθελοντῶν, εἰς τοὺς ὁποίους ἐδίδασκον τὸ ἐπάγγελμα τοῦ μονομάχου. Ἔπραττον δὲ τοῦτο ἀφ' ἑνὸς ἵνα ἔχωσιν εἰς τὴν ἐξουσίαν των, διὰ πᾶσαν περίστασιν, ἕτοιμον μέγαν ἀριθμὸν ἐνόπλων ἀνδρῶν ὑπακουόντων εἰς τὰ κελεύσματά των καὶ ἀφ' ἑτέρου ἵνα δύνανται εὐχερῶς νὰ διοργανώνουν ἀγῶνας μονομάχων δι' ἐξόδων των. Ἐν τέλει οἱ ἔνοπλοι οὗτοι ὅμιλοι ἦσαν μετὰ μεγάλης ὠφελείας ἐμπορεύσιμοι, διότι, ὡς ἦσαν ἐκγυμνασμένοι καὶ πειθαρχικοί, ἐπωλοῦντο εἰς ἐπιχειρηματίας, οἵτινες ἠγόραζαν τούτους δι' ἀδρᾶς δαπάνης ἵνα

*Τὸ ἀγώνισμα τοῦ «ρητιαρίου καὶ μυρμίλλωνος».*

χρησιμοποιήσωσιν εἰς διοργανουμένους ὑπ' αὐτῶν ἀγῶνας μονομάχων ἐπὶ μεγάλῳ κέρδει, διότι πολλάκις μετὰ δύο μόνον παραστάσεις ἡ δαπάνη τῆς ἀγορᾶς των ἐκαλύπτετο.

Οἱ μαθητευόμενοι μονομάχοι ἐνδιῃτῶντο ἐντὸς εἰδικῆς σχολῆς (ludus) ὑπὸ τὴν ἐποπτείαν ἐπιστάτου, ὅστις ἐκαλεῖτο λουδοτρόφος ἢ μονομαχοτρόφος (lanista). Ἔργον τῶν ἀπεχθῶν τούτων ἀν-

Digitized by Google

θρώπων, ἀληθῶν ἐμπόρων ἀνθρωπίνης σαρκός, ἦτο ἡ ἀγορά, ἡ πώλησις καὶ ἡ τοποθέτησις τῶν δυστυχῶν, οἵτινες προωρίζοντο διὰ τὸ ἔργον τῶν μονομάχων, ἤρχοντο δὲ οὗτοι εἰς ἄμεσον συνάφειαν μετὰ παντὸς δυναμένου νὰ πωλήσῃ δούλους καὶ ἰδίως μετὰ τῶν πειρατῶν. Ἡ διδασκαλία τῶν μαθητευομένων καὶ ἡ ἐκγύμνασις αὐτῶν ἀνετίθετο εἰς εἰδικόν, δι' ἕκαστον ἀγώνισμα, διδάσκαλον (doctor, magister). Οἱ προγυμνασταὶ οὗτοι ἦσαν συνήθως πρῴην διακριθέντες μονομάχοι, μὴ διαιτώμενοι ἐντὸς τῶν σχολῶν, ἀλλὰ προσερχόμενοι μόνον κατὰ τὰς ὥρας τῶν ἀσκήσεων. Ὅταν ἡ ἐκγύμνασις τῶν μαθητευομένων συνεπληροῦτο, ὡδηγοῦντο οἱ μονομάχοι εἰς τὴν κονίστραν. Ἐξελέγοντο δὲ οἱ ἀνταγωνισταὶ ὑπὸ τῶν διδασκάλων κατὰ τρόπον, ὥστε νὰ εἶναι τῆς αὐτῆς περίπου μεταξύ των ἱκανότητος.

Κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἀγωνισμάτων ἦτο ἀπίστευτος ἡ σκληρότης, μεθ' ἧς οἱ θεαταὶ ἀπελάμβανον τὸ ἐν τῇ κονίστρᾳ χυνόμενον αἷμα. Εὐθὺς ὡς μετὰ τὴν ἐν πομπῇ προσέλευσιν τοῦ αὐτοκράτορος ἢ τοῦ τοπάρχου μετὰ τῆς ἀκολουθίας των καὶ τῶν λοιπῶν ἐπισήμων ἐκηρύσσετο ἡ ἔναρξις τῶν ἀγώνων, ὡδηγοῦντο δὲ τότε ἐντὸς τῆς κονίστρας ἄοπλοι, διὰ τὸν φόβον στάσεως, πάντες οἱ μέλλοντες νὰ μονομαχήσωσιν. Οὗτοι, ἀδιαφοροῦντες διὰ τὴν σκληρὰν τύχην, ἥτις τοὺς ἀνέμενεν, ἔτερπον ἐν ἀρχῇ τοὺς θεατὰς ἐπιδεικνύοντες τὴν ἐπιδεξιότητά των διὰ τῶν ποικίλων γυμνασμάτων, εἰς ἃ ἐπεδίδοντο πρὸ τοῦ ἀγῶνος, ὅπως ζωογονήσωσι τοὺς νεναρκωμένους μυῶνάς των. Ἔβλεπε δέ τις τούτους φιλίως καὶ ἠρέμα συζητοῦντας μεταξύ των, ἐνῷ μετ' ὀλίγον ἐπὶ τῆς αὐτῆς κονίστρας θὰ ἀλληλεσπαράσσοντο. Ἡ μοιρολατρική των αὐτὴ ἀπάθεια ἦτο ἀπότοκος τῆς μακρᾶς ἐκπαιδεύσεώς των. Εὐθὺς ὡς ἐδίδετο τὸ σύνθημα παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος ἢ ἐν ἀπουσίᾳ αὐτοῦ παρὰ τοῦ διοικητοῦ τοῦ τόπου, πάντες οἱ μονομάχοι ἀπεσύροντο, ὡδηγοῦντο δὲ κατόπιν διαδοχικῶς εἰς τὴν κονίστραν, μετὰ τῶν ὅπλων των, τὰ ζεύγη μόνον ἐκεῖνα, ἅτινα ἐπρόκειτο νὰ μετάσχωσιν εἰς ἕκαστον ἀγώνισμα. Οὗτοι περιήρχοντο τὴν κονίστραν ὑψοῦντες τὰ ξίφη των, ἵνα δείξωσιν ὅτι ἦσαν ταῦτα αἰχμηρὰ καὶ καλῶς ἠκονισμένα, ὅταν δ' ἔφθανον πρὸ τοῦ αὐτοκράτορος ἐφώνουν «χαῖρε Καῖσαρ, οἱ μελλοθάνατοι σὲ χαιρετοῦν» (ave Caesar, morituri te salutant), μεθ' ὃ ἤρχιζον τὸν ἀγῶνα.

Ὡς εἰσαγωγὴ τῶν ἀγώνων συνήθως ἐχρησιμοποιεῖτο τὸ λίαν δημοφιλὲς παίγνιον τοῦ «ρητιαρίου» (δικτυβόλου) καὶ «τοῦ μυρμίλλωνος». Κατ' αὐτὸ ὁ ρητιάριος, ὁ φέρων τὸ δίκτυον, ἦτο ὡπλισμένος μὲ αἰχμηρὰν τρίαιναν καὶ τριγωνικὸν ἐγχειρίδιον, ὁ δὲ μυρμίλλων, καλούμενος οὕτως ἐκ τοῦ ὀνόματος ἰχθύος τινός, ὅστις εἰκονίζετο ἐπὶ τῆς μετόπης τῆς περικεφαλαίας του καὶ ὃν ὑπεκρίνετο κατὰ τὸν ἀγῶνα, ἔφερεν εὐμεγέθη τετράπλευρον ἀσπίδα, περικεφαλαίαν, σιδηροῦν προσωπεῖον καὶ εἰδικὴν μάχαιραν κεκαμμένην εἰς τὸ ἄκρον, κατάλληλον ὅπως διαρρήξῃ δι' αὐτῆς τὸ ἐξ ἀμφιβλήστρου λινοῦ μετὰ βαρυδίων δίκτυον, δι' οὗ ὁ ἀνταγωνιστής του προσεπάθει νὰ τὸν περιτυλίξῃ. Ἦτο διασκεδαστικὸν τὸ θέαμα τῶν εὐστρόφων ἑλιγμῶν καὶ τῶν ἁλμάτων, δι' ὧν ὁ μυρμίλλων ἠγωνίζετο ν' ἀποφεύγῃ τὴν διὰ τοῦ δικτύου σύλληψιν. Ὑπὸ τοὺς ἀκρατήτους γέλωτας τῶν θεατῶν, ὁ ρητιάριος ἔλεγε «διατί μοῦ φεύγεις, Γαλάτη; ἐγὼ δὲν ζητῶ σέ, ἀλλὰ τὸ ψάρι νὰ πιάσω.......». Ἡ θυμηδία ὅμως τοῦ πλήθους μετ' ὀλίγον μετεβάλλετο εἰς ἀληθῆ ἀγωνίαν, καθ' ἣν στιγμὴν ἐν τέλει ἐπετύγχανεν ὁ ρητιάριος δι' ἐπιδεξίου ρίψεως ν' ἀγρεύσῃ τὸν μυρμίλλωνα, ὅστις ἀπηυδημένος ἐκ τοῦ καμάτου καὶ ἀνίκανος νὰ ἀμυνθῇ, ὑπὸ τὴν περίσφιγξιν τοῦ δικτύου, ἐκυλίετο χαμαί. Ὁ ἀνηλεὴς ἀνταγωνιστής του τὸν ἔπληττε τότε διὰ τῆς τριαίνης του εἰς τὸν λαιμόν, ἐγονάτιζεν ἐπ' αὐτοῦ καὶ ὕψωνε τὸ ἐγχειρίδιόν του, ἕτοιμος δι' αὐτοῦ νὰ ἀποτελειώσῃ τὸν ἡμιθανῆ ἀντίπαλόν του εὐθὺς ὡς οἱ θεαταὶ ἔδιδον τὸ σύνθημα. Διότι καὶ εἰς τὴν πάλην αὐτήν, ὅπως καὶ εἰς τὰς λοιπὰς ἐπακολουθούσας μονομαχίας, ὅταν ὁ ἡττημένος ὕψωνε τὴν ἀριστεράν του χεῖρα μὲ τὸν δείκτην τεταμένον ἵνα τῷ χαρισθῇ ἡ ζωή, εἰς τοὺς θεατὰς ἀπέκειτο νὰ ἐγκρίνουν τὴν αἴτησίν του, ὁπότε ὕψωνον τὸν δάκτυλον εἰς τὸν ἀέρα ἢ ἐκίνουν τεμάχιον ὑφάσματος (mappa) κραυγάζοντες «missum!», ἂν δ' ἀντιστρόφως ἠρνοῦντο τὴν χάριν ἀνέστρεφον πρὸς τὴν γῆν τὸν ἀντίχειρα κραυγάζοντες «jugula!», ὁπότε ὁ ἡττημένος, ἄνευ διαμαρτυρίας, ἔτεινε τὸν λαιμόν του ἵνα δεχθῇ τὸ θανάσιμον πλῆγμα (ferrum recipere) ὑπὸ τοῦ νικητοῦ. Τὸ τελευταῖον τοῦτο συνέβαινε συνηθέστερον, καὶ κατ' αὐτὸ δ' ἀκόμη τὸ προεισαγωγικὸν παίγνιον τοῦ ρητιαρίου, διότι μετ' ἀνυπομονησίας ἀνέμενον οἱ θεαταὶ νὰ ἴδωσι τὸ πρῶτον χυνόμενον αἷμα.

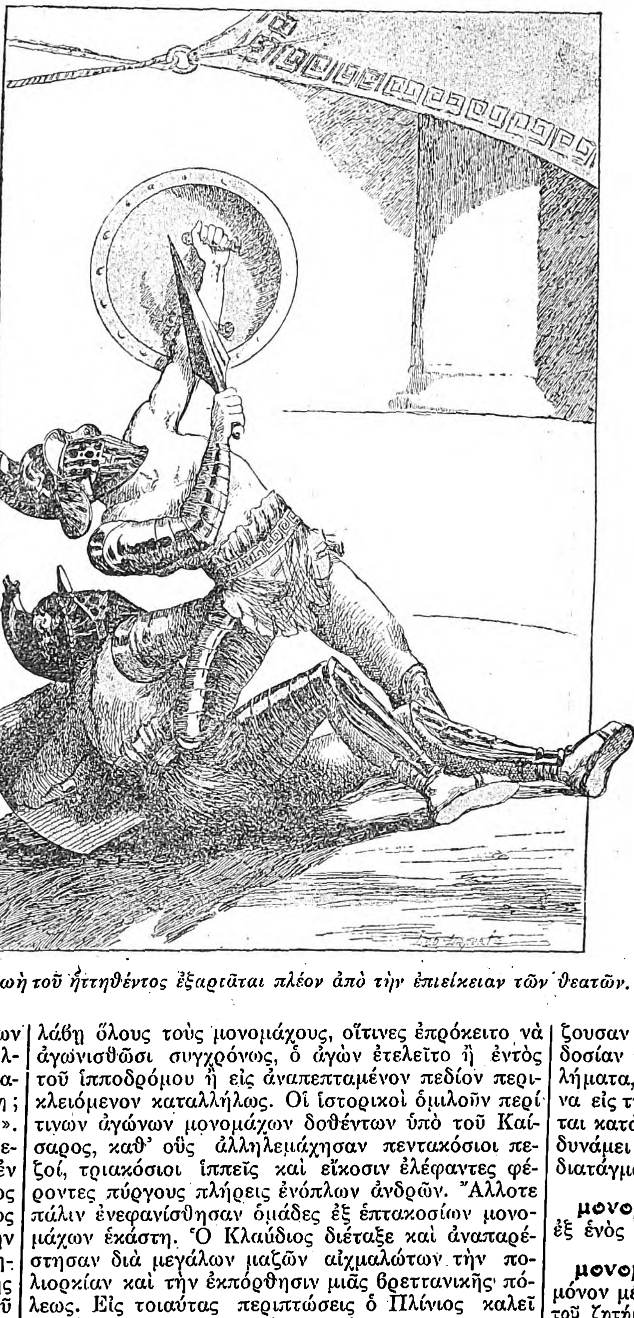
*Ἡ ζωὴ τοῦ ἡττηθέντος ἐξαρτᾶται πλέον ἀπὸ τὴν ἐπιείκειαν τῶν θεατῶν.*

Εἰς σπανίας μόνον περιστάσεις συμπαθοῦντες διέσωζον διὰ τῆς παρεμβάσεώς των τὸν ἡττημένον, ἐὰν ἰδίως εἶχεν οὗτος ἐπιδείξει κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς πάλης ἀξιοσημείωτον θάρρος καὶ δεξιότητα.

Εἰς τοὺς ἀγῶνας τῶν μονομάχων ἐπετρέπετο νὰ παρίστανται καὶ γυναῖκες, παρετηρήθη δὲ ὅτι τρυφεραὶ ἢ αἰδήμονες νεάνιδες μετ' ἀληθοῦς πάθους παρηκολούθουν τὴν ἀγωνίαν τῶν ἡττημένων καὶ ἄνευ δισταγμοῦ ἀνέστρεφον τὸν ἀντίχειρα διὰ ν' ἀρνηθῶσι τὴν χάριν, τερπόμεναι εἰς τὴν θέαν τοῦ χυνομένου αἵματος καὶ τὸν ἐπιθανάτιον σπασμὸν τοῦ θύματος. Συχνὰ ἄλλως τε παρίσταντο καὶ κατ' αὐτὴν τὴν ἐκτέλεσιν τῶν καρατομουμένων διὰ τῆς σπάθης καταδίκων ἢ τῶν ὁδηγουμένων ἐντὸς τῆς κονίστρας τοῦ ἀμφιθεάτρου ὅπως κατασπαραχθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀγρίων θηρίων.

Πολλάκις, κατὰ τὴν τέλεσιν τῶν ἀγώνων αὐτῶν, παρέτασσον ἀπέναντι ἀλλήλων ἀντὶ δύο μεμονωμένων ἀνταγωνιστῶν ὁμάδας ὁλοκλήρους, ὁπότε ὁ ἀγὼν ἐκαλεῖτο «gregatim». Ὅταν αἱ ὁμάδες ἀπετελοῦντο ἐξ ὀλιγαρίθμων μονομάχων, ὁ ἀγὼν ἐτελεῖτο ἐντὸς τοῦ ἀμφιθεάτρου. Ὅταν ὅμως, εἰς πανηγύρεις ἐξαιρετικῆς λαμπρότητος, τὸ ἀμφιθέατρον ὅσον μέγα καὶ ἂν ἦτο δὲν ἠδύνατο νὰ περιλάβῃ ὅλους τοὺς μονομάχους, οἵτινες ἐπρόκειτο νὰ ἀγωνισθῶσι συγχρόνως, ὁ ἀγὼν ἐτελεῖτο ἢ ἐντὸς τοῦ ἱπποδρόμου ἢ εἰς ἀναπεπταμένον πεδίον περικλειόμενον καταλλήλως. Οἱ ἱστορικοὶ ὁμιλοῦν περί τινων ἀγώνων μονομάχων δοθέντων ὑπὸ τοῦ Καίσαρος, καθ' οὓς ἀλληλεμάχησαν πεντακόσιοι πεζοί, τριακόσιοι ἱππεῖς καὶ εἴκοσιν ἐλέφαντες φέροντες πύργους πλήρεις ἐνόπλων ἀνδρῶν. Ἄλλοτε πάλιν ἐνεφανίσθησαν ὁμάδες ἐξ ἑπτακοσίων μονομάχων ἑκάστη. Ὁ Κλαύδιος διέταξε καὶ ἀναπαρέστησαν διὰ μεγάλων μαζῶν αἰχμαλώτων τὴν πολιορκίαν καὶ τὴν ἐκπόρθησιν μιᾶς βρεττανικῆς πόλεως. Εἰς τοιαύτας περιπτώσεις ὁ Πλίνιος καλεῖ τὸν ἀγῶνα «consummatio gladiatorum».

Εἰς μάτην τινὲς τῶν αὐτοκρατόρων προσεπάθησαν νὰ μετριάσωσι τὸ ἔμμονον πάθος τοῦ ρωμαϊκοῦ λαοῦ διὰ τοὺς αἱματηροὺς τούτους ἀγῶνας, καθ' οὓς ἡ δίψα τοῦ αἵματος ηὔξανε προοδευτικῶς, ἀπὸ τῶν χρόνων ἰδίᾳ τοῦ Καλιγούλα, τοῦ Κλαυδίου, τοῦ Νέρωνος καὶ τοῦ Δομιτιανοῦ. Ὁ Τραϊανός, ἐπιστρέψας ἐκ τοῦ νικηφόρου πολέμου τῆς Δακίας (105 μ. Χ.), ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἔτερπε τὸν ρωμαϊκὸν λαὸν δι' ἀγώνων μονομάχων καὶ θηριομαχιῶν, κατὰ τὸ διάστημα δὲ τῶν ἑορτῶν ἐκείνων τοῦ θριάμβου του, αἵτινες διήρκεσαν ἐπὶ 123 ἡμέρας, δέκα χιλιάδες αἰχμαλώτων ἀλληλεσφάγησαν ἐντὸς τῆς κονίστρας τοῦ Κολοσσαίου. Ἐντὸς τῆς αὐτῆς κονίστρας ἀπειράριθμοι Χριστιανοὶ ἐσπαράχθησαν παρὰ τῶν ἀγρίων θηρίων ὑπὸ τὰς ἐνθουσιώδεις ἰαχὰς τῶν μαινομένων θεατῶν.

Ἐν τέλει, μετὰ τὴν ἐπικράτησιν τοῦ Χριστιανισμοῦ ἐπὶ Κωνσταντίνου, ἐξεδόθη ἐν ἔτει 326 νόμος ἀπαγορευτικός, ὅστις ἐμετρίασε σημαντικῶς τὰς διοργανώσεις τοιούτων ἀγώνων, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ τὰς καταργήσῃ τελείως. Μόνον δὲ ἐπὶ Ὀνωρίου, τῷ 404 μ. Χ., ἐξέλιπον ὁριστικῶς πλέον οἱ ἀγῶνες τῶν μονομάχων. Τ. Ι. ΚΑΡΑΚΑΛΟΣ

**Μονομάχος, *Κωνσταντῖνος*.** Ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων ἀρχόντων τῆς Κωνσταντινουπόλεως λόγῳ τῆς ἀρχαιότητος τῆς οἰκογενείας του, τοῦ πλούτου του καὶ τοῦ ἤθους του. Ἐνυμφεύθη τῷ 1042 τὴν αὐτοκράτειραν Ζωὴν καὶ ἀνηγορεύθη αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου (βλ. λ. *Κωνσταντῖνος Θ'*). Ν. ΚΛΣ

—**Μονομάχος, *Μιχαήλ*.** Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Ἀνδρονίκου Γ' Παλαιολόγου (1328—1341), φημιζόμενος διὰ τὴν σύνεσιν καὶ τὴν πολεμικὴν αὐτοῦ ἐμπειρίαν. Περὶ τὸ 1333, διατελῶν διοικητὴς Θεσσαλονίκης καὶ πληροφορηθεὶς τὸν θάνατον τοῦ ἀνεξαρτήτου δεσπότου Θεσσαλίας Στεφάνου Γαβριηλοπούλου, εἰσέβαλεν εἰς τὴν χώραν τούτου καὶ κατέλαβε μέρος αὐτῆς, ἤτοι τὴν Βοττιαίαν (μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ἀξιοῦ καὶ Λουδίου), ἐνῷ τὰς λοιπὰς ἐν Θεσσαλίᾳ κτήσεις κατελάμβανεν ὁ δεσπότης Ἠπείρου Ἰωάννης Ἄγγελος. Ν. ΚΛΣ

**μονομαχοτροφεῖον** (τὸ) *['Αρχ.]*· βλ. λ. *καταγώγιον μονομάχων*.

**μονομαχοτρόφος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ τρέφων, ὁ ἐκπαιδεύων μονομάχους (ἀρχ.). — *['Αρχ.]* Βλ. λ. *ἐπιστάτης μονομάχων*.

**μονομαχῶ** (*—έω*)· εἶμαι μονομάχος, μάχομαι, συμπλέκομαι μόνος πρὸς μόνον καθ' ὡρισμένους ὅρους δι' ὑπόθεσιν τιμῆς.

**μονομεθυλογλυκίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *σαρκοσίνη*.

**μονομεθυλογλυκόκολλα** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *σαρκοσίνη*.

**μονομεθυλογουανιδίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *μεθυλογουανιδίνη*.

**μονομελὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τό)· ὁ ἐξ ἑνὸς μέλους ἀποτελούμενος: «μονομελὲς δικαστήριον» (ἐσχηματίσθη κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ *πολυμελής*).

—**μονομελὲς *πλημμελειοδικεῖον*.** Α') Συγκροτεῖται: 1) ἐν τῇ ἕδρᾳ τοῦ πρωτοδικείου, ἐξ ἑνὸς πρωτοδίκου, τοῦ εἰσαγγελέως καὶ τοῦ γραμματέως πρωτοδικῶν, καὶ 2) ἐκτὸς ταύτης, ὑπὸ πρωτοδίκου ἢ ἀντὶ τούτου πταισματοδίκου (ἀναπληρουμένου μόνον ὑπὸ ὁμοιοβάθμου του), τοῦ εἰσαγγελέως (ἀναπληρουμένου ὑπὸ πταισματοδίκου ἢ εἰρηνοδίκου ἢ τοῦ δημοσίου κατηγόρου) καὶ τοῦ γραμματέως τοῦ εἰρηνοδικείου ἢ τοῦ εἰδικοῦ πταισματοδικείου. Β') Ἐκδικάζει: 1) ὅλα ἐν γένει τὰ εἰς βαθμὸν πλημμελήματος ἀδικήματα περὶ τὰ δάση καὶ 2) τὰ πλημμελήματα τὰ τιμωρούμενα μὲ φυλάκισιν μέχρις ἓξ μηνῶν ἢ μὲ χρηματικὴν ποινὴν μέχρι τετρακισχιλίων δραχμῶν ἢ μὲ ἀμφοτέρας, ἐξαιρουμένων: α') τῶν ἐν ἄρθροις 449 ἕως 465 τοῦ ποινικοῦ νόμου καὶ τῶν συνεπαγομένων τὰς ἐν ἄρθρῳ 24 αὐτοῦ ἐκπτώσεις καὶ ἀνικανότητας, β') τῶν συναφῶν πρὸς ἀδικήματα ἄλλης ἁρμοδιότητος καὶ γ') τῶν ὑπαγομένων εἰς τὴν ἰδιάζουσαν δικαιοδοσίαν (νόμ. 3998). Τὰ εἰς τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ δικαστηρίου τούτου ὑπαγόμενα πλημμελήματα, καταληφθέντα ἐπ' αὐτοφώρῳ διαπραττόμενα εἰς τὴν ἕδραν τοῦ πλημμελειοδικείου, ἐκδικάζονται κατὰ τὴν διαδικασίαν τῶν ἐπ' *αὐτοφώρῳ* (βλ. λ.), δυνάμει τοῦ ἀπὸ 23 Μαρτίου 1929 νομοθετικοῦ διατάγματος. Σ. Α. Χ.

**μονομέρεια** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μονομερής, ἡ ἐξ ἑνὸς μόνον μέρους ἄποψις, ἀντίθ. *πολυμέρεια*.

**μονομερὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τό)· ὁ ἀποβλέπων εἰς ἓν μόνον μέρος, ἀντίθ. *πολυμερής*: «μονομερὴς ἐξέτασις τοῦ ζητήματος», «μόρφωσις μονομερής». —Ἐπίρρ. ***μονομερῶς***.

**μονομεριάτικος,** *—η, —ο*· δημοτ., ὁ διαρκῶν μίαν μόνον ἡμέραν, ὁ ἐν μιᾷ καὶ μόνῃ ἡμέρᾳ συντελούμενος: «ἔκαμα μιὰ μπουγάδα μονομεριάτικη». —Ἐπίρρ. ***μονομεριάτικα***, ἄλλως *μονομερίς*.

**μονομερίς**· ἐπίρρ. δημοτ., ἐν μιᾷ μόνῃ ἡμέρᾳ, ἄλλως *μονομεριάτικα*: «ἐτελείωσε τὴ δουλειά του μονομερίς».

**μονομερίτικος,** *—η, —ο*· δημοτ., καὶ *μονημερίτικος*· ὁ ἐν μιᾷ καὶ μόνῃ ἡμέρᾳ συντελούμενος: «μονομερίτικο παννί», τὸ ὕφασμα τὸ ὁποῖον συνετελέσθη ἀπὸ τῆς νήσεως μέχρι τῆς ὑφάνσεως ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ.

**μονομεριῶ**· ἰδιωμ., ὁδηγῶ πρὸς συμπύκνωσιν ἓν ποίμνιον, κατευθύνω εἰς μίαν μόνην *μεριάν*. Ι. Δ. Ν.

Digitized by Google

**μονομεταλλισμὸς** (ὁ). Σύστημα παραστάσεως τῆς νομισματικῆς μονάδος εἰς ὡρισμένον βάρος τοῦ ἑτέρου τῶν πολυτίμων μετάλλων, χρυσοῦ ἢ ἀργύρου, ἐξ οὗ καὶ ἀποκλειστικῶς ἀποτελεῖται τὸ κυκλοφοροῦν νόμιμον χρῆμα. Ὁ μονομεταλλισμὸς τυγχάνει ἤδη παγκοσμίου ἐφαρμογῆς, ἂν καὶ μεταπολεμικῶς οὐχὶ κατ' ἀμφότερα τὰ στοιχεῖά του, τὴν τε δηλαδὴ ἐπιστήριξιν τοῦ νομισματικοῦ συστήματος ἐπὶ τοῦ ἑνὸς μετάλλου καὶ τὴν πραγματικὴν τούτου κυκλοφορίαν, ἀλλ' ὡς βάσις τοὐλάχιστον ὑπολογισμοῦ τῆς νομισματικῆς μονάδος, εἰς ἃς περιπτώσεις δὲν κυκλοφορεῖ αὐτούσιον μεταλλικὸν χρῆμα, τὸ δὲ ἀντίκρυσμα τῶν τραπεζογραμματίων ἀποτελεῖται κατὰ μέγα μέρος ἐκ στοιχείων ἐξωτερικοῦ συναλλάγματος. Ἡ γενικὴ παραδοχὴ τοῦ μονομεταλλικοῦ συστήματος ὀφείλεται εἰς τὰς παρ' αὐτοῦ, ὡς ἐκ τῆς πείρας τοῦ παρελθόντος κατεδείχθη, παρεχομένας ἐγγυήσεις περὶ τῆς πληρώσεως τῆς θεμελιώδους ἀπαιτήσεως τῆς νομισματικῆς πολιτικῆς: τῆς σταθερότητος τῆς ἀξίας τοῦ χρήματος. Ἐν τῇ οἰκονομικῇ θεωρίᾳ τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ὑπεστηρίχθη, ἀντιθέτως, ὅτι πληρεστέρας ἐγγυήσεις περὶ τῆς σταθερότητος τῆς ἀξίας τοῦ χρήματος παρέχει τὸ εἰς τὸν μονομεταλλισμὸν ἀντιταχθὲν σύστημα τοῦ *διμεταλλισμοῦ* (βλ. λ.), κατὰ τὸν ἑξῆς συλλογισμόν: Προκειμένου περὶ μεταλλικοῦ νομισματικοῦ συστήματος ἀστάθεια τῆς ἀξίας τοῦ χρήματος ἀναμφισβητήτως προκύπτει ἐκ τῆς διακυμάνσεως τῆς ἀγοραίας ἀξίας πολυτίμων μετάλλων, ὀφειλομένης εἰς αὐξομειώσεις ἰδίως τῆς παραγωγῆς των. Ἀλλ' ἐνῷ ἐπὶ τοῦ μονομεταλλικοῦ συστήματος τὸ νόμιμον χρῆμα ὑπόκειται εἰς τὰς ἐκ τῶν αὐξομειώσεων τῆς τιμῆς τῶν πολυτίμων μετάλλων προερχομένας διακυμάνσεις τῆς ἀξίας του, ἄνευ δυνατότητος ἀντιδράσεως, ἀντιθέτως, ἐν περιπτώσει συνυπάρξεως δύο μετάλλων, ἐξ ἴσου νομίμων ἐξοφλητικῶν μέσων, ἐὰν λάβῃ χώραν ὑποτίμησις τοῦ ἑνός, ἥτις εἶναι συνήθης ἐν τῇ οἰκονομικῇ ἱστορίᾳ περίπτωσις, ἡ αὔξουσα ζήτησις, ἡ πρὸς τὸ εὐθηνότερον τοῦτο ἐξοφλητικὸν μέσον κατευθυνομένη (ἐνῷ τὸ ἕτερον ἀποσύρεται τῆς κυκλοφορίας), ἐξουδετεροῖ τὴν ὑποτιμητικήν του τάσιν καὶ σταθεροποιεῖ ἐκ νέου ταχέως τὴν ἀξίαν τοῦ χρήματος. Αἱ διακυμάνσεις αὐτῆς εἶναι μακροτέρας διαρκείας καὶ συνεπῶς ἡ ἀξία τοῦ χρήματος ἀσταθεστέρα ἐπὶ τοῦ μονομεταλλικοῦ παρὰ ἐπὶ τοῦ διμεταλλικοῦ συστήματος. Ἐναντίον τῶν ἀπόψεων τούτων δέον νὰ τονισθῇ ὅτι τὸ εὐεργέτημα τῆς σταθερότητος τῶν τιμῶν, τὸ ἐν τῷ διμεταλλισμῷ παρεχόμενον, ἐξουδετεροῦται, ὡς ὁμολογοῦν καὶ οἱ ὀπαδοὶ τοῦ συστήματος τούτου, διὰ τῆς πιστοποιουμένης συχνῆς ἐναλλαγῆς τῶν κυκλοφορούντων μετάλλων, ὁδηγούσης εἰς τὴν ἐξαφάνισιν, ἐκ τῆς κυκλοφορίας τοῦ ἑκάστοτε σχετικῶς ὑπερτιμωμένου καὶ προκαλούσης πολὺ μεγαλυτέραν ἀβεβαιότητα· ὡς πρὸς δὲ τὴν ἀσφάλειαν καὶ ταχύτητα τῶν συναλλαγῶν εἶναι πολὺ ἐπιβλαβεστέρα (τοσοῦτο μᾶλλον, καθ' ὅσον, ἰσχύοντος τοῦ διμεταλλικοῦ συστήματος, ἡ ἀξία τοῦ χρήματος καὶ τὸ ἐπίπεδον τῶν τιμῶν ὑπόκεινται εἰς διαταραχάς, προερχομένας ὄχι μόνον ἐξ ἑνός, ἀλλ' ἐξ ἀμφοτέρων τῶν πολυτίμων μετάλλων) τῆς ὑπὸ τὸ κράτος τοῦ μονομεταλλισμοῦ ἐν τῇ αὐτῇ περιπτώσει μεταβολῆς τῆς ἀξίας τῶν πολυτίμων μετάλλων, προϋποτιθεμένης μακροτέρας διαταραχῆς τοῦ ἐπιπέδου τῶν τιμῶν. Ἀλλὰ καὶ αὐτὴ αὕτη ἡ βεβαίωσις ὑπάρξεως σχετικῶς μικροτέρας διαρκείας τῆς ἀσταθείας τῶν τιμῶν, θεωρουμένης ὡς ἀναποδράστου συνεπείας τοῦ μονομεταλλισμοῦ, δέον ἐπὶ τῇ βάσει τῶν πραγματικῶν δεδομένων νὰ θεωρηθῇ ὑπερβολική, παρὰ τὸ γεγονὸς τῆς κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος συνδρομῆς τῶν ὅρων ἐκείνων, οἱ ὁποῖοι προκαλοῦν κατὰ τοὺς διμεταλλιστὰς τὰς διακυμάνσεις τῶν τιμῶν, ἤτοι ἀφ' ἑνὸς μὲν τῆς εὐρείας διαδόσεως τοῦ μονομεταλλισμοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ τῆς σπουδαιοτάτης αὐξήσεως τῆς παραγωγῆς τοῦ ἀργύρου καὶ τῆς κατὰ συνέπειαν πτώσεως τῆς τιμῆς του. Κατὰ τὰ ἀνωτέρω, τὸ μονομεταλλικὸν σύστημα, ἀπηλλαγμένον τῶν μειονεκτημάτων τοῦ διμεταλλισμοῦ, δύναται ἐκ παραλλήλου νὰ θεωρηθῇ ὡς παρέχον σπουδαίας ἐγγυήσεις περὶ τῆς σταθερότητος τῆς ἀξίας τοῦ χρήματος.

Ἡ κατὰ τὸ τελευταῖον τέταρτον τοῦ παρελθόντος αἰῶνος κορυφωθεῖσα ἀντίδρασις κατὰ τοῦ ἐπιστημονικῶς ὀρθοτέρου μονομεταλλικοῦ συστήματος εὗρε πρὸς τούτοις ἰσχυρὸν ἔρεισμα τόσον εἰς τὰ συμφέροντα τῶν παραγωγῶν ἀργύρου, ἅτινα διεκινδύνευσαν σοβαρῶς ἐκ τῆς πτώσεως τοῦ μετάλλου τούτου καὶ τῆς ἀπειλῆς τοῦ ὁριστικοῦ ἀποκλεισμοῦ του ἐκ τῆς νομισματικῆς χρήσεως, ὅσον καὶ εἰς παντοιοτρόπως ὑποστηριχθείσας οὐτοπιστικὰς ἐπιθυμίας ὡρισμένων κρατῶν, σοβαρῶς διὰ δανείων ἐπιβεβαρημένων, ἢ οἰκονομικῶν κύκλων, ὅπως, εἰσαγομένου τοῦ διμεταλλισμοῦ καὶ νομισματοποιουμένου τοῦ εὐθηνοτέρου μετάλλου, τοῦ ἀργύρου, ἐξοφλήσωσι τὰς ὑποχρεώσεις των διὰ θυσιῶν μικροτέρων ἐκείνων, εἰς ἃς θὰ ὑπεβάλλοντο ἐν περιπτώσει περαιτέρω ἰσχύος τοῦ χρυσοῦ νομισματικοῦ κανόνος. Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**μονόμετρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τὸ). Λέγεται ἐν τοῖς μαθηματικοῖς ἐπὶ τῆς ποσότητος (βλ. λ. *ποσόν*), ἥτις μετρεῖται δι' ἑνὸς μόνον ἀριθμοῦ, π. χ. ὁ χρόνος, ἡ θερμότης, τὸ μῆκος εἶναι μονόμετροι ποσότητες, ἐνῷ ἡ δύναμις οὐχί, διότι διὰ νὰ ὁρισθῇ αὕτη ἀπαιτοῦνται ἐκτὸς τοῦ ἀριθμοῦ του μετροῦντος την ἔντασίν της καὶ οἱ ἀριθμοὶ οἱ ὁρίζοντες τὴν κατεύθυνσίν της. Ν. Γ.

**μονομιᾶς·** ἐπίρρ. δημοτ., ἄνευ διακοπῆς, διὰ μιᾶς, ἄλλως *γιαμιᾶς: «τό 'πιε μονομιᾶς» μονορρούφι, ἀπνευστί* || ἐν μιᾷ στιγμῇ, ἀμέσως: «πῆγε κι' ἦρθε μονομιᾶς».

**μονόμικτος** (ὁ) *[Πετρογρ.]*. Ὀνομάζεται ὁ σχηματισμὸς ἢ τὸ πέτρωμα, τὸ ὁποῖον συνίσταται ἐξ ἑνὸς καὶ μόνου ὀρυκτολογικοῦ συστατικοῦ ἢ ὀρυκτολογικοῦ εἴδους. Ὁ χαρακτηρισμὸς οὗτος ἀποδίδεται κυρίως εἰς τὰ ἰζηματογενῆ πετρώματα κλαστικῆς προελεύσεως, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦνται ἐκ τοῦ ὑλικοῦ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ ἀρχικοῦ πετρώματος, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς ἐκεῖνα, τῶν ὁποίων τὸ ὑλικὸν προέρχεται ἀπὸ διάφορα ἀρχικὰ πετρώματα, καὶ καλοῦνται διὰ τοῦτο *πολύμικτα*. Τὰ μονόμικτα ἰζηματογενῆ πετρώματα, ἀναλόγως τοῦ ἀρχικοῦ πετρώματος, ἐκ τοῦ ὁποίου προέρχεται τὸ ὑλικὸν αὐτῶν, λαμβάνουν καὶ ἰδίας ὀνομασίας· οὕτω καλοῦνται γρανιτικὰ λατυποπαγῆ ἢ κροκαλοπαγῆ, γνευσιακὰ λατυποπαγῆ ἢ κροκαλοπαγῆ, χαλαζιακὰ λατυποπαγῆ ἢ χαλαζιακὰ κροκαλοπαγῆ κ. ο. κ. Γ. Β.

**μονομπράτσα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς γλώσσης τῶν ναυτικῶν τῶν ἱστιοφόρων, σημαίνων τὸ διανύσαι μέγα διάρμα «ὑπὸ τοὺς αὐτοὺς πρόποδας» (ὁ ἀντίστοιχος ἐπίσημος ὅρος), ἄνευ μεταβολῆς ὀλκῶν· λ. χ. «τὸ μελτέμι μᾶς ἔβγαλε μονομπράτσα ἀπὸ τὸν κάβο Μαλιὰ 's τὴν Ἰκαριά». Κατ' ἐπέκτασιν, εἰς τὴν γλῶσσαν τοῦ λαοῦ τῶν ναυτικῶν πόλεων, σημαίνει τὸ συνεχὲς καὶ ἄνευ διαταράξεως: «ἀπόψε τὸν πῆρα μονομπράτσα ὡς τὸ πρωί» ἐκοιμήθην ἄνευ διακοπῆς. Σ. Ε. Λ.

**μονομυάρια** (τὰ) *[Ζῳολ.]*. Κατηγορία μαλακίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἐλασματοβραγχίων*. Τὰ μονομυάρια χαρακτηρίζονται ὑφ' ἑνὸς καὶ μόνου μυός, ὅστις χρησιμεύει πρὸς σύνδεσμον τῶν δύο θυρίδων τῆς κόγχης. Δ. Ν. Π.

**μονομφάλιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τὸ) (monomphalien) *[Τερατογ.]*. Τερατογονικὴ διάπλασις τῆς οἰκογενείας τῶν διπλῶν τεράτων. Οἱ μονομφάλιοι χαρακτηρίζονται διὰ τῆς ἑνώσεως δύο ἀτόμων τελείων μεθ' ἑνὸς ὀμφαλοῦ κοινοῦ. Ἡ σύντηξις τῶν δύο ὀμφαλίδων καταφαίνεται εἰς ἔκτασιν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλην. Ἡ δὲ σύντηξις ἢ συγχώνευσις τῶν δύο ἀτόμων καθ' ἑαυτὰ ἐκτείνεται καὶ μέχρι τῶν σπουδαιοτάτων σπλάγχνων. Τὰ τέρατα ταῦτα εἶναι ἧττον βιώσιμα τῶν *εὐσομφαλίων*, ἐλάχιστα δὲ τούτων φθάνουσι μέχρι τῆς πρώτης παιδικῆς ἡλικίας. Ὅταν ἡ ἕνωσις ἐπιτελῆται εἰς τὴν ὑπομφαλικὴν χώραν, τότε παράγεται ἡ *ἰσχιοπαγία*· ἀλλ' ἐὰν αὕτη συντελῆται εἰς τὴν ὑπερομφαλικὴν χώραν, πρόκειται τότε περὶ *ξιφοπαγίας, στερνοπαγίας, ἐκτοπαγίας* ἢ *ἡμιπαγίας*. Μ. Ν. Κ.

**μόνον·** ἐπίρρ., ἄνευ ἄλλου, ἀποκλειστικῶς: «μόνον διὰ χρήματα φροντίζει» || «μόνον καὶ μόνον» πρὸς ἐπίτασιν τῆς ἀποκλειστικότητος: «θὰ πάω μόνον καὶ μόνον νὰ τὴν ἰδῶ», «μόνον νὰ παίρνῃ ξεύρει, ὄχι ὅμως καὶ νὰ δίδῃ»· διὰ τοῦ *μόνον ποῦ* πρὸς δήλωσιν ἐξαιρέσεως: «μόνον ποῦ δὲν μᾶς ἔδειρε, ὅλα τ' ἄλλα μᾶς τὰ ἔκαμε» || μετὰ τοῦ *ἀρκεῖ*: «ἀρκεῖ μόνον νὰ μὴ μετανοήσῃ», ἢ ἄνευ τοῦ *ἀρκεῖ* μετὰ τῆς αὐτῆς εὐνοίας: «φύγε μόνον σύ, καὶ τὸν διορθώνω ἐγώ» || *ὄχι μόνον* ἢ *οὐ μόνον* ἐν συμπλοκῇ μετὰ τοῦ *ἀλλὰ καὶ* ἢ *ἀλλ' οὔτε (—οὐδέ)*: «ὄχι μόνον δὲν ἦρθε, ἀλλ' οὔτε μᾶς παρήγγειλε νὰ μὴ τὸν περιμένωμε».

**μονονευρίτις** (ἡ) *[Νευρολ.]*. Καλεῖται ἡ νευρῖτις ἑνὸς μόνου νεύρου, π. χ. τοῦ προσωπικοῦ, τοῦ ἰσχιακοῦ κτλ., κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν *πολυνευρίτιδα*, ἥτις εἶναι νευρῖτις ὅλων τῶν νεύρων ἢ πολλῶν ὁμοῦ. Αἱ μονονευρίτιδες ὀφείλονται εἰς διάφορα αἴτια, τοξικά, λοιμώδη, τραυματικά, εἰς τὴν ψῦξιν, καὶ ἰδίως εἰς τὴν παράλυσιν τοῦ προσωπικοῦ νεύρου. Ἡ πρόγνωσις καλή. Ἡ θεραπεία αἰτιολογικὴ μετὰ συνδυασμοῦ ἠλεκτροθεραπείας. Τ. Α. Ζ.

**μονόνευρος** *σειρὰ* *[Ναυτ.]*. Ἡ κατὰ τὸν Γάλλον ἱστιοποιὸν Consolini ἀντικατάστασις ἑκάστης σειρᾶς τῶν δολώνων καὶ τῶν μειζόνων ἱστίων, δι' ἑνὸς μόνον *νεύρου*, παραλλήλως τῷ κορυφαίῳ λώματι διήκοντος καὶ ἀπὸ πλαγίου εἰς πλάγιον λῶμα. Σ. Ε. Λ.

**μονονιτρίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*. Προϊὸν ἠπίας ἐπιδράσεως νιτρικοῦ ὀξέος ἐπὶ τοῦ ἀμύλου. Κέκτηται πιθανῶς τὸν τύπον $C_{12}H_{19}(NO_2)O_5$. Σ. Γ.

**μονονιτρογλυκερίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*. Ἐστὴρ τῆς γλυκερίνης μεθ' ἑνὸς μορίου νιτρικοῦ ὀξέος. Ἀναλόγως τῆς ἐν τῷ μορίῳ τῆς γλυκερίνης θέσεως τῆς νιτρικῆς ὁμάδος διακρίνεται α-μονονιτρογλυκερίνη $NO_2.O.CH_2.CH(OH).CH_2(OH)$ καὶ β-μονονιτρογλυκερίνη

$$CH_2(OH).CH(O.NO_2)CH_2OH.$$

Ἀμφότεραι λαμβάνονται διὰ μετρίας νιτρώσεως τῆς γλυκερίνης καὶ εἶναι σώματα κρυσταλλικά. Ἡ πρώτη τήκεται εἰς 58° καὶ ἡ δευτέρα εἰς 54°. Δὲν κέκτηται ἐκρηκτικὰς ἰδιότητας. Σ. Γ.

**μονονουκλεοτῖται** (οἱ) *['Οργ. Χημ.]*. Ἐκλήθησαν οὕτω ὑπὸ τοῦ Levene τὰ ἁπλούστερα ἐκ τῶν *νουκλεϊνικῶν ὀξέων* (βλ. λ.).

**μονοξείδιον** (τὸ) *[Χημ.]*. Καλεῖται τὸ ὀξείδιον, εἰς τὸ ὁποῖον τὰ στοιχεῖα εἶναι ἡνωμένα ἄτομον πρὸς ἄτομον, ὡς λ. χ. τὸ μονοξείδιον τοῦ ἀζώτου, $NO$, τὸ μονοξείδιον τοῦ ἄνθρακος, $CO$, κλπ. Σ. Γ.

**μονόξινος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τὸ) *[Χημ.]*. Ὀνομασία τῶν ἁλάτων τῶν πολυσθενῶν βασικῶν σωμάτων, τὰ ὁποῖα ἔχουν σχηματισθῆ διὰ προσθήκης ἑνὸς μόνον μορίου μονοσθενοῦς ὀξέος, ἐνῷ θὰ ἦτο δυνατὴ ἐπίσης ἡ ἕνωσις μετὰ πλειόνων. Σ. Γ.

**μονόξυλον** (τό). Λέμβος κατασκευαζομένη διὰ κοιλάνσεως μεγάλου κορμοῦ δένδρου, συνήθους χρήσεως καὶ σήμερον παρ' ἀγρίοις καὶ ἀπολιτίστοις λαοῖς. Κατ' ἐπέκτασιν, μικρὰ λεπτὴ καὶ ἐλαφρὰ λέμβος, ἐκ φλοιῶν δένδρων, ἢ δορῶν, ἢ σανίδων, ἢ ὀθόνης, χρησιμοποιουμένη εἰς ποταμοὺς ἢ λιμνοθαλάσσας, ὡσαύτως δὲ εἰς ἀσφαλεῖς καὶ περικλείστους θαλασσίας ἐκτάσεις, ὡς παρ' ἡμῖν τὰ καρλάκια, πριάρια καὶ κουρῆτες.

—*['Εγκυκλ.]* Τὸ *μονόξυλον* εἶναι πρωτόγονος τοῦ κοίλου πλοίου ἐμφάνισις. Πρῶται αἱ παραλίμνιοι καὶ παραποτάμιοι φυλαὶ διεῖδον εἰς τὸν κορμὸν ἐκριζωμένου δένδρου, ὀλισθαίνοντος ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῶν ὑδάτων, εὔκολον μεταφορᾶς μέσον, καὶ εἰς τὸ ὑπὸ τοῦ ἀνέμου πληττόμενον φύλλωμα τῶν ὑπὲρ τὸ ὕδωρ κλάδων αὐτοῦ τὸ πρῶτον ἱστίον. Σὺν τῇ παρόδῳ τοῦ χρόνου, ἦλθε καὶ ἡ ἡμέρα, καθ' ἣν

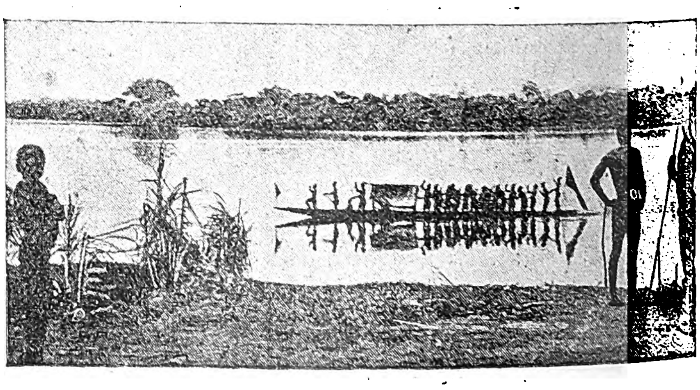

*Μονόξυλον τῶν ἰθαγενῶν τοῦ Βελγικοῦ Κόνγκο.*

ἐκοιλάνθη κορμὸς δένδρου διὰ λιθίνου πελέκεως καὶ οὕτω προέκυψε τὸ πρῶτον κοῖλον πλοῖον, μονόξυλον ἐν ἀρχῇ, μὴ βραδῦναν ὅμως νὰ ἐξελιχθῇ εἰς τὸν τύπον ἐκείνων, τὰ ὁποῖα τόσον ζωηρῶς καὶ γραφικῶς εἰκονίζει ἡ ὁμηρικὴ μοῦσα (Ἰλιὰς Α, 26). Ἡ ὑποκατάστασις τοῦ φυλλώματος διὰ διφθέρας καὶ κατόπιν διὰ ψάθης, ἐξησφάλισε τὴν ἐμφάνισιν τοῦ ἱστίου· ἐκ παραλλήλου δὲ ἡ κώπη, ἥτις ἀντικατέστησε τὸν διὰ τὴν πρόωσιν τοῦ μονοξύλου ἀπωθοῦντα τὸν πυθμένα κοντόν, ἔλυε τὸ ζήτημα τῆς τε προώσεως καὶ τῆς διακυβερνήσεως τοῦ μονοξύλου, τοῦ ὁποίου ἐγίνετο χρῆσις καὶ κατ' αὐτοὺς τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους. Οὕτω ὁ Ξενοφῶν (Κύρ. Ἀνάβ. Ε, δ, 11) ἀναφέρει ὅτι οἱ παρὰ τὴν Κερασοῦντα τοῦ Πόντου Μοσσύνοικοι πρὸς ἐκδήλωσιν τῆς πρὸς τοὺς Μυρίους συμμαχίας των «ἧκον τῇ ὑστεραίᾳ ἄγοντες τριακόσια πλοῖα μονόξυλα καὶ ἐν ἑκάστῳ τρεῖς ἄνδρας, ὧν οἱ μὲν δύο ἐκβάντες εἰς τάξιν ἔθεντο τὰ ὅπλα, ὁ δὲ εἷς ἔμενε». Ὁ Πολύβιος τονίζει ὡσαύτως τὴν μεγάλην χρῆσιν μονοξύλων ὑπὸ τῶν περὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Ροδανοῦ κατοίκων (Γ, λβ, 1—19 καὶ ἑξ.), γράφων ὅτι ὁ Ἀννίβας «ἐξηγόρασε παρ' αὐτῶν τά τε μονόξυλα πλοῖα πάντα καὶ τοὺς λέμβους ...., ἔτι δὲ τὴν ἁρμόζουσαν ξυλείαν ἐξέλαβε πρὸς τὴν κατασκευὴν τῶν μονοξύλων». Ἀλλὰ καὶ σήμερον ἔτι ὑπάρχουν ἐν μεγίστῃ χρήσει μακρόστενα μονόξυλα προωθούμενα διὰ βραχείας κώπης ἄνευ σκαλμοῦ (παγαίας), ἐλαυνομένης δὲ καθ' ὃν τρόπον περιγράφει ὁ Στράβων τὸν χειρισμὸν τῶν μονοξύλων τῶν βαρβάρων, οἵτινες «ταῖς κώπαις οὐ κατὰ σκαλμὸν ἤρεσσον, ὡς ὁ τῶν Ἑλλήνων νόμος, ἀλλ' ὥσπερ...τὸ ὕδωρ ἐπιβάλλοντες ἐν

Digitized by Google

θεν καὶ ἔνθεν, καθ' ἅπερ οἱ σκάπτοντες τὴν γῆν». Τὰ τυπικώτερα τῶν συγχρόνων μονοξύλων εἶναι τὰ δίκην θυρεοῦ ἔχοντα τὸ ἱστίον τῶν νήσων Βανίκορο, τὰ πολύκωπα τῆς Σενεγάλης, ὑπενθυμίζοντα τὸν *φάσηλον* τῶν ἀρχαίων, τὰ τῶν Νεοζηλανδῶν *μαορῆ*, ἔχοντα πλείονας τῶν 60 ἐρετῶν καὶ τριγωνικὸν ἱστίον ἰσοσκελὲς μὲ τὴν κορυφὴν πρὸς τὰ κάτω. Τὰ εὐφυέστερον ὅμως ναυπηγηθέντα μονόξυλα εἶναι τὰ τῶν Καρολινῶν νήσων, τὰ ὁποῖα, διὰ νὰ δεχθῶσιν ἄνευ ἀνατροπῆς μεγάλην ἐπιφάνειαν ἱστίου πρὸς ἀπόδοσιν μεγάλης ταχύτητος, εἶναι ἐφωδιασμένα προσηνέμως δι' ἀντιβάρου ξυλίνου, ὅπερ συνδέεται πρὸς τὸ μονόξυλον διὰ δύο δοκίδων συνδεομένων διὰ διαπήγων, ἐν εἴδει ὁριζοντίας κλίμακος, δι' ἧς μετακινοῦνται δύο τῶν ἀνδρῶν τοῦ πληρώματός του ὁσάκις χρειάζεται ἐνίσχυσις τῆς ἀντιρρόπου δυνάμεως πρὸς τὴν τῆς ἀνατροπῆς. Περίεργος τύπος μονοξύλων εἶναι καὶ τὰ ἰνδικὰ δίδυμα *καταμαρόν*, ἀποτελούμενα ἐκ δύο ἡμικιλυνδρικῶν τμημάτων κοίλου κορμοῦ συζευγνυμένων διὰ σανίδων· τοιαῦτα ἦσαν καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Ἀρριανοῦ, ὅστις ὀνομάζει αὐτὰ *σάγγαρα*. Σύγχρονοι τύποι μονοξύλων παρ' ἡμῖν εἶναι τὰ τῶν φιλάθλων *καγιάκ* καὶ τὰ τῶν ἐν λιμνοθαλάσσαις ἁλιευόντων *πριάρια*. Σ. Ε. Λ.

**μονόοικα** (τά), ἢ *μόνοικα* (τά) *[Βοτ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ φυτά, ἐκ τῶν ὁποίων ἄλλα μὲν φέρουσι μόνον ἄρρενα ἄνθη, ἄλλα δὲ μόνον θήλεα. Τὰ ἄνθη τῶν φυτῶν τούτων καλοῦνται *ἀτελῆ* ἢ *δίκλινα*. Καὶ ὅσα μὲν ἄνθη φέρουσι μόνον στήμονας καλοῦνται *ἄρρενα*, ὅσα δὲ μόνον ὕπερον καλοῦνται *θήλεα*. Δ. Ν. Π.

**Μονοπάρι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἄνω Βαρσαμονέρου τῆς ἐπαρχίας Ρεθύμνης τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. (1928) 50. Ἡ ὀνομασία εἶναι ἐνετική, ἐκ τοῦ γενοατικοῦ φρουρίου τοῦ Πεσκατόρη Castel Bonreparo, οὗ μικρὰ λείψανα σῴζονται ἐπὶ τοῦ σημερινοῦ λόφου Καστέλλου καὶ ἐκ τοῦ ὁποίου ὠνομάζετο ἐπὶ ἐνετοκρατίας ἡ ἐπαρχία Ρεθύμνης. Ἡ ἐπανάστασις Σκορδιλῶν καὶ Μελισσηνῶν τῷ 1217 ὀφείλεται εἰς τὸ φρούριον τοῦτο, τοῦ ὁποίου ὁ καστελλάνος Πέτρος Φιλοκάνεβος εἶχεν ἁρπάσει κτήνη τοῦ Ἰω. Σκορδίλη. Ε. Γ.

**μονοπάτι** (τό)· δημοτ., στενὴ ὁδός, διὰ τῆς ὁποίας εἷς μόνον δύναται νὰ βαδίζῃ, *ἀτραπός*· || σύντομος ὁδὸς διὰ μέσου τῶν ἀγρῶν, παρὰ τὴν συνήθη: «πῆρε τὸ μονοπάτι καὶ βγῆκε γρηγορώτερα».

**μονόπατος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἐπὶ τῶν οἰκιῶν, ἡ ἔχουσα ἕνα μόνον πάτωμα, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ *δίπατος, τρίπατος* κτλ.

**μονοπέταλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἐπὶ ἀνθέων, τὰ ἔχοντα στεφάνην, ἧς τὰ πέταλα εἶναι συνηνωμένα.

**Μονόπετρα** *[Γεωγρ.]*. Νησίον παρὰ τὴν ΒΑ. ἀκτὴν τῆς Λέσβου (πλάτ. 39° 23' Β., μήκ. 26° 23' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1665: Mytileni island) μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Φηρὸ καὶ Τοχμάκι. Σ. Ε. Λ.

—**Μονόπετρα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς βουλγαρικῆς παραλίας μεταξὺ Σωζοπόλεως καὶ Πύργου (πλάτ. 42° 29' Β., μήκ. 27° 40' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2214: Black sea and Sea of Azov). Εἰς τοὺς ξένους χάρτας ἀναγράφεται καὶ ὡς cape Sarleati. Σ. Ε. Λ.

**Μονόπετρο** *[Γεωγρ.]*. Νησίον τῆς Μήλου (πλάτ. 36° 45' Β., μήκ. 24° 25' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2051: Milo, Antimilo, Kimolos, Polino) παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Λαχίδα, ἀριστερὰ τῷ εἰσπλέοντι τὸν λιμένα. Σ. Ε. Λ.

**Μονοπήγαδον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κρήνης τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς, ὀνομαζόμενον πρότερον *Τσεκλῆ*. Κάτ. (1928) 102. Χ. Δ.

**μονοπλάνον** (τό) (monoplan). Ἀεροπλάνον, τοῦ ὁποίου αἱ πτέρυγες ἀποτελοῦσι μίαν μόνον φέρουσαν ἐπιφάνειαν.

— *[Ἐγκυκλ.]* Αἱ πολυειδεῖς κατὰ καιροὺς ἀπόπειραι τοῦ ἀνθρώπου πρὸς πτῆσιν διὰ μηχανῶν βαρυτέρων τοῦ ἀέρος περιεβλήθησαν, ὡς γνωστόν, πρακτικὴν μορφὴν μόνον ἀφ' ἧς οἱ ἀδελφοὶ Ῥάϊτ ἐν Ἀμερικῇ (1900—1903) ἐπέτυχον νὰ ἐκτελέσουν διὰ τοῦ ὑπ' αὐτῶν κατασκευασθέντος ἀεροπλάνου διαδρομὰς ἱκανῆς ἀφ' ἑνὸς διαρκείας καὶ καθωρισμένης ἀφ' ἑτέρου κατευθύνσεως. Τὸ ἀεροπλάνον τοῦτο τῶν Ῥάϊτ, τοῦ ὁποίου αἱ λεπτομέρειαι τῆς κατασκευῆς ἐτηρήθησαν ἐπὶ μακρὸν μυστικαί, ἔφερε δύο ὑπερκειμένας ἀλλήλων ὀρθογωνίους πτέρυγας, αἵτινες ἀπετέλουν τὰς «φερούσας» ἢ «βασταζούσας ἐπιφανείας». Παρομοίας μορφῆς καὶ διατάξεως ἦσαν αἱ πτέρυγες τοῦ ἀεροπλάνου, διὰ τοῦ ὁποίου ὁ Γάλλος Φαρμὰν ἐπέτυχε βραδύτερον (1908) νὰ ἐκτελέσῃ διαδρομὴν ἀπὸ Châlons εἰς Reims μὲ ταχύτητα 80 περίπου χιλιομέτρων. Ταυτοχρόνως ὅμως ἄλλοι κατασκευασταί, καὶ ἰδιαιτέρως μεταξὺ τούτων ὁ Γάλλος Μπλεριώ, ἠδυνήθησαν νὰ φθάσουν εἰς σημαντικὰ ἐπίσης ἀποτελέσματα, ἀντικαθιστῶντες τὴν διπλῆν διάταξιν τῶν πτερύγων τῶν Ῥάϊτ καὶ Φαρμὰν διὰ μιᾶς μόνον ἑνιαίας πτέρυγος, ἢ διὰ δύο τοιούτων, εὑρισκομένων ὅμως ἐν τῷ αὐτῷ ὁριζοντίῳ ἐπιπέδῳ. Ἐπέτυχε δέ, ὡς γνωστόν, ὁ Μπλεριὼ (1909), δι' ἀεροπλάνου τοῦ νέου τούτου τύπου τὸ μέγα διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην κατόρθωμα τῆς διαβάσεως τῆς Μάγχης. Πρὸς διάκρισιν τότε μεταξὺ τῶν δύο ὡς ἀνωτέρω ποικιλιῶν τῆς πτητικῆς μηχανῆς, ἐδημιουργήθησαν οἱ ὅροι *μονοπλάνον* διὰ τὰ δεύτερα, καὶ *διπλάνον* διὰ τὰ πρῶτα. Βραδύτερον ἐδοκιμάσθη ἡ κατασκευὴ καὶ *τριπλάνων*, τῶν ὁποίων αἱ πτέρυγες σχηματίζουσι τρεῖς φερούσας ἐπιφανείας. Τὰ τελευταῖα ὅμως ταῦτα δὲν φαίνεται ὅτι θὰ παραμείνουν ἐν χρήσει. Ἤδη ὁ ἀγὼν ἐπικρατήσεως στρέφεται, ἐν ἴσοις ἐπὶ τοῦ παρόντος ὅροις, μεταξὺ τῶν τύπων τοῦ διπλάνου καὶ τοῦ μονοπλάνου, οἵτινες χρησιμοποιοῦνται ἀδιαφόρως ἀμφότεροι διὰ πάσας τὰς κατηγορίας ἀεροπλάνων (μικρᾶς ἢ μεγάλης ταχύτητος, μικρᾶς ἢ μεγάλης ἀκτῖνος ἐνεργείας, ἐλαφροῦ ἢ βαρέος φορτίου, πολεμικοῦ ἢ συγκοινωνιακοῦ προορισμοῦ).

[Βλ. καὶ λ. *ἀεροπλοΐα*.] Γ. Ζ.

**μονόπλευρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ κατὰ μίαν μόνον πλευρὰν ὑφιστάμενος· || μεταφ., *μονομερής*.— Ἐπίρρ. *μονόπλευρα*· δημοτ., κατὰ τὴν μίαν μόνον πλευράν: «φόρτωσε τὸ ἄλογο μονόπλευρα».

**μονόπλευρος** (ἡ) (Monopleura Mathéron) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *χαμιδῶν ἑτεροδόντων ὁμομυαρίων ἐλασματοβραγχίων* μαλακίων. Τὰ ζῷα ταῦτα εἶχον ὄστρακον ἀνισόθυρον, λεῖον, μετὰ ραβδώσεων ἢ πτυχῶν, τὸ ὁποῖον στερεῶς προσεκολλᾶτο διὰ τῆς δεξιᾶς θύρας. Ἡ ἀριστερὰ θύρα ἦτο κωνικὴ ἢ ἐπίπεδος καὶ ἔφερε δύο ἰσχυρούς, διὰ τάφρου κεχωρισμένους ὀδόντας κλείθρου, ἐπεκάθητο δὲ ὡς κάλυμμα ἐπὶ τῆς δεξιᾶς θύρας. Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν ζῴων τούτων εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς κατωτέρας κρητιδικῆς ὑποδιαπλάσεως τῆς νοτίου Εὐρώπης καὶ τοῦ Τεξάς. Γ. Κ. Γ.

*Μονόπλευρος.*

**μονοπληγία** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται ἡ παράλυσις ἡ ἐντετοπισμένη εἰς ἓν μόνον μέλος ἢ ἄκρον τοῦ σώματος, ἢ εἰς μίαν μόνον μυϊκὴν ὁμάδα· ἀπαντᾷ δὲ εἰς πολλὰς παθήσεις τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος. Μ. Ν. Κ.

**μονόπλοκον** (τό) (κοιν. *σπαρτσῖνο*). Σχοινίον λεπτόν, ἀποτελούμενον ἐκ μιᾶς μόνον συστροφῆς κανναβίνων ἰνῶν. Σ. Ε. Λ.

**μονοπνεύμονες ἰχθύες** (οἱ) *[Ζῳολ.]*. Καλοῦνται οἱ φέροντες ἕνα μόνον πνεύμονα. Δ. Ν. Π.

**μονοπόδαρος, —η, —ο**· δημοτ., ὁ ἔχων ἕνα μόνον ποδάρι: «μονοπόδαρο τραπέζι».

**μονοποδικός, —ή, —όν**· ἐπὶ τῶν φυτῶν, τὸ ἔχον ἓν μόνον πόδιον, τὸ αὐξανόμενον κατὰ μίαν διεύθυνσιν.

— **μονοποδικὸν σύστημα** (τὸ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται ἡ διακλάδωσις τῶν φυτικῶν μορίων, καθ' ἣν ὁ βλαστὸς αὐξάνεται κατὰ τὸ ἐν αὐτοῦ ἄκρον καὶ πρὸς ὡρισμένην κατεύθυνσιν. Δ. Ν. Π.

**Μονοπολάτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πάλης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος, 6 χιλ. ΒΔ. τοῦ Ληξουρίου. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, τηλεφωνεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 421. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται τὰ χωρία *Δελλαπορτάτα, Δεματορὰ* καὶ *Παρισάτα*. Δ. Α. Ζ.

**μονοπολικὴ ἐπαγωγὴ** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἐπαγωγὴ μονοπολική*.

**Μονόπολις** (Monopoli) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μπάρι, παρὰ τὴν Ἀδριατικὴν θάλασσαν. Κάτ. 14.884. Ἔχει καλὸν λιμένα, τμῆμα μεσαιωνικοῦ τείχους, μητρόπολιν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ φρούριον τῆς ἐποχῆς Καρόλου Ε'. Παρ' αὐτὴν ἀνευρέθησαν ἀρχαῖοι τάφοι ἐσκαμμένοι ἐντὸς βράχων, οἵτινες ἀνήκουσι πιθανῶς εἰς τὴν *Ἰγνατίαν*, πόλιν καταστραφεῖσαν κατὰ τὸν Ε' αἰῶνα. Μ. Δ. Β.

**μονόπρακτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ἐπὶ τῶν δραμάτων, τὸ ἀποτελούμενον ἐκ μιᾶς πράξεως: «μονόπρακτος κωμῳδία».

— *[Θεατρ.]* Καλοῦνται *μονόπρακτα* τὰ παντὸς θεατρικὰ ἔργα, ὧν ἡ ὑπόθεσις ἐκτυλίσσεται εἰς μίαν μόνην πρᾶξιν, ἥτις, ὡς γνωστόν, εἶναι ἡ κυριωτέρα διαίρεσις τῶν μεγάλων θεατρικῶν ἔργων, τῶν καλουμένων πολυπράκτων. Ἡ εἰς πράξεις διαίρεσις τῶν θεατρικῶν ἔργων δὲν ὑπῆρχε παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι, καὶ συνεπῶς πάντα ἐν γένει τὰ δραματικὰ ἔργα τῆς ἑλληνικῆς ἀρχαιότητος δύνανται νὰ θεωρηθοῦν ὡς μονόπρακτα. Τοὐναντίον ἐν Ῥώμῃ, ἔνθα τὰ δραματικὰ ἔργα διῃροῦντο εἰς πράξεις, ὑπῆρχον καὶ μονόπρακτα τοιαῦτα, ὅπως ἦσαν τὰ *ἀτελλανὰ* λεγόμενα δράματα καὶ οἱ διάφοροι *μῖμοι*. Ἐν τῷ ἀρχαιοτέρῳ ἱσπανικῷ θεάτρῳ εὑρίσκομεν ἐν τῷ *λόας* ἢ προλόγους, μὲ ἕνα ἢ καὶ περισσότερα πρόσωπα, οὓς προέτασσον κατὰ τὰς παραστάσεις τῆς *ἀοῦτος σακραμεντάλες*, τὰ entremesés *(διάμεσα)*, ἅτινα ἐπαίζοντο κατὰ τὰ διαλείμματα τῶν *ἀοῦτος*, τὰ coloquios, σύντομα δραμάτια μὲ πρόσωπα πάντοτε ποιμένας καὶ χωρικούς, καὶ τὰ pasos, συντόμους φάρσας. Ἐν τῷ νεωτέρῳ ἱσπανικῷ θεάτρῳ ἔχομεν ἀφ' ἑνὸς τὰς saînetes, συντόμους λαϊκὰς φάρσας, ἐν αἷς ἀναπαρίστανται τὰ ἤθη καὶ ἡ πλήρης μεταφορῶν γλῶσσα τῶν συνοικιῶν τῶν κατωτέρων τάξεων τῆς Μαδρίτης, καὶ ἀφ' ἑτέρου τὰς zarzuellas, σύντομα κωμικὰ ἔργα μετὰ μουσικῆς καὶ χορῶν. Ἐν τῷ γαλλικῷ θεάτρῳ ἀπ' ἀρχαιοτάτων χρόνων τὰ μονόπρακτα δραματικὰ ἔργα παντὸς εἴδους ἦσαν εἰς μεγάλην χρῆσιν. Σήμερον τὰ παιζόμενα πρὸ τοῦ κυρίως ἔργου ὀνομάζονται lever de rideau, τὰ μετὰ πνεύματος καὶ χάριτος γεγραμμένα, ὅπως εἶναι «Ὁ διαβάτης» τοῦ Κοππέ, καλοῦνται bluettes. Ἄλλα μονόπρακτα εἶναι αἱ saynètes, ὀλιγοπρόσωπα ἔργα μὲ ἐλαφρὰν πλοκὴν καὶ ὑπόθεσιν καὶ ὅλως διάφορα τῶν ἱσπανικῶν saînetes, καὶ αἱ proverbes, μικραὶ κωμῳδίαι μὲ ἐλαφρὰν πλοκὴν στρεφομένην περὶ τὴν ἀνάπτυξιν παροιμίας τινός, ἐξ ἧς καὶ ἡ ὀνομασία των. Τὸ θεατρικὸν ὅμως τοῦτο εἶδος ἀνεπτύχθη ὀλίγον κατ' ὀλίγον εἰς ἐκτενέστερα καὶ πολυπλοκώτερα ἔργα, ὅπως εἶναι τὰ τοῦ Alfred de Musset.

Εἰς τὴν λοιπὴν Εὐρώπην παίζονται παντὸς εἴδους μονόπρακτα ἔργα, χωρὶς νὰ ἔχουν καὶ ἰδιαιτέρας ὀνομασίας. Παλαιότερον, εἰς τὴν Ἰταλίαν ἐκαλοῦντο farse αἱ μικραὶ μονόπρακτοι ὀπερέτται, αἵτινες ἐπαίζοντο κατὰ τὰ διαλείμματα τῶν μεγάλων πολυπράκτων μελοδραμάτων. Μονόπρακτα ἔργα παίζονται καὶ ἐν Ἰαπωνίᾳ μεθ' ἑκάστην πρᾶξιν τῶν μεγάλων ἔργων, καλούμενα *κιγιογκὲν* (= *τρελλὰ λόγια*). Τὰ κιγιογκὲν ἔχουν συνηθέστατα ὡς ὑπόθεσιν τὰς προλήψεις τῶν χωρικῶν καὶ παίζονται ἄνευ προσωπείων καὶ μουσικῆς. Ἐν τῇ νεωτέρᾳ Ἑλλάδι πρῶτος ἔγραψε μονόπρακτον ἔργον ὁ Ἀλ. Ραγκαβῆς, τὴν κωμῳδίαν «Γάμος ἄνευ νύμφης», παρασταθεῖσαν κατὰ τὸ 1840. Μετ' αὐτὸν πλεῖστοι ἄλλοι ἔγραψαν πάμπολλα μονόπρακτα ἔργα, τραγῳδίας καὶ δράματα. Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**μονοπρόσωπος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον πρόσωπον, μίαν ὄψιν.

**Μονοπρόσωπο** *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου, προελθοῦσα ἐκ τοῦ γενοατικοῦ φρουρίου τοῦ Πεσκατόρη Bonifacio. Ε. Γ.

**μονόπτερον** (τό) *[Ἀρχ.]*. Τὸ ἐκ περιστάσεως μόνον, ἢ ἄλλως λεγομένης πτεροῦ, συγκείμενον κυκλικὸν κτίσμα ἄνευ σηκοῦ. Τὰ κυκλικὰ ταῦτα κτίσματα ἀπετελοῦντο συνήθως ἐκ κρηπιδώματος, ἐφ' οὗ ἠγείρετο ἡ περίστασις, συγκειμένη ἐξ ἐννέα κιόνων ὑποβασταζόντων τὸν θόλον τοῦ μνημείου. Τοιοῦτο μονόπτερον κτίσμα ἦτο ὁ ἐπὶ τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν ἱδρυθεὶς κατὰ τὸ 27 π. Χ. ναός, ἀφιερωμένος εἰς τὴν θεὰν Ῥώμην καὶ τὸν αὐτοκράτορα Αὔγουστον. Ἡ περίστασις τοῦ ναοῦ τούτου ἄνευ τοίχων, ἀπετελεῖτο ἐξ ἐννέα κιόνων ἰωνικοῦ ρυθμοῦ. Μονόπτερα κτίσματα ἦσαν ἐπίσης καὶ τὰ ἑκατέρωθεν τῆς ἐξέδρας Ἡρώδου τοῦ Ἀττικοῦ ἐν Ὀλυμπίᾳ δύο στρογγύλα κτήρια, τὰ ὁποῖα εἶχον τὴν περίστασιν ἐκ κορινθιακῶν κιονοκράνων. Β. Δ. Θ.

**Μονόπυλον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καστορίας τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται πρὸς Ν. τῆς Κορυτσᾶς, ἐγγύτατα τῶν ἀλβανικῶν συνόρων, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Πελκάτη*. Κάτ. (1928) 315. Χ. Δ.

**μονοπύρηνος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Καλοῦνται τὰ κύτταρα, καὶ δὴ τὰ λευκὰ αἱμοσφαίρια, τὰ φέροντα ἕνα μόνον πυρῆνα· οὕτω λέγομεν: λευκοκύτταρον μονοπύρηνον, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ πολυπύρηνον λευκοκύτταρον, τὸ ἔχον δηλαδὴ πολλοὺς πυρῆνας. Μ. Ν. Κ.

**μονοπώλησις, —εως** (ἡ)· ἐπὶ ἐμπορευμάτων, ἡ ὑπὸ ἑνὸς μόνον ὀργανισμοῦ πώλησις, τὸ ἀποκεκλεισμένον ἀπὸ τοῦ ἐλευθέρου ἐμπορίου προϊὸν ἢ ἐμπόρευμα: «ἡ μονοπώλησις τοῦ πετρελαίου, —τῆς σακχάρεως» (βλ. *μονοπώλιον*).

**μονοπώλιον** (τό)· τὸ δικαίωμα ἢ ὁ θεσμὸς τῆς πωλήσεως ἐμπορεύματος ὑπὸ ἑνὸς μόνου ὀργανισμοῦ: «τὸ μονοπώλιον τοῦ οἰνοπνεύματος, — τοῦ πετρελαίου» || τὸ κατάστημα ὅπου γίνεται ἡ πώλησις τῶν μονοπωλιακῶν εἰδῶν· || μεταφ., ἀποκλειστικὴ

Digitized by Google

κατοχή, χρησις κττ.: «ἔχει τὸ μονοπώλιον τῆς φιλοπατρίας, — τῆς ἀρετῆς, — τῆς σοφίας».

— [Ἐγκυκλ.] *Μονοπώλιον* ὑπὸ γενικωτέραν ἔννοιαν εἶναι τὸ προνόμιον, τὸ ὁποῖον κέκτηται πρόσωπον, φυσικὸν ἢ νομικόν, κατ᾽ ἀποκλεισμὸν παντὸς ἄλλου, νὰ κατασκευάζῃ ἢ καὶ νὰ πωλῇ ὡρισμένα εἴδη, ἢ νὰ προσφέρῃ ὑπηρεσίας. Τὰ μονοπώλια διακρίνονται: α᾽) Εἰς *φυσικά*, ὑφιστάμενα ἐκ περιστάσεων εὐνοουσῶν ἐξαιρετικῶς τὴν μονοπωλιακὴν παραγωγὴν ὡρισμένου εἴδους, π. χ. ναξίας σμύριδος, κορινθιακῆς σταφίδος. β᾽) Εἰς *νομικά*, δημιουργηθέντα διὰ νόμου, τὰ ὁποῖα διαστέλλομεν, ὡς ἐκ τοῦ σκοποῦ των, εἰς *ταμιευτικὰ* ἢ *φορολογικά*, ἀποβλέποντα εἰς δημιουργίαν δημοσίας προσόδου (π. χ. μονοπώλιον πυρείων), εἰς *διοικητικά*, σκοποῦντα τὴν ἐξυπηρέτησιν γενικωτέρων (κοινωνικῶν κλπ.) συμφερόντων (π. χ. μονοπώλιον νομίσματος) καὶ εἰς *μικτά*, συνδυάζοντα ἀμφοτέρους τοὺς σκοποὺς τούτους. γ᾽) Εἰς *οἰκονομικά*, τὰ ὁποῖα συνίστανται εἰς οἰκονομικὰ φαινόμενα συγκεντρώσεως, οἷα τὰ τράστ, τὰ καρτὲλ κλπ. Τὸ μονοπώλιον, ὡς ἀποκλειστικὸν δικαίωμα, περιορίζει τὴν ὑπὸ ἰδιωτῶν ἐλευθέραν ἄσκησιν βιομηχανίας ἢ ὑπηρεσίας καὶ ἀποκλείει τὸν ἀνταγωνισμόν. Ὁ καταναλωτὴς ἔχει ἀνάγκην τοῦ μονοπωλίου, ἐνῷ τὸ ἐναντίον συμβαίνει εἰς τὸ σύστημα τῆς οἰκονομικῆς ἐλευθερίας. Ὁσάκις διὰ νόμου παραχωρεῖται ἐφ᾽ ὡρισμένον χρόνον ἀποκλειστικὸν δικαίωμα, π. χ. εἰς ἑταιρείαν ἡ κατασκευὴ καὶ ἐκμετάλλευσις σιδηροδρόμου, ὁ φωτισμὸς πόλεως δι᾽ ἀεριόφωτος ἢ ἠλεκτρικοῦ φωτός, εἰς τὰς περιπτώσεις ταύτας ὑπάρχει διοικητικὸν μονοπώλιον, διότι ἡ παραχώρησις ἀποβλέπει κυρίως εἰς προσπάθειαν νὰ συμβιβασθοῦν αἱ ἀντίθετοι ἀξιώσεις τῶν πολιτῶν, οὓς ὀφείλει ἡ κυβέρνησις νὰ προστατεύῃ, καὶ τῶν κεφαλαιούχων, τῶν ἀναλαμβανουσῶν τὴν ἐπιχείρησιν, διὰ λογικῶν τιμολογίων καὶ κυβερνητικῆς ἐποπτείας, σκοπούσης τὴν ἀκριβῆ ἐκτέλεσιν τῶν συμβάσεων.

Ἡ τάσις πρὸς ἀνάληψιν ἐπιχειρήσεων βιομηχανικῶν καὶ ἄλλων ὑπὸ τοῦ κράτους, καθὼς ἐπίσης ὑπὸ δήμων, κοινοτήτων καὶ γενικῶς ὑπὸ νομικῶν προσώπων δημοσίου δικαίου, χαρακτηρίζει τὴν ἐξέλιξιν τοῦ νεωτέρου κράτους. Τὰ αἴτια δὲ τῆς τάσεως ταύτης εἶναι κυρίως: α᾽) Ταμιευτικά, ὡς ἐκ τῆς μεγίστης αὐξήσεως τῶν δημοσίων δαπανῶν καὶ τῆς δυσαναλόγου φορολογικῆς ἐπιβαρύνσεως. Πρὸς ἀποφυγὴν δὲ ὑπερμέτρου ἐξογκώσεως αὐτῆς, τὸ κράτος ἐπιζητεῖ νὰ δημιουργήσῃ ἔσοδα ὡς βιομήχανος καὶ ἔμπορος. Πολιτικὰ δὲ κόμματα, ἰδίως σοσιαλιστικά, τὸ ἐξωθοῦσιν εἰς τοῦτο, ἀμυνόμενα ὑπὲρ τῶν ὑφισταμένων μονοπωλίων καὶ ἐπιδιώκοντα νὰ δημιουργήσουν καὶ νέα, μεταλλείων, γαιανθράκων, ἀσφαλειῶν, οἰνοπνεύματος, σακχάρεως, καφὲ καὶ ἄλλων εἰδῶν, ἰδίως εἰσαγομένων ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ. Τὰ μονοπώλια ὅμως εἶναι ἐπιβλαβῆ εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς ἐθνικῆς οἰκονομίας, ὡς ἀποκλείοντα τὰ πλεονεκτήματα τοῦ ἐλευθέρου συναγωνισμοῦ, πολλαπλασιάζοντα τὴν γραφειοκρατίαν καὶ τοὺς δημοσίους ὑπαλλήλους καὶ ἀπαιτοῦντα δαπάνας κατὰ πολὺ ἀνωτέρας τῆς κοινῆς βιομηχανίας καὶ ἐμπορίας. β᾽) Κοινωνικά, λόγῳ τῆς ἐχθρότητος κατὰ τῆς κεφαλαιοκρατίας καὶ τῶν μεγάλων ἑταιρειῶν, εἰς τὰς ὁποίας συγκεντροῦνται αἱ εὐρύτεραι τῶν ἐπιχειρήσεων, ἀποφέρουσαι μεγάλα κέρδη καὶ μερίσματα, ἐνῷ τὸ κράτος, ἀναλαμβάνον τὴν μονοπωλιακὴν ἄσκησίν των, ἐξασφαλίζει τὰ κέρδη των ὑπὲρ τοῦ λαοῦ καὶ ἐφαρμόζει οὕτω κρατικὸν σοσιαλισμόν, ὅστις ὅμως δέον νὰ θεωρηθῇ μᾶλλον ὡς ἀντίδρασις κατὰ τοῦ σοσιαλισμοῦ, ὡς ἐπὶ παραδείγματι ἐγένετο ἐν Πρωσσίᾳ. γ᾽) Πολιτικά, ὡς ἐκ τῆς τάσεως τῶν κυβερνήσεων νὰ ἐπεκτείνωσι τὴν δρᾶσίν των πρὸς ἀπόκτησιν μείζονος ἐκλογικῆς ἐπιρροῆς διὰ τῆς κρατικοποιήσεως τῶν σιδηροδρόμων κλπ., καθὼς ἐπίσης διὰ τῆς ὑπὸ δήμων καὶ κοινοτήτων κατασκευῆς καὶ ἐκμεταλλεύσεως τροχιοδρόμων, ἠλεκτροφωτισμοῦ κλπ. Μεταξὺ τῶν κρατικῶν μονοπωλίων καταλέγονται καὶ τὰ ταχυδρομεῖα, οἱ τηλέγραφοι καὶ τὰ τηλέφωνα, τὰ ὁποῖα ὅμως εἰς πάντα τὰ κράτη εἶναι διωργανωμένα ὡς δημόσιαι ὑπηρεσίαι, ἀποβλέπουσαι κυρίως εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν κοινωνικῶν ἀναγκῶν καὶ οὐχὶ εἰς ταμιευτικοὺς σκοπούς. Εἴς τινας χώρας οἱ σιδηρόδρομοι ἀνήκουσιν εἰς τὸ κράτος καὶ ἐκμεταλλεύονται ἀπ᾽ εὐθείας παρ᾽ αὐτοῦ, ὡς συμβαίνει καὶ ἐν Ἑλλάδι διὰ τοὺς ἑλληνικοὺς σιδηροδρόμους (γραμμὴ Πειραιῶς — Ἀθηνῶν — Λαρίσης — Θεσσαλονίκης κλπ.). Καὶ τούτων τὸ μονοπώλιον λόγον ἔχει τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν κοινωνικῶν ἀναγκῶν. Ἐπίσης ἐν Ἑλλάδι τὰ μονοπώλια τῆς σακχαρίνης, τῶν ναρκωτικῶν φαρμάκων καὶ τῆς κινίνης τοῦ κράτους, λόγον ἔχουσι τὴν προστασίαν τῆς δημοσίας ὑγείας. Εἰς τὰ ταμιευτικὰ μονοπώλια (monopoles fiscaux) τὸ κράτος ἐπιφυλάσσει ὑπὲρ ἑαυτοῦ τὸ μονοπώλιον εἴτε τῆς κατασκευῆς, εἴτε τῆς πωλήσεως εἴδους, εἴτε καὶ ἀμφοτέρων τούτων, ἢ τῆς προσφορᾶς ὑπηρεσίας (π. χ. μονοπώλιον μεταφορῶν), αὐξάνον τὴν τιμὴν τῆς παραγωγῆς τοῦ εἴδους ἢ τὴν ἀξίαν τῆς ὑπηρεσίας, διὰ ἐπὶ πλέον ποσοῦ, τὸ ὁποῖον ἐνέχει τὴν ἔννοιαν τοῦ φόρου (ἐμμέσου καταναλώσεως).

Τὰ μονοπώλια ταῦτα παρέχουσι τὸ πλεονέκτημα τῆς εὐχερεστέρας εἰσπράξεως ἐξ αὐτῶν κέρδους, δηλαδὴ τοῦ φόρου, ἄνευ πιέσεως τοῦ λαοῦ καὶ ἄνευ μεγάλης δαπάνης εἰσπράξεως καὶ ἐπὶ πλέον συντελοῦσι σπουδαίως εἰς τὴν πρόληψιν καὶ δίωξιν τοῦ λαθρεμπορίου τῶν εἰδῶν τοῦ μονοπωλίου, διὰ τῶν ἐπ᾽ αὐτῶν ἐπιτιθεμένων σημάτων τοῦ μονοπωλίου, δι᾽ ὧν τὰ εἴδη ταῦτα διακρίνονται εὐχερῶς τῶν λαθραίως ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ εἰσαγομένων. Ἐν Ἑλλάδι, ἐκτὸς τοῦ ἅλατος, τὰ εἴδη μονοπωλίων, σχεδὸν πάντα, εἰσάγονται ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ. Ὡς ἐκ τοῦ λίαν περιωρισμένου κύκλου τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μονοπωλίων τούτων εἰς ἐλάχιστα μόνον εἴδη ἢ ὑπηρεσίας, δὲν παραβλάπτεται ἐξ αὐτῶν ἡ ἀνάπτυξις τῆς βιομηχανίας καὶ τοῦ ἐμπορίου. Διακρίνονται δὲ τὰ μονοπώλια ταῦτα: α᾽) Εἰς μονοπώλια κατασκευῆς καὶ πωλήσεως, ὁσάκις τὸ κράτος ἐπιφυλάσσει εἰς ἑαυτὸ τὸ ἀποκλειστικὸν δικαίωμα κατασκευῆς, εἰσαγωγῆς καὶ πωλήσεως τοῦ εἴδους. β᾽) Εἰς μονοπώλια κατασκευῆς, ὁσάκις ἡ κατασκευὴ μόνον εἶναι ἀποκλειστικὸν δικαίωμα τοῦ κράτους, ὅπερ διαθέτει τὸ εἶδος πρὸς πάντα βουλόμενον νὰ τὸ πωλῇ λιανικῶς, ὡς εἶναι παρ᾽ ἡμῖν τὰ μονοπώλια ἅλατος, πυρείων κλπ. γ᾽) Εἰς μονοπώλια πωλήσεως, ἄνευ μονοπωλίου κατασκευῆς, ὁσάκις πᾶς τις δύναται νὰ κατασκευάζῃ τὸ εἶδος, ἀλλ᾽ ὀφείλει νὰ τὸ πωλῇ ἀποκλειστικῶς πρὸς τὸ κράτος, μόνον δικαιούμενον νὰ τὸ διαθέτῃ πρὸς πώλησιν. Ἡ ἐκμετάλλευσις μονοπωλίου δυνατὸν νὰ γίνηται εἴτε δι᾽ αὐτεπιστασίας παρὰ τοῦ κράτους διὰ δημοσίων ὑπαλλήλων, εἴτε δι᾽ ἐκχωρήσεως τῆς ἐκμεταλλεύσεώς του εἰς ἰδιώτην ἢ ἑταιρείαν ὑπὸ ὡρισμένους ὅρους, π. χ. ἐπὶ ἀμοιβῇ ἐπὶ τῆς τιμῆς τῆς πωλήσεως ἢ ἀντὶ μισθώματος. Ἑκάτερος τῶν τρόπων τούτων παρουσιάζει ἄτοπα, ἀλλ᾽ ἡ ὑπὸ τοῦ κράτους ἄμεσος ἐκμετάλλευσις εἶναι συνήθως ἐκτεθειμένη εἰς ἐπεμβάσεις πολιτικάς, ἐπαγομένας ἐξάρθωσιν τῆς ὑπηρεσίας καὶ δυσαναλόγους δαπάνας.

Ἐν Ἑλλάδι ταμιευτικὰ μονοπώλια, φερόμενα ἐν κεφ. 9 τοῦ γενικοῦ προϋπολογισμοῦ τῶν ἐσόδων τοῦ κράτους, εἶναι: 1) σιγαροχάρτου, 2) παιγνιοχάρτων, 3) πυρείων, 4) πετρελαίου, 5) ἅλατος, 6) σακχαρίνης, 7) κινίνης τοῦ κράτους καὶ 8) ναρκωτικῶν φαρμάκων. Ὡς μονοπώλιον κράτους δέον νὰ θεωρηθῇ καὶ ἡ παρ᾽ αὐτοῦ ἀποκλειστικῶς ἐνεργουμένη ἐκμετάλλευσις τῆς ναξίας σμύριδος, ἥτις τυγχάνει καὶ φυσικὸν μονοπώλιον τῆς νήσου Νάξου καὶ τῆς ὁποίας ἡ πρόσοδος εἶναι, μετὰ τῶν λοιπῶν μονοπωλίων (ἅλατος, πυρείων, παιγνιοχάρτων καὶ σιγαροχάρτου), ὑπέγγυος εἰς τὸ δημόσιον χρέος, εἰσπραττομένη διὰ τῆς ἑταιρείας διαχειρίσεως. Ἐπίσης καὶ ἡ πρόσοδος τοῦ μεταλλείου Χάλαρα καί τινα ἄλλα ἐκ τῶν ἐν κεφ. 22 τοῦ αὐτοῦ προϋπολογισμοῦ φερομένων ὑπὸ τὸν τίτλον «πρόσοδοι ἐκ τῆς περιουσίας τοῦ κράτους» δύνανται νὰ χαρακτηρισθῶσιν ὡς μονοπωλιακαὶ ἐκμεταλλεύσεις τοῦ κράτους. Ἐκ τῶν μονοπωλίων τὸ ἀρχαιότερον εἶναι τὸ τοῦ ἅλατος, διεπόμενον ὑπὸ τοῦ διατάγματος τῆς 11 Ἀπριλίου 1833 «περὶ τῶν ἐθνικῶν ἀλυκῶν» καὶ νεωτέρων νόμων. Τὰ λοιπὰ μονοπώλια εἰσήχθησαν πολὺ βραδύτερον, τοῦ μὲν σιγαροχάρτου διὰ τοῦ νόμου ͵ΑΡΚΔ΄ τοῦ 1883, τῶν δὲ χημικῶν πυρείων, τοῦ πετρελαίου, τῶν παιγνιοχάρτων καὶ τοῦ σιγαροχάρτου διὰ τῶν νόμων ͵ΑΡΞΗ΄, ͵ΑΡΞΣΤ΄, ͵ΑΡΞΖ΄ καὶ ͵ΑΡΚΔ΄ τοῦ 1884, προελθόντων ἐκ τοῦ δημοσιονομικοῦ συστήματος τοῦ τότε πρωθυπουργοῦ καὶ ὑπουργοῦ τῶν Οἰκονομικῶν Χ. Τρικούπη, χρησιμοποιηθέντων δὲ παρ᾽ αὐτοῦ ὡς ὑπεγγύων ἐσόδων εἰς τὸ δάνειον τοῦ 1887, τὸ γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «τῶν μονοπωλίων», διότι, πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς ὑπηρεσίας του, συνεστάθη ἡ «Ἑταιρεία τῶν μονοπωλίων», διὰ συμβάσεως γενομένης δυνάμει τοῦ νόμου ͵ΑΥΟΔ΄ τοῦ 1887. Ἡ ἑταιρεία αὕτη, μετονομασθεῖσα διὰ τοῦ νόμου ͵ΒΦΙΘ΄ τοῦ 1898 περὶ διεθνοῦς ἐλέγχου καὶ τῆς δευτέρας συμβάσεως, τῆς γενομένης κατὰ τὸ 1898, δυνάμει τοῦ νόμου τούτου, εἰς «Ἑταιρείαν τῶν εἰς τὸ δημόσιον χρέος ὑπεγγύων προσόδων», λειτουργεῖ σήμερον συμφώνως πρὸς τρίτην σύμβασιν, κυρωθεῖσαν διὰ διατάγματος τοῦ 1925.

Ἡ ἑταιρεία διενεργεῖ τὴν πώλησιν τῶν εἰδῶν τῶν μονοπωλίων τούτων, ὡς καὶ τῆς ναξίας σμύριδος, ἐπ᾽ ἀμοιβῇ ὁριζομένῃ διὰ τῆς συμβάσεως, καὶ μετ᾽ ἀφαίρεσιν τοῦ ποσοῦ αὐτῆς καταθέτει τὰς εἰσπράξεις εἰς τὴν Ἐθνικὴν Τράπεζαν διὰ λογαριασμὸν τῆς Διεθνοῦς Οἰκονομικῆς Ἐπιτροπῆς, ἥτις διαθέτει αὐτὰς πρὸς ἐκτέλεσιν τῆς ὑπηρεσίας τοῦ δημοσίου χρέους, συμφώνως πρὸς τοὺς σχετικοὺς νόμους καὶ κανονισμούς. Διὰ νεωτέρων νόμων συνεστάθη τὸ μονοπώλιον τῆς σακχαρίνης (νόμος ͵ΓΦΙΑ΄ ὑπ᾽ ἀριθ. 3511 τοῦ 1910), τῶν ναρκωτικῶν φαρμάκων (Ν. Δ. 14 Ὀκτωβρίου 1925) καὶ τῆς κινίνης τοῦ κράτους, ἥτις, κατὰ τὸν ἀρχικὸν νόμον ͵ΓΣΝΒ΄ τοῦ 1908, δὲν ἀπετέλει μονοπώλιον, ἀλλὰ κατεστάθη τοιοῦτον διὰ νόμου ψηφισθέντος κατὰ τὸ 1931. Ἐπίσης, διὰ νεωτέρου νόμου, ψηφισθέντος κατὰ τὸ 1930, εἰσήχθη καὶ τὸ μονοπώλιον βιβλίων ἀντιγραφῆς ἐπιστολῶν, χάριν προστασίας τοῦ μονοπωλίου τοῦ σιγαροχάρτου καὶ τοῦ καπνοῦ, διότι ὁ λεπτὸς χάρτης τῶν βιβλίων τούτων ἐχρησιμοποιεῖτο λαθραίως ἀντὶ σιγαροχάρτου.

Αἱ τιμαὶ τῆς **πωλήσεως τῶν εἰδῶν** τῶν μονοπωλίων εἶναι ὡς ἑξῆς: **Τοῦ ἅλατος** δρ. 2,10 ἀνὰ χιλιόγραμμον, ἐκτὸς τῶν νήσων **Ζακύνθου**, Λευκάδος καὶ Σάμου, ὅπου τιμᾶται 1,40 εἰς τὴν πρώτην καὶ 1,65 εἰς τὰς ἄλλας. **Τοῦ πετρελαίου** (τοῦ μονοπωλίου τούτου ὑφισταμένου μόνον εἰς τὰς ἐπαρχίας τὰς ἀποτελούσας τὸ πρὸ τοῦ ἔτους 1912 κράτος) δρ. 380 ἀνὰ κιβώτιον ἐκ δύο δοχείων ἐκ λευκοσιδήρου, χωρητικότητος πέντε γαλλονίων ἀμερικανικῶν ἢ καθαροῦ βάρους πετρελαίου ἑκάστου δοχείου ὀκάδων 11 ½ (μετρικῶν ὀκάδων 14 καὶ 314 δραμίων). **Τῶν πυρείων** δρ. 1 ἀνὰ κυτίον τῶν 50 ξυλίνων πυρείων (σουηδικῶν). **Τῶν παιγνιοχάρτων** δρ. 25,50 ἀνὰ δέσμην 1ης καὶ 2ας κλάσεως τῶν 52 φύλλων, δρ. 18.50 ἀνὰ δέσμην 2ας καὶ 4ης κλάσεως τῶν 32 φύλλων καὶ δρ. 50,50 ἀνὰ δέσμην πολυτελείας 5ης καὶ 6ης κλάσεως τῶν 52 καὶ 32 φύλλων. **Τοῦ σιγαροχάρτου** δρ. 4 ἀνὰ χιλιόγραμμον καπνοῦ, ἀντιστοιχοῦν πρὸς 880 φυλλάρια διὰ συνήθη σιγαρέττα καὶ δρ. 4,57 ἀνὰ χιλιόγραμμον καπνοῦ, ἀντιστοιχοῦν πρὸς 1040 φυλλάρια διὰ λεπτὰ σιγαρέττα (ντάμες). **Τῆς σακχαρίνης** δρ. 6 ἀνὰ φιαλίδιον. **Τῆς δὲ κινίνης** δὲν ὑπάρχει τιμολόγιον διαφόρων εἰδῶν, καθὼς ἐπίσης καὶ τῶν ναρκωτικῶν φαρμάκων.

Τὸ ἐκ τῶν μονοπωλίων ἔσοδον, κατὰ τὸν προϋπολογισμὸν τῆς χρήσεως 1931—1932, ἔχει οὕτω: σιγαραχάρτου δρ. 20.000.000, σιγοροχάρτου πωλουμένου εἰς καπνοπαραγωγοὺς 17 ἑκατομμύρια, βιβλίων ἀντιγραφῆς ἐπιστολῶν 500.000, παιγνιοχάρτων 21 ἑκατ., πυρείων 130 ἑκατ., πετρελαίου 167.200.000, ἅλατος 126 ἑκατ., σακχάρεως 90.000, κινίνης τοῦ κράτους 21 ἑκατ., ναρκωτικῶν 2.145.000. Σύνολον 504.935.000.

**Ἡ κατανάλωσις τῶν εἰδῶν** μονοπωλίων ἐν Ἑλλάδι κατὰ τὰ ἔτη 1929 καὶ 1928 ἀνῆλθεν εἰς χιλιόγραμμα, ὡς ἑξῆς: **Ἅλατος** τοῦ 1929 εἰς 59.006.918, τοῦ 1928 εἰς 58.608.649 καὶ κατὰ κεφαλὴν τοῦ 1929 εἰς χιλιογρ. 9.509 καὶ δρ. 14.155 καὶ τοῦ 1928 εἰς χιλιογρ. 9.445 καὶ δρ. 14.055. **Πετρελαίου** τοῦ 1929 εἰς 441.219 ½ κιβώτια καὶ κατὰ κεφαλὴν εἰς χιλιόγρ. 3,671 καὶ δρ. 34,50 καὶ τοῦ 1928 εἰς χιλιόγρ. 3,672 καὶ δρ. 33,89. **Πυρείων**, τοῦ 1929 εἰς κυτία 126.716.791 καὶ κατὰ κεφαλὴν εἰς πυρεῖα 1,123 καὶ δρ. 14,92 καὶ τοῦ 1928 εἰς κυτία 88.482.804 καὶ κατὰ κεφαλὴν εἰς πυρεῖα 1.074 καὶ δρ. 14,27. **Παιγνιοχάρτων**, τοῦ 1929 εἰς δέσμας 777.056 καὶ κατὰ κεφαλὴν 0,125 καὶ δραχ. 2,22 καὶ τοῦ 1928 εἰς δέσμας 788.346 καὶ κατὰ κεφαλὴν 0,126 καὶ δρ. 2,29.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Εἰσηγητικὴ ἔκθεσις ἐπὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ τῆς χρήσεως 1931—1932, σελ. 245—252 καὶ 293 καὶ ...—Compte-rendu des opérations de la Commission financière internationale pour l'année 1929.—Συλλογὴ νόμων περὶ μονοπωλίων, ὡς ἰσχύουσι μέχρι τέλους Σεπτεμβρίου 1929 (ἔκδ. Ὑπουργ. Οἰκον.).—*Δ. Παναγιωτοπούλου*, Ἔκθεσις ἐπὶ τῆς κινίνης, τῶν μονοπωλίων καὶ τῶν φόρων καταναλώσεως 1914 καὶ ἐφεξῆς.—*Φ. Α. Ζαΐμη*, Ταμιευτικὰ ἢ φορολογικὰ μονοπώλια (1922).—*Δ. Βουγιούκα*, Τὰ μονοπώλια τοῦ κράτους καὶ ἡ διαχείρισις αὐτῶν (1895).—*Γ. Ν. Κοφινᾶ*, Περὶ ἁλυκῶν καὶ ἅλατος ἐν Ἑλλάδι (σελ. 301—535 τοῦ α΄ τόμου τοῦ Δελτίου τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν, 1908).

Γ. Ν. ΚΟΦΙΝΑΣ

**μονοπωλῶ** (*—έω*)· ἐγὼ μόνος πωλῶ, ἔχω τὸ μονοπώλιον ἐμπορεύματός τινος: «αἱ φωτιστικαὶ ὗλαι μονοπωλοῦνται».

**μονορρούφι** (τό)· δημοτ., διὰ μιᾶς ῥοφήσεως, ἄνευ διακοπῆς τῆς ῥοφήσεως, ἀπνευστί: «πίνει τὸ κρασὶ μονορρούφι»· || μεταφ. ἐπὶ ὕπνου: «κοιμᾶται ἀπὸ τὸ πρωῒ μονορρούφι» ἄνευ διακοπῆς.

**μονορχιδία** (ἡ). Καλεῖται, ἐπὶ τοῦ ἄρρενος, ἡ παθολογικὴ κατάστασις, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐντὸς τοῦ ὀσχέου ὑπάρχει εἷς μόνον ὄρχις, τοῦ ἑτέρου ὄντος ἀτροφικοῦ ἢ μὴ κατελθόντος ἐν τῷ ὀσχέῳ καὶ παραμείναντος ἐν τῇ κοιλίᾳ. Ὁ μὴ κατελθὼν ὄρχις παραμένει φυσιολογικὸς μέχρι τοῦ 20οῦ ἔτους τῆς ἡλικίας, δὲν παράγει ὅμως σπερματοζωάρια, ἀπὸ δὲ τοῦ 20οῦ ἔτους καὶ πέραν ὑφίσταται ἐξαλλαγὴν ἢ ἐκφύλισιν ἰνώδη. Ἕνεκα τούτου παρίσταται ἀνάγκη ἵνα, διὰ χειρουργικῆς ἐπεμβάσεως, καταβιβασθῇ ὁ ὄρχις εἰς τὴν φυσιολογικὴν αὐτοῦ θέσιν πρὸ τοῦ 20οῦ ἔτους τῆς ἡλικίας, καθότι ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει, εἶναι δυνατὸν νὰ ἐπέλθῃ βουβωνοκήλη ἢ καὶ περιτονῖτις.

Μ. Ν. Μ.

**μόνορχις**, *—εως* (ὁ)· ὁ ἔχων ἕνα μόνον ὄρχιν: «μόνορχις ἵππος».

**μόνος**, *—η*, *—ον*· ἄνευ ἄλλου, μοναχός: «κάθημαι—, ζῶ—, ταξιδεύω μόνος»· || δημοτ. μετὰ τῆς προσωπικῆς ἀντων. *μου*, *σου*, *τοῦ*, *μας*, *σας*, *των* ἢ *τους*: «ἦρθα μόνος μου», «θὰ φύγουν μόνοι τους»· || καὶ πρὸς δήλωσιν αὐτοπαθείας: «μόνος του σκοτώθηκε», «μόνοι τους φταῖνε»· || «μόνος του τὸ ζήτησε» ἀφ᾽ ἑαυτοῦ· || φρ. «ἀπὸ μόνος του, — μόνη της» ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, μηδενὸς κελεύσαντος: «ἀπὸ μόνος μου τὸ ἔκαμα» —Ἐπίρρ. **μόνον** (βλ. λ.).

**μονός**, *—ή*, *—ό*· δημοτ., ἁπλοῦς, μοναπλοῦς, ἀντίθ. *διπλός*, *τριπλὸς* κτλ. «μονὴ ἡ κλωστή»: παροιμ. «τοῦ φτωχοῦ τὸ σκοινὶ μονὸ δὲ φτάνει, διπλὸ φτάνει καὶ περισσεύει»· || ἐπὶ ἀριθμοῦ, ὁ **περιττός**, ἀντίθ. ζυγός: «ὁ ἕνας θὰ πάρῃ τοὺς μονοὺς κι᾽ ὁ ἄλλος τοὺς

Digitized by Google

ζυγούς»· || παιδιά: «μονὰ ἢ ζυγά» ὅταν τις, κρύπτων εἰς τὴν παλάμην του ἀριθμόν τινα ὁμοειδῶν πραγμάτων, ἐρωτᾷ τὸν συμπαίκτην νὰ δηλώσῃ τὸ ἕτερον τῶν δύο· || μεταφ. ἐπὶ ἀνθέων: «μονὰ γαρύφαλα» καὶ «γαρυφαλιὰ μονή»· ὁμοίως: «μονὲς μαργαρῖτες—βιολέτες» ὅταν ἡ στεφάνη εἶναι ἁπλῆ, ἀντίθ. «διπλᾶ γαρύφαλα», «διπλὲς μαργαρῖτες, — βιολέτες».

**μονασακχαράσαι** (αἱ) *[Χημ.]*· βλ. *ἔνζυμα*.

**μονοσακχαρῖται** (οἱ), ἢ *μονόζαι [ Ὀργ. Χημ.]*. Καλοῦνται τὰ ἁπλούστερα τῶν σακχάρων, τὰ ὁποῖα δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ὑδρολυθοῦν εἰς ἀκόμη ἁπλούστερα σάκχαρα. Δι' ἑνώσεως πλειόνων μορίων μονοσακχαριτῶν ἀποσπάσει ὕδατος σχηματίζονται τὰ συνηθέστερα σάκχαρα *(πολυσακχαρῖται)*. Διακρίνονται ἀναλόγως τῆς ἑνώσεως τῆς καρβονυλικῆς ὁμάδος εἰς ἀλδεϋδαλκοόλας ἢ ἀλδόζας καὶ κετοναλκοόλας ἢ κετόζας. Εἰς τοὺς μονοσακχαρίτας ἀνήκει ἡ γλυκόζη, ἡ φρουκτόζη κτλ. (βλ. καὶ λ. *σάκχαρα* ἢ *ὑδατάνθρακες*). Σ. Γ.

**μονοσάνδαλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ φορῶν ἓν μόνον σανδάλιον, τὸ τοῦ ἑτέρου ποδός.

**μονόσειρον** (τὸ) (κοιν. *μὲ μιὰ μπίντα*). Ἱστίον φέρον, πρὸς ἐλάττωσιν τῆς ἐπιφανείας του ἐν περιπτώσει κακοκαιρίας, μίαν μόνην σειράν. Τοιαῦτα εἶναι τὰ ἡμιόλια γενικῶς καὶ τὰ μείζονα ἱστία τῶν ἀπὸ μυοδρόμωνος καὶ κάτω ἱστιοφόρων ἢ ἀμφικινήτων. Σ. Ε. Λ.

**μονοσέπαλος** (ὁ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται ὁ κάλυξ, ὅστις φέρει ἡνωμένα μεταξύ των σέπαλα.

**μονοσήμαντος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Λέγεται ἐπὶ παραστάσεως συμβόλων μαθηματικῶν, ὅταν τὸ ὑπ' αὐτῆς παριστώμενον εἶναι ἓν μόνον· π.χ. α καὶ ν ὄντων φυσικῶν ἀριθμῶν αἱ παραστάσεις

$$\alpha + \nu \quad \alpha\nu \quad \alpha^{\nu}$$

εἶναι μονοσήμαντοι, ἐνῷ ἡ $\sqrt[\nu]{\alpha}$ δὲν εἶναι μονοσήμαντος, διότι πᾶς ἀριθμὸς ἔχει ν ρίζας $\nu^{ου}$ βαθμοῦ. Ὁμοίως, ἐὰν ἐπ' εὐθείας ληφθῇ τὸ σημεῖον Ο ὡς

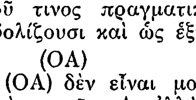


ἀφετηρία, τότε πᾶν σημεῖον Α τῆς εὐθείας παρίσταται ὑπὸ ἀριθμοῦ τινος πραγματικοῦ α, ὃν ἐν τῇ γεωμετρίᾳ συμβολίζουσι καὶ ὡς ἑξῆς:

$$(ΟΑ)$$

ἀλλ' ἡ παράστασις (ΟΑ) δὲν εἶναι μονοσήμαντος, διότι παριστᾷ καὶ τὸ σημεῖον Α, ἀλλὰ καὶ τὸ εὐθύγραμμον τμῆμα ΟΑ. Εἰδικὴ περίπτωσις μονοσημάντου εἶναι ἡ *μονότιμος* συνάρτησις. Ν. Γ.

**μονόσημος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον σῆμα· || ἐπὶ λέξεων, καὶ *μονοσήμαντος*, ἡ ἔχουσα μίαν μόνον σημασίαν.

**μονοσθενὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τό)· βλ. *μονατομικός*.

**μονόσιτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἅπαξ τῆς ἡμέρας σιτούμενος, ὁ λαμβάνων μίαν μόνον τροφὴν καθ' ἑκάστην, συνήθως τὴν ἑσπερινήν.

**μονοσιτῶ (—έω)**· σιτοῦμαι, ἐσθίω ἅπαξ τῆς ἡμέρας, συνήθως δειπνῶ μόνον, λαμβάνω τὴν ἑσπερινὴν μόνον τροφήν· || ἐσθίω μόνος, ἄνευ ἄλλων, ἄλλως *μονοφαγῶ*.

**μονόσπερμοι** (οἱ) *[Βοτ.]*. Καλοῦνται οἱ καρποί, οἵτινες περικλείουσιν ἓν μόνον σπέρμα.

**Μονόσπιτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Γιαννίσης (Γιάντσιστας) τῆς ἐπαρχίας Ἀμαθίας (Βεροίας) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 541. Χ. Δ.

**μονόστεγος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνον στέγην, ἓν πάτωμα: «μονόστεγος οἰκία».

**μονόστεος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ συγκείμενος ἐξ ἑνὸς μόνου ὀστοῦ.

**μονόστηλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν στήλην, ὁ ἐκ μιᾶς στήλης ἀποτελούμενος, ὁ καταλαμβάνων μίαν μόνην στήλην: «μονόστηλον κείμενον», «μονόστηλος τίτλος» ἐν τῇ τυπογραφίᾳ, ὁ τίτλος ἄρθρου ἢ εἰδήσεως ὁ στοιχειοθετούμενος εἰς πλάτος μιᾶς μόνον στήλης, ἐπὶ σελίδων μορφουμένων ἐκ πλειόνων τῆς μιᾶς στηλῶν, «μονόστηλο πλασάρισμα» ἡ προτίμησις μονοστήλου διατάξεως· ἀντίθ. *δίστηλος, τρίστηλος ..., ὁλοσέλιδος*.

**—μονόστηλον *πλοῖον***, ἢ καὶ ***μονάρμενον*** (κοιν. *μονοκάταρτο*) *[Ναυτ.]*. Τὸ πλοῖον τὸ ἔχον μίαν μόνην στήλην καὶ συνεπῶς ἕνα μόνον ἱστόν, οἷα εἶναι πολλοὶ κέρκουροι καὶ λέμβοι. Σ. Ε. Λ.

**μονόστιχος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἐξ ἑνὸς μόνου στίχου ἀποτελούμενος: «μονόστιχον ἐπίγραμμα».

**μονοστομίδαι** (οἱ) (Monostomidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια τρηματωδῶν σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατελμίνθων*, περιλαμβάνουσα μικροτάτους σκώληκας ζῶντας παρασιτικῶς ἐντὸς τοῦ ὀργανισμοῦ διαφόρων ζῴων καὶ ἰδίως θηλαστικῶν. Γνωστότερον γένος τῆς οἰκογενείας εἶναι τὸ *μονόστομον* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μονόστομον** (τὸ) (Monostomum) *[Ζῳολ.]*. Γένος σκωλήκων τρηματωδῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μονοστομιδῶν*, περιλαμβάνον πλεῖστα εἴδη ἐνδιαιτώμενα παρασιτικῶς ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ διαφόρων ζῴων. Δ. Ν. Π.

**μονοστράτηγος** (ὁ) *[Βυζ.]*. Ἐκαλεῖτο ἐνίοτε ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ὁ ἀρχιστράτηγος ἐκστρατείας τινός. Ν. ΚΛΣ

**μονόστυλος** (ὁ) (Monostylus) *[Ζῳολ.]*. Γένος τρηματωδῶν σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατελμίνθων* τῆς οἰκογενείας τῶν *θωρακιδῶν*, περιλαμβάνον μικροτάτους ζωϊκοὺς ὀργανισμούς, ὧν πλεῖστοι ἐνδιαιτῶνται παρασιτικῶς ἐπὶ διαφόρων ὑδροβίων φυτῶν. Δ. Ν. Π.

**μονοσυλλαβικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀποτελούμενος ἐκ μονοσυλλάβων λέξεων.

**— μονοσυλλαβικαὶ** ***γλῶσσαι*** (langues monosyllabiques, einsilbige Sprachen). Καλοῦνται αἱ γλῶσσαι, αἱ ὁποῖαι ἀποτελοῦνται ἐν ὅλῳ ἢ κατὰ μέγα μέρος ἐκ λέξεων μονοσυλλάβων, γυμνῶν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον καὶ ἐστερημένων καταλήξεων, ἑπομένως δὲ καὶ κλίσεως. Αἱ λέξεις αὗται τῶν εἰρημένων γλωσσῶν δύνανται νὰ λαμβάνουν ποικίλας σημασίας καὶ νὰ χρησιμεύουν ἄλλοτε μὲν ὡς ὀνόματα, ἄλλοτε ὡς ῥήματα καὶ ἐπιρρήματα κτλ., ἀναλόγως τῆς ἑκάστοτε ἐν τῇ προτάσει θέσεώς των ἢ τῶν συμφραζομένων, ἐν δὲ τῇ Κινεζικῇ καὶ ἀναλόγως τοῦ ἑκάστοτε ᾠδικοῦ τόνου των, ὁ ὁποῖος εἰς τὴν γλῶσσαν ταύτην χρησιμεύει οὐχὶ ἁπλῶς ὡς ῥητορικὸν μέσον—ὅπως παρ' ἡμῖν—ἀλλὰ πρὸς δήλωσιν σημασιολογικῶν διαφορῶν. Οὕτω λ. χ. ἡ κινεζικὴ λέξις ta ὡς ῥῆμα μὲν σημαίνει «μεγαλύνειν» ἢ «εἶναι μέγαν», ὡς οὐσιαστικὸν τὸ «μέγεθος», ὡς ἐπίθετον τὸν «μέγαν», καὶ ὡς ἐπίρρημα «μεγάλως, λίαν». Εἴς τινας τῶν μονοσυλλαβικῶν γλωσσῶν τὴν ἔλλειψιν μορφολογικῶν στοιχείων, ἤτοι κλιτικῶν καταλήξεων, ἀναπληρώνουν πλὴν τῶν μνημονευθέντων ἀνωτέρω γλωσσικῶν μέσων καὶ διάφορα μόρια, τουτέστι λεξίδια κενὰ σημασίας, χρησιμεύοντα ἁπλῶς πρὸς δήλωσιν γραμματικῶν σχέσεων.

Ἡ μονοσυλλαβία τῆς ῥηθείσης γλωσσικῆς ὁμάδος—περιλαμβανούσης τὴν Κινεζικήν, Σιαμικήν, Βιρμανικήν, Θιβετικὴν κτλ.—δὲν φαίνεται ὅτι ἐχαρακτήριζεν ἀνέκαθεν τὰς γλώσσας ταύτας, πολὺ δὲ ὀλιγώτερον τὴν κοινὴν ἀρχικὴν γλῶσσαν, ἐκ τῆς ὁποίας προῆλθον αὗται, ἄν, ἐννοεῖται, εἶναι ἀληθὴς ἡ ἐκφρασθεῖσα ἀλλ' ὄχι ἀκόμη ἐπιστημονικῶς ἐξακριβωθεῖσα γνώμη περὶ τῆς κοινῆς καταγωγῆς των. Ὅλως τοὐναντίον φαίνεται ὅτι καὶ τῶν γλωσσῶν τούτων αἱ λέξεις εἶχόν ποτε διάφορα προθήματα καὶ ἐπιθήματα, δι' ὃ καὶ ἦσαν ὑπερμονοσύλλαβοι. Καὶ τοιαῦται εἶναι ἀκόμη καὶ σήμερον πολλαὶ λέξεις μερικῶν ἀρχαϊκωτέρων διαλέκτων, ἰδίως τῆς θιβετικῆς καὶ βιρμανικῆς γλώσσης, αἱ ὁποῖαι διασῴζουν τὰ προθήματα ba—, da—, ga—, sa— κτλ., καταλήξαντα εἰς ἄλλα νεωτερικώτερα ἰδιώματα εἰς b—, d—, g—, s— κτλ. διὰ τῆς ἀποβολῆς τοῦ ἑπομένου φωνήεντος a. Ἐνωρίτερον ἀπὸ ὅλας τὰς ἄλλας μονοσυλλαβικὰς γλώσσας φαίνεται ὅτι ἐξηφανίσθησαν τὰ προθήματα καὶ ἐπιθήματα εἰς τὴν Κινεζικήν, εἰς τὴν ὁποίαν — κατὰ τὰ πορίσματα τῆς ἱστορικῆς γραμματικῆς τῆς περὶ ἧς ὁ λόγος γλώσσης—καταλήξεις καὶ προθήματα ἐξέλιπον ἤδη πρὸ τοῦ ΣΤ' αἰῶνος μ. Χ., ἀποτριβέντων καὶ ἀποβληθέντων βαθμηδὸν τῶν κυριωτέρων φθογγικῶν στοιχείων των. Οὕτως ἡ γλῶσσα τῶν Σινῶν ἀποτελεῖ τὸν τελειότερον καὶ χαρακτηριστικώτερον τύπον μονοσυλλαβικῆς γλώσσης.

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

**μονοσύλλαβος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἀποτελούμενος ἐκ μιᾶς μόνης συλλαβῆς: «μονοσύλλαβος λέξις». — Ἐπίρρ. ***μονοσυλλάβως***: «ἀπαντᾷ μονοσυλλάβως».

**μονοσώμιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τὸ) (monosomien) *[Τερατογ.]*. Τερατογονικὴ διάπλασις, ἀποτελοῦσα ἰδίαν οἰκογένειαν διπλῶν τεράτων. Τὰ μονοσώμια τέρατα διακρίνονται τῶν λοιπῶν τεράτων διὰ τῆς ὅσον ἔνεστι τελειοτέρας συντήξεως τοῦ σώματος αὐτῶν· δι' ὃ χρειάζεται λίαν προσεκτικὴ ἐξέτασις πρὸς ἀνεύρεσιν σκοτεινῶν ἰχνῶν τοῦ διπλοῦ σχηματισμοῦ τοῦ κορμοῦ. Ἐν γένει τὰ τέρατα ταῦτα παρίστανται φέροντα δύο σώματα συγκεχωνευμένα στενῶς εἰς ἓν σῶμα, ἀλλ' ἔχοντα δύο κεφαλὰς κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον κεχωρισμένας ἀλλήλων. Μ. Ν. Κ.

**μονοτάξιος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνην τάξιν, ὁ μὴ διῃρημένος εἰς τάξεις: «μονοτάξιον διδασκαλεῖον» τὸ εἰς ὃ ἡ φοίτησις διαρκεῖ ἓν μόνον ἔτος· || δημοτικὸν σχολεῖον εἰς ὃ διδάσκει εἷς μόνον διδάσκαλος.

**—μονοτάξια *σχολεῖα***. Καλοῦνται οὕτω τὰ σχολεῖα, εἰς τὰ ὁποῖα ὅλοι οἱ μαθηταὶ τοῦ δημοτικοῦ σχολείου διδάσκονται εἰς τὴν αὐτὴν αἴθουσαν ὑπὸ ἑνὸς διδασκάλου.

Διακρίνονται δύο μορφαὶ τῶν τοιούτων σχολείων· ἢ ὅλοι οἱ μαθηταὶ παρίστανται καθ' ὅλας τὰς ὥρας τῆς διδασκαλίας ἢ κατά τινας μόνον ὥρας ὅλοι οἱ μαθηταὶ καὶ κατὰ τὰς λοιπὰς μόνον τῶν ἀνωτέρων ἢ τῶν κατωτέρων τάξεων, ὡς ἐν Γερμανίᾳ. Ἐὰν δὲ δὲν συνδιδάσκωνται ὅλοι οἱ μαθηταί, ἀλλ' ἄλλοτε οἱ τῶν ἀνωτέρων καὶ ἄλλοτε οἱ τῶν κατωτέρων τάξεων ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ διδασκάλου, τότε τὸ τοιοῦτον σχολεῖον εἶναι *διτάξιον*, **ἀλλὰ μὲ ἕνα** διδάσκαλον.

Μειονεκτήματα τοῦ μονοταξίου σχολείου **εἶναι**: α') Ἡ συνύπαρξις περισσοτέρων τμημάτων, **ἐκ τῶν** ὁποίων ἄλλα μὲν διδάσκονται, ἄλλα δὲ ἀσχολοῦνται εἰς σιωπηλὰς ἐργασίας· ἀλλὰ διὰ τούτων δυσκολεύεται ἡ τήρησις τῆς τάξεως. β') Ὁ χρόνος τῆς διδασκαλίας μοιράζεται εἰς ἡμισείας ὥρας καὶ τέταρτα, τὸ ὁποῖον περιορίζει τὴν διδασκαλίαν, προκαλεῖ ἀπώλειαν χρόνου κατὰ τὴν ἀλλαγὴν τῶν ἐργασιῶν καὶ κουράζει τὸν διδάσκαλον. γ') Δὲν λαμβάνεται ὑπ' ὄψιν, ὅσον πρέπει, ἡ ἀτομικότης τῶν μαθητῶν. Πλεονεκτήματα δὲ εἶναι: α') Ὁ οἰκογενειακὸς χαρακτὴρ τοῦ σχολείου, κατὰ τὸν ὁποῖον ὁ διδάσκων καὶ διὰ τῶν μαθητῶν δύναται νὰ ἐπιδρᾷ ἐπὶ ἄλλων μαθητῶν καὶ νὰ φροντίζῃ καὶ διὰ τὴν ἀτομικότητά των. β') Ὁ στενότερος σύνδεσμος τῶν μαθητῶν μεταξύ των εἰς μαθητικὴν κοινότητα καὶ ἡ στενοτέρα συνάφεια τοῦ διδασκάλου μὲ τοὺς γονεῖς. γ') Τὸ ἑνιαῖον τῆς παιδευτικῆς ἐργασίας· οὕτως ὁ διδάσκαλος δύναται νὰ κανονίσῃ τὰς ἐργασίας ἑκάστου τμήματος ἀναλόγως τῶν ἀναγκῶν καὶ ἐλλείψεων τῶν μαθητῶν· ἐξετάζει ἀκριβέστερον τὰς φυσικὰς καὶ πνευματικὰς ἰδιότητας ἑκάστου παιδίου εἰς διάστημα 6 ἐτῶν καὶ τὰ διαπαιδαγωγεῖ καταλληλότερον· καὶ οἱ μαθηταὶ συνηθίζουν τὸν διδάσκαλον, τὸν ὑπακούουν καὶ δὲν τὸν συγκρίνουν μὲ ἄλλον διδάσκαλον.

Παρ' ἡμῖν, εἰς τὰ μονοτάξια σχολεῖα συνδιδάσκονται συνήθως ἀνὰ 2 τάξεων μαθηταί· μόνον εἰς τὴν ἀνάγνωσιν καὶ ἀριθμητικὴν αἱ δύο κατώτεραι τάξεις διδάσκονται χωριστά· εἰς δὲ τὴν γυμναστικὴν καὶ ᾠδικὴν αἱ 4 ἀνώτεραι τάξεις συνδιδάσκονται. Εἰς τὴν Γερμανίαν ἡ α' τάξις διδάσκεται χωριστά, ἡ β', γ', δ' καὶ ε' συνδιδάσκονται, ἡ δὲ στ', ζ' καὶ η' τάξις ἀποτελοῦν ἓν τμῆμα συνδιδασκόμενον.

Εἰς τὰς σιωπηλὰς ἐργασίας τῶν μὴ διδασκομένων τμημάτων ὁ διδάσκαλος χρησιμοποιεῖ μαθητὰς εἴτε πρὸς ἐπιτήρησιν, εἴτε πρὸς καθοδήγησιν μαθητῶν, εἴτε καὶ ὁλοκλήρου τμήματος. Αἱ σιωπηλαὶ ἐργασίαι εἶναι: α') Γραπταί, ὡς ἡ ἀντιγραφή, γραφὴ διδαχθείσης ὕλης, γραφὴ καὶ διόρθωσις ἐκθέσεως, χαρτογράφησις, ἰχνογράφησις ὕλης πραγματογνωσίας, καλλιγραφία, γραφὴ σημειώσεων καὶ ἀριθμητικαὶ πράξεις. β') Μὴ γραπταί, ὡς ἡ σιωπηλὴ ἀνάγνωσις, μελέτη χαρτῶν καὶ σημειώσεων, ἐκμάθησις ὀρθογραφίας, ἀπομνημόνευσις διδαχθέντων. Αἱ ἐργασίαι αὗται πρέπει νὰ ἐξελέγχωνται εἴτε ὑπὸ τοῦ διδασκάλου, εἴτε ὑπὸ τοῦ ἐπιτηροῦντος μαθητοῦ. Ἐνίοτε εἶναι δυνατὸν καὶ δύο τμήματα νὰ ἀπασχολοῦνται ὑπὸ τοῦ διδασκάλου· π. χ. κατὰ τὴν ἀνάγνωσιν ποιημάτων ἢ εἰς ἱστορικὰς διηγήσεις· εἴτε ὅταν τὸ ἓν τμῆμα διδάσκεται γραμματικήν, τὸ ἄλλο νὰ γράφῃ σχετικὰς ἀσκήσεις· ἢ ὅταν διδάσκεται μάθημά τι εἰς κατώτερον τμῆμα, νὰ ἐπιζητῆται ἡ συνεργασία ἀνωτέρου τμήματος, τὸ ὁποῖον τότε ἐπαναλαμβάνει ὅ,τι πρὸ χρόνου ἔμαθεν.

Ἐκτὸς τοῦ ὡρολογίου προγράμματος, τὸ ὁποῖον εἰς τὰ μονοτάξια σχολεῖα δύναται νὰ καταρτισθῇ κατὰ τὸν καταλληλότερον τρόπον, χρειάζεται καὶ ἄλλο πρόγραμμα, εἰς τὸ ὁποῖον θὰ δηλοῦται εἰς τὶ θὰ ἀσχολῆται ἑκάστη τάξις ἐκ τῶν μὴ διδασκομένων, ὅταν ἄλλο τμῆμα διδάσκεται. Τοιοῦτον ἑβδομαδιαῖον πρόγραμμα, βαθμηδὸν τελειοποιούμενον, ἀναλόγως τῶν ἀναγκῶν, ἐν Γερμανίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ καταρτίζει ὁ διδάσκαλος. Εἰς ἄλλα κράτη καταρτίζεται ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας. Ἐννοεῖται ὅτι ὁ διδάσκαλος μονοταξίου σχολείου πρέπει νὰ εἶναι πεπειραμένος, νὰ μὴ ἔχῃ ἄλλας κοινοτικὰς καὶ λοιπὰς ἐργασίας, διότι ἐκτὸς τῶν 34 περίπου ὡρῶν διδακτικῆς ἐργασίας καθ' ἑβδομάδα, ὄχι μόνον κοπιάζει πολὺ κατὰ τὴν προπαρασκευήν του καὶ τὰς διορθώσεις, ἀλλὰ καὶ ἡ ἐν τῷ σχολείῳ διδασκαλία καὶ συγχρόνως καὶ ἐπιτήρησις εἶναι πολὺ καταπονητική.

Παντοῦ τὰ μονοτάξια δημοτικὰ σχολεῖα εἶναι πολλά· ἐν Γερμανίᾳ τὰ 43% τῶν μαθητῶν φοιτοῦν εἰς αὐτά, εἰς τὰ ὁποῖα διδάσκουν τὸ $^1/_5$ τῶν διδασκάλων. Παρ' ἡμῖν ἐκ τῶν 7613 δημοσίων δημοτικῶν σχολείων 4945 εἶναι μονοτάξια· ἐκ τῶν 13747 δημοδιδασκάλων τὰ 36,13 διδάσκουν εἰς μονοτάξια καὶ ἐκ τῶν 723,189 μαθητῶν καὶ μαθητριῶν τῶν δημοτικῶν σχολείων τὸ $^1/_3$ περίπου τοῦ ἀριθμοῦ τούτου φοιτᾷ εἰς μονοτάξια σχολεῖα. Π. Α. Β.

**Μονότειχος** *[Βυζ.]*· βλ. λ. *Ἡρακλείου τεῖχος*.

**μονότιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό). Λέγεται ἐπὶ συναρτήσεως, ἐὰν δι' ἑκάστην τιμὴν τῶν ἀνεξαρτήτων με-



Digitized by Google

**ταβλητῶν ἡ συνάρτησις ἔχῃ μίαν καὶ μόνην τιμήν.** Παράδειγμα ἡ συνάρτησις:

$$z=x^2+y^2+2xy+a$$

εἶναι μονότιμος· διότι δι' ἑκάστην τιμὴν τῶν ἀνεξαρτήτων μεταβλητῶν x καὶ y, ἡ z μίαν καὶ μόνην τιμὴν ἔχει. Ἐνῷ ἡ συνάρτησις y τῆς ἀνεξαρτήτου x, ὁριζομένη διὰ τῆς ἐξισώσεως:

$$y^3+bx^2+a=0$$

δι' ἑκάστην τιμὴν τῆς ἀνεξαρτήτου ἔχει τρεῖς διαφόρους τιμάς. Ἡ δὲ συνάρτησις

$$y=\text{τοξ.ημ}\,x$$

δι' ἑκάστην τιμὴν τῆς x ἔχει ἀπείρους τιμάς. Ν. Γ.

**μονοτοκία** (ἡ)· τὸ τίκτειν ἕνα μόνον γόνον εἰς ἕκαστον τοκετόν.

**μονοτόκος** (ὁ, ἡ),—*ον* (τό)· ὁ τίκτων ἕνα μόνον γόνον ἐν ἑκάστῳ τοκετῷ: «τὰ μώνυχα εἶναι μονοτόκα».

**μονοτοκῶ** (—*έω*)· εἶμαι μονοτόκος, τίκτω εἰς ἕκαστον τοκετὸν ἓν μόνον νεογνόν.

**μονοτονία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μονοτόνου, τὸ σταθερῶς ὁμοιόμορφον τῆς ζωῆς: «ἡ μονοτονία τῆς ἐξοχῆς μὲ στενοχωρεῖ,—μοῦ προκαλεῖ ἀνίαν».

— *[Βυζ. Μουσ.]* Εἶδός τι τῆς ψαλμῳδίας, συντεθειμένον ἐξ ἁπλῶν καὶ βραχέων χρόνων ἐν γοργῇ ἢ διγόργῳ χρονικῇ ἀγωγῇ. Ἐν τῇ πρώτῃ ἀγωγῇ εἴθισται νὰ ψάλλωνται οἱ στίχοι τῶν ὡρῶν τῆς Μεγάλης Τεσσαρακοστῆς, οἱ ἐν τῇ Ἀκολουθίᾳ τοῦ Μεγάλου Ἀποδείπνου κατὰ τὴν Μ. Τεσσαρακοστὴν ψαλλόμενοι στίχοι «Μεθ' ἡμῶν ὁ Θεὸς» τὰ Τυπικὰ καὶ ἄλλα, ἐν διγόργῳ δὲ οἱ πρὸ τῶν στιχηρῶν τῶν ἑσπερίων, ἀποστίχων, αἴνων, μακαρισμῶν κ. λ. π. προτασσόμενοι διάφοροι στίχοι, ὧν τὸ τέλος ψάλλεται ἐν γοργῇ χρονικῇ ἀγωγῇ, ἣν ἀκολουθεῖ τὸ στιχηρόν. Τὰ μέλη ταῦτα ἐκαλοῦντο ὑπὸ τῶν ἀρχαίων διδασκάλων «ἐκκλησιαστικὰ μονότονα μέλη». Ν. Α. Χ.

**μονότονος** (ὁ, ἡ),—*ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα μόνον τόνον, ὁ ὁμοιόμορφος, ἰδίᾳ ἐπὶ τοῦ βίου, ὁ ἄνευ ποικιλίας ἀπασχολήσεων: «ὁ βίος εἰς τὴν ἐξοχὴν εἶναι μονότονος» || καθόλου, ὁ μὴ ποικίλος, ὁ προκαλῶν κόπωσιν, ἀνίαν: «τὸ ὕφος του εἶναι μονότονον καὶ κουράζει».—Ἐπίρρ. *μονοτόνως*.

**μονοτρήματα** (τὰ) (Monotremata) *[Ζῳολ.]*. Κατηγορία ζῴων θηλαστικῶν. Τὰ μονοτρήματα παρουσιάζουσι πλείστας χαρακτηριστικωτάτας διαφορὰς τῶν λοιπῶν θηλαστικῶν, ὡς ἐκ τούτου δὲ παλαιότεροί τινες ζῳολόγοι ἠναγκάσθησαν νὰ θεωρήσωσι ταῦτα ὡς ἴδιον ἄθροισμα. Ἴδιον χαρακτηριστικὸν γνώρισμα εἶναι ὅτι ἔχουσι μίαν ὀπὴν διὰ τὴν ἔξοδον ἐκ τοῦ σώματος τῶν ὑγρῶν καὶ στερεῶν, ἀπορριμμάτων, ἐξ ὧν καὶ ἡ ὀνομασία των. Ὁμοιάζουν ὅθεν κατὰ τοῦτο πρὸς τὰ πτηνά. Γενικῶς τὰ ζῷα τῆς κατηγορίας ταύτης ἔχουσι σῶμα χαμηλόν, κυρτὸν κατὰ τὴν ῥάχιν, ἑρπετοειδές, καλυπτόμενον ὑπὸ ἐριώδους τριχώματος. Ἡ κεφαλὴ ἐπιμήκης, χονδρά, κυρτὴ κατὰ τὴν κορυφήν της, ἀπολήγει εἰς ῥύγχος προτεταμένον, χονδρόν, ἀπεστρογγυλωμένον κατὰ τὸ ἄκρον του, ὅπερ στερεῖται σαρκωδῶν χειλέων. Τὸ ῥύγχος καλύπτεται ὑπὸ κερατώδους συστάσεως δερματοπτυχῆς καὶ αἱ σιαγόνες εἶναι νωδαί, ὅπως καὶ αἱ τῶν πτηνῶν. Ἀντὶ ὀδόντων φέρουσι κατὰ τὴν ἄνω ἐπιφάνειαν τῆς γλώσσης ἀκανθοειδεῖς ἀποφύσεις, αἵτινες προστριβόμεναι ἐπὶ τοῦ οὐρανίσκου λειαίνουσι καὶ θρυμματίζουσι τὴν τροφήν. Οἱ πόδες εἶναι βραχύτατοι καὶ φέρουσι πέντε δακτύλους μετὰ γαμψῶν ὀνύχων. Οἱ δάκτυλοι καλύπτονται ὑπὸ δερματοπτυχῆς ἐν εἴδει νηκτικοῦ πτερυγίου. Ὁ σκελετὸς τῶν ζῴων τούτων παρουσιάζει ἀρκετὴν ἰδιορρυθμίαν. Τὰ ὠμικὰ ὀστᾶ παρουσιάζουσι μεγάλην ὁμοιότητα μὲ τὰ ἀντίστοιχα ὀστᾶ τῶν σαυρῶν καὶ τῶν πτηνῶν. Ὀστοῦν τι σχήματος Υ ὑποστηρίζεται ἐπὶ τῆς προσθίας ἄκρας τοῦ στέρνου καὶ ἐπεκτείνει τὰς δύο αὐτοῦ διακλαδώσεις ἐπὶ τῶν δύο ὤμων. Δύο τμήματα ὀστεΐνα, τοποθετημένα ἄνωθεν τῆς ὀστεώδους ταύτης συναρθρώσεως, ἀνταποκρίνονται πρὸς τὴν κορακοειδῆ ἀπόφυσιν τῶν σαυρῶν καὶ τῶν πτηνῶν. Ὡς πρὸς τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν πολλὰ κατὰ καιροὺς ἐλέχθησαν. Τινὲς ὑποστηρίζουσιν ὅτι γεννῶσι ζῶντα τέκνα, ἕτεροι δὲ ὅτι γεννῶσιν ᾠά, παρὰ τὴν ὕπαρξιν τῶν μαστοειδῶν ἀποφύσεων, ἃς φέρουσιν ἐπὶ τοῦ στήθους. Εἰς τὴν κατηγορίαν ταύτην περιλαμβάνονται δύο οἰκογένειαι, οἱ *ἐχιδνίδαι* (Echidnidae) καὶ οἱ *ὀρνιθορυγχίδαι* (Ornythorynchidae). Ἀπαντῶσιν ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν Αὐστραλίαν καὶ τὴν Νέαν Γουϊνέαν καὶ ἐνδιαιτῶνται παρὰ τοὺς ποταμοὺς ἢ τὰς ἑλώδεις ἐκτάσεις. Δ. Ν. Π.

**μονότριχος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τὸ)· ὁ ἔχων μίαν μόνην τρίχα.

**μονοτροπία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μονοτρόπου, ὁ μοναχικὸς βίος.

— *[Φυσικοχημ.]* Βλ. λ. *ἐναντιοτροπία*.

**μονότροπος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ καθ' ἕνα καὶ μόνον τρόπον συμβαίνων: «ἁπλαῖ καὶ μονότροποι ἡδοναί» (ἀρχ.)· || ὁ καθ' ἕνα καὶ μόνον τρόπον ζῶν, μοναχικός, ἔρημος: «μονότροπος νεανίας» (ἀρχ.).

**μονότροπος** (ὁ) (Monotropus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *πυρολιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ αὐτοφυῆ τῶν εὐκράτων καὶ θερμῶν χωρῶν ἀμφοτέρων τῶν ἡμισφαιρίων. Δ. Ν. Π.

**μονοτυπία** (ἡ). Σύστημα γραφομηχανικῆς στοιχειοθεσίας, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπιτυγχάνεται δι' ἐπὶ τούτῳ μηχανῶν, τῶν *μονοτυπικῶν*, ἡ δι' αὐτοτελῶν κατὰ στοιχεῖον μητρῶν στοιχειοχυσία ἐν ταυτῷ καὶ στοιχειοθεσία στίχου μὴ συμπαγοῦς, ὡς ἐν τῇ *λινοτυπίᾳ* (βλ. λ.), ἀλλ' ὡς ἐν τῇ κοινῇ διὰ χειρὸς στοιχειοθεσίᾳ.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *τυπογραφία*.

**μονοτυπικός**, —*ή*, —*όν* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μονοτυπίαν: «μονοτυπικαὶ μηχαναί».

**Μονούνιος**. Βασιλεὺς τῶν Δαρδανίων Ἰλλυριῶν, διαδεχθεὶς περὶ τὸ 281 π. Χ. τὸν Γλαυκίαν, βασιλέα τῶν Ταυλαντίων. Ἐπωφεληθεὶς τῆς ἀπουσίας τοῦ Πύρρου ἐν Ἰταλίᾳ, κατέλαβε τὸ Δυρράχιον, καταστήσας αὐτὸ πρωτεύουσαν τῆς χώρας του. Ὑπῆρξε σύμμαχος τοῦ Πτολεμαίου, υἱοῦ τοῦ Λυσιμάχου τῆς Θράκης, κατὰ τοῦ Πτολεμαίου τοῦ Κεραυνοῦ, ἀντιποιουμένου τὴν ἐπὶ τῆς Θράκης καὶ Μακεδονίας ὑπερτάτην ἀρχήν. Κατὰ τὸ 272 π. Χ. ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Ἀλεξάνδρου, βασιλέως τῶν Μολοσσῶν. Σῴζονται ἀργυροῖ στατῆρες αὐτοῦ, δυρραχηνοῦ τύπου. Α. Θ. Σ.

**μονοφαγία** (ἡ)· τὸ νὰ τρώγῃ τις μόνος, ἄνευ ἄλλου· || τὸ ἅπαξ τῆς ἡμέρας ἐσθίειν, ἄλλως *μονοσιτία*.

**μονοφάγος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ τρώγων μόνος, ἄνευ ἄλλου: «μονοφάγος καὶ γαστρίμαργος»· || «οἱ ἐν Αἰγίνῃ μονοφάγοι» θρησκευτικοί τινες θίασοι τελοῦντες θυσίαν εἰς τὸν Ποσειδῶνα ἐπὶ δεκαὲξ ἡμέρας, οἵτινες «καθ' ἑαυτοὺς μετὰ σιωπῆς ἐστιῶνται» (*Πλουτ.*, Ἠθ. 301, δ' κ. ἑ.).

**μονοφαγῶ** (—*έω*)· εἶμαι μονοφάγος, τρώγω μόνος, ἄνευ ἄλλου, ἕνεκα γαστριμαργίας.

**μονοφαλαγγία** (ἡ) (γαλ. la colonne ἢ la ligne de bataille, ἀγγλ. the line of battle) *[Ναυτ.]*. Σχηματισμὸς τῆς παλαιᾶς ναυτικῆς τακτικῆς, σημαίνων τὴν ἐπὶ μιᾶς στήλης καὶ κατὰ τὴν ἐγγυτάτην εἰς τὰ ἱστιοφόρα τάξιν τῶν πλοίων. Ἐκτὸς ἐλαχίστων ἐξαιρέσεων εἰς τοὺς στόλους τῶν ἱστιοφόρων ἡ μονοφαλαγγία ἀπετέλει τάξιν μάχης. Εἶναι ὁ σχηματισμὸς *λίνεα* ἢ *λίναια* ἢ *λίνια* τῶν στόλων τοῦ Ἀγῶνος. Σ. Ε. Λ.

**μονοφασικὸς** *[Ἠλεκτρ.]*. Ὅρος χρησιμοποιούμενος ἐν τῇ ἠλεκτροτεχνίᾳ πρὸς ὑποδήλωσιν τοῦ ὅτι συσκευή ἢ σύστημα τι παραγωγῆς, μεταφορᾶς, μετατροπῆς ἢ καταναλώσεως ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας παράγει, μετατρέπει, μεταφέρει ἢ χρησιμοποιεῖ ἁπλοῦν ἐναλλασσόμενον ῥεῦμα μὲ μίαν μόνον ἠλεκτρεγερτικὴν δύναμιν, μεταβαλλομένην καθ' ὡρισμένην καμπύλην.

Τὸ μονοφασικὸν ῥεῦμα, τὸ ὁποῖον εἶναι πάντοτε ἐναλλασσόμενον, μεταφέρεται διὰ τῶν ἀγωγῶν ὡς καὶ τὸ συνεχὲς τοιοῦτον, οὗτινος διαφέρει κατὰ τοῦτο: ὅτι δὲν διατηρεῖ ὅπως τὸ συνεχὲς σταθερὰ τὰ μεγέθη τῆς τάσεως καὶ ἐντάσεως. Λ. Ν. Κ.

**Μονοφατσίου** *ἐπαρχία* *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν ἓξ ἐπαρχιῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὸν νομὸν Ἡρακλείου ἐν Κρήτῃ, καταλαμβάνουσα τὸ ΝΑ. τμῆμα αὐτοῦ, τὸ περικλειόμενον ὑπὸ τῶν Λασηθιωτικῶν ὀρέων πρὸς ΒΑ. καὶ τῶν Ἀστερουσίων πρὸς Δ. Πρὸς Ν. βρέχεται ὑπὸ τοῦ Λιβυκοῦ πελάγους, ἐφ' οὗ οὐδένα σχηματίζει ἄξιον λόγου λιμένα, περιβάλλεται δὲ ὑπὸ τῶν ἐπαρχιῶν Πεδιάδος καὶ Τεμένους πρὸς Β., Βιάννου (νομὸς Λασηθίου) πρὸς Α. καὶ Καινουρίου πρὸς Δ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι ὀρεινόν, διαρρέεται δὲ ὑπὸ τοῦ Ἀναποδάρη. Κάτ. (1928) 18.971, πρωτεύουσα *Πύργος*. Τὸ ὄνομα ἔλαβε πιθανῶς ἐκ παραφθορᾶς ἀπὸ τοῦ ἐν αὐτῇ φρουρίου τοῦ Βονιφατίου (κάστρου Μπονιφάτσιο), κληθέντος οὕτω πρὸς τιμὴν τοῦ πρώτου Λατίνου κυρίου τῆς νήσου Βονιφατίου τοῦ Μομφερρατικοῦ (1204). Ἐκτὸς τοῦ τύπου *Μονοφάτσιον* εἶχε παλαιότερον χρησιμοποιηθῆ ἐπὶ τὸ ἑλληνικώτερον ὁ τύπος *Μονοπρόσωπον*, ὅστις ὅμως δὲν ἐπεκράτησεν.

Ἡ ἐπαρχία οἰκεῖται ὑπὸ γεωργῶν καὶ ποιμένων, παράγει δὲ ἔλαιον, οἶνον, σιτηρά, κηπαῖα, ὀπώρας, λίνον κλπ., ὡς καὶ τυρόν, μυζήθρας, ἔρια κλπ. προϊόντα τῶν αἰγοπροβάτων, εἰς μικρὰς ὅμως ποσότητας. Ἐκτὸς τῆς πρωτευούσης αὐτῆς (Πύργου), ἄλλα ἄξια λόγου χωρία εἶναι ἡ *Ἁγία Βαρβάρα* ὁ *Χάρακας*, τὸ *Ἀρχαλοχώρι*, ἡ *Μεγάλη Βρύση* κλπ. Συμφώνως πρὸς τὸ συμπληρούμενον ὁδικὸν δίκτυον τῆς Κρήτης ἡ ἐπαρχία διασχίζεται ὑπὸ μιᾶς μεγάλης ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ μὲ κατεύθυνσιν ἐκ Δ. πρὸς Α. καὶ ὑπὸ δύο διακλαδώσεων αὐτῆς διευθυνομένων πρὸς τὸ Ἡράκλειον.

Τακτικαὶ γραμμαὶ αὐτοκινήτων λεωφορείων, πρὸς τὸ Ἡράκλειον, τὸν Βιάννον κλπ. ἐξυπηρετοῦσι τὰς συγκοινωνιακὰς ἀνάγκας τοῦ Μονοφατσίου.

Δημόσιαι ἀρχαὶ ἑδρεύουσαι ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ εἶναι: εἰρηνοδικεῖον εἰς Πύργον καὶ 6 ἀστυνομικοὶ σταθμοί, ἐκπαιδευτικὰ δὲ ἱδρύματα, ἓν ἡμιγυμνάσιον εἰς Χάρακα καὶ δημοτικὰ σχολεῖα εἰς τὰ κυριώτερα χωρία. Ἐπίσης λειτουργοῦσι πλεῖστα τηλεφωνικὰ γραφεῖα. Ἐκκλησιαστικῶς τὸ Μονοφάτσιον ὑπάγεται ἀπ' εὐθείας εἰς τὸν μητροπολίτην Κρήτης. Διοικητικῶς ἡ ἐπαρχία, ἥτις περιλαμβάνει 114 κώμας, χωρία καὶ συνοικισμούς, διῃρεῖτο ἄλλοτε εἰς 5 δήμους (Χάρακος, Σχοινιᾶς, Ἀρκαίο-χωρίου, Τεφελίου καὶ Μεγάλης Βρύσης), νῦν δὲ εἰς 25 κοινότητας, τὰς ἑξῆς: *Ἁγίας Βαρβάρας, Ἁγίου Θωμᾶ, Ἄνω Ἀκρίων, Ἀλαγνίου, Ἀρκαίοχωρίου, Ἀσημίου, Ἀχενδριᾶς, Βαγιωνιᾶς, Βουτοφοῦς, Ἐπάνω Γαρύπας, Ἐθιᾶς, Καλυβίων, Κάτω Καστελλιανῶν, Μεγάλης Βρύσης, Μεσοχωριοῦ, Παρτήρων, Πατσιδέρου, Πύργου, Σταβγιῶν, Στερνῶ-, Στόλων, Σχοινιᾶς, Σωκαρᾶ, Τεφελίου* καὶ *Χάρακος*. Χ. Δ.

**μονόφθαλμος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα μόνον ὀφθαλμὸν ὡς οἱ κύκλωπες: «μονόφθαλμον τέρας»· || ὁ ἔχων τὸν ἕτερον ὀφθαλμόν, ἄλλως *ἑτερόφθαλμος*.

— *[Ἐγκυκλ.]*. Ἡ καταστροφὴ τοῦ ὀφθαλμοῦ ἐπέρχεται εἴτε ἐκ νόσων, ἐνδοφθαλμικῶν ἢ ἐξωφθαλμικῶν, εἴτε ἀπὸ ἐξωτερικῶν αἰτίων, ὡς τραυμάτων, ἐγκαυμάτων κλπ. Ἔχει δὲ ἡ ἀναπηρία αὕτη τὴν ἐπὶ πλέον συνέπειαν ὅτι συνεπάγεται δυσμορφίαν. Διὰ τὸν τελευταῖον τοῦτον μᾶλλον λόγον ἡ ἐξόρυξις τοῦ ἑνὸς ὀφθαλμοῦ ἐχρησιμοποιήθη, κατὰ διαφόρους ἐποχάς, παραλλήλως πρὸς τὴν ῥινοτομίαν, ὡς ἀτιμωτικὴ τιμωρία, ἰδίως ἐναντίον συνωμοτούντων εὐγενῶν.

Ἱστορικῶς ἀναφέρονται πλεῖστοι ὅσοι μονόφθαλμοι, διακριθέντες καὶ δράσαντες κατὰ διαφόρους ἐποχάς, ἀκόμη δὲ καὶ θεότητες, ὡς ὁ Ὧρος υἱὸς τοῦ θεοῦ Ὀσίριδος καὶ τῆς θεᾶς Ἴσιδος τῶν Αἰγυπτίων, ἡ βασίλισσα Νεφερτιτί, σύζυγος τοῦ βασιλέως τῶν Αἰγυπτίων Ἀχνάτου καὶ πενθερὰ τοῦ Τουτανχαμών, Λυκοῦργος ὁ νομοθέτης τῆς Σπάρτης, Φίλιππος ὁ Β' βασιλεὺς τῆς Μακεδονίας, Ἀννίβας ὁ στρατηλάτης, Ἀντίγονος ὁ Μονόφθαλμος, στρατηγὸς τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου, ὁ σουλτάνος Βαγιαζήτ, Ἐρρῖκος ὁ Β' τῆς Γαλλίας, ὁ ναύαρχος Νέλσων, ὁ Γαμβέττας καὶ πλεῖστοι ἄλλοι. —Σ.

— **μονόφθαλμον τηλεσκόπιον** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *τηλεσκόπιον*.

**μονόφθογγος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἐξ ἑνὸς μόνου φθόγγου ἀποτελούμενος: «μονόφθογγος συλλαβή».

**μονοφθοροξικὸν** *ὀξὺ* *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τοῦ *ὀξικοῦ ὀξέος* τοῦ τύπου $CH_2F.COOH$. Τήκεται εἰς 33° καὶ βράζει εἰς 165°. Σ. Γ.

**μονοφοβίαι** (αἱ) *[Νευρολ.]*. Καλοῦνται οὕτω οἱ μεμονωμένοι ἰδεοληπτικοὶ φόβοι, οἱ ἀπαντῶντες εἰς ἓν ἄτομον. Οὕτως ἔχομεν μονοφοβίαν τῆς ἀγορᾶς (ἀγοραφοβία), τοῦ κλειστοῦ, τοῦ κενοῦ, τῆς αἰχμῆς, τῶν μικροβίων, τῶν ἀνωμαλιῶν τῆς μορφῆς (μορφοφοβία) κττ. Κακῶς μετεχειρίσθησαν τὸν ὅρον τοῦτον ἀντὶ τοῦ ὅρου *μονωσιφοβία*, ἰδίᾳ ἐν τῇ ξένῃ, πρὸς δήλωσιν τοῦ ἰδεοληπτικοῦ φόβου τῆς μονώσεως.

Πᾶσαι αἱ μονοφοβίαι αὐταί, αἵτινες εἶναι ἀναρίθμητοι, χαρακτηρίζονται ἐκ τοῦ ὅτι εἶναι ἐνσυνείδητοι· τὸ ἄτομον προσπαθεῖ νὰ ἀντιδράσῃ, ἀποτυγχάνον ὅμως ὑποχωρεῖ, ὅτε καὶ ἀνακουφίζεται. Ἐὰν τὸ ἄτομον κατορθώσῃ ἅπαξ νὰ ὑπερνικήσῃ τὴν κατέχουσαν αὐτὸ μονοφοβίαν, τότε ἡ νέα προσπάθεια αὐτοῦ πρὸς ἀντίστασιν καθίσταται εὐχερεστέρα, διὰ τῆς οὕτω δὲ ἐπιτυγχανομένης ἕξεως παύει περαιτέρω ἡ ἐμφάνισις τῆς μονοφοβίας. Αἰτιολογία, ἡ νευρασθένεια, ἡ ψυχασθένεια, ἡ ὑστερία, αἱ λοιμώξεις - δηλητηριάσεις, ἡ καταβολὴ τοῦ ὀργανισμοῦ, ἡ ἀδυναμία βουλήσεως. Θεραπεία αἰτιολογικὴ καὶ διὰ τῆς ἕξεως. Τ. Α. Ζ.

**μονοφορμίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται ὁ μεθ' ἑνὸς μορίου μυρμηκικοῦ ὀξέος ἐστὴρ τῆς γλυκερίνης. Ἔχει τὸν τύπον $C_3H_5(OH)_2(O.CO.H)$ καὶ παρασκευάζεται διὰ θερμάνσεως γλυκερίνης μετ' ὀξαλικοῦ ὀξέος. Ἄχρουν ἐλαιῶδες ὑγρὸν διαλυτὸν ἐν ὕδατι. Σ. Γ.

**μονοφτέρη** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *νεφρίδιον* ἢ *ἀρρενόπτερις*.

**μονοφυὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό). Καλεῖται οὕτω τὸ φυτόν, οὗ ὁ καυλὸς δὲν φέρει κλάδους, ἀλλὰ μόνον ἄνθος κατὰ τὸ ἀνώτερον αὐτοῦ τμῆμα. Δ. Ν. Π.

**μονοφυὴς** (ὁ) (Monophyes) *[Ζῳολ.]*. Γένος κοιλεντερωτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μονοφυΐδων*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη ἀπαντῶντα εἰς πλείστας εὐρωπαϊκὰς θαλάσσας. Δ. Ν. Π.

**μονοφυΐδαι** (οἱ) (Monophyidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια κοιλεντερωτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σιφωνοφόρων*, περιλαμβάνουσα ἐλάχιστα γένη μεδουσῶν, ὧν κυριώτερον ὁ *μονοφυὴς* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μονοφυλλίτης** (ὁ) (Monophyllites Mojs.) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς

Digitized by Google

τὴν οἰκογένειαν τῶν *κυκλολοβιδῶν ἀμμωνοειδῶν* μαλακίων. Τὸ ὄστρακον τῶν ζῴων τούτων ἦτο δισκοειδές, εὐρύομφαλον, πρὸς τὰ ἔξω ἀπεστρογγυλωμένον. Αἱ πλευραὶ ἦσαν λεῖαι ἢ κεκοσμημέναι μὲ λεπτὰς πρὸς τὰ ἔμπρὸς κυματιζούσας ἐγχαρσίας ῥαβδώσεις. Ἦσαν κοσμοπολιτικὰ ζῷα, τῶν ὁποίων ἄφθονα λείψανα εὑρίσκονται πολλαχοῦ ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ.

Ἐν Ἑλλάδι ἀπολιθωμένα λείψανα μονοφυλλιτῶν εὑρέθησαν: α) Ἐντὸς τῶν ἀμμωνιτοφόρων ἀσβεστολίθων τῆς τριασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς τὴν Ἀργολίδα (λόφος Θεόκαφτα καὶ Ἅγιος Ἀνδρέας) τὰ εἴδη *μονοφυλλίτης Simonyi, Sphaerophyllus, Wengensis, Suessi, Wengensis* (ποικιλία *ἀργολική*), *Wengensis* (ποικιλία *Aonis*). β) Ἐντὸς ὁμηλίκων στρωμάτων τῆς νήσου Ὕδρας τὸ εἶδος *μονοφυλλίτης Wengensis* (ποικιλία *Sphaeropylla*). γ) Ἐντὸς τῶν θερφενίων ἀσβεστολίθων τῆς Μαρμαροτραπέζης τῆς νήσου Χίου τὰ εἴδη *μονοφυλλίτης Kingi, Dieneri* καὶ *Pitamaka*. Συνώνυμα: *μονόφυλλος, μοϊσβαρίτης*. Γ. Κ. Γ.

**μονόφυλλος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον φύλλον.

**μονοφυόδοντα** (τά) (Monophyodont). Παλαιοντολογικὸς ὅρος, διὰ τοῦ ὁποίου διακρίνονται τὰ διάφορα ζῷα, εἰς τὰ ὁποῖα μία μόνον σειρὰ ἢ γενεὰ ὀδόντων ἀναφαίνεται καθ' ὅλην αὐτῶν τὴν ζωήν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ *διφυόδοντα* καὶ τὰ *πολυφυόδοντα*. Ν. ΠΑΠ.

**μονοφυσισμὸς** (ὁ), καὶ *μονοφυσιτισμός*· τὸ δόγμα τῶν μονοφυσιτῶν, τῶν ἀποδιδόντων εἰς τὸν Χριστὸν μίαν φύσιν, τὴν θείαν.

**μονοφυσίτης** (ὁ)· ὁ ἀσπαζόμενος τὸ δόγμα τοῦ μονοφυσιτισμοῦ, ὁ ἀποδίδων εἰς τὸν Χριστὸν μίαν μόνον φύσιν, τὴν θείαν.

—*[Ἐκκλ. Ἱστορ.]* Ὡς *μονοφυσῖται* εἶναι γνωστοὶ οἱ ἀπὸ τοῦ Ε' αἰῶνος ἀναφανέντες ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ αἱρετικοί, οἵτινες, ἀνήκοντες εἰς τὴν θεολογικὴν σχολὴν τῆς Ἀλεξανδρείας, διισχυρίζοντο ὅτι ἐν τῷ Χριστῷ μετὰ τὴν ἐνανθρώπισιν δὲν ὑπάρχουσι πλέον δύο φύσεις, ἀλλὰ μία μόνον ἐξ ἀναμίξεως καὶ συγκράσεως ἀμφοτέρων προελθοῦσα. Τὴν πλάνην ταύτην ἐδίδαξε πρῶτος ὁ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἀρχιμανδρίτης Εὐτυχής, ὡς καὶ ὁ Ἀλεξανδρείας Διόσκορος. Ἐναντίον τοῦ πρώτου συνεκροτήθη ὑπὸ τοῦ Κωνσταντινουπόλεως Φλαβιανοῦ ἡ ἐνδημοῦσα σύνοδος τῷ 449, ἥτις κατεδίκασεν αὐτόν, ὑπὲρ τῆς καταδίκης δ' αὐτοῦ ἐκηρύχθη καὶ ὁ πάπας Ῥώμης Λέων, ὅστις δι' ἐπιστολῆς ὑπεστήριξε τὴν *περὶ δύο φύσεων ἐν ἑνὶ προσώπῳ* διδασκαλίαν τῆς Ἐκκλησίας. Τότε ὅμως κατῆλθεν εἰς τὸν ἀγῶνα ὁ Διόσκορος, ὅστις, ὑποστηριζόμενος ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Θεοδοσίου τοῦ Β', συνεκρότησεν ἐν Ἐφέσῳ τῷ αὐτῷ ἔτει τὴν λεγομένην *ληστρικὴν σύνοδον*, ἥτις τὸν μὲν Εὐτυχῆ ἀπήλλαξε τοῦ ἀναθέματος, κατεδίκασε δὲ τὸν Φλαβιανὸν καὶ τοὺς λοιποὺς ὀρθοδόξους· οἱ περὶ τὸν Διόσκορον μάλιστα μοναχοί, ἐπιτεθέντες κατὰ τοῦ ἱεροῦ Φλαβιανοῦ ἐπὶ τοσοῦτον ἐξυλοκόπησαν αὐτόν, ὥστε μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀπέθανεν. Οὕτως ἐπῆλθεν ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ σχίσμα, τὸ ὁποῖον ἦρεν ἡ Πουλχερία, ἥτις μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Θεοδοσίου, λαβοῦσα ὡς συνάρχοντα τὸν Μαρκιανόν, συνεκρότησεν ἐν Χαλκηδόνι τῷ 450 τὴν Δ' Οἰκουμενικὴν σύνοδον, ἥτις καταδικάσασα τοὺς ἐναντίους, διὰ τοῦ περιφήμου αὐτῆς Ὅρου καθώρισε τὴν διδασκαλίαν τῆς Ἐκκλησίας, διδάξασα «*ἕνα Χριστὸν Κύριον καὶ μονογενῆ, ἐν δύο φύσεσιν ἀσυγχύτως, ἀτρέπτως, ἀδιαιρέτως γνωριζόμενον, οὐδαμοῦ τῆς τῶν φύσεων διαφορᾶς ἀνῃρημένης διὰ τὴν ἕνωσιν, σῳζομένης δὲ μᾶλλον τῆς ἰδιότητος ἑκατέρας καὶ εἰς ἓν πρόσωπον καὶ μίαν ὑπόστασιν συντρεχούσης*».

Αἱ δογματικαὶ ὅμως ἔριδες καὶ φιλονικίαι καὶ μετὰ τὴν σύνοδον ταύτην οὐ μόνον δὲν κατεσιγάσθησαν, ἀλλὰ καὶ ἐπετάθησαν, προὐκάλεσαν μάλιστα ὀδυνηρὰ ἀποτελέσματα, τὰ ὁποῖα μέχρι τῆς σήμερον διασχίζουσι τὴν Ἐκκλησίαν. Οἱ μονοφυσῖται ὑπερίσχυσαν πανταχοῦ, καὶ ἐν Παλαιστίνῃ μὲν διορίζουσι πατριάρχην Θεοδόσιόν τινα, ἐν δὲ τῇ Ἀλεξανδρείᾳ φονεύσαντες τὸν πατριάρχην Προτέριον ἀναβιβάζουσι Τιμόθεον τὸν Αἴλουρον καὶ ἐν Ἀντιοχείᾳ Πέτρον τὸν Γναφέα. Λέων ὁ Θρᾷξ (457—474) κατώρθωσε πρὸς καιρὸν νὰ καταβάλῃ τοὺς μονοφυσίτας, ἀλλ' ὁ ἅρπαξ τοῦ θρόνου Βασιλίσκος, διὰ τῆς λεγομένης Ἐγκυκλίου (476), καταδικάζει τὴν ἐν Χαλκηδόνι σύνοδον, ἀνακηρύσσει ὡς θρησκείαν τοῦ κράτους τὸν μονοφυσιτισμὸν καὶ ἐπαναφέρει εἰς τοὺς θρόνους αὐτῶν τὸν Αἴλουρον καὶ τὸν Γναφέα. Αἱ ταραχαὶ ἐξηκολούθουν καὶ ἐπὶ Ζήνωνος (477), ὅστις διὰ τοῦ λεγομένου Ἑνωτικοῦ (482) οὐ μόνον δὲν ἐπέφερε τὴν ποθουμένην ἕνωσιν, ἀλλὰ καὶ διήρεσε τὴν Ἀνατολὴν ἀπὸ τῆς Δύσεως, ἡ ἕνωσις τῶν ὁποίων ἐπῆλθε μόλις τῷ 519, ἐπὶ Ἰουστίνου τοῦ Α' (518—527). Ἀλλ' αἱ μεταξὺ ὀρθοδόξων καὶ μονοφυσιτῶν ἔριδες ἐξηκολούθουν καὶ ἐπὶ Ἰουστινιανοῦ τοῦ Μεγάλου (527—565). Καίτοι οἱ μονοφυσῖται ἐν Αἰγύπτῳ διῃρέθησαν εἰς τοὺς *φθαρτολάτρας* καὶ *ἀφθαρτοδοκήτας*, ἐν τούτοις, ἔχοντες ὑπὲρ αὐτῶν τὴν αὐτοκράτειραν Θεοδώραν, ἐν κρυπτῷ ἀποδεχομένην τὸν μονοφυσιτισμόν, πρῶτον μὲν εἰσήγαγον καὶ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐν τῷ τρισαγίῳ ὕμνῳ τὴν ὕποπτον φράσιν Πέτρου τοῦ Γναφέως *ὁ σταυρωθεὶς δι' ἡμᾶς*, εἶτα δὲ ἀναβιβάζουσιν ἐπὶ τοῦ θρόνου τὸν μονοφυσίτην Ἄνθιμον. Τοῦτον ἀντικατέστησε μὲν ὁ Ἰουστινιανὸς διὰ τοῦ ὀρθοδόξου Μηνᾶ, ἀλλ' ἐξαπατηθεὶς ὑπὸ τῆς Θεοδώρας προὐκάλεσε τὴν περὶ τριῶν κεφαλαίων ἔριδα καὶ τῷ 553 συνεκρότησε τὴν Ε' ἐν Κωνσταντινουπόλει Οἰκουμενικὴν σύνοδον, ἥτις κατεδίκασε τὰ τρία κεφάλαια καὶ τὸν πάπαν Βιγίλιον.

Οὕτω καὶ ὁ Ἰουστινιανὸς οὐδὲν κατώρθωσεν ὑπὲρ τῆς ὀρθοδοξίας κατὰ τῶν μονοφυσιτῶν, καίτοι δὲ οὗτοι διῃρέθησαν ἀκολούθως καὶ εἰς ἄλλας μερίδας, τὰς τῶν *ἀγνοητῶν*, τῶν *κτιστολατρῶν*, τῶν *ἀκτιστῶν*, τῶν *τριθεϊτῶν* κτλ., διέτρεχον δὲ τὸν κίνδυνον τῆς ἀποσυνθέσεως, οὐδὲν ἧττον διὰ τῆς ἀκαταπονήτου ἐνεργείας Ἰακώβου τοῦ Ζανζάλου, ἐπισκόπου Ἐδέσσης, συνηνώθησαν αἱ ἐν Συρίᾳ, Μεσοποταμίᾳ καὶ Παλαιστίνῃ μονοφυσιτικαὶ κοινότητες, αἵτινες πρὸς τιμὴν αὐτοῦ ὠνομάσθησαν *ἰακωβῖται*. Ἐκτὸς τῶν χωρῶν τούτων, ὁ μονοφυσιτισμὸς ὑπερίσχυσεν ἐν Ἀρμενίᾳ καὶ κυρίως ἐν Αἰγύπτῳ, ὅπου ἅπας ὁ ἰθαγενὴς πληθυσμὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κόπται* ὡμολόγησε τὸν μονοφυσιτισμόν. Τοσοῦτον δὲ μῖσος ἐπεδείξατο πρὸς τοὺς ὀρθοδόξους, οὓς ἐκάλει *μελχῖτας*, δηλαδὴ βασιλικούς, ὥστε οὐ μόνον ἀπέβαλεν ἐκ τῆς ὅλης λατρείας πᾶν ἑλληνικόν, ἀλλὰ καὶ διηυκόλυνε τὴν ὑπὸ τῶν Ἀράβων ἅλωσιν τῆς χώρας (660). Τὸ παράδειγμα τῆς Αἰγύπτου ἠκολούθησε καὶ ἡ Ἀβησσυνία.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Πρακτικὰ Mansi (τόμ. 5—8).— *Θεοδωρήτου*, Ἐρανιστής.—*Λεοντίου Βυζαντίου*, Κατὰ Νεστοριανῶν καὶ Εὐτυχιανῶν.— *Φ. Βαφείδου*, Ἐκκλ. Ἱστ. (τόμ. Α' σελ. 234).—*Hefele* C. Geschichte (τόμ. 2).—*Neander*, K. Gesch. (τόμ. 4).—*Gieseler* K. Gesch. (τόμ. I, 1).—*Punker* S. Papst Vigil. (Münch. 1856) κλπ. † Η. Φ. ΒΑΦΕΙΔΗΣ

**μονοφυτιλιὰ** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῆς ὁλοπλεύρου βολῆς ἢ ὁμοβροντίας (βλ. λ. *βολή*, τ. Ζ', σ. 477 α').

**μονοφωνία** (ἡ)· ᾆσμα ἐκτελούμενον ὑπὸ μιᾶς καὶ μόνης φωνῆς, ἄνευ συνοδείας.

**μονοφωνικός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς μίαν μόνον φωνήν: «μονοφωνικὴ μουσική», ἡ ἀναφερομένη εἰς τὴν ᾆσιν ᾄσματος διὰ μιᾶς μόνον φωνῆς, ἄνευ συνοδείας.

—*μονοφωνικὴ μουσική*. Ἡ μουσικὴ ᾄσματος ἢ ἐκτελουμένη ὑπὸ μιᾶς φωνῆς, ἢ καὶ ὑπὸ πλειόνων, ἐν ταυτοφωνίᾳ, ἄνευ οἱασδήποτε συνοδείας. Ἡ μονοφωνικὴ μουσικὴ ἦτο ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων ἡ μόνη ἐν χρήσει, μέχρις οὗ, ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος, ἤρχισεν ὑποχωροῦσα βραδέως πρὸ τῆς ἀνατελλούσης πολυφωνικῆς τέχνης. Ἀλλὰ καὶ μετὰ τὴν ἐπικράτησιν ταύτης ἐξηκολούθησεν ὑφισταμένη ἐν τῇ θρησκευτικῇ μουσικῇ, βυζαντινῇ, γρηγοριανῷ ᾄσματι κτλ. Μονοφωνικὰ εἶναι σήμερον ἀκόμη πλεῖστα τῶν λαϊκῶν ᾀσμάτων, ἰδίως τῶν ἀνατολικῶν λαῶν. Ἡ ἑλληνικὴ δημώδης μουσικὴ ἀκολουθεῖ ἐπίσης τὸ μονοφωνικὸν σύστημα, ἐξαιρέσει τῆς Ἑπτανήσου, ἔνθα ἐπεκράτησεν ἡ πολυφωνία, ὡς καὶ ἔν τισι συνθέσεσι τῶν τελευταίων δεκαετηρίδων. Ἡ μονοφωνικὴ μουσικὴ καλεῖται ἐπίσης καὶ *ὁμοφωνική*, καὶ τοῦτο, διότι καὶ ὁσάκις ἀκόμη ὑφίσταται συνοδεία ὀργάνων, ταῦτα συνοδεύουσι τὸ μέλος εἴτε ἐν ταυτοφωνίᾳ εἴτε ἐν ὀγδόῃ. Γ. Σ.

**μονόχειρ** (ὁ, ἡ)· ὁ ἔχων μίαν μόνην χεῖρα, τὴν ἑτέραν χεῖρα, *ἑτερόχειρ*.

**μονόχηλος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνον χηλήν: «ζῷα μονόχηλα».

**μονοχλωρακεταλδεΰδη** (ἡ), ἢ *μονοχλωροξικὴ ἀλδεΰδη [Ὀργ. Χημ.]*. Εἶναι ἀλογονωμένον παράγωγον τῆς *ἀκεταλδεΰδης*, τοῦ τύπου $CH_2Cl.CHO$. Εὐκίνητον δριμύτατης ὀσμῆς ὑγρόν, βράζον εἰς 85°. Πολυμερίζεται ταχύτατα πρὸς ἄμορφον πορσελλανοειδῆ μᾶζαν. Σ. Γ.

**μονοχλωρακετόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Παράγωγον τῆς *ἀκετόνης*. Ἔχει τὸν τύπον $CH_2Cl.CO.CH_3$ καὶ χρησιμοποιεῖται ἐνίοτε εἰς συνθέσεις πρὸς εἰσαγωγὴν τῆς ῥίζης $CH_3.CO.CH_2$. Σ. Γ.

**Μονοχλωρακετοξικοὶ** *ἐστέρες [Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *ἀκετοξικὸν ὀξύ*.

**μονοχλωρακετοξίμη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἐλαιῶδες ὑγρὸν τοῦ τύπου $CH_2Cl.C(:N.OH).CH_3$. Σ. Γ.

**μονοχλωριοῦχον** *ἰώδιον [Χημ.]*· βλ. λ. *ἰωδίου ἑνώσεις*.

**μονοχλωροδιμεθυλαιθὴρ** (ὁ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἀλογονωμένον παράγωγον τοῦ *διμεθυλαιθέρος*. Ἔχει τὸν τύπον $CH_2Cl.O.CH_3$. Βράζει εἰς 59°,5 καὶ χρησιμοποιεῖται ἐνίοτε εἰς συνθέσεις πρὸς εἰσαγωγὴν τῆς ὁμάδος $—CH_2.O.CH_3$. Σ. Γ.

**μονοχλωροξικὴ** *ἀλδεΰδη [Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μονοχλωρακεταλδεΰδη*.

**μονοχλωροξικὸν** *ὀξύ*, ἢ *χλωραιθανικὸν ὀξὺ [Ὀργ. Χημ.]*. Εἶναι τὸ μονοχλωριοπαράγωγον τοῦ ὀξικοῦ ὀξέος καὶ ἔχει τὸν τύπον $CH_2Cl.COOH$. Παρασκευάζεται δι' ἀπ' εὐθείας ἐπιδράσεως ἀναλόγου ποσότητος χλωρίου ἐπὶ βράζοντος ἀνύδρου ὀξικοῦ ὀξέος παρουσίᾳ μικρῶν ποσοτήτων φωσφόρου ἢ θείου. Ἐπίσης δύναται νὰ παρασκευασθῇ δι' ἐπιδράσεως ἠραιωμένου θειικοῦ ὀξέος ἐπὶ τριχλωραιθυλενίου εἰς θερμοκρασίαν 130—190°, ὁπότε προστίθεται εἰς αὐτὸ ὕδωρ κατὰ τὴν ἐξίσωσιν:

$$CHCl:CCl_2+H_2O=CH_2Cl.COOH+2HCl.$$

Σχηματίζει ἀχρόους διαρρέοντας εἰς τὸν ὑγρὸν ἀέρα κρυστάλλους, τηκομένους εἰς 61°,5 καὶ βράζοντας εἰς 189°. Προκαλεῖ ἐπὶ τοῦ δέρματος φλυκταίνας, οἱ δὲ ἀτμοί του προκαλοῦν τὰ δάκρυα. Λόγῳ τοῦ εὐκόλου τῆς ἀντικαταστάσεως τοῦ χλωρίου ὑπὸ ἄλλων στοιχείων ἢ ῥιζῶν, ὡς λ.χ. ὑδροξυλίου, κυανίου, ἀμινικῆς ὁμάδος κλπ., χρησιμοποιεῖται εἰς μέγιστα σχετικῶς ποσὰ δι' ὀργανικὰς συνθέσεις τόσον ἐργαστηριακὰς ὅσον καὶ βιομηχανικάς, μεταφερομένης εὐκολώτατα τῆς ὁμάδος $—CH_2.COOH$. Οὕτω χρησιμοποιεῖται πρὸς παρασκευὴν τοῦ συνθετικοῦ ἰνδικοῦ, διαφόρων ἄλλων χρωμάτων, φαρμάκων κλπ. Ἡ παγκόσμιος παραγωγὴ μονοχλωροξικοῦ ὀξέος φθάνει τοὺς 7—8 χιλ. τόννους κατ' ἔτος.

Ὁ αἰθυλικὸς ἐστὴρ τοῦ μονοχλωροξικοῦ ὀξέος εἶναι ἄχρουν ὑγρόν, βράζον εἰς 144°, χρησιμοποιεῖται δ' ἐπίσης διὰ συνθετικοὺς σκοποὺς καὶ ἔχει τὸν τύπον $CH_2Cl.COOC_2H_5$. Σ. Γ.

**π-μονοχλωροφαινόλη** (p-Monochlorphenol) *[Φαρμ. Χημ.]*. Σκεύασμα λαμβανόμενον διὰ τῆς ἐπιδράσεως χλωρίου ἐπὶ φαινόλης καὶ ἀποχωρισμοῦ διὰ κλασματικῆς ἀποστάξεως. Εἶναι κρύσταλλοι τηκόμενοι εἰς 40°, ὀλίγον διαλυτοὶ εἰς τὸ ὕδωρ, εὐδιάλυτοι εἰς τὴν ἀλκοόλην, τὸν αἰθέρα καὶ τὰ ἀλκάλια. Τὸ σκεύασμα ἀνεγράφη ἐπὶ φυματιάσεως τοῦ λάρυγγος, κατὰ τοῦ λύκου καὶ τοῦ ἐρυσιπέλατος. Ἐπίσης ἐχρησιμοποιήθη ὡς καυτήριον εἰς τὴν ὀδοντιατρικὴν καὶ πρὸς ἀπολυμάνσεις τῶν πτυέλων τῶν φυματικῶν. Κ. Γ. Μ.

**μονοχλωρυδρίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Εἶναι μονοχλωριωμένον παράγωγον τῆς γλυκερίνης. Ἀναλόγως τῆς θέσεως, εἰς ἣν ἔχει εἰσέλθει τὸ χλώριον ἐν τῷ μορίῳ τῆς γλυκερίνης, διακρίνομεν δύο ἰσομερεῖς μορφάς, ἤτοι τὴν *α-μονοχλωρυδρίνην*

$$CH_2Cl.CH(OH).CH_2OH$$

καὶ τὴν *β-μονοχλωρυδρίνην*

$$CH_2(OH).CHCl.CH_2OH.$$

Ἡ α εἶναι διαλυτὸν εἰς τὸ ὕδωρ ἐλαιῶδες ὑγρόν, βράζον ὑπὸ πίεσιν 18 χλστμ. εἰς 139°. Ἡ β βράζει ὑπὸ πίεσιν 18 χλστμ. εἰς 146°. Σ. Γ.

**μονόχνωτος**, —η, —ο· ὀρθότερον *μονόχνοτος*· ὁ οἱονεὶ μὴ ἀνεχόμενος τὰ χνότα τοῦ ἄλλου, ὁ μόνος ζῶν, ὁ μισάνθρωπος.

**μονόχορδον** (τό). Ἀρχαιότατον ὄργανον, ἀποδιδόμενον εἰς τὸν Πυθαγόραν καὶ χρησιμεῦον εἰς τὸν καθορισμὸν τῶν μαθηματικῶν σχέσεων τῶν μουσικῶν ἤχων. Τὸ μονόχορδον ἀποτελεῖται ἀπὸ μακρόστενον ὀρθογώνιον ἠχεῖον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εὑρίσκεται τεταμένη μία χορδή, δυναμένη νὰ διαιρεθῇ κατ' ἀρέσκειαν διὰ μέσου κινητῆς μαγάδος (καβαλλάρη). Κάτωθεν τῆς χορδῆς, μήκους ἑνὸς μέτρου, εὑρίσκεται κλῖμαξ, φέρουσα ἀναγεγραμμένας τὰς ὑποδιαιρέσεις εἰς ἑκατοστόμετρα ἢ χιλιο-

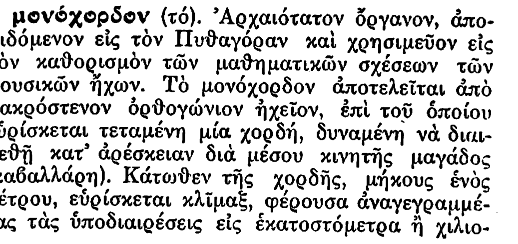

Μονόχορδον.

στόμετρα. Διὰ νὰ πειραματισθῶμεν, κρούομεν τὴν χορδὴν ἐν ὅλῳ αὐτῆς τῷ μήκει, ἥτις δίδει π. χ. τὸν φθόγγον *ντο*$^1$. Εἶτα τοποθετοῦμεν τὴν μαγάδα εἰς τὸ μέσον ἀκριβῶς· οἱονδήποτε ἐκ τῶν δύο ἰσομήκων αὐτῆς τμημάτων ἐὰν κρουσθῇ, θέλει δώσει ἀκριβῶς τὴν ὀγδόην ὀξυτέραν τοῦ *ντο*$^1$ κ.ο.κ. Τὸ μονόχορδον ἀπετέλεσε κατὰ τὸν μεσαίωνα τὴν βάσιν τοῦ κλειδοχόρδου, ἐξ οὗ ἐδημιουργήθη ἀργότερον τὸ κλειδοκύμβαλον. Γ. Σ.

**μονόχορδος** (ὁ, ἡ), —ον (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνην χορδήν: «μονόχορδον ὄργανον» || *μονόχορδον* (τό) (βλ. λ.).

**μονοχρωμία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μονοχρώμου, τὸ νὰ ἔχῃ τις ἓν μόνον χρῶμα.

Digitized by Google

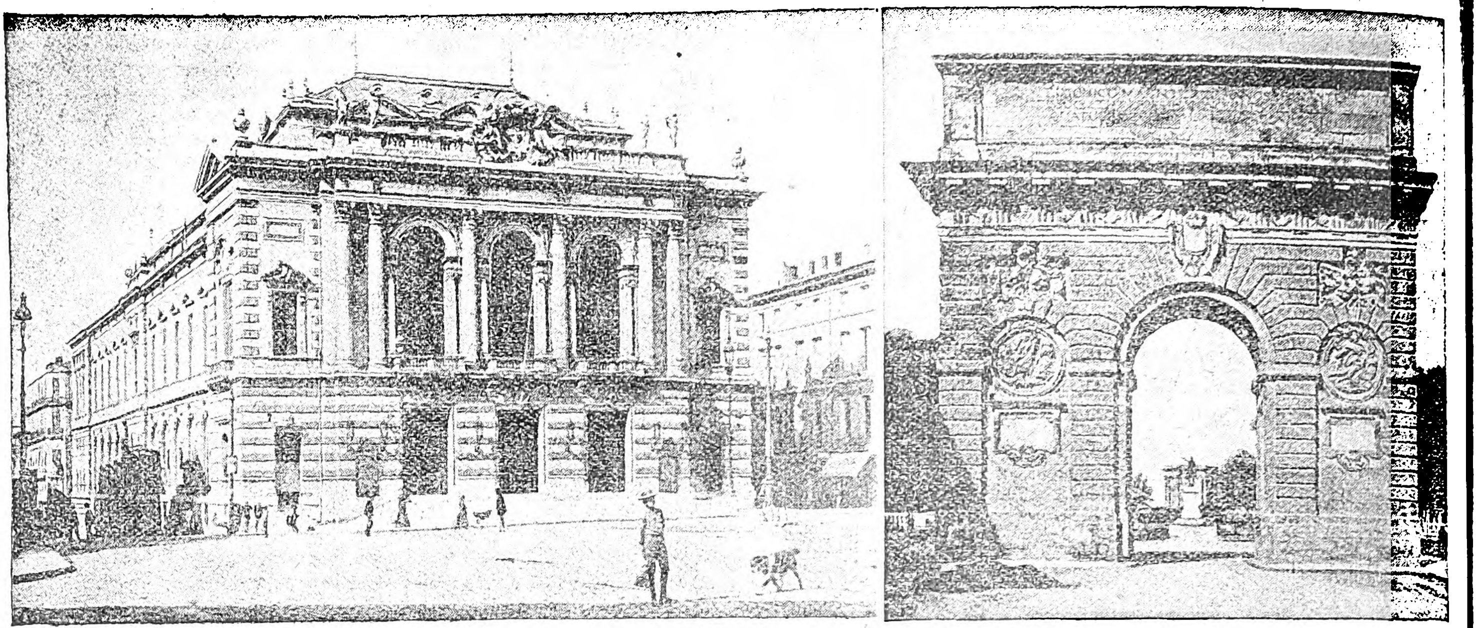

*Μονπελλιέ: 1) Τὸ θέατρον. 2) Θριαμβευτικὴ ἁψίς.*

**μονόχρωμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον χρῶμα: «μονόχρωμος ζωγραφία».

**Μονόχωρο,** ἢ ***Γαλομονόχωρο*** */Γεωγρ./.* Χωρίον τῆς κοινότητος Γαλιᾶς τῆς ἐπαρχίας Καινουργίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 58. Παρὰ τὸ χωρίον τοῦτο σῴζεται ὁ νάρθηξ ναοῦ τῆς Παναγίας μὲ τοιχογραφίαν ἐφ' ὑγροῦ, ἥτις εἰκονίζει τὸν ἀνακαινιστὴν Γ. Μουσοῦρον, μὲ χρονολογίαν 1345. Ε. Γ.

**μονόχωρος** (ἡ) *[Βοτ.].* Καλεῖται ἡ ᾠοθήκη τοῦ ἄνθους, ἥτις φέρει ἕνα μόνον χῶρον ἢ κοιλότητα, Δ. Ν. Π.

**μονοψήφιος** (ὁ)· ἐπὶ ἀριθμ., ὁ ἐξ ἑνὸς μόνον ψηφίου ἀποτελούμενος ἀριθμός, π. χ. 7, 8, 3. Ν. Γ.

**Μονπανσιὲ** (Monpensier) *[Γεωγρ.].* Παλαιὸς φεουδαρχικὸς πύργος τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πυὺ-ντὲ-Ντώμ. Ὁ πύργος οὗτος, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀπέθανε (1226) ὁ Λουδοβῖκος Η', ἀφοῦ περιῆλθε κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα εἰς διαφόρους οἴκους εὐγενῶν, ἐγένετο τῷ 1330 κομιτεία, περιελθοῦσα εἰς τὸν οἶκον τῶν Βουρβώνων δι' ἐπιγαμίας (1416). Βραδύτερον ἐδημεύθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως κατόπιν τῆς προδοσίας τοῦ κοντοστάβλου τῶν Βουρβώνων, ἐν ἔτει δὲ 1538 ἐγένετο δουκᾶτον καὶ ἐδόθη εἰς ἕτερον κλάδον τῆς οἰκογενείας τῶν Βουρβώνων, τοὺς *Βουρβώνους-Μονπανσιέ.* Ὁ πύργος κατεστράφη τῷ 1633 διαταγῇ τοῦ Ρισελιέ. Σήμερον ἡ περιοχή της ἀποτελεῖ μικρὰν κοινότητα. Χ. Δ.

**Μονπανσιὲ** (Montpensier), ***Αἰκατερίνη-Μαρία τῆς Λωρραίνης,*** *δούκισσα τοῦ*— (1552—1596). Ἦτο θυγάτηρ τοῦ Φραγκίσκου τῆς Γκίζης καὶ ἐνυμφεύθη τῷ 1570 τὸν Λουδοβῖκον Β' τῶν Βουρβώνων, δοῦκα τοῦ Μονπανσιέ. Ἀπὸ τοῦ 1558 ἤρχισε νὰ παίζῃ σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν πολιτικὴν τῆς Γαλλίας. Ἦτο θανάσιμος ἐχθρὰ τοῦ Ἑρρίκου Γ', ἀφ' ἑνὸς μὲν διὰ λόγους πολιτικούς, ἕνεκα τοῦ φόνου τοῦ πατρὸς καὶ τοῦ ἀδελφοῦ της Ἑρρίκου, ἀρχηγοῦ τῶν καθολικῶν, ἀφ' ἑτέρου δὲ διότι ὁ βασιλεὺς ἔσκωπτε τὰ φυσικὰ αὐτῆς ἐλαττώματα (ἐχώλαινεν ἐλαφρῶς) καὶ τὰς ἐρωτικάς της περιπετείας. Ὅτε ἐδολοφονήθη ὁ ἀδελφός της, διωργάνωσεν ἐν Παρισίοις ἐξέγερσιν τοῦ λαοῦ, ἔσπευσεν εἰς Βουργουνδίαν, ὅπου ἔπεισε τὸν ἕτερον ἀδελφόν της, δοῦκα τῆς Μαγεντίας, νὰ ἀναλάβῃ τὴν διοίκησιν τοῦ στρατοῦ τοῦ συνασπισμοῦ τῶν καθολικῶν (Ligue), ἐπιστρέψασα δὲ εἰς Παρισίους παρώτρυνε τὸν λαὸν εἰς ἄμυναν ἐναντίον τῶν πολιορκούντων ἤδη τὴν πρωτεύουσαν δύο Ἑρρίκων (τοῦ βασιλέως καὶ τοῦ Ἑρρίκου τῆς Ναβάρρας, τοῦ μετέπειτα Ἑρρίκου Δ'). Πολλοὶ ἱστορικοὶ κατηγόρησαν αὐτὴν ὡς ἀναμεμειγμένην εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ καλογήρου Ἰακώβου Κλεμὰν γενομένην δολοφονίαν τοῦ βασιλέως ἐν τῷ στρατοπέδῳ. Ἀπὸ τῆς εἰς τὸν θρόνον ἀναρρήσεως τοῦ Ἑρρίκου Δ' ἡ δούκισσα Μονπανσιὲ ἔπαυσεν ἀναμειγνυομένη εἰς τὴν πολιτικήν. Ὁ νέος ἄλλως τε βασιλεὺς προσηνέχθη πρὸς αὐτὴν μετὰ μεγάλης εὐνοίας, θαυμάζων προφανῶς τὴν δραστηριότητά της. Χ. Δ.

—**Μονπανσιὲ** (Montpensier), ***Ἄννα-Μαρία-Λουΐζα τῆς Ὀρλεάνης,*** *δούκισσα τοῦ* — (1627—1693). Ἦτο θυγάτηρ τοῦ Γάστωνος τῆς Ὀρλεάνης, ἀδελφοῦ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ', καὶ τῆς Μαρίας τῶν Βουρβώνων-Μονπανσιέ, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἐκληρονόμησε μεγάλην περιουσίαν. Ἔφερε τὸν τίτλον τῆς «Μεγάλης δεσποσύνης», κατέστη δὲ διάσημος διὰ τὴν ὑπερηφάνειαν καὶ τὴν μεγαλομανίαν της. Ἔτρεφε πάντοτε τὸν πόθον νὰ νυμφευθῇ ἕνα βασιλέα, καὶ μάλιστα τὸν τῆς Γαλλίας. Κατὰ τὴν ἐξέγερσιν τῆς «Σφενδόνης», μετὰ μακροὺς δισταγμοὺς ἐτάχθη μετὰ τῶν ἐπαναστατῶν, ἔφιππος δέ, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν εὐγενῶν, κατέλαβε τὴν Ὀρλεάνην. Ἐπιστρέψασα εἰς Παρισίους, ἐγένετο ἀντικείμενον μεγάλης δημοτικότητος. Κατὰ τὴν μάχην τοῦ προαστείου Σαὶν-Ζερμαὶν ἔσπευσεν εἰς Βαστίλλην καὶ διηύθυνε τὰ πυροβόλα τοῦ φρουρίου ἐναντίον τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων, διὰ νὰ ὑπερασπίσῃ τὴν ὑποχώρησιν τοῦ Κοντέ. «Αἱ βολαὶ αὗται τῶν πυροβόλων ἐφόνευσαν τὸν σύζυγόν της», ἔλεγεν ὁ Μαζαρῖνος, ὑπαινισσόμενος τὴν πρόθεσίν της ὅπως νυμφευθῇ μετὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'. Μετὰ τὴν νίκην τοῦ Μαζαρίνου ἔφυγεν ἐκ Παρισίων εἰς τὰ κτήματά της, ἐπέστρεψε δὲ εἰς τὴν πρωτεύουσαν τῷ 1657. Ἐρωτευθεῖσα μετά τινος Γασκώνου εὐγενοῦς, τοῦ μαρκησίου Puyguilhem, τοῦ κατόπιν δουκὸς τοῦ Λωζέν, ἐνυμφεύθη κρυφίως μετ' αὐτοῦ, παρὰ τὴν ρητὴν ἀπαγόρευσιν τοῦ βασιλέως. Συνεπείᾳ τῆς ἀπειθείας ταύτης ὁ δοὺξ τοῦ Λωζὲν ἐφυλακίσθη, βραδύτερον δὲ ἀποφυλακισθεὶς ὑπεχρεώθη ν' ἀκυρώσῃ τὸν γάμον του καὶ νὰ καταλίπῃ τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς προικὸς τῆς δουκίσσης ὑπὲρ τῶν νόθων τέκνων τοῦ βασιλέως. Ἡ Ἄννα Μονπανσιὲ ἔγραψεν «Ἀπομνημονεύματα» (Παρίσιοι, 1858), διάφορα φιλολογικὰ πορτραῖτα ἐκδοθέντα εἰς τόμον (1659) καὶ δύο μυθιστορήματα: «Relation de l'Ile invisible» καὶ «Histoire de la princesse de Paphlagonie» (1659). Χ. Δ.

— **Μονπανσιὲ** (Montpensier), ***Ἀντώνιος-Μαρία-Φίλιππος-Λουδοβῖκος τῆς Ὀρλεάνης,*** *δοὺξ τοῦ* —. Γάλλος πρίγκιψ, πέμπτος υἱὸς τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου-Φιλίππου (1824—1890). Εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατόν, μετέσχεν εἰς τὰς ἐν Ἀφρικῇ ἐκστρατείας (1844) καὶ προήχθη τῷ 1846 εἰς στρατηγόν. Ἐνυμφεύθη τὴν Μαρίαν-Λουΐζαν Φερνάνδην τῶν Βουρβώνων, ἀδελφὴν τῆς βασιλίσσης τῆς Ἱσπανίας Ἰσαβέλλας Β'. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 ἔφυγεν εἰς Ἀγγλίαν, ὁπόθεν μετέβη εἰς Ὀλλανδίαν καὶ τέλος ἐγκατεστάθη ἐν Σεβίλλῃ τῆς Ἱσπανίας. Ἐκεῖ, φέρων τὸν τίτλον τοῦ ἰνφάντου, κατετάγη εἰς τὸν ἱσπανικὸν στρατόν. περιπεσὼν ὅμως εἰς τὴν δυσμένειαν τῆς Ἰσαβέλλας ἔφυγεν εἰς Πορτογαλίαν, ὁπόθεν ἐπέστρεψε, μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866, καὶ προσεπάθησε νὰ σχηματίσῃ ἴδιον κόμμα, ἀποβλέπων εἰς τὸ ἱσπανικὸν στέμμα. Προκληθεὶς ὑπὸ τοῦ δὸν Ἑρρίκου τῶν Βουρβώνων, δουκὸς τῆς Σεβίλλης, ἐξαδέλφου καὶ γαμβροῦ τῆς πρῴην βασιλίσσης Ἰσαβέλλας, ἐφόνευσεν αὐτὸν ἐν μονομαχίᾳ (1870). Ἡ συνέλευσις τῶν Κόρτες δὲν ηὐνόησε τὴν ἐκλογήν του, δώσασα εἰς αὐτὸν μόνον 27 ψήφους, ὅτε δὲ ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ὁ Ἀμεδαῖος Α', ὁ δοὺξ τοῦ Μονπανσιὲ ἐξωρίσθη εἰς τὰς Βαλεαρίδας, ἀλλ' ἐκλεγεὶς μετ' ὀλίγον ἀντιπρόσωπος τῶν Κόρτες ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ Κάντιξ ἐπανέκαμψεν εἰς Ἱσπανίαν. Τῷ 1873 τὸ στέμμα περιῆλθεν εἰς τὸν ἀνεψιόν του Ἀλφόνσον τῶν Βουρβώνων, ὅστις ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα αὐτοῦ Μαρίαν ντὲ λὰς Μερσεντές· ἐπίσης ἀπέκτησε δύο ἀκόμη θυγατέρας, ὧν ἡ μία ἐνυμφεύθη τὸν κόμιτα τῶν Παρισίων καὶ τρεῖς υἱούς, ὧν εἷς μόνον ἐπέζησε. Χ. Δ.

—**Μονπανσιὲ** (Montpensier), ***Γιλβέρτος τῶν Βουρβώνων,*** *κόμις τοῦ* —. Γάλλος εὐγενής, υἱὸς τοῦ Λουδοβίκου Α' τῶν Βουρβώνων, ἀρχιδοὺξ τοῦ Σέσσα καὶ δελφῖνος τῆς Ὠβέρνης (1443—1496). Ἐνίκησε τὸν Κάρολον τὸν Τολμηρὸν εἰς Μπυσσὺ καὶ Κλυνὺ (1471) καὶ διωρίσθη γενικὸς διοικητὴς τοῦ Ποατοὺ ὑπὸ Καρόλου Η'. Τῷ 1494 ἦτο διοικητὴς τῶν Παρισίων καὶ τῆς Ἴλ-ντὲ Φράνς, συνώδευσε δὲ τὸν βασιλέα κατὰ τὴν εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατείαν. Ἐγένετο ἀντιβασιλεὺς τῆς Νεαπόλεως, ἀλλὰ προσβληθεὶς ὑπὸ τοῦ Φερδινάνδου τῆς Ἀραγῶνος ἠναγκάσθη νὰ παραδώσῃ τὸ φρούριον μετὰ πεντάμηνον πολιορκίαν (1495). Χ. Δ.

— **Μονπανσιὲ** (Montpensier), ***Λουδοβῖκος Β' τῶν Βουρβώνων,*** *κόμις καὶ δοὺξ τοῦ* —. Γάλλος εὐγενής, υἱὸς τοῦ Λουδοβίκου Α' τῶν Βουρβώνων ντὲ Μονπανσιέ, διακριθεὶς ἐπανειλημμένως ὡς στρατηγὸς (1513—1582). Μετέσχε κατ' ἀρχὰς τῶν πολέμων τοῦ Φραγκίσκου Α' ἐναντίον τοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου Ε' (Κουΐντου), εἰς ἀνταμοιβὴν δὲ τῶν ὑπηρεσιῶν του ἡ κομιτεία Μονπανσιὲ προήχθη εἰς δουκᾶτον. Ἐπὶ Ἑρρίκου Β' καὶ κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους μεγάλην ἐπέδειξεν ἀνδρείαν, ἐφέρθη ὅμως σκληρότατα πρὸς τοὺς διαμαρτυρομένους. Εἰς αὐτὸν ἀποδίδονται κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος αἱ νῖκαι τοῦ Ζαρνὰκ καὶ τοῦ Μονκοντούρ. Ἂν καὶ μετέσχε τῶν σφαγῶν τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου, συνετέλεσε, πρὸς μεγάλην ἔκπληξιν τῶν καθολικῶν, εἰς τὴν συνομολόγησιν τῆς συνθήκης τοῦ Πουατιὲ (1577). Χ. Δ.

**Μονπαρνὰς** (Montparnasse) *[Γεωγρ.].* Μία ἐκ τῶν τεσσάρων συνοικιῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὴν ΙΔ' περιφέρειαν (arrondissement) τῶν Παρισίων. Κεῖται ἐπὶ λοφίσκου ὑψουμένου ἐντὸς τοῦ ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Σηκουάνα τμήματος τῆς πόλεως, πρὸς Δ. τοῦ ἀστεροσκοπείου καὶ ἐγγὺς τοῦ κήπου τοῦ Λουξεμβούργου, τὸ ὄνομα δὲ (montParnasse=ὄρος Παρνασός), ἐδόθη εἰς αὐτὴν ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ', διότι συνεκεντροῦντο καὶ διεσκέδαζον ἐκεῖ οἱ φοιτηταὶ τῶν ἐγγὺς κειμένων πανεπιστημιακῶν κέντρων. Καὶ σήμερον ἀκόμη τὸ Μονπαρνὰς ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι ἡ κατ' ἐξοχὴν φοιτητικὴ συνοικία καὶ ἓν τῶν μᾶλλον πολυθορύβων κέντρων διασκεδάσεων τῆς Γαλλικῆς μητροπόλεως. Ἡ ὁδὸς τῆς φαιδρότητος (rue de la Gaité), δικαιολογοῦσα πλήρως τὸ ὄνομά της, βρίθει ποικίλων καὶ πολυαρίθμων κέντρων (καφφδείων, αἰθουσῶν χοροῦ, θεάτρων κλπ.). Ἡ συνοικία περιλαμβάνει καὶ τὸ ὁμώνυμον κοιμητήριον, τὸ ἐπισήμως γνωστὸν ὡς «Νότιον νεκροταφεῖον», ἱδρυθὲν τῷ 1824. Ἐν αὐτῷ ἐγείρονται οἱ τάφοι πολλῶν μεγάλων ἀνδρῶν, ὡς τῶν Ντυμὸν ντ' Ὑρβίλ, Σαὶν Μπαίβ, Μωπασσάν, Λεβερριέ, Περρώ, Μπωντελαὶρ κλπ, καὶ δύο καλλιτεχνικὰ μνημεῖα πρὸς τιμὴν τῶν πυροσβεστῶν καὶ πρὸς τιμὴν τῶν θυμάτων τοῦ καθήκοντος. Ἐν αὐτῷ ἐπίσης ὑπάρχει ὁ τάφος τοῦ *Ἀδαμαντίου Κοραῆ* (βλ. λ.). ἐν τῷ ὁποίῳ ἐφυλάσσοντο τὰ λείψανα αὐτοῦ μέχρι τοῦ 1877, ὁπότε ἀνεκομίσθησαν εἰς Ἀθήνας. Χ. Δ.

[Βλ. καὶ λ. *Παρίσιοι.*]

**Μὸν Πελέ,** ἢ ***Μοντάν*** *Πελὲ* (Mont Pelé ἢ Montagne Pelée=Γυμνὸν ὄρος) *[Γεωγρ.].* Ἡφαίστειον τῆς Μαρτινίκας (βλ. *Πελέ*). Χ. Δ.

**Μονπελλιὲ** (Montpellier) *[Γεωγρ.].* Σημαντικὴ πόλις τῆς Ν. Γαλλίας *(Λανγκεντόκ),* πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ἑρώ, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Μερντανσὸν μετὰ τοῦ Λέζ, 12 χλμ. βορείως τοῦ κόλπου τῆς Λυών. Κάτ. (1926) 82.819. Εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ χθαμαλοῦ λόφου ἐντὸς καταφύτου περιοχῆς καὶ ἔχει ἄφθονα ὕδατα. Εἰς τὸ Α. ἄκρον τῆς πόλεως ὑψοῦται τὸ παλαιὸν φρούριον, κτισθὲν ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ', κάτωθεν δ' αὐτοῦ ἀνοίγεται ἡ πλατεῖα καὶ ἡ δενδρόφυτος λεωφόρος τῆς Ἐσπλανάντ. Εἰς τὸ Δ. ἄκρον ὑπάρχει ἡ πλατεῖα Πεϋρού, κοσμουμένη ὑπὸ ὡραίων κτηρίων τοῦ ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνος. Μεταξὺ Πεϋροὺ καὶ Ἐσπλανὰντ βαίνει ἐκ Δ. πρὸς Α. ἡ κεντρικὴ ἐθνικὴ ὁδὸς (Rue Nationale) χωρίζουσα κατὰ πλάτος εἰς δύο τὴν παλαιὰν πόλιν, τὴν ὁποίαν περιβάλλουσι περιφερεια-

Digitized by Google

καὶ λεωφόροι κατέχουσαι τὴν θέσιν τῶν κατεδαφισθέντων τειχῶν. Κυριώτερα μνημεῖα καὶ κτήρια τοῦ Μονπελλιὲ εἶναι μία θριαβευτικὴ ἁψίς, ἄγουσα εἰς τὴν πλατεῖαν Πεϋρού, εἷς πύργος (tour de Pins) τοῦ ΙΒ΄ αἰῶνος, τὸ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ, ἐν τῷ ὁποίῳ στεγάζεται σήμερον ἡ ἰατρικὴ σχολή, ὁ μητροπολιτικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου (ΙΔ΄ αἰῶνος), ὁ ἑλληνορρωμανικοῦ ρυθμοῦ ναὸς τῆς Παναγίας, τὸ δικαστικὸν μέγαρον (παλαιὸν διοικητήριον), τὸ θέατρον, τὸ ἐμπορικὸν χρηματιστήριον, τὸ μουσεῖον τοῦ ζωγράφου Φάβρ, ἱδρυθὲν τῷ 1825 καὶ περιλαμβάνον πλουσίαν συλλογὴν ἔργων τέχνης.

Ἡ πόλις εἶναι ἕδρα ἐπισκοπῆς, σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν καὶ ὁδικῶν συγκοινωνιῶν τῆς Μεσημβρινῆς Γαλλίας καὶ ἀποτελεῖ ἓν ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων ἐκπαιδευτικῶν κέντρων τῆς χώρας, ἔχουσα πανεπιστημιακὰς σχολὰς ἰατρικῆς, ἐπιστημῶν καὶ γραμμάτων, σχολὰς ἐμπορίου καὶ βιομηχανίας, ἄλλας εἰδικὰς φαρμακευτικάς, σηροτροφικὰς καὶ ἀμπελουργικὰς σχολὰς μετὰ ἐργαστηρίων καὶ σταθμῶν ἐφαρμογῆς καὶ μελετῶν· ἐπίσης ἀκαδημίαν γραμμάτων καὶ ἐπιστημῶν κ.λ.π. Ἰδιαιτέρως ἀξιόλογος εἶναι ἡ ἰατρικὴ σχολὴ τοῦ Μονπελλιέ, ὡς μία ἐκ τῶν παλαιοτέρων τῆς Εὐρώπης (λειτουργεῖ ἀπὸ τοῦ ΙΒ΄ αἰῶνος, ἔχει δὲ τελειότατα ἐργαστήρια καὶ βιβλιοθήκην περιλαμβάνουσαν 50.000 τόμους καὶ 600 χειρόγραφα). Ἐν αὐτῇ ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ὁ Κοραῆς. Ἐκτὸς τοῦ ἐπιστημονικοῦ, τὸ Μονπελλιὲ παρουσιάζει ἐπίσης ἀξιόλογον ἐμπορικὸν ἐνδιαφέρον. Εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων οἰνολογικῶν κέντρων τῆς Γαλλίας, ἔχον μεγάλα ἐργοστάσια καὶ σημαντικοὺς οἴκους ἐμπορίου τῶν οἴνων καὶ οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν. Ἐπίσης διεξάγει ἀξιόλογον ἐμπόριον σιτηρῶν, ἐρίου, μετάξης καὶ ἐλαίου καὶ ἔχει βιομηχανίας ζυμαρικῶν, σοκολάτας, στεατοκηρίων, ὑφασμάτων καὶ χημικῶν προϊόντων, βυρσοδεψεῖα, τυπογραφεῖα κλπ.

— *[Ἱστορ.]* Μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΓ΄ αἰῶνος τὸ Μονπελλιὲ ἦτο μικρὰ πόλις, ὑπαγομένη εἰς τὴν ἐπισκοπὴν τῆς Μαγκελόν. Τῷ 1204 περιῆλθε διὰ συνοικεσίου εἰς τὸν οἶκον τῆς Ἀραγῶνος καὶ ἀκολούθως εἰς τὸν νεώτερον κλάδον αὐτοῦ τῆς Μαγιόρκας (1265—1349). Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην τὸ ἐμπόριον καὶ αἱ ἐπιστῆμαι εὑρίσκονται εἰς μεγάλην ἀκμὴν ἐν τῇ πόλει, ἔκτοτε δὲ ἤρχισεν ἀκμάζουσα ἡ τῷ 1220 ἱδρυθεῖσα περιώνυμος ἰατρικὴ σχολή, τὴν ὁποίαν μεγάλως προήγαγον Ἑβραῖοι ἰατροὶ ἐξ Ἱσπανίας, ἐκδιωχθέντες ἐκεῖθεν ὑπὸ τῆς φανατικῆς ἀραβικῆς δυναστείας τῶν Ἀλμοαδῶν. Τῷ 1349 ἡ πόλις ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ Φιλίππου τοῦ Βαλουά. Βραδύτερον ὁ Κάρολος Ε΄ τὴν ἐξεχώρησεν εἰς τὸν Κάρολον τὸν Κακόν, βασιλέα τῆς Ναβάρρας, ἀνακατελήφθη ὅμως αὕτη τῷ 1382 ἐπὶ Καρόλου ΣΤ΄. Ἤδη, ἀπὸ τοῦ 1141 εἶχεν ἴδιον καταστατικὸν χάρτην, κατὰ δὲ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα ἀπετέλει εἶδος αὐτοδιοικουμένης δημοκρατίας. Τῷ 1567, ὅτε, διαρκούντων τῶν θρησκευτικῶν πολέμων, οἱ διαμαρτυρόμενοι κατέλαβον αὐτήν, κατέστη ἐξ ὁλοκλήρου ἐλευθέρα μέχρι τοῦ 1622, ὁπότε πολιορκηθεῖσα κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄. Ἔκτοτε τὸ Μονπελλιὲ κατέστη κέντρον καὶ πρωτεύουσα τοῦ Κάτω Λανγκεντόκ, παρέμεινε δὲ συνεχῶς μέχρι σήμερον εἰς τὴν Γαλλίαν. Χ. Δ.

**Μονπίλιερ** (Montpelier) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βορειοαμερικανικῆς πολιτείας Βέρμοντ, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Οὐάσιγκτων, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὐΐχουσκι. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν καὶ ἐμπόριον σιτηρῶν. Κάτ. (1920) 7.125. Χ. Δ.

**Μονπού** (Monpou), ***Ἱππόλυτος.*** Γάλλος μουσικοσυνθέτης (1804—1841). Ἐγένετο γνωστὸς ἀπὸ τοῦ 1822 διὰ μιᾶς νυκτῳδίας του γραφείσης ἐπὶ στίχων τοῦ Μπερανζέ, τὴν ὁποίαν ἐπηκολούθησαν ἄλλαι ἐπιτυχεῖς ἐλαφραὶ συνθέσεις του ἐπὶ ποιημάτων ρωμαντικοῦ περιεχομένου, ἰδίως τοῦ Βίκτωρος Οὐγκώ, τοῦ Ἀλφρέδου ντὲ Μυσσὲ καὶ τοῦ Ζεράρ ντὲ Νερβάλ. Ἔγραψε κατόπιν ἀρκετὰ μουσικὰ ἔργα θεάτρου, ἀλλὰ μετρίας μόνον ἀξίας. Μεταξὺ τούτων ἀξιολογώτερα θεωροῦνται τά: «*Ἁγνὴ Σουζάνα*» (1839), «*Αἱ δύο βασίλισσαι*» (1835), «*Ἕνα παλιὸ παραμύθι*» (1838) κ. ἄ. — Ω.

**μονραδίτης** (ὁ) (Monradit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀποτελοῦν ἐνδιάμεσον προϊὸν μετουσιώσεως πρὸς *σερπεντίνην* τοῦ ὀλιβίνου καί τινα μέρη τῆς ὁμάδος τῶν *πυροξένων*. Κατά τινας θεωρεῖται ὡς προϊὸν ἀποσαθρώσεως τοῦ *βρονζίτου*. Ἀπαντᾷ ἐν Νορβηγίᾳ. Γ. Β.

**Μονρεὰλ** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μοντρεάλ*.

**Μονρεάλε** (Monreale) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Παλέρμου τῆς Σικελίας, ἀποτελοῦσα προάστειον τοῦ Παλέρμου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει περὶ τὰ 8 χιλ. νοτιοδυτικῶς. Εἶναι ἐκτισμένη ἐντὸς περιοχῆς καταφύτου ἐξ ὀπωροφόρων δένδρων (πορτοκαλλεῶν, ἀμυγδαλῶν, λεμονεῶν κλπ.) καὶ κοσμεῖται ὑπὸ ὡραίας μητροπόλεως μικτοῦ νορμανδικοῦ, βυζαντινοῦ καὶ ἀραβικοῦ ρυθμοῦ μετὰ θαυμασίων μωσαϊκῶν (ΙΒ΄ αἰῶνος). Κάτοικοι (1921) 22.571. Μετὰ τοῦ Παλέρμου συγκοινωνεῖ διὰ τροχιοδρόμου καὶ σιδηροδρόμου. Ἀπὸ τῆς πόλεως ταύτης ἤρχισαν κατὰ Μάρτιον 1282 αἱ σφαγαί, αἱ γνωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα «Σικελικοὶ ἑσπερινοί».

Εἰς Μονρεάλε ἐγκατεστάθη, μετὰ τὴν ἐξ Ἑλλάδος ἀπομάκρυνσίν του, ὁ βασιλεὺς τῆς Ἑλλάδος Κωνσταντῖνος (1922), ἐκεῖ δὲ καὶ ἀπέθανεν. Χ. Δ.

**Μὸν-Ρεπὸ** («Mon-Repos»). Τὸ ἐν Κερκύρᾳ πρῴην ἀγροκήπιον τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α΄.

Διαρκούσης, τῷ 1799, τῆς πολιορκίας τῆς Κερκύρας ὑπὸ τῶν Ρωσοτούρκων πρὸς ἐκδίωξιν τῶν κατεχόντων αὐτὴν Γάλλων, ἀνηγέρθη ὑπὸ τῶν πρώτων πυροβολεῖον ἐπὶ τοῦ λόφου τοῦ Ἁγίου Παντελεήμονος, τοῦ δεσπόζοντος ἐπὶ τὸ προάστειον τοῦ Ἀνεμομύλου. Μετὰ τὴν ἅλωσιν δὲ τῆς πόλεως καὶ τὴν σύστασιν τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τῆς Ἑπτανήσου Πολιτείας, ὁ στρατηγὸς Σωροκίν, ὅστις κατὰ τὴν πολιορκίαν διηύθυνε τὸ ἐπὶ τοῦ λόφου τούτου πυροβολεῖον καὶ εἶχε μαγευθῇ ἐκ τῆς ὡραίας τοποθεσίας, ἐζήτησε τὴν παραχώρησιν τοῦ γηπέδου, ἐφ' οὗ ὁ ναὸς εἶχε κατερειπωθῇ. Ὁ στρατηγὸς ἦτο φίλος τοῦ ἐν Κερκύρᾳ Ρώσου πληρεξουσίου κόμιτος Μοτσενίγου, δι' ὃ καὶ δὲν συνήντησε δυσκολίας ἐκ μέρους τῆς κυβερνήσεως διὰ τὸν ἀποδοχὴν τῆς αἰτήσεώς του, ἀνήγειρε δὲ ἐπὶ τοῦ παραχωρηθέντος γηπέδου μικρὸν περίπτερον.

Οὐδεὶς πλέον γίνεται λόγος περὶ τοῦ περιπτέρου τούτου μέχρι τοῦ 1824, ὅτε, ἀποπερατωθείσης τῆς οἰκοδομῆς τοῦ παλατίου τῶν Ἁγίων Μιχαὴλ καὶ Γεωργίου ἐν τῇ πόλει (1819—1824) ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος ταγματάρχου Withmore, ἀνετέθη εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ μεγάλου ἁρμοστοῦ στρατηγοῦ Ἄδαμ ἡ ἐκπόνησις σχεδίου διὰ τὴν ἀνέγερσιν αὐτόθι μεγαλοπρεποῦς ἐπαύλεως. Ἡ Ἰόνιος κυβέρνησις, μὴ δυναμένη οὐδὲν νὰ ἀρνηθῇ εἰς τοὺς ἁρμοστάς, ἀνέλαβε τὴν δαπάνην τῆς ἀνεγέρσεως συμφώνως πρὸς τὸ ἐκπονηθὲν σχέδιον, ἡ εὐρύτης ὅμως τοῦ οἰκοδομηθέντος μεγάρου ἦτο δυσανάλογος πρὸς τὴν ἔκτασιν τοῦ γηπέδου τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Παντελεήμονος καὶ τῆς περιοχῆς αὐτοῦ. Ὁ Ἄδαμ ἐπεδίωξε τότε παντὶ τρόπῳ τὴν ἐπέκτασιν αὐτοῦ πρὸς Ν., ἀλλ' αὕτη δὲν ἦτο εὔκολος, διότι ἡ περιοχὴ ἦτο ἐκκλησιαστικὴ καὶ συμφώνως πρὸς τοὺς νόμους δὲν ἦτο ἀπαλλοτριωτέα. Μόνον δι' ἀνταλλαγῆς ἦτο δυνατὴ ἡ ζητουμένη ἐπέκτασις. Ἰδιοκτήτρια τοῦ γειτονικοῦ χώρου ἐτύγχανε τότε ἡ οἰκογένεια Καίσαρη, ἥτις προέβαλε πλείστας διὰ τὴν ἀνταλλαγὴν ἀξιώσεις, μετὰ πολλὰς δὲ διαπραγματεύσεις ἐπραγματοποιήθη αὕτη, οὐχὶ ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως, ἀλλὰ ὑπὸ τῆς ὑπηρεσίας τῆς διαχειρίσεως τῶν ἐκκλησιαστικῶν κτημάτων, ἥτις καὶ ὑποκατέστη εἰς τὰ δικαιώματα τοῦ Καίσαρη, ὡς πρὸς τὴν περιοχὴν καὶ τὸν ἐν αὐτῇ ναὸν τοῦ Σωτῆρος (ἱεροσπουδαστήριον).

Μετὰ τὴν μεταφορὰν τοῦ ἱεροσπουδαστηρίου ἡ ἔπαυλις τοῦ Ἁγίου Παντελεήμονος δὲν ἐχρησιμοποιήθη ὑπὸ τῶν ἁρμοστῶν, ἀλλὰ ἐγκατεστάθη εἰς αὐτὸ ἡ καλλιτεχνικὴ σχολὴ ὑπὸ τὸν Παῦλον Προσαλέντην, διάσημον γλύπτην, μαθητὴν τοῦ Κανόβα, καὶ ἡ γεωπονικὴ σχολὴ ὑπὸ τὸν Ἰταλὸν πρόσφυγα Mazziari. Αἱ σχολαὶ αὗται διετηρήθησαν ἐπὶ μακρόν. Τῷ 1862 ἡ ἔπαυλις ἐχρησιμοποιήθη ὡς μέγαρον Πανιονίου ἐκθέσεως.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν καθ' ἣν ἐκτίσθη τὸ ἐν τῷ ἀγροκηπίῳ παλάτιον, ἡ κοινότης τῆς νήσου Κερκύρας, καθὼς καὶ αἱ τῶν λοιπῶν Ἰονίων νήσων, δὲν εἶχον ἰδίαν περιουσίαν, καὶ αὐτὴ δὲ ἡ ὑπὲρ ἐγχωρίων φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων ἀφιερωμένη ἐθεωρεῖτο ἀνήκουσα εἰς τὸ δημόσιον. Κατὰ τὸ ἔτος ὅμως 1834 δια τοῦ νόμου 26 τοῦ Ε΄ κοινοβουλίου, ἡ νομοθετικὴ ἀρχὴ ἐπέταξεν ὑπὲρ τῆς ἐγχωρίου διοικήσεως ἑκάστης νήσου μεταξὺ ἄλλων πόρων καὶ τὰ ἐτήσια εἰσοδήματα δημοσίων ἀστικῶν τε καὶ ἀγροτικῶν κτημάτων, ἰδίως τῶν πρῴην ἀνηκόντων εἰς καταργηθείσας μονὰς καὶ εἰς ἄλλα θρησκευτικὰ ἱδρύματα, ἅτινα εἶχον δημευθῆ κατὰ τὰ ἔτη 1797 καὶ 1799. Ἐπηκολούθησεν ὅμως κατὰ τὸ ἔτος 1841 ὁ Ἰόνιος ἀστικὸς κῶδιξ, τὸ ἄρθρον 427 τοῦ ὁποίου ὁρίζει ὅτι: «κοινοτικὰ κτήματα εἶναι ἐκεῖνα, ἐπὶ τῆς κυριότητος ἢ τῶν προϊόντων τῶν ὁποίων οἱ κάτοικοι μιᾶς ἢ πλειόνων κοινοτήτων ἀπέκτησαν δικαιώματα».

Δυνάμει τῆς διατάξεως ταύτης τὰ κατ' ἐπικαρπίαν κατεχόμενα ὑπὸ τῆς ἐγχωρίου διοικήσεως ἀστικὰ καὶ ἀγροτικὰ κτήματα περιῆλθον εἰς τὴν κυριότητα αὐτῆς.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἔλαβε χώραν ἡ ἕνωσις τῆς Ἑπτανήσου μετὰ τῆς βασιλευομένης Ἑλλάδος καὶ τὸ ἐπιχώριον συμβούλιον Κερκύρας ἐδωρήσατο τὴν ἔπαυλιν, διὰ τοῦ ἀπὸ 1 Ἰουνίου 1864 ψηφίσματός του, πρὸς τὸν τότε βασιλέα τῶν Ἑλλήνων Γεώργιον Α΄, ὁ ὁποῖος ἀκολούθως ἐπηύξησε τὸ ἀγροκήπιον, ἀγοράσας παρ' ἰδιωτῶν γειτονικά τινα κτήματα, κείμενα πρὸς τὸ μέρος τοῦ προαστείου τῆς Ἀναλήψεως. Βραδύτερον δέ, διὰ τοῦ νόμου ͵ΑΦΔ΄ τοῦ 1877, ἐκυρώθη ὁ μεταξὺ τοῦ κράτους καὶ τῆς ἐγχωρίου διαχειρίσεως Κερκύρας συνομολογηθεὶς κατὰ τὸ ἴδιον ἔτος συμβιβασμός, ἀνεγνωρίσθη δὲ ὑπαγόμενον εἰς τὴν κυριότητα τοῦ κράτους ἐν ἄλλοις καὶ τὸ ἀγροκήπιον Μὸν-Ρεπό, ἐκτὸς τοῦ μέρους, ὅπερ τὸ ἐγχώριον συμβούλιον εἶχε δωρήσει πρὸς τὸν βασιλέα Γεώργιον Α΄. Σήμερον (1931) τὸ Μὸν Ρεπὸ ἀνήκει εἰς τὸ ἑλληνικὸν δημόσιον, παραμένει δὲ πρὸς τὸ παρὸν ἀχρησιμοποίητον. Σ. Α. Μ.

**Μόνρο** (Monro), ***Ἀλέξανδρος.*** Ἐπιφανὴς Ἄγγλος ἀνατόμος καὶ χειρουργὸς ἐξ Ἐδιμβούργου (1697—1767). Συμπληρώσας τὰς σπουδάς του ἐν Γαλλίᾳ καὶ Ὁλλανδίᾳ, ἐπανέκαμψεν εἰς Ἐδιμβοῦργον, ὅπου ἐγένετο τὸ πρῶτον ἐπιμελητὴς τῆς ἀνατομικῆς (1719), ἀπὸ δὲ τοῦ 1721 ἔλαβε τὸν τίτλον καθηγητοῦ τοῦ ἰδίου μαθήματος, τοῦ ὁποίου τὴν διδασκαλίαν ἤρχισεν ἀπὸ τοῦ 1725. Ἐκλεγεὶς γενικὸς γραμματεὺς τῆς νεοϊδρυθείσης ἰατρικῆς ἑταιρείας, ἐδημοσίευσεν ἀπὸ τοῦ 1732 ἓξ τόμους τῶν πρακτικῶν ταύτης, περιλαμβάνοντας καὶ πληθὺν ἰδίων αὐτοῦ ἐργασιῶν. Τῷ 1759 ἀνέθεσε τὴν καθηγητικὴν αὐτοῦ ἕδραν εἰς τὸν ἐπίσης διαπρεπῆ ἀνατόμον καὶ χειρουργὸν υἱόν του *Ἀλέξανδρον*, περιορισθεὶς οὗτος εἰς κλινικὰς ἐρεύνας καὶ ἐργασίας. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρομεν τὰ συγγράμματά του τῆς ὀστεολογίας καὶ νευρολογίας, ὡς καὶ τῆς συγκριτικῆς ἀνατομικῆς, μεταφρασθέντα εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ γερμανικήν: Osteology; or a treatise on the anatomy of bones. Τὸ which are added a treatise of the nerves etc.» (Ἐδιμβοῦργον 1726), «Essay on comparative anatomy» (Λονδῖνον 1744), ὡς καὶ τὴν πραγματείαν αὐτοῦ περὶ ἐνοφθαλμισμοῦ τῆς εὐλογίας «An account of the inoculation of small-pox in Scotland» (Ἐδιμβοῦργον 1765). Ἐκ τῶν πρώτων ἀνατόμων καὶ ἀρίστων χειρουργῶν τῆς ἐποχῆς του ὁ Μόνρο εἰργάσθη ὁλοψύχως κατὰ τὴν 40ετῆ δρᾶσίν του πρὸς ἀνύψωσιν τῆς Ἐδιμβουργείου ἰατρικῆς σχολῆς. Ἐδοκίμασε διὰ τὴν θεραπείαν τῆς ὑδροκήλης τὰς ἐνέσεις οἴνου καὶ ὑπῆρξε πολέμιος τῆς ἐγχειρήσεως τοῦ καρκίνου. Οὗτος περιέγραψε τὸ ᾠοειδὲς στόμιον, δι' οὗ συγκοινωνεῖ ἡ πλαγία μετὰ τῆς μέσης κοιλίας τοῦ ἐγκεφάλου (Μονρόειον τρῆμα), ὡς ἐπίσης καὶ τὴν αὔλακα τὴν χωρίζουσαν εἰς δύο τὰ πλάγια τῆς τρίτης κοιλίας τοῦ ἐγκεφάλου (Μονρόειος αὖλαξ). Ο. Ρ.

— **Μόνρο** (Monro-Carmichael), *σὲρ* ***Κάρολος.*** Ἄγγλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1860. Ὑπηρέτησεν εἰς τὰς Ἰνδίας καὶ τὴν Ν. Ἀφρικὴν ὡς ἐπιτελής, ἐν ἀρχῇ δὲ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου διῴκει τὴν 2αν ἀγγλικὴν μεραρχίαν. Κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1915, ἀναλαβὼν τὴν ἀρχηγίαν τῶν στρατιωτικῶν δυνάμεων τῆς Μεσογείου καὶ τῶν συμμαχικῶν στρατευμάτων διὰ τὴν ἐκστρατείαν Καλλιπόλεως, ἐπρότεινε τὴν ἐκκένωσιν τῆς χερσονήσου ταύτης, ἥτις ἐξετελέσθη ὑπὸ τὰς ὁδηγίας του. Ἐπιστρέψας εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον διεδέχθη τὸν Χαίιγκ (Haig) εἰς τὴν διοίκησιν τοῦ Α΄ σώματος στρατοῦ. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ ἔτους 1916 διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τῶν ἐν Ἰνδίαις βρεττανικῶν δυνάμεων, ἀπὸ δὲ τοῦ 1923 μέχρι τοῦ 1928 ἐτοποθετήθη ὡς διοικητὴς καὶ γενικὸς ἀρχηγὸς τῶν στρατευμάτων τοῦ Γιβραλτάρ. Γ. Ι. Β.

**Μονρόε** (Monroe), ***Ἰάκωβος*** καὶ ***Μονρόε δόγμα***· βλ. λ. *Μονρῶ*.

**μονρόειον** ***τρῆμα,*** καὶ ***μονρόειος αὖλαξ*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *Μόνρο Ἀλέξανδρος*.

**Μονρὸζ** (Monrose), ***Κλαύδιος.*** Γάλλος κωμῳδὸς (1783—1843). Ἦτο παῖς ἀκόμη ὅταν ἔπαιξε τὸ πρῶτον ἀπὸ σκηνῆς ἑνὸς ἐλαφροῦ θεάτρου «τῶν Νέων», ἀμέσως δὲ κατόπιν προσελήφθη εἰς σοβαρωτέρους θιάσους, μετὰ τῶν ὁποίων περιῆλθε διαφόρους ἐπαρχιακὰς πόλεις, καὶ εἶτα εἰς τὸν θίασον τῆς δεσποινίδος Ρωκοὺρτ ἀναχωροῦντα δι' Ἰταλίαν. Ἐπανελθὼν ἐκεῖθεν τῷ 1814 ἐνεφανίσθη ἀπὸ τοῦ μεγάλου θεάτρου τῆς Λυών, μετὰ τόσης δὲ ἐπιτυχίας, ὥστε προσελήφθη ἀμέσως εἰς τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν. Αἱ πρῶται ἐν αὐτῇ ἐμφανίσεις του ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ ἐπισήμου γαλλικοῦ θεάτρου ὑπῆρξαν αὐτόχρημα θριαμβευτικαί, προϊόντος δὲ τοῦ χρόνου ὁ Μονρὸζ ἐξειλίχθη εἰς ἠθοποιὸν ἀνωτέρας γραμμῆς, πρωταγωνιστῶν μετ' ἴσης ἐπιτυχίας εἰς τὰ κλασσικὰ καὶ τὰ νεώτερα ἔργα. Τῷ 1840 ἡ μεγάλη του λύπη διὰ τὸν ἐπισυμβάντα θάνατον τῆς συζύγου του τὸν ὡδήγησεν εἰς τὸ φρενοκομεῖον. — Ω.

**μονρόλιθος** (ὁ) (Monrolith) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ *συλλιμανίτου* ($Al_2 Si O_5$). Γ. Β.

**Μονρούζ,** ἢ ***Μέγα Μονροὺζ*** (Montrouge ἢ Grand Montrouge) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σηκουάνα, κειμένη μεταξὺ Παρισίων καὶ Σώ, καὶ ἀποτελοῦσα οἱονεὶ βιομηχανικὸν προάστειον τῆς πρωτευούσης. Ἔχει ἐργοστάσια μηχανῶν καὶ χημικῶν προϊόντων. Κάτ. 22.770. Ἡ πολίχνη *Μικρὸν Μονρούζ*, ἀνήκουσα ἄλλοτε εἰς τὸ Μέγα Μονρούζ, ὑπήχθη σήμερον διοικητικῶς εἰς τὴν πόλιν τῶν Παρισίων. Χ. Δ.

**Μονρῶ** (Monroe), ***Ἰάκωβος.*** Ὁ πέμπτος κατὰ σειρὰν πρόεδρος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Βορείου Ἀμερικῆς. Γεννηθεὶς τῷ 1759 ἐν Βιργινίᾳ, ἐζήτησε, μετὰ τὸ πέρας τῆς ἐγκυκλίου παιδεύσεως, νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν σπουδὴν τῆς νομικῆς ἐπι-

Digitized by Google

στήμης, ἀλλ' ὁ ἀπελευθερωτικὸς ἀγὼν εἰς τὸν ὁποῖον ἐπεδόθη ἡ πατρίς του παρεκώλυσεν αὐτὸν νὰ πραγματοποιήσῃ τότε τὴν ἐπιστημονικήν του φιλοδοξίαν. Ἐπιστρατευθεὶς τῷ 1776, ἐν ἡλικίᾳ 17 περίπου ἐτῶν, ὑπηρέτησε πιστῶς τὴν χώραν του, ἀνδραγαθήσας κατ' ἐπανάληψιν, καὶ διὰ τοῦτο προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ λοχαγοῦ. Δύο ἔτη βραδύτερον (1778) ἠδυνήθη νὰ συνεχίσῃ τὰς σπουδάς του, μετὰ τὸ πέρας τῶν ὁποίων ἐξελέγη τῷ 1782 μέλος τῆς νομοθετικῆς συνελεύσεως τῆς Βιργινίας, κατὰ τὸ ἑπόμενον δὲ ἔτος μέλος τοῦ ἐθνικοῦ κογκρέσσου, ἐπανεκλεγεὶς τῷ 1788. Μετὰ δύο ἔτη ἐξελέγη μέλος τῆς γερουσίας, συνταχθεὶς μὲ τὸ δημοκρατικὸν κόμμα, μὲ τὸ ὁποῖον εἶχε συνεργασθῇ προηγουμένως καὶ εἰς τὰς ἄλλας βουλάς. Ἐπὶ τέσσαρα ἔτη διατηρήσας τὴν ἰδιότητα τοῦ γερουσιαστοῦ, διωρίσθη πρεσβευτὴς εἰς Παρισίους, παραμείνας εἰς τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ 1796. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του, ἐξελέγη μετὰ τρία ἔτη κυβερνήτης τῆς Βιργινίας. Ὀλίγον μετὰ τὴν λῆξιν της προεδρικῆς του θητείας (1799—1802) ἀπεστάλη καὶ πάλιν πρεσβευτὴς εἰς Παρισίους, ὅπως διαπραγματευθῇ τὸ ζήτημα τοῦ ἀποχωρισμοῦ τῆς Λουϊζιάνας, μετὰ τὴν λύσιν τοῦ ὁποίου ἐπεφορτίσθη μὲ διαφόρους ἐντολὰς εἰς τὴν Ἀγγλίαν, κατόπιν δὲ εἰς τὴν Μαδρίτην, ὅπου μετέβη τῷ 1804, καὶ βραδύτερον πάλιν εἰς τὸ Λονδῖνον (1806). Ἐπανεκλεγεὶς τῷ 1810 κυβερνήτης τῆς Βιργινίας, διετέλεσε τῷ 1811, κατὰ τὴν προεδρίαν τοῦ Μάντισον, γραμματεὺς τῆς ἐπικρατείας τῷ δὲ 1814, μετὰ τὴν κατάληψιν παρὰ τῶν Ἄγγλων τῆς Οὐασιγκτῶνος, διωρίσθη ὑπουργὸς ἐν πολέμῳ. Μὲ τὴν συνομολόγησιν τῆς εἰρήνης περιωρίσθη εἰς τὰ καθήκοντά του ὡς γραμματεὺς τῆς ἐπικρατείας ἐπὶ δύο ἔτη, ἀνταλλάξας τὴν θέσιν αὐτὴν μὲ τὴν τοῦ προέδρου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῷ 1817, εἰς ἣν ἐπανεξελέγη τῷ 1820. Διάδοχος αὐτοῦ ὑπῆρξεν ὁ Ἄνταμς, εἰς τὸν ὁποῖον καὶ παρέδωκε τὴν ἀρχὴν τὴν 3 Μαρτίου 1825. Ἔκτοτε εἰργάσθη εἴτε ὡς πρόεδρος τῆς συντακτικῆς ἐπιτροπῆς πρὸς καταρτισμὸν σχεδίου Συντάγματος τῆς πολιτείας Βιργινίας, εἴτε ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ Γέφφερσον καὶ τοῦ Μάντισον πρὸς ἵδρυσιν πανεπιστημίου ἐν τῇ ἰδιαιτέρᾳ του πατρίδι. Ἀπέθανε τῷ 1831 ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ.

*Ἰάκωβος Μονρῶ.*

Ὁ Μονρῶ προσέφερε μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τὴν χώραν του καὶ εἰς τὴν ἀμερικανικὴν ὁμοσπονδίαν, ἐργασθεὶς πρὸς ἐνίσχυσιν τῆς θέσεως τῆς κυβερνήσεως τῆς ὁμοσπονδίας, πρὸς βελτίωσιν τοῦ στρατεύματος καὶ τοῦ ναυτικοῦ, πρὸς τόνωσιν τοῦ ἐμπορίου καὶ ἐξασφάλισιν αὐτοῦ κατὰ τῶν τότε κινδύνων, διὰ τῆς ἀποστολῆς πολεμικῶν πλοίων εἰς τὰ δυτικὰ παράλια τῶν Ἰνδιῶν καὶ τὴν Μεσόγειον θάλασσαν καὶ τὰς ἀκτὰς τῆς Ἀφρικῆς. Διαρκούσης τῆς θητείας τοῦ Μονρῶ ὡς προέδρου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἐπετεύχθη ἡ ἀναγνώρισις τῆς ἀνεξαρτησίας τῶν ἄλλοτε ἱσπανικῶν καὶ πορτογαλικῶν ἀποικιῶν, διεκηρύχθη δὲ παρ' αὐτοῦ τὸ περίφημον καταστὰν ὁμώνυμον δόγμα (βλ. κατωτ.). Η. Γ. Κ.

**— Μονρῶ** (Monroe) ***δόγμα*** *[Διεθν. Δίκ.].* Ὁ πρόεδρος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν *Μονρώ*, ἐξ ἀφορμῆς ἀφ' ἑνὸς μὲν τῶν μεταξὺ τῆς Ἀμερικανικῆς ὁμοσπονδίας καὶ τῆς Ρωσίας δημιουργηθεισῶν ἐμπορικῶν προστριβῶν ἐν τῇ βορειοδυτικῇ Ἀμερικῇ, ἀφ' ἑτέρου δὲ τῆς στάσεως τὴν ὁποίαν ἐνδεχομένως θὰ ἐλάμβανεν ἡ Ἱερὰ Συμμαχία (κατόπιν τοῦ παρὰ τοῦ τσάρου, τῇ αἰτήσει τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας Φερδινάνδου Ζ', ἀπευθυνθέντος εἰς τὰς διαφόρους αὐλὰς τῆς Εὐρώπης ὑπομνήματος, διὰ τοῦ ὁποίου παρώτρυνε τὰς δυνάμεις, ὅπως προβῶσιν εἰς κοινὴν ἐνέργειαν πρὸς ὑπόταξιν ὑπὸ τὸ κράτος τῆς μητροπόλεως τῶν ἐπαναστατησασῶν ἱσπανικῶν ἐν Ἀμερικῇ ἀποικιῶν) ἀπηύθυνε τὴν 2 Δεκεμβρίου 1823 πρὸς τὸ κογκρέσσον μακροσκελὲς διάγγελμα, εἰς τὸ ὁποῖον ἐξετίθεντο αἱ ἀκόλουθοι ἀρχαί: α') Ἀπαγορεύεται ἡ ἀποίκησις εὐρωπαϊκῶν κρατῶν ἐπὶ ἐδαφῶν τῆς Ἀμερικῆς. β') Ἀπαγορεύεται ἡ ἐπέμβασις τῆς Εὐρώπης εἰς τὰς ὑποθέσεις τῆς Ἀμερικῆς. γ') Ἡ Ἀμερικὴ δὲν θὰ ἐπέμβῃ εἰς τὰς ὑποθέσεις τῶν εὐρωπαϊκῶν κρατῶν. Αἱ τρεῖς αὗται ἀρχαὶ συναποτελοῦσι τὸ ἀποκαλούμενον δόγμα τοῦ Μονρῶ, ἡ πολιτικὴ σημασία τοῦ ὁποίου διὰ τὸ διεθνὲς δίκαιον καὶ γενικώτερον διὰ τὰς μεταξὺ τοῦ παλαιοῦ καὶ νέου κόσμου σχέσεις ἀπέβη μεγίστη.

Τὸ δόγμα τοῦ Μονρῶ ἀπετέλεσεν ἀντικείμενον εὐρυτάτων ἐρευνῶν καὶ ἀπὸ νομικῆς ἀπόψεως, ἐξητήθη δηλαδὴ νὰ ἐρευνηθῇ ἂν ἐν αὐτῷ ἐγκλείεται καὶ νομικὴ σημασία, ποία δὲ εἶναι δυνατὸν νὰ εἶναι αὕτη. Οὕτω ὑπεστηρίχθη ὅτι ἀπετέλεσε πρᾶξιν ὑπερασπίσεως τῶν λατινικῶν κρατῶν διὰ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἔναντι τῆς Εὐρώπης· ἢ ὅτι ἀποτελεῖ διακήρυξιν τῆς ἀρχῆς τῆς μὴ ἐπεμβάσεως, ἤ, ἀντιθέτως, τυπικὴν ἐπέμβασιν ἐν Εὐρώπῃ, ὡς ἀποκλείουσαν τὴν ἐπέμβασιν τῶν εὐρωπαϊκῶν κρατῶν ἐν Ἀμερικῇ (Pradier-Fodéré, Rougier), ἐνῷ πράγματι πρόκειται ἁπλῶς περὶ πράξεως ἀντιστάσεως κατ' ἐνδεχομένης ἐπεμβάσεως· ἢ ὅτι ἀποτελεῖ πανηγυρικωτέραν ἐξαγγελίαν περὶ ἀνεξαρτησίας τῶν ἀμερικανικῶν κρατῶν, ἔναντι ὁλοκλήρου τῆς Εὐρώπης, τῶν πολιτειῶν ἑκάστου ἡμισφαιρίου δυναμένων νὰ ἐνδιαφέρωνται μόνον διὰ τὰ ὡς ἐκ τῆς γεωγραφικῆς των θέσεως διάφορα αὐτῶν συμφέροντα καὶ οὐχὶ καὶ διὰ τὰ τῶν κρατῶν τοῦ ἑτέρου ἡμισφαιρίου (de Lapradelle)· ἢ ὅτι ἀποτελεῖ ἐνέργειαν αὐτοϋπερασπίσεως (self protection), τὴν ὁποίαν ἀναγνωρίζει τὸ διεθνὲς δίκαιον δι' ὅλας τὰς πολιτείας (Elihu Root)· ἢ ὅτι ἐσκόπει τὴν ἐξασφάλισιν τῶν δικαιωμάτων καὶ συμφερόντων, τῆς εἰρήνης καὶ τῆς εὐδαιμονίας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν (Fauchille-Bonfils).

Ἡ πρώτη ἀρχή, ἐπὶ τῆς ὁποίας βασίζεται τὸ δόγμα τοῦ Μονρώ, εἶναι ἡ ἀπαγόρευσις τοῦ μελλοντικοῦ ἀποικισμοῦ εὐρωπαϊκῶν κρατῶν ἐν Ἀμερικῇ, χωρὶς ν' ἀναφέρεται καὶ εἰς τὰς ὑφισταμένας ἀκόμη, ἀπὸ παλαιοτέρας ἐποχάς, ἀποικίσεις. Ἡ ἀπαγόρευσις αὕτη ἦτο γενική, παρέχουσα τὴν προστασίαν της εἰς ὅλας τὰς ἀμερικανικὰς πολιτείας. Ἀλλὰ βραδύτερον, ἐπὶ τῆς προεδρίας τοῦ Ἄνταμς, ἡ ἀρχικὴ ἔννοια τῆς πρώτης ταύτης ἀρχῆς περιωρίσθη. Διὰ τῶν ἀπὸ 26 Δεκεμβρίου 1825 καὶ 15 Μαρτίου 1826 διαγγελμάτων του πρὸς τὸ κογκρέσσον, ὁ πρόεδρος Ἄνταμς ἐξήγγειλεν ὅτι «ἐὰν εὐρωπαϊκή τις δύναμις ἐπεχείρει νὰ ἱδρύσῃ ἀποικίαν εἴς τινα πολιτείαν τῆς Ἀμερικῆς, μόνον ἡ δεδομένη πολιτεία ὀφείλει διὰ τῶν ἰδίων αὐτῆς μέσων ν' ἀντιταχθῇ κατὰ τοῦ τοιούτου ἀποικισμοῦ καὶ ὑπεραμυνθῇ τῆς ἰσχύος τῆς ἀρχῆς ἐντὸς τῆς ἰδίας της χώρας». Εἶναι φανερὸν ἐκ τῆς περικοπῆς ταύτης ὅτι αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι, μὴ θέλουσαι ν' ἀναλάβωσι τὴν εὐθύνην, τὴν ὁποίαν θὰ συνεπήγετο δι' αὐτὰς ἡ ἔμπρακτος ἐφαρμογὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως, ὑπὸ τὴν ἀρχικὴν ἔννοιαν αὐτῆς, διεκήρυττον ὅτι δὲν ὑπέχουσιν ὑποχρέωσίν τινα, οἷα διετυποῦτο εἰς τὴν σχετικὴν ἀπόφασιν τῆς βουλῆς τῶν ἀντιπροσώπων, νὰ ἐγγυηθῶσι τὰ ἰδιαίτερα σύνορα τῶν ἄλλων κρατῶν καὶ ὅτι θὰ εἶναι ἐλεύθεραι νὰ ἐνεργήσωσιν, ἐν πάσῃ κρισίμῳ περιστάσει, καθ' ὃν τρόπον ἤθελον ὑπαγορεύσει εἰς αὐτάς, κατὰ τὴν δεδομένην στιγμήν, τὰ αἰσθήματα αὐτῶν πρὸς τὰς ἱσπανικὰς δημοκρατίας τῆς Ἀμερικῆς, ἡ ἰδία αὐτῶν τιμὴ καὶ ἡ πολιτική των. Κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἡ ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως, ἰσχύουσα ἰδιαιτέρως δι' ἑκάστην ἀμερικανικὴν πολιτείαν, ἐχώριζε τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῶν κρατῶν τῆς κεντρῴας καὶ νοτίου Ἀμερικῆς.

Βραδύτερον ὅμως, ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῆς προεδρίας τοῦ Polk (1845), ἡ ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως προσλαμβάνει ἄλλην σημασίαν διὰ τοῦ ἀπὸ 2 Δεκεμβρίου 1845 διαγγέλματος αὐτοῦ, ἐν τῷ ὁποίῳ περιείχετο ἡ ἀκόλουθος φράσις: «οὐδεμία ἀποίκησις ἢ κατάληψις εὐρωπαϊκοῦ τινος κράτους δύναται, ἐν τῷ μέλλοντι, νὰ λάβῃ χώραν, εἰς οἱονδήποτε μέρος τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, ἄνευ τῆς συγκαταθέσεως τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν». Οὕτω, δὲν ἀπαγορεύεται τοῦ λοιποῦ μόνον ἡ ἀποίκησις, ἀλλὰ καὶ ἡ κατάληψις, ἁπλῶς διὰ τὴν Β. Ἀμερικήν, ἐφόσον δὲν συγκατατεθοῦν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι. Ἄρα τῇ συγκαταθέσει των εἶναι δυνατή. Ἀλλ' ἡ ἀρχὴ αὕτη, ὑπὸ τὴν ἐκτεθεῖσαν ἔννοιαν, ἐθεωρήθη ὅτι δύναται ν' ἀποβῇ ἐπιζήμιος εἰς τὴν κυριαρχίαν τῶν διαφόρων ἀμερικανικῶν πολιτειῶν. Διὰ τοῦ διαγγέλματος ὅμως, τὸ ὁποῖον αὐτὸς ὁ Polk ἀπηύθυνεν ὑπὸ ἡμερομηνίαν 29 Ἀπριλίου 1848, ἡ ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως, ὑπὸ τὴν ὡς ἄνω ἔννοιαν, ἐπεξείνετο καὶ εἰς τὰς πολιτείας τῆς κεντρῴας Ἀμερικῆς. Τοῦτο προεκλήθη ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ πολιτεία Yucatan ἀνέθεσε, μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τῶν Ἰνδῶν, τὴν «κυριαρχίαν» της εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας, ἀπευθυνθεῖσα ταυτοχρόνως πρὸς τὸν σκοπὸν αὐτὸν καὶ εἰς τὴν Ἱσπανίαν καὶ Ἀγγλίαν. Ὁ Polk, χωρὶς ν' ἀναμείνῃ τὴν ἀπάντησιν τῶν δύο τούτων δυνάμεων εἰς τὴν αἴτησιν τῆς πολιτείας Yucatan, διὰ τοῦ εἰρημένου διαγγέλματος ἠρνήθη τὴν «συγκατάθεσιν» τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν εἰς πᾶν εὐρωπαϊκὸν κράτος, ὅπως ἀναλάβῃ τὴν κυριαρχίαν ἐπὶ τῆς Yucatan.

Τῷ 1870 ὁ πρόεδρος Grant ἐπεξέτεινε κατ' ἔννοιαν μεγάλως τὸ δόγμα τοῦ Μονρῶ, διακηρύξας ὅτι «τοῦ λοιποῦ οὐδεμία εὐρωπαϊκὴ δύναμις δύναται νὰ καταλάβῃ ὁπωσδήποτε, διὰ πολέμου, ἀποικισμοῦ, προσαρτήσεως, ἔστω καὶ τῇ αἰτήσει τοῦ προσαρτωμένου λαοῦ, μέρος τι τοῦ ἀμερικανικοῦ ἐδάφους». Ἀπὸ τοῦ 1879 ἡ ἀρχὴ αὕτη ἀρχίζει νὰ ἐπεκτείνεται καὶ εἰς τοὺς ἐν Ἀμερικῇ ἐγκατεστημένους ἀλλοδαπούς, ἰδίως τὰς ἐν αὐτῇ ἱδρυομένας ἑταιρείας τῇ ἀρωγῇ ξένων κυβερνήσεων, ἐκ φόβου δημιουργίας δι' αὐτῶν ἀποικήσεων εὐρωπαϊκῶν δυνάμεων. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον ὁ πρόεδρος Οὐΐλσων ἔν τινι ἀγορεύσει του, εἰς τὴν Mobile τῆς Ἀλαβάμας, τῷ 1913, ἠρνήθη πᾶσαν χορήγησιν προνομίων εἰς ξένους κεφαλαιούχους, ἐπειδὴ «τὰ ξένα συμφέροντα δύνανται νὰ φθάσουν εἰς τὸ νὰ κυριαρχήσουν τῶν ἐσωτερικῶν ὑποθέσεων τῆς χώρας, ἥτις παραχωρεῖ τοιαῦτα προνόμια, ἡ κατάστασις δὲ αὕτη εἶναι πάντοτε ἐπικίνδυνος, τείνουσα νὰ καταστῇ ἀφόρητος».

Ἡ δευτέρα ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως τῆς Εὐρώπης ἐν Ἀμερικῇ, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐποικοδομεῖται τὸ δόγμα τοῦ Μονρώ, ὑπῆρξεν ἀπόλυτος, ὡς ἀναφερομένη εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἀμερικὴν καὶ ἐκτεινομένη ἀδιακρίτως εἰς τὰς ἐσωτερικὰς καὶ ἐξωτερικὰς ὑποθέσεις τῶν διαφόρων πολιτειῶν αὐτῆς. Ἐν τῷ διαγγέλματι τοῦ Μονρῶ ἡ ἐπέμβασις τῆς Εὐρώπης ἐν Ἀμερικῇ ἀποτελεῖ «κίνδυνον κατὰ τῆς εἰρήνης καὶ τῆς ἀσφαλείας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν» καὶ ἐπίσης «ἐκδήλωσιν ἐχθρικῆς στάσεως ἀπέναντι αὐτῶν», ὑποχρεωμένων ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει νὰ λάβωσι πάντα τὰ κατάλληλα ὡς ἐκ τῶν περιστάσεων μέτρα. Ἀλλὰ καὶ ἡ ἀρχὴ αὕτη διὰ τοῦ χρόνου ἠλλοιώθη περιορισθεῖσα κατ' ἔννοιαν· αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι δὲν ἀποτελοῦν, δι' οἱανδήποτε πολιτείαν τῆς Ἀμερικῆς, ἐγγύησιν τηρήσεως τῆς τοιαύτης ἀρχῆς, ὡς τοῦτο καταφαίνεται ἐκ τῆς ἀπὸ 18ης Ἀπριλίου 1826 ληφθείσης, ἐπ' εὐκαιρίᾳ τοῦ συνελθόντος ἐν Παναμᾷ συνεδρίου, παρὰ τῆς βουλῆς τῶν ἀντιπροσώπων ἀποφάσεως, καθ' ἣν «ἡ κυβέρνησις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν οὐδένα ἔχει λόγον νὰ συμμετάσχῃ μετὰ τῶν δημοκρατιῶν τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς εἰς κοινὴν διακήρυξιν ἀποσκοποῦσαν νὰ παρακωλύσῃ τὴν ἐπέμβασιν εὐρωπαϊκῆς τινος δυνάμεως ἐπὶ τῆς ἀνεξαρτησίας καὶ τοῦ τύπου τοῦ πολιτεύματός των». Ὁ πρόεδρος Polk διὰ τοῦ ἀπὸ 2 Δεκεμβρίου 1845 διαγγέλματος αὐτοῦ περιώρισε τὴν ἀρχὴν τῆς μὴ ἐπεμβάσεως μόνον εἰς τὰς δημοκρατίας τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, ἀλλὰ τῷ 1848 ἠναγκάσθη, λόγῳ τῆς πολιτείας Yucatan, νὰ ἐπεκτείνῃ τὴν ἰσχὺν αὐτὴν καὶ εἰς τὴν Κεντρῴαν Ἀμερικήν.

Βραδύτερον ἡ ἀρχὴ τῆς ἐπεμβάσεως ἐπεξετάθη κατ' ἔννοιαν εἰς βαθμὸν ὥστε τῷ 1881 ὁ ὑπουργὸς Blaine διεκήρυττεν ὅτι οὐδεμία ξένη πολιτεία θὰ ἐγίνετο δεκτὴ «ὅπως κατασκευάσῃ, σχεδιάσῃ ἢ ἐνισχύσῃ ἐπὶ τοῦ ἀμερικανικοῦ ἐδάφους ἐμπορικὰς ὁδοὺς ἢ ὁδοὺς συγκοινωνίας», ὅπως διώρυγας κλπ. Τῷ 1884 ὁ ὑπουργὸς Frelinghwysen διακηρύττει ὅτι «οὐδεμία διαιτησία εὐρωπαϊκῶν κρατῶν θέλει ἐπικυρωθῆ ἐν τῇ Νοτίῳ Ἀμερικῇ, ἔστω καὶ ἂν αὕτη ἐγίνετο παραδεκτὴ παρὰ τῶν ἐνδιαφερομένων». Ἀπὸ τοῦ 1901 τὸ δόγμα τοῦ Μονρῶ προσλαμβάνει νέαν ὄψιν· ὁ πρόεδρος Roosevelt διὰ διαγγελμάτων του, τῷ 1901 καὶ 1902, δὲν ἀρνεῖται μὲν εἰς τὰ εὐρωπαϊκὰ κράτη νὰ λάβωσι πιεστικὰ μέτρα κατὰ ἀμερικανικῶν πολιτειῶν λόγῳ ἀρνήσεως ἢ ἀδυναμίας ἐκπληρώσεως χρηματικῶν των ὀφειλῶν, ἀποκηρύσσει ὅμως τὸ δικαίωμα εἰς αὐτὰ νὰ προβῶσιν ἐπὶ τῷ σκοπῷ τούτῳ εἰς κατάληψιν ἐδαφῶν τῆς ὀφειλέτιδος πολιτείας κλπ. Εἰς τὴν συνδιάσκεψιν τῆς Χάγης τοῦ 1907, τῇ προτάσει τοῦ ἀντιπροσώπου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν Porter, ἀποφασίζεται ὅπως θεωρηθῇ ἀπηγορευμένον εἰς πᾶν κράτος νὰ χρησιμοποιῇ ἐκβιαστικὰ μέτρα κατὰ τῆς ὀφειλέτιδος πολιτείας. Ἤδη ὅμως ἀπὸ τοῦ 1904 ὁ πρόεδρος Roosevelt εἶχε διακηρύξει τὴν ἀρχὴν τῆς «διεθνοῦς ἀστυνομίας» ἢ τοῦ «big stick», κατὰ τὴν ὁποίαν, ἀδυνάτου καθισταμένης τῆς ἐπεμβάσεως πιστωτρίας τινὸς εὐρωπαϊκῆς δυνάμεως ἐν Ἀμερικῇ, ἐπετυγχάνετο ἡ ἐξόφλησις τῶν ὀφειλομένων τῇ μεσολαβήσει τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἐκτὸς ὅμως τῆς καθαρᾶς οἰκονομικῆς σημασίας, τὴν ὁποίαν προσέλαβεν ἡ ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως, ἡ αὐτὴ ἀρχὴ ἀνεπτύχθη ὡς ἄρνησις κατὰ τῆς ἐμπορικῆς ἐξαπλώσεως τῶν εὐρωπαϊκῶν κρατῶν, εἰς τὴν ὁποίαν, ἀνάγκη ἰδιαιτέρως νὰ σημειωθῇ, ἀνευρίσκεται τὸ σπέρμα τοῦ παναμερικανισμοῦ. Διὰ τῶν διαφόρων ἀμερικανικῶν συνεδρίων ἐξητήθη, μεταξὺ ἄλλων, νὰ παρασχεθῇ πᾶσα διευκόλυνσις εἰς τὸ μεταξὺ τῶν ἀμερικανικῶν δημοκρατιῶν διεξαγόμενον ἐμπόριον, διὰ τῆς ἱδρύσεως τελωνειακῆς ἑνώσεως κλπ., ὥστε κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον νὰ δημιουργηθῇ ἀντιπερισπασμὸς κατὰ τοῦ ἐξ Εὐρώπης ἐμπορίου.

Τὸ δόγμα τοῦ Μονρώ, ὑπὸ τὰς δύο ἀναλυθείσας ἀνωτέρω ἀρχάς, παρεβιάσθη πλέον ἢ ἅπαξ: τῷ 1833 διὰ τῆς καταλήψεως παρὰ τῆς Ἀγγλίας τῶν νήσων Falkland, τῷ 1835 διὰ τῶν προσπαθειῶν τῆς Ἀγγλίας νὰ ἐπεκτείνῃ τοὺς ἀποικισμούς της ἐν Γουατεμάλᾳ, τῷ 1838 καὶ 1845 διὰ τῆς ἐνόπλου ἐπεμβάσεως τῆς Γαλλίας καὶ Ἀγγλίας εἰς τὰς ὑποθέσεις τοῦ Rio de la Plata, τῷ 1850 διὰ τῆς συνομολογήσεως μεταξὺ Μεγάλης Βρεττανίας καὶ Ἀγγλίας τῆς ἀποκαλουμένης συμβάσεως Clayton-Bullwer περὶ κατασκευῆς μεταξὺ Ἀτλαντικοῦ καὶ Εἰρηνικοῦ ὠκεανοῦ διώρυγος δαπάναις καὶ τῶν δύο συμβαλλομένων δυνάμεων, τῷ 1846 διὰ τῆς μετὰ τῆς Ἀγγλίας συμβάσεως, διὰ τῆς ὁποίας παρεχωρεῖτο εὐρυτάτη ἔκτασις ἐδάφους εἰς αὐτὴν ἐν τῇ πολιτείᾳ Oregon καὶ τῷ 1871 διὰ τῆς συνθήκης τῆς Οὐασιγκτῶνος, διὰ τῆς ὁποίας ἀνετίθετο εἰς τὸν αὐτοκράτορα τῆς Γερμανίας ἡ διαιτησία ἐν περιπτώσει συνοριακῶν διαφορῶν κλπ. κλπ. Σπανιώτεραι ἀληθῶς ὑπῆρξαν αἱ περιπτώσεις, καθ' ἃς ἡ ἀρχὴ τῆς μὴ ἐπεμβάσεως ἐτηρήθη παρὰ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ὡς τῷ 1850, ὁπότε ἠρνήθησαν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι ν' ἀποδεχθῶσι τὴν στάσιν τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ὅπως ἐκ τῆς ἡ ἐπίλυσις ἐνίων διαφορῶν, προκυψασῶν

Digitized by Google

συμβάσεως τοῦ 1846, ἀνατεθῇ εἰς διαιτησίαν εἴς τινα εὐρωπαϊκὴν δύναμιν, τῷ 1858, ὁπότε αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι διεμαρτυρήθησαν κατὰ τῶν προσπαθειῶν τῆς Ἱσπανίας νὰ μεταβάλῃ εἰς προτεκτορᾶτον τὸν Μεξικὸν καὶ ὑπὸ τὸν ἔλεγχον τῶν εὐρωπαϊκῶν δυνάμεων κλπ.

Τὸ δόγμα τοῦ Μονρώ, ὑπὸ τὰς δύο ἀνωτέρω ἀναπτυχθείσας ἀρχάς, ἂν καὶ ἀπηυθύνετο μόνον πρὸς τὰς δυνάμεις τῆς Εὐρώπης, ἡρμηνεύθη ἐν τούτοις ὡς ἀφορῶν ὅλα τὰ κράτη τοῦ κόσμου. Τὸ γεγονὸς ὅτι τὸ δόγμα τοῦ Μονρὼ ἔχει ὑπ' ὄψιν του ἀποκλειστικῶς τὰς εὐρωπαϊκὰς πολιτείας ἐξηγεῖται ἐκ τοῦ ὅτι τῷ 1823 τὰ ἀσιατικὰ καὶ τὰ λοιπὰ κράτη δὲν ἐθεωροῦντο ὑπολογίσιμα ἐν τῇ παγκοσμίῳ πολιτικῇ. Βραδύτερον ὅμως ἡ ἀνάπτυξις ἰδίως τῶν ἀσιατικῶν κρατῶν προεκάλεσε τὴν ἑρμηνείαν τοῦ δόγματος τοῦ Μονρὼ ὑπὸ τὴν ὡς ἀνωτέρω ἔννοιαν. Ὁ ἄλλοτε πρόεδρος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν Τὰφτ εἴς τινα λόγον του ἀπαγγελθέντα τὴν 4ην Μαρτίου 1919, ἔλεγεν ὅτι «ἐν τῷ συνόλῳ του τὸ δόγμα τοῦ Μονρὼ σημαίνει ὅτι, πρὸς τὸ ἴδιον ἡμῶν συμφέρον, δὲν σκοπεύομεν νὰ ἐπιτρέψωμεν εἰς τὰς δυνάμεις τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας νὰ καταλάβωσι διὰ πολέμου, δι' ἀγορῶν ἢ διὰ σκευωριῶν εἰς βάρος τῶν ἐθνῶν τοῦ ἡμισφαιρίου μας ἄλλα ἐδάφη, ἢ ἄλλα πολιτικὰ ὀφέλη ἢ ἄλλας στρατιωτικὰς βάσεις τῶν ὅσων κατέχουσιν ἤδη».

Διὰ τοῦ δόγματος τοῦ Μονρώ, ἀποκλειομένης τῆς περιπτώσεως ἀποικισμοῦ ἢ ἐπεμβάσεως τῶν εὐρωπαϊκῶν δυνάμεων ἐν Ἀμερικῇ, προητοιμάσθη. θεωρητικῶς τοὐλάχιστον, καὶ διὰ τοῦ χρόνου ἐφάνη ἐπικρατοῦσα ἡ ἄποψις ὅτι αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι εἶναι ἐλεύθεραι νὰ προβῶσιν εἰς ἀποικισμοὺς καὶ ἐπεμβάσεις εἰς τὰς πολιτείας τοῦ αὐτοῦ ἡμισφαιρίου. Οὕτω ὁ πρόεδρος Polk διεκήρυξεν ὅτι «ὁ ἀποικισμός, ἡ ἐπέμβασις καὶ ἡ ἐγκατάστασις οἱασδήποτε δυνάμεως ἀπηγορεύθη εἰς τὴν Εὐρώπην· ἀλλὰ δι' ἡμᾶς ὑπάρχει ἀπόλυτος ἐλευθερία, ὅπως κατακτήσωμεν, ἱδρύσωμεν ἀποικίας καὶ ἐπεμβῶμεν ὁσάκις παραστῇ ἀνάγκη. Ἀναμφιβόλως, ἀφῃρέσαμεν δικαιώματα ἀπὸ τοὺς Εὐρωπαίους ἐπὶ τῷ σκοπῷ ὅπως οἰκειοποιηθῶμεν αὐτὰ καὶ χρησιμοποιήσωμεν ταῦτα πρὸς τὸ συμφέρον μας». Ἔμπρακτον ἐκδήλωσιν τῶν ἐπισήμων αὐτῶν ἀπόψεων τοῦ προέδρου Polk καὶ ἔκδηλον ἐφαρμογὴν τῆς τοιαύτης δοθείσης ἑρμηνείας, παρέσχον κατ' ἐπανάληψιν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι ἰδίως κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, διὰ τῆς καταλήψεως λ. χ. τῷ 1845, τῷ 1846 καὶ τῷ 1848 ἐδαφῶν ἐν Τεξάς, Oregon καὶ Yucatan, τῷ 1857 μέχρι τοῦ 1870 διὰ τῆς ἐπιθυμίας νὰ ἱδρύσωσι προτεκτορᾶτον εἰς τὰς νοτίους χώρας τοῦ Μεξικοῦ, ἀλλὰ καὶ κατὰ τοὺς νεωτάτους χρόνους, ὡς λ. χ. κατὰ τὸ 1921, ὅτε ἐκ τῶν μεταξὺ τῆς Κοσταρίκας καὶ τοῦ Παναμᾶ προκληθεισῶν διαφωνιῶν ἐπενέβησαν διαιτητικῶς τρόπον τινὰ αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι κλπ. Ἡ τοιαύτη ἑρμηνεία καὶ ἡ κατὰ συνέπειαν ταύτης ἐφαρμογὴ τοῦ δόγματος τοῦ Μονρὼ ἐδημιούργησε πολιτικὴν κατάστασιν ἰμπεριαλισμοῦ ἢ ἡγεμονίας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἔναντι τῶν πολιτειῶν τῆς κεντρῴας καὶ νοτίου Ἀμερικῆς, ἡ ὁποία ἐξειλίχθη εἰς οἰκονομικὴν ἡγεμονίαν. Πρέπει ὅμως νὰ σημειωθῇ ὅτι ἐξ αἰτίας τῶν δυσμενῶν ἀποτελεσμάτων, τὰ ὁποῖα εἶχε διὰ τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας ἡ ἐφαρμογὴ τοιαύτης πολιτικῆς, ἐζητήθη κατὰ τὴν νεωτάτην ἐποχὴν κατ' ἐπανάληψιν νὰ δηλωθῇ ὅτι ἐν τῷ μέλλοντι θὰ θεωρῶσιν αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι τὰς ἀμερικανικὰς πολιτείας τοῦ νότου ὡς ἴσας· εἰς τοιαύτας δηλώσεις προέβη καὶ αὐτὸς ὁ Οὐΐλσων τῷ 1915.

Ἡ τρίτη ἀρχή, ἐπὶ τῆς ὁποίας βασίζεται τὸ δόγμα τοῦ Μονρώ, ἀποτελεῖ τὴν πανηγυρικωτέραν ἐκδήλωσιν τῆς ἀποφάσεως τοῦ νέου κόσμου, ὅπως ὄχι μόνον μὴ προέλθῃ εἰς συμμαχίας κλπ. πρὸς τὰς δυνάμεις τῆς Εὐρώπης, ἀλλὰ καὶ ὅπως, καθ' ἃ εἶχον διακηρύξει ὁ Οὐάσιγκτων, ὁ Τζέφφερσον καὶ ὁ Μάντισον, ἐλαχίστας διατηρήσουν πολιτικὰς σχέσεις μὲ τὰς εὐρωπαϊκὰς πολιτείας. Ἐπέμβασις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Εὐρώπῃ θὰ ἐσυγχωρεῖτο, κατὰ τὴν φράσιν τοῦ προέδρου Polk, «μόνον ἐν περιπτώσει καθ' ἣν τὰ δικαιώματά των θὰ προσεβάλλοντο ἢ σοβαρῶς θὰ ἠπειλοῦντο». Ἀλλ' ἡ ἀνάπτυξις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἰδίως ἡ οἰκονομικὴ αὐτῶν θέσις, μοιραίως ὡδήγησεν εἰς δημιουργίαν πολλαπλῶν σχέσεων μετὰ τῶν εὐρωπαϊκῶν κρατῶν, οὐχὶ δὲ σπανίως προεκάλεσε καὶ τὴν ἐπέμβασιν αὐτῶν. Πρὸς τήρησιν τῆς ἀρχῆς τῆς μὴ ἐπεμβάσεως τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Εὐρώπῃ θὰ ἠδύνατο ν' ἀναφερθῇ ἡ ἄρνησις αὐτῶν νὰ συνυπογράψουν τὴν σύμβασιν τοῦ Βερολίνου (1878), ἐπειδὴ δι' αὐτῆς ἐρρυθμίζοντο μόνον εὐρωπαϊκὰ ζητήματα. Εἰς περιπτώσεις ὅμως, καθ' ἃς προσεβλήθησαν δικαιώματα αὐτῶν, ἡ ἐπέμβασις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Εὐρώπῃ ὑπῆρξεν ἄμεσος μὲ σοβαρὰς συνεπείας. Οὕτω τῷ 1895, κατόπιν τῶν ζημιῶν, ἃς ὑπέστησαν Ἀμερικανοὶ ἀπεσταλμένοι κατὰ τὰς ἐν Ἀρμενίᾳ σφαγάς, στόλος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἀπέκλεισε τὰ τουρκικὰ παράλια, ἐζητήθη δὲ ἡ καταβολὴ ἀποζημιώσεων. Τοῦτ' αὐτὸ συνέβη τῷ 1902, ὅτε Ἀμερικανός τις ἐφονεύθη παρὰ ληστῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει. Ἄλλοτε πάλιν, ἐπικειμένων σφαγῶν ἐν Ἀρμενίᾳ κατὰ τῶν Χριστιανῶν, αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι ἠξίωσαν παρὰ τῶν δυνάμεων τῆς Εὐρώπης νὰ ἐπεμβῶσιν εἰς τήρησιν ὡρισμένων διατάξεων τῆς συνθήκης τοῦ Βερολίνου, τὴν ὁποίαν αὐταὶ δὲν εἶχον ὑπογράψει. Τὴν αὐτὴν στάσιν ἐτήρησαν τῷ 1872 μετὰ τὰ γεγονότα τὰ ἐπισυμβάντα τῷ 1872 ἐν Μολδαβίᾳ καὶ Βλαχίᾳ ἐναντίον τοῦ ἰσραηλιτικοῦ στοιχείου, ἐπιμένουσαι εἰς τὴν ἐφαρμογὴν τῆς συνθήκης τῶν Παρισίων τῆς 30ῆς Μαρτίου 1856, εἰς τὴν κατάρτισιν τῆς ὁποίας δὲν συμμετέσχον, κλπ. Τὸ χαρακτηριστικώτερον, βεβαίως, γεγονὸς τῆς ἐπεμβάσεως τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Εὐρώπῃ ὑπῆρξεν ἡ συμμετοχὴ αὐτῶν εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, ἡ συγκρότησις βραδύτερον ἐν Οὐασιγκτῶνι (1921) τῆς διεθνοῦς συνδιασκέψεως περὶ ναυτικοῦ ἀφοπλισμοῦ ὅλων τῶν κρατῶν καὶ τελευταίως ἡ πρότασις Χοῦβερ (βλ. καὶ λ. *ἐπέμβασις* τ. ΙΑ', σ. 332 α').

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἐκτὸς τῶν γενικῶν περὶ διεθνοῦς δικαίου συγγραμμάτων βλ. ἰδίως *Autokolitz*: La doctrine de Monroe et l'Amérique latine (1905).—*Arenas & Loayza:* Monroe dotrine (1905).—*De Beaumarchais*: La doctrine de Monroe, (2α ἔκδ. 1898).—*Calderon*: La doctrina Monroe y la America latina (1914).—*Caio-Mario*: America latina. Doctrina Monroe (1906).—*Cespédés:* La doctrina de Monroe (1893).—*Edington*: The Monroe doctrine (1905).—*Engelhardt*: Die praxis der Monroe doktrin (1916).—*Hall*: The Monroe doctrine and the great war (1920). -*Hatschek*: Die Wandlungen der Monroedoktrin ἐν «Deutsche Rundschau» (Αὔγουστος 1915 σ. 142 ἑπ.).—*Herbert*: Die Monroedoktrin (1913).—*Hull*: The Monroe doctrin (1915).—*Kraus:* Die Monroedoktrin in ihren Beziehungen zur amerikanischen Diplomatie und zum Völkerrecht (1913).—*De Lannoy*: La doctrine de Monroe et la Pacte des Nations ἐν τῇ «Revue de droit international», (3e série, τ. I σ. 364 ἑπ.).—*Lehr*: La doctrine de Monroe (αὐτόθι, 2e série τ. XV σ. 50 ἑπ. καὶ τ. XVI σ. 51 ἑπ.),—*Moore*: Les États-Unis et la politique d'annexion (αὐτόθι, τόμος XXXVIII σ. 301 ἑπ.).—*Moulin*: La valeur originaire de la doctrine de Monroe et ses rapports avec le principe des nationalités (1904).—*Roig de Leuschering:* La doctrina de Monroe y el pacto de la Liga de la Naciones, ἐν «Revista mexicana de derecho international» (τ. III 1921 σ. 205 ἑπ.).—*Wilson*: The Monroe doctrine and the program of the League to enforce peace (1916).

Η. Γ. ΚΥΡΙΑΚΟΠΟΥΛΟΣ

**Μὸνς** (Mons, λατιν. Montes, φλαμανδ. καὶ γερμ. Bergen) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη πόλις τοῦ Βελγίου, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ἀννωνίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τρούγι, 60 χλμ. ΝΔ. τῆς Μπρουσσέλ. Διαιρεῖται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ εἰς δύο τμήματα, ὧν τὸ μὲν κεῖται ἐπὶ χθαμαλοῦ λόφου, τὸ δὲ ἐπὶ τῆς πεδιάδος. Εἶναι ἀξιόλογον συγκοινωνιακὸν κέντρον, δεσπόζει περιοχῆς πλουσίας εἰς γαιάνθρακας καὶ ἔχει ἐμπόριον ἄνθρακος, ἀποικιακῶν κλπ., ἐργοστάσια καπνοῦ, σάπωνος καὶ ἀτμομηχανῶν, σχολὴν βιομηχανίας καὶ ὀρυχείων, ᾠδεῖον καὶ ἀκαδημίαν καλῶν τεχνῶν. Κοσμεῖται ὑπὸ τετραγώνου πύργου ὕψους 80 μ. μετὰ ὡρολογίου, καθὼς καὶ ἄλλων μεσαιωνικῶν καὶ νεωτέρων κτηρίων (δημαρχεῖον, δικαστήρια, ναὸς Saint Baudru κλπ.). Κάτ. (1926) 28.085.

— *[Ἱστορ.]* Τὸ Μὸνς ἐκτίσθη πέριξ παλαιοῦ μοναστηρίου, ἱδρυθέντος τῷ 650 ὑπὸ τῆς Βωντρύ, θυγατρὸς τοῦ κόμιτος τῆς Ἀννωνίας. Ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος περιεβάλλετο ὑπὸ φρουρίου, περιῆλθε δὲ διαδοχικῶς ἀπὸ τῶν κομίτων τῆς Ἀννωνίας εἰς τὴν κατοχὴν τῆς Ἱσπανίας, τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Αὐστρίας. Τῷ 1572 ἀντέστη ἐπὶ τρίμηνον ἐν αὐτῷ ὁ κόμις τοῦ Νασσάου μετ' ἄλλων σημαινόντων καλβινιστῶν, πολιορκούμενος ὑπὸ ἱσπανικοῦ στρατοῦ, τὸν ὁποῖον διῴκει κατ' ἀρχὰς ὁ Φρειδερῖκος τοῦ Τολέδου καὶ κατόπιν ὁ δοὺξ τῆς Ἄλβονς. Ἐν συνεχείᾳ ἡ πόλις ἐπολιορκήθη καὶ κατελήφθη ἐπανειλημμένως ὑπὸ διαφόρων στρατῶν (1691, 1709, 1746, 1792 κλπ.), τέλος δὲ διὰ τῆς συνθήκης τῶν Παρισίων τοῦ 1815 περιῆλθεν ὁριστικῶς εἰς τὰς Κάτω Χώρας καὶ ἠκολούθησεν ἔκτοτε τὴν τύχην τοῦ Βελγίου. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον συνήφθη περὶ αὐτήν, κατ' Αὔγουστον τοῦ 1914, μεγάλη φερώνυμος μάχη (βλ. κατωτ.), καθ' ἣν κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν καὶ ἐχρησιμοποιήθη ὑπ' αὐτῶν ὡς στρατιωτικὸν κέντρον μέχρι πέρατος τοῦ πολέμου, ὁπότε ἀνακατελήφθη ὑπὸ καναδικῶν στρατευμάτων.

Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου καὶ διαρκοῦντος τοῦ διὰ Βελγίου ὑπερκερωτικοῦ γερμανικοῦ ἑλιγμοῦ, εὑρέθησαν οἱ Ἄγγλοι (δύο σώματα στρατοῦ καὶ μία μεραρχία ἱππικοῦ, ἐν ὅλῳ περὶ τὰς 70.000 ἄνδρες, ὑπὸ τὸν στρατάρχην Φρὲντς) τεταγμένοι τὴν 22αν Αὐγούστου 1914 ἐπὶ ἀμυντικῶν τοποθεσιῶν, ὡς ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαίνεται, προβάλλοντες τὴν διώρυγα *Κοντὲ-Μὸνς* ὡς κώλυμα. ἐν τῇ πεπλανημένῃ ὅμως πεποιθήσει ἀφ' ἑνὸς μὲν ὅτι τὸ δεξιόν των θὰ εὑρίσκετο ἐν στενῇ ἐπαφῇ μετὰ τῆς 5ης γαλλικῆς στρατιᾶς, ἐνῷ ἐν τῷ πραγματικότητι ἐπρόκειτο περὶ μετωπικοῦ διαστήματος 25 περίπου χιλιομέτρων, ἀτελῶς ἐπιτηρουμένου ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ σώματος ἱππικοῦ τοῦ στρατηγοῦ Σορντέ, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὅτι οἱ Γερμανοὶ θὰ ἦσαν μόλις εἰς τὸ ὕψος τῶν Βρυξελλῶν, ἐνῷ οὗτοι εὑρίσκοντο κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην διὰ τῆς 2ας στρατιᾶς των εἰς τὸ ὕψος τοῦ Σάμπρ, ἐπιτιθέμενοι εἰς Σαρλερουὰ κατὰ τῆς 5ης γαλλικῆς στρατιᾶς. Κατὰ τῆς ἀγγλικῆς ταύτης στρατιᾶς ἐπετέθη ἡ 1η γερμανικὴ στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ Κλοὺκ (Klück) καὶ τὸ δεξιὸν τῆς 2ας τοῦ στρατηγοῦ Μπύλοω (Bülow) καὶ τὴν 23ην Αὐγούστου 1914 ἐπηκολούθησεν ἡ *μάχη τοῦ Μόνς*.

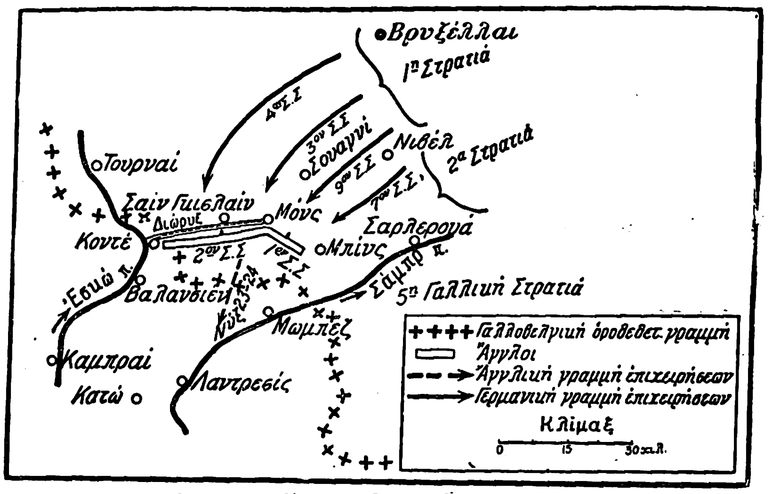


*Μάχη τοῦ Μὸνς τῆς 23ης Αὐγούστου 1914.*

Τὴν πρωΐαν τῆς αὐτῆς ἡμέρας ἤρχισεν ἡ γερμανικὴ ἐπίθεσις, ἀρχικῶς διὰ τοῦ 7ου σώματος στρατοῦ τῆς 2ας στρατιᾶς (ἄκρου δεξιοῦ της) κατὰ τοῦ Μπὶνς (Binche), μετ' ὀλίγον διὰ τῶν σωμάτων στρατοῦ 9ου καὶ 3ου τῆς 1ης στρατιᾶς κατὰ τοῦ Μόνς, καὶ βραδύτερον διὰ τοῦ 4ου σώματος ἐναντίον τοῦ Σαὶν Γκισλαὶν (Ghislain) καὶ δυτικώτερον πρὸς Κοντέ. Μεθ' ὅλην τὴν ἀντίστασιν τῶν Ἄγγλων, τὸ Μὸνς κατελήφθη τάχιστα, ὁπότε ἤρχισεν ἀπειλούμενον τὸ δεξιὸν ἀγγλικὸν πλευρόν, χωρὶς οὐδεμία ὑποστήριξις νὰ φαίνηται ἐκ τῆς παραπλεύρου 5ης γαλλικῆς στρατιᾶς, ἥτις καὶ πολὺ ἀπεῖχε τῆς ἀγγλικῆς καὶ ἀπησχολημένη σοβαρῶς ἦτο. Ἐνῷ δ' οὕτως εἶχεν ἡ κατάστασις, ἔλαβεν ὁ Φρὲντς τὴν 17ην ὥραν τῆς ἡμέρας ταύτης ἐκ τοῦ γαλλικοῦ ἀρχιστρατηγείου τὴν πληροφορίαν ὅτι ἡ μὲν 5η γαλλικὴ στρατιὰ ἠναγκάσθη κατὰ τὴν 21ην καὶ 22αν Αὐγούστου νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς νότον, οἱ δὲ Γερμανοὶ εὑρίσκοντο ἤδη εἰς τὸ ὕψος τοῦ Σάμπρ, ἐπὶ πλέον δὲ εὐρυτάτη ὑπερκερωτικὴ κίνησις ἐξετελεῖτο βορειοδυτικώτερον διὰ τοῦ γερμανικοῦ ἱππικοῦ πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Τουρναί. Ὁ Φρὲντς ἔκρινεν ὅτι ὑπὸ τοιαύτην κατάστασιν δὲν τῷ ἐπετρέπετο νὰ ἐξακολουθήσῃ ἀμυνόμενος τοῦ μετώπου Κοντὲ-Μόνς, καθ' ὅσον ἠπειλεῖτο νὰ ὑπερκερασθῇ κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρά του, δι' ὃ τὴν ἑσπέραν τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας (23ης Αὐγούστου) διέταξε τὴν ὑποχώρησιν πρὸς τὴν γραμμὴν Μωμπὲζ—Βαλανσιέν, ἐκτελεσθεῖσαν κατὰ τὴν νύκτα 23—24 Αὐγούστου.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μὸνς** (Van-Mons), ***Ἰωάννης - Βαπτιστὴς βὰν—***. Βέλγος χημικὸς (βλ. λ. *Βὰν-Μόνς*).

**Μονσαμπρὲ** (Monsabré), ***Ἰάκωβος - Λουδοβῖκος***. Διαπρεπὴς Γάλλος ἱεροκήρυξ, γεννηθεὶς τῷ 1827. Τὰ κηρύγματά του εἰς τὸν ναὸν τῆς Παναγίας τῶν Παρισίων προσείλκυον ἐπὶ δεκαοκταετίαν ὅλην (1872—1890) πυκνότατον πάντοτε πλῆθος ἀκροατῶν, θελγομένων ἀπὸ τὴν χάριν καὶ τὴν δύναμιν τοῦ λόγου καὶ τὴν ἀνωτέραν του διανοητικότητα. Αἱ πλεῖσται τῶν ἐκκλησιαστικῶν του ὁμιλιῶν ἐξεδόθησαν εἰς τόμους, ἐν οἷς: «Λόγος τῆς Τεσσαρακοστῆς ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Θωμᾶ» (1866, 2 τόμ.), «Ὁμιλίαι ἐν τῇ Παναγίᾳ τῶν Παρισίων· ἀνάπτυξις τοῦ καθολικοῦ δόγματος» (1873—1890, τόμ. 18), «Ὁ γάμος» (1887), «Πανηγυρικὸς εἰς τὴν Ἰωάνναν ντ' Ἄρκ» (1887) κτλ.

—Ω.

**Μονσὲ** (Moncey) ***Ἀδριανὸς Ζαννὼ*** (Jeannot) ***ντὲ —, δοὺξ τοῦ Κονελιάνο*** (Conegliano). Γάλλος στρατάρχης (1754—1842). Κατετάχθη δεκαπενταετὴς μόλις, παρὰ τὴν θέλησιν τῶν γονέων του, εἰς τὸ πεζικόν. Τῷ 1791 ἦτο λοχαγὸς ἀκόμη, ἀλλ' ἡ ἐπανάστασις, τῆς ὁποίας ἠσπάσθη τὰς ἀρχάς, ἔδωκεν εἰς αὐτόν, ὅπως καὶ εἰς πολλοὺς ἄλλους, τὴν εὐκαιρίαν ν' ἀναδειχθῇ ραγδαίως. Κατὰ τὰς ἐκστρατείας τοῦ 1793 καὶ 1794 διέπρεψεν εἰς τὰς μάχας τὰς συναφθείσας ὑπὸ τοῦ στρατοῦ τῶν Δυτικῶν Πυρηναίων, ἔφθασε δὲ κατὰ τὸ διάστημα τῆς διετίας ταύτης εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Νικήσας τοὺς Ἱσπανοὺς εἰς Βιλλανόβα κατέ-

Digitized by Google

λαβε τὴν Ναβάρραν, συντελέσας σημαντικῶς εἰς τὸ ν' ἀποθαρρυνθῇ ἡ ἱσπανικὴ κυβέρνησις ἀναφορικῶς μὲ τὴν ἐξακολούθησιν τοῦ πολέμου καὶ νὰ συνάψῃ τὴν εἰρήνην τῆς Βασιλείας (1795). Τῷ 1800 ταχθεὶς μὲ τὸν Βοναπάρτην ἀπεστάλη ὑπ' αὐτοῦ εἰς Ἰταλίαν μὲ 20.000 ἄνδρας, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὁποίων κατέλαβε τὴν Βαλτελίναν μετὰ τὴν μάχην τοῦ Μαρένγκο καὶ συμμετέσχε κατόπιν εἰς τὴν μάχην τοῦ Γκριζόν. Ἐπανελθὼν τῷ 1801 εἰς Γαλλίαν ἔλαβεν ἐμπιστευτικὴν θέσιν πλησίον τοῦ Ναπολέοντος, ὡς γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς χωροφυλακῆς. Τῷ 1804 ὠνομάσθη στρατάρχης τῆς αὐτοκρατορίας, μεγαλόσταυρος τοῦ λεγεῶνος τῆς τιμῆς τῷ 1805 καὶ δοὺξ τοῦ Κονελιάνο τῷ 1808. Μετασχὼν τοῦ κατὰ τῆς Ἱσπανίας πολέμου ἐπὶ κεφαλῆς σώματος στρατοῦ, κατέλαβε τὴν Βαλένθιαν καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν καὶ τὴν ἅλωσιν τῆς Σαραγόσσας. Κατὰ τὴν ἐπάνοδον κατόπιν τῆς στρατιᾶς τοῦ Ναπολέοντος ἐκ τῆς ἐκστρατείας τῆς Ρωσίας, εἰς ἣν αὐτὸς δὲν εἶχε μετάσχει, ἐγένετο ὑποδιοικητὴς τῆς ἐθνοφρουρᾶς τῶν Παρισίων καὶ ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του ταύτην διεκρίθη μίαν φορὰν ἀκόμη διὰ τὴν ἐρρωμένην ἄμυναν, ἣν ἀντέταξε κατὰ τῶν συμμάχων εἰς τὸ Κλισοὺ τὴν ἡμέραν τῆς 30ῆς Μαρτίου 1814. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΗ' τὸν ὠνόμασεν ὁμότιμον, ἀλλ' ὁ Μονσὲ ἠρνήθη νὰ μετάσχῃ τῆς βουλῆς. Κατὰ τὴν δευτέραν παλινόρθωσιν ἀπεκλείσθη ἀπὸ τῆς αὐλῆς, ὅταν δὲ βραδύτερον ἔγραψε τὴν περίφημον ἐπιστολήν, διὰ τῆς ὁποίας ἠρνεῖτο νὰ συμμετάσχῃ τοῦ πολεμικοῦ συμβουλίου, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνετέθη νὰ δικάσῃ τὸν στρατάρχην Νέϋ, ἐτέθη ὑπὸ ἀνεπιφύλακτον δυσμένειαν καὶ ἐνεκλείσθη εἰς τὸ φρούριον του Ἅμ (Σεπτέβρ. 1815). Ἀλλ' ἐπανῆλθεν εἰς τὰς τιμάς του τὸ ἐπόμενον ἔτος, εἰσῆλθε μάλιστα εἰς τὴν βουλὴν τῶν ὁμοτίμων τῷ 1819 καί, τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ 4ου σώματος στρατοῦ κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἱσπανίας τῷ 1823, ἐκυρίευσε τὴν Καταλωνίαν. Ἡ τελευταία του θέσις ἦτο ἡ τοῦ διοικητοῦ τῶν ἀπομάχων, εἰς ἣν διεδέχθη τὸν στρατηγὸν Ζουρντάν. —Ω.

**Μονσελὲ** (Monselet), ***Κάρολος***. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος (1825—1888). Ἐδημοσίευσεν εἰς διάφορα περιοδικὰ φιλολογικὰς μελέτας, ἔγραψε θεατρικὰ ἔργα, μυθιστορήματα καὶ τὸ ἔργον «Οἱ λησμονημένοι καὶ περιφρονημένοι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος» (1857). Τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς πνευματικῆς δράσεώς του ἀπερρόφησεν ἡ δημοσιογραφία εἰς ἣν διεκρίθη. Ι. Μ. Τ.

**Μὸν Σενὶ** (Mont Cenis) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος καὶ διάβασις τῶν Ἄλπεων (βλ. *Κενίσιον ὄρος*) Χ. Δ.

**Μονσενῖγος**· βλ. *Μοτσενῖγος*.

**Μονσενὺ** (Monceny), ***Βαλτάσαρ ντὲ —***. Γάλλος περιηγητὴς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐντυπώσεις του ἐκ ταξιδίων ἀνὰ τὴν Τουρκίαν, τὴν Μ. Ἀσίαν καὶ τὰς Δωδεκανήσους ἐξεδόθησαν τῷ 1887 ὑπὸ τὸν τίτλον: «Τὰ ταξίδια τοῦ Βαλτάσαρ Μονσενύ· στοιχεῖα διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς ἐπιστήμης».

**Μονσερρὰτ** (Monserrat ἢ Montserrat) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἰβηρικῆς χερσονήσου ἐν Καταλωνίᾳ τῆς Ἱσπανίας, ὕψους 1237 μ., περίφημον διὰ τοὺς τεραστίων διαστάσεων βράχους του, οἱ ὁποῖοι δεσπόζουσι τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Λομπρεγάτ. Ἔχει σχῆμα τεραστίας πυραμίδος, ἡ ὁποία, ὡς ἐκ τῆς διαβρώσεως τῶν ὑδάτων, ἐχωρίσθη εἰς 2 μεγάλας κορυφὰς καὶ πολλὰς ἄλλας περὶ αὐτὰς μικροτέρας, συνάπτεται δὲ μετὰ τῶν πέριξ ὀροσειρῶν, τῆς Καταλωνίας πρὸς ΒΑ. καὶ ΝΔ., τῆς Σιέρρα ντὲ Γκουέρρα πρὸς Δ. καὶ τῆς Σιέρρα ντὲλ Κάντι πρὸς Β. διὰ παραφυάδων. Στερεῖται πηγαίων ὑδάτων, οἱ δ' ἐπ' αὐτοῦ βιοῦντες μοναχοὶ ὑδρεύονται διὰ δεξαμενῶν. Ἡ ἀπὸ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους τούτου θέα ἐκτείνεται μέχρι τῶν Βαλεαρίδων, πρὸς τὴν στερεὰν δὲ ἐπὶ τοῦ μεγαλυτέρου τμήματος τῆς ΒΑ. Ἰβηρικῆς. Τὸ Μονσερρὰτ εἶναι ἐπίσης γνωστὸν ἐκ τῆς ἐπ' αὐτοῦ φερωνύμου μονῆς τῶν Βενεδικτίνων, ἀναλόγου πρὸς τὰς παρ' ἡμῖν μονὰς τῶν Μετεώρων, ἡ ὁποία κεῖται ἐπὶ ὑψομέτρου 880 μ. καὶ χρησιμεύει ὡς τόπος προσκυνήματος. Συνδέεται δι' ὀδοντωτοῦ σιδηροδρόμου μετὰ τοῦ 7 χλμ. ἀπέχοντος Μονιστρόλ. Ἐκτὸς της κυρίως μονῆς ὑπάρχουσιν ἐγκατεσπαρμένα ἀνὰ τὰς διαφόρους κορυφὰς τοῦ ὄρους 13 ἐρημητήρια καὶ 6 ἄλλα παρεκκλήσια. Χ. Δ.

**Μονσίκε** (Monchique) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς μεσημβρινῆς Πορτογαλίας ἐν τῷ νομῷ Ἀλγκάρβε, κειμένη ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου ὀροσειρᾶς. Ἔχει ἀξιόλογα θειοῦχα λουτρά, γνωστὰ ὡς Caldas de Monchique. Κάτ. 7.500. Ἡ ὀροσειρὰ (serra de Monchique) ἔχει κορυφὴν τὸ ὄρος *Φόγια* (903 μ.), χωρεῖ δὲ πρὸς τὴν θάλασσαν τοῦ Ἀτλαντικοῦ ἐπὶ τῆς χερσονήσου Σάγκρες, σχηματίζουσα τὸ ἀκρωτήριον *Ἅγιος Βικέντιος*. Χ. Δ.

**Μονσινὺ** (Monsigny), ***Πέτρος - Ἀλέξανδρος***. Διάσημος Γάλλος συνθέτης μελοδραμάτων (1729—1817). Νεώτατος ἐσπούδασε βιολίον εἰς Σαὶντ-Ὀμέρ, τῷ δὲ 1749 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις, ἔνθα ἐδιδάχθη σύνθεσιν ὑπὸ τὸν Τζιανόττι. Τῷ 1759 ἐνεφανίσθη ἀνωνύμως διὰ τοῦ κωμικοῦ μελοδράματος: «Les aveux indiscrets». Ἐπίσης ἀνωνύμως ἀνεβίβασε τὰ ἑπόμενα ἔργα του: «Le maître en droit», «Le Cadi dupé» (1760), «On ne s'avise jamais de tout» (1761). Ἀπὸ τοῦ 1762 ὁ Μονσινὺ ἐμφανίζεται πλέον ἐπισήμως μὲ τὸ πραγματικόν του ὄνομα ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου τῶν Ἰταλῶν. Σειρὰ ἐπιτυχιῶν, ὡς «Le roi et le fermier» (1762), «Rose et Colas» (1764), «Aline reine de Golconde» (1766), «L'île sonnante» (1768), «Le déserteur» (1769), «Le faucon» (1772), «La belle Arsène» (1773), «Le rendez-vouz bien employé» (1774) καὶ «Felix» ἢ «L'enfant trouvé» (1777), ἐξαπλώνει τὴν φήμην του καθ' ὅλην τὴν Γαλλίαν. Ὁ Μονσινὺ εἶχεν εὕρει ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ Σενταὶν πολύτιμον συνεργάτην, εἰς ὃν ὤφειλε τὰ λιμπρέττα τῶν περισσοτέρων μελοδραμάτων, ἐκ τῶν ὁποίων ὁ «Φέλιξ» θεωρεῖται τὸ ἀριστούργημά του. Μετὰ τὸ μελόδραμα τοῦτο ὁ Μονσινὺ οὐδὲν πλέον ἔγραψε. Τῷ 1800 ἀντικατέστησε τὸν Πιτσίννι ὡς ἐπιθεωρητὴς τοῦ Ὠδείου, τῷ δὲ 1813, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Γκρετρί, ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας. Ὁ Μονσινὺ ὑπῆρξε μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας δόξας τοῦ γαλλικοῦ κωμικοῦ μελοδράματος, οὗτινος θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν πρώτων δημιουργῶν. Ἡ αὐθόρμητος μελῳδικότης του, ἡ ἀντλοῦσα πολλὰ ἀπὸ τὴν λαϊκὴν ψυχήν, ἡ ἀληθὴς συγκίνησις, ἡ ὁποία διαπνέει πλείστας ἀπὸ τὰς σελίδας του, ὁ εἰλικρινὴς καὶ εὔχολος λυρισμός του καλύπτουν ὡρισμένας ἀτελείας τῆς μουσικῆς του μορφώσεως καὶ παρουσιάζουν καλλιτέχνην προικισθέντα ἐκ φύσεως μὲ δραματικὸν τάλαντον. Γ. Σ.

**μονστέρα** (ἡ) (Monstera) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀροειδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἀνεπτυγμένας ἢ καὶ θάμνους ἀειθαλεῖς καὶ ἀναρριχητικούς. Ἐκ τῶν 15 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος καὶ ὧν τινα εἶναι κοσμητικά, ἀξιολογώτερα εἶναι ἡ *μονστέρα ἡ διατρητόφυλλος* (Monstera pertusa) καὶ *μονστέρα ἡ ἐξαισία* (Monstera deliciosa), καλλιεργούμενα πολλαχοῦ πρὸς κόσμον, ὡς καὶ παρ' ἡμῖν, ὅπου εἶναι γνωστὰ ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *φυλλόδενδρα*. Εὐδοκιμοῦσιν εἰς ἔδαφος ὑγρόν, σκιερὸν καὶ γόνιμον καὶ πολλαπλασιάζονται εὐκόλως διὰ σπορᾶς. Ὁ καρπὸς ἀμφοτέρων τῶν εἰδῶν εἶναι βρώσιμος καὶ ἀρωματικός. Δ. Ν. Π.

**Μὸν-σὺρ-Μαρσιὲν** (Mont-sur-Marchienne) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀννωνίας. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, γαιανθρακωρυχεῖα καὶ χυτήρια σιδήρου. Κάτ. (1927) 10.843. Χ. Δ

**Μονσὼ** (Monceaux), ***Παῦλος***. Γάλλος ἀρχαιολόγος καὶ ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1859. Τῷ 1897 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς λατινικῆς φιλολογίας εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐγένετο καθηγητὴς εἰς τὴν Σχολὴν ἀνωτέρων σπουδῶν. Σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ μελέται του ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος, εἰδικῶς δ' ἐξ ἄλλου ἠσχολήθη μὲ τὴν ἱστορίαν τῶν ἐν Ἀφρικῇ χριστιανικῶν χωρῶν. Παρεκτὸς διαφόρων μονογραφιῶν του, δημοσιευθεισῶν εἰς ἐπιστημονικὰ περιοδικά, ἐξέδωκεν εἰς τόμους τὰ ἑξῆς ἔργα: «Ἡ Ἑλλὰς πρὸ τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου» (1892), «Κικέρων» (1896), «Λογοτεχνικὴ ἱστορία τῆς χριστιανικῆς Ἀφρικῆς», ἐκτεινομένη μέχρι τῆς ἀραβικῆς καταλήψεως (τόμ. 4, 1901—1912). Ἀπὸ τοῦ 1912 ὁ Μονσὼ εἶναι μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. —Ω.

**Μονσὼ-λὲ-Μὶν** (Montceau-les-Mines) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σὼν-ἐ-Λουάρ, ἀπέχουσα 50 χλμ. τοῦ Σαλόν. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν καὶ μεγάλα ἀνθρακωρυχεῖα καὶ λατομεῖα γρανιτολίθου. Κάτ. 26.300. Χ. Δ.

**Μὸντ** *[Ἀρχ. Θρησκ.]*· βλ. *Μοντού*.

**Μὸντ** (Mond), ***σὲρ Ἀλφρέδος-Μόριτς***. Ἄγγλος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ἦτο υἱὸς τοῦ περιφήμου χημικοῦ Λουδοβίκου Μὸντ καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Κανταβριγίας καὶ τοῦ Ἐδιμβούργου. Τῷ 1894 ἤρχισεν ἐξασκῶν τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, ἀλλὰ κατόπιν ἀνεμίχθη εἰς βιομηχανικὰς ἐπιχειρήσεις καὶ ἐγένετο διευθυντὴς διαφόρων εταιρειῶν ἠλεκτρικοῦ, ἀεριόφωτος, νικελίου κτλ., τινὲς τῶν ὁποίων φέρουν τὸ ὄνομά του. Τῷ 1906 ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων, τῷ δὲ 1916 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων καὶ τῷ 1921 τῆς Γεωργίας ἐν ταῖς κυβερνήσεσι τοῦ Λόϋδ Τζώρτζ. Τῷ 1926, διαφωνήσας πρὸς τὴν γεωργικὴν πολιτικὴν τοῦ Λόϋδ Τζώρτζ, ἀπεσχίσθη ἀπ' αὐτοῦ καὶ προσῆλθεν εἰς τὰς τάξεις τῶν συντηρητικῶν. Ἔγραψε πλεῖστα ἄρθρα καὶ μελέτας ἐπὶ θεμάτων πολιτικῶν, οἰκονομικῶν, φυσικῆς καὶ χημείας, ἐκδοθείσας τῷ 1912 εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ζητήματα τῆς σήμερον καὶ τῆς αὔριον». Μ. Δ. Β.

—**Μὸντ** (Mond), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς χημικὸς καὶ βιομήχανος (1839—1909). Εἶναι ἐφευρέτης μεθόδου, καθ' ἣν ἐπανακτᾶται θεῖον ἐκ τῶν ὑπολειμμάτων τῆς σόδας. Τῷ 1873 ἵδρυσεν ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ σὲρ Τζὼν Μπροῦννερ ἐν Οὐ[illegible] κτον της Ἀγγλίας ἐργοστάσιον παραγωγῆς ἀμμωνιακῆς σόδας, τὸ μέγιστον ἐπὶ τῆς γῆς εἰς τὸ εἶδός του. Ἐπενόησεν ἐπίσης μέθοδον παρασκευῆς τοῦ ὑδραερίου (βλ. λ. *καύσιμα*), φέρουσαν τὸ ὄνομά του *(ὑδραέριον Μόντ*, γερμ. *Mondgas)*. Ἐπίσης ἐφεῦρε νέαν μέθοδον παρασκευῆς καθαροῦ νικελ[illegible] ἐπὶ τῇ βάσει ἐπιστημονικῶν του παρατηρήσεων. Γ. Θ. Κ.

— **Μὸντ** (Mont), ***Κάρολος-Μαρία-Πολύδωρος*** ντὲ —. Ὁλλανδὸς ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1857. Εἶναι ὁ ὀνομαστότερος ἀντιπρόσωπος τῆς φλαμανδικῆς φιλολογικῆς κινήσεως, τεχνοκρίτης μεγίστου κύρους καὶ λογογράφος. Ἐκ τῶν ποιητικῶν του ἔργων ἀξιόλογα εἶναι τὰ λυρικά: «Ποιήματα» (18[illegible]), «Λορελάϋ» (1882), «Εἰδύλλια» (1882) «Ἶρις» (1894) καὶ τὰ εἰς πεζὸν εἰδύλλια «Τοῦ χωριοῦ μου» (18[illegible]). Γ. Ι. Ξ.

—**Μὸντ** (Monte), ***Φίλιππος*** *ντὲ* —, ἢ ***Φίλιππος τοῦ Μόνς***. Διάσημος Βέλγος μουσικοσυνθέτης (1521—1603), ζήσας ἐν Ἰταλίᾳ, Ἀγγλίᾳ καὶ ἐν τέλει ἐν Βιέννῃ, ἔνθα ἀπέθανεν ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τοῦ αὐτοκράτορος Ροδόλφου τοῦ Β'. Τὰ περισωθέντα ἔργα του, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον θρησκευτικά, ἀποτελοῦνται ἐκ πολλῶν βιβλίων λειτουργιῶν καὶ διαφόρων ἄλλων ὕμνων. Εἰς δὲ τὴν κοσμικήν του μουσικὴν περιλαμβάνονται: 1 βιβλίον τριφώνων, 19 βιβλία πενταφώνων καὶ 8 βιβλία ἑξαφώνων μαδριγαλίων· ἐπίσης ἓν βιβλίον ἑπταφώνων τραγουδιῶν καὶ μαδριγαλίων ὑπὸ τὸν τίτλον «La fiammetta», ἓν βιβλίον γαλλικῶν τραγουδιῶν καὶ σονέττα τοῦ Ρονσάρ. Γ. Σ.

**Μόνταγκιου** (Montagu). Ὀνομαστὴ οἰκογένεια Ἄγγλων εὐγενῶν, ἀναφανεῖσα τὸ πρῶτον κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα καὶ ἐκ τῆς ὁποίας κατάγονται οἱ κόμιτες *Σαλισβουρὺ καὶ Σάντουϊτς*, οἱ κόμιτες καὶ οἱ δοῦκες τοῦ *Μάντσεστερ*, οἱ κόμιτες τοῦ *Χάλιφα[illegible]* κ. ἄ. (βλ. τὰς λ.). Μ. Δ. Β.

—**Μόνταγκιου** (Montagu), ***Ἐδβῖνος-Σαμουήλ***. Ἄγγλος πολιτικὸς (1879—1924). Τῷ 1906 ἐξελέγη βουλευτὴς ὡς φιλελεύθερος, κατόπιν δ' ἐχρημάτισεν ὑφυπουργὸς τῶν Ἰνδιῶν (1910—1914), τῶν Οἰκονομικῶν (1914), ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν (1916) καὶ τῶν Ἰνδιῶν (1917—1920). Τῷ 1918 ἐδημοσίευσε περισπούδαστον πραγματείαν περὶ Ἰνδιῶν, εἰς ἣν ὀφείλεται τὸ κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος παραχωρηθὲν εἰς τοὺς Ἰνδοὺς σύνταγμα. Α. Δ.

— **Μόνταγκιου** (Montagu), ***Μαίρυ-Πιερρεπὸν λαίδη Οὐόρτλεϋ***. Ἀγγλὶς συγγραφεὺς (1689—1762). Θυγάτηρ τοῦ δουκὸς Ἔβελυν Πιερρεπὸν Κίγκστον, ἔζησεν ἀπὸ τοῦ 1716—1718 μετὰ τοῦ συζύγου αὐτῆς, Ἄγγλου πρεσβευτοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει, ὅπου ἐγνώρισε τὴν δαμαλίδα, ἣν προσεπάθησε νὰ εἰσαγάγῃ εἰς τὴν πατρίδα της. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων αὐτῆς εἶναι: «Ἐπιστολαὶ ἐξ Ἀνατολῆς» καὶ «Αἱ ἐπιστολαὶ καὶ τὰ ἔργα» (3 τόμ., 1892). Α. Δ.

**Μόνταγκιου** (Montague) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μόντεγκιου*.

**Μοντάδος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Τριαντάρου τῆς ἐπαρχίας Τήνου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 153. Χ. Δ.

**Μοντάζα.** Θερινὸν ἀνάκτορον τοῦ βασιλέως τῆς Αἰγύπτου ἐπὶ τῆς παραλίας μεταξὺ Ἀλεξανδρείας καὶ Ἀμπουκίρ. Ἡ ἀκτὴ παρουσιάζει ὁρμίσκον ἐγκλείοντα νησῖδα βραχώδη, συνδεομένην διὰ γεφύρας μετὰ τῆς παραλίας καὶ φέρουσαν ἐπὶ τῆς κορυφῆς κομψὸν περίπτερον. Ἐπὶ τῆς ἀκτῆς ἔκτισεν ὁ χεδίβης Ἀββᾶς Χιλμῆ Β' ἀνάκτορον καὶ ἐπαυλιν ἀγροτικὴν τελείαν, ὀνομάσας αὐτὸ *Μοντάζα* (= ἐκούσιον ἡσυχαστήριον). Κατὰ τὸν Πλίνιον ἐν τῇ νησῖδι ἐφύετο ἡ *ἀρτεμισία ἡ θαλασσία*, ἧς κλάδους ἐκράτουν οἱ μύσται τῆς Ἴσιδος κατὰ τὰ μυστήρια. Γ. Λ. Α.

**Μονταιγκὺ** (Montaigu) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Βανδέας, γνωστὴ ἐκ τῶν παρ' αὐτὴν συναφθεισῶν κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως δύο μαχῶν (1793) μεταξὺ τῶν βασιλικῶν καὶ τῶν δημοκρατικῶν στρατευμάτων ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Beysser. Καὶ κατὰ μὲν τὴν πρώτην ἐνίκησαν οἱ δημοκρατικοί, ἀλλ' αἰφνιδιασθέντες μετά τινας ἡμέρας ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων ἠναγκάσθησαν νὰ ὑποχωρήσωσιν, ὑποστάντες σοβαρὰς ἀπωλείας. Κάτ. 1.810. Χ. Δ.

**Μονταιγκὺ** (Montaigu), ***Φίλιππος-Κάρολος Γκουπιγιὼ ντὲ —***. Γάλλος πολιτικὸς (βλ. λ. *Γκουπιγιώ*).

**Μονταὶνι** (Montaigne), ***Μιχαήλ***. Γάλλος συγγραφεύς, φιλόσοφος καὶ παιδαγωγὸς (1533—1592). Εἷς ἐκ τῶν μεταγενεστέρων φορέων τῆς κινήσεως τῆς ἀποσκοπούσης εἰς τὴν ἀναβίωσιν καὶ ἀνανέωσιν τῆς ἀρχαίας φιλοσοφίας ἐν τῇ Δύσει. Ἡ ἀναβίωσις αὕτη ἀφορᾷ εἰς πάσας τὰς αἱρέσεις ἢ σχολὰς τῶν κλασσικῶν χρόνων τῆς ἀρχαιότητος, εἰς τὴν πλατωνικὴν φιλοσοφίαν (Βησσαρίων, Μαρσ. Φιτσῖνος κ. ἄ.), τὴν ἀριστοτελικὴν (Ἀγρίκολα κλ.), τὴν στωϊκὴν (λ. χ. Lepsius), τὴν τοῦ Ἐπικούρου (Γκασσένδι), ὡς καὶ τὴν Σκέψιν. Τῆς τελευταίας

Digitized by Google

ταύτης ἐκπρόσωπος δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὁ Μονταίνἱ μετὰ τοῦ μαθητοῦ αὐτοῦ Charron καὶ ἄλλων, ἂν καὶ οὐδαμῶς ἐμφανίζεται ὡς συνεπὴς σκεπτικιστής. Τὴν Σκέψιν συσχετίζει ὁ Μονταίνἱ πρὸς τὸ περιεχόμενον τῆς χριστιανικῆς διδασκαλίας καὶ πειρᾶται κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον νὰ ἐναρμονίσῃ τὴν φιλοσοφικὴν διανόησιν πρὸς τὴν θεολογίαν διὰ τῆς ἐξάρσεως τῆς ἀδυναμίας τοῦ ἀνθρωπίνου νοῦ καὶ τῆς ἐντεῦθεν ἀκολουθούσης ἀναγνωρίσεως τῆς ἀναγκαιότητος τῆς ἀποκαλύψεως. Αἱ ἰδέαι καὶ προϋποθέσεις αὗται τοῦ Μονταίνἱ ἤσκησαν ἰσχυρὰν ροπὴν ἐπὶ τοῦ Πασχάλ, κατὰ δὲ τὸν δέκατον ὄγδοον αἰῶνα ἡ ἐπίδρασις αὐτοῦ ἐπὶ τῆς καθόλου διανοήσεως ἀποβαίνει λίαν σημαντική. Τὸ πρῶτον δημοσίευμα τοῦ Μονταίνἱ εἶναι ἡ μετάφρασις τῆς φυσικῆς θρησκείας τοῦ Ραϋμόνδου Σαβούνδου, ἥτις ἀποτελεῖ καὶ τὸ κύριον περιεχόμενον τοῦ θεμελιώδους ἔργου αὐτοῦ, τῶν «Essais». Ταῦτα εἶναι συλλογὴ ἀτάκτως γεγραμμένη καὶ ἄνευ συστήματος, μεθόδου καὶ ἀρχιτεκτονικῆς, πλήρης πνευματωδῶν ἐμπνεύσεων, ποικίλη κατὰ τὸ περιεχόμενον, ἀποπνέουσα τὴν ἰδιορρυθμίαν καὶ τὴν ἰσχυρὰν ὑποκειμενικότητα τοῦ γράψαντος καὶ μαρτυροῦσα ἐνδελεχῆ μελέτην τῶν ἀρχαίων συγγραφέων. Τὴν ἔλλειψιν τάξεως καὶ συστήματος ἀναπληροῖ βαθεῖα γνῶσις τῶν ἀνθρώπων, δημιουργικὴ δύναμις τῆς γλώσσης καὶ αἱ πνευματώδεις ἐκρήξεις τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, αἰτίνες ἀποτελοῦσι πολυτίμους ἀφορμὰς πρὸς πραγματείαν τῶν διαφορωτάτων φιλοσοφικῶν, παιδαγωγικῶν, ἱστορικῶν καὶ φιλοσοφικῶν θεμάτων. Τὸ βιβλίον τοῦτο εἶναι ἓν ἐκ τῶν μᾶλλον γονίμων καὶ τὸ ἐνδιαφέρον διεγειρόντων ἔργων τῆς παγκοσμίου φιλολογίας, ἐπ' αὐτοῦ δὲ στηριχθεὶς ὁ Lamettrie ἐχαρακτήρισε τὸν συγγραφέα αὐτοῦ ὡς τὸν πρῶτον Γάλλον, ὅστις ἐτόλμησε νὰ σκεφθῇ. Ὁ χαρακτὴρ ὅμως αὐτοῦ καθιστᾷ λίαν δυσχερῆ τὴν ταξινόμησιν τῶν ἰδεῶν τοῦ Μονταίνἱ καὶ τὴν συστηματικὴν αὐτῶν διάταξιν. Ἐπὶ τοῦ μεταφυσικοῦ πεδίου εἶναι, ὡς εἴπομεν, σκεπτικιστής συγχρόνως ὅμως μένει πιστὸς εἰς τὸ δόγμα τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας. Ἐπὶ τοῦ ἠθικοῦ πεδίου ἐκδέχεται τὸν ἄνθρωπον ἠθικῶς αὐτοτελῆ, στηριζόμενος ἐπὶ τοῦ Σωκράτους καὶ ἐπὶ τῆς στωϊκῆς φιλοσοφίας. Τὴν ἀρχὴν τῶν τελευταίων τούτων περὶ τοῦ ὁμολογουμένως τῇ φύσει ζῆν οἰκειοποιεῖται καὶ ὡς παιδαγωγός, ἀπαιτῶν κατὰ φύσιν ἀγωγὴν ἐν συνδυασμῷ μετὰ τῆς αὐτογνωσίας καὶ εὐθανασίας.

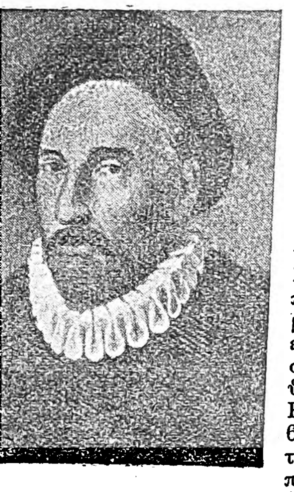

*Μιχαὴλ Μονταίνἱ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *P. Bonneton*, Montaigne, l'homme et l'oeuvre (1893).— *P. Stapfer*, Montaigne (1894).— *Lampion*, Introduction aux Essais de Montaigne (1900).— Κριτικὴ ἔκδοσις τῶν «Essais» εἰς 4 τόμους ὑπὸ τοῦ *Strowski* (1906 καὶ ἑξ.).

Ν. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**Μονταλαμπὲρ** (Montalember), ***Κάρολος Φόρμπ ντὲ Τρυόν***, *κόμης τοῦ* —. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ πολιτικὸς (1810—1870). Ὑπῆρξεν ὁμότιμος τῆς Γαλλίας, μετὰ δὲ τοῦ Lamennais ἵδρυσε τὴν ἐφημερίδα «Avenir» πρὸς ὑπεράσπισιν τοῦ καθολικισμοῦ (1830). Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Φεβρουαρίου (1848) ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ψήφισιν τοῦ περὶ ἐλευθερίας τῆς ἐκπαιδεύσεως νόμου (1850). Ὁ Μονταλαμπὲρ ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτέρων ἀντιπροσώπων τοῦ φιλελευθέρου καθολικισμοῦ, ἔλαβε δὲ ζωηρότατον μέρος ἐναντίον τοῦ ἀλαθήτου τοῦ *πάπα*, κατὰ τὴν σύγκλησιν τῆς συνόδου τοῦ Βατικανοῦ. Τῷ 1852 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τὰ κυριώτερα τῶν συγγραμμάτων του εἶναι: «Vie de Sainte Élisabeth de Hongrie» (1836, 22α ἐκδ. 1903), «L'église libre dans l'État libre» (1836), «Des intérêts catholiques au XIXe siècle» (1852), «Les Moines d'Occident depuis saint Benoît jusqu' à saint Bernard» (1860—1867, τ. 5, ἐκδ. 1874—1877, τ. 7), ὅπερ θεωρεῖται ὡς τὸ σπουδαιότερον ἔργον του, «Une nation en deuil, la Pologne» (1861), «Oeuvres» (1861—1868, τ. 9), «Discours» (1861, 1892, τ. 3), «Lettres à un ami de collège» (1873, 1884), «Lettres» (ἐκδ. Texier 1899 καὶ Cornudet 1905). Ι. Ο.

**Μονταλβὰν** (Montalván), ***Ἰωάννης - Πέρεθ ντὲ*** —. Ἱσπανὸς ποιητὴς καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1602—1638). Ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἦτο βιβλιοπώλης καὶ ἐκδότης τῶν ἔργων τοῦ ποιητοῦ Λόπε ντὲ Βέγκα, μετὰ τοῦ ὁποίου ὁ Μονταλβὰν συνεδέθη ἀπὸ μικρᾶς ἡλικίας καὶ παρὰ τοῦ ὁποίου ἔλαβε τὰς πρώτας ἐνθαρρύνσεις. Ἐσπούδασε θεολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἀλκαλὰ καὶ τῷ 1625 ἐγένετο ἱερεύς. Εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν ἔγραψε τὸ πρῶτόν του δρᾶμα, τῷ δὲ 1624 ἔγραψεν εἰς 234 ὀκτάστιχα τὸ ποίημα «Ὁ Ὀρφεύς», ὅπερ κατέταξεν αὐτὸν μεταξὺ τῶν καλυτέρων ποιητῶν τῆς ἐποχῆς του. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν τῷ 1635 εἰς 2 τόμους, περιλαμβάνοντας κυρίως δράματα πατριωτικά, θρησκευτικὰ καί τινα διηγήματα. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: «Ὁ πρίγκιψ τῶν ὀρέων», «Ἔρως, τιμιότης καὶ φιλία», «Ἡ ἔντιμος ἀτιμία», «Τὰ τέκνα τῆς τύχης», «Θεαγένης καὶ Χαρίκλεια», «Μία εὐχαρίστησις προκαλεῖ χιλίας δυσαρεσκείας», «Ὁ Σαμψών», «Ὁ Πολύφημος» κτλ. Ὁ Μονταλβὰν ἀπέθανε παράφρων. Μ. Δ. Β.

**Μονταλεμπέρτ.** Ὀνομασία προμαχῶνος τοῦ φρουρίου Μεσολογγίου, δοθεῖσα ὑπὸ τοῦ τειχοποιοῦ Κοκκίνου πρὸς τιμὴν τοῦ μαρκησίου *Μονταλεμπέρτου*, Γάλλου στρατιωτικοῦ μηχανικοῦ (1714—1800). Παρὰ τὸν προμαχῶνα τοῦτον ἐτέθη ἡ τρίτη γέφυρα τῆς διαβάσεως τῆς φάλαγγος Νότη Μπότσαρη κατὰ τὴν ἔξοδον τῆς φρουρᾶς. Χ. Γ. Ε.

**Μονταλιβὲ** (Montalivet), ***Κάμιλλος***, *κόμης ντὲ* —. Γάλλος πολιτικὸς (1801—1880). Ἐσπούδασε μηχανικήν, ἀλλ' ἀποθανόντος τοῦ πατρός του, ὑπουργοῦ τῶν Ἐσωτερικῶν ἐπὶ Ναπολέοντος, ἐκλήθη ἐκ κληρονομικοῦ δικαιώματος εἰς τὴν βουλὴν τῶν ὁμοτίμων. Ἀφοσιωθεὶς ἔκτοτε εἰς τὴν πολιτικήν, διεκρίθη τάχιστα εἰς τὸ νέον του στάδιον. Τῷ 1830 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ εἶτα τῆς Παιδείας καὶ τῶν Θρησκευμάτων. Τῷ 1832, ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ πάλιν, κατέστειλε τὰ βασιλόφρονα κινήματα τινων ἐκ τῶν ἐπαρχιῶν καὶ τὴν δημοκρατικὴν ἐπανάστασιν τῆς 5ης καὶ 6ης Ἰουνίου τοῦ ἔτους τούτου. Βραδύτερον ἐχρημάτισεν ἐκ νέου ὑπουργὸς καὶ κατόπιν ἐπιμελητὴς τῶν δημοσίων κτημάτων, δημιουργήσας ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του ταύτην τὸ μουσεῖον τῶν Βερσαλλιῶν καὶ ἐπεκτείνας τὸ τοῦ Λούβρου. Ἀπὸ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848 ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον. —Ω.

**Μονταλμπάνι** (Montalbani), *καὶ ἐπὶ τὸ ἑλληνικώτερον* ***Μονταλβάνης, Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς περιηγητὴς καὶ στρατιωτικὸς ἐκ Βολωνίας (1596—1646). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ φιλοσοφίαν, εἶτα δ' ἐπεσκέφθη διαδοχικῶς τὴν Γαλλίαν, τὴν Γερμανίαν, τὴν Πολωνίαν, τὴν Τουρκίαν, τὴν Περσίαν καὶ τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς Ἄνω Ἀσίας. Ἐπιστρέψας εἰς Εὐρώπην εἰσῆλθεν ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας, συλληφθεὶς δὲ ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν παρέμεινεν ἐπὶ πολὺ αἰχμάλωτος. Ἀπελευθερωθεὶς εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ἐνετικῆς δημοκρατίας καὶ διωρίσθη διοικητὴς τῆς Κρήτης, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ἦτο ἄνθρωπος μεγάλης μορφώσεως, γνωρίζων 13 περίπου ἀνατολικὰς γλώσσας. Ἔγραψε πλεῖστα συγγράμματα, ὧν ἐν ἐδημοσιεύθη τῷ 1625 ἐν Ρώμῃ ὑπὸ τὸν τίτλον «De moribus Turcarum Commentarii». Χ. Δ.

**Μοντάνα** (Montana, *συντετμ.* Mont.) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, κειμένη εἰς τὰ ΒΔ. τῆς ὁμοσπονδίας. Ἔχει ἔκτασιν 380.706 τ. χιλμ. καὶ 714.000 κατ., ἐξ ὧν περὶ τὰς 11.000 εἶναι Ἐρυθρόδερμοι. Τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς Πολιτείας καταλαμβάνεται ὑπὸ τῶν Βραχωδῶν ὀρέων, ἐκ τῶν ὁποίων πηγάζει ὁ Μισσουρὶ καὶ οἱ παραπόταμοι αὐτοῦ *Γέλλοστον, Μέσελσελ* καὶ *Μίλκ*. Ἕτεροι σημαντικοὶ ποταμοὶ τῆς Μοντάνας εἶναι ὁ *Κλάρκ - Φόρκ* καὶ ὁ *Φλάτχηντ*. Τὰ 18 % τῆς ἐκτάσεως καλύπτονται ὑπὸ δασῶν. Ἡ χώρα παράγει δημητριακά, γεώμηλα, λινόσπορον καὶ ἔχει σημαντικὴν κτηνοτροφίαν (576.000 ἵπποι, 1.472.000 βόες, 2.837.000 πρόβατα, 280.000 χοῖροι). Ἡ κυριωτέρα ὅμως πλουτολογικὴ πηγὴ τῆς πολιτείας εἶναι τὰ μεταλλεῖα, ἰδίως τὰ χαλκωρυχεῖά της. Ἡ Μοντάνα εἶναι ἡ δευτέρα εἰς χαλκὸν πλουσία χώρα τοῦ κόσμου. Ἐκ τῶν ἄλλων μετάλλων ἐξάγονται μικραὶ ποσότητες ἀργύρου, χρυσοῦ, μολύβδου, ψευδαργύρου. Ὑπάρχουσιν ἐπίσης κοιτάσματα γαιανθρακος καὶ πετρελαίου. Ἡ βιομηχανία τῆς Μοντάνας περιλαμβάνει κυρίως χυτήρια, ἐργοστάσια ξυλείας καὶ ἀτμομύλους. Τὸ κυριώτερον μέσον συγκοινωνίας εἶναι οἱ σιδηρόδρομοι (10.000 χλμ.), ἐλάχισται δὲ καὶ ἀνάξιοι λόγου εἶναι αἱ ποτάμιοι συγκοινωνίαι της.

Ἡ πολιτεία διαιρεῖται εἰς 56 κομητείας. Κυβερνᾶται ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ Συντάγματος τοῦ 1889. Ἔχει δύο νομοθετικὰ σώματα, τὴν βουλὴν (ἐξ 102 βουλευτῶν) καὶ τὴν γερουσίαν (56). Ἀποστέλλει εἰς τὸ κογκρέσσον δύο γερουσιαστὰς καὶ δύο βουλευτάς. Πρωτεύουσα τῆς πολιτείας εἶναι ἡ Ἕλενα.

Ἡ πρώτη ἐξερεύνησις τοῦ ἐδάφους ἐγένετο τῷ 1743 ὑπὸ τοῦ δεσπότου ντὲ λὰ Βερενδρὺ (sieur de la Verendrye). Διάφοροι περιφέρειαι τῆς σημερινῆς πολιτείας ἀπετέλεσαν κατὰ καιροὺς περιφέρειας διαφόρων ἐδαφικῶν περιοχῶν (Territory) μέχρι τοῦ ἔτους 1804, ὅτε συνεστήθη ἡ ἐδαφικὴ περιοχὴ Μοντάνας (Montana Territory), ἥτις τῷ 1889 ἐγένετο πολιτεία τῆς ὁμοσπονδίας. Γ. Ι. Β.

**Μοντανέλλι** (Montanelli), ***Ἰωάννης.*** Ἰταλὸς φιλέλλην, γεννηθεὶς ἐν Βρεσκίᾳ. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις τὴν μηχανικήν. Ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως ἀπεβιβάσθη εἰς Πελοπόννησον καὶ προσεκολλήθη τῷ στρατηγῷ Φαβιέρῳ, ὅστις διαγνοὺς τὴν ἀξίαν τοῦ ἀνδρὸς ἀνέθηκεν αὐτῷ τὴν ὀχύρωσιν τῶν Μύλων Ναυπλίου, ὅπου τῷ 1822 ἐστήθη τὸ στρατηγεῖον τοῦ Κολοκοτρώνη. Ἀπεβίωσεν ἐν Ναυπλίῳ τῷ 1825. Τ.Ε.Ε.

— **Μοντανέλλι** (Montanelli), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς συγγραφεὺς καὶ πολιτικὸς (1813—1862). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς μουσικὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ κατόπιν νομικά, συνεργαζόμενος ἐν τῷ μεταξὺ εἰς τὸ περιοδικὸν «Ἀνθολογία» ἐπὶ φιλολογικῶν θεμάτων. Τῷ 1840 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ ἀστικοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πίζης, τῷ δὲ 1844 ἵδρυσε τὸν πατριωτικὸν σύλλογον τῆς «Fratelli Italiani» καὶ προπαρεσκεύασε διὰ τῶν κρυφίων προκηρύξεών του τὴν ἐπανάστασιν τῆς Τοσκάνης. Τῷ 1847 ἐξέδωσεν ἐν Φλωρεντίᾳ τὴν ἐφημερίδα «Ἰταλὸν» μὲ πρόγραμμα μεταρρυθμιστικὸν καὶ πατριωτικὸν καὶ τῷ 1848 ἔλαβε μέρος εἰς τὸ πανεπιστημιακὸν τάγμα, πληγωθεὶς σοβαρῶς καὶ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν. Κατορθώσας νὰ διαφύγῃ, ἐξελέγη βραδύτερον βουλευτὴς καὶ κατόπιν διωρίσθη διοικητὴς Λιβόρνου. Μετὰ τὴν φυγὴν τοῦ δουκὸς τῆς Τοσκάνης Λεοπόλδου Β΄ ἐκ Φλωρεντίας, ὁ Μοντανέλλι, μετὰ τοῦ Μαντσίνι καὶ τοῦ Γκουερράτσι, ἀπετέλεσε τὴν τριανδρίαν καὶ ὑπεστήριξε τὴν ἕνωσιν μετὰ τῆς Ρώμης. Μεταβὰς κατόπιν εἰς Παρισίους ἐπὶ διπλωματικῇ ἀποστολῇ, ἠναγκάσθη, μετὰ τὴν γενομένην ἐν τῷ μεταξὺ παλινόρθωσιν τοῦ δουκός, νὰ παραμείνῃ ἐκεῖ, ὅπου συνῆψε φιλίας μετὰ τοῦ Λαμενναί, τοῦ Μισελέ, τοῦ Λαμαρτίνου κ. ἄ. Τῷ 1862 ἐξελέγη ἐκ νέου βουλευτής. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἀναμνήσεις Ἰταλικαὶ καὶ ἰδίως ἐκ τῆς Τοσκάνης κατὰ τὰ ἔτη 1814—1850» (εἰς δύο τόμους, 1853), ἔργον σημαντικώτατον διὰ τὴν μελέτην τῆς συγχρόνου ἰταλικῆς ἱστορίας, «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν μελέτην τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου» (1856), «Ἡ μοναρχία, ἡ παπωσύνη καὶ ἡ δημοκρατία ἐν Ἰταλίᾳ» (1859), «Περὶ τῆς ἐθνικῆς ἀναδιοργανώσεως» (1862). Ἔγραψεν ἐπίσης τὴν τραγῳδίαν «Κάρμα» καὶ τὸ δραματικὸν ποίημα «Πειρασμός» (1856). Μ. Δ. Β.

**Μοντάνια** (Montagna), ***Βαρθολομαῖος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (1450—1523) ἀκμάσας ἐν Βιτσέντζᾳ. Ἐζωγράφησε κυρίως σκηνὰς ἐκ τῶν Γραφῶν, σῳζομένας σήμερον εἰς τὰ μουσεῖα τοῦ Μιλάνου, τῆς Βενετίας, τῆς Βιτσέντζας, τοῦ Βερολίνου καὶ τοῦ Μοντεμπερίκο. Τὰ ἔργα του στεροῦνται αἰσθήματος καὶ φαντασίας, ἀλλ' εἶναι καλῶς χρωματισμένα καὶ μεγαλοπρεπῆ. Σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ἡ ἐμφάνισις τοῦ Ἰησοῦ εἰς τὸν ναὸν» (Βιτσέντζα), «Ἡ Παρθένος μετὰ δύο ἁγίων» (Βενετία) κλπ. Ὁ Μοντάνια ἤσκησε σοβαρὰν ἐπίδρασιν εἰς ὁλόκληρον τὴν Βόρειον Ἰταλίαν.

—**Μοντάνια** (Montagna), ***Βενέδικτος.*** Ζωγράφος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, ἀποθανὼν μετὰ τὸ 1547. Ἐζωγράφησεν ἱστορικὰς σκηνὰς καὶ προσωπογραφίας κατ' ἀπομίμησιν τῶν ἀδελφῶν Μπελλίνι καὶ μὲ τὴν αὐτὴν ὡς καὶ ὁ πατήρ του τεχνοτροπίαν. Γνωστότερα ἔργα του εἶναι: «Ἡ Παρθένος μετὰ πολλῶν ἁγίων» (μουσεῖον Μπρέρα, Μιλᾶνον) καὶ «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων», τὸ κάλλιστον πάντων, κατατεμαχισθὲν τῷ 1848 ὑπὸ Αὐστριακῶν στρατιωτῶν. Χ. Δ.

**μοντανία** (ἡ) (Montania) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον θάμνους κοσμητικούς, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, ἰθαγενεῖς τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων κοσμητικῶν εἰδῶν εἶναι ἡ *μοντανία ἡ ἡρακλειόφυλλος* (Montania heracleifolia), ἰθαγενὴς θάμνος τοῦ Μεξικοῦ, καλλιεργούμενος σχεδὸν πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**Μοντανιὲ** (Montagney). Πραγματικὸν ὄνομα οἰκογενείας μουσικῶν ἐκ Γαλλίας, ἥτις ἐγένετο γνωστὴ ὡς *Ἀρτὸ* (βλ. λ.).

**Μοντανιὲς** ***Μαρτινὲθ*** (Montañes Martinez), ***Ἰωάννης.*** Ἱσπανὸς γλύπτης τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1649. Ἐξειργάσθη πολύχρωμα γλυπτά, χαρακτῆρος ρεαλιστικοῦ, τὰ ὁποῖα ἀπολαύουν σήμερον μεγάλης ἐκτιμήσεως. Ἀνήγαγε τὴν πολύχρωμον γλυπτικὴν εἰς τὴν περιωπὴν τῶν ζωγραφικῶν πινάκων τοῦ Μουρίλλο καὶ τοῦ Βελάσκεθ καὶ ἀποτελεῖ μίαν ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας καλλιτεχνικὰς δόξας τῆς Ἱσπανίας. Ἐγκατασταθεὶς εἰς τὴν Σεβίλλην, ἐφιλοτέχνησεν ἐπὶ ὁλόκληρον τεσσαρακονταετίαν μεγάλην σειρὰν γλυπτῶν ἁγιογραφικῶν παραστάσεων ἐπὶ ξύλου, ἐκ τῶν ὁποίων πολλαὶ σῴζονται εἰς τοὺς ναούς, τὰ μοναστήρια καὶ τὰ μουσεῖα τῆς Ἱσπανίας. Τὸ πρῶτον ἔργον του χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 1607, εἶναι δὲ παράστασις τοῦ Χριστοῦ εἰς παιδικὴν ἡλικίαν. Μεγάλην ἐντύ-



Digitized by Google

πωσιν ἐμποιοῦσι, διὰ τὴν ἀρτιωτάτην ρεαλιστικὴν ἐκτέλεσίν των, αἱ πολυάριθμοι σκηναὶ τῶν παθῶν τοῦ Χριστοῦ, τῶν ὁποίων ἀρίστη εἶναι ἡ ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Σεβίλλης «Σταύρωσις». Τῷ 1635 προσεκλήθη εἰς Μαδρίτην ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Δ' διὰ νὰ ἐκτελέσῃ ἐπὶ ξύλου ἔφιππον ἀνδριάντα τοῦ βασιλέως τούτου. Ὁ ἀνδριάς, ἀντιγραφεὶς ἐπὶ βρόνζου ὑπὸ τοῦ Φλωρεντίνου γλύπτου Τάκκα, σῴζεται ἐν τῇ πλατείᾳ Ὀριέντε τῆς Μαδρίτης. Ἐν Μαδρίτῃ συνεδέθη μετὰ τοῦ Βελάσκεθ, ὑποτίθεται δὲ ὅτι ἡ ἐν τῷ μουσείῳ Πράντο σῳζομένη θαυμασία «Προσωπογραφία ζωγράφου», ἥτις εἶναι ἔργον τοῦ τελευταίου, εἰκονίζει τὸν Μοντανιές. Χ. Δ.

**μοντανικὸν** *ὀξύ*, ἢ *μοντικὸν ὀξὺ [Ὀργ. Χημ.]*. Εἶναι λιπαρὸν ὀξὺ τοῦ τύπου $C_{29}H_{58}O_2$, ἀνευρεθὲν εἰς τὴν κηρώδη μᾶζαν, ἥτις λαμβάνεται ἐκ τῶν θειούχων λιγνιτῶν δι' ἐκχυλίσεως διὰ βενζίνης ἢ βενζολίου. Σ. Γ.

**μοντανισμός**. Αἵρεσις ἀναφανεῖσα κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Β' αἰῶνος καὶ ἀποβλέπουσα κυρίως εἰς τὴν διόρθωσιν δῆθεν τοῦ πρακτικοῦ βίου τῆς Ἐκκλησίας, ὃν ἐθεώρει διεφθαρμένον. Ἡ αἵρεσις, ὡς ἐκ τῆς χώρας, ἐν ᾗ ἀνεφάνη, τῇ Φρυγίᾳ, χαρακτηρίζεται ὑπό τινος ἐνθουσιασμοῦ καὶ φανατισμοῦ, ἐκστατικῆς προφητείας καὶ ὑπνοβατικῶν τάσεων, αἵτινες, καὶ πρὸ Χριστοῦ ἀναφερόμεναι, ὑπέτρεφον ἤδη παρὰ τοῖς ὀπαδοῖς αὐτῆς τὴν πρὸς τὸν κόσμον ἀποστροφήν, προκαλουμένην ἐκ φυσικῶν δυστυχημάτων καὶ μάλιστα τῶν διωγμῶν καὶ ὑπεστήριζον τὰς χιλιαστικὰς αὐτῶν ἐλπίδας. Οὕτω, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Β' αἰῶνος ἐν Πεπούζῃ τῆς Φρυγίας ἐνεφανίσθη Μοντανός τις, ὅστις ὢν πρότερον ἱερεὺς τῶν εἰδώλων ἐπέστρεψεν εἰς Χριστὸν καὶ διέδιδεν ὅτι ἔβλεπεν ὁράσεις, ἀνήγγελλε τὴν δευτέραν παρουσίαν τοῦ Χριστοῦ καὶ δῆθεν προφητεύων ἐξήλου κατὰ τῆς διεφθαρμένης, ὡς ἔλεγεν, Ἐκκλησίας. Εἶχε δὲ μεθ' ἑαυτοῦ καὶ δύο γύναια, τὴν Μαξιμίλλαν καὶ τὴν Πρίσκιλλαν, ἅτινα ὁμοίως ἐν ἐκστάσει προεφήτευον. Οἱ κάτοικοι τῆς Φρυγίας, ἄλλοι μὲν ἀνεγνώρισαν τὸν Μοντανὸν ὡς ἀληθῆ προφήτην, ἄλλοι δὲ ὡς παράφρονα, οὗτος δὲ θεωρῶν ἑαυτὸν ὡς τὸ πρόσωπον, ἐν ᾧ ἐπληρώθη ἡ περὶ Πνεύματος προφητεία, διέδιδε τὴν διδασκαλίαν αὐτοῦ καὶ τοὺς ἀποδεχομένους αὐτὴν ἐκάλει πνευματικούς, πρὸς διάκρισιν τῶν ψυχικῶν, τῶν λοιπῶν Χριστιανῶν. Ἀλλὰ κατ' αὐτοῦ τῷ 150 ἀντεπεξῆλθεν ἡ Ἐκκλησία καὶ ἐν δυσὶ συνόδοις, ἐν Ἱεραπόλει καὶ Ἀγχιάλῳ κατεδίκασε τὴν διδασκαλίαν αὐτοῦ, διάφοροι δὲ διδάσκαλοι ἔγραψαν κατ' αὐτοῦ διάφορα συγγράμματα. Τοὺς ὀπαδοὺς τῆς αἱρέσεως ὠνόμαζον οὗτοι κατὰ Φρύγας, Πεπουζιανούς, Πρισκιλλιανιστάς, Ἀρτοτυρίτας, καὶ Πασσαλορυγχίτας. Ὁ Μοντανισμὸς ἐξ Ἀνατολῆς εὗρεν εἴσοδον εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν ἀνθυπατικὴν Ἀφρικήν, σπουδαιοτάτη κατάκτησις τοῦ ὁποίου ἐνταῦθα ἐγένετο ὁ Τερτυλλιανός.

Βάσις τῆς διδασκαλίας τοῦ Μοντανοῦ εἶναι ὅτι ἡ θεία ἀποκάλυψις ἀναπτύσσεται βαθμιαίως καὶ ὅτι αὕτη δὲν συνεπληρώθη διὰ τοῦ Χριστοῦ καὶ τῶν ἀποστόλων, ἀλλὰ διὰ τοῦ Μοντανοῦ εἰσῆλθεν εἰς τὴν ἐποχὴν τοῦ Παρακλήτου ἀπὸ τοῦ στόματος αὐτοῦ ὁμιλεῖ τὸ ἅγιον Πνεῦμα, οἱ δὲ ὀπαδοὶ τῆς αἱρέσεως ὤφειλον νὰ ἀκολουθῶσι τὰς ἑξῆς ἐντολάς: 1) Τὴν ἀποχὴν τοῦ β' γάμου. 2) Νηστείας αὐστηράς. 3) Ὅτι οἱ θανασίμως ἁμαρτάνοντες ἔπρεπε νὰ μένωσι πάντοτε ἐν τῇ τάξει τῶν μετανοούντων. 4) Ὅτι τὸ ἀποσύρεσθαι ἐν καιρῷ διωγμῶν εἶναι ἴσον τῇ ἀρνήσει τοῦ Χριστοῦ. 5) Ὅτι αἱ παρθένοι πρέπει νὰ καλύπτωνται. 6) Τὴν ἀπαγόρευσιν παντὸς κόσμου καὶ πολυτελείας εἰς τὰς γυναῖκας καὶ 7) Τὴν καταδίκην τῶν τεχνῶν καὶ ἐπιστημῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἱππολύτου, Φιλοσοφούμενα* (8,19).—*Εὐσεβίου*, Ἐκκλ. Ἱστορ. (5,3. 14-19). —*Ἐπιφανίου*, Αἱρ. (48, 49).—*Θεοδωρήτου*, Αἱρετ. κακομ. (3,2).—*Bonwetsch*, d. Geschichte d. Montanismus, (1881).—*Φ. Βαφείδου* Ἐκκλ. Ἱστορ. (τόμ. Α'. σελ. 105 κτλ.). † Η. Φ. ΒΑΦΕΙΔΗΣ

**μοντανισταὶ** (οἱ). Αἱρετικοὶ Χριστιανοὶ (βλ. λ. *μοντανισμός*).

**μοντανίτης** (Montanit). Ὀρυκτὸν τελλουρικὸν βισμούθιον ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Bi_2\,TeO_6.\,2H_2O$. Ἀπαντᾷ εἰς κατάστασιν γεώδη, ἔχει χρῶμα κιτρινόλευκον καὶ λάμψιν κηρώδη, ἢ εἶναι ἀλαμπές. Εὑρίσκεται εἰς Montana, βόρειον Καρολίναν κ. ἀ. Τ. Β.

**Μοντανὸς** (Montanus), ***Μαρτῖνος***. Ἱερεὺς τῆς Κυβέλης ἐκ Φρυγίας, ζήσας κατὰ τὸν Β' μ. Χ. αἰῶνα. Μεταστὰς εἰς τὸν Χριστιανισμὸν ἐγένετο ἀρχηγὸς ἰδίας αἱρέσεως (βλ. λ. *μοντανισμός*).

**Μονταρζὶ** (Montargis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Λουαρέ, ἀπέχουσα 63 χλμ. τῆς Ὀρλεάνης. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, βιομηχανίαν βυρσοδεψίας καὶ κατ. 12.930. Χ. Δ.

**Μοντάρωφ**, ***Γιορντάν***. Σύγχρονος Βούλγαρος διηγηματογράφος. Εἶναι ὁ ἀντιπρόσωπος τοῦ φουτουρισμοῦ ἐν τῇ βουλγαρικῇ λογοτεχνίᾳ.

**Μοντβαλλιὲ** (Montvallier) *[Γεωγρ.]*. Κορυφὴ τῶν κεντρικῶν Πυρηναίων (βλ. λ. *Βαλλιέ*).

**Μοντγκάμερυ** (Montgomery) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας Ἀλαβάμα. Κάτ. 62.500. Εἶναι κέντρον ἀτμοπλοϊκῶν, σιδηροδρομικῶν καὶ ἀεροπορικῶν συγκοινωνιῶν, ἔχει δὲ ἀξιόλογον ἐμπόριον βάμβακος καὶ βιομηχανικῶν εἰδῶν. Ἡ πόλις αὕτη ὑπῆρξε τῷ 1861 ἡ πρωτεύουσα τῶν Ὁμοσπόνδων πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, μετὰ τέσσαρα δὲ ἔτη κατελήφθη ὑπὸ τῶν ἑνωτικῶν στρατευμάτων. Γ. Ι. Β.

**Μοντγκάμερυ** (Montgomery), ***Ἰάκωβος***. Σκῶτος ποιητὴς (1771—1854). Εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν ἔγραψεν ἐπικὰ ποιήματα, εἰς τὰ ὁποῖα ἀπεπειρᾶτο νὰ μιμηθῇ τὸν Μίλτωνα. Μὴ θέλων ν' ἀκολουθήσῃ σχολικὰς σπουδάς, ἐτοποθετήθη ὑπὸ τῶν γονέων του μαθητευόμενος εἰς τυπογραφεῖον, δὲν ἐβράδυνε δὲ νὰ ἐξελιχθῇ εἰς διευθυντὴν ἐφημερίδος. Ἐγκατέλιπεν ὅμως μετά τινα χρόνον τὴν δημοσιογραφίαν, διὰ ν' ἀφοσιωθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν ποίησιν. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ὁ ὁδοιπόρος τῆς Ἑλβετίας» (1806), «Ὁ Ὠκεανὸς» (1805), ποιήματα λυρικοῦ καὶ περιγραφικοῦ τύπου, ἰδίως δὲ οἱ θρησκευτικοὶ περιεχομένου «Ὕμνοι» του. Πλήρης συλλογὴ τῶν μέχρι τοῦ 1841 ποιημάτων του ἐξεδόθη κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐν Λονδίνῳ εἰς 4 τόμους. —Ω.

**—Μοντγκάμερυ** (Montgomery), ***Οὐΐλλιαμ-Φέδερστον Η.*** Ἐπιφανὴς Ἰρλανδὸς μαιευτὴρ (1797—1859). Τῷ 1829 ἐγένετο μέλος τοῦ βασιλικοῦ κολλεγίου τοῦ Δουβλίνου. Ἐδίδαξε τὴν μαιευτικὴν κατ' ἀρχὰς ἐν τῇ κατοικίᾳ του, ἱδρύσας ἀργότερον μαιευτικὴν ἕδραν ἐν τῷ ἰατρικῷ κολλεγίῳ. Τὸ κυριώτερον αὐτοῦ ἔργον εἶναι τὸ περὶ σημείων τῆς ἐγκυμοσύνης: «An exposition of the signs and symptoms of pregnancy» (1837). Ἔγραψεν ἐπίσης: «Spontaneous ampution of the limbs of the foetus in utero» (1832), «Practical observations in midwifery» (1835), «Obs. on the incipient stage of cancerous affections of the womb» (1842), «Some observ. of uterine polype and ulceration with cases» (1846), ὡς καὶ σειρὰν πραγματειῶν εἰς τὸ περιοδικὸν τῆς «Ἐφημερίδος τῶν ἰατρικῶν ἐπιστημῶν» καὶ εἰς τὴν «Ἐγκυκλοπαιδείαν τῆς πρακτικῆς ἰατρικῆς». Περιέγραψε τὴν κατὰ τὸν 3 μῆνα τῆς ἐγκυμοσύνης ἐμφάνισιν καὶ ἀνάπτυξιν ἐπὶ τῆς ἅλω τῆς θηλῆς τοῦ μαστοῦ τῶν ἡμισφαιρικῶν ἐπαρματίων 12—20 τὸν ἀριθμόν, καλουμένων ἔκτοτε μὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ θηλώδη φύματα τοῦ Μοντγκάμερυ. Ο. Ρ.

**Μόντε**, ἢ ***Μὸνς*** (Monte ἢ Mons), ***Φίλιππος ντὲ***—. Βέλγος συνθέτης (1521—1603). Προσελήφθη ὡς ἀοιδὸς τοῦ βασιλικοῦ παρεκκλησίου ἐν Λονδίνῳ καὶ εἶτα μουσικὸς διευθυντὴς τῶν αὐτοκρατόρων Μαξιμιλιανοῦ τοῦ Β' καὶ Ροδόλφου τοῦ Β', ἐν Βιέννῃ, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν. Ἔχουσι διασωθῆ ἐκ τῶν ἔργων του: λειτουργίαι πεντάφωνοι ἕως ὀκτάφωνοι, 6 βιβλία μοτέττων πενταφώνων καὶ ἑξαφώνων, πολυάριθμα βιβλία μαδριγαλίων, συλλογὴ γαλλικῶν ᾀσμάτων καὶ τὰ «Σονέτα τοῦ Πέτρου ντὲ Ρονσάρ» (1576). Γ. Σ.

**Μοντεβάρδια**, καὶ ***Μορτεβάρδια*** *[Γεωγρ.]*. ΝΔ. λόφος τοῦ Ἀκρωτηρίου τῆς Κρήτης, ἄνωθεν τοῦ μυχοῦ τοῦ λιμένος τῆς Σούδας, χρησιμεύων ὡς σκοπιὰ κατὰ τὰς κρητικὰς ἐπαναστάσεις. Ἀμφότεραι αἱ ὀνομασίαι ἐνετικῆς προελεύσεως. Ε. Γ.

**Μοντεβέρντε** (Monteverde), ***Ἰούλιος***. Ἰταλὸς γλύπτης (1837—1917). Ἐσπούδασεν ἐν Γενούῃ καὶ τῷ 1874 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀκαδημίας τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ ἐν Ρώμῃ. Τὰ κάλλιστα τῶν ἔργων του εἶναι ἓν ἄγαλμα τοῦ Κολόμβου κατὰ τὴν παιδικήν του ἡλικίαν, τὸ καταστῆσαν αὐτὸν γνωστὸν καθ' ὅλην τὴν Εὐρώπην σύμπλεγμα τοῦ «Γέννερ ἐμβολιάζοντος διὰ τῆς δαμαλίδος τὸ ἴδιον τέκνον του» (νοσοκομεῖον τῆς Γενούης, 1872), τὸ εἰς πλεῖστα ἀντίγραφα κυκλοφορῆσαν «Πνεῦμα τοῦ Φραγκλίνου», ἔργον παγκοσμίως γνωστόν, τὸ ἐν Μπουένος Ἄϋρες ἄγαλμα τοῦ Ματσίνι (1876), τὸ μνημεῖον τοῦ κόμητος Μασσάρι (νεκροταφεῖον τῆς Φερράρας 1873), τὸ ἄγαλμα τοῦ συνθέτου Τάλμπεργκ (Βίλα Ρεάλε τῆς Νεαπόλεως) κλπ. Ἀξιολογώτατα ἐπίσης εἶναι τὰ ἔργα του «Ἰδανισμὸς καὶ ὑλισμός», σύμπλεγμα ἐκτεθὲν εἰς τὴν διεθνῆ ἔκθεσιν τοῦ 1900, καὶ ὁ ἐν τῷ πανθέῳ τῆς Ρώμης ἀνδριὰς τοῦ Βίκτωρος Ἐμμανουήλ. Χ. Δ.

**Μοντεβέρντε** (Monteverde) ***κατακόμβη***. Ἰουδαϊκὴ κατακόμβη ἐν τῷ ὁμωνύμῳ προαστείῳ τῆς Ρώμης. Εἶναι τὸ παλαιότερον γνωστὸν ἐν τῇ Δύσει ἰουδαϊκὸν νεκροταφεῖον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀπὸ τοῦ Α' ἤδη μ. Χ. αἰῶνος εἶχον ταφῇ οἱ ὑπὸ τοῦ Τίτου ὡς ὅμηροι μεταφερθέντες εἰς Ρώμην πρόκριτοι τῆς Ἱερουσαλὴμ μετὰ τὴν καταστροφὴν αὐτῆς (70 μ. Χ.). Ἐξηκολούθησε λειτουργοῦν μέχρι τοῦ Ε' αἰῶνος, τὰ δ' ἐν αὐτῷ μνημεῖα καὶ ἐπιγραφαί, ὧν τὸ πλεῖστον εἶναι συντεταγμέναι εἰς τὴν ἑλληνικὴν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ἔχουσι μεγάλην ἱστορικὴν καὶ ἀρχαιολογικὴν σημασίαν. Ὁ Νικ. Μύλλερ, καθηγητὴς τῆς χριστιανικῆς ἀρχαιολογίας ἐν Βερολίνῳ, καὶ μετ' αὐτὸν ὁ Ν. Α. Βέης, καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, ἐμελέτησαν τὰς ἐπιγραφὰς τῆς κατακόμβης, ὧν πολλαὶ ἐναπόκεινται ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λατερανοῦ. [Πρβλ. N. Müller—N. A. Bees (Βέης), «Die Inschriften der jüdischen Katakombe am Monteverde zu Rom», Λειψία 1919.] —Α.

**Μοντεβέρντι** (Monteverdi ἢ Monteverde), ***Κλαύδιος***. Διάσημος Ἰταλὸς μουσουργός, τῆς πρώτης περιόδου τοῦ μελοδράματος, γεννηθεὶς ἐν Κρεμώνῃ τῷ 1567 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1643. Ἔχων διδάσκαλον τὸν Ἰντζενιέρι, πρωΐμως ἐγένετο ἀπολύτως κάτοχος τῆς τέχνης τῆς ἀντιστίξεως καὶ ἔφθασεν εἰς μέγα σημεῖον δεξιοτεχνίας εἰς διάφορα ὄργανα καὶ τὸ ᾆσμα. Δεκαεξαετὴς ἐξέδιδε τὴν πρώτην σειρὰν θρησκευτικῶν μαδριγαλίων του, τῷ δὲ 1590 προσελαμβάνετο εἰς τὴν αὐλὴν τῶν Γονζάγων τῆς Μαντούης ὡς ἀοιδὸς καὶ βιολιστής. Ὑπὸ τὴν ἰδιότητα ταύτην ἠκολούθησε, μετ' ἄλλων ἐκλεκτῶν μουσικῶν, τὸν δοῦκα Βικέντιον, εἰς τὴν ἐναντίον τῶν ἀπίστων ἐν Οὐγγαρίᾳ ἐκστρατείαν καὶ ἀργότερον εἰς ταξίδιον ἀνὰ τὴν Φλάνδραν, ἔνθα ἐγνώρισε τὴν τέχνην τῶν Φλαμανδῶν πολυφωνιστῶν. Τῷ 1601 ὁ Μοντεβέρντι ὠνομάσθη μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς τῆς Μαντούης, τῷ δὲ 1612, ἀποθανόντος τοῦ δουκὸς Βικεντίου, παρῃτήθη, ἵνα ἀναλάβῃ τὸ ἑπόμενον ἔτος τὴν μουσικὴν διεύθυνσιν τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας, ὡς ἀντικαταστάτης τοῦ Μαρτινένγκο. Ἐν τῇ νέᾳ ταύτῃ θέσει ἐτιμᾶτο ὅσον οὐδεὶς μουσικὸς τῆς ἐποχῆς του. Περὶ τὰς δυσμὰς τοῦ βίου του ὁ Μοντεβέρντι εἶχε λάβει τὸ ἱερατικὸν σχῆμα. Ὁ θάνατός του ἐθεωρήθη ἐθνικὴ ἀπώλεια καὶ ἐπὶ πολὺν χρόνον οἱ ποιηταὶ ἔγραφον σοννέτα καὶ ἐλεγεῖα πρὸς τιμήν του.

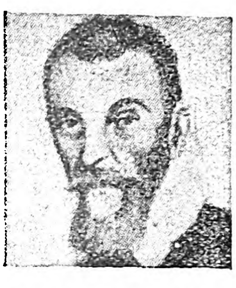

*Κλαύδιος Μοντεβέρντι.*

Ὁ Μοντεβέρντι ὑπῆρξε μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας δόξας τῆς μουσικῆς. Παράτολμος ἁρμονιστὴς καὶ ἀνακαινιστής, κατορθώνει διὰ μεγαλοφυῶν μέσων νὰ αὐξάνῃ τὸ πάθος καὶ τὴν δραματικότητα. Ὡρισμένοι του ἁρμονικοὶ συνδυασμοὶ εἶναι τόσον νέοι, ὥστε φαίνονται νὰ ἔχωσι γραφῆ σήμερον. Θεμελιωτὴς τοῦ συγχρόνου τονικοῦ συστήματος ἀπομακρύνεται ὁριστικῶς τῶν ἀρχαίων ἐκκλησιαστικῶν τρόπων καὶ μεταβαίνει ἀπὸ τόνου εἰς τόνον διὰ τολμηρῶν μετατροπῶν, ἃς θὰ ἐξήλευον πολλοὶ ἐκ τῶν συγχρόνων. Διάσημος ἤδη πρὶν ἢ προσεγγίσῃ τὸ θέατρον, ἐκέρδισεν ἀρχικῶς τὴν φήμην του διὰ τῶν μαδριγαλίων, εἰς ἃ ἀκολουθεῖ τὴν τεχνοτροπίαν τῶν μουσικῶν τῶν Κάτω Χωρῶν καὶ ἰδίως τοῦ Κυπριανοῦ ντὲ Ρὸρ καὶ Βιλλάρτ, ἐκ δὲ τῶν Ἰταλῶν τοῦ Βιτσεντίνο καὶ Τζεζουάλντο. Κατ' ἀπομίμησιν τούτων χρησιμοποιεῖ τὸ χρωματικὸν γένος καὶ τὰς ἀλλοιώσεις, ἵνα μετ' ὀλίγον δημιουργήσῃ ἀπαράμιλλα ἀριστουργήματα εἰς τὸ εἶδος αὐτό, ἐπισκιάζων τοὺς προδρόμους του.

Ὑπὸ τὸ κράτος τῶν νέων (ΙΖ' αἰὼν) ἐν Φλωρεντίᾳ περὶ μουσικῆς ἀπαγγελίας καὶ παραστατικοῦ ὕφους ἰδεῶν, ἔγραψε καὶ αὐτὸς διὰ τὴν αὐλὴν τῆς Μαντούης τὸν «Ὀρφέα» ἐπὶ λιμπρέττου τοῦ Ἀλεξ. Στρίτζιο, ἔργον ὅπερ παιχθὲν τῷ 1607 ἔσχε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν. Ἡ ἐνορχήστρωσις τῶν πρώτων του ἔργων εἶναι ἡ πλουσιωτέρα, ἣν εἶχε γνωρίσει ἕως τότε ὁ κόσμος, καὶ ἀποτελεῖ τὸ ὅριον τῶν παλαιῶν τάσεων, ἂν καὶ στερεῖται ἀκόμη ἰσορροπίας (περὶ τῆς δυνάμεως τῆς ὀρχήστρας τοῦ «Ὀρφέως», βλ. λ. *ἐνορχήστρωσις* τ. ΙΑ', σ. 190 γ). Τῷ 1608 ἀνεβιβάζετο ἐν Μαντούῃ ἡ «Ἀριάδνη» ἐπὶ στίχων τοῦ Ρινοντσίννι. Ἐκ τοῦ τραγικοῦ τούτου ἔργου περιῆλθε μέχρις ἡμῶν μόνον ὁ περίφημος Θρῆνος, ἡ ὡραιοτέρα καὶ δραματικωτέρα σελὶς τοῦ Ἰταλοῦ συνθέτου. Ὁ Μοντεβέρντι διεσκεύασεν ἀργότερον τὸν Θρῆνον τοῦτον εἰς πεντάφωνον μαδριγάλιον, προσθέσας θρησκευτικὸν κείμενον. Οὐδὲν σχεδὸν ἔχει σωθῆ ἐκ τῆς δραματικῆς μουσικῆς, ἣν ὁ συνθέτης εἶχε γράψει μεταξὺ τῆς «Ἀριάδνης» καὶ τῆς «Ἐπανόδου τοῦ Ὀδυσσέως» (1641). Ἐξ ἀποσπασμάτων ἢ ἐκ τῆς ἱστορίας μόνον γνωρίζομεν τὸ μπαλλέττο «Θύρσις καὶ Χλωρὶς» (1618), «Ἔρωτες Ἀρτέμιδος καὶ Ἐνδυμίωνος» (1618), «Ἀνδρομέδα» (1618) (ἀμφότερα παραμείναντα ἡμιτελῆ), «Ἡ Περσεφόνη ἁπαχθεῖσα» (1630) κτλ. Ἐν Βενετίᾳ ὁ Μοντεβέρντι ἀνεβίβασεν ἐκτὸς τῆς «Ἀριάδνης», τὰ μελοδάματα: «Ἄδωνις» (1639), «Οἱ γάμοι τοῦ Αἰνείου μετὰ τῆς Λαβινίας» (1641), «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ Ὀδυσσέως εἰς τὴν πατρίδα» (1641) καὶ «Ἡ στέψις τῆς Ποππαίας» (1642). Εἰς τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔργον αἱ τολμηρότητες τοῦ Μοντεβέρντι φθάνουσιν εἰς τὸ ἔπακρον, ἡ δὲ τεχνική του ἐξικνεῖται εἰς τὸ ὕψιστον σημεῖον. Ὅλαι αἱ μορφαὶ τῆς μουσικῆς λαμβάνουσι τὸν ὁριστικὸν αὐτῶν τύπον, ἐνῷ ταυτοχρόνως ὁ συνθέτης διὰ

Digitized by Google

νὰ ποικίλῃ τὸ δρᾶμα ἐναλλάσσει συχνάκις τὸ τραγικὸν μὲ τὸ κωμικὸν στοιχεῖον, γινόμενος οὕτω πρόδρομος τοῦ «εὐθύμου μελοδράματος» (opera buffa) τῶν διδασκάλων τῆς Νεαπόλεως.

Ὁ Μοντεβέρντι ὑπῆρξεν ἐκ τῶν μεγαλοφυῶν ἐκείνων καλλιτεχνῶν, οἵτινες ἀνήκουσιν εἰς πᾶσαν ἐποχὴν καὶ οἱ ὁποῖοι τὰ πάντα προησθάνθησαν. Αἱ μουσικαί του ἰδέαι παρέμειναν νεώταται μέχρι τοῦ βαθυτάτου γήρατός του. Ὁ Μοντεβέρντι ἔγραψεν ἐπίσης: «Madrigali spirituali à 4 v.» (1583), «Canzonette à 3 v.», 9 βιβλία μαδριγαλίων, μίαν ἐξάφωνον λειτουργίαν, μοτέττα, «Selva Morale», τετραφώνους λειτουργίας, ψαλμούς, λιτανείας κτλ. [Πρβλ. *Prunières*, «Monteverdi and french Music» (1922). *Τοῦ αὐτοῦ*, «Claudio Monteverdi» (γαλλ. 1924).] Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**Μοντεβίντεο** (Montevideo) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα καὶ κύριος λιμὴν τῆς νοτιοαμερικανικῆς δημοκρατίας τῆς Οὐρουγουάης, καὶ τοῦ ὁμωνύμου διαμερίσματος. Κάτ. 429.993 (1925). Κεῖται κατὰ τὸ ΝΑ. ἄκρον τοῦ κόλπου Ρίο ντὲ λὰ Πλάτα, ἐπὶ τῆς μικρᾶς χερσονήσου, εἰς ἣν καταλήγει ἀνατολικῶς ὁ ὅρμος τοῦ *Μοντεβίντεο* (πλάτους 4—5 χλμ.) καὶ εἰς τὸ ἄκρον τῆς ὁποίας, ἐπὶ ὑψώματος 150 μ., ἰσχυρὸς φάρος. Εἶναι ἕδρα ἀρχιεπισκόπου καὶ ἔχει ἀξιολόγους οἰκοδομάς. Ἔχει πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1840, πολυτεχνεῖον, ἀστεροσκοπεῖον, βιβλιοθήκην (106.000 τ.), ἐθνικὸν μουσεῖον. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον, κυρίως κρέατος, ἐρίων, δερμάτων, ζώων, δημητριακῶν, μετὰ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ὅπερ ἐφοδιάζεται κατὰ τὸ πλεῖστον διὰ τοῦ λιμένος τούτου, ἐξυπηρετούμενον διὰ καλοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου. Ἡ πόλις ἱδρύθη τῷ 1724 ὑπὸ τῶν Πορτογάλων καὶ ὠνομάσθη *Σὰν Φελίπε ντὲ Μοντεβίντεο*. Τῷ 1726 κατεκτήθη ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν καὶ ἀπῳκίσθη ὑπὸ ἱσπανικοῦ πληθυσμοῦ μεταφερθέντος ἐκ τῶν Καναρίων νήσων καὶ τῆς Γαλικίας. Ἀπὸ τοῦ 1800 ἡ πόλις προσεβλήθη ἀλληλοδιαδόχως ὑπὸ τῶν Ἄγγλων (1808), τῶν Ἀργεντινῶν (1814), ὑπὸ τῶν Πορτογάλων (1817), ὑπὸ τῶν αὐτοκρατορικῶν (1829), ἀλλὰ κατόπιν ἀνεπτύχθη ταχέως. Θ. Κ.

**Μόντε Βούλτουρε** (Monte Vulture) *[Γεωγρ.]*. Ἐσβεσμένον ἡφαίστειον τῆς Ἰταλίας πρὸς τὰς Α. κλιτῦς τῶν Ἀπεννίνων, εἰς ἀπόστασιν 5 χλμ. ΝΔ. τῆς πόλεως Μέλφι. Ἔχει ὕψος 1328 μ. καὶ εἶναι ὑψηλότερον καὶ μετὰ μεγαλυτέρας βάσεως τοῦ Βεζουβίου. Ὁ μεγαλύτερος κρατὴρ αὐτοῦ εὑρίσκεται πρὸς τὸ Β. τμῆμα τῆς κορυφῆς του, σχηματίζων δύο λίμνας, ἀναδιδούσας ἐλαφρὰν ὀσμὴν ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Αἱ πλευραὶ αὐτοῦ εἶναι κεκαλυμμέναι ὑπὸ πυκνῆς φυτείας. Ἐπ' αὐτοῦ ὑπῆρχε μονὴ τῶν Καπουκίνων, καταστραφεῖσα κατὰ τὸν σεισμὸν τοῦ 1851. Κατὰ τοὺς Καρχηδονιακοὺς πολέμους ἀναφέρεται ὅτι ἀνεδίδοντο ἐξ αὐτοῦ ἀέρια, τὰ ὁποῖα κατερχόμενα μέχρι τοῦ πεδίου τῶν Κανvῶν ἐπετύφλωνον τοὺς Ρωμαίους καὶ διηυκόλυνον τὴν νίκην τῶν Καρχηδονίων τοῦ Ἀννίβα. Ὁ Ὁράτιος τὸ ἀναφέρει εἰς τὰ ποιήματά του ὡς Vultur καὶ Vulturnus. Τοῦ ἡφαιστείου τούτου δὲν ἀναφέρεται ἔκρηξις κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους. Τῷ 1930 τῇ περιοχῇ αὐτοῦ ἔλαβον χώραν σφοδροὶ σεισμοί, οἵτινες ἐπέφερον μεγάλας καταστροφάς. Μ. Δ. Β.

**Μοντεβρασίτης** *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου καὶ λιθίου μετὰ φθορίου. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι:

$$Li(Al\,F).PO_4$$

ἤτοι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν τύπον τοῦ ἀμβλυγωνίτου, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ τοπικὴν ἐν Montebras ἐμφάνισιν. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ τρικλινὲς σύστημα, παρουσιάζει δὲ θρανσμὸν κογχώδη, σκληρότητα 6, εἰδικὸν βάρος 3—3,11 καὶ λάμψιν ὑαλώδη καὶ χρῶμα συνήθως λευκόν. Γ. Β.

**«Μόντεγκιου»** («Montagu»). Ἀγγλικὸν δίκροτον τῶν 74 πυροβόλων, περιώνυμον (1813) διὰ τὴν ἐν τῷ δυτικῷ Ἀτλαντικῷ δρᾶσίν του ἐναντίον τῶν ἀμερικανικῶν πλοίων κατὰ τὸν Ἀγγλοαμερικανικὸν πόλεμον. Τὸ ἑπόμενον ἔτος (1814) εἰσπλεύσαν εἰς τὴν Μεσόγειον καὶ διαπλέον τὸ Ἰόνιον προσήραξε καὶ κατεστράφη εἰς τὴν μεταξὺ Ζακύνθου καὶ Γλαρέντζας ὕφαλον, λαβοῦσαν τὸ ὄνομά του (βλ. κατωτ.). Σ. Ε. Λ.

**Μόντεγκιου ὕφαλος** (Montagu Rocks) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπικινδυνωδεστάτη ὕφαλος τοῦ Ἰονίου πελάγους (πλάτ. 37°55' Β., μηκ. 21°00' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 207: Castro Tornese to Venetico) μεταξὺ Γλαρέντζας καὶ Ζακύνθου, ἔχουσα βύθισμα μόλις 2 ³/₄ ὀργ. Φωτίζεται ἐμμέσως καὶ ἐν μέρει ὑπὸ τοῦ ἐρυθροῦ τομέως τοῦ φάρου Καυκαλίδας. Ὀφείλει δὲ τὴν ὀνομασίαν της εἰς τὴν ἐπ' αὐτοῦ καταστροφὴν ἀγγλικοῦ δικρότου (βλ. ἀν.). Ἀγνοῶν τοῦτο ὁ Berard καὶ νομίζων ταύτην παραφθορὰν ἰταλικῆς τοιαύτης Monte Acuto (= αἰχμηρὸν ὄρος), ἐνόμισεν ἀμφοτέρας ταύτας τὰς ὀνομασίας ὡς μετάφρασιν τῆς ὁμηρικῆς ὀνομασίας Θοαὶ νῆσοι, ταυτίσας πρὸς ταύτας τὴν ὕφαλον Μόντεγκιου (L'Odyssée et les Phéniciens, ἐκδ. 1903, σελ. 138) παρασύρας εἰς ἑτέραν ἀνάλογον πλάνην καὶ τὸν Goekoop (Ithaque la Grande, 1908, 19). Βραδύτερον (Les Phéniciens et l'Odyssée, ἐκδ. 1927, 13) ὁ Berard ὡμολόγησε τὴν πλάνην του. Σ. Ε. Λ.

**Μοντέγκου** (Moudego, λατιν. Munda) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς κεντρικῆς Πορτογαλίας, ἐκ τῶν μεγαλυτέρων τῆς χώρας, πηγάζων ἐκ τῆς ὀροσειρᾶς τῆς Ἐστρέλια (ὑψόμ. 1993 μ.) καὶ ἐκβάλλων δι' εὐρέος στομίου, μετὰ ροῦν 225 χλμ. (ὧν τὰ 84 πλωτά), παρὰ τὸ Φιγκέιρα ντὰ Φός, εἰς τὸν Ἀτλαντικόν, πρὸς Ν. τοῦ ὁμωνύμου ἀκρωτηρίου. Χ. Δ.

**Μοντεγκὺ** (Montégut), *Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Ἰωσὴφ-Αἰμίλιος*. Γάλλος συγγραφεὺς (1825—1895). Κατέλαβε τὴν θέσιν τοῦ φιλολογικοῦ κριτικοῦ εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν δύο Κόσμων». Πολυμαθὴς καὶ ἐμβριθὴς εἰς τὰς ξένας φιλολογίας, μετέφρασε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς καὶ τὰ ἅπαντα τοῦ Σαίξπηρ. Ἐκ τῶν ἰδίων του ἔργων ἀναφέρομεν: «Δοκίμιον περὶ τῆς παρούσης ἐποχῆς» (1858), «Καλλιτεχνικαὶ καὶ ταξιδιωτικαὶ ἐντυπώσεις» (1873), «Εἰκόνες τῆς Γαλλίας» (1874—1875), «Ἡ Ἀγγλία καὶ αἱ νότιαι ἀποικίαι της» (1879), «Βιβλία καὶ ψυχαὶ τῶν χωρῶν τῆς Ἀνατολῆς» (1885), διαφόρους μελέτας ἐπὶ τῆς γαλλικῆς καὶ τῶν ξένων φιλολογιῶν κ.λ. Ι. Μ. Τ.

— **Μοντεγκὺ** (Montégut) *Μαυρίκιος*. Γάλλος συγγραφεὺς (1855—1911). Τῷ 1874 ἐδημοσίευσε τὴν ποιητικὴν συλλογὴν «Ἡ αἰσθηματικὴ Βοηθία» καὶ τῷ 1875 ἄλλην, «Αἱ τραγικαὶ ἱστορίαι». Ἔγραψε τὰ ἑπόμενα δράματα: «Ἡ λαίδη Τέμπεστ» (1879), «Οἱ μαῦροι γάμοι» (1880), «Ὁ τρελλὸς» (1882), «Ὁ Ἀρετῖνος» (1886) καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, ἐν οἷς: «Τὸ λάθος τῶν ἄλλων» (1886), «Τὸ ἔργον τοῦ κακοῦ» (1888), «Οἱ ἐξ κύριοι Ντυμπουά» (1890), «Ἡ ζήλεια» (1890), «Ὁ τοῖχος» (1892), «Ἡ ἀπάτη» (1900) κ. λ. Ι. Μ. Τ.

**Μοντεζούμα**. Τὸ ὄνομα αὐτὸ φέρουσι δύο αὐτοκράτορες τοῦ Μεξικοῦ.

—1) Ὁ *Α'* (1390—1464), ὁ ἐπιλεγόμενος *Ἰλουκαμίνα* (τουτέστιν ὁ *Μέγας* ἢ ὁ *Δίκαιος*). Ἦτο υἱὸς τοῦ Ἀζτέκου βασιλέως Χουϊτζιλιχουΐτλ καὶ κατέλαβε τὸν θρόνον τῷ 1436.

—2) Ὁ *Β'* (1466—1520). Ὁ τελευταῖος Ἀζτέκος αὐτοκράτωρ τοῦ Μεξικοῦ. Διεδέχθη τὸν θεῖόν του Ἀχουϊτζόλλ, κατόπιν δὲ ἐπιτυχῶν πολέμων ηὔρυνε σημαντικῶς τὰ ὅρια τοῦ βασιλείου του. Ὅταν τῷ 1519, ἓν ἔτος δηλαδὴ μετὰ τὴν ἐμφάνισιν τῶν πρώτων λευκῶν ἀνθρώπων εἰς τὰς ἀκτὰς τοῦ Μεξικοῦ, ἐνεφανίσθη ὁ Κορτὲς μετὰ τῶν ἀνδρῶν του εἰς Μεξικόν, ὁ Μοντεζούμα ἐπειράθη διὰ δώρων ν' ἀποτρέψῃ τὴν προέλασιν. Ὁ Κορτὲς ἐβάδισε κατὰ τῆς πρωτευούσης, κατέλαβεν αὐτὴν καὶ ὁ Μοντεζούμα ἐγένετο κατ' οὐσίαν αἰχμάλωτος τοῦ Κορτὲς καὶ ὄργανον διὰ τὰς κατακτητικὰς τοῦ τελευταίου ἐπιχειρήσεις. Τὸν Ἰούνιον τοῦ 1520, ὅτε οἱ ἰθαγενεῖς ἐπαναστάτησαν κατὰ τῶν Ἱσπανῶν, ὁ Μοντεζούμα ἀνῆλθεν εἰς τὸ δῶμα τῶν ἀνακτόρων καὶ ἤρχισε προτρέπων ἐκείθεν τοὺς ἰθαγενεῖς νὰ καταθέσωσι τὰ ὅπλα. Οὗτοι ὄχι μόνον ἠρνήθησαν νὰ ὑπακούσωσιν, ἀλλὰ καὶ ἐξοργισθέντες ἔβαλον κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος καὶ τὸν ἐπλήγωσαν θανασίμως. Γ. Ι. Β.

**Μοντὲθ** (Montez), *Λόλα* —. Ψευδώνυμον τῆς Ἰρλανδῆς χορευτρίας *Μαρίας Τζίλμπερτ* (βλ. λ. *Μοντὲς Λόλα*).

**Μοντέϊγ** (Monteil), *Ἀλέξιος Ἀμὰνς* (Amans). Γάλλος ἱστορικὸς (1769—1850), ἐπιστήμων ἄνευ ἐξαιρετικῆς ἀξίας, ἀλλὰ καταπληκτικῶς πολυγράφος. Ἐκ τῶν κατὰ δεκάδας μετρουμένων ἔργων του δὲν ἀπομένουν—κατὰ τὸν χαρακτηρισμὸν τοῦ Ἐρν. Ντεζαρντὲν—παρὰ οἱ τίτλοι μόνον. Ἄξιος λόγου ἦτο ὁ νεωτερισμός, τὸν ὁποῖον αὐτὸς πρῶτος εἰσήγαγε, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ τὸν χειρισθῇ πρεπόντως, καὶ καθ' ὃν τὸν ἱστοριογράφον δέον νὰ ἐνδιαφέρουν περισσότερον τὰ ἤθη καὶ αἱ πνευματικαὶ ἐκδηλώσεις τῶν διαφόρων ἐποχῶν καὶ τόπων παρ' ὅσον τὰ πολεμικὰ τούτων συμβάντα. —Ω.

— **Μοντέϊγ** (Monteil), *Λουδοβῖκος*. Γάλλος ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1855. Ἐξελθὼν ἀξιωματικὸς τῶν πεζοναυτῶν ἐκ τῆς σχολῆς τοῦ Σαὶν-Σύρ, ὑπηρέτησε κατὰ τὸ πλεῖστον ἐν Σενεγάλῃ, ὅπου ἐξετέλεσεν ἐπιτυχῶς διαφόρους ἐξερευνήσεις. Τῷ 1890, ἀποσταλεὶς εἰς Σουδάν, παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ διετίαν, ἐξερευνῶν τὸ ἐσωτερικὸν τῆς χώρας, καὶ ἐπέτυχε νὰ φθάσῃ, δι' ἐπιπόνων καὶ ἐπικινδύνων πορειῶν, ἐπὶ κεφαλῆς ἀποσπάσματος ἐξ εἴκοσι μόνον ἀνδρῶν, ἀπὸ τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου εἰς Τριπολίτιδα μέσῳ τῆς λίμνης Τσάντ. Τὰ ἐκ τῆς ἐξερευνήσεως ταύτης πορίσματα ἐξέδωκεν εἰς ἔργον του ἐκδοθὲν βραδύτερον (1895) ἐν Παρισίοις. Περὶ τὸ τέλος τοῦ 1893 ἐπεφορτίσθη νέαν ἀποστολὴν πρὸς τὴν ὀροσειρὰν τοῦ Κόνγκ τὴν χωρίζουσαν τὴν κοιλάδα τοῦ Νίγηρος ἀπὸ τῆς Γουϊνέας, μὲ σκοπὸν τὴν καταστροφὴν τῶν συμμοριῶν τοῦ Σαμορύ. Ἀλλ' εὑρεθεὶς πρὸ μεγαλυτέρων κατὰ πολὺ δυνάμεων διετάχθη νὰ ἐπανέλθῃ. —Ω.

**Μοντεκάρλο**, ἢ *Μόντε-Κάρλο* (Montecarlo ἢ Monte Carlo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἡγεμονίας τοῦ Μονακό. Κεῖται πρὸς Α. τῆς πόλεως τοῦ Μονακό, συνεχομένη καὶ μετὰ τῆς τρίτης πόλεως τῆς ἡγεμονίας, τῆς Λακονταμίν, ἐπὶ τῆς ἐν τῇ θαλάσσῃ βραχώδους προεκτάσεως, ἥτις σχηματίζει τὸν Α. βραχίονα τοῦ λιμένος τοῦ Μονακό. Κάτ. (1927) 11.055. Εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μασσαλίας-Γενούης, ἥτις διέρχεται ὑπογείως τῆς πόλεως παρὰ τὴν θάλασσαν καὶ ἐκ τοῦ σταθμοῦ τῆς ὁποίας ἀνέρχεταί τις πρὸς τὴν πόλιν δι' ἀναβατῆρος ἢ διὰ κλίμακος ἢ καὶ μαιανδρικῆς λεωφόρου. Συνδέεται ἐπίσης δι' ὀδοντωτοῦ σιδηροδρόμου μετὰ τῆς ὑπερθεν αὐτῆς εὑρισκομένης ἐπὶ γραφικοῦ ὑψώματος γαλλικῆς πόλεως Λὰ Τουρμπὶ καὶ διὰ τροχιοδρομικῆς γραμμῆς καὶ αὐτοκινήτων συγκοινωνίας μετὰ τῆς Νικαίας καὶ τῆς Μαντόν. Δι' αὐτῆς διέρχεται καὶ ἡ μεγάλη αὐτοκινητιστικὴ ὁδός, ἡ καλουμένη «παραλιακὴ κορνίς», ἡ συνδέουσα τὴν Νίκαιαν μετὰ τοῦ Σὰν Ρέμο καὶ τὰς ἐνδιαμέσους πόλεις τῆς γαλλικῆς καὶ ἰταλικῆς Ριβιέρας. Ἔχει θαυμάσιον κλίμα καὶ εἶναι ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων παγκοσμίων κέντρων ἀναψυχῆς, ὅπερ συγκεντρώνει ἐτησίως τοὺς περισσοτέρους ἐπισκέπτας τῆς Κυανῆς Ἀκτῆς, ὑπερβαίνοντας τὰ 2.000.000, χάρις ἰδίως εἰς τὸ ἐν αὐτῇ παγκοσμίως γνωστὸν καζῖνον.

Ἔχει μεγαλοπρεπῆ καὶ πολυτελέστατα ξενοδοχεῖα, μέγαρα καὶ ἐπαύλεις πολυεκατομμυριούχων ἐκ πάσης χώρας, πλουσιώτατα καταστήματα εἰδῶν πολυτελείας, θαυμάσιον σκοπευτήριον περιστερῶν (Tir aux pigeons), ἐν τῷ ὁποίῳ λαμβάνουν χώραν διεθνεῖς ἀγῶνες ἀπὸ τοῦ Δεκεμβρίου μέχρι τοῦ Ἀπριλίου ἑκάστου ἔτους, ἱππόδρομον, πεδίον γκόλφ καὶ τέννις, ἐν τῷ ὁποίῳ γίνονται κατ' ἔτος διεθνεῖς ἀγῶνες πρωταθλημάτων, διαρκῆ διεθνῆ ἔκθεσιν, πολυτελῆ θερμὰ καὶ θαλάσσια λουτρὰ κ. τ. λ. Ἐν αὐτῇ λαμβάνουν ἐπίσης κατ' ἔτος χώραν διεθνεῖς ἀγῶνες λεμβοδρομιῶν, μηχανοκινήτων ἀκάτων, ἱστιοπλοΐαι καὶ ἀγῶνες ὑδροπλάνων καὶ ἀεροπλάνων. Αἱ ἐν αὐτῇ διοργανούμεναι ἑορταὶ εἶναι σχεδὸν καθημεριναί, ἰδίως κατὰ τὸν χειμῶνα, καθιστῶσαι τὴν πόλιν ταύτην ἀληθῆ πόλιν συνεχῶν ἑορτῶν καὶ κοσμοπολιτικὸν κέντρον μοναδικὸν εἰς τὸ εἶδος του.

Τὸ καζῖνον τοῦ Μοντεκάρλο, ὅπερ ἀποτελεῖ τὸ σπουδαιότερον κέντρον προσελκύσεως ξένων καὶ πέριξ τοῦ ὁποίου περιστρέφεται ὁλόκληρος ἡ ἐντατικὴ ζωὴ τῆς πόλεως, ἱδρύθη τῷ 1856. Τὴν ἰδέαν τῆς ἱδρύσεως αὐτοῦ συνέλαβε πρῶτος ὁ τότε ἡγεμὼν τοῦ Μονακὸ Κάρολος Γ', πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ δημιουργήσῃ πόρον χρηματισμοῦ διὰ τὴν εἰς τὰ πρόθυρα τῆς χρεωκοπίας εὑρισκομένην κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην χώραν του, κατ' ἀπομίμησιν τῶν τότε κέντρων τυχηρῶν παιγνιδίων τῶν γερμανικῶν λουτροπόλεων Σπᾶ, Χόμπουργκ, Βισμπάντεν καὶ Μπάντεν-Μπάντεν. Τὴν πρώτην χαρτοπαικτικὴν λέσχην ἐν Μοντεκάρλο ἵδρυσαν δύο Παρισινοὶ δημοσιογράφοι, οἱ Ὠμπὲρ καὶ Λαγκλουά, μὲ κεφάλαια 2.500.000 φράγκων, ἐγκαταστήσαντες παρὰ τὸν λιμένα, ἐντὸς μικροῦ κτηρίου, μίαν ρουλέτταν καὶ ὀνομάσαντες τὸ ἵδρυμα «Παλαὶ ντὲ λὰ Κονταμίν». Ἡ ἐπιχείρησις ὅμως αὕτη κατεστράφη ἐντὸς βραχυτάτου χρόνου. Ὁ διάδοχος των Φροσὰρ καὶ ὁ τρίτος ἐπιχειρηματίας Ντυβάλ, ὅστις μετέφερε τὴν ρουλέτταν εἰς τὸ μέγαρον Καραμπίνι, ὅπερ στεγάζει ἤδη τὴν σωματοφυλακὴν τοῦ ἡγεμόνος τοῦ Μονακό, ὑπέστησαν τὴν ἰδίαν τύχην. Ὁ ἡγεμὼν τότε Κάρολος Γ' συνεβούλευσε τοὺς ἐπιχειρηματίας Λεφέβρ καὶ Γκρουὰ νὰ ἱδρύσουν νέον καζῖνον καὶ ἐπώλησεν εἰς αὐτοὺς τὸν βράχον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐκτίσθη τῷ 1851 τὸ καὶ σήμερον ὑφιστάμενον περίφημον κτήριον τοῦ καζίνου τοῦ Μοντεκάρλο. Ἀλλὰ καὶ οἱ ἐπιχειρηματίαι οὗτοι, οἵτινες εἶχον συμπηχθῆ εἰς τὴν ἑταιρείαν Λεφέβρ, Γκρουὰ καὶ Σία, ὑπῆρξαν ἀτυχεῖς. Μόλις ὁ πέμπτος κατὰ σειρὰν ἐπιχειρηματίας Φραγκῖσκος Μπλὰν ηὐτύχησεν εἰς τὰς ἐργασίας του, ἐπὶ τῆς ἐποχῆς δὲ τούτου ἐστερεώθη ἡ φήμη τοῦ Μοντεκάρλο καὶ ἐτέθησαν αἱ βάσεις τῆς εὐδοκιμήσεώς του καὶ τῆς εὐημερίας τῆς Κυανῆς Ἀκτῆς. Ὁ Φραγκῖσκος Μπλὰν ἦτο ὑπάλληλος παρισινοῦ ἐστιατορίου, καταστὰς ὅμως ὕποπτος δι' ὡρισμένας λαθροχειρίας ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Γερμανίαν, ὅπου ἵδρυσεν εἰς τὸ Χόμπουργκ χαρτοπαικτικὴν λέσχην, ἐκ τῆς ὁποίας ἐκέρδισεν ἱκανὰ χρήματα. Καταδιωχθεὶς ὅμως ὑπὸ τοῦ Βίσμαρκ, ὁ ὁποῖος ἦτο ἀμείλικτος πολέμιος τῶν χαρτοπαικτικῶν λεσχῶν, ἠναγκάσθη νὰ κλείσῃ τὴν ἐν Γερμανίᾳ λέσχην του καὶ ἠγόρασεν ἀπὸ τὸν ἡγεμόνα τοῦ Μονακό, τῷ 1863, τὸ προνόμιον τοῦ Καζίνου τοῦ Μοντεκάρλο διὰ μίαν πεντηκονταετίαν. Ἡ νέα λέσχη ἤνοιξε μὲ κεφάλαια 15.000.000 φράγκων. Μετὰ τὴν ἐπίσημον ἀπαγόρευσιν ὑπὸ τοῦ Βίσμαρκ ἀπὸ τῆς 1 Ἰανουαρίου τοῦ 1873 τῆς λειτουργίας τῶν χαρτοπαικτικῶν λεσχῶν ἐν Γερμανίᾳ καὶ τὸ κλείσιμον τῶν καζίνων τοῦ Σπᾶ, τοῦ Βισμπάντεν καὶ τοῦ Μπάντεν-Μπάντεν, τὸ Μοντεκάρλο ἀπέμεινε τὸ μοναδικὸν ὠργανωμένον καζῖνον ἐν Εὐρώπῃ, ὅπερ συνεκέντρωσε τὸ ἐνδιαφέρον τῶν χαρτοπαικτικῶν κύκλων τῆς Εὐρώπης καὶ βραδύτερον ὁλοκλήρου τοῦ κόσμου. Ὁ Μπλὰν ἀπέθανε τῷ 1877 καταλιπὼν κολοσσιαίαν περιουσίαν. Οἱ υἱοί του καὶ αἱ θυγατέρες του συνῆψαν ἀρίστους γάμους καὶ ἡ οἰκογένεια αὐτοῦ συνεδέθη μὲ τοὺς

Digitized by Google

ἀριστοκρατικωτέρους οἴκους τῆς Γαλλίας. Τῷ 1898 οἱ κληρονόμοι τοῦ Μπλὰν ἀπετέλεσαν ἑταιρείαν, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνενεώθη τὸ προνόμιον τῆς ἐκμεταλλεύσεως τοῦ καζίνου διὰ μίαν νέαν πεντηκονταετίαν, μέχρι τοῦ 1947, ἐπὶ τῇ καταβολῇ εἰς τὸν ἡγεμόνα 400.000 ἀγγλικῶν λιρῶν τῷ 1899 καὶ 600.000 τῷ 1913, ἐκτὸς τῆς καὶ πρότερον καταβαλλομένης ἐτησίας πληρωμῆς, ἥτις ηὐξάνετο προοδευτικῶς ἀπὸ 50.000 λίρας Ἀγγλίας εἰς 70.000 τῷ 1907, εἰς 80.000 τῷ 1917, εἰς 90.000 τῷ 1927 καὶ 100.000 τῷ 1937. Τῷ 1923 ἡ γενικὴ οἰκονομικὴ κρίσις ἐπέφερε κρίσιν καὶ εἰς τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ καζίνου τοῦ Μοντεκάρλο, ὁ δὲ Βασίλειος Ζαχάρωφ ἐχορήγησε τότε εἰς αὐτὴν δάνειον 1.000.000 λιρῶν Ἀγγλίας. Ἡ οἰκογένεια Μπλὰν ἀπεχώρησε τότε τῆς ἐπιχειρήσεως, ἥτις περιῆλθεν εἰς γαλλικὴν ἑταιρείαν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἀνώνυμος ἑταιρεία θαλασσίων λουτρῶν καὶ λέσχης τῶν ξένων τοῦ Μονακό».

Τὸ κτήριον τοῦ Καζίνου τοῦ Μοντεκάρλο ἐκτίσθη ἐπὶ σχεδίων τοῦ Γάλλου ἀρχιτέκτονος Καρόλου Γκαρνιὲ καὶ εἶναι ὡραίου ῥυθμοῦ Ἀναγεννήσεως. Ἔχει δύο προσόψεις, μίαν πρὸς τὴν θάλασσαν καὶ μίαν πρὸς τὴν ξηράν, ἐπὶ τῆς ὁποίας ὑπάρχει ἡ κεντρικὴ εἴσοδος, ἑκατέρωθεν τῆς ὁποίας ἐγείρονται δύο πύργοι. Εἰς τὰ δύο ἄκρα τῆς πρὸς τὴν θάλασσαν ὄψεως ὑψοῦνται δύο κωδωνοστάσια ὕψους 38 μ. Ἐπὶ τῶν προσόψεων ὑπάρχουν ἀγάλματα τοῦ Σηκουάνα, τῆς Μεσογείου, τῆς μουσικης, τοῦ χοροῦ κτλ. Τὸ ἐσωτερικὸν τῆς οἰκοδομῆς κοσμεῖται δι' ἀναγλύφων, τοιχογραφιῶν, ἔργων τῶν Φέϋεν-Περρέν, Γουσταύου Μπουλανζέ, Κλαιρέν, Λίξ, Ριμπέρα, Σεγκὼ κτλ. Τὸ καζῖνον διαιρεῖται εἰς δύο τμήματα: εἰς τὰς «δημοσίας αἰθούσας» καὶ εἰς τὰς «ἰδιωτικὰς αἰθούσας». Ἡ εἴσοδος εἰς τὰς δημοσίας αἰθούσας ἐπιτρέπεται ἀντὶ μικροῦ τιμήματος, ἐνῷ ἡ εἴσοδος εἰς τὰς ἰδιωτικὰς αἰθούσας ἀπαιτεῖ μεγαλύτερον τίμημα καὶ περισσοτέρας διατυπώσεις. Αἱ δημόσιαι αἴθουσαι εἶναι πέντε μεγάλαι αἴθουσαι παιγνιδίων, ὧν ἡ μεγαλυτέρα ἔχει 8 μεγάλους κίονας καὶ 16 μικροτέρους ἐξ ὄνυχος, ὑποβαστάζοντας θόλον ἐξ ἐγχρώμου ὑάλου 12 μ. διαμέτρου. Εἰς τὸ τμῆμα τῶν ἰδιωτικῶν αἰθουσῶν ὑπάρχει ἐν τῷ ἰσογείῳ ἡ μεγάλη αἴθουσα τῶν συναυλιῶν καὶ εἰς τὸ ἄνω πάτωμα ἡ μεγάλη αἴθουσα τῶν ἑορτῶν μήκους 25.50 μ. καὶ πλάτους 17.50 μ. Τὰ παιζόμενα παιγνίδια εἰς τὰς αἰθούσας ταύτας εἶναι ἡ ρουλέττα, τὸ τράντ-ἐ-καράντ καὶ ὁ μπακαρᾶς. Τὰ μεγαλύτερα ποσὰ παίζονται συνήθως εἰς τὰς ἰδιωτικὰς αἰθούσας. Παραπλεύρως τῶν αἰθουσῶν τῶν παιγνιδίων ὑπάρχει κομψότατον καὶ πολυτέλεστατον θέατρον μὲ 600 θέσεις, ἐν τῷ ὁποίῳ δίδονται κυρίως μελοδραματικαὶ παραστάσεις μὲ τοὺς διασημοτέρους ἀοιδοὺς τοῦ κόσμου. Ἡ εἴσοδος εἰς τὸ καζῖνον ἀπαγορεύεται εἰς τοὺς στρατιωτικούς, τοὺς συμβολαιογράφους, τοὺς ὑπαλλήλους τῶν δημοσίων ταμείων καὶ εἰς τοὺς κατοίκους τῆς ἡγεμονίας καὶ τῶν γειτονικῶν γαλλικῶν νομῶν. Μόνον ἅπαξ τοῦ ἔτους, κατὰ τὴν ἡμέραν τῶν γενεθλίων τοῦ ἡγεμόνος, ἐπιτρέπεται ἡ εἴσοδος καὶ εἰς τοὺς κατοίκους τῆς ἡγεμονίας. Παρὰ τὸ καζῖνον ὑπάρχει καὶ μεγαλοπρεπὲς καλλιτεχνικὸν μουσεῖον ἔναντι δὲ τῆς Β. προσόψεως αὐτοῦ τὸ Καφὲ-ντὲ-Παρί, περίφημον διεθνὲς κοσμικὸν κέντρον καὶ θαυμάσιον ἀνθοβριθὲς πάρκον, μετὰ τοῦ ὀνομαστοῦ ἀλσυλλίου, τοῦ καλουμένου «Μικρὰ Ἀφρική», λόγῳ τῆς ἀφθόνου ἀφρικανικῆς χλωρίδος του. Πρὸς τὴν πρόσοψιν τῆς θαλάσσης ὑπάρχουν ἐπίσης ὡραιότατοι κῆποι, κατερχόμενοι κλιμακηδὸν πρὸς τὴν βραχώδη ἀκτήν, πολυσύχναστοι κατὰ τὰς ἡλιολούστους ἰδίως ἡμέρας, διὰ τὴν ἐκτεταμένην πρὸ αὐτῶν θέαν ἐπὶ τῆς θαλάσσης πρὸς Ν., ἐπὶ τῆς ἰταλικῆς Ριβιέρας πρὸς Α, καὶ ἐπὶ τοῦ βράχου τοῦ Μονακὸ πρὸς Δ. (Εἰκόνας βλ. ἐν λ. *Μονακό*). Μ. Δ. Β.

**Μοντεκασσῖνο** (Monte Cassino) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Νεαπόλεως παρὰ τὴν πόλιν Κασσῖνο. Ἔχει ὕψος 1669 μ. καὶ εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὴν ἐπὶ τῆς κορυφῆς αὐτοῦ ἱδρυθεῖσαν τῷ 529 μονὴν τοῦ Ἁγίου Βενεδίκτου, ἥτις ὑπῆρξεν ἡ κοιτὶς τοῦ τάγματος τῶν βενεδικτίνων. Ἡ μονὴ αὕτη, κτισθεῖσα ἐπὶ τῶν ἐρειπίων ναοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ αὐξηθεῖσα σὺν τῷ χρόνῳ διὰ διαφόρων πτερύγων, ὑπέστη κατὰ καιροὺς πολλὰς καταστροφὰς ὑπὸ τῶν Λογγοβάρδων καὶ τῶν Σαρακηνῶν καὶ ἀνῳκοδομήθη ἐπανειλημμένως. Τῷ 1867 ἀνεκηρύχθη ὑπὸ τῆς ἰταλικῆς κυβερνήσεως ἐθνικὸν μνημεῖον καὶ ἐτέθη ὑπὸ τὴν προστασίαν καὶ ἐπιτήρησιν τῶν ἐν αὐτῇ μοναχῶν. Τῷ 1929 ἑωρτάσθη μετὰ μεγάλης ἐπισημότητος ἡ χιλιοστὴ τετρακοσιοστὴ ἐπέτειος ἀπὸ τῆς ἱδρύσεώς της. Μ. Δ. Β.

**Μοντεκατίνι** (Montecatini) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Λούκκας, παρὰ τὸν ποταμὸν Νιέβολε. Κάτ. 4.000. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν, ἐπὶ ὑψηλῆς τοποθεσίας, συγκοινωνοῦσαι μετὰ τῆς πόλεως δι' ὀδοντωτοῦ σιδηροδρόμου, αἱ θαυμασταὶ θερμοπηγαὶ *Μπάνι ντὶ Μοντεκατίνι*. Αἱ θερμοπηγαὶ αὗται ἀνέρχονται εἰς 19, θερμοκρασίας 17—31°, τῶν ὁποίων τὰ ὕδατα περιέχουν μεγάλην ποσότητα χλωριούχου νατρίου (4—19,33 ‰). Αἱ κυριώτεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι ἡ *Τετούτσιο*, ἡ *Ρατζίνε* καὶ ἡ *Σαλοῦτε*, ὧν τὰ ὕδατα διατίθενται καὶ εἰς τὸ ἐμπόριον ἐντὸς φιαλῶν καὶ ἐνδείκνυνται εἰς τοὺς πάσχοντας ἐκ γαστρικῶν νοσημάτων, χοιράδων, ρευματισμῶν κτλ. Ἔχει μεγάλα ξενοδοχεῖα, θέατρον, ὡραῖα πάρκα κτλ.

—2) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Πίζας, παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Τσετσίνα. Κάτ. 4.600. Κεῖται εἰς ὕψος 478 μ. καὶ ἔχει πλούσια μεταλλεῖα χαλκοῦ, τὰ ὁποῖα εὑρίσκοντο ἐν ἐκμεταλλεύσει ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Ἐτρούσκων, ἐγκαταλειφθέντα κατὰ τὸν μεσαίωνα. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἐπανήρχισεν ἡ ἐκμετάλλευσίς των. Μ. Δ. Β.

**Μοντεκλαὶρ** (Montéclair), *Μιχαὴλ - Πινιολὲ ντὲ—*. Γάλλος συνθέτης καὶ μουσικὸς (1666—1737) ἐν τῇ ὀρχήστρᾳ τοῦ παρισινοῦ μελοδράματος. Ἀνεβίβασεν ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ μελοδράματος τῶν Παρισίων: «Αἱ ἑορταὶ τοῦ θέρους» (1716) καὶ «Ἰεφθά» (1716). Ἔγραψεν ἐπίσης: «Γαλλικαὶ καὶ ἰταλικαὶ καντάται», «Ἓξ κοντσέρτα διὰ 2 πλαγιαύλους», «Σερενάταν» ἢ «Κοντσέρτο», ἓν «Ρέκβιεμ» κτλ. Ἡ «Μέθοδος πρὸς ἐκμάθησιν τῆς μουσικῆς» (1700), ἀργότερον ὑπὸ τὸν τίτλον «Νέα μέθοδος», ἀποδεικνύει τὸν Μοντεκλαὶρ ὡς πρώτης τάξεως παιδαγωγόν, τὸ αὐτὸ δὲ καὶ ἡ «Μέθοδος βιολίου» (1720) ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων εἰς τὸ εἶδός της. Γ. Σ.

**Μοντεκούκκολι** (Montecuccoli) *[Παραλ. Γεωγραφ.]*. Δαλματικὴ βραχονησίς, ἐπίσημος διὰ τὸν ἀνάπλουν τῆς Ναρέντα (ἀρχ. Νάρων), ἔχουσα φάρον (πλάτ. 42°56' Β., μηκ. 17°33' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2713: Curzolla to Cattaro). Σ. Ε. Λ.

**Μοντεκούκκολι** (Montecuccoli), ***Ραϋμόνδος***. Ἔνδοξος Αὐστριακὸς στρατάρχης (1609—1681). Καταταχθεὶς εἰς τὸν αὐστριακὸν στρατὸν τῷ 1625, ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ θείου του Ἐρνέστου, κατηνάλωσεν ὁλόκληρον πεντηκονταετίαν εἰς τὰ πεδία τῶν μαχῶν. Συμμετασχὼν εἰς τὴν ἐκστρατείαν 1629—1636 καὶ προαχθεὶς ἐπ' ἀνδραγαθίᾳ εἰς συνταγματάρχην, ἡττήθη μετὰ τριετίαν ὑπὸ τοῦ Σουηδοῦ στρατάρχου Μπάνερ, παρὰ τὸ Κέμνιτς καὶ συνελήφθη αἰχμάλωτος. Τῷ 1642, ἀνταλλαγεὶς διὰ Σουηδοῦ αἰχμαλώτου, ἐξεδικήθη, καταγαγὼν ἐπανειλημμένας νίκας κατὰ τῶν Σουηδῶν, μετὰ δὲ τὸ 1644 διῴκησε τὴν αὐστριακὴν στρατιὰν ἐν Σαξωνίᾳ, Βαυαρίᾳ καὶ Σιλεσίᾳ καὶ ἐνίκησε τοὺς Σουηδούς, παρὰ τὸ Τρίμπελ (1647). Τὸ ἑπόμενον ἔτος, κατὰ τὴν λῆξιν τοῦ Τριακονταετοῦς πολέμου, ἀπῆλθεν εἰς περιήγησιν τῆς Ἰταλίας, τῆς Σουηδίας καὶ ἄλλων χωρῶν. Ἐπανελθὼν μάχεται μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας Ἰωάννου Καζιμὶρ κατὰ τοῦ πρίγκιπος τῆς Τρανσυλβανίας Ρακόσκυ, ὃν ἐξαναγκάζει νὰ συνθηκολογήσῃ (1657). Ὀνομασθεὶς στρατάρχης, στέλλεται μετὰ σημαντικῆς στρατιᾶς εἰς βοήθειαν τοῦ βασιλέως τῆς Δανίας, κατὰ τῶν Σουηδῶν, οὓς ἐκδιώκει ἐξ Ἰουτλάνδης καὶ Φώνιος καὶ τμήματος τῆς Πομμερανίας (1658). Βραδύτερον ἀναλαμβάνει ἐν Τρανσυλβανίᾳ τὸν ἀγῶνα ἐναντίον τῶν Τούρκων, καθ' ὧν τελικῶς κατάγει τὴν λαμπρὰν νίκην τοῦ Ἁγίου Γοτθάρδου (1664). Ἀποσυρθεὶς τῷ 1673, ἀναγκάζεται νὰ ἐπανέλθῃ μετὰ δύο ἔτη ἵνα ἀντιταχθῇ κατὰ τῶν ὑπὸ τὸν Τουρὲν προελαυνόντων Γάλλων, οὓς ἀναγκάζει νὰ διαβῶσι πάλιν τὸν Ρῆνον καὶ ἀπωθεῖ αὐτοὺς μέχρι τῆς Ἀλσατίας. Ἀλλ' ἐκεῖ ἡττήθη ὑπὸ τοῦ Κοντέ. Παραιτηθεὶς ὁριστικῶς τῷ 1675, προεκάλεσε τὴν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Λεοπόλδου ἵδρυσιν τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν, ἧς καὶ ἐγένετο μέλος διὰ τὴν στρατιωτικὴν ἐπιστήμην. Τότε ὠνομάσθη, εἰς ἀμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του, πρίγκιψ τῆς αὐτοκρατορίας, ὑπὸ δὲ τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας δοὺξ τοῦ Μέλφι. Ἔγραψεν ἰταλιστί: «Ἀπομνημονεύματα τοῦ πολέμου καὶ ἡ ἐκπαίδευσις τοῦ στρατηγοῦ» (1703). Διάφορα ἄλλα ἔργα αὐτοῦ, ποιήσεις, στρατιωτικὰ καὶ πολιτικά, ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1821 ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ ἅπαντα», ἐκλογὴν δὲ τούτων, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἔργα κατ' ἐκλογήν», ἐξέδωκε τῷ 1900 (εἰς 4 τ.), τὸ ἀρχεῖον τῆς αὐτοκρατορικῆς Ἀκαδημίας. Τὸ περίφημον δόγμα ὅτι διὰ τὸν πόλεμον ἀναγκαιοῦν τρία πράγματα: «Χρήματα, χρήματα, χρήματα» εἶναι τοῦ Μοντεκούκκολι. Θ. Κ.

*Ραϋμόνδος Μοντεκούκκολι.*

**Μοντεκρίστο** (Monte Cristo) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ ἐν τῷ Τυρρηνικῷ πελάγει Τσοκανικοῦ ἀρχιπελάγους (πλάτ. 42°18' Β., μηκ. 10°09' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 158: Cape Cavallo to Civita Vecchia) μεταξὺ Πόρτο Ἔρκολε τῆς Ἰταλικῆς χερσονήσου καὶ Πόρτο Ἀλίστρο τῆς Κορσικῆς. Γρανιτικῆς συστάσεως, ἀναδύει ἡμισφαιρικὴ (ὑψόμ. 648 μέτρ., ὁριζ. ἐπιφαν. 10 τετρ. χιλ.) μὲ βαθυτάτους αἰγιαλοὺς ὁλόγυρά της. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς της «Picco della Fortezza» μεσαιωνικὸν φρούριον, εἰς δὲ τὸν δυτικὸν ὅρμον της Cala Maestra, βασιλικὸν ἀνάκτορον, τοῦ ὁποίου οἱ φύλακες καὶ ἡ φρουρὰ εἶναι οἱ μόνοι τῆς νήσου κάτοικοι, καὶ μέγα ναύδετον πρὸς πρόσδεσιν τῆς βασιλικῆς θαλαμηγοῦ. Ἡ νῆσος ἀποτελεῖ βασιλικὴν θηρευτικὴν περιοχήν, δι' ὃ καὶ ἡ ἀποβίβασις εἰς αὐτὴν εἶναι ἀπηγορευμένη. Γνωστοτάτη ἐκ τοῦ μυθιστορήματος τοῦ Δουμᾶ «Ὁ κόμις Μοντεχρῖστος». Εἶναι ἡ *Μοντερία* τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

**Μοντεκρίστο μύρμηκες** (Formiche de Monte Cristo) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐκ τῶν ἐπικινδυνωδεστάτων τῆς Μεσογείου ὑφάλων, 10 μίλλ. δυτικῶς τῆς ὁμωνύμου νήσου καὶ 10 μίλλ. νοτίως τῆς νήσου Πιανόζα. Ὀρθοῦνται ἀπὸ ὑφαλονήσου, ὕφαλοι ὑπὸ συνήθεις περιπτώσεις, ἀποκαλυπτόμενοι κατὰ τὰς τρικυμίας. Ἐπὶ τῶν ἀβαθεστέρων μυρμήκων (0,60 μέτρ.), *Ἄφρικα* ὀνομαζομένων (πλάτ. 42°21' Β., μηκ. 10°04' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 158: Cape Cavallo to Civita Vecchia) φάρος, μνημειώδης διὰ τὰς δυσχερείας τῆς ἀνεγέρσεώς του. Σ. Ε. Λ.

**Μοντελεόνε** ἢ ***Μοντελεόνε ντὶ Καλάμπρια*** (Monteleone ἢ Monteleone di Calabria) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Καταντζάρο. Κάτ. 12.695. Ἔχει βιομηχανίαν μεταξωτῶν. Τῷ 1783 κατεστράφη κατὰ μέγα μέρος ὑπὸ σεισμοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μοντελιμὰρ** (Montélimar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Ντρώμ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, ἐμπόριον ἐλαίου καὶ ὀρυχεῖα γαιάνθρακος καὶ λιγνίτου. Κάτ. 13.280. Χ. Σ.

**μοντέλο** (τό), ἢ ***μοδέλο***· δημοτ., τὸ πρότυπον πρὸς τὸ ὁποῖον προσαρμόζεταί τι, ὑπόδειγμα, ἰδίᾳ ἐν τῇ ζωγραφικῇ καὶ γλυπτικῇ τὸ πρόσωπον ἢ τὸ πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἔχει ὁ καλλιτέχνης ἐνώπιόν του πρὸς ἀναπαράστασιν· ‖ τὸ ὡς ὑπόδειγμα κατασκευαζόμενον καὶ προτιθέμενον: «φόρεμα —, καπέλλο μοντέλο», «τὸ ἀγόρασα ἀκριβά, ἀλλὰ ἤτανε μοντέλο» ‖ μεταφ. «δὲν θὰ σὲ πάρω γιὰ μοντέλο» δὲν θὰ ἀκολουθήσω τὸ παράδειγμά σου.

—*[Καλλιτεχν.]* Πρόσωπον, ζῷον ἢ ἀντικείμενον, τοῦ ὁποίου τὴν μορφὴν ἢ τὰς γραμμὰς ἀναπαράγει πιστῶς, ἢ ἀπομιμεῖται, ἢ ἁπλῶς λαμβάνει ὑπ' ὄψιν ἐν τῇ προσπαθείᾳ ἀποδόσεως τῆς ἐν ἑαυτῷ ἰδανικῆς μορφῆς ὁ ζωγράφος ἢ ὁ γλύπτης κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν ἑνὸς ἔργου (ἄλλως *πρότυπον*). Προκειμένου περὶ ἀνθρώπων, ὁ καλλιτέχνης μεταχειρίζεται ὡς μοντέλο ἢ αὐτὸ τοῦτο τὸ πρόσωπον, τοῦ ὁποίου θέλει νὰ δώσῃ τὴν ἀπεικόνισιν, ὡς π. χ. ἐπὶ προσωπογραφιῶν, ἀγαλμάτων ζώντων προσώπων κλπ., ἢ ἄλλα πρόσωπα, τὰ ὁποῖα προσφέρουν τὴν ὑπηρεσίαν ταύτην οἰκειοθελῶς ἢ κατ' ἐπάγγελμα. Ἡ χρησιμότης τῶν τελευταίων τούτων διὰ τὸν καλλιτέχνην ἔγκειται οὐχὶ εἰς τὴν ἀναπαράστασιν τῆς ἐξωτερικῆς αὐτῶν μορφῆς, ἀλλ' εἰς τὴν ὑποβοήθησιν, τὴν ὁποίαν τῷ παρέχουν πρὸς μελέτην καὶ προεπαλήθευσιν ἐπὶ τοῦ πραγματικοῦ στάσεων, κινήσεων, ἐκφράσεων καὶ τοῦ συνδυασμοῦ αὐτῶν. Ἐννοεῖται ὅτι διὰ νὰ εἶναι χρήσιμον ἐν προκειμένῳ τὸ μοντέλο, πρέπει παρεκτὸς τοῦ φύλου, νὰ προσομοιάζῃ ὁπωσδήποτε ἀπὸ ἀπόψεως ἡλικίας καὶ σωματικῆς κατασκευῆς πρὸς τὸ πραγματικὸν ἢ ἰδεατὸν πρόσωπον, οὗτινος σκοπεῖται ἡ ἀναπαράστασις διὰ τῆς σμίλης ἢ τοῦ χρωστῆρος.

— *[Μόδ.]* Ὀνομάζονται *μοντέλα* τὰ πρωτοτύπου σχεδίου γυναικεῖα φορέματα, τὰ κατασκευαζόμενα ὑπὸ τῶν μεγάλων ραπτικῶν οἴκων (τῶν Παρισίων ἰδίως) καὶ κατ' ἀπομίμησιν ἢ παραλλαγὴν τῶν ὁποίων διαμορφοῦται ἑκάστοτε ἡ μόδα. Κυρίως εἰπεῖν, δηλαδή, μοντέλα εἶναι αἱ πρωτότυποι δημιουργίαι τῶν μεγάλων σχεδιαστῶν τῆς μόδας. Ἀλλ' ἐπεκράτησε νὰ χαρακτηρίζεται ἐπίσης μὲ τὸ ὄνομα τοῦ «μοντέλου» καὶ πᾶν ἐν γένει φόρεμα προερχόμενον ἀπ' εὐθείας ἐκ μεγάλου εὐρωπαϊκοῦ ἐργοστασίου, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὰς κατ' ἀντιγραφὴν αὐτοῦ κατασκευαζομένας ἀπομιμήσεις. Τοῦτ' αὐτὸ προκειμένου καὶ περὶ γυναικείων πίλων.

— *[Μεταλλοτ.]* Καλεῖται ἐν τοῖς χυτηρίοις «*μοντέλο*» τὸ *πρότυπον*, τὸ ὁποῖον χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν κατασκευὴν τοῦ *τύπου* (καλούπι). Τὸ μοντέλο δύναται νὰ εἶναι ἐξ οἱασδήποτε στερεᾶς ὕλης, συνήθως ὅμως κατασκευάζεται ἐκ ξύλου, κατατετμημένον δὲ εἰς τεμάχια, διὰ νὰ εἶναι δυνατὴ ἡ ἐξαγωγὴ αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ τύπου, χωρὶς παραμόρφωσιν τοῦ τελευταίου τούτου. [Βλ. καὶ λ. *χυτήριον*.] —Ε.

**Μοντεμαγιὸρ** (Montemayor). Ὑδρομεταλλικὸς σταθμὸς ἐν Ἱσπανίᾳ εἰς τὴν ἐπαρχίαν Cacérès εἰς ὕψος 750 μ. Τὰ μεταλλικὰ ὕδατα τῆς περιοχῆς ταύτης εἶναι ὀλιγομεταλλικά, θερμοκρασίας 30-42°, θειοῦχα, λιθιοῦχα, πυριτιοῦχα. Ἐνδείκνυνται ἐπὶ ρευματισμῶν, δερματώσεων, κατάρρων τῶν ἀναπνευστικῶν κλπ. Κ. Γ. Μ.

**Μοντεμέτζι** (Montemezzi), ***Ἴταλο***. Ἰταλὸς δραματικὸς συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1875. Μαθητὴς

Digitized by Google

τοῦ ᾠδείου τοῦ Μιλάνου, νεώτατος ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Giovanni Gallurese» (1905), «L'amore dei tre rè» (1913), «La Nave», κατὰ τὸ γνωστὸν ἔργον τοῦ Ντ' Ἀννούντσιο (1918) «Principessa lontana». Γ. Σ.

**Μονταμπέλλο** (Montabello) *[Γεωγρ.]*.—1) Κωμόπολις τῆς Ἰταλίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βικεντίας, παρὰ τὸν ποταμὸν Κιάμπο, παραπόταμον τοῦ Ἀδίγη. Κάτ. 2.491.

—2) Κωμόπολις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Παβίας, παρὰ τὸν ποταμὸν Κόππα. Κάτ. 1.294. Μ. Δ. Β.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας τοῦ 1800 (βλ. λ. *Ὑπατείας πόλεμοι [Στρατ. Ἱστορ.]*), ἐπειδὴ κατὰ τὰς ἀρχὰς Ἰουνίου 1800 ὁ μὲν Αὐστριακὸς στρατηγὸς Μελὰς ἐπεζήτησε νὰ καταλάβῃ τὴν διάβασιν Στραντέλλα, ἵνα τοιουτοτρόπως ἐξασφαλίσῃ τὴν ὑποχώρησίν του πρὸς ἀνατολάς, ὁ δ' ὕπατος Ναπολέων ἐνόμισεν ὅτι διὰ τῆς τοιαύτης ἐνεργείας τοῦ Μελὰς ἐπεζήτουν οἱ Αὐστριακοὶ τὴν διάνοιξιν τῶν πρὸς Μάντουαν συγκοινωνιῶν, δι' αὐτὸ ἐπῆλθε τὴν 9ην Ἰουνίου 1800 ὁ *ἀγὼν τοῦ Μοντεμπέλλο* μεταξὺ τῶν ἐμπροσθοφυλακῶν, γαλλικῆς ὑπὸ τὸν Λάν, προερχομένης ἐκ Μιλάνου, καὶ αὐστριακῆς ὑπὸ τὸν Ὅτ, προερχομένης ἐκ Γενούης, καθ' ὃν ἡττήθησαν οἱ Αὐστριακοί, λόγῳ τοῦ ὅτι ὄπισθεν τοῦ Λὰν ἐπορεύετο τὸ σῶμα τοῦ Βικτόρ, καὶ τοιουτοτρόπως ἡ διάβασις Στραντέλλα παρέμεινεν εἰς χεῖρας τῶν Γάλλων, συλλαβόντων συγχρόνως περὶ τοὺς 5.000 Αὐστριακοὺς αἰχμαλώτους.

Κατὰ τὸν Ἰταλικὸν πόλεμον τοῦ 1859, ἅμα ὡς περὶ τὰ μέσα Μαΐου τὸ ἀποσταλὲν πρὸς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Πάδου 5ον αὐστριακὸν σῶμα στρατοῦ (25.000 ἄνδρες ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Στάντιον), ἵνα ἐκτελέσῃ ἀναγνώρισιν τοῦ γαλλοπεδεμοντιακοῦ στρατοῦ, εὑρέθη ἀντιμέτωπον τῆς ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Φορὲ (Forey) 1ης γαλλικῆς μεραρχίας (7.000 ἀνδρῶν), συγκεντρωμένης περὶ τὴν Βογκέρα, ἐτάχθη προσωρινῶς παρὰ τὸ χωρίον Μοντεμπέλλο μὲ τὴν πρόθεσιν τῆς κατόπιν ἐπιθέσεως, τότε δ' ἐπηκολούθησεν ὁ *ἀγὼν τοῦ Μοντεμπέλλο* τῆς 20ῆς Μαΐου 1859. Τὴν πρωΐαν τῆς ἡμέρας ταύτης τὰ γαλλικὰ προκεχωρημένα τμήματα ἤρξαντο ὑποχωροῦντα ὑπὸ τὴν πίεσιν τῶν Αὐστριακῶν, ἀλλ' ἅμα ἐπληροφορήθη τοῦτο ὁ Φορέ, ἔσπευσε περὶ τὴν μεσημβρίαν ἐκ Βογκέρα καί, χωρὶς νὰ γνωρίζῃ τὴν ἀριθμητικὴν ὑπεροχὴν τῶν Αὐστριακῶν, ἐνήργησεν ἐρρωμένην κατ' αὐτῶν ἐπίθεσιν. Κατὰ ταύτην ὁ Φορέ, διὰ μὲν τῆς δεξιᾶς ταξιαρχίας του ὑπερεκέρασε περὶ τὴν 15ην ὥραν τὸ ἀριστερὸν τῶν Αὐστριακῶν παρὰ τὸ χωρίον Τζενεστρέλο (δυτικῶς τοῦ Μοντεμπέλλο), διὰ δὲ τῆς ἀριστερᾶς του ἀπώθησε τὸ δεξιὸν τῶν Αὐστριακῶν, εἰς τρόπον ὥστε μόνον τὸ κέντρον, παρὰ τὸ χωρίον Μοντεμπέλλο, ἀντεῖχεν ἀκόμη, μέχρις οὗ, περὶ τὴν 18ην ὥραν, κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων τὸ νεκροταφεῖον τοῦ χωρίου τούτου, ὅπερ εἶχεν ὀργανωθῆ ἀμυντικῶς ὡς πρώτη γραμμή, ὁπότε ὁλόκληρος ὁ αὐστριακὸς στρατὸς ὑπεχώρησε πρὸς ΒΑ., πρὸς τὴν μεταξὺ τῶν ὀρέων (Ἀπεννίνων) καὶ τοῦ ποταμοῦ Πάδου στενὴν διάβασιν. Ὁ ἀγὼν οὗτος ἔχει δύο σπουδαῖα χαρακτηριστικά: πρῶτον μὲν ὅτι ὁ στρατηγὸς Στάντιον ἀνέπτυξε τόσον βραδέως καὶ τόσον διαδοχικῶς τὰς δυνάμεις του, ὥστε, ἐνῷ εἶχε μεγάλην ἀριθμητικὴν ὑπεροχὴν ἀπέναντι τῶν Γάλλων, δὲν ἀνέπτυξεν ἐν τούτοις εἰμὴ ἐλαχίστας δυνάμεις ἀπέναντι τῶν συγχρόνως ἀναπτυχθεισῶν πρὸς μάχην γαλλικῶν δυνάμεων· δεύτερον δ' ὅτι οὐχὶ μόνον δὲν ἐξετελέσθη ἡ ἀναγνωριστικὴ ἀποστολὴ τοῦ αὐστριακοῦ τούτου σώματος, ἀλλὰ τοὐναντίον ἐξήχθησαν συμπεράσματα τόσον ἀλλοῖα τῆς πραγματικότητος (πολὺ ἀνώτεραι αἱ γαλλικαὶ δυνάμεις), ὥστε ἐπείσθησαν τότε οἱ Αὐστριακοὶ ὅτι ἐπρόκειτο περὶ ἐλιγμοῦ τῶν Γάλλων διὰ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Πάδου, τοῦθ' ὅπερ ἠνάγκασε τοὺς Αὐστριακοὺς νὰ στρέψωσιν ἐπί τινα χρόνον τὴν προσοχήν πρὸς τὸ ἀριστερόν των, ἐνῷ ὁ κύριος γαλλικὸς ἐλιγμὸς ἐξετελεῖτο κατὰ τοῦ δεξιοῦ των. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μόντενα**, ἡ ***Μοδένη*** (Modena) *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιὸν δουκᾶτον τῆς Ἰταλίας, καταλαμβάνον τὴν ἐπιφάνειαν τῶν σημερινῶν νομῶν τῆς Μοδένης ἢ Μόντενα, τοῦ Ρέτζιο καὶ τῆς Μάσσα καὶ Καρράρα. Ἡ ἱστορία τοῦ δουκάτου τούτου ἄρχεται ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος μὲ τὴν ἵδρυσιν τοῦ οἴκου τῶν Ἔστε. Πρῶτος δοὺξ τῆς Μοδένης καὶ τοῦ Ρέτζιο ὑπῆρξεν ὁ *Μπόρσο ντ' Ἔστε*. Κατὰ τοὺς Ναπολεοντείους πολέμους ἀπετέλεσε τμῆμα τῆς ἐντεῦθεν τῶν Ἄλπεων δημοκρατίας, βραδύτερον δὲ τῆς ἰταλικῆς δημοκρατίας καὶ τέλος τοῦ βασιλείου τῆς Ἰταλίας, ἀποδοθὲν εἰς τὸν δοῦκα Φερδινάνδον Δ' τοῦ οἴκου τῆς Αὐστρίας-Ἔστε. Ὁ δοὺξ ὅμως οὗτος κατέστη τοσοῦτον μισητὸς διὰ τὰς ἀπολυταρχικάς του μεθόδους, ὥστε τῷ 1831 οἱ κάτοικοι ἐπαναστάτησαν καὶ τὸν ἐξηνάγκασαν νὰ τραπῇ εἰς φυγήν. Τὰ αὐστριακὰ ὅμως στρατεύματα τὸν ἐβοήθησαν νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὸ δουκᾶτον του, ὅπου προέβη εἰς σκληροτάτην τιμωρίαν τῶν ἐπαναστατῶν. Μετὰ πολλὰς ἐπαναστάσεις, τὸ δουκᾶτον κατελύθη τῷ 1859 καὶ προσηρτήθη εἰς τὸ βασίλειον τῆς Σαρδηνίας, γενόμενον βραδύτερον τμῆμα τοῦ ἰταλικοῦ βασιλείου.

—2) Νομὸς τῆς Ἰταλίας ἐν Αἰμιλίᾳ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 2.597 τ. χλμ. καὶ 395.513 κατ. Τὸ ἔδαφος διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Σέκκια* καὶ *Πανάρο* καὶ παράγει σιτηρά, οἶνον, ὀπώρας καὶ ἔχει ἀνεπτυγμένην ὀρνιθοτροφίαν.

—3) Πόλις τῆς Ἰταλίας, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. 91.416. Εἶναι πόλις παλαιά, μὲ μεγαλοπρεπῆ μητρόπολιν ρωμανικοῦ ρυθμοῦ, κτισθεῖσαν μεταξὺ τοῦ ΙΑ' καὶ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἀνακαινισθεῖσαν τῷ 1898. Ὁ ναὸς οὗτος ἔχει κωδωνοστάσιον ὕψος 102 μ. Ἡ πόλις κοσμεῖται ὡσαύτως ὑπὸ μουσείου μὲ ἀξιολόγους συλλογὰς κωδίκων καὶ πλήθων νομισμάτων καὶ πινακοθήκης μὲ ἔργα τοῦ Τιτσιανοῦ, Βελάσκεθ, Ντόσσι, Μελόνι, Κατένα, Ἀντρέα ντὲλ Σάρτο κτλ. Τὸ δουκικὸν καὶ κατόπιν βασιλικὸν ἀνάκτορον εἶναι μεγαλοπρεπέστατον κτήριον μὲ θαυμασίας αἰθούσας, ὧν ἡ πλουσιωτάτη τοῦ θρόνου κατεσκευάσθη ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Ἀβαντσίνι. Ἡ Μοδένα ἔχει πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1683, βιβλιοθήκην, ὀνομαστὴν ἱππευτικὴν σχολήν, θέατρα, νοσοκομεῖα, ἀρχαῖον φρούριον καὶ μεγάλους στρατῶνας. Εἶναι πόλις ἐμπορικὴ καὶ βιομηχανική, ἔχουσα ἐργοστάσια μεταλλίνων εἰδῶν, καπνοῦ, τυπογραφεῖα καὶ διεξάγουσα ἐμπόριον σιτηρῶν, οἴνων, ὀπωρῶν, ᾠῶν, πτηνοτροφικῶν προϊόντων κτλ.

Ἡ πόλις τῆς Μοδένης, ἡ Mutina τῶν Λατίνων, ἐκτίσθη ὑπὸ Ἐτρούσκων, κατόπιν κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γαλατῶν καὶ βραδύτερον ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, μεταβληθεῖσα εἰς ρωμαϊκὴν ἀποικίαν τῷ 183 π.Χ. Ἐν αὐτῇ τῷ 44 π. Χ. ὁ Μᾶρκος Ἀντώνιος ἐπολιόρκησε τὸν Δέκιμον Βροῦτον, ἀλλὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐνικήθη ὑπὸ τοῦ Πάνσα καὶ τοῦ Ὀκταβιανοῦ. Τῷ 312 κατέλαβε καὶ κατέστρεψεν αὐτὴν ὁ Κωνσταντῖνος ὁ Μέγας κατὰ τὸν πόλεμον ἐναντίον τοῦ Μαξεντίου. Ἀνοικοδομηθεῖσα βραδύτερον ἐγένετο ἐπὶ τῶν Φράγκων πρωτεύουσα κομιτείας κατὰ τὸν Γ' αἰῶνα. Τῷ 1288 ὑπετάγη εἰς τοὺς δούκας τοῦ Ἔστε καὶ τῷ 1598 ἀπέβη ἡ ἕδρα τῶν δουκῶν τῆς Μοδένης. Ἐν αὐτῇ τῷ 1799 οἱ Αὐστριακοὶ ἐνίκησαν τοὺς Γάλλους. Μ. Δ. Β.

**Μοντένα**, ***Λέων ντὰ*** —. Ἑβραῖος συγγραφεὺς (βλ. λ. *Λέων* ντὰ Μοντένα).

**Μοντενέγκρο** (Montenegro) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία ὑφ' ἣν εἶναι γνωστὸν ἐν Εὐρώπῃ τὸ *Μαυροβούνιον* (βλ. λ.).

— **Μοντενέγκρο** (Capo Montenegro) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπίσημον ἀκρωτήριον τοῦ Λιγυστικοῦ πελάγους (πλάτ. 44°06' Β., μήκ. 9°44' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 157: San Remo to cape Cavallo) ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Γενούης. Σ. Ε. Λ.

**Μοντενιάκ** (Montegnac), ***Λαυρέντιος-Ἰωσὴφ ντὲ Γκαὶν ντὲ***—. Γάλλος συγγραφεὺς (βλ. λ. *Γκαὶν* ντὲ Μοντενιάκ).

**Μοντενόττε** (Montenotte) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Β. Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Γενούης. Εἶναι γνωστὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ νίκης τοῦ Βοναπάρτου ἐναντίον τοῦ Ἀρζαντὼ (βλ. κατωτ.). Κατὰ τὰ ἔτη 1805—1814 τὸ ὄνομά του ἐδόθη εἰς μίαν τῶν ὑπὸ τῶν Γάλλων ἱδρυθεισῶν ἐν Β. Ἰταλίᾳ ἐπαρχιῶν, ἥτις εἶχεν ἕδραν τὴν Σαβόναν. Χ. Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας τοῦ 1796 (βλ. λ. *Διευθυντηρίου πόλεμοι [Στρατ. Ἱστορ.]*), οἱ ὑπὸ τὸν Βοναπάρτην Γάλλοι ἐπετέθησαν τὴν χαραυγὴν τῆς 12ης Ἀπριλίου 1796 ἐναντίον τοῦ ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Μοντενόττε τεταγμένου αὐστριακοῦ στρατοῦ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ἀρζαντώ, διὰ μιᾶς μὲν μεραρχίας κατὰ μέτωπον, δι' ἑτέρας δὲ κατὰ τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ, ὑποστηριζομένης ὑπὸ τρίτης, χρησιμευούσης ὡς ἐφεδρείας. Οἱ Αὐστριακοὶ κατασυντριβέντες ὑπεχώρησαν πρὸς τὸ χωρίον Ντέγκο, οἱ Γάλλοι ὅμως δὲν ἠδυνήθησαν νὰ τοῖς ἀποκόψωσι τὴν ὑποχώρησιν, διότι ἡ μεραρχία Ὠζερὼ ἐβράδυνε νὰ φθάσῃ ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μοντεπὲν** (Montépin), ***Ξαβέριος ντὲ*** —. Γάλλος μυθιστοριογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1823—1902). Ἔγραψε πλῆθος ἐπιφυλλιδογραφικῶν μυθιστορημάτων, καθὼς καὶ θεατρικὰ ἔργα, ὧν τὰ θέματα ἐλάμβανε κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του, ἐξ ὧν σημειοῦμεν τὰ ἑξῆς: «Τὰ δράματα τῆς μοιχείας» (1873), «Ἡ ξανθὴ μάγισσα» (1876), «Ἡ Α. Μ. τὸ χρῆμα» (1877), «Τὰ δράματα τοῦ γάμου» (1878), «Οἱ ἔρωτες τοῦ Ὀλιβιὲ» (1881), «Ἐπαρχιακοὶ ἔρωτες» (1884), «Ἡ ἀρτοπῶλις» (1884), «Ἡ μητρυιά» (1890), «Ἡ κλέπτρια τῆς ἀγάπης» (1894), «Ἡ τραγουδίστρια τοῦ δρόμου» (1902) κ.λ.

**Μοντεπουλτσιάνο** (Montepulciano) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Σιένης. Κάτ. 4.500. Ἔχει ἐκκλησίαν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἐκ μέλανος μαρμάρου, μουσεῖον μετὰ σημαντικῶν ἐτρουσκικῶν συλλογῶν κτλ. Ἔχει βιομηχανίαν κατασκευῆς οἴνων, οἵτινες χαίρουν μεγάλης φήμης ἐν Ἰταλίᾳ, καὶ πολυσυχνάστους σιδηρούχους πηγάς. Μ. Δ. Β.

**μοντεράτο** (ἰταλ. moderato) *[Μουσ.]*. Μουσικὸς ὅρος ἀποδιδόμενος ἑλληνιστὶ διὰ τοῦ *μετρίως* (βλ. λ.).

**Μοντερεγῖνε** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Κάτω Μοισίας παρὰ τὸν Δούναβιν ποταμόν, τὸ ὁποῖον ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μοντερέϋ** (Monterey) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Καλιφορνίας ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου κόλπου. Κάτ. 5.500. Ἡ πόλις ἦτο μέχρι τοῦ ἔτους 1846 πρωτεύουσα τῆς πολιτείας. Γ. Ι. Β.

**Μοντερία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ Τυρρηνικῷ πελάγει (*Πτολ.* Γ, α, 79), ἣν ὁ Πλίνιος ὀνομάζει Oglassa. Εἶναι ἡ σύγχρονος νῆσος *Μοντεκρίστο* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

— **Μοντερία** (Monteria) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς νοτιοαμερικανικῆς πολιτείας Κολομβίας, ἐν τῷ νομῷ Μπολιβάρ. Κάτ. 24.000. Ἔχει μεταλλεῖα ἀργύρου καὶ χρυσοῦ. Γ. Ι. Β.

**Μοντερλὰν** (Montherland), ***Ἐρρῖκος, κόμις ντὲ***—. Γάλλος λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1896. Ἀνήκει εἰς τὴν νεωτέραν γαλλικὴν σχολήν, ἥτις ἀποβλέπει εἰς τὴν ἐξύψωσιν τοῦ πνεύματος τῆς ἀγωνιστικῆς. Ἔγραψε ποιήματα: «Οἱ ἕνδεκα πρὸ τῆς Χρυσῆς Πύλης» (1924), «Δευτέρα Ὀλυμπιάς» (1924) καὶ μυθιστορήματα: «Τὸ πρωϊνὸ ξύπνημα» (1920), «Τὸ ὄνειρον» (1923), «Ὁ παράδεισος ὑπὸ τὴν σκιὰν τῶν ξιφῶν» (1924), «Οἱ θηριομάχοι» (1926) κ.ἄ. Χ. Δ.

*Ἐρρῖκος Μοντερλάν.*

**Μοντερμὲ** (Monthermé) *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῶν Ἀρδεννῶν, ἐπὶ τοῦ Μόζα. Κατεστράφη κατὰ τὸ ἥμισυ διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Ἔχει μεταλλουργικὰς ἐγκαταστάσεις καὶ ἐμπόριον πλακῶν σχιστολίθου. Κάτ. 4.170. Χ. Δ.

**μοντερνίζω**· ἀκολουθῶ τὴν μόδαν, νεωτερίζω.

**μοντερνισμὸς** (ὁ), ἡ ***μοδερνισμός***· τὸ νὰ ἀκολουθῇ τις τὴν μόδαν, ἡ ἄκριτος παρακολούθησις καὶ ἀποδοχὴ τῶν νεωτερισμῶν.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *καινοθηρία*.

**μοντέρνος**, —α, —ο, καὶ ***μοδέρνος***· δημοτ., ὁ σύμφωνος μὲ τὴν μόδαν, μὲ τὴν κρατοῦσαν συνήθειαν: «μοδέρνο καπέλλο,— φόρεμα,— ὕφασμα»· || καθόλου, νεωτεριστικός: «μοδέρνα τέχνη, — φιλολογία» (ἰταλ. moderno).

**Μόντε Ρόζα** (Monte Rosa) *[Γεωγρ.]*. Μεγαλοπρεπὴς ὀρεινὸς ὄγκος τῶν Πεννίνων Ἄλπεων, ὑψούμενος μεταξὺ τοῦ ἑλβετικοῦ καντονίου τῆς Βαλαισίας καὶ τοῦ Πεδεμοντίου καὶ περιβάλλων τὴν κοιλάδα τοῦ Βιέζ. Πλεῖσται κορυφαί του ὑπερβαίνουσι τὰ 4.000 μ. (*Ντυφουρσπὶτζ* 4.638 μ., *Μάττερχορν* 4.482 μ., *Μπράϊτχορν* 4.171 μ., *Λύσκαμμ* 4.538 μ. κλπ.), εἰς οὐδὲν δὲ ἄλλο σημεῖον τῶν Ἄλπεων ἀπαντᾷ τοσαύτη συσσώρευσις χιόνων καὶ πάγων. Ἀπέχει 80 χλμ. ἀπὸ τοῦ Λευκοῦ Ὄρους, ὑψίστης ἀλπικῆς κορυφῆς, καὶ εἶναι κέντρον συγκεντρώσεως πλείστων περιηγητῶν ἐξ ὅλων τῶν μερῶν τῆς γῆς. Κέντρον αὐτῶν εἶναι τὸ *Ζερμάττ* (1.620 μ.), σιδηροδρομικὴ ὅμως γραμμὴ φθάνει μέχρι 3.136 μ. εἰς *Γκαϊρνεργκρατ*. Ἅπαντες οἱ αὐχένες τοῦ ὄρους εἶναι προσιτοὶ μόνον εἰς τοὺς πεζούς, διότι καλύπτονται ὑπὸ χιόνων καὶ παγετώνων. Μᾶλλον βατὴ δίοδος εἶναι ἡ τοῦ Ἁγίου Θεοδούλου (3.322 μ.), ἄγουσα ἀπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Βιὲζ εἰς Ἰταλίαν. Τῷ 1904 ἱδρύθη ἐπὶ τῆς νοτίας πλευρᾶς τοῦ ὄρους εἰς ὕψος 4.560 μ. μετεωρολογοφυσικὸς σταθμός. Χ. Δ.

**Μόντερ Ρίβερ** (Modder River) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ν. Ἀφρικῆς, πηγάζων παρὰ τὸ Ντιουετσντορπ, ρέων πρὸς Β. καὶ εἶτα πρὸς Δ. διὰ τῶν ἐδαφῶν τοῦ κράτους τῆς Ὀράγγης καὶ συμβάλλων μετὰ τοῦ Ριέτ, ἀριστεροῦ παραποτάμου τοῦ Βάαλ, πρὸς Ν. τοῦ Κίμπερλεϋ, μετὰ ροῦν 300 περίπου χλμ. Παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Μόντερ κεῖται ὁμώνυμος σταθμὸς τῆς μεγάλης πρὸς τὴν πόλιν τοῦ Ἀκρωτηρίου σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὸν ἐν Τράνσβααλ Ἀγγλομποερικὸν πόλεμον τοῦ 1899, ὁ στρατηγὸς Methuen, διοικητὴς ἀγγλικῆς μεραρχίας, ἀφοῦ ἀπώθησε κατὰ τὴν 23ην καὶ 25ην Νοεμβρίου 1899 τοὺς Μπόερς πρὸς τὴν δεξιὰν (βορείαν) ὄχθην τοῦ

Digitized by Google

ποταμοῦ Ριέτ, ἀπεφάσισε νὰ προσπεράσῃ μετὰ τῆς ὑπ' αὐτὸν μεραρχίας ἐπὶ τῆς ὄχθης ταύτης, διαβαίνων τὸν Ριὲτ παρὰ τὸν σταθμὸν *Μόντερ Ρίβερ*, χωρὶς ὅμως νὰ γνωρίζῃ ὅτι οἱ Μπόερς εἶχον ἤδη ἐγκατασταθῆ καὶ ὀργανωθῆ ἀμυντικῶς ἐπὶ καταλλήλων τοποθεσιῶν. Διό, ἅμα τῇ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης διαπεραιώσει κατὰ τὴν 28ην Νοεμβρίου 1899, ἀνεκόπη εὐθὺς ἀμέσως ἡ προχώρησις, ἡ δὲ μεραρχία, ὑποστᾶσα μεγάλας βλάβας, ἡτοιμάζετο νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Ριέτ. Ἀλλ' ἐνῷ ἡ κατάστασις ἦτο δυσμενὴς διὰ τοὺς Ἄγγλους, ἐξαίφνης μικροτάτη ἀγγλικὴ δύναμις, ἐκπεμφθεῖσα κατὰ τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ τῶν Μπόερς, οὐχὶ ἐπὶ τῷ σκοπῷ ὑπερκεράσεως, ἀλλ' ἁπλῶς πρὸς ἀπασχόλησιν αὐτῶν καὶ συνεπῶς διευκόλυνσιν τῆς ἀγγλικῆς ὑποχωρήσεως, ἤρκεσε νὰ μεταβάλῃ ριζικῶς τὴν κατάστασιν· οἱ Μπόερς, φοβηθέντες ὑπερκέρασιν ἐγκατέλειψαν, περὶ τὴν ἑσπέραν τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας, τὰς τοποθεσίας των καὶ ἔφυγον προτροπάδην πρὸς βορρᾶν. Τοιουτοτρόπως οἱ Ἄγγλοι, καίτοι ἡττημένοι, εὑρέθησαν κύριοι τῶν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ριὲτ τοποθεσιῶν. Ν. Θ. Κ.

**Μοντερὼ** (Montereau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σηκουάνα-Μάρνη, παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Ὑὸν καὶ Σηκουάνα. Κάτ. 8.853. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν καὶ βιομηχανίαν κεράμων καὶ φαγεντιανῶν εἰδῶν. Τῷ 1419 ἐδολοφονήθη ἐν αὐτῇ ὁ Ἰωάννης ὁ Ἀτρόμητος ὑπὸ τοῦ Ταννεγκὺ Ντυσατέλ. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Γαλλίας τοῦ 1814 (βλ. λ. *Ναπολεόντειοι πόλεμοι*) ὁ Ναπολέων, θελήσας νὰ προσπεράσῃ, περὶ τὰ μέσα Φεβρουαρίου 1814, ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Σηκουάνα καὶ κατόπιν νὰ σπεύσῃ πρὸς Τρουὰ (Troys), ἵνα ἀποκόψῃ τὴν ὑποχώρησιν τῆς ὑπὸ τὸν πρίγκιπα τῆς Βυρτεμβέργης στρατιᾶς τῆς Βοημίας, εὑρέθη ἀντιμέτωπος τμήματος τῆς στρατιᾶς ταύτης, τεταγμένου ἐπὶ ἀμυντικῶν τοποθεσιῶν τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σηκουάνα, σχηματιζουσῶν ἡμικύκλιον βορειοανατολικῶς τοῦ χωρίου *Μοντερώ*, ἐπὶ τῷ σκοπῷ τοῦ νὰ παρακωλύσῃ τὴν διὰ τῶν γεφυρῶν τοῦ χωρίου τούτου προσπέρασιν τῶν Γάλλων ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Σηκουάνα καὶ τοιουτοτρόπως παράσχῃ τὸν χρόνον εἰς τὸν κύριον ὄγκον νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς Τρουὰ (ἄμυνα στενωποῦ ἐκ τῶν ἔμπροσθεν). Τὴν πρωΐαν τῆς 18ης Φεβρουαρίου 1814 ἐπετέθησαν οἱ Γάλλοι κατὰ τῶν Βυρτεμβεργίων πρὸς τὸ κέντρον των, παρὰ τὸ χωρίον Βιλαρύ, καὶ συγχρόνως πρὸς τὸ ἀριστερὸν πλευρόν των. Τὸ χωρίον τοῦτο κατελήφθη ἀμέσως ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἀλλ' ἐντὸς ὀλίγου ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῶν Βυρτεμβεργίων. Ἐνῷ δὲ ἡ κατάστασις παρέμενεν ἑκατέρωθεν ἀμφίρροπος, κατέφθασε, περὶ τὴν 13ην ὥραν, ἡ γαλλικὴ ἐφεδρεία μετὰ πολλοῦ πυροβολικοῦ, καὶ τότε ὁ Ναπολέων διέταξε νὰ ταχθῇ τὸ πυροβολικὸν (40 πυροβόλα), ἵνα παρασκευάσῃ τὴν ἀποφασιστικὴν ἐπίθεσιν. Οἱ Βυρτεμβέργιοι ἐπετέθησαν διὰ τῆς λόγχης κατὰ τοῦ πυροβολικοῦ τούτου, ἵνα παρεμποδίσουν τὴν πρὸς πυροβόλησιν τάξιν, ἀλλ' ἀπεκρούσθησαν ὑπὸ τῶν Γάλλων. Μετὰ τὴν προπαρασκευὴν ἐξετελέσθη ἡ ἐπίθεσις καὶ τάχιστα ἠδυνήθησαν οἱ Γάλλοι νὰ καταλάβωσι τὸ Βιλαρύ καὶ μετ' ὀλίγον τὸ Μοντερώ, ὁπότε ἐπῆλθε διάρρηξις τοῦ ἐχθρικοῦ μετώπου καὶ κατάληψις τῶν ἐπὶ τοῦ Σηκουάνα γεφυρῶν. Ὁ πρίγκιψ τῆς Βυρτεμβέργης ἀπεφάσισε νὰ ὑποχωρήσῃ, ἀλλὰ διέπραξε τὸ σφάλμα ν' ἀποσύρῃ πρῶτον τὸ ἱππικόν του· οἱ Γάλλοι ἀντιληφθέντες τοῦτο ἐπήλασαν διὰ τοῦ ἱππικοῦ των κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ τοῦ ἐχθροῦ καὶ τὸ ἀνέτρεψαν, οἱ δὲ Βυρτεμβέργιοι ἤρχισαν φεύγοντες προτροπάδην πρὸς τὸ Μοντερώ, ἐντὸς τοῦ ὁποίου εἰσῆλθον φύρδην μίγδην μετὰ τῶν καταδιωκόντων Γάλλων. Ἡ μάχη αὕτη ἔχει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι οἱ Βυρτεμβέργιοι ναὶ μὲν ἡττήθησαν, ἀλλ' ἐξεπλήρωσαν τὴν ἐντολήν των, καθ' ὅσον διὰ τοῦ ἀγῶνός των ἐπὶ ὁλόκληρον ἡμέραν παρέσχον τὸν ἀπαιτούμενον χρόνον εἰς τὸν κύριον ὄγκον τῆς στρατιᾶς τῆς Βοημίας ὅπως ὑποχωρήσῃ πρὸς Τρουά. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μοντὲς** (Montez), **Δόλα**. Καλλιτεχνικὸν ὄνομα τῆς χορευτρίας *Μαρίας - Δολορὲς - Ἐλίζας - Ροζάνας Τζίλμπερτ*, μιᾶς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τυχοδιωκτικῶν φυσιογνωμιῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος (1818—1861), τῆς ὁποίας οἱ σκανδαλώδεις ἔρωτες ἐστοίχισαν τὸν θρόνον ἑνὸς βασιλέως καὶ τὴν ζωὴν ἑνὸς ἐκ τῶν πολυαρίθμων θαυμαστῶν της. Ἦτο θυγάτηρ Ἄγγλου ἀξιωματικοῦ καὶ ἔτυχε καλῆς ἀνατροφῆς. Εἰς ἡλικίαν 19 ἐτῶν ἐνυμφεύθη τὸν Ἄγγλον πλοίαρχον Θωμᾶν Τζαίημς, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἁπαγάγει αὐτήν, μετὰ πενταετῆ ὅμως συζυγικὸν βίον ἐγκατέλειψε τὸν σύζυγόν της, ὑπηρετοῦντα ἐν Ἀσίᾳ, καὶ ἦλθεν εἰς Εὐρώπην, ὅπου ἀνῆλθεν ἐπὶ τῆς σκηνῆς, ὡς Ἱσπανὶς χορεύτρια ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Δόλα Μοντές*. Ἐμφανισθεῖσα ἀλληλοδιαδόχως ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων θεάτρων τῶν εὐρωπαϊκῶν πρωτευουσῶν, Λονδίνου, Βερολίνου, Πετρουπόλεως, Παρισίων κλπ., κατέστη διάσημος, λόγῳ ὅμως τῶν πολιτικῶν καὶ κοινωνικῶν σκανδάλων, τὰ ὁποῖα προεκάλει, ἀπηλάθη ἐπανειλημμένως ἐκ διαφόρων πόλεων. Τῷ 1845 ἐν Παρισίοις ἐγένετο ἀφορμὴ μονομαχίας, καθ' ἣν ὁ ἐραστὴς της Ντυζαριέ, ἀρχισυντάκτης τῆς ἐφημερίδος «Presse», ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Μπωβαλλόν. Καταφυγοῦσα εἰς Μόναχον ἐγένετο ἐρωμένη τοῦ γηραιοῦ βασιλέως τῆς Βαυαρίας Λουδοβίκου ΙΑ', ὁ ὁποῖος ἀπένειμεν εἰς αὐτὴν τὸν τίτλον τῆς βαρώνης Ρόζενταλ καὶ τῆς κομίσσης τοῦ Λάνσφελντ. Ἀνεμείχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν, διήγαγε βίον πολυτελέστατον, σχηματίσασα περὶ αὐτὴν ὁλόκληρον αὐλήν. Λόγῳ ὑποστηρίξεως, τὴν ὁποίαν παρεῖχεν εἰς τοὺς φιλελευθέρους φοιτητὰς (Alemannen), προεκλήθη ῥῆξις μεταξὺ αὐτῶν καὶ τῶν συντηρητικῶν (19 Φεβρουαρίου 1848), λαβοῦσα τὴν ἔκτασιν ἀληθοῦς μάχης, καθ' ἣν ἡ Δόλα κινδυνεύουσα νὰ φονευθῇ ἔφυγεν ἐσπευσμένως ἐκ Μονάχου. Ἡ ἐπακολουθήσασα ὅμως τῶν φοιτητικῶν ταραχῶν γενικωτέρας μορφῆς λαϊκὴ ἐξέγερσις ἠνάγκασε τὸν βασιλέα νὰ παραιτηθῇ μετ' ὀλίγον (31 Μαρτίου). Ἐκ Μονάχου ἡ τέως βασιλικὴ ἐρωμένη ἔφυγεν εἰς Βέρνην καὶ ἐκεῖθεν εἰς Λονδῖνον, ὅπου προεκάλεσε νέον σκάνδαλον (1849), νυμφευθεῖσα τὸν σχεδὸν ἀνήλικον Γεώργιον Τράφοντ Χέηντ, ἐνῷ ὁ πρῶτος γάμος της δὲν εἶχεν ἀκόμη λυθῆ νομικῶς. Κινδυνεύουσα νὰ συλληφθῇ ἐπὶ διγαμίᾳ ἔφυγεν εἰς Ἱσπανίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ἀμερικήν, ὅπου ὑπεδύθη ἀπὸ τῆς σκηνῆς τὸ ἴδιον αὐτῆς πρόσωπον εἰς τὸ ἔργον τοῦ Ware «Ἡ Δόλα Μοντὲς ἐν Βαυαρίᾳ» (1852). Ἔκτοτε τὴν συναντῶμεν εἰς Αὐστραλίαν, εἶτα καὶ πάλιν εἰς Ἀμερικήν, ὅπου δημοσιεύει ἀγγλιστὶ τὰ ἑξῆς τρία βιβλία μεταφρασθέντα εἰς τὰς περισσοτέρας γλώσσας: «Ἡ τέχνη τῆς ὡραιότητος ἢ τὰ μυστικὰ τοῦ γυναικείου καλλωπισμοῦ» (Νέα Ὑόρκη, 1858), «Αὐτοβιογραφία καὶ ἀναγνώσματα τῆς Δόλας Μοντές» (Λονδῖνον, 1858) καὶ «Ἀναγνώσματα τῆς Δόλας Μοντές» (1858). Περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου της ἐγκατεστάθη εἰς Νέαν Ὑόρκην, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Χ. Δ.

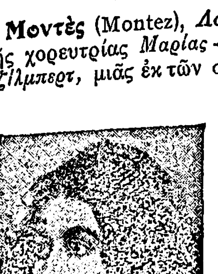

*Δόλα Μοντές.*

**Μόντε - Σάντ - Ἄντζελο** (Monte Sant' Angelo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Φότζιας. Κάτ. 21.547. Κεῖται ἐπὶ τῶν ΝΑ. κλιτύων τοῦ ὄρους Κάργκανο, εἰς ὕψος 843 μ., καὶ εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὸν ἐντὸς σπηλαίου περίφημον ναὸν τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, χρονολογούμενον ἀπὸ τοῦ Ε' αἰῶνος, ὁ ὁποῖος χρησιμεύει ὡς τόπος προσκυνήματος. Ἐν τῷ ναῷ τούτῳ ὑπάρχει μεγάλης τέχνης εἰκὼν τοῦ ἀρχαγγέλου Μιχαήλ. Μ. Δ. Β.

**Μοντεσαντᾶτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Τρωϊανάτων τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 123. Χ. Δ.

**Μόντε Σὰν Τζιουλιάνο** (Monte San Giuliano) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Σικελίᾳ καὶ τῷ νομῷ τοῦ Τράπανι, ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὁμωνύμου ὄρους. Κάτ. 13.404. Ἔχει ἐνδιαφέρουσαν μητρόπολιν, παλαιὸν φρούριον καὶ ἐρείπια προϊστορικῶν ἀρχαίου ρωμαϊκοῦ ναοῦ.

— 2) Ὄρος τῆς Ἰταλίας ἐν Σικελίᾳ (βλ. λ. *Ἔρυξ*). Μ. Δ. Β.

**Μοντεσάντος, *Διονύσιος*.** Δερματολόγος καὶ συφιλιδολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἀργοστολίῳ τῷ 1874. Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ καὶ κατόπιν συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Βιέννῃ καὶ Παρισίοις. Ἐπανελθὼν τῷ 1901 εἰς Ἀθήνας, ἠσχολήθη ἰδίως περὶ τὴν λέπραν, μελετήσας ταύτην ἐν Λευκωσίᾳ τῆς Κύπρου, ἐν Σπιναλόγγᾳ τῆς Κρήτης καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος. Ἐδημοσίευσε: «La séroréaction Wassermann dans 48 cas de lèpre» (Ἀρχ. Ἰατρ. 1910), «Τὰ ἀποτελέσματα τῶν ἐνέσεων τοῦ 606 ἐπὶ 13 περιπτώσεων συφίλιδος καὶ λέπρας» (αὐτ.), «Τὰ κατὰ τὸ βραχὺ ἀρχικὸν στάδιον τῆς λέπρας παρατηρούμενα πρόδρομα καὶ πρώϊμα συμπτώματα» (αὐτ.), «Χημειοθεραπεία Ehrlich» (1910), «Der Einfluss des Salvarsan auf die Leprabacillen» (1911), «Un coup d'oeil sur la question de la contagiosité et l'hérédité de la lèpre» (1913), «Ἡ ἀνοσία τοῦ συφιλιδικοῦ ὀργανισμοῦ ἄνευ θεραπείας καὶ μετὰ θεραπείαν», πραγματεία βραβευθεῖσα εἰς τὸν Συμβουλίδειον ἰατρικὸν ἀγῶνα (1912), «Sur le traitement abortif de la syphilis» (1912). Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Ο. Ρ.

**Μοντεσκιὲ** (Montesquieu), ***Κάρολος ντὲ Σεκοντά, βαρῶνος ντὲ —***. Μέγας Γάλλος φιλόλογος, νομομαθὴς καὶ ἱστορικός, γεννηθεὶς πλησίον τοῦ Βορδὼ τῷ 1689 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1755. Κατήγετο ἐξ εὐγενοῦς καὶ τιμίας οἰκογενείας. Ἔμεινεν ἐνωρὶς ὀρφανὸς μητρὸς καὶ εἰσήχθη τῷ 1700 εἰς οἰκοτροφεῖον λυκείου τινὸς πλησίον τῶν Παρισίων, ὅπου ἔζησε μέχρι τοῦ 1711. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν νομικῶν του σπουδῶν ἐγένετο, εἰς ἡλικίαν εἰκοσιπέντε ἐτῶν, σύμβουλος εἰς τὸ παρλαμέντον τοῦ Βορδώ, τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐνυμφεύθη καὶ δύο ἔτη βραδύτερον, ἤτοι τῷ 1716, ἐγένετο πρόεδρος δικαστηρίου. Ἀλλὰ τὸ ἐπάγγελμα τοῦτο δὲν τὸν ἱκανοποίει· τὸν περισσότερον χρόνον κατηνάλισκεν εἰς τὴν μετὰ πάθους μελέτην τῆς ἱστορίας, τῆς λογοτεχνίας καὶ τῶν ἐπιστημῶν καὶ εἰς τὴν συναναστροφὴν γυναικῶν τοῦ καλοῦ κόσμου. Τῷ 1716 ὑπέβαλεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Βορδὼ μίαν «Διατριβὴν ἐπὶ τῆς πολιτικῆς τῶν Ρωμαίων εἰς τὴν θρησκείαν» («Dissertation sur la politique des Romains dans la religion») καὶ κατόπιν ἐμελέτησε τὴν ἠχώ, τὴν βαρύτητα, τὴν διαφάνειαν τῶν σωμάτων, τοὺς νεφρικοὺς ἀδένας κλπ. Τῷ

*Κάρολος Μοντεσκιέ.*

1719 ἐσχεδίαζε τὴν συγγραφὴν «Φυσικῆς ἱστορίας τῆς ἀρχαίας καὶ νεωτέρας γῆς» («Histoire physique de la terre ancienne et moderne») καὶ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἐζήτησε πληροφορίας ἀπὸ ὅλους τοὺς σοφοὺς τῆς γῆς. Τῷ 1721 ἐπεξειργάζετο ἀκόμη τὰς «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας» («Observations sur l'histoire naturelle») καὶ μόνον μὲ τὰ μαθηματικὰ δὲν εἶχεν ἀκόμη ἀσχοληθῆ. Γενικῶς, κατὰ τὰ πρῶτά του βήματα ἐφαίνετο μᾶλλον ὅτι ἐπεδίωκε ν' ἀφοσιωθῇ εἰς τὰς θετικὰς ἐπιστήμας καὶ νὰ προαγάγῃ ταύτας. Ἀλλ' ἀφ' ἑνὸς ἡ λόγῳ τοῦ ἐπαγγέλματός του ὡς προέδρου δικαστηρίου διαμονὴ μακρὰν τῶν Παρισίων καὶ ἀφ' ἑτέρου ἡ μεγάλη μυωπία, ἐξ ἧς ἔπασχε, τὸν ἠνάγκασαν νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ πεδίον τῶν θετικῶν ἐπιστημῶν καὶ νὰ ἀσχοληθῇ μὲ τὴν φιλολογίαν εἰς ἡλικίαν τριάκοντα δύο ἐτῶν. Οὕτω τῷ 1721 ἐδημοσίευσε τὰς «Περσικὰς ἐπιστολὰς» («Lettres persanes»), μετ' ὀλίγον δὲ (1725) τὸν «Ναὸν τῆς Κνίδου» («Temple de Cnide»). Τὰ δύο ταῦτα ἔργα του ἔσχον πολὺ μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ συνετέλεσαν ὥστε νὰ γίνῃ δεκτὸς ὁ συγγραφεὺς ἐντὸς τῶν κόλπων τῆς Ἀκαδημίας (1728). Γενόμενος ἀκαδημαϊκός, ἤρχισε νὰ ἐργάζηται ἐπὶ ἑνὸς τεραστίου ἔργου, εἴδους φιλοσοφικῆς συνθέσεως ὅλων τῶν νομοθεσιῶν, καὶ ἐπὶ εἰκοσαετίαν ἠσχολεῖτο μὲ αὐτό. Διὰ νὰ συλλέξῃ τ' ἀναγκαιοῦντα στοιχεῖα, ἐπεσκέφθη διαφόρους χώρας, ὡς τὴν Αὐστρίαν, τὴν Οὐγγαρίαν, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Ἑλβετίαν, τὴν Ὁλλανδίαν καὶ τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου ἔμεινεν ἐπὶ διετίαν. Κατόπιν ἐνεκλείσθη ἐπὶ διετίαν εἰς τὸν πύργον του καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐπεξεργασίαν τοῦ συναχθέντος ὑλικοῦ καὶ τοῦ συγγραφικοῦ του ἔργου. Οὕτω συνετέθη «Τὸ πνεῦμα τῶν νόμων» («L'esprit des Lois»), τὸ ὁποῖον ἐξεδόθη τῷ 1748. Δεκατέσσαρα ἔτη προηγουμένως ὁ Μοντεσκιὲ εἶχε δημοσιεύσει τὰς «Κρίσεις ἐπὶ τῶν αἰτίων τοῦ μεγαλείου καὶ τῆς καταπτώσεως τῶν Ρωμαίων» («Considerations sur les causes de la grandeur et de la décadence des Romains»). Τῷ 1750 συνέγραψε μίαν «Ὑπεράσπισιν τοῦ πνεύματος τῶν νόμων» («Défense de l'Esprit des lois»). Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων τοῦ Μοντεσκιὲ τὰ σπουδαιότερα εἶναι: ὁ «Διάλογος Σύλλα καὶ Εὐκράτους» («Dialogue de Sylla et d'Eucrate»), ὁ «Λυσίμαχος» («Lysimaque»), «Ἀρσάκης καὶ Ἰσμηνία» («Arsace et Isménie»), ἀνατολικῆς ὑποθέσεως μυθιστορία, δημοσιευθεῖσα τῷ 1783, καὶ ἓν «Essai sur le goût». Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τοῦ «Πνεύματος τῶν νόμων» ἔσχεν ἀνάγκην ἀναπαύσεως. Πρὸ καιροῦ τὸν κατέτρωγεν ἡ ἀσθένεια, ἐνῷ παραλλήλως ἐξησθένιζε καὶ ἡ ὅρασίς του. Ἀπέθανε τῷ 1755, εἰς ἡλικίαν ἑξήκοντα ἓξ ἐτῶν. Ἡ ζωή του διῆλθεν ἀτάραχος καὶ ἔντιμος. Μετριοπαθὴς καθὼς ἦτο καὶ εἰς τὴν ἰδιωτικήν του ζωὴν καὶ εἰς τὰς πνευματικάς του ἐκδηλώσεις, ἠγαπᾶτο καὶ ἐτιμᾶτο ὑπὸ ὅλων.

Τὰ καθαρῶς ἐπιστημονικὰ ἔργα τοῦ Μοντεσκιὲ καὶ οἱ διάφοροι λόγοι, τοὺς ὁποίους ἐξεφώνησε κατὰ καιροὺς ἐνώπιον τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βορδώ, δὲν ἔχουν κανὲν ἐνδιαφέρον. Τὸ κυριώτερον ἐξ αὐτῶν: «Dissertation sur la politique des Romains dans la religion» εἶναι μετριώτατον ἔργον μὲ παιδαριώδη πολυγνωσίαν. Τῷ 1721, εἰς ἡλικίαν τριάκοντα δύο ἐτῶν, ἐγένετο αἴφνης διάσημος διὰ τῶν «Lettres persanes». Ὑπὸ τὸ πρόσχημα ὅτι θέλει νὰ γνωρίσῃ εἰς τὸ κοινὸν τὴν ἀλληλογραφίαν δύο Περσῶν, τοῦ Οὐσμπὲκ καὶ τοῦ Ρίκα μετ' αὐτοῦ, ὁ Μοντεσκιὲ παρουσίασεν ἓν βιβλίον, τὸ ὁποῖον εἶναι ταυτοχρόνως δραματικὸν roman, σατιρικὴ ἀπεικόνισις τῆς συγχρόνου κοινωνίας καὶ ἔργον ἐξόχως διδακτικόν, εἰς τὸ ὁποῖον θαυμάζει κανεὶς τὴν πρωτοτυπίαν καὶ τὸ ὕψος τῶν σκέψεων. Ἡ ἐποχή, καθ' ἣν ἐνεφανίσθησαν αἱ «Lettres persanes», ἦτο ἀρκετὰ κρίσιμος. Μὲ τὸν θάνατον Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ' ἀνενεοῦτο ἡ ὄψις τῆς Γαλλίας. Τὸν αὐταρχικώτερον ἐξ ὅλων τῶν βασιλέων διεδέχετο ἓν πενταετὲς παιδίον, ἐν ὀνόματι τοῦ ὁποίου ἐκυβέρνα ὁ δοὺξ τῆς Ὀρλεάνης

Digitized by Google

ἡ προσωποποίησις τῆς αἰσχρότητος. Χάρις εἰς τὸ φιλολογικὸν τέχνασμα, τὸ ὁποῖον ἐξέλεξεν ὁ Μοντεσκιέ, ἠδύνατο νὰ παρουσιάζῃ τοὺς Μουσουλμάνους του αὐστηροὺς κριτὰς τῶν πολιτικῶν ἢ θρησκευτικῶν ἐθίμων τῆς δυτικῆς Εὐρώπης καὶ τοῦ τρόπου μὲ τὸν ὁποῖον ἐκδηλοῦται εἰς αὐτὴν ἡ κοινωνικὴ ζωή, ἡ οἰκογένεια, ἡ ἀπονομὴ τῆς δικαιοσύνης. Ἠδύνατο ἀφόβως νὰ εἴπῃ ὅτι ὁ πάπας εἶναι παλαιὸν εἴδωλον, τὸ ὁποῖον λατρεύουν ἐκ συνηθείας, ἠδύνατο νὰ ὀνομάσῃ τὸν Λουδοβῖκον τὸν ΙΔ' μέγαν μάγον, ὁ ὁποῖος κατώρθωσε νὰ πείσῃ τοὺς ὑπηκόους του ὅτι ἓν τεμάχιον χάρτου εἶναι χρῆμα, κλπ. Αἱ «Lettres persanes» προητοίμασαν τὴν εἴσοδον τοῦ συγγραφέως εἰς τὴν Ἀκαδημίαν, ἀλλὰ ταυτοχρόνως ἐπεβράδυναν ἐπί τι διάστημα τὴν εἰσδοχήν του λόγῳ τοῦ περιεχομένου των. Ὁ Μοντεσκιέ, ἀδημονῶν κατέφυγεν, ἂν πιστεύσωμεν τὸν Βολταῖρον, εἰς τέχνασμα ὄχι τόσον τιμητικόν. Ἐξετύπωσεν εἰς ἐλάχιστα ἀντίτυπα μίαν εἰδικὴν ἔκδοσιν τῶν «Lettres persanes», ἐξ ἧς εἶχον ἀφαιρεθῆ τὰ ὕποπτα χωρία. Διὰ τῆς ἠκρωτηριασμένης ταύτης ἐκδόσεως λέγεται ὅτι ἐπέτυχε τὴν εἰσδοχήν του εἰς τὴν Ἀκαδημίαν.

Μετὰ ἐννέα ἐτῶν σιωπὴν ὁ Μοντεσκιὲ ἐδημοσίευσε τὰς «Considérations sur les causes de la grandeur et de la décadence des Romains», μελετήσας τὴν ἱστορίαν τῆς Ρώμης ὡς ἱστορικός, ὡς νομικὸς καὶ ὡς φιλόσοφος. Ὁ Μοντεσκιὲ ἀποδίδει τὸ μεγαλεῖον τῆς Ρώμης εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι οἱ Ρωμαῖοι ἠγάπησαν τὴν ἐλευθερίαν, τὴν ἐργασίαν καὶ τὴν πατρίδα· εἰς τὸ ὅτι ὡς πολεμισταὶ εἶχον σιδηρᾶν πειθαρχίαν καὶ ἐγωϊσμόν, οὐδέποτε ὑποκύψαντες εἰς τὸν τυχὸν νικητὴν ἐχθρόν, καὶ ἐφρόντιζον πολιτικῶς φερόμενοι νὰ διαιροῦν τοὺς ἐχθρούς των καὶ νὰ μὴ καταπιέζουν πολὺ τοὺς ἡττημένους. Οἱ λόγοι τῆς καταπτώσεως τῆς Ρώμης εἶναι ἡ μεγάλη ἔκτασις τῆς αὐτοκρατορίας, ἡ ὁποία ἐγέννησεν ἐμφυλίους πολέμους, κατέστρεψε τὸ πνεῦμα τῆς ἐλευθερίας καὶ ἔδωκε τὸ δικαίωμα τῆς πολιτείας εἰς τοὺς πάντας, ἡ πολυτέλεια, ἡ ὁποία ἤγαγεν εἰς τὴν διαφθορὰν καὶ τὴν τυραννίαν, ἡ ἀνικανότης καὶ ἡ ἐγκληματικότης πολλῶν αὐτοκρατόρων καὶ ὁ διὰ τῆς κτίσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπελθὼν διαμελισμὸς τῆς αὐτοκρατορίας. Τὸ ἔργον δὲν διακρίνεται διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν του· εἶναι σειρὰ σκέψεων τοῦ συγγραφέως μὲ στοιχειώδη διάταξιν. Τὸ ὕφος εἰς τινα σημεῖα εἶναι σκοτεινόν, εἰς ἄλλα δὲ λαμπρόν. Ἡ πρωτοτυπία του δὲν εἶναι μεγάλη· τινὲς εὑρίσκουν ὁμοιότητας εἰς τὰ πορίσματα μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τῆς «Histoire universelle» τοῦ Bossuet.

Τῷ 1748 ὁ Μοντεσκιὲ ἐξέδωκεν ἐν Γενεύῃ εἰς δύο τόμους τὸ ἔργον τῆς ζωῆς του: «L' esprit des lois». Ἐντὸς 18 μηνῶν ἐγένοντο 22 ἐκδόσεις τοῦ ἔργου τούτου καὶ πολλαὶ μεταφράσεις εἰς διαφόρους γλώσσας. Ἦτο ἔργον ἑνὸς ἐλευθέρου διανοητοῦ, καὶ διὰ τοῦτο, παρ' ὅλην τὴν κυκλοφορίαν του, ἀντεμετώπισε κατ' ἀρχὰς τὴν συνωμοσίαν τῆς σιωπῆς ἐκ μέρους τῶν ἐπισήμων κριτικῶν. Τὰ παρλαμέντα, οἱ ἐπίσκοποι, ἡ Σορβόννη ἐσιώπησαν. Μόνον μερικαὶ θρησκευτικαὶ ἐφημερίδες τῶν ἰανσενιστῶν καὶ τῶν ἰησουϊτῶν ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ βιβλίου καὶ κατηγόρησαν τὸν συγγραφέα ἐπὶ σπινοζισμῷ, δισμῷ καὶ ἀθρησκείᾳ ἀκόμη. Ὁ Μοντεσκιὲ ἀπήντησεν ἀμέσως διὰ τῆς «Défense de l'Esprit des lois» καὶ ἐπέτυχεν ἐν μέρει τὴν κατατρόπωσιν τῶν ἀντιπάλων του. Τὸ ἔργον διαιρεῖται εἰς τριάκοντα ἓν βιβλία καὶ εἰς πλέον τῶν πεντακοσίων ἐνεπιγράφων κεφαλαίων, ἀλλ' ἡ λεπτομερὴς αὕτη διαίρεσις δὲν συνοδεύεται καὶ ὑπὸ μεθοδικῆς διατάξεως τῆς ὕλης. Ὁ Μοντεσκιὲ διὰ τοῦ ἔργου τούτου ἐσκόπει νὰ δημιουργήσῃ μίαν φιλοσοφίαν τοῦ δικαίου καὶ νὰ δώσῃ τὴν πεμπτουσίαν τῶν νομοθεσιῶν. Οἱ νόμοι κατ' αὐτὸν εἶναι αἱ ἀναγκαῖαι σχέσεις, αἱ ὁποῖαι προέρχονται ἐκ τῆς φύσεως τῶν πραγμάτων. Οἱ πολιτικοὶ νόμοι εὑρίσκονται ἀναγκαίως ἐν ἁρμονίᾳ πρὸς τὴν φύσιν τῶν κυβερνήσεων. Ὑπάρχουν τρία εἴδη δυνατῶν κυβερνήσεων: τὸ δημοκρατικὸν (république), ὅπερ δύναται νὰ εἶναι ἀριστοκρατικὸν ἢ λαοκρατικὸν (démocratique), τὸ μοναρχικὸν καὶ τὸ δεσποτικόν. Εἰς τὰ διάφορα ταῦτα εἴδη ἀντιστοιχοῦν νόμοι διαφόρων κατηγοριῶν διότι τὸ θεμέλιον τῶν δημοκρατιῶν εἶναι ἡ ἀρετὴ (δηλαδὴ ἡ ἀγάπη τῆς πατρίδος καὶ τῆς ἰσότητος), τῶν μοναρχιῶν ἡ τιμὴ (δηλαδὴ ἡ τιμοκρατία, τὰ προνόμια καὶ αἱ διακρίσεις) καὶ τοῦ δεσποτισμοῦ ὁ φόβος. Ἐξουσίαι, κατ' αὐτόν, ὑπάρχουν τριῶν εἰδῶν: ἡ νομοθετική, ἡ ἐκτελεστικὴ καὶ ἡ δικαστική. Ἐν τούτοις ἡ νομοθετικὴ θέτει κανόνας δικαίου, συμφώνως πρὸς τοὺς ὁποίους δέον νὰ συμπεριφέρωνται τὰ ἄτομα τῆς πολιτείας καὶ οἱ ὁποῖοι εἶναι ὑποχρεωτικοὶ καὶ διὰ τὰς δύο ἄλλας ἐξουσίας, ἡ ἐκτελεστικὴ θέτει εἰς ἐκτέλεσιν τοὺς ὑπὸ τῆς νομοθετικῆς τεθέντας νόμους καὶ τέλος ἡ δικαστικὴ δικάζει τοὺς παραβάτας τούτων. Καὶ αἱ τρεῖς αὐται διάφοροι ἐξουσίαι δὲν πρέπει νὰ συγκεντροῦνται ἐν ἑνὶ καὶ τῷ αὐτῷ προσώπῳ, διότι τότε θὰ ἐπήρχετο σύγχυσις τῶν ἐξουσιῶν, ἐξ ἧς γεννᾶται ἡ τυραννία. Ἐκ γενικῶν ἀρχῶν ὁρμώμενος ὁ Μοντεσκιὲ κατέρχεται εἰς λεπτομερειακὰς πολυαρίθμους ἐφαρμογάς. Ὁμιλεῖ περὶ τῆς ἀγωγῆς εἰς τὰς δημοκρατίας, εἰς τὰς μοναρχίας καὶ εἰς τὰ δεσποτικὰ κράτη, περὶ τῶν πολιτικῶν νόμων, τῶν συνθηκῶν κοινωνικῆς ζωῆς κλπ. Ἐξετάζει τὰς σχέσεις τοῦ νόμου πρὸς τὴν ἄμυναν, τὴν ἐπίθεσιν, τὴν πολιτικὴν ἐλευθερίαν, τοὺς φόρους. Ἐρευνᾷ τὴν σχέσιν τῶν νόμων πρὸς τὸ κλῖμα, τὴν φύσιν τοῦ ἐδάφους, τὰ ἤθη, τὰ ἔθιμα, τὸ ἐμπόριον, τὸν πληθυσμόν, τὴν θρησκείαν κτλ. Ποιεῖται διάκρισιν μεταξὺ τῶν θείων καὶ τῶν ἀνθρωπίνων νόμων καὶ θέτει τὴν ἀρχὴν ὅτι δὲν πρέπει νὰ ρυθμίζεται διὰ τῶν θείων νόμων ὅ,τι εἶναι ρυθμιστέον διὰ τῶν ἀνθρωπίνων, καὶ ἀντιστρόφως. Πρὸς ὑποστήριξιν τῶν θεωριῶν του παραθέτει ἀπειράριθμα παραδείγματα καὶ παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν συμβαινόντων. Ὁ Μοντεσκιὲ ἤσκησεν ἐπὶ τοῦ πολιτικοῦ κόσμου μεγίστην ἐπιρροήν. Ἦτο μοναρχικὸς κατὰ τὸν ἰδικόν του τρόπον καὶ ἐθεώρει τὴν βασιλικὴν ἐξουσίαν ἐπαρκῆ, ἰσοζυγιζομένην διὰ τῆς ὑπάρξεως τῆς τάξεως τῶν εὐγενῶν καὶ τῶν παρλαμέντων.

Ὁ Μοντεσκιὲ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἀνδρῶν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, δυνάμενος νὰ παραβληθῇ πρὸς τὸν Βολταῖρον, τὸν Ρουσσὼ καὶ τὸν Ντιντερό. Ὑπῆρξεν ἐξ ἴσου μὲ αὐτοὺς πρόδρομος τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, μολονότι δὲν ἦτο δημοκρατικός. Ἡ φιλελευθερία του εἰς ὅλους τοὺς τομεῖς τῆς κοινωνικῆς ζωῆς τὸν κατέταξε μεταξὺ τῶν ἐχθρῶν τοῦ παλαιοῦ καθεστῶτος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *D'Alembert*, Éloge de Montesquieu ἐν τῷ Ε' τόμῳ τῆς «Encyclopédie» τῶν *Diderot* κλπ. (1755).— *Villemain*, Éloge de Montesquieu (1816).— *A. Sorel*, Montesquieu ἐν τῷ «Collection des grands écrivains de la France» (1887).— *Barckhausen*, Montesquieu, ses idées et ses oeuvres (1907).—*Dedieu*, Montesquieu (1913).— *Jaubert*, Montesquieu économiste (1901).— Εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἔχουν μεταφρασθῆ: «Ἀρσάκης καὶ Ἰσμηνία», καὶ «Σκέψεις περὶ τῶν αἰτίων τοῦ μεγαλείου καὶ τῆς καταπτώσεως τῶν Ρωμαίων».

Θ. Π.

**Μοντεσκιοῦ** (Montesquiou), ***Ροβέρτος***, *κόμης τοῦ—*. Γάλλος ποιητὴς (1855—1921). Ἐδημοσίευσε διαφόρους ποιητικὰς συλλογάς, ἐν αἷς: «Αἱ νυκτερίδες» (1892), «Αἱ χυαναῖ Ὁρτενσίαι» (1896), «Τὰ κόκκινα μαργαριτάρια» (1899), καὶ μελέτας φιλολογικάς, κοινωνιολογικὰς καὶ αἰσθητικάς.

Ι. Μ. Τ.

**Μοντεσπὰν** (Montespan), ***Φραγκίσκη - Ἀθηναῒς*** de Rochechouart, *μαρκησία ντὲ—*. Μία ἐκ τῶν εὐνοουμένων τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' (1641—1707), καταγομένη ἐξ ἐπιφανοῦς οἰκογενείας τοῦ Ποατοῦ. Ἦτο δευτέρα θυγάτηρ τοῦ μαρκησίου τοῦ Μορτμάρτ καὶ πρίγκιπος τοῦ Τονναὶ Σαράντ, Γαβριήλ, εἰσῆλθε δὲ κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν αὐλὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα δεσποινὶς ντὲ Τονναὶ Σαράντ. Ἀνετράφη καὶ ἐξεπαιδεύθη εἰς τὸ ἐν Σαὶντ μοναστήριον τῆς Ἁγίας Μαρίας, τῷ δὲ 1660 εἰσῆλθεν εἰς τὴν αὐλήν, συγχρόνως μετὰ τῆς δεσποινίδος ντὲ Λὰ Βαλλιέρ, ὡς δεσποινὶς ἐπὶ τῶν τιμῶν τῆς βασιλίσσης. Χάρις εἰς τὸ σωματικὸν κάλλος καὶ τὸ σπινθηροβόλον πνεῦμα της ἐγένετο εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ἀγαπητὴ εἰς τὴν βασίλισσαν. Τῷ 1663 ἐνυμφεύθη τὸν *Λουδοβῖκον ντὲ Παρνταγιὰν - Γκοντρέν, μαρκήσιον ντὲ Μοντεσπάν*, ἡ δὲ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην διαγωγή της οὐδεμίαν ἐγέννα ὑποψίαν διὰ τὸ μέλλον, ὅτε δὲ ἡ Λὰ Βαλλιὲρ ἐγένετο ἐρωμένη τοῦ βασιλέως, ἔλεγεν: «Ἐὰν ἤμην τόσῳ δυστυχής, ὥστε νὰ μοῦ συμβῇ τοιοῦτόν τι, θὰ ἐκρυπτόμην διὰ τὸ ὑπόλοιπον τῆς ζωῆς μου». Ὀλίγα ὅμως παρῆλθον ἔτη καὶ ἡ μαρκησία ντὲ Μοντεσπὰν ἀντικαθίστα αὐτὴν εἰς τὴν εὔνοιαν τοῦ βασιλέως (Ἰούλιος 1667), μετὰ δύο δὲ ἔτη ἐγέννατο τὸ πρῶτον ἐκ τῶν μετ' αὐτοῦ ἀποκτηθέντων καὶ ἀναγνωρισθέντων ἑπτὰ τέκνων.

*Μαρκησία ντὲ Μοντεσπάν.*

Ὁ σύνδεσμος διήρκεσε δώδεκα ὁλόκληρα ἔτη, διακοπτόμενος συχνὰ ἐκ τῶν ἀπιστιῶν τοῦ βασιλικοῦ ἐρωμένου. Τέλος αἱ διαρκεῖς πρὸς τὸν βασιλέα ἐναντίον τῆς ἐρωμένης του παραινέσεις τοῦ Βοσσουέτου, ἡ ἀποκάλυψις τοῦ ἐνεργοῦ ρόλου τὸν ὁποῖον ἔπαιξεν αὕτη εἰς τὴν δηλητηρίασιν. τῆς δεσποινίδος ντὲ Φοντὰνζ καὶ ἡ αὐξάνουσα διαρκῆς ἐπιρροὴ τῆς κυρίας ντὲ Μαιντενόν, παιδαγωγοῦ τῶν τέκνων τῆς Μοντεσπάν, ἐπέφεραν τὴν ὁριστικὴν ψυχρότητα τοῦ βασιλέως. Ἔκτοτε ἡ μαρκησία ἔπαυσε προσκαλουμένη εἰς τὰς τελετὰς τῆς αὐλῆς, ἐξ ἧς ἀπεσύρθη μετὰ ἐπταετίαν (1691) εἰς τὴν ὑπ' αὐτῆς ἱδρυθεῖσαν ἐν Παρισίοις μονὴν τοῦ Ἁγίου Ἰωσήφ. Καθ' ὅλον τὸ διάστημα τῆς ἰσχύος της ἡ Μοντεσπὰν ὑπεστήριξε θερμῶς τὰ γράμματα καὶ τὰς τέχνας, ἐκατηγορήθη ὅμως ὡς σπάταλος, σκληρόκαρδος καὶ ὑπερήφανος καὶ πολλαπλῶς ἐπεκρίθη ὑπὸ τῶν πλείστων ἐκ τῶν συγχρόνων της.

Χ. Δ.

**Μοντεσσόρι** (Montessori), ***Μαρία***. Ἰταλὶς παιδαγωγός, γεννηθεῖσα τῷ 1869. Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ρώμης, ὑπῆρξε δὲ ἡ πρώτη γυνή, ἥτις ἠξιώθη ἀκαδημαϊκοῦ πτυχίου ἐν Ἰταλίᾳ. Ὡς βοηθὸς ἐν τῇ ψυχιατρικῇ κλινικῇ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1880—1900 ὡς διευθύντρια τῆς ὀρθοφρενικῆς σχολῆς, ἀφιερωθεῖσα μετὰ στοργῆς εἰς τὴν θεραπείαν καὶ ἀγωγὴν τῶν ἐκφύλων, βλακῶν καὶ διανοητικῶς ὑστερημένων παιδίων, ἤχθη εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι παρόμοιαι μέθοδοι τῶν ἐφαρμοζομένων ἤδη ὑπ' αὐτῆς διὰ τὴν ἀγωγὴν τῶν παιδίων τούτων θὰ ἠδύναντο νὰ ἐφαρμοσθῶσι καὶ ἐπὶ τῶν πνευματικῶς ὑγιῶν. Ὑπὸ τὸ κράτος τῆς πεποιθήσεως ταύτης ἡ Μοντεσσόρι παραιτεῖται τῆς θέσεώς της διὰ νὰ ἐγγραφῇ εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου, ἔνθα κατέγινεν εἰς τὴν σπουδὴν τῆς παιδαγωγικῆς τῶν κανονικῶν παιδίων. Παραλλήλως πρὸς τὰς θεωρητικὰς αὐτῆς σπουδὰς ἐμελέτησε καὶ ἐν τῇ πράξει, ἐντὸς τῶν σχολείων τῆς δημοτικῆς ἐκπαιδεύσεως, τὴν ἐφαρμογὴν τῶν παλαιῶν σχολικῶν θεσμῶν, ἐπείσθη δὲ ταχέως περὶ τῆς ἀπολύτου χρεοκοπίας αὐτῶν, ἰδίως δὲ τοῦ θεσμοῦ ὅστις ἀπῄτει παρὰ τοῦ τροφίμου παθητικὴν ἀκινησίαν καὶ καθήλωσιν αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ θρανίου. Ἔκτοτε ζωηρὰ ἐπιθυμία τῆς Μοντεσσόρι ὑπῆρξεν ὁ πειραματισμὸς ἐπὶ τῶν διανοητικῶς ἀρτίων παιδίων τῶν κατωτέρων τάξεων τοῦ δημοτικοῦ σχολείου, τῶν μεθόδων ἃς εἶχεν ἤδη ἐφαρμόσει ἐπὶ τῶν βλακῶν καὶ τῶν διανοητικῶς ὑστερημένων.

*Μαρία Μοντεσσόρι.*

Τὴν εὐκαιρίαν τοῦ τοιούτου πειραματισμοῦ παρέσχεν εἰς τὴν Μοντεσσόρι, καὶ δὴ ἐπὶ ἐδάφους γονιμωτέρου, ἤτοι ἐπὶ παιδίων διανυόντων τὸ προσχολικὸν στάδιον τῆς ἡλικίας των (3—7 ἐτῶν), ἡ πρόσκλησις τοῦ μηχανικοῦ Ἐδουάρδου Ταλάμο, διευθυντοῦ τοῦ ἰνστιτούτου τῆς λαϊκῆς κατοικίας ἐν Ρώμῃ, ὅστις ἀνέθεσεν εἰς αὐτὴν τὴν ὀργάνωσιν σχολείων διὰ τὴν ἡλικίαν ταύτην ἐντὸς τῶν λαϊκῶν πολυκατοικιῶν. Τὸ πρῶτον σχολεῖον τοῦ εἴδους τούτου ἱδρύθη τῷ 1907, ἐδόθη δὲ εἰς αὐτὸ ἡ ἐπωνυμία «Σπίτι τῶν παιδιῶν» (Casa dei Bambini). Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἱδρύθησαν ἕτερα δύο, ἐπίσης ἐν Ρώμῃ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1909, ἡ ἑλβετικὴ Ἰταλία ἤρξατο προσαρμόζουσα τὰ φροβελιανὰ νηπιαγωγεῖα της πρὸς τὰς νέας μεθόδους τῆς Μοντεσσόρι. Ἔκτοτε τὸ σύστημα τοῦ «Σπιτιοῦ τῶν παιδιῶν» διεδόθη εἰς τὴν Ἀμερικήν, τὴν Ἀγγλίαν, Γερμανίαν, Δανίαν, τὰς σκανδιναυϊκὰς χώρας καὶ ἀλλαχοῦ. Τὸ πρῶτον ἐκ τῶν ἱδρυμάτων τούτων, ὅπερ ἐλειτούργησεν ὑπὸ τὴν ἄμεσον ἐποπτείαν τῆς Μοντεσσόρι, ὑπῆρξε δι' αὐτὴν στάδιον εὐρέος πειραματισμοῦ τῆς ἐπιστημονικῆς παιδαγωγικῆς καὶ τῆς παιδικῆς ψυχολογίας. Ἡ διετὴς ἐργασία τῆς Μοντεσσόρι εἰς τὰ «Σπίτια τῶν παιδιῶν» ἀντιπροσωπεύει σειρὰν πειραματισμῶν ἐπὶ τῆς ἀγωγῆς τῶν νηπίων, μὲ τὰς μεθόδους τὰς ἐφαρμοσθείσας ἤδη ὑπ' αὐτῆς ἐπὶ τῶν «ὑστερημένων», ἀποτέλεσμα δὲ τῆς ἐργασίας ταύτης ὑπῆρξεν ἡ δημιουργία τοῦ καλουμένου *συστήματος Μοντεσσόρι*, ἀποτελοῦντος, παρὰ τὸ φροβελιανόν, νέον σύστημα ἀγωγῆς τῶν νηπίων.

Βασικὴ προϋπόθεσις τοῦ συστήματος τούτου εἶναι ἡ ἐλευθερία τῶν μαθητῶν. Τὸ σχολεῖον ὀφείλει νὰ ἐπιτρέπῃ τὰς ἐλευθέρας καὶ φυσικὰς ἐκδηλώσεις τοῦ παιδίου, διότι μόνον ὑπὸ τὴν προϋπόθεσιν ταύτην ἀποβαίνει δυνατὴ ἡ γένεσις καὶ δημιουργία τῆς ἐπιστημονικῆς παιδαγωγικῆς. Μόνον ἐπὶ μαθητῶν ἐλευθέρως καὶ κατὰ τρόπον φυσικὸν ἐκδηλουμένων ἀποβαίνει δυνατὴ ἡ ἐφαρμογὴ τῆς μεθόδου τῆς παρατηρήσεως, ἐφόσον βασικὴ ἀξίωσις πάσης ἐπιστημονικῆς παρατηρήσεως εἶναι ἡ ἐλευθέρα, ἡ αὐθόρμητος ἐκδήλωσις τοῦ ἀντικειμένου, ἐφ' οὗ αὕτη γίνεται. Διδάσκαλος ἐνεργῶν ἐπὶ τῇ βάσει τῆς μεθόδου ταύτης, «διδάσκαλος-σοφός», ὡς ἀποκαλεῖ τοῦτον ἡ Μοντεσσόρι, θὰ ἦτο ἀδύνατον νὰ ἐκτελέσῃ παρατηρήσεις ἐντὸς τοῦ παλαιοῦ σχολείου, ἔνθα πᾶσα αὐθόρμητος ἐκδήλωσις τοῦ παιδὸς ἔχει καταπνιγῇ, ἔνθα οἱ μαθηταὶ εἶναι καθηλωμένοι ἐπὶ τῶν θρανίων, ὅπως ἐπίσης ἀδύνατος θὰ ἦτο ἡ διενέργεια ἐπιστημονικῶν παρατηρήσεων ἐκ μέρους σοφοῦ παρατηρητοῦ τῶν φυσικῶν φαινομένων, ἐπὶ χρυσαλλίδων καθηλωμένων διὰ καρφίδων ἐντὸς ὑαλοσκεποῦς κυτίου. Ἐκτὸς ὅμως τούτου ἀπαραίτητος ἐπίσης προϋπόθεσις πάσης ἐπιστημονικῆς ἀγωγῆς εἶναι ἡ ἐλευθέρα ἀνάπτυξις τῶν αὐθορμήτων ἐκδηλώσεων τῆς παιδικῆς προσωπικότητος.

Οὕτω, μία τῶν βασικῶν φροντίδων τῆς Μοντεσσόρι ὑπῆρξεν ἡ διαρρύθμισις τῶν σχολικῶν σκευῶν καὶ ἐπίπλων, ἀλλὰ καὶ τοῦ σχολικοῦ περιβάλλοντος ἐν γένει, κατὰ τρόπον ἐπιτρέποντα τὴν ἐλευθέραν καὶ ἄνετον κίνησιν τῶν νηπίων. Ἡ ἀποσκοράκισις τοῦ θρανίου καὶ ἡ ἀντικατάστασις αὐτοῦ διὰ μικρῶν εὐμετακινήτων τραπεζίων καὶ καθισμάτων ὑπῆρξε μία τῶν κυριωτέρων μετατροπῶν εἰς τὸ κε-

Digitized by Google

φάλαιον τοῦτο. Ἡ Μοντεσσόρι περαιτέρω, συνεπὴς πρὸς τὴν ἀρχὴν τῆς ἐλευθερίας, τῆς ἐλευθέρας κινήσεως, ἐκηρύχθη πολέμιος τῆς πειθαρχίας τοῦ παλαιοῦ σχολείου, τῆς ἐπιτυγχανομένης μόνον διὰ τῆς ἀκινησίας, συνηγορεῖ δὲ ὑπὲρ τῆς ἐνεργοῦ πειθαρχίας, ἥτις βασίζεται ἐπὶ τοῦ θρησκευτικοῦ σεβασμοῦ τῆς αὐθορμήτων ἐκδηλώσεων τοῦ παιδός. Πειθαρχημένον ἄτομον, κατὰ τὴν Μοντεσσόρι, δὲν εἶναι ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον κατέστη τεχνητῶς σιωπηλὸν ὥσπερ βωβός, καὶ ἀκίνητον, ὥσπερ παραλυτικός, διότι εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην εὑρισκόμεθα πρὸ ἀτόμου ἐξουθενωμένου, οὐδαμῶς δὲ πειθαρχημένου. Καὶ ὅμως ἡ ἐλευθερία τοῦ παιδὸς πρέπει νὰ ἔχῃ ὡς ὅριον τὸ ὁμαδικὸν συμφέρον. Ἑπομένως εἶναι ἀνάγκη νὰ ἀπαγορεύσωμεν εἰς τὸ «παιδί» πᾶν ὅ,τι δύναται νὰ βλάψῃ ἢ νὰ προσβάλῃ τοὺς ἄλλους, πᾶν ὅ,τι ἔχει τὴν ἔννοιαν ἀγενείας ἢ πράξεως ἀναξιοπρεποῦς. Πᾶσα ὅμως ἄλλη ἐκδήλωσις ἔχουσα σκοπὸν ὠφέλιμον, οὐχὶ μόνον ἐπιτρέπεται, ἀλλὰ καὶ πρέπει νὰ γίνεται ἀντικείμενον παρατηρήσεως ἐκ μέρους τοῦ διδασκάλου. Διότι τοῦτο ἀκριβῶς εἶναι τὸ οὐσιῶδες. Εἰς τὴν περίπτωσιν ταύτην ὁ διδάσκαλος ὀφείλει νὰ εἶναι ὁ ὑπομονητικὸς καὶ οὐχὶ ὁ σπεύδων πρὸς ἐνεργὸν ἐπέμβασιν. Καὶ ἡ ὑπομονή του αὕτη θὰ εἶναι τὸ ἀποτέλεσμα ἀορέστου περιεργείας καὶ ἀπολύτου σεβασμοῦ πρὸς τὸ φαινόμενον, ὅπερ ἐπιθυμεῖ νὰ παρατηρήσῃ. Ὁ διδάσκαλος ὀφείλει νὰ ἐννοῇ, νὰ αἰσθάνεται τὴν θέσιν του ὡς παρατηρητοῦ. Ἑστία ἐνεργείας εἶναι τὸ φαινόμενον. Πρὸς τοῦτο ὀφείλομεν νὰ ἀποφεύγωμεν ἀπολύτως τὴν παρακώλυσιν πάσης αὐθορμήτου κινήσεως καὶ τὴν ἐπιβολὴν πράξεων ὑπαγορευομένων ὑπὸ ξένης θελήσεως, ἐφόσον βεβαίως δὲν πρόκειται περὶ ἀνωφελῶν ἢ ἐπιζημίων ἐνεργειῶν, αἵτινες ἀσφαλῶς πρέπει νὰ καταστέλλωνται.

Αἴθουσα, ἐντὸς τῆς ὁποίας ὅλα τὰ παιδία εὑρίσκονται ἐν κινήσει, χωρὶς ὅμως νὰ προβαίνωσιν εἰς ἀγενεῖς ἢ ἐπιζημίους διὰ τοὺς ἄλλους πράξεις, εἶναι ἀσφαλῶς ἄριστα πειθαρχημένη. Ἡ τακτοποίησις τῶν μαθητῶν, ὅπως τοῦτο συμβαίνει εἰς τὰ συνήθη σχολεῖα, ὁ καθορισμὸς ἰδίας θέσεως δι' ἕκαστον τῶν μαθητῶν, ἡ ἀξίωσις τοῦ διδασκάλου νὰ τηρῆται ἐκ μέρους αὐτῶν ἡ συμπεφωνημένη τάξις, θὰ πραγματοποιηθῶσιν ἀσφαλῶς βραδύτερον, ὡς πρῶται προϋποθέσεις τῆς ὁμαδικῆς ἀγωγῆς.

Συναφῶς πρὸς τὰ ἀνωτέρω ἐκτεθέντα μία τῶν κυριωτάτων ἐπιδιώξεων τοῦ συστήματος Μοντεσσόρι εἶναι νὰ καταστήσῃ τὸν παῖδα ἀνεξάρτητον. Κατὰ ταῦτα ἡ πρώτη μορφὴ τῆς παιδευτικῆς ἐπεμβάσεως πρέπει νὰ τείνῃ εἰς τὸ νὰ ὁδηγήσῃ τὸν παῖδα εἰς τὰς τρίβους τῆς ἀνεξαρτησίας. Ἡ ἐλευθερία προϋποθέτει τὴν ἀνεξαρτησίαν. Τὸ παιδὶ πρέπει νὰ μάθῃ νὰ ἐνεργῇ ἀφ' ἑαυτοῦ καὶ νὰ κατακτήσῃ τὸ ταχύτερον τὰς ὠφελίμους ἐνεργείας καὶ πράξεις (ἔνδυσις, ἔκδυσις, βάδισμα, νίψιμον κλπ.). Πᾶσα ἀνωφελὴς πρὸς αὐτὸ παροχὴ βοηθείας ἀποτελεῖ κώλυμα εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῶν φυσικῶν αὐτοῦ δυνάμεων. «Ὁ ὑπηρετούμενος ζημιοῦται εἰς τὴν ἀνεξαρτησίαν του».

Φυσικὴ συνέπεια ὅλων τούτων εἶναι ἡ κατάργησις τῶν ποινῶν καὶ ἀμοιβῶν. Ἡ μόνη ἐπιτρεπομένη τιμωρία διὰ τὰ παιδία, ἅτινα ἐξακολουθοῦσιν ἐνοχλοῦντα τοὺς ἄλλους, ἢ διαπράττοντα πράξεις ἀναξιοπρεπεῖς ἢ ἀγενεῖς, εἶναι ἡ ἀπομόνωσις. Ὁ ἀπομονούμενος ὅμως γίνεται ἐκ μέρους τῆς διδασκαλίσσης ἀντικείμενον ἰδιαιτέρων φροντίδων, παρομοίων πρὸς τὰς παρεχομένας εἰς ἀσθενοῦντα παιδία. Τὸ εἶδος τῆς τιμωρίας ταύτης ἀπεδείχθη ἐν τῇ πράξει λίαν ἀποτελεσματικόν.

Ἡ διδασκαλία, δεδομένου ὅτι κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη ἡ πειθαρχία δὲν ἀποβλέπει ἀκόμη εἰς τὴν ὁμαδικὴν ἐν τῷ σχολείῳ τάξιν, πρέπει νὰ γίνηται κατ' ἀνάγκην ἀτομικῶς. Βασικαὶ ἰδιότητες τῆς ἀτομικῆς διδασκαλίας εἶναι ἡ συντομία, ἡ ἁπλότης, ἡ ἀντικειμενικότης. Ἡ συντομία, ἐφόσον μέτρον τῆς τελείας διδασκαλίας ὀφείλει νὰ εἶναι ὁ περιορισμὸς τῶν λέξεων εἰς τὰς ἀπολύτως ἀναγκαίας. Ἡ διδασκάλισσα, παρασκευάζουσα τὴν διδασκαλίαν της, ὀφείλει νὰ ὑπολογίζῃ, νὰ ζυγίζῃ τὰς λέξεις τὰς ὁποίας πρόκειται νὰ προφέρῃ πρὸ τῶν μαθητῶν της, ἀκολουθοῦσα ἐν τούτῳ τὸ σοφὸν πρὸς τὸν διδάσκαλον παράγγελμα τοῦ Δάντου: «Τὰ λόγια σου νἆναι μετρημένα». Ἡ ἁπλότης, διότι ἡ διδασκαλία ὀφείλει νὰ εἶναι ἀπηλλαγμένη παντὸς ὅ,τι δὲν εἶναι ἡ ἀπόλυτος ἀλήθεια. Ἡ ἀντικειμενικότης, ἤτοι ἡ τελεία ἐξαφάνισις τῆς προσωπικότητος τοῦ διδάσκοντος. Τὸ κέντρον πρέπει νὰ κατέχῃ τὸ ἀντικείμενον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐπιθυμοῦμεν νὰ ἐπισύρωμεν τὴν προσοχὴν τοῦ παιδίου. Ἡ σύντομος καὶ ἁπλῆ διδασκαλία εἶναι σχεδὸν πάντοτε ἑρμηνεία τοῦ ἀντικειμένου καὶ τῆς ἐνδεχομένης ὑπὸ τοῦ παιδὸς χρήσεως αὐτοῦ. Κατὰ τὰς διδασκαλίας ταύτας κύριος ὁδηγὸς πρέπει νὰ εἶναι ἡ παρατήρησις. Ἡ διδάσκουσα θὰ παρατηρήσῃ ἐὰν τὸ παιδίον ἐνδιαφέρεται διὰ τὸ ἀντικείμενον, κατὰ ποῖον τρόπον ἐνδιαφέρεται, ἐπὶ πόσον χρονικὸν διάστημα κλπ., παρακολουθοῦσα ἐπίσης τὴν μιμικὴν τοῦ προσώπου του καὶ προσέχουσα μήπως παραβλάψῃ τὴν ἀρχὴν τῆς ἐλευθερίας. Ἐὰν ἡ ἑρμηνεία τοῦ ἀντικειμένου δὲν γίνῃ καταληπτὴ ὑπὸ τοῦ παιδός, ἡ διδασκάλισσα δὲν πρέπει νὰ ἐπιμείνῃ εἰς τὴν ἐπανάληψιν τῆς διδασκαλίας, ἀναβάλλουσα αὐτὴν δι' εὐθετωτέραν στιγμὴν καὶ νὰ προσέξῃ μήπως σχηματισθῇ παρὰ τῷ παιδὶ ἡ ὑπόνοια ὅτι ἠπατήθη ἢ ὅτι δὲν ἠννόησε, τὸ μὲν διότι θὰ τὸ ἠνάγκαζε νὰ ἐννοήσῃ, τὸ δὲ διότι θὰ ἠλλοίωνε τὴν φυσικὴν κατάστασιν, τὴν ὁποίαν ὀφείλει νὰ μεταχειρισθῇ πρὸς ψυχολογικὰς παρατηρήσεις.

Εἰς τὸ ὡρολόγιον πρόγραμμα τῶν «Σπιτιῶν τοῦ παιδιοῦ» περιλαμβάνονται συνήθως αἱ ἀσκήσεις τῆς πρακτικῆς ζωῆς (ἔνδυσις, ἔκδυσις, νίψιμον, καθαριότης, ἀσκήσεις καλῆς συμπεριφορᾶς, λεκτικαὶ ἀσκήσεις κτλ.), αἱ πνευματικαὶ ἀσκήσεις (μικραὶ ἀντικειμενικαὶ διδασκαλίαι διακοπτόμεναι ὑπὸ μικρῶν διαλειμμάτων, ὀνοματολογία, ἀσκήσεις αἰσθήσεων), ἡ ἁπλῆ γυμναστικὴ (συνήθεις κινήσεις ἐκτελούμεναι μετὰ χάριτος, φυσικὴ στάσις τοῦ σώματος, βάδισις, χαιρετισμός, παρουσίασις ἀντικειμένων μετὰ χάριτος καὶ εὐγενείας κτλ.), τὰ ἐλεύθερα παιγνίδια, τὰ παιγνίδια εἰς τὸ ὕπαιθρον, αἱ χειροτεχνικαὶ ἐργασίαι (πλαστική, ἰχνογραφία κτλ.), ὁμαδικὴ γυμναστικὴ καὶ ᾆσμα, εἰ δυνατὸν ἐν ὑπαίθρῳ, κηπουρικαὶ καὶ ζῳοκομικαὶ ἐργασίαι. Ἐκεῖνο ὅμως εἰς τὸ ὁποῖον ἀποδίδει βασικὴν σημασίαν ἡ Μοντεσσόρι εἶναι ἡ ἀγωγὴ τῶν αἰσθήσεων, ἡ σκοπὸν ἔχουσα νὰ ἐκλεπτύνῃ τὴν διαφορικὴν τελειοποίησιν τῶν ἐξωτερικῶν ἐρεθισμῶν δι' ἐπανειλημμένων ἀσκήσεων, δημιουργοῦσα οὕτω ἀνθρώπους παρατηρητικοὺς καὶ παρεσκευασμένους διὰ τὴν ἀντιμετώπισιν τῆς πρακτικῆς ζωῆς. Πρὸς τοῦτο χρησιμοποιοῦνται διδακτικὰ μέσα (ὄργανα), ἅτινα, προάγοντα τὴν αὐτοαγωγήν, ἐπιτρέπουσι τὴν μεθοδικὴν ἀγωγὴν τῶν αἰσθήσεων. Ἡ διδάσκουσα καὶ ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ διδάσκει ὀλίγα, ἀλλὰ παρατηρεῖ πολύ, κύριον δὲ ἔργον αὐτῆς εἶναι νὰ διευθύνῃ τὰς ψυχικὰς ἐνεργείας τοῦ παιδὸς καὶ τὴν φυσιολογικήν του ἀνάπτυξιν, ἐξ οὗ καὶ ὁ τίτλος ὁ ἀποδοθεὶς εἰς αὐτὴν παρὰ τῆς Μοντεσσόρι διευθύντρια.

Μὲ τὴν ἀγωγὴν τῶν αἰσθήσεων στενῶς συνδεδεμένη εἶναι ἡ αἰσθητικὴ ἀγωγή. Αἱ αἰσθητικαὶ ἁρμονίαι τῆς φύσεως καὶ τῆς τέχνης εἶναι ἀπρόσιτοι εἰς πάντα μὴ ἔχοντα καλλιεργημένας τὰς αἰσθήσεις του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *D. Canfied Fischer*, Ἡ αὐτοαγωγὴ κατὰ τὴν Μοντεσσόρι (μετάφρ. *Ἀ. Κουρτίδη*, Ἀθῆναι 1921).— *Hecker und Muchow*, Fröbel und M. Montessori (1927).

Ι. Ι. ΙΟΡΔΑΝΙΔΗΣ

**Μοντεσσὺ ντὲ Μπαλλὸρ** (Montessus de Ballore), ***Φερδινάνδος ντὲ*** —. Γάλλος σεισμολόγος (1851—1923). Ἀρχικῶς ὑπηρέτησεν ὡς ἀξιωματικός, ἠσχολήθη κατόπιν εἰδικῶς μὲ τὴν σεισμολογίαν, δώσας πρῶτος τὴν παράστασιν τῆς σεισμικῆς παγκοσμίου εἰκόνος καὶ διὰ τοῦτο θεωρούμενος ὡς ὁ πατὴρ τῆς γεωγραφίας τῶν σεισμῶν. Τῷ 1907 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς σεισμολογικῆς ὑπηρεσίας ἐν Χιλῇ. Ἔγραψε: «Οἱ σεισμοί, σεισμολογικὴ γεωγραφία» (Παρίσιοι 1906), «Ἡ σεισμολογικὴ ἐπιστήμη» (1907), «Ἡ νεωτέρα σεισμολογία» (1911), «Σεισμικὴ ἱστορία τῶν μεσημβρινῶν Ἄνδεων» (ἱσπανιστὶ 1912—1916), «Γενικὴ βιβλιογραφία τῶν δονήσεων καὶ σεισμῶν» (ἱσπαν. 1915—1919), «Ἡ σεισμολογικὴ γεωλογία» κ. ἄ. Γ. Κ. Γ.

**Μόντε Τσενίζιο** (Monte Cenisio) *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Κενίσιον ὄρος*.

**Μοντετσιτόριο** (Montecitorio). Μέγαρον ἐν Ρώμῃ, ὅπου νῦν ἑδρεύει τὸ νομοθετικὸν σῶμα τῆς Ἰταλίας καὶ ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ὁποίου καλεῖται πολλάκις ἡ ἰταλικὴ βουλή. Ἡ κατασκευὴ αὐτοῦ ἤρχισε τῷ 1650, πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ χρησιμεύσῃ ὡς κατοικία τῆς οἰκογενείας τῶν Λουντοβίζι. Ἡ ἀνοικοδόμησις ἐξηκολούθησε κατόπιν ἐπὶ τοῦ πάπα Ἰννοκεντίου Ι' Παμφίλι, ὁ ὁποῖος προώριζεν αὐτὸ διὰ τοὺς συγγενεῖς του. Ὁ πάπας Ἰννοκέντιος ΙΒ' μετέβαλεν αὐτό, περὶ τὸ τέλος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, εἰς ἕδραν τῶν δικαστηρίων, κατόπιν τροποποιήσεων τὰς ὁποίας ἐπέφερεν ὁ ἀρχιτέκτων Κάρολος Φοντάνα. Κατὰ τὴν ναπολεόντειον περίοδον τὸ μέγαρον τοῦτο ἐχρησίμευσεν ὡς νομαρχεῖον, αἱ δὲ μεγαλοπρεπεῖς αἴθουσαί του εἶχον μεταβληθῆ εἰς κέντρον τῆς κοσμικῆς κινήσεως, τῶν μεγάλων ἑορτῶν καὶ τῶν χορῶν. Ἀπὸ τοῦ 1870 ἀπέβη ἕδρα τοῦ ἰταλικοῦ κοινοβουλίου. Τῷ 1918 κατεσκευάσθη ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Ἐρν. Μπαζίλε, πρὸς τὸ ὄπισθεν μέρος αὐτοῦ, νέα πτέρυξ, ἐπὶ ἐντελῶς νέου ρυθμοῦ, μὴ συμφωνοῦντος πρὸς τὸν τοῦ παλαιοῦ κτηρίου. Ἑκατέρωθεν τῆς εἰσόδου τῆς νέας πτέρυγος, ὅπου ὁδηγεῖ μεγάλη κλῖμαξ, ὑπῆρχον δύο συμβολικὰ ἀγάλματα τῆς ἰταλικῆς μοναρχίας, ἔργα τοῦ γλύπτου Τρενταχόστε. Ἡ μεγάλη αἴθουσα τῶν συνεδριάσεων εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων καὶ ἐπιβλητικωτέρων εἰς τὸ εἶδος της, ἔχει σχῆμα ἡμικυκλικὸν καὶ εἶναι ἐπενδεδυμένη διὰ γεγλυμμένου ξύλου δρυός. Φωτίζεται ἐκ τῆς ὀροφῆς, ἀποτελουμένης ἐξ ἐγχρώμου ὑάλου, κατὰ δὲ τὴν νύκτα ὁ φωτισμὸς αὐτῆς ἔχει ρυθμισθῆ οὕτως, ὥστε νὰ ὁμοιάζῃ πρὸς τὸν φωτισμὸν τῆς ἡμέρας. Τὸ ἄνω μέρος τῶν τοίχων, εὐθὺς μετὰ τὴν ὀροφήν, περιβάλλει τεράστιος ἀλληγορικὸς πίναξ τοῦ ζωγράφου Ἀριστείδου Σαρτόριο, συμβολίζων τὸ «ᾆσμα τῆς ἰταλικότητος», ἄνωθεν δὲ τοῦ προεδρείου ὀρειχάλκινος πίναξ τοῦ Δαυῒδ Καλάντρα συμβολίζων τὴν ἀποθέωσιν τοῦ οἴκου τῆς Σαβοΐας. Μ. Δ. Β.

**Μοντεφέλτρο** (Montefeltro) *[Γεωγρ.]*. Ὀρεινὴ περιφέρεια τῆς Ἰταλίας, ἐν Ρωμανίᾳ, πρὸς τὰ ΝΑ. τοῦ Σὰν Μαρῖνο, εἰς τὸ κέντρον τῆς ὁποίας ὑπάρχει τὸ παλαιὸν φρούριον *Σὰν Λέο*, ὅπερ κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐκαλεῖτο *Μοντεφέλτρο*. Ἀπετέλει ἄλλοτε κομιτείαν, ἐξαρτωμένην ἐκ τῆς ἀρχιεπισκοπῆς τῆς Ραβέννης. Ἐκ τῆς περιφερείας ταύτης ὠνομάσθη καὶ ἡ παλαιὰ οἰκογένεια τῶν κομίτων τοῦ Μοντεφέλτρο, οἵτινες ἀνεφάνησαν κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα καὶ ἦρξαν τῆς περιοχῆς μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ὁπότε συνεχωνεύθησαν πρὸς τοὺς δοῦκας τοῦ Οὐρβίνου. Μ. Δ. Β.

**Μοντεφιασκόνε** (Montefiascone) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Ρώμης. Κάτ. 9.563. Εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει ἐνδιαφέρουσαν μητρόπολιν μετὰ ὀκταγωνικοῦ θόλου καὶ καλλιτεχνικῶν ἀγαλμάτων. Παράγει ὀνομαστοὺς οἴνους, γνωστοὺς ὑπὸ τὸ ὄνομα «Est, est, est». Ἐπὶ τῆς θέσεως τοῦ Μοντεφιασκόνε θεωρεῖται πιθανὸν ὅτι ἔκειτο ἡ ἀρχαία ἐτρουσκικὴ πόλις Fanum Voltumnae. Μ. Δ. Β.

**Μοντεφιόρε** (Montefiore), *σὲρ* ***Μωϋσῆς-Χαΐμ***. Ἑβραῖος φιλάνθρωπος, ἰταλικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Λιβόρνῳ καὶ ἀποθανὼν ἐν Λονδίνῳ (1784—1885). Ἐγκατασταθεὶς ἐν Λονδίνῳ ὡς ἀργυραμοιβός, ἀπέκτησε κολοσσιαίαν περιουσίαν καὶ τῷ 1824 ἀπεσύρθη ἐκ τοῦ ἐμπορίου, ἀφιερωθεὶς ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν Ἰουδαίων καὶ τῆς ἰουδαϊκῆς ἰδέας. Τῷ 1829 ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἀνατολήν, τὰς δ' ἐντυπώσεις του ἐξέδωκε κατόπιν εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡμερολόγιον ταξιδίου εἰς τὴν Παλαιστίνην». Τῷ 1837 ἐξελέγη εἰς τὴν τιμητικὴν θέσιν τοῦ «Σέριφ» (Sheriff) τοῦ Λονδίνου καὶ τοῦ Μίντλεσσεξ καὶ ἔλαβε κατόπιν τὸν τίτλον τῆς εὐγενείας. Ἔλαβεν ὡς σύζυγον τὴν γυναικαδέλφην τοῦ Ρότσχιλντ Ἰουδὴθ Κοὲν καὶ ἐβοήθησε παντοιοτρόπως τοὺς Ἑβραίους, εἴτε παθόντας ἐκ σεισμοῦ, ἢ χολέρας, εἴτε καταδιωχθέντας, ὡς ἐν Μαρόκῳ, Συρίᾳ, Παλαιστίνῃ, Πολωνίᾳ καὶ Ρουμανίᾳ, πολλάκις ταξιδεύσας εἰς τὰς χώρας ταύτας καὶ ἐπιτυχὼν διάφορα ἀνακουφιστικὰ μέτρα ἀπὸ τὰς κατὰ τόπους κυβερνήσεις. Διένεμε πρὸς τοῦτο ἀφειδῶς τὸν πλοῦτόν του καὶ ἵδρυε διάφορα φιλανθρωπικὰ καταστήματα. Τῷ 1875 ἐξέδωκε καὶ νέον βιβλίον, ἐπ' εὐκαιρίᾳ τοῦ ἑβδόμου ταξιδίου του εἰς Παλαιστίνην, ὑπὸ τὸν τίτλον «Διήγησις τεσσαράκοντα ἡμερῶν διαμονῆς ἐν Παλαιστίνῃ». Ἡ σύζυγός του ἐξέδωκε τῷ 18[illegible] τὸ ἔργον «Ἰδιωτικὸν ἡμερολόγιον μιᾶς ἐπισκέψεως εἰς Αἴγυπτον καὶ Παλαιστίνην». Μ. Δ. Β.

**Μοντεφρίο** (Montefrio) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Γρενάδας. Κάτ. 11.800. Παράγει ὑφάσματα, οἰνόπνευμα καὶ σάπωνας. Τὸ Μοντεφρίο ἦτο ἓν τῶν συνοριακῶν ὀχυρῶν τῶν Μαυριτανῶν. Σῴζεται εἰσέτι ὁ ὑπ' αὐτῶν ἀνεγερθεὶς πύργος. Γ. Ι. Β.

**Μοντεχρῖστος** (Montechristo) *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Μοντεχρίστο*.

**Μόντζεε** (Mondsee). Λίμνη ἐν Ἄνω Αὐστρίᾳ ἐν τῇ περιοχῇ Σάλτσκάμεργκουτ, μήκους 10.5, πλάτους 2.5 χλμ., ἐπιφανείας 14.2 τ.χλμ. μεγίστου βάθους 68 μ. Συνδέεται διὰ τοῦ ποταμίσκου Ἀχ μετὰ τῶν γειτονικῶν λιμνῶν Τσέλλερ, Γιούγκφερν, Ἴρρ καὶ Ἄττερ. Εἰς τὸ ΒΔ. ἄκρον αὐτῆς κεῖται ἡ ὁμώνυμος κωμόπολις, ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Βαυαρίας Ὀδίλο, ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ ρωμαϊκοῦ συνοικισμοῦ Tarnanto. Κάτ. 1.5[illegible] (1923). Εἶναι πολυσύχναστος τόπος παραθερισμοῦ καὶ λουτρόπολις. Ἡ συγκοινωνία ἐξυπηρετεῖται διὰ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς καὶ ἀτμοπλοίων, ἐντὸς τῆς λίμνης. Ε. Κ.

**Μόντι** (Monti), ***Ἀλοΐσιος***. Ἐπιφανὴς Ἰταλὸς παιδίατρος, γεννηθεὶς τῷ 1839. Τῷ 1887 ἐγένετο ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Βιέννης, ἔνθα καὶ ἐσπούδασεν. Ἐδημοσίευσε σειρὰν ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν τοῦ κλάδου του ὡς καὶ μονογραφίας: «Περὶ διφθερίτιδος καὶ διφθεριτικοῦ ὀροῦ» (18[illegible]), «Περὶ χρονίας ἀναιμίας τῶν παίδων» (1892). Ἀπὸ τοῦ 1897 ἐξέδιδε τὰ «Πρακτικὰ θεραπευτικῆς παίδων τῆς πολυκλινικῆς Βιέννης». Ο. Ρ.

—**Μόντι** (Monti), ***Βικέντιος***. Ἰταλὸς ποιητὴς καὶ λογογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1754 εἰς Alfonsine ἐκ πατρὸς γεωργοῦ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1828 ἐν Μιλάνῳ. Διακόψας τὰς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Φερράρας νομικάς του σπουδάς, ἀφιερώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ἀρχαίας καὶ νεωτέρας λογοτεχνίας, νεανίας δ' ἔτι ἔγραψε τὸ «Ὅραμα τοῦ Ἰεζεκιήλ», βιβλικὸν ποιημάτων ἀναμιμνῆσκον τὸν τρόπον τοῦ Δάντη, ὅπερ ἀφιέρωσεν εἰς τὸν καρδινάλιον Μποργκέζε. Τοῦτον καὶ ἠκολούθησεν ἔπειτα εἰς Ρώμην, ὅπου ἔγινε δεκτὸς εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Ἀρκαδίας καὶ ὅπου ἔγραψε τὰ ποιήματα «Προσωποποιίαι τοῦ Περικλέους» καὶ «Ὡραιότης τοῦ Σύμπαν

Digitized by Google

ς». Τῷ 1781 διωρίσθη γραμματεὺς τοῦ δουκὸς πράσκι, ἀνεψιοῦ τοῦ πάπα, ἀπὸ τῆς ἐποχῆς δ' ἐίνης χρονολογεῖται ὁ σύνδεσμός του μετὰ τοῦ ἀρωλόγου Βισκόντι, ὅστις σπουδαίαν ἔσχεν ἐπ' αὐοῦ ἐπιρροήν. Τῷ 1793 ἔγραψε τὴν ἡμιτελῆ ἀποείνασαν «Bassvilliana», μακρὸν ποίημα, ἐν τῷ ὁποίῳ αυτηριάζονται αἱ ὑπερβολαὶ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως καὶ δὴ ἡ θανατικὴ ἐκτέλεσις Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Βραδύτερον ἠναγκάσθη ν' ἀκολουθήσῃ τὸν ὑπασπιστὴν τοῦ Ναπολέοντος Μαρμὸν εἰς Βολωνίαν καὶ Φλωρεντίαν καὶ διὰ τοῦ πρώτου ᾄσματος τοῦ ἐπικοῦ ποιήματός του «Προμηθεὺς» νὰ προβῇ εἰς ὁμολογίαν δημοκρατικῆς πίστεως. Ἀλλ' ἡ ἐντύπωσις ἐκ τῆς «Bassvilliana» δὲν εἶχεν ἐξουδετερωθῆ· τ' ἀντίτυπά της ἐκαίοντο δημοσίᾳ ἐν Μιάνῳ (1798) καὶ εἰς τὰς βιαίας ἐναντίον τοῦ Μόντι πιθέσεις ἐχρειάσθη ν' ἀπαντήσῃ ὁ ἐπιστήθιος ίλος του (ἔπειτα ἀντίπαλος) Οὔγος Φώσκολος. Ἐιδεικνύων τότε ἄκρον ἐπαναστατισμὸν ὁ Μόντι, μνησε τὴν καρατόμησιν Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Καταλυθείσης τῆς «Republica Cisalpina», ὁ Μόντι κατέφυγεν εἰς Παρισίους, ὅπου ἔγραψε τὴν ραγῳδίαν «Γάϊος Γράκχος» καὶ μίαν ᾠδὴν ἐπὶ τῇ ίκῃ τοῦ Ναπολέοντος εἰς Μαρέγγον. Βραδύτερον πανελθὼν εἰς τὴν Ἰταλίαν, διωρίσθη καθηγητὴς ἰς Παβίαν, ἔπειτα δὲ «ποιητὴς τῆς ἰταλικῆς κυβερήσεως καὶ ἐπίτροπος διὰ τὰς ὡραίας τέχνας ἐν τῇ χέσει των πρὸς τὴν λογοτεχνίαν», θέσιν ἣν διετήρησε καὶ ὑπὸ τὸ αὐστριακὸν καθεστώς. Μεταξὺ ῶν ἔργων του ἀναφέρομεν: τὴν «Μασκερονιάνα», Τὸν Βάρδον τοῦ Μέλανος δρυμοῦ», τὰς τραγῳδίας Ἀριστόδημον», «Γαλεόττον Μαμφρέδι» καὶ «Γάϊον ράκχον», ὡς καὶ «Μαθήματα», διαλόγους φιλολογιοῦ καὶ κριτικοῦ περιεχομένου, ἐνδιαφέρουσαν ἀλληογραφίαν, διορθώσεις καὶ προσθήκας εἰς τὸ Λεξιόγιον (Vocabolario) τῆς Κρούσκας.

Βικέντιος Μόντι.

Ἀξιοσημείωτον διὰ τὴν λυρικὴν ὁρμὴν εἶναι τὸ οίημα: «Bella Italia, amate sponde». Ἀλλ' ἴσως ὸ καλύτερον ἔργον τοῦ Μόντι εἶναι ἡ μετάφρασις ἰς λαμπροὺς ἀνομοιοκαταλήκτους ἐνδεκασυλλάους τῆς Ἰλιάδος (1808, 1810 καὶ 1812). Ἡ ἐν όγῳ μετάφρασις, γενομένη ἐκ λατινικοῦ κειμένου, δωκεν ἀφορμὴν εἰς τὸν Φώσκολον νὰ ὀνομάσῃ τὸν Μόντι «μέγαν μεταφραστὴν τῶν μεταφραστῶν τοῦ Ὁμήου». Ἐκ τῶν τραγῳδιῶν του ὁ «Ἀριστόδημος» εἶναι λασσικοῦ τύπου, ἐνῷ ὁ «Γαλεόττος Μαμφρέδι» φαίνεαι ἐμπνευσμένος ἐκ τοῦ σαιξπηρικοῦ προτύπου. Καὶ «Γάϊος Γράκχος» ἐνθυμίζει ὡρισμένας σκηνὰς οῦ σαιξπηρικοῦ Ἰουλίου Καίσαρος. Ὁ «Ἀριστόδηος» εἶναι ἐκ τῶν πρώτων ἔργων, ἅτινα ἀνεβιβάσθησαν κατὰ τὴν ἀνασύστασιν τοῦ ἑλληνικοῦ θεάτρου ἐν Σύρῳ τῷ 1830. Μετάφρασις αὐτοῦ ξεδόθη τὸ πρῶτον ὑπὸ Θεμ. Ἐλευθεριάδου ἐν Ἑρμουπόλει τῷ 1835. Ἐπηκολούθησαν δύο ἄλλαι κδόσεις, τῷ 1862 ἐν Ἀθήναις καὶ τῷ 1879 ἐν Σμύρνῃ.

Σύγχρονος τοῦ Φωσκόλου καὶ ὡς αὐτὸς μαθηῆς τῶν ἀρχαίων κλασσικῶν, συγκιρνᾷ τὸν κλασικισμόν του πρὸς τὰς νεωτερικὰς τάσεις τῆς ἐποχῆς, ἀντλῶν τὰς ἐμπνεύσεις του πότε ἀπὸ τὴν ἀρχαιότητα, πότε ἀπὸ τὴν Βίβλον καὶ ἐνθυμίζων ότε τὸν Σαίξπηρ, πότε τὸν Μίλτωνα καὶ πότε τὸν Κλόπστοκ. Ὑπῆρξε στενὸς φίλος διαφόρων Ἑλλήνων καὶ δὴ τοῦ Μουστοξύδου, τὸν Σολωμὸν δὲ ἶχε γνωρίσει νέον, σπουδαστὴν ἐν Ἰταλίᾳ.

«Ὁ χαρακτήρ του εἶναι κατώτερος τοῦ ταλάντου ου· ἀλλὰ καὶ τὸ τάλαντόν του δὲν ἱκανοποιεῖ· θὰ ροετίμα τις ὀλιγώτερον ἄπταιστον στιχουργίαν αὶ περισσοτέραν ψυχήν. Ἡ λατρεία τῆς ἀρχαίας έχνης χαρακτηρίζει τὸ ἔργον τοῦ Μόντι ἀπὸ τῆς Προσωποποιήσεως τοῦ Περικλέους» (1779), τῆς «Μουογονίας» (1793—1797), τοῦ «Προμηθέως» (1797) ιέχρι τῆς μεταφράσεως τῆς Ἰλιάδος, τῶν ᾠδῶν ιὰ τὸν γάμον τοῦ Ναπολέοντος καὶ τῶν μυθολοικῶν του μελετῶν. Μετ' αὐτοῦ καὶ πέριξ αὐτοῦ θριάμβευσεν ἡ κλασσικὴ τέχνη. Ἡ προσήλωσις ιὕτη εἰς τὴν ἀρχαιότητα δίδει κάποιαν ἑνότητα ἰς τὸ ἔργον του» (βλ. *H. Hauvette,* La littérature italienne). Ὁ Καρντούτσι ὅμως ἐκφράζει ἀνεπιφυλάκτως τὸν θαυμασμόν του πρὸς τὸ ἔργον οῦ Μόντι, τοῦ ὁποίου τοὺς στίχους παραβάλλει ρὸς τοὺς ὁρμητικοὺς ἱππεῖς τοῦ βασιλέως Μυράτ. Α. ΚΑΜΠΑΝΗΣ

**μοντία** (Montia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς ικογενείας τῶν *πορτουλακιδῶν*, περιλαμβάνον πόας τησίας, ὑδροχαρεῖς, ὧν τὰ ὀλίγα εἴδη ἀπαντῶσιν ἰς ὑγροὺς τόπους. Δ. Ν. Π.

**Μοντίγιο,** ***Εὐγενία.*** Σύζυγος Ναπολέοντος Γ', ὐτοκράτειρα τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Εὐγενία*).

**Μοντίκολο** (Monticolo), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς ἱστορικὸς (1852—1909). Τῷ 1902 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ρώμης. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς: «Τὸ χρονικὸν τοῦ διακόνου Ἰωάννου καὶ ἡ πολιτικὴ ἱστορία τῆς Βενετίας μέχρι τοῦ 1009» (1882), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Λυγκέων, «Ἀρχαιότατα χρονικὰ τῆς Βενετίας» (1900), «Οἱ κορυφαῖοι τῶν βενετικῶν καλῶν τεχνῶν ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τοῦ 1330» (1896—1905, εἰς 2 τόμ.), «Ἱστορία τῆς παιδαγωγικῆς ἐν Ἰταλίᾳ ἀπὸ τοῦ Δ' αἰῶνος μέχρι τῶν ἡμερῶν μας» (1908). Μ. Δ. Β.

**μοντικὸν** ***ὀξὺ*** *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μοντανικὸν ὀξύ*.

**Μοντίλια** (Montilla) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Κορδούης, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μέριδα—Μάλαγκα. Κάτ. 13.300. Παράγει οἴνους, ὑφάσματα καὶ εἴδη ἀγγειοπλαστικῆς. Γ. Ι. Β.

**Μοντίνο** (Mondino), ***ντὲ Λοῦτσι.*** Διάσημος Ἰταλὸς ἀνατόμος, γεννηθεὶς ἐν Βολωνίᾳ (1275—1327). Ὡς γενέτειράν του θεωροῦσί τινες τὴν Φλωρεντίαν. Διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν Βολωνίᾳ καὶ συνέγραψε τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Γαληνοῦ ἀνατομικὸν σύγγραμμα, διάσημον δέ, περατωθὲν τῷ 1316 καὶ σχὸν 25 ἐκδόσεις ὑπὸ τὸν τίτλον «Anatomia Mondini» (Βολωνία 1316). Ἡ ἀνατομικὴ αὕτη, ὀφειλομένη εἰς ἀνατομὰς ἃς πρῶτος οὗτος ἐποιήσατο ἐπὶ ἀνθρωπίνων πτωμάτων ἐν Ἰταλίᾳ, εἶναι μᾶλλον συνοπτική, ἐκτεινομένη εἰς τὴν μετὰ σαφηνείας περιγραφὴν τῆς σπλαγχνολογίας καὶ ὑποδεικνύουσα ἁπλῶς τοὺς μῦς, τὰ ἀγγεῖα καὶ ὀστᾶ· οὐδεμία δὲ ἐν αὐτῇ γίνεται μνεία περὶ νεύρων ὡς ἐκ τῆς ἁδρᾶς πιθανῶς ἀνατομῆς τῶν παρασκευασμάτων ὑπ' αὐτοῦ. Παρὰ ταῦτα τὸ σύγγραμμα τοῦτο ἐχρησιμοποιήθη ἐπὶ δύο καὶ πλέον αἰῶνας ὡς πρότυπον διὰ τὴν διδασκαλίαν τῆς ἀνατομικῆς ὑπὸ τῶν διαφόρων καθηγητῶν, καὶ ὡς ἐγχειρίδιον μελέτης διὰ τοὺς φοιτητὰς τῆς ἰατρικῆς. Τὸ ἔργον τοῦτο, ἐκτὸς τῶν πολυαρίθμων ἐκδόσεών του, ἔσχε καὶ πλείστας μεταφράσεις. Ο. Ρ.

**Μοντιντιὲ** (Montdidier) *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σόμ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν καὶ κατ. (1914) 4.517. Περὶ τὰ τέλη τοῦ Η' αἰῶνος ἐφυλακίσθη ἐν αὐτῇ ὁ Λομβαρδὸς βασιλεὺς Ντιντιέ, ἐξ οὗ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα, τῷ δὲ 1636 ἀντέστη ἐρρωμένως ἐναντίον τῶν Ἱσπανῶν. Ὡς ἐκ τῶν μεγάλων μαχῶν, αἵτινες ἔλαβον χώραν εἰς τὸν τομέα αὐτῆς κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, κατεστράφη σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου. Χ. Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὸ τελευταῖον ἔτος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου διεξήχθησαν ἐν Πικαρδίᾳ δύο μάχαι, ἑκάστη τῶν ὁποίων φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα *μάχη τῆς Μοντιντιέ*: α') ἡ ἀπὸ 26 Μαρτίου—5 Ἀπριλίου 1918 καὶ β') ἡ ἀπὸ 8—15 Αὐγούστου 1918.

1) Εὐθὺς ἀπὸ τῶν πρώτων ἡμερῶν τῆς μεγάλης γερμανικῆς ἐπιθέσεως τῆς ἀνοίξεως 1918 ἤρχισεν ἀπειλουμένη ἡ Μοντιντιέ, καθ' ὅσον ἡ ἐν τῷ τομεῖ τούτῳ τεταγμένη 5 ἀγγλικὴ στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ Γκόουχ (Gough) ἔφυγε προτροπάδην καὶ διελύθη σχεδὸν εἰπεῖν ἐξ ὁλοκλήρου ὑπὸ τὴν πίεσιν τῆς 18ης γερμανικῆς στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Χούτιερ (Hutier) καὶ τοῦ ἀριστεροῦ τῆς 2ας τοῦ στρατηγοῦ Μάρβιτζ (Marwitz). Ἡ ἀπὸ τῆς 24ης Μαρτίου ταχθεῖσα πρὸς συγκράτησιν τῆς καταστάσεως 1η γαλλικὴ στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ Ντεμπενὲ (Débeney), ἡ ἐσπευσμένως μεταφερθεῖσα σιδηροδρομικῶς ἐκ Λωρραίνης, οὐδὲν κατώρθωσε, καθ' ὅσον ἡ πρὸς Μοντιντιὲ γερμανικὴ προχώρησις ἐξηκολούθησεν ἀκάθεκτος, μέχρις οὗ, τὴν ἑσπέραν τῆς 27ης Μαρτίου, κατελήφθη ἡ πόλις αὕτη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν.

Εὐθὺς μετὰ τὴν κατάληψιν διηνοίχθη περὶ αὐτὴν ῥῆγμα ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ μετώπου μήκους 10 χιλιομέτρων περίπου πρὸς τὸ σημεῖον ἐπαφῆς τῶν 1ης καὶ 3ης γαλλικῶν στρατιῶν, ἀλλὰ τοῦτο δὲν ἐγένετο τότε ἀντιληπτὸν ὑπὸ τῶν Γερμανῶν. Τοιουτοτρόπως, ἐνῷ ὀλίγου δεῖν θὰ ἐπήρχετο πλήρης ἡ διάρρηξις τοῦ ἀνταντικοῦ μετώπου περὶ τὴν Μοντιντιέ, ἐν τούτοις δὲν ὑπέστη τὸ μέτωπον τοῦτο εἰμὴ τὸν σχηματισμὸν εὐρέος καὶ βαθυτάτου θύλακος (poche), γνωστοῦ ὑπὸ τὸ ὄνομα θύλαξ τῆς Μοντιντιέ, τυχὼν τοῦ ὀνόματος τούτου,

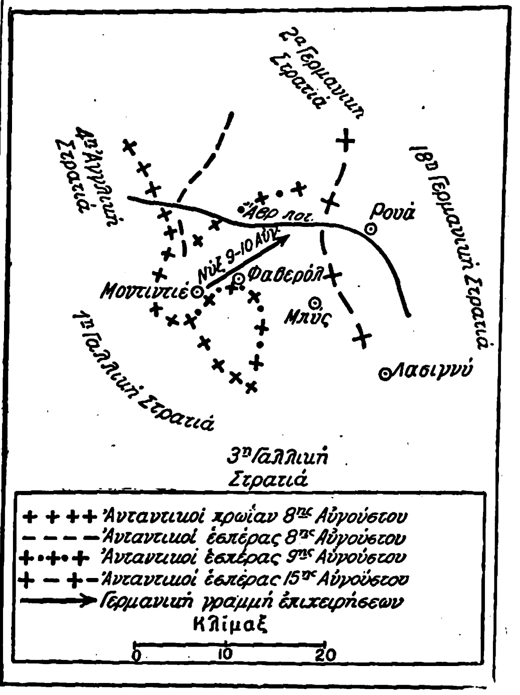

Σχ.2. Μάχη τῆς Μοντιντιὲ ἀπὸ 8—15 Αὐγούστου 1918.

καθ' ὅσον ὁ ὅλος ἀπὸ Ἀρρὰς μέχρι Σουασσὸν σχηματισθεὶς θύλαξ εἶχε τὸ μεγαλύτερον βάθος εἰς Μοντιντιέ. Κατὰ τὰς ἐπομένας ἡμέρας κατεβλήθησαν μέγισται προσπάθειαι ἐκ μέρους τῶν Γερμανῶν περὶ τὴν Μοντιντιέ, ὅπως προσεγγίσωσιν οὗτοι ἔτι περισσότερον πρὸς τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Παρισίων—Ἀμιένης, ἀλλ' αὗται ἀπέβησαν ἄκαρποι, καθ' ὅσον αἱ ἀνταντικαὶ γραμμαὶ ἐνισχύθησαν ἐγκαίρως διὰ πεζικοῦ καὶ βαρέος πυροβολικοῦ. Τὴν 4ην Ἀπριλίου ἐγένετο σοβαρὰ γερμανικὴ ἐπίθεσις βορείως τῆς Μοντιντιέ, ἀπωθήσασα κατά τι τοὺς ἀνταντικούς, οἵτινες ὅμως δι' ἀντεπιθέσεως (5ης Ἀπριλίου) ἐπανέκτησαν τὰς κατὰ τὴν προτεραίαν ἀπολεσθείσας θέσεις. Αἱ διαδοχικαὶ προχωρήσεις τῶν Γερμανῶν ἐμφαίνονται εἰς τὸ σχ. 1. Τὸ παρὰ τὴν Μοντιντιὲ σχηματισθὲν ἔμβολον τοῦ θύλακος ἦτο σπουδαιοτάτης σημασίας, καθ' ὅσον εἶχε βάθος 60 περίπου χιλιομέτρων καὶ τοιουτοτρόπως τὸ γερμανικὸν μέτωπον προσήγγισε κατὰ πολὺ πρὸς τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Παρισίων-Ἀμιένης, τὴν ἀποτελοῦσαν μέρος τῆς ἀπὸ νότου πρὸς βορρᾶν μεγάλης σιδηροδρομικῆς ἀρτηρίας, ἣν ἐτήρει πλέον ὑπὸ τὸ πῦρ του. Ἡ μάχη αὕτη τῆς Μοντιντιὲ ἀποτελεῖ μέρος τῆς 2ας μάχης τῆς *Πικαρδίας* (βλ. λ.).

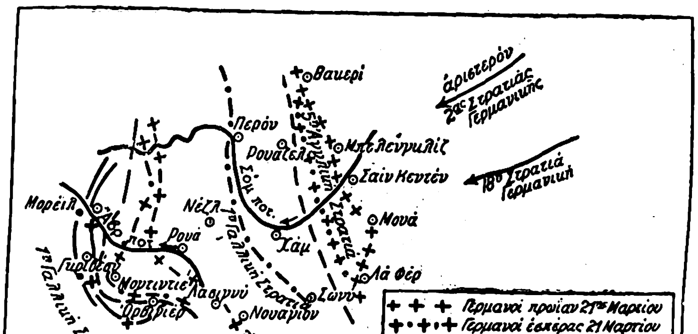

Σχ. 1. Μάχη τῆς Μοντιντιὲ ἀπὸ 26 Μαρτίου—5 Ἀπριλίου 1918.

2) Κατὰ τὴν ἀνάληψιν τῆς ἀνταντικῆς ἀντεπιθέσεως τοῦ Αὐγούστου 1918, ἡ πρώτη ἐκτελεσθεῖσα ἐπίθεσις ἦτο ἡ πρὸς ἐξάλειψιν τοῦ θύλακος τῆς Μοντιντιέ, ἵνα τοιουτοτρόπως καταστῇ ἐλευθέρα ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Παρισίων—Ἀμιένης. Ἡ τοιαύτη ἐπίθεσις ἀνετέθη εἰς τὰς στρατιάς, 1ην γαλλικὴν τοῦ Ντεμπενέ, ἐνισχυθεῖσαν διὰ 350 βαρέων πυροβόλων, καὶ εἰς τὸ δεξιὸν τῆς 4ης ἀγγλικῆς τοῦ στρατηγοῦ Ρώλινσον (Rawlinson), ἐξορμώσας τὴν 8ην Αὐγούστου 1918 μὲ κατεύθυνσιν ΒΔ.. τοῦ Ἄβρ, ἵνα τοιουτοτρόπως καταληφθῶσι τὰ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ τούτου ὑψώματα, πρὸς δὲ εἰς ἓν σῶμα στρατοῦ τῆς 3ης γαλλικῆς στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Ὑμπὲρ (Humbert), ἐξορμῶντος τὴν 9ην Αὐγούστου πρὸς τὴν κατεύθυνσιν νοτίως τῆς Μοντιντιέ, ἵνα τοιουτοτρόπως κυκλωθῇ ἡ πόλις αὕτη, ἡ ἀπὸ τῆς προτεραίας ἀπειληθεῖσα ἀπὸ τῆς κατευθύνσεως τοῦ βορρᾶ, καὶ εἰς τὴν 3ην γαλλικὴν στρατιάν, ἐξορμῶσαν τὴν 10ην Αὐγούστου πρὸς τὴν κατεύθυνσιν Λασιγνὺ-Ρουά, δηλαδὴ κατὰ τοῦ νοτίου πλευροῦ τοῦ θύλακος. Ὄντως, τὴν χαραυγὴν τῆς 8ης Αὐγούστου 1918 ἐξώρμησεν ἡ ἐπίθεσις ἄνευ οὐδεμιᾶς προπαρασκευῆς (βομβαρ-



Digitized by Google

δισμοῦ), ἅτε τοιαύτης οὔσης τῆς ρητῆς διαταγῆς τοῦ ἀρχιστρατήγου Φός, κατιδόντος ὅτι ἡ παρασκευὴ εἰς οὐδὲν ἄλλο ἐχρησίμευεν εἰ μὴ εἰς τὴν προειδοποίησιν τοῦ ἀντιπάλου, ἐφωδιασμένη ὅμως διὰ μεγάλου ἀριθμοῦ ἁρμάτων. Ἡ ἐπίθεσις αὕτη ἐπέφερε πλήρη αἰφνιδιασμὸν εἰς τοὺς Γερμανούς, εἰς τρόπον ὥστε ἡ ὑποχώρησις τῆς 2ας γερμανικῆς στρατιᾶς τοῦ Μάρβιτζ ἤρχισεν εὐθὺς ἀμέσως ἀπὸ τῆς βορείας τῆς Μοντιντιὲ περιοχῆς. Κατὰ τὰς 8 καὶ 9 Αὐγούστου, ἡ Μοντιντιὲ ἐξηκολούθησε παραμένουσα εἰς χεῖρας τῶν Γερμανῶν, ἀλλὰ πρὸς τὴν ἑσπέραν τῆς 9ης Αὐγούστου τμήματα τῆς 1ης γαλλικῆς στρατιᾶς προὐχώρησαν πρὸς βορρᾶν μέχρι τοῦ Ρουά, ἀπωθήσαντα τὴν 18ην γερμανικὴν στρατιὰν τοῦ Χούτιερ, τὸ ἀγγλικὸν ἱππικὸν κατεπλημμύρισε τὴν πεδιάδα ἀποκόπτον τὰς γερμανικὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν καὶ αἰχμαλωτίζον τὰς ἐφοδιοπομπάς, ἕτερα δὲ τμήματα τῆς ἰδίας γαλλικῆς στρατιᾶς κατέλαβον τὸ χωρίον Φαβερόλ. Ἅμα ὡς ἐκυκλώθη πανταχόθεν ἡ Μοντιντιέ, ἐξηναγκάσθησαν οἱ Γερμανοὶ νὰ ἐκκενώσωσι τὴν νύκτα τῆς 9ης πρὸς τὴν 10ην Αὐγούστου τὴν πόλιν ταύτην, ἣν περὶ τὴν μεσημβρίαν τῆς 10ης Αὐγούστου κατέλαβον οἱ Γάλλοι ἀμαχητί. Αἱ διαδοχικαὶ προχωρήσεις τῶν ἀνταντικῶν ἐμφαίνονται εἰς τὸ σχ. 2. Ἡ μάχη αὕτη τῆς Μοντιντιὲ ἀποτελεῖ μέρος τῆς *3ης μάχης τῆς Πικαρδίας* (βλ. λ.). Ν. Θ. Κ.

**Μοντινὺ - λὲ - Μὲτς** (Montigny - le - Metz) *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς πόλεως Μὲτς ἐν τῷ νομῷ Μοζέλλα τῆς Γαλλίας, κείμενον εἰς ἀπόστασιν ἑνὸς χλμ. ἀπ' αὐτῆς καὶ ἔχον 14.100 κατ. Χ. Δ.

**Μοντινὺ - σὺρ - Σὰμπρ** (Montignies-sur-Sambre) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν Ἀννωνίᾳ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, ἀνθρακωρυχεῖα, ὑψικαμίνους, ὑελουργεῖα κτλ. Κάτ. 21.000. Χ. Λ.

**μόντιος** *βαθμὶς* (Mons-stufe, Montian) *[Γεωλογ.]*. Ἡ ἀρχαιοτέρα τῶν τριῶν βαθμίδων, εἰς τὰς ὁποίας ὑποδιαιρεῖται ἡ παλαιοκώκαινος ὑποδιάπλασις τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἀθροίσματος στρωμάτων τοῦ φλοιοῦ τῆς γῆς. Στρώματα αὐτῆς εὑρέθησαν ἐν Γαλλίᾳ (Παρισινὴ λεκάνη), Δανίᾳ, Σκανδιναυΐᾳ καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μοντισελλίτης** (ὁ) (Monticellit) *[Ὀρυκτ.]*. Ὀρυκτὸν ὀρθοπυριτικὸν ἅλας τοῦ μαγνησίου καὶ ἀσβεστίου, ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τοῦ ὀλιβίνου. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Mg\,Ca\,Si\,O_4$, εἰς τὸν ὁποῖον μέρος τοῦ μαγνησίου ἀντικαθίσταται ὑπὸ σιδήρου καὶ μαγγανίου. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα εἰς μικροὺς ἀχρόους κρυστάλλους ἢ χρώματος λευκοῦ ἢ κιτρινολεύκου. Ἔχει σκληρότητα $5-5\,^1/_2$. Ἀπαντᾷ εἰς Somma καὶ Monzoni. Ὁ μοντισελλίτης τοῦ Monzoni εἰς κατάστασιν σχιστοφυῆ καὶ ἀποσεσαθρωμένην ὀνομάζεται *βατραχίτης* (Batrachit). Γ. Β.

**Μοντιτσέλλι** (Monticelli), ***Ἀδόλφος - Ἰωσὴφ - Θωμᾶς***. Γάλλος ζωγράφος (1824—1886), ἀπεικονίσας μετὰ μεγάλης τέχνης θαυμασίας εἰδυλλιακὰς σκηνὰς ἐν μέσῳ φαντασμαγορικῶν τοπίων. Τὰ πρόσωπα τῶν πινάκων του προξενοῦσι μεγάλην ἐντύπωσιν, λόγῳ τῶν ποικιλοχρώμων ἐνδυμασιῶν, τῆς ἁρμονίας καὶ τοῦ πλούτου αὐτῶν. Ἔζησε πτωχὸς καὶ ἄσημος ἐν Μασσαλίᾳ, ἐγένετο δὲ τὸ πρῶτον γνωστὸς μετὰ τὸν θάνατόν του, ὅτε ἐξετέθησαν εἰς τὴν διεθνῆ ἔκθεσιν τοῦ 1900 οἱ πίνακές του: «Τὸ πάρκον τοῦ Σαὶν Κλού», «Ὁ Κορὼ καὶ τὰ μοντέλα του», «Τοπίον μὲ τρεῖς γυναῖκας καὶ ἕνα παγώνι», «Γυναῖκες ἐν μέσῳ τοπίου», «Τοπίον», οἱ ὁποῖοι ἐπροξένησαν μεγάλην ἐντύπωσιν. Ἐπίσης ἀξιόλογα εἶναι τὰ ἔργα του: «Χωρικὴ τοῦ Ἐρῶ», «Οἱ Ἀτσίγγανοι» καὶ ἄλλα. Χ. Δ.

**Μοντίχο** (Montijo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ ναῷ τῆς Μπανταχός. Κάτ. 9.000. Ἔχει παλαιὸν φρούριον καὶ ἀνάκτορον τῶν κομίτων τοῦ Μοντίχο. Παράγει ἔλαιον, σιτηρὰ καὶ οἶνον. Οἱ Ρωμαῖοι ἐκάλουν αὐτὴν Agla. Καταστραφεῖσα κατὰ τὴν μουσουλμανικὴν εἰσβολήν, ἀνῳκοδομήθη βραδύτερον ὀνομασθεῖσα Μεντέσα. Μ. Δ. Β.

**Μοντίχο** (Montijo). Οἶκος εὐγενῶν ἐν Ἱσπανίᾳ, ὁ ὁποῖος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Πορτοκαρρέρο* ἀπετέλεσε κλάδον τοῦ οἴκου *Ἀκούνια* καὶ κατεῖχεν ἐν Ἐστραμαδούρᾳ τὰς πόλεις Μοντίχο, Πουέμπλα ντὲ λὰ Καλθάντα καὶ Κρέσπα. Ὁ οἶκος οὗτος κατήγετο ἐκ τοῦ βασιλέως τῆς Ἀραγωνίας Ἰακώβου Α' τοῦ Κατακτητοῦ. Ἐκ τοῦ οἴκου τούτου κατήγετο καὶ ἡ αὐτοκρατεῖρα τῆς Γαλλίας Εὐγενία, σύζυγος τοῦ Ναπολέοντος Γ'. Μ. Δ. Β.

**Μοντκλαὶρ** (Montclair) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας τῆς Νέας Ἰερσέης ἐν τῇ κομιτείᾳ Ἔσεξ, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος τοῦ Μόρρις. Ἀποτελεῖ ἀπομεμακρυσμένον θερινὸν προάστειον τῆς Νέας Ὑόρκης. Ἔχει βιομηχανίαν ὑφασμάτων καὶ χάρτου. Κάτ. (1920) 28.810. Χ. Δ.

**μοντμοριλλονίτης** (ὁ) (Montmorillonit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου ἔνυδρον, ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τοῦ ἀλλοφανοῦς. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $H_2\,Al_2\,Si_4\,O_{12}+n\,H_2O$. Εἶναι ἄμορφον, ἔχει χρῶμα ἐρυθρὸν καὶ ἀποτελεῖ προϊὸν μετουσιώσεως τοῦ αὐγίτου. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Montmorillon τῆς περιοχῆς τῆς Vienne. Γ. Β.

**Μὸντ-Ντὸρ** (Mont-Dore) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς κεντρικῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πυὺ-ντὲ-Ντόμ, ὑψουμένη μεταξὺ τῶν κοιλάδων τῶν ποταμῶν Αἰγηρος καὶ Γαρούννα. Ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ των (ὄρος *Σανσύ*) φθάνει τὰ 1.886 μ. Χ. Δ.

—*[Λουτρολ.]* Ὁ ὑδρομεταλλικὸς σταθμὸς τοῦ *Μὸντ-Ντὸρ* (ὕψος 1.050 μ.) περιλαμβάνει μεταλλικὰς πηγὰς θερμάς, ὀλιγομεταλλικάς, τῶν ὁποίων ἡ θερμοκρασία ποικίλλει ἀπὸ 38°—46°, περιεχούσας δὲ ἀνὰ λίτρον ὕδατος 2—3 γρ. στερεῶν διαλελυμένων συστατικῶν. Τὰ μεταλλικὰ ὕδατα τοῦ Μὸντ-Ντὸρ χαρακτηρίζονται ὡς πυριτιοῦχα, ἀλκαλικά, σιδηροῦχα, ὀξυανθρακικά, ἀρσενικοῦχα. Τὰ ὕδατα ταῦτα χρησιμοποιοῦνται πρὸς ποσιθεραπείαν καὶ λουτροθεραπείαν διὰ πλήρη λουτρὰ καὶ ὑπέρθερμα ἡμίλουτρα. Ἐνδείκνυνται κατὰ τοῦ ἄσθματος, τῶν ὑπολειμμάτων πνευμονίας, ρινοφαρυγγιτίδων, τραχεοβρογχιτίδων τῶν παίδων καὶ γενικῶς ἐπὶ ὅλων τῶν παθήσεων τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων μορφῆς σπασμωδικοσυμφορικῆς. Ἀντενδείκνυνται ἐπὶ καρδιακῶν παθήσεων, φυματιάσεως τῶν πνευμόνων, παθήσεων τοῦ ἥπατος καὶ τῶν νεφρῶν. Κ. Γ. Μ.

**Μοντοβὶ** (Mondovi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, ἐν Πεδεμοντίῳ καὶ τῷ νομῷ τοῦ Κούνεο. Κάτ. 12.375. Διαιρεῖται εἰς ἄνω καὶ κάτω πόλιν. Ἔχει ἀρχαῖον φρούριον κατασκευασθὲν τῷ 1573, μετὰ γοτθικοῦ πύργου, μητρόπολιν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, τεχνικὴν σχολήν, τρεῖς βιβλιοθήκας καὶ ἐργοστάσια χάρτου, μηχανημάτων καὶ ἐργαλείων χυτοσιδήρου. Παρ' αὐτὴν ἱδρύθη τῷ 1472 ὀνομαστὸν τυπογραφεῖον, τοῦ ὁποίου αἱ ἐκδόσεις ἔφερον τὰς λέξεις «Mons-Regalis». Ἐπίσης μεγάλην φήμην εἶχεν ἀποκτήσει τὸ ἐν αὐτῷ ὑπάρχον τυπογραφεῖον τοῦ Ἐμμανουὴλ Φιλιμπέρτου τῆς Σαβοΐας. Μ.Δ.Β.

**Μοντοβὶλ** (Mondoville), ***Ἰωάννης - Ἰωσήφ, ντὲ***—. Γάλλος βιολιστὴς καὶ συνθέτης (1711—1772), γνωστὸς καὶ ὡς *Κασσανεὰ* (Cassanea), ἐκ τοῦ ὀνόματος τῆς οἰκογενείας τῆς γυναικός του. Σύγχρονος τοῦ Ραμώ, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν Ἔριν τῶν Μπουφώνων, ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς ἐθνικῆς γαλλικῆς τέχνης. Ὁ Μοντοβὶλ ἐχρημάτισε βιολιστής, βραδύτερον δὲ καὶ διευθυντὴς τῶν «Θρησκευτικῶν συναυλιῶν» τῶν Παρισίων, εἶτα μουσικὸς τῆς αὐλῆς καὶ ἐν τέλει ἐπιθεωρητὴς τῆς μουσικῆς ἐν Βερσαλλίαις. Τὸ θέατρον προσήγγισε διὰ τοῦ μελοδράματος «Ἴσβη» (1742). Ἐπηκολούθησαν «Ἡ ἀποκριὰ τοῦ Παρνασσοῦ» (1749) καὶ ἰδίως «Τιθωνὸς καὶ Ἠὼ» (1753), ἔργον στεφθὲν ὑπὸ καταπληκτικῆς ἐπιτυχίας καὶ κατατροπῶσαν τοὺς ὀπαδοὺς τῆς ἰταλικῆς τέχνης. Ὁ Μοντοβὶλ ἔγραψεν ἐπίσης τὸ ποιμενικὸν μελόδραμα: «Δάφνις» (1754), τὸ μπαλλέττο «Ἑορταὶ τῆς Πάφου» (1758) καὶ τὸν «Θησέα» (1767), ὅστις ἀπέτυχεν. Ἡ ὑπόλοιπος παραγωγή του περιλαμβάνει σονάτας, τεμάχια κλαβικυμβάλου μεθ' ἑνὸς βιολίου, 6 σονάτας διὰ βιολίον μόνον, κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μοντολὸν** (Montholon), ***Κάρολος-Τριστάνος***. Γάλλος στρατηγός, μαρκήσιος καὶ κόμης τῆς αὐτοκρατορίας (1783—1853). Ἐξελθὼν τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς τῷ 1799, μετέσχεν ἀμέσως τῶν ναπολεοντείων ἐκστρατειῶν τῆς Ἰταλίας, τῆς Αὐστρίας, τῆς Πρωσίας καὶ τῆς Πολωνίας. Τῷ 1811 εἶχεν ἤδη φθάσει εἰς βαθμὸν ὑποστρατήγου. Ἐλάτρευε τὸν Βοναπάρτην, παρέμεινε δὲ πιστὸς εἰς αὐτὸν καὶ μετὰ τὰ γεγονότα τοῦ 1814. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Ἑκατονθημέρου ὑπῆρξεν εἷς τῶν ὑπασπιστῶν του καὶ συνώδευσε κατόπιν τὸν ἔκπτωτον αὐτοκράτορα εἰς Ἁγίαν Ἑλένην, ὅπου παρέμεινε πλησίον του μέχρι τῶν τελευταίων αὐτοῦ στιγμῶν. Περὶ τῆς ἀφοσιώσεώς του μαρτυρεῖ αὐτὸ οὗτος ὁ Ναπολέων διὰ τῆς διαθήκης του, διὰ τῆς ὁποίας τὸν καθιστᾷ πρῶτον ἐκτελεστήν, κληροδοτῶν ἅμα εἰς αὐτὸν δύο ἑκατομμύρια «εἰς ἔνδειξιν τῆς ἱκανοποιήσεώς του διὰ τὰς υἱϊκὰς φροντίδας τὰς ὁποίας τῷ ἐπεδαψίλευσεν ἐπὶ ἑξαετίαν καὶ διὰ τὰς ζημίας τὰς ὁποίας ὑπέστη διὰ τὴν ἐν τῇ Ἁγίᾳ Ἑλένῃ παραμονήν του». Ἐκ τῆς κληρονομίας ταύτης ὁ Μοντολὸν οὐδὲν ἔλαβε, μέρος δὲ μόνον αὐτῆς ἐδόθη εἰς τοὺς κληρονόμους του ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Ναπολέοντος Γ'. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἐδημοσίευσεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Γκουργκώ, «Ἀπομνημονεύματα χρήσιμα διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς Γαλλίας ἐπὶ Ναπολέοντος, γραφέντα καθ' ὑπαγόρευσίν του» (1823). Μετὰ τὸ 1830 ἐπέτυχε, μετὰ δυσκολίας, τὴν ἐπαναφοράν του εἰς τὸ στράτευμα, συμμετασχὼν ὅμως τοῦ κινήματος τῆς Βουλόνης μετὰ τοῦ Λουδοβίκου-Ναπολέοντος, κατεδικάσθη εἰς εἰκοσαετῆ δεσμὰ καὶ ἐνεκλείσθη μετ' αὐτοῦ εἰς τὸ φρούριον τοῦ Ἅμ. Μετὰ τὴν ἀπόδρασιν τοῦ πρίγκιπος ἀπηλευθερώθη, ἐξέδωκε δὲ τότε τὸ βιβλίον του «Διηγήσεις ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας τοῦ Ναπολέοντος εἰς τὴν Ἁγίαν Ἑλένην» (1847). Κατὰ τὴν δευτέραν δημοκρατίαν ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν Νομοθετικὴν Συνέλευσιν. Τῷ 1851 δὲν μετέσχε τοῦ κινήματος τοῦ ἀπολήξαντος εἰς τὴν ἐπὶ τὸν θρόνον ἄνοδον τοῦ Ναπολέοντος Γ', ὅστις, δυσηρεστημένος διὰ τοῦτο, δὲν ἔδωκεν εἰς τὸν Μοντολὸν οὔτε ἀξίωμα οὔτε θέσιν οἱανδήποτε. —

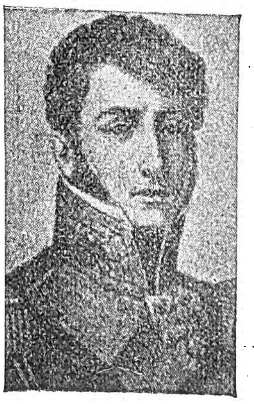

Κάρολος Μοντολόν.

**Μοντὸν** (Modon)· γαλλικὴ ὀνομασία τῆς *Μεθώνης* (βλ. λ.).

**Μοντόνα** (Montona), ***Ματθαῖος***. Στρατιωτικὸς ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΔ' καὶ ΙΕ' αἰῶνα ἐν Ἀθήναις, ὅπου, ὡς ἐκτελεστὴς τῆς διαθήκης τοῦ δουκὸς Νερίου Ἀτζαγιώλη Α' (1388—1394), διωρίσθη φρούραρχος τῆς Ἀκροπόλεως. Ὁ τότε μητροπολίτης Ἀθηνῶν Μακάριος δεινὰ πάσχων ὑπὸ τῶν Φράγκων, ἐπεκαλέσθη τοὺς Τούρκους, ἀποστείλαντας τὸν στρατηγὸν Τιμοὺρ Τάς, ὅστις καὶ κατέλαβε τὰς Ἀθήνας. Ἀλλ' ὁ Μοντόνα, γενναίως ἀγωνισθεὶς καὶ λαβὼν ἐπικουρίας παρὰ τοῦ βαΐλου τῆς Εὐβοίας, κατενίκησε τοὺς Τούρκους, οἱ δὲ Βενετοὶ ἐγένοντο ἔκτοτε (1394—1402) κύριοι τῶν Ἀθηνῶν, μεθ' οὓς ἦρξαν πάλιν οἱ Ἀτζαγιῶλαι (1402—1456), ὅτε ὁ Μοντόνα ἀπεσύρθη εἰς Χαλκίδα μὴ λαμβάνων τὴν ἐκ 400 ὑπερπύρων χορηγίαν. [Π. *W. Miller Σ. Λάμπρου*, Ἱστορία τῆς Φραγκοκρατίας ἐν Ἑλλάδι, Ἀθ. 1910 τόμ. Β', σ. 32, 34 καὶ ἑξ.]

**Μοντόρο** (Montoro) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Κόρδοβας. Κάτ. 9.448. Ἔχει δημαρχεῖον τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, νοσοκομεῖον κτισθὲν τῷ 1632, ναὸν τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου τοῦ 18.. μετὰ πύργου 130 μ. ὕψους κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μοντοὺ** (Montu) *[Ἀρχ. Θρησκ.]*. Αἰγυπτιακὴ θεότης τοῦ πολέμου, λατρευομένη κυρίως ἐν Θήβαις καὶ Ἑρμάν. Εἰκονίζεται ἔχουσα κεφαλὴν ἱέρακος καὶ κρατοῦσα διὰ τῆς χειρὸς κυρτὴν σπάθην. —

**Μοντουχοτποῦ**. Ὄνομα πέντε φαραὼ τῆς ΙΑ' δυναστείας.

**Μοντρὲ** (Montreux) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἑλβετίας, ἐν τῷ καντονίῳ τοῦ Βώ, παρὰ τὴν λίμνην τῆς Γενεύης. Κάτ. 18.300. Δι' αὐτῆς διέρχεται ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Σεμπλὸν—Λωζάννης. Ἔχει μικρὸν λιμένα καὶ σταθμὸν ἀτμοπλοίων καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ πολλὰς ἐπαύλεις καὶ μεγάλα ξενοδοχεῖα καὶ σανατόρια, ἐγκατεσπαρμένα ἐντὸς κήπων ἀπὸ τῶν ἀκτῶν τοῦ λιμένος μέχρι τῶν κορυφῶν τῶν ὑπερκειμένων ὀρέων. Εἶναι κλιματολογικὸς σταθμός, συχναζόμενος ἰδίως κατὰ τὸ φθινόπωρον καὶ τὸν χειμῶνα, ἕνεκα τοῦ γλυκυτάτου κλίματος καὶ τῆς προσηλίου τοποθεσίας του, πολλῶν ἀναρρωννυόντων καὶ καλούμενος κοινῶς «ἡ Νίκαια τῆς Ἑλβετίας». Παρ' αὐτὴν δὲ ὑπάρχουν οἱ ἱστορικοὶ ἐν τῇ λίμνῃ πύργοι τοῦ Σιγιὸν καὶ τοῦ Σατελάρ. Μ. Δ. Β.

**Μοντρεὰλ** (Montreal, ἀγγλ. προφ. *Μοντριώλ*) *[Γεωγρ.]*. Ἡ πολυανθρωποτέρα πόλις καὶ τὸ σπουδαιότερον ἐμπορικὸν καὶ βιομηχανικὸν κέντρον τοῦ Καναδᾶ, κειμένη ἐν τῇ πολιτείᾳ Κουΐμπεκ, ἐπὶ τῆς ΝΑ. πλευρᾶς ὁμωνύμου νησῖδος ἀναδυομένης παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου μετὰ τοῦ ἀριστεροῦ παραποτάμου αὐτοῦ Ὀττάβα. Ἡ νῆσος αὕτη (43°30' Β. πλάτ. καὶ 73° 33' Δ. μῆκ. Γκρήνουιτς) ἔχει μῆκος 35 χλμ. καὶ πλάτ. 12. Τὸ Μοντρεὰλ ἀπέχει ἀπὸ τῆς ἐπὶ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου ἐπίσης κειμένης πόλεως Κουΐμπεκ, πρωτευούσης τῆς πολιτείας, 220 περίπου χλμ., ἀπὸ τῆς Νέας Ὑόρκης διὰ ξηρᾶς 675, ἀπὸ δὲ τοῦ Ἀτλαντικοῦ 990. Κάτ. (1926) 907.500, ἐξ ὧν 75% καθολικοί. 6% Ἰουδαῖοι, οἱ δὲ λοιποὶ διαμαρτυρόμενοι κτλ. Ἀπὸ ἀπόψεως ἐθνικότητος 63% εἶναι Γαλλοκαναδοί, 24% Ἄγγλοι, οἱ δὲ λοιποὶ ἄλλων ἐθνοτήτων.

Ἡ κυρίως πόλις εἶναι ἐκτισμένη κατὰ μῆκος τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου, στηριζομένη ὄπισθεν ἐπὶ τοῦ λόφου *Μὸντ Ρουαγιὰλ* (Mont Royal=βασιλικὸν ὄρος), ὕψους 238 μ., ἀπέχοντος ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ $2\,^1/_2$—3 χλμ. Εἰς τὸ μεταξὺ διάστημα ἐκτείνεται ἡ παλαιὰ πόλις, κατοικουμένη κυρίως ὑπὸ τῶν γαλλικῆς καταγωγῆς κατοίκων. Αὕτη ὑστερεῖ ὡς πρὸς τὴν ρυμοτομίαν ἀπὸ τῆς πέριξ καὶ ἰδίᾳ πρὸς Ν. κατὰ τὸ ἀγγλικὸν πολεοδομικὸν σύστημα ἱδρυθείσης νέας πόλεως, ἥτις ἔχει ἐμφάνισιν ἀπὸ πάσης ἀπόψεως ἀρτιωτάτην. Ἀξιομνημόνευτοι ἐπίσης εἶναι αἱ μακρόταται (7.600 μ.) προκυμαῖαι, αἱ ἐκτεινόμεναι κατὰ μῆκος τῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ ὡς καὶ τὸ καλύπτον τὸν λόφον Μὸν Ρουαγιὰλ θαυμάσιον πάρκον. Περὶ τῆς

Digitized by Google

κυρίως πόλιν καὶ κατὰ μῆκος τοῦ ποταμοῦ ὑπάρχουν πολυάριθμα προάστεια, βιομηχανικὰ καὶ ἐξοχικὰ κέντρα συνδεόμενα μετὰ τῆς πόλεως διὰ πυκνοῦ δικτύου συγκοινωνίας. Ὁ λιμὴν περιλαμβάνει ἀρτιωτάτας ἐγκαταστάσεις μετὰ πολυαρίθμων μηχανικῶν φορτοεκφορτωτήρων σιτηρῶν (elevators). Ὁ ποταμός, ὅστις πρὸ τῆς πόλεως ἔχει πλάτος 2.500—3.000 περίπου μέτρα, εἶναι ἐξευγμένος διὰ μεγάλης γεφύρας (2.637 μ.) μετὰ 25 τόξων. Κυριώτερα κτήρια τοῦ Μοντρεὰλ εἶναι ὁ γοτθικὸς ναὸς τῆς Παρθένου, κατ' ἀπομίμησιν τῆς Παναγίας τῶν Παρισίων, ὁ Ἅγιος Ἰάκωβος, μητροπολιτικὸς ναὸς τῶν καθολικῶν, κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Ἁγίου Πέτρου τῆς Ρώμης, ἡ ἀγγλικανικὴ μητρόπολις Christ Church, τὰ μέγαρα τῶν μεγάλων ἐκπαιδευτηρίων, τὸ ἀνάκτορον Ραμεζαί, παλαιὰ ἕδρα τῶν Γάλλων διοικητῶν, μεταβληθὲν εἰς μουσεῖον, καὶ πλεῖστα ἰδιωτικὰ κτήρια, τράπεζαι, ἐργοστάσια κλπ. Αἱ δύο ὡραιότεραι πλατεῖαι τῆς πόλεως εἶναι ἡ τῶν «Ὅπλων καὶ ἡ Dominion Square, κοσμούμεναι ἡ μὲν πρώτη διὰ τοῦ ἀνδριάντος τοῦ Μαιζοννέβ, ἡ δὲ δευτέρα τοῦ Μακντόναλντ.

Τὸ Μοντρεὰλ εἶναι σπουδαιότατον ἐκπαιδευτικὸν καὶ πνευματικὸν κέντρον. Ἔχει δύο πανεπιστήμια, τὸ Λαβὰλ τῶν καθολικῶν, ἱδρυθὲν τῷ 1878 (6250 φοιτηταί), καὶ τὸ Μὰκ Τζὶλλ (Mac Gill) τῶν διαμαρτυρομένων, ἱδρυθὲν τῷ 1821 (3.600 φοιτηταί), ἀνωτάτας γεωργικάς, ἐμπορικὰς καὶ πολυτεχνικὰς σχολάς, κολλέγια, θεολογικὰς σχολάς, δύο μουσεῖα, ἐπιστημονικοὺς συλλόγους κλπ. Ἐπίσης ἔχει πλεῖστα κέντρα διασκεδάσεως, παγοδρομίας κατὰ τὸν χειμῶνα ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ, ἱππόδρομον, θέατρα. Ἀνώτεροι θρησκευτικοὶ ἄρχοντες τῆς πόλεως εἶναι εἷς ἀρχιεπίσκοπος τῶν καθολικῶν καὶ εἷς ἐπίσκοπος τῶν διαμαρτυρομένων.

Κύριος παράγων τῆς οἰκονομικῆς ζωτικότητος τοῦ Μοντρεὰλ εἶναι τὸ ἐμπόριον καὶ ἡ βιομηχανία. Τὸ πρῶτον διευκολύνεται ὑπὸ τῆς ἐξόχου ἀπὸ συγκοινωνιακῆς ἀπόψεως θέσεως τῆς πόλεως εἰς τὸ μέσον τριῶν μεγάλων πλωτῶν ἀρτηριῶν, τοῦ ἄνω καὶ τοῦ κάτω ροῦ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου καὶ τοῦ Ὀττάβα. Καὶ μέσῳ μὲν τοῦ Ὀττάβα μεταφέρεται εἰς τεραστίας ποσότητας ἡ ξυλεία, μέσῳ δὲ τοῦ ἄνω Ἁγίου Λαυρεντίου σιτηρά, κτήνη, κατεψυγμένα κρέατα, βούτυρον, τυρός, ᾠὰ κλπ. Τέλος ὁ κάτω ροῦς τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου, πλωτὸς μέχρι τοῦ Μοντρεὰλ καὶ εἰς μεγάλα ἀτμόπλοια, χρησιμεύει ὡς ὁδὸς μετακομίσεως τοῦ μεγαλυτέρου μέρους τῶν ἔξωθεν εἰσαγομένων ἀποικιακῶν εἰδῶν, σακχάρεως, καφέ, μεταλλουργικῶν προϊόντων, ὑφασμάτων, γαιάνθρακος κλπ. καὶ τῶν πρὸς τὴν Εὐρώπην ἐξαγομένων προϊόντων τῆς χώρας. Τρία κυρίως εἶναι τὰ εἴδη τοῦ ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου τοῦ Μοντρεάλ, τὰ σιτηρά, ἡ ξυλεία καὶ τὰ γουναρικά, διὰ τὴν συγκέντρωσιν τῶν ὁποίων διεξάγονται συχνὰ ἐν τῇ πόλει μεγάλαι ἀγοραί. Ἡ ἀξία εἰς δολλάρια τῶν ἐξαχθέντων τῷ 1925—1926 προϊόντων ἀνῆλθεν εἰς 238 ἑκατομμύρια, τῶν δὲ εἰσαχθέντων εἰς 192. Ἡ κίνησις τοῦ λιμένος ἀνῆλθε τῷ 1922 εἰς 1194 ἀτμόπλοια, χωρητικότητος 4 περίπου ἑκατομμυρίων τόννων, παρ' ὅλην τὴν ἐπὶ πεντάμηνον διακοπὴν τῶν συγκοινωνιῶν λόγῳ τῆς ἐκ τοῦ ψύχους πήξεως τῶν ὑδάτων τοῦ ποταμοῦ. Ἐκτὸς τῆς διὰ τῶν ποταμῶν καὶ τῶν διωρύγων συγκοινωνίας μεγάλαι ἐπίσης σιδηροδρομικαὶ γραμμαὶ πρὸς τὴν Νέαν Ὑόρκην, τὸ Σικάγον, τὴν Κουίμπεκ, τὸ Χάλιφαξ, τὸ Βανκοῦβερ κλπ. ἐπαυξάνουσι τὴν μεγάλην οἰκονομικὴν σπουδαιότητα τοῦ Μοντρεάλ, καθιστῶσαι αὐτὸ τὴν οἰκονομικὴν μητρόπολιν τοῦ Καναδᾶ. Ἡ βιομηχανία ἀντιπροσωπεύεται ὑπὸ ἐργοστασίων βαμβακερῶν ὑφασμάτων καὶ νημάτων, χαρτοποιείων, διυλιστηρίων σακχάρεως, σαπωνοποιείων, χυτηρίων σιδήρου, μηχανουργείων κλπ. Χάριν τοῦ ἐμπορίου λειτουργοῦσι χρηματιστήριον ἀξιῶν, ἐπιμελητήρια καὶ ἄλλα ὅμοια φύσεως ἱδρύματα. Ἐπίσης πολυάριθμοι τράπεζαι, ἀτμοπλοϊκαὶ ἑταιρεῖαι καὶ ἄλλοι ἰσχυρότατοι οἰκονομικοὶ ὀργανισμοὶ ἑδρεύουσιν ἐν τῇ πόλει. Τὸ Μοντρεὰλ ἐν γένει θεωρεῖται ὁ πρῶτος τῶν ἐσωτερικῶν (ποταμίων ἢ λιμναίων) λιμένων τοῦ κόσμου καὶ ὁ δεύτερος τῶν λιμένων τῆς Ἀμερικῆς.

—*[Ἱστορ.]* Πρῶτος ὁ Γάλλος Ἰάκωβος Καρτιὲ ἐπεσκέφθη τῷ 1535 τὴν ἐπὶ τῆς θέσεως τοῦ σημερινοῦ Μοντρεὰλ ἰνδικὴν πόλιν *Χοτσελάγκα*, ἔδωσε δὲ τὸ ὄνομα *Μὸν Ρουαγιὰλ* (Mont Royal) εἰς τὸν δεσπόζοντα σήμερον τῆς πόλεως λόφον. Βραδύτερον, τῷ 1642, ἐκτίσθη ἡ πόλις ὑπὸ τοῦ Γάλλου Παύλου Σωμεντὺ μαρκησίου τοῦ Μαιζοννέβ, καὶ ἔλαβε κατ' ἀρχὰς τὸ ὄνομα *Βιλλαμαρὶ* (Villemarie) τοῦ *Μοντρεάλ*, ἐκ τοῦ ὁποίου παρέμεινε βραδύτερον μόνον τὸ *Μοντρεάλ*, παραλειφθέντος τοῦ Βιλλαμαρὶ χάριν βραχυλογίας. Κατὰ τοὺς πρώτους χρόνους τῆς ἱδρύσεώς της ἡ πόλις ὑπέστη πολλὰς ἐπιδρομὰς ἐκ μέρους τοῦ ἰθαγενοῦς λαοῦ τῶν Ἰροκούων, οἱ ὁποῖοι τῷ 1688 κατέσφαξαν τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν ἀποίκων. Τῷ 1760 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, τῷ δὲ 1843 ἐγένετο πρωτεύουσα τοῦ Καναδᾶ· παρέμεινεν ὅμως τοιαύτη ἐπὶ βραχὺ μόνον χρονικὸν διάστημα, καταργηθεῖσα τῷ 1849 κατόπιν τοπικῆς ἐξεγέρσεως, καθ' ἣν οἱ ἐπαναστάται κατέστρεψαν τὸ μέγαρον τοῦ κοινοβουλίου. Παραμείνασα ἐμπορικὴ μόνον πόλις τὸ Μοντρεάλ, ἤρχισεν ἀναπτυσσόμενον ἁλματωδῶς, ὑπερδεκαπλασιασθὲν ἀπὸ ἀπόψεως πληθυσμοῦ εἰς διάστημα μικρότερον τῶν 100 ἐτῶν. Χ. Δ.

**Μοντρέϊγ**, ἢ ***Μοντρέϊγ-σοὺ-Μπουά*** (Montreuil ἢ Montreuil-sous-Bois) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σὼ τοῦ νομοῦ Σηκουάνα, κειμένη πρὸς Α. τῶν Παρισίων, μεθ' ὧν συνδέεται διὰ τροχιοδρόμου. Κάτ. (1926) 58.521. Χ. Δ.

— **Μοντρέϊγ**, ἢ ***Μοντρέϊγ-σὺρ-Μὲρ*** (Montreuil ἢ Montreuil-sur-Mer) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς λιμὴν καὶ κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πὰ-ντὲ-Καλαί, εἰς ἀπόστασιν 74 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἀρρᾶς. Τὸ Μοντρέϊγ κατέστη γνωστὸν ὡς ἕδρα τοῦ βρεττανικοῦ ἐπιτελείου κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, ἀπὸ τοῦ Μαρτίου τοῦ 1916 μέχρι τοῦ Ἀπριλίου τοῦ 1919. Κάτ. 3.400. Χ. Δ.

**Μοντρέϊγ** (Montreuil), ***Γερβέρτος ντὲ*** —. Γάλλος ποιητής, ζήσας κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Κύριον ἔργον του ὑπῆρξε τὸ «Γωμάντσο τῆς Βιολέττας», ποίημα ἀποτελούμενον ἀπὸ 6.700 περίπου ὀκτασυλλάβους στίχους, ἀφιερωμένον εἰς τὴν Μαρίαν κόμισσαν Ποντιέ, θυγατέρα τοῦ Γουλιέλμου Γ'. Ὡς θέμα ἔχει τὰς περιπετείας μιᾶς ἀθῴας γυναικός, ἥτις, δεινῶς συκοφαντηθεῖσα καὶ πολυτρόπως βασανισθεῖσα, κατορθώνει ἐν τέλει ν' ἀποδείξῃ τὴν ἀγνότητά της. Τὸ ποίημα τοῦτο, χάρις εἰς τὴν κομψὴν εὐχέρειαν τοῦ ὕφους, τὴν αἰσθηματικὴν φυσικότητα καὶ τὴν ἀκρίβειαν τῶν περιγραφῶν, ἀποτελεῖ ἓν τῶν ἀξιολογωτέρων ἔργων τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἐγένετο παρά τινος ἀνωνύμου διασκευὴ τοῦ «Ρωμάντσου τῆς Βιολέττας» εἰς πεζὸν λόγον, ἀφιερωθεῖσα εἰς τὸν Κάρολον Α' κόμιτα τοῦ Νεβὲρ καὶ πολλάκις ἀνατυπωθεῖσα. Ἀπὸ ταύτης δὲ ἠντλήθη βραδύτερον (1823) τὸ λιμπρέττο τοῦ γερμανικοῦ μελοδράμματος «Εὐρυάνθη» τοῦ Βέμπερ. —Ω.

**Μοντριὼλ** (Montreal) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Καναδᾶ (βλ. *Μοντρεάλ*).

**Μοντρὸζ** (Montrose) *[Γεωγρ.]*. Παράλιος πόλις τῆς Σκωτίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Φόρφαρ, κειμένη ἐπὶ στενῆς χερσονήσου χωριζούσης μεταξὺ τῆς Βορείου θαλάσσης καὶ τῆς ὑπὸ τοῦ Σάουθ Ἔσκ σχηματιζομένης λεκάνης τοῦ Μοντρόζ. Ἔχει ἀκαδημίαν, μουσεῖον κλπ., βιομηχανίαν καννάβεως, ὑφασμάτων, σάπωνος, ἀμυλοκόλλας κλπ. καὶ ἐμπόριον σολομῶν. Ἡ πόλις ὑφίσταται ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος, τῷ δὲ 1296 ὁ Μπαλιὸλ προσέφερεν ἐν αὐτῇ τὸ στέμμα τῆς Σκωτίας εἰς τὸν Ἐδουάρδον Α'. Κάτ. (1921) 10.979. Χ. Δ.

**Μοντρὸζ** (Montrose), ***Ἰάκωβος-Γκράχαμ, μαρκήσιος ντὲ*** —. Σκῶτος εὐγενὴς καὶ στρατηγὸς (1612—1650). Ἦτο κληρονόμος μεγάλης περιουσίας ἐν Σκωτίᾳ, τῷ δὲ 1637, ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν ἐπαναστατικὴν κίνησιν τῶν Σκώτων, ἡ ὁποία προεκλήθη λόγῳ τῶν θρησκευτικῶν μεταρρυθμίσεων τῶν εἰσαχθεισῶν ὑπὸ τοῦ βασιλέως Καρόλου Α', ἐνίκησεν, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν στρατευμάτων τοῦ συνασπισμοῦ, τὸν στρατηγὸν Χέντλεϋ (1639). Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως, δυσαρεστηθεὶς διὰ λόγους ἀντιζηλίας πρὸς τὰς ἰσχυρὰς σκωτικὰς οἰκογενείας Ἀρτζάϋλλ καὶ Χάμιλτον, ἐγκατέλειψε τὸν συνασπισμὸν καὶ ἤρξατο διαπραγματευόμενος μετὰ τοῦ βασιλέως (1640). Ὁ ἀρχηγὸς τῶν Ἀρτζάϋλλ ἀνακαλύψας τὴν συνωμοσίαν συνέλαβε καὶ καθεῖρξε τὸν Μοντρὸζ ἐν τῷ φρουρίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου. Ἀπελευθερωθεὶς μετὰ διετίαν προέτεινεν εἰς τὸν βασιλέα νὰ τῷ ἐπιτρέψῃ ὅπως σχηματίσῃ στρατὸν ἐν Σκωτίᾳ καὶ καταπολεμήσῃ τὸ κοινοβούλιον, ἐπιτυχὼν δὲ τοῦτο κατώρθωσε διὰ ταχυτάτης ἐνεργείας νὰ νικήσῃ τὸν ἐν Τιππερμούϊρ ἐστρατοπεδευμένον στρατὸν τοῦ συνασπισμοῦ (1644), νὰ καταλάβῃ τὸ Πέρθ, νὰ θέσῃ πόδα ἐν τῇ πόλει τοῦ Ἀμπερντὴν καὶ νὰ τρομοκρατήσῃ τὸ Ἐδιμβοῦργον. Τὸ ἑπόμενον ἔτος (2 Φεβρουαρίου) ἐνίκησε τὸν στρατὸν τοῦ μαρκησίου Ἀρτζάϋλλ παρὰ τὸ Ἀϊννερλόκυ καὶ ἔγραψεν εἰς τὸν βασιλέα ὅτι πρὸ τοῦ θέρους θὰ ἦτο ἐλεύθερος νὰ δράμῃ εἰς βοήθειάν του. Νικήσας ἐκ νέου εἰς Ὤλντηρν (9 Μαΐου), Ἄλφορντ (2 Ἰουλίου) καὶ Κιλσάϋθ (15 Αὐγούστου) ἐγένετο κύριος ὁλοκλήρου τῆς Σκωτίας. Μετὰ ἕνα ὅμως μῆνα (13 Σεπτεμβρίου) ὑπέστη δεινὴν ἧτταν παρὰ τὸ Φίλιφωγκ, ἠναγκάσθη νὰ συνθηκολογήσῃ καὶ ἀπῆλθεν εἰς Γαλλίαν. Ὅτε τῷ 1649 ὁ Κάρολος Β' ἤρχισε διαπραγματευόμενος μετὰ τῆς σκωτικῆς κυβερνήσεως, ὁ Μοντρὸζ ἐδέχθη νὰ ἀνατρέψῃ αὐτὴν καὶ νὰ καταλάβῃ τὴν χώραν. Συγκεντρώσας δὲ στρατὸν εἰς τὰς Ὀρκάδας ἀπεβιβάσθη εἰς Σκωτίαν, ὅπου ὅμως ἡττήθη, συλληφθεὶς δὲ ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Λέσλυ ἤχθη εἰς Ἐδιμβοῦργον, ὅπου καταδικασθεὶς εἰς τὸν δι' ἀγχόνης καὶ διαμελισμοῦ θάνατον. Χ. Δ.

**μοντρουδίτης** (ὁ) (Montroydit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ὀξείδιον τοῦ ὑδραργύρου HgO. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα ὑπὸ μορφὴν πρισματικήν, ἀπαντᾷ δὲ καὶ εἰς κυλινδροειδῆ, σφαιροειδῆ, βελονοειδῆ ἢ καὶ γεώδη συσσωματώματα. Ἔχει σκληρότητα 2—3, εἰδικὸν βάρος 11—11,3, λάμψιν ἐν μέρει ἀδαμαντοειδῆ καὶ χρῶμα ἐρυθρὸν καὶ φαιὸν ἕως φαιόμαυρον. Εὑρίσκεται εἰς τὰ μεταλλεύματα ὑδραργύρου τοῦ Terlingua εἰς τὸ Texas. Γ. Β.

**μοντρούνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Δημώδης ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄκανθος ἡ ἁπαλή*.

**Μόντσα** (Monza) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μιλάνου, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ βιομηχανικὸν προάστειον. Κάτ. 42.988· Ἔχει καθεδρικὸν ναὸν κτισθέντα τῷ 590 ὑπὸ τῆς Λογγοβαρδίδος βασιλίσσης Θεοδελίνδας καὶ ἀνακαινισθέντα τὸν ΙΔ' αἰῶνα ὑπὸ τοῦ Καμπιόνε. Ἐν τῷ ναῷ τούτῳ φυλάσσονται σημαντικὰ ἔργα τέχνης, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ σιδηροῦν στέμμα, διὰ τοῦ ὁποίου ἐστέφοντο οἱ Λογγοβάρδοι βασιλεῖς. Εἶναι πόλις βιομηχανικωτάτη καὶ ἔχει ὀνομαστὰ ἐργοστάσια πίλων, ὑφαντουργεῖα μεταξωτῶν καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων, ταπητουργεῖα, μεγάλα μηχανουργεῖα καὶ χρωματουργεῖα. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν πολλαὶ τεχνικαὶ σχολαί. Εἰς ἀπόστασιν 1 χλμ. πρὸς Β. τῆς Μόντσα κεῖται τὸ ἀνάκτορον «Βίλλα ρεάλε», οἰκοδομηθὲν τῷ 1779 μετὰ πάρκου 11 χλμ. περιμέτρου. Ἀπὸ τοῦ 1922 χρησιμεύει ὡς ἀνωτέρα σχολὴ ἐφηρμοσμένων καλῶν τεχνῶν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀνὰ πᾶσαν διετίαν γίνονται διεθνεῖς καλλιτεχνικαὶ ἐκθέσεις. Πέριξ τοῦ πάρκου ὑπάρχει ἱππόδρομιον 10 χλμ. καὶ πεδίον αὐτοκινητικῶν ἀγώνων. Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἐκαλεῖτο Monicia καὶ κατόπιν περιῆλθεν ὑπὸ τοὺς βασιλεῖς τῆς Λογγοβαρδίας. Τῷ 1777 ὁ ἀρχιδοὺξ Φερδινάνδος ἐγκατέστησεν ἐν αὐτῇ τὴν ἕδραν του. Τὴν 29 Ἰουλίου 1900 ἐδολοφονήθη ἐν αὐτῇ, κατὰ τὴν ἔξοδόν του ἐκ τοῦ σταδίου τῶν ἀγώνων, ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰταλίας Οὐμβέρτος Α'. Μ.Δ.Β.

**Μοντσερρὰτ** (Montserrat) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ ἀρχιπελάγους τῶν Μικρῶν Ἀντιλλῶν, ἀνήκουσα εἰς τὴν βρεττανικὴν ἀποικίαν τῶν Προσηνέμων νήσων (Leeward islands). Κεῖται ἐν τῇ Καραϊβικῇ θαλάσσῃ, 27 μίλλ. ΝΔ. τῆς Ἀντίγκουα, εἰς 16°43' Β. πλάτ. καὶ 62°7' Δ. μήκ. Γκρήνουϊτς. Σχήματος ᾠοειδοῦς, ἔχει μέγιστον μῆκος 16 χλμ. ἀπὸ Β.ΒΔ. πρὸς Ν.ΝΑ. καὶ πλάτος 10 χλμ., ἡ δὲ ἔκτασις αὐτῆς ἀνέρχεται εἰς 84 τετρ. χλμ. Κάτ. (1930) 11.954, Νέγροι κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος. Πρωτεύουσα τὸ *Πλυμοὺθ* (1709 κατ.). Τὸ ἔδαφος τῆς νήσου καλύπτεται ὑπὸ ἡφαιστειογενοῦς ὀρεινοῦ συστήματος (ὑψίστη κορυφὴ 915 μ.), ἀποτελοῦντος συνέχειαν τοῦ εἰς 50 χλμ. ἀπόστασιν ὑψουμένου ὀρεινοῦ ὄγκου τοῦ Δ. τμήματος τῆς Μαρτινίκας. Ἔχει πλουσίαν βλάστησιν, τὸ δὲ κλίμα αὐτῆς (μέση ἐτησία θερμοκρασία + 26°,6 C.) εἶναι εὔκρατον καὶ ἐξόχως ὑγιεινόν. Κύρια προϊόντα εἶναι τὸ σακχαροκάλαμον, ἐκ τοῦ ὁποίου παρασκευάζεται ἐκτὸς τοῦ σακχάρου καὶ ἐκλεκτῆς ποιότητος ροῦμι καὶ τὰ ἐσπεριδοειδῆ, ἰδίως δὲ τὰ λεμόνια, ἐξ ὧν παρασκευάζεται ἡ μεγαλυτέρα ποσότης τοῦ ἐν Ἀγγλίᾳ καταναλισκομένου κιτρικοῦ ὀξέος. Ἡ νῆσος ἀνεκαλύφθη τῷ 1493 ὑπὸ τοῦ Κολόμβου, ὅστις ἔδωσεν εἰς αὐτὴν τὸ ὄνομα ὡς ἐκ τῆς ὁμοιότητος τῶν ὀρέων της πρὸς τὸ ὄρος *Μονσερρὰτ* τῆς Καταλανίας. Τῷ 1632 ἀπῳκίσθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, κατελήφθη δὲ μετ' ὀλίγον (1664) ὑπὸ τῶν Γάλλων, διὰ νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τοὺς πρώτους τῷ 1668. Τῷ 1782 ἐγένετο ἐκ νέου γαλλική, ἐπὶ μικρὸν ὅμως μόνον χρόνον, διότι μετὰ δύο ἔτη περιῆλθεν ὁριστικῶς εἰς τοὺς σημερινοὺς κατόχους της. Διοικεῖται ὑπὸ ὀκταμελοῦς νομοθετικοῦ καὶ ἑπταμελοῦς ἐκτελεστικοῦ συμβουλίου καὶ διαιρεῖται εἰς τέσσαρας ἐπαρχίας. Χ. Δ.

**Μοντσίκε** (Monchique) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πορτογαλίας (βλ. λ. *Μονσίκε*).

**Μοντυκλὰ** (Montucla), ***Ἰωάννης - Στέφανος***. Γάλλος ἱστορικὸς τῶν μαθηματικῶν (1725—1799). Καταγόμενος ἐκ πτωχῆς οἰκογενείας καὶ ἀπομείνας ὀρφανὸς ἀπὸ μικρᾶς ἡλικίας, ἔζησεν ὑπὸ δυσχερεῖς βιοτικὰς συνθήκας, μέχρις ὅτου, χάρις εἰς τὴν δι' ἐπιπόνου μελέτης ἀποκτηθεῖσαν πολυμάθειάν του, προσελήφθη ὡς συνεργάτης τῆς «Ἐφημερίδος τῆς Γαλλίας». Ἔκτοτε ἤρχισεν ἀφιερώνων τὰς ὥρας τῆς σχολῆς του εἰς τὴν συγκέντρωσιν στοιχείων διὰ μίαν «Ἱστορίαν τῶν μαθηματικῶν», τῆς ὁποίας οἱ δύο πρῶτοι τόμοι ἐξεδόθησαν τῷ 1758. Τὸ ἔργον τοῦτο, συντεταγμένον μετὰ πολλῆς ἐπιμελείας καὶ ἐπιστημοσύνης, ἐξακολουθεῖ καὶ σήμερον ἔτι νὰ θεωρῆται ὡς τὸ καλύτερον τοῦ εἴδους του. Πρὸ τούτου ὁ Μοντυκλὰ εἶχεν ἐκδώσει ἕνα τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορία τῶν ἀναζητήσεων τοῦ τετραγωνισμοῦ τοῦ κύκλου» (1754), βραδύτερον δὲ (1778) ἐπανεξέδωκεν ἐπηυξημένα παρὰ τοῦ ἰδίου τὰ «Μαθηματικὰ παίγνια» τοῦ Ὀζανάμ. Ἀποθανὼν ἀφῆκεν ἀτελεῖς τοὺς δύο τελευταίους τόμους τῆς «Ἱστορίας τῶν μαθηματικῶν», οἵτινες, συμπληρωθέντες ὑπὸ τοῦ Λαλάνδ, ἐξεδόθησαν τῷ 1808. —Ω.

**Μοντυὸν** (Montyon), ***Ἀντώνιος-Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Ροβέρτος Ὠζὲ*** (Auget), *βαρῶνος ντὲ* —.

Digitized by Google

Γάλλος διακεκριμένος οἰκονομολόγος καὶ ὀνομαστὸς φιλάνθρωπος (1733—1820). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ εἰς δικαστικὰς καὶ εἶτα εἰς ἀνωτέρας διοικητικὰς θέσεις, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ στάδιον τοῦτο λόγῳ τοῦ ἄκρως ἀκεραίου καὶ ἀκάμπτου χαρακτῆρός του. Ἐδέχθη μόνον τῷ 1775 θέσιν συμβούλου τῆς ἐπικρατείας, ἐγένετο δὲ κατόπιν, τῷ 1780, καγκελλάριος τοῦ κόμιτος τοῦ Ἀρτουά. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ἠναγκάσθη νὰ ἐκπατρισθῇ, μεταβὰς εἰς Ἑλβετίαν πρῶτον (1792) καὶ κατόπιν εἰς Ἀγγλίαν, παρέμεινεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Λονδίνῳ, ὅπου ἐξελέγη μέλος τῆς Βρεττανικῆς Ἀκαδημίας, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν μόλις τῷ 1815. Ἀπὸ τοῦ 1780 μέχρι τοῦ 1787 ὁ Μοντυόν, διαθέσας σημαντικὸν μέρος τῆς μεγάλης του περιουσίας, εἶχεν ἱδρύσει ἑπτὰ βραβεῖα, ἀπονεμόμενα κατ' ἔτος ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας εἰς τὰ καλύτερα συγγράμματα διαφόρων κλάδων (ἰδίως τὰ ἀφορῶντα εἰς προαγωγὴν τῶν τεχνῶν καὶ βιομηχανιῶν), ἐπίσης δὲ καὶ ἓν βραβεῖον ἀρετῆς. Μετὰ θάνατον δὲ ἐκληροδότησεν 6 ἑκατομμύρια χρυσῶν φράγκων εἰς διάφορα νοσοκομεῖα τῶν Παρισίων καὶ ἄλλους ἀνθρωπιστικοὺς σκοπούς.

Ὁ Μοντυὸν ἦτο διακεκριμένος οἰκονομολόγος καὶ δημοσιολόγος. Μεταξὺ τῶν συγγραφῶν του ἀναφέρομεν: «Ἔρευναι καὶ παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ πληθυσμοῦ τῆς Γαλλίας» (Παρίσιοι 1776), ἐκδοθὲν ἐπ' ὀνόματι τοῦ γραμματέως του Mohean, «Αἱ προκύψασαι διὰ τὴν Εὐρώπην πολιτικαί, ἠθικαὶ καὶ ἐμπορικαὶ συνέπειαι ἐκ τῆς ἀνακαλύψεως τῆς Ἀμερικῆς», βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, «Ἡ πρόοδος τῶν φώτων κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα», μελέτη βραβευθεῖσα ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῆς Στοκχόλμης, «Ἡ ἐπίδρασις τῶν διαφόρων εἰδῶν τῶν φόρων ἐπὶ τῆς ἠθικῆς, τῆς δραστηριότητος καὶ τῆς βιομηχανίας» (1806), «Ἐγκώμιον τοῦ Κορνηλίου» (1808) κλπ. —ω.

**Μοντωζιὲ** (Montausier) ***Κάρολος ντὲ Σαὶντ-Μὼρ*** (Sainte-Maure), *μαρκήσιος ντὲ* —. Διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Καζὰλ τῷ 1630, προαχθεὶς δὲ εἰς ὑποστράτηγον τῷ 1645 προσέφερε σημαντικὰς ὑπηρεσίας κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ἐμφυλίων σπαραγμῶν ἐπὶ τῆς ἀνηλικιότητος τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ'. Κατενίκησε τοὺς ἐπαναστάτας εἰς Μοντάντρ καὶ ἀπηλευθέρωσε τὸ Κονιάκ, ὑπηρέτησε δὲ κατόπιν ὡς διοικητὴς διαφόρων ἐπαρχιῶν, εἰς τὰς ὁποίας ἠδυνήθη διὰ τῆς αὐστηρότητός του νὰ ἑδραιώσῃ τὴν τάξιν καὶ τὴν πειθαρχίαν. Μολονότι περίφημος διὰ τὸ ὑπεράγαν στρατιωτικὸν ὕφος καὶ τοὺς σκαιούς του τρόπους, ἦτο ἐν τούτοις θερμὸς φίλος τῶν ἀνθρώπων γραμμάτων καὶ τακτικὸς θαμών, ἀπὸ τοῦ 1631, τοῦ μεγάρου τῆς μαρκησίας Ραμπουϊγιέ, ὅπου συνεδέθη μὲ τὸν Μπαλζάκ, τὸν Μενὰζ καὶ τὸν Σαπλαίν, βραδύτερον δὲ μὲ τὸν Μπουαλὼ καὶ τὸν Ρακίναν. Ἔτρεφεν ἄλλως τε διὰ τὴν δεσποινίδα Ραμπουϊγιὲ σφοδρὸν ἀλλ' ἀνεκδήλωτον ἔρωτα, τὸν ὁποῖον, μετὰ 14 ἔτη, ἐπέστεψε διὰ τοῦ γάμου. Ἰδικόν του πρὸς αὐτὴν δῶρον ἦτο τὸ περίφημον πολυτελὲς λεύκωμα, εἰς τὰ φύλλα τοῦ ὁποίου, διακόσμητα διὰ ζωγραφιῶν, ἔγραψαν ἰδιοχείρως ἀνεκδότους γνώμας των καὶ στίχους ὅλοι οἱ μεγάλοι συγγραφεῖς τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Εἰς τὴν αὐλὴν ὁ Μοντωζιέ, λόγῳ ἰδίᾳ τῆς σκαιότητος καὶ τῆς αὐστηρότητός του, εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην ἐπιβολήν, ἐμπνέουσαν ὅμως ὄχι τόσον τὸν σεβασμὸν ὅσον τὸν φόβον, διὸ καὶ λέγεται ὅτι αὐτὸν ἠθέλησε ν' ἀπεικονίσῃ διὰ τοῦ «Μισανθρώπου» του ὁ Μολιέρος. Ἦτο ἐξ ἄλλου εὐσεβὴς μέχρι θρησκοληψίας καί, ἂν πιστεύσωμεν τοὺς συγχρόνους του χρονογράφους, ἐγνώριζε τὴν Γραφὴν ὁλόκληρον ἀπὸ στήθους. Τῷ 1665 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς καὶ τοῦ ὁμοτίμου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1668 διωρίσθη παιδαγωγὸς τοῦ δελφίνου καὶ διετήρησε τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ 1679, ὁπότε ἀποσυρθεὶς ὠνομάσθη πρῶτος εὐγενὴς καὶ μέγας ἱματιοφύλαξ τοῦ διαδόχου.

[Περὶ τῆς συζύγου του *Ἰουλίας-Λουκιανῆς ντ' Ἀνζὲν* βλ. λ. *Ραμπουϊγιέ*.] Γ. Ζ.

**Μοντωμπὰν** (Montauban, λατιν. Mons Albanus) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Τὰρν καὶ Γαρούνα. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἔχει θεολογικὴν σχολὴν τῶν διαμαρτυρομένων, κλωστήρια μετάξης, σαπωνοποιεῖα καὶ πιλοποιεῖα, ἐμπόριον σιτηρῶν, κτηνῶν καὶ νωπῶν σταφυλῶν, φυτώρια κλπ. Κάτ. 29.780. Τὸ Μοντωμπὰν ἀντέστη ἡρωϊκῶς ἐναντίον τῶν στρατευμάτων τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ', τὰ ὁποῖα ὑπὸ τὴν διοίκησιν τοῦ κοντοστάβλου Λυὺν (Luynes) ἐπολιόρκησαν τῷ 1621 τὴν πόλιν ἀνεπιτυχῶς. Βραδύτερον (1629) οἱ κάτοικοι αὐτῆς ὑπετάγησαν εἰς τὸν βασιλέα, ὁ δὲ Ρισελιὲ διέταξε τὴν κατεδάφισιν τῶν τειχῶν της. Χ. Δ.

**μονύελος** (ὁ), καὶ ***μονύελον*** (τό)· μονὴ ὕελος φορουμένη εἰς τὸν ἕτερον ὀφθαλμόν, ὅταν ἡ ὅρασις τούτου μόνον εἶναι ἐλαττωματική, κοιν. *μονόκλ.*

**Μονφαλκόνε** (Monfalcone) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, ἀνήκουσα πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Αὐστροουγγρικὴν μοναρχίαν. Κεῖται ἐγγὺς τῆς παραλίας τοῦ μυχοῦ τοῦ κόλπου τῆς Τεργέστης, πρὸς Ν. τῆς Γκορίτσια, εἰς ἧς τὸν σημερινὸν νομὸν ὑπάγεται, εὑρίσκεται δὲ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τεργέστης-Βενετίας. Κάτ. 5.200. Ἔχει μεταλλικὰ ὕδατα. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἰταλῶν τὴν 9 Ἰουνίου 1915, ἀλλ' ἐγκατελείφθη ὑπ' αὐτῶν τὴν 24 Ὀκτωβρίου 1917, μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Καπορέττο. Χ. Δ.

**Μονφερράτο** (Monferrato), ἢ ***Μοντεφερράτο*** (Monteferrato) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μομφερράτο.*

**Μονφερράτο *οἶκος*** βλ. λ. *Μομφερρατικὸς οἶκος.*

—**Μονφερράτο** (Monferrato), ***Νατάλε.*** Ἰταλὸς θρησκευτικὸς συνθέτης τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἀποθανὼν ἐν Βενετίᾳ, ἔνθα ἦτο μουσικὸς διευθυντὴς τοῦ Ἁγίου Μάρκου, τῷ 1865. Ἔγραψε ψαλμούς, μοτέττα, λειτουργίας, μεγαλυνάρια, ἀντίφωνα κλπ. Γ. Σ.

**Μονφὸρ** (Monfort), ***Εὐγένιος.*** Γάλλος μυθιστοριογράφος. Κυριώτερα ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του εἶναι: «Τρελλοὶ γάμοι», «Τὸ ναπολιτάνικο τραγούδι», «Τὸ σπιτάκι τοῦ βουνοῦ», «Νύχτες τῆς Ἱσπανίας» κλπ. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε καὶ τὰ «Εἴκοσι πέντε χρόνια φιλολογικῆς ζωῆς».

**Μονφορτόν, *Αὔγουστος-Ἰωάννης***, *κόμις ντὲ*— βλ. λ. *Ζερμαίν*, Αὔγουστος-Ἰωάννης.

**Μονφωκὸν** (Monfaucon) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μόζα. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατεστράφη ἐξ ὁλοκλήρου. Καταληφθεῖσα κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Σεπτεμβρίου τοῦ 1914 ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, ἐχρησίμευσεν ὡς παρατηρητήριον ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Βερντέν, καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου. Τὴν 27ην Σεπτεμβρίου 1918 ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων, διαρκούσης τῆς φερωνύμου μάχης (26 Σεπτεμβρίου μέχρι 15 Ὀκτωβρίου). Χ. Δ.

— **Μονφωκὸν** (Montfaucon) *[Γεωγρ.]*. Θέσις περιλαμβανομένη ἄλλοτε ἐκτὸς τῶν τειχῶν τῶν Παρισίων, μεταξὺ Βιλλέττας καὶ Μπὺτ-Σωμόν, ἔνθα κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα εἶχε στηθῇ περίφημος μεγάλη ἀγχόνη, λειτουργήσασα μέχρι τοῦ 1761. Μεταξὺ ἄλλων μεγάλων ἀνδρῶν ἀπαγχονισθέντων ἐν Μονφωκὸν εἶναι καὶ οἱ Ἀγκερρὰν ντὲ Μαρινιύ, Ὀλιβιέρος λὲ Νταίν, Σαμπλανσαὶ κλπ. Χ. Δ.

**Μονφωκὸν** (Montfaucon), ***Βερνάρδος*** *ντὲ* —. Γάλλος βενεδικτῖνος, λόγιος καὶ ἑλληνιστής. Ἐγεννήθη τῷ 1655 ἐν Λαγκεντὸκ καὶ ἀπέθανεν ἐν Παρισίοις τῷ 1741.

*Βερνάρδος ντὲ Μονφωκόν.*

Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ἀκολουθήσει τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, ἐνωρὶς ὅμως τὸ ἐγκατέλειψε καὶ ἠσπάσθη τὸν μοναχικὸν βίον, ὡς βενεδικτῖνος (1676). Ἐμελέτησε τὰς κλασσικὰς γλώσσας, τὴν ἑλληνικήν, λατινικήν, κοπτικὴν καὶ ἑβραϊκήν. Τὸ εἰς Ἰταλίαν ταξίδιόν του (1698) τοῦ ἐπέτρεψε νὰ συμπληρώσῃ τὰς γνώσεις του καὶ ν' ἀσχοληθῇ ἰδίως εἰς τὴν μελέτην τῆς ἑλληνικῆς γραφῆς. Ἐνωρὶς ἔγινε γενικὸς ἐπίτροπος τοῦ τάγματος τοῦ Saint-Maur, βραδύτερον ὅμως παρῃτήθη καὶ ἀπεσύρθη εἰς τὸ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ. Τῷ 1719 ἔγινε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Τὸ ἔργον τοῦ Μονφωκὸν εἶναι ἄξιον μεγίστης προσοχῆς. Τῷ 1688 ἐδημοσίευσε τὰ «Analecta sive Opuscula graeca hactenus inedita». Τὰς περὶ τῶν ἐν Ἰταλίᾳ ἐρευνῶν του σημειώσεις ἐξέθηκεν ἐν τῷ ἔργῳ του «Diarium Italicum» (1702). Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἑξῆς συγγράμματα: «L'Antiquité expliquée et représentée en figures» (1719—1724), «Les Monuments de la monarchie française» (1729—1733) κλπ. Ἀξία ἰδιαιτέρας προσοχῆς εἶναι ἡ «Palaeographia graeca», ἐκδοθεῖσα ἐν Παρισίοις τῷ 1708, ἔργον μακρᾶς πείρας καὶ πολυμόχθου ἐργασίας, ὅπερ ἐξακολουθεῖ καὶ σήμερον ἐν πολλοῖς νὰ εἶναι χρήσιμον εἰς τοὺς ἐρευνητάς. Δ. Α. Ζ.

**μονχαϊμίτης** (ὁ) (Monheimit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν, ὅπερ ὀνομάζεται καὶ *καπνίτης*. Ἀποτελεῖ ἰσόμορφον παράταξιν σμιθσωνίτου καὶ σιδηρίτου, ἔχει χρῶμα ἐλαιοπράσινον ἕως πρασινοκίτρινον, ἀπαντᾷ δὲ εἰς Altenberg παρὰ τὸ Aachen. Γ. Β.

**μονχικίτης** (ὁ) (Monchiquit) *[Ὀρυκτολ.]*. Πέτρωμα πυριγενές. Ἀποτελεῖται ἀπὸ θεμελιώδη μᾶζαν λεπτοκκώδη ἕως στιφρὰν καὶ ἀπὸ φαινοκρυστάλλους βιοτίτου εἰς ἑξαγωνικὰ φυλλάρια, ἀμφιβόλου εἰς πρίσματα, αὐγίτου, περιέχει δὲ συγχρόνως ὡς ἐπουσιῶδες ὀρυκτολογικὸν συστατικὸν καὶ ὀλιβίτην, ἐνίοτε δὲ καὶ χαουΐνην ἢ σοδάλιθον. Ἀπαντᾷ ὑπὸ μορφὴν φλεβῶν εἰς τὴν Μασσαχουσέττην, New Yersey, Νέαν Ὑόρκην, Montreal κ. ἀ. Γ. Β.

**μονῶ** (—*όω*), *ἀόρ. ἐμόνωσα—ἐμονώθην, παθ. μετ. μεμονωμένος*· κάμνω τι νὰ εἶναι μόνον, ἄνευ ἄλλου· ἀποχωρίζω ἀπὸ τῆς μετ' ἄλλου ἐπικοινωνίας, ἰδίᾳ ἐπὶ ἠλεκτραγωγῶν σωμάτων· || *μεμονωμένος, —η, —ον*· μόνος, ἄνευ ἄλλου, μοναδικός: «μεμονωμένη περίπτωσις», «παράδειγμα μεμονωμένον».

**Μονὼ** (Monod)· βλ. λ. *Μονό.*

**μονῳδία** (ἡ)· βλ. λ. *τραγούδι* καὶ λ. *μονόλογος.*

**μονῳδὸς** (ὁ, ἡ)· ὁ οὐδενὸς συνοδεύοντος, ᾄδων μόνος ᾄδων, κοιν. *σολίστας.*

**μονῳδῶ** (—*έω*)· εἶμαι μονῳδός, ᾄδω μόνος, οὐδενὸς συνοδεύοντος, ψάλλω μονῳδίαν.

**μονώνυμον** (τὸ) *[Μαθημ.]*. Πᾶσα ἀλγεβρικὴ παράστασις γραμμάτων καὶ ἀριθμῶν, ἐφ' ὧν σημειοῦνται ἐκτελεσταῖαι πράξεις ὁ πολλαπλασιασμὸς καὶ ἡ ὕψωσις εἰς δύναμιν μὲ ἀκέραιον θετικὸν ἐκθέτην· π. χ. $3\,\alpha^2\,\beta\gamma^{10}$

Ἡ παράστασις αὕτη τοῦ ἀριθμητικοῦ συντελεστοῦ 3 καὶ τῶν γραμμάτων λέγεται μονώνυμον (ἐκ τῶν θεμελιωδῶν πράξεων ἐλλείπουσιν ἡ πρόσθεσις καὶ ἀφαίρεσις). Ν. Γ.

**μονώνυμος** (ὁ ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων ἓν μόνον ὄνομα· || συνεκδοχ., ὁ ὁμοιότυπος, ὁ ὁμοιόμορφος.

—***μονώνυμον σύστημα*** *[Συνταγμ. Δίκ.]*. Ὑπὸ τὸν ὅρον τοῦτον, διὰ τοῦ ὁποίου ἀποδίδεται παρ' ἡμῖν ὁ ἀντίστοιχος γαλλικὸς scrutin unominal καὶ ὁ γερμανικὸς einamige Wahl ἢ Einzelwahl, ἐννοεῖται ἐν τῷ ἐκλογικῷ δικαίῳ τὸ σύστημα ἐκεῖνο, κατὰ τὸ ὁποῖον, ἐπὶ βουλευτικῶν ἐκλογῶν, τὸ κράτος διαιρεῖται εἰς ἐκλογικὰς περιφερείας ἴσας κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεταξύ των, εἰς ἑκάστην τῶν ὁποίων ἐκλέγεται εἷς καὶ μόνον ἀντιπρόσωπος. Τὸ μονώνυμον σύστημα ἐννοιολογικῶς ταυτίζεται πρὸς τὸν καθιερωθέντα ὅρον «στενὴ ἐκλογικὴ περιφέρεια» ὑπὸ τὴν ἐπιστημονικὴν τοῦ ὅρου τούτου ἔννοιαν καὶ οὐχὶ ὑπὸ τὴν κρατοῦσαν ἐν Ἑλλάδι ἀντίληψιν, καθ' ἣν ἡ «στενὴ περιφέρεια» ταυτίζεται μὲ τὴν ἐπαρχίαν ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν νομόν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐν τούτοις δύνανται νὰ ἐκλέγωνται περισσότεροι τοῦ ἑνός. Ἐν τῇ ὀρθῇ ἐννοίᾳ τοῦ ὅρου, ἡ «στενὴ περιφέρεια», εἰς τὴν ὁποίαν ἐκλέγεται εἷς μόνον, ἀντιτίθεται πρὸς τὴν «εὐρεῖαν ἐκλογικὴν περιφέρειαν» ἢ πρὸς τὸ σύστημα τῆς κατὰ συνδυασμοὺς ἐκλογῆς (scrutin de liste, Eistenwahl), κατὰ τὸ ὁποῖον ἐκλέγονται ἀπαραιτήτως περισσότεροι τοῦ ἑνὸς ἀντιπρόσωποι. Τὸ μονώνυμον σύστημα οὐδέποτε ἐφηρμόσθη παρ' ἡμῖν, οὐδὲ προσπάθειά τις ἐσημειώθη ποτὲ πρὸς καθιέρωσιν αὐτοῦ. Κατὰ τὸ σύστημα τοῦτο, ὁ ἐκλογικὸς μηχανισμὸς εἶναι εὔκολος, ἐπειδὴ οἱ ἐκλογεῖς εὐχερῶς δύνανται νὰ διακρίνουν μεταξὺ τῶν ὑποψηφίων τὸν ἀξιώτερον. Παρουσιάζεται ὅμως ἐν αὐτῷ τὸ μειονέκτημα ὅτι, λόγῳ τῆς στενότητος τῆς ἐκλογικῆς περιφερείας καὶ συνεπῶς τοῦ μικροῦ πληθυσμοῦ αὐτῆς, δημιουργοῦνται προσωπικοὶ δεσμοὶ μεταξὺ ἐκλογίμων καὶ ἐκλογέων, οἱ ὁποῖοι καταρρίπτουσι καὶ τὴν ἀξίαν τῆς ψήφου καὶ καταβιβάζουν τὸ ποιὸν τοῦ ἀντιπροσωπευτικοῦ σώματος. Η. Γ. Κ.

**μονῶνυξ**, —*υχος* (ὁ, ἡ), καὶ *μονώνυχος* (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων ἕνα μόνον ὄνυχα, μίαν χηλήν, ἄλλως *μονόχηλος, μῶνυξ.*

**μονώροφος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ ἔχων μίαν μόνην ὀροφὴν ἢ ὄροφον, ἓν δάπεδον κατοικίας, μονόπατος: «οἰκία μονώροφος».

**μόνωσις**, —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μονοῦν, ἀπομόνωσις· || ἐν τῇ ἠλεκτροτεχνίᾳ, ὁ ἐμποδισμὸς τῆς διαχύσεως τοῦ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος, ἢ τὸ μέσον δι' οὗ αὕτη ἐπιτυγχάνεται: «δὲν ἔχει γίνει μόνωσις τῶν ἀγωγῶν», «φέρει μόνωσιν ἐκ γουταπέρκης».

— *[Ἠλεκτρ.]* Βλ. λ. *ἠλεκτρικαὶ μονώσεις* (τόμ. ΙΒ', σ. 204 κ. ἑ.).

— *[Δομικ.]* Ἐν ταῖς δομαῖς λαμβάνεται πρόνοια πρὸς *μόνωσιν* αὐτῶν ἀπὸ τῆς ἐπιδράσεως διαφόρων ἐξωτερικῶν αἰτίων:

1) ***Μόνωσις ἠλεκτρική.*** Ὑποχωρήσεις δομῶν καὶ μάλιστα θεμελιώσεων ἐκ σιδηροφόρου κονιάματος (béton armé) ἀποδίδονται εἰς τὴν ἐπίδρασιν ἠλεκτρικῶν ρευμάτων ἀμέσων ἢ ἐπαγωγικῶν. Ἡ φθορὰ ἐπέρχεται δι' ἠλεκτρολύσεως τοῦ κονιάματος καὶ εἶναι σπουδαιοτέρα ἐπὶ σιδηροφόρου δομῆς καὶ δι' ἀμέσων ρευμάτων, μάλιστα δὲ ὅταν τὸ μέταλλον, ὅπως συνηθέστερον συμβαίνει, ἀποτελῇ τὴν κάθοδον. Τὰ ἐπαγωγικὰ ρεύματα μικρὰν ἀσκοῦσιν ἐπίδρασιν καὶ μόνον ἐπὶ τῶν σιδηροφόρων κονιαμάτων. Καλὴ ἠλεκτρικὴ μόνωσις ἐπιτυγχάνεται δι' ἐγκλεισμοῦ τῶν θεμελιώσεων ἐντὸς τοιχοδομῆς ἐκ γρανίτου. Αἱ ὑδραυλικῶς μονωθεῖσαι θεμελιώσεις παρουσιάζουσι καὶ μικροτέραν ἠλεκτρ-

Digitized by Google

κὴν ἀγωγιμότητα. Ἠλεκτρικὰ κυκλώματα ἐν δομῇ ἐκ σιδηροφόρου κονιάματος δέον νὰ μονωθῶσιν ἀπὸ τοῦ ἐδάφους, τὰ δὲ μεταλλικὰ δομικὰ τμήματα ἔσω τῆς δομῆς δέον νὰ εἶναι μεμονωμένα ἀπὸ τῶν ἔξω, δυνάμενα νὰ συνδεθῶσι μετ' ἀλλήλων ἀλλ' οὐχὶ μετὰ τοῦ ἐδάφους. Ἡ μεταλλικὴ σωλήνωσις, ἀγωγοὶ περιβεβλημένοι διὰ μολυβδίνου περιβλήματος κ. ὅ. πρέπει νὰ μονωθῶσιν ἠλεκτρικῶς ἀπὸ τοῦ κονιάματος κατὰ τὰ σημεῖα εἰσόδου καὶ ἐξόδου αὐτῶν ἐκ τῆς δομῆς.

2) ***Ἠχητικὴ μόνωσις.*** Πρὸς κατάπνιξιν τοῦ ἤχου καὶ ἠχητικὴν μόνωσιν δομικῶν τμημάτων ἐγένετο ἀνέκαθεν εἰδικὴ δομὴ διὰ διατάξεων ξυλίνων ἐπιστρώσεων διπλῶν παρειῶν κ. λ. Κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους χρησιμοποιοῦσιν εἰδικὰς πρὸς τοῦτο ὕλας, καταλλήλως ἐφαρμοζομένας ἐν τῷ σώματι τῶν τοίχων, δαπέδων, θυρῶν κ. λ. Τινὲς τούτων ἔχουσι βάσιν τὸ ξύλον (πεπιεσμένον ξύλον, βάμβαξ ἐκ ξύλου κ. λ.) ἄλλαι δὲ τὰς κονίας (σανίδες ἐκ γύψου, ἐκ σκωριῶν ἢ κισήρεως μετὰ κονίας Πορτλάνδης κ. λ.), τὴν τύρφην κ. λ.

3) ***Θερμικὴ μόνωσις.*** Ἡ θερμικὴ μόνωσις τῶν δομῶν ἔχει σπουδαίαν σημασίαν ἀπὸ ὑγιεινῆς ἀλλὰ κυρίως οἰκονομικῆς ἀπόψεως, γνωστοῦ ὄντος ὅτι ἡ θέρμανσις χώρου τινὸς δυναμένου νὰ συγκρατήσῃ μεταξὺ τῶν τοιχωμάτων αὐτοῦ τὸ μέγιστον δυνατὸν τῆς προσφερομένης θερμότητος εἶναι πληρεστέρα καὶ ἐπιτυγχάνεται διὰ πολὺ μικροτέρου ποσοῦ καυσίμου ὕλης τῆς ἀπαιτουμένης διὰ χῶρον ἀφίνοντα εὐχερῶς τὴν θερμότητα νὰ διαφεύγῃ πρὸς τὰ ἔξω. Κατὰ τὸ θέρος τοὐναντίον δομὴ δυσχεραίνουσα τὴν εἴσδυσιν τῆς ἐξωτερικῆς θερμότητος τηρεῖ τὸν χῶρον ψυχρότερον. Δυσθερμαγωγὸς δομὴ ἐπιτυγχάνεται διὰ χρήσεως ἀεροπερατοῦ ὑλικοῦ, ἤτοι πορωδῶν λίθων (πουριά), κονιαμάτων μετὰ καταλλήλου ἀδρανοῦς προσμίγματος, πλίνθων κυρίων ὀστῶν, πορωδῶν, διατρήτων ἀνόπτων πλίνθων κ.τ.ό. Ὁ ἐντὸς τῶν πόρων τῶν ὑλικῶν τούτων ὑπάρχων ἐν ἀκινησίᾳ δυσθερμαγωγὸς ἀὴρ συνιστᾷ ἄριστον μονωτικὸν τῆς θερμότητος φράγμα. Ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ στρώματος ἠρέμου ἀέρος βασίζεται καὶ ἡ μόνωσις διὰ ξυλοδομῆς διπλῶν παρειῶν. Ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς στηρίζεται ἡ μόνωσις δι' εἰδικῶν οὐσιῶν, οἷαι π. χ. αἱ χρησιμοποιηθεῖσαι κατὰ τὴν ἠχητικὴν μόνωσιν. Πρὸς μόνωσιν ἀπὸ τῆς ἐξωτερικῆς θερμότητος χώρων ταπεινῆς θερμοκρασίας, ὅπως π. χ. ψυχραὶ ἀποθῆκαι (ψυγεῖα) κλπ., ἐφαρμόζεται εἰδικὴ διάταξις πλινθοδομῆς ἱκανοῦ ὑλικοῦ πάχους, ἀλλὰ λεπτῶν παρειῶν, ἐγκλειούσης στρῶμα ἠρέμου ἀέρος. Μόνωσις μεταλλικῆς σωληνώσεως διοχετεύσεως θερμῶν ἀερίων ἢ ὑγρῶν ἐπιτυγχάνεται δι' ἐπενδύσεως μέσῳ δυσθερμαγωγῶν μιγμάτων ἐχόντων βάσιν τὰς ἶνας τοῦ ἀμιάντου κυρίως, ἐγκλειούσας, ὡς γνωστόν, ἀέρα. Πρὸς μόνωσιν χώρου θερμαινομένου δι' ὑπερθέρμου ἀτμοῦ, ἡ τοιχοποιΐα αὐτοῦ γίνεται δι' ὀπτῶν πλίνθων προκυπτουσῶν ἐκ πηλοῦ ἀναμιχθέντος πρὸ τῆς μορφώσεως καὶ ὀπτήσεως μετὰ τριμμάτων φελλοῦ καὶ ὀρυκταλεύρου (βλ. λ. *πλίνθοι*).

4) ***Μόνωσις ὑδραυλική.*** Τὸ ὕδωρ, ὑπὸ μορφὴν ἐδαφικοῦ ὕδατος ἢ ὑγρότητος ἢ ἀτμοσφαιρικοῦ ὕδατος (βροχή, χιών, δρόσος), ἀπορροφεῖται ὑπὸ τῶν ἐν τῷ ἐδάφει ἢ ὑπὲρ αὐτὸ τοιχοδομῶν, ὅταν εὑρεθῇ ἐν ἐπαφῇ μετ' αὐτῶν, διαδίδεται δὲ ἐντὸς τῆς ὅλης μάζης τῆς τοιχοδομῆς διὰ τῶν τριχοειδῶν ἀγγείων, εἰς τὴν ὕπαρξιν τῶν ὁποίων ὀφείλεται πᾶσα ἀπορρόφησις. Τὸ συνηθέστερον ἀποτέλεσμα τῆς τοιαύτης ἀπορροφήσεως εἶναι ὁ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῆς τοιχοδομῆς σχηματισμὸς ἐπανθισμάτων, ἤτοι κρυστάλλων ἐκ τῶν ἁλάτων, τὰ ὁποῖα ἔφερε τὸ ὕδωρ ἐν διαλύσει, ἢ τὰ ὁποῖα ἐνείχοντο ἐντὸς τοῦ κονιάματος ἢ τῶν λίθων (κυρίως τεχνητῶν), δι' ὧν ἐγένετο ἡ δομή. Τοῖχος ἀπορροφῶν ὑγρασίαν παρουσιάζει ὑπὸ ὑγρὰν ἀτμοσφαιρικὴν κατάστασιν κηλῖδας λευκοτέφρους, ὑπὸ ξηρασίαν δὲ ἐπάνθισμα λευκὸν ἢ τεφρόν. Αἱ ἐκ τῶν ἐναλλασσομένων ὑγρομετρικῶν καταστάσεων τῆς ἀτμοσφαίρας προκύπτουσαι οὕτω διαλύσεις καὶ ἀνακρυσταλλώσεις ἔχουσιν ἀποτέλεσμα, συνεπείᾳ τῶν ἀναπτυσσομένων κρυσταλλικῶν τάσεων, τὴν καταστροφὴν τοὐλάχιστον τοῦ ἐπιχρίσματος τῆς τοιχοδομῆς. Σοβαρωτέρα εἶναι ἡ φθορὰ καὶ βαίνει καθ' ὅλην τὴν μᾶζαν τῆς τοιχοδομῆς, ὅταν προκύπτῃ ἐκ διαλυμάτων ὀξέων τοῦ χώματος (humus), ἅτινα ἰδιαιτέρως ἐπὶ τοιχοδομῶν ἐξ ἀσβεστολίθου, τρέπουσι τὰ συστατικὰ εἰς διαλυτὰ ὀργανικὰ ἅλατα τοῦ ἀσβεστίου. Τοιαῦται τοιχοδομαὶ δὲν πρέπει νὰ ἔρχωνται εἰς ἐπαφὴν μετὰ ἐδάφους ἐκ χώματος κήπων ἢ ἀγρῶν, ἀλλὰ νὰ μονοῦνται τούτου διὰ στρώματος ἐξ ὑδραυλικοῦ κονιάματος, κατὰ προτίμησιν μετὰ θηραϊκῆς γῆς ἐπεξεργασθέντος. Ἕτερον ἀποτέλεσμα τῆς ἀπορροφήσεως ὕδατος εἶναι ἡ μείωσις τοῦ δυσθερμαγωγοῦ τῶν τοιχοδομῶν, τῶν ὁποίων οἱ πόροι πληροῦνται ὕδατος. Μακρὰ καὶ συνεχὴς ἐπίδρασις ἀφθόνου ὕδατος εἶναι δυνατὸν νὰ φθάσῃ μέχρι πλήρους μαλθακύνσεως τοῦ κονιάματος καὶ τῶν ἀνόπτων τεχνητῶν λίθων. Τὸ ἐδαφικὸν ὕδωρ ἀσκεῖ καταστρεπτικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν θεμελιώσεων, ἀκόμη δὲ καὶ τῶν δι' ὑδραυλικοῦ κονιάματος, τὸ ὁποῖον εἶναι, κατὰ τὸν πρῶτον τοὐλάχιστον ἀπὸ τῆς ἐφαρμογῆς αὐτοῦ χρόνον, πορῶδες.

Πρὸς ὑδραυλικὴν μόνωσιν θεμελιώσεων ἐν ὑγρῷ ἐδάφει καὶ δι' ὑδραυλικῶν κονιαμάτων ἐφαρμόζεται, ὅταν ἀπαιτῆται ταχεῖα μόνωσις, φράγμα ἐντὸς τοῦ σώματος τοῦ κονιάματος, ἐξ ἐναλλασσομένων στρωμάτων, ἀπὸ τριῶν μέχρις ἕξ, ἐκ θερμῆς ἀσφάλτου ἢ πίσσης μετὰ χάρτου ἐξ ὑφάσματος. Προτιμᾶται ἡ ἄσφαλτος, διότι ἡ πίσσα, ὑπὸ τὴν συνεχῆ δρᾶσιν τοῦ ὕδατος, διογκοῦται καὶ φθείρεται ταχέως. Σημειωτέον ὅτι τόσον ἡ πίσσα, ὅσον καὶ ἡ ἄσφαλτος, δὲν εἶναι μεγάλης διαρκείας, ὡς οὐσίαι ὀργανικῆς προελεύσεως, ἀρκοῦσιν ὅμως μέχρις ὅτου στομωθῶσιν οἱ πόροι τοῦ κονιάματος. Χρῆσις ὀργανικῶν οὐσιῶν (μαλθῶν κ.τ.ό.) ἀμέσως ἢ ὑπὸ μορφὴν εἰδικῶν σκευασιῶν (Truscon κ. ἄ.) γίνεται καὶ ἄλλως, δι' ἐνσωματώσεως αὐτῶν ἐντὸς τῆς μάζης τοῦ κονιάματος εἰς ποσότητας ἱκανὰς ἵνα καταστήσωσι τὸ τριχοειδὲς τοῦ κονιάματος ἀρνητικὸν (βλ. λ. *τριχοειδές*). Διαρκὴς μόνωσις ἐπιτυγχάνεται διὰ πληρώσεως τῶν πόρων τοῦ κονιάματος ὑπὸ ἀδρανοῦς τινος οὐσίας, ὅπως ὁ ἀργιλλικὸς πηλὸς ἢ ὑπὸ ἡφαιστείας γῆς καὶ ἐν Ἑλλάδι μάλιστα διὰ θηραϊκῆς γῆς. Τὰ ὑλικὰ ταῦτα ἀναμειγνύονται μετὰ τοῦ κονιάματος κατὰ τὴν ἐπεξεργασίαν αὐτοῦ. Ὁμοίως, διὰ χρήσεως θηραϊκῆς γῆς ἐν τῇ ἐπεξεργασίᾳ, παρασκευάζονται κονιάματα πρὸς μονωτικὴν ἐπίχρισιν διαρρεόντων τοίχων ὑπογείων δομῶν, σηράγγων κ. ὅ.

Τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἀτμοσφαιρικῆς ὑγρασίας εἶναι μικροτέρας σημασίας, καθόσον ἡ ἐπίδρασις αὐτῆς δὲν εἶναι διαρκής, τὸ δὲ ἀτμοσφαιρικὸν ὕδωρ εἶναι σχετικῶς καθαρόν, ὥστε μόνον μηχανικήν, οὐχὶ δὲ χημικὴν φθορὰν δύναται νὰ θεωρηθῇ ἐπιφέρον. Ἡ ὑγρασία τῶν ὑπὲρ τὸ ἔδαφος δομῶν, ὅταν εἶναι ἀξία λόγου, ὀφείλεται εἰς ἀπορρόφησιν ἀπὸ τῶν θεμελίων, ἔνθα δέον νὰ ἀναζητηθῇ ἡ θεραπεία. Ὁπωσδήποτε ὑγροὶ τοῖχοι μονοῦνται ἐσωτερικῶς διὰ δομῆς ἐλαφρᾶς ἐπιστρώσεως ξύλου, γυψοσανίδων, σιμεντοσανίδων κ.τ.ὅ. εἰς ἀπόστασιν 1—2 ἑκ. ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τοῦ τοίχου. Δομαὶ ἐξ ἀκαύστου πηλοῦ (κοιν. *πλήθρα*) προστατεύονται ἀπὸ τῆς ἀτμοσφαιρικῆς ὑγρασίας διὰ προεχουσῶν στεγῶν καὶ ἀνυδροπερατῶν ἐπιχρισμάτων.

Α. Ι. ΣΟΦΙΑΝΟΠΟΥΛΟΣ

**μονωτήρ,**—*ῆρος*. Ὄργανον χρησιμεῦον διὰ τὴν ἀπομόνωσιν τῶν ἠλεκτρικῶν συσκευῶν ἢ ἀγωγῶν, πρὸς ἀποφυγὴν τῆς διαχύσεως τοῦ ρεύματος ἐξ ἐπαφῆς πρὸς τὴν γῆν ἢ ἄλλα σώματα.

—*[Ἠλεκτρ.]* Βλ. λ. *ἠλεκτρικαὶ* μονώσεις (τόμ. ΙΒ', σ. 204 κ. ἑ.).

**μονωτὴς** (ὁ)· σῶμα ἢ μέσον ἐμποδίζον τὴν μετάδοσιν τοῦ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος, τοῦ ἤχου ἢ τῆς θερμότητος· ἄλλως *μονωτήρ*.

**μονωτίδαι** (οἱ) (Monotidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια σκωλήκων τρηματωδῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πλατελμίνθων*, περιλαμβάνουσα μικρότατα ζῷα, ἀπαντῶντα εἰς πάσας σχεδὸν τὰς θαλάσσας. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μόνωτος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μονωτικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀπομονῶν, ὁ ἀποχωρίζων· || Ἰδίᾳ, μονωτικὸς τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, ὁ δυσηλεκτραγωγός: «ἡ ὕαλος εἶναι μονωτικὸν σῶμα».

**—μονωτικαὶ** ***οὐσίαι*** (ἢ *μονωτικὰ σώματα*) *[Ἠλεκτρ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικαὶ* μονώσεις, *δυσηλεκτραγωγὰ σώματα*.

**μόνωτος** (ὁ) (Monotus) *[Ζῳολ.]*. Γένος σκωλήκων τρηματωδῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μονωτιδῶν*, περιλαμβάνον μικροτάτους θαλασσίους σκώληκας. Δ. Ν. Π.

**μόξαι** (αἱ) (Moxa) *[Φαρμακοτεχν.]*. Καλοῦνται οὕτω μικρὰ σωμάτια ὕψους 2—3 ἑκσμ. ἐξ εὐκαύστου οὐσίας, ἅτινα ἀναπτόμενα καίονται βραδέως, φερόμενα δὲ ἐπὶ τοῦ δέρματος προκαλοῦν ἐπιφανειακῶς ἐγκαύματα. Αἱ μόξαι ἐχρησιμοποιοῦντο παλαιότερον ἰδίᾳ ἐπὶ παραλύσεων καὶ ἐπὶ χρονίων παθήσεων τῶν ὀστῶν καὶ τῶν ἄρθρων. Ἀναλόγως τῆς μορφῆς των διεκρίνοντο αὗται εἰς σφαιροειδεῖς καὶ εἰς κυλινδροειδεῖς. Αἱ μόξαι ὀφείλουν τὴν προέλευσιν αὐτῶν εἰς τὴν Κίναν, ἔνθα παρασκευάζονται τοιαῦται βραδύκαυσται μᾶζαι ἐκ τοῦ τριχώματος τῶν βλαστῶν διαφόρων εἰδῶν ἀρτεμισίας, διὰ τριβῆς τῶν ξηρανθέντων βλαστῶν μεταξὺ τῶν χειρῶν, ἐξ ἧς λαμβάνονται βαμβακώδεις λεπταὶ ἶνες. Βραδύτερον αἱ κινεζικαὶ αὗται μόξαι ὑποκατεστάθησαν δι' ἐστριμμένου βάμβακος, ταύτας δὲ πάλιν ὑποκατέστησαν αἱ ἐκ χάρτου, ὅστις ἐβρέχετο διὰ διαλύματος χρωμικοῦ καλίου ἢ μολυβδόξους, ἐκόπτετο εἰς ταινίας καὶ διεμορφοῦτο εἰς κυλίνδρους. Πρὸς ἐφαρμογὴν τῶν μοξῶν ἐκαλύπτετο τὸ δέρμα διὰ διατρήτου ἐφύγρου τεμαχίου χάρτου καταλλήλως στερεουμένου. Κ. Γ. Μ.

**Μοξιανοὶ** (καὶ ***Μοξεανοί,*** ἢ ***Μοζεανοὶ***) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Μεγάλης Φρυγίας, ἐν Μ. Ἀσίᾳ, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. V, 2 18), κατοικῶν εὐρεῖαν καὶ καλῶς ἀρδευομένην κοιλάδα. Πόλεις αὐτῶν ἦσαν ἡ *Διόκλεια* (νῦν *Δολγᾶκιοϊ*) καὶ ὁ *Ἱεροχάραξ* (νῦν *Ὀτουράκ*). Α. Θ. Σ.

**Μοξίας, *Ματθαῖος*.** Κρὴς εἰκονογράφος τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἔργον αὐτοῦ σῴζεται εἰκὼν παριστῶσα τὸν ἅγιον Γεώργιον, εὑρισκομένη εἰς τὴν ἐκκλησίαν τῆς Παναγίας τοῦ χωρίου Ἀρχάνες τῆς Κρήτης. ΕΡ. Μ.

**Μόξιφα** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Χαλδίας τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 20 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες προσέφυγον εἰς Ἑλλάδα τῷ 1923. Ε. Ι. Χ.

**Μόον** (Moon ἢ Mohn, ἐσθονιστὶ Muhn) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς δημοκρατίας τῆς Ἐσθονίας, κειμένη κατὰ τὴν βορείαν εἴσοδον τοῦ κόλπου τῆς Ρίγας, μεταξὺ τῆς στερεᾶς, ἀφ' ἧς χωρίζεται διὰ τοῦ ὁμωνύμου πορθμοῦ, καὶ τῆς νήσου Αἶζελ, πρὸς Α., ὅπου μικρὸς πορθμὸς ἐπίσης. Ἐμβαδὸν 207 τ. χλμ., κάτοικοι 6.000, κατὰ τὸ πλεῖστον γεωργοὶ καὶ ἁλιεῖς. Κατὰ τὸν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον ἡ νῆσος κατελήφθη ὑπὸ γερμανικῶν στρατευμάτων (17—18 Ὀκτωβρίου 1917) ἅτινα, τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1918, διεπεραιώθησαν διὰ τοῦ παγωμένου πορθμοῦ εἰς τὸ ἔναντι ἐσθονικὸν ἔδαφος. Θ. Κ.

**Μόου** (Mhow) *[Γεωγρ.]*. Στρατιωτικὸς σταθμὸς τῶν Κεντρικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ κράτει τοῦ Ἰντόρ, ἀπέχων 21 χλμ. πρὸς ΝΔ. ἀπὸ τῆς πόλεως Ἰντὸρ καὶ 13 ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ Γκοῦμπερ, παρὰ τὸ ὄρος Βίντγια. Κάτ. 30.000. Χ. Δ.

**Μόουϊ** (Mauï) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν νήσων Χαβάϊ (βλ. λ. *Μάουϊ*).

**Μόπρ.** Συντετμημένη ὀνομασία τῆς ὀργανώσεως *Διεθνὴς Ἐργατικὴ Βοήθεια* (βλ. λ.).

**Μὸρ** (More καὶ Moor)· βλ. *Μώρ*.

— **Μὸρ** (Moore)· βλ *Μούρ*.

— **Μὸρ** (More), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος πολιτικὸς (βλ. *Μῶρος*).

— **Μὸρ** (Mohr), ***Κάρολος - Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς χημικὸς καὶ ἰατρὸς (1806—1879). Εἰδικευθεὶς εἰς τὴν φαρμακοτεχνίαν, ἐγένετο καθηγητὴς ἐν Βόννῃ, συνέβαλε δὲ σημαντικῶς εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς ἐφηρμοσμένης φαρμακευτικῆς διὰ τῶν συγγραμμάτων καὶ τῶν ἐπινοήσεών του, ἐν αἷς ὁ ὁμώνυμος αὐτοῦ ζυγὸς πρὸς προσδιορισμὸν τοῦ εἰδικοῦ βάρους καὶ αἱ ἐπίσης φέρουσαι τὸ ὄνομά του προχοΐδες. Κ. Γ. Μ.

— **Μὸρ** ***ζυγὸς*** *[Φυσ.]*. Ἡ συσκευὴ αὕτη χρησιμεύει διὰ τὸν προσδιορισμὸν τῆς πυκνότητος τῶν ὑγρῶν, ἀποτελεῖται δὲ ἐκ μοχλοῦ δυναμένου νὰ στρέφεται περὶ ἀκμήν, εἰς τὸ ἓν ἄκρον τοῦ ὁποίου ἐξαρτᾶται πλωτήρ, ὅστις ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ εἶναι ταυτοχρόνως διαμεμορφωμένος εἰς θερμόμετρον, ἐνῷ κατὰ τὸ ἕτερον ἄκρον φέρει ἀντίβαρον, δι' οὗ ἰσορροπεῖται ὁ πλωτὴρ ἐν τῷ ἀέρι. Ἐὰν ὁ πλωτὴρ βυθισθῇ ἐν ὑγρῷ, τότε οὗτος ὑφίσταται ἄνωσιν, ἥτις ἰσορροπεῖται διὰ σταθμῶν τύπου ἱππέων, ἅτινα τοποθετοῦνται ἐπὶ τῶν δέκα ἰσαπεχουσῶν ἐγκοπῶν, δι' ὧν εἶναι ἐφωδιασμένος ὁ μοχλοβραχίων τοῦ ζυγοῦ.

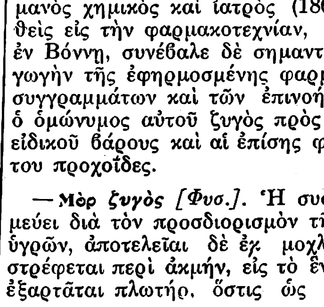

*Ὁ ζυγὸς τοῦ Μόρ.*

Ὁ ζυγὸς φέρει κυρίως τέσσαρας ἱππεῖς $P_1$, $P_2$, $P_3$, $P_4$, ὧν ὁ μὲν $P_1$ ἰσορροπεῖ ἀκριβῶς τὴν ἄνωσιν εἰς ὕδωρ 4°, τὰ δὲ ἄλλα σταθμὰ εἶνε ρυθμισμένα ὥστε $P_2 = 1/_{10}\ P_1$, $P_3 = 1/_{10}\ P_2$ καὶ $P_4 = 1/_{10}\ P_3$. Διὰ τῆς τοιαύτης διατάξεως ἐπιτυγχάνεται ἡ ἄμεσος ἀνάγνωσις τῆς πυκνότητος ἐκ τῶν θέσεων τῶν ἐγκοπῶν εἰς ἃς εὑρίσκονται τὰ σταθμὰ πρὸς ἰσορροπίαν τῆς ἀνώσεως τοῦ πλωτῆρος, βυθιζομένου ἐν τῷ ὑπὸ ἐξέτασιν ὑγρῷ. Οὕτω ἐὰν π. χ. διὰ τὸ οἰνόπνευμα ἡ ἄνωσις ἰσορροπῆται τιθεμένων τῶν σταθμῶν ὡς ἑξῆς: τοῦ $P_1$ εἰς τὴν ἐγκοπὴν 8, τοῦ $P_2$ εἰς 7, τοῦ $P_3$ εἰς 5 καὶ τοῦ $P_4$ εἰς 3, ἡ πυκνότης τοῦ οἰνοπνεύματος εἶναι 0,8753. Πράγματι, ἐὰν ἐφαρμόσωμεν τὸ θεώρημα τῶν ροπῶν καὶ καλέσωμεν διὰ 6 τὴν ἄνωσιν τοῦ οἰνοπνεύματος, ἐπενεργοῦσαν εἰς τὸ ἄκρον τοῦ μοχλοβραχίονος, θὰ ἔχωμεν:

$$6.10 = 8\ P_1 + 7\ P_2 + 5\ P_3 + 3P_4$$

ἢ δυνάμει τῆς σχέσεως τῶν σταθμῶν

$$6.\ 10 = 8{,}753.\ P_1$$

$$\text{καὶ}\ \frac{6}{P} = 0{,}8753.$$

Ἀλλὰ P, ὡς εἴδομεν, παριστᾷ τὴν ἄνωσιν τοῦ

πλωτῆρος ἐν ὕδατι, ἄρα 6/P παριστᾷ τὴν πυκνότητα τοῦ οἰνοπνεύματος.

Προκειμένου περὶ ὑγρῶν πυκνότητος μεγαλυτέρας τῆς τοῦ ὕδατος, ἡ ἰσορροπία ἐπιτυγχάνεται δι' ἑνὸς ἱππέως $P_1$ τιθεμένου ἐπὶ τῆς ἐγκοπῆς καὶ δι' ἱππέων $P_1$, $P_2$, $P_3$, $P_4$ τιθεμένων εἰς τὰς ἐγκοπὰς μεταξὺ 0 καὶ 10. Οὕτω διὰ διάλυμα θειικοῦ χαλκοῦ ἐὰν ἡ ἕνωσις ἰσορροπῆται διὰ τῆς ἀκολούθου διατάξεως τῶν ἱππέων: $P_1$ εἰς 10, $P_1$ εἰς 1, $P_2$ εἰς 4, $P_3$ εἰς 5 καὶ $P_4$ εἰς 7, ἡ πυκνότης τοῦ θειικοῦ χαλκοῦ εἶναι 1,1457. Κ. Π.

**μόρα** (ἡ)· ἀντὶ *μώρα* (βλ. λ.).

—**μόρα** (ἡ)· εἶδος ἰταλικοῦ παιγνίου (βλ. *μόρρα*).

**Μόρα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεσόγειος πόλις τῆς νήσου Κορσικῆς, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. III, 2, 8) εἰς Ἀν. μηκ. 30° 30′ καὶ βορ. πλ. 40°, πιθανῶς παρὰ τὸ νῦν Capo di Muro. Α.Θ.Σ.

**Μόρα** ***βαλεσή***. Τίτλος τῶν Τούρκων διοικητῶν τῆς Πελοποννήσου (=ἄρχων τοῦ Μορέως). Οὗτοι ἤδρευον κατ' ἀρχὰς ἐν Ναυπλίῳ, ἀφ' ἧς, τῷ 1715, κατέλαβον οἱ Τοῦρκοι τὴν Πελοπόννησον, ἀφαιρέσαντες αὐτὴν ἀπὸ τῶν Βενετῶν, κατόπιν δέ, ἀπὸ τοῦ 1779, ἐν Τριπόλει. [Πρβλ. τόμ. Ε', σελ. 533α.] Τ. Ε. Ε.

**Μορά**, ἡ ***Μοῦρτεν*** (Morat ἢ Murten) *[Γεωγρ.]*.

—1) Λίμνη τῆς Ἑλβετίας, ἐν τῷ καντονίῳ τοῦ Φρειβούργου. Ἔχει ἐπιφάνειαν 27 τ. χλμ. καὶ 48 μ. βάθος. Κεῖται εἰς ὕψος 433 μ. καὶ περιβάλλεται ὑπὸ ὑψηλῶν ὀρέων, ἔχουσα παρὰ τὰς ὄχθας της ἀφθονίαν ἀμπέλων καὶ ὀπωροφόρων δένδρων. Ἐν αὐτῇ εὑρίσκονται ἴχνη παναρχαίων συνοικισμῶν ἐπὶ πασσάλων.

—2) Πόλις τῆς Ἑλβετίας, ἐν τῷ καντονίῳ τοῦ Φρειβούργου, παρὰ τὴν λίμνην Μορά. Κάτ. 2.300. Ἔχει ναὸν τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ ἐργοστάσια ὡρολογίων. Εἶναι ἱστορική, διότι παρ' αὐτὴν ἔλαβε χώραν τὴν 22 Ἰουνίου 1476 περίφημος μάχη, καθ' ἣν οἱ Ἑλβετοὶ κατετρόπωσαν τὸν Κάρολον τὸν Τολμηρόν. Τῷ 1876 ἑωρτάσθη μεγαλοπρεπῶς ἡ τετάρτη ἑκατονταετηρὶς τοῦ γεγονότος διὰ τῆς συρροῆς λαοῦ ἐξ ἁπάντων τῶν μερῶν τῆς Ἑλβετίας καὶ ἀνεγέρσεως μαρμαρίνου ὀβελίσκου. Τὸ κοιμητήριον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐτάφησαν τὰ ὀστᾶ τῶν 18.000 Βουργουνδίων, οἵτινες ἐφονεύθησαν ἐν Μορά, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «ὀστεοφυλάκιον τοῦ Μορά», κατεστράφη τῷ 1798 ὑπὸ Γάλλων στρατιωτῶν Βουργουνδίων, οἵτινες ἀπήγαγον τὰ ὀστᾶ τῶν ὁμοεθνῶν των. Μ. Δ. Β.

**Μοράβας** (Morava) *[Γεωγρ.]*. Ὁ κυριώτερος ποταμὸς τῆς Σερβίας, ἀποτελούμενος ἐκ τοῦ *Νοτίου* ἢ *Βουλγαρικοῦ Μοράβα* καὶ τοῦ *Δυτικοῦ* ἢ *Σερβικοῦ Μοράβα*. Τὸ μῆκος τοῦ Νοτίου Μοράβα εἶναι 261 χλμ., τοῦ δὲ Δυτικοῦ 213 χλμ., μετὰ δὲ τὴν συνένωσιν τούτων ὁ κυρίως Μοράβας ἔχει μέχρι τῆς εἰς τὸν Δούναβιν ἐκβολῆς αὐτοῦ μῆκος 145 χλμ. Διατρέχει εὔφορον καὶ εὐρεῖαν κοιλάδα, εἶναι δὲ ἀπὸ τῆς πόλεως Κούπριγια καὶ ἐφεξῆς πλωτὸς διὰ σχεδίας καὶ μικρὰ πλοῖα. Εἰς τὰς ἐκβολὰς αὐτοῦ σχηματίζεται δέλτα, καὶ ὁ μὲν ἀνατολικὸς κλάδος, ὁ κυρίως Μοράβας, ἐκβάλλει παρὰ τὴν πόλιν Ντουμπραβίκα, ὁ δὲ δυτικός, ὀνομαζόμενος *Γιεζάβα*, παρὰ τὴν Σεμένδριαν.

Ὁ Νότιος Μοράβας, πηγάζων ἐκ τῶν δυτικῶν κλιτύων τοῦ ὄρους Καραδάγ, παρὰ τὴν πόλιν Κατσανίκ, δέχεται εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τὸν παραπόταμον *Μοραβίκα*, οὗτινος τὴν κοιλάδα διατρέχει ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Σκοπίων-Βράντζα. Ὁ Νότιος Μοράβας διευθυνόμενος πρὸς βορρᾶν δέχεται πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς ὀχυρᾶς πόλεως Νὶς τὸν παραπόταμον *Νιζάβα*, ὅστις διανοίγει δίοδον πρὸς τὴν βουλγαρικὴν πρωτεύουσαν Σόφιαν καὶ οὗτινος τὴν κοιλάδα διατρέχει ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Νὶς-Πιρότ. Ἡ κοιλὰς τοῦ Νιζάβα ἐγένετο θέατρον μαχῶν κατὰ τὸ 1809, εἶτα κατὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1877 καὶ κατὰ τὸν Σερβοβουλγαρικὸν τοῦ 1885. Ἐν τῇ κοιλάδι ταύτῃ κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1918 ἔφθασεν ἡ Γ' ἑλληνικὴ μεραρχία, ἥτις κατὰ τὴν πρὸς βορρᾶν πορείαν μέχρι Σερβίας τοῦ ἐν Μακεδονίᾳ στρατοῦ τῶν συμμάχων τῆς Ἀντὰντ εἰσῆλθεν εἰς τὴν Παλαιὰν Σερβίαν.

Ὁ Μοράβας μετὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Νιζάβα διευθύνεται πρὸς βορρᾶν, διερχόμενος δυτικῶς τῆς πόλεως Ἀλέξινατς, ἥτις ἦτο μία τῶν εἰσόδων τῆς Σερβίας μέχρι τοῦ 1877, διὸ καὶ ἔλαβον χώραν ἐν τῇ περιοχῇ αὐτῆς διάφοροι κατὰ καιροὺς μάχαι, ὡς ἡ τῆς Μπάνζα (1809), αἱ περὶ τὸ Δελιγράδ (1806, 1810, 1813), κατὰ δὲ τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Τσερνάϊεφ ἡ πόλις κατελήφθη παρὰ τῶν Τούρκων. Πρὸς τὸν κατάρρουν τοῦ Ἀλέξινατς ὁ ποταμὸς οὗτος δέχεται ἐν τῇ ἀριστερᾷ ὄχθῃ του τὰ ὕδατα τοῦ Σερβικοῦ ἢ Δυτικοῦ Μοράβα.

Ὁ Σερβικὸς Μοράβας, πηγάζων ἀπὸ τῶν βορείων κλιτύων τοῦ ὄρους Γκόλια (ὑψ. 1819), ἔχει ἐν ἀρχῇ τὸ ὄνομα *Μοραβίκα*, κατευθυνόμενος δὲ πρὸς βορρᾶν δέχεται τὰ ὕδατα τοῦ ποταμοῦ *Νιζεζίνα*, τοῦ ἀπὸ τῆς πόλεως Οὐζίτσε διερχομένου, μεθ' ὃ λαμβάνει κατεύθυνσιν πρὸς ἀνατολάς, ἀποτελῶν ἐφεξῆς τὸν κυρίως Σερβικὸν Μοράβαν. Ἡ κοιλὰς αὐτοῦ χρησιμεύει ὡς κυρία ὁδὸς συγκοινωνίας μεταξὺ Νὶς καὶ Βοσνίας, δι' ὃ παρὰ τὸ Οὐζίτσε ἐγένοντο πολλαὶ μάχαι μεταξὺ Σέρβων καὶ Τούρκων (1807 καὶ 1809), ὡς καὶ παρὰ τὴν πόλιν Τσατσὰκ κατὰ τὸ 1815. Κατὰ τὸν πρὸς ἀνατολὰς ροῦν αὐτοῦ δέχεται εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τὰ ὕδατα τοῦ *Ἰβάρ*, ὅστις πηγάζει ἐκ τῶν βορείων κλιτύων τῶν Ἀλβανικῶν Ἄλπεων καὶ οὗτινος ἡ κοιλάς, καίτοι στενὴ καὶ ὀρεινή, χρησιμεύει ὡς μία τῶν κυρίων ὁδῶν τῶν ἀγουσῶν ἀπὸ Σερβίας πρὸς τὴν Ἀλβανίαν. Περαιτέρω διέρχεται διὰ τῆς πόλεως Κρούσεβακ καὶ χύνεται εἰς τὸν Νότιον Μοράβαν. Κατὰ τὸν πρὸς βορρᾶν ροῦν αὐτοῦ ὁ Μοράβας διέρχεται διὰ τῆς παλαιᾶς πρωτευούσης Κραγιούγεβατς.

Αἱ κοιλάδες Μοράβα καὶ Νιζάβα διασχίζονται ὑπὸ σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, κατευθυνομένων ἀφ' ἑνὸς πρὸς Σόφιαν—Κωνσταντινούπολιν, ἀφ' ἑτέρου δὲ πρὸς Θεσσαλονίκην—Ἀθήνας. Διὰ τῆς τελευταίας ταύτης γραμμῆς ἐπικοινωνεῖ ἡ Ἑλληνικὴ χερσόνησος μετὰ τῆς λοιπῆς Εὐρώπης διὰ Βελιγραδίου.

Ἡ κοιλὰς τοῦ κυρίως Μοράβα ἐχρησιμοποιήθη εἰς παλαιοτέρους χρόνους διὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Τούρκων πρὸς τὴν Κεντρῴαν Εὐρώπην καὶ τἀνάπαλιν, τῶν Αὐστριακῶν καὶ Σέρβων πρὸς τὴν Τουρκίαν. Ἐν τῇ αὐτῇ κοιλάδι ἐνήργησεν ἡ στρατιὰ τοῦ Γκάλβιτς ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατάρχου Μάκενσεν, κατὰ τὸ 1915, ἀπωθήσασα, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν στρατιῶν Γκόβες καὶ Βογιατζῆεφ τὰς σερβικὰς δυνάμεις ἀπὸ τῆς παλαιᾶς Σερβίας πρὸς τὸ Κοσσυφοπέδιον. Κατὰ τὸν Ὀκτώβριον ὅμως τοῦ 1918 αἱ σερβικαὶ δυνάμεις προελαύνουσαι ἀνακατέλαβον τὴν Σερβίαν, φθάσασαι τὴν 31 Ὀκτωβρίου 1918 εἰς τὴν συμβολὴν τοῦ Σερβικοῦ καὶ τοῦ Νοτίου Μοράβα. Ν. Ι. ΚΟΚΙΔΗΣ

— **Μοράβας** (Morava) *[Γεωγρ.]*. —1) Κύριος ποταμὸς τῆς Μοραβίας, ἐν τῇ Τσεχοσλοβακίᾳ (γερμανιστὶ *Μάρχ*=March), πηγάζων ἐξ ὕψους 1263 μ. ἐκ τῶν νοτίων κλιτύων τοῦ ὄρους τῶν Χιόνων. Ἀπετέλει μέχρι τοῦ 1918 τὸ ὅριον μεταξὺ Μοραβίας καὶ ἔπειτα τῆς Κάτω Αὐστρίας καὶ τῆς Οὐγγαρίας, ἤδη δὲ ῥέει σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου ἐπὶ τσεχοσλοβακικοῦ ἐδάφους. Ἔχει μῆκος 350 χλμ., εἶναι πλωτὸς ἀπὸ Γκαίντιγκ ἐπὶ μήκους 129 χλμ., καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Δούναβιν, παρὰ τὸ Πρεσβούργον. Θ. Κ.

— **Μοράβα, νομὸς** — *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Νοτιοσλαβίας. Ἔχει ἐμβαδὸν 2884 τετρ. χιλμ. καὶ πληθυσμὸν 183.959 κατοίκων (1921). Πρωτεύουσα αὐτοῦ εἶναι ἡ πόλις *Σουπρίγια*. Θ. Κ.

**μοράβια** (ἡ) (moravia) *[Ναυτ.]*. Ἐκλεκτὴ βαφὴ πρὸς χρωματισμὸν τῶν μεταλλικῶν ὑφάλων τῶν πλοίων, προϊὸν τοῦ ἐν Λονδίνου ἱδρυθέντος, κατὰ τὸ 1863, φερωνύμου οἴκου. Εἰς τὸ ἐμπόριον φέρεται ὑπὸ τρία εἴδη: ὡς «ἐρυθρὰ μοράβια», χρησιμοποιουμένη ὡς πρῶτον στρῶμα ἀντιδιαβρωτικὸν δι' ἀπ' εὐθείας ἐπίχρισιν τοῦ ἐλάσματος ἐν ψυχρῷ, μετὰ προηγουμένην τούτου ἀπόξεσιν· ὡς «φαιὰ μοράβια», ἐπιχριομένη ἐπίσης ἐν ψυχρῷ ἐπὶ τοῦ πρώτου ἐρυθροῦ στρώματος καὶ χρησιμεύουσα ὡς ἀντιρρυπαντικόν· καὶ ὡς «πρασίνη μοράβια», ἥτις ἐπιχρίεται ἐπὶ τοῦ δευτέρου στρώματος, ἀφοῦ προηγουμένως θερμανθῇ εἰς εἰδικὰς χύτρας μετὰ πυραύνων, μέχρις ἐλαφροῦ βρασμοῦ. Διὰ τὴν καλυτέραν ἐπίχρισιν τῆς ἐρυθρᾶς καὶ τῆς φαιᾶς, χρησιμοποιεῖται ἐνίοτε καὶ εἰδικὸν ὑγρόν, τὸ «διαλυτικὸν μοράβια». Τῶν ἐν λόγῳ βαφῶν κατασκευάζονται ἀπομιμήσεις ἐν Τεργέστῃ («μοράβια Τεργέστης»), χρησιμοποιούμεναι εἰς τὴν Μεσόγειον διὰ τὰ ἐμπορικὰ σκάφη. Σ. Ε. Λ.

**«Μοράβια»** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Ὑπερδρόμων τουρκικός, ναυπηγηθεὶς εἰς Φιοῦμε καὶ συλληφθείς, διαρκούντων τῶν Βαλκανικῶν πολέμων, ὡς νόμιμος λεία εἰς Ἁγίους Σαράντα (Μάρτιος 1913). Χρησιμοποιηθεὶς εἰς βαρείας ἐργασίας τῆς ὑπηρεσίας τῶν φάρων, ἐξεποιήθη διὰ δημοπρασίας. Σ.Ε.Λ.

**Μοραβία** (γερμαν. Maehren, τσεχιστὶ Morava) *[Γεωγρ.]*. Πρώην ἐπαρχία (μαρκιωνία) τῆς Αὐστρουγγαρίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1919 τμῆμα τῆς δημοκρατίας τῆς Τσεχοσλοβακίας. Ὁρίζεται πρὸς Β. ὑπὸ τῆς πρωσσικῆς Σιλεσίας, χωριζομένη ἀπὸ ταύτης διὰ τῶν Σουδιτικῶν ὀρέων, πρὸς Α. καὶ Ν. ὑπὸ τῆς Οὐγγαρίας διὰ τῶν Καρπαθίων ὀρέων, πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς Βοημίας. Ἀποτελεῖ ὀροπέδιον, ἀρχόμενον ἐκ τῶν βοημικῶν μοραβικῶν ὀρέων εἰς ὕψος 835 μ. καὶ ταπεινούμενον πρὸς τὴν κοιλάδα τοῦ ποταμοῦ Μοράβα. Ἔχει ἐμβαδὸν 22.231 τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 2.662.884 κατοίκων (1921), ἐξ ὧν ὑπὲρ τὰ 78 % Τσέχοι, 21 % Γερμανοί, 0,6 Ἰουδαῖοι. Κύριαι πόλεις αὐτῆς εἶναι: ἡ *Μπρὺν* (πρωτεύουσα), *Ἰγκλάου* καὶ *Ὀλμύτς*. Ἡ Μοραβία εἶναι χώρα ἐξόχως γεωργικὴ καὶ κτηνοτροφική, γραφίτης καὶ γαιάνθρακες. Ἔχει ἀξιόλογον βιομηχανίαν εἰς τὰς πόλεις, ἰδίᾳ εἰς Ὀλμύτς, κυρίως δὲ σακχαροποιΐαν καὶ ὑφαντουργίαν. Ἡ Μοραβία ἀντιπροσωπεύετο εἰς τὴν αὐστριακὴν βουλὴν διὰ 49 βουλευτῶν.

—*[Ἱστορ.]* Οἱ παλαιότεροι κάτοικοι τῆς Μοραβίας ἦσαν Μαρκομᾶνοι, οἱ Τσέχοι δὲ ἐγκατεστάθησαν ἐν αὐτῇ, ὡς καὶ ἐν Βοημίᾳ, μόλις κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα. Ἐν ἔτει 855 εἰσέβαλον οἱ Γερμανοὶ εἰς τὴν χώραν, ἀλλ' ἀπεκρούσθησαν ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῶν Τσέχων Ραστισλάβου. Ὁ βασιλεὺς οὗτος, ἵνα ἀντιδράσῃ κατὰ τῆς διεισδύσεως τῶν Γερμανῶν, ἐπέτυχε παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου τὴν ἀποστολὴν εἰς Μοραβίαν τῶν ἱεραποστόλων Μεθοδίου καὶ Κυρίλλου, οἵτινες ἐδίδαξαν τὸ θρησκευτικὸν κήρυγμα εἰς σλαβικὴν γλῶσσαν. Ὁ διάδοχος τούτου Σβατοπλοὺκ ἀνεκήρυξε τὴν μοραβικὴν Ἐκκλησίαν αὐτοκέφαλον καὶ διεξαγαγὼν νικηφόρους πολέμους κατὰ τῶν Γερμανῶν καὶ τῶν γειτόνων λαῶν ἐπεξέτεινε μεγάλως τὸ κράτος του μέχρι τῆς Βουλγαρίας πρὸς Α. καὶ μέχρι Κρακοβίας καὶ Μαγδεμβούργου. Ἀλλὰ μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ (994), ὑπὸ τὴν διακυβέρνησιν τῶν τριῶν υἱῶν του, παρήκμασε τὸ ἰσχυρὸν τοῦτο βασίλειον καὶ τῷ 1034 κατελήφθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Βοημίας Μπρετοσλάβου. Ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἤρχισεν ἐκ νέου ἡ διείσδυσις τῶν Γερμανῶν καὶ τῷ 1182 ἡ Μοραβία ἐγένετο μαρκιωνία τῆς Ρωμανογερμανικῆς αὐτοκρατορίας. Τῷ 1469 περιῆλθεν εἰς τὴν Οὐγγαρίαν, τῷ 1526 εἰς τὴν Αὐστρίαν καὶ τῷ 1849 εἰς τὴν Αὐστροουγγρικὴν μοναρχίαν, ὑφ' ἣν παρέμεινε μέχρι τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου, ὅτε προσεκυρώθη εἰς τὴν νεοΐδρυτον δημοκρατίαν τῆς Τσεχοσλοβακίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Dudik*, Maehrens allgemeine Geschichte (1886, 11 τ.).—*Bretholz*, Geschichte Boehmens und Maehrens (ν. ἔκδ. 1921). Θ. Κ.

**μοραβίτης** (ὁ) (Morawit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν ἅλας ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν *λεπτοχλωριτῶν*. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι

$$H_4\,(Fe\,Mg)_2\,(Al\,Fe)_4\,Si_7\,O_{24}.$$

Ἀπαντᾷ εἰς τετραγωνικὰ ἢ ἑξαγωνικὰ πινάκια καθὼς καὶ ὑπὸ μορφὴν μικροφυλλοειδῆ ἕως μικρολεπιδοειδῆ καὶ ᾠολιθικήν. Ἔχει σκληρότητα $3\,{}^1/_2$, εἰδικὸν βάρος 2,38 καὶ λάμψιν στεατώδη ἕως μαργαριτώδη, εὑρίσκεται δὲ εἰς τὴν ἐπαφὴν τοῦ διαβάσου παρὰ τὴν Sternberg εἰς Μοραβίαν. Γ. Β.

**Μοραβός**, —*ή*· ὁ κάτοικος τῆς Μοραβίας.

— **Μοραβοὶ** ***ἀδελφοί***· βλ. λ. *Βοημοὶ ἀδελφοί*.

**Μοράβσκι** (Morawski), ***Θεόδωρος***. Πολωνὸς πολιτικὸς καὶ ἱστορικὸς (1797—1861). Διοικητικὸς ὑπάλληλος ἐν ἀρχῇ, ἐπολιτεύθη βραδύτερον καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν τῷ 1831. Εἶτα ἀπεσύρθη εἰς Παρισίους, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του, ἀσχολούμενος εἰς ἱστορικὰς μελέτας. Σπουδαῖον ἔργον εἶναι ἡ ὑπ' αὐτοῦ γραφεῖσα «Ἱστορία τοῦ πολωνικοῦ λαοῦ» εἰς 6 τόμους ἐκδοθεῖσα τῷ 1873. Θ. Κ.

**μοραδίνη** (ἡ), ἡ ***μοραδεΐνη*** (Moradin) *[Φαρμακογ.]*. Οὐσία περιεχομένη ἐν τῷ φλοιῷ τοῦ φυτοῦ Cascarilla Morada ἢ China Morada, ὅστις προέρχεται ἐκ τῶν βορείων ἐπαρχιῶν τῆς Ἀργεντινῆς δημοκρατίας καὶ ἐκ μερῶν τινων τῆς Βολιβίας. Ὁ φλοιὸς οὗτος φέρεται εἰς τεμάχια μήκους 2-5 ἑκστ., πλάτους 2—3 καὶ πάχους 1—4, κιτρινόλευκα ἕως ῥοδέρυθρα, ἅτινα μετὰ μακρὰν ἐν τῷ ἀέρι ἄφεσιν καθίστανται πορφυρέρυθρα, ἐσωτερικῶς δὲ ῥυτιδοῦνται καὶ γίνονται τεφρόλευκα. Εἶναι ἄοσμος, γεῦσιν δ' ἔχει ποώδη καὶ πικράν. Ἡ μοραδίνη $(C_8\,H_{14}\,O_6)$ εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὴν σκοπολετίνην. Οἱ ἐν λόγῳ φλοιοὶ περιέχουν καὶ ἀλκαλοειδές τι, τὴν μοραδεΐνην. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν ἀναγράφεται ἡ δρόγη ὡς φάρμακον ἀντιπυρετικόν. Κ. Γ. Ν.

**Μοράες** ***Μπάρρος*** (Moraes Barros), ***Προυντέντε***. Βραζιλιανὸς πολιτικὸς (1841—1902). Διάπυρος θερμὸς δημοκρατικός, προήδρευσε μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς αὐτοκρατορίας (1889) τῆς συντακτικῆς συνελεύσεως (1891—1894), ἐγένετο δὲ ὁ πρῶτος πρόεδρος τῆς δημοκρατίας (1894—1898). Θ. Κ.

**μοραιία** (ἡ) (Moraea) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἰριδοειδῶν* ἢ *ἰριδιδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς καὶ ῥιζωματικάς, ἀπαντώσας εἰς τὰς περὶ τὸ ἀκρωτήριον τῆς Καλῆς Ἐλπίδος χώρας. Ἐκ τῶν 40 περίπου εἰδῶν τοῦ γένους, ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον διὰ τὰ πολύχρωμα ἄνθη των, ἀξιολογώτερα εἶναι ἡ *μοραιία ἡ δίχρους* (Moraea bicolor), *μοραιία ἡ ἰριδοειδὴς* (Moraea iridoides), *μοραιία ἡ σπαθόφυλλος* (Moraea spathacea) καὶ *μοραιία ἡ τριπτυχὴς* (Moraea tricuspis). Δ. Ν. Π.

**Μόραιυ** (Moray) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς Σκωτίας, ἡ ἄλλως λεγομένη *Ἔλγκιν* (βλ. λ.).

**Μοραλὲς** (Morales), ***Κριστοβάλ***, Διάσημος Ἰσπανὸς μουσικοσυνθέτης (1512—1553). Ἀποτελεῖ μετὰ τοῦ *Θωμᾶ ντὰ Βικτόρια* καὶ τοῦ *Φραγκίσκου Γκουερέρο* τὴν ἔνδοξον τριάδα τῆς ἱσπανικῆς θρησκευτικῆς μουσικῆς. Ὁ Μοραλὲς διετέλεσε ψάλτης τοῦ παπικοῦ παρεκκλησίου ἐν Ρώμῃ καὶ δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς εἷς τῶν προδρόμων τοῦ Παλεστρίνα

Digitized by Google

ιστις κατὰ τὴν νεότητά του ἐγνώρισεν ἀσφαλῶς ὰ ἔργα τοῦ Ἱσπανοῦ μουσουργοῦ. Αἱ συνθέσεις ιακρίνονται διὰ τὴν αὐστηρότητα τοῦ ὕφους των, όν πλοῦτον τῆς φαντασίας καὶ τὴν εὐγένειαν τῶν ιουσικῶν ἰδεῶν· ἐξ ἄλλου ἡ δύναμις τῆς ἐκφρά-εως καὶ ἡ δραματικότης των προαναγγέλλουσι τὸ ραματικὸν ὀρατόριον καὶ τὰς ἱερὰς συμφωνίας. ιεῖγμα τοῦ δραματικοῦ ὕφους τοῦ Μοραλὲς εὑρί-σκομεν εἰς ἓν ἐκ τῶν ἀριστουργημάτων του, τὸ ιοτέττο «Emendemus in melius». Τὰ περισσό-τερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι ἐγκατεσπαρμένα εἰς ιαφόρους παλαιὰς ἀνθολογίας, τινὰ δὲ ἐξ αὐτῶν ἔχουσι τύχει συγχρόνου μεταγραφῆς. Τὰ κυριώ-τερα εἶναι: 2 βιβλία λειτουργιῶν, 2 βιβλία τετρα-φώνων καὶ πενταφώνων λειτουργιῶν· ἡ περίφημος σειρὰ τῶν «Magnificat more», οἱ θαυμάσιοι «Θρῆ-νοι», ἀληθινὰ ἀριστουργήματα, 2 βιβλία τετραφώ-νων μοτέττων, πλεῖστα πεντάφωνα μοτέττα κτλ.

[Διὰ τὴν μελέτην τῶν ἔργων τοῦ Μοραλὲς συνιστᾶται ὁ πρῶτος τόμος τῆς συλλογῆς «Hispaniae Schola Musica Sacra» τοῦ *F. Pedrell* (Βαρκελώνη 1894).] Γ. Σ.

— **Μοραλὲς** (Morales), ***Λουδοβῖκος.*** Ἱσπανὸς ζω-γράφος (1509—1586), ἐπιλεγόμενος ὑπὸ τῶν συγ-χρόνων του *el Divino* (=Ὁ ζωγράφος τῶν θείων), διότι ἐζωγράφησε μόνον θρησκευτικὰ ἔργα. Δὲν εἶναι γνωστὸν ὑπὸ τίνος ἐδιδάχθη τὴν τέχνην, αἱ σχναὶ ὅμως μορφαὶ τῶν εἰκόνων του ὑπενθυμίζουν τοὺς πρώτους Φλαμανδοὺς ζωγράφους. Ὡς συνά-γεται ἐκ διαφόρων ἀντιγραφῶν, ἔτρεφε μέγαν θαυ-μασμὸν πρὸς τὴν τέχνην τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Τὰς μορφὰς τῶν ἔργων του διαπνέει μεγάλη αὐ-στηρότης, πανταχοῦ δὲ διαφαίνεται ἡ βαθεῖα πίστις τοῦ φανατικοῦ Ἱσπανοῦ Χριστιανοῦ. Μολονότι ἔχαιρε μεγάλης ἐκτιμήσεως, οἱ δὲ μιμηταὶ καὶ οἱ ἀντιγραφεῖς του εἶναι πολυάριθμοι, δὲν ἔτυχε παρὰ μικρᾶς μόνον ὑποστηρίξεως ἐκ μέρους τῆς αὐλῆς τοῦ Φιλίππου Β'. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του ινὰ τὰς ἱσπανικὰς μονάς, ναοὺς καὶ μουσεῖα κυ-ριώτερα εἶναι: τὰ ἐν Πράντο τῆς Μαδρίτης «Ἴδε ὁ ἄνθρωπος», «Ἡ Παρθένος καὶ τὸ θεῖον βρέφος», «Κεφαλὴ τοῦ Χριστοῦ» κ. ἄ., ἡ ἀρίστη ἐν τῇ ἀκα-δημίᾳ Σὰν Φερνάντο παράστασις τῆς «Παρθένου ιρατούσης τὸν νεκρὸν Ἰησοῦν», ἡ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Τολέδου «Ὁδὸς τοῦ μαρτυρίου» κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μόραν** (Moran), ***Πατρίκιος-Φραγκῖσκος.*** Ἄγ-γλος καρδινάλιος καὶ πολιτικὸς (1830—1911). Ἐγεννήθη ἐν Ἰρλανδίᾳ καὶ ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν Ρώμῃ, ὅπου ἐδίδαξεν εἰς διάφορα κολλέγια καὶ ἐγένετο καρδινάλιος. Τῷ 1884 μετετέθη εἰς Σίδ-νεϋ τῆς Αὐστραλίας, ὅπου ἀνέπτυξε μεγίστην δρα-στηριότητα, χειροτονήσας 14 ἐπισκόπους, 500 ἱερεῖς καὶ 5.000 μοναχοὺς καὶ ὅπου ἵδρυσεν ὑπὲρ τὰς 500 ἐκκλησίας. Ἀναμιχθεὶς καὶ εἰς τὴν πολιτικὴν ἐτά-χθη ὑπὲρ τῆς ἱδρύσεως αὐστραλιανῆς ὁμοσπονδίας καὶ αὐστραλιανοῦ στρατοῦ καὶ στόλου. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Monasticon Hibericon» (1874), «Ἱστορία τῆς κα-θολικῆς Ἐκκλησίας ἐν Αὐστραλίᾳ» (1896), «Αὐστρα-λιανὴ ὁμοσπονδία». Μ. Δ. Β.

**Μορὰν** (Morand), ***Παῦλος.*** Σύγχρονος Γάλλος λόγιος καὶ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1888. Ἔχει δη-μοσιεύσει μυθιστορήματα καὶ διηγήματα μορφῆς κοσμοπολιτικῆς μὲ θέματα ἐκ τοῦ συγχρόνου μετα-πολεμικοῦ βίου, ἐν οἷς τά: «Ἀνοικτὸν τὴν νύκτα» (1922) καὶ «Κλειστὸν τὴν νύκτα» (1924), «Ὁ ζῶν Βούδας» (1927) καὶ ἄλλα, ἐξέδωκε δὲ καὶ τόμον «Ποιήσεων» (1924). — Ω.

**Μοράνε** (Morane) *[Γεωγρ.].* Νῆσος τοῦ ΝΑ. Εἰρηνικοῦ ὠκεανοῦ ἐν τῷ ἀρχιπελάγει τοῦ Τουα-μοτοῦ (πλάτ. 23°08' Ν., μῆκ. 137° 08' Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 767: Tuamotù or Low archipelago), κο-ραλλιογενής. Φέρει καὶ τὸ περίεργον ὄνομα *νῆσος τοῦ Κάδμου* (Cadmus island) δι' ἄγνωστον εἰς ἡμᾶς λόγον. Σ. Ε. Λ.

**Μοράνζ,** ἢ ***Μόριγκεν*** (γαλλ. Morhange, γερμ. Morhingen) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Λωρραίνης ἐν τῷ νομῷ Μοζέλλα, ἐγγὺς τῶν πηγῶν τοῦ Μικροῦ Σέϊγ, 32 χιλμ. νοτιοανατολικῶς τοῦ Μέτς. Κάτοι-κοι 6.996. Χ. Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς *Λωρραίνης* τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἐνῷ τὸ 20ὸν γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ τοῦ στρατηγοῦ Φὸς (τῆς 2ας στρατιᾶς τοῦ Καστελνὼ) ἡτοιμάζετο νὰ ἐπι-τεθῇ τὴν 20ὴν Αὐγούστου 1914 πρὸς τὴν κατεύ-θυνσιν Μπαρονβιλιὲρ - Μοράνζ προκατελήφθη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν (βλ. λ. *Λωρραίνη* [Στρ. Ἱστορ.]). Μετ' ὀλίγον εὑρέθη ὑπὸ τὰ δραστικὰ πυρὰ ἰσχυ-ροτάτου βαρέος γερμανικοῦ πυροβολικοῦ, καὶ τότε τὸ ἀριστερόν του ἤρχισε κλονιζόμενον καὶ ὑπο-χωροῦν πρὸς τὸ δάσος τοῦ Σατὼ -Σαλὲν (Salins). Καθ' ὃν χρόνον τὸ ἐν λόγῳ σῶμα εὑρίσκετο εἰς τὴν τοιαύτην δύσκολον κατάστασιν, ἐλήφθη ἡ δια-ταγὴ τῆς γενικῆς γαλλικῆς ὑποχωρήσεως πρὸς νο-τιοδυσμάς. Ὁ ἀγὼν οὗτος ἔχει τὸ χαρακτηριστι-κὸν ὅτι, διὰ τῆς ἥττης τῆς 2ας γαλλικῆς στρα-τιᾶς εἰς Μοράνζ, ἐν συνδυασμῷ μετὰ τῆς κατὰ τὴν ἰδίαν ταύτην ἡμέραν ἐπελθούσης ἥττης τῆς 1ης γαλλικῆς στρατιᾶς εἰς *Σάαρμπουργκ* (βλ. λ.), ἀνεκόπη ἡ πρὸς Λωρραίνην γαλλικὴ ἐπίθεσις, ἡ ἀποτελοῦσα τὸν ἀκρογωνιαῖον λίθον τοῦ ἐφαρμο-σθέντος κατ' Αὔγουστον 1914 γαλλικοῦ σχεδίου ἐπιχειρήσεων. Ν. Θ. Κ.

**Μορανλῆ** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Ρυάκι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μορανταμπὰντ** (Moradabad) *[Γεωγρ.].* —1) Διαμέρισμα τῶν Ἰνδιῶν ἐν ταῖς Ἡνωμέναις ἐπαρ-χίαις, μεταξὺ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου καὶ τῆς ἡγεμονίας Ραμπούρ. Ἔχει ἔκτασιν 5.915 τ. χλμ. καὶ 1.200.000 κατ. —2) Πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου διαμερίσματος. Κάτ. 82.671. Εἶναι σι-δηροδρομικὸς σταθμὸς ἐπὶ τοῦ Ραμγκάνγκα. Εἶναι σημαντικὸν ἐμπορικὸν κέντρον. Ἔχει ἀστυνομικὴν καὶ νομικὴν σχολήν, ἐργοστάσια μεταλλικῶν εἰδῶν καὶ ὡραῖον τέμενος τοῦ 1634. Μ. Δ. Β.

**μοραντζίδα** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βάτος ἡ θαμνώδης* (Rubus ulmifolius).

**Μοράντι** (Morandi) ***Λουδοβῖκος.*** Φιλόλογος, πολιτικὸς καὶ παιδαγωγὸς Ἰταλός, γεννηθεὶς ἐν Todi τῷ 1844. Ἠκολούθησε τὸν Γαριβάλδην, τῷ 1867, κατὰ τὴν ἔφοδον τοῦ Μοντεροτόντο. Ἐδη-μοσίευσε πλεῖστα ἔργα, ἰδίως παιδαγωγικά.

**Μορὰξ** (Morax), ***Βίκτωρ.*** Διακεκριμένος Γάλ-λος ὀφθαλμολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1866 ἐν Morges τῆς Ἑλβετίας. Διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων, ὑπεστήριξε τῷ 1894 περισπούδαστον ἐναίσιμον διατριβὴν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Μικροβιακαὶ ἔρευναι ἐπὶ τῆς αἰτιολογίας τῶν ὀξέων ἐπιπεφυκιτίδων καὶ ἐπὶ τῆς ἀσηψίας ἐν τῇ χειρουργικῇ τῶν ὀφθαλ-μῶν». Μαθητὴς τοῦ μεγάλου ὀφθαλμολόγου Pari-naud, ἐμελέτησε τὴν μικροβιολογίαν παρὰ τῷ Roux τοῦ ἰνστιτούτου Pasteur τῶν Παρισίων. Νε-ώτατος ἀκόμη, τῷ 1896, ἐδημοσίευσε θαυμασίαν καὶ πρωτότυπον ἐργα-σίαν ἐπὶ ἐπιπεφυ-κίτιδός τινος, ἣς ἀνεκάλυψε καὶ ἐμε-λέτησε τελείως τὸ παθογόνον μικρό-βιον, τὸ ὁποῖον ἔκ-τοτε, πολὺ δικαίως, φέρει καὶ τὸ ὄνομά του. Πρόκειται περὶ τοῦ *διπλοβακίλλου τοῦ Μοράξ,* αἰτίου τῆς γωνιαίας ἢ διπλοβακιλλικῆς ἐπιπεφυκίτιδος. Ἔκτοτε ὁ Μοράξ, ἐντατικῶς ἐργαζόμενος, τόσον ἀνύψωσε τὴν μικρο-βιολογικὴν ὀφθαλμολογίαν, ὥστε δικαίως θεωρεῖ-ται ὡς ὁ πατὴρ τῆς γαλλικῆς ὀφθαλμολογικῆς μι-κροβιολογίας. Ἀλλὰ τὸ ἔργον του δὲν περιωρίσθη εἰς μόνον τὸν κλάδον τοῦτον· συνδυάζων ἐξ ἄλλου βαθεῖαν κλινικὴν πεῖραν μὲ τελείαν γνῶσιν τῆς ἱστολογίας, ἀνατομοπαθολογίας καὶ θεραπευτικῆς, προσέτι δὲ καὶ μὲ τὴν μεγάλην αὐτοῦ χειρουργι-κὴν δεξιότητα, ἤγαγεν εἰς φῶς πλῆθος ἄλλο ἐρ-γασιῶν, αἵτινες μετὰ τῶν ἐργασιῶν τῶν μαθητῶν του ἐπεβλήθησαν καὶ ἐδημιούργησαν σχολήν. Ἐκ τῶν πολλῶν ἔργων του σημειοῦμεν τὸ περὶ ὀφθαλμο-λογίας σύγγραμμά του, ἀριθμοῦν πλείστας ἐκδό-σεις, «Γλαύκωμα καὶ γλαυκωματικοὶ» (1921), «Τὰ νεοπλάσματα τοῦ βολβοῦ καὶ τοῦ κόγχου» (1926), «Ὀφθαλμικὴ παθολογία καὶ ἱστολογία» (1921), «Τὸ τράχωμα» (1929) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ J. Petit κτλ., τὰ διάφορα κεφάλαια ἅτινα συνέγραψεν ἐν τῇ μεγάλῃ γαλλικῇ ἐγκυκλοπαιδείᾳ τῆς ὀφθαλμο-λογίας κλπ. Ἀπὸ τοῦ 1898 διευθύνει, ὁμοῦ μετὰ τῶν Valude καὶ Sulzer, τὸ περιοδικὸν «Annales d'oculistique».

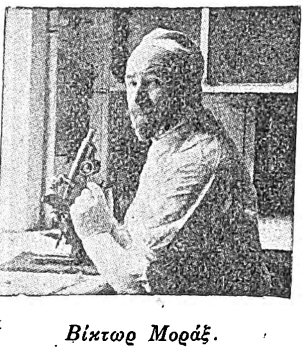

*Βίκτωρ Μοράξ.*

Ὁ Μορὰξ ἐξελέγη τῷ 1929 μέλος τῆς ἰατρικῆς Ἀκαδημίας τῶν Παρισίων. Καταληφθεὶς ὑπὸ τοῦ ὁρίου τῆς ἡλικίας ἀπεχώρησε τοῦ ὀφθαλμολογικοῦ τμήματος τοῦ νοσοκομείου Lariboisière, εἰς τὸ ὁποῖον εἰργάσθη καὶ ἐδίδαξε καθ' ὅλην τὴν διάρ-κειαν τοῦ σταδίου του, ἐξακολουθεῖ δὲ ἐργαζόμε-νος εἰς τὸ ἰνστιτοῦτον Pasteur τῶν Παρισίων. Α. Γ.

**Μόραρ** (Morar) *[Γεωγρ.].* Παράκτιος περιοχὴ ἐν Ἀγγλίᾳ. Κεῖται πρὸς τὸ Δ. τμῆμα τῆς κομι-τείας Ἴνβερνες ἐν Σκωτίᾳ καὶ διασχίζεται εἰς δύο μέρη ὑπὸ τοῦ φιὸρδ Λὸτς Μόραρ, 30 χλμ. μήκους καὶ 1 μέχρι 3 χλμ. πλάτους. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχει ὁμώ-νυμος λίμνη, ἡ βαθυτέρα τῆς Σκωτίας, ἔχουσα ἐπι-φάνειαν 27 τ.χλμ. καὶ 310 μ. βάθος. Μ. Δ. Β.

**Μορατὶν** (Moratin), ***Λέανδρος-Φερναντέθ, ντὲ —.*** Ἱσπανὸς δραματικὸς (1760—1828), υἱὸς τοῦ *Νι-κολάου Μορατὶν* (βλ. κατωτ.). Διεκρίθη κατὰ τὰ ἔτη 1778 καὶ 1780 εἰς ἀκαδημαϊκὰ διαγωνίσματα. Προστατευόμενος τοῦ Χοβελλιάνος, συνώδευσε τὸν Ἱσπανὸν πρεσβευτὴν Καμπάρρους εἰς Παρισίους, ὅπου ἐγνώρισε τὸν Γκολντόνι. Βραδύτερον συμμε-τέσχεν εἰς διαφόρους ἀποστολὰς πολιτικῆς φύσεως. Τῷ 1808 συνεδέθη μὲ τὸν βασιλέα Ἰωσήφ. Κατὰ τὴν παλινόρθωσιν τοῦ Φερδινάνδου Ζ' ἐθεωρήθη ὡς ἀντιδραστικὸς καὶ ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν πατρίδα του καὶ νὰ ἐγκατασταθῇ διαδοχικῶς ἐν Μπορντώ, Ἰταλίαν καὶ Παρισίους. Ὁ Μορατὶν εἶναι ὁ πραγματικὸς μεταρρυθμιστὴς τοῦ ἱσπανι-κοῦ θεάτρου. Ἔλαβεν ὡς ὑπόδειγμα τὸν Μολιέ-ρον, τὴν τέχνην τοῦ ὁποίου κατώρθωσε νὰ ἐναρ-μονίσῃ πρὸς τὴν λογοτεχνικὴν καλαισθησίαν τῆς πατρίδος του. Ἔγραψε πέντε θεατρικὰ ἔργα: «Ὁ γέρος καὶ ἡ μικροῦλα», «Τὸ καφενεῖο ἢ ἡ νέα κωμῳ-δία» (καυστικὴ σάτιρα κατὰ τῶν δραματικῶν συγ-γραφέων τῆς ἐποχῆς του), «Ὁ βαρῶνος», «Ἡ Μο-χιγκάτα» (μίμησις τοῦ Ταρτούφου) καὶ τὸ ἀριστούρ-γημά του «Τὸ ναὶ τῶν κοριτσιῶν», κωμῳδία διακρι-νομένη διὰ τὸ κάλλος τῆς γλώσσης, τὴν γοργό-τητα καὶ τὴν λεπτὴν ψυχολογικὴν ἀνάλυσιν. Ὁ Μορατὶν διεκρίθη καὶ διὰ τὰς σατίρας του, με-ταξὺ τῶν ὁποίων πρώτην θέσιν κατέχει ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Πανωλεθρία τῶν σχολαστικῶν». Ἔκαμε δὲ πρὸς τούτοις καὶ ἀρίστας μεταφράσεις ἔργων τοῦ Σαίκσπηρ καὶ τοῦ Μολιέρου. Α. Δ.

— **Μορατὶν** (Moratin), ***Νικόλαος Φερναντὲθ ντὲ—.*** Ἱσπανὸς λογοτέχνης (1737—1780), πατὴρ τοῦ προηγουμένου. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν συγγραφέων ἐκεί-νων, οἵτινες, ἐμπνεόμενοι ὑπὸ τοῦ κλασσικισμοῦ ἀφ' ἑνὸς καὶ τῆς γαλλικῆς φιλολογίας ἀφ' ἑτέρου, προσεπάθησαν νὰ δώσουν εἰς τὴν λογοτεχνίαν τῆς πατρίδος αὐτῶν νέαν κατεύθυνσιν. Ὁ Μορατὶν διε-κρίθη ἰδίᾳ ὡς δραματικός. Αἱ τραγῳδίαι του «Ὁρμεσίντα», «Λουκρητία» καὶ «Γκούθμαν ὁ ἀγαθὸς» θεωροῦνται ὡς ἄριστα λογοτεχνικὰ ἔργα. Ἐπίσης καὶ ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «La Petimetza» κωμῳδία του. Ἐκ τῶν λυρικῶν ποιημάτων του, ἅτινα ἀπο-τελοῦσιν ὁλόκληρον συλλογήν, φέρουσαν τὸν τί-τλον «Poeta», ἄξια λόγου εἶναι «Les romances Moriscos» καὶ ἡ «Ἑορτὴ τῶν ταύρων τῆς Μαδρίτης». Εἰς τὰ λυρικὰ ποιήματα ταῦτα ἠκολούθησε τὰς λογοτεχνικὰς παραδόσεις τῆς πατρίδος του. Ἔ-γραψεν ἐπίσης καὶ τὸ ἡρωϊκὸν ἔπος «Ἡ καταστροφὴ τῶν πλοίων τοῦ Κορτές», θεωρούμενον ὡς ἓν τῶν καλυτέρων ἱσπανικῶν ποιημάτων τοῦ εἴδους τούτου. Α. Δ.

**Μορατούα** (Moratuwa) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, κειμένη ἐπὶ τῆς Δ. ἀκτῆς τῆς νήσου Κεϋλάνης. Κάτ. 26.608. Μ.Δ.Β.

**Μοραύας** (Morava) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μοράβας.*

**Μοραυΐα** (Morava) *[Γεωγρ.]*· βλ. Μοραβία.

**Μοράφτσα** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ἀντιγόνεια* (βλ.λ.). Χ. Δ.

**Μορβὰν** (Morvan) *[Γεωγρ.].* Ὀροσειρὰ ἐν τῇ Κεντρικῇ Γαλλίᾳ, ἐκτεινομένη ἐπὶ τῶν νομῶν Νιέβρ, Ὑόν, Χρυσῆς Ἀκτῆς, Σηκουάνα καὶ Λίγη-ρος. Διαγράφει σχῆμα ἐλλείψεως, μήκους 88 χλμ. καὶ μεγίστης διαμέτρου 28. Αἱ ὑψηλότεραι κορυ-φαὶ τῆς ὀροσειρᾶς εἶναι τὸ *Δάσος τοῦ βασιλέως* (902 μ.) καὶ τὸ *Πρενελαὶ* (850 μ.). Γ. Ι. Β.

**Μορβὰν** (Morvan), ***νόσος τοῦ***—(καλουμένη καὶ ***ἀνώδυνος παρωνυχία***). *['Ιατρ.].* Ἡ νόσος αὕτη χαρακτηρίζεται διὰ τῆς συνυπάρξεως τριῶν φαι-νομένων, ἤτοι: μυατροφίας, αἰσθητικῶν διατα-ραχῶν καὶ τροφικῶν διαταραχῶν, ἐντοπιζομένων συνήθως εἰς ἓν ἄκρον καὶ προκαλουσῶν παρωνυ-χίας ἀνωδύνους μέχρις ἀποπτώσεως τοῦ ὄνυχος. Κυρίως εἰπεῖν δὲν εἶναι νόσος ἀλλὰ συνδρομή, ἄλ-λων μὲν περιπτώσεων ἀνηκουσῶν εἰς τὴν συριγγο-μυελίαν, ἄλλων δ' εἰς τὴν λέπραν. Τινὲς ὑποστη-ρίζουσι τὴν ὕπαρξιν αὐτῆς παρ' ἐκτὸς πάσης τοι-αύτης παθήσεως.. Τ. Α. ΖΗΣ

**μορβενίτης** (ὁ) (Morvenit) *['Ορυκτολ.].* Ὀρυ-κτόν, ἀποτελοῦν τοπικὴν ἐμφάνισιν τοῦ *χαρμοτό-μου* (Harmotom) ἐν Strontian τῆς Σκωτίας, χα-ρακτηριζομένην ὑπὸ ἰδίας πολυτίμου κατασκευῆς (βλ. λ. *χαρμότομον*). Γ. Β.

**Μόρβερν** (Morvern) *[Γεωγρ.].* Χερσόνησος τῆς Σκωτίας, ἐν τῇ κομητείᾳ Ἄρτζυλ. Ἦτο ἄλλοτε μι-κρὰ νῆσος, ἑνωθεῖσα μετὰ τῆς ξηρᾶς διὰ τῶν προσ-χώσεων. Εἶναι μᾶλλον ὀρεινή, μὲ ὑψηλοτέραν κο-ρυφὴν φθάνουσαν τὰ 864 μ. Μ. Δ. Β.

**Μοργάγνιος** (Morgagni)· *Ἰταλὸς ἰατρὸς* (βλ. λ. *Μοργκάνι*).

**μοργανατικός,**—*ή*,—*όν*· λέγεται ἐπὶ γάμου ἀν-δρὸς ὑψηλῆς κοινωνικῆς θέσεως μετὰ γυναικὸς κατωτέρας τάξεως, καθ' ὃν οὔτε ἡ σύζυγος οὔτε τὰ τέκνα ἔχουσι δικαίωμα ἐπὶ τοῦ ὀνόματος καὶ τῶν τίτλων τοῦ συζύγου: «μοργανατικὸς γάμος», «μοργανατικὴ σύζυγος», «μοργανατικὸν τέκνον».

—*[Ἐγκυκλ.]* Καλεῖται ἐν τῇ Δύσει *μοργανατικὸς γάμος* (matrimonium ad legem morganaticam) ὁ γάμος, ὅστις ἐκκλησιαστικῶς μὲν εἶναι ἔγκυρος, καθ' ὃν ὅμως ἡ γυνὴ καὶ τὰ τέκνα οὔτε τῆς κοι-νωνικῆς τάξεως τοῦ συζύγου καὶ πατρὸς μετέχου-σιν, οὔτε κληρονομικῶν καὶ καθόλου περιουσιακῶν δικαιωμάτων ἐν ὅλῳ ἢ ἐν μέρει ἀπολαύουσι. Λέ-γεται δ' οὕτω ἐκ τοῦ ἐν ταῖς γερμανικαῖς χώραις ἔθους, καθ' ὃ ὁ ἀνὴρ ἔδιδε τῇ γυναικὶ κατὰ τὴν

Digitized by Google

πρωΐαν τῆς ἐπιούσης τοῦ γάμου δωρεὰν τὴν λεγομένην Morgengabe, donum matutinale. Λέγεται ἐπίσης καὶ *γάμος ἐξ ἀριστερᾶς χειρός*, ἔτι δὲ καὶ *Σαλικὸς γάμος*, ἐκ τοῦ ὅτι ἐν χρήσει ἦτο μάλιστα παρὰ τοῖς Σαλίοις Φράγκοις, δύναται δὲ νὰ συναφθῇ μόνον ὑπὸ μελῶν οἰκογενειῶν ἡγεμονικῶν ὡς καὶ τῶν εἰς τὴν ἀνωτάτην γερμανικὴν ἀριστοκρατίαν ἀνηκόντων.

Ὁ μοργανατικὸς γάμος δὲν μνημονεύεται εἰς τοὺς νεωτέρους ἀστικοὺς κώδικας, εἰμὴ μόνον ἐν τοῖς ἄρθροις 55 καὶ 58 τοῦ εἰσαγωγικοῦ τοῦ γερμανικοῦ ἀστικοῦ κώδικος νόμου. Ἐν Αὐστρίᾳ τὰ κατ' αὐτὸν ἐρρυθμίζοντο ὑπὸ τοῦ οἰκογενειακοῦ κώδικος τοῦ αὐτοκρατορικοῦ οἴκου.

Ὁ μοργανατικὸς γάμος διαφέρει τῆς *δυσγαμίας*, τῆς δηλουμένης λατινιστὶ μὲν διὰ τοῦ ὅρου «matrimonium inaequala vel disparagium», γαλλιστὶ δὲ διὰ τοῦ ὅρου «mesalliance» καὶ γερμανιστὶ διὰ τοῦ ὅρου «Missheirat», ἤτοι τοῦ γάμου μεταξὺ προσώπων ἀνωτέρας καὶ ὑποδεεστέρας κοινωνικῆς τάξεως, καθ' ὅσον τὰ προαναφερθέντα μειονεκτήματα γυναικὸς καὶ τέκνων ἐρείδονται ὡς πρὸς μὲν τὴν δυσγαμίαν ἐπὶ τοῦ ἐν τῇ χώρᾳ ἰσχύοντος δικαίου, ὡς πρὸς δὲ τὸν μοργανατικὸν γάμον ἐπὶ τῆς συμφωνίας τῶν συμβαλλομένων μερῶν. Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**μοργανισμὸς** (ὁ) *[Βιολογ.]*. Ἐκλήθη οὕτω πρὸς τιμὴν τοῦ μεγάλου συγχρόνου Ἀμερικανοῦ βιολόγου *Μόργκαν* (βλ. λ.) τὸ σύνολον τῶν θεωριῶν καὶ νόμων, τοὺς ὁποίους οὗτος διετύπωσεν ἐπὶ τῇ βάσει τῶν πειραματικῶν του ἐρευνῶν ὡς πρὸς τὴν ἐξήγησιν τῶν φαινομένων τῆς κληρονομικότητος. Κατ' αὐτὰς οἱ κληρονομικοὶ παράγοντες ἢ οἱ γόνοι εἶναι ἐντετοπισμένοι ἐπὶ τῶν χρωματοσωμάτων τοῦ πυρῆνος καὶ μάλιστα εἰς ὡρισμένην θέσιν καὶ καθ' ὡρισμένας ἀποστάσεις, ὥστε νὰ δύναται νὰ γίνῃ καὶ ὁ λεγόμενος *χάρτης τῶν χρωματοσωμάτων*. Οἱ γόνοι οὗτοι ἐναλλάσσονται, ἕλκονται, ἀπωθοῦνται κλπ., οὕτω δὲ ἐξηγοῦνται πλεῖστα φαινόμενα τῆς κληρονομικότητος. Αἱ θεωρίαι αὗται καλοῦνται καὶ *ἀνώτερος μενδελισμὸς* (βλ. λ. *κληρονομικότης*). Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

**μοργάνειοι** *στῦλοι [Ἀνατ.]*. Πτυχαὶ ἐπιμήκεις τοῦ βλεννογόνου τῆς περινεϊκῆς (κατωτέρας) μοίρας τοῦ ἀπευθυσμένου, 8—10 τὸν ἀριθμόν, τελευτῶσαι ἐπὶ τὰ κάτω εἰς τὸν αἱμορροϊδικὸν δακτύλιον, τὸν ὑπὸ τοῦ σφιγκτῆρος τοῦ πρωκτοῦ παραγόμενον. Αἱ μεταξὺ δὲ τῶν στύλων τούτων περιλαμβανόμεναι αὔλακες καλοῦνται *μοργάνειοι κόλποι*. Ι. Π.

— **μοργάνειοι** *σφαῖραι*, καὶ *μοργάνειος καταρράκτης [Ὀφθαλμολ.]*. Ὁ Ἰταλὸς ἀνατομικὸς *Μοργκάνι* (βλ. λ.) κατὰ τὰς ἀνατομοπαθολογικὰς αὐτοῦ ἐρεύνας συνεπέρανεν (ὅπως πρὸ αὐτοῦ ὁ Stenon καὶ μετ' αὐτὸν ὁ Antoine Petit) ὅτι μεταξὺ τοῦ φακοῦ καὶ τοῦ περιφακίου ὑπάρχει ὑγρόν, τὸ ὁποῖον εἶναι ἀπαραίτητον πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς διαφανείας καὶ τῆς μαλθακότητος τοῦ φακοῦ. Ἡ ἀπουσία τοῦ ὑγροῦ τούτου προκαλεῖ τὴν ξήρανσιν καὶ ἀδιαφάνειαν τοῦ φακοῦ, ἡ δὲ θόλωσις αὐτοῦ τὸν ὀνομασθέντα «*καταρράκτην τοῦ μοργανείου ὑγροῦ*». Οἱ μετέπειτα ἰατροὶ καὶ ὀφθαλμολόγοι (Pott 1787, Richter 1773 κτλ.) ἀπέδειξαν ὅτι τοιοῦτον ὑγρὸν δὲν ὑπάρχει καὶ ἑπομένως οὔτε καταρράκτης αὐτοῦ. Παρετήρησαν ὅμως ὅτι κατὰ τὸν σχηματισμὸν τοῦ γεροντικοῦ καταρράκτου ἐπέρχεται διάστασις μεταξὺ τοῦ πυρῆνος τοῦ φακοῦ καὶ τῶν περιπυρηνικῶν ἰνῶν αὐτοῦ καθὼς καὶ μεταξὺ αὐτῶν τούτων τῶν ἰνῶν. Αἱ συνεπείᾳ τῶν διαστάσεων τούτων σχηματιζόμεναι ρωγμαὶ πληροῦνται ὑπὸ σφαιρικῶν ἐκκριτικῶν μαζῶν, ἃς οἱ νεώτεροι ὀφθαλμολόγοι ὠνόμασαν *μοργανείους σφαίρας*. Ἐπίσης οἱ πρὸ καὶ μετὰ τὸν Μοργκάνι ὀφθαλμολόγοι παρετήρησαν ὅτι, ὅταν ὁ γεροντικὸς καταρράκτης ὑπερωριμάσῃ, τότε αἱ περιφερικαὶ αὐτοῦ στιβάδες ρευστοποιοῦνται καὶ λαμβάνουσι χρῶμα γαλακτῶδες, ὁ δὲ πυρὴν πλέει, οὕτως εἰπεῖν, ἐντὸς τῶν οὕτω ρευστοποιηθέντων ἰνῶν τοῦ φακοῦ. Τὸν τοιοῦτον καταρράκτην ὠνόμασαν ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Beer (1817) «*μοργάνειον*». Ἐν τούτοις ὅμως τὸν τοιοῦτον καταρράκτην εἶχον ἤδη παρατηρήσει πολὺ παλαιότερον οἱ Maitre Jean (1707), St. Yves (1712), Guerin (1769), Wenzel (1786), αὐτὸς οὗτος ὁ Μοργκάνι καὶ ἄλλοι.

Ἡ ρευστοποίησις κατὰ τὸν μοργάνειον καταρράκτην δύναται νὰ ἐπεκταθῇ καὶ εἰς τὸν πυρῆνα. Τὸ γαλακτῶδες χρῶμα τοῦ ὑγροῦ δύναται νὰ γίνῃ ἡμιδιαφανὲς ἢ καὶ διαφανές, εἰς τρόπον ὥστε καὶ ἡ ὅρασις, ἥτις προηγουμένως εἶχεν ἀπολεσθῇ, νὰ ἐπανέλθῃ ἐκ νέου κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον. Κατὰ κανόνα ὅμως ὁ μοργάνειος καταρράκτης παρουσιάζεται ὁμοιομόρφως λευκὸς μετὰ τινων στιγμάτων ἢ γραμμῶν, ἅτινα διακρίνονται σαφέστερον ἐπὶ τοῦ περιφακίου.

Ἐν τῷ ὑγρῷ τοῦ μοργανείου καταρράκτου ὁ πυρὴν διαφαίνεται κιτρινωπὸς ἢ καστανόχρους, κεῖται δὲ πρὸς τὰ κάτω τμῆμα τοῦ ὑγροῦ, ὅταν ὁ ἀσθενὴς εἶναι ὀρθὸς καὶ μετακινῆται κατὰ τὰς κινήσεις τοῦ βολβοῦ ἢ τῆς κεφαλῆς. Κατὰ τὸν μοργάνειον καταρράκτην, ὁ πρόσθιος θάλαμος εἶναι βαθύς, δυνατὸν νὰ ὑπάρχῃ ἰριδοδόνησις, σπανιώτατα δὲ παρατηροῦνται καὶ γλαυκωματικὰ συμπτώματα. Οἱ τοιούτου εἴδους καταρράκται πρέπει νὰ ἐξαιροῦνται μετὰ τοῦ περιφακίου των, ὅσον τὸ δυνατὸν ταχύτερον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Guerin*, Traité des maladies des yeux (1769). —*Morgagni* in *Hirschberg*, Renaissance de l'opthalmologie (Paris 1909). —*Α. Γαβριηλίδης*, Ἰατρικὴ πρόοδος 1924 (σ. 89). Α. ΓΑΒΡΙΗΛΙΔΗΣ

— **μοργάνειος** *κοιλία [Ἀνατ.]* βλ. *γαλήνειος κοιλία*.

**μοργανίτης** (ὁ) (Morganit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν ἀνῆκον εἰς τὸ εἶδος *τῆς εὐγενοῦς βηρύλλου*, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ παραλλαγήν. Ἔχει χρῶμα τριανταφυλλέρυθρον, θεωρεῖται πολύτιμος λίθος καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὴν Maharitra ἐπὶ τῆς Μαδαγασκάρης καὶ εἰς τὴν Pala τῆς Καλιφορνίας. Γ. Β.

**Μοργάντιον** (ἢ *Μοργαντίνη*, καὶ *Μουργαντία*) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Σικελίας, ἐπὶ εὐφόρου πεδιάδος, δεξιὰ τοῦ Χρύσα ποταμοῦ (νῦν Dittaino) πρὸς Δ. τῆς Κατάνης, ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τῶν ἐξ Ἰταλίας ἐκδιωχθέντων *Μοργήτων*, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἔλαβε τὴν ὀνομασίαν (*Στράβ.* VI, 257). Τῷ 459 π. Χ. κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Σικελοῦ ἡγεμόνος Δουκετίου, καὶ τῷ 396 π. Χ. ὑπὸ Διονυσίου, τυράννου τῶν Συρακουσῶν, ἀναφέρεται δὲ πολλάκις κατὰ τὸν δεύτερον Καρχηδονιακὸν πόλεμον. Πολιορκηθεῖσα τῷ 102 π. Χ. ὑπὸ τῶν ἐπαναστατησάντων δούλων, παρήκμασεν ἐπὶ τῆς αὐτοκρατορίας, ἐπὶ δὲ τοῦ Στράβωνος ἦτο κατεστραμμένη. Σῴζονται ἀργυρᾶ νομίσματα αὐτῆς τῶν ἐτῶν 420—400 π. Χ., χαλκᾶ τοῦ 340 π. Χ. περίπου μετὰ τῆς ἐπιγραφῆς ΜΟΡΓΑΝΤΙΝΩΝ. (*Head -Σβορῶνου*, Ἱστορ. τῶν νομισμ. τόμ. Α' σελ. 213.)

Κατά τινας τῶν νεωτέρων, τὸ Μοργάντιον ἔκειτο ἐπὶ τοῦ ὄρους Judica, ΝΔ. τῆς Kentoripa. Α. Θ. Σ.

**Μόργητες** (οἱ) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]* Λαὸς τῆς Κάτω Ἰταλίας, πελασγικῆς καταγωγῆς. Κατοικοῦντες οὗτοι παρὰ τὸ Ρήγιον ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Βρουττίων, ἐξεδιώχθησαν ὑπὸ τῶν Οἰνωτρῶν καὶ ἦλθον εἰς τὴν Σικελίαν, ὅπου ἵδρυσαν τὴν πόλιν *Μοργάντιον* (*Στράβ.* VI, 257). Α. Θ. Σ.

**Μόργκαν** (Morgan), *Ἐρρῖκος*. Περιώνυμος βορειοαμερικανὸς κοινωνιολόγος (1818—1881). Ὑπῆρξεν ἀπὸ τοῦ 1868 μέλος τῆς γερουσίας. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται τὰ ἑξῆς: «The League of the Iroquois» (1851, νέα ἔκδοσις 1904, 2 τόμοι), «Systems of Consanguinity and Affinity of the Human Family» (1869) καὶ «Ancient Society» (1877). Α. Δ.

— **Μόργκαν** (Morgan), *Θωμᾶς Χούντ*. Βορειοαμερικανὸς βιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἀπὸ τοῦ 1891 καθηγητὴς ἐν τῷ κολλεγίῳ Μπρᾶϋν Μάουρ, ἀπὸ τοῦ 1904 καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κολομβίας. Διεκρίθη ἰδίᾳ διὰ τὰς μελέτας του ἐπὶ τῶν φαινομένων τῆς κληρονομικότητος καὶ τὰ ἐκ τῶν πειραμάτων τούτων συναχθέντα συμπεράσματα περὶ τῆς ὑλικῆς βάσεώς της. Ἐν τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Experimental zoology (1907) καὶ «The Physical basis of Heredity» (1919). Α. Δ.

—**Μόργκαν** (Morgan), *Τζὼν-Πίερποντ*. Διάσημος Ἀμερικανὸς οἰκονομολόγος καὶ τραπεζίτης (1837—1913). Υἱὸς τοῦ τραπεζίτου Τζούνιους-Σπένσερ-Μόργκαν, ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἀνωτέραν ἀγγλικὴν σχολὴν τῆς Βοστώνης καὶ εἰς τὸ γερμανικὸν πανεπιστήμιον τῆς Γοττίγγης. Εἰκοσαετὴς μόλις, τῷ 1857, ἤρχισεν ἐργαζόμενος εἰς τὴν τράπεζαν Ντώγκαν Σέρμαν καὶ Σια καὶ Νέας Ὑόρκης, μετ' ὀλίγα δὲ ἔτη ἀνέλαβεν εἰς χεῖράς του τὴν διεύθυνσιν τῆς τραπεζικῆς ἐπιχειρήσεως τοῦ πατρός του, τὴν ὁποίαν δὲν ἐβράδυνε νὰ ἀναδείξῃ εἰς ἓν ἐκ τῶν μεγαλυτέρων ἱδρυμάτων τοῦ κόσμου, χάρις εἰς τὴν μοναδικήν του ἐπιχειρηματικότητα. Ἀνεμίχθη εἰς παντοειδεῖς ἐπιχειρήσεις χάλυβος, σιδηροδρόμων, ἀτμοπλοίων, μεγίστη δὲ ὑπῆρξεν ἡ δανειακὴ του δρᾶσις διὰ συμμετοχῆς του εἰς ἔκδοσιν δανείων διαφόρων κρατῶν. Τῷ 1895 παρέσχε τὸ πρῶτον δάνειον ἐξ 62 ἑκατομμυρίων δολλαρίων εἰς τὴν κυβέρνησιν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἡ κοινωνική του δρᾶσις ὑπῆρξεν ἐπίσης ἐξαιρετική. Ἀνήκων εἰς τὴν ἐπισκοπικὴν Ἐκκλησίαν τῶν διαμαρτυρομένων, παρέσχε μεγάλας δωρεὰς ὑπὲρ διαφόρων φιλανθρωπικῶν σκοπῶν. Ὑπῆρξεν ἐξ ἄλλου μανιώδης φίλαθλος καὶ συλλέκτης βιβλίων καὶ εἰκόνων, αἱ ὁποῖαι ἤδη κοσμοῦν τὰς μεγαλυτέρας ἀμερικανικὰς πινακοθήκας —Ω.

—**Μόργκαν** (Morgan), *Σίδνεϋ-Ὀβένσον* (Owenson), *λαίδη* —. Διακεκριμένη Ἰρλανδὴ λογοτέχνις (1786—1859). Εἰς ἡλικίαν 18 ἐτῶν ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον της μυθιστόρημα «Σαὶν-Κλαὶρ» (Λονδῖνον 1804), μεγάλην δὲ φήμην ἀπέκτησε διὰ τοῦ μετέπειτα ἐκδοθέντος βιβλίου της «Γκλοβίνα, ἡ ἀγρία Ἰρλανδὴ κόρη» (1806), ἀπηχοῦντος τὰς καταπιέσεις, τὰς ὁποίας ὑφίστατο ἡ γενέτειρά της χώρα ὑπὸ τὴν ἀγγλικὴν δεσποτείαν. Ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ πατριωτικοῦ αἰσθήματος εἶναι ἐμπνευσμένα πολλὰ ἐκ τῶν μετέπειτα ἔργων της, ὡς «Τὸ τραγοῦδι μιᾶς ἰρλανδικῆς ἅρπας» κ. ἄ. Ταξιδεύσασα κατόπιν εἰς πολλὰς γαλλικὰς καὶ ἰταλικὰς πόλεις, ἔγραψε τὰς ἐντυπώσεις της εἰς δύο βιβλία, ὑπὸ τοὺς τίτλους «Γαλλία» (1817) καὶ «Ἰταλία» (1821), σημειώσαντα μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ καταστήσαντα αὐτὴν πασίγνωστον ἀνὰ τὴν Εὐρώπην ὅλην. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν ἀπελευθερωτικῶν ἐν Ἰταλίᾳ προσπαθειῶν ἡ Μόργκαν συνηγόρησεν ὑπὲρ αὐτῶν ἐνθέρμως διὰ διαφόρων δημοσιευμάτων, ἔγραψε δὲ ἐπὶ τοῦ προκειμένου καὶ ἀνοικτὴν ἐπιστολὴν πρὸς τὸν πάπαν Πῖον Θ', ἐπὶ τῆς ὁποίας μεγάλη προεκλήθη συζήτησις. Κατὰ τὰ γηρατειά της ἡ κυβέρνησις Γκρέϋ τιμῶσα τὸ ἔργον τῆς Μόργκαν ἀπένειμεν εἰς αὐτὴν ἐτησίαν σύνταξιν 300 λιρῶν. —

**Μοργκὰν** (Morgan), *Ἰάκωβος-Ἰωάννης-Μαρία*. Γάλλος μηχανικὸς καὶ ἀρχαιολόγος (185?-1924). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν μεταλλειολογικὴν σχολὴν τῶν Παρισίων, ἀλλὰ βραδύτερον ἀφιερώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰς ἀρχαιολογικὰς μελέτας καὶ ἐξετέλεσε σπουδαίας ἀνασκαφὰς ἐν Αἰγύπτῳ, ὅπου ἀνεκάλυψεν ἀληθεῖς ἀρχαιολογικοὺς θησαυροὺς τῆς Δ', Ε', ΣΤ' καὶ ΙΒ' δυναστείας τῶν φαραώ. Τῷ 1892 ἵδρυσε τὸ ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον τῆς Ἀλεξανδρείας καὶ τῷ 1895 ἀνεκάλυψε τὸν ναὸν τῆς Μεντινὲτ Ἀμπού. Τῷ 1897 ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ὠνόμασεν αὐτὸν ἀρχηγὸν γαλλικῆς ἀρχαιολογικῆς ἀποστολῆς εἰς Περσίαν, ὅπου προέβη εἰς ἀνασκαφὰς ἐν Σούσοις καὶ ἀνεκάλυψε τὸν περίφημον ὀβελίσκον τοῦ Χαμμουραμπί, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ἐγγεγλυμμένος σχεδὸν ὁλόκληρος ὁ κῶδιξ τῶν τόμων, τοὺς ὁποίους συνέταξεν ὁ βασιλεὺς ἐκεῖνος διὰ τοὺς Χαλδαίους κατὰ τὸν Κ' αἰῶνα π. Χ. Συγχρόνως ἡ ἀποστολή, τῆς ὁποίας ἡγεῖτο οὗτος, προέβη εἰς πολλὰς ἄλλας ἀρχαιολογικάς, γεωλογικὰς καὶ γεωγραφικὰς ἐρεύνας εἰς διάφορα μέρη τῆς Περσίας, τὰ δὲ εὑρήματα καὶ αἱ διάφοροι συλλογαί, τὰς ὁποίας συνεκέντρωσεν ὁ Μοργκὰν καὶ οἱ συνεργάται του, ἐτοποθετήθησαν ἐν ἰδιαιτέρᾳ αἰθούσῃ τοῦ Λούβρου τῶν Παρισίων. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἐν Περσίᾳ ἐργασίας του περιεγράφησαν ἐν τῷ ἔργῳ «Ἱστορία καὶ ἐργασίαι τῆς ἐν Περσίᾳ ἀποστολῆς τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας τῆς Γαλλίας» καὶ εἰς τὰ «Ἀπομνημονεύματα τῆς εἰς Περσίαν ἀποστολῆς». Εἰς νέον ταξίδιόν του ἐν Περσίᾳ (1905—1906) ἀνεκάλυψεν ἀνάγλυφον ἄλλου βασιλέως τῶν Σούσων καὶ τὰ ἐρείπια μιᾶς πόλεως τῶν Σασανιδῶν. Ἔκαμεν ἐπίσης ἀνασκαφὰς ἐν Μέμφιδι, ἐν Γκίζῃ, ἐν Νταχσοὺρ καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Αἰγύπτου καὶ ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Γεωλογικαὶ μελέται περὶ Σκανδιναυΐας» (1879), «Γεωλογικαὶ μελέται ἐν Αὐστροουγγαρίᾳ» (1881), «Ἐπιστημονικὴ ἀποστολὴ εἰς Καύκασον καὶ Ἀρμενίαν» (1886—1889), «Ἐξερεύνησις τῆς χερσονήσου τῆς Μαλάκκας», «Ἐπιστημονικὴ ἀποστολὴ εἰς Περσίαν καὶ Κουρδιστὰν» (1889—1891), «Γλωσσικαὶ μελέται, κατάλογος τῶν ἀρχαίων μνημείων καὶ ἐπιγραφῶν τῆς Αἰγύπτου, ἀπὸ τῶν συνόρων τῆς Νουβίας μέχρι τοῦ Κὸμ Ὅμπος» (1894), «Ἔρευναι περὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ Αἰγυπτιακοῦ πολιτισμοῦ» (1896), «Ἀπὸ Σούσων εἰς Παρισίους» (1909), «Οἱ πρῶτοι πολιτισμοὶ» (1909), «Μελέτη περὶ ἐθνικοτήτων» (1917). Εἰς τὸ δεύτερον μέρος τοῦ βιβλίου τούτου ἀπευθύνει ἔκκλησιν ὑπὲρ τῆς ἐθνικῆς ἀποκαταστάσεως τῶν Ἀρμενίων. Ἐπίσης ἐξέδωσε τῷ 1918 τὸ σύγγραμμα «Κατὰ τῶν βαρβάρων τῆς Ἀνατολῆς· μελέτη περὶ τῆς Τουρκίας, αἱ ἀγριότητες καὶ τὰ ἐγκλήματά της», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκδηλοῖ σφοδρὰν ἀντιπάθειαν κατὰ τῶν Τούρκων. Τῷ 1921 ἐξέδωκε τὴν «Προϊστορικὴν ἀνθρωπότητα» κριθὲν ὡς τὸ σοβαρώτερον ἐκ τῶν ἐπιστημονικῶν του ἔργων. Μ. Δ. Ε.

**Μοργκάνι** (Morgagni), *Ἰωάννης-Βαπτιστής*. Ἰταλὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Forli τῇ 25 Φεβρουαρίου 1682, εἷς τῶν μεγαλυτέρων ἀνατομικῶν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ ἱδρυτὴς τῆς παθολογικῆς ἀνατομικῆς. Τὰς σπουδὰς αὐτοῦ ἐποιήσατο ἐν Βολωνίᾳ, ἔνθα τῷ 1701 ἔλαβε καὶ τὸ διδακτορικὸν αὐτοῦ δίπλωμα. Πρῶτον ἔργον αὐτοῦ ὑπῆρξε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Adversaria anatomica» (α' ἔκδ. Bologna 1706) περίφημον αὐτοῦ σύγγραμμα, δι' οὗ κατέλαβε τὴν πρέχουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν ἀνατομικῶν τῶν χρόνων ἐκείνων. Μετὰ διαμονὴν ἐπί τινων ἐν Βολωνίᾳ καὶ πρακτικὴν ἐξάσκησιν ἐν Παδούῃ καὶ Βενετίᾳ, ἐξήσκησε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ ἐν τῇ γενετείρᾳ αὐτοῦ, ὁπόθεν τῷ 1712 ἐκλήθη ὡς καθηγητὴς τῆς θεωρητικῆς ἰατρικῆς ἐν Παδούῃ εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ θανόντος A. Vallisnieri

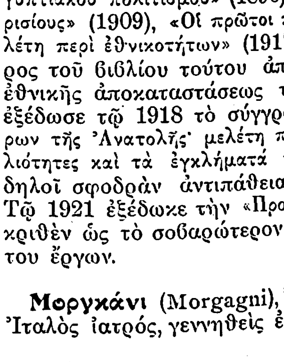

*Ἰωάννης Μοργκάνι.*

Digitized by Google

ἔνθα λίαν εὐδοκίμως ἐδίδαξε μέχρι τοῦ θανάτου αὐτοῦ (6 Δεκεμβρίου 1771). Τὸ ὄνομά του κατέστησαν ἀθάνατον πλεῖσται ἀνατομικαὶ καὶ παθολογοανατομικαὶ ἐργασίαι, ἰδίᾳ δὲ τὸ περίφημον παθολογικο-ανατομικὸν ἔργον αὐτοῦ «De sedibus et causis morborum per anatomen indagatis» (Περὶ τῆς ἕδρας καὶ αἰτίας τῶν νόσων διὰ τῆς ἀνατομῆς ἐρευνομένων, α' ἔκδ. ἐν Βενετίᾳ 1740), τὸ θέσαν τὰς πρώτας στερεὰς βάσεις τῆς παθολογικῆς ἀνατομικῆς. Πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν τῷ 1765 (Opera εἰς 5 τόμ. Basane 1765). Τὸ ὄνομα τοῦ Μοργκάνι δικαίως ἐξακολουθοῦσι νὰ φέρωσι μέρη τινὰ τοῦ ὀργανισμοῦ (μοργάνειος στιβὰς ἐν τῷ κρυσταλλοειδεῖ, μοργάνειοι στῦλοι ἐν τῷ βλεννογόνῳ τοῦ ἀπευθυσμένου, μοργάνειαι κρύπται οὐρήθρας, μοργάνειος κοιλία ἐν τῷ λάρυγγι κτλ.). Γενικῶς δὲ πρὸς τιμὴν αὐτοῦ καὶ ἡ παθολογικο-ανατομικὴ ἔρευνα ἐπὶ πτωμάτων (νεκροψία) καλεῖται μοργάνειος παρατήρησις. ΑΡ. Π. Κ.

**Μοργκαντάουν** (Morgantown) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Δυτικῆς Βιργινίας. Κάτ. 12.127. Εἶναι πρωτεύουσα τῆς κομιτείας *Μονονγκάλια*.

**Μοργκάρτεν** (Morgarten) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ ἐν τῷ καντονίῳ Τσοὺγκ τῆς Ἑλβετίας, παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τῆς λίμνης Αἴγκερι, 5 χλμ. μακρὰν τοῦ σταθμοῦ Σέττελ τῆς γραμμῆς τοῦ ἀπὸ Ζυρίχης εἰς Σβύτς σιδηροδρόμου. Ἐν Μοργκάρτεν ἐνίκησαν τῷ 15 Νοεμβρίου 1315 οἱ Ἑλβετοὶ τὰς ἰσχυρὰς δυνάμεις τοῦ αὐστριακοῦ στρατοῦ, θέσαντες διὰ τῆς νίκης ταύτης τὰς βάσεις τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἑλβετίας. Γ. Ι. Β.

**Μόργκεν** (Morghen), ***Ραφαήλ***. Φλωρεντῖνος χαράκτης (1758—1833). Κατ' ἀρχὰς ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ πατρὶ καὶ τῷ θείῳ του, εἶτα δέ, μεταβὰς εἰς Ρώμην, παρηκολούθησε μαθήματα παρὰ τῷ Βολπάτο, τοῦ ὁποίου ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα. Ἐγκατασταθεὶς ἀπὸ τοῦ 1794 εἰς τὴν πατρίδα του, ἵδρυσε σχολὴν χαρακτικῆς καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν χάραξιν ἔργων μεγάλων καλλιτεχνῶν. Ἔχαιρε μεγάλης φήμης, ἡ ὁποία ὠφείλετο κυρίως εἰς τὴν τεχνικὴν του ἐπιδεξιότητα. Ἐκ τῶν 254 γνωστῶν ἔργων του ἄριστα εἶναι: «Τὸ θαῦμα τῆς Μπολσένα», «Ὁ Παρνασσός», «Ἡ Παναγία τῆς Σετζιόλα», ἅπαντα ἐκ τοῦ Ραφαήλ, «Ἡ Παρθένος καὶ τὸ κοιμώμενον παιδίον» τοῦ Τιτσιανοῦ, «Ἡ ἐλεημοσύνη» τοῦ Κορρέτζιο. «Ἡ Παναγία τοῦ Σάκκο» τοῦ Ἀντρέα ντὲλ Σάρτο, «Ἡ ἀνάπαυσις ἐν Αἰγύπτῳ», «Ἡ ἁγία οἰκογένεια» καὶ «Οἱ ποιμένες τῆς Ἀρκαδίας» τοῦ Ν. Πουσσέν. Ἐφιλοτέχνησεν ἐπίσης πολλὰς ἐπικεφαλίδας (biviérras) καὶ συνθέσεις δι' ἀκουαφόρτε (νιτρικοῦ ὀξέος). Χ. Δ.

**Μοργκεντάου** (Morgenthau), ***Ἐρρῖκος***. Ἀμερικανὸς δημοσιολόγος καὶ πολιτικὸς γερμανικῆς καταγωγῆς. Ἐγεννήθη ἐν Μαννχάϊμ τῆς Γερμανίας τὴν 26ην Ἀπριλίου 1856. Ἐγκατασταθεὶς ἀπὸ τοῦ 1865 ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις τῆς Ἀμερικῆς, ἐσπούδασεν εἰς τὸ ἀστικὸν κολλέγιον τῆς Νέας Ὑόρκης καὶ τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κολούμπια καὶ ἀνεκηρύχθη τῷ 1877 προλύτης τοῦ δικαίου. Τυγχάνει ἐπίτιμος διδάκτωρ καὶ τῶν πανεπιστημίων Ὀμπερλάϊν καὶ Ἀθηνῶν. Ἤσκησε κατ' ἀρχὰς ἐπὶ εἰκοσαετίαν τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ καὶ διετέλεσε νομικὸς σύμβουλος καὶ πρόεδρος πλείστων ἑταιρειῶν. Τῷ 1913—1916 ἐχρημάτισε πρεσβευτὴς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἀντεπροσώπευσε δὲ κατὰ τὸ διάστημα τοῦ πολέμου τὰ ἐν Τουρκίᾳ συμφέροντα τῶν ἐμπολέμων κρατῶν, Μεγάλης Βρεττανίας, Γαλλίας, Ἰταλίας, Ρωσίας, Βελγίου, Μαυροβουνίου, Σερβίας καὶ Ἑλβετίας. Μετὰ τὸν πόλεμον διετέλεσε σύμβουλος τοῦ προέδρου Οὐΐλσων ἐπὶ τῶν ἀνατολικῶν ζητημάτων, προήδρευσε τῆς ἐπιτροπῆς πρὸς μελέτην τῆς ἐν Πολωνίᾳ καταστάσεως καὶ κατόπιν διωρίσθη ὑπὸ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν πρόεδρος τῆς ἐν Ἑλλάδι συσταθείσης «Ἐπιτροπῆς Ἀποκαταστάσεως Προσφύγων», μεγάλας προσενεγκὼν ὑπηρεσίας πρὸς ἐκπλήρωσιν τοῦ σκοποῦ αὐτῆς. Οἱ Ἕλληνες εἰς ἐκδήλωσιν εὐγνωμοσύνης ἀνεκήρυξαν αὐτὸν ἐπίτιμον δημότην τῶν μεγαλυτέρων ἑλληνικῶν πόλεων (Ἀθηνῶν, Θεσσαλονίκης κλπ.). Ἐπίσης εἶναι τετιμημένος διὰ τοῦ γαλλικοῦ παρασήμου τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς καὶ τοῦ βρεττανικοῦ τάγματος τοῦ σταυροῦ. Ἔγραψε: «Secret of the Bosporus» (=Τὸ μυστικὸν τοῦ Βοσπόρου, 1919) καὶ «All in Life-Time» (1922). —Ω.

**Μορδάλας** *ὅρμος [Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος μικρασιατικὸς τῆς ΒΔ. ἐσχατιᾶς τῆς χερσονήσου τῆς Κνίδου, ἀντικρύζων τὴν Κῶν (πλάτ. 36°46' Β., μῆκ. 27°30' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: The gulfs of Kos, Doris and Symi). Πρὸ αὐτοῦ φερώνυμος νησίς. Ἀμφότερα ὀνομάζονται ὑπὸ τῶν Τούρκων *Μοορντοβάν*. Σ. Ε. Λ.

**μορδέλλα** (ἡ) (Mordella) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μορδελλιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 150 εἴδη, ἀπαντῶντα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν 15 εὐρωπαϊκῶν εἰδῶν ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μορδέλλα ἡ κηλιδωτὴ* (Mordella maculata). Τὸ ἔντομον τοῦτο ἔχει μῆκος 5 περίπου ἑκατοστομέτρων, σῶμα ἐπίμηκες καὶ ῥοειδές, εὐρύτερον κατὰ τὸ πρόσθιον αὐτοῦ τμῆμα καὶ στενότερον κατὰ τὸ ὀπίσθιον, πόδας μακροὺς μὲ τὸ πρῶτον ζεῦγος βραχύτερον τῶν λοιπῶν, κεραίας βραχείας, λίαν διεσταμένας κατὰ τὴν βάσιν των, καὶ χρῶμα μελανὸν μὲ λευκοφαίους κηλῖδας ἐπὶ τῆς ραχιαίας ἐπιφανείας. Δ.Ν.Π.

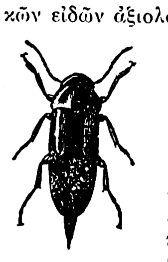

*Μορδέλλα ἡ κηλιδωτή.*

**μορδελλίδαι** (οἱ) (Mordellidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια κολεοπτέρων ἑτερομερῶν κανθάρων. Τὸ μῆκός των κυμαίνεται μεταξὺ 3 καὶ 5 χλστμ., ἔχουσι δὲ ὀφθαλμοὺς μεγάλους καὶ νηματοειδεῖς αἰσθητικὰς κεραίας. Ζῶσιν ἰδίως ἐπὶ ἀνθέων καὶ σαπρῶν ξύλων.

**μορδενίτης** (ὁ) (Mordenit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πολυπυριτικὸν ἅλας ἔνυδρον, ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τῶν ζεολίθων. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ χοϊλανδίτου πλουσιωτέραν εἰς διοξείδιον τοῦ πυριτίου, ἀπαντᾷ δὲ εἰς κρυστάλλους πινακοειδεῖς εἰς τὸ Morden τῆς Νέας Σκωτίας. Γ. Β.

**Μόρδος, *Δονάτος***. Ἰσραηλίτης ἐκ Κερκύρας ζήσας κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα. Ἐσπούδασεν ἐν Πίζῃ καὶ Νεαπόλει καὶ κατέγινεν εἰς φιλολογικὰς καὶ ἠθικοπολιτικὰς μελέτας. Ἐδημοσίευσε στατιστικὸν καὶ γεωγραφικὸν πόνημα ὑπὸ τὸν τίτλον: «Eptanisia. Saggio statistico e geografico-storico delle Isole Ionie». Λ. Χ. Ζ.

—*Μόρδος, **Ἐλεάζαρ (Λάζαρος)**, δὲ—*. Ἰσραηλίτης ἰατροφιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1744. Εἰς τὸ Παταύϊον ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν καὶ ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του ἐξήσκησε ταύτην. Ἐνταῦθα συνδεθεὶς μετὰ τῶν συναδέλφων του Ἰω. Λασκάρεως, Μαρίνου Καλλέργη, Ἰω. Θεοτόκη, Ἀντ. Ροδοσταμίου (συγγραφέως τῆς ἱστορίας τῆς Κερκύρας), Ἀντ. Μαρούλη, Καρόλου Ἀρμένη, Ἰννοκεντίου Γιαλλινὰ καὶ Ἰω. Καποδιστρίου ἵδρυσεν ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ πρώτου, τὸν Μάϊον τοῦ 1802, τὸν «Ἐθνικὸν ἰατρικὸν σύλλογον», ἐν ᾧ ἀνέγνωσε πολλὰς ἰατρικὰς διατριβάς, δι' ὃ καὶ ἐτιμήθη ἕνεκα τῆς πολυμεροῦς αὐτοῦ μαθήσεως διὰ τοῦ προσωνυμίου «*Μαϊμονίδης*» (ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἐξόχου Ἰσραηλίτου ἰατροῦ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος). Ἐπίσης μελετήματα διάφορα ἀνέγνωσε καὶ ἐν τῇ Ἰονίῳ Ἀκαδημίᾳ, τῆς ὁποίας διετέλεσε μέλος μέχρι τοῦ 1814, ὅτε διωρίσθη ὑπὸ τῆς ἐγχωρίου διοικήσεως ἐγχώριος ἀρχίατρος. Τῶν ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του ἐκδιδομένων ἐν Κερκύρᾳ ἐπιστημονικῶν περιοδικῶν «Mercurio Litterario», «Gazzetta Urbana», ὁ Λάζαρος δὲ Μόρδος διετέλεσεν εἷς τῶν κυριωτέρων συντακτῶν. Τῇ εἰσηγήσει του εἰσήχθη τὸ πρῶτον ἐν Κερκύρᾳ ὁ ἐμβολιασμός, ἕνεκα τῆς τότε ἐπικρατούσης εὐλογίας. Πλείστων εὐρωπαϊκῶν Ἀκαδημιῶν διετέλεσεν ἐπίτιμον μέλος ὁ δὲ Μόρδος. Ὑπὸ τῆς κοινότητός του ἐξελέγη ἀρχιραββῖνος καὶ ἐν τῇ συναγωγῇ του ἐξεφώνησεν ἐπιμνημόσυνον λόγον ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ προέδρου τῆς Ἰονίου πολιτείας Σπυρ. κόμητος Θεοτόκη, συνθέσας καὶ ἐλεγεῖον δι' αὐτὸν εἰς λατινικὴν γλῶσσαν. Ἀπέθανεν ἐν Κερκύρᾳ τῇ 14 Ἀπριλίου 1823.

[Πρβλ. *Λ. Βροκίνη* Βιογρ. Σχεδάρια, τόμ. Α'.] Π. Θ. ΣΤΕΡΙΩΤΗΣ

**Μορὲ** (Moret), ***Ἀλέξανδρος***. Σύγχρονος Γάλλος αἰγυπτιολόγος, δημοσιεύσας διάφορα ἔργα περὶ τῶν ἀρχαίων Αἰγυπτίων, τὰ σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Εἰς τὴν ἐποχὴν τῶν φαραώ» (1908), «Τὰ μυστήρια τῶν Αἰγυπτίων» (1913), «Βασιλεῖς καὶ θεοὶ τῆς Αἰγύπτου» (1911), «Ἡ μαγεία εἰς τὴν ἀρχαίαν Αἴγυπτον» κ. ἄ.

**μορέα** (ἡ) (Morus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μορεοειδῶν* ἢ *μορεϊδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δένδρα μόνοικα ἢ δίοικα ὀπωροφόρα καὶ ποικίλως χρήσιμα, μὲ φύλλα ἀκέραια, ἐναλλασσόμενα, μετὰ μίσχου, καὶ ἄνθη μονογενῆ, μικρά, κατὰ στάχυς διατεταγμένα, ἐπιμήκη ἢ κυλινδρικὰ τὰ ἄρρενα καὶ βραχέα φοειδῆ ἢ σχεδὸν σφαιροειδῆ τὰ θήλεα. Ὁ καρπὸς περιβάλλεται ὑπὸ τοῦ κάλυκος, ὅστις συνήθως γίνεται σαρκώδης καὶ εὔχυμος. Ἐκ τῶν 5 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμνει τὸ γένος, ἀξιολογώτερα εἶναι ἡ *μορέα ἡ ἐρυθρὰ* (Morus rubra), ἡ *μορέα ἡ κελτιδόφυλλος* (Morus celtidifolia), ἡ *μορέα ἡ λευκὴ* (Morus alba) καὶ ἡ *μορέα ἡ μέλαινα* (Morus nigra).

***Μορέα ἡ ἐρυθρά***. Εἶναι δένδρον ἰθαγενὲς τῆς βορείου Ἀμερικῆς, φθάνον ἐνίοτε καὶ εἰς ὕψος 30 μέτρων. Τὸ ξύλον της εἶναι σκληρόν, μεγάλης ἀνθεκτικότητος καὶ ποικίλως ἐν τῇ ξυλουργικῇ βιομηχανίᾳ χρήσιμον. Τὰ φύλλα της εἶναι τραχέα, χρησιμοποιούμενα ἐν τούτοις ἐν ἀπολύτῳ ἀνάγκῃ πρὸς διατροφὴν τοῦ μεταξοσκώληκος. Ὁ καρπός της ἔχει βαθὺ ἐρυθρὸν χρῶμα, εἶναι ἐδώδιμος καὶ ἔχει γλυκεῖαν καὶ κατά τι ὀξεῖνον γεῦσιν. Πολλαπλασιάζεται διὰ σπορᾶς ἢ δι' ἐμβολιασμοῦ ἐπὶ τῆς λευκῆς μορέας. Ἀπαντᾷ εἰς γόνιμα καὶ μᾶλλον ὑγρὰ ἐδάφη καὶ καλλιεργεῖται ὑπὸ πλείστας ποικιλίας.

***Μορέα ἡ κελτιδόφυλλος***. Εἶναι ἰθαγενὲς δένδρον τοῦ Περοῦ καὶ τοῦ Μεξικοῦ. Τὰ φύλλα της χρησιμοποιοῦνται ἐνίοτε πρὸς διατροφὴν τοῦ μεταξοσκώληκος καὶ ὁ καρπός της εἶναι ἐδώδιμος καὶ μελανέρυθρος.

***Μορέα ἡ λευκή***, ἢ ***μορέα ἡ κοινή***. Εἶναι δένδρον γνωστότατον (κοιν. *μουριὰ* ἢ *συκαμινιὰ* ἢ *σκαμνιά*), παράγον βρωσίμους καρποὺς γλυκείας γεύσεως (κοιν. *μοῦρα* ἢ *συκάμινα*). Πρὸς τούτοις εἶναι αὐτὴ τὸ μοναδικὸν εἶδος ὅπερ καλλιεργεῖται ἀποκλειστικῶς διὰ τὴν ἐκτροφὴν τοῦ μεταξοσκώληκος. Ἡ μορέα ἡ λευκὴ ἔχει πατρίδα τὰς Ἰνδίας, ἐκεῖθεν δὲ μετηνέχθη ἐν πρώτοις εἰς τὴν Κίναν, κατὰ τὴν 2αν π. Χ. χιλιετηρίδα. Ἐκ τῆς Κίνας διεδόθη εἰς τὴν Ἰαπωνίαν καὶ κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΣΤ' αἰῶνος μ. Χ., ἐπὶ τοῦ Ἰουστινιανοῦ, Ἕλληνες μοναχοί, ἐπιστρέφοντες ἐκ Κίνας, ἔφερον μεθ' ἑαυτῶν φάρια μεταξοσκώληκος καὶ σπόρον τῆς μορέας τῆς λευκῆς εἰς τὴν Ἀνατολήν, ὁπόθεν σὺν τῷ χρόνῳ διεδόθη ἡ καλλιέργεια αὐτῆς εἰς τὴν μεσημβρινὴν Εὐρώπην. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Η' αἰῶνος οἱ Ἄραβες μετέφερον σπόρους μελανῆς μορέας εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ἐνῷ εἰς τὴν Ἑλλάδα ἦτο ἤδη διαδεδομένη τότε ἡ λευκὴ μορέα. Κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα ὁ βασιλεὺς τῆς Σικελίας εἰσήγαγε τὴν καλλιέργειαν τῆς λευκῆς μορέας εἰς τὴν νῆσον, ἐκ ταύτης δὲ κατόπιν διεδόθη εἰς τὴν μεσημβρινὴν καὶ εἶτα εἰς τὴν βόρειον Ἰταλίαν καὶ τέλος εἰς τὴν Γαλλίαν. Εἰς τὴν τελευταίαν ταύτην χώραν μόνον κατὰ τὸ 1494 ἐγένετο συστηματικὴ φύτευσις τῆς λευκῆς μορέας καὶ ἀκριβῶς μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ Καρόλου τοῦ Η' ἐκ τῆς Ἰταλίας.

Κυριώτερα χαρακτηριστικὰ τῆς λευκῆς μορέας εἶναι τὰ ἑξῆς: Ἀνάστημα μέτριον, κορμὸς ἀρκετὰ παχὺς μὲ φλοιὸν σκληρὸν φαιότεφρον καὶ πολυκλαδόδη, φύλλα ἀνεπτυγμένα, βαθυσκολπωτά, λεπτοῦ πάχους, λεῖα, στίλβοντα, ζωηρῶς πράσινα κατὰ τὴν ἄνω αὐτῶν ἐπιφάνειαν καὶ τεφροπράσινα κατὰ τὴν κάτω. Ὁ καρπὸς κρεμάμενος, μετὰ μακροῦ σχετικῶς μίσχου, ἔχει χρῶμα ὑπόλευκον ἢ ὑπέρυθρον καὶ εἶναι γλυκύς.

Ἡ μορέα ἡ λευκὴ εὐδοκιμεῖ εἰς παντοειδῆ ἐδάφη, ἐκτὸς τῶν λίαν ὑγρῶν καὶ τῶν τελματωδῶν τοιούτων, διότι εἰς τὰς τοιαύτας γαίας τὸ δένδρον μένει καχεκτικὸν καὶ εὐκόλως προσβάλλεται ὑπὸ διαφόρων ἀσθενειῶν. Λίαν κατάλληλοι γαῖαι διὰ τὴν εὐδοκίμησιν τῆς μορέας θεωροῦνται αἱ ἀμμοαργιλλώδεις καὶ μετρίως ὑγραί. Εὐδοκιμεῖ ἐπίσης καὶ εἰς ἀγόνους ἔτι γαίας, ἀλλὰ μετὰ προηγουμένην λίπανσιν καὶ συχνὴν ἄρδευσιν. Προτιμᾶται ὁ διὰ σπορᾶς πολλαπλασιασμός της, διότι οὕτω καὶ ταχύτερον ἀναπτύσσεται τὸ νέον δένδρον καὶ μακροβιώτερον καθίσταται. Παρ' ἡμῖν ἡ σπορὰ γίνεται, συνήθως, εὐθὺς μετὰ τὴν ὡρίμανσιν τοῦ καρποῦ καὶ εἰς σκιερόν, εἰ δυνατόν, τόπον. Μετὰ τὸ δεύτερον, συνήθως, ἔτος τῆς σπορᾶς, τὰ νεαρὰ φυτὰ μεταφυτεύονται εἰς φυτώριον, εἰς ὃ καὶ διατηροῦνται ἐπὶ 2 ἢ καὶ 3 ἔτη τακτικῶς ποτιζόμενα. Μετὰ τὴν παρέλευσιν τῆς τριετίας φυτεύονται τελειωτικῶς εἰς τὸν μόνιμον τόπον κατ' ἀποστάσεις 5—8 μέτρων ἀπ' ἀλλήλων, ἀναλόγως τῆς ἀναπτύξεώς των, καὶ εἰς εὐθεῖαν γραμμήν. Τὰ ἐκ σπορᾶς προελθόντα δέον νὰ ἐμβολιάζωνται κατὰ τὸ τέταρτον ἢ πέμπτον ἔτος τῆς ἡλικίας των, διότι ἄλλως παράγουσι μὲν καρπόν, ἀλλὰ τὰ φύλλα των εἶναι ὀλίγα, μικρὰ καὶ τραχέα. Ὁ ἐμβολιασμὸς γίνεται δι' ἐνοφθαλμισμοῦ.

Διὰ καταλλήλων διασταυρώσεων ἐπὶ τοῦ εἴδους τούτου παρήχθησαν πλεῖσται ποικιλίαι, αἵτινες διακρίνονται κυρίως ἐκ τοῦ καρποῦ των, ὅστις εἶναι λευκός, ὑπέρυθρος, ῥόδινος καὶ μελανός, καὶ ἐκ τῶν φύλλων των, ἅτινα εἶναι φοειδῆ, ὀλιγοκολπωτὰ ἢ πολυκολπωτά, κτλ. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων ποικιλιῶν εἶναι: *μορέα ἡ λευκὴ ἡ νανοφυὴς* (Morus alba nana), *μορέα ἡ λευκὴ ἡ πυραμιδοειδὴς* (Morus alba pyramidalis), *μορέα ἡ λευκὴ ἡ τραχεῖα* (Morus alba fibrosa), *μορέα ἡ λευκὴ ἡ πλατύφυλλος* (Morus alba latifolia), *μορέα ἡ λευκὴ ἡ Μορέττιος* (Morus alba Morettii), *μορέα ἡ λευκὴ ἡ σινικὴ* (Morus alba sinensis) κλπ.

Ὁ τρόπος καθ' ὃν κλαδεύεται ἡ μορέα ποικίλλει ἀναλόγως τοῦ ἀναστήματος τῶν δένδρων τῶν ἀνωτέρω ποικιλιῶν καὶ ἀναλόγως τῆς χρησιμοποιήσεώς των. Οὕτω διὰ σχηματισμὸν μορεώνων, τὰ δένδρα, οἱουδήποτε ἀναστήματος, φυτεύονται κατ' ἀποστάσεις 7—10 μέτρων μεταξύ των, κλαδεύονται δὲ σκιαδοειδῶς, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὰ δένδρα, ἅτινα ἐπιθυμεῖ τις νὰ διατηρήσῃ μᾶλλον χαμηλά, φυτεύονται κατ' ἀποστάσεις 3—5 μέτρων καὶ κλαδεύονται πυραμιδοειδῶς. Τὰ δένδρα, ἅτινα πρόκειται νὰ χρησιμοποιηθοῦν διὰ τὸν καταρτισμὸν ζωσίμων φραγμῶν, φυτεύονται εἰς ἀπόστασιν 30—50 ἑκατοστομέτρων καὶ κλαδεύονται πολὺ χαμηλὰ ἀπὸ τοῦ κορμοῦ των, ὥστε νὰ βλαστάνωσι πολλοὶ καὶ ἀπὸ τὸ κατώτερον τμῆμα τοῦ κορμοῦ κλάδοι. Εἴς τινας τῶν παραμεσογειακῶν χωρῶν, ὡς καὶ πολλαχοῦ παρ' ἡμῖν, τὰ δένδρα δὲν κλαδεύονται πρὸ τοῦ λάβουν πλήρη τὴν ἀνάπτυξιν αὐτῶν,



Digitized by Google

εἶτα δὲ κλαδεύεται ἡ κόμη των κυπελλοειδῶς, οὕτως ὥστε τὸ δένδρον νὰ ἡλιάζηται καὶ νὰ ἀερίζηται καλῶς, ὁπότε τὸ φύλλωμά των καθίσταται τρυφερὸν καὶ πυκνόν. Εἰς πλεῖστα μέρη τῆς Ἰταλίας καὶ σχεδὸν πανταχοῦ τῆς Γαλλίας τὰς μετρίου ἀναστήματος μορέας κλαδεύουσιν εὐθὺς ἅμα τῇ ἀποπερατώσει τῆς ἐκτροφῆς τοῦ μεταξοσκώληκος, ἀποκόπτοντες πρὸς τοῦτο τὰς ἐτησίας ῥάβδους (βέργες) ἄνωθεν τοῦ πρώτου ἐκ τῶν ὀφθαλμῶν, οὓς φέρουσι κατὰ τὸ κατώτερον τμῆμα τοῦ κορμοῦ των, διότι τότε ἐκ τοῦ τμήματος τούτου ἀναφαίνεται νέος βλαστός, ὅστις μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ φθινοπώρου ὡριμάζει καὶ κατὰ τὸ ἐπόμενον ἔαρ φέρει ἄφθονα, μεγάλα καὶ τρυφερὰ φύλλα. Ὁ τρόπος ὅμως οὗτος τῆς κλαδεύσεως ἐπιφέρει ταχέως τὴν ἐξασθένησιν τοῦ δένδρου καὶ ἀκολούθως καὶ τὸν ταχὺν τούτου θάνατον. Πρὸς παράτασιν τῆς ζωῆς τῆς μορέας δέον αὐτὴ νὰ ἀποφυλλίζηται ἅπαξ μόνον τοῦ ἔτους καὶ ἐπὶ τῆς κορυφῆς ἑκάστου βλαστοῦ νὰ ἐπαφίενται φύλλα τινά, ἅτινα σπουδαίως συντελοῦσιν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν καὶ τὴν εὐρωστίαν τοῦ δένδρου, δέον δ' ἐπὶ πλέον αἱ ῥάβδοι νὰ ἀποκόπτωνται κατὰ πενταετίαν. Κανονικοῦ μεγέθους μορέα καὶ καλῆς παραγωγῆς ἀποδίδει 100—120 ὀκάδας φύλλων κατ' ἔτος.

Ἡ μορέα, πλὴν τῶν φύλλων της, δι' ἃ κυρίως καλλιεργεῖται πρὸς διατροφὴν τοῦ μεταξοσκώληκος, ἀποδίδει καὶ ἕτερα προϊόντα: τὸν καρπόν της ἐν πρώτοις, ὅστις λόγῳ τοῦ ὅτι εἶναι εὐθηνὸς καὶ πρωϊμώτατος χρησιμοποιεῖται ἀντὶ ἑτέρου ὀπωρικοῦ παρὰ ταῖς λαϊκαῖς μάζαις· τὸ ξύλον της ἀφ' ἑτέρου, ὅπερ ἔχει ὑποκίτρινον χρῶμα καὶ εἶναι σκληρόν, μεγάλης διαρκείας, χρησιμοποιεῖται δὲ ποικίλως καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν ἁμαξοπηγίαν· τὸν φλοιόν της τέλος, ὅστις λαμβάνεται ἐκ τῶν μονοετῶν καὶ διετῶν ῥάβδων τοῦ δένδρου καὶ χρησιμοποιεῖται, λόγῳ τῆς σκληρότητός του, διὰ τὴν κατασκευὴν τῶν ἐμβολίων, πολλαχοῦ δὲ καὶ πρὸς κατασκευὴν χάρτου, κλωστικῆς ὕλης, κ. τ. λ.

***Μορέα ἡ μελανή*** (κοιν. *μαυρομουριά, ξινομουριά, συκαμινιά*). Τὸ εἶδος τοῦτο εἶναι μεγαλύτερον καὶ γενικῶς μακροβιώτερον τοῦ προηγουμένου καὶ

*Μορέα ἡ μελανή.*

[Κλάδος καρποφόρος.]

ἔχει κορμὸν πολυκλαδωτόν, φλοιὸν σκληρότατον καὶ παχύν. Τὰ φύλλα της εἶναι ἀνθεκτικά, παχέα, σκληρὰ κατὰ τὴν ἄνω αὐτῶν ἐπιφάνειαν καὶ πολυτριχωτὰ κατὰ τὴν κάτω, ἀκέραια καρδιόφυλλα καὶ συνηθέστερον πριονωτὰ κατὰ τὴν περιφέρειαν των, φέρουσι δὲ συνήθως ὑπέρυθρα φυλλάρια. Ὁ καρπὸς κρέμαται ἐκ βραχέος μίσχου, εἶναι ᾠοειδὴς καὶ ἔχει χρῶμα ἀνοικτῶς ἐρυθρὸν ἐν ἀρχῇ, μεταβαλλόμενον εἰς σχεδὸν μέλαν μετὰ τὴν τελείαν ὡρίμανσιν· ἔχει μῆκος 0,02—0,03 ἑκατοστομέτρων, εἶναι ἐδώδιμος, μὲ εὐάρεστον γλυκίζουσαν γεῦσιν. Καὶ τὸ εἶδος τοῦτο εἶναι γνωστότατον ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων («ἑτέρα συκάμινος» παρὰ Θεοφράστῳ καὶ ἁπλῶς «μορέα» ἢ «συκαμινέα» παρὰ Διοσκορίδῃ). Τινὲς διατείνονται ὅτι εἶναι ἰθαγενὲς τῆς Περσίας καὶ ἕτεροι τῆς Κίνας. Ἀδιαφόρως τῆς καταγωγῆς της, βέβαιον εἶναι ὅτι καλλιεργεῖται ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ ἐξ αὐτῆς τὸ πρῶτον διεδόθη εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ εἶτα πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Ἡ μορέα ἡ μελανὴ ἀντέχει περισσότερον τῆς λευκῆς μορέας εἰς τὸ ψῦχος, δι' ὃ καὶ καλλιεργεῖται κυρίως εἰς τόπους ὀρεινούς, εἶναι δὲ δένδρον πολὺ μακροβιώτερον τοῦ προηγουμένου εἴδους· ἐν Ἀγγλίᾳ ὑπάρχουσι μελαναὶ μορέαι ἀριθμοῦσαι βίον 4 περίπου αἰώνων. Καὶ ταύτης τὸ φύλλον πολλαχοῦ τῶν παραμεσογειακῶν χωρῶν, καὶ παρ' ἡμῖν ἐπίσης, χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν μεταξοσκωληκοτροφίαν, καίτοι λέγεται ὅτι οἱ διὰ τοιούτων φύλλων αὐτῆς ἐκτρεφόμενοι σκώληκες παράγουσι μέταξαν παχυτέραν καὶ τραχυτέραν ἀπὸ τοὺς τρεφομένους διὰ φύλλων τῆς μορέας τῆς λευκῆς.

Ὁ πολλαπλασιασμός της γίνεται συνήθως διὰ μοσχευμάτων ἢ δι' ἐμβολιασμοῦ ἐπὶ τῆς λευκῆς μορέας καὶ σπανιώτερον διὰ σπορᾶς. Ἐκ τοῦ καρποῦ της παρασκευάζονται διάφορα γλυκίσματα καὶ φαρμακευτικὰ σεράπια (syrupium mororum). Τὸ ξύλον της εἶναι κατωτέρας ποιότητος ἀπὸ τὸ τοῦ προηγουμένου εἴδους.

***Ἀσθένειαι.*** Ἐκ τῶν συνηθεστέρων ἀσθενειῶν τῆς μορέας εἶναι αἱ ἑξῆς:

*Κράδος.* Οὗτος ἐπιφέρει τὴν ἀποσύνθεσιν τοῦ ἐσωτερικοῦ ξύλου τοῦ κορμοῦ, ὡς ἐπίσης καὶ τῶν κυρίων κλάδων.

*Σκωρία.* Αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν παρουσίαν τοῦ μύκητος *κυλινδροσπόριον τῆς μορέας.* Προσβάλλει κυρίως τὰ φύλλα, ἅτινα παραμένουν καχεκτικὰ καὶ τέλος ξηραίνονται. Ὡς μέσον καταπολεμήσεως ἐνδείκνυνται οἱ ψεκασμοὶ διὰ βορδιγαλίου πολτοῦ. Τὰ ψεκασθέντα φύλλα δὲν πρέπει νὰ δίδωνται πρὸς διατροφὴν τοῦ μεταξοσκώληκος.

*Σφακελισμὸς* (κοιν. *σαποκώλιασμα*). Προσβάλλει ἰδίως τὰς μορέας, αἵτινες φύονται εἰς λίαν ὑγρὰ ἢ τελματώδη μέρη ὡς καὶ τὰς ὑπερβολικῶς ποτιζομένας. Τὸ προσβληθὲν δένδρον διακρίνεται εὐκόλως, διότι οἱ βλαστοὶ κιτρινίζουν, καθὼς καὶ τὰ φύλλα τὰ ὁποῖα εἰς τὸ τέλος πίπτουν. Ἡ ἀσθένεια αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν παρουσίαν μικρομυκήτων, ἀποτελεσματικώτερον δὲ μέσον πρὸς καταπολέμησιν ἢ καὶ πρόληψίν της εἶναι ἡ ἀποστράγγισις τοῦ ἐδάφους ἢ καὶ ἡ διακοπὴ τῆς ἀρδεύσεως.

*Ψωρίασις.* Αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν προσβολὴν τῆς μορέας ὑπὸ τοῦ ἐντόμου *κεροπλάστις.* Ἀποτελεσματικώτερον μέτρον θεωρεῖται ἡ συλλογὴ καὶ καῦσις τῶν φύλλων κατὰ τὸ φθινόπωρον, ἡ κλάδευσις καὶ ἡ ἐπίχρισις τοῦ κορμοῦ καὶ τῶν κλάδων τοῦ δένδρου διὰ πυκνῆς διαλύσεως ἀσβέστου μετὰ 2—3 % λυζόλης. Δ. Ν. Π.

—*[Φαρμακ.]* Ὁ καρπὸς τῆς μελανῆς μορέας, εἴτε καὶ τῆς λευκῆς (Fructus Mori), περιέχων σάκχαρον, μηλικὸν ὀξύ, κυτταρίνην κλπ., χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τῆς λαϊκῆς θεραπευτικῆς ὡς γλυκαντικὸν καὶ ὡς ὑπακτικόν, πρὸς παρασκευὴν σιροπίου (Sirupus Mori), τὸ ὁποῖον ἀναγράφεται ἐνίοτε πρὸς γαργαρισμούς, ὡς στυπτικὸν καὶ ὡς ἀπολυμαντικόν. Κ. Γ. Μ.

**Μορέας** (ὁ) (γεν. *Μορέως*). Δημῶδες μεσαιωνικὸν καὶ νεώτερον (ὑπὸ τὸν τίτλον: *Μωριᾶς*) ὄνομα τῆς Πελοπονήσου. Κατ' ἀρχὰς δὲν ἐδήλου ὁλόκληρον τὴν χερσόνησον, ἀλλὰ μόνον τὴν περὶ τὴν Ἠλείαν περιοχήν, ὡς προκύπτει ἐκ χειρογράφου σημειώματος τοῦ ΙΒ' αἰῶνος καὶ ἐκ τῆς ἀφηγήσεως τῶν «Χρονικῶν τοῦ Μορέως». Ἡ πρώτη γνωστὴ μνεία τοῦ τοπωνυμίου εἶναι τοῦ ἔτους 1111.

Περὶ τῆς ἐτυμολογίας τοῦ ὀνόματος Μορέας πολλαὶ μέχρι τοῦδε διετυπώθησαν γνῶμαι. Ὁ Guilletière τὸ παρήγαγεν ἐκ τῆς λέξεως *μορέα*, διότι δῆθεν ἡ χερσόνησος ἔχει σχῆμα φύλλου μορέας. Ὁ Fallmerayer καὶ ἄλλοι σλαβολόγοι παραδέχονται σλαβικὴν καταγωγήν, ἐκ τοῦ *morje*=θάλασσα. Ὁ Hopf νομίζει ὅτι πρόκειται περὶ μεταθέσεως τοῦ ὀνόματος *Ρωμαία.* Ἄλλοι τέλος συσχετίζουν τὸ ὄνομα πρὸς τὰ ὀνόματα τῶν πόλεων *Μάργαλα, Ἀμόριον* κτλ., ὁ δὲ Zachariä von Lingenthal παραδέχεται ἐπίδρασιν τοῦ ἐπιθέτου *ἄνορεος.* Πᾶσαι αἱ ἑρμηνεῖαι αὗται ἀπεδείχθησαν ἀνεπαρκεῖς ὑπὸ τοῦ καθηγητοῦ Γεωργίου Χατζιδάκι («Γλωσσολογικαὶ μελέται», τόμ. Α'), ὅστις παράγει τὸ ὄνομα ἐκ τῆς λέξεως *μορέα*, οὐχὶ λόγῳ τοῦ σχήματος, ἀλλὰ διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐκεῖ καλλιεργουμένων μορεῶν. Δ. Α. Ζ.

**— Μορέως, *Χρονικὸν τοῦ* —.** Διὰ τοῦ ὀνόματος τούτου δηλοῦται συνήθως δημώδης ἑλληνοφραγκικὴ χρονογραφία τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἄλλως «Βιβλίον τῆς Κουγκέστας» λεγομένη καὶ ἀναφερομένη εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ πριγκιπάτου τῆς Πελοποννήσου. Τὸ Χρονικὸν τοῦ Μορέως, τὸ ὁποῖον ἐγνώσθη πλήρως πρὸ ἑκατὸν περίπου ἐτῶν, ἀποτελεῖ σπουδαιοτάτην πηγὴν διὰ τὴν γνῶσιν τοῦ ἑλληνολατινικοῦ πολιτισμοῦ τῆς Πελοποννήσου καὶ τῶν ἄλλων ἐν Ἑλλάδι φραγκικῶν κρατῶν κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας.

Ἡ χρονογραφία αὕτη περιῆλθε μέχρις ἡμῶν ὑπὸ τέσσαρας διαφόρους παραλλαγάς, ἑλληνικήν, γαλλικήν, ἀραγωνικὴν καὶ ἰταλικήν. Σπουδαιότεραι εἶναι αἱ τρεῖς πρῶται· ἡ τετάρτη εἶναι μᾶλλον παράφρασις τῆς ἑλληνικῆς, ὑφ' ἣν μάλιστα μορφὴν διετηρήθη αὕτη ἐν τῷ χειρογράφῳ τῆς Κοπεγχάγης. Τὸ ζήτημα τῆς σχέσεως τῶν παραλλαγῶν τούτων μεταξύ των ἀποτελεῖ μέγα φιλολογικὸν πρόβλημα, ἐπὶ τοῦ ὁποίου διετυπώθησαν αἱ πλέον ἀντιφατικαὶ γνῶμαι. Κατά τινας τὸ ἑλληνικὸν κείμενον εἶναι τὸ πρωτότυπον, κατ' ἄλλους τὸ γαλλικόν· κατ' ἄλλους, τέλος, αἱ δύο αὗται παραλλαγαὶ ἔχουν ὡς βάσιν τρίτον κείμενον ἀπολεσθέν.

Ἡ ἑλληνικὴ παραλλαγὴ εἶναι ἔμμετρος καὶ ἀποτελεῖται ἐκ στίχων 9.219 κατὰ τὸ χειρόγραφον τῆς Κοπεγχάγης, κατὰ δὲ τὰ ἄλλα χειρόγραφα ἐκ στίχων 8.191. Ἡ διήγησις φθάνει μέχρι τοῦ ἔτους 1292· ἀναφέρονται ὅμως ἐν παρεκβάσει καί τινα γεγονότα μεταγενέστερα. Ἐγράφη κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ὑπὸ γασμούλου ἢ ἐξελληνισθέντος Φράγκου. Ἀπὸ γλωσσικῆς καὶ καλαισθητικῆς ἀπόψεως ἡ ἑλληνικὴ παραλλαγὴ ὑστερεῖ κατὰ πολύ.

Ἡ γαλλικὴ παραλλαγή, ἡ ὁποία ἐγράφη ὡς καὶ αἱ ἄλλαι δύο εἰς πεζόν, ἀναφέρεται εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ πριγκιπάτου μέχρι τοῦ ἔτους 1333. Ἐγράφη δὲ πιθανώτατα μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1332 καὶ 1346.

Περὶ τῆς ἀραγωνικῆς παραλλαγῆς ἔχομεν πληρεστέρας εἰδήσεις. Ἀπὸ ἱστορικῆς ἀπόψεως εἶναι ἴσως ἀξιολογωτέρα τῶν τριῶν ἄλλων, φθάνει δὲ μέχρι τοῦ ἔτους 1377. Προτάσσεται αὐτῆς ἱστορικὸν σημείωμα περὶ τῶν αὐτοκρατόρων τοῦ Βυζαντίου ἀπὸ τοῦ 780 μέχρι τοῦ 1118, γραφὲν ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ Ζωναρᾶ. Ἡ ἀραγωνικὴ παραλλαγὴ συνετάχθη ἐντολῇ τοῦ μεγάλου μαΐστορος τοῦ τάγματος τῶν Ἰωαννιτῶν Ἰωάννου Fernandez de Heredia. Τὸ Χρονικὸν τοῦ Μορέως ἐχρησιμοποιήθη καὶ ὑπὸ τοῦ Γκαῖτε.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἰωάν. Schmitt,* «Die Chronik von Morea» (Μόναχον, 1889).— *Τοῦ αὐτοῦ,* «The Chronicle of Morea» (Λονδῖνον, 1904).— *Ἀ. Ἀδαμαντίου,* «Τὰ Χρονικὰ τοῦ Μορέως», ἐν Δελτ. Ἱστορ. καὶ Ἐθνολ. Ἑταιρείας, 6 (1906) σελ. 453—675.— *J. Lougnon,* «Chronique de Morée» (Παρίσιοι 1911), ὅπου καὶ πλήρης βιβλιογραφία. Δ. Α. Ζ.

**Μορεάς,** ***Ζάν*** βλ. *Μωρεάς.*

**Μορὲλ** (Morel), ***Αὔγουστος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος συνθέτης (1809—1881), διακριθεὶς κυρίως εἰς τὴν μουσικὴν δωματίου, εἰς ὃ εἶδος ἔτυχε δὶς τοῦ βραβείου Chartier. Ἔδωκεν ἐπίσης εἰς τὸ θέατρον: ἓν μπαλλέττο, μουσικὴν διὰ τὴν «Κόρην τοῦ Αἰσχύλου» τοῦ Ὠτρὰν καὶ τὸ μελόδραμα «Ἡ κρίσις τοῦ Θεοῦ». Τὰ ἔργα μουσικῆς δωματίου τοῦ Μορὲλ ἀποτελοῦνται ἐκ 5 κουαρτέττων καὶ 5 κουϊντέττων ἐγχόρδων καὶ ἑνὸς τρίο μετὰ κλειδοκυμβάλου. Γ. Σ.

**Μόρελ** (Morel), ***Ἐδμόνδος.*** Ἄγγλος συγγραφεύς, δημοσιογράφος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1873. Ἐσπούδασεν ἐν Φαῖστμπουργ. Τῷ 1904 ἵδρυσε τὴν «Ἑταιρείαν τῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ Κόνγκο» πρὸς προστασίαν τῶν ἰθαγενῶν ἀπὸ τῆς ἀπανθρωπίας τῶν Εὐρωπαίων, ἐδημοσίευσε δὲ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον μετα τοῦ Π. Μάϊλ (P. Mille) ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ Λεοπολδιανὸν Κόνγκον». Ἐπισκεφθεὶς ἀκολούθως τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας (1909), διεξήγαγεν αὐτόθι ἀνάλογον ἀγῶνα. Τῷ 1912 ἐξελέγη φιλελεύθερος βουλευτὴς εἰς τὴν βουλὴν τῶν Κοινοτήτων, παραιτηθεὶς ὅμως εὐθὺς μετὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἵδρυσε τὴν «Ἕνωσιν τοῦ δημοκρατικοῦ κέντρου» καὶ διεξήγαγε σφοδρότατον ἀντιπολεμικὸν ἀγῶνα. Κατηγορηθεὶς ὅτι συνεννοεῖτο δι' ἀλληλογραφίας μετὰ τοῦ Ρομαὶν Ρολλάν, συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη. Βραδύτερον διηύθυνε τὴν ἐπιθεώρησιν «Foreign Affaires» καὶ ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Δέκα ἔτη μυστικῆς διπλωματίας», «Ἡ ἀποκαλυφθεῖσα διπλωματία», «Τὸ ἄχθος τῆς μαύρης φυλῆς» κλπ. Ἐπανεκλεγεὶς μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων (1922) συνετάχθη μετὰ τῶν ἐργατικῶν. Χ. Δ.

**Μορέλια** (Morelia) *[Γεωγρ.].* Πόλις τοῦ Μεξικοῦ, πρωτεύουσα τῆς πολιτείας Μιτσοακάν, κειμένη μεσογείως ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως (1950 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν), εἰς ἀπόστασιν 368 χλμ. Δ. ΝΔ. τῆς πόλεως Μεξικοῦ, μεθ' οὗ συνδέεται διὰ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Ἔχει ὡραῖον μητροπολιτικὸν ναὸν καὶ κυβερνεῖον, τὸ δ' ἐν αὐτῇ κολλέγιον τοῦ Ἁγίου Νικολάου ντὲ Ἰντάλγκο εἶναι τὸ ἀρχαιότερον ἐκπαιδευτικὸν ἵδρυμα τοῦ εἴδους του ἐν Μεξικῷ. Ἐξάγει ἔριον, σάκχαριν, ποῦρα, τυρόν, ἐγχώρια ποτὰ κλπ. Κάτ. (1921) 31.148. Ἡ πόλις ἱδρύθη τῷ 1541 καὶ ὠνομάζετο κατ' ἀρχὰς *Βαλλαδολίδον.* Τῷ 1582 ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς πολιτείας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1828 μετωνομάσθη εἰς *Μορέλια* πρὸς τιμὴν τοῦ δὸν Χοσὲ Μαρία Μορέλος, ἑνὸς ἐκ τῶν ἡρώων τῶν ὑπὲρ ἀνεξαρτησίας πολέμων τῆς χώρας. Χ. Δ.

**Μορελλὲ** (Morellet), ***Ἀνδρέας.*** Γάλλος συγγραφεὺς (1727—1819), μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκα-

Digitized by Google

δημίας. Συνειργάσθη εἰς τὴν περίφημον «Ἐγκυκλοπαιδείαν» τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος. Ἠσχολήθη ἐπίσης καὶ μὲ τὴν πολιτικὴν οἰκονομίαν καὶ τὰς βιομηχανικὰς τέχνας. Τῷ 1818 ἐδημοσίευσεν «Ἀνάμικτα φιλολογικὰ καὶ φιλοσοφικὰ τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος». Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθη τὸ ἔργον του «Ἀπομνημονεύματα ἐπὶ τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος καὶ τῆς ἐπαναστάσεως» (1821).

**Μορέλλι** (Morelli), ***Δομίνικος***. Ἰταλὸς ζωγράφος (1826—1901), θεωρούμενος ὡς ἀρχηγὸς τῆς σχολῆς τῆς Νεαπόλεως. Ἔζησε ζωὴν ἀλήτου, περιπλανώμενος ἐπὶ ἑβδομάδας ὁλοκλήρους κατὰ μῆκος τῆς παραλίας τῆς Νεαπόλεως μεταξὺ Παυσιλύπου καὶ Μπάγιας, μὲ μόνον σύντροφον τὰ ποιήματα τοῦ Βύρωνος. Τῷ 1848 ἐπολέμησεν ἐναντίον τοῦ βασιλέως Φερδινάνδου, τραυματισθεὶς δὲ ἐγκατελείφθη ἡμιθανὴς ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης. Τὸ καλλιτεχνικόν στάδιόν του ἄρχεται ἀπὸ τοῦ 1855. Ἐμαθήτευσεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν καλῶν τεχνῶν τῆς Νεαπόλεως, τὸ δ᾽ ἔργον του διακρίνεται διὰ τὴν πιστὴν ἀπόδοσιν τῶν ἱστορι-

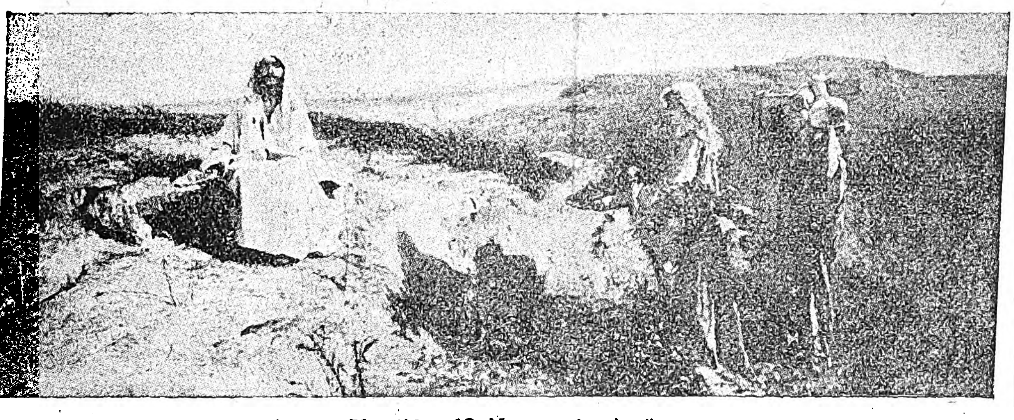

*Δομιν. Μορέλλι: Ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν ἔρημον.*

κῶν σκηνῶν καὶ τῶν ἀμφιέσεων καὶ τὸ λαμπρὸν καὶ ἔντονον χρῶμα. Ἄριστα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Αἱ ἅγιαι γυναῖκες», «Ὁ πειρασμὸς τοῦ ἁγίου Ἀντωνίου», «Ἡ ἀνάστασις τῆς θυγατρὸς τοῦ Ἰαείρου», «Ὁ ἄσωτος υἱός», «Ἄραψ τραγουδιστής» κ. ἄ. Διετέλεσε πρόεδρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν τῆς Νεαπόλεως καὶ ἐβραβεύθη διὰ χρυσοῦ μεταλλίου ἐν τῇ διεθνεῖ ἐκθέσει τοῦ 1900.
Χ. Δ.

— **Μορέλλι** (Morelli), ***Ἰάκωβος***. Ἰταλὸς λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Βενετίᾳ τῷ 1745 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1819. Ὑπῆρξεν ἐπιμελητὴς τῆς βιβλιοθήκης τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Μάρκου, προϊὸν δὲ τῶν ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ ταύτῃ μελετῶν του εἶναι, μεταξὺ ἄλλων, καὶ τὰ ἑξῆς ἔργα του: «Dissertazione storica intorno alla pubblica libreria di San-Marco in Venezia» (1774), «Bibliotheca Maphaei Pinelli descripta et annotationibus illustrata» (1787), «Bibliotheca manuscripta graeca et latina» (1802). Ὁ Μορέλλι εἰργάσθη ἐξ ἄλλου μὲ θαυμασίαν μεθοδικότητα καὶ θερμὴν ἀγάπην διὰ τὴν ἀναβίωσιν τῆς μουσικῆς ἀρχαιολογίας καὶ τέχνης. Μεταξὺ τῶν μελετῶν του ἐξέχουσαν θέσιν κατέχουν τὰ ἀποσπάσματα τῆς «Ρυθμικῆς» τοῦ Ἀριστοξένου, ἅτινα ἀνεκάλυψεν εἰς ἀρχαῖον χειρόγραφον τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ἁγίου Μάρκου. Ἡ μελέτη αὕτη, ὁμοῦ μετ᾽ ἄλλων, ἐξεδόθη ὑπὸ τὸν τίτλον: «Aristidis Oratio adversus Leptinem, Libanii declamatio pro Socrate, Aristoxeni rythmicorum elementorum fragmenta, ex bibliotheca Veneta κτλ.».
Δ. Α. Ζ. — Γ. Σ.

— **Μορέλλι** (Morelli), ***Ἰάκωβος ντὲ—***. Φλωρεντῖνος εὐγενὴς καὶ λόγιος τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος. Τὸ ὄνομά του συνδέεται μὲ τὸ ταξίδιον, τὸ ὁποῖον ὁ Ἕλλην αὐτοκράτωρ Ἰωάννης Η΄ ὁ Παλαιολόγος ἔκαμεν εἰς Ἰταλίαν, διὰ νὰ παραστῇ εἰς τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ σύνοδον. Ὑπὲρ τοῦ ντὲ Μορέλλι τούτου ὁ Ἰωάννης Παλαιολόγος ἐξέδωκε, κατ᾽ Αὔγουστον τοῦ 1439, πρόσταγμα, ἑλληνιστὶ καὶ λατινιστί, διὰ τοῦ ὁποίου τῷ ἀπένειμε τὸν τίτλον κόμιτος παλατίνου καὶ τὸ δικαίωμα τοῦ ἀναγορεύειν νοταρίους καὶ νομιμοποιεῖν τὰ τέκνα, τὰ ἐκ παρανόμου γάμου γεννηθέντα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Σπ. Λάμπρου*, Νέος Ἑλληνομνήμων (τόμ. Δ΄, σ. 188 κ.ἑ.).—*Τοῦ αὐτοῦ*, Παλαιολόγεια καὶ Πελοποννησιακὰ (τόμ. Γ΄, σ. 345—348).—*Δ. Ἀ. Ζακυθηνοῦ*, Βυζαντιακὰ καὶ Βενετικὰ Ἀνάλεκτα, ἐν Ἐπετηρίδι τῆς Ἑταιρείας Βυζαντινῶν Σπουδῶν, 7 (1930) (σ. 64—66).
Δ. Α. Ζ.

**Μορέλος** (Morelos) *[Γεωγρ.]*. Μία ἐκ τῶν 28 πολιτειῶν τῶν ἀποτελουσῶν τὴν Μεξικανικὴν ὁμοσπονδίαν, κειμένη μεσογείως, πρὸς ΝΑ. τῆς πολιτείας τοῦ Μεξικοῦ, ἀφ᾽ ἧς ἀπεσπάσθη τῷ 1869. Εἶναι ἐκ τῶν μικροτέρων πολιτειῶν τῆς χώρας, ἔχουσα ἔκτασιν 4.964 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1930) 132.582 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Κουερναβάκα* (7.117). Τὸ ἔδαφος αὐτῆς ἐκτείνεται ἐπὶ τῶν κλιτύων τοῦ Ἀναχουάκ, εἶναι ἡφαιστειογενὲς καὶ εὔφορον, ἔχει δὲ ὑψίστην κορυφὴν τὸ ὄρος Ποποκατεπὲτλ (5.420 μ.). Ἔχει καλὰς συγκοινωνίας καὶ μεγάλας καλλιεργείας ζαχαροκαλάμου, ὀρύζης, καφὲ καὶ σιτηρῶν, μεγάλους δ᾽ ἐπίσης ὀπωροκήπους. Τὸ ὑπέδαφος ἐγκλείει μεταλλεύματα λευκοσιδήρου, ἀργύρου, χαλκοῦ κλπ. Ἐπίσης ὑπάρχουσι λατομεῖα ἀλαβάστρου, μαρμάρου καὶ ἰάσπιδος.
Χ. Δ.

**Μορὲν** (Morin), ***Ἀρθοῦρος***. Γάλλος στρατιωτικὸς καὶ μαθηματικός. Λοχαγὸς τῷ 1829, ταγματάρχης τῷ 1841, συνταγματάρχης τῷ 1848, προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον τῷ 1852 καὶ τῷ 1855 εἰς στρατηγόν. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐξελέγη πρόεδρος τῆς ἐν Παρισίοις παγκοσμίου ἐκθέσεως, τῷ δὲ 1862 πρόεδρος τοῦ Συλλόγου τῶν πολιτικῶν μηχανικῶν. Ἔγραψε πλεῖστα περισπούδαστα ἔργα σχετικὰ πρὸς τὴν ἐφηρμοσμένην μηχανικήν. Ἐπίσης εἶναι γνωστὸς ὡς ἐφευρέτης ὀργάνου, δι᾽ οὗ δύναται νὰ μελετηθῇ ὁ νόμος τῆς πτώσεως τῶν σωμάτων.
Α. Δ.

— **Μορέν, *μηχανὴ τοῦ*** — *[Φυσ.]*. Συσκευὴ πρὸς μελέτην τῶν φαινομένων τῆς πτώσεως, παραλλαγὴ τῆς μηχανῆς τοῦ Atwood, καὶ διαφέρουσα τῆς τελευταίας κατὰ τὸ ὅτι ἡ πτῶσις γίνεται ἐνώπιον ἰσοταχῶς περιστρεφομένου τυμπάνου, ἐπικεκαλυμμένου διὰ φύλλου χάρτου, οὕτως ὥστε τὸ πῖπτον σῶμα, ἐφωδιασμένον διὰ μολυβδίδος, χαράσσει ἐπὶ τοῦ χάρτου καμπύλην ἀντιστοιχοῦσαν εἰς τὴν συνάρτησιν μεταξὺ διανυομένου κατὰ τὴν πτῶσιν διαστήματος καὶ χρόνου. Ἡ καμπύλη αὕτη εἶναι, ὡς γνωστόν, παραβολική.
Γ. Θ. Κ.

**Μορένα *σιέρρα*** (sierra Morena) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς μεσημβρινῆς Ἱσπανίας, ἀποτελοῦσα τὸ κυριώτερον τμῆμα τῆς κορδιλιέρας Μαριάνικα (montes Mariani), ἥτις σχηματίζει τὴν μεσημβρινὴν παρυφὴν τοῦ κεντρικοῦ ὑψιπέδου. Ἡ σιέρρα Μορένα κατέχει τὸ κέντρον τοῦ συστήματος μεταξὺ τῶν ὀροσειρῶν σιέρρα Ἀλκαρὰθ (1.800 μ.) πρὸς Α., καὶ τῶν ὀρέων Ἀλγκάρβες πρὸς Δ., καθορίζει δὲ τὸν ὑδροκρίτην τῶν ὑδάτων τῶν ποταμῶν Γουαδιάνα (Καστιλλία καὶ Ἐστρεμαδούρα) καὶ Γουαδαλκιβὶρ (Ἀνδαλουσία). Ἡ ὀροσειρὰ αὕτη, ἥτις ὑποδιαιρεῖται εἰς τὰς δευτερευούσας ὀροσυστάδας, τῆς κυρίως *σιέρρα Μορένα*, τῆς *σιέρρα Μαντρόνα*, τῆς *σιέρρα ντὲ Ἀλμάντεν* καὶ τῶν πρὸς Ν. ἐκτεινομένων χθαμαλωτέρων ὀρέων *Ἀρασένα*, ἔχει μέσον ὕψος 1000—1600 μ. καὶ ὑψίστην κορυφὴν τὸ *σέρρο ντὲ Ἀλμανέρα* (1.802 μ.). Διακόπτεται ὑπὸ βαθειῶν κοιλάδων, τῶν ὁποίων πολλαὶ εἶναι ἑλώδεις, καλύπτεται δὲ ὑπὸ δασῶν μόνον κατὰ τὰς κλιτῦς τῶν ὀρέων της. Τὸ ὑπέδαφος τῆς σιέρρα Μορένα περικλείει μεταλλεύματα χαλκοῦ, ὑδραργύρου, γαιάνθρακος κλπ., ὡς καὶ πλείστας θερμοπηγάς.
Χ. Δ.

**Μορένο** *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία τῆς νήσου *Ἔλα(σ)σα*, διασῳζομένη ὑπὸ τοῦ C. Müller (χάρτ. 27, Γ΄ τόμ. Graec. Geogr. minor.).

— **Μορένο** (Moreno) *[Γεωγρ.]*. Οὕτως ὠνομάσθη ἐπί τι διάστημα ἡ πόλις *Λάγκος* (βλ. λ.) τοῦ Μεξικοῦ ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ Μεξικανοῦ πατριώτου Πέτρου Μορένο.

**Μορένο** (Moreno), ***Πέτρος***. Πατριώτης Μεξικανὸς (1775—1817). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἡρώων τῆς μεξικανικῆς ἐπαναστάσεως, εἰς τὴν πατριωτικὴν δρᾶσιν τοῦ ὁποίου ὀφείλεται κατὰ μέγα μέρος ἡ ἐπιτυχία τοῦ ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῶν Μεξικανῶν ἀγῶνος.
Α. Δ.

**μορενοσίτης** (ὁ) (Morenosit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν θειικὸν ἅλας τοῦ νικελίου ἔνυδρον, ἄλλως λεγόμενον καὶ *βιτριόλιον τοῦ νικελίου*. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $NiSO_4.7H_2O$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα, ἔχει χρῶμα σμαραγδοπράσινον ἕως πρασινόλευκον, ἀπαντᾷ δὲ χειροπληθὲς ἢ εἰς τριχοειδῆ ἐπανθήματα εἰς τὸ Wallacegrube παρὰ τὴν λίμνην Huron, εἰς τὸ Cap Ortegal ἐν Ἱσπανίᾳ καὶ εἰς τὸ Riechelsdorf.
Γ. Β.

**μορέντζες** *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ἡ χελδράχειος* (Crataegus Heldreichii).

**μορέντο** (ἰταλ. morendo) *[Μουσικ.]*. Ὅρος μουσικός, σημαίνων ὅτι ἡ φράσις ὀφείλει νὰ βαίνῃ θνήσκουσα ἢ σβήνουσα καὶ φθάνουσα μέχρι τοῦ ἀπολύτου πιανίσσιμο. Συνήθως τὸ μορέντο συνοδεύεται ὑπὸ ἐπιβραδύνσεως τῆς ρυθμικῆς ἀγωγῆς.
Γ. Σ.

**μορεοειδῆ** (τὰ) (Moraceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν δικοτυληδόνων, περιλαμβάνουσα πολλὰ γένη, δένδρα ἢ θάμνους, ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων καὶ θερμῶν χωρῶν τῆς γῆς. Γνωστότερα γένη εἶναι: *ἀρτόκαρπος, βρώσιμον, μορέα, φῖκος* καὶ ἄλλα πολλά.
Δ. Ν. Π.

**Μορέρι** (Moreri), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος σοφὸς (1643—1680). Μετὰ τὸ πέρας λαμπρῶν σπουδῶν ἐχειροτονήθη ἱερεὺς καὶ διεκρίθη ὡς ἱεροκήρυξ. Ἀλλὰ ταχέως ἐγκατέλιπε τὴν ἐκκλησιαστικὴν σταδιοδρομίαν του, ἵνα ἀφιερωθῇ εἰς τὴν σύνταξιν λεξικοῦ ἱστορίας καὶ μυθολογίας. Τὸ λεξικὸν τοῦ Μορέρι διακρίνεται διὰ τὸν πλοῦτον τῶν εἰς αὐτὸ βιογραφιῶν. Ἡ πρώτη ἔκδοσις «Grand Dictionnaire historique en mélange curieux de l'histoire sacrée et profane» ἐγένετο τῷ 1674. Ἡ δοκιμωτέρα ἔκδοσις τοῦ ἔργου τούτου εἶναι ἡ γενομένη τῷ 1759 εἰς δέκα τόμους.
Α. Δ.

**μορέσκα** (ἰταλ. moresca) *[Μουσ.]*. Ἀρχαῖος λαϊκὸς χορός, λίαν διαδεδομένος κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ καὶ ΙΖ΄ αἰῶνα. Ὁ αὐθεντικὸς ρυθμὸς τοῦ χοροῦ τούτου, ὁ «tempo di moresca», ἦτο τριμερὴς ($^3/_2$), ἐναλλασσόμενος συχνάκις μὲ τὸν διμερῆ. Αἱ μορέσκαι ἐξετελοῦντο συνήθως ἀπὸ λαϊκοὺς ἠθοποιοὺς εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς θαλάσσης, τὰ δὲ πρωτεύοντα ἐν αὐταῖς πρόσωπα ἦσαν αἱ μαῦραι «Λουκία» καὶ «Γεωργία», ὡς καὶ ὁ «Κουκουρουκοῦ». Δείγματα τοῦ λαϊκοῦ τούτου εἴδους ἀφῆκεν ὁ Ὀρλάνδος ντὲ Λάσσους μὲ τὰς πολυφωνικάς του μορέσκας καὶ ὁ Μοντεβέρντε μὲ τὸ παρεμφερὲς τεμάχιον, δι᾽ οὗ περατοῦται ὁ «Ὀρφεύς» του. Ἔτι ἀρχαιότερον ἐν τοῖς μεσαιωνικοῖς «μυστηρίοις» καὶ εἰδικῶς εἰς τὸ «μυστήριον τοῦ πάθους», εὑρίσκομεν τὴν κόρην τοῦ Ἡρώδου χορεύουσαν μίαν μορέσκαν, συνοδείᾳ τυμπανίου.
Γ. Σ.

**μορεσνετίτης** (ὁ) (Moresnetit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν, ὅπερ ἀποτελεῖ παράμιξιν καλαμίνας καὶ ἑνὸς ἀργιλλοειδοῦς πυριτικοῦ ἅλατος. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Moresnet παρὰ τὸ Aachen.
Γ. Β.

**Μορὲτ** (Moret), ***Σιγισμοῦνδος***. Ἱσπανὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1838. Ἀνήκων εἰς τὸ κόμμα τῶν φιλελευθέρων, ἐξελέγη τῷ 1863 βουλευτὴς τοῦ νομοῦ Ἀλμαντέν. Τῷ 1869 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἀποικιῶν καὶ ἐπέτυχε τὴν ψήφισιν τοῦ περὶ καταργήσεως τῆς δουλείας νομοσχεδίου. Ὑπὸ τὸν Ἀμεδαῖον διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν, κατόπιν δὲ πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ, καὶ ἐπὶ τῆς βασιλείας Ἀλφόνσου τοῦ ΙΒ΄ ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἡγεμόνος τούτου ὑπῆρξε πιστὸς συνεργάτης τοῦ Σαγκάστα, ἐπὶ τῆς κυβερνήσεως τοῦ ὁποίου ὑπῆρξε διαδοχικῶς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν (1886), τῶν Ἐσωτερικῶν (1888—1889), τῶν Ἐξωτερικῶν (1893), τῶν Ἀποικιῶν (1897), τῶν Ἐσωτερικῶν (1901) καὶ πρόεδρος τῆς βουλῆς.
Α. Δ.

**Μορέτο *ὑ Καμπάνια*** (Moreto y Cabaña), ***Αὐγουστῖνος***. Ἱσπανὸς δραματικὸς (1618—1669). Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι: «Εἰς τὴν περιφρόνησιν περιφρόνησις» ὑπέροχον δρᾶμα, ἐμπνευσθὲν ἐκ τοῦ «Τὰ θαύματα τῆς περιφρονήσεως» τοῦ Λόπε ντὲ Βέγκα, «Ὁ ὡραῖος δὸν Διέγος» δρᾶμα, εἰς ὃ περιγράφεται θαυμασίως ἡ ὑπεροψία καὶ ἡ γελοία ὑπερηφάνεια ἑνὸς ζωγράφου, «Θεία καὶ ἀνεψιά» καὶ «Οἱ τυχεροὶ ἀδελφοί». Ὁ Μορέτο στερεῖται πρωτοτυπίας, ἀλλὰ διακρίνεται διὰ τὴν εὐστροφίαν καὶ τὸ κάλλος τοῦ ὕφους του.
Α. Δ.

**Μορέττο** (Moretto). Ἰταλὸς ζωγράφος, γνωστὸς κυρίως ὑπὸ τὸ ὄνομα Ἀλέξανδρος *Μπονβιτσίνο* (βλ. λ.).

**μορεών, —*ῶνος*** (ὁ)· τόπος ὅπου ὑπάρχουν πολλαὶ μορέαι, φυτεία μορεῶν.

**μορζὲ** (ὁ) (morget). Ὄνομα τοπικοῦ ἀνέμου τῆς κατηγορίας τῆς ἀπογαίας αὔρας, πνέοντος παρὰ τὴν λίμνην τῆς Γενεύης μὲ διεύθυνσιν ἀπὸ βορρᾶ, μεταξὺ τοῦ Ouchy καὶ Rolle ἀπὸ τῆς 17ης ἢ 19ης ὥρας μέχρι τῆς 7ης ἢ 9ης τῆς πρωΐας.
Θ. Θ. Φ.

**Μορζῆνος, *Ἰωάννης*·** βλ. λ. *Ἰωάννης* ὁ Μορζῆνος (τ. ΙΓ΄, σ. 371α΄).

**Μόρθουλα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Καππαδοκίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Ε΄, 6, 6). Ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος.
Α. Θ. Σ.

**μόρια** (moria, ἐκ τοῦ λατ. morio=εὐτράπελος). Οὕτω καθορίζεται μανικὴ κατάστασις, χαρακτηριζομένη ὑπὸ μίγματος εὐφορικῆς διεγέρσεως καὶ

Digitized by Google

εὐτραπελίας μετὰ διαθέσεως καὶ τάσεως πρὸς ἀστειότητα, παρατηρηθεῖσα ὑπὸ τῶν Brune καὶ Jastrowitz. Μ. Ν. Κ.

**Μόρια** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Μυτιλήνης τοῦ νομοῦ Λέσβου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται 4 χλμ. ΒΔ. τῆς Μυτιλήνης, ἐγγὺς τοῦ μυχοῦ τοῦ κόλπου τῆς Γέρας, συνδέεται δὲ δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ μετὰ τῆς Μυτιλήνης καὶ τῆς Ἀγιάσσου. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι εὐφορώτατον. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 2.235. Χ. Δ.

**μορίαι** (αἱ) *[Ἀρχ.]*. Οὕτως ἐκαλοῦντο αἱ δώδεκα ἐλαῖαι, αἵτινες ἦσαν πεφυτευμέναι πέριξ τοῦ ἐν τοῖς κήποις τῆς Ἀκαδημείας εὑρισκομένου βωμοῦ τῆς θεᾶς Ἀθηνᾶς. Τὰ ἱερὰ ταῦτα δένδρα ἔλαβον τὸ ὄνομα τοῦτο ἐκ τοῦ πλησίον αὐτῶν ὑπάρχοντος βωμοῦ τοῦ Διὸς Καταιβάτου τοῦ ἐπονομαζομένου *Μορίου*. Κατὰ τὴν παράδοσιν, τὴν ὁποίαν ἀναφέρουν ὁ Εὐριπίδης, ὁ Κικέρων καὶ ὁ Ἡσύχιος, αἱ μορίαι ἦσαν μεταφυτεύσεις βλαστῶν ἐκ τῆς ἐπὶ τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν ἱερᾶς ἐλαίας. Αἱ μορίαι ἐλαῖαι διετέλουν ὑπὸ τὴν ἐποπτείαν τοῦ Ἀρείου Πάγου καὶ τῶν ἀρχόντων, οἵτινες διὰ τῶν λεγομένων ἐπιμελητῶν ἐπισκεπτομένων αὐτὰς κατὰ μῆνα ἢ τῶν ἐπιγνωμόνων κατ' ἔτος, ἐξήλεγχον τὴν καλὴν διατήρησιν αὐτῶν. Ὁ ὑπεύθυνος καταστροφῆς ἢ βλάβης τοιαύτης ἱερᾶς ἐλαίας ἐμηνύετο ἐπὶ ἀσεβείᾳ ἐνώπιον τοῦ Ἀρείου Πάγου, ἐπεβάλλετο δὲ εἰς αὐτὸν ἡ ποινὴ τῆς ἐξορίας ἢ τῆς κατασχέσεως τῆς περιουσίας του. Ἐκ τοῦ ἐλαίου τῶν ἐλαιῶν τούτων, ὡς καὶ ἐκ τῶν ἐλαιῶν, αἵτινες, βλαστήματα τούτων, ἐφύοντο εἰς μέγαν ἀριθμὸν ἐν τῷ ἀττικῷ πεδίῳ, ἐπληροῦντο οἱ παναθηναϊκοὶ λεγόμενοι ἀμφορεῖς, οἵτινες ἰδίδοντο ὡς ἔπαθλα εἰς τοὺς νικητὰς τῶν παναθηναϊκῶν ἀγώνων. Β. Δ. Θ.

**μοριακός, —ή, —όν**· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μόρια, ὁ τῶν μορίων: «μοριακὴ θερμότης», «μοριακὸν βάρος».

—**μοριακὴ** ***θερμότης*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *θερμότης*.

— **μοριακὴ** ***θεωρία***. Ἡ θεωρία ἡ στηριζομένη ἐπὶ τῆς παραδοχῆς τῶν μορίων ὡς ἐλαχίστων συστατικῶν τῆς ὕλης, ἐμψυχουμένων ὑπὸ κινητικῆς ἐνεργείας (βλ. λ. *μόριον*). Κ. Ζ.

—**μοριακὸν** ***βάρος***. Τὸ μοριακὸν βάρος χημικῆς τινος ἑνώσεως ἢ στοιχείου ὁρίζεται ὡς ὁ λόγος τοῦ βάρους ἑνὸς μορίου σώματός τινος πρὸς τὸ βάρος ἑνὸς ἀτόμου ὑδρογόνου, τοῦ ὁποίου τὸ βάρος τίθεται αὐθαιρέτως ἴσον τῇ μονάδι. Τοῦτο εἶναι βάρος σχετικὸν καὶ κατὰ συνθήκην εἰλημμένον, διάφορον τοῦ ἀπολύτου βάρους ἑκάστου μορίου, τὸ ὁποῖον μόνον κατὰ προσέγγισιν δυνάμεθα νὰ ὑπολογίσωμεν (βλ. λ. *μόριον*). Ἀντὶ νὰ ληφθῇ τὸ ἀτομικὸν βάρος τοῦ ὑδρογόνου ἴσον μὲ τὴν μονάδα, ἐλήφθη βραδύτερον ὡς μονὰς τὸ ἀτομικὸν βάρος τοῦ ὀξυγόνου ἴσον 16. Τὸ μοριακὸν βάρος τῶν ἀερίων σωμάτων δυνάμεθα εὐκόλως νὰ προσδιορίσωμεν στηριζόμενοι εἰς τὸν νόμον τοῦ Avogadro. Ζυγίζομεν ἴσους ὄγκους τοῦ ζητουμένου ἀερίου καὶ τοῦ ὑδρογόνου καὶ τὸν εὑρεθέντα λόγον διπλασιάζομεν. Οὕτω λ. χ., λέγοντες ὅτι τὸ μοριακὸν βάρος τοῦ ὀξυγόνου εἶναι 32, δηλοῦμεν ὅτι ἓν μόριον ὀξυγόνου εἶναι 32 φορὰς βαρύτερον ἑνὸς ἀτόμου ὑδρογόνου ἢ 16 φορὰς βαρύτερον ἑνὸς μορίου ὑδρογόνου, ὅπερ συνίσταται, ὡς γνωρίζομεν, ἐκ δύο ἀτόμων. Τὸ μοριακὸν βάρος χημικῆς ἑνώσεως ἰσοῦται μὲ τὸ ἄθροισμα τῶν ἀτομικῶν βαρῶν τῶν συνιστώντων αὐτήν. Οὕτω, γνωρίζοντες ὅτι ἓν μόριον ὕδατος ἀποτελεῖται ἐκ δύο ἀτόμων ὑδρογόνου καὶ ἑνὸς ἀτόμου ὀξυγόνου, εὑρίσκομεν τὸ μοριακὸν βάρος τοῦ ὕδατος ἴσον μὲ $2 \times 1 + 16 = 18$. Ἐπίσης δυνάμεθα εὐκόλως νὰ προσδιορίσωμεν τὸ μοριακὸν βάρος ἀερίων ἐκ τῆς πυκνότητος αὐτῶν, ἂν εἶναι γνωστή, πολλαπλασιάζοντες αὐτὴν ἐπὶ τὸν ἀριθμ. 28,88. Οὕτω, ἐπειδὴ ἡ πυκνότης τοῦ ὑδρατμοῦ εἶναι 0,632, τὸ μ. βάρος τοῦ ὕδατος θὰ εἶναι $0{,}632 \times 28{,}88 = 18$.

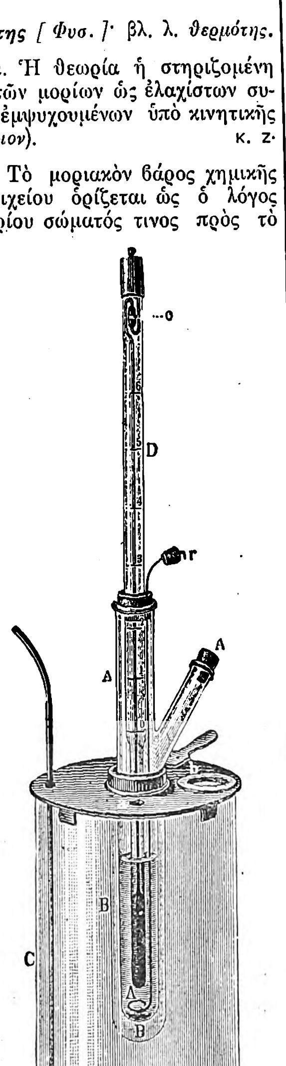


*Συσκευὴ Reckmann.*

Τῶν σωμάτων τὰ ὁποῖα δὲν εἶναι ἐξαερωτὰ ἢ εὐκόλως ἐξαερωτὰ προσδιορίζομεν τὸ μ. βάρος ἐκ τῶν διαλυμάτων αὐτῶν δι' ἐμμέσου ὁδοῦ, στηριζόμενοι καὶ πάλιν εἰς τὴν μοριακὴν θεωρίαν, τὴν ὁποίαν ἐπιτυχῶς ἐπεξέτεινεν ὁ Van t' Hoff καὶ εἰς τὰ διαλύματα. Ὁ Van t' Hoff ἀνεῦρεν ὅτι ἡ ὠσμωτικὴ πίεσις σώματός τινος ἐν διαλύσει ἰσοῦται μὲ τὴν πίεσιν ἣν θὰ ἤσκει τὸ αὐτὸ ποσὸν τοῦ σώματος ἐν ἀερίῳ καταστάσει ἂν κατεῖχε τὸν αὐτὸν ὄγκον, τὸν ὁποῖον κατέχει καὶ τὸ διάλυμα· ἐκ τούτου ἐξάγεται ὅτι ὁ νόμος τοῦ Avogadro ἰσχύει καὶ ἐνταῦθα καὶ ἴσοι ὄγκοι διαλυμάτων, δεικνύοντες τὴν αὐτὴν ὠσμωτικὴν πίεσιν, περιέχουν τὸν αὐτὸν ἀριθμὸν μορίων. Θὰ ἤρκει ἑπομένως πρὸς εὕρεσιν τοῦ μ. βάρους τῶν ἐν διαλύσει σωμάτων νὰ μετρήσωμεν τὴν ὠσμωτικὴν πίεσιν. Ἀλλ' ἡ μέτρησις αὐτῆς μετ' ἀκριβείας προσκόπτει εἰς μεγάλας πειραματικὰς δυσχερείας· δι' αὐτὸ καταφεύγομεν εἰς ἔμμεσον ὁδόν, δηλαδὴ τὴν τοῦ προσδιορισμοῦ ἰδιοτήτων ἐξαρτωμένων ἐκ τῆς ὠσμωτικῆς πιέσεως καὶ δή: α') τῆς ἀνυψώσεως τοῦ ζεσιγόνου βαθμοῦ (ζεσεοσκοπία) διαλυτικοῦ τινος μέσου μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς οὐσίας ἧς ζητεῖται τὸ μ. βάρος, καὶ β') τῆς ταπεινώσεως τοῦ πηξιγόνου βαθμοῦ ὁμοίως (κρυοσκοπία).

Εἰς τὰς περιπτώσεις ταύτας ἰσχύει ὁ τύπος

$$M = K\frac{\Pi}{\Lambda\Delta}$$

Ἔνθα Μ τὸ ζητούμενον μ. βάρος, Κ σταθερὰ ἐφ' ἅπαξ προσδιορισμένη δι' ἕκαστον διαλυτικὸν μέσον, Π τὸ ποσὸν εἰς γραμμάρια τῆς διαλυομένης οὐσίας καὶ Δ ἡ ἀνύψωσις τοῦ ζεσιγόνου ἢ ταπείνωσις τοῦ πηξιγόνου βαθμοῦ. Ἡ τελευταία αὕτη προσδιορίζεται συνήθως διὰ τῆς συσκευῆς τοῦ Beckmann, ἡ ὁποία ἀπαρτίζεται ἐκ τοῦ δοχείου C φέροντος πῶμα καὶ κύκηθρον καὶ πληρουμένου διὰ ψυχροῦ ὕδατος ἢ τοῦ καταλλήλου ψυκτικοῦ μίγματος. Τὸ δοχεῖον φέρει ἐσωτερικῶς κενὸν ὑάλινον κυλινδρικὸν σωλῆνα Β, προωρισμένον νὰ ἐμποδίσῃ τὴν ἀπότομον ἐπίδρασιν τῆς θερμοκρασίας τοῦ ψυκτικοῦ μίγματος ἐπὶ τὴν τοῦ ἐσωτερικοῦ σωλῆνος Α, ἐν ᾧ ὑπάρχουν τὸ διαλυτικὸν μέσον, κύκηθρον, ἐκ λευκοχρυσίνου συνήθως σύρματος, καὶ διαφορικὸν θερμόμετρον Δ, διῃρημένον εἰς $50^{α}$ ἢ $100^{α}$ τοῦ βαθμοῦ. Αἱ ἐνδείξεις τοῦ θερμομέτρου δὲν εἶναι ἀπόλυτοι ἀλλὰ σχετικαί.

Διὰ κρούσεων ἐλαφρῶν κανονίζεται ἑκάστοτε ἡ ποσότης τοῦ ἐν τῷ θερμομέτρῳ τούτῳ ὑδραργύρου, οὕτως ὥστε τὸ διαλαμβανόμενον κατὰ μῆκος τοῦ μικροδιαμετρικοῦ τοῦ θερμομέτρου σωλῆνος ποσὸν ὑδραργύρου νὰ εὑρίσκεται ἐμφανὲς ἐπὶ τοῦ κανόνος εἰς τὴν θερμοκρασίαν ὑφ' ἣν ζέει ἢ πήγνυται τὸ διαλυτικὸν μέσον. Ἀνάλογος εἶναι καὶ ἡ συσκευὴ Beckmann τοῦ προσδιορισμοῦ τοῦ ζεσιγόνου βαθμοῦ. Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

— **μοριακοὶ** ***μαγνῆται***. Τὰ μόρια τοῦ σιδήρου, εἰς τὰ ὁποῖα ἀποδίδεται στοιχειώδης μαγνητικὴ ἰδιότης. Ἐφ' ὅσον ὁ σίδηρος εἶναι ἀμαγνήτιστος, τὰ μόριά του, ἐστραμμένα κατὰ διαφόρους διευθύνσεις, ἀλληλοεξουδετεροῦν τὰς μαγνητικὰς των ἰδιότητας, οὕτως ὥστε πρὸς τὰ ἔξω δὲν ὑπάρχει μαγνητικὴ συνισταμένη. Κατὰ τὴν μαγνήτισιν τοῦ σιδήρου οἱ μοριακοὶ αὐτοῦ μαγνῆται προσανατολίζονται ὅλοι κατὰ τὴν αὐτὴν διεύθυνσιν, καὶ οὕτω προκύπτει ἡ πρὸς τὰ ἔξω μαγνητικὴ ἐνέργεια. Γ. Θ. Κ.

**μορίγγη** (ἡ) (Moringa) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μοριγγοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἰθαγενῆ τῆς Ἀφρικῆς καὶ τῆς Ἀσίας. Ἐκ τῶν πολλῶν εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μορίγγη ἡ ἄπτερος* (Moringa aptera), δένδρον ἀρκούντως ἀνεπτυγμένον, ἀπαντῶν εἰς τὴν Ἀβησσυνίαν, τὴν Αἴγυπτον, τὴν Ἀραβίαν καὶ τὴν Συρίαν. Τὸ δένδρον τοῦτο ἦτο γνωστὸν καὶ παρὰ τοῦ Θεοφράστου (Φυσ. Ἱστ. 4, 2, 6), ὑπὸ τὸ ὄνομα *βάλανος ἡ Αἰγυπτία*. Ὁ καρπός του εἶναι ἐδώδιμος, ἀναφέρεται δὲ καὶ παρὰ τοῦ Διοσκορίδου ὑπὸ τὸ ὄνομα *μυρεψικὴ βάλανος*. *Μορίγγη ἡ ἐλαιοφόρος* (Moriga oleifera), μέγα δένδρον ἀπαντῶν εἰς τὰς ὀρεινὰς χώρας τῶν Ἰνδιῶν καὶ καλλιεργούμενον πολλαχοῦ διὰ τὸν φλοιὸν τῆς ῥίζης του, ὅστις ἐνέχει φαρμακευτικὰς ἰδιότητας, καὶ τὴν ῥίζαν του, ἥτις χρησιμοποιεῖται ἐνιαχοῦ ὡς ἀρτυματικόν. Τὰ φύλλα του λαχανεύονται, πολλάκις δὲ καὶ ὁ ἄωρος καρπός του. Τὸ σπουδαιότερον προϊὸν τοῦ δένδρου τούτου εἶναι τὸ ἔλαιον, ὅπερ λαμβάνεται δι' ἐκθλίψεως τῶν σπερμάτων του καὶ εἶναι χρήσιμον εἰς τὴν ἀρωματοποιίαν καὶ πρὸς λίπανσιν τῶν μηχανῶν τῶν ὡρολογίων. *Μορίγγη ἡ πολύγωνος* (Moringa polygona), ἰθαγενὲς δένδρον τῶν Ἰνδιῶν. Δ. Ν. Γ.

*Μορίγγη.*
[α=καρπός]

**μοριγγοειδῆ** (τά) (Moringaceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα ὀλίγα γένη, ὧν γνωστότερον ἡ *μορίγγη* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μορίδιον** (τό), ἢ καὶ ***μόρον*** (morula). Ἓν ἐκ τῶν πρώτων σταδίων τῆς διαπλάσεως τοῦ ἐμβρύου, κατὰ τὸ ὁποῖον τὰ διὰ τῶν ἀλλεπαλλήλων κυτταροτομιῶν τοῦ γονιμοποιηθέντος ᾠοκυττάρου παραχθέντα κύτταρα ἀποτελοῦν σωρόν, ὁ ὁποῖος παρουσιάζει τὴν μορφὴν τοῦ γνωστοῦ καρποῦ τῆς μορέας (ἐξ οὗ καὶ τὸ στάδιον τοῦτο ἔλαβε τὸ ὄνομά του), καθ' ὅσον τὰ πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν τούτου κύτταρα ἐξέχουν ὡς στρογγύλα κοκκία. Θ. Βλ.

**Μόριερ** (Morier), ***Δαυΐδ-Ριχάρδος***. Ἄγγλος διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ (1784—1877). Εἰσελθὼν εἰκοσαετὴς εἰς τὴν διπλωματίαν μετέσχε τὸ πρῶτον ἀποστολῆς πρὸς τὸν Ἀλῆ πασᾶν τῶν Ἰωαννίνων (1804), διεξήγαγε δὲ ἐν συνεχείᾳ μετ' ἐπιτυχίας πλείστας διαπραγματεύσεις εἰς Αἴγυπτον (1807), Κωνσταντινούπολιν (1809) καὶ ἀλλαχοῦ. Ἀκολούθως ἔπαιξε σπουδαῖον ρόλον (1813—1815) εἰς τάς, πρὸ καὶ μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, διπλωματικὰς ζυμώσεις. Κατὰ τὰ ἔτη 183[illegible]—1847 διετέλεσε πληρεξούσιος ὑπουργὸς ἐν Βέρνῃ. Ἔγραψε: «Wat has the religion to ow with Politics» (Λονδῖνον, 1848) «The Basis of Morality» (Λονδῖνον, 1869) καὶ «Photo the Suliote» (=Φώτω ἡ Σουλιώτισσα, Λονδῖνον 1857).

— **Μόριερ** (Morier), ***Ἰάκωβος-Ἰουστινιανός***. Ἄγγλος περιηγητὴς καὶ διπλωμάτης, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ (1780—1849). Τῷ 1807 μετέσχε τῆς εἰς Περσίαν διπλωματικῆς ἀποστολῆς τοῦ Χάρφορντ Τζόνες, ἐπιστρέψας δ' ἐκεῖθεν ἔγραψε τὰς ταξιδιωτικάς του ἐντυπώσεις εἰς τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ταξίδιον εἰς Περσίαν, Ἀρμενίαν καὶ Μικρὰν Ἀσίαν μέχρι Κωνσταντινουπόλεως» (Λονδῖνον 1812) ἔργον, ὅπερ ἔσχε μεγάλην διάδοσιν, μεταφρασθὲν ἀμέσως εἰς τὴν γαλλικὴν (1813) καὶ τὴν γερμανικὴν (1815). Ἀποσταλεὶς ἐκ νέου εἰς Τεχεράνην (1810) ἔγραψε τὸ «Δεύτερον ταξίδιον εἰς Περσίαν» (Λονδῖνον 1818). Τῷ 1826 ἀπεσύρθη ἐκ τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας καὶ ἠσχολήθη ἀποκλειστικῶς μὲ τὴν λογοτεχνίαν, γράψας πλεῖστα μυθιστορήματα μὲ ὑποθέσεις εἰλημμένας ἐκ τῆς Ἀνατολῆς, τὰ ὁποῖα ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν. Σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Αἱ περιπέτειαι τοῦ Χατζῆ Μπαμπᾶ ἐξ Ἰσπαχὰν» (Λονδῖνον, 1824), «Ἀϊσᾶ, κόρη τοῦ Κὰρς» (1837), «Μίρζα» (1842), «Μισσελμὰχ» (1847) κ. ἄ.

— **Μόριερ** (Morier), ***Ἰωάννης-Φίλιππος***. Ἄγγλος διπλωμάτης, ἀδελφὸς τῶν προηγουμένων, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ (1776—1853). Ἀποσταλεὶς ὡς παρατηρητὴς παρὰ τῷ τουρκικῷ στρατῷ, ὅστις ἐστάλη εἰς Αἴγυπτον ἐναντίον τοῦ στρατηγοῦ Κλεμπὲρ (1800), ἔδειξε μεγάλην διπλωματικὴν ἱκανότητα, ἔγραψε δὲ καὶ βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀπομνημονεύματα τῆς ἐκστρατείας τοῦ Ὀθωμανικοῦ στρατοῦ εἰς Αἴγυπτον» (Λονδῖνον 1801). Βραδύτερον διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν γενικὸς πρόξενος παρὰ τῷ Ἀλῆ πασᾶ τῶν Ἰωαννίνων (1803), ἐπιστρέψας δ' ἐκεῖθεν εἰς Ἀγγλίαν ὑπηρέτησεν ὡς ἀνώτερος ὑπάλληλος ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐξωτερικῶν (1815). Κ. Σ.

**μορίκα** (ἡ) (Morica) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιιδῶν*, περιλαμβάνον πέντε εἴδη κανθάρων ἰθαγενῆ τῆς Εὐρώπης. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μορίκα ἡ μελανὴ* (Morica nigra), ἥτις ἔχει ἀρκετὸν μέγεθος, κεφαλὴν μικράν, κοιλίαν ᾠοειδῆ, κεραίας καμπτομένας, πόδας μακροὺς καὶ ἰσχυροὺς καὶ χρῶμα μελανόν. Ἀπαντᾷ πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Γ.

**Μορικάμβης** ***εἴσχυσις*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κόλπίσκος τῆς Δ. Βρεττανίας ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Βριγάντων, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Β', 3, 2). Εἶναι ὁ νῦν Morecambe Bay, ἐν τῇ κομητείᾳ τοῦ Westmoreland, εἰς τὸν ὁποῖον ἐκβάλλει ὁ ποταμὸς Κέντ. Α. Ε. Σ.

**μορικανδία** (ἡ) (Moricandia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σταυρανθῶν*, περιλαμβάνον ποώδη φυτὰ μὲ φύλλα ἀκέραια καὶ ἐναλλασσόμενα καὶ μικρὰ ἄνθη κατὰ κεφαλίδας διατεταγμένα. Γνωστὰ εἴδη τινὰ φυόμενα εἰς τὰς χώρας τοῦ παλαιοῦ κόσμου. Δ. Ν. Γ.

**μόρικος** (ἐκ τοῦ τουρκ. *μόρ*)· ἰώχρους.

Digitized by Google

**Μορίλλιο** (Morillo), ***Παῦλος.*** Ἱσπανὸς στρατηγὸς (1777—1838). Διεκρίθη κατὰ τὸν ἐναντίον τῆς μητροπόλεως πόλεμον τῶν ἀμερικανικῶν ἀποικιῶν ἐν Νέᾳ Γρενάδᾳ. Ἀνακληθεὶς εἰς τὴν Ἱσπανίαν, διωρίσθη στρατιωτικὸς διοικητὴς τῆς Μαδρίτης κατὰ τὴν συνταγματικὴν περίοδον. Α. Δ.

**μορίλλος** (ὁ) (Morille) *[Βοτ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ μύκητος *ραισλερία*, προκαλοῦντος σηψιρριζίαν τῶν ἀμπέλων. Τὸ πιλίδιον ὁμοιάζει πρὸς σπόγγον φαιὸν ἢ κιτρινωπόν. Θεωρεῖται ἐκ τῶν ἐκλεκτῶν μυκήτων. Ε. Τ. Ε.

**Μοριμηνὴ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας κειμένη εἰς τὰ ΝΔ. τῆς Καππαδοκίας παρὰ τὰ μεθόρια τῆς Γαλατίας καὶ Λυκαονίας, μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Ἅλυος καὶ τῆς ἁλμυρᾶς λίμνης Τάττας (νῦν Τούζ-Γκιόλ). Ἐν Μοριμηνῇ ὑπῆρχε τὸ ἱερὸν τοῦ ἐν Οὐηνάσοις Διός, «ἱεροδούλων κατοικίαν ἔχον τρισχιλίων σχεδόν τι καὶ χώραν ἱερὰν εὔκαρπον, παρέχουσαν πρόσοδον ἐνιαύσιον ταλάντων πεντεκαίδεκα τῷ ἱερεῖ» (*Στράβ.* ΙΒ', 537). Σήμερον ἀποτελεῖ τὴν ἐν τῷ νομῷ Ἰκονίου ὑποδιοίκησιν *Κὸτς-Χισάρ*, μεθ' ὁμωνύμου πρωτευούσης καὶ 80 πολισμάτων. Α. Θ. Σ.

**Μοριμηνοὶ** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, κατοικῶν τὴν παρ' αὐτοῦ κληθεῖσαν *Μοριμηνὴν* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μόρινγκεν** (Morhingen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λωρραίνης (βλ. λ. *Μοράνζ*).

**μορίνδα** (ἡ) (Morinda) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ρουβιδοειδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μορινδίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Γλυκοζίτης ἀπαντῶν εἰς διάφορα εἴδη τῆς *μορίνδης*. Διὰ διασπάσεως παρέχει *μορινδόνην* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**μορινδόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἐρυθρὰ φυτικὴ χρωστικὴ ὕλη λαμβανομένη διὰ διασπάσεως τοῦ εἰς τὰς ρίζας *μορίνδης τῆς βαφικῆς* περιεχομένου γλυκοζίτου *μορινδίνη*. Χημικῶς χαρακτηρίζεται ὡς τριοξυμεθυλανθρακινόνη, $C_{14}H_4O_2(CH_3)(OH)_2$ καὶ εἶναι ἰσομερὴς πρὸς τὴν *ἐμοδίνην* καὶ *ἀλοεμοδίνην*. Κρυσταλλικὴ καστανέρυθρος κόνις μεταλλικῆς λάμψεως. Τήκεται εἰς 271°. Βάπτει τὰ ὑφάσματα κατόπιν προστύψεως ἐρυθρά. Σ. Γ.

**μορίνζα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ἡ ὀξυάκανθα* (Crataegus oxyacantha).

**μορίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Φυτικὴ χρωστικὴ ὕλη ἀπαντῶσα ἐλευθέρα ἢ ὑπὸ τὴν μορφὴν ἅλατος μετ' ἀσβεστίου εἰς τὸ ξύλον *μορέας τῆς βαφικῆς* (κιτρινόξυλον). Χημικῶς χαρακτηρίζεται ὡς πενταοξυφλαβόνη ἢ τετραοξυφλαβόνη, $C_{15}H_{10}O_7$ καὶ ἀποτελεῖ κιτρίνας βελόνας τηκομένας εἰς 290°. Χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν τυποβαφικὴν τῶν βαμβακερῶν. Σ. Γ.

**μορίνη** (ἡ) (Morina) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *διψακοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας ἰθαγενεῖς τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας. Δ. Ν. Π.

**μορινίτης** (ὁ) (Morinit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτόν, ὅπερ θεωρεῖται προϊὸν ἀποσαθρώσεως τοῦ μονεβρασίτου μὲ περιεκτικότητα εἰς νάτριον καὶ ὕδωρ. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Montebras, ὅπου καὶ ὁ μονεβρασίτης. Γ. Β.

**Μορινοὶ** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Πολεμικὸς λαὸς τῆς βελγικῆς Γαλλίας, κατοικῶν τὰ παράλια τοῦ Βρεττανικοῦ πορθμοῦ (Καλαί), μεταξὺ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σκάλδιος καὶ τοῦ Σαμάρα. Ἦτο ὁ βορειότερος λαὸς τῆς Γαλλίας, ὑπὸ δὲ τοῦ Βιργιλίου καλοῦνται «οἱ ἔσχατοι τῶν ἀνθρώπων». Μετὰ δυσκολίας ὑποταχθέντες ὑπὸ τοῦ Καίσαρος, ἐπανεστάτησαν ἐπὶ Αὐγούστου, ἀλλ' ἐν τέλει ὑπέκυψαν εἰς τὴν ρωμαϊκὴν κυριαρχίαν. Πρωτεύουσα αὐτῶν ἦτο ἡ *Ταρουάννα* (νῦν Thérouanne). Α. Θ. Σ.

**μοριόγραμμον** (τὸ) (Molécule-gramme καὶ συγκεκομμένως Mol) *[Φυσ.]*· βλ. λ. *γραμμομόριον*.

**Μοριόκα** (Morioka) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰαπωνίας κειμένη ἐν τῷ Β. τμήματι τῆς νήσου Νιπὸν (Χόντο), ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Κιτακαμιγκάβα. Συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Τόκιο (528 χλμ.) καὶ εἶναι κέντρον γεωργικῆς περιφερείας τρεφούσης καὶ ὀνομαστὴν γενεὰν ἵππων. Ἔχει μεταλλουργικὰς βιομηχανίας καὶ ἐργοστάσια βαμβακερῶν ὑφασμάτων. Κάτ. (1925) 50.030. Χ. Δ.

**μόριον** (τὸ) (ὑποκορ. τοῦ *μέρος*)· μικρὸν μέρος, τμῆμα, τεμάχιον· || τὸ μηχανικῶς ἀδιαίρετον τμῆμα τῆς ὕλης, τὸ παρὰ τοῖς ἀρχαίοις *ἄτομον*· || μέρος τοῦ ὀργανισμοῦ τῶν ζῴων ἢ τῶν φυτῶν: «περὶ ζῴων μορίων»· || *ἀνδρικὸν ἢ γυναικεῖον μόριον*· τὸ γεννητικὸν ὄργανον τοῦ ἀνδρὸς ἢ τῆς γυναικός· || τὸ πλάσμα.

—*[Χημ.]* Καλοῦνται *μόρια* τὰ μηχανικῶς ἀδιαίρετα ἐλάχιστα μέρη, ἐξ ὧν συνίσταται ἡ ὕλη. Ταῦτα ἀποτελοῦνται ἕκαστον ἐξ ἑνὸς ἢ πλειοτέρων, συνήθως δύο (βλ. λ. *μέταλλα καὶ μεταλλοειδῆ*), ἀτόμων. Ἐφ' ὅσον ταῦτα εἶναι ἀνόμοια, δύνανται τὰ μόρια διὰ χημικῶν μέσων νὰ διασπασθῶσιν εἰς τὰ ἁπλούστερα αὐτῶν συστατικά, τὰ ἄτομα. Ὡς λ. χ. δι' ἠλεκτρολύσεως τὸ ὕδωρ εἰς ὑδρογόνον καὶ ὀξυγόνον, τὸ ὑδροχλώριον εἰς ὑδρογόνον καὶ χλώριον.

Διάφορα γεγονότα καὶ ἰδίως ἡ ὁμοιομορφία πάντων τῶν ἀερίων ὡς πρὸς τὴν πίεσιν (νόμος *Boyle-Μαριόττου)* καὶ ἡ ἁπλότης τῶν λόγων τῶν ὄγκων, καθ' οὓς συνέρχονται τὰ ἀέρια πρὸς ἕνωσιν (νόμος *Gay-Lussac*), ἤγαγον τὸν Ἰταλὸν φυσικὸν Avogadro τῷ 1861 εἰς τὴν περίφημον ὑπόθεσιν, ἥτις ὡς νόμος κρατεῖ, ὅτι: ἴσοι ὄγκοι ἀερίων ὑπὸ τὰς αὐτὰς συνθήκας πιέσεως καὶ θερμοκρασίας ἀπαρτίζονται ἐκ τοῦ αὐτοῦ ἀριθμοῦ μορίων. Ἀνεξαρτήτως τούτου εἰς τὴν αὐτὴν ὑπόθεσιν κατέληξε καὶ ὁ Ἀμπὲρ τῷ 1813. Ἡ ὑπόθεσις αὕτη ἐλησμονήθη καὶ μόνον τεσσαράκοντα ἔτη βραδύτερον ἐχρησιμοποιήθη ἐν τῇ χημείᾳ, ἀποβᾶσα μία τῶν θεμελιωδεστέρων ἀρχῶν τῆς χημείας καὶ τῆς φυσικῆς, καθ' ὅσον ἐχρησίμευσεν εἰς αὐτὴν διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς κινητικῆς θεωρίας τῶν ἀερίων. Κατ' αὐτὴν τὰ μόρια τῶν ἀερίων, ὅμοια μεταξύ των, εἶναι προικισμένα ἕκαστον μὲ τὸ αὐτὸ ποσὸν κινητικῆς ἐνεργείας, ἀπολύτως δὲ ἐλαστικὰ ὄντα, εὑρίσκονται ἕνεκα ταύτης εἰς ἀεικινησίαν. Ἡ θεωρία αὕτη διὰ τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ μαθηματικοῦ λογισμοῦ συμφώνως πρὸς τοὺς νόμους τῆς μηχανικῆς, συνεδέθη εἰς ἀδιάσειστον σύνολον, ἐπὶ τῇ βάσει δὲ ταύτης δυνάμεθα σήμερον μετ' ἀσφαλείας νὰ ὑπολογίσωμεν τὰς διαστάσεις, τὸ βάρος, τὴν κινητικὴν ἐνέργειαν κλπ. τοῦ μορίου ἑκάστου εἴδους ἀερίου. Οὐχ ἧττον ἐκτὸς τῶν γενομένων ὑπολογισμῶν ἐπὶ τῇ βάσει τῆς κινητικῆς θεωρίας *(Schir, Chose)*, ἐγένοντο τοιοῦτοι καὶ ἀνεξαρτήτως ταύτης καὶ ἐπὶ τῇ βάσει ὅλως θεωρητικῶν ἢ καὶ πειραματικῆς ἐρεύνης δεδομένων, ὡς λ.χ. ἐπὶ τῇ βάσει τῆς θεωρίας τῆς ἀκτινοβολίας τοῦ φωτός, ἐπὶ τοῦ μεγέθους τῶν αἰωρουμένων ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ ἀφανῶν μορίων, εἰς τὰ ὁποῖα ὀφείλεται τὸ κυανοῦν χρῶμα τοῦ οὐρανοῦ *(Rutherford)*, τῶν εἰς ὑαλοειδῆ διαλύματα αἰωρουμένων ἐλαχίστων τεμαχιδίων *(Perrin)*, τῶν ἀκτινοβολιῶν τοῦ ραδίου, τῶν ἀερίων ἰόντων κλπ. Πᾶσαι αὗται ἔδωσαν τὰ αὐτὰ κατὰ προσέγγισιν μεγέθη, ἐξ οὗ καταφαίνεται ἡ ἀπόλυτος ἀκρίβεια τῶν ἐξαχθέντων ἀριθμῶν.

Οὕτω προσδιωρίσθη ὁ καλούμενος ἀριθμὸς τοῦ Avogadro, τὸν ὁποῖον παριστάνουν διὰ τοῦ ψηφίου *N*, τουτέστιν ὁ ἀριθμὸς τῶν μορίων, ἅτινα ἀποτελοῦσιν ἓν γραμμομόριον οἱουδήποτε σώματος, ἤτοι τὸ εἰς γραμμάρια ἐκφραζόμενον μοριακὸν αὐτοῦ βάρος (φέρ' εἰπεῖν 32 γρ. ὀξυγόνου ἢ δύο ὑδρογόνου ἢ 18 ὕδατος κλ.), εὑρέθη δὲ οὗτος κατὰ μέσον ὅρον ἴσος μὲ $65 \times 10^{22}$. Ἐκ τούτου κυρίως εἶναι δυνατὸν νὰ εὑρεθῶσι καὶ ἄλλαι διαστάσεις καὶ σταθεραὶ τῶν μορίων. Οὕτω εὑρέθη ὅτι ἡ μέση ἐλευθέρα διαδρομὴ τῶν μορίων εἰς τὸ ὀξυγόνον, τουτέστι τὸ μέσον διάστημα, ὅπερ ἕκαστον μόριον διανύει κατ' εὐθεῖαν γραμμὴν μεταξὺ δύο συγκρούσεων μὲ τὰ γειτονικὰ μόρια, ἰσοῦται μὲ 0,1 μ, ἤτοι ἓν δεκάκις χιλιοστὸν τοῦ χιλιοστομέτρου. Ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ N τοῦ Avogadro δυνάμεθα νὰ εὕρωμεν τὴν μᾶζαν ἀτόμου ἢ μορίου οἱουδήποτε, διαιροῦντες τὸ ἀτομικὸν ἢ μοριακὸν βάρος αὐτοῦ διὰ τοῦ N, λ. χ. διὰ τὸ μόριον τοῦ ὀξυγόνου $\frac{32}{N} = 50.10^{-24}$ γρ., διὰ τὸ ἄτομον τοῦ ὑδρογόνου $\frac{1}{N} = 1.55.10^{-24}$ γρ. Ἓν κυβικὸν ἑκατοστὸν οἱουδήποτε ἀερίου περιέχει ὑπὸ κανονικὴν πίεσιν καὶ θερμοκρασίαν $0^0$ $1.3 \times 10^{15}$ μόρια· ἡ κινητικὴ ἐνέργεια οἱουδήποτε μορίου εἰς τὴν θερμοκρασίαν τοῦ 0 εἶνε εἰς ἔργ. ἴση μὲ $0.55.10^{-13}$.

Οἱ ἀριθμοὶ οὗτοι, φανταστικῆς μικρότητος ἢ φανταστικοῦ μεγέθους, δὲν δύνανται νὰ δώσουν ἀκριβῆ ὁπωσδήποτε ἰδέαν τῆς πραγματικότητος. Εἰς ἑκάστην λ. χ. ἀναπνοὴν εἰσάγομεν 15.000 δισεκατομμύρια δισεκατομμυρίων μόρια ἀερίου, ἕκαστον τῶν ὁποίων κινεῖται μὲ ταχύτητα πυροβόλου καὶ συγκρούεται πέντε δισεκατομμύρια φορὰς τὸ δευτερόλεπτον πρὸς γειτονικὰ μόρια, παρεκκλῖνον τοῦ δρόμου του. Τὸ ἔργον τὸ ὁποῖον θὰ ἐχρειάζετο νὰ καταβάλλωμεν διὰ νὰ σταματήσωμεν ἓν μόριον, ἴσον πρὸς τὴν κινητικήν του ἐνέργειαν, ἰσοδυναμεῖ πρὸς τὸ ἔργον τὸ ὁποῖον θὰ κατεβάλλομεν διὰ νὰ ὑψώσωμεν ἓν σταγονίδιον ὕδατος διαμέτρου ἑνὸς ἑκατομμυριοστοῦ τοῦ χιλιοστομέτρου κατὰ ἓν ἑκατομμυριοστὸν τοῦ μέτρου. Θὰ ἐχρειάζοντο δὲ εἴκοσι χιλιάδες χιλιεκατομμύρια μορίων ἀέρος διὰ νὰ ἀποτελέσουν τὸ βάρος ἑνὸς ἑκατομμυριοστοῦ τοῦ χιλιοστοῦ τοῦ γραμμαρίου.

Ἐπὶ τῆς μοριακῆς θεωρίας βασιζομένη ἡ ὀργανικὴ χημεία ἐπετέλεσε τὰς γιγαντιαίας προόδους, ἃς ἐσημείωσεν ἀπὸ τὰ μέσα τοῦ παρελθόντος αἰῶνος· ἀλλὰ καὶ τῆς φυσικῆς χημείας ὑπῆρξεν ἓν τῶν σημαντικωτέρων θεμελίων ἡ θεωρία αὕτη. Κ. ΖΕΓΓΕΛΗΣ

—*[Γραμματ.]* Καλοῦνται *μόρια* (λατ. particulae), λεξίδιά τινα, τὰ ὁποῖα χρησιμεύουν πρὸς δήλωσιν ποικίλων δευτερευουσῶν σχέσεων τῶν ὅρων τῆς προτάσεως καὶ τὰ ὁποῖα οἱ ἀρχαῖοι γραμματικοὶ κατέταττον εἰς τοὺς συνδέσμους ἢ τὰ ἐπιρρήματα. Τοιαῦτα ἦσαν παρὰ τοῖς ἀρχαίοις τὰ *γὲ* ἢ *γὲν* καὶ *γά*, *κὲ* ἢ *κὲν* καὶ *κὰ* (κατὰ διαλέκτους) κ.λ., τὰ ἀχώριστα λεγόμενα μόρια *-τε*, *-περ* (ὥσ-τε, οὔ-τε, μή-τε, ὅσ-περ, ἥ-περ, ὅ-περ κ.λ.), *τοι-* ἢ *-τοι* (τοιγάρτοι, τοιγαροῦν) κ.λ., ὅμοια πρὸς τὰ ὁποῖα ἦσαν παρὰ τοῖς Λατίνοις τὰ -ne, -ve, -que κ.λ. (si-ve, ne-que, at-que κ.λ.). Νεοελληνικὰ μόρια εἶναι τὰ *νά*, *θά*, *δὰ* («αὐτὸ δὰ μᾶς ἔλειπε!» κ.λ.), *μὰ* («μὰ τὸ θεό!» κ.λ.) κ. οὕ. κ. Πρέπει νὰ προστεθῇ ὅτι μεταξὺ τῶν ἐπιρρημάτων (καὶ ἄλλων μερῶν τοῦ λόγου) ἀφ' ἑνὸς καὶ τῶν μορίων ἀφ' ἑτέρου δὲν ὑπάρχουν ὅρια σαφῶς διακεκριμένα, διὰ τοῦτο δὲ καὶ πᾶσα διάκρισις μορίων ἔχει κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ὑποκειμενικὸν χαρακτῆρα.

[Βλ. *Γ. Χατζιδάκι*, Γενικὴν Γλωσσικὴν Β' (Ἀθῆναι 1916) σελ. 390.—***Brugmann-Thumb***, Griechische Grammatik[4] München 1913, σ. 607 κ.ἑξ.] Γ. Π. Α.

—**μόρια ἀρνητικὰ** *[Γραμματ.]*· βλ. λ. *ἀρνητικὰ μόρια*.

—**μόρια ἐναντιόμορφα**· βλ. *στερεοχημεία*.

**Μόριος** *[Ἀρχ.]*. Προσωνυμία: — 1) Τοῦ Διὸς ὡς προστάτου τῶν ἱερῶν ἐλαιῶν (μοριῶν). Ὑπῆρχε καὶ βωμὸς τοῦ Μορίου Διὸς ἐν Ἀθήναις, ἐγγὺς τῆς Ἀκαδημίας, εἶναι δὲ πιθανὸν ὅτι ὁ Φειδίας τὴν ἀττικὴν ταύτην δοξασίαν ἐχρησιμοποίησεν, εἰκονίσας τὸν Δία ἐστεμμένον μὲ κλάδον ἐλαίας εἰς τὸ ἐν Ὀλυμπίᾳ χρυσελεφάντινον ἄγαλμα. Συγγενὴς πρὸς τὴν προσωνυμίαν ταύτην τοῦ Διὸς εἶναι ἡ ἐν Κύπρῳ ἀπαντῶσα Ζεὺς Ἐλαίους. — 2) Τῆς Ἀθηνᾶς (Μόριος Ἀθηνᾶ) ὡς προστάτιδος τῶν ἐλαιῶν καὶ δὴ τοῦ ἐν τῷ Ἐρεχθείῳ ἱεροῦ δένδρου. Ν. Α.

— **Μόριος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Δ. Βοιωτίας, ἐκβάλλων εἰς τὴν λίμνην Κωπαΐδα. Ν. Α.

**μόριος** (ὁ) (Morio) *[Ζῳολ.]*. Ἔντομον λεπιδόπτερον τοῦ γένους Vanessa μὲ χρῶμα πτερύγων καστανὸν μὲ κίτρινον περιθώριον, κοινότατον εἰς τὸ Β. ἡμισφαίριον. Ε. Τ. Ε.

**Μορὶς** (Morice), ***Κάρολος.*** Γάλλος ποιητὴς καὶ κριτικὸς (1861—1919). Συνειργάσθη εἰς διαφόρους ἐπιθεωρήσεις. Ἔγραψε τὸ δρᾶμα «Χερουβεὶμ» (1891). Μετέφρασε μυθιστορήματα τοῦ Δοστογιέφσκι, τὰ «Λαϊκὰ ποιήματα» τοῦ Νεκράσσωφ καὶ ἐξέδωκε διαφόρους μελέτας: «Παῦλος Βερλαὶν» (1887), «Αὔριον, ζητήματα αἰσθητικῆς» (1888), «Ἡ σημερινὴ λογοτεχνία» (1889), «Ροντὲν» (1900), «Εὐγένιος Καρριὲρ» (1906), «Τριστὰν Κορμπιὲρ» (1912). Ι. Μ. Τ.

**μορισία** (ἡ) (Morisia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σταυρανθῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον γένος, τὴν *μορισίαν τὴν ὑπόγειον* (Morisia hypogaea), ἥτις εἶναι πόα πολυετής, ἀπαντῶσα πανταχοῦ τῶν παραμεσογειακῶν χωρῶν καὶ χαρακτηριζομένη κυρίως διότι ὁ καρπός της ὡριμάζει ὑπογείως. Δ. Ν. Π.

**μορισωνία** (ἡ) (Morisonia) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *καππαριδιδῶν* ἢ *καππαριδοειδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς Ἰνδίας καὶ τὴν Ἀμερικήν. Δ. Ν. Π.

**Μόριτς** (Moritz), ***Κάρολος-Φίλιππος.*** Γερμανὸς συγγραφεὺς (1757—1793). Πάμπτωχος, διῆλθε περιπετειώδη νεανικὸν βίον, μέχρις ὅτου, προστατευθεὶς ὑπὸ τῆς αὐλῆς τοῦ Ἀννοβέρου, ἐσπούδασε καὶ ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν τοῦ Βερολίνου καὶ καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Ἐκ τῶν φιλολογικῶν του ἔργων ἀξιόλογα εἶναι τὰ μυθιστορήματα «Ἀνδρέας Ράϊζερ» καὶ «Ἀντώνιος Χάρτκνοπφ» μὲ θέμα τὴν πολυκύμαντον ζωήν του. Ἐξέδιδεν ἐπίσης «Ἐπιθεώρησιν πειραματικῆς ψυχολογίας», εἰς τὴν προμετωπίδα τῆς ὁποίας ἀνεγράφετο τὸ ἑλληνικὸν γνωμικὸν «Γνῶθι σαυτόν». Θ. Κ.

— **Μόριτς** (Moritz), ***Σιγμοῦνδος.*** Οὔγγρος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1879. Ἔγραψε διηγήματα, μυθιστορήματα καὶ δράματα, μὲ θέμα τὴν ζωὴν τῶν Οὔγγρων χωρικῶν καὶ ἀστῶν. Τὰ καλύτερα ἔργα του εἶναι: «Χρυσὸς εἰς τὸ κόκκινον» (1909). «Πίσω ἀπὸ τὸν Θεὸν» (1910). Θ. Κ.

**Μόρκεμ** (Morecambe) *[Γεωγρ.]*. — 1) Κόλπος τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ Ἰρλανδικῇ θαλάσσῃ, χωρῶν βαθέως μεταξὺ τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Κώμπερλαντ πρὸς Β. καὶ τῆς κομιτείας τῆς Λαγκαστρίας πρὸς Ν., φρασσόμενος δὲ πρὸς ΒΔ. ὑπὸ τῆς νήσου Οὐώλνεϋ.

— 2) Λουτρόπολις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Λαγκαστρίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ΝΑ. παραλίας τοῦ ὁμωνύμου κόλπου, $5^1/_2$ χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως τοῦ Λάγκαστερ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει θέατρα, ἀθλητικὰ γήπεδα, κέντρα διασκεδάσεως, καὶ εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον συχναζομένων κέντρων ἀναψυχῆς τῆς περιφερείας. Κάτ. 12.100. Χ. Δ.

Digitized by Google

**Μορκιοῦ** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ἡλιόκαλη.*

**Μορλαὶ** (Morlaix) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Φινιστέρ. Κεῖται ἐντὸς βαθέως εἰσχωροῦντος κόλπου τῆς Μάγχης, 94 χλμ. πρὸς Β. τῆς Κιμπέρ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς καὶ ἔχει χαρτοποιίαν καὶ ἀλευροβιομηχανίαν. Πατρὶς τοῦ στρατηγοῦ Μορώ. Κάτ. 15.260. χ. δ.

**Μορλάκκι** (Morlacchi), ***Φραγκῖσκος.*** Διακεκριμένος Ἰταλὸς συνθέτης (1784—1841), μαθητὴς ἀρχικῶς τοῦ Τσιγκάρέλλι ἐν Νεαπόλει καὶ εἶτα τοῦ Ματτέϊ ἐν Βολωνίᾳ. Τῷ 1805 συνέθεσε μίαν ᾠδὴν διὰ τὴν στέψιν τοῦ Ναπολέοντος ὡς βασιλέως τῆς Ἰταλίας, δύο δὲ ἔτη ἀργότερον ἀνεβίβαζε τὸ πρῶτόν του μελόδραμα «Il Ritratto». Ἔκτοτε καταλαμβάνει ἐξέχουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν δραματικῶν συνθετῶν τῆς πατρίδος του διὰ σειρᾶς σκηνικῶν ἔργων, γεγραμμένων εἰς τὸ ὕφος τοῦ Πάτρ («Il Poeta in campagna», «Corradino», «Enone e Paride», «Rinaldo d'Asti» κτλ.). Μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν τοῦ μελοδράματός του «Δαναΐδες» (1810), ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Σαξωνίας καὶ ἀνέλαβε τῷ 1811 τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἰταλικοῦ θεάτρου τῆς Δρέσδης, ὅπου συνειργάσθη μετὰ τῶν Γάϊσιγγερ, Βέμπερ κ. ἄ. Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ γερμανικοῦ περιβάλλοντος τὸ ὕφος του ὑπέστη μεταμόρφωσιν, ὡς ἀποδεικνύει ἤδη τὸ μελόδραμα «Raoul de Créqui» (1811), θεωρούμενον ὡς τὸ καλύτερον ἐκ τῶν ἔργων του. Διὰ τοῦ θανάτου τοῦ Μορλάκκι ἔσβησεν ἡ ἐν Γερμανίᾳ βασιλεία τῶν Ἰταλῶν. Ἐκτὸς τῶν 20 μελοδραμάτων του ὁ Μορλάκκι ἔγραψεν ἐπίσης: ἓν «Ρέκβιεμ», ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ βασιλέως τῆς Σαξωνίας, πλεῖστα ὀρατόρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων «Ἰσαὰκ» καὶ «Ὁ θάνατος τοῦ Ἄβελ», ἓν «Πάθος», 10 λειτουργίας μετ' ὀρχήστρας, καντάτας, σονάτας δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον κτλ. γ. σ.

**Μορλάκοι** (οἱ) (=θαλασσινοί). Νοτιοσλαυικὸν φῦλον κατοικοῦν εἰς τὰ βόρεια τῆς Δαλματίας καὶ ἐν Ἰστρίᾳ, ἀριθμοῦν 80.000 ψυχάς. Εἶναι καθολικοί. Ἐξ αὐτῶν ὀνομάζεται «Πορθμὸς τῆς Μορλάκκα», ὁ μεταξὺ τῆς κροατικῆς ἀκτῆς καὶ τῶν νήσων Βέλια. θ. κ.

**Μόρλαντ** (Morland), ***Γεώργιος.*** Ἄγγλος ζωγράφος (1763—1804). Ὑπῆρξε καλλιτέχνης μεγάλης παραγωγικότητος, ζωγραφίσας μετὰ πολλῆς τέχνης σκηνάς, ἰδίως τοῦ λαϊκοῦ βίου, καὶ παραστάσεις ζῴων. Κάλλιστα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ πληρωμὴ στὸ καπηλεῖο», «Τὸ ἄλογο τοῦ ἀγωγιάτη», «Ὁ σταθμός», «Ἀναχώρησις διὰ τὴν πανήγυριν», «Ἐσωτερικὸν στάβλου», «Ἡ ἐπιστροφὴ ἐκ τῆς ἀγορᾶς», «Τσιγγάνες» κ. ἄ. χ. δ.

**Μόρλεϋ** (Morley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 6 $^1/_2$ χλμ. ἀπὸ τοῦ Λῆδς, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει σπουδαίαν βιομηχανίαν ἐριούχων ὑφασμάτων, γαιανθρακωρυχεῖα καὶ λατομεῖα. Κάτ. 25.000. χ. δ.

**Μόρλεϋ** (Morley), ***Ἐρρῖκος.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς (1822—1894). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ Νόϋβιντ τῆς Γερμανίας καὶ εἰς τὸ βασιλικὸν κολλέγιον τοῦ Λονδίνου. Θιασώτης ἰδίου ἐκπαιδευτικοῦ συστήματος διὰ τῆς καταργήσεως πάσης ποινῆς, ἵδρυσε πρότυπον σχολήν. Ἔγινε διάσημος διὰ τοῦ ἔργου του περὶ τῆς ἀγγλικῆς φιλολογίας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἄγγλοι συγγραφεῖς» (1864).

— **Μόρλεϋ** (Morley), ***Θωμᾶς.*** Διάσημος Ἄγγλος συνθέτης τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος (1557—1604). Ὑπῆρξε μαθητὴς καὶ συνεχιστὴς τῆς τέχνης τοῦ Μπάϋρντ (Byrd), ὃν ἂν δὲν φθάνῃ εἰς ἔμπνευσιν συναγωνίζεται ὡς πρὸς τὴν χάριν. Ἀσχοληθεὶς κυρίως μὲ τὸ μαδριγάλιον, ἔδωκεν εἰς τὸ εἶδος τοῦτο ἔργα, δι' ὧν ἀποδεικνύεται κάτοχος τῶν μυστικῶν τῆς τέχνης τοῦ Παλεστρίνα. Ἡ ἐπίδρασις τῆς ἰταλικῆς τέχνης διαφαίνεται ἐπίσης εἰς τὰ «Μπαλέττα» τοῦ Μόρλεϋ. Ἀφῆκε μεγάλον ἀριθμὸν ἔργων ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Canzonets, or little short songs to 3 voices», «Madrigals to 4 voices», «Ballets to 5 voices», «Canzonets to 2 voices», «Canzonets or little short ayres to 5 or 6 voices» κτλ. Ἔγραψεν ἐπίσης τραγούδια μετὰ μικρᾶς ὀρχήστρας ἐκ λαούτου, πανδώρας, κιθάρας, πλαγιαύλου, βασίμου καὶ βιόλας. Τῇ φροντίδι τοῦ Μόρλεϋ ἐξεδόθησαν ἐπίσης «Οἱ θρίαμβοι τῆς Ὀριάνας», περίφημος συλλογὴ πενταφώνων καὶ ἑξαφώνων ᾀσμάτων εἰκοσάδος συνθετῶν, εἴδους ἔπους πρὸς τιμὴν τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ, ἣν ἀνύμνουν ὑπὸ τὸ ὄνομα τῆς Ὀριάνας. Διακεκριμένος ἐπίσης θεωρητικὸς ὁ Μόρλεϋ, ἔγραψεν ἓν ἀξιόλογον βιβλίον «A plane and easie introduction to practicall musicke» (1597), ἐν ᾧ περιέχονται ὅλαι αἱ γνώσεις αἱ ἀφορῶσαι τὴν σύνθεσιν, κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. γ. σ.

— **Μόρλεϋ** (Morley), ***Ἰωάννης,*** λόρδος τοῦ *Μπλέκμπωρν.* Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς εἰς Μπλέκμπωρν (1838—1923). Διετέλεσεν ἰδιοκτήτης καὶ ἐκδότης τῆς «Φιλολογικῆς ἐφημερίδος», τῆς «Δεκαπενθημέρου Ἐπιθεωρήσεως» τῆς «Πὲλ-Μὲλ-Γκαζὲτ» καὶ τῆς «Μάκμιλλαν - Γκαζέτ». Ἀνήκων εἰς τὸ κόμμα τῶν φιλελευθέρων ἐξελέγη τῷ 1883 βουλευτὴς Νιουκάστελ. Διετέλεσε (1886) μέλος τῆς κυβερνήσεως Γλάδστων, ὑφυπουργὸς τῆς Ἰρλανδίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1905—1910 ὑπουργὸς τῶν Ἰνδιῶν ἐπὶ κυβερνήσεως Κάμπελ—Μπάννερμαν. Εἶναι συγγραφεὺς πολλῶν ἱστορικῶν καὶ φιλολογικῶν ἔργων: «Κρόμβελ» (1900), «Γλάδστων» (1903), «Ντιντερὸ καὶ Ἐγκυκλοπαιδικοί» (1878) κ.ἄ.

**μορμιδέα** (ἡ) (Mormidea) *[Ζωολ.]*· βλ. λ. *πεντάτομος.*

**μορμολύκειον** (ὁ), καὶ ***μορμολυκεῖον*** (ἀρχ.). Προσωπὶς παριστάνουσα συνήθως τὴν *Μορμὼ* (βλ. λ.), δι' ἧς ἐφόβιζον τὰ μικρὰ παιδία· φόβητρον, σκιάχτρο, μπαμπούλας.

**μορμολύκειον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ὀρχεοειδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη ἰθαγενῆ τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς καὶ τοῦ Μεξικοῦ, καλλιεργούμενα κυρίως πρὸς κόσμον. δ. ν. π.

**μορμολύκη** (ἡ) (Mormolyce) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ κανθάρων ἰθαγενῆ τῆς Ἀσίας. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μορμολύκη ἡ μακρόκερως* (Mormolyce longicornis), ἥτις φθάνει εἰς μῆκος 10 περίπου ἑκατοστομέτρων, μὲ κεφαλὴν ἐπιμήκη καὶ τριγωνικὴν ἀπολήγουσαν εἰς κυλινδρικὸν ῥύγχος καὶ κεραίας μακροτάτας καὶ λεπτοφυεῖς. Ὁ χρωματισμός της εἶναι φαιὸς μὲ μελανὰς κηλῖδας. δ. ν. π.

*Μορμολύκη ἡ μακρόκερως.*

**μορμονισμὸς** (ὁ)· τὸ θρησκευτικὸν δόγμα τῶν *Μορμόνων* (βλ. λ.).

**Μορμόνοι** (οἱ). Μία τῶν πολυπληθῶν αἱρέσεων τοῦ προτεσταντισμοῦ, αἵτινες ἐγεννήθησαν ἐν Ἀμερικῇ. Ἀρχηγὸς αὐτῶν ἐγένετο ὁ Ἰωσὴφ Σμίθ, ὅστις τῷ 1830 ἐμφανισθεὶς ὡς προφήτης, μετέφρασε «Δύο χρυσᾶς πλάκας μετὰ τῶν ἱερῶν βιβλίων τοῦ Μορμόνου», τὰς ὁποίας, ὡς ἔλεγεν, ἀνεκάλυψεν ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ. Κατὰ τὸ μυθιστορικὸν τοῦτο βιβλίον, ὅταν αἱ δέκα φυλαὶ τοῦ Ἰσραὴλ μετηνάστευσαν εἰς Ἀμερικήν, διῃρέθησαν εἰς τοὺς *Λαμηνίτας*, τοὺς νῦν Ἐρυθροδέρμους, καὶ τοὺς *Νεφίτας*, οἵτινες ἐγένοντο Χριστιανοί· ἀλλὰ περὶ τὰ τέλη τοῦ Δ' αἰῶνος κατεδιώχθησαν ὑπὸ τῶν Λαμηνιτῶν καὶ κατεστράφησαν, ἐσώθη δὲ μόνος μετὰ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ ὁ *Μορμόνος*, ὅστις κατ' ἐντολὴν τοῦ θεοῦ κατέγραφεν εἰς τὰς δύο πλάκας τὰς ἀποκαλύψεις αὐτοῦ καὶ κατέχωσε τὸ βιβλίον ἐν Ν. Ὑόρκῃ. Ἀλλὰ καὶ ὁ Μορμόνος μολονότι ἔκτισε τὴν πόλιν Νάουβου καὶ ἵδρυσε μεγαλοπρεπῆ ναὸν διὰ τοὺς ὀπαδοὺς αὐτοῦ, κατεσφάγη ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ· ἀλλ' οἱ ὀπαδοί του εἰς πολλὰς χιλιάδας ἀνερχόμενοι ἐξέλεξαν ὡς ἀρχηγὸν αὐτῶν καὶ προφήτην τὸν Βρίγαμ Γιοὺγγ τῷ 1847, οὗτος δ ἵδρυσεν ἐν Γιούτᾳ τὴν νέαν Ἱερουσαλήμ. Οἱ ὀπαδοὶ τῆς αἱρέσεως ἐπὶ τοσοῦτον ἐπληθύνθησαν, ὥστε τῷ 1898 ἠριθμοῦντο εἰς 254 χιλιάδας. Οἱ Μορμόνοι ἴδιον χαρακτηριστικὸν ἔχουσι τὴν πολυγαμίαν, τὴν ἀνάπτυξιν δ' αὐτῶν κυρίως ὀφείλουσιν εἰς τὸν ἱεραπόστολον Ὄρσουκ Πρὰτ καὶ ἐν τῇ διδασκαλίᾳ αὐτῶν ἔχουσι στοιχεῖα γνωστικῶν καὶ θεοσοφικῶν θεωριῶν. Κατ' αὐτοὺς ὑπάρχουσι πολλοὶ θεοὶ ἐν πολυγαμίᾳ ζῶντες· ὁ Χριστὸς εἶναι ὁ πρωτότοκος τοῦ ὑψίστου θεοῦ, εἶχε δὲ ἐν τῷ κόσμῳ ὡς συζύγους τὴν Μαγδαληνήν, τὴν Μαρίαν καὶ τὴν Μάρθαν· μετὰ τὸ τέλος τοῦ κόσμου ὁ Χριστὸς ἐλεύσεται ἐν τῷ ἐν Γιούτᾳ ναῷ, ὅπου θὰ κρίνῃ τοὺς ἐθνικοὺς καὶ ἀπίστους. Οἱ Μορμόνοι ἀγνοοῦσι τὸ δόγμα της ἁγίας Τριάδος, ἀρνοῦνται τὴν προπατορικὴν ἁμαρτίαν, παραδέχονται κοινοκτημοσύνην ἀγαθῶν καὶ γυναικῶν, ἔχουσι πολίτευμα θεοκρατικὸν καὶ ἱεραρχίαν μετὰ ἐπισκόπων, ἱερέων καὶ διακόνων· τὸ βάπτισμα μεταδίδουσιν εἰς τοὺς ἐνηλίκους διὰ καταδύσεως, τὴν εὐχαριστίαν τελοῦσι δι' ὕδατος, ἀπέχουσι κρεῶν καὶ ποτῶν καὶ προσεύχονται ἔνοπλοι, ἀριθμοῦσι δὲ μεταξὺ τῶν βιβλίων τῆς Καινῆς Διαθήκης καὶ τὸ ἱερὸν αὐτῶν βιβλίον. [Πρβλ. *Φιλαρέτου Βαφείδου* «Ἐκκλ. Ἱστορία» (Τόμ. Γ' Μέρ. Β' σελ. 716 κτλ.).] † η. φ. β.

**Μορμόνος** (Mormon). Θρυλικὸς προφήτης τοῦ Δ' μ. Χ. αἰῶνος, γράψας τὸ φερώνυμον προφητικὸν βιβλίον, τὸ ἀποκαλυφθὲν ὑπὸ τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς αἱρέσεως τῶν Μορμόνων, Ἰωσὴφ Σμὶθ (βλ. λ. *Μορμόνοι*). χ. δ.

**Μόρμορης,** ***Γεώργιος.*** Ἕλλην ἰατροφιλόσοφος ἐκ Κυθήρων, ἀποθανὼν τῷ 1790. Ἀδελφὸς τοῦ ἐπισκόπου Κυθήρων, ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Παταυΐου καὶ ἐγένετο ἀκαδημαϊκὸς Φλωρεντίας.

**Μόρμορις** (ἢ ***Μόρμουρις*** καὶ ***Μούρμουρις***). —1) ***Ἐμμανουήλ.*** Ἀρχοντορρωμαῖος, ἐν Κρήτῃ, ὅστις μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Καντανολέου (1570) ἐστάλη μετ' ἄλλων εἰς Σφακιὰ ἐκ μέρους τοῦ προβλεπτοῦ Μαρίνου δὲ Καβάλλη, ὡς μεσίτης διὰ τὴν εἰρήνευσιν τῆς νήσου, ἥτις καὶ ἐπῆλθε χορηγηθείσης ἀμνηστίας. —2) ***Ἰάκωβος.*** Ἐκ τῶν ἀρχόντων, εἰς τοὺς ὁποίους ἐδόθη τιμάριον ἐν Μεσαρᾷ κατὰ τὴν ΙΣΤ' ἑκατονταετηρίδα ὑπὸ τῆς ἑνωτικῆς πολιτείας διὰ στρατιωτικὰς ὑπηρεσίας. —3) ***Ἰωάννης.*** Ἐκ Κυδωνίας Κρήτης, ἐκ τῶν μαθητευσάντων εἰς τὸ γυμνάσιον Παταυΐου. —4) ***Νικόλαος (Μόρμουρις).*** Λόγιος ἐκ Ναυπλίου (1542). —5) ***Κορνήλιος*** (1548—1559). Κρὴς σπουδάσας τὰ νομικὰ ἐν Ἰταλίᾳ. Πρὸς τοῦτον προσφωνεῖ τὴν Ἐρωφίλην διὰ στίχων ὁ ποιητὴς Χορτάτσης. —6) ***Γεώργιος (Μούρμουρις).*** Εὐπατρίδης πλούσιος ἐκ Γριμπιλιανῶν Κισάμου Κρήτης, ὅστις ἀφιέρωσεν ὁλόκληρον τὴν περιουσίαν του εἰς τὴν μονὴν Κυρίαν Γωνιάν.—7) ***Ἱερόθεος.*** Ἡγούμενος τῆς Γωνιᾶς τῷ 1651. ε. γ.

**Μορμουγκάουν** (Mormugão), ἢ ***Βάσκο ντὲ Γκάμα*** *[Γεωγρ.]*. Ὁ σπουδαιότερος λιμὴν τῆς ἐπὶ τῆς δυτικῆς παραλίας τῶν Ἰνδιῶν μικρᾶς πορτογαλικῆς ἀποικίας Γκόα, κέντρον ἐξαγωγῆς ἰχθύων, ἅλατος, κοκκοφοινίκων κλπ. Κάτ. 6.000. χ. δ.

**Μορμπιὰν** (Morbihan=Μικρὰ θάλασσα) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς δυτικῆς Γαλλίας. Ἔχει ἔκτασιν 7.093 χλμ. καὶ περίπου 578.000 κατ. Τὸ πλεῖστον τῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ ἀποτελεῖται ἀπὸ ἀδένδρους ἐκτάσεις καὶ τενάγη, γνωστὰ ὑπὸ τὸ ὄνομα Λὰνδ ντὲ Λανβὼ (Landes de Lanvaux). Ποταμοὺς ἔχει τὸν Μπλαβέ, τὸν Ὡραὶ κ. ἄ. Πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ εἶναι ἡ *Βάν.* γ. ι. β.

**μορμυρίδαι** (οἱ) (Mormyridae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων*, περιλαμβάνουσα γένη τινὰ ἰχθύων ἀπαντῶντα εἰς τὰ γλυκέα ὕδατα τῆς Ἀφρικῆς. Γνωστότερον εἶναι ὁ *μορμύρος* (βλ. λ.). δ. ν. π.

**μορμύρος** (ὁ) (Mormyrus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μορμυριδῶν*, περιλαμβάνον ἰχθῦς τῶν γλυκέων ὑδάτων, μὲ σῶμα κεκαλυμμένον ὑπὸ πολυπληθῶν λεπίων, κεφαλὴν γυμνὴν λεπίων καὶ πλαγίως μᾶλλον τοῦ σώματος τοποθετημένην, ῥύγχος προέχον καὶ ἀπολῆγον εἰς ῥαμφοειδῆ ἀπόφυσιν καὶ στόμα στενότατον. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μορμύρος ὁ ὀξύρρυγχος* (Mormyrus oxyrhynchus), ὅστις φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὸν Νεῖλον καὶ τοὺς ποταμοὺς τῆς Σενεγάλης. δ. ν. π.

**Μορμὼ** *[Μυθολ.]*. Μυθολογικὴ γυναικεία μορφή, χρησιμεύουσα ὡς φόβητρον τῶν μικρῶν παιδίων. Ἐμυθεύετο ὅτι ἡ Μορμώ, ἢ ἄλλως καλουμένη καὶ *Ἔμπουσα* καὶ *Λάμια*, ἦτο τερατῶδες φάντασμα, ὅπερ ἔτρωγεν ἀνθρώπους. Ἠδύνατο νὰ μεταμορφῶται εἰς διάφορα ζῷα, οἷον βοῦν, ὄνον, κύνα καὶ ἄλλα, νὰ φαίνηται δὲ ἀλλόκοτος καὶ φοβερά, στελλομένη ἐξ Ἅδου ὑπὸ τῆς Ἑκάτης πρὸς ἐκφόβισιν τῶν θνητῶν. Ἐπαρουσιάζετο συνήθως ἔχουσα τὸν ἕνα της πόδα χαλκοῦν καὶ τὸν ἕτερον ὄνου, δι' ὃ καὶ ἐλέγετο ὀνοσκελὶς καὶ ὀνοκώλη. β. δ. θ.

**μορμῶδες** (τὸ) (Mormodes) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ὀρχεοειδῶν*, περιλαμβάνον ἀρκετὰ εἴδη ἀπαντῶντα εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς γῆς. δ. ν. π.

**μόρμωπες** (οἱ) (Mormopes) *[Ζωολ.]*. Κατηγορία ζῴων θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *χειροπτέρων*, περιλαμβάνουσα γένη τινὰ νυκτερίδων ἀπαντωσῶν εἰς τὰς Ἀντίλλας νήσους. δ. ν. π.

**μορμὼν** (ὁ) (Mormon) *[Ζωολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *στεγανοπόδων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀλκιδῶν*, περιλαμβάνον εὐμεγέθη πτηνὰ μὲ σῶμα εὔρωστον, κεφαλὴν ὀγκώδη, ἀπεστρογγυλωμένην, ὀφθαλμοὺς στρογγύλους καὶ ἀρκετὰ μεγάλους, ῥάμφος βραχύ, χονδρόν, τριγωνικὸν καὶ ὅλως ἰδιόρρυθμον, πόδας χονδρούς, βραχεῖς μετὰ τριῶν δακτύλων συνηνωμένων διὰ δερματοπτυχῆς. Αἱ πτέρυγες εἶναι μικραί, στεναί, ἀπεστρογγυλωμέναι, ἡ οὐρὰ βραχυτάτη καὶ τὸ πτέρωμα πυκνόν. Τὰ πτηνὰ ταῦτα ὁμοιάζουσι πολὺ μὲ τοὺς πιγκουΐνους καὶ ἐνδιαιτῶνται κατὰ πολυπληθεῖς ὁμάδας εἰς τὰς ἀκτὰς τῶν βορείων θαλασσῶν, τρέφονται δὲ ἐκ μαλακοστράκων καὶ ἰχθύων. Ἡ θήλεια γεννᾷ εἰς βαθεῖαν ἐκσκαφὴν τοῦ ἐδάφους, τὰ δὲ μικρὰ ἅμα ἐκκολαφθῶσι φέρουσιν ὑπομέλαν πτίλωμα κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ ὑπόλευκον κατὰ τὰ κάτω. Βαδίζουσι σχεδὸν ὄρθια μὲ τὴν κεφαλὴν κεκλιμένην πρὸς τὸ ἔδα-

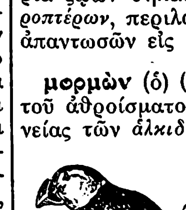

*Μορμὼν ὁ μοναχός.*

Digitized by Google

φος. Τὸ κρέας των, ὅπως καὶ τὰ ᾠά των, εἶναι περιζήτητος τροφὴ τῶν κατοίκων τῶν μερῶν ἐκείνων. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μορμὼν ὁ μοναχὸς* (Mormon fratercula), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος τὰ 40 ἑκατοστόμ. Τὸ χρῶμα τῶν μὲν ἄνω μερῶν τοῦ σώματός του εἶναι μέλαν, τῶν δὲ κάτω λευκὸν πρὸς τὸ ὑπόλευκον. Τὸ ράμφος του εἶναι πεπιεσμένον, λευκὸν κατὰ τὴν βάσιν του καὶ ἐρυθρὸν κατὰ τὸ ἄκρον. Δ. Ν. Π.

**Μόρνα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Σκοτεινὰ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**«Μόρνινγκ Πὸστ»** (Morning Post = Πρωϊνὸς Ταχυδρόμος). Ἡ ἀρχαιοτέρα ἐκ τῶν καθημερινῶν ἐφημερίδων τοῦ Λονδίνου, ἱδρυθεῖσα τῷ 1772 ὑπὸ τοῦ Henry Bate. Ὁ ἀρχικὸς πλήρης τίτλος της ἦτο «Morning Post and Daily Advertising Pamphlet». Ἀπετελεῖτο τότε ἐξ 8 σελίδων σχήματος 0,20×0,40 μ. καὶ ὑπεστήριζε τὰς φιλελευθέρας ἰδέας. Βραδύτερον κατέστη τὸ ἐπίσημον ὄργανον τῶν τόρεων καὶ μετέστη εἰς τὰς ἄκρως συντηρητικὰς τάξεις. Ἐξακολουθεῖ ἐκδιδομένη, πολυσέλιδος καὶ εἰς μέγα σχῆμα, ἀποτελεῖ δὲ τὸ σοβαρώτερον ὄργανον τῆς ἀγγλικῆς ἀριστοκρατίας. —Ω.

**Μόρνος** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Στερεᾶς Ἑλλάδος, ὁ ἀρχαῖος *Δαφνοῦς* (βλ. λ.).

— **Μόρνος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Χθαμαλὴ γλῶσσα, ἐπίσημος διὰ τὴν ναυτιλίαν, τῆς Β. ἀκτῆς τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, 1 μίλλ. Α.ΝΑ. τῆς ἐκβολῆς τοῦ φερωνύμου ποταμοῦ (ἀρχ. *Δάφνος* ἢ *Δαφνοῦς*), ὅστις διαρκῶς τὴν προσεπιχώνει, σχηματιζομένων ἀβαθῶν ἐπικινδύνων εἰς τοὺς παραπλέοντας. ΝΑ. κάτω τοῦ ἐλάσσονος κόλπου τῆς Ναυπάκτου, ἐφωτίζετο (1868) διὰ φάρου σταθεροῦ ἐρυθροῦ φωτὸς (πλάτ. 38°20'23" Β., μήκ. 21°50'11" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 427: Entrance to the gulf of Corinth) 5 μιλλίων, ἀντικατασταθέντος (1914) δι' αὐτομάτου «Ἄγκα» τριάδος ἐκλάμψεων 12 μιλλ. Πρὸς ἀποφυγὴν τῶν ἀβαθῶν δέον ὁ πλέων ἐκ τοῦ πορθμοῦ Ρίου—Ἀντιρρίου πρὸς τὴν Κόρινθον νὰ ἐπέχῃ πρὸς τὸν φάρον Μόρνου, τοὐλάχιστον μέχρι τῆς παραλλάξεως τοῦ φάρου Δρεπάνου. Σ. Ε. Λ.

**Μορντβίνωφ**, ***Ἀλέξανδρος Νικολάγιεβιτς, κόμις***—. Ρῶσος ζωγράφος γεννηθεὶς ἐν Ὀδησσῷ τῷ 1796 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1858. Ἐσπούδασεν ἐν Ἰταλίᾳ καὶ γοητευθεὶς ἀπὸ τὴν ποικίλην γραφικότητα τῆς Βενετίας ἐξεικόνισε πλεῖστας θέας αὐτῆς. Μία τῶν ὡραιοτέρων εἶναι ἡ «Εἴσοδος τοῦ μεγάλου καναλίου», ἀλλ' ἄξιαι ἐνδιαφέροντες εἶναι καὶ οἱ πίνακες αὐτοῦ οἱ παριστάνοντες τὰς πλατείας καὶ τὰς μικρὰς διώρυγας τῆς πόλεως ταύτης. Θ. Β.

**μορντέντο** (ἰταλ. mordendo, γαλλ. mordant ἢ pincé). Μουσικὸν καλλωπιστικὸν σημεῖον, τιθέμενον ἄνωθεν ἑνὸς φθόγγου καὶ σημαῖνον ὅτι μετὰ τὸν φθόγγον τοῦτον πρέπει νὰ ἐπακολουθήσῃ ἡ γοργὴ ἐκτέλεσις τῆς κατιούσης δευτέρας μετ' ἐπανόδου πρὸς τὸν γεγραμμένον φθόγγον. Σημεῖον τοῦ μορντέντο εἶναι τὸ ⁓, δεδομένου δὲ ὅτι ὁ δευτερεύων αὐτοῦ φθόγγος πρέπει νὰ εἶναι δευτέρα μικρά, συνοδεύεται συχνάκις ὑπὸ διέσεως, ὑφέσεως ἢ ἀναιρέσεως, τοποθετουμένης κάτωθεν τοῦ σημείου τοῦ μορντέντο. Παράδειγμα μορντέντο:

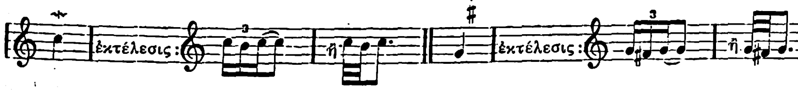


Παλαιότερον τὸ μορντέντο παρίστατο ἐπίσης διὰ τοῦ σημείου >, ἢ V ἢ VV, τοποθετουμένου μετὰ τὸν φθόγγον.

Τὸ *ἀνεστραμμένον μορντέντο* (γαλλ. pincé renversé, γερμ. Pralltriller ἢ Schneller) προϋποθέτει ὅτι μετὰ τὸν κύριον φθόγγον πρέπει νὰ ἐπακολουθήσῃ ἡ ἀνιοῦσα αὐτοῦ δευτέρα, μετ' ἐπανόδου εἰς τὸν ἀρχικὸν φθόγγον. Γράφεται μὲ τὸ σημεῖον ⁓ ἢ μὲ μικροὺς φθόγγους καὶ συνοδεύεται ἐπίσης μὲ δίεσιν, ὕφεσιν ἢ ἀναίρεσιν, ὁσάκις ὁ δευτερεύων φθόγγος πρέπει νὰ εἶναι ἠλλοιωμένος. Παράδειγμα:

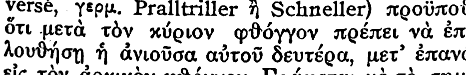


Γ. Σ.

**Μορντότσεφ**, ***Δανιὴλ Λούκιτς***. Ρῶσος συγγραφεύς, γεννηθεὶς εἰς Δανίλοφκαν τῷ 1830 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1899. Νέος ἔτι ἀπέκτησε μεγάλην φήμην ἐν Ρωσίᾳ ἐκ τῶν μελετῶν αὐτοῦ: «Ἱστορία τῆς Μικρορρωσίας», «Ἱστορία τῆς Πολωνίας καὶ ἡ ἐπανάστασις τοῦ Πουγατζώφ». Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Τὰ ρωσικὰ διδακτικὰ βιβλία τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος», «Αὐτόχλητοι» κτλ. Συνέγραψεν ἐπίσης πλεῖστα ἱστορικὰ μυθιστορήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ κάλλιστα εἶναι: ὁ «Ψευδο-Ἰβάν», «Ἡ γαϊδαμάτσινα» καὶ «Οἱ ἰδεολόγοι καὶ πραγματισταί». Θ. Β.

— **Μορντότσεφ**, ***Δημήτριος Λεόνοβιτς***. Ρῶσος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1814 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1887. Συνέγραψε πολλὰ ἱστορικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ Ψευδοϊωάννης», «Ἡ παρακμὴ τῆς Πολωνίας», «Τὰ σχολαστικὰ βιβλία τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος», «Ἡ Χαϊματσίνα», «Φιλολογία τῆς Μικρᾶς Ρωσίας», ἐν μυθιστόρημα «Τὸ ἔτος 1812» κτλ. Θ. Β.

**Μορνὺ** (Morny), ***Κάρολος-Αὔγουστος-Λουδοβῖκος-Ἰωσήφ, κόμις καὶ δούξ*** —. Γάλλος πολιτικὸς (1811—1865). Ἦτο φυσικὸν τέκνον τοῦ στρατηγοῦ ντὲ Φλαὼ καὶ τῆς βασιλίσσης Ὀρτενσίας, συνεπῶς ὁμομήτριος ἀδελφὸς τοῦ Ναπολέοντος Γ'. Τῷ 1832 ἐστάλη εἰς τὴν Ἀφρικὴν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἐκεῖ γαλλικοῦ στρατοῦ. Τῷ 1842 ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Ποϊ-ντὲ-Ντόμ, τῷ 1842 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ ἀπὸ τοῦ 1854 διετέλεσε πρόεδρος τοῦ νομοθετικοῦ σώματος. Τῷ 1858 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Πετρουπόλει. Συγχρόνως ἠσχολεῖτο περὶ τὴν λογοτεχνίαν καὶ ἔγραψεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Σαὶν Ρεμὺ* δοκιμώτατα θεατρικὰ ἔργα. Τῷ 1862 ὁ Ναπολέων Γ' ἐτίμησε τὸν Μορνὺ διὰ τοῦ τίτλου τοῦ δουκός. Α. Δ.

**Μορὸ** (Morot), ***Αἰμὲ-Νικόλαος***. Γάλλος ζωγράφος (1850—1913). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν σχολὴν καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων, τῷ δὲ 1873 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου τῆς Ρώμης. Ἐζωγράφισε σκηνὰς ἐκ τῆς Γραφῆς, διακοσμητικὰς παραστάσεις, προσωπογραφίας καὶ πρὸ πάντων ἱστορικοὺς καὶ μυθολογικοὺς πίνακας, ἐκτιμηθέντας μεγάλως διὰ τὸν χρωματισμὸν καὶ τὴν φυσικότητα τῆς ἀποδόσεως. Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτοι εἶναι αἱ εἰς διαφόρους στάσεις ἀπεικονίσεις καλπαζόντων ἵππων, τῶν ὁποίων ἡ ἀπόδοσις συναγωνίζεται εἰς ἀκρίβειαν τὰ σημερινὰ φωτογραφικὰ στιγμιότυπα (ἐνσταντανέ). Κάλλιστα ἐκ μὲν τῶν ἱστορικῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ 16 Αὐγούστου 1870» (1886), «Ἡ μάχη τοῦ Ραϊχσχόφφεν» (1887), «Ρεζονβὰλ» κ. ἄ., ἐκ τῶν προσωπογραφιῶν «Ὁ ζωγράφος Ζερόμ», «Ὁ πρίγκιψ ντ' Ἀραμπέργ», «Ἐρρῖκος Ζερμαίν», «Ὁ ζωγράφος Ἐμπέρ» κ.λ.π., ἐκ τῶν βιβλικῶν καὶ ἁγιογραφικῶν «Τὸ μαρτύριον Ἰησοῦ τοῦ Ναζωραίου» (1883), «Ὁ καλὸς Σαμαρείτης» (1880), «Ὁ πειρασμὸς τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου», ἐκ τῶν μυθολογικῶν «Ἡ Μήδεια» (1877), «Αἱ Δρυάδες» (1885) κ. ἄ., ἐκ δὲ τῶν διακοσμήσεων αἱ τοῦ δημαρχείου τοῦ Νανσὺ καὶ τῶν Παρισίων. Ἐπίσης ἀπεικόνισε μετὰ πολλῆς τέχνης δύο σκηνὰς ταυρομαχιῶν («Bravo Toro» καὶ «Toro colante» 1885). Ἠσχολήθη τέλος καὶ με τὴν γλυπτικήν, ἐλάχιστα ὅμως γλυπτὰ ἔργα αὐτοῦ σῴζονται, ἐν οἷς ἓν ἄγαλμα τοῦ πενθεροῦ του Ζερόμ, ἐργαζομένου τὴν γνωστὴν σύνθεσίν του «Μαχόμενος μονομάχος». Τῷ 1896 ἐξελέγη μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1903 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς σχολῆς καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων. Χ. Δ.

**Μοροδβῖνοι** (οἱ). Λαὸς τῆς Ρωσίας, ἀποτελούμενος ἐξ ἑνὸς ἑκατομμυρίου ψυχῶν καὶ κατοικῶν εἰς τὰ κυβερνεῖα Σιμπίρσκ, Νίζνι-Νοβογκόροντ, Σαρατώφ, Ταμπόφ, Πένζα καὶ Σαμάρα. Ἀσχολοῦνται κυρίως εἰς τὴν γεωργίαν, κτηνοτροφίαν καὶ μελισσοκομίαν καὶ ἁλιείαν. Διαιροῦνται δὲ εἰς τρεῖς μάζας, τὴν τῶν *Μακσόνων*, κατοικούντων τὰς ὄχθας τοῦ Μόκσα, τῶν *Ἔρσων* περὶ τὸ Τεριούσοβον τῶν *Τετζούσων*, τῶν *Καραταιένων* εἰς Σιμπίρσκ, καὶ τῶν *Τζούχων* εἰς Καζάν. Οἱ τελευταῖοι οὗτοι εἶναι Μουσουλμάνοι, οἱ λοιποὶ δὲ ὀρθόδοξοι. Αἱ γυναῖκές των κατ' ἀρχὴν δὲν ὑπανδρεύονται πρὸ τοῦ τριακοστοῦ ἔτους. Θ. Β.

**Μοροζίνης** (Morozini). Μία τῶν ἀρχαιοτέρων καὶ διασημοτέρων οἰκογενειῶν τῆς μεσαιωνικῆς Ἑνετίας, ἀκμάσασα ἀπὸ τοῦ ΙΒ' μέχρι τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἀναδείξασα πλείστους πολιτικούς, στρατιωτικούς, ἱεράρχας, λογίους κλ. ἄνδρας. Τὸ ἀρχικὸν ὄνομα τῆς οἰκογενείας ἦτο *Mauroceno* ἢ *Mavrogeno* ἢ *Mauroceni* δηλαδὴ *Μαυρογένης*, τὸ ὁποῖον ὑποστὰν τὴν ἐπήρειαν τῆς ἰταλικῆς γλώσσης μετεβλήθη εἰς *Μοροζίνη*. Ἐπιφανέστεροι ἄνδρες τῆς οἰκογενείας ταύτης ἀναφέρονται, κατὰ χρονολογικὴν σειράν, οἱ ἑξῆς:

—1) ***Μοροζίνης Δομένικος***. Δόγης τῆς Ἑνετίας (1148—1156). Ἐγεννήθη τῷ 1080 καὶ νεώτατος συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Παλαιστίνης, ἔλαβε μέρος εἰς τὴν κατάκτησιν τῆς Πτολεμαΐδος καὶ τῆς Σιδῶνος, βραδύτερον δὲ (τῷ 1110) ἐνίκησε τοὺς Παδουαίους, διεκδικοῦντας μέρος τῶν ἐνετικῶν διωρύγων, ἐπολέμησε κατὰ τοῦ ἡγεμόνος τῶν Οὔγγρων Στεφάνου Β' (1114—1131), συμμετέσχεν εἰς διαφόρους ἄλλας ἐκστρατείας (κατὰ τῶν Μουσουλμάνων ἐν Παλαιστίνῃ καὶ Φοινίκῃ, κατὰ τῶν Βυζαντινῶν εἰς Πελοπόννησον, Αἰγαῖον, Δαλματίαν) καὶ τέλος ἐξελέγη δόγης τῆς Ἑνετίας τῷ 1148, παραμείνας τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του (1156).

—2) ***Μοροζίνης Θωμᾶς***. Λατῖνος πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως (1205—1211). Μετὰ τὴν ἐν ἔτει 1204 ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Σταυροφόρων, οὗτοι ἐξέλεξαν ἐκεῖ βασιλέα μὲν τὸν Γάλλον Βαλδουῖνον, πατριάρχην δὲ τὸν Ἐνετὸν Θωμᾶν Μοροζίνην. Χειροτονηθεὶς οὗτος ὑπὸ τοῦ πάπα Ἰννοκεντίου τὴν 13 Μαΐου 1205 ἐν τῷ ἐν Ρώμῃ μεγάλῳ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πέτρου, ἀπῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν, συνοδευόμενος ὑπὸ ἰσχυρᾶς μοίρας ἐνετικοῦ στόλου, ἥτις κατὰ τὸν πλοῦν προσεγγίσασα εἰς Δυρράχιον ἐξεπόρθησεν αὐτό. Ἀναλαβὼν τὴν ἕδραν αὐτοῦ ὁ πατριάρχης Θωμᾶς, ἕνα κυρίως ἐπεδίωξε σκοπόν: τὴν ἐξασφάλισιν τοῦ πατριαρχικοῦ θρόνου εἰς Ἐνετοὺς ἱεράρχας καὶ πρὸς τοῦτο ἐπέμεινεν ἵνα πάντες οἱ ἐν Κωνσταντινουπόλει Λατῖνοι ἱερεῖς ὦσιν Ἐνετοί, ὡς ἐκ τούτου δὲ προῆλθεν εἰς σοβαρὰς προστριβὰς μετὰ τῶν λοιπῶν Λατίνων καὶ αὐτοῦ τοῦ πάπα. Ἀπέθανε τῷ 1211 ἐν Θεσσαλονίκῃ, ἔνθα εἶχε συνοδεύσει τὸν βασιλέα Κωνσταντινουπόλεως Ἐρρῖκον (1206—1216).

—3) ***Μοροζίνης Μαρῖνος***. Δόγης τῆς Ἑνετίας (1249—1252). Ἐκλεγεὶς δόγης τῷ 1249 εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ παραιτηθέντος Ἰ. Τιέπολου, εἰργάσθη πρὸς ἐξωραϊσμὸν τῆς πόλεως (διακόσμησις πλατείας Ἁγίου Μάρκου, θεμελίωσις τῆς περιφήμου γεφύρας τοῦ Rialto κ.λ.) καὶ τέλος ἠρνήθη νὰ παράσχῃ εἰς τὸν βασιλέα τῆς Γαλλίας Λουδοβῖκον Θ' τὰ αἰτηθέντα πλοῖα διὰ τὴν μεταφορὰν τῶν Σταυροφόρων (Ζ' σταυροφορία). Ἀπέθανε τῷ 1252.

—4) ***Μοροζίνης Ἄγγελος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1255—1259).

—5) ***Μοροζίνης Μαρῖνος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1274—1276). Ἀπεστάλη εἰς Κρήτην τῷ 1274, διαρκούσης τῆς μεγάλης ἐπαναστάσεως τῶν ἀδελφῶν Γεωργίου καὶ Θεοδώρου Χορτάτζη, πρὸς ἀντικατάστασιν τοῦ ἐν Μαλεβυζίῳ φονευθέντος ἁρμοστοῦ Μαρίνου Ζένου. Ὁ Μαρῖνος Μοροζίνης μάτην προσεπάθησε διὰ κολακειῶν, δωρεῶν καὶ παραχωρήσεων νὰ μαλάξῃ τοὺς Κρῆτας καὶ εἰρηνεύσῃ τὸν τόπον, ἐν τέλει δέ, ἀποτυχὼν εἰς τὰς ἐνεργείας του, ἀνεκλήθη τῷ 1296, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ Πέτρου Ζένου.

—6) ***Μοροζίνης Νικόλαος***. Ἐνετὸς βαΐλος ἐν Εὐβοίᾳ. Ἀντέστη κατὰ τῆς ἐπιδρομῆς τῶν Βυζαντινῶν (1278), ἀλλ' ἐν τέλει, ἡττηθείς, ὑπεχώρησεν εἰς τὸ φρούριον τῆς Χαλκίδος, τὸ ὁποῖον ἠδυνήθη νὰ κρατήσῃ χάρις εἰς τὰς ἐξ Ἀθηνῶν ἀφιχθείσας φραγκικὰς ἐπικουρίας ὑπὸ τὸν Ἰάκωβον Λαρὸς κλ.

—7) ***Μοροζίνης Ἀλβερτῖνος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης κατὰ τὸ 1290—1293, διαρκούσης τῆς μεγάλης ἐπαναστάσεως τοῦ Ἀλεξίου Καλλέργη.

—8) ***Μοροζίνης Ἰωάννης***. Ἁρμοστὴς Κρήτης κατὰ τὸ 1327—1329 καὶ 1338—1339.

—9) ***Μοροζίνης Μάριος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1329—1331).

—10) ***Μοροζίνης Ἀνδρέας***. Στρατηγὸς Ἐνετὸς ἀποσταλεὶς ἐπὶ κεφαλῆς ἐνισχύσεων εἰς Κρήτην πρὸς καταστολὴν τῆς ἐκεῖ ἐπαναστάσεως (1341—1347) ὑπὸ τοὺς ἀδελφοὺς Ψαρομηλίγγους.

—11) ***Μοροζίνης Μᾶρκος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1352—1355).

—12) ***Μοροζίνης Γιοφρέδος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1355—1357).

—13) ***Μοροζίνης Πέτρος***. Ἁρμοστὴς Κρήτης (1364—1366). Ἐπὶ τῆς ἁρμοστείας αὐτοῦ ἐξερράγη ἐν Κρήτῃ ἡ ὑπὸ τοὺς ἀδελφοὺς Ἰωάννην, Ἀλέξιον καὶ Γεώργιον Καλλέργας ἐπανάστασις, καθ' ἣν κυρίαρχος τῆς νήσου ἀνεκηρύχθη ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου Ἰωάννης Ε' Παλαιολόγος.

—14) ***Μοροζίνης Λεονάρδος***. Ἐπιφανὴς Ἐνετὸς ἄρχων, ὅστις διατελῶν πρόεδρος τοῦ συμβουλίου τῶν τεσσαράκοντα ἀνεκαλύφθη τῷ 1372 ὅτι μετεῖχε συνωμοσίας τινός, ἀποσκοπούσης τὴν παράδοσιν τῆς Ἑνετίας πρὸς τὸν θανάσιμον τῆς πολιτείας ταύτης ἐχθρὸν Φραγκῖσκον de Carrara, δοῦκα τῆς Παδούης. Εἰς τὴν προδοτικὴν ἐκείνην συνωμοσίαν συμμετεῖχον καὶ ἄλλοι ἐπιφανεῖς Ἐνετοί, ὡς ὁ μοναχὸς Βαρθολομαῖος τοῦ τάγματος τοῦ Ἁγίου Ἱερωνύμου, ὁ Μαρῖνος Βαρβαρῆγος, ὁ Λουδοβῖκος Μολίνο, μέλη τοῦ συμβουλίου τῶν τεσσαράκοντα, καθὼς καὶ ὁ Πέτρος Βερνάρδος σύμβουλος τοῦ δόγη τῆς Ἑνετίας. Πάντες οὗτοι διεγράφησαν τῆς «Χρυσῆς Βίβλου» τῶν εὐγενῶν καὶ κατεδικάσθησαν εἰς ἰσόβιον φυλάκισιν.

—15) ***Μοροζίνης Φραγκῖσκος***. Ἁρμοστὴς τῆς Κρήτης (1371—1234).

—16) ***Μοροζίνης Νικόλαος***. Ἐνετὸς ἄρχων, ἀποσταλεὶς τῷ 1379, ὅτε ἡ Ἑνετία ἐπολιορκεῖτο ὑπὸ τῶν Παδουαίων, τῆς Γενουαίων καὶ τῶν Οὔγγρων, ἵνα διαπραγματευθῇ μετ' αὐτῶν τοὺς ὅρους τῆς εἰρήνης. Συναντηθεὶς ἐπανειλημμένως μετὰ τοῦ δουκὸς τῆς Παδούης Φραγκίσκου de Carrara, τοῦ Γενουαίου ναυάρχου Δόρια καὶ τοῦ ἡγεμόνος τῶν Οὔγγρων Καρόλου, ἠγανάκτησε διὰ τοὺς ὑπὸ τούτων προταθέντας ἀτιμωτικοὺς ὅρους εἰρήνης, ἀπέρριψεν ὑπερηφάνως αὐτοὺς καὶ ἐπανελθὼν εἰς Ἑνετίαν ἐξῆψε τὸν πατριωτισμὸν τῶν τε ἀρχόντων καὶ τοῦ λαοῦ, ἐτόνωσε τὸ ἠθικὸν αὐτῶν καὶ ἐπέτυχε τὴν παράτασιν τῆς ἀντιστάσεως, μέχρις οὗ συνέτριψαν τὸν γενουατικὸν στόλον, ἀπώθησαν τὸν οὐγγρικὸν στρατὸν καὶ ἐξηνάγκασαν τὸν δοῦκα τῆς Παδούης νὰ συνομολογήσῃ εὐνοϊκὴν διὰ τοὺς Ἐνετοὺς εἰρήνην.

Digitized by Google

—17) ***Μοροζίνης Μιχαήλ.*** Δόγης τῆς Ἑνετίας (1382), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Διεκρίθη ὡς στρατιωτικὸς εἰς τὸν πόλεμον κατὰ τῆς Γενούης καὶ τοῦ Βυζαντίου, ἐκπορθήσας τῷ 1377 τὴν Τένεδον καὶ ἄλλας νήσους τοῦ Αἰγαίου. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν ὅμως πολιορκίαν τῶν νησίδων τῆς Ἑνετίας ὑπὸ τῶν Παδουαίων, τῶν Γενουαίων καὶ τῶν Οὔγγρων, ὅτε οἱ Ἑνετοί, ἄρχοντες καὶ λαός, ὑπεβλήθησαν (1379) εἰς τὰς μεγαλυτέρας θυσίας ὑπερασπιζόμενοι τὴν πατρίδα των, ὁ Μιχαὴλ Μοροζίνης, καίτοι πλουσιώτατος, περὶ ἑνὸς μόνου ἐμερίμνα: πῶς νὰ πολλαπλασιάσῃ τὴν περιουσίαν του, ἀγοράζων εἰς ἐξευτελιστικὰς τιμὰς τὰ κτήματα τῶν συμπολιτῶν του. Ἐν τούτοις οἱ Ἑνετοὶ τιμῶντες τὴν μνήμην τοῦ ἄρτι ἀποθανόντος ἀδελφοῦ του Νικολάου ἐξέλεξαν αὐτὸν δόγην τὴν 10 Ἰουνίου 1382. Μετὰ 4 μῆνας ἀπέθανε καὶ οὗτος ἐκ πανώλους.

—18) ***Μοροζίνης Λουδοβῖκος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1407—1409).

—19) ***Μοροζίνης Ἐγῖδος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1417—1418).

—20) ***Μοροζίνης Παῦλος.*** Λόγιος καὶ διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Ἑνετίᾳ τῷ 1406. Τῷ 1451 ἐπεφορτίσθη τὸν διακανονισμὸν τῶν συνόρων τῆς Ἰστρίας, κατόπιν δ' ἐγένετο μέλος τῆς γερουσίας καὶ ἐχρησιμοποιήθη ὁτὲ μὲν ὡς διοικητὴς τῶν διαφόρων ἐνετικῶν κτήσεων, ὁτὲ δὲ ὡς πρέσβυς εἰς διαφόρους χώρας (Ρώμην, Νεάπολιν, Πολωνίαν καὶ Βοημίαν). Συνέγραψε διαφόρους πολιτικὰς καὶ θρησκευτικὰς μελέτας. Οὗτος ἔπεισε τὸν Ἕλληνα καρδινάλιον Βησσαρίωνα νὰ διορίσῃ (τῷ 1469), ζῶν ἔτι, τὴν πλουσιωτάτην βιβλιοθήκην του εἰς τὴν Ἑνετίαν καὶ νὰ θέσῃ οὕτω τὰς βάσεις τῆς περιφήμου βιβλιοθήκης τοῦ Ἁγίου Μάρκου. Ἀπέθανε τῷ 1483.

— 21) ***Μοροζίνης Ἱερώνυμος.*** Ἑνετὸς ναυτικός. Εὑρισκόμενος μετὰ δύο πλοίων του εἰς Καφφὰν τῆς Ν. Ρωσίας κατὰ Νοέμβριον 1452, ὅτε ὁ σουλτᾶνος Μωάμεθ Β΄ ἀπέκλεε τὴν Κωνσταντινούπολιν, ἀπέπλευσεν ἐκεῖθεν φέρων σῖτον εἰς τὴν ἀπειλουμένην Πόλιν. Τὴν 10 Νοεμβρίου διερχόμενος πρὸ τοῦ τουρκικοῦ φρουρίου Ρούμελι-χισὰρ (ἐν τῷ Βοσπόρῳ) καὶ διαταχθεὶς ὑπὸ τοῦ Τούρκου φρουράρχου νὰ ἀνακόψῃ τὸν πλοῦν αὐτοῦ, κατώρθωσε νὰ ἐξαπατήσῃ αὐτὸν καὶ τέλος, βαλλόμενος ὑπὸ τῶν τουρκικῶν πυροβόλων, ἐπέτυχε νὰ διαφύγῃ καὶ νὰ καταπλεύσῃ μετὰ τῶν δύο του πλοίων ἀθίκτων εἰς Κωνσταντινούπολιν. Ἀποβιβάσας ἐκεῖ τὰ πληρώματα τῶν πλοίων του, συμμετέσχε μετ' αὐτῶν εἰς τὴν ἄμυναν τῆς πόλεως μέχρι τῆς ἡμέρας τῆς ἁλώσεως (29 Μαΐου 1453), ὅτε κατώρθωσε νὰ ἐξέλθῃ τῆς πόλεως καὶ ν' ἀποφύγῃ τὴν αἰχμαλωσίαν.

— 22) ***Μοροζίνης Ἰωάννης.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1502—1503).

— 23) ***Μοροζίνης Ἀντώνιος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1519—1530).

— 24) ***Μοροζίνης Ἀνδρέας.*** Ἀνὴρ λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Ἑνετίᾳ τῷ 1558. Τυχὼν ἀνωτέρας ἐκπαιδεύσεως ἐν Παδούῃ, ἐχρησιμοποιήθη εἰς ἀνωτάτας ὑπηρεσίας τῆς ἐνετικῆς δημοκρατίας καὶ τέλος ὑπῆρξε μέλος τοῦ συμβουλίου τῶν δέκα. Ἀπέθανε τῷ 1618. Συνέγραψεν: «Ἱστορίαν τῆς κατακτήσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων» ἐκδοθεῖσαν τῷ 1627, καὶ «Ἱστορίαν τῆς δημοκρατίας», ἐκδοθεῖσαν τῷ 1623. Αὕτη ἀποτελεῖ συνέχειαν τῆς λατινιστὶ γραφείσης «Ἱστορίας τῆς Ἑνετίας» τοῦ Paruta καὶ ἱστορεῖ τὰ γεγονότα μέχρι τοῦ 1615. Τῷ 1782 μετεφράσθη εἰς τὴν ἰταλικὴν ὑπὸ Molino. Πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἐδημοσιεύθησαν καὶ ἄλλαι τινὲς συγγραφαὶ αὐτοῦ ἐν Ἑνετίᾳ τῷ 1625, εἰς τόμον ἐπιγραφόμενον: «Opusculorum et epistolarum pars primo».

— 25) ***Μοροζίνης Φραγκῖσκος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1612—1614).

— 26) ***Μοροζίνης Δονᾶτος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1617—1619).

—27) ***Μοροζίνης Ἱερώνυμος.*** Ἑνετὸς ναύαρχος. Διοικῶν τὸν ἐν τῷ Αἰγαίῳ ἐνετικὸν στόλον, καθ' ὃν χρόνον οἱ Τοῦρκοι ἐπολιόρκουν τὰ Χανιὰ (14 Ἰουνίου—12 Αὐγούστου 1645), ἀντὶ νὰ πλεύσῃ πρὸς βοήθειαν τῆς πόλεως, ἠρκέσθη ἐκτελῶν ἀσκόπους διαδρομὰς μεταξὺ Μήλου καὶ Εὐβοίας καὶ οὕτω συνετέλεσε διὰ τῆς ἀδρανείας του εἰς τὴν ἅλωσιν τῶν Χανίων (τὴν 12 Αὐγούστου 1645). Καταπλεύσας εἶτα εἰς τὰ κρητικὰ ὕδατα, ἀπεπειράθη μάτην νὰ ἀνακαταλάβῃ τὴν ὀχυρὰν ἐκείνην πόλιν.

—28) ***Μοροζίνης Θωμᾶς.*** Ἑνετὸς ναυτικός. Κυβερνῶν γαλέραν εἰς τὰ κρητικὰ ὕδατα, συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων κατὰ Ἰούνιον 1645 ἐναντίον τῆς Κρήτης τουρκικοῦ στόλου. Τὸ ἐπιὸν ἔτος (1646), ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ ἀρχιναυάρχου Ἱερωνύμου Μοροζίνη εἰς Δαρδανέλλια, ἐπὶ κεφαλῆς 24 γαλερῶν, ἵνα παρακωλύσῃ τὴν ἐκεῖθεν ἔξοδον τοῦ τουρκικοῦ στόλου, ἠδυνήθη νὰ ἀποκλείσῃ αὐτὸν καθ' ὅλον τὸν χειμῶνα, ἀλλ' ἐπελθόντος τοῦ ἔαρος 1647 καὶ μὴ λαβὼν τὰς αἰτηθείσας ἐνισχύσεις, ἀπῆλθε μετὰ τῶν καταπεπονημένων πλοίων του, καταλιπὼν ἐλευθέραν τὴν ἔξοδον εἰς τὸν ἐχθρικὸν στόλον. Διαπλέων μετὰ ταῦτα τὸ Αἰγαῖον ὑπὸ τὸν ναύαρχον Γριμάνην καὶ διαταχθεὶς νὰ καταδιώξῃ ἐμφανισθέν τι τουρκικὸν πλοῖον, ἀπεχωρίσθη ἐντελῶς τοῦ λοιποῦ στόλου καὶ τέλος εὑρέθη πρὸ τῆς Χαλκίδος ἀντιμέτωπος τῆς ἐκεῖ ναυλοχούσης τουρκικῆς μοίρας ὑπὸ τὸν Μουσᾶ πασᾶν καὶ συγκρουσθεὶς πρὸς αὐτὴν (ἀποτελουμένην ἐκ 45 πολεμικῶν πλοίων) ἔπεσε γενναίως μαχόμενος πρὶν ἢ προλάβωσι νὰ ἔλθωσι πρὸς βοήθειάν του τὰ λοιπὰ ἐνετικὰ πλοῖα.

—29) ***Μοροζίνης Γεώργιος.*** Ἑνετὸς ναύαρχος. Συμμετέσχεν ὡς κυβερνήτης γαλέρας εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων εἰς Κρήτην Τούρκων (1643) καὶ διὰ τῶν τολμηρῶν πλοίων του κατώρθωσε νὰ μεταφέρῃ ἐνισχύσεις, τροφὰς καὶ πολεμεφόδια εἰς τὴν πολιορκουμένην πόλιν τῶν Χανίων (Ἰούνιος—Αὔγουστος 1643). Προαχθεὶς κατόπιν εἰς ναύαρχον, κατεναυμάχησε (τῷ 1661) πρὸ τῆς Τήνου τὸν τουρκικὸν στόλον, βυθίσας 20 αὐτοῦ πλοῖα καὶ καταδιώξας τὰ λοιπὰ πέραν τοῦ Αἰγαίου.

—30) ***Μοροζίνης Δανιήλ.*** Ὑπηρετῶν ὡς κυβερνήτης γαλέρας εἰς τὸν ἐνετικὸν στόλον τοῦ Αἰγαίου, συμμετέσχε τῷ 1653 εἰς τὸν ἀποκλεισμὸν τῶν Δαρδανελλίων ὑπὸ τὸν ναύαρχον Μοτσενῖγον. Ἐπιτεθεὶς ἡμέραν τινὰ κατὰ τουρκικοῦ τινος πλοίου, ἠνάγκασεν αὐτὸ νὰ παραδοθῇ. Συγχρόνως ὅμως οἱ Τοῦρκοι ἔθετον εἰς τὸ πλοῖον πῦρ, τὸ ὁποῖον μεταδοθὲν καὶ ἐπὶ τοῦ ἐνετικοῦ σκάφους ἀνετίναξεν αὐτὸ μετὰ πάντων τῶν ἐπιβαινόντων.

—31) ***Μοροζίνης Βερνάρδος.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1644—1646).

—32) ***Μοροζίνης Ἰωσήφ.*** Ἁρμοστὴς Κρήτης (1650—1653).

—33) ***Μοροζίνης Βερνάρδος.*** Ἑνετὸς ναύαρχος. Συμμετέσχεν ὑπὸ τὸν ἀρχιναύαρχον Γριμάνην εἰς τὸν ἀποκλεισμὸν τοῦ τουρκικοῦ στόλου ἐντὸς τῶν Δαρδανελλίων (1648). Μετὰ τὴν κατὰ τὸ ἔτος ἐκεῖνο καταστροφὴν τοῦ ἐνετικοῦ στόλου ἐκ τῆς ἐνσκηψάσης τρομερᾶς θυέλλης καὶ τὸν πνιγμὸν τοῦ ναυάρχου Γριμάνη, ὁ Μοροζίνης, πιστὸς ἐκτελεστὴς τῶν διαταγῶν τοῦ ἐκλιπόντος ἀρχηγοῦ του, ἐξηκολούθησε τὸν ἀποκλεισμὸν μετὰ τῶν περισωθέντων πλοίων (29 ἐν ὅλῳ) καὶ κατεναυμάχησε τὸν ἀποπειραθέντα νὰ ἐξέλθῃ ἰσχυρότερον τουρκικὸν στόλον. Κατελθὼν εἶτα εἰς Κρήτην ἐνήργησεν ἀποκλεισμὸν τῆς νήσου, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἀντικατεστάθη καὶ ἀνεκλήθη εἰς Ἑνετίαν.

—34) ***Μοροζίνης Φραγκῖσκος***, ὁ ἐπικληθεὶς *Πελοποννησιακός*. Ναύαρχος καὶ εἶτα δόγης τῆς Ἑνετίας (1688—1694). Ἐγεννήθη τῷ 1618 καὶ νεώτατος διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του καὶ ἄλλας στρατιωτικὰς αὐτοῦ ἀρετάς, μαχόμενος κατὰ τῶν Τούρκων καὶ τῶν πειρατῶν τοῦ Αἰγαίου. Διαρκοῦντος τοῦ μακροῦ ἐνετοτουρκικοῦ πολέμου (τοῦ ἀρξαμένου τῷ 1645 ἕνεκα τῆς κατὰ τὸ ἔτος ἐκεῖνο ἐπιδρομῆς τῶν Τούρκων κατὰ τῆς Κρήτης), ὁ Μοροζίνης, εἰς ἡλικίαν 36 ἐτῶν, ἀντικατέστησε προσωρινῶς τὸν ἀποθανόντα ναύαρχον Μοτσενῖγον ἐν τῇ ἀρχηγίᾳ τοῦ στόλου τοῦ Αἰγαίου. Ἀναμένων τὸν νέον ναύαρχον ἐνήργει συνεχεῖς ἐπιδρομὰς κατὰ τῶν τουρκικῶν παραλίων, δηῶν τὴν χώραν καὶ πυρπολῶν τὰς ἀποθήκας τοῦ ἐχθροῦ. Ἀποθανόντος μετ' ὀλίγον καὶ τοῦ νέου ναυάρχου Φοσκαρίνη, ἡ ἀρχηγία τοῦ στόλου ἀνετέθη ὁριστικῶς εἰς τὸν Μοροζίνην, ὅστις ἀμέσως ἔθεσεν εἰς ἐνέργειαν τὸ σχέδιόν του περὶ ἐκτοπίσεως τῶν Τούρκων ἐκ τοῦ Αἰγαίου. Πρὸς τοῦτο προσέβαλεν ἀλληλοδιαδόχως τὰς κυριωτέρας αὐτῶν βάσεις: τὴν Μονεμβασίαν, τὴν Χαλκίδα καὶ λοιποὺς λιμένας τῆς Εὐβοίας καὶ τέλος τὰ Χανιὰ (1660). Ἀποτυχὼν ὅμως εἰς πάσας τὰς ἐπιχειρήσεις ταύτας καὶ συνάμα καταγγελθεὶς ὑπό τινος ὑφισταμένου του, τοῦ Barbaro (καθ' οὗ εἶχεν ἀπαγγείλει ποινὴν θανάτου ἕνεκα παραλείψεως τοῦ καθήκοντός του ἔναντι τοῦ ἐχθροῦ), ἀνεκλήθη ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως εἰς Ἑνετίαν, ἔνθα ἀπολογηθεὶς ἀπηλλάγη πάσης κατηγορίας. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐξηκολούθει ὁ ἐν Κρήτῃ πόλεμος, ἐσχάτως δ' εἶχε λάβει νέαν ἔντασιν ἡ πολιορκία τοῦ Ἡρακλείου, ἣν διηύθυνεν ὁ νέος μέγας βεζύρης Ἀχμὲτ Κιουπρουλῆ πασᾶς. Πρὸς ἀντιμετώπισιν τοῦ πολυμηχάνου βεζύρου ἡ ἐνετικὴ κυβέρνησις ἔκρινεν ἐπιβεβλημένον νὰ πέμψῃ εἰς Ἡράκλειον τὸν δραστήριον καὶ γενναῖον Μοροζίνην, ὅστις καὶ διωρίσθη κατὰ Δεκέμβριον 1666 ἀρχιστράτηγος τῶν ἐν Κρήτῃ ἐνετικῶν δυνάμεων. Ἀλλ' ἡ κατάστασις ἦτο τοιαύτη, ὥστε οὐδεμίαν αἰσθητὴν μεταβολὴν ἐπήνεγκεν εἰς τὸν ἀγῶνα ὁ νέος ἀρχηγός. Μὴ δυνάμενος, μὴ ἔχων τὰ μέσα νὰ διακόψῃ τὰς θαλασσίας τῶν Τούρκων συγκοινωνίας, ἠρκέσθη εἰς τὴν ἄμυναν τοῦ Ἡρακλείου, τοῦ τελευταίου ἐκείνου ἐρείσματος τῶν Ἑνετῶν ἐπὶ τῆς νήσου, τὸ ὁποῖον οἱ Τοῦρκοι ἐπολιόρκουν ἤδη ἀπὸ 18 ἐτῶν, δηλαδὴ ἀπὸ τοῦ 1648. Μετὰ αἱματηροὺς ἀγῶνας δύο ἀκόμη ἐτῶν καὶ 9 μηνῶν, ὁ Μοροζίνης, πεισθεὶς περὶ τοῦ ἀδυνάτου πάσης περαιτέρω ἀντιστάσεως, ἀπεφάσισε νὰ συνθηκολογήσῃ, κατ' ἄλλους μὲν ἵνα προλάβῃ τὴν βεβαίαν ἐξ ἐφόδου ἅλωσιν καὶ τὴν ἀνεπόδραστον σφαγὴν τῆς τε φρουρᾶς καὶ τῶν κατοίκων, κατ' ἄλλους δὲ ἵνα ματαιώσῃ τὰς γαλλικὰς μηχανορραφίας, τὰς ὁποίας ἐπιτηδείως, δῆθεν ἐμπιστευτικῶς, τῷ εἶχεν ἀνακοινώσει ὁ παρὰ τῷ βεζύρῃ Κιοπρουλῇ ὑπηρετῶν ὡς ἔμπιστος γραμματεὺς Παναγιωτάκης Νικούσης. Διὰ τῶν ἐμπιστευτικῶν του ἀνακοινώσεων ὁ τελευταῖος οὗτος ἔπεισε τὸν Μοροζίνην ὅτι οἱ Γάλλοι ἐσκόπουν, ὑπὸ τὸ πρόσχημα τῆς ὑποστηρίξεως τῶν Ἑνετῶν, νὰ γίνωσι κύριοι τῆς νήσου καὶ εἶτα νὰ παραχωρήσωσιν αὐτὴν εἰς τοὺς Τούρκους κτλ. Ταῦτα διηγεῖται ὁ σύγχρονος τῶν γεγονότων ἱστορικὸς Καντεμίρ. Ὁπωσδήποτε ὁ Μοροζίνης ὑπέγραψε τὴν συνθήκην τῆς παραδόσεως τῆς πόλεως τὴν 27 Σεπτεμβρίου 1669 καὶ ἀμέσως ἤρξατο ἡ ἔξοδος τῶν κατοίκων καὶ τῆς φρουρᾶς τῆς ἠρειπωμένης ἐκ τῆς μακρᾶς πολιορκίας, τῶν βομβαρδισμῶν καὶ τῶν ὑπονόμων πόλεως.

Τοιουτοτρόπως ὁ Μοροζίνης ἐπανῆλθεν εἰς Ἑνετίαν, ὅπου ὅμως νέαι ἀνέμενον αὐτὸν συγκινήσεις καὶ περιπέτειαι. Ὁ Ἀντώνιος Corrario, μέλος τοῦ ἀνωτάτου συμβουλίου καὶ ἐχθρὸς προσωπικὸς τοῦ Μοροζίνη, κατήγγειλεν αὐτὸν ὡς παραδώσαντα εἰς τὸν ἐχθρόν, ἐκ λιποψυχίας καὶ διὰ δωροληψίας, τὴν ὡραιοτέραν τῶν ἐνετικῶν κτήσεων. Ἡ συκοφαντία αὕτη γνωσθεῖσα καὶ παρὰ τῷ λαῷ προεκάλεσε τὴν γενικὴν ἀγανάκτησιν κατὰ τοῦ παλαιμάχου στρατηγοῦ, ὃν ἀπεκάλουν προδότην καὶ ἐζήτουν τὴν κεφαλήν του ἐπὶ πίνακι. Ἐν τέλει δικασθεὶς ἐκηρύχθη ἀνεύθυνος ὑπὸ τοῦ δικαστηρίου καὶ ἔκτοτε παρέμεινεν ἐν Ἑνετίᾳ ζῶν ἐν πλήρει ἀφανείᾳ μέχρι τοῦ 1684, ὅτε, ἐκραγέντος νέου Ἑνετοτουρκικοῦ πολέμου, ἐξελέγη πάλιν ἀρχιναύαρχος καὶ ἐντὸς ὀλίγου ἐκυρίευσεν ἐξ ἐφόδου τὴν Λευκάδα καὶ τὴν Πρέβεζαν, ἀπεβίβασε στρατεύματα εἰς Πελοπόννησον καὶ μετὰ βραχεῖαν πολιορκίαν ἐξεπόρθησε καὶ τὴν Κορώνην. Αἱ νῖκαι αὗται γνωσθεῖσαι ἐν Ἑνετίᾳ προεκάλεσαν γενικὸν ἐνθουσιασμὸν ὑπὲρ τοῦ Μοροζίνη. Ἡ κατάπληξις πάντων ἐπὶ ταῖς νίκαις, ταῖς κατόπιν τοσούτων ἡττῶν, ἦτο τοιαύτη, ὥστε ἡ νέα αὕτη ἐκστρατεία τοῦ Μοροζίνη ὠνομάσθη guerra miracolosa (θαυματουργὸς πόλεμος). Συνεχίζων τὴν ἐκστρατείαν του κατὰ τὸ ἐπιὸν ἔτος (1685) ὁ Μοροζίνης ἐκυρίευσε τὰ δύο φρούρια τῆς Πύλου, Ναυαρῖνον καὶ Νεόκαστρον, τὴν Μεθώνην, τὸ Ἄργος καὶ τὸ Ναύπλιον, τὸ δ' ἀκόλουθον ἔτος τὰς Πάτρας, τὸ Ρίον, τὸ Ἀντίρριον καὶ τέλος τῷ 1687 τὴν Ναύπακτον, τὸν Μυστρᾶν, τὴν Κόρινθον καὶ οὕτως ἐγένετο κύριος ἁπάσης τῆς Πελοποννήσου πλὴν τῆς ὀχυρᾶς Μονεμβασίας. Ὁ Μοροζίνης ἦτο ἤδη ὁ δημοφιλέστερος τῶν ἡρώων ἐν Ἑνετίᾳ, ἡ δὲ γερουσία εὐγνωμονοῦσα τῷ ἀπένειμε τὴν τιμητικὴν ἐπωνυμίαν τοῦ *Πελοποννησιακοῦ* καὶ ἔστησεν ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ μεγάλου συμβουλίου τὴν ὀρειχαλκίνην προτομήν του. Μετὰ τὰς ἀνωτέρω νίκας του ὁ Μοροζίνης ἠσχολήθη περὶ τῶν περαιτέρω ἐπιχειρήσεων καὶ πρὸς τοῦτο συνεκάλεσε πολεμικὸν συμβούλιον, κατὰ τὸ ὁποῖον δύο ὑπεστηρίχθησαν γνῶμαι: α΄) ἡ ἐξασφάλισις τῆς Πελοποννήσου διὰ τῆς τομῆς τοῦ Ἰσθμοῦ ἢ τῆς ὀχυρώσεως αὐτοῦ καὶ ἡ διαχείμασις τοῦ στρατοῦ ἐν τῇ χερσονήσῳ· β΄) ἡ ἐξακολούθησις τῶν ἐπιχειρήσεων πρὸς κατάκτησιν τῆς Ἑλλάδος καὶ δὴ ἡ ἄμεσος ἀνακατάληψις τῶν Ἀθηνῶν. Ὁ Μοροζίνης ἐτάχθη ὑπὲρ τῆς πρώτης καὶ ἀνέπτυξε τοὺς κινδύνους οὓς συνεπήγετο ἡ ἀποδοχὴ τῆς δευτέρας. Ἐν τούτοις ὑπείκων εἰς τὴν πλειοψηφίαν τοῦ πολεμικοῦ συμβουλίου ἐδέχθη νὰ ἐκστρατεύσῃ πρὸς κατάληψιν τῶν Ἀθηνῶν. Τὴν 10ην Σεπτεμβρίου ὁ ἐνετικὸς στόλος εἰσήρχετο εἰς τὸν λιμένα τοῦ Πειραιῶς καὶ ἀπεβίβαζε τὰ στρατεύματα, ἅτινα ἀνελθόντα ἀμέσως εἰς Ἀθήνας κατέλαβον αὐτὰς καὶ ἤρξαντο πολιορκοῦντα τοὺς ἐν τῇ Ἀκροπόλει ἐγκλεισθέντας Τούρκους. Τὴν 23 Σεπτεμβρίου οἱ Τοῦρκοι συνθηκολογήσαντες παρέδωσαν τὴν Ἀκρόπολιν καὶ ἀπῆλθον εἰς Μικρὰν Ἀσίαν, ἀλλὰ καὶ οἱ Ἑνετοὶ δὲν ἠδυνήθησαν νὰ παραμείνωσιν ἐκεῖ ἐπὶ μακρόν. Τὸν Μάρτιον τοῦ ἐπιόντος ἔτους (1688) ἀπῆλθον τῶν Ἀθηνῶν, μετ' αὐτῶν δὲ συναπῆλθον καὶ πάντες οἱ Ἕλληνες κάτοικοι ἐκ φόβου τῶν τουρκικῶν ἀντεκδικήσεων (βλ. καὶ λ. *Ἀθῆναι* τ. Β΄, σ. 111—112).

Παραιτηθεὶς τότε ὁ Μοροζίνης πάσης περαιτέρω κατακτήσεως ἐν τῷ χέρσῳ Ἑλλάδι, ἐπεδίωξε τὴν κατάληψιν τῆς Εὐβοίας καὶ στήσας τὸ ἀρχηγεῖόν του ἐν Πόρῳ ἤρξατο παρασκευαζόμενος διὰ τὴν προσβολὴν τῆς ὀχυρᾶς Χαλκίδος. Ἐν τῷ μεταξὺ ἀπέθνῃσκεν ὁ δόγης Ἰουστινιάνης καὶ τότε ἐδόθη εὐκαιρία εἰς τὸν ἑνετικὸν λαὸν νὰ διαδηλώσῃ τὸν πρὸς τὸν Μοροζίνην θαυμασμόν του. Εἰς ἁπάσας τὰς ὁδοὺς τῆς Ἑνετίας ἐτοιχοκολλήθησαν προγράμματα μὲ τὴν ἐπιγραφήν: «Ἐκεῖνος ὅστις σᾶς ἔδωσεν ἓν βασίλειον δικαιοῦται σήμερον νὰ λάβῃ ἓν στέμμα». Καὶ ὁ Φραγκῖσκος Μοροζίνης ἀνῆλθε τότε (1688) εἰς τὸ ἀνώτατον τῆς δημοκρατίας ἀξίωμα, ἐκλεγεὶς δόγης. Τὴν εἴδησιν τῆς ἐκλογῆς του ἔλαβεν ἐν Αἰγίνῃ καὶ μετ' ὀλίγον (8 Ἰουλίου 1688) ἐξεκίνει ἐκεῖθεν κατὰ τῆς Χαλκίδος φέρων τὸ δουκικὸν στέμμα.

Ἡ ἐκστρατεία ἐκείνη ἠτύχησε. Μετὰ αἱματηροὺς ἀγῶνας ἠναγκάσθη νὰ λύσῃ τὴν πο-

Digitized by Google

λιορκίαν (τὴν 20ὴν Αὐγούστου) καὶ νὰ στραφῇ πρὸς ἐκπόρθησιν ἑτέρου ἰσχυροῦ φρουρίου, τῆς Μονεμβασίας, ἀλλ' ἀσθενήσας μετ' ὀλίγον ἠναγκάσθη ν' ἀπέλθῃ εἰς Ἑνετίαν, ἐμπιστευθεὶς τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐπιχειρήσεων εἰς τὸν στρατηγὸν Κορνάρον, ὅ[illegible] ἐξηνάγκασε τὴν Μονεμβασίαν νὰ παραδοθῇ (10ην Αὐγούστου 1690), ἐνίκησε τὸν τουρκικὸν στόλον παρὰ τὴν Μυτιλήνην καὶ κατέλαβε τὴν Αὐλῶνα (Ἠπείρου), ἧς κατεδάφισε τὰ ὀχυρὰ τείχη. Τὸν Κορνάρον, ἀποθανόντα μετ' ὀλίγον, ἀντικατέστησεν ὁ στρατηγὸς Δομένικος Μοντσενῖγος. Διαταχθεὶς οὗτος νὰ καταλάβῃ αἰφνιδιαστικῶς τὰ Χανιὰ (Κρήτης) δὲν ἐπέτυχε τοῦτο καὶ ἐπολιόρκησε τὸ φρούριον, μετὰ πάροδον δὲ χρόνου τινὸς ἔλυσε τὴν πολιορκίαν καὶ ἀπῆλθε, παρὰ τὰς διαμαρτυρίας τῶν ἀξιωματικῶν του, προφασιζόμενος τὴν ἁπλῆν εἴδησιν ὅτι οἱ Τοῦρκοι ἐξεστράτευον κατὰ τῆς Πελοποννήσου.

Ἡ ἀνικανότης τοῦ τελευταίου τούτου στρατηγοῦ κατέστησεν αἰσθητοτέραν τὴν ὑπεροχὴν τοῦ Μοροζίνη καὶ ἐπέβαλε τὴν ἀνάγκην τῆς ἐκ νέου ἀποστολῆς τούτου εἰς τὰ ἑλληνικὰ ὕδατα, ἵνα ἀναλάβῃ τὴν διεύθυνσιν τῶν πολεμικῶν ἐπιχειρήσεων. Ἦτο τότε 75 ἐτῶν. Ἐν τούτοις, πλήρης ζωῆς ἀπῆλθε καὶ πάλιν ἵνα ὑπηρετήσῃ τὴν πατρίδα του. Τὴν 24ην Μαΐου 1693 ἀπέπλευσεν ἐξ Ἑνετίας καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐν τῷ Αἰγαίῳ ἑνετικῶν δυνάμεων, δὲν ἠδυνήθη ὅμως νὰ δράσῃ ἐπὶ μακρόν. Ἀσθενήσας μετ' ὀλίγον ἐν Καρύστῳ διεκομίσθη εἰς Ναύπλιον, ὅπου καὶ ἀπέθανε τὸν Ἰανουάριον 1694. Τὸ πτῶμά του μετενεχθὲν εἰς Ἑνετίαν ἐτάφη ἐν μεγαλοπρεπεῖ μνημείῳ, ἐφ' οὗ ἐτέθη ἐπιγραφή: «Francisco Mavroceno Peloponnesiaco. Senatus». Ν. ΚΑΛΟΜΕΝΟΠΟΥΛΟΣ

**Μόροικα** (Moroeca) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ταρρακωνικῆς Ἱσπανίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Καντάβρων, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Β, 6, 50). Ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος. Α. Θ. Σ.

**Μὸρ-Ὅμ** (Mort-Homme = νεκρὸς ἄνθρωπος) *[Γεωγρ.]*. Λοφοσειρὰ τῆς ΒΑ. Γαλλίας, ἀποτελουμένη ἐκ δύο διδύμων λόφων. Κεῖνται οὗτοι ΒΔ. τοῦ Βερντὲν ἐπὶ τῆς ἐδαφικῆς ἐξάρσεως τοῦ ἐδάφους, ἥτις ὑψοῦται πρὸς Δ. τῆς κοιλάδος τοῦ Μόζα. Ἔχουσι κατεύθυνσιν ἀπὸ ΒΔ. πρὸς ΝΑ. καὶ ὕψος 265 καὶ 295 μ., ἡ δ' ἀπὸ στρατηγικῆς ἀπόψεως σημασία των εἶναι τεραστία, λόγῳ τοῦ ὅτι δεσπόζουσιν ὁλοκλήρου τῆς περὶ αὐτοὺς ἐκτεινομένης πεδινῆς χώρας καὶ δύνανται νὰ χρησιμοποιηθῶσιν ἀφ' ἑνὸς μὲν ὡς θέσις πυροβολικοῦ, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὡς παρατηρητήριον. Διὰ τὴν κατοχὴν τῶν λόφων τούτων μεγάλαι κατεβλήθησαν καθ' ὅλον τὸ διάστημα τοῦ Παγκοσμίου πολέμου θυσίαι ἐκ μέρους τῶν Γάλλων καὶ τῶν Γερμανῶν. Ἤδη ἀπὸ τοῦ Σεπτεμβρίου τοῦ 1914 τὰ γερμανικὰ στρατεύματα τοῦ Κρόνπριντς προσεπάθησαν ἀνεπιτυχῶς νὰ καταλάβωσιν αὐτούς. Βραδύτερον διαρκούσης τῆς δευτέρας μάχης τοῦ *Βερντὲν* (βλ. λ.), κατελήφθη τὴν 14ην Μαρτίου 1916 ὑπὸ τῶν Γερμανῶν τὸ τὴν βορειοτέραν θέσιν κατέχον ὕψωμα (ὑψόμ. 265)· αἱ πρὸς κατάληψιν ὅμως καὶ τοῦ ἑτέρου ἐπανειλημμέναι αὐτῶν ἀπόπειραι ἔμειναν ἄκαρποι. Ἡ περὶ τὸ τελευταῖον τοῦτο προσπάθεια τῶν Γερμανῶν ἐπανελήφθη περὶ τὰ τέλη Δεκεμβρίου, πλὴν καὶ πάλιν ἀνεπιτυχῶς. Τέλος, κατὰ Μάρτιον τοῦ 1917, οἱ Γερμανοὶ ἐγένοντο κύριοι καὶ τῆς δευτέρας ταύτης κορυφῆς, κρατήσαντες αὐτὴν μέχρι τῆς 20ῆς Αὐγούστου, ὁπότε ἠναγκάσθησαν νὰ ἐκκενώσωσιν ὁλόκληρον τὴν λοφοσειρὰν τοῦ Μὸρ Ὅμ, ὑποχωρήσαντες πρὸς Β. Ἔκτοτε μεταφερθέντος τοῦ μετώπου πρὸς Β. ἡ μικρὰ αὕτη λοφοσειρὰ ἔπαυσε ν' ἀποτελῇ τὸ ἐπίμαχον σημεῖον τοῦ τμήματος τούτου τοῦ μετώπου. —Ω.

**μόρον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Καλεῖται ὁ καρπὸς τοῦ δένδρου *μορέα* (βλ. λ.).

**Μορὸν *ντὲ λὰ Φροντέρα*** (Moron de la Frontera, ἀρχ. λατιν. Arumi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Σεβίλλης, κειμένη ἐντὸς γραφικῆς περιοχῆς παρὰ τὸν ποταμὸν Γκουανταΐρα, 50 χλμ. νοτιοανατολικῶς τῆς Σεβίλλης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει παλαιὸν μαυριτανικὸν φρούριον καταστραφὲν τῷ 1812 καὶ γοτθικὴν μητρόπολιν (ΙΣΤ' αἰῶνος). Παράγει ἔλαιον ἐκλεκτῆς ποιότητος καὶ ἔχει ἀξιόλογα λατομεῖα μαρμάρου καὶ ἀσβεστοκαμίνους. Κάτ. (1920) 14.964. Χ. Δ.

**Μορονβιγιὲ** (Moronvilliers) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μάρνη, ἀπέχον 22 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ρέμς. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατεστράφη ἐξ ὁλοκλήρου. Τὸ ὄνομα Μορονβιγιὲ δίδεται ἐπίσης καὶ εἰς τὰ ὄρη τῆς *Καμπανίας*. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ νοτίως τοῦ χωρίου *Μορονβιγιὲ* (Moronvilliers) φερώνυμος λοφοσειρὰ ἀποτελεῖται, ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, ἐκ διαφόρων ὑψωμάτων παρακειμένων ἀλλήλοις ἐπὶ ἐκτάσεως 12 περίπου χιλιομέτρων καὶ περιβαλλόντων τὴν βορείαν παρυφὴν τῆς πεδιάδος τῆς Καμπανίας, εἰς τρόπον ὥστε ὁ κατέχων τὴν λοφοσειρὰν ταύτην νὰ ἐπικρατῇ (νὰ ἔχῃ προκάλυμμα, παρατηρητήρια, βάσεις ἐξορμήσεως κτλ.) ἐπὶ τῆς ἐν λόγῳ πεδιάδος. Ἡ λοφοσειρὰ αὕτη, διατελοῦσα ἀπὸ τοῦ Σεπτεμβρίου 1914 ὑπὸ τὴν κατοχὴν τῶν Γερμανῶν, εἶχεν ὀργανωθῇ ὑπ' αὐτῶν θαυμασίως διὰ τῆς κατασκευῆς διπλῆς σειρᾶς χαρακωμάτων ἐφ' ἑνὸς ἑκάστου ὑψώματος καὶ πολλῶν σηράγγων (ὑπογείων στοῶν) διὰ τὴν προκάλυψιν τῶν στρατευμάτων ἐν περιπτώσει δράσεως. Οἱ Γάλλοι ἔχοντες ἀπόλυτον ἀνάγκην τῆς διακατοχῆς τῆς λοφοσειρᾶς ταύτης, πρὸς προκάλυψιν της Καμπανίας, ἐπετέθησαν πρὸς κατάληψίν της κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 17 Ἀπριλίου—20 Μαΐου 1917, ἡ δὲ διεξαχθεῖσα μάχη, ἀποτελοῦσα τὴν 4ην μάχην τῆς *Καμπανίας* (βλ. λ.), φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα *μάχη Μορονβιγιέ*.

Ἡ γαλλικὴ ἐπίθεσις ἐξώρμησε τὴν 17ην Ἀπριλίου 1917 διὰ μονάδων τινῶν τῆς 4ης γαλλικῆς στρατιᾶς, ἤτοι διὰ δύο σωμάτων στρατοῦ κατὰ μέ-

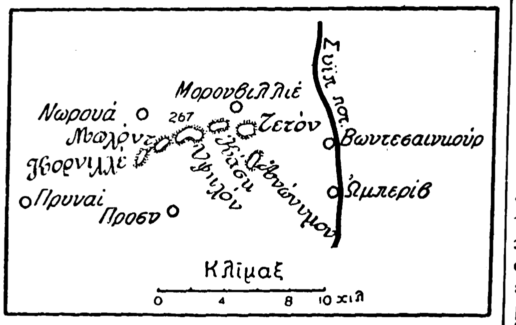


*Λοφοσειρὰ Μορονβιγιέ.*

τωπον καὶ διὰ μιᾶς μεραρχίας κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ πλευροῦ πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ χωρίου Ὠμπερὶβ (Auberive), ὑποστηριζομένων ὑπὸ 550 βαρέων πυροβόλων, δηλαδὴ ἐν ἀναλογίᾳ ἑνὸς βαρέος πυροβόλου ἀνὰ 25 περίπου μέτρα. Κατὰ τῶν γαλλικῶν δυνάμεων ἀντετάχθησαν 8 γερμανικαὶ μεραρχίαι, ἐξ ὧν 4 ἐν ἐφεδρείᾳ, ὑποστηριζόμεναι ὑπὸ 1500 παντὸς εἴδους πυροβόλων. Ἡ γαλλικὴ προχώρησις ἐξετελέσθη λίαν βραδέως, ἀνακοπτομένη ἑκάστοτε ὑπὸ γερμανικῶν ἀντεπιθέσεων· τὴν 20ὴν Ἀπριλίου, μετὰ ἀλληλοδιαδόχους καταλήψεις καὶ ἀνακαταλήψεις ἐκ μέρους τῶν ἀντιπάλων, κατώρθωσαν οἱ Γάλλοι νὰ καταλάβωσιν ἐξ ὁλοκλήρου τὰ ὑψώματα Τετὸν καὶ Ἀνώνυμον, ἐκ δὲ τῶν λοιπῶν τὰ νότια μόνον τμήματα αὐτῶν. Κατὰ τὸ ἐπακολουθῆσαν χρονικὸν διάστημα μέχρι τῆς 20ῆς Μαΐου οἱ Γάλλοι ἐγένοντο κύριοι ἐξ ὁλοκλήρου ἁπάσης τῆς λοφοσειρᾶς Μορονβιγιέ. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μορονβιλλιὲ** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μορονβιγιέ*.

**Μορόνι** (Moroni), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Ἰταλὸς ζωγράφος ἐκ Βρεσκίας (1520—1578), μαθητὴς τοῦ Μορέττο, θεωρούμενος ὡς εἷς ἐκ τῶν ἀρίστων προσωπογράφων τῆς Ἀναγεννήσεως. Τὰ πρόσωπα τῶν ἔργων του εἶναι καλῶς εἰργασμένα, μὲ ἔκφρασιν εὐγενῆ καὶ ἀγαθήν, ἤσκησαν δὲ σοβαρὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ πολλῶν μεγάλων καλλιτεχνῶν, ἐν οἷς καὶ τοῦ Τιτσιανοῦ. Κάλλιστα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἀνὴρ μελανειμονῶν» (1563), «Ὁ σοφὸς» (ἀμφότερα ἐν Φλωρεντίᾳ), «Προσωπογραφία ἀνδρὸς» (Μιλᾶνον), «Ὁ γηραιὸς εὐγενὴς» (Μπέργκαμο) κ. ἄ. Ὡς ἁγιογράφος ἐσημείωσε μικρὰν ἐπιτυχίαν, ὑστερήσας κατὰ πολὺ τοῦ διδασκάλου του. Χ. Δ.

**μορονόβεια** (ἡ) (Moronobea) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σταλαγμοφοριδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ἡ *μορονόβεια ἡ κοκκίνη* (Moronoobea coccinea), δένδρον φθάνον εἰς ὕψος 30 περίπου μέτρων μὲ φύλλα ἀντίθετα καὶ ἄνθη μεγάλα κατὰ καταληκτικὸν κῦμα διατεταγμένα. Τὸ εἶδος τοῦτο ἔχει ὡραιότατον σκληρὸν ξύλον, χρήσιμον εἰς τὴν ξυλοβιομηχανίαν, ἐκ δὲ τῶν ἐντομῶν, αἵτινες προξενοῦνται ἐπὶ τοῦ κορμοῦ του, ἐκκρίνεται κιτρίνη ρητινώδης οὐσία, χρήσιμος εἰς τὴν φαρμακευτικήν. Ἡ ρητίνη αὕτη ἐκτιθεμένη εἰς τὸν ἀέρα σκληρύνεται καὶ χρωματίζεται μελανή. Δ. Ν. Π.

**Μόρονομπου** (Moronobu), ***Χισκικάβα***. Ἰάπων ζωγράφος (1638—1714), θεωρούμενος ὡς ὁ δημιουργὸς τῆς ξυλογραφίας. Εἰργάσθη κυρίως μονόχρωμα διὰ μελάνης σχέδια, ἀπεικόνισε δὲ μετὰ μεγάλης ἀκριβείας καὶ καλαισθησίας σκηνὰς ἐκ τοῦ βίου τοῦ λαοῦ, ἐρωτικὰς παραστάσεις, ζῷα καὶ πτηνὰ κλπ. Τὰ ἔργα του προορίζονται κυρίως διὰ τὴν διακόσμησιν ριπιδίων καὶ λευκωμάτων. Καλλιτεχνικώτατα εἶναι τὰ ἑξῆς λευκώματα: «Περίεργος περίπατος εἰς Γιοσιβάρα» (1678), «Πανόραμα τῶν περιφημοτέρων τόπων τῆς Ἰαπωνίας», «Ἡ πηγὴ τοῦ ἔρωτος» καὶ τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Γυαμάτο νὸ Ὀχυοσέ», ἀληθὲς πανόραμα τῶν ἰαπωνικῶν ἠθῶν. Ἑκάστη εἰκὼν συνοδεύεται ὑπὸ ἐπεξηγήσεως, διατεταγμένης ἐν εἴδει πλαισίου. Τὰ καλύτερα ἐκ τῶν σχεδιασμάτων του εἶναι: «Ἡ παρέλασις ἀμαζόνων», «Κορεανὴ πρεσβεία», «Ἡ ἐπίσκεψις εἰς τὸν ναὸν τοῦ Κιγυομίζου» κ. ἄ. Χ. Δ.

**μοροξίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ ἀπατίτου μὲ χρῶμα κυανοπράσινον καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὸ Arendal. Γ. Β.

**Μορορὰν** (Mororan) *[Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς Ἰαπωνίας ἐν τῇ νήσῳ *Χοκάϊντο*, κείμενος ἐν τῷ κόλπῳ Μπουλκάν. Εἶναι ἀκραῖος σταθμὸς τῆς πρὸς τὴν Ἰβαμισάβα σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἀνοικτὸς εἰς τὸ εὐρωπαϊκὸν ἐμπόριον ἀπὸ τοῦ 1894. Εἰς γειτονικὴν πρὸς αὐτὸν περιοχὴν ὑπάρχουσιν ὀρυχεῖα γαιανθράκων. Κάτ. (1925) 50.040. Χ. Δ.

**μόρος** (ὁ)· μοῖρα, τύχη (ἐκ τοῦ *μείρομαι*).

**Μόρος** (More), ***Θωμᾶς***· βλ. *Μῶρος*.

**μορουΐνη** ἡ *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὀργανικὸν βασικὸν σῶμα τοῦ τύπου $C_{19}H_{27}N_3$, χαρακτηριστικὸν τοῦ μουρουνελαίου. Σ. Γ.

**μορουϊνικὸν *ὀξὺ*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὀργανικὸν ὀξὺ χαρακτηριστικὸν τοῦ μουρουνελαίου. Ἔχει τὸν τύπον $C_9H_{13}NO_3$. Σ. Γ.

**μόρρα, ἢ *μόρα*** (Morra). Λαϊκὸν παίγνιον, γνωστὸν ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος καὶ παιζόμενον σήμερον κυρίως ἐν Ἰταλίᾳ. Παίζεται ὑπὸ δύο παικτῶν, οἵτινες ἐγείροντες τὸν δεξιὸν γρόνθον των μέχρι τοῦ ὕψους τῆς κεφαλῆς των, καταβιβάζουν κατόπιν τοῦτον αἰφνιδίως καὶ ταυτοχρόνως, ἐκτείνοντες συνάμα ἀριθμόν τινα δακτύλων καὶ ἐκφωνοῦντες, ἕκαστος κατὰ τὴν ἔμπνευσίν του, ἀριθμόν τινα μὴ ὑπερβαίνοντα τὸν δέκα. Κερδίζει ἐκεῖνος, ὁ ὁποῖος θὰ ἐκφωνήσῃ ἀριθμὸν ἴσον πρὸς τὸ ἄθροισμα τῶν δακτύλων, τοὺς ὁποίους προέτειναν κατὰ τὴν στιγμὴν ἐκείνην ἀμφότεροι οἱ παῖκται. Εἰς περίπτωσιν ταυτοχρόνου ἐπιτυχίας καὶ τῶν δύο ἢ ἀποτυχίας καὶ τῶν δύο τὸ παίγνιον ἐπαναλαμβάνεται. Οἱ Ρωμαῖοι ἐκάλουν αὐτὸ «micare digitis». Ἐν Ἰταλίᾳ παίζεται σήμερον ὑπὸ τοῦ λαοῦ μετὰ ἀληθινοῦ πάθους, ἕνεκα δὲ τῶν φόνων, οἵτινες προκαλοῦνται ἐξ ἀφορμῆς αὐτοῦ, ἐψηφίσθη εἰδικὸς νόμος ἀπαγορεύων αὐτὸ καὶ ἐπιβάλλων δρακοντείους ποινὰς εἰς τοὺς παίκτας. Παίζεται ἐπίσης σήμερον καὶ ἐν Κίνᾳ, μεταξὺ τῶν νησιωτῶν τῶν νοτίων θαλασσῶν. Κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους ἐπαίζετο καὶ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων, ἐπὶ πολλῶν δὲ αἰγυπτιακῶν ἀγγείων εὑρίσκονται σχετικαὶ παραστάσεις. Ἐκ τῶν Αἰγυπτίων παρέλαβον τοῦτο καὶ οἱ Ἕλληνες, ἀλλ' ἀγνοεῖται τὸ ὄνομα τὸ ὁποῖον εἶχον δώσει εἰς αὐτό, καίτοι ἀναφέρονται τὰ ἀνάλογα «λάχμος», «κλῆρος διὰ δακτύλων» καὶ «δακτύλων ἐπάλλαξις». Τὸ παιγνίδιον τοῦτο ἀναπαρίσταται εἰς διάφορα μνημεῖα, καὶ κυρίως εἰς ἔγχρωμον ἀγγεῖον εὑρισκόμενον εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Βερολίνου καὶ εἰς ἕτερον εὑρισκόμενον ἐν τῇ συλλογῇ Λαμπὲρ τῶν Παρισίων. Ἐπίσης ἀναπαρίσταται ἐν ὡραίᾳ τοιχογραφίᾳ τοῦ μεγάρου Φαρνεζίνα τῆς Ρώμης. Ἐπειδὴ πρόκειται περὶ παιγνίου καθαρᾶς τύχης, οἱ παῖκται καταγίνονται συνήθως εἰς τὸ πῶς θὰ ἐξαπατήσωσι τὸν ἀντίπαλον, ἵνα παρουσιάσουν τὸν κατάλληλον ἀριθμὸν δακτύλων, ὁ ὁποῖος μετὰ τῶν προταθέντων δακτύλων τοῦ ἀντιπάλου νὰ ἔχῃ ἄθροισμα ἴσον πρὸς τὸν ἐμφανισθέντα ἀριθμόν. Ἕνεκα τούτου τὸ παίγνιον ἀπαιτεῖ μεγάλην προσοχὴν καὶ παρατηρητικότητα πρὸς ψυχολογίαν τοῦ ἀντιπάλου καὶ μάντευσιν τῶν προθέσεων αὐτοῦ. Ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ρώμῃ, πρὸς χαρακτηρισμὸν ἀνθρώπου ἀμέμπτου εὐθύτητος, ἐλέγετο ἡ παροιμία: «μετ' αὐτοῦ δύναταί τις νὰ παίζῃ μόρραν εἰς τὰ σκοτεινά». Ἡ παροιμία αὕτη, ἀναφερομένη καὶ ὑπὸ τοῦ Κικέρωνος, ἀποδεικνύει πόσον διαδεδομένον ἦτο τὸ παίγνιον τοῦτο κατὰ τὴν ἀρχαιότητα. Λόγῳ τῶν συμπλοκῶν, τὰς ὁποίας προεκάλει ἡ μόρρα, εἶχεν ἀπαγορευθῇ εἰς τὰς ἀγορὰς κατὰ τὸν Δ' μ. Χ. αἰῶνα. Μ. Δ. Β.

**Μορριζὸν** (Morrison). Ἀμερικανὸς ὀδοντίατρος, εἰσαγαγὼν κατὰ τὸ 1878 σύστημα κατασκευῆς μεταλλικῶν στεφανῶν, δι' ὧν ἀνασυνιστᾶται ὁ καταστραφεὶς φυσικὸς ὀδοὺς καὶ ἀποδίδεται πλήρως τὸ τέως σχῆμα ὡς καὶ ἡ λειτουργία αὐτοῦ. Αἱ χρυσαῖ στεφάναι Μορριζὸν μετὰ μικρῶν τροποποιήσεων εἶναι νῦν ἐν εὐρυτάτῃ χρήσει. Ν.Γ.Π.

**Μόρρις** (Morris), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος ποιητής, ζωγράφος καὶ κριτικὸς (1834—1896). Ἐξεπαιδεύθη ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης, ἐσπούδασε δὲ συστηματικῶς καὶ ζωγραφικήν, ἀλλὰ ταχέως ἐγκατέλιπε τὴν τέχνην ταύτην, ὅπως ἀφιερωθῇ εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Διεκρίθη ὡς ποιητής, ἤδη ἐκ τῆς πρώτης ποιητικῆς συλλογῆς του, διὰ τὴν κομψότητα καὶ ἁρμονίαν τῶν στίχων του. Ἰδίᾳ εἶναι γνωστὸς ὡς συγγραφεὺς τῶν ἔργων: «Ἡ ζωὴ καὶ ὁ θάνατος τοῦ Τζαίσον» (1867), «Ὁ ἔρως εἶναι ἀρκετὸς» (1873), «Σίγκουρντ Βόλσουγκ» (1877), «Ἔρχεται ἡ ἡμέρα» (1881) σοσιαλιστικὸς ὕμνος, «Ὁ οἶκος Βόλφιγκς» (1889), «Οἱ πρόποδες τῶν ὀρέων» (1890), «Τὰ ποιήματα στὸ δρόμο», «Τὸ δάσος μακριὰ ἀπὸ τὸν κόσμο» (1895). Ἐπίσης διεκρίθη καὶ ὡς μεταφραστὴς τῆς Αἰνειάδος (1877), τῆς Ὀδυσσείας (1887) καὶ λογοτεχνικῶν ἔργων ἐκ τῆς ἰσλανδικῆς. Ἐξ ἄλλου συνέβαλε μεγάλως εἰς τὴν κίνησιν, ἥτις ἀνεκαίνι-



Digitized by Google

σεν ἐν Ἀγγλίᾳ τὴν διακοσμητικὴν τέχνην. Πρὸς τοῦτο συνέταξε βαρυσήμαντον ἔργον: «Αἱ διακοσμητικαὶ τέχναι καὶ ἡ σχέσις αὐτῶν πρὸς τὴν σύγχρονον ζωὴν» (1878). Τῷ 1863 ἵδρυσεν ἐργοστάσιον ἀντικειμένων τέχνης, κατασκευαζομένων ἐπὶ τῇ βάσει ἰδικῶν του σχεδίων. Ὁ Μόρρις ἑλκυσθεὶς ὑπὸ τῶν σοσιαλιστικῶν θεωριῶν συνετέλεσεν εἰς τὴν ἵδρυσιν συλλόγου σοσιαλιστικοῦ-δημοκρατικοῦ καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐφημερίδος «Commonwealth». Α. Δ.

*Γουλιέλμος Μόρρις.*

**Μορριστάουν** (Morristown) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν τῇ Νέᾳ Ἱερσέῃ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὐΐππανυ, 35 χλμ. πρὸς Δ. τῆς Νιουέρκ, μετὰ τῆς ὁποίας συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον ἀναψυχῆς τῶν κατοίκων τῆς Νέας Ὑόρκης, εἰς τὰ περίχωρα δ' αὐτῆς κεῖται τὸ μεγαλύτερον τῶν ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις φρενοκομείων. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον ἐν Μορριστάουν ἤδρευε τὸ ἀρχηγεῖον τοῦ Οὐάσιγκτων. Κάτ. 12.500. Χ. Δ.

**Μορρόειον** *τρῆμα [Ἀνατομ.]*· βλ. *μεσοκοιλιακὸν* τρῆμα.

**μορρουόλη** (ἡ) (Morrhuol) *[Φαρμ.]*. Οὕτω καλεῖται ὑγρὸν λαμβανόμενον ἐκ τοῦ ἐλαίου τοῦ ἥπατος τοῦ ὀνίσκου, ὅπερ εἶναι σκοτεινῶς φαιὸν καὶ περιέχει ἰώδιον, θεῖον καὶ φωσφόρον. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 0.93 καὶ περιέχει 10—12 φορὰς μεγαλύτερον ποσὸν τῶν ἀνωτέρων οὐσιῶν ἢ τὸ ἔλαιον τοῦ ἥπατος τοῦ ὀνίσκου, τοῦ ὁποίου θεωρεῖται τοῦτο τὸ δραστικὸν συστατικόν. Χορηγεῖται εἰς καψάκια. Κ. Γ. Μ.

**Μὸρς** (Morse), ***Σαμουὴλ-Φίνλεϋ***. Ἀμερικανὸς ζωγράφος, εἰς τὸν ὁποῖον ὀφείλεται ἡ ἐπινόησις τοῦ πρώτου πρακτικῶς ἐφαρμοσίμου συστήματος ἠλεκτρικῆς τηλεγραφίας.

Ὁ Μόρς ἐγεννήθη εἰς Τσάρλεστον τῆς Μασσαχουσέτης τῷ 1791, μετὰ δὲ τὴν ἐγκύκλιον ἐκπαίδευσίν του αὐτόθι, μετέβη εἰς Λονδῖνον (1811) πρὸς σπουδὴν τῆς ζωγραφικῆς. Ἐπανελθὼν τῷ 1815 εἰς τὰς Ἡν. Πολιτείας, ἐγκατεστάθη διαδοχικῶς εἰς Βοστώνην, Τσάρλεστον, Οὐασιγκτῶνα καὶ Ν. Ὑόρκην, ἀσκῶν τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ζωγράφου. Ἀπέκτησεν ἰδίως ἱκανὴν φήμην ὡς προσωπογράφος καὶ ἵδρυσε τῷ 1824 τὴν ἐν Ν. Ὑόρκῃ Ἀκαδημίαν Ζωγραφικῆς, τῆς ὁποίας ὑπῆρξε καὶ ὁ πρῶτος πρόεδρος (1825-1841). Τῷ 1821 ἐταξίδευσεν ἐκ νέου εἰς Εὐρώπην, ὅπου τὰ ἐκτεθέντα ἔργα του ἐκρίθησαν εὐμενέστατα, θὰ ἔφθανε δὲ νὰ γίνῃ πιθανώτατα διάσημος καλλιτέχνης, ἂν ἐκ τυχαίας συμπτώσεως δὲν ἐτρέπετο πρὸς ἄλλην ὅλως κατεύθυνσιν, ἀπορροφήσασαν εἰτ μακρὸν καὶ ἐξ ὁλοκλήρου τὴν πνευματικήν του δυναμικότητα.

*Σαμουὴλ-Φίνλεϋ Μόρς.*

Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν ἐγκυκλίων αὐτοῦ σπουδῶν ὁ Μόρς ᾐσθάνετο ἰδιάζουσαν κλίσιν πρὸς τὴν φυσικήν, δὲν ἔπαυσε δὲ καὶ μετέπειτα νὰ παρακολουθῇ ἐρασιτεχνικῶς τὰς προόδους τῆς ἐπιστήμης ταύτης, εἰς τὴν ὁποίαν κατὰ τοὺς χρόνους ἀκριβῶς ἐκείνους ἤνοιγον νέους ὁρίζοντας αἱ ἐργασίαι τοῦ Βόλτα, τοῦ Ἀμπέρ, τοῦ Ἀραγώ, τοῦ Ἔρστεντ καὶ ἄλλων διασήμων σοφῶν. Ἐπιστρέφων τῷ 1832 ἐξ Εὐρώπης, ἐπὶ τοῦ ἀτμοπλοίου «Sully», εἶχε συνταξιδιώτην τὸν Ἀμερικανὸν ἐπιστήμονα δόκτορα Ζάκσον, ὅστις ἐν συνομιλίαις τὸν κατετόπισεν ἐπὶ τῶν προσφάτων τότε ἀνακαλύψεων τοῦ Ἔρστεντ (ἐπίδρασις τοῦ ἠλεκτρικοῦ ῥεύματος ἐπὶ τὴν μαγνητικὴν βελόνην) καὶ τῶν Ἀμπὲρ καὶ Ἀραγώ (ἠλεκτρομαγνήτισις τοῦ σιδήρου). Διαρκούσης τῆς συνομιλίας ταύτης ὁ Μόρς ἐνεπνεύσθη τὸ τηλεγραφικὸν σύστημα, τὸ φέρον τὸ ὄνομά του, ἀφωσιώθη δὲ ὁλοψύχως εἰς τὴν διαμόρφωσιν αὐτοῦ εὐθὺς ἅμα τῇ ἀφίξει του εἰς Νέαν Ὑόρκην. Μετὰ προσπαθείας τριῶν ἐτῶν, ἐπέτυχε τὴν πρώτην πειραματικὴν ἐφαρμογὴν τοῦ τηλεγράφου του, εἰς τὸ ἐργαστήριόν του ἐν πρώτοις (τῷ 1835), χρησιμοποιῶν ἀγωγὸν μήκους 1000 μέτρων, καὶ εἰς τὸ πανεπιστήμιον κατόπιν (τῷ 1837), ὅπου ἐπανέλαβε δημοσίᾳ τὰ πειράματά του ὑπὸ εὐρυτέραν ἔκτασιν καὶ μετὰ πλήρους ἐπιτυχίας. Λαβὼν τότε δίπλωμα εὑρεσιτεχνίας μετέβη τῷ 1838 εἰς Λονδῖνον καὶ Παρισίους πρὸς ἐπίδειξιν τοῦ τηλεγραφικοῦ του συστήματος, ὅπερ ἦτο ἀσυγκρίτως ἀνώτερον εἰς ἁπλότητα καὶ πρακτικότητα ὄχι μόνον ἀπὸ τὰ γενομένας ἐν τῷ μεταξὺ συναφεῖς ἐπινοήσεις τῶν Gauss καὶ Weber (Γοττίγγη, 1833), τοῦ Steinheil (Μόναχον, 1837) καὶ τῶν Cooke καὶ Weatstone (Λονδῖνον, 1837), ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τὰ μεταγενεστέρως ἐφευρεθέντα συστήματα τοῦ ἰδίου Weatstone (Ἀγγλία), τοῦ Breguet (Γαλλία) καὶ τῶν Siemens-Halske (Γερμανία). Τὰ πρῶτα ἐκ τῶν συστημάτων τούτων ἐβασίζοντο ἐπὶ τῶν ταλαντώσεων τῆς μαγνητικῆς βελόνης ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἠλεκτρικοῦ ῥεύματος, εἰς τὰ δεύτερα δὲ ἡ συνεννόησις ἐγίνετο δι' ἠλεκτρομαγνήτου μετακινοῦντος βαθμηδὸν τὸν δείκτην ἑνὸς κυκλικοῦ πλαισίου, ἐπὶ τῆς περιφερείας τοῦ ὁποίου ἦσαν ἀναγεγραμμένα τὰ ψηφία τοῦ ἀλφαβήτου. Εἰς τὰ πρῶτα ἡ παρακολούθησις τῶν μετακινήσεων τῆς βελόνης ἦτο καθ' ὑπερβολὴν κουραστικὴ καὶ πρακτικῶς ἀκατόρθωτος, εἰς δὲ τὰ δεύτερα ἦτο μεγάλη ἡ βραδύτης τῆς μεταβιβάσεως, διότι ἐχρειάζοντο μέχρις 25 ἐκπομπαὶ ῥεύματος δι' ἕκαστον γράμμα τοῦ ἀλφαβήτου. Ὁ Μὸρς ἀντιθέτως εἶχε τὴν ἔμπνευσιν νὰ χρησιμοποιήσῃ θαυμασίως ἁπλοῦν καὶ πρακτικὸν σύστημα συνθηματικῆς μεταβιβάσεως, εἰς τὸ ὁποῖον τὰ διάφορα γράμματα τοῦ ἀλφαβήτου (βλ. κατωτ. *Μὸρς ἀλφάβητον*) ἀπετελοῦντο διὰ συνδυασμοῦ ἠλεκτρικῶν ἐκπομπῶν βραχείας καὶ μακρᾶς διαρκείας. Ἑκάστη ἐκπομπὴ ἐμαγνήτιζεν ἐπὶ βραχὺ ἢ ἐπὶ μακρὸν χρονικὸν διάστημα (π. χ. ἐπὶ $1/_6$ ἢ ἐπὶ $3/_6$ τοῦ δευτερολέπτου) τὸν ἠλεκτρομαγνήτην, ὅστις εἵλκυε τὸν ὁπλισμὸν του ἐπὶ χρόνον ἀντίστοιχον πρὸς τὴν διάρκειαν ἑκάστης ἐκπομπῆς. Ἀπέμεινεν ἄρα νὰ καταστῇ δυνατόν, ὥστε αἱ μετακινήσεις αὗται τοῦ ὁπλισμοῦ τοῦ ἠλεκτρομαγνήτου νὰ ἐγγράφωνται ἐπὶ φύλλου χάρτου, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ὁ Μὸρς ἐπέτυχε κατὰ τρόπον ἐξαιρετικῶς ἁπλοῦν καὶ ἀσφαλῆ διὰ τοῦ δείκτου του (βλ. λ. *τηλεγραφία*). Κατὰ τὸ σύστημα τοῦτο, τέσσαρες μόνον ἐκπομπαὶ (βραχείας ἢ μακρᾶς διαρκείας), εἰς ποικίλους μεταξύ των συνδυασμούς, ἦσαν ἀρκεταὶ διὰ τὴν μεταβίβασιν τῶν διαφόρων γραμμάτων τοῦ ἀλφαβήτου. Ἐπὶ πλέον διὰ τὴν τηλεγραφικὴν μεταβίβασιν δὲν ἐχρειάζετο παρὰ εἷς καὶ μόνος ἠλεκτρικὸς ἀγωγός, πηγὴ δὲ ῥεύματος ἐλαχίστης σχετικῶς ἐντάσεως.

Κατὰ Μάρτιον τοῦ 1843, ὁπότε ὁ Μὸρς ἐξετέλεσε νέα πειράματα ὑποβρυχίου τηλεγραφικῆς μεταβιβάσεως ἐν τῷ λιμένι τῆς Νέας Ὑόρκης, τὸ ἀμερικανικὸν κογκρέσσον ἐψήφισε πρὸς ἐνίσχυσίν του χορήγημα 30.000 δολλαρίων. Ἀπὸ τοῦ ἑπομένου ἔτους (1844) ἡ Οὐάσιγκτων καὶ ἡ Βαλτιμόρη εἶχον συνδεθῆ διὰ τοῦ πρώτου πρὸς κοινὴν χρῆσιν ἠλεκτρικοῦ τηλεγράφου, ἐφεξῆς δὲ τὸ σύστημά του εἰσήχθη εἰς τὰ γερμανικὰ κράτη (τῷ 1851), εἰς τὴν Γαλλίαν (1856), ἐγκαταλείψασαν βαθμηδὸν τὸ προηγουμένως χρησιμοποιηθὲν αὐτόθι σύστημα Breguet, καὶ εἰς ἄλλας εὐρωπαϊκὰς χώρας, ἐν αἷς καὶ ἡ Ἑλλὰς (1859). Μόνον ἡ Ἀγγλία ἐξηκολούθησεν ἐμμένουσα ἐπὶ πολὺ ἀκόμη εἰς τὸν ἐλαττωματικὸν τηλέγραφον διὰ πλαισίου τοῦ Weatstone, μέχρις οὗ τὸν ἀντικατέστησε διὰ νεωτέρων ἀγγλικῶν καὶ πάλιν ἐπινοήσεων (διὰ τοῦ αὐτομάτου τηλεγράφου τοῦ ἰδίου Weatstone καὶ διὰ τοῦ «siphon recorder» τοῦ σὲρ William Thomson, περὶ ὧν βλ. ἐν λ. *τηλεγραφία*).

Ὁ Σαμουὴλ Μὸρς ἐτιμήθη ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων καὶ ἐπιστημονικῶν ὀργανώσεων ὅλου τοῦ κόσμου μὲ τὰς πλέον κολακευτικὰς διακρίσεις, τὸ δὲ συνελθὸν ἐν Παρισίοις (1858) διεθνὲς τηλεγραφικὸν συνέδριον ἐψήφισεν ὑπὲρ αὐτοῦ διὰ κοινῆς τῶν διαφόρων κρατῶν εἰσφορᾶς δῶρον 400.000 φράγκων «εἰς ἔνδειξιν εὐγνωμοσύνης». Ὁ ἐφευρέτης ἀπεσύρθη τότε εἰς μίαν ἔξοχὴν ἐπὶ τῶν ὄχθῶν τοῦ Οὔδσωνος, ὅπου ἀνέλαβε καὶ πάλιν τὸν σπηρά του ὡς ἐρασιτέχνης πλέον.

Εἰς τὸν Μόρς, ἀποθανόντα τῷ 1872, ἀνηγέρθη χάλκινος ἀνδριάς, διὰ δημοσίου ἐράνου, ἐν τῷ κεντρικῷ πάρκῳ τῆς Νέας Ὑόρκης. Γ. Ζ.

— **Μόρς, ἀλφάβητον** *[Τηλεγρ.]*. Ὀνομάζονται οὕτω ἐν τῷ συνόλῳ των οἱ συνθηματικοὶ συνδυασμοὶ βραχειῶν καὶ μακρῶν ἠλεκτρικῶν ἐκπομπῶν, ἐξ ὧν ἀποτελοῦνται τὰ ψηφία τοῦ ἀλφαβήτου, σημεῖα στίξεως κ.λ.π., κατὰ τὴν διὰ τοῦ συστήματος Μόρς γινομένην τηλεγραφικὴν συνεννόησιν. Αἱ βραχεῖαι ἐκπομπαὶ ἐπιφέρουν τὴν χάραξιν ἐλαχίστου μήκους γραμμῶν (στιγμῶν) ἐπὶ τῆς ἐκτυλισσομένης ὑπὸ τὸν δέκτην χαρτίνης ταινίας, αἱ δὲ μακραὶ ἐκπομπαὶ προκαλοῦν τὴν χάραξιν γραμμῶν μεγαλυτέρου μήκους. Οἱ διάφοροι συνδυασμοὶ τῶν στιγμῶν καὶ γραμμῶν τούτων εἰκονίζουσι τὰ διάφορα τοῦ ἀλφαβήτου γράμματα, τοὺς ἀριθμοὺς καὶ λοιπὰ σημεῖα.

Τὸ ἀλφάβητον Μόρς ἔχει, ὑπὸ τὴν παροῦσαν αὐτοῦ διαμόρφωσιν, ὡς ἀκολούθως:

*Γράμματα:*

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| α | a | ·— | ρ | r | ·—· |
| β | b | —··· | σ | s | ··· |
| γ | g | ——· | τ | t | — |
| δ | d | —·· | υ | y | —·—— |
| ε | e | · | φ | f | ··—· |
| ζ | z | ——·· | χ | ch | ———— |
| η | h | ···· | ψ | q | ——·— |
| ϑ | c | —·—· | ω | w | ·—— |
| ι | i | ·· | ηυ | v | ···— |
| κ | k | —·— | υι | j | ·——— |
| λ | l | ·—·· | ου | u | ··— |
| μ | m | —— | αι | ä | ·—·— |
| ν | n | —· | αυ | ü | ··—— |
| ξ | x | —··— | ευ | ö | ———· |
| ο | o | ——— | οι | | ———·· |
| π | p | ·——· | ει | | · ·· |

*Ἀριθμοί:*

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | ·———— | 6 | —···· |
| 2 | ··——— | 7 | ——··· |
| 3 | ···—— | 8 | ———·· |
| 4 | ····— | 9 | ————· |
| 5 | ····· | 0 | ————— |

Τὸ 0, πρὸς εὐκολίαν, διαβιβάζεται συνήθως ὡς ἑνιαία μακρὰ γραμμή: ———————. Εἰς δὲ τὰ δι' ἀριθμῶν συνθηματικὰ τηλεγραφήματα μεταβιβάζονται οὗτοι, διὰ τὸ ταχύτερον, ὡς ἀκολούθως:

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | ·— | 6 | —···· |
| 2 | ··— | 7 | ——··· |
| 3 | ···— | 8 | ———·· |
| 4 | ····— | 9 | ————· |
| 5 | ····· | 0 | ——————— |

*Σημεῖα στίξεως καὶ συνθηματικῆς συνεννοήσεως:*

| | | |
|---|---|---|
| Τελεία | (.) | ·· ·· ·· |
| Ἄνω τελεία | (·) | —·—·—· |
| Κόμμα | (,) | ·—·—·— |
| Δύο τελεῖαι | (:) | ———··· |
| Ἐρωτηματικὸν | (;) | ··——·· |
| Θαυμαστικὸν | (!) | ——··—— |
| Ἀπόστροφος | (') | ·————· |
| Παράγραφος | (§) | ·—·—·· |
| Ἑνωτικὸν σημεῖον | (-) | —····— |
| Κλασματικὴ γραμμὴ | (/) | —— ·—— —— |
| Παρένθεσις | (()) | —·——·— |
| Εἰσαγωγικὰ | («») | ·—··—· |
| Ὑπογράμμισις | | ··——·— |
| Διπλῆ γραμμὴ | (=) | —···— |
| Ἐνόησα | | ···—· |
| Διορθωτικὸν | | ············ |
| Σταυρὸς (τέλος μεταβιβάσεως) | | ·—·—· |
| Πρόσκλησις πρὸς μεταβίβασιν | | —·—·— |
| Περιμένετε | | ·—··· |
| Ἐπαναλάβατε | | ··——·· |
| Τέλος λήψεως | | ·—· ·—· ·—· |
| Σημεῖον ἐνάρξεως ἐργασίας | | —·—·— |

Τοῦ ἰδίου ὡς ἄνω ἀλφαβήτου Μόρς χρῆσις γίνεται εἰς τὸν ὀπτικὸν καὶ τὸν ἀσύρματον τηλέγραφον· εἰς δὲ τὰ τηλεγραφικὰ συστήματα τὰ βασιζόμενα ἐπὶ τῆς ἀλλαγῆς τῆς κατευθύνσεως τοῦ ῥεύματος (οἷον τὸ τοῦ «Siphon recorder» τοῦ William Thomson, τὸ χρησιμοποιούμενον ἐν Ἑλλάδι ὑπὸ τῆς ἑταιρείας Eastern) ἀντικαθίστανται ἁπλῶς αἱ βραχεῖαι καὶ μακραὶ ἐκπομπαὶ τῆς αὐτῆς φορᾶς δι' ἐκπομπῶν ἰσοχρόνων μὲν ἀλλ' ἀντιθέτου φορᾶς. Γ. Ζ.

**Μόρσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Εὐμοίρου τῆς ἐπαρχίας Ξάνθης τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 217. Χ. Δ.

**Μόρσαι** (Morsoe) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Δανίας εἰς τὸ φιὸρδ τοῦ Λίμ, ἐν Ἰουτλάντῃ. Ἐμβαδὸν 367 τ. χλμ., κάτ. 26.284. Εἶναι πεδινὴ καὶ εὔφορος, οἱ δὲ κάτοικοι αὐτῆς ἀσχολοῦνται εἰς τὴν γεωργίαν, κτηνοτροφίαν καὶ ἁλιείαν. Πρωτεύουσα εἶναι ἡ *Νικαίμπινγκ*. Θ. Κ.

**Μορσὰνσκ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Ταμπώφ, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Τσνά. Κάτ. 27.758. Ἔχει ἀνεπτυγμένην μεγάλην βιομηχανίαν καὶ κτηνοτροφίαν καὶ διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν. Θ. Β.

**μόρσιμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ὑπὸ τῆς μοίρας ὡρισμένος, μοιραῖος.

**Μορσίνη, *Νέα* καὶ *Παλαιὰ*** — *[Γεωγρ.]*. Δύο χωρία τῆς κοινότητος Εὐμοίρου τῆς ἐπαρχίας Ξάνθης τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) τοῦ πρώτου 122, τοῦ δευτέρου 324. Χ. Δ.

**Μόρσμπυ *νῆσοι*** (Moresby Islands) *[Γεωγρ.]*. Νησιωτικὸν ἀρχιπέλαγος τῆς Αὐστραλίας, κείμενον ἐγγύτατα τοῦ ΝΑ. ἄκρου τῆς Νέας Γουινέας (10° 39′ Β. πλάτ. καὶ 148°—149° Α. μῆκ. Γκρήνουιτς). Ἀνήκουσιν εἰς τὴν Βρεττανικὴν αὐτοκρατορίαν, ἔχουσι συνολικὴν ἔκτασιν 504 χλμ., ὁ δ' ἀριθμὸς αὐτῶν ἀνέρχεται εἰς 65 περίπου. Χ. Δ.

**μορταδέλλα** (ἡ) *[Βρωματ.]*. Ἰταλικῆς προελεύσεως ὄνομα (mortadella) δι' ἀλλᾶντα παρασκευαζόμενον ἐκ βοείου κρέατος, λαρδίου καὶ διαφόρων ἀρτυμάτων (πεπέρεως, κοριάνδρου κτλ.). Ἡ ὡς ἄνω παρασκευαζομένη κρεατομᾶζα τίθεται ἐντὸς κύστεων μόσχου ἢ χοίρου καὶ εἶτα βράζεται ἐλαφρῶς καὶ ὑποβάλλεται εἰς κάπνισιν. Σ. Γ.

**Μορτάρα** (Mortara) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Παβίας, κειμένη 33 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς πόλεως Παβίας, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς

Digitized by Google

γραμμῆς Νοβάρας-Ἀλεξανδρείας. Ἔχει γοτθικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου (1375), ἐν τῷ ὁποίῳ πλεῖστοι πίνακες μεγάλων ζωγράφων τῆς Ἰταλίας. Ἔχει μηχανουργεῖα καὶ πλεκτήρια, ἡ δὲ περιοχὴ αὐτῆς ἀποδίδει ἀξιόλογον παραγωγὴν ὀρύζης. Κάτ. 9.740. Τὸ ὄνομα αὐτῆς προέρχεται ἐκ τοῦ Mortis Ara (=βωμὸς τοῦ θανάτου), ὑπενθυμίζει δὲ τὰς σφαγὰς τῶν Λομβαρδῶν ὑπὸ τοῦ Καρλομάγνου (774 μ. Χ.). Τὴν 21ην Μαρτίου 1849 οἱ Αὐστριακοὶ ἐνίκησαν παρὰ τὴν Μορτάρα τὰ στρατεύματα τῶν Πεδεμοντίων. Χ. Δ.

**μορταρία** (ἡ)· δημοτ., περιληπτ., οἱ μόρτηδες ἐν συνόλῳ: «πλάκωσε ἡ μορταρία».

**Μόρτενσεν** (Mortensen), ***Θεόδωρος***. Δανὸς ζωολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ἀπὸ τοῦ 1917 διατελεῖ διευθυντὴς τοῦ ζῳολογικοῦ μουσείου τῆς Κοπεγχάγης, μετέσχε δὲ ἐπιστημονικῶν ἀποστολῶν εἰς Σιάμ, Δυτικὰς Ἰνδίας καὶ Εἰρηνικὸν Ὠκεανόν. Ἔγραψε «Περὶ ἐχινοδέρμων» (1927) καὶ διαφόρους μονογραφίας. Θ. Κ.

**Μορτὲρ** (Morter) *[Γεωγρ.]*. Δαλματικὴ νῆσος ἀνήκουσα εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν καὶ σχηματίζουσα μετὰ τῆς Δαλματικῆς ἀκτῆς, πρὸς ἣν ἑνοῦται διὰ γεφύρας, φερώνυμον ὅρμον (πλάτ. 43°46′ Β., μῆκ. 13° 38′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2774: Grossa island to Zironna channel). Τὸ μῆκός της εἶναι 6 μιλ., ἡ δὲ ἀκτογραμμή της παρουσιάζει πλείστας ὀδοντώσεις. Εἶναι γραφικωτάτη, κατάφυτος ἀπὸ ἐλαιῶνας καὶ ἀμπελῶνας. Κάτ. 2.500. Ἐν τῇ νήσῳ εὑρέθη ἀρχαῖον νεκροταφεῖον. Σ. Ε. Λ.

**μορτὴ** (ἡ)· τὸ μερίδιον τὸ ὁποῖον λαμβάνει ὁ ἰδιοκτήτης ἀγροῦ παρὰ τοῦ καλλιεργητοῦ κατὰ τὴν καλουμένην *ἐπίμορτον* καλλιέργειαν (βλ.λ.)· || κατ' ἄλλην ἐκδοχήν, τὸ μερίδιον τὸ ὁποῖον λαμβάνει ὁ καλλιεργητής.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. λ. *ἐπίμορτος* καλλιέργεια.

**μόρτης** (ὁ), θηλ. *μόρτισσα*, ὑποκ. *μορτάκι*· ἀγυιόπαις, ἀλάνης, μάγκας, χαμίνιον, γαβριᾶς.

**Μορτιγιὲ** (Mortillet), ***Ἀδριανός***. Σύγχρονος Γάλλος ἀνθρωπολόγος, υἱὸς τοῦ *Γαβριὴλ Μορτιγιέ*. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ πατρός του εἰς τὴν ἔκδοσιν καὶ συμπλήρωσιν τῶν κλασσικῶν προϊστορικῶν ἔργων αὐτοῦ, ἅτινα φέρουν εἰς πολλὰς ἐκδόσεις τὰ ὀνόματα ἀμφοτέρων. Ι. Γ. Κ.

— **Μορτιγιὲ** (Mortillet), ***Γαβριήλ***. Κορυφαῖος Γάλλος προϊστορικὸς (1821—1898), θεωρούμενος εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς προϊστορικῆς ἀνθρωπολογίας. Ἀρχαιολόγος ἐκ τῶν ἀρίστων, ἀφωσιώθη ἐνωρὶς εἰς τὴν νέαν τότε ἐπιστήμην τῆς προϊστορίας τῶν ἀνθρώπων καὶ τὴν ἔρευναν τῶν θαυμασίων ἰχνῶν τῶν προϊστορικῶν πολιτισμῶν, ἅτινα ἀνεκαλύπτοντο καθ' ἑκάστην ἐν Γαλλίᾳ. Ἐχρημάτισεν ἐπιμελητὴς τοῦ ἐν Ἁγίῳ Γερμανῷ μεγαλυτέρου προϊστορικοῦ μουσείου τῆς Γαλλίας, πρόεδρος τῆς Ἀνθρωπολογικῆς Ἑταιρείας τῶν Παρισίων κλπ., ἵνα δὲ καταστήσῃ γνωστὰς τὰς προσφάτους τότε ἀνακαλύψεις (Boucher-de-Perthes, Ed. Lartet κλπ.) καὶ συστηματοποιήσῃ τὴν προϊστορικὴν ἔρευναν, ἵδρυσε τὸ μηνιαῖον περιοδικὸν «Matériaux pour l'histoire positive et philosophique de l'homme» (1864)· ἐπὶ πλέον, πρὸς συντονισμὸν τῆς διεθνοῦς συνεργασίας, ἐπρότεινεν ἔν τινι συνεδρίῳ τῆς ἰταλικῆς φυσιοϊστορικῆς ἑταιρείας ἐν Spezia τὴν συγκρότησιν τῶν περιφήμων καταστάντων ἔκτοτε: «Διεθνῶν Συνεδρίων προϊστορικῆς ἀνθρωπολογίας καὶ ἀρχαιολογίας» (1865), τῶν ὁποίων νέα περίοδος ἤρχισε κατ' αὐτάς, διὰ τῆς ἑνώσεως μετὰ τοῦ διεθνοῦς ἰνστιτούτου Ἀνθρωπολογίας (1930).

Τῷ 1867 ὁ Μορτιγιὲ ἀνεκοίνωσεν ἐν τῇ διεθνεῖ ἐκθέσει τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1869 ἐδημοσίευσε τὴν νέαν «Διαίρεσιν τῆς προϊστορίας τοῦ ἀνθρώπου» (Classification des diverses périodes de l' âge de la pierre κλπ.). Βασιζόμενος ἐπὶ τῶν ἀνακαλύψεων καὶ μόνον τῶν μνημείων τῆς τέχνης, δηλαδὴ τῆς προόδου τῶν πολιτισμῶν οὓς συναντῶμεν εἰς τοὺς καθ' ἕκαστον προϊστορικοὺς σταθμούς, λαμβάνων ὑπ' ὄψει τοὺς κυριωτέρους ὡς τύπους καὶ συμπληρῶν τὴν ἁδρὰν διαίρεσιν τοῦ Δανοῦ Thomsen (λιθική, χαλκῆ, σιδηρᾶ), καὶ τὰς λοιπὰς τῶν παλαιοτέρων Ἄγγλων καὶ Γάλλων ἐπιστημόνων, ἔδωσεν ἀκριβῆ διαίρεσιν τῆς προϊστορίας, ἐκλέξας ὀνόματα ἐκ τῶν κυριωτέρων προϊστορικῶν σταθμῶν τῆς Γαλλίας, ἅτινα παραμένουν ἔκτοτε διεθνῶς παραδεδεγμένα. Ἐγκατελείφθη δὲ ἡ πρότερον ἰσχύουσα διαίρεσις ἐπὶ τῇ βάσει τῶν χαρακτηριστικωτέρων ζῴων (ἐποχὴ ἐλέφαντος παλαιοῦ, μαμμούθ κλπ.). Ἐκτὸς ἀπείρων μελετῶν ἐπὶ παντὸς προϊστορικοῦ θέματος, διακρίνονται τὰ κλασσικὰ ἔργα αὐτοῦ: «Musée préhistorique» (1881) καὶ «Le préhistorique» (1883), εἰς ἃ συνεκέντρωσεν ἐν συντόμῳ πᾶν ὅ,τι κατεῖχε τότε ἡ ἐπιστήμη μετὰ θαυμαστῆς ἐπιλογῆς καὶ μὲ ἐκλαϊκευτικὸν χαρακτῆρα. Τῷ 1885 ἐξελέγη ἀντικληρικὸς βουλευτὴς τῆς Saine-et-Oise. Ι. Γ. Κ.

**Μορτιὲ** (Mortier), ***Ἐδουάρδος-Ἀδόλφος-Καζεμὶρ-Ἰωσήφ***, *δοὺξ τοῦ Τρεβίζου*. Γάλλος στρατάρχης (1768—1835). Εἰσαχθεὶς εἰς τὸν στρατὸν ὡς ὑπολοχαγὸς (1791) καὶ διαπρέψας εἰς διαφόρους μάχας, προήχθη εἰς ὑποστράτηγον, τῷ δὲ 1799 εἰς στρατηγόν. Μετέσχεν εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Δουνάβεως καὶ τῆς Ἑλβετίας, κατέλαβε κατόπιν τὸ Ἀννόβερον καὶ μετὰ τὴν λαμπρὰν ταύτην ἐπιτυχίαν ὁ Ναπολέων Α' ὠνόμασεν αὐτὸν στρατάρχην. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Γερμανίας, ἡγούμενος σώματος στρατοῦ κατέλαβε (1806) τὸ Ἔσσε-Κάσσελ καὶ τὸ Ἀννόβερον. Νικήσας τοὺς Σουηδοὺς εἰς Γκρειφσβάλδ, Γρίμμεν καὶ Ἄλκαμ, κατέλαβεν ἅπασαν τὴν Πομμερανίαν. Τῷ 1807, πολεμήσας εἰς Φρεῖδλανδ ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τῆς Τρεβίζης. Ἀναλαβὼν εἶτα τὴν διοίκησιν τοῦ πέμπτου σώματος τοῦ στρατοῦ τῆς Ἱσπανίας, μετέσχε τῆς πολιορκίας τῆς Σαραγόσσης καὶ κατήγαγεν ἐπανειλημμένας νίκας κατὰ τῶν Ἱσπανῶν. Εὐθὺς κατόπιν μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Ρωσίας ἐπὶ κεφαλῆς νέας στρατιᾶς, κατὰ δὲ τὴν ὑποχώρησιν ἐπολέμησεν ἡρωϊκῶς εἰς Λούτζεν, Βαχάου, Λειψίαν καὶ Χανάου, μὲ τὰ λείψανα δὲ τοῦ στρατοῦ του ἠδυνήθη ν' ἀναχαιτίσῃ τοὺς ἐχθροὺς πρὸ τῶν Παρισίων. Τῷ 1816 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Πετρουπόλει. Μετασχὼν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1830, ἐγένετο πρωθυπουργὸς καὶ ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν. Ἀποσυρθεὶς τῆς πολιτικῆς ἐφονεύθη κατὰ τὴν ἐναντίον τοῦ Λουδοβίκου-Φιλίππου ἀπόπειραν τοῦ Φιέσκι. Θ. Β.

Ἐδουάρδος Μορτιέ.

**Μόρτιμερ** (Mortimer), ***Ρογῆρος***, *βαρῶνος τοῦ* ***Οὐΐγκμορ*** *καὶ κόμις τοῦ* ***Μάρς***. Ἄγγλος πολιτικὸς (1286—1330). Κάτοχος μεγάλης κτηματικῆς περιουσίας, ἤσκει τεραστίαν ἐπιρροὴν ἐν Ἀγγλίᾳ, τὴν ὁποίαν ἐκμεταλλευόμενος προεκάλει ἐξεγέρσεις ἐναντίον τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας καὶ διεξῆγε πολέμους ἐπικρατήσεως πρὸς τοὺς γείτονάς του. Βραδύτερον διετέλεσε, κατὰ τὰ ἔτη 1316—1321, ἀντιβασιλεὺς τῆς Ἰρλανδίας, ἐχρησιμοποίησε δὲ ὅλην τὴν ἰσχύν του διὰ νὰ καταπολεμήσῃ τὴν διαρκῶς αὐξάνουσαν δύναμιν τοῦ οἴκου τῶν Ντέσπενσερ. Ὁ βασιλεὺς ὅμως Ἐδουάρδος Β' συνετάχθη μετὰ τῶν ἀντιπάλων του καὶ τὸν ἐκήρυξαν ἐκτὸς νόμου. Κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα πόλεμον ὁ Μόρτιμερ ἡττηθεὶς συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη. Ἐπιτυχὼν ὅμως ν' ἀποδράσῃ, κατέφυγεν εἰς Γαλλίαν, ὅπου ἐγένετο εὐχαρίστως δεκτὸς ὑπὸ τοῦ βασιλέως Καρόλου Δ'. Ὅτε βραδύτερον ἡ Ἰσαβέλλα τῆς Γαλλίας, σύζυγος τοῦ Ἐδουάρδου Β', ἦλθεν εἰς Παρισίους (1325), συνηντήθη μετὰ τοῦ Μόρτιμερ καὶ συνῆψε μετ' αὐτοῦ ἐρωτικὰς σχέσεις. Λόγῳ ὅμως τοῦ ἐκσπάσαντος μεγάλου ἐν τῇ αὐλῇ σκανδάλου, ὁ Κάρολος Δ' ἠναγκάσθη ν' ἀποπέμψῃ αὐτοὺς ἐκ τῶν Παρισίων. Οἱ δύο ἐρωτευμένοι καταφυγόντες εἰς τὰς Κάτω Χώρας ἤρχισαν συνωμοτοῦντες ἐναντίον τοῦ Ἐδουάρδου, σχηματίσαντες δὲ στρατὸν διεπεραιώθησαν κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1326 εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου διεγείραντες ἐπανάστασιν ἐπέτυχον τὸν ἐκθρονισμὸν τοῦ Ἐδουάρδου Β' καὶ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάρρησιν τοῦ νεαροῦ υἱοῦ του Ἐδουάρδου Γ' (Ἰανουάριος 1327). Ὁ Μόρτιμερ κατέστη ἔκτοτε ὁ πραγματικὸς μονάρχης τῆς Ἀγγλίας. Ἐδολοφόνησε χάριν ἀσφαλείας τὸν ἔκπτωτον βασιλέα ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Μπέρκλεϋ καὶ ἐδίωξεν ἀπηνῶς τοὺς ἐχθρούς του, τῶν ὁποίων τὴν περιουσίαν διένειμεν εἰς τοὺς φίλους του. Ὁ αὐταρχισμὸς ὅμως καὶ ἡ ὑπεροψία του προεκάλεσαν τὴν δυσαρέσκειαν τῶν εὐγενῶν, ὅτε δέ, τὴν 4ην Μαΐου 1328, ὑπέγραψε τὴν προσβλητικὴν διὰ τὴν ἀγγλικὴν ὑπερηφάνειαν συνθήκην τοῦ Νόρθαμπτον, δι' ἧς ἀνεγνωρίζετο ὁ βασιλεὺς τῆς Σκωτίας Ροβέρτος Α', οἱ ἰσχυρότεροι βαρῶνοι ἐξηγέρθησαν φανερὰ ἐναντίον του. Ὁ Μόρτιμερ ἐπιτυχὼν νὰ ἐπιβληθῇ δὲν ἐδίστασε νὰ στείλῃ εἰς τὸ ἰκρίωμα αὐτὸν τὸν θεῖον τοῦ βασιλέως κόμιτα τοῦ Κέντ. Ἐπὶ τέλους ὁ βασιλεύς, βαρυνθεὶς τὴν ἐπίζημιον κηδεμονίαν του, εἰσέδυσε τὴν νύκτα τῆς 19ης Ὀκτωβρίου 1330 διὰ μυστικῆς διόδου εἰς τὸν πύργον τοῦ Νόττιγχαμ, ὅπου διέμενεν ὁ Μόρτιμερ, συνέλαβεν αὐτὸν αὐτοπροσώπως καί, παρ' ὅλας τὰς διαμαρτυρίας καὶ τὰς παρακλήσεις τῆς μητρός του, ἀπηγχόνισεν αὐτὸν ὡς τὸν κοινότερον τῶν κακοποιῶν, συγχρόνως δ' ἀνήγγειλεν εἰς τὸν λαὸν ὅτι ἀναλαμβάνει μόνος τὰς ἡνίας τῆς διοικήσεως. Χ. Δ.

**μορτίτης** (ὁ)· ὁ καλλιεργητὴς ἀλλοτρίων ἀγρῶν ἐπὶ μορτῇ, ἄλλως *ἐπίμορτος*.

**μορτιτικός, —ή, —όν**· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μορτίτην, ὁ τοῦ μορτίτου: «μορτιτικὸν σύστημα».

—**μορτιτικὸν** *σύστημα [Νομ.]*· βλ. λ. *ἐπίμορτος* καλλιέργεια.

**Μορτλαίηκ** (Mortlake) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Σώρρεϋ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Ταμέσεως, εἰς ἀπόστασιν 2 ½ χλμ. ἀπὸ τοῦ Ρίτσμοντ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι τὸ τέρμα τῶν μεγάλων ἐπὶ τοῦ Ταμέσεως λεμβοδρομικῶν ἀγώνων μεταξὺ τῶν πανεπιστημίων Ὀξφόρδης καὶ Κανταβριγίας. Ἦτο ὀνομαστὴ ἄλλοτε διὰ τὴν βιομηχανίαν τῶν ταπήτων της. Κάτ. 16.300. Χ. Δ.

**Μόρτμαν** (Mordtmann), ***Ἀνδρέας-Δαυΐδ***. Γερμανὸς διπλωμάτης καὶ ἀνατολιστὴς (1811—1879). Διαμείνας ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐπὶ πολλὰ ἔτη ὡς γραμματεὺς τῆς πρεσβείας τῶν Ἀνσεατικῶν πόλεων καὶ εἶτα ὡς ἐπιτετραμμένος, ἠσχολήθη εἰς τὴν μελέτην τῶν ἀνατολικῶν ζητημάτων, τὴν ἱστορίαν τοῦ Βυζαντίου καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν λεπτομερῆ ἱστορικὴν καὶ τοπογραφικὴν διευκρίνισιν τῶν περιπετειῶν τῆς πολιορκίας καὶ ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τοῦ Μωάμεθ. Πρὸς τοῦτο ἐδημοσίευσε, τῷ 1853, ἀξιόλογον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ πολιορκία καὶ ἅλωσις τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐν ἔτει 1453» καὶ ἐν παραρτήματι τὸ «Τοπογραφικὸν σχεδιάγραμμα τῆς Κωνσταντινουπόλεως». Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Περὶ τῶν σφραγίδων καὶ τῶν μολυβδοβούλλων τοῦ Βυζαντίου», «Βυζαντιναὶ σφραγῖδες ἐξ ὑάλου», «Ὁδηγὸς τῆς Κωνσταντινουπόλεως», «Μία γερμανικὴ πρεσβεία ἐν Κωνσταντινουπόλει», «Αἱ τελευταῖαι ἡμέραι τοῦ Βυζαντίου», «Ἡ Σταμπούλ καὶ οἱ νεώτεροι Τοῦρκοι» (1877), «Ἡ Ἀνατολία» (τελευταία ἔκδ. 1925). Διὰ τὸ ἔργον αὐτοῦ περὶ τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατηνάλωσεν ὁ Μόρτμαν δέκα ὁλόκληρα ἔτη μελετῶν καὶ ἐπιτοπίων ἐρευνῶν διὰ τὴν τοπογραφικὴν ἐξακρίβωσιν τῶν διαφόρων σημείων, ὅπου ἐσημειώθησαν αἱ κύριαι φάσεις τοῦ μακροῦ ἀγῶνος. Ὁ Κ. Παπαρρηγόπουλος κατατάσσει τὸν Μόρτμαν (ὃν ὀνομάζει Μορτμαννὸν) εἰς τοὺς ἐπισημοτέρους ἐκ τῶν νεωτέρων ἱστορικῶν τῆς ἁλώσεως, ἀποδέχεται δὲ ἐν πολλοῖς τὰς γνώμας αὐτοῦ, ἰδίως ὡς πρὸς δύναμιν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ καὶ τὴν ἀκριβῆ θέσιν, ὅπου ἐτάφη ὁ αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος. Ὁμοίως περὶ πολλοῦ ποιεῖται τὰς μαρτυρίας αὐτοῦ ὁ Σλουμπερζέ. Τὸ ἔργον τοῦτο τοῦ Μόρτμαν, γραφὲν μετὰ δικαιοσύνης καὶ ἀμεροληψίας, μετεφράσθη κατὰ πρῶτον εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἐν τῷ περιοδικῷ «Πανδώρα», τόμ. Γ', ὑπὸ τοῦ Κ. Ν. Κωστῆ, βραδύτερον δὲ ἐδημοσιεύθησαν ἰδιαιτέρως δύο ἄλλαι μεταφράσεις ὑπὸ Α. Βυζαντίου καὶ Α. Βαφειάδου.

— **Μόρτμαν** (Mordtmann), ***Ἰωάννης***. Γερμανὸς διπλωμάτης, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1852. Διατελέσας ἐπὶ μακρὸν γενικὸς πρόξενος τῆς Γερμανίας ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἠσχολήθη, κατὰ τὸ παράδειγμα τοῦ πατρός του, εἰς τὰ ἀνατολικὰ ζητήματα καὶ κυρίως τὰ ἀρχαιολογικά. Ἔγραψεν: «Ἐπιγραφαὶ ἐκ Βιθυνίας», «Ἐπιγραφαὶ ἐκ Νικομηδείας», «Συμβολαὶ εἰς τὴν ἐπιγραφικὴν» (2 τ.), «Συμβολαὶ εἰς τὴν μιναϊκὴν ἐπιγραφικὴν» (1897), ἔργον ἀναφερόμενον εἰς τὸν μιναϊκὸν νοτιοαραβικὸν πολιτισμόν. Θ. Κ.

**Μόρτο** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς Εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς τοῦ πρὸς τὸ Αἰγαῖον στομίου τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 40° 03′ Β., μῆκ. 26° 12′ ½ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles) ἀντικρύ-ζων, πρὸς Ν αὐτοῦ, τὸ Κοὺμ-Καλὲ καὶ διανοιγόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Σεντοὺλ Μπαχὲ καὶ Ἐσκὴ-Ἰσσαρλίκ. Ἀποτελεῖ ἀσφαλὲς ἀγκυροβόλιον ἀπηλλαγμένον τῆς ἐπιρροίας τῶν ρευμάτων. Εἶναι ὁ *Ἐλαιοῦς* τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

**Μόρτον** (Morton), ***Οὐΐλλιαμ - Θωμᾶς - Γκρῖν***. Ἀμερικανὸς ὀδοντίατρος ἐκ Βοστώνης (1819—1868). Οὗτος τὸ πρῶτον εἰσήγαγεν ἀπὸ τοῦ 1846 τὴν νάρκωσιν δι' αἰθέρος. Ο. Ρ.

— **Μόρτον** (Morton), ***Ριχάρδος***. Ἄγγλος ἰατρὸς (1635—1698). Θεολόγος κατ' ἀρχὰς ἐν Ὀξφόρδῃ, ἐσπούδασεν εἶτα τὴν ἰατρικήν. Ἀπέβη λαμπρὸς κλινικός, ἀνήκων εἰς τὴν Ἱπποκρατικὴν γραμμήν, καὶ εἰσήγαγε τὰς κλινικὰς μονογραφίας, αἵτινες λίαν συνετέλεσαν ἔκτοτε πρὸς σπουδὴν τῶν νόσων. Οὕτως ἔχομεν ἐξ αὐτοῦ τὸ διάσημον ἔργον «Phthisiologia seu exercitationes de phthisi» (libri III, 1689), περιέχον πλῆθος παρατηρήσεων χρησίμων πρὸς σπουδὴν τῆς φθίσεως. Ἐπίσης τὰ ἔργα αὐτοῦ «Pyretologia seu exercitationes de morbus universalibus acutis» (1692) καὶ «Pyretologia s. de febribus inflammatoris universalibus» (1694) περιέχουν λίαν ἐνδιαφερούσας γνώσεις περὶ πυρετοῦ, μολυσματικῶν καὶ φλεγμονωδῶν νόσων. Συνιστᾷ καὶ τὴν χρῆσιν τῶν φλοιῶν κίνας πρὸς καταπολέμησιν τοῦ πυρετοῦ. Ο. Ρ.

***Βὴξ τοῦ Μόρτον***. Οὕτω καθορίζεται παροξυσμὸς βηχός, προκαλούμενος ὑπὸ τοῦ γεύματος καὶ παρακολουθούμενος ὑπὸ ἐμέτων ἐκ τροφῶν. Παρατηρεῖται εἰς τὴν πνευμονικὴν φυματίασιν· καλεῖται δὲ καὶ *βὴξ ἐμετοπαραγωγός*.

***Τριὰς τοῦ Μόρτον***. Ὅρος ἀποδιδόμενος ἐνίοτε εἰς τὴν ὁμάδα τῶν τριῶν σημείων, τὰ ὁποῖα ὁ Μόρτον ἐθεώρει ὡς παθογνωμονικὰ τῆς πνευμονικῆς φθίσεως ἐν τῇ ἐνάρξει, ἤτοι: τὸν βῆχα, τὸν πυρετὸν καὶ τὴν ἀπίσχνανσιν. Μ. Ν. Κ.

Digitized by Google

**— Μόρτον** (Morton), ***Σαμουὴλ-Γεώργιος.*** Ἀμερικανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Φιλαδελφείᾳ (1799—1851). Διδάκτωρ τοῦ Ἐδιμβούργου (1824), ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν καὶ Γαλλίαν καὶ ἐγκατέστη ἐν Πενσυλβανίᾳ ὡς καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῷ κολλεγίῳ τῆς πόλεως ταύτης (1839—1843). Ἀπὸ τοῦ 1827 ἐδημοσίευσε σειρὰν γεωλογικῶν καὶ παλαιοντολογικῶν ἐργασιῶν, εἶτα δὲ ζῳολογικῶν καὶ ἰατρικῶν, συγγράψας μεταξὺ ἄλλων καὶ ἀνατομικὴν «An illustrated system of human anatomy, special, general and microscopic» (1839). Ἀλλ' ἡ σπουδαιοτέρα του ἐργασία εἶναι ἡ ἀναφερομένη εἰς τὴν ἐθνολογικὴν κρανιολογίαν: «Crania americana, or a comparative view of the skulls of various aboriginal nations of North and South-America etc.» (1838), «Crania Egyptiaca» (1844). Ἐν τῇ ἰατρικῇ περιέγραψε νευραλγίαν ἑδράζουσαν κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν 4ην μεταταρσο-φαλαγγιαίαν ἄρθρωσιν *(νόσος ἢ νευραλγία τοῦ Μόρτον),* καὶ εἰσήγαγε μέθοδον θεραπείας τῆς δισχιδοῦς ῥάχεως *(μέθοδος τοῦ Μόρτον),* διὰ κενώσεως ἐκ ταύτης ὑγροῦ 4—12 γραμμαρίων καὶ ἐνέσεως 2—4 γραμμαρίων τῆς ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φερομένης ἰωδιο-γλυκερινούχου διαλύσεως. Ο. Ρ.

***Νόσος ἢ ποὺς τοῦ Μόρτον*** βλ. λ. *μεταταρσαλγία.*

**Μόρυλλος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Μακεδονίας ἐπὶ τῆς Χαλκιδικῆς χερσονήσου, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. ΙΙΙ, 12, 35) παρὰ τὴν Ἀντιγόνειαν. Α. Θ. Σ.

**Μόρυχος.** Ἀθηναῖος τραγικὸς ποιητής, συχνότατα διασυρόμενος ὑπὸ τῶν κωμικῶν ποιητῶν, ἰδίως τοῦ Ἀριστοφάνους καὶ τοῦ Πλάτωνος, διὰ τὸν θηλοπρεπῆ χαρακτῆρά του καὶ τὸν τρυφηλόν του βίον. Εἰς αὐτὸν ἀναφέρεται ἡ παροιμιώδης φράσις «μωρότερος Μορύχου», καθὼς καὶ σύγγραμμά τι τοῦ Πολέμωνος «Περὶ τοῦ Μορύχου», μνημονευόμενον ὑπὸ τοῦ Ἀθηναίου. Ν. Α.

**Μὸρφ** (Morf). —1) ***Ἑρρῖκος.*** Ἑλβετὸς παιδαγωγὸς (1818—1899). Διευθυντὴς τοῦ ὀρφανοτροφείου καὶ καθηγητὴς τῆς ἱερατικῆς σχολῆς ἐν Βίντερτουρ, εἰργάσθη πρὸς διάδοσιν τῶν ἰδεῶν τοῦ Πεσταλότσι. Ἔγραψεν: «Ἐπὶ τῆς βιογραφίας τοῦ Πεσταλότσι», «Ἡ διδασκαλία τῆς γλώσσης ἐν τῷ δημοτικῷ σχολείῳ» (1857), «Ὁ Πεσταλότσι ὡς ἱδρυτὴς τῶν ἐκπαιδευτικῶν ἱδρυμάτων διὰ τοὺς πτωχούς», «32 ἔτη ἐκ τῆς ζωῆς ἑνὸς πατρὸς τῶν ὀρφανῶν».

—2) ***Ἑρρῖκος,*** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, Ἑλβετὸς ρωμανιστὴς φιλόλογος (1854—1921). Καθηγητὴς ἐν Βέρνῃ καὶ βραδύτερον ἐν Βερολίνῳ (1910—1921), ἠσχολήθη μὲ τὴν φιλολογίαν τῶν ρωμανικῶν γλωσσῶν. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς γαλλικῆς λογοτεχνίας κατὰ τὴν Ἀναγέννησιν» (δ' ἔκδ. 1914), «Ὁμαδικὴ ἐπισκόπησις τῶν ρωμανικῶν λογοτεχνιῶν» (1909). Ἀπὸ τοῦ 1903 ἐκδίδει τὸ «Ἀρχεῖον διὰ τὴν σπουδὴν τῶν νεωτέρων γλωσσῶν» καὶ ἀπὸ τοῦ 1909 «Συλλογὴν τῶν νεολατινικῶν κειμένων». Θ. Κ.

**μορφάζω·** κάμνω μορφασμούς, στραβομουτσουνιάζω συνήθως πρὸς ἐκδήλωσιν δυσαρεσκείας.

**μορφασμὸς** (ὁ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μορφάζειν, σύσπασις τῶν μυῶν τοῦ προσώπου ὡς ἐκδήλωσις δυσαρεσκείας, κοιν. *στραβομουτσούνιασμα.*

**μορφενόλη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.].* Ὀργανικὴ ἕνωσις τοῦ τύπου $C_{14}H_8O_2$, λαμβανομένη ἐκ τῆς *μορφίνης.* Εἶναι ἄχρουν κρυσταλλικὸν σῶμα τηκόμενον εἰς 145°. Διὰ διαλύσεως αὐτῆς εἰς νατρόρρυμα ἐμφανίζεται κίτρινον χρῶμα μετ' ἀνοικτοκυανοῦ φθορισμοῦ. Σ. Γ.

**Μορφεὺς** *[Μυθολ.].* Πρόσωπον τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μυθολογίας, εἷς ἐκ τῶν χιλίων υἱῶν τοῦ Ὕπνου. Ὡς ἀδελφοὶ τοῦ Μορφέως ἀναφέρονται ὁ Εἴκελος ἢ Φοβήτωρ καὶ ὁ Φάντασος. Ὁ Μορφεὺς ἐλογίζετο ὡς θεὸς τοῦ ὀνείρου, παρουσιαζόμενος δὲ εἰς τοὺς ὑπνώττοντας ἐλάμβανε τὴν μορφὴν καὶ τοὺς τρόπους παντὸς προσώπου. Οὗτος κατὰ διαταγὴν τῆς Ἥρας ἐστάλη ἵνα ἀναγγείλῃ εἰς τὴν Ἀλκυόνην τὸν ἐν ναυαγίῳ θάνατον τοῦ συζύγου της Κήϋκος. Παραστάσεις τοῦ Μορφέως σῴζονται πολλαὶ ἐπὶ ἀγγείων καὶ ἐγχαράκτων λίθων. Εἰκονίζεται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὡς γενειοφόρος καὶ μὲ πτέρυγας ἐλαφράς, δηλωτικὰς τῆς ἐλαφρότητος μετὰ τῆς ὁποίας ἐμφανίζεται. Μ. Σ. Μ.

**Μόρφη** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μοιρισάνη.* Κάτ. (1928) 314. Χ. Δ.

**μορφὴ** (ἡ)· τὸ σύνολον τῶν ἐξωτερικῶν γνωρισμάτων σώματός τινος, ἡ εἰκών, ἡ ὄψις: «ἡ μορφὴ τοῦ ἀνθρώπου,—τοῦ ζῴου,—τοῦ πλοίου» ‖ ἰδίᾳ, τὸ πρόσωπον τοῦ ἀνθρώπου: παροιμ. «οἵα ἡ μορφὴ τοιάδε καὶ ἡ ψυχή» ‖ καθόλου, τύπος, διάγραμμα: «ἡ μορφὴ τοῦ πολιτεύματος, — τῆς συμβάσεως, — τῆς ἐμπορικῆς ἐπιστολῆς κττ.» ‖ μεταφ., πᾶν ὅ,τι ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὸ περιεχόμενον, πρὸς τὴν ἐσωτερικὴν ἰδέαν, πρὸς τὴν ψυχήν: «πραγματεία ὡραίου περιεχομένου, ἀλλ' ἄνευ μορφῆς».

—*[Μιμ.]* Συνοψίζων τὴν πληθὺν τῶν μιμικῶν ἐκφράσεων τοῦ προσώπου, τῶν προκαλουμένων ὑπὸ διαφόρων ψυχικῶν καταστάσεων, ὁ Ὀλλανδὸς ζωγράφος Humbert de Superville δίδει τρία σχήματα (βλ. σχ.), εἰς τὰ ὁποῖα ἁπλαῖ γραμμαὶ τῶν

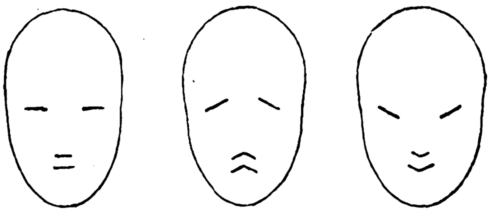

*Αἱ τρεῖς κύριαι μορφαὶ κατὰ τὸν Superville.*
[Ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τὰ δεξιά: Γαλήνης, θλίψεως, φαιδρότητος.]

βλεφαρικῶν τομῶν, τῆς ρινικῆς καὶ στοματικῆς κοιλότητος, ἀρκοῦν διὰ τῆς κατευθύνσεώς των νὰ δείξουν τὸ εἶδος τῆς ἐκφράσεως.

[Πρβλ. *Ed. Bugnion,* «Le mécanisme de l'expression».—*Π. Α. Καλογερίκου,* «Μιμική».] Π. Α. Κ.

—*[Φιλοσ.]* Βλ. λ. εἶδος.

—*[Μαθημ.]* *Μορφὴ* καλεῖται ἐν τῷ μαθηματικῷ λογισμῷ πᾶσα παράστασις συμβόλων αὐτὴ καθ' ἑαυτήν, ἀνεξαρτήτως τῶν συμβολιζομένων ἀριθμῶν. Ὅταν δηλαδὴ λέγωμεν ὅτι δύο τετραγωνικαὶ π. χ. μορφαί:

$$Ax^2 + By^2 + 2\Gamma xy$$
$$\text{καὶ}\quad A'\omega^2 + B'w^2 + 2\Gamma'\omega w$$

εἶναι αἱ αὐταί, νοοῦμεν ὅτι ἡ ἔκφρασίς των εἶναι ἡ αὐτὴ καὶ οὐχὶ τὰ συμβολιζόμενα ποσά. Ὁ λογισμὸς τῶν μορφῶν ἀποτελεῖ σπουδαιότατον μέρος τῆς ἀνωτέρας μαθηματικῆς καὶ γόνιμος εἰς ἀποτελέσματα, δι' ὧν ἐπιλύονται πληθὺς προβλημάτων. Ἐκ τῶν μορφῶν γίνεται μεγάλη χρῆσις τῶν τετραγωνικῶν τοιούτων, δηλαδὴ ἐκείνων, εἰς ἃς τὰ γράμματα τὰ συμβολίζοντα τὰς μεταβλητὰς εἶναι δευτέρου βαθμοῦ δυνάμεις τῶν ἀγνώστων ἀριθμῶν.

Τινὲς μορφαί, καίτοι σύγκεινται ἀπὸ γνωστοὺς μόνον ἀριθμούς, εἶναι ἀπροσδιόριστοι, τουτέστι κατὰ τὰς ἑκάστοτε περιπτώσεις τῶν προβλημάτων παριστῶσι διαφόρους ἀριθμούς· τοιαῦται κυρίως εἶναι αἱ μορφαὶ αἱ συντεθειμέναι ἀπὸ τὰ σύμβολα τοῦ μηδενὸς καὶ τοῦ ἀπείρου. Ἀπροσδιόριστοι μορφαὶ εἶναι, αἱ συνηθέστεραι, αἱ ἑξῆς:

$$\infty-\infty,\ \frac{0}{0},\ \frac{\infty}{\infty},\ 0^0,\ 1^\infty,\ \infty^0,$$

αἵτινες ἐπιδέχονται ἀπείρους ἑρμηνείας, ἤτοι δύναται ἑκάστη ἐξ αὐτῶν νὰ παριστᾷ οἱονδήποτε ἀριθμὸν πραγματικόν, $\left(\text{τὸν } 5 \text{ ἢ } \frac{1}{2} \text{ ἢ } 10 \text{ ἢ } \frac{1}{100} \text{ κλπ.}\right)$ Ἡ ἐλευθερία ὅμως αὕτη εἶναι διὰ τὰς τρεῖς πρώτας μορφάς· ἐνῷ διὰ τὰς δύο τελευταίας: $1^\infty$ καὶ $\infty^0$ ὑπάρχει ὁ περιορισμὸς ὅτι παριστῶσιν ἀριθμοὺς μεγαλυτέρους, ἢ καὶ ἴσους, τῆς μονάδος, καὶ τέλος διὰ τὴν μορφὴν $0^0$ ἔχομεν τὸν περιορισμὸν ὅτι ἐὰν παριστᾷ ἀριθμὸν (διότι ἐνδέχεται, κατὰ τὰ προβλήματα, νὰ μὴ παριστᾷ τι), μόνον τὴν 1 δύναται νὰ παραστήσῃ.

Τέλος ὑπάρχουσι μορφαὶ μὴ ἔχουσαι ἔννοιάν τινα, π. χ.

$$(-5)^{\sqrt{2}}$$

δηλαδὴ δὲν δυνάμεθα νὰ ὑψώσωμεν ἀρνητικὸν ἀριθμὸν εἰς δύναμιν μὲ ἀσύμμετρον ἐκθέτην. Ν. Γ.

**—μορφὴ *βλαστήσεως*** (ἡ) *[Βοτ.].* Καλεῖται οὕτω τὸ φαινόμενον, καθ' ὃ διάφορα φυτὰ εἰς διαφόρους οἰκογενείας καὶ γένη ὑπαγόμενα παρουσιάζουσιν ὁμοίαν ἐξωτερικὴν διαμόρφωσιν, ὀφειλομένην εἰς τὰς αὐτὰς συνθήκας τοῦ περιβάλλοντος ὑφ' ἃς ζῶσιν. Δ. Ν. Π.

**— μορφὴ *κακοήθης*** *[Ἰατρ.]·* βλ. λ. *κακοήθης μορφή.*

**Μόρφι** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Σπαθαραίων (Σπαθαρατίου) τῆς ἐπαρχίας Μαργαριτίου τοῦ νομοῦ Πρεβέζης. Κάτ. (1928) 111. Χ. Δ.

**μορφίδαι** (οἱ) (Morphidae) *[Ζῳολ.].* Οἰκογένεια ἐντόμων λεπιδοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἡμεροβίων,* περιλαμβάνουσα γένη τινὰ ψυχῶν ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς καὶ τροπικὰς χώρας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**μορφίνη** (ἡ). Τὸ κυριώτερον ἀλκαλοειδὲς τοῦ *ὀπίου.* Ἔχει τὸν τύπον $C_{17}H_{17}NO(OH)_2$, κρυσταλλοῦται μεθ' ἑνὸς μορίου ὕδατος εἰς πρίσματα ἢ βελόνας, τήκεται ὑπὸ ἀποσύνθεσιν εἰς 230, εἶναι ὀλίγον διαλυτὴ εἰς τὸ βράζον ὕδωρ καὶ λίαν δυσδιάλυτος εἰς τὸ ψυχρόν. Εἶναι δηλητηριώδης. Χρησιμοποιεῖται ὑπὸ τὴν μορφὴν τῶν ἁλάτων αὐτῆς καὶ δὴ τοῦ ὑδροχλωρικοῦ ὡς ναρκωτικὸν καὶ παυσίπονον. Σ. Γ.

—*[Ἐγκυκλ.]* Ἡ ***μορφίνη*** ἀνεκαλύφθη τῷ 1804 ὑπὸ τοῦ Seguin, ἠρευνήθη δὲ τῷ 1816 ὑπὸ τοῦ Sertürner. Ἤδη ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ὁ Boyle ἀνέφερε τὴν μορφίνην ὡς Magisterium opii. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν χορηγεῖται ἡ μορφίνη ὡς φάρμακον διεγερτικόν, ὑπνωτικὸν καὶ καταπραϋντικόν. Κυρίως ἀντὶ τῆς βάσεως ἀναγράφονται τὰ ἅλατα τῆς μορφίνης καὶ μάλιστα τὸ μεθ' ὑδροχλωρίου. Ἡ μορφίνη δρᾷ ἐπὶ τοῦ κεντρικοῦ κυρίως συστήματος ὡς κατ' ἐξοχὴν ναρκωτικὸν ἐπὶ τὰ κέντρα τοῦ αἰσθησιακοῦ ἄλγους καὶ τὸ ἀναπνευστικόν. Κατὰ τὸ στάδιον τῆς διεγέρσεως ἐπιτείνει τὰς ἀνακλαστικὰς καὶ ἐνορμητικὰς τάσεις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ καὶ τοῦ ἐγκεφάλου. Ἐπὶ μικρῶν δόσεων μορφίνης οὐδεμία ἀλλοίωσις τῆς ἀναπνοῆς ἐπέρχεται, μείζονες ὅμως δόσεις καθιστῶσι ταύτην βραδυτέραν καὶ ἀσθενεστέραν, εἰς δόσεις δὲ δηλητηριώδεις διακόπτεται ἡ ἀναπνοὴ ἐνίοτε ἐπὶ 5″, 10″ καὶ 20″. Ἡ λειτουργία τῆς καρδίας διὰ τῶν μικρῶν δόσεων μορφίνης ἐπιταχύνεται, ἐπὶ μεγάλων δὲ δόσεων ἐπιβραδύνεται. Ὁμοίως ἡ θερμοκρασία διὰ τῶν μικρῶν δόσεων ἐπαυξάνεται, ἐνῷ διὰ τῶν μεγάλων δόσεων μειοῦται, ὅταν δὲ αἱ δόσεις εἶναι δηλητηριώδεις καταπίπτει ἀποτόμως. Ἐπὶ τοῦ πεπτικοῦ συστήματος αἱ μικραὶ δόσεις προκαλοῦν παροδικὴν ἐπαύξησιν τῆς ἐκκρίσεως τοῦ σιέλου, ἐνῷ αἱ μεγάλαι ἐπιφέρουν ξηρασίαν τοῦ στόματος. Γενικῶς διὰ τῶν μεγάλων δόσεων ἡ πέψις ἐπιβραδύνεται. Ὅλαι αἱ ἐκκρίσεις, πλὴν τῆς τοῦ ἱδρῶτος, διὰ τῶν μεγάλων δόσεων μορφίνης μειοῦνται, σημαντικώτερον δὲ ὅλων μειοῦται ἡ ἔκκρισις τῶν οὔρων. Διὰ τῶν ηὐξημένων δόσεων προκαλοῦνται συνήθως δηλητηριάσεις θανατηφόροι, τῶν ὁποίων προηγεῖται φρενικὴ διέγερσις, καρηβαρία, ἴλιγγοι, ξηρασία τοῦ στόματος καὶ τοῦ δέρματος, ναυτίαι, ἔμετοι, ἐπίμονοι δυσκοιλιότητες, ψευδαισθησίαι, συσπάσεις μετὰ πλήρους ἀναχαιτίσεως τῶν καρδιακῶν λειτουργιῶν, ὑπεραισθησία καὶ ἱδρῶτες, ὑπνηλία, κατάστασις κωματώδης, θάνατος. Ἡ ἀπορρόφησις τῆς μορφίνης γίνεται εὐχερῶς δι' ὅλων τῶν ὁδῶν. Βραδύτερον ἀπορροφεῖται ὑπὸ τῶν βλεννογόνων οὓς καὶ ἐρεθίζει, εὐχερέστερον δὲ ἐνδοφλεβίως καὶ ὑποδορίως. Φερομένη ἐπὶ τοῦ δέρματος παρ' οὗ ἀφῃρέθη ἡ ἐπιδερμὶς προκαλεῖ τοπικῶς δυσάρεστον αἴσθημα νύξεως καὶ εἶτα ἀναισθησίαν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον τελείαν. Ὁπωσδήποτε καὶ ἂν εἰσέλθῃ εἰς τὸν ὀργανισμὸν ἡ μορφίνη ἀποβάλλεται βραδύτατα ἐξ αὐτοῦ καὶ ἀφοῦ ὑποστῇ σειρὰν μεταβολῶν, μεταβαλλομένη εἰς *ὀξυδιμορφίνην* ($C_{34}H_{36}N_2O_6 + H_2O$). Μετὰ δώδεκα ὥρας περίπου ἀποβάλλεται μερικῶς ὡς ὀξυδιμορφίνη διὰ τῶν οὔρων ἢ τῶν ἐμεσμάτων. Ἐνίοτε ἀνευρίσκεται εἰς τὸν ἐγκέφαλον τὸ ἧπαρ, τοὺς νεφροὺς τῶν ἀτόμων τῶν δηλητηριασθέντων διὰ τοῦ ἀλκαλοειδοῦς τούτου. Ἡ μορφίνη δρᾷ ὡς ἀναλγητικόν, προκαλοῦσα ἐγκεφαλικὴν ὑπεραιμίαν καὶ εἶτα παράλυσιν τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ὑποβιβάζει δὲ τὴν πίεσιν τοῦ αἵματος διευρύνουσα τὰ περιφερικὰ ἀγγεῖα. Συνεπείᾳ τῆς ἐπιβραδύνσεως τῆς πεπτικῆς λειτουργίας, τὴν ὁποίαν προκαλεῖ, ἐπιφέρει ἐπιμόνους δυσκοιλιότητας. Παραγγελλομένη ἐπί τινα καιρὸν προκαλεῖ ἐθισμὸν πρὸς αὐτήν, λόγῳ τοῦ ὅτι ἐπιφέρει εὐχάριστον περίοδον διεγέρσεως, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἔντονον καὶ ἡδονικήν. Δηλητηριάσεις διὰ μορφίνης δυνατὸν νὰ ἐπέλθωσιν ἀπὸ 0,05—0,06 γρ., θάνατος δὲ ἀπὸ 0,1—0,2 γρ.

Ἐξωτερικῶς χορηγεῖται ἡ μορφίνη καὶ κατὰ προτίμησιν τὰ ἅλατά της, ὡς μᾶλλον διαλυτά, ὡς φάρμακον ἀναισθητικὸν καὶ παυσίπονον εἰς τὴν θεραπείαν τῶν πληγῶν, ἐπὶ ὀφθαλμιῶν, νευραλγιῶν, ὀδονταλγιῶν (μετὰ αἰθερίου ἐλαίου καρυοφύλλων φερομένη εἰς τὴν κοιλότητα τοῦ ὀδόντος) ἀλγουσῶν αἱμορροΐδων κλπ. Εἰς ὑποδορίους ἐνέσεις ἀνεγράφη ἐπὶ νευραλγιῶν, ἡμικρανιῶν, προσωπαλγιῶν, μαστωδυνιῶν καὶ κατὰ τοῦ ζωστῆρος ἕρπητος. Ἐσωτερικῶς ἀναγράφεται ὑπὸ τὴν μορφὴν τῶν ἁλάτων αὐτῆς ὡς ὑπνωτικὸν καὶ καταπραϋντικὸν ἐπὶ νευρικῶν ἀϋπνιῶν, ἐκ βηχός, ἐξ ἐκζεματικῶν κνησμῶν, ἐκ μανίας, μελαγχολίας, ὡς καὶ ἐκ τῆς παραφροσύνης τῶν οἰνοποτῶν. Ἐπίσης ἀνεγράφη κατὰ τῶν ἐκ μολύβδου κωλικῶν, τοῦ εἰλεοῦ, τῆς περιτονίτιδος, τῆς δυσεντερίας καὶ τῆς χολέρας. Ἀσύμβατα τῆς μορφίνης εἶναι: τὸ ὕδωρ τῆς δαφνοκεράσου, ὅπερ σχηματίζει μετ' αὐτῆς, σὺν τῷ χρόνῳ, κυανιοῦχον μορφίνην ἀδιάλυτον, τὰ γλισχρασματώδη, ἅτινα μετατρέπουν τὴν μορφίνην εἰς ὀξυδιμορφίνην, τὰ ἰωδιοῦχα, τὰ σιδηροῦχα, αἱ δεψικαὶ οὐσίαι, τὰ ἀλκάλια, τὸ ἀσβέστιον ὕδωρ, τὰ ἀμμωνιακὰ ἅλατα, αἱ ἑνώσεις τοῦ ἀρσενικοῦ, τοῦ ἀργύρου, τοῦ χαλκοῦ, τοῦ μολύβδου κλπ. Ἐπὶ δηλητηριάσεων διὰ μορφίνης φέρεται πάγος εἰς τὴν κεφαλήν, εἰς τὰς χεῖρας δὲ καὶ τοὺς πόδας θερμὰ ἐπιθέματα, συναπισμοί, γίνονται πλύσεις μὲ ὕδωρ περιέχον ὄξος, χορηγεῖται καφές, καφεΐνη, ἀναληπτικά, θειικὴ ἀτροπίνη ὑποδορίως, ὑπερμαγγανικάλιον ὑποδορίως καὶ ἐσωτερικῶς. Εἰς τὴν κτηνιατρικὴν ἡ μορφίνη χορηγεῖται ὡς φάρμακον καταπραϋντικὸν διὰ τοὺς ἵππους. Ἐκ τῶν ἁλάτων τῆς μορφίνης, ἅτινα καὶ ἰδίᾳ εὐχρηστοῦν εἰς τὴν θεραπευτικήν, τὸ κυριώτερον εἶναι:

*Ὑδροχλωρικὴ μορφίνη* (Morphinum hydrochloricum). Τὸ ἅλας τοῦτο, ὁσάκις ζητεῖται νὰ ἀποφευχθῇ ἡ ἀναγραφὴ τῆς λέξεως μορφίνη εἰς τὰς ἰατρικὰς

Digitized by Google

συνταγάς, γράφεται ὡς Meconium hydrochloricum ἢ ὡς Laudanum hydrochloricum. Ἀποτελεῖ λευκὰς κρυσταλλικὰς βελόνας ἢ κυβοειδῆ τεμάχια λίαν πικρᾶς γεύσεως, διαλύεται εἰς 25 μ. ὕδατος καὶ 50 μ. ἀλκοόλης. Ἐνδείκνυται ἐπὶ βρογχικοῦ ἄσθματος, ἐπὶ ξηροῦ ἢ μετὰ σπασμῶν βηχός, δυσπνοίας, εἰς τὴν ψυχιατρικὴν καὶ γενικῶς ὅπου εἴδομεν ὅτι ἀναγράφεται ἡ μορφίνη.

*Ὀξικὴ μορφίνη* (Morphinum aceticum)

$$C_{17}H_{19}NO_3C_2H_4O_2+3H_2O.$$

Κόνις κιτρινωπή, διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν γλυκερίνην. Τὸ ἅλας τοῦτο ἦτο ἄλλοτε τὸ κυρίως χρησιμοποιούμενον ἅλας τῆς μορφίνης. Χρησιμοποιεῖται ὅπου καὶ ἡ ὑδροχλωρικὴ μορφίνη.

*Μηκωνικὴ μορφίνη*. Ὡς τοιαύτη ἀπαντᾷ ἡ μορφίνη εἰς τὸ ὄπιον. Εἶναι κρυσταλλικὴ λευκοκιτρινωπὴ κόνις.

*Ἐλαϊκὴ μορφίνη* (Morphinum oleinicum solutum). Φέρεται ὡς διάλυμα περιέχον 20 % μορφίνης, ὑγρὸν ἐλαιῶδες, φαιόν, διαλυτὸν εἰς τὴν ἀλκοόλην. Ἐνδείκνυται διὰ τὰς περιστάσεις ἐκείνας, ὅπου ἀναγράφεται ἡ μορφίνη εἰς χρίσματα.

*Θειικὴ μορφίνη*. Λευκαὶ βελόναι διαλυταὶ εἰς ὕδωρ χλιαρόν. Τὸ ἅλας τοῦτο ἀναγράφεται ἐκλεκτικῶς εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας ἀντὶ τῆς ὑδροχλωρικῆς μορφίνης.

*Βαλεριανικὴ μορφίνη* ($C_{17}H_{19}NO_3 . C_5H_{10}O_2$). Ἄχροοι κρύσταλλοι διαλυτοὶ εἰς τὸ ὕδωρ.

Ὅλα τὰ προαναφερθέντα ἅλατα τῆς μορφίνης χρησιμοποιοῦνται καὶ χορηγοῦνται εἰς τὰς αὐτὰς δόσεις, ὡς καὶ ἡ καθαρὰ μορφίνη. Κ. Γ. Μ.

**μορφίνη** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐνιαχοῦ τῆς Ἑλλάδος τοῦ φυτοῦ *μήκων ὁ ὑπνοποιός*.

**μορφινίζω**· δίδω μορφίνην, ναρκῶ διὰ μορφίνης· || παθ. μετχ. *μορφινισμένος*· ὁ ναρκωθεὶς διὰ μορφίνης, ὁ εὑρισκόμενος ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς μορφίνης.

**μορφινικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μορφίνην, ὁ τῆς μορφίνης: «μορφινικὸν ἅλας».

**μορφινισμὸς** (ὁ). Καλεῖται οὕτω ἡ χρονία διὰ μορφίνης δηλητηρίασις. Ὁ μορφινισμὸς παρατηρεῖται ἐπὶ τῶν μορφινομανῶν, διότι οὐδαμοῦ γίνεται χρονία χρῆσις τῆς μορφίνης τοιαύτη, ὥστε νὰ προκαλέσῃ μορφινισμόν. Τὰ φαινόμενα τοῦ μορφινισμοῦ διακρίνομεν εἰς: 1) *σωματικά*, εἰς ἃ περιλαμβάνονται ἡ καχεξία καὶ ἡ προϊοῦσα ἀναιμία, ἃς ἐπιτείνει ἡ γένεσις ἀποστημάτων, ἂν ἡ χρῆσις γίνεται δι' ἐνέσεων, ἄγουσαι εἰς φυματίασιν καὶ θάνατον, μυϊκὴ ἀτονία καὶ ἀδυναμία, ἐλάττωσις ἀνακλάσεων, δυσουρία ἀπότοκος τούτου, γενετήσιος ἀνικανότης, βαθμηδὸν καθισταμένη ὁλοσχερής, τρόμος τῶν χειρῶν καὶ ἀτομικὸς τῶν δακτύλων, ἀνεπάρκεια ἥπατος, ἔντονος ὠχρότης τοῦ προσώπου· καὶ 2) εἰς *ψυχικά*, ἅτινα διακρίνονται περαιτέρω εἰς τὰς ἁπλᾶς τοῦ χαρακτῆρος μεταβολάς, καὶ εἰς τὰ ἀποτελοῦντα πλήρη ψυχικὴν συνδρομήν. Εἰς τὰ πρῶτα ὑπάγονται τὸ εὐμετάβολον τοῦ χαρακτῆρος, ἀναλόγως τῆς ἐπαρκείας τῆς ληφθείσης ποσότητος, ἡ ἀνισορροπία τοῦ αὐτονόμου συστήματος, ἡ ἐλάττωσις τῆς βουλήσεως καὶ τῆς ἐνεργητικότητος τοῦ ἀτόμου μέχρι πλήρους ἀδρανείας σωματικῆς καὶ ψυχικῆς, ὑπνηλία, ὕπνος διακοπτόμενος ὑπὸ ὀνείρων καὶ ἐφιαλτῶν, καὶ διαρκὴς ἀσχολία πρὸς ἀνεύρεσιν τοῦ φαρμάκου, ἀδιαφορία δὲ διὰ πᾶν ἄλλο, μέχρι τελείας καταργήσεως τῶν ἠθικῶν τοῦ ἀτόμου ὑποχρεώσεων. Ἐκτὸς ὅμως τούτων ἅτινα παρατηροῦνται ἐφ' ὅλων τῶν μορφινομανῶν, τινὲς αὐτῶν παρουσιάζουσι καὶ ἀληθεῖς ψυχικὰς συνδρομάς, ὡς παροδικὴν μελαγχολίαν ἢ σύγχυσιν διανοητικὴν ἢ ἄνοιαν μετὰ καχεξίας (démence cachectique). Πάντως ἡ ἀπόληξις εἰς ψυχοπάθειαν εἶναι σπανιωτέρα ἀπὸ πᾶν ἄλλο ἡδονιστικὸν φάρμακον, ἴσως διότι συντελεῖ καὶ ὁ πρώϊμος θάνατος ἐκ τῆς προϊούσης καχεξίας.

Ἡ πρόγνωσις εἶναι βαρεῖα. Ἡ θεραπεία συνίσταται εἰς τὴν παῦσιν τῆς χρήσεως, καὶ εἶτα εἰς χορήγησιν διουρητικῶν, λουτρῶν καὶ ἐν γένει παντὸς συντελοῦντος εἰς τὴν ἀποτοξίνωσιν τοῦ ὀργανισμοῦ, οὖσαν ὅμως δυνατὴν μόνον ἂν παύσῃ ἡ χρῆσις, ὅτε τὸ ἄτομον ἀναλαμβάνει τάχιστα.

Τ. Α. ΖΗΣ

**μορφινομανὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ἐμμανῶς ἀγαπῶν τὴν μορφίνην, ὁ πάσχων μορφινομανίαν.

**μορφινομανία** (ἡ). Καλεῖται οὕτω ἡ ἀκατανίκητος ἐπιθυμία πρὸς χρῆσιν μορφίνης ἢ τῶν ἐν οἷς αὕτη περιέχεται φαρμάκων (οἷον τοῦ ὀπίου, τῆς παντοπώνης, ὡς καὶ τοῦ ἰσχυροτέρου αὐτῆς παραγώγου, τῆς ἡρωΐνης), τῶν ὑπαγομένων εἰς τὰ ἡδονιστικὰ ναρκωτικὰ φάρμακα. Ἡ τοιαύτη ἀκατανίκητος ἐπιθυμία γεννᾶται ἐκ τῆς ἕξεως κατόπιν ἐπανειλημμένης θεραπευτικῆς χρήσεως τοῦ φαρμάκου ἢ ἐκ μιμήσεως ἢ καὶ ἐκ τῆς ἐπιθυμίας πρὸς κατάπνιξιν λύπης ἢ δυσαρέστων ἐν γένει συναισθημάτων ὑπὸ τῶν γνωριζόντων τὴν ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ ἐπίδρασιν αὐτῆς. Ἀρκοῦσι δὲ πολλάκις 3—4 συνεχεῖς θεραπευτικαὶ ἐνέσεις (0,02), ὅπως προκαλέσωσιν ἐθισμόν, ἐπὶ ἀτόμων προδιατεθειμένων, τῶν καλουμένων ἐκφυλογενῶν, ἅτινα ῥέπουσι πρὸς τοξινομανίαν. Λαμβάνεται δὲ συνήθως καθ' ὃν τρόπον ἀρχῆθεν εἰθίσθη τὸ ἄτομον. Ἡ ἡρωΐνη λαμβάνεται δι' ὀσφρήσεων (κοιν. πρέζα), τὸ δ' ὄπιον καπνιζόμενον ἢ διὰ τοῦ πεπτικοῦ συστήματος, τουτέστι διὰ μασήσεως. Παρ' ἡμῖν, παρὰ τοῖς κατωτέροις ἰδίως στρώμασι, γίνεται χρῆσις τῆς ἡρωΐνης εἰς εὐρεῖαν κλίμακα μετὰ τὸ 1922. Πάντως ὁ ἀριθμὸς τῶν ἡρωϊνομανῶν-μορφινομανῶν εἶναι λίαν κατώτερος τῶν χασισομανῶν, οἵτινες ἐν Ἀθήναις καὶ Πειραιεῖ ἀνέρχονται εἰς 80.000 περίπου.

Τὸ φάρμακον τοῦτο (μορφίνη-παντοπώνη, ἡρωΐνη) ἐντὸς 10′ ἀπὸ τῆς χρήσεως αὐτοῦ, ἢ καὶ ἐνωρίτερον, προκαλεῖ ἐν ἀρχῇ, ἐπὶ ἀήθων ἀτόμων, ἔμετον, εὐθὺς δ' ἀμέσως αἴσθημα εὐφορίας, συνιστάμενον εἰς αὔξησιν τοῦ συνδυασμοῦ τῶν παραστάσεων, ὡς ἐκ τῆς ταχύτητος αὐτῶν, συγκέντρωσιν εἰς τὰς σκέψεις ταύτας καὶ ἀποφυγὴν τῶν ἔξωθεν ἐρεθισμάτων, τουτέστιν ἐλαφρὸν αὐτισμόν, μετὰ ἐπακολουθούσης χαλάσεως μυϊκῆς καὶ ψυχικῆς, δι' ὃ τὸ ἄτομον μένει συνήθως ἐξηπλωμένον καὶ σκεπτόμενον. Αἱ παραστάσεις, αἵτινες ἤδη χαλαρῶς συνδέονται, αἱ κατακλύζουσαι τὴν συνείδησιν εἶναι εὐχάριστοι. Καταργεῖται δὲ τὸ αἴσθημα καὶ τῆς εὐθύνης, διότι πάσης σκέψεως καὶ πράξεως τὸ ἀποτέλεσμα φαίνεται εὐχάριστον. Παρατηρεῖται στενοχωρία καὶ ἐλάττωσις τῶν ἀνακλάσεων, τάσις πρὸς ὕπνον, ὅστις ἐπέρχεται μετ' ὀλίγον καὶ διαρκεῖ ὥρας τινάς, ταχυκαρδία καὶ διαταραχαὶ τῆς ἀναπνοῆς. Ἡ κυριωτέρα ὅμως ἐπίδρασις τοῦ φαρμάκου, δι' ἣν καὶ μεταχειρίζονται αὐτὸ ἐν τῇ θεραπευτικῇ, εἶναι ἡ παῦσις τῶν πόνων, ἐπερχομένη ἐξ ἐπιδράσεως τοῦ φαρμάκου ἐπὶ τὸν φλοιὸν τοῦ ἐγκεφάλου.

Διὰ τὴν πρόκλησιν τοιαύτης εὐαρέστου καταστάσεως οἱ ἐν ἀρχῇ μεταχειρισθέντες τὸ φάρμακον δι' οἱονδήποτε λόγον (καὶ 3—4άκις μόνον ἐνίοτε) ἐπιθυμοῦσι νὰ ἐπαναλάβωσι καὶ ἐπαναλαμβάνουσι συνήθως τὴν δόσιν αὐτοῦ. Βαθμηδὸν ὅμως ἀπαιτεῖται μεγαλυτέρα ποσότης, διὰ τὴν πρόκλησιν τῆς αὐτῆς καταστάσεως ἐπερχομένου ἐθισμοῦ εἰς τὸ φάρμακον, ἐνῷ συγχρόνως παρατηρεῖται μείζων καὶ συχνοτέρα ἐπανάληψις τῶν ἐνοχλημάτων, δι' ἃ ἀρχικῶς ἐγένετο ἡ λῆψις, οἷον κωλικῶν καὶ λοιπῶν πόνων, προκαλουμένων ἤδη ψυχικῶς ἢ ὑποσυνειδήτως. Αὐτὸ δὲ εἶναι καὶ τὸ κρίσιμον στάδιον εἰς ὅ, ἂν δὲν παύσῃ ἡ χρῆσις, τὸ ἄτομον περιπίπτει εἰς τὸ στάδιον τῆς μορφινομανίας. Διότι ἐνῷ λίαν ηὐξημένη δόσις τοῦ φαρμάκου οὐδὲν πλέον προκαλεῖ αἴσθημα εὐφορίας (μετὰ τὸν 6ον μῆνα τὸ πολύ), ἐν τούτοις ἡ χρῆσις καθίσταται ἐπιτακτική, διότι ἅμα τῇ ἀποχῇ ἢ τῇ ἐπιβραδύνσει τῆς λήψεως τῆς μορφίνης (ἢ τινος τῶν ῥηθέντων συγγενῶν αὐτῆς) ἐπέρχεται δυσφορίας αἴσθημα, ταχυπαλμία, ἱδρῶτες ἄφθονοι, βράγχος φωνῆς, δυσαρθρία, τρόμος ἔντονος, διάρροια μετὰ κολικῶν ἐντόνων, τὰ δὴ λεγόμενα φαινόμενα τῆς ἀποχῆς, πρὸς ἀποφυγὴν τῶν ὁποίων καθίσταται ἀναγκαία πλέον καὶ ἐπιτακτικὴ ἡ λῆψις τοῦ φαρμάκου, ἐπερχομένης οὕτω τῆς μορφινομανίας. Ἤδη τὰ ἄτομα ταῦτα χρῶνται 1—2—3—10 γραμ. δι' ἡμέρας, ἀναλόγως τῆς οἰκονομικῆς αὐτῶν ἀντοχῆς. Πτωχά, θυσιάζουν πᾶσαν οἰκονομίαν αὐτῶν καὶ πάντα πόρον εἰς τὸ φάρμακον, στερούμενα καὶ αὐτῆς τῆς τροφῆς,παύουν δὲ νὰ ἐργάζωνται δι' οὐδὲν ὄντες ἱκανοί· διότι βαθμηδὸν ἐμφανίζουσι τὰ σημεῖα τῆς χρονίας διὰ μορφίνης δηλητηριάσεως, ἤτοι τοῦ *μορφινισμοῦ* (βλ. λ.), μετὰ προϊούσης καχεξίας, ἣν ἐπιτείνουσι τὰ ἀποστήματα τῶν ἐνέσεων, ἂν δι' ἐνέσεων γίνεται ἡ λῆψις τοῦ φαρμάκου, καὶ ἡ ἀνορεξία καὶ ἡ διαρκὴς ἀνησυχία μήπως στερηθῶσι τοῦ παραδείσου αὐτῶν. Οἱ μορφινομανεῖς εἶναι εὐερέθιστοι καὶ θυμώδεις. Ἡ πρόγνωσις εἶναι βαρεῖα, διότι μόνον τὰ ἰσχυρᾶς θελήσεως ἄτομα δύνανται νὰ παύσωσι τὴν χρῆσιν τῶν ἡδονιστικῶν τούτων φαρμάκων. Γίνεται δὲ ἡ παῦσις ἢ ἀποτόμως, ὅπερ ὅμως διὰ 2—3 ἡμέρας καταντᾷ μαρτύριον διὰ τὸν ἀσθενῆ, ἢ βαθμιαίως. Ἡ ὑποτροπὴ δὲν εἶναι σπανία. Ἡ παῦσις τῆς χρήσεως ἔχει εὐεργετικὴν ἐπίδρασιν ἄμεσον, διότι τὸ ἄτομον ἀνακτᾷ τὴν ὑγείαν αὐτοῦ ταχέως, γινόμενον εὐτραφέστερον ἀπὸ ὅ,τι ἦτο καὶ πρὸ τῆς χρήσεως.

Ἡ βαθμιαία παῦσις δέον νὰ συνοδεύεται μὲ τὴν χορήγησιν φουμινάλης ἰδίᾳ καὶ μὲ τὴν ἐναλλαγὴν τῶν ὡρῶν χρήσεως πρὸς ῥῆξιν τῶν ἕξεων, πρὸς δὲ καὶ μὲ ἀλλαγὴν περιβάλλοντος, ἀπασχόλησιν εἰς ἐργασίαν, σωματικὸν κάματον κ.τ.τ. Ἡ ἰδεώδης θεραπεία θὰ ἦτο ἡ πρόκλησις διαρκοῦς ὕπνου 3—4 ἡμερῶν. Μετὰ τὴν ἀφύπνισιν ἡ ἕξις ἀσφαλῶς ἀποβάλλεται. Τ. Α. ΖΗΣ

**Μορφοβούνι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Βουνέσι*. Κάτ. (1928) 1.354. Χ. Δ.

**μορφογονία** (ἡ). Ἡ μελέτη τῆς γενέσεως τῆς μορφῆς τῶν ὀργανισμῶν, τῶν νόμων, καθ' οὓς γίνεται αὕτη καὶ τῶν αἰτίων αὐτῆς. Πρὸς τοῦτο γίνονται πειραματικαὶ ἔρευναι, ἀποτελοῦσαι τὴν λεγομένην *πειραματικὴν μορφολογίαν* ἢ καὶ *μηχανικὴν* ἢ *φυσιολογίαν τῆς ἐξελίξεως*. Ἡ ἔρευνα τῶν βαθυτέρων αἰτίων τῆς διαπλάσεως τῆς μορφῆς σχετικῶς μὲ τὰς κληρονομικὰς καταβολὰς ἀποτελεῖ τὴν *γενετικὴν μορφολογίαν*, ἥτις μόλις τώρα ἀρχίζει νὰ ἐξελίσσεται. Θ. ΒΛ.

**μορφογραφία** (ἡ)· ἡ γραφικὴ διατύπωσις τῆς μορφῆς, ἡ τέχνη τῆς διὰ γραμμῶν παραστάσεως τῶν στερεῶν σωμάτων.

**μορφοθηβαΐνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἀλκαλοειδὲς τοῦ τύπου $C_{18}H_{19}O_3N$ λαμβανόμενον δι' ἐπιδράσεως ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος ἐπὶ τῆς *θηβαΐνης*. Χημικῶς χαρακτηρίζεται ὡς ὑδροξυλιωμένος μονομεθυλαιθὴρ τῆς *ἀπομορφίνης*. Σ. Γ.

**μορφολίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὀργανικὴ βάσις τοῦ τύπου:

$$\mathrm{NH}\left\langle\begin{array}{l}CH_2-CH_2\\ CH_2-CH_2\end{array}\right\rangle\mathrm{O}$$

παραγομένη κατὰ τὴν θέρμανσιν διαιθυλολαμίνης μετὰ θειικοῦ ὀξέος. Λίαν ὑγροσκοπικὸν ἔλαιον, ἀπορροφοῦν διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος ἐκ τοῦ ἀέρος. Ἔχει ὀσμὴν ἀμμωνίας καὶ πιπεριδίνης. Σ. Γ.

**μορφολογία** (ἡ)· ἡ ἐξέτασις τῆς μορφῆς, μελέτη τοῦ ἐξωτερικοῦ σχηματισμοῦ τῶν σωμάτων καὶ καθόλου παντὸς ὅ,τι λαμβάνει ὑπόστασιν εἴτε ὑλικὴν εἴτε ψυχικήν: «μορφολογία τῶν ζῴων καὶ τῶν φυτῶν».

— *[Βιολ.]* Τὸ μέρος τῆς βιολογίας, τὸ ὁποῖον ἐρευνᾷ γενικῶς τὴν μορφὴν τῶν ὀργανισμῶν καὶ τῶν ὀργάνων αὐτῶν. Οὕτω διακρίνομεν μορφολογίαν τῶν φυτῶν, τῶν ζῴων, τοῦ ἀνθρώπου, ὡς καὶ τῶν μικροτέρων ὑποδιαιρέσεων αὐτῶν, ὡς λ.χ. μορφολογίαν τῶν ἀγγειοσπέρμων, τῶν ἐντόμων κτλ. Ἡ μορφολογία διακρίνεται εἰς ἀναλυτικὴν καὶ συνθετικὴν τοιαύτην. Καὶ ἡ μὲν *ἀναλυτικὴ* ἀναλύει τὸ σῶμα τῶν ὀργανισμῶν μηχανικῶς μὲν εἰς τὰ μέρη αὐτοῦ καὶ συνεπῶς διακρίνεται εἰς *ὀργανολογίαν, ἱστολογίαν* καὶ *κυτταρολογίαν*, αἵτινες ὁμοῦ ἀποτελοῦν τὴν *ἀνατομίαν*, χημικῶς δὲ εἰς τὰ χημικὰ στοιχεῖα καὶ τὰς ἑνώσεις, ἐξ ὧν ἀποτελοῦνται οἱ ὀργανισμοί, ὅτε ἀποτελεῖ τὴν *βιοχημείαν* ἐν μέρει. Ἡ δὲ *συνθετικὴ μορφολογία* ἐξετάζει τὴν ἀπὸ ἑνὸς κυττάρου διάπλασιν τοῦ ὀργανισμοῦ ὡς *ὀντογένεια, ὀντογονία* ἢ *ἐμβρυολογία*, πρὸς δὲ καὶ τὴν μεταβολὴν τῶν μορφῶν κατὰ τὴν ἐξέλιξιν αὐτῶν ὡς *φυλογένεια* ἢ *φυλογονία*, συγκρίνουσα καὶ τὰς διαφόρους μορφὰς πρὸς ἀλλήλας ὡς *συγκριτικὴ ἀνατομία*, διὰ τῆς ὁποίας καταλήγει εἰς τὴν *ταξινόμησιν* τῶν ὀργανισμῶν. Θ. ΒΛ.

— *[Γεωλογ.—Γεωγραφ.]* Κλάδος τῆς φυσικῆς γεωγραφίας, ὁ ὁποῖος μελετᾷ καὶ ἐρευνᾷ τὰς μορφὰς (τὴν ὄψιν) τῆς ἐξωτερικῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς, ὡς καὶ τὴν ἱστορίαν ἐξελίξεως τῶν μορφῶν τούτων. Ὡς θέματα τοῦ κλάδου τούτου ὁ Φίλιπσον ἀναγράφει τὴν ἔρευναν καὶ κατανόησιν τῶν ἀπείρως ποικίλων, διαφόρων μορφῶν τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς, τῶν κυρίων ἰδιοτήτων τῶν μορφῶν τούτων καὶ τὴν ταξινόμησίν των εἰς σύστημα. Ἐπίσης τὴν γεωγραφικὴν διανομὴν τῶν ὁμάδων καὶ τῶν τύπων μορφῶν καὶ τὴν ἐξήγησιν τῆς γενέσεως αὐτῶν. Τέλος τὴν συστηματικὴν κατάταξιν τῶν εἰς τοπία συνηνωμένων ὁμάδων μορφῶν καὶ τὴν ἐξέτασιν τῆς γεωγραφικῆς διανομῆς τῶν τοπίων τούτων. Γ. Κ. Γ.

— *[Γραμματ.]* Καλοῦμεν *μορφολογίαν* τὸ τμῆμα τῆς γραμματικῆς, εἰς τὸ ὁποῖον ἐξετάζεται ἡ κλίσις τῶν οὐσιαστικῶν, ἐπιθέτων, ἀντωνυμιῶν καὶ ῥημάτων, τουτέστιν ἡ διὰ τῶν ποικίλων κλιτικῶν (πτωτικῶν καὶ ῥηματικῶν) καταλήξεων δήλωσις διαφόρων σχέσεων τῶν ῥηθέντων μερῶν τοῦ λόγου, εἴτε πρὸς ἄλληλα, εἴτε πρὸς ἄλλους ὅρους τῆς προτάσεως. Οὕτως εἰς τὸ μορφολογικὸν μέρος τῆς γραμματικῆς ἐξετάζονται οἱ διάφοροι τύποι, ὑπὸ τοὺς ὁποίους ἐμφανίζονται καὶ εὐχρηστοῦν τὰ ῥηθέντα κλιτὰ μέρη τοῦ λόγου. Προσέτι ἐρευνᾶται ἡ πρώτη ἀρχὴ καὶ ἡ κατόπιν ἐξέλιξίς των, ἐφόσον ὅμως τοῦτο εἶναι δυνατόν· διότι ἕνεκα πολλῶν καὶ ποικίλων, ἁδρῶν καὶ μάλιστα παλαιοτάτων φωνητικῶν μεταβολῶν τῶν καταλήξεων παρεμορφώθησαν τοσοῦτον τὰ μορφολογικὰ στοιχεῖα τῶν διαφόρων τύπων, ὥστε κατέστησαν ὅλως ἀδιάγνωστα, ἡ δὲ ἀρχὴ καὶ γένεσίς των θέλει παραμείνει (τοὐλάχιστον κατὰ τὸ πλεῖστον) ἐντελῶς ἀνεξακρίβωτος. Τοῦτο μόνον δύναται νὰ θεωρηθῇ βέβαιον, ὅτι ἡ κυριωτέρα ἀρχὴ τῆς κλίσεως, ἡ σπουδαιοτέρα πηγὴ τῶν διαφόρων τύπων ὑπῆρξεν ἡ σύνθεσις (βλ. λ. *κλιτικαὶ* γλῶσσαι), αἱ δὲ διάφοροι πτωτικαὶ καὶ ῥηματικαὶ καταλήξεις οὐδὲν ἄλλο ἦσαν (κατὰ τὸ μέγιστον μέρος) ἢ τὰ β′ συνθετικὰ παλαιοτάτων συνθέτων λέξεων.

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Μουσ.]* Βλ. *σύνθεσις*.

**μορφολογικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μορφήν, ὁ τῆς μορφῆς: «μορφολογικαὶ διαφοραὶ τῶν ζῴων, —τῶν φυτῶν, —τῶν γλωσσῶν».

Digitized by Google

**μορφόπλασμα** (τό) *['Ιατρ.]* βλ. λ. *ἐνδόπλασμα.*

**μορφοσάνη** (ἡ) (Morphosane) *[Φαρμ. Χημ.].* Οὕτω καλεῖται ἡ *βρωμομεθυλική μορφίνη*:

$C_{17}\,U_{19}\,O_3\,N.\,CH_3\,Br + H_2O$.

Εἶναι κόνεις ἢ βελόναι κρυσταλλικαὶ λευκαὶ πικρᾶς γεύσεως. Ἡ μορφοσάνη περιέχει 21 % βρώμιον, διαλύεται εἰς 20 περίπου μέρη ὕδατος (15°) καὶ καθιζάνει διὰ κεκορεσμένου ἐν ψυχρῷ διαλύματος βρωμιούχου καλίου. Χρησιμοποιεῖται ὡς παράγωγον τῆς μορφίνης. Κ. Γ. Μ.

**μορφοτροπία** (ἡ) (Morphotropie) *['Ορυκτολ.].* Πολλὰ ὀρυκτά, τῶν ὁποίων οἱ χημικοὶ τύποι παρουσιάζουν ἀναλογίαν μεταξύ των, κρυσταλλοῦνται καὶ εἰς τὸ αὐτὸ κρυσταλλογραφικὸν σύστημα καὶ σχηματίζουν τὰς ἰσομόρφους σειράς. Οὕτως ἔχομεν τὴν ἰσόμορφον σειρὰν τοῦ ἀραγωνίτου, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήκουν τὰ ὀρυκτὰ ἀραγωνίτης, στροντιανίτης, κερουσίτης καὶ βιθερίτης. Τὰ ὀρυκτὰ αὐτὰ εἶναι ὅλα ἀνθρακικὰ ἅλατα, ἀλλὰ μολονότι κρυσταλλοῦνται εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα ὡς ἰσόμορφα, ἐν τούτοις παρουσιάζουν μικράς τινας διαφορὰς εἰς τὴν πρὸς ἀλλήλους σχέσιν τῶν κρυσταλλογραφικῶν των ἀξόνων, καθὼς καὶ εἰς τὴν ἀντίστοιχον τιμὴν τῆς γωνίας τῶν ἑδρῶν, ὡς φαίνεται ἐκ τῶν κάτωθι δύο πινάκων.

*Πίναξ σχέσεως κρυσταλλογραφικῶν ἀξόνων*

| | | a : b : c |
|---|---|---|
| 'Αραγωνίτης ............ | $CaCO_3$ | 0,6224 : 1 : 0,7206 |
| Στροντιανίτης.......... .. | $S_2CO_3$ | 0.6090 : 1 : 0,7239 |
| Κερουσσίτης .............. | $PbCO_3$ | 0,6100 : 1 : 0,7230 |
| Βιθερίτης ................ | $BaCO_3$ | 0,6032 : 1 : 0,7302 |

*Πίναξ τιμῶν πρισματικῆς γωνίας*

| | | |
|---|---|---|
| 'Αραγωνίτης ............ | $CaCO_3$ | 63° 48′ |
| Στροντιανίτης............ | $S_2CO_3$ | 62" 41′ |
| Κερουσσίτης ............ | $PlCO_3$ | 62° 46° |
| Βιθερίτης ................ | $BaCO_3$ | 62° 12′ |

Αἱ ἀνωτέρω διαφοραὶ προέρχονται ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι δι' ἕκαστον τῶν ἐν λόγῳ ὀρυκτῶν εἰσέρχεται εἰς τὸν σχηματισμὸν τοῦ χημικοῦ του μορίου καὶ διάφορον στοιχεῖον, ἤτοι τὸ ἀσβέστιον διὰ τὸν ἀραγωνίτην, τὸ στρόντιον διὰ τὸν στροντιανίτην, ὁ μόλυβδος διὰ τὸν κερουσσίτην καὶ τὸ βάριον διὰ τὸν βιθερίτην. Παρατηρεῖται δηλαδὴ ὅτι μὲ τὴν παρουσίαν εἰς τὸ μόριον τοῦ ἀνθρακικοῦ ἅλατος ἀντὶ τοῦ ἀσβεστίου τοῦ στροντίου, ἢ τοῦ μολύβδου, ἢ τοῦ ἀσβεστίου, ἐπέρχεται καὶ ἀλλοίωσις εἰς τὰς τιμὰς τῶν κρυσταλλογραφικῶν σταθερῶν τοῦ ἀντιστοίχου ὀρυκτοῦ τῆς ἰσομόρφου ὁμάδος καὶ συνεπῶς κατ' οὐσίαν μεταβάλλεται καὶ ἡ κρυσταλλογραφικὴ μορφὴ αὐτοῦ. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ὠνόμασεν ὁ Groth *μορφοτροπίαν.* Εἶναι λοιπὸν μορφοτροπία ἡ ἀλλοίωσις, τὴν ὁποίαν παρουσιάζουν διάφορα ὀρυκτὰ εἰς τὰς κρυσταλλογραφικάς των σταθεράς, μολονότι ὡς ἔχοντα ἀνάλογον χημικὴν σύστασιν, κρυσταλλοῦνται εἰς τὸ αὐτὸ κρυσταλλογραφικὸν σύστημα, καὶ ἡ ὁποία ὀφείλεται εἰς τὸ διάφορον βασικὸν στοιχεῖον, τὸ ὁποῖον δι' ἕκαστον ὀρυκτὸν εἰσέρχεται εἰς τὸν σχηματισμὸν τοῦ χημικοῦ μορίου αὐτοῦ. Γ. Β.

**Μορφοῦ** *[Γεωγρ.].* Κωμόπολις ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λευκωσίας τῆς Κύπρου, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος. Κάτ. 4.500 περίπου, ἅπαντες Ἕλληνες. Εἶναι ἕδρα ἡμιμονίμου δικαστηρίου. Ἔχει πλήρη δημοτικὰ ἑλληνικὰ σχολεῖα ἀρρένων καὶ θηλέων καὶ ἀνωτέραν ἑλληνικὴν σχολήν. Ἐν Μορφοῦ σῴζεται μεσαιωνικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Μάμαντος, ὅστις εἶναι καὶ ὁ πολιοῦχος ἅγιος.

Ἡ Μορφοῦ ἀποτελεῖ τὸ σπουδαιότερον ἐμπορικὸν κέντρον μετὰ τὴν πρωτεύουσαν καθ' ὅλην τὴν ἐπαρχίαν Λευκωσίας. Ἡ ὀνομασία της ὀφείλεται πιθανῶς εἰς τὴν ἀρχαίαν κώμην *Μορφώ,* κειμένην παρ' αὐτήν, ἐν ᾗ ἐλατρεύετο ἡ Ἀφροδίτη. Τὸ διαμέρισμα ἀριθμεῖ περὶ τὰς 17.500 κατ., ἐκκλησιαστικῶς δὲ ὑπάγεται εἰς τὴν μητροπολιτικὴν περιφέρειαν Κυρηνείας.

— **Μορφοῦ κόλπος** *[Γεωγρ.].* Ὁ μεγαλύτερος εἰς βάθος καὶ εἰς ἔκτασιν, μετὰ τὸν τῆς Ἀμμοχώστου, κόλπος τῆς Κύπρου, σχηματιζόμενος πρὸς τὸ ΒΔ. μέρος αὐτῆς. Οἱ μόνοι ὅρμοι, ὅπου δύνανται νὰ προσεγγίσωσι πλοῖα, εἶναι οἱ τῆς Πενταγιᾶς, Ξηροῦ καὶ Καραβοστασίου. Α. Κ. Α.

**μορφοφοβία** (ἡ). Καλεῖται ὁ κατέχων ἄτομόν τι ἰδεοληπτικὸς φόβος ἀλλοιώσεως τῆς μορφῆς τοῦ σώματός του, τοῦ προσώπου του κλπ. π. χ. ὁ φόβος ὅτι θὰ ἐμφανισθῇ εἴς τι μέρος τοῦ σώματός του τριχοφυΐα *(τριχοφοβία).* Ὀφείλεται, ὡς καὶ οἱ λοιποὶ τοιοῦτοι φόβοι, εἰς ὑστερίαν, ψυχασθένειαν, λοιμώξεις, δηλητηριάσεις, καταβολὴν τοῦ ὀργανισμοῦ, κόπωσιν, ἀδυναμίαν βουλήσεως. Θεραπεία αἰτιολογικὴ μετὰ τῆς ἐγκαταστάσεως ἀντιθέτου ἕξεως. Τ. Α. Ζ.

**Μόρφυ** (Murphy), ***Τζὼν Β.*** Ἀμερικανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Appleton (1857—1916). Διετέλεσε ὡς καθηγητής, διδάσκων ταυτοχρόνως εἰς κρίθη ὡς καθηγητής, διδάσκων ταυτοχρόνως εἰς τὸ ἰατρικὸν καὶ τὸ ἰατρο-χειρουργικὸν κολλέγιον καὶ εἰς τὴν πανεπιστημιακὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ Northwestern. Ἔγραψε δίτομον γενικὴν χειρουργικήν, ὡς καὶ πληθὺν ἄρθρων εἰς ἰατρικὰ περιοδικά. Κατέστη γνωστὸς διὰ τῆς ὑπ' αὐτοῦ εἰσαγωγῆς εἰς τὴν τεχνικὴν τῶν ἐντερικῶν ἀναστομώσεων τοῦ ἀναστομωτικοῦ κομβίου (κομβίον τοῦ Μόρφυ, 1892), δι' οὗ ἠπλουστεύθη ἡ ἀναστόμωσις καὶ ἠλαττώθη ὁ ἐκ ταύτης κίνδυνος. Ο. Ρ.

*Γουσταύου Μορῶ: Ὁ Ὀρφεύς.*

**Μορφώ** (ἡ) *[Μυθολ.].* Ἐπίκλησις τῆς Ἀφροδίτης, ὑπὸ τὴν ὁποίαν ἐλατρεύετο ἐν Σπάρτῃ, ὅπου εἶχε ναὸν ἀρχαϊκόν, ὑπεράνω τοῦ θεάτρου κείμενον. Ὁ ναὸς οὗτος ἦτο διώροφος, ἐτιμᾶτο δὲ ἡ θεὰ εἰς τὸ ὑπερῷον αὐτοῦ ὑπὸ τὴν μορφὴν ξοάνου, τὸ ὁποῖον τὴν παρίστανε καθημένην, φέρουσαν καλύπτραν καὶ ἔχουσαν ἁλυσιδέτους τοὺς πόδας. Κατά τινα παράδοσιν ἡ δέσμευσις αὐτὴ τῆς θεᾶς ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Τυνδάρεω καὶ ἐσυμβόλιζε τὴν πίστιν καὶ τὴν ὑποταγὴν τῶν γυναικῶν, ἢ ἐγένετο πρὸς ἐκδίκησιν κατὰ τῆς θεᾶς, διότι αὕτη ἔκαμε τὰς θυγατέρας του Ἑλένην καὶ Κλυταιμνήστραν «διγάμους καὶ τριγάμους καὶ λειψάνδρους». Ν. Α.

**μορφῶ** (—όω)· δίδω μορφήν, σχηματίζω· || παθ. *μορφοῦμαι·* λαμβάνω μορφήν, σχηματίζομαι: «τὸ ἔμβρυον μορφοῦται βαθμηδόν», «τὰ ζῷα γεννῶνται μεμορφωμένα» (βλ. καὶ λ. *μορφώνω*).

**μορφώνω,** ἀόρ. *ἐμόρφωσα — ἐμορφώθην,* παθ. μετχ. *μορφωμένος·* ἐκπαιδεύω, ἐκπολιτίζω, καλλιεργῶ, προάγω πνευματικῶς: «ἐμόρφωσε τὰ παιδιά του», «τὸν ἐμόρφωσαν τὰ ταξίδια», «ὅταν ξενιτευθῇ, θὰ μορφωθῇ», «μορφωμένος ἄνθρωπος», «ἐμορφώθη εἰς τὰ καλύτερα σχολεῖα», «ὑπὸ πᾶσαν ἔποψιν μορφωμένη κόρη».

**μόρφωσις,** —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μορφώνω,* ἐκπαίδευσις, ἐκπολίτισις, καλλιέργεια ψυχικὴ καὶ σωματική: «εἶναι ἐξαιρετικῆς μορφώσεως ἄνθρωπος», «ἔδωσε εἰς τὰ παιδιά του ζηλευτὴν μόρφωσιν» || καὶ εἰδικῶς: «μόρφωσις πολιτική, —στρατιωτική, — ἀνθρωπική, —χριστιανική, — ἑλληνοπρεπὴς κτλ.».

**μορφωτικός,** —*ή,* —*όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μόρφωσιν, ὁ τῆς μορφώσεως, παιδευτικός: «μορφωτικὸν μέσον», «μορφωτικὰ ἀναγνώσματα, — θεάματα».—Ἐπίρρ. ***μορφωτικῶς.***

**μορχέλλη** (ἡ) (Morchella) *[Βοτ.].* Γένος μυκήτων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀσκομυκήτων* τῆς οἰκογενείας τῶν *δισκομυκητιδῶν,* περιλαμβάνον μύκητας ἀποτελουμένους ἐκ λείου ποδίσκου, ὅστις εἰς τὸ ἀνώτερον αὐτοῦ τμῆμα διογκοῦται καὶ λαμβάνει φοειδοεπιμήκη μορφήν. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μορχέλλη ἡ κωνική* (Morchella conica), ἥτις ἀπαντᾷ ἐντὸς τῶν δασῶν καὶ εἶναι ἐδώδιμος. Δ. Ν. Π.

**Μορὼ** (Moreau), ***Αἰμίλιος-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος ἐκδότης (1841—1919). Κατ' ἀρχὰς ἦτο ὑπάλληλος εἰς τὸν ἐκδοτικὸν οἶκον Λαρούς καὶ Μπουαγιὲ ἱδρυθέντα τῷ 1851. Ὅτε τῷ 1869 διελύθη ὁ συνεταιρισμὸς οὗτος, ὁ Μπουαγιὲ ἔμεινε μόνος ἰδιοκτήτης καὶ συνεταιρίσθη μὲ τὸν ἀνεψιόν του Μορῶ. Τῷ 1886 ὁ οἶκος Μπουαγιὲ παρεχώρησε τὰ κεφάλαιά του εἰς τὸν οἶκον Λαρούς, εἰς τὸν ὁποῖον ὁ Μορὼ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τμήματος καὶ ὑπῆρξεν ἡ ψυχὴ τοῦ μεγάλου τούτου ἐκδοτικοῦ οἴκου, τὸν ὁποῖον ὡδήγησεν εἰς τὴν πρόοδον καὶ τὴν ἀκμήν. Α. Δ.

— **Μορὼ** (Moreau), ***Γουσταῦος.*** Γάλλος ζωγράφος (1826—1898). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Πικό, τὰ δὲ πρῶτα ἔργα του εἶνα ἐπηρεασμένα ἀπὸ τοὺς Μαντένια καὶ Σασσεριό. Μεταβὰς εἰς Ἰταλίαν (1856—1860) ἐμελέτησε κατὰ προτίμησιν τοὺς πριμιτίφ. Μετὰ τὴν εἰς Παρισίους ἐπιστροφήν του ἐξέθεσε πλεῖστα ἔργα, τὸ πλεῖστον εἰλημμένα ἐκ τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας. Οἱ πίνακές του οὗτοι εἶναι πρωτοτυπόταται ἀλληγορίαι, προεκάλεσαν δὲ μεγάλην συζήτησιν μεταξὺ τῶν καλλιτεχνικῶν κύκλων. Κάλλιστοι ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ὁ Ὀρφεύς», «Οἰδίπους καὶ Σφίγξ», «Ἰάσων καὶ Μήδεια», «Ὁ νέος καὶ ὁ θάνατος», «Ὁ Προμηθεύς», «Ὁ Ἡρακλῆς καὶ ἡ Λερναία Ὕδρα», «Ἡ Σαλώμη» κ. ἄ. Ἀποθανὼν ἐκληροδότησε εἰς τὸ γαλλικὸν δημόσιον τὸ ἐν Παρισίοις ἐργαστήριόν του, τὸ ὁποῖον μετεβλήθη εἰς μουσεῖον. Χ. Δ.

— **Μορὼ** (Moreau), ***Ἡγήσιππος.*** Γάλλος διηγηματογράφος καὶ ποιητὴς (1810—1838). Ἐξέδιδε τὸν «Διογένη», σατιρικὴν ἐφημερίδα, ἄφησε δὲ πέντε διηγήματα, ἐκδοθέντα εἰς τόμον μετὰ τῶν ποιημάτων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Μυοσωτίς». Τὰ καλύτερα ποιήματά του διακρίνονται διὰ τὴν εἰδυλλιακὴν ἁπλότητα καὶ τὴν μελαγχολίαν των. Ι. Μ. Τ.

—**Μορὼ** (Moreau), ***Ἰωάννης-Βίκτωρ.*** Γάλλος στρατηγὸς (1763—1813). Τῷ 1796, τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τῶν στρατευμάτων Ρὲν-ὲ-Μοζὲλλ διῆλθε τὸν Ρῆνον, κατέλαβε τὰς γραμμὰς τῆς Μαγεντίας, τὸ φρούριον τοῦ Κέλ, ἐνίκησε τὸν ἀρχιδοῦκα Κάρολον ἐν Χάϋντενχάϊμ, διῆλθε τὸν Δούναβιν, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Ζουρντὰν ἐν Βουρτσβούργῳ. Γενόμενος ἀρχιστράτηγος τοῦ στρατοῦ τοῦ Ρήνου, συνήντησεν ἐν Παρισίοις τὸν Ναπολέοντα, τὸν ὁποῖον ἔβλεπε διὰ πρώτην φοράν, καὶ συνειργάσθη μετ' αὐτοῦ εἰς τὸ πραξικόπημα τῆς 9 Νοεμβρίου 1799. Ἡ περίφημος ἐκστρατεία του ἐν Γερμανίᾳ, ἰδίᾳ δὲ ἡ νίκη τοῦ Χοενλίντεν, ἐστερέωσε τὴν στρατιωτικὴν φήμην του.

*Ἰωάννης Μορώ.*

Φιλόδοξος ὤν, ἐγένετο ἀντίπαλος τοῦ Βοναπάρτου, ὑποστηριχθεὶς ἐν τούτῳ ὑπὸ τοῦ κόμματος τῶν βασιλοφρόνων. Συλληφθείς, ἐνεκλείσθη εἰς τὸ Τάμπλ καὶ κατεδικάσθη εἰς δύο ἐτῶν φυλάκισιν. Τῷ 1804 μετέβη εἰς τὴν Ἱσπανίαν, εἶτα δὲ εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας (1805), ὅπου ἔζησεν ἀγνοούμενος μέχρι τῆς ἡμέρας, καθ' ἣν ἐκλήθη εἰς τὴν Εὐρώπην ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Ρωσίας Ἀλεξάνδρου Α'. Ὑπῆρξε πολύτιμος σύμβουλος τῶν συμμάχων, εἰς τὴν ἐπιτυχίαν τῶν ὁποίων μεγάλως συνέβαλεν. Ὁ Μορὼ ἔπεσε κατὰ τὴν μάχην τῆς Δρέσδης (27 Αὐγούστου 1813). Α. Δ.

—**Μορὼ** (Moreau), ***Ἰωάννης-Μιχαήλ,*** ὁ ἐπιλεγόμενος ***Μορὼ ὁ νεώτερος.*** Γάλλος σχεδιαστὴς καὶ χαράκτης (1741—1814). Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Λὲ Μπά, ἡ δὲ καλλιτεχνικὴ παραγωγή του περιλαμβάνει ἀντιγραφὰς καὶ διακοσμήσεις ἰδίας ἐμπνεύσεως. Εἰς τὰς τελευταίας καταλέγεται ἡ μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας διακόσμησις διαφόρων ἐκδόσεων τῶν κωμῳδιῶν τοῦ Μολιέρου καὶ τῶν ἔργων τῶν Ρουσώ, τοῦ Βολταίρου κλπ. Τιμηθεὶς διὰ τοῦ τίτλου τοῦ «ἀπεικονιστοῦ τῶν διασκεδάσεων τοῦ βασιλέως», ἐφιλοτέχνησε πλείστας σκηνὰς τελετῶν ἐκ τοῦ γάμου καὶ τῆς στέψεως τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' καὶ τῆς γεννήσεως τοῦ δελφίνου. Κάλλισται ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ὁ χορὸς τῶν προσωπιδοφόρων», «Ἡ ἄφιξις τῆς βασιλίσσης εἰς τὸ δημαρχεῖον» κ. ἄ. Αἱ σῳζόμεναι γραβοῦραι τοῦ Μορὼ ἔχουσι μεγάλην ἱστορικὴν ἀξίαν. Ὁλόκληρον τὸ ἔργον τοῦ Μορὼ φυλάσσεται εἰς τὴν ἐν Παρισίοις «Gallerie des Estampes». Χ. Δ.

—**Μορὼ** (Moreau), ***Πέτρος-Παῦλος.*** Γάλλος ἐκδότης (1878—1931). Τῷ 1900 προσελήφθη εἰς τὸν οἶκον Λαρούς ὡς γενικὸς γραμματεὺς τοῦ πατρός του Γεωργίου Μορώ, ἱδρυτοῦ τῆς «Revue Encyclopédique». Διεδέχθη βραδύτερον τὸν πατέρα του, γενόμενος εἷς τῶν διευθυντῶν τοῦ οἴκου Λαρούς. Α. Δ.

—**Μορὼ-Βωτιὲ** (Moreau-Vauthier), ***Αὐγουστῖνος.*** Γάλλος γλύπτης (1831—1893). Διεκρίθη ὡς ἀγαλματοποιὸς καὶ ὡς καλλιτέχνης κομψοτεχνημάτων ἐξ ἐλεφαντόδοντος. Τὰ εἰς τὴν πρώτην κατηγορίαν ἀνήκοντα ἔργα του εἶναι: «Ὁ ἔρως νικητής» (μουσεῖον Ρέμς), «Ἡ Βηθσαβεὲ» (κῆπος Λουξεμβούργου), «Ἡ Νηρηΐς» (δημαρχεῖον Παρισίων), «Ἡ τύχη», (μέγαρον Ἠλυσίων) κ.ἄ. Τὸ ἔργον του ἐμπνέεται ὑπὸ τῆς κλασσικῆς τεχνοτροπίας τῶν μεγάλων Φλωρεντινῶν καλλιτεχνῶν τῆς Ἀναγεννήσεως. Χ. Δ.

— **Μορὼ ντὲ Ζοννὲς** (Moreau de Jonnès), ***Ἀλέξανδρος.*** Γάλλος στρατιωτικὸς καὶ οἰκονομολόγος

Digitized by Google

(1778—1870). Ἀπὸ τοῦ 1834 διηύθυνε τὰς ἐργασίας καὶ τὴν σύνταξιν τῆς «Γενικῆς Στατιστικῆς τῆς Γαλλίας», τῷ δὲ 1847 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα: «Ὑπόμνημα περὶ τῆς ἀποψιλώσεως τῶν δασῶν», «Στατιστικὴ τῆς Μεγάλης Βρεττανίας καὶ τῆς Ἰρλανδίας», «Στοιχεῖα Στατιστικῆς», «Γεωργικὴ στατιστικὴ τῆς Γαλλίας», «Στατιστικὴ τῶν λαῶν τῆς ἀρχαιότητος» κτλ. Α. Δ.

**Μόρων** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰβηρικῆς χερσονήσου ἐν Λουσιτανίᾳ (νῦν Πορτογαλίᾳ) «εὖ κειμένη ἐν ὄρει τοῦ ποταμοῦ (Τάγου) πλησίον», ἀπέχουσα τῆς θαλάσσης περὶ τὰ πεντακόσια στάδια (*Στράβ.* III, 152). Κατελήφθη τῷ 137 π. Χ. ὑπὸ τοῦ ὑπάτου Δ. Ἰουνίου Βρούτου, τοῦ ἐπικληθέντος Καλλαϊκοῦ, ὅστις καταστήσας αὐτὴν ὁρμητήριον κατέλαβε μέγα μέρος τῆς Λουσιτανίας. Α. Θ. Σ.

**Μορώνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμπελούζου τῆς ἐπαρχίας Καινουργίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. 160 (1928). Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐπὶ τουρκοκρατίας οἱ κάτοικοι ἦσαν Τοῦρκοι, ἐξωμόται, ὡς ἐμφαίνεται ἐκ τῶν ἐρειπίων δύο ἐκκλησιῶν, φανατικώτατοι δὲ κατὰ τῶν Χριστιανῶν. Ε. Γ.

**Μὸς** (Moss) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νορβηγίας, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας Ὄστφολντ, ἐπὶ τοῦ φιὸρδ Ὄσλο. Κάτ. 8.407. Ἔχει ναυπηγεῖα καὶ πριονιστήρια. Ἐνταῦθα ὑπεγράφη τὴν 14 Αὐγούστου 1841 ἡ μεταξὺ Νορβηγίας καὶ Σουηδίας συμφωνία, ἥτις ὡδήγησε βραδύτερον εἰς τὴν προσωπικὴν ἕνωσιν τῶν δύο βασιλείων. Θ. Κ.

**Μοσαμβίκη** (Mosambique) *[Γεωγρ.]*. Πορτογαλικὴ ἀποικία ἐν Α. Ἀφρικῇ (βλ. λ. *Μοζαμβίκη*).

**μοσανδρίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν καὶ τιτανικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου, δημητρίου καὶ νατρίου, περιέχον συγχρόνως καὶ ζιρκόνιον, θόριον, λανθάνιον καὶ φθόριον. Εἶναι ἰσόμορφον πρὸς τὸν ἰονοτρουπίτην, ἀπὸ τὸν ὁποῖον διαφέρει μόνον χημικῶς, καθ' ὅσον ὁ μοσανδρίτης περιέχει περισσότερον δημήτριον καὶ ζιρκόνιον καὶ ὀλιγώτερον ἀσβέστιον, νάτριον καὶ φθόριον ἐκείνου. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα, ἔχει εἰδικὸν βάρος 3 καὶ χρῶμα σκοτεινὸν ἐρυθρόφαιον καὶ κατὰ τὴν ἀποσαθρώσεως ὑποκίτρινον ἕως πρασινοκίτρινον, ἀπαντᾷ δὲ εἰς Laven, Stokö καὶ Barkerit-Schären. Γ. Β.

**Μόσας**, ἢ **Μόζας** (Meuze, Maas) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς ἔχων τὰς πηγάς του ἐν Γαλλίᾳ, εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ Ἄνω Μάρνη, κάτωθεν τοῦ λεκανοπεδίου τῆς Λάγκρ, καὶ διαρρέων τὴν Γαλλίαν, τὸ Βέλγιον καὶ τὴν Ὁλλανδίαν. Διέρχεται ἐκ Νεφσατώ, Κομμερσύ, Σαὶν-Μιχιέλ, Βερντέν, Σεντάν, Μεζιέρ, εἶτα διασχίζει τὸ Βέλγιον διερχόμενος διὰ τοῦ Ναμὺρ καὶ τῆς Λιέγης καὶ φθάνει εἰς Ὁλλανδίαν, ὅπου ἐκβάλλει διὰ πολλῶν στομίων εἰς τὴν Βόρειον θάλασσαν. Τὸ συνολικόν του μῆκος φθάνει τὰ 950 χλμ. Κυριώτεροι παραπόταμοί του εἶναι οἱ *Σεμύ, Λὲς* καὶ *Οὖρθ*. Ἀπὸ τοῦ Βερντὲν εἶναι πλωτός.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἐπειδὴ ὁ Μόσας διασχίζει τὴν βορειοανατολικὴν Γαλλίαν μὲ κατεύθυνσιν ἀπὸ νότου πρὸς βορρᾶν, εἶναι φυσικὸν νὰ χρησιμοποιῆται συχνὰ κατὰ τοὺς διαφόρους πολέμους ὡς κώλυμα, δεδομένου ὅτι αἱ γαλλογερμανικαὶ ἐπιχειρήσεις διεξάγονται ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς καὶ ἀντιστρόφως. Περὶ τῶν τοιούτων ἐπιχειρήσεων κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870 βλ.λ. *Γαλλογερμανικὸς πόλεμος*: Ἐπιχειρήσεις πρὸς Μόζαν. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διεξήχθησαν δύο μάχαι, ἑκάστη τῶν ὁποίων φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα *μάχη τοῦ Μόζα*, ἡ μὲν πρώτη κατὰ τὰς 27 καὶ 28 Αὐγούστου 1914, ἡ δὲ δευτέρα τὸν Νοέμβριον 1918.

**Α')** Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τῶν συνόρων (βλ. λ. *Παγκόσμιος πόλεμος*) ἡ ἐν ὑποχωρήσει 4η γαλλικὴ στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ Λάνγκλ ντὲ Καρύ, εὑρισκομένη τὴν 26ην Αὐγούστου 1914 ὡς ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαίνεται, δηλαδὴ ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Μόσα, κατέχουσα ὅμως ἁπάσας τὰς διαβάσεις τοῦ ποταμοῦ τούτου, ἔλαβε παρὰ τοῦ ἀρχιστρατήγου τὴν ἐντολὴν νὰ «χρησιμοποιήσῃ τὸν Μόσαν πρὸς ἀνακοπὴν τῆς γερμανικῆς προελάσεως» καὶ νὰ «φροντίσῃ ὅπως ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ χαθῇ ὁ σύνδεσμος μετὰ τῆς ἀριστερόθεν (βορειοδυτικῶς) 5ης στρατιᾶς». Τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἄνω ἐντολῶν ἐπεζήτησεν ὁ διοικητὴς τῆς στρατιᾶς ταύτης νὰ ἐκτελέσῃ δι' ἐπιθέσεως πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Ντονσερύ, ἀρχομένης ἀπὸ τῆς 27ης Αὐγούστου, καὶ διὰ τάξεως ἑνὸς σώματος στρατοῦ μετὰ μιᾶς μεραρχίας ἱππικοῦ πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ Σιγνὺ λ' Ἀμπέ, τηρούντων τὸν μετὰ τῆς 5ης στρατιᾶς σύνδεσμον καὶ συγχρόνως προκαλυπτόντων τὸ ἀριστερὸν τῆς 4ης στρατιᾶς.

Τὴν πρωΐαν τῆς 27ης Αὐγούστου 1914 οἱ Γάλλοι ἐπετέθησαν κατὰ τῶν προελαυνόντων Γερμανῶν (4ης στρατιᾶς τοῦ πρίγκιπος τῆς Βυρτεμβέργης), οἵτινες ἐπεζήτησαν κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην νὰ διαρρήξωσι τὸ μέτωπον τῆς 4ης γαλλικῆς στρατιᾶς, ἀλλά, μετ' ἀγῶνας διεξαχθέντας παρὰ τὸ Σεδὰν καὶ παρὰ τὸ Μουζόν, τὸ μόνον ὅπερ κατώρθωσαν οἱ Γάλλοι ἦτο τὸ νὰ συγκρατηθῶσιν ἐπὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Μόσα, χωρὶς νὰ ὑποστῶσιν οὐδεμίαν διάρρηξιν. Τὴν ἑπομένην (28 Αὐγούστου) ἐπετέθησαν οἱ Γερμανοὶ (3η στρατιὰ τοῦ στρατηγοῦ Χάουζεν) δι' ἰσχυρῶν δυνάμεων κατὰ τοῦ παρὰ τὸ Σιγνὺ λ' Ἀμπὲ γαλλικοῦ σώματος στρατοῦ, χωρὶς ὅμως νὰ δυνηθῶσι ν' ἀπωθήσωσι τοῦτο. Νοτιοανατολικώτερον, τὴν ἰδίαν ταύτην ἡμέραν, ἀπωθήθησαν μὲν κατά τι οἱ Γερμανοὶ παρὰ τὸ Ντονσερύ, ἀλλὰ παρὰ τὸ Μουζὸν κατώρθωσαν οὗτοι ν' ἀπωθήσωσι πλήρως τοὺς ἐκεῖ Γάλλους, ἐξαναγκασθέντας τότε νὰ ὑποχωρήσωσι πρὸς δυσμάς. Ἡ 4η γαλλικὴ στρατιὰ εὑρέθη τὴν ἑσπέραν τῆς 28ης Αὐγούστου εἰς πολὺ κρίσιμον κατάστασιν, καθ' ὅσον ἦτο ἀπηωρημένη κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρά, λόγῳ τοῦ ὅτι τὸ μὲν δεξιόν της ἐπέκειτο ν' ἀπολέσῃ τὸν μετὰ τῆς παραπλεύρου 3ης στρατιᾶς σύνδεσμον, τὸ δ' ἀριστερόν της εἶχεν ἤδη ἀπολέσει πάντα τοιοῦτον μετὰ τῆς 5ης στρατιᾶς. Τὴν κατάστασιν ταύτην ἔσωσεν ἡ διαταγὴ τοῦ ἀρχιστρατήγου περὶ γενικῆς ὑποχωρήσεως πρὸς τὸν Αἲν κατὰ τὴν νύκτα 28—29 Αὐγούστου. Πάντως, ἡ διήμερος αὕτη συγκράτησις τῶν Γερμανῶν εἰς τὸν Μόσαν συνετέλεσεν εἰς τὸ νὰ ἐπιτευχθῇ κάπως ὁμαλώτερον ἡ γενικὴ γαλλικὴ ὑποχώρησις.

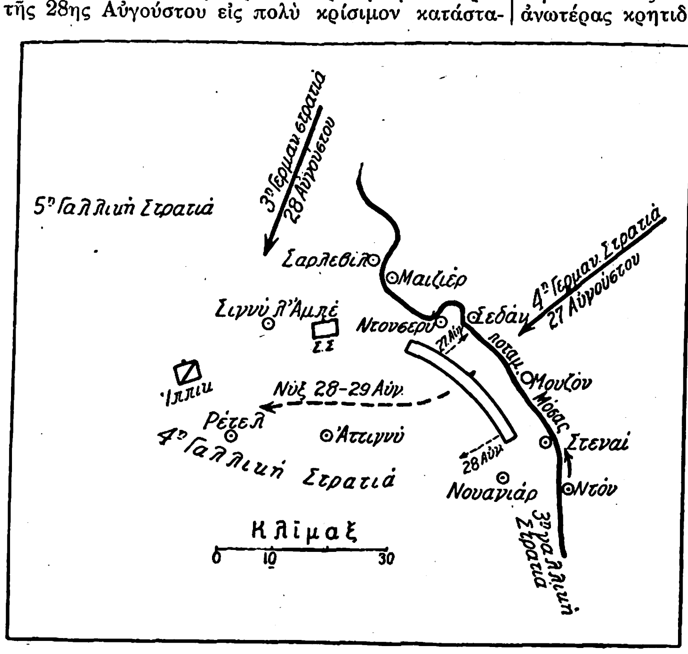


*Μάχη τοῦ Μόσα (27—29 Αὐγούστου 1914).*

**Β')** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τῆς «δευτέρας μάχης τοῦ Μόσα» φέρονται αἱ τελευταῖαι ἐπιχειρήσεις, αἱ διεξαχθεῖσαι ἐν τῷ γαλλικῷ θεάτρῳ (τῷ δυτικῷ) τὸν Νοέμβριον 1918, ἐκεῖναι δηλαδή, δι' ὧν αἱ προελαύνουσαι ἀνταντικαὶ φάλαγγες ἔφθασαν μέχρι τοῦ Μόσα, συμπληρώσασαι τοιουτοτρόπως τὴν ἐξ ὁλοκλήρου κατάληψιν τοῦ γαλλικοῦ ἐδάφους. Αἱ ἐν λόγῳ ἐπιχειρήσεις εἶναι ἀλληλένδετοι μετὰ τῆς ὅλης ἀνταντικῆς προελάσεως, τῆς φερομένης ὑπὸ τὸ ὄνομα «Γενικὴ συμμαχικὴ ἐπίθεσις» (26 Σεπτεμβρίου — 11 Νοεμβρίου 1918), περὶ ἧς βλ. λ. *Παγκόσμιος πόλεμος [Στρατ. Ἱστορ.]*. Ν. Θ. Κ.

—**Μόσα, νομὸς** — *[Γεωγρ.]*. Κεῖται ἐν τῇ ΒΑ. Γαλλίᾳ, περιλαμβάνει δὲ τμῆμα τῆς Καμπανίας καὶ τὸ παλαιὸν δουκᾶτον τοῦ Μπάρ. Ἔχει ἔκτασιν 6.241 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 218.131 κατ. (1926) καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Μπὰρ-λὲ-Ντύκ*. Τὸ ὄνομά του ἔλαβεν ἐκ τοῦ διαρρέοντος αὐτὸν ὁμωνύμου ποταμοῦ. Ἡ περιφέρειά του εἶναι γεωργική, μὲ ὡραῖα δάση, ἔχει δὲ ὀρυχεῖα διαφόρων μεταλλευμάτων, σιδήρου ἰδίως, καὶ ἀνθοῦσας ὑφαντουργικὰς βιομηχανίας. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπέστη μεγάλας καταστροφάς, ἰδίως εἰς τὰς περιοχὰς Βερντὲν καὶ Ἀργκόν. Ὑποδιαιρεῖται εἰς τέσσαρας ἐπαρχίας, 28 δήμους καὶ 586 κοινότητας.

**μοσασαυρίδαι** (οἱ) (Mosasauridae Gervais) *[Παλαιοζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *φολιδοσαύρων* ἑρπετῶν. Οἱ μοσασαυρίδαι ἦσαν μεγάλα, ἐπιμήκη, φολιδωτὰ θαλάσσια ἑρπετά, μὲ ἄκρα κατάλληλα πρὸς κωπηλασίαν. Ἦσαν τελείως προσηρμοσμένα πρὸς τὴν ἐν τῇ θαλάσσῃ ζωὴν καὶ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον κολυμβῶνται τῆς ἐπιφανείας. Ἡ μακρὰ καὶ πλατεῖα οὐρά των ἀπετέλει τὸ κατ' αὐτὸ κινητήριον ὄργανον. Ἐκ τοῦ ἀπολιθωμένου περιεχομένου τοῦ στομάχου των συνάγεται ὅτι ἦσαν ἁρπακτικὰ σαρκοβόρα φοτόκα ἑρπετά, τρεφόμενα κυρίως ἐξ ἰχθύων. Ἀπολιθωμένα λείψανά των εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων τῆς ἀνωτέρας κρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς Νέαν Ζηλανδίαν, Ἀμερικήν, Ν. Ἀφρικὴν καὶ Εὐρώπην. Τὰ κυριώτερα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι: *μοσάσαυρος, πλατύκαρπος, πλειοπλατύκαρπος, προγναθόσαυρος, βαπτόσαυρος, βραχύσαυρος, τυλόσαυρος* καὶ *αἰνόσαυρος*. Γ. Κ. Γ.

**μοσάσαυρος** (ὁ) (Mosasaurus Conyb.) *[Παλαιοζωολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *μοσασαυριδῶν σαυροειδῶν φολιδοσαύρων* ἑρπετῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα ἦσαν γιγαντώδη, μήκους μεγαλυτέρου τῶν 12 μέτρων. Τὸ κρανίον των εἶχε μῆκος 1,2 μ. Ὁ ἀριθμὸς τῶν σπονδύλων ὑπερέβαινε τοὺς 130, οἱ ὀδόντες των ἦσαν ἰσχυροὶ (14 ἐπὶ τῆς ἄνω σιαγόνος καὶ 8 ἐπὶ τοῦ πτερυγοειδοῦς) καὶ τὰ ὀπίσθια ἄκρα τετραδάκτυλα. Λείψανα ἀπολιθωμένα μοσασαύρων εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς νεοκρητιδικῆς ἢ ἀνωτέρας κρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ εἰς Νέαν Ζηλανδίαν, Βέλγιον, Β. Γερμανίαν, Γαλλίαν, Β. Ἰταλίαν καὶ Β. Ἀμερικήν. Συνώνυμον *λειόδους*. Γ. Κ. Γ.

**Μοσεϊλίμα**· βλ. *Μασλάμα*.

**Μόσελες** (Moscheles), *Ἰγνάτιος*. Διάσημος Αὐστριακὸς δεξιοτέχνης τοῦ κλειδοκυμβάλου καὶ συνθέτης (1794—1870). Ἐσπούδασεν ἐν Βιέννῃ, ὅπου μόλις δεκαεξαετὴς εἶχεν ἤδη κατακτήσει τὸ κοινὸν τῆς πόλεως. Συνεδέθη μὲ τὰς μεγαλυτέρας μουσικὰς προσωπικότητας τῆς ἐποχῆς του καὶ ἔχαιρε τῆς ἄκρας ἐκτιμήσεως τοῦ Μπετόβεν, ὅστις εἰς αὐτὸν ἐνεπιστεύθη τὴν διὰ κλειδοκύμβαλον μεταγραφὴν τοῦ «Φιντέλιο». Μετ' ὀλίγον ἤρχισε τὰς καλλιτεχνικὰς του περιοδείας, ἡ δὲ ἐν Παρισίοις ἐμφάνισίς του (1820) καὶ κατόπιν ἐν Λονδίνῳ ὑπῆρξεν ἀληθεῖς θρίαμβος. Τῷ 1843, ἱδρυθέντος τοῦ Ὠδείου τῆς Λειψίας, ὁ Μένδελσων ἐνεπιστεύθη εἰς τὸν Μόσελες τὴν σχολὴν τοῦ κλειδοκυμβάλου. Ἐκ τῶν 142 ἔργων του ἐκτιμῶνται ἰδιαιτέρως πλεῖσται συνθέσεις μουσικῆς δωματίου, τὸ 3ον καὶ 7ον κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον, ἡ μεγάλη σύνθεσις διὰ δύο κλειδοκύμβαλα (ἔργον 92), ἡ «Μελαγχολικὴ σονάτα» (49), ἡ «Χαρακτηριστικὴ σονάτα» (27) κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μόσερος** (Moscherosch), *Ἰωάννης - Μιχαήλ*. Γερμανὸς σατιρικὸς (1601—1669). Ἔγινε περίφημος διὰ τοῦ σατιρικοῦ ἔργου του «Παράξενα καὶ ἀληθινὰ πρόσωπα τοῦ Φιλάνδρου τοῦ Τσίττενβαλντ», ὅπερ ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν διὰ τὴν περιγραφήν, τῶν ἠθῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ὡς κοινωνικὴ καὶ ἠθικὴ σάτιρα. Θ. Κ.

**Μόσηγα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἐν Ἀσίᾳ Ἀλβανίας (νῦν Δαγεστάν), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Ε', 11, 4) μεταξὺ τῶν ποταμῶν Κύρου καὶ Ἀλβάνου. Α. Θ. Σ.

**Μοσία** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς λίμνης τοῦ Φενεοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 373. Χ. Δ.

**Μόσκαιστρεμ** (Moskoestrem) *[Γεωγρ.]*. Θαλάσσιον ρεῦμα τοῦ Β.'Ατλαντικοῦ (βλ. λ. *Μάλστρεμ*).

**μοσκαρδίνια** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *νεκράνθεμον τὸ εὐειδές*.

**μοσκατέλο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐν Κερκύρᾳ ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἄμπελος ἡ οἰνοφόρος*.

**Μοσκέρα** (Mosquera), *Ἰωακείμ*. Κολομβιανὸς στρατιωτικὸς καὶ πολιτικὸς (1787—1877). Συνειργάσθη μετὰ τοῦ Βολιβὰρ διὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς Βενεζουέλας καὶ τῆς Νέας Γρενάδας ἐκ τοῦ ἱσπανικοῦ ζυγοῦ. Ἐπανειλημμένως ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἀντιπρόεδρος τοῦ κράτους τῆς Κολομβίας. Π. Γ. Λ.

**μοσκιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ροδῆ ἡ μόσχοσμος*.

**Μοσκιτία**, ἢ *Ἀκτὴ Μοσκίτος* (Mosquitia ἢ Mosquitos Coast) *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένη παραλιακὴ ζώνη τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς, περιλαμβάνουσα ὁλόκληρον τὴν ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῶν Ἀντιλλῶν παραλίαν τῆς δημοκρατίας τῆς Νικαράγουας, ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Γκράσιας ἁ Ντίος πρὸς Β, μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ ποταμοῦ Σὰν Χουὰν πρὸς Ν. Ἔχει μῆκος 550 περίπου χλμ. καὶ πλάτος περίπου 80, κατοικεῖται δὲ ὑπὸ 6.000 περίπου ἰθαγενῶν τῆς φυλῆς τῶν *Μοσκίτος* ἢ *Μόσκος*, προελθούσης ἐξ ἐπιμιξίας Ἐρυθροδέρμων καὶ Νέγρων. Εἶναι χθα-

Digitized by Google

μαλὴ καὶ ἑλώδης, καλυπτομένη ὑπὸ πλουσίας τροπικῆς βλαστήσεως, καὶ διασχίζεται ὑπὸ πολυαρίθμων ποταμῶν (*Ρίο Κόκο, Ρίο Βάβα, Ρίο Γκράντε, Ρίο Μίκο, Ρίο Σὰν Χουὰν* κλπ.), κατερχομένων ἀπὸ τῆς σιέρρα *Γυολάϊκα*, ἥτις ἀποτελεῖ τὸν ὀρεινὸν σκελετὸν τῆς Νικαράγουας. Παράγει πολύτιμα ξύλα, καφέν, κακάο, σάκχαριν κλπ.

Ἡ Μοσκιτία ἀνεκαλύφθη τῷ 1502 ὑπὸ τοῦ Χριστοφόρου Κολόμβου, βραδύτερον δὲ ἐχρησίμευσεν ὡς ὁρμητήριον πειρατῶν καὶ καταφύγιον δούλων φυγάδων ἐκ τῶν πέριξ χωρῶν. Οἱ Ἄγγλοι ἀπὸ τῆς καταλήψεως τῆς Ἰαμαϊκῆς ἦλθον εἰς σχέσεις μὲ τοὺς ἀρχηγοὺς τῶν Μοσκίτος, διετήρουν δ' ἔκτοτε ψιλήν τινα κυριότητα ἐπὶ τῆς χώρας, χωρὶς ὅμως οὐδέποτε νὰ ἐγκατασταθῶσιν ἐν αὐτῇ δι' ἱδρύσεως ἀποικιῶν. Τέλος, τῷ 1905, κατόπιν ἐπεμβάσεως τῶν Ἡν. Πολιτειῶν παρητήθησαν ὁριστικῶς πάσης ἐπ' αὐτῆς διεκδικήσεως (βλ. καὶ λ. *Νικαράγουα*). Χ. Δ.

**Μοσκῖτος**, ἢ ***Μόσκος***. Λαὸς τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μοσκιτία*).

**Μοσκιῶνας** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κορθίου τῆς ἐπαρχίας Ἄνδρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 135. Τὸ χωρίον τοῦτο εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὴν ἐν αὐτῷ ἵδρυσιν τῷ 1813 ὑπὸ τοῦ λογίου μοναχοῦ Σαμουὴλ Πλασίμη, τοῦ ἐπιλεγομένου Σχαζῆ, τῆς περιωνύμου Σχολῆς τῆς Ἁγίας Τριάδος, τῆς ὁποίας τὸ λαμπρὸν οἰκοδόμημα σῴζεται μέχρι σήμερον, χρησιμοποιούμενον ὡς ἡμιγυμνάσιον. Δ. Π. Π.

**Μόσκοβα** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας (κοινῶς *Μοσκβᾶ* καλούμενος), πηγάζων ἐκ τῶν ἑλῶν τῆς Μοσκοβρεσκάγια τοῦ Σμόλενσκ. Φέρει ἐν ἀρχῇ τὸ ὄνομα *Κονοπλέβκα*, εἰσερχόμενος δὲ πρὸς ἀνατολὰς εἰς τὸ κυβερνεῖον τῆς Μόσχας μετονομάζεται εἰς *Μόσκοβαν*. Περιβρέχων τὴν ρωσικὴν πρωτεύουσαν, στρέφεται εἶτα πρὸς τὰ ΝΑ. καὶ καταλήγει κάτωθεν τὴν Κολόμνας μετὰ ροῦν 450 χιλιομέτρων, ἐκ τῶν ὁποίων κατὰ τὰ 180 εἶναι πλωτός. Τὸ πλάτος αὐτοῦ εἶναι 85 μ. κατὰ μέσον ὅρον, παρὰ τὴν Μόσχαν δὲ 150 μέτρων. Θ. Β.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν εἰς Ρωσίαν Ναπολεόντειον ἐκστρατείαν τοῦ 1812, ἅμα ὡς ὁ ὑποχωρῶν ρωσικὸς στρατὸς ἐπλησίαζε νὰ φθάσῃ, περὶ τὸ τέλος Αὐγούστου 1812, εἰς Μόσχαν (βλ. λ. *Ναπολεόντειοι πόλεμοι*), ἀντικατεστάθη ὁ ἀρχιστράτηγος Μπάρκλαϋ Τόλλυ διὰ τοῦ Κουτούζωφ, ὅστις, ὑπείκων εἰς τὴν πίεσιν τῆς ρωσικῆς κοινῆς γνώμης ὅπως μὴ ἐγκαταλειφθῇ ἀμαχητὶ ἡ ἱερὰ πόλις, ἀπεφάσισε νὰ ἐγκατασταθῇ ἐπὶ ἀμυντικῆς τοποθεσίας δυτικῶς τῆς Μόσχας καὶ ν' ἀγωνισθῇ ἐπ' αὐτῆς μέχρις ἐσχάτων. Ὡς τοιαύτην τοποθεσίαν ἐξέλεξεν ὁ Κουτούζωφ τὴν διήκουσαν κατὰ μῆκος τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Κολόξα, μέχρι τοῦ χωρίου Μποροντίνο, καὶ εἶτα τῆς χαράδρας τοῦ Σεμενόφσκοϊε, τοποθεσίαν δηλαδὴ στηρίζουσαν τὸ μὲν δεξιόν της ἐπὶ τοῦ Μόσκοβα, τὸ δ' ἀριστερόν της ἐπὶ τοῦ δάσους Οὐτίτζα, μετωπικῆς ἀναπτύξεως περὶ τὰ 8.000 μέτρα, ἀπέχουσαν περὶ τὰ 150 χιλιόμετρα δυτικῶς τῆς Μόσχας, ἔχουσαν δὲ προκεχωρημένην θέσιν περὶ τὸ χωρίον Σχβαρντίνο, ἔνθα εἶχε κατασκευασθῇ μικρὰ περιβολή. Ἐπὶ τῆς τοποθεσίας κατεσκευάσθησαν ἀρκετὰ ὀχυρωματικὰ ἔργα, ὧν τὸ κυριώτερον ἦτο μεγάλη περιβολὴ ἐγκατεστημένη εἰς τὸ κέντρον αὐτῆς καὶ ἔχουσα 21 πυροβόλα. Οἱ Ρῶσοι (περὶ τὰς 140.000 ἄνδρες) ἐτάχθησαν ἀπὸ τῆς 3ης Σεπτεμβρίου ἐπὶ τῆς τοποθεσίας ταύτης, μὲ τὸ κέντρον τοῦ βάρους τῶν δυνάμεων πρὸς τὸ δεξιόν, ὅπου τοῦτο ἐστηρίζετο ἀρκετὰ σταθερῶς, λόγῳ τοῦ ὅτι αἱ ὄχθαι τοῦ Κολόξα εἶναι πολὺ ἀπότομοι, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ ἀριστερόν, τὸ ὀλίγον ἀπηωρημένον, ἅτε τοῦ δάσους μὴ ἀποτελοῦντος στήριγμα, ἀλλὰ τοὐναντίον προκάλυμμα διὰ τὸν ἀντίπαλον. Ἀνατολικῶς τῆς τοποθεσίας ταύτης καὶ παραλλήλως αὐτῇ ὑπάρχει σειρὰ ὑψωμάτων, παρὰ τὸ Ψάρεβο, δυναμένων νὰ χρησιμοποιηθῶσιν ὡς δευτέρα γραμμὴ ἀμύνης. Ὁ ὑπὸ τὸν Ναπολέοντα γαλλικὸς στρατὸς (130.000 ἄνδρες, 580 πυροβόλα) προὐχώρησε διὰ τριῶν φαλάγγων, ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, τὴν δὲ 5ην Σεπτεμβρίου 1812 προσέκρουσεν ἐπὶ τῆς προκεχωρημένης ρωσικῆς περιβολῆς τοῦ Σχβαρντίνο, ἣν κατέλαβε ταχύτατα διὰ τῆς ἐμπροσθοφυλακῆς του, κατορθωσάσης νὰ ὑπερκεράσῃ τὴν ἐν λόγῳ περιβολὴν κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρά της. Τὴν 6ην Σεπτεμβρίου κατέστρωσεν ὁ Ναπολέων τὸ σχέδιον τῆς ἐπιθέσεως κατὰ τῆς ρωσικῆς ἀμυντικῆς τοποθεσίας, ἀφοῦ προηγουμένως ἀνεγνώρισεν ἐπιμελῶς ταύτην καὶ κατεῖδεν ὅτι ἡ κατὰ τοῦ δεξιοῦ ρωσικοῦ πλευροῦ ἐπίθεσις ἀπεκλείετο. Εἰς μὲν τοὺς στρατάρχας Νταβοὺ καὶ Νέϋ, ὑποστηριζομένους ὑπὸ μεγάλου ὄγκου ἱππικοῦ, ἀνετέθη ἡ ἐπίθεσις κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ τῶν Ρώσων, εἰς δὲ τὸν πρίγκιπα Εὐγένιον ἡ κεντρικὴ ἐπίθεσις, καθ' ὃν χρόνον ἡ φρουρὰ θὰ ἠκολούθει ὡς ἐφεδρεία. Ὁ Ναπολέων ἀπέρριψε τὴν ἰδέαν τῆς ὑπερκεράσεως τοῦ ἀριστεροῦ ρωσικοῦ πλευροῦ διὰ τοῦ δάσους Οὐτίτζε, καθ' ὅσον, διὰ νὰ ἐνεργηθῇ τοιοῦτος ἑλιγμός, θ' ἀπῃτεῖτο ὅπως ἡ ὑπερκερωτικὴ φάλαγξ εἶναι ἀρκετὰ ἰσχυρά, τοῦθ' ὅπερ θὰ ἐπετυγχάνετο διὰ τῆς ἐξασθενήσεως τοῦ κέντρου, ἣν ἠθέλησε ν' ἀποφύγῃ, καθ' ὅσον αἱ ρωσικαὶ δυνάμεις ἦσαν κατά τι ἀνώτεροι τῶν γαλλικῶν. Ἡ προχώρησις τῶν γαλλικῶν φαλάγγων ἤρχισεν ἀπὸ τῆς χαραυγῆς τῆς 7ης Σεπτεμβρίου, μετ' ὀλίγον δ' ἐξετελέσθη ἰσχυρότατος βομβαρδισμὸς ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ πυροβολικοῦ ἐναντίον ὁλοκλήρου τῆς ἀμυντικῆς ρωσικῆς γραμμῆς. Τὴν πρωΐαν τῆς ἡμέρας ταύτης κατέλαβον ὁ μὲν Εὐγένιος τὸ Μποροντίνο, οἱ δὲ Νταβοὺ καὶ Νέϋ ἀρκετὰ ὀχυρώματα τοῦ ἀριστεροῦ τῶν Ρώσων, τοὺς ὁποίους ἀμέσως τότε ἤρχισαν ἀπωθοῦντες πρὸς ἀνατολάς.

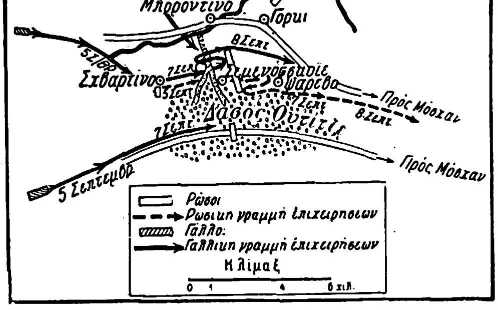


*Μάχη τοῦ Μόσκοβα 5—8 Σεπτεμβρίου 1812.*

Μέχρι τῆς 10ης ὥρας ὁ πρίγκιψ Εὐγένιος εἶχε κατολάβει ὁλόκληρον τὴν μεγάλην ρωσικὴν περιβολὴν τοῦ κέντρου. Ἐνῷ ἡ στιγμὴ ἦτο τότε κατάλληλος καὶ τὰ πάντα ἐνεδείκνυον ὅτι ἐπεβάλλετο ἡ διὰ τῆς ἐφεδρείας (τῆς φρουρᾶς) ἀνάληψις τῆς ἀποφασιστικῆς ἐπιθέσεως κατὰ τοῦ ἐπιτευχθέντος ρήγματος τοῦ ρωσικοῦ κέντρου, ἐν τούτοις ὁ Ναπολέων δὲν ἐξετέλεσε τὴν τόσον οἰκείαν αὐτῷ ἐνέργειαν ταύτην, τὴν τοσάκις δώσασαν εἰς αὐτὸν τὴν νίκην, ἀλλ' ἐπὶ μακρὸν παρέμεινεν ἀμφιρρέπων· τούτου ἐπωφεληθέντες οἱ Ρῶσοι, ἔλαβον τὸν χρόνον νὰ μεταφέρωσιν ἐκ τοῦ δεξιοῦ των εἰς τὸ κέντρον τὰς ἐφεδρείας των (δύο σώματα στρατοῦ), αἵτινες κατώρθωσαν ἐντὸς ὀλίγου ν' ἀνακαταλάβωσι τὴν μεγάλην περιβολὴν τοῦ κέντρου. Ἅμα ὡς ἡ κατάστασις ἔλαβε τοιαύτην τροπήν, ἀπεφάσισε τέλος ὁ Ναπολέων νὰ ἐμπλέξῃ τὴν φρουράν, ἀλλὰ καὶ πάλιν ἀνέστειλε τὴν διαταγὴν ταύτην, καθ' ὅσον κατ' ἐκείνην ἀκριβῶς τὴν στιγμὴν ἐνόμισεν ὅτι ἠπειλήθη τὸ ἀριστερόν του (ρωσικὸς ἀντιπερισπασμὸς διὰ τοῦ ἱππικοῦ, προσπεράσαντος ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Κολόξα, ἀλλ' ἐντελῶς ἀσήμαντος). Ἐπειδὴ περὶ τὴν 15ην ὥραν οἱ Ρῶσοι εἶχον ἀνασυνταχθῇ ἐντὸς τῆς περιβολῆς τοῦ κέντρου, ἐξηναγκάσθησαν οἱ Γάλλοι ν' ἀρχίσωσιν ἀπ' ἀρχῆς νέον ἀγῶνα, ἀποκλίνοντα τέλος ὑπὲρ αὐτῶν, ὁπότε ἐπεμβὰς ὁ Μυρὰ ἐξ ἰδίας πρωτοβουλίας, κατώρθωσε διὰ λαμπρῶν ἐπελάσεων τῶν θωρακοφόρων νὰ διαρρήξῃ πλήρως τὸ ρωσικὸν μέτωπον καὶ νὰ εὑρεθῇ εἰς τὰ νῶτα τῆς περιβολῆς, εἰσελθὼν μάλιστα ἐντὸς αὐτῆς μετὰ τοῦ ἱππικοῦ του διὰ τῆς διόδου τοῦ αὐχένος. Οἱ Ρῶσοι, θεωρήσαντες τότε τὴν μάχην ὡς τελείως ἀπολεσθεῖσαν, ὑπεχώρησαν ἀμέσως πρὸς τ' ἀνατολικὰ ὑψώματα τ' ἀποτελοῦντα τὴν δευτέραν γραμμὴν ἀμύνης, οὐχὶ ὅμως μὲ τὸν σκοπὸν τῆς ἐν αὐτοῖς ἀντιτάξεως ἀγῶνος, καθ' ὅσον τὴν 8ην Σεπτεμβρίου ὑπεχώρησαν πρὸς τὴν Μόσχαν, ἀφήσαντες ὀπισθοφυλακάς τινας μόνον, πρὸς ἐπιβράδυνσιν τῆς γαλλικῆς προελάσεως. Ἐν τῷ συνόλῳ του ὁ ἀγὼν οὗτος ὑπῆρξεν αἱματηρότατος δι' ἀμφοτέρους τοὺς ἀντιπάλους, τεθέντων ἐκτὸς μάχης 50.000 περίπου Ρώσων καὶ 30.000 Γάλλων.

Ἡ μάχη τῆς Μόσκοβας, ἥτις ἤνοιξεν εἰς τοὺς Γάλλους τὴν πρὸς τὴν Μόσχαν ὁδόν, ἔχει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι κατ' αὐτὴν ὁ Μέγας Ναπολέων περιέπεσε, κατὰ τὴν κρίσιν ἁπάντων τῶν συγγραφέων, εἰς δύο μεγάλα σφάλματα· ἀφ' ἑνὸς μὲν ὅτι δὲν ἐξετέλεσεν ὑπερκερωτικὸν ἑλιγμὸν διὰ τοῦ δάσους Οὐτίτζε, ἐνῷ διὰ τοιούτου ἑλιγμοῦ θὰ ὑπερεκερᾶτο τὸ ἀριστερὸν τῶν Ρώσων καὶ θὰ ἐπήρχετο ἀμέσως ἡ ἔκβασις τῆς μάχης, ἀφ' ἑτέρου δὲ δὲν ἐχρησιμοποίησεν ἐν τῇ καταλλήλῳ στιγμῇ τὰς ἐφεδρείας του διὰ τὴν ἀποφασιστικὴν ἐπίθεσιν. Ὅσον ἀφορᾷ τὸ δεύτερον, συγγραφεῖς τινες (συνταγματάρχης Βιὰλ κ. ἄ.) φέρουσιν ὡς δικαιολογητικὸν ὑπὲρ τοῦ Ναπολέοντος ὅτι εὑρίσκετο εἰς μεγάλην ἀπὸ τοῦ πεδίου τῆς μάχης ἀπόστασιν, ἐξ οὗ καὶ δὲν ἀντελήφθη καλῶς τὴν κατάστασιν ἐν τῷ συνόλῳ της, ἀρκούμενοι νὰ τῷ καταλογίζωσιν ὡς σφάλμα τὸ ὅτι παρέμεινε μακράν. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μόσκοβος** ἢ ***Μοσκοβάκης, Γεώργιος***. Ἐγεννήθη εἰς τὸ Κεραμίδιον τοῦ Πηλίου. Φαίνεται ὅτι τὸ οἰκογενειακόν του αὐτὸ ὄνομα εἶναι παρωνύμιον καὶ ἔχει σχέσιν μὲ ἀποδημίαν τοῦ ἰδίου ἢ τοῦ πατρός του εἰς Ρωσίαν πρὸς πλουτισμόν. Κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος, ἐνεργῶν ἐπιδρομὰς θαλασσίας εἰς τὰ τουρκοκρατούμενα παράλια τῆς Μαγνησίας, Χαλκιδικῆς κλπ. μετὰ διαφόρων καραβοκυραίων. Κατά τινα παράδοσιν ἐφονεύθη εἴς τινα ἐμφύλιον συμπλοκὴν ἐν Λεβαδείᾳ κατὰ τὸ 1833. Ἡ παράδοσις αὕτη περὶ τοῦ φόνου του διεσώθη κυρίως εἰς ἓν τοπικὸν δημοτικὸν ᾆσμα. Γ. Κ. ΚΟΡ.

**Μοσκόβσκι** (Moszkowski), ***Ἀλέξανδρος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ σατιρικός, γεννηθεὶς τῷ 1851. Ἀπὸ τοῦ 1888 ἐκ τῶν κυρίων συνεργατῶν τοῦ περιφήμου σατιρικοῦ περιοδικοῦ «Εὔθυμα Φύλλα» (Lustige Blaetter), ἐδημοσίευσε σατιρικὰ ποιήματα, συλλογὴν ἀνεκδότων καὶ λογοπαιγνίων καὶ τὰ φιλοσοφικὰ ἔργα: «Τὸ πήδημα ὑπὲρ τὴν σκιάν» (1917), «Σωκράτης ὁ ἠλίθιος» (1917), «Τὸ μυστικὸν τῆς γλώσσης» (1920), «Τὸ βιβλίον τῶν χιλίων θαυμάτων» (1916), «Τὸ πανόραμα τῆς ζωῆς μου» (1924) καὶ «Ἀϊνστάϊν, βλέμματα εἰς τὸν κόσμον τῶν σκέψεών του» (1921). Θ. Κ.

— **Μοσκόβσκι** (Moszkowski), ***Μόριτς***. Πολωνὸς συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1854. Ἐπιδοθεὶς κυρίως εἰς τὴν σύνθεσιν τεμαχίων μουσικῆς αἰθούσης καὶ διὰ κλειδοκύμβαλον, ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἱσπανικοὶ χοροί», ἓν κοντσέρτο, 3 σπουδαί, 2 τεμάχια καὶ ἓν σκέρτσο διὰ βιολίον καὶ κλειδοκύμβαλον, τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Ζὰν ντ' Ἄρκ», τὴν «Φανταστικὴν πορείαν» δι' ὀρχήστραν, 2 σουΐτας δι' ὀρχήστραν, μελῳδίας κ.ἄ. Γ. Σ.

**Μοσκὸβ-τεπὲ** *[Γεωγρ.]*. Χαρακτηριστικὸς ὀρθόπαγος τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Προποντίδος (ὑψόμ. 1050 ποδ., πλάτ. 40° 32′ 15″ Β., μῆκ. 28° 48′ 15″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ἀπολήγων εἰς τὸ ἀκρωτήριον Μπὸζ-Μπουρνού. Σ. Ε. Λ.

**μοσκοκαύλι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ ***ἐχίνωψ ὁ ἰξώδης***.

**μοσκοκούζουλος** (ὁ)· ἰδιωμ. Κρήτ., ὁ τρελλότσικος, ὁ ἐλαφρός, ὁ ἐπιπόλαιος. Ι. Δ. Μ.

**μόσκος** (ὁ)· βλ. λ. *μόσχος*.

**μοσκοσίταρο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ ***τριγωνίσκος ὁ κερασφόρος***.

**Μοσκοχώρι(ον)** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μοσχοχώρι(ον)*.

**Μόσκωφ** ***Μ.*** Βούλγαρος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1863. Ἐσπούδασε φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Γενεύης καὶ ἔγραψε: «Ἱστορία τῆς βουλγαρικῆς λογοτεχνίας» (1895), «Ἱστορία τοῦ πάπα Παϊσίου» (1893), «Ἡ Βουλγαρὶς εἰς τὰ δημοτικὰ τραγούδια» (1891), «Οἱ πόνοι τῆς Μακεδονίας» (1880) στίχοι, πολλὰ διηγήματα καὶ μετέφρασεν ἔργα τοῦ Γκρίμ, Ἀλφόνσου Δωδέ, Μωπασάν, Μολιέρου, Λερμοντὼφ κ.ἄ. Τ. Β.

**Μοσόνυϊ** (Mosonyi), ***Μιχαὴλ-Μπρὰντ*** (Brandtl) ἐπονομαζόμενος —. Διακεκριμένος Οὔγγρος συνθέτης (1814—1870). Τὰς πρώτας του ἐθνικὰς συνθέσεις: «Σπουδαὶ διὰ τὴν τελειοποίησιν τῆς οὐγγρικῆς μουσικῆς», «Παιδικὸς κόσμος» διὰ κλειδοκύμβαλον, ἐπηκολούθησαν μία συμφωνία, μία εἰσαγωγὴ ἐπὶ λαϊκοῦ οὐγγρικοῦ θέματος, τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Θρίαμβος καὶ πένθος τοῦ Χόνβεδ» κ. ἄ. Εἰς τὸ θέατρον ἔδωκεν ὁ Ποσόνυϊ τὸ μελόδραμα «Ἡ ὡραία Ἴλκα» (Βουδαπέστη 1861). Γ. Σ.

**Μοσούλη** *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἀνήκουσα εἰς τὸ βασίλειον τοῦ Ἰράκ. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Τίγρητος, εἰς ἀπόστασιν 370 χιλιομέτρων περίπου ΒΔ. τῆς Βαγδάτης, ὑπὸ 36°35′ Β. πλάτους καὶ 43°03′ Α. μήκους (Γκρήνουϊτς), ἀπέναντι τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας Νινευΐ, ἄλλοτε ἕδρα τοῦ ὁμωνύμου τουρκικοῦ νομοῦ. Ὁ πληθυσμός της, κατὰ παλαιὰς τουρκικὰς στατιστικάς, περιελάμβανε 61.000 κατοίκων, ἐξ ὧν 48.000 Μουσουλμᾶνοι, 10.000 Χριστιανοὶ (3.500 Χαλδαῖοι, 3.100 Σῦροι καὶ 3.400 Ἰακωβῖται) καὶ 3.000 Ἑβραῖοι· καὶ σήμερον δὲ ὁ συνολικὸς ἀριθμὸς τῶν κατοίκων της εἶναι ὁ αὐτὸς περίπου, ἀνερχόμενος εἰς 60.000.

Ἡ πόλις, κατέχουσα φαίνεται τὴν θέσιν νοτίου προαστείου τῆς ἀρχαίας Νινευΐ, περιβάλλεται ὑπὸ τάφρου καὶ παλαιοῦ ἠρειπωμένου τείχους, ἔχοντος 12 πύλας καὶ 18 πύργους. Οἰκίαι ὑπάρχουσι μόνον ἐντὸς τοῦ περιβόλου τοῦ τείχους, εἶναι δὲ λίθιναι, ἀλλὰ χωρὶς παράθυρα πρὸς τὰς ὁδούς, αἱ ὁποῖαι εἶναι στεναί. Τὸ κυριώτερον κτήριον τῆς Μοσούλης εἶναι μέγα τέμενος, ἄλλοτε ναὸς τοῦ Ἁγίου Παύλου. Χριστιανικαὶ ἐκκλησίαι ὑπάρχουσι σήμερον ἐν αὐτῇ 17, ἀνήκουσαι εἰς τὰ τρία ἀνωτέρω ἀναφερόμενα δόγματα, εἰς δὲ τὰ πέριξ πολλὰ μοναστήρια. Τὸ τεῖχος διατηρεῖται σχεδὸν ἀκέραιον παρὰ τὸν ποταμὸν καὶ προφυλάσσει τὴν πόλιν ἀπὸ τὰς πλημμύρας αὐτοῦ. Ἐντὸς τοῦ Τίγρητος ὑπάρχει νησίς, καλυπτομένη τὸ ἔαρ καὶ τὸ θέρος ὑπὸ τῶν ὑδάτων. Ὅταν δὲ τὰ ὕδατα ἀποσύρονται, εἰς τὰς ἀποκαλυπτομένας ὄχθας καὶ νησῖδας καλλιεργοῦνται ποικίλα κηπουρικὰ προϊόντα, ἰδίως ἐκλεκτὰ πεπόνια.

Ἡ Μοσούλη εἶχεν ἄλλοτε σπουδαίαν βιομηχανίαν, κυρίως δὲ ὑφαντουργικήν, παράγουσαν ἰδίᾳ λεπτὰ βαμβακερὰ ὑφάσματα, τὰς ἀπὸ τοῦ

Digitized by Google

ὀνόματός της κληθείσας «μουσελίνας». Ὁ Γάλλος περιηγητὴς Ὀλιβιέ, ἐπισκεφθεὶς τὴν πόλιν τῷ 1794, περιγράφει τὰ ὑφαντουργεῖά της, ὄντα τότε ἐν πλήρει δράσει. Εἰς αὐτὰ κατεσκευάζοντο ἐπίσης καὶ μεταξωτὰ ὑφάσματα, λαμὲ καὶ ἄλλα, βελοῦδα, τάπητες καὶ ὑφάσματα τυπωτὰ (μπασμάδες) πολὺ πρὶν ἢ κατασκευασθῶσι τοιαῦτα ἐν Εὐρώπῃ. Εἶχεν ἐξ ἄλλου ἀνθοῦσαν βιομηχανίαν ὅπλων, ἐφιππίων, περιζήτητα δὲ ἦσαν καὶ τὰ μαροκηνά της δέρματα, ὡς καὶ τὰ προϊόντα τῆς χρυσοτορευτικῆς, ἀργυροτορευτικῆς καὶ χαλκουργικῆς. Αἱ πλεῖσται τῶν εἰδικῶν τούτων βιομηχανιῶν ἐξέλιπον πρὸ πολλοῦ, διατηρεῖται δὲ μόνον, ἀτελὴς ἄλλως τε καὶ ἐν μετρίᾳ κλίμακι, ἡ ὑφαντουργία. Ἡ παρακμὴ τῆς ἐμπορικῆς καὶ βιομηχανικῆς κινήσεως τῆς Μοσούλης ἀποδίδεται εἰς τὸ ἄνοιγμα τῆς διώρυγος τοῦ Σουέζ, διότι ἔκτοτε τὰ ἐμπορεύματα τῆς Δ. Εὐρώπης μεταφέρονται εἰς Περσίαν καὶ Ἄπω Ἀνατολὴν ἀκολουθοῦντα τὴν ὁδὸν τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης.

—*[Ἱστορ.]* Τὸ ὄνομα τῆς Μοσούλης δὲν ἀπαντᾷ εἰς τοὺς ἀρχαίους συγγραφεῖς τῆς π. Χ. περιόδου, ἐκτὸς ἂν θεωρήσωμεν ὅτι ταυτίζεται πρὸς τὴν *Μέσπιλαν* τοῦ Ξενοφῶντος (Ἀνάβασις III, 4, 10) ἢ πρὸς τὴν *Μοζὲλ* τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης. Ἡ λέξις *Μοσούλη*, ἀρχικῶς ἀραβιστὶ «*ἐλ Μουσίλ*», θεωρεῖται ἀραβικῆς προελεύσεως, σημαίνουσα «τὸ σημεῖον τῆς συνενώσεως ἢ συναντήσεως» τῶν ὁδῶν. Ὁ Vital Cuinet εἰσηγεῖται ἄλλην ἐτυμολογίαν, ὑποστηρίζων ὅτι ἡ λέξις παράγεται ἐκ τοῦ σημιτικοῦ *μοτσάλ*, τὸ ὁποῖον σημαίνει «βαμβακονήματα», καὶ φρονεῖ ὅτι ἐδόθη εἰς αὐτήν, διότι ἐκεῖ ὑφαίνετο ἀρχαιόθεν ἡ μουσελίνα. Κατὰ ταῦτα τὸ ὕφασμα τοῦτο ἔδωκε τὸ ὄνομα εἰς τὴν πόλιν καὶ οὐχὶ τὸ ἐναντίον, ὡς πιστεύεται γενικῶς.

Ἱστορικῶς ἡ Μοσούλη κατέστη γνωστὴ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Χριστιανισμοῦ, ὅστις διεδόθη ἐκεῖ ὑπὸ τῶν ἁγίων Μάρκου καὶ Ἀγαίου, μαθητῶν τοῦ ἀποστόλου Θαδδαίου. Ἀπὸ τοῦ Ε΄ καὶ ΣΤ΄ μ. Χ. αἰῶνος ὁλόκληρος ἡ περὶ αὐτὴν κοιλὰς παρέμεινεν ὑπὸ τὴν ἐπίρειαν τοῦ νεστοριανισμοῦ, τότε δὲ ἡ Μοσούλη ἔγινε μητρόπολις μὲ πέντε ἐπισκοπάς, ὧν μία ἡ τῆς Νινευΐ, τότε μικροῦ χωρίου, ἐκτισμένου ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας ἀσσυριακῆς πόλεως.

Ἡ Μοσούλη εἶδε τὴν μεγαλυτέραν ἀκμήν της περὶ τὰ τέλη τῆς χαλιφείας. Ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ ΙΑ΄ αἰῶνος περιῆλθεν εἰς τοὺς Σελτζουκίδας Τούρκους, ἐκ τῶν ὁποίων ὁ Μελὲκ-Σὰχ (1073—1093) ἐχρησιμοποίησεν αὐτὴν ὡς βάσιν τῶν ἐναντίον τῆς Βαγδάτης πολεμικῶν του ἐπιχειρήσεων. Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν οἱ ἡμιανεξάρτητοι ἡγεμόνες τῆς Μοσούλης μετέσχον τῶν ἐναντίον τῶν Σταυροφόρων πολέμων. Ὁ Κερμπογᾶ, ἔχων ὑπὸ τὰς διαταγάς του 100.000 ἄνδρας ἐνικήθη ὑπὸ τὰ τείχη τῆς Ἀντιοχείας (1098). Ὁ διάδοχός του ὅμως Γκεκερμὶς ἐνίκησε τοὺς Σταυροφόρους. Τῷ 1144 ἱδρύθη ἐν Μοσούλῃ τὸ ἓν ἐκ τῶν τριῶν μουσουλμανικῶν κρατῶν, τῶν *Ἀταμπέκ*. Ἐκ τῶν ἡγεμόνων τούτου ὁ Ζεγκί, ὁ Sanguin (=αἱμοχαρὴς) τῶν Γάλλων χρονογράφων, ἐκυρίευσεν ἀπὸ τῶν Λατίνων τὴν Ἔδεσσαν. Ὁ Νουρεδδίν, υἱὸς τοῦ Ζεγκί, ἐξεδίωξε τοὺς Λατίνους ἐξ ὅλων τῶν πόλεων τῆς Β. Συρίας καὶ κατέλαβε κατόπιν τὴν Δαμασκόν. Κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΓ΄ αἰῶνος ὁ Χουλαγκιοῦ, ἔγγονος τοῦ Δζεγκὶζ-Χάν, κατέλαβε τὴν Μοσούλην, λέγεται δὲ ὅτι δεχθεὶς τότε τὸν νεστοριανισμὸν ἐνυμφεύθη τὴν νεστοριανὴν Δοκοὺς-Χατούν.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἔζη εἰς Μοσούλην ὁ τελευταῖος σουλτᾶνος τῆς δυναστείας τῶν Ἀταμπέκ, ὁ Μπεντρεντὶν Λουλοῦ, ἢ Λουλοῦ-Σουλτάν, ὅστις ἐτάφη παρὰ τὸν ἀρχαῖον ναὸν τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου. Περὶ τὰ τέλη τῆς ΙΕ΄ ἑκατονταετηρίδος ἡ Μουσούλη ἐλεηλατήθη ὑπὸ τῶν ὀρδῶν τοῦ Ταμερλάνου. Κατὰ τὸν αἰῶνα τοῦτον εἶχον κυβερνήσει αὐτὴν Τουρκομᾶνοι δυνάσται, τοὺς ὁποίους διεδέχθησαν κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα οἱ Πέρσαι. Τῷ 1516, ἐπὶ σουλτάνου Σελὶμ τοῦ Α΄, ὁ Τοῦρκος διοικητὴς τῆς Διαρβεκίρης Μεχμὲτ-πασᾶς ἔκαυσε τὴν Μουσούλην καὶ ἔσφαξε μέγα μέρος τῶν κατοίκων της. Ἡ πόλις προσηρτήθη τότε εἰς τὸ τουρκικὸν κράτος, ἦλθε δὲ ἐκεῖ ὁ Κοῦρδος τὴν καταγωγὴν Τοῦρκος ἱστορικὸς Ἰδρίς, ὅστις εἰργάσθη διὰ τὴν ὀργάνωσιν τῆς χώρας. Ἐν τούτοις, μόλις τῷ 1638, κατὰ τὴν ἐναντίον τῆς Περσίας ἐκστρατείαν τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Δ΄, ἐγκατεστάθη εἰς τὴν χώραν τῆς Μοσούλης ἡ τουρκικὴ κυριαρχία. Καὶ πάλιν ὅμως, τῷ 1733, ὁ Ναδὶρ-Σὰχ τῆς Περσίας ἐπολιόρκησε τὴν πόλιν, ἀλλ' ἀπεκρούσθη ὑπὸ τοῦ Τούρκου τοπάρχου Χατζῆ-Χουσεῒν πασᾶ. Ἐπειδὴ δὲ ἡ νίκη τῶν Τούρκων ἀπεδόθη καὶ ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μαχμοὺτ τοῦ Α΄ εἰς τὴν προστασίαν τῆς Θεοτόκου, τὴν ὁποίαν τιμῶσιν οἱ Τοῦρκοι ὑπὸ τὸ ὄνομα Μεριὲμ-Ἀνᾶ, ἐδόθη εἰς τὴν χαλδαϊκὴν καὶ εἰς τὴν συριακὴν κοινότητα τῆς Μοσούλης ἡ ἄδεια νὰ κτίσουν ἀνὰ μίαν ἐκκλησίαν τῆς Παναγίας. Ἔκτοτε ἡ Μοσούλη παρέμεινεν ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῆς Τουρκίας. Ἡ ἀκαταστασία ὅμως τῆς τουρκικῆς διοικήσεως ἐπεκράτει καὶ εἰς τὴν μεμακρυσμένην ταύτην ἐπαρχίαν. Ἀφ' ἑνὸς οἱ γενίτσαροι, ἀφ' ἑτέρου δὲ οἱ ἐντόπιοι φεουδάρχαι (ἀγᾶδες) ἐπίεζον τὸν λαόν, ἐπιβάλλοντες παντοειδεῖς φόρους. Μόλις δὲ μετὰ τὸ 1826 ἐτέθη κἄποια τάξις εἰς τὴν διοίκησιν, παταχθέντων τῶν ἐντοπίων χωροδεσποτῶν.

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μοσούλης *βιλαέτιον*** (νομὸς) *[Γεωγρ.]*. Ὑπὸ τὴν τουρκικὴν κυριαρχίαν ἡ Μοσούλη ἦτο ἕδρα γενικῆς διοικήσεως, ἀποτελουμένη ἐκ τῶν διοικήσεων (σαντζὰκ) Μοσούλης, Σεχριζὸρ καὶ Σουλεϋμανιέ. Τὸ σαντζάκιον τῆς Μοσούλης περιλάμβανε τὰς ὑποδιοικήσεις (καζᾶδες) Μοσούλης, Ντεχόκ, Ζαχό, Ζιμπὰρ Σιντζὰρ καὶ Ἀκρᾶ. Εἶχε δὲ ἐπιφάνειαν 75.700 τετρ. χιλιομέτρων καὶ 300.000 κατοίκους ἐξ ὧν 30.000 ἦσαν Χριστιανοὶ (Χαλδαῖοι, Συροκαθολικοὶ Ἰακωβῖται), 6.000 Ἑβραῖοι καὶ 15.000 Γεζῖται, οἱ δὲ λοιποὶ Μουσουλμᾶνοι, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐπεκράτουν οἱ Ἄραβες, ἀριθμούμενοι εἰς 173.000.

Σήμερον τὸ τέως βιλαέτιον Μοσούλης ἀνήκει ὁλόκληρον εἰς τὸ κράτος τοῦ Ἰράκ, περιλαμβάνει δὲ τοὺς λιβᾶδες (νομοὺς ἢ διοικήσεις) *Μοσούλης, Ἐρμπίλ, Κερκιοὺκ* καὶ *Σουλεϋμανιέ*, ἄρα ἐξετάθη καὶ νοτιώτερον. Κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν Ἄγγλων γενομένην ἀπογραφὴν τῷ 1921, τὸ βιλαέτιον τοῦτο ἔχει 703.378 κατοίκους, ἐξ ὧν 55.000 περίπου Χριστιανοὶ καὶ 14.500 Ἰσραηλῖται. Εἰς τὴν πόλιν Μοσούλην καὶ εἰς τὴν πέριξ πεδιάδα ἐπικρατεῖ τὸ ἀραβικὸν στοιχεῖον, εἰς δὲ τὰ ὀρεινὰ μέρη τὸ κουρδικόν. Ἡ ὑπὸ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν τῷ 1925 ἀποσταλεῖσα ἐπιτροπὴ ἀπεφάνθη ὅτι ἡ χώρα κατοικεῖται ὑπὸ Κούρδων, Ἀράβων, Χριστιανῶν, Τούρκων, Γεζιτῶν καὶ Ἑβραίων, τῶν Κούρδων ἐχόντων τὴν πρώτην θέσιν, τῶν δὲ λοιπῶν ἐρχομένων κατὰ τὴν ἀνωτέρω τάξιν.

Ἡ χώρα ἔχει μεγίστην σπουδαιότητα, τόσον στρατηγικὴν ὅσον καὶ ἐμπορικήν. Ἔχει ἐν πρώτοις ἐνδιαφέρουσαν παραγωγὴν κτηνοτροφικῶν καὶ γεωργικῶν προϊόντων, βιομηχανίαν σιδήρου, ὑφασμάτων, ταπήτων, δερμάτων. μεταλλεῖα χαλκοῦ καὶ ὑδραργύρου καὶ ὀρυχεῖα γαιάνθρακος καὶ ἀσφάλτου. Ἀλλ' ἡ ἀπὸ οἰκονομικῆς ἀπόψεως σημασία της ἔγκειται ἰδίως εἰς τὰς ἐν αὐτῇ ἀφθόνους πετρελαιοπηγάς. Ἀπὸ στρατηγικῆς ἀφ' ἑτέρου ἀπόψεως, ὁ κύριος τῆς περιοχῆς τῆς Μοσούλης δεσπόζει ὁλοκλήρου τοῦ Ἰράκ, διότι κατέχει τὴν ἀρχὴν ὅλων τῶν ποταμίων ὑδάτων καὶ δύναται νὰ ἀπειλήσῃ τὰ νοτίως κείμενα πετρελαιοφόρα πεδία. Ὡς ἐκ τούτου δὲ ἀκριβῶς τὸ ζήτημα τῆς κυριότητος τῆς Μοσούλης (βλ. κατωτ.) προὐκάλεσε σφοδρὰν συζήτησιν εἰς τὴν ἐν Λωζάνῃ συνδιάσκεψιν τῆς εἰρήνης τοῦ 1923. Ν. Μ.

— **Μοσούλης *ζήτημα*** *[Διεθν.]*. Κατὰ τὰ τέλη τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, διὰ τῆς ἀνακωχῆς τοῦ Μούδρου τοῦ Ὀκτωβρίου 1928, αἱ ἐχθροπραξίαι διεκόπησαν μεταξὺ Τούρκων καὶ Ἄγγλων, οἱ ὁποῖοι εὑρίσκοντο Ν. τῆς Μοσούλης. Ἀλλὰ τὴν 3ην Νοεμβρίου ὁ Ἄγγλος στρατηγὸς Κάσελς (Cassels) εἰδοποίησε τὰς τουρκικὰς ἀρχὰς ὅτι διετάχθη νὰ προχωρήσῃ πέραν τῆς γραμμῆς τῆς ἀνακωχῆς καὶ νὰ καταλάβῃ τὴν Μοσούλην, τοῦθ' ὅπερ καὶ ἔπραξεν. Ἡ παραβίασις αὕτη τῆς γραμμῆς τῆς ἀνακωχῆς ἐδικαιολογεῖτο διὰ τοῦ ἄρθρου 7 τῆς συμφωνίας τοῦ Μούδρου, καθ' ἣν «ἐν ᾗ περιπτώσει ἤθελε προκύψει κατάστασις ἀπειλοῦσα τὴν ἀσφάλειαν τῶν συμμάχων, οὗτοι θέλουσιν ἔχει τὸ δικαίωμα νὰ καταλαμβάνωσι πᾶν στρατηγικὸν σημεῖον». Οἱ Τοῦρκοι, ὑποστηρίζοντες ὅτι τοιαύτη ἀπειλὴ δὲν ὑφίσταται, διεμαρτυρήθησαν ἐντόνως ἐναντίον τῆς ἐνεργείας ταύτης τῆς Ἀγγλίας. Βραδύτερον οἱ Ἄγγλοι προὐχώρησαν ἔτι περισσότερον. Τῇ 30ῇ Σεπτεμβρίου 1924 προὐτάθη ὑπὸ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν νέα προσωρινὴ γραμμή, γνωστὴ ὡς «γραμμὴ Βρυξελλῶν», καὶ ἔγινε δεκτὴ ὑπὸ τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς Τουρκίας. Ἡ γραμμὴ αὕτη διῆκεν 150 χλμ. κατ' ἐλάχιστον ὅριον Β. τῆς γραμμῆς τῆς διαχωρίσεως τῆς ὁρισθείσης διὰ τῆς ἀνακωχῆς, ἠκολούθει δὲ τὴν ὀροσειράν, τὴν ὁποίαν τέμνουσιν οἱ ποταμοὶ Χαζὶλ, Χαμποὺρ καὶ Ζάμπ. Ἐνωρίτερον ὅμως, κατὰ τὰς συζητήσεις τῆς συνθήκης εἰρήνης τῆς Λωζάννης (1923), εἶχε συζητηθῆ τὸ ζήτημα τῆς κυριότητος τῆς Μοσούλης, ἀποτελέσαν μίαν τῶν μεγαλυτέρων δυσχερειῶν, αἵτινες προὐκάλεσαν τὴν ἐπὶ μῆνας παράτασιν τῆς συνδιασκέψεως. Οἱ Τοῦρκοι ὑπεστήριζον πεισμόνως τὰς ἀπόψεις των, διεκδικοῦντες μέγα μέρος τοῦ νομοῦ Μοσούλης, εἰς ἐνίσχυσιν δὲ τῶν ἀξιώσεών των ἐπεκαλέσθησαν καὶ αὐτὴν τὴν Βρεττανικὴν ἐγκυκλοπαιδείαν, ἥτις ἔδιδεν εἰς αὐτοὺς δίκαιον. Δυνάμει τοῦ 3ου ἄρθρου τῆς συνθήκης τῆς Λωζάννης, ἡ μεταξὺ Ἀγγλίας καὶ Τουρκίας διαφορὰ θὰ ἤγετο ἐνώπιον τοῦ συμβουλίου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, ἐκτὸς ἂν ἐκανονίζετο ἐντὸς ἐννέα μηνῶν. Οἱ Τοῦρκοι ἐδέχθησαν τοῦτο, συνεπείᾳ διαβεβαιώσεως τοῦ Ἄγγλου ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν λόρδου Curzon, καθ' ἣν «ἡ ἀπόφασις τοῦ συμβουλίου, εἰς τὸ ὁποῖον θ' ἀντεπροσωπεύετο καὶ ἡ Τουρκία, θὰ ἔπρεπε νὰ εἶναι ὁμόφωνος», οὕτως ὥστε δὲν θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ ληφθῇ ἀπόφασις ἄνευ τῆς συγκαταθέσεώς των.

Τὰς σχετικὰς μετὰ τῆς Τουρκίας διαπραγματεύσεις διεξήγαγεν ὁ σὲρ Percy Cox ἐν Κωνσταντινουπόλει (19 Μαΐου—15 Ἰουνίου 1924). Οἱ Τοῦρκοι διεξεδίκουν ὁλόκληρον τὸ τέως τουρκικὸν βιλαέτιον Μοσούλης. Τὸν Αὔγουστον ἡ ὑπόθεσις ἤχθη ἐνώπιον τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, ἥτις διώρισεν ἐπιτροπὴν πρὸς μελέτην τοῦ ζητήματος. Τὸν Σεπτέμβριον ὅμως οἱ Τοῦρκοι, ἐνθαρρυνθέντες ἐκ τῆς ἐκβάσεως τῆς Μικρασιατικῆς ἐκστρατείας, ὑπερέβησαν τὸ προσωρινὸν σύνορον καὶ ἠνάγκασαν τὰς ἀγγλικὰς στρατιωτικὰς δυνάμεις, ἀνερχομένας εἰς 8.000 ἄνδρας, νὰ καταφύγωσι νοτιώτερον εἰς Ἀμαδιέ, ὅπου ἦλθεν εἰς βοήθειαν αὐτῶν στρατὸς τοῦ κράτους τοῦ Ἰράκ. Συνῆλθε τότε εἰδικὴ σύνοδος τοῦ συμβουλίου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν ἐν Βρυξέλλαις (Ἰανουάριος 1925) καὶ ἀνεκοίνωσε τὸ πόρισμα τῶν συζητήσεών της τὸν Αὔγουστον τοῦ αὐτοῦ ἔτους. Ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν διεκήρυττεν ὅτι τὰ ἱστορικὰ δικαιώματα ἦσαν ὑπὲρ τῆς Τουρκίας, ἀπεφαίνετο ὅμως ὅτι ἡ Μοσούλη πρέπει νὰ ἀφεθῇ εἰς τὴν Τουρκίαν, ἂν ἡ Ἀγγλία εἶχε τὴν πρόθεσιν νὰ ἀποχωρήσῃ ἐκ τοῦ Ἰρὰκ τῷ 1928, ἄλλως θὰ ἔπρεπε νὰ ἀφεθῇ εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἂν αὕτη ἤθελε ν' ἀναλάβῃ 25ετῆ ἐντολὴν διὰ τὸ Ἰράκ.

Ἡ Τουρκία ἰσχυρίζετο ὅτι ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν δὲν δύναται νὰ ἐκδώσῃ δεσμευτικὴν ἀπόφασιν, ἐπειδὴ δ' ἐξ ἄλλου ἡ ὑποδειχθεῖσα λύσις ἐφαίνετο δυσχερής, ἂν μὴ καὶ ἀδύνατος, ἡ ὑπόθεσις παρεπέμφθη εἰς τὸ ἐν Χάγῃ Διαρκὲς Δικαστήριον Διεθνοῦς Δικαιοσύνης. Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ Τοῦρκοι ἐπεχείρησαν, τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1925 νέαν παραβίασιν τῆς γραμμῆς τῶν Βρυξελλῶν, συλλαβόντες δὲ τοὺς Β. καὶ Ν. τῆς γραμμῆς ταύτης οἰκοῦντας χριστιανικοὺς πληθυσμοὺς ἐξετόπισαν αὐτοὺς εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Τουρκίας, ἐνῷ 3.000 Χαλδαῖοι κατέφευγον εἰς τὴν χώραν τοῦ Ἰράκ. Ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν, κληθεῖσα πάλιν νὰ ἀσχοληθῇ περὶ τοῦ ζητήματος, διώρισε νέαν ἐπιτροπήν, ὅπως ἐξετάσῃ τὰ ἑκατέρωθεν παράπονα καὶ ὑποβάλῃ ἔκθεσιν περὶ τῶν γενομένων παραβιάσεων. Ἡ ἔκθεσις αὕτη, ὑποβληθεῖσα τὸν Δεκέμβριον, διεπίστωσε τὰς βιαιότητας τὰς διαπραχθείσας ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐναντίον τῶν χριστιανικῶν πληθυσμῶν. Ὡς ἐκ περισσοῦ, ἡ Τουρκία ἠρνεῖτο νὰ δεχθῇ τὴν ἐν τῷ μεταξὺ ἐκδοθεῖσαν διαιτητικὴν ἀπόφασιν τοῦ Δικαστηρίου τῆς Χάγης, προτείνουσα δημοψήφισμα, συνάμα δέ: α) τετραμερὲς σύμφωνον (Ἀγγλίας, Ἰράκ, Περσίας καὶ Τουρκίας) ἐγγυώμενον τὴν ἀνεξαρτησίαν καὶ τὴν ἀκεραιότητα τοῦ κράτους τοῦ Ἰράκ, β) τὴν εἰς τὴν Τουρκίαν ἐκχώρησιν τῆς κοιλάδος τοῦ Συαλέ, περιλαμβανούσης μέρος τῶν πετρελαιοφόρων πεδίων καὶ τὰς κυριωτέρας πηγὰς τῆς ἀρδεύσεως τοῦ Ἰράκ. Ἐπὶ τέλους ὅμως ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν ἐξέδωκεν, ἐρήμην τῆς Τουρκίας, ἀπόφασιν ἐπιδικάζουσαν τὴν Μοσούλην εἰς τὸ κράτος τοῦ Ἰρὰκ ὑπό τινας ὅρους, τοὺς ὁποίους ἐδέχθη ἀμέσως ἡ Ἀγγλία.

Ἡ ἐνσωμάτωσις τῆς Μοσούλης εἰς τὸ κράτος τοῦ Ἰρὰκ ἐπεκυρώθη διὰ τριμεροῦς συνθήκης, ὑπογραφείσης ἐν Ἀγκύρᾳ τῇ 5ῃ Ἰουνίου 1926 μεταξὺ τῆς Ἀγγλίας, τοῦ Ἰρὰκ καὶ τῆς Τουρκίας. Διὰ τῆς συνθήκης ταύτης ἡ Τουρκία ἐδέχθη τὴν γραμμὴν τῶν Βρυξελλῶν μετά τινων τροποποιήσεων τῆς μεταξὺ Ἰρὰκ καὶ Τουρκίας μεθοριακῆς γραμμῆς, ἥτις θὰ ἐχαράσσετο ἐπὶ τόπου ὑπὸ μικτῆς ἐπιτροπῆς. Ἐπίσης ὑπεγράφη καὶ τριμερὲς σύμφωνον ἀσφαλείας μεταξὺ Ἀγγλίας, Ἰρὰκ καὶ Τουρκίας. Εἰς τὴν τελευταίαν ταύτην ἀνεγνωρίσθη μερίδιον εἰς τὸ προνόμιον τῶν πετρελαιοφόρων πεδίων ἐπὶ 25 ἔτη. Ὑπεγράφη πρὸς τούτοις καὶ συμφωνία περὶ ἀποζημιώσεως τῆς Τουρκίας διὰ τὴν ἀξίαν τῶν τέως ἐν τῷ βιλαετίῳ Μοσούλης τουρκικῶν δημοσίων ἔργων. Διὰ μεταγενεστέρας δὲ ἀνταλλαγῆς διακοινώσεων ἀνεγνωρίσθη ἐπὶ πλέον εἰς τὴν Τουρκίαν τὸ δικαίωμα τῆς κεφαλαιοποιήσεως τοῦ μεριδίου αὐτῆς εἰς τὸ προνόμιον τῶν πετρελαίων, ὑπολογισθέντος εἰς 500.000 λίρας Ἀγγλίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Vital Cuinet*, La Turquie d'Asie (Paris 1891), τόμος Β΄ σελ. 763—875. — *E. Sachau*, Am Euphrates und Tigris (Berlin 1899). — Baron von *Oppenheim*, Vom Mittelmeer zum Persischen Golf (Berlin 1900). — La question de Mosul 1918—1925 (τουρκικὴ Ἐρυθρὰ βίβλος).—*G. Gidel*, La frontière entre la Turquie et l'Irak (Paris).—*H. C. Luke*, Mosul and its Minorities (1925).

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μοσπινιώτης, *Ἀναστάσιος*.** Λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Ἰωαννίνοις τῷ 1718. Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Μπαλάνου καὶ ἀργότερον τοῦ Εὐγενίου Βουλγάρεως, ὃν διεδέχθη εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς Μαρουτσείου σχολῆς. Κατόπιν ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Παταβίου, ἐπανελθὼν δὲ εἰς τὴν Ἑλλάδα διωρίσθη διευθυντὴς τῆς ἐν Μυτιλήνῃ σχολῆς. Βραδύτερον ἀπῆλθεν εἰς Αὐστρίαν, Μολδαβίαν καὶ Οὐγγαρίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Κατὰ τὸν Ζαβίραν καὶ τὸν Σάθαν, ἔγραψε πολλὰ συγγράμματα, ἅτινα δὲν διεσώθησαν πλὴν λόγων τινῶν. Χ. Ι. Ζ.

**Μόσσε** (Mosse), ***Ροδόλφος***. Εἷς τῶν μεγαλυτέρων Γερμανῶν ἐκδοτῶν (1843—1920). Τῷ 1889 ἐξέδωκεν ἐν Βερολίνῳ τὴν ἐφημερίδα «Μπερλίνερ Τάγκεμπλατ», κατόπιν δ' ἐπεξέτεινε τὴν ἐπιχείρησιν διὰ τῆς ἐκδόσεως ἐκλαϊκευτικῆς ἐπιστημονικῆς βιβλιοθήκης, ὁδηγῶν ἐμπορίου, ἐπαγγελμάτων, λουτρῶν κλπ., ἐμπορικῶν συνθηματικῶν κω-



Digitized by Google

δίκων καὶ πλήθους ἄλλων δημοσιευμάτων. Ὁ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθεὶς τῷ 1867 ἀγγελιοδοτικὸς οἶκος διεξάγει εἰς εὐρυτάτην κλίμακα διαφημιστικὰς ἐργασίας. Θ. Κ.

**Μόσσελ** *Μπαίυ,* ἢ *Σάουθ 'Αλέγουαλ* (Mossel bay ἢ South Aliwal) *[Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς νοτίου 'Αφρικῆς ἐν τῇ χώρᾳ τοῦ 'Ακρωτηρίου, κείμενος ἐπὶ τῆς Δ. παραλίας τοῦ ὁμωνύμου ὅρμου, ἑνὸς ἐκ τῶν ἀσφαλεστέρων ἀγκυροβολίων τῆς χώρας ταύτης. Συνδέεται διὰ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς μήκους 318 μιλλίων μετὰ τῆς πόλεως τοῦ 'Ακρωτηρίου (Καίηπ-Τάουν) καὶ ἔχει 2.500 περίπου κατ. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἐχρησίμευεν ὡς ἀγκυροβόλιον καταφυγῆς εἰς τοὺς παραπλέοντας τὴν Ν. 'Αφρικὴν Πορτογάλους θαλασσοπόρους, οἵτινες διεξῆγον τὸ ἐμπόριον τῶν 'Ινδιῶν. Χ. Δ.

**Μόσσι** (ὁ) (Mossi). Φυλὴ Νέγρων τῆς γαλλικῆς 'Αφρικῆς, κατοικοῦσα εἰς τὰς περιφερείας Γουϊνέας, Ἄνω Σενεγάλης καὶ Νίγηρος. 'Αναγνωρίζουν διαφόρους φυλάρχους, τῶν ὁποίων ὁ ἀρχηγὸς ἑδρεύει εἰς Οὐαγκαντουγκού. 'Ασκοῦν μικρεμπόριον καὶ πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν τὴν ἐπαιτείαν. Π.Γ.Λ.

**μοσσίτης** (Mossit) *['Ορυκτολ.]*. 'Ορυκτὸν μετανιοβικὸν καὶ μετατανταλικὸν ἅλας τοῦ σιδήρου καὶ τοῦ μαγγανίου. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι:

$$(Fe, Mn)\ [(Nb, Ta)\ O_3]_2.$$

Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ τετραγωνικὸν σύστημα, θεωρούμενον ὡς ἑτέρα μορφὴ τοῦ κολουμβίτου, κρυσταλλουμένου εἰς τὸ ρομβικόν, ἀπαντᾷ δὲ εἰς τὴν νῆσον Moss εἰς τὸ Christianiafjord. Γ. Β.

**Μόσσιωρη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ 'Ιωαννίνων χωρίου *Σιταριά* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μόσσο** (ἰταλ. mosso) *[Μουσ.]*. Ὅρος μουσικὸς σημαίνων ἐπιτάχυνσιν τῆς ρυθμικῆς ἀγωγῆς εὑρηται ἐπίσης καὶ ὡς *πιοὺ μόσσο* (pui mosso=γοργότερον). Γ. Σ.

**Μόσσο** (Mosso), *Ἄγγελος*. 'Επιφανὴς 'Ιταλὸς φυσιολόγος (1846—1910). 'Εσπούδασεν ἐν Τουρίνῳ καὶ κατόπιν ἐν Λειψίᾳ. Τῷ 1876 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Τουρίνου, τῷ δὲ 1879 ἡ 'Ακαδημία τῶν Lincei τῷ ἀπένειμε τὸ βασιλικὸν βραβεῖον ἐκ 10 χιλ. φρ. διὰ τὸ ὑπόμνημά του «Περὶ τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος». Τῷ 1882 ἵδρυσε μετὰ τοῦ Émery τὸ περιοδικὸν «Archives italiennes de biologie», ἐπὶ τῷ σκοπῷ νὰ καταστήσῃ εἰς τὸ ἐξωτερικὸν γνωστὰς τὰς βιολογικὰς ἰταλικὰς ἐργασίας. Τοῦ περιοδικοῦ τούτου, ὅπερ ἅμα τῇ ἐμφανίσει του ἔσχε λαμπρὰν ἐπιτυχίαν, ἐξεδόθησαν 32 τόμοι μέχρι τοῦ 1900. Εἰς τὰ διάφορα πειράματά του ἐπὶ τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τῆς λειτουργίας τῶν μυῶν ἐπέδειξεν ἰδιότητας ἀκαμάτου ἐρευνητοῦ καὶ λεπτολόγου παρατηρητοῦ, αἱ δὲ πολυπληθεῖς του ἔρευναι ἤγαγον αὐτὸν εἰς τὴν ἐφεύρεσιν τοῦ *πληθυσμογράφου*, τοῦ *ἐργογράφου*, τοῦ *πονομέτρου*, τοῦ *σφυγμογράφου κ. ἄ.* Ἔγραψε τὰ ἔργα: «Κόπωσις» (1892), «Φόβος» (1892) καὶ «Θερμοκρασία τοῦ ἐγκεφάλου» (1894) δι' ὧν ἐξήγησε τὰς σχέσεις μεταξὺ τῶν φυσικῶν καὶ πνευματικῶν φαινομένων, τὴν εἰς ἕκαστον προσδιάζουσαν καμπύλην κοπώσεως καὶ τὸν βαθμὸν τῆς τοξικότητος τοῦ αἵματος κατὰ τὸ ἔργον, ἐπηλήθευσε δὲ τὸν ὑπ' αὐτοῦ κληθέντα «νόμον τῆς ἐξαντλήσεως». Πλὴν τούτων ἵδρυσεν ἐπὶ τῶν Ἄλπεων (mont Rose) φυσιολογικὸν καὶ μετεωρολογικὸν ἐργαστήριον πρὸς μελέτην τῆς ἐπενεργείας τοῦ ὕψους ἐπὶ τῶν φαινομένων τῆς ἀναπνοῆς καὶ κυκλοφορίας τοῦ αἵματος, ὡς καὶ τοῦ παραγομένου ἰλίγγου. Τὰς παρατηρήσεις του ταύτας ἐδημοσίευσεν εἰς τὸ ἔργον του «Φυσιολογία τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῶν Ἄλπεων».

'Υπὸ τὸν ὅρον *περιοδικὴ ἀναπνοὴ τοῦ Μόσσο* νοεῖται εἶδος ἀναπνευστικοῦ ρυθμοῦ, παραγομένου ἐν φυσιολογικῇ καταστάσει κατὰ τὸν ὕπνον. Ὁ Μόσσο διετέλεσεν ἐπὶ πλέον ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς 'Ακαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων, τακτικὸν μέλος τῆς 'Ακαδημίας τῶν Lincei καὶ τῆς 'Ακαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Τουρίνου, γερουσιαστὴς καὶ σύμβουλος πολλῶν ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν. Ο. Ρ.

**Μοσσούλη** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ ἀνεξαρτήτου κράτους τοῦ 'Ιρὰκ (βλ. *Μοσούλη*).

**Μόσσυνοι** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς 'Ασίας ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Μοσσυνοίκων, ἀναφερομένη κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα μ. Χ. ὑπὸ τοῦ 'Ιεροκλέους (Συνέκδ. 665, 3) ὡς μία τῶν 39 πόλεων τῆς ἐπαρχίας Φρυγίας Καπατιανῆς, εἰς δὲ τὰ ἐκκλησιαστικὰ χρονικὰ ὡς ἕδρα ἐπισκόπου, ὑπὸ τὸν μητροπολίτην 'Ιεραπόλεως. Σήμερον καλεῖται *Γκεζλὰρ Ἄχ Δερβέντ.* Α. Θ. Σ.

**Μοσσύνοικοι** βλ. λ. *Μοσύνοικοι.*

**Μόστ** (Most), *'Ιωάννης*. Γερμανὸς ἀναρχικὸς (1846—1906). Βιβλιοδέτης ἐν Βερολίνῳ, ἐξέδωκεν ἐκεῖ πρῶτον, ἔπειτα ἐν Λονδίνῳ καὶ Νέᾳ 'Υόρκῃ, τὴν σοσιαλιστικὴν ἐφημερίδα «'Ελευθερία». Τῷ 1874—1878 ἐχρημάτισε βουλευτὴς εἰς τὸ Ράϊχσταγ, ἀλλ' ἀπηλάθη διὰ τὰς ἀναρχικὰς αὐτοῦ ἰδέας, δι' ἃς καὶ κατεδικάσθη εἰς εἱρκτὴν ἐν Λονδίνῳ, ὅπου κατέφυγε, καὶ ἐν Νέᾳ 'Υόρκῃ. Ἔγραψε «Τὸ βιβλίον τῶν ᾀσμάτων τῶν προλεταρίων» καὶ κριτικὴν ἐναντίον τοῦ Μόμμσεν διὰ τὴν ρωμαϊκὴν αὐτοῦ ἱστορίαν.

— **Μόστ** (Most), *Ὄθων*. Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1881. Μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως 1919—1920 τῆς Βαϊμάρης καὶ βουλευτὴς τοῦ λαϊκοῦ κόμματος ἀπὸ τοῦ 1920 εἰς τὸ Ράϊχσταγ. Ἔγραψεν: «'Η διαχείρισις τῶν χρεῶν τῶν γερμανικῶν πόλεων» (1909), «Τὸ πρόβλημα τῆς ἀσφαλίσεως τῶν ἀνέργων» (1910), «'Η γερμανικὴ πόλις καὶ ἡ διοίκησίς της» (1913). Θ. Κ.

**Μοσταγκάνεμ** (Mostaganem) *[Γεωγρ.]*. 'Επίσημος λιμὴν τῆς 'Αλγερίας (πλάτ. 35° 56' Β., μῆκ. 0° 05' 'Αν., χάρτ. ἀγγλ. 2437: Cape Tres Forcas to Ivi) ἐν τῷ κόλπῳ Ἄρτζεφ (Arzew) καὶ παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Σιελὶφ (Shélif). Εἶναι ἐμπορικὸς καὶ πολεμικὸς λιμήν. 'Η ὁμώνυμος πόλις, ἡ Murustaga τῶν Λατίνων γεωγράφων, ἔχει πληθυσμὸν 23.000 κατοίκων. Σ. Ε. Λ.

**Μοσταΐν,** *'Αχμὲτ ἐλ* —. Δωδέκατος 'Αββασίδης καλίφης, ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῷ 861. 'Αναγκασθεὶς νὰ παραιτηθῇ τοῦ θρόνου του (866) ὑπὲρ τοῦ Μοττάζ, υἱοῦ τοῦ Δζαφάρ, ἐδέχθη νὰ διέλθῃ τὸ ὑπόλοιπον τοῦ βίου του ἐν Μέκκᾳ. Κατὰ τὴν μετάβασίν του ὅμως εἰς τὸν τόπον τῆς ἐξορίας, αὐλικὸς τοῦ Μοττάζ τὸν ἐδολοφόνησε καὶ ἀποκόψας τὴν κεφαλὴν τὸν ἐκόμισεν αὐτὴν εἰς τὸν νέον καλίφην. Γ. Λ. Α.

**Μοστανσίρ,** *'Αμποῦ Τεμὶμ Μαάντ, ἐλ*—. Φατιμίτης καλίφης (1036—1094). Υἱὸς δούλης μαύρης, ἐπεδόθη μετὰ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάρρησίν του εἰς ὀργιώδεις διασκεδάσεις καὶ ἐφρόντισε ν' αὐξήσῃ τὴν ἐκ μαύρων φρουράν του. 'Εντὸς μικροῦ 50.000 μαύρων ἐστρατωνίζοντο περὶ τὸ ἐν τῇ ἀκροπόλει τοῦ Καΐρου ἀνάκτορόν του. Τοῦτο ὅμως προεκάλεσε τὴν δυσαρέσκειαν τῶν ἄλλων στρατιωτικῶν. Τῷ 1059 συνεκρούσθησαν ἀγρίως τὰ τουρκικὰ τάγματα ἐν Καΐρῳ πρὸς τοὺς μαύρους, ὁ δὲ Μοστανσὶρ ἠναγκάσθη νὰ διαθέσῃ τοὺς θησαυρούς του, διὰ νὰ ἐξαγοράσῃ τὴν εὐμένειαν τῶν Τούρκων. Τῷ 1062 οἱ Τοῦρκοι ἐπαναστατήσαντες καὶ πάλιν ἐπυρπόλησαν τὸ ἀνάκτορον μετὰ τῆς πλουσιωτάτης βιβλιοθήκης του. Ὁ Μοστανσὶρ διὰ νὰ ἐπιβάλῃ τὴν τάξιν, ἔφερεν ἐξ Ἄκρας (Πτολεμαΐδος) τὸν 'Αρμένιον Μπὲτρ ἐλ Δζεμαλὶ (1073) μετὰ σώματος στρατοῦ 'Αρμενίων. Οὗτος ἐθανάτωσεν ἀμέσως τοὺς ἀξιωματικοὺς τῶν Τούρκων καὶ ἐπέβαλε τὴν τάξιν. Γ. Λ. Α.

— **Μοστανσίρ,** *μπ-'Ιλλάχ, ἐλ* —. Τίτλος δοθεὶς εἰς τὸν πρῶτον 'Αββασίδην χαλίφην τοῦ Καΐρου. Δραπετεύσας ἀπὸ τὴν σφαγὴν τῆς οἰκογενείας του ὑπὸ τοῦ Χουλαγκού, κατέφυγεν εἰς Αἴγυπτον (1258), ὅπου ὁ Μαμελοῦκος σουλτᾶνος Βεϊβάρς τὸν ἀνεγνώρισεν ὡς χαλίφην. 'Η οἰκογένειά του ἐξηκολούθησε νὰ ἀσκῇ τὴν πνευματικὴν ἀρχὴν μέχρι τῆς ὀθωμανικῆς καταχτήσεως τῆς χώρας ὑπὸ Σελὶμ Α' (1517). Γ. Λ. Α.

—**Μοστανσὶρ** *μπ' 'Ιλλὰχ Ἄμπ-οὺλ Χασὰν Χάκεμ.* Ἔνατος 'Ομεϊάδης χαλίφης τῆς 'Ισπανίας, διαδεχθεὶς τῷ 962 τὸν πατέρα του 'Αβδουραχμάν. 'Επροστάτευσε τὰ γράμματα, τὴν γεωργίαν καὶ τὰς τέχνας καὶ προήγαγε τὴν εὐημερίαν καὶ τὸν πολιτισμὸν τῆς χώρας εἰς μέγαν βαθμόν. Διεξήγαγεν ἐπιτυχεῖς πολέμους κατὰ τῶν βασιλέων τῆς Λεόνης καὶ Καστίλλης καὶ κατέκτησε μέγα μέρος τῆς 'Αλγερίας καὶ τοῦ Μαρόκου. Εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τῆς διασήμου κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀραβικῆς 'Ακαδημίας τῆς Κορδούης. 'Απέθανε τῷ 976. Ν. Μ.

— **Μοστανσὶρ** *-ἰ-μπ-'Ιλλὰχ* (=ὁ αἰτῶν τὴν βοήθειαν τοῦ Θεοῦ). 'Αββασίδης χαλίφης τῆς Βαγδάτης, βασιλεύσας ἀπὸ τοῦ 1226 μέχρι τοῦ 1242. Διεδέχθη τὸν πατέρα του 'Ελ-Δαχὲρ (ἢ Ζαχέρ), καθ' ἣν ἐποχὴν τὰς χώρας τοῦ ἐν ἀποσυνθέσει ἀραβικοῦ κράτους κατέκλυζον αἱ μογγολικαὶ ὁρδαὶ τοῦ Δζεγκὶζχάν. Οὐχ ἧττον ὁ Μοστανσὶρ κατώρθωσε νὰ ἐπαναφέρῃ ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν του τὴν 'Ισπανίαν καὶ τὴν 'Αφρικὴν καὶ νὰ νικήσῃ τοὺς Μογγόλους. Ν. Μ.

**Μοστανσιριγια.** 'Ονομαστὸν πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1226 ὑπὸ τοῦ χαλίφου ἐλ Μοστανσὶρ ἐν Βαγδάτῃ. Γ. Λ. Α.

**Μόσταρ** (Mostar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γιουγκοσλαβίας, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. 18.176. Παράγει ὀπώρας, οἶνον καὶ καπνόν. Ὁ νομὸς ἔχει πληθυσμὸν 265.330 κατ. Θ. Κ.

**Μοσταρσὶτ** *μπ-'Ιλλάχ.* 'Αβασσίδης χαλίφης, βασιλεύσας ἐν Βαγδάτῃ ἀπὸ τοῦ 1118—1135. Γ.Λ.Α.

**Μόσταρτ** (Mostaert), *'Ιωάννης*. 'Ολλανδὸς ζωγράφος (1474—1555), διατελέσας ἐπὶ δεκαοκταετίαν ζωγράφος τῆς αὐλῆς τῆς Μαργαρίτας τῆς Αὐστρίας. Εἶναι ἐκ τῶν πρώτων 'Ολλανδῶν καλλιτεχνῶν, οἵτινες εἰσήγαγον εἰς τὴν ζωγραφικὴν τῆς χώρας των τὴν τεχνοτροπίαν τῆς ἰταλικῆς 'Αναγεννήσεως. Γνωστότερα ἐκ τῶν ὀλίγων σῳζομένων ἔργων του (τὰ πλεῖστα κατεστράφησαν ὑπὸ πυρκαϊᾶς τῷ 1571 ἐν Ἄαρλεμ), εἶναι τὰ ἑξῆς: «Προσωπογραφία ἀνδρὸς» (μουσεῖον Βρυξελλῶν), «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων» (μουσεῖον Ἄμστερνταμ), «Κατάβασις ἀπὸ τοῦ σταυροῦ» (μουσεῖον Ἄμστερνταμ κλπ.). 'Επίσης πολλοὶ θεωροῦσιν αὐτὸν ὡς τὸν ἀνώνυμον ζωγράφον τοῦ ἐν τῷ μουσείῳ τῶν Βρυξελλῶν τριπτύχου τοῦ Οὖλτρεμοντ, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἰκονίζονται θαυμασταὶ σκηναὶ ἐκ τῶν παθῶν τοῦ Χριστοῦ. Χ. Δ.

**Μοστασίμ.** 'Αββασίδης χαλίφης, βασιλεύσας ἐν Βαγδάτῃ ἀπὸ τοῦ 1242—1258. Γ. Λ. Α.

**Μοστενίτσα** *[Γεωγρ.]*. Φέουδον τοῦ ἐν Πελοποννήσῳ, κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας, τευτονικοῦ τάγματος. 'Αναφέρεται ἐν ταῖς 'Ασσίζαις τῆς Ρωμανίας ὡς ἓν τῶν μεγαλυτέρων ἐκκλησιαστικῶν κτημάτων τῆς χερσονήσου. 'Υπῆρξε κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἕδρα τοῦ ἡγέτου (grand prieur) τῆς κοινότητος. Μετὰ τὴν ὁλοσχερῆ ὑποταγὴν τοῦ πριγκιπάτου τῆς 'Αχαΐας εἰς τοὺς Παλαιολόγους (1429—1430), ἡ Μοστενίτσα ἔγινεν ὁ στόχος τῶν ἐπιδρομῶν τῶν 'Ελλήνων δεσποτῶν καὶ τῶν Τούρκων. Φαίνεται ὅμως ὅτι ἡ κτῆσις αὕτη τοῦ τάγματος δὲν περιῆλθε τότε εἰς χεῖρας τῶν Παλαιολόγων· ἐν ἐγγράφοις τοῦ 1433, ἀποκειμένοις ἐν Καινιξβέργῃ, γίνεται λόγος περὶ αὐτῆς ὡς ἀνηκούσης εἰς τὸ τευτονικὸν τάγμα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Georges Recoura,* Les Assises de Romanie (Παρίσιοι, 1930) σελ. 194. —Quatre pièces relatives à l'Ordre teutonique en Orient, Archives de l'Orient latin, 2 (1884) 168—169. Δ. Α. Ζ.

— **Μοστενίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ 'Ηλείας χωρίου *'Ορεινὴ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μοστήνη,** ἢ ***Μοστίνα,*** ἢ ***Μοστηνοὶ*** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς 'Ασίας ἐν Λυδίᾳ, ἐπὶ τῶν ὑπωρειῶν τοῦ Σιπύλου καὶ ἐπὶ τῆς ἀπὸ Μαγνησίας εἰς Σάρδεις ὁδοῦ. 'Υποστᾶσα μετ' ἄλλων ἕνδεκα πόλεων μεγάλας καταστροφὰς κατὰ τὸν σεισμὸν τοῦ 17 π.Χ., ἀπηλλάγη ὑπὸ τῶν Ρωμαίων ἐπὶ πενταετίαν παντὸς φόρου. Κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἦτο ἕδρα ἐπισκόπου. Τὰ σῳζόμενα νομίσματα αὐτῆς τῶν ρωμαϊκῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων φέρουσι τὴν ἐπιγραφὴν ΜΟΣΤΗΝΩΝ, ἢ ΜΟΣΤΗΝΩΝ ΛΥΔΩΝ, ἢ ΚΕΣΑΡΑΙΩΝ ΜΟΣΤΗΝΩΝ κτλ. Τὴν θέσιν της ἐπέχει σήμερον τὸ χωρίον *Τσομπὰν-'Ισᾶ*, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σμύρνης-Μαγνησίας, ἀριθμοῦν μέχρι τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν 1.800 κατοίκους. Α. Θ. Σ.

**Μόστις.** Βασιλεὺς τῆς Θρᾴκης κατὰ τὸν Β' π.Χ. αἰῶνα. Τούτου σῴζονται ἀργυρᾶ τετράδραχμα, ὡς καὶ χαλκᾶ, κατ' ἀπομίμησιν τῶν λυσιμαχείων τύπων, μετὰ τῆς εἰκόνος αὐτοῦ. Α. Θ. Σ.

**Μοστίτσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ 'Αχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐντὸς ὡραίας κοιλάδος παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Κλείτορος καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 289. 'Η κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Παλιοκατοῦνα*. Χ. Δ.

**Μοστίτσκι** (Mosticki), *'Ιγνάτιος*. Πολωνὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1867. 'Αγωνισθεὶς διὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς πατρίδος του καὶ ἐνεργῶς δράσας εἰς τὰς πατριωτικὰς ὀργανώσεις, ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ ἐκ Ρωσίας καὶ νὰ μεταβῇ εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἔζησε κατὰ τὰ ἔτη 1891—1897. 'Ακολούθως ἐγένετο καθηγητὴς εἰς τὸ Freiburg (1897—1912). 'Υπῆρξε παραγωγικώτατος εἰς ἐπιστημονικὰς ἐργασίας, ὧν αἱ σπουδαιότεραι εἶναι: 'Η τελειοποίησις τῆς ἠλεκτρικῆς φιάλης τοῦ Λεΰντε, ἡ κατασκευὴ τοῦ ὁμωνύμου του ἠλεκτρικοῦ συμπυκνωτοῦ, ὅστις παρέσχε πολλὰς ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἀσυρμάτου, ἡ ἀνακάλυψις ἰδίας μεθόδου παραγωγῆς νιτρικοῦ ὀξέος ἐκ τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ ἀέρος, ἥτις προσέφερε μεγίστας ὑπηρεσίας εἰς τὴν βιομηχανίαν καὶ τὴν γεωργίαν κλπ. Τῷ 1913 ἐγένετο καθηγητὴς εἰς τὸ πολυτεχνεῖον τῆς Λεοπόλεως καὶ τέλος τῷ 1926, τῇ ὑποδείξει τοῦ δικτάτωρος τῆς Πολωνίας στρατηγοῦ Πιλσούδσκι, ἐξελέγη πρόεδρος τῆς πολωνικῆς δημοκρατίας. Σ. Γ.

**μόστρα** (ἡ)· (λέξις ἰταλική, mostra, σημαίνουσα δεῖγμα) *προθήκη*, ὑαλόφρακτος συνήθως, τῶν καταστημάτων, ἔνθα τοποθετοῦνται δείγματα τῶν πωλουμένων ἐμπορευμάτων· || πᾶν τὸ ἐκτιθέμενον εἰς τὴν μόστραν ἐμπόρευμα, καὶ ἐντεῦθεν τὸ ἐκλεκτότερον μέρος τοῦ ἐμπορεύματος· || μικρὰ ποσότης ἐμπορεύματος ἀποστελλομένη ἢ προσκομιζομένη ὡς δεῖγμα, κυρίως ἐπὶ ὑφασμάτων· || μεταφ. τὸ πρόσωπον: φρ. «τοῦ χάλασε τὴ μόστρα μὲ μιὰ γροθιά»· || καθόλου ἐπὶ ἐπιδείξεως: φρ. «φροντίζει μόνο γιὰ τὴ μόστρα».

**Μόστρας,** *Δημήτριος*. Διδάσκαλος καὶ ἀπόστολος τῆς ἰδέας τοῦ 'Αγῶνος, γεννηθεὶς ἐν Ἄρτῃ τῷ 1777. 'Εδίδαξεν ἐν τῇ πατρίδι του καὶ ἐν Κονίτσῃ, ὅτε δὲ ὁ πολὺς 'Ιγνάτιος ἐγένετο μητροπολίτης τῆς Ἄρτης καὶ Ναυπάκτου (1794—1805) προσελήφθη ὡς ἰδιαίτερος γραμματεὺς αὐτοῦ, οὗτινος συνεμερίσθη ἔκτοτε τοὺς ἀγῶνας καὶ τοὺς κινδύ-

Digitized by Google

νους. Τὸν Ἰγνάτιον καταδιωχθέντα ὑπὸ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ ἠκολούθησεν ὁ Μόστρας εἰς Κέρκυραν, Πετρούπολιν, Βιέννην, Βουκουρέστιον καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πίζαν μετὰ τὴν παράδοσιν τῶν παραδουναβίων ἡγεμονιῶν ὑπὸ τῆς Ρωσίας (1812) εἰς τοὺς Τούρκους. Ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἀλεξάνδρου Α΄ μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἐπιτίμου συμβούλου καὶ διὰ τοῦ παρασήμου τοῦ Ἁγίου Βλαδιμίρου, ἐπὶ πλέον δὲ ἔτυχε καὶ συντάξεως. Ἐν Πίζῃ ὁ οἶκος αὐτοῦ ἐχρησίμευσεν ὡς ἄσυλον τῶν ἐκεῖ μεταβαινόντων χάριν σπουδῶν νέων Ἑλλήνων. Κατὰ τὸ τέλος τοῦ 1819 ὁ Ἰγνάτιος καὶ ὁ Μόστρας διέτρεξαν τὸν κίνδυνον νὰ δολοφονηθῶσιν ὑπὸ ἀπεσταλμένου τοῦ Ἀλῆ πασᾶ. Ἔκτοτε ἐφρουροῦντο ὑπὸ τῶν σπουδαστῶν Ἑλλήνων, πρὸς μεγαλυτέραν ὅμως ἀσφάλειαν κατέφυγον ἐπί τινα χρόνον εἰς Νούγολαν, ἐξοχὴν τοῦ φίλου των Νομπιιώτη, πλησίον τῆς Πίζης. Κατὰ τὴν ἐκεῖ διαμονήν του ἐσχημάτισεν ὁ Μόστρας σπουδαίαν συλλογὴν βιβλίων, εἰκόνων, νομισμάτων, τὴν ὁποίαν ἐπεσκέπτοντο οἱ παρεπιδημοῦντες ξένοι. Ταύτην μετεκόμισεν εἰς Κέρκυραν (1828), μετὰ τὸν ἐν Πίζῃ θάνατον τοῦ μητροπολίτου καὶ τῆς συζύγου του. Συνίστατο ἐκ 12 χιλιάδων τόμων, μεταξὺ τῶν ὁποίων κατελέγοντο σπάνιαι ἐκδόσεις τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος καὶ πολύτιμοι κώδικες. Μέρος τῆς ἐν λόγῳ βιβλιοθήκης του προσέφερεν ὁ Μόστρας τὴν 26 Αὐγούστου 1824 διὰ τοῦ Γεωργίου Μεϊτάνη εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Μεσολογγίου. Μετὰ τὸν θάνατόν του τὰ πολυτιμότερα ἀντικείμενα τῆς συλλογῆς καὶ τὰ σπανιώτερα τῶν βιβλίων ἐπωλήθησαν ὑπὸ τῶν κληρονόμων ἀνεψιῶν του εἰς τὰς βιβλιοθήκας Λονδίνου καὶ Παρισίων, ὑπολείμματα δὲ τούτων, μέγα μέρος τῆς μυστικῆς ἀλληλογραφίας τοῦ Ἰγνατίου ὡς καὶ ἡμερολόγιον τοῦ Μόστρα ἀπὸ τοῦ 1812 μέχρι τοῦ 1826 διεσώθησαν μετὰ πολλὰς περιπετείας καὶ ἀπόκεινται σήμερον παρὰ τῷ ἐν Κερκύρᾳ ἰατρῷ Φωστήρᾳ. Ὁ Μόστρας ἀπέθανεν ἄτεκνος τῷ 1850. Π. Θ. Σ.

— *Μόστρας Σπυρίδων*, βλ. *Ἀθανασίου* Σπυρίδων.

**Μόσυλοι** (οἱ), ἢ **Μόσυλλοι** *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Ἀφρικῆς, κατοικῶν κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. Δ΄, 7, 10) ἐν τῇ ὑπὸ Αἴγυπτον Αἰθιοπίᾳ. Ἡ χώρα αὐτῶν εἶναι ἀρωματοφόρος, παράγουσα κιννάμωμεν, ἀντιστοιχεῖ δὲ σήμερον πρὸς τὰ παράλια τῆς Βρεττανικῆς Σομαλιλάνδης ἐπὶ τοῦ κόλπου Ἄδεν. Α. Θ. Σ.

**Μόσυλον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον καὶ ἐμπόριον τῆς ὑπὸ τὴν Αἴγυπτον Αἰθιοπίας, ἐξαγωγικὸς ἐμπορικὸς λιμὴν τοῦ Σεσώστριος, χρησιμεῦον ὡς ἐπίνειον εἰς τὴν ἔνδον αὐτοῦ πόλιν Γάζαν, παράγουσαν πλησίον ἐκεῖ «*τὴν Μοσυλίτην λεγομένην κασίαν*» (*Διοσκ.* 1,13). Εἶναι τὸ σύγχρονον χωρίον *Μπεντὲρ Φιλοὺκ* (πλάτ. 11°58΄ Β., μήκ. 50°37΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 100a: Ras Galweni to Nafun) ἐγγὺς τῆς κωμοπόλεως Gahseli (ἀρχ. Γάζα). Σ. Ε. Λ.

**Μοσύνοικοι** (οἱ), ἢ **Μοσσύνοικοι**, καὶ **Μόσσυνοι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Μ. Ἀσίας, κατοικῶν τὰ ΝΑ. παράλια τοῦ Εὐξείνου Πόντου, ἀπὸ Κερασοῦντος μέχρι Κοτυώρων. Μετὰ τῶν Χαλύβων καὶ Τιβαρηνῶν ἀπετέλουν ἐπὶ Δαρείου τὸν δέκατον ἔνατον νομὸν τοῦ Περσικοῦ κράτους, καταβάλλοντες ἐτήσιον φόρον 300 τάλαντα. Μετὰ τοῦ Ξέρξου ἐξεστράτευσαν κατὰ τῆς Ἑλλάδος ὑπὸ τὸν Ἀρταΰκτην τὸν Χοράσμιον. Κατῴκουν ἐπὶ ὑψηλῶν *μοσσύνων* (=ξυλίνων πύργων), ἀπὸ τῶν ὁποίων ὁρμώμενοι ἐλῄστευον τοὺς διαβάτας. Ὁ βασιλεὺς αὐτῶν ἦτο αἱρετός, τρεφόμενος δημοσίᾳ δαπάνῃ. Ἂν ὅμως δυσηρέστει αὐτούς, κατεδικάζετο εἰς τὸν διὰ τῆς πείνης θάνατον. Ἔτρωγον ἄρτον ἐκ καστάνων βραστῶν καὶ κρέας δελφίνων ταριχευμένον, τῶν ὁποίων τὸ λίπος ἐχρησιμοποίουν ἀντὶ ἐλαίου. Εἶχον τὴν συνήθειαν νὰ στιγματίζωσι τὸ στῆθος καὶ τὰ νῶτα, μὴ ἔχοντες τὸ αἴσθημα τῆς αἰδοῦς. Γενικῶς ἐθεωροῦντο ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων «*ἔθεσι, νόμοις τε, ἔργοις τε βαρβαρικώτατοι*», ὁ δὲ Ξενοφῶν χαρακτηρίζει αὐτοὺς ὡς τοὺς βαρβαρωτέρους τῶν ἀνθρώπων, τοὺς ὁποίους συνήντησαν οἱ Μύριοι κατὰ τὴν ἐπιστροφήν των. Α. Θ. Σ.

**Μοσυνόπολις,** καὶ **Μοσυνούπολις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία δοθεῖσα ὑπὸ τῶν Ρωμαίων εἰς τὴν ἐν τῇ Δ. Θράκῃ πόλιν *Μαξιμιανούπολιν* (βλ. λ.).

**μόσυνος** *[Βυζ.]*. Ἐκαλεῖτο οὕτω ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ἡ *ἑλέπολις* (βλ. λ.). Ν. ΚΛΣ

**Μόσυχλος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡφαίστειον ὄρος τῆς Λήμνου, θεωρούμενον ὡς κέντρον τῆς ἐν τῇ νήσῳ λατρείας τοῦ Ἡφαίστου. Ποῖον ἐκ τῶν ὀρέων τῆς Λήμνου ἦτο ὁ Μόσυχλος δὲν γνωρίζομεν ἀσφαλῶς, συνήθως ὅμως τοποθετεῖται τοῦτο παρὰ τοὺς σκοπέλους Μυθωνές, τοὺς κειμένους πλησίον τῆς Λήμνου πρὸς Α. Ἐκ τοῦ Μοσύχλου ἔχομεν καὶ ἐπίθετον *Μοσυχλαῖος*. Δ. Π. Π.

**μοσφιλιά** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ὁ ἀζαρόλος*.

**Μοσφιλωτὴ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λάρνακος. Κάτ. 200, ἀσχολούμενοι εἰς τὴν γεωργίαν. Α. Κ. Α.

**Μόσχα** (ρωσιστὶ *Μόσκβα*, γαλλ. Moscou, ἀγγλ. Moscow, γερμ. Moskau). Ἱστορικὴ πόλις τῆς Ρωσίας, πρωτεύουσα μέχρι τοῦ 1703 καὶ εἶτα δευτέρα πόλις τῆς αὐτοκρατορίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1918 πρωτεύουσα τῆς «Ἑνώσεως Σοβιετικῶν Σοσιαλιστικῶν Δημοκρατιῶν» καὶ τοῦ κυριωτέρου ἐκ τῶν ὁμοσπόνδων κρατῶν αὐτῆς, τοῦ περιλαμβάνοντος τὴν κυρίως Ρωσίαν («Ροσγισκάγια Σοσιαλιστιχεσκάγια Φεντερατιβνάγια Ρεσπούμπλικα»). Εἶναι ἕδρα τοῦ ὁμωνύμου κυβερνείου, ἡ πολυανθρωποτέρα δὲ καὶ σπουδαιοτέρα σήμερον ἐμποροβιομηχανικὴ πόλις τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως.

— [ΓΕΩΓΡ.] Ἡ Μόσχα κεῖται εἰς τὸ κέντρον σχεδὸν τῆς Εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας (55°45΄ Β. πλάτ. καὶ 37°37΄ Α. μήκ. Γκρήνουϊτς), ἐπὶ ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ *Μόσκοβα*, ἐξ οὗ ἔλαβε τὸ ὄνομα, ἐντὸς εὐρείας πεδινῆς ἐκτάσεως, εὑρισκομένης εἰς ὕψος 161 μ. μόνον ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Ὁ κύριος ὄγκος τῆς πόλεως ἐκτείνεται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ, διαρρέεται δ' αὐτὴ κατὰ τὸ Α. αὐτῆς τμῆμα καὶ ὑπὸ τοῦ Γιάουσα, ἀριστεροῦ παραποτάμου τοῦ Μόσκοβα. Μέχρι τοῦ 1917 ἡ Μόσχα ἐξετείνετο ἐπὶ ἐπιφανείας 94,5 τετρ. χλμ., ἔκτοτε ὅμως ηὐξήθη σημαντικῶς, καταλαμβάνουσα σήμερον ἔκτασιν 234,4 τετρ. χλμ. (ὑπερπενταπλασίαν δηλαδὴ τῆς ἐκτάσεως τῶν Ἀθηνῶν, ἥτις, συμπεριλαμβανομένων καὶ τῶν συνοικισμῶν, ἀνέρχεται εἰς 44 τετρ. χλμ.). Ὁ πληθυσμὸς τῆς πόλεως ἀριθμεῖ (1931) 2.445.000 κατοίκους.

*Θυρεὸς τῆς Μόσχας.*

***Σχέδιον-Κτήρια.*** Τὸ σχέδιον τῆς νέας πόλεως, σχήματος σχεδὸν κυκλικοῦ, περιβάλλει μεγάλη περιφερειακὴ σιδηροδρομικὴ γραμμή, θέτουσα εἰς ἐπικοινωνίαν πάσας τὰς ἐκ τῶν διαφόρων σημείων τῆς πόλεως ἐκκινούσας σιδηροδρομικὰς ἀρτηρίας. Ὁ ποταμὸς Μόσκοβας διασχίζει τὴν Μόσχαν ἀπὸ Δ. πρὸς ΝΑ., ἐπὶ μήκους 30 περίπου χλμ., σχηματίζων ἐντὸς αὐτῆς δύο ἡμικύκλια, εἰς τὸ μέσον δὲ σχεδὸν τῆς πόλεως καὶ παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ ὑψοῦται ὁ λόφος τοῦ Κρεμλίνου, πυρὴν καὶ ὑψηλότερον σημεῖον τῆς Μόσχας, περιβαλλόμενος ὑπὸ τείχους, ἔχοντος περίμετρον 2 χλμ. καὶ ὕψος 15—20 μ., μετὰ 19 πύργων. Κάτωθεν καὶ πρὸς Α. τοῦ Κρεμλίνου ἐκτείνεται ἡ συνοικία Κιτάϊ Γκορὸντ (=Σινικὴ πόλις), περιβαλλομένη ἐπίσης ὑπὸ τείχους, πέριξ δ' αὐτῆς καὶ τοῦ Κρεμλίνου εἶναι διατεταγμένη ἡμικυκλικῶς ἡ συνοικία Μπιέλι Γκορὸντ (= Λευκὴ πόλις), τῆς ὁποίας τὰ ὅρια καθορίζει μεγάλη περιφερειακὴ λεωφόρος, ἀρχομένη ἑκατέρωθεν ἀπὸ τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ καὶ κατέχουσα τὴν θέσιν τοῦ περιβάλλοντος ἄλλοτε τὴν Μπιέλι Γκορὸντ «λευκοῦ» τείχους. Πέραν αὐτῆς τέλος ἄρχεται ἡ τελευταία περιφερειακὴ συνοικία τῆς παλαιᾶς Μόσχας, τὸ Σεμλιάνοϊ Γκορὸντ (=Χωματίνη πόλις), περικλειομένη ἐπίσης ὑπὸ τῆς περιφερειακῆς λεωφόρου Σαντοβάγια. Οἱ ἐκτὸς τῆς λεωφόρου ταύτης συνοικισμοὶ ἀπετέλουν μέχρι τοῦ 1917 προάστεια τῆς πόλεως, νῦν δέ, περιληφθέντες ἐντὸς τοῦ σχεδίου, ἀποτελοῦσι τὰς κατ' ἐξοχὴν βιομηχανικὰς συνοικίας αὐτῆς. Τὸ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μόσκοβα νότιον τμῆμα τῆς Μόσχας περιλαμβάνει τὴν ἐντὸς τοῦ σχεδίου τῆς παλαιᾶς πόλεως συνοικίαν Σαμοσκβορέτσγιε καὶ ὁμώνυμον βιομηχανικὸν προάστειον πέραν αὐτῆς κείμενον. Αἱ νέαι βιομηχανικαὶ συνοικίαι εἶναι κατὰ σειρὰν αἱ ἑξῆς: Κρασνάγια Πρέσνια (πρὸς ΒΔ.), Σοκόλνικι (πρὸς ΒΑ.), Μπαουμάνσκι (πρὸς Α.), Ρογκόσσκο Σιμονόβσκι (πρὸς Α.Ν.Α.), Σαμοσκβορέτσγιε (πρὸς Ν.) καὶ Χαμόβνικι (πρὸς ΝΔ.).

Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἡ Μόσχα ἀποβάλλει βαθμηδὸν τὸν παλαιὸν ἀριστοκρατικὸν καὶ θεοκρατικὸν χαρακτῆρά της, μεταμορφουμένη ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἡμιτελοῦς εἰσέτι νέου ὑπὸ ἐκτέλεσιν σχεδίου της, διὰ τοῦ ὁποίου θὰ καταστῇ αὕτη ἓν ἐκ τῶν ἀρίστων ἀπὸ πρακτικῆς ἀπόψεως βιομηχανικῶν καὶ ἐμπορικῶν κέντρων τοῦ κόσμου. Τὸ νέον τοῦτο σχέδιον βασίζεται ἐπὶ τοῦ πολεοδομικοῦ συστήματος, καθ' ὃ αἱ κυριώτεραι ἀρτηρίαι διατάσσονται ἀκτινοειδῶς περὶ ἑνιαῖον κέντρον, διὰ τὴν ἀκριβῆ δ' ἐφαρμογὴν αὐτοῦ κατεδαφίζονται ἤδη κτήρια, ναοί, μνημεῖα, ὀχυρώσεις, αἱρόμενον ἐν γένει παντὸς ἐμποδίου, τὸ ὁποῖον ἤθελεν ἀποτελέσει πρόσκομμα εἰς τὴν ἀρτίαν ἀπὸ ἀπόψεως χρησιμότητος διαμόρφωσιν τῆς νέας πόλεως. Τὰς μικρὰς μονοκατοικίας ἀντικαθιστῶσι διαρκῶς μεγάλαι ἐργατικαὶ πολυκατοικίαι, πολλαὶ τῶν ὁποίων δύνανται νὰ περιλάβωσι καὶ μέχρις 20.000 ἀτόμων. Ἐκ παραλλήλου ἀνεγείρονται μεγάλα ἐργοστάσια καὶ βιομηχανικαὶ ἐγκαταστάσεις, συμφώνως πρὸς τὸ πρόγραμμα τοῦ σοβιετικοῦ «πενταετοῦς οἰκονομικοῦ σχεδίου».

Ἡ παλαιὰ Μόσχα, θεωρουμένη ὡς μία ἀπὸ τὰς πλέον ἰδιοτύπους πόλεις τοῦ κόσμου, ἀπετέλει περίεργον κρᾶμα ἀνατολικοῦ καὶ εὐρωπαϊκοῦ ρυθμοῦ, ἐκοσμεῖτο δὲ ὑπὸ τῶν πολυτελεστάτων κτηρίων τῆς παλαιᾶς ρωσικῆς ἀριστοκρατίας καὶ πολυπληθῶν ναῶν ἐπιστεφομένων ὑπὸ ποικιλοχρώμων τρούλλων (χρυσῶν, πρασίνων κλπ.), καὶ ὑψηλῶν σταυροφόρων κωδωνοστασίων. Ὁ ἀριθμὸς τῶν ναῶν τῆς Μόσχας ἀνήρχετο τῷ 1917 εἰς τετρακοσίους περίπου, μετὰ δὲ τῶν παρεκκλησίων ὑπερέβαινε τοὺς χιλίους. Διὰ τὸν λόγον δὲ αὐτὸν ἡ πόλις προσωνομάζετο καὶ «ἁγία Μόσχα». Ἐκ τῶν ναῶν τούτων ὀλίγοι μόνον λειτουργοῦνται σήμερον, ἄλλοι ἀργοῦσι καὶ ἄλλοι κατεστράφησαν ἢ κατηδαφίσθησαν.

Τὰ ἐπὶ τοῦ Κρεμλίνου κυριώτερα κτήρια τῆς παλαιᾶς Μόσχας εἶναι: τὸ μέγα ὁμώνυμον ἀνάκτορον (οἰκοδομηθὲν ἀπὸ τοῦ 1838 μέχρι τοῦ 1849), τὸ «Ὀρουσεγνάγια Παλάτα» (1849—51), τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον τοῦ Τγέρεμ (1508—1636), τὰ παλαιὰ πατριαρχεῖα (ΙΖ΄ αἰῶνος), τὸ μικρὸν ἀνάκτορον Νικολάϊ (τέλη ΙΗ΄ αἰῶνος), τὸ «Γκρανοβιτάγια Παλάτα» (1491), τὸ κτήριον τοῦ ναυστάθμου (1702—1736), ἡ παλαιὰ Γερουσία (1775—1784), νῦν ἕδρα τῆς σοβιετικῆς κυβερνήσεως, καὶ ὁ στρατὼν τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς, ἐν τῷ ὁποίῳ φυλάσσονται 800 παλαιὰ τηλεβόλα, ἐν οἷς καὶ τὸ γιγαντιαῖον «Τσὰρ Πούσκα». Τὸ τηλεβόλον τοῦτο, τὸ ὁποῖον ἔχει βάρος 40 τόννων καὶ ρίπτει βλῆμα βάρους 2.000 χλγρ., ἐχύθη τῷ 1586 ἐπὶ τοῦ Θεοδώρου Ἰβάνοβιτς, ἀποτελεῖ δὲ μετὰ τοῦ κώδωνος «Τσὰρ Κολοκόλ» (246 τόνν.), χυθέντος τῷ 1735, δύο περίεργα διὰ τὸ μέγεθος αὐτῶν μνημεῖα τῆς Μόσχας. Ἐκτὸς τῶν ἐπὶ τοῦ λόφου τοῦ Κρεμλίνου ἀνακτόρων, ἀξιοσημείωτοι ἐπίσης εἶναι οἱ ἑξῆς περίφημοι ἐπ' αὐτοῦ ναοί: τοῦ Σωτῆρος, ἡ παλαιοτέρα ἐκ τῶν 400 ἐκκλησιῶν τῆς Μόσχας (1330), ἡ μητρόπολις Μπλαγκοβιεστσένσκι, τιμωμένη εἰς ἀνάμνησιν τοῦ Εὐαγγελισμοῦ τῆς Θεοτόκου (1480—1492), ἡ μητρόπολις τοῦ Ἀρχαγγέλου (1505—1509), ἔργον τοῦ Ἀλβίζι, ἡ μητρόπολις Οὐσπένσκυ (1463—1479), ἔνθα ἐστέφοντο οἱ τσάροι, καὶ τὸ ὑψηλὸν (97 μ.) κωδωνοστάσιον Ἰβὰν Μπελίκιοϊ, εἰς τοὺς πόδας τοῦ ὁποίου κεῖται ὁ μνημονευθεὶς γιγαντιαῖος κώδων, ὅστις, λόγῳ βλάβης κατὰ τὴν κατασκευήν, οὐδέποτε ἐχρησιμοποιήθη.

Ἡ κάτωθεν τοῦ Κρεμλίνου συνοικία Κιτάϊ Γκορὸντ εἶναι σήμερον τὸ κέντρον τῶν ἀνωτάτων δημοσίων ὑπηρεσιῶν, τοῦ συμβουλίου τῶν ἐπιτρόπων τοῦ λαοῦ, τῶν τραπεζῶν, τῶν μεγάλων βιομηχανικῶν τράστ κλπ. Εἰς τὴν αὐτὴν μεγάλην πλατεῖαν, καλουμένην «Ἐρυθρὰν» (Κράσνα γιὰ Πλόστσαντ) ἀπὸ τοῦ ΙΘ΄ ἤδη αἰῶνος, καταλήγουν αἱ σπουδαιότεραι συγκοινωνιακαὶ ἀρτηρίαι τῆς Μόσχας. Τὴν πλατεῖαν ταύτην κοσμεῖ σήμερον (ἀπὸ τοῦ 1924) ἐκτὸς τῶν παλαιῶν ἀνδριάντων τοῦ Μίνιν καὶ τοῦ Ποσάρσκυ, τὸ μεγαλοπρεπὲς μαυσωλεῖον τοῦ Λένιν, ὑψούμενον ἐν μέσῳ τάφων ἐπιφανῶν μελῶν τοῦ κομμουνιστικοῦ κόμματος. Σπουδαιότερα παλαιὰ κτήρια τοῦ Κιτάϊ Γκορὸντ εἶναι ὁ περίφημος μητροπολιτικὸς ναὸς «Βασσίλι Μπλαγέννοϊ» (1554—1560) καὶ τὸ μέγαρον τοῦ ἱστορικοῦ μουσείου (1875—1883).

Εἰς τὴν Μπιέλι Γκορὸντ οἱ ἀπομείναντες μεγαλοπρεπεῖς ναοὶ καὶ τὰ ἀριστοκρατικὰ μέγαρα ἀναμιγνύονται σήμερον μετὰ κολοσσιαίων νέων κτισμάτων, περιλαμβανόντων μέχρι δέκα πολλάκις ὀρόφων. Ἓν ἐξ αὐτῶν εἶναι καὶ τὸ «Ἰνστιτοῦτον Λένιν», κτισθὲν τῷ 1926. Ἄλλα ἀξιόλογα κτήρια τοῦ τμήματος τούτου τῆς Μόσχας εἶναι τὸ μουσεῖον Ρουμιγιάντσωφ (1787), ἐν τῷ ὁποίῳ στεγάζεται σήμερον ἡ βιβλιοθήκη Λένιν, τὸ μέγα θέατρον (1856), τὸ μουσεῖον τῶν εἰκαστικῶν τεχνῶν (1912), τὸ μνημεῖον τῆς ἐπαναστάσεως (1918) κλπ.

Ἔξω τῆς παλαιᾶς πόλεως ἄξια μνείας, ἐκτὸς τῶν ἐργοστασίων, εἶναι καὶ τὰ δύο ἐκτεταμένα πάρκα Σοκολνίκι καὶ Πετρόφσκυ, κείμενα πρὸς Β., ὡς καὶ τὸ μεταβληθὲν εἰς μουσεῖον ἀνάκτορον Ὀστάνκινο. Ἐνδιαφέρουσαι τέλος εἶναι αἱ πολυάριθμοι περὶ τὴν παλαιὰν Μόσχαν ὀχυραὶ μοναί, αἱ ὁποῖαι, κείμεναι ἐκτὸς τῶν τειχῶν καὶ παρὰ τὰς πύλας, ἐχρησίμευον ὡς προμαχῶνες αὐτῶν. Σπουδαιότεραι τούτων εἶναι ἡ πρὸς ΝΔ. μονὴ τῆς Παρθένου (1524) καὶ αἱ τοῦ Ντονσκόγι (1592) καὶ Σιμονὼφ (1370) πρὸς Ν. Ἐκτὸς τῆς πόλεως φύονται ἐκτεταμένα δάση, ἐντὸς τῶν ὁποίων ὑπάρχουσι πολυάριθμα κέντρα παραθερισμοῦ.

***Κάτοικοι καὶ οἰκονομικὸς βίος.*** Ὁ πληθυσμὸς τῆς Μόσχας ηὐξήθη ἁλματωδῶς ἀφ' ἧς ἤρχισεν ἡ βιομηχανικὴ αὐτῆς ἀνάπτυξις. Τῷ 1871 ἀνήρχετο εἰς 601.969 κατ., τῷ 1897 εἰς 1.038.591, τῷ δὲ 1915 εἶχε φθάσει τὸ 1.983.716. Κατὰ τὰ ἔτη τοῦ πολέμου καὶ τοὺς πρώτους χρόνους τῆς ἐπαναστάσεως περιωρίσθη σχεδὸν εἰς τὸ ἥμισυ (τῷ 1920 ἀνήρχετο εἰς 1.027.336). Ἀπὸ τοῦ σημείου ὅμως τούτου καὶ μάλιστα ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ βιομηχανικοῦ προγράμματος, ἡ Μόσχα, εἰς διάστημα δεκαετίας, ὄχι μόνον ἀνέκτησε τὸν μέχρι τοῦ 1915 πληθυσμόν της, ἀλλὰ καὶ ὑπερέβη αὐτὸν κατὰ ἥμισυ καὶ πλέον ἑκατομμύριον (ἀπο-

Digitized by Google

γραφὴ 1ης Ἰανουαρίου 1931, κάτ. 2.445.090). Ἀληθὲς ρεκὸρ ἐσημειώθη κατὰ τὸ 1925, κατὰ τὸ ὁποῖον ὁ πληθυσμὸς ηὐξήθη κατὰ 270.000. Ἐκ τῶν ἀπογραφέντων τὴν 17 Δεκεμβρίου 1926 2.025.947 κατοίκων τὸ μεγαλύτερον μέρος ἦσαν ἀπὸ φυλετικῆς μὲν ἀπόψεως μεγαλορῶσοι, ἀπὸ ἀπόψεως δὲ θρησκεύματος ὀρθόδοξοι ἢ ἀθεϊσταί. Ἡ ἐπαγγελματικὴ κατανομή των εἶχεν οὕτω: 40 % ἐργάται, 35 % ὑπάλληλοι δημόσιοι καὶ ἰδιωτικοὶ καὶ 24,4 % ἔμποροι, βιοτέχναι ἢ ἀσκοῦντες ἐλευθέρια ἐπαγγέλματα.

Ἡ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη βιομηχανικὴ ἀνάπτυξις τῆς Μόσχας ὑπῆρξεν ἁλματική, ὑπερτέρα πάσης ἄλλης βιομηχανικῆς πόλεως τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως. Τῷ 1926 ἐλειτούργουν ἐν αὐτῇ 794 ἐργοστάσια μὲ 208.461 ἐργάτας, κατανεμόμενα ὡς ἀκολούθως: 136 τῆς βιομηχανίας τῶν τροφίμων, 196 τῆς βιομηχανίας μηχανῶν καὶ μετάλλων, 105 τυπογραφίας, 96 εἰδῶν ρουχισμοῦ, 74 ὑφαντουργίας, 51 χημικῶν προϊόντων κλπ. Ἐκ τῶν ἐργοστασίων τούτων τὰ 75 % ἀνῆκον εἰς τὸ κράτος καὶ τὰς συνεργατικὰς ἑνώσεις.

Ἡ Μόσχα συγκεντροῖ τὸ τρίτον τῆς ἐμπορικῆς κινήσεως τῆς εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας, εἶναι ἕδρα τῶν σπουδαιοτέρων κρατικῶν βιομηχανικῶν τράστ, τῶν ἐμπορικῶν συνδικάτων, τῶν κεντρικῶν ὀργανώσεων τῶν συνεταιρισμῶν, τῶν μεγάλων πιστωτικῶν ἱδρυμάτων, τῶν ὀργανισμῶν τοῦ ἐξωτερικοῦ ἐμπορίου τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως κλπ. Ἡ ἐμπορικὴ κίνησις τοῦ 1925 ἀνῆλθεν εἰς 4.852.000.000 τσέρβονετς (ἕκαστον τσέρβονετς ἰσοδυναμεῖ πρὸς 10 χρυσᾶ ρούβλια, ἤτοι περίπου πρὸς μίαν ἀγγλικὴν λίραν).

Ἀπὸ ἀπόψεως συγκοινωνιῶν ἡ Μόσχα εἶναι ἡ μᾶλλον εὐνοουμένη πόλις τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως. Εἰς τοῦτο συντελεῖ καὶ ἡ εὐνοϊκὴ εἰς τὸ κέντρον τῆς χώρας θέσις αὐτῆς, εἰς σημεῖον ὅπου συναντῶνται αἱ ἐξ ὅλων τῶν σημείων σιδηροδρομικαὶ γραμμαί. Ὁ ἀριθμὸς τῶν ἀπ' αὐτῆς ἀρχομένων σιδηροδρομικῶν ἀρτηριῶν ἀνέρχεται εἰς ἕνδεκα, ἐν αἷς ἡ περίφημος πρὸς τὴν Πετρούπολιν, τῆς ὁποίας εἶναι ὀνομαστὴ ἡ εὐθύτης τῆς τροχιᾶς, ἡ ὑπερσιβηρική, ἡ πρὸς τὴν κεντρώαν καὶ τὴν δυτικὴν Εὐρώπην κλπ. Ἐπίσης, μέσῳ τοῦ Μόσκοβα καὶ τῶν τεχνητῶν διωρύγων, ἡ πόλις συνδέεται ποταμοπλοϊκῶς μετὰ τῆς Κασπίας καὶ τῆς Βαλτικῆς. Ὁ ἀερολιμὴν αὐτῆς εἶναι ὁ συνδετικὸς κόμβος τριῶν μεγάλων γραμμῶν ἀεροπορικῆς συγκοινωνίας. Τέλος δ' ἔχει μέγαν σταθμὸν ἀσυρμάτου τηλεγραφίας.

***Ἐκπαίδευσις. - Πνευματικὴ κίνησις.*** Ἡ Μόσχα, ὡς πρωτεύουσα, εἶναι καὶ κέντρον τῆς ἐκπαιδεύσεως τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως. Τῷ 1926 ἐλειτούργουν ἐν αὐτῇ 1061 ἐκπαιδευτήρια (μὲ 352.871 μαθητάς), ἐξ ὧν 31 πανεπιστήμια καὶ ἀνώταται σχολαὶ καὶ 345 εἰδικαὶ σχολαὶ τεχνικῆς ἐκπαιδεύσεως. Μεταξὺ τῶν ἀνωτάτων σχολῶν ἀναφέρομεν τὸ πρῶτον πανεπιστήμιον (τὸ παλαιότερον τῆς Ρωσίας, ἱδρυθὲν τῷ 1755), ὅπερ ἠριθμεῖ (1925) 9050 φοιτητάς, τὸ νεοϊδρυθὲν πανεπιστήμιον (μέχρι τοῦ 1918 ἀνωτάτη σχολὴ θηλέων) μετὰ 5108 μαθητῶν (1925), τὸ κομμουνιστικὸν πανεπιστήμιον Σβέρντλο, τὸ κομμουνιστικὸν πανεπιστήμιον τῶν ἀνατολικῶν καὶ δυτικῶν λαῶν, τὸ σινικὸν (Σοὺν Γιατσέν), τὸ ἰνστιτοῦτον διὰ τὴν μόρφωσιν τῶν κομμουνιστῶν καθηγητῶν, τὴν Ἀκαδημίαν Κρουπσκάγια (διὰ τὴν μόρφωσιν τῶν κομμουνιστῶν), τὴν ἀνωτέραν βιομηχανικὴν σχολήν, τὴν ἀνωτέραν τεχνικὴν σχολήν, τὴν ἀνωτέραν μεταλλειολογικὴν σχολήν, τὸ ἰνστιτοῦτον ἀνατολικῶν γλωσσῶν, τὴν Ἀκαδημίαν Τιμάργιαζεφ (τῆς ἀγροτικῆς οἰκονομίας), τὸ ἰνστιτοῦτον γεωδαισίας, τὸ ἀνώτερον κρατικὸν ᾠδεῖον, τὸ ἰνστιτοῦτον Πλεχάνωφ (πολιτικῆς οἰκονομίας), τὰ ἰνστιτοῦτα χημικῆς τεχνολογίας, ὑφαντουργίας, μηχανικῆς καὶ μεταφορῶν, τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν κλπ. Ἐπίσης ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ ἑξῆς ἐπιστημονικὰ ἱδρύματα: Κομμουνιστικὴ Ἀκαδημία, Ἀκαδημία τῶν τεχνῶν, 8 ἰνστιτοῦτα ὑγιεινῆς, τὸ ἰνστιτοῦτον Λένιν, τὸ ἰνστιτοῦτον Μὰρξ - Ἔγκελς, τὸ κεντρικὸν ἰνστιτοῦτον ἐργασίας, τὸ ἐπιστημονικὸν τεχνικὸν παράρτημα τοῦ ἀνωτάτου συμβουλίου πολιτικῆς οἰκονομίας κλπ.

Λειτουργοῦσιν ἐξ ἄλλου ἐν τῇ πόλει πολλαὶ μεγάλαι βιβλιοθῆκαι, ὡς ἡ τοῦ Λένιν (3.000.000 τόμοι), τοῦ ἱστορικοῦ μουσείου (1.200.000 τόμοι), τῆς κομμουνιστικῆς Ἀκαδημίας (750.000 τόμοι), τοῦ πολυτεχνικοῦ μουσείου (700.000 τόμοι), τῶν ἰνστιτούτων Μὰρξ - Ἔγκελς (300.000 τόμοι) καὶ Λένιν (200.000 τόμοι) κτλ. Ἐκ τῶν 50 περίπου μουσείων κυριώτερα εἶναι τὸ ἱστορικόν, τῶν καλῶν τεχνῶν, ἡ πινακοθήκη Τρετιάκωφ, ἡ ὁπλοθήκη, τὸ μουσεῖον τῆς ἐπαναστάσεως, τὸ κεντρικὸν ἐθνογραφικόν, τὸ πολυτεχνικὸν καὶ ἄλλα. Πλεῖστα μεγάλα μουσικὰ καὶ μὴ θέατρα λειτουργοῦσιν ἐν αὐτῇ, ἐν οἷς τὸ Μελοδραματικόν, τῶν Καλλιτεχνῶν τῆς Μόσχας, τῆς Βουλῆς, τοῦ Μάγεχολντ κτλ. Ἐπίσης ὑπάρχουσι πολλὰ ἀθλητικὰ γήπεδα καὶ γυμναστήρια, ἐν οἷς τὸ «Διεθνὲς ἐθνικὸν στάδιον», ἱπποδρόμιον καὶ ζωολογικὸς κῆπος, ὁ μεγαλύτερος τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἐφημερίδων ἐπισημότεραι εἶναι: τὸ ὄργανον τῆς κυβερνήσεως «Ἰσβέστια», τὸ κεντρικὸν ὄργανον τῆς Τρίτης Διεθνοῦς «Πράβντα» καὶ ἡ «Ἐκονομιτσεσκάγια Σίσν» (Οἰκονομικὸς Μηνύτωρ).

***Διοίκησις.*** Τὴν πόλιν διοικεῖ τὸ ἡνωμένον προεδρεῖον τῶν σοβιὲτ τῶν ἐργατῶν, τῶν ἀγροτῶν, τοῦ ἐρυθροῦ στρατοῦ καὶ τῆς ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς τοῦ κυβερνείου.

Ἡ Μόσχα εἶναι ἕδρα πασῶν τῶν κεντρικῶν ἀρχῶν τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως, τοῦ ὁμοσπόνδου κράτους τῆς κυρίως Ρωσίας, τοῦ συνεδρίου τῶν σοβιέτ, τῆς κεντρικῆς ἐπιτροπῆς τοῦ συμβουλίου τῶν ἐπιτρόπων τοῦ λαοῦ, τοῦ συμβουλίου ἐργασίας καὶ ἀμύνης, τῆς τρίτης κομμουνιστικῆς διεθνοῦς, τῆς ἐρυθρᾶς βιομηχανικῆς διεθνοῦς καὶ τοῦ διεθνοῦς συμβουλίου τῶν ἀγροτῶν. Ἐπίσης εἶναι ἕδρα τοῦ ἀνωτάτου λειτουργοῦ τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας τῆς Ρωσίας (βλ. καὶ λ. *Ρωσία*).

— [ΙΣΤΟΡ.] Ἡ ἱστορία τῆς ἱδρύσεως τῆς Μόσχας παρουσιάζει πολλὰ σκοτεινὰ σημεῖα. Αἱ κυριώτεραι πληροφορίαι, αἱ ἀναφερόμεναι εἰς τοὺς πρώτους χρόνους αὐτῆς, προέρχονται ἐκ περιγραφῶν διαφόρων ξένων περιηγητῶν καὶ ἐκ τῶν σκοτεινῶν ἀφηγήσεων τῶν Ρώσων χρονογράφων τῆς μεμακρυσμένης ἐκείνης ἐποχῆς (ΙΒ' αἰών). Ἀφ' ἑτέρου αἱ συχναὶ καὶ καταστρεπτικαὶ πυρκαϊαί, τῶν ὁποίων ἡ πόλις κατὰ καιροὺς ἐγένετο θέατρον, ἐξηφάνισαν πᾶν μνημεῖον, δυνάμενον νὰ συμβάλῃ εἰς τὴν διαλεύκανσιν τῶν περὶ τῆς κτίσεως τῆς ὑπαρχουσῶν ἀκαθορίστων εἰδήσεων. Κατὰ γενικῶς παραδεδεγμένην γνώμην, ἡγεμών τις, *Δολγορούκη* καλούμενος, ἵδρυσε τῷ 1150, ἐπὶ τοῦ ἑνὸς ἐκ τῶν ἑπτὰ λόφων τῆς παλαιᾶς τσαρικῆς Μόσχας, τοῦ τοῦ Κρεμλίνου, μικρὸν πόλισμα, εἰς τὸ ὁποῖον ἔδωσε τὸ ὄνομα *Μόσκβα*, ἐκ τοῦ παραρρέοντος αὐτὴν ποταμοῦ. Ἡ πολίχνη αὕτη ἐκτίσθη ἐπὶ τῶν κτημάτων βογιάρου τινὸς καλουμένου *Κούτσκα*, ὅστις εἶχε θανατωθῆ κατὰ διαταγὴν τοῦ Δολγορούκη, ἐξ αὐτοῦ δέ, ἐκτὸς τοῦ ὀνόματος Μόσκβα, ἡ νεοϊδρυθεῖσα πόλις ἐκαλεῖτο ἐπὶ μακρὸν καὶ *Κούτσκοβο*. Τῷ 1176 ὁ φεουδάρχης Ριαζὰν ἐδῄωσε τὴν Μόσχαν, μετ' αὐτὸν δὲ οἱ Μογγόλοι (1237). Τῷ 1248 ἦτο ἡγεμὼν αὐτῆς Μιχαὴλ ὁ Γενναῖος, ὑστερότοκος ἀδελφὸς τοῦ Ἀλεξάνδρου Νέφσκη, μετὰ τοῦτον δὲ ὁλόκληρος ἡ περιοχὴ περιῆλθεν εἰς τὸν υἱὸν τοῦ Ἀλεξάνδρου Νέφσκη, Δανιὴλ (1271—1383), ὅστις θεωρεῖται ὡς ὁ πραγματικὸς θεμελιωτὴς τῆς ἰσχύος τῆς πόλεως. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἡ μικρὰ ἡγεμονία τῆς Μόσχας ἦτο τόσον ἰσχυρά, ὥστε ἠδύνατο νὰ ἀντιπαραταχθῇ ἐναντίον τῆς ἀντιζήλου της Τβέρ. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἡ Μόσχα περιῆλθεν ὡς προὶξ εἰς τὸν Ἰ. Καλίτα (1328—1340), ἐπὶ τοῦ ὁποίου αὕτη ἀντικατέστησε τὸ Βλαντιμὶρ ὡς ἕδρα τοῦ μεγάλου δουκὸς καὶ τοῦ μητροπολίτου, ἀναπτυσσομένη δ' ἐπὶ μᾶλλον ἔκτοτε, ἤρχισε νὰ παίζῃ σημαίνοντα ρόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Ρωσίας. Περιελάμβανεν ἤδη τρία τμήματα: τὸν διὰ ξυλίνου τείχους περιφραχθέντα λόφον τοῦ Κρεμλίνου, τὴν περὶ αὐτὸν συνοικίαν Ποσσάντ, τὸ Σαγκόροντ καὶ τό, ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μόσκοβα, Σαρέτσιε. Τῷ 1307 ὁ Δημήτριος Ἰβάνοβιτς περιέβαλε τὸ Κρεμλῖνον διὰ λιθίνου περιβόλου καὶ ἠδυνήθη νὰ ἀντιπαραταχθῇ ἐπιτυχῶς ἐναντίον τῶν Λιθουανῶν (1368), ὄχι ὅμως καὶ ἐναντίον τῶν Μογγόλων (1382).

Ἡ ταχεῖα ἀνάπτυξις τῆς πόλεως ὀφείλεται, ἀφ' ἑνὸς μὲν εἰς τὴν εὐνοϊκὴν μακρὰν τῶν συνόρων θέσιν της, ἕνεκα τῆς ὁποίας προεφυλάσσετο αὕτη ἀπὸ τῶν συχνῶν ἐπιδρομῶν τῶν Ταττάρων, ἀφ' ἑτέρου δὲ εἰς τὴν καλὴν πολιτικὴν τῶν ἡγεμόνων αὐτῆς, οἱ ὁποῖοι ἐφρόντιζον νὰ αὐξήσωσι συνεχῶς τὴν ἰσχύν των, προσαρτῶντες τὰς πέριξ ἡγεμονίας καὶ συσσωρεύοντες πολὺν πλοῦτον ἐν τῇ πόλει. Ἐπίσης ὑπεστήριξαν σημαντικῶς τὸν κλῆρον, ἀπὸ δὲ τῆς μεταφορᾶς τῆς ἕδρας τοῦ μητροπολίτου ἐκ Βλαντιμίρ, ἤρχισαν κτιζόμεναι αἱ πρῶται μεγαλοπρεπεῖς ἐκκλησίαι τῆς «ἁγίας Μόσχας», ὡς ἐλέγετο αὕτη κατὰ τοὺς χρόνους τῆς αὐτοκρατορίας. Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἡ ὑπεροχὴ τῆς Μόσχας εἶχεν ἤδη σιωπηρῶς ἀναγνωρισθῆ ὑπὸ τῶν πέριξ πόλεων, τῶν ὁποίων οἱ στρατοὶ ἐτάσσοντο ὑπὸ τὰς σημαίας της διὰ νὰ πολεμήσωσι τοὺς Ταττάρους (μάχη τοῦ Κουλίκοβο, 1380). Πρῶτος ὁ Ἰβὰν Γ' (1462—1505) ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ τσάρου, μὲ ἕδραν τοῦ κράτους αὐτοῦ τὴν Μόσχαν. Αἱ ἐπισημότεραι οἰκογένειαι τῆς Ρωσίας ἐγκατεστάθησαν τότε ἐν αὐτῇ καὶ ἤρχισαν διαμορφούμενα τὰ τρία κυριώτερα διαμερίσματα τῆς παλαιᾶς πόλεως: τὸ Κιτάϊ Γκορόντ, παρὰ τὸ Κρεμλῖνον, περιβαλλόμενον ὑπὸ λιθίνου περιβόλου (1534), τὸ Μπιέλγκοροντ, περικλεῖον ἡμικυκλικῶς τὸ πρῶτον καὶ περιβαλλόμενον ἐπίσης ὑπὸ λιθίνου περιβόλου (1586) μετὰ 9 πυλῶν, καὶ τὸ Ζεμλιάνι Γκορόντ, ἔξω τοῦ Μπιέλγκοροντ ἐντὸς ξυλίνου περιβόλου ἱδρυθέντος τῷ 1588—1592. Καὶ εἰς μὲν τὸ Ζεμλιάνι Γκορόντ, τοῦ ὁποίου αἱ οἰκίαι κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ἦσαν ξύλιναι, κατῴκει ὁ λαός, εἰς τὸ Μπιέλγκοροντ οἱ ἀστοὶ καὶ ἡ μικρὰ ἀριστοκρατία, εἰς δὲ τὸ Κιτάϊ Γκορόντ οἱ εὐγενεῖς καὶ οἱ ξένοι πρέσβευται. Τέλος ἐπὶ τοῦ Κρεμλίνου, τῆς οἱονεὶ ἀκροπόλεως τῆς Μόσχας, ὑψοῦντο τὰ ἀνάκτορα τῶν ἡγεμόνων. Ὁ περιηγηθεὶς τὴν πόλιν τῷ 1600 Γάλλος πλοίαρχος Μαργκερὲ περιγράφει αὐτὴν ὡς ἑξῆς: «Ἡ Μόσχα εἶναι μεγάλη πόλις, δι' ἧς διέρχεται ποταμὸς μεγαλύτερος τοῦ Σηκουάνα. Ἡ πόλις περιβάλλεται ὑπὸ ξυλίνου περιβόλου, ἔχοντος περιφέρειαν, ὡς ὑπολογίζω, μεγαλυτέραν τῆς τῶν Παρισίων. Μετ' αὐτὸν ἕπεται δεύτερος λίθινος περίβολος, ἴσος πρὸς τὸ ἥμισυ περίπου τοῦ ξυλίνου, ἀλλὰ δὲν ἐπεκτείνεται ἐπὶ τῆς ἀντιπέραν ὄχθης τοῦ ποταμοῦ. Ἀκολουθεῖ τρίτος πλίνθινος περίβολος, περιβάλλων τὰ ἐμπορικὰ καταστήματα, τὰ ὁποῖα εἶναι ᾠκοδομημένα ἐκ λίθων. Τέλος ὑψοῦται τὸ μέγα ἀνάκτορον, κτισθὲν ὑπό τινος Ἰταλοῦ κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Βασιλείου Ἰωάννου, πατρὸς τοῦ Ἰωάννου Βασιλείου. Ἐντὸς τοῦ περιβόλου τοῦ ἀνακτόρου ἐγείρονται πολυάριθμοι λίθιναι ἐκκλησίαι, μεταξὺ τῶν ὁποίων τέσσαρες εἶναι κεκαλυμμέναι διὰ χαλκοῦ ἐπιχρυσωμένου. Τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν οἰκιῶν εἶναι ξύλιναι, περιλαμβάνουσαι δύο ὀρόφους, περιβάλλονται δὲ ὑπὸ αὐλῶν, αἵτινες προφυλάσσουσιν αὐτὰς ἀπὸ τῶν συχνοτάτων ἐν τῇ πόλει πυρκαϊῶν». Τὸ πῦρ ἐν τούτοις, ἀνεξαρτήτως τῶν καταστρεπτικῶν αὐτοῦ ἀποτελεσμάτων, συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὸν ἐξωραϊσμὸν τῆς Μόσχας, διότι μεθ' ἑκάστην πυρκαϊὰν αἱ οἰκίαι ἀνηγείροντο εὐρυχωρότεραι, τὰ δὲ ξύλινα ὑλικὰ ἀντικαθίστων βαθμηδὸν οἱ λίθοι καὶ αἱ πλίνθοι. Ἀπὸ τοῦ 1463, μέχρι τοῦ 1500 πολλαὶ πυρκαϊαὶ κατέστρεψαν ἐντελῶς τὴν πόλιν, ἰδιαιτέρως δὲ ἡ τοῦ 1493, καθ' ἣν μόνον ὁ ναὸς τῆς Ἀναλήψεως διεσώθη. Ἡ μάστιξ τοῦ πυρὸς ἐξηκολούθησε νὰ λυμαίνεται τὴν Μόσχαν καὶ ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Ἰβὰν Δ' τοῦ Τρομεροῦ. Τὴν 21ην Ἰανουαρίου 1548 αἱ φλόγες ἔλαβον τοσαύτην ἔκτασιν, ὥστε οὐδ' αὐτὸ τὸ βασιλικὸν ἀνάκτορον, μετὰ τῶν ἀρχείων, τῶν θησαυρῶν, τῶν ἁγίων εἰκόνων καὶ τῶν λειψάνων, κατώρθωσε νὰ διαφύγῃ τὴν καταστροφήν, μόνη δὲ ἡ ὀνομαστὴ εἰκὼν τῆς παρθένου τοῦ Βλαντιμὶρ διεσώθη ὡς ἐκ θαύματος. Τὰ ἀνθρώπινα θύματα τῆς πυρκαϊᾶς ταύτης ἀνῆλθον εἰς 1700, αἱ δὲ οἰκονομικαὶ καὶ ἄλλαι ζημίαι ὑπῆρξαν ἀνυπολόγιστοι. Πρὸς πρόληψιν νέων καταστροφῶν, οἱ ἡγεμόνες ἐθέσπισαν διάφορα μέτρα προστατευτικά, διώξαντες ἀπηνῶς τοὺς ἐμπρηστὰς καὶ καθιερώσαντες τὴν ὑποχρεωτικὴν οἰκοδόμησιν πλινθίνων οἰκιῶν εἰς διάφορα ἐπίκαιρα σημεῖα. Δευτέρα πληγὴ τοῦ ἀστικοῦ πληθυσμοῦ τῆς Μόσχας κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἦσαν αἱ σιτοδεῖαι. Τρομερωτέρα ἐκ τούτων ὑπῆρξεν ἡ τοῦ 1602, ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Βόριδος Γκοντουνώφ, τῆς ὁποίας τὰ θύματα ἀναφέρονται ἀνελθόντα εἰς 130.000. Ὁ ἀριθμὸς οὗτος εἶναι βέβαια ὑπερβολικός, δεδομένου ὅτι μόλις ὑπερέβαινεν αὐτὸν ὁ ὅλος τότε πληθυσμὸς τῆς πόλεως. Ἐπίσης αἱ ἐπιδημικαὶ νόσοι ἐπροξένησαν ἐπανειλημμένως μεγάλην φθορὰν εἰς τὴν Μόσχαν, καὶ μάλιστα ἡ χολέρα, ἡ ὁποία ἐπὶ τῆς βασιλείας τῆς Αἰκατερίνης Β' διήρκεσεν ἐπὶ δύο μῆνας μὲ χιλίους περίπου θανάτους ἡμερησίως. Κατὰ τὴν ἐπιδημίαν ταύτην ὁ ἀρχιεπίσκοπος Ἀμβρόσιος ἐσφάγη ἀγρίως ὑπὸ τοῦ πλήθους, διότι ἠθέλησε ν' ἀποκρύψῃ τὴν εἰκόνα τῆς Θεομήτορος τοῦ Μπογκολιούμποβο, τῆς ὁποίας ὁ λαὸς μετέβαινε σύσσωμος νὰ ἐπικαλεσθῇ τὴν θαυματουργὸν ἐπέμβασιν.

Ἄξια μνείας ἐπεισόδια τῆς ἱστορίας τῆς πόλεως εἶναι αἱ ὑπὸ τοῦ χάνου τῆς Κριμαίας Ντεβλὲτ Γκεραΐ (1571) καὶ τῶν Πολωνῶν (1610) λεηλασίαι καὶ ἡ ἡρωϊκὴ ἀντίστασις, τὴν ὁποίαν ὠργάνωσαν ὁ πρίγκιψ Παγιάρσκυ καὶ ὁ κρεοπώλης Μίνιν, τοῦ ὁποίου ὁ ἀνδριὰς κοσμεῖ σήμερον μίαν ἐκ τῶν κυριωτέρων πλατειῶν τῆς Μόσχας. Τῷ 1613 ἐστέφθη ἐν Μόσχᾳ ὁ ἱδρυτὴς τῆς δυναστείας τῶν Ρωμανὼφ τσάρος Μιχαὴλ Θεοδώροβιτς. Ἀπὸ τοῦ 1703, μεταφερθείσης ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Μεγάλου Πέτρου τῆς πρωτευούσης εἰς Πετρούπολιν, ἡ Μόσχα παρέμεινε δευτέρα πρωτεύουσα τῆς αὐτοκρατορίας, διατηροῦσα ὅμως πάντοτε τὸν μητροπολιτικὸν αὐτῆς χαρακτῆρα καὶ παραμένουσα τὸ ἔμβλημα τῆς ἀπεράντου Ρωσίας, δι' ὃ καὶ ἀπεκαλεῖτο συχνὰ ἐπὶ τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων «Ματούσκα Μόσκβα» (=ἡ μητέρα Μόσχα). Ἐπίσης πολλάκις κατὰ τοὺς παλαιοτέρους χρόνους, διὰ τοῦ ὀνόματος «μοσχοβίτης» ἐδηλοῦτο κάθε κάτοικος τῆς Ρωσίας, ἀνεξαρτήτως προελεύσεως.

Κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα τὸ σπουδαιότερον γεγονὸς τῆς ἱστορίας τῆς Μόσχας εἶναι ἡ κατάληψις αὐτῆς (1812) ὑπὸ τῆς Μεγάλης στρατιᾶς τοῦ Ναπολέοντος (βλ. λ. *Μόσκοβα* [Στρατ. Ἱστορ.)]. Εἶχε τότε ἔκτασιν 50 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 400.000 κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ 250.000 κατὰ τὸ θέρος, ἐκοσμεῖτο δὲ ὑπὸ 300 ἐκκλησιῶν. Ὁ Ναπολέων εὗρε τὴν πόλιν ἠρημωμένην ἀπὸ τῶν κατοίκων αὐτῆς, ἐκ τῶν ὁποίων 12—15 χιλιάδες μόνον εἶχον παραμείνει. Τὴν ἰδίαν ὅμως ἑσπέραν τῆς ἐγκαταστάσεως τοῦ Γάλλου αὐτοκράτορος εἰς τὸ Κρεμλῖνον τῶν τσάρων (2/14 Σεπτεμβρίου), ἀπὸ διάφορα συγχρόνως σημεῖα τῆς πόλεως γλῶσσαι φλογῶν ἀνεπήδησαν καταστρέφουσαι τὴν τελευταίαν ἐλπίδα σωτηρίας τῆς λαμπρᾶς στρατιᾶς του. Τὸ πῦρ ἐνισχυόμενον ὑπὸ τοῦ ἀπὸ τῆς ἑπομένης πνεύσαντος ἰσχυροῦ ἀνέμου ἦτο ἀδύνατον νὰ κατασβεσθῇ, καὶ ὁ Να-

Digitized by Google

πολέων ἠναγκάσθη τὴν 16ην Σεπτεμβρίου νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ παλαιὸν τσαρικὸν ἀνάκτορον. Ἡ πυρκαϊὰ διήρκεσε μέχρι τῆς 20ῆς Σεπτεμβρίου, ἀποτεφρώσασα τὰς 2.075 ἐκ τῶν 2.600 λιθίνων οἰκιῶν καὶ τὰς 5.000 ἐκ τῶν 6.600 ξυλίνων. Αἱ ἐξ αὐτῆς ζημίαι ὑπελογίσθησαν εἰς 321 ἑκατομμ. ρουβλίων. Ἡ πυρπόλησις τῆς Μόσχας ἀποδίδεται εἰς τὸν διοικητὴν αὐτῆς κόμητα Ραστόπσιν, ὅστις φρονῶν ὅτι διὰ τοῦ τρόπου τούτου θὰ ἀπεστέρει τὸν ἐχθρὸν ἑνὸς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων πόρων του καὶ θὰ ἠνάγκαζεν αὐτὸν νὰ ὑποχωρήσῃ, προπαρεσκεύασε καὶ διέταξε τὴν πυρπόλησιν, χωρὶς νὰ εἰδοποιήσῃ οὔτε τὸν στρατηγὸν Κουτούσωφ, οὔτε τὸν τσάρον. Ὁ Ραστόπσιν προσεπάθησε νὰ διαψεύσῃ τὴν κατηγορίαν διὰ τοῦ ἔργου του «Ἡ ἀλήθεια διὰ τὴν πυρκαϊὰν τῆς Μόσχας» (Παρίσιοι, 1823)· καὶ ὅμως, ἂν περὶ ἰδικῆς του ἐνεργείας ἐπρόκειτο, ἡ σκέψις του ἀπεδείχθη ὀρθοτάτη, διότι ὁ Ναπολέων, παραμείνας τοιουτοτρόπως ἄστεγος καὶ ἄνευ ζωοτροφιῶν ἐν τῷ μέσῳ τοῦ ψυχροτάτου ρωσικοῦ χειμῶνος, ἠναγκάσθη τέλος τὴν 7/19 Ὀκτωβρίου νὰ ἐκδώσῃ τὴν διαταγὴν τῆς ἀποχωρήσεως. Οἱ Γάλλοι, πρὶν ἐγκαταλείψωσι τὴν πόλιν, ἔθεσαν πῦρ εἰς τοὺς ὑπὸ τὸ Κρεμλῖνον κατασκευασθέντας ὑπονόμους, ἀνατινάξαντες μέγα μέρος ἐκ τῶν ὡραίων ἐπ' αὐτοῦ ἀνακτόρων. Ἐπιστρέψαντες μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τῆς «Μεγάλης στρατιᾶς» οἱ κάτοικοι εὗρον τὴν Μόσχαν ἐντελῶς σχεδὸν ἠρειπωμένην.

Καθ' ὅλον τὸ ὑπόλοιπον διάστημα τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἡ Μόσχα ἀνοικοδομηθεῖσα καὶ τετραπλασιασθεῖσα περίπου εἰς πληθυσμόν, προήγετο ὁλονὲν ἀπὸ ἐμπορικῆς καὶ βιομηχανικῆς ἀπόψεως, κατέστη δ' ἐν τοῖς ἄλλοις ἓν ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων κέντρων τῆς φιλελευθέρας ἐν Ρωσίᾳ κινήσεως. Κατὰ τὴν ἀκολουθήσασαν τὸν ἀτυχῆ Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον μεγάλην λαϊκὴν ἐξέγερσιν (Δεκέμβριος 1905), ἐξερράγη ἐν αὐτῇ ἐπανάστασις, πρὸς καταστολὴν τῆς ὁποίας συνήφθησαν ἀληθεῖς μάχαι ὁδοφραγμάτων μεταξὺ τῶν στασιαστῶν καὶ τοῦ κυβερνητικοῦ στρατοῦ. Ἡ μπολσεβικικὴ ἐπανάστασις τοῦ Ὀκτωβρίου 1917, ἐπὶ τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τοῦ Κερένσκυ, ὑπεστηρίχθη ἐπίσης θερμῶς ὑπὸ τοῦ Μοσχοβιτικοῦ λαοῦ καὶ τῶν ἐργατῶν. Οἱ ὀπαδοὶ τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως κατέφυγον τότε εἰς τὸν λόφον τοῦ Κρεμλίνου, μετὰ ἑπταήμερον δὲ ἀντίστασιν ἠναγκάσθησαν νὰ ὑποκύψωσι πρὸ τῶν πολλαπλασίων ἐπαναστατῶν. Μεγάλως ὑπέφερεν ἐξ ἄλλου ἡ Μόσχα καὶ πολλαὶ συνοικίαι κατεστράφησαν κατὰ τὰς ἐξεγέρσεις τῶν σοσιαλεπαναστατῶν καὶ ἀναρχικῶν (1918). Τέλος, μετὰ τὴν τελειωτικὴν καθ' ὅλην τὴν Ρωσίαν ἐπιβολὴν τῶν μπολσεβίκων, ἡ ἕδρα τοῦ νέου κράτους μετεφέρθη τὴν 14 Μαρτίου 1918 ἐκ Πετρουπόλεως εἰς Μόσχαν, ἡ ὁποία, κειμένη μακρὰν τῶν συνόρων καὶ εἰς τὸ κέντρον τῆς κυρίως Ρωσίας, παρουσίαζε περισσότερα πλεονεκτήματα, τόσον διὰ τὴν ἄποψιν τῆς ἀσφαλείας, ὅσον καὶ διὰ τὴν εὐχέρειαν τῆς διοικήσεως. Χ. ΔΑΣΚΑΛΑΚΗΣ

—**Μόσχας, κυβερνεῖον,** ἡ ***περιοχὴ*** — *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένη διοικητικὴ περιφέρεια τοῦ κυριωτέρου ὁμοσπόνδου κράτους τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως, ὑπαγομένη εἰς τὴν μεγάλην βιομηχανικὴν περιοχὴν τῆς κεντρικῆς Ρωσίας. Ἔχει ἔκτασιν 157.907 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1926) 10.281.969 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Μόσχαν*. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι πεδινόν, καλυπτόμενον ὑπὸ χθαμαλῶν γηλόφων ὕψους μέχρις 170 μ., διασχίζεται δὲ ὑπὸ πολλῶν ποταμῶν ἀνηκόντων εἰς τὴν λεκάνην τοῦ Βόλγα. Οἱ τρεῖς κυριώτεροι ἐκ τῶν ποταμῶν τούτων εἶναι ὁ ἄνω Βόλγας (πρὸς ΒΑ.) καὶ οἱ Μόσκοβας καὶ Ὄκα (πρὸς ΝΑ.). Τὰ 40% τοῦ ἐδάφους καλύπτονται ὑπὸ δασῶν. Τὸ κλῖμα εἶναι ὁμαλόν, παρουσιάζον μέσην ἐτησίαν θερμοκρασίαν +3°,9 C. Ψυχρότερος μὴν εἶναι ὁ Ἰανουάριος μὲ μέσην θερμοκρασίαν —11°C. καὶ θερμότερος ὁ Ἰούλιος (+18°9 C). Αἱ σημειωθεῖσαι ἐντὸς τῆς πόλεως τῆς Μόσχας ἄκραι θερμοκρασίαι εἶναι, ἡ μὲν ἀνωτάτη +31,4 C, ἡ δὲ κατωτάτη —30,5 C. Ἡ ποσότης τῆς ἐτησίως πιπτούσης βροχῆς ἀνέρχεται εἰς 530 χιλιοστόμ. Ἡ γεωργία εἶναι λίαν ἀνεπτυγμένη, τὰ δὲ κυριώτερα ἐκ τῶν καλλιεργουμένων προϊόντων κατανέμονται ὡς ἑξῆς: 36 % βρίζα, 23 % βρόμη, 15 % γεώμηλα κλπ. Ἐπίσης λίαν ἀνεπτυγμένη εἰς τὴν περιοχὴν τῆς πρωτευούσης εἶναι ἡ λαχανοκομία καὶ ἡ κηπουρική. Ἡ κτηνοτροφία εἶναι μικρά, περιοριζομένη εἰς τὴν διὰ τὰς ἀνάγκας τῆς πόλεως ἀσκουμένην περὶ αὐτὴν γαλακτοκομίαν. Τέλος ἡ βιομηχανία ἔχει λάβει κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τεραστίαν ἀνάπτυξιν, περιλαμβάνουσα ἐργοστάσια ὑφασμάτων, ἐνδυμάτων, χημικῶν προϊόντων, μηχανῶν, ξυλουργικῆς, ἀθυρματοποιίας, ὑποδηματοποιίας, βυρσοδεψικῆς, κομβιοποιίας κλπ. Ἐπίσης ἡ συγκοινωνία ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ, δεδομένου ὅτι ἡ Μόσχα ἀποτελεῖ τὸν κυριώτερον κόμβον τῶν σιδηροδρόμων τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως, ἐξυπηρετεῖται ἀρτιώτερον παρ' ὅσον εἰς πάσαν ἄλλην ρωσικὴν χώραν. Χ. Δ.

**Μόσχα *λιμὴν*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς Εὐδαίμονος Ἀραβίας ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀδραμιτῶν, ἀνατολικῶς τοῦ Τρητοῦ λιμένος (νῦν Καδιφούτ), πάντως δὲ ἐπὶ τοῦ Σαχαλίτου κόλπου καὶ δυτικῶς τοῦ ἀκρωτηρίου Σύαγρος (Ρὰς Φαρτάκ). Εἶναι ὁ ἀμέσως πρὸς δυσμὰς τοῦ Φαρτὰκ σύγχρονος ὁρμίσκος *Κεσίδ* (πλάτ. 15° 39' Β., μῆκ. 52° 15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 10b: South East coast of Arabia). Σ. Ε. Λ.

**μοσχαγκαθιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῶν φυτῶν *ἀτρακτυλὶς ἡ μαλλωτὴ* καὶ *ἠρρύγιον τὸ ἀρουραῖον*.

**μοσχάγκαθο** (τὸ) *[Βοτ.]* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἠρρύγιον τὸ ἀρουραῖον*.

**Μοσχαδῖνοι** (οἱ) (Muscadins). Οὕτως ἐκλήθησαν κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν οἱ μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ροβεσπιέρρου ἐμφανισθέντες εἰς Παρισίους περίκομψοι νέοι, οἵτινες ἤρξαντο ἀναμιγνυόμενοι εἰς τὰς συναθροίσεις τῶν στοῶν τοῦ Βασιλικοῦ Ἀνακτόρου καὶ εἰς τὰς κοσμικὰς συγκεντρώσεις, αἵτινες ἀνέζησαν μετὰ τὴν κατάλυσιν τῆς τρομοκρατίας. Τὸ ὄνομα *Μοσχαδῖνοι* ἔδωκεν εἰς τὴν παρισινὴν ταύτην τάξιν ὁ Σαμπὸ εἴς τινα ἀγόρευσίν του ἐν τῇ συνελεύσει. Ἦσαν οὗτοι οἱ δανδῆδες τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, οἱ ὁποῖοι, καθ' ἣν ἐποχὴν ἐπεκράτει γενικὴ τῶν πολιτῶν ἐξέγερσις, δὲν ἐσκέπτοντο παρὰ πῶς νὰ διακρίνωνται διὰ τῆς κομψῆς ἀμφιέσεως καὶ τῶν πολυτίμων κοσμημάτων, τὰ ὁποῖα ἔφερον ἐπιδεικτικῶς. Θ. Β.

**Μοσχάϊμ** (Mosheim), ***Ἰωάννης-Λαυρέντιος, φὸν*** —. Γερμανὸς θεολόγος (1694—1755). Καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν τοῖς πανεπιστημίοις Χελμστὰτ καὶ Γοτίγγης, ὑπῆρξεν ἀληθὴς μεταρρυθμιστὴς τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας, διακριθεὶς ἐπίσης καὶ ὡς ἔξοχος ἱεροκῆρυξ. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του ἔγραψεν εἰς τὴν λατινικήν. Θ. Κ.

**Μοσχάκης, *Ἰγνάτιος*.** Θεολόγος καὶ ῥήτωρ ἐκκλησιαστικὸς ἐκ τῶν δοκιμωτέρων, γεννηθεὶς ἐν Θήρᾳ τῷ 1847 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1903. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ ἱερατικῇ σχολῇ Σύρου καὶ εἶτα ἐν τῷ Ριζαρείῳ, τῷ δὲ 1864 ἐνεγράφη εἰς τοὺς φοιτητὰς τῆς θεολογίας. Ἀπελθὼν κατόπιν εἰς Γερμανίαν, ἐσπούδασε φιλοσοφίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἅλλης, ἔνθα ἀνηγορεύθη διδάκτωρ, καὶ ἐν Παρισίοις. Ἐπιστρέψας εἰς Ἑλλάδα (1878) ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς ἐκκλησιαστικῆς ῥητορικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, τῷ δὲ 1893, προτάσει τῆς θεολογικῆς σχολῆς, διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ποιμαντικῆς καὶ κατηχητικῆς. Ὁ Μοσχάκης ἐχρημάτισεν ἔφορος τῆς σχολῆς τῶν ἀπόρων παίδων τοῦ συλλόγου «Παρνασσοῦ», οὗτινος ὑπῆρξεν ἐκ τῶν δρώντων μελῶν. Συνέγραψε καὶ ἐδημοσίευσε πολλὰς ἐργασίας, ὧν κυριώτεραι: «Ὁ Πλάτων καὶ οἱ θεοὶ τῆς πόλεως» (1872), «Μελέται περὶ τῶν Χριστιανῶν ἀπολογητῶν τοῦ Β' καὶ Γ' αἰῶνος» (1876), «Περὶ τῆς ῥητορείας τῆς Ἁγίας Γραφῆς» (1877), «Μελέται καὶ λόγοι ἐκκλησιαστικοὶ» (1883, 1888, 1889), «Ὁ χριστιανικὸς οἶκος» (1891), «Ὁ δεκάλογος» (1900), ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Α.Δ. Κυριακοῦ τὸ περιοδικὸν «Θρησκευτικὴ φωνὴ» (1889—1892), «Λόγοι καὶ ἄρθρα» καὶ κατὰ μετάφρασιν ἐκ τοῦ γερμανικοῦ: «Μελέται κατὰ τοῦ ὑλισμοῦ» (1874), καὶ «Ἡ φιλοσοφία τῶν πατέρων τῆς Ἐκκλησίας» (1883). Δ. Α. Δ.

*Ἰγνάτιος Μοσχάκης.*

**μοσχαρδινία** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κενταύριον τὸ εὐειδές*.

**μοσχαρήσιος,** —α, —ο· ὁ τοῦ μόσχου, ἀπὸ μοσχάρι, μόσχειος: «μοσχαρήσια πατσά», «μοσχαρήσιο τομάρι».

**μοσχάρι** (τό)· δημοτ., καὶ *μοσκάρι—μουσκάρι*· τὸ νεογνὸν τοῦ βοός, μόσχος.

**Μοσχᾶτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἄμπελος ἡ οἰνοφόρος*.

**Μοσχᾶτον** *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας κειμένη ΝΔ. τῶν Ἀθηνῶν. Διασχίζεται ὑπὸ τῆς γραμμῆς τοῦ ἠλεκτρικοῦ σιδηροδρόμου Ἀθηνῶν-Πειραιῶς, σταθμεύοντος ἀνὰ ἡμίσειαν ὥραν. Πρὸ ὀλίγων ἐτῶν ἡ περιοχὴ αὕτη ἀπετελεῖτο ἀπὸ ἀμπελῶνας καὶ λαχανοκήπους, μὲ ἐξοχικοὺς οἰκίσκους καὶ 176 κατ. (1897), σήμερον ὅμως ἐξελίχθη εἰς πολίχνην ἀριθμοῦσαν (1928) 4.966 κατ. καὶ κατέχουσαν ὅλην τὴν ἔκτασιν, τὴν ὁρίζεται ὑπὸ τῶν χειμάρρων Ἰλισοῦ (τῆς τεχνητῆς ἀποχετεύσεως) καὶ Κηφισοῦ καὶ ἀπὸ τῆς ἁμαξιτοῦ Ἀθηνῶν-Πειραιῶς μέχρι τοῦ ὅρμου Φαλήρου. Ἀπὸ τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Μοσχάτου ἄγει ὁμώνυμος λεωφόρος μέχρι τοῦ ὅρμου τοῦ Φαλήρου. Ἔχει δύο πλήρη δημοτικὰ σχολεῖα μεικτά. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται εἰς τὴν κηπουρικὴν ἢ ἐργάζονται εἰς τὰ διάφορα ἐργοστάσια. Λειτουργοῦν 2 ἐριουργεῖα, 2 χαρτοποιεῖα, 2 παγοποιεῖα, ἓν ἐργοστάσιον ταπητουργίας, ἓν ὑφαντουργεῖον, εἷς ἀλευρόμυλος καὶ ἓν ἐργοστάσιον οἰκιακῶν σκευῶν. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ ὁ συνοικισμὸς *Παράγκες*, μετὰ τοῦ ὁποίου ὁ πληθυσμὸς τῆς κοινότητος ἀνέρχεται εἰς 6.031 κατ. Ι. Σ. Σ.

**μοσχᾶτος,** *—η, —ο*· δημοτ., καὶ *μοσκᾶτος—μουσκᾶτος*· ὁ ἔχων ὀσμὴν μόσχου, ἀρωματώδης, ἰδίᾳ εἶδος σταφυλῆς καὶ συνεκδ. εἶδος οἴνου: «μοσχᾶτο σταφύλι», ᾆσμ. «νὰ φάω σταφύλι ροζακί, νὰ πιῶ κρασὶ μοσκᾶτο».

— **μοσχᾶτος *οἶνος***. Γλυκὺς ἐπιδόρπιος οἶνος, παραγόμενος ἐκ μοσχάτης σταφυλῆς, ἥτις εὐδοκιμεῖ εἰς θερμὰ καὶ ἡφαιστειογενῆ ἐδάφη. Τὸ γλεῦκος τῆς σταφυλῆς αὐτῆς εἶναι λίαν πλούσιον εἰς σάκχαρον, δι' ὃ παράγει ἰσχυρὸν οἰνοπνευματοῦχον οἶνον, παραμένοντος ἀκόμη καὶ ἀζυμώτου σακχάρου. Ἀνήκει εἰς τοὺς εὐγενεῖς οἴνους καὶ χρησιμοποιεῖται εἴτε ὡς ἐπιδόρπιος οἶνος, εἴτε διὰ παρασκευὴν τονωτικῶν φαρμακευτικῶν οἴνων. Μᾶλλον γνωστοὶ εἶναι οἱ μοσχᾶτοι οἶνοι τῆς Σάμου καὶ Κεφαλληνίας. Σ. Γ.

**μόσχειος,** —α, —ο· ὁ τοῦ μόσχου, κοιν. *μοσχαρήσιος*: «μόσχειον κρέας,—δέρμα», «ζωμὸς μόσχειος».

**Μοσχέτης, *Γεώργιος*.** Κρὴς λόγιος, ζήσας περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐξεπαιδεύθη ἐν Ρώμῃ καὶ Παταβίῳ, ἐχρημάτισε κατόπιν διδάσκαλος τοῦ Καρόλου, ἐγγόνου τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Τοσκάνης, καὶ τέλος διωρίσθη δημόσιος διδάσκαλος ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πίζης, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. ΕΡ. Μ.

**μόσχευμα** (τό)· ὁ ἀποσπώμενος καὶ μεταφυτευόμενος βλαστός: «πολλαπλασιασμὸς τῶν φυτῶν διὰ μοσχευμάτων».

— *[Βοτ.]* Καλεῖται *μόσχευμα* τὸ φυτικὸν μόριον, ὅπερ προορίζεται πρὸς φύτευσιν. Τὸ μόσχευμα παρουσιάζει τὰς αὐτὰς ἰδιότητας πρὸς τὸ μητρικὸν φυτὸν ἐξ οὗ ἀπεσπάσθη. Δ. Ν. Π.

**μόσχευσις,** —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μοσχεύειν, μεταφύτευσις παραφυάδος.

**μοσχεύω**· ἀποσπῶ παραφυάδας δένδρου καὶ μεταφυτεύω αὐτάς.

**μοσχιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*· βλ. *μοσκιά*.

**μοσχίδαι** (οἱ) (Moschidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀρτιοδακτύλων*. Τὴν οἰκογένειαν ταύτην οἱ φυσιοδίφαι ὑπήγαγον ἤδη εἰς τὴν ὁμοιογένειαν τῶν *ἐλαφιδῶν*. Δ. Ν. Π.

**Μοσχικὰ *ὄρη*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεγάλη ὀροσειρὰ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Μόσχων, ἡ ὁποία ἀποσπωμένη ἀπὸ τοῦ Καυκάσου, παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Φάσιδος, ἑνοῦται μετὰ τοῦ Ἀντιταύρου, καταλαμβάνουσα οὕτω ὁλόκληρον τὴν Ἀρμενίαν, Ἰβηρίαν καὶ Ἀλβανίαν. Σήμερον καλεῖται *Λὶχ* ἢ *Περσάτι*. Α. Θ. Σ.

**Μοσχικὴ *Γῆ*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀρεινὴ καὶ δύσβατος χώρα τῆς ΒΔ. Ἀρμενίας, παρὰ τὰ μεθόρια τῆς Κολχικῆς καὶ τὴν ἀνατολικὴν ἄκραν τοῦ Γαλατικοῦ Πόντου, κατοικουμένη ὑπὸ τῶν *Μόσχων*. Ἐν αὐτῇ ὑπῆρχε πλουσιώτατον ἱερὸν τῆς Λευκοθέας, ἱδρυθὲν κατὰ τὸν μῦθον ὑπὸ τοῦ Φρίξου, καὶ μαντεῖον αὐτοῦ, «ὅπου κριὸς οὐ θύεται», συλληφθὲν ὑπὸ τοῦ Φαρνάκου, βασιλέως τοῦ Πόντου, καὶ ὀλίγον μετὰ ταῦτα ὑπὸ τοῦ Μιθριδάτου (*Στράβ*. ΙΑ' 498). Α. Θ. Σ.

**Μοσχινέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καστορίου (Καστανιᾶς) τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 27. Χ. Δ.

**Μόσχιοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Μ. Ἀσίας, ὁ αὐτὸς μὲ τοὺς *Μόσχους* (βλ. λ.).

**Μόσχιος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Δαρδανίας καὶ Ἄνω Μοισίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. ΙΙΙ, 9, 3). Πηγάζων ἀπὸ τῶν ἀνατολικῶν ὑπωρειῶν τοῦ ὄρους Σκάρδου, ἐκβάλλει εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Δουνάβεως, 14 μίλια Α. τῆς Σιγγιδόνος (Βελιγράδιον) πρὸ τῆς πόλεως Μάργου (Πασσάροβιτς). Εἶναι ὁ αὐτὸς μὲ τὸν *Βρόγγον* τοῦ Ἡροδότου (IV, 49), τὸν *Μάργον* τῶν Ρωμαίων (*Στράβ*. VII,318), τὸν νῦν *Μοράβαν* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μοσχίων.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται οἱ ἑξῆς σχέσιν πρὸς τὴν ἰατρικὴν ἔχοντες:— 1) Ὁ ὑπὸ τοῦ Πλινίου (XIX, 87) ἀναφερόμενος συγγραφεὺς τῆς περὶ ραφάνου («de raphano») πραγματείας.—2) Ὁ γνωμῶν τινων τοῦ Ἀσκληπιάδου *διορθωτής*, οὗτινος γνωρίζομεν ἐκ τοῦ Γαληνοῦ σιδηρᾶν τοῦ σφυγμοῦ (VIII, 758) καὶ συνταγάς τινας (XII, 416).—3) Ἰατρὸς παρὰ Σωρανῷ (I, 35. 98) ἀναφερόμενος καὶ κατὰ τῆς παχύτητος τοῦ γάλακτος τῶν θηλαζουσῶν δριμυφαγίαν συμβουλεύσας.

Digitized by Google

—**Μοσχίων.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τούτου φέρεται ἰατρικὸν ἔργον «Περὶ τῶν γυναικείων παθῶν» (α' ἔκδ. ἐν Βασιλ. 1566, ἑλλην. καὶ λατ. ὑπὸ *Dewez* ἐν Βιέν. 1793), προωρισμένον διὰ μαίας καὶ ἑρειδόμενον ἐπὶ ἐργασίας τοῦ Σωρανοῦ. Θεωρεῖται μετάφρασις ἀπὸ πρωτοτύπου λατινικοῦ, εἰλημμένου πάντως ἐξ ἐργασίας τοῦ Σωρανοῦ καὶ τῶν libri responsionum τοῦ Καιλίου Αὐρηλιανοῦ καὶ ἀποδιδομένου εἰς Muscio ἢ Mustio, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα Ἰουδαῖον ἰατρὸν ἐξ Ἀφρικῆς ὁρμώμενον καὶ ζήσαντα ἐν Ῥώμῃ. Τὸ πρωτότυπον λατινικὸν κείμενον ἐδημοσιεύθη ὑπὸ Val. Rose *(Sorani,* Gynaeciorum vetus translatio latina, ἐν Λιψίᾳ 1882) κατὰ χειρόγραφον τῆς ἐν Κοπεγχάγῃ βιβλιοθήκης. Παρὰ τὸ πρωτότυπον τοῦτο λατινικὸν κείμενον ὑπάρχει καὶ μετάφρασις λατινικὴ παλαιοτέρα, γενομένη πιθανῶς ὑπὸ ἰατροῦ τινος τῶν ἐν Σαλέρνῳ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἑλληνικοῦ κειμένου (πρόλογος ἐν *Wolf,* Gynaeciorum libri, Βασιλ. 1556). ΑΡ. Π. Κ.

**Μοσχιώνας** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ νομοῦ Κυκλάδων, ἄλλως *Μοσκιώνας* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μοσχοβάκης, Γεώργιος.** Ἀξιωματικὸς τῆς χωροφυλακῆς, προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ταγματάρχου (1832—1875). Ἦτο ἐκ τῶν διακεκριμένων τῆς ἐποχῆς του καὶ συνέγραψεν ἀρκετὰς μονογραφίας καὶ μελέτας. Ν. Θ. Κ.

**μοσχόβιος** *σειρά.* Ἡ ἀρχαιοτέρα ἐκ τῶν δύο σειρῶν στρωμάτων, εἰς τὰς ὁποίας ὑποδιαιρεῖται ἡ ἀνωτέρα λιθανθρακοφόρος ὑποδιάπλασις τῆς λιθανθρακοφόρου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ. Περιλαμβάνει μόνον στρώματα θαλασσίας πετρογενετικῆς ὄψεως, συναντώμενα πολλαχοῦ τῆς γῆς. Ἐν Ἑλλάδι μοσχόβια στρώματα συναντῶνται ἐν Πάρνηθι (ψαμμῖται καὶ σπανιώτερον ἀργιλλικοὶ σχιστόλιθοι μὲ φακοὺς χαλαζιτῶν καὶ ἐνστρώσεων ἀπὸ λεπτομερῆ χαλαζιακὰ κροκαλοπαγῆ), εἰς Στενὴν Εὐβοίας (ψαμμῖται, γραουβάκαι, μαῦροι κερατόλιθοι, καὶ χαλαζιακὰ λατυποπαγῆ), εἰς τὴν Χίον καὶ τὴν Μακεδονίαν. Γ. Κ. Γ.

**Μοσχοβιτέϊκα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καστορίου (Καστανιᾶς) τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 18. Χ. Δ.

**Μοσχοβίτης** (ὁ)· ὁ κάτοικος τῆς Μόσχας, ὁ ἐκ Μόσχας καταγόμενος· || καθόλου, Ῥῶσος.

**μοσχοβίτης** (ὁ) (Moscovit) *[Ὀρυκτολ.].* Ὀρυκτὸν τῆς ὁμάδος τῶν μαρμαρυγιῶν. Ἀποτελεῖ ὀρθοπυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου μετὰ καλίου καὶ ὑδρογόνου καὶ ἔχει χημικὸν τύπον $H_2K\ Al_3Si_3O_{12}$. Κρυσταλλοῦται εἰς τὸ μονοκλινὲς σύστημα συνήθως ὑπὸ μορφὴν ἑξαγωνικῶν πινάκων, ἀπαντᾷ ὅμως καὶ εἰς συσσωματώματα κελυφώδη, φυλλώδη, λεπιδώδη ἢ καὶ στιφρὰ καὶ συχνὰ εἰς ψευδομορφώσεις. Εἰς λεπτὰ φυλλάρια εἶναι εὔκαμπτον καὶ ἐλαστικόν. Ἔχει σκληρότητα 2—3, εἰδικὸν βάρος 2,75—3,1, λάμψιν μαργαριτώδη μεταλλίζουσαν καὶ χρῶμα ὑποκίτρινον, ὑπόφαιον, ὑποπράσινον καὶ ὑπέρυθρον, συνηθέστερον ὅμως εἶναι ἄχρους. Ὁ μοσχοβίτης εἶναι μετὰ τὸν βιοτίτην τὸ συνηθέστερον ὀρυκτὸν τῆς ὁμάδος τῶν μαρμαρυγιῶν. Ἀπαντᾷ εἰς πλεῖστα πυριγενῆ, ἰζηματογενῆ καὶ κρυσταλλοσχιστώδη πετρώματα ὡς οὐσιῶδες ἢ ἐπουσιῶδες ὀρυκτολογικὸν συστατικὸν αὐτῶν, ἰδίως δὲ εἰς τοὺς γρανίτας, τοὺς γνευσίους, τοὺς μαρμαρυγιακοὺς σχιστολίθους καὶ τοὺς ψαμμίτας, ὁπουδήποτε ἐμφανίζονται ταῦτα, λείπει ὅμως ἐξ ὁλοκλήρου ἀπὸ τὰ ἡφαιστειογενῆ πετρώματα. Συνώνυμα πρὸς τὸν μοσχοβίτην εἶναι τὰ ὀρυκτὰ *ἀδαμσίτης* καὶ *ἀμφιλογίτης.* Γ. Β.

**Μοσχοβίτης, Δημήτριος.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου Μοσχοβίτου.* Λαβὼν τὰ ὅπλα ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐπαναστάσεως 1866—1869, διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του εἰς πλείστας μάχας, μετὰ τὸν φόνον δὲ τοῦ ἀδελφοῦ του *Διογένους,* ἀρχηγοῦ Ἀμαρίου, ἀντικατέστησεν αὐτὸν ἐν τῇ ἀρχηγίᾳ μέχρι τέλους τοῦ ἀγῶνος (1869). Ν. ΚΛΣ

— **Μοσχοβίτης, Διογένης.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, πρεσβύτερος ἀδελφὸς τοῦ *Δημητρίου.* Διδάκτωρ τῆς φιλολογίας, ἔλαβε τὰ ὅπλα ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐν Κρήτῃ ἐπαναστάσεως τοῦ 1866 καὶ ἀνακηρυχθεὶς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας Ἀμαρίου διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του καὶ τὰς ἀνὰ τὰς ἐπαρχίας Ῥεθύμνης, Ἀμαρίου, Ἁγ. Βασιλείου καὶ Μυλοποτάμου πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις. Ἔπεσε γενναίως μαχόμενος εἰς τὴν ἐν θέσει Ὀνιθὲ μάχην τῆς 27 Ἰουλίου 1868. Κατά τινας ἐδολοφονήθη ὑπὸ τῶν ἀντιζήλων του, διεδέχθη δὲ αὐτὸν ἐν τῇ ἀρχηγίᾳ ὁ ἀδελφός του *Δημήτριος.* Ν. ΚΛΣ

— **Μοσχοβίτης, Ἰωάννης.** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ Πετροχωρίου τῆς Κρήτης. Διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του καὶ τὴν στρατιωτικὴν αὐτοῦ ἐμπειρίαν ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας του καθ' ὅλον τὸν ἐν Κρήτῃ ἀγῶνα 1821—1830. Ν. ΚΛΣ

— **Μοσχοβίτης, Νεῖλος.** Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, ἐχρημάτισεν ἡγούμενος τῆς μονῆς Πρέβελι (1823—1862). Σ. Γ. Σ.

**μοσχοβιτικός, —ή, —όν·** ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μοσχοβίτας, ὁ τῶν Μοσχοβιτῶν.

— **μοσχοβιτικὸς** *βιοτιτικὸς σχιστόλιθος* (Muscovit-Biotitschiefer) *[Πετρογρ.].* Πέτρωμα κρυσταλλοσχιστῶδες, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν μαρμαρυγιακῶν σχιστολίθων. Περιέχει χαλαζίαν, ἐκ δὲ τῆς ὁμάδος τῶν μαρμαρυγιῶν μοσχοβίτην καὶ βιοτίτην ὑπὸ τὴν αὐτὴν περίπου ἀναλογίαν, χωρὶς οὔτε ὁ βιοτίτης νὰ παρουσιάζῃ ἐπικράτησιν ἀπέναντι τοῦ μοσχοβίτου, οὔτε ὁ μοσχοβίτης ἀπέναντι τοῦ βιοτίτου. Ὡς ἐπουσιώδη ὀρυκτολογικὰ συστατικὰ παρατηροῦνται ἐκεῖνα, τὰ ὁποῖα ὑπάρχουν καὶ εἰς τοὺς ἄλλους μαρμαρυγιακοὺς σχιστολίθους. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς κρυσταλλοσχιστώδεις περιοχάς, ὅπου ἀναπτύσσονται ἐν γένει οἱ μαρμαρυγιακοὶ σχιστόλιθοι, δὲν λείπει δὲ ὡς ἐκ τούτου καὶ ἀπὸ τὰς ὁμοίας περιοχὰς τῆς Ἑλλάδος. Γ. Β.

— —**μοσχοβιτικὸς** *γνεύσιος* (Muscovitgneiss) *[Πετρογρ.].* Πέτρωμα κρυσταλλοσχιστῶδες. Συνίσταται ἀπὸ ἀστρίους, χαλαζίαν καὶ μοσχοβίτην, περιέχει πολλάκις εἰς μικρὰν ἀναλογίαν καὶ βιοτίτην, πρὸς τούτοις δὲ σιδηροξείδια, ἀπατίτην, ζιρκόνιον, τουρμαλίνην, τιτανίτην καὶ ἐν γένει τὰ συνήθη εἰς τοὺς γνευσίους ἐπουσιώδη ὀρυκτολογικὰ συστατικά. Διαφέρει ἀπὸ τὸ ἀντίστοιχον πυριγενὲς πέτρωμα, τὸν γρανίτην, ἐκ τοῦ ἱστοῦ καὶ τῆς παραλλήλου διατάξεως τῶν ὀρυκτολογικῶν του συστατικῶν. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς κρυσταλλοσχιστώδεις περιοχάς, οὕτω δὲ εὑρίσκεται καὶ ἐν Ἑλλάδι. Γ. Β.

— **Μοσχοβιτικὸς** *κύκλος.* Οὕτω καλοῦνται τὰ ὑπὸ τοῦ ῥωσικοῦ λαοῦ πλασθέντα ποιήματα περὶ τὴν πόλιν τῆς Μόσχας. Ταῦτα ἀναφέρονται μὲν κυρίως εἰς τὴν περίοδον τῆς βασιλείας Ἰβὰν τοῦ Τρομεροῦ, ἐκτείνονται ὅμως μέχρι καὶ τοῦ Μεγάλου Πέτρου. Εἰς ὅλα τὰ μικρὰ ταῦτα ἔπη ἡ κυριαρχοῦσα ἰδέα δὲν εἶναι ἡ ἐξύμνησις τοῦ κατακτητικοῦ ἔργου τῶν τσάρων τῆς Μόσχας, ἀλλὰ μᾶλλον ἡ κατάστασις τῆς ἀτομικῆς ψυχολογίας αὐτῶν καὶ ἡ ἔκθεσις ἐπεισοδίων κοινωνικοῦ καὶ πολιτικοῦ χαρακτῆρος. Εἰς τὴν τάξιν τούτων εἶναι καὶ τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὸν ἀνυπότακτον ἐπαναστάτην Στένκα Ραζίνα, εἰς ἃ ἐξιδανικεύονται τὰ ἀνδραγαθήματα τῶν πλανοδίων ἐπαναστατῶν τῆς Μεσημβρινῆς Ῥωσίας. Μετὰ τὴν παρέλευσιν τοῦ χρόνου καὶ τὴν εἰσαγωγὴν τῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ Μεγάλου Πέτρου, τὸ ποιητικὸν τοῦτο ῥεῦμα ἤρξατο χάνον τὴν βαθύτητα καὶ τὴν δροσερότητα αὐτοῦ. Ἡ πρώτη συλλογὴ τῶν ἐπῶν τούτων περιελήφθη εἰς τὴν «Περιήγησιν ἀνὰ τὴν Ῥωσίαν» τοῦ Ἄγγλου περιηγητοῦ Κόλινς, περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, πολύτομον δὲ συλλογὴν ἐδημοσίευσεν ὁ Κυριέβιτς. Θ. Β.

— **Μοσχοβιτικοὶ** *φιλολογικοὶ κύκλοι.* Καλεῖται οὕτως ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ῥωσικῆς φιλολογίας ἡ τῷ 1830 ἀρξαμένη ἀντίδρασις ἐν Μόσχᾳ ὑπὸ νέων λογοτεχνικῶν κύκλων κατὰ τῶν καλουμένων Ὀλυμπίων τῆς Πετρουπόλεως, διὰ περιοδικῶν, οἷα τὸ «Τηλεσκόπιον», «Ἡ φήμη» κ. ἄ. Ἡ νέα αὕτη πνευματικὴ δύναμις ἀπετελεῖτο ἐκ τριῶν φιλοσοφικῶν κύκλων, εἰς οὓς προΐσταντο οἱ Χέρτσεν, Στανκέβιτς καὶ Κυριέβσκι. Οἱ κύκλοι οὗτοι ὁτὲ μὲν προσήγγιζον, ὁτὲ δὲ ἀπεμακρύνοντο ἀλλήλων καὶ τέλος, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1840, συνεχωνεύθησαν εἰς δύο στρατόπεδα, τὸ τῆς *Πετρουπόλεως* τὸ ἐπικαλούμενον τῶν *Δυτικῶν* (νεωτεριστῶν), συγκεντροῦμενον περὶ τὸν Μπελίνσκι, καὶ τὸ τῶν *Σλαβοφίλων* τῆς Μόσχας, οὗτινος ἡγοῦντο οἱ Κερέβσκι, οἱ Ἀξάκωφ καὶ ὁ Χαμιακώφ. Οἱ κύκλοι οὗτοι καθιέρουν ὅλως νέους καὶ ἀγνώστους κανόνας ἐν τῇ λογοτεχνίᾳ, ἐπέφερον δὲ ῥιζικὴν μεταβολὴν τῶν λογοτεχνικῶν ἠθῶν καὶ ἰδεῶν. Οἱ νέοι οὗτοι κύκλοι εἰσήγαγον εἰς τὴν φιλολογίαν ὅλα τὰ πολιτικὰ καὶ κοινωνικὰ ζητήματα, τῶν ὁποίων προεξῆρχον τὸ τῆς καταργήσεως τῆς δουλείας τῶν χωρικῶν καὶ τὸ τῆς δημοσίας διεξαγωγῆς τῶν δικῶν. Ἡ μεγάλη αὕτη κίνησις, ἡ τόσον ὁρμητικῶς καὶ εὐρέως ἐξαπλωθεῖσα, ἀνεκόπη αἴφνης ἐπὶ ἱκανὰ ἔτη κατὰ τὸ 1850. Θ. Β.

— **μοσχοβιτικὸς** *σχιστόλιθος* (Muscovitschiefer) *[Πετρογρ.].* Πέτρωμα κρυσταλλοσχιστῶδες τῆς οἰκογενείας τῶν μαρμαρυγιακῶν σχιστολίθων. Ἀποτελεῖται ἀπὸ χαλαζίαν καὶ μοσχοβίτην ὡς οὐσιώδη ὀρυκτολογικὰ συστατικά, περιέχει δὲ συγχρόνως καὶ βιοτίτην πολλάκις, καθὼς καὶ τὰ ἄλλα ἐπουσιώδη ὀρυκτολογικὰ συστατικά, τὰ ὁποῖα παρουσιοῦνται ἐν γένει εἰς τοὺς μαρμαρυγιακοὺς σχιστολίθους. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς κρυσταλλοσχιστώδεις περιοχάς, τοιουτοτρόπως δὲ εὑρίσκονται καὶ πολλαχοῦ τῆς Ἑλλάδος. Γ. Β.

**μοσχοβόλημα** (τό), καὶ ***μοσκοβόλημα·*** δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μοσχοβολῶ,* εὐωδία, εὐωδίασις, ἀρωματῶδης ἀπόπνοια: «χαρὰ τὸ μοσχοβόλημα ποὺ ἔχει ὁ κῆπος».

**μοσχοβολιά** (ἡ)· δημοτ., μοσχοβόλημα, εὐωδία: «τί μοσχοβολιές εἶν' αὐτές;»

**μοσχοβόλος** (ὁ, ἡ),—ον (τό)· ὁ βάλλων, ὁ ἀποπνέων ὀσμὴν μόσχου, ὁ εὐωδιάζων.

**μοσχοβολῶ** (*—έω,*) καὶ *μοσκοβολάω·* δημοτ., ἀποπνέω ὀσμὴν μόσχου, εὐωδιάζω: «τὴν ἄνοιξη μοσχοβολάει ὁ τόπος».

**Μόσχοβος** (ὁ), καὶ ***Μόσκοβος·*** δημοτ., ὁ κάτοικος τῆς Μόσχας, Μοσχοβίτης· || καθόλου, Ῥῶσος.

**μοσχόβους** (ὁ) (Bos moschatus) *[Ζωολ.].* Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μυρηκαστικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *βοϊδῶν,* περιλαμβάνον βοῦς μὲ σῶμα εὐρωστότατον, χαμηλόν, μήκους μέχρι 220 ἑκατοστομέτρων. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μοσχόβους ὁ ἰνδικὸς* (Bos moschatus indicus), ὅστις ἔχει πυκνότατον καὶ μακρότατον τρίχωμα, κεφαλὴν σχετικῶς μικράν, ἀπολήγουσαν εἰς χονδρὸν καὶ βραχὺ ῥύγχος, κέρατα χονδρὰ καὶ κυρτά, περιελισσόμενα πρὸς τὰ πρόσω. Οἱ πόδες εἶναι βραχεῖς, χονδροὶ καὶ ἡ οὐρὰ βραχεῖα καὶ ὑπὸ πυκνοτάτων τριχῶν κεκαλυμμένη. Ζῇ κατ' ἀγέλας καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὰς Ἰνδίας, ὅπου καταδιώκεται διὰ τὸ κρέας καὶ τὸ ἔριόν του. Δ.Ν.Π.

**μοσχοβούτυρον** (τὸ) *[Χημ.].* Καλεῖται καὶ *μοσχοκαρύων βούτυρον* ἢ *μοσχοκαρυέλαιον* ἢ *μουσκάτιον βούτυρον* ἢ *μουσκάδων βούτυρον,* εἶναι δὲ λιπαρὰ βουτυρώδους συστάσεως ὕλη, ἐξαγομένη ἐκ τῶν σπερμάτων *μυριστικῆς τῆς εὐόσμου* (μοσχοκαρύων) δι' ἐκχυλίσεως ἢ ἐκθλίψεως. Χρησιμοποιεῖται δι' ἐντριβὰς ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἀλοιφὴ τοῦ Ῥόζεν* ἢ *βάλσαμον τοῦ Νερβάλ.* Σ. Γ.

**μοσχοβυστίτσα** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία ἐν Κερκύρᾳ ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἄμπελος ἡ οἰνοφόρος.*

**μοσχογαλῆ, ἢ** ***ὀζογαλῆ*** (ἡ) (Viverra) *[Ζωολ.].* Γένος θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μοσχογαλιδῶν* τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἁρπακτικῶν,* περιλαμβάνον ζῷα μὲ σῶμα ἐλαφρὸν καὶ προεκτεταμένον, οὐρὰν χαλαρὰν καὶ μακρὰν καὶ σκέλη ἀρκούντως ὑψηλά. Οἱ πόδες φέρουσι πέντε δακτύλους μετὰ γαμψῶν ἡμισυσταλτῶν ὀνύχων, τὰ ὦτα εἶναι πλατέα καὶ βραχέα, οἱ ὀφθαλμοὶ μετρίως μεγάλοι μετὰ κυκλικῆς κόρης, τὸ ῥύγχος καὶ ἡ ῥὶς ὀξεῖα, τὸ τρίχωμα μαλακὸν καὶ ὁ ἀδενοθύλαξ λίαν ἀνεπτυγμένος. Κυ-

*Μοσχογαλῆ ἡ ζίβεθος.*

ριώτερα εἴδη εἶναι: *ὀζογαλῆ ἡ κιβέττη* (Viverra civetta) ἢ *κιβέττη ἡ ἀφρικανική,* ἔχουσα ἀνάστημα κυνὸς μετρίου μεγέθους, σῶμα εὔρωστον καὶ οὐρὰν ἴσην πρὸς τὸ ἥμισυ περίπου τοῦ μήκους τοῦ σώματος. Ζῇ κυρίως ἐν Ἀφρικῇ, συλλαμβανομένη δέ, εἰς μικρὰν ἰδίως ἡλικίαν, ἐξημεροῦται. Ἐκ τῶν παρὰ τὸν πρωκτὸν ἀδένων αὐτῆς ἐκθλίβεται τὸ ὀσμὴν μόσχου ἔχον πολύτιμον ἔκκριμά της, ζίβεθον καλούμενον. Τὸ ὑγρὸν ἔχει κατ' ἀρχὰς χροιὰν λευκὴν καὶ ἀφρώδη, βραδύτερον ὅμως καθίσταται καστανόχρουν καὶ ἀποβάλλει μέρος ἐκ τῆς ὀσμῆς του. *Μοσχογαλῆ ἡ ζίβεθος* ἢ *ἀσιατικὴ* (Viverra zi-

*Μοσχογαλῆ ἡ ζενέττα.*

vetha). Ἔχει κεφαλὴν ὀξυτέραν τῆς πρώτης, σῶμα ἰσχνότερον καὶ ὦτα μακρότερα. Εἶναι χρώματος ἀμαυρῶς καστανοκιτρίνου, ἐπὶ δὲ τῆς ῥάχεως σχηματίζεται πλατεῖα μέλαινα ταινία. Πατρὶς αὐτῆς εἶναι ἡ Βεγγάλη, ἀπαντᾷ δὲ κυρίως ἐν τῇ μεσημβρινῇ Ἀσίᾳ καὶ τῇ Μαλαισίᾳ. *Μοσχογαλῆ ἡ ῥάσσα* (Viverra malaccensis). Ἔχει σῶμα μικρότερον, οὐρὰν μακροτέραν, στενὴν κεφαλήν, μεγάλα ὦτα καὶ τρίχωμα τραχὺ μετὰ κυματισμῶν φαιοκαστανοκιτρίνων. Ζῇ κυρίως εἰς τὰς περὶ τὸν Ἰνδὸν καὶ τοὺς Ν. πρόποδας τῶν Ἱμαλαΐων χώρας, ἀπαντᾷ ὅμως γενικῶς καθ' ὅλην τὴν μεσημβρινὴν Ἀσίαν καὶ τὴν Μαλαισίαν. Οἱ Μαλαῖοι ἐξάγουσιν ἐξ αὐτῆς ἰσχυρὸν ἄρωμα, ἀναμιγνύοντες τὸ ἔκκριμα αὐτῆς μετ' ἄλλων εὐωδῶν φυτικῶν οὐσιῶν. *Μοσχο-*

Digitized by Google

γαλῆ ἡ ζενέττα (Viverra genetta). Ζῆ ἐν ἀφθονίᾳ εἰς τὰς χώρας τοῦ Ἄτλαντος, τὴν Ἱσπανίαν καὶ τὴν μεσημβρινὴν Γαλλίαν. Τὸ ζῷον τοῦτο θαυμάζεται διὰ τὴν καταπληκτικὴν εὐστροφίαν του, ἐξημεροῦται εὐκόλως καὶ θηρεύεται διὰ τὸ ὡραῖον ἀνοικτόφαιον καὶ ὑποκίτρινον τρίχωμά του, τὸ ὁποῖον χρησιμοποιεῖται διὰ διφθέρας. —Ω.

—*[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα μοσχογαλῶν συναντῶνται ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Νότιον Γαλλίαν (Rousillon) ὡς καὶ εἰς τὰ στρώματα τοῦ Siwalik τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν. Γ. Κ. Γ.

**μοσχογαλίδαι** (οἱ) (Viverridae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἁρπακτικῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους ἁρπακτικὰ μὲ σῶμα ἐπίμηκες καὶ μᾶλλον λεπτόν. Οἱ ἀντιπρόσωποι τῆς οἰκογενείας ταύτης ἀπαντῶσιν εἰς τὴν Εὐρώπην, Ἀσίαν καὶ Ἀφρικήν. Παρὰ τὸν πρωκτὸν τῶν ζῴων τούτων σχηματίζονται δύο ἢ πλείονες ἀδένες, ἐκκρίνοντες ὑγρὰ μὲ ἰδιάζουσαν εὐώδη ὀσμήν. Αἱ αἰσθήσεις των καὶ μάλιστα ἡ ὄσφρησις, ἡ ἀκοὴ καὶ ἡ ὅρασις εἶναι ὀξύταται, βοηθοῦσαι αὐτὰ εἰς τὴν ἐξεύρεσιν τῆς τροφῆς των, ἡ ὁποία συνίσταται ἐκ μικρῶν θηλαστικῶν, πτηνῶν, ᾠῶν, ἐντόμων, ἀμφιβίων ἰχθύων, καρκίνων, ἑρπετῶν κλπ. Ἡ ἐπιδεξιότης καὶ τὸ θάρρος, μετὰ τῶν ὁποίων ἀντιπαρατάσσονται ἐναντίον τῶν μᾶλλον ἰσχυρῶν ἐχθρῶν των καὶ μάλιστα τῶν ἰοβόλων ὄφεων, εἶναι παροιμιώδης. Θηρεύονται διὰ τὸ πολύτιμον ἔκκριμα τῶν ἀδένων των (ἔχον πολλάκις ἰσχυρὰν ὀσμὴν μόσχου), πολλὰ δὲ εἴδη ἐξημερούμενα χρησιμοποιοῦνται ἐπιτυχῶς πρὸς θήραν. Ἂν καὶ προξενοῦν πολλὰς ζημίας διὰ τῶν διαρπαγῶν κατοικιδίων ζῴων, ἀναγνωρίζονται ἐν τούτοις ὡς ὠφέλιμα λόγῳ τῶν καταστροφῶν τὰς ὁποίας ἐπιφέρουσιν εἰς τὰ βλαβερὰ ζῷα καὶ ἔντομα τῶν ἀγρῶν. Κυριώτερα γένη τῶν μοσχογαλιδῶν εἶναι ἡ *μοσχογαλῆ* (βλ. λ.), ὁ *ἐμπρηστὴς* κλπ. —Ω.

—*[Παλαιοζωολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν ζῴων τούτων συναντῶνται ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν Εὐρώπῃ καὶ ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως καὶ τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Νότιον Ἀσίαν. Ἐκ τῶν ἐκλειψάντων γενῶν τῆς οἰκογενείας σπουδαῖον ἦτο τὸ καὶ εἰς τὸ Πικέρμι τῆς Ἀττικῆς ἀνευρεθὲν *ἰκτιθήριον*. Γ. Κ. Γ.

**μοσχοδουλειὰ** (ἡ)· ἐξαιρετικῶς καλή, λίαν συμφέρουσα ἐπιχείρησις.

**μοσχοέλατο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πεύκη ἡ μελανή*.

**μοσχοθυμίαμα** (τό)· θυμίαμα παρέχον ὀσμὴν μόσχου, ἄλλως *μοσχολίβανο*.

**Μόσχοι** (οἱ), καὶ **Μόσχιοι** *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς ΒΔ. Ἀρμενίας, παρὰ τὰ μεθόρια τῆς Κολχικῆς καὶ τὴν ἀνατολικὴν ἄκραν τοῦ Γαλατικοῦ Πόντου, κατοικῶν τὴν ἀπ' αὐτῶν κληθεῖσαν *Μοσχικήν*, ὀρεινὴν καὶ δύσβατον χώραν. Ὑποταχθέντες ὑπὸ τῶν Ἀχαιμενιδῶν, ἀπετέλουν ἐπὶ Δαρείου μετ' ἄλλων γειτονικῶν λαῶν τὸν δέκατον ἔνατον νομὸν τοῦ περσικοῦ κράτους, καταβάλλοντες ἀπὸ κοινοῦ ἐτήσιον φόρον 300 ταλάντων. Συνεξεστράτευσαν μετὰ τοῦ Ξέρξου κατὰ τῆς Ἑλλάδος, ὑπὸ τὸν Ἀριόμαρδον, υἱὸν τοῦ Δαρείου, φέροντες περικεφαλαίας ξυλίνας, ἀσπίδας καὶ αἰχμὰς μικράς, λόγχας δὲ μεγάλας (*Ἡρόδ.* VII, 78). Ἐπὶ Στράβωνος ἀπώλεσαν τὴν ἀνεξαρτησίαν των, ἡ δὲ χώρα των διεμοιράσθη μεταξὺ τῶν Κόλχων, Ἰβήρων καὶ Ἀρμενίων (XI, 499). Ὑπὸ τοῦ Ἰεζεκιὴλ ἀναφέρονται ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μοσόχ*, ἐπὶ δὲ τῶν βυζαντινῶν χρόνων *Μέσχοι*. Α. Θ. Σ.

**μοσχοΐτιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐλαίαγνος ὁ στενόφυλλος*.

**μοσχοκαρύα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μυριστικὴ ἡ εὐώδης*.

**Μοσχοκαρυὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φθιώτιδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ὁμώνυμον ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Δερβὲν Καρυά*. Κάτ. (1928) 843. Χ. Δ.

**μοσχοκαρυέλαιον** (τό)· βλ. *μοσχοβούτυρον*.

**μοσχοκάρυον** (τὸ) (Nua moschata). Καλεῖται οὕτως ὁ καρπὸς *μυριστικῆς τῆς εὐώδους*. Κ. Γ. Μ.

— **μοσχοκαρύων βούτυρον**· βλ. *μοσχοβούτυρον*.

**μοσχοκάρφι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *καρυόφυλλον τὸ ἀρωματικόν*.

— **μοσχοκάρφι** (τὸ) *[Χειροτεχν.]*. Εἶδος ἑλληνικῆς *δαντέλλας* (βλ. λ.).

**μοσχοκαύλι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐχῖνωψ ὁ κοινός*.

**μοσχοκερατιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λωτὸς ὁ ἐδώδιμος*.

**μοσχολάχανο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐρωδιὸς ὁ μοσχοφόρος*.

**μοσχολεϊμονιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κίτριον ἡ λιμεττία*.

**μοσχολέϊμονο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ καρποῦ τῆς *μοσχολεϊμονιᾶς*.

**Μοσχολέος, Θεολόγητος.** Κρὴς ποιητὴς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, γράψας διὰ στίχων «Βίον τοῦ Ἁγίου καὶ Μεγάλου Νικολάου», ἐκδοθέντα τὸ πρῶτον παρὰ Pinelli (Βενετία 1626), εἶτα δὲ παρὰ Em. Legrand (ἐν Bibliothèque grecque vulgaire). Τὸ ποίημα τοῦτο ἀποτελεῖται ἀπὸ 208 ὁμοιοκαταλήκτους στίχους. ΕΡ. Μ.

**μοσχολίβανον** (τό)· καὶ **μοσκολίβανο**· δημοτ., λιβάνι ἀποπνέον ὀσμὴν μόσχου· ἄλλως *μοσχοθυμίαμα*.

—*[Χημ.]* Βλ. *βενζόη*.

—**μοσχολίβανο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *στύραξ ὁ βενζοϊκός*.

**μοσχολιὸς** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κέντρανθος ὁ ἐρυθρός*.

**μοσχολούλουδο** (τό)· κοιν. *μοσκολούλουδο*.

**μοσχομάγκα** (ἡ), καὶ **μοσχομάγκας** (ὁ)· ὁ ἀγυιόπαις, ὁ μόρτης.

—*[Ἱστορ.]* Καλοῦνται οὕτως ἀπὸ τοῦ 1832, ὅτε ἐξερράγησαν ταραχαὶ ἐν Ναυπλίῳ, μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ κυβερνήτου Καποδιστρίου, οἱ Γάλλοι καὶ εἶτα συνεκδοχικῶς πάντες οἱ γαλλίζοντες. Ἐπίσης *μοσχομάγκαι* ἐκαλοῦντο καὶ οἱ ὀπαδοὶ τοῦ ἐκ Μεσολογγίου πολιτευτοῦ Ἐ. Δεληγεώργη (1865—1879) καὶ πρὸ τούτου ἐν Ναυπλίῳ οἱ ὀπαδοὶ τοῦ ἀγωνιστοῦ Μόσχου (*Μόσχου μάγκα*).

**μοσχομολόχα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πελαργόνιον τὸ ἐρυθρόν*.

**μοσχομοσκιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ῥοδῆ ἡ ἀείζωος*.

**μοσχομπίζελο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λάθυρος ὁ εὔοσμος*.

**μοσχομυρίζω**· μυρίζω μόσχον, ἀποπνέω ὀσμὴν μόσχου, ἄλλως *μοσχοβολῶ*.

**μοσχομυρωδᾶτος**, —η, —ο· δημοτ., οἱονεὶ μοσχᾶτος καὶ μυρωδᾶτος, ὁ πλήρης εὐαρέστου ὀσμῆς.

**μοσχομυρωδιὰ** (ἡ)· εὐωδία μόσχου, μοσχοβόλημα, ἐν γένει, εὐωδία.

**Μοσχονᾶς, Γεώργιος.** Κατήγετο ἐκ Μυλοποτάμου τῆς Κρήτης. Ἀποδημήσας νεώτατος εἰς Μικρὰν Ἀσίαν, ἐπεδόθη εἰς τὸ ἐμπόριον ἐν Ἐφέσῳ καὶ Σμύρνῃ, ἔνθα ἐμυήθη εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας. Ἐνεργὸν ἔλαβε μέρος διὰ τὸν ἐπικείμενον ἀγῶνα καὶ καταδιωχθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων, κατέφυγεν εἰς Σάμον καὶ ἐκεῖθεν εἰς Κρήτην, ἔνθα ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ἐκεῖ ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τῷ 1821, διαρκούσης τῆς ὁποίας διετέλεσε διοικητὴς τῶν ἐπαρχιῶν Σελίνου καὶ Κισάμου. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ ἀγῶνος κατέφυγεν εἰς Ὕδραν, ἔνθα καὶ ἀποκατεστάθη. Ἔλαβεν ὡσαύτως ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ἐπανάστασιν 1841. Ν. ΚΛΣ

— **Μοσχονᾶς, Ἐμμανουήλ.** Ἀδελφὸς τοῦ *Γεωργίου*, συμμετέσχεν ὡς ὁπλαρχηγὸς εἰς τὴν Ἐπανάστασιν 1821, ἐνῷ συγχρόνως ἐθεράπευεν ὡς πρακτικὸς χειρουργὸς τοὺς τραυματίας. Ἀπέθανε τῷ 1824 ἐκ τῶν κακουχιῶν τοῦ πολέμου. Ν. ΚΛΣ

— **Μοσχονᾶς, Δημήτριος.** Ἐγεννήθη ἐν Λέρῳ τῷ 1839 καὶ ἀπέθανε τῷ 1895. Παῖς ἔτι ἐγκατεστάθη ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἐνωρὶς ἐπεδόθη εἰς τὴν αἰγυπτιολογίαν, ἀσχοληθεὶς μετὰ ζήλου εἰς τὴν σπουδὴν τῶν ἱερογλυφικῶν. Ἦτο ἤδη μέλος τῆς Β. Γεωγραφικῆς ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ ἄλλων ἐπιστημονικῶν σωματείων, ὅταν τῷ 1882 εἰσῆλθεν εἰς τὴν ἐν Σουδὰν στρατιωτικὴν ὑπηρεσίαν τῶν Ἄγγλων, μετὰ τοῦ υἱοῦ του Γεωργίου, ὁ ἔρωτος πρὸς τὰς ἐξερευνήσεις. Τὰ τραγικὰ γεγονότα τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ἀραμπῆ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ τοῦ Μάχδη ἐν Σουδάν, ὑπέβαλον αὐτὸν εἰς σκληρὰς δοκιμασίας. Ὁ υἱός του ἐφονεύθη ἐν Τιγκικὰτ τῷ 1885. Ἐπανακάμψας εἰς Κάϊρον ἐπανέλαβε τὰς αἰγυπτιολογικάς του σπουδάς, ἐργαζόμενος εἰς τὴν ἑταιρείαν Κούκ. Ἀφῆκεν ἀνέκδοτα ἔργα, συλλυπητήριον ἐπιστολὴν εἰς ἱερογλυφικὴν πρὸς τὴν βασίλισσαν Βικτωρίαν ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ δουκὸς τοῦ Κλάρενς, ἀφιέρωσιν ἱερογλυφικὴν εἰς τὸν τότε σὲρ Ἔβελιν Μπάριγκ, τὸν κατόπιν λόρδον Κρέμερ, μελέτην ἀγγλιστὶ περὶ τῆς σχέσεως τοῦ τεκτονισμοῦ πρὸς τὴν μυστικὴν θεοσοφίαν τῶν φαραωνικῶν ναῶν καὶ ἑρμηνείαν τῆς ἐπιγραφῆς ἀναθηματικῆς στήλης, εὑρεθείσης ὅταν ἐκτίζετο ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Νικολάου εἰς τὸ Κάϊρον. Ἐπεχείρησε καὶ τὴν ἔκδοσιν περιοδικοῦ «Μανέθων» (1880). Τῷ 1892 ἐφιλοτέχνησε, κατόπιν ἀδείας τῆς αἰγυπτιακῆς κυβερνήσεως, ὁ ἴδιος ὁμοιώματα τῶν μουμιῶν τῶν διασημοτέρων φαραὼ τοῦ μουσείου διὰ τὴν ἔκθεσιν τοῦ Σικάγου, ὅπου καὶ μετέβη ὁ ἴδιος. Γ. Λ. Α.

**μοσχόνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μόσχος*.

**Μοσχονήσια** *[Γεωγρ.]*. —1) Αἱ *Ἑκατόννησοι* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων, συστὰς νησίδων μικρασιατικῶν καὶ σκοπέλων ἐν τῷ Ἀδραμυττηνῷ κόλπῳ, οὗ ἀποτελοῦν τὸ ΝΔ. κέρας, ἀντικρύζουσαι πρὸς δυσμάς των τὸ Λεπέτυμνον τῆς Λέσβου. Καὶ ἐξώταται μὲν αὐτῶν τὸ *Γυμνὸ* καὶ ὁ *Ἐλειός*, ἔχουσαι φάρον ἑκάστη, ἐσώτεραι δὲ ἡ *Μοσχόνησος*, ἡ καὶ μείζων ἐν τῇ συστάδι, αἱ πρὸς δυσμὰς τῆς Μοσχονήσου, *Καλαμόπουλο, Κάλαμος, Πέρα Μόσχος, Λίχα, Πλάτην, Αἰγιαλονήσι, Πελαγονήσι, Ἀδιάβατος* καὶ *Πύργος* ἡ βορειότερα, πρὸς ἀνατολὰς δὲ τῆς Μοσχονήσου, *Κρεμμύδι, Ζεφύρι, Καλαμάκια, Κόπανος, Πετρούσια, Σκλαβοβούνι, Κώδων, Ψαριανό, Δασκαλειά, Οὐλιὰ* ἡ βορειοτέρα, 2 δὲ μίλ. ΒΔ. αὐτῆς ἡ ὕφαλος *Ἀλφειὸς* ἀπὸ τοῦ ἀνακαλύψαντος αὐτὴν (1922) ὑδρογραφικοῦ μας πλοίου (Χάρτ. Ἑλλ. ὑδρογρ. ὑπηρ. 15: Κυδωνίαι καὶ Μοσχόνησοι). —2) Συστὰς βραχονησίδων ἐγγυτάτων τῇ ΝΔ. τῆς Κάσου (πλάτ. 35° 21½ Β., μῆκ. 26° 52⅓ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2824: Scarpanto and Kassos). Σ. Ε. Λ.

**Μοσχόνησος** *[Γεωγρ.]*. Ἡ μείζων νῆσος τῆς συστάδος τῶν *Μοσχονησίων*, σχηματίζουσα μετὰ τῆς κυρίως ἀκτῆς τοὺς ἀσφαλεστάτους φυσικοὺς λιμένας τῶν Κυδωνιῶν, ὧν ὁ κύριος ἐπικοινωνεῖ πρὸς τὸ Αἰγαῖον δυτικῶς μὲν διὰ τοῦ «Πόρου τοῦ Κώνωνος» (κοιν. *Τάλιανη*), Β.ΒΑ. δὲ διὰ τοῦ «Πόρου τῆς Νήσσης» (κοιν. *Ντουλάπα*). Λίαν κολπίζουσα ἡ νῆσος, σχηματίζει καὶ ἔξω τοῦ λιμένος τοῦ Ἀϊβαλῆ ὡραίους ὅρμους καὶ δὴ τὸν τῆς *Πατερίτσας* πρὸς Α. καὶ τὸν τῆς *Πορισελήνης* πρὸς Δ. Ἡ ΒΔ. τῶν Μοσχονησίων *Πύργος*, εἶναι, λόγῳ διαβρώσεως στενοῦ λαιμοῦ, ἀπόσπασμα τῆς Μοσχονήσου. Προάστειον οἱονεὶ τῶν Κυδωνιῶν, ἦτο ὀλιγάνθρωπος πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν. Μέγα μέρος τῶν κατοίκων της ἐσφάγη τῷ 1822. Σ. Ε. Λ.

**μοσχοπεπονιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πέπων ὁ μόσχοσμος*.

**μοσχοπέπονο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ καρποῦ τῆς *μοσχοπεπονιᾶς* (βλ. λ.).

**Μοσχόπολις** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον ἤδη τῆς Ἀλβανίας, κείμενον δυτικῶς τῆς Κορυτσᾶς εἰς τετράωρον ἀπόστασιν ταύτης ἐπὶ ὀροπεδίου ὕψους 1240 μ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης, περιβαλλόμενον ὑπὸ γυμνῶν ὀρέων καὶ διαρρεόμενον ὑπὸ τοῦ χειμάρρου Ἄζου. Ἔχει ὕδατα πηγαῖα ἄφθονα καὶ κλῖμα δροσερώτατον, διὸ καὶ πολλοὶ τῶν κατοίκων τῆς Κορυτσᾶς διαθερίζουν ἐν αὐτῷ.

—*[Ἱστορ.]* Ἐν τῇ «Γεωγραφίᾳ» τοῦ Μελετίου τοῦ ἐξ Ἰωαννίνων μητροπολίτου Ἀθηνῶν (Βενετία 1724) γράφεται *Βοσκόπολις* «κληθεῖσα οὕτω, ὡς ὁ ἴδιος λέγει, ὅτι οἱ πλεῖους προβάτων βοσκοὶ εἶναι». Ὑπὸ τὸ ἴδιον ὄνομα ἀναγράφει ταύτην καὶ ὁ Π. Ἀραβαντινὸς ἐν τῇ «Χρονογραφίᾳ» του (τ. Β' σ. 35), χωρὶς ὅμως νὰ συμφωνῇ διὰ τὴν ἐτυμολογίαν της πρὸς τὸν Μελέτιον. Τὸ πρῶτον ὠνομάσθη Μοσχόπολις ἴσως πρὸ τοῦ 1610 ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Ἱεροσολύμων κατά τινα ἀνεξακρίβωτον γνώμην, ἰδόντος, ὅτι ἐν τοῖς καταλόγοις εἰσφορῶν ὑπὲρ τοῦ Παναγίου Τάφου ἡ Βοσκόπολις προσέφερε περισσότερα ἀπὸ τὰς ἄλλας πόλεις, διὸ καὶ *Μοσχόπολιν* τὴν ὠνόμασεν. Ὁ Πουκεβὶλ («Voyage» τ. Β' σ. 380 ἔκδ. 1825) λέγει ὅτι ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐξ ἀρχαίας πόλεως τῶν *Μόσχων* (des Mosches). Ὁ ἴδιος ἀναφέρει ὅτι κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ἡ Μοσχόπολις ἠρίθμει 40 χιλ. κατοίκους, κατ' ἄλλους δὲ 60 χιλιάδας, ὅτι ὁ πληθυσμός της ηὔξανε καταπληκτικῶς μέχρι τοῦ 1769 καὶ ὅτι εἶχε σπουδαίαν ἐμπορικὴν καὶ πνευματικὴν κίνησιν καὶ ἀξιόλογα σχολεῖα. Ὁ κατὰ τὸ 1843 ἐπισκεφθεὶς ταύτην πρόξενος τῆς Αὐστρίας ἐν Ἰωαννίνοις Hahn, στηριζόμενος εἰς σῳζόμενον τότε κώδικα τοῦ 1765, καλεῖ ταύτην *Μοσχόπολιν* καὶ ὑποστηρίζει ὅτι ἐκτίσθη κατὰ τὸ 1338 ὑπὸ τοῦ μεγάλου οἴκου τῶν Ἀλβανῶν τοπαρχῶν Μουζακαίων, τῶν καταγομένων ἐκ τοῦ Ἰωάννου Μουσακίου ζήσαντος κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Ἀπόγονος τούτου ὑπῆρξεν ὁ Πέτρος Μουσάκιος, ὅστις ἔκτισε ταύτην, κατὰ τὸν Hahn, τῷ 1338, κληθεῖσαν ἀπὸ τούτου *Μουσακιούπολιν* καὶ εἶτα *Μοσχόπολιν*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο γράφεται εἰς ὅλας τὰς ἐκδόσεις τὰς γενομένας ἐν τῷ ἐν αὐτῇ ἱδρυθέντι κατὰ τὸ 1710 τυπογραφείῳ. Ὁ Ἀραβαντινὸς γράφει ὅτι ἱδρύθη κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ὑπὸ βλαχικῆς φυλῆς, ὁ δὲ Δ. Καλλίμαχος (ἐφημερὶς «Ἀκρόπολις» Φεβρουαρίου 1913) κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα. Ἡ εἰκασία τοῦ Ἀραβαντινοῦ φαίνεται πιθανωτέρα, ἂν λάβωμεν ὑπ' ὄψιν, ὅτι οἱ κάτοικοι τῆς Μοσχοπόλεως εἶναι βλαχόφωνοι.

Ἡ Μοσχόπολις, ἂν καὶ νέα πόλις καὶ κειμένη εἰς θέσιν ὀρεινὴν καὶ δυσπρόσιτον, ἀπέβη κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα σπουδαιότατον ἐμπορικόν, βιομηχανικὸν

Digitized by Google

καὶ πνευματικὸν κέντρον. Αἱ σχέσεις αὐτῆς μετὰ τῆς δυτικῆς Εὐρώπης, μετὰ τῆς ὁποίας εἶχε συνάψει στενὴν ἐμπορικὴν ἐπικοινωνίαν, ἔδωσαν εἰς αὐτὴν τὴν εὐκαιρίαν νὰ εὐημερήσῃ καὶ νὰ πλουτήσῃ. Ἡ χειροτεχνία καὶ ἡ βιομηχανία καὶ ἰδίως ἡ ταπητουργία καὶ τὸ ἐμπόριον ἤνθησαν εἰς βαθμὸν ἐπίζηλον καὶ συνετέλεσαν νὰ δημιουργηθῇ εἰς τὴν πόλιν ταύτην τοιαύτη κίνησις, ὥστε πανταχόθεν νὰ συρρέουν ἄνθρωποι δι' ἐμπορικὰς ὑποθέσεις καὶ μαθηταὶ διὰ τὰ σχολεῖά της. Οὕτω βαθμηδὸν ἀπέβη πολυάνθρωπος πόλις, ἀριθμοῦσα, ὡς ἀνωτέρω ἀνεφέρθη, κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ἄνω τῶν 50 χιλιάδων κατοίκων. Χάρις δὲ εἰς τὴν μετὰ τῆς Εὐρώπης ἐπικοινωνίαν ἀπέβη κέντρον παντοίας συναλλαγῆς καὶ ἑστία πάσης πολυτελείας καὶ ἀνέσεως. Πολυτελεῖς οἰκίαι καὶ μεγαλοπρεπεῖς ναοὶ ἐκόσμουν τὴν πόλιν. Καὶ ἡ κοινωνικὴ δρᾶσις δὲν ὑπελείπετο ἐν τῇ πόλει ταύτῃ. Μέγα ὀρφανοτροφεῖον, «'Ορφανοδιοικητήριον» ἢ «Κάσσα τῶν πτωχῶν» καλούμενον, ἐλειτούργησεν ἀπὸ τοῦ 1750 μὲ σκοπὸν τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν ὀρφανῶν καὶ ἀπόρων παιδίων. Ἡ προϊοῦσα αὕτη ἀνάπτυξις τῆς Μοσχοπόλεως, ὁ πλοῦτός της καὶ ἡ εὐμάρειά της ὑπεξέκαυσαν τὰς ἁρπακτικὰς διαθέσεις τῶν γειτόνων της Ἀλβανῶν. Τὸ κίνημα τοῦ Ὀρλὼφ ἔδωκε τὴν πρὸς τοῦτο ἀναμενομένην ἀφορμήν. Ὁ Ὀρλὼφ διὰ προκηρύξεώς του πρὸς τοὺς Χιμαριώτας ἐζήτει τὴν ἐπανάστασιν αὐτῶν κατὰ τῶν Τούρκων. Οἱ Χιμαριῶται ἐζήτησαν τότε τὴν βοήθειαν τῶν Μοσχοπολιτῶν. Οἱ Μοσχοπολῖται λαβόντες ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰ ὀρλωφικὰ μαζὶ μὲ τοὺς Χιμαριώτας ἔδωσαν ἀφορμὴν εἰς τοὺς γείτονας Τουρκαλβανοὺς νὰ πραγματοποιήσουν πόθον διακαῆ. Ὅθεν τῷ 1771, κατὰ τὸν Κ. Παπαρρηγόπουλον (ἔκδ. 1925 τ. Ε 6', σ. 196), εἰσέβαλον εἰς τὴν Μοσχόπολιν, τὴν ὁποίαν ἐλεηλάτησαν. Ἔκτοτε ἀρχίζει ἡ παρακμὴ τῆς ἀξιολόγου ταύτης πόλεως καὶ ἡ διασπορὰ τῶν κατοίκων αὐτῆς. Οὐκ ὀλίγον συνέτεινεν εἰς τὴν παρακμὴν αὐτῆς καὶ ὁ κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἀρχίσας ἐξισλαμισμός, ἀπὸ τὸν ὁποῖον ἔσωσε τοὺς Μοσχοπολίτας ὁ ἅγιος Κοσμᾶς ὁ Αἰτωλός, ὅστις ὀλίγα ἔτη μετὰ ταῦτα, ἤτοι τῷ 1779, ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Κοὺρτ πασᾶ εἰς τὴν οὐχὶ πολὺ ἀπέχουσαν τῆς Μοσχοπόλεως πόλιν τῆς Ἀλβανίας Βεράτιον. Μετὰ τὴν καταστροφὴν καὶ τὴν παρακμὴν τῆς ἀνθούσης καὶ πολυανθρώπου ταύτης πόλεως οἱ Μοσχοπολῖται, ἐγκαταλιπόντες τὴν πατρίδα των, ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν Κορυτσάν, τὸ Μοναστήριον, τὸν Περλεπέν, τὰ Βελεσά, τὴν Ἀχρίδα, τὴν Πολωνίαν, τὴν Βουδαπέστην καὶ ἰδίως εἰς τὴν Βιέννην. Ἐκεῖ τότε κατέφυγε καὶ ὁ Σίμων Σίνας, ὁ πάππος τοῦ Σίμωνος Σίνα, τοῦ μεγάλου ἐθνικοῦ εὐεργέτου, ἱδρυτοῦ τῆς ὁμωνύμου Ἀκαδημίας τῶν Ἀθηνῶν καὶ τοῦ ἀστεροσκοπείου Ἀθηνῶν, ὅστις διὰ τῆς ἀνταλλαγῆς τοῦ ἐν Τουρκίᾳ ἀγοραζομένου βάμβακος πρὸς προϊόντα βιομηχανικὰ τῆς Αὐστρίας ἀπέβη βαθύπλουτος, κατορθώσας νὰ ἀποκτήσῃ καὶ τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου. Ἐκτὸς τοῦ Σίνα καὶ ἄλλοι Μοσχοπολῖται ἀνεδείχθησαν εἰς τὸ ἐμπόριον καὶ ἐπλούτησαν ἐν τῇ ἀλλοδαπῇ. Δύο δὲ ἐξ αὐτῶν, ὁ ἐν Βιέννῃ Μιχ. Κιοπέκας καὶ ὁ ἐν Τεργέστῃ Α. Καζαντζῆς, ἀφῆσαν ἀρκετὰ χρηματικὰ ποσὰ εἰς τραπέζας τῆς Βιέννης, ἵνα διὰ τῶν τόκων αὐτῶν συντηροῦνται τὰ σχολεῖα τῆς παρακμαζούσης πλέον πατρίδος των. Οἱ Μοσχοπολῖται, ἂν καὶ βλαχόφωνοι, ὑπῆρξαν πάντοτε Ἕλληνες τὸ φρόνημα καὶ τὴν ψυχήν, παρὰ τὰς μεγάλας ἀργότερον προσηλυτιστικὰς προσπαθείας τῆς ρουμανικῆς προπαγάνδας. Τὴν ἀλβανικὴν γλῶσσαν ἤρχισαν μανθάνοντες μόλις πρὸ ἑξηκονταετίας. Ἐκραγείσης τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 πολλοὶ Μοσχοπολῖται μαζὶ μὲ κατοίκους τῆς Κορυτσᾶς ἔλαβον μέρος, βοηθήσαντες τὴν ἐπανάστασιν διὰ χρημάτων ἰδίως. Ἔκτοτε ἡ Μοσχόπολις παρακμάζει ραγδαίως. Ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἀραβαντινοῦ (1850) ἡ ἄλλοτε πολυάνθρωπος αὕτη πόλις ἠρίθμει μόλις 250 οἰκογενείας. Ἐκραγέντος τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1914 τοῦ κινήματος πρὸς αὐτονόμησιν τῆς Βορείου Ἠπείρου, οἱ Μοσχοπολῖται ἐτάχθησαν ἀνεπιφυλάκτως ὑπὲρ αὐτοῦ. Τοῦτο δὲ συνετέλεσεν εἰς τὴν παντελῆ αὐτῆς καταστροφὴν καὶ ἐρήμωσιν, τὴν γενομένην διαρκοῦντος τοῦ Πανευρωπαϊκοῦ πολέμου, ἤτοι τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1916, ὑπὸ ἀτάκτων ἀλβανικῶν σωμάτων ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Σαλῆ Μπούτκα. Τότε ἡ Μοσχόπολις ἐλεηλατήθη καὶ ἐπυρπολήθη, πολλοὶ δὲ τῶν κατοίκων της ἐσφάγησαν καὶ ἐφονεύθησαν, οἱ δὲ διασωθέντες διεσπάρησαν, ὥστε σήμερον τὴν πολυάνθρωπον ποτὲ ταύτην πόλιν μόνον 50 οἰκογένειαι νὰ κατοικοῦν. Τοιοῦτον ὑπῆρξε τὸ τέλος τῆς ὡραίας ταύτης πόλεως, ἥτις ἐπὶ αἰῶνα καὶ πλέον ἀπετέλεσε φωτοβόλον ἑστίαν τοῦ Ἑλληνισμοῦ εἰς τὴν ἀπόκεντρον καὶ ὀρεινὴν ταύτην γωνίαν. Τὴν πυρκαϊὰν καὶ τὴν καταστροφὴν συνεπλήρωσαν οἱ κατὰ τὸν Δεκέμβριον 1916 καταλαβόντες αὐτὴν Γάλλοι, οἱ ὁποῖοι ἅπαντα τὰ ἐκ τῆς πυρκαϊᾶς καὶ ἁρπαγῆς τῶν Ἀλβανῶν διασωθέντα κειμήλια τῶν ναῶν καὶ μονῶν ἰδίως, ἤτοι εἰκόνας, ξυλόγλυπτα καὶ ὅ,τι ἄλλο πολύτιμον, διήρπασαν καὶ μετέφερον εἰς Γαλλίαν.

*Ἐκπαίδευσις.* Εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς Μοσχοπόλεως συνετέλεσαν οὐ μόνον ἡ οἰκονομική της ἀνάπτυξις, ἀλλὰ πρὸ παντὸς τὰ ἀξιόλογα σχολεῖά της. Ἡ ἐνστικτος πρὸς τὰ γράμματα κλίσις τῶν Ἠπειρωτῶν, τῶν ὁποίων πλεῖστοι εἶχον συρρεύσει ἐκ τῶν νοτίων ἐπαρχιῶν εἰς τὴν πόλιν ταύτην, ἔλαβεν ἐνταῦθα τοσαύτην ἔντασιν, ὥστε ἐν βραχυτάτῳ χρόνῳ ἡ Μοσχόπολις ἀπέβη κέντρον εὐρείας ἐκπαιδευτικῆς κινήσεως. Ἤδη ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ὑπῆρχον ἐν αὐτῇ σχολεῖα. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος συνεστήθη τὸ περίφημον «Ἑλληνικὸν φροντιστήριον», τὸ ὁποῖον σὺν τῷ χρόνῳ ἀπέβη φυτώριον τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας καὶ φιλοσοφίας. «Εἶναι ἡ σχολὴ αὕτη, ἔγραφε κῶδιξ τῆς πόλεως, ὁ ἄκρος στολισμὸς τῆς πολιτείας, ἡ εὐκοσμία τῶν ἠθῶν, τὸ φῶς τῆς ἐκκλησίας, τὸ εἰς τὸ πρόσωπον φῶς ἀνάγον». Ἀργότερον, τῷ 1744, ἡ σχολὴ αὕτη τελειοποιηθεῖσα ὠνομάσθη «Νέα Ἀκαδημία», ἡμιλλᾶτο δὲ πρὸς τὰς μεγαλυτέρας καὶ ἐξοχωτέρας τότε σχολὰς τοῦ Ἑλληνισμοῦ. Τῷ 1750 ὁ ἐκ Μοσχοπόλεως καταγόμενος ἀρχιεπίσκοπος Ἀχριδῶν Ἰωάσαφ ἔκτισε μεγαλοπρεπέστατον κτήριον διὰ τὴν «Νέαν Ἀκαδημίαν», διότι τὸ παλαιόν, λόγῳ τῆς συρροῆς πολλῶν μαθητῶν, ἦτο ἀνεπαρκές. Ἡ «Ἀκαδημία» εἶχε καὶ ἀξιόλογον βιβλιοθήκην, πλουτισθεῖσαν δι' ὅλων τῶν συγγραμμάτων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης δαπάναις τῶν ἐν τῇ ξένῃ εὐδοκίμως ἐμπορευομένων Μοσχοπολιτῶν. Τῆς βιβλιοθήκης ταύτης ἐσῴζοντο βιβλία μέχρι τῆς τελευταίας παντελοῦς καταστροφῆς τῆς πόλεως τοῦ 1916. Ἐκ τῶν πρώτων διδασκάλων τῶν διδαξάντων εἰς τὰ σχολεῖα τῆς Μοσχοπόλεως μνημονεύονται Χρύσανθος ὁ Ἠπειρώτης, διδάξας κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Τῆς «Νέας Ἀκαδημίας» πρῶτος διευθυντὴς ὑπῆρξε κατὰ τὸ 1744 ὁ ἐκ Καστορίας Σεβαστὸς Λεοντιάδης, ἔχων συνδιδάσκαλον Γρηγόριον τὸν Μοσχοπολίτην, δεινὸν ἑλληνιστήν. Κατὰ τὸ 1760 ἐδίδασκεν ἐν αὐτῷ ὁ ἱερεὺς Θεόδωρος ὁ Καβαλλιώτης, συγγραφεὺς «Γραμματικῆς» ἐκδοθείσης ἐν τῷ τυπογραφείῳ τῆς Μοσχοπόλεως, ὅστις ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Εὐγενίου Βουλγάρεως ἐν Ἰωαννίνοις, ἐπ' αὐτοῦ δὲ ἡ «Ἀκαδημία» ἔφθασεν εἰς ἐπίζηλον σημεῖον. Μετὰ τοῦτον ἐδίδαξε Κωνσταντῖνος ἱερομόναχος ὁ Μοσχοπολίτης, μαθητὴς τῆς «Ἀθωνιάδος Ἀκαδημίας». Μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ 1771 ἀρχίζει ἡ παρακμὴ τῶν σχολείων τῆς Μοσχοπόλεως. Μετὰ τὴν καταστροφὴν ἵδρυσαν ἐκ νέου σχολήν, τὴν ὁποίαν τῷ 1802 διηύθυνε Δανιὴλ ὁ Μοσχοπολίτης. Τῷ 1840 ὁ Σίνας ἀνέλαβε τὴν δι' ἐξόδων του συντήρησιν τῆς σχολῆς, κτισθείσης ὑπὸ τοῦ Ἀ. Καζαντζῆ, ἥτις διετηρήθη μέχρι τέλους, ὑποστηριχθεῖσα ἰδίως διὰ κληροδοτήματος τῶν Μιχ. Κιοπέκα, Ἀ. Καζαντζῆ καὶ Ἀδὰμ Νικαρούση. Πρὸ τοῦ 1916 διετήρει νηπιαγωγεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον, παρθεναγωγεῖον καὶ σχολαρχεῖον μὲ γυμνασιακὰς τάξεις ἐνίοτε. Ἐκτὸς τούτων ἐλειτούργει ἀπὸ τινων ἐτῶν, ἐνεργείᾳ τῆς ρουμανικῆς προπαγάνδας, καὶ ρουμανικὸν σχολεῖον. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ἀναφέρονται καὶ οἱ ἑξῆς λόγιοι Μοσχοπολῖται: Διονύσιος Μάντουκας μητροπολίτης Καστορίας (1670), ὁ ἱερεὺς Δανιήλ, συγγραφεὺς Ἑλληνο-βουλγαροβλαχο-ἀλβανικοῦ λεξικοῦ, ὁ Ἰωάννης Χαλκεὺς (1690), φιλόσοφος καὶ θεολόγος, καθηγητὴς τοῦ ἐν Βενετίᾳ Φλαγγιανοῦ φροντιστηρίου, ὁ Δημ. Προκοπίου (1720), ὁ Δημ. Πάμπερης, συγγράψας «Ἀπαρίθμησιν τῶν λογίων Γραικῶν» (1720), Ἀμβρόσιος Πάμπερης (1730), συγγράψας διδαχὰς καὶ ποίημα καρκινικὸν ἐκδοθὲν ἐν Βιέννῃ τῷ 1802, ὁ Νεκτάριος Τέρπος, συγγράψας τὴν «Πίστιν», ἐκδοθεῖσαν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1750, ὁ Κων. Τζεχάνης, συγγράψας «Ἐγχειρίδιον γραμματικῆς» (1769) καὶ πολλὰ ἄλλα, ὁ Ἰ. Ἀδάμης, ἰατροφιλόσοφος, ἐκδοὺς ἰατρικὸν σύγγραμμα τῷ 1772, ὁ Γρ. Κωνσταντινίδης ἢ Μοσχοπολίτης, ἱερεὺς λόγιος, συγγραφεὺς ἀκολουθιῶν ἁγίων, ὁ Νικ. Σαμσάλας, ὁ Ναοὺμ Γκούστας, οἱ Τοῦρται, ὁ Ἰωάσαφ ὁ ἀρχιεπίσκοπος Ἀχριδῶν, ὁ Γεώργ. Παπασῖμος καὶ πολλοὶ ἄλλοι. Ἐκ Μοσχοπόλεως ἐπίσης κατήγετο καὶ ἡ στρατιωτικὴ οἰκογένεια Σμόλενιτς.

*Τυπογραφεῖον.* Σπουδαίως συνέβαλεν εἰς τὴν πνευματικὴν ἀνάπτυξιν καὶ κίνησιν τῆς Μοσχοπόλεως τὸ τυπογραφεῖον αὐτῆς, ἱδρυθὲν τῷ 1710 ἤ, κατ' ἄλλους, τῷ 1720, ὑπὸ τοῦ ἱερομονάχου Γρηγορίου Κωνσταντινίδου ἢ Μοσχοπολίτου. Τὸ τυπογραφεῖον Μοσχοπόλεως εἶναι τὸ δεύτερον τυπογραφεῖον τὸ ἱδρυθὲν ἐν Ἑλλάδι μετὰ τὸ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ὅπερ ἱδρύθη τῷ 1627 ὑπὸ τοῦ πατριάρχου Κυρίλλου τοῦ Λουκάρεως. Ἔμβλημα αὐτοῦ ἦτο εἰκὼν τοῦ εὐαγγελιστοῦ Λουκᾶ γράφοντος ἐν πλαισίῳ παραλληλογράμμῳ. Τὸ τυπογραφεῖον τοῦτο, παραλλήλως πρὸς τὰ ἄλλα τῶν ἐν Βενετίᾳ Ἠπειρωτῶν, Γλυκῆ, Σάρρου καὶ Θεοδοσίου, προσέφερεν ἀνεκτιμήτους ὑπηρεσίας εἰς τὸν ὑπόδουλον ἑλληνισμόν. Πλῆθος βιβλίων, ἰδίως ἐκκλησιαστικῶν, ἐξετυπώθησαν ἐν αὐτῷ καὶ διεσπάρησαν εἰς τὸν Ἑλληνισμόν, συντελέσαντα οὐ μόνον εἰς τὴν μόρφωσιν αὐτοῦ, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν μεγάλην φήμην τῆς Μοσχοπόλεως. Ἡ καταστροφὴ του πάντως συμπίπτει μὲ τὴν καταστροφὴν τῆς πόλεως τῷ 1771.

*Ἐκκλησία.* Ἐκκλησιαστικῶς ἡ Μοσχόπολις μέχρι τοῦ 1670 ὑπήγετο εἰς τὸν ἀρχιεπίσκοπον Πρώτης Ἰουστινιανῆς καὶ Ἀχριδῶν. Τῷ 1670 ὅμως ὁ ἀρχιεπίσκοπος ταύτης Παρθένιος ὁ ἐκ Κορυτσᾶς ἀνύψωσε τὴν πατρίδα του εἰς ἕδραν μητροπολίτου μὲ τὸν τίτλον Κορυτσᾶς, Σελασφόρου καὶ Μοσχοπόλεως, τοῦ δευτέρου τίτλου δοθέντος ἐκ τῆς παρὰ τὴν Κορυτσὰν ὑπαρχούσης ἄλλοτε πόλεως Σβέντζας, ἥτις σλαβικὴ οὖσα οὕτω μεταφράζεται. Ἀργότερον, λόγῳ τῆς παρακμῆς τῆς Σβέντζας, καθιερώθη ὁ τίτλος Κορυτσᾶς καὶ Μοσχοπόλεως, διατηρηθεὶς μέχρι τοῦ 1806, ὁπότε ἐπανῆλθεν ὁ προηγούμενος τριμερὴς τίτλος. Ἀργότερον ἀπαντῶμεν μαζὶ καὶ τὸν τίτλον Πωγωνιανῆς. Τῷ 1835 συνοδικῇ ἀποφάσει λόγῳ τῆς παρακμῆς τῆς Μοσχοπόλεως ὁ ἐκ Βερροίας Κύριλλος ἐτιτλοφορήθη Κορυτσᾶς καὶ Πρεμετῆς, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1885 εἰς ἀνάμνησιν τῆς ἀξιολόγου ποτὲ ταύτης πόλεως, προσετέθη ἐκ νέου τὸ ὄνομα τῆς Μοσχοπόλεως καὶ οὕτως ὁ μητροπολίτης Κορυτσᾶς τιτλοφορεῖται Κορυτσᾶς, Πρεμετῆς καὶ Μοσχοπόλεως. Κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς πόλεως διέτριβον κατὰ τὸ θέρος εἰς τὴν πόλιν ταύτην οἱ μητροπολῖται Βελεγράδων καὶ Δυρραχίου. Τὴν πόλιν ἐκόσμουν ὡραῖοι ναοί, εἰς εἴκοσιν ἀνερχόμενοι. Ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων ἦτο ὁ τῆς Ἁγίας Παρασκευῆς, ὁ τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου, ἱδρυθεὶς τῷ 1715, ὁ χρησιμεύων καὶ ὡς μητροπολιτικός, ὁ τοῦ Ἁγίου Νικολάου, ἱδρυθεὶς τῷ 1750, ὁ τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Θεολόγου, παρὰ τὸν ὁποῖον ἔκειτο ἡ «Ἀκαδημία» καὶ τὸ τυπογραφεῖον, καὶ ἄλλοι κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς πόλεως κτισθέντες. Εἰς ἡμίωρον ταύτης ἀπόστασιν βορείως κεῖται ἡ ἀρχαία μονὴ τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Προδρόμου, κτισθεῖσα τῷ 1634. Ἅπαντα ταῦτα τὰ ἱδρύματα σήμερον εἶναι ἐρείπια.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Κ. Σακελλαρίδου*, ἐν «Πανδώρᾳ» 1855 σ. 44.—*Π. Λάμπρου*, Ἱστορικὴ πραγματεία περὶ τῆς ἀρχῆς καὶ προόδου τῆς τυπογραφίας ἐν Ἑλλάδι, ἐν «Χρυσαλλίδι» 1863, σ. 33—39.—*Α. Π. Βρετοῦ*, Χρονολογικὴ ἔκθεσις τῶν ἑλληνικῶν τυπογραφείων καὶ τῶν ὑπ' αὐτῶν ἐκδοθέντων βιβλίων, ἐν «Ἐθν. Ἡμερολογίῳ» *Μ. Π. Βρετοῦ*, 1864, σ. 253—259.—*Μ. Παρανίκα*, Σχεδίασμα κλπ. (Κωνσταντινούπολις, 1867), σ. 79—81.—*Σπ. Λάμπρου*, ἐν «Νέῳ Ἑλληνομν.» τ. Η' τοῦ 1912.—*Ι. Εὐαγγελίδου*, Βόρειος Ἤπειρος (Ἀθῆναι 1919).—*Κ. Σκένδερη*, Ἱστορία τῆς Μοσχοπόλεως ἀρχαίας καὶ συγχρόνου (ἔκδ. β' Ἀθῆναι 1928) Χ. Ι. ΣΟΥΛΗΣ

**Μοσχοπόταμος** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Μακεδονίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Πιερίας (Κατερίνης) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Αρυάνιστα*. Κάτ. (1928) 1.502. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Μελιάδι* (Μπουράχια), ἔχει δὲ κατ. (1928) 1.550. Χ. Δ.

**Μοσχόπουλο** *[Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων νῆσος ἐν τῷ συστάδι τῶν *Μοσχονησίων* τοῦ Ἀϊβαλῆ, ἐγγύτατα τῆς Δ. ΝΔ. ἄκρας (πλάτ. 39° 20' 00'' Β., μῆκ. 26° 36' 30'' Ἀν., χάρτ. Ἑλλην. ὑδρ. ὑπηρ. 15: Κυδωνίαι καὶ Μοσχόνησοι) τῆς Μοσχονήσου. Ὀνομάζεται καὶ *Πέρα-Μόσχος*. Σ. Ε. Λ.

**Μοσχόπουλος, *Ἀντώνιος*.** Ἕλλην λόγιος, γεννηθεὶς τῷ 1713 ἐν Χαβριάτοις τῆς Κεφαλληνίας. Συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Ἰταλίᾳ, γενόμενος κατόπιν διδάσκαλος ἐν τῷ ἐν Βενετίᾳ Ἑλληνικῷ φροντιστηρίῳ (1761). Ἐπιστρέψας κατόπιν εἰς Ἑλλάδα ἐδίδαξεν ἐν Κεφαλληνίᾳ, Ζακύνθῳ καὶ Λευκάδι. Ἀπέθανεν ἐν Κεφαλληνίᾳ τῷ 1788. Ἔγραψεν: «Ἐπιτομὴν τῆς δογματικῆς καὶ ἠθικῆς θεολογίας» (1851) «Λογικήν, εἴτε στοχαστικήν», «Ηθικὴν φιλοσοφίαν», «Λογικὴν ἐκ τῆς τοῦ Οὐολφίου» κ.ἄ. Ν. Μ.

**— Μοσχόπουλος, *Κωνσταντῖνος*.** Ἀδελφὸς τοῦ *Τέλλου Μοσχοπούλου* ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1854 ἐν Κωνσταντινουπόλει. Προήχθη ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων, προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ, συμμετέσχεν ὡς διοικητὴς πεδινῆς πυρβολαρχίας παρὰ τῷ στρατῷ Θεσσαλίας. Μετέπειτα διετέλεσε διαδοχικῶς διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας Ἀθηνῶν—Πειραιῶς καὶ φρούραρχος Ἀθηνῶν. Κατ' ἀμφοτέρους τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους 1912—1913, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, διετέλεσε διοικητὴς τῆς 4ης μεραρχίας, συμμετασχὼν μετὰ ταύτης ἁπασῶν τῶν ἐν Μακεδονίᾳ ἐπιχειρήσεων, καθὼς καὶ τῶν πρὸς ἅλωσιν τῶν Ἰωαννίνων. Μετὰ τοὺς πολέμους ἐκείνους προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον καὶ ἐτοποθετήθη διοικητὴς τοῦ ἐν Θεσσολονίκῃ 3ου σώματος στρατοῦ, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τοῦ φθινοπώρου 1916, ὁπότε ἐτοποθετήθη ὡς ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ. Κατὰ τὸν χειμῶνα 1917—1918 διετέλεσεν ὁ Ἕλλην στρατιωτικὸς διοικητὴς Ἠπείρου καὶ Κερκύρας, μὲ ἕδραν τὴν Κέρκυραν, τὴν κατεχομένην τότε ὑπὸ τμημάτων ἁπάντων τῶν ἀνταντικῶν στρατῶν. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1920. Ν. Θ. Κ.

**— Μοσχόπουλος, *Μανουήλ*.** Βυζαντινὸς γραμματικὸς καὶ σχολιαστὴς (1282—1328), ἀνεψιὸς τοῦ μητροπολίτου Κρήτης Νικηφόρου Μοσχοπούλου. Ὁ χρόνος καθ' ὃν ἔζησε καὶ αἱ λεπτομέρειαι τοῦ βίου του, ἀσαφεῖς καὶ συγκεχυμέναι ἐφ' ἱκανὸν καιρόν, καθωρίσθησαν ἀκριβέστερον ἐκ τῆς ἀ-

Digitized by Google

ηλογραφίας του μετὰ διαφόρων συγχρόνων του προσωπικοτήτων καὶ κυρίως μετὰ τοῦ ῥηθέντος θείου του καὶ μετὰ τοῦ λογοθέτου Κωνσταντίνου τοῦ Ἀκροπολίτου. Τὰ εἰς αὐτὸν ἀποδιδόμενα συγγράματα εἶναι πολλά, ἀλλά τινα τούτων δὲν εἶναι δικά του. Τὸ γνωστότερον εἶναι: Ἡ «Γραμματική», συναρμολογηθεῖσα ἐκ προγενεστέρου συγγράμματος κατ᾿ ἐρωταπόκρισιν ὡς σχολικὸν βιβλίον, δημοσιευθεῖσα δὲ τὸ πρῶτον τῷ 1493 ὑπὸ τὸν τίτλον «Grammaticae artis graecae methodus». Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Λεξικὸν» («Τῶν ὀνομάτων ἀττικῶν συλλογή», Βενετίῃσι 1524), «Περὶ γραμματικῆς γυμνασίας», «De vocum passionibus», δημοσιευθὲν ὑπὸ G. Schaeffer ὡς παράρτημα τοῦ περὶ διαλέκτων Γρηγορίου τοῦ Κορινθίου (Λειψίᾳ 1811), «Ἐπιτομὴ νέα γραμματικῆς», ἧς τὸ α´ βιβλίον ἐξέδωκεν ὁ F. N. Titze (Λειψίᾳ 1822). Ἔγραψεν ἐπίσης σχόλια εἰς τὰ Α καὶ Β τῆς Ἰλιάδος, δημοσιευθέντα ὑπὸ τοῦ Joseph Justus Scaliger ὑπὸ τὸν τίτλον «Scholia ad Homeri Iliados librum I et II», ὡς καὶ εἰς Πίνδαρον, Εὐριπίδην, Θεόκριτον, εἰς Ἡσιόδου «Ἔργα καὶ ἡμέρας» (ἐκδοθέντα τὰ τελευταῖα ταῦτα ὑπὸ τὸν τίτλον «Sapientissimi doctissimique Manuelis Moschopuli Cretensis Patruelis Interpretatio Operum et Dierum Hesiodi»).

Συλλογὴ τῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Manuelis Moschopuli opuscula grammatica» ἐξεδόθη ὑπὸ F. N. Titze.

[Πρβλ. καὶ *H. J. Bloch,* «Ueber eine Stelle des Moschopulus die Aussprache der griechischen Diphtongue betreffend» (περὶ ἑνὸς χωρίου τοῦ Μοσχοπούλου ἀφορῶντος τὴν προφορὰν τῶν ἑλληνικῶν διφθόγγων) ἐν Jahne Jahrbücher (1829, σελ. 101—107).—*C. Krumbacher,* «Geschichte der byzantinischen Litteratur» (1897).] Ν. Μ.

— **Μοσχόπουλος, *Μιχαήλ*.** Ἐγεννήθη ἐν Κεφαλληνίᾳ, τῷ 1719, ἐσπούδασε δὲ ἐν Βενετίᾳ, γενόμενος ἐγκρατὴς τῶν φιλοσοφικῶν, μαθηματικῶν, ῥητορικῆς, θεολογίας καὶ κλασσικῶν γλωσσῶν. Διωρίσθη εἰς κυβερνητικὰς θέσεις καὶ γέρων μετήρχετο τὸν διδάσκαλον. Ἀπέθανε τῷ 1801.

— **Μοσχόπουλος, *Νικηφόρος*.** Ἕλλην λόγιος, δημοσιογράφος καὶ ἱστορικός. Ἐγεννήθη τῷ 1871 ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐκ γονέων Σιφνίων, ἀποφοιτήσας δὲ τῷ 1887 τῆς Μεγάλης τοῦ Γένους Σχολῆς ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν ξένων γλωσσῶν καὶ βραδύτερον παρακολουθήσας τὰ μαθήματα τῆς ἐν Παρισίοις «École de Hautes Études Sociales» ἔλαβε δίπλωμα, ὑποβαλὼν εἰς τὸ τμῆμα δημοσιογραφίας καὶ προπαρασκευῆς εἰς τὸν δημόσιον βίον θέσιν «Περὶ τοῦ ρόλου τῶν Ἑλλήνων κατὰ τὴν ἐξέλιξιν τοῦ τύπου καὶ τῶν φιλελευθέρων ἰδεῶν ἐν Ἀνατολῇ». Ἀποδυθεὶς ἀπὸ τοῦ 1893 εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, διετέλεσε συντάκτης τοῦ «Νεολόγου» Κωνσταντινουπόλεως, κατόπιν δὲ ἐπὶ δεκαετίαν τοῦ «Moniteur Oriental», ὅπου μετέφρασεν εἰς τὴν γαλλικὴν ὅλους τοὺς κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐκδοθέντας τουρκικοὺς νόμους. Τῷ 1905 προσελήφθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Καισαροβασιλικοῦ τηλεγραφικοῦ πρακτορείου, τῷ δὲ 1909 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς ἐν Τουρκίᾳ ἀντιπροσωπείας τοῦ αὐτοῦ πρακτορείου, ἐνῷ συγχρόνως ἦτο καὶ συντάκτης τοῦ κυρίου ἄρθρου τῆς «Turquie» καὶ ἄλλων γαλλικῶν ἐφημερίδων τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Μετὰ τὴν ἀνακωχὴν τοῦ 1918 ἀνέλαβε τὴν πολιτικὴν διεύθυνσιν τῆς πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ἑλληνικῶν συμφερόντων ἐν Κωνσταντινουπόλει ἱδρυθείσης ἀγγλογαλλικῆς ἐφημερίδος «Spectateur d'Orient». Εὑρεθεὶς κατόπιν εἰς τὴν ἀνάγκην ν' ἀναχωρήσῃ ἐκ Κωνσταντινουπόλεως, κατῆλθεν εἰς Ἑλλάδα καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ τμήματος τύπου τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν, τὸ ὁποῖον καὶ διηύθυνεν ἐπανειλημμένως ὡς ἀναπληρωτής. Τῷ 1931 ἀνέλαβε τὴν διδασκαλίαν τοῦ μαθήματος τῆς Ἱστορίας τῆς Τουρκίας εἰς τὴν Σχολὴν τῶν Πολιτικῶν Ἐπιστημῶν.

Ἀπὸ τοῦ 1923 ἐδημοσίευσε σειρὰν μελετῶν καὶ ἄρθρων ἐπὶ τῶν ἀνατολικῶν ζητημάτων εἰς τὸν «Messager d'Athènes» καὶ εἰς τὸ «Ἐλεύθερον Βῆμα», γερμανιστὶ δὲ εἰς τὴν «Bund» (τῆς Βέρνης) καὶ τὴν «Neue Zürcher Zeitung». Διετέλεσε τακτικὸς συνεργάτης τοῦ ὑπὸ τῶν πανεπιστημίων Κιέλου καὶ Ἀμβούργου ἐκδιδομένου οἰκονομολογικοῦ περιοδικοῦ «Wirtschaftsdienst». Ἔγραψε γαλλιστί: «Les Turcs jugés par leur histoire» (Παρίσιοι, 1920), «Les alliés qu'il ne faudrait pas à la Turquie» (ἀπάντησις εἰς τὸν Πιὲρ Λοτί, Παρίσιοι 1920), «La Turquie et l'Entente» (Παρίσιοι 1922), «La Question de Thrace ou le mensonge bulgare» (Ἀθῆναι 1922), «La Révolution grecque et les sources turques» (Παρίσιοι 1930), «Historique de la presse grecque» (ἐν τῷ Bulletin du Comité International des Sciences Historiques») κ.τ.λ. Ἑλληνιστί: «Τὸ Ἀρμενικὸν ζήτημα», «Τὸ ζήτημα τῶν Στενῶν», «Ἱστορία τῆς Βουλγαρίας» κτλ. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Γ. Λ. Α.

—**Μοσχόπουλος, *Τέλλος*.** Ἀδελφὸς τοῦ Κωνσταντίνου Μοσχοπούλου, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1847. Ἀξιωματικὸς ὢν τοῦ μηχανικοῦ, προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου Εὐελπίδων, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποστρατήγου. Ὡς κατώτερος ἀξιωματικὸς ὑπηρέτησεν ἐπὶ μακρὸν εἰς διευθύνσεις μηχανικοῦ καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ὁδοποιίας καὶ γεφυροποιίας ἐν τῷ στρατιωτικῷ σχολείῳ Εὐελπίδων. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ταγματάρχου, συμμετέσχε μετὰ τοῦ στρατοῦ Θεσσαλίας, ὡς διοικητὴς τάγματος μηχανικοῦ ἀρχικῶς, ὡς ἐπιτελάρχης δὲ τῆς 2ας μεραρχίας πρὸς τὸ τέλος τοῦ πολέμου. Ἀπὸ τοῦ 1905—1909, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου ἀρχικῶς, τοῦ συνταγματάρχου κατόπιν, διετέλεσε προσωπάρχης τοῦ ὑπουργείου τῶν Στρατιωτικῶν. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1910, προαχθεὶς συγχρόνως εἰς ὑποστράτηγον. Ν. Θ. Κ.

— **Μοσχόπουλος, *Χρύσανθος*.** Ἐγεννήθη ἐν Κεφαλληνίᾳ, ἀρχομένου τοῦ ΙΗ´ αἰῶνος. Ἐσπούδασεν ἐν Βενετίᾳ καὶ ἱερωθεὶς ἐφημέρευσεν ἐν τῷ ἐκεῖ ναῷ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου. Ἐξέδωκεν ἐν Βενετίᾳ, τῷ 1777, «Λειτουργικήν».

**μοσχοπουλῶ** (*—άω*)· πωλῶ τι εἰς καλὴν τιμὴν καὶ εὐκόλως: «'ς τὸν ἀποκλεισμὸ χρονῶν ἀπομεινάδια μοσχοπουληθήκανε».

**μοσχορρούμι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μούσκαρι τὸ μακρόκαρπον* (βλ. λ.).

**μόσχος** (ὁ)· τὸ νεογνὸν τοῦ βοός, κοιν. *μοσχάρι* ‖ μεταφ. ἐπὶ ἀνθρώπου *μόσκος*· ἀνόητος, μωρός: «αὐτὸς ὁ μόσκος τίποτα δὲν καταλαβαίνει» ‖ ἀρωματικὴ οὐσία λαμβανομένη ἐκ τοῦ *μόσχου τοῦ μοσχοφόρου*.

— *[Ζωοτεχν.]*. Καλεῖται *μόσχος* ὁ νεαρὸς βοῦς μέχρι τῆς πτώσεως τῆς πρώτης ὀδοντοφυΐας καὶ κυρίως τῶν γαλακτίων τομέων του, ἤτοι μέχρις ἡλικίας δύο ἕως δύο καὶ ἡμίσεος ἐτῶν. Ὁ μόσχος ἀπογαλακτίζεται ἀπὸ τοῦ πέμπτου ἕως τοῦ ἑβδόμου ἀπὸ τῆς γεννήσεώς του μηνός, δύναται δὲ νὰ ὁδηγηθῇ εἰς τὴν βοσκὴν ἀπὸ ἡλικίας πέντε—ἓξ ἑβδομάδων. Ἡ θρεπτικὴ ἀξία τοῦ μοσχείου κρέατος εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὴν ἡλικίαν του, διότι ὅσον μικρότερον εἶναι τὸ ζῷον τόσον τὸ κρέας του εἶναι ὑδαρέστερον καὶ ἑπομένως ὀλιγώτερον θρεπτικόν. Ὁ ὑγιὴς μόσχος εἶναι λίαν ζωηρὸς καὶ εὔθυμος, ἔχει ῥύγχος ῥοδαλὸν καὶ ὑγρόν, δέρμα μαλακὸν καὶ τρίχωμα λεῖον καὶ στιλπνόν. Νοσήματα ὑφ' ὧν προσβάλλεται εἶναι ἡ ἀρθρῖτις καὶ πολυαρθρῖτις, ὁ δυσεντερικὸς κατάρρους, ἡ παρασιτικὴ ἐντερῖτις, ἡ βρογχοπνευμονία κ. ἄ.

— *[Ἐμπορευμ.]* Καλεῖται *μόσχος* τὸ ἔκκριμα τοῦ ἄρρενος *μόσχου τοῦ μοσχοφόρου*. Τὰ ζῷα μετὰ τὴν σύλληψίν των θανατοῦνται, ἀποκόπτεται ὁ παρὰ τὸν ὀμφαλὸν μαρσιποειδὴς θύλακος καὶ ξηραίνεται εἰς τὸν ἀέρα ἢ εἰς θερμοὺς κλιβάνους. Ὁ ἐντὸς τοῦ θύλακος φερόμενος μόσχος ἔρχεται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὸ ὄνομα Moschus in vesicis, ὁ δὲ ἐκ τοῦ θύλακος ἐξαχθεὶς ὡς Moschus ex vesicis. Εἰς τὸ ἐμπόριον ἔχουσι σημασίαν δύο κυρίως εἴδη μόσχου, ὁ *τονκινικὸς* καὶ ὁ *καβαρδινικός*. Ὁ τονκινικός, ἢ θιβετανικός, ἢ κινεζικὸς μόσχος εἶναι ὁ καλύτερος, προέρχεται ἐκ τοῦ Tonkin καὶ ἐκ τῆς κινεζικῆς ἐπαρχίας Stenuan καὶ διὰ τῆς Καντῶνος ἀποστέλλεται εἰς Ἀγγλίαν καὶ Γερμανίαν. Ὁ διὰ τῆς ἀποκοπῆς τοῦ θύλακος λαμβανόμενος μόσχος δεικνύει ἐν ξηρᾷ καταστάσει μελανόφαιον ἢ σκοτεινερυθρόφαιον χρῶμα καὶ ἀποτελεῖ χαλαρὰν συρρικνωμένην μᾶζαν, συνισταμένην ἐν μέρει ἐκ κόκκων καὶ βωλαρίων μεγέθους ἀπὸ κεφαλῆς καρφίδος μέχρι πίσου. Ἔχει γεῦσιν πικρὰν καὶ ὀσμὴν ἰσχυρὰν καὶ λίαν χαρακτηριστικήν. Ὁ καβαρδινικός, ἢ ῥωσικός, ἢ σιβηρικὸς μόσχος εἶναι τὸ συνήθως ἐμπορευόμενον εἶδος μόσχου, προερχόμενον ἐκ τῆς νοτίου Σιβηρίας. Οὗτος ἔχει ὀσμὴν προσμεμιγμένην μετ' ὀσμῆς οὔρων, ὑπενθυμίζουσαν τὸν ἱδρῶτα τοῦ ἵππου, καὶ χρησιμοποιεῖται μόνον εἰς τὴν ἀρωματοποιίαν, οὐχὶ δὲ καὶ εἰς τὴν φαρμακευτικήν, ὡς ὁ τονκινικός. Ἔχει τιμὴν τὸ $^1/_8$ ἢ $^1/_4$ τῆς τιμῆς τοῦ δευτέρου. Μικροτέραν σημασίαν ἔχουσιν ἐπίσης καὶ τὰ εἴδη Yünan, Taupi καὶ Asam.

Ὁ μοσχοφόρος θύλακος περιέχει κατὰ μέσον ὅρον 50 % τοῦ βάρους μόσχου, ὅστις καὶ ἐξάγεται δι' ἀπ' εὐθείας ἐκκενώσεως τοῦ θυλάκου ἐπὶ φύλλου χάρτου. Οἱ ἐκκενωθέντες θύλακοι ἀποτελοῦν ἀκόμη ἐμπορεύσιμον προϊόν, χρησιμοποιούμενοι ὑπὸ τῶν ἀρωματοποιῶν διὰ τὴν παρασκευὴν κατωτέρων ποιοτήτων ἐκχυλισμάτων μόσχου. Ὁ μόσχος περιέχει ὡς σπουδαιότατον συστατικόν, πλὴν διαφόρων ἄλλων ἀσημάντων, τὴν ἀρωματικὴν ὕλην, ἧς ἡ σύστασις δὲν εἶναι εἰσέτι πλήρως διηυκρινισμένη. Τῷ 1906 ἐπετεύχθη ὑπὸ τοῦ οἴκου Schimmel et Co ἡ ἀπομόνωσις ἐκ τοῦ μόσχου μιᾶς κετόνης τοῦ τύπου $C_{16}H_{30}O$ (μεθυλοκυκλοπεντεδεκανόνης), ἥτις ἐκλήθη *μοσχόνη*. Ἡ μοσχόνη ἀποτελεῖ παχύρρυτον ἄχρουν ἔλαιον, βράζει ὑπὸ πίεσιν 752 χλστμ. εἰς 327—330°, ἔχει εἰδικὸν βάρος 0.927 καὶ εἰδικὴν στροφὴν —10. Ἡ μοσχόνη εἶναι δυσδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ, μίγνυται μετὰ τῆς ἀλκοόλης, εἶναι πτητικὴ μεθ' ὑδρατμῶν καὶ σταθερὰ πρὸς ἀλκάλια. Ἡ μοσχόνη εἶναι ὁ μοναδικὸς φορεὺς τοῦ ἀρώματος τοῦ μόσχου. Τελείως ξηρὸς μόσχος εἶναι σχεδὸν ἄοσμος, διυγραινόμενος ὅμως ἐπανακτᾷ τὸ ἄρωμά του. Λόγῳ τῆς ὑψηλῆς του τιμῆς, ὁ μόσχος νοθεύεται συνηθέστατα διὰ πλείστων ὅσων ξένων ὑλῶν. Ὁ μόσχος παίζει σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν ἀρωματοποιίαν, δὲν χρησιμοποιεῖται ὅμως μόνος, ἀλλ' ὡς προσθήκη εἰς μικρὰς ποσότητας εἰς ἄλλα ἀρώματα, ὡς συμπλήρωμα τῆς ὀσμῆς ἐκείνων.

*Μόσχος τεχνητός*. Οὕτω καλεῖται εἰς τὸ ἐμπόριον τὸ ὑπὸ τοῦ Baur ἀνακαλυφθὲν *τρινιτροβουτυλοτολουόλιον*, τὸ ὁποῖον ἔχει ἰσχυρὰν ὀσμὴν μόσχου. Ἀποτελεῖ ὑποκιτρίνας βελόνας τηκομένας εἰς 96—97°. Τὸ παρασκεύασμα τοῦτο ἔρχεται εἰς τὸ ἐμπόριον συνήθως προσμεμιγμένον μετ' ἀκετανιλιδίου καὶ χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν ἀρωματοποιίαν, δὲν ἔχει ὅμως τὴν λεπτότητα τοῦ ἀρώματος τοῦ πραγματικοῦ μόσχου. Πλὴν τοῦ τρινιτροβουτυλοτολουολίου παρασκευάζεται ἀκόμη ὁλόκληρος σειρὰ προϊόντων λίαν συγγενῶν, ὡς τὸ *τρινιτροβουτυλοξυλόλιον*, *τρινιτροβουτυλοαιθυλοβενζόλιον*, *δινιτροβουτυλοξυλοκυανίδιον* κλπ. Τὸ χαρακτηριστικὸν δι' ὅλας αὐτὰς τὰς ἑνώσεις εἶναι ἡ τριτογενὴς βουτυλικὴ ὁμάς. Σ. Γ.

— *[Φαρμ.]*. Εἰς παλαιοτέρας ἐποχὰς ὁ *μόσχος* ἀνεγράφετο ὡς ἀναληπτικὸν φάρμακον, πολλάκις δὲ περὶ τὴν ὑστάτην ὥραν, ὅτε ὁ θάνατος διεφαίνετο προσεγγίζων, αἱ μόναι ἐλπίδες ἐστηρίζοντο ἐπὶ τῆς δράσεως τούτου, χορηγομένου ὡς ὑστάτου φαρμάκου. Σήμερον ὁ μόσχος δὲν ἀναγράφεται πλέον ὑπὸ τῆς θεραπευτικῆς, ἀφ' ἑνὸς μὲν διότι κατὰ τὸ πλεῖστον φέρεται νοθευμένος, ἀφ' ἑτέρου δὲ διότι ἡ τιμή του εἶναι ἐξαιρετικῶς ὑψηλή. Ὀσφρανθεὶς ὁ μόσχος ἐρεθίζει πολὺ τὸ ὀσφρητικὸν νεῦρον καὶ δι' αὐτοῦ ὅλον τὸν ἐγκέφαλον, ἐξ οὗ ἐπακολουθεῖ ἀνάνηψις, ἣν ὅμως εἰς εὐαίσθητα ἄτομα διαδέχεται κεφαλαλγία, χάσμαι, ναυτία καὶ ἔμετος. Ἐὰν καταποθῇ ὁ μόσχος, φέρει ἀηδεῖς ἐρυγάς. Γενικῶς ἡ ἰαματικὴ ἐνέργεια τοῦ μόσχου δὲν παρουσιάζει ἄλλο τι ἢ παροδικὴν διέγερσιν τῶν νεύρων. Ἐπὶ τῆς διεγέρσεως ταύτης στηρίζεται καὶ ἡ κλινικὴ παρατήρησις, καθ' ἣν καὶ μόνος λαμβανόμενος ὁ μόσχος δύναται νὰ διατηρήσῃ ἐπί τινα χρόνον τὴν ἀποσβεννυμένην ζωήν. Κατά τινας συγγραφεῖς, ὁ μόσχος εἶναι ἐπικίνδυνον ἐμμηναγωγὸν φάρμακον, προκαλοῦν ἐπιταξίαν καὶ διαφόρησιν. Ἀσύμβατα πρὸς τὸν μόσχον φάρμακα εἶναι: τὸ ὕδωρ τῆς δαφνοκεράσου, ἡ θειικὴ κινίνη, ἡ μουστάρδα, αἱ ῥίζαι τῆς βαλεριανῆς κλπ. Κατὰ τὸν μεσαίωνα πλειστάκις συνεχέετο ὁ μόσχος πρὸς τὸ καστόριον. Κ. Γ. Μ.

— ***μόσχος ὁ μοσχοφόρος*** (ὁ) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μηρυκαστικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *βοϊδῶν*. Διακρίνεται ἀπὸ τῶν λοιπῶν ἀντιπροσώπων τῆς αὐτῆς οἰκογενείας ἐκ τοῦ μαρσιποειδοῦς θυλάκου, ὃν φέρει κατὰ τὸν ὀμφαλὸν καὶ ἐξ οὗ ἐκκρίνεται ἐλαιῶδές τι, ἀρωματικὸν ὑγρόν, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα *μόσχος*. Δ. Ν. Π.

—**Μόσχος *χρυσοῦς*** *[Βιβλ.]*. Τοιοῦτον μόσχον χωνευτὸν πρὸς λατρείαν κατεσκεύασεν ἐκ τῶν χρυσῶν κοσμημάτων τοῦ λαοῦ καὶ κατ' ἀπαίτησιν αὐτοῦ ὁ Ἀαρών, ὅτε ἐβράδυνέ πως νὰ ἐπιστρέψῃ ἐκ τοῦ ὄρους τῆς νομοθεσίας ὁ Μωϋσῆς. Οὗτος δὲ κατελθὼν ἐκ τοῦ ὄρους Σινᾶ κατέκαυσε πλήρης ὀργῆς τὸν ἐν λόγῳ μόσχον καὶ ἀλέσας αὐτὸν ἔρριψε τὴν κόνιν ἐντὸς τοῦ ὕδατος, ἐξ οὗ ἐπότισε τὸν λαὸν (Ἐξόδου λβ´ 1 ἑξ.). Κατὰ τὴν γνώμην πλείστων ἑρμηνευτῶν, τὰ τότε γενόμενα ἦσαν ἀπομίμησις τῆς λατρείας τοῦ Ἄπιος ἐν Αἰγύπτῳ, ὑπὲρ ἧς ἐκδοχῆς φαίνονται συνηγοροῦντα τὰ περὶ τὸν μόσχον λαβόντα χώραν (θυσία, εὐωχίαι, χορὸς κτλ.). Ἡ ἐκδοχὴ δ' ὅμως αὕτη ἀμφισβητεῖται ὑπὸ πολλῶν νεωτέρων, διατεινομένων ὅτι ὁ αἰγυπτιακὸς Ἆπις ἐλατρεύετο ζῶν καὶ οὐχὶ ἐν ὁμοιώματι καὶ μὴ δυναμένων νὰ φαντασθῶσιν ὅτι ὁ Ἰσραὴλ ἀπέδωκεν εἰς τὴν αἰγυπτιακὴν ἐκείνην θεότητα τὴν ἀπὸ τῆς δουλείας τῆς Αἰγύπτου ἀπελευθέρωσιν αὐτοῦ, εἰς ὃ θὰ ἠδύνατό τις νὰ ἀντιπαρατηρήσῃ ὅτι ὁ χρυσοῦς μόσχος εἶναι πολὺ πιθανὸν νὰ ἦτο εἴδωλον τοῦ Ἰαβέ. Κατ' ἄλλην ἀξίαν πολλῆς προσοχῆς γνώμην, πρόκειται περὶ παναρχαίας κληρονομίας τῆς θρησκείας τῶν Σημιτῶν. Ὅσον δ' ἀφορᾷ εἰς τὴν παναρχαίαν τέχνην τῆς χωνεύσεως μετάλλων, ἧς τὴν ἐφεύρεσιν ἀπέδιδον τὸ πάλαι εἰς τὸν Κάδμον (*Plin.* VII 56), διεπιστώθη ὅτι ἤδη ἐν παλαιοτάτοις χρόνοις ὑπῆρχον εἰς διαφόρους τόπους τῆς Σιναϊκῆς χερσονήσου μεταλλεῖα καὶ χωνευτήρια. Π. Ι. Μ.

**Μόσχος.** Ἀρχαῖος βουκολικὸς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Συρακούσαις καὶ ζήσας κατὰ τὸν Β´ π. Χ. αἰῶνα ἐπὶ τῆς βασιλείας Πτολεμαίου τοῦ Φιλαδέλφου. Φέρεται ὡς μαθητὴς τοῦ γραμματικοῦ Ἀριστάρχου, ὅπερ δὲν εἶναι πολὺ πιθανόν, ἦτο δὲ σύγχρονος καὶ φίλος τοῦ βουκολικοῦ ποιητοῦ Βίωνος. Περὶ τῆς ζωῆς του οὐδὲν γινώσκομεν, ἐκ τῶν ἔργων του δὲ ἐσώθησαν μόνον δύο ποιήματα, ὁ «Ἐπιτάφιος τοῦ Βίωνος», ποιηθεὶς κατὰ τὸν «Ἐπιτάφιον τοῦ Ἀδώνιδος» τοῦ Βίωνος, καὶ ἡ «Εὐρώπη». Πλὴν τούτων ἐσώθησαν καὶ ἀποσπάσματά τινα, ἐν οἷς ἡ «Μεγάρα» ἀνήκουσα εἰς ἐκτενὲς ἔπος, τὸ



Digitized by Google

*1) Ἰωάννου Μόσχου: Ἅγιος Νικόλαος. 2) Ἠλία Μόσχου: Ἅγιος Κωνσταντῖνος.*

[Εἰκόνες ἀποκείμεναι ἐν τῷ Μουσείῳ Λοβέρδου.]

ὁποῖον ἀνεφέρετο εἰς τὸν μῦθον τοῦ Ἡρακλέους, καὶ τὸ ἀνακρεόντειον ποιημάτιον «Δραπέτης ἔρως», τὸ ὁποῖον πολλοὶ νεώτεροι ἐμιμήθησαν. Ἐκ τῶν δύο πρώτων ἔργων του ὁ «Ἐπιτάφιος τοῦ Βίωνος» εἶναι λυρικὸν ποίημα, δὲν ἐγράφη ὅμως εἰς τὸ προσῆκον ἐλεγειακὸν μέτρον ἀλλὰ εἰς τὸ ἡρωϊκὸν ἑξάμετρον. Ἐκ τοῦ ὑπερβολικοῦ πάθους τὸ ὁποῖον τὸ διακρίνει εἰκάζεται ὅτι εἶναι νεανικὸν ἔργον τοῦ ποιητοῦ. Ὅλα σχεδὸν τὰ ἔργα τοῦ Μόσχου ἀναφέρονται εἰς θέματα μυθολογικὰ καὶ τὰ χαρακτηρίζει ἐπιτήδευσις καὶ λογιότης ξένη πρὸς τὴν ἁπλότητα τῆς ποιήσεως τοῦ Θεοκρίτου. Ἐν τούτοις οἱ στίχοι του δὲν στεροῦνται κομψότητος οὔτε χάριτος. Τὰ ποιήματά του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Ἀρτεμιδώρου μετὰ τῶν ἔργων τοῦ Θεοκρίτου καὶ Βίωνος, ἔκτοτε δ' ἐξακολουθοῦν νὰ συνεκδίδωνται μετ' αὐτῶν καὶ ὑπὸ τῶν νεωτέρων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ahrens*, Bucolicorum Graecorum reliquiae (Lipsiae 1855 εἰς 2 τόμ.). — *Theocritus*, Bion et Moschus ex recogn. *Meinekii* (ed. III 1856 μετ' εὐστόχου ἀποκαταστάσεως τοῦ κειμένου). — *J. T. Hartman*, Notes critiques («Mnémosyne» 1919, 322—331). — *A. Platt*, Bucolica («Journal of Philology» XXXIV 142 ἑπ.). — *A. Taccone*, L' «Europa» di Mosco. Studio critico e versione poetica (Atti de la r. Acad. Arch. di Napoli, IV, 2, 47—62). Ν. Α.

**Μόσχος.** Ἀγωνιστὴς ἐκ τῆς Στερεᾶς Ἑλλάδος. Προσεκολλήθη εἰς τὸ σῶμα τοῦ στρατηγοῦ Θεοδώρου Γρίβα, ἔχοντος τὴν ρουμελιωτικὴν *μάγκαν* (=δύναμιν στρατιωτικήν). Ὅτε δὲ ὁ Γρίβας κατέλαβε τὸ Ναύπλιον τῷ 1828, ὁ Μόσχος μετὰ τῆς μάγκας του, κληθείσης ἐξ αὐτοῦ *μοσχομάγκας*, τὰ πάντα μετήρχετο τῇ ἀδείᾳ τοῦ Γρίβα καὶ ἰδίως λῃστείας καὶ αὐθαιρεσίας ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε ὁ στρατηγὸς Τσῶρτς ἠναγκάσθη νὰ λάβῃ αὐστηρὰ μέτρα κατ' αὐτοῦ. Τ. Ε. Ε.

— **Μόσχος,** ἢ *Παπαμόσχος*· βλ. *Παπαμόσχος.*

— **Μόσχος, *Γεώργιος.*** Ἁγιογράφος, ἀκμάσας κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Εἶναι γνωστὸς ὡς τοιχογράφος, ἔργα δὲ αὐτοῦ διασῴζονται εἰς πλείστας ἐκκλησίας τῆς Ζακύνθου καὶ τῆς Πελοποννήσου. Αἱ ἀρχαιότεραι τῶν διασωζομένων τοιχογραφιῶν αὐτοῦ εἶναι αἱ τοῦ ναοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τῶν Λογοθετῶν ἐν Ζακύνθῳ, γενόμεναι κατὰ τὸ ἔτος 1606 καὶ εἰς τὰς ὁποίας εἰργάσθη ὁ ἐπίσης τοιχογράφος ἀδελφός του *Δημήτριος.* Ἔργα ἐπίσης τοῦ Γεωργίου Μόσχου εὑρίσκονται εἰς τὴν μονὴν τῶν Ἁγίων Τεσσαράκοντα παρὰ τὴν Σπάρτην (1620), εἰς τὴν μονὴν Βουρκάνου (1638 μετὰ τοῦ Δημητρίου), εἰς τὴν μονὴν τῆς Καρυᾶς (1638) καὶ ἀλλαχοῦ. Ὁ Γεώργιος Μόσχος ὡς τοιχογράφος ἀνήκει εἰς τοὺς καλοὺς τεχνίτας τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἀκολουθήσας ἀρκετὰ πιστῶς τὴν βυζαντινὴν παράδοσιν, ἐλάχιστα δὲ ἐπηρεασθεὶς ἀπὸ τὴν ἰταλικὴν τέχνην. Α. Ξ.

— **Μόσχος, *Γεώργιος.*** Καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς καὶ ρητορικῆς ἐν Κερκύρᾳ. Τῷ 1537 διωρίσθη διδάσκαλος τῆς αὐτόθι κοινότητος. Λ. Χ. Ζ.

— **Μόσχος, *Δημήτριος.*** Ἁγιογράφος, ἀδελφὸς τοῦ ζωγράφου Γεωργίου *Μόσχου* (βλ. λ.), μεθ' οὗ καὶ συνειργάσθη εἰς τὴν τοιχογράφησιν διαφόρων ἐκκλησιῶν. Αὐτοτελῆ ἔργα του δὲν διεσώθησαν. Α. Ξ.

— **Μόσχος, *Δημήτριος.*** Ἀδελφὸς τοῦ καθηγητοῦ *Γεωργίου Μόσχου.* Ἔγραψεν ἐλεγεῖα, ἐπιγράμματα, τὸ ἡρωϊκὸν ποίημα «Τὰ καθ' Ἑλένην καὶ Ἀλέξανδρον», τυπωθὲν παρ' Ἄλδῳ, καὶ κωμῳδίας, ὧν τὴν «Νέαιραν» ἐδημοσίευσεν ὁ Μουστοξύδης ἐν τῷ «Ἑλληνομνήμονι». Ἐδίδαξεν ὡσαύτως ἐν Βενετίᾳ, Φερράρᾳ καὶ ἀλλαχοῦ. Λ. Χ. Ζ.

— **Μόσχος *Ἠλίας* ἢ *Ἠλιού.*** Ἁγιογράφος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, καταγόμενος πιθανῶς ἐκ Κρήτης. Ἦτο ἴσως συγγενὴς τοῦ ζωγράφου *Γεωργίου Μόσχου,* ἔζησεν ἐν Ἑπτανήσῳ καὶ εἶναι γνωστὸς ὡς ζωγράφος φορητῶν εἰκόνων. Ἔργα αὐτοῦ διασῴζονται πάμπολλα ἐν ἐκκλησίαις τῆς Ἑπτανήσου, καὶ ἐν ἰδιωτικαῖς συλλογαῖς (Λοβέρδου, Παμπούκη, Σταθάτου κ. ἄ.), ἐν τῷ Βυζαντινῷ μουσείῳ Ἀθηνῶν, ὡς καὶ ἐν τῇ συλλογῇ τῆς Ἱστορικῆς καὶ ἐθνολογικῆς ἑταιρείας. Ὁ ἁγιογράφος οὗτος, διακρινόμενος διὰ τὴν ἐπιμεμελημένην καὶ λεπτολόγον ἐκτέλεσιν τῶν ἔργων του, ἀκολουθεῖ τὴν κρητικὴν λεγομένην τεχνοτροπίαν, ἀλλὰ μὲ ἰσχυροτάτην ἰταλικὴν ἐπίδρασιν, ἥτις εἶναι καταφανεστάτη εἰς τὰς εἰκόνας του. Ἡ τέχνη τοῦ Ἠλία Μόσχου δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὡς τὸ μεταίχμιον μεταξὺ τῆς ἀνωτέρας κρητικῆς τεχνοτροπίας καὶ τῆς ἐπιμελῶς ἐξιταλισμένης τοιαύτης τῶν Ἑπτανησίων ἁγιογράφων τοῦ ΙΗ' αἰῶνος (Κουτούζη κλπ.). Α. Ξ.

— **Μόσχος, *Ἰωάννης.*** Συγγραφεὺς τῶν βυζαντινῶν χρόνων (βλ. λ. *Ἰωάννης ὁ Μόσχος*).

— **Μόσχος, *Ἰωάννης.*** Υἱὸς τοῦ Ἠλία Μόσχου, ἀκμάσας κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Τοῦ ἁγιογράφου τούτου, ὅστις ἐθεωρεῖτο σπουδαῖος διὰ τὰς μικρογραφικὰς αὐτοῦ συνθέσεις, ἐλάχιστα ἔργα διασῴζονται, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ Ἁγία Αἰκατερίνη ἐν τῇ πινακοθήκῃ τοῦ Βατικανοῦ, ὁ Ἅγιος Δονάτος ἐν τῇ συλλογῇ Λοβέρδου καὶ ἄλλα τινὰ ἀποκείμενα εἰς ἰδιωτικὰς συλλογὰς καὶ εἰς τὸ Βυζαντινὸν μουσεῖον Ἀθηνῶν. Εἰς τὸν Ἰ. Μόσχον ἡ μίμησις τῆς ἰταλικῆς τέχνης εἶναι καταφανεστέρα, ἂν καὶ γενικῶς ἀκολουθεῖ τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ πατρός του. Α. Ξ.

— **Μόσχος, *Λέων.*** Ζωγράφος ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, καταγόμενος ἴσως ἐκ τῆς ἰδίας οἰκογενείας, ἐξ ἧς καὶ ὁ *Ἠλίας Μόσχος.* Τούτου ἐλάχιστα ἔργα εἶναι γνωστά. Φαίνεται ὅτι ὁ Λ. Μόσχος ἦτο κυρίως διδάσκαλος τῆς ζωγραφικῆς. Παρ' αὐτῷ, πλὴν ἄλλων, ἐμαθήτευσε καὶ ὁ Παναγιώτης Δοξαρᾶς. Α. Ξ.

**μοσχοσάπουνο** (τὸ)· σάπων ἀρωματικός.

**μόσχοσμος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τὸ)· ὁ ἔχων ὀσμὴν μόσχου.

— **μόσχοσμα φυτὰ** (τὰ) *[Βοτ.].* Καλοῦνται τὰ φυτὰ τὰ ἀναδίδοντα χαρακτηριστικὸν ἄρωμα, ὅπως ἡ *μαλάχη,* ὁ *μόσχος* κ. ἄ.

**μοσχοστάφυλο** (τὸ)· βλ. *μοσχᾶτο.*

**μοσχοστουβιὰ** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *τεύκριον τὸ ξανθόν.*

**Μοσυνοί,** καὶ *Μοσύνοικοι [Ἐθνολ.].* Λαὸς τοῦ Πόντου (βλ. λ. *Μοσσύνοικοι).*

**μόσυνος** (ὁ) *[Βυζαντ.].* Πολιορκητικὴ μηχανὴ τῶν Βυζαντινῶν, ἡ *ἑλέπολις* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων.

**Μοσχοῦλα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Σκαφιδίου (Κιουτσοὺκ-Ματλῆ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μεντισλῆ.* Κάτ. (1928) 38. Χ. Δ.

**μοσχόφυλλο** *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὀξαλὶς ἡ κερατιοφόρος.*

**Μοσχόφυτον** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Κορνέσιον.* Κάτ. (1928) 530. Χ. Δ.

**μοσχόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.].* Ἑτέρα κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *τεύκριον τὸ ξανθόν.*

**Μοσχοχώρι(ον),** ἢ *Μοσκοχώρι(ον) [Γεωγρ.].* —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται πρὸς Α. τῶν Σερβίων κάτωθεν τοῦ Τιταρίου ὄρους καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ματσκοχώρι.* Κάτοικοι (1928) 697.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μπεχτσιλέρ.* Κάτ. (1928) 221. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κυπαρίσσια (Σουφλάρ).*

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Καρτεραλίου τῆς

Digitized by Google

ἐπαρχίας Μεσσήνης τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 247.

— 4) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φθιώτιδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται $1\frac{1}{2}$ ὥραν πρὸς Ν. τῆς Λαμίας, ἐντὸς τῆς πεδιάδος, ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σπερχειοῦ, παράγει ὄσπρια, σιτηρά, ὀπώρας, οἶνον, βάμβακα κτλ., περιβάλλεται ὑπὸ δασῶν καὶ ἦτο παλαιὰ θερινὴ πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Ἡρακλειωτῶν. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 738.

— 5) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καστορίας τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ ταχυδρομικὸν γραφεῖον, ὠνομάζετο δὲ πρότερον *Βαμπέλι*. Κάτ. (1928) 444. Χ. Δ.

**μοσχοψίλιθρο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *χηνοπόδιον τὸ βολβῶδες*.

**Μόσχω.** Σουλιώτις ἡρωῒς (βλ. *Τζαβέλλα Μόσχω*).

**Μοταδίδ, Ἀχμὲτ ἐλ—.** Ἀββασίδης χαλίφης τῆς Βαγδάτης (892—902), υἱὸς τοῦ Τάλχα Μοβαφὰκ καὶ Ἑλληνίδος δούλης. Ἀνῆλθε τὸν θρόνον ἐν πλήρει καὶ φοβερᾷ λαϊκῇ ἐξεγέρσει, ἀλλ' ἀμέσως ἐπέβαλε τὴν τάξιν. Τοῦτο ὤφειλεν εἰς τὸν ἀπελεύθερόν του *Μπάντρ*, ὅστις ἦτο ὁ πραγματικὸς τῆς ἀρχῆς κύριος. Ὁ Μοταδὶδ ἦτο αἱμοδιψής, ᾐσθάνετο δὲ ἡδονὴν νὰ βασανίζῃ ὅσους συνελάμβανεν. Ἔκτισεν ἀνάκτορον, τὸ *Θερεγιὰ* (=Πλειάδες), δαπανήσας ἀμύθητα ποσά, παρὰ τὴν φιλαργυρίαν του. Ἀπέθανε δηλητηριασθείς. Γ. Λ. Α.

**Μοταμίτ, Ἀχμὲτ ἐλ —.** Ἀββασίδης χαλίφης τῆς Βαγδάτης (870—892). Ἐβασίλευσε χάρις εἰς τὴν ἱκανότητα καὶ ἀφοσίωσιν τοῦ ἀδελφοῦ του Τάλχα Μοβαφάκ, ὅστις καὶ ἐξήσκει πραγματικῶς τὴν ἀρχήν. Ὁ Μοταμὶτ παρεδόθη εἰς διασκεδάσεις ἕως ὅτου ὁ ἀδελφός του τὸν ἐφυλάκισεν. Ἀπέθανε κατόπιν τρομερᾶς λαϊκῆς ἐξεγέρσεως, καθ' ἣν ἡ πόλις ἐκάη καὶ αἱ φυλακαὶ ἠνοίχθησαν. Γ. Λ. Α.

**Μοτανεμπῆ.** Ἄραψ ποιητής, ἀκμάσας κατὰ τὸν Ι' μ. Χ. αἰῶνα (βλ. *Μοτανεμπῆ*).

**Μοτανεμπῆ** (*Ἀμπ-οὐλ-Ταῒπ-Ἀχμὲτ μπὶν-ἐλ-Χουσεῒν Ἐλ-Δζαφὶ Ἐλ-Κεντί*). Εἷς τῶν διασημοτέρων, ἴσως ὁ μέγιστος, τῶν Ἀράβων ποιητῶν, ἀκμάσας κατὰ τὸν Ι' μ.Χ. αἰῶνα. Ἐγεννήθη εἰς τὴν συνοικίαν Κεντὲ τῆς Κούφας, ἐξ ἧς καὶ παρωνομάσθη, τῷ 916 μ. Χ. Ὁ Μοτανεμπῆ διεκρίθη ἐκ παίδων διὰ τὴν εὐφυΐαν καὶ ἐπιμέλειάν του, ἀποκτήσας ταχέως μεγάλην παιδείαν. Ἐπὶ ἔτη περιεπλανᾶτο κατόπιν μεταξὺ τῶν νομαδικῶν φυλῶν τῆς ἐρήμου τῆς Συρίας, ἐμφανιζόμενος ὡς προφήτης, παραποιήσας μάλιστα καὶ μερικὰς σουράτας τοῦ Κορανίου. Ὡς ἐκ τούτου ἐστάλη ἐναντίον του στρατός, ὅστις τὸν ᾐχμαλώτισε. Φυλακισθεὶς ὁ Μοτανεμπῆ ἀπεκήρυξε τὴν προηγουμένην δρᾶσίν του, ἔκτοτε ὅμως ἐδόθη εἰς αὐτὸν τὸ ὄνομα τοῦτο, τὸ ὁποῖον σημαίνει «ψευδοπροφήτης». Κατόπιν ἐγκατεστάθη ἐν Δαμασκῷ, ὅπου ταχέως ἀπέκτησε τὴν φήμην ποιητοῦ. Ἐκεῖθεν μετηνάστευσεν εἰς Αἴγυπτον καὶ κατόπιν εἰς Βαγδάτην καὶ Περσίαν, ὁπόθεν ἐπέστρεψεν εἰς Βαγδάτην καὶ Κοῦφαν. Ἀπέθανε τῷ 965, φονευθεὶς ἐν συμπλοκῇ μετὰ σώματος Ἀράβων τῆς φυλῆς Ἀσάτ, τῆς ὁποίας εἶχε σατιρίσει τὸν ἀρχηγόν. Παρὰ τὴν μεταξὺ τῶν Ἀράβων φήμην του ὁ Μοτανεμπῆ δὲν θεωρεῖται ὡς μέγας ποιητής. Ν. Μ.

**Μοταουακκίλ.** —1) *Ἀλλὰ Ἰλλὰχ ἐλ —.* Θανόντος (842) τοῦ Ἀββασίδου καλίφου Ἀρούν, ἐπικληθέντος Ἐλ Οὐαθὶκ μπ' Ἰλλάχ, υἱοῦ Ἑλληνίδος, οἱ πανίσχυροι τότε ἐν τῇ αὐλῇ Τοῦρκοι ἀξιωματικοὶ ἀνεκήρυξαν τὸν ἀδελφόν του Τζαφάρ, υἱὸν δούλης Περσίδος, ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἐλ Μοταουακκὶλ Ἀλλὰ Ἰλλὰχ* (ἤτοι: «ὁ ἀναθέτων ἑαυτὸν τῷ Θεῷ»). Ἀμέσως ἐζήτησεν οὗτος νὰ συντρίψῃ τὴν παντοδυναμίαν τῆς τουρκικῆς φρουρᾶς καὶ ἔρριψε τὸν κυρίως ἀνακηρύξαντα αὐτὸν Ἰτάκχ εἰς τὰς φυλακάς, ὅπου ἀπέθανεν ἐκ δίψης. Προέβη ταυτοχρόνως εἰς θρησκευτικὰς μεταρρυθμίσεις, κηρυχθεὶς προστάτης τῆς ἰσλαμικῆς ὀρθοδοξίας (Σοῦννα), κατέστρεψε τὰς χριστιανικὰς ἐκκλησίας τῆς Βαγδάτης, κατεδίωξε τοὺς Ἀλίδας καταστρέψας τὸν ἐν Κερβελὰ τάφον τοῦ Χουσσέν, ἀπηγόρευσε τὸ ἐκεῖ προσκύνημα τῶν σιιτῶν καὶ μετέφερε τὴν ἕδραν του εἰς τὴν ἀπ' αὐτοῦ ὀνομασθεῖσαν Τζαφαρίγια, καὶ ἐκεῖθεν ἐνήργει ὅπως συντρίψῃ τοὺς πανισχύρους καταστάντας Τούρκους. Ἀλλὰ θελήσας νὰ ἀποκλείσῃ τοῦ θρόνου τὸν πρωτότοκον υἱόν του Μουτασὶρ ὑπὲρ τοῦ νεαροῦ Μοτάζ, ἐδολοφονήθη, τῇ ὑποδείξει τοῦ Μουτασίρ, ὑπὸ δύο Τούρκων ἀξιωματικῶν του, τὴν 10 Δεκεμβρίου 861.

—2) Καλίφης τοῦ Καΐρου, ἀναγορευθεὶς τῷ 1362 διὰ μόνην τὴν πνευματικὴν ἀρχήν, διότι ἡ πολιτικὴ ἀπὸ μακροῦ ἠσκεῖτο ὑπὸ τῶν Μαμελούκων. Ὅταν τῷ 1376 οἱ ἐμίραι ἐδολοφόνησαν τὸν σουλτᾶνόν των ἐλ Μελὲκ ἐλ Ἄσραφ Γ' καὶ προσέφερον τὸ στέμμα εἰς τὸν καλίφην, οὗτος ἠρνήθη. Βραδύτερον δὲ ἐστερήθη καὶ τῆς πνευματικῆς ἐντολῆς ὡς συνωμότης, ἀλλ' ὁ Μελὲκ ἐλ Ζάχερ Βαρκοὺκ τὸν ἐπανέφερεν. Ἐδείχθη ὅμως ἀχάριστος, διότι παρεσκεύασε νέαν συνωμοσίαν μετὰ τῶν ἐν Συρίᾳ ἐμιρῶν, ἥτις ἐπέτυχε νὰ ἐκθρονίσῃ τὸν Βαρκοὺκ (1389). Οὗτος ἀνακληθεὶς τῷ 1390 ἐξεθρόνισε τὸν Μοταουακκίλ.

— 3) *Ἀβδ ἐλ Ἀζὶζ ἐλ —.* Καλίφης Ἀβασσίδης τοῦ Καΐρου περὶ τὸ 1497. Γ. Λ. Α.

**Μοτασίμ, Μωχαμὲτ ἐλ—.** Ὄγδοος Ἀββασίδης καλίφης τῆς Βαγδάτης, διαδεχθεὶς τὸν διάσημον Ἐλ Μαμοὺν τῷ 833. Μετέθηκε τὴν ἕδραν του εἰς τὸ χωρίον Σαμαρρᾶ ἐπὶ τοῦ Τίγρητος βορείως τῆς Βαγδάτης, ὅπου ἔκτισεν ἀνάκτορα καὶ εὐρεῖς στρατῶνας διὰ τὴν ἐκ Τούρκων καὶ Βερβέρων φρουράν του. Ἀπέθανε τῷ 842 καὶ τὸν διεδέχθη ὁ υἱός του *Ἀροὺν* ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἐλ Οὐθὶκ μπ' Ἰλλάχ*. Γ. Λ. Α.

**μοτέλλη** (ἡ) (Motella) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἰχθύων μαλακοπτερυγίων τῆς οἰκογενείας τῶν *γαδιδῶν*, περιλαμβάνον γάδους μετρίου μεγέθους μὲ σῶμα κυλινδρικόν, πεπιεσμένον ἐκ τῶν πλαγίων, πανταχοῦ τῶν εὐρωπαϊκῶν θαλασσῶν ἀπαντῶντας. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ἡ *μοτέλλη ἡ κοινή* (Motella vulgaris), ἥτις φθάνει εἰς μῆκος 50 περίπου ἑκατοστομέτρων καὶ χρῶμα φαιοαργυρῶδες. Ἀλιεύεται διὰ τὸ κρέας της. Δ. Ν. Π.

**μοτὲρ** (ὁ) (γαλλ. moteur)· ὁ *κινητὴρ* (βλ. λ.).

**μοτέττο** (τὸ) (ἰταλ. motetto) *[Μουσ.]*. Πολυφωνικὸν τεμάχιον μουσικῆς ἄνευ συνοδείας ὀργάνων, ἀκολουθοῦν τὸν τύπον τῆς μιμήσεως καὶ βασιζόμενον εἰς περικοπὴν ψαλμοῦ ἢ τῶν Ἱερῶν Γραφῶν. Τὸ μοτέττο, ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων δειγμάτων τῆς πολυφωνικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τῆς Δύσεως, γνωστὸν ἤδη κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα, ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ γαλλικοῦ mot (=λέξις), οὗτινος ὑποκοριστικὸν εἶναι τὸ motet *(μοτέττο)*. Ἡ γένεσις τοῦ μουσικοῦ τούτου εἴδους συγχέεται μὲ τὴν τοῦ *ὀργκάνουμ* (organum), δηλαδὴ μὲ τὴν πλέον πρωτόγονον πολυφωνικὴν τέχνην, ἥτις προϋπέθετεν ὀργανικὴν μουσικήν.

Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα τὸ μοτέττο ἐξαφανίζεται, ἀφομοιούμενον πρὸς τὴν *καντάταν* καὶ τὸ *ὀρατόριον*. Γ. Σ.

**Μότζι** (Moji ἢ Modchi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰαπωνίας κειμένη εἰς τὰ Β. τῆς νήσου Κίου-Σίου, ἐπὶ τοῦ πορθμοῦ Σιμονοσέκι. Κάτ. 106.100 (1929). Εἶναι σημαντικώτατος λιμὴν ἐξαγωγῆς γαιανθράκων τῶν πλησίον αὐτῆς κειμένων πλουσίων γαιανθρακωρυχείων καὶ πόλις βιομηχανικὴ καὶ ἐμπορική, ἐξάγουσα νήματα βάμβακος, τσιμέντον, ὄρυζαν, εἴδη πορσελλάνης, ξυλείαν, ζάχαρην κτλ. Μ. Δ. Β.

**μοτίβο** (τὸ) (ἰταλ. motivo ἐκ τοῦ λατιν. motum =*κίνησις*)· ἡ αἰτία, τὸ κίνητρον, τὸ ἐλατήριον· || *μουσ.*, τὸ κεντρικὸν σημεῖον (ὁ πυρὴν) τοῦ θέματος, περὶ ὃ στρέφεται μουσική τις κίνησις.

**Μοτὶ-μπὲν-Γιουννάν.** Ἄραψ ἰατροφιλόσοφος, Χριστιανὸς τὸ θρήσκευμα καὶ Ἕλλην τὸ γένος, ἀκμάσας κατὰ τὸν Ι' μ. Χ. αἰῶνα ἐν Βαγδάτῃ. Μετέφρασε διάφορα φιλοσοφικὰ καὶ ἰατρικὰ συγγράμματα εἰς τὴν ἀραβικήν, ἐν ἄλλοις δὲ «Ἀνατομικὰ» («Κιτὰπ-οὐλ-ἀνατόμικα») καὶ ἄλλα. Ν. Μ.

**Μότιελινγκ** *[Γεωγρ.]*. Εἷς τῶν αὐχένων (διαβάσεων) τῆς ἐν Μαντζουρίᾳ ὀροσειρᾶς Φεντσουϊλίνγκ, δι' οὗ διέρχεται ἡ ἀπὸ Φενγκχοαντσένγκ πρὸς Λιάο Γιάνγκ ὁδός.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον τοῦ 1904, ὁ αὐχὴν τοῦ *Μότιελινγκ* ἐγκατελείφθη ὅλως ἀδικαιολογήτως ὑπὸ τῶν Ρώσων (δύο σιβηρικῶν μεραρχιῶν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Κέλλερ) κατὰ τὴν περὶ τὰ τέλη Ἰουνίου 1904 προέλασιν τῆς 1ης ἰαπωνικῆς στρατιᾶς, ὁπότε ἐγκατεστάθησαν ἐπὶ τοῦ αὐχένος τούτου οἱ Ἰάπωνες, τάξαντες ἐν αὐτῷ τὰς προφυλακάς των. Ἅμα ὅμως ἀντελήφθησαν οἱ Ρῶσοι τὸ σφάλμα των, ἐπεχείρησαν νὰ τὸν ἀνακαταλάβωσι, καὶ τότε διεξήχθησαν τὴν 4ην καὶ τὴν 17ην Ἰουλίου 1904 ἀγῶνες, εἷς ἕκαστος τῶν ὁποίων φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα «ἀγὼν τοῦ Μότιελινγκ». Κατὰ τὴν 4ην Ἰουλίου ἐπεχείρησεν ὁ Κέλλερ, ὅπως διὰ δύο μόνον ταγμάτων ἐνεργήσῃ αἰφνιδιαστικῶς κατὰ τοῦ Μότιελινγκ, ἀλλ' ἡ ρωσικὴ αὕτη ἀπόπειρα ἀπέτυχε πλήρως. Κατὰ τὴν νύκτα τῆς 16—17 Ἰουλίου ἐπανέλαβεν ὁ Κέλλερ τὴν ἐπίθεσιν διὰ μεγάλων δυνάμεων (δύο μεραρχιῶν περίπου), μολονότι δ' ἀπέναντι αὐτῶν ἀντετάσσετο μόνον ἡ 2α ἰαπωνικὴ μεραρχία, ἐν τούτοις οἱ Ρῶσοι ἀπέτυχον καὶ πάλιν, λόγῳ τῆς καταπληκτικῆς χλιαρότητος τῆς ἐνεργείας των· αἱ ρωσικαὶ ἐφεδρεῖαι δὲν ἐχρησιμοποιήθησαν διόλου, τὸ δὲ ρωσικὸν πυροβολικὸν ἐξετέλει τὰς καταλήψεις θέσεων μετὰ χαρακτηριστικῆς βραδύτητος. Ν. Θ. Κ.

**Μοτίνη,** καὶ **Μουτίνη.** Ἀρχαία ὀνομασία τῆς πόλεως τῆς Ἰταλίας *Μόντενα* (βλ. λ.).

**Μότλεϋ** (Motley), **Ἰωάννη-Λόθροπ.** Ἀμερικανὸς ἱστορικὸς καὶ πολιτικὸς (1814—1877). Ἐγεννήθη ἐν Βοστώνῃ καὶ ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Χάρβαρτ καὶ ἐν Γερμανίᾳ. Μετὰ τὴν δημοσίευσιν φιλολογικῶν τινων ἔργων ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας τῆς Ὁλλανδίας, ἀρχίσας νὰ δημοσιεύῃ τῷ 1856 τοὺς πρώτους τόμους τοῦ ἔργου του «Ἱστορία τῆς Ὁλλανδίας» ἥτις συμπληρωθεῖσα τῷ 1867 εἰς πέντε τόμους, ἀπετέλεσε τὸ σπουδαιότερον ἔργον του καὶ μετεφράσθη εἰς πολλὰς ξένας γλώσσας. Τῷ 1862 ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον, διωρίσθη πρεσβευτὴς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς εἰς τὴν Βιέννην καὶ τῷ 1869 εἰς τὸ Λονδῖνον. Τῷ 1903 ἐγένετο ἐν Λονδίνῳ πλήρης ἔκδοσις τῶν ἱστορικῶν του ἔργων. Μ. Δ. Β.

**Μοτοβίλιχα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῇ περιφερείᾳ τῶν Οὐραλίων, ἀριθμοῦσα περίπου 36.000 κατ. καὶ κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πέρμ—Σβερντλόφσκ. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἶχε μεγάλην βιομηχανίαν, διεκρίνετο δὲ διὰ τὰ μεγάλα ἐργοστάσια αὐτῆς πρὸς κατασκευὴν τηλεβόλων καὶ πολεμεφοδίων. Θ. Β.

**μοτὸς** (ὁ), καὶ **μοτὸν** (τό)· νήματα λινοῦ ὑφάσματος τιθέμενα ἐπὶ τῶν τραυμάτων, ἄλλως *ξαντόν*.

**μοτοσυκλέττα** (ἡ). Δίτροχον αὐτοκίνητον ὄχημα (ἡ λ. ἐκ τοῦ γαλλ. motocyclette).

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἡ *μοτοσυκλέττα* εἶναι βενζινοκίνητον μεταφορικὸν μέσον, κατὰ βάσιν ὅμοιον, ἀπὸ τεχνικῆς ἀπόψεως, πρὸς τὸ *αὐτοκίνητον*, ἀλλ' ἁπλουστευμένου τύπου. Αἱ μεταξὺ ταύτης καὶ ἐκείνου διαφοραὶ ἔγκεινται εἰς τὰ ἑξῆς ἰδίως: ὅτι ἡ μοτοσυκλέττα, συγγενεύουσα περισσότερον κατὰ τὴν ἐξωτερικὴν αὐτῆς μορφὴν πρὸς τὸ *ποδήλατον*, εἶναι, ὅπως αὐτό, δίτροχος, προοριζομένη δι' ἕνα κυρίως ἐπιβάτην, λαμβάνοντα θέσιν ἱππαστὶ ἐπὶ τοῦ καθίσματος (σέλλας)· ὅτι ὁδηγεῖται, ὅπως καὶ τὸ ποδήλατον, ἀπ' εὐθείας διὰ τῶν χειρῶν τοῦ ἐπιβαίνοντος, διὰ μετακινήσεως τοῦ ὁριζοντίου μοχλοῦ (τιμόνι), εἰς ὃν καταλήγει πρὸς τὰ ἄνω ἡ περόνη τοῦ προσθίου τροχοῦ· ὅτι τέλος, στοιχίζουσα κατὰ πολὺ εὐθηνότερον τοῦ αὐτοκινήτου, ὑστερεῖ εἰς ἄνεσιν, ἐνῷ ἀντιθέτως δὲν ὑπολείπεται αὐτοῦ κατὰ τὴν ταχύτητα. Ἡ κίνησις ἐν αὐτῇ γίνεται, ὅπως καὶ εἰς τ' αὐτοκίνητα, διὰ βενζινοκινητῆρος τετραχρόνου (ἢ καὶ διχρόνου εἰς τοὺς ἁπλουστέρους τύπους), ἀποτελουμένου εἴτε ἐξ ἑνὸς μόνου κυλίνδρου, εἴτε ἐκ δύο, διατεταγμένων εἰς σχῆμα V. Οἱ κινητῆρες εἶναι συνήθως ἰσχύος ἀπὸ $1\frac{1}{2}$ μέχρι 5 ἵππων, φθάνοντες καὶ μέχρι 10 ἵππων διὰ τὰ ἰσχυρότερα ὑποδείγματα. Εἶναι δὲ

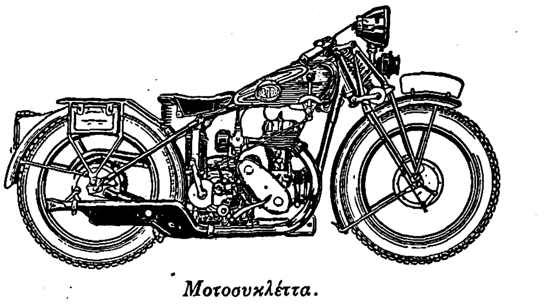

*Μοτοσυκλέττα.*

τοποθετημένος ὁ κινητήρ, ἀκάλυπτος συνήθως, ἐπὶ τοῦ κάτω μέρους τοῦ πλαισίου, μεταξὺ τῶν ποδῶν τοῦ ἐπιβαίνοντος, ἢ ὀλίγον πρὸς τὰ ὀπίσω. Ἡ κίνησις μεταδίδεται εἰς τὸν ὀπίσθιον τροχὸν δι' ἀτέρμονος ἁλύσεως. Τὸν μηχανισμὸν τῆς ἀλλαγῆς τῶν ταχυτήτων χειρίζεται ὁ ἐπιβαίνων διὰ μοχλοῦ εὑρισκομένου ἐπὶ τῆς δεξιᾶς πλευρᾶς τοῦ πλαισίου, τὴν δὲ λειτουργίαν τοῦ ἐξαερωτοῦ (καρμπυρατέρ) κανονίζει διὰ μοχλῶν ἢ κομβίων εὑρισκομένων ἐπὶ τοῦ πηδαλίου. Ἰσχυραὶ τροχοπέδαι λειτουργοῦσιν ἢ διὰ πιέσεως τῶν ποδῶν ἐπὶ πεδίλου (ποδόφρενον) ἢ διὰ τῆς χειρὸς (χειρόφρενον). Τὴν ὅλην τέλος ἐξάρτυσιν τῆς μοτοσυκλέττας συμπληροῖ μικρὰ ἐγκατάστασις φωτισμοῦ (διὰ δυναμομηχανῆς καὶ συσσωρευτῶν), ὁμοία ἐν σμικρῷ πρὸς τὴν τῶν αὐτοκινήτων, ἐπίσης δὲ προβολεῖς, φανοί, κλάξον κλπ.

Διὰ τὴν μεταφορὰν ἑνὸς ἐπὶ πλέον ἢ καὶ πλειόνων ἐπιβατῶν ἡ μοτοσυκλέττα ἐφοδιάζεται μὲ πρόσθετον κάθισμα ὄπισθεν τοῦ ἐφιππίου τοῦ ὁδηγοῦ, δύναται δὲ νὰ συμπληρωθῇ, ὅταν ἡ ἰσχὺς τοῦ κινητῆρός της τὸ ἐπιτρέπει, δι' ἐλαφροῦ χαμηλοῦ καὶ ἐπιμήκους φορείου (σαῒντ-κάρ, side-car). Τοῦτο, ὑποστηριζόμενον κατὰ τὸ μέσον του δι' ἑνὸς τροχοῦ, συνδέεται ἐν κατὰ μῆκος παραβολῇ πρὸς τὸ πλαίσιον τῆς μοτοσυκλέττας, δύναται δὲ νὰ περιλάβῃ ἕνα ἐν ἀνέσει καθήμενον ἐπιβάτην ἢ καὶ δύο ἐνίοτε. Ἄλλοτε πάλιν, ἀντὶ τοῦ σαῒντ-κάρ, προστίθεται εἰς τὴν μοτοσυκλέτταν, καθ' ὅμοιον τρόπον, κιβώτιον διὰ τὴν μεταφορὰν ἢ διανομὴν ἐμπορευμάτων. —Ρ.

**Μοτουτούριοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Νουμιδίᾳ, κατοικῶν κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. ΙΙΙ, 3, 6) πρὸς Ν. τοῦ ὄρους Μαμψάρου. Α. Θ. Σ.

**Μοτρὶλ** (Motril) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Γρενάδας, εἰς ἀπόστασιν 5 χλμ. ἀπὸ τῆς Μεσογείου. Κάτ. 19.000. Παράγει ἔλαιον, γεώμηλα, ζαχαροκάλαμον, οἶνον, ὀπώρας καὶ ἐξάγει οἰνοπνευματώδη ποτά, σάπωνα καὶ ὑφάσματα. Τῷ 1884 καὶ 1885 ἔπαθε μεγάλας ζη-

Digitized by Google

μίας ἐκ τῶν σεισμῶν. Εἶναι πόλις παλαιά, κτισθεῖσα ἐπὶ τῆς ρωμαϊκῆς πόλεως Sex, ἧς σῴζονται ἐρείπια. Μ. Δ. Β.

**Μοτσανέγας**, ***Νικόλαος***. Κερκυραῖος εὐπατρίδης. Μνημονεύεται ὡς ὑμνῳδὸς τοῦ ἱστοριογράφου Μάρμορα, προτάξας τῆς ἐκδόσεως αὐτοῦ λατινικὸν ἐπίγραμμα.

**Μότσαρτ** (Mozart), ***Βόλφραγγκ-Ἀμεδαῖος***. Διάσημος Αὐστριακὸς μουσουργὸς (βλ. λ. *Μόζαρτ*).

**Μοτσενῖγοι** (Mocenigo), ἢ ***Μοντσενῖγοι*** (ἐν Κρήτῃ δὲ καὶ *Μιτσινῖγοι*). Μία τῶν ἐπιφανεστέρων οἰκογενειῶν τῆς Βενετίας, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη διεκρίθησαν ἐν τῇ πολιτικῇ καὶ πολεμικῇ δράσει τῆς χώρας ταύτης ἀπὸ τοῦ ΙΔ' μέχρι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Τινὲς ἐξ αὐτῶν ἐγένοντο δόγαι, ἄλλοι στόλαρχοι καὶ ἄλλοι ἁρμοσταὶ ἐν Κρήτῃ. Κλάδοι τῆς ἰδίας οἰκογενείας ἐγκατεστάθησαν, μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Λατίνων, ἐν Κρήτῃ, Μεθώνῃ καὶ Κορώνῃ, μετηνάστευσαν δὲ βραδύτερον ἐκ Πελοποννήσου εἰς τὰς Ἰονίους νήσους. Ἐκ τῶν τελευταίων τούτων τινὲς ὑπηρέτησαν τὴν Ἑνετίαν, παρὰ τῆς ὁποίας ἠμείφθησαν διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος, ἄλλοι δὲ κατέλαβον διακεκριμένας θέσεις ἐν τῇ πολιτικῇ καὶ τῷ στρατῷ τῆς Ρωσίας.

Ὡς ἐπιφανέστεροι ἐκ τῶν Μοτσενίγων ἀναφέρονται οἱ κατωτέρω:

— **Μοτσενῖγος** (ἄνευ κυρίου ὀνόματος). Ἑνετὸς ναύαρχος, ἀποσταλεὶς τῷ 1692 εἰς Κρήτην (μετὰ τὴν κατάκτησιν τῆς νήσου ὑπὸ τῶν Τούρκων). Ἀποβιβασθεὶς πλησίον τῶν Χανίων, ἐπολιόρκησε τὴν πόλιν ταύτην καὶ προεκάλεσε τὴν ἐξέγερσιν τῶν Κρητῶν, διανείμας αὐτοῖς ὅπλα (ἅτινα ἐξ αὐτοῦ ὠνομάσθησαν μιτσινῖγοι ἢ μουτσινῖγοι). Οἱ Κρῆτες, σπεύσαντες ὑπὸ τὸν Μαχαιριώτην εἰς τὴν πρόσκλησιν τοῦ Μοτσενίγου, ἐκυρίευσαν τὸ φρούριον τῆς Κισάμου, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ὁ Ἑνετὸς ναύαρχος, λύσας τὴν πολιορκίαν τῶν Χανίων, ἀπῆλθεν εἰς Πελοπόννησον φέρων μεθ' ἑαυτοῦ δισχιλίους Κρῆτας πολεμιστάς, διὰ τῶν ὁποίων ἀνεπλήρωσε τὰ ἐκ τῶν μαχῶν κενὰ τοῦ στρατοῦ καὶ τοῦ στόλου του. Ν. ΚΛΣ.

— **Μοτσενῖγος**, ***Ἀλοΐσιος***. Ἑνετὸς στρατηγὸς ἐν Κρήτῃ κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1570.

— **Μοτσενῖγος**, ***Ἀλοΐσιος*** (1701—1778). Δόγης τῆς Ἑνετίας ἀπὸ τοῦ 1763 μέχρι τοῦ θανάτου του. Περιώρισε τὰ προνόμια τῆς Ἐκκλησίας, προκαλέσας ἐκ τούτου σύγκρουσιν πρὸς τὸν πάπαν Κλήμεντα ΙΓ'.

— **Μοτσενῖγος**, ***Ἀλοΐσιος***. Ἐπὶ ἑνετοκρατίας, περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, «γενικὸς προβλεπτής» (Proveditore Generale) καὶ «ναύαρχος τοῦ Κόλπου» ἐν Κερκύρᾳ. Κατὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Ἑνετῶν ἐναντίον τῶν Τούρκων τῆς Κρήτης καὶ εἰς ἐπίσημα ἔγγραφα καὶ εἰς ἐπιστολήν του (21 Ἰουλίου 1692) πρὸς τὸν τότε γενικὸν στρατάρχην Κυριάκον Μοτσενῖγον, ἀναγνωρίζει τὴν γενναιότητα καὶ τὰς μεγάλας τῶν Κερκυραίων ὑπηρεσίας καὶ ζητεῖ ὑπὲρ αὐτῶν τὴν εὐγνωμοσύνην τῆς ἑνετικῆς δημοκρατίας. Ε. Α. Δ.

— **Μοτσενῖγος**, ***Ἀνδρέας***. Δοὺξ (ἁρμοστὴς) τῆς Κρήτης (1441—1443).

— **Μοτσενῖγος**, ***Γεώργιος***, *κόμις* —. Ἐκ τοῦ ἐν Ἑπτανήσῳ κλάδου τῶν Μοτσενίγων, υἱὸς τοῦ *Δημητρίου* (βλ. κατωτ.). Ἐκπαιδευθεὶς ἐν Πετρουπόλει, ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς ρωσικῆς κυβερνήσεως πρέσβυς εἰς Κέρκυραν μετὰ στρατοῦ τῷ 1802, πρὸς καταστολὴν τῆς ἐκεῖ ἀναρχίας. Διωργάνωσε τὸ Σύνταγμα τοῦ 1803 μετὰ τῶν Βαττάλια, Ἰω. Καποδίστρια καὶ Ναράντζη, καὶ λαβὼν σύνταξιν ἔζησεν ἐν Βενετίᾳ, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1836 (Βλ. *Λ. Χ. Ζώη* «Λεξικὸν Ζακύνθου» τόμ. Β', σ. 641).

— **Μοτσενῖγος**, ***Δημήτριος***. Πρόξενος τῆς Ρωσίας ἐπὶ Αἰκατερίνης, ἐφωδίαζε τοὺς Ζακυνθίους μεταβαίνοντας εἰς Πελοπόννησον νὰ πολεμήσωσι κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ὀρλώφ. Καταδιωχθεὶς καὶ μεταβὰς εἰς Ρωσίαν, ἐτιμήθη διὰ τοῦ ἀξιώματος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβούλου τῆς Αἰκατερίνης. Λ. Χ. Ζ.

— **Μοτσενίγου**, ***Ἑλένη Ἀρμένη***, *κόμισσα*—. Ἐγεννήθη ἐν Κερκύρᾳ καὶ ἐνυμφεύθη τὸν κόμιτα *Γεώργιον Μοτσενῖγον* (βλ. ἀνωτ.). Ἔζησεν ἐπὶ ἔτη εἰς Βενετίαν καὶ ἀπέθανεν εἰς τὴν Πάδοβαν περὶ τὰ τέλη τοῦ 1840. Τὴν μεγάλην αὐτῆς περιουσίαν διέθεσε διὰ τὴν προαγωγὴν τῶν γραμμάτων καὶ διὰ σκοποὺς ἐθνικοὺς καὶ φιλανθρωπικούς. Ὅταν ὁ Ἰωάννης Καποδίστριας, πρὶν ἢ κατέλθῃ εἰς τὴν Ἑλλάδα ὡς κυβερνήτης, διῆλθεν ἐκ Βενετίας καὶ ἐζήτησε διὰ τῆς συνδρομῆς τῶν συμπατριωτῶν του νὰ ἐπιτύχῃ τὴν ἵδρυσιν ταμείου πρὸς συντήρησιν καὶ περίθαλψιν τῶν ἐν Ἰταλίᾳ ἀπροστατεύτων Ἑλλήνων ὀρφανῶν, ἡ Ἑλένη Μοτσενίγου ἐνεγράφη διὰ τὸ ποσὸν 200 ἰσπανικῶν ταλλήρων ἐτησίως. Διὰ τῆς διαθήκης της, διέθεσε 10 χιλιάδας ἰταλικῶν λιρῶν ὑπὲρ τοῦ ἐν Ἑνετίᾳ ἑλληνικοῦ φροντιστηρίου τοῦ Θ. Φλαγγίνη, 30 χιλ. ἰταλικῶν λιρῶν ὑπὲρ τῆς ἑλληνικῆς ἐν Ἑνετίᾳ ἐκκλησίας τοῦ Ἁγίου Γεωργίου, εἰς δὲ τὴν πόλιν Κερκύρας ἓν ἑκατομμύριον αὐστριακῶν λιρῶν, ὅπως ἐκ τῶν τόκων τούτων νέοι πτωχῶν καὶ ἐντίμων κερκυραϊκῶν οἰκογενειῶν, διακριθέντες κατὰ τὴν δημοτικὴν ἐκπαίδευσιν, ἀποστέλλωνται κατόπιν διαγωνισμοῦ πρὸς συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν των εἰς τὰ ἑλβετικὰ γυμνάσια καὶ κατόπιν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Εὐρώπης. Ἐκ τοῦ Μοτσενιγείου κληροδοτήματος, ὑφισταμένου μέχρι σήμερον, προικοδοτοῦνται κατ' ἔτος διὰ κλήρου τέσσαρες πτωχαὶ Κερκυραῖαι. Ε. Α. Δ.

— **Μοτσενῖγος**, ***Ζαχαρίας***. Δοὺξ (ἁρμοστὴς) τῆς Κρήτης (1659—1663).

— **Μοτσενῖγος**, ***Θωμᾶς*** (1343—1423). Τῷ 1395 διωρίσθη ναύαρχος τοῦ ἑνετικοῦ στόλου τοῦ ἀποσταλέντος τότε κατὰ τῶν Τούρκων (βλ. λ. *Νικόπολις*). Τῷ 1403 διεκρίθη ὡς στρατηγὸς εἰς τὸν πόλεμον κατὰ τῶν Γενουατῶν, οὓς κατ' ἐπανάληψιν ἐνίκησε. Κατόπιν διετέλεσε δούξ, ἤτοι ἁρμοστὴς τῆς Κρήτης (1403—1405) καὶ τῷ 1413 ἀπεστάλη ὡς πρέσβυς παρὰ τῷ αὐτοκράτορι τῆς Γερμανίας Σιγισμούνδῳ (1410—1437). Τὸ ἐπιὸν ἔτος (1414) ἀνεκηρύχθη δόγης τῆς Ἑνετίας, διαδεχθεὶς τὸν Steno. Τῷ 1415 συνῆψε συνθήκην εἰρήνης μετὰ τοῦ σουλτάνου Μωάμεθ Α' (1413—1421), ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἐκήρυξε πάλιν κατ' αὐτοῦ πόλεμον, καθ' ὃν ὁ ἑνετικὸς στόλος ἤρατο λαμπρὰν κατὰ τῶν Τούρκων ἐν Καλλιπόλει νίκην (1416). Τῷ 1417 ἐκήρυξε τὸν πόλεμον κατὰ τοῦ πατριάρχου Ἀκυληΐας (Aquileja) καὶ κατέκτησε τὰς χώρας αὐτοῦ (εἰς τὴν ΒΑ. Ἰταλίαν, ἐν τῷ Ἀδριατικῷ), νικήσας καὶ τὰ στρατεύματα τοῦ αὐτοκράτορος Σιγισμούνδου. Τῷ 1421 ἀπέρριψε τὰς γενομένας τῇ Ἑνετίᾳ ἐκ μέρους τῆς Φλωρεντίας προτάσεις συμμαχίας ἐναντίον τοῦ δουκὸς τοῦ Μιλάνου καὶ οὕτως ἀπήλλαξε τὴν χώραν του τοῦ νέου ἐκείνου πολέμου. Ὁ Θωμᾶς Μοτσενῖγος ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος ἱδρυτὴς τῆς περιφήμου ἐν Ἑνετίᾳ βιβλιοθήκης τοῦ Ἁγίου Μάρκου. Ν. ΚΛΣ

— **Μοτσενῖγος**, ***Ἰωάννης*** (1408—1485). Ἀνηγορεύθη δόγης τῆς Ἑνετίας τῷ 1478 καὶ διεξήγαγε μακροὺς πολέμους πρὸς τοὺς Τούρκους καὶ τὸ δουκᾶτον τῆς Φερράρας. Τῷ 1479 ἐξεχώρησεν εἰς τοὺς Τούρκους τὸ Σκούταρι, τῷ δὲ 1484 τὴν Κεφαλληνίαν. Ν. ΚΛΣ

— **Μοτσενῖγος**, ***Λάζαρος***. Δοὺξ (ἁρμοστὴς) τῆς Κρήτης (1629—1631).

— **Μοτσενῖγος**, ***Λουδοβῖκος***. Ἀνηγορεύθη δόγης τῆς Ἑνετίας τῷ 1570 καὶ διεξήγαγε μακροὺς κατὰ τῶν Τούρκων πολέμους μέχρι τοῦ 1573, ὅτε συνωμολόγησε τὴν μετὰ τοῦ σουλτάνου Σελὶμ Β' εἰρήνην. Ἀπέθανε τῷ 1577.

— **Μοτσενῖγος**, ***Λουδοβῖκος***. Ἑνετὸς ναύαρχος. Διοικητὴς ὢν τοῦ ἐν τῷ Αἰγαίῳ ἑνετικοῦ στόλου, διακοπτοῦντος τοῦ ἐν Κρήτῃ πολέμου πρὸς τοὺς Τούρκους, κατεναυμάχησε τῷ 1651 τὸν τουρκικὸν στόλον παρὰ τὴν Πάρον καὶ συλλαβὼν πλεῖστα ἐχθρικὰ πλοῖα διῆλθεν ἐν θριάμβῳ πρὸ τοῦ Χάνδακος (Ἡρακλείου), ἵνα ἐνθαρρύνῃ τοὺς πολιορκουμένους. Μετά τινα χρόνον ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ *Λεονάρδου Φοσκόλου*.

— **Μοτσενῖγος**, ***Λουδοβῖκος***. Δόγης τῆς Ἑνετίας (1700—1709). Ἱκανὸς καὶ σώφρων κυβερνήτης καὶ δεξιὸς διπλωμάτης, ἀπέφυγε νὰ ἀναμιχθῇ εἰς τὸν ἐν Ἰταλίᾳ πόλεμον μεταξὺ Αὐστριακῶν καὶ Γάλλων, καὶ οὕτω συνετέλεσεν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἐμπορίου καὶ τῆς ναυτιλίας τῆς Ἑνετίας. Ν. ΚΛΣ

— **Μοτσενῖγος**, ***Νικόλαος***. Ἀνώτερος ἀξιωματικὸς Ἑνετός, ἀναφερόμενος κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, τῷ 1453, ὡς ἀρχηγὸς τοῦ σώματος φρουροῦντος τὴν Πύλην τῆς Πηγῆς (Σηλυμβρίας-Καπουσί). Ε. Γ.

— **Μοτσενῖγος**, ***Πέτρος***. Ἐξετέλεσεν ὡς ναύαρχος τοῦ ἑνετικοῦ στόλου διαφόρους ἐπιτυχεῖς ἐκστρατείας κατὰ τῶν Τούρκων ἀπὸ τοῦ 1470 μέχρι τοῦ 1474 (ἀνὰ τὸ Αἰγαῖον, εἰς Σμύρνην, εἰς Κύπρον, εἰς Σκούταρι). Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ δόγη Μαρκέλλου, τῷ 1474, ἀνηγορεύθη δόγης, ἀλλὰ πάσχων ἐκ τῶν πολεμικῶν κακουχιῶν ἀπέθανε τῷ 1476. Βραδύτερον ἐγένετο δόγης ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ *Ἰωάννης* (βλ. ἀνωτ.). Ν. ΚΛΣ

— **Μοτσενῖγος**, ***Πέτρος***. Ἠκολούθησεν, ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς ἑνετικῆς κυβερνήσεως, τὸν ἀποσταλέντα εἰς Κρήτην στρατὸν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Δαλβέριμην πρὸς καταστολὴν τῆς ἀπὸ τοῦ 1362 ἐκραγείσης ἐπαναστάσεως. Μετὰ τὴν ἧτταν τῶν Κρητῶν ἐπανῆλθεν εἰς Ἑνετίαν, μεθ' ὃ διωρίσθη δὶς δοὺξ (ἁρμοστὴς) τῆς Κρήτης, τῷ 1366—1368 καὶ τῷ 1381—1383. Τῷ 1379 διέπρεψε κατὰ τὸν ἐναντίον τῶν Γενουατῶν πόλεμον. Ε. Γ.

— **Μοτσενῖγος**, ***Σεβαστιανός***. Ἀδελφὸς τοῦ δόγη τῆς Ἑνετίας *Λουδοβίκου* τοῦ νεωτέρου (βλ. ἀνωτ.). Ἀνηγορεύθη καὶ αὐτὸς δόγης τῷ 1722, ἀπέθανε δὲ τῷ 1732. Ν. ΚΛΣ

**Μοτσέττο** (Mocetto), ***Ἱερώνυμος***. Ἰταλὸς χαράκτης τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, καταγόμενος ἐκ Βερώνης καὶ ἐγκατασταθεὶς ἐν Βενετίᾳ. Ἦτο μαθητὴς τοῦ Τζιοβάννι Μπελλίνι, ἐχάραξε δὲ ἔργα τοῦ διδασκάλου του καὶ τῶν Μαντένια καὶ Τσίμα ντὰ Κονελιάνο. Τὰ χαρακτικὰ ἔργα του διακρίνονται διὰ τὸ κάλλος τῶν μορφῶν καὶ τὴν καλλιτεχνικὴν διακόσμησιν. Κυριώτερα τούτων εἶναι: «Ὁ ἅγιος Ἰωάννης Βαπτιστής», «Ἡ ρωμαϊκὴ θυσία», τῆς ὁποίας ἡ σκηνὴ τοποθετεῖται εἰς τὸ περιβάλλον τοῦ δουκικοῦ ἀνακτόρου τῆς Βενετίας, κ.ἄ. Χ. Ι.

**Μόττα** (Motta), ***Ἰωσήφ***. Ἑλβετὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1871. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Φρειβούργῳ, Μονάχῳ καὶ Ἀϊδελβέργῃ καὶ ἀφοῦ κατ' ἀρχὰς ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ἐν τῇ γενετείρᾳ του Ἀϊρόλῳ, ἐξελέγη τῷ 1899 βουλευτὴς Τεσσίνου καὶ ἐγένετο ἡγέτης τοῦ καθολικοῦ συντηρητικοῦ κόμματος, διακριθεὶς διὰ τὴν ρητορικήν του δεινότητα καὶ τὰς οἰκονομολογικάς του μελέτας. Τῷ 1911 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Τὴν 18 Δεκεμβρίου 1914 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Ἑλβετικῆς Ὁμοσπονδίας διὰ τὸ ἔτος 1915, εἰς ἐποχὴν δυσχερεστάτην, ἀπὸ διπλωματικῆς ἀπόψεως, λόγῳ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, καὶ κατώρθωσε νὰ διατηρήσῃ τὴν οὐδετερότητα τῆς χώρας του. Τῷ 1920 ἐξελέγη καὶ πάλιν ὑπουργὸς καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐκ δευτέρου πρόεδρος τῆς Ὁμοσπονδίας. Τῷ 1927 ἐξελέγη διὰ τρίτην φορὰν πρόεδρος τῆς Ὁμοσπονδίας, τῷ δὲ 1929 ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Μ. Δ. Ε.

**Μοττακὶ-ί-*Μπιλλὰχ*** (=ὁ προστατευόμενος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ). 21ος Ἀββασίδης χαλίφης τῆς Βαγδάτης, υἱὸς τοῦ χαλίφου Μουκταδίρ, γεννηθεὶς τῷ 910 καὶ διαδεχθεὶς τῷ 940 τὸν ἀδελφόν του Ραντὶ-ί-Μπιλλάχ. Κατὰ τὴν ἀνάρρησίν του, ἐμιρουλουμερᾶς (γενικὸς ἀρχηγὸς) ἦτο ὁ Τοῦρκος στρατηγὸς Μπαϊκάμ. Ἀσθενοῦντος ὅμως τούτου ἐπηκολούθησε κατάστασις ἀναρχικὴ καὶ μετὰ τέσσαρα ἔτη ἐξεθρονίσθη ὁ Μοττακὶ ὑπὸ τοῦ Τούρκου ἐμιρουλουμερᾶ Τούζ, φυλακισθεὶς δὲ ἀπέθανε μετὰ 23 ἔτη ἐν τῇ φυλακῇ. Εἴς τινας Ἄραβας ἱστορικοὺς φέρεται ὡς *Μοκτεφί*. Ν. Μ.

**Μόττε-λέ-μπαὶν** (La Motte-les-bains). Ὑδρομεταλλικὸς σταθμὸς εἰς Isère τῆς Γαλλίας, εἰς ὕψος 630 μ. Τὰ μεταλλικὰ ταῦτα ὕδατα εἶναι θερμοκρασίας 61°, περιέχουν δὲ ἀνὰ λίτρον 5,6 γρ. διαλελυμένων συστατικῶν, τῶν ὁποίων τὰ 3,0 γρ. ἀντιπροσωπεύουν τὸ χλωριοῦχον νάτριον, τὰ 0,16 τὸ χλωριοῦχον μαγνήσιον, 1,67 τὸ θειικὸν μαγνήσιον κλπ. Τὰ ὕδατα ταῦτα ἐνδείκνυνται ἐπὶ γυναικολογικῶν παθήσεων, χρονίων ἀρθροπαθειῶν, χοιραδώσεως κλπ. Κ. Γ. Μ.

**Μόττλ** (Mottl), ***Φῆλιξ***. Αὐστριακὸς διευθυντὴς ὀρχήστρας (1856—1911), ἀπόφοιτος τοῦ Ὠδείου τῆς Βιέννης. Ἀρχικῶς διευθυντὴς τῆς «Ἀκαδημαϊκῆς ἑταιρείας Βάγνερ» τῆς Βιέννης, εἶτα διευθυντὴς ὀρχήστρας τῆς αὐλῆς ἐν Καρλσρούῃ, ἀφωσιώθη ἐν τέλει εἰς τὴν διεύθυνσιν τῶν ἔργων τοῦ Βάγνερ, δι' ἃ εἶχε μεγάλην εἰδικότητα. Τῷ 1876 ἀπλοῦς προπονητὴς ἐν Μπαϋρόϋτ, ἐνεφανίζετο μετὰ δεκαετίαν (1886) ὡς πρῶτος διευθυντὴς ὀρχήστρας κατὰ τὰς βαγνερείους παραστάσεις. Τῷ 1903, ὅταν ἡ Μετροπόλιταν-Ὄπερα τῆς Νέας Ὑόρκης ἀπεφάσισε νὰ ἀναβιβάσῃ τὸν «Πάρσιφαλ» τοῦ Βάγνερ, εἰς τὸν Μόττλ ἀνετέθη ἡ ἀναβίβασις τοῦ ἔργου. Μετὰ πενταμήνους ἐν τούτοις δοκιμὰς ὁ Αὐστριακὸς μουσικὸς ἀπεσύρθη κατὰ τὴν τελευταίαν στιγμήν. Τῷ 1893 ὁ Μόττλ εἶχεν ὀνομασθῆ γενικὸς μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς τῆς Καρλσρούης, τῷ δὲ 1903 ἔτυχε τοῦ αὐτοῦ ἀξιώματος ἐν Μονάχῳ, ἔνθα διωρίσθη καὶ διευθυντὴς τῆς βασιλικῆς Μουσικῆς Ἀκαδημίας (1904) καὶ ἐν τέλει καὶ τοῦ Μελοδράματος. Ὁ Μόττλ ἔδωκε δείγματα συνθετικοῦ ταλάντου διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Agnes Bernauer» (1880), «Ramin» καὶ «Fürst und Sänger». Ἔγραψεν ἐπίσης τὸ χορογραφικὸν ποίημα «Πᾶν» (1900), τραγούδια, ἓν κουαρτέττο κ. τ. λ. Ἔκαμε, μετὰ τοῦ Λεβί, νέαν διασκευὴν τοῦ «Κουρέως τῆς Βαγδάτης» τοῦ Κορνέλιους καὶ ἐνωρχήστρωσε πλείστας μελῳδίας τῶν Σοῦμπερτ, Βάγνερ, Λαΐβε, Μόζαρτ, ὡς καὶ διάφορα ἄλλα ἔργα τῶν Ραμώ, Γκλοὺκ Χαῖντελ κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μόττρα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μαθούρα*).

**μοττραμίτης** (ὁ) (Mottramit) *['Ορυκτολ.]*. Ὀρυκτόν, ὅπερ ἀποτελεῖ βαναδικὸν ἅλας τοῦ χαλκοῦ καὶ τοῦ μολύβδου βασικὸν καὶ ἔχει χημικὸν τύπον $[Cu.OH]_4(Cu,Pb)[VO_4]_2$. Κρυσταλλοῦται πιθανῶς εἰς τὸ ρομβικὸν σύστημα, ἔχει σκληρότητα 3, εἰδικὸν βάρος 5,894 καὶ χρῶμα μαῦρον ἢ εἰς λεπτὸν στρῶμα κίτρινον. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Mottram St. Andrews ἐν Cheshire, καθὼς καὶ παρὰ τὸ Nosib καὶ Tsumeb εἰς τὸ ὄρος Otavi, ἐνταῦθα ὑπὸ μορφὴν νεφροειδῶν, βοτρυοειδῶν ἢ καὶ ἀκτινωδῶν ἐπιφλοιώσεων μὲ χρῶμα μαῦρον ἕως ἐλαιόχρουν. Θεωρεῖται ὡς σπουδαῖον μετάλλευμα βαναδίου. Γ. Β.

Digitized by Google

**Μοτύη** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Δ. Σικελίας, μετ' ἀσφαλοῦς λιμένος, κειμένη πρὸς Ν. τοῦ Δρεπάνου ἀκρωτηρίου καὶ τοῦ ὄρους Ἔρυκος, ἐπὶ μικρᾶς νήσου ἀπεχούσης ἓξ περίπου στάδια ἀπὸ τῆς παραλίας, μετὰ τῆς ὁποίας συνεδέετο διὰ τεχνητῆς προκυμαίας «τῷ πλήθει καὶ τῷ κάλλει τῶν οἰκιῶν εἰς ὑπερβολὴν πεφιλοτεχνημένη διὰ τὴν εὐπορίαν τῶν κατοίκων» (*Διοδ. Σικ.* XIV, 48). Κατὰ τὸν μῦθον, ἵδρυσεν αὐτὴν ὁ Ἡρακλῆς πρὸς τιμὴν τῆς Μοτύης, ἥτις τῷ κατήγγειλε τὸν ἐν Σικελίᾳ κλέπτην τῶν βοῶν του, πράγματι ὅμως ἱδρύθη ὑπὸ τῶν Φοινίκων (*Θουκ.* VI, 2).

Καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Καρχηδονίων, παρέμενε πιστοτάτη εἰς αὐτούς, ὁ δὲ λιμήν της ἐχρησιμοποιήθη ὑπ' αὐτῶν ὡς ναύσταθμος εἰς τοὺς κατὰ τῶν ἑλληνικῶν τῆς Σικελίας πόλεων πολέμους αὐτῶν, μέχρι τοῦ 397 π.Χ., ὁπότε καταληφθεῖσα, μετὰ μακρὰν πολιορκίαν, ὑπὸ τοῦ Διονυσίου, τυράννου τῶν Συρακουσῶν, κατεστράφη, τὸ δὲ πλεῖστον τῶν κατοίκων της ἐφονεύθη (*Διοδ. Σικ.* XIV, 47-53). Ἀνακτηθεῖσα ὀλίγον μετὰ ταῦτα ὑπὸ τοῦ Ἱμίλκωνος, ναυάρχου τῶν Καρχηδονίων, ἐγκατελείφθη ὑπ' αὐτοῦ, μὴ δυναμένου νὰ ὑπερασπίσῃ αὐτήν, τοὺς δὲ κατοίκους μετῴκησεν εἰς τὴν ὀλίγον νοτιώτερον κειμένην Λιλύβαιον, ἥτις σὺν τῷ χρόνῳ ὑπεσκέλισεν αὐτήν. Ἐκ τῶν σῳζομένων νομισμάτων αὐτῆς ἄλλα μὲν φέρουσι καρχηδονιακὴν ἐπιγραφήν, ἄλλα δὲ ἑλληνικὴν ΜΟΤΥΑΙΟΝ.

Σήμερον καλεῖται Pantaleone, ὅπου σῴζονται τὰ ἐρείπια αὐτῆς. Α.Θ.Σ.

**Μότυκα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ΝΑ. Σικελίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. III. 4, 7), παρὰ τὸν ποταμὸν Μοτύκανον, ἐπὶ εὐφορωτάτης πεδιάδος μεταξὺ Συρακουσῶν καὶ Καμαρίνας (νῦν Torre di Camarana). Σήμερον καλεῖται *Μοδίκα* (Modica). Α. Θ. Σ.

**Μοτύκανος** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς ΝΑ. Σικελίας, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. III, 4, 3). Διερχόμενος παρὰ τὴν Μοτύκαν (νῦν Modica) ἐκβάλλει δυτικῶς τοῦ Παχύνου ἀκρωτηρίου (νῦν Capo Passaro). Α.Θ.Σ.

**μοτῶ** (*—όω*)· θέτω εἰς τὸ τραῦμα μοτόν, ξαντόν.

**μότωμα** (τό)· ἐπίθεσις μοτοῦ ἐπὶ τραύματος.

**μουαβίνης** (ὁ) (ἀραβ. *μουαβὶν*=βοηθός). Οὕτως ὠνομάσθησαν ἐν Τουρκίᾳ οἱ βοηθοὶ τῶν γενικῶν διοικητῶν, διοικητῶν καὶ ὑποδιοικητῶν, οἵτινες, συμφώνως πρὸς διαφόρους νόμους περὶ μεταρρυθμίσεως τῆς ἐπαρχιακῆς διοικήσεως, ἔδει νὰ εἶναι Χριστιανοὶ (Ἕλληνες ἢ Ἀρμένιοι). Ν. Μ.

**Μουαγιὲβρ-*Γκρὰντ*** (Moyeuvre-Grande) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μοζέλλα, παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Κονρουὰ μετὰ τοῦ Ὄρν. Ἔχει σιδηρουργικὰς βιομηχανίας. Κάτ. 9.550. Χ. Δ.

**Μουαγιὼ** (Moyaux), ***Κωνστάν***. Γάλλος ἀρχιτέκτων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Τῷ 1861 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου τῆς Ρώμης. Ὑπῆρξεν ἐπιθεωρητὴς κατὰ τὴν ἀρχιτεκτονικὴν διακόσμησιν τοῦ μουσείου τοῦ Λούβρου, τοῦ μεγάρου τοῦ Ἐλεγκτικοῦ Συνεδρίου, τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν, τῆς σχολῆς Γεφυροποιῶν καὶ τοῦ Ἰνστιτούτου. Ἐκ τῶν καλυτέρων του εἶναι τὸ ἀστεροσκοπεῖον τοῦ Μεντόν, τὸ μνημεῖον τοῦ Λέοντος Κονιὲ εἰς τὸ νεκροταφεῖον Πὲρ Λασαὶζ τῶν Παρισίων καὶ τὸ τοῦ ἀστρονόμου Λαπλὰς ἐν Σαὶν Μαρτὲν ντὲ Μαλλιόκ. Ἔγραψε περισπούδαστον πραγματείαν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Études d'architecture à Venise et en Sicile». Α. Δ.

**«Μου'αλλακὰτ»** (=«Τὰ ἀνηρτημένα»). Συλλογὴ ἑπτὰ ἀραβικῶν ποιημάτων (βλ. λ. *Μο'αλλακάτ*).

**μουαμελετζῆς** (ὁ)· ἄνθρωπος ἔχων ὡς ἐπάγγελμα τὸ διεξάγειν ὑποθέσεις εἰς κυβερνητικὰ γραφεῖα' || τοκογλύφος. Ν. Μ.

**Μουὰν** (Moines), *[Γεωγρ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν Γάλλων ναυτικῶν γλώσσης, σημαίνων σκόπελον ἢ σκοπέλους μεμονωμένους. Ὁ ὅρος οὗτος, ὡς καὶ ὁ ἀντίστοιχος ἰταλικὸς Monachi, σημαίνοντες «μοναχοί», ἀποδεικνύουν πόσον κοινὴ εἶναι ἡ ἀντίληψις εἰς τοὺς ναυτικοὺς παντὸς ἔθνους, δεδομένου ὅτι καὶ παρ' ἡμῖν οἱ τοιοῦτοι σκόπελοι καλοῦνται *καλόγεροι*. Ἔχει δέ, ὡς καὶ παρ' ἡμῖν, περιπέσει ὁ ὅρος εἰς τοπωνυμίαν καὶ δή: —1) Σκοπέλων τῆς νοτίας ἀκτῆς τῆς Κορσικῆς (πλάτ. 41° 47' Β., μῆκ. 8°54' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 429: Cape Feno to Lava bay). —2) Τῆς νήσου Σαὶντ Ὁνορὰ (πλάτ. 43°30' Β., μῆκ. 7°03' Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 2822: Gulf of Napoule and Juan) τῆς Κυανῆς Ἀκτῆς. —3) Ἀκρωτηρίου μετὰ σκοπέλων πρὸ αὐτοῦ τῆς δυτικῆς παραλίας τῆς Κορσικῆς (πλάτ. 42°08' Β., μῆκ. 8°36' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 430: Lava to Morsetta). Σ. Ε. Λ.

**Μουάνσα**, ἢ ***Μουάντσα*** (Muansa, ἢ Mwanza) *[Γεωγρ.]*. —1) Λιμναῖος λιμὴν τῆς Ταγκανίκας ἐν τῇ Α. Ἀφρικῇ, ἐπὶ τῆς νοτίου παραλίας τῆς λίμνης Βικτωρίας Νυάνζα. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἦτο σπουδαῖον κέντρον ἐμπορίου δερμάτων καὶ ἀραχίδων. Τὴν 14 Ἰουλίου 1916 κατελήφθη, διαρκοῦντος τοῦ πολέμου, ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Ἄγγλου στρατηγοῦ Crewe, ὁρμωμένου ἐκ τῆς διευθύνσεως τῆς Ταμπόρα. Εἶναι σπουδαῖος σταθμὸς ἀσυρμάτου τηλεγράφου καὶ διοικητικὸν κέντρον τῆς ἐπαρχίας Μουάνσα. Κάτοικοι 3.000.

—2) Ἐπαρχία τῆς ἐν τῇ Α. Ἀφρικῇ ἀποικίας Ταγκανίκας, ἐκτεινομένη περὶ τὴν νοτίαν παραλίαν τῆς λίμνης Βικτωρίας Νυάνζα. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς ὑπολογίζεται εἰς 300.000 κατ., ἔχει δὲ πρωτεύουσαν τὸν ὁμώνυμον λιμένα. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, τελεῖ δέ, ὡς καὶ ὁλόκληρος ἡ Ταγκανίκα, ὑπὸ τὴν βρεττανικὴν κατοχήν, ἐντολῇ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν. Χ. Δ.

**Μουανὼ** (Mouaneau). Γάλλος θεατρικὸς συγγραφεὺς (βλ. λ. *Κουρτελὶν* Γεώργιος).

**Μουάτα *Γιάμβος*** (Mouata Giambo) *[Γεωγρ.]*. Εὐρεῖα ἔκτασις εἰς τὸ Βελγικὸν Κόνγκο, ἐξερευνηθεῖσα ὑπὸ τοῦ Λίβιγκστων. Ἀπεκλήθη οὕτως ἐκ τοῦ ἀρχηγοῦ αὐτῆς *Μουάτα Γιάμβος*, τοῦ ὁποίου τὸ κράτος περιέγραψεν ὁ ἐξερευνητὴς Μπύχνερ. Διὰ τῆς συμβάσεως τῆς 24 Μαρτίου τοῦ 1894 καθωρίσθησαν αἱ σφαῖραι ἐπιρροῆς μεταξὺ τοῦ ἀνεξαρτήτου κράτους τοῦ Κόνγκο καὶ τῆς Πορτογαλίας σχετικῶς πρὸς τὴν περιφέρειαν τῆς Μουάτα Γιάμβος. Π. Γ. Λ.

**μουατζίρης** (ὁ)· βλ. λ. *μοατζίρης*.

**Μουάτσος**, ἢ ***Μοάτσος***, καὶ ***Μουδάτσος*** (Moazzo ἢ Muazzo καὶ Mudazzo ἢ Mudatio). Ὄνομα εὐγενοῦς ἐνετικῆς οἰκογενείας, ἧς πολλὰ μέλη, ἐγκατασταθέντα μετὰ τὴν Δ' Σταυροφορίαν (1203—1204) εἰς τὰς ἑλληνικὰς νήσους, ἔδρασαν ἐν αὐταῖς ποικιλοτρόπως, ὁτὲ μὲν ὡς τιμαριοῦχοι καὶ ὑπάλληλοι τῆς ἐνετικῆς κυβερνήσεως, ὁτὲ δὲ ὡς ἐπαναστάται (ἐν Κρήτῃ) κατὰ τῆς ἐνετοκρατίας. Τοιουτοτρόπως ἀπαντῶνται Μουάτσοι ἐν Κρήτῃ, ἐν Μυκόνῳ καὶ Τήνῳ, ἐν Τενέδῳ, ἐν Κυθήροις, ἐν Σκιάθῳ, ἐν Σκοπέλῳ, ἐν Κεφαλληνίᾳ κλ.

Ἐκ τοῦ ἐν Κρήτῃ κλάδου, τοῦ ἐγκατασταθέντος ἐκεῖ ἀπὸ τοῦ 1212, ἐπιφανέστεροι ἀναφέρονται, κατὰ χρονολογικὴν σειράν, οἱ ἑξῆς:

—1) *Φραγκῖσκος*. Συμμετασχὼν οὗτος εἰς τὴν ἐναντίον τῆς ἐνετοκρατίας ἐπανάστασιν τῶν Κρητῶν τοῦ 1363, ἐξελέγη μέλος τοῦ δεκαμελοῦς συμβουλίου τῆς ἀνακηρυχθείσης «Δημοκρατίας τοῦ Ἁγίου Τίτου» καὶ εἶτα ἀρχιστράτηγος τῶν ἐπαναστατικῶν δυνάμεων, ὡς τοιοῦτος δ' ἐνίκησε κατ' ἀρχὰς τὰ ἐνετικὰ στρατεύματα, κατόπιν ὅμως, ἡττηθείς, ᾐχμαλωτίσθη κατὰ Μάϊον 1363 καὶ ἐνεκλείσθη εἰς τὰς φυλακὰς τοῦ Χάνδακος, καταδικασθεὶς εἰς θάνατον καὶ δήμευσιν ἁπάσης αὐτοῦ τῆς περιουσίας. Κατορθώσας ν' ἀποδράσῃ ἐκ τῶν φυλακῶν, κατέφυγεν εἰς τὰς ὑπὸ τῶν Γενουατῶν κατεχομένας νήσους τοῦ Αἰγαίου, ὅτε ἡ ἐνετικὴ κυβέρνησις ἐπεκήρυξε τὴν κεφαλήν του ἀντὶ 300 ὑπερπύρων. Ἀμνηστευθεὶς τῷ 1391 ἐπανῆλθεν εἰς Κρήτην, ἔνθα ἔμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του.

—2) *Πιολάτος*. Συμμετέσχε καὶ οὗτος εἰς τὴν ἀνωτέρω ἐπανάστασιν καὶ ἐξελέγη μέλος τοῦ εἰκοσιτετραμελοῦς συντακτικοῦ σώματος τῆς κρητικῆς δημοκρατίας τοῦ Ἁγίου Τίτου. Αἰχμαλωτισθεὶς κατὰ Μάϊον 1363, ἐκαρατομήθη ὑπὸ τῶν Ἐνετῶν.

—3) *Ἰάκωβος*. Ἀδελφὸς τοῦ Φραγκίσκου. Φανατικὸς ἐνετόφρων, ἔσχε τὸ θάρρος ν' ἀποδοκιμάσῃ τὴν ἐπανάστασιν, ἀποκαλέσας αὐτὴν δημοσίᾳ «ἀσυγχώρητον ἀποστασίαν»· μὴ ἀρκεσθεὶς δὲ εἰς τοῦτο εἰσῆλθεν εἰς τὴν αἴθουσαν τοῦ δουκικοῦ παλατίου καὶ ἰδὼν τὸν ἀδελφόν του συνεδριάζοντα μετὰ τῶν ἄλλων συμβούλων περὶ τὸν δοῦκα, ἐξερράγη εἰς λοιδωρίας κατ' αὐτῶν, τοὺς ἀπεκάλεσε σφετεριστὰς καὶ ἀνευφήμησε τὴν ἐνετικὴν κυριαρχίαν. Ἐκληφθεὶς ὡς παράφρων ἀπεπέμφθη ἐν συριγμοῖς καὶ ἀποδοκιμασίαις. Τὴν ἑπομένην ὅμως ὁ υἱός του, θελήσας νὰ ἐπαναλάβῃ τὰ αὐτὰ δημοσίᾳ ἐν τῇ ἀγορᾷ, ἐφονεύθη αὐθωρεὶ ὑπὸ τοῦ ἐκμανέντος πλήθους, τὸ δὲ αἱμόφυρτον πτῶμά του ἐσύρθη πρὸς διαπόμπευσιν διὰ τῶν ἀγυιῶν τῆς πόλεως.

—4) *Ἰαννάκης*. Νεώτατος συμμετέσχε καὶ οὗτος εἰς τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1363, μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ὁποίας κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ εἰς τὰς ὑπὸ τῶν Γενουαίων κατεχομένας νήσους τοῦ Αἰγαίου. Τυχὼν βραδύτερον ἀμνηστίας ἐκ μέρους τῆς ἐνετικῆς κυβερνήσεως, διωρίσθη διοικητὴς Τενέδου, εἰς τὴν θέσιν δὲ ταύτην διετέλει τῷ 1381, ὅτε, λήξαντος τοῦ μακροῦ Ἑνετο-γενουατικοῦ πολέμου, ἠναγκάσθη ἡ ἡττηθεῖσα Ἑνετία νὰ ἐκχωρήσῃ τὴν Τένεδον εἰς τοὺς νικητάς. Ὁ Μουάτσος ἠρνήθη νὰ συμμορφωθῇ πρὸς τὴν περὶ παραδόσεως τῆς νήσου διαταγὴν τῆς κυβερνήσεώς του, ἀνεκήρυξεν ἑαυτὸν ἡγεμόνα τῆς Τενέδου καὶ ἐπὶ ἑπτὰ ὅλους μῆνας ἀντέστη κατὰ τῶν ἐκστρατευσάντων ἐναντίον του ἐνετικῶν δυνάμεων. Ὑποκύψας ἐν τέλει εἰς τὴν ἀνωτέραν βίαν, ἐσυνθηκολόγησε καὶ ἀμνηστευθεὶς ἀπῆλθεν εἰς Κρήτην μετὰ πολλῶν Τενεδίων, ἐνῷ οἱ λοιποὶ τῆς νήσου κάτοικοι μετηνάστευσαν πανοικεὶ εἰς Εὔβοιαν.

— 5) *Ματθαῖος*. Ἑνετὸς πρόκριτος ἐν Κρήτῃ, ἀποσταλεὶς μετὰ τοῦ Ν. Γριμάνη εἰς Ἑνετίαν, ὅπως παρακαλέσῃ τὴν κυβέρνησιν τῆς δημοκρατίας ν' ἀπαγορεύσῃ τὴν ἐκ νέου ἐγκατάστασιν κατοίκων ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Λασηθίου, ὡς ἐπικίνδυνον διὰ τὴν ἀσφάλειαν τῆς ἐπὶ τῆς νήσου ἐνετικῆς κυριαρχίας (βλ. λ. *Λασήθιον*).

— 6) *Ἐμμανουήλ*. Ἄρχων ἐν Κρήτῃ ἐπὶ ἐνετοκρατίας, μέλος τοῦ δεκαμελοῦς συμβουλίου τῆς νήσου κατὰ τὸ τελευταῖον ἔτος (1669) τῆς ἀντιστάσεως τοῦ Χάνδακος κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων εἰς Κρήτην Τούρκων.

— 7) Πέτρος. Μέλος καὶ οὗτος τοῦ ἐν Κρήτῃ δεκαμελοῦς συμβουλίου, συγχρόνως μετὰ τοῦ προηγουμένου.

— 8) *Γεώργιος*. Ἐκ τῶν ἐν Κρήτῃ προκρίτων κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους τῆς ἐν τῇ νήσῳ ἐνετικῆς κυριαρχίας. Μετὰ τὴν παράδοσιν τοῦ Χάνδακος (1669) ἐπανελθὼν εἰς Ἑνετίαν, ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν βιβλίου, ἐν ᾧ ἐκτίθενται συνοπτικῶς πολλαὶ ἱστορικαὶ καὶ στατιστικαὶ εἰδήσεις περὶ Κρήτης, ἀρχόμεναι ἀπὸ τοῦ 1203, καὶ παρατίθενται πίνακες τῆς γενεαλογίας 133 εὐγενῶν ἐνετοκρητικῶν οἰκογενειῶν. Τοῦ βιβλίου τούτου σῴζονται δύο ἀντίγραφα, ἓν ἐν τοῖς ἀρχείοις τοῦ ἀστικοῦ μουσείου Correr καὶ ἕτερον ἐν τῇ Μαρκιανῇ βιβλιοθήκῃ.

— 9) *Ἰωάννης-Ἀντώνιος*. Σύγχρονος τοῦ προηγουμένου Ἑνετὸς ἐν Κρήτῃ. Συμμετέσχεν ὡς κυβερνήτης γαλέρας εἰς νικηφόρον ναυμαχίαν τοῦ ἐνετικοῦ στόλου κατὰ τοῦ τουρκικοῦ πρὸ τῶν Δαρδανελλίων (1649) καὶ εἰς ἄλλας πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις μέχρι τῆς ὁριστικῆς κατακτήσεως τῆς Κρήτης ὑπὸ τῶν Τούρκων (1669). Ἐγκατασταθεὶς τότε εἰς Ἑνετίαν, ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν τῶν ἑξῆς ἔργων: 1) Ἱστορίας τῆς Ἑνετίας ὑπὸ τὸν τίτλον «Historia del governo antico e presente della republica di Venezia» (Κῶδιξ 963—964 Cl. VII ital. τῆς Μαρκιανῆς βιβλιοθήκης). 2) Χρονογραφίας τῶν ἐν Κρήτῃ εὐγενῶν ἐνετικῶν οἰκογενειῶν ἀπὸ τῆς καταλήψεως τῆς νήσου ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν μέχρι τῆς τουρκικῆς κατακτήσεως (1669). 3) Μονογραφιῶν ἐκ 4 ὀγκωδῶν τόμων περὶ τοῦ ἐν Κρήτῃ Ἑνετοτουρκικοῦ πολέμου 1645—1669, ὑπὸ τὸν τίτλον «Diario della guerra di Candia» (ἥτις τῷ 1850 εὑρίσκετο εἰς τὴν ἐν Τεργέστῃ βιβλιοθήκην τοῦ Κ. Κουμάνου). Ἀπέθανεν ἐν Ἑνετίᾳ τῷ 1702.

— 10) *Ἐρρῖκος-Ἐμμανουήλ*. Γεννηθεὶς τῷ 1819 ἐν Κυθήροις, ἐγκατεστάθη νεώτατος εἰς Χανιά. Ἀπελαθεὶς ἐκ Κρήτης ὑπὸ τῶν Τούρκων τῷ 1866 ἕνεκα τῶν πατριωτικῶν αὐτοῦ φρονημάτων, κατώρθωσε νὰ ἐπανέλθῃ μετά τινα ἔτη ὡς ὑποπρόξενος τῆς Ἀγγλίας ἐν Χανίοις. Τὴν θέσιν ταύτην κατεῖχε τῷ 1878, ὅτε ἀπεστάλη εἰς τὴν ἐν Βάμῳ τοῦ Ἀποκορώνου συνεδριάζουσαν ἐπαναστατικὴν τῶν Κρητῶν συνέλευσιν, ἵνα προδιαθέσῃ αὐτὴν εἰς τὴν ἀποδοχὴν τῶν ἐν Χαλέπᾳ ἀποφασισθέντων προνομίων (βλ. ἄρθρα *Κρήτη* καὶ *Χαλέπα*).

Πλὴν τῶν ἐν Κρήτῃ Μουάτσων, ἀναφέρονται ἐπίσης οἱ κατωτέρω, ζήσαντες καὶ δράσαντες εἰς ἄλλας ἑλληνικὰς νήσους:

— 1) *Μᾶρκος*. Καστελλᾶνος Ἑνετὸς ἐν Κυθήροις περὶ τὸ 1467.

— 2) *Λορέντζος*. Διοικητὴς τῆς Τήνου καὶ Μυκόνου κατὰ τὸ 1431.

— 3) *Μᾶρκος*. Διοικητὴς τῆς Τήνου καὶ Μυκόνου κατὰ τὸ 1439.

— 4) *Ἰωάννης-Γεώργιος*. Διοικητὴς τῆς Τήνου καὶ Μυκόνου τῷ 1547, ἀποκρούσας μετὰ θάρρους τὴν κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐπιδρομὴν τῶν Τούρκων κατὰ τῆς Τήνου, δι' ὃ καὶ ἠμείφθη γενναίως ὑπὸ τῆς ἐνετικῆς κυβερνήσεως.

— 5) *Λουδοβῖκος*. Διοικητὴς τῶν νήσων Σκοπέλου καὶ Σκιάθου κατὰ τὸ 1511.

— 6) *Μᾶρκος*. Διοικητὴς τῆς Τήνου καὶ Μυκόνου τῷ 1584.

— 7) *Μαρῖνος*. Προβλεπτὴς (proveditor) τῆς Κεφαλληνίας κατὰ τὸ 1627.

— 8) *Δομίνικος*. Προβλεπτὴς τῆς Κεφαλληνίας περὶ τὸ 1785. Ἦτο ἀνὴρ λόγιος καὶ ἐνθουσιώδης προστάτης τῆς παιδείας. Ἡ οἰκία του ἦτο τὸ ἐντευκτήριον τῶν λογίων, ἐνηργοῦντο δ' ἐν αὐτῇ τακτικαὶ διαλέξεις ἐπιστημονικαί, ἐνώπιον πλήθους φιλομαθῶν καὶ λογίων.

— 9) *Πέτρος-Ἀντώνιος*. Καθολικὸς ἱερεὺς ἐν Ἑνετίᾳ, διατελέσας ἀπὸ τοῦ 1750—1758 βικάριος, ἤτοι ἐκκλησιαστικὸς ἐπίτροπος, παρὰ τῇ ἐν Ἑνετίᾳ ἑλληνικῇ κοινότητι. Ἦτο ἀνὴρ συνετός, πεπαιδευμένος καὶ θερμὸς τῶν Ἑλλήνων φίλος, δι' ὅ, καίτοι κληρικὸς καθολικός, ὑπερησπίσθη μετὰ σθένους τὴν ἑλληνικὴν ἐκείνην κοινότητα κατὰ τῶν ὑπερφιάλων ἀξιώσεων τοῦ Πάπα. Ν. ΚΛΣ—ΕΡ. Μ.

**μουγγαίνω**, ἀόρ. *ἐ)μούγγανα — ἐ)μουγγάθηκα*· δημοτ., καθιστῶ μουγγόν, ἄλαλον.

**Μουγγὰρ** (El-Moungar) *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τῆς Σαχάρας (βλ. λ. *Ἐλ-Μουγγάρ*).

Digitized by Google

**Μουγγλιοὶ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Καρυὲς* (βλ.λ.) Χ. Δ.

**μουγγός**, *—ή, —ό*· δημοτ., ἄλαλος, βωβός.

**μούγγρα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἑνιαχοῦ τῆς Ἑλλάδος τοῦ φυτοῦ *κράμβη ἡ λαχανώδης*.

**μουγγρητὸ** (τό)· δημοτ., ἡ φωνὴ τοῦ βοός, μυκηθμός, ἄλλως *μούγγρισμα*.

**μουγγρὶ** (τὸ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἰχθύος *γόγγρος ὁ κοινὸς* (βλ. λ.).

**Μουγγρὶ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Νάξου (πλάτ. 37° 05′ 30″ Β., μῆκ. 25° 21′ 30″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1837 : Paros and Naxos), βορεία ἄκρα τῆς χερσονησῖδος Ἁγίου Προκόπη τῆς χωριζούσης ἀμφιδύμως τοὺς ὅρμους τῆς Ναξιᾶς καὶ τοῦ Ἁγίου Προκόπη. Σ. Ε. Λ.

**μουγγρίζω**· δημοτ., ἐπὶ τῶν βοῶν, φωνάζω, μυκῶμαι || μεταφ. ἐπὶ ἀνθρώπου, φωνάζω ἰσχυρῶς ἕνεκα πόνων, ἀχομανάω: «ὅλη νύχτα μούγγριζε ἀπὸ τοὺς πόνους».

**μούγγρισμα** (τό)· δημοτ., ἡ φωνὴ τοῦ βοός, μυκηθμός, ἄλλως *μουγγρητό*.

**Μουγδερὲκ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Μελισσουργειό* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουγεαρίτης** (ὁ) (Mugearit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα ἡφαιστειογενὲς στιφρὸν τῆς οἰκογενείας τῶν *τραχυδολεριτῶν*. Ἔχει χρῶμα σκοτεινότεφρον ἕως μαῦρον, διακρίνονται δὲ πολλάκις ἐντὸς τῆς μάζης αὐτοῦ μακροσκοπικῶς σπάνιοι κρύσταλλοι ἀστρίων καὶ ὀκτάεδρα μαγνητίτου. Τὰ ὀρυκτολογικὰ συστατικὰ τοῦ πετρώματος τούτου εἶναι ὀρθόκλαστον καὶ ὀλιγόκλαστον, ὀλιβίνης, αὐγίτης, μαγνητίτης εἰς πλουσίαν περιεκτικότητα καὶ πολλάκις ἀπατίτης. Τὸ ὀρθόκλαστον καὶ τὸ ὀλιγόκλαστον κατέχουν τὰ 70 % τοῦ πετρώματος, ὑπάρχουν ὅμως καὶ παραλλαγαὶ αὐτοῦ, εἰς τὰς ὁποίας τὰ ἔγχροα ὀρυκτολογικὰ συστατικὰ εἶναι πλουσιώτερα. Ἀπαντᾷ εἰς τὸ Druim na Criche μεταξὺ τοῦ Roineval καὶ Portree ἐπὶ τῆς νήσου Skye μαζὶ μὲ ὀλιβινικὸν δολερίτην κ. ἄ. Γ. Β.

**Μουγελτὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Χαλδίας τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 30 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες κατέφυγον εἰς Ἑλλάδα τῷ 1922. Ε. Ι. Χ.

**Μούγια** *[Γεωγρ.]*. Νησὶς τῶν Θεσσαλικῶν Σποράδων (πλάτ. 39° 27′ ³/₄ Β., μῆκ. 24° 10′ 40″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2072 : Scopelos Group), ἓν μίλλιον νοτίως τῆς Ψαθούρας, πρὸς ἣν συνδέεται δι' ὑφαλισθμοῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μούγιαρτ** (Moeyaert), ***Νικόλαος***. Ὀλλανδὸς ζωγράφος τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1669. Διέτριψεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ἰταλίᾳ ὅπου ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Ἐλσάϊμερ Ἐπιστρέψας τῷ 1630 εἰς Ἄμστερνταμ ἐγένετο δεκτὸς εἰς τὴν συντεχνίαν τῶν ζωγράφων, ἔσχε δὲ πολλοὺς ὀνομαστοὺς μαθητάς, ἐν οἷς τούς : Κόνινκ, Μπέρχεμ, Βέενιξ κλπ. Κάλλιστοι ἐκ τῶν πινάκων του εἶναι οἱ ἑξῆς: «Ἔρση καὶ Ἑρμῆς» (Χάγη), «Ἐπίσκεψις τοῦ Ἀντιόχου παρὰ τῷ οἰωνοσκόπῳ» (Ἄμστερνταμ), «Ὁ Ἀβραὰμ περιστοιχιζόμενος ὑπὸ τῆς οἰκογενείας καὶ τοῦ ποιμνίου του» (Ἄμστερταμ), «Ρούθ καὶ Βοόζ» καὶ «Βακχεῖα» (ἀμφότερα ἐν Βερολίνῳ). Χ. Δ.

**μουγιλίδαι** (οἱ) (Mugillidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀκανθοπτερυγίων*, περιλαμβάνουσα ἰχθῦς μετρίου μήκους, μὲ σῶμα πεπιεσμένον ἐκ τῶν πλευρῶν καὶ στόμα μικρόν. Ἀπαντῶσιν εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Μεσογείου καὶ ἁλιεύονται διὰ τὸ νοστιμώτατον κρέας των. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μουγγίλος*, γνωστὸς παρ' ἡμῖν ὑπὸ τὸ ὄνομα *κέφαλος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**Μουγίλωνες** (οἱ) (Mugilones) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Κεντρικῆς Γερμανίας, ὑποταχθεὶς ὑπὸ τοῦ Μαροβόδου, βασιλέως τῶν Μαρκομμάνων, περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Α′ μ. Χ. αἰῶνος. Α. Θ. Σ.

**μουγιόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *χαμαίμηλον τὸ κοινόν*.

**μουγκάλισμα** (τό)· ἰδιωμ. Κρήτ., ἡ φωνὴ τοῦ βοός, ὁ μυκηθμός. Ι. Δ. Μ.

**Μουγκὰν** (Mougan, ἀραβ. *Μουκὰν*) *[Γεωγρ.]*. Πεδινὴ χώρα εἰς τὰ ΒΑ. τῆς Περσίας, μεταξὺ τοῦ Ἀζερμπαϊτζὰν καὶ τῶν περσικῶν ἐπαρχιῶν Σιρβὰν καὶ Γκιλάν, εἰς τὸ τέλος τῆς κοιλάδος τῶν ποταμῶν Κύρου καὶ Ἀράξου. Εἶναι ἐν μέρει ἀμμώδης καὶ βαλτώδης. Τὸ ἀνατολικὸν αὐτῆς τμῆμα ἀνήκει εἰς τὴν Περσίαν, τὸ δὲ δυτικὸν εἰς τὸ κράτος τοῦ Ἀζερμπαϊτζάν. Ἔχει ἐπιφάνειαν 4.440 τ. χλμ. Ἦτο ἄλλοτε χώρα πολύρρυτος καὶ εὔφορος, ἀρδευομένη διὰ διωρύγων, κατεστράφη ὅμως κατὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Μογγόλων, τὸν ΙΓ′ αἰῶνα. Ν. Μ.

**Μουγκελάτικα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Λάκκας τῆς ἐπαρχίας Παξῶν τοῦ νομοῦ Κερκύρας. Κάτ. (1928) 63. Χ. Δ.

**Μοῦγλα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἐν τῷ νομῷ Σμύρνης. Κάτ. 20.000, ἐξ ὧν πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν 3.000 Ἕλληνες, ἀσχολούμενοι εἰς τὸ ἐμπόριον καὶ τὰς τέχνας καὶ διατηροῦντες ἀξιολογώτατα σχολεῖα ἀρρένων καὶ θηλέων. Ἡ πόλις κεῖται εἰς τοὺς πρόποδας τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Μπαμπᾶ δὰγ (Συλβάκου). Ἐπὶ παρακειμένου λόφου ὑπάρχουσιν ἐρείπια ἀκροπόλεως. Ἡ πρὸς τὰ ΝΔ. ἄκρα τοῦ ὀροπεδίου κατέρχεται ἀποτόμως πρὸς τὴν θάλασσαν τοῦ Κεραμεικοῦ κόλπου, ὅπου ὁ μικρὸς λιμὴν *Γκιόβα* (*Ἴδυμα*), συνδεόμενος μετὰ τῶν Μούγλων δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ καὶ ἀπέχων δίωρον. Κ. ΛΣ

**μούδα** (ἡ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *σειρά*.

**Μούδα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς δυτικῆς πλευρᾶς τῆς Κυζίκου, τῆς Χερσονήσου (πλάτ. 40°23′25″ Β., μῆκ. 27°41′15″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224 : Sea of Marmara). Σ. Ε. Λ.

**Μουδανιὰ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἐπὶ τῆς ἀσιατικῆς παραλίας τῆς Προποντίδος, εἰς τὴν νοτίαν ὄχθην τοῦ Κιανοῦ κόλπου, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Προύσης, ἀπέναντι τοῦ ἀκρωτηρίου Μπὸξ-Μπουρνοὺ (26° 35′ Α. μήκ. καὶ 40° 22′ Β. πλάτ.) εἰς ἀπόστασιν 30 χλμ. ἀπὸ τῆς Προύσης καὶ διὰ τῆς σιδηροδρομικῆς ὁδοῦ 42. Ἔχει (1927) 4.989 κατοίκους, πάντας Μουσουλμάνους. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν ἑλληνικῶν καὶ τουρκικῶν πληθυσμῶν οἱ κάτοικοι ἀνήρχοντο εἰς 5.900, ἐξ ὧν, κατὰ τὰς τουρκικὰς στατιστικάς, 3.908 ἦσαν Ἕλληνες (μετοικήσαντες εἰς τὸ Καργῆ-Λιμὰν τῆς Χαλκιδικῆς, καὶ κτίσαντες ἐκεῖ τὰ *Νέα Μουδανιά*, βλ. λ.) καὶ 1.992 Τοῦρκοι. Ἡ ἑλληνικὴ κοινότης ἦτο σπουδαιοτάτη, διατηροῦσα 6 σχολὰς ἀρρένων καὶ 2 θηλέων, ἐπίσης δὲ καὶ 3 ἐκκλησίας. Ἡ ἐμπορικὴ κίνησις τῆς πόλεως ἦτο ἄλλοτε μεγάλη, ἀνερχομένη ἐτησίως εἰς 30.000 τόννους ἐμπορευμάτων, διότι ὁ λιμὴν ἦτο ἐπίνειον ἐνδοχώρας περιλαμβανούσης τὸ βιλαέτιον Προύσης.

Τὰ Μουδανιὰ κατέχουσι σχεδὸν τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας *Μυρλείας*, ἀποικίας τῆς Κολοφῶνος. Ἴχνη τῆς παλαιᾶς ταύτης πόλεως ἀπαντῶσιν εἰς τὰ γειτονικὰ χωρία Παλαιοχώρι καὶ Ἰσαρλίκ. Ἡ Μύρλεια ἐκυριεύθη καὶ κατεστράφη συγχρόνως μετὰ τῆς Κίου ὑπὸ Φιλίππου τοῦ Ε′, βασιλέως τῆς Μακεδονίας. Ἡ κυριευθεῖσα περιοχὴ ἐδόθη τότε εἰς τὸν γαμβρὸν αὐτοῦ Προυσίαν, βασιλέα τῆς Βιθυνίας, ὅστις ἀνῳκοδόμησε τὴν Μύρλειαν καὶ ἔδωκεν εἰς αὐτὴν τὸ ὄνομα τῆς συζύγου του *Ἀπαμείας*, θυγατρὸς τοῦ Φιλίππου. Τὸ ὄνομα τοῦτο διετηρήθη κατὰ τὴν βυζαντινὴν ἐποχήν. Οἱ σταυροφόροι ὠνόμασαν αὐτὴν Montagnac, ἐκ τούτου δὲ προῆλθε τὸ τουρκικὸν ὄνομα *Μουδανιὰ* (Moudania). Οἱ Τοῦρκοι κατέκτησαν τὴν πόλιν ἐπὶ σουλτάνου Ὀρχάν, περὶ τὸ 1.330.

Ἡ ὁμώνυμος ὑποδιοίκησις ἔχει ἐπιφάνειαν 500 τετρ. χλμ. καὶ 13.838 κατοίκους. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν εἶχε 35.114 κατοίκους, ἐξ ὧν οἱ ἡμίσεις ἦσαν Ἕλληνες. Τὸ κυριώτερον αὐτῆς προϊὸν εἶναι αἱ ἐλαῖαι καὶ τὸ ἐλαιόλαδον. Ν. Μ.

*—[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὰ *Μουδανιὰ* μετὰ τὴν ἀνακωχὴν τοῦ Μούδρου τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1918, κατείχοντο ὑπὸ ἀγγλικῆς φρουρᾶς, ἣν ἀντικατέστησε τὴν 27 Ἰουνίου 1920 τάγμα τοῦ 4ου συντάγματος Ἀρχιπελάγους, μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Προύσης ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ. Ἔκτοτε τὰ Μουδανιὰ ἀπετέλεσαν, μέχρι τῆς ἐκ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἀποχωρήσεως τοῦ Γ′ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, βάσιν ἐφοδιασμοῦ αὐτοῦ. Τὴν 30 Αὐγούστου 1922 ἡ 11η ἑλληνικὴ μεραρχία (ἀποτελουμένη ἐκ τῶν 17ου καὶ 45ου συνταγμάτων πεζικοῦ, 20 πυροβόλων πεδινῶν, 10 ὀρειβατικῶν καὶ 2 τοιούτων Σκόντα), ὑποχωροῦσα πρὸς δυσμὰς διὰ Μουδανιῶν, συνῆψε διὰ τῆς ὀπισθοφυλακῆς αὐτῆς σκληρὸν ἀγῶνα πρὸς καταδιώκοντα τουρκικὰ τμήματα πεζικοῦ καὶ ἱππικοῦ, ἐνισχυθέντα καὶ ὑπὸ πολυαρίθμων Τούρκων χωρικῶν, ἐνῷ, ἐξ ἄλλου, γαλλικὸν τάγμα ἀποβιβασθὲν εἰς Μουδανιὰ ἠμπόδιζεν εἰς αὐτὴν τὴν διὰ τῆς πόλεως ἐλευθέραν διάβασιν. Μέρος τῆς μεραρχίας κατώρθωσε τότε να διολισθήσῃ πρὸς δυσμὰς διὰ τῶν νοτίως τῶν Μουδανιῶν ὑψωμάτων, ἐνῷ ἡ λοιπὴ τῶν δύο συνταγμάτων αὐτῆς δύναμις, μεθ' ἅπαντος τοῦ πυροβολικοῦ, ἀποκοπεῖσα τῆς πρὸς Πάνορμον ὁδοῦ ὑποχωρήσεως αὐτῆς, κυκλωθεῖσα καὶ πανταχόθεν βαλλομένη, ἔπεσε, κατ' ἀναπόδρεπτον ἀνάγκην, αἰχμάλωτος τῶν Τούρκων. Ν. ΣΩ

**—Μουδανιῶν κόλπος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὁ κατὰ τὴν ἀνατολικὴν παράλιον τῆς Προποντίδος σχηματιζόμενος κόλπος νοτίως τῆς χερσονησώδους προβολῆς Μπεϊλὶκ-Καρλὶκ-Νταγκλὰρ καὶ διανοιγόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Μπὸξ μπουρνοὺ καὶ Τρίγλια (πλάτ. 40°23′45″ Β., μῆκ. 28°48′00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224 : Sea of Marmara), εἰς εὖρος 8 ¹/₂ μιλ. καὶ εἴσδυσιν 17 μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Τζεμλίκ. Ὀνομαζόμενος ὑπὸ τῶν Τούρκων *Ἰτζὶρ λιμὰν* εἶναι ὁ *Κιανὸς* κόλπος τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

— **Μουδανιῶν *συνθήκη***. Μετὰ τὴν ὁλοσχερῆ ἐκκένωσιν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ, οἱ ἐν Παρισίοις ἀντιπρόσωποι τῶν τριῶν συμμάχων μεγάλων Δυνάμεων Γαλλίας, Ἀγγλίας καὶ Ἰταλίας (Πουανκαρέ, Κῶρζον καὶ Σφόρτσα) ἐπεμβάντες ἀπέστειλαν τὴν 10/23 Σεπτεμβρίου 1922 πρόσκλησιν εἰς Ἄγκυραν, παρακαλοῦντες τὴν κυβέρνησιν τῆς Μεγάλης Τουρκικῆς Ἐθνοσυνελεύσεως ν' ἀπαντήσῃ ἂν ἦτο διατεθειμένη ν' ἀποστείλῃ ἀντιπροσώπους εἰς Βενετίαν ἢ ἀλλαχοῦ ὅπως διαπραγματευθῶσι τοὺς ὅρους τῆς εἰρήνης μεταξὺ Τουρκίας καὶ τῶν Συμμάχων, δηλοῦντες αὐτῇ καὶ τὴν ἀπόφασίν των νὰ ἱκανοποιήσωσι τὰς ἀπαιτήσεις τῆς Τουρκίας, ἀποδίδοντες αὐτῇ τὴν Ἀνατολικὴν Θράκην μέχρι τοῦ Ἕβρου καὶ τῆς Ἀδριανουπόλεως. Αἱ λεπτομέρειαι τῆς ἐκκενώσεως τῆς Ἀνατολικῆς Θράκης θὰ ἐκανονίζοντο ὑπὸ τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει στρατηγῶν τῶν συμμάχων ἐν συμφωνίᾳ μὲ τοὺς στρατιωτικοὺς ἀντιπροσώπους τῆς Τουρκίας καὶ τῆς Ἑλλάδος, συνερχομένους εἰς σύσκεψιν εἰς Μουδανιὰ ἢ εἰς Νικομήδειαν. Ἡ διακοίνωσις αὕτη ἀπετέλεσεν οὐσιαστικῶς τὴν βάσιν τῶν ἐδαφικῶν ἀξιώσεων τῆς Τουρκίας. Τὴν 20ὴν Σεπτεμβρίου / 3ην Ὀκτωβρίου 1922 συνῆλθον πράγματι εἰς Μουδανιὰ ὁ στρατηγὸς Χάριγκτων διὰ τὴν Ἀγγλίαν, ὁ στρατηγὸς Μομμπέλλι διὰ τὴν Ἰταλίαν, ὁ στρατηγὸς Σαρπὺ διὰ τὴν Γαλλίαν, ὁ στρατηγὸς Ἰσμὲτ πασᾶς διὰ τὴν Τουρκίαν καὶ ὁ στρατηγὸς Ἀλέξ. Μαζαράκης-Αἰνιὰν διὰ τὴν Ἑλλάδα. Αἱ συσκέψεις ἐγίνοντο ἐπὶ ἀγγλικοῦ θωρηκτοῦ, ἐφ' οὗ ἐκαλοῦντο διαδοχικῶς οἱ Τοῦρκοι ἀντιπρόσωποι, παραμένοντες ἐν τῇ πόλει τῶν Μουδανιῶν, καὶ οἱ Ἕλληνες τοιοῦτοι, παραμένοντες εἰς τὸ πλοῖον «Αἰγαῖον». Οἱ σύμμαχοι ἀντιπρόσωποι συνεδρίασαν τὴν 20ὴν Σεπτεμβρίου/3ην Ὀκτωβρίου 1922, ἐκάλεσαν δὲ τὴν ἐπομένην καὶ τοὺς Τούρκους ἀντιπροσώπους καὶ ἔλαβον ἀποφάσεις τῶν Ἑλλήνων ἀντιπροσώπων εὑρισκομένων ἐπὶ ἐπλῷ. Τὴν 22αν Σεπτεμβρίου/5ην Ὀκτωβρίου 1922 καλέσαντες τοὺς Ἕλληνας ἀντιπροσώπους ἀνεκοίνωσαν αὐτοῖς τὰ ἀποφασισθέντα, καθ' ἃ θὰ ἐξεκενοῦτο ἡ Ἀνατολικὴ Θράκη ὁλοσχερῶς μέχρι τοῦ Ἕβρου, θὰ ἐξητάζοντο δὲ ἤδη αἱ λεπτομέρειαι τῆς ἐκκενώσεως. Ἡ ἑλληνικὴ ἀντιπροσωπεία τότε ἐπεζήτησε νὰ ἐπιτύχῃ, ἀφ' ἑνὸς μὲν ὅπως ἡ ἀποχώρησις τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ περιορισθῇ μέχρι τῆς γραμμῆς τῆς βουλγαροτουρκικῆς μεθορίου τοῦ 1915, ἥτις ἔκειτο πᾶσα πέραν τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ἕβρου, καθ' ὅσον ἡ κατανομὴ τοῦ δυτικῶς τῆς γραμμῆς ταύτης ἐδάφους, ὄντος βουλγαρικοῦ, εἶχε κανονισθῇ διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Νεϊγὺ καὶ συνεπῶς ἦτο ἀνεξάρτητος τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν, ἀφ' ἑτέρου δέ, ὅπως ἐπιβραδυνθῇ ἡ κατάληψις τῆς Ἀνατολικῆς Θράκης ὑπὸ τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ, διὰ νὰ δοθῇ καιρὸς εἰς τὸν ἑλληνικὸν πληθυσμὸν νὰ μεταναστεύσῃ εἰς τὴν Ἑλλάδα, συναποκομίζων πᾶσαν τὴν κινητὴν αὐτοῦ περιουσίαν. Ἀλλ' ἐπειδὴ αἱ ὑποδείξεις τῆς ἑλληνικῆς ἀντιπροσωπείας δὲν ἐγένοντο δεκταί, ἠρνήθη αὕτη νὰ ὑπογράψῃ τὴν συνθήκην, ἣν αἱ λοιπαὶ μετέχουσαι ἀντιπροσωπεῖαι τῶν Δυνάμεων ὑπέγραψαν τὴν 28ην Σεπτεμβρίου/11ην Ὀκτωβρίου 1922 καθ' ἣν ὡς γραμμὴ ἀποχωρήσεως τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ὡρίζετο ἡ δυτικὴ ὄχθη τοῦ Ἕβρου. Ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις ὅμως συνεμορφώθη πρὸς τὴν συνθήκην ἐκείνην καὶ ἐξεπλήρωσε τοὺς ὅρους αὐτῆς. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μουδανιά, *Νέα*** — *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς ἐπαρχίας Χαλκιδικῆς τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, συνοικισθεῖσα μετὰ τὴν ἀνταλλαγὴν τῶν πληθυσμῶν ὑπὸ προσφύγων Ἑλλήνων τῶν χωρίων τῆς Βιθυνίας Ἐλιγμοί, Σιγή, Νιοχωράκι καὶ κυρίως τοῦ ἐπινείου τῆς Προύσης Μουδανιῶν. Κάτ. (1928) 1.358. Ἡ κωμόπολις ἱδρύθη ἐπὶ ἐρήμου τοποθεσίας καλουμένης *Κιργκῆ Λιμάνι*, ἀπέχει δὲ τῆς Θεσσαλονίκης 65 χλμ. Λόγῳ τῆς ἐπικαιροτάτης θέσεως αὐτῆς καὶ τῆς παντελοῦς ἐλλείψεως ὁδῶν ἐν Χαλκιδικῇ τὰ Νέα Μουδανιὰ ἔλαβον ἀμέσως ζωηροτάτην ἐμπορικὴν ἀνάπτυξιν, συγκεντρώσαντα ὅλον τὸ ἐμπόριον τῆς ἐνδοχώρας. Τὴν ὑγείαν τῆς ἀρτισυστάτου κωμοπόλεως ἠπείλει τὸ παρακείμενον ἕλος ἐκτάσεως 600 στρεμμάτων περίπου, ἀλλ' ἐξυγιάνθη τὸ μέρος δι' ἐπιχωματώσεως. Δ. Ν. Λ.

**Μουδάρι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῶν Κυθήρων (πλάτ. 36°22′ 23″ Β., μῆκ. 22°56′ ... Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3372 : Gulf of Lakonikos), ἡ Β... τῆς νήσου ἐσχατιά. Ἐπ' αὐτοῦ εἷς τῶν ἀρίστων ἑλληνικῶν φάρων ἱδρυθεὶς τῷ 1857 ἐπὶ ἀγγλικῆς προστασίας, μετατραπεὶς δὲ τῷ 1890 καὶ τῷ 1925. Παρὰ τὸν φάρον μήπω λειτουργήσας σηματοφόρος. Ὀνομάζεται παρά τινων καὶ *Σπαθί*. Σ. Ε. Λ.

**μουδαρίνη** (ἡ) (Mudarin) *[Φαρμακολ.]*. Καλεῖται οὕτω πικρὰ οὐσία ἀπομονωθεῖσα ἐκ τοῦ φλοιοῦ τῆς ῥίζης τοῦ φυτοῦ Calotropis gigantea, R. Εἶναι εὔθραυστος, ἀνοικτῶς φαιὰ ἄμορφος μᾶζα, λίαν πικρᾶς γεύσεως, ἥτις λαμβανομένη δρᾷ ὡς ἐμετικόν. Εἰς τὸ ψυχρὸν ὕδωρ εἶναι εὐδιάλυτος, εἰς 23°

Digitized by Google

ὅμως ἀρχίζει τὸ διάλυμα αὐτῆς νὰ θολοῦται καὶ σχηματίζει πήκτωμα. Κ. Γ. Μ.

**Μουδάτσος**· βλ. λ. Μουάτσος

**μουδιάζω**, καὶ *μουδιάω*, *ἀόρ. ἐ)μούδιασα*, *παθ. μετχ. μουδιασμένος*· πάσχω νάρκην, *αἱμωδιῶ* (βλ.λ.): «ὅταν τρώω ξινὰ μουδιάζω», «μούδιασαν τὰ δόντια μου», «μούδιασαν τὰ πόδια μου ἀπὸ τὸ καθισιό» || χάνω τὴν θέρμην, τὸν ζῆλον πρός τι, ἐλαττοῦται ἡ ὁρμή μου: «ἀπὸ τὰς πληροφορίας ἤμην ἐνθουσιασμένος, ὅταν ὅμως τὴν εἶδα, μούδιασα» || χάνω τὸ θάρρος μου, συστέλλομαι, αἰσθάνομαι ἠθικὴν κατάπτωσιν: «ὅταν τοῦ εἶπαν διὰ τὸ ἔγκλημα, μούδιασε», «μούδιασε, διότι εἶναι ἔνοχος», «τὸν εἶδα μουδιασμένο, φαίνεται ὅτι δὲν πάνε καλὰ οἱ δουλειές του» || μεταβ., κάμνω τινὰ νὰ χάσῃ τὸν ἐνθουσιασμόν του, τὸν ζῆλόν του, τὸ θάρρος του: «μὲ μούδιασαν τὰ λόγια του».

**μούδιασμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μουδιάζω*, αἱμωδίασις: «τὸ μούδιασμα τῶν δοντιῶν», «δὲν μπορῶ νὰ σηκωθῶ ἀπὸ τὸ μούδιασμα τοῦ ποδαριοῦ μου».

**μουδιάστρα** [*Ζῳολ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἰχθύος *νάρκη* (βλ. λ.).

**μουδίρης** (ὁ), ἢ *μουντίρης* ἢ *μουντούρης* (ἀραβ. *μουντίρ*). Ἐν τῇ διοικητικῇ ὑπηρεσίᾳ τῆς Τουρκίας ὁ δημόσιος ὑπάλληλος ὁ διοικῶν τὸν ναχιέ, τὴν μικροτέραν διοικητικὴν μονάδα, εἶδος δημάρχου οὐχὶ αἱρετοῦ, ἀλλὰ διοριζομένου ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως. Ἐν Αἰγύπτῳ ὁ μουδίρης ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸν νομάρχην. Ν. Μ.

**μουδιρία** (ἡ). Διοικητικὴ ὑποδιαίρεσις τῆς Αἰγύπτου, ἀντιστοιχοῦσα πρὸς τὸν νομόν.

**μουδόγλωσσο** (τὸ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βούγλωσσον τὸ κοινόν*.

**Μούδου** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἐμπόριον καὶ νῆσος τοῦ Αὐαλίτου κόλπου (βλ. λ. *Μούνδου*).

**Μοῦδρα** [*Γεωγρ.*]. Ἡ κατὰ τοὺς ξένους χάρτας ὀνομασία (Moodra island) τοῦ νησίου *Μαδουρῆ* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μοῦδρος** [*Γεωγρ.*]. Κώμη τῆς νήσου καὶ τῆς ἐπαρχίας Λήμνου τοῦ νομοῦ Λέσβου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῆς Α. παραλίας τοῦ ὁμωνύμου κολπίζοντος λιμένος, εἶναι τὸ σπουδαιότερον κέντρον τοῦ ἀνατολικοῦ τμήματος τῆς νήσου, συνδέεται δὲ μετὰ τοῦ Κάστρου δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, ἀλλὰ καὶ πρὸ αὐτοῦ κατὰ τοὺς Βαλκανικούς, ἔλαβε μεγάλην ἀνάπτυξιν, λόγῳ τῆς ἐκεῖ παραμονῆς πολλῶν ἀξιωματικῶν καὶ ναυτῶν τῶν ἐν τῷ λιμένι ὁρμούντων πολεμικῶν πλοίων. Ἔχει μέγα νεκροταφεῖον τῶν κατὰ τὸ διάστημα τῶν ἐπιχειρήσεων τῶν Δαρδανελλίων φονευθέντων καὶ ἀποθανόντων συμμάχων μετὰ δύο ἀναμνηστικῶν στηλῶν. Δημόσια καταστήματα ἔχει ὑποτελωνεῖον, ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παράγει δὲ σιτηρά, βάμβακα, καπνόν, κηπαῖα, ὄσπρια κλπ. καὶ ἔχει μικρὰν κτηνοτροφίαν καὶ μελισσοκομίαν. Κάτ. (1928) 1.795. Τὴν 30ὴν Ὀκτωβρίου 1918 ὑπεγράφη ἐν Μούδρῳ ἡ ἀνακωχὴ μεταξὺ τῶν συμμάχων δυνάμεων καὶ τῆς Τουρκίας. (βλ. κατωτ.).

— **Μοῦδρος** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Κόλπος τῆς Ν. ἀκτῆς τῆς Λήμνου, ἀνοιγόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Κουμπὶ καὶ Βελανίδι, εἰσχωρῶν βαθέως πρὸς Β., καὶ σχηματίζων ἀσφαλέστατον ὁμώνυμον φυσικὸν λιμένα (πλάτ. 39°52' Β., μήκ. 25°15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1661: Port Mudros). Τὸ στόμιον τοῦ λιμένος φράσσεται ὑπὸ ὑφάλων τινῶν καὶ ἔχει ἀριστερὰ τῷ εἰσπλέοντι τὴν νησῖδα Ἀλόγαν. Ὁ λιμὴν οὗτος ἐχρησίμευσεν ὡς πολύτιμον ὁρμητήριον τοῦ στόλου μας κατὰ τὸν Βαλκανικὸν πόλεμον. Ὁ στόλος μας κατέπλευσεν ἐν αὐτῷ τὸ πρῶτον τὴν 4 μ. μ. τῆς 7/20 Ὀκτωβρίου 1912, τὴν δὲ πρωΐαν τῆς ἑπομένης ἀπεβιβάσθη εἰς τὸν ΒΔ. τοῦ κόλπου μυχὸν τὸ ὑπὸ τὸν λοχαγὸν Κονταρᾶτον ἀποβατικὸν σῶμα, μετενεχθὲν ἐκεῖ διὰ τοῦ ἀτμοπλοίου «Πηνειός». Ἀλλὰ καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἔπαιξε σπουδαῖον μέρος, χρησιμοποιηθεὶς ὑπὸ τῶν συμμάχων. Σ. Ε. Λ.

— **Μούδρου** *συνθήκη*. Οὕτω εἶναι γνωστὴ ἡ ἀπὸ 31ης Ὀκτωβρίου 1918 μεταξὺ τῶν συμμάχων καὶ συνησπισμένων Δυνάμεων καὶ τῆς Τουρκίας συνομολογηθεῖσα ἐν Μούδρῳ συνθήκη ἀνακωχῆς, λήγοντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Ἡ συνθήκη αὕτη, συγκειμένη ἐξ εἴκοσι πέντε ἄρθρων, ὁρίζουσα δὲ ἐν τῷ τελευταίῳ αὐτῆς ἄρθρῳ ὅτι αἱ ἐχθροπραξίαι θὰ κατέπαυον τὴν μεσημβρίαν τῆς αὐτῆς ἡμέρας τῆς ὑπογραφῆς αὐτῆς, ἐπέβαλεν εἰς τὴν Τουρκίαν: α') Τὸ ἄνοιγμα τῶν στενῶν τῶν Δαρδανελλίων καὶ τοῦ Βοσπόρου πρὸς τὴν Μαύρην Θάλασσαν καὶ τὴν κατάληψιν τῶν φρουρίων τῶν ἰδίων στενῶν παρὰ συμμαχικῶν στρατευμάτων. β') Τὴν ὑπόδειξιν τῶν θέσεων, εἰς τὰς ὁποίας εἶχον τοποθετηθῆ τορπίλλαι καὶ τὴν παροχὴν πάσης βοηθείας πρὸς ἀλίευσιν αὐτῶν. γ') Τὴν συγκέντρωσιν ὅλων τῶν αἰχμαλώτων τῶν συμμάχων Δυνάμεων καὶ τῶν Ἀρμενίων αἰχμαλώτων εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἄμεσον παράδοσιν αὐτῶν εἰς τοὺς συμμάχους. δ') Τὴν ἄμεσον παράδοσιν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ, ἐξαιρέσει τοῦ ἀπαιτουμένου διὰ τὴν φρούρησιν τῶν συνόρων καὶ τὴν διατήρησιν τῆς ἐσωτερικῆς τάξεως. ε') Τὴν παράδοσιν ὅλων τῶν πολεμικῶν πλοίων. στ') Τὴν ἀναγνώρισιν εἰς τοὺς συμμάχους τοῦ δικαιώματος νὰ καταλάβωσι πᾶν στρατηγικὸν σημεῖον ἐν περιπτώσει καθ' ἣν ἡ κατάστασις ἤθελεν ἐξελιχθῆ ἐπικινδύνως διὰ τοὺς συμμάχους. ζ') Τὴν ἐλευθέραν χρῆσιν εἰς τὰ συμμαχικὰ πλοῖα παντὸς λιμένος καὶ ὅρμου κατεχομένου παρὰ τῶν Τούρκων. η') Τὴν χρῆσιν ὅλων τῶν ὑλικῶν ἐπανορθώσεως, τὰ ὁποῖα θὰ εὑρίσκοντο εἰς τοὺς τουρκικοὺς λιμένας. θ') Τὴν στρατιωτικὴν κατάληψιν παρὰ τῶν συμμάχων τοῦ συστήματος ὑπογείων διωρύγων τῆς Ταυρίδος. ι') Τὴν ἄμεσον ἀπομάκρυνσιν τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ ἐκ τῆς ΒΔ. Περσίας ἐκεῖθεν τῶν προπολεμικῶν συνόρων. ια') Τὸν ἔλεγχον τῶν συμμάχων ἐπὶ τῶν ὑποβρυχίων καλωδίων. ιβ') Τὴν ἀπαγόρευσιν νὰ καταστρέψῃ ναυτικόν, στρατιωτικὸν ἢ ἐμπορικὸν ὑλικόν. ιγ') Τὴν παραχώρησιν εὐκολιῶν εἰς τοὺς συμμάχους δι' ἀγορὰν ἀνθράκων, ναυτικοῦ ὑλικοῦ κλπ. καὶ τὴν ἀπαγόρευσιν ἐξαγωγῆς τοιούτων εἰδῶν. ιδ') Τὸν ἔλεγχον ὅλων τῶν σιδηροδρομικῶν δικτύων παρ' ἀξιωματικῶν τοῦ συμμαχικοῦ στρατοῦ καὶ τὴν κατάληψιν παρὰ τῶν συμμάχων τοῦ Βατούμ. ιε') Τὴν ἀποστράτευσιν πάσης φρουρᾶς εἰς τὸ Χετζάζ, Ἀσσυρίαν, Ὑεμένην, Συρίαν καὶ Μεσοποταμίαν καὶ τὴν μείωσιν τῶν στρατευμάτων τῆς Κιλικίας. ιστ') Τὴν παράδοσιν τῶν Τούρκων ἀξιωματικῶν, τῶν ὑπηρετούντων ἐν Τριπολίτιδι καὶ Κυρηναϊκῇ καὶ τὴν ὑποχρέωσιν τῆς Τουρκίας νὰ διακόψῃ πᾶσαν σχέσιν μετ' αὐτῶν καὶ τὴν ἀποστολὴν προμηθειῶν ἐν περιπτώσει καθ' ἣν δὲν θὰ συνεμορφοῦντο πρὸς τὴν σχετικὴν διαταγὴν τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως. ιζ') Τὴν παράδοσιν ὅλων τῶν κατειλημμένων λιμένων ἐν Τριπολίτιδι καὶ Κυρηναϊκῇ. ιη') Τὴν ἀπομάκρυνσιν ἐντὸς μηνὸς παντὸς Γερμανοῦ ἢ Αὐστριακοῦ ὑπηκόου ἐκ τοῦ τουρκικοῦ κράτους. ιθ') Τὴν τοποθέτησιν ἀξιωματικῶν τοῦ συμμαχικοῦ στρατοῦ παρὰ τῷ τουρκικῷ ὑπουργείῳ τοῦ ἐπισιτισμοῦ. κ') Τὴν κατακράτησιν παρὰ τῶν συμμάχων τῶν Τούρκων αἰχμαλώτων, «λαμβανομένης ὑπ' ὄψει τῆς ἀπολύσεως τῶν πολιτικῶν Τούρκων αἰχμαλώτων, οἵτινες ὑπερέβησαν τὸ ὅριον τῆς στρατιωτικῆς ἡλικίας». κα') Τὴν ὑποχρέωσιν ὅπως διακόψῃ πᾶσαν σχέσιν μετὰ τῶν Κεντρικῶν Δυνάμεων καὶ κβ') Τὴν ἐπιφύλαξιν εἰς τοὺς συμμάχους τοῦ δικαιώματος νὰ καταλάβωσιν ὡρισμένα μέρη ἐν Ἀρμενίᾳ, ἐν περιπτώσει ταραχῶν εἴς τι βιλαέτιον αὐτῆς.

[*Strupp*, Documents pour servir à l'histoire du droit des gens, 2α ἔκδ. 1923, τ. III, σ. 222 ἑπ.] Η. Γ. Κ.

**μουεζίνης** (ὁ) (*ἀραβ. μουεζζίν*). Ὁ διὰ τῆς ἐκφωνήσεως τοῦ «Ἀλλὰχ ἐκμπὲρ (τρὶς) λὰ-Ἴλα-Ἴλ-ἀλλὰχ Μωχάμεντου ρεσουλλὰχ» (=«Ὁ Θεὸς εἶναι μέγιστος καὶ ὁ Μωάμεθ προφήτης τοῦ Θεοῦ») καλῶν τοὺς Μουσουλμάνους εἰς τὰς πέντε ἡμερησίας προσευχὰς ψάλτης (χότζας) τῶν μωαμεθανικῶν τζαμίων καὶ εὐκτηρίων οἴκων (μεστζίτ). Εἰς τὰ τζαμία τὰ ἔχοντα μιναρὲν ὁ μουεζίνης, τὸν ὁποῖον ὀνομάζουσιν ἀνακριβῶς *ἰμάμην*, ἀνέρχεται εἰς τὸν κυκλικὸν ἐξώστην καὶ ἐκφωνεῖ, κινούμενος κυκλικῶς, τὴν ἀνωτέρω ἐπίκλησιν. Εἰς τοὺς μὴ ἔχοντας μιναρὲν εὐκτηρίους οἴκους ὁ μουεζίνης ἐξέρχεται εἰς τὴν θύραν ἢ ἵσταται πρὸ τοῦ μεστζίτ. Ὁ μουεζίνης πρέπει νὰ εἶναι καλλίφωνος. Εἰς τὰ μεγάλα τεμένη τῆς Κωνσταντινουπόλεως οἱ μουεζίνηδες ἔψαλλον μελῳδικῶς ἰδίᾳ τὸ ἑωθινὸν (σαμπάχ). Ν. Μ.

*Μουεζίνης.*

**μουελεμβεκία** (ἡ) (Muehlenbeckia) [*Βοτ.*]. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *πολυγονοειδῶν* ἢ *πολυγωνιδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ καὶ φρύγανα, ὧν πλεῖστα ἀναρριχητικὰ καί τινα πρὸς κόσμον καλλιεργούμενα, ἰθαγενῆ τῆς Αὐστραλίας καὶ τῶν περὶ τὸν Εἰρηνικὸν ὠκεανὸν νήσων. Ἐκ τῶν 15 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μουελεμβεκία ἡ πλατύκλαδος* (Muehlenbeckia platyclada), θάμνος ἀπαντῶν εἰς τὰς νήσους τοῦ Σολομῶντος, καλλιεργούμενος πολλαχοῦ ὡς κοσμητικὸς διὰ τὰ ἰδιόρρυθμα φύλλα του, ἅτινα ἔχουσι ταινιοειδῆ μορφήν, δι' ὃ καὶ τὸ φυτὸν εἶναι γνωστὸν πολλαχοῦ ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *ταινία μουλεμβεκία ἡ πολύπλοκος* (Muehlenbeckia complexa). Εἶναι ἐπίσης θάμνος ἀναρριχητικὸς μὲ λεπτοὺς κλάδους καὶ μικρὰ φύλλα, ἰθαγενὴς τῆς Νέας Ζηλανδίας. Δ. Ν. Π.

**μούζα** (ἡ)· βλ. *μούντζα*.

**Μουζακᾶτα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς κοινότητος Ζερβάτων τῆς ἐπαρχίας Σάμης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 116. Χ. Δ.

**Μουζακάτι** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πρεβέζης χωρίου *Μουζακεῖκα* (βλ. λ.) Χ. Δ.

**Μουζακεῖκα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μαργαριτίου τοῦ νομοῦ Πρεβέζης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον, ὠνομάζετο δὲ πρότερον *Μουζακάτι*. Κάτ. (1928) 188. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κλεισούρα*. Χ. Δ.

**Μουζάκι** [*Γεωγρ.*]. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Περπατάρι* (βλ. λ.).

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 504.

—3) Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ζακύνθου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.152.

—4) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Παλιοχωρίου τῆς ἐπαρχίας Φιλιατῶν τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτ. (1928) 70.

—5) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 408.

—6) Κώμη τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 5 ὥρας πρὸς ΒΔ. τῆς Καρδίτσης, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, καὶ ἦτο παλαιὰ πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Γόμφων. Ἔχει εἰρηνοδικεῖον, ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον, ἡμιγυμνάσιον καὶ δημοτικὰ σχολεῖα. Κάτ. (1928) 2.078. Χ. Δ.

—**Μουζάκι** [*Γεωγρ.*]. Ἀκρωτήριον τῆς Α. ἀκτῆς τῆς Ἑρμιονίδος, σχηματίζον μετὰ τοῦ *Δοκοῦ* (ἀρχ. *Ἀπεροπίας*) τὸ «στενὸν τοῦ Δοκοῦ» (πλάτ. 37°21' Β., μήκ. 23°17' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spetzai and Dhokos). Ἀπὸ τοῦ 1926 φάρος «Ἄγκα» λευκῶν ἀναλαμπῶν. Εἶναι ὁ *Βούπορθμος* τοῦ Παυσανίου (Κορινθ. Β, λδ, 8). Σ. Ε. Λ.

**Μουζακιά** [*Γεωγρ.*]. Ἐπαρχία τῆς Ἀλβανίας, περιλαμβανομένη μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ἄφου καὶ Γενούσου καὶ ἀποτελουμένη ἀπὸ εὐφορωτάτην πεδιάδα, διαρρεομένην ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ἄψου. Ὀφείλε τὴν ὀνομασίαν της εἰς τοὺς Ἀλβανοὺς τοπάρχας Μουζακαίους, τοὺς ζήσαντας κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα, οἱ ὁποῖοι κέντρον τῆς κυριαρχίας των εἶχον τὴν βυζαντινὴν πόλιν Διάβολιν ἢ Δέβολην καὶ κατήγοντο ἀπὸ τοῦ Ἰωάννου Μουσακίου, ζήσαντος τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς κοιλάδος ταύτης κεῖται ἡ πόλις *Βεράτιον*. Ἡ Μουζακιὰ θεωρεῖται ὁ σιτοβολών, ἡ Θεσσαλία τῆς Ἀλβανίας, περιλαμβάνει δὲ περὶ τὰ 250 χωρία, τὰ ὁποῖα εἶναι τὰ εὐπορώτερα τῆς Ἀλβανίας καὶ κατοικοῦνται ἐξ ὁλοκλήρου ὑπὸ Ἀλβανῶν. Χ. Ι. Σ.

**Μουζαλάκιος.** Στρατηγὸς Βυζαντινὸς καὶ διοικητὴς τοῦ θέματος Ὀψικίου (περιφέρεια Προύσης, Ἀμορίου, Κοτυαίου) ἐπὶ Λέοντος Δ' (775—780). Συμμετέσχεν εἰς τὴν κατὰ τῶν Ἀράβων ἐκστρατείαν τῷ 778, καθ' ἣν ὁ βυζαντινὸς στρατός, εἰσβαλὼν εἰς Μεσοποταμίαν, ἐνίκησε κατὰ κράτος τοὺς Ἄραβας. Ν. ΚΛΣ

**Μουζάλων.** Ἑταιρειάρχης (ἀρχηγὸς τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς, τῆς λεγομένης «ἑταιρείας») ἐπὶ Ἀνδρονίκου Β' Παλαιολόγου (1282—1328). Συμμετέσχεν εἰς τοὺς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ (Προῦσα, Νίκαια, Ἀδραμύττιον κ.λ.) πολέμους κατὰ τῶν Τούρκων τοῦ Ὀσμάν. Ν. ΚΛΣ

— **Μουζάλων, Γεώργιος.** Πρωτοβεστιάριος τοῦ βασιλέως τῆς Νικαίας Θεοδώρου Β' Λασκάρεως (1254—1258). Κατήγετο ἐκ ταπεινῆς οἰκογενείας τοῦ Ἀδραμυττίου καὶ παῖς ἔτι προσελήφθη ὡς «παιδόπουλον» εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ βασιλέως τῆς Νικαίας Ἰωάννου Γ' Λασκάρεως (1222—1254), ἔνθα ἐξεπαιδεύθη καὶ συγχρόνως ἀνεστρέφετο μετὰ τοῦ διαδόχου τοῦ θρόνου Θεοδώρου, παρὰ τοῦ ὁποίου ἠγαπήθη ὡς ἀδελφὸς καὶ κατέστη ἀχώριστος αὐτοῦ σύντροφος καὶ πιστὸς σύμβουλός του. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἰωάννου Γ' καὶ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἄνοδον τοῦ Θεοδώρου Β' (1254), προήχθη ὑπὸ τούτου πρωτοσεβαστὸς καὶ διωρίσθη πρωτοβεστιάριος αὐτοῦ καὶ μέγας δομέστικος, διὰ τῆς εὐφυΐας του δὲ καὶ τῆς ἀνωτέρας αὐτοῦ παιδεύσεως κατέστη ὁ πιστότερος καὶ ἐπικρατέστερος τῶν συμβούλων του βασιλέως, ὅστε ἀποθνήσκων οὗτος (Αὔγουστος 1258) διώρισεν αὐτὸν διὰ τῆς διαθήκης του ἐπίτροπον τοῦ ὀκταετοῦς υἱοῦ του Ἰωάννου Δ' Λασκάρεως, μέχρι τῆς ἐνηλικιώσεώς του. Μετὰ τρεῖς ἡμέρας οἱ κατὰ τοῦ ἀποθανόντος βασιλέως Θεοδώρου Β' δυσηρεστημένοι στρατιωτικοὶ καὶ πολιτικοὶ ἄρχοντες (Ἀλέξιος Στρα-

Digitized by Google

τηγόπουλος, Κ. Τορνίκιος, Θεόδωρος Φιλῆς, Γεώργ. Ζαγαρομμάτης κλ.), συγκεντρώσαντες μέγαν ἀριθμὸν στρατιωτῶν, ἐπέδραμον εἰς τὴν μονὴν τῶν Σωσάνδρων, ἔνθα εἶχε ταφῆ ὁ Θεόδωρος Β' καὶ ἔνθα διέμενεν ὁ Μουζάλων, ἐφόνευσαν αὐτὸν καὶ ἀνέθεσαν τὴν ἐπιτροπείαν τοῦ νεαροῦ βασιλέως εἰς τὸν στρατηγὸν Μιχαὴλ Παλαιολόγον. Ν. ΚΛΣ

—**Μουζάλων, *Θεόδωρος***. Μέγας λογοθέτης. Ὑπηρετῶν εἰς τὸν στρατὸν ἀπὸ τῆς νεανικῆς αὐτοῦ ἡλικίας, προσελήφθη εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου Μιχαὴλ Η' Παλαιολόγου καὶ περὶ τὸ 1280 διωρίσθη ὑπὸ τούτου λογοθέτης τοῦ γενικοῦ, ἀλλὰ προῆλθεν εἰς ρῆξιν μετ' αὐτοῦ ἕνεκα τῆς πρὸς τὸν πάπαν τῆς Ρώμης πολιτικῆς. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μιχαὴλ Η' (1282) καὶ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἄνοδον τοῦ Ἀνδρονίκου Β' Παλαιολόγου, προήχθη ὑπὸ τούτου εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ μεγάλου λογοθέτου (πρωθυπουργοῦ) καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ἀκύρωσιν τῶν μετὰ τῆς Ρώμης συμφωνιῶν. Ὁ Ἀνδρόνικος Β', ἐκτιμῶν ἰδιαζόντως αὐτόν, τῷ ἐπέτρεψε νὰ φέρῃ «καλύπτραν χρυσοκόκκινον» καὶ συνάμα ἐμνήστευσε τὸν δευτερότοκον υἱόν του Κωνσταντῖνον μετὰ τῆς θυγατρὸς τοῦ Μουζάλωνος· πρὸ τῆς τελέσεως ὅμως τῶν γάμων τούτου, ἀσθενήσας ὁ Μουζάλων ἀπεχώρησε τῆς ὑπηρεσίας (περὶ τὸ 1195) καὶ ἐκάρη μοναχός, μετ' ὀλίγον δὲ ἀπέθανε, καὶ τὸ σῶμα του μετεφέρθη εἰς Νίκαιαν καὶ ἐτάφη εἰς τὴν ἐκεῖ μονὴν τοῦ Τορνικίου. Ν. ΚΛΣ

—**Μουζάλων, *Στέφανος***. Δρουγγάριος τῶν πλωΐμων (ἀρχιναύαρχος) τοῦ βυζαντινοῦ στόλου ἐπὶ Ἀνδρονίκου Β' Παλαιολόγου. Ὑπηρετῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ Ἰανουάριον 1303 καὶ ἐπεμβὰς ἵνα διαχωρίσῃ τοὺς συμπλακέντας ἐκεῖ Γενουαίους μετὰ τῶν ἄρτι ἀφιχθέντων Καταλανῶν μισθοφόρων, ἐφονεύθη ὑπὸ τούτων, «κατακοπεὶς σπάθαις αὐτῷ γε ἵππῳ». Ν. ΚΛΣ

**Μουζανδὰμ** (Mujandam) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον καὶ χερσόνησος τῆς Ἀραβίας, τὸ ἀρχαῖον *Ἀσαβῶν ἄκρον* (βλ. λ.).

**μουζαύρα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία διαφόρων εἰδῶν τῆς *δρυός* (βλ.λ.).

**Μουζαφφαργκὰρ** (Muzaffargarh) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ διαμερίσματι Μούλταν τοῦ Πεντζάμπ. Ἡ *ἐπαρχία* ἐκτείνεται ἐπὶ τοῦ τριγώνου τοῦ σχηματιζομένου μεταξὺ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τῆς δεξιᾶς τῶν παραποτάμων αὐτοῦ Τσενάμπ καὶ Πανζνάντ, εἶναι δὲ εὐφορωτάτη ὡς ἐκ τῆς ἀφθόνου ὑπὸ τῶν ποταμῶν ἀρδεύσεώς της. Παράγει ὄρυζαν, βάμβακα κλπ. καὶ ἔχει 569.500 κατ. Ἡ *πόλις* κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Τσέναμπ, ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, ἐκτίσθη δὲ περὶ παλαιὸν ὀχυρὸν φρούριον τοῦ Ναβὰμπ-Μουζαφφὰρ-Χάν. Κάτ. 4.400. Χ. Δ.

**Μουζαφφαρναγκὰρ** (Muzaffarnagar) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ διαμερίσματι Μέερουτ τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν. Ἡ *ἐπαρχία* ἐκτείνεται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου, βορείως τοῦ Μεερούτ, εἶναι πεδινὴ καὶ εὔφορος, παράγει δὲ κυρίως σῖτον καὶ κριθήν. Κάτ. 808.000. Ἡ *πόλις* κεῖται εἰς τὸ μέσον τῆς ἐπαρχίας ἐπὶ τῆς ἀπὸ Δελχῇ καὶ Μεεροὺτ διευθυνομένης πρὸς Β. σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἐκτίσθη δὲ τῷ 1633 ὑπὸ τοῦ Μουζαφφὰρ-Χὰν-Χαντζαχάν. Κάτ. 23.800. Χ. Δ.

**Μουζαφφαρποὺρ** (Muzaffarpur) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ διαμερίσματι Τιρχοὺτ τῆς διοικήσεως Μπεχὰρ καὶ Ὀρίσσα. Ἡ *ἐπαρχία* ἐκτείνεται βορείως τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου ἐπὶ προσχωσιγενοῦς πεδιάδος, σχηματισθείσης ὑπὸ τῶν ποταμῶν Γκαντὰκ καὶ ἐχούσης μεγάλας ἑλώδεις ἐκτάσεις. Τὸ ἔδαφος εἶναι εὐφορώτατον, καλλιεργούμενον εἰς πολλὰ σημεῖα δὶς τοῦ ἔτους. Κυριώτερον προϊὸν εἶναι ἡ ὄρυζα. Κάτ. 2.845.500. Ἡ *πόλις* εἶναι πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας, κεῖται δὲ ἐγγὺς τῆς ἀποξηρανθείσης κοίτης τοῦ μικροῦ Γκαντὰκ καὶ εἶναι κέντρον τῆς βιομηχανίας τοῦ ἰνδικοῦ (λουλάκι), ἀλλὰ παρακμάζει διαρκῶς. Κάτ. 43.700. Χ. Δ.

**Μουζδὲλ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας συνοικισμοῦ *Μυλόπετρα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουζεβίρης** (ὁ)· ἰδιωματ., στρεψόδικος, ἀπατεὼν (τουρκοαραβ. *μουζεββίρ*).

**Μουζὲλ**. Στρατηγὸς Βυζαντινὸς ἐπὶ Μαυρικίου (582—602). Ἦτο Ἀρμένιος καὶ συμμετέσχεν, ἐπὶ κεφαλῆς ἰσχυροῦ σώματος ὁμοεθνῶν του, εἰς τοὺς κατὰ τῶν Ἀβάρων καὶ Σλάβων πολέμους (584—600), καθ' οὓς, αἰχμαλωτισθείς, ἀπηγχονίσθη ἐπί τινος δένδρου. Ν. ΚΛΣ

**Μόϋζελβιτς** (Meuselwitz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, ἐν τῇ Θουριγγίᾳ, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἄλτενμπουργκ-Τσάϊτς. Κάτ. 11.571 (1925). Ἔχει σιδηροχυτήρια, κεραμουργίαν καὶ ἐργοστάσια κατασκευῆς μηχανῶν. Θ. Κ.

**μουζελιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λεπτοκαρύα ἡ ἀβελλάνιος*.

**Μουζελὶμ *διέκπλους* καὶ *ὕφαλος*** *[Παραλ. Γεωγραφ.]*. Ὁ δυτικὸς τῶν δύο διέκπλων, δι' οὗ, βρέχοντος τὰς βορείας τῆς Λέσβου ἀκτάς, ἐπικοινωνεῖ ὁ Ἀδραμυττηνὸς κόλπος πρὸς τὸ Αἰγαῖον. Εἶναι δὲ φερώνυμος ὑφάλου κινδυνωδεστάτης (πλάτ. 39°25'00" Β., μῆκ. 26°15'30" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Mytileni island and gulf of Adramyti and Chandarli) ἐν χρῷ τῆς θαλάσσης καὶ εἰς τὸ κέντρον τοῦ διέκπλου εὑρισκομένης, σημειωσάσης δὲ πολλὰ ναυτικὰ ἀτυχήματα, ἐν οἷς καὶ τοῦ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον καταστραφέντος ἰαπωνικοῦ ἐξωπλισμένου ὑπερωκεανίου «New York Marù». Ἐπεσημάνθη ἀπὸ τοῦ 1923 ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ καταδρομικοῦ «Pegasus» διὰ στήλης σιδηρᾶς μετὰ τριγωνικοῦ ἐπισήματος ἐρυθροῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μουζῆλον**, ἢ *Μουζήλου* *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται $1 \frac{1}{2}$ ὥραν πρὸς Ν. τοῦ Καρπενησίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 303. Χ. Δ.

**Μοῦζι** (Mouzi ἢ Musi), ***Αὐγουστῖνος***. Ὄνομα ὑπὸ τὸ ὁποῖον εἶναι ἐπίσης γνωστὸς ὁ Ἰταλὸς χαλκογράφος καὶ χαράκτης *Βενετσιάνο* (βλ. λ.).

**Μουζιαρίκου** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μαράθου (Ἀραχωβίτσης) τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων. Κάτ. (1928) 53. Χ.Δ.

**Μουζίκα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Δαφνιώτισσα* (βλ. λ.). Χ.Δ.

**μουζῖκοι** (οἱ). Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται οἱ ἀγρόται τῆς Ρωσίας, οἵτινες μετὰ τὴν σύστασιν τῆς ἡγεμονίας τῆς Μόσχας ἐγένοντο δουλοπάροικοι τῶν βογιάρων. Ἀπώλεσαν πᾶσαν ἐλευθερίαν, οἱ δὲ βογιάροι ὄχι μόνον ἐκαρποῦντο τοὺς κόπους αὐτῶν, ἀλλ' εἶχον ἀπόλυτον δικαίωμα ἐπὶ τῆς ζωῆς των. Ὁ βίος αὐτῶν διακούσης τῆς δουλείας ἦτο ἀφόρητος. Πολλάκις ἐξηγέρθησαν κατὰ τοῦ τοιούτου δεσποτισμοῦ, ὑπῆρξαν δὲ ἐπαναστάσεις, καθ' ἃς μυριάδες ἐξ αὐτῶν ἐφονεύθησαν. Ἡ Αἰκατερίνη Β' ἐπεχείρησε ν' ἀποδώσῃ εἰς αὐτοὺς τὴν προσωπικήν των ἐλευθερίαν, συνεκάλεσε δὲ πρὸς τοῦτο συνέλευσιν, ἡ ὁποία εἰς οὐδὲν ἀποτέλεσμα κατέληξε λόγῳ τῆς ἀντιδράσεως τῶν ἀριστοκρατῶν. Ἐπὶ Ἀλεξάνδρου Β' (1861) ἐδημοσιεύθη οὐκάζιον, παραχωρῆσαν τὴν προσωπικὴν αὐτῶν ἐλευθερίαν καὶ τὴν διανομὴν ἀναλόγου ἐκτάσεως γαιῶν. Ἀλλὰ τὸ σύστημα τοῦτο περιήγαγεν αὐτοὺς εἰς ἀπελπισίαν, ἄπειρον δὲ πλῆθος καλλιεργητῶν τῆς γῆς μετεβλήθησαν εἰς ἐργάτας καὶ βιομηχάνους. Ἡ γενικὴ στρατολογία ἐξήγειρεν εἰς αὐτοὺς τὴν ἰδέαν ὅτι ἡ γῆ ἀνήκει εἰς τοὺς καλλιεργοῦντας αὐτήν, τὸ ζήτημα δὲ τοῦτο ὑπῆρξε μία τῶν κυριωτέρων ἀφορμῶν τῆς ρωσικῆς ἐπαναστάσεως. Τὸ ὄνομα μουζῖκος, παρ' ὅλας τὰς ἐπελθούσας μεταβολάς, ἀπέμεινεν εἰς τὴν ἔννοιαν τοῦ χωρικοῦ. Θ. Β.

**Μοῦζιλ** (Musil). —1) ***Ἀλοΐσιος***. Τσέχος θεολόγος καὶ ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1868 ἐν Μοραβίᾳ. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Ὀλμοὺτς, Βιέννῃ καὶ τῷ 1919 ἐν τῷ τσεχικῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πράγας, τῆς διδασκαλίας τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης καὶ τῆς ἀραβικῆς. Ἐταξίδευσε χάριν ἐρευνῶν εἰς τὴν Πετραίαν Ἀραβίαν, τὴν Χετζάζην καὶ Μεσοποταμίαν. Κύρια ἔργα αὐτοῦ εἶναι «Κουσεὶρ Ἄμρα» (1907), «Πετραία Ἀραβία» (1908, 3. τ.), «Τοπογραφικὰ δρομολόγια ἐξερευνήσεως ἐν Ἀραβίᾳ καὶ Μεσοποταμίᾳ» (ἀγγλιστὶ 1927, 6 τ.).

— 2) ***Ροβέρτος***. Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1880. Ἔγραψε τὸ θαυμάσιον παιδικὸν μυθιστόρημα: «Αἱ διαταραχαὶ τοῦ οἰκοτρόφου Ταίρλες» (1906), ἐκ δὲ τῶν ἄλλων ἔργων του ἀξιόλογα εἶναι τὰ μυθιστορήματα «Βιντσέντσος» (1923) καὶ «Τρεῖς γυναῖκες» (1923). Θ. Κ.

**Μουζιρὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν Δ. παραλίας τῶν ἐντὸς τοῦ Γάγγου Ἰνδιῶν, ἐν τῇ Λιμυρικῇ χώρᾳ (νῦν Μαλαβάρ), παρά τινα ποταμόν, μεταξὺ Τύνδιος καὶ Νεκλύνδας, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἀπεῖχε περὶ τὰ 500 στάδια (Περίπλ. Ἐρυθρ. Θαλ. 53). Ἦτο σπουδαιότατον ἐμπορικὸν κέντρον, ὑπήγετο δὲ εἰς τὸν Κηπρόβοτρον, βασιλέα τῆς Λιμυρικῆς. Ὑπὸ τῶν νεωτέρων ταυτίζεται πρὸς τὴν Mangalore τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν. Α. Θ. Σ.

**Μουζλῆ** *[Γεωγρ.]*. Ἀλβανικὴ ὀνομασία ἀκρωτηρίου τῆς Ἀλβανίας μεταξὺ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Μάθιου καὶ τοῦ Ἀρσένη (πλάτ. 41°35'12" Β., μῆκ. 19°27'00" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2701: Gulf of Kattaro to Corfu). Ὑπὸ τῶν χερσαίων ὀνομάζεται *Μουσκελὶν Σκανδερμπέγκ*, ὑπὸ δὲ τῶν Εὐρωπαίων *Ροδώνη*. Ἀπὸ τοῦ 1884 ἔχει φάρον λευκῶν ἀναλαμπῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μουζλιτσὲ** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς ὑποδιοικήσεως Ἀζιζιὲ (Δοκιμείου) τοῦ νομοῦ Προύσης. Κάτ. 1.300. Παραπόταμος τοῦ Σαγγαρίου, κατα... δεύει τὴν χώραν, ἥτις παράγει ἄριστα καὶ ἄφθονα δημητριακά, πρὸς δὲ καὶ βάμβακα καὶ μέταξαν.

**μουζντὲς** (ὁ) (ἐκ τοῦ περσ. *μουζντέ*)· καλὴ εἴδησις. Ν. Υ

**μουζντετζῆς** (ὁ) (=ὁ φέρων καλὰς εἰδήσεις). Ἔντομον ἱπτάμενον, εἶδος μεγάλης βομβούσης μυίας, οὗτινος ἡ ἐμφάνισις θεωρεῖται προαγγέλλουσα καλὴν εἴδησιν ἢ τὴν ἐπικειμένην ἄφιξιν ταξιδιώτου. Ν. Υ

**μουζουδιὰ** (ἡ)· ἰδιωμ. Κρήτ., ἡ κηλίς, ἡ λερ... ματιά, ἡ μουτζαλιά.

**Μουζοὺρ *ἀγᾶς***. Διάσημος Τουρκοκρὴς ἐκ Ρεθύμνης. Κατὰ τὴν εἰς τὴν θέσιν Ἀκόνια τῆς Κρήτης μάχην τοῦ Ἰανουαρίου 1822, καθ' ἣν ... ἐφονεύθη ὁ Γλυμὶδ Ἀλῆς, συνελήφθη αἰχμάλωτος ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν, καταληφθείσης ... τῆς σημαίας αὐτοῦ. Ἀπεστάλη μετὰ τῶν ἄλλων αἰχμαλώτων εἰς τὸν ἐν Λουτρῷ ἁρμοστὴν Ἀφεντούλην, καὶ ἐκεῖθεν, κατ' αἴτησιν αὐτῶν, εἰς Σμύρνην, ἀνταλλαγέντες πρὸς πολλοὺς Ρεθυμνίους Χριστιανοὺς αἰχμαλώτους. ΕΡ. Υ

**μουζουρὰ** (ἡ)· ἰδιωμ. Κρήτ., ἔκτασις γῆς ἀρκοῦσα διὰ σπορὰν ἑνὸς *μουζουριοῦ* δημητριακῶν (ἐπὶ κριθῆς δώδεκα περίπου ὀκάδες, ἐπὶ σίτου δεκαπέντε). Ι. Δ. Υ

**Μουζουρᾶς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κυδωνίας τοῦ νομοῦ Χανίων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 219. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Καλόρρουμα καὶ Χωρδάκι* μετὰ τῶν μονῶν *Γουβερνέτο* καὶ *Ἁγία Τριὰς Τζαγκαρόλων*. Ε.

**μουζοῦρι** (τό)· ἰδιωμ. Κρήτ., μέτρον δημητριακῶν καὶ ἄλλων ξηρῶν καρπῶν.

**Μουζούστα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 354. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Τραγάνες*. Χ.

**Μοὺθ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Ἀδάνων. Κάτ. 1.000. Ἐπὶ Σελτζουκιδῶν ἦτο πολυάνθρωπος πόλις, σῴζονται δ' ἔτι καὶ νῦν σπουδαιότατα κτίσματα τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Παρὰ τὴν νεκρόπολιν σῴζονται τὰ ἐρείπια τῆς *Κλαυδιουπόλεως*.

**μουθουνητὸ** (τό), καὶ ***μουσουνητό***, δημοτ., ... σημα διὰ τῶν ρωθώνων, ἀρχ. *μυχθισμός* || ὁμι... μὲ τὴ μύτη.

**μουθουνίζω**, καὶ ***μουσουνίζω***· δημοτ., φυσῶ διὰ τῶν ρωθώνων, μὲ κλεισμένον τὸ στόμα, ἀρχ. *μυχθίζω* || ὁμιλῶ μὲ τὴ μύτη.

**Μουΐρ-ι-Ζαφφὲρ** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Τουρκικὸν μικρὸν θωρηκτόν, ναυπηγηθὲν τῷ 1862 καὶ ἀνακαινισθὲν εἰς τὰ ἐν Γενούῃ ναυπηγεῖα Ansaldo τῷ 1907, ὁπότε ἐξωπλίσθη διὰ ταχυβόλων Κρούππ ... δείγματος 1906 (4 τῶν 150 χιλ., 10 τῶν 57 καὶ ... τῶν 37). Εὑρεθὲν κατὰ τὴν κήρυξιν τοῦ Ἰταλοτουρκικοῦ πολέμου εἰς Σάμον καὶ μαθὸν τὴν ἡρωϊκὴν καταστροφὴν τοῦ «Ἀβνιλὰ» εἰς Βηρυττόν, ἠδυνήθη νὰ διαφύγῃ τὴν ὑπὸ τοῦ Ἰταλοῦ ναυάρχου Φαραβέλλι δίωξίν του καὶ νὰ καταπλεύσῃ εἰς Σμύρνην, ὅπου ἀπεβίβασε τὰ πυροβόλα του, δι' ὧν ἐξωπλίσθησαν τὰ φρούρια καὶ τὰ πυροβολεῖα τοῦ κόλπου. Σ. Ε. Λ.

**Μοὺκ** (Muck), ***Κάρολος***. Γερμανὸς διευθυντὴς ὀρχήστρας, γεννηθεὶς τῷ 1859. Διηύθυνεν ἀλληλοδιαδόχως μελοδραματικοὺς θιάσους ἐν Ζυρίχῃ, Σαλτσβούργῳ, Γκράτς, Πράγᾳ καὶ κατόπιν τὰς παραστάσεις τῆς «Τετραλογίας» τοῦ Βάγνερ ἐν Πετρουπόλει (1889), τὴν ὀρχήστραν τοῦ μελοδράματος τοῦ Βερολίνου, τοῦ γερμανικοῦ μελοδράματος τοῦ Λονδίνου (1899) κτλ. Τῷ 1912 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς συμφωνικῆς ὀρχήστρας τῆς Βοστώνης. Τῷ 1922 ὠνομάσθη διευθυντὴς ὀρχήστρας τῆς φιλαρμονικῆς τοῦ Ἀμβούργου. Ι. Σ

**μουκαβᾶς** (ὁ), καὶ ***μπουκαβᾶς***· χονδρὸς πεπιεσμένος χάρτης, ναστόχαρτον, κοιν. *χαρτόνι*.

**Μουκάβιτσα. *Ἄνω* — καὶ *Κάτω*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῶν ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίων Ἄνω καὶ Κάτω *Λουκάβιτσα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουκαλίτης** (ὁ) (ἐκ τοῦ ἀραβικοῦ *μουκαλλίτ*)· ὁ μιμούμενος || γελωτοποιός, βωμολόχος, ... ραπτοιῶν, ὁ μιμούμενος || γελωτοποιός, βωμολόχος.

**μουκαλιτλίκι** (τό)· βωμολοχία.

**μουκατὰ** *[Ἱστορ.]*. Φόρος πληρωνόμενος εἰς τὸν σουλτᾶνον ἀπὸ τοὺς Βοϊνίκηδες ἢ Βοϊνίκους (κατοίκους τῆς περιφερείας τοῦ *Βοϊνίκου*) ...

Digitized by Google

ἀπαλλαγήν τῶν ἀπὸ τῆς ὑποχρεώσεως, ὅπως ἀποστέλλωσιν ἐτησίως ἄνδρας εἰς Κωνσταντινούπολιν πρὸς ἐπιμέλειαν τῶν ἵππων καὶ ἁμαξῶν τοῦ σουλτάνου.

**Μουκατὲ-ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Δ. Θράκης ἐν τῷ νομῷ Ἕβρου, ἐκτεινόμενον εἰς τὰς ἐπαρχίας Σουφλίου καὶ Διδυμοτείχου. Ἔχει πολλὰς διακλαδώσεις καὶ δασώδεις ἐκτάσεις, τὸ δὲ ὕψος του ἀνέρχεται εἰς 654 μέτρα. Α. Θ. Σ.

**Μουκάτσεβο**, ἢ ***Μουνκὰκς*** (Mucacevo ἢ Munkaks) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λατόρκα καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τσὸπ - Στρύϊ. Κάτ. 20.865. Ἔχει ἀνάκτορον, καπνεργοστάσια, σιδηροχυτήρια, διυλιστήρια πετρελαίου, οἰνοπνευματοποιΐαν, βιομηχανίαν στεατοκηρίων καὶ πλουσίαν οἰνοπαραγωγήν. Εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. νοτίως τῆς πόλεως κεῖται τὸ παλαιὸν φρούριον, ὅπερ μέχρι τοῦ 1897 ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς φυλακή. Ἐν αὐτῇ ἐφυλακίσθη ὁ Ἀλεξ. Ὑψηλάντης, εὐθὺς ὡς κατέφυγεν εἰς Αὐστρίαν, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τοῦ κινήματος. Θ. Κ.

**Μοῦκδεν** (Mukden ἢ Moukden) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μαντζουρίας, πρωτεύουσα ἄλλοτε ὁλοκλήρου τῆς χώρας, καὶ νῦν τῆς μιᾶς ἐκ τῶν τριῶν ἐπαρχιῶν εἰς ἃς διαιρεῖται αὕτη, τοῦ *Λιάο Νὶνγκ* ἢ *Φενγκτιέν*. Κεῖται μεσογείως ἐντὸς τῆς εὐφόρου κοιλάδος τοῦ Χοὲν-Χόλ, παραποτάμου τοῦ Λιάο, εἰς ἀπόστασιν 180 περίπου χλμ. βορειοανατολικῶς τῆς παραλίας τοῦ κόλπου Λιάου-τούνγκ, εἰς 41° 51′ Β. πλάτους καὶ 123° 38′ Α. μήκους Γκρήνουϊτς. Εἶναι ἐκ τῶν ἀνοικτῶν εἰς τὸ εὐρωπαϊκὸν ἐμπόριον πόλεων τῆς Ἄπω Ἀνατολῆς καὶ ἔχει ἰσχυρότατον σταθμὸν ἀσυρμάτου. Εὑρισκόμενον ἐπὶ τῆς γραμμῆς τῶν νοτιομαντζουριανῶν σιδηροδρόμων, τῆς ἑνούσης τὸ Χαρμπὶν μετὰ τοῦ Νταῖρεν καὶ τοῦ Ριοζοὺν καὶ συνδεόμενον ἀφ᾽ ἑτέρου διὰ διακλαδώσεων μετὰ τοῦ Σεούλ, τοῦ Φουζὰν καὶ τοῦ Πεκίνου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει 680 χλμ., ἀποτελεῖ σπουδαιότατον συγκοινωνιακὸν καὶ ἐμπορικὸν κέντρον μεταξὺ Κίνας, Σοβιετικῆς Ρωσίας καὶ Ἰαπωνίας. Ἐξάγει εἰς μεγάλας ποσότητας γουναρικά, σιτηρά, φασόλια, κουκιά, δέρματα, καπνὸν κλπ. Ὁ ἀριθμὸς τῶν κατοίκων του ὑπολογίζεται εἰς 160.000, ἀναβιβαζόμενος κατ᾽ ἄλλους μέχρι 250.000.

Ἡ πόλις περιλαμβάνει τρία τμήματα, τὰς ἀρχαίας συνοικίας, τὰς νέας, ὅπου τὰ ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα (πανεπιστήμιον, πολυτεχνεῖον κλπ.), καὶ τὰς εὐρωπαϊκάς, ὅπου διαμένουσιν οἱ ξένοι. Ἡ παλαιὰ πόλις παρουσιάζει μεγάλην πρωτοτυπίαν μὲ τὰς στενὰς πλήρεις καταστημάτων ὁδούς της, τὰς ὁποίας διασχίζουσι πρὸς ὅλας τὰς διευθύνσεις βαρεῖαι ἅμαξαι συρόμεναι ὑπὸ βοῶν καὶ ἡμιόνων, ἀχθοφόροι βαστάζοντες τὰ φορεῖα τῶν μεγιστάνων καὶ πλῆθος περιέργως ἐνδεδυμένου καὶ κινουμένου κόσμου. Περιβάλλεται ὑπὸ τείχους, μήκους 18 χλμ., μὲ ὀκτὼ μεγάλας πύλας ὁμοίας πρὸς ἀκροπόλεις, εἰς τὸ μέσον δ᾽ αὐτῆς ὑψοῦται τὸ ἀνάκτορον, ἐν τῷ ὁποίῳ διαμένει ὁ διοικητής. Τοῦτο περιέκλειεν ἄλλοτε πολύτιμα καὶ πολυάριθμα κειμήλια τῆς σινικῆς τέχνης, τῶν ὁποίων τὸ μεγαλύτερον μέρος κατεστράφη κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῶν Μπόξερ. Τὸ ἀξιολογώτερον μνημεῖον τοῦ Μοῦκδεν εἶναι οἱ μεγαλοπρεπεῖς τάφοι τῶν αὐτοκρατόρων τῆς δυναστείας τῶν Μαντζού, οἱ ὁποῖοι σῴζονται ἄθικτοι εἰς ἀπόστασιν ὀλίγων χιλιομέτρων ἀπὸ τῆς πόλεως. Περιβάλλονται ὑπὸ ὡραίου κήπου μὲ πολλὰ δένδρα καὶ πλῆθος λιθίνων ἀγαλμάτων, παριστώντων διάφορα πραγματικὰ καὶ μυθικὰ ζῷα (λέοντας, ἵππους, δράκοντας κλπ.), ἀποτελοῦνται δὲ ἐκ συμπλέγματος καλλιτεχνικῶν ναῶν καὶ ἀνακτόρων μνημειώδους τέχνης.

Ἡ πόλις τοῦ Μοῦκδεν εἶναι ἀρχαιοτάτη. Ἐπὶ τῶν δυναστειῶν Λιάο καὶ Κὶν ὠνομάζετο *Χὲν-Τσέου*, ἐπὶ δὲ τῶν διαδεχθεισῶν αὐτὰς Γυὲν καὶ Μίνγκ, *Χενγιάνγκ*, τὸ τελευταῖον δὲ τοῦτο ὄνομά της ἀπαντᾷ ἐνίοτε καὶ μέχρι σήμερον. Τῷ 1625 ὁ δεύτερος αὐτοκράτωρ τῆς δυναστείας τῶν Μαντσοὺ εἶχεν ἐγκαταστήσει ἐν Μοῦκδεν τὴν πρωτεύουσάν του, μέχρι τοῦ 1644, ὁπότε μετέφερεν αὐτὴν εἰς Πεκῖνον. Κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον συνήφθη παρ᾽ αὐτὴν μεγάλη φερώνυμος μάχη (βλ. κατωτ. *[Στρ. Ἱστορ.]*), καθ᾽ ἣν ἐνίκησαν οἱ Ἰάπωνες, οἱ ὁποῖοι τὴν 12 Μαρτίου εἰσῆλθον εἰς τὴν πόλιν. Χ. Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον (1904—1905) οἱ ἀντίπαλοι παρέμειναν ἐπὶ τρίμηνον (Νοέμβριος, Δεκέμβριος 1904—Ἰανουάριος 1905) ἐν πλήρει ἀδρανείᾳ («ἐν στασιμότητι», ἐφ᾽ ὅσον θὰ ἠθέλαμεν νὰ μεταχειρισθῶμεν τὸν σύγχρονον ὅρον, τὸν μὴ ὄντα ὅμως τότε ἐν χρήσει) εἰς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας θέσεις, ἀμυντικῶς ὀργανωθείσας δι᾽ ἔργων ἀρκετὰ ἰσχυρῶν, ἀφ᾽ ἑνὸς μὲν πρὸς ἀναμονὴν πυρομαχικῶν καὶ ἐνισχύσεων, ἀφ᾽ ἑτέρου δὲ λόγῳ τοῦ μεγάλου ψύχους, φθάσαντος κατὰ τοὺς χειμερινοὺς ἐκείνους μῆνας μέχρι περίπου τῶν 30° κάτω τοῦ μηδενός. Περὶ τὰ μέσα Φεβρουαρίου 1905 ἀπεφάσισαν, ταυτοχρόνως, κατὰ σύμπτωσιν, ἀμφότεροι οἱ ἀντίπαλοι, ὅπως ἀναλάβωσιν ἐπίθεσιν, ἵνα τοιουτοτρόπως ἐπιφέρωσι τὴν λύσιν, εἰς ἐποχὴν καθ᾽ ἣν εἶχε μὲν βελτιωθῆ ἡ θερμοκρασία, ἀλλὰ πάντως χωρὶς νὰ ἔχῃ ἀρχίσει ἡ τῆξις τῶν πάγων, διότι τότε τὸ δυτικῶς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἔδαφος μετεβάλλετο ἐπὶ μακρὸν χρόνον εἰς ἕλος ἀδιάβατον. Οἱ Ρῶσοι εἶχον ἀποφασίσει ν᾽ ἀρχίσωσι τὴν ἐπίθεσιν τὴν 25ην Φεβρουαρίου κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ πλευροῦ τῶν Ἰαπώνων, ἀλλὰ προκατελήφθησαν ὑπ᾽ αὐτῶν, ἀρχισάντων τὴν ἐπίθεσιν τὴν 20ὴν Φεβρουαρίου. Διεξήχθη τότε μάχη διαρκέσασα ἀπὸ 20ῆς Φεβρουαρίου μέχρις 11ης Μαρτίου 1905, φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα «Μάχη τοῦ Μοῦκδεν». Τὴν ἑσπέραν τῆς 19ης Φεβρουαρίου οἱ ἀντίπαλοι εὑρίσκοντο ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται. Οἱ Ρῶσοι (300.000 πεζοί, 16.000 σπάθαι, 1.450 πυροβόλα) ὑπὸ τὴν ἀρχιστρατηγίαν τοῦ Κουροπάτκιν κατεῖχον γραμμὴν μήκους 80 περίπου χιλιομέτρων, διήκουσαν ἀπὸ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς καὶ εἰς ἀπόστασιν 30—35 περίπου χιλιομέτρων νοτίως τοῦ Μοῦκδεν. Ἡ δύναμίς των ἀπετελεῖτο (ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς) ἀπὸ τὴν 2αν στρατιὰν τοῦ στρατηγοῦ Κάουλμπαρς, τὴν 3ην τοῦ στρατηγοῦ Μπίλντερλινγκ, καὶ τὴν 1ην τοῦ στρατηγοῦ Λίνιεβιτς, μὲ τὸ σῶμα ἱππικοῦ τοῦ στρατηγοῦ Ρέννενκαμπφ

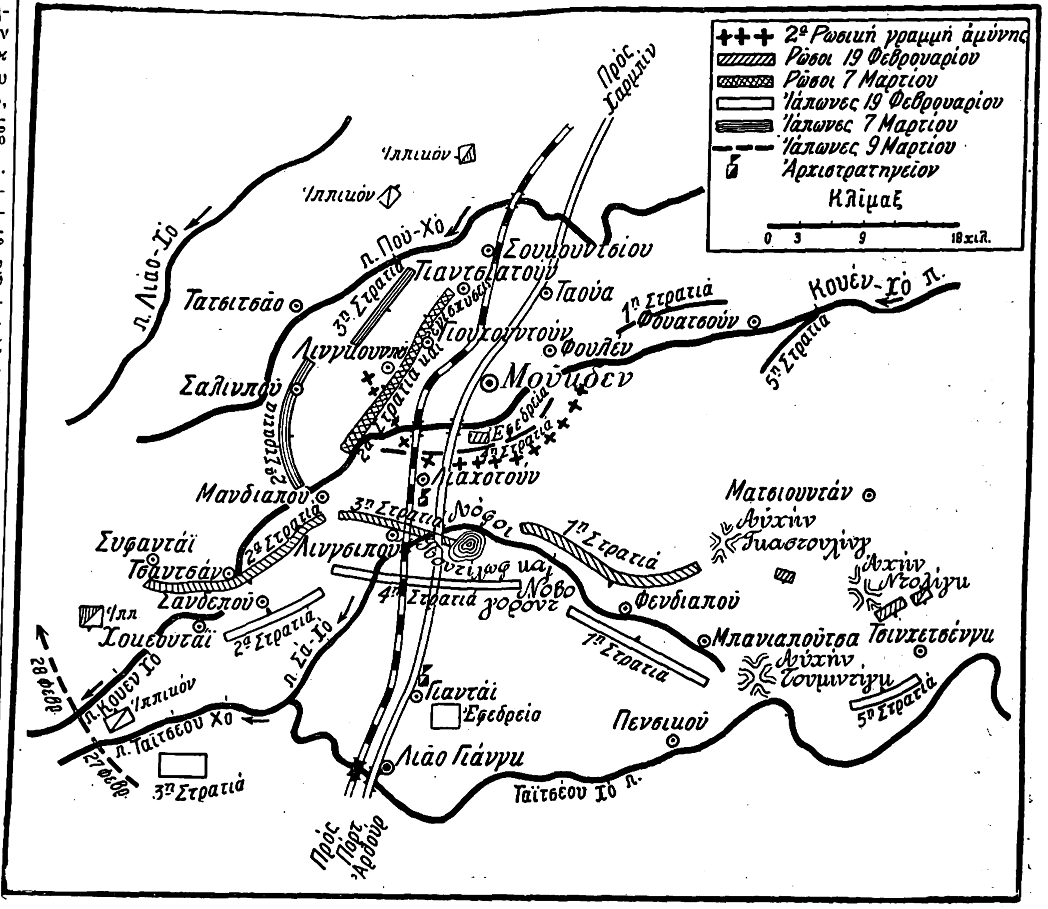

*Μάχη τοῦ Μοῦκδεν 20 Φεβρουαρίου—11 Μαρτίου 1905.*

εἰς τὸ ἄκρον δεξιὸν νοτίως τοῦ Σιφαντάϊ, διὰ τὴν προκάλυψιν τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ, μὲ μικτὸν ἀπόσπασμα ἐκ μεραρχίας καὶ μεραρχίας ἱππικοῦ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ἀλέξιεφ (ἀντικαταστήσαντα τὸν Ρέννενκαμπφ, ἀντικαταστάτην τοῦ τραυματίου Σαμψόνοου) εἰς τὸ ἄκρον ἀριστερὸν διὰ τὴν προκάλυψιν τοῦ πλευροῦ τούτου, τοῦ μετὰ τῆς 1ης στρατιᾶς συνδέσμου τηρουμένου διὰ μικροῦ τινος ἀποσπάσματος, καὶ μὲ ἐφεδρείαν ἐξ ἑνὸς καὶ ἡμίσεος σωμάτων στρατοῦ εἰς Μοῦκδεν. Οἱ Ρῶσοι εἶχον ὀργανώσει ἐπὶ πλέον καὶ δευτέραν γραμμὴν ἀμύνης, νοτίως καὶ ἐγγύτατα τοῦ Μοῦκδεν, ἐν εἴδει προγεφυρώματος τοῦ ποταμοῦ Κουὲν-Χό, διὰ τὴν προκάλυψιν τῶν πρὸς τὴν πόλιν ὁδῶν, εἶχον δ᾽ ἐπὶ πλέον πήξει περὶ τὸν χῶρον τῆς δευτέρας ταύτης γραμμῆς ἓξ γεφύρας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ. Οἱ Ἰάπωνες ἀφ᾽ ἑτέρου (350.000 πεζοί, 10.000 σπάθαι 1.070 πυροβόλα), ὑπὸ τὴν ἀρχιστρατηγίαν τοῦ Ὀγιάμα, κατεῖχον γραμμὴν παράλληλον σχεδὸν πρὸς τὴν ρωσικὴν καὶ εἰς ἀπόστασιν 8—12 περίπου χιλιομέτρων ἀπ᾽ αὐτῆς, μὲ τὰς στρατιὰς (ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολὰς) 2αν τοῦ στρατηγοῦ Ὄκου, 4ην τοῦ στρατηγοῦ Νοδτζού, 1ην τοῦ στρατηγοῦ Κουρόκι, 5ην τοῦ στρατηγοῦ Καβαμούρα (ἄρτι τότε σχηματισθεῖσαν), μὲ τὴν 3ην τοῦ στρατηγοῦ Νογκὴ ὄπισθεν τῆς 2ας καὶ ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ταϊτσέου-Χό, καὶ μὲ ἐφεδρείαν δύο περίπου μεραρχιῶν παρὰ τὸ Γιαντάϊ. Τὸ ἐπιθετικὸν σχέδιον τοῦ Ὀγιάμα ἐστηρίζετο εἰς ἐπίθεσιν κατὰ μέτωπον διὰ τῶν στρατιῶν 2ας καὶ 4ης καὶ ἐρρωμένην συγχρόνως ἐπίθεσιν διὰ τῶν 1ης καὶ 5ης στρατιῶν, ἐπιχειρουσῶν ἐν τῇ ὀρεινῇ περιοχῇ ἐναντίον τοῦ ἀριστεροῦ τῶν Ρώσων, ἵνα ἐφελκύσῃ τὴν προσοχὴν αὐτῶν πρὸς τὸ πλευρὸν τοῦτο καὶ τοὺς ἐξαναγκάσῃ νὰ μεταφέρωσι δυνάμεις πρὸς αὐτό, καθ᾽ ὃν χρόνον ἡ 3η στρατιὰ δι᾽ εὐρέος ὑπερκερωτικοῦ ἑλιγμοῦ θὰ ἐπετίθετο κατὰ τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ καὶ τῶν νώτων τῶν Ρώσων.

*Α΄ φάσις* (20 Φεβρουαρίου—1 Μαρτίου). Κατὰ τὴν χρονικὴν ταύτην περίοδον ἡ μὲν 5η στρατιὰ προὐχώρησε μετ᾽ ἀνηκούστων δυσχερειῶν, καθ᾽ ὅσον οἱ Ρῶσοι ἦσαν ἰσχυρῶς κεχαρακωμένοι καὶ ἑπομένως ἐπρόκειτο περὶ μεθοδικῶν προσβολῶν μετεχουσῶν κατὰ πολὺ τοῦ πολιορκητικοῦ ἀγῶνος. Ὁπωσδήποτε, ἡ στρατιὰ αὕτη κατώρθωσε ν᾽ ἀπωθήσῃ τοὺς Ρώσους πρὸς Ματσιουντὰν καὶ ν᾽ ἀπειλήσῃ τὸ ἀριστερὸν πλευρόν των. Ἡ 1η στρατιὰ ἤρξατο τῆς προχωρήσεώς της τὴν 24ην Φεβρουαρίου καὶ κατώρθωσε νὰ φθάσῃ μέχρι τοῦ Φενδιαποῦ, χωρὶς ὅμως νὰ δυνηθῇ νὰ προσπεράσῃ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σὰ - Χό, καὶ μετὰ πολλῶν δυσκολιῶν κατορθοῦσα ν᾽ ἀποκρούῃ τὰς ἰσχυρὰς ἀντεπιθέσεις τῆς 1ης ρωσικῆς στρατιᾶς. Διὰ τῆς ἐνεργείας τῶν δύο τούτων ἰαπωνικῶν στρατιῶν ἐξηπατήθη τελείως ὁ Κουρουπάτκιν, νομίσας ὅτι ἐπρόκειτο περὶ ἀπειλῆς ἐναντίον τοῦ ἀριστεροῦ του· παρεσύρθη δ᾽ ἔτι περισσότερον εἰς τὴν γνώμην ταύτην ἐκ τῆς παρουσίας τῆς 11ης ἰαπωνικῆς μεραρχίας, τῆς ἀποτελούσης ἤδη μέρος τῆς 5ης στρατιᾶς, διότι γνωρίζων ἐκ τῆς πολιορκίας τοῦ Πὸρτ - Ἀρθοὺρ ὅτι ἡ 11η μεραρχία ἀνῆκεν εἰς τὴν 3ην στρατιάν, ὑπέθεσεν ὅτι καὶ ἡ στρατιὰ αὕτη εἱλίσσετο ὁλόκληρος πρὸς τὸ ἀριστερὸν αὐτοῦ. Δι᾽ ὅ, πρὸς ἀπόκρουσιν τῆς ὑποθετικῆς ταύτης ἀπειλῆς, μετέφερε πρὸς τὸ ἀριστερόν του τὸ πλεῖστον μέρος τῶν ἐφεδρειῶν του καὶ διέταξε συγχρόνως τὸν στρατηγὸν Ρέννενκαμπφ νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν διοίκησιν τῆς ἀριστερᾶς πτέρυγος. Τὴν 27ην Φεβρουαρίου προσεπέρασεν ἡ 3η ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ταϊτσέου - Χό, καὶ τὴν 28ην ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Κουὲν - Χό, φθάσασα εἰς τὸ Συφαντάϊ, ταχθεῖσα δηλαδὴ εἰς τὸ ὕψος τῆς 2ας στρατιᾶς, τότε δὲ μόνον ἐγένετο ἀντιληπτὴ ὑπὸ τῆς ἐρεύνης τοῦ ρωσικοῦ ἱππικοῦ ἡ προχώρησις αὕτη. Ἀπὸ τῆς 1ης Μαρτίου ἡ 3η ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἤρχισεν ἀλλάσσουσα κατεύθυνσιν καὶ λαμβάνουσα τοιαύτην πρὸς ἀνατολάς, προκαλυφθεῖσα πρὸς δυσμὰς ὑπὸ τοῦ ἱππικοῦ ἀκολουθήσαντος τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Λιάο - Χό, ὁπότε ἤρχισεν ἀπειλοῦμενον σοβαρῶς τὸ δεξιὸν ρωσικὸν πλευρόν. Ἡ 2α ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἔσπευσε τότε νὰ ὑποβοηθήσῃ τὸν ὑπερκερωτικὸν ἑλιγμὸν τῆς 3ης, τάξασα μίαν μεραρχίαν της ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Κουὲν - Χό, καὶ συνεπῶς ταχθεῖσα ἱππαστὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τούτου. Κατὰ τὸ μέχρι της 25ης Φεβρουαρίου χρονικὸν διάστημα ἡ 4η ἰαπωνικὴ στρατιὰ οὐδὲν ἐνήργει, ἀσχολουμένη ἁπλῶς εἰς τὸ νὰ συγκρατῇ τοὺς ἔναντι αὐτῆς Ρώσους, τὴν δὲ 27ην ἐξετέλεσεν ἰσχυρότατον βομβαρδισμὸν διὰ τοῦ πυροβολικοῦ κατὰ τῶν λόφων Πουτίλωφ καὶ Νοβογορόντ, ἵνα καθηλώσῃ τελείως τὰς ἐκεῖ ρωσικὰς δυνάμεις. Ἅμα ὡς ἐπληροφορήθη ὁ Κουροπάτκιν περὶ τοῦ ἑλιγμοῦ τῆς 3ης ἰαπωνικῆς στρα-



Digitized by Google

τιᾶς καὶ ἀντελήφθη ὅτι ἐπρόκειτο περὶ ὑπερκεράσεως τοῦ δεξιοῦ του πλευροῦ, ἔσπευσεν ἀφ' ἑνὸς μὲν νὰ μεταφέρη εἰς Σαλινποῦ τὰς ὀλιγίστας ἀπομεινάσας αὐτῷ ἐφεδρείας καὶ νὰ μετακαλέση συγχρόνως δυνάμεις ἐκ τοῦ ἀριστεροῦ του (τὰς ἄνευ λόγου ἀποσταλείσας ἐκεῖ πρὸ τινων ἡμερῶν), ἀφ' ἑτέρου δὲ νὰ διατάξη ἐλαφρὰν ὑποχώρησιν τῶν μονάδων τοῦ ἄκρου δεξιοῦ του, ἵνα μὴ ἀποκοπῶσιν αὗται, καὶ κατὰ τὴν νύκτα 1—2 Μαρτίου τάξιν αὐτῶν ἐν ἀμυντικῇ ἐπικαμπτῇ.

*Β' φάσις* (2—7 Μαρτίου). Ἡ 3η ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἐξηκολούθησε τὸν πρὸς βορρᾶν ἑλιγμόν της, παρακολουθουμένη εἰς τὸ δεξιόν της ὑπὸ τῆς 2ας στρατιᾶς, προσπερώσης τὰς δυνάμεις της συνεχῶς ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Κουὲν-Χὸ καὶ προσπαθούσης νὰ τηρῇ διαρκῶς στενὸν τὸν μετὰ τῆς 3ης στρατιᾶς σύνδεσμον. Τὴν 4ην Μαρτίου, φθάσας ὁ Νογκὴ εἰς τὸ ὕψος τοῦ Τασιτσάο καὶ νομίσας ὅτι τὸ δεξιὸν τῶν Ρώσων δὲν ἐπεξετείνετο περισσότερον, ἐσταμάτησε τὴν περαιτέρω πρὸς βορρᾶν προχώρησιν τοῦ ἑλιγμοῦ καὶ ἐστράφη πρὸς βορειοανατολάς, ἵνα τοιουτοτρόπως ἀποκόψη ἀμέσως τὰς ρωσικὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν, ἀλλὰ κατὰ τὴν ἰδίαν ἐκείνην ἡμέραν ἀντελήφθη ὅτι τὸ δεξιὸν τῶν Ρώσων ἐπεξετείνετο πολὺ περισσότερον ἀπὸ ὅ,τι ἐνόμιζεν· ἐπειδὴ δὲ πρὸς ἀνάληψιν νέας πρὸς βορρᾶν προελάσεως εἶχεν ἀνάγκην ἐνισχύσεως, ἵνα μή, διὰ τῆς ὑπερμέτρου ἐπεκτάσεως τοῦ μετώπου του, λεπτυνθῇ πολὺ τοῦτο, δι' αὐτὸ ἀνέμεινεν ἐπ' ὀλίγον μέχρι τῆς ἀποστολῆς ἐνισχύσεως ὑπὸ τοῦ ἀρχιστρατήγου. Ὁ Κουροπάτκιν πληροφορηθεὶς τὴν ἀνακοπὴν τῆς πρὸς βορρᾶν προελάσεως τῶν Ἰαπώνων καὶ νομίσας κατάλληλον τὴν στιγμήν, ἐπεζήτησε τὴν 5ην Μαρτίου ν' ἀντεπιτεθῇ διὰ τῶν δυνάμεων τοῦ δεξιοῦ του, ἀλλά, δεχθεὶς τότε ζωηρὰν ἐπίθεσιν ὑπὸ τῆς 2ας ἰαπωνικῆς στρατιᾶς, παρητήθη τῆς περαιτέρω ἀντεπιθετικῆς ἐνεργείας. Ἐν τῷ μεταξὺ τούτῳ, ἐνισχυθείσης τῆς πτέρυγος τοῦ ἑλιγμοῦ ὑπὸ μιᾶς μεραρχίας (τῆς 3ης, ἀποτελούσης μέρος τῆς ἐφεδρείας), ἐπεξετάθη τὴν 5ην Μαρτίου ἡ πρὸς βορρᾶν προέλασις τῶν Ἰαπώνων, ἀλλά, μέχρις οὗ συντελεσθῇ αὕτη, ἡ κατάστασις τῆς 3ης ἰαπωνικῆς στρατιᾶς περιῆλθεν εἰς κάπως δύσκολον θέσιν, λόγῳ δημιουργηθέντος κενοῦ μεταξὺ δύο μεραρχιῶν της (7ης καὶ 1ης), πωματισθέντος μόλις τὴν πρωΐαν τῆς 6ης Μαρτίου διὰ τῆς παρενταξέως τῆς 9ης μεραρχίας. Τῆς δυσκόλου ὅμως ταύτης θέσεως τῶν Ἰαπώνων οὐδόλως ἐπωφελήθησαν οἱ Ρῶσοι, ἴσως μὴ ἀντιληφθέντες καλῶς τὴν κατάστασιν.

Κατὰ τὴν ἐπομένην, 7ην Μαρτίου, ἔφθασαν ἡ μὲν 3η ἰαπωνικὴ στρατιὰ μέχρι τοῦ Τιαντσιατούν, ἡ δὲ 2α στρατιὰ μέχρι τοῦ Γιουχουντούν. Διαρκούσης τῆς φάσεως ταύτης, ἡ μὲν 4η ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἐνέτεινε τὰς ἐπιθετικὰς προσπαθείας της πρὸς κατάληψιν τῶν λόφων Πουτίλωφ καὶ Νοβογορόντ, ἀλλὰ χωρὶς νὰ κατορθώσῃ τοῦτο, αἱ δὲ 1η καὶ 5η ἐπεζήτησαν τὴν κατάληψιν σημαινουσῶν τινων θέσεων ἐπὶ τῆς κυρίας ἀμυντικῆς γραμμῆς τῶν Ρώσων, ἀλλὰ καὶ αὗται ἀνεπιτυχῶς. Τοιουτοτρόπως, κατὰ τὴν λῆξιν τῆς 2ας φάσεως, ἤτοι τὴν ἑσπέραν τῆς 7ης Μαρτίου, ἡ ἑκατέρωθεν κατάστασις ἦτο ἡ ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένη, δηλαδή: οἱ μὲν Ρῶσοι, φοβηθέντες ὑπερκέρασιν τοῦ δεξιοῦ των, ἐξετέλεσαν ἀλλαγὴν μετώπου, περιστραφέντες περὶ τὸ Λινγισιποῦ περίπου, καὶ ἐπεξέτειναν τὸ δεξιόν των διὰ μεταφορᾶς διαφόρων μονάδων ἐκ τοῦ ἀριστεροῦ των, εἰς τρόπον ὥστε τὸ μέτωπόν των ἀπετελεῖτο ἐκ δύο σκελῶν, κατευθυνομένων τοῦ μὲν πρὸς βορρᾶν, τοῦ δὲ πρὸς ἀνατολάς· οἱ δ' Ἰάπωνες, διὰ τῆς ἐκτελέσεως τοῦ ὑπερκερωτικοῦ ἑλιγμοῦ, ἐχωρίσθησαν εἰς δύο ὁμάδας, τῆς μὲν δεξιᾶς (ἀνατολικῆς) ἐκ τῶν στρατιῶν 4ης, 1ης καὶ 5ης, μὴ κατορθωσασῶν τὴν πλήρη κατάληψιν τῆς κυρίας ἀμυντικῆς γραμμῆς τῶν Ρώσων, τῆς δ' ἀριστερᾶς (βορείας) ἐκ τῶν στρατιῶν 3ης καὶ 2ας, ἐπιμηκυνασῶν τόσον πολὺ τὸ μέτωπόν των, ὥστε μόλις ἠδύνατο τοῦτο ν' ἀντιστῇ εἰς τὰς ρωσικὰς ἀντεπιθέσεις, τὸ δὲ πάντων κύριον μὲ τὸν μεταξὺ τῶν δύο τούτων ὁμάδων σύνδεσμον λίαν ἀραχνοϋφῆ. Ἐν συνόψει, οἱ μὲν Ἰάπωνες ἠπείλουν ἀμέσως τὰς βορείας τοῦ Μοῦκδεν ρωσικὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν, οἱ δὲ Ρῶσοι ἠδύναντο, ἂν ἐγνώριζον καλῶς τὴν ἰαπωνικὴν κατάστασιν, νὰ διαρρήξωσι τὸ ἰαπωνικὸν μέτωπον, εἴτε πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τῆς κοιλάδος τοῦ Κουὲν-Χό, εἴτε πρὸς τὴν τοῦ βορείου σκέλους.

*Γ' φάσις* (8—11 Μαρτίου). Ὁ Κουροπάτκιν, πεισθεὶς ὅτι τὰ στρατεύματά του ἦσαν ἐξησθενημένα καὶ ὅτι δὲν θὰ ἠδύναντο ν' ἀνθέξωσιν ἐπὶ πλέον, διέταξε κατὰ τὴν νύκτα τῆς 7ης πρὸς τὴν 8ην Μαρτίου ὑποχώρησιν πρὸς τὴν δευτέραν γραμμὴν ἀμύνης, μὴ γνωρίζων οὔτε τὴν ἀπαράλλακτον ἐξασθένησιν τῶν Ἰαπώνων, οὔτε τὴν τακτικήν των κατάστασιν (μέτωπα ἐκλεπτυσμένα, σύνδεσμος μεταξὺ 2ας καὶ 4ης στρατιῶν μόλις ὑφιστάμενος). Ἂν ἐγνώριζε ταῦτα ὁ Κουροπάτκιν, ἴσως ἡ ἐνέργειά του νὰ ἦτο ἀλλοία, ἀλλ' οὗτος κατείχετο πάντοτε ὑπὸ τοῦ ἐφιάλτου τῆς κυκλώσεως καὶ τῆς αἰχμαλωσίας. Ἡ 1η ἰαπωνικὴ στρατιὰ ἀνέλαβε τότε ἐρρωμένην ἐπίθεσιν, καὶ τὴν 9ην Μαρτίου κατώρθωσε νὰ διαρρήξη τὸ μέτωπον τῆς ἀντιμετώπου αὐτῇ 1ης ρωσικῆς στρατιᾶς, καὶ νὰ προσπεράσῃ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Κουὲν-Χό, ἀπειλήσασα τοιουτοτρόπως τὴν ἀποκοπὴν τῶν μετὰ τοῦ Μοῦκδεν γραμμῶν συγκοινωνιῶν (ἁμαξιτοῦ καὶ σιδηροδρομικῆς ὁδοῦ), δηλαδὴ ἐπὶ τοῦ τακτικοῦ πεδίου. Κατὰ τὸν χρόνον τοῦτον, αἱ 3η καὶ 2η ἰαπωνικαὶ στρατιαὶ ἐξηκολούθουν τὰς ἐπιθέσεις των, ἵνα τοιουτοτρόπως ἀπωθήσωσι τοὺς Ρώσους, τοὺς μὴ ἀποβλέποντας κατὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας εἰμὴ μόνον εἰς τὴν στρατηγικὴν προκάλυψιν τῶν γραμμῶν ὑποχωρήσεών των (ἁμαξιτοῦ καὶ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς βορείως τοῦ Μοῦκδεν). Ἀλλ' ἀπὸ τῆς ἑσπέρας τῆς 9ης Μαρτίου τόση ἦτο ἡ βεβαιότης τοῦ Κουροπάτκιν ὅτι εἶχε κυκλωθῇ, ὥστε ἐτηλεγράφησε τοῦτο πρὸς τὸν τσάρον, καὶ ἀμέσως διέταξε, κατὰ τὴν νύκτα 9—10 Μαρτίου, τὴν γενικὴν ὑποχώρησιν πρὸς βορρᾶν τοῦ Μοῦκδεν, ἀρχῆς γενομένης ἀπὸ τοῦ ἀριστεροῦ, ἵνα τοιουτοτρόπως ἐξακολουθήσῃ ἡ διὰ τοῦ δεξιοῦ προκάλυψις τῶν ὁδῶν ὑποχωρήσεως, ἀφοῦ προηγουμένως ἔταξεν ἰσχυρὰς ὀπισθοφυλακὰς πρὸς τὴν Ταοὺα καὶ πρὸς τὴν Σουκουαντσέου. Τὴν ἑσπέραν τῆς 10ης Μαρτίου κατελήφθη τὸ Μοῦκδεν ὑπὸ τῶν Ἰαπώνων. Τὴν 11ην Μαρτίου κατεδίωξαν οἱ Ἰάπωνες διὰ τῆς 3ης στρατιᾶς των, ἀλλὰ λίαν χλιαρῶς, καθόσον ἦσαν ἄκρως κατάκοποι, συγχρόνως δὲ βεβαιότατοι ὅτι δὲν θὰ ἐπρόφθανον ν' ἀποκόψωσι τοὺς Ρώσους πρὸ τῆς διαβάσεώς των διὰ τῆς στενωποῦ Τίελινγκ, ὡς καὶ πράγματι συνέβη, καθόσον οἱ Ρῶσοι διέβησαν ταύτην ἐντὸς τῆς 11ης Μαρτίου δι' ἐσπευσμένης πορείας 45 χιλιομέτρων ἐντὸς τῆς ἡμέρας ταύτης.

Αἱ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μοῦκδεν ἀπώλειαι ἦσαν τῶν μὲν Ἰαπώνων περὶ τὰς 40.000 ἀνδρῶν, τῶν δὲ Ρώσων περὶ τὰς 80.000 νεκρῶν καὶ τραυματιῶν καὶ 20.000 αἰχμαλώτων.

Παρατηρήσεις: Ἡ μάχη τοῦ Μοῦκδεν παρουσιάζει τρία σπουδαῖα χαρακτηριστικά: 1ον) ὅτι διηυθύνθη παρ' ἀμφοτέρων τῶν ἀρχιστρατήγων, κατὰ τὴν τακτικήν της ἐξέλιξιν, ἀπ' ἀρκετῆς ἀποστάσεως ὄπισθεν τοῦ μετώπου διὰ τεχνικῶν μέσων (τηλεγράφου, ὀπτικοῦ, τηλεφώνου)· ἂς μὴ θεωρηθῇ δὲ τοῦτο ὡς φυσικόν, διότι οὕτω πως γίνεται πάντοτε σήμερον, ἀλλ' ἂς ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ὅτι πρόκειται περὶ τοῦ ἔτους 1905· 2ον) ὅτι ἡ μάχη ἐκερδήθη ὑπὸ τῶν Ἰαπώνων ἀναμφισβητήτως λόγῳ τοῦ ὑπερκερωτικοῦ ἑλιγμοῦ, ἀλλὰ συγχρόνως καὶ λόγῳ τοῦ ὅτι ὁ Κουροπάτκιν προώρως ἐθεώρησεν ἑαυτὸν ἡττηθέντα καὶ ἀπολέσαντα πᾶσαν ἐλπίδα ἐπιτυχίας· 3ον) ὅτι ἡ μάχη αὕτη εἶναι ἡ πρώτη τόσον μακρᾶς χρονικῆς διαρκείας (20 περίπου ἡμερῶν), πρωτοφανοῦς διὰ τὴν τότε ἐποχήν.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**μουκιανός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν Μούκιον, ὁ τοῦ Μουκίου: «μουκιανὸν τεκμήριον» (ἐκ τοῦ λατ. mucianus).

—***μουκιανὴ ἐγγύησις ἢ ἀσφάλεια*** (cautio Muciana). Καλεῖται οὕτω, ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἐφευρόντος αὐτὴν Ρωμαίου νομοδιδασκάλου Κοΐντου Μουκίου Σκαιβόλα, ἡ διδομένη ὑπὸ τοῦ κληροδόχου καί, κατ' ἐπέκτασιν, τοῦ κληρονόμου, ὅστις ἐγκατέστη ὑπὸ τὴν αἵρεσιν τοῦ νὰ μὴ πράξῃ τι. Δίδεται ὁσάκις δὲν εἶναι βέβαιον ὅτι ὁ γεγραμμένος μέχρι τοῦ θανάτου του δὲν θὰ πράξῃ ὅ,τι ἀπηγορεύθη αὐτῷ, ἀλλὰ καὶ ὁσάκις πρὸς διαπίστωσιν τούτου καθίσταται ἀναγκαία ἡ κτῆσις τῆς κληρονομίας (ἐπὶ ἀπαγορεύσεως λ. χ. ἐκποιήσεως κληρονομιαίου πράγματος).

Διὰ τῆς παροχῆς τῆς ἐν λόγῳ ἀσφαλείας λογίζεται ὅτι ἡ αἵρεσις πληροῦται, ἡ δὲ κτῆσις τῆς κληρονομίας ἢ κληροδοσίας ἀποβαίνει ὁριστικὴ καὶ ὁ ἐγγυηθεὶς ἔχει ἁπλῆν ἐνοχικὴν ὑποχρέωσιν ὅπως ἀποδώσῃ τὸ ληφθέν, ἂν ἐπεχειρήσῃ τὴν ἀπηγορευμένην πρᾶξιν. Κατὰ τοῦτο, ριζικῶς διαφέρει ἡ προκειμένη τῶν ἄλλων ἀσφαλειῶν τῶν διδομένων ἐπὶ ἀναβλητικῶν ἐν γένει αἱρέσεων, αἵτινες ἐπάγονται προσωρινὴν μόνον κτῆσιν τῆς κληρονομίας ἢ κληροδοσίας. Τὴν ἀσφάλειαν ἀπαιτοῦν οἱ ὑποκατάστατοι, οἱ συγκληρονόμοι καὶ οἱ ἐξ ἀδιαθέτου κληρονόμοι, τηρουμένων κατὰ τὴν χορήγησιν αὐτῆς τῶν διατάξεων τῶν ἄρθρων 840 ἑπ. τῆς πολιτικῆς δικονομίας.

Θ. Ι. Α.

—***μουκιανὸν τεκμήριον*** (praesumptio Muciana). Ἡ προϊοῦσα ἐν Ρώμῃ ἔκλυσις τῶν ἠθῶν κατὰ τοὺς ἐγγὺς π. Χ. χρόνους καὶ ἡ ἐπὶ χρήμασιν ἐκπόρνευσις τῶν γυναικῶν παρέσχεν ἀφορμὴν εἰς τὸν νομοδιδάσκαλον τῆς ἐποχῆς Κόϊντον Μούκιον Σκαιβόλαν ὅπως ἐπινοήσῃ τὸ ἐν λόγῳ τεκμήριον, καθ' ὃ πᾶν ὅ,τι ἀποκτᾷ ἡ γυνὴ συνεστῶτος τοῦ γάμου τεκμαίρεται περιελθὸν αὐτῇ ἐκ δωρεᾶς τοῦ ἀνδρός. Ἡ ἀνάγκη καθιερώσεως τοῦ τεκμηρίου φαίνεται ὅτι ἀπὸ μακροῦ εἶχε καταστῇ συνειδητή, διότι περὶ τὴν δικαιολογικὴν του βάσιν γίνεται συζήτησις μεταξὺ δύο γυναικῶν εἰς κωμῳδίαν τινὰ τοῦ Πλαύτου. Τὸ τεμήριον εἶναι ἀπόρροια τῆς γνωστῆς ἀρχῆς τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου, καθ' ἣν αἱ μεταξὺ συζύγων δωρεαὶ εἶναι ἄκυροι καὶ εἶναι μαχητὸν (praesumptio juris), ἀπαλλασσομένης τῆς γυναικὸς ἐὰν ἀνταποδείξῃ τὸ πόθεν ἔσχεν (unde habeat). Πρὸς τοῦτο, κατὰ τὴν κρατοῦσαν γνώμην, δὲν ἀρκεῖ ἡ ἀπόδειξις τοῦ τίτλου αὐτῆς, ἀλλ' ἐὰν οὗτος ἀπεκτήθη δι' ἀνταλλάγματος προσαπαιτεῖται καὶ ἡ ἀπόδειξις τοῦ πόθεν ἔσχε καὶ τὸ ἀντάλλαγμα. Οὕτως ὁ ἀθέμιτος πορισμὸς περιουσιακῶν κερδῶν ὑπὸ τῆς γυναικὸς ἀχρηστεύεται, ἀφοῦ δὲν δύναται νὰ ἐπικαλεσθῇ αὕτη τὴν ἰδίαν αὐτῆς ἀτιμίαν ἵνα περισώσῃ τὰ ὀφέλη ἐξ ἄλλου δ' ἀποσείεται ἀπ' αὐτῆς καὶ ἡ σχετικὴ ὑπόνοια. Ἀλλὰ καὶ τοὺς πιστωτὰς τοῦ ἀνδρὸς ἐξυπηρετεῖ προδήλως τὸ τεκμήριον, ἐφ' ὅσον ἀποκλείει τὴν μέσῳ τῆς γυναικὸς συγκάλυψιν τῆς περιουσίας τοῦ ἀνδρός.

Ἡ ἐφαρμογὴ τοῦ τεκμηρίου δὲν ἔχει ὡς προϋπόθεσιν τὴν ἀπόδειξιν τοῦ ὅτι ἡ γυνὴ ἀπέκτησε συνεστῶτος τοῦ γάμου, διότι ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ὁ ἐπικαλούμενος αὐτὸ θὰ ἦτο ὑπόχρεως πρὸς τῇ ἀποδείξει τοῦ χρόνου ν' ἀποδείξῃ καὶ τὸν τρόπον τῆς κτήσεως, τὸ δὲ τεκμήριον ἤθελεν οὕτως ἀποβῇ ἀνωφελές. Διαφέρει ἡ περίπτωσις, καθ' ἣν ὁμολογεῖται τὸ γεγονὸς τῆς πρὸ τοῦ γάμου κτήσεως, ὅτε τὸ τεκμήριον δὲν χωρεῖ.

Τροποποίησιν εἰς τὰς ρωμαϊκὰς διατάξεις ἐπέφερεν ὁ νεώτερος νόμος περὶ μεταγραφῶν. Διὰ τοῦ ἄρθρου αὐτοῦ 12, παράγρ. 3, κατηργήθη τὸ δικαίωμα τῶν συζύγων πρὸς διεκδίκησιν τῶν πραγμάτων, τὰ ὁποῖα ὁ εἷς ἀπέκτησεν ἐκ χρημάτων δωρηθέντων αὐτῷ ὑπὸ τοῦ ἑτέρου, ὥστε τὸ εἰς χεῖρας τῆς γυναικὸς πρᾶγμα δὲν διεκδικεῖται πλέον, ἀλλ' αὕτη εὐθύνεται μόνον ἐνοχικῶς πρὸς ἀπόδοσιν τῶν δωρηθέντων χρημάτων ὑπὸ τοῦ ἀνδρός. Λείψανον παρῳχημένων συνθηκῶν καὶ ἀντιλήψεων, δὲν εὐνοεῖται τὸ τεκμήριον ὑπὸ τῶν συγχρόνων νομοθετικῶν τάσεων, ἂν δέ τινες νεώτεραι νομοθεσίαι τὸ υἱοθετοῦν, τοῦτο ὀφείλεται μοναδικῶς εἰς τὸ ὅτι, διὰ τῆς περιστολῆς τῶν καταδολιεύσεων, ἐξυπηρετεῖ τὰ συμφέροντα τῶν δανειστῶν τοῦ ἀνδρός.

Θ. Ι. ΑΝΔΡΕΑΔΗΣ

**μουκίνη** (ἡ) (Mucin) *[Φαρμακογ.]*. Καλοῦνται οὕτω πρωτεΐδαι ἀπαντῶσαι εἰς τὰ βλεννώδη ζωϊκὰ ἐκκρίματα, αἵτινες, ὡς πρὸς τὴν συμπεριφοράν των ἔναντι τῶν ἀντιδραστηρίων, εἶναι ἀρκετὰ ὁμοειδεῖς, μετ' ἀλκαλικῶν δὲ διαλυμάτων δίδουν διαλύματα βλεννώδη συρόμενα ὡς νήματα. Διὰ τοῦ ὀξικοῦ ὀξέος τὰ διαλύματα ταῦτα καθιζάνουν, τὰ δι' ἰζήματα αὐτῶν εἶναι ἀδιάλυτα εἰς περίσσειαν ὀξικοῦ ὀξέος. Κατὰ τὴν δι' ἀραιῶν ὀξέων σχάσιν αὐτῶν δίδουν ἀζωτοῦχον πολυσακχαρίνην. Ὡς πρὸς τὴν σύνθεσιν αὐτῶν αἱ πρωτεΐδαι αὗται εἶναι λίαν διάφοροι. Ἡ μουκίνη ἀπαντᾷ εἰς τὸν σίελον τῶν ὑπογναθιαίων σιαλογόνων ἀδένων, εἰς τὴν χολήν, εἰς τὰ οὖρα, εἰς τὰς βλεννομεμβράνας τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων καὶ τοῦ ἐντέρου. Ἐπίσης μουκίνη ἀπεμονώθη ἐκ τῶν ἱστῶν τοῦ κοχλίου κτλ. Ἡ μουκίνη εἶναι ἀδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ, ἐξοιδεῖται ὅμως εἰς αὐτὸ καὶ ἰδίᾳ παρουσίᾳ χλωριούχου νατρίου. Ἡ διογκωθεῖσα μᾶζα τῆς μουκίνης παρουσιάζει φθορισμόν, ὅστις ὅμως δὲν παρουσιάζεται εἰς τὰ ἀλκαλικὰ διαλύματα αὐτῆς. Αἱ μουκῖναι δίδουν τὰς χαρακτηριστικὰς χρωστικὰς ἀντιδράσεις τῶν λευκωμάτων. Ὑπὸ τοῦ οἴκου Merck φέρεται ὡς μουκίνη βλεννώδης οὐσία λαμβανομένη ἐκ τῆς χολῆς, ἥτις εἶναι πιθανὸν μεῖγμα ὀροσφαιρίνης, μουκίνης καὶ χολικῶν ἀλάτων. Εἶναι κόνις κιτρίνη ἢ κιτρινοπρασίνη, διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ. Ἀνεγράφη ἐν μείγματι μετ' ἴσου ποσοῦ δισανθρακικοῦ νατρίου ἐπὶ γαστρικῶν ἑλκῶν ὡς προστατευτικὸν τῆς διαβρωθείσης βλεννομεμβράνης τοῦ στομάχου. Ἐπίσης ἀνεγράφη ἐπὶ ξηρῶν κατάρρων τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων κτλ.

Κ. Γ. Ν.

**Μούκιος** (Mucius). Πληβεία ρωμαϊκὴ οἰκογένεια, περίφημος ἐν τῇ ἱστορίᾳ, σπουδαιότερα μέλη τῆς ὁποίας ὑπῆρξαν τὰ ἑξῆς:

*Γάϊος Μούκιος Σκαιβόλας*. Οὗτος, κατὰ τὴν παράδοσιν, ὅταν κατὰ τὸ 507 ἐπολιόρκει στενῶς τὴν Ρώμην ὁ βασιλεὺς τῶν Ἐτρούσκων Πορσήννας, ἀπεφάσισε νὰ σώσῃ τὴν πατρίδα του φονεύων τὸν βασιλέα. Μετέβη λοιπόν, κατόπιν συγκαταθέσεως τῆς συγκλήτου, εἰς τὸ στρατόπεδον τοῦ Πορσήννα, ἀλλὰ κατὰ λάθος ἐφόνευσεν ἀντ' αὐτοῦ ἕνα ἐκ τῶν γραμματέων του. Συλληφθεὶς καὶ προσαχθεὶς ἀμέσως ἐνώπιον τοῦ βασιλέως καὶ ἀπειληθεὶς μὲ βασάνους καὶ θάνατον, ἔδειξεν ὅτι δὲν ἐφοβεῖτο οὔτε τὸ ἓν οὔτε τὸ ἄλλο, θέσας τὸν βραχίονά του ἐντὸς τῆς πυρᾶς καὶ ἀφήσας αὐτὸν νὰ καῇ χωρὶς νὰ ἐκδηλώσῃ οὔτε τὴν παραμικρὰν ὀδύνην. Ὁ βασιλεύς, εἰς ἔνδειξιν θαυμασμοῦ πρὸς τὸν ἡρωϊσμὸν τοῦτον τοῦ Μουκίου, τοῦ ἀπέδωσε τὴν ἐλευθερίαν καὶ τρομοκρατηθεὶς ἐκ τῆς δηλώσεως αὐτοῦ ὅτι 300 νέοι Ρωμαῖοι ἔχουν ὁρκισθῆ τὸν θάνατόν του, ἔκλεισεν εἰρήνην μετὰ τῆς Ρώμης. Ὁ Μούκιος, εἰς ἀνταμοιβήν, ἔλαβε παρὰ τῆς συγκλήτου ἀγρὸν παρὰ τὸν Τίβεριν καὶ τὴν ἐπωνυμίαν Scaevola (=ἀριστερόχειρ), λόγῳ ἀπωλείας τῆς δεξιᾶς του χειρός.

Ἱστορικῶς ἡ Μουκία γενεὰ μόλις κατὰ τὰ τέλη τοῦ Γ' π. Χ. αἰῶνος ἀναφαίνεται, καὶ κατέστη περίφημος διὰ τοὺς πολλοὺς καὶ διαπρεπεῖς νομομαθεῖς, τοὺς ὁποίους ἔδωκεν εἰς τὴν ρωμαϊκὴν πολιτείαν. Σπουδαιότεροι ἐξ αὐτῶν εἶναι:

Digitized by Google

Πόπλιος Μούκιος Σκαιβόλας. Ύπατος κατά τό 133, όπαδός τοῦ Τιβερίου καὶ τοῦ Γαΐου Γράκχου, τὴν ἰδεολογίαν τοῦ ὁποίου ἀπηρνήθη μετὰ τὸν σφαγιασμόν του. Βραδύτερον ἐγένετο μέγας ποντίφιξ καὶ ὡς τοιοῦτος ἀπέκτησε φήμην μεγάλου νομομαθοῦς.

Κόϊντος Μούκιος Σκαιβόλας. Ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου, ἐπονομασθεὶς ὁ Οἰωνοσκόπος (Augur), λόγῳ τοῦ ἐπαγγέλματός του. Ὑπῆρξεν ὕπατος τῷ 117 καὶ ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ Κικέρωνος εἰς τὴν ἐπιστήμην τοῦ δικαίου.

Κόϊντος Μούκιος Σκαιβόλας. Υἱὸς τοῦ Ποπλίου Μουκίου Σκαιβόλα, γενόμενος στρατηγὸς τῆς ἐπαρχίας Ἀσίας, ἣν διῴκησε μετὰ τοσαύτης ἐντιμότητος, ὥστε ἐθεσπίσθη πρὸς τιμήν του καὶ ἰδιαιτέρα ἑορτὴ ἀποκληθεῖσα Μουκία. Ἐχρημάτισεν ἐπίσης μέγας ποντίφιξ καὶ ὕπατος τῷ 95. Διεκρίθη διὰ τὴν ἀκεραιότητα τοῦ χαρακτῆρός του καὶ ἐθανατώθη τῷ 82 κατὰ τὸν μεταξὺ Μαρίου καὶ Σύλλα ἐμφύλιον πόλεμον, κατὰ διαταγὴν τοῦ Μαρίου. Διακεκριμένος ῥήτωρ, ὀφείλει τὴν φήμην του κυρίως εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος, ὅστις συνεκρότησεν εἰς σύστημα τὸ ἀστικὸν δίκαιον. Κατέλιπεν ἔργον ἐκ 18 τόμων, ὅπερ ἀπετέλεσε τὴν βάσιν τῶν μεταγενεστέρων ἐργασιῶν διὰ τὴν κωδικοποίησιν τοῦ ἀστικοῦ δικαίου. —Ω.

**Μούκκερμαν** (Muckermann), *Ἕρμαν*. Γερμανὸς ἰησουίτης, συγγραφεὺς καὶ βιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1877. Ἀπὸ τοῦ 1927 διευθυντὴς εἰς τὸ ἐν Βερολίνῳ ἰνστιτοῦτον τοῦ Κάϊζερ-Γουλιέλμου, ἠσχολήθη καὶ ἐνεβάθυνεν ἰδιαιτέρως εἰς μελέτας κοινωνιολογίας, βιολογίας καὶ κληρονομικότητος, ἃς καὶ ἐπεξήτησε παντοιοτρόπως ὅπως ἐκλαϊκεύσῃ. Ἔγραψεν: «Ἐπιτομὴ βιολογίας» (1909), «Παιδίον καὶ λαός» (1918, 2 τ.), «Νέα ζωή» (1925, 3 τ.), «Ἔρευνα τῆς κληρονομικότητος καὶ ἀναγέννησις οἰκογενειῶν καὶ λαοῦ» (1925). Ἀπὸ τοῦ 1920 ἐκδίδει τὸ βιολογικὸν περιοδικόν: «Τὸ ἐρχόμενον φῦλον». Θ. Κ.

**μουκκίτης** (ὁ) (Muckit) [*Ὀρυκτολ.*]. Ὀρυκτὸν ἀνῆκον εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ῥητινῶν. Χημικῶς ἀποτελεῖ ἕνωσιν ὑδρογονάνθρακος μετ' ὀξυγόνου, ὁ τύπος τοῦ ὁποίου δὲν εἶναι σαφῶς καθωρισμένος. Εἶναι σῶμα ἄμορφον καὶ ἀπαντᾷ ἐντὸς λιγνιτῶν τοῦ κρητιδικοῦ εἰς τὸ Neudorf τῆς Mähren. Γ. Β.

**Μουκοβίνα** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης (Ἰωαννίνων) τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 172. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μπιστιά*. Χ. Δ.

**μουκογόνον** (τὸ) (Mukogen) [*Φαρμ. Χημ.*]. Οὕτω καλεῖται τὸ μεθ' ὑδροχλωρίου ἅλας τῆς *διαιθυλοφαινυλο-π-ἀμμωνιο-6-ὀξυναφθοξαζίνης*, λαμβάνεται δὲ διὰ συμπυκνώσεως διναφθόλης μετὰ τῆς νιτροϊσοδιμεθυλανιλίνης. Εἶναι κυανοῖ κρύσταλλοι, σχεδὸν ἀδιάλυτοι εἰς τὸ ὕδωρ, διαλυτοὶ εἰς τὴν ἀλκοόλην καὶ τὰ ἀλκαλικὰ ὀξέα. Τὸ μουκογόνον ἀνεγράφη ὡς καθαρτικόν. Κ. Γ. Μ.

**Μουκούρι** (Mucuri) [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τῆς Βραζιλίας, πηγάζων ἐκ τῆς πολιτείας Μίνας Ζεράες καὶ διερχόμενος διὰ τῆς πολιτείας Ἐσπίριτου Σάντου. Ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανὸν καὶ ἔχει μῆκος 450 χλμ. Μ. Δ. Β.

**Μουκρόν**, ἢ *Μούσκρουν* (γαλλ. Mouscron, φλαμανδ. Moescroen) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Κουρτραὶ τῆς Δυτικῆς Φλάνδρας, κειμένη ἐγγὺς τῶν γαλλικῶν συνόρων, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Γάνδης—Λίλλης. Ἔχει ἐργοστάσια ὑφασμάτων καὶ σοκολάτας, βυρσοδεψεῖα καὶ χρωματουργεῖα. Κάτ. (1926) 27.001. Χ. Δ.

**Μουκτάρ**· βλ. *Μουχτάρ*.

**μουκτάρης** (ὁ)· βλ. *μουχτάρης*.

**Μουκτάροι** (κοινῶς *Μουχτάροι*) [*Γεωγρ.*]. Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας Πεδιάδος τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 427. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἁγία Παρασκευή* καὶ *Λιλιανό*. Ε. Γ.

**Μοὺλ** (Moule) [*Γεωγρ.*]. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς νήσου Γουαδελούπης ἐν ταῖς Μικραῖς Ἀντίλλαις, ἐπὶ τῆς ΒΑ. πλευρᾶς τῆς νήσου. Κάτ. 15.279. Ἔχει ἓν τῶν μεγαλοπρεπεστέρων δημοτικῶν μεγάρων τῆς νήσου καὶ ἐξάγει σάκχαριν, καφὲν καὶ καμπεχιανὸν ξύλον. Μ. Δ. Β.

**μούλα** (ἡ) [*Ζῳολ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ θήλεος τοῦ *ἡμιόνου*.

**Μουλᾶ Πέτρα** [*Γεωγρ.*]. Βραχονησὶς τῆς ΝΔ. ἐσχατιᾶς τῆς Χίου (πλάτ. 38° 15' 05" Β., μῆκ. 25°53'50" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1645: Island of Khios and Gulf of Smyrna). Πρόκειται τοῦ ἀκρωτηρίου Μεστά. Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην. Σ. Ε. Λ.

**μουλάϊ** (ὁ), ἢ *μούλεϋ*. Τίτλος προτασσόμενος τοῦ ὀνόματος τῶν σουλτάνων τοῦ Μαρόκκου καὶ σημαίνων κύριος ἢ ὁ κύριός μου.

—**Μουλάϊ** *Ἄμπντ-ἐλ-Ἀζίζ*. Σουλτᾶνος τοῦ Μαρόκκου (1894—1908), υἱὸς καὶ διάδοχος τοῦ Μουλάϊ-Χασάν. Θελήσας νὰ εἰσαγάγῃ εὐρωπαϊκοὺς νεωτερισμούς, προὐκάλεσε λαϊκὰς ἐξεγέρσεις, σπουδαιοτέρα τῶν ὁποίων ἦτο ἡ ὑπὸ τὸν Μποῦ-Χαμαρᾶ. Ἐπηκολούθησε περίοδος ἀναρχίας, καθ' ἣν ἡ Γαλλία, ἐπωφελουμένη τῆς ἀγγλογαλλικῆς «ἐγκαρδίου συνεννοήσεως» τῆς 8 Ἀπριλίου 1904, δι' ἧς ἀφίνετο εἰς αὐτὴν πᾶσα ἐλευθερία δράσεως ἐν Μαρόκκῳ, ἤρχισε τὴν εἰς τὴν χώραν ταύτην ἐφαρμογὴν προγράμματος οἰκονομικῆς, διοικητικῆς καὶ στρατιωτικῆς διεισδύσεως. Ἡ αὔξουσα γαλλικὴ ἐπιρροὴ ἐν Μαρόκκῳ ἐκίνησε τὴν ἀντιζηλίαν τῆς Γερμανίας, ἥτις μετὰ τὴν ἧτταν τῆς Ῥωσίας κατὰ τὸν Ῥωσοϊαπωνικὸν πόλεμον ἠξίου νὰ ἀσκήσῃ πολιτικὴν ἐπικρατήσεως ἐν Εὐρώπῃ. Τῇ 31ῃ Μαρτίου 1905 ὁ αὐτοκράτωρ Γουλιέλμος ὁ Β' ἐνεφανίσθη εἰς Ταγγέρην καὶ συνηντήθη μετ' ἀντιπροσώπων τοῦ σουλτάνου, δηλώσας ὅτι ἦλθεν ὅπως ἐγγυηθῇ τὴν ἀκεραιότητα τοῦ Μαρόκκου καὶ ἐξησφαλίσῃ τὴν ἰσότητα τῶν γερμανικῶν συμφερόντων. Συνεπείᾳ τῆς ἐπεμβάσεως ταύτης ὁ σουλτᾶνος ἀπέρριψε τὸ ὑπὸ τῆς Γαλλίας προταθὲν σχέδιον μεταρρυθμίσεων καὶ ἐκάλεσε τὰς εὐρωπαϊκὰς δυνάμεις εἰς σύσκεψιν. Τὴν διάσκεψιν ταύτην ἀπέκρουσεν ὁ ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Γαλλίας Δελκασέ, ἀλλ' ὁ Γερμανὸς ἀρχικαγκελλάριος Μπύλωυ μετῆλθεν ἀπειλητικὴν γλῶσσαν καὶ ἐν τέλει, παραιτηθέντος τοῦ Δελκασέ, ἐθριάμβευσεν ἡ γερμανικὴ πολιτικὴ καὶ συνῆλθεν ἡ συνδιάσκεψις τῆς Ἀλγεθίρας (βλ. λ.), καθ' ἣν ἐξεπονήθη σχέδιον μεταρρυθμίσεων, ἀλλ' ἡ Γερμανία ἠναγκάσθη ν' ἀναγνωρίσῃ τὴν προνομιοῦχον θέσιν τῆς Γαλλίας εἰς τὰς πρὸς τὴν Ἀλγερίαν περιοχάς. Ὑπεγράφη τότε ἡ πρᾶξις τῆς Ἀλγεθίρας (7 Ἀπριλίου 1906). Ἐν τούτοις αἱ διενέξεις μεταξὺ σουλτάνου καὶ Γαλλίας ἐξηκολούθουν. Τὸν Ἰούλιον τοῦ 1908 συνέβησαν ταραχαὶ ἐν Καζαμπλάνκᾳ, καθ' ἃς ἐφονεύθησαν 3 Γάλλοι, 3 Ἱσπανοὶ καὶ 3 Ἰταλοί. Ἡ Γαλλία τότε ἀπέστειλε στόλον καὶ στρατὸν πρὸς κατάληψιν τῆς Καζαμπλάνκας. Ἡ ἀπόβασις τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ ἐξετελέσθη ἐν μέσῳ γενικῆς σφαγῆς ἰθαγενῶν, ἐξ ὧν πολλοὶ ἐσώθησαν διὰ τῆς φυγῆς. Τῷ 1908 ἀποκατέστη κάποια ἡσυχία καὶ ἠλαττώθη ἡ δύναμις τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, ἥτις εἶχεν ἀνέλθει εἰς 15.000. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἐνεφανίσθη ἀντίπαλος τοῦ Ἄμπντ-ἐλ-Ἀζὶζ ὁ ἀδελφός του *Μουλάϊ-Χαφίτ* (βλ. λ.). Ν. Μ.

— **Μουλάϊ**-*Ἀμπντερραχμάν*. Σουλτᾶνος (σερίφης) τοῦ Μαρόκκου (1778—1859), ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1823. Τῷ 1828 ἡ Αὐστρία ἔστειλεν εἰς τὰ παράλια τοῦ Μαρόκκου στόλον, ὅπως ἀναγκάσῃ τὸν Ἀμπντερραχμὰν νὰ παραιτηθῇ τοῦ φόρου, τὸν ὁποῖον ἐλάμβανε πρὸς παρακώλυσιν τῆς πειρατείας. Τῷ 1844 ἡ Γαλλία ἐκήρυξε κατ' αὐτοῦ τὸν πόλεμον, διότι ἐπεχείρησε νὰ καταλάβῃ μέρος τοῦ Ἀλγερίου. Νικηθεὶς ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ ὁ Ἀμπντερραχμὰν ἠναγκάσθη νὰ ὑπογράψῃ εἰρήνην, ἀφοῦ γαλλικὸς στόλος ἐβομβάρδισε τὸ Μογκαδὸρ καὶ τὴν Ταγγέρην. Ν. Μ.

— **Μουλάϊ** *Γιουσούφ*. Σουλτᾶνος τοῦ Μαρόκκου, διαδεχθεὶς τὸν ἀδελφόν του Μουλάϊ-Χαφίτ. Ἐξηκολούθησε τὸ μεταρρυθμιστικὸν ἔργον τῶν ἀδελφῶν του ὑπὸ τὴν γαλλικὴν προστασίαν, βελτιώσας κυρίως τὴν δικαιοσύνην καὶ τὴν παιδείαν (βλ. λ. *Μαρόκκον*). Ν. Μ.

— **Μουλάϊ**-*Χαφίτ*. Σουλτᾶνος τοῦ Μαρόκκου, ἀδελφὸς καὶ ἀντίζηλος τοῦ Ἄμπντ-ἐλ-Ἀζίζ. Ἀνεκηρύχθη σουλτᾶνος κατ' ἀρχὰς ἐν Μαρακὲς τῷ 1907, ἐνῷ ἡ Γαλλία ὑπεστήριζε τὸν ἀδελφόν του διὰ χρημάτων καὶ ἄλλως. Τῷ 1908 ὁ Χαφὶτ ἀνεκηρύχθη σουλτᾶνος καὶ ἐν Φέζ. Ὁ ἀγὼν μεταξὺ τῶν δύο ἀδελφῶν ἐξηκολούθησεν, ἐν τέλει ὅμως ὁ Ἄμπντ-ἐλ-Ἀζὶζ ἡττηθεὶς ὁριστικῶς κατέφυγεν εἰς τὸ γαλλικὸν στρατόπεδον καὶ ὁ Χαφὶτ ἐδέχθη νὰ πληρώνῃ εἰς αὐτὸν ἐτήσιον ἐπίδομα ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ μένῃ ἐν Ταγγέρῃ. Ὁ Χαφίτ, ὑποστηριζόμενος ὑπὸ τῆς Γερμανίας, ἀνεγνωρίσθη ὑπὸ τῶν εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων, ἀναγνωρίσας καὶ αὐτὸς τὴν πρᾶξιν τῆς Ἀλγεθίρας (1909). Τὸ αὐτὸ ἔτος ἡ Ἱσπανία ἔστειλε στρατὸν ἐκ 50.000 ἀνδρῶν κατὰ τῶν κατοίκων τῆς περιοχῆς τοῦ Ῥίφ, τοὺς ὁποίους καὶ ὑπέταξε. Τῷ 1910 ὁ Χαφὶτ ἐπέτυχε παρὰ τῆς Γαλλίας δάνειον πρὸς ἱκανοποίησιν διαφόρων ἀπαιτήσεων Εὐρωπαίων ἐναντίον τοῦ μαχζὲν (μαροκκινοῦ δημοσίου). Ἡ γαλλόφιλος αὐτὴ πολιτικὴ τοῦ Χαφὶτ ἐδημιούργησε ῥεῦμα δυσαρεσκείας ἐναντίον του, ἐκ τῆς ὁποίας ἠθέλησε νὰ ἐπωφεληθῇ ἡ Γερμανία. Ἐνῷ δὲ γαλλικὰ καὶ ἱσπανικὰ στρατεύματα ἐνήργουν πρὸς ἀποκατάστασιν τῆς τάξεως, αἰφνιδίως ἐνεφανίσθη ἡ γερμανικὴ κανονιοφόρος «Πάνθηρ» εἰς Ἀγαδὶρ πρὸς προστασίαν δῆθεν τῶν γερμανικῶν συμφερόντων. Ἡ τοιαύτη ἀπότομος ἐπεμβάσεως τῆς Γερμανίας προεκάλεσε κρίσιν εὐρωπαϊκήν, καθ' ἣν ἠπειλήθη πρὸς στιγμὴν πόλεμος, συνεπείᾳ ὅμως τῆς ἀγγλικῆς διπλωματικῆς ἐπεμβάσεως ὑπὲρ τῆς Γαλλίας, ἡ Γερμανία ὑπεχώρησεν, ἐπιτυχοῦσα ἐδαφικὰς παραχωρήσεις ἐν Κόνγκῳ. Τῇ 30ῇ Μαρτίου 1912 ὁ Μουλάϊ-Χαφὶτ ὑπέγραψε μετὰ τῆς Γαλλίας συνθήκην, διὰ τῆς ὁποίας ἀνεγνώριζε τὴν προστασίαν αὐτῆς, ἀναγνωρισθεῖσαν καὶ ὑπὸ τῶν εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων. Τῇ 12ῃ Αὐγούστου 1912 ὁ Χαφὶτ παρῃτήθη, ὑποδείξας ὡς διάδοχον τὸν ἀδελφόν του Μουλάϊ-Γιουσούφ. Ν. Μ.

— **Μουλάϊ-Χασάν**. Ἡγεμὼν τῆς Τύνιδος (1533—1545). Ἐκθρονισθεὶς ὑπὸ τοῦ διασήμου Χαϊρεδδὶν Βαρβαρόσσα, ἐπανέκτησε τὸν θρόνον του τῇ βοηθείᾳ τοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου τοῦ Ε'. Ἀλλ' ὁ λαὸς ἐπαναστάτησεν ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ υἱοῦ του Χομαϊντᾶ. Συλληφθεὶς ἐτυφλώθη καὶ ἐφυλακίσθη (1543), βραδύτερον δὲ ἀποφυλακισθεὶς ἔφυγεν εἰς Ἰταλίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ν. Μ.

— **Μουλάϊ** - *Χασάν*. Σουλτᾶνος τοῦ Μαρόκκου (1873—1894). Ἐπὶ τῆς βασιλείας του ἡ Ἱσπανία παρεσκεύασε μεγάλην ἐκστρατείαν ἐξ 25.000 ἀνδρῶν ὑπὸ τὸν στρατάρχην Μαρτινὲθ Κάμπο, ὅπως τιμωρήσῃ τοὺς ἰθαγενεῖς τῆς χώρας τοῦ Ῥίφ, οἵτινες ἐπετίθεντο κατὰ τῶν Ἱσπανῶν παρὰ τὴν Μελλίλαν. Ὁ Μουλάϊ-Χασὰν ἠναγκάσθη νὰ ὑπογράψῃ συνθήκην, διὰ τῆς ὁποίας ὑπεχρεοῦτο νὰ πληρώσῃ εἰς τὴν Ἱσπανίαν ἀποζημίωσιν 20 ἑκατομμυρίων πεσετῶν. Ν. Μ.

**Μουλαμπαλῆ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ἀκακίες* (βλ. λ.).

**Μουλᾶος** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Ἀκρωτήριον τῆς ΒΑ. ἀκτῆς τοῦ Λακωνικοῦ κόλπου (πλάτ. 36°44'33" Β., μῆκ. 22°44'40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3372: Gulf of Lakonikos), 6 μίλ. βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου Ξυλή. Ὑπ' αὐτό, τὸ ἐπίνειον *Ἐλαία* καὶ ναυτικὸς φανὸς (1911) σταθεροῦ ἐρυθροῦ 5 μιλ. Σ. Ε. Λ.

**μουλάρα** (ἡ)· ἡ θήλεια ἡμίονος, ἄλλως *μούλα*· || μεταφ., ἡ πείσμων γυνή.

**Μουλάρα** [*Γεωγρ.*]· βλ. *Μουλιανή*.

**μουλαρᾶς** (ὁ)· δημοτ., ὁ ὁδηγὸς μουλαριοῦ, ἡμιονηγός· || μεταφ., ἀγροῖκος, ἀναίσθητος.

**μουλαραφάνα** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀστράγαλος ὁ κυλλώνειος*.

**μουλαρήσιος, —α, —ο**· δημοτ. ὁ σχετικὸς μὲ τὸ μουλάρι: «ἔχει μουλαρήσιο κεφάλι, ἀγύριστο» ἐπὶ ἀνθρώπου ἰσχυρογνώμονος: «μουλαρήσιο πεῖσμα».

**μουλάρι** (τό). Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *ἡμιόνου*· || μεταφ., ἄνθρωπος πείσμων.

**μουλᾶς** (τουρκ. καὶ ἀραβ. *μολλᾶ* καὶ *μουλᾶ*, ὅπερ ἐκ τοῦ *μεβλά-να*=ὁ κύριος ἡμῶν). Τίτλος διδόμενος εἰς ἱερωμένους τοῦ μουσουλμανικοῦ θρησκεύματος, ἱεροδίκας, χοτζάδες καὶ ἄλλους. Εἰδικῶς ὁ μέγας ἀρχιδικαστὴς (ὁ μουλᾶς τῆς Αἰγύπτου, τῆς Μέκκας κλ.).

**Μουλάτσι** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Ἑλληνικόν* (βλ. λ.).

**Μουλατὼ** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Δαρδανίας, τὰ ὁποῖα ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μουλγάρ-δὰγ** (κατὰ παραφθορὰν ἐκ τοῦ *Μπουγᾶ* =ταῦρος) [*Γεωγρ.*]. Τμῆμα τῆς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ὀροσειρᾶς τοῦ *Ταύρου*, ἐκτεινόμενον μεταξὺ τῶν Κιλικίων Πυλῶν καὶ τῆς πόλεως Ἐρεγλί. Ἐκ τῆς εἰς *Μπουλγάρ-δὰγ* παραφθορᾶς τοῦ ἀρχικοῦ ὀνόματος λαβὼν ἀφορμὴν Βούλγαρός τις λόγιος ἐνεργεῖ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐρεύνας εἰς τὰ παλαιὰ τουρκικὰ ἀρχεῖα, ὅπως ἀποδείξῃ ὅτι ὑπῆρχεν εἰς τὴν χώραν ταύτην βουλγαρικὸν βασίλειον ἱδρυθὲν ὑπὸ κλάδου τῶν Πρωτο-Βουλγάρων, τραπέντος ἐκ τῆς παρὰ τὸν Καύκασον ἀρχικῆς αὐτῶν κοιτίδος πρὸς τὴν Μικρὰν Ἀσίαν. Ν. Μ.

**μουλγίδιον** (τὸ) (Mulgidium) [*Βοτ.*]. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων χωρῶν, καλλιεργούμενα πρὸς κόσμον. Δ. Ν. Π.

**Μουλγκακώφ, Μιχαὴλ - Ἰβάνοβιτς**. Ἀρχηγὸς τοῦ εὐγενοῦς ῥωσικοῦ οἴκου *Γκαλίτσιν* (βλ. λ.).

**Μουλὲν** (Moulins) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ἀλλιέ. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν μεταξὺ Παρισίων-Λυῶνος καὶ ἔχει ἐργοστάσια ἐβενουργίας, πιλοποιίας καὶ ὀξοποιίας. Κάτ. 22.000. Ὑπὸ τὸ ὄνομα «καλλιτέχνης τοῦ Μουλὲν» (le maître de Moulins) εἶναι γνωστὸς εἷς περίφημος ζωγράφος τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, τοῦ ὁποίου κύριον ἔργον εἶναι τὸ ἐν τῷ ναῷ τῆς Παρθένου τοῦ Μουλὲν τρίπτυχον, εἰκονίζον τὴν Παρθένον μετὰ τοῦ Χριστοῦ εἰς τὸ μέσον καὶ τοὺς Πέτρον Β' τῶν Βουρβόνων καὶ Ἄνναν τῆς Γαλλίας εἰς τὰ πλάγια. Χ. Δ.

**Μουλὲν-Κινιὸν** (Moulin - Quignon). Περιοχὴ ἀνεμομύλου, ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἰδιοκτήτου, παρὰ τὴν πόλιν Saint-Gilles τῆς Abbeville τῆς Γαλλίας (Somme), γενομένου περιφήμου κατὰ τὰ

Digitized by Google

μέσα τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἕνεκα τῶν διαμαχῶν, ἃς ἤγειρεν ἡ ὑποτιθεμένη ἀνακάλυψις σιαγόνος παλαιοντολογικοῦ ἀνθρώπου, τῆς λεγομένης *«γνάθου Moulin-Quignon»*. Ὁ Boucher-de-Perthes, γνωστότατος ἐκ τῶν ἐργασιῶν του ἐπὶ τῶν παλαιολιθικῶν ἔργων τοῦ ἀνθρώπου, θέλων νὰ ἀνακαλύψῃ ἀληθῆ καὶ ἀναμφισβήτητα σκελετικὰ ἴχνη τοῦ παλαιοντολογικοῦ ἀνθρώπου, πρὸς ὑποστήριξιν τῆς αὐθεντικότητος τῶν λιθίνων ἐργαλείων, ἅτινα συνήθροισεν ἐν Amiens καὶ Abbeville, ὑπεσχέθη εἰς τὸν ἐργάτην, ὅστις θὰ τῷ παρουσίαζεν ἐπὶ τόπου τὸ πρῶτον τοιοῦτον λείψανον ἀμοιβὴν 200 φράγκων. Καὶ ὁ Boucher-de-Perthes ἔπιπτε θῦμα ἀπάτης, ὅτε τὴν 28ην Μαρτίου 1863 ὑπεδείχθη εἰς αὐτόν, ἐνσφηνωμένον εἰς βάθος 4,50 μ., τὸ ἥμισυ κάτω σιαγόνος ἀνθρωπίνης, ἐχχωσθὲν ὑπὸ τοῦ ἰδίου παρουσίᾳ τοῦ Dimpre, μετὰ τινῶν λιθίνων ἐργαλείων χελλαίων. Ἡ διεθνὴς συζήτησις τῆς 9 Μαΐου 1863, ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ Milne-Edwards, δὲν κατέληξεν εἰς συμφωνίαν, τοῦ εὑρήματος ἀπορριπτομένου καὶ ὑπ' αὐτῶν τῶν Ἄγγλων, οἵτινες πρότερον εἶχον ἀποδεχθῆ πρῶτοι τὸ λοιπὸν προϊστορικὸν ἔργον τοῦ διασήμου τούτου ἐπιστήμονος, ἐναντίον τῶν γαλλικῶν ἐπιφυλάξεων. Ἀπεδείχθη ἐντὸς τῆς σιαγόνος ἄμμος διάφορος τῆς τοῦ μέρους τῆς εὑρέσεως, διατήρησις καλή, μὴ συμφωνοῦσα μὲ τὴν ὑποτιθεμένην τριβήν, ἐπὶ πλέον δὲ ἀπεδείχθησαν ψευδῆ καὶ πολλὰ τῶν λιθίνων ἐργαλείων. Σήμερον, ἡ ἱστορικῆς ἀξίας μόνον σιαγὼν αὕτη εὕρηται ἐν τῷ μουσείῳ φυσικῆς ἱστορίας τῶν Παρισίων. Ἡ ἐπιστήμη δὲν ἔχει ἄλλως τε ἀνάγκην τοῦ δείγματος τούτου πρὸς ὑποστήριξιν τοῦ παλαιοντολογικοῦ ἀνθρώπου, διότι περὶ αὐτοῦ κατέχει πλεῖστα ἄλλα δείγματα σπουδαιότατα, ραγδαίως ἔκτοτε πληθυνόμενα. Τὸ Μουλὲν-Κινιὸν ἐξερευνηθὲν ἔδωσεν ἐν τούτοις καὶ ἄλλα ἴχνη λαξευτῶν λίθων αὐθεντικῶν. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**Μοῦλες** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λαγάτορας τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης (Ἰωαννίνων) τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 207. Χ. Δ.

**Μούλετε** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κισάμου τοῦ νομοῦ Χανίων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 266. Εἰς τὴν κοινότητα ἀνήκουν καὶ τὰ χωρία *Παθιανά, Σφενδυλιανὰ* καὶ *Χαϊνδεριανά*. Τὸ διαμέρισμα εἶναι εὔφορον εἰς οἶνον καὶ ἔλαιον, συνδέεται δὲ πρὸς τὰ Χανιὰ δι' ἁμαξιτοῦ δρόμου. Ε. Γ.

**μούλεϋ·** βλ. *μουλάϊ*.

**Μούλια** *[Γεωγρ.]*. Συστὰς μυρμήκων ἐν χρῷ τῆς θαλάσσης κατὰ τὸ ΝΔ. τῆς Κύπρου, 2 ½ μίλλ. ΝΑ. τοῦ φάρου τῆς Πάφου (πλάτ. 34° 45' Β., μῆκ. 32° 25' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2074: Cyprus) καὶ βορείως τοῦ Ἄσπρου Κάβου. Ἐν ἡμέρᾳ καὶ τρικυμίᾳ εὐαναγνώριστοι ἀπὸ τῶν ἐπ' αὐτῶν θραυομένων κυμάτων. Σ. Ε. Λ.

—**Μούλια** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καινούργιου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 295. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**Μουλιανὰ** *[Γεωγρ.]*.—1) *Ἔξω Μουλιανά*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασηθίου,

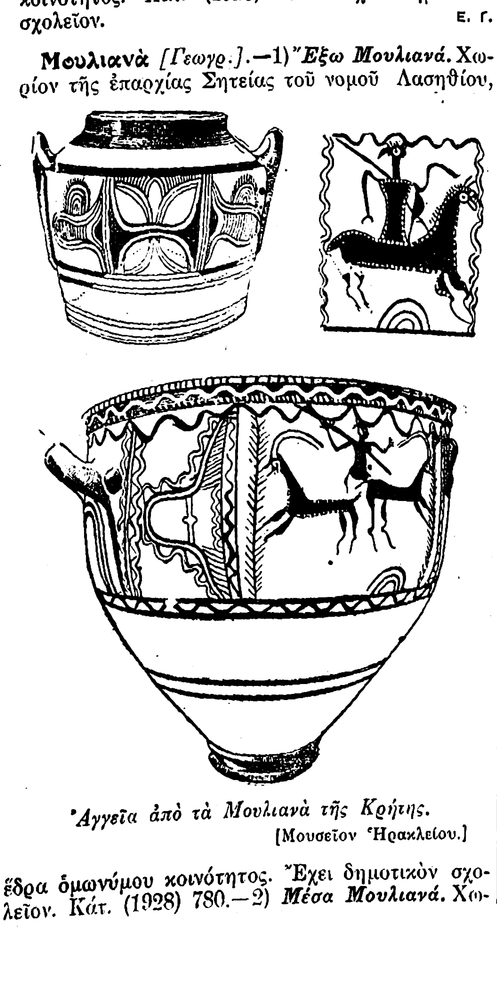

*Ἀγγεῖα ἀπὸ τὰ Μουλιανὰ τῆς Κρήτης.*
[Μουσεῖον Ἡρακλείου.]

ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 780.—2) *Μέσα Μουλιανά*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασηθίου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 456. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ χωρίον Καλαβροῦ. Πλησίον τοῦ χωρίου εἰς τὴν θέσιν *Σελάδες* ἀνεκαλύφθησαν τάφοι τετράγωνοι θολωτοὶ τῆς τελευταίας μινωϊκῆς περιόδου καὶ τῆς ἀρχομένης πρωτογεωμετρικῆς. Ἐντὸς τῶν τάφων εὑρέθησαν ἀγγεῖα, ξίφη, κύμβαλα χαλκᾶ, μία προσωπὶς χρυσῆ κ. ἄ. (πρβλ. Ἀρχαιολ. Ἐφημ. 1904, σ. 21 κ. ἑξ.). Ν. Ε. Π.

—**Μουλιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πρεβέζης χωρίου *Γοργόμυλος* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μουλιανὴ** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Σιγγιτικοῦ κόλπου (πλάτ. 40° 20' Β., μῆκ. 23° 55' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1086: Gulf of Kassandra to Thassos and Lemnos) κατὰ τὸν Β.ΒΑ. αὐτοῦ μυχὸν καὶ πρὸ τοῦ Ἰσθμοῦ τοῦ Ξέρξου, μεθ' οὗ σχηματίζει τὸν ὅρμον *Πρόβλακα*. Ὀνομάζεται ὡσαύτως *Ἀμμουλιανή, Βατοπεδινὴ* (ἀπὸ τῆς μονῆς, εἰς ἣν ἀνήκει), *Διάπορη* καὶ *Μουλάρα*. Ἡ ΒΑ. ἄκρα της, Β.ΒΔ. τῆς ὁποίας εὑρίσκεται τὸ ἀγκυροβόλιον, εἶναι γνωστὴ εἰς τοὺς ξένους ὡς Fearless point. Σ. Ε. Λ.

**μούλικο** (τό) «μούλικο παιδί» νόθον τέκνον, ἄλλως *μπαστάρδικο* (οὐδ. τοῦ *μοῦλος*, βλ. λ.).

**Μούλιος** *[Μυθολ.]*. —1) Σύζυγος τῆς Ἀγαμήδης, θυγατρὸς τοῦ Αὐγείου, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Νέστορος εἰς τὸν μεταξὺ Ἠλείων καὶ Πυλίων πόλεμον (Ἰλιάδ. Ν. 739). —2) Κῆρυξ τοῦ Ἀμφίνομος, ἑνὸς τῶν μνηστήρων τῆς Πηνελόπης (Ὀδυσσ. σ, 424). Α. Θ. Σ.

**μοῦλκι** (τὸ) (ἀραβ. *μούλκ=κτῆμα*). Ἀκίνητον ἢ κινητὸν ἐν Τουρκίᾳ, ἀπολύτου κυριότητος, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ *βακούφιον* (κτῆμα ἀφιερωμένον εἰς εὐαγῆ σκοπὸν) καὶ τὰ *μιριγὲ* (τοῦ δημοσίου).

Κατὰ τὴν τουρκικὴν νομοθεσίαν τὰ ἀκίνητα καὶ κινητὰ τῆς κατηγορίας *μούλκ* εἶναι ἐκεῖνα, ὧν ἡ ἀπόλυτος κυριότης ἀνήκει εἰς ἰδιώτας. Ταῦτα διαιροῦνται εἰς: 1) Κινητὰ πράγματα, ἐνσώματα, ἐνδύματα, ἔπιπλα, χρήματα κτλ. 2) Ἀκίνητα, οἷον γήπεδα, ἐφ' ὧν ὑπάρχουσιν οἰκοδομαὶ ἢ προορίζονται πρὸς ἀνέγερσιν οἰκοδομῶν, γαῖαι φυτευμέναι ἢ προοριζόμεναι διὰ φύτευσιν, γαῖαι ἀρόσιμοι μεθ' ὅλων τῶν ἐμπραγμάτων δικαίων (jura in re). Ἀκίνητα μούλκ ἐκτισμένα ἐπὶ οἰκοπέδων *μιρὶ* (τοῦ δημοσίου) θεωροῦνται κατὰ τὸ 59ον καὶ 81ον ἄρθρον τοῦ περὶ γαιῶν τουρκικοῦ νόμου ὡς *μούλκια*, ἂν ἡ οἰκοδομὴ εἶναι σπουδαιοτέρα τοῦ οἰκοπέδου καὶ τἀνάπαλιν. 3) Τὰ ἀκίνητα, τὰ λεγόμενα *μουκαταᾶ*, ἤτοι οἰκοδομαὶ καὶ φυτεῖαι μούλκ ἐπὶ γαιῶν βακούφ. Ἐν τῇ περιπτώσει ταύτῃ καὶ τὸ βακούφ θεωρεῖται ὡς μούλκι κατὰ τὴν ἐν προκειμένῳ καὶ ἐν τῷ τουρκικῷ δικαίῳ ἰσχύουσαν ἀρχὴν τοῦ accessorium sequitur principalem (=τὰ παρακολουθήματα ἀκολουθοῦσι τὸ κύριον). 4) Μεταλλεῖα. 5) *Γεδίκια* (βλ. λ.) συνεστημένα ὡς μούλκια ἐπὶ βακουφικῶν οἰκοπέδων καὶ συνιστάμενα εἰς τὸ δίκαιον τοῦ ἐξασκεῖν ὡρισμένην βιοτεχνίαν ἐντὸς ὡρισμένου ἀκινήτου. Τὸ δικαίωμα τοῦτο θεωρεῖται ὡς πραγματικὸν καὶ ἀκίνητον. 6) Πραγματικὰς ἀγωγὰς (διεκδικητικὰς καὶ περὶ νομῆς), ἀγωγὰς περὶ ἐμπραγμάτων δικαίων, ὡς τὸ δικαίωμα διελεύσεως ἐπὶ γειτονικοῦ κτήματος κτλ. 7) Ἐνοχάς, ἀπαιτήσεις κτλ., συμπεριλαμβανομένων καὶ τῶν ὁμολογιῶν τοῦ κράτους καὶ τῶν ἀνωνύμων ἑταιρειῶν, γενικῶς δὲ πᾶν δικαίωμα τικτόμενον ἐκ συμβάσεων ἢ ἐκ τοῦ νόμου. 8) Προσωπικὰς ἀγωγὰς καὶ ἀγωγὰς σχετικὰς πρὸς κινητὰ ἐνώπιον τῶν δικαστηρίων.

Κατὰ τὸν ὁρισμὸν τοῦ 125ου ἄρθρου τοῦ παλαιοῦ τουρκικοῦ ἀστικοῦ κώδικος (Μετζελλὲ) μούλκ εἶναι πᾶν ὅ,τι δύναταί τις νὰ κτήσηται, εἴτε πρόκειται περὶ πράγματος εἴτε περὶ τῶν καρπῶν του.

[*George Young*, Corps de droit ottoman. Oxford 1906, τόμ. I, σ. 305, VI 187 κτλ.] Ν. Μ.

**Μοῦλκι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς νήσου Σαλαμῖνος (πλάτ. 37° 55' 20'' Β., μῆκ. 23° 28' 20'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1657: Gulf of Athens), ἀποτελῶν τὸν ΝΑ. μυχὸν τοῦ κόλπου τῆς Κούλουρης, εἰς 2 ¾ μίλλ. ΝΑ. τῆς πόλεως Σαλαμῖνος. Σ. Ε. Λ.

—**Μοῦλκι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς καὶ πρὸς Β. τοῦ Βασιλικοῦ καὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας Σικυῶνος, ἡμίσειαν ὥραν ἀπὸ τοῦ Κιάτου (Σικυωνίας) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 691. —2) Χωρίον τῆς Βοιωτίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λεβαδείας τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐντὸς τῆς κοιλάδος τοῦ Βοιωτικοῦ Κηφισοῦ παρὰ τὴν Κωπαΐδα καὶ ἦτο περίφημον διὰ τοὺς ἐν αὐτῷ καλλιεργουμένους ἐκλεκτοὺς πέπονας («μουλκέϊκα πεπόνια»). Οἱ πέπονες οὗτοι, καλλιεργούμενοι κυρίως σήμερον ἐν τῇ πεδιάδι τοῦ Ἄργους, εἶναι γνωστοὶ ὡς «ἀργίτικα πεπόνια». Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ΤΤΤ γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 784. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ἐπίσης τὸ χωρίον *Ἁλίαρτος (Κριμπᾶς)* καὶ τὸν συνοικισμὸν Κασσί*δος*. Παρὰ τὸ χωρίον Ἁλίαρτος ὑπάρχει σταθμὸς τοῦ σιδηροδρόμου Ἀθηνῶν—Λαρίσης.—3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐπὶ τῆς νήσου Σαλαμῖνος χωρίου *Αἰάντειον* (βλ. λ.).

**Μούλκια** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Δαμαλᾶ τῆς ἐπαρχίας Τροιζηνίας τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Κάτ. (1928) 54. Χ. Δ.

**μουλλανίτης** (ὁ) *[Ὀρυκτολ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ ὀρυκτοῦ *βουλανζερίτης* (βλ. λ.).

**μουλλικίτης** (ὁ) (Moullicit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν φωσφορικὸν ἅλας τοῦ σιδήρου ἔνυδρον. Ὁ χημικὸς τύπος αὐτοῦ εἶναι $Fe_3P_2O_8.8H_2O$, ἤτοι ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν τύπον τοῦ βιβιανίτου, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ παραλλαγὴν εἰς ἀκτινώδη συσσωματώματα. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Mullica Hills ἐν New Jersey ὡς ὑλικόν, τὸ ὁποῖον πληροῖ τὸ ἐσωτερικὸν ἀπολιθωμένων κογχυλίων. Γ. Δ.

**Μοῦλο** (Mulo) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος Δαλματικὴ (πλάτ. 43° 31' Β., μῆκ. 15° 55' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2774: Gulf of Quarnero), ἐπισημοτάτη τὴν θέσιν, χρησιμεύουσα διὰ τοῦτο ὡς ἀφετηρία εἰς τὴν κατάταξιν τῶν φάρων ἐν τοῖς φαροδείκταις τοῦ Ἀδρία. Σ. Ε. Λ.

**μοῦλος,** *—α, —ικο·* νόθος, ὁ μὴ ἐκ νομίμου γάμου γεννηθεὶς (λατ. mulus=ἡμίονος· ἡ συνεκδοχὴ ἐκ τοῦ ὅτι ἡ ἡμίονος γεννᾶται ἐξ ἀνομοιογενῶν γονέων, ἐξ ἵππου καὶ ὄνου).

**Μουλούγια** (Moulouia) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τοῦ μεσημβρινοῦ Μαρόκου, πηγάζων ἐκ τοῦ Ἄτλαντος βορείως τοῦ Τζέμπελ Ἀγιάτουν. Διέρχεται διὰ τοῦ Γιερούφ, διαρρέει τὴν κοιλάδα Ἀγκοὺντ καὶ χύνεται εἰς τὴν Μεσόγειον. Τὸ μῆκός του εἶναι 450 χιλ. Π. Γ.

**μουλπιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *θάλικτρον τὸ στιλπνόν*.

**Μουλτὰν** (Multan ἢ Mooltan) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν. Τὸ διαμέρισμα ἔχει 29.816 τ.χλμ. καὶ 3.000.000 κατ. καὶ εὑρίσκεται ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Πεντζάπ. Ἔχει ἔδαφος καλῶς ἀρδευόμενον ὑπὸ ποταμῶν καὶ διωρύγων καὶ παράγει βάμβακα, ἰνδικόν, οἶνον καὶ ἐλαιοσπόρους.

Ἡ πόλις κεῖται παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Τσενάμπ, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Λαχώρης—Ντερὰ Γαζῆ Χάν. Εἶναι πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος καὶ ἔχει 84.8.. κατ. Περιβάλλεται κατὰ τὰς τρεῖς πλευρὰς ὑπὸ παλαιῶν τειχῶν καὶ ἔχει τάφους πολλῶν Μωαμεθανῶν ἁγίων καὶ ἐρείπια ἰνδικοῦ ἀρχαίου ναοῦ. Ἔχει βιομηχανίαν ταπητουργίας, εἰδῶν μετάξης, βάμβακος καὶ ὀνομαστῶν ἐσμαλτωμένων σκευῶν. Εἶναι ἓν τῶν ὀνομαστοτέρων ἐμπορικῶν κέντρων τοῦ Πεντζάπ, μετὰ σημαντικῆς ἐτησίας ἐμποροπανηγύρεως ἵππων. Μ. Δ. Σ.

**μουλτανίνη** (ἡ) (Multanin) *[Φαρμακ.]*. Εἶναι τὸ βασικὸν δεψικὸν ἀργίλλιον. Κόνις τεφρά, ἀδιάλυτος εἰς τὸ ὕδωρ. Χορηγεῖται ὡς φάρμακον στυπτικὸν πλειστάκις τῆς ἡμέρας εἰς δισκία. Κ.Γ.Ν.

**μουλτεζὶμ** (τὸ) *[Ἐγκυκλ.]*. Ἓν ἐκ τῶν μάλλον διαδεδομένων παιγνιδίων τῶν παιζομένων ἐπὶ τοῦ *ταβλίου* (βλ. λ.). Οἱ δύο συμπαῖκται τοποθετοῦσι τοὺς 15 πεσσούς των ἐπὶ διαγωνίως ἀντιθέτων ἄκρων τοῦ ταβλίου. Τὸ ζήτημα τῆς πρώτης ρίψεως τῶν κύβων κανονίζεται ὡς καὶ εἰς τὰ λοιπὰ παιγνίδια. Εἰς τὸ μέτρημα ἐπίσης δὲν ὑπάρχει καμμία διαφορά, αἱ δὲ διπλαῖ (π. χ. δύο πεντάρια ἢ τριάρια κλπ.) παίζονται δίς. Αἱ δύο κυριώτεραι πρωτοτυπίαι εἶναι: α') Ὅτι κατὰ τὴν ἔναρξιν εἶναι ὑποχρεωτικὴ ἡ μετακίνησις ἑνὸς καὶ μόνου πεσσοῦ μέχρις ὅτου ἐπιτευχθῇ (εἴτε εἰς τὴν πρώτην εἴτε εἰς διαδοχικὰς ρίψεις) καὶ φθάσῃ ὁ πεσσὸς οὗτος εἰς τὸ τεταρτημόριον τοῦ ταβλίου ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐκκινεῖ ὁ ἀντίπαλος, ἐὰν δὲ δὲν δύναται νὰ διέλθῃ, ὁ κάτοχός του δὲν παίζει, ἀναμένων καὶ κατάλληλον εὐκαιρίαν. β') Ὅτι ἀρκεῖ εἷς καὶ μόνος πεσσὸς διὰ ν' ἀποτελέσῃ φραγμόν, ἐφ' οὗ οἱ πεσσοὶ τοῦ ἀντιπάλου δὲν δύνανται νὰ στηριχθῶσι καὶ διέλθωσιν, ἐκτὸς ἂν ὑπερπηδήσωσιν αὐτὸν (ἐὰν πάλιν οἱ ἀριθμοὶ τῶν ριφθέντων κύβων τὸ ἐπιτρέψωσι). Ἕκαστος συμπαίκτης δέον νὰ συγκεντρώσῃ τοὺς πεσσοὺς αὐτοῦ εἰς τὸ ἀπέναντι τοῦ σημείου τῆς ἐκκινήσεως τεταρτημόριον τοῦ ταβλίου, ἀφοῦ ὅμως διανύσῃ δι' αὐτῶν πάντα τὰ λοιπὰ τεταρτημόρια. Πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς ἐπιτυχίας τοῦ παιγνιδίου, ἕκαστος τῶν παικτῶν προσπαθεῖ νὰ ἀποφράξῃ τὴν δίοδον εἰς τοὺς πεσσοὺς τοῦ ἀντιπάλου, παρατάσσων εἰς ἓν οἱονδήποτε σημεῖον τῆς διαδρομῆς 6 πεσσοὺς κατὰ σειράν. Δὲν ἔχει ὅμως τὸ δικαίωμα νὰ καταλάβῃ κατὰ σειρὰν καὶ τὰς 6 θέσεις ἑνὸς τεταρτημορίου, ἀλλὰ πρέπει πάντοτε νὰ ἀφίνῃ μίαν τοὐλάχιστον ἐξ αὐτῶν κενήν. Νικητὴς ἁπλοῦ ἢ διπλοῦ (μάρς) παιγνιδίου ἀναδεικνύεται καθ' ὃν τρόπον καὶ εἰς τὰ λοιπὰ παιγνίδια τοῦ ταβλίου. Χ. Δ.

Digitized by Google

**μουλτεζίμης** (ὁ). Πακτωτὴς τοῦ δημοσίου φό-ου (κυρίως τῆς δεκάτης, τοῦ φόρου ἁλιείας κλ.), τῇ παλαιᾷ Τουρκίᾳ, ἀναλαμβάνων τὴν εἴσπρα-ν αὐτῶν ἔναντι πληρωμῆς ὡρισμένου ποσοῦ ιτ᾽ ἀποκοπήν. Ν. Μ.

**Μοῦλτσερ** (Multscher), ***Χάνς.*** Γερμανὸς γλύπτης ιὶ ζωγράφος τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος, ἱδρυτὴς τῆς σουηβι-ῆς σχολῆς τοῦ Οὖλμ. Ὡς γλύπτης εἰργάσθη εἰς ἡν διακόσμησιν τῆς περιφήμου μητροπόλεως οῦ Οὖλμ. Ὡς ζωγράφος ἐφιλοτέχνησε τὸ περί-ιλημα βωμοῦ τοῦ μουσείου τοῦ Βερολίνου (1437), αριστῶν σκηνὰς ἐκ τοῦ βίου τῆς Παρθένου καὶ ῶν παθῶν τοῦ Χριστοῦ, καὶ ἕτερον περίβλημα ρζόμενον ἐν τῇ πόλει τοῦ Στέρζινγκ (1458), ἀπει-ονίζον τὰς αὐτὰς παραστάσεις. Ἐκ τῶν ὑφιστα-ένων ὅμως εἰς τὰ δύο ταῦτα ἔργα ριζικῶν δια-ορῶν συμπεραίνεται ὅτι δὲν ἐζωγραφήθησαν πὸ τοῦ αὐτοῦ προσώπου, ἂν καὶ εἶναι ὑπογεγραμ-ένα ἀμφότερα διὰ τοῦ αὐτοῦ ὀνόματος. Πιθανὸν ἶναι τὸ πρῶτον νὰ μὴν ἐζωγραφήθη ἰδιοχείρως, λλὰ νὰ φέρῃ τὴν ὑπογραφήν του, διότι ἴσως νὰ ἶχε τοῦτο ἀνατεθῆ εἰς αὐτόν. Χ. Δ.

**μούλωμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μουλώνω*, άλυψις διὰ χώματος, ἐπίχωσις: «ὁ λάκκος θέλει ούλωμα».

**μουλώνω,** *ἀόρ. ἐμούλωσα—ἐ)μουλώθηκα*, παρακ. αθ. μετοχ. *μουλωμένος*· δημοτ., καλύπτω διὰ χώμα-ος, χώνω, καταχώνω, προσχώνω: «μουλώνω τὶς ίζες τοῦ δένδρου», «μούλωσε τὸ λάκκο»· || θάπτω, κα-ύπτω εἰς τὴν γῆν: «τὸν ἐμουλώσανε τὸν νεκρό»· || κα-όλου, καλύπτω: «ἔχει πολὺ νερό, μουλώνει ἄνθρωπο».

— **μουλώνω,** ἢ *μουλλώνω*· δημοτ. ἀμετβ., κρύπτομαι ιπὸ φόβον, πτήσσω καταπτήσσω, σιωπῶ, ἄλλως ουφάζω.

**μουλωχτός,**—*ή,*—*ό,* ἢ *μουλλωχτός*· δημοτ., σιω-τηλός, ὕπουλος, κρυψίνους: κάθεται στὴν ἄκρη μου-ωχτός»· || «μουλλωχτὸ σκυλλί», ἄλλως *κρυφοδάκωτο*.

**Μόϋμαν** (Meumann), ***Ἐρνέστος.*** Γερμανὸς φι-όσοφος καὶ παιδαγωγικὸς (1862—1915), ὀπαδὸς ῆς ψυχολογικῆς σχολῆς τοῦ Βούντ. Ἐχρημάτισε αθηγητὴς ἐν Ζυρίχῃ, Καινιξβέργῃ, Μύνστερ, Χάλλε, ειψίᾳ καὶ Ἀμβούργῳ καὶ συνέγραψε: «Beiträge ur Psychologie des Zeitsinnes» ἀπάνθισμα δημο-ιευθὲν ἐν ταῖς «Philosophische Studien» (1892—896), «Oekonomie und Technik des Gedächtnis-ses» (1911), «Ueber einige Grundfragen der Psy-chologie der Uebungsphänomene» (1904). Ἐν συν-εργασίᾳ μετὰ τοῦ Ἔμπερτ ἐξέδωκε: «Assoziazion-experimente» (1907), «Lehrbuch der Psycholo-gie» (1907), «Intelligenz und Wille» (1913), «Ueber Bekanntheits-und Unbekanntheitsqualität» (1911), «Psychologie des Alltagslehens» (1915) καὶ «Hand-buch der Intelligensprüfungen» (1915). Ὁ Μόϋ-μαν διέπρεψε καὶ ὡς παιδαγωγικός. Ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν πειραματικῆς παιδαγωγικῆς: «Zeit-schrift für experimentelle Pädagogik», ὅπερ ἐπανεξεδόθη βραδύτερον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Zeit-schrift für pädagogische Psychologie und ex-perimentelle Pädagogik» καὶ συνέγραψε: «Die Entstehung der ersten Wortbedeutungen beim Kinde» (1908), «Die sprache des Kindes» (1903), «Ueber Oekonomie und Technik des Lerneus» (1903), «Haus und Schularbeit, Experimente am Kindern der Volksschulen» κτλ. Ἀσχοληθεὶς καὶ ἐν τῇ αἰσθητικῇ ἐδημοσίευσε τῷ 1894 τὰ πορί-σματα τῶν μελετῶν του, τῶν σχετικῶν πρὸς τὴν ψυχολογίαν καὶ τὴν αἰσθητικὴν τοῦ ρυθμοῦ, βρα-δύτερον δὲ ἐξέδωκε τὰ ἔργα: «Einführung in die Aesthetik der Gegenwart» (1911) καὶ «System der Aesthetik» (1914). Κατὰ τὸν Μόϋμαν κύριος σκοπὸς τῆς τέχνης εἶναι ἡ ἔκφρασις τῆς προσω-πικότητος τοῦ καλλιτέχνου, χρησιμοποιοῦντος διά-φορα μέσα αἰσθητοποιήσεως, ἀναλόγως τῶν τεχνῶν. (Βλ. καὶ λ. *αἰσθητική*, τόμ. Β΄, σ. 854 α΄ κ. ἑξ.) Α. Δ.

**μούμια** (ἡ)· πτῶμα ἀνθρώπου ταριχευμένον ἀπ᾽ αἰώνων: «αἰγυπτιακὴ μούμια», ἄλλως *μομία*· || μεταφ., ἐπὶ ἀνθρώπου κατεσκληκότος, συνήθως γέ-ροντος, ἢ καὶ ἐκ νόσου ἀπισχνανθέντος: «μιὰ μού-μια ἔγινε ἀπὸ τὴν ἀρρώστια».

—*[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *μομία*.

**Μούμμιος** (Mummius). Πληβεία ρωμαϊκὴ οἰκο-γένεια (βλ. λ. *Μόμμιος*).

**μουμουτζελιά,** ἢ *μουμουτσελιὰ* (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ἡ ὀξυάκανθα*

**μουμπαγιατζῆς** (ὁ) (ἐκ τοῦ ἀραβοτουρκ. *μουμπα-γιαά=ἀγορά*)· χρηματιστής.

**Μουμπάρρας,** ἢ ***Ἐλ-Μουμπαρρὲζ*** *[Γεωγρ.]*. Πό-λις τῆς ἀνατολικῆς Ἀραβίας, ἐν τῇ παρὰ τὸν Περ-σικὸν κόλπον ἐπαρχίᾳ Χάσσα. Κάτ. 16.000. Ν. Μ.

**μουμχανᾶς** (ὁ) (τουρκ. *μοὺμ=κηρός, χανὲ=οἶκος*). κηροποιεῖον.

**Μουμχανᾶς** *[Γεωγρ.]*. Συνοικία τοῦ Γαλατᾶ ἐν Κωνσταντινουπόλει πρὸς τὸν Τοπχανέ, ὅπου εὑ-ρίσκετο ἄλλοτε ἡ ἑβδόμη πύλη τοῦ παραλίου τεί-χους τοῦ τμήματος τούτου τῆς πόλεως. Ν. Μ.

**μουνάκιας** (ὁ)· δημοτ., γελοῖος γυναικομανής, ἄλλως *γυναικάκιας*.

**μουναρίδα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυ-τοῦ *ὑποχοιρὶς ἡ μελανοφλοιοειδής*.

— **μουναρίδα ἄγρια** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὑποχοιρὶς ἡ κρητική*.

**μουνδαϊκὴ** *γλωσσικὴ ὁμοφυλία* *[Γλωσσολ.]*. Εἰς ταύτην ἀνήκουν αἱ *μουνδαϊκαὶ* (ὡς ὠνομάσθη-σαν ὑπὸ τοῦ Max Müller) ἢ ἄλλως *κολαρικαὶ* κα-λούμεναι γλῶσσαι (ἢ διάλεκτοι), αἱ ὁποῖαι ὁμι-λοῦνται ἰδίως εἰς τὸ ἀνατολικὸν τμῆμα τοῦ Ἰνδο-στάν, δυτικῶς τοῦ κάτω ροῦ τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, ὑπὸ πληθυσμοῦ ὑπερβαίνοντος τὰ τρία ἑκατομμύρια. Αἱ γνωστότεραι ἐκ τῶν μουνδαϊκῶν διαλέκτων—διαιρουμένων εἰς δύο ὁμάδας: τὴν βόρειον τὴν παρὰ τὰ Ἱμαλάϊα ὄρη καὶ τὴν νότιον — εἶναι αἱ ἑξῆς: ἡ *μαγχατική*, ἡ *ραγκλοϊκή*, ἡ *κανασική*, ἡ *καναβρική*, ἡ *ραγκασική*, ἡ *λιμπουϊκή*, ἡ *θαμική*, ἡ *σανταλική*, ἡ *μουνδαρική*, ἡ *κωδαϊκή*, ἡ *ἀσουρι-κή*, ἡ *κορβαϊκή*, ἡ *κουρκουϊκή*, ἡ *χαριακὴ* καὶ ἄλλαι. Αἱ μουνδαϊκαὶ διάλεκτοι διακρίνονται διὰ τὴν ἐξαιρετικὴν ποικιλίαν τῶν ἀντωνυμικῶν καὶ ρη-ματικῶν τύπων, εἰς τὰς πλείστας δὲ ἐξ αὐτῶν διακρί-νονται ἐν τῇ κλίσει τρεῖς ἀριθμοί: ὁ ἑνικός, ὁ δυϊκὸς καὶ ὁ πληθυντικός. Θεωρεῖται πιθανὸν ὅτι ἡ γλῶσσα, ἐκ τῆς ὁποίας αὗται προῆλθον διὰ τῆς χωριστῆς κατὰ τόπους ἐξελίξεώς της, ὑπῆρξεν ἡ παλαιοτάτη γλῶσσα τῆς ἰνδικῆς χερσονήσου καὶ ὅτι ὁμιλουμένη αὕτη κατ᾽ ἀρχὰς εἰς τὸ πλεῖστον μέρος τοῦ βορείου Ἰνδοστάν, περιωρίσθη βαθμη-δὸν ὑπὸ τῶν δραβιδικῶν γλωσσῶν καὶ τῆς ἐκ τῆς ἰαπετικῆς προελθούσης ἰνδικῆς γλώσσης. Γ. Π. Α.

**μουνδαρικὴ** (ἡ) *[Γλωσσολ.]*. Καλεῖται οὕτω μία ἐκ τῶν διαλέκτων τῆς *μουνδαϊκῆς* γλωσσικῆς ὁμο-φυλίας (βλ. λ.).

**Μούνδας** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰβη-ρικῆς χερσονήσου ἐν Λουσιτανίᾳ (νῦν Πορτογα-λίᾳ), «ἀνάπλους ἔχων μικροὺς» κατὰ Στράβωνα (Γ΄ 153), ὅστις διαρρέων τὴν πεδιάδα τοῦ Αἰμινίου (νῦν Κοΐμβρα), ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανὸν μεταξὺ τοῦ Δούρου καὶ Τάγου, μετὰ ροῦν 225 χλμ. Εἶναι ὁ σημερινὸς Mondejo. Α. Θ. Σ.

**Μούνδεπα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Φρούριον τῆς Θράκης ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ροδόπης, κτισθὲν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰουστινιανοῦ (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μουνδίλας.** Βυζαντινὸς στρατηγός. Συμμετέ-σχεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Βελισσαρίου κατὰ τῶν ἐν Ἰταλίᾳ Γότθων (536) καὶ διεκρίθη εἰς τὴν ἄμυναν τῆς Ρώμης διὰ τῶν τολμηρῶν αὐτοῦ ἐξό-δων κατὰ τῶν πολιορκητῶν. Τῷ 538, ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ Βελισσαρίου μετὰ τμήματος στρατοῦ, κα-τέλαβε τὰ Μεδιόλανα, ἀλλὰ πολιορκηθεὶς ὑπὸ πολυαρίθμων Γότθων ἠμύνθη γενναίως, καὶ ἐν τέλει, ἀφοῦ ἐξηντλήθησαν τὰ τρόφιμα τῆς πό-λεως, καὶ αὐτοὶ οἱ κύνες καὶ οἱ μῦς, τοὺς ὁποίους ἠναγκάσθησαν νὰ φάγουν οἱ ἀμυνόμενοι, ἠναγκά-σθη νὰ παραδοθῇ. Ν. ΚΛΣ

**Μοῦνδος,** Βυζαντινὸς στρατηγός. Ὑπηρετῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 532, ὅτε ἐξερράγη ἐκεῖ ἡ φοβερὰ στάσις τοῦ «Νίκα», ἔσωσε μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Βελισσαρίου τὸν αὐτο-κράτορα Ἰουστινιανόν, ἐπιτεθεὶς κατὰ τῶν ἐν τῷ Ἱπποδρόμῳ στασιαστῶν καὶ διασκορπίσας αὐτοὺς κατόπιν φοβερᾶς σφαγῆς. Τῷ 536, ἀποσταλεὶς εἰς Δαλματίαν ἵνα ἐκδιώξῃ τοὺς εἰσβαλόντας ἐκεῖ ἐξ Ἰταλίας Γότθους, ἐξεπόρθησε τὴν πόλιν τῶν Σα-λόνων (παρὰ τὸ σημερινὸν Spalato), συγκρουσθεὶς δὲ κατόπιν παρ᾽ αὐτὴν πρὸς τὰς πολὺ ὑπερτέρας δυνάμεις τῶν πολεμίων, ἐφονεύθη μετὰ τοῦ πλεί-στου τοῦ στρατοῦ αὐτοῦ. Ν. ΚΛΣ

**Μούνδου** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὸς σταθμὸς τῆς Αἰθιοπίας τῆς ὑπὸ Αἴγυπτον ἐν τῇ νοτίᾳ ἀκτῇ τοῦ Αὐαλίτου κόλπου *(Πτολεμ.* Δ, ζ΄, 39), μεταξὺ τῶν ἐμπορίων Μαλαὼ καὶ Μοσύλου, δυτικῶς δὲ τοῦ ἀκρωτηρίου τῶν Ἀρωμάτων (νῦν Γουαδαρ-φουΐ). Εἶναι τὸ σύγχρονον χωρίον *Μάϊτ* εἰς τοὺς πρόποδας φερωνύμου ὄρους (Jebel Mäït, πλάτ. 10°37΄ Β., μῆκ. 47°00΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 6 b: Gulf of Aden, sheet 2). —2) Νῆσος πελαγίως τοῦ ἐμ-πορίου, ἡ σύγχρονος *Ζεζιρὰτ - ἄρ - Ράμπς* ἢ *Μάϊτ* (πλάτ. 11°13΄, μῆκ. 47°13΄ Ἀν.) κατασκευασμένη ἀπὸ γουανώ. Σ. Ε. Λ.

**Μουνδουρνοῦ-σοῦ** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ Σαγγαρίου, ἐκβάλλων παρὰ τὴν Νικομήδειαν. Κ. ΛΣ

**Μουνδρὰ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Φασκομηλιὰ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μούνδριζα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Γρύλλος* (βλ. λ.) Χ. Δ.

**Μουνὲ** (Mounet), ***Παῦλος.*** Γάλλος ἠθοποιός, νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ *Μουνὲ Συλλύ*, γεννηθεὶς τῷ 1847. Ἐσπούδασεν ἰατρικήν, ἀλλ᾽ ἐγκαταλείψας ταχέως τὴν ἐπιστήμην του ἐπεδόθη εἰς τὸ θέατρον. Προσληφθεὶς ὑπὸ τοῦ διευθυντοῦ τοῦ «Ὠδείου» La Rouat τῷ 1880, ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ὡς Ὁράτιος ἐν τῇ γνωστῇ τραγῳδίᾳ τοῦ Κορνηλίου, μεθ᾽ ὃ ἔπαιξεν ἐπιτυχῶς πολλοὺς ἄλλους ρόλους τοῦ γαλλικοῦ δραματολογίου. Συνεπείᾳ τῶν ἐπιτυ-χιῶν του αὐτῶν, τῷ 1889 προσελήφθη εἰς τὴν Γαλλικὴν κωμῳδίαν, ἧς ἐγένετο καὶ ἑταῖρος μετὰ διετίαν. Διεκρίθη κυρίως εἰς τὸν ρόλον τοῦ Ἰάγου ἐν τῷ «Ὀθέλῳ». Διετέλεσε καὶ καθηγητὴς τῆς ἀπαγγελίας ἐν τῷ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων. Ν. Ι. Λ.

— **Μουνὲ-*Συλλὺ*** (Mounet-Sully), ***Ἰωάννης.*** Γάλ-λος ἠθοποιὸς ἐκ τῶν πρωτευσάντων ἐν τῇ γαλλικῇ σκηνῇ, γεννηθεὶς ἐν Μπερζερὰκ τῷ 1841 καὶ ἀπο-θανὼν τῷ 1916. Διακούσας τὰ ἐγκύκλια μαθήματα ἐν τῇ γενετείρᾳ του, μετέβη τῷ 1863 εἰς Παρισίους, ὅπου ἐνεγράφη εἰς τὸ Κονσερβατουάρ. Ἀποφοιτή-σας τῷ 1868 τοῦ Κονσερβατουὰρ μὲ δεύτερον βρα-βεῖον κωμῳδίας καὶ τρίτον τραγῳδίας, προσελήφθη εἰς τὸ θέατρον «Ὠδεῖον» ὑπὸ τοῦ Chilly, ὅστις τὸν ὑπεχρέωσε νὰ ὀ-νομασθῇ ἁπλῶς Μου-νὲ-Σουλύ, ὅπερ ὄνο-μα καὶ διετήρησεν ἔκτοτε. Κατὰ τὸν πό-λεμον τοῦ 1870 ὑπη-ρέτησεν ὡς ἔφεδρος ἀνθυπολοχα-γός. Τῷ 1872 ἐγένετο δεκτὸς ἐν τῇ Γαλλι-κῇ Κωμῳδίᾳ, ἐν ᾗ ἐ-νεφανίσθη τὸ πρῶ-τον ὡς Ὀρέστης ἐν τῇ «Ἀνδρομάχῃ», μεθ᾽ ὃ ἔπαιξε τὸν

*Ἰωάννης Μουνὲ-Συλλύ.*

Ροδερῖγον εἰς τὸν «Σίδ», τὸν Νέρωνα εἰς τὸν «Βρετ-τανικόν», τὸν Διδιὲ εἰς τὴν «Μαριὼν Ντελόρμ», τὸν Ἱππόλυτον καὶ τὸν Ὀροσμάνην εἰς τὴν «Ζαΐραν». Τῷ 1874 ἐγένετο ἑταῖρος καὶ ὡς τοιοῦτος ἔπαιξε τὸν Φαβρίκιον εἰς τὴν «Τυχοδιώκτιδα» τοῦ Δουμᾶ, τὸν Γεράρδον εἰς τὴν «Ξένην» τοῦ αὐτοῦ συγγρα-φέως, τὸν Ἀμφιτρύωνα, τὸν Ἐρνάνην μετὰ τῆς Σάρρας Μπερνάρ, τὸν Οἰδίποδα τύραννον, κλπ.

Τῷ 1889 ἔλαβε τὸ παράσημον τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς, τῷ δὲ 1895 ἐξελέγη πρύτανις τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας, ἀντὶ τοῦ ἀποχωρήσαντος Got. Τῷ 1899, κατὰ τὴν μεγάλην ἀνὰ τὴν Εὐρώπην περιοδείαν του, ἐπεσκέφθη καὶ τὰς Ἀθήνας, ὅπου ἔπαιξεν ἐν τῷ Δημοτικῷ θεάτρῳ τὸν Ἄμλετ, τὸν Ὀθέλλον καὶ τὸν Οἰδίποδα τύραννον, τιμηθεὶς ὑπὸ τοῦ βα-σιλέως Γεωργίου τοῦ Α΄ διὰ τοῦ χρυσοῦ σταυροῦ τοῦ Σωτῆρος. Τῷ 1906, κατόπιν ἀδείας τῆς Γαλ-λικῆς Κωμῳδίας, ἔπαιξεν ἐν τῷ «Ὠδείῳ» τὸν πρῶ-τον ρόλον ἐν τῇ ἐμμέτρῳ κωμῳδίᾳ «Τὸ γῆρας τοῦ Δὸν Ζουάν», ἣν εἶχε γράψει ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Πέτρου Μπαρμπιέ. Τὰ ἀπομνημονεύματά του ἐδη-μοσιεύθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Souvenirs d'un tragédien». Ν. Ι. Λ.

**μουνέϊρα** (Muñeira). Ἀρχαῖος χορὸς τῆς ἱσπα-νικῆς Γαλικίας, μετρίας ἀγωγῆς, ἀρχόμενος μὲ ἄρσιν καὶ χρησιμοποιῶν τὰς καστανιέτας διὰ τὴν συνοδείαν. Ἦτο χορὸς ἡρωϊκὸς διὰ τοὺς ἄνδρας καὶ σεμνὸς διὰ τὰς γυναῖκας. Σήμερον ἤρχισεν ὑποκαθιστάμενος ὑπὸ τοῦ *ἀγκαρράντο* (Agarrado) καὶ μόνον εἴς τινας περιοχὰς ζῇ ἀκόμη ἡ παράδο-σις τῆς ἀληθινῆς *μουνέϊρα ριμπεϊράνα*.

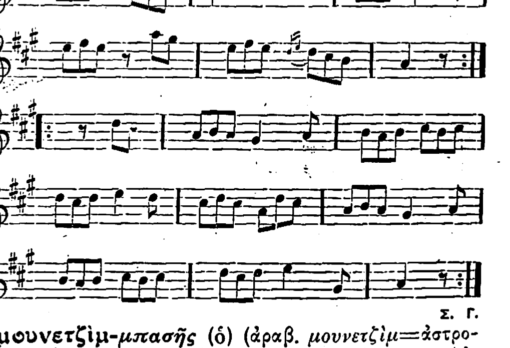

Σ. Γ.

**μουνετζὶμ-*μπασῆς*** (ὁ) (ἀραβ. *μουνετζὶμ=ἀστρο-λόγος* καὶ *μπασῆ=ἀρχι-*)· ὁ ἀρχιαστρολόγος τῆς αὐ-λῆς τῶν σουλτάνων.

**μουνζιστίνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*, ἢ *πορφυροξαν-θινοκαρβονικὸν ὀξύ*. Εἶναι ἀνθρακινονοκαρβονικὸν ὀξὺ τοῦ τύπου $C_{14}H_5O_2(OH)_2COOH$, περιεχόμενον εἰς τὸ ἰνδικὸν ἐρυθρόδανον. Σ. Γ.

Digitized by Google

**μουνὴ** (ἡ)· ἰδιωματ. Ἠπειρ. ἀντὶ *μονή*· περίφραγμα ὅπου περικλείονται τὰ ἀρνία ἢ τὰ ἐρίφια διὰ νὰ μὴ θηλάσουν.

**μουνὶ** (τό)· δημοτ., τὸ γυναικεῖον αἰδοῖον.

**Μουνιὲ** (Mounier), *Ἰωάννης - Ἰωσήφ*. Γάλλος πολιτικὸς (1758—1806). Τῷ 1788 διωρίσθη δικαστὴς ἐν Γρενόβλῃ, τῷ δὲ 1788 ἐξελέγη βουλευτής. Τῇ εἰσηγήσει αὐτοῦ ἡ τρίτη τάξις ἐκηρύχθη ὑπὲρ τῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Τῷ 1801 διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος νομάρχης τοῦ Ἴλ - ἐ - Βιλαίν, βραδύτερον δὲ προσελήφθη εἰς τὸ συμβούλιον τοῦ κράτους. Ἔγραψε: «Recherches sur les causes qui ont empêché les Français de devenir libres» καὶ «De l' influence attribuée aux philosophes, aux francsmaçons et aux illuminés sur la Révolution de France». Α. Δ.

**Μουνίτιον** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς ΒΔ. Γερμανίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (*Γεωγρ.* II 11, 13) εἰς Ἀν. μήκ. 31°40′ καὶ βόρ. πλ. 52°30′, ἀλλὰ μήπω ἐξακριβωθεῖσα. Κατά τινας εἶναι ἡ σημερινὴ *Γοττίγγη*. Α. Θ. Σ.

**Μουνίχια** (τὰ) [*Ἀρχ.*]. Ἑορτὴ καθιερωθεῖσα πρὸς τιμὴν τῆς Μουνιχίας Ἀρτέμιδος, ἧς τὸ ἱερὸν ἔκειτο ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου λόφου (πιθανώτατα παρὰ τὸν αὐτόθι Προφήτην Ἠλίαν). Ἡ ἑορτὴ ἐτελεῖτο τὴν 16ην τοῦ Μουνιχιῶνος (μεταξὺ δηλαδὴ τοῦ Μαρτίου καὶ τοῦ Ἀπριλίου), καθόσον ἐπιστεύετο ὅτι ἡ Ἄρτεμις ἐμφανισθεῖσα κατὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Σαλαμῖνος ἐφώτισεν, ὡς πανσέληνος λαμπρά, τοὺς Ἀθηναίους. Κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἑορτῆς ἐπεκράτει συνήθεια νὰ προσφέρωσιν ὡς θυσίαν εἰς τὴν θεὰν τυροπλάστους πλακοῦντας, καλουμένους «ἀμφιφῶντας», ἐπειδὴ ἦσαν μεταξὺ φώτων, κατ' ἀλληγορίαν παριστώντων τὴν ἀνατολὴν τοῦ ἡλίου ἀφ' ἑνὸς καὶ τὴν δύσιν τῆς σελήνης ἀφ' ἑτέρου. Α. Σ. Χ.

**Μουνιχία** (ἡ) [*Γεωγρ.*] (ἢ ***Καστέλλα***, ἢ ***Προφήτης Ἠλίας***). Ὁ ὑψηλότερος λόφος τῆς Πειραϊκῆς χερσονήσου, ὁ περιλαμβανόμενος μεταξὺ τοῦ Φαληρικοῦ κόλπου καὶ τοῦ ὁμωνύμου λιμενίσκου πρὸς Α. καὶ τοῦ λιμένος τῆς Ζέας πρὸς Δ., κληθεὶς δ' οὕτως ἀπὸ τοῦ μυθικοῦ ἥρωος Μουνίχου, ὅστις πρῶτος καταλαβὼν τὸν λόφον ἵδρυσεν αὐτόθι καὶ ἱερὸν τῆς Μουνιχίας Ἀρτέμιδος. Πλὴν δὲ τοῦ λόφου καὶ τοῦ λιμενίσκου, *Μουνιχία* ἐκαλεῖτο καὶ διαμέρισμα τῆς πόλεως τοῦ Πειραιῶς.

***Ὁ λόφος τῆς Μουνιχίας***. Οὗτος, ἀποτελῶν τὸ ὑψηλότερον (86,59 μ.) μέρος τοῦ Πειραιῶς, δεσπόζει τούτου, πρὸ πάντων δὲ τοῦ κάτωθεν αὐτοῦ ὁμωνύμου λιμένος, διὸ καὶ ἐχρησιμοποιήθη πολλάκις διὰ τὸ ὀχυρὸν τῆς θέσεως αὐτοῦ. Ἐπ' αὐτοῦ ὑπῆρχεν ἡ ἀκρόπολις καὶ ὁ πρῶτος ἀρχαιότατος συνοικισμὸς τῶν Μινυῶν, ἐκεῖ ἱδρύθη τὸ ἱερὸν τῆς Μουνιχίας Ἀρτέμιδος, πρὸς τιμὴν τῆς ὁποίας ἤγετο ἡ μεγαλοπρεπὴς ἑορτὴ *Μουνίχια* (βλ. λ.), αὐτόθι κατέφευγον οἱ ἀρνούμενοι τῶν τριηράρχων νὰ δεχθῶσι τὸ ἀξίωμα καὶ οἱ δι' ἐγκλήματα διωκόμενοι. Οὐ μακρὰν δὲ καὶ ἐπὶ τοῦ λόφου ὑπῆρχεν ἐπίσης τὸ «Βενδίδειον», τὸ ἱερὸν τῆς θρακικῆς θεᾶς Βενδίδος (οὕτως ἐκαλεῖτο ἡ Ἄρτεμις, θρακιστί), ἧς πρὸς τιμὴν ἐτελεῖτο ἡ μεγάλη ἑορτὴ «Βενδίδεια», ὁμοιάζουσα μὲ τὰ Διονύσια. ΝΔ. καὶ εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς κορυφῆς τοῦ λόφου ἐσῴζοντο θεμέλια ἀγνώστου ἀρχαίας οἰκοδομῆς καὶ περαιτέρω εὑρέθησαν πρὸ ἐτῶν ἄλλα θεμέλια κτηρίου, μετὰ πολλῶν πλακῶν πωρίνου λίθου, ἀνηκουσῶν πιθανῶς εἴς τι τῶν ἐκεῖ εὑρισκομένων ἱερῶν, ἴσως δὲ καὶ τῶν ἀνωτέρω. Πλὴν τινων ἄλλων ναῶν καὶ οἰκοδομῶν, κειμένων ἐπὶ τῶν κλιτύων τοῦ λόφου, περὶ ὧν δὲν ἔχομεν ἀπολύτως ἐξηκριβωμένην γνῶσιν, ΒΑ. τῆς λεγομένης Ἱπποδαμείας Ἀγορᾶς, ἐπὶ τῶν δυτικῶν προπόδων τῆς Μουνιχίας, ἀνεσκάφη πρὸ ἐτῶν μέρος τοῦ περιφήμου Διονυσιακοῦ θεάτρου, ὅπερ ἦτο ἀρχαιότερον τῶν ἀθηναϊκῶν, ὡς μαρτυρεῖται ἐκ σῳζομένου ψηφίσματος. Ἐν αὐτῷ ἑωρτάζοντο τὰ Διονύσια καὶ συνήρχετο αὐτόθι ἡ ἐκκλησία τοῦ δήμου ἐνίοτε. Τοῦτο κατεκαλύφθη ὑπὸ νεωτέρων οἰκοδομῶν.

Ὁ λόφος βρίθει κυριολεκτικῶς ὀρυγμάτων, σπηλαιωδῶν κατασκευῶν, δεξαμενῶν καὶ τῶν ὁμοίων, ἰδίως καθ' ὅλην τὴν ΝΔ. αὐτοῦ πλευράν. Τούτων πολλὰ μὲν εἶναι φυσικά, ἄλλα δὲ τεχνητά. Ἐπίσης ἐπὶ τῶν ὑπωρειῶν τῆς Μουνιχίας διεκρίνοντο, πρότοῦ κατακαλυφθῶσιν ὑπὸ τῶν νεωτέρων οἰκοδομῶν, λαξευμένα ἐπὶ τῶν βράχων ἀρχαιότατα οἰκήματα, τάφοι καὶ σκαλισταὶ θέσεις (νύμφαι). Ἐκ τῶν σηραγγωδῶν κατασκευῶν σπουδαιοτάτη εἶναι ἡ λεγομένη κοινῶς «Σπηλιὰ τῆς Ἀρετούσας», διατρυπῶσα τὸν λόφον ἐγκαρσίως καὶ ἔχουσα 165 βαθμίδας ἐπὶ τοῦ βράχου κάτωθεν τῆς κλίμακος καὶ εἰς βάθος 65 μ. ὑπάρχουσιν ὑδραγωγοὶ σωλῆνες, ὁριζοντίως, περίεργος ἐπικοινωνοῦντες διὰ ρωγμῶν πρὸς τὰ ἐπάνω τῆς ἀκροπόλεως. Ἐντὸς τῆς σήραγγος ταύτης ἐγένοντο κατ' ἐπανάληψιν ἀπόπειραι καθαρισμοῦ, πρὸς ἐξακρίβωσιν τῆς χρήσεως αὐτῆς. Φαίνεται ὅτι αὕτη, παναρχαία οὖσα καὶ κατὰ τὸ πλεῖστον φυσική, θὰ σχετίζεται μὲ τὰ ἀρχαιότατα ἔργα τῶν ἐπὶ τῆς Μουνιχίας Μινυῶν καὶ θὰ περιῆλθε διὰ τῶν αἰώνων εἰς διαφόρους χρήσεις, πιθανώτατον ὅμως εἶναι ὅτι θὰ ἐχρησίμευεν ὡς μέγα ὑδραγωγεῖον.

Ἄξιον μνείας ἐπίσης εἶναι καὶ τὸ Σηράγγειον, ἤτοι τὸ ἱερὸν τοῦ ἥρωος Σηράγγου, κείμενον κατὰ τὴν ἀνατολικὴν παραλίαν τῆς γλώσσης τῆς χωρούσης ἀπὸ τοῦ λόφου τῆς Μουνιχίας πρὸς τὴν θάλασσαν. Ἐκεῖ ὑπάρχει σπηλαιῶδες ἄνοιγμα (κοιν. «Σπηλιὰ τοῦ Παρασκευᾶ»), εἰς τὸ ὁποῖον κατέρχεται τις διὰ ξυλίνης κλίμακος εἰς δαιδαλῶδες ὑπόγειον σπήλαιον μετὰ φρεάτων, βαλανείου, λουτήρων καὶ δύο ἀνοιγμάτων πρὸς τὴν θάλασσαν. Ἐν τῷ Σηραγγείῳ, μετὰ τὴν ἀποκάθαρσιν ἀπὸ τῶν χωμάτων ἀπεκαλύφθη ψηφιδωτὸν παριστῶν τὴν Σκύλλαν μετά τινων ἄλλων παραστάσεων. Ἐντὸς τοῦ Σηραγγείου ἐπίσης εὑρέθη καὶ βωμὸς τοῦ λεγομένου Ἀπόλλωνος Ἀποτροπαίου. Πλὴν τῶν ἀνωτέρω, ἄξιον σημειώσεως εἶναι καὶ ἕτερον μέγα ὄρυγμα εἰς τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς Μουνιχίας, ἄνωθεν τοῦ ἀρχαίου Διονυσιακοῦ θεάτρου, ὅπου καὶ λατομεῖον ὑπόγειον καὶ πλεῖστα ἄλλα ποικίλων μορφῶν καὶ διαστάσεων.

Ὁ λόφος τῆς Μουνιχίας περιεβάλλετο πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ μεγάλου τείχους τοῦ περιβόλου τοῦ Πειραιῶς, ἀπετέλει δὲ ὀχυρώτατον σημεῖον τοῦ Πειραιῶς, ὅπερ κατέχων τις ἠδύνατο οὐ μόνον τῆς πόλεως νὰ κρατῇ, ἀλλὰ καὶ αὐτῶν τῶν Ἀθηνῶν. Ὁ Θρασύβουλος καταλαβὼν τὴν Μουνιχίαν καὶ ὁρμηθεὶς ἐξ αὐτῆς, ἐξεδίωξε τοὺς τριάκοντα τυράννους, οἱ δὲ διάδοχοι τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου κατέχοντες αὐτὴν ἐξησφάλιζον τὴν ἐπὶ τῶν Ἀθηναίων κυριαρχίαν των ἐπὶ μακρόν. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῶν Ἀθηναίων ἐν Κραννῶνι (322 π. Χ.), πρὸς ἐκδίωξιν τῶν Μακεδόνων, ἐγκαθίσταται ἐνταῦθα ἡ πρώτη μακεδονικὴ φρουρά. Ἐπίσης ὁ Φωκίων ὑπὸ τῆς ἐν Μουνιχίᾳ φρουρᾶς βοηθούμενος ἐκυβέρνα τὰς Ἀθήνας μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ Ἀντιπάτρου (318 π. Χ.). Εἶτα κατέλαβεν αὐτὴν ὁ Νικάνωρ, περιορισθεὶς ἐν αὐτῇ, ὁ δὲ Κάσσανδρος τὸν Πειραιᾶ, μέχρι διορισμοῦ ὡς ἐπιμελητοῦ αὐτοῦ τοῦ Δημητρίου τοῦ Φαληρέως. Δημήτριος ὅμως ὁ Πολιορκητὴς ἐπελθὼν καταλαμβάνει διὰ πολιορκίας τὴν Μουνιχίαν καὶ ἐκδιώκει τὸν Φαληρέα (τῷ 307 π. Χ.). Εἰς τοῦτον οἱ Ἀθηναῖοι ἐπιδαψιλεύουσιν ἐξαιρετικὰς τιμάς, μετονομάσαντες μάλιστα καὶ τὸν Μουνιχιῶνα μῆνα εἰς Δημητριῶνα. Τέλος ἡ μακεδονικὴ φρουρὰ ἐκδιώκεται ἐκ τῆς Μουνιχίας ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων, τῷ 287 π. Χ., διὰ τοῦ Ὀλυμπιοδώρου, καταλαμβάνεται δ' ἐκ νέου κατὰ τὸν Χρεμωνίδειον πόλεμον ὑπὸ Ἀντιγόνου τοῦ Γονατᾶ. Ἀπὸ δὲ τῶν Μακεδόνων ἐξαγοράζει ὁ Ἄρατος τὴν Μουνιχίαν, τὸν Πειραιᾶ, τὸ Σούνιον καὶ τὴν Σαλαμῖνα ὁμοῦ, ἀντὶ 150 ταλάντων. Ἐπακολουθοῦσι κατόπιν τὰ γεγονότα τοῦ Β′ Μακεδονικοῦ πολέμου, ἕως ὅτου ἐπέρχεται ὁ Σύλλας, ὅστις κατακαύσας τὸν Πειραιᾶ καταστρέφει καὶ τὰ ἐν τῇ Μουνιχίᾳ. Ἐπὶ ἐνετοκρατίας ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς φρούριον, ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία *Καστέλλα* (βλ. λ.). Τέλος, κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Ἐπαναστάσεως κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, μεγάλως ἐξυπηρετήσασα διὰ τὸ ὀχυρὸν τῆς θέσεώς της τὴν διεξαγωγὴν τῶν κατὰ τῶν Τούρκων ἐν Πειραιεῖ ἐπιχειρήσεων, καὶ ἐπὶ Κριμαϊκοῦ πολέμου ὑπὸ τῶν ἀγγλογαλλικῶν στρατευμάτων, εἰς τὰ ὁποῖα ὀφείλεται καὶ ἡ ἄνωθεν τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ὑπάρχουσα πυραμίς.

***Ὁ λιμὴν τῆς Μουνιχίας*** (κοιν. *Τουρκολίμανο*, ἢ *Φανάρι*, ἢ *τοῦ Κουμουνδούρου*). Οὗτος, περιλαμβανόμενος τὸ πάλαι μετὰ τῶν δύο ἄλλων ἐντὸς τῶν τειχῶν τοῦ Πειραιῶς, εἶχεν 82 νεωσοίκους, τῶν ὁποίων τὰ κρηπιδώματα σῴζονται μέχρι σήμερον κατὰ τὸ Β. καὶ Ν. μέρος αὐτοῦ, ἔτι δὲ καὶ περὶ τὸ μέσον· οἱ νεώσοικοι οὗτοι εἶχον πλάτος 6,25 μ. ἕκαστος, χρονολογούμενοι ἀπὸ τοῦ Δ′ π. Χ. αἰῶνος, φαίνεται δὲ ὅτι, κατ' ἐπανάληψιν καταστραφέντες, ἀνῳκοδομήθησαν ἐπὶ νεωτέρων σχεδίων ἑκάστοτε. Ὁ λιμήν, ἔχων περιφέρειαν 560 μ., ἐχωρίζετο ἀπὸ τῆς ξηρᾶς ὑπὸ τείχους ἀπέχοντος 60 μ., ἄνωθεν τοῦ ὁποίου ἐδέσποζεν ἡ ἀκρόπολις τῆς Μουνιχίας· τὸ τεῖχος τοῦτο, κατερχόμενον ἀπὸ τῆς βορείας πλευρᾶς τοῦ λόφου, κατέληγεν εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ λιμένος, ὃν περιέβαλλεν, ἀφῆνον ἄνοιγμα 37 μ. Ἐκεῖ ὑπῆρχον δύο τετράγωνοι πύργοι, ἑκάτερος ἐπὶ μιᾶς ἀκτῆς, συνδεόμενοι ἐν ἀνάγκῃ δι' ἁλύσεων· ἐπὶ τῶν πύργων τούτων θὰ ἦτο φωτιστικὸς τις τρόπος πιθανῶς. Κατὰ τὴν καμπὴν τοῦ νοτίου μώλου πρὸς Δ. ὑψοῦτο ὅμοιος πύργος, ἔτι δὲ ἔξω τοῦ λιμένος καὶ ἐπὶ τοῦ βορείου μώλου διακρίνονται αἱ βάσεις μικροῦ τινος ναοῦ, ἀνήκοντος πιθανῶς εἰς τὴν θεὰν Σώτειραν Ἐλλιμενίαν (ἄκρα Ἀρτέμιδος). Ἀριστερὰ τῷ εἰσιόντι ὑπάρχει γραφικὸς λοφίσκος (ἄκρα Θρασυβούλου), ἐφ' οὗ ἵδρυται ἡ ἔπαυλις τοῦ ἄλλοτε πρωθυπουργοῦ Κουμουνδούρου, ἐξ οὗ καὶ ἡ νεωτέρα ὀνομασία τοῦ λιμένος. Α. Σ. Χ.

**Μουνιχία Ἄρτεμις** (ἡ) [*Ἀρχ.*]. Οὕτως ἐκαλεῖτο ἡ ἐπὶ τῆς Μουνιχίας τοῦ Πειραιῶς λατρευομένη θεὰ Ἄρτεμις, πρὸς τιμὴν τῆς ὁποίας ἐτελεῖτο καὶ ἡ ἑορτὴ *Μουνίχια* (βλ. λ.). Ταύτης τὸ ἱερόν, κτισθὲν κατὰ τὴν παράδοσιν ὑπὸ τοῦ μυθικοῦ ἥρωος *Μουνίχου* (βλ. β.), ἔκειτο ἐπὶ τοῦ λόφου τῆς Μουνιχίας, οὐ μακρὰν τοῦ σημερινοῦ ναοῦ τοῦ Προφήτου Ἠλία. Α. Σ. Χ.

**Μουνίχιον** (τό). Ἄλλος τύπος, ἀπαντῶν παρὰ τοῖς γραμματικοῖς, τῆς λέξεως *Μουνιχία* (βλ. λ.). Α. Σ. Χ.

**Μουνιχιὼν** (ὁ) [*Ἀρχ.*]. Οὕτως ἐκαλεῖτο ὁ 10ος τῶν ἀθηναϊκῶν μηνῶν (δηλαδὴ μεταξὺ τοῦ Μαρτίου καὶ τοῦ Ἀπριλίου), ἀπὸ τῆς ἐν Μουνιχίᾳ τελουμένης ἑορτῆς τὴν 16ην αὐτοῦ, πρὸς τιμὴν καὶ ἀνάμνησιν τῆς Μουνιχίας Ἀρτέμιδος. Ὁ μὴν οὗτος μετωνομάσθη κατόπιν *Δημητριὼν* ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων, πρὸς τιμὴν τοῦ Δημητρίου τοῦ Πολιορκητοῦ, εἰς ὃν τοσαύτας τιμὰς ἐπεδαψίλευσαν οἱ Ἀθηναῖοι. Α. Σ. Χ.

**Μούνιχος** [*Μυθολ.*]. —1) Υἱὸς τοῦ Παντακλέους ἢ Παντευκλέους, ἀρχηγὸς τῶν ὑπὸ τῶν Θρᾳκῶν ἐκδιωχθέντων ἐξ Ὀρχομενοῦ Μινυῶν. Οὗτος πρῶτος κατέλαβε τὸν ἐν Πειραιεῖ λόφον, ὀνομασθέντα οὕτως ἀπ' αὐτοῦ, καὶ ἐγκατέστη αὐτόθι, ἱδρύσας καὶ ἱερὸν τῆς *Μουνιχίας* Ἀρτέμιδος (βλ. λ. καὶ λ. *Μουνιχία*). Κατ' ἄλλους, ἀντιθέτως, οὗτος ἦτο αὐτόχθων βασιλεύς, ἐκχωρήσας τὴν Μουνιχίαν εἰς τοὺς Μινύας καὶ θεωρούμενος ὡς ἐπώνυμος ἥρως τοῦ Πειραιῶς, ἔχων ἐν Πειραιεῖ καὶ ἰδιαίτερον τέμενος ἢ ἱερόν.

— 2) Υἱὸς τοῦ Ἀκάμαντος τοῦ υἱοῦ τοῦ Θησέως καὶ τῆς θυγατρὸς τοῦ Πριάμου Λαοδίκης, ἀνατραφεὶς ἐν Τροίᾳ ὑπὸ τῆς μητρὸς τοῦ Θησέως Αἴθρας. Ἐλέγετο δὲ καὶ *Μούνυτος*.

— 3) Υἱὸς τοῦ Δρύαντος, βασιλέως τῶν ἐν Ἠπείρῳ Μολοσσῶν ἢ Μολοττῶν, σύζυγος τῆς Ἀταλάντης. Ἦτο ὀνομαστὸς διὰ τὴν εὐσέβειαν αὐτοῦ καὶ μάντις, ἀλλὰ πολιορκηθεὶς ποτε μετὰ τῶν τέκνων του εἰς πύργον καὶ μὴ δυνάμενος ἄλλως νὰ διασωθῇ, μετεμορφώθη μετ' αὐτῶν εἰς πτηνά. Α. Σ. Ι.

**Μοὺνκ** (Munch), *Ἀνδρέας*. Νορβηγὸς ποιητὴς καὶ λογογράφος (1811—1884). Ἐσπούδασε τὴν νομικήν, ἀλλ' ἀφιερώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ τὴν ποίησιν. Τὸ πρῶτον ποιητικὸν ἀπάνθισμά του «Ephemerer» καὶ τὸ δρᾶμά του «Kong Sverres Ungdom» (1837) ἔδειξαν τὸ ποιητικὸν δαιμόνιόν του. Ἐπηκολούθησε σειρὰ ποιητικῶν καὶ πεζῶν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται «Digte gamle og nye» (1848), «Nye digte» (1851), «Digte og Fortaellinger» (1855). Ἐνταῦθα δέον νὰ προστεθοῦν ὑπέροχοι περιγραφαὶ ταξιδίων: «Billeder fra Nord og Syd» καὶ τὰ δράματα: «Σολομὼν ντὲ Κάους» καὶ «Ὁ λόρδος Γουίλλιαμ Ροῦσσελ». Α. Σ.

— **Μοὺνκ** (Munch), ***Ἐδουάρδος***. Σύγχρονος Νορβηγὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1863. Ἐσπούδασε εἰς τὸ Μόναχον καὶ μετὰ ταῦτα εἰς Παρισίους, ἔνθα ἐπ' ὀλίγον ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Μποννά. Διήγαγεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Γερμανίᾳ καὶ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ζωηροτέρων «σετσεσιοννιστῶν». Κατ' ἀρχὰς ὑπέστη ἐπιδράσεις τινάς, λίαν ἐνωρὶς ὅμως ἐδημιούργησεν εὐρύτατον ἔργον παλλόμενον ἀπὸ εἰλικρίνειαν, ἐν τῷ ὁποίῳ θαυμαστὴ ψυχολογικὴ διεισδυτικότης ἁμιλλᾶται πρὸς ἐξαιρέτως ζωηρὰν καὶ ἐνιαχοῦ ρωμαλέαν ἔκφρασιν. Μολονότι ὡς τοπιογράφος ἠδυνήθη νὰ παρουσιάσῃ συνθέσεις πλήρεις ἰδιοτύπου θελγήτρου, διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς

***Ἐδ. Μοὺνκ***: *Αὐτοπροσωπογραφία*.
[Μουσεῖον τοῦ Ὄσλο]

Digitized by Google

προσωπογραφίας καὶ σκηνάς τινας ἐκ τοῦ καθημερινοῦ βίου, τῶν ὁποίων μὲ μοναδικὴν δεξιοτεχνίαν ἀπεκάλυψε τὴν ἐσωτερικήν, ψυχικὴν ἰδιοσυστασίαν. Τὰ ἔργα του εὑρίσκονται ἐγκατεσπαρμένα κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς ἰδιωτικὰς συλλογάς. Ὑπάρχουν ὅμως δύο σειραὶ (ἡ μία ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Ὄσλο, ἡ ἄλλη ἐν τῇ «Ἄουλα» τοῦ πανεπιστημίου τῆς αὐτῆς πόλεως), αἵτινες δύνανται νὰ παράσχουν ἀφορμὴν συνολικῆς σπουδῆς τῆς παραγωγῆς τοῦ καλλιτέχνου τούτου. Μεταξὺ τῶν προσωπογραφιῶν, τὰς ὁποίας ἐξειργάσθη ὁ Μούνκ, σημειοῦμεν ἐνταῦθα ἰδιαιτέρως τὰς τῶν: Archimard, Meier Graefe, Hans Jaeger καὶ τοῦ ἰδίου τοῦ καλλιτέχνου. Ἐκ τῶν τοπιογραφιῶν του μνημονεύομεν τὰς κατὰ τὸ 1918 ἐκτεθείσας: «Χιονισμένο ἐλατόδασος», «Πεσμένα δένδρα», «Ἀρχὴ τῆς ἀνοίξεως εἰς τὸ Βέστρε Ἄκερ», «Ὁ τρυγητός», «Χωρικοὶ μέσα εἰς λαχανόκηπον». Τὴν «Ἄουλαν» τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Ὄσλο ὁ Μούνκ διεκόσμησε τῷ 1911 διὰ σειρᾶς συνθέσεων, αἵτινες ἤγειραν θύελλαν μεταξὺ τῶν κριτικῶν. Διαιροῦνται εἰς δύο μέρη: τὸ ἓν ἀναφέρεται εἰς τὴν φύσιν, τὸ ἕτερον εἰς τὴν ἱστορίαν. Ἄλλη μεγαλειώδης σειρὰ συνθέσεων τοῦ Μούνκ εἶναι ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Τοιχογραφία τῆς ζωῆς»· ταύτης ἐξέθηκε μερικὰ τεμάχια κατὰ τὸ 1918. Προσφιλὲς θέμα εἰς τὸν καλλιτέχνην τοῦτον εἶναι ἡ ἀσθένεια καὶ ἡ ἀνάρρωσις, μὲ ἄλλας λέξεις ἡ πάλη μεταξὺ τῆς ζωῆς καὶ τοῦ θανάτου. Ἡ τέχνη τοῦ Μούνκ ἤσκησε σπουδαίαν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως τῆς νεωτέρας νορβηγικῆς ζωγραφικῆς. [Βλ. *G. Vidalenc:* L'Art norvégien contemporain, Paris 1921.] Ι. Μ. Π.

—**Μοὺνκ** (Munch), ***Πέτρος-Ἀνδρέας.*** Νορβηγὸς ἱστοριογράφος (1810—1863). Τῷ 1841 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Χριστιανίας. Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς μελετητὴς τῆς ἀρχαιολογίας καὶ τῆς ἱστορίας τῶν σκανδιναυϊκῶν λαῶν. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων αὐτοῦ, εἰς ὃ ὀφείλει πρὸ παντὸς τὴν φήμην του ὡς ἱστοριοδίφου, εἶναι τὸ ὀκτάτομον: «Det norske Folks historie» (1851—1863). Ἐπίσης ἐξέδωκε καὶ συλλογὴν μεσαιωνικῶν κειμένων, ἀναφερομένων εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν βορείων εὐρωπαϊκῶν λαῶν. Α. Δ.

**Μοὺνκ** (Munk), ***Ἑρμάννος.*** Γερμανὸς βιολόγος (1839—1912). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῇ ἐν Βερολίνῳ κτηνιατρικῇ σχολῇ καὶ ἠσχολήθη ἰδίᾳ περὶ τὴν μελέτην τῆς λειτουργίας τοῦ ἐγκεφάλου. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι: «Über die Funktion der Gronhirn-rinde». Α. Δ.

—**Μοὺνκ** (Munk), ***Σολομών.*** Περιώνυμος Γερμανὸς ἀνατολιστὴς (1805—1867). Ἐσπούδασεν ἐν Βερολίνῳ καὶ Βόννῃ κλασσικὴν φιλολογίαν καὶ ἀνατολικὰς γλώσσας, τὴν μελέτην τῶν ὁποίων ἐσυνέχισεν ἐν Παρισίοις. Τῷ 1840 συνώδευσε τὸν Μοντεφιόρε καὶ τὸν Κρεμιὲ εἰς τὴν Αἴγυπτον, ὅπόθεν ἐκόμισε σημαντικὸν ἀριθμὸν ἀραβικῶν χειρογράφων. Τῷ 1858 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων ἐν Παρισίοις, τῷ δὲ 1865, καίτοι εἶχεν ἀπολέσει σχεδὸν καθ' ὁλοκληρίαν τὴν ὅρασιν, ἀντικατέστησε τὸν Ρενὰν εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας (Collège de France) ὡς καθηγηγὴς τῆς ἑβραϊκῆς, χαλδαϊκῆς καὶ συριακῆς. Τὸ σπουδαιότερον τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι ἡ μετάφρασις τοῦ «Dalâlat-al'Hairin» τοῦ Μαϊμωνίδου, ὅπερ ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Guide des égarés» (1856—1866, 3 τόμ.). Ἄλλα βαρυσήμαντα ἔργα τοῦ Μοὺνκ εἶναι τά: «Réflexions sur le culte des anciens Hébreux» (1833), «Notice sur Rabbi Saadia Gaon» (1838), «Palestine» (1845, γερμανικὴ ἔκδοσις ἐν Βερολίνῳ 1872, 2 τόμ.), «Notice sur Aboul-Walid-Merwan» (1851) καὶ «Mélanges de philosophie juive et arabe» (1859). Α. Δ.

**Μούνκατζυ** (Munkacsy), ***Μιχαὴλ Lieb,*** ὁ ἐπιλεγόμενος *Mihaly*—. Οὖγγρος ζωγράφος (1844—1900). Τῷ 1872 μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα διήγαγε τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του δημιουργήσας εὐρύτατον καὶ ἀπὸ πολλῶν ἀπόψεων ἀξιολογώτατον ἔργον. Τὸ τάλαντόν του, μολονότι πλουσιώτατον, ἦτο ἱκανῶς ἀνώμαλον. Μετεπήδα ἀπὸ τοῦ ἑνὸς κύκλου θεμάτων εἰς τὸν ἕτερον, ἀπὸ τῆς μιᾶς περιοχῆς τῆς ζωγραφικῆς εἰς τὴν ἄλλην· παρῆγεν ὅμως πάντοτε συνθέσεις, αἵτινες προὐκάλουν ἐντύπωσιν καὶ οὐδέποτε ἐστεροῦντο ἀξίας. Ὁ Μούνκατζυ ἐξετέλεσε προσωπογραφίας, ρωπογραφίας, ἱστορικὰς συνθέσεις, θρησκευτικοὺς πίνακας καὶ ἀλληγορίας, διεκρίθη ὅμως ὅλως ἰδιαιτέρως εἰς τὴν ἀπόδοσιν τοῦ ἰδιοτύπου βίου τῶν Οὔγγρων χωρικῶν καὶ τῆς ῥωμαλέας καὶ εἰδυλλιακῆς ἐν ταὐτῷ οὐγγρικῆς

*Μιχαὴλ Μούνκατζυ.*

φύσεως. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων μνημονεύομεν τὰ ἀκόλουθα: «Τελευταία ἡμέρα καταδίκου ἐν Οὐγγαρίᾳ», «Τὸ ἐνεχυροδανειστήριον», «Οὐγγρικὴ σκηνή», 'Ὁ ἥρως τοῦ χωρίου», «Ἐσωτερικὸν καλλιτεχνικοῦ ἐργαστηρίου» (ἐν ᾧ αἱ προσωπογραφίαι τοῦ καλλιτέχνου καὶ τῆς συζύγου του), «Κυνηγετικὴ διήγησις», «Ὁ Μίλτων τυφλὸς ὑπαγορεύων τὸν «Ἀπολεσθέντα παράδεισον» εἰς τὰς θυγατέρας του» (τὸ εὐρύτερον γνωστὸν ἔργον τοῦ Μούνκατζυ), «Ὁ Χριστὸς πρὸ τοῦ Πιλάτου», «Ὁ Γολγοθᾶς», «Ὁ Μόζαρτ θνήσκων», «Ἀλληγορία τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως» (διακόσμησις τοῦ ἐν Βιέννῃ μουσείου τῶν Καλῶν Τεχνῶν), «Προσωπογραφία τῆς κυρίας Β.», «Ὁ ἥρως Ἀρπὰδ θεμελιώνων τὴν ἰσχὺν τῆς Οὐγγαρίας» (ἐν τῷ βουλευτηρίῳ τῆς Βουδαπέστης), «Αἱ μυροφόροι εἰς τὸν τάφον τοῦ Χριστοῦ». Ἐκ τῶν νεωτέρων Οὔγγρων ζωγράφων ὁ Μούνκατζυ ἐξεπροσώπησε περισσότερον παντὸς ἄλλου τὴν τέχνην τῆς πατρίδος του ἐνώπιον τοῦ εὐρωπαϊκοῦ κοινοῦ καὶ ἤσκησε σοβαρὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς καλλιτεχνικῆς ἐν Οὐγγαρίᾳ ἐξελίξεως. Ι. Μ. Π.

**Μοῦνκερ** (Munker), ***Φράντς.*** Γερμανὸς ἱστορικὸς τῆς λογοτεχνίας (1855—1926) καὶ καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου. Ἔγραψε: «Lessings persönliches und literarisches Verhältnis zu Klopstock» (1880) καὶ «J. K. Lavater» (1883). Ἀλλὰ τὰ κυριώτερα ἔργα του, εἰς ἃ καὶ ὀφείλει τὴν φήμην του, εἶναι τά: «R. Wagner (1891) καὶ «Wandlungen in den Auschaunugen über Poesie während der litzten zwei Jahrhunderte» (1906), «Bremer Beiträger» (1888, ἐν τῇ «Deutsche Nationalliteratur» τοῦ Κύρσνερ), «Anakreontiker und preuss. patriotische Lyriker» (1894, 2 τόμ.) καὶ «Forschunger zur neuern Literatur-Geschichte» (1926, 58 τόμ.). Α. Δ.

**Μούννιχ** (Münnich), ***Μπούρχαρντ-Χριστόφορος, κόμις***—. Ρῶσος στρατάρχης, γεννηθεὶς ἐν Ὀλδενμπουργκ τῷ 1683 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1767. Νεανίας μεταβὰς εἰς Γαλλίαν, κατετάχθη ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ καὶ μετέσχε τοῦ περὶ διαδοχῆς τοῦ ἱσπανικοῦ θρόνου πολέμου. Ἐπολέμησεν ἐπίσης εἰς Ἰταλίαν καὶ Φλάνδραν. Εἰσελθὼν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ πολωνικοῦ στρατοῦ, ἐγένετο συνταγματάρχης καὶ τῷ 1721 καταταχθεὶς εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν διηύθυνε τὴν κατασκευὴν τῆς διώρυγος τῆς Λαδόγης. Ἡ αὐτοκράτειρα Ἄννα ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος, τῷ δὲ 1732 τὸν προήγαγεν εἰς στρατάρχην. Τῷ 1734 κατέλαβε τὸ Δάντσιγ καὶ εἰρήνευσε τὴν Βαρσοβίαν, εἶτα ἐξεστράτευσε κατὰ τῶν Τατάρων τῆς Κριμαίας, ἤρατο πολλὰς νίκας καὶ τῷ 1737 ἥλωσε τὸ Ὀτζάκωφ, τῷ δὲ 1739, νικήσας τοὺς Τούρκους, κατέλαβε τὸ Ἰάσιον. Ἐπὶ τῆς ἀνηλικιότητος Ἰβὰν ΣΤ' ἐχρημάτισε μέλος τοῦ συμβουλίου τῆς ἀντιβασιλείας, ἐπέτυχε τὴν ἀνατροπὴν τοῦ Βίρεν, ὃν ἀπέστειλεν ἐξόριστον εἰς Σιβηρίαν, καὶ ἐγένετο πρωθυπουργὸς (1740), ἀλλὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος, διαφωνήσας μετὰ τῆς ἀντιβασιλίσσης, παρῃτήθη. Κατὰ τὴν ἄνοδον εἰς τὸν θρόνον τῆς Ἐλισάβετ ἐφυλακίσθη, ἡ περιουσία του ἐδημεύθη καὶ καταδικασθεὶς εἰς θάνατον ἔλαβε χάριν ἐπὶ τοῦ ἰκριώματος, ἀλλ' ἀπεστάλη εἰς Σιβηρίαν. ἔνθα διέμεινεν ἐξόριστος ἐπὶ εἰκοσαετίαν. Τῷ 1762 ὁ τσάρος Πέτρος Γ' ἀποκατέστησεν αὐτὸν εἰς τὰ ἀξιώματά του καὶ τὰς ἰδιοκτησίας του, ἡ δὲ Αἰκατερίνη Β' διώρισεν αὐτὸν γενικὸν διευθυντὴν τῶν λιμένων τῆς Βαλτικῆς. Συνέγραψε γαλλιστί: «Ébauche pour donner une idée de la forme du gouvernement de l'Empire Russe» καὶ «Recueil des écluses et des travaux du canal Ladoga». Θ. Β.

**μουνοτρίχι** (τὸ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀδίαντον ἢ κόμη τῆς Ἀφροδίτης.*

**Μουνούχι** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Μαυροθάλασσα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουνουχίζω**· δημοτ., εὐνουχίζω (ἐκ τοῦ *μουνοῦχος*).

**μουνούχισμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μουνουχίζω*, εὐνουχισμός.

**μουνοῦχος** (ὁ)· δημοτ., εὐνοῦχος (ἐκ τοῦ *εὐνοῦχος—βνοῦχος—μνοῦχος—μουνοῦχος*).

**μουνόψειρα** (ἡ)· εἶδος φθειρὸς ἀναπτυσσομένου ἰδίᾳ εἰς τὸ τρίχωμα τῆς ἥβης.

**Μοῦνρο** (Munro), ***σημεῖον τοῦ***—. Οὕτω καλεῖται σημεῖόν τι κείμενον εἰς τὴν μεσοδιατομὴν τοῦ ἐξωτερικοῦ χείλους τοῦ ὀρθοῦ κοιλιακοῦ μυὸς καὶ τῆς γραμμῆς, ἥτις ἐκτείνεται ἀπὸ τῆς προσθίας καὶ ἀνωτέρας εἰλεακῆς ἀκάνθης πρὸς τὸν ὀμφαλόν· τὸ σημεῖον τοῦτο ὑποδεικνύεται ὡς χαρακτηριστικὸν τῆς σκωληκοειδίτιδος. Μ. Ν. Κ.

**Μοὺντ** (Mundt), ***Θεόδωρος.*** Γερμανὸς συγγραφεὺς (1808—1861). Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν λογοτεχνικὴν κίνησιν τῆς «Νέας Γερμανίας» καὶ ἐδημοσίευσε πολλὰ περιοδικά, ἅτινα ἀπηγορεύθησαν ὑπὸ τῆς λογοκρισίας. Τῇ συστάσει τοῦ Σέλλιγγ διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου, τῷ δὲ 1848 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν Βρεσλαυΐᾳ. Τῷ 1855 ἐκλήθη ὡς καθηγητὴς εἰς Βερολῖνον, ἀλλ' ἐγκατέλιπε ταχέως τὴν ἕδραν του, ἵνα ἀφιερωθῇ ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν διοργάνωσιν τῆς βιβλιοθήκης τοῦ πανεπιστημίου τῆς μνησθείσης πόλεως, τῆς ὁποίας ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν. Ὁ Μοὺντ ὡς λογοτέχνης διεκρίθη διὰ τὴν εὐστροφίαν τοῦ ὕφους του, τὴν καλλιέπειαν, ἰδίᾳ δὲ διὰ τὴν περιγραφικὴν δεινότητα καὶ τὴν ψυχολογικὴν ἀνάλυσιν τῶν χαρακτήρων. Πλὴν μεγάλης σειρᾶς μυθιστορημάτων, συνέγραψε καὶ πολλὰ ἔργα σχετικὰ πρὸς τὴν λογοτεχνίαν, τὴν ἱστορίαν καὶ τὴν αἰσθητικήν: «Kunst der deutschen Prosa», «Geschichte der Litteratur der Gegenwart», «Geschichte der Gesellschaft», «Ästhetik», «Allgemeine Litteraturgeschichte», «Dramaturgie» κτλ. Α. Δ.

**μούντα** (ἡ). Καλοῦνται οὕτω ἐν Μεσολογγίῳ αἱ χαμηλότεραι ἐκτάσεις τῶν ἐν τῇ λιμνοθαλάσσῃ νησίδων, ἐντὸς τῶν ὁποίων πήγνυται τὸ εἰσρέον κατὰ τὰς χειμερινὰς ἀναβάσεις θαλάσσιον ὕδωρ καὶ σχηματίζονται τὰ αὐτόπηκτα ἅλατα. Χ. Γ. Ε.

**Μούντα,** ἡ ***Μυοῦς*** *[Γεωγρ.].* Ἑλληνικὸν χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῷ νομῷ Τραπεζοῦντος καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Πυξίτου, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 53 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες μετηνάστευσαν τῷ 1923 εἰς Ἑλλάδα. Ε. Ι. Χ.

—**Μούντα** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ἀκρωτήριον τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Ἀντικύρρας χερσονησίζον (ὑψόμ. 223 ποδ., πλάτ. 38° 20′ 40″ Β., μῆκ. 22° 40′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1600: Gulf of Corinth), σχηματίζον βορείως του ἀσφαλῆ κατὰ νοτίων ἀνέμων φερώνυμον ὅρμον, ὃν ὅμως οἱ ἐντόπιοι ὀνομάζουν *Γραμματικόν.* Σ. Ε. Λ.

**Μούντα** (Munda). Ἰθαγενὴς φυλὴ τῶν Β. Ἰνδιῶν, περιλαμβάνουσα 700.000 περίπου ψυχῶν, ἐξ ὧν τὸ μεγαλύτερον μέρος κατοικεῖ ἐν Ναγκπούρ, Μπεχὰρ καὶ Ὀρίσσα. Εἶναι μελαψοὶ καὶ δολιχοκέφαλοι. Τὸ τρίτον περίπου ἐξ αὐτῶν εἶναι Ἰνδουισταὶ καὶ τὸ ἕβδομον Χριστιανοί.

—**Μούντα** ***διάλεκτος*** βλ. λ. ***Μουνδαϊκὴ*** γλωσσικὴ ὁμοφυλία.

**Μουντάκις.** Ὄνομα πατριωτικῆς οἰκογενείας καταγομένης ἐκ Καλλικράτους Σφακίων Κρήτης. Πολλὰ τῶν μελῶν αὐτῆς ἐγκατεστάθησαν εἰς ἄλλας ἐπαρχίας τῆς νήσου καὶ εἰς τὴν Σαντορίνην καὶ ἵδρυσαν οἰκογενείας νέας. Ἐκ τῶν ἄλλων μελῶν τῆς οἰκογενείας διεκρίθησαν ὁ *Μανοῦσος*, ὅστις ἠνδραγάθησε τῷ 1828 κατὰ τῆς στρατιᾶς τοῦ Μουσταφᾶ πασᾶ, καὶ ὁ *Ἐμμανουήλ*, ἐπαναστατικὸς πληρεξούσιος Ἀποκορώνου, μέλος τῆς Μεταπολιτευτικῆς Ἐπιτροπῆς τοῦ 1894 καὶ δήμαρχος Χανίων ἐπὶ 23 ἔτη. Ε. Γ.

**Μουντανίστικα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Τσουκαλιᾶς τῆς ἐπαρχίας Οἰτύλου τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 88. Χ. Δ.

**Μουντανὸς** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ροδοπόλεως τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος, κατοικούμενον ἄλλοτε ὑπὸ 55 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες προσέφυγον εἰς Ἑλλάδα τῷ 1923. Ε. Ι. Χ.

**Μουντάρι** (Mundari). Ἰθαγενὴς φυλὴ τῶν Ἰνδιῶν, συγγενὴς πρὸς τοὺς Μούντα, οἰκοῦσα ἐν Βεγγάλῃ καὶ ἔχουσα πληθυσμὸν ἡμίσεος περίπου ἑκατομμυρίου ψυχῶν.

—**Μουντάρι** ***διάλεκτος***· βλ. λ. *μουνδαρική.*

**Μούνταρος** (οἱ), καὶ ***Μοῦντος.*** Κλάδος τῆς φυλῆς τῶν Τσότα-Νάγκεμπουρ, οἰκῶν τὰ βορειοανατολικὰ τῶν Ἰνδιῶν. Ὁ πληθυσμός των ἀνέρχεται εἰς 100.000 καὶ εἶναι κυρίως γεωργοὶ καὶ κτηνοτρόφοι. Π. Γ. Λ.

**Μοῦντε** (Munthe), ***Γεράρδος-Λουδοβῖκος.*** Νορβηγὸς ζωγράφος (1841—1896). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ Μόναχον καὶ εἰς τὴν Δυσσελδόρφην, συνεπλήρωσε δὲ τὴν καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν διὰ ταξιδίων εἰς τὴν Ὁλλανδίαν, τὴν Ἰταλίαν καὶ τὴν Γαλλίαν, ἔνθα ἀνεμίχθη εἰς τοὺς ἀγῶνας τῶν ρεαλιστῶν καὶ τῶν ἐμπρεσσιονιστῶν. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του συνετέλεσεν ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ Κρόγκ καὶ τοῦ Βέρενσκιολδ εἰς τὴν δημιουργίαν ἰσχυρῶν ρευμάτων ἀνανεώσεως. Ὑπῆρξε καλλιτέχνης παραγωγικώτατος, ἐνεπνέετο εὐχερέστατα, τὸ δὲ γόνιμον τάλαντόν του ἐξεδηλοῦτο ἀλλεπαλλήλως εἰς ἐξαιρέτους συνθέσεις, ἐν αἷς ἡ χαρὰ τῆς τέχνης ἁμιλλᾶται πρὸς τὴν χαρὰν τῆς ζωῆς. Σπουδὰς τοπίων ἐκόμισεν ἀπὸ τὰ ταξίδιά του πολυπληθεῖς καὶ ἄκρως ἐκτιμηθείσας. Αἱ τοπιογραφίαι ὅμως, αἵτινες ἐστερέωσαν τὴν φήμην του, εἶναι αἱ ἀποδίδουσαι τὴν μελαγχολικὴν νορβηγικὴν φύσιν, τὴν ἐναλλαγὴν τῶν ἐποχῶν εἰς τὰς ἐρήμους κοιλάδας, τὰς κεκαλυμμένας ἀπὸ ὁμίχλην καὶ διψώσας ἡλιακὸν φῶς βορείους περιοχάς. Τὸ μουσεῖον τοῦ Ὄσλο κατέχει ἀξιόλογον σειρὰν τοιούτων πινάκων τοῦ Μοῦντε, ἐκτελεσθέντων μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1875

Digitized by Google

καὶ 1890. Ἀλλ' αἱ τοπιογραφίαι αὗται δὲν ἀρκοῦν διὰ νὰ λάβωμεν ἐπαρκῆ γνῶσιν τῆς δυναμικότητος τοῦ ταλάντου τοῦ ἐξαιρέτου τούτου καλλιτέχνου· πρέπει ν' ἀποβλέψωμεν καὶ εἰς τὰς θαυμασίας σειρὰς συνθέσεων ἀναφερομένων εἰς τοὺς παλαιοὺς νορβηγικοὺς θρύλους ἢ εἰς ἐξόχους περιόδους τῆς νορβηγικῆς ἱστορίας, τὰς ὁποίας ἐξειργάσθη. Μεταξὺ τούτων καταλέγονται αἱ δέκα συνθέσεις, αἱ ἀφιερωθεῖσαι εἰς τὸν λαϊκὸν ἥρωα Aasmund Fraedejaever: «Ἡ αὐλὴ τοῦ βασιλέως τῆς Ἰρλανδίας», «Τὸ ταξίδιον τοῦ Aasmund ἐπὶ τῆς ἀξένου θαλάσσης», «Ἡ ἄφιξις εἰς τὴν κατοικίαν τῶν τρόλλ», «Αἱ πέντε αἴθουσαι τοῦ μαγεμένου πύργου», «Ἡ θύρα πρὸς τὴν θάλασσαν», «Ἡ ἐπάνοδος ἐπάνω εἰς τὸ μαγικὸ ἄλογο» κλπ., αἱ διακοσμήσεις τῆς Haakonshall τοῦ Μπέργκεν, ἀναφερόμεναι εἰς τὸ θαυμαστὸν ταξίδι τῆς πριγκιπίσσης Χριστίνας μεταβαινούσης ἀπὸ τὴν Νορβηγίαν εἰς τὸ ἱσπανικὸν Μποῦργκος, διὰ νὰ ὑπανδρευθῇ τὸν βασιλέα τῆς Καστίλλης, καὶ αἱ εἰκονογραφίαι τῆς μεγάλης ἐκδόσεως τῶν «Βασιλικῶν σάγκας». Εἰς τὰ ἔργα του ταῦτα ὁ Μοῦντε ἀναζωογονεῖ καὶ ἑρμηνεύει τοὺς παλαιοὺς θρύλους κατὰ τρόπον ἐξαιρέτως χαριτωμένον. [*G. Vidalenc*, L'Art Norvégien contemporain, Paris 1921.] Ι. Μ. Π.

**μούντζα** (ἡ), καὶ **μούτζα**, καὶ **μούζα**· δημοτ., ἀσβόλη ἐκ μαγειρείου, φούρνου κτλ.· || καθόλου, ρύπος, μελανία, κηλίς· || ἐπίχρισις τοῦ προσώπου δι' ἀσβόλης πρὸς ὕβριν· || σφάκελος διὰ τῆς χειρὸς μὲ ἀναπεπταμένους τοὺς δακτύλους: «τοῦ 'δωσε μιὰ μούντζα'» || περιφρόνησις, ὄνειδος: «μοῦντζες νά 'χῃ τέτοιος ἄνθρωπος» (περὶ τῆς λέξ. βλ. περιοδ. «Λαογραφία» Δ', 621 κ. ἑ.).

**Μούντζινος** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας κώμης ***Λεκάνη*** (βλ. λ.).

—**Μούντζινος**, ἢ ***Μούντζουνος*** *[Γεωγρ.]*. Οὕτως ἀναγράφεται εἰς παλαιοὺς χάρτας ἡ ὀρεινὴ χώρα ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Μακεδονίᾳ, ἥτις ὁρίζεται πρὸς Δ. ὑπὸ τῶν τεναγῶν τῶν Φιλίππων, ΒΔ. ὑπὸ τῆς πεδιάδος τῆς Δράμας, ΒΑ. ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Νέστου, ΝΑ. ὑπὸ τῆς πεδιάδος τῆς Χρυσοπόλεως (Νέστου) καὶ πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ κόλπου τῆς Καβάλλας. Τὸ ὄνομα προέρχεται ἐκ τῆς ἐν τῷ μέσῳ κειμένης ὁμωνύμου κωμοπόλεως, μετονομασθείσης ἤδη εἰς *Λεκάνην* (βλ. λ.), λόγῳ τῆς μορφῆς τῆς θέσεώς της. Τὰ ὄρη τῆς χώρας ταύτης εἶναι χαμηλά, τὸ δὲ ὑψηλότερον εἶναι τὸ ΒΔ. τῆς κωμοπόλεως *Χιονοβούνι* (1262 μ.). Νοτιοδυτικῶς καὶ ἄνωθεν τῆς Καβάλλας διὰ χαμηλοῦ αὐχένος (150 μ. ὑψ.) συνδέεται ἡ ὀρεινὴ αὕτη χώρα μετὰ τῶν ὀρέων Συμβόλου καὶ Παγγαίου. Τὰ ἐν ταύτῃ μικρὰ χωρία διανέμονται εἰς τρεῖς διαφόρους ἐπαρχίας: Δράμας, Νέστου καὶ Καβάλλας. Ι. Σ. Σ.

**Μουντζοὺρ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Ἀγκύρας, πρὸς τὰ ΝΑ. τοῦ Κὶρ Σεχὴρ. Κάτ. 2.000, ἀσχολούμενοι εἰς τὴν ταπητουργίαν. Κ. ΛΣ

**μουντζούρα** (ἡ), καὶ **μουτζούρα**, ἢ **μουζούρα**· δημοτ., ρύπος δι' ἀσβόλης, μελάνης κττ., μελανία: «ἔχεις μιὰ μουντζούρα 'ς τὸ μάγουλο»· || ὄνειδος, ἀτιμία: «ἡ μουντζούρα ποὺ ἔβαλε 'ς τὸ πρόσωπό του δὲν βγαίνει» (ἐκ τοῦ *μούντζα*).

**Μουντζουρέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κράλης τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 30. Χ. Δ.

**μουντζούρης** (ὁ), καὶ **μουτζούρης**, καὶ **μουζούρης**, δημ., ὁ φέρων, ὁ ἔχων μουντζοῦρες, μουτζουρωμένος.

**μουντζούρωμα** (τό), καὶ **μουτζούρα**, καὶ **μουζούρα**· δημοτ., ἡ πρᾶξις καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουντζουρώνω, κηλίδωσις, ρύπανσις διὰ μελανίας· || ἰδίᾳ τοῦ προσώπου κυριολεκτικῶς καὶ μεταφορικῶς: «αὐτὸς εἶναι γιὰ μουντζούρωμα», δηλαδὴ ἐπ' ὀνειδισμῷ.

**μουντζουρώνω** καὶ **μουτζουρώνω** καὶ **μουζουρώνω**· δημοτ., ἐπαλείφω, ἐπιχρίω μὲ μουντζούρα, ρυπαίνω, κηλιδῶ διὰ μελανίας, ἀπασβολῶ.

**μούντζωμα** (τό)· δημοτ. ἡ ἐνέργεια τοῦ μουντζώνω, ἡ διὰ μούντζας ἐξύβρισις, ἄλλως *σφακέλωμα*.

**Μούντζωμα** *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον χερσονησίζον τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Νάξου (πλάτ. 37°05'00" Β., μήκ. 25°37'20" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1837: Paros and Naxos), ἀντικρύζον τὰς νήσους Μακαριές. Εἰς τὴν νοτίαν μασχάλην του ὅρμος φεράνυμος. Σ. Ε. Λ.

**μουντζώνω**· δημοτ., προβάλλω τὴ μούντζα κατά τινος, περιφρονῶ μὲ μούντζωμα, ἄλλως *σφακελώνω*· || περιφρονῶ, δὲν ὑπολογίζω, ἀδιαφορῶ: «μούντζωσέ τα ἐπὶ τέλους, μὴν ἐνοχλῆσαι μ' αὐτά».

**Μουντιὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ἀπορρὼξ ἀκτὴ ἡ ἀποτελοῦσα τὴν νοτίαν τῆς Σύρου ἐσχατιὰν καὶ ἀπολήγουσα εἰς τὸ ἀκρωτήριον *Βιγλοστάσι*. Σ. Ε. Λ.

**μουντός,—ή,—ό**· δημοτ., θολός, ἀντίθ. *ξάστερος*, *διαυγής*: «ὁ μοῦστος εἶναι μουντός» || ὁ μὴ ἐντελῶς λευκός, κιτρινωπός: «τὸ ἀμερικάνικο παννὶ εἶναι μουντό» || ἐπὶ χρωμάτων, ὁ μὴ στιλπνός, ἀλαμπής, σκοτεινός, σκοῦρος.

**Μουντουρλοῦ** *[Γεωγρ.]* βλ. *Μόδρα*.

**μουντρίζω**· ἰδιωμ. Κρήτ., ἐπὶ σταφυλῶν ὅταν πατῶνται ἀρχικῶς, χωρὶς νὰ ἀφίεται ἐλευθέρα ἡ ἐκροὴ τοῦ οἴνου ἐκ τοῦ πατητηρίου. Ι. Δ. Μ.

**μουντρίνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄκανθος ὁ ἀκανθοφόρος*.

**Μοῦντρος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ρεθύμνης τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 332. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ τὰ χωρία *Βελονάδω* καὶ *Νησί*. Ν. ΚΛΣ

**Μούντσινγκερ** (Munzinger). Ἑλβετὸς ἐξερευνητὴς καὶ γλωσσοδίφης (1830—1875). Ἐταξίδευσεν εἰς Αἴγυπτον, Ἐρυθρὰν θάλασσαν, Ἀβησσυνίαν καὶ Ἀ. Σουδάν, ὅπου ἐφονεύθη κατά τινα ἐπίθεσιν τῶν Γκάλλα ἐν καιρῷ νυκτός. Ἔγραψε: «Περὶ τῶν ἠθῶν καὶ τοῦ δικαίου τῶν Μπόγκος», «Μελέται ἐκ τῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μούντυ** (Moody), ***Γουλιέλμος Βώγκαν*** (1869—1910). Ἀμερικανὸς δραματικὸς συγγραφεύς. Ἔγραψεν: «Ὁ πυρπολητής» (1904), «Ὁ θεραπευτὴς τῆς πίστεως» (1909) κ. ἄ. Π. Γ. Λ.

**Μουνυχιᾶτις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Πετραίας Ἀραβίας, ἐκτεινομένη κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. Ε, 16, 3) μεταξὺ τῆς Σαρακηνῆς καὶ τῆς ἐρήμου Φαράν. Α. Θ. Σ.

**Μοὺρ** (Muhr ἢ Mur) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Αὐστρίας, παραπόταμος τοῦ Δράβου, μήκους 416 χλμτρ. Πηγάζει ἐκ τοῦ ὄρους Σχρέντεντορν καὶ χύνεται βορείως τῶν Ἄλπεων ἀπὸ ὕψους 1107 μέτρων. Μετὰ τοῦ Δράβου ἑνοῦται πλησίον τοῦ Νεογκάντ. Θ. Β.

**Μοὺρ** (Moore), ***Ἀλβέρτος***. Ἄγγλος ζωγράφος (1841—1893). Διέπρεψεν ἰδίως εἰς διακοσμητικὰς συνθέσεις, τὰς ὁποίας διακρίνει ὡραῖος καὶ ζωηρὸς χρωματισμός. Μεταξὺ τούτων ἀναφέρεται ἰδιαιτέρως τὸ διάζωμα τῆς ἐν Λονδίνῳ αἰθούσης συναυλιῶν Ἄλμπερτ Χώλ. Ἄλλα ἐκλεκτὰ ἔργα του εἶναι: ἡ «Κοιμωμένη κόρη» καὶ τὰ «Ὄνειρα». —Ω.

— **Μοὺρ** (Moore), ***Γεώργιος***. Ἰρλανδὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1857. Ἤρχισε τὴν λογοτεχνικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὴν ἔκδοσιν ποιητικοῦ ἀπανθίσματος «Flowers of Passion» (1878) καὶ τῆς τραγῳδίας «Μαρτῖνος Λούθηρος» (1879). Βραδύτερον μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν τῆς πραγματιστικῆς σχολῆς. Τὰ μυθιστορήματά του, ἰδίᾳ δὲ τὰ «A. Mummer's Wife» (1884) καὶ «Esther Waters» (1894), ὡς καὶ τὰ ἔργα του «Literature at Nurse» (1885), «A drama in Muslin» (1877), «Confessions of a youngman» κτλ. ἔτυχον μεγάλης ὑποδοχῆς. Βραδύτερον ὁ Μοὺρ ἐφάνη ἀποκλίνων πρὸς τὴν ἰδεολογικὴν σχολήν. Μέλος τοῦ κόμματος τῆς «Νέας Ἰρλανδίας» συνεδέθη πρὸς τὴν κίνησιν ἐκείνην, ἥτις ἀπεσκόπει τὴν κελτικὴν ἀναγέννησιν ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Γήτς, τοῦ Μάρτιν καὶ τοῦ Χάϋντ. Συνειργάσθη εἰς τὰ «Ideals in Island» (1901). Δύο ἐκ τῶν τελευταίων ἔργων του «Sister Teresa» (1901) καὶ «The Untilled Field» (1913) ἀποκαλύπτουν ὑπὲρ πάντα τὰ λοιπὰ τὸ βάθος τῆς ἐμπνεύσεως καὶ τὸ πλῆθος σφρίγους, ζωῆς καὶ ἐντατικότητος ὕφος τοῦ συγγραφέως. Μετέφρασε καὶ τὸ «Pot-Bouille» τοῦ Ζολᾶ. Α. Δ.

— **Μοὺρ** (Moore), ***Θωμᾶς***. Περιφανὴς Ἄγγλος ποιητὴς (1779—1852), υἱὸς οἰνεμπόρου. Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Δουβλίνου, μεθ' ὃ ἐπέστρεψεν εἰς Λονδῖνον (1799), ὅπως ἀσκήσῃ τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Ἐνταῦθα ἐξέδωκε (1808) τὴν μετάφρασιν τοῦ Ἀνακρέοντος, ἥτις ἔτυχε μεγάλης ἐπιδοκιμασίας. Μετὰ πολλοῦ ἐνθουσιασμοῦ ἐγένοντο ἐπίσης δεκτὰ ὑπὸ τοῦ κοινοῦ τὰ ποιητικὰ πρωτόλειά του «Poerical woks of the late Thomas Little» (1801). Ἀποκτήσας τὴν ἐπίσημον θέσιν ποιητοῦ τῆς αὐλῆς, ἐδέχθη νὰ σταλῇ διοικητικὸς ὑπάλληλος εἰς τὰς νήσους Βερμούδας, ἀλλὰ μετὰ πάροδον τριῶν μηνῶν ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ κυβέρνησις περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν Οὐΐγων, εἰς τὸ κόμμα τῶν ὁποίων ἀνῆκε καὶ ὁ ποιητής, ἐπρόκειτο δὲ ν' ἀναχωρήσῃ διὰ τὴν Ἰρλανδίαν, ὅπου εἶχε διορισθῆ ὑπὸ τῶν ὁμοφρόνων του ὑπάλληλος, ὁπότε κριτική, δημοσιευθεῖσα εἰς τὴν «Edimburgh Review» ἐναντίον τῶν «Odes and Epistles», ἃς εἶχε δημοσιεύσει ἐν Λονδίνῳ, θίγουσα δὲ καὶ αὐτὴν ταύτην τὴν τιμὴν τοῦ συγγραφέως των, τὸν ἠνάγκασε ν' ἀναβάλῃ τὸ ξίφος του. Ἡ μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ συντάκτου τῆς κριτικῆς Τζέφρυ ὁρισθεῖσα μονομαχία ἀπεσοβήθη τῇ ἐπεμβάσει τῶν ἀστυνομικῶν ἀρχῶν. Ἄλλη ὁμοίας φύσεως ὑπόθεσις μετὰ τοῦ Βύρωνος, ὅστις εἰς σάτιράν του ἔκαμε δηκτικὸν εἰς τὸ ἐπεισόδιον τοῦτο ὑπαινιγμόν, διηυθετήθη ἄνευ προσφυγῆς εἰς τὰ ὅπλα, ἀπὸ τῆς εἰρηνικῆς δὲ διευθετήσεως ταύτης χρονολογεῖται ἡ ἀκραιφνὴς καὶ μακρὰ φιλία τῶν δύο τούτων δαφνοστεφῶν ποιητῶν.

Τῷ 1811 ὁ Μοὺρ συνεζεύχθη τὴν μὶς Ντάϊ καὶ ἔζη ἄλλοτε μὲν εἰς τὸ ἀγροτικὸν κτῆμά του Σλόπερτον Κοτταΐϊτζ ἐν Οὐΐλτσάϊερ, ἄλλοτε δὲ ἐν Λονδίνῳ. Ἀποκλειστικῶς περὶ τὴν λογοτεχνίαν ἀσχολούμενος, ἠξίωτο τῆς συγγραφῆς δραμάτων. Ἀλλ' αἱ πλήρεις εὐστροφίας, καλλιεπείας καὶ δηκτικότητος σάτιραί του, αἱ κατὰ τοῦ κόμματος τῶν Τόρεϊς στρεφόμεναι, ἔσχον πολὺ μεγαλυτέραν ἐπιτυχίαν. Αἱ πολυθρύλητοι «Irish melodies» (18[illegible]—1834), εἶναι ὑπέροχα λυρικὰ ποιήματα, συνταχθέντα ἐπὶ τῇ βάσει τῶν κειμένων τῶν ὑπὸ τοῦ Τζὼν Στήβενσον διασκευασθεισῶν ἐθνικῶν μελῳδιῶν. Παρεμφερὴς λογοτεχνικὴ σύνθεσις εἶναι αἱ «National melodies» καὶ τὰ «Sacred songs». Τὰ τελευταῖα συνοδεύονται ὑπὸ μουσικῆς, συντεθείσης ὑπὸ τοῦ Μοὺρ καὶ τοῦ Στήβενσον. Ἀλλὰ τὸ ἀριστούργημά του εἶναι ἡ «Lalla Rookh». Τὸ μεγαλειῶδες τοῦτο λογοτέχνημα σύγκειται ἐκ τεσσάρων μερῶν, ἐξ ὧν τὸ «Paradise and Peri» εἶναι τὸ γνωστότερον. Πρόκειται περὶ τεσσάρων ἀφηγήσεων ἀναφερομένων εἰς τὰ θαύματα τῆς Ἀνατολῆς. Ἐκ τῶν ἀφηγήσεων τούτων ἀποπνέει ἡ μελῳδικὴ γοητεία, ἥτις χαρακτηρίζει τὴν μοῦσαν τοῦ ποιητοῦ, ἀλλὰ καὶ ἥτις εἰς πολλὰ ποιήματά του ἐξαφανίζεται, θυσιαζομένης τῆς βαθείας ποιητικῆς ἐνοράσεως εἰς τὸν βωμὸν ξηροῦ ὀρθολογισμοῦ. Ἡ διάνοια τοῦ Μούρ, νομικῶς διαπαιδαγωγηθεῖσα, ἐγκύπται θριαμβευτικῶς εἰς συνθέσεις σατιρικοῦ, συχνάκις δὲ πολιτικοῦ περιεχομένου. Οἰκονομικὴ στενοχωρία, προελθοῦσα ἐκ τῆς ἀποζημιώσεως, ἣν ἐδέησε νὰ καταβάλῃ ὡς ἐγκαταλιπὼν τὴν εἰς τὰς νήσους Βερμούδας δημοσίαν θέσιν του, ἐξηνάγκασεν αὐτὸν νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν γαλλικὴν πρωτεύουσαν, ὅπου συνέταξε τοὺς «Ἔρωτας τῶν Ἀγγέλων». Ἔκτοτε διεκόπη ἡ λογοτεχνικὴ παραγωγικότης του, δεδομένου ὅτι μόνον τὸ μυθιστόρημά του «Epicurean» ἦλθεν εἰς φῶς. Ἀπὸ τοῦ 1827 ἡ δρᾶσις τοῦ Μοὺρ περιωρίσθη εἰς τὴν περισυλλογὴν τῶν ἔργων του καὶ τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας. Τὴν ἱστορίαν τῆς πατρίδος του εἶχεν ἀφηγηθῆ ἤδη τῷ 1823 εἰς τὰ «Memoirs of the life of captain Rock», δὲν ὑπῆρξεν ὅμως πάντοτε ἀμερόληπτος, ἅτε διακατεχόμενος ὑπὸ σφοδροῦ κομματικοῦ πάθους. Τὰ «Memoirs of Lord Edward Fitzgerald» (1831) ἀποτελοῦσι πολύτιμον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Ἰρλανδίας συμβολήν. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Travels of an Irish gentleman in search of religion». Διὰ τὴν «Ἐγκυκλοπαιδείαν» τοῦ Λάρντνερ συνέγραψεν «Ἱστορίαν τῆς Ἰρλανδίας», τὴν ὁποίαν, βραδύτερον συμπληρώσας, ἐξέδωκεν εἰς τέσσαρας τόμους. Ὁ Μοὺρ ἀπέθανε κατόπιν μακρᾶς καὶ ὀδυνηρᾶς νόσου εἰς τὸ ἀγροτικὸν κτῆμά του. Ἐν Γλασκόβῃ καὶ Δουβλίνῳ ἠγέρθησαν εἰς αὐτὸν ἀνδριάντες. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1856 ἐν Λονδίνῳ εἰς δέκα τόμους. Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

*Θωμᾶς Μούρ.*
[Προσωπογραφία τοῦ Lawrence].

— **Μοὺρ** (Moore), *σὲρ* ***Τζών***. Ἄγγλος στρατηγὸς (1761—1809). Καταταχθεὶς εἰς ἡλικίαν δέκα πέντε ἐτῶν εἰς τὸν στρατόν, ἐξελέγη τῷ 1784 μέλος τοῦ κοινοβουλίου. Τῷ 1787 λαμβάνει μέρος εἰς τὸν πόλεμον τῆς Ἀμερικῆς, τῷ 1792 δρᾷ ἐν Γιβραλτάρ, τῷ 1793 συμμετέχει εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Τουλῶνος καὶ τῷ 1794 εἰς τὴν τῆς Κορσικῆς. Μετακληθεὶς λόγῳ τῶν προστριβῶν του μὲ τὸν ἀντιβασιλέα Ἔλιοτ, ἀπεστάλη εἰς τὰς Ἰνδίας καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ἅλωσιν τῆς Σάντα-Λουτσία. Χρησιμοποιηθεὶς βραδύτερον (1797) μετὰ τοῦ Ἀμπέρκρομπυ πρὸς κατάπνιξιν τῆς στάσεως ἐν Ἰρλανδίᾳ, κατήγαγε νίκην περιφανῆ ἐν Νιοὺ-Ρὸς (1798). Τῷ 1799 μάχεται ἐν Ὁλλανδίᾳ, ὅπου τραυματίζεται ἐν Μπέργκεν. Τῷ 1800 ἀποστέλλεται εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐκεῖθεν εἰς τὴν Ἱσπανίαν καὶ συνοδεύει τὸν Ἀμπέρκρομπυ εἰς τὴν Αἴγυπτον. Τῷ 1809 τίθεται ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ εἰς τὴν Ἱσπανίαν ἀποσταλέντος βρεττανικοῦ στρατοῦ. Καταδιωκόμενος ὑπὸ τοῦ Σοὺλτ καὶ πληροφορηθεὶς ὅτι ὁ Ναπολέων κατέφθασεν εἰς τὴν Μαδρίτην, ἀναγκάζεται νὰ ὑποχωρήσῃ ἐκ τοῦ Τόρο εἰς τὴν Κορόνια. Καθ' ὃν ὅμως χρόνον ἐπεστάτει εἰς τὴν μετὰ θαυμασίας τάξεως ἐπιβίβασιν τῶν ἀνδρῶν του ἐπὶ τῶν πλοίων, ἐφονεύθη. Α. Δ.

Digitized by Google

**Μοὺρ** (Moor), ***Ἐμμανουήλ.*** Οὔγγρος συνθέτης καὶ κλειδοκυμβαλιστής, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ἐγένετο γνωστὸς διὰ σειρᾶς ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων: 7 συμφωνίαι, ἓν κοντσέρτο διὰ κλειδοκύμβαλον, 4 κοντσέρτα διὰ βιολίον, 7 σονάται διὰ βιολίον, 3 σονάται διὰ βιολλοντσέλλον, πλεῖστα ἔργα μουσικῆς δωματίου, μία λειτουργία διὰ μονῳδούς, χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν, 500 τραγούδια κλπ. Τῷ 1902 ὁ Μοὺρ ἔγραψε τὸ μελόδραμα «Die Pompadour», τὸ αὐτὸ δ' ἔτος ἀνεβίβασε τὸν «Andreas Hofer» καὶ εἶτα, τῷ 1908, τὸ «Hochzeitsglocken». Γ. Σ.

**Μοὺρ** (Moure), ***Ἰωάννης - Γαβριὴλ - Αἰμίλιος.*** Διαπρεπὴς Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Βορδὼ τῷ 1855. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Βορδὼ καὶ πρόεδρος τοῦ διεθνοῦς ὠτολογικοῦ συνεδρίου τοῦ Βορδὼ (1904). Μετέφρασε (1881—1883) τὰ ἔργα τοῦ Morel - Mackenzie ἐπὶ τῶν νόσων ῥινὸς καὶ λάρυγγος καὶ ἔγραψε: «Μελέτη ἐπὶ τῶν κύστεων τοῦ λάρυγγος» (1881), «Ἐγχειρίδιον τῶν νόσων τῶν ῥινικῶν κοιλοτήτων: Στοιχειώδης ῥινο-λαρυγγολογία» (1908), «Πρακτικὸς ὁδηγὸς τῶν νόσων ὤτων, ῥινὸς καὶ λάρυγγος μετὰ τῶν ἐξαρτημάτων των» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Brindel (1908), «Χειρουργικὴ τεχνικὴ ὠτο-ῥινολαρυγγολογία». Ὑπῆρξεν ὁ ἐφευρέτης νέων ἐγχειρητικῶν μεθόδων καὶ ἐργαλείων καὶ ἱδρυτὴς καὶ διευθυντὴς ἀπὸ τοῦ 1880 τῆς «Ἑβδομαδιαίας Ἐπιθεωρήσεως ὠτο - ῥινολαρυγγολογίας». Ο. Ρ.

**μοῦρα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων: 1) Τοὺς *ποδωτῆρας* τῶν μειζόνων. 2) Τοὺς *πρόποδας* τῶν τετραγώνων ἱστίων καὶ αὐτῶν τῶν παριστίων, ὁπότε χρησιμοποιεῖται καὶ ὁ ὅρος «κοῦντρες τῆς κουρτελάτσας». 3) Τὴν πλευρὰν ἐξ ἧς ἔχον τὸν ἄνεμον πλαγιοδρομεῖ τὸ ἱστιοφόρον πλοῖον. Σ. Ε. Λ.

**Μουράβιεφ.** Παλαιὰ ῥωσικὴ οἰκογένεια, ἀνήκουσα εἰς τοὺς βογιάρους τῆς ἡγεμονίας τῆς Μόσχας καὶ λαβοῦσα παρὰ τοῦ τσάρου Ἰβὰν Βασίλιεβιτς τῷ 1488 ἐκτεταμένας γαίας εἰς τὸ διαμέρισμα τῆς παλαιᾶς δημοκρατίας τοῦ Νοβογορόδ. Ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης προῆλθον πολυάριθμοι διαπρεπεῖς ἄνδρες, διαπρέψαντες εἰς τὰς ἐπιστήμας, τὰ γράμματα, τὸν στρατὸν καὶ τὴν διπλωματίαν. Θ. Β.

— **Μουράβιεφ,** ***Ἀλέξανδρος Νικολάγιεβιτς.*** Ῥῶσος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1792 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1864 ἐν Μόσχᾳ. Μετασχὼν εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῶν Δεκεμβριστῶν (1825), κατεδικάσθη εἰς θάνατον, μεταβληθείσης δὲ τῆς ποινῆς του ἐξωρίσθη εἰς Σιβηρίαν. Ἀπονεμηθείσης εἰς αὐτὸν χάριτος μετὰ εἰκοσαετίαν, κατετάχθη ἐκ νέου εἰς τὸν στρατόν, ἐπολέμησεν εἰς Κριμαίαν καὶ λαβὼν τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ ἀπεσύρθη, διορισθεὶς κυβερνήτης τοῦ Νίζνιϊ Νοβογορόδ, ἔνθα εἰργάσθη μεγάλως ὑπὲρ τῆς χειραφετήσεως τῶν δουλοπαροίκων. Θ.Β.

— **Μουράβιεφ,** ***Ἀνδρέας Νικολάγιεβιτς.*** Ῥῶσος περιηγητής, γεννηθεὶς τῷ 1798 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1874. Διῆλθεν ὁλόκληρον τὴν ζωήν του περιηγούμενος τὸν Καύκασον, τὴν Συρίαν, τὴν Ἑλλάδα, τὴν Ἀρμενίαν κτλ. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἀποδημία εἰς τοὺς Ἁγίους Τόπους», «Ἱστορία τῆς Ἱερουσαλήμ», «Ἱστορία τῆς ῥωσικῆς Ἐκκλησίας», «Ἀποδημία εἰς τὴν Ἐγγὺς Ἀνατολήν», πρὸς δὲ ἓν δρᾶμα. Μετέφρασε καὶ μέρη τινὰ τῆς «Θείας Κωμῳδίας» τοῦ Δάντε κτλ. Θ. Β.

— **Μουράβιεφ,** ***Μιχαὴλ Νικήτιτς.*** Ῥῶσος φιλόλογος καὶ ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Σμολένσκ τῷ 1757 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1807. Ὑπηρέτησε κατὰ πρῶτον ἐν τῇ αὐτοκρατορικῇ φρουρᾷ ἐπὶ Αἰκατερίνης Β', ὑπὸ τῆς ὁποίας καὶ ἐξελέγη ὡς παιδαγωγὸς τῶν ἐγγόνων της Ἀλεξάνδρου καὶ Κωνσταντίνου. Διωρίσθη γερουσιαστὴς καὶ σύμβουλος τῆς αὐτοκρατορίας. Συνέγραψεν: «Ἐπιστολὰς τοῦ Αἰμιλίου», «Διαλόγους τῶν θνητῶν», «Ἱστορικὸν δοκίμιον», «Γεωγραφίαν τῆς Ῥωσίας» καὶ πολλὰ λυρικὰ ποιήματα. Θ. Β.

— **Μουράβιεφ,** ***Μιχαὴλ Νικολάγιεβιτς,*** *κόμης* —. Ῥῶσος διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1845 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1906. Διετέλεσεν εἰς πλείστας πρωτευούσας πρεσβευτής, τῷ δὲ 1897 ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Τῷ 1898 ἀπηύθυνε πρὸς τὰς μεγάλας δυνάμεις πρότασιν περὶ ἀφοπλισμοῦ. Ἐδημοσίευσε τὰ ἀπομνημονεύματα τοῦ πάππου του. Θ. Β.

— **Μουράβιεφ,** ***Νικόλαος Νικολάγιεβιτς.*** Ῥῶσος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Ῥίγᾳ τῷ 1768 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1840. Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ναυτικόν, εἶτα εἰς τὸν στρατὸν τῆς ξηρᾶς καὶ ἵδρυσε τῷ 1797 τὴν Ἀκαδημίαν ἐπιτελῶν. Τῷ 1812—1814 μετέσχε τοῦ κατὰ τῆς Γαλλίας πολέμου ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου. Ἐπιστρέψας εἰς Ῥωσίαν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ, ἐγένετο πρόεδρος τῆς στρατιωτικῆς Ἀκαδημίας. Ἀπὸ τοῦ 1823 κατεγίνετο μόνον εἰς τὴν γεωργίαν. Θ. Β.

**μουράγιο** (τό)· δημοτ., κρηπίδωμα λιμένος, προκυμαία (ἰταλ. muraglia).

**Μουραλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Πελαργὸς* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μουράνο** (Murano) *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Βενετίας, ἐπὶ ὁμωνύμου νησῖδος, ἐντὸς τῆς βενετικῆς λιμνοθαλάσσης (πλάτ. 45°27' Β., μῆκ. 12°21' Α., χάρτ. ἀγγλ. 201: Gulf of Venice and Trieste). Κάτ. 5.813. Ἔχει πολλὰ κτήρια παλαιὰ καὶ ναοὺς ὀνομαστοὺς διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν των καὶ τὰς τοιχογραφίας των, ὁ κυριώτερος τῶν ὁποίων εἶναι ἡ βασιλικὴ τοῦ Ἁγίου Δονάτου, ἀνακαινισθεῖσα κατὰ τὸν Ι' αἰῶνα καὶ κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους, ἑλληνοαραβικῆς ἀρχιτεκτονικῆς μετὰ κιόνων ἐξ ἑλληνικοῦ μαρμάρου. Ὁ ναὸς οὗτος ἀποτελεῖ σπουδαῖον γνώρισμα διὰ τοὺς ναυτιλλομένους. Ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου περικλείει πολύτιμα ἔργα τοῦ Μπελλίνι. Ἡ πόλις ἔχει σημαντικὸν μουσεῖον μετὰ περιφήμου συλλογῆς ἀρχαίων ὑαλίνων εἰδῶν. Ἡ νῆσος ἔχει περίμετρον 8 χλμ. καὶ ἦτο ἄλλοτε ἐκ τῶν ἰσχυροτέρων κτήσεων τῆς δημοκρατίας τῆς Βενετίας μετὰ 30.000 κατ. καὶ 16 ναῶν. Εἶχεν ὀνομαστὴν σχολὴν ζωγραφικῆς, ἀλλὰ τὴν παγκόσμιον φήμην της ὀφείλει εἰς τὴν περίφημον βιομηχανίαν τῆς ὑαλουργίας της, ἥτις εὑρίσκετο ἤδη εἰς ἀνθηρὰν κατάστασιν κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἤρχισαν νὰ κατασκευάζωνται καὶ τὰ ἔγχρωμα κρύσταλλα, γνωστὰ καθ' ἅπαντα τὸν κόσμον ὡς «κρύσταλλα τῆς Βενετίας», τὰ διαποίκιλτα κάτοπτρα καὶ τὰ ἐζωγραφισμένα ὑάλινα ἀγγεῖα. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ἀνεπτύχθη προσέτι ἡ κατασκευὴ χανδρῶν. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς δημοκρατίας τῆς Βενετίας ἡ βιομηχανία τῆς ὑάλου ἤρχισε νὰ παρακμάζῃ ἐν Μουράνῳ, ἀλλὰ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους προσέλαβε νέαν ἀναζωογόνησιν. Ἐπὶ τῆς νήσου ταύτης ἐγένετο (1913—1914) ἡ πρώτη πρὸς εὐθυγραμμίσεις αὐτόματος ἐγκατάστασις φάρων Ἄγκα, τὸ ἀπ' αὐτῆς δὲ φῶς ἐν εὐθείᾳ μετὰ τῶν ἐκλάμψεων ὁμοίου φάρου ἐπὶ τοῦ φρουρίου Σὰν Ἀντρέα ὁδηγεῖ πρὸς ἀσφαλῆ διάπλουν διὰ τοῦ πλοΐμου πόρου τοῦ Λίντο. Μ. Δ. Β.—Σ. Ε. Λ.

**Μουράνο** (Murano), ***Ἀντώνιος ντὰ—.*** Βενετὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Βιβαρίνι* Ἀντώνιος).

**Μουράντ,** ἢ ***Φρὰτ*** *[Γεωγρ.]*. Ὁ νότιος βραχίων τοῦ Εὐφράτου, ὁ *Ἀρσανίας* τῶν ἀρχαίων.

**Μουρὰτ** (=ποθητός). Ὄνομα πέντε σουλτάνων τῆς Τουρκίας:

— ***Μουρὰτ ὁ Α'***, ἢ *Ἀμουράτης* (Amurat), ὁ ἐπιλεγόμενος *Γαζῆ* (νικητής) καὶ *Χουνταβεντιγκιὰρ* (ἤτοι ἡγεμών, τίτλος δοθεὶς εἰς αὐτὸν ὅτε ἦτο ἀκόμη διοικητὴς τοῦ νομοῦ Προύσης, ὅστις ὠνομάσθη κατόπιν ἐξ αὐτοῦ Χουνταβεντιγκιάρ). Τρίτος Ὀσμανίδης σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Ὀρχὰν καὶ ἔγγονος τοῦ Ὀσμάν, ἱδρυτοῦ τοῦ τουρκικοῦ κράτους καὶ γενάρχου τῆς δυναστείας τῶν Ὀσμανιδῶν. Ἐγεννήθη τῷ 1326, διετέλεσε δέ, νέος ἔτι, διοικητὴς τῆς ἐπαρχίας Σουλτὰν-ὀνοῦ καὶ κατόπιν τῆς Προύσης. Διεδέχθη τὸν πατέρα του, ἀποθανόντα τῷ 1359 ἐν Προύσῃ, πρωτευούσῃ τότε τῆς Τουρκίας. Εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς παρεσκευάσθη ὅπως συνεχίσῃ τὰς εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς ἐπαρχίας τοῦ βυζαντινοῦ κράτους κατακτήσεις τοῦ ἀδελφοῦ του Σουλεϋμὰν πασᾶ. Ἐκ τούτου ἠθέλησε νὰ ἐπωφεληθῇ ὁ ἡγεμὼν τῆς Καραμανίας, ὑποκινήσας ἐν Ἀγκύρᾳ τὴν ἐπανάστασιν τῆς μυστικῆς τουρκικῆς ὀργανώσεως τῶν Ἀχίδων. Ἐπελθὼν ὅμως ὁ Μουρὰτ κατέστειλε τοὺς Ἀχίδας καὶ ἐκυρίευσε τὴν Ἄγκυραν. Εὐθὺς κατόπιν, διορίσας ἀρχιστράτηγον καὶ μέγαν βεζύρην τὸν διακριθέντα κατὰ τὰς ἐν Εὐρώπῃ πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις Λαλᾶ-Σαχὶν πασᾶν, διέβη εἰς Θρᾴκην τῷ 1361 καὶ κατέλαβεν εὐκόλως τὴν Τυρολόην (Τσορλοῦ), τὸ Διδυμότειχον, τὴν Κεσάνην, τὸ Μπαμπᾶ-Ἐσκὶ καὶ κατόπιν τὴν Ἀδριανούπολιν, ἁλωθεῖσαν ὑπὸ τοῦ Λαλᾶ-Σαχίν, ἐκεῖθεν τὴν Γκιουμουλτζίναν (Κομοτηνὴν ἢ Κουμουτσηνὴν) καὶ ἄλλας πόλεις, μεθ' ὃ ἐπέστρεψεν εἰς Προῦσαν. Συνεχίζων τὰς κατακτήσεις ὁ Λαλᾶ-Σαχὶν κατέλαβε τὴν Φιλιππούπολιν (1362) καὶ ἐπεξέτεινε τὰ ὅρια τοῦ τουρκικοῦ κράτους μέχρι τοῦ Αἵμου, ἐνῷ ἄλλοι Τοῦρκοι πολέμαρχαι, ἐπωφελούμενοι τῆς ἀδυναμίας καὶ ἀκαταστασίας τοῦ βυζαντινοῦ κράτους, κατελάμβανον τὴν Δράμαν καὶ Καβάλλαν, τὸ Ἀβρὲτ-Χισὰρ (Γυναικόκαστρον), δηλαδὴ τὸ ἥμισυ τῆς Μακεδονίας. Ἀνησυχῶν ἐκ τῶν τοιούτων προόδων τῶν Τούρκων ὁ κράλης (βασιλεὺς) τῆς Σερβίας συνησπίσθη μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας καὶ μετὰ τῶν ἡγεμόνων τῆς Βοσνίας καὶ Βλαχίας καὶ κατήρτισε στρατὸν 60.000 ἀνδρῶν, οἵτινες προήλασαν ταχέως πρὸς τὴν Ἀδριανούπολιν καὶ ἐστρατοπέδευσαν παρὰ τὸν Ἕβρον. Ὁ Λαλᾶ-Σαχὶν εἰδοποίησεν ἀμέσως τὸν σουλτᾶνον Μουράτ, πολιορκοῦντα τότε τὴν Μπίγαν (τὰς Πηγάς), παρὰ τὰ Δαρδανέλλια. Ἀλλὰ πρὸ τῆς ἀφίξεως τῶν ἐνισχύσεων ὁ Τοῦρκος στρατηγὸς ἀπέστειλε χάριν κατοπτεύσεως σῶμα ἱππικοῦ ὑπὸ τὸν Χατζῆ-Ἰλμπεκί.

Οὗτος εὑρὼν τοὺς Σέρβους καὶ τοὺς συμμάχους των διασκεδάζοντας, ἐπετέθη τὴν νύκτα καὶ ἐπροξένησεν εἰς αὐτοὺς ἀληθῆ πανωλεθρίαν παρὰ τὸ Τσερμὲν ἢ Τσερνόμεν (1363 ἢ 1365). Μετὰ τὴν νίκην ταύτην τὰ στρατεύματα τοῦ Μουρὰτ κατέλαβον ἀκωλύτως τὴν Α. Θρᾴκην μέχρις ἀποστάσεως δύο μερῶν πορείας ἀπὸ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ὡς καὶ τὴν Ν. Βουλγαρίαν μέχρις Ἰχτιμὰν καὶ Σαμακοβίου, κατόπιν δὲ καὶ τὴν Α. Μακεδονίαν μέχρι Σερρῶν (1373) ὡς καὶ τὴν Β. Μακεδονίαν καὶ Ν. Σερβίαν, κυριεύσαντες κατόπιν ἡρωϊκῆς ἀντιστάσεως τῶν Σέρβων τὴν Νύσσαν. Ὁ βασιλεὺς Λάζαρος ἠναγκάσθη νὰ συνθηκολογήσῃ, ἀναγνωρίσας τὴν τουρκικὴν ἐπικυριαρχίαν καὶ ὑποχρεωθεὶς νὰ πληρώνῃ ἐτήσιον φόρον καὶ νὰ παρέχῃ εἰς τὸν Μουρὰτ δύναμιν 1.000 ἱππέων (1375). Ἐλεύθερος ἐκ ΒΔ. ὁ Μουράτ, ἐστράφη πρὸς τὴν Βουλγαρίαν καὶ κατέλαβε τῷ 1382 τὴν Σόφιαν. Κατόπιν ἠσχολήθη μὲ τὴν ἐπέκτασιν τοῦ κράτους του ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ εἰς βάρος τῶν Τούρκων καὶ Τουρκομάνων δυναστῶν, οἱ ὁποῖοι εἶχον ἱδρύσει διάφορα μικρὰ κρατίδια ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ κράτους τῶν Σελτζουκιδῶν. Ἔγινε κύριος τῆς Κιουτάχειας καὶ τριῶν ἄλλων πόλεων, αἵτινες ἐδόθησαν ὡς προὶξ εἰς τὴν κόρην τοῦ ἡγεμόνος τοῦ Κερμιάν, νυμφευθεῖσαν τὸν υἱὸν τοῦ Μουράτ, τὸν κατόπιν σουλτᾶνον Βαγιαζὶτ τὸν Α'. Ἠγόρασε τὰς πόλεις Βεησεχρί, Σεϊδὶ-σεχρί, Καραγὰτς καὶ Ἰσπάρτα (Σπάρτην) τῆς Πισιδίας ἀπὸ τὸν σατράπην τῆς χώρας τοῦ Χαμὶτ-ἀμπὰτ καὶ ἐπολέμησε κατὰ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Καραμανίας, τὸν ὁποῖον ὁ Μουρὰτ ἐνίκησεν εἰς τὴν πεδιάδα τοῦ Ἰκονίου (1386), ἔχων ὡς βοηθοὺς καὶ Σέρβους. Τὸ ἐπιὸν ἔτος οἱ Τοῦρκοι ὑπέταξαν ὁλόκληρον τὴν Βουλγαρίαν. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ κράλης τῆς Σερβίας, συνεννοηθεὶς πάλιν μὲ τὸν βασιλέα τῆς Οὐγγαρίας ὡς καὶ μὲ τοὺς ἡγεμόνας τῆς Ἀλβανίας, Ἑρζεγοβίνης, Βλαχίας καὶ Βοσνίας, περεσκεύασε στρατὸν ἐκ 200.000 περίπου ἀνδρῶν, ὅπως ἐκδιώξῃ, ὡς ἐπίστευε, τοὺς Τούρκους ἐκ τῶν εὐρωπαϊκῶν ἐπαρχιῶν. Ὁ Μουρὰτ ἐπῆλθε κατὰ τῶν Σέρβων καὶ τῶν συμμάχων αὐτῶν, συγκεντρωθέντων εἰς τὴν πεδιάδα τοῦ Κοσσυφοπεδίου (Κόσοβο-πόλιε). Ἡ μάχη συνήφθη τῇ 15 Ἰουνίου 1389, ἡμέραν τοῦ ἁγίου Βίτου (Βίντοβ-ντάν), διήρκεσε δὲ ὁλόκληρον τὴν ἡμέραν. Παρὰ τὴν ἀριθμητικὴν ὑπεροχὴν τοῦ χριστιανικοῦ στρατοῦ, οἱ Τοῦρκοι ἐνίκησαν χάρις εἰς τὴν ὁρμητικότητα, μεθ' ἧς ὡδήγησε τὸ ὑπ' αὐτὸν σῶμα εἰς ἐπίθεσιν ὁ υἱὸς τοῦ Μουράτ, Βαγιαζίτ, ὁ ἐπικληθεὶς Γιλδιρὶμ (Κεραυνὸς ἢ κατὰ Χαλκοκονδύλην Λαῖλαψ). Μεταξὺ τῶν νεκρῶν ἦτο καὶ ὁ βασιλεὺς Λάζαρος. Εἶχε πλέον λήξει ἡ μάχη, καὶ ὁ Μουρὰτ ἐθεᾶτο τὸ στράτευμά του παρελαῦνον, ὅτε εἷς τῶν βαρέως πληγωμένων Σέρβων εὐγενῶν, ὁ Μίλος Κομπίλοβιτς, εἷς τῶν ἐπὶ θυγατρὶ γαμβρῶν τοῦ Λαζάρου, ἐγερθεὶς αἰφνιδίως ἐκ τοῦ σωροῦ τῶν νεκρῶν ἐπλησίασε τὴν ἀκολουθίαν τοῦ σουλτάνου καὶ ἐζήτησε νὰ ἐμφανισθῇ πρὸ αὐτοῦ, ὅπως ἐπιδώσῃ, ὡς ἔλεγεν, ἀναφορὰν ἤ, κατ' ἄλλους, δηλώσῃ ὅτι δέχεται νὰ γίνῃ Μουσουλμᾶνος. Γενόμενος δὲ δεκτὸς καὶ προσποιηθεὶς ὅτι κύπτει ὅπως προσκυνήσῃ τοὺς πόδας τοῦ σουλτάνου, ἐξήγαγε μάχαιραν καὶ ἐβύθισεν αὐτὴν εἰς τὴν κοιλίαν τούτου. Ὁ Κομπίλοβιτς ἐφονεύθη ἀμέσως ὑπὸ τῶν σωματοφυλάκων τοῦ Μουράτ. Ἀλλὰ καὶ οὗτος ἐξέπνευσε μετ' ὀλίγον, προφθάσας ν' ἀνακηρύξῃ σουλτᾶνον τὸν πρωτότοκον υἱόν του Βαγιαζίτ. Ὁ νεκρός του μετεφέρθη εἰς Προῦσαν καὶ ἐτάφη εἰς ἰδιαίτερον μαυσωλεῖον τοῦ ὑπ' αὐτοῦ παρὰ τὸ Τσεκιργκὲ κτισθέντος τζαμίου, ἐνῷ τὰ ἐντόσθιά του ἐνεταφιάσθησαν εἰς μαυσωλεῖον ἀνεγερθὲν ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης. Ὁ Μουρὰτ ὁ Α' θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν ἐνδοξοτέρων σουλτάνων τῆς Τουρκίας. Εἰς 37 ἀναβιβάζουσιν οἱ Τοῦρκοι τὰς πολεμικὰς νίκας του.

***Μουρὰτ ὁ Β'*** (ὁ ἐπικληθεὶς *Γαζῆ*). Ἕκτος σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, υἱὸς τοῦ σουλτάνου Μεχμὲτ Α'. Ἐγεννήθη τῷ 1404, διεδέχθη δὲ τὸν πατέρα του, ἀποθανόντα τῷ 1421. Ἦτο τότε διοικητὴς Ἀμασείας, ἐδέησε δὲ νὰ κρατηθῇ μυστικὸς ὁ θάνατος τοῦ πατρός του ἐπὶ 42 ἡμέρας, μέχρις ὅτου εἰδοποιηθῇ ὁ ἴδιος καὶ φθάσῃ εἰς Προῦσαν πρὸς παραλαβὴν τῆς ἀρχῆς. Ἡ ἀνάρρησίς του ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς σοβαρὰς ἐν Κωνσταντινουπόλει σκέψεις περὶ τῆς τηρητέας πολιτικῆς, διότι ὑπῆρχον καὶ ἄλλοι μνηστῆρες τοῦ θρόνου καὶ κυρίως ὁ ἐν Λήμνῳ συνεπείᾳ συμφωνίας μετὰ Μεχμὲτ τοῦ Α' κρατούμενος Ντζουζμὲ-Μουσταφᾶς, ὁ δῆθεν υἱὸς Βαγιαζὶτ τοῦ Α', πάππου τοῦ Μουράτ. Καὶ ὁ μὲν αὐτοκράτωρ Μανουὴλ ἤθελε ν' ἀναγνωρισθῇ ὁ Μουράτ, ἀλλ' ὁ υἱός του καὶ ἀντιβασιλεὺς Ἰωάννης ἐπέμεινε νὰ ὑποστηριχθῇ ὁ Μουσταφᾶς καὶ ἡ γνώμη του ἐπεκράτησε. Ὁ Μουσταφᾶς κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τῇ βοηθείᾳ τῶν Βυζαντινῶν τὴν Καλλίπολιν καὶ ἐνίκησε τὸν στρατὸν τοῦ Μουρὰτ παρὰ τὴν Ἀδριανούπολιν. Κατόπιν ὅμως, διαβὰς εἰς Ἀσίαν, ἐνικήθη παρὰ τὴν Προῦσαν καὶ παραδοθεὶς ὑπὸ τῶν ἰδίων του ἀνθρώπων εἰς τὸν Μουρὰτ ἀπηγχονίσθη ἐν Ἀδριανουπόλει (1422). Μετὰ τὴν τοιαύτην ἔκβασιν τοῦ ἀγῶνος ἐστάλη ἐκ Κωνσταντινουπόλεως εἰς τὸν Μουράτ, εὑρισκόμενον ἐν Ἀδριανουπόλει, πρεσβεία ἀποτελουμένη ἐκ τοῦ Δημητρίου Κανтακουζηνοῦ, Ματθαίου τοῦ Λασκάρεως καὶ τοῦ γραμματικοῦ Ἀγγέλου Φιλομ-



Digitized by Google

μάτη, ὅπως προτείνῃ φιλίαν καὶ εἰρήνην. Ὁ Μουρὰτ ἀντὶ νὰ δεχθῇ τοὺς πρέσβεις τοῦ Βυζαντίου, διέταξε νὰ δεθῶσι καὶ φυλακισθῶσι. Κατόπιν ἀποφυλακισθέντες ἐστάλησαν εἰς Κωνσταντινούπολιν μὲ μήνυμα τοῦ σουλτάνου ὅτι μετ' ὀλίγον ἔρχεται καὶ ὁ ἴδιος. Καὶ πράγματι δὲν ἐβράδυνε νὰ φθάσῃ ἐπὶ κεφαλῆς πολυαρίθμου στρατοῦ, ὁ ὁποῖος ὑπολογίζεται μὲν ὑπὸ τοῦ ἱστορικοῦ Δούκα εἰς 200.000 ἄνδρας, φαίνεται ὅμως ὅτι δὲν ὑπερέβαινε τὰς 40.000—50.000, διαθέτων καὶ πολιορκητικὰς μηχανάς, ἀκόμη δὲ καὶ τὰ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἐπινοηθέντα βαρέα πολιορκητικὰ τηλεβόλα (ὀλμοβόλα), τὰ ὁποῖα ὁ χρονογράφος Ἰωάννης ὁ Κανανὸς ὀνομάζει «βουμβάρδας». Ἡ γενικὴ ἔφοδος ὡρίσθη διὰ τὴν 24 Αὐγούστου (1422). Ὅπως ὑπεκκαύσῃ τὴν ὁρμὴν τοῦ στρατοῦ ὁ Μουρὰτ ὑπεσχέθη εἰς τὸν στρατόν του πλήρη ἐλευθερίαν πρὸς λεηλασίαν τῆς πόλεως καὶ ἐξανδραποδισμὸν τῶν κατοίκων. Συνεπείᾳ τῆς διαταγῆς ταύτης συνηθροίσθη εἰς τὸ τουρκικὸν στρατόπεδον συρφετὸς πάσης τάξεως, ἀκόμη δὲ καὶ τουρκοκαλόγηροι (δερβίσαι) «τὰς καλογραίας ἡμῶν κέρδος καὶ κούρσος εὐεργεσίαν νὰ ἔχουν παρὰ τοῦ δεσπότου τῶν Τούρκων», ὡς λέγει ὁ Κανανός. Ἡ ἐπίθεσις ἤρχισε τὴν μεσημβρίαν μὲ βροχὴν βελῶν. Ἡ φρουρὰ ὑπεχώρει ἤδη εἰς τινα σημεῖα καὶ οἱ Τοῦρκοι ἀνερριχῶντο ἤδη εἰς τὰ τείχη, ὅτε ὁ λαὸς τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἐντόπιοι καὶ ξένοι, ἄνδρες καὶ γυναῖκες, ὡς ἠλεκτρισθέντες ἐκ τοῦ ἀπειλουμένου κινδύνου, ἔτρεξαν εἰς τὰς ἐπάλξεις καὶ κατώρθωσαν νὰ ἀποκρούσωσι τὴν ἔφοδον μὲ μεγάλας ἀπωλείας τῶν Τούρκων, οἱ ὁποῖοι ἐτράπησαν εἰς φυγήν. Μέρος τῆς φρουρᾶς ἐξῆλθε τότε ἔξω τῶν τειχῶν καὶ ἔκαυσε τὰς πολιορκητικὰς μηχανάς. Ἡ πόλις ἑώρτασε μὲ ἐνθουσιασμὸν τὸν θρίαμβον τοῦτον, ὁ ὁποῖος ἀπεδόθη εἰς θαῦμα τῆς Παναγίας, ἐμφανισθείσης, ὡς ἐλέχθη καὶ ἐπιστεύθη, ἐπὶ τῶν τειχῶν μεταξὺ τῶν πολεμιστῶν.

Μουρὰτ ὁ Β΄.

Ἡ ἀποτυχία αὕτη, κυρίως ὅμως εἰδήσεις ἐξ Ἀσίας περὶ ἐμφανίσεως ὡς μνηστῆρος τοῦ θρόνου τοῦ νεαροῦ Μουσταφᾶ, ἀδελφοῦ τοῦ Μουράτ, ἠνάγκασαν τοῦτον νὰ λύσῃ τὴν πολιορκίαν καὶ νὰ στρέψῃ τὴν προσοχήν του πρὸς τὴν Ἀσίαν. Ὁ Μουσταφᾶς εἶχεν ἤδη καταλάβει τὴν Νίκαιαν καὶ ἠπείλει τὴν Προῦσαν. Ἀλλ' ὁ διορισθεὶς βεζύρης του δωροδοκηθεὶς παρέδωκε τὸν ἡγεμονίδην εἰς τὸν Μουράτ, ὅστις τὸν ἀπηγχόνισεν ἔξω τῆς Νικαίας. Μετὰ τὴν τοιαύτην ἔκβασιν τοῦ ἀγῶνος ὁ αὐτοκράτωρ Μανουὴλ ἔστειλε πρεσβείαν προτείνων εἰρήνην. Αὕτη συνωμολογήθη τῷ 1423 ὑπὸ τοῦ υἱοῦ καὶ διαδόχου τοῦ Μανουήλ, Ἰωάννου Η΄ τοῦ Παλαιολόγου, συγκατατεθέντος εἰς σημαντικὰς ἐδαφικὰς παραχωρήσεις.

Ἀμέσως κατόπιν ὁ Μουρὰτ ἐπῆλθε κατὰ τοῦ Τουρκομάνου ἡγεμόνος τῆς Κασταμονῆς Ἰσφενδιάρ-ὀγλοῦ, ὅστις παραβαίνων τὰς ὑφισταμένας συνθήκας ἐπετέθη κατὰ τῆς πόλεως Μπολοῦ. Κυριεύσας ὁλόκληρον τὴν χώραν τοῦ Ἰσφενδιάρ, πλὴν τῆς Σινώπης, ὁ Μουρὰτ ἐπέβαλεν εἰς αὐτὸν τὴν εἰρήνην, λαβὼν καὶ τὴν θυγατέρα του ὡς γυναῖκα. Κατόπιν ἔστειλε στρατὸν κατὰ τοῦ βοϊβόδα τῆς Βλαχίας Δρακούλη, ὅστις ἐπίσης εἶχε δείξει ἐχθρικὰς διαθέσεις καὶ ἐπωφελούμενος τῆς πολιορκίας τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἔφθασε μέχρι Σιλιστρίας. Ἡττηθεὶς ὅμως ὑπὸ τῶν Τούρκων προσῆλθε μετὰ τῶν δύο υἱῶν του εἰς Ἀδριανούπολιν καὶ ζητήσας συγγνώμην ἐδέχθη νὰ πληρώσῃ ἐτήσιον φόρον (1423). Καὶ οἱ Σέρβοι ὑπὸ τὸν Γεώργιον Μπράγκοβιτς ἠθέλησαν νὰ ἐπωφεληθοῦν, ἀλλὰ καὶ ἐναντίον αὐτῶν ἐστάλη ἰσχυρὸς τουρκικὸς στρατός, ὅστις τοὺς ἠνάγκασε νὰ ζητήσουν τὴν εἰρήνην ὑπὸ βαρεῖς ὅρους. Ὡς ἐκ περισσοῦ ὁ Μπράγκοβιτς ὑπεσχέθη νὰ δώσῃ τὴν θυγατέρα του ὡς γυναῖκα εἰς τὸν Μουρὰτ καὶ ἀνέλαβε τὴν ὑποχρέωσιν νὰ μὴ συνάψῃ πλέον συμμαχίαν μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας, ἀλλὰ νὰ πολεμῇ ὁμοῦ μετὰ τῶν Τούρκων ἐναντίον του καὶ νὰ πληρώνῃ φόρον 5.000 δουκάτων. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν διαπραγματεύσεων τούτων οἱ Τοῦρκοι κατέλαβον καὶ τὴν ἐπὶ τοῦ Δουνάβεως ὀχυρὰν θέσιν Γκαλαπός.

Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μουράτ, ὅπως πολεμήσῃ τὴν αὔξουσαν δύναμιν τῆς Ἐνετίας, ἔστρεψε τὴν προσοχήν του καὶ κατὰ τῆς κυρίως Ἑλλάδος, τῆς ὁποίας τὰς κυριωτέρας παραλίους πόλεις κατεῖχον οἱ Βενετοί, ἀποστείλας εἰς Θεσσαλίαν στρατὸν ὑπὸ τὸν Τουραχὰν (Τουραχάνην). Τὸν Μάϊον τοῦ 1423 ὁ Τουραχάνης διῆλθε τὸν Ἰσθμὸν καὶ ἐπεδόθη ἐν Πελοποννήσῳ εἰς λεηλασίας, σφαγὰς καὶ ἐξανδραποδισμούς. Τῷ 1428 τουρκικὸς στόλος ἐπετέθη κατὰ τῆς Εὐβοίας, κατεχομένης ὑπὸ τῶν Ἐνετῶν, συγχρόνως δὲ ἐπολιόρκει καὶ τὴν Θεσσαλονίκην, τὴν ὁποίαν εἶχε προσκτήσει ἡ ἐνετικὴ δημοκρατία δι' ἀγορᾶς ἀπὸ τῶν Βυζαντινῶν. Τὸ ἔαρ τοῦ 1430 ὁ σουλτᾶνος, συναθροίσας στρατὸν πολὺν ἐξ Εὐρώπης καὶ Ἀσίας, περιέσφιγξε τὴν πόλιν ἐκ τοῦ πλησίον. Ἐντὸς αὐτῆς ἡ κατάστασις ἦτο ἀνώμαλος, διότι οἱ Ἐνετοὶ ἐπίεζον διὰ παντοίων μέσων τοὺς κατοίκους, οἵτινες ἦσαν ὅλοι Ἕλληνες. Ἡ Θεσσαλονίκη κατελήφθη κατόπιν ὁρμητικῆς ἐφόδου τὴν νύκτα τῆς 29ης Μαρτίου. Ἐπειδὴ δὲ ὁ σουλτᾶνος ὑπεσχέθη εἰς τὸν στρατὸν ἐλευθέραν λεηλασίαν, ἐπηκολούθησαν ἀπερίγραπτοι σκηναὶ ἀγριότητος, διαρκέσασαι ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας, τόσον ὥστε ὁ Μουρὰτ ἠναγκάσθη νὰ ἐξαγοράσῃ δι' ἰδίων του χρημάτων πολλοὺς Ἕλληνας αἰχμαλώτους, ὅπως ἐπιστρέφοντες ἀνοικοδομήσωσι τὴν πόλιν. Μετὰ δύο ὅμως ἔτη ἐπανελθὼν κατέσχε τὰς ἐκκλησίας καὶ τὰ μοναστήρια καὶ διένειμε μέρος τῶν ἄλλων ἀκινήτων εἰς τοὺς Τούρκους ἐποίκους, τοὺς ὁποίους εἶχε φέρει ἐκ Γιανιτσῶν.

Τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ Μουράτ, ἀποστείλας τὸν στρατηγὸν Σινὰν βέην, κατέλαβεν ἀμαχητὶ τὰ Ἰωάννινα, ἀνταποκριθεὶς εἰς πρότασιν ἑνὸς ἐκ τῶν περὶ τῆς κατοχῆς τῆς πόλεως ἀντιμαχομένων ἀδελφῶν Τόκκων. Ἡ συμφωνία τῆς παραδόσεως ἐγένετο ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ διατηρήσωσιν οἱ Ἰωαννῖται τὴν διοίκησιν της πόλεως, ἀλλ' οἱ Τοῦρκοι παρεβίασαν αὐτὴν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς. Κατόπιν ὁ Μουρὰτ ἐστράφη πρὸς ΒΑ. ὅπως τιμωρήσῃ τὸν ἡγεμόνα τῆς Βλαχίας Βλὲδ Δράκουλ. Οὗτος ὅμως ἐδέχθη νὰ πληρώνῃ φόρον καὶ νὰ βοηθήσῃ τὸν σουλτᾶνον μὲ στρατὸν εἰς τὴν κατὰ τῆς Οὐγγαρίας ἐκστρατείαν, διὰ τὴν ὁποίαν ἡτοιμάζετο ὁ Μουράτ, ὑποπτευόμενος τὸν βασιλέα Σιγισμόνδον ὡς ἐνθαρρύνοντα τὸν ἡγεμόνα τῆς Καραμανίας εἰς τὴν κατὰ τῶν Τούρκων ἀντίστασιν. Τῷ 1432 τουρκικὸς στρατὸς εἰσέβαλεν εἰς Τρανσυλβανίαν, περιορισθεὶς ὅμως εἰς λεηλασίας ὑπεχώρησεν ἅμα συνηντησεν οὐγγρικὰ στρατεύματα. Ἐπειδὴ ὁ Μουρὰτ ὑποπτεύθη προδοσίαν τοῦ Δρακοὺλ καὶ τοῦ Μπράγκοβιτς, εἰσέβαλεν εἰς Σερβίαν, ἀλλ' ὁ κράλης ἐζήτησεν εἰρήνην, προσφέρων καὶ τὴν δευτερότοκον θυγατέρα του εἰς τὸν σουλτᾶνον ὡς σύζυγον, ὡς προῖκα δὲ μέγα μέρος τῆς χώρας του. Τῷ 1437 ὁ Μουράτ, βοηθούμενος ὑπὸ τῶν Σέρβων καὶ Βλάχων, εἰσέβαλε πάλιν εἰς Τρανσυλβανίαν, προχωρήσας μέχρι Κρόνσταντ (Μπράσο) καὶ Χέρμανστατ (Σιμσίου). Κατὰ τὴν ἐκ τῆς ἐκστρατείας ταύτης ἐπάνοδον προσῆλθεν εἰς τὸν Μουρὰτ ὁ Δράκουλ ὅπως ὑποβάλῃ τὰ σέβη του. Ὁ σουλτᾶνος ὅμως ὑποπτευόμενος αὐτὸν διέταξε νὰ συλληφθῇ καὶ φυλακισθῇ εἰς Καλλίπολιν, ὁπόθεν ἀφέθη κατόπιν ἐλεύθερος, δώσας ὡς ὁμήρους τοὺς δύο υἱούς του. Ἀφ' ἑτέρου ὁ κράλης τῆς Σερβίας πιεζόμενος κατέφυγεν εἰς Οὐγγαρίαν, ἐνῷ οἱ Τοῦρκοι κατελάμβανον τὴν Σεμένδριαν καὶ ὑπέταξαν ὁριστικῶς τὴν Σερβίαν πλὴν τοῦ Βελιγραδίου. Ἀλλ' αἱ κατὰ τῆς Οὐγγαρίας πολεμικαὶ ἐπιχειρήσεις τῶν Τούρκων ἀπέτυχον, διότι οἱ Οὗγγροι εἶχον τώρα στρατηγὸν ἱκανώτατον, τὸν Ἰωάννην Οὐννάδην, ὅστις καταλαβὼν τὴν Νῦσσαν προήλαυνε πρὸς τὴν Ἀδριανούπολιν. Τῷ 12 Ἰουνίου 1444 οἱ Τοῦρκοι ἐδέχθησαν δεκαετῆ εἰρήνην μετὰ τῆς Οὐγγαρίας. Βασιζόμενος εἰς ταύτην, λυπηθεὶς δὲ κυρίως καὶ ἐκ τοῦ θανάτου τοῦ υἱοῦ του Ἀλαεδδίν, ὁ Μουρὰτ παρῃτήθη ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ του Μωάμεθ τοῦ Β΄ καὶ ἀπεσύρθη εἰς Μαγνησίαν. Τοῦτο πληροφορηθεὶς ὁ πάπας Εὐγένιος ὁ Δ΄ παρεκίνησε τὸν βασιλέα τῆς Οὐγγαρίας νὰ ἐπωφεληθῇ τῆς εὐκαιρίας. Δέκα ἐννέα μόλις ἡμέρας μετὰ τὴν οὐγγροτουρκικὴν εἰρήνην ἐσχηματίσθη συνασπισμὸς τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας καὶ Οὐγγαρίας Λαδισλάου τοῦ Γ΄, τοῦ ἡγεμόνος τῆς Τρανσυλβανίας Οὐννάδου, τοῦ βοεβόδα τῆς Βλαχίας καὶ τοῦ καρδιναλίου Cesarini ἐκ μέρους τοῦ πάπα. Ὁ συμμαχικὸς στρατὸς διέβη τὸν Δούναβιν καὶ ἔφθασε μέχρι Βάρνης, ὅπου θὰ συνηντᾶτο, ὡς ἀνέμενε, μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου. Ὁ Μουρὰτ ὅμως ἀναλαβὼν πάλιν, κατὰ παράκλησιν τοῦ υἱοῦ του, τὸν θρόνον καὶ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στρατοῦ, ἔφθασεν ὁρμητικῶς εἰς Βάρναν καὶ ἐνίκησε κατὰ κράτος τοὺς Χριστιανοὺς συμμάχους, πεσόντων κατὰ τὴν μάχην τοῦ βασιλέως Λαδισλάου καὶ τοῦ καρδιναλίου Τσεζαρίνι (10 Νοεμβρίου 1444). Ὁ Μουρὰτ παρῃτήθη κατόπιν διὰ δευτέραν φοράν, ἀλλ' ἐπανῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ὅπως καταστείλῃ ἐπανάστασιν τῶν γενιτσάρων ἐν Ἀδριανουπόλει. Συγχρόνως ἀνέλαβε τὸ ἔαρ τοῦ 1446 ἐκστρατείαν κατὰ τοῦ δεσπότου τοῦ Μορέως, τοῦ κατόπιν αὐτοκράτορος Κωνσταντινουπόλεως Δραγάτση-Παλαιολόγου, ὅστις, ἐπωφελούμενος τῶν κατὰ τῶν Ἐνετῶν, Οὔγγρων καὶ ἄλλων πρὸς Β. πολέμων, εἶχεν ἐπεκτείνει τὴν βυζαντινὴν κυριαρχίαν ἐν Πελοποννήσῳ καὶ διελθὼν τὸν Ἰσθμὸν κατέλαβε τὰς Θήβας, ἐπέβαλε φόρον εἰς τὸν δοῦκα τῶν Ἀθηνῶν Νέριον Ἀτζαγιώλην, κατέλαβε κατόπιν τὰς Ἀθήνας καὶ ἔφθασε πρὸς Β. μέχρι τῆς περιοχῆς τῶν Ἀγράφων, ἐνῷ ἐν Θεσσαλίᾳ ἔμενεν ὡς διοικητὴς ὁ Τοῦρκος στρατηγὸς Τουραχάν. Πληροφορηθεὶς ὁ Κωνσταντῖνος τὴν ἐκ Σερρῶν ἐκκίνησιν 60.000 τουρκικοῦ στρατοῦ μὲ βαρέα τηλεβόλα, ἐξεκένωσεν ὁλόκληρον τὴν πέραν τοῦ Ἰσθμοῦ χώραν καὶ βοηθούμενος ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Θωμᾶ παρεσκευάσθη εἰς ἄμυναν ἐντεῦθεν τοῦ ἰσχυροῦ τείχους, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἀνεγείρει, ἀνοικοδομήσας ἐκ βάθρων τὸ πρὸ εἰκοσαετίας κτισθέν. Ὁ Μουρὰτ διελθὼν διὰ Θηβῶν, ὅπου συνηνώθη μετὰ τοῦ στρατοῦ του βοηθητικὸν σῶμα τοῦ δουκὸς τῶν Ἀθηνῶν, ἔφθασε πρὸ τοῦ τείχους περὶ τὰ τέλη Νοεμβρίου. Πρὶν ὅμως ἀρχίσῃ ἡ ἐπίθεσις, ὁ Κωνσταντῖνος ἀπέστειλεν εἰς τὸν σουλτᾶνον πρεσβείαν ὑπὸ τὸν ἱστορικὸν Λαόνικον Χαλκοκονδύλην, ὅπως προτείνῃ εἰρήνην, ζητῶν νὰ κρατήσῃ τὸν Ἰσθμὸν καὶ ὅσην χώραν εἶχε καταλάβει πέραν αὐτοῦ. Ὁ Μουράτ, μὴ ἀξιώσας ἀπαντήσεως τὰς προτάσεις ταύτας, διέταξε τὴν σύλληψιν τοῦ Χαλκοκονδύλη μετὰ τῆς συνοδείας του καὶ τὴν φυλάκισιν αὐτῶν ἐν Σέρραις. Πλησιάσας δὲ μὲ 60.000 ἄνδρας πρὸς τὸ τεῖχος τοῦ Ἰσθμοῦ, ἀντελήφθη ὅτι ἡ θέσις ἦτο πολὺ ὀχυρωτέρα παρ' ὅσον ἐνόμιζε καὶ ἤλεγξε τὸν Τουραχάν, διότι ἔδωκεν ἀνακριβεῖς πληροφορίας. Ἤρχισεν οὐχ ἧττον τὴν κατὰ τοῦ τείχους ἐπίθεσιν, ἥτις ἔγινε τὴν 10ην Δεκεμβρίου, διευθυνομένη ὑπὸ τοῦ Μουρὰτ αὐτοπροσώπως καὶ ὑποστηριζομένη ὑφ' ἑνὸς βαρέος τηλεβόλου, τὸ ὁποῖον ἐπροξένησε μέγα ῥῆγμα. Διὰ τούτου εἰσώρμησαν οἱ Τοῦρκοι, ἐνῷ οἱ Βυζαντινοὶ ἐτρέποντο εἰς φυγὴν μὴ σταματήσαντες οὔτε ἐν Κορίνθῳ, διότι οὐδὲ τρόφιμα ὑπῆρχον εἰς τὴν πόλιν ταύτην. Οἱ δεσπόται Κωνσταντῖνος καὶ Θωμᾶς ἀπελπισθέντες ἡτοιμάζοντο νὰ φύγουν ἐκ Πελοποννήσου εὐθὺς ὡς ἤθελε προσεγγίσει ὁ Μουράτ. Οὗτος ὅμως δὲν εἰσέβαλεν εἰς τὸ ἐσωτερικόν. Ἀνέθεσε μόνον εἰς τὸν Τουραχὰν νὰ καταδιώξῃ τοὺς πρὸς τὰ ὄρη τῆς Λακωνίας φεύγοντας. Καὶ οὗτος ὅμως περιωρίσθη εἰς λεηλασίας, προχωρήσας, ὡς φαίνεται, μόνον μέχρι Γλαρέντζας, ἐνῷ ὁ Μουράτ, ἀφοῦ ἔσφαξε μέγα μέρος τῶν περὶ τὸν Ἰσθμὸν κατοίκων, ἐπετέθη κατὰ τοῦ χωρίου Βασιλικῶν (τῆς ἀρχαίας Σικυῶνος) καὶ κατέλαβε τὸ ἐκεῖ φρούριον, ὑπερασπιζόμενον ὑφ' ἑνὸς καλογήρου ἐπὶ κεφαλῆς ὀλίγων ἀνδρῶν. Τὴν ἐπιοῦσαν ἔσφαξε 300 Ἕλληνας καταφυγόντας ἐπὶ τοῦ ὄρους Ὀξύ, παρὰ τὰς Κεγχρεάς, καὶ 600 ἀκόμη αἰχμαλώτους, μεθ' ὃ ὥδευσε κατὰ τῶν Πατρῶν. Οἱ κάτοικοι τῆς πόλεως ταύτης ἔφυγον κατὰ μέγα μέρος εἰς τὴν ἀπέναντι αἰτωλικὴν παραλίαν, ὑπελείφθησαν δὲ μόνον 4.000, οἵτινες ἀντέστησαν ἡρωϊκῶς. Οἱ γενίτσαροι εἶχον ἤδη καταλάβει τὸ κάτω μέρος τῆς πόλεως, ἀλλ' ἐκ τῆς ἀκροπόλεως ἡ φρουρὰ ἐξεσφενδόνιζε κατὰ τῶν ἐπιτεθεμένων βραστὴν πίσσαν, οὕτω δὲ τὸ φρούριον ἐσώθη καὶ ὁ Μουρὰτ μετὰ τοῦ Τουραχὰν ὑποχωρήσαντες ἀπεχώρησαν πέραν τοῦ Ἰσθμοῦ, ἀφοῦ κατέστρεψαν τὸ τεῖχος. Ἡ λεία, τὴν ὁποίαν ἀπεκόμισαν τότε οἱ Τοῦρκοι λεηλατήσαντες πρὸς τοῖς ἄλλοις τὸ στρατόπεδον τοῦ Κωνσταντίνου, ἦτο τοσαύτη, ὥστε οἱ στρατιῶται παρέλαβον κατὰ τὴν ἀποχώρησιν μόνον τὰ πολυτιμότερα πράγματα. Τοσοῦτος δὲ ἦτο ὁ ἀριθμὸς τῶν αἰχμαλώτων, ὥστε οἱ γενίτσαροι ἐπώλουν καθ' ὁδὸν τὰς ἀπαγομένας Ἑλληνίδας ἔναντι εὐτελεστάτης τιμῆς, 300 ἄσπρων κατὰ τὸν Τοῦρκον ἱστορικὸν Σααδεδδίν. Καὶ ἐν τούτοις 60.000 αἰχμαλώτων ἀπήχθησαν τότε ἐκ Πελοποννήσου. Ὁ Μουρὰτ ἐξηκολούθησε τὴν ὑποχώρησιν πρὸς Β., ἐπειγόμενος νὰ φύγῃ καὶ ἐκ τῆς Στερεᾶς, ἵνα μὴ καταληφθῇ ὑπὸ τοῦ βαρέος χειμῶνος ἐν μέσῳ ἐχθρικῶν πληθυσμῶν. Μεθ' ὅλα ὅμως ταῦτα ὁ Κωνσταντῖνος συνῆψε μετὰ τοῦ Μουρὰτ εἰρήνην ταπεινωτικήν. Αἱ Θῆβαι, τὰς ὁποίας εἶχον τελείως γυμνώσει οἱ Τοῦρκοι κατὰ τὴν ὑποχώρησίν των, προσηρτήθησαν εἰς τὴν Τουρκίαν, ἐπίσης δὲ καὶ ὁλόκληρος ἡ μέχρι τῆς Πίνδου χώρα, τὴν δὲ Πελοπόννησον «ὑπόφορον ἔσχον τὸ ἀπὸ τοῦδε οἱ Ἕλληνες τὸ πρὶν ἐλευθέραν οὖσαν», ὡς λέγει ὁ Χαλκοκονδύλης, ἐπιβεβαιούμενος ὑπὸ τοῦ Σααδεδδίν, λέγοντος ὅτι ὁ Μουρὰτ ἐπέβαλε κεφαλικὸν φόρον εἰς τοὺς κατοίκους τῆς τότε πολυκατοικουμένης ταύτης «νήσου».

Ἐξασφαλίσας οὕτω τὴν κυριαρχίαν ἐν τῇ Α. Στερεᾷ Ἑλλάδι ὁ Μουράτ, ἐστράφη κατὰ τοῦ ἐν Ἀλβανίᾳ ἡρωϊκῶς κατὰ τῶν τουρκικῶν ἐπιθέσεων ἀνθισταμένου Γεωργίου Καστριώτου (Σκενδὲρ βέη). Ἀλλ' αἱ πολεμικαὶ αὗται ἐνέργειαι ἀπέτυχον. Ἐκ τῶν περισπασμῶν δὲ τούτων τῶν Τούρκων ἐπωφελούμενος ὁ Οὐννάδης ἐπῆλθε τῷ 1448 ἐπὶ κεφαλῆς 14.000 οὐγγρικοῦ στρατοῦ καὶ 10.000 Βλάχων διὰ Σερβίας καὶ καταλαβὼν τὴν Νῦσσαν ἔφθασεν εἰς τὴν πεδιάδα τοῦ Κοσσυφοπεδίου. Χωρὶς ν' ἀναμείνῃ ἐκεῖ τὴν βοήθειαν τοῦ Καστριώτου, συνῆψε μετὰ τοῦ στρατοῦ τοῦ Μουρὰτ μάχην διαρκέσασαν τρεῖς ἡμέρας. Τὸ ἀποτέλεσμα ἦτο ἀληθὴς πανωλεθρία διὰ τὸν χριστιανικὸν στρατόν, ἰδίᾳ μετὰ τὴν λιποταξίαν τῶν Βλάχων (17 Ὀκτωβρίου 1448). Τὰ δύο ἐπιόντα ἔτη ὁ Μουρὰτ ἐστράφη πάλιν κατὰ τοῦ Σκενδὲρ βέη ἐπὶ κεφαλῆς 90.000 ἱππέων καὶ 40.000 πεζῶν. Ἀλλ' οἱ Ἀλβανοὶ ἐξηκολούθουν νὰ ἀνθίστανται ἡρωϊκῶς ἐν Κρόϊᾳ. Τόσον ἐκουράσθη ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐκ τῶν μακρῶν κατὰ τοῦ Καστριώτου ἀγώνων, ὥστε ὁ σουλτᾶνος εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην νὰ προτείνῃ εἰς αὐτὸν τὸν ἡγεμονικὸν θρόνον τῆς Ἀλβανίας ὑπὸ τὴν ἐπικυριαρχίαν τῆς Τουρκίας. Ὁ Σκενδὲρ βέης ἠρνήθη καὶ ὁ Μουρὰτ ἀποκαμὼν πλέον ἐπανῆλθεν εἰς Ἀδριανούπολιν, ὅπου ἑορτάσας τοὺς γά-

Digitized by Google

ιους τοῦ υἱοῦ του Μωάμεθ παρεδόθη κατόπιν, ὡς λέγεται, εἰς βίον κραιπάλης ἐπὶ τῆς ἐν τῷ Ἕβρῳ νησῖδος, ὅπου εἶχεν ἰδιαίτερον μέγαρον. Ἐν μέσῳ τοῦ ἀσώτου τούτου βίου ἀπέθανε τῇ 5 Φεβρουαρίου 1451, προσβληθεὶς ἐξ ἀποπληξίας εἰς ἡλικίαν 50 ἐτῶν, βασιλεύσας 30 ἔτη καὶ 6 μῆνας. Ἐτάφη ἐν Προύσῃ, εἰς ἰδιαίτερον μαυσωλεῖον.

N. M.

***Μουρὰτ ὁ Γ'.*** Δωδέκατος σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, υἱὸς Σελὶμ τοῦ Β', γεννηθεὶς τῷ 1546 ἐκ τῆς Χασεκῆ-σουλτάνας Νοὺρ-Μπανοῦ (γυναικὸς τοῦ φωτὸς) καὶ διαδεχθεὶς τὸν πατέρα του εἰς ἡλικίαν 28 ἐτῶν τῇ 21 Δεκεμβρίου 1574. Πρώτη πρᾶξίς του ἦτο νὰ διατάξῃ τὸν φόνον τῶν πέντε ἀδελφῶν του, ταφέντων ἐν τῷ δυτικῷ περιβόλῳ τῆς Ἁγίας Σοφίας, παρὰ τὸν πατέρα των. Διετήρησεν εἰς τὸ πρωθυπουργικὸν ἀξίωμα ἐπὶ πέντε ἔτη, δηλαδὴ μέχρι τῆς δολοφονίας του, τὸν Μεχμὲτ πασᾶν Σοκόλλι (Σοκόλοβιτς), ὅστις εἶχε διατελέσει μέγας βεζύρης κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη Σουλεϋμὰν τοῦ Νομοθέτου καὶ καθ' ὅλην τὴν βασιλείαν Σελὶμ τοῦ Β'. Ἀπὸ τῆς βασιλείας Μουρὰτ τοῦ Γ' ἀρχίζει ἡ παρακμὴ τῆς Τουρκίας, ἥτις εἶχε διατηρηθῆ εἰς τὸν κολοφῶνα τῆς δόξης της χάρις εἰς τὴν μεγαλοφυΐαν τοῦ βεζύρου τούτου, τοῦ ὁποίου ὅμως ἡ παντοδυναμία ἤρχισε νὰ ὑπονομεύεται ὑπὸ τῶν γυναικῶν τοῦ αὐτοκρατορικοῦ γυναικωνίτου καὶ κυρίως τῆς πρώτης καδίνας Σαφιὲ (ἀγγῆς), ὡραίας Βενετῆς ἐκ τῆς οἰκογενείας Baffo, θυγατρὸς τοῦ ποτὲ διοικητοῦ Κερκύρας, συλληφθείσης εἰς μικρὰν ἡλικίαν ὑπὸ πειρατῶν καὶ πωληθείσης ἐν Κωνσταντινουπόλει. Ἡ καδίνα αὕτη κατώρθωσε νὰ διατηρήσῃ μέχρι τέλους τὴν ἐπὶ τοῦ σουλτάνου ἐπιρροήν της, παρ' ὅλας τὰς ἐναντίον αὐτῆς ἀντενεργείας.

*Μουρὰτ ὁ Γ'.*

Ἓν τῶν πρώτων γεγονότων τῆς βασιλείας του ἦτο ἡ ἐπέμβασις εἰς τὰ ἐσωτερικὰ τοῦ Μαρόκκου, πρὸς ὑποστήριξιν τοῦ εἰς Κωνσταντινούπολιν καταφυγόντος μνηστῆρος τοῦ σεριφικοῦ θρόνου Ἄμπντ-οὐλ-Μελίκ. Κατὰ διαταγὴν τοῦ Μουρὰτ ὁ βεηλέρβεης Ἀλγερίου Ραμαζὰν πασᾶς εἰσέβαλεν εἰς τὸ Μαρόκκον καὶ ἐκθρονίσας τὸν Μεχμὲτ-Ἐλ-Μοστανσὶρ ἐγκαθίδρυσε τὸν Ἄμπντ-ἐλ-Μελίκ. Ὁ Μοστανσὶρ κατέφυγε τότε εἰς τὸν βασιλέα τῆς Πορτογαλίας. Οὗτος δὲ τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς πορτογαλικοῦ στρατοῦ διέβη εἰς Μαρόκκον, ἀλλ' ἐνικήθη ὑπὸ τοῦ Ραμαζὰν πασᾶ, φονευθεὶς μάλιστα κατὰ τὴν μάχην, κατὰ τὴν ὁποίαν ἔπεσε καὶ ὁ προστατευόμενός του Μαροκκινὸς ἡγεμών. Εὐθὺς κατόπιν ὁ Μουρὰτ ἐπεχείρησε μακρὸν πόλεμον κατὰ τῆς Περσίας, διαρκέσαντα ἐπὶ δώδεκα ἔτη. Οἱ Τοῦρκοι κατέλαβον τὴν Γεωργίαν, τὸ Σιρβάν, τὸ Δαγεστάν, τὸ Ἀζερμπαϊτζὰν μετὰ τῆς Ταμπρίζ. Διὰ τῆς συνθήκης εἰρήνης, συνομολογηθείσης τῷ 1590, ἡ Τουρκία ἐκράτησε τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν κυριευθεισῶν ἐπαρχιῶν. Ἀλλ' οἱ Τοῦρκοι ἱστορικοὶ ἐπικρίνουσι τὴν τοιαύτην πολιτικὴν τοῦ Μουράτ, ὡς ἐκ τῆς ὁποίας ἐξησθένησαν τὰ μουσουλμανικὰ κράτη τῆς Περσίας καὶ τοῦ Δαγεστὰν καὶ διηυκολύνθη ἡ πρὸς τὰ ἐκεῖ κάθοδος τῆς Ρωσίας.

Τῷ 1578 ἡ δολοφονία τοῦ Σοκόλλι ἔρριψε τὴν χώραν εἰς ταραχάς. Τὰ στρατιωτικὰ φέουδα, δηλαδὴ τὰ ζιαμέτια καὶ τὰ τιμάρια, δὲν ἐδίδοντο πλέον εἰς τοὺς διακρινομένους στρατιωτικοὺς ἀλλ' εἰς εὐνοουμένους τοῦ σουλτανικοῦ χαρεμίου, ἢ ἐπωλοῦντο, εἰς τὴν γενικὴν δὲ αὐτὴν συναλλαγὴν συμμετεῖχεν ἐκ τῶν πρώτων ὁ σουλτᾶνος. Ὡς ἐκ περισσοῦ ἡ ἐπίσημος κιβδήλευσις τοῦ τουρκικοῦ χρυσοῦ νομίσματος ἐπεδείνωσε τὴν οἰκονομικὴν κρίσιν. Τῷ 1589 ἐπῆλθον στρατιωτικαὶ στάσεις καθ' ὅλον τὸ κράτος καὶ ἐπαναστάσεις τῶν γενιτσάρων εἰς Κωνσταντινούπολιν ἐξ αἰτίας τῆς μὴ τακτικῆς πληρωμῆς τῆς μισθοτροφοδοσίας. Εἰσορμήσαντες εἰς τὰ ἀνάκτορα οἱ γενίτσαροι ἀπήτησαν καὶ ἐπέτυχον τὴν εἰς αὐτοὺς παράδοσιν δύο εὐνοουμένων τοῦ σουλτάνου, τοῦ βεηλέρβεη τῆς Ρούμελης καὶ τοῦ δεφτερδάρη, ἤτοι τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Οἰκονομικῶν (4 Ἀπριλίου 1589). Ἐν τῷ μεταξύ, παρὰ τὴν ἐπανειλημμένως ἀνανεωθεῖσαν εἰρήνην μετὰ τῆς Αὐστρίας, ἐξηκολούθουν αἱ εἰς τὰς αὐστριακὰς χώρας τουρκικαὶ εἰσβολαὶ καὶ τῷ 1593 ἐκηρύχθη ὁ πόλεμος. Ὁ τουρκικὸς στρατὸς ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ὀγδοηκονταετοῦς βεζύρου Σινὰν πασᾶ ἐνίκα, ἀλλὰ βοηθούμενος ἀνεπαρκῶς ἐκ Κωνσταντινουπόλεως συνήντησε σοβαρὰς δυσχερείας. Ὁ πόλεμος διήρκεσε 14 ἔτη, ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ὁ Μουρὰτ ἀπέθανε τῇ 16 Ἰανουαρίου 1595 καὶ ἐτάφη εἰς τὸ ἐν τῇ Ἁγίᾳ Σοφίᾳ μαυσωλεῖον τοῦ πατρός του. Ἦτο θηλυμανέστατος, ἀποκτήσας ἐκ τῶν τεσσαράκοντα γυναικῶν του (εἶχε καὶ πολλὰς ἄλλας παλλακίδας) 118 τέκνα, ἐκ τῶν ὁποίων ἔζων κατὰ τὸν θάνατόν του 20 υἱοὶ καὶ 27 θυγατέρες. Ἐκ τούτων 19 υἱοὺς ἐφόνευσεν ὁ ἀδελφός του Μεχμὲτ ὁ Γ', 17 δὲ ἐκ τῶν θυγατέρων του ἀπέθανον ἐκ πανώλους. Ὑπεστήριζε πολὺ τοὺς ποιητάς, ἔγραψε δὲ καὶ ὁ ἴδιος μερικοὺς στίχους ὑπὸ ψευδώνυμον.

N. M.

—**Μουρὰτ Δ'** ὁ ἐπιλεγόμενος *Γαζῆ*. 17ος σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, υἱὸς Ἀχμὲτ τοῦ Α', γεννηθεὶς τῷ 1611 καὶ διαδεχθεὶς (9 Σεπτεμβρίου 1623) τὸν θεῖόν του Μουσταφᾶν τὸν Α' ὑπὸ τὴν κηδεμονίαν τῆς μητρός του, τῆς διασήμου Μὰχ-Πεϊκὲρ σουλτάνας. Βοηθούμενος ὑπ' αὐτῆς εἰς τὴν ἐκλογὴν τῶν καταλλήλων προσώπων, προσεπάθησεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς νὰ φέρῃ κάποιαν τάξιν εἰς τὴν ἀναρχουμένην τότε Τουρκίαν. Τῷ 1631 ἐπανεστάτησαν οἱ σπαχῆδες (ἱππεῖς) τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ὅπως διαμαρτυρηθῶσι διὰ τὴν παῦσιν τοῦ μεγάλου βεζύρου Χοσρὲβ πασᾶ. Ἀντιπροσωπεία αὐτῶν ἐλθοῦσα εἰς Κωνσταντινούπολιν ἐλιθοβόλησε τὸν νέον βεζύρην Χαφὶζ πασᾶν ἐντὸς τῆς αὐλῆς τοῦ σαραγίου καὶ κατεδίωξε τὸν σουλτᾶνον μέχρι τῶν ἐνδοτέρων τοῦ ἀνακτόρου του, ἀπαιτοῦσα τὰς κεφαλὰς 17 εὐνοουμένων του, ἄλλως τὴν παραίτησίν του. Ὁ Χαφὶζ παρεδόθη εἰς τοὺς λυσσῶντας γενιτσάρους καὶ ἐθανατώθη ὑπ' αὐτῶν, διάφοροι δὲ ὑπουργοὶ ἐπαύθησαν. Ἐν τούτοις ὁ σουλτᾶνος ἀνέλαβε τὸν ἀγῶνα κατὰ τῶν στασιαστῶν. Δευτέραν ἐναντίον του συνωμοσίαν τῶν γενιτσάρων καὶ τῶν σπαχήδων ἐματαίωσαν οἱ πιστοὶ εἰς αὐτὸν Ροὺμ-Μεχμὲτ πασᾶς, ἀρχηγὸς τῶν σπαχήδων, καὶ Κιοσὲ Μεχμὲτ πασᾶς, γενιτσὰρ-ἀγᾶς. Ἔκτοτε ὁ Μουρὰτ ἔδειξεν ἀμείλικτον αὐστηρότητα, ἀπαγορεύσας ἐπὶ ποινῇ θανάτου τὴν χρῆσιν τοῦ οἴνου, τοῦ ὀπίου, καὶ αὐτοῦ τοῦ καφφὲ καὶ τοῦ καπνοῦ. Εἰς μίαν μόνον ἡμέραν ἐθανατώθησαν 18 πρόσωπα, παραβάντα τὰς ἀπαγορεύσεις ταύτας. Λέγεται ὅτι ἐπὶ τῆς βασιλείας του ἐθανατώθησαν 100.000 ἄνθρωποι ἐπὶ παραβάσει τῶν διαταγῶν του. Ἀλλά, παρὰ τὴν παροιμιώδη ὠμότητά του, ἦτο συγχρόνως εἷς τῶν γενναιοτέρων ἡγεμόνων τῆς Τουρκίας. Πεπροικισμένος διὰ τεραστίας σωματικῆς δυνάμεως, διετήρει ταύτην διὰ συνεχοῦς ἀσκήσεως, ἀγαπῶν δὲ τὰς κυνηγεσίας διέμενε συχνάκις ἐν Ἀδριανουπόλει.

Παραβαίνων τὴν παραγγελίαν Σουλεϋμὰν τοῦ Νομοθέτου, καθ' ἣν ὁ σουλτᾶνος οὐδέποτε πρέπει νὰ ὁδηγῇ ὁ ἴδιος τὸν στρατὸν εἰς ἐκστρατείαν, ἀνέλαβεν αὐτοπροσώπως τὴν ἀρχηγίαν κατὰ τὸν ἐναντίον τῆς Περσίας πόλεμον, καθ' ὃν ἀνέκτησε τὴν Ταμπρὶζ καὶ ἄλλας πόλεις, κατόπιν δὲ καὶ τὴν Βαγδάτην (1638) καὶ συνῆψεν ἔντιμον εἰρήνην (7 Μαΐου 1639). Ἀπέθανε τῷ 1640. Ἐπὶ τῆς βασιλείας του παρεχωρήθησαν εἰς τὴν ὀρθόδοξον Ἐκκλησίαν τὰ ἐν Ἱεροσολύμοις προσκυνήματα. Τὸ σχετικὸν χάττι-σερὶφ εἶναι ὑποδειγματικὸν διὰ τὸ ἀπειλητικὸν ὕφος τῶν τοιούτων ἐγγράφων του.

N. M.

— **Μουρὰτ Ε'.** 33ος σουλτᾶνος, πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἀβδοὺλ Μετζίτ, γεννηθεὶς τῷ 1840. Διεκρίθη κατὰ τὴν νεανικὴν ἡλικίαν του διὰ τὴν σοβαρότητα καὶ τὴν ἀγαθότητά του, ἀπολαύων δὲ κάποιας ἀσυνήθους, ἕως τότε διὰ τοὺς Τούρκους πρίγκιπας ἐλευθερίας, ἐνεφανίζετο εἰς τὴν ἀνωτέραν εὐρωπαϊκὴν καὶ μὴ μουσουλμανικήν, ἰδίᾳ δὲ τὴν ἑλληνικὴν κοινωνίαν. Ὡς ἐκ τούτου κατέστη ἀγαπητὸς εἰς ὅλας τὰς τάξεις τῆς κοινωνίας καὶ τοῦ λαοῦ. Τῷ 1867 συνώδευσεν, ὡς διάδοχος, τὸν θεῖόν του Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ εἰς Εὐρώπην κατὰ τὴν εἰς Ναπολέοντα τὸν Γ' καὶ τὴν βασίλισσαν Βικτωρίαν ἐπίσκεψίν του. Ἡ συμπεριφορὰ τοῦ νεαροῦ πρίγκιπος ἐφείλκυσε τὴν ἐκτίμησιν τῶν αὐλῶν καὶ τοῦ πολιτικοῦ κόσμου, τοῦτο δὲ ἐκίνησε τὴν ζηλοτυπίαν τοῦ σουλτάνου. Μετὰ τὴν ἐξ Εὐρώπης ἐπάνοδον ὑπέβαλεν εἰς τὸν Μουρὰτ περιορισμοὺς τῆς ἐλευθερίας του, ἐπιτεινομένους καὶ διὰ τῶν ραδιουργιῶν τοῦ μεγάλου βεζύρου Ἀαλῆ πασᾶ, ὅστις, ὅπως κρατῇ τὴν ἀπόλυτον ἐξουσίαν εἰς χεῖράς του, ἐτήρει τὸν σουλτᾶνον ὑπὸ τὸν διηνεκῆ φόβον συνωμοσιῶν, κατὰ τῶν ὁποίων μόνος αὐτὸς δῆθεν ἦτο ἱκανὸς νὰ τὸν προστατεύσῃ. Συγχρόνως ὁ Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ διενοήθη νὰ τροποποιήσῃ τὸ σύστημα τῆς διαδοχῆς τοῦ θρόνου ὑπὲρ τοῦ πρωτοτόκου υἱοῦ του Γιουσοὺφ Ἰζεντίν. Παρὰ τὴν αὐστηρὰν ταύτην ἐπίβλεψιν ὁ Μουράτ, ποδηγετούμενος μεταξὺ ἄλλων ὑπὸ τοῦ φιλελευθέρου Αἰγυπτίου πρίγκιπος Μουσταφᾶ Φαζὺλ πασᾶ καὶ ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Ναμὺκ Κεμὰλ βέη, ἐμυήθη εἰς μίαν τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει τεκτονικῶν στοῶν. Συνῆψε γνωριμίας καὶ μετὰ διαπρεπῶν προσωπικοτήτων τοῦ Ἑλληνισμοῦ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἀκμάζοντος τὰ μέγιστα κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Λόγῳ τῶν φιλελευθέρων ἰδεῶν του ἐβασίσθησαν τότε πολλαὶ ἐλπίδες περὶ τοῦ δυνατοῦ τῆς πραγματοποιήσεως πολιτικοῦ προγράμματος βασιζομένου ἐπὶ τῆς ἑλληνοτουρκικῆς φιλίας ἐν Ἀνατολῇ. Μεγάλας ἐλπίδας ἐβάσισαν ἐπὶ τοῦ Μουρὰτ καὶ οἱ φιλελεύθεροι τουρκικοὶ κύκλοι, οἵτινες ἀπέβλεπον εἰς τὴν εἰσαγωγὴν φιλελευθέρου συνταγματικοῦ καθεστῶτος ἐν Τουρκίᾳ. Ἐπειδὴ δὲ ὁ Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ ἐθεωρεῖτο κώλυμα, οἱ ὡς ἀρχηγοὶ τῆς κινήσεως ταύτης δρῶντες πολιτικοὶ καὶ στρατιωτικοὶ ἄνδρες, ἔχοντες ἐπὶ κεφαλῆς τὸν Μιτχὰτ πασᾶν, ἐπέτυχον παρὰ τοῦ σεϊχουλισλάμου Χαϊρουλλὰχ ἐφέντη φετβᾶν, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπετρέπετο ἡ ἐκθρόνισις τοῦ σουλτάνου, συντελεσθεῖσα τῇ 30ῇ Μαΐου 1876. Ὁ Μουρὰτ ἀνεκηρύχθη σουλτᾶνος καὶ ἔδωκε τὸν νενομισμένον ὅρκον ἐν μέσῳ ἀπείρου ἐνθουσιασμοῦ τοῦ λαοῦ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἀλλ' οἱ ἠθικοὶ κλονισμοί, τοὺς ὁποίους ὑπέστη ἀπὸ τῆς πρώτης ἡμέρας τῆς ἀναρρήσεώς του, ἐκλόνησαν σοβαρῶς τὸ ἀσθενές, ὡς φαίνεται, νευρικόν του σύστημα. Τὴν νύκτα τῆς ἐκθρονίσεως τοῦ θείου του οἱ συνωμόται παρέλαβον αὐτὸν ἐκ τοῦ ἀνακτόρου του ἄνευ τῆς ἐλαχίστης προειδοποιήσεως, μὴ γνωρίζοντα ποῦ ὁδηγεῖται. Ὁ τρόμος τῆς νυκτὸς ἐκείνης, ἡ ὅλως ἀπρόοπτος δι' αὐτὸν ἀνακήρυξίς του εἰς σουλτᾶνον, ἡ ἐν ἀγνοίᾳ του γενομένη ἐγκάθειρξις τοῦ θείου του εἰς στενὸν διαμέρισμα τοῦ παλαιοῦ σαραγίου, μία ἐπιστολή, τὴν ὁποίαν ἔστειλεν εἰς αὐτὸν ὁ τελευταῖος οὗτος, παραπονούμενος διὰ τὴν τοιαύτην μεταχείρισιν καὶ συνιστῶν εἰς τὸν ἀνεψιόν του νὰ προσέχῃ τὸν στρατόν, ὁ ὁποῖος ἔφερε καὶ τὸν ἴδιον εἰς τὴν κατάστασιν ταύτην, ἡ μετὰ δύο ἡμέρας ἐπελθοῦσα αὐτοκτονία τοῦ Ἀβδοὺλ Ἀζίζ, ἥτις ἐθεωρήθη γενικῶς ὡς δολοφονία, καὶ ἄλλα ἐπεισόδια ἐκλόνησαν τὸν Μουρὰτ τόσον, ὥστε εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἕκτης ἡμέρας τῆς ἀναρρήσεώς του ὁ ἰδιαίτερος ἰατρός του Capoleone παρετήρησε συμπτώματα διανοητικῆς διαταράξεως. Ἐφήρμοσεν ἀμέσως θεραπείαν διὰ μορφίνης καὶ ἰωδιούχου καλίου, θεραπείαν τὴν ὁποίαν ἐνέκρινε καὶ ὁ ἐκ Βιέννης μετακληθεὶς νευρολόγος Leidersdorf, συστήσας μόνον ἐπὶ πλέον σιδηροῦχα φάρμακα μὲ δίαιταν τονωτικήν. Οἱ ὑπουργοὶ ἀπέκρυψαν κατ' ἀρχὰς τὴν κατάστασιν τοῦ Μουράτ, διαδώσαντες ὅτι ὁ σουλτᾶνος δὲν ἠδύνατο νὰ ἐμφανισθῇ δημοσίᾳ, διότι εἶχεν εἰς τὸν τράχηλον μέγαν δοθιῆνα. Μετὰ τρεῖς ὅμως μῆνας, μὴ βλέποντες θεραπείαν, κατά τινας δὲ πλανηθέντες καὶ ἐξ ὑποσχέσεων τοῦ δευτεροτόκου ἀδελφοῦ τοῦ Μουράτ, τοῦ Ἀβδοὺλ Χαμίτ, ὅστις διεβεβαίωνεν ὅτι ἦτο πρόθυμος νὰ εἰσαγάγῃ τὸ φιλελεύθερον συνταγματικὸν καθεστώς, ἀπεφάσισαν καὶ ἀνήγγειλαν ὅτι ὁ Μουράτ, πάσχων ἐξ ἀνιάτου νοσήματος καταβιβάζεται ἐκ τοῦ θρόνου καὶ ἀναβιβάζεται εἰς αὐτὸν ὁ Ἀβδοὺλ Χαμὶτ (19/31 Αὐγούστου 1876).

Ὁ Μουρὰτ καὶ ἡ οἰκογένειά του ἐνεκλείσθησαν μετὰ τὴν ἐκθρόνισίν του εἰς τὸ ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς ὄχθης τοῦ κάτω Βοσπόρου ἀνάκτορον Τσεραγάν. Οἱ ὀπαδοί του ὅμως δὲν ἔπαυον νὰ θεωρῶσι κακόβουλα τὰ περὶ ἀσθενείας του καὶ αὐτὸν ὡς τὸν νόμιμον σουλτᾶνον, τὸν δὲ Χαμὶτ ὡς ἁπλοῦν ἀντιβασιλέα ἢ ἐπίτροπον τῆς ἀρχῆς καὶ ἤλπιζον ὅτι ὁ Μουρὰτ θὰ ἀποκαθίστατο ἐπὶ τοῦ θρόνου. Αἱ ἐλπίδες αὗται μετετράπησαν εἰς ἀνυπομονησίαν ἀφ' ἧς ὁ Ἀβδοὺλ Χαμίτ, διαλύσας τὴν βουλήν, ἠγνόησε τὸ Σύνταγμα καὶ ἐκυβέρνα ἀπολυταρχικῶς. Συγχρόνως περιέσφιγγεν αὐστηρότερον τὴν ἀπομόνωσιν τοῦ Μουράτ, ἀπαγορεύων εἰς αὐτὸν πᾶσαν μετὰ τοῦ ἔξω κόσμου ἐπικοινωνίαν. Τοῦτο ὅμως δὲν ἀφώπλισε τοὺς φίλους τοῦ Μουράτ, οἵτινες δὲν ἔπαυσαν ἐργαζόμενοι πρὸς ἀπελευθέρωσίν του τόσον ἐν Τουρκίᾳ ὅσον καὶ ἐν Εὐρώπῃ. Μία τοιαύτη ἐνέργεια ἦτο ἡ τοῦ Ἕλληνος Κλ. Σκαλιέρη, προσωπικοῦ φίλου τοῦ Μουράτ. Ὁ Σκαλιέρης ἀπεπειράθη νὰ φυγαδεύσῃ τὸν τέως σουλτᾶνον τῇ βοηθείᾳ ἐξ τολμηρῶν φίλων, οἵτινες ἦσαν τέκτονες καὶ κατὰ μέγα μέρος Ἕλληνες. Κατὰ τὸ σχέδιόν των, ὁ Μουρὰτ θὰ μετεφέρετο δι' ἐπὶ τούτῳ ναυλωθέντος ἱστιοφόρου εἰς Καλλίπολιν, ἐκεῖθεν, μετημφιεσμένος, διὰ τοῦ Ἰσθμοῦ τοῦ Μπουλαγὶρ (Πλαγιαρίου) εἰς τὸν κόλπον τοῦ Σάρου, καὶ ἐκεῖθεν, διὰ τοῦ αὐτοῦ ἱστιοφόρου, εἰς Ἀθήνας, ὅπου θὰ συνῆπτε μυστικὴν συμφωνίαν φιλίας μετὰ τοῦ «ἀδελφοῦ» βασιλέως Γεωργίου. Τὴν νύκτα τῆς 15ης Ἀπριλίου 1877 ὁ Σκαλιέρης μετὰ τῶν συντρόφων του, ἐπιβάντες δύο ἁμαξῶν ἐν Σταυροδρομίῳ, ἦλθον εἰς τὰ πέριξ τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Τσεραγάν, ὁπόθεν διὰ τῶν ὑπονόμων εἰσῆλθον εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῶν ἀνακτόρων.

Ἡ ὑπόγειος αὕτη στοὰ εἶχε κλεισθῆ κατὰ διαταγὴν τοῦ Χαμὶτ διὰ τοίχου. Ἀλλ' ὁ ἀρχιτέκτων τῶν ἀνακτόρων Σερκὶζ βέης, Ἀρμένιος, ἔδωκεν εἰς τοὺς συνωμότας σχεδιάγραμμα τῆς θέσεως τοῦ τοίχου. Οἱ περὶ τὸν Σκαλιέρην ἤλπιζον ὅτι θὰ ἐξήρχοντο διὰ τοῦ ὑπογείου δρόμου ἀκριβῶς εἰς μυστικὴν κλίμακα ἄγουσαν εἰς τὰ διαμερίσματα τοῦ Μουράτ. Ἀντὶ τούτου ὅμως εὑρέθησαν εἰς διάδρομον, ὅστις ἔφερεν αὐτοὺς εἰς τὸ δωμάτιον τῶν μαύρων εὐνούχων. Ὁ Σκαλιέρης, ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ πρώτου εὐνούχου τί θέλει, ἔσχε τὸ θάρρος νὰ ὁμολογήσῃ ὅτι ἦλθε νὰ ἐλευθερώσῃ τὸν τέως σουλτᾶνον καὶ ἐζήτησε τὴν σύμπραξιν τῶν εὐνούχων. Οὗτοι ὅμως εἰδοποίησαν ἀμέσως τὸν Ἀβδοὺλ Χαμίτ. Ὁ Σκαλιέρης καὶ οἱ σύντροφοί του συνελήφθησαν, ἀλλ' ὡς ξένοι ὑπήκοοι δὲν ἠδύναντο νὰ κρατηθῶσιν εἰς τουρκικὴν φυλακὴν καὶ παρεδόθησαν εἰς τὰ οἰκεῖα προξενεῖα, ἐξ ὧν διαφυγόντες τὴν ἐπιοῦσαν ἀπεμακρύνθησαν ἐκ Κωνσταντινουπόλεως διὰ τοῦ ἱστιοφόρου, τὸ ὁποῖον εἶχον ναυλώσει διὰ τὸν Μουράτ.

Ἄλλη ἀπονενοημένη ἀπόπειρα ἦτο ἡ τοῦ Ἀλῆ Σουαβῆ ἐφέντη, πρώην χότζα καὶ τέως διευθυντοῦ τοῦ λυκείου τοῦ Γαλατᾶ-Σαράϊ καὶ τῆς μετ' αὐτοῦ συνδεομένης τότε νομικῆς σχολῆς. Οὗτος, ἐξερεθίσας ἐπὶ ἡμέρας τοὺς ἐκ Βουλγαρίας Τούρκους

Digitized by Google

πρόσφυγας ἐναντίον τοῦ σουλτάνου Χαμίτ, ἀπεπειράθη τὸν Μάϊον τοῦ 1878 νὰ εἰσέλθη ἐπὶ κεφαλῆς 400 περίπου τοιούτων προσφύγων εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦ Τσεραγάν, εἰς τὸ ὁποῖον προσήγγισαν κατὰ μικρὰς ὁμάδας. Φονεύσαντες δὲ τοὺς φρουροὺς εἰσώρμησαν εἰς τὸν κῆπον τοῦ παλατίου. Ὅταν ὅμως ὁ Ἀλῆ Σουαβῆ, συναντήσας τὸν Μουράτ, ὅστις ἠγνόει περὶ τίνος πρόκειται, ἀνευφήμει αὐτὸν ὡς σουλτᾶνον καὶ ἠθέλησε νὰ τὸν ἐξαγάγη ἐκ τῆς ἀνακτορικῆς φυλακῆς του, ὁ Μουρὰτ ἐδίστασεν ἢ ἠρνήθη. Κατ' ἄλλην ἐκδοχήν, ἐν τουρκικὸν πολεμικόν, ἠγκυροβολημένον πρὸ τοῦ Τσεραγάν, καὶ τοῦ ὁποίου ὁ πλοίαρχος συνέπραττε, δὲν ἔδωκε σημεῖα ζωῆς. Ἐν τῷ μεταξὺ ἔφθασεν ἰσχυρὸν στρατιωτικὸν ἀπόσπασμα ὑπὸ τὸν φρούραρχον Διπλοκιονίου Χασὰν πασᾶν καὶ οἱ συνωμόται συνελήφθησαν, ἀφοῦ ἀφῆκαν τριακοντάδα νεκρῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἦτο καὶ ὁ Σουαβῆ. Ἡ ἀποτυχία τῆς δευτέρας ταύτης ἀποπείρας ἀποδίδεται εἰς προδοσίαν ὑπό τινος Γερμανοῦ ὀνόματι Rolland, τυχαίως πληροφορηθέντος ἐν τῷ στρατοπέδῳ τοῦ Ἁγίου Στεφάνου (διήρκει τότε ἡ ἀνακωχὴ τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου) τὰ τῆς φυγαδεύσεως τοῦ Μουράτ. Τῆς καταστάσεως θὰ ἐπωφελοῦντο τότε οἱ Ρῶσοι, ὅπως εἰσέλθουν εἰς Κωνσταντινούπολιν.

Ἔκτοτε οὐδὲν πλέον ἐσημειώθη «μουρατικὸν κίνημα». Μόνον ἡ φρούρησις καὶ ἡ ἀπομόνωσις τοῦ τέως σουλτάνου κατέστη αὐστηροτέρα. Καὶ εἰς αὐτὰ τὰ ἀτμόπλοια καὶ ἀκάτια τοῦ Βοσπόρου ἀπηγορεύετο νὰ διέρχωνται πλησίον τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Τσεραγάν, εἰς τὴν ἀπὸ τῆς ξηρᾶς δὲ ὁδὸν δὲν ἐπετρέπετο νὰ ἵστανται οἱ ἁμαξαι διαβάται, ἐνῷ οἱ ὡς ὀπαδοὶ τοῦ Μουρὰτ καταγγελλόμενοι κατεδιώκοντο ἀπηνῶς. Σχεδὸν λησμονημένος πλέον ὁ Μουράτ, ὅστις ὀλίγον καιρὸν μετὰ τὴν ἀπομόνωσίν του συνῆλθεν ἐκ τῆς διανοητικῆς του ἀσθενείας, διῆγε καρτερικῶς, ὡς ἄλλος Masque de fer, μεθ' ὁλοκλήρου τῆς οἰκογενείας του τὸν βίον τοῦ πολιτικοῦ ἐγκαθείρκτου, ἐπιδιδόμενος μετ' ἐπιτυχίας εἰς μουσικὰς συνθέσεις. Ἀπέθανε τῇ 29ῃ Αὐγούστου 1904, εἰς ἡλικίαν 64 ἐτῶν. Ἐπίσημον ἀνακοινωθὲν ἀνέφερεν ὡς αἰτίαν τοῦ θανάτου του τὸν σακχαρώδη διαβήτην, ἐξ οὗ δῆθεν ἔπασχεν ἀπὸ πολλοῦ. Ἀλλὰ καὶ τοῦτο ἐθεώρησαν οἱ ὀπαδοί του ὡς ἐπίνοιαν τοῦ Χαμίτ, θελήσαντος οὕτω νὰ καταστήσῃ πιστευτὸν ὅτι ὁ ἀδελφός του ἦτο καὶ ἀλκοολικός.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Περὶ Μουρὰτ τοῦ Ε' ἐγράφησαν πολλά, ἐν ἄλλοις δὲ καὶ ἑλληνιστὶ ὑπὸ Κλ. Σκαλιέρη. Πρβλ. καὶ *Keratry*, «Mourad V, prince sultan, prisonnier d'État 1840—1876» (Paris, 1878).—*Djemaleddin bey*, «Sultan Murad V, the Turkish Dynasty Mystery 1876—1895» (London 1895).—«Serail und Hohe Pforte» ὑπὸ ⁂ (Wien 1879).

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μουρὰτ** ***βέης***. Τοῦρκος διανοούμενος, καταγόμενος ἐκ τοῦ Καυκάσου καὶ ἀκμάσας ἐν Τουρκίᾳ ἐπὶ Ἀβδοὺλ Χαμὶτ Β'. Ἦτο καθηγητὴς τῆς ἱστορίας, συγχρόνως δ' ἐξέδιδε καὶ τὴν ἐφημερίδα «Μιζάν» πρὸς ὑποστήριξιν τῶν φιλελευθέρων ἰδεῶν. Ἐθεωρεῖτο τότε ὡς εἷς τῶν προμάχων τοῦ νεοτουρκισμοῦ. Διωχθεὶς διὰ τὰς ἰδέας του ἔφυγεν εἰς Εὐρώπην, ὅπου ἔγραφε κατὰ τοῦ χαμιτικοῦ καθεστῶτος μεταξὺ ἄλλων καὶ εἰς τὸ «Temps» τῶν Παρισίων. Δελεασθεὶς ὅμως ὑπὸ τοῦ χαμιτικοῦ χρήματος ἐπανῆλθεν εἰς Τουρκίαν καὶ διωρίσθη αὐτοκρατορικὸς ἐπίτροπος παρὰ τῷ συμβουλίῳ τοῦ δημοσίου ὀθωμανικοῦ χρέους μὲ παχύτατον μισθόν. Διὰ νὰ εἰσπράττῃ ὅμως τὸν μισθόν του ἠναγκάζετο νὰ διαπράττῃ ἑκάστοτε νέας καταγγελίας καὶ προδοσίας κατὰ τοῦ νεοτουρκισμοῦ, οὕτως ὥστε ἀπέβη πρόσωπον ἀπαίσιον. Κατὰ τὴν ἀντινεοτουρκικὴν ἀντεπανάστασιν τοῦ Ἀπριλίου 1909 ἐνεφανίσθη εἰς τοὺς διαδρόμους τῆς βουλῆς καὶ εἰς τὸν τύπον ἀνωνύμως, ὡς ὑπέρμαχος τοῦ χαμιτικοῦ καθεστῶτος. Ἐπικρατήσαντος ὅμως τοῦ νεοτουρκισμοῦ ὁ Μουρὰτ βέης ἐξηφανίσθη καὶ οὐδὲν πλέον ἠκούσθη περὶ αὐτοῦ. Ν. Μ.

— **Μουρὰτ** ***βέης***. Ἀρμένιος ἐκ Καυκάσου. Παιδίον ἔτι ἤχθη εἰς Αἴγυπτον καὶ εἰσήχθη εἰς τὰ τάγματα τῶν μαμελούκων. Περὶ τῆς δράσεως αὐτοῦ βλ. λ. *Αἴγυπτος* (τ. Β' σ. 594 α', β', γ' κεφ.).

— **Μουρὰτ Γκεραΐ**. Χάνης τῆς Κριμαίας, υἱὸς τοῦ Μουμπαρὲκ-Γκεραΐ. Διωρίσθη χάνης τῷ 1659 μὲ τὴν ὑποστήριξιν τοῦ βεζύρου τῆς Τουρκίας Καρᾶ Μουσταφᾶ. Ἐπολέμησε μετὰ τῶν Τούρκων ἐναντίον τῶν Ρώσων καὶ τῶν Πολωνῶν. Ἐπαύθη τῷ 1684 καὶ ἀπέθανε τῷ 1694. Μέχρι τῆς ἐποχῆς του οἱ πρέσβεις τῆς Ρωσίας ἀπηυθύνοντο εἰς τὴν Τουρκίαν διὰ τῶν χανῶν τῆς Κριμαίας. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ Μουρὰτ Γκεραΐ, ὢν πάντοτε μεθυσμένος, τοὺς ὕβριζεν, ἤρχισαν οὗτοι ν' ἀπευθύνωνται διὰ τοῦ Τούρκου διοικητοῦ τοῦ Βενδέρ. Ν. Μ.

— **Μουρὰτ-Ρεΐζ**. Ναύαρχος τῆς Τουρκίας, διακριθεὶς κυρίως ἐν τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ καὶ τῷ Περσικῷ κόλπῳ, ὅπου κατεναυμάχησε τοὺς Πορτογάλους. Ἀπέθανεν ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1653. Ν. Μ.

**Μουρὰτ-μπαΐρ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Χερσονησίζουσα κεφαλὴ νοτίως τῆς κωμοπόλεως Ἐρντὲκ (Ἀρτάκης) ἀποτελοῦσα τὴν ΝΝΔ. τῆς χερσονήσου τῆς Κυζίκου ἐσχατιὰν (πλάτ. 40°23'00" Β, μῆκος 27°48'00" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ἅμα δὲ καὶ ΒΔ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Ἀρτάκης. Ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καλεῖται *Ἅγιος Συμεών*, πρόκειται δὲ αὐτοῦ νῆσος ὀνομαζομένη *Λαγοῦσα*, ὑπὸ δὲ τῶν Τούρκων *Ταουσὰν Ἀντά*. Ἐκ τοῦ Στράβωνος (ΙΒ, 576) «...τῶν Κυζικηνῶν ὄρος ἐστὶν εὔδενδρον Ἀρτάκη καὶ νησίον ὁμώνυμον πρόκειται τούτου καὶ πλησίον ἀκρωτήριον Μέλανος καλούμενον» προκύπτει ἡ ταυτότης τῆς Ταουσὰν Ἀντὰ πρὸς τὴν *Ἀρτάκην* καὶ τοῦ *Μελάνου* πρὸς τὸ *Μουρὰτ Μπαΐρ*. Σ. Ε. Λ.

— **Μουρὰτ-ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Τουρκίας (τὸ *Δίνδυμον* τῶν ἀρχαίων), ἐν τῷ νομῷ Κιουτάχειας. Ἡ ὑψηλοτέρα κορυφή του εἶναι τὸ *Ἂκ-Δὰγ* (= λευκὸν ὄρος), ὕψους 2440 μ. Τὰ ἐκ τῶν προπόδων του πηγάζοντα ὕδατα ῥέουσι διὰ τοῦ Μαιάνδρου, τοῦ Ἕρμου, τοῦ Σούσουρλου καὶ τοῦ Σαγγαρίου πρὸς τὸ Αἰγαῖον, τὴν Προποντίδα καὶ τὸν Εὔξεινον. Οὕτω τὸ Μουρὰτ-ντὰγ εἶναι τὸ σημεῖον τοῦ χωρισμοῦ τριῶν λεκανοπεδίων. Ν. Μ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἐπὶ τοῦ *Μουρὰτ-ντὰγ* καὶ πλησίον αὐτοῦ, κατ' Αὔγουστον τοῦ 1922, συνετελέσθη ἡ ὁλοσχερὴς ἀποσύνθεσις τῆς ἑλληνικῆς ὁμάδος μεραρχιῶν τοῦ στρατηγοῦ Ν. Τρικούπη, ἥτις μετὰ σκληρὰν μάχην, ἡττηθεῖσα εἰς Ἀλῆ Βερὰν τῇ 17 Αὐγούστου (βλ. λ. *Μικρασιατικὴ ἐκστρατεία*), διηρέθη ὑποχωροῦσα εἰς τρία τμήματα, κινούμενα ἄνευ συνοχῆς ἐπὶ τῶν κορυφογραμμῶν τοῦ ὄρους. Ἐξ αὐτῶν τὸ τμῆμα τὸ ἀκολουθοῦν τὸν στρατηγὸν Τρικούπην (13η μεραρχία) ἠναγκάσθη κυκλωθὲν νὰ παραδοθῇ, παρὰ τὸ χωρίον Καρατζᾶ Χισάρ, τῇ 20ῇ Αὐγούστου 1922 αἰχμάλωτον εἰς τὸ καταδιῶκον τουρκικὸν ἱππικόν. Ἑτέρα φάλαγξ, ἧς ἡγοῦντο οἱ διοικηταὶ τῆς 4ης καὶ 12ης μεραρχιῶν, περιπλανηθεῖσα ἐπὶ τῶν δρυμῶν τοῦ Μουρὰτ ντάγ, παρεδόθη τῇ 19ῃ ἰδίου μηνὸς παρὰ τὸ Εὐσοῦ εἰς τὴν 17ην τουρκικὴν μεραρχίαν αἰχμάλωτος. Τρίτη φάλαγξ, τέλος, ἡ καὶ πολυαριθμοτέρα, ἐξ 25.000 ἀνδρῶν, ἑνωθεῖσα μετὰ τῆς 5ης μεραρχίας, διέφυγε, διευθυνθεῖσα πρὸς Γιουρού-Ταχμᾶ-Ἐνδαλάρ. Ἕτερα μικρότερα τμήματα τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἀπωλέσθησαν ἐπὶ τῶν ἀτελευτήτων κλιτύων καὶ χαραδρῶν τοῦ Μουρὰτ ντάγ, κατασφαγέντα ὑπὸ Μουσουλμάνων χωρικῶν. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μουρὰτ** ***σοῦ*** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ Σαγγαρίου, ἀρδεύων τὴν πεδιάδα τῆς Ἀγκύρας.

— **Μουρὰτ-τσάϊ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τοῦ ἑτέρου τῶν βραχιόνων τοῦ ποταμοῦ *Εὐφράτου*. Πηγάζει ἐκ τοῦ παρὰ τὸ Βαγιαζίτ, οὐχὶ μακρὰν τῶν παλαιῶν ρωσσοτουρκικῶν συνόρων, κειμένου ὄρους Ἀλᾶ-Δάγ, ῥέων δὲ πρὸς ΒΔ. καὶ κατόπιν τρεπόμενος πρὸς τὰ ΝΔ. εἰσέρχεται εἰς τὸν νομὸν Βιτλίς, κατόπιν δὲ ῥέων πρὸς Δ. καὶ πρὸς ΝΔ. καὶ εἰσδεχόμενος δεξιόθεν καὶ ἀριστερόθεν πολλοὺς παραποτάμους, συμβάλλει μετὰ τοῦ ἐκ τῆς περιοχῆς τοῦ Ἐρζερούμ κατερχομένου Καρασοῦ καὶ ἀποτελεῖ οὕτω τὸν Εὐφράτην. Ἔχει ὁλικὸν μῆκος 575 χλμ. κατ' εὐθεῖαν γραμμήν. Ν. Μ.

**Μουράτης, Ἰωάννης**. Εὐεργέτης τῆς Κοζάνης, γεννηθεὶς περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἐκ πατρὸς Ἐμμανουὴλ Μουράτου, ἐμπορευομένου καὶ διαμένοντος ἐν Πέστῃ τῆς Οὑγγαρίας, καὶ ἀποθανὼν τῷ 1873. Πλουτήσας ἐκ τοῦ ἐμπορίου κατέστη μέγας κτηματίας ἐν Οὑγγαρίᾳ, ἀπέστελλε δὲ ἑκάστοτε δωρεὰς εἰς Κοζάνην πρὸς ἐνίσχυσιν τῶν ἀπόρων οἰκογενειῶν καὶ τῶν σχολείων αὐτῆς καὶ ἐπλούτιζε τὴν βιβλιοθήκην αὐτῆς. Διὰ διαθήκης του ἀπὸ 28 Ἰουνίου 1866 διέθηκεν, ἐκτὸς τῶν ἄλλων κληροδοτημάτων, ποσὸν ἐκ 14.000 φιορινίων, ἵνα ἐκ τῶν τόκων αὐτῶν σπουδάζωσι δύο νέοι ἄποροι ἐκ τῆς πατρίδος του Κοζάνης, ὁ μὲν φιλολογίαν, ὁ δ' ἕτερος θεολογίαν εἰς τὸ Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον. Τὸ κληροδότημα τοῦτο ὑφίσταται μέχρι σήμερον. Ἐπίσης ἕτερα ποσὰ κατέλιπεν, ἵνα ἐκ τῶν τόκων αὐτῶν διανέμηται βοήθεια εἰς τοὺς πτωχούς, ὑπὲρ τῶν σχολείων τῆς Κοζάνης 2000 φιορίνια, εἰς τὸ Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον 2000 φιορίνια, καὶ εἰς τὰ νοσοκομεῖα καὶ πτωχοκομεῖα τῆς Πέστης 1000. Ν. Π. Δ.

**Μουράταγα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Χαϊδαρίου τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 112. Γ. Θ. Δ.

**Μουρατζὶκ** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μυρτοῦσα*.

**Μουρατλῆ** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Σκοπός*.

— **Μουρατλῆ** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Χαλκηδόνος, κατοικούμενον ὑπὸ ἀνθρακέων καὶ ὑλοτόμων. Κ. Λ.

**μουρατόρειος κανών** *[Θεολ.]*. Οὕτως ἐκλήθη ὁ ἐν τῇ Ἀμβροσιανῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Μεδιολάνου ὑπὸ τοῦ Λ. Α. Μουρατόρι († 1750) εὑρεθεὶς ἐν δημώδει λατινικῇ γλώσσῃ καὶ τῷ 1740 δημοσιευθεὶς κατάλογος τῶν βιβλίων τῆς Καινῆς Διαθήκης. Ἐνῷ τὸ χειρόγραφον τὸ περιέχον τὸν κατάλογον τοῦτον εἶναι τοῦ Η' αἰῶνος, ὁ κατάλογος αὐτός, ὅστις εἶναι ἠκρωτηριασμένος, κατάγεται ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ Β' αἰῶνος καὶ μνημονεύει τὸν κατὰ Λουκᾶν καὶ Ἰωάννην εὐαγγέλιον, τῶν Πράξεων, 13 ἐπιστολῶν τοῦ Παύλου, τῆς ἐπιστολῆς τοῦ Ἰούδα, 2 ἐπιστολῶν καὶ τῆς Ἀποκαλύψεως τοῦ Ἰωάννου. Ἐν τῇ ἐλλειπούσῃ δὲ ἀρχῇ τοῦ καταλόγου τούτου θὰ ὑπῆρχον ἀσφαλῶς καὶ τὰ εὐαγγέλια τοῦ Ματθαίου καὶ τοῦ Μάρκου. Περὶ τῆς πατρίδος καὶ τοῦ συγγραφέως τοῦ μνημείου τούτου, ὅπερ κέκτηται μεγίστην σπουδαιότητα διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ κανόνος τῆς Καινῆς Διαθήκης, ἔχουσι διατυπωθῆ ποικίλαι εἰκασίαι, οἷον ὅτι ἐγράφη ἐξ ὑπ' ἀρχῆς λατινιστὶ καὶ δὴ ἐν Ρώμῃ, ἢ ὅτι ἐγράφη ἑλληνιστί, εἴτε ἐν τῇ Ἀνατολῇ εἴτε ἐν τῇ Δύσει καὶ μετεφράσθη λατινιστὶ κλπ. Ὁ κατάλογος ἀναφέρει μετ' αἰτιολογικῶν σημειώσεων τὰ βιβλία τῆς Καινῆς Διαθήκης, ἅτινα ἐχρησιμοποιοῦντο ἐν τῇ δημοσίᾳ λατρείᾳ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Τοῦ καταλόγου τούτου ἐξεδόθη φωτοτυπία ὑπὸ τοῦ *Tregelles* (Canon Muratorius Oxford 18[illegible]). Τὸ κείμενον δὲ αὐτοῦ εὑρίσκεται παρὰ *Th. Zahn*, Grundriss der Geschichte des Neut. Kanons (β' ἔκδ. [illegible]) παρὰ *Lietzmann* (Kleine Texte) κ. ἄ. (Βλ. καὶ *Kuhn*, Das Muratorische Fragment 1892).

Π. Ι. Μ.

**Μουρατόρι** (Muratori), ***Λουδοβῖκος-Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς καὶ ἀρχαιολόγος (1672–1750). Περιβληθεὶς λίαν ἐνωρὶς τὸ ἱερατικὸν ἔνδυμα ἐσπούδασεν ἐν τῇ ἱερατικῇ σχολῇ τῆς Μοδένης φιλοσοφίαν καὶ νομικὰ καὶ ἐγένετο ἱερεὺς τῷ 1695. Εὐθὺς κατόπιν διωρίσθη ἐπιμελητὴς τῆς Ἀμβροσιανῆς βιβλιοθήκης τοῦ Μιλάνου, ὅπου ἐδόθη εἰς αὐτὸν ἡ εὐκαιρία νὰ καταγίνῃ εἰς εὐρείας ἱστορικὰς μελέτας καὶ ἐρεύνας, ἐξ ὧν ἀπέκτησε μεγάλην φήμην. Τῷ 1700 ὁ δοὺξ τῆς Μοδένης τὸν ἐκάλεσεν ὡς ἀρχειοφύλακα καὶ βιβλιοθηκάριον. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἀφιερώθη εἰς τὴν συγγραφὴν πολυαρίθμων ἱστορικῶν ἔργων. Ἡ σπουδαιοτέρα ἐργασία του ἀνάγεται εἰς τὴν συλλογὴν καὶ ἔκδοσιν ἱστορικῶν καὶ ἄλλων σπουδαίων χειρογράφων καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Rerum italicarum scriptores praecepui ab anno 500 ad annum 1500» (1723—1750, εἰς τόμ. 25). Τὸ ἔργον τοῦτο ἐσυνεχίσθη ὑπὸ τοῦ Ταρτίνι (1748–1770) καὶ τοῦ Μιταρέλλι (1771). Ἀπὸ τοῦ 1900–1928 ἐγένετο νέα ἔκδοσις αὐτοῦ εἰς 216 τεύχη. Κατόπιν ἐξέδωσε τὸ ἔργον «Antiquitates italicae medii aevi» (1738—1742, 6 τόμ.), εἰς τὸ ὁποῖον προσέθεσε τὸ «Novus thesaurus inscriptionum» (1739–1743, 4 τόμ.). Ἐξέδωσεν ἐπίσης τὰ «Annali d'Italia» (1744—1749) εἰς 12 τόμους, «Anecdota Graeca» (1709), τὸν περίφημον *μουρατόρειον κανόνα* (βλ. λ.) κ. ἄ. Κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν εἶχεν ἐπιδοθῆ καὶ εἰς τὴν ποίησιν καὶ τὴν συγγραφὴν μελετῶν περὶ αἰσθητικῆς, δημοσιεύσας μεταξὺ ἄλλων: «Della perfetta poesia italiana» (1706), «Rifflessioni sopra il buon gusto nelle scienze e nelle arti» (1708) κλπ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1767—1780 εἰς 48 τόμους, τῷ δὲ 1872 ἐξεδόθησαν τὰ ἀνέκδοτα αὐτοῦ ἔργα. Ἡ ἀλληλογραφία αὐτοῦ ἐξεδόθη εἰς 12 τόμους (1900–1911). Μ. Σ. Ξ.

**μούργα** (ἡ)· δημοτ., ἡ ὑποστάθμη, τὸ κατακάθι τοῦ λαδιοῦ, ἀμόργη.

**Μουργὰβ** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μουργκάμπ*.

**Μουργάνι** *[Γωγρ.]*. Νεωτέρα ὀνομασία τοῦ ἀρχαίου ποταμοῦ *Ἴωνος* (βλ. λ.), παραποτάμου τοῦ Πηνειοῦ. Χ. Σ.

**Μουργιὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται τρίωρον ΝΑ. τοῦ Κριεκουκίου παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 247. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον Κάμενα. Χ. Σ.

**Μουργὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μεσόγειος πόλις τῆς Βαιτικῆς Ἱσπανίας (Ἀνδαλουσίας), ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Β, 4, 9). Ἄγνωστος ἄλλοθεν καὶ ἀκαθόριστος. Α. Θ. Σ.

**Μουργίσκη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Φρούριον τῆς Θρᾴκης, τὸ ὁποῖον μετὰ τοῦ *Σερρείου*, *Ἰεροίσκου* καὶ ἄλλων κατέλαβε παρασπόνδως Φίλιππος ὁ Μακεδὼν τῷ 346 π. Χ., ἐξαναγκάσας τὴν φρουρὰν τῶν Ἀθηναίων νὰ ἐκκενώσῃ αὐτό. Ἡ ἀκριβὴς θέσις του δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένη. Α. Θ. Σ.

**Μουργκὰμπ** (Murghab) *[Γεωγρ.]*. Δύο ποταμοὶ τῆς κλειστῆς λεκάνης τῆς κεντρικῆς Ἀσίας. Ἐκ τούτων ὁ πρῶτος πηγάζει ἐκ τῶν ὀρέων Σαρντζιστὰν τοῦ Ἀφγανιστάν, ῥέει πρὸς Β., ἀρδεύει τὴν ὄασιν τοῦ Μὲρβ καὶ μετὰ ῥοῦν 800 χλμ. χάνεται ἐντὸς τῆς ἄμμου τῆς ἐρήμου Καρακορούμ ἐπὶ τοῦ ρωσικοῦ ἐδάφους. Εἶναι ὁ ἀρχαῖος *Μάργος* (βλ. λ.). Ὁ δεύτερος διέρχεται διὰ μέσου τῶν ὀρέων τοῦ Παμίρ, ἐξ ὧν πηγάζει, ῥέει μὲ κατεύθυνσιν ἀνατολικὴν ἐπὶ μήκους 240 περίπου χλμ. καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀμοὺ-Νταριά, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ ἕνα τῶν κυριωτέρων βραχιόνων. Χ. Σ.

**Μουργκμπὰτ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Νησὶς πρὸ τῆς Ἀλεξανδρείας. Μεταξὺ αὐτῆς καὶ τῆς ὑφάλου Μαραμποὺτ ἡ διὰ μικρὰ πλοῖα τῆς ἀκτοπλοΐας πρὸς τὸν λιμένα ὑφαλαῦλαξ, διεθνῶς γνωστὴ ὡς Marabout pass. Σ. Ε. Λ.

Digitized by Google

**Μοῦργον** *['Αρχ. Γεωγρ.]*· βλ. *Μάργος*.

**μοῦργος** (ὁ)· δημοτ., προσηγορία κυνὸς μέλανος χρώματος ἢ περίπου μέλανος· || μεταφ. ἐπὶ ἀνθρώπου, ἀγροῖκος, χυδαῖος, ἄσχημος, χονδροπρόσωπος.

**Μουρὲ** (Mouret). Γάλλος συνθέτης (1682—1738). Ἔγραψε διὰ τὸ θέατρον πλεῖστα ὅσα ἔργα, ἐν οἷς ἐξέχουν τὰ μελοδράματα μπαλλέτα: «Αἱ ἑορταὶ τῆς Θαλείας» (1714), «Οἱ ἔρωτες τῶν θεῶν» (1727), «Αἱ αἰσθήσεις» (1732), «Αἱ χάριτες» (1735) κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μουρελάκης, *Ἐμμανουήλ*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1810. Διεκρίθη κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1869, συμμετασχὼν εἰς τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις τῶν ἀνατολικῶν τῆς Κρήτης ἐπαρχιῶν. Ν. ΚΛΣ

**μουρέλλο** (τό)· ἰδιωμ. Κρήτ., τὸ μικρὸν ἐλαιόδενδρον.

**Μουρέλλος, *Γαβριήλ*.** Κρὴς κληρικός, γεννηθεὶς τῷ 1655. Ἔδρασε μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Τούρκων κατάληψιν τῆς Κρήτης καὶ τὸν περιορισμὸν τῶν Κρητῶν μετὰ τῶν ἐμμενόντων εἰς τὸν κατὰ τῶν Τούρκων ἀγῶνα Ἑνετῶν ἐντὸς τῶν φρουρίων Σπιναλόγκας, Γραμβούσης καὶ Σούδας. Εἰς τὰ τρία ταῦτα φρούρια οἱ Κρῆτες καταφυγόντες παρηνώχλουν τοὺς Τούρκους, μέχρις ὅτου διὰ συνθήκης πρὸς τὴν Ἑνετίαν τὰ κατέλαβον οἱ Τοῦρκοι τῷ 1715. Εἰς τὸν Γαβριὴλ Μουρέλλον ἐδόθη τότε ἐντολὴ παραδόσεως τῆς Σπιναλόγγας. Ἀπέθανε τῷ 1725.

— **Μουρέλλος, *Ἐμμανουήλ*.** Ὁπλαρχηγὸς Μεραμβέλλου, γεννηθεὶς τῷ 1803. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου καὶ τὴν ἔξοδον. Διεκρίθη βραδύτερον κατὰ τὴν μάχην τοῦ Λασηθίου. Ἐκδικούμενος τουρκικὴν κατὰ τοῦ χωρίου του ἐπίθεσιν, ἐν καιρῷ νυκτὸς διεπεραιώθη εἰς τὴν νῆσον Ψεῖραν καὶ κατέσφαξε τοὺς ἐν αὐτῇ 48 Τούρκους. Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Ἀγῶνα μετὰ τοῦ Κόρακα καὶ ἐτραυματίσθη εἰς τὴν παρὰ τὸ Φάληρον μάχην. Ἀργότερον, λαβὼν γαίας εἰς Ἄργος, ἐγκατέλειψε ταύτας καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Κρήτην. Διεδραμάτισε σοβαρὸν ρόλον κατὰ τὸ 1866. Ἀπέθανε τῷ 1894.

—**Μουρέλλος, *Ἰωάννης Νικ*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1838. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866 βουλευτῶν καὶ ἐκ τῶν ἑπτὰ ἀντιπροσώπων τῆς Κρήτης, οἱ ὁποῖοι παρασυρθέντες ὑπὸ τῆς Πύλης ἐνεκλείσθησαν εἰς τὴν φυλακὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει· κατώρθωσεν ὅμως νὰ δραπετεύσῃ καὶ νὰ φθάσῃ εἰς Ἀθήνας. Ἀπέθανε τῷ 1897.

—**Μουρέλλος, *Ἰωάννης*.** Ὁπλαρχηγὸς Μεραμβέλλου, υἱὸς τοῦ Ἐμμανουήλ, γεννηθεὶς τῷ 1840. Μὴ καταθέσας τὰ ὅπλα τῷ 1868, ἵδρυσε τὸ καταφύγιόν του εἰς τὸ ὄρος Κεφάλα. Ἀποπειραθεὶς τὸ αὐτὸ ἔτος νὰ ἐλευθερώσῃ τὸν μεταγόμενον σιδηροδέσμιον παπᾶ Γιαμαλῆν, ἐπρόδωσε τὴν ἡρωϊκὴν φωλεάν του, καὶ τὴν νύκτα, περικυκλωθεὶς ὑφ' ὁλοκλήρου τάγματος τουρκικοῦ στρατοῦ, συνελήφθη μετὰ ἑπτάωρον ἄμυναν καὶ ὑπέστη μαρτυρικὸν θάνατον.

—**Μουρέλλος, *Ἰωάννης Δ*.** Λογογράφος γεννηθεὶς ἐν Ἡρακλείῳ τῷ 1886. Ἐξέδωκε τρεῖς τόμους διηγημάτων: «Ἱστορία μιᾶς γυναίκας» (1919), «Πολεμικὰ» (1920), «Δύο τελάλισσες» (1922), τρεῖς τόμους τῆς «Κρητικῆς στοᾶς» (1909—1911) καὶ ἐπὶ δύο ἔτη τὰ «Νεοελληνικὰ γράμματα». Ἀπὸ τοῦ 1910 μέχρι τοῦ 1926 ἐξέδιδε τὴν «Νέαν ἐφημερίδα» καὶ ἀπὸ τοῦ 1928 τὴν «Ἐλευθέραν σκέψιν». Ἐπίσης ἐξέδωκε: «Κρητικὰς βιογραφίας» (Ἀθῆναι, 1931). Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας».

—**Μουρέλλος, *Νικόλαος*.** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1769. Ἐκ τῶν πρώτων φυλακῶν ἐπροδόθη, φονευθεὶς δι' ἐνέδρας εἰς θέσιν Χαυγούδι Μεραμβέλλου, ὀλίγους μῆνας πρὸ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 καὶ καθ' ἣν ἐποχὴν εὑρίσκετο εἰς συνεννοήσεις διὰ τὴν παραλαβὴν τῶν ὅπλων, ἅτινα ἐπρομηθεύετο ἀπὸ τὸν ἀπρόσιτον τότε κόλπον Μαντράκι.

**μουρέλο** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸ *ἐμβόλαιον* (βλ.λ.) τῶν σχοινίων. Σ. Ε. Λ.

**μουρεξίδη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *μουρεξίδιον*.

**μουρεξιδικὴ *ἀντίδρασις*** *['Οργ. Χημ.]*. Καλεῖται ἡ ἀνίχνευσις τῶν *πουρινικῶν σωμάτων* διὰ θερμάνσεως μετὰ νιτρικοῦ ὀξέος ἢ χλωρικοῦ καλίου καὶ ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος ἢ χλωριούχου ὕδατος καὶ ἀκολούθως προσθήκης ὕδατος. Παρουσίᾳ πουρινικῶν σωμάτων (ὡς τὸ οὐρικὸν ὀξὺ κ.λ.π.) ἐμφανίζεται ζωηρὰ πορφυρέρυθρος χροιά. Σ. Γ.

**μουρεξίδιον** (τὸ) *['Οργ. Χημ.]*. Καλεῖται τὸ μετ' ἀμμωνίας ἅλας τοῦ *πορφυρικοῦ* ὀξέος (βλ. λ.). Στερεὸν κρυσταλλικὸν σῶμα μὲ χρῶμα κόνεως ἐρυθρόν, ὡς καὶ ὑδατικὸν διάλυμα ἐρυθρόν. Εἰς τὸν σχηματισμὸν αὐτοῦ ὀφείλεται ἡ *μουρεξιδικὴ ἀντίδρασις* τῶν πουρινικῶν σωμάτων. Σ. Γ.

**Μοῦρερ** (Murer), ***Ἰωσίας*** καὶ ***Χριστόφορος***. Ἑλβετοὶ καλλιτέχναι (βλ. λ. *Μάουρερ*).

**Μούρεσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 881. Κεῖται πιθανῶς ἐπὶ τῆς θέσεως τῆς ἀρχαίας πόλεως *Μύραι*, τῆς ἀναφερομένης ὑπὸ τοῦ Σκύλακος. Χ. Δ.

**Μουρζικὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μυκόνου τῆς ἐπαρχίας Σύρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 131. Χ. Δ.

**μούρη** (ἡ)· δημοτ., τὸ ρύγχος τῶν ζῴων: «ὁ χοῖρος σκάβει μὲ τὴ μούρη του»· || ἐπὶ ἀνθρώπου, τὸ πρόσωπον (εὐτελιστικῶς), ἄλλως *μοῦτρο*: «θὰ φὰς καμμιὰ 'ς τὴ μούρη»· || «θέλει κι' ἡ μούρη σου γλυκό», «ἤθελε κι' ἡ μούρη του χορό», ἀντὶ *σύ, αὐτὸς* κτλ. (περιφρονητικῶς).—Ὑποκορ. *μουράκι* (τό), *μουρίτσα* (ἡ).

**Μούρη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πρεβέζης συνοικισμοῦ *Πυργὶ* (βλ. λ.).

**Μουρήνας** (Mourena). Οἰκογένεια τῆς Λικινίας πληβείας γενεᾶς ἐκ Λανουβίου. Κατάγεται ἐκ τοῦ *Ποπλίου Λικινίου*, στρατηγοῦ κατὰ τὸ 156 π. Χ., τοῦ ὁποίου ὁ υἱὸς *Πόπλιος Λικίνιος*, στρατηγὸς κατὰ τὸ 113, ἔλαβε τὸ ἐπώνυμον *Μουρήνας*, διότι ἡλίευε μυραίνας (murena). Οὗτος ἔσχε δύο υἱούς, τὸν *Πόπλιον*, φονευθέντα ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν τοῦ Μαρίου, καὶ τὸν *Λούκιον*, ὅστις ἠκολούθησε τὸν Σύλλαν εἰς τὴν Ἀνατολὴν καὶ διεκρίθη εἰς τὰς μάχας τοῦ Πειραιῶς καὶ τῆς Χαιρωνείας (86). Παραμείνας εἰς Ἀσίαν μετὰ δύο λεγεώνων, μετὰ τὴν ἐπάνοδον τοῦ ἀρχηγοῦ του ἐπανήρχισεν ἀπερισκέπτως τὸν πόλεμον κατὰ τοῦ Μιθριδάτου, ὑπὸ τοῦ ὁποίου καὶ ἐνικήθη. Ἀνακληθεὶς διὰ τὸν λόγον τοῦτον τῷ 81, ἐτέλεσεν ἐν τούτοις θρίαμβον. Ὁ υἱὸς τούτου *Λούκιος* ὑπῆρξεν ἀγορανόμος, ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν Λούκουλλον ἐν Ἀσίᾳ, ἐχρημάτισε στρατηγὸς (65), κυβερνήτης τῆς πέραν τῶν Ἄλπεων Γαλατίας, ἐξελέγη ὕπατος τῷ 62 καὶ κατηγορήθη ἐπὶ παρανόμῳ σπουδαρχίᾳ ὑπὸ τοῦ ἀνταγωνιστοῦ του Σ. Σουλπικίου, ὑποστηριχθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὁρτησίου, τοῦ Κράσσου καὶ τοῦ Κικέρωνος. Τοῦ τελευταίου τούτου ὁ ὑπὲρ τοῦ Μουρήνα λόγος ἐσώθη. Ὁ Μουρήνας ἀπηλλάγη τῆς κατηγορίας καὶ ἐβοήθησε τὸν Κικέρωνα εἰς τὴν κατάπνιξιν τῆς συνωμοσίας τοῦ Κατιλίνα καὶ τὴν σκληρὰν τιμωρίαν τῶν ἐνόχων. Γνωστὸς ἐπίσης εἶναι καὶ ὁ *Τερέντιος Οὐάρρων Μουρήνας*, υἱὸς πιθανῶς τοῦ προηγουμένου, υἱοθετηθεὶς ὑπὸ τοῦ Τερεντίου Οὐάρρωνος, ἀφωσιωμένου φίλου τοῦ Κικέρωνος. Οὗτος ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ Αὐγούστου νὰ ὑποτάξῃ τοὺς Σαλασσίους (25 π. Χ.). Ἐχρημάτισεν ἀναπληρωτικὸς ὕπατος τῷ 23, ἀλλ' ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν συνωμοσίαν τοῦ Φαννίου Καιπίωνος, κατεδικάσθη εἰς θάνατον καὶ ἐξετελέσθη, παρὰ τὴν ἐπέμβασιν τῆς ἀδελφῆς του, ἥτις ἦτο σύζυγος τοῦ Μαικήνα. Θ. Π.

**Μούρθια** (Murcia) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἱσπανίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ, παρὰ τὴν συμβολὴν τῶ ποταμῶν Σανγκονέρα καὶ Σεγκούρα. Κάτ. 35.211 καὶ μετὰ τῶν προαστείων 151.200. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Καρθαγένης—Ἀλικάντης καὶ ἀπέχει ἀπὸ τῆς Μεσογείου 40 χλμ. Ἔχει μητρόπολιν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος μὲ ἑξαώροφον πύργον, ἐν τῷ ὁποίῳ φυλάσσεται ἡ καρδία τοῦ Ἀλφόνσου Ι' τῆς Καστίλλης. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον πορτοκαλλίων, λεμονίων, σταφίδων καὶ ξηρῶν καρπῶν καὶ ἔχει βιομηχανίαν μεταξωτῶν. Ἔχει πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1915 καὶ ἀνωτέρας σχολάς. Εἶναι πιθανῶς ἡ ἀρχαία Vergilia καὶ διετέλεσε κατὰ τὸν μεσαίωνα πρωτεύουσα ἑνὸς ἐκ τῶν πλουσιωτέρων ἀραβικῶν βασιλείων τῆς Ἰβηρικῆς χερσονήσου.

—2) Νομὸς τῆς Ν.Α. Ἱσπανίας ἐπὶ τῆς Μεσογείου, ἔχων ἔκτασιν 11.317 τ. χλμ, καὶ 663.000 κατ. Ἔχει ἔδαφος πλούσιον εἰς μεταλλεῖα σιδήρου, μολύβδου, ἀργύρου, ἀμιάντου καὶ εὐφορώτατον, μὲ ἀφθόνους φυτείας μορεῶν, πορτοκαλλεῶν, λεμονεῶν, ἀμπέλων, σιτηρῶν κτλ. καὶ κυριωτέρας πόλεις τὴν πρωτεύουσαν αὐτοῦ Μούρθια καὶ τὴν Καρθαγένην.

— 3) Παλαιὸν βασίλειον τῆς Ἱσπανίας, ἐπὶ τῆς Μεσογείου θαλάσσης, ἱδρυθὲν ὑπὸ τῶν Ἀράβων κατὰ τὸν Η' αἰῶνα. Περιελάμβανε τὸν σημερινὸν νομὸν τῆς Μούρθια, μέγα μέρος τοῦ νομοῦ τῆς Ἀλμπαθέτε καί τινας περιοχὰς αἵτινες ἀνήκουν σήμερον εἰς τοὺς νομοὺς τῆς Ἀλικάντε καὶ Χαέν. Πρωτεύουσα αὐτοῦ ἦτο ἡ Μούρθια. Μ. Δ. Β.

**Μουρί.** —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Βουργάρω τῆς ἐπαρχίας Κισάμου τοῦ νομοῦ Χανίων. Κάτ. (1928) 192.

— 2) Χωρίον τῆς κοινότητος Χώρας Σφακίων τῆς ἐπαρχίας Σφακίων τοῦ νομοῦ Χανίων. Κάτοικοι (1928) 112.

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Γεωργιουπόλεως τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου τοῦ νομοῦ Χανίων. Κάτ. (1928) 89. Ν. ΚΛΣ

**μουριὰ** (ἡ). Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μορέα*.

**Μουριὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Πουρναριᾶς (Ποδογύρων) τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Συριάμον*. (Κάτ. (1928) 148. Χ. Δ.

— **Μουριὰ** *[Γεωγρ.]*. Λιμνοθάλασσα τῆς Πελοποννήσου ἐν τῇ Ἠλείᾳ καὶ ΒΔ. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἀλφειοῦ ποταμοῦ, 3 χλμ. ΝΔ. τοῦ Πύργου. Τὸ μῆκος αὐτῆς εἶναι περὶ τὰ 8 χλμ., τὸ δὲ πλάτος περὶ τὰ 2. Εἶναι ἰχθυοτρόφος. Ι. Σ. Σ.

**μουριακίτης** (ὁ) (Muriacit), ἢ *καρστενίτης* *['Ορυκτολ.]*. Ὀνομάζεται οὕτω τὸ ὀρυκτὸν ἄνυδρον θειικὸν ἀσβέστιον, γνωστὸν συνήθως ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν *ἀνυδρίτης* ἢ ἀνυδρῖτις γύψος (βλ. λ.). Γ. Β.

**Μουριανί, *Ἔμπου Ἐγιοὺπ*** —· βλ. λ. *Ἔμπου* Ἐγιοὺπ Μουριανί.

**Μουριατάδα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς Κυπαρισσίας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 234. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Καρβούνι*. Χ. Δ.

**Μουριγιὸν** (Murillon) *[Γεωγρ.]*. Ἐλάσσων λιμὴν ἐν τῷ κολπίζοντι λιμένι τῆς Τουλῶνος (πλάτ. 43° 05' Β., μῆκ. 5° 55' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 151: Tulon), περιστοιχιζόμενος ἀπὸ ἐπαύλεις καὶ ὡρισμένος διὰ τὴν ἀγκυροβολίαν τῶν θαλαμηγῶν. Σ.Ε.Λ.

**Μουριδεβὰ** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Θρᾴκης ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ροδόπης, τὰ ὁποῖα ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μουριὲς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται παρὰ τὴν ΒΑ. ὄχθην τῆς λίμνης τῆς Δοϊράνης, ἐγγὺς τῶν νοτιοσλαβικῶν συνόρων καὶ ἔχει εἰρηνοδικεῖον, δασοκομεῖον, ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ἐγγὺς τοῦ χωρίου ὑπάρχει σιδηροδρομικὸς σταθμὸς τῆς γραμμῆς Θεσσαλονίκης-Ἀλεξανδρουπόλεως. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Ἀκίντζαλι*. Κάτ (1928) 342. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ὡσαύτως τὰ χωρία καὶ τοὺς συνοικισμούς: *Ἀγορὰ (Καρᾶ-Παζαρλῆ), Ἀκακίες (Μουλαμπαλῆ), Ἀκρολίμνιον (Μπρές), Ἀλεξάνδρα (Ἐρτζελῆ), Καβαλάρης (Ἀατλῆ), Κληματαριὰ (Σανσαλῆ), Κρητικὰ (Καρλόβασι), Λιθωτὸ (Κιολεμενλῆ), Μικρόβρυση (Τσααλῆ), Νίγδη (Δουρκουτλῆ), Πλατανιὲς (Σαντζαλῆ), Προμαχὼν (Δεβερλῆ), Ρεματιὰ (Γκενσεκλῆ), Σιδηροδρομικὸς Σταθμὸς Μουριῶν, Συκαμινιὰ (Καραλῆ), Σύνορον (Δουρμπανλῆ)* καὶ *Ψυχόβρυση (Χατζῆ-Ὀγλαρᾶ)*. Χ. Δ.

— **Μουριῶν *Σιδηροδρομικὸς Σταθμὸς*** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μουριῶν τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, κείμενος παρὰ τὸν ὁμώνυμον σιδηροδρομικὸν σταθμόν. Κάτ. (1928) 89. Χ. Δ.

**Μουριζιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Νέου Χωρίου τῆς ἐπαρχίας Κυδωνίας τοῦ νομοῦ Χανίων, παρὰ τὸν Ταυρωνίτην ποταμόν. Κάτ. (1928) 68. Ε. Γ.

**Μουρίκι** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Προφήτου Ἠλία τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Α. Ι. Ο.

**Μουρίλλο** (Murillo, προφ. *Μουρίλιο*), ***Βαρθολομαῖος Ἐστεμπάν***. Διάσημος Ἱσπανὸς ζωγράφος. Ἐγεννήθη τῷ 1617 ἐκ πτωχοτάτης οἰκογενείας ἐν Σεβίλλῃ καὶ διῆλθε τὴν παιδικὴν ἡλικίαν του ἐν μέσῳ στυγνῆς πενίας καὶ ἀφορήτων στερήσεων. Δεκαετὴς μόλις ἀπώλεσε τὸν πατέρα του, ἁπλοῦν ἐργάτην, καὶ τὴν μητέρα του, προσβληθέντας ὑπὸ τῆς πανώλους, ἡ ὁποία κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους ἀπεδεκάτιζε τὴν Ἱσπανίαν. Ὁ θεῖός του Λαγαρές, ἐπιφανὴς χειρουργός, τὸν ἔλαβεν ὑπὸ τὴν προστασίαν, διακρίνας δὲ τὴν ἔντονον κλίσιν τοῦ παιδὸς πρὸς τὴν ζωγραφικήν, τὸν εἰσήγαγε πρὸς μαθητείαν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Χουὰν ντὲλ Καστίλλιο, ὅστις ἐφημίζετο ὡς ὁ σπουδαιότερος καλλιτέχνης τῆς ἐποχῆς. Ἀλλὰ βραδύτερον ὁ Χουὰν ντὲλ Καστίλλιο κατέλιπε τὴν Σεβίλλην, καὶ ὁ Μουρίλλο, μὴ δυνάμενος νὰ τὸν παρακολουθήσῃ, ἐφ' ὅσον εἶχε νὰ διαθρέψῃ μικρὰν ἀδελφήν, παρέμεινεν ἐν τῇ πατρίδι του ἐργαζόμενος ὡς βοηθὸς διαφόρων καλλιτεχνῶν εἰς τὴν διακόσμησιν τῶν ναῶν τῆς πόλεως. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Σεβίλλην κατόπιν μακρᾶς διαμονῆς ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Φλάνδρᾳ ὁ ζωγράφος Πέτρος Μόγια, παλαιός του συμμαθητὴς εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Χουὰν ντὲλ Καστίλλιο· διὰ τῶν διηγήσεών του καὶ τῶν δειγμάτων τῆς τέχνης του ἤνοιξε πρὸ τῶν ὀφθαλμῶν του τοὺς θαυμασίους ὁρίζοντας τῆς ἰταλικῆς καὶ φλαμανδικῆς ζωγραφικῆς· τοῦ ἐξέθηκε τὰ τῶν συχνῶν ἐπισκέψεών του εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Βὰν Ντάϊκ, τοῦ ἔδειξεν ὅσα εἶχεν ἐκπονήσει ἀντίγραφα τῶν πινάκων τοῦ μεγάλου διδασκάλου καὶ τοῦ διήγειρε τὴν ἐπιθυμίαν νὰ ἐπισκεφθῇ τὰς ὀνειρώδεις ἐκείνας χώρας τῆς καλλιτεχνικῆς ἀνθήσεως καὶ ν' ἀντικαταστήσῃ τὴν ἐπὶ τῆς παλαιοτάτης καὶ ξη-

Digitized by Google

ρᾶς παραδόσεως ἐρειδομένην τεχνοτροπίαν του διὰ τοῦ λεπτοῦ καὶ χαριτωμένου πνεύματος τῆς ἰταλικῆς καὶ φλαμανδικῆς ἀναγεννήσεως. Ἀλλὰ τὰ ὑλικὰ μέσα δι' ἓν τόσῳ μακρὸν ταξίδιον τοῦ λείπουν· ἐν τούτοις καταλείπει τὴν Σεβίλλην καὶ μετὰ κοπιώδη προσπάθειαν φθάνει εἰς τὴν Μαδρίτην. Ἐκεῖ γοητεύεται ἀπὸ τὴν ἐξαισίαν ἀκτινοβολίαν μιᾶς προσωπικότητος, ἡ ὁποία μεσουρανεῖ εἰς τὴν πόλιν ἐκείνην: τοῦ Βελάσκουεθ. Ὁ Μουρίλλο τὸν πλησιάζει, τοῦ παρουσιάζει δείγματα τῆς τέχνης του, προσελκύει τὴν συμπάθειαν καὶ τὸ ἐνδιαφέρον του. Μέχρι τοῦ 1645 παραμένει πλησίον του, ἐμπνεόμενος ἀπὸ τὸ ὑψηλόν του παράδειγμα, μελετῶν ἀδιακόπως τὴν τεχνοτροπίαν του, τόσῳ ξένην, ἄλλως τε, πρὸς τὸν χαρακτῆρα τοῦ ἰδικοῦ του ταλάντου, διεξερχόμενος, μετ' ἐμπαθοῦς προσοχῆς, τὰς πλουσιωτάτας καλλιτεχνικὰς συλλογὰς τῶν ἀνακτόρων ἀπὸ ἔργα τοῦ Ραφαήλ, τοῦ Ροῦμπενς, τοῦ Βὰν Ντάϊκ, τοῦ Βερονέζε καὶ τοῦ Κορρέτζιο. Ἀφοῦ κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἐδιδάχθη ὁ Μουρίλλο καὶ ᾐσθάνθη τὸ τάλαντόν του νὰ συμπληρώνεται καὶ νὰ ἐνισχύεται διὰ τῆς θεωρήσεως τῆς μεγάλης τέχνης, ἐπιστρέφει εἰς τὴν Σεβίλλην, ὅπου, μακρὰν πάσης ματαιοδόξου ἐπιδείξεως, διήγαγεν ἐν συνεχεῖ προσπαθείᾳ τὸ πλεῖστον μέρος τοῦ βίου του. Τὰς τιμάς, αἱ ὁποῖαι προσηνέχθησαν εἰς αὐτόν, δὲν ἐδέχθη. Καὶ ὅταν Κάρολος ὁ Β' ἠθέλησε νὰ τὸν ἐγκαταστήσῃ εἰς τὸ ἐν Μαδρίτῃ ἀνάκτορόν του ὑπὸ τὸν τίτλον ἐπισήμου αὐλικοῦ ζωγράφου, ἠρνήθη. Ἡ ψυχή του ἠγάπα τὴν ἁπλότητα, τὴν σιωπὴν καὶ τὴν ταπεινοφροσύνην. Ἀλλὰ τοῦτο δὲν τὸν ἠμπόδισε νὰ καταστῇ ὁ δημοφιλέστερος καλλιτέχνης τῆς Ἱσπανίας κατὰ τοὺς χρόνους του. Τῷ 1680, ἐνῷ εἰργάζετο ἐπὶ μιᾶς συνθέσεως εἰκονιζούσης τὸν «Μυστικὸν γάμον τῆς ἁγίας Αἰκατερίνης τῆς Σιένης» ἔν τινι ναῷ τῶν καπουκίνων μοναχῶν ἐν Κάδιξι, προσβληθεὶς πιθανῶς ὑπὸ συμφορήσεως κατέπεσεν ἀπὸ τοῦ ἰκριώματος, ἐφ' οὗ ἵστατο. Κατόπιν τούτου ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Σεβίλλην· ἔζησεν ἐπωδύνως, ἀνίκανος πρὸς ἐργασίαν, ἐπὶ διετίαν εἰσέτι, καὶ τῷ 1682 ἀπέθανε. Ὁ Μουρίλλο εἶναι ὁ τελευταῖος ἀπὸ τοὺς παλαιοὺς μεγάλους ζωγράφους τῆς Ἱσπανίας. Δὲν εἶναι τόσον μεγαλοφυὴς καὶ καθολικός, ὅσον ὁ Βελάσκουεθ. Ἀλλ' ἔχει μερικὰς ὅλως ἀτομικὰς ἀρετάς, αἱ ὁποῖαι τὸν ἀναβιβάζουν εἰς ὑψηλὸν βάθρον δόξης. Ὁλόκληρον τὸ ἔργον του περιλαμβάνει δύο θεμελιώδεις σειρὰς συνθέσεων: θρησκευτικοὺς πίνακας καὶ σκηνὰς εἰλημμένας ἀπὸ τὴν καθημερινὴν ζωήν. Κάθε μία ἀπὸ τὰς σειρὰς αὐτὰς παρουσιάζει ἰδιαίτερα χαρακτηριστικὰ γνωρίσματα· ἀλλ' ἀμφότεραι ἑνώνονται εἰς τὴν κοινὴν ἀντίληψιν τοῦ καλλιτέχνου περὶ τῆς ζωῆς καὶ τῆς τέχνης. Ψυχὴ γεμάτη καλωσύνην, δοκιμασθεῖσα μέσα εἰς τὰς ἐναντιότητας τοῦ πλήρους στερήσεων βίου, ὁ Μουρίλλο δὲν ὑπεδουλώθη εἰς ἄ γ ο ν ο ν μισανθρωπίαν, οὔτε εἶδε βραδύτερον, εἰς τοὺς εὐτυχισμένους καιροὺς τῆς ἀνυψώσεώς του, τοὺς ἀνθρώπους διὰ μέσου τοῦ θολοῦ πρίσματος ὀψίμου ἀλαζονείας. Σκέψεις ταπειναί, χαμερπεῖς ἢ βέβηλοι δὲν ἐτάραξάν ποτε τὸ πνεῦμά του· καὶ ὡς ἀποκορύφωμα ὁλοκλήρου τοῦ ψυχικοῦ του βίου ἡ εὐλάβειά του πρὸς τὸν Θεὸν ὑπῆρξεν ἀκαταμέτρητος καὶ ἀπεριόριστος. Ἀλλ' ἡ εὐλάβεια αὐτὴ δὲν ἔχει ζοφερὸν καὶ μελαγχολικὸν χαρακτῆρα, ἀλλ' εἶναι φαιδρά, γαληνιαία, πλήρης ἐμπιστοσύνης εἰς τὴν θείαν εὐμένειαν καὶ ἀντίληψιν. Πρέπει νὰ ἐνθυμηθῇ τις πόσον τραχύς, σκοτεινὸς καὶ ἐμπαθὴς ὑπῆρξεν ὁ ἱσπανικὸς μυστικισμὸς καὶ πόσον δεσποτικὴ ἡ ἱεροκρα-

*Αὐτοπροσωπογραφία.*

τία εἰς τὴν χώραν αὐτὴν τῶν ὀξυτάτων ἀντιθέσεων, διὰ νὰ ἐννοήσῃ ποίαν ἀντίθεσιν πρὸς τὸ μέγιστον μέρος τῆς καθόλου ἱσπανικῆς τέχνης ἀποτελοῦν αἱ θρησκευτικαὶ μεταρσιώσεις τοῦ Μουρίλλο, τὰς ὁποίας καταυγάζει τὸ φῶς μιᾶς τόσον ἀφελοῦς καὶ τόσον συγκινητικῆς συγχρόνως ἀφοσιώσεως.

Τὸ ἔργον τοῦ Μουρίλλο εὑρίσκεται ἐν μέσῳ ρεαλισμοῦ πλήρους παρατηρητικότητος καὶ διεισδυτικότητος καὶ αἰσθηματολογικῆς μυστικοπαθείας. Διὰ τοῦτο ἀκριβῶς ὑπάρχει εἰς αὐτὸ μία ἐξωτερικὴ διαχωριστικὴ γραμμή. Αἱ ρωπογραφίαι του, ζωηρόταται κατὰ τὸν χρωματισμὸν καὶ τὴν ἔκφρασιν, ἔχουν ἀπαράμιλλον γραφικότητα: εἶναι κομμάτια τῆς ζωῆς τῶν πτωχικῶν συνοικιῶν τῆς Σεβίλλης, εἰς τὰς ὁποίας ὁ Μουρίλλο ἐπέρασε τὴν ταπεινήν παιδικήν του ἡλικίαν καὶ τὴν ἀνήσυχον νεότητά του· ὑπάρχει εἰς τοὺς πίνακας αὐτοὺς πολλὴ συμπάθεια καὶ πολλὴ καλωσύνη· τὰ εἰκονιζόμενα θέματα ὁ καλλιτέχνης φαίνεται καθαρὰ ὅτι δὲν τὰ εἶδε μὲ τὸ βλέμμα τοῦ ψυχροῦ παρατηρητοῦ ἢ τοῦ ἐπὶ ὡρισμένων αἰσθητικῶν προϋποθέσεων βαίνοντος ζωγράφου· τὰ ᾐσθάνθη εἰς τὴν καρδίαν του ὡς ἰσαρίθμους ἀναμνήσεις τοῦ ἰδίου του βίου. Ἄλλως τε καὶ ἀπὸ καθαρᾶς ἠθογραφικῆς ἀπόψεως ἡ σημασία των εἶναι ἀνυπολόγιστος. Διότι ὁ καλλιτέχνης κατώρθωσε νὰ ἐκφράσῃ δι' αὐτῶν ὅλην τὴν ἱσπανικὴν πτωχείαν, τὴν διὰ τοῦ μηδενὸς συντηρουμένην ἀμέριμνον ὕπαρξιν τῶν ἀπογόνων τῶν παλαιῶν ἰδαλγῶν.

Εὐνόητον εἶναι ὅτι τοιοῦτοι πίνακες ἐξησφάλισαν εἰς τὸν Μουρίλλο ἄκραν δημοτικότητα. Ἀλλὰ δὲν τοῦ προσεπόρισαν ὀλιγωτέραν τοιαύτην αἱ θρησκευτικαί του συνθέσεις, εἰς τὰς ὁποίας ἡ ἀφελὴς ψυχὴ τοῦ καλλιτέχνου ἐκφράζει κατὰ τρόπον ἁπλοϊκόν, αἰσθηματικὸν καὶ εὐχερέστατα καταληπτὸν τὴν συγκινητικήν της εὐλάβειαν. Διὰ τῶν θρησκευτικῶν του πινάκων ὁ Μουρίλλο ἐκλαϊκεύει, οὕτως εἰπεῖν, τὴν θρησκείαν, τὴν καθιστάνει προσιτὴν εἰς τὴν καρδίαν καὶ εἰς τὸ πνεῦμα τοῦ πολλοῦ λαοῦ, τῆς δίδει ὑλικωτέραν κάπως ὑπόστασιν, ἐν μιᾷ λέξει τὴν ἐξανθρωπίζει. Διὰ τ ο ῦ τ ο αἱ πολυπληθεῖς «παναγίαι» του ὑπενθυμίζουν τόσον ζωηρῶς τὰς κόρας τῆς Ἱσπανίας καὶ τὰ «θεῖα βρέφη» του εὑρίσκονται εἰς τόσον ἄμεσον σχέσιν πρὸς τὰ ταπεινὰ ἐκεῖνα παιδία, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν τὴν χαρὰν καὶ τὸ θάλπος τῶν ρωπογραφιῶν του.

***Βαρθ. Μουρίλλο:** Ἀνάληψις.*

[Μουσεῖον Μπράντο - Μαδρίτη]

Ἀπὸ καθαρῶς τεχνικῆς ἀπόψεως τὸ ἔργον τοῦ Μουρίλλο παρουσιάζει σπουδαιότατα πλεονεκτήματα, ἀλλὰ δὲν στερεῖται καὶ σημαντικῶν ἐλαττωμάτων. Τὸ σοβαρώτερον μεταξὺ τῶν τελευταίων εἶναι ἡ προφανὴς ἔλλειψις σαφοῦς καὶ ἀκριβοῦς σχεδίου· ἀξιολογώτατον μεταξὺ τῶν πρώτων εἶναι ἡ δεξιοτεχνία εἰς τὸν χρωματισμόν, διὰ τῆς ὁποίας ὁ καλλιτέχνης κατώρθου νὰ δίδῃ τόσην γλυκύτητα, χάριν καὶ ἁρμονίαν εἰς τοὺς πίνακάς του. Ὡς παρετήρησε κριτικός τις, «ὁ Μουρίλλο εἶναι διδάσκαλος τοῦ ἀτμώδους χρώματος, τοῦ ἄλλοτε ἀργυρόχρου καὶ ἄ λ λ ο τ ε χρυσίζοντος, πάντοτε δὲ θελκτικοῦ καὶ θωπευτικοῦ». Τὸ χρῶμα τοῦτο δὲν τὸ ρίπτει μόνον ἐπάνω εἰς τὰς μορφάς, τὰς ὁποίος εἰκονίζει· τὸ διαχέει καὶ γύρω ἀπὸ αὐτάς, οὕτως ὥστε ὅλος ὁ πίναξ λούεται εἰς ἤρεμον καὶ γλυκὺ φῶς. Ἰσχυρὰ πρωτοτυπία εἰς τὸν Μουρίλλο δὲν ὑπάρχει· ἀλλ' εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου πρὸς τιμήν του τὸ γεγονὸς ὅτι ἐστράφη μὲ τόσην προσοχὴν πρὸς τὴν ζωὴν καὶ τὴν φύσιν ἀντὶ νὰ μετεωρισθῇ εἰς κόσμους ἰδεαλιστικωτέρους, ἀ λ λ ὰ καὶ ἀπροσαρμόστους εἰς τὸν χαρακτῆρα τοῦ ταλάντου του. Εἶναι ἀληθὲς ὅτι ἡ τέχνη του εἶναι ἱκανῶς λαϊκή· δὲν λύει δυσχερῆ προβλήμα-

Digitized by Google

τα, οὔτε ὑποδεικνύει νέας ἀπόψεις· δι' αὐτὸν ἀκριβῶς τὸν λόγον, ἐνῷ κατὰ τοὺς χρόνους του διεφημίσθη ὅσον ἐλάχιστοι, σήμερον ἡ δόξα του φαίνεται κάπως ὠχρὰ καὶ πάντως οὐδ' ἁπλῶς ν' ἀντιμετωπίσῃ δύναται τὴν δόξαν ἑνὸς Βελάσκουεθ. Παρὰ πάντα ὅμως ταῦτα ὁ Μουρίλλο παραμένει μέγας καλλιτέχνης καὶ μέγας ἄνθρωπος· τὸ ἔργον του ἁπαλύνει, ἀνακουφίζει καὶ θέλγει.

Ἐκ τῶν συνθέσεων, τὰς ὁποίας ὁ καλλιτέχνης οὗτος ἐξειργάσθη, ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Ὁ ἅγιος Διέγος μεταξὺ τῶν πτωχῶν» (Ἀκαδημία Ἁγίου Φερδινάνδου), «Ὁ θάνατος τῆς ἁγίας Κλαίρης», «Ἡ ἔκστασις τοῦ ἁγίου Φραγκίσκου» (Ἀκαδημία Ἁγίου Φερδινάνδου), «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» (Μουσεῖον Μαδρίτης), «Ἡ Παρθένος μὲ τὸ κομβολόγιον» (περίφημος διὰ τὴν ἁρμονίαν τοῦ χρωματισμοῦ καὶ τὴν γλυκύτητα τῆς ἐκφράσεως πίναξ, ἀποκείμενος εἰς τὸ Λοῦβρον), αἱ διακοσμητικαὶ ζωγραφίαι τοῦ παρεκκλησίου τοῦ Ἁγίου Γεωργίου de la Caridad, ἐν Σεβίλλῃ: «Ὁ Μωϋσῆς πλήττων τὸν βράχον», «Ὁ πολλαπλασιασμὸς τῶν ἄρτων», «Ὁ ἅγιος Ἰωάννης φέρων πτωχὸν ἀσθενῆ», «Ἡ ἁγία Ἐλισάβετ τῆς Οὐγγαρίας» κλπ. Ἕτερα ἐξαιρέτως ἀξιοσημείωτα ἔργα τοῦ Μουρίλλο εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁ ἅγιος Θωμᾶς τῆς Βιλλανουέβας κάμνων ἐλεημοσύνας», «Τὸ ὄνειρον τοῦ πατρικίου», «Ἡ ἀποκάλυψις τοῦ ὀνείρου», «Παιδιὰ τρώγοντα καρπούς», «Τὸ κολάτσισμα» (Μουσεῖον Μονάχου), «Τὸ ξεψείρισμα», (Μουσεῖον Λούβρου), «Τὸ μέτρημα τῆς εἰσπράξεως» (Μουσεῖον Μονάχου), «Ἡ Παρθένος», «Ἡ Παρθένος διδασκομένη», «Ὁ θεῖος ποιμήν», «Ἡ ἁγία οἰκογένεια» (Μουσεῖον Πράντο), «Ἡ ἄμωμος σύλληψις», «Ἡ γέννησις τῆς Θεοτόκου» (Μουσεῖον Λούβρου).

Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μουριώτης** *Χατζῆ-Γιώργης*. Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1784. Νεώτατος ἐπεδόθη εἰς τὸν ἁρματολικὸν βίον ἐν Κρήτῃ, εἶτα δὲ καὶ ἐν Μ. Ἀσίᾳ, ὁπόθεν, ἅμα τῇ κηρύξει τῆς Ἐπαναστάσεως τοῦ 1821, ἔσπευσε μετὰ τῶν ὀπαδῶν του καὶ ἄλλων ἐκ τῶν ἐκεῖ Κρητῶν εἰς Σάμον, ἔνθα διεκρίθη κατὰ τὴν ἀπόκρουσιν τῶν ἐπελθόντων κατὰ τῆς νήσου ταύτης Τούρκων. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ αὐτοῦ ἔτους μετέβη μετὰ 200 πολεμιστῶν εἰς Κρήτην, ἔνθα ἠγωνίσθη εἰς διαφόρους μάχας καὶ ἐτραυματίσθη. Κατὰ τὴν εἰς Σφακιὰ εἰσβολὴν τῶν τουρκοαιγυπτιακῶν στρατευμάτων (Μάρτιος 1824) μετὰ 30 περίπου ὀπαδῶν του ἔσωσεν ἑκατοντάδας γυναικοπαίδων ἀπὸ τὴν σφαγήν. Καταλαβόντες ἐπίκαιρον θέσιν κάτωθεν τοῦ χωρίου Ἅγιος Ἰωάννης, ἀνεχαίτισαν τοὺς ἐχθροὺς μέχρις οὗ ἔπεσαν μέχρις ἑνὸς ἡρωϊκῶς μαχόμενοι. Ν. ΚΛΣ

**Μουρχία** (Murcia) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μούρθια*.

**Μουρχιάντων** *[Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς Τουρκίας ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Σουρμαίνων τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος. Κατῳκεῖτο ἄλλοτε ὑπὸ χιλίων περίπου Ἑλλήνων, προσφυγόντων εἰς Ἑλλάδα κατὰ τὴν ἀνταλλαγὴν τῶν πληθυσμῶν. Κ. ΛΣ

**μούρλα** (ἡ)· μωρία, ἀνοησία, νωθρότης σκέψεως: «μούρλα τὴν ἔπιασε» (ἐκ τοῦ *μουρλός*, πβλ. *ξέρα* ἐκ τοῦ *ξερός*).

**Μουρλᾶ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀχαΐας χωρίου *Ροδοδάφνη* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουρλαίνω**, *ἀόρ. ἐ)μούρλανα—ἐ)μουρλάθηκα*· κάμνω τινὰ μουρλόν, μωραίνω: «τὸ μούρλανε τὸ παιδί του ἀπὸ τὸ ξύλο»· || παθ., γίνομαι μουρλός, πάσχω διανοητικὴν σκότωσιν: «μουρλάθη ἀπὸ τὸ ξύλο».

**μουρλός**, —ή, —ό· δημοτ., ἀνόητος, μωρός, νωθρὸς τὴν διάνοιαν: «μὴν εἶσαι μουρλός» (ἐκ τοῦ *μωρὸς* κατὰ σύμφυρσιν πρὸς τὸ *τρελλός*).

**Μουρμὰν** *παραλία* (Murman) *[Γεωγρ.]*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι γνωστὴ ἡ ἐπὶ τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ βορεία παραλία τῆς χερσονήσου τῆς Κόλα. Ἡ παραλία αὕτη, μήκους 420 χλμ., ἄρχεται ἀπὸ τῶν νορβηγικῶν περίπου συνόρων καὶ λήγει εἰς τὸ ἐπὶ τῆς χερσονήσου τῆς Κόλα ἀκρωτήριον Σβιατόϊ Νός, ἐπιστέφεται δὲ ὑπὸ ἀποτόμων βράχων ὑψουμένων πολλάκις μέχρι 200 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Ἀπὸ συγκοινωνιακῆς ἀπόψεως ἔχει μεγάλην σπουδαιότητα, διότι εἶναι ἡ μόνη ἐλευθέρα πάγων ἀκτὴ τῆς ρωσικῆς ἀρκτικῆς παραλίας, καὶ τοῦτο διότι βρέχεται ὑπὸ τῶν ἀκραίων προεκτάσεων τοῦ θερμοῦ ρεύματος τοῦ Μεξικανικοῦ κόλπου (Gulf-Stream). Εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμά της σχηματίζεται βαθυτάτη ἐν εἴδει φιορδ κόλπωσις, ὅπου αἱ πόλεις *Μουρμάνσκ* καὶ *Κόλα*, εἰς τὴν περιβρέχουσαν δ' αὐτὴν θάλασσαν διεξάγεται συστηματικὴ ἁλιεία βακαλάου, πολλάκις δὲ καὶ φαλαινῶν. Ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ τοῦ Μουρμὰν εἶναι ἡ σπουδαιοτέρα ἀπὸ συγκοινωνιακῆς ἀπόψεως γραμμὴ τῆς Βορείου Ρωσίας, μήκους 1450 χλμ., ἀρχομένη ἀπὸ τῆς ἐπὶ τοῦ Βορείου Παγωμένου ὠκεανοῦ πόλεως Μουρμάνσκ, διασχίζουσα κατὰ πλάτος τὸν λαιμὸν τῆς χερσονήσου Κόλα, διερχομένη ἐγγὺς τοῦ ΒΔ. μυχοῦ τῆς Λευκῆς θαλάσσης καὶ φθάνουσα μὲ κατεύθυνσιν πάντοτε πρὸς Ν. μέχρι τῆς πόλεως Ζβάνκα, 120 χλμ. πρὸς Α. τοῦ Λένινγκραντ, ὅπου συναντᾷ τὴν γραμμὴν Λένινγκραντ—Βολόγκτα. Ἡ ἀρτηρία αὕτη, περατωθεῖσα μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1915 καὶ 1923, ἐξυπηρετεῖ ὁλόκληρον τὴν σοβιετικὴν Καρελίαν, τὴν Λαπωνίαν καὶ τὴν ὁμώνυμον παραλίαν τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ. Χ. Δ.

**Μουρμάνσκ**, ἢ *Μουρμὰν* (Murmansk ἢ Murman) *[Γεωγρ.]*. Κυβερνεῖον τῆς Ρωσίας ἐν τῇ περιοχῇ τῆς χερσονήσου Κόλα, ἱδρυθὲν τὸν Ἰούνιον τοῦ 1921 ἐκ τῆς παλαιᾶς ἐπαρχίας Ἀλεξανδρόφσκ τοῦ κυβερνείου Ἀρχαγγέλου. Ἔκτασις 133.947 τετρ. χλμ. καὶ κάτ. 22.920. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1927 τὸ κυβερνεῖον ὑπήχθη εἰς τὴν τότε ἱδρυθεῖσαν μεγάλην διοίκησιν Λένινγκραντ.

—**Μουρμάνσκ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Β. Ρωσίας κειμένη ἐντὸς τοῦ κόλπου τῆς Κόλας ἐπὶ τοῦ Βορείου Παγωμένου ὠκεανοῦ, ἀφετηρία τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς *Μουρμὰν* καὶ πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου κυβερνείου (1921—1927). Ἱδρύθη τῷ 1915, ὅτε ἤρξατο ἡ κατασκευὴ τῆς γραμμῆς Μουρμάν, ὠνομάζετο κατ' ἀρχὰς *Καταρινενχάφεν* (= λιμὴν Αἰκατερίνης) καὶ εἶναι ἀξιόλογον ἁλιευτικὸν κέντρον. Κάτ. (1926) 8.777. Χ. Δ.

**μουρμούρα** (ἡ)· δημοτ., μεμψιμοιρία, γογγυσμός, παράπονον: «ἄρχισε πάλι τὶς μουρμοῦρες»· || μετωνυμ. μεμψίμοιρος, παραπονιάρης: «εἶσαι μιὰ μουρμούρα» (ἐκ τοῦ *μουρμουρίζω* ἀναδρομικῶς).

**Μούρμουρης**, ἢ *Μόρμορης*. Ἀρχοντικὴ κρητικὴ οἰκογένεια, τῆς ὁποίας εἷς κλάδος μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς νήσου ὑπὸ τῶν Τούρκων μετηνάστευσεν εἰς Ἑπτάνησον, ἕτερος δὲ ἐξισλαμίσθη. Ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης κατήγετο ὁ *Ἰωάννης Μούρμουρης*, ὅστις ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Ἰταλίᾳ καὶ διεκρίθη ὡς δικηγόρος. Εἰς αὐτὸν ἀφιέρωσεν ὁ Γεώργιος Χορτάτσης τὴν «Ἐρωφίλην». ΕΡ. Μ.

**μουρμούρης** (ὁ)· δημοτ., μεμψίμοιρος, παραπονιάρης, γρυνιάρης: «ὁ μουρμούρης δὲ μ' ἀφίνει ἥσυχο μὲ τὰ παράπονά του» (ἐκ τοῦ *μουρμουρίζω* ἀναδρομικῶς).

**Μουρμούρης**. Παρωνύμιον τοῦ ἀγωνιστοῦ Δράκου Βασιλείου (βλ. λ.).

**μουρμουρητὸ** (τό). δημοτ., ἄλλως *μουρμούρισμα* (βλ. λ.).

**μουρμουρίζω**· δημοτ., κάμνω μούρ-μούρ, ὁμιλῶ χαμηλῇ τῇ φωνῇ, ψιθυρίζω, ἀρχ. *μορμύρω*: «ἦρθε καὶ κάτι μοῦ μουρμούρισε 'ς τ' αὐτί»· || μεμψιμοιρῶ, παραπονοῦμαι, γογγύζω: «διαρκῶς μουρμουρίζει» (ἐκ τοῦ ἀρχ. *μορμύρω*).

**μουρμούρισμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουρμουρίζω, ψίθυρος, συγκεχυμένη ὁμιλία: «ἀκούω ἕνα μουρμούρισμα»· || μεμψιμοιρία, παράπονο, γογγυσμός: «δὲν τ' ἀφίνεις τὰ μουρμουρίσματα».

**Μουρνὲ** (ἡ) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἁγίου Βασιλείου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 522. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**Μοῦρνερ** (Murner), *Θωμᾶς*. Γερμανὸς ποιητὴς (1475—1537), εἷς τῶν σημαντικωτέρων τῆς ἐποχῆς του. Ἔγραψε τὰ περίφημα σατιρικὰ ἔργα: «Ἡ συνωμοσία τῶν μωρῶν», «Ἡ συντεχνία τῶν πανούργων», εἰς τὰ ὁποῖα μαστίζει τὰς προλήψεις, τὰ ἐλαττώματα καὶ τὰς μωρίας τῶν συγχρόνων, «Ὁ μύλος τοῦ Σβιντελσχάϊμ», «Gäuchmatt» (=ὁ λειμὼν τῶν βλακῶν), εἰς τὸ ὁποῖον σατιρίζει τοὺς ἐξαπατω-

*Βαρθ. Μουρίλλο: Ἅγιος Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής.*
[Μουσεῖον τῆς Ἱστορίας τῆς Τέχνης ἐν Βιέννῃ.]

Digitized by Google

μένους συζύγους κ.ἄ. Κατὰ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ρόϋχλιγκ ἐναντίον τῶν δομινικανῶν ὁ Μποῦρνερ ἐτάχθη ὑπὲρ τῶν ἀνθρωπιστῶν, ἀλλ' ἀντέδρασεν εἰς τὸ σχίσμα τοῦ Λουθήρου. Α. Δ.

**μουρνιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μορέα ἡ λευκή*.

**Μουρνιὰ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πύργου τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 141. Ε. Γ.

**Μουρνιὲς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ δήμου Χανίων τῆς ἐπαρχίας Κυδωνίας τοῦ νομοῦ Χανίων. Κεῖται 3 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πόλεως, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτῆς ὁδοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.002. Εἶναι πατρὶς τοῦ Ἐλευθερίου Βενιζέλου. Χ. Δ.

— *[Ἱστορ.]* Εἰς τὸ χωρίον *Μουρνιὲς* συνεκεντρώθησαν τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1833 ἑπτακισχίλιοι ἄοπλοι, οἵτινες ὑπέβαλον πρὸς τὸν διοικητὴν τῆς Κρήτης καὶ τοὺς προξένους τῶν Προστατίδων Δυνάμεων ἀναφοράν, παραπονούμενοι διὰ τὴν ἐπιβληθεῖσαν βαρεῖαν φορολογίαν καὶ τὰς πιέσεις τῆς διοικήσεως. Ὁ διοικητὴς Μουσταφᾶς πασᾶς ἀποστείλας ἰσχυρὸν τμῆμα στρατοῦ διεσκόρπισε τοὺς συγκεντρωθέντας καὶ συνάμα συλλαβὼν 30 περίπου ἐξ αὐτῶν ἀπηγχόνισεν ἀπὸ τῶν δένδρων. Ν. ΚΛΣ

— **Μουρνιὲς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βιάνου τοῦ νομοῦ Λασηθίου, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 332. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγεται καὶ τὸ χωρίον *Μῦθοι*. Ν. ΚΛΣ

**μοῦρνο** (τό)· ἰδιωμ. Κρήτ., τὸ μοῦρον, ὁ καρπὸς τῆς μορέας. Ι. Δ Μ.

**Μουρνοπέρβολα** *[Γεωγρ.]*. Οὕτω καλοῦνται τὰ δύο ἱστορικὰ προάστεια Χανίων τῆς Κρήτης, *Μουρνιὲς* καὶ *Περβόλια* (βλ. τὰς λ.).

**μουρνόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βατράχιον τὸ βραχύφυλλον*.

**μουρντάρεμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μουρνταρεύω*: ρύπανσις, λέρωμα: «τὸ μουρντάρεμά της δὲν υποφέρεται» ‖ μεταφ., ἔγκλημα, κλοπή, κατεργαριά: «κάποιο μουρντάρεμα ἔγινε ἐδῶ μέσα», «ἄρχισε τὰ μουρνταρέματα».

**μουρνταρεύω**· ρυπαίνω, λερώνω: «μουρντάρεψε τὰ ροῦχά του» ‖ παρεκτρέπομαι, μεταβάλλω διαγωγὴν ἐπὶ τὰ χείρω: «εἶναι τώρα λίγος καιρὸς ποῦ τὰ μουρντάρεψε».

**μουντάρης** (ὁ), —*άρα*, —*ικο*· ὁ μὴ τηρῶν καθαριότητα, ρυπαρός, λεριάρης: «ἡ ὑπηρέτριά μου εἶναι μουρντάρα» ‖ μεταφ., ὁ παρεκτρεπόμενος, ὁ μὴ καλῆς διαγωγῆς, ἄσεμνος, κλέπτης κττ.: «ἄρχισε καὶ γίνεται μουρντάρης», «μὴν τὸν βάλῃς 's τὸ σπίτι σου γιατὶ εἶναι μουρντάρης» (ἐκ τοῦ τουρκοπερσ. *μουρντάρ*).

**Μουρ(ν)τάρι** ***Σπήλιο*** *[Γεωγρ.]*. Οὕτω καλεῖται σπήλαιον τῆς ἐπαρχίας Σελίνου ἐν Κρήτῃ, εἰς τὸ ὁποῖον κατέφυγε μετὰ τὴν λῆξιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1866 ὁ Κ. Κριάρης μετά τινων πολεμιστῶν, μὴ θέλων νὰ ὑποταχθῇ καὶ προσπαθῶν νὰ σωθῇ εἰς τὴν Ἑλλάδα. Ἀνακαλυφθέντος τοῦ σπηλαίου ἠναγκάσθη νὰ ἐξορμήσῃ, ἀλλὰ τραυματισθεὶς ἐν συμπλοκῇ συνελήφθη. Γ. Ε.

**Μουρντοβὰν** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος καὶ ὅρμος τῆς χερσονήσου τῆς Δωρίδος, κατέναντι τῆς Κῶ καὶ ΒΑ. τοῦ Τριοπίου (Κάβο Κριὸς) ἀκρωτηρίου (πλάτ. 36°46′ Β., μῆκ. 27°30′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1664: The gulfs of Kos, Doris and Symi). Σ. Ε. Λ.

**μοῦρο** (τό)· ὁ καρπὸς τῆς μορέας, μόρον· ‖ εἶδος καρκινώματος ὁμοιάζοντος πρὸς τὸ μοῦρο: «ἔβγαλε τὸ μοῦρο».

***Βαρθ. Μορίλλο****: Τὸ κολάτσισμα.*

[Πινακοθήκη Μονάχου.]

— **μοῦρο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ποτήριον τὸ ἀκανθωτόν*.

**Μοῦρο** (Muro) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τῆς Κορσικῆς (πλάτ. 41° 43′ Β., μῆκ. 8° 42′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 429: Capo Feno to Lava) εἰς τὰ πρόσγεια τοῦ Αἰακείου. Σ. Ε. Λ.

**Μοῦρο Λουκάνο** (Muro Lucano) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ, τῆς Ποτέντσας, παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ ποταμοῦ Καλόρε. Κάτ. 6.996. Ἔχει ναοὺς τοῦ ΙΒ′ καὶ ΙΔ′ αἰῶνος καὶ φρούριον, ἐν τῷ ὁποίῳ τῷ 1382 ἐφονεύθη κατὰ διαταγὴν τοῦ Καρόλου Γ′ ἡ Ἰωάννα τῆς Νεαπόλεως. Ὑπέστη καταστροφὰς κατὰ τοὺς σεισμοὺς τοῦ 1694 καὶ 1857. Εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως ὑπάρχουν ἐρείπια πελασγικῶν τειχῶν. Μ. Δ. Β.

**Μοῦρομ** (Murom) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κεντρικῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Βλαντιμίρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Ὄκα, δεξιοῦ παραποτάμου τοῦ Βόλγα. Ἔχει μουσεῖον καὶ βιολογικὸν σταθμόν, διεξάγει δὲ ἐμπόριον σιτηρῶν, μετάλλων, ξυλείας, σακχάρεως, τείου καὶ ἅλατος. Κάτ. (1926) 22.621. Ἦτο παλαιότερον κέντρον τοῦ ἀρχαίου φιννικοῦ λαοῦ τῶν Μουρόμα καὶ εὑρίσκετο κατὰ τὸν ΙΑ′ αἰῶνα εἰς μεγάλην ἐμπορικὴν ἀκμήν. Ἀπὸ τοῦ ΙΑ′ αἰῶνος μέχρι τοῦ 1353, ὁπότε προσηρτήθη εἰς τὸ Βλαντιμίρ, ἀπετέλει αὐτόνομον ἡγεμονίαν. Χ. Δ.

**Μουρόμετς, Ἠλίας**. Ἥρως ρωσικῶν ραψῳδιῶν (βλ. λ. *Ἠλίας* Μουρόμετς).

**μουρομοντίτης** (ὁ) (Muromontit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν τῆς ὁμάδος τοῦ ζωϊσίτου καὶ ἐπιδότου. Εἶναι πολυπυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀσβεστίου μετὰ σιδήρου, δημητρίου καὶ ὑδρογόνου, ἔχον τὸν χημικὸν τύπον $H(Ca\ Fe)_2\ (Al\ Ce)_8\ Si_8\ O_{18}$, ἀποτελεῖ δὲ παραλλαγὴν τοῦ ὀρθίτου ἀκάθαρτον καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὸ Mauersberg παρὰ τὴν Marienberg ἐν Σαξωνίᾳ. Γ. Β.

**Μουρόμτσεβ** (Mouromtsev), ***Σέργιος Ἀντρέγιεβιτς***. Ρῶσος νομομαθὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1850. Νεώτατος διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Μόσχας, τοῦ ὁποίου ἐγένετο καὶ πρύτανις. Ἀπολυθεὶς ἐπὶ κυβερνήσεως Ἀλεξάνδρου τοῦ Γ′ προσελήφθη ὡς ἀρχισυντάκτης τοῦ «Νομικοῦ ἀγγελιαφόρου», παυθέντος τῷ 1892 λόγῳ τῶν φιλελευθέρων αὐτοῦ τάσεων. Τῷ 1906 ὁ Μουρόμτσεβ ἐξελέγη πρόεδρος τῆς πρώτης ρωσικῆς βουλῆς. Ἔγραψε σειρὰν ἀξιολόγων ἔργων, σχετικῶν πρὸς τὸ ἀστικὸν δίκαιον. Α. Δ.

**Μοῦρος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπισημότατον ἀκρωτήριον τῆς νοτίας ἀκτῆς τῆς Κρήτης καὶ κατὰ τὸ δυτικὸν αὐτῆς ἥμισυ, χωρίζον ἀμφιδύμως τοὺς ὅρμους τοῦ Φοίνικος ἐκ δυσμῶν του καὶ τὸν Σφακιανὸν (ἢ Λουτρό: πλάτ. 35° 11′ Β., μῆκ. 24° 01′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536 a: Candia Western Portion) ἐξ ἀνατολῶν του. Σ. Ε. Λ.

**μουροτσίχλα** (ἡ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐν Λακωνίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ *σπίζης τῆς ἀκανθίδος* (Fringilla cannabina). Εἶναι μικρὸν πτηνὸν κοινότατον καὶ πασίγνωστον. Ἀπαντᾷ ἀπὸ τῆς Νορβηγίας μέχρι τῆς Μεσογείου, παραμένον καὶ κατὰ τοὺς βαρεῖς χειμῶνας εἰς τὰς βορείας χώρας. Συχνότατον πτηνὸν ἐν Ἑλλάδι, ἐμφανιζόμενον ἀπὸ τοῦ Νοεμβρίου μέχρι τῶν μέσων ἢ τέλους Μαρτίου εἰς τὴν Πελοπόννησον, τὰς νήσους καὶ τὴν Στερεὰν καὶ διαιτώμενον εἰς τοὺς ἀγροὺς ἐν ἀναστροφῇ μετὰ τῶν ἄλλων συγγενῶν τοῦ γένους του. Περὶ τὸ τέλος τοῦ Μαρτίου ἀνέρχεται εἰς τὰ βορειότερα τῆς χώρας μέρη, καταφεῦγον εἰς τὰ προβούνια καὶ τὰ κράσπεδα τῶν δασῶν της, ἔνθα φωλεοποιεῖ καὶ νεοττοποιεῖ. Κατὰ τὴν πρόοδον τῶν ἐτῶν τῆς ἡλικίας του μεταλλάσσει οὐσιωδῶς τὸν χρωματισμόν του. Τὸ προκεχωρημένον τὴν ἡλικίαν ἄρρεν εἶναι κινναμόχρουν τὸ πτέρωμα, λευκόφαιον τὴν κεφαλὴν καὶ τὸν αὐχένα, ὑσγινον πρὸς τὸ ἐρυθρὸν εἰς τὸ στῆθος καὶ τὴν κορυφὴν τῆς κεφαλῆς καὶ μὲ ὑπόλευκα καὶ καστανόχροα στίγματα εἰς τὸν λαιμόν. Τὰ θήλεα καὶ οἱ νεοσσοὶ στεροῦνται τοῦ ἐρυθροῦ χρώματος· ἄνωθεν εἶναι καστανόχροα μὲ κιτρινωπὰ ἄκρα τῶν πτερῶν καὶ μελανοχρόους κηλῖδας εἰς τὰ στελέχη αὐτῶν καὶ κάτωθεν κιτρινόλευκα μὲ μελανόχροα κατὰ μῆκος στίγματα. Τρώγει σπορίδια, ζιζάνια, ἔντομα, ἀποβαῖνον ὠφελιμώτατον εἰς τὴν γεωργίαν, οὗ ἕνεκα ἀπαγορεύεται ἥ τε δίωξις καὶ ἡ σύλληψίς του ὑπὸ τῶν κειμένων ἐν Ἑλλάδι περὶ θήρας διατάξεων. Εἶναι πτηνὸν ζωηρόν, εὔχαρι, φαιδρόν, εὐάγωγον, ἱκανὸν πρὸς τῷ εὐχαρίστῳ καὶ ἐπιμελεῖ κελαδήματί του ν' ἀπομιμῆται καὶ ἄλλας μελῳδίας. Ὡς ἐκ τούτου, παρὰ μὲν τοῖς ἀρχαίοις ἐπωλεῖτο ἐν ταῖς ἀγοραῖς, καὶ τανῦν, ὡς ἐκ τῆς εὐχαρίστου φωνῆς του, ἀποτελεῖ κόσμον τῶν αἰθουσῶν τῶν οἰκιῶν. Φ. Δ. Γ.

**Μουρούζης**. Ὄνομα ἀρχαίας βυζαντινῆς καὶ φαναριωτικῆς οἰκογενείας ἥτις κατέφυγε, μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Λατίνων (1204), μετὰ τοῦ Ἀλεξίου Κομνηνοῦ Δούκα εἰς Τραπεζοῦντα, ἔνθα ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος τούτου ἡ αὐτοκρατορία τῆς Τραπεζοῦντος. Ἡ οἰκογένεια Μουρούζη ἵδρυσεν, ὡς ἀναφέρεται ὑπὸ πλείστων ἱστορικῶν, τὸ προάστειον Μουρούζ, εἰς ὃ κατῴκησε μέχρι τοῦ 1665. Συνεδέθη διὰ συγγενικῶν δεσμῶν μετὰ τῆς αὐτοκρατορικῆς οἰκογενείας Τραπεζοῦντος, καθ' ὅσον εἷς Μουρούζης ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα τοῦ τελευταίου αὐτοκράτορος Δαβίδ. Ἡ οἰκογένεια αὕτη ἀναφαίνεται πάλιν τῷ 1665, ὅτε ὁ *Ἀντίοχος Μουρούζης* ἐγκατεστάθη ἐν Βυθίῃ τοῦ Βοσπόρου καὶ ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ φαναριωτικοῦ κλάδου, ἐκ τοῦ ὁποίου προῆλθον πλεῖστοι Μουροῦζαι διαπρέψαντες καὶ καταλαβόντες ἀνώτατα ἀξιώματα. Μεταξὺ τῶν μελῶν τῆς οἰκογενείας ταύτης ὁ Ἀθανάσιος Κομνηνὸς Ὑψηλάντης ἀναφέρει τὴν *Μαρίαν*, ὡς οἰκοδομήσασαν τὴν ἐν Τραπεζοῦντι περίφημον μονὴν τῆς Παναγίας Σουμελᾶ. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς Τουρκοκρατίας, πλὴν τοῦ Ἀντιόχου, ἀναφέρονται ὁ *Ἀδάμ*, νυμφευθεὶς τὴν ἐγγόνην τοῦ περιωνύμου Παναγιωτάκη Νικούση, τοῦ πρώτου Ἕλληνος ὅστις ἔλαβε τὸ ἀξίωμα τοῦ μεγάλου διερμηνέως τῆς Ὑψηλῆς Πύλης, οἱ υἱοί του: *Ἰωάννης*, χρηματίσας μέγας ποστέλνικος τῆς Βλαχίας (1776 — 1783) καὶ ἀπελαθεὶς εἰς Ρόδον· ὁ *Ματθαῖος*, γενόμενος πρωτοσύγκελλος τοῦ οἰκουμενικοῦ πατριαρχείου τῷ 1775· ὁ *Ἀλέξανδρος*, διατελέσας μέγας διερμηνεύς, καὶ πλεῖστοι ἄλλοι. Θ. Β.

Digitized by Google

— **Μουρούζης *Ἀλέξανδρος*.** Ἕλλην ἡγεμὼν τῆς Μολδαυΐας καὶ τῆς Βλαχίας, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1746, ἄγνωστον δὲ πότε ἀποβιώσας. Ἐξεπαιδεύθη ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἐγένετο εἰδήμων πλείστων εὐρωπαϊκῶν καὶ ἀσιατικῶν γλωσσῶν. Ἦτο, ὡς λέγει ὁ Σταματιάδης εἰς τὰς «*Βιογραφίας τῶν μεγάλων διερμηνέων*», «βα-

*Ἀλέξανδρος Μουρούζης, ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας.*

θύφρων, νουνεχής, ἐπιστήμων, χρηστότητι τρόπων καὶ θεοσεβείᾳ σεμνυνόμενος, πρὸς δὲ λίαν ἐξησκημένος πρὸς τὴν πολιτικήν, διὸ ἀπελάμβανε μεγίστης ὑπολήψεως παρὰ τοῖς Τούρκοις». Γενόμενος μέγας διερμηνεὺς τῆς Ὑψηλῆς Πύλης, ἀπεστάλη ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Τουρκίας εἰς Γαλάζιον, ὅπως διαπραγματευθῇ μετὰ τῶν Ρώσων τὴν συνθήκην εἰρήνης ὑπογραφεῖσαν τὴν 11 Αὐγούστου 1796, εἰς τὸν Μουρούζην δὲ κατὰ μέγα μέρος ὀφείλεται ἡ συνομολόγησις τῆς εἰρήνης ταύτης. Ὁ σουλτᾶνος ἀμείβων τὰς ἐπιτυχίας του, ἀνηγόρευσεν αὐτὸν ἡγεμόνα τῆς Μολδαυΐας κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος. Οὗτος ἐπέφερε τάξιν εἰς τὴν ἀνάστατον χώραν, ἵδρυσεν εἰς τὴν πρωτεύουσαν αὐτῆς Ἰάσιον τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Σπυρίδωνος, τὴν ἑλληνικὴν σχολήν, προσελκύσας πλείστους τῶν διδασκάλων τοῦ Γένους, μέγα νοσοκομεῖον, ἐκαλλώπισε τὴν πρωτεύουσαν ὑδρεύσας ἀφθόνως αὐτὴν καὶ ἀφῆκε τὰς ὡραιοτέρας ἀναμνήσεις εἰς τὴν Μολδαυΐαν. Μετατεθεὶς τῷ 1793 εἰς τὴν ἡγεμονίαν Βλαχίας, διῴκησε μετ' ἄκρας πραότητος καὶ δικαιοσύνης, ὡς οὐδεὶς ἄλλος τῶν ἡγεμόνων. Αἱ ἀγαθαὶ ἀναμνήσεις, ἃς ἀφῆκεν ὁ Μουρούζης, ἠνάγκασαν τὴν Πύλην νὰ διορίσῃ αὐτὸν αὖθις ἡγεμόνα τῆς Βλαχίας τῷ 1799, ὅτε, ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ ἀνταρσία τῶν Πεσβάνογλου, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ διαγωγὴ τῶν σουλτανικῶν στρατευμάτων, ἅτινα ἐβάδιζον πυρπολοῦντα καὶ καταστρέφοντα, εἶχον ἐρημώσει τὴν χώραν. Παραιτηθεὶς ἐπέστρεψεν εἰς Κωνσταντινούπολιν. Δὲν ὑπῆρξεν ὅμως αὕτη ἡ τελευταία ἡγεμονία τοῦ Μουρούζη, πεντάκις διορισθέντος καὶ τρὶς ἡγεμονεύσαντος. Ὁ Κούμας μνημονεύει ὅτι ἡγεμόνευσε τῷ 1803, ὅτε οἱ Ρῶσοι, διαβάντες τὸν Δούναβιν, εἰσῆλθον εἰς τὰς ἡγεμονίας. Ὅτε ἡ Τουρκία, ὑποκινουμένη ὑπὸ τῆς Γαλλίας, ἐκήρυξε κατὰ τῆς Ρωσίας πόλεμον (1806), ὁ Μουρούζης ἀπελύθη ὡς ρωσίζων, ἔκτοτε δὲ οὐδὲν ἀναφέρεται περὶ αὐτοῦ. θ. β.

— **Μουρούζης, *Ἀλέξανδρος*.** Ἕλλην πρωθυπουργὸς ἐν Ρουμανίᾳ, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἰταλίᾳ τῷ 1873. Ἦτο υἱὸς τοῦ καρατομηθέντος μεγάλου διερμηνέως *Κωνσταντίνου Μουρούζη*, διέπρεψε δὲ ὡς ἀνθρωπιστὴς καὶ εὐφυὴς πολιτικός. θ. β.

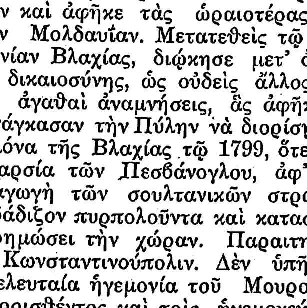

*Ἀλέξανδρος Μουρούζης.*

— **Μουρούζης, *Γεώργιος*.** Μέγας διερμηνεὺς τῆς Ὑψηλῆς Πύλης, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1771 καὶ φονευθεὶς ἐν Κύπρῳ τὴν 7 Ἀπριλίου 1793. Τριτότοκος υἱὸς τοῦ ἡγεμόνος *Κωνσταντίνου Μουρούζη*, ἦτο κάτοχος πολλῶν εὐρωπαϊκῶν καὶ ἀσιατικῶν γλωσσῶν. Διατρίβων ἐν Ἰασίῳ παρὰ τῷ γενικῷ στρατηγείῳ, διωρίσθη τῷ 1792 μέγας διερμηνεὺς τῆς Πύλης. Ἐπιστρέψας εἰς Κωνσταντινούπολιν περιῆλθεν εἰς ἔριδας πρὸς τὸν ἀρχιναύαρχον τοῦ σουλτάνου Χουσεΐν πασᾶν, κατατυραννοῦντα τοὺς Χριστιανούς, ἐξωρίσθη εἰς Κύπρον καὶ ἐσφάγη κατ' ἐντολὴν τοῦ σουλτάνου. θ. β.

— **Μουρούζης, *Γεώργιος*.** Ἕλλην ἀξιωματικὸς τοῦ ἑλληνικοῦ καὶ ρωσικοῦ στρατοῦ, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1863 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1907. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ στρατιωτικῇ σχολῇ τοῦ Βελγίου καὶ διεκρίνετο ἐπὶ ἀνδρείᾳ. Περατώσας τὰς σπουδάς του κατετάχθη ἐν Γαλλίᾳ εἰς τὴν φάλαγγα τῶν Ξένων καὶ ὑπηρέτησεν ἐν Ἀλγερίᾳ. Μετέσχε κατόπιν τῆς Κρητικῆς ἐπαναστάσεως τῷ 1897 καὶ εἶτα τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου τοῦ αὐτοῦ ἔτους. Ἰδιόρρυθμος τύπος, ἐγένετο ἥρως διαφόρων ἐπεισοδίων, ἅτινα κατέστησαν αὐτὸν θρυλικὸν παρὰ τῷ λαῷ, ἐχρησίμευσε δὲ ὡς ἥρως λαϊκῶν μυθιστορημάτων. Παραιτηθεὶς τῶν τάξεων τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ καὶ συνδεόμενος μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Ρωσίας Νικολάου Β', κατετάχθη εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν εἰς τὸ σῶμα τῶν οὐσάρων τῆς αὐτοκρατορικῆς φρουρᾶς, μετέσχε δὲ τοῦ Ρωσοϊαπωνικοῦ πολέμου (1905) καὶ διακριθεὶς εἰς τὴν μάχην τοῦ Μοῦκδεν προήχθη εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου. Μετὰ τὴν ἀτυχῆ ἔκβασιν τοῦ πολέμου ἐκείνου παρῃτήθη καὶ διέτριβεν εἰς Παρισίους, ὅπου, ἄγνωστον ὑπὸ ποίου, ἐδολοφονήθη. θ. β.

*Γεώργιος Μουρούζης.*

— **Μουρούζης, *Δημήτριος*.** Ἕλλην μέγας διερμηνεὺς τῆς Ὑψηλῆς Πύλης, υἱὸς τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας *Ἀλεξάνδρου Μουρούζη*, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1768 καὶ καρατομηθεὶς τῷ 1812. Τὸν ἄνδρα τοῦτον ὁ μὲν Σταματιάδης ἀνομολογεῖ ἔμπειρον περὶ τὰ πολιτικὰ καὶ εἰδήμονα πλείστων εὐρωπαϊκῶν καὶ ἀσιατικῶν γλωσσῶν, ὁ δὲ Οἰκονόμος ὁ ἐξ Οἰκονόμων «οὐδέποτε, λέγει, φυτὸν λογικόν, οὐδ' ἐβλάστησε παρὰ τοῦτον εὐγενέστερον, οὐδ' ἐκαλλιεργήθη φιλοπονώτερον, οὐδ' ἀνέδραμεν εὐθύτερον καὶ εὐθαλέστερον, οὐδ' ἐστεφανώθη πρωϊμώτατα κάλλει ἀνθέων καὶ καρπῶν». Τοιαύτας κεκτημένος ἀρετὰς διωρίσθη ὁ Δημήτριος Μορούζης τῷ 1808, μέγας διερμηνεὺς τῆς Ὑψηλῆς Πύλης. Προτοῦ ἀναλάβῃ τὸ ἀξίωμα τοῦτο, ὁ σουλτᾶνος Σελὴμ, εὔνους διακείμενος πρὸς τοὺς Χριστιανούς, συγκατετέθη εἰς τὴν παράκλησιν τοῦ Μουρούζη, ὅπως ἱδρυθῇ εἰς Κουροὺκ Τσεσμὲ ἡ Μεγάλη τοῦ Γένους Σχολή, πρὸς τὸν σκοπὸν ὅπως εἰσαχθῶσιν εἰς αὐτὴν αἱ ἐπιστῆμαι καὶ ἰδίως ἡ ἰατρική. Ἀλλ' ἐκθρονισθέντος τοῦ Σελὴμ, δὲν ἠδυνήθη μὲν νὰ εἰσαγάγῃ τὰς ἐπιστήμας, ἃς παρ' αὐτοῦ ἐζήτει ὁ σουλτᾶνος ἐκεῖνος, ἐφρόντισεν ὅμως νὰ προικίσῃ αὐτὴν δι' ἀφθόνων πόρων καὶ δι' ἐπιφανῶν διδασκάλων, διορίσας σχολάρχην τὸν Πρώϊον. Ἔχων ὡς ἀρχὴν ὅτι διὰ τῆς παιδείας θ' ἀνεκτᾶτο ἡ ἑλληνικὴ ἀνεξαρτησία, ἵδρυσε καὶ συνέδραμε πλεῖστα ἐκπαιδευτήρια εἰς τὰς ἐπαρχίας, δι' ὧν διεδίδετο ἡ ἑλληνικὴ παίδευσις.

Ὅταν ἀνῆλθεν εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ μεγάλου διερμηνέως, ἐκίνησε τὸν φθόνον πολλῶν, οἵτινες διέβαλον αὐτὸν εἰς τὴν Ὑψηλὴν Πύλην· δι' ὃ ἐκπεσὼν τῆς θέσεώς του, αὐτὸς μὲν ἐξωρίσθη εἰς Καισάρειαν, ἡ δὲ περιουσία του ἐδημεύθη. Ἀλλ' ἡ ἀνάγκη ἐπέβαλεν εἰς τὴν Πύλην τὴν ἀνάκλησιν αὐτοῦ. Τῷ ἀνέθεσε τότε τὰς διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Κουτούζωφ πρὸς τερματισμὸν τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου. Ἀλλ' ἡ ὑπογραφὴ τῆς εἰρήνης ἐξήγειρε κατ' αὐτοῦ τὴν ἀντιπάθειαν τοῦ πρεσβευτοῦ τῆς Γαλλίας Σεβαστιάνι, ὅστις ἐσκευώρησεν ἐναντίον του ραδιουργίας, ἡ δὲ Πύλη διέταξε τὴν σφαγὴν αὐτοῦ, ὅπως ἱκανοποιήσῃ τὰς ἀξιώσεις τοῦ Γάλλου πρέσβεως, ἥτις καὶ ἐξετελέσθη ἐν Σούμλᾳ. Καλέσας αὐτὸν ὁ Τοῦρκος ἀρχιστράτηγος, τοῦ προσέφερε τήβεννον διὰ τὰς ὑπὲρ τῆς εἰρήνης ἐνεργείας του, ἀλλ' ὡς ἐξῆλθεν, οἱ παραμένοντες εἰς τὴν εἴσοδον δήμιοι κατεκρεούργησαν αὐτόν. Καὶ τὴν μὲν κεφαλήν του ἐκόμισεν ἔκτακτος ταχυδρόμος εἰς Κωνσταντινούπολιν, τὸ δὲ διαμελισθὲν σῶμά του περισυλλέξαντες ἔθαψαν οἱ Χριστιανοί. θ. β.

— **Μουρούζης, *Κωνσταντῖνος*.** Ἕλλην ἡγεμὼν τῆς Μολδαυΐας, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1730 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1787. Ἦτο κάτοχος εὐρείας παιδείας, ἐγνώριζε δὲ τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικήν, τὴν λατινικήν, τὴν γαλλικήν, τὴν περσικήν, τὴν ἀραβικὴν καὶ τὴν τουρκικήν. Διετέλεσε μέγας ποστέλνικος τῷ 1765, εἶτα μέγας διερμηνεὺς (1774—1777). Κατὰ τὸν Ἀ. Ὑψηλάντην, φονευθέντος (6 Ὀκτωβρίου 1777) εἰς Ἰάσιον τοῦ ἡγεμόνος Ἀλεξάνδρου Γκίκα, ἐγένετο ἡγεμὼν τῆς Μολδαυΐας ὁ «δραγομάνος τῆς Πόρτας» Κωνσταντῖνος Δημητρίου Μουρούζης. Ἀναλαβὼν τὴν ἡγεμονίαν κατέγινε μεγάλως εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς γεωργίας, ὑπῆρξε δὲ ἄσπονδος ἐχθρὸς τῆς πολυτελείας, δίδων αὐτὸς τὸ παράδειγμα τῆς λιτότητος εἰς τοὺς ὑπηκόους του. Ἐπεσκέπτετο τὰ σχολεῖα, τὰ ἐργοστάσια καὶ τὰ ἐμπορικὰ καταστήματα, ἐνθαρρύνων τοὺς πάντας. Πρῶτος οὗτος ἐχαλιναγώγησε τὰς αὐθαιρεσίας τῶν βογιάρων, τινὰς τῶν ὁποίων ἐτιμώρησε διὰ θανάτου. Εἰσήγαγε πλείστας μεταρρυθμίσεις εἰς τὴν διοίκησιν καὶ ἐνίσχυσε τὴν ἑλληνικὴν ἐκπαίδευσιν. Τῷ 1782 ἐξώσθη τῆς ἡγεμονίας, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου Μαυροκορδάτου. Τῷ 1785 ὑπεγράφη διάταγμα διορισμοῦ αὐτοῦ ὡς ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας, ἀλλ' ἕνεκα ἀντιζηλιῶν δὲν ἐξετελέσθη καὶ ὁ ἰσχύων τότε Μαυρογένης κατώρθωσεν ὅπως ἐκτοπισθῇ εἰς Τένεδον, μόλις δ' ἐπιστρέψας ἐκ τῆς ἐξορίας του ἀπέθανεν ἐξ ἀποπληξίας. Ὁ Οἰκονόμος ὁ ἐξ Οἰκονόμων ἀναφέρει περὶ τοῦ Κωνσταντίνου Μουρούζη ὅτι ὑπῆρξεν εἰς ἄκρον θεοσεβὴς καὶ μεγαλόφρων. θ. β.

— **Μουρούζης, *Κωνσταντῖνος*.** Ἕλλην μέγας διερμηνεὺς τῆς Πύλης, υἱὸς δὲ τοῦ ἡγεμόνος *Ἀλεξάνδρου Μουρούζη*, γεννηθεὶς τῷ 1789 ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ καρατομηθεὶς τὴν 4 Ἀπριλίου 1821. Κατὰ τὸν Κούμαν ὑπῆρξεν οὗτος ὁ ἀγαθοφρονέστερος πάντων τῶν συγχρόνων του Φαναριωτῶν. Ἐξεπαιδεύθη ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἔχων ὡς διδάσκαλον τὸν Ζαχαρίαν Αἰνιᾶνα. Κατὰ τὸν Σταματιάδην «ἦτο γλυκὺς τοὺς τρόπους, μεγαλόφρων, γενναῖος, ἐμβριθὴς καὶ ἐγκρατὴς παιδείας οὐ σμικρᾶς καὶ γλωσσῶν εὐρωπαϊκῶν τε καὶ ἀσιατικῶν οὐκ ὀλίγων». Διωρίσθη, ἀρχομένου τοῦ 1821, μέγας διερμηνεὺς τῆς Πύλης, μετὰ μικρὸν δὲ ἐξερράγη ἡ ἐν Δακίᾳ ἐπανάστασις τοῦ Ὑψηλάντου.

Ἡ θέσις τοῦ μεγάλου διερμηνέως κατέστη δεινοτάτη, καθ' ὅσον καὶ ἡ ἐλαχίστη ἐκδήλωσις συμπαθείας πρὸς τοὺς καταδιωκομένους ὁμοεθνεῖς του ἐτιμωρεῖτο διὰ θανάτου. Ὁ σουλτᾶνος, ὡς ἐπληροφορήθη τὰ συμβάντα ἐν Δακίᾳ, θέλων νὰ ἐμπνεύσῃ τρόμον εἰς τοὺς Ἕλληνας, διέταξε τὴν κάθειρξιν καὶ εἶτα τὸν θάνατον πολλῶν ἐπιφανῶν τοιούτων. Μετὰ τὰ γεγονότα ταῦτα μεταβὰς ὁ πατριάρχης Γρηγόριος Ε' εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ μεγάλου διερμηνέως τὸν προέτρεψε νὰ φυγῇ καὶ ν' ἀφήσῃ αὐτόν, γέροντα ἤδη, νὰ πληρώσῃ τὴν ὀργὴν τοῦ τυράννου. Ὁ Μουρούζης, γνωρίζων ὅτι ἡ φυγή του ἔμελλε νὰ βεβαιώσῃ τὰς ὑποψίας τοῦ σουλτάνου περὶ τῆς συμμετοχῆς τοῦ Γένους εἰς τὴν ἐπανάστασιν, ὅτε ἤθελεν ἐπακολουθήσει γενικὴ σφαγή, ἠρνήθη νὰ πράξῃ τοῦτο: «Ἂς θυσιασθῶ ἐγώ, εἶπεν, ἀλλ' ἂς σωθοῦν οἱ ἀθῷοι». «Τότε ὁ Γρηγόριος Ε', λέγει ὁ Φιλήμων, εὐλογήσας καὶ ὁ Μουρούζης ἀσπασθεὶς τὴν ἁγίαν αὐτοῦ δεξιάν, ἐνηγκαλίσθησαν ἄφωνοι ἀλλήλους ἐπί τινας στιγμὰς καὶ ἔδωκαν τὸν τελευταῖον ἀσπασμὸν ἐπὶ τῆς γῆς μετὰ λυγμῶν καὶ δακρύων».

Τὸ τραγικὸν τέλος δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐπέλθῃ. Ὁ Φιλήμων περιγράφει δραματικώτατα τὴν σκηνὴν ταύτην. Τὴν 4 Ἀπριλίου 1821, Μεγάλην Δευτέραν, ἐνῷ ὁ Μουρούζης εὑρίσκετο πρὸ τῆς θύρας τοῦ πασᾶ Καπουσοῦ, ἄγνωστός τις ἐπέδωκεν εἰς αὐτὸν πλαστὴν ἐπιστολὴν τοῦ Ἀλεξάνδρου Ὑψηλάντου, εἰς ἣν ἀνεφέροντο τὰ κατὰ τὰς ἡγεμονίας συμβάντα, ἐνεθαρρύνετο δέ, ὡς μεμυημένος τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, εἰς τὸν ἐθνικὸν ἀγῶνα. Ἡ ἐπιστολὴ αὕτη εἶχε πλασθῇ ὑπὸ τῆς Πύλης, ὅπως ἐνοχοποιηθῇ ὁ μέγας διερμηνεύς. Ὁ Μουρούζης, ἀναβὰς εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, παρουσίασε τὴν ἐπιστολὴν καὶ ἀπέδειξε τὴν πλαστότητα αὐτῆς. Ἀλλ' ὁ θάνατός του εἶχεν ἀποφασισθῇ ἤδη. Ἐξερχόμενος τῆς αἰθούσης, ἡρπάγη ὑπὸ τῶν δημίων καὶ ἀχθεὶς εἰς τὸ Γιαλί-Κιουσκιοῦ ἐσφάγη ἐπὶ παρουσίᾳ τοῦ σουλτάνου Μαχμούτ. Ἀναβλέψας πρὸς αὐτὸν ἐφώνησε τουρκιστί: «Αἱμοβόρε ἄθλιε σουλτᾶνε· ἡ τελευταία ὥρα τῆς βασιλείας σου ἐσήμανε». Καὶ ἡ μὲν κεφαλή του κοπεῖσα προσενέχθη εἰς τὸν σουλτᾶνον, τὸ δὲ σῶμά του ἐρρίφθη εἰς τὴν θάλασσαν. Οὗτος ὑπῆρξε τὸ πρῶτον θῦμα τῆς ἐπακολουθησάσης βραδύτερον σφαγῆς.

Τὴν 6 Μαΐου 1821 ἐσφάγη καὶ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ *Νικόλαος Μουρούζης* (1791—1821), ὁ τελευταῖος Ἕλλην διερμηνεὺς τοῦ ὀθωμανικοῦ στόλου. Εὐθὺς μετὰ τὴν ἀποκεφάλισιν τοῦ ἀδελφοῦ του, ἐρρίφθη οὗτος εἰς τὰς φυλακὰς τοῦ Ταρσανᾶ σιδηροδέσμιος. Πληροφορηθεὶς ὁ σουλτᾶνος παρὰ τοῦ μεσιτεύσαντος ὑπὲρ αὐτοῦ Ντελῆ-Ἀχμὲτ-πασᾶ ὅτι ἔζη ἀκόμη, διέταξε τὸν διαμελισμὸν αὐτοῦ ἐνώπιόν του. θ. β.

— **Μουρούζης, *Κωνσταντῖνος*.** Ἕλλην πλοίαρχος τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, υἱὸς δὲ τοῦ καρατομηθέντος μεγάλου διερμηνέως τῆς Ὑψηλῆς Πύλης Κωνσταντίνου Μουρούζη. Ἐγεννήθη τέσσαρας μη-



Digitized by Google

νας μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του (1821) ἐν Ὀδησσῷ, ἔνθα εἶχε καταφύγει ἡ μήτηρ του ἐπὶ Ἰονικοῦ πλοίου, καὶ ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1876. Σπουδάσας εἰς τὴν ναυτικὴν σχολὴν τῆς Γαλλίας ἐγένετο σημαιοφόρος ἐν τῷ γαλλικῷ στόλῳ, ἐπανελθὼν δὲ εἰς τὴν Ἑλλάδα ἐβαθμολογήθη ὑπεράριθμος σημαιοφόρος (1846), προαχθεὶς τῷ 1848 εἰς πλωτάρχην καὶ ὑπηρετήσας εἰς ὀργανωτικὰς καὶ ἰδίᾳ ἐπιτελικὰς θέσεις. Προσελήφθη ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Ὄθωνος, διατελέσας δὲ ὡς τοιοῦτος μέχρι τῆς ἐκθρονίσεως αὐτοῦ, παρηκολούθησε τοὺς βασιλεῖς μέχρι Μονάχου, εἶτα δὲ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν θέσιν αὐτοῦ. Ὁ Κωνσταντῖνος Μουρούζης διεκρίθη διὰ τὰ φιλάνθρωπα αὐτοῦ αἰσθήματα, προήδρευε διαφόρων φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων, οὗτος δὲ συνέστησε τὴν «Σκοπευτικὴν Ἑταιρείαν», τῆς ὁποίας προήδρευσε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἐνυμφεύθη τὴν Ἑλένην Μαυρομιχάλη, ἐγγόνην τοῦ Πετρόμπεη καὶ θυγατέρα τοῦ στρατηγοῦ Ἀναστασίου Μαυρομιχάλη. Θ. Β.

*Κωνσταντῖνος Κ. Μουρούζης*

**—Μουρούζης, *Παναγιώτης*.** Ἕλλην μέγας διερμηνεύς, υἱὸς τοῦ ἡγεμόνος *Κωνσταντίνου Μουρούζη*, γεννηθεὶς τῷ 1769 ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ καρατομηθεὶς τῷ 1812. Διορισθεὶς μέγας διερμηνεὺς τοῦ στόλου, περιέπεσεν εἰς τὴν δυσμένειαν τοῦ σουλτάνου Μαχμούτ, ὡς συντελέσας εἰς τὴν μετὰ τῆς Ρωσίας συνθήκην τοῦ Βουκουρεστίου, ἐξ οὗ καὶ ἀπεκεφαλίσθη. Θ. Β.

**—Μουρούζης, *Παναγιώτης*.** Ἕλλην ἀξιωματικὸς τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἀποθανὼν ἐν Βιέννῃ τῷ 1859 φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον ἀρχηγὸς τῶν ἑλληνικῶν σωμάτων, μετέσχεν ὅλων τῶν μαχῶν καὶ ὑπέστη τὰ δεινὰ τῆς πολιορκίας τῆς Σεβαστουπόλεως, ἀπέθανε δ' ἐκ τῆς πληγῆς, ἣν ἔλαβεν εἰς τὴν μάχην τοῦ Μαλακώφ. Θ. Β.

*Παναγιώτης Μουρούζης.*

**μουρούνα** (ἡ) *[Ζῳολογ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἰχθύος *γάδος ὁ ὀνίσκος*.

**μουρουνέλαιον** (τὸ) (Oleum Jecoris Aselli) *[Φαρμακογν.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ ἐκ τοῦ προσφάτου ἥπατος διαφόρων εἰδῶν τοῦ γάδου τοῦ ὀνίσκου (Gadus Morrhua) λαμβανόμενον λιπαρὸν ἔλαιον. Ἡ παρασκευή του γίνεται ἐκ τοῦ ἥπατος τῶν ἰχθύων τούτων, ὅπερ τέμνεται εἰς μικρὰ τεμάχια, ἅτινα ρίπτονται εἰς μεγάλους ξυλίνους κάδους καὶ ὑποβάλλονται εἰς ἐλαφρὰν ζύμωσιν, ὑποβοηθουμένην διὰ τῶν ἡλιακῶν ἀκτίνων, εἰς τὰς ὁποίας ἐκτίθενται. Τὸ ἐπ' αὐτῶν ἐπιπλέον ἔλαιον μεταγγίζεται καὶ ἀκολούθως ἐκθλίβονται τὰ τεμάχια τοῦ ἥπατος δι' ὑδραυλικῶν πιεστηρίων. Τελειοτέρα ἐξαγωγὴ τούτου γίνεται διὰ θερμάνσεως δι' ἀτμοῦ τῶν τεμαχίων τοῦ ἥπατος παρουσίᾳ ὑδρογόνου ἢ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος ἐντὸς μεγάλων ὑποδοχέων, πρὸς ἀποφυγὴν τῆς αὐτοξειδώσεως καὶ ἀκολούθως δι' ἐκθλίψεως αὐτῶν δι' ὑδραυλικῶν μηχανῶν εὑρισκομένων ἐντὸς αὐτῶν τῶν πλοίων τῶν ἐπιδιδομένων εἰς τὴν ἁλιείαν τοῦ ὀνίσκου. Δέον νὰ σημειωθῇ ὅτι τὸ οὕτω παρασκευαζόμενον ἔλαιον πρέπει νὰ ἀφεθῇ ἐπί τινα χρόνον ἤρεμον, κατόπιν δὲ μεταγγίζεται ἐντὸς βαρελίων ἢ ἄλλων δοχείων καὶ ἐξάγεται εἰς τοὺς λιμένας Μασσαλίας, Χάβρης, Λονδίνου, Ἀμβούργου. Τὰ διάφορα εἴδη τοῦ μουρουνελαίου ταξινομοῦνται ἐμπορικῶς ἀναλόγως τοῦ τρόπου τῆς παρασκευῆς των εἰς πλείστας κατηγορίας, ὡς ἔλαιον λευκόν, ὠχρόν, χρυσίζον, φαιόν, κιτρινόφαιον, ἀνοικτῶς φαιόν.

Ἐκτὸς τούτων φέρονται καὶ τὰ ἔλαια τὰ λευκανθέντα διὰ χημικῶν μεθόδων, ὡς ἐπίσης καὶ ἔλαια πρώτης, δευτέρας καὶ τρίτης ἐκθλίψεως. Τὰ διάφορα εἴδη τοῦ μουρουνελαίου ταξινομοῦνται ἐπίσης καὶ ἀναλόγως τῶν λιμένων ἐξαγωγῆς, ὡς: ἔλαιον νορβηγικόν, γαλλικὸν κτλ. Αἱ κυριώτεραι ὅμως καὶ μᾶλλον πεφημισμέναι ἀγοραὶ εἶναι: τῆς Νέας Γῆς, τοῦ Λαβραδόρ, τῶν νήσων Laffoden κ. ἄ. Τὸ μουρενέλαιον εἶναι ἐλαιῶδες διαυγὲς ὑγρόν, ὠχροκίτρινον ἢ χρυσοκίτρινον, ἐλαφρῶς ὄξινον, ἀσθενοῦς ὀσμῆς εἰδικῆς καὶ γεύσεως ἐλαιώδους, δυσαρέστου διὰ τοὺς πλείστους. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 0,92—0,93 καὶ δὲν πρέπει νὰ στερεοποιῆται εἰς θερμοκρασίαν μέχρι —15°, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ ἄλλα ἔλαια. Τὸ μουρουνέλαιον νοθεύεται δι' ἐλαίων διαφόρων ἰχθύων, ἅτινα ὅμως ἔχουν διαφόρους φυσικοχημικὰς σταθεράς. Ἐπίσης καὶ τὸ ἔλαιον τῆς βαζελίνης χρησιμοποιεῖται πρὸς νοθείαν αὐτοῦ. Τὸ μουρουνέλαιον περιέχει: 70 % τριελαΐνην, 23% τριπαλμιτίνην, ἴχνη τριστεαρίνης, ὡς ἐπίσης καὶ τριγλυκερίδια τοῦ ὀξικοῦ, βαλεριανικοῦ, γαδινικοῦ, καπρινικοῦ καὶ ἀσελλικοῦ ὀξέος. Ἐπίσης περιέχει χοληστερίνην, λιπόχρωμα, ἴχνη ἰωδίου (0,02—0,03 %), βρωμίου (0,03—0,04 %), χλωρίου, φωσφόρου καὶ θείου ὀργανικῶς ἡνωμένων, ἴχνη ἀμμωνίας, τριμεθυλαμίνην, βουτυλαμίνην, ἀμυλαμίνην, ἐξυλαμίνην, ἀσελλίνην, γεκορίνην, μορρουΐνην κλπ. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη εὑρέθη ὅτι τὸ μουρουνέλαιον περιέχει μεγάλην ποσότητα βιταμινῶν Α καὶ Δ καὶ μάλιστα τῆς βιταμίνης Α, ὑπερβάλλον ὡς πρὸς τοῦτο ἁπάσας τὰς μέχρι τοῦδε ἐρευνηθείσας φυτικὰς καὶ ζῳϊκὰς οὐσίας. Ἡ θεραπευτικὴ ἐνέργεια τοῦ μουρουνελαίου ἀπεδίδετο παλαιότερον εἰς τὰς ἰωδιούχους ἑνώσεις του, τὰς φωσφορούχους καὶ εἰς τὴν θρεπτικὴν του δύναμιν, διότι τὸ ἔλαιον γαλακτωματοποιεῖται εὐχερέστατα καὶ ὀξειδοῦται, ὥστε εἰσαγόμενον εἰς τὸν ὀργανισμὸν ἀπορροφεῖται ταχέως καὶ καίεται εὐχερῶς. Ἤδη ἡ κυρίως ἐπενέργεια τοῦ ἐλαίου ἀποδίδεται εἰς τὰς βιταμίνας Α καὶ Δ, τὰς ὁποίας ἐγκλείει, τὰ δὲ λοιπὰ συστατικά του θεωροῦνται ὡς σύνδρομα φάρμακα. Τὸ μουρουνέλαιον ἐνδείκνυται εἰς τοὺς πάσχοντας ἐκ χρονίων ἐξαντλητικῶν νόσων, ὡς ἐπὶ φυματιάσεως τῶν πνευμόνων, χρονίας βρογχίτιδος, χοιραδώσεως, ὡς καθαρκτικὸν τοῦ αἵματος, εἰς προφυματικὰς καταστάσεις κτλ. Πολλὰ ἄτομα ἀνέχονται τὸ μουρουνέλαιον μόνον ὑπὸ τὴν μορφὴν γαλακτωμάτων (Emulsio Jecoris Aselli). Ἐπίσης καὶ διάφορα ἄλλα φαρμακοτεχνικὰ σκευάσματα φέρονται ὡς μᾶλλον εὔληπτα τοῦ αὐτουσίου ἐλαίου.

Τὸ μουρουνέλαιον παραγγέλλεται κατὰ τὸν χειμῶνα, διότι κατὰ τὸ θέρος φέρει πεπτικὰς διαταραχάς. Νεώτερα σκευάσματα τοῦ μουρουνελαίου εἶναι ἡ *γαδιόλη* καὶ ἡ *γαδόλη*. Τὸ αὐτούσιον χρησιμοποιούμενον μουρουνέλαιον δέον νὰ εἶναι πρόσφατον, κιτρίνης χροιᾶς καὶ οὐχὶ σκοτεινῶς κεχρωσμένον. Τινὲς ὑποστηρίζουν ὅτι μείζονα ἀντιρραχιτικὴν ἐνέργειαν ἔχει τὸ μὴ κεκαθαρμένον ἔλαιον. Ὡς βελτιωτικὸν τῆς γεύσεως τοῦ μουρουνελαίου προστίθεται ἔλαιον μίνθης τῆς πιπερώδους. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν τὸ μουρουνέλαιον χρησιμοποιεῖται ἤδη ἀπὸ τοῦ 1822, πολὺ ὅμως πρὸ τῆς ἐποχῆς αὐτῆς εἶχε χρησιμοποιηθῇ τοῦτο εἰς τὴν θεραπευτικὴν τῶν βορείων λαῶν. Σήμερον εἶναι λίαν διαδεδομένον καὶ θεωρεῖται ὡς ἄριστον ἀναγεννητικὸν τῶν δυνάμεων. Τὸ μουρουνέλαιον ἀντενδείκνυται μόνον ἐπὶ τῆς ἀπολύτου καὶ ἀκατανικήτου δυσανεξίας αὐτοῦ, ὡς ἐπίσης ἐπὶ διαταραχῶν τῆς πέψεως καὶ ἐπὶ πυρετοῦ. Λαμβάνεται τὴν πρωΐαν, τὴν μεσημβρίαν καὶ τὴν ἑσπέραν πρὸ τῶν γευμάτων ἢ τοὐλάχιστον 3 ὥρας μετὰ τὸ φαγητόν. Ἐκ τῶν κυριωτέρων ἀναπληρωμάτων τοῦ μουρουνελαίου εἶναι: ἡ *λιπανίνη*, ἡ *ὀσσίνη*, ἡ *γαδιόλη*, ἡ *φουκόλη* κ. ἄ. Κ. Γ. Μ.

**μουρουνόλαδο** (τό)· λάδι τῆς μουρούνας (Gadus Morrhua)· βλ. *μουρουνέλαιον*.

**μουρόφυλλο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ποτήριον τὸ αἱματόφυλλον*.

**Μουρόχοβα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀχαΐας χωρίου *Πλάκα* (βλ. λ.).

**μουρραιία** (ἡ) (Murraya) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ρυτιδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δενδρύλια ἰθαγενῆ τῶν θερμῶν χωρῶν τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Αὐστραλίας. Ἐκ τῶν τεσσάρων εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ἡ *μουρραιία ἡ ἐξωτική* (Murraya exotica), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Αὐστραλίας, καλλιεργούμενον πρὸς κόσμον διὰ τὰ ὡραῖα καὶ εὔοσμα ἄνθη του. Δ. Ν. Π.

**Μοῦρρο ντὶ Πόρκο** (Murro di Porco) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Σικελίας, τὸ ἀρχαῖον *Μακρὸν ἄκρον* (βλ. λ.).

**Μοῦρσα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Παννονίας, κειμένη κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. ΙΙ, 15, 4) ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Δράβου, ὀλίγον πρὸ τῆς εἰς τὸν Δούναβιν συμβολῆς του. Ἦτο ρωμαϊκὴ ἀποικία (Mursia colonia), ἱδρυθεῖσα τῷ 133 μ. Χ. ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἀδριανοῦ, καὶ ἕδρα τοῦ διοικητοῦ τῆς χώρας, ὀνομαζομένη καὶ *Μεγάλη Μοῦρσα*, πρὸς διάκρισιν τῆς *Μικρᾶς Μούρσας* (βλ. λ. *Μουρσέλλα*). Ἐνταῦθα ἐνίκησεν ὁ Κωνσταντῖνος τὸν Μαξιμῖνον τῷ 338 μ. Χ. Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐπέχει σήμερον ἡ πόλις Eszeg ἐν Νοτιοσλαβίᾳ. Α. Θ. Σ.

**Μουρσαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ἀμπελόφυτον* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουρσελάρισμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μουρσελάρω, σύνδεσμος δι' ἀγκτῆρος, *ἀγκτηρίασμα* (βλ. λ.).

**μουρσελάρω**· συνδέω δι' ἀγκτῆρος, διὰ δακτυλίου, *ἀγκτηριάζω* (βλ. λ.).

**Μουρσέλλα** (Mursella) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*.—1) Πόλις τῆς Ἄνω Παννονίας, κειμένη κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. ΙΙ, 14, 4) δεξιὰ τοῦ Ἀραβῶνος ποταμοῦ (νῦν Raab), 52 μίλλια ΒΑ. τῆς Σαβαρίας (Stein-am-Anger). Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐπέχει ἡ νῦν Lowasz Patona τῆς ΒΔ. Οὐγγαρίας.

—2) Πόλις τῆς Κάτω Παννονίας, καλουμένη καὶ *Μικρὰ Μοῦρσα* (Mursa Minor) πρὸς διάκρισιν τῆς *Μούρσας* (νῦν Eszeg), ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπεῖχε κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (ΙΙ, 15, 4) δέκα μίλλια πρὸς Β., ὅπου ἡ νῦν Petrievce. Α. Θ. Σ.

**Μουρσὶ** *[Γεωγρ.]*. Σπήλαιον ἐν Κεφαλληνίᾳ, εὑρισκόμενον εἰς ἀπόστασιν μιᾶς καὶ ἡμισείας ὥρας ἀπὸ τοῦ χωρίου Μεσοβούνια, εἰς θέσιν Ἅϊ-Νικόλας. Ἡ εἴσοδός του, ὁμοιάζουσα πρὸς ὀπὴν φρέατος, καλύπτεται ὑπὸ λίθου, λέγεται δὲ ὅτι ἔχει ἀρκετὸν μῆκος καὶ στολίζεται ὑπὸ πλήθους ὡραίων σταλακτιτῶν. Ὑπάρχει ἡ ἰδέα ὅτι συγκοινωνεῖ πρὸς τὴν παρακειμένην ἀκτήν, καταλῆγον εἰς τὴν θάλασσαν. Γ. Δ.

**Μουρσία *κολωνία*** (Mursia colonia) *[Ἀρχ. Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Παννονίας (βλ. *Μοῦρσα*). Α. Θ. Σ.

**μοῦρσοι** (οἱ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τοὺς *ὑποστάτας*. Ἐπὶ τούτων, ἐχόντων ἄνοιγμα ὅμοιον πρὸς ἐγκαρσίαν τομὴν τῆς λέμβου, ἐγκάθηνται αἱ λέμβοι ὅταν ἐντίθενται, ἑδραζόμεναι κατὰ τὴν τοιαύτην ἐγκαρσίαν των διατομήν. Λέγονται καὶ *μόρσοι*. Σ.Ε.Λ.

**Μουρστιάνον** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Λυσιμαχία*.

**Μουρτάρα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ὁρίου τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 79. Χ. Δ.

**μουρτάτης** (ὁ)· ὁ ἀπαρνηθεὶς τὸν ἰσλαμισμόν, καθόλου ἀρνησίθρησκος (λ. τουρκ.).

**Μουρτᾶτον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Γλυκόρριζον* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μοῦρτεν** (Murten) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μορά*.

**Μουρτζανὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Γαράζου τῆς ἐπαρχίας Μυλοποτάμου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης, κείμενον ἐντὸς καταφύτου κοιλάδος. Κάτ. (1928) 162. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**Μούρτζεφλο** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μούρτζουφλο*.

**μουρτζιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ὁ μονόγυνος*.

**μούρτζινος**, *—η, —ο*· ἰδιωμ., οἰνωπός, μαυροκόκκινος, φοινικοῦς. Ι. Δ. Μ.

**Μούρτζινος, *Δημήτριος*.** Ἕλλην ὀργανοποιός, γεννηθεὶς ἐν Αἰγίνῃ (1857—1931). Ἐπιπλοποιὸς κατ' ἀρχάς, εἰδικεύθη εἰς τὴν κατασκευὴν ἐγχόρδων ὀργάνων, σημειώσας ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν καὶ καταστὰς ἐπὶ μακρὸν χρόνον ὁ μοναδικὸς ἐν Ἑλλάδι εἰδικὸς τεχνίτης. Τῷ 1885 ἵδρυσεν ἐν Ἀθήναις κατάστημα κατασκευῆς μουσικῶν ὀργάνων, τὰ προϊόντα τοῦ ὁποίου ἔτυχον βραβείων εἰς ἐκθέσεις τῶν Παρισίων (1889 καὶ 1900), Ἀθηνῶν (1903), Ὀστάνδης (1904), Λιέγης (1905). —Δ.

**Μοῦρτζο** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. *Μοῦρτο*.

**Μουρτζοὺκ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τριπολίτιδος ἐν τῇ χώρᾳ τοῦ Φεζζὰν (25°55'16" Β. πλάτ. καὶ 11°49'51" Α. μήκ.). Κάτ. 6.500. Ἱδρύθη πρὸ 600 ἐτῶν καὶ εἶναι σπουδαῖος σταθμὸς τῶν καραβανίων ἐπὶ τῆς ἐκ Τριπόλεως πρὸς τὸ Σουδὰν ὁδοῦ. Ν. Μ.

**Μουρτζουνάκης, *Ἐμμανουήλ*.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Κρήτης, διαπρέψας ὡς κυβερνήτης πλοίου 18 πυροβόλων τοῦ στόλου τοῦ Λάμπρου Κατσώνη. Ἐφονεύθη γενναίως μαχόμενος εἰς τὴν παρὰ τὸν Καφηρέα ναυμαχίαν τῆς 7 Ἀπριλίου 1790. Ν. ΚΑΣ

**Μούρτζουφλο**, ἢ ***Μούρτζεφλο*** *[Παραλ. Γεωγρ.]* βλ. λ. *Κλέφτης*.

**Μούρτζουφλος, *Ἀλέξιος Ε' Δούκας*,** ἐπιλεγόμενος—. Αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου, ἀποκληθεὶς οὕτως «ἐκ τοῦ συνεσπᾶσθαι τὰς ὀφρῦς καὶ οἷον τοῖς ὀφθαλμοῖς ἐπικρέμασθαι». Ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1204, καθ' ἣν ἐποχὴν ἡ πόλις ἐπολιορκεῖτο ὑπὸ τῶν σταυροφόρων τῆς Δ' Σταυροφορίας. Παρὰ τὰς προσπαθείας ἃς κατέβαλε διὰ τὴν ἄμυναν τῆς πόλεως καὶ τὴν ἀνασύνταξιν τοῦ στρατοῦ, οἱ πολιορκηταὶ κατώρθωσαν νὰ γίνωσι κύριοι πύργων τινῶν τῆς συνοικίας Πετρίου (ἐπὶ τοῦ Κερατίου κόλπου) καὶ νὰ εἰσορμήσωσιν ἐν τῇ πόλει. Ὁ Ἀλέξιος Ε', φοβηθεὶς μήπως συλληφθῇ αἰχμάλωτος, ἀπεφάσισε νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν πόλιν καὶ παραλαβὼν τὴν τέως αὐτοκράτειραν Εὐφροσύνην (σύζυγον τοῦ φυγάδος αὐτοκράτορος Ἀλεξίου Γ' Ἀγγέλου) καὶ τὴν θυγατέρα ταύτης Εὐδοκίαν, ἧς ἠρᾶτο ἐμμανῶς, ἀπῆλθε μετ' αὐτῶν, τὴν 10 Ἀπρι-

Digitized by Google

λίου 1204. διὰ θαλάσσης εἰς Θράκην, μετὰ βασιλείαν 2 μηνῶν καὶ 6 ἡμερῶν. Εἰς Μοσινόπολιν τῆς Θράκης συνηντήθη μετὰ τοῦ ἐκεῖ ἀπὸ μακροῦ καταφυγόντος Ἀλεξίου Γ', ὅστις ἐδέχθη αὐτὸν μετὰ προσποιητῆς φιλοφροσύνης καὶ διέταξε νὰ τοῦ ἑτοιμασθῇ λουτρόν. Ἀλλὰ καθ' ἣν στιγμὴν ὁ Μούρτζουφλος ἐλούετο, συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν ὑπηρετῶν τοῦ Ἀλεξίου Γ' ἐτυφλώθη, παρὰ τὰς διαμαρτυρίας καὶ τὰς ἀρὰς τῆς Εὐδοκίας, καὶ εἶτα ἐξεδιώχθη τῆς πόλεως. Μετ' ὀλίγας ἡμέρας οἱ σταυροφόροι κατέλαβον τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ εἶτα προήλασαν εἰς τὴν Θράκην, ἔνθα εὗρον πλανώμενον περὶ τὴν Μοσινόπολιν τὸν ἀτυχῆ Μούρτζουφλον, ὃν ὡδήγησαν εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖ τὸν ἐθανάτωσαν, κρημνίσαντες αὐτὸν ἐκ τῆς κορυφῆς τῆς στήλης τοῦ Θεοδοσίου. Ν. ΚΛΣ

**Μουρτιὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Σάμου μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Πράσσο (πλάτ. 37° 47′ Β., μῆκ. 27° 06′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1530 : Strait of Samos) καὶ Γάτος. Σ. Ε. Λ.

**Μουρτιὲς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λίμνης τῆς ἐπαρχίας Χαλκίδος τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 151. Χ. Δ.

**Μοῦρτο** *[Γεωγρ]*. Νησίον ὀνομαζόμενον προσέτι *Μοῦρτος* καὶ *Μοῦρτζο*, τῆς νοτίας ἀκτῆς τῆς Ἠπείρου, ἐν τῇ Κερκυραϊκῇ θαλάσσῃ (πλάτ. 39° 24′ Β., μῆκ. 20° 15′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206 : Channels of Corfu), ἔχον μέγαν φάρον ἱδρυθέντα τῷ 1884 καὶ ἐκπέμποντα λευκὰς ἀναλαμπὰς 20 μιλλ. Σχηματίζει δὲ μετὰ τῆς στερεᾶς καὶ τοῦ παρεμβαλλομένου νησίου *Ἅγιος Νικόλαος* ὁμώνυμον φυσικὸν λιμένα ἀσφαλῆ, τὸν *Συβότων λιμένα* (*Πτολ.* Γ, ιδ, 5) τῶν ἀρχαίων. Εἰς τὸν λιμένα τοῦτον εἶχε καταφύγει τουρκικὴ μοῖρα δράσασα κατὰ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, ἣν θελήσας νὰ προσβάλῃ ὁ Μιαούλης (1822) ἠμποδίσθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, λόγῳ τῆς ἐπὶ τῆς Κερκυραϊκῆς θαλάσσης ἀγγλικῆς κυριαρχίας. Σ. Ε. Λ.

**Μοῦρτος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Θυάμιδος (Φιλιατῶν) τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον, ὠνομάζετο δὲ πρότερον *Βώλια*. Κάτ. (1928) 679. Χ. Δ.

**Μουρχισονία** (ἡ) (Murchisonia d' Arch. Vern) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *πλευροτομαριιδῶν ἀσπιδοβραγχίων προσωβραγχίων γαστεροπόδων* μαλακίων. Τὸ κέλυφος τῶν ζῴων τούτων ἦτο πυργοειδὲς καὶ ἔφερε πολλὰς περιφορὰς (γύρους), ὁτὲ λείους, ὁτὲ πεποικιλμένους. Τὸ ἐξωτερικὸν χεῖλος ἔφερε σχισμήν. Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν ζῴων τούτων εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων ἀπὸ τῆς καμβρίου διαπλάσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ μέχρι καὶ τῆς τριασίου τοῦ μεσοζωϊκοῦ. Τὴν κυρίαν ἐξάπλωσίν των εἶχον κατὰ τὰς διαπλάσεις δεβόνιον καὶ λιθανθρακοφόρον τοῦ παλαιοζωϊκοῦ αἰῶνος. Τοῦ γένους τούτου διακρίνονται πολυάριθμα ὑπογένη, ὧν κυριώτερα εἶναι ἡ *βερανία*, ἡ *βιστιλία*, ἡ *βεμβεξία*, ἡ *μεσοκοιλία*, ἡ *τουρριτόμα* κ. ἄ. Γ. Κ. Γ.

**μουρχισονίτης** (ὁ) (Murchisonit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πολυπυριτικὸν ἅλας τῆς ὁμάδος τῶν ὀρθοκλάστων, ἤτοι τῶν μονοκλινῶν ἀστρίων. Ὀνομάζεται οὕτω μία παραλλαγὴ τοῦ ὀρθοκλάστου, ἀπαντῶσα εἰς Dawlish τῆς Devonshire, εἰς τὴν ὁποίαν διακρίνει κανεὶς σχισμὸν κατὰ ἕδραν τοῦ ὀρθοπινακοειδοῦς. Γ. Β.

**Μοὺς** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Βιτλίς, ἐν τῷ ἀρμενικῷ Κουρδιστάν, εἰς ἀπόστασιν 170 χλμ. ΝΔ. τῆς πόλεως Ἐρζερούμ. Κάτ. (1927) 4.277. Πρότερον ἠρίθμει 27.003 κατ., ἐξ ὧν 12.921 ἦσαν Ἀρμένιοι, οἱ δὲ λοιποὶ κατὰ μέγα μέρος Κοῦρδοι. Ἡ τεραστία ἐλάττωσις τοῦ πληθυσμοῦ δεικνύει τὴν ἐκεῖ ἔκτασιν τῶν σφαγέντων Ἀρμενίων καὶ Κούρδων.

Τὸ ὄνομα τῆς πόλεως ὀφείλεται εἰς τὸν ἱδρυτὴν αὐτῆς, τὸν Ἀρμένιον ἡγεμόνα Μουσίγκ. Ἦτο δὲ ἄλλοτε διάσημος πόλις τῆς Ἀρμενίας. Ἐκεῖ ἐτάφησαν ἐκτὸς τοῦ Μουσίγκ διάφοροι ἡγεμόνες τῆς δυναστείας τῶν Μαμιγκονιάν. Σῴζονται καὶ πολλὰ μνημεῖα τῆς ἀρμενικῆς ἱστορίας καὶ κυρίως τῆς ἐποχῆς τοῦ βασιλέως Θιριδάτου. Ἡ ὑποδιοίκησις *Μοὺς* ἔχει ἐπιφάνειαν 4.550 τετρ. χλμ. καὶ 21.124 (1927) κατ., ἔναντι 42.000 προηγουμένως. Ν. Μ.

**Μοὺς** (Moose) *[Γεωγρ]*. Ποταμὸς τῆς ἐπαρχίας Ὀντάριο τοῦ Καναδᾶ, μήκους 500 χλμ. Ἐκβάλλει εἰς τὸν ὅρμον Τζαὶμς τοῦ Οὔδσωνος, εἶναι δὲ πλωτὸς κατὰ τὰ 210 χλμ. μέχρι τῆς ἀποκαλουμένης Πύλης τῆς Κολάσεως.

**μοῦσα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σκυταμινοειδῶν* (βλ. λ. *βανανέα*).

**Μοῦσα** (ἡ) *[Ἀστρον.]*. Ἀστεροειδὴς φερόμενος ὑπ' ἀριθ. 600 ἐν τῷ καταλόγῳ τοῦ ἡλιακοῦ μας συστήματος (βλ. λ. *πλανῆται*).

**Μουσᾶ**. Ἀραβικὸν καὶ μουσουλμανικὸν ἐν γένει ὄνομα τοῦ *Μωϋσέως*, σύνηθες καὶ παρὰ Τούρκοις.

— **Μουσᾶ**. Υἱὸς τοῦ Ὀσμανίδου σουλτάνου τῆς Τουρκίας Βαγιαζὶτ τοῦ Α'. Κατὰ τὴν μάχην τῆς Ἀγκύρας (1402), πολεμήσας μετὰ τοῦ πατρός του κατὰ τοῦ Ταμερλάνου, συνελήφθη μετ' αὐτοῦ αἰχμάλωτος. Κατὰ τὸν θάνατον τοῦ Βαγιαζὶτ ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου νὰ μεταφέρῃ τὸν νεκρόν του εἰς Προῦσαν. Μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Ταμερλάνου ἐκ Μικρᾶς Ἀσίας ἠθέλησε ν' ἀνακηρυχθῇ σουλτάνος ἐν Προύσῃ, μὴ κατορθώσας ὅμως τοῦτο κατέφυγεν εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ νεωτέρου ἀδελφοῦ του, τοῦ Μεχμέτ, ἐκεῖθεν δὲ εἰς Ἀδριανούπολιν παρὰ τῷ πρεσβυτέρῳ ἀδελφῷ του Σουλεϋμάν, ὅστις εἶχεν ἐπίσης ἀνακηρυχθῇ σουλτᾶνος. Κατόπιν διῆλθε πάλιν εἰς Ἀσίαν, ὁπόθεν, βοηθούμενος ὑπὸ στρατοῦ, τὸν ὁποῖον ἔθεσεν εἰς τὴν διάθεσίν του ὁ Μεχμέτ, εἰσέβαλεν εἰς Θράκην, ὅπου ἐπεκράτει ἀκόμη ὁ Σουλεϋμάν. Νικηθεὶς κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τούτου, ἐνεφανίσθη ἐκ νέου πρὸ τῆς Ἀδριανουπόλεως, ἀλλὰ τότε ὁ Σουλεϋμὰν ἐφονεύθη ὑφ' ἑνὸς τῶν τοξοτῶν του καὶ ὁ Μουσᾶ ἔμεινε μόνος κύριος τῶν εὐρωπαϊκῶν ἐπαρχιῶν. Εἰσέβαλεν εἰς Σερβίαν καὶ ἐνίκησε τοὺς εἰς βοήθειαν τῶν Σέρβων ἐλθόντας Οὔγγρους ὑπὸ τὸν βασιλέα Σιγισμόνδον. Ἐπειδὴ δὲ ὁ αὐτοκράτωρ Μανουὴλ ὁ Παλαιολόγος ἠρνήθη νὰ πληρώσῃ εἰς αὐτὸν φόρον, ὁ Μουσᾶ ἐπολιόρκησε τὴν Κωνσταντινούπολιν. Ὁ Μανουὴλ ἐκάλεσεν εἰς βοήθειάν του τὸν Μεχμέτ. Ἐσχηματίσθη τότε κοινὸν μέτωπον Ἑλλήνων, Σέρβων καὶ τῶν ὑπὸ τὸν Μεχμὲτ Τούρκων κατὰ τοῦ Μουσᾶ. Οὗτος ἐγκαταλειφθεὶς ἐπὶ τέλους διὰ προδοσίας ὑπὸ τοῦ στρατοῦ του παρεδόθη εἰς τὸν Μεχμέτ, ὅστις τὸν ἐστραγγάλισε (1413) καὶ ἔμεινεν οὕτω μόνος σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας, ὑπὸ τὸ ὄνομα Μεχμὲτ Α'. Ν. Μ.

—**Μουσᾶ *ἐλ-Χάδι*.** Δ' Ἀββασίδης χαλίφης. Μετὰ δεκαπεντάμηνον βασιλείαν ἔπεσεν, εἰς ἡλικίαν εἰκοσιπέντε ἐτῶν, θῦμα συνωμοσίας (786), ἐξυφανθείσης, κατά τινα παράδοσιν, ὑπὸ τῆς μητρός του Χαϊζοράν. Γ. Λ. Α.

—**Μουσᾶ *μπὲν-ἐλ-Ἀζάρ*.** Διάσημος Ἄραψ, Ἑβραῖος τὸ θρήσκευμα, ἰατρός, ἀκμάσας ἐν Αἰγύπτῳ ἐπὶ τοῦ Φατιμίδου σουλτάνου Μουαζελντίν, τοῦ ὁποίου ἦτο καὶ ἰδιαίτερος ἰατρός. Ἔγραψε διάφορα ἰατρικὰ συγγράμματα. Ν. Μ.

—**Μουσᾶ *μπὲν-Νουσαΐρ*.** Ἄραψ στρατηγός, κατακτήσας μετὰ τοῦ Ταρὶκ-μπὲν-Ζιγιὰτ τὴν Ἀνδαλουσίαν καὶ εἰσβαλὼν εἰς Πορτογαλίαν (711 μ.Χ.) καὶ κατόπιν διὰ τῶν Πυρηναίων εἰς Γαλλίαν, προχωρήσας μέχρι Καρκασῶν. Ἀνακληθεὶς κατόπιν ὑπὸ τοῦ χαλίφου Οὐαλὶδ εἰς Δαμασκόν, ἕνεκα τῶν κατὰ τοῦ Ταρὶκ ῥαδιουργιῶν του, ἀπέθανε τῷ 719. Ν. Μ.

—**Μουσᾶ *πασᾶς*.** Καπετὰν πασᾶς τῆς Τουρκίας ἐπὶ δύο ἔτη, ἐπὶ σουλτάνου Ἰβραχὶμ (1645—1647). Ἐπαύθη διότι δὲν ἠδυνήθη νὰ μεταφέρῃ στρατὸν εἰς Κρήτην. Τῷ 1674 ἐφυλακίσθη εἰς τὸ Ἑπταπύργιον Κωνσταντινουπόλεως, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ν. Μ.

**μουσάγγα** (ἡ) (Musanga) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μορεοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἱκανοῦ ὕψους, ἀπαντῶντα εἰς τὰς εὐκράτους καὶ θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**Μουσαγέτης** (καὶ ***Μουσηγέτης***, ἢ ***Μοισαγέτας***) *[Ἀρχ.]*. Ὁ ἡγέτης τῶν Μουσῶν· προσωνυμία : —1) Τοῦ Ἀπόλλωνος, περὶ τοῦ ὁποίου ἐπιστεύετο ὅτι συμμετεῖχε τῶν χορῶν τῶν Μουσῶν ἐπὶ τοῦ Ἑλικῶνος, προσηγορεύετο δὲ καὶ «πάσης παιδείας ἄρχων». —2) Τοῦ Διονύσου, τοῦ ὁποίου ἡ λατρεία ἐπίσης συνεδέετο πρὸς τὴν τῶν Μουσῶν· καὶ —3) Τοῦ Ἡρακλέους. Ν. Α.

**Μουσαγόραι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία ὑφ' ἣν φέρονται (Musagorae καὶ Musagoros) παρὰ Πλινίῳ (4,20,61) καὶ Πομπονίῳ Μέλα (2,7) τρεῖς νησῖδες, ἀποτελοῦσαι συστάδα ἐγγὺς τοῦ ἀκρωτηρίου Κριοῦ Μέτωπον τῆς ΝΔ. τῆς Κρήτης ἐσχατιᾶς. Εἰς ἄλλους κώδικας τῶν προμνησθέντων Λατίνων γεωγράφων ἀπαντῶσιν ὡς ὀνομασίαι τῶν τριῶν νησίδων καὶ αἱ Acusagorus, Acusagonus, Acausagores, Musagorus. Ὑπὸ τοῦ Ἀνωνύμου τοῦ «*Σταδ. Μεγάλ. Θαλάσσης*» (336) ἀναγράφονται ὡς «Ἰουσάγουρα, βλέπουσα πρὸς ἀνατολάς· ἔχει λιμένα· ἔχει δὲ ἱερὸν Ἀπόλλωνος ἐν τῷ λιμένι». Εἶναι τὸ σύγχρονον *Ἐλαφονήσι* (βλ. λ.) καὶ οἱ περὶ αὐτὸ σκόπελοι. Σ. Ε. Λ.

**Μοῦσαι** *[Μυθολ.]*. Θεότητες τοῦ ᾄσματος, τῆς μουσικῆς, τῆς ποιητικῆς ἐμπνεύσεως καὶ τῆς πνευματικῆς ἐν γένει δημιουργίας. Πρὶν ἢ καταστῶσι προστάτιδες θεαὶ τῶν ἀοιδῶν, τῶν μουσικῶν καὶ τῶν ποιητῶν, φαίνεται ὅτι ὑπῆρξαν θεότητες τῶν πηγῶν, τῶν ῥυάκων καὶ τῶν ὑδάτων ἐν γένει, ὡς μαρτυροῦσιν ἡ παρὰ τὰς πηγὰς καὶ τὰ ῥεῖθρα ῥυακίων λατρεία των, ἡ πρὸς τὸν Ποσειδῶνα καὶ τὴν Ἀμφιτρίτην σχέσις των καὶ τὰ παρά τισι τῶν ποιητῶν (Ἐπιχάρμῳ καὶ ἄλλοις) ὀνόματά των (Νειλώ, Ἀσωπίς, Ἀχελωὶς κλπ.), διασωθέντα ἐξ ἀρχαιοτάτων περὶ αὐτῶν παραδόσεων. Ἀνῆκον δηλαδὴ καὶ αὗται εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν Νυμφῶν τῶν δασῶν καὶ τῶν ὑδάτων. Εἰς τὴν προέλευσιν αὐτῶν ταύτην, ἂν μὴ εἰς τὴν πρὸς τὸν Ἀπόλλωνα σχέσιν των, φαίνεται μάλιστα ὅτι ὀφείλεται καὶ ἡ πίστις τῶν ἀρχαίων ὅτι εἶχον καὶ τὸ χάρισμα τῆς μαντικῆς τέχνης : «Μαντεύεο Μοῖσα, προφατεύσω δ' ἐγώ», λέγει ὁ Πίνδαρος, καὶ ἐγνώριζον «τά τ' ἐόντα, τά τ' ἐσσόμενα πρό τ' ἐόντα» (*Ἡσιόδ.* Θεογ. 38). Κατὰ τὸν Πλούταρχον ἡ ἐκ τοῦ Ἑλικῶνος προερχομένη πρώτη Σίβυλλα εἶχε τραφῆ ὑπὸ τῶν Μουσῶν. Ἡ μεταλλαγή των ἀπὸ θεοτήτων τῶν πηγῶν εἰς θεότητας τῆς ᾠδῆς καὶ τῆς μουσικῆς πιστεύεται ὅτι ὀφείλεται εἰς τὴν ἀντίληψιν τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων ὅτι τὸ κελάρυσμα τοῦ ῥέοντος ὕδατος τῶν ῥυάκων ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος μουσικὸς τόνος, ὅστις ἔθελξε τὰ ὦτα τοῦ πρωτογόνου ἀνθρώπου καὶ διήγειρεν εἰς αὐτὸν τὸ αἴσθημα τῆς μουσικῆς ἁρμονίας.

Εἰς τὰ ὁμηρικὰ ἔπη ἡ Μοῦσα («Μῆνιν ἄειδε θεά...») ἢ αἱ Μοῦσαι εἶναι ἰδίως θεότητες τῆς μνήμης, τὰς ὁποίας ἐπικαλεῖται ὁ ποιητὴς διὰ νὰ μάθῃ τὰ ὀνόματα ὅλων τῶν ἀρχηγῶν τῶν Ἑλλήνων ἢ διὰ νὰ ὑπενθυμίσουν εἰς αὐτὸν τίς ἦτο ὁ ἀνδρειότερος ὅλων τῶν ἡρώων ἢ τίς ἐπῆλθε πρῶτος κατὰ τοῦ Ἀγαμέμνονος (Λ,218), ἤτοι συμπληρώνουν διὰ τὸν ποιητὴν τὰ λησμονηθέντα μέρη ἀρχαίων παραδόσεων, ὡς πάνσοφοι καὶ πανταχοῦ παροῦσαι· «Ὑμεῖς γὰρ θεαί ἐστε, πάρεστέ τε, ἴστε τε πάντα» (Ἰλ. Β', 485), ἀνακράζει οὗτος. Ἡ πανσοφία λοιπὸν εἶναι ὁ κύριος χαρακτὴρ τῶν Μουσῶν παρ' Ὁμήρῳ. Ὅ,τι ἄλλο γνωρίζομεν ἀκόμη ἐξ αὐτοῦ εἶναι ὅτι ἐκαλοῦντο θυγατέρες τοῦ Διὸς (ἡ μήτηρ των δὲν ὀνομάζεται) καὶ ὅτι ἦσαν ἐννέα (ἅπαξ τοῦτο λέγεται ἐν Ὀδυσ. ω, 60) τὸν ἀριθμόν. Δὲν εἶχε δηλαδὴ πλασθῆ μέχρι τοῦ Ὁμήρου ἡ γενεαλογία των καὶ δὲν ἦτο καθωρισμένος ἀναντιρρήτως ὁ ἀριθμός των. Ὁ Ἡσίοδος πρῶτος ἐν τῇ «Θεογονίᾳ» του καθώρισε καὶ τὸν ἀριθμόν των καὶ τὰ τῆς θρησκείας καὶ λατρείας των, καὶ αὐτὸς πρῶτος ὑπῆρξεν ὁ ἀνάδοχός των, δώσας εἰς αὐτὰς τὰ ὀνόματα, ἅτινα διετήρησαν αὗται μέχρις ἐκπνοῆς τῆς ἀρχαίας θρησκείας, ἂν καὶ δὲν ἔλειψαν ποικίλαι περὶ αὐτῶν ἐπιτόπιοι παραλλαγαί. Οὕτως ἐν Λέσβῳ αἱ Μοῦσαι ἦσαν ἑπτά, ὑπενθυμίζουσαι μὲ τὸν ἀριθμόν των τὰς ἑπτὰ χορδὰς τῆς λύρας τοῦ Τερπάνδρου. Οἱ Πυθαγόρειοι ὥριζον αὐτὰς εἰς ὀκτώ, ὅσος ἦτο δηλαδὴ καὶ ὁ ἀριθμὸς τῶν οὐρανίων σφαιρῶν. Ἐν Δελφοῖς ἦσαν τρεῖς, καλούμεναι Νήτη, Μέση καὶ Ὑπάτη κ.ο.κ.

Ἡ λατρεία τῶν Μουσῶν ἦτο διαδεδομένη ἁπανταχοῦ τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος, ἰδίως ὅμως εἶχεν ἐντοπισθῆ αὕτη ἐν Βοιωτίᾳ. Ἐν Ἄσκρῃ ἐπιστεύετο, ὅτι τὸ πρῶτον ἱδρύθη ἡ λατρεία τῶν τριῶν Μουσῶν (Μνήμης, Μελέτης καὶ Ἀοιδῆς) ὑπὸ τῶν Ἀλωαδῶν καὶ ὁ Ἑλικών, ἀπὸ τοῦ ὁποίου καὶ ἐκαλοῦντο Ἑλικωνιάδαι, ὑπῆρξε τὸ ἱερὸν ὄρος αὐτῶν, εἰς τὸ ὁποῖον ἐτράφησαν ὑπὸ τῆς Εὐφήμης. Καὶ εἰς τὴν Βοιωτίαν ὅμως ἐπιστεύετο, κατ' ἄλλην παράδοσιν (*Παυσ.* IX 29.3), ὅτι εἰσήχθη ἡ λατρεία τῶν Μουσῶν ἐκ τῶν ὀρέων τῆς Πιερίας ὑπὸ τοῦ Μακεδόνος Πιέρου, ὅστις καὶ πρῶτος, κατὰ τὴν αὐτὴν πάντοτε παράδοσιν, ὥρισεν αὐτὰς εἰς ἐννέα καὶ ἀνάδοχος αὐτῶν ἔγινε, δώσας εἰς ἑκάστην τὸ

*Αἱ Μοῦσαι ἐπὶ ῥωμαϊκῆς σαρκοφάγου.*

[Μουσεῖον Λούβρου.]

Digitized by Google

ὄνομά της, συνώνυμον πρὸς τὸ ὄνομα ἑκάστης τῶν ἐννέα θυγατέρων του. Τὰ ὀνόματα τῶν ἐννέα Μουσῶν, θυγατέρων, κατὰ τὴν «Θεογονίαν» τοῦ Ἡσιόδου, τοῦ Διὸς καὶ τῆς Μνημοσύνης ἦσαν τὰ ἑξῆς: *Κλειώ*, *Εὐτέρπη*, *Θάλεια*, *Μελπομένη*, *Τερψιχόρη*, *Ἐρατώ*, *Πολύμνια*, *Οὐρανία* καὶ *Καλλιόπη*. Ὑπὸ τὰ ὀνόματα ταῦτα ἐλατρεύθησαν τὸ πρῶτον ἐν Θεσπιαῖς καὶ ἔπειτα εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἑλλάδα.

Ἐκ τῶν ἐννέα Μουσῶν ὑπερεῖχεν ἡ Καλλιόπη· διὰ τοῦτο, ὅτε μὲν ἤκμαζεν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἑλλάδι ἡ ἐπικὴ ποίησις, ταύτην ἐπεκαλοῦντο οἱ ἐπικοὶ ποιηταί, ὅτε δὲ παρήκμασε τὸ ἔπος καὶ ἡ εὐγλωττία ὑμνήθη ὡς τὸ ὑπέρτατον χάρισμα, ἡ Καλλιόπη ἐλατρεύθη ὡς προστάτις τῆς ῥητορικῆς. Αὕτη παρίστατο, συνήθως, καθημένη ἢ εἰς στάσιν βαθείας σκέψεως ἢ εἰς στάσιν προτιθεμένης νὰ γράψῃ ἢ

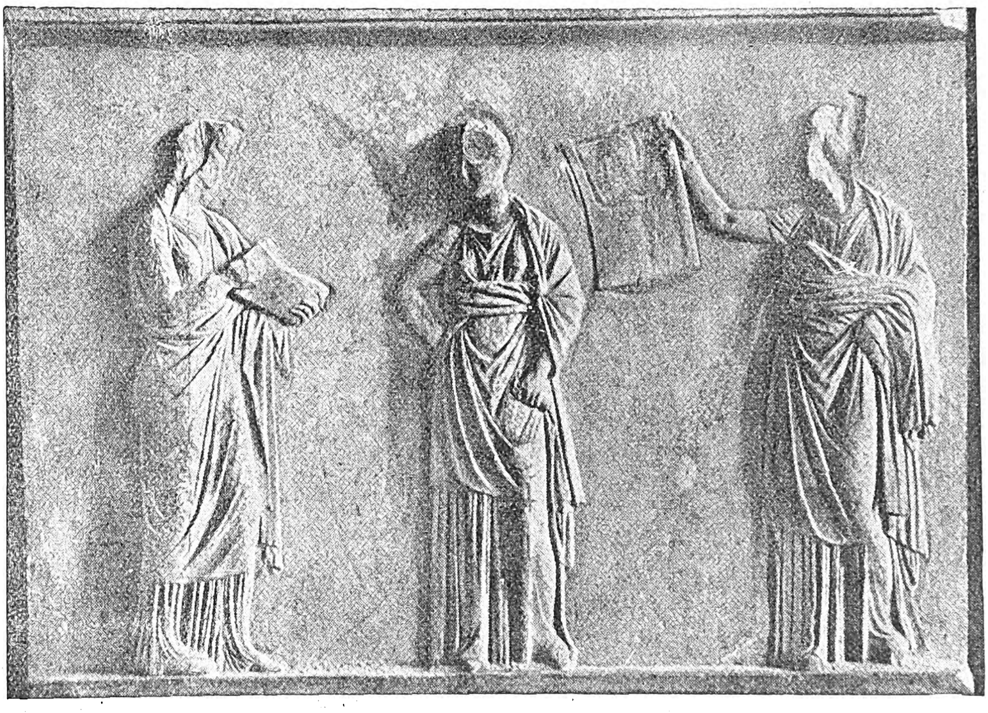

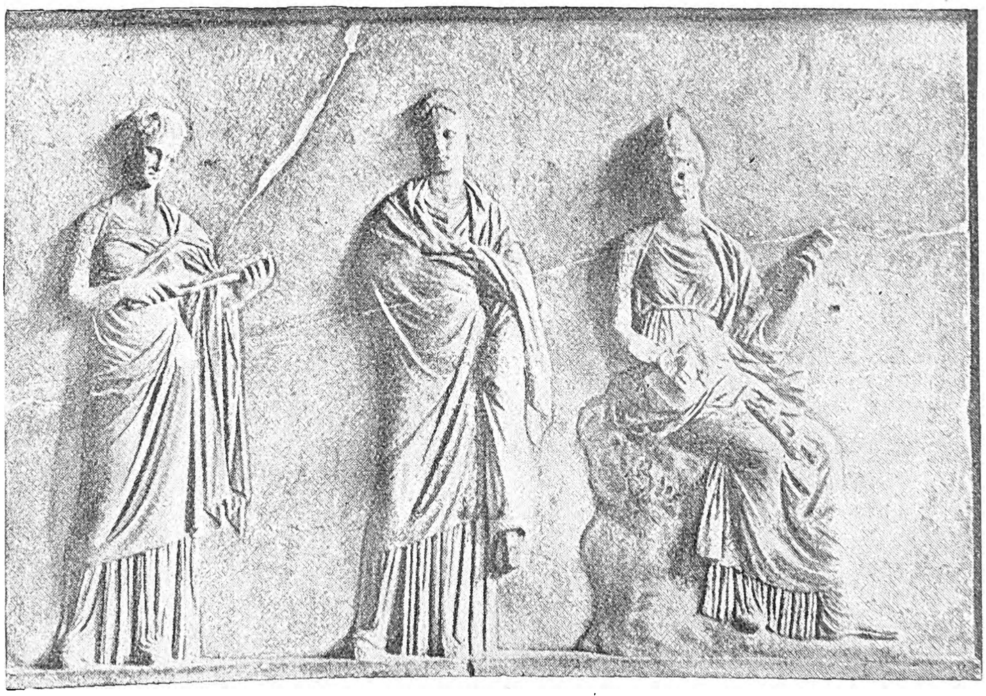

*Ἀνάγλυφα ἐκ Μαντινείας παριστῶντα Μούσας.*

[Ἔργα τοῦ Πραξιτέλους.]

ν' ἀναγνώσῃ ὅ,τι πρὸ ὀλίγου ἔγραψε καὶ κρατοῦσα πινάκιον καὶ γραφίδα. Ὅπως δὲ ἡ ἰδιότης τῆς Καλλιόπης (θεᾶς τῆς ἐπικῆς ποιήσεως ἐν ἀρχῇ, καὶ ἔπειτα τῆς ῥητορικῆς) δὲν ἐτηρήθη σταθερά, οὕτως ἀσταθεῖς ἦσαν (καὶ πολὺ περισσότερον μάλιστα) καὶ αἱ ἰδιότητες τῶν ἀδελφῶν της, αἵτινες συνεχέοντο μεταξύ των. Ἐπεκράτησεν ὅμως ὁπωσδήποτε εἰς χρόνους μεταγενεστέρους ἑκάστη αὐτῶν νὰ θεωρῆται προστάτις ἑνὸς λογοτεχνικοῦ ἢ μουσικοῦ εἴδους ἢ μιᾶς τῶν ἐπιστημῶν. Οὕτως ἡ Κλειὼ ἐθεωρεῖτο προστάτις τῆς ἱστορίας, καὶ παρίστατο κρατοῦσα βιβλίον (κύλινδρον), ἡ Εὐτέρπη τῆς αὐλήσεως, ἔχουσα σύμβολον δίαυλον, ἡ Θάλεια τῆς βουκολικῆς ποιήσεως καὶ τῆς ἀγροτικῆς ἐν γένει ζωῆς ἐν ἀρχῇ καὶ ἔπειτα τῆς κωμῳδίας, ἔχουσα ὡς σύμβολον προσωπίδα, ἡ Μελπομένη τῆς μουσικῆς ἁρμονίας καὶ τοῦ ᾄσματος ἐν ἀρχῇ καὶ τῆς τραγῳδίας ἔπειτα, ἡ Τερψιχόρη τῆς ὀρχήσεως ἐν ἀρχῇ καὶ βραδύτερον τῆς λυρικῆς ἐν γένει ποιήσεως, ἡ Ἐρατὼ τοῦ ὑμεναίου, ἡ Πολύμνια τῶν πρὸς τιμὴν τῶν θεῶν καὶ τῶν ἡρώων ᾀδομένων ὕμνων καὶ ἡ Οὐρανία τῆς μελέτης τῶν οὐρανίων σωμάτων, ἔχουσα ὡς σύμβολον οὐρανίαν σφαῖραν καὶ δείκτην ἢ διαβήτην. Ἐνῷ ὅμως ἑκάστη τῶν Μουσῶν ἦτο ἡ προστάτις ἑνὸς εἴδους τῆς μουσικῆς ἢ τῆς ποιήσεως, πάντες οἱ ποιηταὶ τῶν θεογονικῶν ἢ ἡρωϊκῶν συνθέσεων προέτασσον αὐτῶν ὕμνον πρὸς τιμὴν πασῶν τῶν Μουσῶν καὶ ἐπεράτουν ταύτας μὲ ἐγκώμιον τῶν θεαινῶν τούτων.

Ὅπως δὲ ἐξύμνουν ἁπάσας ὁμοῦ οἱ μουσόληπτοι ποιηταί, οὕτω καὶ συνελάτρευον ἁπάσας οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες. Εἰς τὴν Ἄσκρην ἐπίστευον ὅτι ἤκουον κατὰ τὴν νύκτα τὰς ἁρμονικὰς φωνάς των, ὅτε περιτετυλιγμέναι διὰ πυκνοῦ νέφους κατήρχοντο ἀπὸ τὰς κορυφὰς τοῦ Ἑλικῶνος καὶ ἔστηνον τὸν χορόν των παρὰ τὰς πηγὰς καὶ τὰ διαυγῆ ὕδατα τῶν πηγῶν καὶ τῶν ῥυάκων τῆς Ἱπποκρήνης, τῆς Ἀγανίππης, τοῦ Περμησσοῦ καὶ τοῦ Ὀλμειοῦ. Εἰς τὸ παρὰ τὴν Κορώνειαν Λειβήθριον, τὸ ὁποῖον ἐπιστεύετο ὅτι ἦτο ἀποικία τοῦ εἰς τὰς ἀνατολικὰς κλιτῦς τοῦ Ὀλύμπου Λειβηθρίου, κώμης τῆς Πιερίας, ἐλατρεύοντο πλησίον τῶν δύο πηγῶν, ἀπὸ τῶν ὁποίων «ὅμοιον γάλακτι ὕδωρ ἄνεισι» (*Παυσ*. IX. 34.4.) ὡς Λειβηθρίδες Μοῦσαι. Εἰς τὰς Θεσπιὰς ἐντὸς τοῦ ἱεροῦ ἄλσους τῶν Μουσῶν ἐτελεῖτο ἑορτὴ πρὸς τιμὴν αὐτῶν καὶ ἀγών, τὰ *Μουσεῖα*. Εἰς τὴν Κόρινθον ἡ πηγὴ τοῦ Πηγάσου Πειρήνη ἦτο ἀφιερωμένη εἰς ταύτας καὶ ἐν Τροιζῆνι ἐτιμῶντο ὡς Μοῦσαι Ἀρδαλιώτιδες ἢ Ἀρδαλίδες. Εἰς τὰς Ἀθήνας ὁ Εὐριπίδης, διὰ νὰ κολακεύσῃ τὸ φιλόθεάμον κοινὸν τῆς πατρίδος του, ἔπλασε τὰς ἐννέα Μούσας θυγατέρας τῆς ξανθῆς Ἁρμονίας καὶ ἔδωκεν εἰς αὐτὰς πατρίδα τὴν Ἀττικὴν (Μηδ. 833). Οἱ φιλόμουσοι Ἀθηναῖοι ἀφιέρωσαν εἰς αὐτὰς ἕνα τῶν γραφικῶν λόφων τοῦ Ἄστεως (τὸν τοῦ Μουσείου), ἵδρυσαν πρὸς τιμήν των βωμὸν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ καὶ παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Ἰλισοῦ ἐλάτρευσαν ταύτας ὡς Ἰλισιάδας Μούσας. Πολὺ ἐσέβοντο τὰς Μούσας καὶ οἱ Σπαρτιᾶται, οἵτινες προσέφερον εἰς αὐτὰς θυσίας ἐν τῷ παρὰ τὸν ναὸν τῆς Χαλκιοίκου Ἀθηνᾶς ἱερῷ των, πρὸ τῶν μαχῶν. Ἀλλὰ καὶ ἐν Σικυῶνι, ἔνθα ἡ μία τῶν τριῶν λατρευομένων ἐκεῖ Μουσῶν ἐκαλεῖτο Πολυμάθεια, καὶ ἐν Δελφοῖς, ἔνθα ἐνομίζοντο βοηθοὶ καὶ φύλακες τοῦ μαντείου, καὶ ἐν Τεγέᾳ, καὶ ἐν Μεγαλοπόλει, καὶ ἐν Μαντινείᾳ, καὶ ἐν Τροιζῆνι, ἔνθα ὑπῆρχε καὶ ἱερὸν αὐτῶν, καὶ ἐν Θήβαις, ἔνθα ἐλέγετο ὅτι ἠχούσθησαν τὸ πρῶτον τὰ ᾄσματα αὐτῶν κατὰ τὸν γάμον τῆς Ἁρμονίας, καὶ ἐν Τέῳ, καὶ ἐν Θήρᾳ καὶ ἐν τοῖς παραλίοις τῆς Μ. Ἀσίας ἦτο τὰ μάλιστα διαδεδομένη ἡ λατρεία τῶν Μουσῶν. Ἐκεῖ ὅμως ὅπου ἡ λατρεία τῶν Μουσῶν ἡμιλλᾶτο σχεδὸν πρὸς τὴν ἐν Ἑλικῶνι, ἦσαν αἱ πόλεις τῆς Μεγάλος Ἑλλάδος (Κάτω Ἰταλίας), Κρότων καὶ Μεταπόντιον, εἰς τὰς ὁποίας εἰσηγηταὶ τῆς λατρείας τῶν Μουσῶν ὑπῆρξαν οἱ πυθαγόρειοι.

Τινὲς τῶν Μουσῶν, κατὰ τοὺς μεταγενεστέρους μυθογράφους (Ἀπολλόδωρον καὶ Μάξιμον τὸν Τύριον), δὲν διετήρησαν τὴν παρθενίαν των, ἀλλ' ἐλθοῦσαι εἰς γάμου κοινωνίαν μετὰ ποταμῶν (εἶναι καὶ τοῦτο ἔνδειξις τῆς διατηρήσεως τῆς ἀναμνήσεως καὶ εἰς μεταγενεστέρους χρόνους ὅτι ἀρχαιότατα ἐλατρεύοντο αὗται ὡς θεότητες τῶν ὑδάτων) καὶ ἡρώων ἐγένοντο μητέρες διαφόρων ἡρώων. Οὕτως ὁ Ὀρφεὺς ἐλέγετο υἱὸς τῆς Καλλιόπης καὶ τοῦ ποταμοῦ Οἰάγρου, αἱ Σειρῆνες θυγατέρες τῆς Μελπομένης καὶ τοῦ Ἀχελώου ποταμοῦ, ὁ Ῥῆσος τῆς Εὐτέρπης καὶ τοῦ ποταμοῦ Στρυμόνος, ὁ Λίνος τῆς Οὐρανίας καὶ τοῦ Ἀμφιμάρου, τοῦ υἱοῦ τοῦ Ποσειδῶνος, κ. ο. κ. Ἐκ τῶν θεῶν, ὁ μᾶλλον συνδεδεμένος πρὸς τὰς Μούσας εἶναι ὁ Ἀπόλλων, ὅστις καὶ Μουσαγέτης διὰ τοῦτο ἐκαλεῖτο. Ἐνῷ ὅμως φαίνεται ὅτι συγχέεται τὸ ἔργον τοῦ θεοῦ τούτου μὲ τὸ ἔργον τῶν Μουσῶν, ἐν τούτοις πάντοτε ὑπῆρχεν ἡ μεταξύ των διάκρισις. Ὁ Ἀπόλλων εἶναι πάντοτε ὁ κιθαρῳδὸς θεὸς καὶ αἱ Μοῦσαι εἶναι αἱ ἀποτελοῦσαι τὸν ᾠδικὸν χορόν. Εἰς τὸν χορὸν τῶν Μουσῶν ἐγίνοντο αἱ προσφοραὶ τῆς λατρείας τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων. Ὡς ἀποτελοῦσαι χορὸν αἱ Μοῦσαι, ἐταυτίζοντο ἐνίοτε πρὸς τὰς Χάριτας, αἵτινες ἐπίσης ἀπετέλουν ἀδιάρρηκτον χορόν, διὰ τοῦτο καὶ ὁ βωμὸς τῶν Μουσῶν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ὀλυμπίᾳ ἔκειτο παρὰ τὸν βωμὸν τῶν Χαρίτων (*Παυσ*. V. 14, 10). Ἀλλὰ καὶ πρὸς τοὺς μύθους τῶν Σειρήνων συνεδέοντο οἱ περὶ Μουσῶν μῦθοι, οἵτινες ἄλλοτε μὲν ἐλέγοντο μητέρες τῶν Σειρήνων, ἄλλοτε δὲ ἀντίζηλοι εἰς τὴν τέχνην τοῦ ᾄσματος, καὶ πρὸς τὸν Θάμυριν, τὸν ἀοιδὸν Θρᾶκα, τὸν ὁποῖον νικήσασαι εἰς ἀγῶνα ᾠδῆς αἱ Μοῦσαι, ὡς καὶ τὰς Σειρῆνας (τῶν ὁποίων ἐμάδησαν τὰ πτερά), ἐτύφλωσαν πρὸς τιμωρίαν διὰ τὸ θράσος του. Ἕνεκα τῆς μεγάλης διαδόσεως τῆς λατρείας τῶν Μουσῶν καὶ τῆς εἰς αὐτὰς ἀφιερώσεως πολλῶν ἀναθημάτων, ὄχι ὀλίγα ἦσαν τὰ προϊόντα τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς καλλιτεχνίας, τῶν ὁποίων ἡ δημιουργία προῆλθεν ἐκ τῆς λατρείας αὐτῶν. Ἀρχαιότερον πάντων ἦτο τὸ σύμπλεγμα τριῶν Μουσῶν, τὰς ὁποίας ἐκράτει εἰς τὴν ἑτέραν τῶν χειρῶν του τὸ κολοσσιαῖον ἐπίχρυσον ξόανον τοῦ Ἀπόλλωνος ἐν Δήλῳ, τὸ ὁποῖον ἦτο ἔργον τῶν τεχνιτῶν Τεκταίου καὶ Ἀγγελίωνος. Δεύτερον, κατὰ χρονολογικὴν σειράν, ἦτο μία Μοῦσα κρατοῦσαν λύραν εἰς τὴν χεῖρα, τοῦ Ἀριστοκλέους, ἀδελφοῦ τοῦ Κανάχου, ἔργον χαλκοῦν, καὶ σύγχρονοι αὐτοῦ αἱ γλυπταὶ εἰκόνες τῶν Μουσῶν εἰς τὴν λάρνακα τοῦ Κυψέλου καὶ τὸν θρόνον τοῦ Ἀμυκλαίου Ἀπόλλωνος. Νεώτερα δὲ αὐτῶν ἦσαν τρία ἀγάλματα τῶν Μουσῶν, ἀφιερωθέντα εἰς τὸ ἐν Ἑλικῶνι ἱερὸν αὐτῶν, ἅτινα ἦσαν ἔργα τοῦ κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον ζήσαντος καλλιτέχνου Στρογγυλίωνος· καὶ τὰ ἀγάλματα τῶν Μουσῶν, ἅτινα μετὰ τῶν τοῦ Ἀπόλλωνος, τῆς Ἀρτέμιδος, τῆς Λητοῦς, τοῦ Διονύσου καὶ τῶν Θυιάδων, ἁπάντων ἔργων τῶν Ἀθηναίων καλλιτεχνῶν Πραξίου καὶ Ἀνδροσθένους, ἐκόσμουν τὰ ἀετώματα τοῦ ἐν Δελφοῖς ναοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος. Μεταγενέστερα τῶν προηγουμένων εἶναι τὸ ἀνάγλυφον Ἀρχελάου τοῦ Πριηνέως «Ἀποθέωσις τοῦ Ὁμήρου», εἰς τὸ ὁποῖον ἀπεικονίζοντο καὶ αἱ Μοῦσαι μετὰ τῆς μητρός των Μνημοσύνης καὶ τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὰ κατ' ἀπομίμησιν αὐτῶν ἀγάλματα τῶν Μουσῶν καὶ ἄλλων θεοτήτων τοῦ Ῥοδίου καλλιτέχνου Φιλίσκου, ζήσαντος κατὰ τὸν Α' π. Χ. αἰῶνα. Ἀλλὰ καὶ πλεῖστα ἄλλα ἀγάλματα τῶν Μουσῶν μνημονεύονται ἐν Ἀθήναις (*Παυσ*. I. 2. 5), ἐν Κορίνθῳ, ἐν Μεσσήνῃ, ἐν Μεγάλῃ πόλει, ἐν Τεγέᾳ καὶ ἀλλαχοῦ. Πάντων ὅμως τούτων ἀνώτερα ἦσαν τὰ ἐν Μεγάροις (*Παυσ*. I. 43. 6) ἀγάλματα τῶν Μουσῶν τοῦ Λυσίππου καὶ τὰ ἐν τῷ ἐν Ἑλικῶνι ἱερῷ αὐτῶν τοῦ Κηφισοδότου. Πλεῖσται ἦσαν αἱ γλυπταὶ παραστάσεις τῶν Μουσῶν εἰς σαρκοφάγους (ἀρίστη ἡ ἐπὶ σαρκοφάγου ἀποκειμένης ἐν Λούβρῳ) καὶ αἱ γραπταὶ ἐπὶ τῶν τοίχων διαφόρων ἀρχαίων μνημείων καὶ οἰκιῶν καὶ ἐπὶ ἀγγείων. Ἐκ τῶν διασω-

Digitized by Google

θεισῶν εἰκόνων τῶν Μουσῶν ἄξιαι μνείας ἰδίως εἶναι αἱ ἐπὶ δύο ἀναγλύπτων πλακῶν, ἀποκειμένων εἰς τὸ ἐν Ἀθήναις Ἐθνικὸν μουσεῖον, ἓξ Μοῦσαι. Αἱ πλάκες αὗται προέρχονται ἐκ τοῦ βάθρου τοῦ ἐν Μαντινείᾳ τῆς Ἀρκαδίας συμπλέγματος τῶν ἀγαλμάτων τοῦ Ἀπόλλωνος, τῆς Ἀρτέμιδος καὶ τῆς Λητοῦς τοῦ Πραξιτέλους, τῶν μαθητῶν τοῦ ὁποίου καὶ ἔργα εἶναι αἱ γλυπταὶ αὗται εἰκόνες τῶν Μουσῶν, ἡ ἐπὶ ἀγγείου τῆς Μήλου, ἀποκειμένου εἰς τὸ αὐτὸ μουσεῖον, γραπτὴ παράστασις τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ δύο Μουσῶν ἐπὶ ἅρματος συρομένου ὑπὸ πτερωτῶν ἵππων καὶ ἡ προρρηθεῖσα παράστασις τῆς σαρκοφάγου τοῦ Λούβρου.

Ἀλλὰ πλεῖσται εἶναι αἱ εἰκόνες τῶν Μουσῶν, αἵτινες ὁμοιάζουσι πρὸς ἀλλήλας κατὰ τὴν πλουσίαν ἀμφίεσιν καὶ τὴν εὐφυᾶ τοῦ προσώπου ἔκφρασιν, γλυπταὶ καὶ γραπταί, αἱ ὁποῖαι προῆλθον ἐκ τῆς σμίλης καὶ τοῦ χρωστῆρος νεωτέρων καλλιτεχνῶν. Τούτων δὲ δημοφιλεστέρα ἔγινε (διὰ τοῦτο καὶ κατὰ χιλιάδας κυκλοφοροῦσιν αἱ φωτογραφίαι αὐτῆς) ἡ τοῦ Τζούλιο Ρομάνο (Pippi), «Ὁ χορὸς τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τῶν Μουσῶν» (Palazzo Pitti, Firenze).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Schillbach*, De Musis. — *Deiters*, Ueber die Verehrung der Musen bei den Griechen (Bonn 1868). — *Rödiger*, Die Musen. — *Oberg*, Musarum typi monumentis veteribus expressi. — *Decharme-Ἀδαμαντίου*, Μυθολογία τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος. — *Roscher*, Myth. Lexikon. — *Τσούντα*, Ἱστορία τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς τέχνης.

Γ. Δ. ΚΑΨΑΛΗΣ

**Μοῦσαι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἐπισκοπῆς τῆς ἐπαρχίας Μυλοποτάμου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης. Κάτ. (1928) 95. Ε. Γ.

**μουσαίνδα** (ἡ) (Mussaenda) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ρουβιδοειδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

**Μουσαῖος** *[Μυθολ.]*. Υἱὸς τοῦ Ἀντιφήμου ἢ τοῦ Εὐμόλπου καὶ τῆς Μήνης ἢ τῆς Σελήνης. Ἐθεωρεῖτο μαθητὴς τοῦ Ὀρφέως ἢ τοῦ Λίνου καὶ ποιητὴς διαφόρων θρησκευτικῆς φύσεως ᾀσμάτων, ἐπῳδῶν, χρησμῳδιῶν, καταδέσμων, καθαρμῶν κ.τ.τ., τῶν ὁποίων θεωρεῖται σήμερον ὡς προσωποποίησις, καθὼς καὶ τὸ ὄνομά του ὑποδηλοῖ.

— **Μουσαῖος.** Ἐπικὸς ποιητής, ζήσας περὶ τὰ τέλη τοῦ Ε' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΣΤ' αἰῶνος μ. Χ. Συνέγραψεν ἐρωτικὸν ἐπύλλιον «Τὰ καθ' Ἡρὼ καὶ Λέανδρον» ἐκ 340 στίχων, τὸ ὁποῖον ὁ Köchly χαρακτηρίζει ὡς τὸ τελευταῖον ῥόδον ἐκ τοῦ μαραινομένου κήπου τῆς ἑλληνικῆς ποιήσεως. Καὶ ὁ μὲν μῦθος αὐτοῦ δὲν φαίνεται ἐπινόησις τοῦ ποιητοῦ, διότι τὸν ὑπαινίσσεται καὶ ὁ πρὸ ἑνὸς αἰῶνος ἀκμάσας Ausonius, ἡ δὲ γλῶσσα στερεῖται τῆς λιτότητος τῶν κλασσικῶν χρόνων. Παρὰ τὰς ἐλλείψεις του ὅμως εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων ἐρωτικῶν ποιημάτων, ἀποπνέει ἱλαρότητα καὶ χάριν ἑλληνικὴν καὶ εὗρε πολλοὺς μιμητὰς καὶ μεταγλωττιστάς, κατὰ τοὺς τελευταίους δὲ χρόνους διεσκευάσθη δραματικῶς ὑπὸ τοῦ Grillparzer. Ἐξεδόθη μετ' εἰσαγωγῆς καὶ σχολίων ὑπὸ Fr. Passow ἐν Λειψίᾳ τῷ 1816, κριτικὴ ἔκδοσις ἐγένετο ὑπὸ Dilthey ἐν Βόννῃ τῷ 1874 καὶ ὑπὸ Ludwig τῷ 1912. Τοῦ ἰδίου ποιητοῦ ἔργον εἶναι ἴσως καὶ τὸ διασωθὲν χαρίεν ἀλλὰ κολοβὸν ποίημα περὶ τοῦ ἔρωτος τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ τῆς Ἀρεθούσης (Ἀνθολογία Θ' 362), τοῦ ὁποίου ἡ τεχνικὴ ὑπενθυμίζει τοὺς στίχους τοῦ Νόννου, ὑπαινίσσεται δὲ τὴν ἧτταν τῶν Γότθων ἐν Ἤλιδι τῷ 396 μ. Χ., ὡς εἰκάζει ὁ ἐκδοὺς αὐτὸ Rich. Holland («De Alpheo et Arethusa» ἐν Commentat. Ribbek σ. 381—414). Ὁ ποιητὴς ταυτίζεται πρὸς τὸν ὑπὸ τοῦ Προκοπίου μνημονευόμενον ὡς φίλον του Μουσαῖον. Ν. Α.

**Μουσαῖος** (Musäus), ***Ἰωάννης-Κάρολος-Αὔγουστος.*** Γερμανὸς συγγραφεὺς (1735—1787). Κυριώτερα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Der deutsche Grandison», δι' οὗ ἐπεχείρησε νὰ σατιρίσῃ τὸν ἐνθουσιασμόν, ὃν προὐκάλεσε τὸ ὁμώνυμον ὑπερρομαντικὸν μυθιστόρημα τοῦ Ἄγγλου Ρίχαρντσον, «Physiognomische Reisen», σάτιρα κατὰ τοῦ Λαφάτερ καὶ «Volksmärchen der Deutschen». Α. Δ.

**μουσακᾶς** (ὁ)· φαγητὸν παρασκευαζόμενον ἐκ λαχανικῶν μετὰ κρέατος (κιμᾶ) καὶ ψηνόμενον εἰς τὸν φοῦρνον.

—*[Μαγειρ.]* Ὁ *μουσακᾶς* εἶναι εἶδος παστιτσίου μὲ κιμᾶν, εἰς τὸ ὁποῖον τὰ μακαρόνια ἀντικαθίστανται μὲ μελιτζάνες, ἢ κολοκυθάκια, ἢ καὶ μὲ πατάτες. Καβουρδίζομεν εἰς τὸ τηγάνι $1/2$ ὀκᾶν κιμᾶ μὲ 1—2 κουταλιὲς βουτύρου καὶ 2—3 ψιλοκομμένα κρεμμύδια, ἀφοῦ δὲ καβουρδισθῇ καλὰ τὸν σβήνομεν μὲ ἕνα ποτήρι κρασὶ ἄσπρο καὶ προσθέτομεν καὶ $1/2$ ὀκᾶν νερό, 1 κουταλιὰ ντομάτα μπελντὲ ἢ ἀνάλογη φρέσκη, μαϊδανό, ἁλάτι καὶ πιπέρι. Ἀφοῦ σκεπάσωμεν τὴν κατσαρόλα, τὴν ἀφήνομεν νὰ σιγοβράσῃ ἀπὸ $3/4$ τῆς ὥρας ἕως $1 1/2$ ὥραν, ἀναλόγως τῆς τρυφερότητος τοῦ κρέατος. Εἰς τὸ μεταξὺ ἔχομεν κόψει εἰς φέτες 7—8 μελιτζάνες μετρίου μεγέθους (ἢ μία ὀκᾶ κολοκυθάκια, ἢ 300 δράμια πατάτες) καὶ τὰς τηγανίζομεν μὲ μῖγμα βουτύρου καὶ λαδιοῦ. Ἅμα βράσῃ ὁ κιμᾶς, ἀλείφομεν ἕνα ταψὶ μὲ βούτυρο καὶ τὸ κοκκινίζομεν μὲ τριμμένη γαλέτα. Ρίπτομεν τότε εἰς τὸν κιμᾶν 3—4 κουταλιὲς γαλέτα καὶ 3 ἀσπράδια αὐγῶν καὶ ἀφοῦ τὰ ἀναμίξωμεν καλὰ στρώνομεν τὸ ἥμισυ τοῦ κιμᾶ ἐπάνω ἀπὸ τὶς μελιτζάνες (ἢ τὰ κολοκύθια κτλ.), κατόπιν κάμνομεν ἐπ' αὐτοῦ δευτέραν στρῶσιν ἀπὸ μελιτζάνες καὶ στρώνομεν κατόπιν τὸν ὑπόλοιπον κιμᾶν. Τὴν ἀνάμιξιν τῆς γαλέτας καὶ τῶν αὐγῶν μὲ τὸν κιμᾶν κάμνομεν τὴν τελευταίαν στιγμήν, διὰ νὰ μὴ προλάβῃ νὰ σφίξῃ τὸ μῖγμα, ὁπότε τὸ στρώσιμόν του δὲν θὰ γίνεται κανονικόν. Ἔχομεν ἐν τῷ μεταξὺ ἑτοιμάσει ἄσπρην σάλτσαν μπεσαμέλ, εἰς τὴν ὁποίαν προσθέτομεν τοὺς δύο κρόκους τῶν αὐγῶν, καὶ τὴν ἁπλώνομεν ἐπάνω ἀπὸ τὸν μουσακᾶν, προσθέτοντες κατόπιν ὀλίγο τυρὶ τριμμένο καὶ ὀλίγην γαλέταν. Τὸν βρέχομεν τότε μὲ λειωμένο βούτυρο καὶ τὸν ψήνομεν εἰς τὸν φοῦρνον ἐπὶ $3/4$ τῆς ὥρας. Μ. ΔΡ.

**Μουσάκειον** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Συκαράγης τῆς ἐπαρχίας Σαπῶν τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 88. Χ. Δ.

**Μουσάκωφ, *Βλαδίμιρος.*** Σύγχρονος Βούλγαρος λογοτέχνης. Ἐνεφανίσθη μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον μὲ τὸ ἔργον «Κηλῖδες αἵματος», ὅπερ διαπνέεται ὑπὸ τοῦ αἰσθήματος τοῦ τρόμου καὶ τῆς φρίκης. Τ. Β.

**Μουσαλᾶ**, ἢ ***Μουσαλλᾶ*** (Muss-Alla) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Βουλγαρίας, ἀποτελοῦν τὴν ὑψίστην κορυφὴν (2.930 μ.) τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ρίλου, ἐν τῷ ΒΔ. τμήματι τοῦ ὀρεινοῦ συστήματος τῆς Ροδόπης. Χ. Δ.

**Μουσαλὰρ** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ροδιά* (βλ. λ.).

—2) Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Μισαλὰρ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσαμᾶς** (ὁ)· δημοτ., ὕφασμα κηρωτὸν καὶ ἐν γένει ειδικῆς κατασκευῆς ἀδιάβροχον ὕφασμα· || τὸ ἐξ ἀδιαβρόχου ὑφάσματος ἐπανωφόριον: «ἐφόρεσα τὸ μουσαμᾶ μου γιατὶ βρέχει».

— *['Εγκυκλ.]* Τῆς λέξεως *μουσαμᾶς* γίνεται χρῆσις πρὸς προσδιορισμὸν εἰδῶν τινων ὑφαντουργικῶν, τὰ ὁποῖα, ἄσχετα ἐνίοτε πρὸς ἄλληλα ἀπὸ ἀπόψεως κατασκευῆς, κοινὸν γνώρισμα ἔχουσι τὸ ὅτι εἶναι ἀδιαπέραστα ὑπὸ τοῦ ὕδατος. Εἶναι δὲ ταῦτα: τὰ λεγόμενα «*κηρωτὰ ὑφάσματα*», διαποτισμένα ἢ ἐπηλειμμένα διὰ κηρωδῶν ὑλῶν, τὰ «*ἀδιάβροχα*», φέροντα ἐπίστρωμα καουτσοὺκ ἢ διαπεποτισμένα διὰ τῆς ὕλης ταύτης, οἱ «*τάπητες λινελαίου*» καὶ τὰ ὁμοίας πρὸς τούτους κατασκευῆς, ἀλλ' ἐλαφρότερα ἐπικαλύμματα οἰκιακῆς χρήσεως (διὰ τραπέζας μαγειρείων κλπ.).

**μουσάντρα** (ἡ)· ἰδιωματ., μεγάλο ντουλάπι, ἄλλως *μεσάντρα* (βλ. λ.) (τουρκ. musandra).

**Μούσας, *Ἀντώνιος.*** Ρωμαῖος ἰατρὸς (βλ. λ. *Ἀντώνιος* Μούσας).

**Μουσάτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κραναίας τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 206. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Πορίαρατα*. Χ. Δ.

**Μουσατζαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ εἰς *Ἀετοφωλιὰν* μετονομασθέντος συνοικισμοῦ τῆς κοινότητος Σιδηροκάστρου τῆς ἐπαρχίας Σιντικῆς τοῦ νομοῦ Σερρῶν. Κάτ. (1928) 13. Χ. Δ.

**Μουσατζῆκ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ροδόπης χωρίου *Μυρτίσκη* (βλ. λ.).

**μουσαφίρης** (ὁ)· ὁ φιλοξενούμενος, ὁ ἐπισκέπτης: «θὰ μαγειρέψω, γιατὶ ἔχω μουσαφίρη» (τουρκοαραβ. *μουσαφίρ*).

**μουσαφιρλίκι** (τό)· δημοτ., φιλοφρόνησις πρὸς τὸν νεωστὶ ἐλθόντα ἢ φιλοξενούμενον, προσφορὰ γεύματος ἢ ἁπλῶς ποτοῦ τινος: «ἔλα νὰ σοῦ κάμω τὰ μουσαφιρλίκια» (τουρκ. *μουσαφιρλίκ*).

**μουσαφιρχανᾶς** (ὁ)· ξενοδοχεῖον.

**Μουσβάνδα** / *Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν Λυκαονίᾳ, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Ε, 6, 16) ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀντιοχιανῆς, 15 μίλια πρὸς Ν. τῶν Λαράνδων (Καραμάν). Ἄγνωστος ἡ ταυτότης αὐτῆς. Α. Θ. Σ.

**Μούσγα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Κουδούνια* (βλ. λ.). Χ. Δ.

— **Μούσγα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Καμινίων τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 100. Χ. Δ.

**Μουσγαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Κλειστὸν* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσεῖον** (τό)· τὸ κατοικητήριον, τὸ τέμενος τῶν Μουσῶν· || ἐν Ἀλεξανδρείᾳ, σύμπλεγμα οἰκοδομημάτων μετὰ βιβλιοθηκῶν, περιπάτου καὶ ἐξέδρας, ὅπου συνήρχοντο καὶ συνεζήτουν φιλόλογοι· || οἰκοδόμημα, ὅπου ἐκτίθενται εἰς θέαν καὶ μελέτην συλλογαὶ ἔργων τέχνης: «μουσεῖον ἀρχαιολογικόν,—νομισματικόν,—βυζαντιακόν»· || συνεκδ. «μουσεῖον ὀρυκτολογικόν,—παλαιοντολογικόν».

—*['Εγκυκλ.]* *Μουσεῖον* κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἐκαλεῖτο ὁ ναὸς τῶν Μουσῶν· τόπος δηλαδὴ διαμονῆς τῶν Μουσῶν ἢ θέσις ἀφιερωμένη εἰς τὰς *Μούσας* (βλ. λ.). Ἀλλὰ καὶ πᾶς τόπος προωρισμένος δι' ἀσχολίας τελούσας ὑπὸ τὴν προστασίαν τῶν Μουσῶν ἐκλήθη κατ' ἐπέκτασιν *μουσεῖον*. Σήμερον διὰ τῆς λέξεως *μουσεῖον* νοεῖται πᾶν οἰκοδόμημα ἢ ἵδρυμα, ὅπερ περιλαμβάνει συλλογὴν ἀντικειμένων τέχνης ἢ ἐπιστήμης. Ὑπὸ τὴν γενικὴν ταύτην σημασίαν τὰ μουσεῖα διακρίνονται εἰς *μουσεῖα τέχνης* καὶ εἰς *ἐπιστημονικὰ μουσεῖα*. Εἰς τὴν πρώτην κατηγορίαν ὑπάγονται τὰ μουσεῖα τῶν καλῶν τεχνῶν, τὰ ἀρχαιολογικά, βιομηχανικά, βιοτεχνικά, τεχνολογικά, ἐμπορικὰ κλπ., εἰς τὴν δευτέραν δὲ πάντα τὰ ἱδρύματα τὰ περιέχοντα συλλογὰς ἀντικειμένων ἐπιστημονικῶν μελετῶν καὶ ἐρευνῶν. Ἡ κατάταξις αὕτη δὲν εἶναι ἀπολύτως ἀκριβής, διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν πολλὰ μουσεῖα εἶναι ἐν ταὐτῷ καὶ τεχνικὰ καὶ ἐπιστημονικά, ὡς γραφικῶς παρίσταται ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι:

ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ κατάταξις αὐτῶν τούτων τῶν ἀντικειμένων εἶναι ἐν πολλοῖς προβληματική.

Τὸ περιφημότερον μουσεῖον τῆς ἀρχαιότητος, ὑπὸ τὴν ἔννοιαν τοῦ τόπου ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκαλλιεργοῦντο τὰ γράμματα καὶ αἱ τέχναι, ἦτο τὸ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ μουσεῖον τῶν Πτολεμαίων. Τὸ μουσεῖον τοῦτο διηυθύνετο παρὰ ἱερέως, ὅστις ἦτο διαπεπιστευμένος μὲ τὰ τῆς λατρείας τῶν Μουσῶν, ἀπετέλει δ' ἐνδιαίτημα ὁμίλου σοφῶν (μὲ τὴν ἐξέδραν ἔνθα συνήρχοντο οὗτοι, τὸν οἶκον ἐν ᾧ ἔτρωγον, μὲ ἰδιαίτερα πιθανὸν διαμερίσματα, ἔνθα ἐγίνοντο μελέται ἀνατομικαί, ἀστρονομικαὶ κλπ.). Τὸ μουσεῖον περιελάμβανε καὶ τὴν περίφημον βιβλιοθήκην, ἡ ὁποία κατεστράφη ἐκ πυρκαϊᾶς κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Καίσαρος. Ἀνάλογα ἱδρύματα ὑπῆρξαν ἐν Κωνσταντινουπόλει, Περγάμῳ καὶ Ἀντιοχείᾳ.

Ἀλλὰ καὶ κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, ὅπως βραδύτερον κατὰ τὸν μεσαίωνα, ἀναφέρονται μεμονωμένα παραδείγματα πόλεων καὶ ἀτόμων, ἅτινα συνέλεγον περίεργά τινα πράγματα ἢ ἀντικείμενα τέχνης. Τοῦτο ὅμως οὔτε συστηματικῶς ἐγένετο οὔτε ἀπετέλεσε ποτὲ κανόνα. Αἱ ἰδιωτικαὶ συλλογαί, ἀκόμη καὶ κατὰ τὸν μεσαίωνα, δὲν προσέλαβον εὐρυτέραν σημασίαν. Τὰ μουσεῖα, μέχρι τῶν νεωτέρων χρόνων, δὲν ἀνεγνωρίζοντο ὡς ἱδρύματα.

Κυρίως ἡ καταγωγὴ τῶν μουσείων ἀνάγεται εἰς τοὺς χρόνους τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἡ ἀναβίωσις τοῦ ἐνδιαφέροντος πρὸς τὰς κλασσικὰς σπουδὰς ἐγέννησε καὶ τὸ ἐνδιαφέρον πρὸς τὰ λείψανα τῆς ἀρχαιότητος. Διάφοροι τότε ἰδιῶται παρεκινήθησαν νὰ καταρτίζωσι συλλογὰς αὐτῶν. Σὺν τῷ χρόνῳ τὸ πνεῦμα τῆς περιεργείας ἀνεπτύχθη καὶ ἡ μανία τοῦ συλλέγειν ἐπεξετάθη καὶ εἰς ἀντικείμενα ἀναγόμενα εἰς τὴν σπουδὴν τῆς φυσικῆς ἱστορίας καὶ τῶν ἐπιστημῶν, ὡς αὗται ἠννοοῦντο τότε. Τὰς συλλογὰς ὅθεν τὰς ὁποίας κατήρτισαν οἱ πρίγκιπες, οἱ εὐγενεῖς καὶ οἱ ἀνθρωπισταὶ τοῦ ΙΣΤ' καὶ ἀκόμη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, δέον νὰ θεωρήσωμεν ὄχι μόνον ὡς τὰ πρότυπα, ἀλλὰ καὶ ὡς τὰς ἀπαρχὰς τῶν σημερινῶν μουσείων. Μεταξὺ τῶν πρώτων συλλεκτῶν ἀντικειμένων φυσικῆς ἱστορίας ἀναφέρεται ὁ Γεώργιος Ἀγρικόλας (1490—1555), ἐπονομασθεὶς πατὴρ τῆς ὀρυκτολογίας. Ἐκ τῶν ἐργασιῶν τούτου λαβὼν ἀφορμὴν ὁ ἐκλέκτωρ τῆς Σαξωνίας Αὔγουστος ἵδρυσε τὸ «Kunst und Naturalien Kammer» (Ἐπιμελητήριον τέχνης καὶ φυσικῶν ἐπιστημῶν), σύγχρονος δ' αὐτοῦ ὑπῆρξε ὁ Κορράδος Γκέσνερ ἐκ Ζυρίχης (1516—1565), ὁ Γερμανὸς Πλίνιος. Ἕτεροι ἐπιστήμονες συλλέκται εἶναι ὁ Πέτρος Μπελὸν (Bélon, 1517—1564), ὁ Ἀνδρέας Τσεζαλπίνι (Cesalpini, 1519—1603), ὁ φυσικὸς Ἀλντροβάντι (Aldrovandi, 1527—1605), αἱ συλλογαὶ τοῦ ὁποίου ἀποτελοῦσι τὰς ἀπαρχὰς τοῦ μουσείου τῆς Βολωνίας, κ. ἄ. Ἀφ' ἑτέρου αἱ συλλογαὶ πανοπλιῶν, νομισμάτων καὶ ἄλλων ἀρχαιοτήτων τοῦ ἀρχιδουκὸς Φερδινάνδου τοῦ Β' εὑρίσκονται σήμερον ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Βιέννης, τὰ δὲ νομίσματα καὶ ἡ συλλογὴ ἀντικειμένων τῆς φυσικῆς ἱστορίας τοῦ Γάστωνος, δουκὸς τῆς Ὀρλεάνης (1608—1660), ἀποτελοῦσι τὸν πυρῆνα μουσείων τινῶν τῶν Παρισίων. Ὁ Ν. Φαμπρὶντ Πεϊρὲσκ (Fabride Peiresc, 1580—1637), ὁ θεωρούμενος ὡς ἱδρυτὴς τῆς ἐπιστήμης τῆς ἀρχαιολογίας ἐν Γαλλίᾳ, συνέλεξε φυτά, νομίσματα, βιβλία. Πολλὰ ἀντικείμενα τῆς συλλογῆς του εὑρίσκονται σήμερον εἰς τὸ ἀββαεῖον τῆς Ἁγίας Γενεβιέ-

Digitized by Google

βης. Αἱ συλλογαὶ τοῦ Θωμᾶ Χόβαρντ (Howard, † 1638) καὶ τῶν Τραϊντησκαντ (Tradescant, † 1660) ἀπήρτισαν τὸ πρῶτον μουσεῖον ἐν Ἀγγλίᾳ, αἱ συλλογαὶ δὲ τοῦ σὲρ Χὰνς Λῶν (Hans Loane, 1660—1753), τοῦ σὲρ Ροβέρτου Κόττεν (Cotton) καὶ τῶν δύο Χάρλεϋ (Harley) ἀποτελοῦσι τὸν πυρῆνα τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου. Πολλαὶ ἰδιωτικαὶ συλλογαὶ τῆς ΙΖ' ἑκατονταετηρίδος διασπαρεῖσαι ἀπωλέσθησαν. Τοὐναντίον αἱ ἰδιωτικαὶ συλλογαὶ τῆς ΙΗ' ἑκατονταετηρίδος κατὰ τὸ πλεῖστον διεσώθησαν, καὶ τοῦτο διότι μεθοδικώτερος ὑπῆρξεν ὁ τρόπος τοῦ καταρτισμοῦ αὐτῶν. Πολλοὶ Γερμανοὶ πρίγκιπες, Ἰταλοὶ καὶ Ἄγγλοι εὐγενεῖς ἔσχον τὴν φιλοδοξίαν νὰ καταρτίζωσι καὶ νὰ διατηρῶσι, πρὸς στολισμὸν τῶν μεγάρων των καὶ τῶν πριγκιπικῶν αὐλῶν των, διαφόρους συλλογάς. Αἱ συλλογαὶ αὗται, κατόπιν τῶν ἑκάστοτε διαφόρων πολιτικῶν μεταβολῶν, περιήρχοντο εἰς τὸ κράτος. Τὰ μεγαλύτερα μουσεῖα τῆς Εὐρώπης εἰς τὰς συλλογὰς ταύτας κυρίως ὀφείλουσι τὴν ἵδρυσίν των. Τὰ μουσεῖα ὅθεν ἀπὸ ἠθικῆς μὲν ἀπόψεως προῆλθον ἐκ τῆς ἐξαπλώσεως τοῦ ζήλου πρὸς τὰ γράμματα καὶ τὰς τέχνας, ἀπὸ πρακτικῆς ὅμως ἀπόψεως εἶναι προϊόντα ἰδιωτικῶν συλλογῶν ἀντικειμένων, τὰ ὁποῖα εἴτε ἀνευρίσκοντο ἐντὸς τῆς χώρας ἢ τῆς περιφερείας ἐν ᾗ κατηρτίζοντο αἱ συλλογαὶ αὗται, εἴτε μετεφέροντο, ἁρπαζόμενα, κλεπτόμενα ἢ καθ' οἱονδήποτε ἄλλον τρόπον ἀποκτώμενα ἀπὸ ξένας χώρας, καὶ τὰ ὁποῖα παρεδίδοντο εἰς τοπικόν τι μουσεῖον, ὅταν τὰ ἀντικείμενα ταῦτα ἔπαυον νὰ ἔχωσιν ἐνδιαφέρον διὰ τὸν ἀρχικὸν κάτοχον.

***Μουσεῖα τέχνης.*** Περὶ τῶν μουσείων τῶν καλῶν τεχνῶν βλέπε ἄρθρα *γλυπτοθήκη* καὶ *πινακοθήκη*. Εἰς πάσας τὰς χώρας ὑπάρχουσι μουσεῖα τέχνης (ἐθνικά, δημοτικὰ ἢ κοινοτικά). *Αἴγυπτος:* Τὸ ἐν Καΐρῳ μουσεῖον τῶν αἰγυπτιακῶν ἀρχαιοτήτων. *Αὐστρία:* Τὸ ἐν Βιέννῃ μουσεῖον τέχνης, περιέχον ἑλληνικάς, ρωμαϊκὰς καὶ αἰγυπτιακὰς ἀρχαιότητας, νομίσματα κλπ. *Ἀγγλία.* Τὸ ἐν Λονδίνῳ Βρεττανικὸν μουσεῖον, περιέχον τὴν συλλογὴν τῶν χειρογράφων τοῦ ἀλεξανδρινοῦ κώδικος, τοὺς καλυτέρους ἑλληνικοὺς παπύρους ἐξ Αἰγύπτου, τὰ ἐλγίνεια μάρμαρα, τὴν Δήμητρα τῆς Κνίδου, τὸ μνημεῖον τοῦ Νηρέως, λείψανα τοῦ Μαυσωλείου καὶ τῶν ναῶν τῆς Ἐφέσου καὶ Φιγαλείας κλπ. Διάφορα ἄλλα μουσεῖα ὑπάρχουσιν εἰς ἄλλας πόλεις. *Γαλλία:* Τὸ «Λοῦβρον», ἱδρυθὲν κατὰ τὴν ἐπανάστασιν, ἐν ᾧ στεγάζεται τὸ περίφημον ἑλληνικὸν ἄγαλμα τῆς Ἀφροδίτης τῆς Μήλου, τὸ μουσεῖον Λουξεμβούργου, Κλουνύ, τὸ δημοτικὸν μουσεῖον, τὸ μουσεῖον Ροντὲν καὶ ἄλλα μικρότερα. *Γερμανία:* Τὸ μουσεῖον τοῦ αὐτοκράτορος Φρειδερίκου, περιέχον ἀρχαιότητας τῆς Βαβυλῶνος, Ἀσσυρίας, Συρίας καὶ φοινικικάς, τὸ ἀρχαῖον καὶ τὸ νέον μουσεῖον, περιέχοντα συλλογὴν νομισμάτων, γύψινα συμπλέγματα, ἰχνογραφίας, χαλκογραφίας, τὸ ἐθνογραφικὸν μουσεῖον, ἐν ᾧ φυλάσσονται τὰ εὑρήματα τοῦ Σλῆμαν, ἡ ὡς μουσεῖον κατηρτισμένη ἐθνικὴ πινακοθήκη δι' ἔργα ζωγραφικῆς ἀπὸ τοῦ ἔτους 1780 μέχρι σήμερον, τὸ μουσεῖον τῶν ἀνακτόρων (Schloss Museum), διάφορα μουσεῖα ἐν Δρέσδῃ, τὸ περίφημον ἐν Μονάχῳ γερμανικὸν μουσεῖον. *Δανία:* Τὸ ἐν Κοπεγχάγῃ ἐθνικὸν μουσεῖον, τὸ μουσεῖον τέχνης καὶ βιομηχανίας καὶ τὸ λαϊκὸν μουσεῖον. *Ἐλβετία:* Τὸ ἐν Ζυρίχῃ ἐθνικὸν μουσεῖον, περιέχον συλλογὴν ἐζωγραφισμένων ὑάλων, καὶ τὰ ἐν Βασιλείᾳ, Βέρνῃ, Γενεύῃ καὶ Λωζάννῃ μουσεῖα. *Ἰταλία:* Τὰ πολυάριθμα μουσεῖα ἐν Ρώμῃ, τὸ ἐθνικὸν μουσεῖον Νεαπόλεως. *Ἱσπανία:* Τὸ ἐν Μαδρίτῃ ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον. *Πορτογαλία:* Τὸ ἐν Λισσαβῶνι ἐθνικὸν μουσεῖον. *Ρωσία:* Τὰ ἐν Μόσχᾳ, Πετρουπόλει, Χάρκωφ, Ὀδησσῷ, Κρασνόγιαρκ μουσεῖα. *Ἰαπωνία:* Τὸ ἐν Τόκιο ἐθνικὸν μουσεῖον. *Ἀμερική:* Τὸ ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ μητροπολιτικὸν μουσεῖον τέχνης, περιέχον αἰγυπτιακὰς καὶ κλασσικὰς ἀρχαιότητας, ὅπλα, πανοπλίας, τὴν διακοσμητικῆς τέχνης συλλογὴν τοῦ Μόργκαν ἀπὸ τοὺς χρόνους τῶν Μεροβιγγείων μέχρι τῆς ΙΘ' ἑκατονταετηρίδος, τὸ ἐν Βοστώνῃ, περιέχον πρωτότυπα ἔργα ἑλληνικῆς, ρωμαϊκῆς, ἀνατολικῆς, ἀμερικανικῆς, σινικῆς, ἰαπωνικῆς, ἰνδικῆς, αἰγυπτιακῆς κλασσικῆς τέχνης, τὰ μουσεῖα τοῦ πανεπιστημίου Χάρβαρτ, τῆς Οὐασιγκτῶνος, τῆς Φιλαδελφείας, τοῦ Ντητρόϊτ, τοῦ Πιτσβούργου (Carnegie Institut).

***Ἐπιστημονικὰ μουσεῖα.*** Πᾶσα σημαίνουσα πόλις τῆς ὑφηλίου ἔχει ἐπιστημονικὸν μουσεῖον. Τὰ ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: Τὸ βρεττανικὸν μουσεῖον ἐν Λονδίνῳ καὶ ἄλλα μουσεῖα εἰς τὰς πόλεις Μάντσεστερ, Βρέστην, Χάλην, Ἐδιμβοῦργον. Τὰ μουσεῖα τῆς φυσικῆς ἱστορίας ἐν Παρισίοις καὶ Λυῶνι. Τὸ βασιλικὸν μουσεῖον τοῦ Βελγίου καὶ τὸ μουσεῖον τοῦ βελγικοῦ Κόγκο ἐν Βρυξέλλαις. Τὸ ἐν Βερολίνῳ μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας, ἀνθρωπολογίας, ὀρυκτολογίας, τὰ ἐν Ἀμβούργῳ, Βρέμῃ, Δρέσδῃ μουσεῖα φυσικῆς ἱστορίας, τὸ ἐν Λειψίᾳ ἐθνογραφικόν, τὸ ἐν Μονάχῳ μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας, τὸ ἐν Στουττγάρτῃ ὅμοιον, περιέχον θαυμασίας παλαιοντολογικὰς συλλογάς. Τὸ ἐν Βιέννῃ αὐτοκρατορικὸν μουσεῖον, ἓν ἐκ τῶν λαμπροτέρων μουσείων τοῦ κόσμου, περιέχον τὴν καλλίστην ὀρυκτολογικὴν συλλογὴν τοῦ κόσμου. Τὸ ἐν Βουδαπέστῃ ἐθνολογικόν, περιέχον ἐξόχως σπουδαίας συλλογάς. Τὸ ὠκεανογραφικὸν καὶ τὸ προϊστορικὸν ἀνθρωπολογικὸν μουσεῖον ἐν Μονακό. Τὰ ἐν Λισσαβῶνι, Βαρκελώνῃ καὶ Μαδρίτῃ μουσεῖα τῆς φυσικῆς ἱστορίας. Τὸ γεωλογικόν, ὀρυκτολογικὸν καὶ ζῳολογικὸν μουσεῖον τοῦ Λέϊντεν τῆς Ὁλλανδίας, τὸ μουσεῖον Μπέργκεν διὰ τὴν σκανδιναυϊκὴν ἱστορίαν, τὸ ἐν Ὄσλο (Χριστιανίᾳ) μουσεῖον διὰ τὰς ἀρχαιότητας τῶν βορείων λαῶν, τὸ μουσεῖον τοῦ πανεπιστημίου τῆς Οὐψάλης. Τὸ ἐν Γενούῃ μουσεῖον (Museo Civico), τὸ ἐν Βολωνίᾳ γεωλογικὸν καὶ τὸ ἐν Νεαπόλει ζῳολογικὸν καὶ ἰχθυολογικόν. Τὰ ἐν Βέρνῃ, Γενεύῃ καὶ Λωζάννῃ τῆς φυσικῆς ἱστορίας. Τὰ ἐν Σόφιᾳ τῆς Βουλγαρίας, Βουκουρεστίῳ τῆς Ρουμανίας (ἔνθα καὶ τὸ δεινοθήριον), ἐν Πράγᾳ Τσεχοσλοβακίας, ἐν Κρακοβίᾳ καὶ Λεοπόλει τῆς Πολωνίας (βιομηχανικὸν καὶ φυτολογικὸν) μουσεῖα. Τὰ ἐν Φιλαδελφείᾳ, Σάλεμ (Μασσαχουσέττης), Νέᾳ Ὑόρκῃ, Οὐασιγκτῶνι καὶ ἄλλαις πόλεσι τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, καθὼς καὶ τὰ μουσεῖα τῶν πανεπιστημίων Χάρβαρτ καὶ Γιάλε, ὅπως καὶ τὰ ἐν Μεξικῷ, Ρίῳ Ἰανεΐρῳ, Μπουένος Ἄϊρες τῆς λοιπῆς Ἀμερικῆς.

***Ἀρχιτεκτονικὴ τῶν μουσείων.*** Τὰ πλεῖστα οἰκοδομήματα ἅτινα χρησιμεύουσιν ὡς μουσεῖα εἶναι οἰκοδομήματα τὰ ὁποῖα ἀρχικῶς εἶχον ἄλλον προορισμόν. Τοιαῦτα εἶναι τὰ μουσεῖα Λούβρου, Κλουνύ, Καρναβαλὲ τῶν Παρισίων, τὸ Μπελβεντέρε τῆς Βιέννης, τὸ μουσεῖον τῆς Νυρεμβέργης. Ἄλλα ἐκτίσθησαν κατὰ τὴν ἑλληνικὴν ἀρχιτεκτονικὴν παράδοσιν, μὲ δύο ὀρόφους, προθάλαμον ὁδηγοῦντα εἰς εὐρεῖαν αἴθουσαν, ἐν ᾗ ἐκτίθενται αἱ συλλογαί. Τοῦ τύπου τούτου μουσεῖα εἶναι τὸ μουσεῖον τοῦ Βερολίνου, ἡ κρυπτοθήκη τοῦ Μονάχου, τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον, ἡ ἐθνικὴ πινακοθήκη τοῦ Λονδίνου, τὸ μουσεῖον της Δρέσδης, τὰ ἐπιστημονικὰ μουσεῖα τῆς Βιέννης καὶ Μασσαλίας καί τινα μουσεῖα τῆς Ἀμερικῆς.

Ἡ νεωτέρα ἀρχιτεκτονικὴ τῶν μουσείων εἰσήγαγεν, ἀντὶ τῆς εὐρείας αἰθούσης, μικροὺς θαλάμους, ἵνα οὕτω διευκολύνηται ἡ ἔκθεσις ποικίλων ἔργων τέχνης κατὰ χρονικὰς περιόδους. Τοῦ τύπου τούτου μουσεῖα εἶναι τὸ τοῦ Μονάχου, Δαρμστάτης καὶ τὰ πλεῖστα τῶν ἀμερικανικῶν (ἰνστιτοῦτον τέχνης ἐν Ντητρόϊτ).

Ἐν τοῖς ἐπιστημονικοῖς μουσείοις οὐσιῶδες ἀρχιτεκτονικὸν στοιχεῖον ἀποτελεῖ ἡ διάταξις σχεδίου ἐπιτρέποντος τὴν ἄνετον κυκλοφορίαν τῶν ἐπισκεπτῶν ἢ σπουδαστῶν, τὴν λογικὴν κατάταξιν τῶν συγκροτημάτων καὶ τὸν καλὸν φωτισμόν. Ἀρχικῶς τὸ ἐπιστημονικὸν μουσεῖον ἐσχεδιάζετο ὡς οἰκοδόμημα ἐκθέσεως. Σήμερον ὅμως ἐπικρατεῖ ἡ ἄποψις ὅτι τὰ μουσεῖα ταῦτα χρησιμεύουσιν ὄχι μόνον ὡς ἱδρύματα ἐκθέσεως τῶν ἐπιστημονικῶν ἐρευνῶν ἀλλὰ καὶ ὡς τόποι μελέτης. Συμφώνως δὲ πρὸς τὴν ἄποψιν ταύτην ἔχει διαρρυθμισθῆ ἡ ἀρχιτεκτονική των. Ἀντικείμενα ἐλαχίστης διὰ τὸν συνήθη ἐπισκέπτην, μεγίστης ὅμως σημασίας διὰ τὸν μελετητὴν ἐκτίθενται εἰς ἰδιαιτέρους θαλάμους. Πολλὰ τῶν νεωτέρων μουσείων ἔχουσιν ἀκροατήρια. Μεγάλα δὲ μουσεῖα, ὡς τὸ ἐν Τολέδῳ τῆς πολιτείας Ὀχάϊο τῆς Ἀμερικῆς, ἔχουσιν ἐγκαταστήσει καὶ ὄργανον, ἐν ᾧ ἐκτελοῦνται διάφορα τεμάχια μουσικῆς δωματίου (ἐκ τῶν χειρογράφων τῶν περιεχομένων ἐν τῷ μουσείῳ). Ἐν Γερμανίᾳ δὲ διὰ τοὺς ἐνδιαφερομένους διὰ τὴν ἀστρονομίαν ἔχουσιν ἐγκαταστήσει ἐν τῷ μουσείῳ μηχάνημα, δι' οὗ προβάλλονται ἐπὶ τοῦ θόλου τοῦ οἰκοδομήματος εἰκόνες τῶν ἀστέρων καὶ πλανητῶν. Ἔνια ζῳολογικά, βοτανικὰ καὶ ἀνθρωπολογικὰ μουσεῖα ἔχουσιν ἀναπαραστάσεις ὁμάδων ἐν τῷ φυσικῷ αὐτῶν περιβάλλοντι (habitat). [Περὶ τῶν ἐν Ἑλλάδι διαφόρων μουσείων βλ. λ. *Ἑλλάς.*] Γ. Ι. Β.

**Μουσεῖον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν πολλῶν φρουρίων τῆς Μακεδονίας, τὰ ὁποῖα ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μουσελέμ,** ***Ἀλέξιος.*** Βυζαντινὸς στρατηγὸς τῷ 790, ἀπεστάλη εἰς τὸν Πόντον, ἵνα καταστείλῃ τὰς ἐναντίον τῆς αὐτοκρατείρας Εἰρήνης τῆς Ἀθηναίας καὶ ὑπὲρ τοῦ συμβασιλεύοντος υἱοῦ της Κωνσταντίνου ΣΤ' ἐκδηλώσεις τοῦ ἐκεῖ στρατοῦ. Ὁ Ἀλέξιος, ὅστις ἦτο ὀπαδὸς τῶν μεταρρυθμίσεων καὶ συνεπῶς διέκειτο ἐχθρικῶς πρὸς τὴν Εἰρήνην, ὄχι μόνον δὲν ἐνήργησέ τι κατὰ τῶν στασιαστῶν, ἀλλ' ἑνωθεὶς μετ' αὐτῶν καὶ ἀναγορευθεὶς ἀρχηγὸς των ἀνευφήμισε τὸν Κωνσταντῖνον ὡς μόνον αὐτοκράτορα. Τὸ αὐτὸ ἔπραξαν καὶ τὰ ἄλλα στρατεύματα τῶν μικρασιατικῶν θεμάτων, ἅτινα ἐν τέλει ἀπῄτησαν καὶ ἐπέτυχον νὰ ἀπομακρυνθῇ ἡ Εἰρήνη ἐκ τῶν παλατίων καὶ νὰ παραμείνῃ μόνος ὁ Κωνσταντῖνος. Οὗτος ἐκάλεσε τότε εἰς Κωνσταντινούπολιν τὸν Ἀλέξιον, ὃν ἀνηγόρευσε πατρίκιον καὶ παντοειδῶς ἐτίμησεν. Ἡ χλιαρὰ ὅμως πολιτικὴ τοῦ Κωνσταντίνου καὶ αἱ ἀτυχεῖς ἐκστρατεῖαι αὐτοῦ κατὰ τῶν Βουλγάρων καὶ τῶν Ἀράβων συνετέλεσαν εἰς τὴν μετ' ὀλίγον (τῷ 792) ἐπάνοδον τῆς Εἰρήνης εἰς τὰ παλάτια καὶ τὴν ἀνάκτησιν ὑπ' αὐτῆς τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας. Εὗρε δὲ τότε τὴν εὐκαιρίαν νὰ ἐκδικηθῇ τὸν Ἀλέξιον. Λαβοῦσα ἀφορμὴν ἐκ τῆς ὑποβληθείσης παρακλήσεως τοῦ στρατοῦ τοῦ ἐν τῷ Πόντῳ θέματος τῶν Ἀρμενιακῶν, ὅπως ἐπαναδιορισθῇ ὁ Ἀλέξιος στρατηγός των, κατηγόρησε τοῦτον ὡς συνωμοτοῦντα κατὰ τοῦ θρόνου, τὸν ἐφυλάκισε καὶ μετ' ὀλίγον τὸν ἐτύφλωσε. Ν. ΚΑΣ

—**Μουσελέμ,** ***Ἀλέξιος.*** Βυζαντινὸς στρατηγός. Κατήγετο ἐκ τῆς ἐν Πόντῳ παλαιᾶς οἰκογενείας τῶν Κρηνιτῶν καὶ ἐφημίζετο διὰ τὴν γενναιότητα καὶ τὸ ἀνδρικὸν αὐτοῦ κάλλος, δι' ὃ καὶ ἐξελέγη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Θεοφίλου ὡς σύζυγος τῆς θυγατρός του Μαρίας. Προαχθεὶς τότε εἰς καίσαρα καὶ προχειρισθεὶς εἰς στρατηγόν, ἀπεστάλη (περὶ τὸ 840) κατὰ τῶν ἐν Ν. Ἰταλίᾳ καὶ Σικελίᾳ Ἀράβων, οὓς ἐνίκησεν ἐπανειλημμένως. Αἱ ἐπιτυχίαι του αὗται ἐκίνησαν τὸν φθόνον τῶν αὐλικῶν, οἵτινες διέβαλον τὸν Ἀλέξιον παρὰ τῷ Θεοφίλῳ ὡς μελετῶντα δῆθεν νὰ ἀνακηρυχθῇ βασιλεὺς τῶν ἰταλικῶν ἐκείνων ἐπαρχιῶν. Ὁ Θεόφιλος, φιλύποπτος ἐκ φύσεως, ἐπίστευσε τὰς διαβολὰς καὶ ἔσπευσε νὰ ἀνακαλέσῃ εἰς Κωνσταντινούπολιν τὸν Ἀλέξιον, ὅστις ὅμως φοβούμενος ἠρνήθη νὰ ὑπακούσῃ εἰς τὴν πρόσκλησιν τοῦ αὐτοκράτορος. Ἐν τέλει ἡ Μαρία ἐπεμβᾶσα παρὰ τῷ πατρὶ αὐτῆς, ἔλαβε τὴν ὑπόσχεσιν περὶ ἀσυλίας τοῦ συζύγου της Ἀλεξίου, ἥτις καὶ διεβιβάσθη αὐτῷ διὰ τοῦ ἀρχιεπισκόπου Θεοδώρου τοῦ Κριθίνου, ἐπὶ τούτῳ ἀποσταλέντος εἰς Σικελίαν. Ὁ Ἀλέξιος ἐπανῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἀποθάνει ἡ Μαρία, ὁ δὲ Θεόφιλος, λησμονήσας τὰς ὑποσχέσεις του, διέταξε τὴν φυλάκισιν τοῦ Ἀλεξίου, τὴν μαστίγωσιν αὐτοῦ καὶ τὴν δήμευσιν ἁπάσης τῆς περιουσίας του. Ἡ σθεναρὰ στάσις τοῦ ἀρχιεπισκόπου Θεοδώρου καὶ τοῦ πατριάρχου Ἰωάννου Ζ', ἐλεγξάντων δημοσίᾳ τὸν αὐτοκράτορα, ἐξηνάγκασαν αὐτὸν ν' ἀποφυλακίσῃ τὸν Ἀλέξιον καὶ νὰ τῷ ἀποδώσῃ τό τε ἀξίωμα καὶ τὴν περιουσίαν του· ἀλλ' οὗτος, ἀπογοητευθεὶς ἐκ τῆς ἀδίκου καταστροφῆς ἣν ὑπέστη, δὲν ἠθέλησε πλέον νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν, καρεὶς δὲ μοναχὸς ἐνεκλείσθη εἴς τι ὑπ' αὐτοῦ κτισθὲν μοναστήριον. Ν. ΚΑΣ

**Μουσελές,** ***Ἀλέξιος.*** Βυζαντινὸς ναύαρχος. Ἐπῆλθε μετὰ τοῦ στόλου του κατὰ τῶν μέχρι τοῦ Βοσπόρου ἐπιδραμόντων Βουλγάρων, περὶ τὸ 925, οὓς ἀποβιβασθεὶς εἰς τὴν ξηρὰν προσέβαλε μετὰ τῶν στρατηγῶν Ἰωάννου, Λέοντος καὶ Πόθου Ἀργυροῦ. Κατὰ τὴν ἐπελθοῦσαν σύγκρουσιν οἱ Βυζαντινοὶ ἡττήθησαν καὶ ὁ Μουσελές, σπεύδων νὰ ἀνέλθῃ ἐπὶ τοῦ πλοίου του, ἔπεσεν εἰς τὴν θάλασσαν καὶ ἐπνίγη. Ν. ΚΑΣ

**Μουσελὴμ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Δρατσίστης τῆς ἐπαρχίας Δράμας τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτοικοι (1928) 108. Ἤδη μετωνομάσθη εἰς *Ἀηδονόκαστρον*.

— **Μουσελὴμ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ εἰς *Ἀμυγδαλιὰν* μετονομασθέντος συνοικισμοῦ τῆς κοινότητος Λευκίμης της ἐπαρχίας Σουφλίου τοῦ νομοῦ Ἕβρου. Κάτ. (1928) 52. Χ. Δ.

**μουσελίμης** (ὁ). Ὁ κατώτερος τῶν διοικητικῶν ὑπαλλήλων ἐν τῇ παλαιᾷ Τουρκίᾳ, ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸν κατόπιν *καϊμακάμην* (ὑποδιοικητὴν) ἢ *μουδίρην* (= δήμαρχον διοριζόμενον). Μουσελίμηδες ἀπεστέλλοντο καὶ εἰς Ἑλλάδα ἐπὶ τουρκοκρατίας. Ν. Μ.

**Μουσελίμης,** ἢ ***Κομνηνός, Διονύσιος.*** Πατριάρχης τῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ. λ. *Διονύσιος* Δ').

— **Μουσελίμης,** ***Σπῦρος.*** Ἕλλην λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Ποπόβῳ τῆς Ἠπείρου τῷ 1898. Ἀσχοληθεὶς εἰς τὴν λαογραφίαν ἐδημοσίευσε τὴν συλλογὴν «Παροιμίες καὶ μῦθοι». Τῷ 1926 ἐβραβεύθη ὑπὸ τῶν «Ἠπειρωτικῶν χρονικῶν» «Ἠπειρωτικὴ συλλογὴ λαογραφικοῦ ὑλικοῦ» καὶ τῷ 1928 ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἰδιωτισμοὶ καὶ ξενικὲς λέξες τῶν Σουλιορειτῶν» συλλογὴ τοῦ ἰδίου.

**μουσελίνα** (ἡ), καὶ ***μουσουλίνα*** · λεπτὸν βαμβακερὸν ὕφασμα, ὀνομασθὲν οὕτως ἐκ τῆς ἐν Μεσοποταμίᾳ πόλεως *Μοσούλης* (βλ. λ.), ὅπου ἀρχικῶς κατεσκευάζετο.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἡ *μουσελίνα* εἶναι λεπτόν, ἀραιόν, ἡμιδιαφανές, βαμβακερὸν ὕφασμα, ὑφαινόμενον δι' ἴσου ἀριθμοῦ νημάτων στήμονος καὶ κρόκης (20—30 περίπου νήματα κατὰ ὑφεκατόμετρον), ἐξ ὧν τὰ πρῶτα εἶναι κατὰ πολὺ παχύτερα τῶν δευτέρων. Κατὰ κανόνα εἶναι ἁπλοῦν μονόχρωμον ὕφασμα, ἐνίοτε ὅμως διακοσμεῖται διὰ κεντημάτων. Κατ' ἀπομίμησιν τῆς ὑφάνσεως τῆς βαμβακερᾶς μουσελίνας, κατασκευάζονται ἤδη καὶ μάλλινά τινα καὶ μεταξωτὰ ὑφάσματα, προσλαβόντα τὸ ἴδιον ὄνομα. —Ρ.

**μουσελκὰλκ** (ἡ) (Muschelkalk) *[Ὀρυκτολ.]*. Γερμανικὴ ὀνομασία τοῦ *κογχυλιάτου* λίθου (βλ. λ.) καὶ τῆς ἀντιστοίχου ὑποδιαπλάσεως. Γ. Β.

**Μουσθένη** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ἀποτε-

Digitized by Google

λοῦσα ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται εἰς τὸ μέσον τῆς μεταξὺ τῶν ὀρέων Παγγαίου καὶ Συμβόλου κοιλάδος καὶ ἀποτελεῖ μετὰ τῆς ἐγγὺς κειμένης Μεσορώπης τὸ κέντρον τῶν ἐν τῇ κοιλάδι χωρίων. Συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, ὑπὸ κατασκευήν, μετὰ τοῦ Πραβίου καὶ τῆς Καβάλλας καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.655. χ. Δ.

**μουσικὴ** (ἡ)· (ἀρχ.) πᾶσα τέχνη προστατευομένη ὑπὸ τῶν Μουσῶν, ἰδίᾳ ἡ λυρικὴ ποίησις πρὸς μέλος ᾀδομένη· κατ' ἐπέκτ., τὰ γράμματα καὶ αἱ καλαὶ τέχναι ἐν τῷ συνόλῳ των· || ἡ τέχνη τοῦ συναρμολογεῖν τοὺς ἤχους συμφώνως πρὸς ὡρισμένους φυσικοὺς καὶ αἰσθητικοὺς νόμους.

—[*Ἐγκυκλ.*] Λέγοντες *μουσικὴν* οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες ὑπενόουν πολύμορφον τέχνην, περιλαμβάνουσαν ἐν ταὐτῷ τὴν *ποίησιν*, τὴν *μουσικὴν* (ὑπὸ τὴν σύγχρονον τῆς λέξεως ἔννοιαν) καὶ τὴν *ὄρχησιν*. Διὰ τὴν τέχνην τῶν ἤχων εἰδικῶς μετεχειρίζοντο τὴν λέξιν *ἁρμονική*. Ἐκ τῶν πολλῶν ὁρισμῶν περὶ μουσικῆς τῶν ἀρχαίων ὁ τοῦ Ἀριστοτέλους εἶναι πλέον συγκεκριμένη, διαφέρουσα τῶν ἀοριστολογιῶν τῶν ἄλλων σοφῶν: «Ἐνῷ — γράφει — ἡ ζωγραφικὴ καὶ ἡ γλυπτική, ἀπευθυνόμεναι εἰς τὴν ὅρασιν, μιμοῦνται τὰ ἐξωτερικὰ πράγματα καὶ τὰ πρόσωπα τῇ βοηθείᾳ τῶν χρωμάτων καὶ τῶν σχημάτων, αἱ μουσικαὶ τέχναι (ποίησις, μουσική, ὄρχησις), αἱ ὁποῖαι ἐνεργοῦν διὰ μέσου τῆς ἀκοῆς, μιμοῦνται τὰ ψυχικὰ συναισθήματα καὶ τὰς πράξεις διὰ τοῦ ῥυθμοῦ, τοῦ λόγου καὶ τῶν μελῳδικῶν διαδοχῶν» (*Ἀριστοτέλους* «Ποιητική»). Ὁ αὐτὸς λέγει: «Ἡ μουσικὴ οὐδὲν ἄλλο εἶναι, ἢ ἐντονωτέρα ἀπόλαυσις τῆς ποιήσεως, ἔργον δ' ἔχει νὰ ἐξεγείρῃ ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ ἀκροατοῦ τὸ αἴσθημα καὶ τὰς ἰδέας, αἵτινες εἶναι κατάλληλοι νὰ διευκολύνωσι τὴν πλήρη κατανόησιν τοῦ ποιητικοῦ ἔργου, τοῦτο δ' ἀποτελεῖ τὸ κεντρικὸν σημεῖον, περὶ ὃ ὀφείλουσι νὰ ταχθῶσι πάντα τὰ στοιχεῖα τῆς ἐκτελέσεως».

Παρὰ τοῖς συγχρόνοις ὁ ὁρισμὸς τοῦ Ρουσσώ, καθ' ὃν «Μουσικὴ εἶναι ἡ τέχνη τοῦ συναρμολογεῖν ἤχους ἡδεῖς τῇ ἀκοῇ», οὐδόλως πλέον ἱκανοποιεῖ, διότι ἠχητικοὶ συνδυασμοὶ ἀρεστοὶ εἰς τοὺς μὲν εἶναι ἀφόρητοι εἰς τοὺς ἄλλους. Οἱ Κινέζοι θεωροῦσι βάρβαρον τὴν μουσικὴν τῶν Εὐρωπαίων, ἐνῷ ἐξ ἄλλου οἱ τελευταῖοι οὗτοι δὲν δύνανται νὰ ἀνεχθῶσι τὴν μουσικὴν τῶν πρώτων. Ἡ κατὰ τὸν μεσαίωνα πρωτόγονος ἁρμονία, ἡ βασιζομένη ἐπὶ τῆς συνηχήσεως τῆς πέμπτης καὶ τῆς τετάρτης, εἶναι ἀπολύτως ἀπαράδεκτος διὰ τὰ ὦτα τῶν συγχρόνων, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου ὡρισμένος συνδυασμὸς τῶν ὑπερνεωτεριστῶν προκαλοῦσι δυσάρεστον συναίσθημα ἐπὶ τῶν συντηρητικῶν. Πληρέστερος εἶναι ὁ ὁρισμὸς τοῦ Καΐστλιν (Köstlin): «Ἡ μουσικὴ τέχνη εἶναι ἡ παράστασις τοῦ καλοῦ διεξαγομένη διὰ τόνων ἢ σχημάτων τῆς λεγομένης διαστηματικῆς, ἤτοι μελῳδικῆς κινήσεως τῆς φωνῆς. Ὁ φυσικὸς αὐτῆς τύπος εἶναι ἡ κίνησις, ἥτις εἶναι ἀκατανόητος μὲν ἄνευ ὡρισμένου χρονικοῦ μέτρου, ἀκατάληπτος δὲ ὡς σχῆμα, ὡς ἰδία μορφὴ κινήσεως ἄνευ κανονικῆς τῶν μορίων αὐτῆς ἐπαναλήψεως. Τὰ πρώτιστα λοιπὸν στοιχεῖα τῆς μουσικῆς, ὡς τέχνης μελῳδικῆς κινήσεως, εἶναι τὸ *μέτρον*, ὁ *ῥυθμὸς* καὶ ἡ *συμμετρία*». Ὁ Ρίμαν (Riemann) δίδει τὸν ἑξῆς ὁρισμόν: «Ἡ μουσικὴ εἶναι ταυτοχρόνως τέχνη καὶ ἐπιστήμη. Ὡς τέχνη εἶναι ἡ ἐκδήλωσις τοῦ καλοῦ διὰ τῶν ἤχων· ἀλλ' ἡ ἐκδήλωσις αὕτη βασίζεται ἐπὶ ἀκριβοῦς ἐπιστήμης, ἀποτελουμένης ἐκ τοῦ συνόλου τῶν νόμων, οἵτινες ἀφ' ἑνὸς διέπουσι τὴν παραγωγὴν τῶν ἤχων καὶ ἀφ' ἑτέρου ἐξετάζουσι τὰς σχέσεις ὀξύτητος καὶ διαρκείας». Ἀναφέρομεν ἀκόμη τὸν ὁρισμὸν τοῦ Παύλου Ρουνιὸν (Rougnon) ἐν τῇ «Μουσικῇ Ἐγκυκλοπαιδείᾳ»: «Μουσικὴ εἶναι ἡ ἐπιστήμη τῶν ἤχων καὶ ἡ τέχνη τοῦ συνδυασμοῦ αὐτῶν ὑπὸ ὅρους προσαρμοζομένους εἰς τὸ ἀνθρώπινον αἴσθημα τῆς ἁρμονίας».

Κύρια συστατικὰ τῆς μουσικῆς εἶναι: — 1) Ὁ *ἦχος*, ἄνευ τοῦ ὁποίου μουσικὴ δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ὑπάρξῃ. Ὁ ἦχος ἐνέχει ὅμως ἕτερα διακριτικὰ στοιχεῖα: τὴν *χροιάν*, τὸ ἰδιαίτερον δηλαδὴ ἐκεῖνο χρῶμα, τὸ ὁποῖον ἐπιτρέπει νὰ διακρίνεται μία φωνὴ ἀπὸ μίαν ἄλλην, ἓν ὄργανον ἀπὸ ἕτερον· τὴν *ἐκπομπήν*, διὰ τῆς ὁποίας ἦχος τις λαμβάνει τὴν ποθουμένην ὀξύτητα ἢ βαρύτητα· τὴν *ἔντασιν*, διὰ τῆς ὁποίας ὁ ἦχος αὐξάνει ἢ μειοῦται εἰς δύναμιν· τὴν *διάρκειαν*, ἥτις ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς παρατάσεως ἢ τῆς παύσεως τῶν παλμικῶν δονήσεων τοῦ ἤχου. Ἕτερα κύρια συστατικὰ τῆς μουσικῆς εἶναι: — 2) Ὁ *ῥυθμός*, διὰ τοῦ ὁποίου καθορίζεται ὁ τρόπος τῆς διαδοχῆς τῶν χρονικῶν ἀξιῶν διὰ μέσου μετρικῶν μονάδων εὐκόλως διακρινομένων. — 3) Ἡ *μελῳδία*, ἥτις παρουσιάζει τὴν διαδοχὴν ἤχων, προχωρούντων μεμονωμένως καὶ κατὰ λογικὴν τάξιν. — 4) Ἡ *ἁρμονία*, ἥτις εἶναι ἡ ταυτόχρονος συνήχησις περισσοτέρων φθόγγων.

Ἡ εὐρωπαϊκὴ μουσικὴ βασίζεται ἐπὶ τῆς *μείζονος* καὶ τῆς *ἐλάσσονος* κλίμακος, ὧν τὰ ὀνόματα τῶν φθόγγων καὶ αἱ ἀκουστικαὶ σχέσεις εἶναι αἱ ἑξῆς:

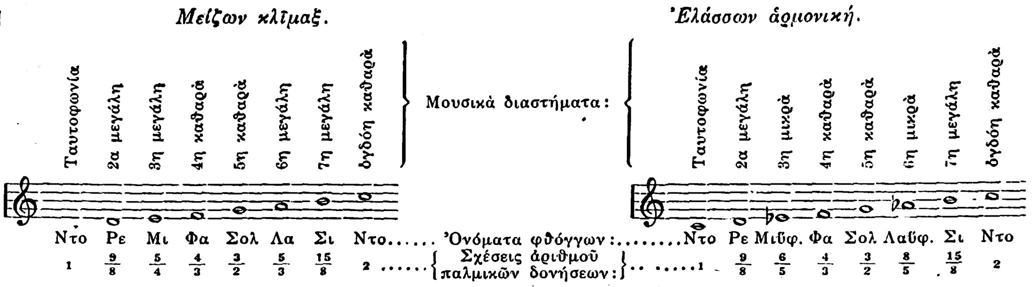


ΕΞΕΛΙΞΙΣ ΤΗΣ ΜΟΥΣΙΚΗΣ. Τὸ νὰ καθορισθῇ ἡ ἡλικία τῆς μουσικῆς θὰ ἦτο τόσον ἀκατόρθωτον, ὅσον ἀδύνατον εἶναι νὰ ζητηθῇ ἡ ἀκριβὴς ἐποχὴ καθ' ἣν ἐνεφανίσθη ὁ ἔναρθρος λόγος ἐπὶ τῆς γῆς. Πάντως, ἀσφαλὲς τυγχάνει ὅτι ὁ ἄνθρωπος, ἀφ' ἧς ἀντελήφθη τὴν δυνατότητα τῆς διὰ τοῦ λάρυγγος ἐκπομπῆς ἤχων, ἐπεζήτησε καὶ τὴν λογικὴν αὐτῶν συναρμογήν. Μὴ δυνάμενος νὰ τὴν ἑρμηνεύσῃ, τῇ προσέδωκεν ἀρχικῶς μυστηριώδη σημασίαν, διὸ παρ' ἅπασι τῆς ἀρχαίοις λαοῖς, καὶ σήμερον ἀκόμη μεταξὺ τῶν πρωτογόνων φυλῶν, ἡ μουσικὴ ἀποτελεῖ στοιχεῖον μαγγανείας. Πολὺ πρὶν ἢ ὀργανωθῇ ἡ θρησκεία, οἱ προπάτορες ἡμῶν προσεπάθουν διὰ μαγικῶν ᾀσμάτων νὰ δώσωσι ζωὴν εἰς τοὺς νεκρούς, νὰ ἀπομακρύνωσι τὰς ἀσθενείας, νὰ προκαλέσωσι βροχήν, ἢ ν' ἀποφύγωσι τὴν καταιγίδα. Ἡ παράδοσις τοῦ Ὀρφέως, ὅστις ἀπαντᾶται ἐπίσης παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ὑπὸ τὸ ὄνομα Κρίσνα-Γκοβίντα καὶ παρὰ τοῖς Κινέζοις, ὡς αὐτοκράτωρ Φοὺ-Χί, εἶναι ἀρκετὰ δηλωτικὴ τῆς μυστηριώδους δυνάμεως, ἣν ἀνέκαθεν ἀπέδωκαν οἱ ἄνθρωποι εἰς τὴν μουσικήν. Τί εἴδους ἦσαν τὰ ᾄσματα ταῦτα, εἶναι ἀδύνατον νὰ γνωρίσωμεν, ἐφ' ὅσον οὐδὲν γραπτὸν μνημεῖον μετὰ μουσικῶν σημείων, τῆς ἀπομεμακρυσμένης ἐκείνης ἐποχῆς, ἔχει περιέλθει μέχρις ἡμῶν. Ἓν μόνον πρᾶγμα εἶναι καθωρισμένον· ὅτι παρ' ἅπασι σχεδὸν τοῖς ἀρχαίοις λαοῖς, Κινέζοις, Ἰνδοῖς, Ἕλλησι, προγενεστέροις τοῦ ῥαψῳδοῦ Ὀλύμπου, Κέλταις, Γαλάταις κλπ., ὡς βάσις τῆς μουσικῆς ἐχρησιμοποιήθη ἡ πεντάτονος ἀνημιτόνιος κλῖμαξ: ντο-ρε-μι-σολ-λα.

Ἀλλ' ἐὰν ἐλάχιστα γνωρίζωμεν περὶ τῆς ἀρχαίας μουσικῆς, τὸ πλῆθος τῶν περισωθεισῶν ἀναπαραστάσεων ἀοιδῶν καὶ μουσικῶν ὀργάνων μᾶς δίδουσι μίαν ἰδέαν τοῦ πόσον ἡ τέχνη αὕτη ἐκαλλιεργήθη καὶ ποίαν θέσιν κατεῖχεν εἰς τὸν δημόσιον καὶ ἰδιωτικὸν βίον τῶν πρωτογόνων λαῶν. Τὰ ἀρχαιότερα δείγματα μουσικοῦ πολιτισμοῦ θέλομεν ἀναζητήσει παρὰ τοῖς Αἰγυπτίοις τῆς προϊστορικῆς ἐποχῆς (5000—4000 π. Χ.), οἵτινες, χάρις εἰς τὴν συνήθειαν τοῦ νὰ ἐγκλείωσιν εἰς τοὺς τάφους των ἀντικείμενα οἰκιακῆς χρήσεως, μᾶς ἐκληροδότησαν πλεῖστα ἀγγεῖα μετ' ἀναπαραστάσεων *κρουστῶν ὀργάνων*. Τὰ ὄργανα ταῦτα εἶναι τὰ πρῶτα ἐμφανισθέντα ἐπὶ τῆς γῆς, δεδομένου ὅτι ἐχρησίμευον εἰς τὸ νὰ σημειῶσι τὸν ῥυθμόν, τὸ βασικὸν τοῦτο στοιχεῖον τῆς μουσικῆς, ἀπαραίτητον ἀφ' ἧς ὁ ἄνθρωπος ἐδημιούργησε τὴν *μαγικὴν ὄρχησιν*, ἐξ ἧς ἐγεννήθησαν οἱ μετέπειτα χοροί. Τὰ κρουστὰ ὄργανα τῶν Αἰγυπτίων—*κρόταλα, κύμβαλα, σεῖστρα, τύμπανα, βασκικὰ τύμπανα* κττ.—κοινὰ σχεδὸν παρ' ἅπασι τοῖς ἀρχαίοις λαοῖς, ἀποτελοῦσι καὶ σήμερον τὰ πρότυπα, ἐφ' ὧν βασίζεται ἡ κατηγορία αὕτη. Ἡ δευτέρα κατηγορία τῶν παρὰ τοῦ ἀνθρώπου χρησιμοποιηθέντων ὀργάνων εἶναι ἡ τῶν *αὐλῶν*. Ἁπλοῖ, διπλοῖ, ἢ ἐν σχήματι τριγώνου οἱ αὐλοὶ οὗτοι, ἦσαν πολλάκις ἐκ μετάλλου. Τινὲς ἐξ αὐτῶν, εὑρεθέντες εἰς αἰγυπτιακοὺς τάφους καὶ μελετηθέντες, μᾶς ἔδωκαν μίαν ἰδέαν τῶν κλιμάκων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Προϊόντα μᾶλλον βιομηχανίας, τὰ *ἔγχορδα ὄργανα* ἔρχονται ἀργότερον καὶ ἀντιπροσωπεύονται παρὰ τοῖς Αἰγυπτίοις διὰ τῶν ἀπείρων παραλλαγῶν τῆς ἅρπας, τῆς κιθάρας κτλ.

Τὸν αὐτὸν πλοῦτον ὀργάνων καὶ τὰ αὐτὰ δείγματα τῆς πρὸς τὴν μουσικὴν ἀγάπης θέλομεν εὕρει καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις λαοῖς τῆς Ἀνατολῆς. Χετταῖοι, Ἀσσύριοι, Χαλδαῖοι, Σύριοι, Φοίνικες ἐκαλλιέργησαν μετὰ πάθους τὴν τέχνην τῶν ἤχων, ὑπερβληθέντες μόνον παρὰ τῶν Ἑβραίων, λαοῦ κατ' ἐξοχὴν μουσικοῦ. Τὰ ἱερὰ βιβλία τῶν τελευταίων καὶ ὡρισμένοι ψαλμοὶ δίδουσιν ἰδέαν τῆς σημασίας, ἣν πάντοτε ἀπέδιδον οὗτοι εἰς τὴν μουσικήν, καὶ τῆς θέσεως, τὴν ὁποίαν αὕτη κατεῖχε κατὰ τὰς τελετάς των καὶ τὰς θυσίας. Διὰ πρώτην φοράν, ἰδίως ἀπὸ τοῦ Δαυΐδ, εὑρισκόμεθα πρὸ ὠργανωμένων μουσικῶν σχολῶν καὶ ὠργανωμένων μουσικῶν ἐκτελέσεων, εἰς ἃς ἐλάμβανον μέρος ἑκατοντάδες ἀοιδῶν καὶ ὀργανοπαικτῶν. Εἰς τὴν Κίναν ἡ μουσικὴ καλλιεργεῖται παρὰ τῶν αὐτοκρατόρων, ποιητῶν, φιλοσόφων, ἱερέων κλπ., παραμένει ἐν τούτοις σχολαστικὴ τέχνη, στερουμένη πάσης φαντασίας καὶ ἐκφράσεως. Οἱ παρὰ τῶν Κινέζων θεσπισθέντες νόμοι τῆς ἀκουστικῆς, βασιζόμενοι ἐπὶ τοῦ κύκλου τῶν πεμπτῶν καὶ σχετικοὶ πρὸς τὰς θεωρίας τοῦ Πυθαγόρου, εἶναι ἴσως οἱ ἀρχαιότεροι μουσικοὶ ὁρισμοί. Ἡ πρωτογενὴς κλῖμαξ ἣν χρησιμοποιοῦσιν εἶναι ἡ πεντάτονος ἀνημιτόνιος, συμπληρωθεῖσα ἀργότερον εἰς ἑπτάτονον καὶ ἐν τέλει εἰς χρωματικὴν κλίμακα ἐκ δώδεκα βαθμίδων. Πολὺ πλέον μουσικώτεροι τῶν Κινέζων οἱ Ἰνδοί, δημιουργοῦσι μουσικὴν διάλεκτον προσεγγίζουσαν πρὸς τὴν ἡμετέραν, ἐξ ἧς δὲν εἶναι ξένη οὔτε ἡ ἔκφρασις οὔτε τὸ πάθος. Ἡ φαντασία των ἐπινοεῖ σειρὰν ῥαγκὰ (προτύπων μελῳδιῶν), τῶν ὁποίων ἡ νωχελὴς μελῳδικὴ γραμμὴ προσδίδει εἰς αὐτὰς ἰδιάζον ἀνατολικὸν ἄρωμα. Ἡ διαίρεσις τῆς ὀγδόης εἰς 22 σρούτζ ἀπομακρύνει ἐν τούτοις κατά τι τὴν μουσικὴν θεωρίαν τῶν Ἰνδῶν ἀπὸ τὴν τῶν Εὐρωπαίων· τὸ αὐτὸ δὲ δυνάμεθα εἰπεῖν καὶ διὰ τοὺς Ἄραβας, ὡς ὑποδιαιροῦντας τὴν ὀγδόην των εἰς 17 βαθμῖδας.

Πρὸς τοὺς Ἕλληνας, ὡς ἀφομοιώσαντας ὅ,τι καλὸν ὑπῆρχεν ἐν τῇ μουσικῇ τῶν ἀρχαίων ἀνατολικῶν λαῶν, ἀναπτύξαντας αὐτὴν καὶ θέσαντας τὰς βάσεις τῆς ἀκουστικῆς καὶ τῆς θεωρίας τῆς τέχνης τῶν ἤχων, ἡ συνάφεια τῆς εὐρωπαϊκῆς μουσικῆς εἶναι ἀμεσωτέρα. Ἐν Ἑλλάδι δέον νὰ ἀναζητηθῶσιν αἱ ῥίζαι τῆς συγχρόνου τέχνης, ὅσον καὶ ἂν ἡ τελευταία αὕτη ἀπέχῃ ἐκείνης αἰσθητικῶς. Ὡς καὶ προεισαγωγικῶς εἴπομεν, *μουσικὴν* οἱ Ἕλληνες ἠννόουν μίαν τριάδα τεχνῶν, περιλαμβάνουσαν τὴν *ποίησιν*, τὴν *μουσικὴν* ὑπὸ τὴν σημερινὴν σημασίαν καὶ τὴν *ὄρχησιν*. Τὸ εἰδικώτερον ὄνομα τῆς τέχνης τῶν ἤχων ἦτο *ἁρμονική*.

Διελθοῦσα ἀπὸ τὸ στάδιον τῆς μαγγανείας, ἡ μουσικὴ ἐθεωρήθη παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ὡς θείας προελεύσεως, δι' ὃ καὶ λίαν πρωΐμως ἐθεοποιήθη ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ ἀφιερώθη τῇ θρησκείᾳ. Φαίνεται κατέχουσα σημαίνουσαν θέσιν ἤδη ἀπὸ τοῦ Ὁμήρου, εἰς τοῦ ὁποίου τὰ ἔπη μνημονεύεται συχνάκις εἴτε ὡς «ἀοιδή», εἴτε ὡς «εὐχή», μελετηθεῖσα δὲ βαθύτερον κατόπιν παρὰ τῶν φιλοσόφων, ἐθεωρήθη ὡς «αὐτὴ αὕτη ἡ φιλοσοφία» (*Πλάτων*), ἢ ὡς «ἀπόλαυσις ἐντονωτέρα τῆς ποιήσεως» (*Ἀριστοτέλης*).

Οἱ πρῶτοι ὠργανωμένοι θρησκευτικοὶ ὕμνοι τῶν Ἑλλήνων ἦσαν οἱ *νόμοι*, ἀφιερωμένοι εἰς διαφόρους θεότητας καὶ χρησιμεύοντες ὡς πρότυπα, ἐφ' ὧν ἐδημιουργοῦντο πλεῖσται μελῳδικαὶ παραλλαγαί. Εἶχε δ' ἕκαστος τῶν θεῶν τὴν ἑαυτοῦ ᾠδήν. Ὁ Ἀπόλλων τὸν παιᾶνα, ὁ Διόνυσος τὸν διθύραμβον, ἡ Δημήτηρ τὸν ἴουλον, ἡ Ἄρτεμις τὸν οὔπιγγον κτλ. Ὁ *θρῆνος* ἦτο πένθιμος ᾠδή, ἐνῷ ἅπασαι αἱ τάξεις καὶ τὰ ἐπαγγέλματα εἶχον τὸ ἑαυτῶν *ᾆσμα*. Τὴν συνήθειαν τῶν θρήνων εὑρίσκομεν μέχρι σήμερον εἰς τὰ ἑλληνικὰ μοιρολόγια, ἐνῷ τὰ ᾄσματα τῶν τάξεων καὶ τῶν ἐπαγγελμάτων θέλομεν συναντήσει ἐν τῇ μεσαιωνικῇ Γερμανίᾳ μεταξὺ τῶν ἀρχιτραγουδιστῶν (βλ. λ. *μαϊστρεζίνγκερ*).

Ἡ μουσικὴ θεωρία τῶν Ἑλλήνων, κατὰ τοὺς χρόνους τῆς ἀκμῆς ἐβασίζετο ἐπὶ σειρᾶς ἐκ 15 φθόγγων, διαιρουμένων εἰς τέσσαρα τετράχορδα:

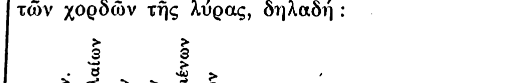

Τὰ ὀνόματα τῶν φθόγγων ἦσαν τὰ αὐτὰ μὲ τὰ τῶν χορδῶν τῆς λύρας, δηλαδή:

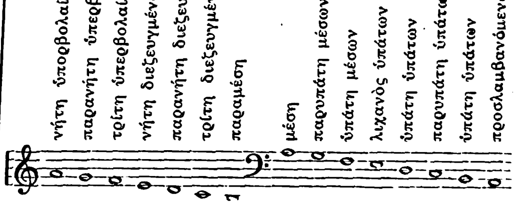


Αἱ κλίμακες, ὑπὸ τὸ ὄνομα *τρόποι* ἢ *ἁρμονίαι*, εἶχον ὡς ἀφετηρίαν ἕνα ἕκαστον ἐκ τῶν ἑπτὰ φθόγγων τῆς διατονικῆς κλίμακος καὶ ἦσαν οἱ ἑξῆς: ὑποδώριος=λα, μιξολύδιος=σι, λύδιος=ντο, φρύγιος=ρε, δώριος=μι, ὑπολύδιος=φα, ὑποφρύγιος=σολ. Οἱ αὐτοὶ τρόποι, μὲ ἄλλην βάσιν, θέλουσι παραμείνει ἐν χρήσει καθ' ὅλον τὸν μεσαίωνα, μέχρι τῶν προθύρων τῶν καθ' ἡμᾶς χρόνων.

Τὰ μέχρις ἡμῶν περιελθόντα τρία γένη τῆς μουσικῆς, *διατονικόν*, *χρωματικὸν* καὶ *ἐναρμόνιον*, εὕρηνται ὑπὸ τὴν αὐτὴν ὀνομασίαν παρὰ τοῖς Ἕλλησιν. Ἐκ τούτων μόνον τὸ πρῶτον εἶναι καθ' ὅλα ὅμοιον πρὸς τὸ τῆς εὐρωπαϊκῆς μουσικῆς. Τὸ ἀρχαῖον χρωματικὸν γένος προϋποθέτει τὴν καθ'

Digitized by Google

ἡμιτόνιον βάρυνσιν τοῦ λιχανοῦ, εἰς τρόπον ὥστε νὰ σχηματισθῇ τὸ τετράχορδον: λα, φα δίεσις, φα φυσικόν, μι, ἐνῷ παρ' ἡμῖν εἶναι κλῖμαξ ἀνερχομένη ἢ κατερχομένη καθ' ἡμιτόνια. Τὸ ἐναρμόνιον τῶν ἀρχαίων σχηματίζεται διὰ τῆς βαρύνσεως τοῦ λιχανοῦ (σολ) κατὰ τόνον καὶ τοῦ φα ταυτοφωνίας κατὰ τέταρτον τόνου. Παρὰ τοῖς συγχρόνοις προϋποθέτει φθόγγους ἢ κλίμακας τῆς αὐτῆς ὀξύτητος, ἀλλὰ μὲ διαφορετικὸν ὄνομα. π. χ. ντο δίεσις, ρε ὕφεσις, σι δίεσις, ντο κ. τ. λ.

Παρὰ τῶν Ἑλλήνων ἔχει ἐπίσης δανεισθῇ ἡ εὐρωπαϊκὴ μουσικὴ τὴν θεωρίαν τῶν διαστημάτων. Κατὰ ταύτην, *σύμφωνα διαστήματα* εἶναι: ἡ ταυτοφωνία, ὀγδόη, πέμπτη καὶ τετάρτη· *διάφωνα* δέ: ὁ τόνος καὶ τὸ ἡμιτόνιον, ἡ τρίτη, μεγάλη καὶ μικρά, ἡ ηὐξημένη τετάρτη, ἡ ἕκτη, μεγάλη καὶ μικρά, ἡ ἑβδόμη, μεγάλη καὶ μικρά. Αἱ τρίται καὶ αἱ ἕκται, νῦν ἀτελῶς σύμφωνα διαστήματα, ἐχαρακτηρίσθησαν ἐπίσης ὡς τοιαῦτα παρά τινων θεωρητικῶν τῆς ἀρχαιότητος, ὑπὸ τὸ ὄνομα *παραφωνίαι*.

Εἰς τοὺς Ἕλληνας, καὶ ἰδίως εἰς τὸν Ἀριστόξενον, ὀφείλομεν τὴν θεωρίαν τοῦ ρυθμοῦ, βάσιν τῆς σημερινῆς *ρυθμικῆς*. Ἀναποσπάστως συνδεδεμένη μὲ τὴν μετρικήν, ἡ θεωρία αὐτὴ βασίζεται ἐπὶ τοῦ πρώτου χρόνου, τῆς μικροτέρας μονάδος—τῆς βραχείας—τῆς ὑπαρχούσης ἔν τινι τεμαχίῳ καὶ δυναμένης ν' ἀποδοθῇ διὰ τοῦ σημερινοῦ ὀγδόου. Ὁ πρῶτος χρόνος (◡), ἐν συνδυασμῷ μετὰ τοῦ μακροῦ (—), ἔδιδε λαβὴν εἰς πλεῖστα ρυθμικὰ σχήματα ὡς π. χ:

*Τριμερῆ:*

ἴαμβος = ◡́ — ἢ ♪ ♩

τροχαῖος = —́ ◡ ἢ ♩ ♪

τρίβραχυς = ◡ ◡ ἢ ♪ ♪ ♪

*Τετραμερῆ:*

δάκτυλος = —́ ◡ ◡ ἢ ♩ ♪ ♪

ἀνάπαιστος = ◡ ◡ — ἢ ♪ ♪ ♩

σπονδεῖος = —́ — ἢ ♩ ♩

σπονδεῖος ἀναπαιστικὸς = — —́ ἢ ♩ ♩

*Πενταμερῆ:*

παίων (κρητικὸς) = ◡ ◡ ◡ — ἢ ♪ ♪ ♪ ♩

παίων (βακχιακὸς) = — ◡ ◡ ◡ ἢ ♩ ♪ ♪ ♪

*Ἑξαμερῆ:*

ἰωνικὸς (μείζων) = —́ — ◡ ◡ ἢ ♩ ♩ ♪ ♪

ἰωνικὸς (ἐλάσσων) = ◡́ ◡ — — ἢ ♪ ♪ ♩ ♩

ἑξάβραχυς = ◡́◡◡◡◡◡ ἢ ♪ ♪ ♪ ♪ ♪ ♪

Οἱ Ἕλληνες δὲν ἐπροίκισαν τὴν μουσικὴν μὲ νέα ὄργανα, τὰ δὲ παρ' αὐτῶν χρησιμοποιηθέντα ἦσαν ὅμοια σχεδὸν πρὸς τὰ τῶν λοιπῶν ἀνατολικῶν λαῶν. Καθαρῶς ἐθνικὰ ἐθεώρουν μόνον τὴν λύραν καὶ τὴν κιθάραν. Ἐχθροὶ τοῦ θορύβου, ἐλάχιστα μετεχειρίσθησαν τὰς σάλπιγγας καὶ τὰ κρουστά. Ἐτέθη ὅμως πλειστάκις τὸ ἐρώτημα τοῦ πῶς, ἐνῷ ἐγνώριζον καὶ ἔπαιζον τόσα πολύχορδα ὄργανα, τὸ τρίγωνον φέρ' εἰπεῖν, οὐδέποτε ἐσκέφθησαν νὰ χρησιμοποιήσωσι συνηχούσας συγχορδίας καὶ νὰ θέσωσι τὰς βάσεις τῆς συγχρόνου ἁρμονίας. Εἰς τὸ ἐρώτημα τοῦτο οἱ μουσικολόγοι δὲν εἶπον εἰσέτι τὴν τελευταίαν των λέξιν, συμφωνοῦσιν ὅμως εἰς τὸ ὅτι οἱ Ἕλληνες ἠγνόησαν τὴν πολυφωνίαν, ἐκτὸς ἴσως μιᾶς πρωτογόνου συνηχούσης φωνῆς, περιοριζομένης εἰς τὰ σύμφωνα διαστήματα, καὶ τῶν μελισμάτων, ἢ μικρῶν καλλωπιστικῶν φθόγγων, δι' ὧν διεκόσμουν μίαν μελῳδίαν.

Ἐξέχουσαν θέσιν εἶχεν ἡ μουσικὴ ἐν τῷ ἀρχαίῳ θεάτρῳ. Χορικὰ καὶ ὄρχησις ᾔδοντο ἢ ἐξετελοῦντο ὑπὸ ὀργάνων, ἐν τῇ τραγῳδίᾳ δὲ πρέπει νὰ ἀναζητηθῇ τὸ πρότυπον τοῦ συγχρόνου λυρικοῦ θεάτρου. Οἱ ποιηταὶ ἦσαν ταυτοχρόνως καὶ μουσικοὶ καὶ ἀοιδοί· ἡ ὑπεροχή των, συνεπῶς, ἐπὶ τῶν συγχρόνων των εἶναι λίαν ἔκδηλος. Ἀλλ' οὔτε καὶ ἠννοοῦντο ἀγῶνες ἄνευ μουσικῆς· εἰς τὰ Ὀλύμπια, τὰ Πύθια, τὰ Νέμεα ἢ τὰ Ἴσθμια, ἠγωνίζοντο οἱ μεγαλύτεροι καλλιτέχναι τῆς ἀρχαιότητος, παρακολουθούμενοι ὑπὸ λαοῦ μουσικοῦ, ὅστις ἐθεώρει αἶσχος τὴν ἄγνοιαν τοῦ ᾄδειν. Οἱ Ἕλληνες ἵδρυσαν ἐπίσης ὀργανωμένας μουσικὰς σχολάς, ἃς ὠνόμασαν *ᾠδεῖα*.

Παρερχόμενοι τοὺς πρώτους θρυλικοὺς ποιητάς—μουσικοὺς—ἀοιδοὺς τῆς προϊστορικῆς Ἑλλάδος, Ὀρφέα, Λίνον, Ἀμφίωνα, Φιλάμμονα, Θάμυριν κ. λ., δυνάμεθα νὰ κατατάξωμεν εἰς τὴν μεταξὺ 730—665 π. Χ. περίοδον τὸν Τέρπανδρον, Ἀρχίλοχον καὶ Ὄλυμπον. Ἀπὸ τοῦ 665—510 ἔχομεν τοὺς Θαλήταν, Ξενόδαμον, Σακάδαν κ.λ. Ἡ περίοδος 510—450 περιλαμβάνει τοὺς μεγάλους καλλιτέχνας: Σιμωνίδην, Φρύνιχον, Μελανιππίδην, Πρόνομον, Λάσον, καὶ ἰδίως τὸν Πίνδαρον, ἐξ ἴσου μέγαν μουσικὸν καὶ ποιητήν. Μεταξὺ 450—338 ἐμφανίζονται ὁ Τιμόθεος, ὁ Φρύνις, ὁ Ἀντιγενίδης κ.λ.π. καὶ κατὰ τὴν μέχρι τοῦ 50 π. Χ. περίοδον ἔχομεν πλείστους ὑποδεεστέρους μουσικούς. Οἱ αἰώνιοι νόμοι τῆς μουσικῆς ἐθεσπίσθησαν ἐπίσης ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων σοφῶν καὶ θεωρητικῶν Πυθαγόρου, Πλάτωνος, Ἀριστοτέλους, Εὐκλείδου, Ἀλυπίου, Ἀριστοξένου, Ἀριστείδου τοῦ Κοϊντιλιανοῦ, Πτολεμαίου κ. τ. λ.

Οἱ Ἕλληνες εἶχον ἰδίαν παρασημαντικήν, βασιζομένην ἐπὶ τῶν γραμμάτων τοῦ ἀλφαβήτου, ἀκεραίων, ἠκρωτηριασμένων ἢ ἀνεστραμμένων.

Παραλαβόντες παρὰ τῶν Ἑλλήνων τὴν πλουσίαν μουσικὴν κληρονομίαν οἱ Ρωμαῖοι, δὲν ἠδυνήθησαν νὰ ἀναπτύξωσιν αὐτήν. Λαὸς πολεμικός, ἀρεσκόμενος εἰς τὰ τραχέα θεάματα τῆς πάλης καὶ τοῦ ἱπποδρόμου, οὐδέποτε κατενόησε τὰς λεπτότητας τῆς τέχνης. Αἱ μόναι ἄξιαι λόγου καινοτομίαι τῆς περιόδου ταύτης εἶναι ἡ κατάργησις τοῦ χοροῦ ἐκ τῆς κωμῳδίας καὶ ἡ τελειοποίησις πλείστων μουσικῶν ὀργάνων, εἰσαχθέντων ἐκ τῆς Ἀνατολῆς. Εἰς τὴν πρώτην σειρὰν ἔφερον τὴν σάλπιγγα μὲ τὰς διαφόρους παραλλαγάς της (lituus, buccina, tuba καὶ cornu), ἠκολούθουν δὲ οἱ ποικίλοι τύποι τοῦ αὐλοῦ, τοῦ ἱεροῦ αὐτῶν ὀργάνου.

Ἡ ἑλληνικὴ μουσικὴ κληρονομία ἤθελεν ἀπολεσθῇ ἐντελῶς, ἐὰν κατὰ τὴν αὐτὴν περίοδον δὲν ἤκμαζεν ὁ ἀλεξανδρινὸς ἑλληνισμός, παρ' ᾧ περιεσώθησαν τὰ κύρια αὐτῆς συστατικά. Ἐν Ἀλεξανδρείᾳ, κατὰ τὸν Β' π. Χ. αἰῶνα, ἀνεκαλύφθη παρὰ τοῦ Κτησιβίου ἡ ὕδραυλις, ὁ πρόγονος τοῦ σημερινοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου. Ἀνατείλαντος

σει λειτουργικὸν μέλος, ὡς τοῦτο διεμορφώθη καὶ ἐκωδικοποιήθη, χάρις εἰς τὸν πάπαν Γρηγόριον τὸν Μέγαν. Τὸ ᾆσμα τοῦτο, πολὺ ἀρχαιότερον τοῦ ἐν λόγῳ πάπα, ἐν χρήσει ἀσφαλῶς ἀπὸ τῶν πρώτων αἰώνων τῆς χριστιανωσύνης, εἶχεν ἤδη περὶ τὰ τέλη τῆς ΣΤ' ἑκατονταετηρίδος, ὅτε ἀνῆλθεν ὁ Γρηγόριος εἰς τὸν παπικὸν θρόνον, ἐπικινδύνως ἀλλοιωθῇ καὶ ὑποστῇ τὴν ἐπίδρασιν ξένων στοιχείων, λόγῳ τῶν ἐπιδρομῶν τῶν βαρβάρων. Εἰς τὸν Γρηγόριον τὸν Μέγαν ἀνήκει ἡ τιμὴ τῆς ὁριστικῆς ὀργανώσεως τοῦ λειτουργικοῦ ᾄσματος τῆς Δύσεως, τῆς ἀποκαθάρσεώς του καὶ τῆς ἀποκαταστάσεώς του εἰς τὴν σημερινὴν ἱεροπρεπῆ μορφήν. Τὸ ὑπ' αὐτοῦ καταρτισθὲν ἀρχικὸν ἀντιφωνάριον, περιλαμβάνον τὰ ἀντίφωνα, εἰσοδικά, ὕμνους κ.λ.π., ἀπωλέσθη· ἡ ὁμοιότης ἐν τούτοις τῶν σῳζομένων πολυαρίθμων χειρογράφων, τῶν ἀμέσως ἑπομένων αἰώνων, μᾶς πείθει ὅτι ἅπαντα ἐκπορεύονται ἐξ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ πρωτοτύπου. Εἰς πλεῖστα ἐκ τῶν ἀντιφώνων τοῦ Γρηγορίου ἀπαντῶνται στοιχεῖα ἀνατολικῆς μουσικῆς· τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὴν μακροχρόνιον διαμονήν του ἐν Βυζαντίῳ, ἐπὶ τοῦ διαδόχου τοῦ Ἰουστινιανοῦ, Τιβερίου.

Τὸ γρηγοριανὸν μέλος αὐξάνει τοὺς τόνους ἀπὸ τέσσαρας εἰς ὀκτὼ καὶ τοὺς ἀποκαλεῖ τρόπους (modi). Ἐκ τούτων οἱ τέσσαρες εἶνε αὐθεντικοὶ καὶ οἱ τέσσαρες πλάγιοι, ὡς κατωτέρω:

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Τρόπος πρῶτος | | | | Ρε, | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | | | | |
| Πλάγιος πρώτου | Λα, | Σι, | Ντο, | Ρε, | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | | | | | | | |
| Τρόπος δεύτερος | | | | | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι, | | | |
| Πλάγιος δευτέρου | | Σι, | Ντο, | Ρε, | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | | | | | | |
| Τρόπος τρίτος | | | | | | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι, | φα, | | |
| Πλάγιος τρίτου | | | Ντο, | Ρε, | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | | | | | |
| Τρόπος τέταρτος | | | | | | | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι, | φα, | σολ, | |
| Πλάγιος τετάρτου | | | | Ρε, | Μι, | Φα, | Σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | | | | |

δὲ τοῦ Χριστιανισμοῦ, ἐν Ἀλεξανδρείᾳ ἀρχικῶς καὶ εἶτα ἐν Ἀντιοχείᾳ ἐδημιουργήθησαν οἱ τύποι τῆς ψαλμῳδίας καὶ τῆς λειτουργίας τῶν πρώτων Χριστιανῶν. Ἀλλ' ἡ μουσικὴ τούτων δὲν εἶναι καθαρῶς ἑλληνική. Στοιχεῖα ἑβραϊκά, χαλδαϊκὰ ἢ συριακὰ περιελήφθησαν ἐν αὐτῇ· ὅταν δὲ μετ' ὀλίγον τὸ Βυζάντιον ἔγινεν ἕδρα τοῦ Χριστιανισμοῦ, ἐκ τοῦ κράματος τούτου ἐδημιουργήθη μία νέα τέχνη: *ἡ βυζαντινή*. Ἡ συμβολὴ ταύτης εἰς τὴν ἐν γένει μουσικὴν εἶναι ἀναμφισβήτητος καὶ πλεῖστα στοιχεῖά της εὕρηνται ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ τῆς Δύσεως. Οἱ Βυζαντινοὶ τελειοποιοῦν τὴν ὕδραυλιν, μεταβάλλοντες αὐτὴν εἰς πνευστὸν ὄργανον καὶ διαδίδοντες αὐτὴν εἰς τὴν Ἑσπερίαν. Ἡ παλαιὰ των παρασημαντικὴ εἶναι μεγίστης σημασίας, διότι δὲν ἀρκεῖται εἰς τὴν ὑπόδειξιν τῶν ἀνιουσῶν ἢ τῶν κατιουσῶν κινήσεων τῆς φωνῆς, ἀλλὰ καθορίζει σαφῶς *διαστήματα*. Διὰ τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας γνωρίζομεν ἐπίσης τὴν μεσαιωνικὴν ἑλληνικὴν μουσικήν, δεδομένου ὅτι οὐδὲν τεμάχιον κοσμικῆς μουσικῆς τῆς περιόδου ἐκείνης ἔχει περιέλθει μέχρις ἡμῶν. Ἡ παλαιὰ βυζαντινὴ παρασημαντική, τροποποιηθεῖσα ἀρχικῶς περὶ τὸ 1300 καὶ εἶτα περὶ τὸ 1820, παρὰ τοῦ Χρυσάνθου τῆς Μαδύτου, πρὸ καιροῦ εἶχε λησμονηθῆ, εἰς τρόπον ὥστε πλεῖσται δυσκολίαι γεννῶνται περὶ τὴν ἀνάγνωσιν τῶν πρὸ τοῦ 1300 χειρογράφων. Εἰς τὴν εὕρεσιν τῆς κλειδὸς τῆς παλαιᾶς ταύτης παρασημαντικῆς στρέφονται νῦν αἱ προσπάθειαι τῶν ἀρχαιοδιφῶν. Ὅσον δ' ἀφορᾷ τὴν ἑτέραν παρασημαντικήν, ἀπὸ τοῦ Ἰωάννου Κουκουζέλη (ΙΔ' αἰὼν) διπλῆν, καθόσον, ἐκτὸς τῶν διαστημάτων, εἶχεν εἰδικὰ σημεῖα ὑποδεικνύοντα τὰ μελίσματα, ἡ ἀνάγνωσίς της κατέστη εὐχερεστέρα χάρις εἰς τὴν ὕπαρξιν μικρῶν ἐγχειριδίων, γνωστῶν ὑπὸ τὸ ὄνομα παπαδικά. Ἐκτὸς τῆς Δύσεως ἡ ἐπίδρασις τῆς βυζαντινῆς μουσικῆς ὑπῆρξε μεγίστη καὶ ἐν τῇ μοζαραβικῇ Ἱσπανίᾳ, κατηχηθείσῃ χάρις εἰς τὰς φροντίδας Ἰωάννου τοῦ Χρυσοστόμου, ἰδίως δὲ παρὰ τοῖς Ρώσοις καὶ τοῖς Σλάβοις, ἐν γένει, ὧν ἡ παλαιὰ ἐκκλησιαστικὴ μουσικὴ εἶναι συχνάκις παραλλαγὴ τῆς βυζαντινῆς.

Καθ' ὃν χρόνον ἐν τῇ Ἀνατολικῇ αὐτοκρατορίᾳ διαμορφοῦται εἷς νέος τύπος τέχνης, ἐν τῇ Δύσει ἡ μουσική, χάρις εἰς τὰς ἐπιδρομὰς τῶν βαρβάρων καὶ τὴν καταστροφὴν τῶν θεάτρων, ἱπποδρόμων κλ., ψυχορραγεῖ. Μόνον ἡ ἐν κρυπτῷ ἀκόμη προσευχομένη χριστιανικὴ Ἐκκλησία ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἑλληνορρωμαϊκῆς μουσικῆς θεωρίας διαμορφώνει ἴδιον μέλος, ἐρειδόμενον ἐπὶ τῆς μουσικῆς ἀπαγγελίας. Τὸ μέλος τοῦτο, πάντοτε ὁμόφωνον, ὠργανώθη τὸ πρῶτον ἐπισήμως παρὰ τοῦ ἐπισκόπου Μεδιολάνων Ἀμβροσίου (340—397), διὸ καὶ ἐκλήθη *ἀμβροσιανόν*. Φέρει ἴχνη τῆς μουσικῆς τῆς ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, παρ' ἧς ἐδανείσθη τὰ ἀντίφωνα καὶ τὰ ἀλληλούϊα.

Τὸ ἀμβροσιανὸν μέλος γνωρίζει τέσσαρας τόνους:

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Τόνος πρῶτος: | ρε, | μι, | φα, | σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε | | |
| Τόνος δεύτερος: | | μι, | φα, | σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι | |
| Τόνος τρίτος: | | | φα, | σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι, | φα |
| Τόνος τέταρτος: | | | | σολ, | λα, | σι, | ντο, | ρε, | μι, | φα, σολ |

Τὸ δεύτερον ὀργανωθὲν λειτουργικὸν μέλος τῆς Ἑσπερίας εἶναι τὸ *γρηγοριανόν*, λεγόμενον ἐπίσης καὶ κάντους πλάνους (cantus planus) καὶ ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ plain-chant τῶν Γάλλων καὶ τὸ choral τῶν Γερμανῶν. Τὸ γρηγοριανὸν μέλος εἶναι τὸ ἐν τῇ καθολικῇ Ἐκκλησίᾳ καὶ σήμερον ἐν χρή-

Τὸ μόνον δυσάρεστον εἶναι ὅτι τὸ πρωτότυπον γρηγοριανὸν μέλος, διὰ τῆς ἐλαττωματικῆς σημειογραφίας τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ἔχασε τὸν ἀρχικόν του ρυθμὸν καὶ παρέμεινεν ὡς ψαλμῳδία χρησιμοποιοῦσα φθόγγους τῆς αὐτῆς διαρκείας.

Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω λειτουργικῶν μελῶν ὑπῆρχον ἐπίσης τὸ *γαλλικανικόν*, ἀπορροφηθὲν σὺν τῷ χρόνῳ παρὰ τοῦ γρηγοριανοῦ, καὶ τὸ *μοζαραβικόν*, ἐν χρήσει ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Τολέδου, οὗτινος ἡ κλεὶς δὲν ἔχει εὑρεθῆ μέχρι τῆς στιγμῆς.

Κατὰ τοὺς σκοτεινοὺς χρόνους τοῦ μεσαίωνος ἡ παράδοσις τῆς ἑλληνικῆς μουσικῆς θεωρίας δὲν ἔχει ἐντελῶς ἀπολεσθῆ. Συνεχίζεται διὰ πλείστων θεωρητικῶν, ὧν προέχει ὁ Βοήθιος. Εἰς αὐτὸν ἐσφαλμένως ἀποδίδεται ἡ λεγομένη βοηθιανὴ σημειογραφία, ἡ ἀντικαταστήσασα τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικήν. Κατὰ τὴν νέαν ταύτην σημειογραφίαν, ἐμφανισθεῖσαν περὶ τὸν Ι' αἰῶνα καὶ γνωστὴν ὡς ἀλφαβητική σημειογραφία, τὰ ἀρχαῖα ὀνόματα τῶν φθόγγων, προσλαμβανόμενος, ὑπάτη, λιχανὸς κλπ., ἀντικαθίστανται διὰ τῶν ἑπτὰ πρώτων γραμμάτων τοῦ λατινικοῦ ἀλφαβήτου, εἰς τρόπον ὥστε ἡ κλῖμαξ νὰ ἀπαγγέλληται:

| A, | B, | C, | D, | E, | F, | G, |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (λα), | (σι), | (ντο), | (ρε), | (μι), | (φα), | (σολ) |

Ἀργότερον μετεχειρίσθησαν τὰ δεκαπέντε πρῶτα γράμματα:

| A, | B, | C, | D, | E, | F, | G, | H, | I, |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (λα), | (σι), | (ντο), | (ρε), | (μι), | (φα), | (σολ), | (λα), | (σι) |
| K, | L, | M, | N, | O, | P | | | |
| (ντο), | (ρε), | (μι), | (φα), | (σολ), | (λα) | | | |

Καὶ ἐν τέλει διὰ τὴν πρώτην ὀγδόην τὰ ἑπτὰ κεφαλαῖα, διὰ τὴν δευτέραν τὰ ἑπτὰ μικρὰ καὶ διὰ τὴν τρίτην τὰ διπλᾶ μικρά:

A, B, C, D, E. F, G, a, b, c, d, e, f, g,
aa, bb, cc, dd, ee, ff, gg

Περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Ι' αἰῶνος, προστεθέντος τοῦ βαρυτέρου σολ, ἐσκέφθησαν νὰ τὸ παραστήσωσι πρὸς διάκρισιν, διὰ τοῦ ἑλληνικοῦ γράμματος, τὸ ὁποῖον ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ λατινικὸν G, δηλαδὴ διὰ τοῦ Γ, ὅπερ ἐγένετο ἀφετηρία τῆς κλίμακος, ἐκ τούτου ὀνομασθείσης *gamma* καὶ νῦν εἰσέτι γαλλιστὶ *gamme*.

Ἡ ἀλφαβητικὴ ὀνομασία τῶν φθόγγων παρέμεινεν ἐν χρήσει μέχρι σήμερον παρὰ τοῖς Ἄγγλοις καὶ τοῖς Γερμανοῖς. Παραλλήλως πρὸς ταύτην ὑπῆρχεν ὅμως καὶ ἡ νευματικὴ σημειογραφία, δι' ἧς εἶναι γεγραμμένα τὰ ἀρχαῖα γρηγοριανὰ χειρόγραφα. Τὰ ἀρχαιότερα δείγματα τῆς σημειογραφίας ταύτης, συγγενοῦς πρὸς τὴν βυζαντινήν, εὕρηνται εἰς ἑλληνικὰ χειρόγραφα τοῦ Ε' μ. Χ. αἰῶνος. Ἦσαν δὲ τὰ σημεῖα ταῦτα εἶδος μουσικῆς στενογραφίας, δι' ἧς διηυκολύνετο ἡ ἀνάγνωσις. Ἡ νευματικὴ σημειογραφία μετεχειρίσθη ἀντὶ ἄλλων σημείων τοὺς τόνους· δὲν καθορίζει ὀξύτητα, ἀλλὰ μόνον κίνησιν τῆς φωνῆς. Ἡ ἀρχικὴ μορφὴ τῶν σημείων τούτων ἦτο ἡ ἑξῆς:

/ *ὀξεῖα* ἢ *virga, acuta*· δεικνύει ὀξύτερον φθόγγον.

\ *βαρεῖα* ἢ *gravis*, δεικνύει βαρύτερον φθόγγον.

Λ *περισπωμένη* ἢ *flexa* = 2 φθόγγοι, ὀξὺς καὶ βαρύς.

V *περισπωμένη ἀνεστραμμένη* = 2 φθόγγοι, ὀξὺς καὶ βαρύς

• *στιγμή, punctum*=φθόγγοι κρατημένοι.

ͽ *ἀπόστροφος*, ἢ *strophicus*, ἢ *bistropha*, ἢ *tristropha*, φθόγγοι ἐπαναλαμβανόμενοι.

Digitized by Google

Οἱ τόνοι οὗτοι, ἢ *νεύματα* (neumes) ὡς ἐλέγοντο, ἔλαβον σὺν τῷ χρόνῳ τὴν ἑπομένην μορφήν:

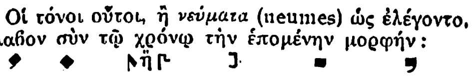

ὀξεῖα βαρεῖα περισπωμένη περισπ. ἀνεστρ. στιγμὴ ἀπόστροφος

Ἐκ τῶν σημείων τούτων προέκυψε μικρὸν κατὰ μικρὸν ἡ σήμερον ἐν χρήσει σημειογραφία. Ὑπῆρχον ὅμως καὶ ἕτεροι συνδυασμοὶ νευμάτων, περὶ ὧν βλ. εἰς λ. *νεύματα* καὶ *σημειογραφία*.

Σχεδὸν περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν (Θ′ αἰών), ὁ μοναχὸς Οὐβάλδος ἀνακαλύπτει τὸ μουσικὸν διάγραμμα, δηλαδὴ ὁριζοντίους γραμμάς, μεταξὺ τῶν ὁποίων τοποθετεῖ τὸ κείμενον, ὅπερ πρόκειται νὰ ψαλῇ. Ὑποδεικνύει ταυτοχρόνως τὴν ἀνιοῦσαν ἢ κατιοῦσαν κίνησιν τῆς μελῳδίας, διὰ γραμμάτων τοποθετουμένων εἰς τὰ μεταξὺ τῶν γραμμῶν διαστήματα. Ἀλλὰ τὸ σύστημα τοῦτο ἐτελειοποίησε μετ᾽ ὀλίγον ὁ Γουΐδος ντ᾽ Ἀρέτσο (990 — 1050). Ἤδη πρὸ αὐτοῦ ἐχρησιμοποίουν δύο ὁριζοντίους γραμμάς, μίαν ἐρυθράν, ἥτις ὥριζε τὸν φθόγγον φα καὶ μίαν κιτρίνην διὰ τὸν ντο. Ὁ Γουΐδος προσέθεσε μεταξὺ τῶν δύο τούτων, μίαν τρίτην, μέλαιναν, διὰ τὸν Λα· ἐνίοτε δὲ προσέθετε καὶ τετάρτην, ἐπίσης μέλαιναν, ἄνωθεν (Μι) ἢ κάτωθεν. Ἐπὶ τῶν γραμμῶν καὶ εἰς τὰ μεταξὺ αὐτῶν διαστήματα ἔθηκε τὰ γράμματα ἢ τὰ νεύματα, δημιουργήσας γραφὴν παριστῶσαν σαφέστερον παρ᾽ ὅσον τὸ σύστημα τοῦ Οὐβάλδου τὴν ἀνιοῦσαν ἢ τὴν κατιοῦσαν κίνησιν τῆς φωνῆς, ὡς καὶ τὸ ἀπόλυτον ὕψος τῶν τόνων. Εἰς τὸν Γουΐδον ἀποδίδεται ἐπίσης, ἂν καὶ τοῦτο δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένον, ἡ ὀνομασία τῶν σημερινῶν μουσικῶν φθόγγων, οὓς ἐδανείσθη ἐκ τῶν πρώτων συλλαβῶν ἑκάστου στίχου ὕμνου τινὸς πρὸς τὸν Ἰωάννην τὸν Βαπτιστήν:

*Ut* queant laxis
*Re*sonare fibris
*Mi*ra gestorum
*Fa*muli tuorum
*Sol*ve polluti
*La*bii reatum
*S*ancte Johannes.

Κατὰ τὸν ΙΖ′ αῶνα, οἱ Ἰταλοὶ εὑρίσκοντες κακόηχον τὴν ὀνομασίαν τῆς πρώτης βαθμῖδος τῆς κλίμακος *ut*, ἀντικατέστησαν ταύτην διὰ τοῦ *do*.

Ἀλλὰ τὸ ἀπόλυτον ὕψος τῶν τόνων ὡρίσθη ἔτι σαφέστερον διὰ τῆς τοποθετήσεως ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ἑκάστης γραμμῆς ἑνὸς ἐκ τῶν ἑπτὰ πρώτων γραμμάτων τοῦ ἀλφαβήτου, ὅπερ ἔδιδε τὴν ὀνομασίαν του εἰς τὸ σημεῖον τὸ εὑρισκόμενον ἐπὶ τῆς αὐτῆς γραμμῆς καὶ κατ᾽ ἀναλογίαν καὶ εἰς τὰ λοιπά. Οὕτως ἐγεννήθησαν οἱ *γνώμονες* καὶ εἰδικῶς ἐκ τοῦ γράμματος C ὁ γνώμων τοῦ ντο, ἐκ τοῦ G ὁ τοῦ σολ καὶ ἐκ τοῦ F ὁ τοῦ φα..

Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν ἐνεφανίσθησαν τὰ πρῶτα σημεῖα ἐμμέτρου μουσικῆς, εἶδος συνδυασμοῦ νευμάτων ἡνωμένων διὰ τῶν λεγομένων συζεύξεων (ligatura). Τὰ πρῶτα μετρικὰ σημεῖα ἦσαν τὰ ἑξῆς: ▮ μακρὸν (longa), ▪ βραχὺ (brevis), ◆ ἡμίβραχυ (semibrevis). Ἡ ὑποδιαίρεσίς των, ἀντιθέτως πρὸς τὴν σημερινήν, ἦτο τριμερής, καθότι τὸ μακρὸν περιελάμβανε τρία βραχέα, καὶ τὸ βραχὺ τρία ἡμιβραχέα.

Καθ᾽ ὅλην τὴν ἀπὸ τῆς ἀπωτάτης ἀρχαιότητος μέχρι τοῦ Ι′ αἰῶνος περίοδον, ἀνὰ τὴν Ἀνατολὴν καὶ τὴν Δύσιν ἐπεκράτει τὸ ὁμόφωνον ᾆσμα. Ἀπὸ τοῦ Ι′ αἰῶνος ἀρχίζουν ὅμως αἱ πρῶται δειλαὶ ἀπόπειραι συνηχήσεως πλειόνων φωνῶν. Ἡ Δανία, ἡ Νορβηγία καὶ εἶτα ἡ Ἀγγλία φαίνονται ὅτι ὑπῆρξαν ἡ κοιτὶς τῆς *πολυφωνίας*. Ἡ Ἀγγλία ἰδίως, ἔξω τῆς ἑλληνολατινικῆς παραδόσεως καὶ τῶν σχολαστικῶν τύπων, ἠκολούθησε τὸ ἔνστικτον, πρωΐμως χρησιμοποιήσασα τὸ διάστημα τῆς τρίτης καὶ κατὰ συνέπειαν τὰς συγχορδίας. Ὀλίγον ἐνωρίτερον, κατὰ τὸν Θ′ αἰῶνα, εἶχον γίνει ἐν τῇ Δύσει ἐπίσης αἱ πρῶται ἀπόπειραι ἁρμονίας, ἀλλὰ κατὰ διαστήματα τετάρτης καὶ πέμπτης, διότι, κατὰ τὴν θεωρίαν, αὐτὰ ἦσαν τὰ σύμφωνα διαστήματα. Εἰς τὸν Οὐβάλδον ἐσφαλμένως ἀποδίδεται ἡ στοιχειώδης αὕτη πολυφωνία, ἢ μᾶλλον διαφωνία καὶ ὄργανον (organum), ὡς τὴν ὀνομάζει ἐν τοῖς συγγράμμασί του. Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν οἱ Ἄγγλοι ἐπίσης μεταχειρίζονται τὸ ψευδὲς-βάσιμον (faux bourdon), συνιστάμενον εἰς τὴν κατὰ τρίτας ὑποκειμένας συνήχησιν δύο ἀκόμη φωνῶν, ἐκτὸς τοῦ δεδομένου μέλους. Ἐὰν δηλαδὴ ὁ δεδομένος φθόγγος ἦτο ὁ σολ, ἡ συγχορδία ἐγράφετο σολ - μι - ντο, ἠκούετο ὅμως μι - σολ - ντο, διότι ὁ βαρύτερος φθόγγος ἐξετελεῖτο κατὰ μίαν ὀγδόην ἐπὶ τὸ ὀξύτερον, ἐξ οὗ καὶ «ψευδὲς βάσιμον» ὠνομάσθη. Εἶναι ἡ ἀρχὴ τῆς ἀναστροφῆς τῶν συγχορδιῶν. Εἰς τὴν πρώτην περίοδον τῆς πολυφωνίας ὑπάγεται ἓν σπουδαιότατον μουσικὸν εἶδος: τὸ *μοτέττο* (βλ. λ.).

Κατὰ τοὺς σκοτεινοὺς χρόνους τοῦ μεσαίωνος τὸ θέατρον δὲν ἔχει ἐκλείψει ἐντελῶς. Ἐμφανίζεται ἀκόμη δι᾽ ἀφελῶν παραστάσεων, ἐχουσῶν ὡς βάσιν ὑποθέσεις τῆς Βίβλου ἢ τοῦ Εὐαγγελίου. Εἶναι τὰ μυστήρια, τὰ ὁποῖα ἐκτελοῦνται ἀρχικῶς ἐν τῷ ναῷ καὶ εἶτα ἐν ὑπαίθρῳ, εἰς τὴν πλατεῖαν τῆς πόλεως ἢ τοῦ χωρίου. Περιέχουσι δὲ ταῦτα χορῳδίας, μονῳδίας, ἐνῷ ἡ πρωτόγονος ὀρχήστρα παίζει τὴν εἰσαγωγήν, ἢ συνοδεύει τοὺς χορούς.

Ἡ θρησκευτικὴ μουσική, ἂν καὶ δεσπόζουσα κατὰ τοὺς πρώτους αἰῶνας τοῦ Χριστιανισμοῦ, δὲν εἶναι δυνατὸν ἐν τούτοις νὰ ἐξολοθρεύσῃ ἀπολύτως τὰς ἐκδηλώσεις τῆς κοσμικῆς τέχνης. Ὁ ἔρως πρὸς τὸ θεῖον δὲν κατορθώνει νὰ πνίξῃ τὸ μεταξὺ τῶν δύο φύλων αἴσθημα. Ἀλλὰ καὶ ἡ ἀρετὴ τῆς γυναικὸς ἀπαιτεῖ τὸν ἐξυμνητήν της, ὡς καὶ ἡ ἀνδρεία τοῦ ἀνδρός. Ἐκ τῆς ἀνάγκης ταύτης ἐγεννήθη ὁ τύπος τοῦ περιπλανωμένου ῥαψῳδοῦ, ὅστις κατὰ τόπους καὶ χώρας ἔλαβε τὸ ὄνομα τοῦ τρουβαδούρου ἐν Προβηγκίᾳ, τρουβὲρ (trouvère) ἐν τῇ Βορείᾳ Γαλλίᾳ, μιννεζαῖνγκερ, ἐν Γερμανίᾳ καὶ βάρδου παρὰ τοῖς Σκώτοις, Ἰρλανδοῖς καὶ Κέλταις. Οἱ τρουβαδοῦροι ἦσαν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εὐγενοῦς καταγωγῆς—βασιλεῖς καὶ αὐτοκράτορες συγκαταλέγονται μεταξὺ αὐτῶν—, ἤρχισαν δὲ ἀκμάζοντες κατὰ τὰς πρώτας σταυροφορίας, διὰ νὰ φθάσωσι εἰς τὴν περίοδον τῆς δόξης των κατὰ τὸν ΙΒ′ καὶ ΙΓ′ αἰῶνα. Αὐτοσχεδιάζοντες τὴν ποίησιν καὶ τὴν μουσικὴν τῶν ᾀσμάτων των οἱ τρουβαδοῦροι ἐδημιούργουν ἀσυνειδήτως τὸν τύπον τοῦ λαϊκοῦ τραγουδιοῦ, ἐξ οὗ μετ᾽ ὀλίγον ἐγεννήθησαν τὸ λὶντ καὶ ἡ καντάτα. Τὰ ᾄσματά των συνωδεύοντο γενικῶς ὑπὸ ὀργάνων, κυρίως τῆς βιέλλας, ἐγχόρδου ὀργάνου μετὰ τόξου, προελθόντος πιθανῶς ἐκ τοῦ κρούτ καὶ τῆς ρότας τῶν Κελτῶν. Ἀλλὰ καὶ γενικώτερον κατὰ τὴν περίοδον ταύτην τὰ ὄργανα πληθύνονται καὶ τελειοποιοῦνται, χωρὶς ἐν τούτοις εἰς τὸν νοῦν τῶν τότε μουσικῶν νὰ γεννηθῇ ἡ ἰδέα τῆς ἐνορχηστρώσεως. Ἐν ἀπειρίᾳ εὕρηνται αὐλοὶ εὐθεῖς, ἢ πλαγίαυλοι, ὀξύαυλοι, κάλαμοι (μετὰ γλωττίδων)· ποικίλα χάλκινα, ὡς τὸ κέρας, τὸ κεράτιον, ἡ σάλπιγξ, τὸ βούκκινον, τὸ ὀλιφάν· ἐκ τῶν κρουστῶν: τύμπανα, κύμβαλα, τρίγωνα, κώδωνες, βασκικὰ τύμπανα· ἔγχορδα: ἡ βιόλα, ἡ ρεβέκα, τὸ λαοῦτο, μανδόρα, ἅρπα, κιθάρα, ψαλτήριον, τύμπανον· πλεῖσται ὅσαι παραλλαγαὶ τοῦ ἀσκαύλου κ.τ.λ. Τὸ δὲ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, τὸ ὁποῖον ἐγνώσθη τὸ πρῶτον ἐν τῇ Δύσει διὰ τοῦ ὑπὸ τοῦ Κωνσταντίνου τοῦ Κοπρωνύμου ἀποσταλέντος εἰς Γαλλίαν ὀργάνου (757), εἶχεν ἤδη τοσοῦτον τελειοποιηθῇ, ὥστε τὸ ἐν Ἀγγλίᾳ κατασκευασθὲν τοιοῦτον, κατὰ τὸν Ι′ αἰῶνα, εἶχε 400 σωλῆνας καὶ 14 φυσητῆρας.

Χαρακτηριστικὸν φαινόμενον, διαρκέσαν καθ᾽ ὅλον τὸν μεσαίωνα, εἶναι ὁ τρόμος ὃν ἐνέπνεεν εἰς τοὺς τότε μουσικοὺς τὸ διάστημα τῆς ηὐξημένης τετάρτης, ὅπερ ἀπεκάλουν «ὁ διάβολος ἐν τῇ μουσικῇ» (diabolus in musica). Τὸ διάστημα τοῦτο σχηματίζεται μεταξὺ τῶν φθόγγων φα-σι· πρὸς ἀποφυγὴν δὲ αὐτοῦ ἐπενόησαν κλίμακας ἐξ ἓξ φθόγγων, ἃς ἀπεκάλουν ἑξάχορδα (βλ. τὴν λ. καὶ λ. *μεταβολή*).

Αἱ ἀλλοιώσεις ἐμφανίζονται εἰς τὴν μουσικὴν κατὰ ποικίλας ἐποχάς. Κατὰ τὸν Ι′ αἰῶνα ἐκ τῶν διαφόρων τύπων τοῦ *b* (b rotundum, b molle καὶ b quadratum ἢ durum), ἐδημιουργήθη ἡ ὕφεσις (bémol) καὶ ἡ δίεσις (becarre), ἥτις ἀρχικῶς σημειουμένη ὡς ♮, μετεμορφώθη κατὰ τὸν ΙΓ′ αἰῶνα εἰς ♯· ἡ δὲ ἀρχικὴ δίεσις (♮) ἀπὸ τοῦ 1650 ἐχρησιμοποιήθη ὑπὸ τὴν ἔννοιαν τῆς σημερινῆς ἀναιρέσεως. Αἱ διπλαῖ διέσεις καὶ ὑφέσεις εἶναι ἐφεύρεσις τῶν τελευταίων χρόνων.

Ἓν ζήτημα περιπλέξαν πολλάκις τοὺς μουσικοὺς εἶναι ὅτι οἱ θεωρητικοὶ τοῦ μεσαίωνος διατηρήσαντες τὰ ὀνόματα τῶν ἀρχαίων ἑλληνικῶν τρόπων, ἤλλαξαν τὴν βάσιν, οὕτως ὥστε μέχρις αὐτοῦ τοῦ Γλαρεανοῦ (1567) οἱ τρόποι οὗτοι νὰ ἐμφανίζωνται ὡς ἑξῆς:

| *Ἀρχ. ἑλλ. τρόποι* | *Μεσαιωνικοὶ* | |
|---|---|---|
| Φρύγιος | Δώριος | ρε,μι,φα,σολ,λα,σι,ντο,ρε |
| Ὑποδώριος (αἰολικὸς) | Αἰολικὸς | λα,σι,ντο,ρε,μι,φα,σολ,λα |
| Δώριος | Φρύγιος | μι,φα,σολ,λα,σι,ντο,ρε,μι |
| Μιξολύδιος | Ὑποφρύγιος | σι,ντὸ,ρε,μι,φα,σολ,λα,σι |
| Ὑπολύδιος (ἰωνικὸς) | Λύδιος | φα,σολ,λα,σι,ντο,ρε,μι,φα |
| Λύδιος | Ἰώνιος | ντο,ρε,μι,φα,σολ,λα,σι,ντο |
| Ὑποφρύγιος | Μιξολύδιος | σολ,λα,σι,ντο,ρε,μι,φα,σολ |

Εἶναι τίτλος τιμῆς τοῦ μεσαίωνος ὅτι ἐδημιούργησε τὴν *ἀντίστιξιν*, κοιτίδα τῆς ἁρμονίας καὶ βάσιν τῆς ἡμετέρας τέχνης. Ἀντίστιξις (contrapunctum) σημαίνει συνδυασμὸν πλειόνων μελῳδιῶν ταυτοχρόνως ἐκτελουμένων. Ἡ ὀνομασία δὲ αὕτη ἐδόθη εἰς τὰς συνηθείας, ἃς εἶχον οἱ μουσικοὶ τῆς Ἀκουϊτανίας νὰ σημειῶσι τοὺς φθόγγους διὰ στίξεων (punctum). Καὶ ἀρχικῶς μὲν ἐλέγετο «punctum contra punctum» (στίξις ἔναντι στίξεως) εἶτα δὲ συντετμημένως «contra-punctum» (ἀντίστιξις). Ἅμα τῇ γενέσει της ἡ νέα αὕτη τέχνη ἠρέσκετο εἰς τὸ νὰ μιμῆται δι᾽ ἑκάστης τῶν προστιθεμένων φωνῶν τὸ ἀρχικὸν δεδομένον μέλος· οὕτως ἐγεννήθη ἡ *μίμησις* καὶ ἐκ ταύτης ὁ *κανών*, ἡ *κάτσια*, τὸ *ριτσερκάρε* καὶ ἡ *φυγή*.

Ἡ περιοχὴ τῆς Εὐρώπης, ἔνθα ἀνεπτύχθη ἡ ἀντιστικτικὴ ἢ πολυφωνικὴ μουσική, εἶναι αἱ Κάτω Χῶραι, ἔνθα συναντῶμεν τὰ ὀνόματα τῶν Ντυφαί, Ὄκεγκεμ, Πιὲρ ντὲ λὰ Ρύ, Λοαζὲ Κομπέρ, Ἀντ. Μπρυμὲλ καὶ ἰδίως τοῦ Ζοσκὲν Ντεπρέ. Σύγχρονοι τούτων εἶναι οἱ Γερμανοὶ Πάουμαν, Ἀγκρίκολα, Φίνκ, Ἰζαὰκ κλπ. Χαρακτηριστικὸν εἶναι ἡ ὑπὸ τῶν μουσουργῶν τούτων ἐπιζήτησις συνθέσεων ὅσον τὸ δυνατὸν πολυφωνοτέρων, ὡς ὁ κανὼν δι᾽ εἴκοσι τέσσαρας φωνὰς τοῦ Ζοσκὲν Ντεπρὲ καὶ ὁ ἕτερος διὰ τριάκοντα ἓξ φωνὰς τοῦ Ὄκεγκεμ.

Παραλλήλως ἡ σημειογραφία τελειοποιεῖται, πλησιάζουσα ὁλονὲν πρὸς τὴν σύγχρονον, καὶ δημιουργοῦνται αἱ παύσεις:

| Φθογγόσημα | | | Παύσεις | |
|---|---|---|---|---|
| *Μέγιστον* (maxima) | ⟦ | | ▮ | |
| *Μακρὸν* (longa) | ⊐ | | ▮ | |
| *Βραχὺ* (brevis) | □ | | ■ | |
| *Ἡμίβραχυ* (semi-brevis) | ◇ | (ἡμέτερον ὁλόκληρον) | ▬ | (κάτωθεν 4ης γραμμῆς |
| *Ἐλάχιστον* (minima) | 𝅗𝅥 | (ἡμέτερον ἥμισυ) | ▬ | (ἐπὶ τῆς 2ας γραμμῆς) |
| *Ἡμιελάχιστον* (semi-minima) | ◇ ἢ ◆ | (ἡμέτερον τέταρτον) | 𝄽 | |
| *Χρῶμα* (fusa) | ◇ ἢ ◆ | (ὄγδοον) | 𝄾 | |
| *Ἡμίχρωμα* (semi-fusa) | ◇ ἢ ◆ | (δέκατον ἕκτον) | 𝄿 | |

Ἡ μουσικὴ Ἀναγέννησις (μέσα ΙΣΤ′ αἰῶνος) σημειοῦται διὰ τῆς ὁριστικῆς ἐπιβολῆς τοῦ μείζονος τρόπου, ὑπάρχοντος μὲν καὶ προηγουμένως, ἐπικρατήσαντος ὅμως χάρις εἰς τὸν Γλαρεανόν. Διὰ τοῦ τρόπου τούτου ἡ τέχνη βαίνει πρὸς τὴν σύγχρονον ἁρμονικὴν ἀντίληψιν, διότι ἡ κλῖμαξ τοῦ ντο περιέχει ὡς κυρίας αὐτῆς βαθμῖδας τονικήν, δεσπόζουσαν καὶ ὑποδεσπόζουσαν, μείζονας συγχορδίας, ἐφ᾽ ὧν στηρίζεται τὸ σημερινὸν ἁρμονικὸν οἰκοδόμημα. Περιέχει ἐπίσης ἐπὶ τῆς ἑβδόμης βαθμῖδος τὸν προσαγωγέα, οὗτινος ἡ ἕλξις πρὸς τὴν τονικὴν εἶναι γνωστή.

Κατὰ τὴν Ἀναγέννησιν σημειοῦται καὶ ἡ μεγάλη κίνησις τῶν οὑμανιστῶν, τῶν ἐπιζητούντων νὰ ἀναζωογονήσωσι τὴν πρὸς τὸ ἀρχαῖον ἑλληνικὸν πνεῦμα λατρείαν. Ἡ προσπάθεια δημιουργίας στίχων ἐπὶ τῶν ἀρχαίων μέτρων ἐκδηλοῦται εἰς τὴν μουσικὴν διὰ μιᾶς ἐσφαλμένης περὶ ρυθμοῦ ἀντιλήψεως καὶ γεννᾷ μουσικὰς φράσεις ρυθμικῶς ἀκανονίστους. Παρ᾽ ὅλα ταῦτα ἡ περίοδος αὕτη χαρίζει εἰς τὴν τέχνην ἀπαράμιλλα γαλλικὰ τραγούδια (chansons), εἰς τὰ ὁποῖα διαπρέπει κυρίως ὁ Κλεμὰν Ζαννεκέν. Τινὰ ἐκ τῶν τραγουδιῶν, ὅπως ὁ «Πόλεμος», τὸ «Τραγούδι τῶν πουλιῶν», τὸ «Κυνήγι», εἶναι ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων ὑποδειγμάτων περιγραφικῆς μουσικῆς, πραγματοποιουμένης διὰ τῆς πολυφωνίας. Παρὰ τὸ γαλλικὸν τραγούδι δημιουργεῖται τὸ *μαδριγάλιον*, εἶδος γεννηθὲν ἐν Ἰταλίᾳ καὶ λαβὸν μεγάλην ἐξάπλωσιν. Εἶναι τραγούδι γραμμένον μὲ πολλὴν τέχνην καὶ ἐπιμέλειαν καὶ ὑποθέσεως ἀρχικῶς ποιμενικῆς (ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομά του ἐκ τοῦ mandriale καὶ τοῦτο ἐκ τοῦ mandra=μάνδρα). Ἐπὶ δύο αἰῶνας, ΙΣΤ′ καὶ ΙΖ′, κρατεῖ τὰ σκῆπτρα τῆς κοσμικῆς μουσικῆς, ἰδίως ἐν Βενετίᾳ, ἔνθα ἔχει ἱδρυθῇ ἡ σημαντικωτέρα σχολὴ τῆς Ἰταλικῆς χερσονήσου. Ἡ ἐπιμεμελημένη πολυφωνία τοῦ μαδριγαλίου, αἱ ἁρμονικαὶ τολμηρότητες, ἃς συχνάκις εὑρίσκομεν ἐν αὐτῷ, ἡ ἐπιζήτησις τοῦ χρωματισμοῦ ἀνοίγει εἰς τὴν τέχνην νέους ὁρίζοντας καὶ τὴν ὁδηγεῖ πρὸς τὴν *ἱερὰν συμφωνίαν*, τὴν *καντάταν*, καὶ τὰ μεγάλα σύνολα τοῦ μελοδράματος. Μεταξὺ τῆς πλειάδος τῶν συνθετῶν τῶν ἀσχοληθέντων μὲ τὸ εἶδος τοῦτο (Βίλλαρτ, Ἀρκαντέ, Ρόρε, Βιτσεντῖνο κλπ.) σταματῶμεν πρὸ τῶν ὀνομάτων δύο μεγαλοφυῶν μουσουργῶν, τοῦ Λάσσου καὶ τοῦ Παλεστρίνα. Ἀλλ᾽ ἡ θέσις τούτων, ἰδίως τοῦ δευτέρου, εὕρηται κατὰ πρῶτον λόγον ἐν τῇ θρησκευτικῇ μουσικῇ. Ὁ Παλεστρίνα (1524—1694) ὑπῆρξεν ἡ μεγαλυτέρα μουσικὴ ἰδιοφυΐα τῆς ἐποχῆς του, ἡ δὲ τέχνη του παραμένει ὡς ἡ ἀνωτέρα ἐκδήλωσις τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὕφους. Ἡ αὐστηρὰ πολυφωνία καὶ οἱ μάταιοι ἀντιστικτικοὶ συνδυασμοὶ ἀντικαθιστῶνται παρ᾽ αὐτῷ διὰ γλυκείας μελῳδικῆς γραμμῆς, σύμφωνοι συγχορδίαι διαδέχονται ἀλλήλας, ἐνῷ αἱ πάντοτε καλῶς προετοιμαζόμεναι διαφωνίαι παράγουν ἐλαφρὰς σκιάσεις, ἐκτεινούσας τὰς ἀντιθέσεις τοῦ μουσικοῦ πίνακος. Ἡ ἐπίδρασίς του ἐπὶ τῆς τέχνης ὑπῆρξε τοιαύτη, ὥστε μέχρι σήμερον λέγοντες: ὕφος Παλεστρίνα (alla Palestrina), ἐννοοῦμεν πολυφωνικὴν σύνθεσιν ἄνευ συνοδείας ὀργάνων.

Καθ᾽ ὃν χρόνον διὰ τοῦ Παλεστρίνα, τοῦ Λάσσου καὶ τοῦ Βικτόρια ἡ θρησκευτικὴ μουσικὴ τῆς Δύσεως φθάνει εἰς τὸ ὕψιστον σημεῖον τῆς ἀκμῆς της, διὰ τῆς μεταρρυθμίσεως τοῦ Λουθήρου δημιουργεῖται νέος τύπος ἐκκλησιαστικοῦ μέλους, τὸ *χορικὸν* (choral). Γεγραμμένον ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς διὰ νὰ δεχθῇ ἁρμονικὸν ἔνδυμα, τὸ χορικὸν διαφέρει οὐσιωδῶς τοῦ γρηγοριανοῦ μέλους, ἀρχαιοτάτης προελεύσεως καὶ κατ᾽ ἐξοχὴν ὁμοφώνου ᾄσματος.

Τὸ ἔτος ἀκριβῶς τοῦ θανάτου τοῦ Παλεστρίνα (1594) ἀνεβιβάζετο ἡ «Δάφνη», τὸ πρῶτον μελόδραμα τῆς φλωρεντινῆς σχολῆς, εἰς ἣν ὀφείλεται ἡ δημιουργία τοῦ σπουδαιοτάτου τούτου εἴδους. Προελθὸν ἐκ τῆς ἀνάγκης ἀντιδράσεως πρὸς τὴν ψυχρὰν ἀντιστικτικὴν τέχνην, τὸ μελόδραμα ἐβασίσθη ἐπὶ τῆς μουσικῆς ἀπαγγελίας καὶ ἐπὶ τοῦ παραστατικοῦ ὕφους. Δι᾽ αὐτοῦ ἐπεζητήθη ἡ ανα-



Digitized by Google

ζωογόνησις τοῦ δραματικοῦ πάθους καὶ τῆς ἐκφράσεως ἐν τῇ μουσικῇ. Ἡ μονῳδία πράγματι, ὡς ἐκλήθη παρὰ τῶν Φλωρεντινῶν ἡ μουσικὴ ἀπαγγελία, ἐπιτρέπουσα τὴν κατ' ἄτομον ᾠδήν, ἦτο ἡ μόνη δι' ἧς θὰ κατωρθοῦτο ἡ ἀναβίωσις τοῦ δράματος, ἐφ' ὅσον μέχρι τῆς στιγμῆς ἐκείνης, τόσον εἰς τὰ μεσαιωνικὰ μυστήρια, ὅσον καὶ εἰς τὰ μπαλλέττα καὶ τὰ σκηνικὰ δοκίμια τοῦ Ὁρατίου Βέκκι, τὸ ᾆσμα ἦτο πάντοτε πολυφωνικόν, διὰ τρεῖς, τέσσαρας ἢ καὶ πλείονας φωνάς. Ἔξω δηλαδὴ τῆς δραματικῆς ἀληθείας, ἐφ' ὅσον αἱ ἐρωτικαὶ ἐκδηλώσεις, φέρ' εἰπεῖν, δύο ἀτόμων θὰ ἔπρεπε νὰ ἐκτελῶνται ὑπὸ πολυφωνικοῦ χοροῦ εἰς τὸ ὕφος τοῦ μαδριγαλίου (βλ. πλείονα ἐν λ. *μελόδραμα*).

Τῆς πρώτης περιόδου τοῦ μελοδράματος δεσπόζει ἡ μεγάλη μορφὴ τοῦ Μοντεβέρντι (1570—1649), τολμηροῦ νεωτεριστοῦ, τοῦ πρώτου χρησιμοποιήσαντος τὰς συγχορδίας ἑβδόμης καὶ ἐνάτης δεσποζούσης ἄνευ προετοιμασίας καὶ ἱδρυτοῦ τοῦ συγχρόνου *τονικοῦ συστήματος*. Ὁ Μοντεβέρντι θεωρεῖται ἐπίσης ὡς θεμελιωτὴς τῆς νεωτέρας ἐνορχηστρώσεως· δὲν ἔχει μὲν εὕρει εἰσέτι τὴν μεταξὺ τῶν ὀργάνων ἰσορροπίαν, χειρίζεται ὅμως αὐτά, ὁτὲ μὲν μεμονωμένα, ὁτὲ ἐν συνδυασμῷ, ὁτὲ δὲ κατὰ κατηγορίας. Ἡ ὀρχήστρα τοῦ Μοντεβέρντι εἶναι σχεδὸν ἡ ἐπικρατοῦσα γενικῶς κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα καὶ περιλαμβάνει τὰ ἑξῆς ὄργανα : 2 κλαβικύμβαλα, 2 βαθείας βιόλας (βαδύχορδα), 10 βιόλας, 1 διπλῆν ἅρπαν, 2 μικρὰ βιολία, 2 μεγάλας κιθάρας (chitarroni), 2 φορητὰ ὄργανα, 3 γκάμπας, 4 ὁλκωτὰς σάλπιγγας, 2 κεράτια, 1 μικρὸν αὐλόν, 1 ξυλίνην σάλπιγγα. 3 σάλπιγγας μετὰ πνιγέων. Ἐν τῇ ὀρχήστρᾳ ταύτῃ βλέπομεν ἐπικρατοῦσαν τὴν βιόλαν, ὄργανον μετὰ τόξου, ἕλκον τὴν καταγωγὴν εἴτε ἐκ τῆς ραβανάστρας τῶν Ἰνδῶν, εἴτε ἐκ τοῦ κρούτ τῶν Κελτῶν· ἡ σημασία τῆς βιόλας εἶναι μεγίστη, διότι ἐκ ταύτης ἐδημιουργήθησαν ἐπὶ τὸ ὀξύτερον μὲν τὸ βιολίον (μικρὰ βιόλα), ἐπὶ δὲ τὸ βαθύτερον ἡ βιόλα ντὰ γκάμπα, ἐξ ἧς τὸ σημερινὸν βιολοντσέλλον καὶ τὸ βιολλόνε κοντραμπάσσο, δηλαδὴ τὸ σημερινὸν βαθύχορδον. Εἰς τὴν Κρεμώναν τῆς Ἰταλίας ζῶσι κατὰ τὸν ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνα οἱ περίφημοι κατασκευασταὶ βιολίων Ἀμάτι, Γκουαρνέριους, Στραντιβάριους κ. ἄ. Παραλλήλως τελειοποιοῦνται τὰ ὄργανα μετὰ πλήκτρων. Ἐκ τοῦ μονοχόρδου τοῦ Πυθαγόρου, διὰ τῆς βιέλλας καὶ τοῦ ἐξακίρ, φθάνομεν εἰς τὸ κλειδόχορδον, οὗτινος αἱ χορδαὶ κρούονται διὰ μεταλλικῶν γλωσσιδίων προσηρμοσμένων εἰς τὰ πλῆκτρα καὶ διαχωριζόντων τὴν χορδήν. Μετὰ τὸ κλειδόχορδον ἐμφανίζεται τὸ κλαβικύμβαλον, οὗτινος αἱ χορδαὶ κρούονται διὰ πτερῶν κόρακος καὶ περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος τὸ σημερινὸν κλειδοκύμβαλον μετὰ σφυρίων καὶ πνιγέων, ὅπερ ἕνα αἰῶνα ἀργότερον τελειοποιεῖται παρὰ τοῦ Ἐρὰρ (βλ. λ. *κλειδοκύμβαλον*)

Ἔργον τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος εἶναι ἐπίσης ἡ ἀνακάλυψις τοῦ *ἐναρίθμου βασίμου* (basso continuo), δηλαδὴ συστήματος ἀριθμῶν σημειουμένων ἐπὶ τῆς βαρυτέρας φωνῆς καὶ ὑποδεικνυόντων τὸ σύνολον τῆς συγχορδίας. Τὸ ἐνάριθμον βάσιμον ὑπῆρξε μεγάλης ὠφελιμότητος διὰ τὴν συνοδείαν τῶν ρετσιτατίβων τοῦ πρώτου μελοδράματος καὶ δι' αὐτὴν τὴν ὀργανικὴν μουσικήν, μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ Μπάχ.

Ἱδρυθὲν ἐν Φλωρεντίᾳ τὸ μελόδραμα, τάχιστα διεδόθη ἀνὰ πᾶσαν τὴν Ἰταλίαν. Ἀρχικῶς μὲν ἐν Βενετίᾳ, ἑστίᾳ πάσης καλλιτεχνικῆς κινήσεως, ἔνθα παρὰ τὸν Μοντεβέρντι, ἤκμασαν ὁ Καβάλλι, ὁ Τσέστι, ὁ Λόττι, ὁ Γκαλούππι, ὁ Λεγκρέντσι κ. ἄ. Ἡ σχολὴ τῆς Νεαπόλεως ἐλθοῦσα μεταγενεστέρως, διετηρήθη καὶ πλειότερον. Ἐν αὐτῇ κυρίως ἐδημιουργήθη τὸ *εὔθυμον μελόδραμα* (opera buffa), ὅπερ ἐλαμπρύνθη παρὰ τοῦ Ἀλεξ. Σκαρλάττι καὶ διὰ πλειάδος ἄλλων συνθετῶν—τῶν Ντουράντε, Περγκολέζε, Βίντσι, Τεραντέλλιας, Γιομέλλι καὶ ἀργότερον τῶν Πιτσίνι, Σακκίνι, Γκουλιέλμι, Παϊζιέλλο, Πόρπορα, Χάσσε κ. ἄ.

Ἡ σχολὴ τῆς Ρώμης ἔχει δικαίους τίτλους τιμῆς, διότι ἐδημιούργησε τὸ *ὀρατόριον*, τύπον μουσικῆς κατὰ τὸ ἥμισυ δραματικόν, ἐπικὸν καὶ λυρικόν, ἀρχικῶς ἁπλοῦν ὕμνον καὶ ἀργότερον πλῆρες θρησκευτικὸν μουσικόδραμα προωρισμένον νὰ παιχθῇ ἀπὸ σκηνῆς, ἐν τέλει δὲ περιορισθὲν νὰ ἐκτελῆται μόνον ἐν συναυλίαις. Τὰ δειλὰ πρότυπα τοῦ Νέρι καὶ Ἀνιμούτσια ἐτελειοποίησεν ὁ Καρίσσιμι, ὁ δικαίως θεωρούμενος ὡς ὁ θεμελιωτὴς τοῦ εἴδους.

Διὰ τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ μελοδράματος ἡ ἡγεμονία τῆς Ἰταλίας ἐπὶ τῆς μουσικῆς ἡδραιώθη. Ἡ Εὐρώπη ἅπασα εἶναι εἰς τὰς χεῖράς της. Ἡ Βιέννη ἰταλοκρατεῖται, ἡ Γερμανία οὐδὲν ἄλλο γνωρίζει ἢ τὴν ἰταλικὴν τέχνην· ἐξαίρεσιν κάμνει πρὸς στιγμὴν τὸ Ἀμβοῦργον διὰ τοῦ Κάϊζερ, ἵνα ὑποκύψῃ μετ' ὀλίγον· ἡ Ἀγγλία μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Πάρσελ, τοῦ μόνου ἀξίου λόγου ἐθνικοῦ συνθέτου, πίπτει εἰς τὰς χεῖρας τῶν Ἰταλῶν, πρὸς οὓς οὐδ' αὐτὸς ὁ Χαῖντελ δύναται νὰ ἀντισταθῇ. Ἡ Γαλλία μόνον κατορθώνει νὰ διατηρήσῃ σχετικὴν αὐτοτέλειαν, διότι παρὰ τὸ ἰταλικὸν μελόδραμα ἱδρύει διὰ τῶν Περρὲν καὶ Καμπὲρ καὶ ἐθνικὸν τοιοῦτον, ὅπερ βλέπει ἡμέρας δόξης διὰ τῶν Λούλλυ καὶ Ραμώ. Εἰς τὸν τελευταῖον τοῦτον ἡ μουσικὴ ὀφείλει τὴν κωδικοποίησιν τῶν θεμελιωδῶν τῆς ἁρμονίας νόμων, οὓς ὁ Ραμὼ ἐκθέτει εἰς τὸ «Ἐγχειρίδιον Ἁρμονίας», προάγων τὰς θεωρίας τοῦ Τσαρλῖνο (Istituzioni harmoniche, 1558).

Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἔχομεν τὰς πρώτας δειλὰς ἐκδηλώσεις καθαρᾶς *ὀργανικῆς μουσικῆς* καὶ ὀλίγον κατόπιν *μουσικῆς δωματίου* (περὶ ὧν βλ. κατωτ.). Ἕνα αἰῶνα ἀργότερον ἡ συγχώνευσις τῶν φωνῶν καὶ τῶν ὀργάνων ἔχει συντελεσθῆ, ἡ δὲ μουσικὴ γλῶσσα ἔχει ὁριστικῶς διαπλασθῆ. Ἡ ἀντιστικτικὴ τέχνη χάνει συνεχῶς ἔδαφος καὶ αἰσθάνεται τὴν ἀνάγκην νὰ ζητῇ συνεπίκουρον τὴν μουσικὴν ἀπαγγελίαν. Μὲ τὰς τελευταίας ἀναλαμπὰς τῆς μουσικῆς ἀναγεννήσεως καὶ τὰς πρώτας ἀκτῖνας τοῦ κλασικισμοῦ (μέσα ΙΗ' αἰῶνος), ἡ σύγχρονος θεωρία τῶν τόνων ἔχει θέσει τὰς ὁριστικάς της βάσεις. Ἡ συγκεκραμένη κλῖμαξ ἔχει δώσει τὸ τελευταῖον κτύπημα εἰς τὰ μικρότερα τοῦ ἡμιτονίου διαστήματα καὶ διευκολύνει τὸ χόρδισμα τῶν πληκτροφόρων κυρίως ὀργάνων. Ὁ σύγχρονος μείζων καὶ ἐλάσσων τρόπος ἔχει ἐπικρατήσει ὁριστικῶς, οὕτως ὥστε δύο κλίμακες ὑπάρχουσι πλέον ἐν τῇ πραγματικότητι, τῶν λοιπῶν θεωρουμένων ὡς προερχομένων ἐκ μεταθέσεως ἐπὶ τὸ ὀξύτερον ἢ τὸ βαρύτερον τῶν δύο βασικῶν τρόπων, εἰς οὓς θὰ ἠδύνατο νὰ προστεθῇ ἡ παραλλαγὴ τοῦ μελῳδικοῦ ἐλάσσονος. Ἡ καθιέρωσις τῶν νέων τούτων θεωριῶν εὕρηται εἰς τὸ «Καλῶς συγκεκραμένον κλειδόχορδον» τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπάχ, περιέχον 48 πρελούντια καὶ φυγὰς εἰς ὅλους τοὺς τόνους κατὰ χρωματικὴν τάξιν.

Κατὰ φυσικὸν νόμον τῆς τέχνης, ἑκάστη μεγάλη αὐτῆς περίοδος ἔχει ὡς ἐπιστέγασμα τὸ ἔργον ἑνὸς ὑπερτέρου πνεύματος, συγκεντροῦντος ἐν αὐτῷ καὶ ὑπερβάλλοντος τὰς ἰδιότητας ὅλων τῶν προκατόχων του. Οὕτω καὶ εἰς τὴν μουσικὴν αἱ ἀντιστικταὶ προσπάθειαι ὀκτὼ σχεδὸν αἰώνων, μετὰ τὰς πρώτας δειλὰς ψηλαφήσεις εἰς τὸ σκότος, ἐδημιούργησαν ἀρχικῶς τὸ ἔργον τῶν μεγάλων πολυφωνιστῶν τῶν Κάτω-Χωρῶν, τὴν ἐκφραστικὴν πολυφωνίαν καὶ τὴν θειότητα τοῦ Παλεστρίνα. σχοῦσαι τέλος ὡς ἐπιστέγασμα τὴν ἀνυπέρβλητον τέχνην τοῦ Μπάχ, οὗτινος ἡ τεχνικὴ εἶναι αὐτὴ ἡ ἔμπνευσις καὶ ἡ ἀντιστικτικὴ δεινότης, αὐτὸ τὸ πνεῦμα τῆς μουσικῆς. Ἂν προσθέσῃ τις εἰς τὸ ἔργον τοῦ κολοσσοῦ τούτου τὰ μελοδράματα τοῦ Χαῖντελ, δύναται νὰ σχηματίσῃ ἰδέαν τῆς διανυθείσης ὁδοῦ καὶ τῶν ἐπιτευχθεισῶν προόδων περὶ τὰ τέλη τῆς Ἀναγεννήσεως.

Ἀλλ' ἡ πρόοδος ἔχει ἐπιτελεσθῆ καὶ εἰς τὰ μέσα· διότι ἐὰν τὰ ἔγχορδα, ἕνα σχεδὸν αἰῶνα ἐνωρίτερον, εἶχον ἤδη λάβει τὸν ὁριστικόν των τύπον, τὰ πνευστὰ εἶχον πολλὰς ἐλλείψεις, τὰς ὁποίας συνεχῶς τελειοποιεῖ ὁ ΙΗ' αἰών. Ὁ πλαγίαυλος ἀντικαθιστᾷ ὁριστικῶς τὸν εὐθὺν αὐλόν, ἀπὸ τῶν μέσων δὲ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος κατασκευάζεται ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἐπιστημονικῶν ὑποδείξεων τοῦ Μπαῖμ (Bœhm). Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν αὐτῶν ἀρχῶν κατασκευάζεται καὶ ὁ εὐθύαυλος, ἐμφανισθεὶς ἐπισήμως εἰς τὴν ὀρχήστραν περὶ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ὁ ὀξύαυλος καὶ ὁ βαρύαυλος πρωταγωνιστοῦν καθ' ὅλην αὐτὴν περίοδον, ἐνῷ τὰ κέρατα καὶ αἱ σάλπιγγες γνωρίζουν ἡμέρας ἀκμῆς ἐπὶ Μπὰχ καὶ Χαῖντελ. Τὰ ὄργανα ταῦτα, πρωτόγονα ἀκόμα κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, συμπληροῦν χρωματικὴν κλίμακα, διὰ τῆς προσθήκης τῶν κλειδιῶν ἢ τῶν ἐμβόλων κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἡ ὁλκωτὴ σάλπιγξ (τρομπόνι), χρησιμοποιεῖται εὐρέως ἐπὶ Ἰω. Γκαμπριέλλι, Μοντεβέρντι, εἶτα ἐπὶ Γκλούκ, διὰ νὰ ἐγκαταλειφθῇ σχεδὸν κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἀποκαθίσταται ἐπὶ Μπετόβεν καὶ ἰδίως ἐπὶ Μπερλιόζ. Τέλος ἡ πρωτόγονος ἅρπα τελειοποιεῖται ὑπὸ τοῦ Ἐράρ, περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, διὰ τῆς προσθήκης ποδοπλήκτρων.

Οὕτω τὰ ὑλικὰ μέσα εἶναι σχεδὸν τελειοποιημένα τὴν στιγμὴν καθ' ἣν πρόκειται νὰ ἐμφανισθοῦν ἐπὶ τῆς μουσικῆς σκηνῆς οἱ μεγάλοι αὐτῆς κλασσικοί : Χάϋδν, Μόζαρτ, Μπετόβεν, εἰς οὓς πρέπει νὰ προστεθῇ ὁ ἀναμορφωτὴς τῆς λυρικῆς τραγῳδίας Χρ. Βίλ. Γκλούκ. Γερμανοὶ πάντες, ἀλλὰ καὶ κοσμοπολῖται ἀπὸ ἀπόψεως τέχνης, ἀποτελοῦσιν οὗτοι τὴν θαυμασίαν ἅλυσιν τῶν κλασσικῶν τῆς Βιέννης, περὶ τοὺς ὁποίους προβάλλει πλειὰς ὁλόκληρος ὀλιγώτερον φωτεινῶν δορυφόρων, εἰς αὐτοὺς δὲ ἀνήκει ἡ τιμὴ τῆς ἀναπτύξεως τῆς συμφωνικῆς τέχνης καὶ ἡ δημιουργία ἔργων, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἡ πάροδος τοῦ χρόνου οὐδεμίαν δύναται νὰ ἔχῃ ἐπίδρασιν. Ἡ ἁρμονικὴ τριὰς Χάϋδν—Μόζαρτ—Μπετόβεν, τοῦ τέλους τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ', μὲ τοὺς ἐπὶ θύραις ρωμαντικούς, ἀποτελεῖ ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς μουσικῆς φαινόμενον, τὸ ὁποῖον μόνον πρὸς τὸ ἀρχαῖον ἑλληνικὸν θαῦμα καὶ τὴν ἰταλικὴν Ἀναγέννησιν δύναται νὰ παραβληθῇ. Διὰ τῶν δύο πρώτων ἀνοίγει νέα περίοδος, εἰς τὸ τέρμα τῆς ὁποίας προβάλλει ὡς φάρος τηλαυγὴς ἡ μεγαλοφυΐα τοῦ Μπετόβεν, ἥτις, ἔχουσα τὰς ρίζας της εἰς τὸ παρελθόν, πρόκειται νὰ φωτίσῃ τὰς ὁδοὺς τῆς συγχρόνου τέχνης καὶ ἀρχικῶς τῆς ρωμαντικῆς, ἐν τῇ ὁποίᾳ τὸ ὑποκειμενικὸν στοιχεῖον καὶ ἡ ἐλευθέρα φαντασία ἀντικαθιστοῦν τὸν καθωρισμένον τύπο[ν]. Συνδετικὸς κρίκος μεταξὺ κλασσικισμοῦ καὶ ρωμαντισμοῦ ὁ Μπετόβεν, δίδει εἰς τὴν μουσικὴ[ν] του τόνους πλέον ἀνθρωπίνους, δημιουργεῖ νέο[υς] ρυθμοὺς καὶ ζωγραφίζει εἰκόνας, ἐν ταῖς ὁποία[ις] τὸ φανταστικὸν στοιχεῖον πολλὰ ἔχει νὰ ἀντλήσ[ῃ]. Ἀλλὰ τὸ φανταστικὸν στοιχεῖον εὗρε τὸν διδάσκαλόν του ἐν τῷ προσώπῳ κυρίως τοῦ Βέμπε[ρ], τοῦ δημιουργοῦ τοῦ μουσικοῦ θρύλου καὶ τῆ[ς] μπαλλάντας, τοῦ εἰσαγαγόντος τὸ λαϊκὸν στοιχεῖο[ν] ἐν τοῖς ἔργοις του. Διὰ τοῦ ρωμαντισμοῦ τὸ ἐξωτικὸν στοιχεῖον ἔχει εἰσδύσει ἐπίσης εἰς τὴν μουσική[ν], ἐνῷ ἡ διὰ τῶν ἤχων ζωγραφικὴ καὶ ἡ περιγραφικὴ τέχνη υἱοθετοῦνται ὁριστικῶς παρὰ τῶν μεγάλων διδασκάλων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Κύριος ἀγωγ[ὸς] τῶν ρωμαντικῶν τάσεων τῆς περιόδου ἐκείνη[ς] εἶναι ἡ νέα ἀντίληψις τῆς ἐνορχηστρώσεως, μ[ὲ] τὴν γραφικὴν μῖξιν τῶν ὀργάνων καὶ τοὺς πρωτοτύπους ἠχητικοὺς συνδυασμούς, δι' ὧν τὰ χρώματα τῆς ὀρχήστρας ποικίλλουν μέχρι τοῦ ἀπείρου. Ἀλλ' ὁ μέγας διδάσκαλος τῆς ἐνορχηστρώσεως, ὁ βαδίσας ἐπὶ τὰ ἴχνη τοῦ Βέμπερ καὶ τελειοποιήσας τὴν τέχνην τούτου, εἶναι ὁ Μπερλιόζ, εἰς ὃν οἱ σύγχρονοι πολλὰ ὀφείλουσι.

Διὰ τοῦ Σοῦμπερτ ἐμφανίζεται μία ἄλλη πλευρὰ τοῦ μουσικοῦ ρωμαντισμοῦ : ἡ τοῦ *τεχνικοῦ τραγουδιοῦ* (Kunstlied), μὲ τάσεις ἀφ' ἑνὸς αἰσθηματικὰς καὶ ἀφ' ἑτέρου ρεαλιστικάς. Ἡ τέχνη αὕτη βασίζεται πάντοτε εἰς τὴν ἀφελῆ μελῳδίαν, διαφέρει ὅμως πάσης ἄλλης προγενεστέρας λόγῳ τοῦ στενοτέρου δεσμοῦ μεταξὺ ποιήσεως καὶ τῆς μουσικῆς, καὶ τῆς ἐξαιρετικῆς σημασίας, ἥτις δίδεται εἰς τὴν συνοδείαν. Τὸ κλειδοκύμβαλον δὲν συμπληρώνει πλέον τὰς συγχορδίας τοῦ ἐναρίθμου βασίμου, ἀλλ' ἔχει ζωὴν ἀνεξάρτητον, ὁ δὲ ρόλος του συνίσταται εἰς τὸ νὰ ἑρμηνεύῃ καὶ νὰ συμπληρώνῃ τὴν ἔννοιαν τῆς ποιήσεως. Ἔτι δὲ περισσότερον εἰς τὰς *μπαλλάντας*, τοὺς μουσικοὺς τούτους θρύλους, ὧν τὴν ὁδὸν πρὸς τοὺς ἐπιγόνους ἀνοίγει ὁ Λαῖβε. Τὸ τεχνικὸν τραγοῦδι φθάνει εἰς τὸ κορύφωμα διὰ τοῦ Σοῦμαν καὶ εἶτα διὰ τοῦ Βόλφ.

Ταυτοχρόνως τὸ κλειδοκύμβαλον εὑρίσκει τὸν μεγάλον αὐτοῦ ποιητὴν ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ Σοπέν. Ἤδη πρὸ αὐτοῦ, πρῶτος ὁ Μπετόβεν καὶ εἶτα ὁ Βέμπερ καὶ ὁ Σοῦμπερτ εἶχον ἐμπιστευθῆ εἰς τὸ ὄργανον τοῦτο μέγα μέρος τῆς δημιουργίας των. Ἰδίως ὁ Μπετόβεν μὲ τὰς σονάτας του δίδει τὸ μέτρον τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τελειότητος εἰς τὸ εἶδος τοῦτο. Ὁ Μένδελσων μὲ τὰ *τραγούδια χωρὶς λέξεις* (Lieder ohne Worte) εἰσάγει τὸν λυρισμὸν εἰς τὴν μουσικὴν τοῦ κλειδοκυμβάλου, τὴν ὁποίαν μέλλει νὰ ἐξιδανικεύσῃ ὁ Σοπέν. Παρ' αὐτοὺς ὁ Σοῦμαν εἰσάγει τὸν ρωμαντισμὸν τὸν συνδεόμενον στενῶς μετὰ τῆς ποιήσεως καὶ τῆς φιλοσοφίας, τὸν ἀγνοοῦντα πάντα αὐστηρὸν νόμον καὶ περιφρονοῦντα τοὺς σχολικοὺς κανόνας. Ἁρμονικὴ ἐν τῇ φαινομενικῇ της ἀκαταστασίᾳ καὶ τῷ ἐλευθέρῳ σχεδίῳ, πηγὴ πάντοτε ἀπροόπτων καὶ ἀντιθέσεων, ἡ τέχνη του ἀποτελεῖ τὸ κορύφωμα τοῦ μουσικοῦ ρωμαντισμοῦ.

Ὁ πλούσιος μουσικὸς ἀμητὸς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος εἶχεν ἐν τούτοις ἀνάγκην ἑνὸς ἱεραποστόλου, ὅστις θὰ ἀνελάμβανε νὰ ἐπιβάλῃ εἰς τὸ κοινὸν τὰς νέας τάσεις τῆς τέχνης. Καὶ ὡς τοιοῦτος ἐνεφανίσθη ὁ Λίστ. Δεξιοτέχνης τοῦ κλειδοκυμβάλου ὅσον οὐδεὶς πρὸ αὐτοῦ καὶ οὐδεὶς μετ' αὐτόν, ἔθεσεν ὡς κύριον σκοπὸν τῆς ζωῆς του τὴν ἱερὰν ταύτην ἰδέαν. Διὰ τοῦ Λίστ ἐπεβλήθησαν πλεῖστοι ὅσοι συνθέται, οἵτινες θὰ παρέμενον ἐν ἀφανείᾳ. Αὐτὸς ἔδωκε νέαν ὤθησιν εἰς τὴν βαθέως μουσικὴν δεξιοτεχνίαν, καθ' ἣν στιγμὴν ὁ Παγκανίνι ἐδημιούργει τὴν διαβολικὴν δεξιότητα. Εἰς τὸν Λίστ ἀνήκει τέλος ἡ πατρότης τοῦ *συμφωνικοῦ ποιήματος*.

Καθ' ἣν στιγμὴν ἡ Γερμανία πληροῖ τὸν μουσικὸν κόσμον διὰ τῆς ρωμαντικῆς τέχνης, ἡ Ἰταλία καθ' ὅλον τὸν ΙΘ' αἰῶνα συνεχίζει τὴν παράδοσιν τοῦ μελοδράματος, κατὰ μὲν τὸ πρῶτον αὐτοῦ ἥμισυ διὰ τοῦ Ροσσίνι καὶ τῶν ἐπιγόνων του Μπελλίνι, Ντονιζέττι, κατὰ δὲ τὸ δεύτερον ἥμισυ διὰ τοῦ Βέρντι. Ἡ Γαλλία εὑρίσκεται πάντοτε ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τοῦ *κωμικοῦ μελοδράματος* (opéra comique), εἴδους δημιουργηθέντος ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα. Τὸ σοβαρὸν μελόδραμα ἀντιπροσωπεύεται ἐν αὐτῇ διὰ ξένων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον συνθετῶν : Ροσσίνι, Μάγερμπεερ κτλ. καὶ μόνον ἀπὸ τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος γνωρίζει τὴν αὐτοτέλειαν διὰ τῶν Γκουνώ, Μπιζέ, Μασσενὲ κλπ. Κατὰ τὴν δευτέραν ἐπίσης πεντηκονταετίαν τοῦ αὐτοῦ αἰῶνος ἐπιβάλλεται καὶ ἓν ἐλαφρὸν εἶδος σκηνικῆς μουσικῆς : ἡ *ὀπερέττα*, ἐν Γαλλίᾳ μὲν διὰ τῶν Ὄφφενμπαχ, Ἐρβέ, Ὠντράν, Λεκόκ, Πλανκὲτ κλπ., ἐν δὲ τῇ Γερμανίᾳ καὶ Αὐστρίᾳ διὰ τῶν ἀδελφῶν Ἰωάννου καὶ Ἰωσὴφ Στράους, Μιλλαῖκερ Σουππὲ κ. ἄ., ἐπ' ἐσχάτων δὲ διὰ τῶν Λέχαρ, Κάλμαν κτλ.

Διὰ τῆς ἐμφανίσεως τοῦ Βάγνερ ἀπὸ τῆς μουσικῆς σκηνῆς ἀληθὴς ἐπανάστασις ἀναμένει τὴν τέχνην, οἵα ἕνα αἰῶνα ἀκριβῶς προηγουμένως εἶχε σημειωθῆ διὰ τοῦ Γκλούκ. Ποιητής, μουσικός, φιλόσοφος, θεωρητικός, σκηνοθέτης ὁ Βάγνερ, ἐσάρκωσεν ἐν τῷ προσώπῳ του αὐτὴν τὴν ἰδέαν τῆς μουσικῆς, ὑπὸ τὴν σημασίαν ἣν ἔδιδον εἰς τὴν

Digitized by Google

λέξιν οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες. Ἡ ἐπίδρασίς του ἐπὶ τοῦ συγχρόνου θεάτρου ὑπῆρξε καταπληκτική, διότι ὅσον καὶ ἂν οἱ σημερινοὶ συνθέται προσπαθοῦν ν' ἀπαλλαγοῦν τῆς καταθλιπτικῆς προσωπικότητός του, ὡρισμέναι θεωρίαι του, ὡς ἡ τοῦ λάϊτ-μοτίβ, ἢ τῶν συνεχομένων σκηνῶν, ἢ τῆς συμφωνικῆς ἐπεξεργασίας τοῦ μουσικοῦ δράματος, ἐρρίζωσαν διὰ παντὸς ἐν τῷ θεάτρῳ.

Ἀλλ' ἡ πλουσία ἄνθησις τριῶν συνεχῶν αἰώνων φαίνεται ὅτι ἐξήντλησε τὸ μουσικὸν δένδρον. Ἀπὸ τοῦ θανάτου τοῦ Βάγνερ καὶ τοῦ Βέρντι ἡ τέχνη τῶν ἤχων φαίνεται διστάζουσα ὡς πρὸς τὴν κατεύθυνσιν ἣν ὀφείλει νὰ λάβῃ. Κατὰ τὴν μεταβατικὴν ἐκείνην περίοδον εὑρίσκει εὐκαιρίαν νὰ ἐπιβληθῇ ἡ *ἐθνικιστικὴ μουσική*, ἡ λαμβάνουσα ὡς βάσιν τῆς συνθέσεως τὸ λαϊκὸν ᾆσμα διαφόρων χωρῶν, καὶ τὴν κατὰ συνέπειαν δημιουργίαν πλείστων σχολῶν. Ἐπὶ κεφαλῆς τούτων ἵσταται ἡ Ρωσία μὲ τοὺς Μουσσόργσκυ, Μποροντίν, Μπαλακίρεφ, Κούϊ, Ρίμσκυ-Κορσακὼφ κ. ἄ., ἡ Νορβηγία μὲ τὸν Γκρῆγκ κλπ.. ἡ Τσεχοσλοβακία μὲ τοὺς Σμετάνα, Ντβόρζακ, Φαῖρστερ, Νόβακ κ. ἄ., ἡ Ἱσπανία μὲ τοὺς Ἀλμένιθ, Γκρανάντος, ντὲ Φάλλια, Τουρίνα κλπ. Ἀπαλλαγεῖσα τῆς ἰταλο-επτανησιακῆς παραδόσεως ἡ Ἑλλὰς βαίνει ἐπίσης ἐπὶ τὰ ἴχνη τῶν σχολῶν τούτων.

Κατὰ τὴν τελευταίαν πεντηκονταετίαν ἀληθὲς χάος ἐπικρατεῖ ὡς πρὸς τὰς κατευθύνσεις τῆς μουσικῆς. Ἐν Γερμανίᾳ καὶ Αὐστρίᾳ οἱ ἐπίγονοι τοῦ Βάγνερ, Μπροῦκνερ καὶ ἰδίως Μάλερ καὶ Ριχ. Στράους ἐπιζητοῦν τὴν ἐντύπωσιν διὰ τοῦ ὄγκου καὶ τῆς θορυβώδους πολυφωνίας. Εἶναι ὅμως συντηρητικοὶ ὡς πρὸς τὰ ἁρμονικὰ μέσα. Ἀλλ' ἡ συντηρητικότης αὐτὴ δὲν ἀρέσκει εἰς ὡρισμένους ὑπερνεωτεριστάς, ὡς ὁ Σαΐνμπεργκ (Schœnberg) π. χ. Διὰ τὸν τελευταῖον τοῦτον καὶ τοὺς ὀπαδούς του βάσις τοῦ ἁρμονικοῦ συστήματος πρέπει νὰ εἶναι ἡ ἀτονικότης, δηλαδὴ ἡ ἔλλειψις πάσης καθωρισμένης μουσικῆς κλίμακος ἢ τόνου. Οὕτω καταλύεται καὶ ἡ θεωρία τῶν διαφώνων διαστημάτων, διότι κατὰ τὸν Σαΐνμπεργκ καὶ ἡ συνήχησις τῶν φθόγγων, π. χ. φα, λα, σι, ρε δίεσις, φα δίεσις, ντο, φα φυσικόν, λα δίεσ., ντο δίεσ., μι, σολ φυσικόν, ντο φυσ., μι ὕφεσις, συμφώνως πρὸς τοὺς φυσικοὺς νόμους εἶναι ἀπολύτως παραδεκτή. Ἀλλ' ἡ ἀτονικότης δὲν εἶναι καθαρῶς γερμανικὴ ἐφεύρεσις. Ἤδη ὁ Μουσσόργσκυ ἀσυνειδήτως εἶχε διαπλάσει ἰδίαν ἁρμονικὴν γλῶσσαν, τοῦτον δὲ μιμούμενος ὁ Ντεμπυσσὺ ἐδημιούργησε τὴν ἰδικήν του διάλεκτον, τὴν τόσον νέαν κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ' αἰῶνος. Τὸ σύστημα τοῦτο τῆς ἁρμονίας αὐξάνει μέχρι τοῦ ἀκροτάτου σημείου τὸν ἀριθμὸν τῶν ἁρμονικῶν φθόγγων τῆς θεμελίου καὶ δημιουργεῖ σύνδεσιν συγχορδιῶν κατὰ τὸν πλέον ἐλεύθερον τρόπον· ἐπιτρέπει τὰς παραλλήλους πέμπτας ἢ τετάρτας, σειρὰς συγχορδιῶν ἐνάτης κ.τ.λ. Ἡ νέα ἁρμονικὴ γλῶσσα ἐτέθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ μουσικοῦ συμβολισμοῦ, ἐξπρεσσιονισμοῦ καὶ ἰμπρεσσιονισμοῦ, τὸν ὁποῖον ἐκαλλιέργησαν οἱ Ντεμπυσσύ, Ραβέλ, Ντυκὰς κτλ. Λεπτὴ καὶ διαφανὴς ἐνορχήστρωσις τῆς σχολῆς ταύτης ἀποτελεῖ ἐξ ἄλλου τὴν μεγαλυτέραν ἀντίθεσιν πρὸς τὴν ὀγκώδη γερμανικὴν τοιαύτην. Ἡ μουσικο-θεατρικὴ παραγωγὴ τῆς Ἰταλίας κατὰ τὴν τελευταίαν περίοδον βασίζεται ἐπὶ τοῦ «verismo», δηλαδὴ τῆς ρεαλιστικῆς τέχνης. Κύριοι ὀπαδοὶ τῆς σχολῆς ταύτης εἶνε οἱ Πουτσίνι, Λεονκαβάλλο καὶ Μασκάνι. Ἐξ ἄλλου ἀληθὴς ἀναγέννησις, μὲ τάσεις κατ' ἐξοχὴν νεωτεριστικάς, σημειοῦται καὶ εἰς τοὺς λοιποὺς κλάδους τῆς μουσικῆς, διὰ τῶν Πιτσέττι, Μαλιπιέρο, Ρεσπίγκι, Καζέλλα, Ἀλφάνο κ. ἄ. Τέλος ὁ μουσικὸς κομμουνισμὸς εἰσβάλλει διὰ τοῦ Νικολάου Ὀμπούσκωφ, ὅστις ἐξαγγέλλει ὅτι εἰς τὴν ἁρμονίαν του, βασιζομένην ἐπὶ τῆς χρωματικῆς κλίμακος, ἀπαγορεύει οἱονδήποτε διπλασιασμόν· ὅτι αἱ συγχορδίαι του ἀποτελοῦνται ἐκ δώδεκα φθόγγων, ἐξ ὧν οὐδεὶς πρέπει νὰ διπλασιάζηται· ὅτι εἰσάγει τέλος τὰ γκλισσάντο, ἵνα πλουτίσῃ τὴν συγκεκραμένην κλίμακα μὲ ἀπειρίαν νέων φθόγγων.

ΚΛΑΔΟΙ ΤΗΣ ΜΟΥΣΙΚΗΣ. Εἴθισται ἡ μουσικὴ ὡς τέχνη καὶ ἐπιστήμη νὰ ὑποδιαιρῆται εἰς πλείστους κλάδους, ἀναλόγως τῶν στοιχείων ἅτινα δημιουργοῦσιν αὐτὴν καὶ τῶν ἰδεῶν αἱ ὁποῖαι συνδέονται πρὸς αὐτήν. Αἱ κυριώτεραι ὑποδιαιρέσεις εἶναι αἱ ἑξῆς:

***Μουσικὴ ἀναλογική*** · βλ. κατωτ. *μουσικὴ ἔμμετρος*.

***Μουσικὴ ἀπόλυτος*** (γερμ. absolute Musik, γαλλ. musique pure), δηλαδὴ μουσικὴ οὐδεμίαν ἔχουσα σχέσιν πρὸς οἱανδήποτε ἄλλην τέχνην καὶ προκαλοῦσα συγκίνησιν διὰ τῶν ἰδίων αὐτῆς μέσων. Ἀντιτίθεται πρὸς τὴν *προγραμματικὴν* μουσικήν, ἥτις ὀφείλει νὰ εἶναι ἡ διὰ τῶν ἤχων ἀπεικόνισις ἰδεῶν ὑπαγορευομένων ὑπὸ τῆς ποιήσεως πίνακος ζωγραφικῆς κτλ.

***Μουσικὴ ἀριθμητική***, ἡ ἐξετάζουσα τοὺς ἤχους ἐν σχέσει μὲ τοὺς ἀριθμούς.

***Μουσικὴ ἁρμονική***. Παρὰ τοῖς ἀρχαίοις ἡ ἐκτελουμένη διὰ τῶν φυσικῶν ὀργάνων τοῦ ἀνθρώπου, δηλαδὴ τοῦ λάρυγγος, τῆς γλώσσης, τῶν ὀδόντων, τῶν χειλέων κλπ. Παρὰ τοῖς συγχρόνοις ἡ ἐκτελουμένη παρὰ διαφόρων ὀργάνων ἢ φωνῶν, εἰς τρόπον ὥστε νὰ σχηματίζηται ἁρμονία.

***Μουσικὴ ἀρχαία***. Ἡ τῶν προϊστορικῶν χρόνων, ἡ περιλαμβάνουσα τὴν τέχνην τῶν Αἰγυπτίων, Ἑβραίων, Χαλδαίων, Ἰνδῶν κλπ. Ἐπίσης ἡ τῶν ἱστορικῶν χρόνων τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Ρώμης. Εὑρίσκεται εἰς τὴν κάτω βαθμῖδα τῆς χρονολογικῆς κλίμακος, εἰς τὸ μέσον τῆς ὁποίας τοποθετεῖται ἡ *παλαιὰ* μουσική, ἡ ἀρχομένη ἀπὸ τοῦ Ε' μ. Χ. αἰῶνος καὶ ἐξικνουμένη μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἐποχὴν καθ' ἣν ἄρχεται ἡ σύγχρονος περίοδος, ἡ φθάνουσα μέχρι τῶν ἡμερῶν μας.

***Μουσικὴ βέβηλος***· βλ. κατωτ. *μουσικὴ κοσμική*.

***Μουσικὴ διατονική***, ἡ χρησιμοποιοῦσα μόνον τὸ διατονικὸν γένος (βλ. λ. *διατονικός*).

***Μουσικὴ διδακτική***, ἡ ἀσχολουμένη μὲ τὴν διδασκαλίαν τῆς μουσικῆς.

***Μουσικὴ δωματίου*** (ἰταλ. musica di camera, γερμ. Kammermusik). Ἀρχικῶς ὠνομάζετο οὕτω πᾶσα μουσική, φωνητικὴ ἢ ὀργανική, μὴ προοριζομένη διὰ τὸ θέατρον ἢ τὴν ἐκκλησίαν· εἶτα ὑπὸ τὸ αὐτὸ ὄνομα ἐξυπακούοντο ἐπίσης αἱ συνθέσεις δι' ὀρχήστραν—συμφωνίαι, κοντσέρτα, εἰσαγωγαί· τέλος ἐπὶ τῶν ἡμερῶν μας διὰ τοῦ ὀνόματος τούτου ὑπονοοῦνται ἔργα ἐκτελούμενα ὑπὸ ἀριθμοῦ τινος μεμονωμένων ὀργάνων, δηλαδή: τὰ τρίο, κουαρτέττα, κουϊντέττα, σεξτέττα, σεπτέττα, ὀκτέττα κτλ. Εἰς τὴν μουσικὴν δωματίου ὑπάγονται ἐπίσης αἱ σονάται διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ ἓν ἔγχορδον ἢ πνευστὸν ὄργανον, τὰ δι' ἓν μεμονωμένον ὄργανον ἔργα, ἀκόμη δὲ καὶ μελῳδίαι, διῳδίαι, ἢ τριῳδίαι μετὰ ἑνὸς ἢ πλειόνων ὀργάνων. Ὁ ὅρος «μουσικὴ δωματίου» ἦτο ἀρχικῶς συνώνυμος μὲ τὴν *κοσμικὴν μουσικὴν* ἢ μὲ τὴν *τῆς «Αὐλῆς»*, ἐμφανίζεται δὲ τὸ πρῶτον τὸ 1555, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικήν, ἐν τῷ ἔργῳ: «L'antica musica ridotta alla moderna» τοῦ Νικ. Βιτσεντῖνο. Ἡ μουσικὴ δωματίου ἀποτελεῖ ἰδίαν μορφὴν συνθέσεως. Ἐν αὐτῇ ἡ ἐπιμεμελημένη ἐπεξεργασία τοῦ μέρους ἑκάστου ἐκτελοῦντος ὀργάνου ὀφείλει νὰ ἀναπληρώσῃ τὴν ἔλλειψιν ποικιλίας χροιᾶς καὶ τὴν πενιχρότητα τοῦ ἤχου. Ἐξ οὗ ἡ σύνθεσις ἔργων εἰς τὸ ἰδιαίτερον «ὕφος μουσικῆς δωματίου» ἀπαιτεῖ μεγίστην ὡριμότητα καὶ ἐξαιρετικὴν τεχνικὴν ἐκ μέρους τῶν μουσικοδιδασκάλων, οὓς πάντας ὑπερέβαλεν ὁ Μπετόβεν εἰς τὰ περίφημα κουαρτέττα του.

***Μουσικὴ δημοτική***. Ἡ χρησιμοποιοῦσα ὡς βάσιν τῆς συνθέσεως τὸ δημῶδες ᾆσμα, ἢ ἡ γραφομένη μὲ λαϊκὸν χαρακτῆρα (βλ. ἀνωτ. κεφ. *ἐξέλιξις τῆς μουσικῆς*).

***Μουσικὴ δραματική***. Ἡ τοῦ θεάτρου, τοῦ λυρικοῦ δράματος ἢ τοῦ μελοδράματος.

***Μουσικὴ ἐκκλησιαστική***. Ἡ ἱστορία τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς ἐν τῇ Δύσει εἶναι σχεδόν, μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, αὐτὴ αὕτη τῆς μουσικῆς ἐν γένει. Αἱ ἀρχαί της πρέπει νὰ ἀναζητηθῶσιν εἰς τὰ πρῶτα ᾄσματα τῶν Χριστιανῶν, ἅτινα ἀφ' ἑτέρου εἶναι συνέχεια τῶν ἑβραϊκῶν ψαλμῳδιῶν. Ἀλλὰ καὶ τὰ ἑβραϊκὰ αὐτὰ ἴχνη τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τῶν πρώτων μ. Χ. αἰώνων φέρουσι βαθέως τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἑλληνικῆς τέχνης, ἥτις εἶχεν εἰσδύσει καὶ ἐν Παλαιστίνῃ, πρὸ τῆς γεννήσεως ἀκόμη τοῦ Χριστοῦ. Οὕτω λοιπὸν οἱ πρῶτοι Χριστιανοί, λαβόντες ὡς βάσιν ψαλμῳδίας τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης καὶ ἐπενδύσαντες αὐτὰς μὲ κείμενα εἰλημμένα ἐκ τῆς Καινῆς Διαθήκης, ἐδημιούργησαν τὴν πρώτην χριστιανικὴν μουσικήν. Ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων ἐκκλησιαστικῶν μελῶν δύνανται νὰ θεωρηθῶσιν ἡ Μεγάλη Δοξολογία καὶ τὸ Φῶς ἱλαρὸν (Β' καὶ Γ' μ. Χ. αἰῶνες). Ἡ πρωτοχριστιανικὴ μουσική, πάντοτε ὁμόφωνος, ἐψάλλετο ἐν χορῷ, κατὰ τὸ σύστημα τῆς συναγωγῆς, ἄνευ συνοδείας ὀργάνων. Ἡ κατάργησις ἄλλως τε τῶν ὀργάνων ἐν ταῖς χριστιανικαῖς ἱεροτελεστίαις ἐπισημοποιήθη ἀπολύτως κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα· μόνον τὸ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον ἀπαντῶμεν κατὰ τὸν Η' αἰῶνα ἐν τοῖς μοναστηρίοις τῆς Δύσεως, ἀλλὰ καὶ τοῦτο ἀρχικῶς διὰ λόγους μόνον διδακτικούς, μέχρις οὗ ἐπετράπη ἀργότερον καὶ ἡ ἐν τῇ λειτουργίᾳ χρησιμοποίησίς του.

Ἡ λειτουργία καὶ ἡ χριστιανικὴ ψαλμῳδία ἔλαβον τὴν ὁριστικήν των μορφὴν ἐν τοῖς μοναστηρίοις τῆς Συρίας καὶ τῆς Αἰγύπτου· δυστυχῶς ὅμως ἡ ἔλλειψις εἰδικῆς παρασημαντικῆς θέτει ἐν ἀμφιβόλῳ ἐὰν τὰ σῳζόμενα ἀρχαιότατα μέλη τῶν Ἐκκλησιῶν τούτων εἶναι οἷα ἐψάλλοντο κατὰ τοὺς πρώτους μ. Χ. αἰῶνας ἢ ἠλλοιώθησαν ἐκ τῆς παρόδου τοῦ χρόνου. Παρὰ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικὴν τῆς Συρίας καὶ τῆς Αἰγύπτου, ἔχομεν τὴν τῶν Μαρωνιτῶν, κλάδον συριακῆς μουσικῆς φερούσης ἴχνη ἀραβικῆς τέχνης· ἐπίσης τὴν τῶν Κοπτῶν τῆς Αἰγύπτου, πτωχοτάτην ἀπὸ ἀπόψεως πρωτοτύπων μελῶν· τὴν τῶν Αἰθιόπων, κρᾶμα τῶν ἀνωτέρω, στερουμένην πάσης παρασημαντικῆς· τέλος τὴν τῶν Ἀρμενίων, ἥτις χωρὶς νὰ ἔχῃ τὴν ἀξίαν τῆς βυζαντινῆς μουσικῆς εἶναι σπουδαιοτέρα τῶν λοιπῶν ἀνατολικῶν κλάδων. Τὰ ἀρχαιότερα σῳζόμενα χειρόγραφα ἀρμενικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς, ἀναγόμενα εἰς τὸν ΙΒ' αἰῶνα, μᾶς δίδουσιν ἰδέαν τῆς εἰδικῆς τῶν Ἀρμενίων σημειογραφίας, κράματος τῆς ἀρχαιοτέρας βυζαντινῆς παρασημαντικῆς, τῶν νευμάτων τῆς Δύσεως καὶ τῶν ἑβραϊκῶν μελῳδικῶν τόνων. Δυστυχῶς ἡ ἀπόδοσις τῆς παλαιᾶς ἀρμενικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς εἶναι ἀκατόρθωτος, μὴ εὑρεθείσης τῆς κλειδὸς τῆς σημειογραφίας αὐτῆς.

Ἀλλ' ἡ ἀνατολικὴ ἐκκλησιαστικὴ μουσική, συμπληρωθεῖσα διὰ πλουσίων ἑλληνικῶν στοιχείων, ἐπέπρωτο νὰ δημιουργήσῃ ἴδιον κλάδον τέχνης: τὸν τῆς *βυζαντινῆς μουσικῆς*, ἧς ἡ ἐπίδροσις ἐπὶ τῆς ἐν γένει ἱερᾶς ψαλμῳδίας ἁπασῶν τῶν ἐκκλησιῶν ὑπῆρξε μεγίστη (βλ. καὶ λ. *Βυζαντινὴ* μουσικὴ καὶ *Ἑλλὰς* [Μουσ.]). Μέχρι τοῦ τέλους τοῦ Γ' αἰῶνος ἡ ρωμαϊκὴ λειτουργία ψάλλεται εἰς ἑλληνικὴν γλῶσσαν. Ἀλλὰ καὶ ὅταν, ἕνα αἰῶνα ἀργότερον, ὁ ἅγιος Ἀμβρόσιος ἐπισημοποιεῖ τὴν *λατινικὴν λειτουργικήν*, οἱ παρ' αὐτοῦ χρησιμοποιούμενοι ὕμνοι εἶναι οἱ τῆς ἑλληνικῆς Ἐκκλησίας, ἐν λατινικῇ παραφράσει ἢ καὶ ἐν καθαρᾷ μεταφράσει. Ὁ Ἀμβρόσιος ἀποκλείει ἐκ τῆς μουσικῆς του τὸ χρωματικὸν καὶ τὸ ἐναρμόνιον γένος, διατηρῶν μόνον τὸ διατονικόν. Ἀπομακρύνει ἐπίσης τὰ ὄργανα, ὡς ὑπενθυμίζοντα ἐθνικὰς παραστάσεις. Καθιερώνει, κατ' ἀπομίμησιν τῆς Ἀνατολῆς, τὸ *ἀντίφωνον ᾆσμα* καὶ ἐπιβάλλει τοὺς τέσσαρας κυρίους τόνους. Οἱ τόνοι οὗτοι ηὐξήθησαν διὰ τεσσάρων εἰσέτι πλαγίων ὑπὸ τοῦ Γρηγορίου τοῦ Μεγάλου, ὅστις περὶ τὰ τέλη τοῦ ΣΤ' αἰῶνος ἀποκαθαίρει τὸ *ἀμβροσιανὸν μέλος* τῶν παρεισφρησάντων ξένων στοιχείων καὶ δημιουργεῖ τὸ *γρηγοριανὸν μέλος*, βάσιν μέχρις σήμερον τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας. Αἱ μεταξὺ τῶν δύο λειτουργικῶν μελῶν διαφοραὶ ὕφους συνίστανται εἰς τὰ ἑξῆς: ὁσάκις τὸ ἀμβροσιανὸν μέλος εἶναι ἁπλοῦν, εἶναι ἁπλούστερον τοῦ γρηγοριανοῦ καὶ παρουσιάζει ἰδιαιτέραν γοητείαν ἐν τῇ ἁπλότητί του· ὁσάκις ὅμως χρησιμοποιεῖ τοὺς καλλωπισμούς, δὲν ἐμφανίζει τὰ τέλεια καλλιτεχνικῶς μελίσματα τοῦ γρηγοριανοῦ ᾄσματος.

Εἴτε μονῳδικῶς εἴτε ἐν χορῷ ψαλλομένη ἡ ἐκκλησιαστικὴ μουσικὴ τῶν πρώτων αἰώνων εἶναι πάντοτε ὁμόφωνος. Ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος ἄρχεται ἡ βάναυσος πρωτόγονος πολυφωνία, διὰ τῆς ὁποίας εἰς τὸ ὁμόφωνον γρηγοριανὸν μέλος προστίθεται ἐπὶ τὸ βαρύτερον μία δευτέρα συνοδεύουσα μελῳδία, ἐκτελουμένη συνήθως ὑπὸ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου. Ἀλλὰ τὸ γρηγοριανὸν μέλος ἐχρησίμευεν ὡς βάσις συνθέσεως τῶν μοτέττων, τῶν λειτουργιῶν καὶ ἄλλων ἐκκλησιαστικῶν ὕμνων μέχρις αὐτῆς τῆς ἐποχῆς τοῦ Παλεστρίνα. Ἐπ' αὐτοῦ ἐπὶ πολλοὺς αἰῶνας ἀνεγείρονται τὰ μεγάλα πολυφωνικὰ μνημεῖα. Ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἐν τούτοις, οἱ μουσικοὶ τῆς Φλωρεντίας οἱ ἀκολουθοῦντες τὴν Ars nova, δὲν ἀρκοῦνται πλέον εἰς τὸ γρηγοριανὸν μέλος, ἀλλὰ δημιουργοῦσιν ἐκκλησιαστικὰς συνθέσεις ἰδίας ἐμπνεύσεως, προκαλοῦντες τὴν ἀντίδρασιν τῆς ἐπισήμου Ἐκκλησίας. Ἡ πολυφωνική των τέχνη, ἡ ἀπειρία τῶν φθόγγων, αἱ φωναὶ αἱ ὁποῖαι κυνηγοῦν ἡ μία τὴν ἄλλην, σκανδαλίζουν τοὺς πάπας. Ἡ πρόοδος ὅμως δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἀνακοπῇ· οἱ μεγάλοι διδάσκαλοι τῆς φλαμανδικῆς τέχνης, ἐλεύθεροι παντὸς δεσμοῦ, ἀρχίζουν δημιουργοῦντες, ἤδη ἀπὸ τοῦ ἑπομένου αἰῶνος, τὰ ἀθάνατα πολυφωνικὰ ἀριστουργήματα, τῶν ὁποίων τὸ κορύφωμα ἀπετέλεσαν τὰ ἔργα τοῦ Παλεστρίνα. Κατὰ τοὺς δύο τούτους αἰῶνας, ΙΔ' καὶ ΙΕ', κυριαρχεῖ ἐπίσης ἡ ἐκκλησιαστικὴ μουσικὴ διὰ μίαν φωνήν, τῶν λοιπῶν μερῶν τῆς ἀντιστίξεως συμπληρουμένων ὑπὸ τῶν ἐγχόρδων, τῶν πνευστῶν ὀργάνων καὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου. Ἀπὸ τῶν μέσων ὅμως τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἀποκλείονται τελειωτικῶς τὰ ὄργανα καὶ ἐπικρατεῖ ἡ πολύφωνος μουσικὴ ἄνευ οἱασδήποτε συνοδείας (a capella). Μία περίεργος συνήθεια, παραταθεῖσα μέχρι τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἦτο ἡ παρὰ τῶν μουσουργῶν χρησιμοποίησις ὡς δεδομένου μέλους πρὸς σύνθεσιν μοτέττου ἢ λειτουργίας, ἀντὶ γρηγοριανοῦ ᾄσματος, μιᾶς οἱασδήποτε λαϊκῆς μελῳδίας ἢ καὶ βακχικοῦ ἢ ἐρωτικοῦ τραγουδιοῦ. Ἡ βέβηλος αὕτη συνήθεια ἀπηγορεύθη παρὰ τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας διὰ τῆς συνόδου τοῦ 1545. Εἶναι ἡ ἐποχὴ ἀκριβῶς, καθ' ἣν τὸ γρηγοριανὸν ᾆσμα ποικιλοτρόπως ἀκρωτηριαζόμενον καὶ παραμορφούμενον χάνει τὴν ἀρχικήν του ὡραιότητα. Ἡ ἀτέλεια ἐξ ἄλλου τῆς σημειογραφίας καὶ ἡ πάροδος τοῦ χρόνου συντείνουν εἰς τὸ νὰ χάνεται συνεχῶς ἡ παράδοσις τοῦ λειτουργικοῦ τούτου ᾄσματος τῆς Δύσεως. Προλαμβάνων τὴν ἀπόλυτον καταστροφὴν ὁ πάπας Γρηγόριος ΙΓ' ἀναθέτει ἐπισήμως εἰς τὸν Παλεστρίνα καὶ τὸν Τσοΐλο τὴν ἀναθεώρησιν τῶν βιβλίων τοῦ ᾄσματος. Ἡ ἐργασία αὕτη, λόγῳ ποικίλων ἀντιδράσεων, οὐδέποτε ἦλθεν εἰς πέρας, ἔδωκεν ὅμως ἀφορμή, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Παλεστρίνα, εἰς ὑποδεεστέρους μουσικοὺς νὰ δημιουργήσουν ἓν εἶδος «μουσικοῦ γρηγοριανοῦ μέλους», ἀκρωτηριάζοντος ἔτι περισσότερον τὸ πρωτότυπον. Ἀπὸ τοῦ 1889 οἱ βενεδικτῖνοι τοῦ Σολὲμ ἀνέλαβον, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀρχαίων χειρογράφων, τὴν κριτικὴν ἔκδοσιν τοῦ μο-

Digitized by Google

νασικοῦ τούτου μουσικοῦ μνημείου τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας.

Διὰ τοῦ Παλεστρίνα ἡ πολύφωνος μουσικὴ ἔχει ἐπικρατήσει ὁριστικῶς. Ἀντὶ τῶν 3 ἢ 4 φωνῶν, εἰς ἃς ἠρκοῦντο οἱ πρῶτοι πολυφωνισταί, καὶ 8 ἀκόμη δὲν ἀρκοῦν πλέον εἰς τοὺς συνθέτας. Ὁ Βίλλαρτ, ὠθούμενος ἀπὸ τὴν ἐν τῷ Ἁγίῳ Μάρκῳ τῆς Βενετίας ὕπαρξιν δύο ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων, δημιουργεῖ πρῶτος συνθέσεις διὰ διπλοῦν χορὸν (coro spezzato). Ἐπαναλαμβάνει δηλαδὴ τὸν τύπον τῆς παλαιᾶς ἀντιφωνικῆς ψαλμῳδίας, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι ἀντὶ τοῦ ὁμοφώνου ᾄσματος μεταχειρίζεται δύο χορούς, τετραφώνους συνήθως, ψάλλοντας μεμονωμένως, ἀπαντῶντας ὁ εἷς εἰς τὸν ἄλλον, ἢ καὶ συνενουμένους, ἵνα δώσωσι τὴν ἐντύπωσιν τῆς μεγαλοπρεπείας. Ἀλλὰ καὶ οἱ δύο χοροὶ δὲν ἐπαρκοῦσι πλέον εἰς τοὺς μουσικοδιδασκάλους τῆς Βενετίας καὶ τῆς Ρώμης. Ὁ Ἰω. Γκαμπριέλι γράφει πολλὰς ἀπὸ τὰς «ἱερὰς του συμφωνίας» (symphoniae sacrae) διὰ τέσσαρας τετραφώνους χορούς. Ἡ πολυφωνικὴ αὐτὴ τέχνη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἐκφραστικὴ καὶ κομψὴ ταυτοχρόνως, εἶναι ἡ ὡραιοτέρα, ἣν ἐγνώρισεν ὁ κόσμος, οὐδέποτε δὲ ὑπερεβλήθη εἰς μεγαλοπρέπειαν.

Διὰ τῆς δημιουργίας τοῦ μελοδράματος καὶ τῆς μουσικῆς ἀπαγγελίας, ἤδη ἀπὸ τὴν ἀρχὴν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἡ δυτικὴ Ἐκκλησία υἱοθετεῖ τὸ ᾆσμα διὰ μίαν ἢ δύο φωνὰς συνοδείᾳ ἐναρίθμου βασίμου. Πολλάκις ὅμως τὰ ὄργανα μόνα ἀντικαθιστοῦν ἐξ ὁλοκλήρου τὸν χορόν. Ὀλίγον κατόπιν οἱ συνθέται ἄρχονται γράφοντες ἐκκλησιαστικὰ ἔργα εἴτε καθαρῶς δι' ὄργανα, εἴτε διὰ φωνὰς καὶ ὄργανα, καθορίζοντες σαφῶς τὸ μέρος ἀμφοτέρων. Οὕτως ἐδημιουργήθησαν τὰ μεγάλα ἐκκλησιαστικὰ ἔργα διὰ μονῳδίαν, χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν, τὰ ὁποῖα πολλάκις, λόγῳ τοῦ μήκους των, ἐξέρχονται τοῦ πλαισίου τῆς Ἐκκλησίας καὶ ἐκτελοῦνται ἐν συναυλίαις. Εἰς τὴν κατηγορίαν ταύτην ὑπάγονται δύο ἀπαράμιλλα μουσικὰ μνημεῖα τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας: ἡ «Λειτουργία εἰς σι ἔλασσον» τοῦ Μπὰχ καὶ ἡ «Μεγάλη λειτουργία» (Missa solemnis) τοῦ Μπετόβεν. Γενικῶς ὅμως δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν ὅτι ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ τῶν καθολικῶν τὴν βάσιν ἀπετέλεσε πάντοτε ἡ πολυφωνικὴ μουσικὴ καὶ ὅτι κατ' ἐξαίρεσιν μόνον ἐγένετο ἀποδεκτὴ ἡ συμμετοχὴ ὀρχήστρας. Μεγάλοι διδάσκαλοι τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τοῦ καθολικισμοῦ δύνανται νὰ θεωρηθῶσιν οἱ ἑξῆς: Ντυφαί, Ὄκεγκεμ, Ζοσκὲν Ντεπρέ, Βίλλαρτ, Μοραλές, Βικτόρια, Λάσσους, Παλεστρίνα, Ἀνδρέας καὶ Ἰω. Γκαμπριέλι, Φρεσκομπάλντι, Καρίσσιμι, Μπενέβολι, Μαρτσέλλο, Ρόσσι, Χάϋδν, Μόζαρτ, Μπετόβεν, Σοῦμπερτ, Λίστ, Περγκολέζε, Κερουμπίνι, Φράνκ, Μπροῦκνερ κ. ἄ.

Ἡ ἐκκλησιαστικὴ μουσικὴ τῶν *διαμαρτυρομένων* ἀρχικῶς ἐλάχιστα διαφέρει τῆς τῶν καθολικῶν. Ὁ Λούθηρος πραγματοποιῶν τὸ σχίσμα καινοτομεῖ εἰς τὸ ὅτι ἐγκαταλείπων τὴν λατινικὴν γλῶσσαν γράφει τοὺς ὕμνους εἰς τὴν γλῶσσαν τοῦ λαοῦ. Ἡ ἀρχαιοτέρα συλλογὴ λουθηρανῶν ᾀσμάτων, τοῦ συνεργάτου τοῦ μεγάλου μεταρρυθμιστοῦ Βάλτερ, περιέχει μελῳδίας εὐλήπτους καὶ προσιτὰς εἰς τὸν λαόν, συχνάκις ὅμως μὴ ἀφισταμένας πολὺ τοῦ γρηγοριανοῦ μέλους. Σὺν τῷ χρόνῳ αἱ μελῳδίαι αὗται λαμβάνουσιν ἴδιον τύπον, οὗτινος τὸ κύριον χαρακτηριστικὸν εἶναι ἡ ἰσότης τῆς διαρκείας τῶν φθόγγων, δημιουργουμένου οὕτω τοῦ *χορικοῦ* (choral), ὅπερ ἐν χορῷ ψάλλει ἡ ὁμήγυρις τῶν διαμαρτυρομένων. Τὸ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, τόσον ἐν χρήσει παρὰ τοῖς καθολικοῖς, υἱοθετεῖται ἐπίσης παρὰ τῶν λουθηρανῶν καὶ δίδει ἀφορμὴν εἰς σύνθεσιν ἰδίων ἔργων μεγίστης σημασίας. Ἐξ ἄλλου ἡ διάφορος λειτουργία τῶν διαμαρτυρομένων ἐπιτρέπει τὴν δημιουργίαν νέων ἐκκλησιαστικῶν μουσικῶν τύπων, ὧν οἱ σπουδαιότεροι εἶναι ὁ τῆς *καντάτας* καὶ τοῦ Πάθους. Ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ τῶν *μεταρρυθμιστῶν* ἀναπτύσσονται ἐπίσης, περισσότερον ἢ ἐν τῇ τῶν καθολικῶν, αἱ μεγάλαι συνθέσεις διὰ μονῳδίαν, χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν. Ἡ ἐξέχουσα αὕτη τέχνη ἀντιπροσωπεύεται ὑπὸ τῶν Σύτς, Χάμμερσμιτ, Βέκμαν, Μπουξτεχοῦντε, διὰ νὰ ἔχῃ ὡς ἐπιστέγασμα τὰς καντάτας καὶ τὰ πάθη τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπάχ.

Ἡ *ἀγγλικανικὴ Ἐκκλησία* βασίζει τὴν μουσικήν της ἐπὶ τοῦ γρηγοριανοῦ μέλους, τὸ ὁποῖον ἐφαρμόζει εἰς ἀγγλικὸν κείμενον. Διατηρεῖ εἰς πλείστας ἱεροτελεστίας τὸ «Te Deum», τὸ «Magnificat», τὸ «Sanctus», τὸ «Gloria» κ.τ.λ., ἀλλὰ δημιουργεῖ καὶ ἴδιον τύπον ἐκκλησιαστικῆς ᾠδῆς, τὸ «ἀνθέμιον» (anthem), διαρκείας δέκα ἕως δέκα πέντε λεπτῶν. Τὸ ἀνθέμιον, παραφθορὰ τοῦ ἑλληνικοῦ «ἀντίφωνον», εἶναι τὸ χαρακτηριστικώτερον μέλος τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας καὶ ἐπέχει τὴν θέσιν τῆς λουθηρανῆς καντάτας τοῦ ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνος. Εἰσήχθη ἐπισήμως ἐπὶ τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ καὶ οἱ μεγαλύτεροι συνθέται τῆς Ἀγγλίας—Μπέρντ, Γκίμπονς, Κλάρκε, Πάρσελ, Χαῖντελ—ἠσχολήθησαν μὲ αὐτό.

Ἡ *ρωσικὴ Ἐκκλησία* ἔχει ἴδιον σύστημα μουσικῆς, ἕλκον τὸ γένος ἐκ τῆς βυζαντινῆς. Τὸ ἀρχαιότερον αὐτῆς μέλος, χρησιμοποιηθὲν ἀπὸ τὸν ΙΑ' μέχρι τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ἐβασίζετο ἐπὶ τῆς σημειογραφίας τῆς λεγομένης «κοντακάρυ». Ἡ κλεὶς τῆς σημειογραφίας ταύτης ἀπωλέσθη διὰ παντός. Ἀπὸ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος ἐμφανίζεται καὶ ἡ σημειογραφία διὰ τῶν «κρούκυ» (ἀγκυλῶν). Ἀπὸ τοῦ αἰῶνος τούτου ἄρχεται ἡ ἱστορικὴ περίοδος τῆς ρωσικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς, ἧς τὸ ἀρχαιότερον βιβλίον εἶναι τὸ «Στιχηράριον» (1152). Ἡ σημειογραφία διὰ τῶν ἀγκυλῶν, διατηρηθεῖσα μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἠγνόει τὸ πεντάγραμμον καὶ ἐτοποθέτει τὰ μουσικὰ σημεῖα ἄνωθεν τοῦ κειμένου. Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, τῶν ρωσικῶν ἡμιφωνηέντων (γιέρ, γιέρι) ἀντικατασταθέντων διὰ τῶν φωνηέντων Ο—Ε, ὁ ἀριθμὸς τῶν συλλαβῶν ηὐξήθη ἀναγκαστικῶς, προκαλῶν ἐπιμήκυνσιν τῶν συλλαβῶν τοῦ κειμένου τῶν μελῳδιῶν. Ἐξ οὗ ἀλλοίωσις τῆς ἀρχαιοτέρας ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς. Ἡ περίοδος αὕτη φέρει τὸ ἑλληνικὸν ὄνομα «ὁμόνοια». Διὰ τῆς συνόδου τοῦ 1551 ἀπεφασίσθη τέλος ἡ ἐπιβράχυνσις τῶν ἐκκλησιαστικῶν μελῶν καὶ ἡ κωδικοποίησις αὐτῶν ὑφ' ἣν μορφὴν εὑρίσκονται μέχρι σήμερον. Διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἐπροτιμήθη ἡ σημειογραφία ἐπὶ τοῦ πενταγράμμου, γνωστὴ ἤδη ἐν τῇ μεσημβρινῇ Ρωσίᾳ ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἡ σημειογραφία αὕτη, καλουμένη «σημειογραφία τοῦ Κιέβου», εἶχεν εἰδικὰ σημεῖα τοποθετούμενα ἐπὶ τοῦ πενταγράμμου:

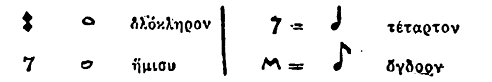


Τὸ ρωσσικὸν ἐκκλησιαστικὸν μέλος, δημιούργημα τῶν πρώτων ἐτῶν τοῦ Χριστιανισμοῦ ἐν Ρωσίᾳ, εἶναι καθαρῶς ὁμόφωνον ᾆσμα καὶ διετηρήθη ἐν ἀπολύτῳ χρήσει ἕως τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Εἶναι ἡ ἐποχὴ καθ' ἣν κάμνει τὴν πρώτην αὐτῆς ἐμφάνισιν ἡ πολύφωνος ψαλμῳδία. Εἰς τὸν τετράφωνον μικτὸν χορὸν ἐξ ὑψιφώνων, μεσοφώνων, ὀξυφώνων καὶ βαθυφώνων ἐμπιστεύονται ἔκτοτε, μέχρι τῶν ἡμερῶν μας, οἱ ὀρθόδοξοι Ρῶσοι τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ὕμνων καὶ τῆς λειτουργίας των. Οἱ κυριώτεροι πολυφωνισταὶ συνθέται τῆς ρωσικῆς Ἐκκλησίας εἶναι οἱ: Μπερεζόφσκι, Μπορτνιάνσκυ, Ντεγκτιάρεφ, Βινογκράντωφ, Τουρτσανίνωφ, Λβώφ, Γκλίνκα, Μπαχμέτιεφ, Λομακίν, Κοτσενόφσκυ, Τσαϊκόφσκυ, Ἀρένσκυ κτλ.

***Μουσικὴ ἔμμετρος*** (γερμ. Mensuralmusik, γαλλ. musique figurée, mesurée ἢ proportionelle). Ἡ μουσικὴ ἡ περιλαμβανομένη κατὰ τὴν περίοδον ἀπὸ τῆς ἀνακαλύψεως τῆς ἀναλογικῆς σημειογραφίας μέχρι τῆς ἐπικρατήσεως τῆς διαστολῆς. Εἶναι ἔμμετρος, διότι τὰ σημεῖά της παρουσιάζουν διάφορα σχήματα, δι' ὧν ποικίλει ἡ διάρκεια τῶν φθόγγων καὶ ἀντιτίθεται πρὸς τὸ γρηγοριανὸν μέλος, τοῦ ὁποίου οἱ φθόγγοι ἔχουν σχεδὸν πάντοτε τὴν αὐτὴν διάρκειαν καὶ κατ' ἀναλογίαν τὰ αὐτὰ πάντοτε σχήματα. Ἡ ἔμμετρος μουσικὴ εἶναι καὶ *ἀναλογική*, διότι πολλάκις τὸ αὐτὸ σχῆμα φθόγγου δύναται νὰ ἔχῃ διαφόρους σχετικὰς διαρκείας, ἀναλόγως τοῦ εἰδικοῦ σημείου τοῦ εὑρισκομένου εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ πενταγράμμου (βλ. λ. *μέτρον καὶ σημειογραφία)*.

***Μουσικὴ θεωρητική.*** Παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησιν ἐχαρακτηρίζετο οὕτως ἡ μουσικὴ ἡ ἀσχολουμένη μὲ τὴν θεωρίαν τῶν ἤχων, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν *πρακτικὴν* μουσικήν, ἥτις ἦτο ἐφαρμογὴ τῶν μουσικῶν κανόνων. Παρὰ τοῖς συγχρόνοις *θεωρητικὴ μουσικὴ* εἶναι ἡ διδάσκουσα τὰ θεωρητικὰ στοιχεῖα τῆς τέχνης τῶν ἤχων.

***Μουσικὴ θρησκευτικὴ*** ἢ ***ἱερατική.*** Ἡ περιλαμβάνουσα ἐκτὸς τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τῶν Χριστιανῶν τὴν ἱερὰν μουσικὴν τῶν ἄλλων λαῶν, Ἰνδῶν, Κινέζων, Ἑβραίων, ἀρχαίων Ἑλλήνων, Ἀράβων κλπ.

***Μουσικὴ κλασσική.*** Ἡ ὑπαγομένη εἰς ὡρισμένους ἀρχιτεκτονικοὺς κανόνας.

***Μουσικὴ κοσμική.*** Πᾶσα μὴ θρησκευτικὴ μουσική. Ὁ ὅρος ἦτο λίαν ἐν χρήσει κατὰ τὸν μεσαίωνα, καθότι κατὰ τὴν περίοδον ἐκείνην τῆς ὁλοσχεροῦς σχεδὸν ἐπικρατήσεως τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς ἔκαμνεν ἐντύπωσιν ἡ διὰ τῶν τρουβαδούρων καὶ λοιπῶν ραψῳδῶν σποραδικὴ ἐμφάνισις πάσης κοσμικῆς τέχνης.

***Μουσικὴ μελῳδική.*** Ἡ βαδίζουσα διὰ μελῳδικῶν διαστημάτων, ἡ ἐκείνη ἐν τῇ ὁποίᾳ προεξάρχει ἡ γοητευτικὴ μελῳδία.

***Μουσικὴ οἰκογενειακὴ*** (γερμ. Hausmusik, γαλλ. musique intime). Ἡ προοριζομένη νὰ ἐκτελῆται ἰδιωτικῶς ἐν στενῷ κύκλῳ, ἀντιθέτως ἀπὸ τὴν παιζομένην δημοσίᾳ, ἐν συναυλίαις. Ἡ συνήθεια τῶν κατ' ἰδίαν μουσικῶν συγκεντρώσεων ἦτο λίαν τοῦ συρμοῦ πρὸ τοῦ 1800. Δύο ἢ καὶ περισσότερα μέλη τῆς αὐτῆς οἰκογενείας ἢ καὶ φιλικῶν τοιούτων ἐξετέλουν σονάτας, τρίο, κουαρτέττα κλπ. Ἀπὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ὅμως ἡ οἰκογενειακὴ μουσικὴ ἀντικατεστάθη ἀπὸ τὴν τῆς «αἰθούσης», ἐνῷ ἡ μουσικὴ δωματίου ἐφυγαδεύετο πρὸς τὰς μεγάλας αἰθούσας συναυλιῶν.

***Μουσικὴ ὀργανικὴ*** (γερμ. Instrumentalmusik, γαλλ. musique instrumentale). Ἡ ἐκτελουμένη μόνον ὑπὸ ὀργάνων, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν *φωνητικήν*, ἥτις ἐκτελεῖται ὑπὸ τῶν φωνῶν. Εἰς τὴν τελευταίαν ταύτην εἴθισται νὰ ὑπάγεται καὶ ἡ ὀργανικὴ μουσική, ἡ συνοδεύουσα τὰς φωνάς. Εἶναι ἄγνωστον ἐὰν ἡ καθαρῶς ὀργανικὴ μουσικὴ προηγήθη τῆς τῆς συνοδείας, εἶναι φανερὸν μόνον ὅτι διὰ τῶν πνευστῶν ὀργάνων, αὐλῶν, σαλπίγγων κτλ., ἐξετελέσθησαν τὰ πρῶτα μέλη ὀργανικῆς μουσικῆς, καθότι δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ᾄδῃ τις συνοδευόμενος ταυτοχρόνως ὑπὸ πνευστοῦ ὀργάνου καὶ ὅτι τὰ ἔγχορδα ἐχρησιμοποιήθησαν ἀρχικῶς μόνον διὰ τὴν συνοδείαν, μέχρις οὗ ἀπέκτησαν τὴν αὐθυπαρξίαν των. Παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ἡ *αὐλητικὴ* ἦτο ἐξέχουσα τέχνη, ἀναδείξασα μεγάλους καλλιτέχνας, μεταξὺ ἄλλων Σακάδαν τὸν Ἀργεῖον, τὸν πρῶτον νικήσαντα εἰς τοὺς πυθικοὺς ἀγῶνας, ὅστις ἐθεώρει τὴν αὐλητικὴν ἐφάμιλλον πάσης ἄλλης τέχνης. Ἡ αὐλητικὴ ἐκτάκτως ἀνεπτύχθη ἐν Σπάρτῃ, ἔνθα ἀπετέλεσε μέρος τῆς ἐθνικῆς παιδεύσεως. Ἦτο τέχνη ἀπαιτοῦσα ἐξαιρετικὴν δεξιοτεχνίαν, ἀντιθέτως ἀπὸ τὴν πολὺ ἁπλουστέραν *κιθάρισιν*. Ἡ κιθάρισις ἢ μᾶλλον ἡ «ψιλὴ κιθάρισις» εἰσήχθη παρὰ τοῦ Ἀριστονίκου κατὰ τὸν Ζ' π. Χ. αἰῶνα καὶ ἔφθασεν εἰς μέγιστον σημεῖον ἀκμῆς περὶ τὸ 554 διὰ τοῦ Ἀγελάου τῆς Τεγέας. Σχέδιον καθαρῶς ὀργανικῆς μουσικῆς εἶναι τὸ τοῦ Πυθικοῦ νόμου, ὅστις ἀποδίδεται εἰς τὸν Σακάδαν καὶ παρέμεινεν ἐπὶ πολὺ ὡς βάσις παρεμφερῶν συνθέσεων. Τὸ Πυθικόν, ἀναπαριστῶν τὴν πάλην τοῦ Ἀπόλλωνος μετὰ τοῦ ὄφεως Πύθωνος, ἦτο ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων παραδειγμάτων προγραμματικῆς μουσικῆς καὶ ἀπετελεῖτο ἐκ τῶν ἑξῆς μερῶν: ἐκ τῆς «πείρας», εἴδους εἰσαγωγῆς κατὰ τὴν ὁποίαν ὁ Ἀπόλλων ἐξετάζει τὸ πεδίον τῆς πάλης· ἐκ τοῦ «κατακελευσμοῦ», κατὰ τὸν ὁποῖον ὁ θεὸς προκαλεῖ τὸ τέρας· τοῦ «ἰαμβικοῦ», τοῦ περιγράφοντος τὸν ἀγῶνα διὰ διαφόρων γοργῶν ρυθμῶν, ἀπομιμήσεων σαλπίγγων· καὶ τοῦ «ὀδοντισμοῦ», ἀπομιμουμένου τὸν τριγμὸν τῶν ὀδόντων τοῦ Πύθωνος· ἐκ τοῦ «σπονδείου», τμήματος δι' οὗ ἀνυμνεῖται ὁ θρίαμβος τοῦ θεοῦ. Ἐπερατοῦτο δὲ τέλος μὲ τὴν «καταχόρευσιν», δι' ἧς ὁ Ἀπόλλων ἔψαλλε τὸν θρίαμβόν του. Εἶναι ἀδύνατον νὰ ἔχωμεν τὴν παραστατικωτέραν ἰδέαν τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων, διότι οὐδὲν τεμάχιον μετὰ παρασημαντικῆς ἔχει περιέλθει μέχρις ἡμῶν. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν ὀργανικὴν μουσικὴν τὴν χρησιμοποιουμένην ὡς συνοδείαν, ἦτο ἁπλοῦς διπλασιασμός, ἐν ταυτοφωνίᾳ ἢ ὀγδόῃ, τοῦ ᾄσματος, μετὰ παρεμβολῆς ἐνίοτε καὶ τῆς ἑτεροφωνίας, μικρῶν δηλαδὴ καλλωπιστικῶν φθόγγων, δι' ὧν ἐποικίλλετο τὸ μέλος. Παρὰ τὴν αὐλητικὴν καὶ τὴν κιθάρισιν, τὰ ἄλλα ὄργανα, καὶ ἰδίως τὰ χάλκινα, ἐχρησιμοποιοῦντο κατὰ τὰς τελετάς, τὰς θυσίας, τὰς στρατιωτικὰς ἐπιδείξεις καὶ οὐδέποτε σχεδὸν διὰ καλλιτεχνικοὺς σκοπούς. Πρῶτοι οἱ Ρωμαῖοι ἔδωκαν ἐξέχουσαν θέσιν εἰς τὰ θορυβώδη ὄργανα κατὰ τὰς ἑορτάς, αἵτινες ἀπῄτουν μεγάλας μάζας ἐκτελεστῶν.

Κατόπιν τῆς ἐπὶ τῶν πρώτων αἰώνων τοῦ Χριστιανισμοῦ παρακμῆς, ἡ ὀργανικὴ μουσικὴ ἀναλαμβάνει τὴν θέσιν της εἰς τὰ μεσαιωνικὰ λειτουργικὰ δράματα καὶ μυστήρια. Βασίζεται τότε εἰς τὴν πρωτόγονον πολυφωνίαν καὶ ἀποτελεῖ ὀρχήστρας ἐκ σαλπίγγων, βουκκίνων, ἀσκαύλων, φορητῶν, λαούτων, μικρῶν αὐλῶν, τυμπάνων, φορητῶν ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων κτλ. Ἡ ὀρχήστρα αὕτη παίζει κυρίως τὰς εἰσαγωγὰς καὶ ἀναγγέλλει τὴν ἐμφάνισιν τῶν ἐπισήμων προσώπων ἀπὸ σκηνῆς. ἐν γένει ἐκτελεῖ ἓν εἶδος «μουσικῆς σκηνῆς» υπό τὴν σύγχρονον τοῦ ὅρου ἔννοιαν.

Νέα περίοδος ἀνοίγεται εἰς τὴν ὀργανικὴν μουσικὴν διὰ τῆς ἐμφανίσεως τῶν ὀργάνων μετὰ τὸν Θ' ξου. Γνωστὰ ἤδη ταῦτα ἐν τῇ Δύσει ἀπὸ τοῦ Θ' αἰῶνος, χρησιμεύουν κυρίως διὰ τὴν συνοδείαν τῶν ᾀσμάτων ἢ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς μουσικῆς χοροῦ παρὰ τῶν τρουβαδούρων. Ἡ βιέλλα καὶ τὰ ἐξ αὐτῆς παράγωγα βιόλα καὶ ζίγκ (giga, Geige = βιολίον) δεσπόζουν καθ' ὅλην ταύτην τὴν περίοδον, ἔχοντα ὡς μόνους ἀντιπάλους τὰ λαουτοειδῆ ὄργανα: λαοῦτα, κιθάρας, ἅρπας, ἅτινα μετά τινα σχετικὴν παρακμὴν ἔγιναν ἐκ νέου τοῦ συρμοῦ ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ἐνῷ ὅμως ἔχομεν πλουσίαν συλλογὴν ᾀσμάτων τρουβαδούρων, οὐδὲν ἴχνος ὀργανικῆς μουσικῆς σῴζεται ἐν χειρογράφοις ἀρχαιοτέροις τοῦ 1300, μολονότι εἶναι γνωστὸν ὅτι οἱ πλανόδιοι θαυματοποιοὶ ἔπαιζον πλῆθος χορῶν εἰς τὰς πλατείας τῶν πόλεων καὶ τῶν χωρίων. Τὸ ἀρχαιότερον μέχρις ἡμῶν περιελθὸν κείμενον ὀργανικῆς μουσικῆς εἶναι τὸ παρὰ τοῦ Πέτρου Ὠμπρύ, εὑρεθὲν καὶ ἀναγεγραμμένον εἰς τὸ 1310 περίπου. Εἶναι χειρόγραφον περιλαμβάνον μεταξὺ ἄλλων σειρὰν χορῶν, λίαν δημοφιλῶν, ὡς φαίνεται, κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Τοῦ αὐτοῦ αἰῶνος εἶναι καὶ τὸ πολυτιμότατον ἐγχειρίδιον περὶ μουσικῆς τοῦ Ἰωάννου ντὲ Γκροκεο, ἱστορικοῦ ζῶντος ἐν Παρισίοις, ὅστις ἐν τῷ ἔργῳ του ὁμιλεῖ ἰδιαιτέρως περὶ φωνητικῆς καὶ ὀργανικῆς μουσικῆς, κατονομάζων λεπτομερῶς τὰ ἐν χρήσει ὄργανα καὶ ἀναφέρων τὰς «estampies» καὶ τὰς «ducties», εἴδη ᾀσμάτων ἄνευ λέξεων. Ὑπὸ ποίων ὀργάνων ἐξετελοῦντο τὰ ᾄσματα ταῦτα; Εἶναι ἀδύνατον νὰ δοθῇ ἀπάντησις. Πάντως κατὰ

Digitized by Google

ὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἐλαχίστη σημασία ἐδίδετο εἰς ὴν χροιὰν τοῦ ἤχου καὶ συνεπῶς ἓν καὶ τὸ αὐτὸ έλος θὰ ἠδύνατο νὰ ἐκτελεσθῇ ὑπὸ ἀνομοίων ργάνων καὶ τῆς πλέον διαφόρου ἀκόμη κατηγοίας. Ἀπὸ τῆς ἐμφανίσεως τῆς Ars nova τῶν Φλωρεντινῶν (ΙΔ' αἰὼν) ἐπιζητεῖται ἡ καλλιτεχνικωτέρα ὑπὸ τῶν ὀργάνων συνοδεία τοῦ ᾄσματος. Ὁ διασημότερος συνθέτης τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὁ τυφλὸς ὀργανοκρούστης Πέτρος Λαντῖνο, ἐπροκάλει τὸν θαυμασμὸν τῶν συγχρόνων διὰ τῆς ἐπιτυχοῦς ἐν ταῖς συνθέσεσί του μίξεως τῶν φωνῶν καὶ τῶν ὀργάνων, δι' ἣν ἠκολούθει ἰδίους κανόνας.

Ἐθεωρεῖτο γενικῶς μέχρις ἐσχάτων, ὅτι ἡ πλουσία μουσικὴ παραγωγὴ τῶν πολυφωνιστῶν τῶν Κάτω Χωρῶν, Ντυφαί, Μπενσοά, Λὰ-Ρὺ κτλ., ἦτο καθαρῶς φωνητική. Κατὰ νεωτέρας ὅμως ἐρεύνας ἀποδεικνύεται ὅτι ὄχι μόνον ἡ κοσμικὴ μουσική, ἀλλὰ καὶ ἡ ἐκκλησιαστικὴ ἀκόμη παρεδέχετο ἀπὸ τοῦ 1500 περίπου, ὅπως ἓν τεμάχιον γεγραμμένον διὰ φωνὰς μόνον ἐκτελῆται ὑπὸ ὁμάδος ὀργάνων τῆς αὐτῆς οἰκογενείας· ἢ ἀκόμη, ὅπως εἰς ἓν τρίφωνον αἴφνης ᾆσμα ᾄδωνται μία ἢ δύο φωναὶ μόνον, τῆς τρίτης συμπληρουμένης ὑπὸ ὀργάνων.

Ἐνωρίτερον πάντων τὸ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον ἀπέκτησε τὴν αὐτοτέλειάν του καὶ παρουσίασε τεμάχια γεγραμμένα ἀποκλειστικῶς δι' αὐτό. Ἡ ἀρχαιοτέρα σωζομένη συλλογὴ παρεμφερῶν συνθέσεων εἶναι ἡ γραφεῖσα τῷ 1452 ὑπὸ τοῦ τυφλοῦ ὀργανοκρούστου τῆς Νυρεμβέργης Κορράδου Πάουμαν καὶ φέρουσα τὸν τίτλον «Fundamentum organisandi». Ὅσον καὶ ἂν ἡ τέχνη τούτου καὶ τῶν διαδόχων του δὲν εἶναι προηγμένη, πάντως ἡ ἐπίδρασίς της ἐπὶ τῆς φωνητικῆς μουσικῆς τῆς περιόδου ἐκείνης εἶναι πασιφανὴς καί, ἀντιθέτως ἀπὸ τὰ πιστευόμενα, ἐδάνεισε πλεῖστα ἐκ τῶν στοιχείων καὶ τῆς τεχνικῆς της εἰς τὴν πολυφωνίαν, ἥτις μέχρι τοῦ Παλεστρίνα ἐβασίζετο εἰς τὰ πρότυπα τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς. Περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, διὰ τῆς δημιουργίας ὡρισμένων μουσικῶν συνθέσεων, ὅπως ἡ «κάτσια» καὶ τὸ «ριτσερκάρε», γραφομένων συνήθως δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον ἢ κλειδόχορδον, ἡ ὀργανικὴ μουσικὴ βαίνει πρὸς ὁλοσχερῆ ἀποχωρισμὸν ἀπὸ τῆς φωνητικῆς· ἀπὸ δὲ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, διὰ τῆς ἐπαναστάσεως ἣν δημιουργεῖ τὸ μονῳδικὸν μέλος τῶν Φλωρεντινῶν, οἱ συνθέται γράφουσι κατ' ἀπομίμησιν ἔργα, προοριζόμενα νὰ ἐκτελῶνται ὑπὸ μεμονωμένων ὀργάνων. Εἰς τοῦτο βοηθεῖ καὶ ἡ ὁριστικὴ ἐπικράτησις τῶν ὀργάνων μετὰ τόξου, ἰδίως δὲ τῶν βιολίων. Διὰ τοῦ ὀργάνου τούτου, συνοδευομένου ὑπὸ ἐναρίθμου βασίμου τοῦ κλειδοχόρδου ἢ τοῦ κλαβικυμβάλου, ἐκτελεῖται τὸ περὶ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁλονὲν τελειοποιούμενον νέον μουσικὸν εἶδος, τὸ τῆς *σονάτας*, καὶ ἰδίως τὸ τῆς *σονάτας δωματίου*. Δὲν εἶναι βεβαίως ἀκόμη ἡ σονάτα τῶν κλασσικῶν, τὰ κύρια ὅμως χαρακτηριστικά της—τὸ ἀρχικὸν ἀλλέγκρο, ἓν μεσαῖον ἀργὸν μέρος καὶ ἡ γοργὴ κατακλεὶς—ἀνευρίσκονται ἤδη εἰς τὰς τοιούτου εἴδους συνθέσεις τοῦ Φοντάνα (ἀρχαὶ ΙΖ' αἰῶνος). Εἰς τὴν Βολωνίαν ἀνήκει κυρίως ἡ τιμὴ τῆς ἀναπτύξεως τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς κατὰ τὸν αἰῶνα τοῦτον· ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἔζησαν καὶ ἔδρασαν οἱ διάσημοι μουσικοδιδάσκαλοι, οἱ ἀναδείξαντες τὰ ἔγχορδα ὄργανα: Βιτάλι, Μπασσάνι, Βερατσίνι, Κορέλλι, Τορέλλι, Βιβάλντι, Τζεμινιάνι, Λοκατέλλι, Ταρτίνι κλπ. Τὸ ὕφος, ὅπερ ἀκολουθοῦν οἱ ἀνωτέρω συνθέται, εἶναι κυρίως τὸ μελῳδικόν, κατ' ἀπομίμησιν τοῦ μονῳδικοῦ, ἐνίοτε δὲ (ὁσάκις αἱ σονάται εἶναι γεγραμμέναι διὰ δύο ἢ τρία ἔγχορδα ὄργανα μετὰ βασίμου) μικτόν, δηλαδὴ μελῳδικὸν καὶ ἀντιστικτικόν. Τὸ καθαρῶς ἀντιστικτικὸν ὕφος ἐξακολουθεῖ ἐν τούτοις ἀκόμη νὰ δεσπόζῃ κυρίως εἰς τὰ ἔργα δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, κλειδόχορδον ἢ κλαβικύμβαλον, ἰδίως δὲ εἰς τὰς φυγὰς τοῦ Βέκμαν, Μπουξτεχοῦντε, Χαῖντελ καὶ Μπάχ, οὗτινος τὸ «Καλῶς συγκεκραμένον κλειδόχορδον» καὶ ἡ «Μουσικὴ προσφορὰ» ἀποτελοῦσι τὴν τελευταίαν λέξιν τοῦ ἀντιστικτικοῦ ὕφους. Παραλλήλως ὅμως παρὰ τοῖς αὐτοῖς συνθέταις εὑρίσκομεν ἔργα ὀργανικῆς μουσικῆς ἀκολουθοῦντα τὸν μελῳδικὸν τύπον κατ' ἀπομίμησιν τῶν Ἰταλῶν μονῳδιστῶν.

Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ὅλοι σχεδὸν οἱ τύποι τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς: σονάτα, τοκκάτα, σουΐτα, παρτίτα, εἰσαγωγή, κοντσέρτο γκρόσσο κτλ., ἔχουν ὁριστικῶς διαμορφωθῆ. Ἀλλὰ καὶ ἡ συμφωνία, διὰ τοῦ Στάμιτς καὶ τῶν ἄλλων ὀπαδῶν τῆς σχολῆς τῆς Μαγχάϊμ, λαμβάνει τὴν ὁριστικήν της μορφήν, ἣν κατόπιν ἐτελειοποίησαν ὁ Ἰω. Χριστ. Μπάχ, ὁ Χάϋδν, ὁ Μόζαρτ καὶ ἰδίως ὁ Μπετόβεν. Ὁ τελευταῖος οὗτος εἶναι ὁ μέγιστος διδάσκαλος τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς, ὁ ἐπιτυχὼν διὰ τῶν ὀργάνων συνδυασμοὺς καὶ δύναμιν ἐκφράσεως ἀφαντάστους μέχρι τῆς ἐποχῆς του. Μετὰ τὸν Μπετόβεν ὁ Βέμπερ καὶ ὁ Μπερλιὸζ ἐπεζήτησαν τὴν γραφικὴν διὰ τῆς ὀρχήστρας. Ἀφ' ἑτέρου εἰς τὰ κοντσέρτα καὶ εἰς τὰς λοιπὰς συνθέσεις μεθ' ἑνὸς δεσπόζοντος ὀργάνου ἐπιζητεῖται πλέον ὅσον τὸ δυνατὸν στενοτέρα σχέσις μεταξὺ τοῦ σόλο καὶ τῆς ὀρχήστρας ὡς καὶ μεγαλύτερον ἐνδιαφέρον εἰς τὴν συνοδείαν. Τὸ αὐτὸ δύναται νὰ λεχθῇ καὶ διὰ τὴν θέσιν τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς ἐν τῷ θεάτρῳ, ἐν τῷ ὁποίῳ, ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Βάγνερ, ἡ ὀρχήστρα πρωτοστατεῖ πλειότερον ἀκόμη καὶ τῶν φωνῶν. Δύναται, τέλος, νὰ λεχθῇ ὅτι ἐγένετο κατάχρησις γραφικῆς ἐν τῇ ὀρχήστρᾳ, ἀφ' ἧς κατ' ἀρχὰς διὰ τοῦ Μπερλιόζ, εἶτα διὰ τοῦ συμφωνικοῦ ποιήματος τοῦ Λίστ, κατόπιν διὰ τῶν Ρώσων ὀπαδῶν τῆς ἐθνικιστικῆς σχολῆς, διὰ τῶν συγχρόνων συνθετῶν Μάλερ, Ριχ. Στράους, Ραβέλ, Στραβίνσκυ, Ὀνεγκὲρ κλπ. ἐζητήθησαν ἀπὸ τὰ ὄργανα ἰδιότητες χρωστῆρος ζωγραφικῆς (ἐπὶ τῶν μεγάλων τύπων τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς: *εἰσαγωγή, κανών, κοντσέρτο, κοντσέρτο γκρόσσο, παραλλαγή, παρτίτα, πρελούντιο, σονάτα, σουΐτα, συμφωνία, συμφωνικὸν ποίημα, τοκκάτα, φαντασία, φυγὴ* βλ. τὰς οἰκείας λ.).

***Μουσικὴ περιγραφική***, ἢ ***προγραμματική***. Ἡ σκοπὸν ἔχουσα νὰ περιγράψῃ ἢ παραστήσῃ διὰ τῶν ἤχων ὡρισμένον φυσικὸν ἢ ψυχικὸν φαινόμενον. Αἱ συνθέσεις, αἱ ἀκολουθοῦσαι τὸν τύπον τοῦτον τῆς μουσικῆς, δύνανται ἢ νὰ ἀρκεσθῶσιν εἰς ἁπλοῦς τίτλους, ὅπως συμβαίνει π. χ. μὲ τὴν «Ποιμενικὴν συμφωνίαν» τοῦ Μπετόβεν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἕκαστον μέρος—«Εὐχάριστοι ἐντυπώσεις κατὰ τὴν ἄφιξιν εἰς τὴν ἐξοχήν»· «Σκηνὴ παρὰ τὸ ρυάκιον»· «Εὔθυμος συνάθροισις τῶν χωρικῶν»· «Θύελλα, καταιγίς»· «Τραγούδι τῶν ποιμένων· ἔκφρασις εὐγνωμοσύνης...»—εἶναι ἀφ' ἑνὸς ρεαλιστικὴ ἀπεικόνισις τῆς φύσεως, ἀλλὰ ταυτοχρόνως καὶ ἔκφρασις τῶν παρ' αὐτῆς προκαλουμένων αἰσθημάτων, ἢ ἀπαιτοῦσιν ἐκτενὲς πρόγραμμα, ὅπως ἐπὶ παραδείγματι εἰς τὴν «Φανταστικὴν συμφωνίαν» τοῦ Μπερλιόζ, ἐν τῇ ὁποίᾳ, ὡς λέγει ὁ συνθέτης, τὸ πρόγραμμα πρέπει νὰ θεωρηθῇ ὡς τὸ ἀπαγγελλόμενον κείμενον μελοδράματος, σκοπὸν ἔχον νὰ συνεπαγάγῃ μουσικὰ τεμάχια, ὧν ἀποδίδει τὸν χαρακτῆρα καὶ τὴν ἔκφρασιν.

Τὰ ὅρια τῆς καθαρῶς περιγραφικῆς μουσικῆς καὶ τῆς προγραμματικῆς συγχέονται πολλάκις καὶ εἰς πλείστας περιπτώσεις ἀδυνατεῖ τις νὰ ἐννοήσῃ ποῦ σταματᾷ ἡ μέν, ἵνα ἀρχίσῃ ἡ δέ. Ὑλιστικωτέρα ἡ πρώτη, προσπαθοῦσα νὰ παραστήσῃ ρεαλιστικῶς ὡρισμένα γεγονότα, δὲν δύναται ποτὲ νὰ καυχηθῇ ὅτι ἐπιτυγχάνει πιστὴν ἀπεικόνισιν διὰ τῶν ἤχων, ὡς ἡ ζωγραφικὴ διὰ τοῦ σχεδίου καὶ τῶν χρωμάτων. Πλέον ἀφῃρημένη ἡ δευτέρα, χρησιμοποιεῖ τὸ πρόγραμμα ἵνα προφυλάξῃ τὸ ἔργον, ὡς λέγει ὁ Λίστ, ἀπὸ μίαν διφορουμένην ποιητικὴν ἑρμηνείαν καὶ ἵνα ἐπιστήσῃ ἐκ τῶν προτέρων τὴν προσοχὴν τοῦ ἀκροατοῦ ἐπὶ τῆς ποιητικῆς ἰδέας τοῦ συνόλου, ἢ ἐπὶ ἑνὸς ἐξαιρετικοῦ σημείου. Τὸ πρόγραμμα προτάσσεται τοῦ μουσουργήματος ἀναγιγνωσκόμενον παρὰ τοῦ ἀκροατοῦ, ὅστις ἀφ' ἑτέρου ἐπιζητεῖ διὰ κριτικοῦ ἐλέγχου νὰ ἀνεύρῃ τὴν μεταξὺ τοῦ προγράμματος καὶ τοῦ ἔργου ὑφισταμένην συγγένειαν.

Ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων ὁ ἄνθρωπος ἐπεζήτησε νὰ κάμῃ ζωγραφικὴν διὰ τῶν ἤχων. Τὸ Πυθικὸν τοῦ Σακάδα (βλ. ἀνωτ. *ὀργανικὴ μουσική*) ὑπῆρξεν ἐκ τῶν παλαιοτέρων τοιούτων δειγμάτων. Ἐκ τῶν σῳζομένων συνθέσεων περιγραφικῆς μουσικῆς ἄξιαι ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι αἱ τοῦ Κλεμὰν Ζαννεκὲν (ΙΣΤ' αἰών), ὅστις εἰς τὴν καντάταν του «Ὁ πόλεμος» προσπαθεῖ διὰ φωνῶν νὰ μιμηθῇ τὰς σάλπιγγας, τὰ τύμπανα, τὰς ἰαχὰς τοῦ πολέμου κτλ. Εἰς τὸ «Τραγούδι τῶν πουλιῶν» ὁ αὐτὸς συνθέτης ἐπιζητεῖ νὰ μιμηθῇ τὸ κελάδημα τῶν πτηνῶν. Παραστατικωτέρα διὰ τῶν ὀργάνων ἡ περιγραφικὴ μουσική, ἔχει νὰ ἐπιδείξῃ τὰς συνθέσεις τῶν μεγάλων κλαβικυμβαλιστῶν, ὡς ὁ Κουπερὲν π. χ., ὅστις συνθέτων εἶχε πάντοτε ὑπ' ὄψιν του ὡρισμένην εἰκόνα. Ὁ Μπὰχ μᾶς δίδει τὸ «Καπρίτσιο ἐπὶ τῇ ἀναχωρήσει τοῦ ἀγαπητοῦ του ἀδελφοῦ». Ἀφ' ἑτέρου αἱ εἰσαγωγαὶ δι' ὡρισμένα δραματικὰ ἔργα, ὡς αἴφνης ἡ τοῦ «Ἔγκμοντ», ἢ τοῦ «Κοριολανοῦ» τοῦ Μπετόβεν, ἡ τοῦ «Ὀνείρου θερινῆς νυκτός», ἢ τῶν «Ἑβρίδων» τοῦ Μέντελσον, εἶναι καθαραὶ εἰκόνες τοῦ δράματος, ὅπερ πρόκειται νὰ ἐπακολουθήσῃ. Ἐγκαινιαστὴς τῆς καθαρῶς προγραμματικῆς μουσικῆς ὁ Μπετόβεν («Ἡρωϊκὴ» καὶ «Ποιμενικὴ» συμφωνίαι), εὗρε συνεχιστὰς τῶν γραφικῶν του τάσεων ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ Μπερλιόζ, καὶ ἰδίως ἐν τῷ τοῦ Λίστ, τοῦ δημιουργοῦ τοῦ συμφωνικοῦ ποιήματος.

***Μουσικὴ πολυτονική***. Ἡ παραδεχομένη ὅλους τοὺς τόνους. Τοιαύτη εἶναι ἡ σύγχρονος, ἐν ᾗ, διὰ μετατροπῶν, δύναταί τις νὰ διέλθῃ δι' ὅλων τῶν ἐν χρήσει τόνων.

***Μουσικὴ πολυφωνική***. Ἡ γραφομένη, ἁρμονικῶς ἢ ἀντιστικτικῶς, διὰ πλείστας φωνάς.

***Μουσικὴ προγραμματική***· βλ. ἀνωτ. *μουσικὴ περιγραφική*.

***Μουσικὴ σκηνική***. Ἡ τοῦ θεάτρου γενικῶς. Ὡς τοιαύτη δύναται νὰ θεωρηθῇ ἡ ἀποτελοῦσα τὸ μουσικὸν στοιχεῖον τῶν τραγῳδιῶν τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων, ἐν ταῖς ὁποίαις τὰ χορικὰ ἐμέλποντο· ἐπίσης ἡ μουσικὴ τῆς ὀρχήσεως. Πλουσιωτάτην σκηνικὴν μουσικὴν εἶχον καὶ οἱ Ἰνδοί. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ὁ κλάδος οὗτος τῆς τέχνης ἀντιπροσωπεύεται ἐν τοῖς λειτουργικοῖς δράμασι καὶ τοῖς μυστηρίοις, κατὰ τὸν ΙΣΤ' δὲ αἰῶνα μὲ τὰς μασκαράτας καὶ τὰ μπαλλέττα. Σκηνικὴ μουσικὴ ἢ ὡς εἴθισται νὰ λέγηται *μουσικὴ σκηνῆς* (γαλλ. musique de scène), εἶναι ἀκόμη ἡ ἑνουμένη μετὰ τῆς ἀπαγγελίας καὶ χρησιμοποιουμένη ὡς ὑπόκρουσις εἰς ὡρισμένα θεατρικὰ ἔργα, ὡς π. χ. εἰς τὸ «Ὄνειρον θερινῆς νυκτὸς» (Σαίξπηρ-Μένδελσων), εἰς τὴν «Ἀρλεζιάναν» (Ντωντὲ-Μπιζὲ), εἰς τὸν «Πέερ Γκὺντ» (Ἴμπσεν-Γκρῆγκ) κ. τ. λ. Τὸ εἶδος τοῦτο τῆς τέχνης ὀνομάζεται καὶ *μελόδραμα* (γερμ. Melodram), οὐχὶ ὑπὸ τὴν σημασίαν ἣν δίδουσιν εἰς τὴν λέξιν οἱ Ἕλληνες.

Ἀπὸ ἀπόψεως μορφῆς ἡ σκηνικὴ μουσικὴ δὲν ἀκολουθεῖ τοὺς κανόνας τῆς *ἀπολύτου μουσικῆς* (βλ. ἀνωτ.), ἥτις γράφεται ἐπὶ τῇ βάσει ὡρισμένων ἀρχιτεκτονικῶν νόμων, χρησιμοποιεῖ τὴν ἐπάνοδον καὶ τὴν ἀνάπτυξιν τῶν θεμάτων, παρουσιάζει συγγένειαν εἰς τὴν διαδοχὴν τῶν τόνων κ. τ. λ. Εἰς τὸ πρὸ τοῦ Βάγνερ λυρικὸν θέατρον πᾶν μελόδραμα διῃρεῖτο εἰς αὐτοτελῆ τεμάχια,—ἄριας, καβατίνας, διῳδίας, χορῳδίας κ.τ.λ.—χωριζόμενα πολλάκις ἀπὸ ρετσιτατίβα καὶ μειοῦντα τὴν ἑνότητα τοῦ ἔργου. Εἰς τὰ μουσικὰ δράματα τοῦ Βάγνερ διὰ τῆς ἐφαρμογῆς τῶν συνεχομένων σκηνῶν, τῆς ἐπανόδου τῶν θεμάτων καὶ τῆς συμφωνικῆς αὐτῶν ἐπεξεργασίας, ἡ σκηνικὴ μουσικὴ ἐκέρδισεν εἰς ἑνότητα, μολονότι ὑπάρχουσι καὶ οἱ φρονοῦντες ὅτι ἡ ὑπερβολικὴ αὕτη ὁμοιομορφία καὶ ἡ ἐπάνοδος τῶν τυπικῶν θεμάτων ἀντιβαίνουσι πρὸς τὸ πνεῦμα τοῦ μουσικοῦ θεάτρου καὶ ὅτι ἡ ἐπιβολὴ τοῦ συστήματος Βάγνερ ἐπετεύχθη μόνον χάρις εἰς τὴν ἰσχυρὰν προσωπικότητα τοῦ μουσουργοῦ. Αἱ νεώτεραι τάσεις δεικνύουν τὴν ὁσημέραι ἐκ τοῦ συστήματος τούτου ἀπομάκρυνσιν.

***Μουσικὴ στρατιωτική***. Τὸ εἶδος τοῦτο τῆς μουσικῆς ἐχρησιμοποιήθη ἀπὸ ἀρχαιοτάτων χρόνων. Εἰς τὰ ἱερὰ βιβλία τῶν Ἑβραίων ἐπανειλημμένως γίνεται μνεία περὶ τυμπάνων καὶ σαλπίγγων. Εἰδικώτερον τὸ βιβλίον τῆς Ἐξόδου ἀναφέρει ὅτι τὸ σημεῖον τῆς ἐκκινήσεως ἢ τῆς κατασκηνώσεως, τὰ προσκλητήρια τῶν ἀρχηγῶν ἐγίνοντο διὰ σαλπίγγων ὀνομαζομένων «χασοσέρατ». Ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα εὑρίσκομεν τὰς σάλπιγγας παρὰ τοῖς Αἰγυπτίοις καὶ ἰδίως παρὰ τοῖς Ἕλλησιν, οἵτινες εἰς τὸ ὄργανον τοῦτο προσέθετον ἐπίσης τὰς πολυαρίθμους ποικιλίας τῶν αὐλῶν, τινὲς τῶν ὁποίων εἶχον ἰσχυρὰν φωνήν, προσεγγίζουσαν εἰς ὄγκον τὴν τοῦ εὐθυαύλου. Τὰ πολεμικὰ ταῦτα ὄργανα ἐχρησιμοποιοῦντο οὐχὶ μόνον κατὰ τὰς ἐκστρατείας, ἀλλὰ καὶ ἐν εἰρήνῃ, διότι δι' αὐτῶν ἐξετελοῦντο τὰ ἐμβατήρια, ὡς καὶ εἰδικά τινα μέλη κατὰ τὰς ἱεροτελεστίας. Πολεμικώτεροι τῶν Ἑλλήνων οἱ Ρωμαῖοι, ὑπῆρξαν οἱ πρῶτοι ὀργανώσαντες σχολὴν στρατιωτικῶν μουσικῶν, εἰς ἣν ἐμορφοῦντο δύο ἑκατονταρχίαι ἐκτελεστῶν. Αὐλοί, σάλπιγγες, εἰς μεγάλην ποικιλίαν καὶ μεγέθη, κέρατα, βούκινα καὶ τύμπανα ἀπετέλουν τὰς στρατιωτικὰς μουσικὰς τοῦ λαοῦ τούτου, ὅστις τὸν τοιοῦτον αὐτῶν καταρτισμὸν μετέδωκε καὶ εἰς τοὺς Βυζαντινούς. Κατὰ τὸν Μεσαίωνα προστίθενται ἀκόμη ἡ ὁλκωτὴ σάλπιγξ (τρομπόνι), τὰ κύμβαλα καὶ τὰ τυμπάνια, ἐνῷ οἱ πολεμισταὶ τῆς Ἀγγλίας χρησιμοποιοῦν τοὺς ἀσκαύλους, ἐθνικὸν ὄργανον διατηρηθὲν παρ' αὐτοῖς μέχρις σήμερον, ἰδίως ἐν Σκωτίᾳ.

Ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως τῆς πολυφωνίας—ΙΕ' αἰὼν—οἱ συνθέται συνηθίζουν νὰ συνοδεύουν ἑκάστην φωνὴν μὲ ὄργανα, προσπαθοῦντες νὰ μεταχειρίζωνται πάντοτε ὄργανα τῆς αὐτῆς οἰκογενείας καὶ τῆς αὐτῆς χροιᾶς. Οὕτως ἐδημιουργήθησαν αὐτοτελεῖς κατηγορίαι πνευστῶν ὀργάνων, ὧν μίαν ἰδέαν δίδει ὁ ἑπόμενος πίναξ:

| | | |
|---|---|---|
| Ἁπλοῖ αὐλοί | Αὐλὸς μετὰ τριῶν ὀπῶν | (galoubet) |
| | Αὐλὸς μετὰ ἓξ ὀπῶν | (flageol) |
| | Μικρὸς αὐλὸς ἄνευ κλειδ. | (piferro) |
| | Πλαγίαυλος | (flauto traverso) |
| | Αὐλὸς μετὰ ράμφους | (flauto inglese) |
| Αὐλοὶ μετὰ διπλῆς γλωττίδος | Ἄσκαυλος | (musette) |
| | Ὀξύαυλος (οἰκογένεια) | (oboe) |
| | Πόμμερ (οἰκογένεια) | (pommer) |
| | Βομβάρδα (οἰκογένεια) | (bombarda) |
| | Κρομόρνη (οἰκογένεια) | (cromorne) |
| | Βαρύαυλος (οἰκογένεια) | (fagotto) |
| Αὐλοὶ μετὰ ἁπλῆς γλωττίδ. | Κάλαμος (οἰκογένεια) | (chalumeau) |
| | Τουρνεμποὺ (οἰκογένεια) | (tournebout) |
| Χάλκινα | Σάλπιγξ | (tromba) |
| | Ὁλκωτὴ σάλπιγξ | (trombone) |
| | Κέρατα ἁπλᾶ | (corni) |
| | Κέρατα κυνηγετικὰ | (corni di caccia) |
| | Κεράτια μετ' ἐπιστομίου | (cornets à bouquin) |
| | Ὀφισάλπιγγες | (serpents) |
| Κρουστά | Τύμπανα | (tamburo) |
| | Τυμπάνια | (tamburino) |
| | Κύμβαλα | (piatti) |

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω ὀργάνων οἱ ἁπλοῖ αὐλοί, οἱ μεθ' ἁπλῆς γλωττίδος, τὰ κέρατα, τὰ κεράτια καὶ αἱ ὀφισάλπιγγες ἀπέδιδον τὴν λεγομένην γλυκεῖαν χροιὰν τοῦ ἤχου· οἱ αὐλοὶ μετὰ διπλῆς γλωττίδος τὴν ζωηράν, αἱ σάλπιγγες καὶ αἱ ὁλκωταὶ σάλπιγγες τὴν διαυγῆ.

Τὰ ὄργανα κατὰ οἰκογένειαν ἔπαιζον ἰδιαιτέρως ἢ ἀλληλοδιαδόχως, οὐδέποτε ὅμως συνηνωμένα, διπλασιάζοντα τὰς φωνὰς ἢ ἐκτελοῦντα χορούς. Ἡ τέχνη τῆς ἐνοργανώσεως δὲν εἶχεν ἀκόμη δημιουργηθῆ καὶ πολλάκις μία σύνθεσις ἐξετελεῖτο

Digitized by Google

ὑπὸ τῶν πλέον ἀνομοίων καὶ ἐλάχιστα ἀφομοιουμένων ὀργάνων.

Ἐν τῷ στρατῷ παρεδέχοντο τὰς ἑξῆς κατηγορίας ὀργάνων:

Μικροὺς αὐλοὺς καὶ στρατιωτικὰ τύμπανα (ἐν τῷ πεζικῷ).
Σάλπιγγας καὶ τύμπανα (ἐν τῷ ἱππικῷ).
Ὀξυαύλους καὶ στρατ. τύμπανα (διὰ τοὺς σωματοφύλακας).

Τέλος, περὶ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος συναντῶμεν τὴν πρώτην συστηματικὴν χρῆσιν στρατιωτικῆς μουσικῆς παρὰ ταῖς γερμανικαῖς φρουραῖς. Αἱ μουσικαὶ αὗται εἶναι ἀκόμη πενιχραὶ καὶ περιλαμβάνουν τὰ ἑξῆς ὄργανα: δύο ὀξυαύλους, δύο εὐθυαύλους, δύο κέρατα καὶ δύο βαρυαύλους· ἀργότερον προσετέθησαν: εἷς πλαγίαυλος, μία ἢ δύο σάλπιγγες, εἷς ἀντιβαρύαυλος καὶ μία ὀφικλείς. Εἶναι δηλαδὴ ἀκριβῶς τὰ ὄργανα τῆς συμφωνικῆς ὀρχήστρας, μεῖον τὰ ἔγχορδα. Περὶ τὰ τέλη τοῦ αὐτοῦ αἰῶνος αἱ στρατιωτικαὶ μουσικαὶ γενικεύονται καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην, ἀπὸ δὲ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ' διαδίδονται καταπληκτικῶς. Εἰς τοῦτο συμβάλλει ἡ ὁλονὲν τελειοποιουμένη κατασκευὴ τῶν πνευστῶν ὀργάνων καὶ ἡ ὑπὸ τοῦ Ἀδόλφου Σὰξ ἐφεύρεσις νέων τοιούτων, εἰδικῶς χρησιμοποιουμένων ἐν τῷ στρατῷ.

Ὁ καταρτισμὸς μιᾶς στρατιωτικῆς μουσικῆς ἐποίκιλλεν ἀνέκαθεν καὶ σήμερον ἀκόμη ποικίλλει ἀναλόγως τῶν χωρῶν καὶ προσκαίρων πολλάκις συνθηκῶν. Διὰ τὴν πλήρη σνρατιωτικὴν μουσικὴν ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐκτελεστῶν καὶ τῶν ὀργάνων πρέπει νὰ εἶναι ὁ ἑξῆς:

| | | Ἀριθμὸς ὀργάνων |
|---|---|---|
| Μικρὸς πλαγίαυλος | (flauto piccolo) | 1 |
| Πλαγίαυλος | (flauto) | 3 |
| Ὀξύαυλος | (oboe) | 3 |
| Βαρύαυλος | (fagotto) | 2 |
| Μικρὸς εὐθύαυλος εἰς μι ὕφ. | (clarinetto Es) | 4 |
| Εὐθύαυλος εἰς σι ὕφ. | (clarinetto B) | 18 |
| Εὐθύαυλος βαρὺς | (clarinctto basso) | 2 |
| Σαξόφωνον ὑψίφωνον | (saxophone soprano) | 2 |
| » μέσον | ( » alto) | 2 |
| » ὀξύφωνον | ( » ténor) | 3 |
| » βαρύτονον | ( » baryton) | 2 |
| » βαθύφωνον | ( » basse) | 1 |
| Σαρρυζόφωνον βαθὺ | (sarrusophone Es) | 1 |
| Κλειδοσάλπιγξ ἢ κεράτιον | (cornetto) | 3 |
| Σάλπιγξ | (tromba) | 4 |
| Κέρας | (corno) | 4 |
| Ὁλκωτὴ σάλπιγξ | (trombone) | 5 |
| Μικρὸν κλειδοκέρας | (Fügelhorn piccolo) | 1 |
| Κλειδοκέρας | (Flügelhorn) | 3 |
| Ὀξυκέρας | (Althorn) | 3 |
| Εὐφώνιον ἢ βαρύτονον | (euphonium) | 2 |
| Βαθυσάλπιγξ | (basso) | 5 |
| Ἀντιβαθύφωνα εἰς μι ὕφ. | (contrabasso Es) | 1 |
| » » σι ὕφ. | ( » B) | 2 |
| Βαθύχορδον (μετὰ χορδῶν) | (contrabasso) | 2 |
| Τύμπανον | (timpani) | 1 |
| Στρατ. τύμπανον | (tamburo) | 1 |
| Μέγα τύμπανον | (cassa) | 1 |
| Κύμβαλα | (piatti) | 1 |
| | | 83 |

Εἶναι δυνατὸν ἐν τούτοις νὰ καταρτισθῇ στρατιωτικὴ μουσικὴ μὲ 50 ἐκτελεστάς, μὲ 35 ἢ καὶ μὲ 27, ἀρκεῖ νὰ ληφθῇ μέριμνα, ἵνα διατηρηθῇ ἡ μεταξὺ τῶν ὀργάνων ἰσορροπία καὶ μὴ πλουτισθῇ ἡ μία κατηγορία εἰς βάρος τῆς ἄλλης.

Διὰ τὴν στρατιωτικὴν μουσικὴν ἐκ χαλκίνων μόνον ὀργάνων, τὴν κοινῶς λεγομένην φανφάραν (fanfare), ἡ δύναμις τῶν ἐκτελεστῶν τῆς πληρεστέρας ἐξ αὐτῶν δύναται νὰ εἶναι ἡ ἑξῆς:

| | | |
|---|---|---|
| Σαρρυζόφωνα ὑψίφωνα | (sarrusophone soprano) | 3 |
| » βαρύτονα | ( » baritono) | 1 |
| » βαθέα | ( » basso) | 1 |
| » ἀντιβαθέα | ( » contrabasso) | 1 |
| Σαξόφωνα ὑπερυψίφωνα | (saxophone sopranino) | 1 |
| » ὑψίφωνα | ( » soprano) | 4 |
| » μέσα | ( » alto) | 5 |
| » ὀξύφωνα | ( » ténore) | 4 |
| » βαρύτονα | ( » baritono) | 4 |
| » βαθέα | ( » basso) | 2 |
| Κλειδοσάλπιγγες ἢ κεράτια | (cornetti) | 5 |
| Σάλπιγγες | (trombe) | 8 |
| Κέρατα | (corni) | 8 |
| Ὁλκωταὶ σάλπιγγες | (tromboni) | 16 |
| Μικρὸν κλειδοκέρας | (Fügelhorn piccolo) | 1 |
| Κλειδοκέρατα-σόλο | (Flügelhorn solo) | 18 |
| Κλειδοκέρατα πρῶτα | (Flügelhorn 1mi) | 9 |
| » δεύτερα | ( » 2di) | 5 |
| » τρίτα | ( » 3ri) | 3 |
| Ὀξυκέρατα | (Althorn) | 8 |
| Εὐφώνια | (euphonium) | 4 |
| Βαθυσάλπιγγες | (basso) | 12 |
| Ἀντιβαθύφωνα εἰς μι ὕφ. | (contrabasso Es) | 1 |
| » » σι ὕφ. | ( » B) | 8 |
| Βαθύχορδον | ( » ) | 1 |
| Τύμπανα | (timpani) | 1 |
| Κρουστὰ | (batteria) | 5 |
| | Τὸ ὅλον | 140 |

Ἡ ἀνωτέρω κολοσσιαία σύνθεσις εἶναι ἐντελῶς ἐξαιρετική, διότι ὁ συνήθης καταρτισμὸς μιᾶς φανφάρας ἀπαιτεῖ 49, 29 ἢ 22 ἐκτελεστάς. Εἰς πλείστας φρουρὰς χρησιμοποιεῖται καὶ ἡ μικροτέρα εἰς δύναμιν φανφάρα ἐκ 12 μουσικῶν: 2 κερατίων, 2 κλειδοκεράτων, 2 ὀξυκεράτων, 1 εὐφωνίου, 2 ὁλκωτῶν σαλπίγγων, 2 βαθειῶν σαλπίγγων εἰς σι ὕφ. καὶ 1 βαθείας σάλπιγγος εἰς μι ὕφ.

Ἡ ἐπιτυχὴς ἀπόδοσις συνθέσεώς τινος ὡς καὶ ἡ ἱκανοποιητικὴ ἠχητικότης ἐξαρτῶνται πολλάκις ἐκ τῆς καλῆς τοποθετήσεως τῶν ἐκτελεστῶν (βλ. λ. *ἐνοργάνωσις*). Τὰ ἑπόμενα δύο σχήματα ἀφοροῦν τὴν τοποθέτησιν τῶν στρατιωτικῶν μουσικῶν ἐν στάσει.

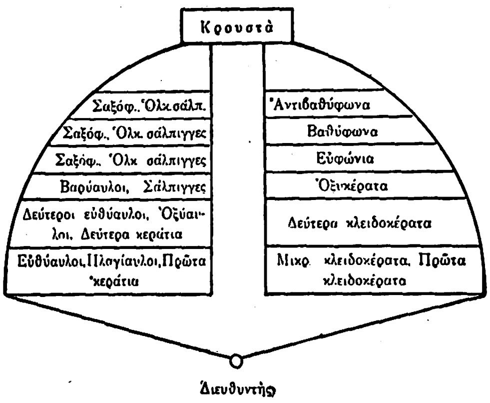


*Διάταξις στρατιωτικῆς φανφάρας ἐν ἡμικυκλίῳ.*

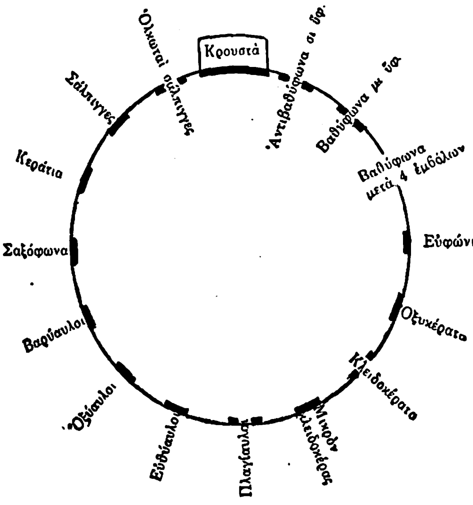


*Διάταξις στρατιωτικῆς φανφάρας ἐν κύκλῳ.*

Διὰ τὴν ἐν πορείᾳ τοποθέτησιν τῶν στρατιωτικῶν μουσικῶν δύναται νὰ προκριθῇ—ὡς ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι—ἡ ἐπὶ κεφαλῆς τῆς φάλαγγος τοποθέτησις τῶν κρουστῶν ὀργάνων, ἅτινα, σημειοῦντα τὸν ρυθμόν, παρεμποδίζουν τὴν ἐπιβράνδυνσιν τοῦ βήματος.

***Μουσικὴ φωνητική.*** Ἡ γραφομένη μόνον διὰ φωνάς, ἐνίοτε δὲ καὶ ἡ δι' ᾆσμα μετὰ συνοδείας.

***Μουσικὴ χοροῦ.*** Εἰς τὸν κλάδον τοῦτον ἡ μουσικὴ κύριον σκοπὸν ἔχει νὰ ρυθμίζῃ τὰ βήματα τῶν χορευτῶν καὶ νὰ ὑποβοηθῇ τὴν ἔκφρασιν τοῦ χοροῦ. Εἰς τὰς ἀρχαιοτέρας ἐκδηλώσεις τῆς τέχνης ταύτης, εἰς τὸν μαγικὸν χορόν, φέρ' εἰπεῖν, οὗτινος ἡ ἀρχὴ χάνεται εἰς τὰ βάθη τῶν αἰώνων,

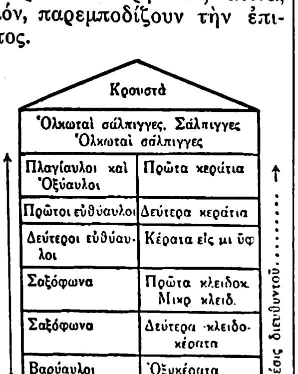


*Στρατιωτικὴ μουσικὴ ἐν πορείᾳ*

τὸ μουσικὸν στοιχεῖον συμμετεῖχεν ἁπλῶς διὰ τοῦ ρυθμοῦ του, εἶτα καὶ διὰ τῶν ἤχων, ἵνα λάβῃ ἐν τέλει πλέον συγκεκριμένην μορφήν. Παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησιν ἡ μουσικὴ ἦτο συνώνυμος, πρὸς τοῖς ἄλλοις, μὲ αὐτὴν τὴν ὄρχησιν. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀποτελεῖ σημαντικὸν στοιχεῖον τοῦ χοροῦ τῶν μυστηρίων καὶ κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Ἀναγεννήσεως ἡ τέχνη τῶν ἤχων εἶναι ἡ βάσις τῶν χορογραφικῶν παραστάσεων, οἷαι ἡ μασκαράτα παρὰ τοῖς Ἄγγλοις, τὸ μπαλλέττο παρὰ τοῖς Γάλλοις καὶ Ἰταλοῖς κτλ.

Ἀλλὰ ἡ μουσικὴ χοροῦ, λόγῳ τῆς συγκεκριμένης της μορφῆς, τοῦ καθωρισμένου της σχεδίου, τῶν συμμετρικῶν της περιόδων καὶ τῶν ἐπαναλήψεων, τοῦ κανονικοῦ ἀριθμοῦ τῶν μέτρων, ἔδωκε τὸν τύπον τῶν πρώτων συνθέσεων ὀργανικῆς μουσικῆς. Ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' ἤδη αἰῶνος αἱ σουῖται διὰ κλαβικύμβαλον, βιόλαν καὶ βιολίον τοῦ Φρόμπεργκερ, Κουπερέν, Σαμπονιὲρ κτλ. δὲν εἶναι ἢ σειρὰ χορῶν—ὡς ἡ ἀλλεμάντ, σαραμπάντ, ζίγκ, γκαγιάρντ, κουράντ, παβάν, γκαβόττα, μπουρρέ, πασσακάλια, ριγκωντὸν κτλ.—, χορῶν ἐν τούτοις μὴ προοριζομένων διὰ τὴν ὄρχησιν, ἀλλὰ δανειζόντων ἁπλῶς τὸν τύπον καὶ τὴν εὐρρυθμίαν των εἰς τὴν σύνθεσιν. Ἀθάνατοι παραμένουσιν ἀκόμη αἱ «Σουῖται», ἐπὶ χορευτικῶν ρυθμῶν τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπάχ. Ἀπὸ τῆς δημιουργίας τοῦ τύπου τῆς σονάτας καὶ τῆς συμφωνίας, ἡ μουσικὴ χοροῦ ἀρχίζει νὰ χάνῃ τὴν σημασίαν της ἐν τῇ ὀργανικῇ μουσικῇ. Ἐκ τῆς παλαιᾶς εὐκλείας της παραμένει αὐτόσιον μόνον τὸ μινουέττο, ὡς τρίτον μέρος τῆς συμφωνίας, ὡς ἐπὶ Χάϋδν καὶ Μόζαρτ π. χ., ἵνα παραμερίσῃ καὶ τοῦτο ἐν τέλει πρὸ τοῦ σκέρτσο, τὸ ὁποῖον εἰσάγει ὁ Μπετόβεν. Τὸν τύπον τῆς μουσικῆς χοροῦ, μετ' ἐλευθέρας ἐν τούτοις ἀναπτύξεως, θέλομεν συναντᾷ ἐπὶ πολὺν ἀκόμη χρόνον εἰς τὸ τελευταῖον μέρος—ροντὼ (rondeau)—τῆς σονάτας, ἢ τῆς συμφωνίας τῶν κλασσικῶν μουσουργῶν.

Ἐκ τοῦ ἀπείρου ἀριθμοῦ χορῶν, τὸ διατηρῆσαν τὴν σημασίαν του μέχρι σήμερον καὶ περιληφθὲν εἰς πλεῖστα συμφωνικὰ καὶ σκηνικὰ ἔργα εἶναι τὸ βάλς, εἴτε αὐστηρῶς χορευτικοῦ τύπου, ὡς ἡ περίφημος «Πρόσκλησις εἰς βάλς» τοῦ Βέμπερ, εἴτε πλέον ἐλευθέρας μορφῆς, ὡς εἶναι τὰ ἀθάνατα βὰλς τοῦ Σοπέν, τοῦ Λίστ, ἢ τοῦ Μπράμς, ὁ «Χορὸς τῶν Σιλφίδων» ἐκ τῆς «Καταδίκης τοῦ Φάουστ» τοῦ Μπερλιόζ, τὰ βὰλς τῆς «Μιρέϊγ», τοῦ «Ρωμαίου καὶ Ἰουλιέττας», τοῦ «Φάουστ» τοῦ Γκουνώ, κλπ. Ὑπερόχους σελίδας ἐνέπνευσαν ἐπίσης εἰς τὸν Σοπὲν οἱ χορευτικοὶ ρυθμοὶ τῆς πολωνέζας καὶ τῆς μαζούρκας.

Χαρακτηριστικὸν ἐπίσης εἶναι ὅτι ἡ χορευτικὴ μουσικὴ ἀποτελεῖ τὴν βάσιν τῶν ἐθνικιστικῶν λεγομένων σχολῶν. Τὸ πασπιὲ (passepied), ἢ τὸ ταμπουρὲν (tambourin) μεταφέρουν τὸν ἀκούοντα εἰς τὴν Γαλλίαν, τὰ τσάρντας εἶναι αὐτὴ ἡ μουσικὴ τῶν Οὕγγρων καὶ τῶν Ἀτσιγγάνων, ἡ σεγκουῖντιλια, τὸ φαντάνγκο ἢ ἡ χότα ἐδάνεισαν τοὺς ρυθμούς των εἰς τοὺς μεγαλυτέρους συνθέτας τῆς συγχρόνου Ἱσπανίας, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου οἱ βάρβαροι ρωσικοὶ χορευτικοὶ σκοποὶ ἐνέπνευσαν τὸν Ρίμσκυ Κορσακώφ, τὸν Μουσόργσκυ καὶ τὸν Μποροντὶν καὶ τὰ χορογραφικὰ ποιήματα τοῦ Στραβίνσκυ. Χορευτικὰ δημώδη θέματα ἢ δημοτικοφανῆ τοιαῦτα, συρτός, καλαματιανός, πεντοζάλης κλπ, ἐχρησίμευσαν ἐπίσης πολλάκις ὡς πυρῆνες, παρὰ πλείστοις τῶν συγχρόνων Ἑλλήνων μουσουργῶν, πρὸς σύνθεσιν ἀξιολόγων συμφωνικῶν ἢ φωνητικῶν ἔργων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἔργα γενικά: W. C. Prinz*, Historische Beschreibung der edlen Sing und Klngkunst.... (Δρέσδη 1690, ἡ ἀρχαία γερμανικὴ ἱστορία τῆς μουσικῆς).—*G. A. Bontempi*, Istoria musica nella quale si ha piena cognizione della teoria e della pratica antica della musica armonica (Περουγία 1695).—*J. Bonnet*, Histoire de la musique.... (Παρίσιοι 1715).—*G. Martini*, Storia della musica (Βολωνία 1757, 1770, 1781).—*F. W. Marpurg*, Kritische Einleitung in die Geschichte und Lehrsätze der alten und neuen Musik (Βερολῖνον, 1759).—*J. Hawkins*, A general history of the science and practice of music (5τόμ., Λονδῖνον, 1776).—*C. Burney*, A general history of music (Λονδῖνον, 1776—1789, 4 τόμοι).—*J. N. Forkel*, Allgemeine Geschichte der Musik (Λειψία, 1788—1801).—*A. W. Ambros*, Geschichte der Musik (Βρεσλαυία, 1862—1882, 5 τόμοι).—*A. Reissmann*, Allgemeine Geschichte der Musik (Λειψία, 1863—1865, 3 τόμοι).—*P. Franck*, Geschichte der Tonkunst (Λειψία, 1870),—*E. Naumann*, Illustrirte Musikgeschichte (Στουτγάρτη, 1880—1885).—*H. Lavoix Fils*, Histoire de la musique (Παρίσιοι, 1885, καὶ ἐν ἑλληνικῇ μεταφράσει Ἀθηνᾶς Σερεμέτη, Ἀθῆναι 1888).—*Clément*, Histoire de la musique depuis les temps anciens.... (Παρίσιοι, 1885).—*H. A. Köstlin*, Musikgeschichte (1874, 1898) καὶ ἐν ἑλληνικῇ μεταφράσει Ἀν. Μάλτου, Ἀθῆναι, Βιβλιοθήκη Μαρασλῆ, 1908).—*H. Riemann*, Handbuch der Musikgeschichte (τόμοι 3, 1901, 1905, 1907).—*Al. Lavignac*, La musique et les musiciens (Παρίσιοι, 1866).—*Αὔρας Θεοδωροπούλου*, Ἱστορία τῆς Μουσικῆς (τόμος 1ος μέχρι Μπετόβεν, Ἀθῆναι).—*Landormy*, Histoire de la musique (καὶ ἐν ἑλληνικῇ μεταφράσει Σοφ. Σπανούδη, Ἀθῆναι, 1931).—*J. Combarieu*, Histoire de la musique (τόμοι 3).—*Woolet*, Histoire de la musique (1924).

Ἐπὶ τῆς *μουσικῆς δωματίου: L. Nohl*, Die geschichtliche Entwickelung der Kammermusik (1885).—*Wasielewski*, Die Violiue und ihre Meister (1893) καὶ Die Violine im XVII Jahrh. (1874).—*L. Torchi*, La musica instrumentale in Italia.... (1901).—*A. Schering*, Gesch. des Instrumentalkonzerts (1905).—*A. Sandberger*, Zur Geschichte des Haydnschen Streichquartetts (1900). —*N. Kilburn*, The story of chamber music (1904).

Ἐπὶ τῆς *ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς: Wetzer und Welte*, Kirchenlexikon (12 τόμοι, 1847—1856).—*Schlecht*, Gesch. der Kirschenmusik (1871).—*Kornmüller*, Lexikon der Kirchliche Tonkunst (1891).—*Bäumker*, Das katholische deutsche Kirchenlied (1883—1891).—*Joh. Tretze*, Ueber die altgriechische Musik in der griechischen Kirche (1874).—*H. Stevenson*, Du rythme das l'hymnographie de l'église grecque (1877).—*Bourgault-Ducoudray*, Études sur la musique ecclésiastique grecque (1877).—*Wossnessensky*, Du chant de l'église grecque orientale, de l'antiquité jusqu' à nos jours (1897).—*Weinmann*, Gesch. der Kirchenmusik (1909, καὶ ἐν γαλλικῇ μεταφράσει τοῦ P. Landormy).—*Winterfeld*, Der evangelische Kirchengesang (3 τόμοι, 1843—1847).—*J. Zahn*, Die Melodien der deutschen evangelischen Kirche.... (1887—1893).—*F. Bovet*, Histoire du Psautier der églises réformées.

Ἐπὶ τῆς *οἰκογενειακῆς μουσικῆς: K. F. Becker*, Die Hausmusik in Deutschland (1840).—*A. Reissmann*, Die Hausmusik (1884). —*J. Hullah*, Music in the house (1877). —*Riemann*, Hausmusik aus alter Zeit.

Ἐπὶ τῆς *ὀργανικῆς μουσικῆς: Wasielewski*, Gesch. der Instrumentalmusik iu XVI Jahrh. (1878) καὶ Die Violine im XVII Jahrh. (1874).—*H. Riemann*, Das Kunstlied im XIV—XV Jahrh. (1906), Die Variationenform i. d. alten deutschen Tanzsuite, Die franz. Ouvertüre zu Anfang des XVIII Jahrh. (1898), Die Mannheimer Schule καὶ Joh. Schobert.—*K. Nef*, Zur Geschichte der deutschen Instrumentalmusik i. d. 2ten Hälfte des XVII Jahrh. (1902).—*A. Schering*, Gesch. des Instrumental-Konzerts bis Ant. Vivaldi (1903).

Ἐπὶ τῆς *στρατιωτικῆς μουσικῆς: Gevaert*, Cours méthodique d'orchestration (ἀπὸ τῆς σελ. 288).—*Kalkbrenner*, Die Organisation der Militärmusik-Korps aller Länder (1884).—*Wieprecht*, Die Miiitärmusik (1885).—*Ed. Neukomm*, Histoire de la musique militaire (1889).—*Damanski*, Die Militärkapellmeister Oesterreich - Ungarus (1904).—*Rott*, Der Dienst im Heere als Militärmusiker (1898).—*G. Kastner*, Manuel général de la musique militaire (1893).—*J. le Forgeron*, Étude sur la réorganisation des musiques militaires (1898).—*P. Clodomir*, Manuel complet du Chef Directeur.

*Λεξικὰ καὶ Ἐγκυκλοπαιδεῖαι: J. Tinctoris*, Terminorum musicae diffinitorium (1474).—*Th. B. Janowka*, Clavis ad thesaurum magnae artis musicae (1701).—*Brossard*, Di-

Digitized by Google

…lonnaire de musique (1703).—*J. J. Rousseau*, Dictionnaire de musique (1767).—*Koch*, Musikalisches Lexikon (1802).—*P. Gianelli*, Dizionario (1801).—*P. Lichtenthal*, Dizionario e bibliographia della musica (1826, 4 τόμοι).—*Castil-Blaze*, Dictionnaire de musique moderne (1821).—*M. et L. Escudier*, Dictionnaire de musique (1844).—*E. L. Gerber*, Historisch-biographisches Lexikon der Tonkünstler (1790—1792).—*Fétis*, Biographie universelle des musiciens (1835—1844, 8 τόμοι, συμπλήρωμα *A. Pougin*, 1879—1881).—*Φιλοξένους*, Λεξικὸν τῆς ἑλληνικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς (1868, μέχρι τοῦ γράμματος Μ).—*R. Eitner*, Biographisch-bibliographisches Quellen-Lexikon.... bis zur Mitte XIX Jahrh. (1900—1904, 10 τόμοι).—*Th. Baker*, Biographical Dictionary of musicians (1900). — *Ἐγκυκλοπαιδικὰ λεξικά: J. G. Walther*, Musikalisches Lexicon (1732). *G. Schilling*, Universallexicon der Tonkunst (1835—1838). *Gollmick*, Handlexicon der Tonkunst (1857).—*J. Schu…rt*, Musikalisches Konversationslexicon.—*H. Mendel* καὶ …τα *Reissmann*, Musikalisches Conversationslexikon (1870—1879, 11 τόμοι καὶ συμπλήρωμα 1883).—*O. Paul*, Handlexikon der Tonkunst (1883).—*Grove*, Dictionary of music and musicians (1879—1890, 4 τόμοι μετὰ συμπληρώματος· νέα ἔκδοσις 1904—1909).—*H. Riemann*, Musik-lexicon (1η ἔκδοσις 1882, τελευταία εἰς 2 τόμους ἐπιμελείᾳ Einstein, 1929).—*Luisa Lacàl*, Diccionario de lamusica (Μαδρίτη, 1900).—*Amintore Galli*, Piccolo lessico del musicista (1902).—*A. Lavignac, L. de la Laurencie*, Encyclopédie de la musique (μέχρι τοῦ 1930, 10 τόμοι). Συνεργασίᾳ πλειάδος μουσικολόγων: Handbuch der Musikwischenschaft (Βερολῖνον, 1931, τόμοι 6). — *Λεξικὰ μουσικοῦ θεάτρου: M. de Le…s*, Dictionnaire portatif historique et litteraire des théatres de Paris (1763).—*Carlo Dassori*, Opere e operisti, dizionario lirico (1903).—*L. Eisenberg*, Grosses biographisches Lexikon der deutschen Bühnen im XIX Jahrh. (1903).—*E. Campardon*, L'Académie royale de musique (1884).—*Λεξικὸν κατασκευαστῶν ἐγχόρδων ὀργάνων: Von Lütgendorff*, Geigen-und Lautenmacher (1904—1905).

Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**μουσικοθεραπεία** (ἡ), ἢ *μελοθεραπεία*· μέθοδος θεραπείας νόσων τινῶν διὰ τῆς μουσικῆς.

—*['Ιατρ.]* Πάντα τὰ διάφορα φυσικὰ μέσα, ἅτινα χρησιμοποιοῦνται σήμερον ἐν τῇ θεραπευτικῇ, ὡς ἐφευρέσεις καὶ ἐφαρμογαὶ τῆς ἐπιστήμης, ἐχρησιμοποιοῦντο ἤδη, ἐμπειρικῶς, ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων. Οὕτω, πλὴν τῶν παραδόσεων, μυθικῶν ἢ μή, τοῦ Ὀρφέως καὶ τοῦ Ἀμφίονος, δέον νὰ ὑπομνήσωμεν ὅτι ὁ Κέλσος συνεβούλευε τὴν χρῆσιν τῆς μουσικῆς κατὰ τῆς ἀνησυχίας τῶν παραφρόνων, ὁ Γαληνὸς κατὰ τῆς μελαγχολίας, καὶ ὁ Θεόφραστος κατὰ τῶν ἀλγηδόνων τῆς ἰσχιάδος καὶ τῆς ἀρθρίτιδος. Ἐπίσης, καθ' ἅπαντα τὸν μεσαίωνα πολυάριθμοι ἐφαρμογαὶ τοῦ μέσου τούτου ἐγένοντο εἰς τὴν θεραπείαν ποικιλωτάτων νόσων· ὁ δὲ Fetis ἐν τῷ «Περὶ ἱστορικῶν παραδοξοτήτων τῆς μουσικῆς» βιβλίῳ αὐτοῦ (1831) ἀναφέρει καταπληκτικώτατα παραδείγματα. Ἐν τούτοις μόνον περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' ἐγένοντο σαφεῖς περὶ τοῦ ζητήματος τούτου ἔρευναι. Τῷ 1758 ὁ Roger, ἰατρὸς ἐν Montpellier, παρετήρησεν ὅτι πλειστάκις ἡ μουσικὴ ἐθεράπευσε διαλείποντας πυρετοὺς μετὰ παραληρήματος καὶ ἀϋπνίας. Ὁ Dodart, τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν, ἀναφέρει ἀναλόγους περιπτώσεις, τὰ δὲ ὑπομνήματα τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ἰδίᾳ τὰ τοῦ Guétry, βρίθουσι παρατηρήσεων σχετικῶν ὄχι μόνον μὲ τὴν πρὸς τὴν μουσικὴν ἰδικὴν εὐαισθησίαν ἀτόμων τινῶν, ἀλλὰ καὶ μὲ τὴν ἐπίδρασιν τῆς μουσικῆς ἐπὶ τὰς νευρικὰς νόσους, τὸν πυρετόν, τὴν ἀρθρίτιδα, τὸ ἄλγος ἐν γένει καὶ τὰς καταστάσεις τῆς ἐκλύσεως καὶ τῆς ἀνησυχίας καὶ ἀδημονίας τῶν νευροπαθῶν. Ὁ Rostan, ὁ Recamier, ὁ Alibert καὶ ὁ Corvisart ἔσχον πλειστάκις τὴν εὐκαιρίαν νὰ διαπιστώσωσι τὰ ἀγαθὰ ἀποτελέσματα τῆς μεθόδου ταύτης. Πρῶτος ἐν τούτοις ὁ Esquirol ἐπεχείρησε νὰ συστηματοποιήσῃ αὐτήν. Φυσικῶς αἱ ἔρευναί του ἐστράφησαν ἐν πρώτοις εἰς τὴν παραφροσύνην, ἀλλ' ὡς ὁ ἴδιος ἀναγνωρίζει εἰς τὸ «Περὶ ψυχικῶν νόσων» ἐγχειρίδιον αὐτοῦ, τὰ ἀποτελέσματα δὲν ὑπῆρξαν τὰ προσδοκώμενα. «Ἐδοκίμασα, λέγει, τὴν μουσικὴν παντοιοτρόπως καὶ ὑπὸ τὰς εὐνοϊκωτέρας τῶν περιπτώσεων. Ἐνίοτε ἡ μουσικὴ ἠρέθισε μέχρι τοῦ νὰ προκαλέσῃ μανίαν· πολλάκις ἐφάνη διασκεδάζουσα, δὲν δύναμαι ὅμως νὰ εἴπω, ὅτι συνετέλεσεν εἰς τὴν ἴασιν». Ἐν γένει ἡ μουσικὴ φαίνεται ὡς αὐτὸν ἐπιβοηθητικὸν μέσον, ἱκανὸν νὰ ἐπιφέρῃ ἀνακούφισίν τινα εἰς τὸ φυσικὸν καὶ ἠθικὸν ἄλγος. Εἰς τὸ συμπέρασμα τοῦτο φαίνεται ὅτι καταλήγουσι καὶ σήμερον ἔτι οἱ μουσικοθεραπευταί.

Ἀλλ' ἐν τῇ ἐφαρμογῇ τῆς μεθόδου μεγάλαι ἐγένοντο τελειοποιήσεις. Ὁ R. Legge ἐπιμένει ἐπὶ τῆς ἀνάγκης, ὅπως ἐρευνᾶται ἡ εὐπροσαρμοσία τοῦ πάσχοντος πρός τε τὴν μουσικὴν καὶ τὸν ρυθμόν, ὡς καὶ πρὸς τὴν εἰδικὴν ψυχικὴν ἀνταπόκρισιν πρὸς τὸν χαρακτῆρα τοῦ χρησιμοποιηθησομένου μουσικοῦ ὀργάνου καί, κατ' ἀκολουθίαν, πρὸς τὰς ἀντιδράσεις, αἵτινες θέλουσι διεγερθῇ παρὰ τῷ νευροπαθεῖ ἢ ψυχοπαθεῖ. Βραδύτερον (1889) ὁ Gordon de Acosta, ἐμπνεόμενος ἐκ τῶν …ο συμβουλῶν, κατέληξε διὰ μακρᾶς πειραματικῆς ἐρεύνης εἰς τὰ ἑξῆς συμπεράσματα: Κατ' αὐτόν, τὸ τετράχορδον (βιολίον) καταπολεμεῖ τὴν μελαγχολίαν καὶ τὴν ὑποχονδρίαν, ὁ μέγας βαρύαυλος (κόντρα-μπάσσο) τὰς νευρικὰς καὶ μυϊκὰς ἀτονίας, ἡ ἅρπα τὴν ὑστερίαν, ὁ βαρύαυλος τὴν φυσικὴν καὶ ψυχικὴν ἀνισορροπίαν, τὸ κέρας τὸ παραλήρημα, τὸ ἀγγλικὸν κέρας τὴν ὀργήν, τὸ τρομπόνιον τὴν κώφωσιν, τὸ τύμπανον δὲ ἁρμόζει πρὸς πάσας τὰς νευρικὰς παθήσεις, ἰδιαιτέρως εἰς ἐκείνας, αἵτινες ἔχουσι τὴν πηγὴν αὐτῶν ἐν τῷ μυελῷ τῶν ὀστέων. Τὸ κλειδοκύμβαλον εἶναι ὄργανον εἰδικῶς ἐπικίνδυνον, ἕνεκα τοῦ ἐκνευρισμοῦ, ὃν ἐπιφέρει διὰ μακροῦ χρόνου, ἐνίοτε δὲ καὶ λίαν ταχέως. Ἡ τοιαύτη τῶν μουσικῶν ὀργάνων θεραπευτικὴ κατανομὴ φαίνεται ἐν πολλοῖς παράδοξος. Δέον ἄλλως τε νὰ σημειωθῇ ὅτι οἱ μουσικοθεραπευταὶ δὲν παραδέχονται γενικῶς ταύτην, πλὴν ἴσως ἀναφορικῶς πρὸς τὸ κλειδοκύμβαλον, πρὸς ὃ ἱκανοὶ τῶν Γερμανῶν ἰατρῶν ἐξεδήλωσαν πραγματικὸν μῖσος.

Τὸ σημεῖον ὅμως, ἐφ' οὗ οἱ ἰατροὶ εὑρίσκονται ἐν καλυτέρᾳ ἁρμονίᾳ εἶναι τὸ τῆς ἐπιδράσεως τοῦ ρυθμοῦ καὶ τοῦ τόνου. Γνωστὴ τυγχάνει ἡ καταπραϋντικὴ καὶ ὑπνογόνος ἐνέργεια τῶν μονοτόνων καὶ βραδέων ἤχων ἢ μελῳδιῶν παρὰ τοῖς παιδίοις καὶ παρὰ πλείστοις ἔτι τῶν ἐνηλίκων, ὡς καὶ ἡ διεγερτικὴ ἐξ ἄλλου ἐπίδρασις τῶν ἐμβατηρίων καὶ τῶν πολεμικῶν θουρίων καὶ ᾀσμάτων. Ὁ Bestchinsky ἰσχυρίζεται ὅτι ἐθεράπευσε κορασίδα τινὰ ἐκ νυκτερινῶν τρόμων, παραγγέλλων νὰ παίζωσι τὴν ἑσπέραν τὸ ὑπ' ἀριθμ. 2 ἐκ τῶν «Valses brillantes» τοῦ Chopin.

Τὸ καταπραϋντικὸν ἢ διεγερτικὸν τῆς μουσικῆς ἀποτέλεσμα ἐξαρτᾶται βεβαίως ἐκ τῶν φυσιολογικῶν μεταβολῶν καὶ ἐμμέσως ἐκ τῆς εὐαισθησίας καὶ τῶν παθῶν, ἅτινα εἶναι ἱκανὴ ἡ μουσικὴ νὰ ἀναπτύξῃ. Αἱ μεταβολαὶ αὗται ἐμελετήθησαν ὑπὸ τοῦ Ferraut (1895), ὑπὸ τοῦ Binet (1897) καὶ ὑπὸ τοῦ Destouches (1902). Αἱ μόναι ἐν τούτοις μετὰ σχετικῆς ἀκριβείας βεβαιωθεῖσαι μεταβολαὶ ἀφορῶσιν εἰς τὴν κυκλοφορίαν, τὴν ἀναπνοὴν καὶ τὰς ἐκκρίσεις. Ἔν τισι περιπτώσεσιν ὁ καρδιακὸς ρυθμὸς καὶ ἡ ἀναπνοὴ ἐπιταχύνονται, ἡ ἀρτηριακὴ τάσις ὑψοῦται ἐλαφρῶς, παρατηρεῖται δ' ἡ ἐμφάνισις δακρύων, σιάλου καὶ ἡ ἀνάγκη τῆς οὐρήσεως. Δέον ὅμως νὰ ἐξακριβωθῇ ἐὰν αἱ μεταβολαὶ αὗται εἶναι ἄμεσοι (ἀπ' εὐθείας), ἢ ἂν προέρχωνται δευτερευόντως ἐκ τῶν συγκινήσεων, ἃς προκαλεῖ ἡ μουσική.

Ἐν περιλήψει, ἡ θεραπευτικὴ ἐνέργεια τῆς μουσικῆς δὲν εἶναι εἰσέτι ὁριστικῶς καθωρισμένη, ἡ δὲ σπουδὴ αὐτῆς εὑρίσκεται εἰς τὰ πρῶτά της ἀκόμη βήματα. Αἱ μόναι διαβεβαιώσεις, ἃς δυνάμεθα νὰ συγκρατήσωμεν, εἶναι ὅτι, ἀναλόγως τοῦ ρυθμοῦ καὶ τοῦ τόνου, ἡ μουσικὴ δυνατὸν νὰ εἶναι κατευναστικὴ ἢ διεγερτικὴ καὶ νὰ χρησιμοποιηθῇ αὕτη πολυτίμως εἰς τοὺς νευρασθενικοὺς καὶ τοὺς ψυχοπαθεῖς, ὡς μέσον ὑποβοηθητικὸν τῆς κλασσικῆς αὐτῶν θεραπείας. Ἀνάγκη δὲ πρὸς τούτοις νὰ προσαρμόζηται τὸ θέμα τῆς μελῳδίας καὶ τὸ ὄργανον τῆς ἐκτελέσεως εἰς ἑκάστην περίπτωσιν.

Μ. Ν. ΚΑΪΡΗΣ

**μουσικομανία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μουσικομανοῦς, ἡ ἐμμανὴς ἀγάπη τῆς μουσικῆς.

**μουσικομανὴς** (ὁ, ἡ),—*ἐς* (τό)· ὁ ἐμμανῶς ἀγαπῶν τὴν μουσικήν, μελομανής.

**μουσικός,**—*ή,*—*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μουσικήν: «μουσικὴ σύνθεσις», «μουσικὸν ὄργανον»· ‖ «ἔχει μουσικὸ ἀφτί» ἔχει μουσικὴν προδιάθεσιν· ‖ ***μουσικὸς*** (ὁ)· ὡς οὐσ., ὁ ἔχων προδιάθεσιν μουσικήν, ὁ δεκτικὸς μουσικῆς παιδεύσεως· ‖ ὁ περὶ τὴν μουσικὴν ὡς ἐπάγγελμα ἀσχολούμενος: «ἄριστος μουσικός».—Ἐπίρρ. ***μουσικῶς.***

— **μουσικὰ *ὄργανα*** · βλ. λ. *μουσικὴ* ['Εγκυκλ.] καὶ τὰς οἰκείας δι' ἕκαστον ὄργανον λέξεις.

— **μουσικὰ *σημεῖα*** · βλ. λ. *μουσικὴ* ['Εγκυκλ.] καὶ *σημειογραφία*.

— **μουσικαὶ *βιβλιοθῆκαι.*** Μέχρι τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἡ ἀναζήτησις παλαιοῦ μουσικοῦ βιβλίου ἢ χειρογράφου προσέκοπτεν εἰς τὴν παντελῆ ἔλλειψιν ἐντύπων καταλόγων, περιλαμβανόντων τὰς πηγὰς ἢ τὰς βιβλιοθήκας, εἰς ἃς θὰ ἠδύνατό τις νὰ τὸ ἀναζητήσῃ. Πλεῖστα πολύτιμα μουσικὰ χειρόγραφα καὶ σπάνια βιβλία ἐφυλάσσοντο εἰς ἀρχαίας μονὰς ἢ εἰς ἰδιωτικὰς συλλογάς, ἀπρόσιτα ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς τοὺς σοφοὺς μουσικολόγους. Πρῶτος ὁ Ροβ. Ἄϊτνερ (Eitner) εἶχε τὴν φαεινὴν ἰδέαν καὶ τὴν ὑπομονὴν ν' ἀναδιφήσῃ τὰ μουσικὰ ἀρχεῖα τῆς Γερμανίας, ν' ἀνεύρῃ πληθὺν χειρογράφων καὶ βιβλίων εἰς τὰς βιβλιοθήκας τῶν σωματείων, μουσικῶν ἑταιρειῶν, ναῶν κ. τ. λ. τῆς πατρίδος του, νὰ τὰ ταξινομήσῃ καὶ ν' ἀποτελέσῃ τὸν πρῶτον ἔντυπον κατάλογον τῶν μουσικῶν θησαυρῶν τοῦ παρελθόντος. Αἱ πολύτιμοι αὗται πληροφορίαι τοῦ Ἄϊτνερ ἀπετέλεσαν τὸν πρῶτον τόμον, ἐκδοθέντα τῷ 1877, ὑπὸ τὸν τίτλον «*Bibliographie der Musikalwerke des XVI und XVII Jahrh.*», ἀργότερον δὲ τὸ «*Quellenlexikon*» (Λεξικὸν τῶν πηγῶν). Μιμούμεναι τὸ παράδειγμα τοῦ Ἄϊτνερ, πολλαὶ βιβλιοθῆκαι, πανεπιστήμια, ἐπιστημονικὰ καὶ καλλιτεχνικὰ ἱδρύματα προέβησαν ἔκτοτε εἰς λεπτομερεῖς ἐρεύνας καὶ ἀναδιφήσεις παλαιῶν μουσικῶν χειρογράφων, εἰς τρόπον ὥστε νὰ ἐλπίζεται ἡ προσεχὴς ἔκδοσις γενικῶν καταλόγων, περιλαμβανόντων τὰς πηγὰς καὶ πᾶν ὅ,τι ἀφορᾷ τὴν ὡραίαν αὐτὴν τέχνην. Μέχρι σήμερον ἐξέδωκαν τοὺς μουσικούς των καταλόγους αἱ ἑξῆς πόλεις: *Ἄμστερνταμ*, Tonküstlerverein (1884). *Ἄουγκσμπουργ*, Δημοτικὴ βιβλιοθήκη (1878). *Βάλη*, Βιβλιοθήκη πανεπιστημίου (1892). *Βερολῖνον*, Kgl. Hausbibliothek (1895), Graues Kloster (1856). Deutsche Musiksammlung bei der Kgl. Bibliothek (1906) κλπ. *Βολωνία*, Liceo musicale (1890), Parisini (1892), Torchi (1893), Cadolini (1905). *Βρανβεβοῦργον*, Katharinen-Kirche (1857), *Βρεσλαυΐα*, Δημοτικὴ βιβλιοθήκη, Πανεπιστημιακὴ βιβλιοθήκη (1890), *Βάσιγκτων*, ἡ μεγαλυτέρα μουσικὴ βιβλιοθήκη τῆς Ἀμερικῆς, περιλαμβάνουσα πλέον τῶν 500.000 μουσικῶν ἔργων καὶ σχετικῶν μὲ τὴν μουσικήν, ὡς καὶ δύο ἰδιαιτέρους καταλόγους ἐκλεκτῶν μουσικῶν βιβλίων καὶ *παρτισιόν*. *Βενετία*, Ἁγίου Μάρκου (I codici musicali Contariniani del secolo XVIII, 1888). *Βιέννη*, Katalog der Wiener Musikausstellung (G. Adler, 1892). *Βρυξέλλαι*, Βασιλικὴ βιβλιοθήκη (1877), Βασιλικὸν ᾠδεῖον (1870, 1898, 1902, 1909), ἀπὸ τὰς πλουσιωτέρας τοῦ εἴδους της. *Γλασκώβη*, Βιβλιοθήκη τοῦ πανεπιστημίου (1878). *Γοττίγγη*, Βιβλιοθήκη πανεπιστημίου (1883). *Δάντσιχ*, Δημοτικὴ βιβλιοθήκη. *Δαρμστάτη*, βιβλιοθήκη Βάλτερ (1874) καὶ *Μηνιαῖα δελτία* (1888). *Δρέσδη*, Κρατικὴ βιβλιοθήκη (1890). *Ἔλμπιγκ*, Δημοτικὴ βιβλιοθήκη (1893—1894). *Ἔλυ*, βιβλιοθήκη καθεδρικοῦ ναοῦ (1861). *Ἰένα*, Βιβλιοθήκη πανεπιστημίου (1828). *Καίνιγκσμπεργ*, Κρατικὴ καὶ πανεπιστημιακὴ βιβλιοθήκη (1870). *Κανταβριγία*, Fitzwilliam Museum (1893). *Κάσσελ*, Κρατικὴ βιβλιοθήκη (1893). *Λειψία*, Μουσικὴ βιβλιοθήκη Πέτερς (1894, 1910), Δημοτικὴ βιβλιοθήκη ἀπὸ τὰς σπουδαιοτέρας καὶ πλουσιωτέρας (1845). *Λιέγη*, Βιβλιοθήκη πανεπιστημίου (1861). *Λίγκνιτς*, *Ritterakademie* (1876—1878). *Λονδῖνον*, Βρεττανικὸν μουσεῖον· I κατάλογος χειρογράφων (1842). II κατάλογος θρησκευτικῆς μουσικῆς (1906). III κοσμικὰ τραγούδια (1908), IV κατάλογος νέων ἀποκτημάτων ἀρχαίας μουσικῆς (1886, 1899)· Royal College of music (κατάλογος 1872, παράρτ. 1892). *Μάγχαϊμ*, Ἀρχεῖα θεάτρου (1899). *Μιλᾶνον*, Ὠδεῖον (1899 κλπ.). *Μοδένα*, βιβλιοθήκη τῶν δουκῶν τοῦ Ἔστε. *Μόναχον*, βιβλιοθήκη Αὐλῆς καὶ Κρατική· περιέχει κατάλογον χειρογράφων μόνον μέχρι τοῦ 1700· πλήρης κατάλογος δὲν ἔχει ἀκόμη ἐκδοθῆ. *Μύνστερ*, καθεδρικὸς ναὸς καὶ βιβλιοθήκη Σαντίνι (κατάλογος 1820, 1854). *Οὐψάλα*, Πανεπιστημιακὴ βιβλιοθήκη (1911). *Παρίσιοι*, βιβλιοθήκη ᾠδείου (Βεκερλὲν 1885), βιβλιοθήκη Ὄπερας (Lajarte 1878), Ἁγίας Γενεβιέβης, Ἐθνικὴ βιβλιοθήκη 8 τόμοι ὑπὸ ἐκτύπωσιν. *Ρατισβόνη* (ὑπὸ ἐκτύπωσιν). *Ρώμη*, Ἀρχεῖα τοῦ παρεκκλησίου τοῦ ποντίφικος (1888). *Σβέριν*, Βιβλιοθήκη (1893). *Στουτγάρτη*, Κρατικὴ βιβλιοθήκη (1902). *Φραγκφούρτη*, Gymnasialbiblioth. καὶ Peterskirche (1872).

Βιβλιογραφικὰς πληροφορίας εὑρίσκομεν ἐπίσης εἰς διάφορα εἰδικὰ συγγράμματα ὡς: *Krebs*, Dittersdorfiana, *Gastoué*, Catalogue des Manuscripts de musique byzautinc conservés dans les bibliothèques de France (1910)· *Altmann*, Oeffentliche Musikbibliotheken κτλ.

Ἐν Ἑλλάδι ἡ μόνη ἀξία λόγου μουσικὴ βιβλιοθήκη εἶναι ἡ τοῦ Ὠδείου Ἀθηνῶν. Περιλαμβάνει μεγάλον ἀριθμὸν ἔργων εὐρωπαϊκῆς μουσικῆς, στερεῖται ὅμως δυστυχῶς χειρογράφων καὶ σπανίων βιβλίων. Κατάλογοι αὐτῆς ὑπάρχουσι μόνον ἐν χειρογράφῳ. Πλούσιαι ἀντιθέτως εἶναι αἱ συλλογαὶ χειρογράφων βυζαντινῆς μουσικῆς τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης καὶ τῆς τοῦ Ἁγίου Ὄρους. Οἱ ἔντυποι κατάλογοι τῆς πρώτης περιέχουν 263 χειρόγραφα βυζαντινῶν μελοποιῶν. Αἱ γνώσεις μας ἀφ' ἑτέρου διὰ τὰ πολύτιμα χειρόγραφα τοῦ Ἄθω ὀφείλονται εἰς τὸν *Σπ. Λάμπρον*, ὅστις ἀναδιφήσας τὰς βιβλιοθήκας τῶν ἱερῶν μονῶν καὶ ταξινομήσας τὰ χειρόγραφά των ἀναλόγως τῆς ὕλης, συνέταξε τὸν δίτομον κατάλογόν του, εἰς ὃν ἀναγράφονται 496 μουσικὰ βυζαντινὰ χειρόγραφα. Ἴδιον κατάλογον διὰ τὴν μονὴν τοῦ Βατοπεδίου συνέταξαν ἐπίσης ὁ μητροπολίτης πρῴην Λεοντοπόλεως *Σωφρ. Εὐστρατιάδης* καὶ ὁ ἱεροδιάκονος *Γερόντιος Ἀρκάδιος*· ἐν τῷ καταλόγῳ τούτῳ σημειώνονται 284 μουσικὰ χειρόγραφα καὶ κώδικες.

Γ. Σ.

— **«Μουσικὴ *Ἐπιθεώρησις*».** Μηνιαῖον οἰκονομικὸν καὶ καλλιτεχνικὸν περιοδικὸν ἐν Ἀθήναις μετὰ μουσικοῦ παραρτήματος, ἱδρυθὲν εἰς σχῆμα 4ον τῷ 1921 ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν Ν. Παππᾶ. —π.

— **μουσικὴ *κλῖμαξ*** · βλ. λ. *κλῖμαξ* μουσική.

— **«Μουσικὴ *Μέλισσα*».** Βιβλίον μουσικὸν εὐχρηστότατον, τετράτομον, σπάνιον νῦν, ἐκδοθὲν ἐν Κωνσταντινουπόλει ὑπὸ Θεοδώρου Φωκαέως τῷ 1843. Οἱ α' καὶ β' τόμοι αὐτοῦ περιλαμβάνουσι τὸ σύντομον στιχηραρικὸν καὶ σύντομον εἱρμολογικὸν ἀναστασιματάριον Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου, ὁ γ' τὴν συλλογὴν ἰδιομέλων Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος καὶ ὁ δ' σειρὰν μαθημάτων μελοποιηθέντων ὑπὸ τοῦ ἐκδότου. Ἐκ τῶν τελευταίων τούτων διακρίνονται τὰ ἑξῆς μουσουργήματα: τὰ συντετμημένα ἀνοιξαντάρια, θεωρούμενα ὡς κλασσικά, ὁ εἰς ἦχον μέσον τοῦ τετάρτου πολυέλεος «Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ», τὰ στιχηρὰ ἰδιόμελα τῶν Αἴνων τῆς Κυριακῆς τῶν Βαΐων, ὁ χερουβικὸς ὕμνος τῆς λειτουργίας τῶν

Digitized by Google

Προηγιασμένων «Νῦν αἱ δυνάμεις» εἰς ἦχον πρῶτον τετράφωνον, τὸ εἰς ἦχον βαρὺν κοινωνικὸν «Εἰς μνημόσυνον αἰώνιον», τὸ πρωτότυπον εἰς ἦχον βαρὺν «Μακάριος ἀνὴρ» καὶ ἡ εἰς ἦχον δεύτερον ἀργὴ Δοξολογία, ψαλλόμενα καὶ ἤδη ἐπ' ἐκκλησίαις. Ν. Α. Χ.

— «**Μουσικὸς Κόσμος**». Εἰκονογραφημένον μηνιαῖον μουσικόν, φιλολογικὸν καὶ ἐπιστημονικὸν περιοδικόν, ἐκδοθὲν ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ Ὀκτωβρίου 1929 μέχρι καὶ τοῦ Μαρτίου 1930 (ἀριθ. 1—6) ὑπὸ Θεοδ. Θωΐδου, πρῴην καθηγητοῦ τῆς θεωρίας τῆς βυζαντινῆς μουσικῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει. Ἐν τῷ περιοδικῷ τούτῳ ἐδημοσιεύθησαν μελέται καὶ πραγματεῖαι, ἀφορῶσαι ἰδίᾳ τὴν θεωρίαν τῆς ἡμετέρας μουσικῆς, ὡς καὶ ποικίλα ἐκκλησιαστικά, δημώδη καὶ σχολικὰ ᾄσματα ἐν βυζαντινῇ παρασημαντικῇ. Ν. Α. Χ.

**Μουσιούντας** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Μεσούντα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσίρης** (ὁ) (ἐκ τοῦ ἀραβοτουρκικοῦ *μουσίρ*)· ὁ ἀνώτατος τουρκικὸς στρατιωτικὸς βαθμοφόρος, στρατάρχης, ἀρχηγός.

**Μουσιώνας**, ἢ *Μοσχιώνας [Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κορθίου τῆς ἐπαρχίας Ἄνδρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 135. Χ. Δ.

**Μουσιωτίτσα, *Ἄνω* καὶ *Κάτω***—*[Γεωγρ.]*. Δύο χωρία τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦντα τὴν κοινότητα *Μουσιωτίτσης*. Ἔχουσι ταχυδρομικὸν γραφεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) τὸ μὲν πρῶτον 124, τὸ δὲ δεύτερον 455. Χ. Δ.

**μουσκάδων** ***βούτυρον***· βλ. *μοσχοβούτυρον*.

**μουσκαρεύω**· ἰδιωματ., εἰρωνεύομαι, ἐμπαίζω, ἰδίᾳ διὰ μορφασμῶν.

**μουσκάρι** (τό)· δημοτ., τὸ νεογνὸν τοῦ βοός, μόσχος· ‖ μεταφ., ἀνόητος, μωρός, βραδύνους.—Ὑποκορ. *μουσκαράκι*.

**Μουσκαρία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ΒΑ. Ταρρακωνικῆς Ἱσπανίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Β, 6, 66) ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Οὐασκόνων, ἀπέχουσα τῆς πόλεως Σετίας (νῦν Eja) 28 μίλλια. Ταυτίζεται πρὸς τὴν σημερινὴν Santacara a Labarre. Α. Θ. Σ.

**μουσκαρίνη** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *ἀμιναχετάλη*.

**μουσκάτιον** ***βούτυρον***· βλ. *μοσχοβούτυρον*.

**Μουσκάτο** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Δωδεκανησιακὸς λιμὴν (πλάτ. 37°19' Β., μηκ. 26°44' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1574 : Patmos Arki and Lipso islands) κατὰ τὴν ΒΔ. ἄκραν τῆς νήσου Λειψῶ. Σ. Ε. Λ.

**Μουσκελὶν** ***Σκανδερμπέγκ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἄλλη ὀνομασία τοῦ ἀλβανικοῦ ἀκρωτηρίου *Ροδώνη* (βλ. λ. *Μουζλῆ*). Σ. Ε. Λ.

**μούσκεμα** (τό)· *μούσκευμα* (βλ. λ.).

**μουσκετάρισμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μουσκετάρω, τουφεκισμός, ἄλλως *μουσκέτο*.

**μουσκετάρω**· δημ., φονεύω διὰ τουφεκισμοῦ.

**μουσκετισμὸς** (ὁ)· πυροβολισμὸς πολλῶν ὁμοῦ πυροβολούντων, συμπυροβόλησις.

**μουσκέτο** (τό)· εἶδος ὅπλου· ‖ ἡ διὰ τουφεκισμοῦ θανάτωσις, ἄλλως *μουσκετάρισμα* : «μουσκέτο ποὺ σοῦ χρειάζεται» (ἐκ τοῦ ἰταλ. moschetto).

— *[Ἐγκυκλ.] Μουσκέτον* (mousquet) ἐκαλεῖτο τυφέκιον ἀρχεγόνου τύπου, ἐμφανισθὲν περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἔχον μῆκος κυμαινόμενον μεταξὺ 1,40—1,60 μ., διαμέτρημα 16 χστ., βάρος περὶ τὰ 6 χιλιόγρ. καὶ βεληνεκὲς 200 μ., βάλλον δὲ μίαν βολὴν ἀνὰ πέντε πρῶτα λεπτὰ τῆς ὥρας. Ἐπειδή, λόγῳ τοῦ τοιούτου βάρους καὶ τοῦ τοιούτου μήκους, εὐστάθεια κατὰ τὴν βολὴν δὲν ἠδύνατο νὰ ὑπάρχῃ, δι' αὐτὸ τὸ μουσκέτον ἐστηρίζετο κατὰ τὴν βολὴν ἐπὶ δικράνου (fourche) ἐμπηγνυομένου ἐντὸς τοῦ ἐδάφους. Ἡ διὰ μουσκέτου βολὴ καθίστατο προβληματικὴ καὶ ἐνίοτε τελείως ἀδύνατος ὑπὸ βροχὴν (πυρῖτις καὶ θρυαλλὶς διάβροχοι), καθὼς καὶ ἐπὶ ἐδάφους βραχώδους (ἀδύνατος ἡ ἔμπηξις τοῦ δικράνου) (βλ. καὶ λ. *τυφέκιον*). Ν. Θ. Κ.

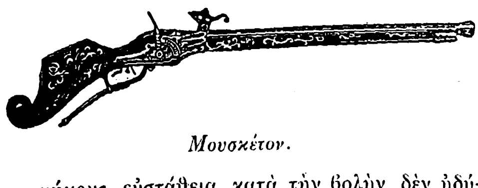

*Μουσκέτον*.

**μουσκετοφόρος** (ὁ) (mousquetaire). Ἐκαλεῖτο οὕτω κατὰ τοὺς ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνας ὁ πεζὸς στρατιώτης ὁ ὡπλισμένος διὰ *μουσκέτου* (βλ. λ.). Κατὰ τὰς ἐποχὰς ἐκείνας οἱ *μουσκετοφόροι* (*τυφεκιοφόροι*, κατὰ τὴν ἑλληνικὴν ἔκφρασιν) ἀπετέλουν τὸ ἥμισυ τῆς δυνάμεως ἑνὸς λόχου, τοῦ ἑτέρου ἡμίσεος ἀποτελουμένου ἐκ *δορατοφόρων* (piquiers). Βραδύτερον, διὰ τοῦ ὅρου *μουσκετοφόρος* ἀπεκαλεῖτο ἡ σωματοφυλακὴ (φρουρὰ) τῶν βασιλέων τῆς Γαλλίας Λουδοβίκου ΙΓ' καὶ Λουδοβίκου ΙΔ', ἡ ἀποτελουμένη κατὰ τὸ πλεῖστον ἐξ εὐγενῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Ν. Θ. Κ.

**μούσκευμα** (τό), καὶ *μούσκεμα*· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουσκεύω, διαβροχή, διύγρανσις : «τὸ παννὶ θέλει μούσκεμα νὰ πήξῃ» ‖ «γίνομαι μούσκεμα» γίνομαι διάβροχος, μουσκεύομαι : «μᾶς ἔπιασε ἡ βροχὴ 'ς τὸ δρόμο καὶ ἐγίναμε μούσκεμα».

**μουσκεύω**, *ἀόρ. ἐ)μούσκεψα—ἐ)μουσκέφτηκα, παθ. μετχ. μουσκεμένος*· δημοτ., καθιστῶ τι διάβροχον, κατανοτίζω : «μουσκεύω τὸ παννί,— τὸ .σχοινί,— τὸ πετσί» ‖ παθ., γίνομαι διάβροχος, βρέχομαι : «κάθε φορὰ ποὺ θὰ πλύνῃ μουσκεύεται ὡς ἀπάνω» ‖ ὁμοίως τὸ ἐνεργ. ἀμεταβ. : «ἄφησα τὸ σχοινὶ 'ς τὸ ὑπόγειο καὶ μούσκεψε ἀπὸ τὴν ὑγρασία».

**μουσκίδι** (τό)· δημοτ. συνήθ. εἰς τὴν φρ. «γίνομαι μουσκίδι» γίνομαι μούσκεμα, δ.αβρέχομαι ἐντελῶς.

**μουσκιρούμι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λεοπολδία ἡ πολύκομος*.

**μούσκλι** (τό), καὶ *μούσκλια [Βοτ.]*. Καλοῦνται οὕτω κοινῶς τὰ *βρύα*.

**μοῦσκλο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ καρποῦ τῆς *μεσπιλέας* (βλ. λ.).

**Μουσκοβὶ** (οἱ) (Muskovi). Ἰνδικὸς λαὸς τῆς Ν. Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μασκοΐ*).

**Μοῦσκοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Ἀρχαῖος λαὸς τῆς Μ. Ἀσίας, κατοικῶν ἑκατέρωθεν τοῦ Ἄνω Εὐφράτου καὶ ἐκτεινόμενος πρὸς Δ. μέχρι τοῦ Ἅλυος, ἐξαφανισθεὶς κατὰ τὸν Ζ' π. Χ. αἰῶνα ὑπὸ τῶν ἐπιδραμόντων τὴν χώραν Σκυθῶν. Α. Θ. Σ.

**μουσκολάχανο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ ἐρώδιον ὁ μόσχοσμος (βλ. λ. *ἐρωδιός*).

**Μούσκρουν** (Moescroen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου (βλ. *Μουκρόν*).

**Μουσλοὺκ** ***Δελῆ*** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἕβρου χωρίου *Δελήτιον* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσλούκι** (τό)· ἰδιωμ., κρουνός, κοιν. *ρουμπινὲς* (τουρκ. musluk).

**μουσμουλιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μεσπιλέα ἡ γερμανική*.

**μούσμουλο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ καρποῦ τῆς *μεσπιλέας*· ἄλλως *μέσπιλον*.

**μουσόληπτος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ οἱονεὶ ὑπὸ τῶν Μουσῶν κατειλημμένος, ἐμπνευσμένος, ἐνθουσιῶν.

**Μουσονίτσα**, *Ἄνω — [Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παρνασσίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται κατὰ τὰς ΒΑ. ὑπωρείας τῶν Βαρδουσίων, 1 ὥραν ΝΔ. τοῦ Μαυρολιθαρίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 595.

— **Μουσονίτσα**, *Κάτω — [Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παρνασσίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται παρὰ τὴν Ἄνω Μουσονίτσαν καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 324. Χ. Δ.

**μουσοτραφὴς** (ὁ, ἡ), —*ὲς* (τό)· ὁ οἱονεὶ ὑπὸ τῶν Μουσῶν τεθραμμένος, πεπαιδευμένος.

**Μουσουλῆ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Χαροκοπειοῦ τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 129. Χ. Δ.

**Μουσουλίκης**. Στρατηγὸς Βυζαντινός. Διατελῶν ἐπὶ Βασιλείου Α' τοῦ Μακεδόνος (867—886) διοικητὴς τοῦ θέματος Κεφαλληνίας, συμμετέσχεν εἰς τὴν ὑπὸ τὸν ναύαρχον Νάσαρ νικηφόρον ἐκστρατείαν κατὰ τῶν ἐν τῇ Ν. Ἰταλίᾳ καὶ Σικελίᾳ Ἀράβων (βλ. λ. *Νάσαρ*). Ν. ΚΛΣ

**Μουσουλίτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀμμοχώστου, συνδεόμενον σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς πόλεως Ἀμμοχώστου. Κάτ. περίπου 250, πάντες Ἕλληνες. Α. Κ. Α.

**μουσουλμανικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μουσουλμάνους, ὁ τῶν Μουσουλμάνων : «μουσουλμανικὰ τεμένη», «μουσουλμανικὸν δίκαιον».

—**Μουσουλμανικαὶ** ***κοινότητες***. Παρ' ἡμῖν διὰ τοῦ ὑπ' ἀριθ. 2345 ἀπὸ 1920 νόμου ἡ διοίκησις καὶ διαχείρισις τῶν μουσουλμανικῶν κοινοτήτων, ἰδίᾳ ...
τῶν βακουφικῶν τῆς κατηγορίας *μεαρίφ*, ἀνήκει ...
παρ' ἑκάστῃ μουφτίᾳ διαχειριστικῇ ἐπιτροπείᾳ ...
Α') ἀποτελεῖται ἐξ ἑπτὰ μέχρι δώδεκα μελῶν, ...
ἐκλέγουσιν ἐξ αὐτῶν τὸν πρόεδρον, ἐκπροσω-
ποῦντα τὰς περιουσίας ταύτας ἔναντι τῶν ἰδιωτ-
καὶ τῶν δημοσίων ἀρχῶν, καὶ ἀντιπρόεδρον ...
πληροῦντα τὸν πρόεδρον κωλυόμενον ἢ ἀπόντα.
Β') Ἐκλέγεται ἐπὶ τριετίαν ὑπὸ τῶν Μουσουλμά-
νων τῶν ἐγγεγραμμένων ἐν τῷ ἐκλογικῷ κατα-
τῆς πόλεως, ἐν ᾗ προεδρεύει ὁ μουφτῆς, καὶ ...
οὗτοι ὦσιν ἐλάσσονες τῶν διακοσίων, τῶν ἐκλ...
ὁλοκλήρου τῆς περιφερείας τοῦ μουφτῆ. ...
ναι ἐκλόγιμοι οἱ μουφτῆδες καὶ οἱ ὑπάλληλοι ...
μουφτιῶν ἢ τῶν ἐπιτροπῶν τούτων, οἱ μουτεβελῆ-
δες τῶν βακουφικῶν περιουσιῶν καὶ οἱ κατ' ...
θεῖαν ἢ ἐκ πλαγίου μέχρι δευτέρου βαθμοῦ συγ-
γενεῖς αὐτῶν, ἐφ' ὅσον δὲν ἔχουσιν ὑποβάλει ...
τὰς ἐκλεγησομένας διαχειριστικὰς ἐπιτροπείας λ-
γοδοσίαν τῆς διαχειρίσεως αὐτῶν καὶ δὲν ἔχου...
ἀπαλλαγῇ τῆς ἐκ ταύτης εὐθύνης, ὡς καὶ οἱ ἐστε-
ρημένοι τῶν πολιτικῶν αὐτῶν δικαιωμάτων. Γ')
Συντάσσει προϋπολογισμὸν τῶν ἐσόδων καὶ τῶν
ἐξόδων, ἅτινα συνίστανται κυρίως εἰς τὰς ἀποδο-
χὰς τῶν θρησκευτικῶν λειτουργῶν τῆς περιφε-
ρείας; τὰς δαπάνας ἐκπαιδεύσεως, ἔξοδα παραστά-
σεως καὶ ὁδοιπορικὰ τῶν μουφτήδων καὶ τῶν
προέδρων τῶν ἐπιτροπειῶν, μισθοὺς τοῦ προσω-
πικοῦ τῶν μουφτιῶν καὶ τῶν κοινοτήτων, δικαιώ-
ματα τῶν μουτεβελήδων, ἐπισκευὰς βακουφικῶν
κοινοτικῶν καὶ σχολικῶν κτηρίων, δαπάνας ἱδρύ-
σεως καὶ λειτουργίας φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων
κτλ. Δ') Διοικεῖ τὰ κοινοτικὰ μουσουλμανικὰ σχο-
λεῖα, διορίζει καὶ παύει τὸ προσωπικὸν αὐτῶν, ...
καὶ τοὺς ὑπαλλήλους τῶν κοινοτήτων, πλὴν τῶν
θρησκευτικῶν λειτουργῶν καὶ τοῦ προσωπικοῦ τῶν
ἱεροδικαστηρίων, ὑπαγομένων εἰς τὸν οἰκεῖον μου-
φτῆν. Διὰ τοῦ ἀπὸ Ἰουνίου 1922 νόμου ὑπ' ἀριθ.
2782 ὡρίσθη ἵνα ἐν τῷ ἐτησίῳ προϋπολογισμῷ
τοῦ ὑπουργείου τῶν Θρησκευμάτων ἀναγράφηται
πίστωσις διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν Ὀθωμανῶν, ...
ποσοῦ ὁριζομένου ἐπὶ τῇ βάσει ἐκθέσεως τῶν ...
μοδίων ἀρχῶν.

Κατὰ τὸ ἐπὶ τοῦ ἄρθρου 28 τοῦ νόμου ...
ἐρειδόμενον ἀπὸ 30 Νοεμβρίου 1925 διάταγμα ...
Μουσουλμᾶνοι τὸ θρήσκευμα κάτοικοι Θράκης
οἱ κεκτημένοι τὰς ἐννόμους τοῦ ἐκλογέως ἰδιότη-
τας, θὰ ἐγγραφῶσιν ἐν ἰδίοις καταλόγοις συντα-
χθησομένοις κατὰ δήμους ἢ προκειμένου περὶ
ἐκλογέων δημοτῶν κοινοτήτων κατὰ περιφερείας
εἰρηνοδικείων. Πρὸς σύνταξιν τῶν τοιούτων κατα-
λόγων συγκροτοῦνται ἐπιτροπεῖαι τριμελεῖς, ἀποτε-
λούμεναι ἐκ τοῦ εἰρηνοδίκου ἢ πταισματοδίκου
τοῦ νομίμου αὐτῶν ἀναπληρωτοῦ, ὡς προέδρου,
τοῦ μουφτῆ, ἐλλείψει δὲ τοιούτου, ἑνὸς προκρίτου
Μουσουλμάνου, ὁριζομένου ὑπὸ τοῦ προέδρου τῆς
ἐπιτροπείας καὶ τοῦ οἰκείου δημάρχου ἢ προέδρου
τῆς κοινότητος ὡς μελῶν. Οἱ πρόεδροι τῶν κατὰ
τὰ εἰρημένα ἐπιτροπειῶν διορίζονται ὑπὸ τοῦ Ἀ-
ρείου Πάγου. Τὰ τοῦ γραμματέως παρ' ἑκάστῃ ἐπι-
τροπείᾳ ἐκτελεῖ εἷς ἐκ τῶν ἐγγύτερον ὑπηρετούν-
των διδασκάλων, ὑπὸ τοῦ προέδρου τῆς ἐπιτρο-
πείας ὁριζόμενος (βλ. καὶ λ. *μουφτῆς* καὶ *μουφ*...
Κ. Μ. ΡΑ...

—**μουσουλμανικὴ** ***τέχνη*** *[Τεχν.]*· βλ. λ. *ἰσλαμ...*
*τέχνη*.

— **μουσουλμανικὸν** ***δίκαιον***. Ἡ νομοθεσία τῶν
Μουσουλμάνων τοὺς θεσμοὺς ἐν γένει καὶ τοὺς
κανόνας της ἠρύσθη ἐκ τοῦ Κορανίου καὶ τῶν
συμπληρωμάτων αὐτοῦ. Οἱ Μουσουλμᾶνοι πιστεύ-
ουσιν ὅτι ὁ Θεός, ὁ ἀνοίξας εἰς τὸν ἐκλεκτὸν λαὸν
τὴν ὁδὸν τῆς σωτηρίας, εἶναι ἡ πηγὴ πάσης νο-
μοθεσίας. Ἵνα δὲ τὸν ὁδηγήσῃ εἰς τὴν ὁδὸν ταύ-
την ὁ Θεὸς διέγραψε κανόνας, ἐξ ὧν οἱ μὲν περιέ-
χονται ἐν τῷ Κορανίῳ, οἱ δὲ ἐν τοῖς λόγοις τοῦ
ἐμπνευσμένου προφήτου του. Ἡ διαχαραχθεῖσα
οὕτως ὁδὸς ὀνομάζεται παρὰ τοῖς Μουσουλμάνοις
*σεριάτ*, ὁ ὁδηγός, δηλαδὴ ὁ νομοθέτης Μωάμε...
*σεριί*. Τὸ σύνολον τῶν κανόνων τούτων (σεριάτ)
ὀνομάζεται *ἀχκιάμ*. *Ἴλμι σὲρ* (=γνῶσις τοῦ νόμου)
ὀνομάζεται ἡ ἐπιστήμη, ἥτις ἔχει ἀντικείμενον τὸ
σύνολον τῶν ἀναγομένων εἰς τὸν Ἰσλαμισμὸν κα-
νόνων, εἴτε ἀφορώντων τὸ δόγμα καὶ τὰς ἱεροτε-
λεστίας, εἴτε τὸν δημόσιον καὶ ἰδιωτικὸν βίον.
*Σέρ-αν* σημαίνει ἔν τε τῇ κοινῇ καὶ τῇ νομικῇ
γλώσσῃ πᾶσαν πρᾶξιν μὴ ἀντιβαίνουσαν εἰς τοὺς
θεμελιώδεις τοῦ Ἰσλαμισμοῦ κανόνας.

Τὰ κυριώτερα κεφάλαια τοῦ Κορανίου, τὰ περιέ-
χοντα νομικὰς διατάξεις, ἀναμεμιγμένας μετὰ κα-
νόνων ἐπὶ τῶν ὑποθέσεων τοῦ συνήθους βίου,
εἶναι τ' ἀκόλουθα : Τὸ β' κεφάλαιον, «Ἡ Β...
πραγματεύεται περὶ διαθηκῶν, περὶ νηστειῶν, περὶ
προσκυνητῶν, περὶ ἐλεημοσύνης, περὶ τοῦ κατὰ
τῶν ἀπίστων πολέμου, περὶ γάμου, περὶ ὅρκων,
περὶ διαζυγίου, περὶ γαμικῶν δωρεῶν, περὶ χηρεί-
μονίας, περὶ τροφῶν, περὶ προσευχῶν, περὶ τόκου,
περὶ συναλλαγμάτων καὶ μαρτύρων. Τὸ δ' κεφά-
λαιον, «Αἱ γυναῖκες», περιλαμβάνει τοὺς κανό-
νας περὶ ὀρφανῶν καὶ τῆς περιουσίας των,
περὶ ἐπιτρόπων, περὶ προικός, περὶ διανομῆς τῆς
κληρονομίας, περὶ πορνείας, μοιχείας καὶ παιδερ...

Digitized by Google

στίας, περὶ νομίμου καὶ ἀπηγορευμένου γάμου, περὶ τιμωρίας τῶν γυναικῶν, περὶ ὑποταγῆς εἰς τὴν ἀρχήν, ἱεροῦ πολέμου, φόνων καὶ μαρτυριῶν. Τὸ κεφάλαιον θ΄ «Ὁ ἁγιασμός», περιέχει ὡσαύτως διατάξεις τινὰς περὶ ὅρκου. Τὸ κεφάλαιον ιζ΄ «Ἡ νυκτερινὴ ὁδοιπορία», περιέχει κανόνας καὶ τοῦτο περὶ φόνου, περὶ ἐκδικήσεως καὶ περὶ τῆς περιουσίας τῶν ἀνηλίκων. Τὸ κεφάλαιον κδ΄, «Τὸ φῶς», πραγματεύεται περὶ τῆς εἰς τὸν μοιχὸν ἐπιβαλλομένης ποινῆς, περὶ δυσφημίας, περὶ παραβιάσεως τῆς κατοικίας, περὶ ἱματισμοῦ τῶν γυναικῶν, περὶ ἀπελευθερώσεως τῶν δούλων καὶ περὶ τῆς μεταξὺ κυρίων καὶ ὑπηρετῶν σχέσεως.

Τὸ Κοράνιον, ἀτελέστατον ὡς κῶδιξ τῶν νόμων, ἄνευ συστήματος καὶ ἐσωτερικῆς μεθόδου, πλῆρες ἀντιφάσεων, ἐπαναλήψεων καὶ σκοτεινῶν ἢ ἀμφιβόλων χωρίων, ἐπιπόλαιον ἐπὶ πολλῶν οὐσιωδῶν κανόνων, ἀποσιωπῶν πολλὰ ἐκ τῶν οὐσιωδῶν δογμάτων καὶ νόμων, ἀλλ᾽ ἁρμόζον κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον εἰς τὸν ἁπλοῦν καὶ πατριαρχικὸν ὀργανισμὸν τοῦ ἀστικοῦ καὶ πολιτικοῦ βίου τοῦ ἀραβικοῦ λαοῦ καὶ εἰς τὸν νηπιώδη πολιτισμόν του, δὲν ἠδύνατο μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μωάμεθ νὰ ἐπαρκῇ πλέον ὡς γνώμων ἐφ᾽ ὅλων τῶν θεολογικῶν ζητημάτων, δηλαδὴ ἐφ᾽ ὅλων τῶν δογματικῶν, κατὰ τὰς ἀστικὰς ἰδέας θρησκευτικῶν καὶ νομικῶν ζητημάτων. Ὅθεν ἠναγκάσθησαν, ὅπου τὸ Κοράνιον ἐτήρει σιωπήν, νὰ προσφεύγωσιν εἰς τὰς ὑπὸ τοῦ προφήτου γενομένας προφορικὰς ἐξηγήσεις καὶ εἰς τὰ παραδείγματα τοῦ δημοσίου καὶ ἰδιωτικοῦ αὐτοῦ βίου (Χαδίς)· καὶ ὁσάκις ἡ πηγὴ αὕτη ἐξηντλεῖτο, νὰ καθιερῶσιν, ὡς θρησκευτικοὺς κανόνας καὶ ἀρχάς, τὰς ἀποφάσεις τῶν ἰμαμῶν, δηλαδὴ τῶν καλιφῶν, οἵτινες περιεβλήθησαν μὲ τὴν ὑψηλοτέραν πνευματικὴν ἐξουσίαν (Ἰδζμανὶ-Οὐμμέτ). Πρὸς συμπλήρωσιν προσέτι τοῦ θρησκευτικοῦ καὶ νομικοῦ συστήματος τοῦ Ἰσλαμισμοῦ, ἔδωκαν ἰσχὺν νόμου εἰς τὰς διατάξεις καὶ τὰ ψηφίσματα καὶ τὰς ἀποφάσεις, αἵτινες εἰς παρομοίας περιστάσεις ἐξεδόθησαν ὑπὸ τῶν καλιφῶν τοῦ Α΄ αἰῶνος τῆς Ἐγίρας καὶ τῶν θεμελιωτῶν τῶν διαφόρων θρησκευτικῶν αἱρέσεων (κιγιὰς ἢ μααχούλη καὶ Ἰτιμπὰρ - οὺλ - Ἐμπάλ).

Ἡ κατάστασις αὕτη, ὡς ἦτο ἑπόμενον, ἐδημιούργησε πλείστας αἱρέσεις εἰς τοὺς κόλπους τοῦ Ἰσλαμισμοῦ, αἱ μεταξὺ τῶν ὁποίων διαφοραὶ ἀνάγονται εἴτε εἰς τὰ δόγματα τῆς πίστεως, εἴτε εἰς τὴν ἐξάσκησιν τῶν θρησκευτικῶν καθηκόντων καὶ τοὺς νόμους τοῦ ἰδιωτικοῦ δικαίου. Αἱ δὲ σημαντικώτεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι ἡ αἵρεσις Σουννῆ καὶ ἡ Σιά.

Ἡ ἐπιστήμη τῶν νόμων διαιρεῖται εἰς δύο μέρη: *Ἰλμὶ-κελὰμ* καὶ *Ἴλμι φίκχ*, ἤτοι ἡ *νομοθεσία*. Τὸ μὲν πρῶτον εἶναι ἡ θεωρητικὴ καὶ δογματικὴ γνῶσις τῆς πίστεως, ἔχουσα ἀντικείμενον τὴν ἀνάπτυξιν τῶν ἀναγομένων εἰς τὸ οὐσοὺλ-ἐδδὶν κανόνων, ἤτοι εἰς τὰς θεμελιώδεις ἀρχὰς τῆς θρησκείας. Τὸ δὲ δεύτερον περιλαμβάνει τὸ σύνολον τῶν θεσμῶν, οἵτινες κανονίζουσι τὴν πρακτικὴν ἐξάσκησιν τῆς θρησκείας καὶ ἅπαντα τὸν πολιτικὸν βίον τῶν Μουσουλμάνων. Ὅθεν ἡ ἐντελὴς γνῶσις τῆς ἐπιστήμης ταύτης εἶναι ἀπαραίτητος εἰς τοὺς δικαστὰς (καδῆ), πρὸς ἔρευναν καὶ ἐκδίκασιν τῶν δικῶν καὶ τῶν ἐκ τῶν τοῦ ἰδιωτικοῦ βίου σχέσεων ἀναφυομένων ἐρίδων.

Ἡ νομοθεσία περιλαμβάνει τὰ τέσσαρα ἑπόμενα μέρη:

α) *Ἰβαδάτ*, ἤτοι τὴν ἐξάσκησιν τῆς θρησκείας.

β) *Οὐκουδάτ*, ἤτοι τὴν θεωρίαν τῶν συναλλαγμάτων, τὸ σύνολον δηλαδὴ τῶν κανόνων τῶν διεπόντων τὰς τοῦ ἀστικοῦ βίου εἰς τὴν ἀμοιβαίαν συναίνεσιν στηριζομένας σχέσεις, τὸν γάμον, τὰ ἀμφοτεροβαρῆ συναλλάγματα, τὰς συμβάσεις, τῶν ὁποίων σκοπὸς εἶναι ἡ ἐπίρρωσις αὐτῶν, τὴν δωρεάν, τὰς διαθήκας, τὰ περὶ ἀφιερωμάτων καὶ διακατοχῆς, τὰ περὶ συμβιβασμοῦ καὶ πτωχεύσεως.

γ) *Ἰκιάτ*, ἤτοι τὰς ἰδιωτικὰς σχέσεις τὰς στηριζομένας ἐπὶ τῆς μονομεροῦς δηλώσεως τῆς βουλήσεως, ἐν αἷς τὸ διαζύγιον καὶ αἱ εἰς τὴν δουλείαν ἀναγόμεναι διατάξεις, κανόνες τινὲς διαδικασίας, ὡς οἱ περὶ ὁμολογίας καὶ ὅρκου, καὶ τὸ κεφάλαιον τὸ ἀφορῶν τὸ τάξιμον καὶ τὴν μετάνοιαν.

δ) *Ἀχικάμ*, ἤτοι τοὺς κοινοὺς περὶ τοῦ βίου κανόνας: δηλαδὴ τὸ σύνολον τῶν εἰς τὸν πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν βίον τῶν Μουσουλμάνων ἀναγομένων θεσμῶν, τοὺς ὁποίους οὗτοι ὀφείλουσι νὰ τηρῶσιν ἀδιαλείπτως· ἐνταῦθα ἐκτίθενται οἱ κανόνες περὶ τῆς δημοσίας δυνάμεως, τῆς ἰδιοκτησίας, περὶ τοῦ καδῆ, περὶ τοῦ δικαιώματος τῆς διαδοχῆς, περὶ μαρτυρίας, περὶ τοῦ δικαιώματος προτιμήσεως, περὶ θήρας, περὶ ζῳοκτονίας, περὶ φαγητῶν καὶ ποτῶν, τέλος δὲ περὶ τοῦ ποινικοῦ δικαίου, περὶ ἐκδικήσεως καὶ ἀποζημιώσεως.

Κατὰ τὸ μουσουλμανικὸν δίκαιον εἰς τὰς πολιτικὰς ὑποθέσεις τρία ἐνδεικτικὰ μέσα ὑπάρχουν: ἡ ὁμολογία (ἰκράρ), ἡ μαρτυρικὴ ἀπόδειξις (νεχαδάτ), καὶ ὁ ὅρκος (γεμέν). Τὰ ἔγγραφα δὲν ἀποτελοῦσιν ἀρκοῦσαν ἀπόδειξιν, ὥστε ἐπ᾽ αὐτῶν νὰ στηριχθῇ δικαστικὴ ἀπόφασις, ἀλλ᾽ ἀπαιτοῦνται μαρτυρικαὶ καταθέσεις πρὸς ἐνίσχυσιν καὶ νομιμοποίησιν τῶν ἀποδεικτικῶν τούτων μέσων. Ἐπὶ ποινικῶν ὑποθέσεων τὰ μόνα ἀποδεικτικὰ μέσα εἶναι ἡ ὁμολογία καὶ ἡ μαρτυρικὴ ἀπόδειξις.

Ἐν Τουρκίᾳ τὸ μουσουλμανικὸν δίκαιον ἔπαυσε παντελῶς νὰ εἶναι ἐν ἰσχύϊ ἀπὸ τοῦ Ἰουνίου 1926, ὁπότε ἐδημοσιεύθη ὁ νέος τουρκικὸς ἀστικὸς κῶδιξ, παραληφθεὶς ἐκ τῆς ἑλβετικῆς νομοθεσίας, ἥτις ἐχρησίμευσεν ὡς βάσις τῆς ἀναπλάσεως τοῦ συνόλου τῶν τουρκικῶν νομικῶν θεσμῶν.

Μ. ΚΑΤΙΝΑΚΗΣ

—**μουσουλμανικὸν** ***ἡμερολόγιον*** *[Χρονολ.]*· βλ. λ. *ἡμερολόγιον*.

**μουσουλμανισμὸς** (ὁ) *[Θρησκειολ.]*· βλ.λ. *Ἰσλαμισμός*.

**Μουσουλμᾶνος** (ὁ)· Μωαμεθανός, ὁ ἀσπαζόμενος τὴν θρησκείαν τοῦ Μωάμεθ (ἐκ τοῦ περσικοῦ *μουσλιμὰν*=οἱ πιστοί).

**Μουσουλοῦ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Στενῆς τῆς ἐπαρχίας Τήνου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 123. Χ. Δ.

**μουσουλοὺκι** (τὸ) (ἀραβοτουρκ. *μουσλούκ*)· στρόφιγξ ὕδατος, ὀρσύδρα, κρουνός, ρομπινέ.

**Μουσουλοὺμπεη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Λευκοχώρι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσουνητὸ** (τό)· βλ. λ. *μουθουνητό*.

**μουσουνίζω**· βλ. *μουθουνίζω*.

**Μούσουνοι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς, κατοικῶν κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. Δ, 3, 6) εἰς τὰ ἀνατολικὰ τῆς Μαυριτανίας Καισαριηνσίας, πρὸς Δ. τῆς Σιτίφεως (νῦν Sétif). Α. Θ. Σ.

**Μούσουρχς,** ***Ἱερόθεος.*** Κληρικὸς γεννηθεὶς ἐν Ζακύνθῳ. Ἐγένετο ἡγούμενος τῆς ἐν τῇ νήσῳ μονῆς τοῦ Ἁγίου Γεωργίου τῶν Κρημνῶν καὶ ἔγραψε προλεγόμενα εἰς τὴν ἑρμήνειαν Θεοδωρήτου, ἐπισκόπου Κύρου, τῶν ψαλμῶν Ἀθανασίου, Βασιλείου κτλ., ἀποκειμένων ἐν κώδικι τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος. Λ. Χ. Σ.

**μουσούργημα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουσουργεῖν, μουσικὴ σύνθεσις, ἔργον μουσικόν.

**μουσουργῶ** (*—έω*)· εἶμαι μουσουργός, ἀσχολοῦμαι εἰς τὴν μουσικήν, συνθέτω μουσικὰ ἔργα.

**Μουσούρης,** ***Σπῦρος.*** Ἕλλην ποιητὴς καὶ λογοτέχνης, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Φῶτος *Γιοφύλλης* (βλ. λ.).

**Μουσοῦρος** (***Γκύκης*** ἢ ***Γύγγης***), ***Βασίλειος.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Γεωργίου Μουσούρου-Γκύκη, κτηματίου ἐν Ρουμανίᾳ, καὶ ἔγγονος τοῦ Βασιλείου Γύγγη, Διεκρίθη ὡς διπλωμάτης καὶ γραμματεὺς ἰδιαίτερος τοῦ σουλτάνου Χαμήτ, ὡς γενικὸς πρόξενος τῆς Τουρκίας ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ μετὰ ταῦτα ὡς σύμβουλος τῆς Ἐπικρατείας. Ἐν τῷ μεταξὺ κατεδιώχθη παρὰ τοῦ σουλτάνου Χαμήτ, εἰς ὃν ἐγένοντο γνωσταὶ αἱ φιλελεύθεραι ἀρχαὶ τοῦ πρῴην ἰδιαιτέρου του γραμματέως, καὶ ἐδέησε νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους, ὅπου συνειργάσθη μετὰ τοῦ πρίγκιπος Σαμπαχεδδὶν πρὸς ἀνατροπὴν τοῦ Χαμὴτ καὶ ἐπικράτησιν τῶν Νεοτούρκων. Τούτου ἐπιτευχθέντος, ὁ Βασίλειος Μουσοῦρος ἐκλήθη εἰς Κωνσταντινούπολιν παρὰ τῶν Νεοτούρκων, πλὴν ὅμως δὲν ἐβράδυνε νὰ διαπιστώσῃ ὅτι, παρὰ τὴν ψήφισιν Συντάγματος, οἱ Νεότουρκοι δὲν ἀφίσταντο τῶν δεσποτικῶν ἀρχῶν τῆς φυλῆς των, καὶ ἠναγκάσθη νὰ τοὺς ἀποκηρύξῃ καὶ νὰ καταφύγῃ καὶ αὖθις εἰς Παρισίους, ὅπου καὶ συνεστήθη ὁ «Σύλλογος τῶν ἀλυτρώτων», τοῦ ὁποίου καὶ ἐξελέγη πρόεδρος. Τῷ 1912, ὀλίγους μῆνας πρὸ τῶν Βαλκανικῶν πολέμων, ὁ ἀγγλόφρων Κιαμὴλ πασᾶς, σχηματίσας ὑπουργεῖον, μετεκάλεσεν ἐκ Παρισίων τὸν Μουσοῦρον καὶ τὸν συμπεριέλαβεν ὡς ὑπουργὸν τῶν Ταχυδρομείων καὶ Τηλεγράφων. Μετὰ τὴν νίκην τῶν συμμάχων βαλκανικῶν κρατῶν, ἡ Βουλγαρία ἐπεζήτησε τὴν συμμαχίαν τῆς Τουρκίας κατὰ τῆς Ἑλλάδος καὶ Σερβίας. Πρὸς τοῦτο εἶχεν ἀναθέσει εἰς τὸν στρατηγὸν Σαβὼφ τὴν ἐντολὴν νὰ προβῇ εἰς τὰς σχετικὰς διπραγματεύσεις. Αὗται διεξήγοντο ἐν κρυπτῷ μετὰ τῶν διαφόρων ὑπουργῶν, ὅταν δὲ περιῆλθον εἰς γνῶσιν τοῦ Μουσούρου, ἔσπευσεν οὗτος νὰ ἀνακοινώσῃ τὸ πρᾶγμα εἰς τὸν πρωθυπουργὸν Κιαμήλ, ἀπὸ τὸν ὁποῖον ἐτηροῦντο μυστικαὶ αἱ διαπραγματεύσεις, καὶ νὰ τῷ ἐξηγήσῃ τοὺς κινδύνους τῆς τοιαύτης συμμαχίας μετὰ τῆς Βουλγαρίας. Τῷ ἐδήλωσε δ᾽ ὅτι ἡ ἐπιτυχὴς ἔκβασις διὰ τὴν Βουλγαρίαν καὶ Τουρκίαν ἑνὸς τοιούτου πολέμου θὰ ἐσήμαινε τὴν ἐν οὐ μακρῷ χρόνῳ παράδοσιν τῶν κλειδῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως εἰς τὴν Βουλγαρίαν καὶ ὑπέδειξε τὴν ἀνάγκην τῆς ἐμμονῆς ἐν τῇ οὐδετερότητι ὑπὸ τὸν ὅρον τῆς ἀνακαταλήψεως τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης μετὰ τῆς Ἀδριανουπόλεως. Ὁ Κιαμὴλ ἐπείσθη καὶ τὴν ἐπομένην ἐλήφθη ἡ ἀπόφασις ἐν ὑπουργικῷ συμβουλίῳ τῆς τηρήσεως τῆς οὐδετερότητος, ὑπογραφείσης καὶ τῆς σχετικῆς συμβάσεως μετὰ τοῦ Σαβώφ. Τὰ ἀνωτέρω ὁ Μουσοῦρος ἔσπευσε νὰ ἐμπιστευθῇ εἰς τὸν Λεωνίδαν Ζαρίφην, ὅστις ἀνέλαβε νὰ τὰ ἀνακοινώσῃ πρὸς τὸν Ἐλ. Βενιζέλον. Ἀπέθανε τῷ 1924 ἐν ἐσχάτῃ ἐνδείᾳ εἰς Ἀθήνας, ὅπου κατέφυγεν ἐκ Κωνσταντινουπόλεως τῷ 1922, ἀφοῦ εἶχεν ὁμοθύμως ἐκλεγῇ τῷ 1920 πολιτικὸς σύμβουλος τῶν Πατριαρχείων. Γ. Μ. - Γ.

— **Μουσοῦρος,** ***Ἰωάννης.*** Κρὴς εἰκονογράφος, ζωγραφήσας δι᾽ ἐγκαυστικῆς τὰς εἰκόνας τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου τοῦ χωρίου Ἀπάνω Βιάννος τῆς Κρήτης, ἐν ἔτει 1401. ΕΡ. Μ.

— **Μουσοῦρος,** ***Ἰωάννης.*** Κρὴς λόγιος τοῦ ΙΒ΄ αἰῶνος, ἀδελφὸς πιθανῶς τοῦ *Μάρκου Μουσούρου*. Διατρίβων ἐν Βενετίᾳ, ἐγένετο μέλος τῆς Ἀλδιανῆς Ἀκαδημίας. Τὸ αὐτὸ ὄνομα ἔφερε καὶ ἕτερος Κρὴς λόγιος, ζήσας τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα, πρὸς ὃν ἀπευθύνονται αἱ ἐπιστολαὶ Μελετίου τοῦ Πηγᾶ. ΕΡ.Μ.

— **Μουσοῦρος,** ***Ἰωάννης.*** Λόγιος, υἱὸς τοῦ *Στεφάνου Μουσούρου*. Εἶναι ὁ πρῶτος Ἕλλην, ὅστις ἐξέδωκεν ἐν Κωνσταντινουπόλει ἑλληνικὴν ἐφημερίδα, τὸν «Φάρον τοῦ Βοσπόρου». Ἐπίσης εἶναι ὁ πρῶτος Ἕλλην, ὅστις διωρίσθη σύμβουλος τοῦ ἀνωτάτου δικαστηρίου τῆς ὀθωμανικῆς ἐπικρατείας, ἱδρυθέντος ἐπὶ σουλτάνου Ἀζίζ. Γ. Μ. - Γ.

— **Μουσοῦρος,** ***Κωστάκης.*** Υἱὸς τοῦ *Στεφάνου Μουσούρου*, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1809. Διαπρεπὴς ἑλληνιστὴς καὶ γλωσσομαθέστατος, ἐνυμφεύθη τὴν δευτερότοκον θυγατέρα τοῦ πρίγκιπος Βογορίδου, ἀπολαύοντος ὅσον οὐδεὶς τῆς εὐνοίας τοῦ σουλτάνου Μετζήτ. Διετέλεσε πρεσβευτὴς τῆς Τουρκίας ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ 1834 μέχρι τοῦ 1846, ὁπότε ἐγένετο αἴτιος σοβαροῦ διπλωματικοῦ ἐπεισοδίου, ἕνεκα τῆς ἀρνήσεως αὐτοῦ νὰ ἐπικυρώσῃ τὸ διαβατήριον τοῦ εἰς Τουρκίαν μεταβαίνοντος στρατηγοῦ καὶ βασιλικοῦ ὑπασπιστοῦ Τσάμη Καρατάσσου. Ἐκ τοῦ ἐπεισοδίου τούτου ἐπῆλθε διακοπὴ τῶν ἑλληνοτουρκικῶν σχέσεων, διαρκέσασα πλέον τοῦ ἔτους, τέλος δέ, τῇ μεσολαβήσει τοῦ τσάρου Νικολάου καὶ τοῦ Μεττερνίχου, διηυθετήθη ἡ διαφορά, ἐπανελθόντος τοῦ Μουσούρου εἰς Ἀθήνας. Ἀργότερον μετετέθη εἰς Βιέννην καὶ μετὰ τριετίαν εἰς Λονδῖνον, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινεν ἐπὶ 34 ἔτη, μέχρι τοῦ θανάτου του (1901). Ἡ Πύλη τῷ ἀπένειμε τὸν τίτλον τοῦ βεζύρου. Μετέφρασεν εἰς ἰαμβικοὺς στίχους καὶ ἀρχαΐζουσαν γλῶσσαν τὴν «Θείαν κωμῳδίαν» τοῦ Δάντου. ΕΡ. Μ.

*Κωστάκης Μουσοῦρος.*

— **Μουσοῦρος,** ***Μᾶρκος.*** Ἐπιφανέστατος Ἕλλην φιλόλογος τοῦ μέσου αἰῶνος, γεννηθεὶς ἐν Ρεθύμνῃ τῆς Κρήτης (πιθανώτατα) περὶ τὸ 1470 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ρώμῃ τῷ 1517.

Περὶ τῆς ἐν Κρήτῃ νεότητός του δὲν ἔχομεν ἱκανὰς εἰδήσεις· γνωρίζομεν μόνον ὅτι περὶ τὸ 1486 ἦλθεν εἰς Φλωρεντίαν, ἔνθα ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἰανῷ Λασκάρει. Τὰς δύο κλασσικὰς γλώσσας, τὴν ἑλληνικὴν καὶ λατινικήν, ἐξέμαθε βραδύτερον εἰς ἐκπλήσσοντα βαθμὸν τελειότητος. Φαίνεται ὅτι ἐξ Ἰταλίας ἐπανῆλθε πάλιν βραδύτερον εἰς Κρήτην πρὸς ἐπίσκεψιν τῆς οἰκογενείας του, πόσον χρόνον ὅμως διέτριψεν ἐν τῇ γενετείρᾳ του νήσῳ δὲν εἶναι γνωστόν. Ἀσφαλὲς εἶναι ὅτι τῷ 1494 διέτριβε πάλιν ἐν Ἰταλίᾳ, καὶ δὴ ἐν Βενετίᾳ. Ἐνταῦθα ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ Ἄλδου Μανουτίου, ὅστις ἐκτιμήσας τὴν εὐρυμάθειαν καὶ βαθύτητα τῶν γνώσεων τοῦ νεαροῦ Ἕλληνος λογίου προσέλαβεν αὐτὸν ὡς βοηθὸν καὶ ἐπιστημονικὸν ἐπόπτην πλείστων ἐκ τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ τὸ πρῶτον ἐκδοθέντων ἀρχαίων ἑλληνικῶν κειμένων ἐν τῷ ἀρτισυστάτῳ καὶ περιφήμῳ γενομένῳ τυπογραφείῳ του. Τῷ 1497 ἐδημοσιεύθη παρὰ τῷ Ἄλδῳ τὸ «Dictionarium graecum copiosissimum» μετ᾽ ἐπιγράμματος τοῦ Μουσούρου. Ἓν ἔτος βραδύτερον (1498) ἐδημοσιεύθησαν τῇ ἐπιστασίᾳ τοῦ Μ. Μουσούρου ἐννέα ἐκ τῶν κωμῳδιῶν τοῦ Ἀριστοφάνους («Πλοῦτος», «Νεφέλαι», «Βάτραχοι», «Ἱππῆς», «Ἀχαρνῆς», «Σφῆκες», «Ὄρνιθες», «Εἰρήνη», «Ἐκκλησιάζουσαι»). Ἡ φήμη τοῦ νεαροῦ Ἕλληνος λογίου ἀρχίζει νὰ διαδίδηται νῦν εὐρύτατα ἐν Ἰταλίᾳ, τῇ συστάσει δ᾽ ἴσως τοῦ Ἄλδου ὁ κόμις de Capri Ἀλβέρτος Pio προσέλαβε τὸν Μουσοῦρον ὡς καθηγητὴν καὶ βοηθὸν τῶν μελετῶν του, εἶχε δὲ αὐτὸν συχνότατα καὶ ὁμοτράπεζον φίλον του. Δεῖγμα τῆς πρὸς τὸν Μουσοῦρον εὐγνωμοσύνης τοῦ Ἀλβέρτου Πίου εἶναι ἡ ὑπὸ τούτου γενομένη δωρεὰ εἰς τὸν Ἕλληνα λόγιον μικροῦ ἀγροτικοῦ κτήματος, ἐξ οὗ οὗτος («ἀνὴρ πένης καὶ φιλόλογος») ἠδύνατο νὰ προσπορίζηται ἐξ ἀμέσου πηγῆς πολλὰ τῶν πρὸς τὸ ζῆν καὶ νὰ διαγάγῃ ἐπί τινα χρόνον ἐκεῖ βίον ἤρεμον καὶ ἀτάραχον («ὥστε ἐξεῖναί μοι τὸν ἐπ᾽ αὐλῆς κλύδωνα φεύγοντι ραστώνης ἐκεῖ καὶ ψυχαγωγίας ἐπιτυγχάνειν ὑπὸ τὰς φυταλιὰς κατακλινομένῳ ἐπὶ σμίλακος καὶ θύμου καὶ πόας εὐώδους καὶ εἰς τὸ βιβλίον ἀποβλέποντι»).

Παρὰ τῷ μνημονευθέντι κόμιτι Ἀ. Πίῳ φαίνεται ὅτι παρέμεινε μόνον ἓν ἔτος, τουτέστι μέχρι



Digitized by Google

τοῦ 1499, ὅτε ἐξέδωκεν εἰς δύο τόμους τοὺς «Ἕλληνας ἐπιστολογράφους». Ἄξιον ἰδίας μνείας εἶναι ὅτι ἐν τῷ προλόγῳ τῆς ἐκδόσεως ταύτης λέγει γενικά τινα περὶ τοῦ τρόπου τῶν ὑπ' αὐτοῦ παρασκευαζομένων ἐκδόσεων καὶ τῶν δυσχερειῶν ἃς συνήντα. Τὸ αὐτὸ ἔτος, ἐν συνεργασίᾳ πρὸς τὸν συμπατριώτην του Ζαχαρίαν Καλλιέργην, ἐξέδωκε τὸ «Μέγα Ἐτυμολογικόν», ἐν ᾧ πλεῖστα ὅσα πρῶτος μετὰ θαυμαστῆς ἀγχινοίας διώρθωσε. Τὸ ἑπόμενον ἔτος (1500) ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ Ἄλδου, τοῦ Ἰωάννου Γρηγοροπούλου καὶ Σκιπίωνος Καρτερομάχου ἡ λεγομένη «Νέα Ἀκαδημία», ἑταιρεία τις λογίων πρὸς προαγωγὴν τῶν ἑλληνικῶν σπουδῶν, εἰς ἣν πάντως προσήρχετο καὶ ὁ Μουσοῦρος, ἀλλ' ἀμφίβολον ἂν ὡς τακτικὸς αὐτῆς ἑταῖρος. Νέον ἀξίωμα ἀνέλαβεν ὁ Μουσοῦρος τῷ 1503 προσενεχθὲν αὐτῷ ὑπὸ τῆς ἑνετικῆς γερουσίας. Ἦτο τοῦτο τὸ ἀξίωμα τοῦ λογοκριτοῦ τῶν ἐν τῷ ἑνετικῷ κράτει τυπωνομένων ἑλληνικῶν βιβλίων· τουτέστι πᾶν τὸ ἑλληνιστὶ τυπωνόμενον εἰς πάσας τὰς ἑνετικὰς κτήσεις ἔπρεπε νὰ ἔχῃ τὴν ἔγκρισίν του ὡς μὴ ἀπᾷδον πρὸς τὴν θρησκείαν καὶ ἠθικήν. Τὴν θέσιν ταύτην κατεῖχε μέχρι τοῦ 1516. Ὅτε δέ, τῷ 1503, ὁ Λαυρέντιος Κρητικὸς (Creticus), καθηγητὴς τῶν ἑλληνικῶν ἐν Παταβίῳ (Παδούῃ), ἐστάλη μὲ διπλωματικὴν ἀποστολὴν εἰς Πορτογαλλίαν, ἀνετέθη εἰς τὸν Μουσοῦρον ἡ ἀναπλήρωσίς του ἐν τῇ καθηγητικῇ ἕδρᾳ. Τῷ 1503 ἢ μᾶλλον 1504 ἐξεδόθησαν παρὰ τῷ Ἄλδῳ δέκα ἑπτὰ τραγῳδίαι τοῦ Εὐριπίδου (ὡς 18η προσετέθη ἀργότερον ὁ «Ἡρακλῆς»), τῶν ὁποίων τὴν ἔκδοσιν ἐπεμελήθη ὁ λόγιος Κρής, καίτοι ἐν τῷ ἀφιερωτικῷ προλόγῳ δὲν ἀναγράφεται τὸ ὄνομά του. Τῷ 1504 ἐξελέγη ὑπὸ τῆς ἑνετικῆς γερουσίας καθηγητὴς ἐν τῇ χηρευούσῃ ἕδρᾳ τῆς ἑλληνικῆς ἐν Βενετίᾳ, προτιμηθεὶς τοῦ ἀνταγωνιστοῦ του Νικολάου de Lonigo. Ὅτε δέ, δύο ἔτη βραδύτερον, ἀπέθανεν ὁ Λαυρέντιος Creticus, ὁ Μουσοῦρος ἐξελέγη ὁριστικῶς διάδοχός του ἐν Παταβίῳ.

«Ἕνεκα τῶν τότε ἐν Ἰταλίᾳ πολιτικῶν ἀνωμαλιῶν ὁ Μουσοῦρος ἐγκατέλιπε τὴν ἐν Παταβίῳ ἕδραν (κατὰ Μάϊον 1509) καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Βενετίαν, ἔνθα βραδύτερον διὰ τῶν ἐνεργειῶν τοῦ φίλου του Φραγκίσκου Fagiuoli, τοῦ γραμματέως τῆς ἑνετικῆς γερουσίας, ἐπανιδρύθη ἡ ἕδρα τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης καὶ διωρίσθη εἰς αὐτὴν ὁ Μουσοῦρος. Ἐν τούτῳ τῷ μεταξὺ χρόνῳ φαίνεται ὅτι ὁ Μουσοῦρος ἠσχολεῖτο ἐπιμελῶς περὶ τὸν Πλάτωνα (τοῦ ὁποίου ἡ λατινικὴ μετάφρασις εἶχεν ἤδη τῷ 1482 ἐκδοθῆ ἐν Φλωρεντίᾳ ὑπὸ τοῦ Μαρσιλίου Φικίνου), ὅστις καὶ ἐξεδόθη ὑπ' αὐτοῦ παρὰ τῷ Ἄλδῳ τὸ πρῶτον (editio princeps) κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1513 μετ' ἀφιερώσεως εἰς τὸν μεγαλοπρεπῆ καὶ φιλόμουσον πάπαν Λέοντα τὸν Ι'. Τῆς ἐκδόσεως ταύτης, δι' ἧς συνέδεσε τὸ ὄνομά του διαρκῶς ὁ Μουσοῦρος πρὸς τὸ τοῦ φιλοσόφου, προετάχθη μακρὰ καὶ θαυμασία ᾠδὴ εἰς τὸν μνημονευθέντα ἱεράρχην, ἐν ᾗ ἐπαινεῖται μὲν ὁ ῥηθεὶς πάπας καὶ κοινὸς φίλος ἀμφοτέρων, εὑρίσκονται δὲ πρὸς τούτοις ἱκαναὶ εἰδήσεις καὶ περὶ τοῦ βίου τοῦ Μουσούρου. Πρὸς δὲ πᾶσι τούτοις ὁ φιλόπατρις Μουσοῦρος παρακελεύεται ἐν τῇ ᾠδῇ ταύτῃ τὸν Λέοντα νὰ βοηθήσῃ εἰς ἀπελευθέρωσιν τοῦ δουλωθέντος ἔθνους τῶν Ἑλλήνων, τοῦ ὁποίου ἡ ὑποδούλωσις ἐφαίνετο εἰς τοὺς λογίους Ἕλληνας τοὺς καταφυγόντας εἰς Ἰταλίαν ὡς μέλλουσα καταστροφή. Ἄξιον ἰδιαιτέρας παρατηρήσεως εἶναι ὅτι ὁ Μουσοῦρος ἀποδεικνύεται διὰ τῆς ᾠδῆς ταύτης ποιητὴς ἄριστος, ὑπὸ τῶν συγχρόνων του μάλιστα τότε ἀνακηρυχθεὶς αὐτὸ τοῦτο ὡς ἀντάξιος τῶν παλαιῶν μεγάλων τῆς Ἑλλάδος ποιητῶν.

Κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1513 ἐξέδωκε τὰ «Ὑπομνήματα» Ἀλεξάνδρου τοῦ Ἀφροδισιέως εἰς τὰ «Τοπικὰ» τοῦ Ἀριστοτέλους. Ὀλίγον πρότερον εἶχε λάβει ὁ Μουσοῦρος διὰ τοῦ Bembo ἐπιστολὴν τοῦ μνημονευθέντος πάπα Λέοντος Ι', ἐν ᾗ ὁ πάπας παρεκάλει αὐτὸν ἵνα συνεννοηθῇ πρὸς τὸν Ἰανὸν Λάσκαριν καὶ ἀπὸ κοινοῦ μετακαλέσωσιν Ἑλληνόπαιδας ὡς μαθητὰς τοῦ ὑπὸ τοῦ Λέοντος Ι' τῇ προτροπῇ τοῦ Ἰ. Λασκάρεως ἱδρυθέντος ἐν Ῥώμῃ Ἑλληνικοῦ Γυμνασίου. Τὸ γυμνάσιον τοῦτο ἐπεδίωκε τὸν σκοπὸν τῆς ὑπὸ Ἑλλήνων διατηρήσεως τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης καὶ τῆς διδασκαλίας αὐτῆς ἐν τῇ Ἰταλίᾳ ὑπὸ Ἑλλήνων. Ὑπῆρχεν ἄρα τότε φόβος παντελοῦς αὐτῆς ἐξαφανίσεως ἐν Ἑλλάδι. Ἐκ τῶν περιφανεστάτων καὶ ὑπὸ κριτικὴν ἔποψιν σπουδαιοτάτων ἔργων τοῦ μεγάλου Κρητὸς φιλολόγου ὑπῆρξεν ἡ πρώτη ἔκδοσις τοῦ Ἡσυχίου (κατ' Αὔγουστον 1514) ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ μοναδικοῦ τοῦ λεξικογράφου χειρογράφου, ἀποκειμένου νῦν ἐν τῇ Μαρκιανῇ βιβλιοθήκῃ. Πλῆθος νέων βραχυγραφικῶν ἀναγνώσεων, διορθώσεων, μεταβολῶν ἢ μετατοπίσεων εἰς τὸ κείμενον ἐπέφερεν ἡ δεξιωτάτη κριτικὴ τοῦ ἀνδρὸς χείρ. Τὴν ἀκατάβλητον φιλοπονίαν αὐτοῦ χαρακτηρίζει ἐπίσης τὸ γεγονὸς ὅτι τὸ αὐτὸ ἔτος τῆς ἐκδόσεως τοῦ Ἡσυχίου ἐξεδόθη καὶ ὁ Ἀθήναιος, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀπειρία σφαλμάτων διωρθώθη καὶ πλεῖστοι παρεισηγμένοι στίχοι μὴ διακρινόμενοι ἐν τῷ χειρογράφῳ ἐκ τοῦ εἱρμοῦ τοῦ κειμένου ἀνεγνωρίσθησαν ὡς στίχοι καὶ μετηνέχθησαν εἰς ἔμμετρον τάξιν. Ἐπηκολούθησεν εἶτα (1515) ἡ ἔκδοσις τοῦ Θεοκρίτου (ἐν Φλωρεντίᾳ παρὰ Βερνάρδῳ Giunta). Βαρὺ πλῆγμα ὑπῆρξε διὰ τὸν Μουσοῦρον ὁ ἐπισυμβὰς τῇ 6ῃ Φεβρουαρίου 1515 θάνατος τοῦ Ἄλδου Μανουτίου. Ἐξεδήλωσε λυρικώτατα τὸ πένθος του ἐν τῇ εἰς τὸν Ἰωάννην Grolier ἀφιερωτηρίῳ ἐπιστολῇ, ἥτις προετάχθη τῆς ἐκδόσεως τῆς Ἑλληνικῆς γραμματικῆς τῆς συνταχθείσης ὑπὸ τοῦ Ἄλδου Μανουτίου (Albi Manutii Romani Grammaticae Graecae Institutiones), ἣν ἐξέδωκεν ὁ Μουσοῦρος ἐκπληρῶν ἐντολὴν τοῦ ἀποθνήσκοντος Ἄλδου.

Κατ' Ἰούλιον τοῦ αὐτοῦ ἔτους (1515) ἐξεδόθησαν παρὰ τῷ Giunta τὰ «Ἁλιευτικὰ» τοῦ Ὀππιανοῦ τῇ ἐπιστασίᾳ τοῦ Μουσούρου καὶ κατ' Ἀπρίλιον τοῦ 1516 ἐξέδωκεν οὗτος δεκαὲξ λόγους Γρηγορίου τοῦ Ναζιανζηνοῦ, τοὺς ὁποίους συνοδεύει μακρὰ ἀφιερωτικὴ ἐπιστολὴ εἰς τὸν τότε πρεσβευτὴν τῆς Γαλλίας ἐν Βενετίᾳ Ἰωάννην Pinum (de Pins). Δύο ἄλλα σπουδαῖα γεγονότα διὰ τὸν Μουσοῦρον συνέβησαν κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος. Τὸ πρῶτον

Μάρκος Μουσοῦρος.
[Γραβοῦρα τοῦ Tobias Stimmer.]

εἶναι ἡ ἔκδοσις τοῦ Παυσανίου, ἣν προσφωνεῖ ἐν μακρᾷ ἀφιερωτηρίῳ ἐπιστολῇ εἰς Ἰανὸν Λάσκαριν, καὶ ἡ μετάβασις τοῦ Μουσούρου, τῇ ἐπιμόνῳ προσκλήσει Λέοντος Ι', εἰς Ῥώμην, διὰ νὰ βοηθήσῃ τὸν Ἰανὸν Λάσκαριν εἰς τὴν διοργάνωσιν τοῦ Ἑλληνικοῦ Γυμνασίου καὶ εἰς τὴν ἐν αὐτῷ διδασκαλίαν. Ἄλλοτε ἠμφισβητεῖτο ἐὰν ὄντως ὁ Μουσοῦρος μετέβη πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον εἰς Ῥώμην, ἀλλὰ σήμερον τοῦτο φαίνεται πλέον ἐξηκριβωμένον. Ἀμφίβολον φαίνεται ἂν παρ' ὅλας τὰς περὶ ἐπανόδου εἰς Βενετίαν ὑποσχέσεις του ἐπανῆλθε πλέον ὁ Μουσοῦρος εἰς Βενετίαν. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε προσλάβει οὗτος καὶ τὸ ἱερατικὸν σχῆμα, εἶχε δὲ διορισθῆ ὑπὸ τοῦ προστάτου του πάπα Λέοντος Ι' ἐπίσκοπος τῆς ἐν Κρήτῃ Ἱεραπέτρας καὶ εἶχε λάβει καὶ κτήματα ἔν τε τῇ Κρήτῃ καὶ ἐν Κύπρῳ. Χρηρευσάσης τῆς ἀρχιεπισκοπῆς τῆς Μονεμβασίας διὰ τοῦ θανάτου τοῦ Μανιλίου Ῥάλλη, διωρίσθη εἰς αὐτὴν ὁ Μουσοῦρος, ἀλλὰ δὲν προέφθασε νὰ μεταβῇ ἐκεῖ.

Τὸ φθινόπωρον τοῦ 1517 ἀνηρπάγη ὑπὸ προώρου θανάτου, ἐτάφη δὲ ἐν Ῥώμῃ ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ S. Maria de Pace. Τὸ ἐγχαραχθὲν ἐπὶ τοῦ τάφου του (exactae diligentiae grammatico et mirae felicitatis poetae) ἐπίγραμμα ὑπὸ τοῦ φίλου του Ἀντωνίου Ἀμιτέρνου ἔχει ὡς ἑξῆς:

Musure o mansure parum, properata tulisti
Praemia, namque cito tradita, rapta cito

Πλὴν τῶν ἑλληνικῶν βιβλίων ὁ Μουσοῦρος ἐβοήθησε καὶ εἰς τὴν ἔκδοσιν (1513) τῶν ἐπιστολῶν τοῦ Κικέρωνος παρὰ τῷ Ἄλδῳ (Ciceronis Epistolarum ad Atticum, ad Brutum, ad Quintum fratrem, libri XX), διότι ἴση πρὸς τὴν γνῶσιν τῆς Ἑλληνικῆς ὑπῆρξεν, ὡς ἐλέχθη, καὶ ἡ γνῶσις τῆς Λατινικῆς, δι' ἣν ἐπῄνει καὶ ἐθαύμαζεν αὐτὸν ὁ πρὸς ἐπαίνους τόσον φειδωλὸς Ἔρασμος («Vir insigniter eruditus in omni disciplinarum genere». «Mirabar hominem Graecum tantum scire latine»). Ἀναντιρρήτως διὰ τῶν ἐργασιῶν του ὁ Μουσοῦρος πρέπει νὰ κατατάσσηται εἰς τὴν πρώτην σειρὰν τῶν φιλολόγων τῆς Ἀναγεννήσεως.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *P. Jovius*, Elogia virorum doctorum (ἐν Ἀμβέρσῃ 1557).—*Hody (Hodius)*, De Graecis illustribus medii aevi (ἐν Λονδίνῳ 1742).—*Κ. Σάθα*, Νεοελληνικὴ φιλολογία (Ἀθῆναι 1868, σελ. 80—92).—*A. F. Didot*, Alde Manuce et l'Hellénisme à Venise (Παρίσιοι 1875).—*R. Menge*, ἰδιαιτέρα διατριβὴ περὶ Μ. Μουσούρου ὡς παράρτημα εἰς τὸν ε' τόμον τῆς ὑπὸ *M. Schmidt* ἐκδόσεως τοῦ Ἡσυχίου.—*E. Legrand*, Bibliographie Hellénique (ΙΕ' καὶ ΙϚΤ' αἰῶνος τόμ. 1—2, Παρίσιοι 1885).—*G. Voigt*, Wiederbelebung des classischen Altertums (3η ἔκδ. ἐπιμελείᾳ *Lehnerdt*, τόμ. 1—2. Ἐν Βερολίνῳ 1893).—Πλείονα σχετικὴν βιβλιογραφίαν βλέπει τις ἐν ταῖς σημειώσεσι τῆς διατριβῆς *Ἰ. Καλιτσουνάκι* «Ματθαῖος Δεβαρῆς καὶ τὸ ἐν Ῥώμῃ Ἑλληνικὸν Γυμνάσιον» ἐν «Ἀθηνᾶς» τόμῳ 26 (1914) σελ. 81—102.

Ι. ΚΑΛΙΤΣΟΥΝΑΚΙΣ

**—Μουσοῦρος, *Παῦλος*.** Υἱὸς τοῦ *Στεφάνου Μουσούρου*, γεννηθεὶς τῷ 1810 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1876. Ἐχρημάτισε πρεσβευτὴς τῆς Τουρκίας ἐν Βιέννῃ καὶ ἡγεμὼν τῆς Σάμου (1866—1873). ΕΡ. Μ.

**—Μουσοῦρος, *Στέφανος*.** Ἐγκατεστημένος ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἦλθεν εἰς γάμον μετὰ τῆς ἐκ Μεγάλου Ῥεύματος (Ἀρναούτ-κιοϊ) *Κασσάνδρας Ἰωαννίδου*, ἐξ ἧς ἀπέκτησε τρεῖς υἱούς, τοὺς *Ἰωάννην*, *Κωνσταντῖνον* καὶ *Παῦλον*. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἡ σύζυγός του συνεζεύχθη τὸν ἑβδομηκοντούτην *Βασίλειον Γύγγην*, τραπεζίτην τοῦ σουλτάνου Μετζήτ, ἐξ οὗ καὶ ἀπέκτησε δύο ἀκόμη υἱούς, τὸν *Γεώργιον* καὶ τὸν *Μελέτιον*, οἵτινες, ἀνατραφέντες μετὰ τῶν ἑτεροθαλῶν ἀδελφῶν των, διετήρησαν τὸ ὄνομα *Μουσοῦρος-Γκύκης* (ὡς ἐξειλίχθη τὸ Γύγγης). Γ. Μ. - Γ.

**—Μουσοῦρος, *Στέφανος*.** Υἱὸς τοῦ *Κωνστ. Μουσούρου*. Διετέλεσε πρεσβευτὴς τῆς Τουρκίας ἐν Ῥώμῃ, κατόπιν ἡγεμὼν της Σάμου, ἀντικατασταθείς, μετὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον καὶ τὸν ἐν τῇ νήσῳ ἀντίκτυπον, ὑπὸ τοῦ Κ. Βαγιάνη (1898), συνεπλήρωσε δὲ τὸ στάδιόν του ὡς πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του.

**—Μουσούρου, *Ραλλοῦ*.** Θυγάτηρ τοῦ *Κ. Μουσούρου* καὶ ἀδελφὴ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Σάμου, ὑπῆρξε διάσημος καλλιτέχνις τοῦ κλειδοκυμβάλου, σύζυγος τοῦ Ῥουμάνου πρίγκιπος Μπραγκοβάνο καὶ μήτηρ τῆς ποιητρίας κομίσσης *Ντὲ Νοάϊγ*. Γ. Μ. - Γ.

**Μουσούτα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀρκαλοχωρίου τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 113. Ε. Γ.

**μουσοφιλὴς** (ὁ, ἡ), —ὲς (τό)· ὁ οἱονεὶ ὑπὸ τῶν Μουσῶν φιλούμενος, ἀγαπώμενος.

**Μουσπίνα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης (Ἰωαννίνων) τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον. Κάτ. (1928) 371. Χ. Δ.

**Μουσσὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Κινδυνωδεστάτη ὕφαλος τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 40°13' 1/4 Β., μῆκ. 26°30' 2/8 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles) προσκειμένη τῇ μικρασιατικῇ ἀκτῇ μεταξὺ Ναγαρᾶ Καλεσσὶ καὶ Μπεργκὰζ Ἰσκαλεσσί. Σ. Ε. Λ.

**Μουσσὰρ-*Ντὰγ*** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Μ. Ἀσίας ἐν Λυκίᾳ, τὸ ἀρχαῖον *Κλῖμαξ* (βλ. λ.).

**Μουσσολίνι** (Mussolini), ***Μπενίτο*** (ἤτοι ***Βενέδικτος***). Ἰταλὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1883 ἐν τῷ χωρίῳ Ντόβια τοῦ νομοῦ Φορλὶ τῆς Ῥωμάνιας. Ὁ πατὴρ αὐτοῦ Ἀλέξανδρος ἦτο σιδηρουργός, ἐμπεποτισμένος μὲ ἐπαναστατικὰς καὶ ἀντιθρησκευτικὰς ἰδέας καὶ εἶχε λάβει ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν κίνησιν τῆς περιοχῆς του, ἐνῷ ἡ μήτηρ του, Ῥόζα Μαλτόνι, εἶχε χρηματίσει διδασκάλισσα καὶ ἐνεφορεῖτο ὑπὸ βαθέος θρησκευτικοῦ αἰσθήματος. Τὰ πρῶτα ἐγκύκλια μαθήματα διήκουσεν ἐν τῷ Σαλεσιανῷ κολλεγίῳ τῆς Φαέντσας καὶ κατόπιν ἐφοίτησεν ἐν τῷ διδασκαλείῳ τῆς Φορλιμπόπολι, ὁπόθεν ἐξῆλθεν εἰς ἡλικίαν 18 ἐτῶν, μὲ τὸ δίπλωμα τοῦ δημοδιδασκάλου, διορισθεὶς ἀμέσως ὡς τοιοῦτος ἔν τινι χωρίῳ. Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας εἶχε δείξει κλίσιν εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ λίαν ἐνωρὶς ἤρχισεν ἀναμιγνυόμενος εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν κίνησιν τῆς Ἰταλίας. Ἐπιθυμῶν ὅμως νὰ εὐρύνῃ τὸν κύκλον τῶν σπουδῶν του καὶ φεύγων τὴν καταδίωξιν τῶν ἰταλικῶν ἀρχῶν, συνεπείᾳ ἐνεργοῦ ἀναμίξεώς του εἰς τὴν ἀπεργιακὴν κίνησιν, κατέφυγεν εἰς τὴν Ἑλβετίαν τῷ 1902, ὅπου, πρὸς πορισμὸν τῶν πρὸς τὸν ζῆν, ἐξετέλει χειρωνακτικὰς ἐργασίας, ἐργαζόμενος ὡς κτίστης ἢ μετερχόμενος ἄλλα παρόμοια ἐπαγγέλματα, παρακολουθῶν συγχρόνως μαθήματα εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Λωζάννης καὶ τῆς Γενεύης καὶ κατορθώσας ἐν τέλει νὰ λάβῃ δίπλωμα διδασκάλου τῆς γαλλικῆς γλώσσης. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην εἶχε συγχρωτισθῆ στενῶς μὲ τοὺς ἐργάτας καὶ κατέχων ἐκ φύσεως μεγάλην διοργανωτικὴν ἱκανότητα, εἶχε κατορθώσει νὰ ἱδρύσῃ πολλὰ ἐργατικὰ σωματεῖα καὶ νὰ προκαλῇ συχνὰς ἀπεργίας, συνεπείᾳ τῶν ὁποίων αἱ ἀρχαὶ ἠναγκάζοντο νὰ ἀπελαύνουν αὐτὸν ἀπὸ καντονίου εἰς καντόνιον, ἐν τέλει δὲ ἀπὸ ὁλόκληρον τὸ ἔδαφος τῆς Ἑλβετίας. Ἐπανελθὼν ἕνεκα τούτου εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐκλήθη καὶ ἐξετέλεσεν ἐκεῖ τὴν στρατιωτικήν του θητείαν ἐν τῷ σώματι τῶν Βερσαλλιέρων καὶ κατόπιν ἐπανέλαβε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ διδασκάλου, ἐνῷ συγχρόνως κατεγίνετο εἰς τὴν μελέτην τῶν ἀρχαίων κλασσικῶν. Κατὰ τὸ 1908, ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν κίνησιν καὶ τὰς συγκρούσεις τῶν ἀγροτῶν τῆς Ῥωμάνιας, συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς 10 ἡμερῶν φυλάκισιν, ἔκτοτε δὲ ἐτέθη ὑπὸ ἀστυνομικὴν ἐπιτήρησιν, ὡς «ἐπικίνδυνος ἐπαναστάτης». Περὶ τὸ τέλος τοῦ 1908 μετέβη εἰς τὴν αὐστριακὴν τότε πόλιν Τρέντο τοῦ Ν. Τυρόλου, ὅπου

Digitized by Google

προσελήφθη ὡς γραμματεὺς τοῦ ἐκεῖ ἐργατικοῦ κέντρου καὶ συντάκτης τῆς ἰταλικῆς σοσιαλιστικῆς ἐφημερίδος «L'Avvenire» καὶ κατόπιν τῆς «Popolo» τοῦ σοσιαλιστοῦ Καίσαρος Μπαττίστι. Ἐνταῦθα ὁ Μουσσολίνι ἔλαβεν ἀφορμὴν νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν γερμανικὴν λογοτεχνίαν καὶ νὰ μελετήσῃ τὸν Νίτσε. Ἡ ἐπαφὴ αὐτοῦ μετὰ τοῦ Μπαττίστι ἐνεπότισεν αὐτὸν μὲ τὰς πρώτας ἀλυτρωτικὰς ἰδέας, ἕνεκα τῶν ὁποίων, μετὰ τὴν δημοσίευσιν ἄρθρου τονίζοντος ὅτι «τὰ ἰταλικὰ σύνορα δὲν πρέπει νὰ τελειώνουν εἰς τὴν "Αλα», συνελήφθη καὶ ἐξωρίσθη ἀπὸ τῆς Αὐστρίας. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του ε ς τὴν Ἰταλίαν ἔγραψεν, ἐπὶ τῇ βάσει ἀλυτρωτικῶν ἰδεῶν, τὴν μελέτην «Πῶς εἶδε τὸ Τρεντῖνο εἷς σοσιαλιστής», τὴν ὁποίαν ἐδημοσίευσεν ἐν τῷ περιοδικῷ «La Voce», ὅπερ ἐξεδίδετο εἰς τὴν Φλωρεντίαν καὶ συγκατέλεγε τότε μεταξὺ τῶν συνεργατῶν του τοὺς ὀνομαστοτέρους ἐκ τῶν νεαρῶν λογοτεχνῶν καὶ διανοουμένων τῆς χώρας.

Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὁ Μουσσολίνι, γενόμενος λίαν γνωστὸς εἰς τους κύκλους τῶν διανοουμένων καὶ τῶν σοσιαλιστῶν, ἀφιερώθη τελείως εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν δρᾶσιν. Τῷ 1910 ἵδρυσε καὶ ἐξέδωσεν ἐν Φορλὶ τὴν ἐφημερίδα «La lotta di classe», ἐν τῇ ὁποίᾳ, ἐνῷ ὑπεστήριζε μετὰ θέρμης τὰς σοσιαλιστικὰς ἰδέας, ἐπετίθετο σφοδρότατα κατὰ τοῦ «ὑλισμοῦ τοῦ ἀστικοῦ πνεύματος», ἐν τῷ ὁποίῳ εἶχεν ἐκφυλισθῇ τότε, κατ' αὐτόν, τὸ ἰταλικὸν σοσιαλιστικὸν κόμμα. Ἀπομακρυνόμενος δὲ ὁλονὲν ἀπὸ τοῦ ὀρθοδόξου μαρξισμοῦ, ἐξεδήλου ζωηρὰν συμπάθειαν πρὸς τὰς ἰδέας τοῦ Μπαμπέφ, τοῦ Μπαλνκί, τοῦ Πρυντὸν καὶ ἰδίως πρὸς τὸν ἐπαναστατικὸν συνδικαλισμὸν τοῦ Σορέλ. Ὅτε ἡ κυβέρνησις Τζιολίττι, ἀπεφάσισε τὴν ἐκστρατείαν τῆς Τριπολίτιδος, ὁ Μουσσολίνι ἐκηρύχθη ἐναντίον αὐτῆς, διότι, ὡς ἔγραφεν, «ἀντιθέτως πρὸς τοὺς ἐθνικόφρονας, οἵτινες ἐπεθύμουν νὰ εὐρύνουν τὰ ὅρια τῆς Ἰταλίας», οὗτος ἐπεθύμει «μίαν Ἰταλίαν, ἡ ὁποία νὰ εἶναι δυνατὸν νὰ καλλιεργῆται καλῶς, πλουσίαν καὶ ἐλευθέραν». Ἕνεκα τούτου τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1911 διωργάνωσε λαϊκὴν ἐξέγερσιν ἐν Φορλὶ κατὰ τῆς ἐκστρατείας τῆς Τριπολίτιδος, παροτρύνων τὸν λαὸν εἰς ἀντίστασιν κατὰ τῶν ἀρχῶν, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς πέντε μηνῶν φυλάκισιν.

Εἰς τὸ συνέδριον τοῦ ἰταλικοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος τῷ 1912, ἐν Ρέτζιο Ἐμίλια, ὁ Μουσσολίνι διεκρίθη ὡς εἷς τῶν μᾶλλον ἀδιαλλάκτων ἐπαναστατῶν καὶ συνέτεινε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐκ τοῦ κόμματος ἀποβολὴν τῶν ὑποστηριξάντων τὴν πολιτικὴν τῆς κυβερνήσεως ἐν τῇ ἐκστρατείᾳ τῆς Τριπολίτιδος ἡγετῶν Μπισσολάτι καὶ Μπονόμι, οἵτινες ἵδρυσαν κατόπιν τὸ «Μεταρρυθμιστικὸν σοσιαλιστικὸν κόμμα τῆς Ἰταλίας». Ὁ Μουσσολίνι ἐξελέγη τότε, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Μπισσολάτι, γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ἰταλικοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος, καὶ τὸν Δεκέμβριον τοῦ ἰδίου ἔτους ἐγένετο διευθυντὴς τῆς ἐφημερίδος «Avanti!» τοῦ Μιλάνου, ἐπισήμου ὀργάνου τοῦ κόμματος. Ὁ Μουσσολίνι προσέδωσεν εἰς τὸ «Avanti!» νέαν ζωὴν καὶ πολεμικώτατον χαρακτῆρα καὶ ηὔξησε τὴν κυκλοφορίαν του ἀπὸ 40.000 εἰς 100.000 φύλλα ἡμερησίως, ἐπιμείνας κυρίως εἰς τὴν ἀνάγκην τῆς οἰκονομικῆς καὶ κοινωνικῆς ἐν γένει ἀναπτύξεως τῶν νοτίων ἐπαρχιῶν τῆς Ἰταλίας, τὰς ὁποίας οἱ προηγούμενοι ἡγέται τῶν σοσιαλιστῶν παρημέλουν, διότι οἱ κάτοικοι αὐτῶν προσέφερον πολὺ ὀλίγας ψήφους εἰς τὸ κόμμα, λόγῳ τῆς μικρᾶς βιομηχανικῆς ἀναπτύξεώς των καὶ τοῦ μικροῦ ἐν αὐταῖς ἀριθμοῦ ἐργατῶν καὶ σοσιαλιστῶν. Κατὰ τὴν καλουμένην «Ἐρυθρὰν ἑβδομάδα», ἐν ταῖς Μάρκαις καὶ τῇ Ρωμάνιᾳ (7—14 Ἰουνίου 1914), ὁ Μουσσολίνι ὑπῆρξεν ἐκ τῶν δραστηριωτέρων ὑποκινητῶν τῶν συρράξεων. Κατὰ τὴν διάρκειαν ὅμως τοῦ αἱματηροῦ ἐκείνου ἀγῶνος ὑπέστη πολλὰς ἀπογοητεύσεις ἐκ μέρους ὁμοϊδεατῶν του, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐγένετο ἀφορμὴ νὰ ἀναθεωρήσῃ τὴν μέχρι τότε ἀκολουθουμένην γραμμὴν τῆς πολιτικῆς του.

Ἀλλ' ἡ μεγάλη κρίσις ἐν τῇ πολιτικῇ ζωῇ τοῦ Μουσσολίνι ἄρχεται ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ἀντιταχθῇ μετὰ βιαιότητος εἰς τὴν ἐπέμβασιν τῆς Ἰταλίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν κεντρικῶν Δυνάμεων, ὅπως ἠξίουν οἱ φρονοῦντες ὅτι ἡ Ἰταλία ἦτο ὑποχρεωμένη νὰ ἐπέμβῃ, λόγῳ τῆς συμμετοχῆς αὐτῆς εἰς τὴν Τριπλῆν Συμμαχίαν. Μετὰ τὴν κήρυξιν τῆς οὐδετερότητος τῆς Ἰταλίας, ἐξηκολούθησεν εἰσέτι νὰ ἀμφιρρέπῃ κατὰ τὸ φθινόπωρον ὅμως τοῦ 1914 ἤρχισε νὰ κλίνῃ ὑπὲρ τῆς εἰσόδου τῆς Ἰταλίας εἰς τὸν πόλεμον καὶ νὰ διακηρύττῃ ὅτι «ἔπρεπε νὰ συμπληρωθῇ ἡ ἰταλικὴ ἑνότης». Κατόπιν ἤρχισε νὰ ἐγκρίνῃ τὰ στρατιωτικὰ μέτρα, τὰ ὁποῖα ἐλάμβανεν ἡ κυβέρνησις ἐπὶ τῷ σκοπῷ ὅπως μὴ εὑρεθῇ ἀπαράσκευος εἰς περίπτωσιν ἐπιθέσεως. Ἀλλ' ἡ στάσις του αὕτη εὑρίσκετο εἰς πλήρη δυσαρμονίαν πρὸς τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς πεποιθήσεις τοῦ κόμματός του. Ἕνεκα τούτου, κατόπιν διαφωνίας πρὸς τὴν διοικοῦσαν ἐπιτροπήν, ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τῆς διευθύνσεως τοῦ «Avanti!» καὶ τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1914 νὰ ἐμφανισθῇ πρὸ τῆς συνελεύσεως τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος πρὸς δικαιολογίαν τῆς διαγωγῆς του καὶ τῆς μεταστροφῆς τῆς πολιτικῆς του. Κατὰ τὴν συνέλευσιν ἐκείνην, ἥτις ὑπῆρξε θορυβωδεστάτη, ἡ πλειοψηφία τῶν σοσιαλιστῶν ἐπετέθη ἐναντίον αὐτοῦ σφοδρότατα, τὸν ἀπεκάλεσε «προδότην», «ἀργυρώνητον», «δολοφόνον» καὶ τὸν ἀπέβαλεν ἐκ τοῦ κόμματος, παρὰ τὰς διαμαρτυρίας του καὶ τὴν διακήρυξιν τῆς πίστεώς του εἰς τὸν σοσιαλισμὸν διὰ βιαιοτάτου λόγου, διὰ τοῦ ὁποίου κατηγόρησε τοὺς ἀντιπάλους του ὡς ἐμφορουμένους ὑπὸ «μικροαστικοῦ πνεύματος» καὶ ὡς ἀνειλικρινεῖς.

Μετὰ τὴν ἀποχώρησίν του ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος ἵδρυσεν ἰδικήν του καθημερινὴν ἐφημερίδα ἐν Μιλάνῳ, τὴν «Il Popolo d'Italia», πρὸς ὑποστήριξιν τῶν νέων πολιτικῶν ἀρχῶν του. Οἱ ἀντίπαλοι αὐτοῦ διέδωσαν τότε ὅτι ἔλαβε χρήματα ἐκ τῆς γαλλικῆς πρεσβείας πρὸς ὑποστήριξιν τῶν συμμάχων διὰ τῆς ἐκδόσεως ἐφημερίδος, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἠνάγκασεν αὐτὸν ν' ἀποδείξῃ ὅτι τὰ μόνα κεφάλαια τῆς ἐφημερίδος του ἦσαν 4.000 λιρέτται, προελθοῦσαι ἐκ συνδρομῶν φίλων του καὶ ἀγγελιοδοτῶν. Ἡ νέα ἐφημερὶς ἐξεδόθη

*Μπενίτο Μουσσολίνι.*

τὴν 15ην Νοεμβρίου 1914 μὲ κύριον ἄρθρον τοῦ Μουσσολίνι ὑπὲρ τῆς ἐξόδου τῆς Ἰταλίας εἰς τὸν πόλεμον παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Συμμάχων. Ἡ ἐφημερὶς αὕτη δὲν ἔτυχεν ἐν ἀρχῇ εὐμενοῦς ὑποδοχῆς παρὰ τῷ λαῷ, κατὰ δὲ τοὺς πρώτους μῆνας μετὰ μεγάλης δυσκολίας κατώρθωνε νὰ ἀνταποκρίνεται εἰς τὰ ἔξοδά της· εἶχεν ὅμως συγκεντρώσει ὀλίγον κατ' ὀλίγον περὶ ἑαυτὸν ἐκλεκτὸν ἐπιτελεῖον, νεαρῶν ἰδίως καὶ ἐνθουσιωδῶν ἐθνικοφρόνων συγγραφέων, καθὼς καὶ πολλῶν δημοκρατικῶν καὶ σοσιαλιστῶν. Ὁ Μουσσολίνι κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐπίστευεν ὅτι ὁ λαὸς ἔπρεπε νὰ φθάσῃ εἰς τὸν πόλεμον ἔστω καὶ δι' ἐπαναστάσεως κατὰ τοῦ κρατοῦντος ἀστικοῦ καθεστῶτος, τὴν πεποίθησίν του δὲ ταύτην ἐξέφρασε καὶ φανερὰ ἐν λαϊκῷ συλλαλητηρίῳ, κατὰ τὸ ὁποῖον συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1915. Μετὰ τὴν ἔξοδον τῆς Ἰταλίας εἰς τὸν πόλεμον, ὁ Μουσσολίνι, κληθεὶς ὑπὸ τὰ ὅπλα τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1915, ὑπηρέτησεν εἰς τὸ σῶμα τῶν Βερσαλλιέρων εἰς τὰ χαρακώματα κατὰ μῆκος τοῦ Ἰζόντζο καὶ τοῦ Κάρσο. Τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1917 ἐτραυματίσθη ἐκ θραύσματος ὀβίδος. Μετὰ παραμονὴν πολλῶν μηνῶν εἰς τὸ νοσοκομεῖον, ἐπέστρεψεν εἰς τὴν ἐφημερίδα του καὶ ἤρχισε νὰ γράφῃ ἐνθουσιώδη ἄρθρα ὑπὲρ τῆς ἐξακολουθήσεως τοῦ πολέμου καὶ νὰ ἐπιτίθεται σφοδρότατα κατὰ τῶν οὐδετερόφιλων σοσιαλιστῶν. Ἰδίως ἠγωνίσθη πρὸς πρόληψιν καὶ κατάπαυσιν τῶν ἀπεργιῶν εἰς τὰ ἐργοστάσια πυρομαχικῶν, μετὰ δὲ τὴν ἧτταν τοῦ Καπορέττο ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ὀλίγων οἵτινες δὲν ἀπεθαρρύνθησαν καὶ προσεπάθησαν νὰ κρατήσουν ὑψηλὰ τὸ φρόνημα τοῦ λαοῦ καὶ τοῦ στρατοῦ.

Μετὰ τὴν ἀνακωχὴν ὁ Μουσσολίνι διεξήγαγεν ἔντονον ἀγῶνα, ἐν μὲν τῇ ἐξωτερικῇ πολιτικῇ ὑπὲρ τῆς διεκδικήσεως τῶν ἰταλικῶν δικαίων κατὰ τὴν διάσκεψιν τῆς εἰρήνης τῶν Παρισίων, καὶ ἰδίως ὑπὲρ τῆς διατηρήσεως τοῦ ἰταλικοῦ χαρακτῆρος τοῦ Φιοῦμε, ἐν δὲ τῇ ἐσωτερικῇ πολιτικῇ ὑπὲρ τῆς ἱκανοποιητικῆς ἀναγνωρίσεως τῶν ὑπηρεσιῶν τὰς ὁποίας προσέφερον καὶ τῶν ἀναγκῶν τὰς ὁποίας εἶχον οἱ ἀποστρατευόμενοι ἔφεδροι. Εἰς ἀντίκρουσιν δὲ τῶν πρώτων μπολσεβικικῶν ἐκδηλώσεων, εἰς τὰς ὁποίας προέβαινον οἱ σοσιαλισταί, κατόπιν τῆς χαλαρώσεως τῆς λογοκρισίας καὶ τῆς ἄρσεως τοῦ στρατιωτικοῦ νόμου, ὁ Μουσσολίνι ἵδρυσε τὴν πρώτην φασιστικὴν ἕνωσιν τῇ 23 Μαρτίου 1919 ἐν Μιλάνῳ, ὑπὸ τὸ ὄνομα «Fascio italiano di combattimento» («ἰταλικὴ μαχητικὴ ἕνωσις» ἢ «ἰταλικὸς μαχητικὸς σύνδεσμος», βλ. καὶ λ. *φασισμός*). Αἱ φασιστικαὶ αὗται ἑνώσεις, τῶν ὁποίων οἱ σκοποὶ ἦσαν πατριωτικοὶ καὶ ἐθνικιστικοί, ἐπολλαπλασιάσθησαν κατόπιν ταχέως καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν καὶ προσεπάθησαν νὰ ἀναχαιτίσουν τὸ κῦμα τῶν κομμουνιστικῶν θεωριῶν, ὅπερ συνεπείᾳ τοῦ πολέμου καὶ τῆς μεγάλης οἰκονομικῆς δυσπραγίας τῆς Ἰταλίας εἶχεν ἀρχίσει νὰ ἐξαπλοῦται εἰς ὁλόκληρον τὴν χώραν. Ὁ ἀγὼν οὗτος τοῦ Μουσσολίνι κατέστησεν ἔτι μισητότερον αὐτὸν μεταξὺ τῶν σοσιαλιστῶν, οἱ ὁποῖοι, ὅτε ἐξέθεσε, διὰ πρώτην φοράν, ὑποψηφιότητα ἐν Μιλάνῳ, κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1919, τὸν ἐπολέμησαν σφοδρότατα καὶ συνέβαλον μεγάλως εἰς τὴν ἀποτυχίαν του. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν ταύτην, ἐπειδὴ ὑπεστήριξε τὸ πραξικόπημα τῆς καταλήψεως τοῦ Φιοῦμε ὑπὸ τοῦ Ντ' Ἀννούντσιο, συνελήφθη καὶ ἀπηγγέλθη κατ' αὐτοῦ κατηγορία περὶ «ἐνόπλου συνωμοσίας ἐναντίον τῆς ἀσφαλείας τοῦ κράτους» καὶ ἐφυλακίσθη ἐπί τινα χρόνον. Βραδύτερον, ὅτε, κατὰ τὰς μεγάλας βιομηχανικὰς ἀπεργίας τοῦ φθινοπώρου τοῦ 1920 ἐν τῇ Β. Ἰταλίᾳ, οἱ ἐργάται κατέλαβον τὰ ἐργοστάσια, ὁ Μουσσολίνι κατ' ἀρχὰς μὲν ἐπεδοκίμασεν αὐτούς, διαβλέπων ἐν τῇ ἐνεργείᾳ αὐτῶν ταύτῃ εἶδός τι πρακτικῆς ἐφαρμογῆς τοῦ συνδικαλισμοῦ, διὰ τῆς ὁποίας αἱ ἐργατικαὶ τάξεις θὰ ἦτο δυνατὸν ν' ἀποσπασθοῦν ἀπὸ τὸ ἰταλικὸν σοσιαλιστικὸν κόμμα· κατόπιν ὅμως, ἐπειδὴ μεταξὺ τῶν ἐργατικῶν μαζῶν ἤρχισαν νὰ ἐπικρατοῦν οἱ κομμουνίζοντες, οἵτινες προέβησαν καὶ εἰς πολιτικὰς δολοφονίας ἐν Βολωνίᾳ, Μοδένῃ καὶ Φερράρᾳ, ἐτάχθη ἀντιμέτωπος τῶν κομμουνιστῶν καὶ ἀπέβη τὸ κέντρον τῆς ἀντιμπολσεβικικῆς κινήσεως ἐν Ἰταλίᾳ, διεξάγων σφοδροὺς καὶ πολλάκις αἱματηροὺς ἀγῶνας, λαμβάνων μέρος εἰς συρράξεις, περιερχόμενος πόλεις καὶ χωρία, ἀμυνόμενος ἢ ἐπιτιθέμενος καὶ ἐκτελῶν, πεζὸς ἢ ἐπὶ φορτηγῶν αὐτοκινήτων, ὁμοῦ μετὰ τῶν μελανοχιτώνων συντρόφων του, τὰς «spedizioni punitive» (ἐκστρατείας πρὸς τιμωρίαν), διὰ τὴν ἐκμηδένισιν τῶν ἀντιπάλων. Χάρις εἰς αὐτὸν καὶ εἰς τὰς φασιστικὰς ἑνώσεις του, βοηθούμενος οἰκονομικῶς καὶ ἀπὸ τοὺς βιομηχάνους, κατέστη δυνατὸν νὰ παραλύσῃ ἡ κομμουνιστικὴ δρᾶσις κατ' ἀρχὰς μὲν ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Πάδου, βραδύτερον δὲ εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἰταλίαν, οὐχὶ ὅμως ἄνευ σοβαροῦ κλονισμοῦ τῆς τάξεως καὶ καταρρακώσεως τοῦ γοήτρου τοῦ κράτους, ὅπερ πολλαχοῦ ὑποκαθίστων οἱ φασίσται, ἀντιτάσσοντες τὴν ἰδικήν των τρομοκρατίαν εἰς τὴν τρομοκρατίαν τῶν κομμουνιστῶν καὶ τῶν ἀναρχικῶν.

Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ἐφημερὶς τοῦ Μουσσολίνι εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην κυκλοφορίαν καὶ μέγα κῦρος εἰς τοὺς πολιτικοὺς κύκλους τῆς χώρας, ἀπὸ τῶν στηλῶν δὲ αὐτῆς ἤρχισε νὰ διαγράφεται σαφὲς πρόγραμμα κατευθύνσεως πρὸς νέους πολιτικοὺς ὁρίζοντας. Ὁ Μουσσολίνι δὲν ἠρκεῖτο πλέον εἰς τὴν ἀρνητικὴν ἀντίδρασιν κατὰ τῶν κομμουνιστῶν καὶ τῶν σοσιαλιστῶν, ἀλλ' ἤρχισε νὰ διαγράφῃ καὶ θετικὴν δρᾶσιν διὰ τῆς δημιουργίας «νέου καθεστῶτος, ἐξασφαλίζοντος εἰς τὴν χώραν τὴν ἡσυχίαν καὶ ἐπιτρέποντος εἰς αὐτὴν νὰ ἐργασθῇ ἀνενοχλήτως πρὸς διεκδίκησιν τῶν ἐν τῷ κόσμῳ ὑψηλῶν της πεπρωμένων». Πρὸς ἐπιτυχίαν τοῦ σκοποῦ τούτου ἐφρόνει ὅτι «ἡ φθαρεῖσα ἤδη κυβερνῶσα τάξις ἔπρεπε νὰ παραχωρήσῃ τὴν θέσιν της εἰς τὴν πλήρη ζωῆς νεολαίαν, ἥτις ἐκέρδισε τὸν πόλεμον». Οὕτω ἐδημιουργήθη ὁ *φασισμός* (βλ. λ.), ὁ ὁποῖος τὸν Νοέμβριον τοῦ 1921 διωργανώθη εἰς πολιτικὸν κόμμα, περιλαβὸν πάσας τὰς μέχρι τότε ὑφισταμένας φασιστικὰς ἑνώσεις καὶ ἱδρῦσαν βραδύτερον πλείστας ἄλλας, εἰς πάσας σχεδὸν τὰς πόλεις καὶ τὰ χωρία τῆς Ἰταλίας. Τὸ νέον τοῦτο κόμμα περιέλαβεν ἀντιπροσώπους πασῶν τῶν κοινωνικῶν τάξεων καὶ ὠργανώθη ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἱεραρχίας καὶ τῆς αὐστηρᾶς στρατιωτικῆς πειθαρχίας, μὲ «τάσεις πρὸς τὴν δημοκρατίαν» (tendenzialmente repubblicano). Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ Μαΐου τοῦ 1921 ὁ Μουσσολίνι μετὰ 37 ἄλλων φασιστῶν ὑποψηφίων ἐξελέγη βουλευτής, ὁμοῦ δὲ μετὰ τῆς ὁμάδος τῶν Ἐθνικοφρόνων, μεθ' ἧς συνειργάζετο, ἔπαιξε σημαντικὸν πρόσωπον εἰς τὴν βουλήν, διακριθεὶς διὰ τὰς νευρώδεις ἀγορεύσεις του καὶ τὴν μεγάλην μαχητικότητά του κατὰ τὰς συζητήσεις.

Ἐν τῷ μεταξύ, ἐπειδή, συνεπείᾳ τῶν ἀσθενῶν ἐναλλασσομένων κατὰ μικρὰ χρονικὰ διαστήματα συμμαχικῶν κυβερνήσεων, ἡ δημοσία ἀσφάλεια εἶχε χαλαρωθῇ εἰς τὸ ἔπακρον, αἱ δὲ ἀπεργίαι παρέ-

Digitized by Google

λυον τὰς ἐργασίας καὶ αἱ συγκρούσεις μεταξὺ φασιστῶν καὶ κομμουνιστῶν ὁλονὲν καθίσταντο βιαιότεραι, ὁ Μουσσολίνι συνέλαβε τὸ σχέδιον νὰ καταλάβῃ τὴν ἀρχήν, εἴτε πραξικοπηματικῶς, εἴτε διὰ νέων ἐκλογῶν, κατὰ τὰς ὁποίας εἶχε τὴν πεποίθησιν ὅτι θὰ ἤρχετο πλειοψηφῶν. Πρὸς τοῦτο διωργάνωσεν εἰς διαφόρους πόλεις της Ἰταλίας φασιστικὰ συνέδρια καὶ συγκεντρώσεις ἐνόπλων φασιστῶν μελανοχιτώνων, κατὰ τὰς ὁποίας ὡμίλει βιαιότατα. Αἱ φασιστικαὶ αὗται ἐπιδείξεις ἔδωσαν ἀφορμὴν εἰς τοὺς πολιτικοὺς κύκλους νὰ συζητηθῇ ὁ σχηματισμὸς κυβερνήσεως διὰ τῆς συμμετοχῆς καὶ φασιστικῶν στοιχείων, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν ἐδέχθη ὁ Μουσσολίνι, προβαλὼν ἀξιώσεις κριθείσας ἀπαραδέκτους καὶ ζητήσας τὴν μεταβολὴν τοῦ κυβερνητικοῦ συστήματος, εἰς τρόπον ὥστε «τὸ φιλελεύθερον κράτος νὰ ἀντικατασταθῇ ὑπὸ φασιστικοῦ». Τοῦτο προεκάλεσεν ἔτι σφοδροτέραν ἐξέγερσιν τῶν ἀριστερῶν στοιχείων, τὰ ὁποῖα διὰ τοῦ κοινοῦ σωματείου των «Alleanza del Lavoro» ἐκήρυξαν τὴν 1 Αὐγούστου 1922 γενικὴν ἀπεργίαν καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν διὰ τὴν ἀδράνειαν τῶν ἀρχῶν ἔναντι τῶν φασιστικῶν ἐπιθέσεων κατὰ τῶν ἐργατικῶν ὀργανώσεων. Ἡ ἀπεργία αὕτη ἀπέτυχε χάρις εἰς τὴν ἐπέμβασιν τῶν φασιστῶν, οἵτινες ἀντικατέστησαν ἐγκαίρως πλείστους ἀπεργοὺς καὶ ὑπεχρέωσαν ἄλλους νὰ ἀναλάβουν ἐργασίαν. Ἡ ἐπιτυχία αὕτη τοῦ Μουσσολίνι ἐστερέωσε τὴν δύναμίν του καὶ τὸν κατέστησε δημοτικώτατον. Ἐν τῷ μεταξὺ οὗτος, διὰ νὰ ἄρῃ πᾶν ἐμπόδιον εἰς τὴν κατάληψιν τῆς ἀρχῆς, ἐκηρύχθη, κατὰ τὴν φασιστικὴν συγκέντρωσιν τοῦ Οὔντινε, τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1922, ὑπὲρ τῆς βασιλευούσης μοναρχίας τῆς Ἰταλίας, ἐξασφαλίσας οὕτω τὰς συμπαθείας πολλῶν συντηρητικῶν στοιχείων μὴ φασιστικῶν καὶ τοῦ στρατοῦ. Κατόπιν τούτου, τὸν Ὀκτώβριον τοῦ ἰδίου ἔτους, διέταξε τὴν μεγάλην φασιστικὴν συγκέντρωσιν τῆς Νεαπόλεως, ὅπου ἐν τῇ κυριωτέρᾳ πλατείᾳ αὐτῆς συνῆλθον, ἀπὸ ὅλα τὰ μέρη τῆς Ἰταλίας, στρατιωτικῶς συντεταγμένοι, περὶ τοὺς 50.000 ἔνοπλοι μελανοχίτωνες, πρὸς τοὺς ὁποίους ὁ Μουσσολίνι προανήγγειλε τὴν ἐπικειμένην κατάληψιν τῆς ἀρχῆς. Μετὰ τὴν λῆξιν τῆς συγκεντρώσεως ταύτης καὶ πρὶν ἀκόμη αἱ φασιστικαὶ λεγεῶνες ἐπιστρέψουν ἅπασαι εἰς τὰς ἑστίας των, ὁ Μουσσολίνι, μεταβὰς εἰς τὸ Μιλᾶνον, διέταξε γενικὴν ἐπιστράτευσιν τῶν φασιστῶν καὶ ὠργάνωσε τὴν περίφημον «ἐκστρατείαν κατὰ τῆς Ρώμης» («marcia su Roma»), περικυκλώσας, εἰς βραχὺ χρονικὸν διάστημα, ἐκ τριῶν σημείων τὴν πόλιν δι' 70.000 περίπου μελανοχιτώνων, ὡπλισμένων μὲ παντὸς εἴδους ὅπλα καὶ σκεύη ἢ συντρίμματα αὐτῶν. Ἡ τότε κυβέρνησις Φάκτα ἐκήρυξε τὸν στρατιωτικὸν νόμον καὶ ἐπεχείρησε νὰ ὀργανώσῃ τὴν ἄμυναν τῆς Ρώμης διὰ συρματοπλεγμάτων καὶ τηλεβόλων, τοποθετηθέντων ἐπὶ τῶν γεφυρῶν τοῦ Τιβέρεως καὶ εἰς διάφορα ἄλλα ἐπίκαιρα σημεῖα. Ὁ βασιλεὺς ὅμως ἠρνήθη νὰ ἐπικυρώσῃ τὸ διάταγμα τῆς κηρύξεως τοῦ στρατιωτικοῦ νόμου, ἕνεκα δὲ τούτου ἡ κυβέρνησις Φάκτα ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν της. Κατόπιν τῆς παραιτήσεως ταύτης ὁ βασιλεὺς ἀνέθεσε τὸν σχηματισμὸν κυβερνήσεως συνασπισμοῦ εἰς τὸν Σαλάντρα, ἀλλ' ὁ Μουσσολίνι ἠρνήθη νὰ ὑποσχεθῇ εἰς αὐτὸν τὴν ὑποστήριξίν του. Ὡς ἐκ τούτου ὁ βασιλεὺς ἐκάλεσεν αὐτὸν τοῦτον τὸν Μουσσολίνι νὰ σχηματίσῃ κυβέρνησιν. Ὁ Μουσσολίνι ἐδέχθη ἀμέσως καὶ ἔσπευσεν εἰς τὴν Ρώμην, διανύσας τὸ ἀπὸ Μιλάνου εἰς Ρώμην διάστημα ἐν μέρει μὲν διὰ τοῦ σιδηροδρόμου, ἐν μέρει δὲ δι' αὐτοκινήτου, καθότι αἱ πλησιάσασαι ἐν τῷ μεταξὺ εἰς τὴν πόλιν φασιστικαὶ λεγεῶνες εἶχον ἀχρηστεύσει μέγα τμῆμα τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Ὁ Μουσσολίνι ἐντὸς ὀλίγων ὡρῶν ἐσχημάτισε τὴν πρώτην του κυβέρνησιν, διὰ τῆς προσλήψεως καὶ μὴ φασιστικῶν στοιχείων, καὶ ὡρκίσθη τὴν 1 Νοεμβρίου 1922, λαβὼν ὁ ἴδιος τὰ ὑπουργεῖα τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τῶν Ἐσωτερικῶν. Τὴν ἑπομένην ἐπετράπη εἰς τὰς φασιστικὰς λεγεῶνας τὰς ἐστρατοπεδευμένας ἐκτὸς τῆς Ρώμης νὰ εἰσέλθουν καὶ νὰ παρελάσουν θριαμβευτικῶς πρὸ τοῦ Μουσσολίνι, ὁ ὁποῖος μετὰ δύο ἡμέρας διέταξε τὴν εἰς τὰς ἕδρας των ἀναχώρησιν. Σημειωτέον ὅτι κατὰ τὴν αὐτὴν ἡμέραν ὁμὰς ἀξιωματικῶν τῆς φρουρᾶς Ρώμης ἐζήτησε νὰ τὸν ἐπισκεφθῇ καὶ νὰ ἐκφράσῃ τὰς συμπαθείας της, ἀλλ' ὁ Μουσσολίνι ἠρνήθη νὰ τοὺς δεχθῇ, συστήσας εἰς αὐτοὺς νὰ περιορισθοῦν αὐστηρῶς εἰς τὰ στρατιωτικὰ των ἔργα. Μετὰ τὸν φόνον τοῦ βουλευτοῦ Ματτεόττι παρεχώρησε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν εἰς τὸν Φεντερτσόνι, τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος ἀνέλαβε καὶ τὰ ὑπουργεῖα τῶν Στρατιωτικῶν καὶ τῶν Ναυτικῶν καὶ κατόπιν τῆς Ἀεροπορίας, τὰ ὁποῖα, βραδύτερον, συνεχώνευσεν εἰς ἕν, τὸ ὑπουργεῖον τῆς Ἐθνικῆς Ἀμύνης. Μετὰ πάροδον ὀλίγων ἐτῶν παρεχώρησε πάντα τὰ ὑπουργεῖα εἰς ἄλλους, κρατήσας αὐτὸς μόνον τὴν προεδρίαν τῆς κυβερνήσεως καὶ τοῦ μεγάλου φασιστικοῦ συμβουλίου. Τῷ 1923 ὁ Μουσσολίνι μετέβη εἰς τὸ Τερριτὲτ τῆς Ἑλβετίας, ἐπὶ τῆς λίμνης τῆς Γενεύης, ὅπου συνηντήθη μετὰ τοῦ τότε πρωθυπουργοῦ τῆς Γαλλίας Πουανκαρὲ καὶ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Ἀγγλίας Κῶρζον, πρὸς συζήτησιν τῶν βάσεων τῆς μετὰ τῆς Τουρκίας νέας συνθήκης, συνεπείᾳ τῆς ἑλληνικῆς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καταστροφῆς, συνθήκης ἥτις συνήφθη κατόπιν ἐν Λωζάννῃ. Βραδύτερον μετέβη καὶ εἰς τὸ Λονδῖνον κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος, ὅπου ἔλαβε μέρος εἰς τὴν οἰκονομικὴν διάσκεψιν τῶν πρωθυπουργῶν τῶν κυριωτέρων εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων. Τῷ 1925 μετέβη ἐπίσης εἰς τὸ Λοκάρνο τῆς Ἑλβετίας ὅπου ὑπέγραψε τὸ γνωστὸν «σύμφωνον τοῦ Λοκάρνο». Σὺν τῷ χρόνῳ ἀντικατέστησε τοὺς μὴ φασίστας ὑπουργούς του δι' ἀκραιφνῶν ὀπαδῶν του καὶ τῷ 1924 ἐνήργησε νέας ἐκλογάς, κατὰ τὰς ὁποίας συνεκέντρωσε μεγάλην πλειοψηφίαν, ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ὁποίας προέβη εἰς τὴν ψήφισιν διαφόρων νόμων, συμφώνων πρὸς τὰ φασιστικὰ ἰδεώδη καὶ τὸ φασιστικὸν πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν ἐν γένει πρόγραμμα, τὸ ὁποῖον διεμορφώθη ἐν τῷ μεταξὺ ἀπὸ τοὺς ἡγέτας τοῦ φασισμοῦ ὑπὸ τὴν ἀνωτέραν καθοδήγησιν τοῦ Μουσσολίνι, καὶ ἐπέβαλεν ἰδιότυπον ἐντελῶς καθεστὼς διακυβερνήσεως.

Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων μέτρων, τὰ ὁποῖα ἔλαβεν εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἀνόδου του εἰς τὴν ἀρχήν, ὑπῆρξε καὶ ἡ διάλυσις τοῦ βοηθητικοῦ ἀστυνομικοῦ σώματος, τῶν λεγομένων «βασιλικῶν φρουρῶν», τὸ ὁποῖον εἶχεν ἱδρύσει ὁ ἄλλοτε πρωθυπουργὸς Νίττι καὶ τὸ ὁποῖον εἶχεν ἐπιδείξει ἐξαιρετικὴν δραστηριότητα εἰς τὴν περιστολὴν τῶν φασιστικῶν βιαιοτήτων. Τὸ σῶμα τοῦτο ἀντικατέστησε βραδύτερον διὰ τῆς «ἐθνικῆς φασιστικῆς φρουρᾶς» (milizia nazionale fascista), ἥτις, διατηρήσασα τὸν ἐθελοντικόν της χαρακτῆρα, ἀνέλαβε βοηθητικὰ στρατιωτικὰ καὶ προπαιδευτικὰ κατ' ἀρχὰς καθήκοντα, κατόπιν δὲ καὶ ἀστυνομικὰ τοιαῦτα καὶ ἀπετέλεσε τὸ κυριώτερον στήριγμα τοῦ φασιστικοῦ καθεστῶτος. Ἑτέρα βασικὴ μεταρρύθμισις τοῦ Μουσσολίνι ὑπῆρξεν ἡ τροποποίησις τοῦ ἐκλογικοῦ νόμου καὶ τῆς συνθέσεως τοῦ κοινοβουλίου, διὰ τῆς καταργήσεως τῶν κομμάτων καὶ τῆς καθιερώσεως τοῦ κοινοβουλίου τῶν ἐπαγγελματιῶν καὶ τῶν ἐργατῶν. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς μεταρρυθμίσεως ταύτης διενήργησε τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1928, καθ' ἃς πάντες οἱ ἐκλεγέντες βουλευταὶ ὑπῆρξαν μέλη διαφόρων φασιστικῶν σωματείων. Βασικὸν ἐπίσης μέτρον, ἐπιβληθὲν ὑπὸ τοῦ Μουσσολίνι, ὑπῆρξε καὶ ἡ καθιέρωσις διὰ νόμου τῆς ὑποχρεωτικῆς διαιτησίας ἐργατῶν καὶ ἐργοδοτῶν εἰς τὰς μεταξὺ αὐτῶν διαφορὰς καὶ τῆς ἐξ ἴσου ἀντιπροσωπεύσεως τῶν ἐνδιαφερομένων μερῶν εἰς τὰ προκαταρκτικὰ τῆς διαιτησίας συμβούλια. Διὰ τοῦ μέτρου τούτου κατώρθωσε νὰ «κρατικοποιήσῃ» τὰς ἐργατικὰς ὀργανώσεις τῆς Ἰταλίας καὶ νὰ καταστήσῃ σπανιωτάτας τὰς ἀπεργίας, τὰς ὁποίας εἰς ἐλαχίστας μόνον περιπτώσεις ἐπέτρεψε. Τέλος κατεπολέμησε σφοδρῶς τὸν τεκτονισμόν, διαλύσας πάσας τὰς ἐν Ἰταλίᾳ στοάς.

Ἰδιαιτέραν προσοχὴν ἐπέδειξεν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς γεωργίας, ἰδίως τῶν νοτίων ἐπαρχιῶν τῆς Ἰταλίας, πρὸς τὸν σκοπὸν ὅπως ἡ χώρα καταστῇ αὐτάρκης, ἰδίως ἀπὸ ἀπόψεως τῆς σιτοπαραγωγῆς. Ἐν γένει δὲ ἔλαβε πλεῖστα μέτρα καὶ ἐπέφερε μεγίστας καὶ βασικὰς μεταρρυθμίσεις εἰς τὴν διοίκησιν, τὸ ἐμπόριον καὶ τὴν βιομηχανίαν καὶ εἰς ὅλας ἀνεξαιρέτως τὰς ἐκδηλώσεις καὶ μορφὰς τοῦ κράτους καὶ τῆς κοινωνίας, αἵτινες προσέδωσαν εἰς τὴν ὅλην ζωὴν τῆς χώρας νέον ρυθμὸν γενικῆς ἀνακαινίσεως καὶ ἐντόνου δράσεως, ἧς τὰ πρῶτα ἄμεσα ἀποτελέσματα ὑπῆρξαν ἡ ἐπιβολὴ τῆς τάξεως καὶ ἡ οἰκονομικὴ σταθεροποίησις, τῶν ἀποτέρων τοιούτων ἀποκειμένων εἰς τὴν διαπίστωσιν τοῦ μέλλοντος. Ἐν τῇ ἐξωτερικῇ πολιτικῇ ὁ Μουσσολίνι ἐπεδίωξε τὴν ἀνάδειξιν τῆς Ἰταλίας εἰς ἰσχυρὰν μεσογειακὴν Δύναμιν καὶ ἐπέτυχε τὴν ἀνύψωσιν τοῦ γοήτρου αὐτῆς μεταξὺ τῶν μικρῶν καὶ μεγάλων Δυνάμεων, διὰ τῆς συντόνου καὶ δραστηρίας στρατιωτικῆς προπαρασκευῆς καὶ διὰ σταθερᾶς καὶ ἀκάμπτου πολλάκις στάσεως, ἥτις εἴς τινας περιστάσεις ἠπείλησε καὶ αὐτὴν τὴν εἰρήνην τῆς Εὐρώπης, ὅπως συνέβη κατὰ τὸ ἐπεισόδιον τῆς καταλήψεως τῆς Κερκύρας τῷ 1923 καὶ κατὰ τὰς διαπραγματεύσεις πρὸς ἐπίλυσιν ἐκκρεμῶν ζητημάτων μετὰ τῆς Νοτιοσλαβίας καὶ τῆς Γαλλίας. Πρὸς ἀντίκρουσιν δὲ τῆς γαλλικῆς ἐπιρροῆς ἐν τῇ Κεντρικῇ καὶ τῇ Ἀνατολικῇ Εὐρώπῃ προσεπάθησεν ἐπανειλημμένως νὰ συνασπίσῃ περὶ τὴν Ἰταλίαν, ὡς ἀντίρροπον τῆς «Μικρᾶς Ἀντάντ», τὴν Οὐγγαρίαν, τὴν Βουλγαρίαν, τὴν Τουρκίαν, τὴν Ἀλβανίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα, ἐπιτυχὼν ἐν τέλει νὰ συνάψῃ μὲ τὰ κράτη ταῦτα εἰδικὰ σύμφωνα φιλίας καὶ διαιτησίας. Σημαντικὸν ἐπίσης γεγονὸς διὰ τὴν ἐσωτερικὴν καὶ τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικὴν τῆς Ἰταλίας ἐπὶ τῆς πρωθυπουργίας τοῦ Μουσσολίνι ὑπῆρξεν ἡ τῇ πρωτοβουλίᾳ τούτου λύσις τοῦ περιφήμου «Ρωμαϊκοῦ ζητήματος», ὅπερ εὑρίσκετο ἐν ἐκκρεμότητι ἀπὸ τῆς καταλήψεως τῆς Ρώμης ὑπὸ τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων τῷ 1870 καὶ ὅπερ διηυθετήθη διὰ τῆς συνάψεως, τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1930, κογκορδάτου μετὰ τοῦ Βατικανοῦ, διὰ τοῦ ὁποίου ἐδίδετο μία τις λύσις εἰς τὴν ἀπὸ τῆς συστάσεως τοῦ ἰταλικοῦ κράτους ἔριδα αὐτοῦ μετὰ τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας.

Ὁ Μουσσολίνι ἀποτελεῖ μίαν τῶν μᾶλλον ἰδιοτύπων καὶ ἰσχυρῶν μορφῶν πολιτικοῦ ἀνδρὸς τοῦ αἰῶνος. Ἐξελιχθεὶς ἀπὸ σοσιαλιστὴν εἰς ἄκρον ἐλευθερόφρονα καὶ ἀπὸ δημοκρατικὸν εἰς θερμὸν ὑπερασπιστὴν τῆς ἰταλικῆς δυναστείας καὶ καταπολεμήσας τὸν κοινοβουλευτισμόν, τὸν σοσιαλισμὸν καὶ τὸν κομμουνισμόν, καὶ ἀγόμενος ἐκ τῆς ἀρχῆς ὅτι «τὰ πάντα ὀφείλουν νὰ γίνωνται καὶ εἶναι δυνατὸν νὰ γίνωνται, συνεπῶς δὲ καὶ ἡ εὐημερία τοῦ ἀτόμου, μόνον διὰ τὸ κράτος καὶ διὰ τοῦ κράτους», περιώρισε μεγάλως τὰς ἀτομικὰς ἐλευθερίας, τὰς θεσπισθείσας καὶ στηριζομένας ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀρχῶν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως καὶ διακηρυττομένας ὑπὸ τῶν φιλελευθέρων πάσης πολιτικῆς χροιᾶς καὶ προσεπάθησε νὰ φθάσῃ εἰς τὸν σκοπόν του διὰ τῆς «φασιστικοποιήσεως τοῦ ἔθνους» (fascistizzare la nazione) καὶ διὰ δικτατορικῶν καὶ πολλάκις σκληρῶν μέσων, ἅτινα ἐνεφάνισαν αὐτὸν ἰσχυρότατον κυβερνήτην μεγάλης θελήσεως καὶ σιδηρᾶς πυγμῆς. Ρήτωρ νευρώδης καὶ ἑτοιμόλογος, παρεμβάλλων συχνάκις εἰς τὰς ἀγορεύσεις του ἐρωτήσεις, ἵνα δεχθῇ ἀπαντήσεις καὶ ἀνταπαντήσῃ, κατέστη εἰς μεγάλα στρώματα τοῦ ἰταλικοῦ λαοῦ λίαν δημοφιλὴς καὶ πρότυπον δραστηριότητος καὶ ἐργατικότητος, ἣν ἐπέτυχε νὰ μεταδώσῃ εἰς πάσας τὰς κρατικὰς καὶ ἰδιωτικὰς ὀργανώσεις ἐν Ἰταλίᾳ. Παρὰ τὴν μεγάλην του ὅμως ταύτην δημοτικότητα, ἐδημιούργησε μεγάλα μίση καὶ κατ' ἐπανάληψιν ἐσημειώθησαν δολοφονικαὶ κατ' αὐτοῦ ἀπόπειραι, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι ἡ τοῦ πρῴην σοσιαλιστοῦ βουλευτοῦ ταγματάρχου Τίτου Τσανιμπόνι τῷ 1925, ἡ τῆς Ἰρλανδῆς Βιολέτας Τζίμπσον, ἥτις ἐτραυμάτισεν αὐτὸν διὰ περιστρόφου εἰς τὴν ῥῖνα, ἐξερχόμενον τοῦ Καπιτωλίου, τῷ 1926, καὶ ἡ τοῦ ἐκ Γαλλίας Ἰταλοῦ ἐργατικοῦ Σακέττι διὰ βόμβας ῥιφθείσης κατὰ τοῦ αὐτοκινήτου του. Αὕτη ὅμως προσκρούσασα ἐπὶ τοῦ αὐτοκινήτου ἀνετινάχθη εἰς τὴν ὁδόν, ὅπου καὶ ἐξερράγη. Ἐπίσης ὁ Μουσσολίνι προεκάλεσε σφοδρὰς κατ' αὐτοῦ ἐπιθέσεις διὰ τοῦ τύπου καὶ διὰ τῆς ἐκδόσεως ἰδιαιτέρων φυλλαδίων καὶ βιβλίων. ὄχι μόνον πλείστων Ἰταλῶν ἀναγκασθέντων νὰ καταφύγουν εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ἀλλὰ καὶ πολλῶν ξένων πολιτικῶν, διανοουμένων καὶ ἐργατικῶν, οἵτινες ἀμφισβητοῦν τὴν σταθερότητα, τὴν χρησιμότητα καὶ τὴν ἀποτελεσματικότητα τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἐγκαθιδρυθέντος ἐν Ἰταλίᾳ καθεστῶτος.

Τῷ 1924 ὁ Μουσσολίνι, δι' ἐναισίμου διατριβῆς αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ Μακκιαβέλι, ἐγένετο διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Περουγίας. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰταλίας ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸ ἀνώτατον ἰταλικὸν παράσημον τοῦ Περιδεραίου τῆς Ἀννουντσιάτας, ὅπερ παρέχει εἰς αὐτὸν τὸ δικαίωμα ν' ἀποκαλῆται ἐξάδελφος τοῦ βασιλέως καὶ νὰ λαμβάνῃ μέρος εἰς τὰ βασιλικὰ οἰκογενειακὰ συμβούλια. Ὁ Μουσσολίνι εἶναι πολυγραφώτατος, γράψας πλεῖστα ἄρθρα καὶ μελέτας εἰς τὰς ἐφημερίδας τὰς ὁποίας διηύθυνε, καθὼς καὶ εἰς περιοδικά, ἰδίως δὲ εἰς τὰς ἐφημερίδας «Avanti!», «Il Popolo d' Italia», εἰς τὸ περιοδικόν του «Ἱεραρχία» κ.τ.λ. Ἐπίσης συνειργάσθη εἰς πολλὰς ξένας ἐφημερίδας, πρὸ καὶ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς πρωθυπουργίας του. Τῷ 1920 ἐξέδωσε «Τὸ πολεμικόν μου ἡμερολόγιον», τῷ δὲ 1921 ἐξεδόθησαν εἰς τόμον διάφοροι ἀγορεύσεις του ὑπὸ τὸν τίτλον «Λόγοι πολιτικοί». Τῷ 1923 ἐξεδόθη ἕτερος τόμος τῶν πολιτικῶν του λόγων ἀπὸ τοῦ 1914 μέχρι τοῦ 1923, καὶ τῷ 1924 τὰ «Dinturna». Ἐπίσης τῷ 1925 συνεκεντρώθησαν εἰς ἰδιαίτερον τόμον ἕτεροι λόγοι του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ νέα πολιτικὴ τῆς Ἰταλίας» καὶ τῷ 1928 ἄλλοι λόγοι του ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ νέον ἡνωμένον πολιτικὸν κράτος».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Antonio Beltrameli*, «L' uomo nuovo» (1918).—*F. Güterbock*, «Mussolini und der Fascismus» (1923).—*Margaritta Sarfatti*, «Mussolini» (1925).—*E. v. Beckerath*, «Wesen und Werden des faschistischen Staates» (1927).—*Spencer Jones*, «Benito Mussolini» (1927).—*Vittorio de Fiori*, «Mussolini» 1928.
Μ. Δ. ΒΑΤΑΛΑΣ

**Μουσσόργκσκι** (Moussorgski), ***Μόδεστος-Πέτροβιτς.*** Διάσημος Ρῶσος συνθέτης (1835—1881). Κατ' ἀρχὰς ἠκολούθησε τὸ στρατιωτικὸν στάδιον καὶ ἐγένετο ἀξιωματικός. Λόγῳ ὅμως τῆς ἐμφύτου κλίσεως πρὸς τὴν μουσικὴν ἐγνωρίσθη μὲ πολλοὺς ἐπιφανεῖς Ρώσους μουσικούς, τὸν Μποροντίν, τὸν Νταργκομύσκι, ὅστις πρῶτος τῷ ἀπεκάλυψε τὴν ἐθνικὴν ρωσικὴν μουσικήν, τὸν Μπαλακίρεφ, ὅστις τὸν ἐμύησεν εἰς τὰ μυστικὰ τῆς ἐνορχηστρώσεως καὶ κατόπιν παρῃτήθη τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ. Ἔκτοτε ἤρχισε ζῶν βίον ἔκδοτον, ὅστις ὡδήγησεν αὐτὸν προώρως εἰς τὸ τάφον. Τὴν φήμην του ὡς μουσικοῦ ἀπέκτησε τῷ 1874 διὰ τοῦ μελοδράματος «Βόρις Γκοντουνώφ».

Ὁ Μουσσόργκσκι ὑπῆρξεν ἀναμφισβητήτως ἡ ἰσχυροτέρα διάνοια τοῦ «Ὁμίλου τῶν πέντε», ὡς λέγεται ἡ ρωσικὴ ὁμὰς ἡ ἀκολουθοῦσα τὰς ἐθνικιστικὰς τάσεις τῆς μουσικῆς. Αὐτὴ αὕτη ἡ ἀτέλεια τῆς μορφώσεώς του καὶ αἱ ἐλλείψεις τῆς τεχνικῆς συνέτεινον ὥστε τὸ ὕφος του ν' ἀποκτήσῃ τὴν ἔξω παντὸς κανόνος καὶ σχολαστικότητος ἀνεξαρτησίαν, ἥτις εἶναι τὸ κύριον χαρακτηριστικὸν τῆς δημιουργίας του. Μὲ τὴν ὀργανικὴν μουσικὴν ἠσχολήθη ὀλίγον. Ἐκ τῶν ἔργων του διὰ κλειδοκύμβαλον ἐξέχουσαν θέσιν κατέχουσιν αἱ «Εἰκόνες ἐκ θέσεως», αἵτινες ἔτυχον ἐνορχηστρώσεως ἐκ μέρους

Digitized by Google

τοῦ Τουσμάλωφ καὶ τοῦ Ραβέλ. Δι' ὀρχήστραν ἔγραψε: «Intermezzo in modo classico», «Σκέρτσο», «Τουρκικὸν ἐμβατήριον», «Ἡ νύχτα στὸ φαλακρὸ βουνό», ἥτις εἶναι συμφωνικὴ εἰκών, εὐρέως ἀνεπτυγμένη, ἀναθεωρηθεῖσα καὶ ἐκ νέου ἐνορχηστρωθεῖσα ὑπὸ τοῦ Ρίμσκυ - Κορσακώφ. Καταπληκτικῶς ὅμως πρωτότυπος παραμένει ὁ Μουσσόργκσκι εἰς τὰς μελῳδίας του. Ἑκάστη ἐξ αὐτῶν εἶναι ἓν μικρὸν δρᾶμα ἢ μικρὰ κωμῳδία. Αἱ σειραί: «Χωρὶς ἥλιο», «Τραγούδια καὶ χοροὶ τοῦ θανάτου», «Ἡ κάμαρα τῶν παιδιῶν» κτλ. παραμένουσι μέχρι σήμερον ἀνυπέρβλητοι. Ἔγραψεν ἐπίσης ἔργα τινὰ διὰ χορῳδίαν: «Ἡ ἧττα τοῦ Σεναχερίμπ», «Ὁ Ἰησοῦς τοῦ Ναυῆ», «Σαλαμπό», χορικὰ διὰ τὸν «Οἰδίποδα» κ. ἄ. Τῷ 1868 ἔγραψε τὴν μίαν μόνον πρᾶξιν τοῦ «Γάμου» τοῦ Γκόγκολ, μελοποιήσας ὁλόκληρον τὸ κείμενον τῆς κωμῳδίας ἵνα θέσῃ εἰς ἐφαρμογὴν τὰς ἰδέας του «περὶ τῆς δραματικῆς μουσικῆς εἰς πεζόν». Τέλος τῷ 1874 ἐπέτυχε ν' ἀναβιβάσῃ ἀπὸ σκηνῆς τὸ μελόδραμα «Βόρις Γκοντουνώφ», ἐπὶ κειμένου ἐν μέρει τοῦ Πούσκιν καὶ ἐν μέρει ἰδικοῦ του. Τὸ ἔργον τοῦτο, παρὰ τὰς ἀτελείας του, εἶναι τὸ πλέον παράτολμον τῆς ρωσικῆς σχολῆς καὶ τὸ κατ' ἐξοχὴν ἐθνικὸν μελόδραμα τῆς Ρωσίας, ἀληθινὸν ἔπος, πλῆρες ζωῆς καὶ συγκινήσεως. Τῷ 1896 τὸ μελόδραμα τοῦτο ἐξεδόθη μὲ νέαν ἐνορχήστρωσιν τοῦ Ρίμσκυ-Κορσακὼφ καὶ μὲ πλείστας ὅσας μεταβολὰς εἰς τὸ πρωτότυπον. Ὁ Ρίμσκυ-Κορσακὼφ ἐνωρχήστρωσεν ἐπίσης τὸ τελευταῖον μελόδραμα τοῦ Μουσσόργκσκι «Κοβαντσίνα», οὗτινος ὁ συνθέτης ἀφῆκε τὴν μουσικὴν μόνον ἐν μερολογίῳ δι' ᾆσμα καὶ κλειδοκύμβαλον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *P. d'Alheim,* Moussorgsky (1896).—*W. Baskine,* Moussorgsky (1887).—*M. Olénine d'Alheim,* Le legs de Moussorgsky (1908).—*W. Stassow,* Moussorgsky (1896).—*M. D. Calvocoressi,* Moussorgski (1911, γαλλιστί).

Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**μουσσών,** —*ῶνος* (ὁ) *[Μετεωρ.]*· βλ. λ. *ἄνεμος* (τ. Δ' σ. 694 β' ἐπ.).

— **μουσσώνων** ***ζώνη***· βλ. λ. *ζῶναι τῆς Γῆς.*

**Μουσταῆς (*Μουσταφᾶ βέης Κιαφεζέζης*).** Τουρκαλβανὸς ἀρχηγός, ἀποσταλεὶς τῷ 1821 μετὰ δυνάμεως ἐξ Ἰωαννίνων εἰς Καρπενήσιον, Ἄμφισσαν καὶ τέλος εἰς Ἀθήνας. Κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1826, ἐπιμελούμενος τῆς μεταφορᾶς ζῳοτροφιῶν καὶ πολεμεφοδίων, πολλάκις ἐνίκησε τμήματα τῶν ἀνδρῶν τοῦ Καραϊσκάκη, ἀλλὰ κατὰ Νοέμβριον διερχόμενος ἐξ Ἀραχώβης τῆς Παρνασσίδος ἐπολιορκήθη καὶ πληγεὶς ἀπέθανε, τὴν δὲ κεφαλήν του ἔστειλεν ὁ Καραϊσκάκης πρὸς τὴν κυβέρνησιν. Τ. Ε. Ε.

— **Μουσταῆ** ***πασᾶς Σκόδρας***· βλ. λ. *Σκόδρα* Μουσταῆ πασᾶς.

**Μουστάκας,** ***Διονύσιος.*** Ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1900. Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας εἰς τὸ Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον, διατελέσας βοηθὸς καὶ ἐπιμελητὴς τῶν ἐργαστηρίων ὀρυκτολογίας καὶ γεωλογίας, τῷ δὲ 1920 ἔτυχε διπλώματος χημικοῦ. Ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν γεωγραφίαν καὶ τὰ οἰκονομικά, ἐδημοσίευσε τὰς ἑξῆς ἐργασίας: «Ἡ μεταλλουργικὴ βιομηχανία ἐν Ἑλλάδι» (1922), «Ἡ βιομηχανία τῆς Κεντρικῆς Μακεδονίας (1922), «Μελέται ἐπὶ τῶν ὀρυκτῶν πρώτων ὑλῶν τῆς Ἑλλάδος» (1923), «Ἡ μεταλλευτικὴ βιομηχανία τῶν Κυκλάδων» (1923), «Ἡ νῆσος Ἄνδρος» (1924), «Αἱ ἐν Ἑλλάδι πηγαὶ βιομηχανικῆς ἐνεργείας» (1927), «Ἡ Σάριζα τῆς Ἄνδρου» (1928), «Ἡ νῆσος Ἀνάφη» (1929) «Ἡ ἐν Ἄνδρῳ μονὴ τοῦ Ἁγίου Νικολάου» (1930), «Ὁ Βόλος ἀπὸ οἰκονομικογεωγραφικῆς ἀπόψεως» (1930), «Ἡ νῆσος Ἀμοργὸς» (1931) κ. ἄ. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». —Ω.

— **Μουστάκας,** ***Κωνσταντῖνος.*** Ἕλλην ἠθοποιός, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1883. Δεκαεπταετὴς τὴν ἡλικίαν ἀνῆλθεν εἰς τὴν σκηνήν, ἐπιδοθεὶς κυρίως εἰς τοὺς δραματικοὺς ρόλους. Ἰδίᾳ ἐγένετο πασίγνωστος μὲ τὸν ρόλον τοῦ Λεονταρῆ, ὃν διέπλασε μετὰ περισσῆς τέχνης. Ἔγραψε καί τινα ἐλαφρὰ ἔργα, ἐν οἷς «Τὸ φραγκόσυκο». Ἀπέθανεν ἐν Αἰγύπτῳ τῷ 1926. Ν. Ι. Λ.

— **Μουστάκα,** ***Ἀθανασία.*** Ἑλληνὶς ἠθοποιός, θυγάτηρ τοῦ ἠθοποιοῦ Ἰ. Πλέσσα, γεννηθεῖσα ἐν Ἀθήναις τῷ 1898. Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ἐλαφρὸν μουσικὸν θέατρον καὶ κατόπιν ἀφωσιώθη εἰς τὸ σοβαρὸν τοιοῦτον, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ σήμερον ἓν τῶν ἐπιλέκτων στοιχείων. Ὑπῆρξε σύζυγος τοῦ ἀποθανόντος ἠθοποιοῦ Κ. Μουστάκα. Ν. Ι. Λ.

**μουστακαλῆς** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἔχων μεγάλους μύστακας, μυστακοφόρος.

**μουστάκι** (τό)· δημοτ., μύσταξ: «στρίβει τὸ μουστάκι του», «ἀγκίστρι τό 'χει τὸ μουστάκι του» || ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τὴν *ὑπήνιον* (τοῦ προβόλου)· *κόντρα μουστάκι* ἢ παρυφήνη.

— **μουστάκια τοῦ** ***κατσουλιοῦ*** (τὰ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *φλέως ὁ ἐχινοειδής.*

**μουστακοδέτης** (ὁ)· τὸ μέσον μὲ τὸ ὁποῖον δένεται τὸ μουστάκι διὰ νὰ στρώνουν αἱ τρίχες.

**Μουστάκος** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Βοθιανῶν τῆς ἐπαρχίας Σελίνου τοῦ νομοῦ Χανίων. Κάτ. (1928) 162. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

**μουστακοφόρος** (ὁ)· ὁ ἔχων μεγάλον μύστακα, μουστακαλῆς.

**μουσταλευριὰ** (ἡ) *[Ζαχαρ.].* Εἶδος γλυκίσματος παρασκευαζομένου κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ τρυγητοῦ. Πρὸς τοῦτο καθαρίζομεν κατὰ πρῶτον τὸν μοῦστον καλῶς, ὡς ἑξῆς: Δι' ἀναλογίαν 5 ὀκάδων μούστου λαμβάνομεν δύο κουταλιὲς στάκτης ξυλανθράκων, κοσκινισμένης καὶ καθαρᾶς, τὴν δένομεν ἐντὸς τουλουπανίου, τὴν κρεμῶμεν ἐντὸς τοῦ μούστου καὶ κατόπιν τὴν ἀφίνομεν νὰ βράσῃ ὀλίγον, ἀφαιροῦντες συνάμα τὸν σχηματιζόμενον ἀφρόν. Ἀνασύρομεν κατόπιν τὴν στάκτην καὶ ἀφίνομεν νὰ κρυώσῃ τελείως ὁ μοῦστος καὶ νὰ κατασταλάξῃ, ὁπότε τὸν στραγγίζομεν. Μετροῦμεν κατόπιν τὸν μοῦστον εἰς ποτήρια καὶ τὸν θέτομεν νὰ βράσῃ ἐκ νέου, ρίπτομεν δὲ ἐντὸς αὐτοῦ διὰ κάθε 8 ποτήρια ἕνα ποτήρι σιμιγδάλι καὶ τὸν ἀνακατεύομεν συνεχῶς μὲ ξυλίνην κουτάλαν, μέχρις ὅτου πήξῃ καὶ ἀρχίσῃ νὰ σχηματίζῃ φοῦσκες εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, ὁπότε τὸν ἀποσύρομεν ἀπὸ τὴν φωτιὰν καὶ ἔχομεν τὴν μουσταλευριάν. Προσθέτομεν ἀμύγδαλα καὶ κουκουνάρια ἢ καρύδια καὶ τὴν σερβίρομεν ἀμέσως ζεστὴν εἰς πιατέλλες, τὴν πασπαλίζομεν μὲ κανέλλα καὶ σησάμι κοπανισμένον καὶ ἀφοῦ κρυώσῃ τὴν κόπτομεν εἰς τεμάχια. Μ. ΔΡ.

**Μουσταλῆ** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τοῦ δήμου Βεροίας τῆς ἐπαρχίας Ἡμαθίας τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 58. Χ. Δ.

**μουστάρδα** (ἡ). Ἐπιτραπέζιον ἄρτυμα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον δριμείας καυστικῆς γεύσεως, βάσιν ἔχον τὸ σιναπάλευρον. Παρασκευάζεται ἐκ κόνεως ἀλεύρου μελανοῦ ἢ λευκοῦ σινάπεως, ἀπολιπανθέντος ἢ μή, τῇ προσθήκῃ ὄξους ἢ οἴνου καὶ διαφόρων ἄλλων ὑλῶν, αἵτινες ἔχουσι σκοπὸν τὴν βελτίωσιν τῆς γεύσεως καὶ τὴν δημιουργίαν ἰδίων τύπων. Αἱ συνηθέστερον χρησιμοποιούμεναι ἐκ τῶν ὑλῶν τούτων εἶναι τὸ ἄμυλον, ἡ σάκχαρις, τὰ γαρύφαλλα, ἡ πιμέντα κλπ. Σ. Γ.

**μουστάρδα** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *σίναπι τὸ λευκόν.*

**μουσταρδιέρα** (ἡ)· τὸ δοχεῖον τῆς μουστάρδας.

**Μουσταφᾶ.** Μουσουλμανικὸν κύριον ὄνομα, πολὺ σύνηθες παρὰ Τούρκοις, οἵτινες τὸ ἐκφέρουσι κατὰ συγκοπὴν καὶ *Μουστᾶ.* Εἶναι ἐπίθετον ἀραβικόν, σημαῖνον κυριολεκτικῶς ἐκλεκτός, διαπρεπής. *Μουσταφᾶ* ἐκαλεῖτο καὶ ὁ προφήτης τῶν Μουσουλμάνων, ὁ Μωάμεθ. Ν. Μ.

— **Μουσταφᾶ.** Ὄνομα τεσσάρων σουλτάνων τῆς Τουρκίας (βλ. *Μουσταφᾶς*).

— **Μουσταφᾶ.** Ψευδώνυμον τοῦ Γάλλου στρατηγοῦ καὶ συγγραφέως *Ζὲνγκ* Ἐρρίκου-Φήλικος-Θεοδώρου (βλ. λ.).

— **Μουσταφᾶ,** ἢ ***Ἀλεμδάρ***· βλ. λ. *Ἀλεμδάρ.*

— **Μουσταφᾶ** ***Ἰωάννης-Ἀρμάνδος.*** Μωαμεθανὸς περιηγητής, γεννηθεὶς περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἐν Τουρκίᾳ καὶ ἀποθανὼν περὶ τὸ 1660 παρὰ τοὺς Παρισίους. Περιηγηθεὶς κατ' ἀρχὰς τὴν Ἀνατολήν, μετέβη βραδύτερον εἰς Γαλλίαν, ἔνθα ἀσπασθεὶς τὸ καθολικὸν θρήσκευμα ἐχρησιμοποιήθη ὑπὸ τοῦ Ρισελιὲ ὡς διερμηνεύς. Δὶς συνώδευσεν εἰς Μαρόκον τὸν Ραζιγὺ (Razilly), ἀπεσταλμένον τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ'. Ἔγραψε «Περιηγήσεις εἰς Ἀφρικήν», ἔνθα περιέχονται οἱ ὑπὸ τῶν Γάλλων εἰς τὰς ἀκτὰς τῶν βασιλείων τοῦ Φὲζ (1629 καὶ 1630) καὶ τοῦ Μαρόκου (1632) γενόμενοι πλόες. Ν. Μ.

— **Μουσταφᾶ,** ***Καρὰ — πασᾶς.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Καρὰ*-Μουσταφᾶ πασᾶς).

— **Μουσταφᾶ,** ***Κεμὰλ-πασᾶς.*** Τοῦρκος στρατηγὸς καὶ πολιτικός, σήμερον πρόεδρος τῆς τουρκικῆς δημοκρατίας (βλ. *Κεμάλ*).

— **Μουσταφᾶ,** ***Κεχαγιᾶ — βέης***· βλ. λ. *Κεχαγιᾶ-βέης* Μουσταφᾶ.

— **Μουσταφᾶ,** ***Κιοπρουλῆ-ζαδὲ —.*** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Κιοπρουλῆ-ζαδὲ* Μουσταφᾶ).

— **Μουσταφᾶ,** ***Κοτζᾶ — πασᾶ.*** Βεζύρης τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Κοτζιὰ* Μουσταφᾶ πασᾶ).

—**Μουσταφᾶ-*Λαλᾶ πασᾶς*** (1535—1580). Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1535 πλησίον τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Προσληφθεὶς ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Σουλεϊμὰν (1520—1566) ὡς παιδαγωγὸς τῶν υἱῶν του Βαγιαζὶτ καὶ Σελίμ, ὑπέθαλψε τὰς μεταξὺ τῶν ἑτεροθαλῶν τούτων ἀδελφῶν ἀντιζηλίας καὶ συγχρόνως, θηρεύων τὴν εὔνοιαν τοῦ Σελίμ, μετῆλθε πᾶν μέσον ὅπως προκαλέσῃ τὴν δυσπιστίαν καὶ τὴν ὀργὴν τοῦ σουλτάνου κατὰ τοῦ Βαγιαζίτ. Ὅταν, τῷ 1577, ὁ τελευταῖος οὗτος ἐστασίασε κατὰ τοῦ πατρός του καὶ ὠχυρώθη ἐντὸς τοῦ Ἰκονίου, ὁ Μουσταφᾶ-Λαλᾶ συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Σελὶμ κατὰ τοῦ στασιαστοῦ ἀδελφοῦ του καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν κατατρόπωσιν τούτου.

Ὁ Σελίμ, ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1566, προσέλαβεν ἀμέσως τὸν Μουσταφᾶν πλησίον του ὡς μέγαν βεζύρην καὶ αὐλάρχην του, τῷ δὲ 1569 ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς Ὑεμένην τῆς Ἀραβίας πρὸς κατάπνιξιν τῆς ἐκεῖ ἐκραγείσης ἐπαναστάσεως. Ἀποτυχὼν εἰς τὴν ἀποστολήν του ταύτην ὁ Μουσταφᾶς ἀπώλεσε τὴν εὔνοιαν τοῦ Σελὶμ καὶ ἀπεπέμφθη τῶν ἀνακτόρων, ἀλλὰ μετὰ ἓν ἔτος (1570) διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τοῦ πρὸς κατάκτησιν τῆς Κύπρου ἀποσταλέντος στρατοῦ. Ἐντὸς ὀλίγου ἐξεπόρθησε τὴν ὀχυρὰν Νικοσίαν, ἣν ἐπυρπόλησεν, ἀφοῦ προηγουμένως ἐλεηλάτησεν αὐτὴν καὶ ἔσφαξε τοὺς δεκαπεντακισχιλίους κατοίκους της. Προσβαλὼν κατόπιν τὴν Λευκωσίαν ἐξεπόρθησεν αὐτὴν τὴν 9 Σεπτεμβρίου, μεθ' ὃ ἐπολιόρκησε τὴν Φαμαγούσταν, ἣν ὑπερησπίζετο ὁ γενναῖος Ἑνετὸς στρατηγὸς Βραγαδῖνος. Μετὰ ἐνδεκάμηνον πολιορκίαν ἐξηνάγκασε καὶ τὴν πόλιν ταύτην νὰ συνθηκολογήσῃ, ἐλλείψει τροφῶν (τὴν 1 Αὐγ. 1571) καὶ τότε, παρασπονδῶν, κατέσφαξε πᾶσαν τὴν παραδοθεῖσαν φρουρὰν καὶ ἐξέδαρε ζῶντα τὸν ἀρχηγὸν αὐτῆς Βραγαδῖνον. Τοιουτοτρόπως συνεπλήρωσε τὴν κατάκτησιν τῆς Κύπρου, ἀλλ' ἀμέσως τότε διαβληθεὶς παρὰ τῷ σουλτάνῳ ὑπὸ τῶν γενιτσάρων (οἵτινες εἶχον δυσαρεστηθῆ ἐναντίον του, διότι τοὺς εἶχεν ἀποστερήσει μέρους τῆς λείας των) καθῃρέθη τῆς ἀρχηγίας (15 Σεπτεμ. 1571) καὶ ἐξωρίσθη εἰς μεμακρυσμένην τινὰ ἐπαρχίαν, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1578, ὅτε ἀνεκλήθη ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Γ' (1573—1595) καὶ διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τῆς κατὰ τῆς Περσίας ἐκστρατείας, καθ' ἣν νικήσας τὰ περσικὰ στρατεύματα ἐπέτυχεν, ἀπὸ τοῦ Ἰουλίου μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου 1578, νὰ καταλάβῃ τήν τε Γεωργίαν καὶ τὸ Σιρβάν· ἀδρανήσας ὅμως κατόπιν ἐν Ἐρζεροὺμ ἐγένετο παραίτιος νὰ ἀνακτηθῇ ὑπὸ τῶν Περσῶν ἡ Τιφλίς, ἕνεκεν δὲ τούτου καθῃρέθη τῆς ἀρχιστρατηγίας καὶ διετάχθη νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Κωνσταντινούπολιν. Καταληφθεὶς τότε ὑπὸ ἀπελπισίας, ηὐτοκτόνησε (1580). Ν. ΚΛΣ

— **Μουσταφᾶ,** ***Μπορεκλουτζέ.*** Τοῦρκος δερβίσης. Βλ. λ. *Μπορεκλουτζέ,* Μουσταφᾶ.

—**Μουσταφᾶ-*Ναϊλῆ πασᾶς***· βλ. *Γκιριτλῆς.*

—**Μουσταφᾶ** ***πασᾶς Δεφτερδάρ.*** Ἀρχιναύαρχος τῆς Τουρκίας (βλ. λ. *Δεφτερδὰρ* Μουσταφᾶ πασᾶς).

—**Μουσταφᾶ** ***Ρεσὶτ πασᾶς***· βλ. *Ρεσὶτ πασᾶς.*

**Μουσταφᾶ** ***Ἐφένδη*** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀχαΐας μικροσυνοικισμοῦ *Λεκάνη* (βλ. λ.). Χ. Δ.

—**Μουσταφᾶ** ***Ὀγλὰρ*** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Στεγνὸν* (βλ. λ.).

—**Μουσταφᾶ-*πασᾶ*** (*Μουσταφᾶ-πασᾶ Κιοπρουσοῦ,* ἢ *Δζίσρι-Μουσταφᾶ πασᾶ*) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Βουλγαρίας, μετονομασθεῖσα ἀπὸ τεσσαρακονταετίας ὑπὸ τῶν Βουλγάρων εἰς *Σβίλενγραδ* (βλ. λ.).

— **Μουσταφᾶ-*πασᾶ*** *[Γεωγρ.].* Νησίον ἐγγύτατα τῶν Ψαρῶν (πλάτ $38^{0}$ 36' Β., μῆκ. $25^{0}$ 33' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1891: Psara island) σχηματίζον τὴν δυτικὴν τῆς νήσου ἐσχατιάν. Σ. Ε. Λ.

—**Μουσταφᾶ,** ***Χατζῆ*** — *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ νομοῦ Λαρίσης (βλ. *Χατζῆ* Μουσταφᾶ). Χ. Δ.

**Μουσταφᾶδες** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Θηβῶν τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτοικοι (1928) 551. Χ. Δ.

**Μουσταφακλῆ** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Κοκκίνα* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μουσταφάμπεη** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος χωρίου *Ἡράκλεια* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μουσταφᾶς.** Ὄνομα τεσσάρων σουλτάνων τῆς Τουρκίας. —1) Ὁ *Α'*. 15ος σουλτᾶνος, υἱὸς Μεχμὲτ τοῦ Γ', γεννηθεὶς τῷ 1591 καὶ διαδεχθεὶς εἰς τὸν θρόνον τὸν πρεσβύτερον ἀδελφόν του Ἀχμὲτ Α', ἀποθανόντα τῷ 1617. Ἐξεθρονίσθη μετὰ τρεῖς μῆνας ὡς ἠλίθιος καὶ ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του Ὀσμὰν τοῦ Β'. Ἐπανεφέρθη ὅμως εἰς τὸν θρόνον τῷ 1622 ὑπὸ τῶν γενιτσάρων ἐπαναστατησάντων κατὰ τοῦ Ὀσμάν, καὶ βασιλεύσας κατ' ὄνομα μόνον ἐπὶ ἓν ἔτος καὶ τέσσαρας μῆνας ἐξεθρονίσθη πάλιν τὴν 9ην Σεπτεμβρίου 1623 καὶ κλεισθεὶς ἐν τοῖς ἀνακτόροις ἀπέθανε τὸν Ἰούνιον τοῦ 1639.

—2) Ὁ *Β'*. 22ος σουλτᾶνος, υἱὸς Μεχμὲτ τοῦ Δ', γεννηθεὶς τῷ 1664 καὶ διαδεχθεὶς τῷ 1695 τὸν θεῖόν του Ἀχμὲτ Β', ἐνῷ ἐξηκολούθουν οἱ κατὰ τῆς Αὐστρίας, Ρωσίας, Ἑνετίας καὶ Πολωνίας πόλεμοι. Μετὰ τὴν εἰρήνην τοῦ Κάρλοβιτς (1699)

Digitized by Google

ἔγιναν ἀνωφελεῖς ἀπόπειραι βελτιώσεως τῆς ἐσωτερικῆς καταστάσεως τῆς Τουρκίας. Ἐν τούτοις αἱ ταραχαὶ ἐξηκολούθουν καὶ ὁ σουλτᾶνος ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τῷ 1703.

3) Ὁ Γ'. 26ος σουλτᾶνος, υἱὸς τοῦ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Γ', ἐγεννήθη τῇ 22 Ἰανουαρίου 1717 καὶ διεδέχθη τῷ 1757 τὸν ἐξάδελφόν του Ὀσμὰν τὸν Γ'. Ἐπ' αὐτοῦ ἐξερράγη ὁ κατὰ τῆς Ρωσίας πόλεμος ἐξ ἀφορμῆς τοῦ ζητήματος τῆς διαδοχῆς τῆς Πολωνίας (1768), κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὁποίου ἐπεχειρήθη ἡ ἀτυχὴς ἑλληνικὴ ἐπανάστασις τοῦ 1769 καὶ κατεστράφη ὁ τουρκικὸς στόλος ἐν Τσεσμέ. Ὁ πόλεμος διήρκει ἀκόμη, ὅταν ὁ Μουσταφᾶς ἀπέθανε (9/20 Ἰανουαρίου 1774), καθ' ἣν στιγμὴν ἡτοιμάζετο ν' ἀναλάβῃ αὐτοπροσώπως τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στρατοῦ τοῦ Δουνάβεως.

—4) Ὁ Δ'. 29ος σουλτᾶνος, υἱὸς Ἀβδοὺλ-Χαμὶτ τοῦ Α', γεννηθεὶς τῷ 1779 καὶ ἀνελθὼν τὸν θρόνον τῇ 16/28 Μαΐου 1807 κατόπιν ἐπαναστάσεως τῶν γενιτσάρων κατὰ τῶν στρατιωτικῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ ἐξαδέλφου του Σελὶμ τοῦ Γ'. Εὐθὺς ἀπὸ τῆς ἀναρρήσεώς του ἠναγκάσθη νὰ καταργήσῃ ὅλας τὰς μεταρρυθμίσεις καὶ κυρίως τὸ νέον, κατὰ τὰ εὐρωπαϊκὰ συστήματα, ἐκγυμναζόμενον στρατιωτικὸν σῶμα, τὸ ἀποκληθὲν νιζάμι-τζεδίτ. Ἡ θέσις τῆς Τουρκίας ἀπέβαινεν ἐν μέσῳ τῶν ναπολεοντείων πολέμων κρίσιμος, ἀλλ' ἡ εἰρήνη τοῦ Τιλσὶτ μεταξὺ Γαλλίας καὶ Ρωσίας ἐπρόλαβεν ἄλλας περιπλοκάς. Εὐθὺς κατόπιν ὁ πασᾶς τοῦ Ρουστσουκίου Μουσταφᾶς Μπαϊρακτάρ, ὀπαδὸς τῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ Σελίμ, ἐβάδισεν ἐπὶ κεφαλῆς στρατιωτικοῦ σώματος πρὸς τὴν Κωνσταντινούπολιν μὲ τὸν ἀπόρρητον τηρούμενον σκοπὸν νὰ παλινορθώσῃ τὸν Σελίμ. Κατώρθωσε πράγματι νὰ φθάσῃ μέχρι τῶν ἀνακτόρων, ἀλλὰ τὴν στιγμὴν ἐκείνην ὁ Μουσταφᾶς διέταξε νὰ φονευθῇ ὁ Σελὶμ καὶ νὰ ριφθῇ τὸ πτῶμα εἰς τὸν πολιορκοῦντα τὸ παλάτιον στρατόν. Ἐκμανεὶς ὁ Μπαϊρακτὰρ εἰσήλασεν εἰς τὰ ἀνάκτορα καὶ ἐθανάτωσε τὸν Μουσταφᾶν (16/28 Ἰουλίου 1808), ἀνεκήρυξε δὲ σουλτᾶνον τὸν ἀδελφὸν τούτου Μαχμοὺτ τὸν Α'.

Ν. Μ.

— **Μουσταφᾶς**. Ὀσμανίδης σουλτανόπαις, υἱὸς τοῦ σουλτάνου Σουλεϊμὰν Α' τοῦ νομοθέτου καὶ μιᾶς Κιρκασίας εὐνοουμένης. Διαβληθεὶς ὑπὸ τῆς Ρωσίδος τὸ γένος παλλακῆς καὶ κατόπιν σουλτάνας Ρόσας ἢ Ροξολάνης, τῆς μετονομασθείσης εἰς Χασεκὶ-Χουρρέμ, ὡς συνωμόσας κατὰ τοῦ πατρός του, ὅπως καταλάβῃ τὸν θρόνον τῇ βοηθείᾳ τῶν ὑπὸ τὰς διαταγάς του γενιτσάρων, ἐθανατώθη σκληρῶς κατὰ διαταγὴν καὶ ἐνώπιον τοῦ πατρὸς του ἐν Ἐρέκλι τῆς Καραμανίας τῷ 1553, εἰς ἡλικίαν 37 ἐτῶν. Τὸ ἀνοσιούργημα τοῦτο προὐκάλεσε τοσαύτην ἀγανάκτησιν, ὥστε ὁ νεώτερος υἱὸς τοῦ Σουλεϊμὰν (ἐκ τῆς Ροξολάνης) Δζιχανγκὶρ ἀπέθανεν ἐκ λύπης μετὰ δύο μῆνας ἐν Χαλεπίῳ.

Ν. Μ.

**Μουσταφοῦλι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας κώμης *Παναιτώλιον* (βλ. λ.).

Χ. Δ.

**Μουστάφτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Βασιλικὸν Νέον* (βλ. λ.).

Χ. Δ.

**μουστέλα** (ἡ) (Mustela) *[Ζωολ.]*· βλ. *ἰκτίς*.

**μούστελος** (ὁ) (Mustelus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τῆς τάξεως τῶν σκουαλίων σελαχοειδῶν (βλ. λ. *σελαχοειδῆ*).

**μουστερῆς** (ὁ)· πελάτης καταστήματος, ὁ ἀποκλειστικῶς ἐξ ὡρισμένου καταστήματος ἀγοράζων: «ἔχασα τοὺς μουστερῆδές μου», «τὸν ἔπιασα μουστερῆ», (τουρκοαραβ. *μουστερί*).

**Μοὺς Τζὼ** (Moose Jaw) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Καναδᾶ, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σασκατσεβάν, ἐπὶ τῶν ὄχθῶν τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ Μοὺς-Τζώ. Κάτ. 30.000 περίπου. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου δημητριακῶν. Εἰς τὴν περιφέρειαν αὐτῆς ὑπάρχουσι γαιανθρακωρυχεῖα.

Γ. Ι. Β.

**Μούστη**, καὶ ***Μούστι*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Λιβύης, κειμένη, κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (Γεωγρ. IV, 3, 11), μεταξὺ τῶν δύο Σύρτεων πρὸς Ν. τοῦ ὄρους Γίγιρι (νῦν Djebel-Nefousa). Εἶναι ἡ ὄασις Mizba, κειμένη εἰς ὕψος 490 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης πρὸς Ν. τῆς Τριπόλεως,

Α. Θ. Σ.

**μουστιαία** ***ἐποχή***. Ὠνομάσθη οὕτω (ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ σπουδαιοτάτου διὰ τὰ εὑρήματα καὶ πρώτου ἐξερευνηθέντος σπηλαίου Le Moustier τῆς Dordogne τῆς Γαλλίας) ἀπὸ τοῦ 1869 ὑπὸ τοῦ Gabriel Mortillet μία βαθμὶς τῆς προϊστορίας τοῦ ἀνθρώπου, ἐμφανίζουσα πανταχοῦ τὸν αὐτὸν τύπον ἔργων. Ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ *μέσον πλειστόκαινον* τῶν γεωλόγων καὶ τὴν ἔναρξιν τῆς τετάρτης παγετώδους περιόδου *(βουρμίου)*, μάλιστα δὲ ἀπὸ τῆς τρίτης μεσοπαγετώδους *(ρισσίου-βουρμίου)*. Τὰ μουστιαῖα εὑρήματα ἀπαντῶσι συχνότατα εἰς προσχώσεις ὑπερκειμένας τῶν τοῦ κατωτέρου πλειστοκαίνου (χελλαίας καὶ ἀχιλίου βαθμῖδος). Τὸ κλῖμα, κατ' ἀρχὰς θερμόν, καθίσταται βαθμηδὸν ὑγρὸν καὶ ψυχρόν. Πλὴν τῶν γεωλογικῶν ἔχομεν καὶ παλαιοντολογικὰς διαφοράς. Ἡ πανὶς τῆς μουστιαίας διαφέρει ἀρκούντως τῆς τῶν προηγουμένων ἐποχῶν. Ὡς τὸ χαρακτηριστικώτερον ζῷον ἐμφανίζεται ὁ μαμμούθ, ἐξ οὗ καὶ ἡ περίοδος ἐκλήθη ὑπὸ τῶν παλαιοτέρων *ἐποχὴ μαμμούθ*. Τὸν μέρκιον ρινόκερων διαδέχεται ὁ ρινόκερως ὁ τοιχόρρινος, ἐμφανίζονται τὰ μεγάλα σαρκοβόρα, ἡ σπηλαία ἄρκτος, ὁ σπηλαῖος λέων, ἡ σπηλαία ὕαινα, ὁ τάρανδος, ὁ βόνασος, οἱ ἵππιδαι κλπ., τὰ πλεῖστα φέροντα πυκνὸν τρίχωμα κατὰ τοῦ ψύχους.

Ἀπὸ παλαιοεθνολογικῆς δὲ καὶ φυσικῆς ἀνθρωπολογικῆς ἀπόψεως, ἡ μουστιαία ἐποχὴ μετὰ τῶν προηγουμένων χελλαίας καὶ ἀχιλίου, ἀποτελοῦν ἐν πρώτον τμῆμα τῆς μεγάλης παλαιολιθικῆς περιόδου, ἤτοι τὸ *παλαιο-παλαιολιθικόν*, σπουδαίως διαφέρον ἀπὸ πάσης ἀπόψεως τοῦ δευτέρου, νεωτέρου ἡμίσεος, ἢ τοῦ *νεο-παλαιολιθικοῦ*. Κατὰ τὴν μουστιαίαν καὶ τὰς προηγουμένας βαθμῖδας ἔχομεν κατώτερον ἄνθρωπον, κατώτερον ἔργον ἢ πολιτισμόν, ἄλλα ζῷα, ἄλλον τρόπον ζωῆς κλπ. Ἡ μουστιαία διακρίνεται καὶ ὡς *μεσο-παλαιολιθική*.

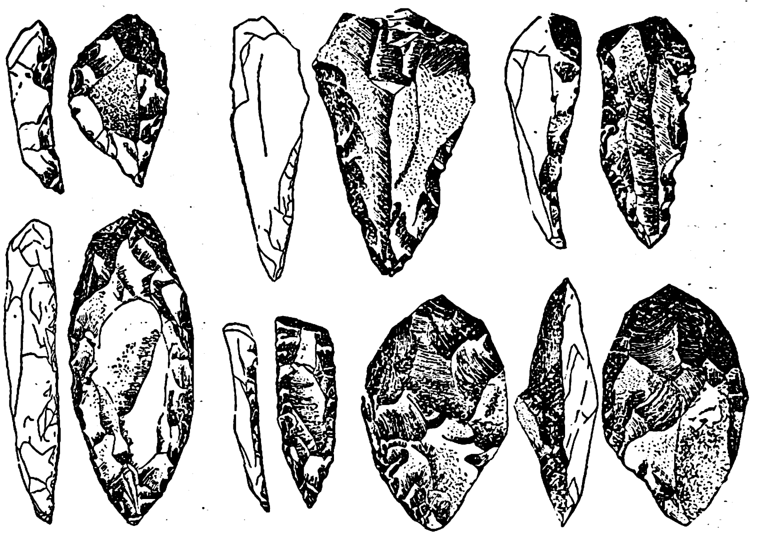

*Χαρακτηριστικὰ ἐργαλεῖα τῆς μουστιαίας ἐποχῆς.*

Ὡς πρὸς τὴν ἀπόλυτον χρονολογίαν, ἡ μουστιαία, κατὰ τὸν Osborn, τάσσεται μεταξὺ 50.000 καὶ 25.000 ἐτῶν π. Χ., μὲ πᾶσαν ἐπιφύλαξιν ἄλλωστε, δεδομένου ὅτι αἱ γνῶμαι τῶν διαφόρων ἐπιστημόνων, τῶν παλαιοντολόγων ἰδίᾳ, διίστανται λίαν ὡς πρὸς τὸν ὑπολογισμὸν τῆς ἀπολύτου, εἰς μονάδας χρόνου, χρονολογίας.

Τὰ προϊστορικὰ ἴχνη τῆς μουστιαίας ἐποχῆς εἶναι κατωτέρας τεχνοτροπίας τῶν νεωτέρων βαθμίδων τοῦ παλαιολιθικοῦ, ἀλλὰ διαφέρουν, ὡς εἴπομεν, καὶ τῶν ἔργων τῆς χελλαίας καὶ ἀχιλίου. Τὸ ἀμυγδαλόσχημον πρωτογενὲς ἐργαλεῖον εἶναι πολὺ μικρότερον καὶ λεπτοφυέστερον, ἐπεξειργασμένον δὲ ἀπὸ τῆς μιᾶς συνήθως πλευρᾶς, πολλάκις δισκοειδές. Κυριαρχεῖ δὲ τὸ ξύστρον καὶ ἡ αἰχμή, τὸ μέν, πλατὺ θραῦσμα φοειδές, παχὺ κατὰ τὸ ἓν χεῖλος καὶ λελεπτυσμένον κατὰ τὸ ἕτερον δι' ἐπικρούσεως, ἡ δέ, αἰχμηρὸν θραῦσμα μὲ πλατεῖαν βάσιν. Ἀμφότερα εἶναι μεγάλης ποικιλίας, ἐνεφανίσθησαν δὲ κατὰ τὴν ἀχίλιον κυρίως, ἀλλὰ τελειοποιηθέντα κατὰ τὴν μουστιαίαν. Ἐχρησίμευον, κρατούμενα διὰ τῆς παλάμης ἢ ὑπενδεδυμένα διὰ δέρματος κυρίως, διὰ τὴν ἀπόξεσιν καὶ διάτρησιν κλπ., τινὰ δὲ καὶ ὡς αἰχμαὶ δοράτων, βελῶν πιθανῶς. Ἁδροὶ δίσκοι εἶναι μᾶλλον πυρῆνες, ἐξ ὧν ἀπεσπάσθησαν θραύσματα. Ὑπάρχουν πολύεδρα, κρουσταὶ κλπ.

Πλὴν τῶν λιθίνων τούτων, ἐκ πυρίτου, χαλαζίου, ἰάσπιδος ἀντικειμένων, ἐμφανίζεται κατὰ τὴν μουστιαίαν ἐποχὴν ἡ κατεργασία τοῦ ὀστοῦ. Παρασχίδες μεγάλων ὀστῶν, ἡ ἐπιφύσεις, ἐκλεπτυνθεῖσαι διὰ τῆς κρούσεως ἢ πιέσεως χονδροειδῶς, εἶναι τὰ μόνα ἴχνη ταύτης, πλὴν τῶν σημείων τῆς δράσεως αἰχμηρῶν λίθων κατὰ τὴν ἀπομάκρυνσιν τῶν μαλακῶν μορίων ἀπὸ τῶν ὀστῶν πρὸς διατροφήν.

Ὑπὸ τῶν Capitan καὶ Peyrony ἀνευρέθησαν (Ferrassie) ἴχνη χρωστικῶν οὐσιῶν, πιθανῶς διὰ τὸ σῶμα, τὰ ὀστᾶ κλπ. ἢ τὰ τοιχώματα τῶν σπηλαίων. Ἐπίσης ἄνευρον καὶ λίθους φέροντας μικρὰς κοιλότητας ἀνὰ 2—4, πιθανῶς τὰ πρῶτα σημεῖα γραπτῆς συνεννοήσεως τοῦ ἀνθρώπου.

Κατὰ τὴν μουστιαίαν περίοδον δὲν εὑρίσκομεν ἴχνη ἀνωτέρας καλλιτεχνικῆς ἐμφανίσεως ἀκόμη. Τὰ ἔργα τοῦ ἀνθρώπου, δηλαδὴ ἐργαλεῖα καὶ ὅπλα, δεικνύουν εἰσέτι κατωτέραν διανοητικότητα. Μὲ τὴν ἁδράν, πρωτογενῆ ἐμφάνισιν τούτων συμβαδίζει ἀκριβῶς καὶ ἡ ἁδρά, κατωτέρα μορφολογία αὐτοῦ τοῦ σώματος.

Τὰ παλαιοανθρωπολογικὰ ταῦτα ἴχνη τῆς μουστιαίας ἐποχῆς εἶναι σχετικῶς ἄφθονα. Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὰς προηγηθείσας βαθμῖδας, καθ' ἅς, παρὰ τὴν μεγάλην ἀφθονίαν τῶν ἔργων, δὲν ἔχομεν ἢ ὅλως ἐξαιρετικῶς ἴχνη αὐτοῦ τοῦ σώματος, τὰ μουστιαῖα στρώματα μᾶς ἔδωσαν τὸ πλεῖστον τοῦ σκελετικοῦ ὑλικοῦ τοῦ παλαιοντολογικοῦ ἀνθρώπου, ὅπερ ἔχομεν. Ἀναφέρομεν μεταξὺ τῶν σπουδαιοτέρων ἐκ τούτων τὸν σκελετὸν νεάντερταλ (1856), τὸ κρανίον Γιβραλτὰρ (1864), τὴν σιαγόνα Λανωλὲττ (1866), τοὺς δύο σκελετοὺς Σπῦ (1886), τὰς σιαγόνας Μαλαρνὼ (1889), Arcy-sur Cure, Γκουρντὰν (1889), Bañolas (1887), Ochos κλπ., τοὺς 21 σκελετοὺς τοῦ Krapina (1899), τὸν σκελετὸν Λὲ Μουστιὲ (1908), τὸν περίφημον σκελετόν, πλήρη, Λα-Σαπὲλ-ὼ-Σαὶν (1908), τοὺς 6 σκελετοὺς Λὰ Φερασσὶ (1909), τὸ κρανίον Pech de l' Azé (1909), τὸ τῆς Παλαιστίνης, τοῦ σπηλαίου Sipka, τοὺς σκελετοὺς Λὰ Κινὰ (1911), τῆς Grenelle κλπ., ἀκόμη τὰ κρανία τῆς Ροδεσίας, τῆς Κίνας ἐσχάτως.

Τὸ σύνολον τοῦ μουστιαίου ἀνθρώπου, εἰς ὃν δίδομεν τὸ ὄνομα νεαντερτάλιος, ἢ πρωτογενής, ἢ παλαιός, προτιμότερον ἴσως, ἐμφανίζει κοινότητα χαρακτηριστικῶν, δι' ὧν διακρίνεται βασικῶς ὁ παλαιὸς - παλαιοντολογικὸς ἄνθρωπος οὗτος (Homo Neandertalensis ἀλλὰ καὶ αἱ παλαιότεραι ὁμοῦ μορφαί, H. Dawsoni, H. Heidelbergensis κλπ., fossilis), ἀπὸ τῶν νεωτέρων μορφῶν, τοῦ νέου-παλαιοντολογικοῦ (Homo sapiens fossilis) καὶ τοῦ νέου-συγχρόνου (Homo sapiens rezens), δηλαδὴ ἀπὸ τῆς μορφῆς καθόλου τοῦ «ἔμφρονος» ἀνθρώπου, τῆς τε νεωτέρας παλαιολιθικῆς περιόδου, ὡς καὶ τῆς νεολιθικῆς καὶ μεταλλικῆς.

Περὶ τῶν χαρακτηριστικῶν τοῦ παλαιοῦ ἀνθρώπου, ὧν βάσις εἶναι ἡ μεγάλη ἀκόμη προβολὴ τοῦ προσώπου καὶ ἡ μικρὰ ἀνύψωσις τοῦ θόλου τοῦ κρανίου, γίνεται λόγος προκειμένου περὶ τοῦ νεαντερταλίου ἀνθρώπου. Σημειοῦμεν μόνον τὴν δολιχοκεφαλίαν, χαμαικεφαλίαν, ὀπισθομετωπίαν, τὸ ὑπερκόγχιον γεῖσον, τὸ προβάλλον ἰνίον, τὴν πλατυρρινίαν καὶ βραχυρρινίαν. τὴν προγναθίαν, τὴν ἔκσημον ὀπισθογενείαν (ἔλλειψιν γενείου τῆς κάτω γνάθου), ἅπαντα χαρακτηριστικὰ τείνοντα πρὸς τὰ τῶν ἀνθρωποειδῶν πιθήκων. Τὸ σῶμα βραχὺ καὶ ἁδρὸν μὲ μικροτέρας κυρτώσεις τῆς σπονδυλικῆς στήλης καὶ ἡμικεκαμμένα τὰ ἄκρα (γόνυ, ἀγκών). Παρετηρήθησαν τέλος ἴδια χαρακτηριστικὰ καὶ ἐπὶ τοῦ ἐγκεφάλου, μελετηθέντος ἐπὶ ἐκμαγείων τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς κάψης τῶν διαφόρων σκελετῶν.

Ἡ προέλευσις τῶν Μουστιαίων (τῆς Εὐρώπης), τοὺς ὁποίους συναντῶμεν εἰς τόσον διάφορα σημεῖα, δὲν εἶναι, ὅπως καὶ τοῦ παλαιοῦ ἀνθρώπου καθόλου, σαφῶς γνωστή. Θεωροῦνται ὡς συνέχεια τῶν Ἀχιλίων, οἵτινες μετὰ τῶν Χελλαίων ἕλκουν πιθανῶς τὴν καταγωγὴν ἐκ τῆς Ἀφρικῆς, ἐξ ἧς διῆλθον πρὸ τῆς τελείας ρήξεως τῶν γεφυρῶν. Ὡς κατοικίαν οἱ Μουστιαῖοι ἐχρησιμοποίουν ἀσφαλῶς καλύβας παρὰ τὰς ὄχθας καὶ τὰς πηγάς, ἔχομεν δὲ τὰ ἴχνη τῆς οἰκήσεως τῶν ὑπηνέμων καὶ τῶν σπηλαίων κατὰ τὴν ἔντασιν τοῦ ψύχους. Ἔζων δὲ νομαδικὸν βίον, ὅπως ὅλοι οἱ παλαιολιθικοὶ ἄνθρωποι καὶ πολὺ νεωτέρων περιόδων ἀκόμη.

Ὡς πρὸς τὴν τύχην τῶν νεκρῶν, πλὴν τῆς ἐγκαταλείψεως, τοῦ συνήθους μέσου καταστροφῆς, ἔχομεν ἐνδείξεις εἴς τινας περιπτώσεις ταφῆς (La Ferrassie, La Chapelle-aux-Saints κλπ.) πραγματικῆς ἤδη ἀπὸ τῶν παλαιοτάτων τούτων χρόνων. Ἡ στάσις τοῦ νεκροῦ ἦτο ἐν κάμψει. Κεῖται δὲ ἐν ἐκσκαφῇ ἐν τῷ ἐδάφει τοῦ σπηλαίου τῷ βραχάδει. Ἐνίοτε, πλὴν τῶν ἰχνῶν τῆς ἑστίας ἢ λίθων, εὑρίσκομεν παρ' αὐτῷ καὶ ἀντικείμενά τινα χρήσεως. Τοῦτο δεικνύει ἤδη τὴν ὕπαρξιν ἰδέας μελλούσης ζωῆς, μόνην ἔνδειξιν θρησκευτικοῦ αἰσθήματος. Εὑρίσκομεν ἴχνη καὶ ἀσκήσεως ἀνθρωποφαγίας. Συμπληροῦντες, σημειοῦμεν ὅτι *μουστιαῖοι σταθμοὶ* ἀνεκαλύφθησαν πανταχοῦ σχεδόν, καθημερινῶς δὲ ἀποκαλύπτονται καὶ νέοι. Οἱ σπουδαιότεροι εἶναι εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Somme, τοῦ Σηκουάνα, τοῦ Oise, τὸ διαμέρισμα τῆς Aisne, τὰ περίχωρα τῶν Παρισίων, τὴν Νορμανδίαν καὶ τὴν Βρετάνην, τὴν κοιλάδα τοῦ Loire, Βανδέαν, Charentes, τὴν Δορδόνην (σπήλαια Mouthe, Moustier), Garonne, Ροδανόν, ἐν Βελγίῳ, Γερμανίᾳ καὶ Αὐστρίᾳ, Ἑλβετίᾳ, Ἀγγλίᾳ (ὀλιγώτερον), Ἰταλίᾳ, Πολωνίᾳ, Ρωσίᾳ, Ἀσίᾳ, Ἀφρικῇ καὶ εἰς πολλὰ ἄλλα σημεῖα τοῦ κόσμου, Ἀμερικὴν κλπ., εἰς μικρότερον βαθμόν.

Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**Μουστιὲ** (Moustier), ***Ἐλεονώρα-Φραγκῖσκος***, *κόμης*, κατόπιν μαρκήσιος *ντὲ—*. Γάλλος στρατιωτικὸς καὶ διπλωμάτης **(1751—1817)**. Ἐχρημάτισε πρε-

Digitized by Google

σβευτὴς τῆς Γαλλίας ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις τῆς Ἀμερικῆς, βραδύτερον δὲ ἐν Βερολίνῳ. Τῷ 1791 παρεσκεύασε στρατιωτικὴν ἐπέμβασιν ἵνα βοηθήσῃ τὸν Λουδοβῖκον ΙΣΤ΄. Ἐντεταλμένος ὑπὸ τῶν ἐξορίστων, ὅπως ἀντιπροσωπεύσῃ αὐτοὺς παρὰ τοῖς συμμάχοις, διεξήγαγεν ἐν Γαλλίᾳ ἀλληλογραφίαν μετ' αὐτῶν, ἥτις κατεσχέθη ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΗ΄ ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸ ἀξίωμα στρατηγοῦ, εἶτα δὲ ἀρχιστρατήγου. Α.Δ.

**μουστοκούλουρα** (τὰ) *[Ζαχαρ.]*. Κουλούρια παρασκευαζόμενα ὡς ἑξῆς: Εἰς δύο ὀκάδας μούστου, τὸν ὁποῖον καθαρίζομεν καὶ στραγγίζομεν ὅπως εἰς τὴν *μουσταλευριὰν* (βλ. λ.), προσθέτομεν 100 δράμια ζάχαριν, ἀφήνομεν δὲ τὸ μεῖγμα νὰ βράσῃ ἐπὶ πολὺ μέχρις ὅτου γίνῃ πετιμέζι. Παραλλήλως θέτομεν εἰς μεγάλην λεκάνην δύο ὀκάδας σιμιγδάλι, τὸ περιχύνομεν μὲ 100 δράμια λάδι καμμένο καὶ τὸ ἀνακατεύομεν μέχρις ὅτου τὸ ἀπορροφήσῃ· κάμνομεν ἔπειτα ἕνα λάκκον εἰς τὸ μέσον καὶ θέτομεν 150 δράμια προζύμι, μία κουταλιὰ τῆς σούπας σόδα, μία κουταλιὰ τοῦ γλυκοῦ μαστίχα κοπανισμένη, ἕνα ποτηράκι ρόμι καὶ ἕνα μαστίχα, μία κουταλιὰ κανέλλα ψιλὴ καὶ ὀλίγα γαρύφαλλα. Δουλεύομεν τὸ μεῖγμα προσθέτοντες ὀλίγον κατ' ὀλίγον τὸ πετιμέζι, καὶ τόσο, ὅσο ἀπαιτεῖται διὰ νὰ γίνῃ ἡ ζύμη σφικτή, τρίβομεν αὐτὴν ἐπάνω εἰς πλαστήρι ἐπ' ἀρκετὸν ὥστε νὰ γίνῃ λεία καὶ κατόπιν, ἀποσπῶντες ἐξ αὐτῆς μικρὰ τεμάχια, πλάθομεν τὰ κουλουράκια. Τὰ τοποθετοῦμεν εἰς λαμαρίναν καὶ τὰ ψήνομεν ἀμέσως εἰς φοῦρνον μέτριον ἐπὶ ἡμίσειαν ὥραν. Μ. ΔΡ.

**μουστόμετρον** (τό)· βλ. λ. *γλευκόμετρον*.

**Μουστοξύδης, *Ἀνδρέας***. Ἐπιφανὴς ἱστοριοδίφης καὶ φιλόλογος γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ τῇ 6 Ἰανουαρίου 1785, ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Παταβίου, ὅπου ἀνηγορεύθη καὶ διδάκτωρ, ἀλλὰ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς ἱστορικὰς καὶ φιλολογικὰς μελέτας, ὧν καρπὸς ὑπῆρξεν ἡ ἐν ἔτει 1804 δημοσιευθεῖσα μελέτη (Notizie per servire alla storia Corcirese dai tempi eroici sino al secolo XII». Ἡ ἐργασία του αὕτη ἐξετιμήθη τοσοῦτον, ὥστε τῷ 1806 ὠνομάσθη ἱστοριογράφος τῆς πολιτείας τῶν Ἰονίων νήσων. Συγχρόνως ἤρχισε νὰ διδάσκῃ ἐν τῷ λυκείῳ τῆς πατρίδος αὐτοῦ ἀμισθὶ φιλολογικὰ μαθήματα. Μετὰ τὴν συνθήκην τοῦ Τιλσὶτ μετέβη καὶ πάλιν εἰς Ἰταλίαν, ὅπου παρέμεινεν ἐρευνῶν καὶ συγγράφων, ἐκεῖθεν εἰς Παρισίους χάριν ἐπιστημονικῶν μελετῶν καὶ κατόπιν εἰς Μιλᾶνον, ὅπου ἐξέδωκε τοὺς δύο πρώτους τόμους τῆς «Illustrazioni Corciresi» (1811—1814) καὶ ἓν μακρὸν καὶ πολύτιμον ἀπόσπασμα τοῦ ἕως τότε ἀγνώστου λόγου τοῦ Ἰσοκράτους «Περὶ ἀντιδόσεως» (1812—1813) μεταφρασθέντος εἰς τὴν λατινικὴν ὑπὸ τοῦ Mai καὶ ἐπανεκδοθέντος κατόπιν ἐν Ζυρίχῃ, Λειψίᾳ καὶ Λονδίνῳ. Ἡ Γαλλικὴ ἀκαδημία τὸν ὠνόμασεν ἀντεπιστέλλον αὐτῆς μέλος τῆς τάξεως τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων, ὡσαύτως δὲ καὶ αἱ ἀκαδημίαι Βερολίνου, Μονάχου, Τουρίνου, Βίλνας κ. ἄ. Ἐπὶ πλέον, ὑπὸ τῆς ἰταλικῆς κυβερνήσεως τῷ ἐπετράπη νὰ ἀναδιφήσῃ χάριν ἰδίων μελετῶν τὰ ἀρχεῖα τὰ περιέχοντα τὴν ἀλληλογραφίαν τῶν Βενετῶν πρεσβευτῶν μετὰ τῆς γερουσίας τῆς Βενετίας. Τῷ 1815 ὁ αὐτοκράτωρ τῆς Ρωσίας Ἀλέξανδρος τῷ ἀπένειμε τὸ παράσημον τοῦ ἁγίου Βλαδιμήρου, συνοδεύσας τὴν ἀπονομὴν καὶ δι' ἰδίας ἐπιστολῆς. Βραδύτερον ἐτιμήθη καὶ δι' ἄλλων ξένων παρασήμων. Εἰς τὸν Μουστοξύδην ἐπροτάθη κατόπιν νὰ διορισθῇ καθηγητὴς τῆς ἱστορίας καὶ τῶν ἑλληνικῶν ἀρχαιοτήτων ἐν τῷ λυκείῳ τοῦ Βουκουρεστίου, ἀλλὰ δὲν ἐδέχθη τὴν προσφορὰν ταύτην. Ἐπεσκέφθη ἐκ νέου τοὺς Παρισίους καὶ τέλος ἐγκατεστάθη ἐν Μιλάνῳ. Βραδύτερον προσκληθεὶς ὑπὸ τοῦ Καποδιστρίου κατῆλθεν εἰς Ἑλλάδα καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐφημερίδων «Αἰγιναία» καὶ «Ἑλληνικὸς Ταχυδρόμος». Δολοφονηθέντος τοῦ κυβερνήτου ἐπανῆλθεν εἰς Κέρκυραν, ὅπου ἐγένετο βουλευτής, γερουσιαστὴς καὶ ἄρχων τῆς Παιδείας.

Κηρυχθεὶς ὑπὲρ τῶν συνταγματικῶν μεταρρυθμίσεων ἐνετάλη τῷ 1840 νὰ παρουσιάσῃ τῇ ἀγγλικῇ κυβερνήσει ἐν Λονδίνῳ τὸ περὶ τῆς πολιτικῆς καταστάσεως τῶν Ἰονίων νήσων Promemoria κατὰ τοῦ ἁρμοστοῦ Δούγλας, τῷ δὲ 1841 ἐξέδωκεν ἐν Μελίτῃ ἀνασκευὴν τῆς εἰς ἐκεῖνο ἀπαντήσεως τούτου, ἐδημοσίευσε δὲ καὶ ἄλλας τινὰς πολιτικῆς φύσεως διατριβάς. Ἔκτοτε ἰδιωτεύσας προέβη εἰς τὴν ἔκδοσιν τοῦ περισπουδάστου ἔργου «Delle cose Corciresi» (Corfu 1848). Περίφημον ἰδίᾳ κατέστη τὸ ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθὲν περιοδικὸν «Ἑλληνομνήμων» (1843 — 1853), ὅπερ συνετάσσετο ὑπ' αὐτοῦ καὶ μόνου καὶ περιεῖχεν ἀνέκδοτα ὑπὸ τοῦ ἰδίου ἐκ τῶν κωδίκων μεταγεγραμμένα καὶ μονογραφίας, αἵτινες ἦσαν καρπὸς τῶν μακροχρονίων μελετῶν τοῦ ἀκαταπονήτου ἀνδρός. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Dissertazione epistolare sui qnattro cavalli della Basilica di S. Marco in Venezia» (Padova 1816), «Raccolta di operette e di frammenti greci inediti» (1817), «Exposé de faits qui ont précédé et suivi la cession de Parga» (Paris 1820), μετάφρασις τοῦ Ἡροδότου εἰς τὴν ἰταλικὴν μετὰ πολυτίμων σχολίων, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Δ. Σχινᾶ Βυζαντίου 8 τεύχη συλλογῆς ἀποσπασμάτων ἀνεκδότων ἑλληνικῶν μετὰ σημειώσεων («Raccolta di operette e di frammenti greci inediti» (1817) κ. ἄ. Ἀπέθανε τῇ 17 Ἰουλίου 1860. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθη ἐκ τῶν ἀνεκδότων ἔργων αὐτοῦ τὸ α΄ τεῦχος τῶν «Ἱστορικῶν καὶ φιλολογικῶν ἀναλέκτων» (ἐν Κερκύρᾳ 1872), τῆς ἐκδόσεως τῶν λοιπῶν ἀνακοπείσης διὰ τοῦ θανάτου τοῦ υἱοῦ του, ὅστις ἐπεμελεῖτο αὐτῆς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Emilio Tipaldo*, Biografia del cavaliere Andrea Mustoxidi (Venezia 1836). Ἡ βιογραφία αὕτη διορθωθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἰδίου Μουστοξύδου καὶ διὰ σημειώσεων μέχρι τοῦ θανάτου αὐτοῦ συμπληρωθεῖσα ὑπὸ *Ἀ. Παπαδοπούλου Βρετοῦ* ἐξεδόθη ὡσαύτως ἰταλιστὶ ἐν Ἀθήναις τῷ 1860.—Corrispondenza del cav. A Mustoxidi col suo amico A. Pap. Vreto (Atene 1860). Ι. Φ. Δ.

—**Μουστοξύδης, *Θεοδόσιος***. Ἕλλην αἰσθητικός, ἔγγονος τοῦ Ἀνδρ. Μουστοξύδη, γεννηθεὶς τῷ 1890 ἐν Ἑπτανήσῳ. Ἐξεπαιδεύθη ἐν Παρισίοις ὑπὸ τὸν Lalande καὶ ἐν Γενεύῃ, εἶναι δὲ μέλος τῆς Ἀνθρωπολογικῆς ἑταιρείας τῶν Παρισίων καὶ λέκτωρ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λυών. Ἔργα του εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Les systèmes esthétiques en France, envisagés surtout au point de vue de leur caractère scientifique» (διατριβὴ ἐπὶ διδακτορίᾳ, Paris, 1918), «Histoire de l'esthétique française, 1700—1900» préface André Lalande (Paris, 1920), «Bibliographie générale de l'esthétique française, des origines à 1914» (Paris, 1920), «Qu'est-ce que la mode?» (Paris 1920), πραγματεία περὶ Ἀνδρέου Μουστοξύδη καὶ «Στοιχεῖα αἰσθητικῆς» (Ἀθῆναι 1921). Τ. Α.

**μουστόπιττα** (ἡ)· δημοτ., πίττα ἀπὸ μοῦστον, τὸ ἐκ γλεύκους καὶ ἀλεύρου ἢ ἀμύλου γλύκισμα, ἄλλως *μουσταλευριά*.

**μοῦστος** (ὁ)· δημοτ., τὸ γλεῦκος (λατ. mustum vinum=νέος οἶνος).

**Μούστροβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος χωρίου *Περιβόλιον* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μοῦσχα, *Ἄνω*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας χωρίου *Μακρόλογγος* (βλ. λ.).

—**Μοῦσχα, *Κάτω***—. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας χωρίου *Λουτρὰ* Παλαιὰ (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μουσχᾶς** (ὁ) (κατὰ παραφθορὰν ἐκ τοῦ ἀραβοτουρκ. *νουσχᾶ*=φύλλον ἢ ἀντίγραφον). Τριγωνοειδῶς, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, συνεπτυγμένον φύλλον χάρτου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου Τοῦρκοι κομπογιαννῖται, μέχρι τῆς κεμαλικῆς μεταρρυθμίσεως, ἐπαγγελλόμενοι ὅτι θεραπεύουσι πᾶσαν νόσον, ἐπέγραφον μυστηριώδεις καὶ ἀβρακαδαβροειδεῖς λέξεις καὶ ἐπώλουν αὐτὸ ὡς περίαπτον.

Εἰς τοὺς τοιούτους Τούρκους κομπογιαννίτας ἀπηυθύνοντο καὶ Χριστιανοί, ὁσάκις προσεβάλλοντο ἀπὸ ἀνεμοπυρώματα καὶ ἄλλας ὁμοίας φύσεως ἀσθενείας, τὰς ὁποίας οἱ ἀπατεῶνες οὗτοι ἠξίουν ὅτι θεραπεύουσι δι' ἐπιθέσεως τῶν χειρῶν καὶ σιγανῆς ἀναγνώσεως μυστηριωδῶν εὐχῶν, ὡς «Ἀλλὰχ ἐκμπὲρ» (=μέγιστε Θεέ), «σουπχὰν-Ἀλλὰχ» (=ὕψιστε Θεὲ) κ. ἄ., ἐπαναλαμβανομένων πολλάκις. Τὰς εὐχὰς ταύτας ἐπέστεφεν ἡ ἐπὶ τοῦ πάσχοντος μέρους ἐπίθεσις τοῦ *μουσχᾶ*, τοῦ ὁποίου αἱ ἐπιγραφαὶ ἦσαν ἀκατάληπτοι. Ν. Μ.

**Μούσχεντ** (Moosehead) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη ἰχθυοτρόφος ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ πολιτείᾳ Μαίν. Ἔχει ἔκτασιν 309 τ. χλμ. Ἐξ αὐτῆς πηγάζει ὁ ποταμὸς Κέννεκ. Γ. Ι. Β.

**μουσχέτα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ροδῆ ἡ μόσχοσμος*.

**Μουσώνιος**. Ἐπίσκοπος τῆς ἐν Κρήτῃ Ἡρακλειουπόλεως, λαβὼν μέρος εἰς τὴν ἐν Σαρδικῇ σύνοδον (343). ΕΡ. Μ.

**Μουσώνιος *Ροῦφος*** (Musonius Rufus). Στωϊκὸς φιλόσοφος ἐκ Τυρρηνίας καταγόμενος, ἀκμάσας κατὰ τὸν Α΄ μ.Χ. αἰῶνα καὶ μεγάλως τιμώμενος ὡς διδάσκαλος τῆς φιλοσοφίας. Ἐγένετο εἷς τῶν κυριωτέρων εἰσηγητῶν τῶν στωϊκῶν δογμάτων εἰς τὴν Ρώμην, διετέλεσε δὲ καὶ διδάσκαλος τοῦ Ἐπικτήτου. Ἐπὶ Νέρωνος ἐξορισθεὶς εἰς Γύαρον, τῷ 65 μ. Χ., ἠδυνήθη νὰ ἀνακαλύψῃ εἰς τὴν αὐχμηρὰν καὶ κατάξηρον νησῖδα πηγὴν ὕδατος, γνωσθέντος δ' ἐκ τούτου ὅτι ὁ περιώνυμος οὗτος στωϊκὸς φιλόσοφος ἔζη ἐκεῖ ἐξόριστος, συνέρρεον αὐτόθι πανταχόθεν νέοι ὅπως μαθητεύσωσι παρ' αὐτῷ, ἀψηφοῦντες τὰς στερήσεις καὶ κακουχίας, εἰς ἃς ὑπεβάλλοντο εἰς τὴν ἔρημον καὶ τῶν πάντων στερουμένην νησῖδα. Ὅτε δ' ὁ Νέρων, ἐν ἔτει 67, ἀπεφάσισε τὴν διόρυξιν τοῦ ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου, μετεφέρθη καὶ ὁ Μουσώνιος ἐκεῖ, ὅπως διὰ τῆς βίας ἐργασθῇ μετὰ τῶν λοιπῶν ἐργατῶν. Εὑρὼν αὐτὸν εἰς τὴν Κόρινθον ἐργαζόμενον ὁ φιλόσοφος Δημήτριος τὸν συνελυπήθη. Ἀλλ' ἐκεῖνος τὴν σκαπάνην κρατῶν καὶ ἐρρωμένως ἐμβάλλων αὐτὴν εἰς τὴν γῆν, ἀνακύψας εἶπε: «Λυπῶ σε, ὦ Δημήτριε, τὸν Ἰσθμὸν ὀρύττων τῇ Ἑλλάδι, εἰ δὲ καὶ κιθαρῳδοῦντά με εἶδες, ὥσπερ Νέρωνα, τί ἂν ἔπαθες;» (*Φιλοστράτου*, Τὰ εἰς Ἀπολλών. Ε΄, 19). Ἔργα αὐτοῦ ἀναφέρονται: «Λόγοι φιλοσοφίας ἐχόμενοι» καὶ «Ἀπομνημονεύματα». Ἐκ δὲ τῶν ὑπὸ τοῦ Πολλίωνος παραδεδομένων διαλέξεων αὐτοῦ διεσώθησαν πολλὰ ἀποσπάσματα, ἐκδοθέντα τῷ 1905.

Ἡ κριτικὴ θεωρεῖ ὑπόπτους τὰς περὶ τοῦ Μουσωνίου πληροφορίας τοῦ Φιλοστράτου, τὰς δὲ ἐπιστολάς, τὰς ὡς δῆθεν ἀνταλλαγείσας μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ Ἀπολλωνίου, ὡς ἀναφερομένας εἰς ἄλλον Μουσώνιον. Ὁμοίως πιστεύεται ὅτι τὰ χωρία, ἅτινα παραθέτουν οἱ διάφοροι συγγραφεῖς ὡς ἰδικά του, τὰ ἔχουν δανεισθῇ ἐξ ἔργων μαθητῶν του.

Μολονότι ὁ Μουσώνιος, κατὰ τὴν μαρτυρίαν τοῦ Ἐπικτήτου, ἐδίδαξε τὴν στωϊκὴν λογικὴν καὶ φυσικήν, ἐν τούτοις ἐθεώρει τὴν ἠθικὴν ὡς τὸ ἅπαντον τῆς φιλοσοφίας καὶ τὴν ἀρετὴν στηριζομένην κυρίως ἐπὶ τῆς πρακτικῆς. Οἱ ἄνθρωποι, κατὰ τὸν Μουσώνιον, εἶναι ἀσθενεῖς καὶ μόνη ἡ φιλοσοφία δύναται νὰ τοὺς θεραπεύσῃ.

Ὁ Μουσώνιος ἤσκησε μεγάλην ἐπιρροὴν ἐπὶ τῶν μαθητῶν του, ὄχι τόσον διὰ τῆς πρωτοτυπίας ἢ τῆς δυνάμεως τῶν θεωριῶν του, ὅσον διὰ τοῦ τόνου, τὸν ὁποῖον μετεχειρίζετο κατὰ τὴν διδασκαλίαν του, διὰ τῆς πειστικῆς καὶ ἁπλῆς εὐγλωττίας του, ἥτις ἀπηυθύνετο μᾶλλον εἰς τὴν καρδίαν ἢ εἰς τὸ πνεῦμα. Ἡ θεωρία του παρουσίαζε μεγάλην ὁμοιότητα πρὸς τὴν τοῦ Ἐπικτήτου.

Δ. Π. Π.—Θ. Π.

**Μουσωτῆς**, ἢ ***Μοσσόττι*** (Mussoti ἢ Mossotti), ***Ὀκτάβιος-Φαβρίκιος***. Ἰταλὸς ἀστρονόμος καὶ μαθηματικὸς (1791—1863). Κατήγετο ἐκ Νοβάρας καὶ διετέλεσε κατ' ἀρχὰς βοηθὸς τοῦ ἀστεροσκοπείου τοῦ Μιλάνου. Καταδιωχθεὶς ὑπὸ τῶν αὐστριακῶν ἀρχῶν λόγῳ τῶν πατριωτικῶν του αἰσθημάτων, κατέφυγεν εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικήν, ὅπου ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς, τῆς ἀστρονομίας καὶ τῶν μαθηματικῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μπουένος Ἄϋρες. Κατὰ τὸν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας ἀγῶνα τῆς Ἰταλίας ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ὁπόθεν ὅμως, λόγῳ τῶν ἀτυχημάτων τοῦ ἀγῶνος ἐκείνου, ἠναγκάσθη καὶ πάλιν νὰ φύγῃ καὶ νὰ δεχθῇ πρόσκλησιν τῆς Ἰονίου κυβερνήσεως, ἥτις διώρισεν αὐτὸν καθηγητὴν τῆς Ἰονίου Ἀκαδημίας, ἔνθα ἐδίδασκεν ἀνώτερα μαθηματικά. Τῷ 1841 παραιτηθεὶς τῆς θέσεώς του ταύτης, διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀστρονομίας καὶ τῆς γεωδαισίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πίζης. Κατὰ τὸ κίνημα τοῦ 1848 ἐν Ἰταλίᾳ ἠγωνίσθη ἐν Μοντανάρᾳ καὶ Κουρτατόνε. Ἐκ τῶν πολυπληθῶν ὑπομνημάτων ἐπὶ τῆς κινήσεως τῶν ὑγρῶν, τῆς τάσεως τῶν ὑδρατμῶν, τῶν ἡλιακῶν κηλίδων κτλ. ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἔργα: «Αἱ δυνάμεις αἵτινες διέπουν τὴν ἐσωτερικὴν σύστασιν τῶν σωμάτων» (1836), «Ἡ σύστασις τοῦ πολικοῦ συστήματος» (1850), διάλεξις ἀναγνωσθεῖσα ἐν τῷ Ἰονίῳ Ἀκαδημίᾳ, «Ἡ δρᾶσις τῶν σωμάτων» (1840), «Μαθήματα μηχανικῆς» (1850) κτλ. Λ. Χ. Ζ.

**Μοὺτ** *[Θρησκειολ.]*. Θεὰ λατρευομένη ἐν Θήβαις τῆς Αἰγύπτου. Ἐφέρετο ὡς σύζυγος τοῦ Ἄμμωνος-Ρᾶ καὶ μήτηρ τοῦ Κενσοῦ. Ἡ λέξις *μοὺτ* σημαίνει τὴν μητέρα. Ὁ Ἀμενχοτὲπ Γ΄ ἔκτισε ναὸν αὐτῆς ὀλίγον νοτιώτερον τοῦ Κάρνακ. Ἡ θεὰ παρίσταται καθημένη, μὲ τὴν κεφαλὴν καλυπτομένην ὑπὸ τοῦ γυπὸς καὶ ὑπὲρ τοῦτον τὰ δύο στέμματα τῆς Κάτω καὶ Ἄνω Αἰγύπτου. Ἐνίοτε παρίσταται λεοντοκέφαλος. Γ. Λ. Α.

**Μοὺτ** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μούθ*.

**Μοὺτ** (Muth), ***Κάρολος***. Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1865. Ἀπὸ τοῦ 1903 ἐξέδωκε τὸ περιοδικὸν «Hochland». Ἔγραψε: «Die literarischen Aufgaben der deutschen Katholiken», «Die Wiedergeburt der Dichtung aus dem religiösen Erlebnis» καὶ «Religion, Kunst und Poesie». Α. Δ.

**Μουταζαλῖται** (οἱ), ἢ ***Μοταζάλαι***. Μουσουλμανικὴ αἵρεσις, περιλαμβάνουσα τοὺς ὀρθολογιστὰς ἢ ἐλευθερόφρονας τῆς μωαμεθανικῆς θρησκείας. Τὴν αἵρεσιν ταύτην ἵδρυσεν ὁ Βασὶφ-ἶμπν-Ἀθᾶ-ἐλ-Γαζνί, διδάσκων μεταξὺ ἄλλων ὅτι τὸ Κοράνιον ὡς δημιούργημα, δὲν εἶναι αἰώνιον καὶ καταρρίπτων οὕτω τὸ ἄθικτον τοῦ θρησκευτικοῦ δόγματος. Ν. Μ.

**Μουταλάσκη** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, καλουμένη ὑπὸ τῶν Τούρκων Ταλάς. Κεῖται ἀμφιθεατρικῶς ὑπὸ τοὺς πρόποδας τοῦ ὀροπεδίου Φλαβιανῶν (Ζινζίδερε), εἰς ἀπόστασιν μιᾶς ὥρας ΝΑ. τῆς Καισαρείας. Ἐν αὐτῇ ἐγεννήθη ὁ ἅγιος Σάββας. Κάτ. 10.000 περίπου. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς κατῴκουν ἐν αὐτῇ καὶ 5.000 Ἕλληνες, διατηροῦντες ἀξιόλογα ἐκπαιδευτήρια. Ἔχει καὶ ἀμερικανικὰ ἐκπαιδευτήρια καὶ θεραπευτήριον ὑπὸ Ἀμερικανοὺς ἰατρούς. Κ. ΛΣ

**Μουταλὶμπ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, παρὰ τὰς νοτίας ὑπωρείας τοῦ Μπὸζ-δάγ, βορείως τοῦ Ἐσκὶ Σεχίρ. Τῇ 8ῃ Ἰουλίου 1921 ἀπὸ τῶν ὑψωμάτων βορείως τοῦ χωρίου τούτου ἐξώρμησαν τρεῖς τουρκικαὶ μεραρχίαι, κινηθεῖσαι

Digitized by Google

πρὸς Ἐσκὶ Σεχὶρ ἐναντίον τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ. Ἐν τῇ πεδιάδι μεταξὺ τοῦ λόφου τοῦ ἀρχαίου Δορυλαίου καὶ τοῦ Μουταλίμπ διεξήχθη τότε αἱματηρότατος ἀγὼν μεταξὺ τῶν εἰρημένων τουρκικῶν μεραρχιῶν πεζικοῦ καὶ δύο ἀκόμη ἑτέρων τοιούτων (1 πεζικοῦ καὶ 1 ἱππικοῦ), ὁρμηθεισῶν ἐκ Σινεκλῆ Καγιά, καὶ τῶν 7ης καὶ 9ης ἑλληνικῶν μεραρχιῶν, ἀπολήξας περὶ τὴν ἑσπέραν εἰς ὁλοσχερῆ ὑποχώρησιν τῶν Τούρκων καὶ καταδίωξιν αὐτῶν ὑπὸ τῆς 7ης μεραρχίας (22ου συντάγματος πεζικοῦ) μέχρι τοῦ ὑψιπέδου τοῦ Μπὸζ δάγ, βορείως τοῦ Μουταλίμπ. Ἡ ὑποχώρησις τῶν τουρκικῶν ἐκείνων μεραρχιῶν βορείως τοῦ Πουρσὰκ ἐπήνεγκε καὶ τὴν ἐκ τοῦ λοιποῦ μετώπου (νοτίως τοῦ Πουρσὰκ) περὶ τὸ Ἐσκὶ Σεχὶρ ὑποχώρησιν καὶ τῶν λοιπῶν 6 τουρκικῶν μεραρχιῶν, πρὸς ἀνατολάς. Ν. Κ. Σ.

**Μουτανάμπι, *Ἀμποὺ Ἰσὰκ Μωχάμετ ἔλ* —.** Ἄραψ ποιητής (βλ. λ. *Μοτανάμπι*).

**Μουταουακὲλ *ἔμπν Μοετάσσεμ*.** Ἀββασίδης καλίφης, ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῷ 847 μ. Χ. Ἓν ἔτος ἀπὸ τῆς ἀναρρήσεώς του παρεχώρησε τὴν κυβέρνησιν τῆς Αἰγύπτου εἰς τὸν υἱόν του *ἐλ Μουντάσσερ*, δύο ἔτη δὲ κατόπιν τὸν ἀνεκήρυξε διάδοχόν του καὶ μετὰ τοῦτον ἐπιδόξους διαδόχους τὸν δεύτερον *ἐλ Μοεττὰζ μπ' Ἰλλὰχ* καὶ τὸν τρίτον *Μουγὲτ μπ' Ἰλλάχ*. Συγχρόνως διένειμεν εἰς αὐτοὺς τὸ κράτος του. Τὰ μέτρα ταῦτα, δι' ὧν ἐνόμιζεν ὅτι θὰ ἱκανοποιήσῃ τὰς φιλοδοξίας τῶν υἱῶν του, δὲν ἐτελεσφόρησαν. Ὁ Μουντάσσερ, παρὰ τὰς μεγάλας πατρικὰς ἐκχωρήσεις, ἀφῆκε τὴν διοίκησιν τῆς Αἰγύπτου εἰς χεῖρας τοῦ Γιαζὶτ ἔμπν Ἀβδὲλ Ἀλλὰχ καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὸ ἀνάκτορον τῆς Βαγδάτης διὰ νὰ ραδιουργήσῃ κατὰ τοῦ πατρός. Τῷ 858 ὑποκινούμενοι ὑπ' αὐτοῦ ἐπανεστάτησαν αἱ φρουραὶ τῆς Δαμασκοῦ. Ὁ καλίφης βλέπων τὸν υἱόν του φανερὰ νὰ τὸν ἐπιβουλεύεται, τὸν ἐπέπληξε δημοσίᾳ (1861), ἀλλὰ μετὰ τινας ἡμέρας ἐσφάγη ἐντὸς τοῦ ἀνακτόρου του καὶ ἐν καιρῷ νυκτὸς ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς φρουρᾶς του Βογκὰ ἐλ Σογκαῦρ, ἄγων τὸ 41ον ἔτος τῆς ἡλικίας του. Ἀνεκηρύχθη ἀμέσως καλίφης ὁ πατροκτόνος Μουντάσσερ, ὅστις ἔσπευσε νὰ ἐκβιάσῃ ἀπὸ τοὺς ἀδελφούς του ἔγγραφον παραίτησιν πάσης ἀξιώσεως ἐπὶ τῶν παροχῶν τοῦ πατρός των. Καταληφθεὶς ὅμως ὑπὸ τῶν τύψεων τῆς συνειδήσεως, ἐπεδόθη εἰς τὴν οἰνοποσίαν καὶ ἀπέθανε πρὶν ἢ συμπληρώσῃ ἔτος ἐπὶ τοῦ θρόνου. Γ. Λ. Α.

**μουτάφης** (ὁ) (περσ. *μουτάφ*)· ὁ πωλῶν χονδρὰ ὑφάσματα ἐκ τριχῶν (τσόλια, λινάτσες κτλ.).

**Μουτάφωφ, *Βασίλ*.** Βούλγαρος ἀξιωματικὸς καὶ ποιητὴς (1868—1895), φονευθεὶς ἐν Μακεδονίᾳ. Τὸ ποιητικόν του ἔργον ἀποτελεῖται κυρίως ἀπὸ πολεμικὰ ἐμβατήρια. Τ. Β.

— **Μουτάφωφ, *Τσαβδάρ*.** Σύγχρονος Βούλγαρος λογοτέχνης. Τῷ 1922 ἐδημοσίευσε τὴν συλλογὴν διηγημάτων «Μαριονέτκι», καὶ εἰς διάφορα περιοδικὰ τὰ διηγήματα «Παραμύθι Ροκοκό», «Ὕπνος θανάτου» κ. ἄ. Τὸ ἔργον του χαρακτηρίζεται ὡς φουτουριστικόν. Τ. Β.

**Μούτεβα, *Ἑλένη*.** Ἡ πρώτη Βουλγαρὶς ποιήτρια, ἀποβιώσασα ἐν Ὀδησσῷ τῷ 1857. Εἶναι γνωστὰ δύο ποιήματά της ὑπὸ τὸν τίτλον «Θεὸς» καὶ «Μῦθος», δημοσιευθέντα εἰς τὴν ἐπιθεώρησιν «Blgarski knijitsi» (Κωνσταντινούπολις 1858). Τ. Β.

**μουτεβελῆς** (ὁ) (ἐκ τοῦ ἀραβοτουρκ. *μουτεβελῆ*, ὅπερ ἐκ τοῦ *βελῆ*=κύριος, κηδεμών)· ἐπίτροπος πρὸς διαχείρισιν βακουφικῶν κτημάτων.

— *[Μουσουλμ. Δίκ.]* Ὁ ἐπιθυμῶν, κατὰ τὸ μουσουλμανικὸν δίκαιον, νὰ συστήσῃ ἀφιέρωμα, ἔχει τὸ δικαίωμα νὰ ἐπιφυλάξῃ εἰς ἑαυτόν, ἰσοβίως, τὴν διαχείρισιν τοῦ ἀφιερωθέντος πράγματος· ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει δύναται νὰ διορίσῃ τὸν διαχειριστήν, τὸν ὁποῖον οὗτος ἐγκρίνει. Ὁ παρὰ τοῦ ἀφιερωτοῦ δὲ διοριζόμενος ἔφορος καλεῖται *μουτεβελῆς*, ὅστις ἔχει τὸ δικαίωμα καὶ τὴν ὑποχρέωσιν νὰ φροντίζῃ περὶ τῆς συνάξεως τῶν προσόδων καὶ τῆς διατηρήσεως τοῦ ἀφιερώματος, ὡς καὶ τῆς ἐκτελέσεως τῶν ἐν τῷ ἀφιερωτηρίῳ διαλαμβανομένων διατάξεων.

Ἐὰν ὁ ἀφιερωτὴς δὲν διώρισεν ἔφορον, τὸ δικαίωμα τοῦ διορισμοῦ ἀνήκει εἰς τὸν δικαστήν. Εἰς τὴν περίπτωσιν καθ' ἣν οἰκοδομή τις, ἐγερθεῖσα ἐπ' ἐδάφους δημοσίας γῆς καὶ καθιερωθεῖσα ὡς ἀφιέρωμα, κατέρρευσεν, ὁ δὲ ἔφορος τοῦ βακουφίου (μουτεβελῆς) δὲν ἀνεκαίνισε τὸ οἰκοδόμημα, τότε τὸ ἔδαφος ἀφαιρεῖται ἀπ' αὐτοῦ καὶ δίδεται εἰς τὸν ἐπιθυμοῦντα νὰ τὸ ἀγοράσῃ. Ὁ νόμος ἐπιτρέπει εἰς τὸν ἔφορον τοῦ βακουφίου νὰ ἐκμισθώσῃ τοῦτο, συμμορφούμενος πρὸς τοὺς ὅρους τοὺς διατυπωθέντας ὑπὸ τοῦ ἀφιερωτοῦ. Ὁ δικαστὴς ὅμως δύναται νὰ ἐπιτρέψῃ εἰς αὐτὸν νὰ παραβῇ τοὺς ὅρους τούτους, ἐὰν εἶναι ἀποδεδειγμένον ὅτι τὸ συμφέρον τοῦ βακουφίου καθιστᾷ ἀναγκαίαν τὴν παράβασιν ταύτην (βλ. καὶ λ. *βακούφιον*). Μ. ΚΑΤΙΝΑΚΗΣ

**Μουτέζιους** (Muthesius), ***Ἑρμάννος*.** Γερμανὸς ἀρχιτέκτων καὶ τεχνοκρίτης (1861—1927). Ὑπηρέτησε διαδοχικῶς παρὰ τῇ ἰαπωνικῇ κυβερνήσει, ὡς τεχνικὸς σύμβουλος τῆς γερμανικῆς πρεσβείας τοῦ Λονδίνου καὶ ἀπὸ τοῦ 1903 ἐν τῇ κρατικῇ ὑπηρεσίᾳ ἐξοχικῶν οἰκιῶν ἐν Βερολίνῳ. Ἔγραψε: «Die englische Baukunst der Gegenwart», «Architektonische Zeitbetrachtungen», «Die neuere Kirchliche Baukunst in England», «Das englische Haus» κτλ. Α. Δ.

— **Μουτέζιους** (Muthesius), ***Κάρολος*.** Γερμανὸς παιδαγωγικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ διδασκαλείου τῆς Βαϊμάρης καὶ ἐδημοσίευσε σειρὰν ἀξιολόγων συγγραφῶν, ἐν αἷς: «Schulaufsicht und Lehrerbildung» (1902), «Universität und Volksschullehrerbildung» (1904), «Die Lehrerbildung im Strom der Zeit» (1906), «Goethe und Pestalozzi» (1908) καὶ «Goethe und Karl Alexander» (1910). Α. Δ.

**Μοὺτ-ἐμ-οὐα.** Σύζυγος Θουθμώσεως Δ' καὶ μήτηρ Ἀμενχοτὲπ Γ'. Παρίσταται ἱσταμένη ἀριστερὰ τοῦ βασιλέως υἱοῦ της εἰς τὸν ἐν Θήβαις κολοσσὸν τούτου καὶ ἐπὶ τοῦ τοίχου τοῦ ἐν Λοὺξορ ναοῦ. Γ. Λ. Α.

**μοῦτερ** (Muther), ***Ριχάρδος*.** Γερμανὸς τεχνοκρίτης καὶ ἱστορικὸς τῆς τέχνης (1860—1909). Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Ἀϊδελβέργης καὶ τῆς Λειψίας φιλοσοφίαν, ἀρχαιολογίαν καὶ ἱστορίαν τῶν καλῶν τεχνῶν, ἐδίδαξε δ' ἐπὶ βραχὺ μὲν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μονάχου καὶ ἀπὸ τοῦ 1895 ὡς καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μπρεσλάου. Συνέγραψεν ἱστορικὰ ἐγχειρίδια, μονογραφίας καὶ μελέτας: «Ἱστορία τῆς ζωγραφικῆς κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα» (1893—1894), «Ἱστορία τῆς ζωγραφικῆς» (1899—1902), «Εἷς αἰὼν τῆς γαλλικῆς ζωγραφικῆς» (1901), «Ἱστορία τῆς ἀγγλικῆς ζωγραφικῆς» (1903), «Ἱστορία τῆς βελγικῆς ζωγραφικῆς» (1904), «Μελέται καὶ κριτικαὶ» (1901 καὶ ἑφ.), «Ὁ Ρέμπραντ—Ἡ ζωὴ ἑνὸς καλλιτέχνου» (1904), «Ἀριστουργήματα τῆς ξυλογραφίας τεσσάρων αἰώνων» (1888—1893, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Γ. Χίρτ), «Ὁδηγὸς τῆς παλαιᾶς βασιλικῆς πινακοθήκης τοῦ Μονάχου» (1888), «Ὁδηγὸς τῆς βασιλικῆς πινακοθήκης τοῦ Βερολίνου» (1889), «Λουκᾶς Κράναχ» (1902), «Ἰωάννης-Φραγκῖσκος Μιλλέ», «Λεονάρδος ντὰ Βίντσι», «Βελάσκουεθ», «Ἡ ἀναγέννησις τῆς ἀρχαιότητος» (1903), «Φραγκῖσκος Γκόγια» (1904). Ι. Μ. Π.

**μουτεσαρρίφης** (ὁ) (ἀραβ. *μουτεσαρρίφ*=ἰδιοκτήτης, ὁ διευθύνων κατὰ τὸ δοκοῦν μίαν ὑπόθεσιν). Διοικητὴς τῆς δευτέρας κατὰ τάξιν διοικητικῆς μονάδος τῆς σουλτανικῆς Τουρκίας, δηλαδὴ τοῦ σαντζακίου ἢ μουτεσαρριφλικίου, ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸν νομάρχην. Σήμερον δὲν ὑπάρχουσι μουτεσαρρίφαι ἐν Τουρκίᾳ, καταργηθέντων τῶν σαντζακίων ὑπὸ τοῦ κεμαλικοῦ καθεστῶτος καὶ περιορισθείσης τῆς ἐκτάσεως τῶν βιλαετίων, ὥστε ὁ σημερινὸς βαλῆς ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸν ἄλλοτε μουτεσαρρίφην. Ν. Μ.

**μουτεσελλίμης** (ὁ). Δημόσιος εἰσπράκτωρ ἐν τῇ παλαιᾷ τουρκικῇ διοικήσει.

**Μοῦτεφ, *Δημήτριος Στεφάνωφ*.** Βούλγαρος συγγραφεὺς (1818—1864). Ἐσπούδασεν ἐν Βόννῃ καὶ Βερολίνῳ φυσικήν, μετεωρολογίαν καὶ φιλοσοφίαν, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ διὰ τῆς διατριβῆς «De psychometria». Μετέφρασε καὶ ἔργα τινὰ τῆς ἀγγλικῆς καὶ ἰταλικῆς φιλολογίας. Τ. Β.

**μούτζα** (ἡ)· ἄλλως *μούντζα* (βλ. λ.).

**μουτζαλιά** (ἡ)· δημοτ., κηλὶς μελάνης: «τὸ γράψιμό του εἶναι γεμάτο μουτζαλιές».

**μουτζαλώνω**· κηλιδώνω διὰ μελάνης, ἐπὶ τετραδίων, βιβλίων κτλ.: «μοῦ μουτζάλωσε τὸ βιβλίο μου», «μουτζαλώνει τὰ τετράδιά του».

**Μουτζίπαρα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Θρᾳκικὴ πόλις ἐν Μακεδονίᾳ, κειμένη ἐπί τινος διαβάσεως τοῦ Ἀξιοῦ ποταμοῦ, διὰ τῆς ὁποίας διήρχετο ἡ ἀπὸ Πανταλίας (Κιοστενδὴλ) εἰς Στόβους (Σίρκοβον) ὁδός. Τὸ φρούριον αὐτῆς ἐπεσκεύασεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565). Α. Θ. Σ.

**Μούτι** *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Σκοπέλου (πλάτ. 39° 04' 20'' Β., μῆκ. 24° 39' 40'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2072: Scopelos Group), ἡ ΝΔ. τῆς νήσου ἐσχατιά. Σ. Ε. Λ.

**Μουτιανὸς** (ὁ) (Mutianus). Γερμανὸς ἀνθρωπιστὴς (1471—1526). Ἀπὸ τοῦ 1495—1502 ἔζησεν εἰς τὴν Ἰταλίαν ἐν μέσῳ κύκλου νεαρῶν λογίων, ἐκ τοῦ ὁποίου προέρχονται αἱ «Epistolae obscurorum virorum». Αἱ ἐπιστολαὶ καὶ τὰ ποιήματά του ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ Τέντσελ ἐν τῷ α' συμπληρωματικῷ τόμῳ τῆς «Historia Gothana» (1701). Α. Δ.

**μουτίζω**· ἰδιωμ. Κρήτ., ὑποτάσσομαι: «Τὸ τάδε χωρίον ἐμούτισε» ἐδήλωσεν ὑποταγήν. *Μουτῆδες* ἐλέγοντο οἱ δηλοῦντες ὑποταγὴν ἐπαναστάται. Ν. ΚΛΣ

**Μουτικὶ** *[Γεωγρ.]*. Ὑποδιοίκησις τῆς Τουρκίας, ἐξαρτωμένη ἐκ τοῦ νομοῦ Βιτλίς, εἰς τὸ ἄκρον δυτικὸν αὐτοῦ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 792 τετρ. χλμ. καὶ 10.987 κατοίκους. Πρὸ τῶν ἀρμενικῶν σφαγῶν εἶχεν 22.612 κατ., ἐξ ὧν 5.710 Ἀρμένιοι. Ν. Μ.

**μούτιλη** (ἡ). Στρῶμα παχὺ βούρκου, καλύπτον τὸν πυθμένα τῆς λιμνοθαλάσσης τοῦ Μεσολογγίου. Σύγκειται ἀπὸ ἀποσυντεθειμένα φύκια καὶ ἡ περιεκτικότης τοῦ ἅλατος καὶ τοῦ ἰωδίου ἐν αὐτῇ εἶναι μεγίστη. Χ. Γ. Ε.

**Μουτίνα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Β. Ἰταλίας ἐπὶ τῆς Αἰμιλίας ὁδοῦ, μεταξὺ τῶν ποταμῶν Σεκία (Secchia) καὶ Σκουλτάννα. Εἶναι ἡ σημερινὴ *Μούτενα* (βλ. λ.). Α. Θ. Σ.

**Μουτκούρωφ, *Σάββα*.** Βούλγαρος στρατηγὸς (1852—1891). Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Σερβοβουλγαρικὸν πόλεμον καὶ μετὰ τὴν ἔξωσιν τοῦ ἡγεμόνος Ἀλεξάνδρου ἐγένετο μέλος τῆς τριμελοῦς ἀντιβασιλείας. Ἐπὶ ἡγεμόνος Φερδινάνδου ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν. Τ. Β.

**Μουτὸν** (Mouton), ***Γεώργιος* —**, *κόμις Λομπώ*. Γάλλος στρατάρχης (βλ. λ. *Λομπώ*).

— **Μουτὸν** (Mouton), ***Ἰωάννης τῆς Χολλίνγκης***, ἐπονομαζόμενος—. Γάλλος μουσικός, γεννηθεὶς κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1522. Ὑπῆρξε δεινὸς διδάσκαλος τῆς ἀντιστίξεως. Τὰ ἔργα του εἶναι: 5 λειτουργίαι (1508), μέγας ἀριθμὸς μοτέττων, ψαλμοί, τραγούδια κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μουτουλλᾶς** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Κύπρου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λευκωσίας, κειμένη εἰς ὕψος 2.700 ποδῶν ἐπὶ τῶν κλιτύων τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Τροόδους. Ἔχει καλὰς θειούχους πηγὰς καὶ χρησιμοποιεῖται ὡς θέρετρον. Α. Κ. Λ.

**Μουτούλοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Μεταξοχώρι* (βλ. λ.). Χ. Σ.

**Μουτούργουρες** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς, ἐν Νουμιδίᾳ, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. Δ, 3. 6) καὶ κατοικῶν μεταξὺ τῶν Ἀχαιμενέων καὶ Μοχθουσίων. Α. Θ. Σ.

**Μουτούσης, *Κωνσταντῖνος*.** Ἕλλην ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Πάτραις τῷ 1891. Διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Βιέννης (1914), ὑπηρέτησεν εἰς τὸ αὐτόθι ἀντιλυσσικὸν ἰνστιτοῦτον, εἰς τὸ πανεπιστημιακὸν τῆς ὑγιεινῆς καὶ ὡς βοηθὸς ἐν τῷ πανεπιστημιακῷ ἐργαστηρίῳ πειραματικῆς παθολογίας, μικροβιολογίας, ὀροθεραπείας κ. λ. (1913—1915). Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν (1915) ἐν Ἀθήναις, ἐγένετο προϊστάμενος τοῦ μικροβιολογικοῦ ἐργαστηρίου τοῦ Εὐαγγελισμοῦ (1915—1923), ἐπιμελητὴς τοῦ ἐργαστηρίου ὑγιεινῆς καὶ μικροβιολογίας τοῦ πανεπιστημίου (1919—1923), τμηματάρχης τῶν λοιμωδῶν νόσων παρὰ τῇ γενικῇ διευθύνσει δημοσίας ὑγείας (1923—1924), διευθυντὴς τοῦ κεντρικοῦ ἐργαστηρίου τοῦ κράτους (1923—25), καθηγητὴς τῆς ἀνωτέρας σχολῆς ἐκπαιδεύσεως τῶν ὑγειονομικῶν ἀξιωματικῶν (1925—1926).

Κατὰ τὸν Ἑλληνοβουλγαρικὸν πόλεμον τοῦ 1913 διηύθυνε τὸ μικροβιολογικὸν ἐργαστήριον τοῦ νοσοκομείου χολεριώντων ἐν Σιδηροκάστρῳ, εἶτα δὲ ὡς ἔφεδρος ἀνθυπίατρος εἰργάσθη εἰς τὸ ἐργαστήριον ὑγιεινῆς καὶ μικροβιολογίας τοῦ πανεπιστημίου, διὰ τὴν παρασκευὴν τοῦ ἀντιτυφικοῦ καὶ ἀντιχολερικοῦ ἐμβολίου. Ἀπὸ τοῦ 1926 διατελεῖ διευθυντὴς τοῦ ἀνθελονοσιακοῦ ἀγῶνος εἰς τὴν Στερεὰν Ἑλλάδα, τὴν Θεσσαλίαν, Εὔβοιαν, Κυκλάδας καὶ νήσους τοῦ Αἰγαίου, παρὰ τῷ ὑπουργείῳ Ὑγιεινῆς. Τῷ 1923, δαπάναις τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως εἰς Ἰταλίαν, ὅπως ἀποτελέσῃ μέλος ἐπιτροπῆς ἐξ ἑλονοσιολόγων διαφόρων κρατῶν πρὸς σπουδὴν καὶ παρακολούθησιν τοῦ ἐκεῖ ἀνθελονοσιακοῦ ἀγῶνος· τῷ δὲ 1924 ἐξελέγη ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς μονίμου διὰ τὴν ἑλονοσίαν ἐπιτροπῆς τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν. Ἔκαμε διαφόρους ἐπιστημονικὰς ἀνακοινώσεις καὶ ἐδημοσίευσε πλῆθος ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν, ἐν αἷς: «Πειραματικαὶ ἔρευναι περὶ τῆς ἐν τῷ ὀργανισμῷ καταχρατήσεως τῆς κινίνης» (1925), «Περὶ καταπολεμήσεως τῆς ἑλονοσίας ἐν Ἑλλάδι ἐν σχέσει πρὸς τὴν τῶν λοιπῶν χωρῶν» (1927), «La lutte contre le paludisme» (1923), «Περὶ τῆς αἰτιολογίας τῆς ὀζαίνης καὶ ἐμβολιοθεραπείας αὐτῆς» («Ἰατρικὰ Χρονικὰ» 1929), «Μαθήματα γενικῆς ὑγιεινῆς καὶ προφυλάξεως ἀπὸ τῶν λοιμωδῶν νόσων» (1924), «Die Cholerakämpfung in den griechischen Armee wärend des griechisch-bul-garischen Krieges» (Wien. med. Woch. No 4 1914), «Untersuchungen über Fleckfieber» (Zeitschrfft. für Hyg. und Inf. Krankh. 1923), «Ἐντομολογικὰ εὑρήματα ἐν Ἑλλάδι» (1913) κ. ἄ. Β. Σ.

**μουτρίνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄκανθος ἡ ἀκανθώδης*.

Digitized by Google

**μοῦτρον** (τό), καὶ συνήθ. *μοῦτρα* (τά)· τὸ πρόσωπον, λέγεται συνήθως μετὰ ἐννοίας εὐτελιστικῆς: «τί μοῦτρα εἶν' αὐτά!», «πῆγε νὰ δείξῃ τὰ μοῦτρά του» νὰ κάμῃ τὴν ἐλεεινὴν ἐμφάνισίν του· || φρ. «μὲ τί μοῦτρα νὰ παρουσιασθῇ;», «δὲν ἔχω μοῦτρα νὰ τὸν ἰδῶ», ἐντρέπομαι, αἰσχύνομαι νὰ τὸν ἀτενίσω· || «ἔχει μοῦτρα νὰ μιλῇ» τολμᾷ νὰ ὁμιλῇ· || «μᾶς κάμνει μοῦτρα», ἄλλως «μᾶς κάμνει τὸ θυμωμένο»· || «μᾶς τὸ κτύπησε 'ς τὰ μοῦτρα» δὲν ἀπεδέχθη τὸ προσενεχθέν, μᾶς περιεφρόνησε· || «παίρνω τὰ μοῦτρά μου νά...», τολμῶ νά...· || «πέφτω μὲ τὰ μοῦτρα 'ς τὴ δουλειά, —'ς τὴ μελέτη», ἐργάζομαι—, μελετῶ μὲ ὅλας μου τὰς δυνάμεις.

**Μουτσᾶ.** Ὄνομα οἰκογενείας, ἥτις ἕλκουσα τὴν καταγωγὴν ἐξ Ἱσπανίας καὶ μεταναστεύσασα εἰς Βενετίαν ἐγκατεστάθη κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἐν Ζακύνθῳ καὶ ἐνεγράφη μεταξὺ τῶν εὐγενῶν τῆς νήσου ταύτης. Τῆς οἰκογενείας διεκρίθησαν: —1) ***Φραγκῖσκος*** (1769—1851), δικηγόρος, χρηματίσας ὕπαρχος Ζακύνθου καὶ νομοθέτης. —2) ***Ἐλισάβετ*** (1801—1832), θυγάτηρ τοῦ προηγουμένου. Αὐτοδίδακτος, παρὰ τὰς προλήψεις, τοὺς περιορισμοὺς καὶ τὴν αὐστηρότητα τῆς ἐποχῆς της, ἐμορφώθη τελείως. Ἔγραψε τὴν «Αὐτοβιογραφίαν» της, ἐκδοθεῖσαν ἐν Ἀθήναις, τῷ 1881, ὑπὸ τοῦ υἱοῦ της Ἐ. Μαρτινέγκου, ποιητοῦ. Λ. Χ. Ζ.

**Μουτσάκης,** ἢ ***Μητσάκης, Δημήτριος.*** Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1775 εἰς τὸ χωρίον Κάμποι τῆς Κυδωνίας. Νεώτατος ἀπεδήμησεν εἰς Χίον, ὅπου ἐγκατεστάθη. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐκεῖ ἐπαναστάσεως (1821), συμμετέσχεν εἰς αὐτὴν ὡς ὁπλαρχηγός, μετὰ τὴν καταστροφὴν δὲ τῆς Χίου, καθ' ἣν ἀπώλεσε πᾶσαν τὴν οἰκογένειάν του, μετέβη εἰς Σάμον καὶ ἑνωθεὶς μετὰ τοῦ ἐκεῖ ἀδελφοῦ του *Μιχαὴλ* ἐνήργει συνεχεῖς ἐπιδρομὰς εἰς τὰ ἔναντι μικρασιατικὰ παράλια, τέλος δὲ ἔπεσε γενναίως μαχόμενος εἴς τινα ἀπόβασιν παρὰ τὸν Τσεσμέν. Ν. ΚΛΣ

— **Μουτσάκης,** ἢ ***Μητσάκης, Ἰωάννης.*** Κρὴς ὁπλαρχηγός, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γνωστότερος ὡς *Μουτσογιάννης*. Ἐγεννήθη τῷ 1780, ἐπεδόθη δὲ νεώτατος εἰς τὸν ἁρματολικὸν βίον. Ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 μετέβη εἰς Σάμον, ὅπου συμμετέσχεν εἰς τὴν ἄμυναν τῆς νήσου κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων Τούρκων, ἐπανελθὼν δὲ κατόπιν εἰς Κρήτην ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας μάχας, ὡς καὶ εἰς τὴν ἅλωσιν τῆς Γραμβούσης (2 Αὐγούστου 1825). Ἐξηκολούθησε δὲ τὸν ἀγῶνα συνεχῶς μέχρις οὗ ἐμπεσὼν εἰς τουρκικὴν ἐνέδραν παρὰ τὸ Τηγάνι τῆς Κισάμου, ἐφονεύθη γενναίως μαχόμενος τὴν 9ην Μαρτίου 1827. Ν. ΚΛΣ

—**Μουτσάκης,** ἢ ***Μητσάκης, Μιχαήλ.*** Κρὴς ὁπλαρχηγός. Ἀδελφὸς τῶν προηγουμένων, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1778. Νεώτατος ἀπεδήμησεν εἰς Σάμον, ὅπου ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως ἐν τῇ νήσῳ (17 Ἀπριλίου 1821), μεθ' ὅ, τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς πολλῶν Κρητῶν καὶ Σαμίων, ἐξετέλει τολμηρὰς ἐπιδρομὰς ἀνὰ τὰ μικρασιατικὰ παράλια. Πληροφορηθεὶς ὅτι τρισχίλιοι Ἕλληνες ἄοπλοι (ἄνδρες καὶ γυναικόπαιδα) εἶχον συγκεντρωθῆ παρὰ τὸν Γέρονταν τῆς Μ. Ἀσίας, ἔσπευσεν ἐκεῖ μετά τινων πλοίων καὶ ἀποβιβασθεὶς μετὰ τῶν ἀνδρῶν του ἐξεδίωξε, κατόπιν διημέρου μάχης, τοὺς ἐπελθόντας Τούρκους καὶ εἶτα μετέφερεν εἰς Σάμον τοὺς ἀόπλους πληθυσμούς. Συμμετέσχεν εἶτα εἰς τὴν ἄμυναν τῆς Σάμου κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων Τούρκων καὶ εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῆς Χίου (1822), μεθ' ὃ ἐξηκολούθησε τὰς ἐπιδρομὰς εἰς Μ. Ἀσίαν μέχρι τέλους τοῦ Ἀγῶνος. Ν. ΚΛΣ

**Μουτσάλα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Νεροχώρι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μουτσαμάνι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κορώνης τῆς ἐπαρχίας Μαργαριτίου τοῦ νομοῦ Πρεβέζης. Κάτ. (1928) 101. Χ. Δ.

**Μουτσάρα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 95. Χ. Δ.

**Μουτσογιάννης**· βλ. *Μουτσάκης* Ἰωάννης.

**Μουτσόπουλος,** ἢ ***Μουτζόπουλος, Δημήτριος.*** Δήμαρχος Πειραιῶς (1866—1874). Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ διακανόνισις τοῦ ὑδρευτικοῦ ζητήματος τῆς πόλεως, ἡ κατασκευὴ τοῦ δημαρχιακοῦ καταστήματος, ἡ ἀνέγερσις τῶν ναῶν τοῦ Ἁγίου Σπυρίδωνος καὶ τῆς Μεταμορφώσεως, ὡς καὶ τοῦ Τζαννείου ἢ Ζαννείου νοσοκομείου. Α. Σ. Χ.

—**Μουτσόπουλος,** ***Τρύφων Ἀθαν.*** Νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, δήμαρχος καὶ οὗτος Πειραιῶς (1874—1883 καὶ 1895—1903). Συνεπλήρωσε τὰ ἐπὶ τοῦ ἀδελφοῦ του συντελεσθέντα ὑδραυλικὰ ἔργα, εἰσήγαγε τὸ φωταέριον, ἤγειρε τὸ γυμνάσιον τοῦ Πειραιῶς, δεύτερον παρθεναγωγεῖον καὶ ἐξωραΐσε τὴν πόλιν διὰ τοῦ ὑπὸ τὴν Τερψιθέαν κήπου. Προσέτι ἐπετέλεσε τὰ πρῶτα σπουδαῖα λιμενικὰ ἔργα τοῦ Πειραιῶς, δι' ἐκβαθύνσεων, κρηπιδωμάτων κ. τ. λ. Α. Σ. Χ.

**μοῦτσος** (ὁ). Ὁ ναυτόπαις (γαλλ. mousse, ἀγγλ. sea-boy) καὶ κατ' ἐπέκτασιν ὁ μαθητευόμενος ναύτης, ὁ πρωτόπειρος, ὁ ἀπειρόπλους, ὁ «ἀθαλάσσωτος». Ὑπερισχύει ὅμως ἡ σημασία τοῦ ναυτόπαιδος ἢ τοῦ παιδός, οἷοι εἶναι οἱ κάτω τῶν 15 ἐτῶν παῖδες, οἱ πρὸς ἐκμάθησιν τοῦ ναυτικοῦ ἐπαγγέλματος ὑπηρετοῦντες ἐπὶ πολεμικῶν ἢ ἐμπορικῶν πλοίων. Τὴν παρ' ἡμῖν ἄλλοτε «Σχολὴν ναυτοπαίδων», ἐν ᾗ ἐξεπαιδεύοντο οἱ *μοῦτσοι*, ὅπως γίνωσι πτυχιοῦχοι ναῦται, ὑποκατέστησεν ἡ «Σχολὴ τῶν δοκίμων ὑπαξιωματικῶν». Σ. Ε. Λ.

**Μουτσουκέλος** ***Βαρδῆς.*** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ Σφακίων, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ, ὑπὸ τὸν Δασκαλογιάννην, ἐπανάστασιν τοῦ 1770. Ν.ΚΛΣ

**Μουτσούνα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀπειράνθου τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 65. Χ. Δ.

**Μούττη** ***τοῦ Γερόννησου*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Λιμνίτης*.

**Μούττρα** (Muttra) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ματούρα*.

**Μουὺ** (Mouy), ***Κάρολος*** *ντὲ* —. Γάλλος διπλωμάτης καὶ συγγραφεὺς (1833—1916). Εἰσαχθεὶς νεώτατος εἰς τὴν διπλωματικὴν ὑπηρεσίαν, διετέλεσε γραμματεὺς τῆς γαλλικῆς πρεσβείας εἰς Κωνσταντινούπολιν, εἶτα δὲ εἰς τὸ κέντρον. Μετέσχε τῆς γαλλικῆς ἀντιπροσωπείας κατὰ τὸ ἐν Βερολίνῳ συνέδριον, εἶτα δέ, τῷ 1880, διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Ἀθήναις. Θερμὸς φιλέλλην καὶ ὀπαδὸς τοῦ Γαμβέττα, ἐτάχθη πάντοτε ὑπὲρ τῆς Ἑλλάδος καὶ κατὰ τὴν κατάληψιν ὑπὸ τῶν Βουλγάρων τῆς Ἀνατολικῆς Ρωμυλίας ὑπεστήριξε τὴν ἑλληνικὴν ἄποψιν καὶ ἐνεθάρρυνε τὸν Δηλιγιάννην εἰς τὴν πολιτικήν του. Ὅτε ἀπεφασίσθη ὁ ἀποκλεισμὸς τῶν ἑλληνικῶν λιμένων, ἡ Γαλλία δὲν μετέσχεν αὐτοῦ καὶ ὁ ντὲ Μουὺ ἐξεφράσθη δυσμενῶς διὰ τὴν πρὸς τὴν ἑλληνικὴν κυβέρνησιν συμπεριφορὰν τοῦ Ἄγγλου πρεσβευτοῦ. Μετετέθη ἐξ Ἀθηνῶν μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ ἑλληνικοῦ ζητήματος, τῷ 1886. Συνέγραψε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἀπομνημονεύματα διπλωμάτου», «Ἐπιστολαὶ ἀπὸ τὸν Βόσπορον», «Ἀθηναϊκαὶ ἐπιστολαί», μεταφρασθεῖσαι ὑπὸ τοῦ Σπ. Σακελλαροπούλου καὶ δημοσιευθεῖσαι εἰς τὴν φιλολογικὴν «Ἑστίαν» κλ. Θ. Β.

**Μούυντεν** (Van-Muyden), ***Ἰάκωβος-Ἀλφρέδος*** *βὰν* —. Ἑλβετὸς ζωγράφος· βλ. λ. *Βὰν-Μούυντεν*.

**Μοὺφ** (Muff), ***Χριστιανός.*** Γερμανὸς φιλόλογος καὶ παιδαγωγικὸς (1841—1911). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Χάλλης. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Antiquitates Romanae in Virgilii Aeneïde» (1864), «Über den Vortrag der chorischen Partien bei Aristophanes» (1871), «De exitu Vesparum Aristophanis» (1872), «Die chorische Technik des Sophokles» (1877), «Der Zanber der Homerischen Poesie». Α. Δ.

**μουφεττίσης** (ὁ) (λ. ἀραβοτουρκική)· ἐπιθεωρητής.

**Μουφκίτσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ὀλυμπίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἀπέχει 10 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς Κάτω Φιγαλίας (Ζούρτσας) καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 667. Χ. Δ.

**μοῦφλον** (τὸ) *[Ὀδοντιατρ.]*. Μετάλλινον κιβωτίδιον πολύγωνον ἢ στρογγύλον (γαλλ. moufle, ἀγγλ. flask), χρησιμοποιούμενον ἐν τῇ ὀδοντιατρικῇ πρὸς ἔγκλεισιν ἐν αὐτῷ τῆς πρὸς ὄπτησιν ὀδοντοστοιχίας ἐξ ἐλαστικοῦ κόμμεως ἢ ἄλλου ὑλικοῦ, ἢ καὶ πρὸς τῆξιν ἐν αὐτῷ τοῦ χρυσοῦ κατὰ τὴν παρασκευὴν ἐνθέτων (inlay) ἐμφράξεων καὶ παντὸς εἴδους χυτῶν ὀδοντιατρικῶν ἐργασιῶν. Ἡ λέξις ἀπεδόθη ἑλληνιστὶ καὶ *ἔγκλειστρον*, διατηρεῖται ὅμως ἰδίως ἐν χρήσει ὁ ξενικὸς ὅρος. Μούφλων ὑπάρχουσι διάφορα εἴδη, ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῆς ὀδοντιατρικῆς ἐργασίας, ἣν ἔχει τις νὰ ἐπιτελέσῃ.

Καὶ τὰ μὲν πρὸς ὄπτησιν τῶν ὀδοντοστοιχιῶν ἀποτελοῦνται ἐκ δύο ἕως τεσσάρων τεμαχίων, συναρμοζομένων πρὸς ἄλληλα διὰ κοχλιῶν ἢ καὶ ἄνευ τούτων, τὰ δὲ πρὸς κατασκευὴν ἐνθέτων ἐμφράξεων ἢ χυτῶν ἐργασιῶν εἶναι στρογγύλα, μονοκόμματα καὶ ἄνευ πυθμένος. Τὰ μεγέθη τῶν μὲν πρώτων εἶναι σχεδὸν πάντοτε τὰ αὐτά, τῶν δὲ δευτέρων ποικίλλουσιν ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῆς ἐργασίας, ἣν ἔχει τις νὰ κατασκευάσῃ. Εἰς τὴν Ἀγγλικὴν διὰ τοῦ ὅρου muffle σημαίνεται τὸ τμῆμα ἐκεῖνο τοῦ κλιβάνου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου τοποθετεῖται τὸ πρὸς ὄπτησιν ἀντικείμενον. Εἶναι δὲ κατεσκευασμένον ἐξ ἀργίλλου καὶ ἀσβέστου καὶ χρησιμοποιεῖται πρὸς ὄπτησιν πορσελλάνης.

Ν. Γ. ΠΑΠΑΝΤΩΝΟΠΟΥΛΟΣ

**μουφλὸν** (τὸ)· ὀνομασία εἰδῶν τινων ἀγρίων προβάτων (ἐκ τοῦ γαλλ. **mouflon**) (βλ. λ. *πρόβατον*).

**μουφλούζεμα** (τὸ)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουφλουζεύω, πτώχευσις, χρεοκοπία.

**μουφλουζεύω**· δημοτ., γίνομαι μουφλούζης, κάμνω στάσιν τῶν πληρωμῶν, πτωχεύω, χρεοκοπῶ· || καὶ μεταβ., κάμνω τινὰ νὰ πτωχεύσῃ, νὰ χρεοκοπήσῃ: «τὸν ἐμουφλούζεψαν αἱ ἐπιδείξεις».

**μουφλούζης** (ὁ)· δημοτ., ὁ χρεοκοπήσας, ὁ πτωχεύσας, ὁ ἀναξιόχρεως (ἐκ τῆς ἀραβ. *μουφλὶς*=πτώχευσις).

**μουφτῆς** (ὁ)· λέξις συνώνυμος τοῦ ἀραβ. *μουφτί*, σημαίνοντος τὸν ἑρμηνευτὴν τῶν νόμων.

— *[Ἐγκυκλ.]*. Ὁ *μουφτῆς* εἶναι Μουσουλμᾶνος θεολόγος συντάττων τὰς ἐπὶ τῶν εἰς τὸ θρησκευκὸν μουσουλμανικὸν δίκαιον ἀφορώντων ζητημάτων γνωμοδοτήσεις (φετφᾶδες) ἐπισήμους μέν, ἀλλὰ μὴ ὑποχρεωτικὰς διὰ τὸν *καδῆν*, ἤτοι τὸν ἱεροδίκην. Περὶ τῶν μουφτήδων τῶν ἐν Ἑλλάδι μουσουλμανικῶν κοινοτήτων προέβλεπεν ἀρχικῶς ἡ μεταξὺ Ἑλλάδος καὶ Τουρκίας σύμβασις τοῦ 1881, προέβλεψε δ' ἐπίσης καὶ ἡ μεταξὺ τῶν δύο χωρῶν μεταγενεστέρα σύμβασις τοῦ ἔτους 1913.

Παρ' ἡμῖν ὁ μουφτῆς ἀναδείκνυται δι' ἐκλογῆς, ἥτις προκηρύσσεται ἐντὸς μηνὸς ἀπὸ τῆς χηρεύσεως θέσεως μουφτῆ ὑπὸ τοῦ ἁρμοδίου γενικοῦ διοικητοῦ, ἤ, ὅπου δὲν ὑπάρχει γενικὴ διοίκησις, ὑπὸ τοῦ ἁρμοδίου νομάρχου. Κατ' αὐτὴν δύνανται νὰ ἐκλεγῶσι Μουσουλμᾶνοι πολῖται Ἕλληνες, ἔχοντες δίπλωμα μενδρεσὲ (ἰτζαζέτ) ἢ σχολῆς ναϊπήδων, ἢ διατελέσαντες μουφτῆδες, μὴ καταδικασθέντες δὲ ἐπὶ κακουργήματι ἢ πλημμελήματι ἐκ τῶν ἐν τοῖς ἄρθρ. 22, 24, 456, 457, 461, 462, καὶ 482 § 1 τοῦ ποιν. νόμου. Ὁ πίναξ τῶν ὑποψηφίων καταρτίζεται ἑκάστοτε ὑπὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Θρησκευμάτων, δικαίωμα δ' ἐγγραφῆς ἐν αὐτῷ ἔχουσιν, ἐκ τῶν κεκτημένων τὰ ὡς ἀνωτέρω προσόντα οἱ ἐγγεγραμμένοι ἐν τοῖς ἐκλογικοῖς καταλόγοις τῶν βουλευτικῶν ἐκλογῶν τῆς περιφερείας δι' ἣν ἡ ἐκλογή.

Ἡ ἐκλογὴ διεξάγεται κατὰ τὴν ταχθεῖσαν ἡμέραν ἐν τοῖς ὑπὸ τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ ἢ τοῦ νομάρχου ὁρισθεῖσι τμήμασι διὰ μυστικῆς διὰ ψηφοδελτίων ψηφοφορίας. Ἐπιτυχὼν θεωρεῖται ὁ σχετικῶς πλειοψηφήσας, ὅστις ἀνακηρύσσεται ὑπὸ τοῦ πρωτοδικείου τῆς πρωτευούσης τῆς περιφερείας τοῦ μουφτῆ, δι' ἣν ἡ ἐκλογή. Κατὰ τοῦ κύρους τῆς ἐκλογῆς ἐντὸς ὡρισμένης προθεσμίας δύναται πᾶς ἐκλογεὺς νὰ ὑποβάλῃ ἐνστάσεις, αἵτινες ἐκδικάζονται ὑπὸ τοῦ πρωτοδικείου. Τῆς συζητήσεως δύναται νὰ μετάσχῃ ὁ ἐπιτυχὼν μουφτῆς πρὸς ὑποστήριξιν τοῦ κύρους τῆς ἐκλογῆς αὐτοῦ. Ἐπικυρωθείσης ὑπὸ τοῦ πρωτοδικείου τῆς ἐκλογῆς, ἢ μὴ ὑποβληθείσης ἐνστάσεως, τὸ ἐπὶ τῶν Θρησκευμάτων ὑπουργεῖον προκαλεῖ τὸ περὶ διορισμοῦ τοῦ ἐκλεγέντος μουφτῆ διάταγμα. Μέχρι τῆς δι' ἐκλογῆς ἀναδείξεως ὁριστικοῦ μουφτῆ καθίσταται προσωρινὸς τοιοῦτος, κατὰ πρότασιν τοῦ ἁρμοδίου γενικοῦ διοικητοῦ, διὰ διατάγματος προκαλουμένου ὑπὸ τοῦ ἐπὶ τῶν Θρησκευμάτων ὑπουργοῦ. Καταστάσεις τοιούτων προσωρινῶν μουφτήδων ἐγένοντο κατ' ἐπανάληψιν, ὡς λ. χ. διὰ τῶν ἀπὸ 20 Μαρτίου καὶ 22 Ἰουνίου 1927 διαταγμάτων. Ὁ μουφτῆς δίδει πρὸ τῆς ἀναλήψεως τῶν καθηκόντων αὐτοῦ τὸν ὅρκον τοῦ δημοσίου ὑπαλλήλου ἐνώπιον τοῦ ἁρμοδίου νομάρχου.

Ὁ μουφτῆς παύεται διὰ διατάγματος προκαλουμένου ὑπὸ τοῦ ἐπὶ τῶν Θρησκευμάτων ὑπουργοῦ: 1) ἕνεκα διὰ τελεσιδίκου ἀποφάσεως καταδίκης ἐπί τινι τῶν ἐν τοῖς ἄρθροις 21, 22, 24, 456, 457, 461, 462 καὶ 482 § 1 τοῦ ποιν. νόμου ἀδικημάτων ἢ εἰς στέρησιν τῶν πολιτικῶν αὐτοῦ δικαιωμάτων· 2) ἕνεκα νόσου, ἀνεπαρκείας ἢ ἀναξιοπρεποῦς ἢ ἀσυμβιβάστου πρὸς τὸ ἀξίωμα αὐτοῦ διαγωγῆς, βεβαιωθείσης δι' ἀποφάσεως τοῦ συμβουλίου τῶν ἐν Ἀθήναις ἐφετῶν.

Οἱ μουφτῆδες μισθοδοτοῦνται ὑπὸ τοῦ δημοσίου ταμείου. Ἤδη, κατὰ τὸν ἀπὸ 1882 νόμον ΑΛΗ', ἐμισθοδοτοῦντο ὑπὸ τοῦ δημοσίου ταμείου οἱ μουφτῆδες τῶν μουσουλαμανικῶν κοινοτήτων Λαρίσης, Φαρσάλων, Τρικκάλων καὶ Βόλου, ὡς καὶ πᾶς ἕτερος, ὅστις διὰ βασιλικοῦ διατάγματος θὰ καθίστατο ἐν πρωτευούσῃ νομοῦ ἢ καὶ ἐπαρχίας, ἥτις θὰ ἠρίθμει κατοίκους πλείονας τῶν τεσσαρακοντακισχιλίων.

Ὁ μουφτῆς ἀσκεῖ δικαιοδοσίαν μεταξὺ Μουσουλμάνων ἐπὶ τῶν ἀφορώντων εἰς γάμους, διαζύγια, διατροφὴν (νεφακά), ἐπιτροπείας, κηδεμονίας, χειραφεσίας ἀνηλίκων, ἰσλαμικὰς διαθήκας, διαδοχὴν εἰς θέσιν μουτεβελῆ (τεβλιέτ). Διὰ νὰ γίνῃ ἐκτέλεσις τῶν ἐπὶ τοιούτων ζητημάτων ἀμφισβητουμένης δικαιοδοσίας ἀποφάσεων τοῦ μουφτῆ, δέον προηγουμένως νὰ κηρυχθῶσιν αὗται ἐκτελεσταὶ ὑπὸ τοῦ προέδρου τοῦ πρωτοδικείου, ἐν οὗ τῇ περιφερείᾳ ἑδρεύει ὁ μουφτῆς κατὰ τὸ ἄρθρον 119 ἐδάφ. 2 τῆς πολιτικῆς δικονομίας. Ἡ ἀπόφασις τοῦ μουφτῆ ὑποβάλλεται εἰς τὸν πρόεδρον τῶν πρωτοδικῶν ἐν πρωτοτύπῳ καὶ κεκυρωμένῃ μεταφράσει, δι' ἐγγράφου τοῦ ἰδίου, ὅπερ ἐπέχει θέσιν πρακτικοῦ καταθέσεως. Ὁ πρόεδρος τῶν πρωτοδικῶν ἐρευνᾷ μόνον ἂν ἡ ἀπόφασις τοῦ μουφτῆ



Digitized by Google

ἐξεσόθη ἐντὸς τῶν ὁρίων τῆς κατὰ νόμον δικαιοδοσίας αὐτοῦ. Ἐν ᾗ περιπτώσει ὁ πρόεδρος τῶν πρωτοδικῶν ἤθελεν ἀρνηθῇ νὰ κηρύξῃ ἐκτελεστὴν τὴν ἀπόφασιν δι' ὑπέρβασιν δικαιοδοσίας, ἡ ὑπόθεσις φέρεται δι' αἰτήσεως τοῦ ἐπιμελεστέρου τῶν διαδίκων, ἥτις δέον νὰ κοινοποιῆται εἰς τὸν ἀντίδικον, ἐνώπιον τοῦ ἁρμοδίου πρωτοδικείου, ὅπερ δὲν δύναται νὰ ἐρευνήσῃ τὸ περιεχόμενον τῆς ἀποφάσεως τοῦ μουφτῆ. Κατὰ τοῦ περιεχομένου αὐτῆς οὔτε τακτικὸν ἔνδικον μέσον χωρεῖ, οὔτε ἔκτακτον. Οἱ μουφτῆδες διαιροῦνται εἰς τρεῖς τάξεις κατὰ λόγον τῆς σπουδαιότητος ἑκάστης θέσεως. Κατὰ τὰς διατάξεις τῶν οἰκείων νόμων, εἰς τὸν ἀρχιμουφτῆν, ὅστις θ' ἀπετέλει τὴν ἀνωτάτην ἐν Ἑλλάδι θρησκευτικὴν ἀρχὴν τῶν Μουσουλμάνων, θὰ κατεβάλλοντο ὑπὸ τοῦ δημοσίου ταμείου μισθὸς καὶ ἐπίδομα δι' ἔξοδα παραστάσεως, ἔτι δὲ τὸ μίσθωμα τοῦ καταστήματος τῆς ἀρχιμουφτείας καὶ τὰ ἄλλα ἔξοδα αὐτῆς, ὡς καὶ οἱ παρὰ τῷ ἀρχιμουφτῇ μισθοὶ τοῦ γενικοῦ γραμματέως, τοῦ διερμηνέως, τοῦ γραμματέως, τοῦ ἱερωμένου Μουσουλμάνου, τῶν γραφέων καὶ τῶν κλητήρων. Ἡ ὑπηρεσιακὴ ἀλληλογραφία τοῦ ἀρχιμουφτῆ, καθάπερ καὶ ἡ τῶν μουφτήδων, θὰ ἦτο ἀπηλλαγμένη ταχυδρομικῶν καὶ τηλεγραφικῶν τελῶν. Σίτησις μαθητῶν καὶ ἄλλα ἔξοδα θὰ κατεβάλλοντο ὑπὸ τοῦ δημοσίου ταμείου. Ὁ ἀρχιμουφτῆς θὰ ἐπεκοινώνει πρὸς τὰς ἀρχὰς τοῦ κράτους διὰ τοῦ ὑπουργείου τῶν Θρησκευμάτων, μόνον δὲ μετὰ τοῦ ἐπὶ τῆς Δικαιοσύνης ὑπουργοῦ θ' ἀλληλογράφει ἀμέσως. Θὰ ἱδρύετο δ' ἐν Ἀθήναις καὶ θὰ συνετηρεῖτο ὑπὸ τοῦ κράτους ἱερὰ μουσουλμανικὴ σχολὴ πρὸς μόρφωσιν ναϊπήδων (μουφτήδων καὶ ἱεροδικῶν). Τὰ τῆς καθόλου ὀργανώσεως τῆς σχολῆς ταύτης καὶ δὴ τὰ τοῦ διδάσκοντος προσωπικοῦ, τὰ προσόντα καὶ αἱ ἀποδοχαὶ ἑκάστου, ἡ διάρκεια τῶν σπουδῶν καὶ τὰ ἐν ἑκάστῃ τάξει διδακτέα μαθήματα, τὸ ἀναλυτικὸν πρόγραμμα, τὰ τῆς ἐγγραφῆς, φοιτήσεως, ἐξετάσεων, προαγωγῆς ἀπὸ τάξεως εἰς τάξιν καὶ ἀποφοιτήσεως τῶν μαθητῶν, ὡς καὶ καθόλου λεπτομέρειαι τῆς λειτουργίας τῆς σχολῆς, θὰ ὡρίζοντο διὰ διαταγμάτων, ἅτινα θὰ ἐξεδίδοντο προτάσει ἐπιτροπείας ἐξ ἱερωμένων Μουσουλμάνων ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ ἀρχιμουφτῆ ἢ τοῦ ἀπὸ τούτου καθισταμένου μουφτῆ.

[Ὅρα τὸν ἀπὸ Ἰουνίου 1920 νόμον 2345 «Περὶ προσωρινοῦ ἀρχιμουφτῆ καὶ μουφτήδων τῶν ἐν τῷ κράτει Μουσουλμάνων καὶ διαχειρίσεως τῶν περιουσιῶν τῶν μουσουλμανικῶν κοινοτήτων» καὶ τὸν ἀπὸ Μαρτίου 1924 νόμον 3069. Βλ. καὶ λ. *μουσουλμανικαὶ* κοινότητες καὶ μουφτία. Ὅρα ἔτ. *Κ. Μ. Ράλλη*, Ἐγχειρίδιον Ἐκκλησιαστικοῦ Δικαίου, τεῦχ. Α' 1927, σελ. 23, 25, 30 καὶ 32.] Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**μουφτία** (ἡ)· ἡ περιφέρεια, ἐν ᾗ ὁ μουφτῆς ἀσκεῖ τὰ καθήκοντά του.

—*[Ἐγκυκλ.]* Παρ' ἡμῖν ἡ τάξις καὶ ἡ περιφέρεια τῶν *μουφτιῶν* ὁρίζεται διὰ προεδρικοῦ διατάγματος. Οὕτω διὰ τοῦ ἀπὸ 19 Μαρτίου 1928 διατάγματος ὁ ἀριθμὸς τῶν μουφτιῶν ὡρίσθη εἰς δώδεκα. Ἐγένοντο δὲ καὶ συγχωνεύσεις μουφτιῶν. Οὕτω λ.χ. διὰ τοῦ ἀπὸ 1 Ἰουνίου 1927 διατάγματος εἰς τὴν δι' αὐτοῦ ἱδρυθεῖσαν ἐν τῷ νομῷ Ἕβρου μουφτίαν, δι' ἣν ὡς ἕδρα ὡρίσθη τὸ Διδυμότειχον, συνεχωνεύθη ἡ μουφτία Ἀλεξανδρουπόλεως. Αἱ μουφτίαι ἔχουσιν ἰδίους ὑπαλλήλους.

[Βλ. λ. *μουσουλμανικαὶ* κοινότητες καὶ *μουφτῆς*.] Κ. Μ. ΡΑΛΛΗΣ

**Μοῦφφατ** (Muffat), *Γεώργιος*. Γερμανὸς συνθέτης καὶ ὀργανοκρούστης (1645—1704). Τελειοποιηθεὶς εἰς τὴν μουσικὴν ἐν Παρισίοις, ὠνομάσθη ὀργανοκρούστης τοῦ ἐν Στρασβούργῳ καθεδρικοῦ ναοῦ, ἔλαβε δὲ βραδύτερον τὴν θέσιν τοῦ ὀργανοκρούστου τῆς ἀρχιεπισκοπῆς τοῦ Σαλτσβούργου. Ὁ Μοῦφφατ ἔγραψεν: «Armonico tributo» (σονάτας διὰ πλεῖστα ὄργανα), «Σουΐτας» δι' ὀρχήστραν ἐγχόρδων καὶ συνεχὲς βάσιμον, τοκκάτας, πασσακάλιας κλπ. καὶ 12 «Κοντσέρτι γκρόσσι». Ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Γκόττλιμπ* (1690—1770) ὑπῆρξεν ἐπίσης ἀξιόλογος συνθέτης. Γ. Σ.

**Μοὺχ** (Much), *Χάνς*. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1880. Τῷ 1912 ὑπῆρξε διευθυντὴς τοῦ φθισιατρείου τοῦ Βραδεμβούργου, τῷ δὲ 1919 καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς ἐν Ἀμβούργῳ. Ἐκ τῶν ἰατρικῶν αὐτοῦ ἔργων διακρίνονται τά: «Παθολογικὴ βιολογία» (1922) καὶ «Ἱπποκράτης ὁ Μέγας» (1926). Ὁ Μοὺχ εἶναι γνωστὸς καὶ ὡς ποιητής, ἰδίᾳ ἐκ τῶν ποιητικῶν ἀπανθισμάτων του: «Σκέψις καὶ ἐποπτεία» (1913), «Ποῦ κατέφυγα» (1920) κλπ. Ὡς φιλόσοφος ἀποκλίνει πρὸς τὸν βουδισμὸν καὶ τὸν μυστικισμόν, ὡς καταφαίνεται ἐκ τῶν ἔργων του: «Εἰς τὴν ὁδὸν τῆς τελειότητος» (1919), «Ὁ κόσμος τοῦ Βούδα» (1923), «Ἀχμπάρ, ἡ σκιὰ τοῦ Θεοῦ ἀνὰ τὸν κόσμον» (1924), «Μάϊστερ Ἔκκεχαρτ». κ.τ.λ. Α. Δ.

**Μοῦχα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Καστανιᾶς τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων. Κάτ. (1928) 180. Χ. Δ.

**Μουχὰλ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Βουνοχώρι* (βλ.λ.). Χ.Δ.

**Μουχαλετζὶκ** *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν ὑποδιοικήσεων τοῦ νομοῦ Ἀγκύρας μετὰ ὁμωνύμου πρωτευούσης κειμένης παρὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἄγουσαν ἀπὸ Προύσης εἰς Μπεϋ-Μπαζάρ. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει πλουσιώτατον μεταλλεῖον κιμωλίας γῆς, ἧς γίνεται σημαντικὴ ἐξαγωγὴ ἀπὸ τῶν ἀρχαίων χρόνων.

**Μουχαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ εἰς *Ἁγίαν Κυριακὴν* μετονομασθέντος χωρίου τῆς κοινότητος Πλαγιῶν (Οὐσουσλοῦ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 377. Χ. Δ.

**Μουχαλὶτς** (*Καπουδὰγ* ἢ καὶ *Μιχαλητζὶκ*) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Φρυγίας ἐν τῇ Δυτικῇ Μ. Ἀσίᾳ, κειμένη ἀνατολικῶς τοῦ Ἐσκὶ Σεχὶρ καὶ παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Πουρσὰκ εἰς τὸν Σαγγάριον. Ἔχει περὶ τὰς 5.000 κατοίκων, Τούρκων καὶ Κιρκασίων. Ἐν τῇ περιοχῇ αὐτῆς κατ' Αὔγουστον 1921 εἶχε προωθηθῆ μικτὸν ἀπόσπασμα ἐκ τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ καὶ μοίρας ὀρειβ. πυροβολικοῦ (συνταγμ. Γ. Στημοναρᾶς) καλύψαν παρὰ τὸ Γόρδιον τὴν ἄκραν ἀριστερὰν πτέρυγα τοῦ πρὸς Ἄγκυραν (ἀνατολικῶς τοῦ Σαγγαρίου) προελάσαντος ἑλληνικοῦ στρατοῦ. Ν. Κ. Σ.

**Μουχάνι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μικρασιατικὸς φυσικὸς λιμὴν κατὰ τὸ ΝΑ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Μαντελιᾶς (πλάτ. 37° 04' 40" Β., μῆκ. 27° 16' 50" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1546: Samos strait to Mandelyah gulf). Ὑπὸ τῶν ναυτικῶν μας ὀνομάζεται *Γύφτου-φυσερό*, ἀπὸ τοῦ ἐν αὐτῷ καταχεομένου ριπαίου ἀπογείου (ΝΑ) ἀνέμου. Σ. Ε. Λ.

**Μουχάνια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς ἀνατολικῆς ἐσχατιᾶς τῆς χερσονήσου τῆς Ἀρτάκης (πλάτ. 40° 28' 00" Β., μῆκ. 28° 02' 15" Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ἀντικρύζων τὰς νησῖδας Μολὰ Ἀντασσί. Σ. Ε. Λ.

**Μουχαρρὲμ** (=ὁ θρησκευτικῶς ἀπηγορευμένος). Ὁ πρῶτος μὴν τοῦ ἀραβικοῦ ἡμερολογίου. Δὲν δύναται νὰ καθορισθῇ πρὸς ποῖον μῆνα ἀντιστοιχεῖ, διότι ἡ ἀρχὴ τοῦ ἀραβικοῦ ἔτους, ὄντος σεληνιακοῦ, μετατίθεται κατ' ἔτος κατὰ 11 ἡμέρας, οὕτως ὥστε ὁ Μουχαρρέμ, μετατιθέμενος κατ' ἔτος, συμπίπτει πρὸς ὅλους τοὺς ἡμετέρους μῆνας. Ἡ λέξις *Μουχαρρὲμ* εἶναι καὶ κύριον ὄνομα, σύνηθες παρὰ τοῖς Μουσουλμάνοις Ἀλβανοῖς. Ν. Μ.

— **Μουχαρρὲμ** *διάταγμα*. Τουρκικὸν αὐτοκρατορικὸν διάταγμα ἐκδοθὲν τῇ 28ῃ τοῦ ἀραβικοῦ μηνὸς Μουχαρρὲμ τοῦ ἔτους τῆς Ἐγίρας 1299 (8/20 Δεκεμβρίου 1881) πρὸς ἐπικύρωσιν τῶν περὶ διακανονίσεως τῆς ὑπηρεσίας τοῦ Δημοσίου ὀθωμανικοῦ χρέους ἀποφάσεων, αἵτινες ἐλήφθησαν κατόπιν μακρῶν διαπραγματεύσεων τῆς ὀθωμανικῆς κυβερνήσεως ἀφ' ἑνὸς καὶ τῶν ἐνδιαφερομένων κρατῶν καὶ δανειστῶν ἀφ' ἑτέρου.

Συνεπείᾳ ἀστόχου δανειστικῆς πολιτικῆς, ἐκδηλωθείσης διὰ τῆς συνάψεως ἀδιακόπου σειρᾶς ἐξωτερικῶν δανείων ἀπὸ τοῦ 1854 καὶ ἐντεῦθεν, τῶν ὁποίων τὸ βάρος ἐπέτειναν αἱ δαπάναι αἱ προκληθεῖσαι ἐκ τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Βοσνίας καὶ Ἑρζεγοβίνης καὶ τοῦ πολέμου κατὰ τῆς Σερβίας καὶ κατόπιν κατὰ τῆς Ρωσίας, ὡς καὶ αἱ ἐσωτερικαὶ ἀνωμαλίαι (ἐκθρονίσεις τῶν Σουλτάνων Ἀβδοὺλ Ἀζὶζ καὶ Μουρὰτ τοῦ Ε'), ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις ἠναγκάσθη ἤδη ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ 1876 νὰ διακόψῃ τελείως τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ τοκοχρεολυσίου ὁλοκλήρου τοῦ δημοσίου αὐτῆς χρέους. Τὴν διευθέτησιν τῆς ἐπαναλήψεως τῶν σχετικῶν πληρωμῶν ἐπεδίωξαν οἱ δανεισταὶ τῆς Τουρκίας ἀπὸ τοῦ Συνεδρίου τοῦ Βερολίνου. Μετὰ μακρὰς δὲ καὶ κοπιώδεις συζητήσεις ἐπῆλθε συμφωνία, κυρωθεῖσα διὰ τοῦ «διατάγματος τοῦ Μουχαρρέμ», κοινοποιηθέντος ἐπισήμως καὶ εἰς τὰς ὑπογραψάσας τὴν Βερολίνειον συνθήκην δυνάμεις. Πρὸς ἐξασφάλισιν τοῦ κατ' ἀναλογίαν 15—60 % ἐλαττωθέντος κεφαλαίου τῶν διαφόρων δανείων, πλέον 10 % διὰ τὴν κεφαλαιοποίησιν τῶν καθυστερουμένων τόκων, ἡ ὀθωμανικὴ κυβέρνησις ἐξεχώρησεν ἀπολύτως καὶ ἀνεκκλήτως (ἄρθρ. 8) ἀπὸ τῆς 1/13 Ἀπριλίου 1882 μέχρις ὁριστικῆς ἀποσβέσεως ὁλοκλήρου τοῦ χρέους, τὰς ἑξῆς προσόδους: 1) Τῶν Μονοπωλίων τοῦ καπνοῦ καὶ τοῦ ἅλατος, τῶν φόρων χαρτοσήμου, ἁλιείας Κωνσταντινουπόλεως, δεκάτης μετάξης Κωνσταντινουπόλεως, Ἀδριανουπόλεως, Προύσης καὶ Σαμψοῦντος κ.λ.π. 2) Τὰ ἐξ αὐξήσεως τῶν τελωνειακῶν δασμῶν πλεονάσματα τῶν τελωνείων. 3) Τὰ ἐξ ἐνδεχομένης ἐφαρμογῆς τοῦ ἐπαγγελματικοῦ φόρου πλεονάσματα. 4) Τὸν φόρον τῆς βουλγαρικῆς ἡγεμονίας (οὐδέποτε πληρωθέντα, μηδὲ κἂν καθορισθέντα), μέχρι δὲ καθορισμοῦ τούτου 100.000 λιρ. ἐτησίως ἐκ τῆς δεκάτης τῶν καπνῶν. 5) Τὸ πλεόνασμα τοῦ φόρου Κύπρου (130.000 λιρῶν τουρκικῶν ἐτησίως). 6) Τὸν φόρον Ἀνατολικῆς Ρωμυλίας ἐκ 240.000 λιρῶν τουρκικῶν ἐτησίως. 7) Τὰς εἰσπράξεις τοῦ φόρου ἐπὶ τουμπεκίου. 8) Τὰ εἰς τὴν Τουρκίαν ἀναλογοῦντα ποσὰ ἐκ τῆς συμμετοχῆς τῆς Ἑλλάδος, Βουλγαρίας, Σερβίας καὶ τοῦ Μαυροβουνίου εἰς τὸ δημόσιον χρέος τῆς Τουρκίας (δὲν ἐφηρμόσθη ἀκόμη).

Ἡ εἴσπραξις καὶ διαχείρισις τῶν προσόδων τούτων ἀνετέθη εἰς διοικητικὸν συμβούλιον, ἑδρεῦον ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἀποτελούμενον ἐξ ἀντιπροσώπων τῶν Ἄγγλων, Ὁλλανδῶν, Γάλλων, Γερμανῶν, Αὐστροούγγρων, Ἰταλῶν καὶ Τούρκων ὁμολογιούχων, ὡς καὶ ἑνὸς ἀντιπροσώπου τῆς Αὐτοκρατορικῆς Ὀθωμανικῆς Τραπέζης. Ἡ εἴσπραξις διενεργεῖται διὰ προσωπικοῦ ἐξαρτωμένου ἐκ τοῦ συμβουλίου τούτου, ἀλλ' ὑπόκειται εἰς τὸν ἔλεγχον τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως διὰ κυβερνητικοῦ ἐπιτρόπου.

Τὸ συμβούλιον τοῦτο ἦτο ἡ ἐν Τουρκίᾳ Διεθνὴς Ἐπιτροπὴ τοῦ Οἰκονομικοῦ Ἐλέγχου. Ἀπετέλει ἔλεγχον βαρύν, διότι τὸ εἰς ἀσφάλειαν τῶν τόκων ὁρισθὲν ἐνέχυρον εὑρίσκετο εἰς χεῖρας τῶν δανειστῶν τῆς Τουρκίας. Ἦτο ὅμως ἐπιτροπὴ ἀντιπροσωπεύουσα ἰδιώτας (ἂν καὶ οἱ ἀντιπρόσωποι ἦσαν ἐνίοτε διπλωματικοὶ ἢ τέως διπλωματικοὶ ὑπάλληλοι) καὶ οὐχὶ αὐτὰς τὰς ξένας κυβερνήσεις, ὡς ἐν Ἑλλάδι. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**μουχασεμπετζῆς** (ὁ)· (λέξις ἀραβοτουρκική) ὁ διευθυντὴς τῆς λογιστικῆς ὑπηρεσίας ἑνὸς ὑπουργείου, ἑνὸς τμήματος, μιᾶς ἐπαρχίας.

**Μου(χ)ατζήρ**, *Γενῆ-κιοΐ* *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Ἀν. Θράκης (βλ. λ. *Γενῆ-κιοΐ* Μουχατζήρ).

**Μουχαφεζὲ** (οἱ). Κλάδος τοῦ τάγματος τῶν δερβισῶν. Οἱ Μουχαφεζὲ πιστεύουσιν εἰς Χριστὸν ἐνανθρωπίσαντα, διάκεινται ἐχθρικώτατα πρὸς τοὺς Τούρκους, ἀγαπῶσι δὲ καὶ τιμῶσιν ἐξαιρετικῶς τοὺς Ἕλληνας. Κατοικοῦσι κυρίως ἐν τῷ νομῷ Ἀγκύρας.

**Μουχείρησις** (ἢ *Μοχείρησις* ἢ *Μοχόρησις*) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς Λαζικῆς, κειμένη ἐπὶ τῶν ἀρκτικῶν αὐτῆς ὁρίων πρὸς τὸν Καύκασον. Ν. ΚΑΣ

**Μουχεντὶζ-δὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Μ. Ἀσίας (βλ. λ. *Μεεντὶς-δάγ*).

**Μουχιεντὶν** *Ἀραμπί*. Διάσημος Ἄραψ θεολόγος, γεννηθεὶς ἐν Μουρκίᾳ καὶ ἀκμάσας κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΒ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἐν Συρίᾳ καὶ ἐν Ἰκονίῳ. Ἔγραψε μέγαν ἀριθμὸν πολυτόμων ἔργων.

**μούχλα** (ἡ)· ἰδιωματ., ὁμίχλη, ἄλλως ἀντάρα· ‖ ὁ ἐκ τῆς ὑγρασίας σχηματιζόμενος εὐρώς: «αὐτὸ τὸ σπίτι ἀπὸ τὴν ὑγρασία μυρίζει μούχλα»· ‖ μεταφ. πνευματικὴ καθυστέρησις: «ἡ ἐκπαίδευσις μυρίζει μούχλα».

**μούχλα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία γένους τινὸς μυκήτων (βλ. λ. *βοτρῦτις*).

**μουχλαντάρα** (ἡ)· ἰδιωματ., ὁμίχλη, καταχνιά, ἀντάρα.

**Μούχλη** (ἡ), ἢ ***Μουχλὶ*** (τό), καὶ ***Μουχλιὰ*** (τά). Μεσαιωνικὴ πόλις τῆς Πελοποννήσου ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Τεγεάτιδος (Ἀρκαδίας) καὶ κατὰ τὴν ὁδὸν ἀπὸ Ἄργους εἰς Τρίπολιν, οὐ μακρὰν τοῦ ὄρους Παρθενίου. Διεκρίνετο εἰς *Παλαιὰν Μούχλην* καὶ *Καινούργιαν Μούχλην*. Ἡ τελευταία ἱδρύθη μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Μωάμεθ καθυπόταξιν καὶ ἐρήμωσιν τῆς παλαιᾶς. Κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους τῆς τουρκοκρατίας οἱ κάτοικοι ἀπῆλθον καὶ ἐκ ταύτης εἰς τὰ χωρία Στενὸν καὶ Ἁγιωργίτικα, οὕτω δὲ σήμερον ἡ Μούχλη εἶναι τελείως ἔρημος. Σῴζεται αὐτόθι φρούριον ἄνωθεν πηγῆς, δεσπόζον τῆς ὀρεινῆς διόδου καὶ ἐρείπια μεσαιωνικοῦ τάφου. Ι. Σ. Σ.

**μουχλιάζω**· ἀποκτῶ μούχλαν, εὐρωτιῶ: «τὸ ψωμὶ μούχλιασε, γιατὶ δὲν ἦταν καλὰ ψημένο»· ‖ μεταφ. «μουχλιάσαμε ἀπ' τὸ καθισιό».

**μούχλιασμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μουχλιάζω, μούχλα.

**Μουχλιώτισσα**, *Ἀσανίνα*. Δημῶδες ὄνομα, μὲ τὸ ὁποῖον προσωνυμεῖτο ὑπὸ τῶν συγχρόνων της, λόγῳ τῆς ἐκ *Μούχλης* καταγωγῆς της, ἡ περίφημος διὰ τὸ κάλλος της θυγάτηρ τοῦ *Δ. Ἀσάνη* (βλ. λ.), δουκὸς τῆς Κορίνθου, καὶ σύζυγος τοῦ δουκὸς τῶν Ἀθηνῶν Φράγκου Β' Ἀτζαγιώλη. Μετὰ τὸν φόνον τοῦ συζύγου της ἐνεκλείσθη εἰς τὸν γυναικωνίτην Μωάμεθ τοῦ Πορθητοῦ καὶ κατόπιν κατέστη παλλακὴ τοῦ *Γ. Ἀμιρούτση* (βλ.λ.).

— **Μουχλιώτισσα**, ***Παναγία*** ἡ —· βλ. λ. *Μαγουλιώτισσα* Παναγία.

**Μούχου** (Muhu) *[Γεωγρ.]*. Ἐσθονικὴ ὀνομασία τῆς νήσου *Μόον* (βλ. λ.).

**Μουχουρδὰρ** *[Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν ὡραίων προαστείων τῆς Χαλκηδόνος, προσφιλὲς θέρετρον Ἑλλήνων καὶ Εὐρωπαίων.

**μουχούρι** (τό)· (λ. ἀραβοτουρκ.) σφραγίς.

**μουχουρντάρης** (ὁ) (ἐκ τοῦ *μουχούρι*)· ὁ σφραγιδοφύλαξ.

Digitized by Google

**μουχρός,** —ή, —ό· δημοτ., σκοτεινός, άλαμπής (έκ τοῦ *μορυχὸς* —*μουρχὸς* —*μουχρός*).

**Μουχρουτᾶς,** ἡ *«Περσικὸς δόμος»*. Ἕν τῶν βασιλικῶν παλατίων τοῦ Βυζαντίου, κτισθὲν περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΑ' αἰῶνος παραπλεύρως καὶ πρὸς Δ. τοῦ *Χρυσοτρικλίνου* (βλ. λ.). Ἦτο οἰκοδόμημα πολυτελέστατον, εἰς τὸ ὁποῖον συνήρχοντο διὰ καλλιτεχνικωτάτης μαρμαρίνης κλίμακος. Ἡ αἴθουσα αὐτοῦ ἀπήστραπτεν ἐκ λευκοῦ, κυανοῦ, πρασίνου καὶ ἐρυθροῦ μαρμάρου, ἡ δὲ στέγη του ἀπετελεῖτο ἐξ ἡμισφαιρίων καὶ ἐκοσμεῖτο διὰ θαυμασίων σταλακτιτῶν καὶ διαφόρων χρυσῶν καὶ πολυχρώμων γραφῶν ἐν θαυμασίᾳ ἁρμονίᾳ γραμμῶν καὶ χρωμάτων.

Ἐκλήθη *«μουχρουτᾶς»* ἐκ τῆς ἀραβικῆς λέξεως «μουχρουτᾶ» σημαινούσης κῶνον, διότι ἐκτίσθη ὑπὸ Ἑλλήνων μὲν ἀρχιτεκτόνων, ἀλλὰ κατὰ μίμησιν τῶν περσικῆς ἀρχιτεκτονικῆς κτηρίων τῶν Σελτζουκιδῶν σουλτάνων τοῦ Ἰκονίου. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον ἐκαλεῖτο καὶ *«Περσικὸς δόμος»*. Ν. ΚΛΣ.

**μούχρωμα** (ὁ)· ὁ μεταξὺ ἡμέρας καὶ νυκτὸς χρόνος, τὸ λυκόφως, ἄλλως *σούρουπο* ἢ *σουρούπωμα*.

**μουχρώνω·** δημοτ., ἀπροσώπως «μουχρώνει» ἀρχίζει νὰ γίνεται σκότος, ἄλλως *σουρουπώνει* (ἐκ τοῦ *μουχρός*, βλ. λ.).

**Μουχτὰρ πασᾶς, *Ἀλῆ Μπεϊζαδέ*.** Ἀλβανός, υἱὸς πρωτότοκος τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τοῦ Τεπελενλῆ (1768—1822). Τοῦ πατρὸς πολεμοῦντος κατὰ τῶν ἀνυποτάκτων Σουλιωτῶν, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος καὶ διεκρίθη. Εἶτα ἐστάλη κατὰ τῶν Βουλγάρων, Σέρβων καὶ τῶν ἐπαναστατῶν Μακεδόνων. Διοικήσας εἶτα διαφόρους ἐπαρχίας καὶ τέλος τὴν τοῦ Βερατίου τῷ 1820, παρέδωκε τὸ Βεράτιον ἅμα τῇ ἐπικηρύξει ὑπὸ τῆς Πύλης τοῦ πατρός του, αὐτὸς δὲ συλληφθεὶς ἀπήχθη εἰς Ἄγκυραν ἐξόριστος μετὰ τοῦ χαρεμίου καὶ τῶν θησαυρῶν του, ἐκεῖ δὲ καὶ ἐφονεύθη. Τ. Ε. Ε.

— **Μουχτάρ, *Ἀχμὲτ πασᾶς*·** βλ. λ. *Ἀχμὲτ Μουχτὰρ πασᾶς*.

**μουχτάρης** (ὁ), ἡ ***μουκτάρης***, καὶ ***μικτάρης*** (ἐκ τῆς ἀραβ. λ. *μουχτάρ*, σημαινούσης τὸν ἐκλεκτόν, τὸν αἱρετόν, τὸν προνομιοῦχον, καὶ οὐχί, ὡς ὑπό τινων νομίζεται, κατὰ συγκοπὴν ἐκ τοῦ *μουχουρντάρ*=σφραγιδοφύλαξ). Αἱρετὸς ἐν Τουρκίᾳ δημοτικὸς ἢ κοινοτικὸς ὑπάλληλος τῶν χωρίων ἢ συνοικιῶν, ἀντιστοιχῶν κάπως πρὸς τὸν πρόεδρον κοινότητος. Ἐνίοτε ὑπάρχουσι δύο μουχτάραι, ἐξ ὧν, εἰς τὰς ὑπὸ Χριστιανῶν καὶ Ἑβραίων κατοικουμένας συνοικίας, ὁ εἷς ἦτο Ἕλλην ὀρθόδοξος, Ἀρμένιος ἢ Ἑβραῖος. Εἰς τὰς ἑλληνικὰς κοινότητας ὁ μουχτάρης ἦτο σύνδεσμος μεταξὺ τῆς κοινότητος καὶ τῆς δημοτικῆς ἀρχῆς, ἐξέδιδον ἄλλοτε καὶ πιστοποιητικὰ χρησιμοποιούμενα διὰ τὰ ληξιαρχεῖα. Τὰ τῶν μουχταρῶν διείποντο ὑπὸ τοῦ περὶ διοικήσεως τῶν ἐπαρχιῶν (βιλαγὲτ) νόμου τῆς 8 Νοεμβρίου 1864. Κατ' αὐτὸν ἡ ἐκλογὴ τῶν μουχτάρηδων ἀνακοινοῦται ἑκάστοτε εἰς τὸν ὑποδιοικητὴν (καϊμακάμην), ἁρμόδιον νὰ ἐπικυρώσῃ ταύτην. Εἰς τοὺς μουχτάρηδες εἶναι ἀνατεθειμένη ἡ εἴσπραξις τῶν φόρων καὶ ἄλλα διοικητικὰ καθήκοντα. Ν. Μ.

**μουχτερὸ** (τό)· ἰδιωματικὴ ἐνιαχοῦ ὀνομασία τοῦ χοίρου.

**Μόχας.** Ἀραβικὴ ὀνομασία τῆς *Μόκας* (βλ. λ.).

**Μόχαιβ *ἔρημος*** (Mohave Desert) *[Γεωγρ.]*. Ἁλμυρὰ ἔρημος ἐν τῇ μεσημβρινῇ ἐνδοχώρᾳ τῆς Καλιφορνίας, ἔχουσα ἐμβαδὸν περὶ τὰ 100.000 τ. χλμ. Ἀπὸ Ν. καὶ Δ. περικλείεται ὑπὸ ὀρέων, πρὸς Α. δὲ ἐκτείνεται μέχρι τοῦ Κολοράδο ποταμοῦ καὶ πρὸς Β. μέχρι τῆς μεγάλης λεκάνης τῆς Νεβάδας. Περὶ τὰς πηγὰς Μπέννεττ τῆς κοιλάδος τοῦ Θανάτου, ἡ ἐπιφάνεια τῆς ἐρήμου εὑρίσκεται εἰς βάθος 146 μ. κάτωθεν τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Κατὰ ταῦτα ἡ ἔρημος Μόχαιβ ἀποτελεῖ τὴν χθαμαλωτέραν ἐν Ἀμερικῇ περιοχήν. Διὰ ταύτης διέρχεται ὁμώνυμος ποταμός, κατὰ δὲ τὰς ἐποχὰς τῶν βροχῶν σχηματίζονται διάφορα τενάγη καὶ πληροῦται ἡ ὁμώνυμος λίμνη. Κατὰ τὸ θέρος ἡ θερμοκρασία φθάνει μέχρι 52°, αἱ χειμεριναὶ ὅμως νύκτες εἶναι ψυχρόταται. Ἡ ἔρημος αὕτη εἶναι ἀκαλλιέργητος. Βρύα τινὰ φύονται ἐνιαχοῦ, κατὰ τὰ λοιπὰ δὲ ἡ ἔκτασις εἶναι κεκαλυμμένη ὑπὸ ἐπανθήματος ἅλατος. Ὁ μόνος φυσικὸς πλοῦτος τῆς ἐρήμου, ἣν διασχίζουσι πολλαὶ σιδηροδρομικαὶ γραμμαί, εἶναι τὰ ἐν αὐτῇ ὑπάρχοντα πλούσια κοιτάσματα βόρακος. Γ. Ι. Β.

**μόχαιρ,** ἡ ***μοαίρ*** (τό)· εἶδος ὑφάσματος ἐκ τριχῶν αἰγὸς (τῆς Ἀγκύρας ἰδίως), κατάλληλον διὰ γυναικεῖα ἐνδύματα καὶ ἐπανωφόρια, καθὼς καὶ δι' ἐλαφρὰς ἀνδρικὰς ἐνδυμασίας.

**Μοχαρέμ·** βλ. λ. *Μουχαρέμ*.

**μοχατζίρης** (ὁ)· βλ. λ. *μουατζίρης*.

**Μόχατς** (Mohács) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῇ κομητείᾳ Μπαράννα. Κεῖται 184 χλμ. Ν. τῆς Βουδαπέστης, ἐπὶ τῶν δεξιῶν ὀχθῶν τοῦ Δουνάβεως, ἀπέναντι τῆς ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ ὁμωνύμου νησῖδος Μόχατς. Ἔχει 16.000 κατ., σιδηροδρομικὴν καὶ ποτάμιον συγκοινωνίαν, ἐργοστάσια καννάβεως, ὑφασμάτων, μηχανῶν, ζύθου, ἐμπόριον δημητριακῶν καὶ ξυλανθράκων. Ἡ πόλις εἶναι γνωστὴ ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἐκ τῆς μάχης τῆς 29 Αὐγούστου 1526, καθ' ἣν ἡττήθη ὁ Λουδοβῖκος Β' τῆς Οὐγγαρίας ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Σουλεϋμάν, καὶ ἐκ τῆς μάχης τῆς 12 Αὐγούστου 1687, καθ' ἣν ἡττήθησαν οἱ Τοῦρκοι ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, ὧν ἡγεῖτο ὁ Κάρολος τῆς Λωρραίνης. Γ. Ι. Β.

**Μοχέλλι** (λατιν. γραφὴ Mohelli, ἢ Mohilla) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος ἐν τῷ Ἰνδικῷ ὠκεανῷ, ἡ μικροτέρα καὶ νοτιωτέρα ἐκ τῶν *Κομορῶν* νήσων (ΒΔ. τῆς Μαδαγασκάρης). Ἔχει ἔκτασιν 231 τετρ. χλμ. καὶ 8.000 κατοίκους. Γ. Ι. Β.

**μοχθηρία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μοχθηροῦ· || καθόλου, φαυλότης, κακία.

**μοχθηρός,** —ά, —όν· ὁ ἐπὶ τῇ εὐτυχίᾳ τοῦ ἄλλου αἰσθανόμενος λύπην καὶ μῖσος· || καθόλου, κακός, φαῦλος.

**μόχθος** (ὁ)· κόπος, ἀγωνία, ταλαιπωρία, βάσανα: «μὲ πολλοὺς κόπους κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ».

**Μοχθούσιοι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λαὸς τῆς Β. Ἀφρικῆς ἐν Νουμιδίᾳ, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου (Γεωγρ. IV, 3, 6) καὶ κατοικῶν πρὸς Ν. τῶν Μουτουργούρων. Α. Θ. Σ.

**μοχθῶ** (—έω)· καταβάλλω μόχθους, κοπιάζω, ταλαιπωροῦμαι, ἀγωνιῶ, βασανίζομαι: «ἐμόχθησα διὰ νὰ ἐπιτύχω τὸν σκοπόν μου», «μοχθεῖ διὰ νὰ κερδίσῃ τὸν ἄρτον του».

**Μοχικανοί** (οἱ) (Mohicans). Φυλὴ ἐρυθροδέρμων τῆς Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μοϊκανοί*).

**Μοχιλιέφ,** ἡ ***Μαγκιλιέβυ*** (λατιν. γραφὴ Mohilew-Magilewy) *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιὸν κυβερνεῖον ἐν τῇ δυτικῇ Ρωσίᾳ, ἔχον ἔκτασιν 48.047 τ. χλμ. καὶ 2.343.000 κατ. Ἀπὸ τοῦ 1926 ἀνήκει σχεδὸν ὁλόκληρον εἰς τὸ σοβιετικὸν κράτος τῆς Λευκῆς Ρωσίας.

—2) Πόλις τοῦ σοβιετικοῦ κράτους τῆς Λευκῆς Ρωσίας. Εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ λόφων, ἑκατέρωθεν τῶν ὀχθῶν τοῦ Δνείπερ. Ἔχει 54.000 κατ., ἐνδιαφέροντα μητροπολιτικὸν ναόν, δημαρχεῖον τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, μουσεῖον. Εἶναι καθολικὴ ἀρχιεπισκοπικὴ ἕδρα (τοῦ ἀρχιεπισκόπου διαμένοντος ἐν Πετρουπόλει). Εὐδοκιμεῖ ἐν αὐτῇ ἡ βυρσοδεψία, ἡ ζυθοποιία καὶ ἡ καπνοβιομηχανία, εἰς δὲ τὴν περιοχήν της ἡ καλλιέργεια ὀπωρῶν. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπῆρξεν ἕδρα τοῦ Γενικοῦ ρωσικοῦ στρατηγείου.

—3) Πόλις τῆς Οὐκρανίας (συνήθως λέγεται *Μόγκιλιεφ Ποντόλσκη* ἢ *Μ. ἐπὶ τοῦ Δνείπερ*· οὐκρανιστὶ *Μογκυλίφ*), κειμένη κατὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Ντέρλα καὶ Νεμίγια εἰς τὸν ποταμὸν Δνείπερον. Κάτοικοι 33.000. Ἔχει ἀλευρομύλους, χυτήρια σιδήρου, ζυθοποιεῖα καὶ σημαντικὸν ἐμπόριον δημητριακῶν. Γ. Ι. Β.

**μόχλευσις,** —εως (ἡ)· ἡ διὰ μοχλοῦ ἀνακίνησις, μετατόπισις, ἀναμόχλευσις.

**μοχλεύω·** διὰ μοχλοῦ ἀνακινῶ, μετατοπίζω, ἀναμοχλεύω.

**μοχλοβραχίων** (ὁ)· ἡ ἀπόστασις ἑκάστης τῶν ἐπί τινος μοχλοῦ ἐνεργουσῶν δυνάμεων ἀπὸ τοῦ ὑπομοχλίου (βλ. λ. *μοχλὸς* [Μηχαν.]).

**μοχλοπέδη** (ἡ)· μοχλὸς χρησιμεύων ὡς πέδη.

**Μόχλος** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος *Τουρλωτῆς* τῆς ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασηθίου. Κάτ. 55.

— 2) Μικρὰ νησὶς βραχώδης παρὰ τὸ ἀνωτέρω χωρίον, ἡ ὁποία ἀπετέλει ποτὲ γλῶσσαν ξηρᾶς μὲ δύο ὁρμίσκους ἑκατέρωθεν.

— *[Ἀρχαιολ.]* Ἐπὶ τῆς νησῖδος Μόχλος ἐνήργησεν ἀνασκαφὰς ὁ Σῆγερ, τῷ 1908, ἀνεῦρε δ' αὐτόθι λείψανα συνοικισμοῦ, ἰδίως εἰς τὴν νοτίαν κλιτύν, ἀνήκοντα εἰς τοὺς πρωτομινωϊκοὺς χρόνους καί τινα τῆς ὑστερομινωϊκῆς ἐποχῆς καταστραφέντα διὰ πυρός. Ἡ νεκρόπολις τοῦ συνοικισμοῦ τοῦτον ἀνευρέθη ἐπὶ τῆς ἀπότομον βραχώδη κλιτὺν τῆς νήσου καὶ περιλαμβάνει τάφους κατὰ τὸ πλεῖστον τετραγώνου σχήματος. Ἐπίσης ἀνευρέθησαν ταφαὶ ἐντὸς κοιλωμάτων τῶν βράχων, καθὼς καί τινες λαξευτοὶ τάφοι εἰς τὴν ἀπέναντι ἀκτήν. Περίφημα εἶναι τὰ ἀνευρεθέντα λίθινα ἀγγεῖα ἐκ πολυχρώμων λίθων καὶ κομψοτάτων σχημάτων, καθὼς καὶ τὰ ἔργα χρυσοχοϊκῆς, ὧν τινα λεπτοτάτης κατασκευῆς. Πιθανῶς ὁ Μόχλος ἀπετέλεσε σταθμὸν ἐμπορικὸν τῶν πρὸς νότον καὶ ἐκ νότου πλεόντων.

[*Seager*: Explorations of the island of Mochlos (1912)]. Ν. Ε. Π.

**μοχλὸς** (ὁ)· ξύλον ἐπίμηκες ἄκαμπτον ἢ ῥάβδος σιδηρᾶ πρὸς ἀνύψωσιν ἢ μετατόπισιν βάρους· || ἀρχ., τὸ δι' οὗ ἐκλείετο ἡ θύρα, ῥάβδος διήκουσα ἀπὸ τῆς μιᾶς παραστάδος μέχρι τῆς ἄλλης, μάνδαλος.

— *[Μηχαν.]* Ὀνομάζεται *μοχλὸς* πᾶν ἐν γένει στερεὸν σῶμα δυνάμενον νὰ κινηθῇ περὶ σταθερόν τι σημεῖον. Νοεῖται ὅμως ἰδίᾳ ὁ μοχλὸς ὑπὸ μορφὴν εὐθείας ἢ κεκαμμένης ῥάβδου, ἐρειδομένης ἐλευθέρως ἐπί τινος ὑποστηρίγματος ἢ περιστρεπτῆς περὶ σταθερὸν ἄξονα, καὶ ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐνεργοῦσι δυνάμεις κείμεναι ἐπὶ ἐνιαίου ἐπιπέδου, διερχομένου διὰ τοῦ σημείου τῆς στηρίξεως. Τὸ τελευταῖον τοῦτο καλεῖται *ὑπομόχλιον*. Ὁ μοχλὸς εἶναι ἡ ἁπλουστέρα τῶν ἁπλῶν μηχανῶν, ἀποτελεῖ δὲ κύριον στοιχεῖον τῶν συνθέτων τοιούτων, τῶν ὁποίων πάντα σχεδὸν τὰ ὄργανα δὲν εἶναι ἄλλο τι παρὰ συνδυασμοὶ μοχλῶν.

Ἡ θεωρία τοῦ μοχλοῦ, μελετηθεῖσα τὸ πρῶτον καὶ πλήρως ὑπὸ τοῦ Ἀρχιμήδους, βασίζεται ἐπὶ τῶν καλουμένων ἐν τῇ μηχανικῇ ῥοπῶν. Καλεῖται δὲ ῥοπὴ μιᾶς δυνάμεως ἐν σχέσει πρὸς σταθερόν τι σημεῖον, τὸ γινόμενον τῆς ἐντάσεως τῆς δυνάμεως ταύτης ἐπὶ τὴν ἀπὸ τοῦ σημείου ἀπόστασιν αὐτῆς. Ὡς εἶναι προφανές, διὰ νὰ εὑρίσκεται μοχλός τις ἐν ἰσορροπίᾳ, πρέπει καὶ ἀρκεῖ τὸ ἀλγεβρικὸν ἄθροισμα τῶν ῥοπῶν τῶν ἐπ' αὐτοῦ ἐνεργουσῶν δυνάμεων νὰ ἰσοῦται πρὸς τὸ μηδέν. Ἂν δηλαδὴ θεωρήσωμεν ὅτι ἐπὶ τοῦ μοχλοῦ ἐνεργοῦσι δύο δυνάμεις μόνον, ἀνὰ μίαν ἑκατέρωθεν τοῦ ἄξονος (ἐξ ὧν, πρὸς διάκρισιν, τὴν μίαν καλοῦμεν *«δύναμιν»* τὴν δὲ ἄλλην *«ἀντίστασιν»*) διὰ νὰ ὑπάρξῃ ἰσορροπία, δέον αἱ ῥοπαὶ τῶν δυνάμεων τούτων νὰ εἶναι ἴσαι μεταξύ των καὶ νὰ τείνωσι νὰ στρέψωσι τὸ σύστημα πρὸς ἀντιθέτους κατευθύνσεις. Παριστῶντες τὰς δυνάμεις ταύτας διʼ Α καὶ Δ, τὰς δὲ ἀποστάσεις αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὑπομοχλίου (τοὺς *«μοχλοβραχίονας»*) δι' α καὶ δ, ἔχομεν ἐν περιπτώσει ἰσορροπίας

$$Αα = Δδ \text{ ἤτοι } \frac{Α}{Δ} = \frac{δ}{α}$$

Ἐν ἄλλοις λόγοις ἡ σχέσις μεταξὺ δυνάμεως καὶ ἀντιστάσεως εἶναι ἀντιστρόφως ἀνάλογος τῆς σχέσεως τῶν μοχλοβραχιόνων των.

Οἱ μοχλοὶ διακρίνονται εἰς τρία εἴδη, ὡς ἀκολούθως:

***Μοχλὸς τοῦ α' εἴδους.*** Ἐν αὐτῷ (σχ. 1) ἡ δύναμις (Δ) ἐπενεργεῖ κατὰ τὸ ἓν ἄκρον τοῦ μοχλοῦ

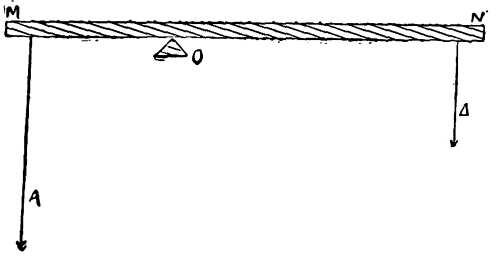


Σχ. 1.

καὶ ἡ ἀντίστασις (Α) κατὰ τὸ ἕτερον, κατὰ τὴν αὐτὴν ἀμφότεραι κατεύθυνσιν, ἐνδιάμεσος δὲ μεταξὺ αὐτῶν εἶναι ἡ θέσις τοῦ ὑπομοχλίου. Ἔχοντες ἐν προκειμένῳ ὑπ' ὄψιν τὴν προτεθεῖσαν ἐξίσωσιν $\frac{Α}{Δ} = \frac{δ}{α}$, συνάγομεν τὸ ἀκόλουθον συμπέρασμα: Διὰ σταθερᾶς τινος δυνάμεως δυνάμεθα, θεωρητικῶς, νὰ ὑπερνικήσωμεν διπλασίαν, τριπλασίαν ἢ ὁσονδήποτε πολλαπλασίαν ἀντίστασιν, ἀρκεῖ ὁ μοχλο-

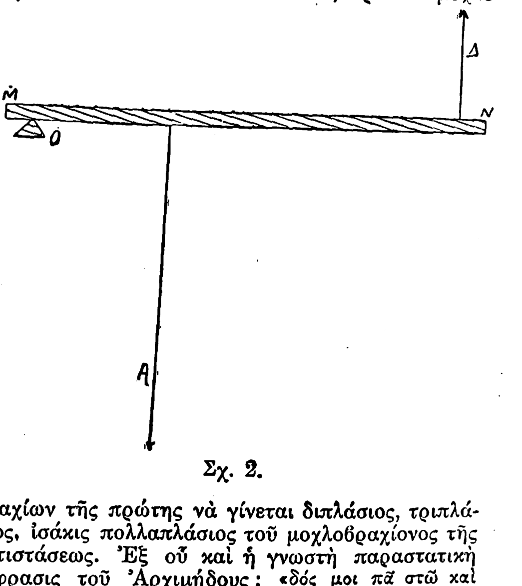


Σχ. 2.

βραχίων τῆς πρώτης νὰ γίνεται διπλάσιος, τριπλάσιος, ἰσάκις πολλαπλάσιος τοῦ μοχλοβραχίονος τῆς ἀντιστάσεως. Ἐξ οὗ καὶ ἡ γνωστὴ παραστατικὴ ἔκφρασις τοῦ Ἀρχιμήδους: «*δός μοι πᾶ στῶ καὶ τὰν γᾶν κινήσω*».

Παραδείγματα μοχλῶν τοῦ α' εἴδους εἶναι οἱ ζυ-

γοί, οἱ στειλεοὶ δι' ὧν ὑπεγείρονται βαρέα ἀντικείμενα, ἡ ψαλίς, ἡ ἡλάγρα (τανάλια), αἱ κοπτικαὶ λαβίδες κλπ.

***Μοχλὸς β' εἴδους.*** Εἰς αὐτὸν τὸ ὑπομόχλιον εὑρίσκεται εἰς τὸ ἓν ἄκρον τοῦ μοχλοῦ, ἡ δύναμις εἰς τὸ ἕτερον ἄκρον, ἡ δὲ ἀντίστασις ἐνδιαμέσως καὶ κατ' ἀντίθετον τῆς δυνάμεως κατεύθυνσιν. Καὶ ἐνταῦθα τ' ἀποτελέσματα εἶναι ὅμοια ὡς καὶ εἰς τὸ α' εἶδος, δυνάμεθα δηλαδὴ διὰ δυνάμεώς τινος νὰ ὑπερνικήσωμεν ἀντίστασιν μεγαλυτέραν.

Παραδείγματα: Τὸ χειραμάξιον, ὁ καρυοθραύστης κλπ.· ἐπίσης ἡ κώπη (ἐν τῇ ὁποίᾳ τὸ ὑπομόχλιον κεῖται εἰς τὸ σημεῖον τῆς ἐμβυθίσεως τῆς κώπης εἰς τὴν θάλασσαν, ἡ δὲ ἐκ τῆς ἀδρανείας τῆς λέμβου ἀντίστασις ἔχει σημεῖον ἐπενεργείας αὐτῆς τὸν σκαλμόν).

***Μοχλὸς γ' εἴδους.*** Εἰς αὐτόν, τοῦ ὑπομοχλίου εὑρισκομένου καὶ πάλιν κατὰ τὸ ἓν ἄκρον τοῦ μοχλοῦ, ἡ ἀντίστασις ἐπενεργεῖ ἐπὶ τοῦ ἄλλου ἄκρου, ἡ δὲ δύναμις ἐνδιαμέσως καὶ κατ' ἀντίθετον πρὸς

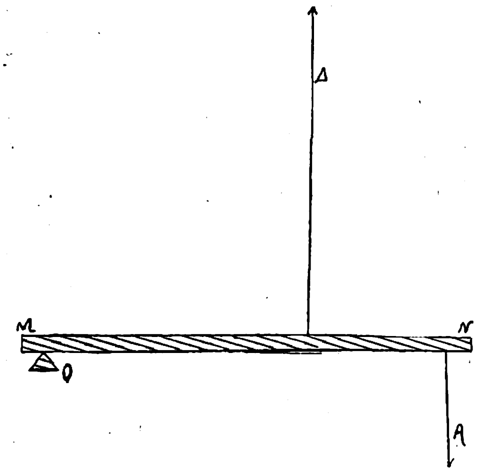


Σχ. 3.

τὴν ἀντίστασιν κατεύθυνσιν. Ἡ συνθήκη τῆς ἰσορροπίας ἀντιστρέφεται ἐνταῦθα ὅσον ἀφορᾷ τὴν σχέσιν τῆς δυνάμεως πρὸς τὴν ἀντίστασιν, χρειάζεται δηλαδὴ μεγαλυτέρα δύναμις πρὸς ἐξουδετέρωσιν μικροτέρας ἀντιστάσεως.

Εἰς τὸν μοχλὸν τοῦ γ' εἴδους ἀνάγονται κατὰ τὸ πλεῖστον αἱ κινήσεις τῶν ὀστῶν τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος· ὅπως ἐπὶ παραδείγματι ἡ λειτουργία τοῦ ἀντιβραχίου, ὅπου ὑπομόχλιον εἶναι ἡ ἄρθρωσις τοῦ ἀγκῶνος, δύναμις ὁ δισχιδὴς μῦς τοῦ πήχεως καὶ ἀντίστασις τὸ διὰ τῆς χειρὸς κρατούμενον ἀντικείμενον. Γ. Ζ.

— *['Οδοντ.]* Καλεῖται *μοχλὸς* (γαλλ. levier, ἀγγλ. elevator) ἐργαλεῖον τὰ μάλα χρήσιμον νῦν ἐν τῇ ὀδοντιατρικῇ, εἰς ἀντικατάστασιν τῶν ὀδονταγρῶν, δι' οὗ ἐξαιροῦνται ὀδόντες ἢ καὶ ῥίζαι αὐτῶν. Ἐκ τῶν πολλῶν ἐν χρήσει ὀδοντικῶν μοχλῶν οἱ σπουδαιότεροι εἶναι ὁ τοῦ Lecluse, εἰδικῶς χρησιμοποιούμενος πρὸς ἐξαίρεσιν ὑπογεγομφωμένων ἢ ἐγκλείστων σωφρονιστήρων ὀδόντων, καὶ ὁ τοῦ Cryer πρὸς ἐξαίρεσιν ῥιζῶν τῶν ὀδόντων. Ν. Γ. Π.

**μοχλοφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ φέρων μοχλόν: «μοχλοφόρος δακτύλιος».

**Μοχνὸ** *[Γεωγρ.].* Ἓν τῶν 140 χωρίων, ἐξ ὧν ἀπαρτίζεται ἡ ὑποδιοίκησις Σουρμαίνων τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος. Κάτοικοι 800, πάντες Τοῦρκοι. Τὸ χωρίον κεῖται παρὰ τὸν ποταμὸν Καρὰ-σοῦ.

**Μοχόγλους** ***'Αρίφ.*** Γενίτσαρος ἐκ Μοχοῦ, ἐπαρχίας Πεδιάδος τῆς Κρήτης, ἐκ τῶν ἀγριωτέρων. Οὗτος, ἀποπειραθεὶς νὰ ἀτιμάσῃ τὴν ἀδελφὴν τοῦ ἁρματολοῦ Βέργα Γεωργίου καὶ φονεύσας αὐτὴν διὰ τὴν ἀποτυχίαν, ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ της. Ε. Γ.

**Μοχὸς** *[Γεωγρ.].* Χωρίον της ἐπαρχίας Πεδιάδος τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου (Κρήτης). Ἀποτελεῖ ἰδίαν κοινότητα καὶ ἔχει 1.730 κατοίκους.

— *[Ἱστορ.]* Τὸν Νοέμβριον 1822 δισχίλιοι Ἕλληνες ὑπὸ τοὺς Ἀναγν. Κουσκουρέ, Ν. Ζερβόν, Ἐμ. Λουτσάκην, Κ. Στακάκην, Ρ. Χούρδον, Βουζομάρκον κλ., κατέχοντες τὰς περὶ τὸ χωρίον Μοχὸν κλ. θέσεις, ἀπέκρουσαν τὸν κατὰ τῆς ἐπαρχίας Λασηθίου ἐκστρατεύσαντα τουρκικὸν στρατὸν ὑπὸ τὸν Χασᾶν πασᾶν καὶ μετὰ πολύωρον μάχην κατεδίωξαν αὐτόν, φονεύσαντες καὶ αἰχμαλωτίσαντες πλείστους πολεμίους καὶ συλήσαντες τὰς σημαίας αὐτῶν.

Τὴν 13 Δεκεμβρίου 1827 τρισχίλιοι Ἕλληνες, κατέχοντες τὰς περὶ τὸν Μοχὸν θέσεις, διεσκορπίσθησαν εὐχερῶς ὑπὸ τοῦ ἐκ Μαλλιῶν προελάσαντος τουρκικοῦ στρατοῦ, ἕνεκα τῶν ἐρίδων τῶν ἀρχηγῶν των, καὶ οὕτως ὁ ἐχθρὸς εἰσέβαλεν εἰς Μεραμπέλλον.

Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1869 ὁ τουρκικὸς στρατός, καταλαβὼν τὸν Μοχόν, ἐπεχείρησε τὴν 26 Νοεμβρίου 1868 νὰ καταλάβῃ καὶ τὸ Κράσι, ἀλλ' ἀποκρουσθεὶς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ὑπεχώρησεν ἐν ἀταξίᾳ εἰς Μοχόν. Τὴν ἑπομένην οἱ ἐν Μοχῷ Τοῦρκοι, σπεύσαντες εἰς ἐνίσχυσιν τῶν ἐν τῷ πλησίον χωρίῳ Αὐδοῦ προσβληθέντων ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, ἀπεκρούσθησαν πάλιν καὶ φεύγοντες ἐνεκλείσθησαν εἰς Μοχόν. Ν. ΚΛΣ

**Μόχωκ** (Mohawk) *[Γεωγρ.]* —1) Παραπόταμος τοῦ Οὔδσωνος ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ πολιτείᾳ Νέας Ὑόρκης. Πηγάζει ἐκ τῆς λίμνης Ὀντάριο, σχηματίζει πολλὰς ταχείας ῥοὰς καὶ πολλοὺς καταρράκτας καὶ χύνεται εἰς τὸν Οὔδσωνα παρὰ τὸ Κόχοες, ἄνωθεν τοῦ Τρόϋ. Ἔχει μῆκος 257 χλμ. —2) Ἔθνος Ἐρυθροδέρμων τῆς Βορείου Ἀμερικῆς, ἀποτελοῦν κλάδον τῆς ὁμοεθνίας τῶν Ἰροκέζων. Ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν ἀνέρχεται ἤδη εἰς 1500 ἄτομα, κατῴκουν δ' ἄλλοτε Ν. τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου (St-Laurence Strow) καὶ τῆς λίμνης τοῦ Ὀντάριο. Ἐσχάτως μετηνάστευσαν εἰς Καναδᾶν. Τὸ ὄνομα αὐτῶν σημαίνει «ἀνθρωποφάγοι». Οἱ ἴδιοι ὅμως αὐτοκαλοῦνται «Κανινγκεχάγκα» δηλαδὴ «ἄνθρωποι τῶν χαλίκων». Γ. Ι. Β.

**μοψέα** (ἡ) (Mopsea) *[Ζῳολ.].* Γένος ἀνθοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀλκυοναρίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *γοργονιδῶν*, περιλαμβάνον θαλάσσια ζῷα σχηματίζοντα ἀποικίας. Τὰ ἐλάχιστα αὐτῶν εἴδη ἀπαντῶσιν εἰς τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν. Δ. Ν. Π.

**Μοψία,** καὶ ***Μοψοπία*** *['Αρχ. Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν Μ. Ἀσίᾳ Παμφυλίας, ἀπὸ τοῦ Μόψου, υἱοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Μαντοῦς, θυγατρὸς τοῦ Τειρεσίου, ὅστις ἐλθὼν ἐνταῦθα μετὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον ἐγένετο ἱδρυτὴς τῆς ἐν Κιλικίᾳ Μαλλοῦ καὶ τοῦ ἐκεῖ μαντείου (*Στράβ.* XIV, 668). Α. Θ. Σ.

**Μόψιον** *['Αρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Θεσσαλίας ἐν Πελασγιώτιδι, ἐπί τινος λόφου ἐν τῇ μεταξὺ Λαρίσης καὶ Τεμπῶν πεδιάδι, ΒΑ. τῆς λίμνης Νεσσωνίδος (Μαυρολίμνη), ὀνομασθεῖσα οὕτως «οὐχ ἀπὸ Μόψου τῆς Μαντοῦς τῆς Τειρεσίου, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Λαπίθου τοῦ συμπλεύσαντος τοῖς Ἀργοναύταις» (*Στράβ.* IX, 443).

Σῴζονται νομίσματα αὐτῆς τῶν ἐτῶν 400—344 π. Χ. φέροντα ἐπιγραφὴν ΜΟΨΕΑΝ καὶ τὸν Λαπίθην Μόψον μαχόμενον πρὸς Κένταυρον (*Head - Σβορῶνου,* Ἱστορία τῶν Νομισμ. Α, σελ. 381). Α. Θ. Σ.

**Μοψοπία** *['Αρχ. Γεωγρ.].* —1) Ἀρχαῖον ὄνομα τῆς Ἀττικῆς κατὰ Στράβωνα (IX, 397, 443) ἀπὸ τοῦ μυθικοῦ αὐτῆς βασιλέως Μοψόπου.

— 2) Ἀρχαῖον ὄνομα τῆς Παμφυλίας (βλ. *Μοψία*). Α. Θ. Σ.

— **Μοψοπία.** Μικρὸν ἔπος τοῦ ἐκ Χαλκίδος ποιητοῦ *Εὐφορίωνος* (βλ. λ.).

**Μόψοπος** *[Μυθολ.].* Μυθικὸς βασιλεὺς τῆς Ἀττικῆς, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἡ Ἀττικὴ ἐκαλεῖτο *Μοψοπία* (*Στράβ.* IX, 443). Α. Θ. Σ.

**Μόψος** *[Μυθολ.].* —1) Περίφημος μάντις, υἱὸς τοῦ Ἀπόλλωνος ἢ τοῦ Κρητὸς Ῥακίου καὶ τῆς θυγατρὸς τοῦ Τειρεσίου Μαντοῦς, ζήσας κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Τρωϊκοῦ πολέμου. Ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Κολοφῶνος Ἀμφιμάχου περὶ τῆς ἐκβάσεως πολέμου, τὸν ὁποῖον οὗτος ἔμελλε νὰ ἐπιχειρήσῃ, προεῖπεν εἰς αὐτὸν καταστροφήν, ἐνῷ ὁ Κάλχας προεῖπεν αἰσίαν ἔκβασιν. Ὁ Ἀμφίμαχος ἐνικήθη, ὁ δὲ Κάλχας ἀπέθανεν ἀπὸ θλῖψιν διὰ τὴν διάψευσιν τῆς προφητείας του. Κατ' ἄλλην παράδοσιν, οἱ δύο μάντεις, ὑποβλέποντες ἀλλήλους, διηγωνίσθησαν ὡς ἑξῆς εἰς τὴν μαντικὴν δύναμιν. Ἐρωτηθεὶς ὁ Μόψος ὑπὸ τοῦ Κάλχαντος πόσα σῦκα ἔφερε γειτονικὴ συκῆ, ὥρισεν ἀριθμόν, ὅστις γενομένης καταμετρήσεως ἀπεδείχθη ἀπολύτως ἀκριβής. Ἐρωτηθεὶς εἶτα καὶ ὁ Κάλχας ὑπὸ τοῦ Μόψου πόσα χοιρίδια ἔφερεν ἐν τῇ κοιλίᾳ της ἔγγυός τις ὗς διερχομένη, ὡμολόγησεν ὅτι ἀγνοεῖ. Τότε ὁ Μόψος προεῖπε καὶ περὶ αὐτῆς ὅτι θὰ γεννήσῃ τὴν ἑπομένην δέκα χοιρίδια, τῶν ὁποίων τὸ ἓν θὰ εἶναι ἄρρεν καὶ μέλαν. Ἡ προφητεία του ἐπηλήθευσεν, ὁ δὲ Κάλχας συντριβεὶς ἐκ θλίψεως διὰ τὴν ἀποτυχίαν του ἀπέθανε. Ὁ Μόψος ἐλατρεύθη μετὰ θάνατον ὡς θεὸς ἐν Κιλικίᾳ καὶ ἐν Κολοφῶνι τῆς Καρίας, τῆς ὁποίας κατὰ τὸν Παυσανίαν ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτής. Κατὰ τὴν παράδοσιν ἔκτισε καὶ τὴν ἐν Κιλικίᾳ καὶ ἐκ τοῦ ὀνόματός του ἀποκληθεῖσαν *Μόψου Ἑστίαν*, καθὼς καὶ τὴν παρὰ τὴν Ταρσὸν *Μόψου Κρήνην*. —2) Ἡγεμὼν τῆς Θράκης, ὁ ὁποῖος βοηθούμενος ὑπὸ τοῦ Σκύθου Σιπύλου ἐνίκησε τὰς Ἀμαζόνας. —3) Ἡγεμὼν τῆς Κολοφῶνος, σύμμαχος τοῦ Πριάμου. —4) Υἱὸς τοῦ Λυδοῦ ἢ ἁπλῶς Λυδός, ὅστις συνέλαβε καὶ κατεπόντισεν εἰς τὴν περὶ τὴν Ἀσκάλωνα λίμνην τὴν βασίλισσαν Ἀργατάτιν μετὰ τοῦ υἱοῦ της Ἰχθύος, διότι αὕτη εἶχεν ἀπαγορεύσει εἰς τοὺς ὑπηκόους της νὰ τρώγουν ἰχθῦς, τοὺς ὁποίους μόνη αὐτὴ ἔτρωγε. —5) Υἱὸς τοῦ Ἄμπυκος καὶ τῆς νύμφης Χλωρίδος. Συμμετέσχεν εἰς τὴν θήραν τοῦ Καλυδωνίου κάπρου, εἰς τὸν ἀγῶνα τῶν Λαπιθῶν κατὰ τῶν Κενταύρων καὶ ἠκολούθησεν ὡς μάντις τὴν Ἀργοναυτικὴν ἐκστρατείαν. Ἀπέθανε δηχθεὶς ὑπὸ ὄφεως, ὅστις ἐξεπήδησεν ἐκ τοῦ αἵματος τῆς Μεδούσης, καὶ ἐτάφη ἐν Λιβύῃ, ὅπου ἐλατρεύθη ὡς ἡμίθεος, ἱδρυθέντος ἐκεῖ ὀνομαστοῦ πρὸς τιμήν του μαντείου. Ν. Α.—Η. Π. Γ.

**Μόψου** ***Κρήνη*** *['Αρχ. Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν Κιλικίᾳ, οὐ μακρὰν τῶν μεθορίων τῆς Καταονίας, κειμένη ἐπὶ τῶν μεσημβρινῶν ὑπωρειῶν τοῦ Ταύρου, 12 χλμ. ΒΔ. τῆς Ταρσοῦ. Ἐνταῦθα ἀσθενήσας ἀπέθανεν ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου Κωνστάντιος τῇ 3 Νοεμβρίου 361 μ. Χ. Σήμερον τὴν θέσιν αὐτῆς κατέχει τὸ μικρὸν τουρκικὸν χωρίον *Καρὰ-Ἰσαλοῦ*, ἐν τῷ νομῷ Ἀδάνων, ἀριθμοῦν 500 κατοίκους. Α. Θ. Σ.

**Μοψουεστία,** ἢ ***Μόψου Ἑστία*** *['Αρχ. Γεωγραφ.].* Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν Κιλικίᾳ, ἐπὶ τοῦ εὐφορωτάτου Ἀληΐου πεδίου (νῦν Τσουρούκ-Ὀβά), κειμένη ἐπὶ τῆς δεξιᾶς κατ' ἀρχὰς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Πυράμου (Τζιχάν), εἶτα ἐπ' ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν αὐτοῦ, ἐπὶ τῆς ἀπὸ Ταρσοῦ εἰς Ἰσσὸν ὁδοῦ, περὶ τὰ 20 χλμ. μακρὰν τῆς παραλίας. Κατὰ τὴν παράδοσιν ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ μάντεως *Μόψου*.

Ἀκολουθήσασα τὴν τύχην τῆς *Κιλικίας* (βλ. λ.), ἡ πόλις αὕτη περιῆλθεν εἰς τοὺς Πέρσας, εἶτα εἰς τοὺς Ἕλληνας (Μέγαν Ἀλέξανδρον καὶ διαδόχους αὐτοῦ, ὅτε μετωνομάσθη *Σελεύκεια*), εἰς τοὺς Ῥωμαίους (ὡς πόλις ἐλευθέρα καὶ σύμμαχος) καὶ τέλος εἰς τὴν Βυζαντινὴν αὐτοκρατορίαν (ἀπὸ τοῦ Δ' αἰῶνος μ. Χ.), ὅτε ἀνῆκεν εἰς τὴν ἐπαρχίαν Κιλικίας Δευτέρας καὶ εἶτα εἰς τὸ θέμα Σελευκείας.

Κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα ἐγένετο ἐπισκοπὴ καὶ ὑπῆρξεν ἕδρα (392—428) τοῦ ἐπισκόπου Θεοδώρου, τοῦ ἀποδοκιμασθέντος ὑπὸ οἰκουμενικῶν συνόδων διὰ τὰς αἱρετικὰς δοξασίας του (βλ. *Θεόδωρος* ὁ Μοψουεστίας). Κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Ἱεροκλέους (Συνέκδ. 705, 3), ὡς μία τῶν ἐννέα πόλεων τῆς ἐπαρχίας, εἰς δὲ τὰ ἐκκλησιαστικὰ χρονικὰ ἕδρα ἐπισκόπου ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Ἀναζάρβου. Ἡ Μοψουεστία, ἀναπτυχθεῖσα σὺν τῷ χρόνῳ, ἐξετάθη, ὡς ἐλέχθη, ἐπὶ ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν τοῦ Πυράμου, τὰ δὲ δύο τμήματά της συνεκοινώνουν διὰ μεγαλοπρεποῦς γεφύρας, κτισθείσης ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Κωνσταντίνου Β' (351—361 μ. Χ.), ἥτις ἐρειπωθεῖσα κατὰ τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἀνεκαινίσθη ὑπὸ Ἰουστινιανοῦ Α' (527—565). Τὸ φρούριον τοῦτο ἦτο ἐκ τῶν ὀχυρωτέρων τῆς αὐτοκρατορίας. Κατὰ τὸν Η' αἰῶνα καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Ἀράβων διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν ἕδρα Ἀράβων ἡγεμονίσκων. Τῷ 964 ὁ αὐτοκράτωρ Νικηφόρος Α' ὁ Φωκᾶς, ἐκστρατεύσας κατὰ τῶν Ἀράβων, ἐπολιόρκησε τὴν Μοψουεστίαν καὶ κατόπιν μακρῶν ἀγώνων ἐξηνάγκασεν αὐτοὺς νὰ ἐκκενώσωσι τὸ ἓν τῆς πόλεως τμῆμα, ἀφοῦ προηγουμένως ἐνέπρησαν αὐτό, καὶ νὰ περιορισθῶσιν εἰς τὸ ἐπὶ τῆς ἀντίπεραν ὄχθης. Ὁ Νικηφόρος, συνεχίζων τὰς ἐπιθέσεις του, κατώρθωσε νὰ καταρρίψῃ μέρος τοῦ τείχους καὶ νὰ εἰσέλθῃ δι' ἐφόδου ἐντὸς τῆς πόλεως. Σύμπας ὁ ἀραβικὸς τῆς πόλεως πληθυσμὸς ᾐχμαλωτίσθη καὶ ἄφθονος λεία περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν Βυζαντινῶν. Μεταξὺ τῶν λαφύρων συγκατελέγετο καὶ ἡ χαλκῆ καὶ ἐξαιρέτου τέχνης πύλη τῶν τειχῶν, ἣν ὁ Νικηφόρος μετέφερεν εἰς Κωνσταντινούπολιν, καὶ ἀφοῦ ἐπεχρύσωσεν αὐτήν, τὴν ἐτοποθέτησεν εἰς τὴν δυτικὴν πύλην τοῦ Βυζαντίου, τὴν γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Χρυσῆ πόρτα». Ἐπὶ Ἀλεξίου Α' Κομνηνοῦ (1081—1118) κατελήφθη ὑπὸ τῶν σταυροφόρων τῆς Α' σταυροφορίας, ἀλλὰ βραδύτερον ὁ ἀρχηγὸς αὐτῶν Βοημοῦνδος, νικηθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀλεξίου Α', ἀνεγνώρισε διὰ τῆς συνθήκης τοῦ 1108 τὴν ἐπὶ τῆς Μοψουεστίας βυζαντινὴν ἐπικυριαρχίαν. Περιελθοῦσα κατόπιν ἡ πόλις ὑπὸ τὴν ἄμεσον κατοχὴν τῶν Βυζαντινῶν, κατελήφθη ὑπὸ τοῦ ἐν Κιλικίᾳ Ἀρμενίου ἄρχοντος Λεβούνη, ἀλλ' ἀνεκτήθη ἀμέσως ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Β' Κομνηνοῦ (1118—1143). Μετ' οὐ πολύ, ἐπὶ Μανουὴλ Α' Κομνηνοῦ (1143—1180), κατελήφθη ἐκ νέου ὑπὸ τοῦ Ἀρμενίου Τερόζη. Οἱ Βυζαντινοὶ ἐπεχείρησαν νὰ ἀνακαταλάβωσιν αὐτὴν καὶ ἐπολιόρκησαν τὴν πόλιν ὑπὸ τὸν Ἀνδρόνικον Κομνηνόν, ἀλλ' ἡττήθησαν δεινῶς. Ἔκτοτε, ἀκολουθήσασα τὴν τύχην τῆς Κιλικίας, ὑπέκυψεν ὑπὸ τοὺς Τούρκους. Σῴζονται αὐτόνομα νομίσματα αὐτῆς τοῦ Β' π. Χ. αἰῶνος φέροντα ἐπιγραφὴν ΜΟΨΕΑΤΩΝ ΤΗΣ ΙΕΡΑΣ ΚΑΙ ΑΥΤΟΝΟΜΟΥ καὶ βωμὸν καίοντα (Μόψου ἑστία). Ἐπίσης τοῦ βασιλέως τῆς Συρίας Ἀντιόχου Δ' (175—164 π. Χ.) καὶ αὐτοκρατορικὰ τῶν ῥωμαϊκῶν χρόνων. Τὰ ἐρείπια αὐτῆς κατέχει ἡ σημερινὴ κωμόπολις *Μισίς*, ἐν τῷ νομῷ Ἀδάνων, ἀριθμοῦσα 2.000 Τούρκους. Ν. ΚΛΣ—Α. Θ. Σ.

**Μπ—.** Εἰς τὰς ἀπὸ *Μπ—* ἢ *μπ—* ἀρχομένας λέξεις ζητητέαι ἐνταῦθα, πλὴν τῶν οὕτω γραφομένων εἰς τὴν ἑλληνικὴν καὶ αἱ ξενόγλωσσοι αἱ ἀρχόμεναι ἀπὸ Β— ἢ β— τῶν λατινοφθόγγων γλωσσῶν, δ— τῶν σλαβικῶν καὶ پ τῶν ἀραβοφθόγγων, ἐξαιρέσει ἐκείνων, αἵτινες μετεγράφησαν εἰς

Digitized by Google

τὴν ἑλληνικὴν δι' ἀρχικοῦ Β— ἢ β— (ὡς *Βαλκάνια, βέης, Βοναπάρτης, Βρυξέλλαι, Βύρων* κ.τ.τ.), καὶ αἱ ὁποῖαι ζητητέαι εἰς τὸ Β— ἢ 6—.

**μπά·** ἐπιφών. δημοτ. δηλοῦν ἀπορίαν, ἔκπληξιν, ἀγανάκτησιν: «μπά! τί εἶν' αὐτὰ ποῦ λές», «μπά, ποῦ κακὸ νὰ σοῦ 'ρθῇ!»· || ἄρνησιν μετ' ἀπορίας: «δέχεται νὰ μᾶς ἀκολουθήσῃ;-μπά! μὲ κανένα τρόπον» ἢ «— ἄ μπά! μὲ κανένα τρόπον» (γαλλ. bah).

**μπᾶ, ἢ μπάϊ.** Εἰς τὴν αἰγυπτιακὴν πνευματολογίαν τὸ *μπᾶ* ἦτο ἡ ψυχὴ τοῦ ἀνθρώπου, ἡ ὁποία μετὰ τὸν θάνατον παρίστατο ἐνώπιον τῶν δικαστῶν θεῶν. Ἐνίοτε ἐπανήρχετο εἰς τὸ σῶμα καὶ ἐνεψύχου τὴν μουμίαν. Παρίστατο ὡς ἀνθρωποκέφαλον πτηνόν, κρατοῦν ἐνίοτε εἰς τοὺς ὄνυχάς του τὸν ἄγκχ, ἤτοι σταυρὸν ἔχοντα τὴν ἄνω κεραίαν εἰς μορφὴν δακτυλίου καὶ συμβολίζοντα τὴν ζωήν, ἢ κρατοῦντα τὸ νίφ, ἱστίον μικροῦ πλοίου, συμβολίζον τὴν πνοήν. Οὕτως εἰς μίαν τοιχογραφίαν παρίσταται πετῶν ἐντὸς τοῦ νεκρικοῦ φρέατος, τοῦ φέροντος εἰς τὸν ὑποχθόνιον νεκρικὸν θάλαμον, διὰ νὰ φθάσῃ εἰς τὴν μουμίαν. Εἰς ἄλλην εἰκόνα παρίσταται ἠρεμοῦν, μὲ ἀνοιγμένα τὰ πτερὰ παρὰ τὴν κεφαλὴν τῆς μουμίας. Ὑπὸ τὴν τελευταίαν ταύτην μορφὴν ἀπαντᾷ γεγλυμμένον ἐπὶ τοῦ καλύμματος σαρκοφάγων. Γ. Λ. Α.

**Μπάαλε** (Baale), *Ἐρρῖκος φὰν—*. Ὀλλανδὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς (1782—1822). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι γνωσταὶ δύο τραγῳδίαι: «Σαρακηνοί» (1809) καὶ «Ἀλέξανδρος». Α. Δ.

**Μπάαλ-Μεὼν** [*Βιβλ. Γεωγρ.*]. βλ. λ. *Βεελμεών*.

**Μπααλὶς** [*Βιβλ.*]. Βασιλεὺς τῶν Ἀμμωνιτῶν ἀποδοθεὶς ὑπὸ τῶν Ο' διὰ τοῦ *Βελεισσά*.

**Μπάαλμπεκ** (Baalbek) [*Γεωγρ.*]· βλ. λ. *Βααλβέκ*.

**Μπάαν ἢ Μπάεν** (Baan ἢ Baen), *Ἰάκωβος ντὲ —*. Ὀλλανδὸς ζωγράφος, υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου ντὲ Μπάαν* (1672—1700). Διεκρίθη ὡς προσωπογράφος. Ἠκολούθησε Γουλιέλμον τὸν Γ' εἰς Ἀγγλίαν, ἔνθα ἐξετέλεσε πολυαρίθμους προσωπογραφίας, ἐν αἷς καὶ τὴν τοῦ δουκὸς τοῦ Glocester. Μετὰ ταῦτα ἐπεσκέφθη τὴν Φλωρεντίαν καὶ τὴν Ρώμην, ἐπιστρέφων δ' ἐκεῖθεν εἰς τὴν πατρίδα του ἀπέθανε καθ' ὁδὸν, ἐν Βιέννῃ. Ι. Μ. Π.

— **Μπάαν, ἢ Μπάεν** (Baan ἢ Baen), *Ἰωάννης ντὲ—*. Ὀλλανδὸς ζωγράφος (1633—1702). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Pirmans καὶ τῷ Backer. Βραδύτερον ἐμελέτησε τὸ ἔργον τοῦ Βὰν Ντάϊκ καὶ ἐξεπόνησεν ἔργα τινὰ κατὰ τὴν τεχνοτροπίαν τούτου. Τῷ 1660, μεταβὰς εἰς Χάγην, ἐξετέλεσε σειρὰν ἀξιολόγων προσωπογραφιῶν. Μετὰ ταῦτα ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, τυχὼν τῆς προστασίας Καρόλου Β', ἐπανελθὼν δ' ἐκεῖθεν εἰς τὴν πατρίδα του εἰργάσθη ἐπὶ μακρὸν ἀκαταπονήτως, διαφημισθεὶς ὡς εἷς τῶν ἐξοχωτέρων καλλιτεχνῶν τῶν χρόνων του. Ὁ ἐκλέκτωρ τοῦ Βραδεμβούργου Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος τῷ προσήνεγκε τὴν θέσιν αὐλικοῦ ζωγράφου, ἀλλ' ὁ Μπάαν ἠρνήθη ταύτην. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται αἱ προσωπογραφίαι τῶν ἀδελφῶν ντὲ Βιττ (ἐν τῷ Μουσείῳ τοῦ Ἄμστερνταμ), ἡ προσωπογραφία τοῦ πρίγκιπος τοῦ Νασσάου-Τσίγκεν (ἐν Βερολίνῳ), ἡ προσωπογραφία τοῦ Μαυρικίου τοῦ Νασσάου (ἐν Χάγῃ) καὶ ἡ αὐτοπροσωπογραφία του, ἀποκειμένη ἐν Δρέσδῃ. Ι. Μ. Π.

**Μπάαντε** (Baade), *Κνοὺτ Ἄντρεσσεν —*. Νορβηγὸς ζωγράφος (1808—1879). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Χριστιανῷ Ντάλ ἐν Δρέσδῃ, διετέλεσε δ' ἐπίσημος ζωγράφος τῆς σουηδικῆς αὐλῆς καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Στοκχόλμης. Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς θαλασσογράφος. Μεγάλη ὑπῆρξεν ἡ δεξιοτεχνία του εἰς τὴν ἀπόδοσιν τοῦ σεληνόφωτος. Ι. Μ. Π.

**Μπααντὲρ** (Baader), *Λουδοβῖκος-Μαρία*. Γάλλος ζωγράφος. Ἐγεννήθη τῷ 1828 καὶ ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Petit de Granville. Ἐπιδοθὴ ἀλληλοδιαδόχως εἰς τὴν λιθογραφίαν, τὴν ξυλογραφίαν καὶ τέλος τὴν ζωγραφικήν. Χάριν τῆς τελευταίας ταύτης ἐφοίτησεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Yvon καὶ εἰς τὴν παρισινὴν σχολὴν τῶν καλῶν τεχνῶν. Ἐξειργάσθη ἰδίᾳ ἱστορικὰ θέματα καὶ σκηνὰς τοῦ καθημερινοῦ βίου. Μετέσχε τακτικῶς τῶν ἐκθέσεων τοῦ Σαλὸν ἀπὸ τοῦ ἔτους 1857. Τῷ 1874 ἐβραβεύθη ὁ πίναξ του «Ἡ μετὰ θάνατον δόξα». Ι. Μ. Π.

**Μπάαντερ** (Baader), *Τωβίας*. Βαυαρὸς γλύπτης. Ἔζησε κατὰ τὸ 6' ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του ἀπόκεινται ἐν Μονάχῳ. Μεταξὺ τούτων μνημονεύομεν τὰ ἀκόλουθα: «Ὁ Χριστὸς ἐπὶ τοῦ σταυροῦ» καὶ «Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ». Ι. Μ. Π.

— **Μπάαντερ** (Baader), *Φραγκῖσκος-Ξαβιὲ φὸν —*. Γερμανὸς φιλόσοφος (1765—1841). Ὑπῆρξε πολέμιος τοῦ θεϊσμοῦ τοῦ Ρουσσὼ καὶ τοῦ ὑποκειμενισμοῦ τοῦ Καντίου, θαυμαστὴς δὲ τοῦ Μπαῖμε, τοῦ Σαὶν-Μαρτὲν καὶ Θωμᾶ τοῦ ἐξ Ἀκουΐνων. Χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τῆς φιλοσοφίας του εἶναι ὁ μυστικισμός. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν Μονάχῳ, τὰ δὲ ἔργα του ἐδημοσιεύθησαν μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ὑπὸ τῶν μαθητῶν του μετὰ σχολίων καὶ σημειώσεων (1851—1860). Α. Δ.

**Μπααντὶν-Μεχμὲτ-Γκεμπὲτ-Ἀμέχ**. Πέρσης σοφὸς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἀμπὰς ὁ Μέγας ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν τὴν συγγραφὴν συντόμου βιβλίου περιλαμβάνοντος πάσας τὰς ἀρχὰς τοῦ πολιτικοῦ καὶ θρησκευτικοῦ δικαίου, τὸ ὁποῖον ἐτιτλοφορήθη «Συλλογὴ τοῦ Ἀμπᾶς». Ταύτης ὅμως συνέταξε μόνον τὰ πέντε πρῶτα βιβλία, τῶν λοιπῶν συμπληρωθέντων ὑφ' ἑνὸς ἐκ τῶν μαθητῶν του. Χ. Δ.

**Μπάαρ** (Baar) [*Γεωγρ.*]. Ἐκτεταμένον ὑψίπεδον ἐν Γερμανίᾳ, ἐν Βάδῃ, εἰς ὕψος 700 μ., μεταξὺ τοῦ Μέλανος Δρυμοῦ καὶ τοῦ ποταμοῦ Σουηβικὸς Ἄλμπ. Ἐμβαδὸν 550 τ. χλμ. Κάτ. 55.000. Τὸ ὑψίπεδον τοῦτο ἀνήκει εἰς τὴν περιοχὴν ὅπου εὑρίσκονται αἱ πηγαὶ τοῦ Δουνάβεως καὶ τοῦ Νέκαρ. Τὸ κλῖμα εἶναι ξηρὸν καὶ δριμύ, τὸ ἔδαφος πτωχὸν εἰς δάση, ἀλλ' εὔφορον, παραγον πολλὰ δημητριακὰ καὶ διατρέφον ἀκμαίαν κτηνοτροφίαν. Παλαιότερον τὸ Μπάαρ ἀπετέλει ἀνεξάρτητον τοπαρχίαν τῆς Σουηβίας, τῷ δὲ 1283 περιῆλθεν εἰς τοὺς πρίγκιπας τοῦ Φύρστενμπεργκ. Θ. Κ.

**μπααρὰς, ἡ** *βαάρας* (baaras) [*Βοτ.*]. Ὄνομα φανταστικοῦ φυτοῦ, ὀνομαζομένου οὕτω ἐκ τῆς κοιλάδος Βαάρας τῆς Παλαιστίνης, ὅπου λέγεται ὅτι ἐφύετο. Ἀνάλογον κατὰ τὰς ἰδιότητας πρὸς τὴν *λαμπηδόνα* (βλ. λ.) τῆς ἑλληνικῆς λαογραφίας.

**Μπάαργκάου·** βλ. *Μπάαρ*.

**Μπάαρλανδ, ἢ Μπάρλανδ** (Baarland ou Barland), *Χούμπερτ βὰν—*. Φλαμανδὸς ἰατρὸς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, γεννηθεὶς ἐν Μπάαρλανδ τῆς Ζηλανδίας. Ἐν Βασιλείᾳ συνεδέθη μετὰ τοῦ Ἐράσμου. Ἐγκατέλειψε πλεῖστα συγγράμματα εἰς τὴν λατινικήν, ἐξ ὧν ἀναφέρομεν τὰ ἀκόλουθα: «Velitatio medica cum Arnoldo Nootsio, qua docetur non paucis abuti nos vulgo medicamentis simplicibus» (Ἀμβέρσα 1532), «De medicamentis paratu facilibus» (μετάφρασις ἐκ τοῦ Γαληνοῦ, 1533), «Epistola medica de aquarum distillatorum facultatibus» (1536). Ο. Ρ.

**Μπάαρν** (Baarn) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Οὐτρέχτης, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἔμ. Κάτ. 10.947 (1922). Θ. Κ.

**Μπάαρτ** (Baardt ἢ Baart), *Πέτρος*. Φλαμανδὸς ποιητὴς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἔγραψε διάφορα ποιήματα εἰς φρεισικὴν γλῶσσαν, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὰ περιλαμβανόμενα ὑπὸ τὸν τίτλον «Πρακτικὴ βουκολικὴ τῆς Φρεισίας», ἅτινα παραβάλλονται ὑπὸ πολλῶν πρὸς τὰ «Γεωργικά» τοῦ Βιργιλίου. Γ. Ι. Β.

**Μπαάς, ἢ Μπαάτς** (Baas ἢ Baatz), *Παῦλος, βαρῶνος ντὲ —*. Γάλλος εὐγενὴς (1601—1703 ἢ 1610—1712). Πρωτότοκος ἀδελφὸς τοῦ θρυλικοῦ λοχαγοῦ τῶν σωματοφυλάκων κόμητος ντ' Ἀρτανιάν. Τῷ 1654 ὁ Μαζαρῖνος ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν διπλωματικὴν ἀποστολὴν εἰς Ἀγγλίαν, καθ' ἣν, ἂν καὶ ἐπέδειξε μεγάλην ἱκανότητα καὶ πολιτικὴν διορατικότητα, ἦλθεν εἰς ῥῆξιν μετὰ τοῦ Κρόμβελ καὶ ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ. Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν ὑπηρέτησεν ὡς ἀρχηγὸς τῶν σωματοφυλάκων καὶ βραδύτερον ὡς διοικητὴς τοῦ Ναβαρρέν. Χ. Δ.

**Μπάατς, ἢ Μπαάτσιους** (Baaz ἢ Baazius). Σουηδὸς ἱεράρχης (1581—1649). Ὑπῆρξεν ἐπίσκοπος τοῦ Βέξιο καὶ εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ὡς συγγραφεὺς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας τῆς Σουηδίας: «Inventarium ecclesiae Sueco-Gothorum» (1642). Α. Δ.

**Μπααψὸρ** (Baapsor). Ὄνομα διδόμενον εἰς ὕφασμα χρησιμοποιούμενον διὰ πένθιμα γυναικεῖα ἐνδύματα, κατεσκευασμένον ἐξ ἰνδικοῦ μερινοῦ.

**Μπαβαμπούτι** (Bhâvabhûti). Περιώνυμος Ἰνδὸς συγγραφεύς, ἀκμάσας κατὰ τὸ ἔτος 720 μ.Χ. Εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ὡς δραματικός. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι τρία δράματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνεται τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Mâlati». Α. Δ.

**Μπάβεαν** (Bavean) [*Γεωγρ.*]. Ὀρεινὴ καὶ δασώδης νῆσος τοῦ συμπλέγματος τῆς Ἰάβας βορείως τοῦ στενοῦ τῆς Μαντούρας, ἀνήκουσα εἰς τὴν ἐπαρχίαν Σουραμπάγια τῶν ὀλλανδικῶν Ἰνδιῶν. Κάτ. 38.000.

**Μπαβένο** (Baveno) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἰταλίας παρὰ τὰς ὄχθας τῆς Λάγκο Ματζιόρε καὶ ἔναντι τῶν περιφήμων νησίδων Μπορρομαίων. Κάτ. 2.500. Εἶναι κλιματολογικὸς σταθμὸς συγκεντρώνων πολλοὺς Ἰταλοὺς καὶ ξένους καὶ ἔχει εἰς τὰ περίχωρα λατομεῖα γρανίτου καὶ μεταλλεῖα χαλκοῦ καὶ καολίνης. Μ. Δ. Β.

**μπαβούλια** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λάθυρος ἡ ἀφάκη*.

**Μπάβρα** (Bavra) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ προεδρείᾳ τῆς Βομβάης. Περιβάλλεται ὑπὸ δασώδους περιφερείας καὶ ἔχει ἐμπόριον ὀρύζης καὶ δημητριακῶν. Κάτ. 39.300, κατὰ τὸ πλεῖστον βραχμᾶνοι. Χ. Δ.

**μπαγάσας** (ὁ)· κατ' ἐτυμολογίαν κίναιδος· || παρ' ἡμῖν ὡς ὑβριστικὴ προσηγορία: ὁ ἐστερημένος πίστεως ἄνθρωπος, ἀναξιόπιστος, κακόπιστος, φαῦλος, κάθαρμα, παληάνθρωπος· ἐπιτ. *παληομπαγάσας*.

**Μπαγάσσα** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Ἀκρωτήριον τῆς Καραμανίας (βλ. λ. *Λισὰν Καχπὲ Μπουρνοῦ*).

**Μπάγγκεσεν** (Baggesen), *Ἰωάννης-Ἐμμανουήλ*. Δανὸς ποιητὴς (1764—1826). Ἐγένετο τὸ πρῶτον γνωστὸς διὰ τῶν ἐμμέτρων «Κωμικῶν διηγημάτων» του, εἰς ἡλικίαν δὲ εἴκοσιν ἑνὸς ἐτῶν εἶχεν ἀποκτήσει φήμην δοκίμου λυρικοῦ. Ἡ ἀποτυχία ὅμως τοῦ ἐν ἔτει 1789 ἀναβιβασθέντος ἐπὶ σκηνῆς θεατρικοῦ ἔργου του «Holge Danske» τὸν ἠνάγκασε νὰ ἐκπατρισθῇ. Τῷ 1790 ἤρχισε γράφων γερμανιστὶ («Τραγούδια τῶν Ἄλπεων»). Μετὰ ἓν ἔτος ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, γράψας δανιστὶ τὸ ποίημα «Λαβύρινθος». Ἔκτοτε ἔζησε διαρκῶς ἀλλάσσων τόπους διαμονῆς καὶ γράφων ἐναλλὰξ εἰς γερμανικὴν καὶ δανικὴν γλῶσσαν. Τέλος ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους. Ἐκ τῶν τελευταίων ποιημάτων του, ἀξιολογώτερον εἶναι τὸ εἰδυλλιακὸν ἔπος «Παρθενάϊς» εἰς γερμανικὴν γλῶσσαν. Ἡ δανικὴ φιλολογία ὀφείλει πολλὰ εἰς τὸ ἔργον τοῦ Μπάγγκεσεν, τὴν λεπτότητα, τὴν μορφήν, τὸ ὕφος, τὴν κομψότητα. Μεθ' ὅλα τὰ φιλολογικά του ἐλαττώματα ἵσταται μεταξὺ τῶν ποιητῶν Χόλμπεργκ καὶ Αἰλενσλαϊγκερ. Τὸ δημοφιλέστερον τῶν ποιημάτων του εἶναι τὸ ἐπιγραφόμενον «Μιὰ φορὰ ποῦ ἤμουνα μικρός», ἀπαράμιλλον διὰ τὴν ἁπλότητα καὶ τὸ πάθος του. Γ. Ι. Β.

**μπαγδατὶ** (τό)· ἰδιωματ., τὸ διὰ λεπτῶν καὶ ἐπιμήκων σανίδων καὶ ἀσβεστοκονιάματος σχηματιζόμενον στρῶμα, εἴτε ὡς χώρισμα δωματίων, εἴτε ὡς ὀροφή (τουρκ. bagdadi).

**μπαγδατίζω·** κάμνω *μπαγδατὶ* (βλ. λ.).

**Μπαγεωργαῖοι.** βλ. λ. *Κοτζακαραῖοι*.

**Μπάγια** (Baja) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας, πρωτεύουσα τοῦ κομιτάτου Μπὰκς Μπόντρογκ, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Λουμπότικα—Μπάκς. Κάτ. 19.379 (1921). Παράγει σιτηρὰ καὶ ἔχει ἀκμαίαν χοιροτροφίαν. Θ. Κ.

**Μπάγια** [*Γεωγρ.*]. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Κῆπος* (βλ. λ.).

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει εἰρηνοδικεῖον, ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 604. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Γεωργανάδες*. Χ. Δ.

**Μπαγιαζήτ.** Ὄνομα δύο σουλτάνων τῆς Τουρκίας (βλ. *Βαγιαζίτ*). Ὁ Χαλκοκονδύλης (καὶ ἄλλοι Βυζαντινοὶ ἱστορικοὶ) γράφει *Πεαζήτης* ἢ *Παιαζήτης*, κλίνων τὴν λέξιν κατὰ τὴν ἰωνικὴν διάλεκτον (γενικὴ *Πεαζήτεω*). Ν. Μ.

**Μπαγιαζήτ** [*Γεωγρ.*]. Τουρκικὴ ἐπαρχία καὶ πόλις ἐν Ἀρμενίᾳ (βλ. λ. *Βαγιαζήτ*).

**Μπαγιάλτσα** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Πλατάνι* (βλ.λ.).

— [*Στρατ. Ἱστορ.*]. Κατὰ τὸν Ἑλληνοβουλγαρικὸν πόλεμον τοῦ 1913, τμήματά τινα τῆς πρὸς Δοϊράνην προχωρούσης 10ης ἑλληνικῆς μεραρχίας ἐνεπλάκησαν, τὴν 19ην Ἰουνίου 1913, πρὸς τὰ τμήματα τῆς 3ης βουλγαρικῆς μεραρχίας τὰ κατέχοντα τὰ νοτίως τῆς *Μπαγιάλτσας* ὑψώματα, μὲ τὴν ἐντολὴν τοῦ νὰ ἐπιβραδύνωσιν ὅσον τὸ δυνατὸν περισσότερον τὴν πρὸς Δοϊράνην προχώρησιν τῆς 10ης ἑλληνικῆς μεραρχίας, συνεπῶς τὴν συμμετοχήν της εἰς τὸν κύριον ἀγῶνα. Μεθ' ὅλας τὰς ἐπανειλημμένας ἐντατικὰς βουλγαρικὰς προσπαθείας, τὰς διευθυνομένας ὑπὸ τοῦ διοικητοῦ ταξιαρχίας συνταγματάρχου Καβαρνάλιεφ, κατώρθωσεν ἡ ἑλληνικὴ μεραρχία, διὰ τῆς σχεδὸν συνεχοῦς καὶ ἐντεταμένης δράσεως τοῦ πυροβολικοῦ της, ν' ἀπωθήσῃ ἐντὸς τῆς ἡμέρας ταύτης τὰ βουλγαρικὰ ταῦτα στρατεύματα καὶ νὰ ἐγκαταστήσῃ κατὰ τὴν νύκτα 19—20 Ἰουνίου προφυλακὰς ἐπὶ τῶν νοτίως τῆς Μπαγιάλτσα ὑψωμάτων. Ν. Θ. Κ.

**μπαγιαντέρα** (ἐκ τοῦ πορτογ. *bailadeira*=χορεύτρια). Ἰνδαὶ χορεύτριαι (βλ. κατωτ.). Κατ' ἐπέκτασιν αἱ χορεύτριαι γενικῶς.

—[*Ἐγκυκλ.*] Αἱ Ἰνδαὶ *μπαγιαντέραι* εἶναι εἶδος ἑσταίδων ἀσχολουμένων γενικῶς μὲ τὴν λατρείαν τῶν θεῶν, εἰδικώτερον δὲ μὲ τὸν στολισμὸν τῶν βωμῶν καὶ τῶν ἀγαλμάτων τῶν θεοτήτων δι' ἀνθέων καὶ τὴν ἐκτέλεσιν κατὰ τὰς τελετὰς τῶν ἱερῶν χορικῶν καὶ ὕμνων. Ὑποδιαιροῦνται αὗται εἰς δύο τάξεις, τὰς «ντεβαντάσι» (=ὑπηρέτριαι τῆς

Digitized by Google

θεῶν, ἱεροδούλους»), αἵτινες κατοικοῦσιν ἐντὸς τῶν ναῶν, ἀπὸ τῶν ὁποίων δὲν δύνανται νὰ ἐξέλθωσιν ἄνευ τῆς ἀδείας τοῦ μεγάλου ἱερέως, καὶ τὰς περιπλανωμένας μπαγιαντέρας, αἵτινες περιερχόμεναι τὴν χώραν χορεύουσιν ὁπουδήποτε ἐνώπιον τοῦ πλήθους ὄχι μόνον τῶν Ἰνδῶν ἀλλὰ καὶ τῶν ξένων. Αἱ «ντεβαντάσι» διακρίνονται ἐπίσης εἰς διαφόρους κατηγορίας, ἀναλόγους πρὸς τὴν σειρὰν τὴν ὁποίαν κατέχει ὁ θεὸς τὸν ὁποῖον ὑπηρετοῦσιν. Ἐπισημότεραι ἐξ αὐτῶν θεωροῦνται αἱ τοῦ Βισνοῦ καὶ τοῦ Σίβα. Ἡ διαγωγὴ τῶν μπαγιαντερῶν δὲν εἶναι ἀνεπίληπτος, ἐκτελοῦσι δὲ συχνὰ καὶ χρέη ἑταιρῶν, ὡς αἱ ἱερόδουλοι τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος. Μετὰ τὴν μουσουλμανικὴν κατάκτησιν τῶν Ἰνδιῶν οἱ Μουσουλμᾶνοι ἡγεμόνες, καὶ μάλιστα οἱ μεγάλοι Μογγόλοι, διετήρουν ὁλόκληρα μπαλέττα μπαγιαντερῶν Ἰνδῶν ἢ Μουσουλμανίδων. Χ. Δ.

*Μπαγιαντέρα.*

**Μπαγιὰρ** (Bayard), ***Αἰμίλιος-Ἀντώνιος.*** Γάλλος ζωγράφος καὶ σχεδιαστὴς (1837—1891). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Λ. Κονιέ, συνειργάσθη δὲ ὡς σχεδιαστὴς εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῆς νεότητος», τὸν «Γῦρον τοῦ κόσμου», τὴν «Εἰκονογραφημένην» καὶ τὴν «Ροδίνην βιβλιοθήκην». Ἐξετέλεσε τὰς εἰκονογραφίας πολυπληθῶν λογοτεχνικῶν ἔργων, ἐν οἷς: «Ὁ ἀββᾶς Κωνσταντῖνος», «Νουμᾶ Ρουμεστάν», «Ἡ κόμισσα Σάρα» κλπ. Συνέθηκεν ἀλληγορίας, ὡς ἡ τῆς μάχης τοῦ Σεδάν, καὶ ἐξεπόνησεν εὐρείας διακοσμητικὰς συνθέσεις, ὡς αἱ τοῦ φουαγιὲ τοῦ θεάτρου τοῦ Παλαὶ-Ρουαγιάλ. Ι. Μ. Π.

— **Μπαγιὰρ** (Bayard), ***Ἰωάννης-Φραγκῖσκος-Ἀλφρέδος.*** Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς (1796—1853). Τὰ ἔργα του, ἅτινα διακρίνονται διὰ τὴν ταχύτητα τῶν ἐναλλασσομένων σκηνῶν, περιλαμβάνονται εἰς 12 τόμους (1855—1858). Εἰς τὰ πλεῖστα ἐξ αὐτῶν συνειργάσθη μετὰ πολλῶν ἄλλων συγγραφέων (Σκρίμπ, Ντεζωζιέ, Τεπλόν, Βαρνέρ, Ντυμανουὰρ κλπ.). Χ. Δ.

— **Μπαγιὰρ** (Bayard), ***Πέτρος-Τεράϊγ.*** Γάλλος ἱππότης (βλ. λ. *Βαϋάρδος*).

**παγιαρζὲ** (Baillarger), ***Ἰούλιος-Γαβριὴλ-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος φρενίατρος (1806—1891). Διετέλεσε μαθητὴς τοῦ Esquirol, ἐσωτερικὸς ἰατρὸς τοῦ φρενοκομείου Charenton καὶ διευθυντὴς τοῦ ἐν Ivry. Τῷ 1842 ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς ἰατρικῆς Ἀκαδημίας διὰ τὴν πραγματείαν του «Des hallucinations, des causes qui les produisent et des maladies qu'elles caractérisent». Τῷ 1843 ἵδρυσε μετὰ τοῦ Longer καὶ Cerise τὰ «Ἰατρο-ψυχολογικὰ χρονικά», ἐν οἷς ἐδημοσίευσε πλείστας ἐργασίας του, ἐξ ὧν ἀναφέρομεν τὰς ἀκολούθους: «Stupidité des aliénés», «Statistique de la folie héréditalre», «Frequence de la folie chez les prisonniers», «Hallucinations», «Folie à double forme» κλπ., ὡς καὶ τὰς μονογραφίας αὐτοῦ: «L'enquête sur le goître et le crétinisme», «Recherches sur la structure de la couche corticale des circonvolutions du cerveau». Ἡ ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ ῥάβδωσις Μπαγιαρζὲ ἀποτελεῖ πυκνὸν πλέγμα ἐξ εὐρείας ταινίας, διελαῦνον τὴν μέσην μοῖραν τῆς στιβάδος τῶν μεγάλων πυραμοειδῶν κυττάρων τοῦ φλοιοῦ τοῦ ἐγκεφάλου. Ο. Ρ.

**μπαγιατεύω**· γίνομαι μπαγιάτικος, ἕωλος, παλαιοῦμαι: «μπαγιάτεψε τὸ ψωμὶ καὶ δὲν τρώγεται».

**Μπαγιάτι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Στουπαίων τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 85. Χ. Δ.

**μπαγιατιάζω**· δημοτ., γίνομαι μπαγιάτικος, ἕωλος, παλαιοῦμαι, ἄλλως *μπαγιατεύω*.

**μπαγιάτικος,—η,—ο**· δημοτ., ὁ μὴ πρόσφατος, ἕωλος, ἰδίᾳ ἐπὶ τροφίμων, ἀντίθ. *νωπός, φρέσκος*: «μπαγιάτικα ψάρια», «μπαγιάτικο κρέας,—ψωμί» (τουρκ. *μπαγιάτ*).

**Μπαγιβὰτ** *[Θρησκειολ.]*. Ἐπίθετον τοῦ *Βούδα* (βλ. λ.).

**Μπαγιὲ** (Bayeux) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Καλβαντὸς τῆς Νορμανδίας. Ἔχει βιομηχανίαν ἐκλεκτῶν φερωνύμων τριχάπτων (dentelles de Bayeux), πορσελλάνης καὶ βουτύρου. Κάτ. 7.640. Τὸ Μπαγιὲ εἶναι μία τῶν ἀρχαιοτέρων πόλεων τῆς Γαλλίας, διεδραμάτισε δὲ σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Νορμανδίας, περιελθοῦσα ἐπανειλημμένως εἰς τοὺς Ἄγγλους κατ' ἀρχὰς καὶ τοὺς διαμαρτυρομένους βραδύτερον. Εἰς τὸν σπουδαιότατον καθεδρικὸν ναὸν τῆς πόλεως, τιμώμενον ἐπ' ὀνόματι τῆς Παρθένου, φυλάσσονται πλεῖστα πολύτιμα κειμήλια. Ἐπίσης εἰς τὸ μικρὸν μουσεῖον τῆς πόλεως εὑρίσκεται ὁ περίφημος *τάπης τοῦ Μπαγιὲ* (βλ. κατωτ.).

— **Μπαγιὲ** *τάπης*. Μακρότατος ἐν εἴδει λωρίδος τάπης μεγάλης ἱστορικῆς ἀξίας, φυλασσόμενος εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ *Μπαγιέ*. Ἔχει μῆκος 70,34 μ καὶ πλάτος 0,50 μ., εἶναι δὲ ἐπ' αὐτοῦ κεντημένα κατὰ σειρὰν διὰ βελόνης καὶ χρωματιστῶν μαλλίνων νημάτων ἐπεισόδια ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς καταλήψεως τῆς Ἀγγλίας ὑπὸ τοῦ Γουλιέλμου τοῦ Κατακτητοῦ (1066).

Ἑκάστην σκηνὴν τοῦ τάπητος ἐπεξηγεῖ λατινικὴ ἐπιγραφή, περιβάλλουσι δ' αὐτὴν παραστάσεις φανταστικῶν ζῴων καὶ σκηναὶ κυνηγίου. Ἡ παράδοσις ἀποδίδει τὴν κατασκευήν του εἰς τὴν Ματθίλδην, σύζυγον τοῦ Γουλιέλμου τοῦ Κατακτητοῦ. Ὁ τάπης τοῦ Μπαγιὲ ἀποτελεῖ σπουδαίαν συμβολὴν εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν στολῶν, τοῦ ὁπλισμοῦ καὶ τοῦ στρατιωτικοῦ καὶ ἰδιωτικοῦ βίου κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΑ' μ. Χ. αἰῶνος. Χ. Δ.

**Μπαγιὲ** (Baillet), ***Ἀδριανός.*** Γάλλος κληρικὸς καὶ λόγιος (1649—1706). Τὰ ἔργα του, μειονεκτοῦντα ἀπὸ ἀπόψεως ὕφους, διακρίνονται ἐν τούτοις διὰ τὴν εὐσυνείδητον λεπτολογικότητα καὶ τὸν πλοῦτον τῶν γνώσεων τοῦ συγγραφέως. Κυριώτερα ἐκ τούτων εἶναι: «Κρίσεις τῶν σοφῶν ἐπὶ τῶν μεγάλων συγγραφέων» (1686), «Βιογραφία τοῦ Καρτεσίου» (1691), «Βίοι τῶν Ἁγίων» (1701) κλπ.

— **Μπαγιὲ** (Baillet), ***Εὐγένιος.*** Γάλλος συνθέτης λαϊκῶν ᾀσμάτων, γεννηθεὶς τῷ 1831. Τῷ 1848 ἐνεφάνισε τὰ πρῶτά του πατριωτικὰ τραγούδια, τὰ ὁποῖα ἔτυχον εὐμενοῦς ὑποδοχῆς ἐκ μέρους τοῦ κοινοῦ. Ὁ Βερανζέρος μεταξὺ τῶν ἄλλων τὸν ἐνεθάρρυνε καὶ ὁ Μπαγιέ, καλλιεργήσας διὰ τοῦ χρόνου τὸ τάλαντόν του, δὲν ἐβράδυνε νὰ γίνῃ ἕνας ἀπὸ τοὺς πλέον δημοφιλεῖς λαϊκοὺς συνθέτας. Ἐδημοσίευσε διαφόρους συλλογάς: «Λουλούδια καὶ γέλια» (1853), «Τραγούδια τῆς χθὲς καὶ τῆς σήμερον» (1868), «Τραγούδια καὶ μικρὰ ποιήματα» (1885) κ. ἄ. Πολλὰ ἀπὸ τὰ ᾄσματα τῶν συλλογῶν τούτων ἐσημείωσαν ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν, ἐν οἷς: «Τὸ φυλακισμένο χελιδόνι», «Μὴν ξεχνᾷς, ὡραία Ἰταλίδα», «Σαμπινὺ» κλπ. —Ω.

**Μπαγιέλ**· βλ. *Μπάλλιου*.

**Μπαγιὲλ** (Bailleul), ***Ἰάκωβος-Κάρολος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1762—1843). Ἐξελέγη μέλος τῶν Πενταχοσίων ἐπὶ Διευθυντηρίου, δήμαρχος ἐπὶ Ὑπατείας, ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης ἐπὶ αὐτοκρατορίας. Ἀνεσκεύασε τὸ περὶ Ἐπαναστάσεως ἔργον τῆς κυρίας ντὲ Στάελ καὶ ἔγραψε πολλὰς πραγματείας σχετικὰς πρὸς τὴν πολιτικὴν καὶ τὴν οἰκονομολογίαν. Α. Δ.

**Μπαγιὲλ** (Bailleul) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Βορρᾶ. Ἔχει ξυθοποιίαν καὶ βιομηχανίαν τριχάπτων. Κάτ. 13.250. Καταληφθεῖσα ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, ὑπέστη διαρκοῦντος αὐτοῦ πολλὰς ζημίας. Τὴν 30 Αὐγούστου 1918 ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῶν βρεττανικῶν στρατευμάτων. Χ. Δ.

**μπαγιέτο.** Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτικῶν γλώσσης (ἐκ τοῦ ἰταλ. paglietto), σημαίνων πᾶσαν *πλεκτὴν* καὶ δή: —1) Τὴν ἐξ ἧς τὰ ἐχμάτια τῶν εἰς τὰς ἐπωτίδας ἀνακρεμαμένων λέμβων. 2) Τὸν πρὸς ἔμφραξιν διαρροῆς χρησιμοποιούμενον ὑφαντὸν ρίπον καὶ δὴ τὸν ὑπὸ τοῦ Μακάρωφ ἐπινοηθέντα τοιοῦτον. —3) Τὴν μεταξὺ πλοίων, ἐγγύτατα ἀλλήλων ἠγκυροβολημένων, παρεμβαλλομένην, ὅπως καθίσταται ἠπία τῶν πλευρῶν των ἡ προστριβή. Σ. Ε. Λ.

**Μπαγιὸν** (Bayonne) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Πυρηναίων, ἐγγὺς τοῦ Μπιαρίτς. Ἔχει ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα, βιβλιοθήκας, ὑδρογραφικὴν σχολὴν κλπ. Εἶναι ἄξιον λόγου ὀχυρὸν τῆς ΝΔ. Γαλλίας καὶ ἔχει παλαιὰν ἀκρόπολιν, δεσπόζουσαν τῆς πόλεως καὶ τοῦ λιμένος. Διεξάγει κυρίως ἐμπόριον οἰνοπνευμάτων καὶ χοιρομηρίων καὶ ἔχει βιομηχανίας σοκολάτας, βάμβακος, ὑφασμάτων κλπ. Κυριώτερα ἐκ τῶν κτηρίων της εἶναι ὁ καθεδρικὸς ναὸς (ΙΓ' αἰῶνος), τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον (ΙΓ' αἰῶνος) καὶ τὸ ὑπὸ τῆς Μαρίας-Ἄννας τοῦ Νόϋμπουργκ κτισθέν, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπεγράφη ἡ περίφημος πρᾶξις τῆς παραιτήσεως τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας Καρόλου Δ' χάριν τοῦ μεγάλου Ναπολέοντος. Κάτ. 27.900. Ἐν Μπαγιὸν ἐφευρέθη τῷ 1523 ἡ ξιφολόγχη, ἡ ὁποία ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τῆς πόλεως (baïonnete). Χ. Δ.

— **Μπαγιὸν** (Bayonne) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Νιοῦ Ζέρσεϋ. Ἔχει διυλιστήρια πετρελαίου, ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων καὶ βιομηχανίαν μεταξωτῶν. Κάτ. 72.205. Π. Γ. Λ.

**Μπαγιὸν** (Baillon), ***Ἐμμανουήλ.*** Γάλλος φυσιοδίφης, ἀποθανὼν τῷ 1802. Ἠσχολήθη ἰδίως μὲ τὴν ὀρνιθολογίαν καὶ μὲ τὴν φυτικὴν φυσιολογίαν, ἧς ἐπεζήτησε τὴν ἐφαρμογὴν ἐπὶ τῆς ἀγροτικῆς οἰκονομίας. Ἀναφέρομεν τὸ βραβευθὲν ὑπόμνημά του «Memoire sur les causes du dépérissement des bois, et des moyens d' y remédier» (1791). Ο. Ρ.

— **Μπαγιὸν** (Baillon), ***Ἐρνέστος-Ἐρρῖκος.*** Γάλλος ἰατρὸς καὶ διαπρεπὴς βοτανικός, γεννηθεὶς ἐν Καλαὶ (1827—1895). Ἐβραβεύθη δὶς ὡς ἐσωτερικὸς ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων τῶν Παρισίων. Ἐγένετο ὑφηγητὴς τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, τῷ δὲ 1863 διεδέχθη τὸν Moquin-Tandon ἐν Παρισίοις εἰς τὴν ἕδραν τῆς φυσικῆς ἰατρικῆς ἱστορίας, διδάξας ἀργότερον καὶ τὴν ὑγιεινὴν καὶ τὴν ἐφηρμοσμένην εἰς τὴν βιομηχανίαν φυσικὴν ἱστορίαν ἐν τῇ κεντρικῇ σχολῇ τεχνῶν καὶ χειροτεχνίας. Κυριώτερα ἐκ τῶν συγγραμμάτων εἶναι: «Monographie des buxacées et des stylocerées» (1859), «Recherches organogéniques sur la fleur femelle des conifères» (1860), «Adansonia, recueil périodique d'observations botaniqus» (1860—1873, δεκάτομον) «Dictionnaire de Botanique» (1876), «Traité de Botanique médicale phanéro-gamique» (1883—1884) κλπ. Ἀλλὰ τὸ κυριώτερον αὐτοῦ ἔργον εἶναι ἡ πολυτελοῦς ἐκδόσεως πολύτομος ἱστορία του τῶν φυτῶν («Histoire des plantes», 1866—1875), ἥτις ἀπετέλεσε μνημεῖον τῆς βοτανικῆς ἐπιστήμης. Ο. Ρ.

**μπαγιονέττα** *[Στρατ.]*· βλ. λ. *βαϋοννὶς [Στρατ.]*.

**Μπαγιοὺ** (Baillou καὶ Baillon καὶ Ballonius), ***Γουλιέλμος ντὲ*** —. Διάσημος Γάλλος ἰατρὸς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις (1538—1616). Ἀρχίατρος τοῦ δελφίνου Λουδοβίκου ΙΓ' καὶ εἷς τῶν ἐπιλέκτων καθηγητῶν τῆς παρισινῆς σχολῆς τῆς ἐποχῆς του, ἐπηρέασε τὰς παραδόσεις ταύτης διὰ τῆς ἐπαναφορᾶς, κατόπιν μακρᾶς διακοπῆς, τῆς κλινικῆς παρατηρήσεως διὰ τὴν μελέτην τῆς φύσεως τῶν νόσων, σχὼν πρὸς τοῦτο πρότυπον τὸν Ἱπποκράτη. Οὕτω κατέστησε γνωστὴν τὴν φύσιν τῆς διφθερίτιδος, ὡς καὶ τῶν μεμβρανωδῶν ἐξιδρωμάτων ταύτης. Ὑπεστήριξε τὰς σχέσεις τῶν ἀτμοσφαιρικῶν ἐπηρειῶν ἐπὶ τῆς εἰσβολῆς τῶν νόσων καθ' ὡρισμένας ὥρας τοῦ ἔτους καὶ ἐξήνεγκε τὴν περὶ τῆς ἀρθρίτιδος θεωρίαν του. Διετέλεσε πρύτανις τῆς ἰατρικῆς σχολῆς. Ὡς καθηγητὴς διέπρεψεν ἐπίσης καὶ διὰ τὴν διαλεκτικήν του δεινότητα, ὡς καὶ διὰ τὴν ὀξύτητα τῶν κρίσεων καὶ συλλογισμῶν του. Κυριώτεραι τῶν συγγραφῶν αὐτοῦ εἶναι: «Epidemiarum et ephemeridum libri duo» (1640), «Consiliorum medicinalium» (1635—1636—1649), «Commentaria in libellum Theophrasti de vertigine» (1640), «Liber de rheumatismo et pleuritide dorsali» (1642). Τὰ ἅπαντά του ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του J. Thevart εἰς τετράτομον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Opera omnia medica Ballonii» (1635—1649). Ο. Ρ.

— **Μπαγιοὺ** (Bailloud), ***Μαυρίκιος-Κάμιλος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1847—1921). Συμμετέσχεν εἰς τὸν πόλεμον τοῦ 1870 ὡς διοικητὴς συντάγματος ἱππικοῦ, τραυματισθεὶς εἰς τὸ Σεδάν. Τῷ 1880 μετετάχθη εἰς τὸ πυροβολικὸν καὶ τῷ 1888 μετέβη ἐπὶ ἀποστολῇ εἰς Κεντρικὴν Ἀσίαν, Καύκασον καὶ Ἀρμενίαν. Τῷ 1895 μετέβη εἰς Μαδαγασκάρην μετὰ τοῦ ἐκστρατευτικοῦ σώματος, τῷ 1900 διῴκει ταξιαρχίαν ἐν Κίνᾳ, κατὰ τὴν διεθνῆ ἐπέμβασιν, κατὰ δὲ τὸν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον ἦτο διοικητὴς μεραρχίας ἐν Δαρδανελλίοις καὶ μετέπειτα ἐν τῷ μακεδονικῷ μετώπῳ. Θ. Κ.

**Μπάγιους** (Bajus)· βλ. λ. *Βάϊος*.

**Μπαγιὼ** (Baillaud), ***Ἐδουάρδος-Βενιαμίν.*** Γάλλος ἀστρονόμος, γεννηθεὶς ἐν Σαλὸν-σὺρ-Σὼν τῷ 1848. Ἐγένετο διευθυντὴς τῶν ἀστεροσκοπείων Τουλούζης καὶ Παρισίων. Ἀπὸ τοῦ 1908 εἶναι μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν καὶ τοῦ Διεθνοῦς Γραφείου τῶν Μηκῶν. Ἔγραψε «Cours d' astronomie». Χ. Δ.

**Μπαγιὼ** (Baillot), ***Πέτρος-Μαρία-Φραγκῖσκος ντὲ Σὰλ*** (de Salles). Γάλλος βιολιστὴς (1771—1842). Τῷ 1795 ὠνομάσθη καθηγητὴς τοῦ βιολίου ἐν τῷ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων. Τῷ 1802 ἤρχισε τὰς καλλιτεχνικάς του περιοδείας ἐν Ρωσσίᾳ, Ἀγγλίᾳ, Κάτω Χώραις καὶ Ἰταλίᾳ, τῷ δὲ 1821 ὠνομάσθη κορυφαῖος βιολιστὴς τοῦ μελοδράματος. Ὁ Μπαγιὼ συνέθεσε: 9 κοντσέρτα διὰ βιολίον, 30 θέματα μετὰ παραλλαγῶν, μίαν συμφωνίαν διὰ δύο βιολία καὶ ὀρχήστραν, 24 πρελούντια, ὡς καὶ πλείστας συνθέσεις μουσικῆς δωματίου. Ἀλλὰ τὸ κεφαλαιῶδες καὶ μοναδικὸν παιδαγωγικόν του ἔργον εἶναι ἡ περίφημος «Τέχνη τοῦ βιολίου», ὡς καὶ ἡ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν Ρόντι καὶ Κρόϋτσερ «Μέθοδος τοῦ βιολίου», ἐπίσημος μέθοδος τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων. Ὁ Μπαγιὼ ἔγραψεν ἐπίσης κριτικὰ καὶ συγγραφικά τινα ἔργα, ὡς: «Σημειώσεις ἐπὶ τοῦ Γκρετρὺ» (1814), «Σημειώσεις ἐπὶ τοῦ Βιόττι» (1825) κτλ. Γ. Σ.

**Μπαγιώργας**· βλ. *Κοτζακαραῖοι*.

**μπάγκα** (ἡ)· πιστωτικὸν κατάστημα, τράπεζα: «ἔχω ἀνοιχτὸ λογαριασμὸ μὲ τὴν μπάγκα» ‖ ταμεῖον: «ποιὸς ἔχει τὴν μπάγκα;» ‖ χαρτοπαικτικὸν κέντρον: «ἡ μπάγκα τοῦ Μόντε Κάρλο» (ἰταλ. banca).

**μπαγκαβάτα** (bhâgavata), καὶ *μπαγκαβὰν* (bhagavân). Λέξις σανσκριτικὴ δηλοῦσα τὸν ἱερόν, τὸν

Digitized by Google

ἅγιον, τὸν ὅσιον. Ὡς τίτλος ἀπονέμεται εἰς τοὺς θεοὺς Βισνοῦ καὶ Κρίσνα καὶ εἰς τοὺς λάτρας τοῦ δευτέρου. Ὑπὸ τὸν παλικὸν τύπον Bhagavâ ἡ λέξις ἀπαντᾷ ὡς κύριον ὄνομα ἀντὶ τοῦ Buddha (=Βούδας), σημαίνει δὲ τὸν μακάριον. Ἰδίᾳ ἐν τῇ Σαττιπαττχάνᾳ Σούττᾳ τὸ Bhagavâ ἀντὶ τοῦ Buddha ἀπαντᾷ πανταχοῦ. Α. Δ.

**Μπαγκαβάτα γκιτὰ** (Bhâgavata gitâ). Ἰνδικὸν ἔπος τῆς Μαχαβαράτα (βλ. λ. *Βαγκαβάτα γκιτά*).

— **Μπαγκαβάτα πουράνα** (Bhâgavata purana). Ἰνδικὸν θρησκευτικὸν ἔπος (βλ. λ. *Βαγκαβάτα πουράνα*).

**μπαγκαδόρος** (ὁ)· δημοτ., χαρτοπαικτικῶς, αὐτὸς ποῦ κρατεῖ τὴ μπάγκα, ἄλλως *μπαγκέρης*.

**Μπαγκάλια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ΒΑ. πλευρᾶς τῆς Σύρου (πλάτ. 37° 29′ 20″ Β., μῆκ. 24° 56′ 55″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1542: Syra island). Ἀνώνυμον εἰς τὸν ἀγγλικόν, ὀνομάζεται οὕτως εἰς τὸν χάρτην τοῦ Ν. Γ. Κοτσοβίλλη («Νῆσος Σύρος» ἔκδ. 1892). Σ. Ε. Λ.

**Μπαγκαλκότα** (Bagalcota) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἰνδιῶν τῆς ἐπαρχίας Κολάτζι, ἕδρα διοικητοῦ. Κάτ. 12.940. Εἶναι σημαντικὸν ἐμπορικὸν κέντρον δημητριακῶν.

**Μπαγκαλποὺρ** (Bhagalpour) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας τῶν Ἰνδιῶν. Κάτ. 69.650.

**Μπαγκαμόγυο** (Bagamoyo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος τῆς κατ' ἐντολὴν τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν διοικουμένης ἀγγλικῆς ἀποικίας τῆς Ταγγανίκας (πρώην Γερμανικῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς). Κάτ. 57.000 περίπου, κατὰ τὸ πλεῖστον ἰνδικῆς καταγωγῆς, Ἄραβες καὶ ὀλίγοι Εὐρωπαῖοι, κυρίως Γερμανοὶ καὶ Ἄγγλοι. Κεῖται ἀπέναντι τῆς νήσου Ζανζιβάρης, μεταξὺ τοῦ Ντὰρ-ἐσ-Σαλὰμ καὶ Τάγγας καὶ εἶναι σημαντικὸν κέντρον ἐκκινήσεως καραβανίων καὶ ἐξερευνητικῶν ἀποστολῶν πρὸς τὸ ἐσωτερικόν. Ἔχει μεγάλας φρουριακὰς ἐγκαταστάσεις τῆς ἄλλοτε ἑταιρείας τῆς Γερμανικῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς, καθὼς καὶ τῶν ἱερατικῶν ἀποστολῶν. Ἔχει κλῖμα ἀνθυγιεινὸν καὶ παράγει κυρίως καουτσοὺκ καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα. Κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων τῷ 1916. Μ. Δ. Β.

**Μπαγκαρὰν** *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς Ἀρμενίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀϊραρὰτ (Ἀραράτ).

**μπαγκατέλλα** (ἡ)· δημοτ., πᾶν τὸ οὐτιδανόν, τὸ εὐτελές, πεπαλαιωμένον, κοινόν, ἄνευ ἀξίας: «δὲν ἔχει καλὰ πράγματα, δλο μπακατέλλες (ἰταλ. bagattella).

**Μπαγκάτζεμ** (Bagagem) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας τῆς πολιτείας Μίνας-Γκεράες, ἐκτεινομένη παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ὁμωνύμου παραποτάμου. Οἱ εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ ποταμοῦ ἀδάμαντες εἶναι περίφημοι, ἐκεῖ δὲ ἀνευρέθη τῷ 1854 καὶ ὁ κληθεὶς «Ἄστρον τοῦ νότου», ὁ μεγαλύτερος (βάρ. 125 καρατ.) καὶ ὡραιότερος ἀδάμας. Κάτ. 20.000 περίπου.

**μπαγκέρης** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἔχων μπάγκαν, τράπεζαν, τραπεζίτης, ὁ ἐκτελῶν τραπεζικὰς ἐργασίας || χαρτοπαικτικῶς, ὁ ἔχων τὴν μπάγκαν τοῦ παιγνιδίου, αὐτὸς ποῦ κάμνει μπάγκα ἢ μπάγκο, ὁ καθ' οὗ στρέφονται οἱ λοιποὶ παῖκται (ἰταλ. banchere).

**Μπαγκερία** (Bagheria) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Σικελίᾳ καὶ τῷ νομῷ τοῦ Παλέρμου. Κάτ. 20.309. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 14 χλμ. ἀπὸ τοῦ Παλέρμου, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ προάστειον καὶ ἐκ τῶν μᾶλλον πολυσυχνάστων θερέτρων. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τοὺς θαυμασίους κήπους της. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας πόλεως Σολοῦντος. Μ. Δ. Β.

**μπαγκέττα** (ἡ) (ἰταλ. bacchetta). Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ῥαβδίου τοῦ διευθυντοῦ ὀρχήστρας. Ἀποτελεῖται ἐκ ξυλίνου κυλίνδρου, ποικίλου πάχους καὶ μήκους, καὶ χρησιμεύει εἰς τὴν διαίρεσιν τοῦ μέτρου εἰς ἰσόχρονα μέρη. *Μπαγκέττες* λέγονται ἐπίσης τὰ ῥαβδία, δι' ὧν κρούονται τὰ στρατιωτικὰ τύμπανα ὡς καὶ τὰ δι' ὧν κρούονται τὰ τύμπανα. Γ. Σ.

**Μπαγκιράτι** (Baghirati) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τοῦ Ἰνδοστὰν πηγάζων ἐκ τῶν Ἰμαλαίων ἐξ ὕψους 4000 μ. καὶ ἑνούμενος μετὰ τοῦ Ἀλακανάντα, μεθ' οὗ σχηματίζει τὸν Γάγγην.

**Μπαγκίρμι** (Baghirmi ἢ Bagirmi) *[Γεωγρ.]*. Μουσουλμανικὸν κράτος τοῦ ἀνατολικοῦ Σουδάν, ἐκτεινόμενον ἐπὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Σαρῆ, ΝΑ. τῆς λίμνης Τσάντ, μεταξὺ τῶν παραλλήλων 8° 30′—12° 30′ Β. πλάτους καὶ τῶν μεσημβρινῶν 14° 30′—18° 30′ Α. μήκους Γκρήνουιτς καὶ ὑπαγόμενον εἰς τὴν Ἰσημερινὴν Γαλλικὴν Ἀφρικήν. Περιβάλλεται ὑπὸ τῶν χωρῶν Μπὰς Σαρῆ πρὸς Β., Οὐανταῒ πρὸς Α. καὶ Καμεροὺν πρὸς Δ. Ἡ ἔκτασις αὐτοῦ δὲν εἶναι ἐπακριβῶς καθωρισμένη, ὑπολογίζεται δὲ περίπου εἰς 400 χλμ. ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ 270 χλμ. ἀπὸ Α. πρὸς Δ. Ὁ πληθυσμὸς αὐτοῦ ἀνέρχεται εἰς 150.000 περίπου κατοίκους, ἀποτελεῖται δὲ ἐκ νεγροειδῶν φυλῶν κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος, Ἀράβων καὶ Φούλα. Τὸ ἔδαφος αὐτοῦ εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον πεδινόν, σχηματίζον κορυφὰς οὐχὶ ὑψηλοτέρας τῶν 1000 μ., ἐλάχισται ὅμως περὶ αὐτοῦ πληροφορίαι εἶναι γνωσταί, λόγῳ τοῦ ὅτι δὲν ἔχει λεπτομερῶς ἐξερευνηθῆ.

Τῷ 1873 ἦτο ὑποτελὲς εἰς τὸ Οὐανταῒ καὶ εἶχε πρωτεύουσαν τὴν *Μασσέννα*. Κατὰ τὴν μεταξὺ Γερμανίας καὶ Γαλλίας συμφωνίαν τοῦ 1894, τὸ Μπαγκίρμι περιελήφθη εἰς τὴν ζώνην τῆς γαλλικῆς ἐπιρροῆς. Ἀπὸ τοῦ προηγουμένου ὅμως ἔτους ἡ χώρα εἶχεν ἐμπλακῆ εἰς πόλεμον πρὸς τὸν περιώνυμον φύλαρχον Ραμπά, ὅστις κατώρθωσε νὰ ἐκδιώξῃ τὸν σουλτᾶνον τοῦ Μπαγκίρμι Γκαουράνγκ καὶ νὰ καταλάβῃ τὴν ἀρχήν. Ὁ πόλεμος ἐξηκολούθησε μέχρι τοῦ 1900, λήξας μόνον κατόπιν τῆς ἐνεργοῦ ἐπεμβάσεως τῶν Γάλλων καὶ τοῦ φόνου τοῦ Ραμπὰ ἔν τινι μάχῃ παρὰ τὸ Κουσρί. Οἱ Γάλλοι ἐπανέφερον εἰς τὸν θρόνον τὸν παλαιὸν σουλτᾶνον καὶ κατέστησαν τὴν χώραν προτεκτορᾶτον. Χ. Δ.

**Μπαγκλὰν** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς (Γεωργίας) τοῦ Εὐξείνου πόντου (πλάτ. 42°47′ Β., μῆκ. 41°19′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2235: Fort Anakria to Kertch strait), 71 μίλλ. Β.ΒΔ. τοῦ Βατούμ. Ἡ ὑπὸ τῶν Γεωργιανῶν ὀνομασία του *Ἰσκουριά*, πείθει περὶ τῆς ταυτότητός του πρὸς τὴν *Διοσκουριάδα ἄκραν* τοῦ Πτολεμαίου καὶ τοῦ Ἀρριανοῦ. Σ. Ε. Λ.

**μπάγκος** (ὁ), καὶ *πάγκος*, καὶ *μάγκος*· δημοτ., ἕδρανον, θρανίον: «ἐκάθητο 'ς ἕνα μπάγκο τοῦ Ζαππείου», «ξύλινος —, σιδερένιος μπάγκος» || τὸ ξύλινον κατασκεύασμα, ἐπὶ τοῦ ὁποίου στηρίζουν τὰ κατασκευαζόμενα οἱ ξυλουργοὶ ἢ ἄλλοι τεχνῖται, ἀρχ. *τηλία*: «ὁ μπάγκος τοῦ ξυλουργοῦ, — τοῦ ἀρτοποιοῦ, — τοῦ φαρμακοποιοῦ κττ.» || χαρτοπαικτικῶς, τὸ χρηματικὸν κεφάλαιον, τὸ ὁποῖον καταθέτει ὁ μπαγκέρης, ὁ καθ' οὗ στρέφονται οἱ λοιποὶ παῖκται || ναυτ., κοινὴ ὀνομασία: —1) Ἑκάστου τῶν σελμάτων τῆς λέμβου. —2) Τοῦ παρασκευαστηρίου τοῦ Ναυστάθμου.

**μπάγκος** *[Ὠκεανογρ.]*. Ἔξαρσις τοῦ βυθοῦ τῆς θαλάσσης, ἀνεξαρτήτως τῆς ποιοτικῆς αὐτοῦ συστάσεως, παρουσιάζουσα τὴν ἄνω αὐτῆς ἐπιφάνειαν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλην, ἐπικίνδυνον δὲ εἰς τὰ πλοῖα. Μερικὴ περίπτωσις τοῦ μπάγκου, ὀνομαζομένου ἄλλως καὶ *στήθους*, εἶναι ἡ *ὕφαλος*, ἡ ὁποία δύναται ν' ἀποφύεται καὶ ἀπὸ μπάγκου. Κ. Χ. Κ.

**Μπαγκὸτ** (Bagot) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς ἐπαρχίας Κεμπὲκ τοῦ Καναδᾶ, περιλαμβάνουσα τὸ τμῆμα τὸ περιλαμβανόμενον μεταξὺ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου καὶ τῶν συνόρων τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἔχει εὐφόρους ἐκτάσεις, ὁ δὲ πλοῦτος τοῦ ὑπεδάφους της εἶναι μέγας. Ἔχει μεταλλεῖα κασσιτέρου. Ἐμβ. 861 τετρ. χλμ. Πρωτεύουσα *Σαὶν Λιμπονάρ*.

**Μπαγκρατίδαι.** Ἀρχαία ἀρμενικὴ δυναστεία (βλ. *Βαγρατίδαι*).

**Μπαγκρατουνί, *Ἀρσέν*.** Ἀρμένιος λόγιος, καταγόμενος ἐκ τῆς ἡγεμονικῆς οἰκογενείας τῶν Βαγρατιδῶν. Μαθητὴς τοῦ Μεκιτάρ, ἐν Βενετίᾳ, μετέφρασε μετὰ τοῦ Ἐδουάρδου Χουρμούζ, κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα, εἰς τὴν ἀρμενικὴν τὸν Ὅμηρον, Σοφοκλῆ, Βιργίλιον, Μίλτωνα, Ρακίναν, Βολταῖρον, Ἀλφιέρι κλ. Ν. Μ.

**Μπαγκριάνα, *Ἐλισάβετ-Μπέλτσεβα*.** Σύγχρονος Βουλγαρὶς ποιήτρια. Τῷ 1928 ἐξέδωκε τὴν συλλογὴν «Vetsnata i Svetata». Ἡ ποίησις τῆς Μπαγκριάνα διακρίνεται διὰ τὴν λεπτὴν εὐαισθησίαν καὶ τὸ θερμὸν πάθος της. Τινὰ τῶν ποιημάτων της μετεφράσθησαν εἰς τὴν τσεχικὴν γλῶσσαν. Τ. Β.

**Μπάγκσω** (Bagshaw), ***Χριστόφορος***. Ἄγγλος θεολόγος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1625 ἐν Παρισίοις. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐνδιαφέροντα διὰ τὴν μελέτην τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐν Ἀγγλίᾳ ἐπὶ Ἐλισάβετ καὶ Ἰακώβου Α' καὶ ὑπέστη πολλὰς καταδιώξεις διὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἀσκουμένην προπαγάνδαν ὑπὲρ τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας ἐν Ἀγγλίᾳ. Μ. Δ. Β.

**μπαγκυΐος**, ἢ *βαγκύιος* (Baguios ἢ Vaguios). Καλοῦνται οὕτω εἰς τὰς Φιλιππίνας νήσους οἱ τροπικοὶ *κυκλῶνες* (βλ. λ.). Θ. Θ. Φ.

**Μπαγκώη**, ἢ ***Μπεγκώη***, ἢ ***Μπυγκωΐς*** *[Ἀρχ.]*. Νύμφη καὶ προφῆτις, διδάξασα ἢ κατ' ἄλλους διδαχθεῖσα ὑπὸ τῶν Ἐτρούσκων τὴν τέχνην τοῦ προλέγειν τὰ μέλλοντα διὰ τῆς παρατηρήσεως τοῦ κεραυνοῦ καὶ τῶν ἀστραπῶν. Ἴσως εἶναι ἡ Σίβυλλα *Ἐρυθραία* ἢ ἡ *Ἐρωφίλη*. —Ω.

**Μπαγλὰρ-*Ἀλτοὺν*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Βουλγαρίας κατὰ τὰ νότια τοῦ κόλπου τοῦ Πύργου πρόσγεια (πλάτ. 42°20′ Β., μῆκ. 27°50′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2230: Bosporus to cape Kaliacra). Ὑπὸ τῶν ἐκεῖ ναυτικῶν μας ἐκαλεῖτο *Κάβο Κόρακας*, εἶναι δὲ ἡ *Χερρόνησος* τοῦ Ἀρριανοῦ (Περίπλ. Εὐξ. 36). Σ. Ε. Λ.

**μπαγλάρωμα** (τό)· δέσιμο || ξύλισμα, ξυλοφόρτωμα, καρπάζωμα.

**μπαγλαρώνω**· ἰδιωματ., δένω καλῶς, ἐξασφαλίζω μὲ τὸ δέσιμο: «δέσ' το καὶ μπαγλάρωσ' το» || δέρω, ξυλοφορτώνω, κατραπακιάζω.

**μπαγξάνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ῥοδῆ ἢ βαγξιανή*.

**Μπαγτσὲ-*καπουσοῦ*** (τουρκ.=πύλη τοῦ κήπου). Τετάρτη τῶν ἀπὸ τῆς ἀκροπόλεως τοῦ Βυζαντίου πρὸς τὸν κόλπον πυλῶν τῶν τειχῶν, ἡ *Πύλη τοῦ Νεωρίου*, ἢ *Ὡραία Πύλη* τῶν Βυζαντινῶν, οὕτως ἐπονομασθεῖσα ἀπὸ τοῦ πλησίον αὐτῆς νεωρίου ἢ λιμένος, τὸν ὁποῖον πρῶτος συνέχωσεν ὁ Κωνσταντῖνος καὶ μετέτρεψεν εἰς θαλασσίαν ἀγοράν, τὴν ὁποίαν μετὰ ταῦτα ὁ Ἰουλιανὸς μετέφερεν εἰς τὸν Ἰουλιανοῦ λιμένα ἢ τὸ ἔξω Νεώριον. Βραδύτερον ὁ χῶρος ἐκαθαρίσθη, ἀλλὰ μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων συνεχώσθη ἐκ νέου, ὅπως ἐπεκταθῇ ὁ περίβολος τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων, ἐξ οὗ καὶ τὸ τουρκικὸν ὄνομα τῆς πύλης. Σήμερον οὔτε κῆπος ὑπάρχει οὔτε πύλη. Ἐκ τοῦ χώρου ἐκείνου διήκει μία τῶν εὐρυτέρων λεωφόρων τῆς πόλεως μὲ ὡραῖα ἐμπορικὰ καταστήματα. Ν. Μ.

**Μπαγτσὲ-σαράϊ** *[Γεωγρ.]*. Ἡ μεγαλυτέρα πόλις τῆς Κριμαίας, ἄλλοτε καθέδρα τῶν χάνων τῆς Κριμαίας, εἰς ἀπόστασιν 30 χλμ. Β. τῆς Σεβαστουπόλεως. Κάτ. 14.000 περίπου, Τάταροι, Ἑβραῖοι, Ἀρμένιοι καί τινες Ρῶσοι. Τὸ μέγαρον τῶν χάνων σῴζεται ἀκόμη. Ν. Μ.

**μπαγτσές**· βλ. *μπαξές*.

**Μπαγὺ** (Bailly). Γάλλος φιλέλλην ἰατρός, ὅστις διαμένων ἐν Παρισίοις εἰργάζετο πρὸς εὐόδωσιν τοῦ ἑλληνικοῦ Ἀγῶνος. Τ. Ε. Ε.

**Μπαγὺ** (Bailly), ***Ἀντώνιος - Νικόλαος - Λουδοβῖκος***. Διακεκριμένος Γάλλος ἀρχιτέκτων (1810—1892). Μετέσχε τῶν ἐργασιῶν τῆς ἀνακαινίσεως τοῦ δημαρχείου τῶν Παρισίων καὶ τῆς ἀνεγέρσεως της κρήνης τοῦ Μολιέρου. Ταξιδεύσας μετέπειτα εἰς Ἰταλίαν, πρὸς πληρεστέραν ἐκπαίδευσιν, ἐξετέλεσε μετὰ τὴν ἐπάνοδόν του πολλὰ σημαντικὰ ἀρχιτεκτονικὰ ἔργα, τόσον ἐν τῇ πρωτευούσῃ ὅσον καὶ εἰς διαφόρους ἐπαρχιακὰς πόλεις τῆς Γαλλίας. Μεταξὺ τῶν ἄλλων ἀξιολογώτερα θεωροῦνται ἡ μεγέθυνσις τοῦ λυκείου τοῦ Ἁγίου Λουδοβίκου ἐπὶ τῆς λεωφόρου Σαὶν-Μισέλ, ἡ οἰκοδόμησις τοῦ δημαρχείου τοῦ δ' διαμερίσματος τῶν Παρισίων, ἡ κατασκευὴ της ἐξέδρας τοῦ ἱπποδρόμου τοῦ Λονσάν, ἡ ἀνακαίνισις τῶν καθεδρικῶν ναῶν τῆς Βαλάνς, τοῦ Μπούρζ, τῆς Λιμὸζ κ. ἄ. Ἐγένετο ἐπίτιμος γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἀρχιτεκτονικῆς, πρόεδρος κατ' ἐπανάληψιν τῆς ἑταιρείας τῶν Γάλλων ἀρχιτεκτόνων, ὡς καὶ τῆς τῶν Γάλλων καλλιτεχνῶν καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. —Ω.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Βενσὰν ντὲ Πώλ***. Γάλλος κληρικὸς καὶ δημοσιογράφος (1832—1912). Ἀπὸ τοῦ 1852 ὑπηρέτει ὡς τηλεγραφικὸς ὑπάλληλος, μόλις δὲ εἰς ἡλικίαν 28 ἐτῶν περιεβλήθη τὸ μοναχικὸν σχῆμα τοῦ τάγματος τῶν «ἀσσομπσιοννιστῶν». Τῷ 1870 εἶναι στρατιωτικὸς ἱερεὺς τῶν ζουάβων εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Μέτς, μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ ὁποίου συνοδεύει εἰς Μαγιὰνς τοὺς Γάλλους αἰχμαλώτους. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἀφωσιώθη εἰς διάφορα κοινωνικὰ ἔργα, ἰδίως εἰς τὴν διοργάνωσιν ἐθνικῶν προσκυνημάτων εἰς Λούρδην, Ρώμην καὶ Ἱερουσαλήμ. Αἱ γαλλικαὶ ἐξ ἄλλου ἀποστολικαὶ ὀργανώσεις τῆς Ἀνατολῆς καὶ τῆς Παλαιστίνης ὀφείλουν πολλὰ εἰς τὴν ἀκαταπόνητον δραστηριότητα καὶ τὸν θερμὸν καθολικὸν ζῆλόν του.

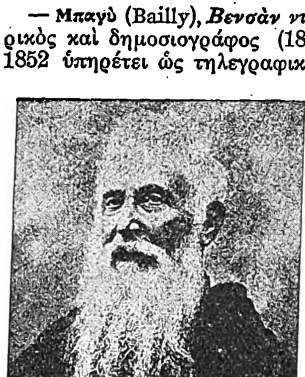

*Βενσὰν ντὲ Πὼλ-Μπαγύ.*

Ἀπὸ τοῦ 1874 ὁ πατὴρ Μπαγὺ ἀφωσιώθη ὁλοκληρωτικῶς εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, ἱδρύσας ἐν ἀρχῇ τὸν «Προσκυνητήν», ἑβδομαδιαῖον εἰκονογραφημένον περιοδικόν, τοῦ ὁποίου πολλὴ ὑπῆρξεν ἡ ἐπιτυχία. Κατόπιν ἐγένετο ἀρχισυντάκτης τοῦ «Σταυροῦ», τοῦ ἰσχυροτέρου τῶν ἐν Γαλλίᾳ καθη-

Digitized by Google

λικῶν δημοσιογραφικῶν ὀργάνων. Ἡ ἐφημερὶς αὐτή, ἐν τῇ ὁποίᾳ ὁ Μπαγὺ ἐδημοσίευε, καθ' ἑκάστην σχεδόν, σύντομα μὲν ἀλλὰ νευρώδη καὶ σοβαρὰ ἄρθρα, ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς ὅλας τὰς διαμάχας τὰς προηγηθείσας τῆς ἀναθεωρήσεως τῆς δίκης τοῦ Δρεϋφοὺς καὶ τῆς ψηφίσεως τοῦ νόμου περὶ μοναχικῶν ταγμάτων. Ἡ πολεμική του ὑπῆρξεν ἔντονος καὶ ἐπιθετικὴ τόσον κατὰ τῶν δεδηλωμένων ἐχθρῶν τοῦ καθολικισμοῦ, ὅσον καὶ τῶν κατὰ τὴν γνώμην του χλιαρῶν αὐτοῦ φίλων. Μετὰ τὴν ψήφισιν τοῦ νόμου ἡ ἀδιάλλακτος ἀρθρογραφία τοῦ «Σταυροῦ» ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς δικαστικὰς διώξεις ἐναντίον τῶν μελῶν τοῦ τάγματος τῶν «ἀσσομπσιονιστῶν», ἐπὶ τῇ κατηγορίᾳ ὅτι δὲν συνεμορφώθησαν μὲ τὸ διάταγμα τῆς διαλύσεως, ἐκ τούτου δὲ ἠναγκάσθη ὁ πάπας, διὰ νὰ δώσῃ τέρμα εἰς τὰς ἔριδας ἐκείνας, αἵτινες ἔθετον εἰς κίνδυνον τὸ μέλλον τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας ἐν Γαλλίᾳ, ν' ἀναθέσῃ εἰς ἄλλον τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐφημερίδος. Ὁ γηραιὸς μοναχὸς ἀπεσύρθη ἔκτοτε εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον καὶ παρέμεινεν ἔξω πάσης ἐνεργοῦ δράσεως μέχρι τοῦ θανάτου του. Γ. Ζ.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Δαβίδ***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1584—1661). Ἔζησεν εἰς Λούγδουνον, ὅπου ὁ πατήρ του, ζωγράφος καὶ οὗτος, εἶχεν ἐγκατασταθῇ ἀπὸ τοῦ 1577. Ἐφημίσθη ὡς προσωπογράφος, ἀναφέρονται δὲ ἰδιαιτέρως ἐκ τῶν πορτραίτων του ἓν τοῦ ἄρχοντος Jean Sixe (ἐκτελεσθὲν τῷ 1642) καὶ ἓν ἄλλο γυναικὸς (1626), εὑρισκόμενον εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Ἀμστελλοδάμου. Ἡ ἐκτέλεσις αὐτῶν εἶναι ἄψογος, ἀλλ' ἐστερημένη ἀνωτέρας πνοῆς. Ὁ ἴδιος ἐξετέλεσε χαλκογραφίας τινῶν ἐκ τῶν προτραίτων του. —Ω.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος χαράκτης καὶ ζωγράφος (1629—1679). Διεκρίθη ἰδίως ὡς ζωγράφος καρπῶν, ἀνθέων καὶ διακοσμητικῶν μικρογραφιῶν. Κατὰ τὴν ἐκλογήν του ὡς ἀκαδημαϊκοῦ (1663) ὑπέβαλεν ὡς ἔργον ὑποψηφιότητος μίαν μικρογραφίαν ὕψους 2 ἑκατοστῶν μόνον. Μετ' ἐπιτυχίας ἐπεδίδετο ἐπίσης εἰς τὴν χαρακτικήν. Πνεῦμα περίεργον καὶ ἐρευνητικόν, ὁ Ἰάκωβος Μπαγὺ εἶχεν ἐπινοήσει πολλὰς μεθόδους, δι' ὧν ἐπετυγχάνετο ἡ διαπότισις καὶ τοῦ σκληροτέρου μαρμάρου ὑπὸ τῶν χρωμάτων, καθὼς ἐπίσης καὶ ἡ σταθεροποίησις αὐτῶν ἐπὶ τῶν ὑφασμάτων. Φαίνεται δὲ ὅτι ὁ θάνατός του ὑπῆρξε συνέπεια συναφῶν χημικῶν ἐρευνῶν του, καθ' ἃς ἐδηλητηριάσθη ἐκ τῶν ἀτμῶν μιᾶς χημικῆς του συνθέσεως. —Ω.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Ἰωάννης-Συλβαίν***. Γάλλος ἀστρονόμος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1736 καὶ ἀποθανὼν ἐπὶ τῆς λαιμητόμου τῷ 1793. Υἱὸς τοῦ Ἰακώβου Μπαγύ, διευθυντοῦ τῆς βασιλικῆς πινακοθήκης, προωρίζετο ὑπὸ τοῦ πατρός του διὰ τὴν ζωγραφικήν, τὴν ὁποίαν ὅμως ταχέως ἐγκατέλιπε, διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς φιλολογικὰς μελέτας. Εἰς ἡλικίαν δεκαέξ ἐτῶν εἶχεν ἤδη γράψει δύο τραγῳδίας· ὅταν ὅμως ἐζήτησεν ἐπ' αὐτῶν τὴν γνώμην τοῦ ἠθοποιοῦ Λανού, ὁ τελευταῖος οὗτος ἔρριψεν ἀνενδοιάστως τὰ χειρόγραφα, ὡς ἀνάξια λόγου, εἰς τὸ πῦρ τῆς θερμάστρας. Ὁ νεαρὸς Μπαγὺ ἐτράπη ἔκτοτε πρὸς τὴν πραγματικήν κλίσιν του, τὴν ἀστρονομίαν. Τῷ 1760 ἐξετέλεσεν ἐπιτυχεῖς παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς τροχιᾶς τοῦ πλανήτου Ἄρεως, καθὼς ἐπίσης καὶ τὸ ἐπόμενον ἔτος, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Λακάϊγ, ἐπὶ τῆς διαβάσεως τῆς Ἀφροδίτης πρὸ τοῦ ἡλίου. Ἀπὸ τοῦ 1763 ἤρχισε τὰς ἐρεύνας του ἐπὶ τῶν δορυφόρων τοῦ Διός, ὧν τ' ἀποτελέσματα ἀνεκοίνωσε τῷ 1771. Ἐν τῷ μεταξὺ ἠσχολεῖτο εἰς τὴν συγγραφὴν ἐκτεταμένου ἔργου περὶ τῆς ἱστορίας τῆς ἀστρονομίας, τοῦ ὁποίου τὸ πρῶτον μέρος («Ἱστορία τῆς ἀστρονομίας ἐν τῇ ἀρχαιότητι») ἐξέδωκε τῷ 1775. Ὁ μέγας Ἀραγὼ ἐχαρακτήρισε τὸ σύγγραμμα τοῦτο ὡς ἀξιοθαύμαστον. Μετὰ τέσσαρα ἔτη ἐδημοσίευσε τὸ δεύτερον αὐτοῦ μέρος («Ἱστορία τῆς συγχρόνου ἀστρονομίας» 1779) καὶ βραδύτερον τὸ τρίτον («Ἱστορία τῆς ἰνδικῆς ἀστρονομίας», 1789). Ἀπὸ τοῦ 1763 ὁ Μπαγὺ εἶχεν εἰσέλθει εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Ἐπιστημῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1783 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ὑπὸ τὴν τελευταίαν του ταύτην ἰδιότητα ἐνετάλη ὑπὸ τοῦ βασιλέως νὰ μελετήσῃ, μετ' ἄλλων ἐπιστημόνων, τὸν τόσας συζητήσεις προκαλοῦντα τότε «μεσμερισμόν», περίφημος δ' ἀπέμεινεν ἡ ἐπὶ τῆς ἐρεύνης ταύτης συνταχθεῖσα ἔκθεσίς του, εἰς τὴν ὁποίαν μετ' ἀδιασείστου εὐθυκρισίας ἀπεκάλυψε τὸν τσαρλατανισμὸν τοῦ Μέσμερ καὶ τὴν ἀπλοϊκότητα τῶν θαυμαστῶν του, ὧν πολλοὶ ἐκ τῶν πλέον διακεκριμένων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Παρεκτὸς τοῦ προαναφερθέντος μεγάλου ἔργου του, ἔγραψεν ἐπίσης τὰ ἑξῆς ἐπιστημονικὰ συγγράμματα: «Συλλογὴ παρατηρήσεων ἐπὶ τῆς σελήνης» (1763), «Ἔρευναι ἐπὶ τῶν ζῳδιακῶν ἀστέρων» (1764), «Οἱ δορυφόροι τοῦ Διός, μετὰ πίνακος τῶν κινήσεών των» (1766), «Ἐπιστολαὶ ἐπὶ τῶν ἀρχῶν τῆς ἐπιστήμης» (1777), «Ἐπιστολαὶ ἐπὶ τῆς Ἀτλαντίδος τοῦ Πλάτωνος» (1779).

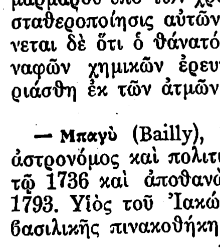

*Ἰωάννης-Συλβαὶν Μπαγύ.*

Ὅταν ἐξερράγη ἡ Γαλλικὴ Ἐπανάστασις, ὁ Μπαγὺ ἔχαιρε μεγάλης φήμης καὶ ἀπεριορίστου ἐκτιμήσεως. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1789 ἐξελέγη πρῶτος βουλευτὴς Παρισίων, ἐγένετο δὲ πρόεδρος τῆς συνόδου τῶν γενικῶν συμβουλίων. Ἡ εὐγλωττία του καὶ ἡ ἀξιοπρεπὴς καὶ σταθερὰ στάσις του κατὰ τὰς κρισίμους ἡμέρας τῆς 17ης—23ης Ἰουνίου τὸν ἔκαμαν νὰ διακριθῇ τάχιστα ἐν τῇ συνελεύσει, ἥτις διὰ βοῆς τὸν ἐξέλεξε δήμαρχον Παρισίων τὸν ἑπόμενον μῆνα. Δεχθεὶς ὑπὸ τὴν ἰδιότητα του ταύτην τὴν ἐπίσκεψιν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' εἰς τὸ δημαρχεῖον, ἀπηύθυνε πρὸς αὐτὸν τὴν περίφημον ἀπομείνασαν φράσιν: «Ὁ Ἑρρῖκος Δ' ἀνέκτησε τὸν λαόν του, σήμερον ὁ λαὸς ἀνακτᾷ τὸν βασιλέα του». Ἡ δημοτικότης του ἦτο τότε τεραστία, δὲν διήρκεσεν ὅμως ἐπὶ μακρόν, λόγῳ τῆς ἀφοσιώσεώς του εἰς τὰς αὐστηρῶς συνταγματικὰς ἀρχάς. Ὅταν οἱ ἐν τῷ πεδίῳ τοῦ Ἄρεως συγκεντρωθέντες διαδηλωταὶ (17 Ἰουλίου 1791) ἐζήτησαν τὴν ἔκπτωσιν τοῦ βασιλέως, ὁ Μπαγὺ δὲν ἐδίστασε νὰ διατάξῃ τὴν φρουρὰν νὰ πυροβολήσῃ ἐναντίον των. Ἀπολέσας ἐκ τούτου τὴν δημοτικότητά του, ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ καὶ ν' ἀποσυρθῇ εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον, βραδύτερον δὲ συλληφθεὶς (Ἰούλιος 1793) ἤχθη πρὸ τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἀντεμετώπισε τὴν λαιμητόμον μετὰ θαυμαστοῦ θάρρους, διηγοῦντο δὲ συναφῶς τὸ ἑξῆς χαρακτηριστικὸν ἀνέκδοτον. Τὸ ψῦχος κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς θανατικῆς του ἐκτελέσεως ἦτο δριμύτατον, αἱ δὲ δι' αὐτὴν προπαρασκευαὶ παρετείνοντο ἐπὶ πολλὴν ὥραν. Ὁ Μπαγὺ ἐθεάθη τότε ριγῶν, εἷς δὲ ἐκ τῶν παρισταμένων του ἐφώναξε: «Τρέμεις, Μπαγύ;». «Ναὶ φίλε μου,—ἀπήντησεν ἐκεῖνος,—ἀλλ' ἀπὸ τὸ κρύο μόνον».

Ὁ Ἀραγὼ ἔγραψεν «Ἐγκώμιον τοῦ Μπαγύ», περιλαμβανόμενον εἰς τὸν δεύτερον τόμον τῶν ἔργων αὐτοῦ (1844), ἀνδριὰς δὲ τούτου ἐκ χαλκοῦ, ἐκ τῶν καλλίστων ἔργων τοῦ Ὠμπέ, εὑρίσκεται ἀπὸ τοῦ 1883 ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λουξεμβούργου. Τὰ ἀπομνημονεύματα τοῦ πολιτικοῦ του βίου ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1801 ὑπὸ τὸν τίτλον «Mémoire d' un temoin de la Révolution». Γ. Ζ.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Κάρολος-Φραγκῖσκος*** — *ντὲ Μερλιὲ* (Merlieux). Γάλλος φυσικομαθηματικός, γεννηθεὶς τῷ 1800. Ἔγραψεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπαμπινέ, συνοπτικὰ ἔργα ἀστρονομίας, βοτανικῆς, φυσικῆς καὶ γεωργίας. Ἐξέδωκε δ' ἐπίσης δύο τόμους προχείρου ἐγκυκλοπαιδείας («Encyclopédie portative» καὶ «Mémorial encyclopédique»).

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Φραγκῖσκος-Ἀνατόλιος***. Γάλλος φιλόλογος (1833—1911). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ λύκειον τῆς Ὀρλεάνης καὶ τὸ ἰνστιτοῦτον Φαβὰρ τῶν Παρισίων, εἶτα δὲ ἐνεγράφη εἰς τὴν «École normale supérieure» (1853). Τῷ 1889 ἐξελέγη ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του γνωστότερα εἶναι: «Ἑλληνογαλλικὸν λεξικόν» (1894), «Ἐγχειρίδιον πρὸς σπουδὴν τῶν ἑλληνικῶν καὶ λατινικῶν ριζῶν» (1867), «Ἑλληνικὴ γραμματική» (1872), κ. ἄ. Ἐπίσης συνειργάσθη εἰς τὰς «Mots latins» καὶ τὰς «Mots grecs» τοῦ Μπρεὰλ καὶ ἔγραψε «Σημείωμα περὶ τοῦ Αἰμιλίου Ἔγκερ» (1886). Τὸ λεξικόν του εἶναι τὸ ἄριστον τῶν ἔργων τοῦ Μπαγύ, περιλαμβάνον ἐπὶ πλέον καὶ πάντας τοὺς τύπους τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης τοὺς ἀπαντῶντας εἰς ἐπιγραφὰς καὶ γνήσια χειρόγραφα. Χ. Δ.

— **Μπαγὺ** (Bailly), ***Φραγκῖσκος - Γεδεὼν*** —, *κόμης τοῦ Μοντιὸν* (Monthion). Γάλλος στρατηγὸς (1776—1846). Μετασχὼν ὅλων τῶν ἐπὶ ἐπαναστάσεως καὶ αὐτοκρατορίας ναπολεοντείων πολέμων, ἔλαβε τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου ἐν Ἀούστερλιτς καὶ τοῦ στρατηγοῦ τῷ 1812. Κατὰ τὴν μάχην τοῦ Βατερλὼ ἐτραυματίσθη ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΗ' ἐτέθη εἰς ἀποστρατείαν, παρέμεινε δὲ ἐκτὸς ὑπηρεσίας μέχρι τοῦ 1835, ὁπότε ὁ Λουδοβῖκος - Φίλιππος τῷ ἀνέθηκε καθήκοντα γενικοῦ ἐπιθεωρητοῦ τοῦ πεζικοῦ. Τῷ 1837 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ὁμοτίμου, τῷ δὲ 1843 τὸν μεγαλόσταυρον τοῦ Λεγεῶνος τῆς τιμῆς.—Ω.

**Μπαδιὰ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πάρτηρα τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 59. Ε. Γ.

**Μπαέθα** (Baeza) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Χαέν, παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Γκουανταλκιβίρ. Κάτ. 15.326. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν, οἴνου, ἐλαίου καὶ κατεργασίας δερμάτων. Ἔχει ἱερατικὴν σχολὴν καὶ ὡραῖον κτήριον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐλειτούργει ἄλλοτε πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1533 καὶ ἀνταγωνιζόμενον τὸ τῆς Σαλαμάνκας. Ἡ πόλις εἶναι ἀρχαιοτάτη, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πλινίου ὡς Vivatia καὶ ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου ὡς Biatra. Καταχτηθεῖσα ὑπὸ τῶν Γότθων, ὠνομάσθη Viatiensis ἢ Biatiensis καὶ ὑπὸ τῶν Ἀράβων Biesa, ἐξ οὗ προέκυψε τὸ σημερινὸν ὄνομα. Ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ἐκαλεῖτο *Βαῖτις*. Μέχρι τοῦ 1927 ἦτο ἕδρα Ἀράβων χαλιφῶν καὶ βασιλέων, πολλάκις καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Χριστιανῶν καὶ ἀνακαταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Ἀράβων. Μ. Δ. Β.

**Μπάελε** (Baele). Φυλὴ τοῦ Ἀνατολικοῦ Σουδάν, ἐγκατεστημένη ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Ἐννεντί. Οἱ Μπάελε εἶναι ὑψηλοὶ καὶ εὔσωμοι, ἀσχολοῦνται δὲ μὲ τὴν κτηνοτροφίαν. Προσηλυτίσθησαν εἰς τὸν Μωαμεθανισμόν, ἀλλὰ δὲν ἀπέβαλον τὰς εἰδωλολατρικὰς παραδόσεις των. Π. Γ. Λ.

**Μπαένα** (Baena) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Κορδούης, ΝΑ. τῆς πόλεως ταύτης. Κάτ. 18.361. Παράγει σιτηρά, οἶνον, ἔλαιον καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα καὶ ἔχει βιομηχανίαν δερμάτων καὶ σάπωνος. Μέχρι τῷ 1239 κατείχετο ὑπὸ τῶν Ἀράβων. Ἐν αὐτῇ ἐφονεύθη τῷ 1361 ὁ Ἄραψ βασιλεὺς τῆς Γρενάδας ὑπὸ Πέτρου τοῦ Σκληροῦ. Μ. Δ. Β.

**Μπαεπέντυ** (Baependy) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Μίνας-Γκεράες. Κάτ. 9.000. Ἔχει βιομηχανίαν ἀλλάντων, ὧν γίνεται ἐξαγωγή. Παρ' αὐτὴν εὑρίσκονται ἰαματικαὶ πηγαί. Π. Γ. Λ.

**Μπαὲς** (Baez), ***Μποναβεντούρα***. Πολιτικὸς τῆς δημοκρατίας τοῦ Ἁγίου Δομίγγου (1830—1884). Ἦτο μιγὰς ἐξ ἰθαγενῶν τῆς Ἀϊτῆς καὶ ἀπὸ ἁπλοῦς ξυλέμπορος ἐγένετο πρόεδρος τῆς δημοκρατίας. Ἀνατραπεὶς καὶ ἐπανεκλεγεὶς πολλάκις, διετήρησε τὸ ἀξίωμά του μέχρι τοῦ 1873, ὅτε ἀνετράπη ὁριστικῶς, ὡς ἐπιχειρήσας νὰ προσαρτήσῃ τὴν Ἀϊτὴν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Β. Ἀμερικῆς. Ἐξορισθεὶς κατόπιν, ἐπεχείρησε πολλάκις νὰ καταλάβῃ τὴν ἀρχὴν διὰ συνωμοσιῶν. Μ. Δ. Β.

**μπάζα** (ἡ)· δημοτ. χαρτοπαικτικῶς, λῆμμα, ἄλλως *χαρτωσιά*: «πόσες μπάζες ἔκαμες;» || μεταφ., πᾶν ὅ,τι λαμβάνει τις, κέρδος: «ἔκανε μιὰ μπάζα καλή» (Ἰταλ. bazza).

**Μπαζαὶν** (Bazain), ***Ἀχιλλεὺς-Φραγκῖσκος***. Γάλλος στρατάρχης (1811—1888). Υἱὸς ἀξιωματικοῦ κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν τῷ 1831 ὡς ἁπλοῦς στρατιώτης καὶ ἀπῆλθεν εἰς Ἀλγερίαν, τοποθετηθεὶς εἰς τὴν λεγεῶνα τῶν ξένων, τῷ δὲ 1833 προήχθη εἰς ἀνθυπολοχαγὸν καὶ μετά τινας μῆνας εἰς ὑπολοχαγόν. Τῷ 1839 ἀπεστάλη εἰς Μαρόκον, ὅπου διεκρίθη εἰς διαφόρους μάχας καὶ ἐγένετο διοικητὴς τῆς λεγεῶνος τῶν ξένων, τῷ δὲ 1850 προήχθη εἰς συνταγματάρχην καὶ μετὰ τέσσαρα ἔτη ἔλαβε τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου. Ἐκραγέντος τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου ἀπεστάλη εἰς Κριμαίαν ὡς στρατηγὸς μεραρχίας (1855), ἐπεφορτίσθη δὲ αὐτὸς τὴν κατάληψιν τοῦ φρουρίου Κιμπούρνα, ὅπερ μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἐκυρίευσε. Κατόπιν ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς Σεβαστουπόλεως, ὅταν περιῆλθεν αὕτη εἰς τὰς χεῖρας τῶν συμμάχων. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας ὡς ἀρχηγὸς μεραρχίας διέπρεψεν εἰς τὰς μάχας τοῦ Μελενιάνο καὶ τοῦ Σολφερῖνο. Τῷ 1862 ἀπεστάλη εἰς Μεξικὸν εἰς στιγμὰς δυσχερεστάτας, ὅτε ἡ Γαλλία, ἀποπλανηθεῖσα ὑπὸ τοῦ διπλωματικοῦ τῆς πράκτορος, ἀνέλαβε τὴν ὑπερωκεάνιον ἐκστρατείαν δι' ἐλαχίστων δυνάμεων. Ὁ Μπαζαὶν διοικῶν τὴν πρώτην μεραρχίαν ἐνίκησεν εἰς Σὰν-Λορέντζο τὸν στρατηγὸν Κομουφὸρντ καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πρωτεύουσαν νικητής. Ἀνακληθέντος κατόπιν τοῦ Γάλλου ἀρχιστρατήγου Forey, ἀνέλαβεν ὁ Μπαζαὶν τὴν γενικὴν ἀρχηγίαν, γενόμενος στρατάρχης. Ἀπώθησε τὸν Ζουάρεζ καὶ ἐσκέπτετο νὰ καταστῇ δικτάτωρ τῆς χώρας, ὅτε ὁ Αὐστριακὸς ἀρχιδοὺξ Μαξιμιλιανός, ἀφιχθεὶς εἰς Μεξικόν, ἀνηγορεύθη ἐπισήμως αὐτοκράτωρ. Ὁ Μπαζαὶν προέβη εἰς μέτρα, τὰ ὁποῖα ἐξῆψαν τὸ ἐθνικὸν φρόνημα τῶν κατοίκων, ἡ δὲ καταφανὴς ἐχθροπάθεια αὐτοῦ κατὰ τοῦ νέου αὐτοκράτορος ἐξήγειρεν ἐναντίον του τὴν κοινὴν γνώμην τῆς Γαλλίας. Ἠναγκάσθη ὡς ἐκ τούτου ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ν' ἀνακαλέσῃ αὐτὸν μετὰ τῶν στρατευμάτων τῆς κατοχῆς. Τὴν 11 Μαρτίου 1866 κατέλιπε τὸ Μεξικὸν καὶ ἐπανέκαμψε μετὰ τῶν στρατευμάτων του εἰς Γαλλίαν, ὑπὸ τὴν δυσμένειαν τῆς κοινῆς γνώμης, ἥτις δὲν τὸν συνεχώρησε καὶ μετὰ τὴν δημοσίευσιν τῆς ἀπολογίας του. Εἰς αὐτὸν δὲ ἀπέδιδε τὸν μετά τινα χρόνον ἐπακολουθήσαντα θάνατον τοῦ αὐτοκράτορος Μαξιμιλιανοῦ. Ἐν τούτοις ὁ Ναπολέων Γ' ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν τῷ 1869 τὴν διοίκησιν τῆς αὐτοκρατορικῆς φρουρᾶς καὶ ἐκραγέντος τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ τρίτου σώματος τοῦ στρατοῦ τοῦ Ρήνου κατὰ τὸν Ἰούλιον τοῦ 1870. Τὸν Αὔγουστον συνηνώθη ὑπὸ τὰ τείχη τοῦ Μὲτζ μετὰ τῶν ἄλλων σωμάτων, τῶν

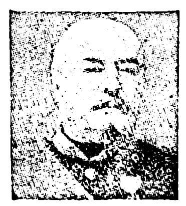

*Ἀχιλλ. Μπαζαίν.*

Digitized by Google

ὁποίων τὴν ἀρχηγίαν ἀνέλαβεν ὁ Μπαζαὶν μετὰ τὴν ὑποχώρησιν τῶν Γάλλων.

Ἡ ἔλλειψις δραστηριότητος ἀπὸ μέρους αὐτοῦ ἐματαίωσε τὴν περαιτέρω ὑποχώρησιν, αἱ δὲ μάχαι τῶν Κρουντέλ, Τιονβὶλ καὶ Γραβελὸτ ἠνάγκασαν αὐτὸν νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Μέτς, ἔνθα ἐγκλεισθεὶς ἐπὶ δύο καὶ πλέον μῆνας παρεδόθη μεθ' ὅλης τῆς φρουρᾶς (βλ. λ. *Μέτς*). Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν τῆς εἰρήνης, κατηγορούμενος ὑπὸ τῆς κοινῆς γνώμης ὡς προδότης, ἤχθη ἐνώπιον στρατοδικείου προεδρευομένου ὑπὸ τοῦ δουκὸς ντ' Ὠμὰλ ὡς συνθηκολογήσας μετὰ τοῦ ἐχθροῦ, χωρὶς νὰ πράξῃ ὅ,τι ἡ τιμὴ καὶ τὸ καθῆκον ὑπηγόρευον. Ἡ κατηγορία τῆς προδοσίας δὲν ἐστηρίχθη σοβαρῶς, ἐν τούτοις τὸ στρατοδικεῖον κατεδίκασεν αὐτὸν παμψηφεὶ εἰς θάνατον καὶ στρατιωτικὴν καθαίρεσιν τὴν 10 Δεκεμβρίου 1873, ἀλλὰ συνέστησε τὴν ἀπονομὴν εἰς αὐτὸν χάριτος. Ὁ πρόεδρος τῆς δημοκρατίας Μὰκ Μαὼν μετέτρεψε τὴν ποινὴν εἰς ἰσόβια δεσμά, ὁ δὲ Μπαζαὶν ἐνεκλείσθη εἰς τὸ ἀπέναντι τῶν Καννῶν φρούριον τῆς Ἁγίας Μαργαρίτας, ὁπόθεν, τὸν Αὔγουστον τοῦ 1874, ἐδραπέτευσε, διευκολυνθεὶς εἰς τοῦτο ὑπὸ τῶν φυλάκων του, καὶ κατέφυγεν εἰς Μαδρίτην, ὅπου ἐγένετο φιλοφρόνως δεκτὸς ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἀλφόνσου ΙΒ'. Ἐνταῦθα ἐδημοσίευσε πρὸς δικαιολογίαν του τὰ βιβλία: «L'armée du Rhin» καὶ «Épisodes de la guerre 1870 et le blocus de Metz». Τῷ 1887 ἐγένετο κατ' αὐτοῦ ἀπόπειρα δολοφονίας. Θ. Β.

**Μπαζάϊρ** (Basire). Διάσημος οἰκογένεια Ἄγγλων χαρακτῶν. Τὰ σημαντικώτερα μέλη ταύτης ὑπῆρξαν οἱ: — 1) ***Ἰσαὰκ*** (1704—1768), διακριθεὶς ἰδίᾳ ὡς χαρτογράφος.— 2) ***Τζέϊμς***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1730—1802), διακριθεὶς εἰς τὴν ἀντιγραφὴν πινάκων τοῦ Ἔντουαρντς, τοῦ Οὐΐλσον καὶ τοῦ Ρέϋνολτς καὶ εἰκονογραφήσας τὰς «Ἀρχαιότητας τῶν Ἀθηνῶν» τοῦ Stwart.— 3) ***Τζέϊμς***, ἐκ τῶν νεωτέρων ἐκπροσώπων τῆς οἰκογενείας (1769 1822), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ι. Μ. Π.

**μπαζαΐτης** (Basaiti), ***Μᾶρκος***. Διάσημος Ἕλλην ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1470 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1525 ἐν Βενετίᾳ. Τὸν Μπαζαΐτην οἱ ἰταλικοὶ ὁδηγοὶ ἐξ ἐπικρατήσεως πλάνης σημειώνουσιν ὁ Δαλματὸν ἢ Ἀλβανόν, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1844 ὁ A. Quadri εἰς τὸ βιβλίον του «Otto giorni a Venezia» ἀναφέρει ὅτι οὗτος κατάγεται ἐξ Ἑλλάδος καὶ θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν διαπρεπεστέρων ἀντιπροσώπων τῆς βενετικῆς σχολῆς. Κατὰ τὸν Κουάντρι ὁ Μπαζαΐτης ἦτο υἱὸς Ἕλληνος καταφυγόντος εἰς Βενετίαν, ἐσπούδασε ζωγραφικὴν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Ἀλβίζε Βιβαρίνι, εἶχε δὲ ὡς συσπουδαστὰς τὸν Μοντάνια, τὸν Μοτσέτο, τὸν Βαλέντζα, τὸν Λόττο κτλ., ἀλλ' οὗτος ὑπῆρξεν ὁ ἄριστος τῶν μαθητῶν τοῦ Βιβαρίνι. Ἀκολουθήσας κατ' ἀρχὰς τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ διδασκάλου του, λίαν ταχέως ἀπέκτησε πλήρη ἀνεξαρτησίαν, ἡ δὲ ἰδιορρυθμία του γοητεύει διὰ τῆς διαφανείας τοῦ χρωματισμοῦ καὶ τῆς κομψότητος τῶν εἰκονιζομένων εἰς τοὺς πίνακάς του προσώπων. Ὁ Μπαζαΐτης ἔγραψεν ἱστορικοὺς πίνακας κυρίως ἐκ τῆς ἱστορίας τοῦ Χριστιανισμοῦ. Τοῦ καλλιτέχνου σῴζονται πλεῖστα ἔργα ἐν Βενετίᾳ καὶ εἰς ναοὺς εὑρισκομένους παρὰ τὴν πόλιν ταύτην. Εἰς τὴν ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν τεχνῶν αὐτῆς ὑπάρχουν δύο πίνακες αὐτοῦ: «La Vocazione all'Apostolato de' figli di Zebedeo» καὶ «Cristo morto». Εἶναι οὗτοι ἐκ τῶν ἀριστουργημάτων τοῦ Ἕλληνος καλλιτέχνου. Εἰς τὴν ἐκκλησίαν τῆς Santa Maria de la Salute εὑρίσκεται ἕτερος πίναξ αὐτοῦ, ὁ «ἅγιος Σεβαστιανός» εἰς δὲ τῆς Santa Maria de' Frari ἡ «Στέψις τῆς Θεοτόκου». Τὸ ἔργον τοῦτο εἶχεν ἀνατεθῆ εἰς τὸν Βιβαρίνι, ἀλλὰ μόλις ἤρξατο αὐτοῦ ἐπῆλθεν ὁ θάνατος τοῦ καλλιτέχνου καὶ οἱ κτίτορες τοῦ ναοῦ ἀνέθεσαν τὴν ἀποπεράτωσιν του εἰς τὸν ἄριστον τῶν μαθητῶν του, ὅστις ὅμως μόνον τὴν ἔμπνευσιν ἔλαβε παρὰ τοῦ διδασκάλου του. Ἐπίσης εἰς τὸν ναὸν τοῦ Πέτρου καὶ Παύλου εἶναι ἀνηρτημένος πίναξ παριστάνων τὴν «Μετάστασιν τῆς Παναγίας», οὗτος δὲ θεωρεῖται ὡς τὸ ἀριστούργημα τοῦ Μπαζαΐτη.

Ἡ Πινακοθήκη τῆς Βιέννης κέκτηται πίνακα παριστάνοντα τοὺς υἱοὺς τοῦ Ζεβεδαίου, τοὺς ἀποστόλους Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην, ἀφήνοντας το ἁλιευτικόν των πλοιάριον καὶ ἀκολουθοῦντας τὸν Ἰησοῦν Χριστόν. Θ. Β.

**Μπαζαναβίτσιους** (Basanavicius), ***Ἰωνᾶς***. Λιθουανὸς πατριώτης (1851—1927). Ὑπῆρξεν ἀπὸ τῆς νεανικῆς του ἡλικίας ἀκούρατος πρωταγωνιστὴς τῆς ἐθνικῆς ἀναγεννήσεως τῶν Λιθουανῶν. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν Μόσχαν φιλοσοφίαν καὶ ἰατρικήν, μεθ' ὃ ἐγκατεστάθη τῷ 1879 ἐν Βουλγαρίᾳ ὡς ἰατρός. Τῷ 1883 μετέβη εἰς Τιλσὶτ καὶ ἐξέδωκεν εἰς λιθουανικὴν τὸ πατριωτικὸν περιοδικὸν «Αὐγή». Ἐπανῆλθεν εἰς Βουλγαρίαν τῷ 1884, καὶ τῷ 1905, κατὰ τὴν ρωσικὴν ἐπανάστασιν, μετέβη εἰς Βίλναν καὶ συνεκάλεσεν ἐθνοσυνέλευσιν, ἥτις διεκήρυξε τὸ δικαίωμα τῆς Λιθουανίας πρὸς αὐτοδιάθεσιν. Ἀποτυχούσης τῆς ἐπαναστάσεως ἐκείνης ἐπανῆλθεν εἰς Βουλγαρίαν. Μετὰ τὸν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον ὑπέγραψε τὴν πρᾶξιν τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Λιθουανίας. Θ. Κ.

**Μπαζανκοὺρ** (Bazancourt), ***Καῖσαρ***, *βαρῶνος ντὲ*—. Γάλλος λόγιος (1810—1865). Διετέλεσεν ἐπὶ Λουδοβίκου - Φιλίππου βιβλιοθηκάριος τῆς βιβλιοθήκης τῆς Κομπιέννης. Ἔγραψεν ἐν ἀρχῇ μυθιστορήματα, ἐν τοῖς ὁποίοις ἠρέσκετο ν' ἀπεικονίζῃ τὰ ἀριστοκρατικὰ ἤθη τῆς ἐποχῆς του: «Εἰς τὸ πλευρὸν τῆς εὐτυχίας» (1845), «Ἡ εὐγένεια ὑποχρεώνει» («Noblesse oblige», 1851), «Ὁ κόμης τοῦ Ριενὺ» (1812) κτλ., ἐπίσης δὲ καὶ «Ἱστορίαν τῆς Σικελίας ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Νορμανδῶν» (1846). Ἀπὸ τοῦ 1855 ἐξέδωκε μίαν σειρὰν ἐπισήμων, οὕτως εἰπεῖν, δημοσιευμάτων: «Πέντε μῆνες εἰς τὸ στρατόπεδον πρὸ τῆς Σεβαστοπόλεως» (1855), «Ἡ ἐκστρατεία τῆς Ἰταλίας τοῦ 1859, χρονικὸν τοῦ πολέμου» (1859—1860), «Ἐκστρατεῖαι τῆς Κίνας καὶ τῆς Κοχιγκίνας» (1861—1862). — Ω.

**«Μπάζαρ»** (Bazaar). Εἰδικὴ ἀγγλικὴ ἐφημερίς, ἐκδιδομένη τρὶς τῆς ἑβδομάδος ἐν Λονδίνῳ, διὰ τὴν δημοσίευσιν ἐμπορικῶν προσφορῶν καὶ ζητήσεων, τὴν ἀγορὰν καὶ πώλησιν μεμονωμένων ἀντικειμένων, προσφερομένων ἢ ζητουμένων παρ' ἰδιωτῶν κτλ. Ἔχει μεγάλην διάδοσιν πανταχοῦ τῆς Ἀγγλίας. Θ. Κ.

**Μπαζὰρ** (Bazar), ***Ἀμάνδος***. Γάλλος σοσιαλιστὴς (1791—1832), μαθητὴς τοῦ Σαὶν Σιμόν. Δημοκρατικῶν ἀνέκαθεν φρονημάτων, ἵδρυσε μετὰ τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων τὴν μυστικὴν ἐπαναστατικὴν ἑταιρείαν τῶν «Φίλων τῆς ἀληθείας». Λόγῳ συμμετοχῆς του εἰς ἀποτυχοῦσαν κατὰ τοῦ καθεστῶτος ἀπόπειραν κατεδικάσθη εἰς θάνατον, ἀλλὰ τυχὼν μετὰ ταῦτα χάριτος ἐστράφη πρὸς τὴν θεωρίαν τοῦ διδασκάλου του, διὰ τὴν διάδοσιν τῆς ὁποίας σπουδαίως συνετέλεσεν ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ Enfantin. Ἡ κατόπιν διχογνωμίας πρὸς τὸν τελευταῖον ἀποχώρησίς του ἐκ τῆς ὁμάδος τῶν ὀπαδῶν τοῦ Σαὶν Σιμὸν ἐπήνεγκε ταχεῖαν παρακμὴν τῆς σχολῆς ταύτης. Εἰς τὸν Μπαζὰρ ὀφείλεται ἡ ἐπιτυχεστέρα ἔκθεσις τῆς θεωρίας τοῦ Σαὶν Σιμὸν διὰ τοῦ ἔργου «Exposition de la doctrine de St. Simon» (1828—1830, 2α ἔκδ. 1834). Α. Α. Τ.

**Μπαζὰρ** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Ἀγκυροβόλιον τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου (πλάτ. 40°56' Β., μῆκ. 38°24' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2236: Cape Yasùn to Fort Anakria), ἀμέσως πρὸς Δ. τῆς χερσονησίδος τῆς Κερασοῦντος. Ὑπὸ τῶν Λαζῶν ὀνομάζεται καὶ *Λουζά*. Σ. Ε. Λ.

**Μπαζάρκιοϊ** [*Γεωγρ.*] βλ. *Παζάρκιοϊ*.

**Μπαζαρτζὶκ** [*Γεωγρ.*] βλ. *Παζαρτζίκ*.

**μπαζάρω** [*Ναυτ.*]. Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτικῶν γλώσσης ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸν ἐπίσημον *φιλῶ* καὶ σημαίνων τὴν ἀδυναμίαν περαιτέρω ἕλξεως τροχίλου πρὸς τρόχιλον, σύσπαστον ἢ πρὸς κεραίαν, λόγῳ τελείας ἐπαφῆς π. χ. «μπαζάρισε ὁ μακαρᾶς τοῦ μαντιζέλου» (=ἐφίλησεν ὁ τρόχιλος τοῦ ἐκφόρου). Σ. Ε. Λ.

**Μπαζάρωφ.** Ψευδώνυμον τοῦ Ρώσου συγγραφέως *Βλαδιμίρου Ἀλεξάντροβιτς Ρούντεφ*, γεννηθέντος τῷ 1874. Ἀπὸ τοῦ 1896 δρῶν μέλος τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος, προσεχώρησε τῷ 1904 εἰς τὴν μπολσεβικικὴν παράταξιν, διετέλεσε δὲ ἀπὸ τοῦ 1905—1907 συνεργάτης νομίμων καὶ παρανόμων μπολσεβικικῶν δημοσιογραφικῶν ὀργάνων. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἀντιδράσεως (μετὰ τὸ 1907) ὁ Μπαζάρωφ ἐγκατέλειψε τὰς τάξεις τῶν μπολσεβίκων, χωρὶς ἐν τούτοις νὰ προσχωρήσῃ εἰς οἱανδήποτε ἄλλην πολιτικὴν παράταξιν. Τὰς φιλοσοφικὰς αὐτοῦ ἀντιλήψεις ἀνέπτυξε τὸ πρῶτον εἰς τὴν πραγματείαν του: «Ἡ μεταφυσικὴ καὶ ἡ αὐτόνομος προσωπικότης» (1904), ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀντιπροσωπεύει κυρίως τὴν φιλοσοφικὴν θέσιν τοῦ Μάχ, Ἀβεναρίου κ. ἄ. ἐμπειριοκρατικῶν, ἀπὸ τῆς ἀπόψεως δὲ ταύτης ἔκρινε τὰς φιλοσοφικὰς καὶ ἠθικὰς ἀπόψεις τοῦ Στρούβε, τοῦ Μπερντιάγιεφ καὶ τῶν ἄλλων λεγομένων «νομίμων μαρξιστῶν». Εἰς τὰς βραδύτερον ἐκδοθείσας πραγματείας του ὁ Μπαζάρωφ, ὑπὸ τὸ πρόσχημα κριτικῆς τῶν ἰδεῶν τοῦ Γ. Πλεχάνωφ, εἰς τὰς ὁποίας ἀποπειρᾶται νὰ ἀντιτάξῃ τὰς ἀπόψεις τοῦ Ἔνγκελς, στρέφεται ἐπίσης κατὰ τοῦ διαλεκτικοῦ ὑλισμοῦ, χαρακτηρίζων αὐτὸν ὡς μεταφυσικὸν ὑλισμόν. Ἡ στάσις του ἀπέναντι τῆς μπολσεβικικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ὀκτωβρίου καὶ τοῦ ἐμφυλίου πολέμου ὑπῆρξε μᾶλλον ἀντίθετος. Κατὰ τὴν διάρκειαν μάλιστα τοῦ ἐμφυλίου πολέμου, εἰς τὴν συλλογὴν τῶν πραγματειῶν του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τοῦ σοσιαλισμοῦ» (1919), ὠνόμασεν ἑαυτὸν «προσήλυτον πατριώτην» καὶ προσεπάθησε νὰ δικαιολογήσῃ τὸν πόλεμον ὡς ἀποτέλεσμα θρησκευτικῶν - μυστικιστικῶν αἰτίων.

Ἀπὸ τοῦ 1922 ὁ Μπαζάρωφ ἀσχολεῖται ἰδίως περὶ τὴν πολιτικὴν οἰκονομίαν, ἐδημοσίευσε δὲ σειρὰν πολυτίμων πραγματειῶν περὶ ἐκδόσεως χαρτονομίσματος, ἐμπορικοῦ ἰσοζυγίου τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως κτλ. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀξιολογώτερα εἶναι: «Ἀναρχικὸς κομμουνισμὸς καὶ μαρξισμὸς» (1906), κριτικὴ τῶν ἀπόψεων τοῦ Κροπότκιν, Ρεκλὺς καὶ ἄλλων ἀναρχικῶν. Ἐπίσης μετὰ τοῦ Ἰ. *Στεπάνωφ-Σκβορτσώφ* ἐξεπόνησε δευτέραν εἰς τὸ ρωσικὸν μετάφρασιν τοῦ «Κεφαλαίου» τοῦ Μὰρξ (1909). Ι. Ι. Ι.

**Μπαζὰς** (Bazas) [*Γεωγρ.*]. Ἱστορικὴ πολίχνη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γιρόνδης, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Μπέβ, παραπόταμον τοῦ Γαρούνα, εἰς ἀπόστασιν 52 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπορντώ. Διεξάγει ἐμπόριον κτηνῶν, οἴνου καὶ ξυλείας. Κάτ. 4.680. Εἶναι τὸ Cossium τῶν Λατίνων, μία τῶν σπουδαιοτέρων πόλεων τῆς ρωμαιογαλατικῆς περιόδου. Ὁ Καρλομάγνος ἵδρυσεν ἐν αὐτῇ πανεπιστήμιον. Βραδύτερον οἱ Νορμανδοὶ κατέστρεψαν αὐτήν, ἀλλ' ἀνανήψασα ἐγένετο θέατρον πολλῶν μαχῶν καὶ σφαγῶν, διαρκούντων τῶν μετὰ τῶν Ἄγγλων πολέμων καὶ τῶν θρησκευτικῶν ἐμφυλίων ἐρίδων. Τῷ 1096 ὁ πάπας Οὐρβανὸς Β' ἐκήρυξεν ἐν Μπαζὰς τὴν πρώτην σταυροφορίαν. Χ. Δ.

**Μπαζέϊγ** (Bazeilles) [*Γεωγρ.*]. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῶν Ἀρδεννῶν, εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σεδάν. Κάτ. 1.350. Ἐν αὐτῇ συνήφθη τὴν 1 Σεπτεμβρίου 1870 σφοδρὰ μάχη μεταξὺ Πρώσσων καὶ Γάλλων, προηγηθεῖσα τῆς καταλήψεως τοῦ Σεδὰν ὑπὸ τῶν Πρώσσων. Χ. Δ.

**Μπάζελ** (Basel) [*Γεωγρ.*]. Γερμανικὴ ὀνομασία τῆς ἑλβετικῆς πόλεως *Βασιλεία* (βλ. λ.).

**Μπαζελίτσε** (Baselice) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἰταλίας, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μπενεβέντο τῆς Καμπανίας. Κάτ. 3.315. Κεῖται ἐπὶ ὑψώματος 620 μ. καὶ εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὰς δύο μεταλλικὰς αὐτῆς πηγάς, τῆς *Σκαλέλλα* μὲ ὕδατα σιδηροῦχα καὶ τῆς *Ἄκουα ντεῖ Ρουτσίνι* μὲ ὕδατα θειοῦχα. Μ. Δ. Β.

**Μπαζὲν** (Bazin), ***Ἐρνέστος-Ἰωσὴφ-Λουδοβῖκος***. Γάλλος μηχανικὸς καὶ ἐφευρέτης (1826—1898). Ἀπὸ τῶν παιδικῶν του ἔτι χρόνων κατεδείχθη προικισμένος δι' ἐξαιρετικῆς ἰδιοφυΐας, πλῆθος δὲ ὁλόκληρον ἐπινοήσεων μεγάλης πρακτικῆς χρησιμότητος ὀφείλεται εἰς τὸ τάλαντον καὶ τὰς προσπαθείας του. Μεταξὺ τούτων σημειοῦμεν τὰς καὶ σήμερον ἔτι ἐν χρήσει μηχανὰς κατασκευῆς τῶν πλίνθων, τὸ τρύπανον διατρήσεως βράχων, τοῦ ὁποίου πρώτη χρῆσις ἐγένετο κατὰ τὴν κατασκευὴν τῆς σήραγγος τοῦ ὄρους Cenis, ἕνα ὑποβρύχιον ἠλεκτρικὸν φανόν, καὶ ἕτερον ὑποβρύχιον ὀπτικὸν ὄργανον, εὐρέως χρησιμοποιηθέντα ἐν τῇ ἁλιείᾳ καὶ εἰς τὰς ὑποβρυχίους κατασκευὰς κλπ. Ἰδικὴ του τέλος ἐπινόησις ὑπῆρξε τὸ περίφημον «κυλιόμενον πλοῖον», ἀποτελούμενον ἀπὸ μεγάλους κοίλους τροχούς, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐστηρίζετο τὸ κυρίως σκάφος, ἐν εἴδει τρόπον τινὰ τροχοφόρου ὀχήματος. Διὰ τῆς ἐπινοήσεώς του ταύτης ὁ Μπαζὲν ἤλπιζεν ὅτι θὰ ἐπιφέρῃ ἐπανάστασιν εἰς τὰς θαλασσίας μεταφοράς, ἡ πρακτικὴ ὅμως αὐτῆς ἐφαρμογὴ δὲν ἐδικαίωσε τὰς προβλέψεις του.

— **Μπαζὲν** (Bazin), ***Ἐρρῖκος-Αἰμίλιος***. Γάλλος ὑδραυλικὸς μηχανικός, γεννηθεὶς τῷ 1829. Αἱ μακραὶ αὐτοῦ μελέται καὶ παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς διώρυγος τῆς Βουργουνδίας, ὅπου ἐπὶ τριακονταετίαν εἰργάσθη, ἀπέδωκαν σημαντικὰ ἐπιστημονικὰ συμπεράσματα. Οἱ παρ' αὐτοῦ καταρτισθέντες τύποι καὶ πίνακες ἐπὶ τῆς ροῆς τῶν ὑδάτων εἰς ἀκαλύπτους διώρυγας καὶ ἐπὶ τῆς διαδόσεως τῶν κυμάτων ἐπὶ ἠρεμούντων ἢ κινουμένων ὑδατίνων ἐπιφανειῶν εἶναι σήμερον ἐν γενικῇ χρήσει. Ἀξιόλογος ἐπίσης ἡ μελέτη αὐτοῦ (1902) ἐπὶ τῆς ἀποστενώσεως τῆς φλεβὸς ὑγροῦ ἐκρέοντος ἀπὸ ὀπῆς ἀγγείου ἔχοντος λεπτὰ τοιχώματα. Τῷ 1913 ὁ Μπαζὲν ἐξελέγη ἔκτακτον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν.

— **Μπαζὲν** (Bazin), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος δημοσιολόγος καὶ ἐπαναστάτης (1771—1820). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πλέον ἀφωσιωμένων ὀπαδῶν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, τὴν ὁποίαν ὑπερήσπισε μετὰ πάθους καθ' ὅλον αὐτοῦ τὸν βίον διὰ τῶν δημοσιευμάτων του, ἐν ἀρχῇ μὲν ἐναντίον τῶν μετριοπαθῶν μελῶν τοῦ Διευθυντηρίου, κατόπιν ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος καὶ τέλος ἐναντίον τῆς παλινορθώσεως. Ἐφονεύθη ἐν μονομαχίᾳ τῷ 1829.

— **Μπαζὲν** (Bazin), ***Ρενέ***. Σύγχρονος Γάλλος λογογράφος καὶ ἀκαδημαϊκός, γεννηθεὶς τῷ 1853. Δικηγόρος ἐν ἀρχῇ καὶ καθηγητὴς τοῦ δικαίου εἰς τὸ καθολικὸν πανεπιστήμιον τοῦ Ἀνζέρ, ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον ἐντυπώσεις του ἐκ ταξιδίων ἀνὰ τὴν Γαλλίαν, Ἱσπανίαν καὶ Ἰταλίαν, εἶτα δὲ διηγήματα καὶ μυθιστορήματα. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, διὰ τῶν ὁποίων ἐβραβεύθησαν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἀναφέρομεν τά: «Κηλὶς μελάνης» (1888), «Ταπεινὸς ἔρως» (1894), «Ἡ χώρα τῆς Ἱσπανίας» (1895), «Μὲ ὅλη του τὴν ψυχὴ» (1897), «Ἡ γῆ ποὺ πεθαίνει» (1899), «Γλυκειὰ Γαλλία» (1911), «Οἱ Ὀμπερλὲ» (1901), «Οἱ νέοι Ὀμπερλὲ» (1919). Ὁ Μπαζὲν εἶναι συγγραφεὺς λεπτὸς καὶ τρυφερός, μὲ ζωηρὸν φυσιολατρικὸν αἴσθημα, ὑπέροχος ζωγράφος τῶν παλαιῶν ἠθῶν καὶ τῆς ζωῆς



Digitized by Google

τοῦ χωρικοῦ. Ἀπὸ τοῦ 1903 ἔχει ἐκλεγῆ μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. —Ω.

—**Μπαζὲν** (Bazin), ***Φραγκῖσκος-Ἐμμανουὴλ-Ἰωσήφ.*** Γάλλος συνθέτης (1816—1878). Συνέθεσε τὰ μελοδράματα: «Ὁ σαλπιγκτὴς τοῦ κυρίου πρίγκιπος» (1846), «Μαντελὸν» (1852), «Τὸ ταξίδι στὴν Κίνα» (1855) ἐπὶ λιμπρέττου τῶν Λαμπὶς καὶ Ντελακοὺρ καὶ ἄλλα ἑξ. Τῷ 1872 ὠνομάσθη μέλος τοῦ ἐν Παρισίοις ἰνστιτούτου τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Γ. Σ.

**Μπάζεντοβ** *(—οω ἢ καὶ —ωφ)* βλ. *Μπασεντόου.*

**Μπαζιὰν** *[Γεωγρ.].* Πόλις τοῦ Ἰράκ, εἰς ἀπόστασιν 30 χλμ. ΒΔ. τῆς πρὸς τὰ περσικὰ σύνορα πόλεως Σουλεϋμανιέ. Κάτ. 3.000. Ν. Μ.

**Μπαζίλη, *Κωνσταντῖνος Μιχαήλοβιτς.*** Ἕλλην τὸ γένος Ρῶσος διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1807 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ὀδησσῷ τῷ 1884. Διασωθεὶς μετὰ τοῦ πατρός του κατὰ τὰς γενομένας ἐν Κωνσταντινουπόλει σφαγὰς τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1821, κατέφυγεν εἰς Ὀδησσόν, ὅπου ἐσπούδασεν εἰς τὸ ἑλληνικὸν λύκειον, εἶτα δὲ εἰς τὸ πανεπιστήμιον Πετρουπόλεως. Τῷ 1830 διωρίσθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ ἐν τῷ Αἰγαίῳ ναυάρχου τῆς ρωσικῆς μοίρας Ρίκορδ, παρὰ τὴν πολιτικὴν δὲ ἣν ἠκολούθει ὁ Ρῶσος ναύαρχος, οὗτος τος ηὐνόει τὰ ἐν Μάνῃ καὶ Ὕδρᾳ κινήματα κατὰ τοῦ Καποδιστρίου. Μετὰ τὸν φόνον τοῦ κυβερνήτου ἐπέστρεψεν εἰς Πετρούπολιν καὶ ὑπηρέτησεν ἐπί τινα χρόνον εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν ἐν τῷ τμήματι τῶν ἀνατολικῶν ὑποθέσεων, μεθ' ὃ διωρίσθη γενικὸς πρόξενος ἐν Συρίᾳ καὶ Παλαιστίνῃ, παρέμεινε δὲ αὐτόθι καθ' ὅλον τὸ διάστημα τοῦ περιπλόκου ζητήματος τοῦ Παναγίου Τάφου, ὅπερ ἦτο ἓν τῶν προκαλεσάντων τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον. Ἀνακληθεὶς ἐκεῖθεν ὑπηρέτησεν ὡς γραμματεὺς τῆς ἐν Βιέννῃ πρεσβείας, εἶτα ὡς σύμβουλος πρεσβείας καὶ ἐν τέλει διωρίσθη μέλος τῆς διεθνοῦς ἐπιτροπῆς τῆς Κωνσταντινουπόλεως, πρὸς διακανονισμὸν τῆς νέας πολιτικῆς καὶ διοικητικῆς θέσεως τῶν παραδουναβίων ἡγεμονιῶν. Τῷ 1861 κατέλιπε τὸ διπλωματικὸν στάδιον καὶ διωρίσθη πρόεδρος τοῦ ἐν Ὀδησσῷ ἐφετείου, εἰργάσθη δὲ μετὰ τῶν αὐτόθι Ἑλλήνων καὶ τῶν Ρώσων φιλελλήνων πρὸς ὑποστήριξιν τῆς κρητικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1864. Ὁ Μπαζίλη, διακριθεὶς ὡς διπλωμάτης, ὑπῆρξεν ἐπίσης καὶ διακεκριμένος συγγραφεύς, ἰδίως δὲ γνώστης τῶν ἀνατολικῶν ζητημάτων. Ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας διπλωματικῆς φύσεως, ἐν αἷς: «Τὸ Αἰγαῖον πέλαγος καὶ ἡ Ἑλλὰς» (1834), εἰς ἣν εἰκονίζει τὴν κατάστασιν ἐν Ἑλλάδι ἀπὸ τῆς κυβερνήσεως τοῦ Καποδιστρίου μέχρι τῆς ἐλεύσεως τοῦ βασιλέως Ὄθωνος, «Ἀπόψεις τῆς Κωνσταντινουπόλεως» (1835), «Βόσπορος καὶ Κωνσταντινούπολις» (1836), «Συρία καὶ Παλαιστίνη ὑπὸ τὴν Τουρκίαν» (1862), μετὰ τὴν λῆξιν δὲ τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου (1878) ὑπὸ τὸν τίτλον «Ζητήματα τῆς ἡμέρας» ἐδημοσίευσε γαλλιστὶ πλείστας διατριβὰς διαρκοῦντος τοῦ Βερολινείου συνεδρίου. Ὑπῆρξε προσέτι εἷς τῶν κυριωτέρων συνεργατῶν τοῦ «Ρωσικοῦ ἐγκυκλοπαιδικοῦ λεξικοῦ». Θ. Β.

**Μπαζίλι** (Basili), ***Φραγκῖσκος.*** Ἰταλὸς συνθέτης (1766—1850). Ἔγραψε 14 μελοδράματα, ἐξ ὧν τὴν μεγαλυτέραν ἐπιτυχίαν εἶχον: «Ἡ ὡραία ἄγνωστος», «Ἡ λοχαντιέρα», «Ἀχιλλεύς», «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ Ὀδυσσέως» καὶ ἡ «Ἀντιγόνη». Ἡ ὑπόλοιπος παραγωγή του περιλαμβάνει: λειτουργίας, ὀφφερτόρια, μοτέττα, ἓν ρέκβιεμ, τὸ ὀρατόριον «Σαμψὼν» κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπαζιλικάτα** (Basilicata) *[Γεωγρ.].* Χώρα τῆς νοτίου Ἰταλίας (βλ. λ. *Βασιλικάτα*).

**Μπαζιλούτσο** (Basiluzzo) *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ἐλάσσων νησὶς ἐν τῇ συστάδι τῶν Λιπάρων (πλάτ. 38° 40′ Β., μήκ. 15° 07′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 172: Lipari island). Εἶναι ἡ ἀρχαία *Βασιλιδία* (βλ. *Αἰόλου νῆσοι*). Σ. Ε. Λ.

**Μπάζιν *Νικόλαος Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος μυθιστοριογράφος (1843—1906). Ἐσπούδασεν εἰς στρατιωτικὴν σχολήν, ἀλλὰ δὲν ἠκολούθησε τὸ στρατιωτικὸν στάδιον. Τῷ 1865 ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον μυθιστόρημά του «Στεπὰν Ρουλιὼφ», τοῦτο δὲ ἠκολούθησαν ἄλλα, ἐν οἷς: «Ξένοι μεταξὺ τῶν ἰδικῶν μας», «Τὸ σχολεῖον τῆς ζωῆς», «Θλιβερὸν ἐλεγεῖον», καὶ «Αἱ τρεῖς οἰκογένειαι», δημοσιευθέντα εἰς τὸν «Ρωσικὸν λόγον». Ἔπειτα συνειργάσθη εἰς τὸ περιοδικὸν «Ἐργασία», ὅπου ἐκτὸς τῶν μυθιστορημάτων: «Ἀπὸ τὴ φωτιὰ στὴ φλόγα», «Ἡ ἱστορία ἑνὸς συνεταιρισμοῦ» κ. ἄ. ἐδημοσίευσε σειρὰν μελετῶν περὶ τῆς συγχρόνου λογοτεχνίας. Θ. Β.

**Μπαζίνιο** (Basinio da Parma). Ἰταλὸς ποιητὴς (1424 — 1457). Εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν ἔγραψε τὸ ποίημα «Μελεαγρίς», ὅπερ ἐνεπνεύσθη ἐκ τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας καὶ ἕνεκα τοῦ ὁποίου ἀνέλαβεν αὐτὸν ὑπὸ τὴν προστασίαν του ὁ δοὺξ τῆς Φερράρας Λεονέλος ντ' Ἔστε. Κατόπιν προσελήφθη εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Σιγισμόνδου Μαλατέστα τοῦ Ρίμινι, ὁ ὁποῖος ἐχρησιμοποίησεν αὐτὸν ὡς ἀπεσταλμένον παρὰ τῷ πάπᾳ Νικολάῳ Ε'. Ἔγραψε τὸ ἔπος «Ἑσπερίδες» κ. ἄ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν τῷ 1794—1795 ὑπὸ τὸν τίτλον «Basinii Poemata praestantiora». Μ. Δ. Β.

**Μπαζόκο** (Basoko). Ἀγρία φυλὴ τοῦ βελγικοῦ Κόνγκο. Παρὰ τὰ μέτρα τῆς βελγικῆς διοικήσεως, οἱ Μπαζόκο δὲν ἔπαυσαν νὰ εἶναι ἀνθρωποφάγοι. Ἀφηγοῦνται ὅτι εἷς ἐκ τῶν βασιλέων των κατέφαγεν ἐννέα γυναῖκάς του. Π. Γ. Λ.

**Μπαζὸς** (Basoche ἢ Bazoche). Ὄνομα παλαιοῦ σωματείου τῶν ἐν Παρισίοις δικαστικῶν γραφέων, εἰς τὸ ὁποῖον εἶχον χορηγηθῆ περίεργα προνόμια. Ἡ ὀνομασία του προῆλθεν ἐκ τῆς λέξεως basilique (=βασιλική), δι' ἧς ἐχαρακτηρίζετο ὁ τόπος τῶν συνεδριάσεων τῶν δικαστηρίων καὶ ἥτις παρεφθάρη βαθμηδὸν εἰς baselche, baseuche καὶ ἐν τέλει basoche. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἐποχὴν τῆς ἱδρύσεώς του δὲν εἶναι αὐτὴ ἐπακριβῶς γνωστή· βέβαιον μόνον εἶναι ὅτι ἐπὶ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου (1303) ἡ ὀργάνωσις τοῦ Μπαζὸς καθωρίσθη σαφέστερον, προικισθεῖσα διὰ διαφόρων προνομίων.

*Μεγάλη σφραγὶς τοῦ βασιλείου τοῦ Μπαζός.*

Τὸ κυριώτερον τούτων ἦτο ὅτι ἐδίδετο εἰς τοὺς ἀποτελοῦντας τὸ σωματεῖον δικαστικοὺς γραφεῖς ἴδια δωσιδικία, θέτουσα σχεδὸν αὐτοὺς ἔξω τοῦ κοινοῦ δικαίου. Αἱ μεταξύ των καθὼς καὶ αἱ πρὸς τρίτους ἀστικαὶ ὑποθέσεις ἐξεδικάζοντο ὑπὸ τῶν ἀρχηγῶν τοῦ σωματείου, ἐκ δὲ τῶν ποινικῶν ἐπίσης αἱ ἀφορῶσαι μόνον εἰς ἐνδοσωματειακὰς ραχὰς καὶ ρήξεις. Τὸ σωματεῖον ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ «βασιλείου», ἐπετράπη δὲ καὶ εἰς τὸν ἀρχηγὸν αὐτοῦ νὰ τιτλοφορῆται «βασιλεύς». Κατ' ἀναλογίαν οἱ περὶ αὐτὸν ἀξιωματοῦχοι ὠνομάσθησαν «πρίγκιπες τοῦ Μπαζός», ὡρκίζοντο δὲ πίστιν καὶ ἀφοσίωσιν εἰς τὸν βασιλέα των καὶ ὑπακοὴν εἰς τὰς διαταγάς του. Αὐτοὶ ἐδίκαζον τὰς ὑποθέσεις τῶν μελῶν, ἅτινα ἠδύναντο νὰ ἐφεσιβάλουν τὰς ἀποφάσεις των μόνον ἐνώπιον τοῦ «βασιλέως» καὶ τοῦ «καγκελλαρίου» του.

Τὰ μέλη τοῦ Μπαζὸς ἔδιδον κατ' ἔτος μεγάλας ἑορτάς, αἵτινες ἄφηκαν φαιδρὰς ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἀναμνήσεις. Ἐπίσης κατ' ἔτος ἐτελεῖτο μία ἐν πομπῇ παρέλασις τοῦ βασιλέως τοῦ Μπαζὸς κατ' ἀπομίμησιν τῶν παρελάσεων τῶν ἱπποτῶν. Αἱ ἑορταὶ ὅμως αὐταί, γινόμεναι ὁλονὲν περισσότερον θορυβώδεις καὶ προσλαβοῦσαι ἐν τέλει μορφὴν ἀταξιῶν, ἔδωκαν ἀφορμὴν νὰ καταλυθῇ ὁ θρόνος τοῦ Μπαζὸς ἐπὶ Ἑρρίκου Γ'. Τὸ σωματεῖον ἐν τούτοις διετηρήθη μέχρι τῆς Ἐπαναστάσεως.

Κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Μπαζὸς τῶν δικαστικῶν γραφείων τῆς πρωτευούσης, ἱδρύθησαν ὑπὸ τὸ αὐτὸ ὄνομα καὶ ἄλλα σωματεῖα τῶν ἐν ταῖς ἐπαρχίαις συναδέλφων των. Ἀλλὰ καὶ ἕτερα Μπαζὸς συνεπήχθησαν ἐν Παρισίοις, ὅπως τὸ τῶν γραφέων τοῦ Ἐλεγκτικοῦ Συνεδρίου, τοῦ ὁποίου μάλιστα ὁ ἀρχηγὸς ἐτιτλοφορεῖτο ὄχι πλέον βασιλεὺς ἀλλ' «αὐτοκράτωρ». Ἐν τούτοις, παρὰ τὴν μεγαλοπρέπειαν τῶν τίτλων του, τὸ Μπαζὸς τοῦτο ὑπῆρξεν ὅλως ἄσημον. —Ω.

**μπάζω,** *ἀόρ. ἔμπασα, παρακ. παθ. μετχ. μπασμένος·* δημοτ., εἰσάγω, ἐμβιβάζω· || ἰδίᾳ εἰσάγω εἰς τὸν οἶκον τὰ ἀναγκαῖα: «ξέρεις τί μπάζει ἡ γάτα 'ς τὸ σπίτι αὐτὸ τὸ παιδί»· || *μπασμένος, —η, —ον·* ἐπὶ ὑφάσματος, συνεστώς, πυκνός: «εἶναι μπασμένη ἡ φανέλλα ἀπὸ τὸν ἱδρῶτα» || ἐπὶ ἀνθρώπου καὶ ἰδίᾳ παιδίου, ὁ μικρόσωμος, ἀλλ' ἔχων ἡλικίαν: «αὐτὴ ἡ μπασμένη τά 'χει τὰ χρονάκια της» (ἡ μετχ. αὐτὴ εἶναι καὶ τοῦ *μπαίνω*), βλ. *ἐμβάζω.*

**μπάζωμα** (τὸ) *[Μεταλλ.].* Κοινὴ ὀνομασία τῆς *λιθογομώσεως* (βλ. λ.).

**Μπάθ** (Bath) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Ἀγγλίας, ἐν ὁμωνύμῳ κομιτείᾳ, παρὰ τὸν ποταμὸν Αἶβον (Avon) καὶ ἐπὶ πυκνοτάτου σιδηροδρομικοῦ δικτύου. Κάτ. 68.530. Εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον πολυσυχνάστων καὶ ὀνομαστῶν λουτροπόλεων τῆς Ἀγγλίας, ἔχουσα σημαντικὰς θερμοπηγὰς καὶ μεγαλοπρεπεῖς ἐγκαταστάσεις λουτρῶν, ὧν ἡ καλουμένη τοῦ *Βασιλέως* ἔχει ἀνεγερθῆ ἐπὶ τῆς θέσεως ἀρχαίου ρωμαϊκοῦ λουτροῦ, ἀνακαλυφθέντος τῷ 1881. Ἔχει ἐπίσης δύο μεγάλας ἐγκαταστάσεις διὰ τοὺς ἀπόρους ἀσθενεῖς. Τὰ ὕδατα τῶν πηγῶν της εἶναι θειοῦχα καὶ ἀσβεστοῦχα καὶ ἐνδείκνυνται εἰς τοὺς ρευματισμούς, τοὺς ἀρθριτισμούς, τὰς νευραλγίας, τὰς ἰσχιαλγίας κτλ. Αἱ θερμοπηγαὶ τῆς Μπάθ ἦσαν γνωσταὶ καὶ παρὰ τοῖς Ρωμαίοις ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἡλίου ὕδατα* (Aquae Solis). Ἔχει πολλὰ ἀρχαῖα ἐρείπια καὶ πλεῖστα μεγαλοπρεπῆ μεσαιωνικὰ καὶ νεώτερα κτήρια, κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου καὶ Παύλου, κτισθεὶς τῷ 1582, ὀνομαστὸς διὰ τὴν καλλιτεχνικὴν καὶ πλουσίαν διακόσμησιν, τὰ ἄφθονα ὑελογραφήματα τῶν παραθύρων, τὰ ἐν αὐτῷ μνημεῖα τοῦ διασήμου ἠθοποιοῦ Κήν, τοῦ οἰκονομολόγου Μάλθου καὶ ἄλλων. Πρὸς Δ. τῆς πόλεως ὑπάρχει τὸ περίφημον Πάρκον τῆς Βικτωρίας καὶ πρὸς Α. οἱ κῆποι τῆς Σίδνεϋ. Κατὰ τὸν ΙΗ' καὶ ΙΘ' αἰῶνα ἀπετέλει τὸ κυριώτερον κέντρον τῆς συναντήσεως τῆς ἀνωτάτης καὶ ἐκλεκτῆς κοινωνίας τῆς Ἀγγλίας καὶ τὴν σημαντικωτέραν αὐτῆς λουτρόπολιν.

— 2) Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ Μαίην (Maine), πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Σαγκανταχόκ. Κάτ. 14.731. Ἔχει καλὸν λιμένα καὶ σημαντικὰ ναυπηγεῖα πολεμικοῦ καὶ ἐμπορικοῦ ναυτικοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μπάθα** (Baza) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν Ἀνδαλουσίᾳ καὶ τῷ νομῷ τῆς Γρενάδας. Κάτ. 15.935. Παράγει σιτηρά, ὀπώρας, ἔλαιον καὶ οἶνον καὶ ἔχει βιομηχανίαν πιλοποιίας, ἀγγειοπλαστικῆς, βυρσοδεψίας καὶ κτηνοτροφικῶν προϊόντων. Ἔχει ἐπίσης χλωριούχους καὶ θειούχους πηγάς. Εἰς τὰ πέριξ ὑπάρχουν μεταλλεῖα μολύβδου καὶ σιδήρου. Εἶναι πόλις ἀρχαιοτάτη, ὀνομαζομένη ὑπὸ τῶν Ρωμαίων Basti. Κατὰ τὴν ἀραβικὴν κατοχὴν ὀνομάζετο *Βάτσα* καὶ ἦτο ἐκ τῶν μᾶλλον ἀκμαζουσῶν πόλεων τῆς Ἱσπανίας, κατακτηθεῖσα ὑπὸ τῶν καθολικῶν βασιλέων ὁριστικῶς τῷ 1489 διὰ μακρᾶς πολιορκίας καὶ σφοδρᾶς ἐφόδου, ἥτις ὑπῆρξεν ἐκ τῶν σημαντικωτέρων κατορθωμάτων τοῦ βασιλέως Φερδινάνδου.

— 2) Ὀροσειρὰ τῆς Ἱσπανίας, ἐν τοῖς νομοῖς τῆς Γρενάδας καὶ Ἀλμερία. Ἀποτελεῖ συνέχειαν τῆς Σιέρα Νεβάδα καὶ ἔχει πολλὰ μεταλλεῖα σιδήρου καὶ μολύβδου. Ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ αὐτοῦ εἶναι ἡ *Μοχὸν ντὲ κουάτρο Πούντας,* ὕψους 1901 μ. Μ. Δ. Β.

**Μπαθαῖος** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μπιζάνων τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 82. Χ. Δ.

**Μπάθαρστ** (Bathurst) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Αὐστραλίας ἐν τῇ Νοτίῳ Νέᾳ Οὐαλίᾳ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μακαρί, πρὸς τὰ ΒΑ. τοῦ Σίδνεϋ. Κάτ. 9.350. Εἶναι ἡ πρώτη πόλις, ἥτις ἱδρύθη εἰς τὸ κέντρον τῆς Αὐστραλίας τῷ 1815. Ἔχει μεταλλεῖα χρυσοῦ, ἀργύρου καὶ χαλκοῦ καὶ βιομηχανία νζύθου καὶ δερμάτων. —2) Πρωτεύουσα τῆς ἀγγλικῆς ἀποικίας τῆς Γαμβίας ἐν τῇ δυτικῇ Ἀφρικῇ. Κεῖται ἐπὶ τῆς νησῖδος τῆς Ἁγίας Μαρίας, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Γαμβία, καὶ ὀνομάζεται ἐπίσης καὶ *Ἁγία Μαρία τοῦ Μπάθαρστ.* Κάτ. 9.000. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον κόμμεως, κηροῦ, βάμβακος καὶ καπνοῦ. Τὸ κλῖμα αὐτῆς εἶναι λίαν ἀνθυγιεινόν. Μ. Δ. Β.

**Μπάθαρστ** (Bathurst). Παλαιὰ ἀγγλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη διεκρίθησαν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ τὰ γράμματα. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: —1) *Ἄλλεν Κάρολος,* πολιτικὸς καὶ λόγιος (1684—1775). Ὑπῆρξε πρῶτος κόμις τοῦ Μπάθαρστ καὶ διετέλεσε βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1705—1711, καταπολεμήσας σφοδρῶς τὴν πολιτικὴν τοῦ δουκὸς τοῦ Μάλπορω. Μετὰ τὴν ἄνοδον τοῦ Τόρεων εἰς τὴν ἀρχὴν ἐγένετο βαρῶνος καὶ λόρδος, ἀπέβη δὲ σφοδρὸς πολέμιος τοῦ Οὐῶλπολ ἐν τῇ βουλῇ τῶν Λόρδων. Ἐγένετο ἐπίσης μέλος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου τοῦ βασιλέως. Ἦτο εὐρυτάτης μορφώσεως καὶ στενὸς φίλος τῶν ποιητῶν Μπόλινμπροκ, Ἄντισον, Πώπ, Σουΐφτ, Στὲρν καὶ Γκάϋ. —2) ***Ἑρρῖκος,*** νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1714—1794). Διετέλεσε βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1735—1754 καὶ ἐγένετο λόρδος τῷ 1771. Ἐχρημάτισε γενικὸς εἰσαγγελεὺς καὶ πρόεδρος τῆς βουλῆς τῶν Λόρδων. —3) ***Ἑρρῖκος,*** πολιτικὸς (1762—1834). Ἦτο στενὸς φίλος τοῦ Πὶττ καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου καὶ κατόπιν τῶν Στρατιωτικῶν, τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τῶν Ἀποικιῶν. Εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην δημοτικότητα διὰ τὴν σφοδρότητα μὲ τὴν ὁποίαν κατεπολέμησε τὸν Ναπολέοντα καὶ τὴν Γαλλίαν. Λέγεται ὅτι αὐτὸς ὑπέδειξε τὸν δεσμοφύλακα τοῦ Ναπολέοντος εἰς τὴν Ἁγίαν Ἑλένην καὶ ἐνέπνευσε τὰ αὐστηρὰ μέτρα ἐναντίον του. —4) ***Κάρολος,*** πολιτικός, γεννηθεὶς τοῦ 1867. Τῷ 1918 ἐγένετο ὑφυπουργὸς τοῦ Ἐπισιτισμοῦ καὶ τῷ 1924 ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας. Φέρεται καὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *βαρῶνος Μπλέντισλω-Μπάθαρστ.* Μ. Δ. Β.

**Μπάθγκαιητ** (Bathgate) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἐν Σκωτίᾳ, ἐν τῇ κομιτείᾳ Λινλιθγκόου, πρὸς Δ. τοῦ Ἐδιμβούργου. Κάτ. 8.800. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον περιφερείας μεταλλείων σιδήρου καὶ ἄνθρακος καὶ ἔχει σημαντικὰ ἐργοστάσια χάρτου καὶ σιδήρου. Μ. Δ. Β.

**Μπαὶ** (de Bay), ***Μιχαὴλ ντὲ —·*** βλ. λ. *Βάϊος Μιχαήλ.*

**Μπαΐα** (Bahia) *[Γεωγρ.].* Κράτος τῆς ὁμοσπονδιακῆς δημοκρατίας τῆς Βραζιλίας. Ἐμβαδὸν 529.379 τ. χλμ., κάτ. 4.041.540 (1927). Ἡ παραλία ζώνη, πλάτους 45—75 χλμ., εἶναι πεδινὴ μᾶλλον, πλουσία εἰς δάση καὶ ὕδατα, τὸ δὲ λοιπὸν ἔδαφος ὀρεινόν. Κύριος ποταμὸς ὁ Σὰν Φραντζίσκο, δευτερεύοντες δὲ ὁ Παραγκουάσσο καὶ Ζεκουιτινόνα, πάντες πλωτοί. Ἡ συγκοινωνία ὑπηρετεῖται

Digitized by Google

διὰ σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καὶ δι' ὑγρᾶς ὁδοῦ μήκους 2.422 χλμ. (ποταμοὶ καὶ διώρυγες). Παράγει καπνόν, σακχαροκάλαμον, βάμβακα, καφέν, κακάον, ἀραβόσιτον καὶ ἔχει πλουσίαν κτηνοτροφίαν. Κατὰ τὸ Σύνταγμα, ἀναθεωρηθὲν τῷ 1915, τὸ κράτος διοικεῖται ὑπὸ κυβερνήτου ἐκλεγομένου ἀπ' εὐθείας ὑπὸ τοῦ λαοῦ ἀνὰ τετραετίαν, τὴν δὲ νομοθετικὴν ἐξουσίαν ἀσκοῦν ἡ βουλὴ ἐκ 42 μελῶν καὶ ἡ γερουσία ἐξ 21 γερουσιαστῶν.

— **Μπαΐα** (Bahia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου κράτους, καλουμένη ἐπισήμως *Σὰν Σαλβατὸρ* (Sao Salvador da Bahia). Εἶναι μετὰ τὸ Ρίον Ἰανέϊρον ἡ μεγίστη καὶ σπουδαιοτάτη ἐμπορικὴ πόλις τῆς Βραζιλίας καὶ ἡ ἰσχυρότερον ὠχυρωμένη θέσις τῆς χώρας. Κεῖται εἰς τὴν ἀνατολικὴν ἄκραν τοῦ μεγάλου καὶ ἀσφαλοῦς ὅρμου τῶν Ἁγίων Πάντων καὶ εἶναι τὸ τέρμα τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τοῦ Σὰν Φραντζίσκο. Κάτ. 350.000 (1927). Ἡ κάτω πόλις, ἐπὶ τῆς παραλιακῆς ζώνης, μήκους 7 χλμ., ἀποτελεῖ τὸ βιομηχανικὸν κέντρον, περιλαμβάνουσα τὸ τελωνεῖον, τὸ χρηματιστήριον, τὸν ναύσταθμον, ναυπηγεῖα καὶ ἐργοστάσια. Ἡ ἄνω πόλις, εἰς ὕψος 60—80 μ., διακρίνεται κυρίως διὰ τὴν κοινωνικὴν κίνησιν, κεκοσμημένη δι' ὡραίων κτηρίων, πλείστων ἐκκλησιῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ καθεδρικὸς ναός, ὁ θαυμασιώτερος τῆς Βραζιλίας, διὰ πλατειῶν καὶ πάρκων. Ἔχει ζωηρὰν βιομηχανίαν κλωστηρίων, ὑφαντουργίας, κατασκευῆς πούρων, καπνοῦ πρὸς μάσησιν καὶ ῥόφησιν (ταμβάκου), πιλοποιίας. Εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ ὅρμου, χωρίζουσα αὐτὴν εἰς δύο βραχίονας, κεῖται ἡ νῆσος Χαπαρίκα, χρησιμεύουσα καὶ ὡς τόπος παραθερισμοῦ. Ἡ πόλις, ἱδρυθεῖσα τῷ 1549 ὑπὸ τοῦ Σούτσα, ὑπῆρξε πρωτεύουσα τῆς Βραζιλίας ἀπὸ τοῦ 1763. Ἀλλ' ἡ ἁλματικὴ ἀνάδειξις τοῦ Ρίου Ἰανέϊρου ἔφερεν αὐτὴν εἰς παρακμήν. θ. κ.

— **Μπαΐα *Γκράντε*** (Bahia Grande=μέγας ὅρμος) *[Γεωγρ.]*. Εὐρύτατος ἀνοικτὸς κόλπος τῆς Ἀργεντινῆς, ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ ὠκεανοῦ, ἔναντι τῶν βρεττανικῶν νήσων Φάλκλαντ, ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Τρὲς Πούντας πρὸς Β., μέχρι τοῦ νοτιωτάτου τῆς Ἀργεντινῆς ἀκρωτηρίου Βίρτζενες. θ. κ.

— **Μπαΐα *Μπλάνκα*** (Bahia Blanca) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Ἀργεντινῆς, ἐν τῷ νομῷ Μπουένος Ἄϋρες, ἀκραῖος σταθμὸς ἑπτὰ σιδηροδρομικῶν γραμμῶν. Κάτ. 44.143 (1921). Εἶναι ὁ κυρίως λιμὴν τοῦ νοτίου Πάμπα καὶ ἐκτεταμένης πλουσίας ἐνδοχώρας, δι' ὃ καὶ διεξάγεται δι' αὐτῆς ζωηρότατον ἐμπόριον εἰσαγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς. Ἐν τῷ ὁμωνύμῳ κόλπῳ κεῖται ὁ πολεμικὸς λιμὴν τῆς Ἀργεντινῆς, Πουέρτο Μπελγκράνο. θ. κ.

— **Μπαΐα-*Νουέβα*** (Bahia-Nueva) *[Γεωγρ.]*. Κλειστὸς κόλπος τῆς ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ παραλίας τῆς Ν. Ἀμερικῆς ἐν Ἀργεντινῇ, παρὰ τὸν 23° παράλληλον Ν. πλάτους, κλειόμενος ὑπὸ τῆς χερσονήσου Σὰν Χοσέ. Ἔχει δύο ἀξιολόγους ἐμπορικοὺς λιμένας, τὸ *Πουέρτο Πιραμίντες* καὶ τὸ *Πουέρτο Μάντριν*.

— **Μπαΐα *Ὄντα*** (Bahia Honda) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Κούβας, γνωστὴ καὶ διὰ τὰς παρ' αὐτὴν θειούχους πηγάς. Κάτ. 8.500. Εἶναι σταθμὸς ἀνθρακεύσεως διὰ τὰ πολεμικὰ καὶ ἐμπορικὰ πλοῖα τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. θ. κ.

**Μπάϊγ** (Baile), ***Ἰάκωβος-Ἰωσήφ***. Γάλλος ζωγράφος (1819—1856). Διδάσκαλόν του ἔσχε τὸν Τιεργιά. Ἐζωγράφησε κυρίως μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας ἄνθη καὶ καρπούς (Σαλὸν Παρισίων, 1848—1855), τὸ πλεῖστον δ' ἐκ τῶν ἔργων του φυλάσσεται εἰς τὸ μουσεῖον τῆς Λυών. χ. δ.

— **Μπάϊγ** (Bail), ***Ἰωσήφ***. Γάλλος ζωγράφος (1862—1921). Ἐζωγράφησε κυρίως σκηνὰς ἐκ τῆς οἰκιακῆς ζωῆς, διακρινομένας διὰ τὸν ὡραῖον χρωματισμὸν καὶ τὴν ἁρμονικὴν ἐκτέλεσίν των. Κάλλιστα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Αἱ δαντελλοπλέκτριαι» καὶ «Ἡ πρὸ τοῦ γεύματος προσευχὴ φιλοξενουμένων ἐν Μπόν». χ. δ.

**Μπαΐγκ** (Boegh), ***Ἐρρῖκος***. Δανὸς δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ ποιητὴς (1822—1897). Κατ' ἀρχὰς ἐχρημάτισε δημοδιδάσκαλος, εἶτα νεωκόρος, ἠθοποιὸς καὶ ζωγράφος. Τῷ 1850 ἀνεβίβασε τὸ δρᾶμα «Ἡ νὺξ τῆς πρωτοχρονιᾶς», τὸ ὁποῖον ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν. Κατόπιν ἀφιερώθη εἰς τὴν συγγραφὴν κωμῳδιῶν, γράψας 150 τοιαύτας. Ἀπὸ τοῦ 1855—1860 ἦτο διευθυντὴς τοῦ Θεάτρου τοῦ Καζίνου καὶ φιλολογικὸς συντάκτης τῆς ἐφημερίδος «Folkets Avis». Τῷ 1877 προσελήφθη εἰς τὴν ἐφημερίδα «Dagens Nyheter». Μεταξὺ τῶν θεατρικῶν του ἔργων ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Huldrebakken» (1852), «Et enfoldigt Pigebarn» (1853), «Αἱ περιπέτειαι τοῦ χαλίφου» ἐκ τῶν ποιημάτων του: «Digte» (1855 καὶ 1879), ἐκ δὲ τῶν πεζῶν του: «Ἰωνὰς Τβόερμπσες» (1873) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπαϊγκορὺ** (Baïgory) ***κοιλὰς*** *[Γεωγρ.]*. Κοιλὰς τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Πυρηναίων, ἀποτελοῦσα ἄλλοτε ἐπαρχίαν τοῦ βασιλείου τῆς Κάτω Ναβάρρας. Ἔχει μεταλλεῖα χαλκοῦ. Ἐν αὐτῇ τῷ 1794 ὁ στρατηγὸς Ντυμπουκέ, διοικῶν τὸν στρατὸν τῶν Ἀνατολικῶν Πυρηναίων, ἐνίκησε τοὺς Ἱσπανούς. χ. δ.

**Μπαϊὲλ** (Bailleul) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Μπαγιέλ*).

**Μπαϊὲλ** (Bailleul), ***Ἰάκωβος-Κάρολος***. Γάλλος ἰατρὸς (βλ. λ. *Μαγιὲλ* Ἰάκωβος-Κάρολος).

**μπαϊέρα** (ἡ) (Baiera) *[Παλαιοφυτολ.]* βλ. *βαϊέρα*.

**Μπαΐζ** (Baïse) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας, ἀριστερὸς παραπόταμος τοῦ Γαρούνα, πηγάζων ἐκ τοῦ ὀροπεδίου Λαννεμεζάν. Διαρρέει τὰς πόλεις Μιράντ, Κοντὸμ καὶ Νερὰκ καὶ συμβάλλει μετὰ ροῦν 180 χλμ. Ἐπὶ τμήματος τοῦ κάτω ῥοῦ αὐτοῦ εἶναι πλωτός. χ. δ.

**Μπάϊζα** (Majza), ***Ἰωσήφ***. Οὖγγρος ποιητὴς (1804—1858). Διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1830—1843 τὰ περιοδικὰ «Athenaeum» καὶ «Aurora», διετέλεσε δὲ καὶ διευθυντὴς τοῦ ἐθνικοῦ θεάτρου ἐν Βουδαπέστῃ. Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς λυρικός. Τὰ «Ἔργα» του εἰς ἓξ τόμους ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ Φ. Τόλντυ ἐν Βουδαπέστῃ τῷ 1861. Α. Δ.

**Μπαιζεννττόρφερ** (Boesendorfer). Ὀνομαστὸν ἐργοστάσιον κλειδοκυμβάλων, ἱδρυθὲν τῷ 1828 ἐν Βιέννῃ ὑπὸ τοῦ *Ἰγνατίου Μπαιζενντόρφερ* (1796—1859). Ὁ οἶκος οὗτος ἵδρυσεν ἐπίσης ἐν Βιέννῃ τὴν «Αἴθουσαν συναυλιῶν Μπαιζενντόρφερ», ἐγκαινιασθεῖσαν τῷ 1872 παρὰ τοῦ Χὰνς φὸν Μπύλωφ. Γ. Σ.

**Μπαιθὲλ** *[Βιβλ. Γεωγρ.]*. Ἑβραϊκὸν ὄνομα τῆς πόλεως τῆς Παλαιστίνης *Βαιθήλ* (βλ. λ.).

**Μπαίικερ** (Baker) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος, κειμένη ἐν τῷ Εἰρηνικῷ ὠκεανῷ, βορείως τοῦ συμπλέγματος τῶν νήσων τοῦ Φοίνικος, μὲ 300 κάτ., ἀνήκουσα εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ ἐκχωρηθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1914 εἰς μακροετῆ μίσθωσιν εἰς ἰδιωτικὴν ἑταιρείαν. θ. κ.

— **Μπαίικερ** (Baker) *[Γεωγρ.—Ἡφαιστειολ.]*. Ἡφαίστειον ὄρος, κείμενον εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμα τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Βορ. Ἀμερικῆς, τὸ ὁποῖον κατὰ τὸν G. Gibbs ἐνήργησε κατὰ τὸ 1843 καὶ ἐκάλυψεν ὅλην τὴν χώραν μὲ τέφραν, σύμφωνα μὲ τὰς ἀφηγήσεις τῶν Ἰνδιάνων καὶ τῶν ὑπαλλήλων τῆς ἑταιρείας Hudson Bay. Τὸ ἡφαίστειον ἐνήργησεν ἐπίσης κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1859, κατὰ δὲ τὴν 26—28 Ἀπριλίου 1860 ἀνεξέβαλε πυκνὸν καπνὸν καὶ ἡ κορυφή του ὑπέστη ἀλλοιώσεις τῆς μορφῆς της. Γ. Κ. Γ.

**Μπαίικερ** (Baker), ***Ἀβιὰ-Ρίχαρδσον***. Ἀμερικανὸς κληρικὸς καὶ ἐκκλησιαστικὸς συγγραφεὺς (1805—1876). Ἔγραψεν: «Ἱστορίαν τῶν Σχολείων τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς», «Κατήχησιν ἐπὶ τῇ βάσει τῶν κειμένων τῆς ἁγίας Γραφῆς», «Ἑρμηνείαν τῆς ἐπὶ τοῦ Ὄρους τῶν Ἐλαιῶν ὁμιλίας».

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Ἀλφρέδος***. Ἀμερικανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1873, καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Σέφηλντ. Ἔγραψε: «Στοιχεῖα τῆς γαλλικῆς γραμματολογίας» κ. ἄ.

— **Μπαίικερ** (Baker) ***Ἀρθοῦρος***. Ἀμερικανὸς μαθηματικὸς καὶ νομικός, γεννηθεὶς τῷ 1853, καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ρότσεστερ. Ἔγραψε: «Γεωμετρίαν στερεῶν», «Περὶ ἐλλειπτικῶν συναρτήσεων», «Νομολογίαν ἐπὶ τῶν ἀποφάσεων τοῦ ἀνωτάτου δικαστηρίου τῆς Πεννσυλβανίας».

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Βαλεντῖνος***, γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Βαΐκερ πασᾶς*. Ἄγγλος στρατηγὸς (1827—1887). Ἦτο ἀδελφὸς τοῦ σὲρ Σαμουὴλ Οὐάϊτ Μπαίικερ (βλ. κατ.). Κατετάγη τῷ 1848 εἰς τὸν στρατὸν καὶ μετέσχε τῆς ἐναντίον τῶν Κάφρων ἐκστρατείας (1852—1853) καὶ τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου (1855). Τῷ 1859 προήχθη εἰς ταγματάρχην, ἀναλαβὼν μετὰ ἓν ἔτος τὴν διοίκησιν τοῦ 10ου συντάγματος τῶν οὐσσάρων. Ἐπὶ δέκα τρία ἔτη διετήρησε τὴν θέσιν ταύτην ὁ Μπαίικερ, κατὰ τὸ διάστημα δὲ τοῦτο συνέγραψε διαφόρους στρατιωτικὰς μελέτας. Κατὰ τὰ ἔτη 1866 καὶ 1870 παρηκολούθησεν ὡς παρατηρητὴς τὸν γερμανικὸν στρατόν. Τῷ 1873 ἐπεχείρησε ταξίδιον διὰ μέσου τοῦ Χορασάν, μετὰ ἓν δ' ἔτος ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Κατόπιν καταδίκης του εἰς ἑνὸς ἔτους φυλάκισιν, συνεπείᾳ ἀπρεποῦς ἐπιθέσεως κατὰ νεάνιδος ἐντὸς σιδηροδρομικῆς ἁμάξης, απετάχθη τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ. Μετὰ δύο ἔτη ἀνέλαβεν ὑπηρεσίαν ἐν τῷ τουρκικῷ στρατῷ καὶ ἤσκησε τὰ καθήκοντα τοῦ ἐπιτελάρχου, διακριθεὶς εἰς τὸν κατὰ τῆς Ρωσίας πόλεμον. Ὠνομάσθη τότε φερὶκ (ἀντιστράτηγος). Μετὰ ταῦτα ἀπεστάλη διοικητὴς ἐν Ἀρμενίᾳ καὶ τῷ 1882 διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τοῦ αἰγυπτιακοῦ στρατοῦ· ἀλλ' ὅταν ὁ Μπαίικερ ἔφθασεν εἰς Κάϊρον, ἀνεκλήθη ὁ διορισμὸς του ὡς ἀρχιστρατήγου καὶ ἐτοποθετήθη ὡς ἀρχηγὸς τῆς αἰγυπτιακῆς ἀστυνομίας. Ὅταν δ' ἐξερράγη ὁ Σουδανικὸς πόλεμος, ὁ Μπαίικερ ἔσπευσε μετὰ δυνάμεως 3.000 ἀνδρῶν, οἵτινες εἰς τὴν πρώτην σύρραξιν κατέστησαν πανικόβλητοι. Ὁ Μπαίικερ κατώρθωσε μαχόμενος μετ' ὀλίγων ἀξιωματικῶν νὰ διανοίξῃ δρόμον διὰ μέσου τῶν γραμμῶν τοῦ ἐχθροῦ καὶ νὰ σωθῇ. Ἐκ τῶν στρατιωτικῶν συγγραφῶν του ἀξιολογώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Αἱ ἐθνικαί μας ἄμυναι» (1860), «Πόλεμος ἐν Βουλγαρίᾳ», «Νέφη ἐν Ἀνατολῇ» (1876) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Βενιαμίν***. Ἄγγλος μηχανικὸς (1840—1907). Ὑπῆρξεν ἐν τῶν ἐπιλέκτων μελῶν τοῦ σώματος τῶν πολιτικῶν μηχανικῶν τῆς Ἀγγλίας. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὰ κυριώτερα εἶναι ἡ γέφυρα τοῦ Φόρθ, ἣν κατεσκεύασεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Τζὼν Φάουλερ καὶ ὁ πολυθρύλητος νειλοφράκτης τοῦ Ἀσσουάν, δι' οὗ ἀρδεύεται μεγάλη περιοχὴ τῆς Αἰγύπτου. Εἶναι ἐπίσης γνωστὸς καὶ ὡς συμμετασχὼν εἰς τὴν ἀνοικοδόμησιν τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Τσάριγκ Κρὸς ἐν Λονδίνῳ, κρημνισθέντος τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1905. Ὁ Μπαίικερ ἔλαβε τίτλον εὐγενοῦς τῷ 1890. Α. Δ.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Γεώργιος-Πῆρς*** (Pierce). Ἀμερικανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Χάρβαρντ, ἐν τῷ ὁποίῳ καὶ διετέλεσε κατόπιν, ἀπὸ τοῦ ἔτους 1905—1924, καθηγητὴς τῆς φιλολογίας. Τὰ περὶ δραματικῆς τέχνης μαθήματά του παρηκολούθουντο ὑπὸ πλήθους ἀκροατῶν. Τῷ 1925 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Γιὰλ τμήματος τῆς δραματικῆς τέχνης. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ἡ ἐξέλιξις τοῦ Σαιξπήρου ὡς δραματικοῦ» (1907), «Ἡ δραματικὴ τεχνικὴ» (1919), «Νεώτερα ἀμερικανικὰ θεατρικὰ ἔργα» (1920).

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Γεώργιος-Φίσερ*** (Fisher). Ἀμερικανὸς τραπεζικός, γεννηθεὶς τῷ 1840. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Σιούαρντ. Ἀπὸ τοῦ ἔτους 1858 μέχρι τοῦ 1863 διετέλεσεν οἰκονομικὸς ὑπάλληλος, ἵδρυσε δὲ κατόπιν, μετὰ τοῦ Θόμψων, τὴν πρώτην Ἐθνικὴν Τράπεζαν τῆς Νέας Ὑόρκης, ἧς ἐγένετο τῷ 1868 ταμίας καὶ τῷ 1877 διοικητής.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Δανιήλ***. Ἀμερικανὸς διαμαρτυρόμενος κληρικὸς καὶ ἱεραπόστολος (1795—1857). Ἐφημέριος κατ' ἀρχὰς ἐν Χάρρισμπαργ καὶ ἔπειτα ἐν Οὐασιγκτῶνι, διέτρεξε βραδύτερον ὡς ἱεραπόστολος τὰς νοτίους πολιτείας τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας. Ἔγραψε διαφόρους ἐκκλησιαστικοὺς λόγους καὶ παραινέσεις.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Δαυΐδ***, ἢ ***Αὐγουστῖνος***. Ἄγγλος βενεδικτῖνος συγγραφεὺς (1575—1641). Ἀνῆκεν εἰς ἀριστοκρατικὴν οἰκογένειαν καὶ ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Ὀξφόρδῃ. Κατὰ τὴν νεότητά του ὑπῆρξεν ἄθεος καὶ ἔκδοτος εἰς ἡδονάς, βραδύτερον ὅμως, κουρασθεὶς ἐκ τοῦ τρόπου τούτου τοῦ ζῆν, μετέβη εἰς Ἰταλίαν καὶ τῷ 1605 ἐκάρη μοναχός, εἰσελθὼν εἰς τὸ τάγμα τῶν βενεδικτίνων, τὴν ἱστορίαν τοῦ ὁποίου ἐπὶ μακρὸν κατόπιν ἐμελέτησε. Συνέγραψε περὶ τὰς 30 μοναστηριακὰς πραγματείας. Γ. Ι. Β.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***σὶρ Ἑρβέρτος-Χάνρυ***. Περιώνυμος Ἄγγλος μηχανικός, γεννηθεὶς τῷ 1862. Εἶναι γνωστὸς διὰ τὴν ἀποικιακὴν ἀρχιτεκτονικήν του, θαυμασίως προσηρμοσμένην πρὸς τὰς τοπικὰς ἀρχιτεκτονικὰς παραδόσεις τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς νοτίου Ἀφρικῆς. Ὠκοδόμησε τοὺς τρεῖς ὡραίους μητροπολιτικοὺς ναοὺς ἐν Καΐπ-Τάουν, Σαίλσμπουργ καὶ Πραιτωρίᾳ εἰς γοτθικὸν ῥυθμὸν τῆς μεταγενεστέρας ἐποχῆς, τὰ «Union Buildings», τὸ ἀνάκτορον τῆς διοικήσεως καὶ τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν τῆς Πραιτωρίας. Ὁ Μπαίικερ εἰργάσθη καὶ εἰς τὴν Ἀγγλίαν εἰς μνημεῖα ἀναμνηστικὰ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, εἰς αὐτὸν δ' ἀνετέθη ἡ ἀνοικοδόμησις τοῦ μεγάρου τῆς Τραπέζης τῆς Ἀγγλίας. Α. Δ.

— **Μπαίικερ**, ***Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος φυσιοδίφης (1698—1774). Τῷ 1774 ἔλαβε χρυσοῦν μετάλλιον διὰ τὰς μικροσκοπικὰς παρατηρήσεις του ἐπὶ τῆς κρυσταλλώσεως τῶν ἁλάτων. Ἐξέδωκε μετὰ τοῦ Ντεφόε (τοῦ συγγραφέως τοῦ «Ροβινσῶνος Κρούσου») τὸν «Παγκόσμιον Θεατὴν» (Universal Spectactor) καὶ τὴν «Ἑβδομαδιαίαν» (Weekly Journal). Ἀσχοληθείς, παιγνιωδῶς ἐν ἀρχῇ καὶ συστηματικώτερον κατόπιν, πρὸς ἐπινόησιν συστήματος διδασκαλίας τῶν κωφαλάλων, ἐπέτυχε νὰ δημιουργήσῃ μέθοδον ἀποδίδουσαν ἀπιστεύτως ἐπιτυχῆ ἀποτελέσματα.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Ἐρρῖκος-Φρειδερῖκος***. Ἄγγλος καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λονδίνου, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ὑπερελλειπτικαὶ συναρτήσεις τοῦ σίγμα», «Τὸ θεώρημα τοῦ Ἄμπελ καὶ αἱ συναφεῖς αὐτῷ περὶ συναρτήσεων θεωρίαι» κ. ἄ.

— **Μπαίικερ** (Baker), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος ἀρχαιοδίφης καὶ συγγραφεὺς (1656—1740). Τὸ ἀξιολογώτερον τῶν ἔργων του εἶναι: «Σκέψεις περὶ τῆς ἐπιστήμης». Ἡ πολύτιμος αὐτοῦ συλλογὴ χειρογράφων, ἀναφερομένων εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὰς ἀρχαιότητας τοῦ πανεπιστημίου τῆς Καίμπριτζ, περιλαμβανομένη εἰς 42 τόμους, εὑρίσκεται σήμερον ἐν μέρει εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον καὶ τὴν Δημοσίαν Βιβλιοθήκην τοῦ Καίμπριτζ.

Digitized by Google

— **Μπαίικερ** (Baker), *σὲρ Ἰωάννης*. Ἄγγλος πολιτικός, ζήσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ἦτο πάππος τοῦ χρονικογράφου σὲρ Ριχάρδου Μπαίικερ (βλ. κατωτ.). Διετέλεσε πρόεδρος τῆς βουλῆς τῶν κοινοτήτων καὶ ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν ἀπὸ τοῦ 1545 μέχρι τοῦ θανάτου του, συμβάντος ἐν ἔτει 1558.

— **Μπαίικερ** (Baker), *Ἰωάννης - Γιλβέρτος*. Ἄγγλος βοτανικὸς καὶ γεωλόγος, γεννηθεὶς τῷ 1834. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Μονογραφία περὶ τῶν βρεττανικῶν ρόδων», «Χλωρὶς τοῦ διαμερίσματος τῆς Ἀγγλικῆς Λίμνης» «Ἐγχειρίδιον ἀμαρυλλιδῶν» κ. ἄ.

— **Μπαίικερ** (Baker), *Κάρολος*. Ἄγγλος κληρικός, μάρτυς τῆς θρησκευτικῆς καταδιώξεως τῆς ψηφισθείσης τῷ 1768 ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ Παρλαμέντου (1616—1679). Ἀνετράφη ὡς διαμαρτυρόμενος, δεκαεξαετὴς δὲ μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα προσηλυτίσθη ὑπὸ τοῦ ἰησουίτου Τάλμποτ εἰς τὸν καθολικισμόν. Ἐχειροτονήθη ἱερεὺς καὶ εἶτα διωρίσθη πνευματικὸς διευθυντὴς τοῦ Ρωμαϊκοῦ κολλεγίου. Τῷ 1648 ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν, ἔνθα ἐγένετο διαπρύσιος κῆρυξ τοῦ καθολικοῦ δόγματος. Καταγγελθεὶς ὑπὸ τοῦ καλβινιστοῦ Ἄρνολντ ἐπὶ ἀντιπατριωτικαῖς δῆθεν ἐνεργείαις κατεδικάσθη εἰς θάνατον, τῆς ποινῆς ἐκτελεσθείσης τὸ ἑπόμενον ἔτος τῆς δίκης.

— **Μπαίικερ** (Baker) *Νεύτων - Ντῆλ* (Newton Diehl). Ἀμερικανὸς νομικός, γεννηθεὶς τῷ 1871. Δικηγόρος τοῦ δήμου ἐν Κλέβελαντ, τοῦ Ὀχάϊο, καὶ εἶτα δήμαρχος (1912—1916). Μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ Γκάρρισον ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, διατηρήσας τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργείου τούτου καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Κατὰ τὸ ἔτος 1917 εἰσηγήθη πρότασιν καθολικῆς στρατολογίας. Μετὰ τὸ ἔτος 1921 ἀπεσύρθη εἰς Κλέβελαντ καὶ ἐπανέλαβε τὴν ἄσκησιν τοῦ δικηγορικοῦ ἐπαγγέλματος. Κατὰ τὸ ἐν ἔτει 1924 συγκληθὲν συνέδριον τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος ὑπεστήριξε πρόγραμμα περὶ ἐνισχύσεως τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν.

— **Μπαίικερ** (Baker), *Ριχάρδος*. Ἄγγλος δικαστικός, πολιτικὸς καὶ ἱστοριογράφος (1568—1645). Ἀναλαβὼν καὶ πληρώσας χρέη τῆς οἰκογενείας τῆς συζύγου του περιέστη εἰς ἔνδειαν καὶ κατασχεθείσης τῆς ἀτομικῆς περιουσίας του ἐνεκλείσθη εἰς τὰς φυλακάς, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς φυλακίσεως συνέγραψε «Χρονικὰ τῶν βασιλέων της Ἀγγλίας», συνεχισθέντα ὑπὸ τοῦ Ἐδουάρδου Φίλιπς, ἀνεψιοῦ τοῦ Μίλτωνος. Ὁ Μπαίικερ ἔγραψε καὶ θρησκευτικά τινα ἔργα, ἐξ ὧν αἱ «Σκέψεις ἐπὶ τῶν ψαλμῶν», ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1882 ὑπὸ τοῦ **Γκρόσαρτ.**

— **Μπαίικερ** (Baker), *Ροβέρτος*. Ἄγγλος περιηγητὴς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Περιῆλθεν ἐν πρώτοις τὰ παράλια τῆς Γουϊνέας (1563), εἶτα δ' ἐπεχείρησε δεύτερον ταξίδιον, καθ' ὃ ὑπέστη τὰ πάνδεινα ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν. Ἀπελευθερωθεὶς τέλος ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου ἀπέθανε κατὰ τὸ ἔτος 1580. Ἔγραψε περιεργοτάτην «Ἀφήγησιν» τῶν ταξιδίων του.

— **Μπαίικερ** (Baker), *Σαμουὴλ - Οὐάϊτ*. Ἄγγλος ἐξερευνητὴς (1821—1893). Ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ. Τῷ 1846 ἐταξίδευσεν εἰς Κεϋλάνην, ἔνθα ἵδρυσε τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀγροτικὴν ἐγκατάστασιν. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς ὀκταετοῦς ἐν Κεϋλάνῃ παραμονῆς του ἐπεχείρησε διαφόρους περιπετειώδεις κυνηγετικὰς ἐκδρομάς. Τῷ 1855 μετέβη εἰς Κωνσταντινούπολιν, μετέσχε τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου καὶ διωργάνωσε τὴν κατασκευὴν σιδηροδρόμου διὰ Δοβρουτσάς, συνδέσαντος τὸν Δούναβιν μετὰ τοῦ Εὐξείνου Πόντου. Τῷ 1861 ἐπεχείρησε τὸ πρῶτον του ἐξερευνητικὸν ταξίδιον εἰς τὴν Κεντρῴαν Ἀφρικήν. Συνοδευόμενος ὑπὸ τῆς δευτέρας συζύγου του (Φλωρεντίνης) ἀνέπλευσε τὸν Νεῖλον ἵνα συναντήσῃ τοὺς περιηγητὰς Σπὴκ καὶ Γκράντ. Παρέμεινεν ἐπὶ ἓν ἔτος εἰς τὰ σουδανο-αβησσυνιακὰ σύνορα, ἐξηρεύνησε τὸν Ἀτμπάρα καὶ τοὺς ἄλλους παραποτάμους τοῦ Νείλου, μετέβη εἰς Χαρτοὺμ καὶ τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1863 συνήντησε τοὺς Σπὴκ καὶ Γκράντ, οἵτινες εἶχον ἀνακαλύψει τὰς πηγὰς τοῦ Νείλου. Συνεχίσας ὁ Μπαίικερ τὴν πορείαν του ἀνεκάλυψε τὴν λίμνην Ἀλβέρτου Νυάνζα. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1865 ἐπέστρεψεν εἰς Ἀγγλίαν, ἔνθα ἐτιμήθη διὰ χρυσοῦ μεταλλείου ὑπὸ τῆς γεωγραφικῆς ἑταιρείας καὶ διὰ τοῦ τίτλου τοῦ βαρωνέτου ὑπὸ τοῦ βασιλέως. Τῷ 1869 συνώδευσε τὸν τότε διάδοχον τῆς Ἀγγλίας, τὸν ἔπειτα βασιλέα Ἐδουάρδον τὸν Ζ', εἰς περιοδείαν του εἰς Αἴγυπτον. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἀνέλαβε, τῇ αἰτήσει τοῦ χεδίβου Ἰσμαήλ, στρατιωτικὴν ἀποστολὴν εἰς τὰς ἰσημερινὰς περιφερείας του Νείλου πρὸς κατάπαυσιν τῆς ἐμπορίας τῶν δούλων. Μετὰ πέντε ἔτη, λήξαντος τοῦ χρόνου τῆς ἀποστολῆς του, ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν. Περιῆλθεν εἶτα τὴν Κύπρον, τὴν Συρίαν, τὰς Ἰνδίας, τὴν Ἰαπωνίαν καὶ Ἀμερικήν, γράψας σχετικὰς ἀφηγήσεις. Ἐκ τῶν ἔργων τούτων ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὀκτὼ ἔτη περιπλανήσεων εἰς Κεϋλάνην», «Ἰσμαηλία» (1874), «Πῶς εἶδον τὴν Κύπρον κατὰ τὸ ἔτος 1879». Γ. Ι. Β.

— **Μπαίικερ** *Μπράουν* (Baker - Brown), *Ἰσαάκ*. Διαπρεπὴς Ἄγγλος γυναικολόγος, ἰσραηλιτικῆς καταγωγῆς (1812—1873). Ἐκ τῶν διακεκριμένων ἀνατόμων τῆς ἐποχῆς του, ἠσχολήθη ἰδίως εἰς τὴν σπουδὴν τῶν νόσων τῶν γυναικῶν καὶ εἰς αὐτὸν ἀνήκει ἡ τιμὴ τῆς εἰσαγωγῆς τῆς ἐγχειρήσεως τῆς *ᾠοθηκεκτομῆς* κατὰ τὰς κύστεις τῆς ᾠοθήκης. Ἐκτελέσας τρὶς ἀνεπιτυχῶς τὴν ἐγχείρησιν ταύτην, δὲν ἐδίστασε νὰ ἐπαναλάβῃ αὐτὴν καὶ ἐπὶ τῆς ἰδίας ἀδελφῆς του, μετ' ἀπολύτου τὴν φορὰν αὐτὴν ἐπιτυχίας (1853). Ἔκτοτε ἡδραιώθη ἡ φήμη του καὶ πολλοὶ χειρουργοὶ κατέφθανον ἐκ διαφόρων χωρῶν εἰς τὴν ἐν Λονδίνῳ κλινικήν του, ἵνα διδαχθῶσι τὴν νέαν μέθοδον, μεταξὺ δὲ τούτων καὶ ὁ Γάλλος Nelaton (1862), ὅστις, ἀφοῦ παρηκολούθησε πλείστας ᾠοθηκεκτομὰς ἐκτελεσθείσας ὑπὸ τοῦ Μπαίικερ, εἰσήγαγε τὴν ἐγχείρησιν ταύτην καὶ ἐν Γαλλίᾳ. Ὁ Μπαίικερ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς γυναικολογίας εἰς τὸ νοσοκομεῖον τοῦ Λονδίνου «Sainte - Marie», οὗτινος ὑπῆρξε καὶ ἱδρυτής. Ἀργότερον ἵδρυσε διὰ τὰς γυναῖκας εἰδικὸν θεραπευτήριον, τὸ «London Surgical house». Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ κυριώτερα εἶναι τὸ σύγγραμμά του «Γυναικολογία» (Λονδῖνον (1854), πλειστάκις ἐπανεκδοθέν. Ο. Ρ.

**Μπαίιν** (Bain), *Ἀλέξανδρος*. Ἄγγλος φιλόσοφος (1818—1903). Σπουδάσας ὡς ὑπότροφος τοῦ κολλεγίου τοῦ Ἄμπερντην, ἰδιαιτέρας του πατρίδος, ἀνηγορεύθη πτυχιοῦχος τῆς φιλολογίας, μικρὸν δὲ κατόπιν ὠνομάσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἠθικῆς ἐν τῷ κολλεγίῳ τούτῳ, καὶ κατόπιν τακτικὸς καθηγητὴς τῆς φυσικῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἄμπερντην. Διορισθεὶς τῷ 1845 καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γλασκώβης, ἐκλήθη βραδύτερον εἰς τὸ Λονδῖνον ὡς ἐξεταστὴς τῶν φοιτητῶν τῆς φιλοσοφικῆς σχολῆς. Τέλος, τῷ 1860, τῷ ἐδόθη ἡ ἕδρα τῆς λογικῆς καὶ τῆς ἀγγλικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς γενετείρας του πόλεως.

*Ἀλέξανδρος Μπαίιν.*

Ὁ Μπαίιν ὑπῆρξεν ἐν τῇ ψυχολογίᾳ συνεχιστὴς τῆς σκωτικῆς σχολῆς. Τὰ ἔργα αὐτοῦ διακρίνονται διὰ τὴν μαθηματικὴν ἀκρίβειαν τῆς ἀναλύσεως καὶ τὴν θαυμαστὴν σαφήνειάν των. Ἀποφεύγων ἐν τῇ ψυχολογίᾳ τὴν μεταφυσικήν, παραβάλλει ἑκάστοτε τὰ φυσιολογικὰ πρὸς τὰ ψυχολογικὰ δεδομένα. Τὸ αὐτὸ θετικὸν πνεῦμα διέπει καὶ τὴν παιδαγωγικὴν αὐτοῦ, ὡς πρὸς τὴν ὁποίαν περιορίζεται εἰς τὰ ζητήματα τ' ἀφορῶντα τὴν διδασκαλίαν ὑπὸ πρακτικὴν ἔποψιν. Κατ' αὐτόν, μέρος τῶν αὐτομάτων κινήσεων, αἵτινες ἀποτελοῦν τὸν πρωταρχικὸν παράγοντα τῶν ψυχοφυσιολογικῶν φαινομένων, ὀφείλονται εἰς τὸν ἐπὶ τῶν μυῶν ἀσκούμενον ἐρεθισμὸν τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος. Βασικὸς παράγων παντὸς ψυχικοῦ φαινομένου εἶναι, κατὰ τὸν Μπαίιν, ἡ δύναμις καὶ ἡ ἐνέργεια, αἵτινες δὲν δρῶσιν ἐν τῷ κόσμῳ μεμονωμέναι, ἀλλ' ἐν συνδυασμῷ μετὰ τοῦ συστήματος τῶν κοσμικῶν δυνάμεων, διεπόμεναι ὑπὸ τοῦ νόμου τοῦ ἀφθάρτου τῆς ἐνεργείας. Τὸ νευρικὸν σύστημα εἶναι, κατὰ τὴν γνώμην αὐτοῦ, τὸ κέντρον, ἐν ᾧ συναντῶνται δύναμις καὶ ἐνέργεια. Πᾶν φαινόμενον συνειδήσεως δεικνύει τρία τινά: τὴν ἱκανότητα τοῦ διακρίνειν, τὴν τοῦ ἀντιλαμβάνεσθαι τὰς ὁμοιότητας καὶ τὴν τοῦ καθορίζειν τὰς παραστάσεις. Ἀπὸ τοῦ σημείου τούτου ἡ ἀρχὴ τοῦ συνειρμοῦ διέπει καὶ τὰ στοιχειωδέστερα τῶν ψυχικῶν φαινομένων. Ὁ Μπαίιν διακρίνει δύο θεμελιώδεις τύπους συνειρμοῦ, τὸν τῆς συναφείας καὶ τὸν τῆς ὁμοιότητος. Πλὴν τούτων ὁμιλεῖ καὶ περὶ ἄλλου συνειρμοῦ, τὸν ὁποῖον καλεῖ δημιουργικὸν (constructiv) καὶ ὅστις ἀποκαλύπτεται ἐν τῇ τέχνῃ καὶ τῇ ἐπιστήμῃ. Κατὰ τὸν Μπαίιν γνωρίζομεν μόνον ὑποκειμενικὰς καὶ οὐχὶ ἀντικειμενικὰς ἰδιότητας τοῦ ὑλικοῦ κόσμου. Πάντως τὰς ἀντικειμενικὰς ἰδιότητας δυνάμεθα κατ' αὐτὸν ν' ἀντιληφθῶμεν ὡς διαφόρους τῶν ὑποκειμενικῶν μόνον δι' ἀφαιρέσεως, ἀλλὰ δὲν δυνάμεθα ν' ἀποδώσωμεν αὐτόνομον ὕπαρξιν εἰς τὰς ἐξ ὑποκειμένου ἰδιότητας. Ἐν τῷ κεφαλαιώδει τούτῳ ζητήματι, ἐν τῇ σχέσει τοῦ ἀντιλαμβανομένου τὸν ἐξωτερικὸν κόσμον ὑποκειμένου, ὁ Μπαίιν δίσταται πρὸς τὸν Στούαρτ Μίλλ. Πρὸς τὴν ἱκανότητα τοῦ αἰσθάνεσθαι, ἤτοι πρὸς τὸ ἐξωτερικὸν φαινόμενον τοῦ Μίλλ, ὁ Μπαίιν ἀντιτάσσει τὴν μυϊκὴν λειτουργίαν ἐκ μέρους τοῦ ὑποκειμένου καὶ τὸν ἐρεθισμὸν ἐκ μέρους τοῦ ἀντικειμένου. Ἡ ἀντίθεσις αὕτη σημειοῖ πρόοδον τῆς συνειρμικῆς σχολῆς, ἀποτασσομένης οὕτω τῆς ἰδέας αὐτομάτου τινὸς ἐνεργείας. Ἄρρηκτοι δεσμοὶ συνδέουν ὡρισμένα αἰσθήματα πρὸς ὡρισμένας μυϊκὰς δράσεις. Ἐνταῦθα πρόκειται περὶ ἀρχικῶς αὐτομάτων κινήσεων, ἐστερημένων παντὸς τελολογικοῦ χαρακτῆρος. Αἱ αὐτόματοι κινήσεις αὗται λαμβάνουν, κατὰ τὸν Ἄγγλον φιλόσοφον, ὡρισμένας κατευθύνσεις διὰ τῆς συχνῆς ἐπαναλήψεως.

Πλὴν πολλῶν ἔργων, ἀποσκοπούντων πρὸ παντὸς τὴν ἐκλαΐκευσιν τῆς ἐπιστήμης, καὶ πολλῶν πραγματειῶν, δημοσιευθεισῶν ἐν τοῖς περιοδικοῖς «Information of the People», «Westminster Review» καὶ «Papers for the People», ὁ Μπαίιν ἔγραψε καὶ τὰ κάτωθι ἔργα, εἰς ἃ ὀφείλει τὴν διεθνῆ φήμην του. «Αἱ αἰσθήσεις καὶ ἡ νόησις» (1855), «Τὰ συναισθήματα καὶ ἡ βούλησις» (1859), «Ἡ μελέτη τοῦ χαρακτῆρος» (1861), «Ἐγχειρίδιον ψυχολογίας καὶ ἠθικῆς» (1868), «Πνεῦμα καὶ σῶμα» (1873), «Ἡ παιδαγωγικὴ ὡς ἐπιστήμη» (1879), «Ὁ Τζαίμς Μίλ, (βιογραφία) καὶ ὁ Τζὼν Στούαρτ Μὶλ (κριτική)» (1821), «Πρακτικαὶ μελέται» (1884), «Ἀγγλικὴ γραμματική», «Ἐγχειρίδιον συνθέσεων καὶ ρητορικῆς» κτλ. Τῷ 1876 ὁ Μπαίιν ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν φιλοσοφικῶν σπουδῶν «Mind, a Quarterly Review of Psychology and Philosophy».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *L. Ferri*, La psychologie de l'association.—*T. Ribot*, La phychologie anglaise contemporaine.—*J. Stuart Mill*, Essays.—*J. E. Verona*, Conferencias filosoficas (Ἀβάνα, 1890).

Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

— **Μπαίιν** (Bain), *Ἀλέξανδρος*. Ἄγγλος ἠλεκτρολόγος καὶ ἐφευρέτης (1810—1877). Ἐπενόησε τὸ ἠλεκτρικὸν ὡρολόγιον καί, τῷ 1843, ἓν σύστημα τυποτηλεγράφου. Ἀμφοτέρας τὰς ἐπινοήσεις του ταύτας διεξεδίκησεν ὁ ἐπίσης Ἄγγλος ἐφευρέτης Οὐΐτστων (Weatstone), προέκυψαν δ' ἐκ τούτου μακραὶ δίκαι, προκαλέσασαι τὴν οἰκονομικὴν καταστροφὴν τοῦ Μπαίιν. Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι αὐτὸς πρῶτος ἐχρησιμοποίησε διατρήτους ταινίας διὰ τὴν ταχεῖαν μεταβίβασιν τῶν τηλεγραφημάτων καὶ ὅτι πολύτιμος ἐν γένει ὑπῆρξεν ἡ συμβολή του ἐν τῇ προαγωγῇ τῆς τηλεγραφίας. Ἰδική του ἐπίσης ἐπινόησις ἦτο ὁ πρῶτος αὐτόματος ἠλεκτραγγέλτης πυρκαϊῶν. Ἡ ἀγγλικὴ κυβέρνησις ἀπένειμεν εἰς τὸν Μπαίιν (1874) σύνταξιν 2.000 φράγκων, γέρων ὅμως ὡς ἦτο πλέον καὶ ἐξηντλημένος ἐκ τῆς πενίας, δὲν ἠδυνήθη νὰ ἐπωφεληθῇ ἐπὶ μακρὸν χρόνον τοῦ εὐεργετήματος αὐτοῦ. Γ. Ζ.

**Μπαίινς** (Bains), *Ἐδουάρδος*. Ἄγγλος δημοσιολόγος (1774—1848). Ὡς ἁπλοῦς τυπογράφος ἐν Λήντς, συνέτασσε καὶ ἐξέδιδε τὴν ἐφημερίδα «Leeds Mercury», ἥτις ταχέως ἐγένετο ἓν τῶν κυριωτέρων ὀργάνων τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων. Ἀπὸ τοῦ 1833 μέχρι τοῦ 1840 ἀντεπροσώπευσε τὴν ἰδιαιτέραν πατρίδα του εἰς τὴν βουλὴν τῶν Κοινοτήτων, παρὰ τῆς ὁποίας ἠξίωσε τὴν μεταρρύθμισιν τοῦ ἐκλογικοῦ συστήματος καὶ τὴν εἰς τὰς βρεττανικὰς ἀποικίας κατάργησιν τῆς δουλείας. Ὑπῆρξεν ἐπίσης ὁ πρωτουργὸς πλείστων κοινωφελῶν ἱδρυμάτων. Ἔργα: «Ἱστορία τῶν πολέμων τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως» (1814), «Ἱστορία τῆς βασιλείας τοῦ Γεωργίου Γ'» (1825), «Ἱστορία τοῦ κόμιτος Λαγκάστερ» (1825). Α. Δ.

**Μπαὶκ** (Böckh, καθ' ἑλληνικὴν ἀπόδοσιν Βοίχιος), *Αὔγουστος*. Εἷς τῶν περιφημοτέρων ἀρχαιοδιφῶν καὶ φιλολόγων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἀσκήσας μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἀρχαιολογίας καὶ τῆς φιλολογικῆς ἐπιστήμης. Ἐγεννήθη τῇ 24 Νοεμβρίου 1785 ἐν Καρλσρούῃ τῆς Γερμανίας, ὅπου ὁ πατήρ του ὑπηρέτει ὡς δημόσιος ὑπάλληλος, καὶ ἀπεβίωσεν ἐν Βερολίνῳ τῇ 3 Αὐγούστου 1867. Ἀποπερατώσας τὰς γυμνασιακάς του σπουδὰς ἐν τῇ γενετείρᾳ του, ἐνεγράφη τῷ 1803 ἐν τῇ θεολογικῇ σχολῇ τοῦ ἐν Χάλλῃ πανεπιστημίου, πεισθεὶς ὅμως ὑπὸ τοῦ ἐπιφανοῦς φιλολόγου *Φρειδ. Αὔγ. Βόλφ*, διδάσκοντος ἐν τῇ φιλοσοφικῇ σχολῇ τοῦ αὐτοῦ πανεπιστημίου, ἠκολούθησε φιλολογικὰς σπουδὰς γενόμενος μαθητὴς αὐτοῦ. Τῶν μελετῶν τοῦ νεαροῦ φοιτητοῦ καρπὸς ἦτο ἡ ἐν ἔτει 1806 ἐκδοθεῖσα διατριβὴ «Commentatio in Platonis qui vulgo fertur Minoem». Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος διωρίσθη τῇ μεσολαβήσει τοῦ Σλάϊεμάχερ εἰς τὸ παιδαγωγικὸν φροντιστήριον τοῦ Βερολίνου. ἕνεκα ὅμως τῶν ἐπισυμβάντων τότε πολεμικῶν γεγονότων μετέβη εἰς Ἁϊδελβέργην ἐνταῦθα τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1807 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, τῷ δὲ 1809 ἐγένετο τακτικός, διδάσκων πλὴν τῶν καθαρῶς φιλολογικῶν μαθημάτων καὶ ἑλληνικὴν ἀρχαιολογίαν. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐξέδωκε τὰς κριτικὰς αὐτοῦ ἐρεύνας ἐπὶ τῶν τριῶν μεγάλων Ἑλλήνων τραγικῶν τῆς ἀρχαιότητος (1808), τὴν λατινιστὶ γεγραμμένην διατριβὴν περὶ τῶν μέτρων τοῦ Πινδάρου (1809) καὶ «Simonis Socratici, dialogi quatuor» (1810). Διὰ τῶν ἔργων του τούτων ἀπέκτησε τοιαύτην φιλολογικὴν φήμην, ὥστε τῷ 1811 ἐκλήθη ὡς καθηγητὴς τῆς ρητορικῆς καὶ τῆς ἀρχαίας λογοτεχνίας ἐν τῷ νεωστὶ ἱδρυθέντι πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου, συνάμα δὲ ἀνέλαβε καὶ τὴν διεύθυνσιν τοῦ φιλολογικοῦ φροντιστηρίου καὶ μετά τινα ἔτη (1820) καὶ τοῦ παιδαγωγικοῦ. Τῷ 1814 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Βερολίνου, κατόπιν δὲ καὶ πλείστων ἄλλων γερμανικῶν καὶ ξένων ἐπὶ πλέον ὠνομάσθη καὶ μυστικοσύμβουλος τοῦ αὐτοκράτορος.

Διὰ τῆς διδασκαλίας του, ἥτις περιελάμβανεν

Digitized by Google

ὄχι μόνον τὴν γραμματικὴν καὶ ἱστορικὴν ἑρμηνείαν σχεδὸν πάντων τῶν ἀρχαίων μνημείων τῆς ἑλληνικῆς λογοτεχνίας, ἀλλ' ἐξετείνετο καὶ εἰς τὰς ἀρχαιότητας, τὴν ἱστορίαν τῆς φιλοσοφίας, τὴν ἱστορίαν τῆς λογοτεχνίας, τὴν μετρικὴν καὶ τὴν ἐγκυκλοπαιδείαν τῆς ἀρχαιολογίας, νοουμένης ὡς γενικῆς ἐπιστήμης τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος, ἐμόρφωσε μέγαν ἀριθμὸν μαθητῶν, οἵτινες διέπρεψαν βραδύτερον ὡς καθηγηταὶ γυμνασίων καὶ πανεπιστημίων καὶ ἐδίδαξαν τὴν φιλολογίαν συμφώνως πρὸς τὰς ἀρχὰς τοῦ διδασκάλου των· μεταξὺ αὐτῶν καταλέγονται ἐκ μὲν τῶν Γερμανῶν ὁ K. Otfried Müller, ἐκ δὲ τῶν Ἑλλήνων ὁ **Εὐθ. Καστόρχης** καὶ ὁ Γ. Μιστριώτης. Ἡ ἀντίληψις τοῦ Μπαὶκ περὶ τῆς φιλολογίας ὡς ὀργανικοῦ συνόλου, ἀποσκοποῦντος τὴν γνῶσιν καὶ ἀναπαράστασιν τοῦ ὅλου βίου τῆς ἀρχαιότητος, εὗρε μὲν ἀντιπάλους σφοδροὺς ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ ἐπίσης ἐπιφανοῦς φιλολόγου *Γοδοφρείδου Ἕρμαν* καὶ τῆς ἐν Λειψίᾳ φιλολογικῆς σχολῆς, συνετέλεσεν ὅμως εἰς τὸ νὰ δοθῇ σπουδαιοτάτη ὤθησις εἰς τὰς φιλολογικὰς ἐρεύνας καὶ τὴν βαθυτέραν ἀντίληψιν τοῦ ἀρχαίου κόσμου. Τῆς τοιαύτης δὲ ἀντιλήψεως τῆς φιλολογίας ἔδωκεν ὁ ἴδιος ἀναμφισβήτητα δείγματα διὰ τῶν ἔργων αὐτοῦ. Ὁ Μπαὶκ συνέγραψε πλῆθος διατριβῶν καὶ συγγραμμάτων, ἐκ τῶν ὁποίων «Ἡ πολιτικὴ οἰκονομία τῶν Ἀθηναίων («Die Staatshauspaltung der Athener» 2 τόμ., Βερολῖνον 1817, β' ἔκδ. 1851—1852) κατέστησεν αὐτὸν ἔνδοξον· εἶναι ἔργον κλασσικόν, ἀνυπέρβλητον εἰς τὸ εἶδός του, διότι κατήρτισεν ἐκ συγγραφέων καὶ ἐξ ἐπιγραφῶν σαφεστάτην εἰκόνα τῆς Ἀθηναίων πολιτείας, οὕτω σαφῆ, ὥστε νὰ λεχθῇ ὅτι τοῦ προϋπολογισμοῦ τῶν Ἀθηνῶν ἐπὶ τοῦ Πελοποννησιακοῦ πολέμου ἔχομεν τοιαύτην εἰκόνα, οἵαν δὲν ἔχομεν περὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ σημερινοῦ κράτους. Ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ κυρίως φιλολογίᾳ ἀνεδείχθη ὁ Μπαὶκ διὰ τῆς ἐκδόσεως τοῦ Πινδάρου (2 τόμ. Λειψία 1811—1821, β' ἔκδ. 1825) καὶ τοῦ «Corpus inscriptionum graecarum» (τόμ. 4, Βερολῖνον 1824—1862), ἐκδοθέντος κατ' ἐντολὴν τῆς ἐν Βερολίνῳ ἀκαδημίας. Ἀξιολογώταται δὲ εἶναι καὶ αἱ ἄλλαι ἐργασίαι αὐτοῦ, μεταξὺ τῶν ὁποίων καταλέγονται αἱ ἑξῆς: «De metris Pindari libri III quibus praecepta artis metricae et musicae Graecorum docentur» (1811), «Ἡ ἐξέλιξις τῆς διδασκαλίας τοῦ πυθαγορείου Φιλολάου» (1819), «Μετρολογικαὶ ἔρευναι περὶ βαρῶν, νομισμάτων καὶ μέτρων τῶν ἀρχαίων» (1838), «Τὰ κείμενα περὶ τῶν ναυτικῶν τῆς ἀττικῆς πολιτείας» (1840), ἡ ἔκδοσις τῆς «Ἀντιγόνης» τοῦ Σοφοκλέους μετὰ γερμανικῆς μεταφράσεως (1843), «Zur Geschichte der Mondcyclen bei den Hellenen» (1855), «Ἐπιγραφικαὶ καὶ χρονολογικαὶ σπουδαί» (1856) καὶ πλῆθος ἄλλων διατριβῶν, ἐν αἷς καὶ αἱ περὶ κοσμογονικῶν, ἀστρονομικῶν καὶ χρονολογικῶν παρὰ τοῖς ἀρχαίοις διδασκαλιῶν κτλ., αἵτινες μετὰ τῶν ἀκαδημεικῶν αὐτοῦ λόγων ἐξεδόθησαν εἰς τὴν σειρὰν τῶν «Kleinen Schriften» τοῦ Μπαὶκ ὑπὸ τῶν Ascherson, Braduscheck καὶ Eichholz (Λειψία 1858—1874 εἰς 7 τόμ.). «Ἐγκυκλοπαιδεία καὶ μεθοδολογία τῶν φιλολογικῶν ἐπιστημῶν», ἣν ἐδίδασκεν ἐπὶ τεσσαρακονταετίαν καὶ πλέον, ἐξεδόθη μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ Braduscheck εἰς δύο τόμους (Λειψία 1877, β' ἔκδ. 1886—1888).

*Ἡ φιλολογία κατὰ τὸν Μπαίκ*. Ἐκ τῆς σχολῆς τοῦ Βόλφ προερχόμενος ὁ Μπαίκ, κατ' ἀρχὰς μὲν ἐβάδισεν ἐπὶ τὰ ἴχνη τοῦ διδασκάλου, κατόπιν ὅμως διεμόρφωσεν ἴδιον σύστημα φιλολογικόν. Ἤδη τῷ 1822 ἐν τῷ πανεπιστημιακῷ του λόγῳ «De antiquarum litterarum disciplina» ἐξέθηκε τὰς γνώμας αὐτοῦ περὶ τῆς οὐσίας καὶ τῶν μερῶν τῆς φιλολογίας, ἣν ὥριζεν ὡς «universae antiquitatis cognitionem historicam et philosophicam» (=ἱστορικὴν καὶ φιλοσοφικὴν γνῶσιν συμπάσης τῆς ἀρχαιότητος)· βραδύτερον ὥρισε τὴν φιλολογίαν ὡς «das Wiedererkennen des Erkannten» (=ἐκ νέου γνῶσιν, ἤτοι ἐπαναγνώρισιν καὶ κατανόησιν τῶν ἐγνωσμένων). Ἀλλ' ὁ ὁρισμὸς οὗτος ἦγεν εἰς ἄτοπον, ὅπερ ἐνόησε καὶ ὁ Μπαίκ, περιορίσας τὴν φιλολογίαν εἰς τὴν ἱστορικῶς ἐπιστημονικὴν γνῶσιν τῆς ὅλης δράσεως καὶ ἐνεργείας ἔθνους τινὸς ἢ ἐποχῆς. Προχωρῶν δὲ διῄρεσε τὴν φιλολογίαν εἰς δύο μέρη, τὸ *τυπικὸν* ἢ *διαπλαστικὸν* (formalen) καὶ τὸ *πραγματικὸν* ἢ *ὑλικὸν* (materialen)· καὶ τὸ μὲν πρῶτον περιλαμβάνει τὴν *ἑρμηνευτικὴν* καὶ τὴν *κριτικήν*, τὸ δὲ δεύτερον πάσας τὰς ἄλλας φιλολογικὰς μαθήσεις, αἵτινες ἐρευνῶσι τὸν *πρακτικὸν* καὶ *θεωρητικὸν* βίον τῶν ἀρχαίων. Ὁ πρακτικὸς περιλαμβάνει: α') τὸν δημόσιον βίον, τὸν ὁποῖον περιγράφουσιν ἡ πολιτικὴ ἱστορία, αἱ πολιτικαὶ ἀρχαιότητες, ἡ χρονολογία καὶ ἡ γεωγραφία, καὶ β') τὸν ἰδιωτικὸν βίον, ὑποδιαιρούμενον εἰς ἐξωτερικὸν (ἀγροτικὴ οἰκονομία, ἐμπόριον καὶ βιομηχανία, ναυτικὸς βίος καὶ κυρίως ὁ οἰκιακὸς βίος μετὰ τῆς βοηθητικῆς μαθήσεως τῆς μετρολογίας) καὶ ἐσωτερικὸν (γάμος, ἀνατροφὴ τῶν τέκνων, δουλεία κτλ.). Ὁ θεωρητικὸς διαιρεῖται: α') εἰς τὸν βίον, ἐν ᾧ ἡ σκέψις τῶν ἀνθρώπων ἐξωτερικεύεται διὰ συμβόλων: θρησκεία, πλαστική, μουσική, ὀρχηστική, καὶ β') εἰς τὸν βίον, ἐν ᾧ ἡ σκέψις μένει καθαρὰ ἐν τῷ ἐσωτερικῷ κόσμῳ: ἡ ἐπιστήμη. Ἐν αὐτῇ τὸ περιεχόμενον καὶ ἡ μορφὴ τῆς γνώσεως διαφέρουσι. Τὸ περιεχόμενον ἀποτελεῖ ἀρχικῶς ἡ μυθολογία, ἀπὸ τῆς ὁποίας διαμορφοῦται ἡ φιλοσοφία καὶ ἐξ αὐτῆς αἱ λοιπαὶ ἐπιστῆμαι, αἵτινες ἐν μέρει εἶναι φυσικαί, συμπεριλαμβανομένων καὶ τῶν μαθηματικῶν, καὶ ἐν μέρει ἠθικαί. Μορφὴ τῆς γνώσεως εἶναι ἡ γλῶσσα, ἥτις κατ' ἀρχὰς πρέπει νὰ μελετηθῇ αὐτὴ καθ' ἑαυτὴν ἐν τῷ ἐσωτερικῷ ὀργανισμῷ της διὰ τῆς γραμματικῆς, εἶτα δὲ ἐν τῇ διαμορφώσει καὶ ἐξελίξει αὐτῆς εἰς διαφόρους καλλιτεχνικὰς μορφάς, περὶ ὧν πραγματεύεται ἡ ἱστορία τῆς λογοτεχνίας.

*Μπαὶκ καὶ Ἕρμαν*. Ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς φιλολογίας κατέστη περιώνυμος ἡ ὀξεῖα ἐπιστημονικὴ ἔρις μεταξὺ τοῦ Γοδ. Ἕρμαν καὶ τοῦ Μπαίκ. Ἀφορμὴν κυρίως εἰς τὴν διαμάχην τῶν δύο ἐπιφανεστάτων ἐν τῇ φιλολογίᾳ ἀνδρῶν ἔδωκεν ἡ ἐν ἔτει 1824 γενομένη ἔκδοσις τοῦ α' τεύχους τοῦ «Corpus inscriptionum graecarum» ὑπὸ τοῦ Μπαίκ, τὸν ὁποῖον ἐπέκρινεν αὐστηρότατα ὁ ἐν τῇ ἀκμῇ τῆς δόξης του εὑρισκόμενος τότε Ἕρμαν. Ὁ Μπαὶκ εἶχεν ἤδη ψέξει τὴν τάσιν τῶν νεωτέρων φιλολόγων νὰ ἀρέσκωνται περὶ τὰ γραμματικὰ ἀντὶ νὰ ἐπιδιώκωσι τὴν ἐκτενῆ γνῶσιν τῆς ἀρχαιότητος. Πρὸς τὸν Ἕρμαν εὑρίσκετο ἀπὸ πολλοῦ εἰς ἀντίθεσιν, ἐκ συζητήσεων μετ' αὐτοῦ περὶ τῶν θεμελιωδῶν ἀρχῶν τῆς μετρικῆς, ἥτις ηὐξήθη μετὰ ταῦτα καὶ ἐξ ἄλλων προστριβῶν, ἀλλ' ὑπέβοσκεν ἀνεκδήλωτος. Ἐπηκολούθησε τότε ἡ ἐπίκρισις τοῦ ἐκδοθέντος τεύχους τῶν ἐπιγραφῶν, ἥτις εἶχε τὴν καταφανῆ πρόθεσιν τῆς ἐπιστημονικῆς συντριβῆς τοῦ Μπαίκ. Ὁ Ἕρμαν, ἐπεκτείνων τὸν ἔλεγχον αὐτοῦ, ἐπέκρινε καθ' ὅλην τὴν γραμμὴν τὰς περὶ τοῦ σκοποῦ τῆς φιλολογίας γνώμας τοῦ Μπαὶκ καὶ ὑπερημύνθη ζωηρῶς τοῦ ἰδίου φιλολογικοῦ συστήματος, ὅπερ ἦτο ἄντικρυς ἀντίθετον ἐκείνου. Ὁ ἀγὼν ἔλαβε μεγάλας διαστάσεις, διότι πρὸς βοήθειαν τῶν δύο ἀντιπάλων ἔσπευσαν οἱ ἐπιφανέστεροι τῶν Γερμανῶν φιλολόγων. Τὸ ἐπίμαχον ζήτημα, τὸ καὶ σήμερον θεμελιῶδες, ἦτο: τίς ὁ πρώτιστος σκοπὸς τῆς φιλολογικῆς ἐπιστήμης καὶ ποῖον τὸ κύριον περιεχόμενον αὐτῆς. Κατὰ τὸν Μπαὶκ καὶ τοὺς ἀκολουθοῦντας αὐτόν, ἡ μὲν κριτικὴ καὶ ἑρμηνευτικὴ εἶναι βοηθητικαὶ ἐπιστῆμαι, δι' ὧν κατανοοῦμεν σαφῶς καὶ ὀρθῶς τὰς ἐν τοῖς ποιήμασι καὶ συγγράμμασι τῶν Ἑλλήνων καὶ Ρωμαίων ἰδέας καὶ διὰ τούτων τὸν βίον τῆς ἀρχαιότητος, ἡ δὲ γνῶσις τῆς γλώσσης, ὡς παρέχουσα τὰς ἰδέας αὐτὰς εἰς τὸν φιλόλογον, εἶναι μὲν καὶ αὐτὴ ἓν τῶν ἀντικειμένων τῆς ἐρεύνης αὐτοῦ, οὐχὶ ὅμως τὸ πρῶτον καὶ κύριον. Ἀληθὴς φιλόλογος γίνεταί τις διὰ μόνης τῆς γνώσεως τῆς πραγματικῆς ὕλης καὶ οὐχὶ μελετῶν ἁπλῶς τοὺς ἀρχαίους ποιητὰς καὶ συγγραφεῖς χάριν τῆς γλώσσης αὐτῶν. Ὁ Ἕρμαν, ἀντιθέτως, καὶ ἡ σχολὴ αὐτοῦ τὴν μὲν ἔρευναν τῆς γλώσσης θεωρεῖ ὡς κύριον τοῦ φιλολόγου ἔργον, τὴν ἑρμηνευτικὴν καὶ κριτικὴν ὡς ὄργανα πρὸς ἀκριβῆ καὶ ὀρθὴν κατάληψιν καὶ διόρθωσιν τοῦ κειμένου, τὸ δὲ πραγματικὸν ὡς βοήθημα μόνον. Ἐὰν ἡ γνῶσις τῶν πραγμάτων ἦτο τὸ πᾶν διὰ τὸν φιλόλογον, τότε ἠδύνατό τις νὰ ὀνομάζηται καὶ φιλόλογος χωρὶς νὰ γνωρίζῃ ἑλληνικὰ καὶ λατινικά, ἀλλὰ νὰ μάθῃ ἐκ βιβλίων ἐν νεωτέραις γλώσσαις τὰ πράγματα ταῦτα. Ἐὰν ὅμως θεωρηθῇ ἡ γνῶσις τῆς γλώσσης ὡς τὸ σπουδαιότατον, τότε εὑρίσκεταί τις μᾶλλον ἐν τῷ δικαίῳ, πρῶτον μὲν διότι ἡ γνῶσις αὕτη εἶναι τὸ δυσκολώτατον, εἶτα δὲ καὶ διότι ἡ γλωσσομάθεια προϋποθέτει καὶ γνῶσιν πολλῶν πραγμάτων, καὶ τρίτον διότι ἡ γλῶσσα καταφανῶς εἶναι τὸ κέντρον, ἐξ οὗ ὁρμᾶται πᾶσα γνῶσις ἡμῶν ἐν τῇ ἀρχαιομαθείᾳ.

Ἡ ἐπιστημονικὴ αὕτη ἔρις μεταξὺ τῶν δύο ἐπιφανῶν φιλολόγων διήρκεσεν ἀπὸ τοῦ 1825 μέχρι τοῦ 1837, ὅτε ὁ μαθητὴς τοῦ Ἕρμαν καὶ φίλος τοῦ Μπαὶκ Fr. Thiersch ἐμεσολάβησεν ὅπως καταπαύσῃ. Τοῦτο, ἄλλως τε, εἶχεν ἤδη ἀποφασίσει νὰ ἐπιτύχῃ καὶ αὐτὸς ὁ Μπαὶκ διὰ προσωπικῆς ἐν ἀνάγκῃ συναντήσεως· πράγματι δέ, κατ' Αὔγουστον τοῦ αὐτοῦ ἔτους διερχόμενος διὰ Λειψίας ἐπεσκέφθη τὸν ἀντίπαλόν του, ὅστις φιλοφρονέστατα καὶ ἱπποτικώτατα ὑπεδέχθη αὐτόν. Ἀλλὰ μόλις μετὰ ἐννέα ἔτη εἶδον οἱ φιλόλογοι ὁμοῦ τοὺς δύο κορυφαίους διδασκάλους ἐν τῷ φιλολογικῷ συνεδρίῳ τῆς Ἰένης νὰ συνδιαλέγωνται φιλοφρόνως. Κατὰ τὴν μακρὰν ταύτην διαμάχην, καθ' ἣν αἱ ἀπαντήσεις ἐγίνοντο διὰ βιβλίων ὁλοκλήρων, οἱ δὲ φιλόλογοι τῆς Γερμανίας διηρέθησαν εἰς δύο στρατόπεδα, ἐνίκησεν ἐπὶ τέλους ἡ ὀρθὴ ἀντίληψις, ὅτι ἀμφότεραι αἱ κατευθύνσεις ἐν τῇ ἐπιστήμῃ, ἡ γλωσσικὴ καὶ ἡ πραγματική, ἐπιδιώκουσιν ἕνα καὶ τὸν αὐτὸν σκοπόν, τὴν γνῶσιν τῆς ἀρχαιότητος ἐν εὐρυτάτῃ ἐννοίᾳ, ὅτι ἡ μία συμπληροῖ τὴν ἑτέραν, διδασκομένων τῶν τροφίμων νὰ στρέφωσι τὰ βλέμματα ἐκ τῶν λέξεων εἰς τὰ πράγματα, ἐσχηματίσθη δ' οὕτως ἡ καθολικὴ ἔννοια τῆς κλασσικῆς φιλολογίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Εὐθ. Καστόρχη*, Πρῶτον εἰσαγωγικὸν μάθημα τῶν ἑλληνικῶν ἀρχαιολογιῶν (Ἀθήνησι 1849, σελ. 13—21).— *W. Freund*, Triennium philologicum oder Grundzüge der philologischen Wissenschaften (Leipzig 1874 σ. 10 ἑ. καὶ 80).—*Sachse*, Erinnerungen an August Boeckh (Berlin 1868).—*Max Hoffmann*, Aug. Böckh (1901).—*Brockhaus*, Conversation Lexicon (Leipzig 1882) ἐν λ.—*Iwan von Müller*. Handbuch der klassischen Altertums-Wissenschaft (τ. Α' 1892 σ. 128 ἑπ.).—*E. Babelon*, ἐν τῇ γαλλικῇ μεγάλῃ ἐγκυκλοπαιδείᾳ («La Grande Encyclopédie»).—*I. E. Καλιτσουνάκι*, Αἱ μεταλλαγαὶ τοῦ σκοποῦ τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας κατὰ τὴν τελευταίαν ἑκατονταετηρίδα (ἐν Ἀθήναις 1926, σ. 28 ἑπ.).

Ι. Φ. ΔΗΜΑΡΑΤΟΣ

**Μπαϊκὰλ** (Baikal) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Ἀσίας (βλ. λ. *Βαϊκάλη*).

**Μπαῖκαπ** (Bacup) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λαγκασάϊρ. Εἶναι ἐμπορικωτάτη καὶ ἔχει ἀξιολόγους ἐγκαταστάσεις ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας, χυτήρια σιδήρου καὶ κασσιτέρου, χρωματουργεῖα, κλωστήρια βάμβακος κλπ. ὡς καὶ ὀρυχεῖα γαιάνθρακος καὶ λατομεῖα. Κάτ. 22.318.

Χ. Δ.

**Μπαϊκαρᾶ (Μιρζᾶ-σουλτὰν Χουσεΐν)**. Ἀπόγονος τοῦ Ταμερλάνου, βασιλεύσας ἀπὸ τοῦ 1470 μέχρι τοῦ 1505 ἐν Χορασὰν τῆς Περσίας καὶ Ἀφγανιστάν, ἀφοῦ ἐφόνευσε τὸν Μπαϊσουγγούρ, υἱὸν τοῦ Σαχρόκ. Πρωτεύουσά του ἦτο ἡ Χεράτη, ἥτις ἔγινεν ἐπ' αὐτοῦ κέντρον μουσουλμανικῆς παιδείας. Ἔγραψε καὶ ποιήματα περσιστὶ καὶ τουρκιστί.

Ν. Μ.

**Μπαῖκερ** (Backer), ***Ἀδριανός***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1635—1684). Ἐξεπόνησε συνθέσεις ἐπὶ ἀλληγορικῶν ἢ μυθολογικῶν καὶ ἱστορικῶν θεμάτων καὶ προσωπογραφίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἡ ἐσχάτη κρίσις» (ἐν Ἄμστερνταμ), «Ἡ ἁρπαγὴ τῶν Σαβίνων» (ἐν Μπροῦνσβικ) καὶ «Τὸ μάθημα τῆς ἀνατομίας».

— **Μπαῖκερ** (Backer), ***Ἰάκωβος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1608—1651), πατὴρ τοῦ προηγουμένου. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Lambert Jacobsz ἐν Leeuwarden, εἶτα δὲ παρὰ τῷ Ρέμπραντ ἐν Ἄμστερνταμ καὶ ἠσχολήθη εἰς τὴν ἀπεικόνισιν ἀλληγοριῶν καὶ μυθολογικῶν θεμάτων καὶ τὴν προσωπογραφίαν, ἐν ᾗ διέπρεψε. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Αἱ συντεχνίαι» τοῦ ἐν Ἄμστερνταμ μουσείου Van der Hoop καὶ τοῦ δημαρχείου τῆς ἰδίας πόλεως, αἱ ἐν τοῖς μουσείοις τῆς Δρέσδης καὶ τοῦ Μπροῦνσβικ ἀποκείμεναι προσωπογραφίαι του καὶ ἡ σύνθεσις «Ἀφροδίτη καὶ Ἄδωνις», ἣν κατέχει τὸ Μουσεῖον τοῦ Κάσσελ.

Ι. Μ. Π.

**Μπαῖκερ** (Baker)· βλ. λ. *Μπαίικερ*.

—**Μπαῖκερ** (Baker), ***Ἰωσηφίνα***. Σύγχρονος μαύρη Ἀμερικανὶς χορεύτρια. Κατέστη διάσημος μετὰ τὴν πρό τινων μόλις ἐτῶν ἄφιξίν της εἰς Παρισίους, ἔνθα διήνυσε καὶ τὸ κυριώτερον καλλιτεχνικόν της στάδιον εἰς τὰ μεγαλύτερα παρισινὰ καφῳδεῖα. Στερουμένη πάσης χορογραφικῆς μορφώσεως, ἀκολουθεῖ μᾶλλον τὴν ρυθμικὴν σχολήν, σχηματοποιοῦσα τὰς πρωτογόνους ὀργιαστικὰς ὀρχήσεις τῶν μαύρων. Ὁ χορός της ἔχει μεγάλην ἐκφραστικότητα, ἰδίως προκειμένου περὶ τῶν ὀσφυϊκῶν κινήσεων. Συνήθως χορεύει γυμνή, περιεζωσμένη δι' ἀπομιμήσεων τροπικῶν καρπῶν (βανανῶν) καὶ φυλλωμάτων. Εἶναι ἀνωτέρα εἰς εἶδος τέχνης κατώτερον. Ἐσχάτως (1931) ἐξέδωκε τὰ ἀπομνημονεύματά της, συντεταγμένα ὑπὸ τοῦ Γάλλου δημοσιογράφου Sauvage.

Μ. Β.

**Μπαικερέελ** (Backereel). Οἰκογένεια Φλαμανδῶν ζωγράφων, ἣν ἰδίᾳ ἐκπροσωποῦν ὁ *Ζὶλλ* καὶ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ *Γουλιέλμος Μπαικερέελ*. Ὁ πρῶτος τούτων ἐγεννήθη περὶ τὸ 1572 ἐν Ἀμβέρσῃ· ἠκολούθησε δ' ἐπαλλήλως τὴν τεχνοτροπίαν τῶν Καρράτσι, τοῦ Τιντορέτο καὶ τοῦ Ρούμπενς. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: Ἅγιος Κάρολος ὁ Βορρομαῖος» (ἐν Μπρύζ), «Ἡ ἐμφάνισις τῆς Παρθένου» καὶ «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» (ἐν Βρυξέλλαις), «Ἡ Ἡρὼ καὶ ὁ Λέανδρος» (Μπελβεντέρε Βιέννης). Ὁ Γουλιέλμος Μπαικερέελ ἐγεννήθη περὶ τὸ 1570 ἐν Ἀμβέρσῃ καὶ ἀπέθανε τῷ 1600 ἐν Ἰταλίᾳ. Διεκρίθη ὡς τοπιογράφος.

Ι. Μ. Π.

**Μπαῖκι** (Baikie) ***Μπάλφουρ***. Σκῶτος ἐξερευνητὴς (1824—1864). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν Ἐδιμβούργῳ. Διωρίσθη ἰατρὸς τῆς ἀποστολῆς τοῦ Νίγηρος (1854), ἀποθανόντος δὲ τοῦ πρεσβυτέρου τῶν ἀξιωματικῶν τῆς ἀποστολῆς ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν αὐτῆς. Ἀναπλεύσας τὸν ποταμὸν Μπενουέ, εἰς ἀναζήτησιν τοῦ ἐξερευνητοῦ Ἑρρίκου Μπάρτ, ἀνεκάλυψε τὸ σημεῖον τῆς ἑνώσεως τοῦ ποταμοῦ τούτου μετὰ τοῦ Νίγηρος. Τῷ 1857 ἐπεχείρησεν ἕτερον ἐξερευνητικὸν ταξίδιον ἐν τῷ ποταμῷ Νίγηρι. Τὸ μικρὸν ἀτμῆρες σκάφος, οὗτινος ἐπέβαινε, κατεστράφη κατὰ τὴν διάβασιν πτώσεών τινων τοῦ ροῦ τοῦ ποταμοῦ καὶ ὁ Μπαῖκι ἠναγκάσθη νὰ ἀποχωρισθῇ τῶν συντρόφων του, οἵτινες καὶ ἐπέστρεψαν οἴκαδε. Ὁ ἴδιος ὅμως ἐξηκολούθησε τὰς ἐρεύνας του, συνοδευόμενος ὑπὸ δύο ἰθαγενῶν, καὶ παραμείνας ἐν τῇ κεντρικῇ Ἀφρικῇ μέχρι τοῦ 1864 ἐγκατέστησεν ἐκεῖ κέντρα ἐμπορίου καὶ συγκοινωνιῶν. Ἔγραψε: «Παρατηρήσεις περὶ τῶν γλωσσῶν Χάουζα καὶ Φουλφουλδέ», «Ἀφήγησιν περὶ τῆς ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς εἰς τὸν ποταμὸν Νίγηρα».

Γ. Ι. Β.

**Μπαΐκινγκ** (Boeking), ***Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς νομικὸς (1802—1870). Καθηγητὴς τοῦ ρωμαϊκοῦ

Digitized by Google

δικαίου ἐν Βόννῃ καὶ Βερολίνῳ ἀνεδείχθη διὰ κλασσικῶν ἐκδόσεων τῶν ἔργων τῶν Ρωμαίων νομοδιδασκάλων τῶν «Institutiones» (Εἰσηγήσεων) τοῦ Γαΐου καὶ Ἰουστινιανοῦ, τῶν «Fragmenta» (Ἀποσπασμάτων) τοῦ Οὐλπιανοῦ, τοῦ Παπινιανοῦ, τοῦ Μοδεστίνου καὶ τοῦ «Corpus legum seu Brachylogus», ἀγνώστου συγγραφέως. Ἀλλὰ τὸ κύριον αὐτοῦ ἔργον ὑπῆρξεν ἡ συγκέντρωσις καὶ ἔκδοσις τῆς συλλογῆς «Notitia dignitatum utriusque imperii» δι' ἣν εἰργάσθη ἐπὶ 20 ὁλόκληρα ἔτη. Ἔγραψεν ἐπίσης πρὸς χρῆσιν τῶν φοιτητῶν του τὰ ἐπίτομα ἔργα: «Ἐπιτομὴ πανδεκτῶν» καὶ «Ἐγχειρίδιον πανδεκτῶν». Θ. Κ.

**Μπαΐκλερ** (Boecler), ***Ἰωάννης.*** Γερμανὸς σοφὸς καὶ ἱστορικὸς (1611—1692). Ἐσπούδασε φιλολογίαν, φιλοσοφίαν, δημόσιον δίκαιον, εἰδικεύθη δὲ εἰς τὴν ἱστορίαν. Τῷ 1648, κληθεὶς ὑπὸ τῆς βασιλίσσης τῆς Σουηδίας Χριστίνας, ὠνομάσθη καθηγητὴς τῆς ῥητορικῆς ἐν Οὐψάλᾳ καὶ ἱστοριογράφος τοῦ βασιλείου. Μὴ ἀνεχόμενος τὸ κλῖμα τῆς Σουηδίας ἐπανῆλθεν εἰς Γερμανίαν καὶ ἔτυχεν ἐξαιρετικῶν τιμῶν καὶ χρηματικῆς χορηγήσεως ἐκ μέρους τοῦ ἐκλέκτορος τῆς Μαγεντίας, τοῦ αὐτοκράτορος Φερδινάνδου Γ' καὶ τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'. Ἐξέδωκε μετὰ σχολίων πλείστους Λατίνους συγγραφεῖς καὶ ἐκ τῶν Ἑλλήνων τὸν Ἡρόδοτον καὶ τὸν Πολύβιον, καὶ ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἱστορικά, φιλοσοφικὰ καὶ ἠθικά, ἐξ ὧν κύρια: «Πραγματεία περὶ Ἑλλήνων καὶ Λατίνων συγγραφέων ἀπὸ Ὁμήρου μέχρι τοῦ ΙΖ' αἰῶνος» (1674), «Βιβλιογραφία ἱστορικοφιλολογική» (1677), «Ἱστορία παγκόσμιος ἀπὸ κτίσεως κόσμου μέχρι τῆς γεννήσεως τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ» «Ἱστορία παγκόσμιος τεσσάρων αἰώνων μ. Χ.». Θ. Κ.

**Μπαΐκλιν** (Boecklin), ***Ἀρνόλδος.*** Διακεκριμένος Ἑλβετὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Βασιλείᾳ (1827—1901). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς τὴν ζωγραφικὴν εἰς Ντύσσελντορφ, ὅπου ἐμελέτησε τοὺς Γερμανοὺς ζωγράφους, χωρὶς οὐδόλως νὰ ἐπηρεασθῇ ὑπ' αὐτῶν. Ἐκεῖθεν μετέβη τῷ 1848 εἰς Παρισίους, εἰς νεαρωτάτην ἔτι ἡλικίαν, ὅπου βαθεῖαν ἐνεποίησαν εἰς αὐτὸν ἐντύπωσιν αἱ δραματικαὶ σκηναὶ τῆς κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐπισυμβάσης ἐπαναστάσεως. Μεταβὰς ἀπὸ τῶν Παρισίων εἰς Ρώμην (1850), παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ μακρὸν ζῶν ἐν μέσῳ παντοειδῶν στερήσεων. Ἐκεῖ ἐγνωρίσθη μετά τινος πτωχῆς νέας, ὀνομαζομένης Ἀγγέλας Πασκοῦτσι, τὴν ὁποίαν βραδύτερον ἐνυμφεύθη. Ἡ γυνὴ αὕτη μεγάλως ἐνίσχυσε τὸν ἀπογοητευμένον καλλιτέχνην, ἔδωσε δὲ εἰς αὐτὸν θάρρος διὰ τὴν συνέχισιν τοῦ δυσκόλου ἀγῶνος τῆς ἐπικρατήσεως. Ἐκ Ρώμης ὁ Μπαΐκλιν μετέβη εἰς Γερμανίαν καὶ παρέμεινεν εἰς Βαϊμάρην καὶ Μόναχον, ὁ φωτεινὸς ὅμως τῆς Ἰταλίας οὐρανὸς προσείλκυσεν αὐτὸν ἐκ νέου εἰς Ρώμην, ὅπου ἐζωγράφησε μεταξὺ 1862 καὶ 1866 τὸ ἐν τῇ πινακοθήκῃ Σὰκ τοῦ Μονάχου εἰς διπλοῦν σῳζόμενον ἔργον του «Ἔπαυλις ἐγγὺς τῆς παραλίας». Τῷ 1866, εὑρισκόμενος εἰς Βασιλείαν, ἐπεδόθη εἰς τὴν τοιχογραφίαν, διεκόσμησε δὲ διάφορα κτήρια, ἐν οἷς καὶ τὸ μουσεῖον τῆς πόλεως.

Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἡ τεχνοτροπία τοῦ Μπαΐκλιν ἄρχεται διαμορφουμένη πρὸς τὸν τέλειον καὶ

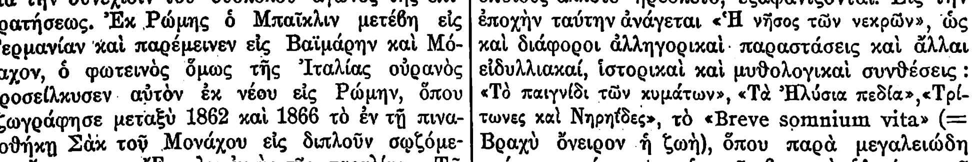

*Ἀ. Μπαΐκλιν: Ἡ νῆσος τῶν νεκρῶν.*

[Μουσεῖον τῆς Βασιλείας.]

ὁριστικὸν αὐτῆς τύπον. Ἀποκτᾷ ἤδη βαθμηδὸν τὴν τεχνικὴν εὐχέρειαν, τῆς ὁποίας ἐστερεῖτο μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὁ δὲ χρωματισμὸς καὶ ἡ καθόλου ἐκτέλεσις καθίστανται ὁλονὲν ἀρτιώτεραι. Ὁ «Καλπασμὸς τοῦ θανάτου», οἱ «Προσκυνηταὶ τῆς Ἐμμαοὺς» καὶ ἄλλα ἔργα του, σῳζόμενα κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν πινακοθήκην Σὰκ τοῦ Μονάχου, ἀνάγονται εἰς τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Παραμένων ἐν τῇ πατρίδι του ἐξειργάσθη διαφόρους προσωπογραφίας, ἀλλὰ κατὰ τοιοῦτον σατιρικὸν τρόπον, ὥστε προεκάλεσε τὴν ἐχθρότητα πολλῶν συμπατριωτῶν του καὶ ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ. Ἐταξίδευσεν ἐκεῖθεν εἰς Μόναχον (1871—1874), Φλωρεν-

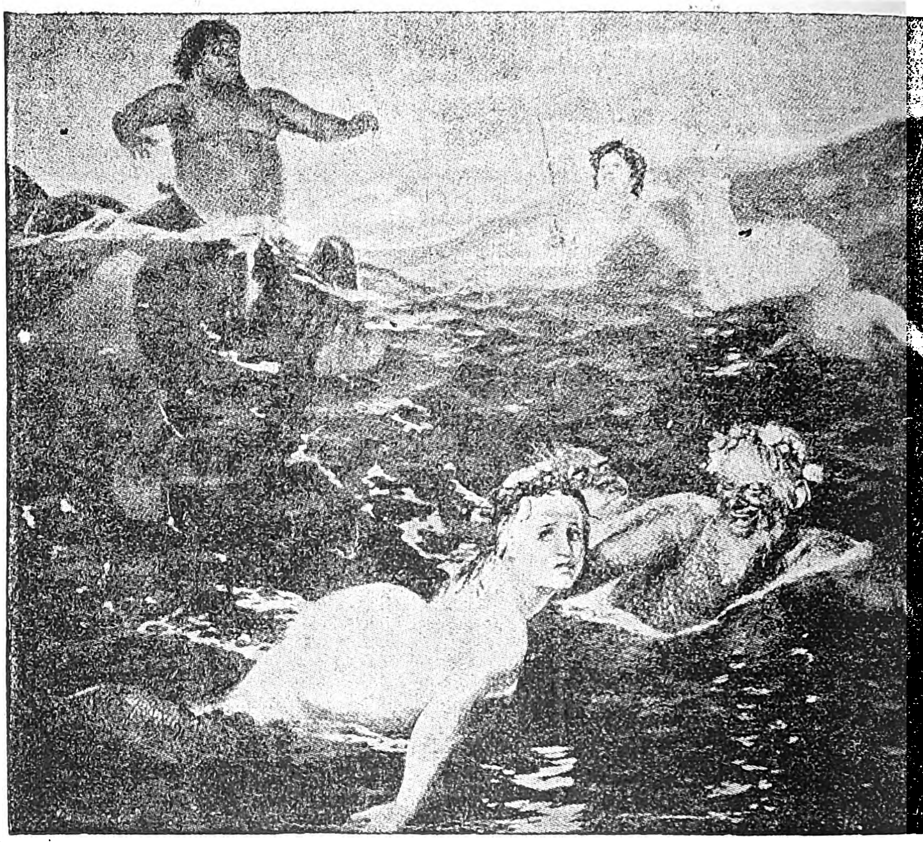

*Ἀ. Μπαΐκλιν: Τὸ παιγνίδι τῶν κυμάτων.*

[Νέα πινακοθήκη τοῦ Μονάχου.]

τίαν (1874—1885) καὶ Ζυρίχην (1885—1892), ἐργαζόμενος διαρκῶς καὶ τελειοποιῶν τὴν τεχνοτροπίαν του. Αἱ συνθέσεις του καθίστανται ἁπλούστεραι, οἱ δὲ παράτολμοι χρωματισμοί, εἰς τοὺς ὁποίους ἄλλοτε ἠρέσκετο, ἐξαφανίζονται. Εἰς τὴν ἐποχὴν ταύτην ἀνάγεται «Ἡ νῆσος τῶν νεκρῶν», ὡς καὶ διάφοροι ἀλληγορικαὶ παραστάσεις καὶ ἄλλαι εἰδυλλιακαί, ἱστορικαὶ καὶ μυθολογικαὶ συνθέσεις: «Τὸ παιγνίδι τῶν κυμάτων», «Τὰ Ἠλύσια πεδία», «Τρίτωνες καὶ Νηρηΐδες», τὸ «Breve somnium vita» (= Βραχὺ ὄνειρον ἡ ζωή), ὅπου παρὰ μεγαλειώδη κρήνην παρίστανται αἱ τρεῖς βασικαὶ ἡλικίαι τοῦ ἀνθρώπου κλπ. Τὸ ἔργον τοῦ Μπαΐκλιν διακρίνεται ὄχι κυρίως διὰ τὸ σχέδιον, τὸ χρῶμα ἢ τὴν σύνθεσιν, ἀλλὰ πρὸ πάντων διὰ τὴν ποίησιν, ἡ ὁποία διαπνέει αὐτό. Ἡ τοιαύτη πρὸς τὴν ποίησιν προτίμησις τοῦ καλλιτέχνου καταφαίνεται εἰς τὸν πίνακά του «Ποίησις καὶ ζωγραφική», ἐν τῷ ὁποίῳ παρίσταται ἡ ποίησις ὑπὸ μορφὴν ὡραίας γυναικὸς μὲ βλέμμα ἀγέρωχον καὶ μέτωπον ὑπερήφανον, πρὸ αὐτῆς δὲ ἡ ζωγραφικὴ ἐργάζεται σκυμμένη ὡς ταπεινὴ χειρῶναξ καὶ δούλη τῆς πρώτης. Ἐπίσης εἰς τὰς μορφὰς τῶν συνθέσεών του κρύπτεται ἀδυναμία τις βλάπτουσα τὴν λεπτομέρειαν· τὸ σύνολον ὅμως εἶναι πάντοτε ἰσοζυγισμένον μετὰ πολλῆς δεξιοτεχνίας, παντοῦ δὲ κυριαρχεῖ ἡ ἀνήσυχος σκέψις καὶ ὁ χαρακτηρίζων τοὺς ἀνθρώπους τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ρωμαντισμός. Πολλοὶ ὑποστηρίζουσιν ὅτι ὁ Μπαΐκλιν ἐπεσκέφθη καὶ τὴν Ἑλλάδα ἢ τὰς Ἰονίους τοὐλάχιστον νήσους, δεδομένου ὅτι δύο ἐκ τῶν κυριωτέρων ἔργων του («Ἡ νῆσος τῶν νεκρῶν» καὶ «Ἔπαυλις ἐγγὺς τῆς παραλίας») ὑπενθυμίζουσι καταπληκτικῶς ἑλληνικὰ τοπία, τὸ Ποντικονήσι τῆς Κερκύρας ἡ πρώτη καὶ τοποθεσίαν τοῦ Ἀκρωτηρίου τῆς Ζακύνθου ἡ δευτέρα. Χ. Δ.

**Μπαΐκον** (Bacon)· βλ. λ. *Βάκων.*

**Μπαικοῦλα,** ἢ ***Μπαιτοῦλα*** (Baecula ἢ Baetula καὶ Becula) *[Γεωγρ.]* Ἀρχαία πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ Βαιτικῇ, παρὰ τὴν σημερινὴν πόλιν Μπακλὲν καὶ πρὸς Α. τῆς Καρδούης. Παρ' αὐτὴν Σκηπίων ὁ πρεσβύτερος ὁ Ἀφρικανὸς ἐνίκησε τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἀννίβα Ἀσδρούβαν τῷ 209 π. Χ. καὶ τοὺς Μάγωνα καὶ Μασσινίσσαν τῷ 206 π. Χ. Λέγεται καὶ *Μπαικοῦλα ἢ Βαιτική.* Μ. Δ. Β.

**Μπαὶλ** (Bayle), ***Πέτρος.*** Γάλλος φιλόσοφος· βλ. λ. *Βάϋλος* Πέτρος.

— **Μπαὶλ** (Bayle), ***Ἀντώνιος.*** Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1799 καὶ θανὼν τῷ 1858. Ἐγένετο διάσημος, διότι πρῶτος αὐτὸς διεχώρησε τὴν προϊοῦσαν παράλυσιν ὡς ἰδίαν νόσον, γενόμενος εἰσηγητὴς τῶν νεωτέρων μελετῶν ἐπὶ τῆς φοβερᾶς καὶ συχνοτάτης αὐτῆς νόσου, διὰ διατριβῆς αὐτοῦ, ἣν ἐξέδωκε τῷ 1822. Ὀνομάζει δ' αὐτὴν ἀνατομικῶς *ἀραχνίτιδα ἢ μηνιγγίτιδα χρονίαν,* κλινικῶς δὲ *προϊοῦσαν παράλυσιν* τῶν φρενοπαθῶν, διακρίνας τρεῖς μορφάς: μονομανίαν, μανίαν καὶ ἄνοιαν. Ἔκτοτε ἡ νόσος αὕτη καλεῖται καὶ *νόσος τοῦ Μπαίλ.* Τῷ 1829 ἐγένετο βιβλιοθηκάριος τῆς ἰατρικῆς σχολῆς καὶ ἐξέδωκε πλείστας ἄλλας μελέτας. Τ. Α. Ζ.

**Μπαΐλ** (Bail), ***Ἰωσήφ.*** Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ἐμαθήτευσε πλησίον τοῦ πατρός του, ἐνεφανίσθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1879. Διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου, ζῴων καὶ «νεκρῶν φύσεων». Χαρακτηριστικὸν γνώρισμά του εἶναι τὸ τολμηρὸν καὶ θερμόν του χρῶμα. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται «Ψάρια», «Τὰ στρείδια», «Οἱ «Κομψοτεχνήματα», «Χαρτοπαῖκται», παραμάγειροι». Ι. Μ. Π.

—**Μπαΐλ** (Bail), ***Ἰωάννης-Ἀντώνιος.*** Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1836. Παρ' οὐδενὸς διδαχθείς, κατώρθωσε διὰ τῆς ἰδίας ἐπιπόνου προσπαθείας του νὰ δημιουργήσῃ ἔργον διακρινόμενον διὰ τὴν λεπτότητα καὶ τὸν ἁρμονικόν του χρωματισμόν. Ἀφιερώθη εἰς τὴν ἀπεικόνισιν καρπῶν, λαϊκῶν ἐσωτερικῶν καὶ ἀγροτικῶν σκηνῶν. Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1861 διὰ τοῦ ἐξαιρέτου πίνακός του «Τὰ κεράσια». Ι. Μ. Π.

**Μπαΐλάν**· βλ. *Μπαλάν.*

Digitized by Google

**Μπαϊλάου** (Boehlau), ***Ἑλένη***. Γερμανὶς συγγραφεύς, γεννηθεῖσα τῷ 1859. Διέμεινεν ἐπὶ πολὺν χρόνον ἐν Κωνσταντινουπόλει μετὰ τοῦ συζύγου αὐτῆς *Φρειδερίκου Ἄρντ*, ὅστις ἐξισλαμίσθη ἐκεῖ λαβὼν τὸ ὄνομα *Ὀμὰρ ἀλ Ρασὶδ* βέης, μετὰ δὲ τὸν θάνατον αὐτοῦ (1911) ἐπανῆλθεν εἰς Μόναχον. Ἔγραψεν ὑπὸ τὸ πατρικόν της ὄνομα μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, διακρινόμενα διὰ τὴν πιστότητα τῶν εἰκόνων, τὴν τρυφερότητα τοῦ αἰσθήματος καὶ τὴν λεπτὴν ἀνάλυσιν τῆς γυναικείας ψυχῆς. Τὰ θέματα εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον εἰλημμένα ἀπὸ τὴν ζωὴν τῆς γενεθλίου πόλεώς της Βαϊμάρης. Τὰ ἐπιτυχέστερα ἐξ αὐτῶν: «Ἱστορίαι κοριτσιῶν» (17 ἔκδ. 1914), «Νέαι ἱστορίαι τῆς παλαιᾶς Βαϊμάρης» (1897), «Θερινὸν βιβλίον» (1902), «Ἔνοχος μὲ καθαρὰν καρδίαν» (1888), «Ἡ κρυσταλλίνη σφαῖρα», εἰς τὸ ὁποῖον περιγράφονται θαυμασίως τὰ ἤθη τῆς ἀστικῆς κοινωνίας τῆς Βαϊμάρης, εἰς τὴν ἐποχὴν τοῦ Γκαῖτε, «Σταθμὸς χειρισμῶν» (15 ἐκδ. 1920), «Ἴζεμπίς», μυθιστορηματικὴ αὐτοβιογραφία της, «Εἰς τὸν κῆπον τῆς Κας Μαρίας Στρὸμ» (1922). θ. κ.

**Μπαίλεϋ** (Bailey). —1) ***Ναθαναήλ***. Ἄγγλος λεξικογράφος, ἀποθανὼν τῷ 1742. Ἐχρημάτισε διευθυντὴς σχολῆς ἐν Στέπνεϋ καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Αἱ ἀρχαιότητες τοῦ Λονδίνου καὶ τοῦ Οὐεστμίνστερ» (1726), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν ἀγγλικὴν γλῶσσαν» (1726), «Λεξικὸν οἰκοκυρικῆς» (1736) κτλ. Τὸ κυριώτερον ὅμως ἔργον αὐτοῦ, ὅπερ τὸν κατέστησεν ὀνομαστότατον, ὑπῆρξε τὸ περίφημον «Γενικὸν ἐτυμολογικὸν λεξικόν», τοῦ ὁποίου ἡ πρώτη ἔκδοσις ἀνεφάνη τῷ 1721 καὶ τοῦ ὁποίου μέχρι τοῦ 1806 εἶχον γίνει 30 ἐκδόσεις, ἐξ ὧν μία εἰς λατινικὴν γλῶσσαν ὑπὸ τὸν τίτλον» «Dictionarium britanicum quo continentur etymologiae verborum» (1736). Ὁ Τζόνσον ἐχρησιμοποίησε τὸ ἔργον τοῦτο ὡς βάσιν τοῦ περιφήμου λεξικοῦ του. —2) ***Πέτρος***. Ἄγγλος ποιητὴς καὶ δημοσιογράφος, ἀποθανὼν τῷ 1823. Ἵδρυσε τὴν συλλογὴν τὴν ἐπικαλουμένην «Musaeum» καὶ ἔγραψε διάφορα ποιήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ σημαντικώτερον εἶναι τὸ ἔπος «Idwal», τοῦ ὁποίου ἡ ὑπόθεσις ἐλήφθη ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς κατακτήσεως τῆς Οὐαλλίας. —3) ***Σαμουήλ***. Ἄγγλος οἰκονομολόγος καὶ φιλόσοφος (1791—1870). Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν μᾶλλον διακεκριμένων φιλοσόφων τῆς ἐποχῆς του, ταχθεὶς εἰς τὸ μεταίχμιον τῆς σκωτικῆς καλουμένης σχολῆς καὶ τῆς σχολῆς τῆς πειραματικῆς ψυχολογίας τοῦ Ἑρβέρτου Σπένσερ. Ἔγραψεν ἐπίσης πολλὰ οἰκονομολογικῆς φύσεως ἔργα καὶ ἐξέδωσε πλεῖστα συγγράμματα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Κριτικὴ περὶ τῆς φύσεως, τῶν αἰτίων καὶ τῶν μέτρων τῶν τιμῶν» (1825), ὅπερ κατέταξεν αὐτὸν ἀμέσως μεταξὺ τῶν ἐξεχόντων οἰκονομολόγων τῆς ἐποχῆς του, «Τὸ δικαίωμα τῶν πρωτοτόκων» (1825), «Τὸ χρῆμα καὶ τὰ ἀποτελέσματα τῶν διακυμάνσεων τῆς ἀξίας του» (1837), «Περὶ τραπεζῶν» (1840), «Φιλοσοφικαὶ ἐπιστολαὶ»(1855—1858—1863), «Δοκίμιον περὶ τῆς ἀναζητήσεως τῆς ἀληθείας καὶ περὶ τῆς προόδου τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος». Τὸ κυριώτερον ἔργον αὐτοῦ εἶναι ἡ «Λογικὴ πολιτικὴ ἐκπροσώπησις», ἐν τῷ ὁποίῳ ἀναλύει τὸ ἀγγλικὸν Σύνταγμα. —4) ***Φίλιππος-Ἰάκωβος***. Ἄγγλος ποιητὴς (1816—1902). Εἰς ἡλικίαν μόλις 23 ἐτῶν ἐδημοσίευσε τὸ ποίημα «Festus» (1839), εἶδος ἐμμέτρου αὐτοβιογραφίας, ὅπερ προεκάλεσε μέγαν ἐνθουσιασμὸν εἰς ὅλας τὰς χώρας, ὅπου ὁμιλεῖται ἡ ἀγγλική. Τοσαύτη δὲ ἦτο ἡ δημοτικότης τοῦ ποιήματος αὐτοῦ, διακρινομένου διὰ τὸ ὕψος τῶν ἰδεῶν καὶ τὴν ἁρμονίαν τῶν στίχων, ὥστε οἱ κριτικοὶ δὲν ἐδίστασαν νὰ κατατάξουν αὐτὸν εἰς τὴν σειρὰν τοῦ Σαίξπηρ καὶ τοῦ Μίλτωνος. Βραδύτερον ὅμως ὁ ἐνθουσιασμὸς οὗτος ἐμετριάσθη κατὰ πολύ. Ὁ Μπαίλεϋ ἔγραψε καὶ ἄλλα πολλὰ ποιήματα κατόπιν, μεξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ὁ κόσμος τῶν ἀγγέλων» (1850), «Τὸ μυστηριῶδες» (1855), Ὁ αἰὼν» (1858), «Ὁ παγκόσμιος ὕμνος» (1867) κτλ. μ. δ. β.

**Μπαΐλλι** (Baillie), ***Ἰωάννα***. Ἀγγλὶς συγγραφεὺς (1762—1851). Ἐδημοσίευσε κατ' ἀρχὰς τῷ 1790 τὴν ποιητικὴν συλλογὴν «Φευγαλέοι στίχοι», ἡ ὁποία ἔτυχεν ἐνθουσιώδους ὑποδοχῆς. Κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν δραμάτων καὶ τῷ 1798 ἐξέδωσε συλλογὴν τριῶν δραμάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ δράματα τοῦ πάθους». Κατόπιν ἐξέδωσε καὶ ἄλλας συλλογὰς δραμάτων, τὰ ὁποῖα ἀνῆλθον ἐν ὅλῳ εἰς 20 καὶ πολλὰ τῶν ὁποίων ἐπαίχθησαν ἀπὸ σκηνῆς μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Τὸ δρᾶμα αὐτῆς «Οἰκογενειακὴ παράδοσις», μὲ πρόλογον τοῦ Οὐῶλτερ Σκώτ, ἀνεβιβάσθη ἐπὶ σκηνῆς μετὰ πλουσιωτάτου διακόσμου, ἡ δὲ τραγῳδία «Ἰωάννα ντὲ Μονφὸρτ» ἐπαίχθη ἀπὸ τοὺς δύο καλυτέρους Ἄγγλους ἠθοποιοὺς τῆς ἐποχῆς. Τὰ ἔργα αὐτῆς, καίτοι εἰς τὴν ἐποχήν της ἔτυχον μεγάλης δημοτικότητος, ἐλησμονήθησαν κατόπιν σχεδὸν τελείως, ὡς δυσκόλως συμβιβαζόμενα πρὸς τὰς ἀπαιτήσεις τῆς νεωτέρας σκηνοθεσίας. μ. δ. β.

*Ἰωάννα Μπαΐλλι.*

—**Μπαΐλλι** (Baillie), ***Ματθαῖος***. Ἄγγλος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Shotts τῆς Σκωτίας τῷ 1761 καὶ ἀποθανὼν ἐν Λονδίνῳ τῷ 1823. Ἤρξατο τῶν σπουδῶν ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ Γλασκώβῃ, συμπληρώσας ταύτας τῷ 1779 ἐν Λονδίνῳ παρὰ τῷ θείῳ του καὶ διασήμῳ ἀνατόμῳ William Hunter. Ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ ἐν Ὀξφόρδῃ, διετέλεσεν ἐπιμελητὴς τῆς ἀνατομικῆς καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ θείου του ἤρξατο ἀσχολούμενος μὲ τὴν διδασκαλίαν τῆς ἀνατομικῆς, ὡς καὶ μὲ παθολογοανατομικὰς ἐργασίας, συλλέξας περὶ τὰ 1000 παρασκευάσματα. Τῷ 1789 ἐγένετο ἰατρὸς τοῦ νοσοκομείου Γεωργίου. Τῷ 1793 συνέγραψεν ἀνατομοπαθολογίαν «The morbid human anatomy of some of the most important parts of the human body» (1793), πλουτίσας ταύτην διὰ πινάκων εἰς νέαν ἔκδοσιν (1799—1802). Ἀργότερον ἐξέδωκεν ἕτερον ἀνατομοπαθολογικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Lectures and observations on Mediane», ἐν ᾧ πραγματεύεται περὶ ἀνωμαλιῶν, νεοπλασιῶν, ἡπατιτίδων, ἐχινοκόκκων ἥπατος, ἐμφυσήματος, ἄσθματος, μελανοσαρκώματος κλ. Πρῶτος ἐπίσης ὁμιλεῖ περὶ μετατοπίσεως τῆς ἀορτῆς καὶ πνευμονικῆς ἀρτηρίας (1797). Κατέλαβε διακεκριμένην θέσιν ἐν τῷ ἰατρικῷ σώματι τῆς Ἀγγλίας, ὡς ἐκ τῶν ἀνατομοπαθολογικῶν, φαρμακολογικῶν καὶ κλινικῶν του γνώσεων. Ὡς καθηγητὴς διεκρίθη διὰ τὴν διαύγειαν καὶ μεθοδικότητα τῆς διδασκαλίας του. Διετέλεσε πρὸς τούτοις καὶ ἰατρὸς τῆς πριγκιπίσσης τῆς Οὐαλλίας Καρλόττας καὶ σύμβουλος ἰατρὸς τοῦ βασιλέως. Ἀπέθανεν ἐκ φθίσεως τῶν πνευμόνων καὶ λάρυγγος. ο. ρ.

**Μπαὶλ ντὲ Φάμπερ** (Böhl de Faber), ***Ἰωάννης-Νικόλαος***. Διακεκριμένος Ἱσπανὸς συγγραφεὺς γερμανικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Ἁμβούργῳ (1770—1836). Ἀποσταλεὶς εἰς Ἱσπανίαν ὡς διπλωματικὸς ὑπάλληλος, εἰργάσθη μετὰ πολλοῦ ζήλου διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἰσπανικοῦ θεάτρου, καταπολεμήσας μετὰ φανατισμοῦ τὴν μεγάλην ἐπίδρασιν, τὴν ὁποίαν ἤσκει τότε ἐπ' αὐτοῦ τὸ ἀνθοῦν γαλλικὸν θέατρον. Πρὸς τοῦτο ὑπεδύθη εἰς μεγάλους ἀγῶνας, ἰδιαιτέρως δὲ γνωστὴ ἐγένετο ἡ ἀπὸ τῶν στηλῶν τοῦ ἰσπανικοῦ τύπου πολεμική του ἐναντίον τοῦ δὸν Ἀντώνιο Ἀλκάλα Γκαλιάνο. Ἐδημοσίευσεν ἐν Λειψίᾳ ἰσπανιστὶ «Συλλογὴν παλαιῶν καστιλλιανῶν ποιημάτων» (1825) καὶ «Τὸ ἰσπανικὸν θέατρον πρὸ τοῦ Λόπε ντὲ Βέγκα» (1832). χ. δ.

**μπαϊλντίζω,** *ἀόρ. ἐμπαΐλντισα, παθ. μετχ. μπαϊλντισμένος·* ἀποκάμνω, καταβάλλομαι ἕνεκα κόπου ἢ στενοχωριῶν: «μπαΐλντισα νὰ δουλεύω 'ς τὰ ξένα», «εἶναι μπαϊλντισμένος ἀπὸ τὴ ζέστη» (τουρκ. ἐκ τοῦ ἀορ. baïldim τοῦ ρ. baïlmak).

**μπαΐλντισμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπαϊλντίζω, κάματος σωματικὸς ἢ ψυχικός: «ἀρρώστησε ἀπὸ τὸ καθημερινὸ μπαΐλντισμα».

**Μπάϊλντον** (Baildon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ὑόρκης. Εἶναι κέντρον χημικῶν βιομηχανιῶν. Κάτ. 6.042. χ. δ.

**μπάϊλος** (bailo)· βλ.λ. *βαΐλος*.

**Μπαῖλσε** (Boehlsche), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ἀνεδείχθη κυρίως ὡς ἐκλαϊκευτὴς τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν. Ἔγραψεν: «Ὁ μάγος τοῦ βασιλέως Ἄρπου» (1887), «Ἡ θέα τῆς μεσημβρίας» (12 ἔκδ. 1921), «Ἡ ἐρωτικὴ ζωὴ ἐν τῇ φύσει» (1903, 75 ἔκδ. 1923), «Ἀπὸ τὸν βάκιλλον εἰς τὸν πιθηκάνθρωπον» (1900), «Καταγωγὴ τοῦ ἀνθρώπου» (1904), «Τὸ ᾄδον δένδρον» (1924), «Περὶ τοῦ ἡλίου» (1903). Ἔγραψεν ἐπίσης τὰ ἱστορικὰ φιλολογικὰ ἔργα: «Ἐρρῖκος Χάϊνε» καὶ «Πίσω ἀπὸ τὴν κοσμόπολιν» (1911). θ. κ.

**Μπάϊλστάϊν** (Beilstein), ***Φρειδερῖκος-Κονράδος***. Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει (1838—1906). Ἔκτακτος καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Γοττίγγης, ἐγένετο τῷ 1866 καθηγητὴς εἰς Πετρούπολιν, διευθύνας τὸ ἐκεῖ τεχνολογικὸν ἰνστιτοῦτον μέχρι τοῦ 1896. Κατὰ τὴν ἐν Γοττίγγῃ διαμονήν του ἠσχολήθη εἰς τὴν μελέτην περὶ τῶν σχέσεων μεταξὺ τῶν διαφόρων ἰσομερῶν τῶν παραγώγων τοῦ βενζολίου, τὴν μελέτην τῶν πετρελαίων τοῦ Καυκάσου, καθορίσας αὐτὸς πρῶτος τὴν ἰδιάζουσαν φύσιν τῶν ἀποτελούντων αὐτὰ ὑδρογονανθράκων. Ἐκεῖνο ὅμως τὸ ὁποῖον περισσότερον χαρακτηρίζει τὴν ἐργασίαν τοῦ Μπάϊλστάϊν καὶ ἀπηθανάτισε τοῦτον εἶναι ἡ ἔκδοσις τοῦ περιφήμου του ἐγχειριδίου τῆς ὀργανικῆς χημείας «Beilsteins Handbuch der organischen Chemie» (ἔκδ. 1880—1883, 1892—1899 καὶ 1900—1906). Ἀπὸ τοῦ 1918 ἤρξατο ὑπὸ τῆς «Deutsche Chemische Gesellschaft» ἡ δημοσίευσις τῆς 4ης ἐκδόσεως. Ὁ Μπάϊλσταϊν ἀπέθανεν ἐν Πετρουπόλει τὴν 18ην Ὀκτωβρίου 1906. σ. γ.

**Μπαῖλτε** (Boelte), ***Ἀμαλία***. Γερμανὶς συγγραφεὺς (1814—1891). Ἀπὸ τοῦ 1839 μέχρι τοῦ 1851 παρέμεινεν ἐν Ἀγγλίᾳ ὡς παιδαγωγός. Ἔγραψε πολλὰ μυθιστορήματα, κοινωνικὰ καὶ ἱστορικά, ὧν ἐπιτυχέστερα: «Ἡ Κυρία ντὲ Στάελ» (1859), «Ἰουλιανὴ ντὲ Κρούντενερ» (1861), «Βιττόριο Ἀλφιέρι», «Πριγκίπισσα Βιλελμίνη τῆς Πρωσσίας» (1867), «Ἡ κόρη τοῦ συνταγματάρχου», «Ἐλισάβετ» (1872), «Ποῦ ὁδηγεῖ αὐτό;» Διὰ τῶν τριῶν τελευταίων ἔργων ὑπεραμύνεται τῶν ἰδεῶν ὑπὲρ χειραφετήσεως τῆς γυναικός, τῶν ὁποίων ὑπῆρξε πρωταγωνίστρια. θ. κ.

**Μπαίλυ** (Baily), ***Φραγκῖσκος***. Ἄγγλος μαθηματικὸς καὶ ἀστρονόμος, γεννηθεὶς τῷ 1774 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1844. Ἐξελέγη ἐπανειλημμένως πρόεδρος τῆς Βασιλικῆς Ἀστρονομικῆς Ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ ἐχρημάτισε μέλος διαφόρων ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν καὶ ἀντεπιστέλλον μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Γαλλίας. Μεταξὺ τῶν σπουδαιοτάτων ἐπιστημονικῶν του ἐργασιῶν εἶναι ἡ σύνταξις καταλόγου ἐκ 57.000 περίπου ἀστέρων, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν παρατηρήσεων τοῦ Joseph Lalande καὶ τοῦ Nicolas de Lacaille, ἡ ὑπὸ τὴν ἐποπτείαν του σύνταξις τοῦ κατὰ τὸ 1845 δημοσιευθέντος καταλόγου τῆς British Association (B. A. Cof 8377 stars) καὶ ἡ ἀναθεώρησις τῶν καταλόγων τοῦ Πτολεμαίου, Οὐλοὺγ βέη, Τύχωνος, Χεβέλιους, Χάλλεϋ καὶ Τωβία Μάγερ (Memoirs R. A. S. IV, XIII). Ἀναδιωργάνωσε τὸ γραφεῖον τῶν ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων (Nautical Almanac office), καθώρισε τὴν ὑάρδαν ὡς μονάδα μήκους ἐν Μ. Βρεττανίᾳ καὶ συνεπλήρωσε τὰ πειράματα τοῦ H. Foster ἐπὶ τοῦ ἐκκρεμοῦς. Καὶ διὰ μὲν τῶν πειραμάτων τούτων προσδιώρισε τὴν πλάτυνσιν τῆς Γῆς εἰς $^{1}/_{289}$ (Memoirs R. A. S. VII), διὰ δὲ τῆς μεθόδου τοῦ Cavendish συνήγαγεν ἀκριβεστέραν τιμὴν τῆς μέσης πυκνότητος τῆς Γῆς, ἤτοι 5,66.

Τὸ ὄνομα τοῦ Μπαΐλυ κατέστη γνωστὸν οὐ μόνον ἐκ διαφόρων ἀξιολόγων πραγματειῶν, ἃς ἐδημοσίευσεν, ἀλλὰ καὶ ἐκ φαινομένου, ὅπερ εἶναι γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Περιδέραιον τοῦ Μπαΐλυ», ὀφείλεται δὲ εἰς τὴν ἀνωμαλίαν τῆς περιμέτρου τοῦ δίσκου τῆς Σελήνης, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας, κατὰ τὰς ἐκλείψεις τοῦ Ἡλίου, ὅταν ὁ δίσκος αὐτοῦ καλύπτεται σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου ὑπὸ τοῦ τῆς Σελήνης, βλέπομεν μέρος τῆς περιμέτρου τοῦ σκοτεινοῦ δίσκου τῆς Σελήνης νὰ περιβάλλεται ὑπὸ κομβολογίου φωτεινῶν σημείων, ὀφειλομένου εἰς τὴν δίοδον ἡλιακῶν ἀκτίνων μεταξὺ τῶν ἐναλλασσομένων ἐπὶ τῆς περιμέτρου τῆς Σελήνης ὀρέων καὶ κοιλάδων αὐτῆς. σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

— **Μπαίλυ** (Baily), ***Ἐδουάρδος-Hodges***. Ἄγγλος γλύπτης (1788—1867), μαθητεύσας παρὰ τῷ Ἰ. Φλάξμαν. Τῷ 1810 ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου ἓν ἔργον του παριστῶν τὸν «Ἡρακλέα ἐπαναφέροντα τὴν Ἄλκηστιν ἐκ τοῦ Ἅδου», βραδύτερον δὲ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας ταύτης. Κάλλιστα εἶναι τὰ ἑξῆς δύο ἔργα του: «Ἡ Εὔα ἐξηπλωμένη παρὰ τὴν πηγὴν» καὶ «Ἡ Εὔα ἀκροωμένη τὴν φωνὴν τοῦ ὄφεως». Ἐπίσης εἰργάσθη μέγαν ἀριθμὸν ἀγαλμάτων καὶ προτομῶν, ὡς τοῦ Καρόλου-Ἰακώβου Φόξ, τοῦ λόρδου Μάρσφηλντ, τοῦ δουκὸς τοῦ Οὐέλλινγκτων, τοῦ λόρδου Βύρωνος κλπ. Εἷς ἀνδριὰς τοῦ Νέλσωνος, ἔργον αὐτοῦ, κοσμεῖ τὴν πλατεῖαν Τραφαλγκὰρ ἐν Λονδίνῳ, ὡς καὶ πολλὰ γλυπτὰ τῆς Μαρμαρίνης Ἁψῖδος τοῦ Λονδίνου. χ. δ.

**Μπαῖμ** (Boehm), ***Γεώργιος***. Γερμανὸς ὀργανοκρούστης, κλαβικυμβαλιστὴς καὶ συνθέτης (1661—1733). Τὰ ἔργα του ἔσχον μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ Μπάχ· ἐκ τούτων περιεσώθησαν ἔντυπα ἢ ἐν χειρογράφῳ 18 πρελούντια χορικῶν, ἓν 4φωνον «Neujahrslied», καντάται, μία «Γαλλικὴ σουΐτα εἰς ρέ», 3 μικραὶ «Σουΐται» κτλ.

—**Μπαῖμ** (Boehm), ***Θεοβάλδος***. Γερμανὸς δεξιοτέχνης καὶ συνθέτης (1794—1881). Ἐτελειοποίησε τὴν κατασκευὴν τοῦ πλαγιαύλου, τὸ δὲ «σύστημά» του, ὅπερ φέρει τὴν ὀνομασίαν του, ἐφηρμόσθη ἐφ' ὅλων τῶν ξυλίνων πνευστῶν ὀργάνων. Διὰ τῶν τελειοποιήσεων τούτων ὁ πλαγίαυλος ἀπέκτησεν ἰσχυρότερον καὶ παχύτερον ἦχον, ἂν καὶ ὑπάρχουσιν οἱ φρονοῦντες ὅτι ἀπώλεσε τὴν ἀρχικὴν αὐτοῦ χροιάν. Ὁ Μπαῖμ ἔγραψεν ἐπὶ τῆς ἐφευρέσεώς του: «Ueber den Flötenbau und die neuesten Verbesserungen desselben» (1847). γ. σ.

— **Μπαῖμ** (Boehm), ***Ἰωάννης-Δανιήλ***. Οὖγγρος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1794. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Cervara κατ' ἀρχάς, βραδύτερον δ' ἐν Ἰταλίᾳ παρὰ τῷ Τορβάλδσεν καὶ τῷ Κανόβα. Ἡ τέχνη του εἶναι πλήρης χάριτος καὶ κομψότητος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Φαῦνος» (τῆς συλλογῆς τοῦ πρίγκιπος Μέττερνιχ) καὶ «Ἡ ὀρχηστρὶς» (τοῦ κόμιτος τοῦ Λέμπεργκ). ι. μ. π.

— **Μπαῖμ** (Boehm), σὲρ ***Ἰωσὴφ-Ἔντγαρ Bart***—. Οὐγγροβρεττανὸς γλύπτης (1834—1890). Ἐσπούδασεν ἐν Βιέννῃ, ἐγκατεστάθη δὲ ἐν Λονδίνῳ ἀπὸ τοῦ 1862, ὅπου ἀπέκτησε τὴν βρεττανικὴν ἰθαγένειαν (1865) καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας (1878). Εἰργάσθη κυρίως ἀνδριάντας καὶ μνημεῖα, ἄριστα δ' ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι οἱ ἀνδριάντες τοῦ λόρδου Βήκονσφηλδ καὶ τοῦ Ντ. Στάνλεϋ ἐν τῷ ἀββαείῳ τοῦ Οὐεστμίνστερ, τοῦ Καρλάϋλ ἐπὶ τῆς προκυμαίας τοῦ Ταμέσεως, τοῦ

Digitized by Google

Δαρβίνου ἐν τῷ μουσείῳ τῆς φυσικῆς ἱστορίας, καὶ τὸ μνημεῖον τοῦ Οὐέλλινγκτων ἐν Χάϋντ Πάρκ. Ἐπίσης σῴζονται πλεῖσται ἀπεικονίσεις μελῶν τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας ἐπὶ τῆς Βικτωρίας. Τῷ 1889 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρωνέτου. Χ. Δ.

**Μπαῖμε** (Boehme), ***Ἰακώβ.*** Γερμανὸς θεόσοφος, ὑποδηματοποιὸς τὸ ἐπάγγελμα, γεννηθεὶς τῷ 1575 ἐν Γκαϊρλιτς, ἀποθανὼν τῷ 1624 καὶ ἐπικληθεὶς philosophus teutonicus. Κατήγετο ἐκ πατρὸς γεωργοῦ καὶ ἐν τῷ ἀσθενικῷ σώματι περιέκλειε πνεῦμα ῥέπον ἰσχυρῶς πρὸς τὴν φιλοσοφικὴν διανόησιν καὶ τὴν μυστικοπάθειαν. Τὴν προδιάθεσιν ταύτην ἐνίσχυσε διὰ τῆς ἀναγνώσεως παντοειδῶν συγγραμμάτων ἀναφερομένων εἰς τὴν φυσικὴν φιλοσοφίαν καὶ ὑπὸ μυστικοπαθῶν συντεταγμένων, οἷα τὰ τοῦ Παρακέλσου, τοῦ Βάϊγκελ, τοῦ Σβέγκφελδ. Οὕτω διεμόρφωσε σὺν τῷ χρόνῳ ἴδιον κόσμον ἰδεῶν, θαυμαστόν, ἰδιότυπον καὶ μυστικοπαθῆ, τῷ δὲ 1612 ἐπεχείρησε τὸ πρῶτον νὰ διατυπώσῃ τὰς ἰδέας του ταύτας γραπτῶς, ἐκδοὺς τὴν «Ἀνατέλλουσαν Αὐγήν», διὰ τῆς ὁποίας καὶ ἐγένετο εὐθὺς ἀμέσως γνωστός, ἕνεκα τῆς ἀντιδράσεως τῶν ὀρθοδόξων κύκλων τοῦ λουθηρανισμοῦ. Ἀναγκασθεὶς εἰς σιωπὴν ἐπί τινα χρόνον, ἐκδίδει μετὰ πέντε ἔτη σειρὰν θεοσοφικῶν καὶ μυστικοπαθῶν ἔργων, ὠθούμενος τὸ μὲν ὑπὸ τῆς ἐμφύτου ὁρμῆς, τὸ δὲ ὑπὸ τῶν πολυαρίθμων φίλων καὶ θαυμαστῶν, τοὺς ὁποίους εἶχεν ἀποκτήσει ἐν τῷ μεταξύ. Καταδιωχθεὶς ἐγκατέλιπε τὴν γενέτειραν πόλιν, εἰς τὴν ὁποίαν ὅμως ἔλαβε τὸ δικαίωμα νὰ ἐπανέλθῃ μετὰ τὴν ἐν Δρέσδῃ ἀθῴωσίν του, τῆς ὁποίας προηγήθη μακρὰ δημοσία συζήτησις. Ὅ,τι εἵλκυε τοὺς ὀπαδούς του πρὸς αὐτὸν ἦτο τὸ θεολογικὸν καὶ μυστικοπαθὲς περιεχόμενον τῶν ἔργων του, τὸ ὁποῖον ἐνδιέφερε πρὸ πάντων τοὺς κύκλους ἐκείνους τῶν μυστικοπαθῶν, τοὺς ὁποίους δὲν ἱκανοποίει ἡ διδασκαλία τῆς λουθηρανῆς Ἐκκλησίας καὶ ἔρρεπον διὰ τοῦτο πρὸς τὴν ἀπόσχισιν καὶ τὰς αἱρέσεις. Χαρακτηριστικὸν εἶναι ὅτι τὰ συγγράμματα τοῦ Μπαῖμε ἐξέδωκε κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος ὁ Γκέχτελ, ἱδρυτὴς εὐρύτατα ἐξαπλωθείσης αἱρέσεως, ὅστις καὶ ἐστήριξεν ἐπὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Μπαῖμε τὴν ἀσκητικὴν αὐτοῦ μυστικοπάθειαν. Τὸ πρὸς τὸν «τευτονικὸν φιλόσοφον» διαφέρον ἀναγεννᾶται πάλιν μόλις κατὰ τὸν ΙΘ′ αἰῶνα, ὡς καταφαίνεται ἤδη ἐκ τῆς ἀνατυπώσεως τῶν ἔργων αὐτοῦ, καὶ δὴ εἰς δύο ἀλλεπαλλήλους ἐκδόσεις. Τὸ ἐνδιαφέρον ὅμως τοῦτο δὲν προέρχεται τὴν φορὰν αὐτὴν ἐκ τῶν θρησκευτικῶν κύκλων, ἀλλ' ἐκ τῆς φιλοσοφίας, ἥτις δημιουργεῖ εἰς τὸν Μπαῖμε μόνιμον θέσιν ἐν τῇ ἱστορίᾳ αὐτῆς. Ὁ Σέλλιγκ καὶ ὁ Ἕγελος ἀνακαλύπτουσιν ἐν τῇ φαντασιώδει διανοήσει τοῦ Μπαῖμε τὴν ἄρχουσαν ἰδέαν τῶν ἰδίων αὐτῶν συστημάτων, τουτέστι τὴν ἀναγκαιότητα τῆς ἀντιθέσεως ὡς ὅρου καὶ προϋποθέσεως πάσης κινήσεως. Κατὰ τοὺς νεωτάτους χρόνους διαβλέπει ἐν τῷ Γερμανῷ θεοσόφῳ τὸν προφήτην ἑαυτοῦ ὁ πρὸς τὴν Ἐκκλησίαν ἐχθρικὸς μυστικοπαθὴς πανθεϊσμός. Οὕτω ὁ Γκράμπις ἐκδίδει τρία ἔργα τοῦ Μπαῖμε καὶ ἐκθειάζει αὐτὸν ὡς τὸν σπουδαιότατον ἐκπρόσωπον τῆς νέας θρησκευτικῆς κινήσεως τῶν τριῶν τελευταίων αἰώνων καὶ ὡς τὸν ὑποφήτην τῆς καθαρῶς ἐσωτερικῆς θρησκείας, τὸν πρὸς τὴν ὁποίαν πόθον ἀδυνατεῖ νὰ ἱκανοποιήσῃ ἡ Ἐκκλησία.

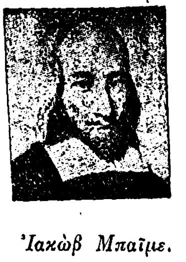

Ἰακὼβ Μπαῖμε.

Ὁ Ἰακὼβ Μπαῖμε, καίπερ ἀναζητῶν συμβιβασμὸν μεταξὺ πανθεϊσμοῦ καὶ διαρχίας, εἶναι κατ' οὐσίαν φυσιοκρατικὸς πανθεϊστής. Παραπλησίως τοῖς γνωστικοῖς καὶ τοῖς νεοπλατωνικοῖς, πειρᾶται νὰ ἐμβάλῃ τὸν θεὸν ἐντὸς τῆς φύσεως, ἵνα οὕτω πληρώσῃ πάλιν τοῦ θεοῦ τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν, ὥσπερ νέος τις Διονύσιος. «Ὡς τὸ πνεῦμα τοῦ ἀνθρώπου κυριαρχεῖ τοῦ ὅλου σώματος καὶ πληροῖ τὸν ὅλον ἄνθρωπον, οὕτω πληροῖ καὶ τὸ ἅγιον πνεῦμα ὁλόκληρον τὴν φύσιν. Εἶναι ἡ καρδία τῆς φύσεως καὶ ἐκφαίνεται εἰς ὅλας τὰς καλὰς ἰδιότητας τῶν ὄντων». «Οἱ ἄνθρωποι ἐδημιουργήθησαν ἐκ τῆς φύσεως, ἐκ τῶν ἀστέρων καὶ τῶν στοιχείων, ὁ δὲ δημιουργὸς θεὸς κυριαρχεῖ ἐν πᾶσιν ὡς ὁ χυμὸς δι' ὁλοκλήρου τοῦ δένδρου». Ἐκ τῶν ὀλίγων ἤδη τούτων καταφαίνεται ὅτι ἡ μυστικοπάθεια τοῦ Μπαῖμε σημαίνει ὑποτροπὴν εἰς τὴν φυσιοκρατικὴν μυστικοπάθειαν τῶν ἀρχαίων χρόνων. Ζητεῖ τὸν θεὸν ἐκεῖ, ὅπου μόνον τὴν φύσιν εἶναι δυνατὸν νὰ εὕρωμεν. Καὶ ὅπου ἀκόμη αἰσθάνεται κατὰ τρόπον ὅλως προσωπικόν, καὶ ὅπου ἵσταται ἐν πλήρει σιωπῇ ἔναντι τοῦ θεοῦ καὶ ὑποτάσσει αὐτῷ ταπεινοφρόνως τὴν ἰδίαν αὐτοῦ βούλησιν, καὶ ἐκεῖ ἀκόμη ἀντιλαμβάνεται τὸν θεὸν ὡς ἥλιον, ὅστις ἐνεργεῖ ἐν αὐτῷ ὡς ὁ αἰσθητὸς ἥλιος ἐν τῷ κόσμῳ. Ἀκόμη καὶ ὅταν πειρᾶται νὰ καθορίσῃ τὸν κοινὸν βίον τῶν τέκνων τοῦ θεοῦ, δὲν κατορθώνει νὰ ὑψωθῇ ὑπεράνω της φυτικῆς ζωῆς τῶν ἀνθέων. «Ὅπως τὰ ἄνθη ἵστανται ὅλα ἐπὶ τῆς γῆς καὶ αὔξουσι τὸ ἓν παρὰ τὸ ἄλλο, καὶ οὐδὲν ἐξ αὐτῶν δάκνει τὸ ἄλλο, χάριν τοῦ χρώματος ἢ τοῦ ἀρώματος, ἀλλ' ἀφίνουσι τὴν γῆν καὶ τὸν ἥλιον, τὴν βροχὴν καὶ τὸν ἄνεμον, τὴν θερμότητα καὶ τὸ ψῦχος νὰ κάμωσιν ὅτι θέλουν μαζί των, αὔξοντα ἕκαστον κατὰ τὴν ἰδίαν αὐτοῦ φύσιν, τοιουτοτρόπως συμβαίνει καὶ μὲ τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Schibler*, Die Werke Jacob Böhme's, 7 τόμοι (1831 ἑξ., β′ ἔκδ. 1861 ἑξ.).—*Fechner* J. Böhme, Sein Leben und seine Schriften (1857).—*Lehmann*, Mystik im Heidentum und Christentum (1908). Ν. Λ.

**Μπαῖμερ** (Boehmer), ***Γεώργιος-Ροδόλφος.*** Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ βοτανολόγος (1723—1803). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀνατομίας καὶ βοτανικῆς καὶ βραδύτερον τῆς χημείας καὶ θεραπευτικῆς. Ἐδημοσίευσε βιβλιογραφικὸν εὑρετήριον ὑπὸ τὸν τίτλον «Συστηματικὸν φιλολογικὸν ἐγχειρίδιον τῆς φυσικῆς ἱστορίας», ἐπίσης «Φυτικὴν σπερματολογίαν», «Lexicum rei herbariae». Θ. Κ.

— **Μπαῖμερ** (Boehmer), ***Ἐδουάρδος.*** Γερμανὸς ρωμανιστὴς καὶ θεολόγος (1827—1906). Καθηγητὴς τῆς ρωμανικῆς φιλολογίας ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Χάλλης καὶ τοῦ Στρασβούργου, ἔγραψε φιλολογικὰ καὶ φιλοσοφικὰ ἔργα, ὡς καὶ ἱστορίαν περὶ τῆς ἱσπανικῆς μεταρρυθμίσεως. Αἱ κυριώτεραι μελέται αὐτοῦ ἀναφέρονται εἰς τὰ ἀρχαῖα γραπτὰ μνημεῖα τῆς γαλλικῆς, προβηγκιανῆς καὶ ἰταλικῆς γλώσσης (ἰδία περὶ Δάντου). Ἔγραψεν ἐπίσης «De Monarchia» «De vulgari Eloquentia» καὶ «Περὶ τῆς σημερινῆς προβηγκιανῆς ποιήσεως» (1870). Θ. Κ.

— **Μπαῖμερ** (Boehmer), ***Ἰοῦστος-Χέννινγκ.*** Γερμανὸς νομομαθὴς (1674—1749). Καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Χάλλης, ἠσχολήθη ἰδίως εἰς μελέτας τοῦ ἀστικοῦ καὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ δικαίου. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, πάντων εἰς λατινικήν, περίφημον εἶναι «Ἡ Εἰσαγωγὴ εἰς τὸ δίκαιον τῶν πανδεκτῶν», ὡς καὶ τὸ «Exertationes ad Pandectas», τὰ ὁποῖα ἐπηρέασαν τὴν γερμανικὴν νομοθεσίαν τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος. Ἐπὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ δικαίου, κλασσικὰ συγγράμματα αὐτοῦ εἶναι: «Ἐκκλησιαστικὸν δίκαιον τῶν διαμαρτυρομένων» καὶ «Σῶμα κανονικοῦ δικαίου», ἐπὶ τῶν ἀρχῶν τῶν ὁποίων βασίζεται καὶ σήμερον τὸ κανονικὸν δίκαιον τῶν Γερμανῶν. Θ. Κ.

— **Μπαῖμερ** (Boehmer) ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς ἱστορικὸς (1795—1863). Ἀπέγραψε τὰ βασιλικὰ ἐπίσημα ἔγγραφα μέχρι τοῦ Καρόλου Δ′, εἰς ἰδιαίτερον κατάλογον «Regesto Imperii», ἐξησφάλισε δὲ τὴν συνέχειαν τοῦ ἔργου τούτου διὰ δωρεᾶς, ἣν κατέλιπεν. Ἐδημοσίευσεν: «Οἱ νόμοι τοῦ Κράτους ἀπὸ τοῦ 900—1400» (1832), «Ἀρχεῖον τῆς πόλεως Φραγκφούρτης», «Fontes rerum germanicarum», περιέχον τὰ ἐπίσημα ἔγγραφα διὰ τὴν ἱστορίαν τῶν αὐτοκρατόρων τοῦ ΙΓ′ καὶ ΙΔ′ αἰῶνος. Μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐδημοσιεύθησαν τὰ ἔργα του: «Ἀρχεῖον τῶν Ρωμαίων βασιλέων καὶ αὐτοκρατόρων ἀπὸ Κονράδου Α′ μέχρι τοῦ Ἐρρίκου Ζ′» καὶ «Ἀρχεῖον πάντων τῶν Καρολιδῶν». Θ. Κ.

**Μπαῖμερβαλντ** (Boehmerwald=βοημικὸς δρυμός, τσεχιστὶ Tchesky Los).

— *[Γεωγρ.]* Ὀρεινὸς ὄγκος, ἀποτελῶν τὴν μεθοριακὴν γραμμὴν μεταξὺ Βαυαρίας καὶ Βοημίας (Τσεχοσλοβακία), μήκους 230 χλ., χωριζόμενος τῶν ὀρέων Φίχτεργκεμπίργκε διὰ τῆς στενωποῦ τοῦ *Ἔγκερ* καὶ προεκτεινόμενος μέχρι τῆς κάτω Αὐστρίας, ὅπου συναντᾶται μετὰ τῶν ὑψωμάτων τῆς Μοραβίας. Διὰ χαμηλῶν αὐχένων διέρχονται δύο σιδηροδρομικαὶ γραμμαί, αἱ Πράγας—Ρέγκενσμπουργκ (Ράτισμπον) καὶ Πράγας—Μονάχου. Ὑψηλότερα σημεῖα ἐπὶ βαυαρικοῦ ἐδάφους εἶναι αἱ κορυφαὶ *Ἄλμπερ* (1457 μ.) καὶ *Ραχέλ* (1452 μ.) καὶ ἐπὶ βοημικοῦ, αἱ *Ὄσσερ* (1283 μ.) καὶ *Ζέβαντ* (1345 μ.). Τὸ κλῖμα εἶναι ξηρὸν καὶ δριμύ. Τὸ ὄρος καλύπτεται ὑπὸ πλουσίων δασῶν, κατὰ τὸ πλεῖστον ἐξ ἐλάτης, καὶ ἐκτεταμένων λειμώνων. Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Κάτω Μολδάβα καὶ Βοττόβα, χυνομένων εἰς τὸν Ἔλβαν, καί τινων μικρῶν παραποτάμων τοῦ Δουνάβεως. Κατοικεῖται ἀραιῶς. Θ. Κ.

**Μπαῖμις** *Λάϊπα* (Boehmisch-Leipa, τσεχ. Cesca Lipa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἐν τῇ Β. Βοημίᾳ, πρώην ἀνήκουσα εἰς τὴν Αὐστρίαν. Κάτ. 11.720 (1921). Ἔχει βιομηχανίαν γεωργικῶν ἐργαλείων καὶ προϊόντων καὶ ὑφαντουργίαν. Θ. Κ.

— **Μπαῖμις** *Τρυμπάου* (Boehmisch-Truebau, τσεχ. Cesca Trebova) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν Βοημίᾳ. Κάτ. 8.389. Ἔχει κλωστήρια καὶ ὑφαντουργεῖα. Θ. Κ.

**Μπαῖμοκ** (Bajmok) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας, ἀνήκουσα πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν οὐγγρικὴν ἐπαρχίαν Μπὰκς Μποντρόγκ. Κάτ. 8.300. Θ. Κ.

**Μπαῖμ-Μπάβερκ** (Böhm-Bawerk), ***Εὐγένιος φὸν —.*** Αὐστριακὸς οἰκονομολόγος (1851—1914). Ἐσπούδασε νομικὰς καὶ οἰκονομικὰς ἐπιστήμας καὶ εἰσῆλθε νεώτατος εἰς τὴν δημοσίαν οἰκονομικὴν ὑπηρεσίαν. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἰννσμπρούκ (1880—1889) καὶ μετὰ ταῦτα ἐν Βιέννῃ (1904—1914) καὶ τετράκις ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Κατὰ τὸ 1911 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν.

Ὁ Μπαὶμ-Μπάβερκ εἶναι ἀναντιρρήτως μετὰ τὸν Κάρολον Μένγγερ ἡ πλέον ἐξέχουσα φυσιογνωμία τῆς αὐστριακῆς σχολῆς. Εἰς τὴν μελέτην τῆς φύσεως τοῦ σχηματισμοῦ καὶ τοῦ δικαιολογητικοῦ λόγου τῆς ἀμοιβῆς τοῦ κεφαλαίου ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τῆς σχολῆς ταύτης καὶ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν θεμελιωδῶν ἀρχῶν τῆς ὑποκειμενικῆς θεωρίας τῆς ἀξίας καὶ τῆς τελικῆς χρησιμότητος κυρίως ἀφιερωθείς, παρέσχε τὴν κλασσικωτέραν ἐπιστημονικὴν συμβολήν. Τὴν κοινωνικὴν σημασίαν τοῦ κεφαλαίου εὑρίσκει εἰς τὴν δι' αὐτοῦ παρεχομένην δυνατότητα χρησιμοποιήσεως μηχανικῶν ἰδίᾳ μέσων παραγωγῆς, ἐν οἷς τοῦτο ἐνσωματοῦται, καὶ μεθόδων, αἵτινες καθιστῶσι μακροτέραν μὲν τὴν παραγωγικὴν διαδικασίαν (ἐὰν συνυπολογισθῇ καὶ ὁ πρὸς κατασκευὴν καὶ ἐφαρμογὴν τῶν ὀργάνων τούτων χρόνος), ἀποδίδουσιν ὅμως διὰ τῆς αὐτῆς προσπαθείας πολλαπλάσια τῆς δι' ἁπλῆς ἐργασίας καὶ ἄνευ τεχνικῶν βοηθημάτων διενεργείας τῆς παραγωγῆς. Ἐκ τῆς σκέψεως ὅτι μόνον οἱ κάτοχοι τῶν διὰ τὴν ἐφαρμογὴν ἀποδοτικωτέρων μεθόδων καταλλήλων παραγωγικῶν ἀγαθῶν δύνανται ἀμέσως ἐν τῷ παρόντι νὰ ἐφαρμόσωσι ταύτας καὶ νὰ πορισθῶσι τὰς ἐκ τούτων ὠφελείας, δικαιολογεῖται ἡ αὔξησις τῆς τιμῆς τῶν ἐν τῷ παρόντι διαθεσίμων μέσων παραγωγῆς, ἢ τῆς ἀξίας τοῦ εἰς χρήματα ἐκπεφρασμένου ἀντιτίμου των ἐν συγκρίσει πρὸς ὅμοια μετά τι χρονικὸν διάστημα εἰς τὴν διάθεσιν τῆς παραγωγῆς τιθεμένων. Ἐπὶ τῆς θεμελιώδους ταύτης ἀρχῆς τῆς ηὐξημένης ἀποτιμήσεως τῶν ἐν τῷ παρόντι διαθεσίμων παραγωγικῶν ἀγαθῶν στηρίζεται ἡ ἐξήγησις τῆς εἰς τὸ κεφάλαιον παρεχομένης ὑπὸ παντοειδῆ μορφὴν ἀμοιβῆς: ὁ παρέχων ἐν τῷ παρόντι ἀφῃρημένην περιουσιακὴν δύναμιν, κατάλληλον νὰ χρησιμεύσῃ εἰς παραγωγικοὺς σκοπούς, ἢ ὁ διαθέτων αὐτούσια παραγωγικὰ μέσα λαμβάνει ὡς ἀντάλλαγμα μέρος τῆς διαφορᾶς τῆς ἀποτιμήσεως τῶν ἀντικειμένων τούτων κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς ἐν τῷ μέλλοντι ἀποδόσεώς των πρὸς τὴν μεγαλυτέραν ἀξίαν κατὰ τὴν στιγμὴν τῆς εἰς τὸν δανειζόμενον παροχῆς, ποσὸν τὸ ὁποῖον, περιοδικῶς, κατ' ἀναλογίαν πρὸς τὸ παρασχεθὲν καταβαλλόμενον, ἀποτελεῖ τὸν τόκον. Τὴν περὶ τοῦ κεφαλαίου θεωρίαν του ἐξέθεσεν ὁ Μπαὶμ Μπάβερκ ἐν τῷ ἔργῳ «Positive Theorie des Kapitals» (2 τόμ. 1884—1889). Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**Μπαίμπιγκτον** (Babington). Ἄγγλος φυσιοδίφης τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ἐκ τῶν ἔργων του: «Ἐγχειρίδιον βοτανικῆς» «Flora Bathoniensis καὶ «Flora of the Channel islands». Α. Δ.

— **Μπαίμπιγκτον** (Babington), ***Ἀντώνιος.*** Ἄγγλος συνωμότης (1561—1586). Παρακινηθεὶς ὑπὸ τοῦ ἰησουΐτου Τζὼν Μπαλλιάρ, ἐγένετο, τῇ ἐπινεύσει τοῦ ἐν Λονδίνῳ πρεσβευτοῦ τῆς Ἱσπανίας Μπερναρντῖνο Μεντόθα, ἡ ψυχὴ συνωμοσίας, ἥτις ἀπεσκόπει τὴν δολοφονίαν τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ καὶ τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς Μαρίας Στούαρτ, ἥτις ὑπῆρξε, καίτοι διεψεύσθη τοῦτο, μέλος ἐνεργὸν τῆς ἐν λόγῳ συνωμοσίας. Ὁ Τζίλμπερτ Τίφορντ, εἷς τῶν συνωμοτῶν, ἐματαίωσε τὰ σχέδια τοῦ Μπαίμπιγκτον, τοῦ ὁποίου κατεσχέθησαν αἱ πρὸς τὴν Μαρίαν Στούαρτ ἐπιστολαί. Πολλοὶ συνωμόται συνελήφθησαν καὶ ἐθανατώθησαν, μεταξὺ δ' αὐτῶν πρῶτος ὁ Μπαίμπιγκτον, ὅστις καὶ κατεδικάσθη εἰς τὸν δι' ἀγχόνης θάνατον. Α. Δ.

**Μπαίμπλινγκεν** (Boeblingen) *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Γερμανίας, ἐν Βυρτεμβέργῃ, κειμένη νοτιοδυτικῶς τῆς Στουτγάρτης. Κάτ. 6.391. Εἶναι γνωστὴ εἰς τὴν ἱστορίαν διὰ τὴν ἐν αὐτῇ νίκην, τῇ 12 Μαΐου 1825, τῶν στρατευμάτων τοῦ σουηβικοῦ συνδέσμου κατὰ τῶν ἐπαναστατῶν τῆς Βαυαρίας. Θ. Κ.

**Μπαϊμποὺρτ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἐν τῇ ἀρχαίᾳ Ἀρμενίᾳ, ἕδρα τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως καὶ διοικήσεως τοῦ νομοῦ Ἐρζερούμ. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 121 χλμ. ΒΔ. τῆς πόλεως Ἐρζερούμ καὶ 90 περίπου ΝΑ. τῆς Τραπεζοῦντος, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τσουροὺκ-σοῦ, διὰ τοῦ ὁποίου συγκοινωνεῖ μετὰ τοῦ ρωσικοῦ λιμένος τοῦ Βατούμ. Ὁ ποταμὸς οὗτος διαιρεῖ τὴν πόλιν εἰς δύο τμήματα, τῶν ὁποίων τὸ μὲν ἓν κεῖται ἐπὶ τῆς πεδιάδος, τὸ δὲ ἄλλο εἰς τοὺς πρόποδας ὄρους. Παρὰ τὴν σχετικῶς εὐνοϊκὴν αὐτῆς θέσιν, ἡ πόλις παρακμάζει, ἰδίᾳ ἀπὸ τῶν ἀρμενικῶν σφαγῶν. Εἰδικὸν προϊὸν τῆς πόλεως ἦσαν ἄλλοτε ἀντικείμενα ἐκ κατειργασμένου καὶ σκαλιστοῦ ἀργύρου, ὡς καπνοθῆκαι, κομβία, καρφίδες καὶ τὰ τοιαῦτα, ἅτινα κατεσκεύαζον Ἀρμένιοι τεχνῖται. Σήμερον κατασκευάζονται ἐν τῇ πόλει τάπητες, λέβητες, ἐφίππια καὶ ἄλλα εἴδη. Κάτ. 10.000 περίπου, τῶν ὁποίων τὸ τέταρτον περίπου Ἀρμένιοι, ἔχοντες πρὸ τῶν σφαγῶν ὀκτὼ ναοὺς καὶ δύο μονάς. Κτισθεῖσα κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τῶν Ἀρμενίων, κατεκτήθη ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, κατόπιν δὲ ἀνεκαινίσθη ὑπὸ τῶν Σελτζούκων. Τῷ 1829, κατὰ τὸν τότε Ρωσο-

Digitized by Google

τουρκικὸν πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ρώσων, ὡσαύτως δὲ καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον (1916—1917). Ἡ ὁμώνυμος διοίκησις ἔχει 110.000 κατοίκων. Ἄλλοτε ὑπῆρχον καὶ περὶ τὰς 15.000 Ἀρμένιοι, σφαγέντες ἢ καταφυγόντες εἰς τὴν σοβιετικὴν Ἀρμενίαν. Ν. Μ.

—**Μπαϊμποὺρτ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ τῷ νομῷ τῆς Ἀγκύρας, ΝΑ. τοῦ Πολατλί.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἐπὶ τῶν παρὰ τὸ *Μπαϊμποὺρτ* ὑψωμάτων τὸ ἑλληνικὸν Γ′ σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Γ. Πολυμενάκος) κατὰ τὸ τελευταῖον δεκαήμερον τοῦ Αὐγούστου 1922 συνῆψε σκληροτάτους καὶ αἱματηροτάτους ἀγῶνας πρὸς τοὺς Τούρκους διὰ τῶν μεραρχιῶν αὐτοῦ 9ης καὶ 10ης, κατὰ πρῶτον μὲν ἐπιτιθέμενον πρὸς ἀπώθησιν καὶ ἐκτοπισμὸν τῶν Τούρκων, εἶτα δ' ἀμυνόμενον (28—30 Αὐγούστου 1922) καθ' ὁρμητικωτάτης ἀντεπιθέσεως 14 τουρκικῶν μεραρχιῶν τοῦ Μουσταφᾶ Κεμάλ. Ὁ τουρκικὸς στρατὸς προσεπάθει τότε (28—30 Αὐγούστου 1922) ν' ἀνατρέψῃ τὸ Γ′ σῶμα στρατοῦ, ὅπερ ἀπετέλει τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς καὶ νὰ καταλάβῃ τὰς ἐπὶ τοῦ Σαγγαρίου γεφύρας Μπεϋλὶκ Κιοπροῦ, Καβουντζὶ Κιοπροῦ καὶ λοιπὰς 5 τοιαύτας, πηχθείσας ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ μηχανικοῦ, ἀποκόπτων τὰς συγκοινωνίας τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς μετὰ τῆς βάσεως αὐτῆς πρὸς δυσμάς, ἐξωθουμένης πρὸς νότον, πρὸς τὴν Ἁλμυρὰν ἔρημον ἢ Τζιχὰν Μπεϋλὶ (βλ. καὶ λ. *Σαγγάριος*). Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπαὶν** (Bain)· βλ. *Μπαίιν*.

**Μπαινβὶλλ** (Bainville), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος ἱστορικὸς συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1879. Ἤρχισε τὸ συγγραφικόν του στάδιον ὡς κριτικὸς καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν. Τῷ 1900 ἐξέδωκε τὸ πρῶτόν του ἱστορικὸν ἔργον περὶ Λουδοβίκου Β′ τῆς Βαυαρίας, τῷ 1923 τὴν πολύκροτον καταστᾶσαν «Ἱστορίαν τῆς Γαλλίας» καὶ τῷ 1925 ἐξέδωσε τὴν «Ἱστορίαν δύο λαῶν», ὅπου ἐξετάζει τὸν ἀνταγωνισμὸν Γερμανῶν καὶ Γάλλων. Τὰ βασιλόφρονα ὅμως φρονήματα τοῦ συγγραφέως ἐπισκιάζουσι τὴν ἀμερόληπτον καὶ ἀντικειμενικὴν κρίσιν του. Διευθύνει τὴν «Παγκόσμιον Ἐπιθεώρησιν». Μ. Β.

**Μπαΐνι** (Baini), *ἀββᾶς* ***Ἰωσήφ***. Ἰταλὸς συνθέτης (1775—1844), ἀρχικῶς ψάλτης καὶ εἶτα, μέχρι τοῦ θανάτου του, καμερλῖγκος τοῦ παπικοῦ παρεκκλησίου. Τὰ ἔργα του (ἐκκλησιαστικαὶ καὶ πολυφωνικαὶ συνθέσεις) εἶναι γραμμένα εἰς τὸ ὕφος τοῦ ΙΣΤ′ αἰῶνος. Ἰδιαιτέραν σημασίαν ἔχουν αἱ βιογραφικαί του μελέται ἐπὶ τοῦ Παλεστρίνα: «Memorie storico-critiche della vita e delle opere di Giovanni Pierluigi da Palestrina» (1828). Τὸ ἔργον τοῦτο, κυρία πηγὴ πληροφοριῶν ἐπὶ τῆς ζωῆς τοῦ Παλεστρίνα, ἐλέγχεται ἐν τούτοις σήμερον ἐν πολλοῖς ἀνακριβές. Ὁ Μπαΐνι ἔγραψεν ἐπίσης μίαν μελέτην περὶ τῆς ἀρχαίας ρυθμικῆς ὑπὸ τὸν τίτλον: «Sagio sopra l'identità de ritmi musicale e poetico» (1820). Γ. Σ.

**μπαὶν-μὶξτ** (τά)· λουτρὰ μικτά, ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν ὁμοῦ, ἐν τῷ αὐτῷ τόπῳ (γαλλ. bains-mixtes).

**Μπαίνμπριτζ** (Bainbridge), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος ἀστρονόμος, γεννηθεὶς τῷ 1582 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1643. Κατέστη γνωστὸς ἐκ τῆς περιγραφῆς τοῦ κομήτου τοῦ 1618, μεθ' ὃ ἐκλήθη ἀμέσως εἰς Ὀξφόρδην, ὅπου τῷ ἀνετέθη ἡ ἕδρα τῆς ἀστρονομίας. Ἐδημοσίευσε διαφόρους παρατηρήσεις του, φυλάσσονται δὲ ἐν Δουβλίνῳ καὶ δύο τόμοι ἀνεκδότων παρατηρήσεών του καὶ διάφορα ἄλλα σχετικὰ χειρόγραφά του. Σ. Π.

**μπαινοβγαίνω**· δημοτ., μπαίνω καὶ βγαίνω, ἐπανειλημμένως εἰσέρχομαι καὶ ἐξέρχομαι: «μπαινοβγαίνω 'ς τὸ δωμάτιον, —'ς τὸ μπαλκόνι»· || συχνάζω εἰς οἰκίαν τινά: «μπαινοβγαίνω 'ς τὸ σπίτι μας», «ἐκεῖ μέσα μπαινοβγαίνει».

**Μπαὶνς** (Baines), ***Ἐδουάρδος***. Ἄγγλος δημοσιογράφος καὶ πολιτικὸς (1774—1848). Κατ' ἀρχὰς εἰργάσθη ὡς τυπογράφος. Τῷ 1801 ἵδρυσε τὴν ἐφημερίδα «Ἑρμῆς τοῦ Λήντς», ἡ ὁποία ἀπέβη τὸ κυριώτερον ὄργανον τῶν φιλελευθέρων ἐν Ὑόρκῃ. Διετέλεσε βουλευτὴς τοῦ Λήντς (1834—1841) καὶ ὑπεστήριξε τὴν κατάργησιν τῆς δουλείας. Ἔγραψεν «Ἱστορίαν τῆς βασιλείας τοῦ Γεωργίου Γ′» (1823) καὶ «Ἱστορίαν τῆς χώρας τοῦ Λαγκάστερ» (1836).

— **Μπαὶνς** (Baines), ***Ἐδουάρδος***. Ἄγγλος δημοσιογράφος καὶ πολιτικός, δευτερότοκος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1800—1890), διαδεχθεὶς αὐτὸν εἰς τὴν διεύθυνσιν τοῦ «Ἑρμοῦ τοῦ Λήντς» καὶ διατελέσας βουλευτὴς τῆς περιφερείας τοῦ Λήντς (1859—1874). Ἔγραψεν «Ἱστορίαν τῆς βιομηχανίας τοῦ βάμβακος ἐν Μεγάλῃ Βρεττανίᾳ» (1835) καὶ βιογραφίαν τοῦ πατρός του (1880). Χ. Δ.

**Μπαΐνσιτσα** (Bainsizza) *[Γεωγρ.]*. Ὀροπέδιον τῆς Ἰταλίας ἐν Γκορίτσια, κείμενον παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ἰζόντζο ποταμοῦ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατεκτήθη, περὶ τὸ τέλος τοῦ 1917, ὑπὸ τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Καπέλλο, κατὰ τὴν ἑνδεκάτην μάχην τοῦ Ἰζόντζο, ἀπωλέσθη ὅμως κατόπιν, μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Καπορέττο, ὅταν οἱ Ἰταλοὶ ἠναγκάσθησαν νὰ ὀπισθοχωρήσουν ἐκ τοῦ Ἰζόντζο μέχρι τοῦ Ταλιαμέντο, τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1917. Μ. Δ. Β.

**Μπαίντεκερ** (Baedeker). Γερμανικὴ οἰκογένεια βιβλιοπωλῶν, τῆς ὁποίας ἱδρυτὴς ὑπῆρξεν ὁ *Διδέριχος*, γεννηθεὶς ἐν Βρέμῃ τῷ 1680, καὶ ὁ ὁποῖος ἤνοιξε τὸ πρῶτον βιβλιοπωλεῖόν του ἐν Μπίλεφελντ. Ὁ ἀνεψιὸς αὐτοῦ *Ζαχαρίας-Γεράρδος* (1750—1800) εἶχε τυπογραφεῖον εἰς τὸ Ἔσσεν, ὁ δὲ υἱὸς αὐτοῦ *Γκόττσαλκ Διδέριχος* (1778—1841) θεωρεῖται ὡς ὁ ἱδρυτὴς τοῦ σημερινοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου «Γ. Ντ. Μπαίντεκερ» τοῦ Ἔσσεν κατὰ τὸ 1798. Οὗτος ἔσχε πολλοὺς υἱούς, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ *Κάρολος* (1801—1859), ὁ *Ἐδουάρδος* (1817—1879) καὶ ὁ *Ἰούλιος* (1821). Ὁ Κάρολος ἐγκατεστάθη ἐν Κόμπλεντς, ὅπου ἐπεδόθη εἰς διαφόρους ἐκδόσεις. Οὗτος ἐν τῷ μεταξὺ ἠγόρασεν ἀπό τινα συγγραφέα, ὀνόματι Κλάϊν, τὴν περιγραφὴν ἑνὸς ταξιδίου του ἀνὰ τὸν Ρῆνον, τὴν ὁποίαν ἐξέδωκε τῷ 1839 μετὰ προσθήκης διαφόρων ἰδικῶν του παρατηρήσεων. Τὸ ἔργον τοῦτο ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ ὑπῆρξεν ἡ ἀρχὴ τῆς ἐκδόσεως τῶν ταξιδιωτικῶν ὁδηγῶν, τῶν γνωστῶν καθ' ἅπαντα τὸν κόσμον ὑπὸ τὸ ὄνομα «Μπαίντεκερ». Μετὰ τὸν πρῶτον ἐκεῖνον ὁδηγόν, ὁ Κάρολος Μπαίντεκερ ἐδημοσίευσε κατόπιν, κατὰ τὸ ὑπόδειγμα τῶν ἀγγλικῶν ὁδηγῶν τοῦ Τζὼν Μόρραιυ, καὶ ἄλλους ἀναφερομένους εἰς τὴν Ὁλλανδίαν, τὸ Βέλγιον καὶ τὰ ἄλλα κράτη τῆς Εὐρώπης. Οἱ ὁδηγοὶ οὗτοι, μεταφρασθέντες εἰς πλείστας γλώσσας τῆς Εὐρώπης, ἔσχον πλείστας ἐκδόσεις, διαρκῶς ἀνανεουμένας καὶ βελτιουμένας. Οἱ τρεῖς υἱοὶ αὐτοῦ, *Ἐρνέστος* (1833—1861), *Κάρολος* (1837) καὶ *Φρειδερῖκος* (1844—1925), ἐξηκολούθησαν τὸ ἔργον τοῦ πατρός των, μετὰ τὸν θάνατον ἐκείνου, προσθέσαντες εἰς τοὺς ὑπ' ἐκείνου ἐκδοθέντας ὁδηγοὺς καὶ τοὺς ὁδηγοὺς τῆς Ἀγγλίας, τῆς Σκωτίας, τῆς Παλαιστίνης, τῆς Συρίας, τῆς Ἰταλίας, τῆς Αἰγύπτου, τῆς Σουηδίας καὶ Νορβηγίας, Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἐρνέστου καὶ τὴν ἀπομάκρυνσιν τοῦ Καρόλου ἐκ τῶν ἐργασιῶν τοῦ οἴκου, ὁ Φρειδερῖκος μετέφερε τὴν ἕδραν αὐτοῦ εἰς τὴν Λειψίαν καὶ ἔδωσεν εἰς αὐτὸν τὸ ὄνομα τοῦ «Καρόλου Μπαίντεκερ» εἰς ἀνάμνησιν τοῦ πατρός του. Σὺν τῷ χρόνῳ ἐξεδόθησαν καὶ ὁδηγοὶ διὰ τὰς ἄλλας ἠπείρους. Τῷ 1887 προσελήφθη εἰς τὸν οἶκον ὡς συνεταῖρος καὶ ὁ Ἐρρῖκος Ρίττερ. Ὁ πρῶτος ὁδηγὸς Μπαίντεκερ περὶ Ἑλλάδος ἐξεδόθη τῷ 1883, ἔκτοτε δὲ ἐγένοντο ἐπανειλημμέναι ἐκδόσεις αὐτοῦ μετὰ προσθηκῶν καὶ βελτιώσεων. Ἡ μεγάλη δημοτικότης καὶ τὸ κῦρος τῶν ὁδηγῶν Μπαίντεκερ ὀφείλεται κυρίως εἰς τὴν ἀκρίβειαν καὶ τὴν ἀμεροληψίαν τῶν πληροφοριῶν, εἰλημμένων ἐπὶ τόπου ὑπὸ αὐτοπτῶν ἀπεσταλμένων τοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου. Μ. Δ. Β.

**Μπαΐντεν - Πάουελ** (Baden-Powell), ***σὲρ Ροβέρτος - Στήφενσον - Σμίθ***. Ἄγγλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1857. Ὁ πατήρ του ἦτο καθηγητὴς ἐν Ὀξφόρδῃ· ἡ μήτηρ του θυγάτηρ τοῦ ναυάρχου Σμὶτ καὶ ἐγγόνη τοῦ λόρδου Νέλσωνος. Εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν τῷ 1876 καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὰς Ἰνδίας, τὸ Ἀφγανιστὰν καὶ τὴν Ν. Ἀφρικήν, διορισθεὶς κατόπιν γραμματεὺς τῆς στρατιωτικῆς διοικήσεως τῆς Μάλτας (1890—1893). Διεκρίθη ἐπίσης κατὰ τὸν πόλεμον ἐναντίον τῶν Ἀσαντί, καθὼς καὶ κατὰ τὸν Νοτιοαφρικανικὸν πόλεμον, κατὰ τὸν ὁποῖον ὑπερήσπισε τὴν Μαίηφκινγκ, ἐναντίον πολυπληθεστέρων δυνάμεων τῶν Μπόερς, ὑπομείνας πολιορκίαν 215 ἡμερῶν, μέχρις ὅτου ἀγγλικαὶ ἐνισχύσεις τὸν ἀπηλευθέρωσαν. Εἰς ἀνταμοιβὴν τοῦ κατορθώματός του τούτου προήχθη εἰς στρατηγὸν καὶ ἀπὸ τοῦ 1900—1903 ἀνέλαβε τὴν διοργάνωσιν καὶ τὴν διεύθυνσιν τῆς νοτιαοφρικανικῆς χωροφυλακῆς. Κατόπιν διωρίσθη ἐπιθεωρητὴς τοῦ ἱππικοῦ τῆς Ἀγγλίας καὶ ἀπεσύρθη τῆς ἐνεργοῦ στρατιωτικῆς ὑπηρεσίας τῷ 1910. Ὁ Μπαΐντεν - Πάουελ κατέστη κυρίως περιώνυμος διὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἵδρυσιν τοῦ *προσκοπισμοῦ* ἐν Ἀγγλίᾳ (τῷ 1908), τοῦ ὁποίου ἐγένετο ἀρχηγός. Τὸ πρῶτον σῶμα προσκόπων, ὅπερ ἵδρυσεν ὁ Μπαΐντεν - Πάουελ, περιελάμβανε περὶ τὰς 2.000 παῖδας καὶ κοράσια, ηὐξήθη δὲ μεγάλως ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος καὶ εὗρε μιμητὰς εἰς πάντα τὰ ἔθνη. Ἐδημοσίευσε δὲ καὶ πρωτότυπον προσκοπικὸν ὁδηγὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Scouting for boys» (1908), ὁ ὁποῖος μετεφράσθη εἰς πλείστας γλώσσας.

Τὴν ἰδέαν τοῦ προσκοπισμοῦ συνέλαβεν ὁ Μπαΐντεν - Πάουελ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς παραμονῆς του εἰς τὰς ἀγγλικὰς ἀποικίας. Κατὰ τοὺς πολέμους, τοὺς ὁποίους διεξήγαγε κατὰ διαφόρων ἡμιαγρίων φυλῶν, ἐφείλκυσε τὴν προσοχήν του ὁ φυσικὸς βίος, τὸν ὁποῖον διῆγον οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι μακρὰν τῶν πόλεων, συνησπισμένοι εἰς ὁμάδας πειθαρχουμένας καὶ ἠσκημένας πλήρως, ὅπως ἀντιμετωπίζωσιν, εἷς ἕκαστος τῶν ἀποτελούντων αὐτάς, τὰς ἀνάγκας καὶ τὰς δυσχερείας τοῦ καθ' ἡμέραν βίου καὶ καθιστῶσι σεβαστὰ τὰ δικαιώματά των κατὰ παντὸς ἐπιβουλευομένου αὐτά. Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν παρατηρήσεών του τούτων ἐσκέφθη νὰ καταρτίσῃ σύστημα φυσικῆς ἀγωγῆς τῶν νέων, τὸ ὁποῖον νὰ εἰσαγάγῃ εἰς τὴν πατρίδα του. Τὰς σκέψεις του ταύτας ἐνίσχυσεν ἡ κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἀγγλίας πρὸς τοὺς Μπόερς συμμετοχή του καὶ ἡ ὑπ' αὐτοῦ, συνταγματάρχου τότε, διοίκησις τοῦ στρατεύματος τῆς πολιορκηθείσης τῷ 1899 μικρᾶς πόλεως τοῦ Μαίηφκινγκ ὑπὸ τῶν Μπόερς. Ἔχων ὑπὸ τὰς διαταγάς του μικρὸν σῶμα ἐκ 1.200 μόλις ἀνδρῶν, εὑρέθη ἐν μεγίστῃ στενοχωρίᾳ, καθ' ὅσον καὶ ἐξ αὐτῶν μέγας ἀριθμὸς ἀπησχολεῖτο εἰς τὰς βοηθητικὰς ὑπηρεσίας. Ὅπως ἐξέλθῃ τῆς στενοχωρίας, ἀπεφάσισε νὰ κάμῃ ἔναρξιν τοῦ σχεδίου, τὸ ὁποῖον εἶχε συλλάβει, τῆς ἐκγυμνάσεως τῶν παιδίων εἰς τὰς πρακτικὰς γνώσεις καὶ τῆς ἀναπτύξεως τῆς πρωτοβουλίας των καὶ τοῦ αἰσθήματος τῆς πρὸς τὸν πλησίον ἀγάπης καὶ ἀλληλεγγύης. Διέταξε τότε τὸν ὑπὸ τὰς διαταγάς του ὑπηρετοῦντα ἀξιωματικὸν λόρδον Σέσιλ νὰ συγκεντρώσῃ τὰ ἄνω τῆς ἡλικίας τῶν 12 ἐτῶν παιδία, νὰ καταρτίσῃ δι' αὐτῶν μικρὸν στρατιωτικὸν σῶμα καὶ νὰ ἀναθέσῃ εἰς αὐτὰ ὅλας τὰς βοηθητικὰς ὑπηρεσίας τοῦ στρατεύματος. Ἡ ἐπιτυχία, ἡ ὁποία ἔστεψε τὸ σχέδιον ἐκεῖνο καὶ εἰς τὸ ὁποῖον ἀπεδόθη ἡ λύσις τῆς πολιορκίας καὶ ἡ σωτηρία τοῦ Μαίηφκινγκ καὶ τῶν κατοίκων, ἐνίσχυσε τὴν ἀπόφασιν τοῦ γενναίου στρατηγοῦ, ὅπως θέσῃ εἰς ἐνέργειαν, μόλις ἐπανελθὼν εἰς Ἀγγλίαν, τὸ κίνημα, ὅπως ἀπεκλήθη, τῶν μπόϋ σκάουτς

*Σμὶθ Μπαΐντεν-Πάουελ.*

(=παίδων ἀνιχνευτῶν) καὶ τὸ ὁποῖον κατὰ τὴν εἰς τὴν Ἑλλάδα εἰσαγωγήν του ἀπεκλήθη *προσκοπισμὸς* (βλ. λ.).

Μεγάλαι τιμαὶ ἀπενεμήθησαν εἰς τὸν Μπαΐντεν-Πάουελ διὰ τὰ μεγάλα ἀποτελέσματα, τὰ ὁποῖα ἔφερε τὸ σύστημά του εἰς τὴν φυσικὴν ἀνάπτυξιν καὶ τὴν ἠθικὴν διαπαιδαγώγησιν τῶν παίδων εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ εἰς ὅλας τὰς χώρας, εἰς τὰς ὁποίας εἰσήχθη ὁ προσκοπισμός. Τῷ 1929 ἀπενεμήθη αὐτῷ καὶ ὁ τίτλος τοῦ λόρδου.

Εἰς τὸ μέγα του ἔργον ὁ Μπαΐντεν-Πάουελ εἶχεν ὑπ' ὄψιν του καὶ τὰ συστήματα τῆς ἀνατροφῆς τῶν νέων τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος, πρὸς τὴν ὁποίαν ἰδιαιτέραν τρέφει συμπάθειαν. Ὅτε, κατὰ τὸ 1920, παρεκλήθη ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ περιοδικοῦ «The Greyfriar», τῆς παλαιοτάτης ἐν Godalmig σχολῆς, νὰ γράψῃ τι δι' αὐτό, ἀντὶ ἄλλου τινὸς ἔστειλε σκιαγραφίαν περὶ τοῦ ἑλληνικοῦ προσκοπισμοῦ καὶ ἓν πολὺ ἐπιτυχὲς ἔγχρωμον σκίτσον τῆς Ἀκροπόλεως μετὰ τῶν στύλων τοῦ Ὀλυμπίου Διός, τὸ ὁποῖον ὁ ἴδιος εἶχε σχεδιάσει, ὅτε, τῷ 1867, ἀνθυπολοχαγὸς ὤν, ἐπεσκέφθη τὰς Ἀθήνας. Τερματίζει δὲ τὴν σκιαγραφίαν ἐκείνην διὰ τῆς περικοπῆς: «Μέγας ὡς ἦτο ἀνέκαθεν ὁ θαυμασμός μου διὰ τὴν μεγάλην αὐτὴν χώραν, ἐγένετο ἔτι μεγαλύτερος, ἀφ' ἧς οἱ ἀποτελοῦντες τὴν νέαν αὐτῆς γενεὰν ἐγένοντο πρόσκοποι».

Ἔγραψεν ὡσαύτως καὶ ἄλλα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Αἱ ἀναγνωρίσεις» (1890), «Ἡ ἐκπαίδευσις τοῦ ἱππικοῦ» (1895), «Ἡ ἐκστρατεία τοῦ Ματαμπέλε» (1896), «Οἱ βοηθητικοὶ κατὰ τὰς ἐξερευνήσεις ἐν ἐκστρατείᾳ» (1899), «Αἱ περιπέτειαί μου ὡς κατασκόπου» (1915) κτλ. Μ. ΜΙΝΔΛΕΡ

**Μπαΐντινγκ** (Banting), ***Φρειδερῖκος-Γκράντ***. Καναδὸς ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1891. Ἐν τῷ πανε-



Digitized by Google

πιστημίῳ τοῦ Τορόντο ἐπεδόθη μετὰ τῶν Best καὶ Macleod ἀπὸ τοῦ 1921 εἰς ἐρεύνας ἐπὶ τῆς ἐσωτερικῆς ἐκκρίσεως τοῦ παγκρέατος, μετὰ ἓν ἔτος δὲ ἐπέτυχε μέθοδον ἐξαγωγῆς καὶ παρασκευῆς τῆς ἰνσουλίνης, δι' ἧς εὐοδοῦτο ἡ θεραπεία τοῦ διαβήτου. Τῷ 1923 ἐγένετο καθηγητὴς τῶν ἰατρικῶν πειραματικῶν ἐρευνῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Τορόντο, ἐτιμᾶτο ὁμοῦ μετὰ τοῦ καθηγητοῦ Macleid διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς ἰατρικῆς καὶ ἐψηφίζετο ὑπὸ τῆς καναδικῆς βουλῆς ἐτησία ἐπιχορήγησις 500 λιρῶν διὰ τὰς ἐρεύνας του. Τῷ 1924 ἱδρύθη τὸ «ἰνστιτοῦτον ἐρευνῶν Μπάϊντινγκ» πρὸς τιμὴν καὶ συνέχειαν τοῦ ἔργου αὐτοῦ καὶ τῶν συνεργατῶν του. Ο. Ρ.

**Μπαΐντίρ.** Τουρκικὸν ὄνομα τοῦ ἐν Μεσοποταμίᾳ καὶ ἐν τῷ τουρκικῷ Κουρδιστὰν ὑπὸ Τουρκομάνων, ἐλθόντων διὰ Περσίας ἐκ Κουρδιστάν, ἱδρυθέντος κράτους τῶν *Ἀκ-κογιουνλοῦ* (*Ἀσπροπροβατάδων*). Τούτων σπουδαιότερος ἡγεμὼν ὑπῆρξεν ὁ διαβόητος *Οὐζοὺν Χασάν*. Τὸ κράτος τοῦτο ἐξέλιπε κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, καταλυθὲν ὑπὸ τοῦ σάχου Ἰσμαὴλ τῆς Περσίας, ἀπὸ τοῦ ὁποίου κατέκτησε τὰς χώρας αὐτοῦ ἡ Τουρκία. Ν. Μ.

**Μπαΐντίρ** [*Γεωγρ.*]· βλ. *Βαϊνδίριον*.

**Μπαΐντοῦ** *χάν*. Μογγόλος ἡγεμών, ἔγγονος τοῦ Δζεγκὶς χάν, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου περιῆλθεν εἰς αὐτὸν κατὰ τὴν διανομὴν τοῦ ἀπεράντου μογγολικοῦ κράτους ἡ ἐπαρχία Κιπτσάκ, ἡ χώρα ὅπου κατῴκουν τότε οἱ Βούλγαροι, καὶ τμῆμα τῆς Ν. Ρωσίας. Μετὰ ἓν ἔτος (1228 μ. Χ.) ὁ Μπαΐντοῦ χάν, διελάσας διὰ τῆς Ρωσίας, εἰσέβαλεν εἰς τὴν Πολωνίαν, ὁπόθεν προὐχώρησε διὰ τῆς Οὐγγαρίας μέχρι Μολδαυΐας καὶ Δαλματίας, ἐμπνεύσας τρόμον εἰς τὴν Εὐρώπην. Ὑποστὰς ὅμως κατόπιν ἐπανειλημμένας ἥττας, ἐπέστρεψε μετὰ δύο ἔτη εἰς Κιπτσάκ, ἐβοηθήσεν ἕνα τῶν ἐξαδέλφων του πρὸς κατάκτησιν τῆς Περσίας καὶ ἐστράφη πρὸς τὴν Κίναν, τῆς ὁποίας κατέκτησεν ἐπαρχίας τινάς. Ἀπέθανε τῷ 1257.

— **Μπαΐντοῦ χάν.** Ἀπόγονος τοῦ Δζεγκὶς χάν. Ἀνῆλθε τῷ 1295 εἰς τὸν θρόνον τοῦ κράτους τῶν Ἰλχανιὰν ἐν Περσίᾳ. Ἡττηθεὶς μετὰ 11 μῆνας παρὰ τὸ Ναχιτσεβὰν ὑπὸ τοῦ ἐξαδέλφου του Γαζὰν χάν, ἐξεθρονίσθη. Ἀπέθανε μετὰ ἓν ἔτος. Ν. Μ.

**Μπαϊντυαμπάτι** (Baïdyabati) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Βεγγάλῃ, 24 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Β. τῆς Καλκούττας. Εἶναι ἀξιόλογον ἐμπορικὸν κέντρον καὶ ἔχει βιομηχανίαν σχοινίων ἐκ καννάβεως. Κάτ. 20.516. Χ. Δ.

**Μπαϊντχάβι** ***Νασὶρ - ἀλ-Ντὶν - 'Ἀμποὺ - Σαΐντ-ἄμπν - 'Ἀλλὰχ - ἴμπν - 'Ὀμάρ.*** Πέρσης λογοτέχνης, ἀποθανὼν τῷ 1286. Ἦτο πολυγραφώτατος, ἐκ δὲ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: τὸ εἰς τὸ Κοράνιον ἀναφερόμενον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ φῶτα τῆς ἀποκαλυφθείσης βίβλου καὶ τὰ μυστικὰ τῆς ἑρμηνείας της», δημοσιευθὲν ὑπὸ τοῦ Φλούεγκελ, καὶ τὸ «Νιζὰμ-ἀλ-τεβαρὶχ», γνωστὸν χρονικόν. Χ. Δ.

**μπαίνω**, *ἀόρ.* ἐ*μπῆκα, παρακ. παθ. μετχ. μπασμένος* ἐμβαίνω, εἰσέρχομαι: «μπῆκε καὶ βγῆκε σὰ γαμπρός»· || ἐπὶ ὑφάσματος, γίνομαι κρουστός, πυκνοῦμαι, ἄλλως *πήζω* : «καθάρισα τὸ καπέλλο μου καὶ μπῆκε» ἐστένεψε (βλ. λ. *ἐμβαίνω*).

**Μπαὶρ** (Baehr), ***Χριστιανὸς - Φῆλιξ.*** Γερμανὸς φιλόλογος (1798—1872). Τῷ 1826 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἀϊδελβέργης. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς ρωμαϊκῆς φιλολογίας», «Οἱ Χριστιανοὶ ποιηταὶ καὶ ἱστορικοὶ τῆς Ρώμης» (1836), «Ἡ ἱστορία τῆς ρωμανικῆς φιλολογίας κατὰ τὴν περίοδον τῶν Καρολιδῶν» (1840) κ. ἄ. Ἐξέδωκε μετὰ σχολίων τὸν Ἡρόδοτον καί τινας Λατίνους συγγραφεῖς, καὶ ὑπῆρξεν ὁ μόνος συντάκτης τῆς κλασσικῆς ἐπιθεωρήσεως «Χρονικὰ τῆς Ἀϊδελβέργης». Θ. Κ.

**μπαϊράκι** (τό)· ἡ σημαία: «σηκώνω μπαϊράκι» ἐπαναστατῶ (ἡ λ. τουρκ.).

— [*Ἐγκυκλ.*] *Μπαϊράκια* ἐκαλοῦντο ἐν Ἑλλάδι, μέχρι τῆς Ἐπαναστάσεως τοῦ 1821, ὡς ἀναφέρουσι τὰ δημοτικὰ τραγούδια, αἱ σημαῖαι τῶν ἐπαναστατικῶν κατὰ τῆς Τουρκίας σωμάτων τῶν κλεφτῶν καὶ ἁρματολῶν καὶ δὴ τῶν ἐπισημοτέρων· διότι ὅλα τὰ σώματα δὲν εἶχον *μπαϊράκι* ἢ *φλάμπουρον* μετ' ἰδιαζόντων ἐμβλημάτων πρὸς διάκρισιν, ὁ δὲ φέρων αὐτὸ ἐθεωρεῖτο τὸ ἀνδρειότερον τῶν παλληκαρίων καὶ ἐλέγετο *μπαϊρακτάρης* ἢ *φλαμπουριάρης*, προσωνυμίαι ἀπολήξασαι νῦν εἰς πατρωνυμικά. Τ. Ε. Ε.

**Μπαϊράκι, *Χατζῆ*—** [*Γεωγρ.*]· βλ. *Χατζῆ-Μπαϊράκι*.

**Μπαϊρακλῆ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Πασχαλιὰ* (βλ. λ.).

— **Μπαϊρακλῆ** [*Γεωγρ.*]. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Βαμβακοῦ* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Λαρίσης.

— **Μπαϊρακλῆ** [*Γεωγρ.*]. Προάστειον τῆς Σμύρνης, κείμενον πρὸς Α. τοῦ Κορδελιοῦ. Κ. ΛΣ

**Μπαϊρακτὰρ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Φλάμπουρον* (βλ. λ.)

**μπαϊρακτάρης** (ἐκ τοῦ τουρκ. *μπαϊρὰκ* καὶ κατὰ παραφθορὰν *μπαργιὰκ*=σημαία καὶ *ντὰρ*=ὁ κρατῶν)· σημαιοφόρος, ἀρχηγὸς φυλῆς (ἐν Ἀλβανίᾳ, ἔνθα ἑκάστη φυλὴ ἢ πατριὰ ἔχει τὸ μπαϊράκι της). Ν. Μ.

**Μπαϊρακτάρης, *Δημήτριος*.** Στρατιωτικός, γεννηθεὶς τῷ 1833 ἐν Ἀγρινίῳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1900 ἐν Ἀθήναις. Γόνος σουλιωτικῆς οἰκογενείας, κατετάχθη τῷ 1848 εἰς τὸν στρατόν, προήχθη βαθμηδὸν εἰς ἀξιωματικὸν τοῦ πεζικοῦ καὶ τῷ 1866, ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς Κρητικῆς ἐπαναστάσεως, κατῆλθεν εἰς Κρήτην, ὅπου διεκρίθη εἰς πλείστας μάχας διὰ τὸν ἡρωϊσμόν του. Κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1897, συνταγματάρχης ὤν, διωρίσθη διοικητὴς ταξιαρχίας καὶ ἐπὶ κεφαλῆς ταύτης συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις Ἠπείρου, διακριθεὶς ἰδίως εἰς τὴν ἐπίθεσιν τοῦ Γριμπόβου, καθ' ἥν, περιερχόμενος τὴν πρώτην γραμμὴν τοῦ πυρός, ἐνεψύχωνε τοὺς ἄνδρας του καὶ ὤθει αὐτοὺς εἰς τὰς ἐφόδους. Παρέσχεν ὡσαύτως πολυτίμους ὑπηρεσίας εἰς τὴν δημοσίαν ἀσφάλειαν, ἔν τε τῇ ὑπαίθρῳ, ὡς διοικητὴς εὐζωνικῶν τμημάτων πρὸς καταδίωξιν τῆς λῃστείας, καὶ ἐν Ἀθήναις, ὡς διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας, περιστείλας καὶ ἐξοντώσας τὰ μαστίζοντα τὴν κοινωνίαν κακοποιὰ στοιχεῖα. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1900, προαχθεὶς εἰς ὑποστράτηγον (βλ. καὶ λ. *Ἀθῆναι*, τ. Β', σ. 206γ' ἐπ.). Ν. ΚΛΣ

**Μπαϊρὰμ *πασᾶς*.** Μέγας βεζύρης τῆς Τουρκίας ἐπὶ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Δ'. Ἦτο Κωνσταντινουπολίτης γενίτσαρος, ἀνελθὼν μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ γενιτσὰρ-ἀγᾶ. Νυμφευθεὶς τὴν ἀδελφὴν τοῦ σουλτάνου διωρίσθη βαλῆς Αἰγύπτου καὶ κατόπιν διοικητὴς Βουδαπέστης. Ἐξορισθεὶς ἐπί τινα καιρὸν εἰς Ρόδον, ἐπανῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ τῷ 1636 διωρίσθη μέγας βεζύρης. Ἀπέθανε τῷ 1638 ἐν Οὐρφᾷ, προελαύνων πρὸς ἀνάκτησιν τῆς Βαγδάτης. Κατὰ διαταγήν του ἐθανατώθη ὁ Τοῦρκος ποιητὴς Νεφί, ὅστις ἔγραψε στίχους ἐναντίον του. Ν. Μ.

—**Μπαϊρὰμ *πασᾶς*.** Τοῦρκος στρατηγὸς κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821. Οὗτος ἄγων ἰσχυρὸν στρατὸν κατέστειλε τὴν ἐπανάστασιν τῆς Χαλκιδικῆς, διασκορπίσας τὸ σῶμα τοῦ Ἐμμανουὴλ Παπᾶ καὶ τῶν ἄλλων ἐπαναστατῶν, κατεχόντων τὴν θέσιν Χάψα, καὶ οὕτω συνετέλεσεν εἰς τὴν μετὰ ταῦτα διὰ μεγάλων σφαγῶν ὑποταγήν της χώρας. Κατὰ Αὔγουστον, προελάσας εἰς Φθιῶτιδα, ἐπεζήτησε νὰ διέλθῃ διὰ τῆς Ἐλατείας (Δραχμάνι) εἰς Βοιωτίαν, ἵνα ἑνωθῇ μετὰ τοῦ Μεχμὲτ πασᾶ ἢ Ὀμὲρ Βρυώνη τῆς Καρύστου καὶ εἰσβάλῃ εἰς Πελοπόννησον. Παρὰ τὴν θέσιν ὅμως Βασιλικὰ καὶ Φοντάνα τῆς Λοκρίδος ὑπέστη τοιαύτην ἧτταν, τὴν 25 Σεπτεμβρίου, ὥστε ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς τὴν Λαμίαν, καταστρέψας τὴν γέφυραν τῆς Ἀλαμάνας. Εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἡμετέρων περιῆλθον 2 τηλεβόλα, 500 ἵπποι καὶ πολλὰ πολεμεφόδια, χίλιοι δὲ νεκροὶ ἐκάλυψαν τὸ πεδίον τῆς μάχης. Τ.Ε.Ε.

**μπαϊράμ(ιον)** (τό). Λέξις τουρκοπερσική, σημαίνουσα ἑορτή. Εἰδικῶς ὀνομάζονται *μπαϊρὰμ* αἱ δύο μεγάλαι ἑορταὶ τῆς μουσουλμανικῆς θρησκείας, τὸ μικρὸν μπαϊράμιον, τὸ κοινῶς ὑπὸ τῶν Τούρκων λεγόμενον *σεκὲρ-μπαϊράμ*, διότι κατ' αὐτὸ ἀνταλλάσσουν ἐπισκέψεις καὶ δῶρα, κυρίως δὲ ζαχαρωτά, καὶ τὸ *κουρμπὰν-μπαϊρὰμ* (=ἑορτὴ τῶν θυσιῶν). Καὶ τὸ μὲν πρῶτον, τὸ ὁποῖον παρὰ Τούρκοις θεωρεῖται μεγαλύτερον ὡς πολιτικὴ ἑορτή, τελεῖται κατ' ἔτος, τὴν 1ην τοῦ ἀραβικοῦ σεληνιακοῦ μηνὸς *Σεββάλ*, μετὰ τὸν μῆνα *Ραμαζάν*. Τὸ δὲ δεύτερον, ὅπερ θρησκευτικῶς εἶναι μεγαλύτερον, ἑορτάζεται 70 ἡμέρας μετὰ τὸ πρῶτον καὶ θεωρεῖται ὡς συνέχιση τὴν παράδοσιν τῆς θυσίας τοῦ Ἀβραάμ. Κατ' αὐτὸ ἑκάστη οἰκογένεια σφάζει ἓν ἢ καὶ πλεῖονα ἄρρενα πρόβατα, τῶν ὁποίων τὸ πλεονάζον κρέας διανέμουσιν οἱ πλούσιοι εἰς τοὺς ἀπόρους. Τὸ κουρμπὰν-μπαϊρὰμ ἑορτάζεται πανδήμως εἰς Μέκκαν, ὅπου συνέρεον, ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ ταύτῃ, πολλαὶ χιλιάδες Μουσουλμάνων προσκυνητῶν ἐξ ὅλων τῶν μερῶν τοῦ κόσμου. Ἀπὸ τῆς ἐπικρατήσεως ὅμως τοῦ Βαχαβισμοῦ (1925) ἔπαυσε τὸ προσκύνημα.

Τὰ δύο μπαϊράμια ἑωρτάζοντο εἰς τὰ σουλτανικὰ ἀνάκτορα τῆς Κωνσταντινουπόλεως μετὰ μεγάλης πομπῆς, τῆς λεγομένης τελετῆς τοῦ χειροφιλήματος, καθ' ἣν ὁ σουλτᾶνος ἐδέχετο τὰ συγχαρητήρια τῶν ὑπουργῶν, μεγιστάνων καὶ ἀνωτέρων λειτουργῶν τοῦ κράτους, οἱ ὁποῖοι προσεκύνουν κροσσωτὴν ταινίαν ἐκτεινομένην ἐπὶ τῶν ποδῶν τοῦ αὐτοκρατορικοῦ θρόνου. Κατὰ τὸ κουρμπὰν μπαϊρὰμ ὁ σουλτᾶνος ἔσφαζεν ὁ ἴδιος ἢ προσεποιεῖτο ὅτι ἔσφαζε τὰ σφάγια.

Ἄλλοτε ἡ λαϊκὴ συμμετοχὴ καὶ αἱ λαϊκαὶ διασκεδάσεις κατὰ τὰ μπαϊράμια ἦσαν μεγάλαι. Ἤδη ὅμως περιωρίσθησαν ἐν Τουρκίᾳ σημαντικῶς.

Μπαϊρὰμ ὀνομάζουν οἱ Τοῦρκοι καὶ τὸ Πάσχα ἄλλων θρησκευμάτων. Ν. Μ.

**Μπαϊραμὶτς** [*Γεωγρ.*]. Πολίχνη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως ἐν τῷ νομῷ Τσανὰκ - καλὲ (Δαρδανελλίων). Κεῖται παρὰ τὸν ποταμὸν Σκάμανδρον (Μένδερες), εἰς ἀπόστασιν 45 χλμ. ΝΑ. τῆς πόλεως τῶν Δαρδανελλίων. Κάτ. 2.760. Ἡ ὁμώνυμος ὑποδιοίκησις ἔχει ἐπιφάνειαν 2.035 τετρ. χλμ. καὶ 24.941 κατ., παράγει δὲ ἐλαίας, ὀπωρικὰ κ. ἄ. Ν. Μ.

**Μπαϊραμλῆ, *Χατζῆ*—** [*Γεωγρ.*]· βλ. λ. Θεοδοσία.

**Μπαϊρὰμ-Σὰχ** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ὑποδιοικήσεως Χαριουπόλεως τοῦ νομοῦ Ραιδεστοῦ τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης, ὅπερ ἐπὶ ἑλληνικῆς κατοχῆς εἶχε μετονομασθῆ εἰς *Βάριον* καὶ ἠρίθμει (1920) 140 κατοίκους. Δ. Ε. Μ.

**Μπαϊρὰμ τεπὲ** [*Στρατ. Ἱστορ.*]. Σειρὰ ὑψωμάτων τοῦ Καρὰ δάγ, κειμένη δυτικῶς τῆς Πανόρμου. Ἐπ' αὐτῶν συνεκροτήθη τῇ 3 Σεπτεμβρίου 1922 σφοδρὰ μάχη μεταξὺ τοῦ ἑλληνικοῦ Γ' σώματος στρατοῦ καὶ ἰσχυρῶν δυνάμεων τῆς Β' τουρκικῆς στρατιᾶς. Τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ὑποχωρῆσαν ἐξ Ἐσκὶ Σεχὶρ—Προύσης ἤχθη εἰς τοὺς λιμένας τῆς Πανόρμου, τῆς Ἀρτάκης καὶ τῆς Γωνιᾶς, ὅπου κατασκευάσαν 10 ἀποβάθρας ἐν ὅλῳ (ἐν Πανόρμῳ, ἐν Ἀρτάκῃ καὶ ἐν Γωνιᾷ) ἐνήργει ἐπὶ πλοίων τὴν ἐπιβίβασιν τοῦ ὑλικοῦ καὶ τῶν μονάδων αὐτοῦ, μεταφερομένων εἰς Ραιδεστόν. Τὴν ὅλην ἐπιβίβασιν ἐκάλυπτον ἀπὸ τοῦ Μπαϊρὰμ Τεπὲ διὰ τοῦ Ἀκτσὲ Μπουνὰρ μέχρι τῶν ὑψωμάτων τοῦ Κουρούκιοϊ, ἤτοι ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Πανόρμου μέχρι τοῦ τοιούτου τῆς Ἀρτάκης, αἱ Χ καὶ ΙΙΙ μεραρχίαι τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ἐνισχυμέναι καὶ διὰ πεδινοῦ πυροβολικοῦ. Καὶ ἡ μὲν Χ μεραρχία ἀπετέλει τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα (ἐπὶ τοῦ Μπαϊρὰμ τεπὲ) τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ἡ δὲ ΙΙΙ τοιαύτη τὴν δεξιὰν τοιαύτην (ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Κουρούκιοϊ). Τὴν ὅλην παράταξιν ταύτην ἐπλαισίουν καὶ ὑπεστήριζον ἀπὸ μὲν τοῦ κόλπου τῆς Ἀρτάκης δύο ἀντιτορπιλλικὰ τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου, ἀπὸ δὲ τοῦ τοιούτου τῆς Πανόρμου τὸ καταδρομικὸν «Ἀβέρωφ» καὶ ἕτερα δύο ἀντιτορπιλλικά. Περὶ τὴν μεσημβρίαν τῆς 3 Σεπτεμβρίου 1922 λαβοῦσαι τὴν ἐπαφὴν αἱ καταδιώκουσαι τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ τουρκικαὶ δυνάμεις ἐπετέθησαν μετὰ σφοδρότητος κυρίως κατὰ τῆς κατεχούσης τὸ Μπαϊρὰμ τεπὲ Χ μεραρχίας. Ἓν τάγμα τοῦ 27ου πεζικοῦ συντάγματος τῆς μεραρχίας ταύτης καμφθὲν ὑπεχώρησε, τουρκικὰ δὲ τμήματα προχωρήσαντα ἐπίεζον ἰσχυρῶς τὸ ὅλον μέτωπον τοῦ συντάγματος τούτου, οὗ ὁ διοικητὴς καὶ πολλοὶ ἀξιωματικοὶ εἶχον τεθῆ ἐκτὸς μάχης. Τὸ τουρκικὸν πυροβολικὸν ἐξ ἄλλου, προαχθὲν καὶ ἐπιμηκῦνον τὴν βολὴν αὐτοῦ, ἤρξατο βάλλον καὶ κατὰ τῶν ἐν τῷ λιμένι Πανόρμου συμπληρούντων τὴν φόρτωσιν αὐτῶν πλοίων, ἃ ἐτέθησαν ἐν ἀταξίᾳ, ἐπιτεινομένῃ ἐκ τῆς τρικυμιώδους θαλάσσης. Πρὸς στιγμὴν ἡ κατάστασις ἐν γένει ἦτο κρίσιμος. Τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἐπενέβη, ἀντιμετωπίσαν ἀποτελεσματικῶς τὴν δημιουργηθεῖσαν κατάστασιν. Διὰ τῆς συγκεντρώσεως ἀφ' ἑνὸς ἐπὶ τοῦ ἀπειλουμένου σημείου τοῦ πυρὸς τοῦ πυροβολικοῦ τῆς γραμμῆς καὶ τῶν δύο ἑλληνικῶν ἀντιτορπιλλικῶν καὶ τοῦ θωρηκτοῦ καταδρομικοῦ «Ἀβέρωφ» ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Πανόρμου, καὶ διὰ τῆς διαταχθείσης ἀφ' ἑτέρου ὁρμητικῆς ἀντεπιθέσεως ὑπὸ τῆς Χ μεραρχίας, πρὸς ὁριστικὴν ἀπώθησιν τῶν Τούρκων, κατωρθώθη ὥστε νὰ ἀναγκασθῶσιν οὗτοι ν' ἀποσυρθῶσι πρὸς τὰ ὑψώματα βορείως τοῦ Μιχαλίτσι. Κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ἐξηκολούθησεν ἀνενόχλητος κατὰ τὴν νύκτα ἐκείνην ἡ ὑποχώρησις πρὸς τὴν χερσόνησον τῆς Ἀρτάκης τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ἀπαγκιστρωθέντος τελείως ἀπὸ τῶν Τούρκων καὶ κρατήσαντος τὸ πρὸ τοῦ ἰσθμοῦ τῆς χερσονήσου ὕψωμα Ντελικλῆ Μπαῒρ διὰ δύο συνταγμάτων πεζικοῦ (τοῦ 30οῦ τῆς Χ μεραρχίας καὶ τοῦ 12ου τῆς ΙΙΙ) καὶ διὰ δύο μοιρῶν ὀρειβατικοῦ πυροβολικοῦ, ὑποστηριζομένων ἑκατέρωθεν, ἀπὸ μὲν τοῦ κόλπου τῆς Ἀρτάκης διὰ τοῦ πυρὸς τοῦ «Ἀβέρωφ» καὶ δύο ἀντιτορπιλλικῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ κόλπου τῆς Πανόρμου διὰ τοῦ πυρὸς ἑτέρων δύο ἀντιτορπιλλικῶν τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπαϊρας, *Ἀνδρέας*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ πεζικοῦ γεννηθεὶς ἐν Μεσολογγίῳ τῷ 1856. Ἐξεπαιδεύθη (1889—1892) εἰς μὲν τὴν Γαλλίαν παρακολουθήσας τὰ μαθήματα τοῦ σχολείου βολῆς πεζικοῦ, εἰς δὲ τὴν Ἀλγερίαν ἐργασθεὶς εἰς τοπογραφικὰς ἐργασίας. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον 1897, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑπολοχαγοῦ, συμμετέσχεν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ ἀρχηγείου στρατοῦ Θεσσαλίας. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου, συμμετέσχεν ὡς διοικητὴς συντάγματος πεζικοῦ παρὰ τῷ στρατῷ Μακεδονίας, τραυματισθεὶς εἰς τὴν μάχην Γιαννιτσῶν. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Ἑλληνοβουλγαρικοῦ πολέμου

Digitized by Google

1913 διωρίσθη ἀρχηγὸς χωροφυλακῆς Θεσσαλονίκης, εὐθὺς δὲ μετὰ τὸ πέρας τοῦ πολέμου ἐκείνου, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, ἐτοποθετήθη διοικητὴς τῆς τότε συγκροτηθείσης ἐν Θεσσαλονίκη 11ης μεραρχίας, ὀλίγον δὲ χρόνον κατόπιν διοικητὴς τῆς ἐν Σέρραις 6 μεραρχίας, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τοῦ θέρους 1916, προαχθεὶς ἐν τῷ μεταξὺ τούτῳ εἰς ὑποστράτηγον. Κατόπιν ἐτοποθετήθη διοικητὴς τῆς ἐν Χαλκίδι 13ης μεραρχίας καὶ κατὰ Μάϊον 1917 τῆς ἐν Λαρίσῃ 1ης, εἰς ἣν θέσιν παρέμεινε μέχρι τῶν ἀρχῶν Ἰουνίου 1917, ὁπότε συνελήφθη ὑπὸ τῶν εἰς Λάρισαν εἰσβαλόντων Γάλλων καί, τῇ διαταγῇ τοῦ στρατηγοῦ Σαράϊγ, ἐφυλακίσθη. Ἀπὸ τοῦ Αὐγούστου 1917 μέχρι Μαΐου 1919 παρέμεινεν ἐξόριστος εἰς Κορσικήν. Ἀνακληθεὶς τῷ 1920 εἰς τὴν ἐνεργὸν ὑπηρεσίαν, ἐτοποθετήθη διοικητὴς τοῦ ἐν Ἰωαννίνοις 5ου σώματος στρατοῦ, μέχρι τῆς ἀνοίξεως τοῦ 1922, ὁπότε ἐτοποθετήθη ἀνώτερος στρατιωτικὸς διοικητὴς Παλαιᾶς Ἑλλάδος, προαχθεὶς τὸν Ὀκτώβριον 1921 εἰς ἀντιστράτηγον. Ἀπεστρατεύθη τῷ 1922. Συνέγραψε στρατιωτικὸν μνημόνιον καὶ διαφόρους μελέτας, πρὸς δὲ γαλλιστὶ «Le fort d'arrêt Roupel» (1922). Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**μπαΐρ(ι)** (τὸ) *[Καπνολ.]*. Καπνοχώραφον ἐγκαταλειφθέν, πλῆρες ἀχρήστων χόρτων. Δ. Μ. Γ.

**Μπαΐρλε**, ἢ ***Μπαιρλεους*** (Baerle ἢ Baerleus), ***Γάσπαρ φὰν —***. Ὁλλανδὸς ποιητὴς καὶ φιλόλογος (1584—1648). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν Λεύντεν καὶ Ἀμστελλοδάμῳ. Ἔγραψε σειρὰν ποιητικῶν ἔργων καὶ λόγων εἰς τὴν λατινικὴν καὶ τὴν γαλλικήν. Α. Δ.

**Μπαΐρνε** (Boerne), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς δημοσιολόγος καὶ εἰρηνιστής (1786—1837). Ἦτο ἰσραηλιτικῆς καταγωγῆς. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν καὶ εἶτα νομικά. Ἂν καὶ ἀγωνιζόμενος ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τῆς θρησκευτικῆς συνειδήσεως τῶν ὁμοθρήσκων του, ἠσπάσθη τῷ 1818 τὸν Χριστιανισμὸν καὶ ἀντήλλαξε τὸ ἀληθὲς του ὄνομα *Λέσμπ Μπαρούχ* πρὸς τὸ ἀνώτερω, ὑπὸ τὸ ὁποῖον καὶ ἔμεινεν ἔκτοτε γνωστός. Φιλελεύθερος καὶ εἰρηνιστής, ἐξέδωκε δύο ἐφημερίδας, αἵτινες ὅμως ταχέως ἐπαύθησαν. Ἐπεχείρησε τότε διάφορα ταξίδια εἰς τὸ ἐξωτερικὸν καὶ τῷ 1830 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις. Ἐκεῖθεν δὲν ἔπαυσεν ἀρθρογραφῶν εἰς γερμανικὰ φύλλα πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ἰδεῶν του ὑπὲρ τῆς ἀδελφοσύνης τῶν λαῶν. Αἱ «Ἐπιστολαὶ ἐκ Παρισίων» καὶ αἱ «Νέαι ἐπιστολαὶ ἐκ Παρισίων», ἐκδοθεῖσαι εἰς τεύχος εὐρύτατα κυκλοφορήσαν, ἤσκησαν βαθυτάτην ἐπίδρασιν ἐν Γερμανίᾳ καὶ συνετέλεσαν εἰς τὴν ἐνίσχυσιν τοῦ ἀντισωβινιστικοῦ ρεύματος, ὅπερ ἀντεπροσώπευε τὸ νεοΐδρυτον φιλολογικοπολιτικὸν κόμμα «τῆς νέας Γερμανίας». Διὰ τοῦ περιφήμου φιλιππικοῦ του «Μέντσελ ὁ γαλλοφάγος» ὑποστηρίζει τὴν ἀνάγκην τῆς ἑνώσεως τοῦ γαλλικοῦ καὶ τοῦ γερμανικοῦ πνεύματος πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῆς ἀνθρωπότητος. Θ. Κ.

**Μπαιρντ** (Baird), ***Δαυΐδ***. Ἄγγλος στρατηγὸς (1757—1829). Ἀποσταλεὶς εἰς τὰς Ἰνδίας ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Χυντὲρ-Ἀλῆ, τοῦ ὁποίου συνέλαβεν αἰχμάλωτον (1779), κατόπιν δ' ἐναντίον τῶν Τιππὸο-Σαΐμπ καὶ κατέλαβε τὴν Σεριγκαπατάμ. Τῷ 1807 ἔλαβε μέρος εἰς τὸν πόλεμον κατὰ τῆς Δανίας, τῷ δὲ 1808 ἀπεστάλη εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ὅπου ἠνδραγάθησε κατὰ τὴν μάχην τῆς Κορόνια. Α. Δ.

**—Μπαιρντ** (Baird), ***Ροβέρτος***. Ἀμερικανὸς δημοσιολόγος (1798—1863). Ὑπῆρξεν ἐνθουσιώδης ἐκλαϊκευτὴς τῶν προτεσταντικῶν δογμάτων. Τὰ ἔργα του «Ἱστορία τῶν ἐν ἐγκρατείᾳ κοινωνιῶν» καὶ «Ἡ θρησκεία τῶν Ἀμερικανῶν» θεωροῦνται κλασσικά. Α. Δ.

**—Μπαιρντ** (Baird), ***Σπένσερ-Φούλλερτον***. Ἀμερικανὸς φυσιοδίφης (1823—1887). Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Νέας Ὑόρκης καὶ διευθυντὴς τοῦ μουσείου τῆς φυσικῆς ἱστορίας «Smithsonian Institution», τὰ χρονικὰ τοῦ ὁποίου συνέτασσε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἠσχολήθη πρὸ παντὸς περὶ τὴν μελέτην τῶν σπονδυλωτῶν, περὶ ὧν ἔγραψεν ἀπείρους πραγματείας, δημοσιευθείσας εἰς τὸ περιοδικὸν «Bulletin of the United States National Museum». Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι: «Catalogue of Northamerican Reptiles» (1853), «Catalogue of Northamerican Birds» (1858), «Mammels of North America» (1854), «History of American Birds» 1874). Α. Δ.

**Μπαΐροτσάνα** (Bairotsana). Ἅγιος τοῦ Θιβέτ, μαθητὴς τοῦ πατριάρχου Κάντα Ραχχίτα, ἀκμάσαντος τὸν Η' αἰῶνα, σεβάσμιος διὰ τὴν ἠθικὴν φιλοσοφίαν του καὶ περίφημος διὰ τὴν σοφίαν του. Μετέφρασε πολλὰ βιβλία σανσκριτικὰ εἰς τὴν θιβετικήν, μετὰ δὲ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἁγιοποιήθη ὡς ἐνσάρκωσις τοῦ Ἀνάντα, ἀγαπητοῦ μαθητοῦ καὶ ἐξαδέλφου τοῦ Κάκια Μούνι. Θ. Κ.

**Μπάϊς** (Baisch), ***Ἑρμάννος***. Γερμανὸς ζωγράφος (1846—1894). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Στουττγάρτῃ σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν, τῷ δὲ 1868 μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα ἐμελέτησε τοὺς νεωτέρους τοπιογράφους. Βραδύτερον ἐπεσκέφθη τὸ Μόναχον καὶ ἔλαβε μαθήματα παρὰ τοῦ A. Lier. Τῷ 1880 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῇ σχολῇ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Καρλσρούης. Ὁ Μπάϊς διεκρίθη ὡς τοπιογράφος διὰ τὴν χάριν τῶν συνθέσεών του καὶ τὸν ἁρμονικόν του χρωματισμόν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται τὰ ἀκόλουθα: «Ἕνας μεγάλος δρόμος εἰς τὴν Ὁλλανδίαν» (ἐξετέθη εἰς τὴν ἐν Παρισίοις Παγκόσμιον ἔκθεσιν τοῦ 1878), «Μύλος στὸ σεληνόφως», «Ἀνοιξιάτικο πρωΐ», «Τὸ ποτιστήρι», «Τέλη τοῦ καλοκαιριοῦ», «Πρωΐ», «Μεσημέρι», «Βράδυ» κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπαϊσλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Τερψιθέα* (βλ. λ.).

**Μπαϊσλῆ** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Πανόραμα* (βλ. λ.).

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν συνοικισμοῦ *Μεσάδα* (βλ. λ.).

**Μπαϊσουγγούρ**, ***Μιρζᾶ***. Τέταρτος ἡγεμὼν τῆς ἐν Διαρβεκὶρ κυβερνησάσης οἰκογενείας τῶν *Ἀκκογιουνλοῦ* (=Ἀσπροπροβατάδων), ἔγγονος τοῦ Οὐζοὺν Χασάν. Ἐφονεύθη τῷ 1493 ὑπὸ τοῦ ἐξαδέλφου του Ρουστὲμ βέη.

**— Μπαϊσουγγούρ**, ***Μιρζᾶ***. Ἔγγονος τοῦ Ταμερλάνου, υἱὸς τοῦ Σαχρόχ, γεννηθεὶς τῷ 1400 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1435 ἐν Χεράτῃ. Ἔγραψε ποιήματα εἰς τὴν περσικὴν καὶ τσαγαταϊκήν. Ἦτο καὶ καλλιγράφος, ἀντιγράψας πολλὰ βιβλία. Ν. Μ.

**Μπαΐστεμπλ** (Bastable), ***Κάρολος***. Ἄγγλος νομομαθὴς καὶ οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1855. Διετέλεσεν ἀλληλοδιαδόχως καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἀπὸ τοῦ 1882 καὶ κατόπιν τῆς φιλοσοφίας τοῦ δικαίου ἀπὸ τοῦ 1902 ἐν Δουβλίνῳ καὶ ἐν Ὀξφόρδῃ ἀπὸ τοῦ 1908. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται εἰς τὰς οἰκονομικὰς ἐπιστήμας τά: «Theory of international Trade», «Commerce of Nations», «Public Finance». Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**Μπαϊταβαννὶ** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰνδικῆς, ὁ ἀρχαῖος *Δωσάρων* (βλ. λ.).

**Μπάϊτερ** (Baiter), ***Ἰωάννης-Γεώργιος***. Ἑλβετὸς κλασσικὸς φιλόλογος (1807—1877). Ἐσπούδασεν εἰς τὰ γερμανικὰ πανεπιστήμια τοῦ Μονάχου καὶ Γοττίγκης, ἐγένετο δὲ καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ζυρίχης, ἔνθα ἐδίδαξε μέχρι τοῦ 1849. Πλὴν πολλῶν πραγματειῶν περὶ τῆς ἑλληνικῆς καὶ τῆς λατινικῆς φιλολογίας, ἐξέδωκε τοὺς λόγους τοῦ Ἰσοκράτους, τὰ ἅπαντα τοῦ Πλάτωνος (μετὰ τῶν Ὀρέλλι καὶ Βίνκελμαν) καὶ τοὺς λόγους τοῦ Κικέρωνος. Ἐπίσης ἔγραψεν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Οἱ ἀττικοὶ ρήτορες». Θ. Κ.

**Μπάϊτζοτ** (Bagehot) ***Οὐῶλτερ***. Ἄγγλος οἰκονομολόγος (1826—1877). Ἐσπούδασεν ἐν Λονδίνῳ νομικὴν καὶ διωρίσθη τῷ 1852 δικηγόρος. Ὡς διοικητὴς κατόπιν μιᾶς τῶν σπουδαιοτέρων ἐπαρχιακῶν τραπεζῶν τῆς Ἀγγλίας, ἀνεμίχθη ἐπιτυχῶς εἰς ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις, ἐπεδόθη δὲ ἐκ παραλλήλου εἰς πλουτολογικὰς μελέτας. Τῷ 1859 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς ἑβδομαδιαίας οἰκονομικῆς ἐπιθεωρήσεως «Economist» καὶ διεκρίθη μετὰ ταῦτα ὡς συγγραφεύς. Ὁ Μπάϊτζοτ θεωρεῖ τὸν ἑαυτόν του ὡς τὸν τελευταῖον ἐκπρόσωπον τῆς ὀρθοδόξου κατευθύνσεως τῆς κλασσικῆς σχολῆς, ὡς αὕτη ἐδιδάχθη ὑπὸ τοῦ Ricardo. Ἐν τῷ ἔργῳ του «Lombard Street», εἰς τὸ ὁποῖον κυρίως ὀφείλει τὴν μεγάλην φήμην του, δίδει περιγραφὴν τῆς λειτουργίας τῆς πιστωτικῆς ἀγορᾶς τοῦ Λονδίνου ὡς κέντρου τῆς παγκοσμίου ἐμπορικῆς ἐπικοινωνίας. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν ὑπὸ Forrest Morgan εἰς τρεῖς τόμους (Νέα Ὑόρκη 1889). Α. Α. Τ.

**Μπάϊτλινγκ** (Boehtlingk), ***Ἀρθοῦρος***. Ρῶσος ἱστορικός, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1849. Ἐσπούδασεν ἐν Πετρουπόλει καὶ Βερολίνῳ καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πολυτεχνείῳ τῆς Καρλσρούης. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἱστορικὰ συγγράμματα, ἐν οἷς: «Ναπολέων Βοναπάρτης καὶ ἡ σφαγὴ τῶν πρέσβεων ἐν Ραστάτ», «Ἡ Ὁλλανδικὴ ἐπανάστασις καὶ αἱ συμμαχίαι τῶν Γερμανῶν ἡγεμόνων», «Τὸ ἔργον τοῦ Βίσμαρκ» κτλ. Θ. Β.

**— Μπάϊτλινγκ** (Boehtlingk), ***Ὄθων***. Ρῶσος ἀνατολιστὴς (1830—1904). Ἀνήκων εἰς γερμανικὴν οἰκογένειαν ἐγκατασταθεῖσαν ἐν Ρωσίᾳ, ἤρχισε τὰς σπουδάς του ἐν Πετρουπόλει καὶ συνεπλήρωσεν αὐτὰς ἐν Δορπάτῃ καὶ Βερολίνῳ. Ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν σπουδὴν τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν, ἐξέμαθε κατ' ἀρχὰς τὴν ἀραβικὴν καὶ περσικήν, εἶτα τὴν σανσκριτικήν, ἥτις καὶ ἀπερρόφησεν αὐτὸν ἐξ ὁλοκλήρου. Τῷ 1840 ἐδημοσίευσε «Σανσκριτικὴν γραμματικήν» εἰς 2 τόμους, μετὰ δύο δὲ ἔτη ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν τῆς Πετρουπόλεως. Μετὰ ἓν ἔτος ἐδημοσίευσε τὴν μελέτην του περὶ τῆς γλώσσης Ὑακούτ, εἶτα δὲ διαφόρους μελέτας περὶ τῆς σανσκριτικῆς γλώσσης καὶ φιλολογίας, τὸ «Ἰνδικὸν λεξικόν», μετάφρασιν τοῦ «Σακουντάλα» καὶ τὴν «Σανσκριτικὴν χρηστομάθειαν», πρὸς δὲ πλουσιωτάτην συλλογὴν ἰνδικῶν ἀποφθεγμάτων, μεταφρασμένων εἰς τὴν ρωσικήν. Ἀπὸ τοῦ 1852—1875, ἐδημοσίευσεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ρώτ, «Σανσκριτο-Γερμανικὸν λεξικόν». Ἀποσυρθεὶς τῷ 1878 εἰς Λειψίαν, ἐξέδωκεν ἐκ νέου, συμπληρωμένην, τὴν σανσκριτικὴν γραμματικήν του καὶ πλείστας ἄλλας μελέτας. Θ. Β.

**Μπαΐττγκερ** (Böttger) ***Ἀδόλφος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1815—1870). Τὴν φήμην αὐτοῦ ὀφείλει εἰς τὴν θαυμασίαν μετάφρασίν του τοῦ Βύρωνος καὶ τοῦ Σαίξπηρ καὶ εἰς τοὺς στίχους του, οὓς διακρίνει ὑπέροχος εὐστροφία καὶ χάρις. Ἐκ τῶν ἔργων του διακρίνονται: «Ποιητικὸν ἀπάνθισμα» (1846), «Ἆσμα τῆς ἑορτῆς τοῦ ἁγίου Ἰωάννου» (1847), «Ἐπὶ τῆς Βαρτβούργης» (1847), «Τὸ προσκύνημα τοῦ πνεύματος τῶν ἀνθέων» (1851), «Αἱ σκιαὶ» (1856), «Ἡ πτῶσις τῆς Βαβυλῶνος» (1855), «Τὸ βιβλίον τῶν Σαξώνων» (1858), «Οἱ ἔρωτες τοῦ νεαροῦ Γκαῖτε» (1861), «Νέα ποιήματα καὶ ᾄσματα» (1868). Α. Δ.

**— Μπαΐττγκερ** (Böttger), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς ἀλχημιστὴς (1682—1719). Εἰς ἡλικίαν δέκα πέντε ἐτῶν προσελήφθη ὡς μαθητευόμενος εἰς ἓν φαρμακεῖον τοῦ Βερολίνου, ἐκεῖ δὲ τῷ ἐδόθη ἡ εὐκαιρία νὰ ἐπιδοθῇ εἰς μελέτας τῆς χημείας, πρὸς τὴν ὁποίαν ᾐσθάνετο ζωηρὰν κλίσιν. Χειρόγραφον, σχετικὸν πρὸς τὸν φιλοσοφικὸν λίθον, περιελθὸν εἰς χεῖράς του, ἤγαγεν αὐτὸν εἰς τὴν σκέψιν νὰ κατασκευάσῃ χρυσόν, ἐγκλειόμενος δὲ κατὰ τὴν νύκτα εἰς τὸ φαρμακεῖον ἠσχολεῖτο μέχρι πρωΐας εἰς σχετικὰ πειράματα. Ἀλλ' αἱ παννυχίδες αὐταὶ ἐνέβαλον εἰς ὑπονοίας τὸν προϊστάμενόν του, ὅστις, ἀφοῦ τὸν ἀπεδίωξε πρὸς καιρόν, ἐδέχθη νὰ τὸν ἐπαναπροσλάβῃ, ἀλλ' ὑπὸ τὸν ρητὸν ὅρον ὅτι δὲν θὰ ἐπαναλάβῃ τὰ ἀλχημιστικά του πειράματα. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ Μπαΐττγκερ ᾐσθάνετο ὅτι δὲν θὰ δυνηθῇ ν' ἀντιστῇ ἐπὶ πολὺ εἰς τὸν πειρασμὸν καὶ ὅτι ὑπῆρχε φόβος νὰ θεωρηθῇ ἐν τέλει ὡς μάγος καὶ νὰ ριφθῇ εἰς τὰς φυλακάς, ἐγκατέλιπε τὸ Βερολῖνον καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Βυττεμβέργῃ, ὅπου ἔτυχε τῆς προστασίας τῆς σαξωνικῆς αὐλῆς. Ὁ πρίγκιψ Ἔγκον φὸν Φύρστενμπεργκ ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς τὴν Δρέσδην, ὅπου ἵδρυσεν ἐντὸς τῶν ἀνακτόρων του ἐργαστήριον. Ἀλλὰ τῶν πειραμάτων πρὸς κατασκευὴν χρυσοῦ μὴ στεφθέντων ὑπὸ τῆς προσδοκωμένης ἐπιτυχίας, ὁ Μπαΐττγκερ ἐπεχείρησε νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Βιέννην. Καθ' ὁδὸν ὅμως συνελήφθη καὶ ἤχθη εἰς Δρέσδην (1705), ὅπου δι' ἀπειλῶν ἐπιέσθη ν' ἀποκαλύψῃ τὸ «μέγα μυστικόν». Φοβηθεὶς τότε, ἐνεχείρισεν εἰς τὸν Αὔγουστον Β' σχετικὸν χειρόγραφον πλῆρες μυστικιστικῶν ἀνοησιῶν. Ἀλλ' ὁ ἡγεμὼν ἐξωργίσθη καὶ ὁ Μπαΐττγκερ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὸν κόμιτα Τσερνχάουζεν. Οὗτος προέτεινεν εἰς τὸν Αὔγουστον νὰ ἱδρύσῃ ἐργοστάσια κατασκευῆς πορσελλάνης ἀπὸ κοινὰς γαιώδεις ὕλας. Ἡ ἐπιχείρησις ἐπέτυχε, δεδομένου ὅτι ὁ Μπαΐττγκερ κατώρθωσεν ἔκ τινος ἐρυθροφαίου γῆς εἰς τὰ περίχωρα τοῦ Μάϊσνερ νὰ παραγάγῃ πορσελλάνην, ἥτις ὡς πρὸς τὴν ἀντοχὴν καὶ τὴν στιλπνότητα ἦτο πολὺ ἀνωτέρα τῆς ἤδη ὑπ' αὐτοῦ τούτου τοῦ κόμιτος παρασκευασθείσης. Ὁ Μπαΐττγκερ ἔλαβε τότε γενναιοτάτην διὰ τὴν ἀνακάλυψίν του ταύτην ἀμοιβήν. Τῷ 1706 ὁ Τσερνχάουζεν ἵδρυσεν εἰς Δρέσδην ἐργοστάσιον, εἰς τὸ ὁποῖον, ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Μπαΐττγκερ, παρεσκευάζετο πορσελλάνη εἰς μεγάλην ποσότητα, μέρος τῆς ὁποίας ἐξήγετο καὶ εἰς ξένας ἀγοράς. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ κόμιτος τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐργοστασίου ἀνέλαβεν αὐτὸς ὁ Μπαΐττγκερ. Ἀλλὰ κατὰ τὰ ἔτη 1716 καὶ 1717 ἀντήλλαξεν ἐπιστολὰς μετά τινων βιομηχάνων ἐν Βερολίνῳ, εἰς τοὺς ὁποίους ἐσκόπευε ν' ἀποκαλύψῃ τὸ μυστικὸν τῆς παρασκευῆς πορσελλάνης ἀντὶ μεγάλης ἀμοιβῆς. Πολλαὶ ἐκ τῶν ἐπιστολῶν τούτων κατεσχέθησαν, ὁ δὲ Μπαΐττγκερ κατεδιώχθη καὶ κατεδικάσθη εἰς φυλάκισιν. Α. Δ.

**Μπαΐττιγκερ** (Boettiger), ***Κάρολος-Αὔγουστος***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος καὶ φιλόλογος (1760—1835). Φίλος τῶν μεγάλων ποιητῶν τῆς Γερμανίας Γκαῖτε καὶ Σίλλερ, ὑποστηριζόμενος δὲ καὶ ὑπὸ ἄλλων καλλιτεχνικῶν κύκλων, διωρίσθη τῷ 1804 διευθυντὴς τοῦ μουσείου τῶν Ἀρχαιοτήτων καὶ καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν Δρέσδῃ. Ὁ Μπαΐττιγκερ ἐδημοσίευσεν, εἴτε ὑπὸ τὸ ἀληθὲς αὐτοῦ ὄνομα, εἴτε ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Bertuch, πολλὰ ἀρχαιολογικὰ βιβλία καὶ ἄρθρα, τὰ σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ilithyia oder die Hexe. Ein archäologisches Fragment nach Lessing» (1799), «Sabina» (1803), «Die aldobrandinische Hochzeit» (1810), «Amalthea, oder Museum der Kunstmythologie und bildlichen Altertumskunde I, II, III» (1820—1825), «Archäologie und Kunst» (1828). Β. Δ. Θ.

**—Μπαΐττιγκερ** (Böttiger), ***Κάρολος***. Σουηδὸς ποιητὴς καὶ λογοτέχνης (1807—1878). Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Στοκχόλμης. Εἶναι γνωστὸς ὡς συγγραφεὺς τῶν ἑξῆς ἔργων: «Ποιητικὰ ἀπομνημο-

Digitized by Google

νεύματα», «Λυρικὰ ποιήματα», «Θρησκευτικὰ ᾄσματα». Ἐπίσης διεκρίθη καὶ ὡς θεατρικὸς συγγραφεύς, ὡς μεταφραστὴς λογοτεχνικῶν ἔργων καὶ ὡς βιογράφος τοῦ μεγάλου Σουηδοῦ ποιητοῦ Τέγκνερ. Α. Δ.

**Μπαίττιχερ** (Boetticher), ***Κάρολος.*** Γερμανὸς ἀρχαιολόγος (1806—1889). Ἐπεδόθη ἰδίως εἰς τὴν μελέτην τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῶν ἀρχαίων. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν καλῶν τεχνῶν, καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ διευθυντὴς τοῦ μουσείου τῶν γλυπτῶν τῆς πόλεως Δρέσδης. Ὁ Μπαίττιχερ περιώδευσε τὴν Ἑλλάδα καὶ ἐδημοσίευσε πολλὰ βιβλία καὶ ἄρθρα, τὰ σημαντικώτερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς, κατὰ χρονολογικὴν σειράν: «Ornamentenbuch» (1844), «Die Tektonik der Hellenen» (1854), «Der Baukunst der Hellenen nach den gottesdienstlichen Gebräuchen und den überlieferten Bildwerken dargestellt» (1856), «Das Grab des Dionysos an der Marmorbasis zu Dresden» (1858), «Der Omphalos des Zeus zu Delphi» (1859), «Bericht über die untersuchungen auf der Akropolis von Athen in 1862» (1863), «Dirke als Quelle und Heroine» (1864), «Athenischer Festkalender in Bildern» (1865), «Der Zophorus am Parthenon hinsichtlich der Streitfrage über seinen Inhalt und dessen Beziehung auf dieres Gebäude» (1875), «Die Thymele der Athena-Nike auf der Akropolis von Athen in ihrem hentigen Zustande» (1880). Β. Δ. Θ.

**Μπαΐλ·** βλ. *Μπαΐλ.*

**Μπαίυνς** (Baynes), ***Θωμᾶς - Σπένσερ.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ φιλόσοφος (1823—1887). Ὑπῆρξε διευθυντὴς τῶν «Ἡμερησίων Νέων» (Daily News) καὶ καθηγητὴς τῆς λογικῆς καὶ τῆς μεταφυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου τῆς Σκωτίας. Ἡ Ἀγγλία ὀφείλει εἰς τὸν σοφὸν τοῦτον συγγραφέα τὰ ἑξῆς βαρυσήμαντα ἔργα: «Νέα ἀνάλυσις τῶν τύπων τῆς λογικῆς» (1852), τὴν ἐνάτην ἔκδοσιν τῆς «Νέας Βρεττανικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας» καὶ ἄλλας περισπουδάστους συγγραφάς. Α. Δ.

**Μπαΐφ** (Baïf), ***Ἰωάννης - Ἀντώνιος.*** Γάλλος ποιητὴς (1522—1589), εἷς ἐκ τῶν ἑπτὰ τῆς Πλειάδος. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι συλλογὴ διαφόρων ποιημάτων μὲ τὸν τίτλον «Passe-temps» (1573) καὶ ἑτέρα συλλογὴ διδακτικῶν ποιημάτων «Μῖμοι, διδάγματα καὶ παροιμίαι» (1575). Εἶχε φαντασίαν καὶ εὐαισθησίαν, τοῦ ἔλειψεν ὅμως ἡ ἐπιμέλεια καὶ ἡ καλλιτεχνικὴ διαίσθησις. Ι. Μ. Τ.

**μπὰκ** (τό). Πλωτόν, ὅπερ χρησιμεύει εἰς τὴν μεταφορὰν ἀνθρώπων καὶ ζῴων ἀπὸ ὄχθης εἰς ὄχθην ποταμοῦ, καθὼς ἐπίσης, ὅταν ὁ ποταμὸς τέμνῃ ἀγεφυρώτως ἁμαξιτὸν ὁδόν, καὶ ἁμαξῶν φορτίου ἢ ἐπιβατῶν· διὰ τὴν τελευταίαν ταύτην περίπτωσιν, τὰ καταστρώματα τῶν μπὰκ καὶ τῶν ἑκατέρωθεν τμημάτων τῆς ὁδοῦ δέον νὰ ὦσι περίπου κατὰ τὸ αὐτὸ ὁριζόντιον ἐπίπεδον. Προωθοῦνται δὲ τὰ μπὰκ εἴτε διὰ μυϊκῆς εἴτε διὰ μηχανικῆς δυνάμεως, ἑλκούσης πάντως σχοινίον, φυτικὸν ἢ συρμάτινον, ὅπερ, ἔχον τὰ ἄκρα του μονίμως συνδεδεμένα πρὸς τὰς ὄχθας, ἀφίεται, ὅταν δὲν χρησιμοποιῆται ὑπὸ τοῦ μπάκ, βυθισμένον εἰς τὸν πυθμένα τῆς κοίτης, ἵνα μὴ ἐμπλέκηται εἰς τοὺς πρωστῆρας τῶν ποταμοπλοίων. Μικρογραφία τῶν μπὰκ εἶναι τὰ παρ' ἡμῖν *περάματα*, μεγαλογραφία δὲ τὰ μήπω παρ' ἡμῖν χρησιμοποιούμενα *συρμοπορθμεῖα* (ferry-boat). Σ. Ε. Λ.

**—μπὰκ** (ὁ, ἡ τὸ) (ἀγγλ. back=ὀπίσθιος) *[Ἀθλητ.]*. Διεθνοποιηθεὶς ὅρος τῆς παιδιᾶς τοῦ ποδοσφαίρου, χρησιμοποιούμενος καὶ παρ' ἡμῖν συγχρόνως μετὰ τοῦ ἑλληνογλώσσου «ὀπισθοφύλαξ». Δι' αὐτοῦ δηλοῦνται οἱ δύο παῖκται, οἵτινες μετὰ τοῦ τερματοφύλακος ἀποτελοῦσι τὴν ἀμυντικὴν γραμμὴν ἑκάστης ὁμάδος (βλ. λ. *ποδόσφαιρον*). Χ. Δ.

**Μπὰκ** (Back), ***Γεώργιος.*** Ἄγγλος ναύαρχος καὶ θαλασσοπόρος (1796—1878) ἐκ τῶν ἐξερευνητῶν τῶν βορείων ἀκτῶν τῆς ἀμερικανικῆς ἠπείρου καὶ δυσμῶν τοῦ κόλπου τοῦ Οὔδσονος (1818), διανύσας πεζῇ 1000 μίλλια ὑπὸ σφοδρότατον χειμῶνα. Μεταξὺ τῶν πολλῶν ἐξερευνήσεων, εἰς ἃς μετέσχεν, ἄξιαι ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι ἡ τῶν ἀπὸ τοῦ κόλπου τοῦ Μπάθορστ ἕως τοῦ κόλπου τοῦ Οὔδσονος παραλίων καὶ ἡ ἀπὸ τῆς λίμνης τῶν Δούλων καὶ πρὸς Β. διέλασις τῆς χώρας τῶν Ἐσκιμώων τοῦ ΒΔ. Καναδᾶ, μέχρι τῆς πολικῆς θαλάσσης, δι' ὃ καὶ ποταμὸς τῆς χώρας ταύτης φέρει τὸ ὄνομά του. Ὁ Μπὰκ ὑπῆρξεν εἷς ἄλλου εἷς ἐκ τῶν πρώτων ἀλλὰ καὶ τῶν καλύτερον μελετησάντων τὸ βόρειον σέλας. Σ. Ε. Λ.

**Μπὰκ** (Bac), ἢ ***Μπὰχ*** (Bach), ***Σιγισμόνδος-Φερδινάνδος.*** Σχεδιαστὴς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Στουττγάρτῃ τῷ 1859, ἐκ γονέων Αὐστριακῶν. Ἐγκατασταθεὶς εἰς Γαλλίαν, ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον τῷ 1880 ἀπὸ τῶν στηλῶν τῶν παρισινῶν περιοδικῶν «Caricature» καὶ «Vie Parisienne». Τὸ κυριώτερον σχεδιαστικὸν ἔργον του εἶναι τὸ εἰς 10 λευκώματα καὶ 5 τόμους ἐκδοθέν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ σύγχρονος ἔρως» (1894—1903), τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖται ἐκ σειρᾶς εὐφυῶν γελοιογραφιῶν σατιριζουσῶν τὴν σύγχρονον γυναῖκα. Ὡς συγγραφεὺς ἐξέδωκε κυρίως ἐνδιαφερούσας ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις, τῶν ὁποίων σπουδαιότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Ἡ παλαιὰ Γερμανία» (1906), «Τὸ ἐνετικὸν μυστήριον» (1909), «Παρὰ τῷ Λουδοβίκῳ Β' τῆς Βαυαρίας» (1910), «Ἡ παλαιὰ Γαλλία» (1913), «Τὸ τέλος τῆς παλαιᾶς Γερμανίας, τοῦ 1812—1871» (1919) κ.ἄ. Χ. Δ.

**μπάκα** (ἡ)· κοιλιά || χαρτοπαικτ., βλ. *μπάκκα.*

**Μπακαζᾶκος.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Μάνης (βλ.λ. *Καλκανδῆς Δημήτριος*).

**Μπακαΐρις,** ἢ ***Μπακούρις*** (Bacahiris ἢ Bacuris). Φυλὴ ἐρυθροδέρμων Καραΐβων ἐν τῇ Νοτίῳ Ἀμερικῇ, κατοικοῦσα τὸ ὀροπέδιον τῆς πολιτείας Μάτο -Γκρόσσο τῆς Βραζιλίας, παρὰ τὰς πηγὰς τῶν ποταμῶν Ξυγγοῦ καὶ Ἀρίνος. Διαιρεῖται εἰς δύο κλάδους: τοὺς ἀνατολικοὺς καὶ τοὺς δυτικοὺς Μπακαΐρις. Τὴν φυλὴν ταύτην ἐμελέτησε πρῶτος ὁ Γερμανὸς ἐξερευνητὴς Κάρολος φὸν ντὲν Στάϊνεν. Εἶναι λαὸς πρωτόγονος καὶ καταγίνεται εἰς τὴν ἁλιείαν τῶν ποταμῶν καὶ τὴν γεωργίαν, ὀλονὲν ἐκπολιτιζόμενος. Μ. Δ. Β.

**μπάκακας** (ὁ)· κοινὴ ὀνομασία τοῦ *βατράχου.*

**μπακαλὰ** (baccalats) *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Ξύλινα τείχη προέχοντα ἀπὸ τῶν πλευρῶν τῶν γαλερῶν, ἐφ' ὧν ἐστηρίζοντο οἱ ἀπῶσται, ἐν τοῖς ὁποίοις ἐνεπηγνύοντο οἱ σκαλμοὶ τῶν κωπῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μπακάλαι,** ἢ ***Μπακέλαι*** (Bacalai ἢ Bakelai). Λαὸς μαύρων τῆς Ἀφρικῆς, ἀνήκων εἰς τὴν φυλὴν τῶν Μπαντοῦ καὶ κατοικῶν ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Γκαμπὸν τῆς Νοτίου Γουϊνέας, ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἀφρικῇ τοῦ Ἰσημερινοῦ, μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ὀγκουὲ καὶ Μούνι. Εἶναι φυλὴ πολυάριθμος, μὲ δέρμα οὐχὶ πολὺ μέλαν, μικροῦ ἀναστήματος, καὶ διακρίνεται διὰ τὸν ἔντονον προγναθισμόν της. Οἱ Μπακάλαι κατοικοῦν εἰς προσωρινοὺς συνοικισμούς, ἀνεγειρομένους ἐπὶ νησίδων περιβαλλομένων ὑπὸ ἑλῶν, τὰ ὁποῖα χρησιμοποιοῦν ὡς ὀχυρώματα. Εἶναι λίαν πολεμοχαρεῖς καὶ δεισιδαίμονες καὶ συχνάκις ἐγκαταλείπουν τὰ χωρία των, ἀπερχόμενοι μακρὰν καὶ κτίζοντες νέα, μόλις σημειωθοῦν συχνοὶ θάνατοι εἰς αὐτά. Καταγίνονται κυρίως εἰς τὸ ἐμπόριον, ἐπιδεικνύοντες ἐξαιρετικὴν πανουργίαν, καὶ ἀποτελοῦν τὸν κυριώτερον πληθυσμὸν τῆς Ἀφρικῆς τοῦ Ἰσημερινοῦ, μετὰ τὴν φυλὴν τῶν Παχουΐν. Μ. Δ. Β.

**Μπακαλὰρ** (Bacalar) *[Γεωγρ.]*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο φέρονται ἐν τῷ Μεξικῷ καὶ τῇ πολιτείᾳ τοῦ Γιουκατάν, κατὰ τὴν Α. παραλίαν τῆς χερσονήσου τοῦ Γιουκατὰν πόλις, λίμνη, ποταμὸς καὶ κολπίσκος, ἐπὶ τοῦ κόλπου Σετυμάλ. Ἡ πόλις ἔχει 7.500 κατ. Μ. Δ. Β.

**Μπακαλαριὰ** (Bacalaria), ἢ ***ντὲ λὰ Μπασελερί, Οὖγος.*** Προβηγκιανὸς τρουβαδοῦρος τοῦ ΙΒ' αἰῶνος. Εἶναι γνωστὸς μᾶλλον ἐκ τῶν φιλολογικῶν του ἐρίδων παρὰ ἐκ τῶν ἔργων του. Ποιήματα αὐτοῦ περιέχονται ἐν τῷ 4ῳ τόμῳ τῶν «Choix des poésies originales des troubadours» τοῦ Raymond. Γ. Ι. Β.

**Μπακαλαχάρι** (Bakalaharis). Ὁμὰς πατριῶν τῆς καφρικῆς φυλῆς τῶν Μπετσουάνων, ἥτις ζῇ ἐν τῇ Νοτίῳ Ροδεσίᾳ καὶ πρὸς τὰ ΒΑ. τῶν ὄχθων τοῦ ποταμοῦ Ζαμβέζη καὶ τὰ Α. ὅρια τῆς ἐρήμου Καλαχάρης, ἐν τῇ Ν. Ἀφρικῇ. Καταγίνονται εἰς τὴν γεωργίαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Εἶναι φυλὴ προσομοιάζουσα πρὸς τοὺς ἰθαγενεῖς τῆς Αὐστραλίας, μὲ κοιλίαν λίαν προτεταμένην. Οἱ τῆς καθαρᾶς φυλῆς Μπακαλαχάρι θεωροῦνται ὡς ἐλεύθεροι, ἐνῷ οἱ προερχόμενοι ἐκ διασταυρώσεως ἄλλων φυλῶν εἶναι δοῦλοι καὶ πωλοῦνται ὡς τοιοῦτοι. Πιστεύουν εἰς τοὺς λέοντας ὡς θεούς. Ὑπολογίζονται εἰς 200.000. Μ. Δ. Β.

**μπακάλης** (ἐκ τοῦ ἀραβικοῦ *μπακκάλ*). Πωλητὴς διαφόρων ἐδωδίμων, παντοπώλης.

**μπακαλιάρος** (ὁ), καὶ *μπακαλάος [Ἰχθυολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία, ὑφ' ἣν εἶναι γνωστὰ παρ' ἡμῖν διάφορα γένη ἰχθύων, ὡς *γάδος ὁ ὀνίσκος, μέρλαγγος, μερλούκκιος ὁ κοινὸς* κ. ἄ.

— *[Μαγειρ.]* Ὁ μπακαλιάρος μαγειρεύεται ὡς ἑξῆς: τὸν κόπτομεν εἰς μεγάλα τετράγωνα τεμάχια καὶ τὸν θέτομεν ἐντὸς ἀφθόνου ὕδατος ἐπὶ πολλὰς ὥρας, ἀλλάσσοντες τὸ νερὸ 2—3 φορὰς διὰ νὰ ξαρμυρίσῃ. Ξύνομεν τὸ δέρμα του, ἀφαιροῦμεν τὰ ἐξέχοντα πτερά, τὸν πλύνομεν πάλιν καλῶς, κυλίομεν ἕκαστον τεμάχιον εἰς κουρκούτι (ἀλεύρι μὲ ὀλίγον νερό), τὸ τηγανίζομεν εἰς ἄφθονο λάδι καὶ κατόπιν σερβίρομεν μὲ σκορδαλιά.

*Μπακαλιάρος πλακί.* Κόπτομεν καὶ ξαρμυρίζομεν τὸν μπακαλιάρο ὡς ἀνωτέρω. Καθαρίζομεν καὶ κόπτομεν εἰς ψιλὲς φέτες διὰ μίαν ὀκᾶν μπακαλιάρο 200 δράμια κρεμμύδια. Τὰ ξανθίζομεν εἰς 100 δράμια λάδι καὶ προσθέτομεν ἀνάλογον ντομάταν πελτὲ ἢ φρέσκη, καθαρισμένην καὶ κομμένην εἰς μικρὰ τεμάχια, ἕνα μάτσο μαϊντανὸ ψιλοκομμένο καὶ ἀνάλογο νερό. Ἀφοῦ πάρουν λίγες βράσεις, ρίπτομεν καὶ τὸν μπακαλιάρον καὶ τὸν ἀφίνομεν νὰ σιγοβράζῃ μέχρις ὅτου ἀπορροφήσῃ τὸ ὑγρὸν καὶ μείνῃ μὲ πυκνὴν σάλτσαν. Μ. ΑΣ.

**μπακαλιάρος** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τοὺς *δίπλακας* τῶν ξυλίνων πλοίων. Σ. Ε. Λ.

**μπακαλικὴ** ἡ *[Ἐγκυκλ.]*. Τὸ ὑπὸ τοῦ παντοπώλου (μπακάλη) διεξαγόμενον λιανικὸν ἐμπόριον τροφίμων καὶ αὐτὰ ταῦτα τὰ ὑπὸ τοῦ παντοπώλου πωλούμενα εἴδη. Τὰ εἴδη ταῦτα, κυρίως τρόφιμα, εἶναι πλεῖστα τὸν ἀριθμόν, δύναται δέ τις νὰ ἰσχυρισθῇ ὅτι δὲν ὑπάρχει εἶδος τροφίμων μὴ ὑπάρχον εἰς τὰ νεώτερα καὶ μεγάλα παντοπωλεῖα, ἅτινα καὶ κρέας καὶ ἰχθῦς καὶ λαχανικὰ ἀκόμη πωλοῦσιν. Ἡ μικροτέρα κατηγορία τῶν μὴ ἐδωδίμων εἰδῶν μπακαλικῆς, ἀρκετὰ καὶ αὐτὴ ἐκτεταμένη, περιλαμβάνει σχεδὸν πάντα τὰ διὰ τὸν φωτισμὸν καὶ καθαριότητα τῶν οἰκιῶν χρησιμεύοντα πράγματα.

**μπακάλικο** (τό)· δημοτ., τὸ κατάστημα τοῦ μπακάλη, παντοπωλεῖον.

**μπακάλικος,** *—η, —ο*· δημοτ., ὁ ἀναφερόμενος ἁρμόζων εἰς τὸν μπακάλην.

**Μπακάλμπασης,** ***Ἀναστάσιος Γ.*** Ἕλλην πολιτευτής, γεννηθεὶς ἐν Καλλιπόλει τῷ 1889. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Μεγάλῃ τοῦ Γένους Σχολῇ καὶ κατόπιν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κωνσταντινουπόλεως νομικά, συνεπλήρωσε δὲ τὰς νομικὰς αὐτοῦ σπουδὰς εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Γενεύης καὶ τῶν Παρισίων. Ἐπίσης ἐσπούδασεν οἰκονομικὰς καὶ κοινωνικὰς ἐπιστήμας εἰς τὴν Νευσατέλην τῆς Ἑλβετίας. Τῷ 1920 ἐξελέγη βουλευτὴς Καλλιπόλεως καὶ ἀπὸ τοῦ 1922 ἐκλέγεται βουλευτὴς Ροδόπης. Τῷ 1924 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας καὶ τῷ 1926—1928 ὑφυπουργὸς τῆς Γεωργίας ἐπὶ κυβερνήσεως συνασπισμοῦ. Ἐξέδωκε γαλλιστὶ ἐν Λωζάννῃ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον «Διόσκουρος» τὰ ἔργα: «Ἡ Θράκη», «Ἡ λύσις τοῦ τουρκικοῦ προβλήματος», «Ἡ νεωτέρα ἑλληνικὴ φιλολογία» (1918), καὶ ἑλληνιστὶ τὸ «Προσφυγικὸν πρόβλημα» (1922) καὶ τὰ «Ἑλληνικὰ καπνά» (1930). Μ. Δ. Β.

**μπακαλόγατος** (ὁ)· δημοτ., ὁ γάτος τοῦ μπακάλη, ὁ διατρεφόμενος εἰς τὸ μπακάλικο || μεταφ. ὁ παῖς τοῦ παντοπωλείου, ὁ ὑπηρετῶν εἰς παντοπωλεῖον.

**μπακαλόπαιδο** (τό)· δημοτ., τὸ παιδί, ὁ ὑπηρέτης τοῦ μπακάλη.

**μπακάμι,** ἢ ***μπαχάμι*** (τὸ) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *αἱματόξυλον.*

**Μπακαμπᾶ** (Bakambas). Φυλὴ μαύρων τῆς τροπικῆς Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Βακάμπα).*

**Μπακανάλια** (τὰ) (Bacchanalia) *[Ἀρχ.]*. Μυστήρια πρὸς τιμὴν τοῦ Διονύσου ἐν Ρώμῃ (βλ. λ. *Βακανάλια).*

**Μπακάναν** (Buchanan), ***Γεώργιος.*** Σκῶτος ποιητὴς καὶ ἱστορικὸς (1506—1582). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων καὶ κατόπιν ἐν Σκωτίᾳ, ὅπου ὁ βασιλεὺς Ἰάκωβος Ε' διώρισεν αὐτὸν καθηγητὴν τοῦ νόθου υἱοῦ του Ἰακώβου. Λόγῳ ὅμως τῶν σατιρῶν τὰς ὁποίας ἔγραψε κατὰ τῶν φραγκισκανῶν ἐξωρίσθη καὶ κατέφυγεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπου προσελήφθη καθηγητὴς εἰς τὸ Βορδῶ καὶ ἔσχεν ὡς μαθητὴν τὸν Μονταίνι. Κατόπιν ἐδίδαξεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κόϊμπρας ἐν Πορτογαλλίᾳ, ὅπου ὅμως συνελήφθη ὑπὸ τῆς Ἱερᾶς Ἐξετάσεως καὶ ἐνεκλείσθη ἐπὶ πολλὰ ἔτη εἰς μοναστήριον, ἔνθα ἐπεξειργάσθη τὸν θαυμαστὴν μετάφρασιν τῶν Ψαλμῶν τοῦ Δαβὶδ εἰς λατινικὴν γλῶσσαν. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου ἔτυχε μεγάλων τιμῶν ὑπὸ τοῦ προστάτου του Ἰακώβου ΣΤ', γενόμενος λόρδος καὶ μυστικοσύμβουλος. Μετὰ τὸν θάνατον ὅμως αὐτοῦ συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον ὑπὸ τῶν ἀντιπάλων του, διὰ τοὺς κατ' αὐτῶν σατιρικοὺς λιβέλλους. Ὁ Μπακάναν ἔγραψε πολλὰ ποιήματα καὶ ἱστορικὰ ἔργα εἰς λατινικὴν γλῶσσαν, θεωρεῖται δὲ εἷς τῶν πολυμαθεστέρων τῆς ἐποχῆς των. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: αἱ τραγῳδίαι «Iephtes» (1557), «Baptistes sive Calumnia» (1578), αἱ μεταφράσεις τῶν τραγῳδιῶν τοῦ Εὐριπίδου «Μήδεια» καὶ «Ἄλκηστις», τὸ διδακτικὸν ποίημα «De Sphaera» ὁ σφοδρὸς λίβελλος κατὰ τῆς Μαρίας Στούαρτ «De Maria Scotorum regina» (1571), «Διάλογος περὶ τοῦ δικαιώματος τῆς βασιλείας» (1579), ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπεραμύνεται τῶν δικαιωμάτων τοῦ λαοῦ, ὑποστηρίζων ὅτι οἱ λαοὶ δὲν ἔγιναν διὰ νὰ ἐξυπηρετοῦν τοὺς βασιλεῖς, ἀλλ' ὀφείλουν νὰ κυβερνῶνται καὶ νὰ εὐημεροῦν διὰ τῶν ἰδίων των δυνάμεων, «Ἱστορία τῆς Σκωτίας» (1582), κ. τ. λ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν ἐν Ἐδιμβούργῳ εἰς 2 τόμους τῷ 1715 καὶ 1725. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

— **Μπακάναν** (Buchanan) ***Γεώργιος***. Ἄγγλος διπλωμάτης (1854—1924). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ εἰσῆλθε νέος εἰς τὴν διπλωματικὴν ὑπηρεσίαν, γενόμενος τῷ 1903 πρεσβευτὴς ἐν Σόφιᾳ, τῷ 1908 ἐν Χάγῃ καὶ τῷ 1910 ἐν Πετρουπόλει, ὅπου εὑρίσκετο κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἔξοδον τῆς Ρωσίας εἰς τὸν πόλεμον καὶ εἰς τὴν συνέχισιν αὐτοῦ διὰ παντὸς τρόπου, ἀντιταχθεὶς εἰς τὰς εἰρηνοφίλους τάσεις διαφόρων ρωσικῶν πολιτικῶν καὶ στρατιωτικῶν κύκλων. Μετὰ τὴν μπολσεβικικὴν ἐπανάστασιν ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν θέσιν του. Τῷ 1919 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1921, μετατεθεὶς κατόπιν εἰς τὸ Βερολῖνον. Μ. Δ. Β.

— **Μπακάναν** (Buchanan), ***Ἰάκωβος***. Δέκατος πέμπτος πρόεδρος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς (1791—1868). Ἦτο υἱὸς μετανάστου Ἰρλανδοῦ γεωργοῦ καὶ ἐσπούδασε νομικά, γενόμενος δικηγόρος τῷ 1812. Ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγη κατ' ἀρχάς, τῷ 1814, βουλευτὴς ἐν τῇ βουλῇ τῆς Πενσυλβανίας, τῷ δὲ 1821 εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὁμοσπονδιακὴν βουλήν. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1845 ὑπεστήριξε τὸν ἐκλεγέντα πρόεδρον Πόλκ, ὁ ὁποῖος διώρισεν αὐτὸν ὑπουργὸν τῶν Ἐξωτερικῶν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Μπακάναν προπαρεσκεύασε τὸν πόλεμον κατὰ τοῦ Μεξικοῦ (1846—1848), ἀποτέλεσμα τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν ἡ προσάρτησις τοῦ Τεξάς, τῆς Καλιφορνίας καὶ τῆς πολιτείας τοῦ Νέου Μεξικοῦ. Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν αὐτοῦ ὁ πρόεδρος Πὸλκ διεκήρυξε κατόπιν ἐκ νέου τὴν ἀρχὴν τοῦ Μονρώ, δι' ἧς παρημποδίσθη ἡ Ἀγγλία νὰ ἐπεμβῇ εἰς τὰ πράγματα τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς. Τῷ 1852 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ. Τῷ 1856 ὑπεδείχθη ὡς ὑποψήφιος τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος ἐν τῇ προεδρίᾳ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, κατορθώσας νὰ ἐκλεγῇ, παρὰ τὴν σφοδρὰν προπαγάνδαν τῶν κεκηρυγμένων ὑπὲρ τῆς ἀπελευθερώσεως τῶν Μαύρων καὶ τὴν ἐκπεφρασμένην ὑπ' αὐτοῦ γνώμην ὑπὲρ τῆς διατηρήσεως τῆς δουλείας. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς προεδρίας του (1857—1861) ὁ Μπακάναν ὑπεστήριξε μετὰ ζέσεως τὰς ὑπὲρ τῆς διατηρήσεως τῆς δουλείας ἰδέας καὶ ἐπεκύρωσε τὴν ἐκλογὴν τῆς βουλῆς τῆς πολιτείας τοῦ Κάνσας, ἥτις εἶχε κηρυχθῇ σαφῶς ὑπὲρ τῆς δουλείας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε σχίσμα εἰς τὸ κόμμα του. Ἕνεκα τούτου, κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1860 ἐπέτυχεν ὁ ὑποψήφιος τῶν ἀπελευθερωτικῶν Ἀβραὰμ Λίνκολν. Ἡ προεδρία τοῦ Μπακάναν ὑπῆρξε λίαν ἐπιτυχὴς διὰ τὰς ἐξωτερικὰς ὑποθέσεις τῆς χώρας. Κατώρθωσε νὰ λύσῃ τὰ μετὰ τῆς Ἀγγλίας ἐκκρεμῆ ζητήματα καὶ νὰ συνάψῃ ἐπωφελῆ συνθήκην μὲ τὴν Κίναν. Ἐσωτερικῶς ὅμως ἡ ἀνεκτικότης αὐτοῦ πρὸς τοὺς κεκηρυγμένους ὑπὲρ τῆς δουλείας ὡδήγησε, μετὰ τὴν ἐκλογὴν τοῦ Λίνκολν, εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῆς Νοτίου Καρολίνας, ἥτις ἐκήρυξε τὸν χωρισμὸν αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὁμοσπονδίας, τὴν ὁποῖαν ἠκολούθησαν κατόπιν ἑπτὰ ἄλλαι πολιτεῖαι. Μετὰ τὴν λῆξιν τῆς προεδρίας του ἐξέδωκε τῷ 1866 ἀπολογίαν τῶν πολιτικῶν του πράξεων, ὑπὸ τὸν τίτλον «Buchanan's administration on the Ere of the Rebellion». Μ. Δ. Β.

— **Μπακάναν,** (Buchanan), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος ποιητὴς μυθιστοριογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1841—1901). Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, ἰδιαιτέρως δὲ ἐπιτυχῆ θεωροῦνται τὰ ποιήματά του, εἰς τὰ ὁποῖα μετ' ἀφθάστου λυρισμοῦ ψάλλει τὴν ζωὴν τῶν ἀποκλήρων τῆς τύχης. Ἄριστα ἐκ τῶν ἔργων του θεωροῦνται τὰ ἑξῆς: «Εἰδύλλια καὶ παραδόσεις τοῦ Ἀϊβερνμπωρν» (1865), «Τραγούδια τοῦ Λονδίνου» (1866), «Ποιήματα τῆς βορείου παραλίας» (1867), «Τὸ δρᾶμα τῶν βασιλέων» (1871), «Μπαλάνται τῆς ζωῆς, τῆς ἀγάπης καὶ τοῦ χιοῦμορ» (1882), «Ἡ πόλις τοῦ ὀνείρου» (1888), «Ὁ παρίας» καὶ «Ὁ περιπλανώμεος Ἰουδαῖος» (1893), ποιήματα, «Ἐννέα ἡμερῶν βασίλισσα» (1874), «Ἡ Λαίδη Κλαίρη» (1883), «Ἡ πτῶσις τοῦ Ναπολέοντος» (1871), «Σοφία» (1885), δράματα, «Ἡ σκιὰ τοῦ ξίφους», «Τὸ παιδὶ τῆς φύσεως», «Ὁ Θεὸς καὶ ὁ ἄνθρωπος» μυθιστορήματα. Ἐπίσης ἀξιόλογον εἶναι ἓν μελόδραμά του «Μόνος εἰς Λονδῖνον» (1885). Τὰ τελευταῖα ποιήματά του περιέχουσι μομφὰς ἐναντίον νεωτέρων τινῶν ἀπόψεων τοῦ Χριστιανισμοῦ. Χ. Δ.

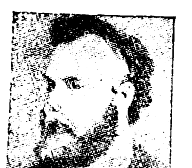

*Ροβέρτ. Μπακάναν.*

— **Μπακάναν** *δειγματολήπτης*· βλ. λ. *βυθός*.

**Μπακανέλλι** (Baccanelli ἢ Bacchanellus), ***Ἰωάννης***. Ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Ρηγίῳ (Reggio) τῆς Ἰταλίας καὶ ζήσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Εἶναι συγγραφεὺς δύο πραγματειῶν, δημοσιευθεισῶν πάντοτε ὁμοῦ, ὧν ἡ μὲν πρώτη σχετικὴ πρὸς τὴν θεραπευτικὴν («De consensu medicorum in curandis morbis libri quatuor»), ἡ δὲ ἄλλη βοτανική, ἀσχολουμένη περὶ τὴν συνωνυμίαν τῶν εἰς τὴν ἰατρικὴν χρησίμων φυτῶν («De consensu medicorum in cognoscentis simplicibus liber unus»). Ἡ πρώτη ἔκδοσις ἐγένετο τῷ 1550, ὅτε ἦν ἔτι νεώτατος ὁ συγγραφεύς, ἀφιερώθη δὲ εἰς τὸν φίλον αὐτοῦ ἰατρὸν Ἰ. Σκουτελλάριον. Τὰ ἔργα ἐξεδόθησαν εἶτα ἐπανειλημμένως (Παρίσιοι 1554, Βενετία 1555 καὶ τέλος ἐν Λυὼν 1572, σχ. 16ον εἰς 1054 σελίδας) ΑΡ. Π. Κ.

**μπακανιάζω,** ἀόρ. *ἐ)μπακάνιασα, παρακ.* παθ. μετχ. *μπακανιασμένος*· δημοτ., γίνομαι μπακανιάρης, πάσχω ἀπὸ *μπάκα* (βλ. λ.): «κοίταξε τὸ μπακανιασμένο πόσο τρώει».

**μπακανιάρης** (ὁ), *—α, —ικο*· δημοτ., αὐτὸς ποῦ ἔχει μπάκα, μεγάλη κοιλιὰ καὶ σχετικῶς μικρὸν σῶμα: «οἱ μπακανιάρηδες δὲ χορταίνουν εὔκολα».

**Μπακάου,** ἢ ***Μπάκοβα*** (Bacau ἢ Bacowa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Μολδαυίᾳ, ἕδρα ὁμωνύμου νομοῦ. Εἶναι σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν πρὸς τὸ Βουκουρέστιον, τὴν Μπουκοβίναν καὶ τὴν Πολωνίαν καὶ ἔχει ἐπαγγελματικὴν σχολήν, βιομηχανίαν χάρτου καὶ πετρελαιοπηγάς. Κάτ. 18.985, ὧν οἱ ἡμίσεις Ἑβραῖοι. Χ. Δ.

**Μπάκαρ** (Bakar) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τοῦ Καναδᾶ ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Κηβατίν, ἔχουσα ἔκτασιν 265.000 ἑκταρίων περίπου. Μ.Δ.Β.

**Μπακάρρα** (Bacarra) *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἰθαγενῶν τῶν Φιλιππίνων, κειμένη ἐν τῷ ΒΔ. τμήματι τῆς νήσου Λουσὸν ἐντὸς εὐφόρου καὶ καλῶς ἀρδευομένης γεωργικῆς περιοχῆς. Κάτ. 15.000. Χ. Δ.

**Μπάκατς** (Bakacs), ***Θωμᾶς***. Οὔγγρος καρδινάλιος, ἀκμάσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΕ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Γραμματεὺς τοῦ βασιλέως Ματθία Κορβίνου, ὑπῆρξε πανίσχυρος ἐπὶ τῆς βασιλείας Βλαδισλαύου Β', οὗτινος ἐγένετο καγκελλάριος. Τῷ 1509 ἐματαίωσε συμμαχίαν, ἥτις ἐπρόκειτο νὰ συναφθῇ μεταξὺ τῆς Οὐγγαρίας καὶ τῆς ὁμοσπονδίας τοῦ Καμπραί, κατορθώσας νὰ σώσῃ κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον τὴν Βενετίαν, ἥτις τὸν ἐδωροδόκησε καὶ ὑπεσχέθη εἰς αὐτὸν τὸν παπικὸν θρόνον. Ἐπέτυχεν ἀπὸ τὸ Κονκλάβιον βοῦλλαν σταυροφορίας κατὰ τῶν Τούρκων, ἀλλ' ὁ ἐξ ἑβδομήκοντα χιλιάδων ἀνδρῶν στρατός, ὅστις εἶχε στρατολογηθῇ ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Γεωργίου Ντόσσα, ἔστρεψε τὰ ὅπλα κατὰ τοῦ κλήρου καὶ τῶν εὐγενῶν, ἡ τοιαύτη δὲ ἔκβασις τῆς σταυροφορίας ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὴν ὑποδούλωσιν τῶν Οὔγγρων ἀγροτῶν. Α. Δ.

**Μπάκε** (Bake), ***Ἰωάννης***. Περιώνυμος Ὁλλανδὸς φιλόλογος (1787—1854). Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῶν ἑλληνικῶν καὶ λατινικῶν γραμμάτων ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λεϋντεν καὶ μέλος τοῦ ἰνστιτούτου τῶν Κάτω Χωρῶν. Συνειργάσθη εἰς τὴν «Bibliotheca critica nova» (1825—1831), ἐδημοσίευσε δὲ βαρυσήμαντον ἔργον «Scholia hypomnemata» (1837—1852), εἰς τὸ ὁποῖον ὀφείλει πρὸ παντὸς τὴν μεγάλην φήμην του. Ἐπίσης ἔγραψε πολλὰς πραγματείας, ἀναφερομένας εἰς τὴν πολιτικὴν κτλ. Α. Δ.

**Μπακὲλ** (Bakel) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ὠχυρωμένος σταθμὸς τοῦ γαλλικοῦ Σουδὰν (Ἀφρική) ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σενεγάλη, 560 χλμ. πρὸς Α. τοῦ Σαὶν Λουΐ. Ἔχει ἀκμαῖον ἐμπόριον γόμμας καὶ ἀραχίδων. Κάτ. 3.000. Χ. Δ.

**Μπακέλαι**· βλ. *Μπακάλαι*.

**Μπάκεργκαντζ** (Backergange ἢ Bakerganj) *[Γεωγρ.]*. Διαμέρισμα τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ντάκκα τῆς περιοχῆς τῆς Βεγγάλης, ἐπὶ τοῦ κόλπου τῆς Βεγγάλης, μεταξὺ τοῦ Γάγγη καὶ τοῦ Βραχμαπούτρα. Ἔχει ἔκτασιν 9.450 τ. χλμ. καὶ 2.154.000, κατ., κατὰ τὸ πλεῖστον Μωαμεθανούς, μετὰ 700.000 Ἰνδῶν. Τὸ ἔδαφος αὐτοῦ εἶναι τελείως πεδινὸν καὶ διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Γάγγη καὶ Βραχμαπούτρα καὶ τῶν πολυαρίθμων παραποτάμων αὐτῶν, πλωτῶν κατὰ μέγα μέρος. Ἔχει κλῖμα εὐχάριστον καὶ ὑγιεινόν, πολυάριθμα ἄγρια θηρία, λέοντας τίγρεις, πάνθηρας, ρινόκερως καὶ παράγει ὄρυζαν, κοκκοφοίνικας, κάνναβι κτλ. Πρωτεύουσα εἶναι ἡ Μπάρισαλ, ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ μὲ 18.978. Μ. Δ. Β.

**Μπακῆ.** Εἷς τῶν μεγαλυτέρων Τούρκων ποιητῶν, ἀκμάσας ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ἦτο κατ' ἀρχὰς μαθητευόμενος σελλοποιοῦ, βραδύτερον ὅμως, σπουδάσας θεολογίαν, ἐδίδαξεν εἰς τὸν μεδρεσὲν τοῦ τζαμίου τοῦ Σουλεϋμανιέ, ὡς τοιοῦτος δὲ ἐφείλκυσε τὴν εὔνοιαν Σουλεϋμὰν τοῦ νομοθέτου, γενόμενος καὶ θαλαμηπόλος αὐτοῦ. Τὴν εὔνοιαν τῆς αὐλῆς διετήρησε καὶ ἐπὶ Σελὶμ τοῦ Β'. Ἀλλ' ἐπὶ τοῦ διαδόχου τούτου Μουρὰτ τοῦ Γ', περιπεσὼν εἰς δυσμένειαν διότι συνέκρινεν ἕνα Γανυμήδην πρὸς τὸν Ἰωσὴφ (προφήτην κατὰ τοὺς Μουσουλμάνους), κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Συγχωρηθεὶς ἐξωρίσθη. Παρελθούσης δὲ βραδύτερον τῆς δυσμενείας τοῦ σουλτάνου διωρίσθη ἀρχιδικαστὴς καὶ ρεῖς-οὐλ-οὐλεμᾶ (ἀρχηγὸς τῶν οὐλεμάδων). Ἀπέθανε τῷ 1593. Ἐκτὸς τοῦ διβανίου (συλλογῆς) τῶν ποιημάτων του, μετέφρασε καὶ διάφορα θεολογικὰ ἔργα ἐκ τῆς ἀραβικῆς. Τὰ ποιήματά του καὶ ἰδίᾳ αἱ γαζέλλαι καὶ τὰ ἐλεγεῖα διακρίνονται διὰ τὴν ἁπλότητα καὶ διαύγειαν τοῦ ὕφους. Πολλοὶ τῶν στίχων του ἔμειναν παροιμιώδεις παρὰ Τούρκοις. Πολλὰ τῶν ποιημάτων του μετεφράσθησαν γαλλιστὶ ἐν τῇ «Anthologie de l' amour turc» τῶν Edmond Fagy καὶ Abdul-Halim Memdouh (Paris 1905). Ν. Μ.

**Μπακὶν** (Bakin) ***Κυοκουτέϊ***. Ἰάπων μυθιστοριογράφος (βλ. λ. *Βακίν*).

**Μπακὶρ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον κείμενον πρὸς τὰ ΝΑ. τοῦ Κιρκαγὰτς τῆς διοικήσεως Μαγνησίας τοῦ νομοῦ Σμύρνης. Οἱ κάτοικοί του ἀσχολοῦνται ἰδίᾳ εἰς τὴν ταπητουργίαν.

**μπακίρα** (ἡ)· νόμισμα χαλκοῦν.

**μπακιρένιος,** *—α, —ο*· ὁ κατεσκευασμένος ἀπὸ μπακίρι, χαλκοῦς, χαλκωματένιος: «μπακιρένιο μπρίκι, —λαγύνι».

**μπακίρι** (τό)· δημοτ. (ἐκ τῆς τουρκικῆς λ. *μπακίρ*), χαλκός, χάλκωμα· || περιληπτικῶς, τὰ ἐκ χαλκοῦ σκεύη καὶ ἰδίᾳ τὰ μαγειρικά: «ἐπῆρε πολὺ μπακίρι»· || καὶ πληθ. *μπακίρια* (τά)· τὰ χαλκώματα.

**μπακιρικὸ** (τό)· περιληπτικῶς, τὰ ἐκ χαλκοῦ σκεύη, τὰ ὁποῖα λαμβάνει ὡς προῖκα ἡ κόρη· πρβλ. *χρυσαφικό, ἀσημικό*· || καὶ πληθ. *μπακιρικὰ* (τά)· ὁμοίως.

**Μπακίρ-κιοΐ** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ. λ. *Μακρίκιοϊ*).

**Μπακὶρ-κιουρρεσὶ** (=χαλκῆ σφαῖρα, ἄλλως *Κιουρρεϊ-Νουχὰς) [Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου δήμου τῆς ὑποδιοικήσεως Ἰνεπόλεως ἐν τῷ νομῷ Καστομονῆς. Κεῖται ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἑνούσης τὴν Ἰνέπολιν μὲ τὴν Κασταμονήν, εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. ἀπὸ τῆς δευτέρας. Ὁ δῆμος ἀριθμεῖ 39 χωρία. Ν. Μ.

**Μπακίρτζα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης, μετονομασθὲν ἐπὶ ἑλληνικῆς κατοχῆς *Βριγική* (βλ. λ.).

**Μπακὶρ-τσάϊ** *[Γεωγρ.]*. Μικρασιατικὸς ποταμὸς ἐκβάλλων εἰς τὸν κόλπον τοῦ *Τσανδαρλῆ*. Εἶναι ὁ *Κάϊκος* τῶν ἀρχαίων.

**μπακίρωμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπακιρώνω, ἐπικάλυψις, ἐπένδυσις διὰ χαλκοῦ, ἐπιχάλκωσις.

**μπακιρώνω**· δημοτ., ἐπικαλύπτω, ἐπενδύω διὰ χαλκοῦ, ἐπιχαλκῶ.

**μπάκκα** (ἡ)· χαρτοπαικτικὸς ὅρος τοῦ παγνιδίου *μπακκαρᾶς* (βλ. λ.).

**Μπακκαλὰρ-ὐ-*Σάννα*** (Baccalar y Sanna), ***Βικέντιος*** *ντὲ—*. Ἱσπανὸς διπλωμάτης καὶ ἱστορικὸς (1669—1728). Ἐπὶ Φιλίππου τοῦ Ε' ἐχρησιμοποιήθη εἰς πολλὰς διπλωματικὰς ἀποστολὰς κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Διαδοχῆς. Ὑπῆρξε πρεσβευτὴς ἐν Γενεύῃ, βραδύτερον δὲ ἐν Χάγῃ. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ἐν οἷς διακρίνεται τὸ «Comentarios de la guerra de España et istoria de su rey Felipe V elanimoso desde el principio de su regnado hasta el año 1725» (Γενεύη 1729). Τὸ ἔργον τοῦτο μετεφράσθη εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Mémoires pour servir à l'histoire d'Espagne sous Philippe V». Α. Δ.

**μπακκαουρέα** (ἡ) (Baccaurea) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *εὐφορβιοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἢ δενδρύλλια τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς καὶ τῆς ἀνατολικῆς Ἀσίας. Δ. Ν. Π.

**Μπακκαρὰ** (Baccarat) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μὲρτ καὶ Μοζέλλα, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ καὶ εἰς ἀπόστασιν 25 χλμ. ἀπὸ τῆς Λουνεβίλλης. Ἔχει βιομηχανίαν εἰδῶν ἐκ κρυστάλλου ἐκλεκτῆς ποιότητος («κρύσταλλα Μπακκαρά»), ἐπίσης δὲ χειροκτίων καὶ κεντημάτων. Κάτ. 7.000. Καταληφθεῖσα ἐπ' ὀλίγον κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (1914) ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, ἐπυρπολήθη κατὰ μέγα μέρος. Χ. Δ.

**μπακκαρᾶς** (ὁ) (baccara)· εἶδος τυχηροῦ χαρτοπαιγνίου.

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὸ παίγνιον τοῦτο ἔχει κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἰταλικὴν τὴν προέλευσιν, ἠὐνοήθη ὅμως ἰδίως ἐν Γαλλίᾳ, ὅπου ἐνεφανίσθη ἀπὸ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἐκεῖθεν δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον ἐγένετο ἡ διάδοσίς του εἰς τὰς ἄλλας χώρας.

Ὁ μπακκαρᾶς παίζεται, μὲ δύο συναναμεμιγμένας δεσμίδας παιγνιοχάρτων τῶν 52 φύλλων, ὡς ἀκολούθως:

Εἷς ἐκ τῶν παικτῶν, ὁ «μπαγκέρης», ἀντιμετωπίζων πάντας τοὺς ἄλλους, διαχωρισμένους εἰς δύο ὁμάδας, κάθηται κατὰ τὸ μέσον ἐπιμή-

Digitized by Google

κους τραπέζης. Ἐκ τῶν λοιπῶν παικτῶν οἱ πρὸς τὰ δεξιὰ αὐτοῦ καθήμενοι ἀποτελοῦσι τὸ πρῶτον (ἢ δεξιὸν) ταμπλώ, οἱ δὲ ἄλλοι τὸ δεύτερον (ἢ ἀριστερόν). Ὁ μπαγκέρης ἀνακατώνει τὰ χαρτιά, προσφέρει δὲ αὐτὰ ἐκ περιτροπῆς εἰς τὸ πρῶτον καὶ κατόπιν εἰς τὸ δεύτερον ταμπλώ, τῶν ὁποίων οἱ παῖκται δικαιοῦνται ἂν θέλουν νὰ τὰ ἀνακατώσουν ἐπίσης, μεθ' ὃ καλεῖ ἕνα οἱονδήποτε ἐκ τῶν παρισταμένων νὰ «κόψῃ» (ὁ ἴδιος δὲν δικαιοῦται νὰ τὸ κάμῃ, παρὰ μόνον ἐὰν οἱ παῖκται συγκατατίθενται). Ἐν τῷ μεταξὺ αὐτὸς μὲν ἔχει καθορίσει τὸν μπάγκον του, τὸ ποσὸν δηλαδὴ ποῦ πρόκειται νὰ διακυβεύσῃ εἰς τὴν πρώτην πάσσαν, ἕκαστος δ' ἐκ τῶν παικτῶν ἀποθέτει ἐπὶ τῆς τραπέζης τὴν μίζαν του, τῆς ὁποίας τὸ ποσὸν κανονίζει κατ' ἐλευθέραν βούλησιν. Σημειωτέον ὅμως ὅτι ἐὰν αἱ μίζαι ἑνὸς ἐκ τῶν ταμπλώ, τοῦ πρώτου ἐπὶ παραδείγματι, ἔχουν ἄθροισμα μεγαλύτερον τοῦ ἡμίσεος τοῦ μπάγκου, αἱ πέραν τοῦ ποσοῦ τούτου τελευταῖαι κατὰ σειρὰν μίζαι οὔτε χάνουν οὔτε κερδίζουν· ἐξαίρεσις γίνεται εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν αἱ μίζαι τοῦ ἄλλου ταμπλὼ εἶναι ὀλιγώτεραι ἀπὸ τὸ ἥμισυ τοῦ μπάγκου, ὁπότε ἡ ἀπομένουσα ἀκάλυπτος διαφορὰ λογίζεται ὡς μεταφερομένη εἰς τὸ πρῶτον. Τὸ μοίρασμα τῶν φύλλων γίνεται ἀπὸ τὸν μπαγκέρην, ὅστις, εἰς κάθε πάσσαν, δίδει ἀπὸ ἕνα χαρτὶ (κρυφὸ) εἰς ἕκαστον ταμπλὼ καὶ κρατεῖ ἕνα ἐπίσης διὰ τὸν ἑαυτόν του, ἐπαναλαμβάνων τὸ ἴδιον καὶ δευτέραν φοράν. Τὰ χαρτιὰ ἑκάστου ταμπλὼ δίδονται ἐν ἀρχῇ εἰς τὸν πλησιέστερα πρὸς τὸν παγκέρην καθήμενον παίκτην, ἂν δὲ τὸ ταμπλὼ χάσῃ, δίδονται διὰ τὴν ἑπομένην εἰς τὸν ἀμέσως κατόπιν του, καὶ οὕτω καθεξῆς· ἕκαστος δηλαδὴ παίκτης «ἔχει τὸ χέρι» ἐφ' ὅσον κερδίζει. Ὁ ἔχων τὸ χέρι ἐκ τοῦ πρώτου ταμπλώ, ἐὰν μὲν τὰ φύλλα του ἀποτελοῦν ἄθροισμα 9 ἢ 8 (ὁπότε λέγουν ὅτι ἔχει «ἀμπατὰζ») τὰ φανερώνει, ἀναστρέφων αὐτὰ ἐπὶ τῆς τραπέζης· ἄλλως, κρατῶν τὰ φύλλα του κρυφά, δηλοῖ ἂν «θέλῃ» ἢ «δὲν θέλῃ» τρίτον χαρτί. Τὸ αὐτὸ γίνεται κατόπιν διὰ τὸν ἔχοντα τὸ χέρι ἐκ τοῦ δευτέρου ταμπλώ. Μετὰ τοῦτο ὁ μπαγκέρης ἀναστρέφει τὰ ἰδικά του φύλλα. Ἂν συμβῇ νὰ εἶναι τὸ ἄθροισμα αὐτῶν ἴσον μὲ 9 ἢ 8 (ἂν δηλαδὴ ἔχει ἀμπατάζ), τὸ παιγνίδι τῆς πάσσας αὐτῆς σταματᾷ μέχρις ἐδῶ. Τοῦτ' αὐτὸ δὲ γίνεται καὶ εἰς περίπτωσιν κατὰ τὴν ὁποίαν ἔχουν ἀμπατὰζ ἀμφότερα τὰ ταμπλώ. Ἄλλως ὁ μπαγκέρης δίδει ἀνὰ ἕνα χαρτὶ (φανερὸν αὐτὴν τὴν φορὰν) εἰς τοὺς τυχὸν ζητήσαντας, λαμβάνει δὲ καὶ ὁ ἴδιος ἕνα, ἂν θέλῃ· τότε ἀναστρέφονται τὰ φύλλα ὅλων καὶ ἡ πάσσα τελειώνει. Ἕκαστον ἀπὸ τὰ ταμπλὼ κερδίζει, ἂν οἱ πόντοι του εἶναι ἀνώτεροι ἀπὸ τοὺς πόντους τοῦ μπάγκου, ἢ χάνει, ἂν εἶναι κατώτεροι. Καθορίζεται δὲ ἡ σειρὰ τῆς δυνάμεως τῶν πόντων ὡς ἀκολούθως:

Ἕκαστον φύλλον ἀπὸ τοῦ ἄσσου μέχρι τοῦ 9 ἐκπροσωπεῖ τὸν ἀντίστοιχον πρὸς αὐτὸ ἀριθμὸν (1—9), τὰ δὲ δεκάρια καὶ αἱ φιγοῦραι λογίζονται ὡς μηδενικά. Οὕτω, ὁ ἔχων π. χ. ἕνα διάρι καὶ ἕνα τεσσάρι ἔχει 6 πόντους, ὁ ἔχων μίαν ντάμαν, ἕνα τριάρι καὶ ἕνα πεντάρι ἔχει 8 πόντους, ὁ ἔχων τρεῖς φιγοῦρες ἢ δύο φιγοῦρες καὶ ἕνα δεκάρι ἔχει 0 πόντους («μπάκκαν»), καθὼς ἐπίσης καὶ ὁ ἔχων φιγοῦραν μὲ τεσσάρι καὶ ἑξάρι. Ἰσχυρότερον ὅλων εἶναι τὸ ἐκ τῶν δύο μόνον φύλλων ἀποτελούμενον 9 («μεγάλο ἀμπατάζ»), ἕπεται δὲ τὸ ὁμοίως ἐκ δύο φύλλων ἀποτελούμενον 8 («μικρὸ ἀμπατάζ»). Ἀκολουθοῦσι κατόπιν κατὰ σειράν: τὸ ἐκ τριῶν φύλλων ἀποτελεσθὲν 9, τὸ ἐκ τριῶν ἐπίσης φύλλων 8, τὸ ἐκ δύο ἢ τριῶν ἀδιαφόρως φύλλων ἀποτελούμενον 7, εἶτα τὸ 6, 5, 4, 2, 1, 0. Ὅταν ἓν ἐκ τῶν ταμπλὼ ἔχῃ ἴσης δυνάμεως πόντους πρὸς τὸν μπάγκον, λέγουν ὅτι εἶναι «ἂν κάρτ», δὲν κερδίζει δὲ οὔτε χάνει. Ὡς καὶ ἀνωτέρω ὅμως ἐξηγήθη, τὰ διὰ τριῶν φύλλων ἀποτελεσθέντα 9 ἢ 8 δὲν εἶναι ἰσοδύναμα πρὸς τὰ διὰ τῶν δύο πρώτων φύλλων (ἀπὸ χέρι) ἀποτελούμενα «ἀμπατάζ», ἅτινα προηγοῦνται.

Μετὰ τὴν ὡς ἀνωτέρω ἐκκαθάρισιν τῶν κερδῶν καὶ ζημιῶν τῆς πρώτης πάσσας, δίδεται καθ' ὅμοιον ἐντελῶς τρόπον ἡ δευτέρα, μετ' αὐτὴν ἡ τρίτη καὶ οὕτω καθεξῆς, μέχρις ἐξαντλήσεως τῶν χαρτιῶν τῆς διπλῆς δεσμίδος. Ἐξαιρετικῶς κατὰ τὴν πρώτην πάσσαν δύναται εἷς μόνος ἐκ τῶν παικτῶν νὰ παίξῃ διὰ λογαριασμόν του ὁλόκληρον τὸ ποσὸν τοῦ μπάγκου («ἀ σεβάλ»), λαμβάνων ἐναλλὰξ τὰ φύλλα καὶ τῶν δύο ταμπλώ.

Ἂν ὁ μπαγκέρης κερδίσῃ εἰς τὴν πρώτην πάσσαν, δὲν δικαιοῦται νὰ μειώσῃ τὸν ἐπαυξηθέντα ἐκ τοῦ κέρδους μπάγκον του, τοῦ ὁποίου τὸ σύνολον ὑποχρεοῦται νὰ διακυβεύσῃ εἰς τὴν ἑπομένην πάσσαν· τοῦτ' αὐτὸ δὲ καὶ διὰ τὰς ἀκολούθους. Ἄν, ἀντιθέτως, χάνῃ, ἐνισχύει τὸ ἀπομένον ὑπόλοιπον τοῦ μπάγκου του μέχρις ἐξισώσεως αὐτοῦ πρὸς τὸν ἀρχικόν, ἢ καὶ περισσότερον ἂν θέλῃ. Δικαίωμα ἐξ ἄλλου ἔχει, μετὰ οἱανδήποτε πάσσαν, νὰ δηλώσῃ ὅτι κάμνει «σουίτ». Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει δύναται νὰ τὸν ὑποκαταστήσῃ ὡς μπαγκέρης, μέχρις ἐξαντλήσεως τῆς διπλῆς δεσμίδος τῶν παιγνιοχάρτων, οἱοσδήποτε ἄλλος θὰ ἤθελε, δι' ἴδιόν του λογαριασμόν. Ἄλλως ἀνακατώνονται τὰ χαρτιὰ καὶ τὸ παιγνίδι ἐπαναρχίζει, ὡς ἀνωτέρω.

Ποικιλία τοῦ συνήθους μπακκαρᾶ εἶναι ὁ λεγόμενος *«μπακαρᾶς σ' μὲν ντὲ φέρ»*, εἰς τὸν ὁποῖον ὁ μπαγκέρης δὲν εἶναι μόνιμος, οὔτε σχηματίζονται ταμπλὼ ἀπὸ τοὺς λοιποὺς παίκτας. Εἰς αὐτὸν ὁ ἑκάστοτε κρατῶν τὴν τράπουλαν παίκτης δίδει φύλλα εἰς τὸν ἑπόμενόν του, μεθ' ὃ λαμβάνει καὶ αὐτὸς τὰ ἰδικά του (ὡς ἂν ὑπῆρχε ἓν ταμπλὼ καὶ μόνον), ἔχουν ὅμως καὶ οἱ περαιτέρω καθήμενοι παῖκται δικαίωμα νὰ καταθέτουν μίζας μέχρι καλύψεως τοῦ ὅλου ποσοῦ τοῦ μπάγκου. Ἂν ὁ μπαγκέρης χάσῃ, παραδίδει τὴν δεσμίδα τῶν παιγνιοχάρτων εἰς τὸν ἑπόμενόν του παίκτην. Ἂν δὲ κερδίζῃ, δὲν δικαιοῦται νὰ μειώσῃ τὸν αὐξανόμενον ἐκ τοῦ κέρδους μπάγκον του, παρὰ μόνον μετὰ τὴν τρίτην πάσσαν. Κατὰ τὰ λοιπὰ τὸ παιγνίδι διεξάγεται ὁμοίως πρὸς τὸ προηγούμενον.

Ὁ μπακκαρᾶς τάσσεται μεταξὺ τῶν καθαυτὸ «τυχηρῶν» παιγνίων, πράγματι δὲ δὲν ἔχει εἰς αὐτὸν σημασίαν τὸ ἂν οἱ παῖκται εἶναι ἠσκημένοι ἢ ἀδαεῖς, ἀρκεῖ μόνον νὰ τηρῶσιν ἐν τῇ διεξαγωγῇ του στοιχειώδεις τινὰς κανόνας. Οὕτω τὰ ταμπλὼ ἐπιβάλλεται νὰ ζητήσουν ἀπαρεγκλίτως τρίτον χαρτί, ὅταν ἡ δύναμις τῶν δύο πρώτων φύλλων αὐτῶν εἶναι μικροτέρα τοῦ 5. Καὶ τὸ 5 ἐπίσης «δὲν τραβιέται» κατὰ κανόνα· ἐπιτρέπονται ὅμως προκειμένου περὶ αὐτοῦ καὶ ἐξαιρέσεις, ἀναλόγως τῆς ἐμπνεύσεως τοῦ ἔχοντος τὸ χέρι, ἰδίᾳ δὲ ὅταν τὸ ταμπλὼ χάνῃ συνεχῶς. Ὅσον ἀφορᾷ τὸν μπαγκέρην, τὸ ἂν αὐτὸς θὰ τραβήξῃ ἢ δὲν θὰ τραβήξῃ τρίτον φύλλον, ἐξαρτᾶται ὄχι μόνον ἀπὸ τοὺς πόντους τῶν δύο του πρώτων χαρτιῶν ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τὰς πιθανότητας ποῦ δημιουργοῦν τὰ φανερὰ χαρτιὰ ποῦ ἐδόθησαν εἰς τὰ ταμπλώ. Ἂν ἐπὶ παραδείγματι ὁ μπαγκέρης ἔχῃ 4 καὶ δώσῃ εἰς τὰ δύο ταμπλὼ φανερὰ χαρτιὰ ἀπὸ μίαν φιγοῦραν ἢ δεκάρι, ἢ ἔστω μίαν φιγοῦραν εἰς τὸ ἕνα καὶ ἕνα διάρι εἰς τὸ ἄλλο, δὲν τραβᾷ τρίτο χαρτί, διότι αἱ περισσότεραι πιθανότητες εἶναι μὲ τὸ μέρος του. Ἀντιθέτως, ἂν αὐτὸς ἔχῃ 5, ἔδωσε δὲ εἰς τὰ δύο ταμπλὼ ἀπὸ ἕνα τεσσάρι, τότε συμφερότερον δι' αὐτὸν φαίνεται νὰ τραβήξῃ. —Ρ.

**Μπακκαρίνι** (Baccarini), ***Ἀλφρέδος***. Ἰταλὸς μηχανικὸς καὶ πολιτικὸς (1828—1890). Ἐσπούδασεν ἐν Βολωνίᾳ καὶ παρηκολούθησε τὸν πόλεμον τοῦ 1848, ἐκτελέσας τὰ ὀχυρωματικὰ ἔργα τῆς Ῥαβέννας τῷ 1849. Τῷ 1875 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἐπὶ πρωθυπουργίας Καϊρόλι, τῷ 1878, ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων ἔργων. Ἔγραψε: «Τὸ ἀνώτατον ὕψος τοῦ Τιβέρεως καὶ μέτρα πρὸς προστασίαν κατὰ τῶν πλημμυρῶν», «Στοιχεῖα ὑδρογραφικῆς στατιστικῆς» (1877) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπάκκιγχαμ** (Buckingham) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ ὁμωνύμῳ κομιτείᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ὄους, 97 χλμ. βορειοδυτικῶς τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι κομψοτάτη πολίχνη, ἔχουσα ναὸν τῶν Ἁγίων Πέτρου καὶ Παύλου καὶ ἐρείπια τοῦ παρεκκλησίου τοῦ Θωμᾶ Μπέκετ, εἰς ἀπόστασιν δὲ 3 χιλμ. λαμπρὸν πύργον τῶν δουκῶν τοῦ Μπάκκιγχαμ. Ἀποτελεῖ κέντρον ἐμπορίου τριχάπτων, δεράμτων, μαρμάρου, χάρτου κλπ. Κάτ. 3.282.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham) ***κομιτεία***, ἢ ***Μπάκκιγχαμσάϊρ*** ἢ ***Μπὰκς*** (Buckinghamshire ἢ Bucks) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς κεντρικῆς Ἀγγλίας, περιβαλλομένη ὑπὸ τῶν κομιτειῶν Νόρθαμπτον πρὸς Β, Μπέντφορ, Χέρτφορντ καὶ Μαϊντλεσεξ πρὸς Α καὶ Ὄξφορντ πρὸς Δ. Τὸ Ν. ὅριον αὐτῆς σχηματίζει ὁ Τάμεσις, ὁ ὁποῖος μετὰ τῶν Κόλν, Θέϊμ καὶ Ὄους ἀρδεύει τὸ ἔδαφός της. Ἡ Μπάκκιγχαμ εἶναι χώρα πεδινή, καλυπτομένη ὑπὸ ἐκτεταμένων δασῶν ἰδίως κατὰ τὸ Ν. τμῆμα, ὅπου οἱ λόφοι Τσίλντερν Χίλλς (280 μ.), καὶ πρὸς τὸ Β. αὐτῆς ἄκρον. Ἔχει ἔκτασιν 1.940 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1921) 236.171 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Αὐλέσμπαρυ* (κάτ. 12.970). Ἔχει ἀκμαιοτάτην κτηνοτροφίαν καὶ ἐξυπηρετεῖται ἄριστα συγκοινωνιακῶς. Χ. Δ.

—**Μπάκκιγχαμ-ἀνάκτορον** (Buckingham-Palace). Ἀνάκτορον ἐν Λονδίνῳ, ἐν τῷ ὁποίῳ διαμένουσιν οἱ βασιλεῖς τῆς Ἀγγλίας, κείμενον εἰς τὸ πάρκον τοῦ Ἁγίου Ἰακώβου. Ἐκτίσθη τῷ 1703 ὑπὸ Ὀλλανδοῦ ἀρχιτέκτονος διὰ τὸν Ἰωάννην Σέφφηλντ, δοῦκα τοῦ Μπάκκιγχαμ, τῷ δὲ 1761 ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Γεωργίου Γ' ἀντὶ 21.000 λιρῶν στερλινῶν. Τῷ 1825—1836 ἀνεκαινίσθη ἐπὶ τῇ βάσει σχεδίου τοῦ Ἰωάννου Νάς, τῷ δὲ 1846 ἐμεγεθύνθη διὰ προσθήκης νέας πτέρυγος ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Ἰακώβου Μπλόρ. Τέλος τῷ 1913 ἡ πρόσοψις μετερρυθμίσθη ὑπὸ τοῦ Ἄστον Οὐέμπ. Ἀπὸ τοῦ 1837, ὁπότε ἐγκατεστάθη ἐν αὐτῷ ἡ βασίλισσα Βικτωρία, ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι τὸ κύριον ἀνάκτορον διαμονῆς τῶν Ἄγγλων βασιλέων. Κυριώτερα διαμερίσματα αὐτοῦ εἶναι αἱ δύο μεγάλαι αἴθουσαι, τοῦ θρόνου καὶ τῶν ὑποδοχῶν, καὶ ἡ ὡραία πινακοθήκη μήκους 60 μ. καὶ πλάτους 7 μ., ἐν τῇ ὁποίᾳ φυλάσσονται θαυμάσιοι πίνακες τῶν Ρέϋνολντς, Οὐΐλκι, Ρέμπραντ, Ρούμπενς, Βαττὼ καὶ ἄλλων μεγάλων Ἄγγλων, Ὀλλανδῶν, Φλαμανδῶν καὶ Γάλλων ζωγράφων. Χ. Δ.

**Μπάκκιγχαμ** (Buckingham) *κόμιτες, μαρκήσιοι καὶ **δοῦκες***. Ἀγγλικὸς τίτλος εὐγενείας, τὸν ὁποῖον ἔφεραν κατὰ καιροὺς μέλη τῶν ὀνομαστῶν οἰκογενειῶν *Στάφφορντ*, *Βίλλιερς*, *Σέφφηλντ* καὶ *Γκρένβιλλ* ἀπὸ τοῦ 1444 μέχρι τοῦ 1889. Ὁ τίτλος τοῦ κόμιτος τοῦ Μπάκκιγχαμ ὑπῆρχεν ἤδη κατὰ τὸν μεσαίωνα, ἀπὸ τῶν χρόνων τοῦ Γουλιέλμου Β' τοῦ Κατακτητοῦ. Τῷ 1377 ὁ Θωμᾶς Γοῦντστοκ, δοὺξ τοῦ Γκλόστερ (ἀδελφὸς τοῦ Ἐδουάρδου Γ'), ἔφερε τὸν τίτλον τοῦτον, ἐξ αὐτοῦ δὲ περιῆλθεν εἰς τὸν Χάμφρεϋ Στάφφορντ τῷ 1444 καὶ παρέμεινεν εἰς τοὺς ἀπογόνους αὐτοῦ μέχρι τοῦ 1521, ὁπότε ὁ Ἐδουάρδος Στάφφορντ ἐθανατώθη ὑπὸ τοῦ Ἑρρίκου Η'. Τῷ 1618 ὁ Ἰάκωβος Α' ἀπένειμε τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος Μπάκκιγχαμ εἰς τὸν εὐνοούμενόν του Γεώργιον Βίλλιερς, βραδύτερον δὲ προήγαγεν αὐτὸν εἰς μαρκήσιον καὶ τέλος εἰς δοῦκα (1623). Ὁ τίτλος τοῦ δουκὸς διετηρήθη καὶ εἰς τὸν υἱὸν τοῦ Βίλλιερς, ὁ ὁποῖος ἀπέθανε τῷ 1687. Μετ' αὐτὸν ὁ Ἰωάννης Σέφφηλντ μαρκήσιος τοῦ Νόρμανμπυ ἔφερε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τοῦ Μπάκκιγχαμ ἀπὸ τοῦ 1703 μέχρι τοῦ 1735. Τῷ 1784 ὁ Γεώργιος Γκρένβιλλ ὠνομάσθη μαρκήσιος τοῦ Μπάκκιγχαμ, τὸν τίτλον δὲ τοῦτον διετήρησε καὶ ὁ υἱός του Ριχάρδος, ὁ ὁποῖος νυμφευθεὶς τῷ 1822 τὴν μόνην θυγατέρα τοῦ δουκὸς τοῦ Τσάντος ὠνομάσθη δοὺξ τοῦ Μπάκκιγχαμ καὶ Τσάντος. Ὁ υἱὸς τούτου, καλούμενος ἐπίσης Ριχάρδος (1823—1889), ὑπῆρξεν ὁ τελευταῖος Ἄγγλος εὐγενὴς τετιμημένος διὰ τοῦ τίτλου τούτου.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham) ***Γεώργιος Βίλλιερς***, *δοὺξ τοῦ* —. Ἄγγλος εὐπατρίδης καὶ πολιτικὸς (1592—1628), εὐνοούμενος τοῦ Ἰακώβου Α'. Ἔμεινεν ὀρφανὸς πατρὸς εἰς νεαρὰν ἡλικίαν, ἀλλ' ἡ μήτηρ του ἐπεμελήθη ἐξαιρετικῶς τὴν ἐκπαίδευσίν του. Ὅτε δὲ τῷ 1614 παρουσιάσθη τὸ πρῶτον εἰς τὴν αὐλήν, ὁ βασιλεύς, ἐκτιμήσας τὰ χαρίσματά του, τὸν προσέλαβεν εἰς τὴν ἰδιαιτέραν αὐτοῦ ἀκολουθίαν, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ δουκὸς Σόμερσετ. Ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος ὁ βασιλεὺς ἐτίμησε τὸν νεαρὸν εὐπατρίδην διὰ σωρείας ἀξιωμάτων, τοῦ αὐλάρχου, τοῦ ἱππότου, τοῦ βαρώνου καὶ εἶτα τοῦ ὑποκόμιτος τοῦ Βίλλιερς, τοῦ κόμιτος, τοῦ μαρκησίου καὶ εἶτα τοῦ δουκὸς τοῦ Μπάκκιγχαμ, τέλος δὲ τῷ 1619 διώρισεν αὐτὸν λόρδον ἀρχιναύαρχον, φρονῶν ὅτι εἷς νέος μορφωμένος ὅσον αὐτός, ἐνεργητικὸς καὶ πεπροικισμένος διὰ θελήσεως, θὰ καθίστατο ὁ καταλληλότερος παντὸς ἄλλου διοργανωτὴς τοῦ ἀγγλικοῦ ναυτικοῦ. Ἡ τοιαύτη ὅμως εὔνοια τῆς τύχης κατέστησε τὸν Μπάκκιγχαμ ἐξαιρετικῶς ἀλαζόνα, ἐπεδίωξε δὲ οὗτος ν' ἀναλάβῃ καὶ τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐξωτερικῆς πολιτικῆς τοῦ κράτους, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον καὶ ἐπέτυχεν ἀπὸ τοῦ 1620. Κατ' ἀρχὰς ἐστράφη πρὸς τὴν Ἱσπανίαν καὶ ἐπεχείρησε νὰ συνάψῃ μετ' αὐτῆς συμμαχίαν ἐναντίον τῆς Ὀλλανδίας, εἶτα δὲ καὶ νὰ νυμφεύσῃ τὸν διάδοχον Κάρολον μετὰ τῆς ἰνφάντας Μαρίας. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον μετέβη αὐτοπροσώπως μετὰ τοῦ διαδόχου εἰς Μαδρίτην, ἀποτυχὼν ὅμως κατὰ τὰς διαπραγματεύσεις, καθύβρισε τὴν καστιλλιανὴν αὐλὴν καὶ ἔσπευσε νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Λονδῖνον. Ἀμέσως τότε ἐστράφη πρὸς τὴν Γαλλίαν καὶ ἤρξατο διεξάγων συνεννοήσεις πρὸς νύμφευσιν τοῦ διαδόχου μετὰ τῆς πριγκιπίσσης Ἑρριέττας-Μαρίας, ἀδελφῆς τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου ΙΓ'. Ἐν τῷ μεταξὺ ἀπέθανεν ὁ Ἰάκωβος Α' (1625) καὶ διεδέχθη αὐτὸν ὁ Κάρολος Α', ὁ ὁποῖος περιέβαλεν ἐπίσης διὰ τυφλῆς ἐμπιστοσύνης τὸν Μπάκκιγχαμ. Ἐπονται ἀλλεπάλληλοι ἀποτυχίαι τῆς πολιτικῆς αὐτοῦ καὶ ἰδιαιτέρως ἡ ἀτυχὴς εἰς Παλατινᾶτον ἐκστρατεία, ἡ ἀτυχὴς ὁμοίως ναυμαχία τοῦ Κάντιξ (1625) καὶ ἡ μετὰ τῆς Γαλλίας σύγκρουσις, ἥτις προεκλήθη κατόπιν τῆς ἀπρεποῦς πρὸς τὴν Ἄνναν τῆς Αὐστρίας καὶ τὸν Ρισελιὲ συμπεριφορᾶς τοῦ εὐνοουμένου τῆς βασιλέως τῆς Ἀγγλίας. Αἱ ἐχθροπραξίαι ἤρξαντο πρὸ τῆς ἐπισήμου κηρύξεως τοῦ πολέμου, ἡ κοινὴ ὅμως ἀγγλικὴ γνώμη καὶ τὸ κοινοβούλιον ἐξανέστησαν ἐναντίον τοῦ Μπάκκιγχαμ εἰς βαθμὸν ἐπικίνδυνον. Φρονῶν τότε οὗτος ὅτι θὰ κατώρθου νὰ ἀνακτήσῃ τὴν ἀπολεσθεῖσαν δημοτικότητά του δι' ἐπιτυχοῦς ἐπιδρομῆς ἐναντίον τῆς Γαλλίας ἤρχισε παρασκευάζων πυρετωδῶς μέγαν στόλον. Ἐνῷ ὅμως εὑρίσκετο εἰς Πόρτσμουθ ἕτοιμος νὰ ἐπιβῇ τοῦ στόλου, ἐδολοφονήθη ὑπό τινος φανατικοῦ ἀξιωματικοῦ τοῦ ναυτικοῦ, τοῦ Ἰωάννου Φέλτον. Ὡραία προσωπογραφία τοῦ Μπάκκιγχαμ, ἔργον τοῦ Ροῦμπενς, σῴζεται εἰς τὸ παλάτσο Πίττι τῆς Φλωρεντίας.

*Γεώργιος-Βίλλιερς, Α' δοὺξ τοῦ Μπάκκιγχαμ.*

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckinghan), ***Γεώργιος Βίλλιερς***, *δοὺξ τοῦ* —. Ἄγγλος εὐγενής, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1627 — 1688). Ἀπὸ τοῦ 1648 ὑπεστήριξε μετὰ φανατισμοῦ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάρρησιν τοῦ Καρόλου Β', μεθ' ἣν (1660) ἠμείφθη δι' ὑψη-

Digitized by Google

λῶν ἀξιωμάτων καὶ τιμῶν. Ἀνεμείχθη μέχρι τοῦ θανάτου του εἰς πολλὰς ῥαδιουργίας τῆς πολιτικῆς καὶ ἦτο ἐκ τῶν μᾶλλον καταχθονίων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς του. Διάγων βίον ἀκατάστατον, ἐσπατάλησε τὴν κολοσσιαίαν αὐτοῦ περιουσίαν, κατὰ τὰ τέλη δὲ τοῦ βίου του ἔζησε σχεδὸν ἐν πενίᾳ.

*Γεώργιος-Βίλλιερς, Β' δοὺξ τοῦ Μπάκιγχαμ.*

—**Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Ἐδουάρδος Στάφφορντ, δοὺξ τοῦ*** —. Ἄγγλος εὐγενὴς (1478—1521), υἱὸς τοῦ Ἑρρίκου. Ἡ περιουσία τοῦ πατρός του, ἡ ὁποία μετὰ τὴν θανάτωσίν του εἶχε δημευθῆ, ἀπεδόθη εἰς αὐτὸν τῷ 1486. Μετὰ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἄνοδον τοῦ Ἑρρίκου Η' ἀνεμιγνύετο ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν, ὁ βασιλεὺς ὅμως ἀπέφευγεν αὐτόν, φοβούμενος μήπως προβάλῃ ἀξιώσεις ἐπὶ τοῦ ἀγγλικοῦ θρόνου, λόγῳ τοῦ ὅτι ἦτο ἀπόγονος τοῦ Ἐδουάρδου Γ'. Ἐλθὼν εἰς ῥῆξιν μὲ τὸν κόμιτα Οὐόλσεϋ, προεκάλεσε μεγάλην ἐναντίον του δυσαρέσκειαν, κατηγορηθεὶς δὲ τέλος ὑπό τινος ἐκ τῶν ἱπποτῶν τοῦ οἴκου του, ὅτι ἐπεβουλεύετο τὴν ζωὴν τοῦ βασιλέως καὶ ἐποφθαλμία τὸν θρόνον, συνελήφθη καὶ ἐθανατώθη εἰς Τάουερ Χὶλλ.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Ἑρρῖκος Στάφφορντ, δοὺξ τοῦ*** —. Ἄγγλος εὐγενὴς (1453—1483) ἔγγονος τοῦ *Χάμφρεϋ* (βλ. κατωτέρω), παίξας σπουδαιότατον πολιτικὸν ῥόλον μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἐδουάρδου Δ'. Συμμαχήσας μετὰ τῶν Γκλόστερ ἀνεκήρυξε βασιλέα τὸν Ριχάρδον Γ', αὐτὸς δὲ ἔλαβε δι' ἑαυτόν, εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του, τὰ ἀνώτερα ἀξιώματα τῆς αὐλῆς. Ἀποτόμως ὅμως συλλαβών, ἐναντίον τῆς θελήσεως τοῦ βασιλέως, τὸ σχέδιον τῆς συμφιλιώσεως τῶν δύο ἀντιπάλων οἴκων τῆς Ὑόρκης καὶ τῆς Λαγκαστρίας διὰ συζεύξεως τοῦ κόμιτος Ρίτσμοντ μετὰ τῆς Ἐλισάβετ τῆς Ὑόρκης, ἐπανεστάτησε τὴν Οὐαλλίαν. Ὁ Ριχάρδος Γ' τὸν κατεδίωξε καὶ μετὰ πολλὰς ἀναζητήσεις συνέλαβε καὶ ἐθανάτωσεν αὐτόν.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Ἰωάννης Σέφφηλντ, μαρκήσιος τοῦ Νόρμανμπυ, δοὺξ τοῦ*** — Ἄγγλος εὐπατρίδης καὶ πολιτικὸς (1648—1721). Εἰς ἡλικίαν 23 ἐτῶν ἦτο συγχρόνως κυβερνήτης πολεμικοῦ πλοίου καὶ διοικητὴς συντάγματος πεζικοῦ, ἐπολέμησε δὲ κατ' ἀρχὰς ἐν Ὁλλανδίᾳ. Βραδύτερον ὑπηρέτησεν εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν ὑπὸ τὸν Τυρέν, τῷ δὲ 1680 ἐπὶ κεφαλῆς 2000 ἀνδρῶν μετέβη νὰ ἐνεφοδιάσῃ τὴν Ταγγέρην πολιορκουμένην ὑπὸ τῶν Μαυριτανῶν. Ὡς μέλος τοῦ ἰδιαιτέρου βασιλικοῦ συμβουλίου καὶ μέγας αὐλάρχης τοῦ Ἰακώβου Β' ἐπέδειξε μεγάλην πολιτικὴν ἐπιδεξιότητα κατὰ τὴν ἐπανάστασιν. Ὁ Γουλιέλμος τῆς Ὀράγγης ἀναγνωρίζων τὰς ἱκανότητάς του, διετήρησεν αὐτὸν μέλος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου του. Κατὰ τὴν βασιλείαν τῆς Ἄννης ἔφθασεν εἰς τὸ ἀπόγαιον τῆς δόξης του, γενόμενος μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Μάλμπορω λόρδος καγγελάριος τοῦ βασιλικοῦ οἴκου καὶ πρόεδρος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου τοῦ βασιλέως. Ἐπίσης μετὰ τὸν θάνατον τῆς Ἄννης ἀπετέλεσε μέλος τῆς ἀντιβασιλείας. Μετὰ τὴν ἀνάρρησιν τοῦ Γεωργίου Α' εἰς τὸν θρόνον ἔπαυσε ν' ἀναμιγνύεται ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν. Ἦτο ἄνθρωπος πολλῆς μορφώσεως καὶ λεπτῆς φαντασίας, κατέλιπε δὲ πλεῖστα ἔργα, ποιήματα, τραγῳδίας καὶ ἀπομνημονεύματα, ἐκδοθέντα τῷ 1723—1729 ἐν Λονδίνῳ.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Ριχάρδος Γκρένβιλλ (δοὺξ τοῦ Μπάκκιγχαμ καὶ Τσάντος).*** Ἄγγλος εὐπατρίδης καὶ πολιτικὸς (1797—1861). Εἰς τὴν βουλὴν τῶν κοινοτήτων, ὅπου ἀντεπροσώπευε τὴν κομιτείαν Μπάκκιγχαμ, τοσαύτην ἐπεδείξατο ἱκανότητα εἰς τὰ ζητήματα τῆς ἀγροτικῆς οἰκονομίας, ὥστε ἐπωνομάζετο «Ὁ φίλος τοῦ ἀγρότου». Τῷ 1839 μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του ἀντικατέστησεν αὐτὸν εἰς τὴν βουλὴν τῶν λόρδων καὶ διωρίσθη τῷ 1841 λόρδος σφραγιδοφύλαξ τῆς κυβερνήσεως Πὴλ. Παρῃτήθη τῆς θέσεώς του ὅτε τὰ μέλη τοῦ ὑπουργείου ἐδιχάσθησαν ἐπὶ ζητημάτων ἀφορώντων τὴν περὶ τὰ δημητριακὰ νομοθεσίαν. Ὢν σπάταλος περιέπεσεν εἰς οἰκονομικὰς δυσχερείας, τῷ δὲ 1848 ἐπωλήθησαν τὰ κτήματα καὶ αἱ πολύτιμοι συλλογαί του. Ἔκτοτε ἀποσυρθεὶς τῆς ἐνεργοῦ πολιτικῆς ἠσχολήθη μὲ τὴν συγγραφὴν δύο ἀξιολογωτάτων ἀπὸ ἱστορικῆς ἀπόψεως ἔργων, ὑπὸ τοὺς τίτλους «Memoirs of the court of George III and the regency» (Λονδῖνον 1862) καὶ «Courts and cabinets of William IV and Victoria» (1861).

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Χάμφρεϋ Στάφφορντ, δοὺξ τοῦ*** —. Ἄγγλος εὐγενὴς (1402—1460), υἱὸς τοῦ *Ἐδμόνδου*, πέμπτου κόμιτος τοῦ Στάφφορντ. Διεκρίθη κατ' ἀρχὰς παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Ἑρρίκου Ε' κατὰ τὴν εἰς Γαλλίαν καὶ Φλάνδραν ἐκστρατείαν καὶ ἀντημείφθη τῷ 1444 διὰ τοῦ τίτλου τοῦ δουκὸς τοῦ Μπάκκιγχαμ. Ἀκολούθως διεδραμάτισε σημαίνοντα ῥόλον κατὰ τὰς διαπραγματεύσεις τῆς εἰρήνης μετὰ τῆς Γαλλίας (1445—1446) καὶ διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν διοικητὴς τοῦ Καλαί. Ταχθεὶς κατὰ τὸν πόλεμον τῶν «Δύο Ρόδων» παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Ἑρρίκου ΣΤ', ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Νόρθαμπτον (10 Ἰουλίου 1460). Χ. Δ.

**Μπάκκιγχαμ** (Buckingham) ***Ἰωσήφ***. Ἀμερικανὸς δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1779. Ἦτο κατ' ἀρχὰς ὑπάλληλος ἀγροτικοῦ κτήματος καὶ εἶτα ἐργάτης τυπογραφείου. Ἀπὸ τοῦ 1802 μέχρι τοῦ 1815 διετήρησεν ἐν Βοστώνῃ ἐκδοτικὴν ἐπιχείρησιν, ἵδρυσε δὲ τῷ 1805 τὴν μηνιαίαν ἐπιθεώρησιν «The Polyanthus», ἥτις, διακοπτομένη κατὰ διαστήματα, ἔπαυσεν ὁριστικῶς ἐκδιδομένη τῷ 1814. Ἀκολούθως ἵδρυσε τὰς ἐφημερίδας «The New England Galaxy» (1817—1828), «The Boston Courier» (1824—1848) καὶ «The New England Magazine» (1832—1836). Ἐπίσης ἔγραψε δύο ἀξιόλογα ἔργα, περιέχοντα πληθὺν πληροφοριῶν διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς δημοσιογραφίας ἐν Ἡνωμέναις Πολιτείαις: «Specimens of Newspaper Literature, with Personal Memoirs, Anecdotes and Reminiscensces» (Βοστώνη, 1850) καὶ «Personal Memoirs and Recollections of Editorial Life» (Βοστώνη, 1852). Ὁ Μπάκκιγχαμ διετέλεσεν επανειλημμένως μέλος τῶν νομοθετικῶν σωμάτων ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Μασσαχουσέττης. Χ. Δ.

— **Μπάκκιγχαμ** (Buckingham), ***Ἰάκωβος - Σίλκ***. Ἄγγλος περιηγητὴς καὶ συγγραφεὺς (1786—1855). Εἶναι εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τῶν δύο ὀνομαστῶν περιοδικῶν ἐκδόσεων «The Oriental Herald» καὶ «The Athenaeum». Ἐπίσης διετέλεσε μέλος τοῦ κοινοβουλίου, ὅπου διεκρίθη ὡς ῥήτωρ. Κυρίως ὅμως κατέστη γνωστὸς διὰ τὰς περιηγήσεις του, τὰς ἐκ τῶν ὁποίων ἐντυπώσεις ἐδημοσίευσεν εἰς σειρὰν ἔργων του: «Περιήγησις εἰς Παλαιστίνην» (1821), «Περιήγησις τῶν Ἀραβικῶν φυλῶν τῶν οἰκουσῶν τὰς ἀνατολικὰς περιοχὰς τῆς Συρίας καὶ τῆς Παλαιστίνης» (1824), «Περιήγησις ἐν Μεσοποταμίᾳ» (1828), «Περιήγησις ἐν Ἀσσυρίᾳ, Μηδίᾳ καὶ Περσίᾳ» (1828), «Περιήγησις εἰς Βέλγιον, Ρῆνον, Ἑλβετίαν κλπ.», «Περιήγησις εἰς Γαλλίαν, Πεδεμόντιον, Λομβαρδίαν κλπ.». Εἶχε μελετήσει κατὰ παραγγελίαν τοῦ Μωχάμετ - Ἀλῆ τὴν τομὴν τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ Σουέζ, χάρις δὲ εἰς τὰς σχέσεις του μὲ τὸν Αἰγύπτιον ἡγεμόνα διηυκολύνετο εἰς τὴν μελέτην τῶν χωρῶν τῆς Ἀνατολῆς. Ἐπίσης ἔγραψεν: «America historical, statistic and descriptive» (1841—1843) καὶ δύο πρώτους τόμους μακροτάτης «Αὐτοβιογραφίας» ἥτις ὅμως, ἐπισυμβάντος τοῦ θανάτου του, ἔμεινεν ἡμιτελής. Χ. Δ.

**Μπὰκλ** (Buckle), ***Ἑρρῖκος-Θωμᾶς***. Ἄγγλος ἱστορικὸς (1821—1862). Κληρονομήσας μεγάλην περιουσίαν ἀπὸ τὸν προώρως θανόντα πατέρα του, φίλος δὲ τῶν ἐπιστημῶν καὶ ἐπιμελέστατος, ἀφιερώθη ὁλοψύχως εἰς ἱστορικὰς σπουδάς, περιελθὼν πρὸς τοῦτο πολλὰς εὐρωπαϊκὰς χώρας. Τὸ πρῶτον ἔργον του, «Ἱστορία τοῦ πολιτισμοῦ τῆς Ἀγγλίας», πραγματικὸν ἀριστούργημα, πλῆρες πρωτοτύπων ἀπόψεων, συντεταγμένον εἰς σοβαρὸν καὶ γλαφυρὸν ὕφος, ἐνεποίησε μεγάλην ἐντύπωσιν καὶ παρέσχεν ἀφορμὴν πολλῶν συζητήσεων, διότι ὁ Μπὰκλ εἰσῆγε δι' αὐτοῦ εἰς τὴν ἱστορίαν τὴν ἐπιστημονικὴν μέθοδον τῆς ἐρεύνης. Πληγεὶς ὑπὸ τοῦ θανάτου τῆς μητρός του, ἐξηντλημένος δὲ λόγῳ ὑπερκοπώσεως, δὲν κατώρθωσε ν' ἀποπερατώσῃ τὸ ἔργον του, ὅπερ ἐπρόκειτο ν' ἀπαρτισθῇ ἐκ δέκα πέντε μεγάλων τόμων. Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Ἱστορίαν τοῦ Καρόλου Α'» (1863) καὶ ἄλλας συφωτάτας συγγραφάς. Α. Δ.

**μπακλαβᾶς** (ὁ)· εἶδος γλυκίσματος, τουρκικῆς, ὡς καὶ ἡ ὀνομασία αὐτοῦ, προελεύσεως.

—*[Ζαχαρ.]* Ὁ *μπακλαβᾶς* εἶναι ἀνατολίτικον γλύκισμα τοῦ ταψιοῦ, παρασκευαζόμενον ὡς ἑξῆς: Λαμβάνομεν 200 δράμια ἀμύγδαλα ψίχα, τὰ ζεματίζομεν διὰ νὰ τὰ ξεφλουδίσωμεν, τὰ κοπανίζομεν καὶ προσθέτομεν εἰς αὐτὰ κανέλλαν καὶ ὀλίγα γαρύφαλλα (ἀντὶ ἀμυγδάλων δυνάμεθα νὰ χρησιμοποιήσωμεν καρύδια). Καίομεν 150 δράμια βούτυρο, ἀλείφομεν δι' αὐτοῦ τὸ ταψὶ καὶ στρώνομεν 2 «φύλλα μπακλαβᾶ», τῶν ὁποίων τὴν ἐπιφάνειαν βουτυρώνομεν. Ρίπτομεν ἐπάνω εἰς αὐτὰ ὀλίγα ἀπὸ τὰ ἀμύγδαλα, τὰ ὁποῖα σκεπάζομεν πάλιν μὲ δύο φύλλα, βούτυρο καὶ ἀμύγδαλα, ἐξακολουθοῦμεν δὲ τὸ ἴδιον, χωρὶς νὰ πιέζωμεν τὰ φύλλα, ἕως ὅτου γεμίσωμεν τὸ ταψὶ μέχρις ἀποστάσεως 3 δακτύλων ἀπὸ τὰ χείλη του. Τελειώνομεν μὲ 3 φύλλα, ἀφοῦ προηγουμένως ἀφαιρέσωμεν τὰ περισσεύοντα ἀπὸ τὸν γῦρον. Ταχτοποιοῦμεν τὸ ἐπάνω φύλλον, τοῦ ὁποίου τὴν ἐπιφάνειαν βουτυρώνομεν καλῶς, καὶ τὴν χαράσσομεν μὲ μυτερὸ μαχαίρι εἰς ῥομβοειδῆ σχήματα. Τὸν μπακλαβᾶν ψήνομεν εἰς μέτριον φοῦρνον ἐπὶ 1 ½—2 ὥρας καὶ ἀφοῦ κρυώσῃ τὸν περιλούομεν μὲ σιρόπι ἀπὸ ζάχαρι ἢ μέλι. Μ. ΔΡ.

**Μπακλαλὶ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ἀλία* (βλ. λ.).

**Μπάκλαντ** (Buckland), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος γεωλόγος (1784—1856). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς θεολογίαν ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ κατόπιν μεταλλειολογίαν καὶ παλαιοντολογίαν, διετέλεσεν ἡγούμενος τοῦ ἀββαείου τοῦ Οὐεστμίνστερ, διευθυντὴς τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου, μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἀγγλικῆς ἐπιστημονικῆς ἑταιρείας καὶ τῆς γεωλογικῆς ἑταιρείας καὶ ἵδρυσε τὸ γεωλογικὸν μουσεῖον τοῦ Λονδίνου. Εἰς τὰ ἔργα του προσεπάθησε νὰ ἀποδείξῃ τὴν ἁρμονίαν μεταξὺ τῆς ἐπιστήμης καὶ τῆς πίστεως. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Γεωλογία καὶ θρησκεία» (1820), «Reliquae diluvianae» (1824), «Γεωλογία καὶ μεταλλειολογία» (1836—1837) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπακλὰρ-μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Θρᾳκικῆς χερσονήσου (Καλλιπόλεως) κατὰ τὴν Ν. ἀκτὴν τοῦ κόλπου τοῦ Ξηροῦ (πλάτ. 40°33' Β., μῆκ. 26°44' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1004: Western part of sea of Marmara and gulf of Xeros) ἐπιστεφόμενον ὑπὸ καταστραφέντος φρουρίου. Ἀμέσως παρὰ τὸ ἀκρωτήριον φερώνυμος λιμήν. Ἐχρησιμοποιήθησαν ἀμφότερα κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπὸ τῶν συμμάχων κατὰ τὰς ἐναντίον τῆς χερσονήσου ἀποπείρας των. Σ. Ε. Λ.

**Μπακλὲ ντ' Ἄλμπ** (Bacler d'Albe), ***Λουδοβῖκος - Ἀλβέρτος, βαρῶνος*** —. Γάλλος ζωγράφος, χαρτογράφος καὶ στρατιωτικὸς (1762—1824). Κατὰ τὴν περίοδον τῶν ναπολεοντείων ἀγώνων προσήνεγκε σπουδαίας ὑπηρεσίας ὡς χαρτογράφος τοῦ γαλλικοῦ ἐπιτελείου, ἐτιμήθη δ' ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος διὰ βαθμῶν καὶ ἀξιωμάτων, τὰ ὁποῖα ἔχασε κατὰ τὴν παλινόρθωσιν. Ἐξέδωκεν εἰς πεντήκοντα τέσσαρα μεγάλα φύλλα τοὺς χάρτας τῶν ἐν Ἰταλίᾳ ἐπιχειρήσεων τοῦ Βοναπάρτου, ἐπὶ πλέον δὲ κατέλιπε συλλογὴν τῶν γραφικῶν ἀπόψεων τῆς Ἑλβετίας, χαρακτικὰ ἀντίγραφα τῶν ἔργων διασήμων τοπιογράφων καὶ ἐλαιογραφίας εἰκονιζούσας τοπία καὶ πολεμικὰ ἐπεισόδια. Ι.Μ.Π.

**Μπὰκ-Λιὲ** (Bac-Lieu) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τῆς Κοχιγχίνας (Γαλλικὴ Ἰνδοκίνα), κειμένη ἐπὶ τῆς πρὸς Ν. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Μέκογκ προσχωσιγενοῦς παραλίας. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι χθαμαλὸν καὶ εἰς πολλὰ σημεῖα ἑλῶδες, διακοπτόμενον ὑπὸ διωρύγων καὶ ποταμίων. Ἔχει καλλιεργείας ὀρύζης, ἁλυκὰς καὶ ἁλιείαν. Κάτ. 178.000, πρωτεύουσα δὲ ἡ ὁμώνυμος πόλις, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας, 261 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς Σαϊγκόν. Χ. Δ.

**Μπάκλουντ** (Backlund), ***Ἰωάννης - Ὀσκάρ***. Σουηδὸς ἀστρονόμος (1846—1916). Σπουδάσας ἐν Οὐψάλᾳ καὶ ἀκολούθως ἐν Στοκχόλμῃ, εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ τῆς Δορπάτης ἀπὸ τοῦ 1876 μέχρι τοῦ 1879, κατόπιν δὲ προσελήφθη εἰς τὸ ἀστεροσκοπεῖον τῆς Πουλκόβας, οὗτινος διωρίσθη διευθυντὴς ἀπὸ τοῦ 1895. Τὸ ἐπιστημονικόν του ἔργον εἶναι γνωστὸν ἐκ τῶν πολυαρίθμων δημοσιευμάτων του εἰς τὰ περιοδικὰ ὅλου σχεδὸν τοῦ κόσμου καὶ εἰδικώτερον εἰς τὰ πρακτικὰ καὶ ὑπομνήματα τῆς ἐν Πετρουπόλει Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Αἱ ἔρευναι εἰς τὰς ὁποίας ἠσχολήθη εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον θεωρητικοῦ χαρακτῆρος, πρωτεύει δὲ μεταξὺ αὐτῶν ἡ ἀφορῶσα εἰς τὸν ὑπολογισμὸν τῆς τροχιᾶς τοῦ περιοδικοῦ κομήτου τοῦ Encke. Ἐκ τῆς μελέτης τῶν ἐπὶ τοῦ κομήτου τούτου παρέλξεων τῶν πλανητῶν ὁ Μπάκλουντ συνήγαγε πολλὰ σπουδαιότατα πορίσματα καὶ προσδιώρισε νέας τιμὰς τῶν μαζῶν τοῦ Ἑρμοῦ καὶ τῆς Ἀφροδίτης, αἵτινες θεωροῦνται ὡς αἱ ἀκριβέστεραι πασῶν τῶν μέχρι τοῦδε προσδιορισθεισῶν. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**Μπάκναγκ** (Backnang) *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Γερμανίας ἐν Βυρτεμβέργῃ, ἐπαρχίᾳ Νέκαρ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μούρ. Κάτ. 8.395 (1919). Ἔχει βυρσοδεψεῖα καὶ κλωστήρια. Θ. Κ.

**Μπὰκ-Νὶνχ** *[Γεωγρ.]*. —1) Ἐπαρχία τοῦ Τονκίνου (Γαλλικὴ Ἰνδοκίνα), ἐκτεινομένη πρὸς Δ. τῆς Χανόϊ, ἐπὶ πεδινῆς ἐκτάσεως διαρρεομένης ὑπὸ τοῦ Ἐρυθροῦ ποταμοῦ. Ἔχει μεγάλας ἐκτάσεις καλλιεργείας ὀρύζης, κατοικεῖται δὲ ὑπὸ 396.000 κατ., ὧν 210 μόνον Εὐρωπαῖοι. Διασχίζεται ὑπὸ τριῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, διευθυνομένων ἀπὸ τῆς Χανόϊ πρὸς τὴν Χαϊφόν, τὸ Γιουὰν-Φοῦ καὶ τὸ Λάνγκσον.

— 2) Πόλις, πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 29 χλμ. ἀπὸ τῆς Χανόϊ. Εἶναι ἐμπορικὸν καὶ βιομηχανικὸν κέντρον τῆς περιφερείας καὶ ἔχει φρούριον. Κάτ. 7.000. Παρ' αὐτήν, εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ., κεῖται τὸ *Ντὰπ Κάου*, σταθμὸς τῆς γαλλικῆς φρουρᾶς τῆς περιφερείας. Χ. Δ.

**Μπάκοβα** (Bacowa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας (βλ. *Μπακάου*).

**Μπακογιάννης, Γεώργιος**. Ἀγωνιστὴς ἐκ Μεσολογγίου, γενναῖος προασπιστὴς τῆς πόλεως κατὰ τὰς πολιορκίας καὶ τὴν ἔξοδον. Ἐπέζησε μέχρι τοῦ 1860 ἐν Μεσολογγίῳ, ἐστερημένος τῆς ἀριστερᾶς χειρός, ἣν εἶχον οἱ Τοῦρκοι ἀποκόψει ὅτε τὸν συνέλαβον αἰχμάλωτον. Χ. Γ. Ε.

Digitized by Google

**Μπακόγκο,** ἢ *Μπαφιὸ* (Bakogo ἢ Bafiou). Ἀφρικανικὴ φυλὴ οἰκοῦσα τὰς γειτονικὰς περιφερείας τοῦ Γαλλικοῦ Κόγκο. Ἡ γλῶσσά των ὁμοιάζει πολὺ πρὸς τὴν τῶν κατοίκων τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Κόγκο. Τὸ ὑπέρτατον ὂν δι' αὐτοὺς εἶναι μία θήλεια θεότης, εἶδος Παναγίας καὶ Δήμητρος, ἣν ὀνομάζουν Τζάμπι. Εἶναι δὲ αὕτη τὸ κύριον πρόσωπον μιᾶς τριάδος, τῆς ὁποίας τὰ δύο ἄλλα μέλη εἶναι ὁ υἱός της καὶ τὸ πνεῦμα, ὀνομαζόμενον Ντέϊσος. Εἰς τὴν φυλὴν τῶν Μπακόγκο ἔχει καθιερωθῆ ὁ θεσμὸς τῶν κηνσόρων, ὀνομαζομένων «παπαγκάριος», οἱ ὁποῖοι καθ' ἑσπέραν διατρέχουν τὰ χωρία προσωπιδοφοροῦντες, διὰ νὰ τιμωροῦν τὰς ἀπίστους συζύγους καὶ νὰ καταδιώκουν τοὺς κλέπτας. Ἡ φυλὴ ὑποδιαιρεῖται εἰς ἄλλας μικροτέρας, τῶν ὁποίων σπουδαιοτέρα εἶναι ἡ τῶν *Καμπίντος*.

**Μπακόλας, *Γεώργιος*.** Ἁρματολὸς ἐκ Σκουληκαριᾶς Βάλτου (βλ. λ. *Γῶγος* Γεώργιος).

**Μπάκολοντ** (Bacolod) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῶν Φιλιππίνων ἐπὶ τῆς νήσου *Νέγκρος*. Διεξάγει μεγάλην ἁλιείαν καὶ ἔχει ἐμπόριον βάμβακος καὶ σακχάρεως. Κάτ. 12.000. Χ. Δ.

**Μπάκολορ** (Bacolor) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Φιλιππίνων ἐπὶ τῆς νήσου *Λουσόν*, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Παμπάνγκα. Εἶναι ἀξιόλογον ἐμπορικὸν κέντρον, τῷ δὲ 1762 διετέλεσεν ἐπὶ μικρὸν πρωτεύουσα τῶν ἐν Μαλαισίᾳ ἱσπανικῶν κτήσεων. Κάτ. 14.300. Χ. Δ.

**Μπακόνις,** ἢ ***Μπασσοῦτος*** (Bakonis ἢ Bassoutos). Λαὸς τῆς Ν. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μπασσοῦτος*).

**Μπακόνυ *δρυμὸς*** (Bakonywald) *[Γεωγρ.]*. Δασώδης ὀρεινὸς ὄγκος ἐν Οὑγγαρίᾳ, μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Ραάμπ καὶ τῆς λίμνης Μπαλατόν, τμῆμα τῶν Μέσων ὀρέων τῆς Οὑγγαρίας, καταλήγων εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Δουνάβεως, μεταξὺ Γκρὰν καὶ Μπάϊτσεν. Ἔχει μῆκος 90 χλ. καὶ πλάτος 30—40 χιλ. Ὑψηλότερον σημεῖον αὐτοῦ ἡ κορυφὴ *Κρόϋτσμπεργκ* (713 μ.). Ἡ ΝΑ. ὑπώρειά του ἔχει πολλὰς ἡφαιστειώδεις ἐξάρσεις, ὧν ὑψηλοτέρα ἡ *Καπχέγκυ* (601 μ.). Παλαιότερον ὁ δρυμός, μὲ τὴν πυκνοτάτην δάσωσιν αὐτοῦ, ἐχρησίμευεν ὡς κρησφύγετον τῶν ληστρικῶν συμμοριῶν, ἃς ἐξεδίωξεν ἡ διάνοιξις πολλῶν ὁδῶν διὰ μέσου αὐτοῦ. Θ. Κ.

**Μπακοῦ** (Bakou) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς δημοκρατίας τοῦ Ἀζερμπαϊτζὰν (βλ. λ. *Βακοῦ*).

**Μπακούεροι·** βλ. *Μπακοῦοι*.

**Μπακούμπα** (Bakumba). Ἀφρικανικὴ φυλὴ τῆς περιφερείας Κασσάϊ τοῦ κράτους τοῦ Κόνγκου. Κατοικεῖ εἰς δασώδεις ἐκτάσεις. Οἱ ἄνδρες εἶναι μεγαλόσωμοι καὶ ἐπιβλητικοί, ὡπλισμένοι μὲ τόξα, ἀλλ' ἐλάχιστα γενναῖοι. Στιγματίζονται μόνον αἱ γυναῖκες, αἵτινες εἶναι ἀσχημότεραι τῶν ἀνδρῶν. Ἡ φυλὴ αὕτη οὐδέποτε ὑπῆρξεν ἀνθρωποφάγος. Ἡ δουλεία ὑφίσταται παρὰ τοῖς Μπακούμπα καὶ οἱ δοῦλοι θάπτονται μετὰ τῶν κυρίων των. Τὰ νεογέννητα θεωροῦνται ὡς ἐπανερχόμενοι πρόγονοι, δι' ὃ καὶ ὁ σεβασμὸς πρὸς αὐτὰ εἶναι μεγάλος. Κληρονομία δὲν ὑφίσταται.

**Μπακοῦνιν, *Μιχαὴλ Ἀλεξάνδροβιτς*.** Μέγας Ρῶσος ἀναρχικός, γεννηθεὶς τῷ 1814 ἐν τῷ χωρίῳ Πριαμουτσίνο τοῦ διαμερίσματος Τορζὸκ τοῦ κυβερνείου Τβὲρ καὶ ἀποθανὼν ἐν Βέρνῃ τῷ 1876. Ὁ πατήρ του εἶχεν ἀκολουθήσει τὸ διπλωματικὸν στάδιον καὶ ἔζησε κατὰ τὴν νεότητά του ὡς διπλωματικὸς ἀπεσταλμένος ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ Νεαπόλει, κατόπιν δὲ ἐπανῆλθεν εἰς τὸ χωρίον του, ὅπου συνεζεύχθη, τεσσαρακονταετής, νεαρὰν κόρην τῆς οἰκογενείας τῶν Μουράβιεφ. Εἶχε φιλελευθέρας ἰδέας καὶ ἀνῆκεν εἰς μίαν ἐκ τῶν ὀργανώσεων τῶν δεκεμβριστῶν, ἀλλὰ μετὰ τὴν ἀνάρρησιν Νικολάου τοῦ Α' απογοητευθεὶς καὶ γενόμενος σκεπτικιστής, ἀφωσιώθη εἰς τὴν καλλιέργειαν τῶν γαιῶν του καὶ τὴν ἀνατροφὴν τῶν τέκνων του. Ὁ Μιχαὴλ ἦτο ὁ πρεσβύτερος καὶ εἶχε πέντε ἀδελφοὺς καὶ πέντε ἀδελφάς. Εἰς ἡλικίαν δεκαπέντε ἐτῶν εἰσήχθη εἰς τὴν σχολὴν πυροβολικοῦ τῆς Πετρουπόλεως καὶ κατόπιν τριετοῦς φοιτήσεως ἐστάλη ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὸ κυβερνεῖον τοῦ Μίνσκ. Ἦτο ἡ ἐπομένη τῆς καταπνίξεως τῆς πολωνικῆς ἐξεγέρσεως.

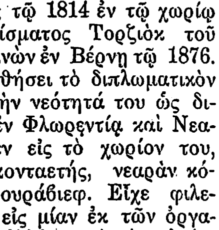

*Μιχαὴλ Μπακοῦνιν.*

Ἡ φρικτὴ τρομοκρατία, ἡ ὁποία ἐξαπελύθη κατὰ τῆς Πολωνίας, ἐνέπνευσεν εἰς αὐτὸν τὸ μῖσος κατὰ τοῦ δεσποτισμοῦ. Μετὰ πάροδον διετίας παρῃτήθη τοῦ στρατεύματος (1834) καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Μόσχᾳ, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ ἑξαετίαν καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῆς φιλοσοφίας. Ἐμελέτησε τοὺς Γάλλους ἐγκυκλοπαιδιστάς, τὸν Φίχτε καὶ τὸν Ἔγελον, τοῦ ὁποίου καὶ ἔγινεν ἐνθουσιώδης ὀπαδός. Τῷ 1840 μετέβη εἰς Πετρούπολιν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Βερολῖνον μὲ τὴν πρόθεσιν νὰ μελετήσῃ τὴν γερμανικὴν φιλοσοφικὴν κίνησιν. Μετ' ὀλίγον ὁ ἐγελειανισμός του ἔλαβεν ἐπαναστατικὸν χαρακτῆρα, ὁδηγηθεὶς μέχρι τῶν τελευταίων λογικῶν συνεπειῶν του εἰς τὸν πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν τομέα. Τῷ 1842 μετέβη εἰς Δρέσδην, ὅπου συνεδέθη μετὰ τοῦ Α. Ροῦγκε, ὁ ὁποῖος ἐξέδιδε τὰ «Deutsche Jahrbücher». Εἰς τὸ περιοδικὸν τοῦτο ἐδημοσίευσε κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1842, μὲ τὸ ψευδώνυμον *Ἰούλιος Ἐλυζὰρ* (Elysard), ἄρθρον ὑπὸ τὸν τίτλον: «*Ἡ ἀντίδρασις ἐν Γερμανίᾳ*», τὸ ὁποῖον κατέληγεν εἰς ἐπαναστατικὰ πορίσματα. Ἡ σαξωνικὴ κυβέρνησις ἐξεδήλωσεν ἀμέσως τὰς ἐχθρικάς της διαθέσεις κατὰ τοῦ Ροῦγκε καὶ τῶν συνεργατῶν του, καὶ ὁ Μπακοῦνιν ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Δρέσδην καὶ νὰ μεταβῇ εἰς Ζυρίχην, ὅπου διέτριψε κατὰ τὸ 1843. Ἐν Ἑλβετίᾳ ἐγνωρίσθη μετὰ τῶν Γερμανῶν κομμουνιστῶν τῆς ὁμάδος τοῦ Βάϊτλινγκ, μετὰ πάροδον ὅμως ἔτους ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ καὶ μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου παρέμεινε μέχρι τέλους τοῦ 1847. Ἐκεῖ ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ Καρόλου Μάρξ, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἔλθει κατὰ τὸ 1843, μετὰ τοῦ Προυντών, τῆς Γ. Σάνδη καὶ τοῦ Π. Λερού. Τὰ ἔτη τῆς ἐν Παρισίοις διαμονῆς του ὑπῆρξαν τὰ γονιμώτερα ἐξ ἀπόψεως διανοητικῆς ἐξελίξεως. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο συνέλαβε τὰ σπέρματα τῶν ἰδεῶν, αἱ ὁποῖαι ἀπετέλεσαν βραδύτερον τὸ ἐπαναστατικόν του πρόγραμμα. Κατόπιν ἑνὸς λόγου τὸν ὁποῖον ἐξεφώνησε κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1847 διὰ τὴν πολωνικὴν ἐξέγερσιν τοῦ 1830 ὁ Μπακοῦνιν, ἐξωρίσθη ἐκ Γαλλίας κατ' ἀπαίτησιν τῆς ρωσικῆς πρεσβείας, ἡ ὁποία μάλιστα ἄφησε νὰ διαδοθῇ ἐπίτηδες, διὰ νὰ μειώσῃ τὴν συμπάθειαν πρὸς αὐτόν, ὅτι ἦτο ὄργανόν της, ἀλλ' ὅτι τώρα ἦτο ὑποχρεωμένη ν' ἀπαλλαγῇ αὐτοῦ, διότι εἶχε προχωρήσει πολύ. Ὁ Μπακοῦνιν κατέφυγεν εἰς Βρυξέλλας, ὅπου διέμενεν ἤδη ὁ Μὰρξ ἀπὸ τοῦ 1845, τὸν ὁποῖον κατηγόρει ἐπὶ αὐταρχισμῷ, φλυαρίᾳ καὶ πολιτικῇ ἀνηθικότητι.

Ἡ φεβρουαριανὴ ἐπανάστασις τοῦ 1848 ἐπέτρεψεν εἰς τὸν Μπακοῦνιν νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Παρισίους. Ἀλλ' ἐπροτίμησε νὰ μεταβῇ εἰς Γερμανίαν, ὅπόθεν ἤλπιζεν ὅτι θὰ ἠδύνατο νὰ μετάσχῃ τῶν ἐξεγέρσεων τῆς Πολωνίας. Διῆλθε διὰ Κολωνίας, ὅπου ὁ Μὰρξ καὶ ὁ Ἔνγκελς προητοιμάζοντο διὰ τὴν ἔκδοσιν τῆς «Neue Rheinische Zeitung». Ἦτο ἡ ἐποχή, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ γερμανικὴ δημοκρατικὴ λεγεὼν τῶν Παρισίων, μεθ' ἧς συνειργάζετο ὁ φίλος τοῦ Μπακοῦνιν ποιητὴς G. Herwegh, ἐπεχείρησε τὴν ἀπόπειραν ἐξεγέρσεως εἰς τὸ μέγα δουκᾶτον τῆς Βάδης, ἥτις ἔσχεν οἰκτρὸν τέλος. Ὁ Μὰρξ κατεπολέμησε βιαίως τὸν Herwegh εἰς τὸ ζήτημα τοῦτο, ὁ δὲ Μπακοῦνιν ἀνέλαβε τὴν ὑπεράσπισιν τοῦ φίλου του, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἤγαγεν εἰς ὁριστικὴν ρῆξιν μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ Μάρξ. Βραδύτερον, κατὰ τὸ 1871, ὁ Μπακοῦνιν, μὲ τὴν χαρακτηρίζουσαν αὐτὸν εἰλικρίνειαν, ὡμολόγει ὅτι εἶχον δίκαιον τότε ὁ Μὰρξ καὶ ὁ Ἔνγκελς καταπολεμοῦντες τὸν Herwegh. Ἐκ Κολωνίας μετέβη εἰς Βερολῖνον, ἐκεῖθεν εἰς Μπρεσλάου καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πράγαν, ὅπου ματαίως ἐπεχείρησε νὰ ἐνεργήσῃ δημοκρατικὴν καὶ ἐπαναστατικὴν προπαγάνδαν εἰς τὸ σλαβικὸν συνέδριον, καὶ ὅπου μετέσχε τῆς ὑπὸ τοῦ Βιντισγκραῖτζ σκληρῶς κατασταλείσης ἐξεγέρσεως. Κατόπιν ἐπανῆλθεν εἰς Μπρεσλάου, ὅπου κατηγορηθεὶς ὡς πράκτωρ τῆς Ρωσίας ἀπέδειξε τὴν ἀθῳότητά του.

Ἀπελαθεὶς ἐκ Πρωσσίας καὶ Σαξωνίας ὁ Μπακοῦνιν κατέφυγεν εἰς τὸ πριγκιπᾶτον τοῦ Ἄνχαλτ. Ἐνταῦθα ἐδημοσίευσε γερμανιστὶ τὴν μπροσοῦραν: «Aufruf an die Slaven, von einem russischen Patrioten, Mickael Bakunin, Mitglied des Slavencongressses», εἰς ἣν ἐπρότεινε τὴν συνένωσιν ὅλων τῶν Σλάβων ἐπαναστατῶν μετὰ τῶν ἐπαναστατῶν τῶν ἄλλων χωρῶν, Οὕγγρων, Γερμανῶν, Ἰταλῶν, διὰ τὴν ἀνατροπὴν τῶν τριῶν ἀπολυταρχικῶν καὶ καταπιεστικῶν μοναρχιῶν, τῆς ρωσικῆς, τῆς αὐστριακῆς καὶ τῆς πρωσσικῆς. Ὁ Μὰρξ κατέκρινε τὴν ἄποψιν ταύτην τοῦ Μπακοῦνιν ὡς μὴ ἐξυπηρετικὴν τῆς κοινωνικῆς ἐπαναστάσεως. Τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1849 ὁ Μπακοῦνιν ἦλθε κρυφίως εἰς Λειψίαν. Ἐνταῦθα ἐπεδόθη εἰς τὴν προπαρασκευὴν ἐξεγέρσεως ἐν Βοημίᾳ μετὰ ὁμάδος νεαρῶν Τσέχων ἐκ Πράγας. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως, κατὰ Μάϊον τοῦ 1849, ἐξερράγη ἐν Δρέσδῃ λαϊκὴ ἐξέγερσις, διότι ὁ βασιλεὺς τῆς Σαξωνίας ἠρνήθη νὰ δεχθῇ τὸ Σύνταγμα τοῦ γερμανικοῦ λαοῦ, τὸ ὁποῖον εἶχε ψηφίσει τὸ κοινοβούλιον τῆς Φραγκφούρτης. Ὁ βασιλεὺς ἔφυγεν, οἱ δὲ ἐπαναστάται ὑπῆρξαν κύριοι τῆς πόλεως ἐπὶ πέντε ἡμέρας. Ὁ Μπακοῦνιν, ὅστις εἶχε σπεύσει εἰς Δρέσδην, ἐγένετο εἷς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῶν ἐπαναστατῶν καὶ ἠγωνίσθη διὰ τὴν λῆψιν δραστηρίων μέτρων πρὸς ἄμυναν τῆς ἐπαναστάσεως κατὰ τῶν πρωσσικῶν στρατευμάτων. Ἀλλὰ τὸ κίνημα ἦτο καταδικασμένον εἰς ἀποτυχίαν. Ἀποπειραθεὶς νὰ δραπετεύσῃ συνελήφθη καὶ παρεδόθη εἰς τοὺς Πρώσσους. Φυλακισθεὶς εἰς τὸ φρούριον Καίνιχστάϊν τῆς Σαξωνίας, κατεδικάσθη εἰς θάνατον τὴν 14 Ἰανουαρίου τοῦ 1850. Μετά τινας μῆνας (τὸν Ἰούνιον), μετατραπείσης τῆς ποινῆς του εἰς ἰσόβια δεσμά, παρεδόθη εἰς τὴν αὐστριακὴν κυβέρνησιν, ἡ ὁποία τὸν ἐζήτει, καὶ ἐφυλακίσθη κατ' ἀρχὰς ἐν Πράγᾳ, εἶτα δὲ (1851) εἰς τὸ φρούριον τοῦ Ὀλμούτζ, ὅπου τὴν 15 Μαΐου 1851 κατεδικάσθη εἰς τὸν δι' ἀγχόνης θάνατον. Ἀλλὰ καὶ πάλιν ἡ ποινή του μετετράπη εἰς ἰσόβια δεσμά. Εἰς τὰς αὐστριακὰς φυλακὰς ὁ Μπακοῦνιν ὑπέστη φρικτὰ βασανιστήρια καὶ κατόπιν παρεδόθη εἰς τὴν ρωσικὴν κυβέρνησιν, ἡ ὁποία τὸν ἐνέκλεισεν εἰς τὸ φρούριον τοῦ Πέτρου καὶ Παύλου.

Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου, ἐπειδὴ τὸ φρούριον Πέτρου καὶ Παύλου διέτρεχε τὸν κίνδυνον νὰ καταληφθῇ ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, ὁ Μπακοῦνιν μετεφέρθη εἰς Σλούσσελμπουργκ (1854), ὅπου προσεβλήθη ἐκ σκορβούτου καὶ ἀπώλεσεν ὅλους τοὺς ὀδόντας του. Μετὰ τὸν θάνατον Νικολάου τοῦ Α', ὁ νέος τσάρος Ἀλέξανδρος Β' μετέτρεψε τὴν ποινὴν τῶν ἰσοβίων δεσμῶν εἰς ἐξορίαν. Τῷ 1857 ὁ ἐπαναστάτης μετεφέρθη εἰς Τόμσκ τῆς Σιβηρίας, ὅπου τὸ ἑπόμενον ἔτος συνεζεύχθη μίαν νεαρὰν Πολωνίδα, τὴν Ἀντωνίαν Κβιατκόβσκαν. Τῷ 1859 τοῦ ἐπετράπη νὰ ἐγκατασταθῇ ἐν Ἰρκούτσκ τῆς Σιβηρίας, ὁπόθεν κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ εἰς Ἰαπωνίαν καὶ ἐκεῖθεν μέσῳ Ὑοκοχάμας, Ἁγίου Φραγκίσκου καὶ Νέας Ὑόρκης εἰς Λονδῖνον (1861), ὅπου ἐγένετο δεκτὸς θερμότατα ὑπὸ τοῦ Herzen καὶ τοῦ Ὀγκάρεφ. Τῷ 1862 ἐξέδωκε ρωσιστὶ δύο βιβλία: «Πρὸς τοὺς Ρώσους, Πολωνοὺς φίλους καὶ ὅλους τοὺς Σλάβους φίλους» καὶ «Ἡ ὑπόθεσις τοῦ λαοῦ. Ρωμανώφ, Πουγκάτσεφ ἢ Πέστελ;» Κατόπιν ἐπεσκέφθη διαδοχικῶς τὴν Στοκχόλμην, τὸ Λονδῖνον ἐκ νέου, τοὺς Παρισίους, τὴν Φλωρεντίαν, τὴν Νεάπολιν κλπ. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο συνέλαβε τὸ σχέδιον μιᾶς διεθνοῦς μυστικῆς ὀργανώσεως τῶν ἐπαναστατῶν διὰ προπαγάνδαν καὶ δρᾶσιν ἐν καιρῷ καὶ ἀπὸ τοῦ 1864 ἐπέτυχε νὰ συγκεντρώσῃ ἀρκετοὺς Ἰταλούς, Γάλλους, Σκανδιναυοὺς καὶ Σλάβους εἰς τὴν μυστικὴν ταύτην ὀργάνωσιν, ἡ ὁποία ὠνομάσθη «Διεθνὴς ἀδελφότης» ἢ «Ἕνωσις τῶν σοσιαλιστῶν ἐπαναστατῶν». Ἐν Ἰταλίᾳ ὁ Μπακοῦνιν καὶ οἱ φίλοι του ἐπεδόθησαν κυρίως εἰς τὴν καταπολέμησιν τῶν ματσινιστῶν. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἵδρυσεν ἐν Νεαπόλει τὴν ἐφημερίδα: «Libertà e Giustizia». Ἐν τῷ μεταξύ, εἰς τὴν «Διεθνῆ ἀδελφότητα» εἶχον προσηλυτισθῆ μέλη ἐκ Σουηδίας, Νορβηγίας, Δανιμαρκίας, Ἀγγλίας, Βελγίου, Γαλλίας, Ἱσπανίας, Ἰταλίας, Πολωνίας καὶ Ρωσίας.

Τῷ 1868 ἵδρυσε νέαν ὀργάνωσιν ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν «Διεθνὴς ἕνωσις τῆς σοσιαλιστικῆς δημοκρατίας», τῆς ὁποίας συνέταξε καὶ τὸ πρόγραμμα. Ἡ ὀργάνωσις αὕτη, διακηρύσσουσα τὴν ἀθεΐαν της, ἐπεζήτει, κατὰ τὸ πρόγραμμα, τὴν ὁριστικὴν καὶ καθολικὴν κατάργησιν τῶν τάξεων, τὴν πολιτικήν, οἰκονομικὴν καὶ κοινωνικὴν ἰσότητα τῶν δύο φύλων, τὴν κοινωνικοποίησιν τῶν μέσων τῆς παραγωγῆς καὶ τὴν ἐξαφάνισιν τοῦ κράτους, τὸ ὁποῖον θ' ἀντικαθίστατο εἰς τὰς χρησίμους λειτουργίας του ὑπὸ ἐλευθέρων ἑνώσεων. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἱδρυθῆ ἀπὸ τοῦ 1864 ἡ «Διεθνὴς ἕνωσις τῶν ἐργαζομένων», ἡ συνήθως γνωστὴ ὡς Α' διεθνής, μὲ τὴν πρωτοβουλίαν τοῦ Κ. Μάρξ, ὁ ὁποῖος εἶχεν προτείνει εἰς τὸν Μπακοῦνιν νὰ προσχωρήσῃ εἰς αὐτήν. Ἀλλ' ὁ Μπακοῦνιν ἐπροτίμησε νὰ δράσῃ κεχωρισμένως, καὶ μόνον κατὰ τὸ δεύτερον συνέδριον τῆς Διεθνοῦς ἐν Γενεύῃ ἐδέχθη νὰ γίνῃ μέλος αὐτῆς (Ἰούλιος 1868). Διὰ τῆς προσχωρήσεως τῆς ὁμάδος τοῦ Μπακοῦνιν εἰς τὴν Διεθνῆ ἐνισχύθη αὕτη σημαντικῶς. Πολὺ ταχέως ἱδρύθησαν τμήματα αὐτῆς ἐν Ἱσπανίᾳ, Ἑλβετίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ. Εἰς τὸ τέταρτον παγκόσμιον συνέδριον τῆς Διεθνοῦς ἐν Βασιλείᾳ (Σεπτέμβριος 1869) ἡ παμψηφία σχεδὸν τῶν ἀντιπροσώπων ἐξεδηλώθη ὑπὲρ τῆς κολλεκτιβιστικῆς ἰδιοκτησίας, ἀλλ' ὑπὸ δύο ρεύματα: οἱ μὲν (Γερμανοί, Ἑλβετογερμανοί, Ἄγγλοι) ἦσαν ὀπαδοὶ τοῦ κρατικοῦ κομμουνισμοῦ, ἐξουσιακοί· οἱ ἄλλοι (Βέλγοι, Ἑλβετογάλλοι, Ἱσπανοί, Γάλλοι) ἦσαν ἀντιεξουσιακοὶ κομμουνισταί, ἢ φεντεραλισταὶ (ὁμοσπονδιακοί). Ὁ ἀναρχικοὶ καὶ ὠνομάσθησαν κολλεκτιβισταί. Ὁ Μπακοῦνιν ἀνῆκεν εἰς τὴν δευτέραν ταύτην κατηγορίαν, εἰς τὴν ὁποίαν συγκατελέγοντο καὶ ὁ Βέλγος De la Paepe καὶ ὁ Γάλλος Varlin. Ἡ «Διεθνὴς ἀδελφότης», ἱδρυθεῖσα τῷ 1864, διελύθη κατ' Ἰανουάριον τοῦ 1869, ἀλλὰ τὰ μέλη αὐτῆς καὶ κατόπιν ἐξηκολούθουν τὰς σχέσεις των. Μετὰ τὸ συνέδριον τῆς Βασιλείας ὁ Μπακοῦνιν δι' ἰδιωτικοὺς λόγους ἀπεσύρθη εἰς Λοκάρνο, ὅπου ἐπεδόθη εἰς τὴν μετάφρασιν τοῦ πρώτου τόμου τοῦ «Κεφαλαίου» τοῦ Κ. Μὰρξ εἰς τὴν ρωσικήν. Κατὰ τὸ διάστημα ὅμως τοῦτο ἐκυκλοφόρησαν ἐκ νέου αἱ κατὰ τοῦ Μπακοῦνιν ὡς πανσλαβιστοῦ κατηγορίαι. Ἡ ἐκ τῶν τμημάτων τῆς γαλλικῆς Ἑλβετίας σχηματισθεῖσα ὁμοσπονδία (Fédération romande), ἥτις ἐξέδιδε καὶ ἴδιον ὄργανον, τὴν «Égalité», διῃρέθη τότε εἰς δύο ὁμάδας (Ἀπρίλιος 1870), ἐκ τῶν ὁποίων ἡ μία ἐκ συμφώνου μετὰ τῶν διεθνιστῶν τῆς Γαλλίας, τοῦ Βελγίου καὶ τῆς Ἱσπανίας ἐκηρύχθη ὑπὲρ τῆς ἐπαναστατικῆς πολιτικῆς, ὑποστηρίζουσα ὅτι κάθε συμμετοχὴ τῆς ἐργατικῆς τάξεως εἰς τὴν ἀστικὴν κυβερνητικὴν πολιτικὴν θέλει ἐπιφέρει ἀναγκαίως τὴν σταθεροποίησιν τῆς κρατούσης τάξεως πραγμάτων, ἐνῷ ἡ ἄλλη ἐτάχθη ὑπὲρ τῆς πολιτικῆς

Digitized by Google

ἐπεμβάσεως καὶ τῆς ἀναδείξεως ἐργατῶν ὑποψηφίων εἰς τὰς ἐκλογάς. Τὸ γενικὸν συμβούλιον τῆς Διεθνοῦς, ὅπερ ἤδρευεν ἐν Λονδίνῳ, ὅπως καὶ οἱ Γερμανοὶ καὶ οἱ Ἑλβετογερμανοὶ ἐτάχθησαν ὑπὲρ τῆς δευτέρας ὁμάδος, οἱ δὲ Γάλλοι, οἱ Βέλγοι καὶ οἱ Ἱσπανοί, συμφώνως πρὸς τὴν γνώμην τοῦ Μπακοῦνιν, ὑπὲρ τῆς πρώτης, ἥτις καὶ ὠνομάσθη τμῆμα τοῦ Ἰούρα (fraction du Jura).

Ὁ Μπακοῦνιν κατὰ τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1869 συνεδέθη μὲ τὸν Νετσάγιεφ, πιστεύων ὅτι ἦτο δυνατὸν νὰ ὀργανωθῇ ἐν Ρωσίᾳ εὐρεῖα ἐξέγερσις τῶν χωρικῶν, ὅπως κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στένκο Ραζίν. Τότε ἔγραψε ρωσιστὶ καὶ τὴν ἔκκλησιν: «Ὀλίγαι λέξεις πρὸς τοὺς νέους ἀδελφοὺς τῆς Ρωσίας», τὰς μπροσούρας: «Ἡ ἐπιστήμη καὶ ἡ σημερινὴ ἐπαναστατικὴ ὑπόθεσις», «Πρὸς τοὺς ἀξιωματικοὺς τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ» καὶ γαλλιστί: «Αἱ ἄρκτοι τῆς Βέρνης καὶ ἡ ἄρκτος τῆς Πετρουπόλεως» καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν δρᾶσιν. Ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἀντελήφθη τὰς δικτατορικὰς διαθέσεις καὶ μηδενιστικὰς τάσεις τοῦ Νετσάγιεφ, καὶ διέκοψε τὰς μετ' αὐτοῦ σχέσεις. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870 ὁ Μπακοῦνιν ἐξεδήλωσε παντοιοτρόπως τὴν συμπάθειάν του πρὸς τὴν Γαλλίαν, τὴν ἧτταν τῆς ὁποίας ἐθεώρει ὡς θρίαμβον τῆς ἀντεπαναστάσεως. Κατὰ τὴν περίστασιν ταύτην ἐπίστευεν ὅτι οἱ ἐργάται δὲν ἠδύναντο νὰ παραμείνουν ἀπαθεῖς πρὸ τῆς γερμανικῆς ἐπιδρομῆς, ἐξέδωκε δ' ἐπὶ τούτῳ καὶ εἰδικὴν μπροσοῦραν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἐπιστολαὶ πρὸς ἕνα Γάλλον ἐπὶ τῆς σημερινῆς κρίσεως». Ἀφιχθεὶς εἰς Λυὼν ἵδρυσεν «Ἐπιτροπὴν σωτηρίας τῆς Γαλλίας», ἡ ὁποία εἰς προκήρυξίν της ἐκήρυξε χρεοκοπημένην τὴν διοικητικὴν καὶ κυβερνητικὴν μηχανὴν καὶ διεπίστωσε τὴν ἀνάγκην, ὅπως ὁ ἴδιος ὁ γαλλικὸς λαὸς διευθύνῃ τὰς τύχας του, ἀποστέλλων ἀντιπροσώπους τῶν κατὰ τόπους «Ἐπιτροπῶν σωτηρίας» εἰς τὴν Λυὼν πρὸς σχηματισμὸν τῆς «Ἐπαναστατικῆς συνελεύσεως τῆς σωτηρίας τῆς Γαλλίας». Πράγματι δέ, μετ' ὀλίγον, ἐκραγέντος λαϊκοῦ κινήματος ἐν Λυών, κατελήφθη τὸ δημαρχεῖον. Ἀλλ' ἡ νίκη ἦτο ἐφήμερος, καὶ ὁ Μπακοῦνιν, ἐναντίον τοῦ ὁποίου ἐξεδόθη ἔνταλμα συλλήψεως, ἠναγκάσθη νὰ δραπετεύσῃ εἰς Μασσαλίαν. Ἡ Γαλλία τὸν εἶχεν ἀπογοητεύσει. Ἔβλεπεν ὅτι ἐφυλλορρόουν αἱ ἐλπίδες του περὶ μιᾶς προσεχοῦς κοινωνικῆς ἐπαναστάσεως.

Ἐπανελθὼν εἰς Λοκάρνο συνέγραψε τὸ ἔργον: «Ἡ κνουτογερμανικὴ αὐτοκρατορία καὶ ἡ κοινωνικὴ ἐπανάστασις». Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἡ κομμοῦνα τῶν Παρισίων ἐφαίνετο ὅτι διέψευδε τὰς ἀπαισιοδόξους προβλέψεις τοῦ Μπακοῦνιν διὰ τὸ μέλλον τοῦ γαλλικοῦ λαοῦ. Ὁ ἡρωϊσμὸς τοῦ παρισινοῦ προλεταριάτου ἀνεπτέρωσε τὰς ἐλπίδας τῶν ἐπαναστατῶν ὅλου τοῦ κόσμου καὶ ἐτρομοκράτησε τοὺς συντηρητικούς, ἐν οἷς καὶ τὸν Ἰταλὸν πατριώτην Ματσίνι. Ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῶν κατηγοριῶν, τὰς ὁποίας διετύπωσεν ὁ Ματσίνι κατὰ τῆς Κομμοῦνας καὶ τῆς Διεθνοῦς, ὁ Μπακοῦνιν ἔγραψε τὴν «Ἀπάντησιν ἑνὸς διεθνιστοῦ πρὸς τὸν Ματσίνι» (γαλλιστὶ καὶ ἰταλιστὶ 1871), ἡ ὁποία ἔσχε μεγίστην κυκλοφορίαν ἐν Ἰταλίᾳ, καὶ τὴν μπροσοῦραν «Ἡ πολιτικὴ θεολογία τοῦ Ματσίνι καὶ ἡ Διεθνής». Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς Κομμοῦνας, συνεκλήθη ὑπὸ τοῦ Μὰρξ καὶ τοῦ Ἔνγκελς μυστικὸν συνέδριον τῆς Διεθνοῦς ἐν Λονδίνῳ, τὸ ὁποῖον ἐθέσπισε τὸν συγκεντρωτισμὸν διὰ τὰ τμήματα τῆς Διεθνοῦς καὶ ἀνέθεσε τὴν ἀνωτάτην διεύθυνσιν αὐτῆς εἰς τὸ γενικόν της συμβούλιον. Ἀλλ' ἡ ἀπόφασις αὕτη ἤχησε κακῶς εἴς τινα τμήματα (Ἰούρα, Γενεύης), τὰ ὁποῖα, συνενωθέντα εἰς μίαν «Ἰουρασικὴν ὁμοσπονδίαν» (Fédération jurassienne) ἀπηύθυναν ἐγκύκλιον πρὸς ὅλα τὰ τμήματα τῆς Διεθνοῦς καὶ διεξεδίκουν τὴν δημοκρατικὴν αὐτονομίαν των. Ὁ Μπακοῦνιν ἐτάχθη ὑπὲρ τῶν ἀπόψεων τῆς «Ἰουρασικῆς ὁμοσπονδίας», μὲ τὴν ὁποίαν συνεφώνησαν καὶ τὰ τμήματα τῆς Ἱσπανίας, τοῦ Βελγίου καὶ τῆς Γαλλίας. Ἡ πρώτη Διεθνὴς ἔβαινε πρὸς τὴν διάλυσίν της.

Τὸ φθινόπωρον τοῦ 1872 ὁ Μπακοῦνιν μετέβη εἰς Ζυρίχην, ὅπου ἵδρυσε τμῆμα τῆς «Ἰουρασικῆς ὁμοσπονδίας», ἀποτελούμενον κυρίως ἀπὸ Ρώσους καὶ Σέρβους σπουδαστάς, οἱ ὁποῖοι, ἀκολουθοῦντες βραδύτερον τὸ σύνθημα τοῦ Μπακοῦνιν: «Πηγαίνετε εἰς τὸν λαόν», ἐδημιούργησαν τὴν ἐπαναστατικὴν κίνησιν τοῦ τελευταίου τετάρτου τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἐν Ρωσίᾳ. Τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1872 συνεκλήθη ἐν Χάγῃ γενικὸν συνέδριον τῆς Διεθνοῦς, εἰς τὸ ὁποῖον δὲν κατώρθωσαν νὰ παραστοῦν ἀντιπρόσωποι ὅλων τῶν τμημάτων. Τὸ συνέδριον τοῦτο, μεταξὺ ἄλλων, ἀπέκλεισε τῆς Διεθνοῦς καὶ τὸν Μπακοῦνιν ἐπὶ δράσει ἀσυμβιβάστῳ πρὸς τὸ καταστατικόν. Ὀλίγας ὅμως ἡμέρας κατόπιν συνεκροτήθη ἀντισυνέδριον τῶν τμημάτων, τὰ ὁποῖα δὲν μετέσχον καὶ τὰ ὁποῖα εἶχον ταχθῆ ὑπὲρ τῆς αὐτονομίας. Τὸ ἀντισυνέδριον τοῦτο ἀπεκήρυξε τὰς ἀποφάσεις τοῦ συνεδρίου τῆς Χάγης. Νέον συνέδριον τῆς Διεθνοῦς, συγκληθὲν τῷ 1873 ἐν Γενεύῃ, ἐκήρυξε τὴν αὐτονομίαν τῶν τμημάτων. Ἡ Διεθνὴς διελύετο, καὶ ὁ Μπακοῦνιν ἐπλησίαζε πρὸς τὸ τέλος του. Ἀπέθανε τὸν Ἰούλιον τοῦ 1876 ἀπογοητευμένος.

***Ἡ ἀναρχικὴ θεωρία τοῦ Μπακοῦνιν.*** Αἱ θεωρίαι τοῦ Μπακοῦνιν ἐκτίθενται κυρίως εἰς τὴν «Ἠτιολογημένην πρότασιν πρὸς τὴν κεντρικὴν ἐπιτροπὴν τῆς Ἑνώσεως τῆς εἰρήνης καὶ τῆς ἐλευθερίας», ἡ ὁποία ἐξεδόθη ὑπὸ τὸν τίτλον: «Fédéralisme, socialisme et antithéologisme» («Ἅπαντα» τόμ. Α' 1895), εἰς τὸ «Καταστατικὸν τῆς διεθνοῦς ἀδελφότητος τῆς σοσιαλιστικῆς δημοκρατίας» (ἐν «L' Alliance de la démocratie socialiste et l' association internationale des travailleurs» 1873), εἰς τὸ «L' empire Knoutogermanique et la révolution sociale» (1882 καὶ «Ἅπαντα» τόμ. Β' 1907) εἰς τὴν ὑπὸ τὸν ξένον τίτλον «Dieu et l' Etat» μπροσοῦράν του («Ἅπαντα» τόμ. Α' 1895). Δύο ἕτερα ἔργα: «Die Principien der Revolution» (ἐν Dragomanow; Michail Bakunins social-politischer Briefwechsel etc. 1894 σ. 358 κ. ἑξ.) καὶ «Katechismus der Revolution» (αὐτόθ. σ. 371 κ. ἑξ.) δὲν δύνανται ν' ἀποδοθοῦν μετὰ βεβαιότητος εἰς τὸν Μπακοῦνιν.

Ὁ Μπακοῦνιν ὀνομάζει ἑαυτὸν *ἀναρχικὸν* καὶ ἀπορρίπτει κάθε νομοθεσίαν, κάθε αὐθεντίαν, κάθε προνομιοῦχον, ἐπίσημον, κεκυρωμένην, νόμιμον ἐξουσίαν, ἔστω καὶ προερχομένην ἐκ καθολικῆς ψηφοφορίας, πεπεισμένος ὅτι αὕτη καταλήγει εἰς ὄφελος μιᾶς κυριάρχου καὶ ἐκμεταλλευτρίας μειοψηφίας καὶ ἐναντίον τῶν συμφερόντων τῆς τεραστίας ὑποδεδουλωμένης πλειοψηφίας. Ὑπέρτατος νόμος διὰ τὸν ἄνθρωπον εἶναι ὁ νόμος τῆς ἐξελίξεως τῆς ἀνθρωπότητος, ἤτοι ὁ νόμος τῆς προόδου ἐκ μιᾶς καταστάσεως ἀτελεστέρας πρὸς ὅσον τὸ δυνατὸν τελειοτέραν κατάστασιν. Αὐτὸ δεικνύει ἡ ἱστορικὴ ἐξέλιξις τοῦ ἀνθρώπου, ὁ ὁποῖος, ὁρμώμενος ἐκ τῆς βαθείας νυκτὸς τοῦ ζωϊκοῦ ἐνστίκτου, φθάνει εἰς τὸ φῶς τοῦ πνεύματος. Ὁ ἄνθρωπος ἐξεκίνησεν ἐκ τῆς ζωϊκῆς δουλείας καὶ διελθὼν διὰ τῆς θείας δουλείας, βαδίζει σήμερον εἰς τὴν κατάκτησιν καὶ τὴν πραγματοποίησιν τῆς ἀνθρωπίνης ἐλευθερίας. Ὁ θρίαμβος τῆς ἀνθρωπότητος ἐπὶ τῆς γῆς εἶναι ἐξησφαλισμένος καὶ διὰ τοῦτο οἱ ἄνθρωποι πρέπει πάντοτε νὰ ἀτενίζουν τὸ μέλλον. Ὅταν ἡ ἀνθρωπότης πηδήσῃ ἀπὸ τὴν ζωϊκὴν εἰς τὴν ἀνθρωπίνην κατάστασιν, τὸ ἐκ νομοθετήσεως δίκαιον θέλει ἐξαφανισθῇ. Αἱ νομοθεσίαι, αἱ ὁποῖαι προέρχονται ἐκ τῆς αὐθαιρέτου θελήσεως ἑνὸς ἀτόμου ἢ πλειόνων ἀντιπροσώπων, ἀντιβαίνουν εἰς τοὺς φυσικοὺς νόμους καὶ θάπτουν τὴν ἐλευθερίαν τῶν μαζῶν μὲ τὸν δεσποτισμόν των. Σκοπὸς τῶν νομοθεσιῶν εἶναι ἡ ἐγκαθίδρυσις καὶ ἡ συστηματοποίησις τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῆς ἐργασίας τῶν ἐργαζομένων τάξεων πρὸς ὄφελος τῶν κυριάρχων. Ἐκδήλωσις τοῦ ἐκμεταλλευτικοῦ τούτου δεσποτισμοῦ εἶναι τὸ κράτος, τὸ ὁποῖον θὰ ἐξαφανισθῇ ἀναγκαίως. Ὅταν ἐξαφανισθῇ τὸ κράτος, θὰ παραμείνουν στοιχειώδεις τινὲς κανόνες δικαίου, ἀποτέλεσμα ὄχι νομοθεσίας, ἀλλὰ συγκαταθέσεως ὅλων, σπουδαιότερος τῶν ὁποίων θὰ εἶναι ἐκεῖνος, καθ' ὃν ὁ ἄνθρωπος θὰ καθορίζῃ τὰς πράξεις του κατὰ τὰς ἰδίας αὐτοῦ πεποιθήσεις. Ἡ αὐτὴ αὐτονομία θὰ εἶναι ἠγγυημένη καὶ προκειμένου περὶ τῶν ὠργανωμένων ὁμάδων (κοινοτήτων, ἐπαρχιῶν κτλ.). Ἕτερος θεμελιώδης κανὼν δικαίου θὰ εἶναι ἐκεῖνος, καθ' ὃν ὅλα τὰ μέσα τῆς παραγωγῆς, κοινωνικοποιημένα, θ' ἀνήκουν εἰς τὸ σύνολον τῆς ἐργαζομένης κοινωνίας. Τὸ κράτος ἀποτελεῖ ἱστορικήν, μεταβατικὴν κατηγορίαν, ἡ ὁποία, σὺν τῇ ἐξελίξει τῆς κοινωνίας, μέλλει νὰ ἐξαφανισθῇ. Ἔχει γεννηθῆ ἐκ τοῦ γάμου τῆς βίας, τῆς ἁρπαγῆς, τῆς λεηλασίας, ἐν μιᾷ λέξει τοῦ πολέμου καὶ τῆς κατακτήσεως, μετὰ τῶν θεῶν, οἱ ὁποῖοι ἐδημιουργήθησαν διαδοχικῶς ἐκ τῆς θεολογικῆς φαντασίας τῶν ἐθνῶν. Δοῦλοι τοῦ Θεοῦ οἱ ἄνθρωποι, γίνονται καὶ δοῦλοι τῆς Ἐκκλησίας καὶ τοῦ κράτους, τὸ ὁποῖον κυροῦται ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας. Ὅταν ἡ ἀνθρωπότης καταργήσῃ τὸ κράτος, θὰ βαδίσῃ πρὸς τὴν ἀληθῆ πρόοδον, ἡνωμένη κοινωνικῶς, ἀλλ' ἄνευ καταναγκασμοῦ. Ἡ κοινωνικὴ αὕτη ἕνωσις θὰ συνεπιφέρῃ καὶ τὸν θρίαμβον τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς ἐχθρικῶς ἀπέναντί του διακειμένης φύσεως. Ἡ ὑλικὴ χειραφέτησις τῆς ἀνθρωπότητος θὰ συνεπιφέρῃ καὶ τὴν ἠθικὴν αὐτῆς χειραφέτησιν καὶ τελείωσιν. Ἡ ἀμοιβαιότης τῆς ἐλευθερίας ὅλων τῶν ἀπαρτιζόντων τὴν κοινωνίαν μελῶν θὰ δώσῃ καὶ εἰς ἕνα ἕκαστον τὴν αἴσθησιν τῆς ἐλευθερίας του ἐν μέσῳ κοινωνίας ἐλευθέρων. Οἱ ἄνθρωποι θὰ ἑνωθοῦν κοινωνικῶς, θ' ἀντικαταστήσουν κάθε καταναγκαστικὴν ὀργάνωσιν καὶ θὰ σχηματίσουν ἐλευθέρας κοινότητας παραγωγῶν, συνηνωμένας διὰ συμβολαίου πρὸς ἀλλήλας καὶ μὲ προϋπόθεσιν τὸν πλήρη σεβασμὸν ἑκάστης ὁμάδος, ἐθνότητος κλπ. ἐκ μέρους τῶν ἄλλων. Ὅλα τὰ ζητήματα τ' ἀφορῶντα τὰ φυσικά, πολιτικά, στρατηγικά, ἐμπορικὰ σύνορα θὰ ἐκλείψουν ἀφ' ἑαυτῶν, ἐφ' ὅσον θὰ ἐκλείψῃ ἡ κρατικὴ ὀργάνωσις, ἡ ὁποία τὰ δημιουργεῖ καὶ τὰ διατηρεῖ.

Ἡ ἀτομική, ἡ ἀπεριόριστος ἰδιοκτησία θὰ ἐξαφανισθῇ ἐπίσης. Ἡ ἀτομικὴ ἰδιοκτησία εἶναι ἡ συνέπεια καὶ ταυτοχρόνως τὸ φυσικὸν θεμέλιον τοῦ κράτους. Ἡ ὕπαρξις τοῦ θεσμοῦ αὐτῆς ἀσκεῖ ὀλεθρίαν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς κοινωνίας. Δημιουργεῖ δύο ἀντιμαχομένας τάξεις, μίαν προνομιοῦχον καὶ ἄλλην δυστυχεστάτην, ἀποκτηνωμένην καὶ ἀξίαν οἴκτου. Ὅταν συντριβῇ τὸ κρατοῦν κοινωνικὸν καθεστώς, τότε ἡ ἀτομικὴ ἰδιοκτησία θὰ διατηρηθῇ μόνον ἐπὶ τῶν μέσων τῆς καταναλώσεως, ἐνῷ τὸ ἔδαφος, τὰ μέσα παραγωγῆς καὶ κάθε ἄλλο κεφάλαιον θὰ γίνῃ ἰδιοκτησία τῆς κοινότητος. Ἡ κοινωνία τοῦ μέλλοντος θὰ εἶναι κολλεκτιβιστικὴ κοινωνία.

Τῆς μεταβάσεως τῆς ἀνθρωπότητος ἀπὸ τὸ ζωϊκὸν στάδιον εἰς τὸ στάδιον τοῦ ἀνθρωπισμοῦ, δηλαδὴ τῆς ἐξαφανίσεως τοῦ κράτους, τῆς μεταμορφώσεως τοῦ δικαίου καὶ τῆς ἰδιοκτησίας, θὰ προηγηθῇ μία κοινωνικὴ ἐπανάστασις, ἡ ὁποία θὰ ἐκραγῇ ὁπωσδήποτε. Ἀλλ' ὅσοι βλέπουν τὴν φορὰν τῆς ἐξελίξεως πρέπει νὰ τὴν ἐπισπεύσουν καὶ νὰ τὴν βοηθήσουν. Ἡ ἀνθρωπότης νοσεῖ καὶ ἐναντίον τῆς νόσου αὐτῆς ἓν μόνον φάρμακον ὑπάρχει: ἡ κοινωνικὴ ἐπανάστασις, δηλαδὴ ἡ καταστροφὴ κάθε ἀνισότητος καὶ ἡ ἐγκαθίδρυσις οἰκονομικῆς καὶ κοινωνικῆς ἰσότητος ὅλων. Αἱ ἐπαναστάσεις δὲν γίνονται οὔτε ὑπὸ ἀτόμων οὔτε ὑπὸ μυστικῶν ὀργανώσεων. Ἐκρήγνυνται αἴφνης ὡς θύελλαι λαϊκαί, κατόπιν ἐσωτερικῆς ὡριμάνσεως εἰς τὰς ψυχὰς τῶν καταπιεζομένων.

Ἡ ἐπανάστασις δὲν θὰ στραφῇ κατὰ τῶν ἀτόμων, ἀλλὰ κατὰ τῶν συστημάτων καὶ τῶν πραγμάτων. Ὅλον τὸ μυστικόν της ἔγκειται εἰς τὴν ἀμείλικτον συντριβὴν τοῦ θεσμοῦ τοῦ κράτους καὶ τῆς ἀτομικῆς ἰδιοκτησίας. Ὅπως τίθεται σήμερον ἱστορικῶς ἡ ἐπανάστασις, ἔχει διεθνῆ χαρακτῆρα. Δεδομένης τῆς ἀλληλοϋποστηρίξεως, τὴν ὁποίαν θὰ ἔχουν οἱ καταπιεσταί, εἶναι καταδικασμένη εἰς ἀποτυχίαν κάθε κοινωνικὴ ἐπανάστασις, ὅταν δὲν κατορθώσῃ νὰ ἐπεκταθῇ ἐφ' ὁλοκλήρου τῆς Εὐρώπης, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον τότε μόνον θὰ τὸ ἐπιτύχῃ, ὅταν θὰ εἶναι πραγματικῶς σοσιαλιστικὴ ἐπανάστασις, καταστροφεὺς τοῦ κράτους καὶ δημιουργὸς πραγματικῆς ἐλευθερίας διὰ τῆς ἰσότητος καὶ τῆς δικαιοσύνης.

Αἱ φυσικαὶ καὶ ἀναγκαῖαι συνέπειαι τῆς ἐπαναστάσεως θὰ εἶναι: ἡ κατάρρευσις τοῦ κράτους, ἡ σεισάχθεια, ἡ κατάργησις τῶν φόρων, ἡ διάλυσις τοῦ στρατοῦ, τῆς ἀστυνομίας, τῆς γραφειοκρατίας, τοῦ κλήρου, ἡ κατάργησις τῆς ἐπισήμου δικαιοσύνης, ἡ δήμευσις ὅλων τῶν κεφαλαίων καὶ μέσων παραγωγῆς, ἡ δήμευσις ὅλων τῶν κτημάτων τῆς Ἐκκλησίας καὶ τοῦ κράτους, ἡ ὀργάνωσις τῆς κοινότητος, καὶ ἡ ἐλευθέρα συνένωσις ὅλων τῶν κοινοτήτων. Οἱ διαισθανόμενοι τὴν πορείαν, τὴν ὁποίαν ἀκολουθεῖ ἡ ἐξέλιξις τῆς ἀνθρωπότητος, ἔχουν καθῆκον νὰ προετοιμάζουν, νὰ ὀργανώνουν καὶ νὰ ἐπιταχύνουν τὴν κοινωνικὴν ἐπανάστασιν, διαδίδοντες εἰς τὸν λαὸν τὴν ἰδέαν αὐτῆς, καταπολεμοῦντες τὰς προλήψεις του καὶ συγκροτοῦντες τὸ ἐπιτελεῖον τῆς ἐπαναστάσεως ἐξ ἀφωσιωμένων, δραστηρίων, εὐφυῶν καὶ ἐντίμων ἀτόμων. Τοιοῦτον ἐπιτελεῖον ἀπετέλει καὶ ἡ ὑπὸ τοῦ Μπακοῦνιν ἱδρυθεῖσα «Διεθνὴς ἕνωσις τῆς σοσιαλιστικῆς δημοκρατίας».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *M. Nettlau*: M. Bakunin, eine Biographie (London 1896—1900 τόμ. 3).— *Τοῦ αὐτοῦ*, M. Bakunin, uno schizzo biografico, ἰταλ. μετ. S. Merlino, μετὰ προλόγου E. Réclus (Messina 1904).— *Τοῦ αὐτοῦ*, Bakunin und die Internationale in Italien, ἐν «Archiv fur die Gesch. des Soz. und der Arbeiterbew.» τόμ. II, III.— *J. Guillaume*, Michel Bakounine, notice biographique ἐν Β' τόμῳ τῶν «Oeuvres» τοῦ Μπακοῦνιν (Paris 1907) σ. V—LXIII.— *Τοῦ αὐτοῦ*, L'Internationale, documents et souvenirs τόμ. Δ' (Paris 1905—1910).— *Zoccoli*, L'Anarchia (Torino 1907).— *G. Plekhanov*, Anarchisme et socialisme (Paris 1922).— *De Preaudeau*, M. Bakounine. Le collectivisme dans l'Internationale (Paris 1911).— *Dragomanov*, Correspondance de Bakounine, Lettres à Herzen et Ogareff (Paris 1898).— *R. Huch*, M. Bakunin und die Anarchie (1923).— *R. W. Postgate*, The Workers' Internatinale (1920).— *G. M. Stekloff*, History of the First International (1928).— *R. Eltzbacher*, L'anarchisme (γαλλ. μεταφ. O. Karmin. Paris 1923).

Θ. Π.

**Μπακουντοῦ** (Bakuntu). Φυλὴ ἰθαγενῶν τῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς, κατοικοῦσα τὰς κοιλάδας τῆς περιφερείας Μεμέ. Εἶναι ἐργατικοί, ἀσκοῦσι δὲ μικρὰς βιομηχανίας, κατασκευάζοντες ἰδίως σχοινία καὶ κατεργαζόμενοι δέρματα.

**Μπακοῦοι** (Bakouï) ἢ ***Μπακούεροι***. Κλάδος φυλῆς τῶν Μπαντοῦ ἐν Καμεροὺν τῆς Ἀφρικῆς τοῦ Ἰσημερινοῦ. Οἱ Μπακοῦοι εἶναι ἐγκατεστημένοι εἰς τὰ ὄρη, ἐκ τῶν ὁποίων πηγάζει ὁ ποταμὸς Κόμο. Ἂν καὶ ἡμιάγριοι, εἶναι λαὸς ἐκτάκτως ἀξιοσημείωτος ἐν τῷ μέσῳ τῶν ἄλλων μαύρων φυλῶν, πρὸς τὰς ὁποίας δὲν ὁμοιάζουν. Εἶναι εὐρυμέτωποι, μὲ τὸ πρόσωπον ἐπίμηκες καὶ ἔντονα χαρακτηριστικά. Ἀσκοῦν τὸν στιγματισμόν.

**Μπακοὺρ** (Bacourt), ***Ἀδόλφος-Φουριὲ*** (Fourier), *ντὲ*—. Γάλλος διπλωμάτης (1801—1865). Ὑπηρετῶν μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 ὡς ἀκόλουθος τῆς ἐν Λονδίνῳ γαλλικῆς πρεσβείας ὑπὸ τὸν πρίγκιπα Ταλλεϋράνδον, κατέκτησε τὴν συμπάθειαν καὶ τὴν ἐκτίμησιν αὐτοῦ, προήχθη δὲ τάχιστα εἰς ἀνωτέρους βαθμούς. Τῷ 1835 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Καρλσρούῃ, ἔχων ἅμα τὴν ἰδιαιτέραν ἀποστολὴν νὰ ἐπιβλέπῃ τὰς κινήσεις τοῦ ἐκεῖ εὑρισκομένου τότε Λουδοβίκου-Ναπολέοντος Βοναπάρτου. Τῷ 1840 μετετέθη εἰς τὴν πρεσβείαν τῆς Οὐασιγκῶνος καὶ μετὰ δύο ἔτη εἰς τὴν τοῦ



Digitized by Google

Τουρίνου. Ὑπηρετῶν ἐκεῖ ἀκόμη μέχρι τοῦ 1848, ὅτε ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις, ἡ ἀναβιβάσασα εἰς τὸν θρόνον τὸν Λουδοβῖκον-Ναπολέοντα, ἀπέστειλε τὴν παραίτησίν του εἰς τὸν Λαμαρτῖνον, ἀρνηθεὶς νὰ ὑπηρετήσῃ τὴν αὐτοκρατορίαν. Κατὰ τὸν ὑπόλοιπον βίον του ἠσχολήθη μὲ τὴν προπαρασκευὴν τῆς ἐκδόσεως τῶν «Ἀπομνημονευμάτων» τοῦ Ταλλεϋράνδου, ὅστις ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν διὰ τῆς διαθήκης του τὴν φροντίδα ταύτην, ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ μὴ γίνῃ ἡ ἔκδοσις πρὸ τῆς παρελεύσεως τριακονταετίας ἀπὸ τοῦ θανάτου του, ἤτοι πρὸ τοῦ 1868. Ὁ Μπακοὺρ ἀνεδίφησε πλεῖστα ἀρχεῖα τῆς Εὐρώπης, διὰ ν' ἀνεύρῃ συμπληρωματικὰ στοιχεῖα ἢ ἐπαληθεύσεις σχετικὰς μὲ τὰ γραφόμενα τοῦ Ταλλεϋράνδου, καὶ ἡτοίμασε καθ' ὅλα τὴν ἔκδοσιν, ἀλλ' ἔκρινεν ὅτι ἔπρεπε νὰ προσθέσῃ εἰκοσιν ἀκόμη ἔτη εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Ταλλεϋράνδου ταχθεῖσαν προθεσμίαν καὶ ἀνέθηκεν εἰς τοὺς κληρονόμους του νὰ προβοῦν αὐτοὶ εἰς τὴν δημοσίευσιν μετὰ τὸ ἔτος 1888, ὅπερ καὶ ἐγένετο. Ὁ Μπακοὺρ ἔγραψεν: «Ἀναμνήσεις ἑνὸς διπλωμάτου», δημοσιευθείσας μετὰ τὸν θάνατόν του (1882), ἐξέδωκε δὲ ἐν ζωῇ τὴν «Ἀλληλογραφίαν τοῦ κόμητος Μιραμπὼ μετὰ τοῦ κόμητος ντὲ Λαμὰρκ κατὰ τὰ ἔτη 1789—1791» (Παρίσιοι 1851, τόμ. 3). —Ω.

**Μπακουτοῦ** (Bakoutou). Κλάδος ἰθαγενοῦς φυλῆς ἐν Κονγκό, εἰς τὴν περιφέρειαν εἰς τὴν ὁποίαν ἑνοῦνται οἱ ποταμοὶ Σαγκουρῶ καὶ Κασπάτ. Εἶναι ἀφιλόξενοι καὶ ἐμπνέουν τὸν τρόμον εἰς τοὺς περιηγητάς, οἵτινες τοὺς ἀποφεύγουν.

**Μπάκραινα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μακρυχωρίου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 187. Παράγει ἐκλεκτὰ πεπόνια, φημιζόμενα ὡς τὰ καλύτερα τῶν ἐν Ἑλλάδι. Χ. Δ.

**μπακράτσι** (τὸ) (τουρκ. *μπακράτς*)· δοχεῖον ἐκ χαλκοῦ. Οὕτω καλοῦσιν οἱ Ἕλληνες Κωνσταντινουπόλεως τὸ ἁγιασματάριον, τὸ ὁποῖον κρατεῖ ὁ ἱερεὺς ἢ ὁ τοῦτον συνοδεύων κανδηλανάπτης ἢ παῖς, ὅπως ἐμβαπτίζεται εἰς τὸν ἁγιασμὸν ἡ ἁγιαστήρα (ἁγιαστοῦρα) κατὰ τὸ φώτισμα τοῦ μηνός. Ν. Μ.

**Μπακράτσι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ζάππειον* (βλ. λ.).

**Μπὰκ-Ρίβερ**, ἢ *Γκρέητ - Φὶς - Ρίβερ* (Back-River ἢ Great-Fish-River) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τοῦ Καναδᾶ, ὀνομασθεὶς οὕτως ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἐξερευνήσαντος αὐτὸν Ἄγγλου ναυάρχου Μπάκ, ὅστις τὸν ἀνεκάλυψε τῷ 1831. Εἶναι ὅμως γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα Γκρέητ-Φὶς-Ρίβερ. Πηγάζει ἐκ τῆς λίμνης Σοὺσσεξ, σχηματίζει τὰς λίμνας Πήρρυ καὶ Γκάρρυ καὶ χύνεται εἰς τὸν Βόρειον Παγωμένον ὠκεανόν, εἰς τὸν κόλπον Ἔλλιοτ, μετὰ ροῦν 1.000 χλμ. Οἱ ἰθαγενεῖς ὀνομάζουν αὐτὸν *Λουετσόρ*, ὅπερ σημαίνει εἰς τὴν γλῶσσαν αὐτῶν «μέγας ἰχθύς», ἤτοι φάλαινα, ἕνεκα τῶν πολλῶν φαλαινῶν, αἵτινες εὑρίσκονται παρὰ τὰς ἐκβολάς του. Μ. Δ. Β.

**Μπακσάϊ** (Baksaï), ***Ἀβραάμ***. Οὗγγρος ἱστορικὸς καὶ νομομαθής, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ παρέμεινεν ἀξιόλογον μέχρι σήμερον τὸ «Χρονικὸν τῶν βασιλέων καὶ τῶν δουκῶν τῆς Οὐγγαρίας» (1567). Θ. Κ.

**Μπάκστ**, ***Λέων***· βλ. *Μπάξτ*.

**Μπακτὶ** *[Θρησκειολ.]*. Καλεῖται οὕτω ἡ τρίτη παρὰ τὰς δύο ἄλλας ὁδὸς πρὸς ἀπολύτρωσιν, ἣν ἀπαντῶμεν παρὰ τῇ Ἰνδικῇ θρησκείᾳ, καὶ δὴ τῷ Ἰνδουϊσμῷ. Σημαίνει δὲ Μπακτὶ τὸ κατ' ἀρχὰς μὲν πλήρη καὶ ἀπόλυτον ἀφοσίωσιν, καθ' ἣν ἡ βούλησις ὑποτάσσεται ἐντελῶς εἰς τὴν βούλησιν τοῦ θεοῦ, ἔπειτα δὲ ἰσχυρὰν ὁρμὴν πρὸς τὸν θεὸν καὶ ἀνιδιοτελῆ πρὸς αὐτὸν ἀγάπην. Ἡ περὶ σωτηρίας διδασκαλία αὕτη συνδέεται πρὸς τὴν πίστιν περὶ προσωπικοῦ θεοῦ καὶ διὰ τοῦτο οὔτε ἐν τῷ παλαιοτέρῳ βουδισμῷ ἦτο δυνατὸν νὰ ἀναπτυχθῇ οὔτε ἐν ταῖς Οὐπανισάδαις, κέντρον τῆς διδασκαλίας τῶν ὁποίων εἶναι ἡ ἀπολυτροῦσα γνῶσις τοῦ Ἑνὸς καὶ Αἰωνίου ὡς μόνη ὁδὸς πρὸς ἀπαλλαγὴν ἀπὸ τοῦ θανάτου καὶ τοῦ πόνου. Ἀλλ' ἤδη ἡ Μαχαραγιάνα ὁδηγεῖ πέρα τοῦ ἀρχικοῦ βουδισμοῦ, ἐξαίρουσα τὴν ἐπὶ τῆς ἀφοσιώσεως καὶ τῆς ἐν ἀγάπῃ λατρείας τοῦ Βούδα χωροῦσαν ὁδὸν πρὸς τὴν ἀπολύτρωσιν. Πλήρως διαμορφοῦται καὶ σαφῶς ἐκφαίνεται ἡ περὶ Μπακτὶ διδασκαλία ἐν τῷ Ἰνδουϊσμῷ. Ἀπὸ τῆς Σαμψάρα δὲν ἀπαλλάσσει οὔτε ἡ γενναιόδωρος θυσία οὔτε ἡ γνῶσις τοῦ λόγου τοῦ παντὸς οὔτε ἡ αὐταπολυτροῦσα ἄσκησις, ἀλλ' ἡ ἀπεριόριστος ἐλπὶς ἐπὶ τὴν θείαν χάριν, ἡ ἐπὶ τῆς ἀγάπης στηριζομένη. Ὁ πιστὸς ἐπιθυμεῖ ἐν τῷ Ἰνδουϊσμῷ ὅ, τι ὀνομάζει θρησκείαν ὁ Αὐγουστῖνος. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον τὴν πρὸς τὸ Μπακτὶ συνδεομένην εὐσέβειαν δυνάμεθα νὰ χαρακτηρίσωμεν ὡς τρίτον τι στάδιον ἀκμῆς ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἰνδικῆς θρησκείας, ὅπερ ὅμως ὑπερέχει τῶν προγενεστέρων. Ἡ περὶ Μπακτὶ διδασκαλία συνέβαλε πολὺ μᾶλλον ἢ ἡ ἀριστοκρατικὴ φιλοσοφία τοῦ βραχμανικοῦ πανθεϊσμοῦ καὶ ἡ μοναστικὴ πολιτεία τοῦ πρωταρχικοῦ βουδισμοῦ εἰς τὴν ἀπάμβλυνσιν τῶν ταξικῶν ἀντιθέσεων, εἰς τὴν βελτίωσιν τῆς θέσεως τῆς γυναικὸς καὶ εἰς τὴν προαγωγὴν τοῦ πολιτισμοῦ τῶν Ἰνδῶν. Ἐξ ἄλλου ὅμως οὐχὶ σπανίως μετέπεσεν ἡ εὐσέβεια αὕτη εἰς πανθεϊσμὸν ἢ καὶ ἀνεμίχθη πρὸς μορφὰς θρησκευτικότητος ἀνηκούσας εἰς κατώτερα στάδια. Ν. Λ.

**Μπακτσὲ-Λόβασι** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Κηπάρι* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Κοζάνης.

**Μπάκτσετζὶκ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Βιθυνίας, κειμένη εἰς τὸ νότιον τμῆμα τῆς πεδιάδος τῆς Νικομηδείας, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Παρὰ τὰ ὑψώματα τοῦ χωρίου τούτου ἡ XI ἑλληνικὴ μεραρχία (συνταγματάρχης Ν. Κλαδᾶς), τῇ 15 Ἰουνίου 1921, ἀποσυρομένη, συνεπείᾳ διαταγῆς τῆς Στρατιᾶς Μικρᾶς Ἀσίας, ἀπὸ τῆς περιοχῆς τῆς Νικομηδείας - Ἀδᾶ Παζὰρ πρὸς τὴν περιοχὴν τῆς Κίου - Ἀσκανίας λίμνης, νοτιώτερον, συνῆψε σφοδρὰν μάχην μετὰ τουρκικῶν δυνάμεων, παρενοχλουσῶν τὴν μεραρχίαν, καὶ νικήσασα ἀπώθησεν αὐτὰς πρὸς Α. πρὸς Μπουγιοὺκ Δερβέντ, καὶ πρὸς Β., πρὸς Νικομήδειαν. Ἀπαγκιστρωθεῖσα δ' οὕτως ἡ μεραρχία, ἀπεχώρησεν εἶτα ἀνενοχλήτως διὰ τῆς νοτίας παραλιακῆς ζώνης τοῦ κόλπου τῆς Νικομηδείας πρὸς Γιάλοβαν—Παζάρκιοϊ τῆς περιοχῆς Κίου, ἐνταχθεῖσα εἰς τὸ Γ' ἑλληνικὸν σῶμα στρατοῦ. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπακχάους** (Backhouse), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος πολιτικὸς (1772—1845). Ἀπὸ τοῦ 1812 διετέλεσεν ἰδιαίτερος γραμματεὺς τοῦ Γ. Κάννιγκ καὶ τῷ 1822 κατέλαβεν ἀνωτάτην θέσιν ἐν τῇ διοικήσει τῶν Ἰνδιῶν. Ἀπὸ τοῦ 1827 μέχρι τοῦ 1843 διετέλεσεν ὑφυπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπακχόϊζεν** (Backhuyzen ἢ Backhuisen), ***Λοῦντολφ***. Ὀλλανδὸς ζωγράφος (1631—1708). Κατ' ἀρχὰς ἐχρημάτισε γραμματεὺς εἴς τι ἐμπορικὸν κατάστημα, χρησιμοποιῶν τὰς ὥρας τῆς σχολῆς του εἰς τὴν ἐκτέλεσιν σχεδίων, τὰ ὁποῖα βραδύτερον, γενόμενα εὐρέως γνωστά, τὸν κατέστησαν περίφημον. Παρακινηθεὶς ἐκ τῆς ἐπιτυχίας ταύτης ἀπεφάσισε ν' ἀποβάλῃ τὴν ἰδιότητα τοῦ ὑπαλλήλου καὶ νὰ λάβῃ μαθήματα ζωγραφικῆς. Πρὸς τοῦτο εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ τοπιογράφου Ἐβερντίνγκεν, ὅστις ἐνεφύτευσεν εἰς τὸν Μπακχόϊζεν τὸν ἔρωτα πρὸς τὴν σπουδὴν τῆς φύσεως. Πολὺ περισσότερον ὅμως ἢ αἱ ὑποδείξεις τοῦ διδασκάλου τον συνετέλεσεν εἰς τὴν διαμόρφωσιν τοῦ ταλάντου τοῦ καλλιτέχνου τούτου ἡ μακρὰ καὶ συνειδητὴ ἐν τῇ φύσει ἀναστροφή του, οἱ περίπατοι εἰς τὰς ὀλλανδικὰς παραλίας, ἡ θέα τῶν ἐμπορικῶν λιμένων, ἡ μελέτη τῶν συστατικῶν μερῶν τῶν πλοίων. Διὰ τοῦτο ὁ Μπακχόϊζεν κατέλιπεν ὡς θαλασσογράφος ἔργον μεγίστης σημασίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν του ἐτάσσετο εἰς τὴν ἰδίαν γραμμὴν μὲ τοὺς Βὰν ντὲρ Βέλντε. Καὶ σήμερον δ' ἔτι προκαλοῦν βαθεῖαν αἴσθησιν οἱ πίνακές του, εἰς τοὺς ὁποίους περιέκλεισεν ὁλόκληρον τὸ δραματικὸν μεγαλεῖον τῆς ἀνησύχου, εὐρείας θαλάσσης καὶ τῆς ἰδιοτύπου ζωῆς, ἡ ὁποία ἀνανεώνεται διηνεκῶς μέσα εἰς τοὺς κόλπους της. Αἱ θαλασσογραφίαι του ἐξετιμήθησαν ἄκρως ὑπὸ τῶν συγχρόνων του· βασιλεῖς καὶ μεγιστᾶνες, ὁ ἐκλέκτωρ τῆς Σαξωνίας, ὁ βασιλεὺς τῆς Πρωσσίας, ὁ Μέγας Πέτρος τῆς Ρωσίας τοῦ ἀνέθηκαν τὴν ἐκτέλεσιν ἐνδιαφερόντων ἔργων καὶ τὸν ἐτίμησαν διὰ τῆς προσωπικῆς των φιλίας. Ἐν τούτοις τὸ ἔργον του δὲν στερεῖται ἐλαττωμάτων· ἐλαφρά τις ψυχρότης εἰς τὴν ἔκφρασιν καὶ καθ' ὑπερβολὴν ἐξαντλητικὴ σπουδὴ τῶν λεπτομερειῶν μειώνουν τὴν αὐθορμησίαν του καὶ ἀμαυρώνουν τὸ ἐν αὐτῷ ψυχικὸν στοιχεῖον. Ὁ Μπακχόϊζεν κατέλιπεν ὑδατογραφίας, ἐλαιογραφίας, σχέδια καὶ χαλκογραφίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ ὀλλανδικὸς στόλος παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Τέξελ» (μουσεῖον Λούβρου), «Ἡ ἐπιβίβασις τοῦ Ἰωάννου ντὲ Βὶττ» (Ἄμστερνταμ), «Τὰ ναυπηγεῖα τῆς ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν», «Ταραγμένη θάλασσα» (μουσεῖον Χάγης), «Τρικυμία εἰς τὴν λίμνην τοῦ Χάαρλεμ» (μουσεῖον Van der Hoop). Ἕτερα πολυπληθῆ ἔργα τοῦ Μπακχόϊζεν ἀπόκεινται ἐν τοῖς μουσείοις τοῦ Ρόττερνταμ, τῶν Βρυξελλῶν, τῆς Δρέσδης, τοῦ Μονάχου, τῆς Βιέννης, τοῦ Σβέριν καὶ τῆς Κοπεγχάγης. Ι. Μ. Π.

— **Μπακχόϊζεν**, *βὰν ντὲρ* ***Μπρίγκ*** (Bakhuizen van der Brink), ***Ρεϊνέριος***. Ὀλλανδὸς ἱστορικὸς (1810—1865). Τῷ 1853, ὡς ἀρχειοφύλαξ τοῦ κράτους, ἐτακτοποίησε καὶ κατέστησε τὰ ἐν τῷ ἀρχείῳ ἐπίσημα καὶ βαρυσήμαντα ἔγγραφα προσιτὰ εἰς πάντα ἐρευνητήν, συγχρόνως δ' ἐξέδωκε καὶ σχετικὴν πραγματείαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Overzigt» (Ἐπιθεώρησις). Ἔγραψεν σειρὰν ἔργων ἐκδοθέντων ὑπὸ τὸν γενικὸν τίτλον «Studiën en schetsen over vaderlandsche geschiedenis en letteren» (τελευτ. ἐκδ. 1913 εἰς 3 τόμους). Α. Δ.

— **Μπακχόϊζεν**, *βὰν ντὲρ* ***Σάντε*** (Bakhuizen van der Sande), ***Ἐρρῖκος-Γεράρδος***. Ὀλλανδὸς ἀστρονόμος καὶ μαθηματικὸς ἐκ Χάγης (1838—1923). Ἐδίδαξε κατ' ἀρχὰς ἐν Χάγῃ, Οὐτρέχτῃ καὶ Ντέλφ, εἶτα διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου καὶ διευθυντὴς τοῦ ἀστεροσκοπείου τοῦ Leyden (Λουγδούνου). Ἔγραψε πολλὰς πραγματείας ἐπὶ διαφόρων παρατηρήσεών του καὶ ἄλλας θεωρητικοῦ περιεχομένου, ἐν αἷς καὶ μελέτην περὶ καταρτισμοῦ τοῦ ἀστρονομικοῦ χάρτου τοῦ οὐρανοῦ. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε μετὰ τοῦ Σραῖτερ ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀερογραφικαὶ παρατηρήσεις διὰ τὴν μελέτην τοῦ Ἄρεως» (1873). Χ. Ι.

**Μπακὼν** (Bacon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἰθαγενῶν τῶν Φιλιππίνων νήσων, κειμένη ἐπὶ τῆς νήσου Λουσόν, ἐντὸς τοῦ κόλπου Ἀλμπαΐυ, 32 χλμ. πρὸς ΝΑ. τῆς πόλεως Ἀλμπαΐυ. Ἡ περιοχὴ αὐτῆς εἶναι εὐφορωτάτη, ὑπέρκειται δ' αὐτῆς τὸ ἡφαίστειον *Μπακὼν* ἢ *Πόκντολ* (ὕψ. 4667 ποδ.), ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐκρέει θερμοπηγὴ θερμοκρασίας 70° Κ. Κάτ. 15.000. Χ. Ι.

**Μπὰλ** (Bâle) *[Γεωγρ.]*. Γαλλικὴ ὀνομασία τῆς ἑλβετικῆς πόλεως Basel (βλ. λ. *Βασιλεία*).

**Μπὰλ** (Bayle), ***Ἀντώνιος***· βλ. λ. *Μπαὶλ Ἀντώνιος*.

— **Μπὰλ** (Bayle), ***νόσος τοῦ —***· βλ. λ. *Μπαὶλ Ἀντώνιος*.

**μπάλα** (ἡ)· βλ. λ. *μπάλλα*.

**Μπάλα** (Bala) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας ἐν Οὐαλλίᾳ καὶ τῇ κομητείᾳ Μεριόνεθ, ἐπὶ τῆς Β. ὄχθης τῆς λίμνης Μπάλα. Κάτ. 15.537. Εἶναι πόλις παλαιοτάτη, ἔχουσα θεολογικὴν σχολὴν καὶ ἐργοστάσια ζύθου καὶ φανελοποιίας. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν τὰ ἐρείπια τριῶν ρωμαϊκῶν στρατοπέδων. —2) Λίμνη τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἡ μεγίστη τῆς Οὐαλλίας, ἣν διέρχεται ὁ ποταμὸς Ντά. Ἔχει μῆκος 6 ½ χλμ., πλάτος 1.200 μ. καὶ βάθος 91. Κεῖται εἰς ὕψος 175 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης καὶ εἶναι πλουσία εἰς ἰχθῦς. Μ. Δ. Β.

**Μπάλα** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τοῦ δήμου Πατρέων τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 143.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μεσσήνης τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ ὀρεινῆς θέσεως, 1 ½ ὥραν πρὸς Α. τοῦ Μελιγαλᾶ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 372. Χ. Δ.

**Μπαλαγιὰν** (Balayan ἢ Balayang) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἀμερικανικῆς ἀποικίας τῶν Φιλιππίνων νήσων, ἐπὶ τῆς νήσου Λουσόν. Κάτ. 24.800. Κεῖται ἐπὶ ὁμωνύμου κόλπου, 88 χιλ. ΝΔ. τῆς Μανίλης, εἶναι στρατιωτικὸς σταθμὸς καὶ λιμὴν καὶ ἐξάγει ζάχαριν, κακάον καὶ βανίλλην. Μ. Δ. Β.

**Μπάλαγκατ** (Balaghat) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ περιφερείᾳ Ναγκποὺρ τῶν Κεντρικῶν ἐπαρχιῶν. Ἡ ἐπαρχία ἐκτείνεται ἐπὶ ὀροπεδίου τῶν ὀρέων Γκάτς, ἔχει ἔκτασιν 8.000 περίπου τετρ. χλμ. καὶ 388.920 κατ. Ἡ πόλις ἔχει 7.400 κατ. Χ. Δ.

**Μπαλαγκὲρ** (Balaguer), ***Βίκτωρ***. Ἱσπανὸς ἱστορικός, λογοτέχνης καὶ πολιτικὸς (1824—1901). Τῷ 1854 διωρίσθη ἀρχειοφύλαξ ἐν Βαρκελώνῃ, βραδύτερον δὲ καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ αὐτῆς. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι: ἡ «Ἱστορία τῶν τρουβαδούρων» (1878—1880). Τὰ «Ποιήματα» αὐτοῦ, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται «Ὁ τρουβαδοῦρος τοῦ Μονσερράτ» καὶ «Οἱ ἥρωες τῆς θαλάσσης», συνετάχθησαν εἰς τὴν καταλανικὴν διάλεκτον. Ὡσαύτως ἐδημοσίευσε θρύλους καὶ μπαλλάντες: «Ἡ νεότης τοῦ τελευταίου Καταλανοῦ τρουβαδούρου», διηγήματα

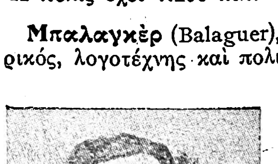

*Βίκτωρ Μπαλαγκέρ.*

«Χουὰν ντὲ Σερραλόγκα» εἰς τὴν καστιλιανὴν διάλεκτον, «Ἱστορία τῆς Καταλανίας» κ. ἄ. Ὁ Μπαλαγκὲρ ἔγραψε καὶ πολλὰ δράματα, τὰ θέματα τῶν ὁποίων παρέλαβεν ἐκ τῆς ἀρχαιότητος καὶ τῆς καταλανικῆς ἱστορίας: «Χουὰν ντὲ Παντίλλια», «Ἀννίβας», «Σαπφώ», «Κοριολανός», «Καῖσαρ», «Νέρων» κ. ἄ. Διὰ τῶν ἔργων του ἠγωνίσθη ν' ἀναγάγῃ εἰς λογοτεχνικὴν περιωπὴν τὴν καταλανικὴν διάλεκτον.
Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγη ἐπανειλημμένως βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1861 καὶ ἐγένετο τετράκις ὑπουργός, κατ' ἀρχὰς τῶν Δημοσίων ἔργων τῷ 1872 καὶ κατόπιν τῶν Ἀποικιῶν. Τῷ 1886 ἐγένετο ἀντιπρόεδρος τῆς βουλῆς καὶ τῷ 1875 μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τῆς Μαδρίτης. Α. Δ.—Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπαλαζὸρ** (Balasor) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρετανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν Βεγγάλῃ, εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Βεγγάλης. Κάτ. 21.362. Εἶναι πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος ἔχοντος ἔκτασιν 5.351 τ. χλμ. καὶ 1.071.300 κάτ. Εἶναι πόλις κυρίως γεωργική, ἐξάγουσα ἄφθονον ὄρυζαν καὶ ἅλας. Ἱδρύθη τῷ 1641 ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ὡς ἐμπορικὸς σταθμὸς καὶ ὑπῆρξεν ἄλλοτε ἐκ τῶν κυριωτέρων ἐμπορικῶν κέντρων τῶν Ἰνδιῶν. Βραδύτερον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Πορτογάλων, οἵτινες παρεχώρησαν ὁριστικῶς αὐτὴν εἰς τοὺς Ἄγγλους τῷ 1803. Μ. Δ. Β.

**μπαλαίνα,** ἡ καὶ *μπανέλα*. Κερατοειδοῦς συστάσεως ἔλασμα, ἐξαγόμενον ἐκ τοῦ στόματος τῆς φαλαίνης καὶ χρησιμοποιούμενον λόγῳ τῆς ἐκτάκτου αὐτοῦ εὐλυγισίας καὶ στερεότητος πρὸς συγκράτησιν καὶ στερέωσιν ζωνῶν κοιλίας καὶ στηθοδέσμων γυναικῶν. Πλὴν τῆς πραγματικῆς μπαλαίνης χρησιμοποιοῦνται εὐρύτατα διὰ τὰς ἰδίας χρήσεις ἐλάσματα καὶ ἐξ ἄλλων ὑλῶν, μεταλλικῆς ἢ κερατοειδοῦς συστάσεως. Σ. Γ.

**Μπαλαῖοι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἄρνης τῆς ἐπαρχίας Ἄνδρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 317. Χ. Δ.

**Μπαλαϊτοὺς** (Balaïtous) *[Γεωγρ.]*. Κορυφὴ τῶν Ἄνω Πυρηναίων ἐν Γαλλίᾳ, ὑψουμένη κατὰ τὸ νοτιοδυτικὸν τμῆμα αὐτῶν. Ὑψόμετρον 3.148 μ. Χ. Δ.

**μπαλὰκ** (balak). Λέξις μογγολικὴ σημαίνουσα πόλις καὶ χρησιμοποιουμένη συχνότατα ὡς πρῶτον συνθετικὸν διαφόρων γεωγραφικῶν ὀνομάτων, ὡς *Μπαλακλάβα*, *Μπαλακὸτ* κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπαλακίρεφ** (Balakireff), ***Μίλι.*** Ρῶσος συνθέτης τῆς «Ὁμάδος τῶν πέντε» (1837—1910). Μετὰ λαμπρὰς σπουδὰς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Καζάν, ἤρχισεν ἐκμανθάνων μουσικήν, ὠθούμενος εἰς τοῦτο παρὰ τοῦ Γκλίνκα. Ὁ οἶκος του ἐγένετο μετ' ὀλίγον τόπος συγκεντρώσεως τῶν μουσικῶν, οἵτινες ὡς ἰδεῶδες εἶχον τὴν ἵδρυσιν ἐθνικῆς ρωσικῆς σχολῆς. Περὶ τὸν Μπαλακίρεφ προσεκολλήθησαν ἀρχικῶς ὁ Καῖσαρ Κουΐ καὶ εἶτα οἱ Μουσόργκσκι, Μποροντὶν καὶ Ρίμσκυ - Κορσακώφ, οἱ ἀποτελέσαντες τὴν περίφημον ὁμάδα τῶν «Πέντε». Ὁ Μπαλακίρεφ, ἂν καὶ δὲν ἦτο ὁ πρεσβύτερος πάντων, ἐγένετο ὁ διδάσκαλος τῶν ὁμοϊδεατῶν του, ὑπῆρξεν ἡ πραγματικὴ ψυχὴ τοῦ ὁμίλου καὶ ὁ κύριος ἀντιπρόσωπος τῆς μουσικῆς μεταρρυθμίσεως τῆς πατρίδος του. Τῷ 1882 ἵδρυσεν ἐν Πετρουπόλει μετὰ τοῦ Λομακὶν τὴν «Μουσικὴν σχολήν». Ἡ τεχνοτροπία του βασίζεται ἀπολύτως ἐπὶ τοῦ ρωσικοῦ λαϊκοῦ τραγουδιοῦ, τὸ ὁποῖον γνωρίζει νὰ ἐπενδύῃ μὲ λαμπρὰς ἀνατολικὰς ἁρμονίας καὶ μὲ γραφικωτάτην ἐνορχήστρωσιν. Ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν προπαγανδισμὸν τῶν ἰδεῶν καὶ τὴν διδασκαλίαν τῶν φίλων του, ἔγραψε σχετικῶς ὀλίγα, ὧν ἀξιολογώτερα εἶναι: τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Ταμάρα», δύο συμφωνίαι, εἰσαγωγαὶ (ἱσπανική, τσεχικὴ καὶ ρωσική), ἡ περίφημος φαντασία Ἰσλαμέ, ἐμπνευσθεῖσα ἀπὸ τὰ καυκασιανὰ δημώδη ᾄσματα, πλεῖσται μελῳδίαι καὶ μεταγραφαὶ κτλ. Ὁ Μπαλακίρεφ διατρέχων τὰ ρωσικὰ χωρία κατήρτισε πλουσίαν συλλογὴν δημωδῶν ᾀσμάτων, ἀπ' εὐθείας ἐκ τοῦ στόματος τοῦ λαοῦ, ἣν ἐξέδωκε τῷ 1866 μετὰ θαυμαστῆς ἐναρμονίσεως. Σ. Γ.

**Μπαλακλάβα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τοῦ Εὐξείνου εἰς τὸ μέσον τῆς ΝΔ. πλευρᾶς τῆς χερσονήσου τῆς Κριμαίας (πλάτ. 44° 30' Β., μηκ. 33° 36' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 964: Cape Lukul to Balaklava bay). Εἶναι ὁ *Συμβόλων λιμὴν* (*Πτολ.* Γ, στ, 2, Didot) τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

— **Μπαλακλάβα** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς αὐτονόμου σοβιετικῆς δημοκρατίας τῆς Κριμαίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ΝΔ. ἀκτῆς τῆς χερσονήσου Κριμαίας (Ταυρικῆς χερσονήσου) καὶ εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. τῆς Σεβαστουπόλεως, μεθ' ἧς συνδέεται ἀπὸ τοῦ 1926 τροχιοδρομικῶς. Κάτ. 2.540 (1926), ἐξ ὧν 78% Ἕλληνες ρωσόφωνοι.

—*[Ἱστορ.]* Κατὰ τὸν Κ. Κίττερ καὶ ἄλλους ὁ ὅρμος τῆς *Μπαλακλάβας* εἶναι ὁ ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου ἐν τῇ Ὀδυσσείᾳ ἀναφερόμενος λιμὴν τῶν *Λαιστρυγόνων*. Ἄλλοι ταυτίζουν τὴν Μπαλακλάβαν μὲ τὴν ὑπὸ τοῦ Στράβωνος ἀναφερομένην πόλιν *Παλάκιον*, ἣν ἵδρυσαν κατὰ τὸν Β'—Α' π. Χ. αἰῶνα οἱ Σκύθαι πρὸς τιμὴν τοῦ Πάλακος, υἱοῦ τοῦ βασιλέως τῶν Σκυθῶν Σκιλούρου. Ἐξηκριβωμένον ὅμως εἶναι ὅτι ὁ ὅρμος τῆς Μπαλακλάβας εἶναι ὁ ὑπὸ τοῦ Στράβωνος ἀναφερόμενος *Συμβόλον*, *Συμβόλου* ἢ *Συμβόλων λιμήν*, ὑφ' ἣν ὀνομασίαν ἦτο οὗτος γνωστὸς καὶ εἰς τὴν δημοκρατίαν τῆς Χερρονήσου, ἧς ἀπετέλει τὸ ἀνατολικὸν σύνορον. Κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἡ Μπαλακλάβα κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γενουησίων οἵτινες τὴν μετωνόμασαν εἰς *Τσεμπάλο*. Τῷ 1433 ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων τῇ βοηθείᾳ τοῦ πρίγκιπος τῆς Μαγκοὺπ Ἀλεξίου, ἀλλὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐξεδιώχθησαν οὗτοι ὑπὸ τῶν Γενουησίων, οἵτινες κατεῖχον ταύτην μέχρι τοῦ 1475, ὅτε ἐξεδιώχθησαν καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἐπὶ Μωάμεθ Β' τοῦ Πορθητοῦ. Τῷ 1784, μετὰ τὴν προσάρτησιν τῆς Κριμαίας εἰς τὴν Ρωσίαν, μετετέθη ἐνταῦθα ἐκ Κὲρτς καὶ Γενὶ-καλὲ τμῆμα τοῦ ἐξ Ἀρχιπελαγιτῶν κυρίως Ἑλλήνων ἀποτελουμένου «Γραικικοῦ στρατοῦ» τοῦ πρίγκιπος Ὀρλώφ, ὅπερ κατέστη ὁ πυρὴν τοῦ μετ' ὀλίγον ἐξ Ἑλλήνων ἀποκλειστικῶς συγκροτηθέντος «ἑλληνικοῦ τάγματος τῆς Μπαλακλάβας», τὸ ὁποῖον διετηρήθη μέχρι τοῦ 1859. Τῷ 1787, πρὸς μεγαλοπρεπεστέραν ὑποδοχὴν τῆς εἰς περιοδείαν ἀνὰ τὴν Κριμαίαν ἐξελθούσης Αἰκατερίνης Β', ἐσχηματίσθη ἐκ τῶν συζύγων καὶ ἀδελφῶν τῶν ἀνδρῶν τοῦ τάγματος τούτου πρότυπον «Ἀμαζονικὸν τάγμα Ἑλληνίδων» ἐξ 100 ἁμαζόνων ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τῆς Ἑλένης Τσαπώνη, κατόπιν Σιντένσκυ. Κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 συνέτρεξαν καὶ οἱ κάτοικοι τῆς Μπαλακλάβας, ὑπὸ τὸν πρόκριτον Θεοδόσιον Ρεβελιώτην. Κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον ἡ Μπαλακλάβα κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, χρησιμοποιηθεῖσα ὡς βάσις ἀνεφοδιασμοῦ τοῦ στρατοῦ των. Ε. Ι. Χ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ὁ λιμὴν καὶ τὸ ὑψίπεδον τῆς *Μπαλακλάβας* ἐγένοντο πασίγνωστα ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου (1854—1855), ὁπότε ὁ μὲν λιμὴν ἐχρησιμοποιήθη ὡς βάσις τῶν Ἄγγλων, ἐπὶ δὲ τοῦ ὑψιπέδου (ὀροπεδίου) διεξήχθη ἡ φερώνυμος μάχη. Τὴν 24ην Ὀκτωβρίου 1854 οἱ ἀντίπαλοι εὑρίσκοντο ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, δηλαδή, οἱ μὲν Σύμμαχοι (4 μεραρχίαι, ἐξ ὧν μία ἀγγλική, μία τουρκική, δύο γαλλικαί, ἅπασαι ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μπουσκὲ) ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς παρυφῆς τοῦ ὑψιπέδου μὲ μέτωπον πρὸς τὴν πεδιάδα Μπαλακλάβας, οἱ δὲ Ρῶσοι (2 μεραρχίαι) ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Τσερνάγια. Τὴν πρωΐαν τῆς 25ης Ὀκτωβρίου 1854 οἱ Ρῶσοι προσεπέρασαν διὰ τῆς γεφύρας τοῦ Τρακτὶρ ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Τσερνάγια, χωρὶς νὰ παρενοχληθῶσιν ὑπὸ τῶν Συμμάχων, εὐθὺς δ' ἀμέσως ἤρξαντο τῆς ἐπιθέσεως κατὰ τοῦ δεξιοῦ τῶν Συμμάχων (Ἄγγλων καὶ Τούρκων), ὅπερ ἀπώθησαν τάχιστα καὶ τοιουτοτρόπως ἤρχισαν ἀπειλοῦντες τὰς μετὰ τοῦ λιμένος Μπαλακλάβας γραμμὰς συγκοινωνιῶν. Ἀλλά, διὰ τῆς ἐσπευσμένης παρεμβάσεως γαλλικῶν δυνάμεων, ἀρχικῶς μὲν ἀνεκόπη ἡ περαιτέρω προχώρησις τῶν Ρώσων, ἐντὸς δ' ὀλίγου ἐξετελέσθη ἡ ἀντεπίθεσις ἐκ μέρους τῶν Συμμάχων, ἐξαναγκάσασα τοὺς Ρώσους νὰ ὑποχωρήσωσιν ἐντὸς τῆς πρωΐας τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας πέραν τοῦ Τσερνάγια (ἐπὶ τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ ὄχθης). Κατὰ τὴν μάχην ταύτην ἡ ἀγγλικὴ ταξιαρχία ἱππικοῦ, ἐπελάσασα κατὰ τῶν Ρώσων πρὸς ἀνακούφισιν τῶν ἀγγλοτουρκικῶν στρατευμάτων (πρὸ τῆς παρεμβάσεως τῶν Γάλλων), ὑπέστη πλήρη πανωλεθρίαν, ἀπολέσασα τὸ ἥμισυ τῆς δυνάμεώς της, χωρὶς τοὐλάχιστον νὰ δυνηθῇ νὰ ὑποβοηθήσῃ τὰ φιλικὰ της πεζικά. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

*Μάχη τῆς Μπαλακλάβας τῆς 25ης Ὀκτωβρίου 1854.*

**μπαλαλάϊκα.** Ρωσικὸν λαϊκὸν ἔγχορδον ὄργανον, γνωστὸν ἤδη ἐν Ρωσίᾳ ἀπὸ τῶν τελῶν τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Ἀνήκει εἰς τὴν οἰκογένειαν τῆς ντόμρας καὶ διεδόθη διὰ τῶν Τατάρων καὶ τῶν Μογγόλων ἐπιδρομέων. Ἡ μπαλαλάϊκα ἀποτελεῖται ἐξ ἠχείου, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τριγωνικοῦ, καὶ φέρει ἐπὶ τῆς ἠχητικῆς πλακὸς κοχλίας τινὰς (ὀπάς). Αἱ χορδαί της, ἐξ ἐντέρου ἢ μετάλλου, ἀρχικῶς δύο, συνήθως τρεῖς καὶ ἐνίοτε τέσσαρες, ἐκτείνονται ἐπὶ μακρᾶς λαβῆς, φερούσης χωρίσματα ὡς τὰ τοῦ μανδολίνου ἢ τῆς κιθάρας. Ἡ κροῦσις ἐπιτυγχάνεται διὰ τῶν δακτύλων τῆς δεξιᾶς χειρός, τέλος δὲ τὸ χόρδισμα γίνεται κατὰ ποικίλους τρόπους, ὧν ὁ

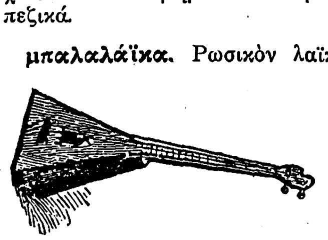

*Μπαλαλάϊκα.*

συνηθέστερος εἶναι: 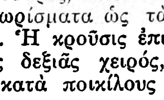

ἐνίοτε δὲ 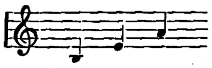 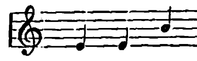

ἢ 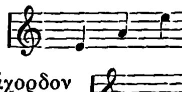

Διὰ τὴν τετράχορδον μπαλαλάϊκαν: 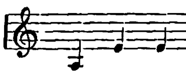

Γ. Σ.

**Μπαλαμοὺτ** ***Ἀντὰ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ἔπακτο*.

**μπαλαμοῦτι** (τό)· χαρτοπαικτικὸς ὅρος: ἡ κατὰ τὴν χαρτοπαιξίαν ἀπάτη· κατ' ἐπέκτασιν δολερὰ ἐνέργεια, σκοποῦσα τὴν ἐξαπάτησιν τοῦ καθ' οὗ αὕτη στρέφεται.

**Μπαλαμοῦτι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ἰτιὰ* (βλ. λ.).

**Μπαλάμπακ** (Balabac) *[Γεωγρ.]*. Νῆσις τοῦ ἀρχιπελάγους τῶν Φιλιππίνων, κειμένη πρὸς τὴν ΝΔ. ἐσχατιὰν αὐτοῦ, ἐπὶ τοῦ μετὰ τῆς νήσου Βόρνεο σχηματιζομένου πορθμοῦ. Ἔχει ἔκτασιν 320 τετρ. χλμ. καὶ 22.550 κατ. Ἔχει ὁμώνυμον πρωτεύουσαν καὶ ἐξάγει ἄφθονον ξυλείαν. Μ. Δ. Β.

**Μπαλαμπὰν** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Τραχώνι* (βλ. λ.). —2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Χαλκιδικῆς χωρίου *Μαρμαρᾶς* Νέος (βλ. λ.).

**Μπαλαμπὰν-κιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ροδόπης χωρίου *Διαλαμπὴ* (βλ. λ.).

**Μπαλαμπὰν** ***βέης.*** Εἷς τῶν ἀξιωματικῶν τοῦ σουλτάνου Μωάμεθ τοῦ Β' τοῦ Πορθητοῦ, Ἀλβανὸς τὸ γένος. Λέγεται περὶ αὐτοῦ ὅτι ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος ἐφορμήσας ἐναντίον τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατὰ τὴν πολιορκίαν της. Ἀποσταλεὶς κατόπιν ἐναντίον τοῦ Γεωργίου Καστριώτου (Σκενδὲρ βέη) ἐπὶ κεφαλῆς στρατοῦ 30.000 ἀνδρῶν, ἔλαβε μέρος καὶ εἰς τοὺς κατόπιν πολέμους κατὰ τοῦ ἥρωος τῆς Ἀλβανίας. Ἔπεσε κατά τινα ἔφοδον ἐναντίον τῆς Κροΐας. Ν. Μ.

**Μπαλαμπάνγκαν** (Balambangan) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸν ἰθαγενὲς κράτος τῆς Ἰάβας (βλ. *Μπανγιουβάνγκι*).

**Μπαλαμπανοῦ,** ἡ *Μπαλαμπανὴ* *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λεονταρίου (Ἀσλανὰρ) τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 231. Χ. Δ.

**Μπαλαμπάνωφ,** ***Ἀλεξάντρ.*** Σύγχρονος Βούλγαρος φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Ἰστὶπ τῆς Μακεδονίας. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Λειψίας καὶ τῷ 1909 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Σόφιας. Μετέφρασεν ἐμμέτρως ὁλόκληρον σχεδὸν τὸ ἔργον τοῦ Σοφοκλέους, Εὐριπίδου καὶ Ἀριστοφάνους, ραψῳδίας τῆς Ὀδυσσείας καὶ Ἰλιάδος, ἐπίσης καὶ πολλοὺς διαλόγους τοῦ Πλάτωνος. Ἀπὸ τοῦ 1923 εἶναι τακτικὸς καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς φιλολογίας», «Ἐξέλιξις τῆς ἑλληνικῆς λυρικῆς ποιήσεως», «Τὸ πνεῦμα τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ δράματος», «Τὸ σύννεφον εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν ποίησιν» κ. ἄ. Ἐπίσης ποιήματα καὶ διηγήματα εἰς διάφορα περιοδικά. Ἀπὸ τοῦ 1921 ἐκδίδει τὸ περιοδικὸν «Rasvigor» καὶ θεωρεῖται εἷς τῶν αὐθεντικωτέρων κριτικῶν τῆς βουλγαρικῆς λογοτεχνίας.

— **Μπαλαμπάνωφ,** ***Ἰβάν.*** Βούλγαρος συγγραφεὺς ἐκ Νευροκοπίου τῆς Μακεδονίας. Συνέγραψεν ἔργα θρησκευτικοῦ περιεχομένου καὶ εἰς ἑλληνικὴν γλῶσσαν γεγραμμένα: «Ὁδηγὸς τῆς εὐσεβείας», «Ἐκλόγιον» καὶ «Κῆπος πολυανθής». Ἀπέθανεν, εἰς βαθύτατον γῆρας, εἰς τὴν μονὴν Παντελεήμονος τοῦ Ἁγίου Ὄρους τῷ 1860.

— **Μπαλαμπάνωφ,** ***Μάρκο.*** Βούλγαρος δημοσιογράφος, συγγραφεὺς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Κλεισούρᾳ τῷ 1837. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἱερατικὴν σχολὴν τῆς Χάλκης καὶ νομικὰ εἰς Παρισίους. Ἐν Κωνσταντινουπόλει ἦτο γραμματεὺς τῆς βουλγαρικῆς Συνόδου καὶ εἷς τῶν διευθυντῶν τοῦ περιοδικοῦ «Tsitalichte» (1890) καὶ τῆς ἐφημερίδος «Vek» (1874). Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ ἐπί τινα ἔτη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου. Πλὴν τῶν ἰδικῶν

Digitized by Google

του ἔργων μετέφρασε καὶ τὸν Μολιέρον, Γκαῖτε καὶ τὴν Γ. Σάνδη. Τ. ΒΑΦΕΙΑΔΗΣ

**Μπαλαμπιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Εἷς ἐκ τῶν 18 συνοικισμῶν τῶν ἀποτελούντων τὴν κοινότητα Λαρδᾶ τῆς ἐπαρχίας Κισάμου τοῦ νομοῦ Χανίων Κρήτης. Κάτ. (1928) 44. Ε. Γ.

**Μπαλάν,** καὶ **Μπαϊλὰν** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Χαλεπίου. Κάτ. 5.000, ὧν ἐλάχιστοι Χριστιανοί. Παρ' αὐτῇ κεῖνται αἱ Σύριαι πύλαι, αἱ ἀπὸ τῆς Κιλικίας εἰς Συρίαν ἄγουσαι καὶ δι' ὧν διελθὼν ὁ Ἀλέξανδρος προσέβαλε καὶ κατενίκησε τὸν Δαρεῖον παρὰ τὸν Ἰσσόν. Εἶναι αἱ *Βαλανέαι* τῶν Βυζαντινῶν.

**Μπαλαναία** ***βιβλιοθήκη***. Παρὰ τὴν *Μπαλαναίαν* σχολὴν (βλ. λ.) οἱ ἀδελφοὶ Μπαλᾶνοι εἶχον ἱδρύσει, κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἐν Ἰωαννίνοις βιβλιοθήκην, ἐν ᾗ εἶχον συγκεντρώσει πλεῖστα σπάνια χειρόγραφα καὶ ἀνεκτιμήτους ἐπιγραφάς. Ἐκάη ὁμοῦ μετὰ τῆς σχολῆς κατὰ τὸν φοβερὸν ἐμπρησμὸν τῶν Ἰωαννίνων, τὸν διαταχθέντα ὑπὸ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, τὴν 13ην Αὐγούστου 1920. [Πρβλ. *Pouqueville*, «Voyage dans la Grèce», τόμ. ε', Paris 1821 σ. 461).

— **Μπαλαναία** ***σχολή***. Οὕτως ἀπεκλήθη ἐκ τοῦ περιφήμου διδασκάλου της Μπαλάνου Βασιλοπούλου ἡ ἐν Ἰωαννίνοις μεγάλη σχολὴ ἡ τῷ 1676 ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἐν Βενετίᾳ ἐμπορευομένου Μάνου (Ἐμμανουὴλ) Γκιούμα. Διδάσκαλοι αὐτῆς ἐχρημάτισαν ὁ ἱερομόναχος Βησσαρίων Μακρῆς (1676—1683), ὁ ἱερεὺς Γεώργιος Σουγδουρῆς (1683—1714), ὁ ἱερεὺς Ἀναστάσιος Παπαβασιλείου (1715), ὁ ἱερομόναχος Μεθόδιος Ἀνθρακίτης (1715—1723), ὁ Μπαλᾶνος Βασιλόπουλος (1723—1760) καὶ ὁ τούτου υἱὸς Κοσμᾶς Μπαλᾶνος (1760—1807), Κωνσταντῖνος Μπαλᾶνος (1807—1818) καὶ Ἀναστάσιος Μπαλᾶνος (1818—1820).

Ὅταν, μετὰ τὴν κατάλυσιν τῆς ἐνετικῆς πολιτείας, τῷ 1797, ἐξέλιπε τὸ ἐν τῇ ἐνετικῇ τραπέζῃ κατατεθειμένον κληροδότημα τοῦ Γκιούμα, δι' οὗ κυρίως συνετηρεῖτο ἡ Μπαλαναία σχολή, ὁ Κοσμᾶς κατώρθωσε διὰ τῶν ἐνεργειῶν του νὰ ἀποσοβηθῇ ἡ οἰκονομικὴ κρίσις, ἥτις ἠπείλει τὴν ὕπαρξιν τῆς σχολῆς, τὸ μὲν ἐπιτυχὼν συνδρομὰς πλουσίων ὁμογενῶν, ὡς τῶν Ζωσιμάδων, οἵτινες τῷ 1828 ἵδρυσαν ἐν Ἰωαννίνοις νέαν σχολήν, τὸ δὲ κατορθώσας ὅπως διὰ πατριαρχικοῦ συγκυκλίου τοῦ ἐθνομάρτυρος πατριάρχου Γρηγορίου Ε' τὸ ἐν χωρίῳ Ζίτσῃ κείμενον σταυροπηγιακὸν μοναστήριον τοῦ προφήτου Ἠλιοῦ τοῦ Θεσβίτου κυρωθῇ ὡς κτῆμα τῆς σχολῆς, ἐπὶ τῷ ὅρῳ νὰ χορηγῶνται κατ' ἔτος τῷ ταμείῳ τῆς μεγάλης Ἐκκλησίας 250 γρόσια (Περιοδικὸν «Παρνασσὸς» 10, 1886, σελ. 68—70). Οὕτως ἠδύνατο ἡ σχολὴ νὰ παρέχῃ εἰς τοὺς πτωχοὺς τροφίμους, πλὴν τῆς μαθήσεως, τροφήν, ἐνδύματα καὶ βιβλία.

Οἱ Μπαλᾶνοι, ἐμπνευσμένοι διδάσκαλοι τοῦ Γένους, προσέφερον ἀνεκτιμήτους ὑπηρεσίας διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν αὐτοῦ καὶ διεμόρφωσαν μαθητάς, οἵτινες μετέδωκαν τὰ φῶτα των εἰς πλεῖστα μέρη τῆς Ἑλλάδος. Οὕτως ἀπόφοιτοι τῆς Μπαλαναίας σχολῆς ἦσαν ὁ Λάμπρος Πάσχος ἐν Λαρίσῃ καὶ Τυρνάβῳ, ὁ Ἰωάννης Πέζαρος ἐν Τυρνάβῳ καὶ ἀλλαχοῦ, ὁ Γρηγόριος Μπαλανίδης καὶ ὁ Τρύφων ἐν Μετσόβῳ, ὁ Γεώργιος Μόστρας ἐν Κονίτσῃ, ὁ Γεώργιος Σγοῦρος ἐν Καλαρρύταις, ὁ Ἰωάννης Βλαχογιάννης ἐν Πρεβέζῃ, ὁ ἱερομόναχος Ἱερεμίας ἐν Δροβιάνῃ, ὁ Ἀμφιλόχιος Παρασκευᾶς ἐν Κοζάνῃ καὶ ἀλλαχοῦ, ὁ Δημήτριος Βόδας ἐν Ἀθήναις, ὁ Νικόλαος Ζαρζούλης ἐν Τρίκκῃ, Ἄθωνι καὶ Ἰασίῳ καὶ ἄλλοι πολλοί. Ὁ μητροπολίτης Ἀθηνῶν Μελέτιος καὶ ὁ Θεόφιλος ὁ Καμπανίας, ὁ Γεώργιος Κωνσταντίνου, ὁ συντάκτης τοῦ λεξικοῦ, καὶ ὁ Γεώργιος Σταύρου ἦσαν ἀπόφοιτοι τῆς Μπαλαναίας σχολῆς.

Κατὰ τὸν φοβερὸν ἐμπρησμὸν τῶν Ἰωαννίνων, τὸν διαταχθέντα ὑπὸ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τῇ 13ῃ Αὐγούστου 1820, κατεστράφη καὶ ἡ Μπαλαναία σχολή. Οἱ Μπαλᾶνοι ἦλθον τότε ἐξ Ἰωαννίνων εἰς Κέρκυραν καὶ οἱ πλεῖστοι αὐτῶν βραδύτερον ἐγκατέστησαν ἐν Ἀθήναις.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Περὶ τῆς Μπαλαναίας σχολῆς καὶ τῶν ἐν αὐτῇ σχολαρχῶν βλ. ἰδίως: *Κοσμᾶ Μπαλάνου*, «Ἔκθεσις συνοπτικὴ ἀριθμητικῆς, ἀλγέβρας καὶ χρονολογίας» (Βιέννη 1798, Προλεγόμενα). — «*Λόγιος Ἑρμῆς*» (Βιέννη 1817, σ. 84—90).—*Κ. Μ. Κούμα*, «Ἱστορία τῶν ἀνθρ. πράξεων» (τόμ. 12, Βιέννη 1832 σ. 5571).— *Π. Ἀραβαντινοῦ*, «Χρονογραφία Ἠπείρου» (τόμ. 2, Ἀθῆναι 1856, σ. 275 ἑ.). — *Α. Παπαδοπούλου Βρετοῦ*, «Νεοελλ. Φιλολογία» (τόμ. 2, Ἀθῆναι 1857, σελ. 51, 106, 185 καὶ 311).—*Ματθαίου Κ. Παρανίκα*, «Σχεδίασμα περὶ τῆς ἐν τῷ ἑλλ. ἔθνει καταστάσεως τῶν γραμμάτων κλπ.» (Κωνσταντινούπολις 1867, σ. 61—66).— *Κ. Σάθα*, «Νεοελλ. Φιλολογία» (Ἀθῆναι 1868, σελ. 519 ἑ. 568—594).—*Γ. Ζαβίρα*, «Νέα Ἑλλὰς» (Ἀθῆναι 1872, σ. 450 ἑ.)—*Β. Μυστακίδου*, «Συμβολὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν ἐν Ἰωαννίνοις σχολείων» («*Παρνασσὸς*» 10, 1886, σ. 55 ἑ.). — *Σπ. Λάμπρου*, «Περὶ τῆς παιδείας ἐν Ἰωαννίνοις ἐπὶ Τουρκοκρατίας» (ἐν «Νέῳ Ἑλληνομνήμονι» 13, 1916, σ. 273 ἑ.).

**Μπαλᾶνος, *Ἀναστάσιος*.** Ἀδελφὸς τοῦ *Κωνσταντίνου Μπαλάνου*, ὅν, θανόντα τῷ 1818, διεδέχθη ἐν τῇ διευθύνσει τῆς Μπαλαναίας σχολῆς. Διετέλεσεν ὁ τελευταῖος διδάσκαλος αὐτῆς, καταστραφείσης κατὰ τὸν διαταγῇ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ ἐμπρησμὸν τῶν Ἰωαννίνων τὴν 13ην Αὐγούστου 1820.

— **Μπαλᾶνος, *Ἀριστείδης Κοσμᾶ*.** Ἐγεννήθη ἐν Ἰωαννίνοις τῷ 1819. Σπουδάσας τὴν νομικὴν ἐν τῇ ἐν Κερκύρᾳ Ἰονίῳ Ἀκαδημίᾳ, ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ 1841. Τῷ 1864 ἐξελέγη βουλευτὴς Ἀττικῆς. Ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1875.

— **Μπαλᾶνος, *Ἀριστείδης Σίμου*.** Ἐγεννήθη τῷ 1876 ἐν Ἀθήναις. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου, δικηγορεῖ ἀπὸ τοῦ 1895. Ὑπὸ τὴν διεύθυνσίν του ἐκδίδεται ἀπὸ τοῦ 1897 ἡ «Ἐφημερὶς τῆς ἑλληνικῆς καὶ γαλλικῆς νομολογίας», ἣν ἵδρυσεν ὁ πατήρ του Σίμος. Ἐξέδωκε καὶ Ἑλληνογερμανογαλλικὸν νομικὸν λεξικὸν (1930).

—**Μπαλᾶνος, *Ἀριστείδης Σπ.*** Ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1866. Ἀπόφοιτος τῆς École Centrale τῶν Παρισίων, ἐξήσκει τὸ ἐπάγγελμα τοῦ μηχανικοῦ. Ἀπέθανε τῷ 1927. Ἔγραψε μελέτην σχεδίου πόλεως Ἀθηνῶν (1917).

— **Μπαλᾶνος *Βασιλόπουλος*.** Διδάσκαλος τοῦ Γένους, ἐξ ἐπιφανοῦς οἰκογενείας, γεννηθεὶς ἐν Ἰωαννίνοις περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1760. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Μεθοδίῳ Ἀνθρακίτῃ, τοῦ ὁποίου ἐγένετο ὁ ἄριστος τῶν μαθητῶν, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ διδασκάλου του (1723) διεδέξατο αὐτὸν ἐν τῇ διευθύνσει τῆς σχολῆς, ἥτις ἐλέγετο συνήθως «Πρώτη σχολὴ Ἰωαννίνων», ὑπὸ δὲ τοῦ ἰδίου ἀπεκλήθη «Ἀρχιγυμνάσιον». Ἐπὶ 37 ὁλόκληρα ἔτη ἐδίδαξε καὶ διηύθυνε τὴν σχολὴν ταύτην μετὰ τοσαύτης φήμης καὶ ὑπολήψεως καὶ καρποφορίας, ὥστε ἔκτοτε ἐκαλεῖτο αὐτὴ *Μπαλαναία*. Ὁ Μπαλᾶνος, κατὰ τὸν Ζαβίραν, διεκρίθη κυρίως ὡς μαθηματικὸς ἄριστος, ὅσον οὐδεὶς τῶν συγχρόνων του. Ἄγαν συντηρητικὸς καὶ δυσπιστῶν πρὸς τὰ νεώτερα φιλοσοφήματα, ἐνέμενε μονομερῶς εἰς τὰ παραδεδομένα, θεωρῶν ὡς καταδικαστέαν πᾶσαν νεωτέραν θεωρίαν καὶ ἐμπνέων μάλιστα τὴν κατὰ τῶν

*Μπαλᾶνος Βασιλόπουλος.*

νεωτέρων μεθόδων ἀποστροφήν. Λόγῳ τῶν ὑπερσυντηρητικῶν του τάσεων ἦλθεν εἰς προστριβὰς πρὸς τὸν Εὐγένιον Βούλγαριν, διευθύνοντα τὴν Μαρουτσαίαν σχολὴν τῶν Ἰωαννίνων. Ὁ Μπαλᾶνος Βασιλόπουλος διεκρίθη καὶ ὡς συγγραφεύς, τὰ δὲ ὑπ' αὐτοῦ γραφέντα ἔργα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁδὸς μαθηματικῆς, ἡ σειρὰ βαθμηδὸν προϊοῦσα, περιεκτικὴ τῶν κατ' εἶδος κυριωτέρων τῆς μαθήσεως πραγματειῶν, οἷον τῶν στοιχείων τοῦ Εὐκλείδου, σφαιρικῶν κατὰ Θεοδόσιον, γεωμετρίας θεωρητικῆς καὶ πρακτικῆς, τριγωνομετρίας, τοῦ περὶ κρικωτῆς σφαίρας κατὰ Πρόκλον, τοῦ περὶ χρήσεως σφαιρῶν, ἀστρολαβίου, γεωγραφίας καὶ ὀπτικῆς» εἰς τόμους 3 (Ἑνετίῃσιν 1749). Νομίσας ὅτι εὗρε τὴν λύσιν τοῦ καλουμένου δηλίου προβλήματος «δύο εὐθειῶν δοθεισῶν, δύο μέσας ἀναλόγους εὑρεῖν κατὰ συνεχῆ γεωμετρικὴν ἀναλογίαν», ἀνεκοίνωσε τὰ πορίσματα τῶν μελετῶν του εἰς τὰς Ἀκαδημίας Πετρουπόλεως, Βρεττανίας, Ὁλλανδίας, Παρισίων, Βερολίνου, Ἄλλης καὶ Βονωνίας, οἱ δὲ μαθηταί του Ν. Ζερζούλης καὶ Γ. Ζεπελοβίτης ἐξέδωκαν τὴν ὑπὸ τοῦ Μπαλάνου προτεινομένην λύσιν ἐν Ἑνετίᾳ.

Τῆς πραγματείας ταύτης λαβὼν γνῶσιν ὁ Εὐγένιος Βούλγαρις, διδάσκων τότε ἐν τῇ Ἀθωνιάδι σχολῇ, ἀπεκάλεσε παραλογισμὸν τὴν προτεινομένην λύσιν, στηριζομένην «σαθροτάτοις θεμελίοις τοῦ ψεύδους». Βραδύτερον ὁ υἱὸς τοῦ Μπαλάνου *Κοσμᾶς*, πρὸς ὑπεράσπισιν τῆς μνήμης τοῦ πατρός του, ἐξέδωκε βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀντιπελάργησις», ἐν τῷ ὁποίῳ περιέχονται ἡ λύσις ἡ δοθεῖσα ὑπὸ τοῦ Μπαλάνου, αἱ ἀνακοινώσεις του πρὸς τὰς ἀκαδημίας, ἡ ἀπάντησις τῆς ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως καὶ ἡ ἐπίκρισις τοῦ Βουλγάρεως, γενομένη ἐν ἐπιστολιμαίᾳ διατριβῇ πρὸς τὸν διδάσκαλον καὶ σύγκελλον Τρύφωνα. Ἐν χειρογράφοις διεσώθησαν οἱ «Ἀφορισμοὶ» τοῦ Ἱπποκράτους, ἐσχολιασμένοι κατὰ Γαληνόν, κατεστρωμένοι δὲ εἰς πεζὴν φράσιν ὑπὸ τοῦ Μπαλάνου. Πρόκειται περὶ ἀξιολόγου μεταφράσεως εἰς τὴν ὁμιλουμένην τότε γλῶσσαν ἑκατὸν ἐκ τῶν ἀφορισμῶν τοῦ Ἱπποκράτους καὶ αἰτιώδους ἑρμηνείας αὐτῶν, ἐπὶ τῇ βάσει κυρίως τῶν εἰς αὐτοὺς ὑπομνημάτων τοῦ Γαληνοῦ.

Ὁ Μπαλᾶνος Βασιλόπουλος ἀπέλαυε μεγίστης ὑπολήψεως παρὰ τοῖς συγχρόνοις του, ὑπὸ δὲ τῶν μαθητῶν του ἀπεκαλεῖτο ὕπατος φιλοσόφων, ἀρχικαθηγητής, πολυΐδμων, σοφώτατος, πάμμεγας εὖχος Ἠπείρου κ. τ. λ. [*Δ. Σ. Μπαλάνου*, Οἱ Μπαλαναῖοι διδάσκαλοι τοῦ Γένους ἐν «Ἠπειρωτικοῖς Χρονικοῖς» ἔ. Γ σ. 229 ἑ.]

—**Μπαλᾶνος, *Δημήτριος Σπ.*** Ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1862. Διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Παρισίοις. Ἐπανελθὼν διωρίσθη ἐπιμελητὴς τοῦ Ἀρεταιείου καὶ τοῦ Δημοτικοῦ νοσοκομείου, καὶ τῷ 1891 ὑφηγητὴς τῆς μαιευτικῆς καὶ γυναικολογίας, διατελέσας τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του (1907). Αἱ κυριώτεραι τῶν μελετῶν του εἶναι αἱ ἑξῆς: «Μελέτη περὶ τῆς μονοχρόνου λιθοθρυψίας κατὰ Bigeloff» (Ἀθῆναι 1884), «Κύστις πολλαπλῆ τῆς ᾠοθήκης. Ὠοθηκοτομία» (Ἀθῆναι 1885), «Περὶ τεχνητοῦ μετασχηματισμοῦ» (διατριβὴ ἐπὶ ὑφηγεσίᾳ, Ἀθῆναι (1890), «Αἱ πρόοδοι τῆς μαιευτικῆς καὶ γυναικολογίας» (λόγος ἐναρκτήριος, Ἀθῆναι 1891), «Sur les résultats du curettage de l'uterus (μελέτη πρὸ τοῦ ἐν Ρώμῃ ια' διεθνοῦς ἰατρικοῦ συνεδρίου), «Ἡ δι' ἐνέσεων κοκκαΐνης ὑπὸ τὸν ἀραχνοειδῆ μήνιγγα τοῦ νωτιαίου μυελοῦ ἀναλγησία κατὰ τὰς ἐγχειρήσεις καὶ τοὺς τοκετούς» (Ἀθῆναι 1901), «Ὀλίγα τινὰ περὶ πυγοπαγῶν καὶ διπλῶν ἐν γένει τεράτων» (Ἀθῆναι, «Ἰατρ. καὶ φαρμακ. δελτίον» 1901), «Ἔκθεσις περὶ τοῦ ἐν Ρώμῃ δ' διεθνοῦς μαιευτικοῦ καὶ γυναικολογικοῦ συνεδρίου» (Ἀθῆναι 1902).

— **Μπαλᾶνος, *Δημήτριος Σίμου*.** Θεολόγος γεννηθεὶς τῷ 1877 ἐν Ἀθήναις. Ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ, ὑφ' οὗ καὶ ἀνηγορεύθη διδάκτωρ, ἔπειτα δὲ συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Γερμανίᾳ. Ἐκεῖθεν ἐπανελθὼν ὑπηρέτησεν ἀπὸ 1904—1918 ὡς λειτουργὸς τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως ἐν Ἀθήναις. Τῷ 1905 διωρίσθη ὑφηγητὴς τῆς δογματικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν, τῷ δὲ 1915 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ Ὀρφανοτροφείου Χατζηκώνστα, εἰς τὴν ἀναδιοργάνωσιν τοῦ ὁποίου μεγάλως συνετέλεσε. Τῷ 1924 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς πατρολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, τῷ δὲ 1931 ἐξελέγη τακτικὸν μέλος τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν. Ἀπὸ τοῦ Ἰουλίου τοῦ 1926 μέχρι τοῦ Νοεμβρίου τοῦ 1928 διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ θεολογικοῦ τμήματος τῆς συντάξεως τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας», εἰς τὴν διοργάνωσιν τῆς ὁποίας ἐπίσης προσήνεγκε πολυτίμους ὑπηρεσίας. Μετέσχεν εἰς τὰ παγχριστιανικὰ συνέδρια τῆς Κοπεγχάγης, τῆς Στοκχόλμης, τῆς Λωζάννης καὶ τῆς Πράγας. Ἐξέδωκε πολλὰς ἐπιστημονικὰς πραγματείας, μεταξὺ τῶν ὁποίων αἱ ἑξῆς: «Εἶναι ἡ Ὀρθόδοξος ἑλληνικὴ Ἐκκλησία μόνον κοινωνία λατρείας;» (1904), «Περὶ δικαιώσεως» (1904), «Περὶ ὑπάρξεως τοῦ Θεοῦ» (1905), «Εἶναι ἡ θεολογία ἐπιστήμη;» (1906), «Ἡ ὁμολογία Κυρίλλου τοῦ Λουκάρεως» (1906 καὶ 1907), «Κρίσις Δογματικῆς Ἀνδρούτσου» (1907), «Ἐκκλησία καὶ θέατρον» (1909). «Ἡ γυνὴ ἐν ταῖς θρησκείαις» (1910), «Περὶ ἁγίας Τριάδος» (1911), «Ἡ καῦσις τῶν νεκρῶν» (1912), «Ἡ χρῆσις τῶν κατηχήσεων» (1915), «Ἡ διδασκαλία τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης ἐν τοῖς σχολείοις» (1917), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν δογμάτων» (1919), «Σύμβολα καὶ συμβολικὰ βιβλία» (1919), «Ἀπόστολος Μακράκης» (1920), «Αἱ θρησκευτικαὶ ἰδέαι τοῦ Κοραῆ» (1920), «Πολιτεία καὶ ἐκκλησία» (1920), «Ἰσίδωρος Πηλουσιώτης» (1922), «Ἡ πολυτέλεια κατὰ τοὺς χρόνους τῶν πατέρων τῆς Ἐκκλησίας» (1922), «Ἐρνέστος Ρενὰν» (1923), «Ἀλεξ. Λυκοῦργος» (1923), «Λόγος ἐναρκτήριος εἰς πατρολογίαν» (1924), «Χριστιανισμὸς καὶ σκηνὴ» (1925), «Εἶναι ἀναγκαία καὶ σκόπιμος ἡ σύγκλησις οἰκουμενικῆς συνόδου;» (1925), «Οἱ τρεῖς ἱεράρχαι καὶ ὁμιλεῖ ἡ ἐποχή των» (1926), «Ἀνακοινώσεις καὶ ὁμιλίαι ἐν Λωζάννῃ» (1927), «Πῶς παρηγοροῦν τοὺς πενθοῦντας οἱ πατέρες τῆς Ἐκκλησίας» (1928), «Σπυρίδων Λάμπρος» (1929), «Οἱ Μπαλᾶνοι» (1930). Τὸ δὲ μέγιστον καὶ σπουδαιότατον τῶν ἔργων του εἶναι ἡ «Πατρολογία» (1930). Ἐπίσης ἐδημοσίευσε καὶ διαφόρους πανηγυρικοὺς λόγους, ἐκλαϊκευτικὰ θεολογικὰ καὶ θρησκευτικὰ ἔργα, σχολικὰ θρησκευτικὰ βιβλία καὶ διαφόρους πραγματείας καὶ κρίσεις εἰς θεολογικὰ καὶ ἐκκλησιαστικὰ περιοδικά, λεξικά, ἡμερολόγια καὶ ἐφημερίδας. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας».

—**Μπαλᾶνος, *Κοσμᾶς*.** Υἱὸς τοῦ *Μπαλάνου Βασιλοπούλου*, ὃν θανόντα τῷ 1760 διεδέχθη ἐν τῇ διευθύνσει τῆς ἐν Ἰωαννίνοις Μπαλαναίας σχολῆς. Γεννηθεὶς τῷ 1731 ἐν Ἰωαννίνοις, ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ πατρί, ὃν καὶ ἐβοήθει ἐν τῷ διδακτικῷ του ἔργῳ κατὰ τὰ τελευταῖά του ἔτη. Γενόμενος μέγας οἰκονόμος Ἰωαννίνων διηύθυνε τὴν σχολὴν ἐπὶ 47 ὁλόκληρα ἔτη (1760—1807), φημισθεὶς καὶ αὐτός, ὡς ὁ πατήρ του, διὰ τὴν σοφίαν του καὶ τὴν διδακτικήν του ἱκανότητα, ἀναδειχθεὶς «εἷς τῶν καλυτέρων καὶ φιλομαθεστέρων λογίων τοῦ ἡμετέρου ἔθνους» καὶ εἰς ἄκρον τιμώμενος ὑπὸ τῶν μαθητῶν του, ὧν πολλοὶ διέπρεψαν βραδύτερον ὡς διδάσκαλοι τοῦ γένους. Ἄγαν συντηρητικός, ὡς καὶ ὁ πατήρ του, διεφέρετο πρὸς τὸν ἀπὸ τοῦ 1791 προϊστάμενον τῆς Καπλανείου σχολῆς Ἀθανάσιον Ψαλλίδαν, τὸν ὁποῖον οἱ τῆς Μπαλαναίας σχολῆς ἐθεώρουν ὡς βολταιριστὴν καὶ ἐλευθερόφρονα. Ὁ Κοσμᾶς ἔγραψε καὶ μαθηματικὸν σύγγραμμα ὑπὸ

Digitized by Google

…ὸν τίτλον «Ἔκθεσις συνοπτικὴ ἀριθμητικῆς, ἀλγέβρας …καὶ χρονολογίας» (Βιέν…η 1798, σελ. 374 εἰς …ον), ὅπερ ἀφιέρωσε …οῖς ἀδελφοῖς Ζωσι…ᾶ καὶ ἔγραψε κυ…ίως χάριν τῶν μα…ητῶν του. Ἐν χει…ογράφῳ σῴζεται …αὶ ἱστορικὸν τῆς Ἠπείρου, κατὰ πα…άδοσιν Κοσμᾶ Μπα…άνου. Ὑπὸ τοῦ …ρεμμύδα («Περὶ ἑλ…ην. γλώσσης») διεσώ…ησαν καί τινες ἐπι…τολαί του. Ὁ Κο…μᾶς ἐκήρυττε συ…νάκις καὶ ἀπὸ τοῦ …μβωνος, ἑρμηνεύων …ὰς Γραφάς.

*Κοσμᾶς Μπαλᾶνος.*

— **Μπαλᾶνος, *Κωνσταντῖνος*.** Ἀδελφὸς τοῦ *Κο…μᾶ Μπαλάνου*, ὃν διεδέχθη ἐν τῇ διευθύνσει τῆς …Μπαλαναίας σχολῆς (1807—1818). Ἐπεκαλεῖτο καὶ *…Μπαλανίδης* καὶ *Καμινάρης*. Ἐλλόγιμος ἀλλ' ὑπερά…αν συντηρητικὸς καὶ παραγνωρίζων τὴν ἀξίαν …ῶν νεωτέρων προόδων καὶ μεθόδων, συνετέλεσεν …ὶς παρακμὴν τῆς σχολῆς. Πρὸς χρῆσιν τῶν μα…θητῶν του εἶχεν ἐκδώσει ἀνθολογίαν.

— **Μπαλᾶνος, *Νικόλαος*.** Ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις …τῷ 1860. Σπουδάσας εἰς τὴν ἐν Παρισίοις σχολὴν …τῶν γεφυροποιῶν, τῷ 1883 ἔλαβε δίπλωμα πολι…τικοῦ μηχανικοῦ καὶ κατετάχθη εἰς τὸ σῶμα τῶν …δημοσίων ἔργων. Ἀπὸ τοῦ 1895 τῷ ἀνετέθη ἡ …διεύθυνσις τῶν ἐργασιῶν συντηρήσεως καὶ ἀνα…στηλώσεως τῶν μνημείων τῆς Ἀκροπόλεως καὶ …διαφόρων ἄλλων μνημείων. Ἀπὸ τοῦ 1911 ἀνετέθη …αὐτῷ ἐπιπροσθέτως ἡ διεύθυνσις τοῦ ἀρχιτεκτονι…κοῦ τμήματος ἐν τῷ ὑπουργείῳ Παιδείας μέχρι …τοῦ 1930, ὅτε ἀπηλλάγη, λόγῳ ὁρίου ἡλικίας, δι' …ειδικοῦ νόμου ἀνατεθείσης αὐτῷ τῆς ἐξακολουθή…σεως τῶν ἔργων συντηρήσεως καὶ ἀναστηλώσεως …τῶν μνημείων τῆς Ἀκροπόλεως.

— **Μπαλᾶνος, *Σῖμος Κοσμᾶ*.** Ἐγεννήθη ἐν Κερ…κύρᾳ τῷ 1830. Σπουδάσας νομικὰ ἐν τῷ Ἐθνικῷ …πανεπιστημίῳ, ἐξήσκει τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα …ἀπὸ τοῦ 1857 ἐν Ἀθήναις. Διετέλεσεν ἐκ τῶν ἱδρυ…τῶν τοῦ Ὠδείου (1871) καὶ σύμβουλος αὐτοῦ, …πρόεδρος τοῦ φιλολογικοῦ συλλόγου Παρνασσοῦ …(1886—1892), νομικὸς σύμβουλος τοῦ πανεπιστη…μίου (1896—1913), μέλος τοῦ ἀνωτάτου συμβου…λίου τοῦ δικηγορικοῦ συλλόγου. Μετὰ τοῦ Ἐπα…μεινώνδα Λουριώτου ἐξέδωκε τὴν «Ἐφημερίδα τῶν …δικαστηρίων καὶ τῆς ἑλληνικῆς νομοθεσίας» (1871—1873) καὶ ἀπὸ τοῦ 1881 ἵδρυσε τὸ νομικὸν περιο…δικὸν «Ἐφημερὶς τῆς ἑλληνικῆς καὶ γαλλικῆς νομολο…γίας», ὅπερ διηύθυνε μέχρι τοῦ 1897, ὅτε τὴν …διεύθυνσιν ἀνέλαβεν ὁ πρωτότοκος υἱός του Ἀρι…στείδης. Ἡ ἐπιστημονικὴ ἐργασία του, ἡ ἀποκει…μένη ἐν τῷ περιοδικῷ αὐτοῦ, δύναται νὰ κατανε…μηθῇ εἰς δύο μεγάλα συμπλέγματα. Τὸ ἓν περι…λαμβάνει τὴν ἐπιστημονικὴν ἐπεξεργασίαν τῶν …ἀποφάσεων τοῦ Ἀρείου Πάγου καὶ τῶν Ἐφε…τείων διὰ παρατηρήσεων καταχωρουμένων ὑπὸ …τὰς ἀποφάσεις ταύτας, τὸ δ' ἕτερον περιλαμβάνει …ἐπιστημονικὰς διατριβάς. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης …καὶ γενικωτέρας τινὰς μελέτας, ἐν αἷς: «Περὶ τῆς …ὑπὸ τῶν πολιτῶν ὀφειλομένης ὑπακοῆς εἰς τὰς δια…ταγὰς τῆς ἀρχῆς καὶ περὶ τῶν ὁρίων τῆς ὑποχρεώ…σεως ταύτης τοῦ πολίτου» (Ἀθῆναι 1869), «Ὁ κόμις …Γκύλφορδ» (Ἀθῆναι 1890). [Βλ. καὶ «Ἐφημερὶς τῆς …ἑλληνικῆς καὶ γαλλικῆς νομολογίας» (41, 1921, 49-80).]

— **Μπαλᾶνος, *Σῖμος Κωνσταντίνου*.** Ἐγεννήθη ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1866. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς, εἰσῆλθε τῷ 1887 εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐσωτερικῶν μέχρι τοῦ 1914, ὅτε ἀπεχώρησε μὲ βαθμὸν τμηματάρχου α' τάξεως. Ἀπὸ τοῦ 1915 ἐξελέγη τρὶς βουλευτὴς τοῦ νομοῦ Εὐβοίας καὶ διετέλεσε πρῶτος ἀντιπρόεδρος τῆς εἰς Γ' ἐθνικὴν συνέλευσιν μεταβληθείσης βουλῆς τοῦ 1920.

— **Μπαλᾶνος, *Σπυρίδων Κοσμᾶ*.** Ἐγεννήθη ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1824, ἐσπούδασε δὲ τὴν ἰατρικὴν ἐν Ἀθήναις καὶ ἐν Παρισίοις. Ἐγένετο τῷ 1856 ὑφηγητὴς τῆς δημοσίας ὑγιεινῆς ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, τῷ 1862 διωρίσθη ἔκτακτος τοῦ αὐτοῦ μαθήματος καὶ τῷ 1875 τακτικὸς καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου διὰ τὴν ἕδραν τῆς ὑγιεινῆς καὶ συφιλοδολογίας. Συνέγραψε πλείστας πραγματείας, ἐν αἷς: «Περὶ τῆς νοθεύσεως τῶν σιτίων, ποτῶν καὶ καρυκευμάτων καὶ τῆς αὐτομάτου αὐτῶν ἀλλοιώσεως» (Ἰατρ. Ἐφημ. Α' 98), «Περὶ σωμασκιῶν» (Γαλην. Α' 39). Μετέφρασεν ἐκ τοῦ γαλλικοῦ μετὰ τοῦ Ἰ. Θεοφανίδου τὸ σύγγραμμα τοῦ Α. Γριζόλου ὑπὸ τὸν τίτλον «Εἰδικῆς παθολογίας στοιχειώδους καὶ πρακτικῆς πραγματεία» (Ἀθ. 1849, 8ον, σελ. 304) καὶ τὸ τοῦ Κουλλεριὲ «Περὶ τῶν ἀφροδισίων νοσημάτων» (3 τόμ., Ἀθ. 1873, 8ον). Ἀπέθανε τῇ 7ῃ Ἀπριλίου 1881. ΑΡ. Π. Κ.

— **Μπαλᾶνος, *Χ*.** Ἐκ τῆς ἠπειρωτικῆς οἰκογενείας τῶν Μπαλάνων. Ζῶν ἐν Θεσσαλονίκῃ κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 ἀπηγχονίσθη ὑπὸ τῶν Τούρκων μετὰ τοῦ ἐπισκόπου Κίτρους καὶ δύο ἄλλων προκρίτων τῆς μακεδονικῆς πρωτευούσης. Πρὸς τιμήν του ὑπάρχει ὁδὸς ἐν Θεσσαλονίκῃ.

**Μπαλάνται** (Balantes). Μαύρη φυλὴ τοῦ λεκανοπεδίου τοῦ Καζαμὰνς ἐν τῇ μεσημβρινῇ Σενεγαμβίᾳ. Εἶναι λαὸς πολεμικὸς καὶ ἡμιάγριος.

**Μπάλα-Ντέβα**· βλ. *Μπάλα-Ράμα*.

**μπαλάντζα** (ἡ), καὶ ***παλάντζα***· δημοτ., ζυγὸς τῶν πλανοδίων λαχανοπωλῶν καὶ ὀπωροπωλῶν, ἐνίοτε δὲ καὶ καταστημάτων, φέρων μίαν πλάστιγγα καὶ κανόνα δεικνύοντα τὸ βάρος τοῦ ζυγιζομένου· ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὴν ζυγαριὰν (ἐκ τοῦ ἰταλ. bilancia).

— *[Θεατρ.]* Καλεῖται *μπαλάντζα* ἐλλειψοειδὴς κύλινδρος, συνήθως ἐκ λαμαρίνας κατεσκευασμένος, ὃν τοποθετοῦν ἀκριβῶς ὄπισθεν τῶν καλουμένων *ἀερίων* πρὸς φωτισμὸν τῶν ἄνω μερῶν τοῦ σκηνικοῦ διακόσμου. Ἐντὸς τοῦ κυλίνδρου αὐτοῦ ὑπάρχει σειρὰ φωτοβολίδων, ὧν τὸ φῶς ἐκχυνεται πρὸς τὴν σκηνὴν ἐκ τῆς ἀνοικτῆς πλευρᾶς τοῦ κυλίνδρου, ἥτις περιβάλλεται διὰ πλεκτοῦ μεταλλικοῦ σύρματος. Ν. Ι. Λ.

**Μπαλαντούρ**, ἢ ***Μπελαντόρ***. Ἄραψ ἱστορικὸς καὶ γεωγράφος, ἀποθανὼν τῷ 892. Διετέλεσε παιδαγωγὸς τῶν τέκνων τοῦ χαλίφου Μουταβεκκίλ. Ἔγραψεν ἱστορικογεωγραφικὸν ἔργον περὶ τῶν κατακτήσεων τῶν Μουσουλμάνων. Ν. Μ.

**μπαλάντσα** (ἡ)· βλ. *μπαλάντζα* καὶ *ζυγός*.

**μπαλαοῦρος *τῶν πανιῶν*** *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῆς *ἱστιοθήκης* (βλ. λ.).

**μπαλαουρτζῆς** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τοὺς κυτωρούς, ὡς καὶ τοὺς ἐπιμελουμένους τὰ ἐν τῇ ναυκληρικῇ ἀποθήκῃ πρωρατικὰ εἴδη ἢ σκεύη. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλαποὺρ** (Balapour) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Μπεράρ, παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Μούν. Κάτ. 5.953. Παρ' αὐτὴν κεῖνται τὰ ἐρείπια τῶν ἀνακτόρων τοῦ Σαπούρ, κτισθέντων ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μουράτ. Ἔχει ἐπίσης ἐρείπια ἀρχαίου ναοῦ τῆς θεᾶς Μπάλα. Μ. Δ. Β.

**Μπαλὰρ** (Balard), ***Ἀντώνιος-Ἱερώνυμος***. Γάλλος χημικὸς (1802—1876). Κατ' ἀρχὰς ὑπῆρξε φαρμακοποιός, βραδύτερον ἐγένετο καθηγητὴς τῆς χημείας, ἀνακαλύψας τῷ 1826 ἐν τῷ θαλασσίῳ ὕδατι τὸ βρώμιον. Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν μελέτην τοῦ βρωμίου καὶ τῶν ὑποχλωριωδῶν ἁλάτων. Σ. Γ.

**Μπαλάρ, *Χασὰν*—** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Χασὰν-Μπαλάρ*.

**Μπάλα-Ράμα** (Bala-Rama) καὶ ***Μπάλα Ντέβα*** (Bala Deva) *[Ἰνδ. Μυθολ.]*. Πρεσβύτερος ἀδελφὸς τοῦ Κρίσνα, θεωρούμενος ὡς ἀβατάρ, ἤτοι ἐνσάρκωσις τοῦ Βισνοῦ. Διεκρίθη ἤδη ὡς παιδίον διὰ τὴν ὑπεράνθρωπον σωματικήν του δύναμιν. Ἐφόνευσε τὸν δαίμονα Ντενούκα καὶ τὸν γίγαντα Πραλάμπα. Συνδεθεὶς μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του ἐβοήθησεν αὐτὸν εἰς ὅλους τοὺς πολέμους καὶ τὰς περιπετείας του. Ὁ Κρίσνα τῷ προσέφερε δέκα ἓξ χιλιάδας γυναῖκας, ἐξ ὧν ἐδέχθη μόνον μίαν, τὴν *Ρεβάτι*, τὴν ὁποίαν ἐλάτρευε. Α. Δ.

**Μπαλὰρτ** (Balart), ***Φρειδερῖκος***. Ἱσπανὸς ποιητὴς καὶ κριτικὸς (1831—1905). Ὡς ποιητὴς διεκρίθη διὰ τῶν λυρικῶν ποιημάτων του «Dolores» καὶ «Sombres y destellos», ὡς κριτικὸς δὲ διὰ τοῦ «El prosaismo en el arte» καὶ πολλῶν ἀξιολόγων ἄρθρων. Α. Δ.

**Μπαλαρὺκ-λὲ-Μπαὶν** (Balaruc-les-Bains) *[Γεωγραφ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἐρώ, εἰς ἀπόστασιν 20 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μομπελλιέ. Κάτ. 1.500. Ἔχει ἰαματικὰς πηγάς, ἐνδεικνυομένας ἐναντίον τῶν παραλυσιῶν, τῶν ἰσχιαλγιῶν κλπ. Χ. Δ.

**Μπαλασάκης**. Ἐπώνυμον τοῦ μητροπολίτου Δέρκων *Μακαρίου* (βλ. λ.).

**Μπαλάσιος**. Βυζαντινὸς μουσικοδιδάσκαλος καὶ ἱερεὺς (βλ. λ. *Βαλάσιος*).

**μπαλάσκα** (ἡ)· βλ. λ. *παλάσκα*.

**Μπαλάσκας *Κ*.** Εἷς τῶν ἱππέων τοῦ σώματος τοῦ Χατζημιχάλη, τοῦ καταστραφέντος ὑπὸ τῶν Τούρκων εἰς τὸ Φραγκοκάστελλον τῆς Κρήτης τὸν Μάϊον 1828. Τῆς καταστροφῆς ταύτης ὡς ἐκ θαύματος διασωθεὶς ὁ Μπαλάσκας ἐξηκολούθησεν ἀγωνιζόμενος ἐν Κρήτῃ μέχρι τοῦ τέλους τῆς ἐπαναστάσεως. ΕΡ. Μ.

**Μπάλασσα** (Balassa), ***Βαλίντ***. Οὔγγρος ποιητὴς (1551—1594). Εἶναι ὁ πρῶτος ἄξιος λόγου Οὔγγρος λυρικός. Διήγαγε ζωὴν πλήρη περιπετειῶν, ἔπεσε δὲ ἐν Ἐστεργκὸμ μαχόμενος κατὰ τῶν Τούρκων. Ἔγραψε πολλὰ ποιήματα, στρατιωτικὰ καὶ ἐρωτικά, ἅτινα ἐδημοσιεύθησαν κατὰ πρῶτον τῷ 1874. Κριτικὴ ἔκδοσις αὐτῶν ἐγένετο τῷ 1924. Α. Δ.

**Μπάλασσα-Γκιάρματ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ Νεόγκραντ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἄϊπελ. Κάτ. 11.257. Ἔχει ἄφθονον παραγωγὴν ὀπωρῶν καὶ οἴνου. Θ. Κ.

**Μπαλάσσωφ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Σαράτωφ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κόπερ, παραποτάμου τοῦ Δόν. Κάτ. 23.000. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν καὶ δημητριακῶν. Θ. Κ.

**μπαλαστροῦτσος** *[Ναυτ.]*. Ἡ κατὰ ἀκουστικὴν παρανόησιν ὑπὸ τῶν ναυτῶν μας ὀνομασία τοῦ διαστημομέτρου Barr and Stroud. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλὰτ** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Παλάτια*.

**Μπαλατᾶς**, ἢ ***Βαλατᾶς***, ἢ ***Παλατᾶς*** (τουρκ. *Μπαλέτ*) *[Γεωγρ.]*. Συνοικία τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἐπὶ τῆς πρὸς τὴν πόλιν ὄχθης τοῦ Κερατίου, ἀμέσως μετὰ τὸ Φανάριον. Ὠνομάσθη οὕτως ἀπὸ τῆς ἐπὶ τοῦ τείχους τούτου *Πύλης τοῦ Παλατᾶ* (ἥτις ἐλέγετο καὶ *Βασιλικὴ* ἢ *Αὐτοκρατορικὴ* ἢ *Παλατίνη* ἢ *Παλατιανή*). Εἶναι συνοικία συναρὰ μὲ οἰκίας μικρὰς καὶ κατοικεῖται κυρίως ἀπὸ Ἑβραίους, ὑπάρχει ὅμως καὶ σημαντικὴ ἑλληνικὴ κοινότης. Ἐνταῦθα ἐσῴζετο πρὸ πολλῶν ἐτῶν τὸ *Γκερχύρι*, οἰκία λιθόκτιστος ἀνήκουσα κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα εἰς τὸν Παναγιωτάκην Νικούσιον, τὸν πρῶτον Ἕλληνα διερμηνέα τῆς Πύλης. Ὁ Μπαλατᾶς ἀναφέρεται ὑπό τινων Ἀράβων ποιητῶν, γενόμενος εἰς αὐτοὺς γνωστὸς ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἐκεῖ ἐκρατήθησαν αἰχμάλωτοι οἱ συλληφθέντες ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Ἀράβων. Ν. Μ.

**Μπαλατζὶκ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐπὶ τῶν ὑπωρειῶν τῆς Μεσωγίδος καὶ εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Μαιάνδρου, κειμένη πρὸς Α. τοῦ Ἀϊδινίου. Συνδέεται μετὰ τῆς Σμύρνης σιδηροδρομικῶς (99 χλμ.) διὰ τῆς γραμμῆς Σμύρνης-Ἐργκεντίρ. Ἐκ Μπαλατζὶκ σιδηροδρομικὴ διακλάδωσις ἄγει εἰς Σώκια (30 χλμ.).

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ *Μπαλατζὶκ* κατελήφθη ὑπὸ τῆς 1ης ἑλληνικῆς μεραρχίας (διὰ τάγματος τοῦ 1/38ου συντάγματος εὐζώνων) τῇ 11 Μαΐου 1919. Ἀλλὰ μεταξὺ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ, προχωρήσαντος τότε κατὰ 3—4 χλμ. νοτίως τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, καὶ τοῦ ἰταλικοῦ τοιούτου, ἀποβιβασθέντος εἰς Νέαν Ἔφεσον (Σκάλα Νουόβα), τὸν Μάϊον 1919, ἐπῆλθον πολλαὶ προστριβαί. Καίτοι διὰ τῆς συμφωνίας Βενιζέλου—Τιτόνι ὡρίσθη ἐν τῇ περιφερείᾳ ταύτῃ γραμμὴ διαχωρισμοῦ τῶν ζωνῶν κατοχῆς, ἐν τούτοις αἱ προστριβαὶ ἐξηκολούθουν πάντοτε μέχρι τοῦ Ἀπριλίου 1922, ὅτε οἱ Ἰταλοί, ἐκκενώσαντες τὴν Μ. Ἀσίαν, κατέλιπον τὴν περιοχὴν Σωκίων, ἣν τότε κατέλαβεν ὁ ἑλληνικὸς στρατός. Τὸ Μπαλατζὶκ ἐγκατελείφθη ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ τῇ 26 Αὐγούστου 1922. Ν. Κ. Σ.

**Μπαλατὸν** (Balaton) ***λίμνη***, γνωστοτέρα ὑπὸ τὸ γερμανικόν της ὄνομα *Πλάττενζε* (Plattensee) *[Γεωγραφ.]*. Λίμνη ἐν Οὐγγαρίᾳ, ἡ μεγίστη τῆς κεντρικῆς Εὐρώπης, λεγομένη ἄλλως καὶ *Οὐγγρικὴ θάλασσα*. Ἔχει ἐμβαδὸν 596.000 τ. χλμ. (μετὰ τῶν γειτονικῶν τελμάτων 660.000), μῆκος 76 χλμ., πλάτος 4—13, μέσον βάθος 3 μ. καὶ μέγιστον 11. Κεῖται εἰς ὕψος 106 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης, εἰς ἀπόστασιν 80 χλμ. ΝΔ. τῆς Βουδαπέστης. Τροφοδοτεῖται ὑπὸ τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Τσάλα καὶ τοῦ Σίο, παραποτάμου τοῦ Δουνάβεως. Ἐπὶ τῶν ὄχθῶν αὐτῆς ὑπάρχουν πολλὰ κέντρα παραθερισμοῦ. Ἐκ τούτων ὀνομαστὰ εἶναι αἱ λουτροπόλεις *Κέστελυ* καὶ *Μπαλατὸν Φοῦρεν*. Ἐν τῇ λίμνῃ διενεργεῖται πλουσία ἁλιεία. Θ. Κ.

**Μπαλατσεάνου** (Balaceanu), ***Κωνσταντῖνος***. Βάνος (τοπάρχης) τῆς Βλαχίας (1776—1850). Ἀποτελῶν μέλος τῆς ἐφορείας τῶν σχολείων τῷ 1816, εἰς ἐποχὴν καθ' ἣν διεδίδετο πανταχοῦ τῆς Ρουμανίας ἡ ἑλληνικὴ παιδεία, παρώτρυνε καὶ ἐβοήθησε διὰ παντὸς τρόπου τὸν ἐκ Τρανσυλβανίας ἐλθόντα λόγιον Γεώργιον Λαζάρου, ἵνα ἱδρύσῃ τὸ πρῶτον ρουμανικὸν σχολεῖον ἐν Βουκουρεστίῳ. Κατόπιν εἰργάσθη παντοιοτρόπως διὰ τὴν διάδοσιν τῆς ἐκπαιδεύσεως ἐν Ρουμανίᾳ καὶ ὡς ἐκ τούτου θεωρεῖται εἷς τῶν κυρίων πρωταγωνιστῶν τῆς ἐκπαιδευτικῆς ἀναμορφώσεως τῆς χώρας. Θ. Κ.

**Μπαλατσέσκου** (Balacescu), ***Κωνσταντῖνος***. Ρουμάνος ποιητὴς (1800—1880). Ἔγραψεν ἐμμέτρους μύθους, μὲ βαθὺ πνεῦμα παρατηρήσεως, καυστικὴν σάτιραν καὶ ἐπιγραμματικὴν λακωνικότητα. Ἡ πρώτη συλλογὴ τῶν ποιημάτων του ἐδημοσιεύθη τῷ 1845. Ἐκ τῶν σατιρῶν του γνωστότερα εἶναι: «Ὁ ἀρχοντοχωριάτης εἰς τὸ Βουκουρέστιον» καὶ ἡ τρίπρακτος κωμῳδία «Καλὴ ἀνατροφή». Θ. Κ.

Digitized by Google

**Μπαλάφας Κ.** Ἀνθυπολοχαγὸς τοῦ πυροβολικοῦ, ὅστις κατελθὼν μετ' ἄλλων ἐθελοντῶν εἰς Κρήτην, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1869, προσήνεγκε πολλὰς ὑπηρεσίας εἰς τὸν ἀγῶνα ὡς ἀρχηγὸς τῶν πυροβολητῶν. ΕΡ. Μ.

**Μπαλάφτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομοῦ Θεσσαλονίκης χωρίου *Κολχικὸν* (βλ. λ.).

**Μπαλαχάνυ** (Balachany) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλαι πηγαὶ νάφθης τῆς περιφερείας τοῦ Βακοῦ, κείμεναι παρὰ τὴν ὁμώνυμον κώμην ἐπὶ τῆς χερσονήσου τοῦ Ἀψχερόν. Αἱ πηγαὶ αὗται εἶναι αἱ μεγαλύτεραι τῆς περιφερείας. Χ. Δ.

**Μπαλαχισὰρ** (*μπαλᾶ = ἄνω, χισὰρ = φρούριον*) *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Ἀγκύρας, ἕδρα τῆς ὑποδιοικήσεως Μπαλᾶ. Ν. Μ.

**Μπάλγκυ** (Balguy), *Θωμᾶς*. Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου Μπάλγκυ (1716—1795). Διεκρίθη ὡς ἱεροκήρυξ καὶ συγγραφεὺς θεολογικῶν πραγματειῶν. Α.Δ.

—**Μπάλγκυ** (Balguy), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος θεολόγος διαμαρτυρόμενος (1686—1748). Διεκρίθη ἐκ τοῦ ἔργου του «Controversia bangoriana», δι' οὗ ἠθέλησε ν' ἀποδείξῃ ὅτι ἡ ἐπέμβασις τῆς πολιτείας εἰς ἐκκλησιαστικὰ ζητήματα εἶναι παράνομος. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «On the beauty and excellence of moral virtues» (1726), «The foundation of moral goodness (1728) καὶ «An Essay of Redemption» (1741). Α. Δ.

**Μπάλεν** (Balen), ***Ἐρρῖκος βὰν***—. Φλαμανδὸς ζωγράφος (1575—1632). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἀδὰμ βὰν Νόορτ, τῷ δὲ 1593 ἐγένετο μέλος τοῦ διασήμου καλλιτεχνικοῦ σωματείου τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ. Ἐπισκεφθεὶς τὴν Ἰταλίαν συνεπλήρωσε τὴν καλλιτεχνικήν του μόρφωσιν διὰ τῆς μελέτης τῶν ἔργων τῶν μεγάλων καλλιτεχνῶν τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως, ὅτε δ' ἐπανῆλθεν εἰς τὴν πατρίδα του ἐπεδόθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀναπαράστασιν ἱστορικῶν ἢ μυθολογικῶν ἐπεισοδίων ἐπὶ πινάκων, τοὺς ὁποίους συνεπλήρουν διὰ τοπιογραφιῶν ὁ Μόμπερ ἢ ὁ Μπρέχελ. Ἔργα του σῴζονται πολυάριθμα εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Ἄμστερνταμ, τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Ἰακώβου ἐν Ἀμβέρσῃ καὶ τὰ μουσεῖα τῆς Δρέσδης, τοῦ Μονάχου, τῆς Βιέννης καὶ τῆς Λίλλης. Ι. Μ. Π.

**Μπαλέσης** ***Μανιᾶς***. Ὁπλαρχηγὸς ἐκ Σφακίων Κρήτης, διακριθεὶς κατὰ τὸν ἐν τῇ νήσῳ ἀγῶνα τοῦ 1821—1830. Ν. ΚΛΣ

**μπαλέστρα** *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἐξάντος καὶ τοῦ ὀκτάντος: *«κατεβάζω τὸν ἥλιο μὲ τὴν μπαλέστρα»* λαμβάνω τὸ ὕψος τοῦ ἡλίου διὰ τοῦ ἐξάντος. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλέστρα** (Balestra), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς χαράκτης καὶ ζωγράφος (1660—1740). Ἐμαθήτευσεν ἐν Βενετίᾳ ὑπὸ τὸν Μπελλοῦτσι κατ' ἀρχάς, ἐν Ῥώμῃ ὑπὸ τὸν Μαράττα μετὰ ταῦτα. Ἐξεπόνησε πίνακας πολυπληθεῖς ἐπὶ θρησκευτικῶν ἰδίᾳ θεμάτων, ἀποκειμένους εἰς τοὺς ναοὺς τῆς Παδούης, τῆς Βενετίας, τῆς Βερόνης κλπ., καὶ ἀξιόλογα ἔργα χαρακτικῆς. Ἡ τέχνη του ἔχει σπουδαίας ἀρετάς, ἀλλ' ἐν τῷ συνόλῳ της παρουσιάζεται ἱκανῶς ἀνώμαλος. Ι. Μ. Π.

**Μπαλέστρας** (Balestra). Κορσικανὸς φιλέλλην, ἀγωνισθεὶς κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 (βλ.λ. *Βαλέστρας*).

**μπαλέττο** (τό)· βλ. λ. *μπαλλέτο*.

**Μπαλέϋα** (Baleya) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Δ. Ἀφρικῆς ἐν τῷ Γαλλικῷ Σουδάν. Διαρρέεται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Μπάκκους, παραποτάμου τοῦ Ταγκίσσο. Εἶναι πλουσία καὶ εὔφορος. Π. Γ. Λ.

**Μπαλζὰκ** (Balzac), ***Ἰωάννης-Λουδοβῖκος-Γκὲ ντὲ***—. Γάλλος συγγραφεὺς (1597—1654). Ἐνωρίτατα ἀπεσύρθη τῆς κοινωνίας καὶ ἔζησε βίον μονήρη. Ὑπῆρξε, παρὰ τὴν θέλησίν του, ἐκ τῶν πρώτων μελῶν τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, εἰς ἣν ἅπαξ μόνον ἐνεφανίσθη κατά τι εἰς Παρισίους ταξίδιον (1636). Ὁ Ρισελιὲ διώρισεν αὐτὸν σύμβουλον τῆς ἐπικρατείας καὶ ἱστοριογράφον τῆς Γαλλίας. Τὰ ἔργα τοῦ Μπαλζὰκ δὲν ἀναγιγνώσκονται σήμερον· ἡ φράσις του εἶναι πλήρης ἐμφάσεως καὶ ἐν πολλοῖς ἐπιτετηδευμένη. Συνετέλεσεν ὅμως σημαντικῶς εἰς τὴν διαμόρφωσιν τῆς γαλλικῆς γλώσσης, δημιουργήσας τὴν ῥυθμικὴν καὶ παραστατικὴν ἔκφρασιν. «Οὐδεὶς ἐγνώριζε κάλλιον αὐτοῦ τὴν γλῶσσάν του, οὐδεὶς ἐνόησε κάλλιον αὐτοῦ τὴν κυριολεξίαν καὶ τὸ ἀκριβὲς τῶν περιόδων μέτρον» (Boileau). Δὲν ἦτο μὲν πνεῦμα δημιουργικόν, εἶχεν ὅμως κρίσιν ἀκριβεστάτην καὶ καλαισθησίαν εἰς ἄκρον λεπτήν, διὰ τῶν προσόντων δὲ τούτων ἀπέβη ὁ παιδαγωγὸς τῆς μᾶλλον ἀμορφώτου ὑψηλῆς κοινωνίας τῆς ἐποχῆς του. Ἔγραψε: «Lettres» (1624), «Le Prince» (1631), «Socrate chrétien» (1652), «Œuvres» (1665, τ. 2). Ι. Ο.

—**Μπαλζὰκ** (Balzac), ***Λάουρα***. Γαλλὶς συγγραφεὺς (1800—1871), ἀδελφὴ τοῦ *Ὀνορὲ ντὲ Μπαλζάκ*. Ἐνυμφεύθη τὸν πολιτικὸν μηχανικὸν Allain, τὸν ἐπονομαζόμενον Surville. Εἶναι κυρίως γνωστὴ διὰ τὴν μελέτην, τὴν ὁποίαν ἔγραψε περὶ τοῦ ἀδελφοῦ της: «Balzac, sa vie et ses œuvres» (1858). Ἐπίσης ἔγραψε πολλὰ διηγήματα, ὧν τὰ πλεῖστα συνεκεντρώθησαν εἰς δύο τόμους ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Le Compagnon du foyer» (1854) καὶ «La Fée des nuages» (1854). Ι. Ο.

—**Μπαλζὰκ** (Balzac), ***Ὀνορὲ ντὲ***—. Διάσημος Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς εἰς Τοὺρ τῷ 1799 καὶ ἀποθανὼν εἰς Παρισίους τῷ 1850. Μετὰ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα παρηκολούθησε μαθήματα φιλολογίας εἰς τὴν Σορβόννην, κατ' ἀπαίτησιν δὲ τῶν γονέων του ἐσπούδασε παραλλήλως καὶ τὰ νομικά. Μὴ αἰσθανόμενος οὐδεμίαν κλίσιν πρὸς τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, ἀφιερώθη εἰς τὰ γράμματα, τὴν ποίησιν καὶ τὴν δημοσιογραφίαν. Κατ' ἀρχὰς ἐδοκίμασε τὸ τάλαντόν του εἰς τὴν τραγῳδίαν, ἀποτυχὼν ὅμως στρέφεται πρὸς τὸ μυθιστόρημα, ἀκολουθῶν τὴν τάσιν τῆς ἐποχῆς του, καὶ συγγράφει τὴν «Héritière de Birague», τὴν ὁποίαν παρουσιάζει ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Lord R'Hoone (ἀναγραμματισμὸν τοῦ Honoré). Μετὰ τὸ πρῶτον

*Ὀνορὲ ντὲ Μπαλζάκ.*
[Προσωπογραφία ὑπὸ Louis Boulanger ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Tours.]

αὐτὸ μυθιστόρημα ἀρχίζει ἡ σειρὰ τῶν ἀτελευτήτων ἔργων του, ἡ ὁποία, μετὰ τὰ πρῶτα ἀσήμαντα μυθιστορήματα («Jean-Louis ou La Fille trouvée» καὶ «Clotilde de Lusignan ou Le beau Juif»), τὰ δημοσιευθέντα ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Horace de Saint-Aubin, καταλήγει μὲ τὰ πολυάριθμα ἀριστουργήματά του. Ἐν τῷ μεταξὺ συλλαμβάνει τὴν ἰδέαν ν' ἀναμειχθῇ εἰς διαφόρους ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις· μεταβάλλεται εἰς ἐκδότην, ἀνοίγει τυπογραφεῖον καὶ ἀγοράζει στοιχειοχυτήριον. Πεισθεὶς τέλος περὶ τῆς ἐμπορικῆς ἀνικανότητός του, ἀφοσιώνεται εἰς τὴν συγγραφὴν τῶν ἱστορικῶν μυθιστορημάτων του καὶ ὑπὸ τὸ πραγματικόν του πλέον ὄνομα παρουσιάζει τῷ 1829 τὸ ἔργον του «Le Dernier Chouan ou La B etagne en 1800» καὶ εὐθὺς ἀμέσως «La Physiologie du mariage», ἐπηρεαζόμενος δὲ ἀπὸ τὸν Bulwer Lytton, τὸν Sterne, τὸν Walter Scott καὶ τὸν Cooper στρέφεται πρὸς τὸ κοινωνικὸν μυθιστόρημα, ἐκδίδων τῷ 1830 ἓξ διηγήματα ὑπὸ τὸν γενικὸν τίτλον «Scenes de la vie privée», διὰ τοῦ ὁποίου προαναγγέλλεται τὸ μέγα ἔργον του, τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «La Comédie Humaine», συγκεντρωθὲν βραδύτερον. Τὰς «Σκηνὰς τοῦ Ἰδιωτικοῦ βίου» ἀκολουθεῖ τὸ μυθιστόρημά του «Peau de Chagrin» (1831), ὅπερ ἐσημείωσε τὴν πρώτην πραγματικήν, θριαμβευτικὴν μάλιστα, ἐπιτυχίαν, ἐν τῷ μέσῳ τῶν ἔργων τῆς Γεωργίας Σάνδη, τοῦ Ἀλ. Δουμᾶ, τοῦ Οὐγκώ, τοῦ Βινιὺ καὶ τοῦ Στεντὰλ καὶ εἰς πλείστους ἄλλους μεγάλους συγγραφεῖς.

Διὰ μέσου τοῦ ἀτελευτήτου πλήθους τῆς ἀκαταπονήτου δημιουργικότητός του, διακρίνονται τὰ ἀπὸ τοῦ 1831—1833 ἐκδοθέντα ἀριστουργήματά του: «Le Curé de Tours», «La femme de trente ans», «Le chef-d'œuvre inconnu», «Maitre Cornélius», «Louis Lambert», «Contes drôlatiques», «Le médecin de campagne». Ἀρχίζει τότε νὰ ταξινομῇ τὰ μυθιστορήματά του πολλὰ ἐκ τῶν συγγραφέντων ἤδη, καθὼς καὶ πολλὰ σχεδιάσματα του, κατατάσσονται ὑπ' αὐτοῦ εἰς τὰς ἑξῆς τρεῖς κατηγορίας: 1) Ἡ ζωὴ τῆς δράσεως, 2) Ἡ ζωὴ τῆς καρδίας, 3) Ἡ ζωὴ τοῦ πνεύματος. Ὑπὸ δὲ τὸν γενικὸν τίτλον «Études de mœurs aux XIX siècle», εὑρίσκομεν τοὺς ὑποτίτλους: «Scènes de la vie privée», «Scènes de la vie du monde», «Scènes de salon», «Scènes de village». Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης προσπαθεῖ νὰ συνδέσῃ τὸ πλῆθος τῶν εἰς τὰ ἔργα του κινουμένων προσώπων καὶ ν' ἀποτελέσῃ κοινωνίαν πλήρη. Οὕτω, ὀλίγον κατ' ὀλίγον, δημιουργεῖται ἡ «Ἀνθρωπίνη Κωμῳδία», ὅπως ἐπιτλοφόρησε τῷ 1842 τὸ ἔργον του, ὑφ' ὃ συνεκέντρωσε περὶ τὰ 97 μυθιστορήματα. «Ἡ Ἀνθρωπίνη Κωμῳδία» δέον νὰ θεωρηθῇ ὡς τμῆμα μόνον τοῦ ὅλου ἔργου, διακοπέντος ἕνεκα τοῦ προώρου θανάτου τοῦ συγγραφέως. Εἰς τὴν «Ἀνθρωπίνην Κωμῳδίαν» ἐσκόπει νὰ περιλάβῃ καὶ 51 μὴ συγγραφέντα μυθιστορήματα, προοριζόμενα πρὸς συμπλήρωσιν τῶν «Σκηνῶν τοῦ Πολιτικοῦ Βίου» καὶ τῶν «Σκηνῶν τοῦ Στρατιωτικοῦ Βίου». Μεταξὺ τῶν ἔργων τῆς «Ἀνθρωπίνης Κωμῳδίας» ὑπάρχουν, πλὴν τῶν ἤδη ἀναφερθέντων, πλεῖστα ὅσα ἀριστουργήματα: «Eugénie Grandet», «La Femme abandonnée», «La Recherche de l'Absolu», «Le Père Goriot», «Le Lys dans la vallée», «La Vieille fille», «Les Deux Poètes», «La Femme Supérieure», «Une fille d'Ève», «Béatrix», «Physiologie de l'employé», «Le Curé de Village», «Ursule Mirouet», «Memoires de Deux Jeunes Mariées», «La fausse Maîtresse», «Une Ténébreuse Affaire» κλπ.

Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἡ ὡριμότης τοῦ ταλάντου του ἀναγκάζει αὐτὸν νὰ μετριάσῃ τὴν παραγωγικότητά του· ἀλλ' οὔτε ἡ δύναμις, οὔτε ἡ διάθεσίς του ἔχει ἐλαττωθῆ. Ἡ ἐλάττωσις αὕτη τῆς παραγωγικότητος τοῦ συγγραφέως ὀφείλεται ἴσως εἰς τὴν τελευταίαν ἐρωτικὴν περιπέτειαν τῆς ζωῆς του. Τὸ αἴσθημά του αὐτό, τὸ ὁποῖον ἀρχίζει δι' ἀλληλογραφίας πρὸς μίαν ἄγνωστον, ὑπογραφομένην «l'Etrangère», καὶ διαμένουσαν εἰς Ὀδησσόν, κατέληξε, κατόπιν διαφόρων ταξιδίων του εἰς Ρωσίαν, εἰς τὸν γάμον του (1850) μετὰ τῆς χήρας Εὔας Χάνσκα, ὀλίγους μόνον μῆνας πρὸ τοῦ θανάτου τοῦ συγγραφέως.

Ὁ Μπαλζὰκ ἐνδιαφέρεται νὰ περιγράφῃ ἀνθρώπους, οἱ ὁποῖοι νὰ ζοῦν, νὰ κινοῦνται, νὰ σκέπτωνται, νὰ δρῶσιν ὅπως ὅλοι οἱ ἄνθρωποι. Ἀλλ' ἀπὸ τὴν ζωὴν αὐτὴν ἀπομακρύνει τὸ φανταστικὸν καὶ τὸ ἀπίθανον· διότι, ὡς λέγει, τὸ «ἀπίθανον ὑπάρχει ἐν τῇ ζωῇ, ἀλλὰ δὲν ἐπιτρέπεται νὰ ὑπάρχῃ εἰς τὸ μυθιστόρημα». Εἶναι τῆς γνώμης ὅτι ὁ ποιητὴς τῆς ἐποχῆς του ὀφείλει νὰ γνωρίζῃ τὸ ὑλικόν του ἐπιστημονικῶς καὶ τοιουτοτρόπως νὰ τὸ ἐπεξεργάζεται. Δὲν ἐπιτρέπεται νὰ κατέρχεται μεταξὺ τῶν ἀνθρώπων κομίζων δόγματα θρησκευτικά, ἀλλὰ νὰ ἐξετάζῃ αὐτοὺς ὡς ἐπιστημονικὸν ἀντικείμενον. Πιστεύει ὅτι οὐδεὶς μυθιστοριογράφος εἶναι δυνατὸν νὰ γράψῃ κάτι τὸ ἄξιον λόγου καὶ νὰ δημιουργήσῃ κάτι τὸ βιώσιμον ἄνευ ἰατρικῆς καὶ φυσιολογικῆς προπαιδείας. Ὑπὸ δὲ τὸν ὅρον φυσιολογία ἐννοεῖ πᾶσαν περὶ τῆς φύσεως τοῦ ἀνθρώπου παρατήρησιν, τὰς σωματικὰς καὶ ψυχικὰς αὐτοῦ ἰδιότητας καὶ τὴν πρὸς ἀλλήλας σχέσιν αὐτῶν, τὸν κοινωνικόν, τὸν πολιτικόν, τὸν οἰκογενειακὸν βίον, κλπ. Ὄχι δὲ μόνον αἰσθάνεται ἀκόρεστον διάθεσιν πρὸς παρατήρησιν, ἀλλ' ἔχει εἰς ὕψιστον βαθμὸν τὴν πρὸς τοῦτο ἀπαιτουμένην ἱκανότητα. Ἐνδύεται ὡς ἐργατικός, ἵνα μὴ προκαλέσῃ τὴν προσοχὴν οὐδενός, καὶ περιφέρεται εἰς τὰ περίχωρα, ὅπου συναναστρέφεται τὸν λαὸν καὶ παρατηρεῖ αὐτὸν μετὰ πάσης δυνάμεως, ὥστε νὰ φθάνῃ ἀμέσως μέχρι τοῦ βάθους τῆς ψυχῆς τῶν ὑπὸ παρατήρησιν ἀτόμων. Ταυτοχρόνως δὲ ἔχει τὴν ἱκανότητα νὰ ζῇ τόσον πλήρως τὴν ζωὴν τῶν ἡρώων του, ὥστε ὁμιλεῖ περὶ αὐτῶν ὡς περὶ ὄντων ὑπαρκτῶν καὶ λίαν σχετικῶν πρὸς αὐτόν. Τοιουτοτρόπως, ὁ ἱδρυτὴς οὗτος τῆς ἐπιστημονικῆς μεθόδου πλάττει τὸν κόσμον του, τὴν κοινωνίαν του μὲ τὴν ἀπειρίαν τῶν τύπων της (ὑπὲρ τοὺς χιλίους πεντακοσίους τοιούτους δυνάμεθα ν' ἀριθμήσωμεν), καὶ ὑπερήφανος διὰ τὸ ἔργον του τιτλοφορεῖ αὐτὸ «La Comédie Humaine». Τὸ κολοσσιαῖον αὐτὸ ἔργον του δὲν εἶναι βεβαίως ἐστερημένον ἐλαττωμάτων. Τὸ ὕφος του εἶναι πομπῶδες καὶ κοινόν· ὁ Μπαλζὰκ εἶναι ἀνίκανος ν' ἀναλύσῃ λεπτὰ καὶ ποιητικὰ αἰσθήματα. Ἡ λιτότης τοῦ εἶναι ἀπολύτως ἄγνωστος. Προσπαθεῖ ν' ἀποδώσῃ πλήρως τὴν πραγματικότητα, νὰ μὴ παραλείψῃ οὐδὲ τὴν ἐλαχίστην λεπτομέρειαν, νὰ περιγράψῃ τὰ πάντα, καὶ τοιουτοτρόπως πνίγει τὰς γενικὰς γραμμὰς τοῦ πίνακος εἰς χάος ἀπεραντολογίας, ἐνδιαφερόμενος ἀποκλειστικῶς διὰ τὴν ἀπεικόνισιν τῶν ἀνθρωπίνων ὄντων καὶ τῶν κοινωνικῶν αὐτῶν σχέσεων. Παρ' ὅλην ὅμως τὴν προσπάθειάν του αὐτήν, πολλὰ τῶν προσώπων του, ἰδίως τὰ ἐκ τῶν ἀριστοκρατικῶν τάξεων προερχόμενα, στεροῦνται ἀληθοφανείας. Τὸ ρωμαλέον πνεῦμα τοῦ Μπαλζὰκ εἶναι καθαρῶς λαϊκόν, εἰς τὸ ἐπίπεδον δὲ τοῦτο πρέπει νὰ ἀναζητήσωμεν τὴν μεγαλοφυΐαν του. Ὅταν προβαίνῃ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν λαϊκῶν καὶ ἀστικῶν τάξεων εἶναι ἀσύγκριτος. Σπανία εἶναι ἡ δύναμις τῆς συνθετικῆς φαντασίας του. Γνωρίζει ὅσον οὐδεὶς ἄλλος νὰ ζωντανεύῃ τοὺς ἥρωάς του διὰ τῆς πειστικῆς περιγραφῆς του· καὶ προικίζει αὐτοὺς διὰ τῆς ἐσωτερικῆς ἐκείνης δυνάμεως, ἀπὸ τὴν ὁποίαν

Digitized by Google

ἀπεικονίζονται ὅλαι αἱ πράξεις των. Ἀλλ' οἱ ἥρωές του εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον παθολογικοί· ἄγονται πάντοτε καὶ φέρονται ἀπὸ ἀκαταμάχητόν τι ἔνστικτον, ὁτὲ μὲν εὐγενές, ὁτὲ δὲ ταπεινὸν καὶ διεφθαρμένον. Εἰς τὴν «Eugenie Grandet» περιγράφεται τὸ πάθος τῆς φιλαργυρίας, εἰς τὴν «Cousine Bette» τὸ τῆς ζηλοτυπίας, εἰς τὸν «Père Goriot» ἡ πατρικὴ ἀγάπη, εἰς τὸν «Balthazar Claës» ἡ μανία τῆς ἐφευρέσεως. Ὁ Μπαλζὰκ παρουσιάζει τοὺς ἥρωάς του ὄχι διὰ μέσου τῶν ἐρωτικῶν περιπετειῶν των ἀλλὰ διὰ μέσου τοῦ ἐπαγγελματικοῦ των βίου, χαρακτηρίζων τὰ πρόσωπά του κυρίως διὰ τοῦ περιβάλλοντος, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ζοῦν. Ἀλλὰ καὶ τὰς κοινωνικὰς ὁμάδας μετὰ τῆς αὐτῆς περιγράφει δυνάμεως: ὁ κομψὸς κόσμος, οἱ πλουτοκράται, οἱ ἀστοί, οἱ μικρέμποροι, ὁ λαὸς τῶν Παρισίων, οἱ ἐπαρχιῶται καὶ οἱ ἀγρόται, οἱ χωρικοί, οἱ ὑπάλληλοι καὶ οἱ δημοσιογράφοι παρελαύνουν ἀπὸ τὰ μυθιστορήματά του· ἕκαστον δὲ ἐπάγγελμα, ἑκάστη τάξις ἔχει τὸν ἀντιπροσωπευτικὸν αὐτῆς τύπον, ἢ μᾶλλον τοὺς διαφόρους τύπους, οἱ ὁποῖοι δύνανται νὰ ἐμφανισθοῦν εἰς μίαν καὶ τὴν αὐτὴν σφαῖραν ζωῆς. Οὕτως ἡ «Ἀνθρωπίνη κωμῳδία» ἐμφανίζει σύνολον μεγαλοπρεπέστατον, ἡ δὲ ἐξ αὐτῆς ἐντύπωσις εἶναι μοναδική. Τμήματα ἐλάχιστα τοῦ μνημειώδους αὐτοῦ ἔργου ἔχουν μεταφρασθῆ καὶ εἰς τὴν ἑλληνικήν: «Εὐγενία Γκραντὲ» ὑπὸ Δάφνης Ἰ. Σιδέρη καὶ ὑπὸ Κ. Θ. Παπαλεξάνδρου· «Ἀγάπη κάτω ἀπὸ μάσκα», ὑπὸ Παλμύρας Χονδροδήμου· «Οἱ γάμοι τῆς Ἀδέλας», «Ὁ μπάρμπα Γκοριὸ» (1925), «Ὁ Σαρραζῖνος» ὑπὸ Μ. χ. Στασινοπούλου (1925), «Φακίνο Κάνε», «Τὸ ἄγνωστο ἀριστούργημα», «Ὁ συνταγματάρχης Σαμπὲρ» ὑπὸ Α. Χρυσάνθη (1925), «Πληγωμένη καρδιὰ» (1925), «Κρίνος στὴ λαγκαδιὰ» ὑπὸ Λίζας Κοντογιάννη (1926). Ἐξεδόθησαν αὐτοῦ: «Oeuvres Complètes» (τ. 24), ὑπὸ Calmann-Lévy (Comédie Humaine, τ. 17· Théâtre, τ. 1· Contes drôlatiques τ. 1· Oeuvres diverses inédites, τ. 4· Correspondance, τ. 1), «Oeuvres Compètes» (εἰς τ. 45, «Ἀνθρωπίνη κωμῳδία» τ. 40, «Διηγήματα» τ. 3, «Θέατρον» τ. 2), «Oeuvres de Jeunesse» (τ. 10), «Lettres à l'Étrangère».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *William H. Royce*, «A Balzae Bibliography» (1929).—*L. S. Arrigou*, «Les débuts littéraires d'Honoré de Balzac» καὶ «Les années romantiques de Balzac» (1924 καὶ 1927).—*E. R. Curtius*, «Balzac» (1923).—*Kretschmer*, «Körperbau und Karakter» (1925).—*Lamartine*, «Balzac et ses œuvres» (1862).—*E. Preston*, «Recherches sur la technique de Balzac» (1925).—*Sainte-Beuve*, Causeries du Lundi» (1852).—*Séché et Bertaux*, «H. de Balzac» (1910).—*L. de Survilie* (ἀδελφῆς τοῦ Μπαλζάκ), «Balzac, sa vie, ser œevres» (1858).—*Taine*, «Nouveaux essais de critique et d'histoire.—*Stéfan Zweig*, «Balzac-Dickens» (1927). I. O.

**Μπαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Πεταλιδίου τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 115. Χ. Δ.

— **Μπαλῆ** *ὅρμος [Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τοῦ Μυλοποτάμου τῆς Κρήτης (πλάτ. 35° 25′ Β., μῆκ. 24° 49′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536a: Candia Western portion), 7 μίλλ. Ἀν. τοῦ *Λιανοῦ Κάβου*. Εἶναι πιθανῶς ἡ *Ἀστάλη* (βλ. λ. καὶ λ. *Ἀξός*) τοῦ «Σταδιασμοῦ τῆς Μεγάλης θαλάσσης».

Ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν ἐκαλεῖτο Porto di Atali. Τὸ σημερινὸν αὐτοῦ ὄνομα ὀφείλεται εἰς τὴν ἄνωθεν αὐτοῦ κειμένην μονὴν τοῦ Μπαλῆ. Ὁ λιμὴν οὗτος χρησιμεύει σήμερον διὰ τὴν ἐξαγωγὴν τῶν προϊόντων τῆς περιφερείας, δι' ὃ καὶ ὑπάρχουσιν ἐκεῖ ἀποθῆκαί τινες καὶ ὀλίγοι οἰκίσκοι. Κατὰ τὰς διαφόρους κρητικὰς ἐπαναστάσεις κατέπλεον συχνάκις ἐκεῖ τὰ τροφοδοτοῦντα τὸν ἀγῶνα πλοῖα, ἀποβιβάζοντα τροφάς, πολεμεφόδια καὶ ἐθελοντάς. Σ. Ε. Λ.—Ν. ΚΛΣ

**Μπαλῆς, Γεώργιος**. Ἐπιφανὴς Ἕλλην νομομαθής, γεννηθεὶς τῷ 1879. Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του ἐν Ἀθήναις καὶ Βερολίνῳ ἐδικηγόρησεν ἐν Ἀθήναις, τῷ δὲ 1925 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τοῦ ἀστικοῦ δικαίου ἐν τῷ Ἐθνικῷ πανεπιστημίῳ. Τῷ 1929 ἐξελέγη πρόεδρος τοῦ δικηγορικοῦ συλλόγου Ἀθηνῶν καὶ τῷ 1930 μέλος τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν. Ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας, ἃς συλλέξας ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Μελέται ἐπὶ τοῦ ἀστικοῦ δικαίου» (ἔκδ. β′ 1927)· ἐξέδωκεν ἐπίσης καὶ «Ἐγχειρίδιον κληρονομικοῦ δικαίου» (ἔκδ. β′ 1930). Μ.Γ.Δ.

**Μπάλι** (Bali) *[Γεωγρ.]*. —1) Νῆσος τοῦ ἀρχιπελάγους τῆς Σόνδης, καλουμένη καὶ *Μικρὰ Ἰάβα*, πρὸς Ν. τῆς Ἀσίας, ἀνήκουσα εἰς τὰς ὀλλανδικὰς Ἀνατολικὰς Ἰνδίας. Κεῖται πρὸς Α. τῆς Ἰάβας, ἀπὸ τῆς ὁποίας χωρίζεται διὰ τοῦ πορθμοῦ τοῦ *Μπάλι* καὶ πρὸς Δ. τῆς Λόμποκ, ἀπὸ τῆς ὁποίας χωρίζεται διὰ τοῦ πορθμοῦ τοῦ *Λόμποκ*. Ἔχει ἔκτασιν 5.396 τ. χλμ. καὶ 1.362.000 κατ., μεταξὺ τῶν ὁποίων ὑπάρχουν καί τινες χιλιάδες Ἀράβων καὶ Κινέζων. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι ὀρεινόν, διασχιζόμενον ἀπὸ Α. πρὸς Δ. ὑπὸ ὀροσειρᾶς, ἧς ὑψηλοτέρα κορυφὴ εἶναι τὸ ἡφαίστειον Γκουνοὺνγκ—Ἀγκούνγκ, ὕψους 3.200 μ. Διαρρέεται ὑπὸ πολυαρίθμων ποταμῶν, οἵτινες καθιστοῦν αὐτὴν λίαν εὔφορον, καὶ παράγει βάμβακα, καφέν, ὄρυζαν, ἰνδικόν, ζάχαριν κ.τ.λ. Ἔχει ἐπίσης λίαν ἀνεπτυγμένην κτηνοτροφίαν. Αἱ κλιματολογικαὶ συνθῆκαι αὐτῆς, καθὼς καὶ ἡ χλωρὶς καὶ ἡ πανίσκη, ὁμοιάζουν κατὰ πολὺ πρὸς τὰς τῆς ἀνατολικῆς περιοχῆς τῆς νήσου Ἰάβας. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς εἶναι ρωμαλεώτεροι καὶ ἀνοικτοτέρου χρώματος τῶν κατοίκων τῆς Ἰάβας. Ἀποτελοῦν διαφόρους φυλάς, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι οἱ μπαλιάγκα, κατοικοῦντες εἰς τὸ ἐσωτερικόν, καὶ οἱ μαϋαπαχίτ, κατοικοῦντες εἰς τὰ παράλια. Οἱ ἰθαγενεῖς ἀνήκουν εἰς ἐξέχουσαν μαλαισιακὴν φυλὴν καὶ ὁμιλοῦν διάλεκτον συγγενῆ πρὸς τὴν τῆς Ἰάβας. Ἡ θρησκεία αὐτῶν εἶναι ὁ ἀρχαῖος βραχμανισμός, μὲ παλαιοὺς τύπους λατρείας, σχέσιν ἔχοντας πρὸς τὴν γεωργίαν καὶ τοὺς ὁποίους δὲν χρησιμοποιοῦν πλέον εἰς τὰς ἄλλας ἰνδικὰς χώρας. Διατελεῖ ὑπὸ τὴν ὀλλανδικὴν κυριαρχίαν καὶ διαιρεῖται διοικητικῶς εἰς ἐννέα περιφερείας, διοικουμένας ὑπὸ ἐγχωρίων τοπαρχῶν καὶ περιλαμβανούσας τὴν παρακειμένην νῆσον Λόμποκ καί τινας ἄλλας μικροτέρας. Τὰ ἰθαγενῆ βασίλεια τῶν *Κλούνγκ-Κούνγκ*, *Μένγκβι* καὶ *Μπάντουνγκ*, κείμενα πρὸς Ν. τῆς νήσου, καὶ τὰ *Μπάνγκλυ* καὶ *Τάμπανγκ* πρὸς Δ. εἶναι ὑποτελῆ εἰς τὸ πολιτικὸν καθεστὼς τοῦ ὀλλανδικοῦ προτεκτοράτου. Τὸ ἐμπόριον εὑρίσκεται κυρίως εἰς χεῖρας τῶν Κινέζων καὶ ὀλίγων Εὐρωπαίων. Πρωτεύουσα αὐτῆς καὶ κυριώτερος λιμὴν ἐξαγωγῆς εἶναι ἡ πόλις *Μπουλελέν*, ἐπὶ τῆς Β. ἀκτῆς τῆς νήσου.

—2) Πορθμὸς μεταξὺ τῶν νήσων Ἰάβας καὶ Μπάλι, ἐν τῷ ἀρχιπελάγει τῆς Σόνδης. Ἔχει μῆκος 93 χλμ. καὶ πλάτος 2 χλμ. Μ. Δ. Β.

**Μπαλὶ** (Bhali) *[Ἰνδ. Μυθολ.]*. Γίγας, βασιλεὺς τῶν δαιμόνων *Νταΐτυας*. Εἶχε σχεδὸν κατορθώσει ν' ἁρπάσῃ ἀπὸ τῶν θεῶν τὴν διακυβέρνησιν τοῦ κόσμου, ὅτε ὁ Βισνοῦ, ὑπὸ μορφὴν νάνου βραχμᾶνος (Βαμάνα), ἐζήτησε παρ' αὐτοῦ τὴν παραχώρησιν ἐδάφους ἐκτάσεως τριῶν ποδῶν. Τοῦ Μπαλὶ συγκατατεθέντος, ὁ Βισνοῦ ἐστηρίχθη διὰ τοῦ δεξιοῦ ποδός του ἐπὶ τῆς γῆς καὶ διὰ τοῦ ἀριστεροῦ ἐπὶ τοῦ οὐρανοῦ. Ὁ γίγας κατεπτοήθη, ἀναμένων τιμωρίαν σκληράν, ἀλλ' ὁ Βισνοῦ, ἔχων ὑπ' ὄψιν τὴν ἀνδρείαν καὶ τὰς ἀρετὰς τοῦ ἀντιπάλου του, δὲν ἠθέλησε νὰ τὸν τιμωρήσῃ, ἀλλὰ τοὐναντίον τοῦ παρεχώρησε τὸ βασίλειον τῶν νεκρῶν. Α. Δ.

**Μπαλὶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κέντρου (Ἰμὰμ-Τσαούση) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, μετονομασθὲν εἰς *Ἁγία Ἄννα*. Κάτ. (1928) 103. Χ. Δ.

**Μπαλὶ** *βέης (Γιαχιὰ-πασᾶ-ζαδές)*. Τοῦρκος στρατηγὸς ἐπὶ σουλτάνου Σουλεϋμὰν τοῦ Νομοθέτου. Διετέλεσε διοικητὴς Βελιγραδίου (1521) καὶ Βουδαπέστης, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1543. Ν. Μ.

—**Μπαλὶ** *βέης (Μαλκὸτς-ὀγλοῦ)*. Τοῦρκος στρατηγὸς ἐπὶ σουλτάνου Βαγιαζὶτ τοῦ Β′ (1481—1512), διακριθεὶς εἰς διαφόρους ἐκστρατείας κατὰ τῆς Βλαχίας, Οὐγγαρίας καὶ Πολωνίας.

**Μπάλια,** ἢ καὶ *Μπαλιᾶ*-Χισὰρ (βλ. λ.).

**Μπάλια** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Μπαλουκεσέρ, διάσημος διὰ τὰ ἐκεῖ μεταλλεῖα ἀργυρούχου μολύβδου. Κάτ. 5.424 (1927). Μόνον ὁ ἑλληνικὸς πληθυσμὸς ἀνήρχετο πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς εἰς 5 000 τοὐλάχιστον. Τὰ μεταλλεῖα τῆς Μπάλιας ἦσαν γνωστὰ καὶ κατὰ τὴν ἀρχαιότητα, ἐκμεταλλευόμενα ὑπὸ τῶν βασιλέων τῆς Περγάμου. Τῷ 1840 ἐπανήρχισεν ἡ ἐκμετάλλευσις, ἀφότου τὴν ἐπιχείρησιν ἀνέλαβεν ἡ ἑλληνικὴ ἑταιρεία Λαυρείου. Τῷ 1892 κατηρτίσθη ὑπὸ Ἑλλήνων κεφαλαιούχων ἡ «Ἀνώνυμος Ὀθωμανικὴ Ἑταιρεία» τῶν μεταλλείων Μπάλια-Καραϊδίν, πρὸς ἐκμετάλλευσιν τοῦ μεταλλείου ἀργυρούχου μολύβδου καὶ παλαιῶν σκωριῶν τοῦ Κοτζᾶ-Γκιουμούς, τοῦ μεταλλείου ἀργυρούχου μολύβδου καὶ σκωριῶν τοῦ χωρίου Καραϊδὶν καὶ ἑνὸς λιγνιτωρυχείου κειμένου εἰς θέσιν Μανζιλιά. Ἡ ἐπιχείρησις ἠναγκάσθη νὰ διακόψῃ τὰς ἐργασίας της μετὰ τὴν μικρασιατικὴν καταστροφὴν (1922).

Ἡ σημερινὴ ὑποδιοίκησις *Μπάλια* ἔχει ἐπιφάνειαν 1.095 τ. χλμ. καὶ 30.846 κατοίκους (1927). Ν.Μ.

**μπαλιᾶ.** Λέξις περσική, σημαίνουσα ὑψηλός, ἄνω. Ὡς δεύτερον συνθετικὸν τουρκικῶν τοπωνυμίων σημαίνει «*Ἄνω —*», π. χ. Τζουμάϊ-μπαλιᾶ (= Ἄνω-Τζουμαγιά), κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ Τζουμάϊ-ζὶρ (=Κάτω Τζουμαγιά)· || πολιτικὸς βαθμὸς ἐν Τουρκίᾳ ἐν τῇ ἱεραρχίᾳ τῶν πολιτικῶν βαθμούχων, ἐρχόμενος ἀμέσως μετὰ τὸν τοῦ βεζύρου καὶ δίδων δικαίωμα εἰς τὸν τίτλον «χαζρετλερὶ» (=ἐξοχότης). Κατηργήθη ὑπὸ τῶν Νεοτούρκων ἀπὸ τοῦ 1908. Ν. Μ.

**Μπαλιᾶ-χισάρ,** ἢ ἁπλῶς **Μπάλια** *(Βάλια) [Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα τῆς ὑποδιοικήσεως *Μπάλια* τοῦ νομοῦ Ἀγκύρας. Κάτ. 5.294. Ἡ ὑποδιοίκησις ἔχει ἐπιφάνειαν 3.060 τετρ. χλμ. καὶ κατ. 29.313 (1927). Εἰς θέσιν Ντεμὶρ-μπὶλ ὑπάρχει λιγνιτωρυχεῖον, εἴς τινα δὲ μέρη καὶ λατομεῖα μαρμάρου. Ν. Μ.

**Μπαλιάγα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καλαμῶν τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 641. Μετωνομάσθη *Ἄμμος*. Χ. Δ.

**Μπαλίβι** (Baglivi), ***Γεώργιος***. Διάσημος Ἰταλὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Ραγούζῃ τῷ 1669 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ρώμῃ τῷ 1706. Υἱὸς πτωχῆς ἀρμενικῆς οἰκογενείας, υἱοθετήθη παρὰ τοῦ πλουσίου καὶ διαπρεποῦς ἰατροῦ Pier-Angelo Baglivi, κληρονομήσας τὸ ὄνομα καὶ τὴν περιουσίαν αὐτοῦ. Ἐσπούδασεν ἐν Παδούῃ καὶ Βολωνίᾳ, διατελέσας μαθητὴς καὶ φίλος τοῦ μεγάλου ἀνατόμου Μαλπίγκι. Διορισθεὶς ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος ΙΑ′ καθηγητὴς τῆς θεωρητικῆς ἰατρικῆς εἰς τὸ κολλέγιον Sapience, ἐδίδαξεν ἀργότερον (1695) ἀνατομικὴν καὶ χειρουργικήν. Ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τῶν ἀρχῶν τοῦ Καρτεσίου καὶ Βάκωνος διέσεισεν οὗτος τὰς περὶ χυμῶν δοξασίας τῆς Γαληνικῆς σχολῆς, μοχθῶν ὑπὲρ τῆς ἀναβιώσεως τῶν ἀρχῶν τῆς παλαιᾶς μεθοδικῆς σχολῆς. Κατ' αὐτόν, πάντα τὰ φυσιολογικὰ φαινόμενα ἠδύναντο φυσικώτερον καὶ σαφέστερον νὰ ἐξηγηθῶσι διὰ τῶν μαθηματικῶν νόμων καὶ τῆς μηχανικῆς ἢ διὰ τῶν θεωριῶν, αἵτινες, ἀποτελοῦσαι τρόπον τινὰ αὐθαίρετον συνδυασμὸν τοῦ πνεύματος, ἰσχύουσι μόνον ἐφ' ὅσον ἀναπαριστῶσιν ἀκριβῶς τὴν φύσιν. Οὕτως ἐπὶ τῆς αἰτιολογίας τῶν νόσων καὶ τῆς θεραπείας αὐτῶν, ἑκάστη τῶν διαφόρων θεωριῶν, χωριστὰ λαμβανομένη, θὰ ἠδύνατο νὰ δώσῃ τὴν ἐξήγησιν καὶ τὴν ἴασιν τῶν νόσων, ἀπαράλλακτα ὡς οἱ ἀστρονόμοι κατορθοῦσι διὰ διαφόρων συστημάτων νὰ προλέγωσι καλῶς τὰ οὐράνια φαινόμενα. Τὰ σχετικά του ἔργα ἐδημοσιεύθησαν πλειστάκις ὑπὸ τὸν τίτλον: «Opera omnia medico-practica et anatomica» (Lyon 1704, Paris 1788). Τὸ σπουδαιότερον τούτων εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «De praxi medica ad priscam observandi rationem revocanda» (Rome 1696), μεταφρασθὲν ὑπὸ τοῦ δόκτωρος Boucher τῷ 1851 ὑπὸ τὸν τίτλον «De l'aceroissement de la médecine pratique». Ο. Ρ.

**μπαλιέτα.** Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὰς *πλεκτὰς* (βλ. λ.) τῶν λέμβων. Προφέρεται καὶ *μπαγιέτα*. Σ. Ε. Λ.

**μπαλιέτο.** Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τὸν *ρίπον* (βλ. λ.). Προφέρεται καὶ *μπαγιέτο*. Σ. Ε. Λ.

**Μπάλιζ** (Bélize) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς Βρεττανικῆς Ὁνδούρας (βλ. λ. *Μπέλιζ*).

**μπάλιζα** (ἡ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία παρ' ἡμῖν τοῦ πτηνοῦ *αἴθυια*.

**Μπαλιζοὺ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον μικρασιατικὸν καὶ ὅρμος (πλάτ. 36°55′ Β., μῆκ. 28° 05′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: Gulf of Kos, Doris and Symi) τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Κῶ. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλίκεσερ** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μπαλούκεσερ*.

**Μπαλίλλα** (Balilla), ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Περάσσο***, ἐπικαλούμενος —. Ἰταλὸς λαϊκὸς ἥρως (1721—1781). Ἐγένετο ὀνομαστὸς ἐκ τοῦ θαρραλέου κατορθώματός του, τῆς 5 Δεκεμβρίου 1746, ὅπερ συνέβαλεν εἰς τὴν ἐκδίωξιν τῶν αὐστριακῶν στρατευμάτων ἐκ τῆς πόλεως Γενούης. Κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀπόσπασμα αὐστριακοῦ στρατοῦ, ἐκ τοῦ καταλαβόντος πρό τινος τὴν πόλιν, μετέφερε μέγα τηλεβόλον διά τινος ὁδοῦ μιᾶς λαϊκῆς συνοικίας τῆς Γενούης. Τὸ τηλεβόλον ὅμως, λόγῳ τοῦ βάρους του, βυθισθὲν ἐντὸς τῆς λάσπης, καθίστατο ἀδύνατον νὰ κινηθῇ. Ὁ ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ἀποσπάσματος Αὐστριακὸς λοχίας διέταξε διὰ σκαιοῦ καὶ ἀπειλητικοῦ τρόπον τὸ συγκεντρωθὲν ἐκ περιεργείας πλῆθος νὰ βοηθήσῃ εἰς τὴν μεταφοράν. Αἰφνιδίως ὅμως ἀνεπήδησεν ἐκ τοῦ πλήθους ὁ νεανίας τότε Μπαλίλλα, ὁ ὁποῖος, κραυγάζων «Κάμνω ἐγὼ πρῶτος τὴν ἀρχήν», ἤρχισε νὰ λιθοβολῇ τοὺς Αὐστριακούς. Τὸ παράδειγμά του ἠκολούθησεν ἀμέσως τὸ πλῆθος καὶ ἐντὸς ὀλίγου οἱ Αὐστριακοὶ στρατιῶται ἐτράπησαν εἰς φυγήν, μεταδώσαντες τὸν πανικὸν εἰς ὁλόκληρον τὴν φρουράν. Οἱ κάτοικοι ἀναθαρρήσαντες ἐξηγέρθησαν κατόπιν καὶ μετὰ πενθήμερον ἀγῶνα κατώρθωσαν νὰ ἐκδιώξουν τοὺς Αὐστριακοὺς ἐκ τῆς πόλεως καὶ ἐξ ὁλοκλήρου τῆς Λιγυρίας. Τῷ 1863 ἱδρύθη ἐν Γενούῃ χάλκινον ἄγαλμα, παριστάνον τὸν νεανίαν ρίπτοντα λίθον. Μ. Δ. Β.

— **Μπαλίλλα,** ***Ἐθνικὸν ἵδρυμα τῶν*** — (Opera Nazionale Balilla). Παιδικὴ φασιστικὴ ὀργάνωσις πρὸς προστασίαν καὶ φυσικὴν καὶ ἠθικὴν διαπαιδαγώγησιν τῆς νεολαίας, ἱδρυθεῖσα ἐν Ἰταλίᾳ τῷ 1926 καὶ ἐξαρτωμένη ἀπὸ τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας, ὑπὸ τὴν ἄμεσον ἐποπτείαν τοῦ προέδρου τῆς κυβερνήσεως. Ἕδρα αὐτῆς εἶναι ἡ Ρώμη, περιλαμβάνει δέ, πλὴν τῶν Μπαλίλλα, τοὺς Πρωτοπόρους (Avanguardisti) καὶ τὰ σωματεῖα τῶν «Μικρῶν καὶ νεαρῶν Ἰταλίδων». Εἰς τὴν ὀργάνωσιν τῶν Μπαλίλλα, ἥτις εἶναι διακλαδωμένη καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν, ἀνήκουν παιδία ἀπὸ 8—14

Digitized by Google

ἐτῶν ἡλικίας, εἰς δὲ τοὺς πρωτοπόρους ἔφηβοι ἀπὸ 14—18 ἐτῶν. Ὁ ὀργανισμὸς αὐτῶν στηρίζεται ἐπὶ στρατιωτικῶν βάσεων καὶ προσομοιάζει μεγάλως πρὸς τὸν προσκοπισμόν. Μέχρι τοῦ 1930 ἡ ὀργάνωσις αὕτη περιελάμβανε 1.974.822 μέλη (ὧν 903.324 Μπαλίλλα καὶ 365.044 Πρωτοπόροι), συντεταγμένα εἰς 592 λεγεῶνας ὑπὸ τὴν διοίκησιν 5.588 ἀξιωματικῶν τῆς φασιστικῆς φρουρᾶς, μετὰ 19.500 ἐκπαιδευτῶν, 767 ἱερέων καὶ 1.237 ἰατρῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπαλῖνον** *[Γεωγρ.]*. Συνοικία τῆς Κωνσταντινουπόλεως, παρὰ τὸ Φανάριον, μεταξὺ Μουχλίου καὶ τῆς Ξυλοπόρτας, οἰκουμένη ὑπὸ Ἑλλήνων. Ὁ ἐν αὐτῇ ναὸς τιμᾶται εἰς ὄνομα τῆς Θεοτόκου ἢ Παναγίας-Χαντζαρλῆ, διότι εἰς τὴν εἰκόνα αὐτῆς προσαρτᾶται μάχαιρα (χαντζάριον) Ἄραβος, ὅστις μαχαιρώσας τὴν εἰκόνα εἶδε, κατὰ λαϊκὴν παράδοσιν, ν' ἀναβλύζῃ ἐξ αὐτῆς αἷμα. Ν. Μ.

**Μπαλιόλ,** ἢ ***Μπαλλιέλ*** (Baliol ἢ Bailleul). Οἰκογένεια εὐγενῶν τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, καταγομένη ἐκ Νορμανδίας καὶ διαδραματίσασα εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Σκωτίας καὶ τῆς Ἀγγλίας κατὰ τὸν ΙΓ' καὶ ΙΔ' αἰῶνα σημαντικὸν πρόσωπον. Σπουδαιότερα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης ὑπῆρξαν:

— 1) ***Γουΐδος.*** Συνοδεύσας Γουλιέλμον τὸν Κατακτητὴν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἔλαβε παρὰ τῶν δουκῶν τῆς Νορμανδίας ὡς ἀντάλλαγμα τῶν ὑπηρεσιῶν αὐτοῦ μεγάλας ἐκτάσεις γαιῶν ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Ντύραμ.

— 2) ***Βερνάρδος,*** υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Κατεσκεύασε τὸ πολυθρύλητον φρούριον «Μπέρναρ Κάστλ», ἐρείπια τοῦ ὁποίου περιεσώθησαν.

— 3) ***Ἰωάννης,*** ἱδρυτὴς τοῦ Κολλεγίου τῆς Ὀξφόρδης. Ἡ σύζυγός του Μαργαρίτα κατήγετο ἐκ τῶν βασιλέων τῆς Σκωτίας.

—4) ***Ἰωάννης,*** υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1249. Μετὰ τὸν θάνατον Ἀλεξάνδρου τοῦ Γ', τελευταίου ἐκπροσώπου τῆς πρώτης ἐν Σκωτίᾳ δυναστείας, διεξεδίκησε τὰ δικαιώματα, ἅτινα εἶχεν ἐπὶ τοῦ θρόνου ἐκ μέρους τῆς μητρὸς αὐτοῦ, ἐκτοπίζων τὸν Ροβέρτον Μπρύς. Τῆς Σκωτίας ἀποδεχθείσης τὴν διαιτησίαν τοῦ Ἐδουάρδου Α', βασιλέως τῆς Ἀγγλίας, ὁ Μπαλιὸλ ὑπεδείχθη ὡς ἡγεμὼν ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ εἶναι ὑποτελὴς εἰς τὸν Ἄγγλον μονάρχην. Ἀλλ' ὁ Ἐδουάρδος κατεχράσθη κατὰ τοιοῦτον τρόπον τῶν δικαιωμάτων του, ὥστε ὁ Μπαλιόλ, μὴ δυνάμενος πλέον ν' ἀνεχθῇ τὴν αὐθαιρεσίαν τοῦ βασιλέως, ἐστασίασεν. Ἡττηθεὶς ἐν Ντομπάρ, καθῃρέθη τῷ 1296 καὶ ἤχθη αἰχμάλωτος εἰς τὸ φρούριον τοῦ Λονδίνου. Δύο ἔτη βραδύτερον ἐπετράπη εἰς αὐτὸν νὰ ἐγκατασταθῇ ἐν Νορμανδίᾳ, ὅπου ἐξεμέτρησε τὸ ζῆν τῷ 1314.

— 5) ***Ἐδουάρδος,*** γεννηθεὶς τῷ 1290. Τῷ 1332 ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ θρόνου τῆς Σκωτίας μὲ τὴν βοήθειαν τοῦ Ἐδουάρδου Γ'. Ἀλλ' ἐπειδὴ ὤμοσεν ὅρκον ὑποτελείας εἰς τὸν μονάρχην, ἐγένετο ἀφορμὴ ὅπως ἐκραγῇ νέα στάσις τῶν Σκώτων κατὰ τοῦ Ἄγγλου ἡγεμόνος. Οἱ Σκῶτοι ἡττήθησαν κατὰ κράτος ὑπὸ τῶν ἀγγλικῶν στρατευμάτων, ὁ δὲ Μπαλιόλ, ἀποδιωχθεὶς λόγῳ τῆς δειλίας του ὑπὸ τῶν ὑπηκόων του, κατέφυγεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου ἐκήρυξεν ἑαυτὸν ἔκπτωτον τῶν δικαιωμάτων του ἐπὶ τοῦ θρόνου ὑπὲρ τοῦ Ἐδουάρδου Γ', παρὰ τοῦ ὁποίου ἔλαβεν ἐτησίαν ἐπιχορήγησιν ὀλίγων χιλιάδων λιρῶν. Α. Δ.

**Μπαλιόνι** (Baglioni). Ἰταλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν ἐκ Περουγίας. Τὰ κυριώτερα τῶν μελῶν αὐτῆς εἶναι: —1) ***Ἰωάννης Παῦλος.*** Οὗτος ἦτο ἀρχηγὸς μισθοφόρων καὶ κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὴν Περουγίαν, τῆς ὁποίας ἐγένετο ἄρχων. Ὁ Καῖσαρ Βοργίας κατώρθωσε νὰ τὸν ἐκδιώξῃ τῷ 1506, ἀλλὰ μετὰ δύο ἔτη ἠδυνήθη νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν πόλιν ἐκ νέου. Ἐγένετο διάσημος διὰ διάφορα ἐγκλήματα καὶ ἀνομίας, αἵτινες ἐξήγειραν ἐναντίον του τοὺς κατοίκους, καθὼς καὶ διὰ τὴν συμβίωσιν μετὰ τῆς ἀδελφῆς του. Τῷ 1520 ὁ πάπας Λέων Ι' κατέλαβε τὴν πόλιν, τὸν συνέλαβεν αἰχμάλωτον καὶ τὸν κατεδίκασεν εἰς τὸν διὰ βασάνων θάνατον. —2) ***Ἀστόρρε,*** στρατιωτικός. Ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατὸν τῆς ἑνετικῆς δημοκρατίας, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἡρωϊκὴν ἄμυναν τῆς Ἀμμοχώστου τῆς Κύπρου ἐναντίον τῶν Τούρκων τῷ 1571, ὅτε συλληφθεὶς ὑπ' αὐτῶν ἐξεδάρη ζῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπαλίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης συνοικισμοῦ *Μελίσσι* (βλ. λ.).

**Μπάλκ** (Balck), ***Γουλιέλμος.*** Γερμανὸς στρατηγὸς καὶ στρατιωτικὸς συγγραφεὺς (1858—1929). Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ πολέμου, τῆς ὁποίας κατόπιν ἐγένετο καθηγητής. Ἐπίσης ἐχρημάτισε καθηγητὴς εἰς τὰς στρατιωτικὰς σχολὰς τοῦ Δάντσιγκ καὶ τοῦ Ἔνγκερ. Ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ 1904 ὑπηρέτησεν εἰς τὸ μέγα γενικὸν ἐπιτελεῖον. Βραδύτερον ἐταξίδευσε χάριν μελετῶν εἰς Ἰταλίαν, Ἀγγλίαν καὶ Γαλλίαν. Κατέστη παγκοσμίως γνωστὸς ἐκ τοῦ ἔργου του «Τακτική», τὸ ὁποῖον ἐξέδωσε τῷ 1903—1910 εἰς πέντε τόμους καὶ ὅπερ μετεφράσθη εἰς πλείστας γλώσσας καὶ εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ τοῦ Ξενοφῶντος Στρατηγοῦ (ὁ ε' τόμ. ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ε. Βερνάρδου). Ἔγραψεν ἐπίσης τὴν βιογραφίαν τοῦ «Πρίγκιπος Φρειδερίκου Καρόλου» καὶ ἐξέδωσε τὸν «Wedels Offizier-Taschenbuch». Ν.Θ.Κ.

— **Μπάλκ** (Balck), ***Γουσταῦος-Βίκτωρ.*** Σουηδὸς στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1844 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1928. Ἐπιδοθεὶς ἐνωρὶς εἰς τὴν καλλιέργειαν τῆς γυμναστικῆς καὶ τοῦ ἀθλητισμοῦ, διετέλεσεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη διευθυντὴς τοῦ Κεντρικοῦ Γυμναστικοῦ Ἰνστιτούτου Στοκχόλμης. Παρακολουθήσας διὰ τὰ σχετικὰ ζητήματα τὴν ἑλληνικὴν ἱστορίαν, κατέστη ἔνθερμος φιλέλλην καὶ εἷς τῶν μετ' ἐνθουσιασμοῦ ἐργασθέντων διὰ τὴν τέλεσιν ἐν Ἀθήναις τῶν Ὀλυμπιακῶν Ἀγώνων, εἰς τοὺς ὁποίους καὶ προσῆλθεν ὡς πρόεδρος τῆς Σουηδικῆς Ἐπιτροπῆς τῷ 1906, κατέχων τότε τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου. Μ. Ι. Μ.

**Μπαλκαλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Ψηλόκαστρον* (βλ. λ.).

**Μπαλκὰν** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τοῦ *Αἵμου* (βλ. λ.).

— **Μπαλκὰν** *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη ὀροσειρὰ ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ὄχθης τῆς Κασπίας θαλάσσης Β. τοῦ Ὑπερκαυκασίου σιδηροδρόμου, ἀνερχομένη εἰς ὕψος 1.635 μέτρων.

— **Μπαλκὰν** *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς Κασπίας θαλάσσης, μέχρι τῆς παραλίας τοῦ ὁποίου κατέρχονται αἱ ὑπώρειαι τῆς ἀνωτέρω ἀναφερομένης ὀροσειρᾶς. Ν. Μ.

**Μπάλκας** *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Ρωσίας, εἰς τὰ σύνορα Σιβηρίας καὶ Τουρκεστάν. Ἔχει μῆκος 660 χλμ., πλάτος 10 ἕως 90, ἐμβαδὸν 18.800 τ. χλμ. καὶ βάθος 10—20 μ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν πολλαὶ νησῖδες ὀλικῆς ἐκτάσεως 125 τ. χλμ. Τὰ ὕδατά της πήγνυνται καθ' ἕκαστον ἔτος ἀπὸ τοῦ Ἀπριλίου μέχρι τοῦ Δεκεμβρίου. Ἡ λίμνη τροφοδοτεῖται ὑπὸ τοῦ μεγάλου ποταμοῦ Ἰλὶ καὶ 6 ἄλλων μικροτέρων, ἐκ τῶν ὁποίων λαμβάνει τὸ ὄνομα αὐτῆς ἡ ὅλη περιφέρεια, ὀνομαζομένη *Σεμιργιετσένσκα* (=χώρα τῶν ἑπτὰ ποταμῶν). Θ. Κ.

**Μπαλκίς.** Ἐπώνυμον τῆς βασιλίσσης τοῦ *Σαβᾶ* (βλ. λ.).

**Μπαλκὶς σεράϊ** *[Ἀρχ.]*. Ἐν μέσῳ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας πόλεως Ἀσπένδου, ἐγείρεται μέγα μνημεῖον φέρον τὸ ὄνομα *Μπαλκὶς σεράϊ*, ἤτοι ἀνάκτορον τῆς Μπαλκίς, ὡς ἐκαλεῖτο ἡ βασίλισσα Σαβᾶ. Κ. ΛΣ

**Μπάλκλι** (Bulkely) *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Ἀλεξανδρείας (βλ. λ. *Βούκλεϋ*).

**μπαλκόνι** (τό)· δημοτ., ὁ ἐξώστης (γαλλ. balcon, ἰταλ. balcone).

— *[Ἀρχ.]* Βλ. λ. *ἐξώστης*.

— **μπαλκόνι τῆς πρύμνης** *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἐξώστης* (τ. ΙΑ' σ. 289 α').

**Μπαλκουβίνα** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βαλκουβίνα*.

**Μπὰλλ** (Ball), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος ἱερεὺς (βλ. λ. *Μπὼλλ Ἰωάννης*).

**μπάλλα** (ἡ)· σφαῖρα, ἰδίᾳ τοῦ *φούτ-μπόλ*: «ἐπαίξαμε μπάλλα», «ξεφούσκωσε ἡ μπάλλα» ‖ ἡ σφαιρικὴ βολίς: «μπάλλα κανονιοῦ», «μπάλλα ἀπὸ χιόνι» ‖ δέμα ἐμπορευμάτων συσκευασμένων πρὸς ἀποστολήν, ἄλλως *μπαλλότο* ‖ φρ. «πῆρε μπάλλα τὰ μαγαζιά», «— τοὺς δρόμους», γυρίζει, περιφέρεται 'ς τὰ μαγαζιά, εἰς τοὺς δρόμους (ἡ λ. εἶναι ξένη, μολονότι εἶναι ἱκανῶς παλαιά· τῆς αὐτῆς ἀρχῆς μὲ τὴν γαλλ. balle καὶ ἰταλ. palla).

— **μπάλλα φογάδα,** ἢ καὶ **μπαλλαστρόνια** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Ὀνομασία ἣν ἔδωσαν οἱ ναυμάχοι τοῦ Ἀγῶνος εἰς πυρπόλον βλῆμα, ὅλως ἄσχετον πρὸς τὰς πεπυρακτωμένας σφαίρας παιξάνς τῶν πυροβόλων τῆς «Καρτερίας», ἀποτελοῦν δὲ ἓν τῶν λυσιτελῶν μέτρων, ἅτινα οἱ ἐπιβαίνοντες τοῦ αἰγυπτιακοῦ στόλου Εὐρωπαῖοι ἀξιωματικοὶ ἐφήρμοσαν κατὰ τῶν πυρπολικῶν μας. Ἦτο σφαῖρα, ἥτις ἐκ βραχείας ἀποστάσεως κατὰ τῶν καταστρωμάτων τῶν πυρπολικῶν βαλλομένη, καθίστατο ἀμέσως περιφλεγὴς πρὸς μετάδοσιν πυρκαϊᾶς εἰς τὴν *μίναν τῆς φωτιᾶς* ἢ τὸ *λούκι τοῦ μπαρουτιοῦ* καὶ ἀνάφλεξιν τοῦ πυρπολικοῦ πρὸ τῆς προσκολλήσεώς του. Τὸ τοιοῦτον ἀμυντικὸν μέσον ἐγένετο τὸ πρῶτον ἀντιληπτὸν μετὰ τὴν ἔξοδον τοῦ στόλου τοῦ Ἰμπραὴμ ἀπὸ τοῦ κόλπου τῆς Ἁλικαρνασσοῦ, κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ μεγάλην ναυμαχίαν, πυρποληθέντος τοῦ πυρπολικοῦ τοῦ Ρομπότζη. Σ. Ε. Λ.

— **μπάλλα-φουμάδα** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Σημαλέον πυροτέχνημα τοῦ ἄλλοτε ναυτικοῦ. Ἦσαν σφαῖραι ἐκ πυροτεχνουργικοῦ πολτοῦ λίαν καπνογόνοι πρὸς σήμανσιν σημάτων μεγάλης ἀποστάσεως ἐν ἡμέρᾳ, ἐν ταὐτῷ δ' ἀποδιδοῦσαι ἐντατικωτάτην λάμψιν διὰ νυκτερινὰ σήματα. Ἐξεσφενδονίζοντο εἴτε ἀπὸ μικροῦ σιδηροῦ σωλῆνος κεκλιμένου πρὸς τὰ ἄνω, εἴτε ἀπὸ ξυλίνου ὀργάνου μετὰ σφύρας, πυρίτινος καὶ ὀχετοῦ πυρίτιδος, ὁμοιάζοντος πρὸς ἀτέχνως κατεσκευασμένον πιστόλιον. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλλαὶ** (Ballay), ***Νοὲλ-Εὐγένιος.*** Γάλλος ἐξερευνητὴς (1847—1902). Ἦτο ἰατρός, τῷ δὲ 1875—1879) μεταβὰς εἰς Ἀφρικὴν ἐξηρεύνησε τὸ Ὀγκοουὲ καὶ τὸν ἄνω ροῦν τοῦ Ἀλίμα, μετὰ δὲ τοῦ Μπραζζὰ τὸν ποταμὸν Λικόνα. Ἐν συνεχείᾳ κατὰ τὰ ἔτη 1880—1884 ἐπεσκέφθη τὴν χώραν τῶν Μπατέκη καὶ μετέσχε τῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις καθώρισε τὰ μεταξὺ τοῦ Βελγικοῦ καὶ Γαλλικοῦ Κόνγκο σύνορα (1886). Ἔκτοτε διωρίσθη διοικητὴς τῆς γαλλικῆς Γουϊνέας καὶ παρέμεινεν ἐν Ἀφρικῇ μέχρι τοῦ θανάτου του. Χ. Λ.

**μπαλλαμισδράλλια** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Ὀνομασία ἣν ἔδιδον οἱ ναυμάχοι τοῦ Ἀγῶνος εἰς τὰς βολίδας καὶ τὰ κερμάτια, ἅτινα ἔβαλλον τὰ πυροβόλα τῶν πλοίων ἐξ ἐγγυτάτων ἀπὸ τοῦ στόχου ἀποστάσεων καὶ δὴ ἐναντίον πυρπολικῶν καὶ ἐξωπλισμένων ἀκάτων. Σ. Ε. Λ.

**μπαλλάμπιλε** (ἰταλ. ballabile) *[Μουσ.]*. Βραχὺ μπαλλέτο, περιοριζόμενον συχνάκις εἰς μερικὰ χορευτικὰ βήματα καὶ εἰσαγόμενον εἰς θεατρικόν τι ἔργον, ἵνα ποικίλῃ αὐτὸ ἢ νὰ δώσῃ ἐντονώτερον χαρακτῆρα εἰς σκηνήν τινα. Γ. Σ.

**Μπαλλὰνς** (Ballanche), ***Πέτρος-Σίμων.*** Γάλλος μυστικιστὴς (1776—1847). Κατ' ἀρχὰς ἁπλοῦς τυπογράφος, ἐγένετο γνωστὸς ὡς συγγραφεὺς ἐκ τῶν δημοσιεύσεων του ἐν τῷ «Bulletin de Lyon». Συνδεθεὶς εἰς τὴν Λυών, ἰδιαιτέραν πατρίδα του, μὲ τὴν κυρίαν Ρεκαμιέ, συνώδευσεν αὐτὴν εἰς Παρισίους, ὅπου ἦλθεν εἰς ἐπαφὴν πρὸς τὴν Ἀμπαὶγ-ντὲ-Μπουᾶ, τὴν ὁποίαν συχνότατα ἐπεσκέπτετο. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐξέδωκε τὰ μυστικιστικά του ἔργα: «Ἀντιγόνη», «Οἱ κοινωνικοὶ θεσμοί», «Ὁ παλαιὸς καὶ ὁ νέος ἄνθρωπος» κ. ἄ. Εἰς τὴν συγγραφὴν «Κοινωνικὴ παλιγγενεσία» ἀναπτύσσει τὴν ἰδέαν τῆς παλιγγενεσίας τοῦ ἀτόμου, ἀκολουθῶν ἐν προκειμένῳ τὸν Κ.

*Πέτρος Μπαλλάνς.*

Μποννέ. Ἐπὶ τῆς ἰδέας ταύτης στηρίζει ὁλόκληρον σύστημα, καθ' ὃ ἡ ἀνθρωπότης, ἐκπεσοῦσα συνεπείᾳ τοῦ προπατορικοῦ ἁμαρτήματος, ἐπανῆλθεν εἰς τὴν πρώτην αὐτῆς κατάστασιν, ἀφοῦ ὑπέστη διαφόρους δοκιμασίας καὶ ὑπεβλήθη εἰς πολλοὺς ἐξαγνισμούς. Ὡς τελευταίας δοκιμασίας θεωρεῖ τὴν μεγάλην Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν καὶ τὴν αὐτοκρατορίαν. Τῷ 1842 ὁ Μπαλλὰνς διεδέχθη εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν τὸν Ἀλέξανδρον Ντυβάλ. Α. Σ.

**μπαλλάντα** (ἡ) (ἢ ***μπαλλάτα***). Λογοτεχνικὸν εἶδος, ὅπερ μετὰ τοῦ *σοννέτου* εἶναι τὰ μόνα μέχρι τῆς συγχρόνου ποιητικῆς ἐποχῆς ἐνεργῶς ἐπιζήσαντα καὶ ἐπιζῶντα εἴδη ποιήσεως παγίας μορφῆς (poésie à forme fixe), ἥτις ἀπετέλεσε κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ὁλόκληρον τὸ ποιητικὸν ἰδεῶδες, ἀπὸ τῆς ἐμφανίσεως αὐτῆς ἐν τῇ ἡμιβαρβάρῳ ἔτι δυτικῇ Εὐρώπῃ (Η' αἰὼν) μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ ρωμαντισμοῦ (1790—1800), ὁπότε, τῆς μορφῆς τιθεμένης ἐν ἥσσονι μοίρᾳ, ἡ ἔννοια τῆς ποιήσεως ἀνεζητήθη ἐπέκεινα τῆς στιχουργικῆς καὶ εἰς πηγὰς βαθυτέρας, οἷα ἡ τοῦ πάθους, βραδύτερον δὲ καὶ ἡ τῆς μουσικῆς καὶ μουσικότητος ὑπὸ πᾶσαν ἐκδοχὴν τῆς λέξεως. Τῆς λέξεως *μπαλλάντα* εἶναι οὐ μόνον ἡ ῥίζα καὶ ἡ προέλευσις ἑλληνική (ἀπὸ τοῦ *βαλλίζω*, ἤτοι ὀρχοῦμαι βάλλων, δηλαδὴ κινῶν, ἐκτείνων ζωηρῶς τοὺς πόδας), ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχικὸν πραγματικὸν περιεχόμενον· ὄντως, τὸ βάλλισμα ἀποτελεῖ ἀπὸ τοῦ ἀρχαίου σεμνοῦ θρησκευτικοῦ *παιᾶνος*, ἐμμελοῦς καὶ ψαλλομένου ἐν χορῷ, καὶ τοῦ μεταγενεστέρου *ὑπορχήματος*, τὸ στάδιον μεταβάσεως εἰς τὴν λυρικὴν ἔκφρασιν παντὸς ἀνθρωπίνου συναισθήματος, διὰ λόγου, μέλους καὶ ὀρχήσεως ὁμοῦ. Μετὰ τὴν ρωμαϊκὴν κατάκτησιν τῆς Ἑλλάδος τὸ πρᾶγμα καὶ ἡ ὀνομασία ἀπαντῶσι διαδεδομένα ἐν τῇ Ν. Ἰταλίᾳ (Γ' μ. Χ. αἰών), ἐκεῖθεν δ' ἐν Ρώμῃ, ὁπόθεν καὶ ἡ μπαλλάντα διεδόθη εἰς ἅπαντας τοὺς λατινικοὺς λαούς, ξένη πλέον παντὸς θρησκευτικοῦ ἢ τελετουργικοῦ χαρακτῆρος, ἀπεναντίας δ' ἔχουσα χροιὰν κοσμικὴν καὶ δὴ μᾶλλον ἀνειμένην καὶ ἐλευθεριάζουσαν. Ἐκ δὲ τοῦ ὅλου *μπαλλάντα* ἀπεκλήθη βραδύτερον καὶ τὸ μέρος, τουτέστι τὸ κατὰ τὸ βάλλισμα ᾀδόμενον στιχούργημα, οὗτινος παρουσιάζεται εὐεξήγητος καὶ ἡ περιγεγραμμένη καὶ αὐστηρὰ συγκρότησις εἰς στροφάς. Τῆς τοιαύτης διαφοροποιήσεως προϊούσης ἡ μπαλλάντα κατέστη αὐθυπόστατον ποιητικὸν εἶδος, καλλιεργούμενον εἴτε ὑπὸ τῶν αὐτοσχεδίων ἀοιδῶν καὶ τῶν αὐλικῶν ραψῳδῶν τῆς ἐποχῆς, ἤτοι τῶν *τρουβέρων* καὶ *τρουβαδούρων* καὶ τῶν *minnestrels* ἐν Γαλλίᾳ, ὑπὸ τῶν *βάρδων* καὶ τῶν

Digitized by Google

...trels ἐν Σκωτίᾳ καὶ Ἀγγλίᾳ, τῶν *meisterssinger* ἐν Γερμανίᾳ καὶ ἄλλως ἀλλαχοῦ, ἀλλ' οὐδὲν ἧττον καὶ ὑπ' αὐτῶν τούτων τῶν λογίων καὶ μουσοτραφῶν ἡγεμόνων τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἐν Ἱσπανίᾳ τὸ εἶδος τοῦτο καλεῖται *romancero.*

Κατὰ τ' ἀνωτέρω, ἡ μπαλλάντα, προκειμένου διὰ τὰ λατινικὰ ἔθνη, ὁρίζεται μόνον ἀπὸ ἀπόψεως μορφῆς, ἤτοι ὡς στιχούργημα εὐρυτάτου ἢ μᾶλλον οἱουδήποτε περιεχομένου, διατεταγμένον εἰς στροφάς, τοὐλάχιστον τρεῖς καὶ ἐνίοτε μέχρι δώδεκα, εἰς μετρικὸν πλάτος πάντοτε ἔλασσον τοῦ δωδεκασυλλάβου (τοῦ γαλλικοῦ ἀλεξανδρινοῦ), ἰδιαιτέρως χαρακτηριζομένας ἐν πρώτοις μὲν διὰ περιορισμοῦ περὶ τὴν *ὁμοιοκαταληξίαν,* ἥτις, διπλῆ καὶ μέχρι δεκαπλῆς ἐν τῇ πρώτῃ, ὀφείλει ἡ αὐτὴ νὰ ἐπανέρχεται ἐν ἑκάστῃ περαιτέρω στροφῇ, ἔπειτα δὲ διὰ τῆς *ἐπῳδοῦ*, τουτέστι διὰ τῆς συμμέτρου ἑκάστοτε ἐπαναλήψεως ἑνὸς ἢ περισσοτέρων στίχων αὐτουσίων· τὸ δὲ στοιχεῖον τοῦτο, ἐν τῇ καθολικῇ πλαστικότητι τῆς μπαλλάντας, παρουσιάζεται ὡς τὸ πρῶτον ἐμφανιζόμενον τυπικὸν μουσικὸν στοιχεῖον, εἶναι δ' ἡ ἀξία του τοσοῦτον μεγαλυτέρα, καθ' ὅσον ἐπιτυγχάνει, ἀντὶ ν' ἀναστέλλῃ, νὰ παρακολουθῇ καὶ νὰ ὑποβοηθῇ τὴν προοδευτικὴν ἀνέλιξιν τοῦ νοήματος, καίτοι δὲ ταυτολογία, νὰ προσλαμβάνῃ διὰ τῆς διηνεκοῦς μεταθέσεως διάφορον χροιάν, ὡς ἡ ἐν τῇ ῥητορικῇ *ἀνάκλασις* βλ. λ.)· χαρακτηριστικὸν τέλος τῆς μπαλλάντας εἶναι καὶ ὁ δι' *ἐπιμυθίου* (envoi) ὑπὸ εὐρυτάτην λυρικὴν ἔννοιαν τερματισμός. Ἀλλὰ τῶν ἀνωτέρω στοιχείων τὸ ἄθροισμα ἀποτελεῖ μᾶλλον ἰδανικῆς ἐπαγωγῆς τὸ προϊόν, ἢ ὁλοκλήρωσιν τυπικοῦ ὁρισμοῦ ἀπαραβάτου, καὶ τοῦτο, διότι ἀπόλυτος ἐφαρμογὴ τῶν ἀνωτέρω οὐδέποτε ἐτηρήθη ἐν τῇ πράξει, ἤδη δὲ ὁ Φραγκ. Βιγιὸν (ΙΕ´ αἰών), ὅστις ἐλάμπρυνε τὸ εἶδος, παρουσιάζει ἱκανὰς ποικιλίας καὶ ἐλαστικότητας.

Ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον ἐλαστικότητες παρουσιάζονται εἰς τὴν μπαλλάνταν τῶν μὴ λατινικῶν ἐθνῶν (Σκῶτοι), ἔνθα τὸ εἶδος ὁρίζεται μᾶλλον ἀπὸ ἀπόψεως περιεχομένου, ὡς ἐπύλλιον ζωηρῶς δραματικῆς ὑφῆς, περιστρεφόμενον περὶ τοὺς λυρικοὺς τόπους τοῦ ἄθλου, τοῦ ἔρωτος καὶ τοῦ θανάτου, οἵτινες ἀποτελοῦσι τὴν τριάδα τῶν ἐκδηλώσεων τοῦ μεσαιωνικοῦ πολιτισμοῦ καὶ ἐν μέρει τοῦ τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἔτι πλέον, εἰς τὴν μπαλλάνταν τῆς Β. Εὐρώπης ἡ στροφὴ περιορίζεται καὶ μέχρι τοῦ διστίχου καὶ ἡ ὁμοιοκαταληξία μέχρι τῆς παρηχήσεως (assonance), ἡ δὲ ἐπῳδὸς παραμένει στατικὴ ὅλως.

*Ἡ παραλογή.* Εἶδος μορφικῶς μὲν ἄσχετον, ἀντιπροσωπευτικὸν ὅμως ἐσωτερικῶς, εἶναι καὶ ἡ δημώδης βυζαντινὴ ἑλληνικὴ μπαλλάντα, ὡς δυνάμεθα νὰ χαρακτηρίσωμεν τὴν ὑπὸ τὸ βυζαντινὸν ὄνομα *παραλογὴ* φερομένην. Ἀκολουθοῦσα αὕτη ἁπάσης τῆς λοιπῆς δημώδους ἡμῶν ποιήσεως τὴν μορφήν, εἰς οὐδένα περιορισμὸν περὶ τὴν στιχουργικὴν ὑπόκειται, οὔτε ὁμοιοκαταληξίαν, οὔτε κατὰ συνέπειαν στροφὰς παρουσιάζουσα, οὔτε ἄλλο μέτρον ἢ τὸ τοῦ δεκαπεντασυλλάβου, οὔτε καὶ ἐπῳδὸν παρεντιθεμένη, οὔτε καὶ τὴν ἐν ἐπιμυθίῳ ἐπίκλησιν ἐπιφέρουσα, ἐκτὸς ἐὰν πρόκειται περὶ ἑστιωμένου ῥαψῳδοῦ· ἀλλὰ κατὰ τὸ περιεχόμενον, ἱστορικῶς μὲν ἀποτελοῦσα ἡ παραλογὴ μετάβασιν ἀπὸ τοῦ ἀκριτικοῦ ἐπικοῦ κύκλου εἰς ποικιλώτερα συγγενῆ θέματα, γραμματολογικῶς δὲ εἰς τὸ ἐπύλλιον ἀπὸ τοῦ ἔπους, χαρακτηρίζεται αὕτη ἀνεξαιρέτως ὑπὸ στοιχείων δραματικῶν· τοιαῦτα εἶναι ὁ ἀριστοτελικῶς «τέλειος» μῦθος καὶ δὴ καὶ ἡ σπουδαιότης καὶ ἡ τραγικότης αὐτοῦ, τουτέστι τὸ διὰ τρόμου καὶ οἴκτου, καὶ οὐχὶ δι' ἠθικοῦ διδάγματος πέρας (ἀδελφοκτονία, παιδοκτονία, μητροκτονία, συζυγοκτονία, αἱμομειξία, ἀτίμωσις)· ἔπειτα δὲ τὸ ὑπερφυσικόν, σπάνιον καὶ πρὸς τὴν ἠθικὴν ξένον τῶν προσώπων καὶ πραγμάτων· ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τεχνικῆς ἀπόψεως ὁ διάλογος, κορυφούμενος εἰς συχνὰς ἐπιγραμματικὰς καὶ κρισίμους διὰ τὴν ἀνέλιξιν καὶ τὴν λύσιν στιχομυθίας, ἡ περιπέτεια καὶ ἡ ἀναγνώρισις, τὸ προσφιλέστατον τοῦτο καὶ ἀνελλιπῶς φερόμενον δραματικὸν εὕρημα, ἄλλοτε πρὸς εὐτυχῆ, ἄλλοτε πρὸς δεινὴν λύσιν ἄγον τὴν ὅλην πλοκήν· μεταξὺ δὲ τῶν τοιούτων ἀναγνωρίσεων χαριεστέρα μὲν εἶναι ἡ τοῦ «Μαυριανοῦ», ἐντεχνοτέρα ἡ τῆς «Κυρᾶς Ρήνας τοῦ Σκληροῦ» καὶ τοῦ «Ἀνδρούτσου», ἄτεχνος καὶ ὑπενθυμίζουσα τὴν ἐπίσης ἄτεχνον τοῦ Ὀδυσσέως ἡ τῆς «Πιστῆς Γυναίκας», ὑπερφυσικὴ δὲ ἡ τῆς «Μάννας Φόνισσας» καὶ τοῦ «Νεκροῦ ἀδερφοῦ»· τέλος ἡ τῆς «Νύφης ποὺ κακοτύχησε» ἀποτελεῖ συλλογιστικὴν διὰ τῆς εἰς ἄτοπον ἀπαγωγῆς ἀναγνώρισιν. Τῶν παραλογῶν πυρὴν εἶναι ἐνίοτε ἡ παραφθορὰ καὶ ὁ συγχρονισμὸς ἀρχαίων τραγικῶν μύθων («Γιοφύρι τῆς Ἄρτας», — «Ἰφιγένεια ἡ ἐν Αὐλίδι»· «Μάννα φόνισσα» — «Μήδεια»· «Ἄνομη μάννα» — Φαίδρα ἢ Ἰοκάστη). Ἀλλ' ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ σύγχρονα αὐτῇ βυζαντινὰ λυρικὰ ποιήματα («Καταλόγια», «Πιττάκια», ἀλφάβητα, λιανοτράγουδα), φέροντα ἐν τῇ ψυχολογίᾳ, τῇ τεχνικῇ, τῇ αἰσθητικῇ τῶν κοσμητικῶν ἐπιθέτων κλπ. τὴν χροιὰν φραγκικῆς ἐπιδράσεως, ἡ παραλογὴ εἶναι γέννημα καὶ δώρημα τοῦ ἀνατολικοῦ ἑλληνισμοῦ, ἀρρενωπὴ μέχρι τραχύτητος, ζωηρῶς δὲ γραφική. Ἐκ τῶν παραλογῶν τινας διεσκεύασεν ὁ Μορεὰς γαλλιστὶ (Les Cantilènes: Airs et récits). Ἐντέχνους μπαλλάντας, προερχομένας συνήθως ἐκ βυζαντινῶν παραλογῶν, ἔγραψαν οἱ νεοέλληνες ποιηταὶ Παῦλος Νιρβάνας, Μιλτ. Μαλακάσης («Τραλαρῶ»), Ἰ. Γρυπάρης («Πραμματευτής»), Λάμπρος Πορφύρας («Θρῦλος Ἀγάπης»), Κώστας Χατζόπουλος κ. ἄ. Ἐν δὲ τῇ μεταγενεστέρᾳ Εὐρώπῃ ἐκαλλιέργησαν τὴν μπαλλάνταν διάσημοι ποιηταί, ἐν οἷς ὁ Bürger, ὁ Uhland καὶ ὁ Γκαῖτε ἐν Γερμανίᾳ, ὁ Tennysson ἐν Ἀγγλίᾳ, ὁ Θ. Γκωτιὲ καὶ ὁ Ρισπὲν ἐν Γαλλίᾳ κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους κ. ἄ. Τῆς ποιήσεως ὅμως καθισταμένης ὁσημέραι λυρικῆς μὲν ἀπολύτως κατὰ τὸ περιεχόμενον, ἁπλουστέρας δὲ κατὰ τὴν στιχουργικὴν μορφήν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς ἄλλας δυσχερεστάτας αὐτῆς ἐκζητήσεις, τὸ μέλλον τῆς μπαλλάντας δύναται νὰ προβλεφθῇ βραχύτατον, καὶ ὡς διακοσμητικὸν ἀκόμη, ὡς εἶναι σήμερον.

*Γ. Βιζυηνοῦ* «Ἀνὰ τὸν Ἑλικῶνα», 1931.]

ΤΕΛΛΟΣ ΑΓΡΑΣ

— *[Μουσ.]* *Ἡ μπαλλάντα* (ἰταλ. ballata, ἐκ τοῦ ballo=χορὸς) ἦτο ἀρχικῶς τεμάχιον χοροῦ, ἐπιμεμελημένης μᾶλλον τεχνοτροπίας καὶ μὲ βραχείας ἐπῳδούς. Προελθοῦσα, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, ἀπὸ τοὺς λαϊκοὺς χοροὺς τῶν τρουβαδούρων, ταχέως ἀνεπτύχθη καὶ ἐτελειοποιήθη κατὰ τὸν ΙΔ´ αἰῶνα παρὰ τοῖς Φλωρεντινοῖς καὶ τοῖς Ἱσπανοῖς, οἵτινες ἐξαιρετικῶς ἐκαλλιέργησαν τὸ εἶδος τοῦτο τῆς μουσικῆς. Ὁ βραχύτερος τύπος τῆς μπαλλάντας παρουσιάζει μίαν στερεότυπον *ἐπῳδὸν* (ripresa), ἐπαναλαμβανομένην ἐν εἴδει ἀπαντήσεως τοῦ χοροῦ· ἀκολουθεῖ μουσικὴ φράσις ἐπαναλαμβανομένη δὶς μὲ διαφορετικὸν κείμενον καὶ ἀποτελοῦσα τὸ *ἰντερμέδιο,* ἐν τέλει δ' ἐκτελεῖται ἡ *βόλτα* (volta), δηλαδὴ ἡ ἐπανάληψις τῆς ἀρχικῆς φράσεως ἐπὶ νέου κειμένου, ἵνα ἀκολουθήσῃ ἡ ἐπῳδὸς τοῦ χοροῦ. Κατὰ τὸν ΙΣΤ´ αἰῶνα ἡ ἀρχικὴ μπαλλάντα ἐξαφανίζεται, ἀντικαθισταμένη ὑπὸ τοῦ στροφικοῦ ᾄσματος. Δύο αἰῶνας ἀργότερον διὰ τοῦ Τσοῦμστεγκ καὶ τοῦ Λάϊβε ἐμφανίζεται ἡ τεχνικὴ μπαλλάντα, ἡ βασιζομένη ἐπὶ τοῦ ἐπικοῦ καὶ λυρικοῦ στοιχείου, ἢ ἐπὶ τοῦ θρύλου, καὶ περιέχουσα πλεῖστα οὐσιώδη μουσικὰ θέματα, ἐλευθέρως ἀναπτυσσόμενα. Κλασσικὸν ὑπόδειγμα τοιούτου εἴδους μπαλλάντας παραμένει «Ὁ βασιλιᾶς τῶν σκλήθρων» (Erlkönig) τόσον τοῦ Λάϊβε, ὅσον καὶ τοῦ Σοῦμπερτ. Παρὰ τοῖς συγχρόνοις ἡ μπαλλάντα προϋποθέτει σύνθεσιν δι' ᾆσμα καὶ κλειδοκύμβαλον ἢ ὀρχήστραν, ἧς τὸ ποιητικὸν κείμενον εἶναι ἐπίσης μπαλλάντα. Ὑπάρχει τέλος καὶ ἡ μπαλλάντα ὀργανικῆς μουσικῆς, ἧς ἡ δημιουργία ἀποδίδεται εἰς τὸν Σοπέν. Αἱ τοιούτου εἴδους συνθέσεις, ἐμπνεόμεναι ἀπὸ τὰ διηγηματικὰ ἢ ἐπικὰ στοιχεῖα τὰ ἐνυπάρχοντα ἔν τινι θρύλῳ, ἐπιζητοῦν νὰ δημιουργήσωσι διὰ τῶν ἤχων τὴν ἀνάλογον ἀτμοσφαῖραν τῆς χαρᾶς ἢ τοῦ πένθους. Εἶναι προϊόντα τοῦ ῥωμαντισμοῦ τοῦ ΙΘ´ αἰῶνος, φέροντα ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὴν σφραγῖδα τῆς μυστικοπαθείας καὶ τῆς ἀπαισιοδοξίας. Γ. Σ.

**Μπαλλαντάϊν** (Ballantine), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος νομικός, ὅστις ἐγένετο γνωστὸς ἀφ' ὅτου συνηγόρησεν ὑπὲρ τοῦ Ἰνδοῦ πρίγκιπος τῆς Μπαρόδας Μουλὰρ Ράο, εἰς τὴν δίκην αὐτοῦ μετὰ τοῦ Τίσμπορν, λαβὼν ὡς ἀμοιβὴν 250.000 χρυσῶν φράγκων. Ἐνδιαφέρον ἔργον αὐτοῦ εἶναι τὸ τιτλοφορούμενον: «Πεῖρα ἀπὸ τὴν ζωὴν ἑνὸς δικηγόρου» (1882). Θ. Κ.

**Μπαλλαντάϋν** (Ballantyne), ***Ἰάκωβος-Ροβέρτος.*** Ἄγγλος ἀνατολιστὴς (1813—1864). Ἀπεστάλη τῷ 1845 εἰς Μπεναρὲς τῶν Ἰνδιῶν, ὅπως διευθύνῃ καὶ ὀργανώσῃ τὸ νεοσύστατον σανσκριτικὸν κολλέγιον, παραμείνας δὲ αὐτόθι μέχρι τοῦ 1861 ἐξέμαθε καὶ ἐσπούδασε τὴν γλῶσσαν καὶ τὴν φιλολογίαν τῆς χώρας. Ὑπῆρξεν ὁ κύριος συντελεστὴς τῆς διαδόσεως ἐν Ἰνδίαις μὲν τῶν εὐρωπαϊκῶν ἐπιστημῶν, ἐν Εὐρώπῃ δὲ τῆς γλώσσης καὶ τῆς φιλολογίας τῶν Ἰνδιῶν. Ἔγραψε πάμπολλα ἔργα, ἐν οἷς: «Γραμματικὴ τῆς ἰνδοστανικῆς γλώσσης» (1838), «Ἀρχαὶ τῆς περσικῆς καλλιγραφίας» (1839), «Πρακτικὸς διερμηνεὺς διὰ τὴν Ἀνατολὴν» (1843), «Διδασκαλία τῆς περσικῆς γραμματικῆς», «Διδασκαλία τῆς σανσκριτικῆς γραμματικῆς», «Ὁδηγίαι διὰ τὴν ἰνδοστανικὴν συνδιάλεξιν», «Πρῶτα μαθήματα σανσκριτικῆς γραμματικῆς», «Ὁ Χριστιανισμὸς καὶ ἡ ἰνδικὴ φιλοσοφία».

— **Μπαλλαντάϋν** (Ballantyne), ***Ροβέρτος-Μιχαήλ.*** Σκῶτος μυθιστοριογράφος (1825—1894). Ἔγραψε μυθιστορήματα διὰ τὴν νεανικὴν ἡλικίαν, ἐν οἷς: «Ἡ νῆσος τῶν κοραλλίων», «Ὁ κόσμος τοῦ πάγου» (1859), «Οὐγκάβα ἢ εἷς μῦθος τῆς χώρας τῶν Ἐσκιμώων» (1857). Θ. Κ.

**Μπαλλὰρ** (Ballard). Μέγας μουσικὸς ἐκδοτικὸς οἶκος τῶν Παρισίων, διατηρηθεὶς ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ´ μέχρι τοῦ ΙΗ´ αἰῶνος. Ὁ ἱδρυτὴς τοῦ οἴκου Ροβέρτος Μπαλλὰρ μετὰ τοῦ γυναικαδέλφου του Ἀδριανοῦ Λὲ Ροὰ (Le Roy), συνεταιρισθέντες τῷ 1552, ἔτυχον εἰδικοῦ προνομίου παρὰ τοῦ βασιλέως Ἐρρίκου Β´. **Τὴν ἀνανέωσιν τοῦ προνομίου ἐπετύγχανον οἱ ἑκάστοτε διάδοχοι τοῦ οἴκου μέχρι** τοῦ 1776, ὁπότε δὲν ἀνενεώθη πλέον καὶ ὁ οἶκος ἐξέλιπε. Γ. Σ.

**Μπαλλαρὰτ** (Ballarat) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Αὐστραλίας ἐν τῇ ἀποικίᾳ τῆς Βικτωρίας. Κάτ. 53.000. Ἱδρύθη τῷ 1852 εἰς τόπον ἔρημον μέχρι τότε, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Τζαρρογουεκρήκ, χάρις εἰς τὰ παρ' αὐτὴν ἀνακαλυφθέντα πλούσια χρυσωρυχεῖα καὶ ἀνεπτύχθη ταχύτατα, ἀποκτήσασα μεγαλοπρεπῆ κτήρια καὶ μεταβληθεῖσα εἰς βιομηχανικωτάτην πόλιν, μὲ ἐργοστάσια σιδήρου, ἐριουργεῖα, οἰνοπνευματοποιεῖα, ἀλευρομύλους κτλ. Τὸ πέριξ αὐτῆς ἔδαφος εἶναι γονιμώτατον, ἡ δὲ κτηνοτροφία ἀκμαιοτάτη, ἀποδίδουσα ἰδίως ἔρια, ἅτινα θεωροῦνται τὰ καλύτερα ὅλης τῆς Αὐστραλίας. Εἶναι ἐπίσης σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον. Μ. Δ. Β.

**μπαλλαρίνα** (ἡ) (ἐκ τοῦ ἰταλ. *ballerina*= χορεύτρια). Γενικὴ ὀνομασία τῶν χορευτριῶν τοῦ θεάτρου καὶ τοῦ χοροδράματος.

**μπαλλαρμᾶς** (ὁ) *[Πυροβολ.]*. Ἐκαλεῖτο οὕτω μέχρι τέλους τοῦ ΙΗ´ αἰῶνος τὸ σύστημα τοῦ βλήματος τοῦ ἀποτελουμένου ἐκ δύο ῥαβδοδέτων ἢ ἁλυσιδέτων σφαιρῶν. Ὁ μπαλλαρμᾶς ἐχρησιμοποιεῖτο κυρίως κατὰ τὴν βολὴν πρὸς θερισμὸν κατὰ βάθος ἀντιπάλων ἀνδρῶν, εὑρισκομένων ἐπὶ ἀναπεπταμένου ὁριζοντίου χώρου, ὡς π.χ. ἐπὶ τοῦ καταστρώματος πλοίου κτλ. Ν. Θ. Κ.

**Μπάλλαρντ** (Ballard), ***Γεώργιος.*** Ἄγγλος συγγραφεύς, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΗ´ αἰῶνα. Εἶναι γνωστὸς κυρίως ἐκ τοῦ βιογραφικοῦ ἀπανθίσματος «Ἱστορία τῶν ἐνδόξων γυναικῶν τῆς Ἀγγλίας» (1752). Α. Δ.

**μπαλλαστρόνια** *[Ναυτ. Ἱστορ.]*· βλ. *μπάλλαφογάδα.*

**μπαλλαστρόπι** (τὸ) *[Πυροβολ.]*. Ἐκαλεῖτο ἄλλοτε τὸ βύσμα (τάπα), ὅπερ ἐχρησιμοποιεῖτο κατὰ τὴν γέμισιν τῶν ἐμπροσθογεμῶν τυφεκίων καὶ πυροβόλων. Ν. Θ. Κ.

**Μπαλλὲ** (Ballet), ***Γιλβέρτος.*** Γάλλος νευρολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1853. Διετέλεσε πρῶτος ἐπιμελητὴς τοῦ Charcot ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τῆς νευρολογικῆς ἕδρας ἐν Σαλπετριέρῃ τῷ 1882, καὶ ἔγραψε: «Recherches anatomiques et cliniques» (1881), «Le langage intérieur et les formes cliniqus de l'aphasie» (1888), «L'hygiène du neurasthénique» (1897), «Leçons de clinique médicale: Psychoses et affections nerveuses» (1897), «Traité de pathologie mentale» (1903) κ. ἄ. Τῷ 1901 ἐξελέγη πρόεδρος εἰς τὸ συνέδριον τῶν Γάλλων φρενολόγων. Ο. Ρ.

**Μπαλλὲν** (Ballin), ***Κλαύδιος.*** Ὄνομα δύο διακεκριμένων Γάλλων χρυσοχόων, θείου καὶ ἀνεψιοῦ. Ἐκ τούτων ὁ πρῶτος (1615—1678) εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ἐπὶ τῇ βάσει μοτίβων εἰλημμένων ἐκ τῶν διακοσμητικῶν ἔργων τοῦ Ν. Πουσσέν, ἀνήγαγε δὲ τὴν τέχνην τῆς χρυσοχοΐας εἰς τὸν τελειότερον διακοσμητικὸν αὐτῆς χαρακτῆρα. Κάλλιστα ἐκ τῶν κομψοτεχνημάτων του ἦσαν τὰ διὰ λογαριασμὸν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ´ κατασκευασθέντα τραπέζια ἐξ ἀργύρου, πολυέλεοι, ἀγγεῖα κλπ., τὰ ὁποῖα ὅμως δὲν περιεσώθησαν, διότι ἐρρευστοποιήθησαν τῷ 1689 χάριν τῶν ἀναγκῶν τοῦ κράτους. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἰ. Βαρὲν ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ βασιλικοῦ νομισματοκοπείου. Ὁ δεύτερος Μπαλλὲν (1660—1754) ἐμιμήθη τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ θείου του, τοῦ ὁποίου διετέλεσε μαθητής, καὶ εἰργάσθη ἐπίσης κομψοτεχνήματα διακρινόμενα διὰ τὴν καλαισθησίαν των. Ὡς κάλλιστον ἔργον του ἀναφέρεται τὸ στέμμα τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ´. Χ. Δ.

**Μπάλλενστετ** (Ballenstedt) *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις καὶ τόπος ἀεροθεραπείας τῆς Γερμανίας, ἐν Ἄνχαλτ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γκάϊτελ, παραποτάμου τοῦ Ζάαλ, καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Φρόζε—Κβέντλινμπουργκ. Κάτ. 5.935 (1919). Ἔχει θαυμάσιον ἀνάκτορον τοῦ ΙΗ´ αἰῶνος μὲ μεγαλοπρεπεῖς ἐξώστας, περιβαλλόμενον ὑπὸ πάρκων, ἕδραν τῶν ἡγεμόνων τοῦ Ἄνχαλτ-Μπέρνμπουργκ. Θ. Κ.

**Μπαλλεντιὲ** (Balleydier), ***Ἀλφόνσος.*** Γάλλος λογοτέχνης καὶ ἱστορικὸς ἐκ Λυὼν (1820—1859). Ἔγραψε: «Πολιτικὴν καὶ στρατιωτικὴν ἱστορίαν τοῦ λαοῦ τῆς Λυὼν» (1845—1846), «Ἱστορίαν τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Ρώμης» (1851), «Ἱστορίαν τῶν ἐπαναστάσεων τῆς αὐστριακῆς αὐτοκρατορίας» (1853), «Ἱστορίαν τοῦ πολέμου τῆς Οὐγγαρίας τοῦ 1848—1849» (1853). Χάρις εἰς τὰ δύο τελευταῖα ἔργα του ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἱστορικοῦ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Αὐστρίας. Χ. Δ.

**Μπάλλενυ νῆσοι** (Balleny) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν ἀρχιπέλαγος ἐν τῷ Ν. Παγωμένῳ ὠκεανῷ. Κεῖται μεταξὺ 66° 44´ Ν. πλάτ. καὶ 163° 11´ Α. μήκ., 450 χλμ. πρὸς Β. τῆς Γῆς τῆς Βικτωρίας. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1839 ὑπὸ τοῦ φαλαινοθήρα Μπάλλενυ, τοῦ ὁποίου ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα, καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ πέντε μικρὰς ἡφαιστειογενεῖς νησῖδας. Μ.Δ.Β.



Digitized by Google

**Μπαλλερίνι** (Ballerini). Δύο ἀδελφοὶ Ἰταλοὶ θεολόγοι, ***Πέτρος*** (1698—1764) καὶ ***Ἱερώνυμος*** (1702—1770). Θεωροῦνται ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων συγγραφέων τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας καὶ ἐξέδωσαν τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων των ἐν κοινῇ συνεργασίᾳ. Κατήγοντο ἐκ Βερώνας, ὅπου ἐσπούδασαν θεολογίαν, τὴν ὁποίαν ἐδίδαξαν κατόπιν εἰς τὴν ἐκεῖ ἱερατικὴν σχολήν. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων των εἶναι «Περὶ τῶν ἀρχαίων συλλογῶν καὶ συλλεκτῶν τῶν ἐκκλησιαστικῶν κανόνων μέχρι τοῦ Γρατιανοῦ». Ἔγραψαν ἐπίσης καὶ πολυάριθμα ἄλλα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «De vi ac ratione Primatus Romanorum Pontificorum» καὶ «De potestate ecclesiastica Summorum Pontificum et Conciliorum Generalium». Μ. Δ. Β.

**Μπάλλεστρεμ** (Ballestrem), ***Φραγκῖσκος, κόμις***—. Γερμανὸς πολιτικὸς (1834—1910). Ἀξιωματικὸς τοῦ ἱππικοῦ τῶν θωρακοφόρων, ἀπὸ τοῦ 1855 συμμετέσχεν εἰς τὸν Γερμανοαυστριακὸν (1866) καὶ Γαλλογερμανικὸν (1870) πόλεμον. Ἀποσυρθεὶς τοῦ στρατοῦ συνεπείᾳ πτώσεως ἐκ τοῦ ἵππου, ἐπεδόθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ τῷ 1872 ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Ράϊχσταγ, ἀνήκων εἰς τὸ συντηρητικὸν κόμμα τοῦ καθολικοῦ κέντρου. Τῷ 1890 ἐξελέγη πρῶτος ἀντιπρόεδρος τοῦ Ράϊχσταγ, τῷ δὲ 1898 πρόεδρος αὐτοῦ, διατηρήσας συνεχῶς τὸ ἀξίωμα μέχρι τοῦ 1906. Ἦτο ἐκ τῶν εὐνοουμένων τοῦ αὐτοκράτορος Γουλιέλμου, ἐν τῇ βουλῇ δὲ καὶ πανταχοῦ ὑπεστήριζε τὴν πολιτικὴν αὐτοῦ, ἰδίᾳ ὡς πρὸς τὸ ναυτικὸν πρόγραμμα. Ἀπὸ τοῦ 1872 εἶχε τὸν τίτλον μυστικοῦ συγκέλλου τοῦ πάπα διὰ τὴν ἀφοσίωσιν αὐτοῦ εἰς τὸν καθολικισμόν. Θ. Κ.

**Μπαλλέττι-Μπενότσι** (Balletti-Benozzi), ***Ρόζα-Ἰωάννα***. Περιώνυμος Ἰταλὶς ἠθοποιὸς (1700—1758). Ἐπρωταγωνίστησεν ἐπὶ τεσσαράκοντα ἔτη εἰς τὴν «Commedia Italiana» ἢ «Compania del Reggenti», διακριθεῖσα ἰδίᾳ εἰς τὴν διερμήνευσιν τῶν ἔργων τοῦ Μαριβῶ. Περὶ αὐτῆς ὁμιλεῖ ἐνθουσιωδῶς ὁ Καζανόβα εἰς τὰ «Ἀπομνημονεύματά» του, πολλοὶ δὲ ζωγράφοι, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ Βαττῶ, τὴν ἀπηθανάτισαν διὰ τοῦ χρωστῆρός των. Α. Δ.

**μπαλλέττο** (τό) (ἰταλ. balletto ἐκ τοῦ ballo=χορός). Ὄνομα διδόμενον παρὰ τοῖς συγχρόνοις εἰς αὐτοτελὲς σκηνικὸν ἔργον, οὗτινος ἡ δρᾶσις ἐκφράζεται διὰ χορῶν, παντομίμας ἢ πλαστικῶν κινήσεων, ἢ εἰς σύνολον χορῶν παρεισαγομένων εἰς μελόδραμά τι καὶ μηδεμίαν πολλάκις σχέσιν ἐχόντων πρὸς τὸ δρᾶμα. Ἀρχικῶς τὸ μπαλλέττο ἦτο ἁπλοῦς λαϊκὸς χορός, ὅστις ἀναπτυχθεὶς τεχνικώτερον καὶ καλλωπισθεὶς διὰ πολλῶν παραλλαγῶν ὑπὸ τῶν συνθετῶν, ἐγένετο ἀληθὲς θέαμα. Τὸ τοιοῦτον εἶδος μπαλλέττο δὲν εἶχεν οὔτε κείμενον, οὔτε ᾆσμα, τῆς μουσικῆς του ἐκτελουμένης ὑπὸ τῆς ὀρχήστρας. Ὑπῆρχεν ὅμως καὶ τὸ δραματικὸν λεγόμενον μπαλλέττο, τὸ βασιζόμενον εἰς πραγματικὴν ὑπόθεσιν, περιέχον τὸν πυρῆνα, τὰ ἐπεισόδια καὶ τὴν λύσιν, οὗτινος ἡ δρᾶσις ἐξεφράζετο εἴτε διὰ τοῦ λόγου, εἴτε διὰ τοῦ ᾄσματος, εἴτε διὰ τῶν κινήσεων καὶ τῶν χορῶν. Εἰς τὸ τελευταῖον τοῦτο εἶδος μπαλλέττου δύνανται νὰ ὑπαχθῶσιν αἱ ρυθμικαὶ καὶ ἐκφραστικαὶ κινήσεις τοῦ χοροῦ ἐν τῇ ἀρχαίᾳ τραγῳδίᾳ, εἰδικώτερον δὲ τὰ *μιμορχήματα*, ἅτινα κυρίως ἀνεπτύχθησαν ἐν Ρώμῃ. Κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα τὰ μπαλλέττα ἦσαν ἤδη λίαν διαδεδομένα ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ, κυρίως δὲ ἐν Βουργουνδίᾳ, ἥτις ἰδιαζόντως ἠρέσκετο εἰς τὸ εἶδος τοῦτο. Ἐξετελοῦντο συνήθως κατὰ τὸ μέσον τῶν ἐπισήμων γευμάτων καὶ εἶχον ὑποθέσεις εἰλημμένας ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας. Ἐν Γαλλίᾳ οἱ βασιλεῖς ἦσαν οἱ ἔμψυχωταὶ τῶν τοιούτου εἴδους θεαμάτων. Ὄχι μόνον κατέβαλλον ἐξ ἰδίων των τὰ ὑπέρογκα ἔξοδα παραστάσεως ἑνὸς μπαλλέττου, ἀλλ' ἐλάμβανον πολλάκις μέρος εἰς αὐτό. Ἱστορικὸν ἔχει παραμείνει τὸ «Κωμικὸν μπαλλέττο τῆς βασιλίσσης» (Ballet comique de la Royne), τὸ παρασταθὲν ἐν Βερσαλλίαις τὴν 15 Ὀκτωβρίου 1581, κατὰ τὰς ἑορτὰς τῶν γάμων τῆς Μαργαρίτας τῆς Λωρραίνης μετὰ τοῦ δουκὸς τοῦ Ζουαγιέζ. Ἦτο τεράστιον ἔργον, διαρκείας πέντε ὡρῶν, ἐπὶ ποιήσεως τοῦ Ντὲ λὰ Σεναὶ καὶ μουσικῆς τῶν Ζιρὰρ ντὲ Μπωλιὲ καὶ Ζὰκ Σαλμόν, περιλαμβάνον μονῳδίας, χορῳδίας κλπ. καὶ ὡς ἐκ τούτου δυνάμενον νὰ θεωρηθῇ ὡς συνδεόμενον ἀπ' εὐθείας μὲ τὴν ἱστορίαν τοῦ μελοδράματος. Διακοπὲν ἐπί τινα χρόνον τὸ δραματικὸν μπαλλέττο, ἀναζωογονεῖται κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἵνα παρακμάσῃ πάλιν μέχρι τοῦ τέλους τῆς βασιλείας τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ' καὶ ἴδῃ ἐκ νέου ἡμέρας δόξης ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ', ὅστις ἰδιαιτέρως ἠρέσκετο εἰς τὸ εἶδος τοῦτο. Εἶχεν ὅμως διαμορφωθῇ ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ὄπερα-μπαλλέττο, εἰς ἣν τόσον διέπρεψεν ὁ Λούλλυ.

Τὰ παρεισαγόμενα μπαλλέττα ἦσαν ἐπίσης γνωστὰ ἤδη ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος, ὁπότε συναντῶμεν πρωτόγονα δείγματα τοῦ εἴδους ἐν τοῖς *μυστηρίοις*, ἀργότερον δ' ἐν τοῖς δράμασι τῆς Ἀναγεννήσεως. Κατὰ τὴν ἐμφάνισιν τοῦ μελοδράματος τὸ μπαλλέττο ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς συμπληρωματικὸν ἔργον **παρεμβαλλόμενον κατὰ ἀποσπάσματα μεταξὺ τῶν** πράξεων ἢ τῶν σκηνῶν τοῦ κυρίου θεάματος, χωρὶς νὰ ἔχῃ καμμίαν σχέσιν πρὸς αὐτό· ἐκαλεῖτο δὲ μὲ τὸ εἰδικὸν ὄνομα *ἰντερμέτζο* (βλ. λ.). Ἡ σύγχρονος ἐξέλιξις τοῦ μπαλλέττου ὡδήγησεν αὐτὸ πρὸς τὸ *χορόγραμμα*. Γ. Σ.

—*[Ἱστ. Θεάτρ.]* Εἶδος μπαλλέττου ὑπὸ τὴν ἀρχαϊκὴν αὐτοῦ μορφήν, ἤτοι μιμόρχημα, ἀναφέρει ὁ Ξενοφῶν (*Ἀνάβ.* VI, I). Ἀνάλογα μιμορχήματα ἀπαντῶσιν ἐν Ἀγγλίᾳ ἀπὸ τοῦ 1348 ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν Masques. Εἰς τὸ θεατρικὸν αὐτὸ εἶδος δὲν ἀπηξίωσαν νὰ ἐνασχοληθῶσι καὶ σπουδαῖοι συγγραφεῖς, μεταξὺ δ' ἄλλων καὶ ὁ Μίλτων, ὅστις ἔγραψε δύο ἢ τρία τοιαῦτα ἔργα, ὧν ἡ μόδα δὲν παρῆλθεν ἀκόμη, ὡς ἠδύνατό τις νὰ ὑποθέσῃ, καθόσον τοιαῦτα ἐδόθησαν μετὰ μεγάλης πολυτελείας καὶ κατὰ τοὺς γάμους τοῦ βασιλέως Ἐδουάρδου τῷ 1863 καὶ κατὰ τὸ 1887 εἰς τὰς πρὸς τιμὴν τῆς τότε βασιλίσσης Βικτωρίας δοθείσας ἑορτάς. Τοιοῦτον εἶδος μπαλλέττα ἐπεκράτησαν καὶ ἐν Ἱσπανίᾳ ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν Danzas habladas. Τὰ ἄνευ ᾀσμάτων μπαλλέττα τὰ εἰσήγαγε καὶ ὁ Λόπε δὲ Βέγα εἰς τὰ θρησκευτικὰ αὐτοῦ ἔργα ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν bayles. Ν. Ι. Λ.

**Μπάλλια** (Ballia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μπεναρές. Ἡ πόλις ἔχει 16.684 κατ., ὧν οἱ πλεῖστοι Ἰνδοί, καὶ κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου ποταμοῦ. Καταστραφεῖσα ὑπὸ τῶν πλημμυρῶν τοῦ 1873—1875, ἀνῳκοδομήθη ἐκ νέου. Ἐν αὐτῇ λαμβάνει χώραν ὀνομαστὴ ἑορτὴ κατὰ τὴν πανσέληνον τοῦ Νοεμβρίου, καθ' ἣν συγκεντρώνονται ἑκατοντάδες χιλιάδων πιστῶν, οἵτινες προσεύχονται καὶ ἐπισκέπτονται ἰδίως τὸ παρὰ τὴν πόλιν ἱερὸν δάσος καὶ λαμβάνουν μέρος εἰς τὰς τελετὰς τοῦ καθαρισμοῦ εἰς τὰ ὕδατα τοῦ ποταμοῦ. Τὸ διαμέρισμα ἔχει 3.030 τ. χλμ. ἔκτασιν καὶ 950.000 κατ., παράγει δὲ ὄρυζαν, βάμβακα, σάκχαριν, κριθὴν καὶ ἄφθονα δασικὰ προϊόντα. Μ. Δ. Β.

**μπαλλιά** (ἡ)· ἰδιωμ. Κρήτ., πυροβολισμός, τυφεκισμός, ἐκπυρσοκρότησις ὅπλου. Ι. Δ. Μ.

**Μπαλλιαί**· βλ. *Μπάλλιου*.

**Μπαλλιέλ** (Bailleul ἢ Baliol)· βλ. *Μπαλιόλ*.

**Μπαλλιεστέρος** (Ballesteros), ***Φραγκῖσκος***. Ἱσπανὸς στρατηγὸς καὶ πολιτικὸς (1770—1833). Διεκρίθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μπάϋλεν ἐναντίον τῶν Γάλλων. Τῷ 1815 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν ὑπὸ τοῦ Φερδινάνδου Ζ', ἀλλ' ἐθεωρήθη ὡς ἀντιδραστικὸς καὶ ἐπαύθη. Βραδύτερον ἠνώνησε τὰς προσπαθείας του ἐθνικιστικοῦ κόμματος, ὅπερ ἐπεδίωκε τὴν ἀποκατάστασιν τοῦ Συντάγματος. Τῷ 1822 καὶ 1823 ὑπῆρξεν ἀρχηγὸς τῆς ἐπαναστάσεως, ἀλλ' ἡττηθεὶς κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Κατώρθωσεν ὅμως νὰ σωθῇ καταφυγὼν εἰς Παρισίους. Α. Δ.

**Μπαλλὶν** (Ballin), ***Ἀλβέρτος***. Γερμανὸς ἐφοπλιστὴς (1857—1918). Συνεταιρισθεὶς μετὰ τοῦ ἐφοπλιστοῦ Κάρρ, ἰδιοκτήτου τῆς ὁμωνύμου ἀτμοπλοϊκῆς γραμμῆς, ἐπέτυχε μετά τινα χρόνον τὴν συγχώνευσιν αὐτῆς μετὰ τῆς μεγάλης ἀτμοπλοΐας Ἀμβοῦργον - Ἀμέρικα - Λίνιε. Ἐξαιρετικῆς ἱκανότητος ἐπιχειρηματίας, ὤθησεν, ὡς γενικὸς διευθυντής, τὴν ἑταιρείαν πρὸς τοιαύτην πρόοδον, ὥστε αὕτη ἀπέβη, διὰ τῆς ἑνώσεως καὶ μετ' ἄλλων μικροτέρων ἑταιρειῶν, ὁ ἰσχυρότερος οἰκονομικὸς καὶ ἐφοπλιστικὸς ὀργανισμὸς τῆς Εὐρώπης. Ἵνα ἀντιδράσῃ κατὰ τοῦ ξένου συναγωνισμοῦ, εἰσηγήθη τὴν ἐπιτευχθεῖσαν σύναψιν συμφωνίας μεταξὺ Γερμανίας καὶ Ἀμερικῆς διὰ τὴν μεταφορὰν ἐπιβατῶν, καὶ συγχρόνως ἐπέσπευσε τὴν κατασκευὴν ταχυπλόων ἐπιβατηγῶν καὶ φορτηγῶν πλοίων, διὰ τῶν ὁποίων κατέφερε καίριον πλῆγμα κατὰ τῶν ἀγγλικῶν ἰδίᾳ ἀτμοπλοϊῶν. Σὺν τῷ χρόνῳ, χάρις εἰς τὸ μεγαλεπήβολον ἐπιχειρηματικὸν αὐτοῦ πνεῦμα, κατέστη κορυφαία οἰκονομικὴ προσωπικότης ἐν Γερμανίᾳ, ὁ δὲ Κάϊζερ Γουλιέλμος, θεωρῶν αὐτὸν ὡς τὸν κύριον συντελεστὴν τῆς ἰσχύος τοῦ ἐμπορικοῦ στόλου, τὸν περιέβαλε διὰ τοσαύτης ἐμπιστοσύνης, ὥστε νὰ ζητῇ τὴν γνώμην του ἐπὶ παντὸς μεγάλου οἰκονομικοῦ ζητήματος. Κατὰ τὸ 1908, ὅτε, λόγῳ τῆς ὀξύτητος τῶν σχέσεων μεταξὺ Γαλλίας καὶ Γερμανίας, διεφαίνετο ὁ κίνδυνος εὐρωπαϊκῆς συρράξεως, ὁ Μπαλλὶν ἐμεσολάβησεν, ἀλλ' ἄνευ ἀποτελέσματος, ἐν συνεννοήσει μετὰ τοῦ Κάσσελ, πρὸς προσέγγισιν τῆς Γερμανίας καὶ Ἀγγλίας. Κατὰ τὰς παραμονὰς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, θεωρῶν πάντοτε ὅτι ὁ ἐπικίνδυνος ἀντίπαλος τῆς Γερμανίας ἦτο ἡ Ἀγγλία, εἰσηγήθη ὅπως ἡ γερμανικὴ κυβέρνησις προσκαλέσῃ εἰς Γερμανίαν τὸν Ἄγγλον ὑπουργὸν τῶν Ναυτικῶν Τσώρτσιλ, ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς ἐπισκέψεως τοῦ ἀγγλικοῦ στόλου εἰς Κιέλον. Ἡ προσπάθεια ὅμως αὕτη, ἣν ἠνόει καὶ ὁ Κάϊζερ, ἐματαιώθη ἕνεκα τῆς ἀντιδράσεως τοῦ ναυάρχου Τίρπιτς. Ἐπελθούσης τῆς ἥττης ὁ Μπαλλὶν ἔπαθεν ἐκ τῆς θλίψεως νευρασθενικὴν προσβολήν, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας ἀπέθανεν, ἢ κατ' ἄλλους ηὐτοκτόνησεν, ἔν τινι κλινικῇ τοῦ Ἀμβούργου. Θ. Κ.

**Μπαλλίνα** (Ballina) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰρλανδίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Μάγιο καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μόϋ. Κάτ. 4.505. Τὸν Αὔγουστον τοῦ 1798 κατελήφθη ὑπὸ γαλλικῶν στρατευμάτων ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Οὐμπέρ. Ὑπῆρξε τὸ μόνον μέρος τῶν βρεττανικῶν νήσων, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐπάτησαν Γάλλοι στρατιῶται. Θ. Κ.

**Μπάλλινγκ** (Balling), ***Κάρολος-Ἰωσὴφ-Ναπολέων***. Βοημὸς χημικὸς (1805—1868). Κατ' ἀρχὰς ἠσχολήθη εἰς τὴν μεταλλουργίαν, εἶτα δὲ ἐγένετο χημικὸς καὶ ἀπὸ τοῦ 1835 ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς χημείας εἰς τὸ πολυτεχνεῖον τῆς Πράγας. Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὰ ζητήματα τῆς ζυμοχημείας καὶ τῶν ἐφαρμογῶν αὐτῆς εἰς τὰς ζυμοβιομηχανίας (οἰνοποιίαν, ζυθοποιίαν, οἰνοπνευματοποιίαν κλπ.), γράψας καὶ διεξοδικὸν περὶ αὐτῶν σύγγραμμα. Εἶναι ὁ εἰσαγαγὼν τοὺς καλουμένους σακχαρομετρικοὺς βαθμοὺς Balling. Σ. Γ.

**Μπάλλιου** (Balliu, ἢ Baillieu, ἢ Bailleul) ***Πέτρος ντὲ*** —. Ὀνομαστὸς Φλαμανδὸς χαράκτης. Ἐγεννήθη τῷ 1613 ἐν Ἀμβέρσῃ, ἀπετέλεσε δὲ μέλος τῆς συντεχνίας τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ τῷ 1629. Ἐπισκεφθεὶς τὴν Ἰταλίαν συνεπλήρωσεν ἐν Ρώμῃ τὴν καλλιτεχνικήν του μόρφωσιν, ἐπανελθὼν δ' εἰς τὴν πατρίδα του ἀπέκτησε μεγάλην φήμην δι' ἔργων σημαντικωτάτων. Ὡς πρότυπόν του ὁ Μπάλλιου ἔλαβε τοὺς ἐξοχωτέρους πίνακας τῶν Ὁλλανδῶν καὶ Ἰταλῶν διδασκάλων. Ἐκ τῆς ἀφθόνου του παραγωγῆς ἀξιομνημόνευτος εἶναι ὁ «Ἅγιος Ἀθανάσιος» (ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ πίνακος τοῦ Ρέμπραντ). Ι. Μ. Π.

**«Μπάλλο *ἰν μάσκερα*»** (Ballo in maschera= Χορὸς μετημφιεσμένων). Μελόδραμα εἰς πράξεις τρεῖς (ποίησις *Σόμμα*, μουσικὴ *Βέρντι*), ἀναβιβασθὲν τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου «Ἀπόλλων» τῆς Ρώμης τὴν 17 Φεβρουαρίου 1859. Ἡ ὑπόθεσις τοῦ ἔργου, ἡ αὐτὴ μὲ τὴν τοῦ «Γουσταύου Γ'», τοῦ Σκρὶμπ καὶ τοῦ «Ἀντιβασιλέως» τοῦ Μερκαντάντε, στρέφεται περὶ τὸν φόνον τοῦ βασιλέως τῆς Σουηδίας Γουσταύου Γ' παρὰ τοῦ Τζιὰν Τζάκομο Ἀνκάστρεμ, κατά τινα χορόν, ἐν τῷ μελοδράματι τῆς Στοκχόλμης, τὴν νύκτα μεταξὺ 15 καὶ 16 Μαρτίου 1792. Περὶ τὸ γεγονὸς τοῦτο, ἀνάμεικτον μὲ αἰσθήματα ἔρωτος καὶ φιλίας, μίσους καὶ πικρίας, ἐγράφη ἓν δραματικὸν λιμπρέττο, ὅπερ ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὸν Βέρντι νὰ συνθέσῃ ἓν ἐκ τῶν δημοφιλεστέρων του ἔργων, χαρακτηριζόμενον διὰ τὸ αὐθόρμητον καὶ τὴν θεατρικήν του ἀκρίβειαν. Γ. Σ.

**Μπαλλὸ** (Ballot), ***Ἰούλιος***. Γάλλος λόγιος καὶ φιλέλλην, συμμετασχὼν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Anemos* εἰς τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866—1868. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν τῷ 1868 συνέγραψεν ἱστορίαν τῆς ἐπαναστάσεως ἐκείνης ὑπὸ τὸν τίτλον «Histoire de l' insurrection Crétoise» (Paris 1868). Μ. ΚΑΣ

—**Μπαλλὸ** (Ballot), ***Κάρολος***. Γάλλος νομομαθὴς καὶ δημοσιογράφος (1818—1885). Συνειργάσθη εἰς τὴν ἐφημερίδα «Αἰών», ἵδρυσε τὴν νομικὴν ἐπιθεώρησιν «Revue Pratique du Droit Français» καὶ διηύθυνεν, ὡς ἀρχισυντάκτης, τὴν «Ἐφημερίδα τοῦ δικαίου» (Journal du Droit). Κατέλαβε πολλὰς ἀνωτάτας δικαστικὰς θέσεις, ἐν αἷς καὶ τὴν τοῦ ἀντιπροέδρου τοῦ συμβουλίου τῆς ἐπικρατείας. Χ. Σ.

— **Μπαλλὸ** (Ballot), ***Μαρία-Παῦλος-Βίκτωρ***. Γάλλος ἀποικιστής, γεννηθεὶς τῷ 1855. Ὑπηρέτησε ἀπὸ τοῦ 1878 εἰς τὰς ἀποικίας τοῦ Σενεγάλη, παρεσκεύασε δὲ τὴν ἐν τῇ κεντρικῇ Ἀφρικῇ (Νιγηρίᾳ) ἐγκατάστασιν τῶν Γάλλων καὶ τὴν κατάληψιν ὑπ' αὐτῶν τῆς Δαχομέης, περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Χ. Σ.

— **Μπαλλὸ** (Ballot), ***Μάρκελλος***. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ κριτικός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1860. Ἦτο υἱὸς διακεκριμένου δικηγόρου καὶ δικαστικοῦ, ἐσπούδασε δὲ καὶ αὐτὸς τὴν νομικήν. Ἀπὸ τοῦ 1884 ἐνεφανίσθη ὡς δραματικὸς κριτικὸς ἀπὸ τῶν στηλῶν τῆς «Βελγικῆς ἀνεξαρτησίας», τῷ δὲ 1902 ἀνετέθη εἰς αὐτὸν ἡ στήλη τῆς λογοτεχνικῆς κριτικῆς τοῦ «Φιγκαρώ». Τῷ 1904 ἐγένετο πρόεδρος τῆς «Association syndicale des critiques litteraires». Ἔγραψε: «Πανηγυρικὸν τοῦ Λαμαρτίνου» καὶ πλεῖστα δραματικὰ ἔργα ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Ἀμβροσίου Ζανὲ*, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Τὸ ὄνομά μου», «Οἱ νόμιμοι τοῦ διαζυγίου», «Οἱ ἐρωμένοι» (1893), «Οἱ εὐήθεις τοῦ διαζυγίου», «Ἡ καλὴ σπιτονοικοκυρὰ» (1899), «Καταπράσινοι». Χ. Σ.

**μπαλλόνι** (τό)· δημοτ., σφαῖρα ἐλαστικοῦ κόμμεως ἢ ἄλλης λεπτῆς καὶ ἀεροστεγοῦς ὕλης, πλήρης ἀερίου ἐλαφροτέρου τοῦ ἀέρος, ἀερόστατον (ἐκ τοῦ γαλλ. ballon).

**μπάλλος** (ὁ)· ὁ χορὸς (ἰταλ. ballo)· ‖ εἶδος χοροῦ χορευομένου ὑπὸ ζεύγους ἀνδρὸς καὶ γυναικὸς ἀπέναντι ἀλλήλων (ἰταλ. ballo).

—*[Ἐγκυκλ.]* Ὁ *μπάλλος* εἶναι εἶδος ἑλληνικοῦ χοροῦ, ἰδίως νησιωτικοῦ, φέροντος ἔκδηλα τὰ ἴχνη ξενικῶν ἐπιδράσεων. Χορεύεται, μόνος ἴσως σή-

Digitized by Google

τός, κατὰ ζεύγη, τοῦ χορευτοῦ ἱσταμένου ἀπέναντι τῆς χορευτρίας καὶ εἰς ἀπόστασιν ἀπ' αὐτῆς. Εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων καὶ παραστατικωτέρων ἑλληνικῶν χορῶν. Ἀποτελεῖ ὁλόκληρον μιμόρχημα. Ἐμφανίζει σεμνῶς ἀλλὰ καὶ περιπαθῶς ἐρωτικὸν τὸ ζεῦγος τῶν χορευτῶν εἰς κινήσεις θαυμαστῆς πλαστικότητος· ἡ ἐρωτιῶσα χορεύτρια φεύγει διαρκῶς διὰ χαριεστάτων πλαγιοβαδισμάτων καὶ ἡμιστροφῶν τὸν προκλητικὸν χορευτήν, ὅταν δὲ αὐτὸς προσποιῆται ἀποθάρρυνσιν, γίνεται τοὐναντίον ἐκείνη προκλητική, διὰ νὰ ἐπαναλάβῃ καὶ πάλιν τὴν προσποιητὴν φυγήν, μόλις ὁ ἄρρην ἀναθαρρήσῃ. Ἀμφότεροι κρατοῦν μανδήλια, τὰ ὁποῖα ὁτὲ μὲν ἀνεμίζουν καὶ ἄλλοτε κρατοῦν τεντωμένα, μὲ τὰς δύο χεῖρας ὄπισθεν τοῦ αὐχένος ἢ τῆς ὀσφύος. Ἡ μουσικὴ τοῦ μπάλλου, γοργὴ ἀλλὰ καὶ παρορμητικὴ εἰς περιπάθειαν, ἐκτελεῖται εἰς χρόνον $^{2}/_{4}$. Τ. Δ.

**μπαλλοττάζ** (τὸ) (γαλλ. ballottage=ψηφοφορία, καθ' ἣν οὐδεὶς τῶν ὑποψηφίων συνεκέντρωσε τὴν ἀπαιτουμένην πλειοψηφίαν). Κατὰ τὸ ἐν Γαλλίᾳ ἰσχῦον ἐκλογικὸν δίκαιον, ἐπὶ μὲν τῶν βουλευτικῶν ἐκλογῶν ἔχομεν *μπαλλοττάζ*, ἐὰν ὁ ἀριθμὸς τῶν ψηφισάντων εἶναι κατώτερος τοῦ ἡμίσεος τῶν εἰς τοὺς ἐκλογικοὺς καταλόγους ἐγγεγραμμένων ἢ ἐὰν οὐδεὶς τῶν ὑποψηφίων συνεκέντρωσε τὸν νομίμως ἀπαιτούμενον βασικὸν ἀριθμὸν ψήφων· ἐπὶ δὲ τῶν κοινοτικῶν καὶ δημοτικῶν, ἐὰν οὐδεὶς ἐκ τῶν ὑποψηφίων ἔλαβε τὸ τέταρτον τοὐλάχιστον τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ψήφων τῶν εἰς τοὺς καταλόγους ἐγγεγραμμένων ψηφοφόρων. Ἐπὶ βουλευτικῶν ἐκλογῶν, ἐν περιπτώσει μπαλλοττάζ, ἡ ψηφοφορία ἐπαναλαμβάνεται ματὰ δεκαπενθήμερον, ἐπὶ κοινοτικῶν δὲ τὴν ἑπομένην ἀπὸ τῆς πρώτης ψηφοφορίας Κυριακήν. Ἐὰν καὶ πάλιν δὲν ἐπιτευχθῇ ἡ νόμιμος πλειοψηφία, ἐπιτυγχάνει ὁ συγκεντρῶν τὰς περισσοτέρας μεταξὺ τῶν ὑποψηφίων ψήφους, ἐν περιπτώσει δὲ ἰσοψηφίας ἐπιτυγχάνει ὁ μᾶλλον ἡλικιωμένος. Χ. Δ.

**μπαλλότο** (τό)· δημοτ., δέμα ἐμπορευμάτων συνεσκευασμένων πρὸς ἀποστολήν, ἄλλως *μπάλλα*.

**μπάλλουντ** (ballod), ***Κάρολος***. Λέττων οἰκονομολόγος καὶ στατιστικός. Ἐγεννήθη τῷ 1864 ἐκ γονέων χωρικῶν καὶ ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς θεολογίαν. Ἐπιδοθεὶς βραδύτερον εἰς τὴν οἰκονομικὴν ἐπιστήμην, διεκρίθη ταχέως. Καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Βερολίνου πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, κατέχει ἤδη (1931) τὴν ἕδραν τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας καὶ στατιστικῆς ἐν τῷ νεοϊδρυθέντι πανεπιστημίῳ τῆς Ρίγας. Ἀφιερώθη ἰδίως εἰς τὴν μελέτην τοῦ ζητήματος τοῦ πληθυσμοῦ καὶ ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Der Zukunfsstaat» (1919). Α. Α. Τ.

**Μπάλλπλατς** (Ballplatz). Καλεῖται οὕτω τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Αὐστρίας ἐν Βιέννῃ (ἡ ἀρχικαγκελλαρία τῆς πρῴην αὐστροουγγρικῆς μοναρχίας), κείμενον ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου πλατείας, ὀνομασθείσης οὕτω πιθανῶς ἔκ τινος αἰθούσης χοροῦ, ἥτις παλαιότερον ὑπῆρχεν ἐγγύς. Θ. Κ.

**Μπαλλὺ** (Bally), ***Θεόδωρος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων (1817—1885). Τῷ 1840 ἔτυχε τοῦ βραβείου Ρώμης διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν, τῷ δὲ 1856 ἐξέδωκεν ὑδατογραφίας εἰκονιζούσας τὰ κλασσικὰ μνημεῖα τῶν Ἀθηνῶν κατόπιν ταξιδίου του εἰς τὴν Ἑλλάδα. Τῷ 1873 ἐξετέλεσε τὰ σχεδιαγράμματα τοῦ νέου δημαρχείου τῶν Παρισίων, τοῦ ὁποίου ἀνέλαβε τὰς ἐργασίας τῆς ἀνοικοδομήσεως. Ἐπὶ πλέον ἀνῳκοδόμησε τὸν πύργον τοῦ Saint-Jacques la Boucherie. Ι. Μ. Π.

**— Μπαλλὺ** (Bally), ***Φραγκῖσκος-Βίκτωρ***. Γάλλος ἰατρὸς (1775—1866). Ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ συνέγραψεν: «Ἱστορία τοῦ κιτρίνου πυρετοῦ τῆς Ἱσπανίας καὶ ἰδίως τῆς Καταλωνίας», ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν François καὶ Paizet, «Du typhus d'Amérique» (1814), «Rapport au Conseil supérieur sur la fièvre jaune» (1824), «Recherches sur les épidémies des bords de la Méditerranée» (1849), «Coup d'oeil sur l'histoire de la gymnastique» κ. ἄ. Ο. Ρ.

**Μπαλλυμένα** (Ballymena) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰρλανδίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Ἄντριμ. Κάτ. 12.000. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 54 χλμ. ΒΔ. τοῦ Μπέλφαστ καὶ εἶναι κέντρον ἐμπορίου λίνου. Μ. Δ. Β.

**Μπαλλυσάνον** (Ballyshanon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰρλανδίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντόνεγκαλ τοῦ Ὤλστερ. Κάτ. 3.000. Κεῖται ἐπὶ τοῦ στομίου τοῦ ποταμοῦ Ἔρν καὶ εἶναι ἓν ἐκ τῶν μεγαλυτέρων κέντρων ἁλιείας καὶ ἐμπορίου σολωμοῦ. Εἰς νησῖδα κειμένην παρ' αὐτὴν εὑρίσκεται τὸ περίφημον σπήλαιον τοῦ Ἁγίου Πατρικίου. Μ. Δ. Β.

**μπάλλωμα** (τό)· βλ. λ. *μπάλωμα*.

**μπαλλωτιὰ** (ἡ), ἰδιωμ. Κρήτ., βολή, τὸ ρίψιμον σφαίρας ὅπλου, ἀλλὰ καὶ χωρὶς σφαῖραν μόνον ὁ κρότος. Ι. Δ. Μ.

**Μπὰλμ** (col de Balme) ***αὐχὴν*** — *[Γεωγρ.]*. Δίοδος τῶν Ἄλπεων, κειμένη εἰς ὕψος 2.204 μ., μεταξὺ τῶν κοιλάδων τοῦ Ἄρβ καὶ τοῦ Ροδανοῦ. Ἔχει μῆκος 45 χλμ. καὶ εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον συχναζομένων τῆς περιφερείας. Χ. Δ.

**Μπαλμὰ** (Balmat), ***Ἰάκωβος***. Ἀλπινιστὴς (1762—1838) ἐκ Σαμονὶξ τῆς Σαβοΐας, ὅπου ὑπάρχει καὶ μνημεῖόν του, ἀνεγερθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς γεωλογικῆς ἑταιρείας (1878). Τὴν 7 Αὐγούστου 1786 ἀνευρὼν δίοδον κατώρθωσε νὰ φθάσῃ μέχρι τῆς ὑψίστης κορυφῆς τοῦ Λευκοῦ ὄρους, εἰς τὴν ὁποίαν οὐδεὶς εἶχεν ἀναρριχηθῆ μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος (3 Αὐγούστου) ἀνῆλθεν ἐκ νέου συνοδεύων τὸν φυσιοδίφην Σωσσύρ. Ἐρευνῶν εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Σὶξτ πρὸς ἀνεύρεσιν μεταλλείου χρυσοῦ, ἐφονεύθη. Χ. Δ.

**Μπαλμαθέντα** (Balmaceda), ***Ἰωσὴφ-Ἐμμανουήλ***. Πολιτικὸς τῆς Χιλῆς (1838—1891). Ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τῷ 1870, τῷ 1882 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τῷ 1886 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς δημοκρατίας. Κατὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ διακυβέρνησιν τῆς χώρας διεκανονίσθησαν τὰ πρὸς τὴν Ἀργεντινὴν σύνορα κατὰ τρόπον εὐνοϊκὸν μᾶλλον πρὸς τὴν Ἀργεντινήν. Ἕνεκα τούτου καὶ διότι ηὐνόει τὸν ἐν τῇ Χιλῇ ἀποικισμὸν τῶν Εὐρωπαίων, περιῆλθεν εἰς ρῆξιν, κατὰ τὸ τελευταῖον ἔτος τῆς προεδρίας του, πρὸς τὸ Κογκρέσσον, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας ἐξερράγη ἐπανάστασις. Ὁ ἐμφύλιος πόλεμος κατέληξεν εἰς πλήρη ἧτταν τοῦ Μπαλμαθέντα, τοῦ ὁποίου ἐφονεύθησαν κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σαντιάγου (1891) ὑπὲρ τὰς 3.000 ὀπαδοί. Κατόπιν τῆς ἥττης του παρέδωσε τὴν ἀρχὴν εἰς τὸν στρατηγὸν Μανουὲλ Μπακεντάνο καὶ καταφυγὼν εἰς τὴν πρεσβείαν τῆς Ἀργεντινῆς ηὐτοκτόνησε. Μ. Δ. Β.

**— Μπαλμαθέντα** (Balmaceda) ***περίπτωσις*** *[Διεθν. Δίκ.]*. Οὕτως ἀπεκλήθη σειρὰ ὅλη διεθνῶν ζητημάτων, εἰς τὰ ὁποῖα ἔδωκεν ἀφορμὴν ἡ τηρηθεῖσα διάφορος στάσις ἐκ μέρους τῶν εἰς τὰ χωρικὰ ὕδατα τῆς Χιλῆς κατὰ τὸ πλεῖστον ἠγκυροβολημένων ἀγγλικῶν, γαλλικῶν, γερμανικῶν καὶ ἀμερικανικῶν πλοίων, πολεμικῶν τε καὶ ναυτικῶν, ἔναντι τῶν εἰς αὐτὰ καταφυγόντων καταδιωκομένων ὀπαδῶν τοῦ προέδρου τῆς Χιλῆς *Μπαλμαθέντα* (βλ. λ.), ὡς καὶ τῶν ἀντιπάλων αὐτοῦ, ἐξαιτουμένων ἄσυλον καὶ προστασίαν. Οὕτω ἐνῷ τὰ ἀγγλικὰ καὶ γαλλικὰ πλοῖα ἠρνήθησαν νὰ παράσχωσι τὴν ἀπαιτουμένην ἀσυλίαν, τὰ ἀμερικανικὰ πολεμικὰ «Baltimore» καὶ «San Francisco» καὶ τὸ γερμανικὸν πολεμικὸν «Leipzig» ἐδέχθησαν πρόσφυγας ἐκ Χιλῆς, οὓς καὶ περιέθαλψαν. Τὰ γεγονότα ταῦτα, ἂν καὶ ἐνδιαφέροντα ἀμέσως τὸ Διεθνὲς δίκαιον, δὲν ἔδωσαν ἀφορμὴν εἰς διπλωματικὰς συζητήσεις, προεκάλεσαν ὅμως τὴν ἔκδοσιν δηλώσεως παρὰ τοῦ Ἀμερικανοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ναυτικῶν, ἥτις περιελήφθη ἐν τῇ «United States Navy Regulation of 1893»· ἡ σπουδαιοτέρα διάταξις τῆς ἐν ὅλῳ δηλώσεως, ἥτις ἀνταποκρίνεται καὶ πρὸς τὴν διεθνῆ πρακτικήν, εἶναι ὅτι δὲν ἐπιτρέπεται νὰ παρέχεται ἀσυλία εἰς ποινικῶς διωξίμους πρόσφυγας, εἰς ἕτερα δὲ πρόσωπα δὲν εἶναι «ἀπαραίτητον» νὰ παρέχηται τοιαύτη ἀσυλία (ἐξαιρουμένων τῶν ἰδίων ἰθαγενῶν)· εἰς περίπτωσιν ὅμως καθ' ἣν ἐγίνοντο δεκτοὶ τοιοῦτοι, ἀποτελεῖ ἀπαίτησιν ἀνθρωπίνου δικαίου ἡ τήρησις τῶν ἐκ τῆς τοιαύτης φιλοξενίας παρεπομένων καθηκόντων· ἀπαγορεύεται τουτέστιν ἡ παράδοσις τούτων εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ τόπου ἢ ἡ ἐκδίωξις αὐτῶν. Η. Γ. Κ.

**Μπὰλ Μαχμοὺτ** *[Γεωγρ.—Ἱστορ.]*. Χωρίον τῆς Φρυγίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, κείμενον περὶ τὰ 20 χλμ. Δ. τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Ἀκὰρ τσάϊ. Τὸ τμῆμα τῆς κοιλάδος, ἐφ' οὗ κεῖται τὸ χωρίον, συνιστᾷ εὐρὺ ὁμώνυμον λεκανοπέδιον, οὗ τμῆμα ἀποτελεῖ ἕλος (μήκους 5 χλμ. καὶ πλάτους 3), καὶ ὃ περιορίζεται ὑπὸ τοῦ Ἰμπουλὰκ δὰγ καὶ Ρεσὶλ Τεπὲ ἀπὸ Β., ὑπὸ τῶν ὑψωμάτων Κιοπρουλοῦ-Κιουτσοὺκ Τζορτζᾶ καὶ τοῦ Καλεντζὶκ ντὰγ ἀπ' Α., ὑπὸ τοῦ Ἀχοὺρ ντὰγ ἀπὸ Ν., οὗ αἱ κορυφαὶ Τιλκὶ Κιρὶ Μπὲλ, Κιλὶντς Ἀρσλὰν Μπὲλ καὶ Χασὰν Μπὲλ κατέστησαν περιώνυμα ἐκ τῶν ἐκεῖ ὁμωνύμων κέντρων ἀντιστάσεως τῆς I ἑλληνικῆς μεραρχίας κατὰ τὸ 1922, καὶ τέλος ὑπὸ τοῦ Ἀκὰρ δὰγ ἀπὸ Δ. Τὸ ὑψίπεδον Μπὰλ Μαχμοὺτ συνδέεται πρὸς Α. μὲν μετὰ τοῦ πεδίου Ἀφιὸν Καρᾶ Χισὰρ διὰ τοῦ αὐχένος Κουτσοὺκ Τζορτζᾶ καὶ τῆς στενωποῦ Ἀραπλῆ Τσιφλίκ, πρὸς Β. δὲ μετὰ τῆς Κιουταχείας διὰ τοῦ Κιζιλτζὶμ δερβέν, πρὸς Δ. μετὰ τοῦ Τουμλοῦ Μπουνὰρ διὰ τοῦ στενοῦ τοῦ Κουτσούκιοϊ, καὶ πρὸς Ν. μετὰ τοῦ πεδίου Σαντουκλῆ καὶ τῆς κοιλάδος τοῦ Μαιάνδρου διὰ τοῦ αὐχένος Δ. τοῦ Τιλκὶ Κιρὶ Μπέλ. Τὸ ὑψίπεδον τοῦ Μπὰλ Μαχμοὺτ ἀπετέλεσε θέατρον ἐπιχειρήσεων συχνάκις κατὰ τὴν μικρασιατικὴν ἐκστρατείαν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ:

α) Τῇ 13 καὶ 14 Μαρτίου 1921 τὸ Α' ἑλληνικὸν σῶμα στρατοῦ συνῆψε διὰ τῶν μεραρχιῶν αὐτοῦ II καὶ XIII σφοδρὰν μάχην κατὰ τῶν τουρκικῶν μεραρχιῶν 41ης καὶ 57ης τοῦ 12ου σώματος στρατοῦ καὶ τῆς 4ης τουρκικῆς ταξιαρχίας ἱππικοῦ ὑπὸ τὴν ἀνωτέραν διοίκησιν τοῦ Ρεφὲτ πασᾶ. Κατὰ τὴν μάχην ταύτην οἱ Τοῦρκοι ἡττήθησαν καὶ ὑπεχώρησαν ἐκ τῶν θέσεων αὐτῶν Ἀραμπᾶ Τσιφλὶκ-ὑψώματα Κιοπρουλοῦ-Κουτσοὺκ Τζορτζᾶ, ἡ δὲ XIII ἑλληνικὴ μεραρχία κατέλαβε τὸ Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ.

β) Τῇ 25 καὶ 26 Μαρτίου 1921 αἱ II καὶ XIII μεραρχίαι, ὑποχωροῦσαι πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ, ἀπέκρουσαν διὰ τῶν ὀπισθοφυλακῶν αὐτῶν τὰς παρακολουθούσας καὶ στενὴν ἐπαφὴν τηρούσας μετ' αὐτῶν τουρκικὰς δυνάμεις ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Κουτσοὺκ Τζορτζᾶ καὶ Ἀραπλῆ Τσιφλὶκ (Α. τοῦ Μπὰλ Μαχμούτ).

γ) Τῇ 29 Ἰουνίου 1921 τὸ νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν διὰ τῶν δύο αὐτοῦ μεραρχιῶν, τῆς IV δεξιὰ καὶ τῆς XII ἀριστερά, προελάσαν ἀπὸ δυσμῶν διὰ τοῦ ὑψιπέδου Μπὰλ Μαχμοὺτ ἀπεδίωξε τὰς τουρκικὰς δυνάμεις καὶ κατέλαβε τὸ Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ.

δ) Ὅτε ἡ κυρία μᾶζα τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἐνήργει πρὸς Κιουτάχειαν, Δορύλαιον, Σαγγάριον, τὰ αὐτοκίνητα τῶν ἐφοδιοπομπῶν παρηνωχλοῦντο ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Μπὰλ Μαχμοὺτ ὑπὸ τῆς ἐν Σαντουκλῆ 6ης τουρκικῆς μεραρχίας. Τὸ νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν τότε ἐπεχείρησε τὴν ἐξασφάλισιν τοῦ ὑψιπέδου Μπὰλ Μαχμούτ, πρῶτον μὲν διὰ διλοχίας τοῦ 49ου συντάγματος πεζικοῦ (8 Αὐγούστου 1921), δι' ἀποσπάσματος ἐκ 3 ταγμάτων καὶ πυροβολικοῦ (16 Αὐγούστου 1921), εἶτα δὲ καὶ δι' ἰσχυροτέρου μεικτοῦ ἀποσπάσματος, ὃ κατέλαβε (24 Αὐγούστου 1921) τὸ Σαντουκλῆ. Τῇ 1, 2 καὶ 3 Σεπτεμβρίου 1921 τὸ 49ον σύνταγμα πεζικοῦ, κατέχον τὸ ὑψίπεδον Μπὰλ Μαχμούτ, προσεβλήθη ὑπὸ τῶν Τούρκων ἀποκρουσθέντων, οἵτινες ὅμως τῇ 8 καὶ τῇ 9 Σεπτεμβρίου 1921 ἐπανέλαβον τὰς ἐπιθέσεις αὐτῶν κατ' ἄλλου τινὸς ἀποσπάσματος ἀποκρουσθείσας. Τῇ 11 Σεπτεμβρίου 1921, ἀποσυρθέντος τέλος τοῦ ἀποσπάσματος τούτου εἰς τὰ ὑψώματα Ν. τοῦ σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Μπὰλ Μαχμούτ, οἱ Τοῦρκοι κατέλαβον τὰ ὑψώματα Κιλὶτς Ἀρσλὰν Μπὲλ καὶ Τιλκὶ Κιρὶ Μπέλ. Τέλος δέ, περὶ τὸ τέλος Σεπτεμβρίου 1921, ἡ IV μεραρχία ἐκαθάρισε τελείως τὴν κατάστασιν ἐπὶ τοῦ ὑψιπέδου Μπὰλ Μαχμούτ, ἀποδιώξασα τοὺς Τούρκους καὶ ἐγκατασταθεῖσα ἐπὶ τῶν εἰρημένων ὑψωμάτων, ἃ ἀνέκτησεν.

ε) Τῇ 13 καὶ 14 Αὐγούστου 1922 ἐξαπελύθη ἡ μεγάλη ἐπίθεσις τῶν Τούρκων κατὰ τῆς ἀπὸ Ν. περιβαλλούσης τὸ ὑψίπεδον Μπὰλ Μαχμοὺτ ὀροσειρᾶς (Ἀκὰρ δάγ-Ἀχοὺρ δάγ), ἤτοι κατὰ τῶν κέντρων ἀντιστάσεως Χασὰν Μπέλ, Κιλὶτς Ἀρσλὰν Μπέλ, Τιλκὶ Κιρὶ Μπέλ, κατεχομένων ὑπὸ τῆς I μεραρχίας, ἐνῷ ἀνατολικώτερον ἡ IV μεραρχία ἦτο ἐγκατεστημένη ἐπὶ τοῦ Καλετζὶκ δάγ. Ἡ τουρκικὴ ἐπίθεσις ἐγένετο διὰ τῆς I στρατιᾶς ὑπὸ τὸν Νουρεντὶν πασᾶν, ἣν συνίστων τὸ 1 σῶμα στρατοῦ (15η, 23η καὶ 57η μεραρχία), τὸ 2 σῶμα στρατοῦ (3η, 4η καὶ 7η μεραρχίαι) καὶ τὸ 4 σῶμα στρατοῦ (5η, 11η καὶ 12η μεραρχίαι), ὡς ἐπίσης καὶ διὰ τοῦ σώματος στρατοῦ ἱππικοῦ (1ης, 2ας καὶ 14ης μεραρχιῶν ἱππικοῦ). Ἡ συγκέντρωσις τῆς μάζης ἐπιθέσεως ταύτης ἐγένετο περὶ τὴν στενωπὸν τοῦ Σαντουκλῆ, κεκαλυμμένην ὑπὸ δάσους, ὑπὸ τὴν προκάλυψιν τῆς 8ης καὶ 14ης μεραρχιῶν πεζικοῦ (ΝΑ. Ἀφιὸν Καρᾶ Χισὰρ) καὶ τῆς 6ης μεραρχίας πεζικοῦ (εἰς Σαντουκλῆ). Ἡ II τουρκικὴ στρατιὰ ὑπὸ τὸν Γιακοὺπ Σεβκὶ πασᾶν, περιλαμβάνουσα τὸ 3 σῶμα στρατοῦ (1ην, 41ην, 61ην μεραρχίας) καὶ τὸ 6 σῶμα στρατοῦ (16ην καὶ 17ην μεραρχίας) καὶ τὴν ἀνεξάρτητον μεραρχίαν ἱππικοῦ, εἶχεν ἐντολὴν νὰ καθηλώσῃ τὰς ἑλληνικὰς δυνάμεις ἀπὸ τοῦ Ἀκὰρ τσάϊ διὰ Σεϊντῆ Γαζῆ μέχρι Δορυλαίου καὶ Μπὸς δάγ. Ἐπὶ τοῦ λοιποῦ μετώπου αἱ ἑλληνικαὶ δυνάμεις θ' ἀπησχολοῦντο ὡς ἑξῆς: Εἰς Μαίανδρον διὰ τμημάτων χωροφυλακῆς, εἰς Ντενιζλῆ διὰ τῆς 3ης μεραρχίας ἱππικοῦ, εἰς Τσιβρὶλ διὰ 2 συνταγμάτων πεζικοῦ, εἰς περιοχὴν Κιοπροῦ Χισὰρ διὰ τῆς 18ης μεραρχίας πεζικοῦ καὶ εἰς τὴν περιοχὴν Κίου διὰ 2 ἀνεξαρτήτων ταγμάτων πεζικοῦ. Ἐπὶ τούτοις αἱ τουρκικαὶ ὀργανώσεις τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς κατεχομένης ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ζώνης θὰ ἐνέτειναν τὴν δρᾶσιν αὐτῶν καὶ θὰ προέβαινον εἰς μεγάλας καταστροφὰς ἔργων συγκοινωνίας. Βάσις τῆς ὅλης ἐπιθετικῆς ἐνεργείας ἦτο τὸ Ἐγκερντίρ, μεθ' οὗ αἱ συγκοινωνίαι τοῦ Σαντουκλῆ ἐπεσκευάσθησαν. Ὁ Τοῦρκος ἀρχιστράτηγος Μουσταφᾶ Κεμὰλ μετὰ τοῦ ἐπιτελείου του, ὁ διοικητὴς τοῦ δυτικοῦ μετώπου Ἰσμὲτ πασᾶς καὶ ὁ γενικὸς ἐπιτελάρχης Φεβζῆ πασᾶς παρηκολούθουν ἐκ τοῦ σύνεγγυς τὴν ἐξέλιξιν τῆς ἐπιχειρήσεως ἀπὸ τοῦ Κοντζᾶ Τεπέ, παρατηρητηρίου τοῦ Νουρεντὶν πασᾶ. Ἡ ἐπίθεσις ἤρξατο τῇ 4ῃ ὥρᾳ τῆς 13 Αὐγούστου 1922. Μετὰ 1 $^{1}/_{2}$ ὥρας προπαρασκευὴν διὰ πυρὸς 200 πυροβόλων, ἐξώρμησε τὸ πεζικὸν πρὸς ἐπίθεσιν. Αἱ I καὶ IV ἑλληνικαὶ μεραρχίαι, ἐνισχυθεῖσαι καὶ διὰ τῆς VII μεραρχίας καὶ μεικτῶν ἀποσπασμάτων τῆς XIII καὶ IX μεραρχιῶν (καὶ δι' 108 ἐν ὅλῳ πυροβόλων) ἀντέστησαν μέχρι τῆς μεσημβρίας τῆς 14 Αὐγούστου 1922, ὁπότε διετάχθη ὑπὸ τοῦ Α' ἑλληνικοῦ σώματος

Digitized by Google

στρατοῦ ὑποχώρησις ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Κιουπρουλοῦ—Ν. σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ Μπὰλ Μαχμούτ, ἐκκενωθέντος τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Ἐκεῖθεν τὴν ἡμέραν τῆς ἑπομένης (15 Αὐγούστου 1922) ἡ ὑποχώρησις πρὸς Β. καὶ πρὸς Δ. τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἐξηκολούθησε, διασπασθείσης τῆς ἑνότητος τῆς διοικήσεως τῶν μονάδων, μὴ δυνηθεισῶν ν' ἀπαγκιστρωθῶσιν ἀπὸ τοῦ ἐχθροῦ. Ἐπηκολούθησαν: τῇ μὲν 16 Αὐγούστου 1922 ἡ μάχη τοῦ Χαμούρκιοϊ-Κουτσούκιοϊ, τῇ δὲ 17 τοῦ αὐτοῦ μηνὸς ἡ τοῦ Τσάλκιοϊ-Ἀλῆ-Βεράν, ὁπότε ἡ μὲν ὁμὰς μεραρχιῶν τοῦ στρατηγοῦ Τρικούπη (V, IX, XII, XIII, καὶ μικρὸν τμῆμα τῆς IV) ἀποσυνετέθη, ἡ δὲ ὁμὰς μεραρχιῶν τοῦ στρατηγοῦ Φράγκου (I, VII, II, μεραρχία ἱππικοῦ, IV (μεῖζον τμῆμα) καὶ ἀπόσπασμα τῆς XIII) διηυθύνθη πρὸς τὴν Ἐρυθραίαν, ἀποχωρήσασα ἐκ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας.
Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπάλμερ** (Balmer), ***Ἰακώβ.*** Γερμανὸς φυσικομαθηματικὸς (1825—1898). Κατέστη ὀνομαστὸς ἐκ τοῦ ἐμπειρικοῦ τύπου ὃν ἀνεῦρε καὶ ὅστις καθορίζει τὸν νόμον τῆς διανομῆς τῶν φασματικῶν γραμμῶν ἐν τῷ φάσματι τοῦ ὑδρογόνου. Οὕτως αἱ γραμμαὶ αὗται τοῦ ὑδρογόνου, αἱ παρατηρούμεναι διὰ σωλῆνος Geissler ὑδρογόνου, παρέχονται ὑπὸ τοῦ τύπου:

$$v = R\left(\frac{1}{4} - \frac{1}{m^2}\right)$$

ὅπου v ἡ συχνότης, m = 2, 3, 4... καὶ R σταθερὰ (καλουμένη σταθερὰ Rydberg), ἧς ἡ τιμὴ εἶναι 109677,69. c, ὅπου $c = 3.10^{10}$. Ὁ Bohr ἐπέτυχε, βάσει τῆς ἀτομικῆς θεωρίας αὐτοῦ, νὰ ἀνεύρῃ διὰ θεωρητικῆς ὁδοῦ τὸν τύπον τοῦ Μπάλμερ. Κ. Π.

— **Μπάλμερ** ***σειρά.*** Οὕτω καλεῖται ἐν τῇ φασματοσκοπίᾳ ἀριθμητικὴ σειρὰ ἀνακαλυφθεῖσα τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ *Μπάλμερ* καὶ ἥτις παρέχει τὰς φασματικὰς γραμμὰς φάσματος τοῦ ὑδρογόνου (βλ. *ἀτομικὴ θεωρία*). Κ. Π.

**Μπαλμὲς** (Balmès), ***Ἰάκωβος - Λουκιανός.*** Καταλανὸς δημοσιολόγος καὶ συγγραφεὺς (1810—1848). Τῷ 1840 ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην πραγματείαν του «Μελέτη κοινωνικο-πολιτικο-οικονομικὴ περὶ τῆς ἰδιοκτησίας τοῦ κλήρου». Βραδύτερον ἐξέδωκεν ἑβδομαδιαίαν ἐφημερίδα «El pensamiento de la nacion», ὄργανον τοῦ συντηρητικοῦ καὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ κόμματος. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «El Criterio», «Filosofia fondamental» καὶ «Προτεσταντισμὸς καὶ καθολικισμὸς ἐν σχέσει πρὸς τὸν πολιτισμὸν τῆς Εὐρώπης». Α. Δ.

**Μπάλμοντ** (Balmont), ***Κωνσταντῖνος - Δημητρίεβιτς.*** Ρῶσος ποιητὴς καὶ λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1867 ἐν τῷ κυβερνείῳ Βλαντιμίρ. Ἐσπούδασε τὴν νομικήν, εἶτα δ' ἐπεδόθη εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ ἐταξίδευσεν ἐπὶ μακρὸν εἰς τὴν Δ. Εὐρώπην καὶ τὴν Ἀμερικήν. Ἡ πρώτη ποιητικὴ συλλογή του, δημοσιευθεῖσα τῷ 1890, ἔσχε μικρὰν ἐπιτυχίαν. Βραδύτερον ἀνεδείχθη διὰ τῶν λυρικῶν ἔργων: «Ὑπὸ τὸν οὐρανὸν τοῦ βορρᾶ», «Τιτσίνα» κ. ἄ., τὰ ὁποῖα ἐξεδόθησαν εἰς ἐνιαῖον τόμον τῷ 1904—1905. Τὰ ἔργα ταῦτα τάσσουσιν αὐτὸν μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἀντιπροσώπων τῆς συγχρόνου ποιήσεως. Σπουδαιότερα τούτων εἶναι: «Εἰς τὸ ἄπειρον», «Σιωπή», «Τὰ κτήρια ποὺ καίονται» (1899), «Νάμαστε σὰν τὸν ἥλιο» (1902), «Πράσινος κῆπος» κ.ἄ. Ἀξιοσημείωτος εἶναι ὁ λυρισμός, ἰδίᾳ τῶν πρώτων ἔργων του, καὶ ἡ ἀπαράμιλλος μουσικὴ τοῦ στίχου. Ἐπίσης μετέφρασε πολλὰ ἔργα διαφόρων συγγραφέων, ἐν οἷς καὶ τῶν: Σέλλεϋ, Καλντερόν, Πόε, Ἴψεν, Σούντερμαν κλπ. Χ. Δ.

**Μπαλμόραλ** (Balmoral Castle). Ἀνάκτορον τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας τῆς Ἀγγλίας, κείμενον παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Ντή, ἐν τῇ κομητείᾳ Ἀμπερντὴν τῆς Σκωτίας. Περιβάλλεται ὑπὸ μεγάλου κτήματος καὶ πάρκου κειμένου ἐπὶ ὀροπεδίου 270 μ. ὕψους, μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Ντὴ καὶ τῆς λίμνης Μίνκ, καὶ ἀνῆκεν ἀρχικῶς εἰς ἰδιώτας, ἀγορασθὲν ὑπὸ τοῦ συζύγου τῆς βασιλίσσης Βικτωρίας τῷ 1848. Ἡ βασίλισσα Βικτωρία, κατεδαφίσασα τὸ παλαιόν, ἔκτισε τῷ 1882 τὸ σημερινὸν ἀνάκτορον ἐξ ἐρυθροῦ γρανίτου, εἰς σκωτικὸν βαρωνικὸν ῥυθμὸν μετὰ πύργου ὕψους 30 μ. Χρησιμεύει ὡς θερινὴ διαμονὴ τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας τῆς Ἀγγλίας. Εἰς μικρὰν ἀπ' αὐτοῦ ἀπόστασιν εὑρίσκεται ἕτερον βασιλικὸν θερινὸν ἀνάκτορον, τὸ Ἀβεργκέλντυ-Κάσλ. Ἐν Μπαλμορὰλ ἐγεννήθη καὶ ἡ κατόπιν βασίλισσα τῆς Ἱσπανίας Βικτωρία τοῦ Βάττεμπεργκ. Μ. Δ. Β.

**Μπαλμουζαφφέρ,** ***Νασὶρ μπὲν-Μαχμοὺτ ἰμπν-Μαρούφ.*** Διάσημος Ἄραψ ἰατρός, χημικὸς καὶ ἀστρονόμος, ἀκμάσας ἐν Αἰγύπτῳ κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Ν. Μ.

**Μπαλμπὲκ** (Balbek) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας (βλ. λ. *Βάαλβεκ*).

**Μπάλμπες,** ἢ ***Μπάλμπι*** (Balbes, Balbi). Μεγάλη καὶ παλαιὰ οἰκογένεια τοῦ Πεδεμοντίου. Διαιρεῖται εἰς πολλοὺς κλάδους καὶ εἶναι γνωστὴ ἐκ τῆς δράσεώς της κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα ἐν τῇ δημοκρατίᾳ Κιέρι, τὴν ὁποίαν τέλος παρέδωσαν εἰς τὸν Ἀμεδαῖον τῆς Σαβοΐας, τῷ 1347. Εἷς τῶν κλάδων τῆς οἰκογενείας ταύτης, ἐγκατασταθεὶς ἐν Ἀβινιὸν τῷ 1456, ὑπῆρξε τὸ στέλεχος τοῦ γένους *Κριλλιόν*.

**Μπάλμπι** (Balbi), ***Ἀδριανός.*** Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ στατιστικὸς (1782—1848). Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ τοῦ βασιλείου τῆς Σαρδηνίας, ἀφιερώθη κατόπιν εἰς ἐπιστημονικὰς μελέτας, γενόμενος νεώτατος καθηγητὴς τῆς φυσικῆς, τῶν μαθηματικῶν καὶ τῆς γεωγραφίας ἐν τῷ βασιλικῷ κολλεγίῳ τῆς Βιέννης. Ἦτο μέλος πλείστων εὐρωπαϊκῶν ἀκαδημιῶν καὶ ἔχαιρε μεγάλης φήμης διὰ τὰς ἐπιστημονικάς του μελέτας. Ὁ Γάλλος ἐξερευνητὴς Ντυμὸν ντ' Ὑρβὶλ ἔδωσε, τιμῆς ἕνεκεν, τὸ ὄνομα τοῦ Μπάλμπι εἰς τὴν ὑψηλοτέραν κορυφὴν τῆς νήσου Μπουγκανβίλ, τοῦ πολυνήσου Σολομῶντος. Ἔγραψε πλούσια ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ φυσικοπολιτικὴ ἄποψις τῆς γηΐνης σφαίρας» (1808), «Στατιστικὰ στοιχεῖα τῆς Πορτογαλίας» (1822), «Πολιτικοστατιστικὸς ἄτλας τοῦ κόσμου», «Ἡ Βρεττανικὴ αὐτοκρατορία», «Ἡ Ρωσικὴ αὐτοκρατορία», «Πολιτικὸς καὶ στατιστικὸς πίναξ τῆς Εὐρώπης κατὰ τὸ 1820» κτλ. Τὸ κυριώτερον αὐτοῦ ἔργον, ἐν τῷ ὁποίῳ συνώψισεν ὁλόκληρον τὴν γεωγραφικὴν ἐπιστήμην, ὑπῆρξεν ἡ περίφημος «Σύνοψις γεωγραφίας», ἥτις μετεφράσθη εἰς πλείστας ξένας γλώσσας. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλμπι** (Balbi), ***Γάσπαρος.*** Βενετὸς περιηγητής. Κοσμηματοπώλης ἐν Βενετίᾳ, ἐπεχείρησε διὰ ξηρᾶς ἀπὸ τοῦ Χαλεπίου μακρὸν ταξίδιον εἰς τὰς χώρας τῆς Ἀνατολῆς μέχρι τῶν Ἰνδιῶν, διαρκέσαν ἐννέα ἔτη (1579—1588), ἵνα ἴδῃ τοὺς πολυτίμους λίθους εἰς τὸν τόπον τῆς παραγωγῆς των. Ἐπανελθὼν ἐδημοσίευσε τὰς ἐντυπώσεις του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ταξίδιον ἑνὸς κοσμηματοπώλου εἰς τὰς Ἰνδίας». Τὸ βιβλίον τοῦτο ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν εἰς τὴν ἐποχήν του, διότι περιεῖχε πληροφορίας ποικίλας περὶ τῶν ἠθῶν, τοῦ ἐμπορίου καὶ τῶν νομισμάτων χωρῶν ἀγνώστων σχεδὸν τότε εἰς τοὺς Εὐρωπαίους. Θ. Κ.

— **Μπάλμπι** (Balbi), ***Δομένικος.*** Ἰταλὸς δραματικός, ἀκμάσας κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: Lo sfortunato paziente», «Il Pantalone burlao» καὶ «Il Primo Zanne disgraziato mezzano de'matrimonii». Α. Δ.

—**Μπάλμπι** (Balbi), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς βοτανικὸς (1765—1831). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὴν βοτανικήν. Τῷ 1798 ἐξελέγη βουλευτὴς τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως, τῷ δὲ 1800 διεδέχθη τὸν Ἀλλιόνι εἰς τὴν ἕδραν τῆς βοτανικῆς. Τῷ 1814 ἀπεσύρθη εἰς τὴν Παβίαν καὶ τέλος, τῷ 1819, μετέβη εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Λυών. Κυριώτεραι ἐργασίαι του εἶναι αἱ ἑξῆς: «Enumeratio plantarum officinalium» (1804), «Flora Taurinensis» (1806), «Materies medica» (1811), «Flore Lyonnaise» (1827—1828) κτλ. Δ.Ν.Π.

— **Μπάλμπι** (Balbi), ***Λουδοβῖκος.*** Ἰταλὸς συνθέτης τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἀποθανὼν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1604. Ψάλτης ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας καὶ εἶτα μοναχὸς ἐν τῇ μονῇ τῶν φραγκισκανῶν τῆς αὐτῆς πόλεως, ἔγραψε πλεῖστα θρησκευτικὰ ἔργα: λειτουργίας, μοτέττα κτλ., ἐπίσης πλεῖστα μαδριγάλια, καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Τζ. Γκαμπριέλι καὶ τοῦ Ὁρατίου Βέκκι εἰς τὴν ἔκδοσιν τοῦ γκραντουαλίου καὶ τοῦ ἀντιφωναρίου τοῦ οἴκου Γκαρντάνο τῆς Βενετίας (1591).

— **Μπάλμπι** (Balbi), ***Μελχιώρ.*** Ἰταλὸς συνθέτης καὶ θεωρητικὸς (1796—1879). Ἔγραψε τρία μελοδράματα καὶ ἐξέδωκε τὰ θεωρητικὰ συγγράμματα: «Grammatica ragionata della musica considerata sotto l'aspetto di lingua» (1845) καὶ «Nuova scuola basata sul sistema semitonato equabile» (1872). Γ. Σ.

**Μπαλμπιανὶ** (Balbiani), ***Ἐδουάρδος - Γεράρδος.*** Γάλλος βιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1825. Διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς τῷ 1854, διευθυντὴς τοῦ ἱστολογικοῦ ἰνστιτούτου τοῦ Κλαυδίου Μπερνὰρ (1867), καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς ἐμβρυολογίας ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας, εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ἐκ τῶν μελετῶν αὐτοῦ τῶν σχετικῶν πρὸς τὰ χνοώδη ἐγχυματικὰ ζωΰφια, τὰ ἐπιδημικὰ νοσήματα τῶν μεταξοσκωλήκων, τὴν φυλλοξήραν κτλ. Εἶναι εἷς τῶν πρώτων Γάλλων βιολόγων τῶν ἀσχοληθέντων περὶ τὴν κυτολογίαν. Ὁ Μπαλμπιανὶ ἵδρυσε μετὰ τοῦ Ρανβιὲ καὶ τοῦ Ἐννεγκὺ τὰ «Ἀρχεῖα τῆς μικροσκοπικῆς ἀνατομίας».

**Μπάλμπο** (Balbo), ***Ἴταλος.*** Ἰταλὸς πολιτικός, στρατιωτικὸς καὶ ἀεροπόρος, γεννηθεὶς τῷ 1896. Ἐσπούδασε πολιτικὰς ἐπιστήμας ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς τὸν ἰταλικὸν στρατὸν ὡς ὑπολοχαγός. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐγένετο τῷ 1921 ἀρχηγὸς τῶν φασιστῶν τῆς γενετείρας του Φερράρας καὶ κατόπιν ἀπετέλεσε μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τοῦ Φιοῦμε ὑπὸ τὸν Ντ' Ἀννούντσιο. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῶν φασιστῶν κατὰ τῆς Ρώμης, τῷ 1922, ὑπῆρξεν ὁ κυριώτερος ὀργανωτὴς τῶν φασιστικῶν λεγεώνων καὶ μέλος τῆς τετρανδρίας. Μετὰ τὴν ἄνοδον τῶν φασιστῶν εἰς τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν καθιέρωσιν τῆς φασιστικῆς φρουρᾶς, διωρίσθη ἀρχιστράτηγος αὐτῆς (generalissimo). Ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τῷ 1920 καὶ τῷ 1924 ἐγένετο ὑφυπουργὸς τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας καὶ κατόπιν ὑφυπουργός, βραδύτερον δὲ ὑπουργὸς τῆς Ἀεροπορίας. Τῷ 1930 διωργάνωσε καὶ ἐξετέλεσε τὴν ἀπὸ Ἰταλίας εἰς Ν. Ἀμερικὴν πτῆσιν ἐπὶ κεφαλῆς σμήνους ἰταλικῶν ἀεροπλάνων, ἐξέδωκε δὲ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος εἰς ἰδιαίτερον τόμον τὴν περιγραφὴν τοῦ ταξιδίου του τούτου. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλμπο** (Balbo), ***Καῖσαρ,*** *κόμις ντὶ Βιναρτίο.* Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1789—1853). Υἱὸς τοῦ Ἰταλοῦ διπλωμάτου Προσπέρου Μπάλμπο, ἐσπούδασεν ἐν Τουρίνῳ καὶ Παρισίοις νομικά, νεώτατος δὲ διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος εἰς ἀνωτέρας θέσεις, φθάσας μέχρι τοῦ παρέδρου τοῦ συμβουλίου ἐπικρατείας τῆς γαλλικῆς αὐτοκρατορίας. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Πεδεμοντίου καὶ μετέσχε τῆς κατὰ τὸ Ἑκατονθήμερον ἐκστρατείας εἰς τὸ Δελφινᾶτον. Ἠκολούθησε κατόπιν τὸν πατέρα του, διορισθέντα πρεσβευτὴν εἰς τὴν Μαδρίτην, ὡς στρατιωτικὸς ἀκόλουθος, καὶ κατόπιν ἐγένετο πρεσβευτὴς ἐν τῇ αὐτῇ πόλει.

*Καῖσαρ Μπάλμπο.*

Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ἐν Ἰταλίᾳ ἀντετάχθη κατὰ τῶν μυστικῶν ἑταιρειῶν καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους. Ἐπανελθὼν τῷ 1824 εἰς τὴν πατρίδα του ἀφιερώθη εἰς ἱστορικὰς ἐργασίας καὶ ἐξέδωκε τὸ πατριωτικὸν ἔργον «Ἰταλικαὶ ἐλπίδες», ὅπερ ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν καὶ κατέστησεν αὐτὸν δημοτικώτατον. Τῷ 1848 ἐγένετο πρῶτος συνταγματικὸς πρωθυπουργὸς τοῦ Καρόλου Ἀλβέρτου καὶ ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ μετὰ πεντάμηνον, μετὰ τὴν ἧτταν τῆς Κουστότσας. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Μελέται ἐπὶ τοῦ πολέμου τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἱσπανίας» (1817), «Ἱστορία τῆς Ἰταλίας ὑπὸ τοὺς βαρβάρους» (1830), «Ἡ ζωὴ τοῦ Δάντη» (1839), «Ἱστορικαὶ μελέται» (1842) κτλ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν ἐν Φλωρεντίᾳ εἰς 10 τόμους. Μ. Δ. Β.

**Μπαλμπόα** (Balboa), ***Βάσκο-Νούνιεθ.*** Ἱσπανὸς ἐξερευνητὴς (βλ. λ. *Νούνιεθ* ντὲ Μπαλμπόα, Βάσκο).

—**Μπαλμπόα** (Balboa), ***Μιχαὴλ-Καβέλλιο.*** Ἱσπανὸς ἱεραπόστολος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Τῷ 1576, ἐγκατασταθεὶς ἐν Κίτῳ, ἠσχολήθη περὶ τὴν μελέτην τῶν ἀρχαίων μνημείων τῶν Περουϊανῶν. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ἐκ τῆς περιέργου συγγραφῆς αὐτοῦ «Miscellanea australia», μεταφρασθείσης εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Histoire du Pérou» (Παρίσιοι, 1882). Α. Δ.

**Μπαλντάγια** (Baldaya), ***Ἀλφόνσος,*** Πορτογάλος ἐξερευνητὴς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Τῷ 1434 ἐξηρεύνησε τὰς δυτικὰς ἀκτὰς τῆς Ἀφρικῆς, ἀνεκάλυψε κόλπον τινά, εἰς ὃν ἔδωσε τὸ ὄνομα «Angra dos Vivos», τῷ δὲ 1436 ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του κομιστὴς πολυτίμων σημειωμάτων, σχετικῶν πρὸς τοὺς ὑπ' αὐτοῦ ἐξερευνηθέντας τόπους. Α. Δ.

**Μπαλνταζάρρε** (Baldasarre), ***Ἄννα.*** Ἰταλὶς ζωγράφος, γεννηθεῖσα ἐν Ἐνετίᾳ κατὰ τὸ 1630. Ὑπῆρξε μαθήτρια τοῦ Λεονάρδου Κορόνα, μετὰ τὸν θάνατον δ' αὐτοῦ ἐπεράτωσε πολλὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα ὁ διδάσκαλος αὐτῆς ἀφῆκεν ἡμιτελῆ. Ἡ καλλιτεχνικὴ δρᾶσίς της φαίνεται περιορισθεῖσα εἰς ἁγιογραφίας πρὸς διακόσμησιν ναῶν καὶ ἰδιωτικῶν μεγάρων. Εἰς τοὺς παλαιοὺς ὁδηγοὺς τῆς Ἐνετίας ἀναφέρονται πολλὰ ἔργα της, ἐκ τῶν ὁποίων ὀλίγιστα διεσώθησαν. Α. Δ.

**Μπαλντασσάρε** (Baldassare), ***Σαλβατώρ.*** Ἰταλὸς καθηγητὴς τῆς ζῳολογίας, γεννηθεὶς τῷ 1853. Ἠσχολήθη κυρίως εἰς τὴν ζῳοτεχνίαν, ἣν καὶ ἐδίδαξεν εἰς ἰταλικὰς σχολάς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων ἔργων του εἶναι τὸ «Trattato Zootehnico». Δ. Ν. Π.

**Μπαλντασσερόνι** (Baldasseroni), ***Ἰωάννης.*** Ἰταλὸς πολιτικὸς (1790—1876). Ἐσπούδασεν οἰκονομικὰς ἐπιστήμας καὶ ἐγένετο κατ' ἀρχὰς ἀνώτατος ὑπάλληλος ἐν Τοσκάνῃ. Κατακτήσας βραδύτερον τὴν εὔνοιαν τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Τοσκάνης Λεοπόλδου Β', διωρίσθη ὑπ' αὐτοῦ πρωθυπουργὸς καὶ τὸν συνώδευσεν εἰς τὴν Βιέννην. Εἶναι γνωστὸς διὰ τὰ ἀνελεύθερα μέτρα, τὰ ὁποῖα ἔλαβε κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς διακυβερνήσεώς του, ἀπο-

Digitized by Google

στείλας τὸ σύνταγμα, καταλύσας τὰς ἐλευθερίας τοῦ τύπου καὶ ἐπιβαλὼν ἐπαχθεῖς φόρους. Μετὰ τὴν παλινόρθωσιν τοῦ δουκὸς ἀντετάχθη πάντοτε εἰς τὴν ἐπαναφορὰν τοῦ συνταγματικοῦ καθεστῶτος καὶ ἀπεκλήθη τὸ «κακὸν πνεῦμα» τοῦ Λεοπόλδου, εἰς τοῦ ὁποίου τὴν ἔκπτωσιν (1859) συνέτεινε ὑπὲρ πάντα ἄλλον. Τῷ 1871 ἐξέδωκε «Βιογραφίαν τοῦ δουκὸς Λεοπόλδου Β'». Μ. Δ. Β.

**Μπάλντε** (Balde), ***Ἰάκωβος***. Γερμανὸς ἰησουΐτης καὶ ποιητὴς (1604—1668). Ἐγένετο ἰησουΐτης τῷ 1624 καὶ διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ αὐλῇ τῆς Βαυαρίας, κατόπιν δὲ εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Ἴνμπρουκ καὶ τοῦ Ἴγγελστατ. Ἔγραψε κυρίως ποιήματα λατινιστὶ καὶ ὠνομάσθη ὑπὸ τῶν συγχρόνων του ὁ «Γερμανὸς Ὁράτιος», διὰ τὴν ἐπιτυχῆ μίμησιν τῶν ἔργων τοῦ Λατίνου ποιητοῦ. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Βατραχομυομαχία» (1637), «Ἡ νικηφόρος Οὐρανία» (1643), ὅπερ ἐβραβεύθη ὑπὸ τοῦ πάπα Ἀλεξάνδρου ΣΤ' διὰ χρυσοῦ μεταλλίου, «Ἐπῳδὸς» (1645), κτλ. Τῷ 1660 ἐξέδωκεν ὁ ἴδιος συλλογὴν τῶν κυριωτέρων ποιημάτων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιήματα». Τῷ 1856 ἐν Μύνστερ καὶ τῷ 1884 ἐν Ρατισβόνῃ ἐγένετο νέα ἔκδοσις τῶν ποιητικῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Λυρικά». Μ. Δ. Β.

—**Μπάλντε** (Balde), ἢ ***Μπαλντέους*** (Baldeus), ***Φίλιππος***. Ὁλλανδὸς ἱεραπόστολος, ἀκμάσας κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐκήρυξε τὸ Εὐαγγέλιον εἰς τὴν νῆσον Κεϋλάνην καὶ συνέγραψε περισπούδαστον πραγματείαν σχετικὴν πρὸς τοὺς τόπους, εἰς τοὺς ὁποίους ἔδρασεν ὡς ἱεροκήρυξ καὶ ἱεραπόστολος. Α. Δ.

**Μπαλντέλλι** (Baldelli). Ἰταλὸς ἑλληνιστὴς καὶ λατινιστής, ἀκμάσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ὡς μεταφραστὴς τοῦ Φιλοστράτου, Δίωνος τοῦ Κασσίου, Διοδώρου τοῦ Σικελιώτου καὶ τοῦ Ἰωσήπου. Ἐπίσης διεκρίθη ὡς σχολιαστὴς τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος. Α. Δ.

— **Μπαλντέλλι** (Baldelli), *κόμις* ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Ἰταλὸς φιλόλογος (1766—1831). Τῷ 1791 μετηνάστευσεν εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπου ὑπηρέτησεν ὡς ἀξιωματικός, ἐπολέμησε κατὰ τῆς δημοκρατίας καὶ τέλος διωρίσθη διοικητὴς τῆς Σιέννης. Ὑπῆρξε πρόεδρος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Κρούσκας. Ὡς συγγραφεὺς εἶναι γνωστὸς ἐκ τῶν βαρυσημάντων πραγματειῶν του: «Ὁ Πετράρχης καὶ τὰ ἔργα του» (1797), «Ὁ βίος τοῦ Βοκκακίου» (1806), καὶ «Ἐγκώμιον εἰς τὸν Μακκιαβέλην». Α. Δ.

**Μπαλντενσελ** (Baldensel), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς δομινικανὸς μοναχὸς καὶ περιηγητής, οὗ τὸ ἀληθὲς ὄνομα *Ὄθων Νίνχους* (Nienhus). Ἐπιχειρήσας μακρὸν ταξίδιον εἰς Ἀνατολὴν (1333—1335) διὰ Κωνσταντινουπόλεως, Αἰγύπτου, ὄρους Σινᾶ, Ἱερουσαλήμ, ἔγραψε τὰς ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις του λατινιστὶ τῷ 1336. Τὸ πολλοῦ ἐνδιαφέροντος ἔργον του τοῦτο μετεφράσθη βραδύτερον εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ τὴν γερμανικήν. Θ. Κ.

**Μπαλντὲρ** (Balder), καὶ ***Μπάλντρ*** (Baldr) *[Σκανδ. Μυθολ.]*. Υἱὸς τοῦ Ὀδὶν καὶ τῆς Φρίκκας, σύζυγος τῆς θεᾶς τῶν ἀνθέων Ναννᾶς, ὁ ὡραιότερος καὶ σοφώτερος τῶν θεῶν. Κατῴκει ἐντὸς θαυμασίου ἀνακτόρου, ὅπου ὄνειρα φρικαλέα τῷ προανήγγειλαν τὸν προσεχῆ θάνατόν του. Ἡ μήτηρ του Φρίκκα, θελήσασα ν' ἀποσοβήσῃ τὸν κίνδυνον, ἐξώρκισε πάντα τὰ ἔμψυχα καὶ τὰ ἄψυχα ὄντα, ὅπως φεισθῶσι τῆς ζωῆς τοῦ ἀγαπητοῦ τέκνου της· ἀλλ' ἐλησμόνησε καχεκτικόν τι φυτόν: τὸν ἰξόν. Ὅτε ἡμέραν τινὰ οἱ θεοί, ἐν γνώσει τοῦ ἀτρώτου τοῦ Μπαλντέρ, ἔπαιζον καὶ διεσκέδαζον ρίπτοντες κατ' αὐτοῦ λίθους καὶ βέλη, ὁ Λόκι, θεὸς τοῦ κακοῦ, συναντήσας τὸν Χόντερ, τυφλὸν θεὸν τοῦ πολέμου, ἀδελφὸν τοῦ Μπαλντέρ, τὸν ὥπλισε μὲ κλάδον ἰξοῦ καὶ τὸν παρώτρυνε νὰ λάβῃ μέρος εἰς τὸ παιγνίδιον. Ὁ Μπαλντέρ, πληγεὶς ὑπὸ τοῦ Χόντερ, ἔπεσε νεκρός. Οἱ θεοί, καίτοι κατηγανακτισμένοι, δὲν ἠδύναντο νὰ τιμωρήσωσι τὸν φόνον τοῦ θεοῦ, διότι τὸ Ἀσγκάρ, ὅπου ἐξειλίχθη τὸ δρᾶμα, ἦτο τόπος ἀπαραβίαστος. Ἡ Φρίκκα ἀπέστειλεν ἐσπευσμένως τὸν Χερμόντερ, ἀγγελιαφόρον τῶν θεῶν, πρὸς τὴν Χέλ, βασίλισσαν τοῦ Ἅδου, ὅπως τὴν ἱκετεύσῃ νὰ τῇ ἀποδώσῃ ἀντὶ πλουσίων ἀνταλλαγμάτων τὸν υἱόν της. Ἡ Χὲλ δέχεται, ἀλλ' ὑπὸ τὸν ὅρον, ὅπως πάντες, θεοί, γίγαντες καὶ ἄνθρωποι, θρηνήσωσι τὸν θάνατον τοῦ Μπαλντέρ. Πάντες δέχονται πλὴν τοῦ γίγαντος Τόκ, ὅστις οὐδεὶς ἄλλος εἶναι εἰμὴ ὁ Λόκι μεταμορφωμένος. Οἱ θρῆνοι ἐγένοντο μάταιοι. Ὁ Μπαλντὲρ ὤφειλε νὰ μείνῃ εἰς τὴν χώραν τῶν νεκρῶν μέχρι τῆς Ραγκνακόρ, τῆς μεγάλης ἀναστάσεως, ὁπότε θὰ ἐπανήρχετο εἰς τὸν Γκίμλε (οὐρανόν), ὅπου θὰ ἐβασίλευε μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ αἰωνίως. Α. Δ.

**Μπαλντέσκι** βλ. *Μπάλντους ντὲ Οὐμπάλντις*.

**Μπάλντι**, ἢ ***Γιάρ-Μπροκ-Μτσ' ὁ*** *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τοῦ Θιβέτ, ὑπὸ τῶν Εὐρωπαίων καλουμένη *Παλτὶ* ἢ *Πελτί*, κειμένη εἰς ὕψος 4.176 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν καὶ εἰς ἀπόστασιν 90 χλ. νοτίως τῆς πρωτευούσης τοῦ Θιβὲτ Λάσσα. Εἶναι σεπτὸς τόπος προσκυνήματος διὰ τὸν ἐπὶ τῆς ἐν τῷ μέσῳ τῆς λίμνης νησῖδος περίφημον ναὸν τῆς θεᾶς Πάγκ-μό, ἐχούσης κεφαλὴν χοίρου. Θ. Κ.

**Μπάλντι**, ἢ ***Μπάλντε*** (Baldi, Balde). Ἰταλὸς φιλόλογος καὶ φιλόσοφος (1547—1634), καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βολωνίας. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι: «In Physiognomica Aristotelis commentarii» (1621), «Trattato come da una lettera missiva si conoscono la natura e qualità dello scrittore» (1622), «De humanarum propensionum ex temperamenti praenotionibus tractatus». Α. Δ.

— **Μπάλντι** (Baldi), ***Βερναρδῖνος***. Ἰταλὸς ζωγράφος, ζήσας κατὰ τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Διηύθυνεν ἐν Βολωνίᾳ καλλιτεχνικὴν σχολήν, ἐν ᾗ ἐπαιδεύθησαν πολλοὶ καὶ ἐκλεκτοὶ καλλιτέχναι. Ἔργα του πολυάριθμα ἀπόκεινται εἰς τοὺς ναοὺς τῆς Βολωνίας. Ι. Μ. Π.

— **Μπάλντι** (Baldi), ***Λάζαρος***. Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ χαλκογράφος (1623 ἢ 1624—1703). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Κορτόνε ἐν Ρώμῃ καὶ διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν θρησκευτικῶν θεμάτων κατὰ τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ διδασκάλου του. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Εὐαγγελισμὸς» (ναὸς Ἁγίου Μαρκέλλου, ἐν Ρώμῃ), «Ἡ παρθένος μετὰ τῆς ἁγίας Αἰκατερίνης καὶ τῆς ἁγίας Βριγίττης» (ναὸς Santa Maria della Pace, Ρώμῃ), «Ἰωάννης ὁ Εὐαγγελιστὴς» (ἐν τῇ βασιλικῇ τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Λατερανοῦ, Ρώμῃ), «Ὁ ἅγιος Πέτρος τῆς Ἀλκάνταρας μετὰ τῆς ἁγίας Θηρεσίας» (ναὸς Ἁγίων Πάντων ἐν Φλωρεντίᾳ). Ι. Μ. Π.

— **Μπάλντι** ὁ ἐξ ***Οὐρβίνου*** (Baldi d' Urbino), ***Βερναρδῖνος***. Ἰταλὸς μαθηματικός, νομικός, θεολόγος, ἀρχαιολόγος, φιλόλογος καὶ συγγραφεὺς (1553—1617). Ἐχειροτονήθη ἱερεὺς ἐν Γκουαστάλλᾳ (1586), εἶτα δὲ μετέβη εἰς Ρώμην, ὅπου ἐξέμαθε δέκα ἓξ ξένας γλώσσας. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πολυμαθεστέρων σοφῶν τοῦ κόσμου, βεβαιοῦται δὲ ὅτι ἔγραψεν ἑκατὸν ἔργα, ἅτινα ὅμως κατὰ μέγα μέρος δὲν εἶδον τὸ φῶς τῆς δημοσιότητος. Ἐκ τῶν δημοσιευθεισῶν πραγματειῶν του φημίζονται δύο ἔργα του περὶ Βιτρουβίου εἰς τὴν λατινικήν, τὸ «Περὶ τῶν μηχανικῶν προβλημάτων τοῦ Ἀριστοτέλους», μία ἐκτεταμένη «Ἱστορία τῶν μαθηματικῶν», «Τὰ μαθηματικὰ παράδοξα», ἡ «Παγκόσμιος γεωγραφικὴ ἱστορία», τὰ «Ναυτικὰ» κ. ἄ. Τὰ ποιητικὰ του ἔργα θεωροῦνται τὰ καλύτερα τοῦ εἴδους, χαρακτηριζόμενα ἰδίως διὰ τὴν πιστὴν ἀπεικόνισιν τῆς ἀγροτικῆς ζωῆς. Α. Δ.

—**Μπάλντι** (Baldi), ***Πέτρος***· βλ. *Μπάλντους ντὲ Οὐμπάλντις*.

**Μπαλντινόττι** (Baldinotti), ***Καῖσαρ***. Ἰταλὸς φιλόσοφος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, τοῦ ὁποίου ἡ ζωὴ καὶ τὰ ἔργα εἶναι ὀλίγον γνωστά. Τῷ 1820 ὠνομάσθη καθηγητὴς ἐν Παδούῃ καὶ ὑπῆρξε διδάσκαλος τοῦ Ροσμίνι. Ἔγραψε: «De recta humanae mentis institutione» (Πάδουα, 1787) καὶ ἄλλα ἔργα, ἐν οἷς δεικνύεται ἡ ἐπίδρασις τοῦ Λόκκε καὶ τοῦ Κοντιλλιάκ. Ὁ Μπαλντινόττι προσεπάθησε νὰ συναρμονίσῃ τὴν αἰσθησιοκρατικὴν φιλοσοφίαν μὲ τὰ δόγματα τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας. Κατεπολέμησε τοὺς σχολαστικούς, μεταχειρισθεὶς ἐναντίον αὐτῶν τὰ ἐπιχειρήματα Βάκωνος τοῦ Βεραλαμίου, τοῦ Γαλιλαίου καὶ τοῦ Καρτεσίου. Κατ' αὐτὸν ἡ φιλοσοφία τοῦ Καντίου δὲν δύναται νὰ εἶναι γόνιμος, καθόσον αὕτη ἀνήκει εἰς πάσας ἀνεξαιρέτως τὰς σχολάς. Α. Δ.

**Μπαλντινοῦτσι** (Baldinucci), ***Φίλιππος***. Ἰταλὸς φιλόλογος (1624—1696). Ἀφιερώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης καὶ ἔγραψε δύο σημαντικὰ ἔργα ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Ἱστορία τῶν καλλιτεχνῶν» (1774) καὶ «Ἱστορία τῆς χαλκογραφίας καὶ τῶν γνωστοτέρων χαλκογράφων» (1686). Νέα ἔκδοσις τῶν συγγραφῶν τοῦ Μπαλντινοῦτσι ἐγένετο ἐν Μιλάνῳ τῷ 1808 ἐν τῇ συλλογῇ τῶν «Κλασσικῶν Ἰταλῶν». Α. Δ.

**Μπαλντισσέρα** (Baldissera), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς στρατηγὸς (1838—1917). Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸν αὐστριακὸν στρατόν, ἀπὸ τοῦ 1857 μέχρι τοῦ 1866, ὁπότε κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν τῆς πατρίδος του. Τῷ 1888 ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων ἐν Ἐρυθραίᾳ καὶ κατέλαβεν ἀμαχητὶ τῷ 1889 τὴν Κέρεν καὶ τὴν Ἀσμάρα. Τῷ 1890 ὅμως, κατόπιν διαφωνιῶν πρὸς τὸν Κρίσπι, ἀνεκλήθη. Μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ στρατηγοῦ Μπαρακιέρι εἰς τὴν Ἄδουαν, διωρίσθη ἀντικαταστάτης αὐτοῦ καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὰς διαπραγματεύσεις τῆς εἰρήνης μὲ τοὺς Ἀβησσυνούς. Τῷ 1899 ἐπανελθὼν εἰς τὴν Ἰταλίαν διωρίσθη διοικητὴς τοῦ σώματος στρατοῦ ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ τῷ 1900 γερουσιαστής. Μ. Δ. Β.

**Μπάλντο** (Baldo) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ ἐν Ἰταλίᾳ, ἀποτελοῦσα διακλάδωσιν τῶν Ἄλπεων, μεταξὺ τῆς λίμνης Γκάρντα καὶ τοῦ ποταμοῦ Ἀδίγη, ἐπὶ τῶν αὐστροϊταλικῶν συνόρων. Διαιρεῖται εἰς δύο τμήματα, τεμνόμενα διὰ τῆς κλεισωρείας τῆς Ναβένης, τὸ βόρειον μὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὴν *Ἀλτίσσιμο* (2.079 μ.) καὶ τὸ νότιον μὲ τὴν *Βὰλ Ντρίττα* (2.218 μ.). Ἔχει ἐν ὅλῳ μῆκος 55 χλμ. καὶ πλάτος 22 χλμ. Τῷ 1796 συνήφθη παρ' αὐτὴν μάχη μεταξὺ Αὐστριακῶν καὶ Γάλλων. Εἶναι κυρίως ὀνομαστὴ διὰ τὴν θαυμασίαν χλωρίδα της. Μ. Δ. Β.

**Μπαλντοβινέττι**, ἢ ***Μπαλντουϊνέττι*** (Baldovinetti ἢ Balduinetti), ***Ἀλέξιος***. Ἰταλὸς ζωγράφος τῆς φλωρεντινῆς σχολῆς (1424—1499). Τὰ κύρια χαρακτηριστικὰ τῆς τέχνης του ὑπῆρξαν ἡ εὐγένεια τῆς ἐκφράσεως καὶ ἡ ἐντέλεια τῆς ἐξεργασίας. Ἐξεπόνησε πίνακας ἐπὶ θρησκευτικῶν κατὰ τὸ πλεῖστον θεμάτων, τοὺς ὁποίους διεκόσμει δι' ἄκρως ἐνδιαφερόντων τοπίων. Ἐκ τῶν συνθέσεών του μνημονεύομεν τὴν καταστραφεῖσαν ἤδη «Βασίλισσαν τοῦ Σαββᾶ» (Santa-Maria-Nova) καὶ τὴν «Γέννησιν τοῦ Χριστοῦ» (Annunziata) ἐν Φλωρεντίᾳ. Ὁ Μπαλντοβινέττι ὑπῆρξε διδάσκαλος τοῦ *Γκιρλαντάγιο*. Ι. Μ. Π.

**Μπάλντουϊν** (Baldwin), ***Ἰάκωβος - Μᾶρκος***. Ἀμερικανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1861 ἐν Κολομβίᾳ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. Ἐσπούδασεν ἐν Λειψίᾳ, Βερολίνῳ καὶ Θουριγγίᾳ καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῶν πανεπιστημίων τοῦ Λαίηκ Φόρεστ, τοῦ Τορόντο, τοῦ Πρίντσετον καὶ τῆς Βαλτιμόρης. Τῷ 1892 ἐγένετο ἀντιπρόεδρος τοῦ ἐν Λονδίνῳ συνελθόντος διεθνοῦς συνεδρίου ψυχολογίας. Βραδύτερον διωρίσθη καθηγητὴς τῶν ἀνωτέρων κοινωνιολογικῶν σπουδῶν ἐν Παρισίοις. Ἵδρυσε τὴν «Ψυχολογικὴν ἐπιθεώρησιν» καὶ διετέλεσεν ἀρχισυντάκτης τοῦ «Λεξικοῦ φιλοσοφίας καὶ ψυχολογίας». Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τινὰ τῶν ὁποίων μετεφράσθησαν εἰς πολλὰς γλώσσας. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: «Ἐπιτομὴ ψυχολογίας» (1888), «Στοιχεῖα ψυχολογίας» (1893), «Τὸ ἄτομον καὶ ἡ κοινωνία» (1911), «Ἱστορία τῆς ψυχολογίας» (1913), «Ἡ θεωρία τῆς πραγματικότητος» (1915), «Τὸ ὑπερκράτος» (1916), «Ἡ Γαλλία καὶ ὁ πόλεμος» (1916), «Μεταξὺ δύο πολέμων, 1861—1921» (1926) κ.τ.λ. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλντουϊν** (Baldwin), ***Στάνλεϋ***. Σύγχρονος Ἄγγλος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1867. Κατάγεται ἐκ γονέων πουριτανῶν τὰ ἤθη καὶ συντηρητικῶν τὰς ἰδέας καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κανταβριγίας, ἐπιδοθεὶς κατ' ἀρχὰς εἰς τὰς γεωργικὰς καὶ σιδηροβιομηχανικὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ πατρός του ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ Μπιούντλεϋ. Τῷ 1892, μετὰ τὴν ἐκλογὴν τοῦ πατρός του ὡς βουλευτοῦ, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν πατρικῶν ἐπιχειρήσεων, εἰς τὰς ὁποίας ἀφιερώθη ἐπὶ εἴκοσι συνεχῆ ἔτη, καταγινόμενος συγχρόνως καὶ εἰς τὰ γράμματα καὶ τὰς τέχνας καὶ συνδεθεὶς διὰ στενῆς φιλίας μετὰ τῶν Ροσσέττι καὶ Γουλιέλμου Μόρρις.

*Στάνλεϋ Μπάλντουϊν.*

Τῷ 1906 ἐξετέθη διὰ πρώτην φορὰν ὡς ὑποψήφιος βουλευτὴς τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ Κιντερμίνστερ, ἀλλ' ἀπέτυχε. Τῷ 1908, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του, ἀνέλαβε τὴν πλήρη διεύθυνσιν τῶν βιομηχανικῶν αὐτοῦ ἐπιχειρήσεων, αἵτινες συνεπηχθησαν εἰς ἑταιρείαν ὑπὸ τὴν ἐπωνυμίαν «Ἀνώνυμος Ἑταιρεία Μπάλντουϊν», καὶ ἐγένετο πρόεδρος τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου τῆς ἑταιρείας τοῦ Μεγάλου Δυτικοῦ Σιδηροδρόμου, εἰς τὴν ὁποίαν μετεῖχε διὰ μεγάλων κεφαλαίων. Συγχρόνως κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ ἰδίου ἔτους ἐξελέγη βουλευτὴς τῆς περιφερείας Μπιούντλεϋ εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ πατρός του.

Ἐπὶ ἐννέα συνεχῆ ἔτη ὁ Μπάλντουϊν ἀντεπροσώπευε τὴν περιφέρειάν του εἰς τὴν βουλήν, λαμβάνων τὸν λόγον σπανιώτατα καὶ μόνον ἐπὶ οἰκονομικῶν καὶ βιομηχανικῆς φύσεως ζητημάτων. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην, καίτοι οἱ λόγοι του ἐπροξένουν μεγάλην ἐντύπωσιν καὶ ἠκούοντο μετὰ προσοχῆς, ἀπέφυγεν ἐν τούτοις, ἕνεκα τῆς ἐξαιρετικῆς μετριοφροσύνης του, νὰ δημιουργήσῃ οἱανδήποτε κίνησιν περὶ ἑαυτόν, ἐκ τῆς ὁποίας θὰ ἠδύνατο νὰ προΐδῃ τις τὴν μέλλουσαν γοργὴν καὶ ἐπιφανῆ πολιτικήν του σταδιοδρομίαν. Κατὰ τὸ 1916 ὅμως ὁ τότε ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν συντηρητικῶν Μπόναρ Λῶ, διαβλέπων τὰς ἐξαιρετικὰς τοῦ Μπάλντουϊν ἰδιότητας καὶ ἐκτιμῶν τὴν μεγάλην αὐτοῦ πεῖραν καὶ αὐθεντίαν εἰς τὰ βιομηχανικὰ καὶ οἰκονομικὰ ἐν γένει προβλήματα, προσέλαβεν αὐτὸν ὡς ἰδιαίτερον κοινοβουλευτικὸν γραμματέα του καὶ κατόπιν τὸν διώρισε μέλος τοῦ συμβουλίου τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν κατὰ τὴν ὁποίαν ὁ Μπόναρ Λῶ κατεῖχε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Οἰκονομικῶν καὶ βραδύτερον, κατὰ τὴν ἀνάληψιν τοῦ αὐτοῦ ὑπουργείου ὑπὸ τοῦ

Digitized by Google

Ὥστεν Τσάμπερλαιν, ὁ Μπάλντουϊν προσέφερε πολυτίμους ὑπηρεσίας εἰς τοὺς ὑπουργούς του, χάρις εἰς τὰς ἐξαιρετικὰς οἰκονομολογικὰς γνώσεις του καὶ τὴν ἐκ τῶν πολυετῶν βιομηχανικῶν ἐργασιῶν του πεῖραν. Ἕνεκα τούτου ἀπέκτησε μέγιστον κῦρος ἐν τῷ συντηρητικῷ κόμματι καὶ τῷ 1920 διωρίσθη μέλος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου τοῦ βασιλέως, τῷ δὲ 1921 ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου. Τῷ 1922, μετὰ τὴν διάσπασιν τοῦ ὑπὸ τὸν Λόϋδ Τζώρτζ κυβερνητικοῦ συνασπισμοῦ καὶ τὴν διενέργειαν ἐκλογῶν, κατὰ τὰς ὁποίας ἦλθε πλειοψηφοῦν τὸ συντηρητικὸν κόμμα, ὁ Μπάλντουϊν ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν ἐν τῇ ὑπὸ τοῦ Μπόναρ Λῶ σχηματισθείσῃ κυβερνήσει.

Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μπόναρ Λῶ, ὡς φυσικὸς διάδοχος αὐτοῦ ἐν τῇ ἀρχηγίᾳ τοῦ κόμματος τῶν συντηρητικῶν καὶ λόγῳ μακρῶν ὑπηρεσιῶν πρὸς αὐτὸ καὶ λόγῳ παλαιῶν πολιτικῶν ἀγώνων ἐφέρετο ὁ λόρδος Κῶρζον. Ἐπειδὴ ὅμως, ἀφ' ἑνὸς μὲν ἡ ἀνάθεσις τοῦ σχηματισμοῦ κυβερνήσεως εἰς λόρδον θὰ ἐθεωρεῖτο ὑπὸ τῶν ἐργατικῶν ὡς πρόκλησις, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἡ ἐξωτερικὴ πολιτικὴ τοῦ λόρδου Κῶρζον κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν περίοδον, καὶ ἰδίως εἰς τὴν ἑλληνοτουρκικὴν ὑπόθεσιν, ἐκρίνετο ὡς ἀποτυχοῦσα, ὁ βασιλεὺς ἀνέθεσε τὸν σχηματισμὸν τῆς κυβερνήσεως εἰς τὸν Μπάλντουϊν, ὡς τὸν παρουσιάζοντα τὰς περισσοτέρας ὑποσχέσεις οἰκονομικῆς ἀνασυγκροτήσεως κατὰ τὴν δύσκολον ἐκείνην μεταπολεμικὴν περίοδον. Ὁ βίος ὅμως τῆς πρώτης κυβερνήσεως αὐτοῦ ὑπῆρξε βραχύς. Μετὰ τὴν ὑπὸ τὴν προεδρίαν του συνελθοῦσαν ἐν Λονδίνῳ «αὐτοκρατορικὴν διάσκεψιν», καθ' ἣν ὑπεστήριξε ζωηρῶς τὸ προστατευτικὸν δασμολόγιον, ἠναγκάσθη, τὸν Νοέμβριον τοῦ 1923, νὰ προκηρύξῃ ἐκλογάς, κατὰ τὰς ὁποίας τὸ συντηρητικὸν κόμμα ἔφερε σχετικὴν μόνον πλειοψηφίαν καὶ ἡττήθη εἰς τὴν βουλὴν ὑπὸ τῶν συνασπισθέντων κομμάτων τῶν ἐργατικῶν καὶ τῶν φιλελευθέρων. Ἕνεκα τούτου ἡ κυβέρνησις Μπάλντουϊν παρῃτήθη, διεδέχθη δ' αὐτὴν τότε ἡ πρώτη κυβέρνησις τοῦ ἀρχηγοῦ τῶν ἐργατικῶν Ράμσαιυ Μακντόναλντ, ὁ ὁποῖος ὅμως μόνον ἐπὶ ἐννέα μῆνας ἠδυνήθη νὰ παραμείνῃ εἰς τὴν ἀρχήν, παραιτηθεὶς καὶ οὗτος μετὰ τὴν ἧτταν τὴν ὁποίαν ὑπέστη κατὰ τὰς ἐκλογάς, ἃς ὑπεχρεώθη νὰ ἐνεργήσῃ τὸν Νοέμβριον τοῦ 1924. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς ταύτας τὸ συντηρητικὸν κόμμα ἔφερε μεγάλην πλειοψηφίαν, ὁ δὲ Μπάλντουϊν ἐσχημάτισεν ἐκ νέου κυβέρνησιν τὸν Δεκέμβριον ἰδίου ἔτους. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην, τῇ βοηθείᾳ τοῦ ἐπὶ τῶν Οἰκονομικῶν ὑπουργοῦ του Τσώρτσιλ, κατώρθωσε νὰ ἐπαναφέρῃ τὸ βρεττανικὸν χαρτονόμισμα ἐν ἰσοτιμίᾳ πρὸς τὸν χρυσὸν (1925), ὑπέγραψε τὰς συμφωνίας τοῦ Λοκάρνο, ἐτήρησεν ἔντονον στάσιν ἔναντι τῆς Τουρκίας μέχρι τῆς ὑπογραφῆς τῆς συμφωνίας περὶ τῆς Μοσούλης καὶ ἀντεπεξῆλθε κατὰ τῆς μεγάλης ἑπταμήνου ἀπεργίας τῶν Ἄγγλων γαιανθρακωρύχων. Τῷ 1927 ὁ Μπάλντουϊν ἐπεσκέφθη τὸν Καναδᾶν καὶ τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Τῷ 1928, συνεπείᾳ ῥήξεως ἐπελθούσης εἰς τὸ συντηρητικὸν κόμμα, ἐξ ἀφορμῆς τῆς δασμολογικῆς πολιτικῆς, ἡ θέσις τοῦ Μπάλντουϊν ἐκλονίσθη σημαντικῶς, μετὰ τὰς ἐκλογὰς δὲ τοῦ 1929, κατὰ τὰς ὁποίας οἱ συντηρητικοὶ ἡττήθησαν, ἡ κυβέρνησις Μπάλντουϊν παρῃτήθη τὸν Ἰούνιον τοῦ ἰδίου ἔτους, παραχωρήσασα τὴν ἀρχὴν καὶ πάλιν εἰς τοὺς ἐργατικούς. Τῷ 1926 ἐδημοσιεύθησαν εἰς ἰδιαίτερον τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «On England» οἱ μὴ πολιτικοὶ αὐτοῦ λόγοι, διακρινόμενοι διὰ τὴν ποιητικὴν των φρασιολογίαν καὶ τὴν πατριωτικὴν ἔξαρσιν. Μ. Δ. Β.

**Μπαλντούμας** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ *Ἀράχθου* (βλ. λ.).

**Μπάλντουνγκ** (Baldung), *Ἰωάννης*, ὁ ἐπιλεγόμενος ***Γκρὺν*** (Grün). Γερμανὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης ἐκ Σουηβίας (1470—1552). Ὑπῆρξε σύγχρονος τοῦ Ἀλβέρτου Ντύρερ, τοῦ ὁποίου ὑπέστη ἐπιτυχέστερον ἢ πᾶς ἄλλος τὴν ἐπίδρασιν. Ἡ τέχνη του διακρίνεται διὰ τὴν πρωτοτυπίαν τῆς συνθέσεως, τὴν ζωηρότητα τοῦ χρώματος καὶ τὴν δύναμιν τῆς ἐκφράσεως· ἐν τούτοις ὅμως δὲν εἶναι ἄμοιρος μονοτονίας, προερχομένης ἐξ ἐλλείψεως εἰλικρινοῦς αἰσθήματος καὶ ἁρμονίας. Τὸ σημαντικώτερον ἔργον του εἶναι ἓν πολύπτυχον, εὑρισκόμενον εἰς τὴν μητρόπολιν τοῦ Φρειβούργου καὶ εἰκονίζον τὴν «Στέψιν τῆς Θεοτόκου», «Σταύρωσιν τοῦ Χριστοῦ», τὴν «Γέννησιν», τὴν «Φυγὴν εἰς Αἴγυπτον» κλπ. Ἕτερα λίαν ἀξιόλογα ἔργα τοῦ Μπάλντουνγκ εἶναι: «Ὁ λιθοβολισμὸς τοῦ ἁγίου Στεφάνου» (ἐν Βερολίνῳ), «Ὁ πειρασμὸς τοῦ ἁγίου Ἀντωνίου» (ἐν Κόλμαρ), «Ὁ θάνατος ἐναγκαλιζόμενος μίαν γυναῖκα» (ἐν Βασιλείᾳ) καὶ αἱ προσωπογραφίαι τοῦ Μαξιμιλιανοῦ καὶ τοῦ Καρόλου Κουΐντου (ἐν Καρλσρούῃ), τοῦ μαργράβου τῆς Βάδης (ἐν Μονάχῳ) κλπ. Ὁ Μπάλντουνγκ ἐξεπόνησε καὶ πολυαρίθμους ξυλογραφίας. Ι. Μ. Π.

**Μπάλντους** *ντὲ* ***Οὐμπάλντις*** (Baldus de Umbaldis, καὶ ἄλλως Baldeschi), ***Πέτρος***. Ἰταλὸς νομομαθὴς (1327—1400). Μαθητὴς τοῦ Μπάρτολους, περίφημος γλωσσογράφος, κατέχων βαθέως τὸ ῥωμαϊκὸν δίκαιον, ἐδίδαξεν αὐτὸ ἐπὶ μίαν πεντηκονταετίαν περίπου ὡς καθηγητὴς εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Βολωνίας, τῆς Περούτζια, τῆς Πίζης, τῆς Φλωρεντίας, τῆς Παδούης καὶ τῆς Παβίας. Δύναται νὰ λεχθῇ ὅτι αἱ γενεαὶ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης καὶ πολλαὶ μεταγενέστεραι γενεαὶ ἀπέκτησαν μόρφωσιν καὶ συνείδησιν νομικὴν ἐκ τῆς διδασκαλίας καὶ τῶν συγγραμμάτων αὐτοῦ. Κύρια ἔργα αὐτοῦ τὰ σχόλια εἰς τοὺς Πανδέκτας καὶ τὸν κώδικα τοῦ Ἰουστινιανοῦ. Θ. Κ.

**Μπαλντοῦτσι** (Balducci), *Ἰωάννης*. Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, ζωγράφος καὶ γλύπτης, γεννηθεὶς ἐν Πίζῃ. Ἤκμασε μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1339 καὶ 1347. Κατεσκεύασεν ἐν Μιλάνῳ τὴν πρόσοψιν τοῦ ναοῦ τῆς Bera καὶ τὸ μαυσωλεῖον τοῦ Ἁγίου Πέτρου, ἓν τῶν χαρακτηριστικωτέρων προϊόντων τῆς τέχνης τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ι. Μ. Π.

— **Μπαλντοῦτσι** (Balducci), *Ἰωάννης*, ὁ ἐπιλεγόμενος Cosci. Ἰταλὸς ζωγράφος, ἀποθανὼν ἐν Νεαπόλει τῷ 1600. Εἰργάσθη ἐν Ῥώμῃ, Φλωρεντίᾳ, Πιστοΐᾳ κλπ. εἰς φορητὰς εἰκόνας καὶ τοιχογραφίας. Τὰ σημαντικώτερα τῶν ἔργων του εὑρίσκονται εἰς τὸν ἐν Φλωρεντίᾳ ναὸν τοῦ Gesù pellegrino, εἶναι δὲ ταῦτα: «Ἡ Ἀνάστασις τοῦ Σωτῆρος», «Ὁ Χριστὸς ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ», «Ἡ κλῆσις τῶν υἱῶν τοῦ Ζεβεδαίου» καὶ «Ἡ ἀνάληψις». Ὑπάρχει καὶ ἕτερος *Ἰωάννης Μπαλντοῦτσι*, ἐπιλεγόμενος ὁμοίως Cosci, ζωγράφος καὶ οὗτος, γεννηθεὶς ἐν Νεαπόλει τῷ 1560 περίπου καὶ ἀποθανὼν τῷ 1600. Οὗτος διεκόσμησε διὰ τοιχογραφιῶν πλείστους ναοὺς ἐν Νεαπόλει, ἐξετέλεσε δὲ καὶ διακοσμητικὰς συνθέσεις λίαν ἀξιολόγους ἐν Φλωρεντίᾳ ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῶν γάμων τῆς Χριστίνης τῆς Λωρραίνης. Ι. Μ. Π.

—**Μπαλντοῦτσι** (Balducci), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1579—1642). Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν στρατὸν τὸν ὁποῖον ὁ πάπας Κλήμης Η' ἀπέστειλε κατὰ τῶν Τούρκων πρὸς ἀπελευθέρωσιν τοῦ Ροδόλφου τῆς Οὐγγαρίας καὶ κατόπιν ἐγένετο γραμματεὺς τοῦ πρίγκιπος Κολόννα. Ὢν ὅμως ἀπὸ χαρακτῆρος πνεῦμα ἀνήσυχον, ἐγκατέλειψε τὴν θέσιν του καὶ διῆγε βίον πλάνητα καὶ ἔκλυτον, περιῆλθε δ' ἔκτοτε εἰς μεγάλην δυστυχίαν. Περισυλλεγεὶς ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Κολόννα καὶ γενόμενος μοναχός, ἀπέθανεν ἐν νοσοκομείῳ τῆς Ῥώμης. Ἔγραψε διάφορα ἐρωτικὰ ποιήματα, τὰ ὁποῖα κατέταξαν αὐτὸν μεταξὺ τῶν ἀρίστων ἀνακρεοντείου χαρακτῆρος ποιητῶν τῆς Ἰταλίας. Συνέθεσεν ἐπίσης καὶ θρησκευτικηρωϊκὰ ποιήματα καὶ θεωρεῖται ὁ προσδώσας τὸν κλασσικὸν τύπον εἰς τὰ «ὀρατόρια». Ἐκ τῶν ποιημάτων του τούτων κυριώτερα εἶναι: «Ἡ πίστις» καὶ «Ὁ θρίαμβος». Ἔγραψεν ἀκόμη «Σικελικὰ τραγούδια» καὶ «Στίχους» (1630). Μ. Δ. Β.

—**Μπαλντοῦτσι-Πεγκολέττι** (Balducci - Pegoletti), ***Φραγκῖσκος***. Φλωρεντῖνος τραπεζικός, ἀνήκων εἰς τὸν πανίσχυρον κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα τραπεζικὸν οἶκον τῶν Μπάλντι. Ἐταξίδευσε χάριν τῶν ὑποθέσεων τοῦ οἴκου τούτου εἰς Ῥωσίαν, Κίναν, Ἰνδίαν καὶ πλείστους ἄλλους τόπους, ἐν οἷς καὶ εἰς Κύπρον, ὅπου παραμείνας ἐπὶ τετραετίαν ὅλην (1324—1327) ἐπέτυχε νὰ δημιουργήσῃ στενὴν ἐπικοινωνίαν μεταξὺ τῆς ἀγορᾶς τῆς μεγαλονήσου καὶ τῶν Φλωρεντίνων ἐμπόρων. Μεγάλης διὰ τὴν ἐποχήν του σπουδαιότητος ὑπῆρξε τὸ ἔργον του «Pratica di mercantura», τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖ τὴν πρώτην σοβαρὰν συγγραφὴν ἐμπορικῆς γεωγραφίας καὶ ἐμπορευματολογίας. Ἐν αὐτῷ περιλαμβάνεται μεταξὺ τῶν ἄλλων λεπτομερὴς πίναξ τῶν εἰδῶν εἰσαγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς τῆς κυπριακῆς ἀγορᾶς μετὰ πλήθους ἄλλων συναφῶν πληροφοριῶν πρακτικῆς ἐμπορικῆς ἀξίας. —Ω.

**Μπαλντρίγκι** (Baldrighi), *Ἰωσήφ*. Ἰταλὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Παβίᾳ περὶ τὸ 1722 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1802. Ὑπῆρξεν ἐπίσημος ζωγράφος τῆς αὐλῆς τῆς Πάρμας καὶ ἐξειργάσθη μεταξὺ ἄλλων τὸν «Προμηθέα ἀπελευθερούμενον ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους» καὶ τὰς προσωπογραφίας τῆς «Οἰκογενείας τοῦ δουκὸς τῆς Πάρμας Φιλίππου». Ι. Μ. Π.

**Μπαλογλαρῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Μελισσώνας* (βλ. λ.).

**Μπαλοδημέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πύλου τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 80.

**Μπάλοου** (Barlow), *Ἰωήλ*. Ἀμερικανὸς ποιητὴς καὶ πολιτικὸς (1754—1812). Ἀπόφοιτος τοῦ πανεπιστημίου Γιάλε, ἵδρυσε τῷ 1784 ἑβδομαδιαίαν ἐφημερίδα, τὸν «Ἑρμῆν τῆς Ἀμερικῆς» (American Mercury). Ἀπετέλεσε μέλος τοῦ ἐν Χάρτφορντ συνδέσμου τῶν λογοτεχνῶν, τοῦ γνωστοῦ ὑπὸ τὸν τίτλον «Hartford wits». Τῷ 1787 ἐδημοσίευσε ποιήματα, ἐν οἷς «Τὸ ὅραμα τοῦ Κολόμβου». Τῷ 1788 μεταβὰς εἰς Παρισίους συνεκρότησεν ἐκεῖ ὁμάδα Γάλλων μεταναστῶν, οἵτινες ἔβραδύτερον ἵδρυσαν τὴν ἐν Ὀχάϊο πόλιν Gallipolis. Ἐδημοσίευσε διαφόρους πραγματείας καὶ ῥιζοσπαστικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Συμβουλαὶ πρὸς τὰς προνομιούχους τάξεις», τοῦ ὁποίου ἡ κυκλοφορία ἀπηγορεύθη ὑπὸ τῆς βρεττανικῆς κυβερνήσεως. Τότε ἐπολιτογραφήθη Γάλλος (1792), μετέβη δὲ ἐπὶ ἀποστολῇ εἰς Ἀλγερίαν (1795—1797), ἔνθα ἀπελύτρωσεν Ἀμερικανοὺς αἰχμαλώτους. Τῷ 1805 ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ἐπανῆλθε δὲ εἰς Γαλλίαν τῷ 1811 ὡς πρεσβευτὴς τῆς Ἀμερικῆς, ἐπιφορτισθεὶς νὰ διαπραγματευθῇ ἐμπορικὴν σύμβασιν μετὰ τοῦ Ναπολέοντος καὶ τὴν ἀπόδοσιν τῶν κατασχεθεισῶν ἀμερικανικῶν περιουσιῶν. Ὡς καλύτερον ἔργον του θεωρεῖται τὸ βουκολικὸν ποίημα «Hasty Pudding» (1793). Γ. Ι. Ϛ.

**μπάλος** (ὁ)· βλ. *μπάλλος*.

**Μπαλοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Κῶ, ΒΑ. κέρας τοῦ κολπίζοντος λιμένος *Τσανὰκ* (πλάτ. 36°57' Β., μήκ. 28°14' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: Gulf of Kos, Doris and Symi). Πρὸ αὐτοῦ ἡ συστὰς τῶν νησίων *Σαχὴρ-Ὀγλάν*. Σ. Ε. Ι.

**Μπαλοὺκ-Γκιὸλ** (=λίμνη τῶν ἰχθύων) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς τουρκικῆς Ἀρμενίας ἐπὶ τοῦ Σιπὲκ-δὰγ (=ὄρους τῶν μυτῶν), ὅπερ εἶναι μία τῶν κορυφῶν τοῦ Ἀραράτ. Εἶναι λίαν ἰχθυοτρόφος καὶ ἔχει ἐπιφάνειαν 50 τετρ. χλμ.

**Μπαλούκεσερ**, ἢ ***Μπαλίκεσερ***, ἢ ***Μπαλίκεσρ*** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας (αἱ «*Ἀδριανοῦ θῆραι*» τῆς ῥωμαϊκῆς ἐποχῆς), εἰς 25° 30' Α. μήκους καὶ 39° 40' Β. πλάτους, ἀπέχουσα 125 χλμ. ΝΔ. τῆς Προύσης, 150 χλμ ΒΑ. τῆς Σμύρνης, 80 χλμ. ἀπὸ τῆς ἐπὶ τῶν παραλίων τῆς Προποντίδος Πανόρμου καὶ 80 χλμ. ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τῶν παραλίων τοῦ Αἰγαίου Ἀδραμυττίου. Κεῖται ἐπὶ τοῦ *Μπαλίκεσὶρ-σοῦ*, χυνομένου εἰς τὸν Οὐζουντζᾶ-δερέ-σοῦ παραπόταμον τοῦ εἰς τὴν Προποντίδα ἐκβάλλοντος ποταμοῦ Σούσουρλου καὶ εἰς τὸ ἄκρον ὡραίας πεδιάδος. Εἶναι ἕδρα ὁμωνύμου νομοῦ (τέως σαντζακίου) τῆς γενικῆς διοικήσεως Προύσης καὶ ἔχει 25.448 κατοίκους (1927). Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς κατὰ προηγουμένας τουρκικὰς στατιστικάς, ἦτο ἄλλοτε κατὰ πολὺ μικρότερος (13.118 κάτ.) δεδομένου δὲ ὅτι ὑπῆρχον αὐτόθι πρὸ τῆς φυγῆς τῶν Ἑλλήνων ἐκ Μικρᾶς Ἀσίας 2.000 Ἕλληνες καὶ 2.000 Ἀρμένιοι, πρέπει νὰ δεχθῶμεν ὅτι ἐγκατεστάθησαν ἐν Μπαλούκεσερ πολλοὶ τῶν ἐξ Ἑλλάδος μεταναστευσάντων Τούρκων.

Ἡ πόλις εἶναι τὸ φυσικὸν κέντρον ὁλοκλήρου τῆς Μέσης Μυσίας, διότι ἐδῶ συναντῶνται αἱ ἀπὸ Ἀδραμυττίου καὶ Μπάλιας ὁδοὶ πρὸς τὴν μέσην καὶ ἄνω κοιλάδα τοῦ Μακέστου, ὡς καὶ αἱ ἀπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Καΰκου καὶ τοῦ Ἕρμου πρὸς τὴν Προποντίδα. Ἡ σπουδαιότης αὐτῆς ηὔξησεν ἀφ' ὅτου συνεδέθη σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Σμύρνης διὰ τῆς διακλαδώσεως Σόμα—Πανόρμου τῆς γραμμῆς Σμύρνης - Κασαμπᾶ καὶ προεκτάσεων ταύτης. Ἔχει κλῖμα λαμπρόν, περικυκλοῦται δὲ ὑπὸ ἀμπελώνων. Ἐκ τῶν λαχανικῶν τοῦ Μπαλούκεσερ περιζήτητοι εἶναι αἱ μπάμιαι. Ἡ πέριξ πεδιὰς παράγει ὄσπρια, σιτηρά, βάμβακα, σησάμιον, ὄπιον κλπ. Εἰς τὸ γειτονικὸν δὲ χωρίον *Ὀμέρκιοϊ* ὑπάρχουν μεταλλεῖα βόρακος.

Ὁ σημερινὸς νομὸς Μπαλούκεσερ ἔχει ἐπιφάνειαν 14.315 τετραγωνικῶν χιλιομέτρων καὶ 418.315 κατοίκους (1927). Περιλαμβάνει δὲ τὰς ὑποδιοικήσεις *Μπαλούκεσερ*, *Ἀϊβαλὶκ* (Κυδωνιῶν), *Μπάλια*, *Μπάντερμα* (Πανόρμου), *Μπουρχανιέ*, *Ἐδρεμὶτ* (Ἀδραμυττίου), *Κιονέν*, *Σιντιργί*, *Σουσιγιρλίκ*, *Τουρσὸν - μπέη*.

Ἡ ὑποδιοίκησις Μπαλούκεσερ ἔχει ἐπιφάνειαν 3.625 τετρ. χμ. καὶ 135.647 κατοίκους. Ν. Μ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν περίοδον 1919—1920, διαρκούσης τῆς ἑλληνικῆς κατοχῆς ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, τὸ Μπαλούκεσερ ὑπῆρξεν ἕδρα κεμαλικῶν ὀργανώσεων. Τὴν 17ην Ἰουνίου 1920 τὸ σῶμα στρατοῦ Σμύρνης (ἀντιστράτηγος Δ. Ἰωάννου), προελαῦνον μὲ τὴν μεραρχίαν Σμύρνης δεξιὰ (ἀπὸ Γκέλεμπε πρὸς Μπαλούκεσερ), μὲ τὴν μεραρχίαν Ἀρχιπελάγους ἀριστερὰ (ἀπὸ Σόμα διὰ Κερασοῦντος πρὸς Μπαλούκεσερ), καὶ μὲ τὴν XIII μεραρχίαν, ἐν δευτέρᾳ γραμμῇ, κατέλαβε τὸ Μπαλούκεσερ διὰ τῆς μεραρχίας Σμύρνης (συνταγματάρχης Ἀλ. Μαζαράκης Αἰνιάν), προχωρῆσαν μέχρι τῆς στενωποῦ Χαλκᾶ Μπουνὰρ—Ντεμὶρ Καπὶ πρὸς βορρᾶν. Κατ' Αὔγουστον τοῦ 1922 τὸ Μπαλούκεσερ κατείχετο ὑπὸ τοῦ 48ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς ζώνης μετόπισθεν, ὅπερ, μὴ κατορθῶσαν νὰ ἀποσυρθῇ εἰς Πάνορμον, ὡς ἀρχικῶς εἶχε διαταχθῇ, συνεπτύχθη εἰς Ἀδραμύττιον-Κεμέρ, ὁπόθεν διέφυγε διαπεραιωθὲν εἰς Μυτιλήνην. Ἡ II τουρκικὴ στρατιὰ (Γιακοὺπ Σεβδὶ πασᾶ) κατηυθύνθη διὰ Μπαλούκεσερ πρὸς Πάνορμον, ὅπως ἀποκόψῃ τὴν ἐκ Προύσης ὑποχώρησιν τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ (ὑποστράτηγος Π. Σουμίλας), ἀλλ' ἐπιτυχῶς ἀπεκρούσθη ὑπὸ τῶν ὀπισθοφυλακῶν τοῦ σώματος τούτου εἰς Μπαϊρὰμ Τεπὲ (Δ. τῆς Πανόρμου) καὶ εἰς Ντελικλῆ-μπαϊρ (Ν. τοῦ λαιμοῦ τῆς Ἀρτάκης), χωρὶς νὰ φέρῃ ἀποτέλεσμά τι. Ν. Σ.

Digitized by Google

**Μπαλουκλῆ** (ἢ *Μπαλυκλί*). Ἡ *Ζωοδόχος Πηγὴ* (βλ. λ.) τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Οὕτως ὠνομάσθη ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐκ τῶν ἐν τῷ ὕδατι τῆς πηγῆς μικρῶν ἰχθύων, περὶ τῶν ὁποίων ἀδέσποτος παράδοσις φέρει ὅτι τηγανιζόμενοι ὑπὸ τινος ἱερέως ἐπήδησαν εἰς τὸ ὕδωρ τοῦ ἁγιάσματος εἰς ἔνδειξιν τοῦ ὅτι ἐπίκειται ἡ πτῶσις τῆς Πόλεως.

**Μπαλούκλοβα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον ἑλληνικὸν ἐπὶ τῆς πρὸς Α. παραλίας τῆς Μελαίνης Ἄκρας (Καραμπουρνοῦ) τοῦ κόλπου τῆς Σμύρνης.

**Μπαλουκπαζὰρ** (= ἰχθυαγορά). Συνοικία τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἔσω καὶ ἔξω τοῦ θαλασσίου τείχους, παρωνυμουμένη ἐκ τῶν ἐκεῖ ἰχθυοπωλείων. Ἡ ἐπὶ τοῦ ἐκεῖ τείχους πύλη, κατεδαφισθεῖσα πρὸ καιροῦ, καλεῖται *Μπαλὺκ-παζὰρ-καπουσοῦ*.

Τὸ αὐτὸ ὄνομα ἔχει καὶ ἡ συνοικία τῆς ἀπέναντι ὄχθης τοῦ Γαλατᾶ, ὅπου ὑπάρχουσιν ἐπίσης ἰχθυοπωλεῖα. Μεταξὺ τῶν δύο τούτων ὄχθῶν κυκλοφοροῦσιν ἀπὸ πρωΐας μέχρις ἑσπέρας ἀδιακόπως καΐκια (τὰ περάματα ἢ περαμίδια τῶν Βυζαντινῶν), δι' ὧν διαπεραιοῦνται ἀνὰ τέσσαρες ἐπιβάται. Ν. Μ.

**Μπαλοὺκ-παζὰρ** *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν τριῶν ἐνοριῶν, ἐξ ὧν ἀπηρτίζετο ἡ ἑλληνικὴ κοινότης τῆς Προύσης.

**μπαλουκχανὲς** (ὁ)· (τουρκ.) ἰχθυοπωλεῖον. Ἐν Κωνσταντινουπόλει τὸ τελωνεῖον τῶν ἰχθύων.

— **Μπαλουκχανὲ καπουσοῦ.** Παραπυλὶς τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει παλαιῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων, εἰς τὴν ὁποίαν ἔφερεν ὑπόγειος σῆραγξ ἐκ τῶν ἐνδοτέρων τοῦ σαραγίου πρὸς διεκφυγὴν τοῦ σουλτάνου ἐν περιπτώσει κινδύνου. Ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὴν παραπυλίδα Μιχαὴλ τοῦ Πρωτοβεστιαρίου τῶν βυζαντινῶν ἀνακτόρων. Ν. Μ.

**Μπαλοῦσκα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Πολύστυλον* (βλ. λ.).

**Μπαλούσκου** (Baluscu), ***Νικόλαος.*** Ρουμᾶνος στρατιωτικός, πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1818—1852). Δεκαεννεαετὴς εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατόν. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν κατὰ τοῦ ρωσικοῦ προτεκτοράτου συνωμοσίαν κατεδικάσθη εἰς περιορισμὸν ἐν τῷ μοναστηρίῳ Μαργκιένι, ὁπόθεν ἀπηλευθερώθη μετὰ διετίαν τῇ μεσολαβήσει τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας Μπιμπέσκο. Τῷ 1848 μετέσχε τοῦ ἀντιδραστικοῦ κινήματος καὶ ἐγένετο μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως ταύτης ἐξεπατρίσθη, μετέβη δὲ τότε εἰς Τρανσυλβανίαν, εἶτα εἰς Παρισίους καὶ τέλος εἰς Παλέρμον, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ σημαντικώτερον θεωρεῖται ἡ «Ἱστορία Μιχαὴλ τοῦ Γενναίου». Ἕτερον ἔργον του σχετικῆς ἱστορικῆς ἀξίας εἶναι «Ἡ ἐν Ἀρντεὰλ ἐξέγερσις τοῦ 1848». Γ. Ι. Β.

**Μπαλούστρα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Δυτικῆς Θράκης (πλάτ. 40°55' Β., μῆκ. 24°59' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1087: Thasso to Dardanelles), 9 μίλλ. Α.ΒΑ. τοῦ Νέστου, ΝΔ. δὲ κέρας τοῦ κόλπου τοῦ *Καρὰ-ἀγάτς* ἢ *Λάγο*. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλούτσκι** (Balucki), ***Μιχαήλ.*** Πολωνὸς λόγιος, θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ κριτικὸς τῆς λογοτεχνίας (1837—1901). Ἔγραψε πολλὰ διηγήματα, ἐν οἷς διακρίνονται τά: «Κόστνυα», «Ἔρως ἔρημος καὶ φερέοικος», «Τὰ μυστήρια τῆς Κρακοβίας» καὶ «Ἡ πατρικὴ θέλησις». Ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων του πολλὴν ἐπιτυχίαν ἐσημείωσαν τά: «Κυνήγι γιὰ ἕνα σύζυγον», «Αἱ χειραφετημέναι», «Τὸ ἀνοικτὸ σπίτι», «Αἱ χῆνες καὶ τὰ χηνόπουλα». Εἰς τὰς κωμῳδίας του ὁ Μπαλούτσκι σατιρίζει τὴν ἀστικὴν τάξιν τῆς πατρίδος του. Α. Δ.

**Μπαλοῦφι** (Baluffi), ***Γαετᾶνος.*** Ἰταλὸς καρδινάλιος καὶ ἱστορικὸς (1788—1866). Διετέλεσε νούντσιος τοῦ πάπα εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικὴν ἐπὶ πολλὰ ἔτη καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἡ θειότης τοῦ Χριστιανισμοῦ ἀποδεικνυομένη διὰ τῆς φιλανθρωπίας» καὶ «Θρησκευτικὴ ἱστορία τῆς Ἀμερικῆς», ὅπερ θεωρεῖται τὸ κυριώτερον ἔργον του. Μ. Δ. Β.

**Μπαλράμπουρ** (Balrampur) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ διαμερίσματι Γκόντα τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν Ἄγκρα καὶ Οὔντχ. Κάτ. 17.000. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον ἐμπορίου βάμβακος καὶ ἔχει ἐργοστάσια ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπάλσαλλ Χὴθ** (Balsall Heath) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Γούστερ, πρὸς Ν. τῆς Βιρμιγχάμης, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ προάστειον. Κάτ. 41.668. Μ. Δ. Β.

**μπάλσαμο** (τό), ***μπαλσάμωμα*** (τό), ***μπαλσαμώνω***· δημοτ., ἀντὶ *βάλσαμον, βαλσάμωμα, βαλσαμώνω* (βλ. τὰς λ.).

**Μπάλσαμο** (Balsamo), ***Ἰωσήφ***· ὁ ἄλλως γνωστὸς ὡς *Καλλιόστρο* (βλ. λ.).

— **Μπάλσαμο** ἢ ***Μπάλσαμο-Κριβέλλι*** (Balsamo ἢ (Balsamo-Crivelli), ***Ἰωσὴφ-Εὐγένιος.*** Ἰταλὸς φυσικὸς (1800—1874). Ἐδίδαξεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παβίας μεταλλειολογίαν, ζῳολογίαν καὶ συγκριτικὴν ἀνατομικὴν καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, ἀναφερόμενα εἰς πάσας τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας. Εἶναι ὀνομαστοὶ ἰδίως αἱ ἔρευναι αὐτοῦ εἰς τὴν βοτανικήν, ὅπου κατέγινε πρῶτος εἰς τὴν μελέτην τῶν κρυπτογάμων. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Περὶ τῆς ἀρχῆς καὶ τῆς ἐξελίξεως τῆς βασσιανῆς βοτρύτιδος», «Περὶ παραγωγῆς μικροργανισμῶν εἰς ὕδατα ἐν ὑψηλῇ ὑγρᾷ θερμοκρασίᾳ». Μ. Δ. Β.

— **Μπάλσαμο** (Balsamo), ***Παῦλος.*** Ἰταλὸς κληρικός, ἀγρονόμος καὶ οἰκονομολόγος (1763—1818). Ἐταξίδευσε χάριν μελετῶν εἰς τὴν Ἰταλίαν, Ἀγγλίαν καὶ Γαλλίαν καὶ ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του ἐγένετο καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Παλέρμου, ὅπου ἐδίδαξε καὶ ὑπεστήριξε τὴν ἀποχὴν τοῦ κράτους ἀπὸ πάσης διαρρυθμίσεως τῶν τιμῶν καὶ ἀπὸ πάσης ἀναμίξεως εἰς τὴν γεωργίαν καὶ τὸ ἐμπόριον. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ὁ βασιλεὺς ἐδώρησεν εἰς αὐτὸν ἐν μοναστήριον μετὰ μεγάλου κτήματος, ὅπου κατέγινεν εἰς γεωργικὰς μελέτας, καλλιεργείας καὶ ἐρεύνας. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Ἡ θνησιμότης τῶν ζῴων» (1804), «Στατιστικαὶ πληροφορίαι περὶ Σικελίας καὶ τῆς γεωργίας αὐτῆς» (1809) κτλ. Τῷ 1842 ἐξεδόθησαν δύο ἀνέκδοτοι τόμοι διαφόρων ἔργων αὐτοῦ ἐπὶ τῆς «Πολιτικῆς οἰκονομίας καὶ τῆς γεωργίας». Μ. Δ. Β.

**Μπάλσαρ** (Bulsar ἢ Balsar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σούρατ τοῦ Β. διαμερίσματος τῆς Βομβάης. Κάτ. 13.500. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον βιομηχανίας μεταξωτῶν καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπάλσης, *Ἀντώνιος.*** Πυρπολητὴς κατὰ τὸν ὑπὲρ ἐθνικῆς ἀνεξαρτησίας Ἀγῶνα, καταγόμενος ἐξ Ἀποικίων τῆς Ἄνδρου. Ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν Πιπῖνον. Δ. Π. Π.

— **Μπάλσης** (ἢ ***Κατσαρίδης***), ***Δημήτριος.*** Πυρπολητὴς ἐκ Κάτω Κάστρου τῆς Ἄνδρου, ἐκ τῶν καλυτέρων παλληκαριῶν τοῦ Κανάρη. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν πυρπόλησιν τῆς τουρκικῆς ναυαρχίδος ἐν Χίῳ, καίτοι μὴ μνημονευόμενος, καθὼς καὶ εἰς τὴν ἐπιχείρησιν τῆς Ἐρεσσοῦ. Διὰ τὰς ὑπηρεσίας του ἀπενεμήθησαν εἰς αὐτὸν τὸ ἀριστεῖον τοῦ Ἀγῶνος, 500 γρόσια ἐφ' ἅπαξ καὶ σύνταξις τις ἀσήμαντος. Τὴν μικρὰν ἔκτασιν ἐθνικῆς γῆς, ἡ ὁποία ἐπίσης ἐχορηγήθη εἰς αὐτόν, τὴν ἐπώλησεν ἀντὶ ἐλαχίστου τιμήματος καὶ ἀπέθανε πάμπτωχος καὶ ὑπέργηρος. [Βλ. *Δ. Π. Πασχάλη*, Ἱστορία Ἄνδρου, τ. Β', σ. 397—398.] Δ. Π. Π.

**Μπάλτα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῷ οὐκρανικῷ κυβερνείῳ Ποδολίᾳ. Ἔχει περὶ τὰς 30.000 κάτ., βιομηχανίαν σάπωνος καὶ κηρίων καὶ ἐμπόριον δημητριακῶν καὶ κτηνοτροφικῶν προϊόντων. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν. Γ. Ι. Β.

— **Μπάλτα *Ἄλμπα,*** ἢ ***Μπάλτα Ἀμάρα*** (Balta Alba ἢ Balta Amara) *[Γεωγρ.]*. Ἑλώδεις ἐκτάσεις ἐν Ρουμανίᾳ καὶ ἐν τῇ Κάτω Δουνάβει μεταξὺ Σιλιστρίας καὶ Γαλαζίου. Διαρρέονται ὑπὸ μικρῶν παραποτάμων καὶ καλύπτονται ὑπὸ ὑδάτων καθ' ἅπασαν μὲν αὐτῶν τὴν ἔκτασιν ἐν καιρῷ πλημμύρας, κατὰ μέρος δὲ ἐν καιρῷ ὑφέσεως τῶν ὑδάτων. Ἀφθονοῦσι πτηνῶν. Γ. Ι. Β.

**Μπάλτα** (Balta), ***Ἰωσήφ.*** Περουβιανὸς πολιτικὸς (1816—1872). Νεαρώτατος εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατόν, φθάσας μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ταγματάρχου (1855). Συνήργησεν εἰς τὴν ἐπιτυχίαν τῆς ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ συνταγματάρχου Πράντο κατὰ τοῦ ἀντιπροέδρου Πέζετ ἐκραγείσης ἐπαναστάσεως, ὅταν δὲ κατηρτίσθη ἡ νέα κυβέρνησις, ὁ Μπάλτα ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν καὶ τῶν Ναυτικῶν. Ὀλίγον χρόνον ὅμως διετήρησε τὸ χαρτοφυλάκιον καὶ παραιτηθεὶς ἠγέρθη ἐναντίον τοῦ δικτατορικῶς πλέον κυβερνῶντος Πράντο. Ἀνατραπέντος τοῦ τελευταίου, ἀνέλαβε προσωρινῶς τὴν ἀντιπροεδρίαν ὁ Κανσέκο καὶ τῷ 1868 ἐξελέγη πρόεδρος ὁ Μπάλτα. Ὑπὸ τὴν προεδρίαν αὐτοῦ ἤρχισε νέα διὰ τὸ Περοῦ περίοδος εἰρήνης καὶ ἐκτελέσεως δημοσίων ἔργων. Ὁ Μπάλτα κατέστειλε τῷ 1871 δύο ἀποπείρας στάσεως, τὸν Ἰούνιον ὅμως τοῦ ἑπομένου ἔτους ἐδολοφονήθη ὑπὸ ὀπαδῶν τοῦ Γκουτιερές, ζητήσαντος νὰ καταλάβη τὴν ἀρχήν. Ὁ δολοφόνος του ἐφονεύθη ἀμέσως ὑπὸ τοῦ λαοῦ. Γ. Ι. Β.

**Μπαλταζὰρ** (Balthazard), ***Βίκτωρ.*** Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1872. Μέλος τῆς ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς, καθηγητὴς τῆς ἰατροδικαστικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων, ἐπιθεωρητὴς τοῦ νεκροτομείου καὶ σύμβουλος τῆς τεχνικῆς ὑπηρεσίας ἀναγνωρίσεως καὶ σημάνσεως, ἐδημοσίευσε: «Ταυτότης βλημάτων πυροβόλου ὅπλου βραχείας βολῆς, πιστολίων αὐτομάτων καὶ πυριτίδων», «Τυφικὴ τοξίνη καὶ ἀντιτοξίνη», «Ἰατροδικαστική» κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μπαλταζὰρ** (Balthazar), ***Κασιμὶρ - Ἀλέξανδρος - Βίκτωρ ντὲ*** —. Γάλλος ζωγράφος (1809—1875), μαθητεύσας παρὰ τῷ Παύλῳ Ντελαρός. Ἐνεφανίσθη ἀπὸ τοῦ 1833 τακτικῶς εἰς τὸ παρισινὸν Σαλόν, ἐκθέσας μεταξὺ πολλῶν ἄλλων τὰ ἀκόλουθα ἔργα: «Γκαῖτς φὸν Μπερλίχιγκεν», «Φίλιππος ὁ ΣΤ' μετὰ τὴν μάχην τοῦ Κρεσύ», «Ἡ ὀπτασία τῆς Ἰωάννας ντ' Ἄρκ», «Ἡ Ἰωάννα ντ' Ἄρκ ἐν τῇ φυλακῇ», «Ὁ θάνατος τοῦ Λάρα», «Τὸ βάπτισμα τοῦ Χλωδοβίκου», «Ὁ Χριστὸς καὶ ἡ Σαμαρεῖτις», «Παρὰ τὴν κρήνην». Ὁ Μπαλταζὰρ ἐξειργάσθη ὡσαύτως καὶ πολλὰς προσωπογραφίας. Ι. Μ. Π.

**Μπαλταλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 813. Χ. Δ.

**μπαλταλήκ(ιον)** (τό)· δάσος δημόσιον (ἐκ τῆς τουρκ. λ. *μπαλτάς*=πέλεκυς).

—*[Ἐγκυκλ.]* *Μπαλταλὴκ* λέγονται, κατὰ τὴν τουρκικὴν νομοθεσίαν, τὰ δένδρα τῶν δασῶν, τὰ ὁποῖα ἐγκατελείφθησαν ὑπὲρ τῆς ὁλομελείας τῶν κατοίκων ἑνὸς ἢ πολλῶν παρακειμένων χωρίων ἢ κωμῶν, ὅπως οὗτοι ξυλεύωνται ἐξ αὐτῶν καὶ τὰ χρησιμοποιῶσι πρὸς ἴδιον ὄφελος. Οἱ κάτοικοι ἄλλων χωρίων ἢ κωμοπόλεων δὲν δύνανται νὰ ὑλοτομῶσιν ἐκ τῶν δένδρων τῶν δασῶν τούτων, οὐδὲ δύναται νὰ ἀποσπασθῇ μέρος τι τῶν δασῶν τῶν ὡρισμένων διὰ τοὺς κατοίκους χωρίων καὶ νὰ διατεθοῦν διὰ *ταπίου* εἰς ἄλλον τινά, ἵνα ἐξουσιάσῃ αὐτὸ ἀποκλειστικῶς ἢ συνεταιρικῶς καὶ σχηματίσῃ ἰδιωτικὸν δάσος ἢ τὸ ἀροτριάσῃ πρὸς καλλιέργειαν. Ἂν τις ἐξουσιάσῃ αὐτό, οἱ κάτοικοι δύνανται νὰ τὸν ἐμποδίσωσιν ἐν παντὶ χρόνῳ. Τὰ δάση τὰ λεγόμενα μπαλταλὴκ ἀνήκουσιν εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ἐγκαταλελειμμένων γαιῶν, ὁποῖαι εἶναι αἱ πλησίον τῶν κατῳκημένων τόπων κείμεναι, μὴ ἀπέχουσαι αὐτῶν πέραν τῆς ἀποστάσεως, μέχρι τῆς ὁποίας ἐξικνεῖται ἡ ἀνθρωπίνη φωνή, καὶ ὁρισθεῖσαι πρὸς χρῆσιν τῶν κατοίκων. Μ. ΚΑΤΙΝΑΚΗΣ

**Μπαλτᾶ λιμὰν** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Γυναικῶν λιμήν*.

**Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ**, ἢ ***Μπαλτόγλους***, ἢ ***Παλτόγλης Σουλεϋμάν.*** Ἀρχιναύαρχος τῆς Τουρκίας. Ἦτο υἱὸς τοῦ ἐξ ἐπιφανοῦς οἰκογενείας Βουλγάρου ἄρχοντος Πάλδα. Αἰχμαλωτισθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων καὶ ἐξομώσας, ἔλαβε τὸ ὄνομα *Σουλεϋμὰν-βέης-Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ*, καὶ σὺν τῷ χρόνῳ ἀνῆλθεν εἰς ἀνώτατα ἀξιώματα. Περὶ τὸ 1450 ἐπιδραμὼν κατὰ τῆς Λέσβου, ἐδῄωσεν αὐτὴν καὶ ᾐχμαλώτισε πλῆθος κατοίκων. Θέλων ὁ σουλτᾶνος Μωάμεθ Β' νὰ καταστήσῃ στενοτέραν τὴν πολιορκίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως τῷ 1453, εἶχε παρασκευάσει μέγαν στόλον ἀνερχόμενον εἰς 145 ἢ κατ' ἄλλους εἰς 350 ἢ 420 πολεμικὰ σκάφη (γαλέρας, γαλιώτας, φούστας κτλ.). Τοῦ στόλου τούτου διώρισε ναύαρχον τὸν Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ, ὅστις κατὰ τὸν Κριτόβουλον ἦτο ναυτικὸς δεδοκιμασμένος· συγχρόνως ἀνέθεσεν αὐτῷ καὶ τὴν ἀνωτάτην ἀρχηγίαν ἁπασῶν τῶν ἐν Ἀσίᾳ καὶ Εὐρώπῃ ναυτικῶν αὐτοῦ δυνάμεων καὶ τὴν διοίκησιν ἁπάντων τῶν παραλίων τοῦ Βοσπόρου, τῆς Προποντίδος καὶ τῶν Δαρδανελλίων, καθὼς καὶ τῆς Καλλιπόλεως, ἧς ὁ λιμὴν εἶχεν ὁρισθῆ ὑπὸ τοῦ σουλτάνου ὡς τόπος συγκεντρώσεως τοῦ τουρκικοῦ στόλου. Διὰ τοῦ πολυαρίθμου ἐκείνου στόλου, ὅστις ἀποπλεύσας ἐκ Καλλιπόλεως κατέπλευσε τῇ 12 Ἀπριλίου 1453 εἰς Βόσπορον, ἀγκυροβολήσας πρὸ τοῦ Διπλοκιονίου (κάτωθι τοῦ σημερινοῦ ἀνακτόρου Ντολμᾶ - Μπαξέ), ὁ Μπαλτᾶ - Ὀγλοῦ ἀπέκλεισε στενότατα σύμπασαν τὴν μακροτάτην γραμμὴν τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἀπὸ θαλάσσης, ἤτοι ἀπὸ τὸν πύργον τοῦ Μαρμάρου, εἰς ὃν καταλήγει τὸ χερσαῖον λεγόμενον τεῖχος εἰς τὴν Προποντίδα, μέχρι τοῦ ἐν τῷ Γαλατᾷ νεωρίου, ἐγγύτατα τοῦ ἄκρου τῆς ὀνομαστῆς ἁλύσεως, τῆς ἀποφρασσούσης τὴν εἴσοδον τοῦ Κερατίου κόλπου, δηλαδὴ ἐπὶ ἐκτάσεως ὀκτὼ χιλιομέτρων. Πλειστάκις ὁ Μπαλτᾶ - Ὀγλοῦ προσεπάθησεν ἀνεπιτυχῶς νὰ διαρρήξῃ τὴν ἰσχυρὰν ἐκείνην ἅλυσιν, ὅπως ἐκβιάσῃ τὸν εἴσπλουν τοῦ Κερατίου καὶ καταστρέψῃ τὰ ὑπερασπιζόμενα αὐτὸν χριστιανικὰ πολεμικὰ σκάφη, ἅτινα δὲν ὑπερέβαινον κατὰ τοὺς διαφόρους τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἱστορικοὺς τὰς 30—39 μικρὰς καὶ μεγάλας γαλέρας. Περὶ τὸν αὐτὸν χρόνον ἀποσπάσας ἰσχυρὸν τμῆμα τοῦ στόλου ἐπετέθη καὶ ἐκυρίευσε τὰ Πριγκιποννήσους. Τῇ 20 Ἀπριλίου 1453, ἅμα τῇ ἕῳ, τέσσαρα μεγάλα πλοῖα ἐσημειώθησαν πλέοντα πρὸς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὧν 3 προήρχοντο ἐκ Γενούης, τὸ δὲ τέταρτον ἦτο μέγα φορτηγὸν τοῦ αὐτοκρατορικοῦ στόλου, κομίζον σῖτον (ἐκ Σικελίας κατὰ τὸν Φραντζῆν, ἐκ Πελοποννήσου κατὰ τὸν Δούκαν) καὶ κυβερνώμενον ὑπὸ τοῦ Φλαντανελᾶ ἢ Φλακτανελᾶ, ναυτικοῦ ἱκανωτάτου. Ἅμα τῇ ἀγγελίᾳ τῆς ἐμφανίσεως ὁ Μωάμεθ Β' «Εὐθὺς Παλτόγλην τὸν ἡγεμόνα τοῦ στόλου μεταστειλάμενος, ἐξοπλίσαι κελεύει τὴν ταχίστην πάντα τὸν στόλον.... Ἐπισκευάσας δὲ καὶ ὁπλίσας τὸν στόλον κα-

Digitized by Google

λῶς ἀνδράσι τε καὶ παντοίοις ὅπλοις, ἐκπέμπει κελεύσας ἢ τὰς ὁλκάδας λαβόντας ἀγαγεῖν ὡς αὐτὸν ἢ μηδὲ αὐτοὺς ἐπανήκειν» *(Κριτόβουλος)*. Ὁ Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στόλου ἐξώρμησε κατὰ τῶν τεσσάρων πλοίων, ἅτινα ἱστιοδρομοῦντα προσεπάθουν, πνέοντος ἰσχυροῦ νοτίου ἀνέμου, νὰ κάμψωσι τὴν σημερινὴν ἄκραν τοῦ σεραγίου, ἔνθα τότε ἦτο ἡ ἐκκλησία τοῦ Ἁγίου Δημητρίου, ἵνα εὐθὺς πλεύσωσι πρὸς τὸν Κεράτιον κόλπον καὶ ἀσφαλισθῶσιν ἀπὸ τῶν ἐπιπλεόντων Τούρκων. Καὶ ἐφ' ὅσον μὲν ἔπνεεν ἄνεμος, τὰ χριστιανικὰ πλοῖα ἔπλεον ταχέως, καίτοι εἶχεν ἀρχίσει ἑκατέρωθεν ἡ ἀνταλλαγὴ τοξευμάτων, καθ' ὅσον τὰ τουρκικὰ σκάφη, κωπήλατα ὄντα, δὲν ἠδύναντο ν' ἀντιστῶσιν εἰς τὴν ὁρμὴν τοῦ ἀνέμου καὶ τοῦ ῥεύματος καὶ νὰ κατορθώσωσι νὰ προσκολληθῶσιν εἰς αὐτά· ἀλλ' ἅμα ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος καὶ καθ' ἣν στιγμὴν τὰ χριστιανικὰ πλοῖα εὑρίσκοντο περὶ τὸ ὕψος τῆς ἄκρας τοῦ σεραγίου, ὁ Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ πρῶτος διὰ τῆς ναυαρχίδος του ἐπετέθη ὁρμητικώτατα κατὰ τῶν πλοίων τοῦ Φλαντανελλᾶ, καθ' ὅλην δὲ τὴν διάρκειαν τῆς μάχης δὲν ἀπεσπάσθη τούτου, ἀλλ' ἠγωνίζετο γενναίως, ἐν τέλει δὲ πληγωθεὶς ἀπώλεσε τὸν ἕνα ὀφθαλμόν. Τὰ τέσσαρα χριστιανικὰ πλοῖα ἐρρωμένως ἀνθίσταντο κατὰ τοῦ πλήθους τῶν περικυκλούντων αὐτὰ τουρκικῶν, ὑψηλότερα δ' ὄντα ἠδύναντο ν' ἀποκρούσωσι τὰς πρὸς ἐμβολὴν ἀποπείρας τῶν Τούρκων. Ὁ Μωάμεθ ἀκολουθούμενος ὑπὸ μεγαλοπρεποῦς ἀκολουθίας κατῆλθεν ἔφιππος εἰς τὸν αἰγιαλὸν τοῦ Γαλατᾶ καὶ ἐθεᾶτο μετ' αὐξούσης ἀνησυχίας καὶ ὀργῆς τὴν ἀντίστασιν τῶν Χριστιανῶν καὶ τὴν ἀδυναμίαν τῶν πολυαρίθμων πλοίων του νὰ συλλάβωσι 4 μόνον ἐχθρικὰ πλοῖα. Ἔκφρων ἐξ ὀργῆς ἐκέντρισε τὸν ἵππον του καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν θάλασσαν, προχωρήσας ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε ἡ ἄκρα τοῦ πλατέος καφτανίου του ἐσύρετο ἐντὸς τῶν ὑδάτων, καὶ δι' ὕβρεων, ἀπειλῶν καὶ λοιδοριῶν παρώρμα τὸν Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ εἰς ἀπεγνωσμένην ἐπίθεσιν, παρέμεινε δὲ ἐπὶ τῆς ἀκτῆς μέχρι πέρατος τῆς ναυμαχίας. Παρὰ τὴν ἀπεγνωσμένην τῶν Χριστιανῶν ἀντίστασιν, τὰ χριστιανικὰ πλοῖα θὰ ὑπέκυπτον ἀφεύκτως εἰς τὰς ὁρμητικωτάτας τῶν Τούρκων ἐφόδους, ἂν μή, περὶ τὴν δύσιν τοῦ ἡλίου, σφοδρὸς νότιος ἄνεμος πνεύσας ἐκόλπου τὰ ἱστία αὐτῶν εὐκολύνων τὴν φυγὴν των πρὸς τὸν Κεράτιον, ἐνῷ τὰ τουρκικὰ πλοῖα, κωπήλατα ὄντα, δὲν ἠδύναντο ν' ἀντιστῶσιν εἰς τὴν ὁρμὴν τοῦ ἀνέμου καὶ τοῦ ῥεύματος. Ἐκ τῶν πληρωμάτων τῶν χριστιανικῶν πλοίων ἐφονεύθησαν 22 καὶ ἐτραυματίσθησαν ὑπὲρ τοὺς ἡμίσεις, ἐκ δὲ τῶν τουρκικῶν ἐφονεύθησαν 100 καὶ ἐτραυματίσθησαν ὑπὲρ τοὺς 300. Μετὰ τὴν διαφυγὴν τῶν χριστιανικῶν πλοίων ὁ Μωάμεθ διέταξε τὸν Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ νὰ επαναφέρῃ τὸν στόλον εἰς τὸ ἀγκυροβόλιον τοῦ Διπλοκιονίου. Τὴν ἐπαύριον, 21 Ἀπριλίου, ὁ σουλτᾶνος, ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ἀκολουθίας του καὶ πολυαρίθμων ἱππέων, κατελθὼν εἰς Διπλοκιόνιον ἐκάλεσεν ἐνώπιον του τὸν Μπαλτᾶ-Ὀγλοῦ, τὸν ὁποῖον, καίτοι γενναιότατα ἀγωνισθέντα καὶ τραυματισθέντα, ἠθέλησεν ἐν τῇ τρομερᾷ ὀργῇ του ν' ἀποκεφαλίσῃ ἢ ἀνασκολοπίσῃ· κατόπιν ὅμως τῶν ἱκεσιῶν τῶν μεγιστάνων τῆς ἀκολουθίας του περιωρίσθη εἰς τὸ νὰ διατάξῃ νὰ τὸν ῥίψωσι χαμαὶ ἐνώπιόν του καὶ νὰ τὸν ῥαβδίσωσιν, ἔπειτα δέ, ἀφαιρέσας ἀπ' αὐτοῦ τὴν ναυαρχίαν καὶ τὰ συμπαρομαρτοῦντα ταύτῃ δικαιώματα, διέταξε τὴν δήμευσιν πάσης τῆς περιουσίας του εἰς ὄφελος τῶν γενιτσάρων καὶ ἀνέθηκε τὴν ναυαρχίαν εἰς τὸν ἐκ τῶν εὐνοουμένων του Χαμουζᾶ πασᾶν. Γ. Ν. Ν.

**Μπαλτὰρ** (Baltard), ***Βίκτωρ***. Γάλλος ἀρχιτέκτων καὶ σχεδιαστὴς (1805—1874), υἱὸς καὶ μαθητὴς τοῦ Λουδοβίκου Μπαλτάρ. Τῷ 1833 ἐτιμήθη διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου Ῥώμης, μεταβὰς δ' εἰς Ἰταλίαν παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ μίαν πενταετίαν. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους κατέλαβεν ἀλληλοδιαδόχως διαφόρους θέσεις, γενόμενος τέλος διευθυντὴς τῶν δημοσίων ἔργων τῶν Παρισίων καὶ αναλαβὼν τὴν διεύθυνσιν τῶν ἑορτῶν, αἵτινες ὡργανώθησαν ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῶν γάμων Ναπολέοντος τοῦ Γ'. Ὁ Μπαλτὰρ ὑπῆρξε μέλος τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου, ᾠκοδόμησε δὲ ἢ ἀνεκαίνισε πλεῖστα δημόσια κτήρια τῆς γαλλικῆς πρωτευούσης καὶ ἐξέδωκεν ἀξιολόγους μονογραφίας, ἐν αἷς καὶ περὶ τῆς Villa Medicis. Ι. Μ. Π.

—**Μπαλτὰρ** (Baltard), ***Λουδοβῖκος-Πέτρος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων, χαράκτης, ζωγράφος καὶ φιλόλογος (1765—1846). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Λούβρῳ ἀκαδημαϊκὴν σχολήν, ἔλαβε δὲ μέρος εἰς τὴν σύνταξιν τῶν ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' παραγγελθέντων σχεδίων ἐξωραϊσμοῦ τῶν Παρισίων, συνεργασθεὶς μετὰ τῶν ἀρχιτεκτόνων Ledoux, Brongniart καὶ Pâris. Τῷ 1788 μετέβη εἰς τὴν Ἰταλίαν δαπάναις τοῦ βαρώνου de Breteuil. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ἐπέστρεψεν εἰς Παρισίους καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐκπόνησιν διαφόρων ὀχυρωματικῶν σχεδίων. Μετὰ ταῦτα ἀνέλαβε τὴν ἕδραν τῆς ἀρχιτεκτονικῆς ἐν τῷ πολυτεχνείῳ καὶ τῇ σχολῇ Καλῶν Τεχνῶν τῶν Παρισίων, διετέλεσε δὲ καὶ ἀρχιτέκτων τοῦ Πανθέου. Ἐξέδωκεν ἐνδιαφερούσας σειρὰς πινάκων: «Ταξίδιον εἰς τὴν Ἄνω καὶ Κάτω Αἴγυπτον», «Pariseum», «Γραφικὸν ταξίδιον εἰς τὰς Ἄλπεις», «Ταξίδιον εἰς τὴν Ἰσπανίαν» (μὲ κείμενον τοῦ κόμητος *A. de Laborde*), «Αἱ ἀρχαιότητες τῆς Νουβίας» (μὲ κείμενον τοῦ *F. C. Gau*) κλπ. Ἐπὶ πλέον ἐξεπόνησε πολυάριθμα ἔργα χαρακτικῆς καὶ ἐλαιογραφίας, ἐπὶ μυθολογικῶν ἰδίᾳ θεμάτων, ᾠκοδόμησε δὲ πολυάριθμα κτήρια ἐν Παρισίοις. Ι. Μ. Π.

**μπαλτᾶς** (ὁ)· δημοτ., συνήθως ὁ πέλεκυς, δι' οὗ τεμαχίζεται τὸ κρέας, ἄλλως *τσεκούρι* (λ. τουρκ.).

—*[Ναυτ.]* Καλεῖται *μπαλτᾶς* εἶδος πρώρας ἐχούσης τὴν στεῖραν κάθετον ἢ ἐλαφρότατα κεκλιμένην ὡς πρὸς τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης (βλ. λ. *ἄγκυρα* σχ. 14), κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν *ταλιαμάν*. Τοιαῦται εἶναι κατὰ κανόνα αἱ πρῷραι τῶν φορτηγῶν, πλείστων ἐπιβατηγῶν καὶ ἐνίων ἐλαφρῶν πολεμικῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μπαλτᾶς, *Κωνσταντῖνος***. Ἀγωνιστής, γεννηθεὶς ἐν Παπαδάτες τῆς Μακρυνείας. Μετέσχε τῶν πολιορκιῶν τοῦ Μεσολογγίου, ἡρωϊκῶς πεσὼν κατὰ τὴν ἔξοδον. Χ. Γ. Ε.

**Μπαλτατζῆ *δερὲ*** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ὄφεως (Ὄφ) τοῦ νομοῦ Τραπεζοῦντος. Παρὰ τὸν ποταμὸν τοῦτον οἰκοῦσιν οἱ *Ὀφλῆδες*, Μουσουλμᾶνοι κατὰ τὸ φαινόμενον, ἀγνοοῦντες ὅμως τὴν τουρκικὴν γλῶσσαν καὶ λαλοῦντες ἄπταιστον ἑλληνικήν, ἔχοντες δὲ ἤθη καὶ ἔθιμα ἑλληνοχριστιανικά. Κ. ΛΣ

**Μπαλτατζῆ *Μεχμὲτ πασᾶς***. Τοῦρκος μέγας βεζύρης (βλ. *Μεχμὲτ πασᾶς* Μπαλτατζῆ).

**Μπαλτατζηλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας συνοικισμοῦ *Πελεκητὴ* (βλ. λ.).

**μπαλτατζῆς** (ὁ)· ὁ φέρων πέλεκυν, ὁ ὡπλισμένος διὰ πελέκεως· ‖ ὁ ξυλοκόπος (τουρκ. baltaci).

—*[Ἐγκυκλ.]* Ἐκαλοῦντο *μπαλτατζῆδες* οἱ ὑπηρέται τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων, κατόπιν δὲ καὶ οἱ πρὸς κατάσβεσιν πυρκαϊῶν μὲ πελέκεις τρέχοντες πυροσβέσται. Πρὸ πεντηκονταετίας ἀκόμη, παντὸς τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ προηγεῖτο μία ἐνωμοτία μπαλτατζήδων, ἀρχικῶς πρὸς διάνοιξιν ὁδοῦ διὰ μέσου δασῶν, κατόπιν ὅμως χάριν διακοσμητικῶν σκοπῶν κατὰ τὰς παρελάσεις. Οἱ μπαλτατζῆδες τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων, ἀρχικῶς ὑλοτόμοι, ὡπλίσθησαν ὑπὸ τῶν σουλτάνων ἀπὸ τῆς ἐποχῆς καθ' ἣν ἤρχισαν αἱ γενιτσαρικαὶ ἀνταρσίαι, ὅπως ὑπερασπίζωσι τὸ σαράγιον, ἀποτελέσαντες οὕτω βαθμιαίως ἰδιαίτερον σῶμα σωματοφυλάκων. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς σουλτανικῆς Τουρκίας οἱ λεγόμενοι μπαλτατζῆδες ἦσαν ὑπηρέται τῶν γυναικῶν του, χρησιμοποιούμενοι εἰς θελήματα τῶν γυναικῶν τοῦ σουλτανικοῦ χαρεμίου. Ν. Μ.

**Μπαλτατζῆς, *Γεώργιος***. Ἕλλην πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1866 ἐν Σμύρνῃ καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τὴν 15 Νοεμβρίου 1922. Διδαχθεὶς τὰ ἐγκύκλια μαθήματα εἰς τὴν Εὐαγγελικὴν Σχολὴν τῆς Σμύρνης, ἐσπούδασε κατόπιν νομικὰ εἰς τὸ ἐν Ἀθήναις Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον. Νυμφευθεὶς τὴν θυγατέρα τοῦ Νικολάου Μαυροκορδάτου, ὑπηρέτησεν ἐπί τινα χρόνον εἰς τὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει ἑλληνικὴν πρεσβείαν, εἶτα διωρίσθη νομάρχης καὶ τῷ 1902 ἐξελέγη βουλευτής. Τὴν 21 Ἰουνίου 1908 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Γεωργίου Θεοτόκη. Τῷ 1915 ἐν τῇ κυβερνήσει Γούναρη ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῆς Συγκοινωνίας. Κατὰ τὴν σχηματισθεῖσαν κυβέρνησιν Γούναρη τῷ 1921 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, τὴν δὲ 26 Μαρτίου τοῦ αὐτοῦ ἔτους εἰς τὴν νέαν πάλιν κυβέρνησιν Γούναρη ἀνέλαβε τὸ αὐτὸ ὑπουργεῖον. Μετέβη τότε εἰς Λονδῖνον καὶ Παρισίους μετὰ τοῦ Δ. Γούναρη πρὸς διακανονισμὸν τοῦ μικρασιατικοῦ ζητήματος. Τὴν 2 Μαρτίου 1922 μετέσχε καὶ πάλιν τῆς κυβερνήσεως Γούναρη καὶ τὴν 9 Μαΐου εἰς τὴν κυβέρνησιν Πρωτοπαπαδάκη ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Τὴν 26 Αὐγούστου ἡ κυβέρνησις αὕτη παρῃτήθη. Ἐκραγείσης τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Σεπτεμβρίου 1922 συνελήφθη καὶ ἀχθεὶς ἐνώπιον ἐκτάκτου στρατοδικείου μετὰ τῶν ἄλλων πολιτικῶν κατεδικάσθη εἰς θάνατον τὴν 15 Νοεμβρίου, ἡ δὲ ἀπόφασις ἐξετελέσθη εἰς τὸ Γουδὶ τὴν αὐτὴν ἡμέραν. Θ. Β.

**Μπαλτὲ** (Baltet), ***Κάρολος***. Γάλλος βοτανικὸς (1830—1908). Ἐπεδόθη εἰδικώτερον εἰς τὴν δενδροκομίαν, ἔγραψε δ' ἐπ' αὐτῆς πολλῆς ἀξίας συγγράμματα, ἐν οἷς: «Καλλιέργεια τῶν καρποφόρων δένδρων πρὸς μεγάλην παραγωγήν», «Οἱ πρὸς ἐμπορίαν καὶ ἐξαγωγὴν καρποί», «Ἀνθοφόρα δένδρα καὶ δενδρύλλια». Ἠσχολήθη ἐπίσης μὲ τὴν ἀμπελουργίαν, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἔγραψε πολλῆς πρακτικῆς ἀξίας διὰ τὴν ἐποχήν του ἔργον, «Ὁ ἐνοφθαλμισμὸς τῆς ἀμπέλου». —Ω.

**Μπάλτεν,** ἢ ***Μπάλτενς*** (Balten ἢ Baltens), ***Πέτρος***. Φλαμανδὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Βαλτένος* Πέτρος).

**Μπάλτζα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης κώμης *Μελισσοχώριον* (βλ. λ.).

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ *Μπάλτζα* κατέστη γνωστὴ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Βαλκανικῶν πολέμων 1912—1913. Κατὰ τὸ τέλος Ὀκτωβρίου 1912 ἐγκατεστάθη ἐν αὐτῇ τὸ στρατηγεῖον τῆς 2ας ἑλληνικῆς μεραρχίας, καὶ ἐκεῖθεν ἐξεπέμφθησαν τὰ ἀποσταλέντα ἔγγραφα πρὸς τὴν 7ην βουλγαρικὴν μεραρχίαν τοῦ στρατηγοῦ Θεοδωρώφ, ἐπιζητήσαν τότε δολίως νὰ εἰσέλθῃ ὁπωσδήποτε εἰς Θεσσαλονίκην. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Ἑλληνοβουλγαρικοῦ πολέμου 1913 ἐγκατεστάθη ἐν αὐτῇ τὸ γενικὸν στρατηγεῖον μέχρι τῆς 22ας Ἰουνίου 1913. Ν. Θ. Κ.

**μπαλτζῆς** (ὁ)· ἰδιωμ., ὁ μελισσοκόμος (βλ. λ. *βαλτζῆς*).

**Μπαλτζί,** ἢ ***Μπαλτσὶ*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 167. Χ. Σ.

**Μπάλτιζα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὁ ἀνατολικὸς καὶ μείζων μυχὸς τοῦ λιμένος τῶν Σπετσῶν (πλάτ. 37° 15′ 30″ Β, μῆκ. 23° 10′ 20″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spezzia and Dhokos), λαβὼν τὴν ὀνομασίαν ταύτην (= πηλὸς) διὰ τὴν ποιότητα τοῦ βυθοῦ του. Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην. Σ. Ε.

**Μπάλτιμορ** (Baltimor) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Βαλτιμόρη*.

**Μπάλτιμορ** (Baltimore). Εὐγενὴς ἀγγλικὴ οἰκογένεια (βλ. λ. *Βάλτιμορ*).

**Μπάλτινον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Καταφύγι* (βλ. λ.).

**Μπαλτιστάν,** ἢ ***Μικρὸν Θιβὲτ*** (Baltistan) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τοῦ ἰθαγενοῦς κράτους τοῦ Κασμὴρ τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν. Ἔχει ἐπιφάνειαν 33.684 τετρ. χλμ. καὶ περὶ τὰς 60.000 κατ. Πρὸς τὸ Β. τμῆμα αὐτῆς ὑψοῦται ἡ ὀροσειρὰ *Καρὰ-Κορουμ*, ὅπου ὑπάρχουν πλεῖσται διαβάσεις, ὑψηλότερα τῶν ὁποίων εἶνε ἡ *Μούσταχ* εἰς ὕψος 5.500 μ. Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Τσάϋοκ* καὶ Ξ... δεξιῶν παραποτάμων τοῦ Ἰνδοῦ. Τὸ μεγαλύτερον τμῆμα τῆς χώρας, ἐξαιρέσει ὀλίγων δασῶν, εἶναι ἀμμῶδες καὶ ἔρημον, τὰ δὲ ὄρη εἶναι πτωχὰ εἰς χλωρίδα. Ἡ πανὶς εἶνε ἡ αὐτὴ μὲ τὴν τοῦ Θιβέτ. Παράγει ὄρυζαν, ὀλίγα σιτηρά, οἶνον καὶ ἐξαίρετους ὀπώρας, ἰδίως δὲ εἶδος μικρῶν σταφυλῶν, αἵτινες μεταβαλλόμεναι εἰς σταφίδα φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον τῶν Ἰνδιῶν ὡς σταφὶς τῆς Κορίνθου. Οἱ κάτοικοι εἶναι Μωαμεθανοί, παρ' αὐτοῖς δὲ ἰσχύει ἡ πολυανδρία. Πρωτεύουσα αὐτῆς εἶναι ἡ *Ἰσκάρδον* ἢ *Σκάρδον*. Ἐκυβερνᾶτο ὑπὸ ἀνεξαρτήτων ἡγεμόνων μέχρι τοῦ 1835, ὁπότε προσηρτήθη εἰς τὸ Κασμὴρ ὑπὸ τοῦ Γκολὰμπ Σίνγκ. Μ. Δ. Ξ.

**Μπάλτσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Βοιωτίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Θηβῶν τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 683. Χ. Σ.

**Μπάλτσερ** (Balzer), ***Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1814—1887). Ἵδρυσε τὴν «ἐλευθέραν κοινότητα» ἐν Νορντχάουζεν καὶ ἐξέδωκε τὸ ἔργον «Grund-linien der Religionswissenschafts». Α. Σ.

— **Μπάλτσερ** (Balzer), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Γερμανὸς καθολικὸς θεολόγος (1803—1871). Τῷ 1831 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βόννης, τῷ δὲ 1862 προσῆλθεν εἰς τὸν παλαιοκαθολικισμόν, γενόμενος ὀπαδὸς τοῦ Χέρμες καὶ τοῦ Ἀντωνίου Γκύντερ. Α. Σ.

**Μπαλτσὶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀγαλαστῆς τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 155. Χ. Σ.

**Μπαλτσὶκ** (Baltcshik) *[Γεωγρ.]*. Παράλιος πόλις τῆς Ρουμανίας ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου Πόντου (πλάτ. 43° 23′ Β., μῆκ. 28°11′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2230: Bosporus to Kaliakra). Κάτ. 6.000. Ἔχει μεγάλας ἀποθήκας δημητριακῶν προϊόντων καὶ διεξάγει ἐμπόριον δημητριακῶν. Τὸ Μπαλτσὶκ κατέχει τὴν θέσιν, ἐν ᾗ ἔκειτο ἡ ἀρχαία ἑλληνικὴ ἀποικία *Διονυσσούπολις*. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου τὸ πλεῖστον τοῦ πληθυσμοῦ της ἀπετελεῖτο ἐξ Ἑλλήνων. Ἔχει τὸν ἀσφαλέστερον λιμένα ἐκ τῶν ἐν Εὐξείνῳ Πόντῳ. Ἐξ αὐτοῦ ἀπέπλευσαν κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον διὰ Σεβαστούπολιν αἱ ἀγγλικαί, γαλλικαὶ καὶ τουρκικαὶ πολεμικαὶ δυνάμεις. Γ. Ι. Β.

**Μπαλὺ** (Balue), ***Ἰωάννης***. Γάλλος καρδινάλιος καὶ πολιτικὸς (1421—1491). Κατορθώσας νὰ ἑλκύσῃ τὴν συμπάθειαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΑ', διωρίσθη ἱερεὺς τῆς αὐλῆς καὶ κατόπιν γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν, ὑπουργός, ἐπίσκοπος τοῦ Ἐβρὲ καὶ τέλος ὠνομάσθη καρδινάλιος ἐν Ῥώμῃ. Ὑποκριτὴς εἰς τὸ ἔπακρον, προέβη εἰς μυστικὰς διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ

Digitized by Google

ουκὸς τῆς Βουργουνδίας Καρόλου τοῦ Ἰταμοῦ, ἰς ὃν ἐπρόδωσε τὰ μυστικὰ τοῦ βασιλέως τῆς αλλίας. Ἐπιστολαὶ κατασχεθεῖσαι (1469) ἀπεκάυψαν τὰς μηχανορραφίας του. Ὁ μονάρχης ἐνέλεισε τὸν Μπαλὺ εἰς τὸ φρούριον τοῦ Ὀνζαὶν αὶ τὸν κατεδίκασε νὰ φέρῃ ἁλύσεις, αἵτινες εἶναι νωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα «θυγατέρες τοῦ βασιλέως». Μετὰ ἕνδεκα ἔτη ἐπανέκτησε τὴν ἐλευθερίαν του ῆ παρεμβάσει τοῦ πάπα Σίξτου Δ΄ καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Ρώμῃ, ὅπου καὶ ἀπεβίωσε. Α. Δ.

**Μπαλὺζ** (Baluze), ἢ ***Βαλούζιος, Στέφανος***. Γάλος σοφὸς τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος, ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1718. Βιβλιοθηκάριος τοῦ Κολμπέρ, καθηγητὴς τοῦ κανονικοῦ δικαίου, βραδύτερον δὲ πιθεωρητὴς τοῦ Βασιλικοῦ Κολλεγίου, ἐξωρίσθη ῷ 1710, διότι ἐν τῇ «Γενεαλογικῇ ἱστορίᾳ τοῦ οἴιου τῆς Ὠβέρνης» ὑπεστήριξε τὰς διεκδικήσεις τοῦ οἴκου τῶν Μπουλλιόν. Μετακληθεὶς τῷ 1713 εἰς Παρισίους, ἦλθεν εἰς ἐπαφὴν μετὰ τῶν μεγάλων σοφῶν τῆς ἐποχῆς καὶ ἠσχολήθη περὶ τὴν ἔκδοιν τῶν ἔργων ἐκκλησιαστικῶν συγγραφέων. Ἐξέδωκε μετὰ θαυμασίων προλόγων σημαντικὰς συλλογὰς σπουδαίων ἐγγράφων σχετικῶν πρὸς τὴν πολιτικὴν καὶ τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν («Capitularia regum Francorum», «Miscellanea», «Nova collectio conciliorum» κτλ.), δι' ὧν ἡδραίωσε τὴν φήμην του ὡς σοφοῦ ἱστοριοδίφου. Τὰ σημειώματά του («Armoire de Baluze») ἐν τῇ Ἐθνικῇ Βιβλιοθήκῃ τῶν Παρισίων εἶναι ἀνεξάντλητος πηγὴ πολυτίμων διὰ τοὺς ἱστορικοὺς πληροφοριῶν. Α.Δ.

**Μπαλὺκ** —· βλ. λ. *Μπαλοὺκ*—.

**Μπὰλφ** (Balfe), ***Μιχαὴλ-Γουλιέλμος***. Διακεκριμένος Ἄγγλος συνθέτης μελοδραμάτων (1808—1870). Ἐσπούδασε σύνθεσιν ἐν Ρώμῃ καὶ ᾆσμα ἐν Μιλάνῳ, ἐπιβληθεὶς ταχέως ὡς συνθέτης καὶ ἀοιδὸς (βαρύτονος). Μετὰ λαμπρὰν σταδιοδρομίαν ἐν Ἰταλίᾳ ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν, ἔνθα τὸ συνθετικόν του τάλαντον, ἐμπνευσμένον ἀπολύτως ἐκ τῆς ἰταλικῆς τεχνοτροπίας, ἐξεδηλώθη διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Ἡ ἅλωσις τῆς Ροσέλλης», «Ἡ κόρη τοῦ Ἀρτουά», «Ἰωάννα ντ' Ἄρκ» κ. ἄ. Ἀποτυχὼν ὡς θεατρικὸς ἐπιχειρηματίας ἐν Λονδίνῳ, μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα ἀνεβίβασε μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ κωμικοῦ μελοδράματος τὰ λυρικὰ ἔργα: «Τὸ πηγάδι τοῦ ἔρωτος» καὶ «Οἱ τρεῖς υἱοὶ τοῦ Αὑμόν». Ἀλλ' ἡ μεγίστη ἐπιτυχία τοῦ Μπὰλφ ὑπῆρξε τὸ μελόδραμα «Ἡ τσιγγάνα» (The Bohemian girl). Ἔγραψεν ἀκόμη πλεῖστα ἄλλα μελοδράματα, καντάτας, μπαλλάντας κτλ. Γ.Σ.

**Μπάλφουρ** (Balfour), ***Ἀνδρέας***. Ἄγγλος ἰατρὸς καὶ λογογράφος, γεννηθεὶς εἰς Ἐδιμβοῦργον τῷ 1873. Ἠξιώθη τριῶν χρυσῶν μεταλλίων, ἐξ ὧν τὸ ἓν διὰ τὴν διατριβήν του «Περὶ τῆς τοξικότητος τῶν χρωστικῶν ὑλῶν». Διετέλεσε διευθυντὴς τῶν τροπικῶν ἐρευνῶν Wellcome, κατὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν ὡς μέλος τῆς Μεσογειακῆς ἐπιτροπῆς τοῦ πολέμου (1915—1916), πρόεδρος τῆς ἰατρικῆς ἐπιτροπῆς Μεσοποταμίας (1916—1917), σύμβουλος ἐπιστημονικῆς ἐπιθεωρήσεως τῆς γενικῆς ἀγγλικῆς χειρουργικῆς ἀποστολῆς ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Ἀφρικῇ (1917). Ἀπὸ τοῦ 1923 διατελεῖ διευθυντὴς τοῦ ἐν Λονδίνῳ γραφείου Wellcome δι' ἐπιστημονικὰς ἐρεύνας, καὶ τῆς Λονδινείου σχολῆς ὑγιεινῆς καὶ ἰατρικῆς τροπικῶν χωρῶν. Ἔγραψε: «Δημοσία ὑγιεινὴ καὶ προληπτικὴ ἰατρική» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Lewis, «Ὁ πόλεμος κατὰ τῶν τροπικῶν νόσων» (1920) κλπ. Ἐκ δὲ τῶν φιλολογικῶν του ἔργων σημειοῦμεν τὰ ἀκόλουθα: «By stroke of Sword», «To arms !», «Vengeance is Mine», «The Golden Kingdom», «Short stories». Ο. Ρ.

— **Μπάλφουρ** (Balfour), *κόμις* ***Ἀρθοῦρος - Ἰάκωβος***. Ἄγγλος πολιτικὸς (1848—1930). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ἤτον καὶ τὸ πανεπιστήμιον Κανταβριγίας καὶ τῷ 1874 ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος. Μετὰ τέσσαρα ἔτη ὁ θεῖός του, λόρδος Σαλισβουρύ, παρέλαβεν αὐτὸν μεθ' ἑαυτοῦ, ὡς ἰδιαίτερον γραμματέα, εἰς τὸ συνέδριον τῆς Βιέννης καὶ τῷ 1885 τὸν διώρισεν ὑφυπουργὸν τοῦ Ἐμπορίου καὶ κατόπιν τῆς Σκωτίας καὶ τῆς Ἰρλανδίας. Ἐν τῇ τελευταίᾳ ταύτῃ θέσει κατεπολέμησε τὴν πρότασιν περὶ αὐτοδιοικήσεως τῆς Ἰρλανδίας, τὴν ὁποίαν εἶχε προτείνει ὁ Γλάδστων, καὶ κατώρθωσε νὰ καταπνίξῃ τὰς ταραχὰς τῶν Ἰρλανδῶν πατριωτῶν. Τῷ 1891 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ κατόπιν ἐξελέγη πρόεδρος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων. Τῷ 1898 ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἀσθενείας τοῦ Σαλισβουρύ, καὶ κατόπιν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Οἰκονομικῶν. Τῷ 1902 διεδέχθη τὸν λόρδον Σαλισβουρὺ εἰς τὴν πρωθυπουργίαν, ἐν ᾗ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1905, πραγματοποιήσας σημαντικὰς ἐπιτυχίας ἐσωτερικῶς μὲν διὰ τῆς ψηφίσεως τοῦ νόμου τῆς ἐκπαιδευτικῆς καὶ γεωργικῆς μεταρρυθμίσεως, ἐξωτερικῶς δὲ διὰ τῆς διατηρήσεως τῆς παγκοσμίου εἰρήνης κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον καὶ διὰ τῆς ἀποκρούσεως τῶν γερμανικῶν ἀξιώσεων κατὰ τὴν μαροκκινὴν κρίσιν τοῦ 1904. Τῷ 1903 ὅμως αἱ προτάσεις τοῦ Τσάμπερλαιν περὶ τῆς δασμολογικῆς μεταρρυθμίσεως διῄρεσαν καὶ ἐξησθένησαν τὸ συντηρητικὸν κόμμα, ἐν τῷ ὁποίῳ ὁ Μπάλφουρ ὑπεστήριζε πάντοτε τὸ προστατευτικὸν δασμολογικὸν σύστημα, κατὰ δὲ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1904 οἱ συντηρητικοὶ ὑπέστησαν μεγάλην ἧτταν, κατὰ τὴν ὁποίαν καὶ αὐτὸς ὁ Μπάλφουρ ἀπέτυχεν ἐν τῇ ἐκλογικῇ περιφερείᾳ του, τοῦ Μάντσεστερ, κατορθώσας μόνον βραδύτερον, ἐν ἀναπληρωματικῇ ἐκλογῇ τοῦ Λονδίνου, νὰ ἐπανεκλεγῇ βουλευτής. Κατόπιν ἐδέχθη τὸ οἰκονομικὸν πρόγραμμα τοῦ Τσάμπερλαιν, συνεπείᾳ δὲ τούτου ἐπανῆλθεν ἐκ νέου ἡ συνοχὴ ἐν τῷ κόμματί του, ἀλλὰ μετὰ τρεῖς ἐκλογικὰς ἀποτυχίας τῶν συντηρητικῶν ἠναγκάσθη τῷ 1911 νὰ παραιτηθῇ τῆς ἀρχηγίας τοῦ κόμματος καὶ νὰ παραχωρήσῃ τὴν θέσιν του εἰς τὸν Μπόναρ Λῶ. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου μετέσχε τῆς κυβερνήσεως ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ ὑπὸ τὸν Ἀσκουΐθ, ὡς ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν τῷ 1915, κατορθώσας νὰ ἐπαναφέρῃ τὴν γαλήνην ἐν τῷ ἀγγλικῷ ναυτικῷ, ἥτις εἶχε διαταραχθῇ συνεπείᾳ διαφωνίας τοῦ πρώην ὑπουργοῦ τῶν Ναυτικῶν Τσῶρτσιλ μετὰ τοῦ ναυάρχου λόρδου Φίσερ, καὶ διορίσας τοὺς δύο κατόπιν διαπρέψαντας ναυάρχους Τζέλλικο καὶ Μπῆττυ, τὸν μὲν πρῶτον γενικὸν κατὰ θάλασσαν ἐπιτελάρχην, τὸν δὲ δεύτερον ἀρχηγὸν τοῦ στόλου τῆς Μ. Βρεττανίας· τῷ 1916 ἀνέλαβεν ἐν τῷ ὑπουργείῳ Λόϋδ Τζώρτζ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, διαδεχθεὶς τὸν Ἐδουάρδον Γκρέϋ, τῷ δὲ 1917 μετέβη εἰς τὴν Ἀμερικὴν ἐπὶ κεφαλῆς βρεττανικῆς ἀποστολῆς, ὅπως ἐπιτύχῃ τὴν συνεργασίαν ἐν τῷ πολέμῳ μεταξὺ τῶν δύο κρατῶν. Κατὰ τὴν παραμονήν του ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις παρεσχέθη εἰς αὐτὸν ἡ ἐξαιρετικὴ εἰς ξένους τιμὴ νὰ ὁμιλήσῃ καὶ ἀπὸ τοῦ βήματος τῆς ἀμερικανικῆς βουλῆς. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος προέβη εἰς τὴν περίφημον δήλωσιν *Μπάλφουρ* (βλ. λ.), μετὰ δὲ τὴν λῆξιν τοῦ πολέμου μετέσχε τῆς ἐν Παρισίοις διασκέψεως τῆς εἰρήνης ὡς δεύτερος, μετὰ τὸν Λόϋδ Τζώρτζ, ἀντιπρόσωπος τῆς Ἀγγλίας τῷ 1919.

*Ἀρθοῦρος Μπάλφουρ.*

Τῷ 1920 διωρίσθη πρῶτος ἀντιπρόσωπος τῆς Ἀγγλίας κατὰ τὴν πρώτην συνέλευσιν τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν. Ἐπίσης ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἀγγλίαν ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ἀγγλικῆς ἀποστολῆς τοῦ 1921—1922 κατὰ τὴν διεθνῆ διάσκεψιν τῆς Βασιγκτῶνος, καθ' ἣν ἀπεφασίσθη διὰ πρώτην φορὰν ὁ περιορισμὸς τῶν ναυτικῶν ἐξοπλισμῶν καὶ ἡ ἐγκατάλειψις ναυπηγήσεως μεγάλων σκαφῶν, καὶ καθ' ἣν ἐπῆλθεν ἡ συμφωνία τῶν τεσσάρων μεγάλων Δυνάμεων, Ἀγγλίας, Ἡνωμένων Πολιτειῶν, Ἰαπωνίας καὶ Γαλλίας, διὰ τὸν Εἰρηνικόν. Τῷ 1923 ὁ Μπάλφουρ, συνεπείᾳ τῆς πιέσεως τὴν ὁποίαν ἐξήσκει ἡ Ἀμερικὴ ἐπὶ τῆς Ἀγγλίας διὰ τὴν πληρωμὴν τῶν ἐκ τοῦ πολέμου χρεῶν, ἀπηύθυνεν ἐξ ὀνόματος τῆς Μεγάλης Βρεττανίας τὴν περίφημον διακοίνωσιν πρὸς τὴν Γαλλίαν καὶ τὰς ἄλλας συμμάχους εὐρωπαϊκὰς Δυνάμεις, ἥτις ἔκτοτε εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «διακοίνωσις Μπάλφουρ» καὶ διὰ τῆς ὁποίας ἐτονίζετο ὅτι, καίτοι ἡ Μεγάλη Βρεττανία, δανείστρια μᾶλλον ἢ ὀφειλέτις, ἦτο εὐνοϊκὴ πρὸς τὴν διαγραφὴν τῶν διασυμμαχικῶν χρεῶν, δὲν ἠδύνατο ἐν τούτοις νὰ δεχθῇ τὴν ἀκύρωσιν τῶν πρὸς αὐτὴν ὀφειλομένων ἐκ μέρους τῶν εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων, ἐφ' ὅσον θὰ ὑφίστατο ἡ βρεττανικὴ ὀφειλὴ πρὸς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Τῷ 1923 ὁ Μπάλφουρ, μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς κυβερνήσεως συνασπισμοῦ, παρῃτήθη μετὰ τῶν ἄλλων συντηρητικῶν ἐκ τῆς κυβερνήσεως. Τῷ 1925 διωρίσθη πρόεδρος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου τοῦ βασιλέως, παραμείνας εἰς τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ 1928, ὁπότε ἀπεσύρθη τῆς ἐνεργοῦ πολιτικῆς διὰ λόγους ὑγείας. Κατὰ τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1925 εἶχεν ἐπισκεφθῇ τὴν Παλαιστίνην, ὅπου ἐγένετο ἐνθουσιωδῶς δεκτὸς ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων. Θελήσας ὅμως νὰ ἐπισκεφθῇ καὶ τὴν Συρίαν, ἔτυχεν ἐχθρικῆς ὑποδοχῆς ὑπὸ τῶν Ἀράβων, ἀναγκασθεὶς νὰ ἀναχωρήσῃ ἐσπευσμένως ὑπὸ τὴν προστασίαν τῶν γαλλικῶν ἀρχῶν. Ἕνεκα τῶν μεγάλων του πρὸς τὸ ἔθνος ὑπηρεσιῶν ὁ βασιλεὺς ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸ παράσημον τῆς περικνημῖδος καὶ τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος.

Ὁ Μπάλφουρ διεκρίθη καὶ ὡς συγγραφεύς, γράψας διάφορα φιλοσοφικά, πολιτικὰ καὶ θρησκευτικὰ συγγράμματα καὶ ἀσχοληθεὶς μὲ πλεῖστα ἐγκυκλοπαιδικὰ θέματα. Ἐπίσης ᾐσθάνετο μεγάλην ἀγάπην καὶ πρὸς τὸν ἀθλητισμόν, ὃν ἐνίσχυσε παντοιοτρόπως ἐν Ἀγγλίᾳ. Τῷ 1919 εἶχεν ἐκλεγῇ πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κανταβριγίας. Ὑπῆρξεν ἐπίσης πρόεδρος τῆς Βρεττανικῆς Ἀκαδημίας, πρόεδρος τοῦ ἀγγλικοῦ ἰνστιτούτου τῆς πειραματικῆς ψυχολογίας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ὑπεράσπισις τῆς φιλοσοφικῆς ἀμφιβολίας» (1879), «Τὰ θεμέλια τῆς πίστεως» (1898), «Οἰκονομολογικαὶ σημειώσεις» (1903), «Αἱ νέαι θεωρίαι ἐπὶ τῆς ὕλης» (1904), «Δημοσιονομικὴ μεταρρύθμισις» (1906), «Κατάπτωσις» (1908), «Προβλήματα κριτικῆς καὶ ὡραιότητος» (1909), «Θεϊσμὸς καὶ ἀνθρωπισμός» (1914), «Πολιτικαὶ μελέται» (1920), «Θεϊσμὸς καὶ σκέψις» (1923), «Γνῶμαι καὶ ἐπιχειρήματα» (1927) κτλ. Πολλὰ τῶν ἔργων του μετεφράσθησαν εἰς διαφόρους ξένας γλώσσας. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλφουρ** (Balfour), ***Ἰάκωβος***. Σκῶτος νομομαθὴς καὶ πολιτικός, ἀποθανὼν τῷ 1583. Ἐθεωρεῖτο ὁ μεγαλύτερος Σκῶτος νομομαθὴς τῆς ἐποχῆς του· κατέλαβε δὲ ὕψιστα δικαστικὰ ἀξιώματα. Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι ἡ πρώτη συλλογὴ τῶν νόμων τῆς Σκωτίας, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «Balfour's Practicks of the law» (1574).

— **Μπάλφουρ** (Balfour), ***Ἰάκωβος***. Σκῶτος ἱστορικὸς (1600—1657). Μετὰ μακρὸν ταξίδιον εἰς τὴν Εὐρώπην ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Σκωτίας καὶ τῆς οἰκοσημολογίας. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον ὑπηρέτει εἰς τὴν βασιλικὴν αὐλὴν καὶ περιελθὼν εἰς τὴν δυσμένειαν τοῦ Κρόμβελ ἔζησε μακρὰν τῶν πολιτικῶν γεγονότων τῆς ἐποχῆς του, καταρτίσας πλουσιωτάτην βιβλιοθήκην καὶ ἐργασθεὶς ἐπὶ διαφόρων ἱστορικῶν θεμάτων. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του παρέμειναν ἀνέκδοτα, ἀλλ' ἐχρησιμοποιήθησαν ὡς πολύτιμοι πηγαὶ εἰς διαφόρους συγγραφεῖς. Τὸ κυριώτερον τούτων εἶναι: «Χρονικὰ Σκωτίας», ἐκδοθέντα τῷ 1824. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλφουρ** (Balfour), ***Τζὼν-Χιοῦτον***. Ἄγγλος ἰατρὸς καὶ βοτανολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἐδιμβούργῳ τῷ 1808. Ἠκολούθησε μαθήματα φιλολογίας καὶ φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς γενετείρας του, συνεχίσας εἶτα ταῦτα μὲ τὴν σπουδὴν τῆς ἑβραϊκῆς καὶ θεολογίας. Τῷ 1826 ἤρξατο σπουδῶν ἰατρικῆς, τῷ 1831 καὶ 1832 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Βασιλικῆς Ἰατρικῆς Ἑταιρείας, τῷ 1833 μέλος τοῦ κολλεγίου τῆς χειρουργικῆς τοῦ Ἐδιμβούργου καὶ τῷ 1835 μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἑταιρείας τῆς αὐτῆς πόλεως. Ἀλλ' ἡ ἰδιαιτέρα του συμπάθεια πρὸς τὴν βοτανικήν, ἡ ὑπ' αὐτοῦ γενομένη συλλογὴ ἀξιοσημειώτου χλωρίδος, ὡς καὶ αἱ λίαν ἐνδιαφέρουσαι αὐτοῦ διαλέξεις περὶ βοτανικῆς εἰς τὴν εἰδικὴν σχολὴν τοῦ Ἐδιμβούργου, ἤγαγον τοῦτον εἰς τὴν καθηγητικὴν ἕδραν τῆς Βοτανικῆς τῆς Γλασκώβης, ἐν ᾗ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ διδασκάλου του Graham, ὃν ἐκλήθη νὰ διαδεχθῇ εἰς τὴν καθηγεσίαν τῆς βοτανικῆς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Ἐδιμβούργου, ὡς καὶ εἰς τὴν διεύθυνσιν τοῦ αὐτόθι βοτανικοῦ κήπου. Ἐδημοσίευσε μέγαν ἀριθμὸν ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀναφέρομεν τὸ «Ἐγχειρίδιον τῆς βοτανικῆς» (1849), «Μαθήματα καὶ στοιχεῖα βοτανικῆς» (1851) «Τὰ φυτὰ τῆς Γραφῆς» (1858) κλπ. Ο. Ρ.

— **Μπάλφουρ** (Balfour), ***Φράνσις-Μαίιτλαντ***. Ἐπιφανὴς Ἄγγλος ἰατρὸς καὶ βιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἐδιμβούργῳ (1851—1882). Τῷ 1873 ἐστάλη ὑπὸ τοῦ πανεπιστημίου Καΐμπριτζ ὡς διευθυντὴς τοῦ ἐν Νεαπόλει ζῳολογικοῦ σταθμοῦ. Ἀποτέλεσμα τῶν ἐρευνῶν του κατὰ τὴν ἐν Νεαπόλει διαμονήν του ὑπῆρξε σειρὰ σοβαρῶν μονογραφιῶν περὶ ἐλασματοβραχίων ἰχθύων «A monograph on the development of Elasmobranch fishes» (Λονδῖνον 1878), αἵτινες ἀπετέλεσαν κλασσικὴν ἐμβρυολογικὴν ἐργασίαν, διαφωτίσασαν τὴν ἀνάπτυξιν πολλῶν ὀργάνων τῶν σπονδυλωτῶν, ἰδίως δὲ τοῦ οὐρογεννητικοῦ καὶ νευρικοῦ συστήματος αὐτῶν. Ἕτερον ἔργον αὐτοῦ ὑπῆρξεν ἡ δίτομος «Συγκριτικὴ ἐμβρυολογία». Ἄλλαι ἐργασίαι του εἶναι (1880, 1881): «A comparison of the early stages in the development of vertebrates» «On the spinal Nerves of Amphioxus», «On the structure and development of the vertebrate ovary», «On the development of the Araneina» (1880) κλπ. Μετὰ τοῦ Forster ἐξέδωκε καὶ σύγγραμμα ἐμβρυολογίας «The elements of embryology» (1874), μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικὴν ὑπὸ Kleinberg. Ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Καΐμπριτζ συνέστη ἰδιαιτέρα ἕδρα πρὸς διδασκαλίαν ὑπ' αὐτοῦ τῆς συγκριτικῆς ἀνατομικῆς καὶ μορφολογίας τῶν ζῴων, ἣν ὅμως ἐπ' ἐλάχιστον διετήρησε, θανὼν εἰς ἡλικίαν μόλις 31 ἐτῶν. Ἀλλ' ἡ ἀπὸ τοῦ 1875 διδασκαλία αὐτοῦ ὡς καὶ τὰ πρακτικά του μαθήματα περὶ ἐμβρυολογικῆς ἐξελίξεως εἵλκυον μέγαν ἀριθμὸν μαθητῶν καὶ ἔσχον λαμπρὰν ἐπιτυχίαν. Ο. Ρ.

— **Μπάλφουρ *δήλωσις***. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶνε γνωστὴ ἡ δήλωσις, εἰς τὴν ὁποίαν προέβη τὸν Νοέμβριον τοῦ 1917 ἐξ ὀνόματος τῆς Μεγάλης Βρεττανίας ὁ τότε ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν αὐτῆς Μπάλφουρ καὶ δι' ἧς παρεῖχεν ὑπόσχεσιν περὶ ἱδρύσεως ἐν Παλαιστίνῃ «ἐθνικῆς ἑστίας» διὰ τοὺς Ἰουδαίους. Μ. Δ. Β.

— **Μπάλφουρ, *νόσος τοῦ* —**. Νόσος χαρακτηριζομένη ὑπὸ λεμφικῶν ὀξιδίων ὑποπρασίνων, ἑδραζομένων συνήθως εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τῶν ὀστῶν, ἀλλ' ἀναπτυσσομένων ὡσαύτως καὶ ἐντὸς τῶν σπλάγχνων καὶ ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῶν βλενογόνων καὶ τοῦ καλυπτηρίου συστήματος. Ἡ ἐμφά-

Digitized by Google

νισις αὐτῶν χαρακτηρίζει μορφὴν ὀξείας λευχαιμίας, τὴν χλωριολευχαιμίαν. Μ. Ν. Κ.

**Μπαλφουριὲ** (Balfourier), *Μαυρίκιος*. Γάλλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1852. Διακριθεὶς εἰς τὴν μάχην τοῦ Βερντὲν (1916), ἐτιμήθη διὰ τοῦ παρασήμου τῆς Λεγεῶνος τῆς Τιμῆς. Τῷ 1917 ἦτο διοικητὴς τοῦ 36 σώματος στρατοῦ. Α. Δ.

**Μπάλφρους**, ἢ *Μπαλφερούς*, καὶ *Μπαρφερούς [Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας, ἐν τῷ νομῷ Μαζανντεράν, εἰς ἀπόστασιν 22 χλμ. ἀπὸ τῆς Κασπίας θαλάσσης. Κάτ. 55.000, Ἀρμένιοι, Πέρσαι καὶ Ρῶσοι. Χωρίζεται ἀπὸ τῆς Τεχεράνης διὰ τῶν ὀρέων Ἐλμπουρζ. Εἶναι σημαντικώτατον ἐμπορικὸν κέντρον καὶ ἔχει ἀκμαίαν βιομηχανίαν μετάξης, ἐξάγουσα βάμβακα, ὄρυζαν, λίνον, κανναβιν καὶ ζαχαροκάλαμον. Ἔχει ἐπίνειον ἐπὶ τῆς Κασπίας τὸν Μεσὲντ-ἰ-Σάρ. Μ. Δ. Β.

**Μπάλχ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Β. Ἀφγανιστάν, κατοικουμένη ὑπὸ 500 ἀφγανικῶν οἰκογενειῶν καί τινων Ἑβραίων. Εἶναι ἡ ἀρχαία πόλις *Βάκτρα*, ἧς ἡ κτίσις ἀποδίδεται εἰς τὸν μυθικὸν Καϊομούρς, τὸν Ρωμύλον τῶν Περσῶν. Εἰς πολὺ παλαιὰν ἐποχὴν ἦτο ἀντίζηλος τῆς πόλεως τῶν Ἐκβατάνων, πρωτευούσης τῆς Περσίας, ὡς καὶ τῆς Νινευῒ καὶ τῆς Βαβυλῶνος. Ἐπὶ πολὺ ἦτο τὸ κέντρον τῆς ζωροαστρικῆς θρησκείας, λέγεται δὲ ὅτι ὁ ἱδρυτὴς τῆς θρησκείας ταύτης ἀπέθανεν ἐνταῦθα. Βραδύτερον διεδόθη εἰς αὐτὴν ὁ Βουδισμός. Ὁ Κινέζος περιηγητὴς Χσιάγκ-Τσόγκ ἐπισκεφθεὶς τὴν πόλιν (κατὰ τὸν Ζ' μ. Χ. αἰῶνα) εὗρεν ἐν αὐτῇ ἑκατὸν περίπου μοναστήρια Βουδιστῶν μὲ 3.000 μοναχούς. Τῷ 1220 ἡ Μπάλχ κατεστράφη ὑπὸ τοῦ Δζιγκὶζ-χάν, ὅστις ἔσφαξε καὶ ὅλους τοὺς κατοίκους της. Οὐχ ἧττον φαίνεται ὅτι διεσώθησαν ἱκανά, διότι μετὰ ἕνα αἰῶνα ὁ Μάρκο Πόλο τὴν περιγράφει ὡς πόλιν εὐγενῆ. Ἀπὸ τοῦ 1850 ἀνήκει εἰς τὸ Ἀφγανιστὰν (βλ. καὶ λ. *Βάκτρα* καὶ *Βακτριανή*). Ν. Μ.

**Μπαλχὰρ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Βραγιὰ* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ροδόπης.

**μπάλωμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μπαλώνω*, ἐπίβλημα, ἐπίρραμμα: «σήμερα καταγίνομαι 'ς τὸ μπάλωμα», «τί μπάλωμα εἶναι αὐτὸ ποῦ ἔκαμες;» ‖ τεμάχιον ὑφάσματος χρησιμεῦον ὡς ἐπίρραμμα: «τὰ κομμάτια τὰ χρειάζομαι γιὰ μπαλώματα».

— *[Ραπτ.]* Ὅταν μέρος τοῦ ἐνδύματος, τοῦ ἐσωρούχου ἢ ἄλλου εἴδους ρουχισμοῦ εἶναι κατεστραμμένον, εἰς τρόπον ὥστε νὰ εἶναι ἀδύνατος ἡ ἐπιδιόρθωσίς του μὲ *μαντάρισμα* (βλ. λ.), τότε κάμνομεν χρῆσιν τοῦ μπαλώματος. Εἰς ἐνδύματα ἐξ ἄλλου ἐργατῶν, μπλοῦζες, ποδιὲς καὶ ἄλλα κοινὰ βαμβακερά, τὸ μπάλωμα προτιμᾶται πάντοτε τοῦ μανταρίσματος, ὡς στερεώτερον καὶ εὐκολώτερον.

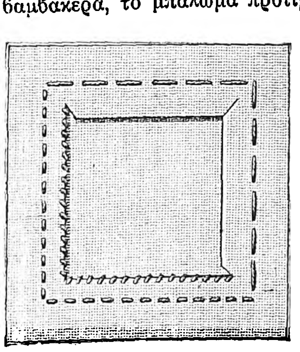

Σχ. 1.

Ὡς μπάλωμα χρησιμοποιοῦμεν τεμάχιον ὑφάσματος ὁμοίου μὲ τὸ πρὸς ἐπισκευήν, ἐὰν δὲ δὲν ἔχωμεν τὸ ἐντελῶς ὅμοιον, τότε θὰ ἐκλέξωμεν ἄλλο κατὰ τὸ δυνατὸν προσομοιάζον εἰς χρῶμα, ὕφανσιν καὶ ποιότητα. Τὸ μπάλωμα δυνάμεθα νὰ πλύνωμεν προηγουμένως ἢ νὰ ἐκθέσωμεν αὐτὸ εἰς τὸν ἥλιον πρὸς ἐλάττωσιν τῆς ζωηρότητος τοῦ χρώματός του, διὰ νὰ ἐπιτύχωμεν ἐπὶ μᾶλλον ὁμοιόμορφον προσαρμογήν.

Διὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐργασίας ἀφαιροῦμεν ἐν πρώτοις τὸ κατεστραμμένον μέρος τοῦ ἐνδύματος εἰς ὁ,τιδήποτε σχῆμα κανονικόν, στρογγύλον, τετράγωνον, τρίγωνον κτλ., τοποθετοῦντες δὲ αὐτὸ ἐπάνω εἰς τὸ νέον ὕφασμα κόπτομεν ἐκ τοῦ τελευταίου τούτου ἓν τεμάχιον τοῦ ἰδίου ἐπακριβῶς σχήματος, ἀλλὰ μὲ διαστάσεις μεγαλυτέρας (ἀπὸ 3 χιλιοστῶν ἕως 1 ἑκατοστοῦ ἐξ ἑκάστης πλευρᾶς, ἀναλόγως τοῦ μεγέθους τοῦ μπαλώματος καὶ τοῦ εἴδους τοῦ ὑφάσματος). Τοποθετοῦμεν κατόπιν τὸ μπάλωμα ἐπάνω εἰς τὸ κενὸν τὸ ὁποῖον ἔγινεν διὰ τῆς ἀποκοπῆς τοῦ ἐφθαρμένου, εἰς τρόπον ὥστε τὰ ἄκρα νὰ ἐξέχουν ἐξ ἴσου καθ' ὅλας τὰς πλευρὰς καὶ τὸ συγκρατοῦμεν δι' ἑνὸς τρυπώματος διὰ νὰ γίνῃ ἡ ἐπεξεργασία καλύτερον. Κόπτονται αἱ γωνίαι τοῦ ὑφάσματος ὡς φαίνεται εἰς τὸ σχ. 1, γίνεται πτυχὴ πρὸς τὰ ἔσω (στρίφωμα) καὶ ἑνώνεται μὲ τὸ μπάλωμα μὲ ἁπλωτὴ βελονιά.

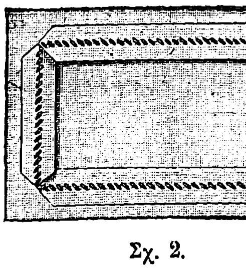

Σχ. 2.

Ἕτερον εἶδος μπαλώματος εἶναι τὸ ἑξῆς: Ἀφαιροῦμεν τὸ ἐφθαρμένον τμῆμα τοῦ ἐνδύματος καὶ κάμνομεν στρίφωμα πρὸς τὰ ἔσω τῶν ἄκρων τῆς ὀπῆς· κόπτομεν ἔπειτα τὸ μπάλωμα, τὰ ἄκρα τοῦ ὁποίου στριφώνομεν ἐπίσης, καὶ πρὸς ἀποφυγὴν ξεφτίσματος τὰ καρικώνομεν μὲ ἀραιὰν φεστοβελονιὰν καὶ κατόπιν ἑνώνομεν τὸ μπάλωμα μὲ παρωβελονιὰν (σχ. 2).

Τὸ μπάλωμα εἰς χονδρὰ ἐξωτερικὰ ἐνδύματα δύναται νὰ γίνῃ ἐν συνδυασμῷ μὲ μαντάρισμα. Τοποθετεῖται τὸ νέον τεμάχιον ἐπάνω εἰς τὸ κατεστραμμένον μέρος, ἔχον ἀκριβῶς τὸ σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος αὐτοῦ· ἑνώνεται μὲ περαστὲς μικρὲς βελονιὲς (βλ. λ. *μαντάρισμα*, εἰκ. 1) μὲ νῆμα τὸ ὁποῖον ἀφαιροῦμεν ἐξ αὐτοῦ τούτου τοῦ ὑφάσματος, κατόπιν ἀφαιρεῖται τὸ ἐφθαρμένον καὶ καρικώνονται τὰ ἄκρα ὡς ἀνωτέρω. Μ. ΔΡ.

**μπαλωματῆς** (ὁ)· αὐτὸς ποῦ μπαλώνει ὑποδήματα, ἀκεστὴς ὑποδημάτων: «ἦρθαν 'ς τὸ χωριὸ μπαλωματῆδες» ‖ «μαλώνουν καὶ τὰ φτιάνουν σὰν τοὺς μπαλωματῆδες».

**μπαλώνω**, *ἀόρ. ἐ)μπάλωσα—ἐ)μπαλώθηκα, παθ. μετχ. μπαλωμένος*· ἐπιδιορθῶ ἐφθαρμένα ἐνδύματα, ὑποδήματα κττ., θέτω ἐπίβλημα, ἐπίρραμμα: «μπάλωσέ μου τὸ πανταλόνι γιατὶ σχίστηκε, — τρύπησε», «δὲν μπαλώνονται πιὰ τὰ ρουχά σου, εἶναι πολὺ τριμμένα» ‖ συνεκδ. ἐπιδιορθῶ ὁτιδήποτε: «μπαλώνω τὰ παράθυρα, — τὸ πάτωμα» ‖ μεταφ. «μπαλώνομαι» ἱκανοποιοῦμαι ἐν μέρει, βοηθοῦμαι: «ἦρθε ὁ θεῖός μου καὶ μπαλωθήκαμε ἀπὸ λεφτά», «καλὰ μπαλώθηκε μ' αὐτὴ τὴ δουλειά» (ἐκ τοῦ ἀόρ. *ἐνέβαλον - ἐμβάλω—παθ. μετχ. ἐμβαλωμένος—μπαλωμένος*, ὅθεν ὁ ἐνεστὼς *μπαλώνω*).

**Μπὰμ** (Bam) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας καὶ φρούριον, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Κιρμάν. Κάτ. 13.000. Κεῖται ἐν ὀρεινῇ τοποθεσίᾳ, πλησίον ὁμωνύμου ποταμοῦ, ἐν μέσῳ κήπων καὶ ὀπωροφόρων δένδρων. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει ὀνομαστὴ ὀχυρὰ ἀκρόπολις, μὲ τείχη ὕψους 40 ποδῶν, ἀνεγερθεῖσα ὑπὸ τῶν Ἀφγάνων, οἵτινες εἶχον κυριεύσει τὴν πόλιν τῷ 1719 καὶ ἐξεβλήθησαν ἐκεῖθεν ὑπὸ τῶν Περσῶν μετὰ ἕνα αἰῶνα. Ἡ περιφέρεια ἐξάγει κυρίως βάμβακα, ἰνδικὸν καὶ ὀπώρας. Μ. Δ. Β.

**Μπαμάκο**, ἢ *Μπαμάκου*, καὶ *Μπαμμάκου* (Bamak, Bammaku) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία καὶ πόλις τοῦ Γαλλικοῦ Σουδάν, ἐν τῇ Δ. Ἀφρικῇ, παρὰ τὸν ποταμὸν Νίγηρα. Ἔχει περὶ τὰς 150.000 κατ. Ἡ χώρα εἶναι ὑγρὰ καὶ εὔφορος, μὲ πλεῖστα δάση, παράγουσα ἀραβικὸν κόμμι καὶ ἐξάγουσα ἀφθονον ξυλείαν. Ἡ πόλις ἔχει 1.200 κατ., εἶναι πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας καὶ ἔχει φρούριον, ὅπου διαμένει ἡ γαλλικὴ φρουρά. Ἡ χώρα αὕτη ἀπετέλει ἄλλοτε βασίλειον, τὸ ὁποῖον ὑπετάγη τῷ 1882 εἰς τοὺς Γάλλους. Μ. Δ. Β.

**Μπαμανγκουάτο** (Bamanguato). Φυλὴ ἰθαγενῶν τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς, κατοικούντων εἰς τὴν περιφέρειαν ἥτις ἐκτείνεται ἀπὸ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ζαμβέζη μέχρι τῶν καταρρακτῶν τῆς Βικτωρίας. Εἰς τὸ κέντρον τῆς χώρας των ὑπάρχουν πολλαὶ λίμναι. Οἱ Μπαμανγκουάτο συγγενεύουν φυλετικῶς πρὸς τοὺς Μπετσουάνας, εἶναι δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον κτηνοτρόφοι καὶ γεωργοί. Π. ΛΣ

**μπάμια** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἰβίσκος ὁ ἐδώδιμος* (βλ. λ.).

**Μπαμιὰν** (Bamian ἢ Bamyan) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τοῦ Ἀφγανιστάν, ἐπὶ ὁμωνύμου ὀροπεδίου ὕψους 2.800 μ., εἰς ἀπόστασιν 135 χλμ. ΒΔ. τῆς πόλεως Καβούλ. Νοτιοδυτικῶς, εἰς μικρὰν ἀπόστασιν, κεῖται ἡ περίφημος φάραγξ Χατζῆ Κάκ, μήκους 14 χλμ., στρατιωτικὴ διάβασις, δι' ἧς λέγεται ὅτι διῆλθον ὁ Μέγας Ἀλέξανδρος καὶ οἱ Μογγόλοι κατακτηταὶ Ταμερλᾶνος καὶ Τεμουδσίν. Ἡ πόλις εἶχε φθάσει κατὰ τὸν ΙΑ' καὶ ΙΒ' αἰῶνα εἰς τοιαύτην ἀκμήν, ὥστε ἐκαλεῖτο «Θῆβαι τῆς Ἀνατολῆς». Σώζονται ἤδη, κατὰ μῆκος τῶν βραχωδῶν ὑπορειῶν, 12.000 σπήλαια-κατοικίαι, ἐσκαμμέναι ἐντὸς τῶν βράχων, ὡς καὶ κολοσσιαῖα ἔκγλυφα ἐπὶ τῶν βράχων, ὁμοιώματα τοῦ Βούδα. Ἐκ τούτων δύο, τὰ μέγιστα, παριστῶσι τὸν θεὸν ὄρθιον, ἐν μέσῳ τεραστίων κοιλωμάτων σκαφέντων εἰς τοὺς βράχους. Ἐπὶ τῶν τοιχωμάτων τῶν σπηλαίων ἀνευρίσκονται καὶ σήμερον ἔτι ζωγραφικαὶ παραστάσεις, σημαντικαὶ διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς ἑλληνοβουδικῆς τέχνης. Ἡ πόλις κατεστράφη τῷ 1221 ὑπὸ τοῦ Μογγόλου χάνου Τεμουδσίν, ἀνῳκοδομήθη μετὰ δύο ἔτη καὶ ἐγκατελείφθη πάλιν ὑπὸ τῶν κατοίκων. Ἐγγὺς τῆς παλαιᾶς πόλεως ὑπάρχει σήμερον χωρίον ἀσήμαντον ὁμώνυμον. Θ. Κ.

**Μπάμο** (Bhamo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῆς Βιρμανίας ἐν ταῖς βρεττανικαῖς Ἰνδίαις. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἄνω Ἰραουάντυ καὶ τῆς κυρίας ὁδοῦ τῆς ἀγούσης παλαιόθεν ἐκ Βιρμανίας εἰς Κίναν. Κάτ. 7.741 (1921). Συνδεομένη σιδηροδρομικῶς διὰ τῆς Μανδαλάϋ μετὰ τοῦ μεγάλου λιμένος τῆς Βιρμανίας καὶ τοῦ Πεκίνου, ἔχει ζωηρὰν κίνησιν διαμετακομιστικοῦ ἐμπορίου μετὰ τῆς Κίνας, ἰδίᾳ τοῦ δυτικοῦ Γιουνάν. Τὸ διαμέρισμα καταλαμβάνει τὴν κοιλάδα τοῦ Ἰραουάντυ καὶ ἔχει πληθυσμὸν 80.000 κατ. Θ. Κ.

**Μπαμοὺν** (Bamun). Ὄνομα ἰθαγενοῦς λαοῦ τῆς δυτικῆς Ἀφρικῆς, κατοικοῦντος ὁμώνυμον περιοχὴν τοῦ Γαλλικοῦ Προτεκτοράτου τοῦ *Καμεροὺν* (ἐπὶ τοῦ κόλπου τῆς Γουϊνέας).

—*[Γεωγρ.]*. Ἡ χώρα τῶν *Μπαμούν*, κατέχουσα τὸ ΒΔ. μεσόγειον τμῆμα τοῦ Καμερούν, ἀποτελεῖται ἐκ βαθμιδωτῶν ὀροπεδίων, ἐξικνουμένων μέχρις ὕψους 2 καὶ 3 χιλ. μέτρων, τῶν ὁποίων ἡ στεππώδης βλάστησις περιλαμβάνει ἀγρίας πόας, θάμνους καὶ ἐλάχιστα μόνον δενδρύλλια· εἰς τὰς κοιλάδας ὅμως ἀπαντῶνται πυκναὶ λόχμαι καὶ δάση ἐνίοτε μεγάλων φοινικοειδῶν. Ἡ περιοχὴ κατοικεῖται ὑπὸ 42.000 περίπου ἰθαγενῶν καὶ ἐλαχίστων Εὐρωπαίων, πρωτεύουσαν δ' ἔχει τὴν Φούμμπαν, κειμένην ἐπὶ ὀροπεδίου ὕψους 1.200 μέτρων. Εἰς τὴν πόλιν ταύτην ἑδρεύουσιν ὁ σουλτᾶνος τῶν Μπαμοὺν καὶ ὁ ἀντιπρόσωπος τοῦ Γάλλου ἁρμοστοῦ μετὰ στρατιωτικῆς φρουρᾶς καί τινων ὑπαλλήλων. Ὁδὸς κατάλληλος δι' αὐτοκίνητα, μήκους 210 χλμ. συνδέει τὴν Φούμμπαν μετὰ τῆς Γκουζάμπα, εἰς ἣν καταλήγει ἡ ἑτέρα τῶν ἐν τῷ γαλλικῷ προτεκτοράτῳ σιδηροδρομικῶν γραμμῶν (μήκους 150 χλμ.).

—*[Ἐθνογρ.]*. Ὁ ἐθνογραφικὸς χαρακτὴρ τῶν Μπαμούν, ὅπως καὶ τοῦ ὅλου πληθυσμοῦ τοῦ Καμερούν, εἶναι εἰς ἄκρον συγκεχυμένος, ἐμφανίζων διαφόρους ποικιλίας, προελθούσας ἐξ ἀλλεπαλλήλων μείξεων. Τὸ χρῶμά των εἶναι κατὰ γενικὸν κανόνα ἀνοικτὸν σοκολατόχρουν, ἀπὸ ἀπόψεως δὲ χαρακτηριστικῶν διαφέρουν κατὰ πολὺ ἀπὸ τῶν ἄλλων Νέγρων, προσεγγίζοντες μᾶλλον πρὸς αἰθιοπικὸν τύπον.

Οἱ κάτοικοι τῆς χώρας διακρίνονται εἰς τοὺς κυρίως Μπαμούν, τοὺς Χαούσσας καὶ τοὺς Μποῤῥόρος· οἱ τελευταῖοι εἶναι νομάδες βόσκοντες ποίμνια βοῶν, οἱ δὲ Χαούσσας ἐπιδίδονται περισσότερον τῶν ἄλλων εἰς τὸ ἐμπόριον. Οἱ κυρίως Μπαμοὺν ἦσαν εἰς παλαιοτέρους χρόνους ἐξ ἐπαγγέλματος πολεμισταί, εὑρισκόμενοι εἰς ἀδιαλείπτους πρὸς τοὺς γείτονάς των ἀγῶνας, ἤδη ὅμως, ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Γάλλων, ἐπιδίδονται μὲ ἀρκετὴν ἱκανότητα καὶ ἰδιοφυΐαν εἰς τὰς τέχνας (ὑποδηματοποιίαν, κεντητικήν, σιδηρουργίαν, ὑφαντικήν, κατασκευὴν ταπήτων ἀπὸ ἶνας τῶν φοινικοειδῶν κλπ.), φαίνονται δ' ἔχοντες ἰδιαιτέραν κλίσιν πρὸς τὴν πηλοπλαστικήν, διὰ τῆς ὁποίας ἐπιτυγχάνουν νὰ κατασκευάζουν ἐν τοῖς ἄλλοις ὁμοιώματα ἀνθρώπων καὶ ζῴων, πρωτογόνου ἀλλ' ἰδιοτύπου τεχνοτροπίας· ἐπίσης ἐπίδοσιν ἔχουν εἰς τὴν ξυλογλυπτικὴν καὶ τὴν κατεργασίαν τοῦ ἐλεφαντόδοντος.

Ὅταν τῷ 1912 εἰσῆλθον εἰς Φούμμπαν οἱ πρῶτοι λευκοί, εὗρον τὴν χώραν ὑποτεταγμένην εἰς ἕνα σουλτᾶνον, τὸν Ν'ζόγια, 16ον ἡγεμόνα τῶν Μπαμούν, ὅστις ἐξακολουθεῖ βασιλεύων καὶ σήμερον. Τῶν διαφόρων χωρίων ἦρχον ἐπιτόπιοι διοικηταί, ὑποτεταγμένοι εἰς τὸν σουλτᾶνον. Αὐτοὶ ἀπονέμουν τὴν δικαιοσύνην, οἱ πολῖται ὅμως δικαιοῦνται νὰ ἐκκαλέσουν τὰς ἀποφάσεις των ἐνώπιον τοῦ ἡγεμόνος, ὅστις συχνὰ τιμωρεῖ μὲ πρόστιμα τοὺς κακῶς δικάσαντας. Ἡ κλοπὴ θεωρεῖται μέγα ἔγκλημα, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ ψεῦδος ἐπεβάλλετο ἐνίοτε ποινὴ θανάτου, ὅπως καὶ εἰς τὴν μοιχείαν. Δὲν ἦτο ἀντιθέτως ἔγκλημα ὁ φόνος ἑνὸς ξένου. Ὁ ἡγεμὼν εἶχεν ἀπόλυτον δικαίωμα ζωῆς καὶ θανάτου ἐπὶ τῶν ὑπηκόων του, αἱ δὲ γυναῖκες καὶ αἱ θυγατέρες του ἠδύναντο νὰ φονεύουν κατ' ἀρέσκειαν τοὺς δούλους καὶ τὰς δούλας των. Εἰς παλαιοτέρους χρόνους δὲν ἐτιμωρεῖτο ἐπίσης ὁ πατὴρ ὁ φονεύων τὰ ἴδιά του τέκνα.

Ἰδιαιτέρως περίεργον ἦτο τὸ κρατοῦν παρὰ τοῖς Μπαμοὺν ἔθιμον, καθ' ὃ ἡ διάρκεια τῆς ζωῆς τοῦ βασιλέως των δὲν ἔπρεπε νὰ παρατείνεται πέραν ὡρισμένου ὁρίου. Ἂν ὁ ἡγεμὼν ἔζη ἀκόμη κατὰ τὴν γέννησιν τοῦ πρώτου ἐγγόνου του, ὁ λαὸς ὤφειλε νὰ τὸν θανατώσῃ. Ἐπειδὴ ὅμως εἶχον δημιουργηθῆ ἐκ τούτου πολλὰ ζητήματα, οἱ δὲ βασιλεῖς μετήρχοντο φυσικὰ πᾶν μέσον διὰ νὰ μὴ ἀποκτήσουν ἐγγόνους, εἶχε καθιερωθῆ κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας ὁ ἀκόλουθος θεσμός: Κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἀναρρήσεως τοῦ βασιλέως ἐστήνετο εἰς δημόσιον ἀσκεπὲς μέρος ἓν ὁμοίωμά του, εἶδος ἀνδριάντος, κατεσκευασμένον ἐξ ἅλατος· ὅταν τὸ ἄγαλμα τοῦτο ἀνελύετο ἐξ ὁλοκλήρου ἐκ τῶν βροχῶν, ἐσήμαινεν ἡ ὥρα τῆς θυσίας τοῦ ἡγεμόνος. Ὁ σημερινὸς ἐν τούτοις σουλτᾶνος δὲν ἐδυσκολεύθη ἐννοεῖται νὰ ἐπιτύχῃ ἀπὸ τοὺς Γάλλους τὴν κατάργησιν τοῦ δυσαρέστου δι' αὐτὸν ἐθίμου, ὁμοῦ μετὰ τῶν ἄλλων ἀπαγορευθεισῶν βαρβάρων συνηθειῶν.

Οἱ Μπαμούν, πλὴν τῶν ἐκχριστιανισθέντων, εἶναι ἐλευθέρως καὶ ἀπεριορίστως πολύγαμοι, κυριαρχοῦσα δὲ παρ' αὐτοῖς θρησκεία εἶναι εἶδός τι φετιχισμοῦ, μὲ ὑπερτάτην θεότητα τὴν γιγαντιαίαν

Digitized by Google

φρικανικὴν ἀράχνην, τῆς ὁποίας τὸ σῶμα ἔχει ιαστάσεις 20—30 ἑκατοστομέτρων. Τὴν συμβουεύονται εἰς σοβαρὰς περιστάσεις, τῇ μεσολαβήσει άντοτε ἑνὸς ἐπισήμου μάγου, ὅστις τοποθετεῖ εἰς ὴν ὀπὴν τῆς ὑπογείου κρύπτης τοῦ ἐντόμου φύλλα ένδρων φέροντα σημεῖα ἀναφερόμενα πρὸς τὸ ρόσωπον ἢ τὴν ὑπόθεσιν, περὶ ἧς ζητεῖται ἡ χρημοδότησις. Ἐξερχομένη τοῦ ἐνδιαιτήματός της ἡ ράχνη μετακινεῖ φυσικὰ τὰ φύλλα καὶ ὁ μάγος υνάγει τὸν χρησμόν του ἐκ τῆς διατάξεως τὴν ποίαν ταῦτα προσλαμβάνουν. Ἡ μυσταγωγία γίεται ὑπὸ τὴν αὐστηροτέραν μορφὴν μυστηρίου, ιεγάλον δὲ κίνδυνον θὰ διέτρεχεν ὁ βέβηλος, ὅστις ὰ ἤθελε νὰ παρακολουθήσῃ τὰ κατ' αὐτήν. Μεαξὺ τῶν Μπαμοὺν ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ ἀρκετοὶ Ιωαμεθανοί, οἱ ὁποῖοι ὅμως εἶναι ἐπιφανειακῶς ιόνον ἀφωσιωμένοι εἰς τὴν θρησκείαν των. Τέλος ὲ ἱκανὸν μέρος τοῦ πληθυσμοῦ, τὸ ¹/₃ περίπου, χει ἤδη προσέλθει εἰς τὸν Χριστιανισμὸν χάρις ἰς τοὺς ἐργαζομένους ἐν Καμεροὺν καθολικοὺς αὶ προτεστάντας ἱεραποστόλους. Εἰς τὴν πρωεύουσαν Φούμμπαν ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐκχριστιανιιθέντων ὑπερβαίνει τὰς 3.000, ἰσάριθμα δὲ παιδία ατηχοῦνται, διδασκόμενα ταυτοχρόνως, ὁμοῦ μετὰ ῆς ἰδικῆς των γλώσσης, καὶ τὴν γαλλικήν.

Οἱ Μπαμοὺν ἔχουν ἰσχυρὸν τὸ αἴσθημα τοῦ οἰογενειακοῦ δεσμοῦ. Ὅλοι οἱ συγγενεῖς μέχρις ιπομεμακρυσμένου βαθμοῦ, οἱ δοῦλοι καὶ οἱ ἐλεύθεροι ὑπηρέται ἔχουν δικαίωμα ἐπὶ τῆς φιλοξεἰας τοῦ οἴκου. Ὁ γενάρχης ἔχει ἐξουσίαν ἐπὶ πάνων τούτων, ὁλόκληρος δὲ ἡ οἰκογενειακὴ ἰδιοκτηία ἀνήκει εἰς αὐτὸν προσωπικῶς. Αἱ κατοικίαι ων, τόσον τῶν πτωχῶν ὅσον καὶ τῶν ἀρχόντων, ἶναι κατὰ γενικὸν κανόνα τετράγωνοι καλύβαι καεσκευασμέναι ἀπὸ στελέχη φοινικοφύλλων, διαγωίως πεπλεγμένα καὶ ἐπικεχρισμένα διὰ πηλοῦ. Αἱ στέγαι εἶναι ὁμοίας κατασκευῆς, εἰς σχῆμα κώου ἢ πυραμίδος, καὶ καλύπτονται ἀπὸ συμπεπιεμένην χλόην. Ὁ σουλτᾶνος ὅμως κατεσκεύασεν ιπὸ τοῦ 1917 ἀνάκτορα ἐξ ὀπτοπλίνθων, ἐπιβληικὰ εἰς ὄγκον καὶ ἔχοντα κατὰ τὴν πρόσοψίν των ιροστύλιον μὴ ἐστερημένον κομψότητος.

Ἡ τροφὴ τῶν Μπαμοὺν συνίσταται ἰδίως ἀπὸ ιατάτας, καρποὺς ἀραβοσίτου ψηνομένους ἐπὶ τῆς ιυρᾶς, μανιόκαν καὶ διάφορα λαχανικά. Καὶ τὸ ιρέας ἐν τούτοις περιλαμβάνεται ἐνίοτε εἰς τὸ ιψολόγιον τῶν οἰκογενειακῶν δείπνων.

Τὴν χώραν πρότερον ἐθέριζον κυριολεκτικῶς ιοικίλαι μεταδοτικαὶ ἀσθένειαι: ἡ σύφιλις, ἡ λέπρα, ἡ ἐλεφαντίασις καὶ ἡ τρομερὰ νόσος τοῦ ὕπνου, ἡ μαστίζουσα ὁλόκληρον τὸ Καμερούν. Ἤδη ὅμως τὰ δεινὰ ταῦτα ἔχουν σημαντικῶς καταπολεμηθῆ διὰ τῶν δραστηρίων μέτρων τῶν γαλλικῶν ὑγειονομικῶν ἀποστολῶν. Τὰ ἤθη ἐξ ἄλλου τῶν Μπαμοὺν ἔχουν ἤδη ἐξ ὁλοκλήρου σχεδὸν ἐξημερωθῆ χάρις εἰς τὴν εὐρωπαϊκὴν διείσδυσιν ἐν τῇ χώρᾳ των, ἥτις δύναται νὰ λογισθῇ ὡς εἰσελθοῦσα ὁριστικῶς εἰς τὸ στάδιον τοῦ πολιτισμοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Sauvaire-Jourdan* «Le Bamonn au Caneroun» (1930). Γ. Ζ.

**Μπὰμπ** (*'Ελ—*) (El Bab) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας, εἰς ἀπόστασιν 50 χιλμ. ΒΑ. τοῦ Χαλεπίου, μεθ' οὗ συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Ἐγγὺς εὑρίσκονται οἱ ἁλυκαὶ Τζεμπούλ. Κάτ. 5.700. Θ. Κ.

**Μπὰμπ.** Πέρσης μεταρρυθμιστὴς (βλ. λ. *Βάβ*).

**Μπὰμπ - 'Ααλῆ.** Ἡ Ὑψηλὴ Πύλη, ἤτοι τὸ ἐν Κωνσταντινουπόλει μέγαρον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἦσαν ἐπὶ σουλτανικοῦ καθεστῶτος ἐν Τουρκίᾳ τὰ γραφεῖα τῆς μεγάλης βεζυρείας, τῶν ὑπουργείων Ἐξωτερικῶν καὶ Ἐσωτερικῶν καὶ τοῦ Συμβουλίου τῆς Ἐπικρατείας. Ἡ μεσαία πτέρυξ τοῦ μεγάρου τούτου, ἡ περιλαμβάνουσα τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τὸ Συμβούλιον τῆς Ἐπικρατείας, ἀπετεφρώθη τῷ 1909, ἀλλ' οὐδέποτε ἔκτοτε ἀνῳκοδομήθη. Τὰ ὑπόλοιπα τοῦ ἐπιμήκους κτηρίου χρησιμοποιοῦνται καὶ σήμερον ὡς κυβερνητικὰ γραφεῖα.

Ἡ ὀνομασία προέρχεται ἐκ τοῦ ἀπὸ τῆς ἀρχαίας Περσίας γνωστοῦ ἀκόμη ἐθίμου τῶν βασιλέων, καθ' ὃ ἐδέχοντο ἀκροάσεις καὶ ἐδίκαζον ἐνώπιον τῆς πύλης τῶν ἀνακτόρων ἢ τῆς εἰσόδου τῆς βασιλικῆς σκηνῆς. Ν. Μ.

**Μπαμπᾶ** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καλλιανοῦ τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 52.

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Τέμπη* (βλ. λ.). Χ. Δ.

— **Μπαμπᾶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τουρκίας παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Μπαμπᾶ-μπουρνοὺ (Λεκτόν), ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Μπίγα τοῦ νομοῦ Τσανὰκ-καλέ. Ἐδῶ κατεσκευάζοντο ἄλλοτε περίφημα γιαταγάνια. Ν. Μ.

— **Μπαμπᾶ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἀκρωτήριον τῆς πρὸς τὸν Βόσπορον μικρασιατικῆς ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου, ἔχον μέγαν φάρον (πλάτ. 41° 18′ Β., μῆκ. 31° 26′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2238: Bosporus to Kerempeh), σχηματίζον δὲ πρὸς Δ. αὐτοῦ τὸν λιμένα *Μπεντὲρ Ἐρεκλῆ*. Εἶναι ἡ *Ἀχερουσιὰς Χερρόνησος* τῆς χώρας τῶν Μαριανδυνῶν (*Ξενοφ.*, Κύρ. Ἀνάβ. ΣΤ, β, 2), «ἔνθα λέγεται ὁ Ἡρακλῆς ἐπὶ τὸν Κέρβερον κύνα καταβῆναι, ᾗ νῦν τὰ σημεῖα δεικνύουσι τῆς καταβάσεως τὸ βάθος πλέον ἢ ἐπὶ δύο στάδια».

—2) Ἀκρωτήριον τοῦ Μαρόκκου (Cabo Baba, πλάτ. 35° 10′ Β., μῆκ. 4° 14′ Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 2717: Cape Spartel to cape Ferrat), ἀκρότομος ὄγκος σιδηρολίθου, ἔχον πρὸ αὐτοῦ τὴν περιώνυμον ἐν τῇ μεσαιωνικῇ ναυτικῇ ἱστορίᾳ νησῖδα *Πενιὸν-ντὲ-Βελὲθ* (βλ. λ.).

—3) Μικρασιατικὴ νῆσος προσκειμένη εἰς τὴν Ν. ἀκτὴν τῆς χερσονήσου τῆς Δωρίδος (πλάτ. 36° 39′ 20″ Β., μῆκ. 27° 32′ 45′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: Gulfs of Kos, Doris and Symi) πρὸ τοῦ μεγάλου ὅρμου *Ἅϊ Γεώργης*. Σ. Ε. Λ.

— **Μαμπᾶ-μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Μικρασιατικὸν ἀκρωτήριον, ΒΔ. κέρας τοῦ Ἀδραμυττηνοῦ κόλπου (πλάτ. 39° 29′ Β., μῆκ. 26° 04′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1665: Mityleni island). Εἶναι τὸ *Λεκτὸν* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

—2 Ἀκρωτήριον τῆς ἐπὶ τῆς Προποντίδος ἀκτῆς τῆς Ἀν. Θρᾴκης (πλάτ. 40° 58′ 45″ Β., μῆκ. 28° 33′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2604: Sau Stephano to Erekli). Ἀπέχει τῆς Συληβρίας 14 μίλλ. Α. ΝΑ. καὶ ἀποτελεῖ τὸ ΝΔ. κέρας τοῦ λιμένος Μπουγιοὺκ-Τσεκμεζέ. Σ. Ε. Λ.

— **Μπαμπᾶ-ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, πρὸς Δ. τοῦ Κάδμου, τοῦ ὁποίου εἶναι ἔκφυσις. Ὕψος 2.315 μ. (εἶναι ὁ *Σάλβακος* τῶν ἀρχαίων). Ν. Μ.

**Μπαμπᾶ-πασᾶς** (*Μπεχλιβὰν-πασᾶς*). Στρατηγὸς τῆς Τουρκίας (1750-1820), διακριθεὶς κατὰ τὸν ΙΗ′ αἰῶνα καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ′ εἰς τοὺς ἐναντίον τῶν Περσῶν καὶ Ρώσων πολέμους. Ἐχρημάτισε διοικητὴς Δαμασκοῦ, Ἀγκύρας καὶ Βελιγραδίου καὶ τῷ 1818 προήχθη εἰς Ρούμελη-βαλεσῆν, ἐδρεύοντα ἐν Σόφιᾳ τῆς Βουλγαρίας. Ἐπρόκειτο νὰ σταλῇ κατὰ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τοῦ Τεπελενλῆ τῶν Ἰωαννίνων, ἀλλὰ ραδιουργίαι ἐνεργηθεῖσαι καταλλήλως ἐματαίωσαν τὴν ἐκστρατείαν ταύτην, σταλέντος, ὡς γνωστόν, τοῦ Μόρα-βαλεσῆ Χουρσὶτ πασᾶ, αὐτὸς δὲ ἐδηλητηριάσθη σουλτανικῇ διαταγῇ. Τ. Ε. Ε.

— **Μπαμπᾶ-Φιανί.** Πέρσης ποιητής, καταγόμενος ἐκ Σιράζ, ἀλλ' ἀκμάσας ἐν Χορασὰν καὶ Ἰρὰκ-ἀραμπί. Διετέλεσεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Οὐζοὺν Χασάν. Ἀπέθανε τῷ 1519. Ν. Μ.

**Μπαμπάγια,** ἢ ***Μπαμπάρα*** (Bambaia, ἢ Bambara). Ἰταλὸς γλύπτης (βλ. λ. *Μπούστι Αὐγουστῖνος*).

**μπαμπαγιοῦροι** (οἱ), ἢ ***μπαμπόγεροι*** *[Λαογρ.]*· βλ. λ. *κουδουναραῖοι*.

**μπαμπαδέλια** (τὰ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτικῶν γλώσσης, σημαίνων: 1) Τοὺς *κιονίσκους* ἢ τοὺς *ποδοδέτας*, ὁπότε λέγονται καὶ *καμπανέλια*. 2) Τὰ *σταμινάρια* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**μπαμπᾶδες** (οἱ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτικῶν γλώσσης σημαίνων ἐν γένει τοὺς *κίονας* (βλ. λ). «*Μπαμπᾶδες τοῦ κορακιοῦ*»=οἱ *παραστάται* τοῦ προβόλου. Σ. Ε. Λ.

**Μπαμπᾶ-'Εσκῆ,** ἢ ***Μπαμπᾶ-Ἔσκισι,*** ἢ ***Μπαμπάϊ-'Ατὲκ*** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Ἀνατ. Θρᾴκης (Τουρκία), ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως ἐν τῷ νομῷ Κιρκλὰρ-'Ελὶ (πρώην Κὶρκ-Κιλισὲ) τῆς γενικῆς διοικήσεως Ἀδριανουπόλεως, κειμένη 50 περίπου χλμ. ΝΑ. τῆς πόλεως ταύτης, ἐπὶ τῆς πρὸς τὴν Κωνσταντινούπολιν ὁδοῦ, καὶ 30 χλμ. ΝΔ. τῶν Σαράντα Ἐκκλησιῶν. Κατὰ τὴν ἑλληνικὴν κατοχὴν εἶχε μετονομασθῆ εἰς *Ἀρτισκὸν* ἢ *Ἐλευθερὰς* καὶ ἦτο ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Σαράντα Ἐκκλησιῶν, ἠρίθμει δὲ κατ. (1920) 3.108. Σήμερον ἔχει (1927) 3.047 κατ. Κατέχει τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας πόλεως *Βουρτουδιζὸς* (βλ. κατωτ. *[Ἱστορ.]*). Χ. Λ.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ ἀρχαία πόλις, τῆς ὁποίας ἡ θέσις κατέχεται σήμερον ὑπὸ τοῦ Μπαμπᾶ-'Εσκῆ, καθορίζεται ὑπὸ τῶν ἀρχαίων γεωγράφων καὶ τῆς Tabula Peutingeriana, ὡς ἀπέχουσα 26 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς Ἀδριανουπόλεως. Τὸ ὄνομα ὅμως αὐτῆς φέρεται ὑπὸ ποικίλας παραλλαγάς. Οὕτω π. χ. τὸ «Ὁδοιπορικὸν» τοῦ Ἀντωνίνου ὀνομάζει αὐτὴν *Βουρτουδιζόν*, ἡ Tabula Peutingeriana *Burdizo*, τὸ Ὁδοιπορικὸν τῶν Βορδιγάλλων *Burdista*, ὁ δὲ Προκόπιος εἰς τὸ «Περὶ Κτισμάτων» *Βουρτουδγιζί*. Εἶναι ὄνομα καθαρῶς θρᾳκικόν, ἡ δὲ κατάληψις δίζος ἢ δίζα σημαίνει φρούριον ἢ ὀχυρὸν (π. χ. Οὐστούδιζος, Ταρπόδιζος, Τυρόδιζα καὶ ἄλλα).

Πολλοὶ τῶν γεωγράφων τοποθετοῦσιν ἐνταῦθα τὴν *Καβύλην*, καὶ ταύτην ἀρχαίαν θρᾳκικὴν πόλιν. Ἀλλὰ τοῦτο προέρχεται μᾶλλον ἐκ παρερμηνείας τοῦ γεωγράφου Πτολεμαίου, ὅστις ἀναφέρει τὴν Καβύλην εὐθὺς μετὰ τὴν Βεργούλην (ΙΙΙ, 11, 7)· ἐπειδὴ δὲ ἡ Βεργούλη ἔκειτο ὅπου ἡ Ἀρκαδιούπολις (τὸ σημερικὸν Λουλὲ-Βουργάζ), ἐνόμισαν ὅτι ἡ Καβύλη ἔκειτο εἰς τὸν μετὰ τὴν Βεργούλην στρατιωτικὸν σταθμόν, δηλαδὴ τὸ Μπαμπᾶ-'Εσκῆ. Βέβαιον ἀντιθέτως εἶναι ὅτι κατὰ τὸν μέσον αἰῶνα ἔκειτο ἐνταῦθα τὸ *Βουλγαρόφυγον*, φρούριον τὸ ὁποῖον πολλάκις ἀναφέρουσιν οἱ ἡμέτεροι καὶ ξένοι χρονογράφοι, ἐκ τούτου δὲ προῆλθε μεταβολὴ τοῦ ὀνόματος Βουρτουδιζὸς εἰς Βουλγαρόφυγον. Ἡ μετονομασία αὕτη συνετελέσθη, φαίνεται, κατὰ τὸν Ζ′ ἢ Η′ αἰῶνα, καθ' ὅσον, ὅτε τῷ 787 συνεκροτήθη ἡ Ζ′ Οἰκουμενικὴ σύνοδος, ἀναφέρεται διὰ πρώτην φορὰν ὡς προεδρεύσας ἐν αὐτῇ ἱεράρχης φέρων τὸν τίτλον τοῦ ἐπισκόπου Βουλγαροφύγου.

Τὸ φρούριον, κατὰ τὴν ὀλεθρίαν ἐπιδρομὴν τοῦ Κρούμου ἐν Θρᾴκῃ, τῷ 813, ἡλώθη μετὰ πολλῶν ἄλλων ὑπὸ τῶν Βουλγάρων καὶ ἡ πόλις ὑπέστη τὰ πάνδεινα ἐκ τῆς βουλγαρικῆς ἀγριότητος καὶ θηριωδίας. Ἀλλ' ἀποθανόντος τοῦ Κρούμου κατα τὸ ἑπόμενον ἔτος (τῇ 13 Ἀπριλίου 814) ἐν Ἀρκαδιουπόλει, τὸ Βουλγαρόφυγον περιῆλθεν ἐκ νέου εἰς τὸ Βυζάντιον ἐπὶ Λέοντος τοῦ Ἀρμενίου (813—820). Ἐνταῦθα τῷ 893 ἐγένετο ἡ φοβερὰ σύγκρουσις μεταξὺ Συμεών, βασιλέως τῶν Βουλγάρων, καὶ τοῦ Κατακαλών, ἀναξίου στρατηγοῦ Λέοντος τοῦ Σοφοῦ. Ὁ δὲ Ἀλέξιος Α′ ὁ Κομνηνὸς τὸ Βουλγαρόφυγον εἶχεν ὡς ὁρμητήριον, ὅταν ἐπεχείρησε τὴν κατὰ τῶν Πετσινάκων (Βοσνιάκων) μακρὰν ἐκστρατείαν του.

Ἐπὶ τῶν Τούρκων τὸ φρούριον ἐκυριεύθη ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Α′, τῷ 1361, μετονομασθὲν *Ἀτὶκ* ἢ *Μπαμπᾶ-'Εσκῆ*, πρὸς τιμὴν ἐπισήμου τινὸς δερβίσου (Μπαμπᾶ), παρακολουθοῦντος τὸν στρατὸν καὶ μεγάλης τιμῆς ἀπολαύοντος. Ὁ ἐν τῇ πόλει ἀρχαῖος βυζαντινὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Νικολάου μετεβλήθη εἰς τεκὲν τοῦ δερβίσου, ὅπου σῴζεται μέχρι σήμερον ὁ τάφος του καὶ κατ' ἔτος προσέρχεται πλῆθος προσκυνητῶν. Α. Θ. Σ.

**Μπαμπὰκ** (Babac) *[Γεωγρ.]*. Ἀδριατικὴ νῆσος (πλάτ. 43°51′Β., μῆκ. 15°24′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2774: Grossa island to Zironna) ἐν τῷ διέκπλῳ τοῦ Πασμὰν πλησίον τῆς Παλαιᾶς Ζάρας (Zara Vecchia). Σ. Ε. Λ.

**Μπάμπακα,** ἢ ***Μπούμπουκα*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μανεσίου τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 207. Χ. Δ.

**μπαμπάκι** (τό)· δημοτ., ἀντὶ *βάμβαξ* (βλ. λ.).

**Μπαμπᾶ - κιόϊ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Μεσιὰ* (βλ.λ.).

**μπαμπακοκάρυδο** (τὸ) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *βαμβακοκάρυον*.

**Μπαμπακοὺλ** (Baba-koul) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη ἐν Κίνᾳ, εἰς τὸ ἀνατολικὸν Τουρκεστάν, βορείως τοῦ ποταμοῦ Ταρίμ, παρὰ τοὺς νοτίους πρόποδας τοῦ ὄρους Τιὲν-Σάν. Ἔχει μῆκος 30 χλμ. καὶ πλάτος 12 χλμ. Θ. Κ.

**Μπαμπαλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Γονικὸν* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ἕβρου.

**Μπαμπαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Εἷς τῶν 7 συνοικισμῶν τῆς κοινότητος Σκαλανίου τῆς ἐπαρχίας Πεδιάδας τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης, εὐφορώτατος εἰς ποικίλα προϊόντα. Κάτ. (1928) 107. Ἐκ τῶν ὑδάτων τῆς περιοχῆς αὐτοῦ ὑδρεύεται τὸ Ἡράκλειον. Ε.Γ.

— **Μπαμπαλῆ-*Χάνι*** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καΐνας τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου τοῦ νομοῦ Χανίων Κρήτης. Κάτ. (1928) 91. Ἡ τοποθεσία εἶναι ἱστορικὴ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Δασκαλογιάννη, ὅτε οἱ Τοῦρκοι συνηθροίσθησαν ἐνταῦθα πρὶν ἐξορμήσωσι κατὰ τῶν Σφακιῶν. Διὰ τοῦ συνοικισμοῦ διέρχεται ἡ ἑνώνουσα τὰς πόλεις τῆς Κρήτης ὁδικὴ ἀρτηρία. Ε. Γ.

**μπαμπαλῆς** (ὁ), καὶ *μπαμπάλης*· γέρων ἀνίκανος πρὸς ἐργασίαν· || φλύαρος, ἀνόητος.

**Μπαμπαλιοῦ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Καστρακίου (Κριεκουκίου) τῆς ἐπαρχίας Βάλτου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 337. Χ. Δ.

**Μπαμπαντὰγκ** (Babadag) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας, ἐν τῇ Δοβρουτσᾷ, νομῷ Τούλτσεα, εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς μεγάλης λιμνοθαλάσσης Ραμσίν, δι' ἧς καὶ ἐπικοινωνεῖ μετὰ τοῦ Εὐξείνου Πόντου, καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Τούλτσεα - Κωνστάντζης - Ντόμπριτς Κάτ. 4.781 (1915). Εἶναι κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν. Ἡ πόλις ἐκτίσθη κατὰ τὸν ΙΔ′ αἰῶνα ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Βαγιαζὶτ τοῦ Α′, ὑπῆρξε πρωτεύουσα τῆς Δοβρουτσᾶς ἀπὸ τοῦ 1771 καὶ ἐχρησίμευσεν ὡς στρατηγεῖον τῶν Τούρκων εἰς τοὺς κατὰ τῆς Ρωσίας πολέμους. Τῷ 1878 ἐξεχωρήθη εἰς τὴν Ρουμανίαν μεθ' ὁλοκλήρου τῆς Δοβρουτσᾶς. Θ. Κ.

**Μπαμπάρα** (Bambara) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἄνω Σενεγάλης ἐν τῇ δυτικῇ Ἀφρικῇ, εἰς ἀπόστασιν 150 χλμ. Ν. τοῦ Τιμπουκτοῦ. Θ. Κ.

Digitized by Google

**Μπαμπαρὸς** (Bambaros). Ἀφρικανικὴ φυλὴ ἕλκουσα τὴν καταγωγήν της ἐκ τῶν παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Νίγηρος ὀρεινῶν περιφερειῶν τοῦ Τορὸγκ καὶ τοῦ Κόνγκο. Ἐκεῖθεν οἱ Μπαμπαρὸς κατῆλθον καὶ ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Νίγηρος. Ὑποταχθέντες ἐνωρὶς ὑπὸ Μουσουλμάνων ἠγωνίσθησαν πάντοτε κατὰ τῆς κυριαρχίας τούτων, ἐδέχθησαν δὲ μετὰ χαρᾶς τοὺς Γάλλους, ἀνακτήσαντες τὰ ἀνεξάρτητα κρατίδιά των *Μπελεντοῦγκον, Καάρτα, Μπανίγκο* κτλ. Οἱ Μπαμπαρὸς ἀνήκουν εἰς τὴν νιγριτικὴν φυλὴν καὶ εἰς τὴν γλωσσικὴν οἰκογένειαν τῶν Μαντές. Συχνὰ συναντᾷ τις μεταξὺ αὐτῶν τύπους μὲ τὴν ῥῖνα κανονικὴν καὶ τὰ χείλη λεπτά. Εἶναι φιλόξενοι, γενναῖοι καὶ φιλοπόλεμοι. Ἡ σύζυγος θεωρεῖται δούλη τοῦ συζύγου. Κατὰ μεγάλην πλειοψηφίαν εἶναι φετιχισταί. Π. Γ. Λ.

**μπαμπᾶς** (ὁ)· δημοτ., πατὴρ (ἰδίᾳ ἐν τῇ παιδικῇ γλώσσῃ): «ὁ μπαμπᾶς καὶ ἡ μαμμά».

**Μπαμπέκ,** ὁ ἐπιλεγόμενος *Φερράχ*. Πέρσης αἱρεσιάρχης ἐπὶ τοῦ Ἀββασίδου χαλίφου Μααμούν, κηρύσσων πρὸς τοῖς ἄλλοις τὸν φόνον τῶν γυναικῶν. Ἐθανατώθη τῷ 838 ἐν Βαγδάτῃ. Ν. Μ.

**Μπάμπελ, *Ἰσαὰκ Ἐμμανουήλοβιτς*.** Σύγχρονος Ῥῶσος πεζογράφος, τὴν ἐθνικότητα Ἑβραῖος, γεννηθεὶς ἐν Ὀδησσῷ τῷ 1894. Ἀπεφοίτησε τῆς σχολῆς τῆς κοινωνικῆς καὶ πολιτικῆς οἰκονομίας τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Κιέβου. Ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ῥωσικὴν ἐπανάστασιν, ὑπηρετῶν εἰς τὸ περίφημον ἱππικὸν τοῦ Μπουτιόννι. Ἀκριβολεξία καὶ παραστατικὴ ἔκφρασις, λιτότης καὶ σαφήνεια, εἶναι ὅ,τι χαρακτηρίζει τὸ ἔργον του. Ἔγραψε: «Τὰ διηγήματα τῆς Ὀδησσοῦ» (Μόσχα, 1925), «Τὸ Ἱππικὸν» (Μόσχα 1924, 1925), «Διηγήματα» (Μόσχα 1925), «Ἡ ἱστορία τοῦ περιστερεῶνός μου» (Μόσχα 1925), «Ἀπὸ τὸ ἡμερολόγιόν μου» (Μόσχα 1924) καὶ ἄλλα. Ε. Ι. Χ.

**Μπαμπελιστὰν** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικόν, ἀραβικὸν καὶ περσικὸν ὄνομα τῆς Βαβυλωνίας (*Μπαμπέλ*=Βαβυλών).

**Μπάμπ-ἐλ-Μαντέμπ** (Bab-el-Mandeb) *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βὰβ-ἐλ-Μανδέβ*.

**Μπαμπελὸν** (Babelon), ***Ἐρνέστος***. Εἷς τῶν μεγαλυτέρων νομισματολόγων τῆς Γαλλίας, γεννηθεὶς εἰς Sarrey (1854—1924). Τῷ 1892 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ Νομισματικοῦ μουσείου ἐν τῇ Ἐθνικῇ βιβλιοθήκῃ τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1897 ἀκαδημαϊκός. Ἀπὸ τοῦ 1903 ἐδίδαξε νομισματικὴν εἰς τὸ Collège de France. Τῷ 1883 ἠσχολήθη μὲ τὰς ῥωμαϊκὰς ἐπιγραφὰς τῆς Β. Ἀφρικῆς καὶ τῷ 1885 ἐξέδιδε τὸ πρῶτον ἔργον του: «Τὰ νομίσματα τῆς ῥωμαϊκῆς δημοκρατίας», τὸ ὁποῖον δὲν ἐπεσκιάσθη ἀπὸ κανὲν νεώτερον σχετικὸν ἔργον. Πολλαὶ μελέται του ἀνάγονται εἰς τὴν νομισματικὴν τῆς Ἀνατολῆς («Rois de Syrie», «Les Perses Achéménides», 2 τόμ. 1893) καὶ εἰς τὴν σφραγιδογλυφίαν («La gravure en pierre fine», «Histoire de la gravure sur gemmes» κ. ἄ.). Μετὰ τοῦ Blanchet συνέταξε κατάλογον τῶν χαλκῶν τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης τῶν Παρισίων καὶ ὁδηγὸν τῶν ἐν αὐτῇ ἀρχαίων καὶ μεσαιωνικῶν ἀντικειμένων. Τῷ 1897 συνέταξε τὸν κατάλογον τῆς συλλογῆς Waddington καὶ μετὰ τοῦ Reinach τὸν πρῶτον τόμον τοῦ ὑπὸ τοῦ Waddington ἀρξαμένου «Corpus» τῶν νομισμάτων τῆς Μ. Ἀσίας. Ὑπῆρξε συνεργάτης πλείστων περιοδικῶν, ἀπὸ τοῦ 1901 δὲ ἤρχισε συγγράφων τὸ σπουδαιότερον νομισματικὸν ἔργον του: «Σύστημα ἑλληνικῆς καὶ ῥωμαϊκῆς νομισματικῆς», ἀφῆκεν ὅμως τοῦτο ἡμιτελές, ἐκδώσας μόνον τρεῖς τόμους. Τὸ ἔργον του τοῦτο, καινοτομῶν, στηρίζει ἐπὶ χρονολογικῶν καὶ ὄχι γεωγραφικῶν διαιρέσεων. Ε. Β.-Χ.

**Μπάμπελσμπεργκ** (Babelsberg). Μέχρι τοῦ 1918 γερμανικὸν βασιλικὸν ἀνάκτορον, ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ὑψώματος, πλησίον τοῦ Πότσδαμ, κτισθὲν ἀπὸ τοῦ 1835—1849 ἐπὶ σχεδίων τοῦ Σίνκελ καὶ Στράκ. Περιβάλλεται ὑπὸ θαυμασίου πάρκου, εἰς τὰς παρυφὰς τοῦ ὁποίου ἀνηγέρθη τῷ 1911—1913 ἀστεροσκοπεῖον. Εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦτο διέμενε κατὰ προτίμησιν ὁ αὐτοκράτωρ Γουλιέλμος Α΄. Θ. Κ.

**Μπαμπὲν** (Babin), ***Ἰάκωβος-Παῦλος***. Γάλλος ἰησουΐτης, γεννηθεὶς ἐν Ἀνζὲρ τῷ 1651 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1734. Πλὴν ἄλλων ἔγραψε καὶ «Relation de l'état présent de la ville d'Athènes, ancienne capitale de la Grèce, bâtie depuis 3.400 ans, avec un abrégé de son histoire et de ses antiquités» (Lyon 1674). Διὰ τοῦ ἔργου του τούτου ἔδωκεν ὁ Μπαμπὲν εἰς τὸ εὐρωπαϊκὸν κοινὸν τὴν μόνην ἕως τότε ἀληθῆ καὶ ἐπὶ τῶν πραγμάτων βασιζομένην περιγραφὴν τῶν Ἀθηνῶν μετὰ σχεδιαγράμματος καὶ ἀπόψεως τῆς πόλεως, εἰ καὶ ἐν πολλοῖς σφάλλεται εἰς τὴν ἀναγραφὴν τῶν διαφόρων ὀνομασιῶν. Μέρος αὐτοῦ ἐδημοσιεύθη ὑπὸ Δ. Γρ. Καμπούρογλου ἐν μεταφράσει ἐν τοῖς «Μνημείοις» (τ. Α΄, σ. 193—209). Δ. Π. Π.

**Μπαμπὲν *δημοκρατία*** (Republique de Babin)· βλ. λ. ***Βαβινικὴ πολιτεία***.

**Μπάμπενχάουζεν** (Babenhausen) *[Γεωγρ.]*. Πρῴην γερμανικὸν πριγκιπᾶτον ἐν Σουηβίᾳ, περιελθὸν εἰς τὴν Βαυαρίαν τῷ 1806. Ἡ παλαιὰ ὁμώνυμος πρωτεύουσα εἶναι σήμερον μικρὸν χωρίον (2.098 κατ.), ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γκύντς. Θ. Κ.

**Μπάμπερ** (Barbour), ***Ἰωάννης***. Σκῶτος ποιητὴς (1316—1395). Τὸ καλύτερον ἔργον του εἶναι ἡ ἱστορία τοῦ Ροβέρτου Μπροὺς («The Bruce»), τὸ ὁποῖον συνέταξε τῷ 1375. Εἶναι ἔμμετρον χρονικὸν εἰς 20 βιβλία ἐκ 13.500 καὶ πλέον στίχων, ἀναφερόμενον εἰς τοὺς ὑπὲρ ἐλευθερίας ἀγῶνας τῶν Σκώτων ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ βασιλέως τῆς Σκωτίας Ροβέρτου τοῦ Α΄. Ὁ Μπάμπερ θεωρεῖται ὡς πατὴρ τῆς σκωτικῆς ποιήσεως. Πολλοὶ Ἄγγλοι φιλόλογοι θεωροῦσιν αὐτὸν ὡς συγγραφέα καὶ τῶν «Μύθων τῶν Ἁγίων» καὶ τοῦ «Μύθου τοῦ Ἀλεξάνδρου». Γ. Ι. Β.

**Μπαμπὲρ** (=Τίγρις) ***Ζαχὶρ-ἐτ-ντὶν Μωχάμμετ***. Ἀπόγονος (τετρακισέγγονος) τοῦ Ταμερλάνου, ἱδρυτὴς τῆς μογγολικῆς δυναστείας, ἥτις ἐκυριάρχησεν ἐπὶ ἔτη τῶν Ἰνδιῶν. Ἐγεννήθη τῷ 1483 ἐκ πατρὸς Ὀμὲρ-Σεΐχ, ἡγεμόνος ἢ βασιλέως τῆς περσικῆς χώρας Φέργανα, μέρος τῆς ὁποίας εἶναι τὸ σημερινὸν ῥωσικὸν Τουρκεστάν. Διαδεχθεὶς τὸν πατέρα του εἰς ἡλικίαν 12 ἐτῶν, ἐπολέμησεν ἐπὶ 11 ἔτη κατὰ τῶν Τατάρων καὶ Οὐζμπέκων ἡγεμόνων· ἐννοήσας ὅμως ὅτι δὲν θὰ δυνηθῇ νὰ ἀντισταθῇ, ἐστράφη πρὸς τὸ Ἀφγανιστάν, τὸ ὁποῖον κατέκτησε. Μετὰ ὑπερεικοσαετῆ κυβέρνησιν ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ ἐξεστράτευσεν, ἐπὶ κεφαλῆς 12.000 ἀνδρῶν, κατὰ τῶν Ἰνδιῶν, ὅπου ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Δελχί, Ἰμπραχίμ, εἶχε καταστῇ μισητὸς εἰς τὸν λαόν. Οὗτος, ἡγούμενος στρατοῦ 100.000 ἀνδρῶν μετὰ πολλῶν ἐλεφάντων, ἐξῆλθεν εἰς ἀπάντησιν τοῦ Μπαμπέρ. Οἱ δύο στρατοὶ συνηντήθησαν τῇ 21 Ἀπριλίου 1526 ἐν Πανιπάτ. Ὁ Ἰμπραχὶμ ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην, ὁ δὲ στρατός του κατεστράφη. Οὕτως ὁ Μπαμπὲρ εἰσῆλθε νικητὴς εἰς Δελχί, ἱδρύσας κράτος μέγα καὶ ἰσχυρόν. Ἀπέθανε τῷ 1530. Ὁ τάφος του εὑρίσκεται ἐν Καβούλῃ.

Ὁ Μπαμπὲρ ἦτο ἔξοχος ξιφομάχος καὶ τοξότης. Θεωρεῖται ἡγεμὼν ἐξ ἴσου πολεμικὸς καὶ φρόνιμος πολιτικός, ἐχειρίζετο δὲ τὸν κάλαμον τόσον καλῶς ὅσον καὶ τὸ ξίφος. Ὁρμητικὸς εἰς τὰς ἐπιθέσεις του, ἐπωνομάσθη ἐκ τούτου Τίγρις. Τὸν βίον του ἔγραψεν ὁ ἴδιος εἰς τσαγαταϊκὴν διάλεκτον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τοζέκι-Μπαμπερί», μεταφρασθεῖσαν εἰς τὴν περσικὴν κατὰ διαταγὴν τοῦ ἐγγόνου του Ἐκμπὲρ-σὰχ ὑπὸ τοῦ Ἀβδουρραχμὰν χάν, εἰς δὲ τὴν ἀγγλικὴν τῷ 1826 ὑπὸ τῶν Leyden καὶ Erskine. Ν. Μ.

—**Μπαμπέρ, *Μιρζᾶ***. Δισέγγονος τοῦ Ταμερλάνου. Ἡγεμόνευσεν ἐν Χορασὰν καὶ κατόπιν ἐν Χεράτῃ τοῦ Ἀφγανιστάν. Ἀπέθανεν ἐν Μεσχὲτ τῆς Περσίας τῷ 1457. Ἦτο καὶ στιχουργός. Ν.Μ.

**Μπάμπεργκ** (Bamberg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, ἐν τῷ βαυαρικῷ νομῷ Ὀμπερφράνκεν (Ἄνω Φραγκονίας). Κάτ. 49.478 (1925). Ἀξιόλογα μνημεῖα ἔχει τὸν καθεδρικὸν ναόν, κτισθέντα ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἑρρίκου Β΄ τῷ 1004, κεκοσμημένον δι' ἀγαλμάτων, κενοτάφιον τοῦ αὐτοκράτορος καὶ τῆς συζύγου του, καὶ περικλείοντα τὸν τάφον τοῦ πάπα Κλήμεντος Β΄· ἐπίσης τὸ παλαιὸν καὶ τὸ νέον ἀνάκτορον καὶ τὸ δημαρχεῖον, τὸ πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1585 καὶ καταργηθὲν τῷ 1803, καὶ τὴν βιβλιοθήκην, μὲ 450.000 τόμους, πλεῖστα πολύτιμα χειρόγραφα, χαλκογραφίας καὶ ξυλογραφίας. Ἡ πόλις, ἀνθοῦσα κατὰ τὸν ΙΖ΄ καὶ ΙΗ΄ αἰῶνα, παρήκμασεν ἀπὸ τοῦ 1802, ὅτε ἔπαυσε νὰ εἶναι ἡ πρωτεύουσα, ἀλλ' ἀνέλαβε πάλιν ταχέως διὰ τῆς ἀναπτύξεως τῆς σιδηροδρομικῆς συγκοινωνίας, ἧς ἐγένετο σημαντικὸν κέντρον. Ἔχει βιομηχανίαν ζυθοποιίας, ὑφαντουργίας, ἐριουργίας, σχοινοποιίας, κωδώνων καὶ ἠλεκτρικῶν εἰδῶν. Κατὰ τὴν κομμουνιστικὴν ἐπανάστασιν τοῦ Μονάχου τοῦ 1919, ἡ κυβέρνησις τῆς Βαυαρίας μετεφέρθη εἰς τὴν πόλιν ταύτην. Ἐνταῦθα ἐγκατεστάθη καὶ ἀπέθανεν ὁ βασιλεὺς τῆς Ἑλλάδος Ὄθων μετὰ τὴν ἐξορίαν του. Θ. Κ.

**Μπαμπέργκα** (Bamberga) *[Ἀστρον.]*. Ἀστεροειδὴς φερόμενος κατὰ τὴν σειρὰν τῆς ἀνακαλύψεως αὐτοῦ ὑπ' αὔξοντα ἀριθμὸν 324. Ἀνεκαλύφθη τῇ 25 Φεβρουαρίου 1892, τὰ δὲ ἐλλειπτικὰ στοιχεῖα τῆς τροχιᾶς του διὰ τὴν 1ην Ἰανουαρίου 1910 εἶναι τὰ ἑξῆς: α=2.682, Τ=1604, e=0.339, i=11°19′, L=151°46′, Ω=329°9′ καὶ π=9°28′. Σ. Π.

**Μπαμπεργκερ** (Bamberger), ***Ἑρρῖκος φὸν —***. Ἐπιφανὴς Οὔγγρος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Πράγᾳ (1822—1888). Τῷ 1854 ἐκλήθη ἐν Βυρτσβούργῃ εἰς τὴν ἕδραν τῆς εἰδικῆς νοσολογίας καὶ θεραπευτικῆς, τῷ δὲ 1872 μετετέθη εἰς Βιέννην διὰ τὴν αὐτὴν ἕδραν καὶ τὴν διεύθυνσιν τῆς πανεπιστημιακῆς ἰατρικῆς κλινικῆς, διακριθείς. Συνέγραψε: «Lehrbuch der Krankheiten des Herzens» (1857), «Die Krankheiten des Chylopoetischen systems» (1864), ὅπερ μετεφράσθη εἰς τὴν ὀλλανδικὴν καὶ ἰταλικήν, «Über Bacon von Verulam» (1865). Τὸ σημεῖον Μπαμπέργκερ, ἢ ἄλλως ἀλλοχειρία, ἀποτελεῖ διαταραχὴν αἰσθητικότητος, ἀπαντῶσαν σπανιώτατα ἐπὶ τῶν πασχόντων ὑστερίαν, νωτιάδα φθίσιν καὶ παραπληγίας, καθ' ἣν ἐρεθισμός τις γινόμενος ἐπί τινος σημείου τῆς ἐπιφανείας τοῦ σώματος καθίσταται αἰσθητὸς ὑπ' αὐτῶν ἐπὶ τοῦ ἀντιστοίχου σημείου τοῦ ἑτέρου ἡμιμορίου τοῦ σώματος αὐτῶν. Ὁ δὲ σφυγμὸς τοῦ Μπαμπέργκερ εἶναι ὁ φλεβικὸς σφυγμὸς ἐν τῇ ἀνεπαρκείᾳ τῆς τριγλώχινος, ὁ ἐπονομασθεὶς ὑπ' αὐτοῦ βολβικὸς (1856), αἰσθητὸς γινόμενος διὰ τῶν δακτύλων καὶ τοῦ στηθοσκοπίου ἐπὶ ἰσχνῶν ἀτόμων κατὰ τὴν ὑπερκλείδιον κοιλότητα. Τῷ 189? εἰς τὸ προαύλιον τοῦ βιενναίου πανεπιστημίου ἐγένοντο τὰ ἀποκαλυπτήρια τοῦ μνημείου αὐτοῦ. Ο. Ρ.

—**Μπαμπέργκερ** (Bamberger), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς οἰκονομολόγος καὶ πολιτικὸς (1823—1899). Ἐσπούδασε νομικά, ἔλαβε δὲ ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν πολιτικὴν κίνησιν τοῦ 1848, ἀναγκασθείς, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν ταύτης, νὰ καταφύγῃ εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Κατὰ τὴν μακρὰν διαμονήν του ἐν Ἑλβετίᾳ, Ἀγγλίᾳ, Βελγίῳ, Ὀλλανδίᾳ καὶ Γαλλίᾳ, ἐπεδόθη εἰς τὸ ἐμπόριον καὶ εἰς οἰκονομολογικὰς μελέτας καὶ διετέλεσε διευθυντὴς τραπεζικοῦ οἴκου ἐν Παρισίοις. Ἐπιστρέψας τῷ 1866 εἰς τὴν πατρίδα του ἐξελέγη βουλευτὴς (1868) καὶ, ὡς μέλος τοῦ ἐθνικοῦ φιλελευθέρου κόμματος, ἐκηρύχθη ὑπέρμαχος τοῦ ἐλευθέρου ἐμπορίου καὶ τῆς νομισματικῆς μεταρρυθμίσεως. Ἀποχωρισθεὶς (1881) τοῦ ἐθνικοῦ φιλελευθέρου κόμματος, ἵδρυσε τὴν ὁμάδα τῶν «Sezessionisten» καὶ κατόπιν (1884), ἐν συνδυασμῷ μετὰ τῶν προοδευτικῶν, τὴν τῶν «Φιλελευθέρων Γερμανῶν», ἐκ τῶν ὁποίων πάλιν ἀπεμακρύνθη τῷ 1893. Ἔκτοτε ἤρχισε δριμεῖαν πολεμικὴν ἐναντίον τῆς πολιτικῆς, καὶ ἰδίως τῆς ἀποικιακῆς, τοῦ Βίσμαρκ. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρομεν τὰ ἑξῆς: «Monsieur de Bismarck» (Παρίσιοι 1868), ἐκδοθὲν καὶ εἰς τὴν γερμανικήν, «Ἐπὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας τοῦ Γαλλικοῦ πολέμου» (1871), «Ἐπὶ τῆς γερμανικῆς νομισματικῆς νομοθεσίας» (1873), «Κρατικὸς χρυσὸς» (3η ἔκδ. 1876), «Ἡ Γερμανία καὶ ὁ σοσιαλισμὸς» (1878), «Ἡ Sezession» (4η ἔκδ. 1881). Ἐξέδωκε πρὸς τούτοις τὰ ἅπαντά του εἰς 5 τόμους (1895—1897) καὶ τὰς ἐν τῷ περιοδικῷ «Ἔθνος» δημοσιευθείσας συμβολάς του ἐπὶ τῆς κοινωνικῆς πολιτικῆς καὶ τῶν «Σκέψεων καὶ ἀναμνήσεων» τοῦ Βίσμαρκ. Αἱ καταληφθεῖσαι «Ἀναμνήσεις» του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Nathan (1899), καὶ ἡ «Ἐκλογὴ λόγων καὶ πραγματειῶν ἐπὶ τοῦ χρήματος καὶ τῶν τραπεζῶν» ὑπὸ τοῦ Helfferich (1900, 2 τεύχη). Γ. Ε. Κ.

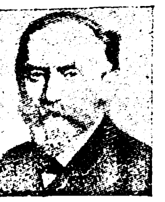

*Λουδοβῖκος Μπαμπέργκερ.*

**Μπαμπερζὲ** (Bamberger), ***Ἐδουάρδος-Ἀδριανός***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ πολιτικὸς ἰσραηλιτικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Στρασβούργῳ τῷ 18??. Ἐν Μέτς, παραλλήλως πρὸς τὴν ἄσκησιν τοῦ ἐπαγγέλματός του, ἐπεδόθη καὶ εἰς τὴν διάδοσιν τῆς παιδείας εἰς τὸν λαόν, γινόμενος μέλος τοῦ διδασκαλικοῦ συνδέσμου καὶ ποιούμενος πλείστας διαλέξεις ἐπὶ φιλοσοφικῶν θεμάτων, ἐπὶ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς ὑγιεινῆς· συνάμα συνεργάζετο καὶ εἰς πλείστας ἐφημερίδας. Ἐξελέγη δὲ βουλευτὴς (1871 καὶ 1876), τῷ δὲ 1887 διετέλεσε βοηθὸς βιβλιοφύλαξ τοῦ μουσείου. Ἐδημοσίευσε: «Études sur le travail des enfants dans les manufactures» (1873—1874), «Étude sur le socialisme en Russie» κλπ. Ο. Ρ.

**Μπαμπὲς** (Babès), ***Βίκτωρ***. Διαπρεπὴς Ρουμάνος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Βιέννῃ τῷ 1854. Τῷ 188? ἐγένετο ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς παθολογικῆς ἱστολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Βουδαπέστης. Μετὰ διαμονὴν ἐν Παρισίοις ἐν τῷ Ἰνστιτούτῳ Pasteur, ἐκλήθη ἐν Βουκουρεστίῳ ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομοπαθολογίας καὶ βακτηριολογίας καὶ διευθυντὴς τῶν οἰκείων ἰνστιτούτων ἱδρυθέντων ὑπὸ τοῦ ἰδίου. Ἐτιμήθη ὑπὸ τῆς ῥουμανικῆς καὶ τῆς γαλλικῆς ἰατρικῆς Ἀκαδημίας, γενόμενος μέλος ἀμφοτέρων. Ὁ Μπαμπὲς ἐκ τῶν πρώτων ἀνεῦρε τὸ βακτηρίδιον τῆς φυματιάσεως ἐν τοῖς οὔροις τῶν ζώντων. Καθώρισεν ὅτι ὁ βάκιλλος τῆς λέπρας ὁδεύει εἰς τὴν ἔσω κάψαν τῆς ῥίζης τῶν τριχῶν διὰ τῆς ὑγιοῦς ἐπιδερμίδος καὶ ὅτι τὸ μικρόβιον τῆς χολέρας τῶν ὀρνίθων καὶ ὁ πνευμονιόκοκκος δὲν εἶναι κόκκοι ἀλλὰ βραχεῖαι βακτηρίαι. Πρῶτος περιέγραψε τὸν βάκιλλον τῆς μύξης (1881) καὶ ἔδειξε τὴν εἴσδυσιν τοῦ βακτηριδίου τοῦ σπληνάνθρακος διὰ τοῦ βλεννογόνου τοῦ στομάχου, καὶ τὴν τοῦ βακτηριδίου τῆς φυματιάσεως διὰ τοῦ βλεννογόνου τῶν ἀμυγδαλῶν (1888). Οὗτος ἀνεκάλυψε τὰ ἐνδοκυττάρια παράσιτα τῶν ζῴων (μπαμπεσίωσις ἢ πυροπλάσμωσις), τὰ μεταχρωματικὰ κοκκία τῶν μικροβίων, τὴν σπουδαιότητα τῶν μικροβιακῶν συνδυασμῶν, ἰδίως κατὰ τὴν φυματίασιν (Συνέδριον φυματιάσεως 1890), τὴν θεραπευτικὴν ἀξίαν τῶν ἐνέσεων νευρικῆς οὐσίας ἐπὶ μολυσματικῶν νευρικῶν νόσων καὶ

Digitized by Google

πιληψίας, τὰς διαμέσους μορφὰς τῶν βακτηριδίων μεταξὺ τοῦ βακτηριδίου Ebert καὶ τοῦ κο-οβακτηριδίου, τὰς προκαλούσας εἰδικὰς νόσους κλπ. Ἐπίσης ἐφεῦρεν ὀρὸν ἀντιφυματικόν. Ἐκτὸς πλείστων συγγραμμάτων του, ἐκδοθέντων εἰς τὴν ρουμανικήν, ἐδημοσίευσεν ἐν Βερολίνῳ καὶ τὰ ἑξῆς: «Ἄτλας παθολογικῆς ἱστολογίας τοῦ νευρικοῦ συστήματος» (1905), «Σηπτικαὶ νόσοι τῆς παιδικῆς ἡλικίας» (1889), «Λέπρα» (1898), «Ἔρευναι περὶ τοῦ κομματοειδοῦς βακτηριδίου τοῦ Κώχ». Ἐξέδωκε μετὰ τοῦ Cornil σύγγραμμα «Μικροβιολογίας» (1886, 1890) καὶ «Ἐγχειρίδιον ἀνατομοπαθολογίας». Ἐπίσης πλείστας ἀνακοινώσεις ἐποιήσατο εἰς ἐπιστημονικὰς ἑταιρείας καὶ Ἀκαδημίας καὶ ἐδημοσίευσεν ἐργασίας του εἰς διάφορα γαλλικὰ καὶ γερμανικὰ περιοδικά. Ἰδιαιτέρας μνείας ἄξιαί εἰσιν ἡ ἀνακάλυψις τοῦ πυρετοῦ Τεξὰς τῶν βοῶν ἢ τῆς ἐπιδημικῆς αἱμοσφαιρινουρίας τῶν βοῶν (πρακτ. Ἀκαδ. Ἐπιστ. 1888, 1889), καὶ ἡ ἀνακάλυψις τῆς ἰδιότητος τοῦ ἀνοσοποιηθέντος αἵματος τῶν ζῴων, ἵνα μεταβιβάζῃ τὴν ἀνοσίαν, ἣν ἐφήρμοσε διὰ τὴν θεραπείαν τῆς λύσσης καὶ μάλεως (Χρονικὰ Ἰνστιτούτου Παστὲρ 1889). Ο. Ρ.

**μπαμπεσὰ** (ἡ), ἢ ***μπαμπεσιά***· ὑπουλότης, δουλιότης, ἀπάτη: «τὸν σκότωσε μὲ μπαμπεσὰ» (λ. τουρκική). Ι. Δ. Μ.

**Μπαμπὲφ** (Babeuf), ***Φραγκῖσκος-Νοέλ***. Γάλλος σοσιαλιστὴς ἐπαναστάτης (1760—1800). Καταγόμενος ἀπὸ πτωχὴν οἰκογένειαν, διῆλθε περιπετειώδη νεότητα, ἠναγκασμένος νὰ ἐργάζηται διὰ νὰ ἐξοικονομῇ τὰ πρὸς τὸ ζῆν. Εἰς ἡλικίαν 22 ἐτῶν συνεζεύχθη μίαν ἀμόρφωτον ἀλλ' ἐνάρετον κόρην, ἡ ὁποία ὑπῆρξε πιστὴ σύντροφός του. Τῷ 1787 συνέγραψε τὸ πρῶτόν του ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Τὸ διαρκὲς κτηματολόγιον», τὸ ὁποῖον μόλις τῷ 1790 ἐδημοσιεύθη. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ὁ Μπαμπὲφ εὑρίσκετο ἐν Ρόϊ, κατόπιν δὲ μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ἔγραψε διάφορα ἄρθρα ὑπὸ τὰ ψευδώνυμα *Κάμιλλος* καὶ *Γράκχος*. Κατηγορηθεὶς ἐπὶ ἐπαναστατισμῷ συνελήφθη, ἀλλ' ὑποστηριχθεὶς ὑπὸ τῆς ἐφημερίδος τοῦ Μαρὰ ἀφέθη προσωρινῶς ἐλεύθερος. Ἐπιστρέψας εἰς Ρόϊ, ἵδρυσεν ἐκεῖ τὴν ἐφημερίδα «Ὁ ἀνταποκριτὴς τῆς Πικαρδίας» μὲ πατριωτικὴν τάσιν. Ἐκλεγεὶς μέλος τοῦ δημοτικοῦ συμβουλίου, ἀπεβλήθη ὡς μὴ ἔχων κοινωνικὴν θέσιν ἀνεγνωρισμένην. Τῷ 1791 διωρίσθη ἐπὶ κεφαλῆς ὑπηρεσίας ἐντεταλμένης τὴν ἀναζήτησιν τῆς δημοτικῆς περιουσίας καὶ ἔδειξε σπανίαν δραστηριότητα.

*Φραγκῖσκος-Νοέλ Μπαμπέφ*

Κατηγγέλθη ὅμως διότι ἐπροπαγάνδιζε τὴν ἀνάγκην διανομῆς τῶν ἀμφιβόλων γηπέδων καὶ ἐδικάσθη, ἀλλ' ἠθωώθη. Τῷ 1792 κατήγγειλε τὸν δῆμον τοῦ Ρόϊ διὰ τὴν παράνομον διατήρησιν τοῦ δημοτικοῦ φόρου. Τὸ αὐτὸ ἔτος διωρίσθη σύμβουλος τοῦ ἐπαρχιακοῦ συμβουλίου τῆς Σώμ, διακριθεὶς διὰ τὴν μεγάλην ἱκανότητά του. Κατὰ τὴν πρώτην περίοδον τῆς ἀνατροπῆς τοῦ Τερμιδὸρ ἐφαίνετο μᾶλλον κατὰ τῶν ἡττημένων δημοκρατικῶν, σχεδὸν μοναρχικός. Τὸ δεύτερον ἔτος ἀπὸ τῆς ἀνατροπῆς ἐξέδωκε τὴν «Ἐφημερίδα τῆς ἐλευθερίας τοῦ τύπου», ἡ ὁποία κατὰ τὸ τρίτον ἔτος μετωνομάσθη εἰς «Βῆμα τοῦ λαοῦ». Δι' αὐτῆς ἐπετίθετο δριμύτατα ἐναντίον τοῦ κοινωνικοῦ καθεστῶτος τοῦ προελθόντος ἐκ τῆς ἐπαναστάσεως. Συλληφθεὶς ἐφυλακίσθη εἰς Ἀράς, ὅπου ἐγνωρίσθη μὲ τοὺς Ταφουρώ, Κοσὲ καὶ Κάρολον Ζερμέν. Ἀμνηστευθεὶς ἐπανεξέδωκε τὸ «Βῆμα τοῦ Λαοῦ» καὶ ὠργάνωσε τὴν περίφημον «Ἑταιρείαν τῶν ἴσων», εἶδος ἐπαναστατικοῦ κόμματος, ἥτις ἑνωθεῖσα μετὰ τῶν ὑπολειμμάτων τῶν Ἰακωβίνων κατεπολέμησε σφοδρῶς τὸ Διευθυντήριον καὶ ἐζήτησε τὴν ἐπαναφορὰν τοῦ λαϊκοῦ Συντάγματος τοῦ 1793. Αἱ ἀρχαὶ θορυβηθεῖσαι ἔκλεισαν τὴν ἐπίσημον λέσχην των, ἀλλ' ἡ δρᾶσις ἐσυνεχίσθη παρανόμως καὶ κρυφίως. Διὰ νὰ διαφωτίσουν τὸν λαόν, ἐξέδωκαν τὴν «Προκήρυξιν τῶν ἴσων» καὶ τὴν «Ἀνάλυσιν τῆς θεωρίας τοῦ Μπαμπέφ», κατορθώσαντες νὰ συγκεντρώσουν πέριξ των ὅλην τὴν ἀντιπολίτευσιν.

Πρὶν ἢ ὅμως ἐκραγῇ ἡ ἐξέγερσις, συνεπείᾳ προδοσίας, συλλαμβάνονται οἱ ἀρχηγοὶ τῆς «Ἑταιρείας», ἐν οἷς καὶ ὁ Μπαμπέφ, καὶ καταδικάζονται εἰς τὸν διὰ τῆς λαιμητόμου θάνατον. Ἡ ποινή των ἐξετελέσθη τὴν ἐπομένην τῆς καταδίκης.

Ὁ Μπαμπὲφ θεωρεῖται σοσιαλιστὴς-οὐτοπιστής. Αἱ ἀρχαί του στηρίζονται ἐπὶ τῆς θεωρίας τῆς οἰκονομικῆς ἰσότητος. Ἀνήκει εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ἐπαναστατῶν δημοκρατῶν, οἱ ὁποῖοι ἤθελον τὴν ἔκτασιν τῆς ἐπαναστάσεως μέχρι τῆς τελείας οἰκονομικῆς ἰσότητος καὶ εἶναι πρόδρομος τοῦ ἐπαναστατικοῦ, συνωμοτικοῦ σοσιαλισμοῦ, ἐμπνευστὴς τοῦ Μπλανκί. Ἡ «Ἑταιρεία τῶν ἴσων» εἶναι ἡ πρώτη μεγάλη σοσιαλιστικὴ ἐπαναστατικὴ ὀργάνωσις τῆς Γαλλίας, ἡ ὁποία καὶ συνεκλόνησε τὴν κοινωνίαν. Α. Ε. Μ.

**Μπάμπιανη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Λάκκα* (βλ. λ.).

**Μπάμπινα *Γκρεντὰ*** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Σερβίας ἐν Σλαβονίᾳ, ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σαύου. Κάτ. 4.500. Ἐνταῦθα ἐνίκησαν τὴν 3 Ἰουλίου 1693 οἱ Αὐστριακοὶ τοὺς Τούρκους καὶ ἀπώθησαν αὐτοὺς μέχρι Τέμεσβαρ. Γ. Ι. Β.

**Μπαμπινὲ** (Babinet), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος φυσικομαθηματικὸς (1794—1872). Σπουδάσας εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολήν, ἐγένετο ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ, παρῃτήθη ὅμως μετά τινα ἔτη τοῦ βαθμοῦ του καὶ διωρίσθη καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐν Παρισίοις. Ἀξιόλογοι ὑπῆρξαν αἱ μελέται του ἐπὶ ποικίλων ἐπιστημονικῶν θεμάτων, ἀναγομένων εἰς τὴν φυσικὴν ἰδίως, πολυάριθμοι δὲ αἱ ἐφευρέσεις του, ἐν αἷς διάφορα ὄργανα πειραματισμοῦ ἐν τῇ ὀπτικῇ, εἷς νέος τύπος ὑγρομέτρου, τελειοποίησις τοῦ γωνιομέτρου, ἴδιον σύστημα ὑποτυπώσεως τῶν γεωγραφικῶν χαρτῶν κτλ. Ἀπὸ τοῦ 1840 ὁ Μπαμπινὲ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ἐκτὸς τῶν εἰς τὰ ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ ἐγκατεσπαρμένων πραγματειῶν του ἔγραψεν: «Ἐγχειρίδιον περιγραφικῆς γεωμετρίας» καὶ «Ἠλεκτρικὴν Τηλεγραφίαν». —Ω.

**Μπαμπίνι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βονίτσης καὶ Ξηρομέρου τοῦ νομοῦ Αἰτωλοακαρνανίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 780. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον, τηλέφωνον, γεωργικὸν προμηθευτικὸν συνεταιρισμόν. Παράγει τὸν περίφημον καπνὸν Μπαμπίνης Ξηρομέρου. Ἔχει τακτικὴν συγκοινωνίαν αὐτοκινήτων μὲ τὸ Ἀγρίνιον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ 69 σκηνῖται. Χ. Γ. Ε.

**Μπαμπίνι** (Babbini), ***Ματθαῖος***. Διάσημος Ἰταλὸς ὀξύφωνος (1754—1816). Ἔδρεψε δάφνας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μελοδραμάτων Βερολίνου, Πετρουπόλεως, Βιέννης, Λονδίνου καὶ Παρισίων. Ἀπέθανεν ἐν Ἰταλίᾳ κάτοχος μεγάλης περιουσίας. Γ. Σ.

**Μπαμπίνσκι** (Babinski), ***Ἰωσὴφ-Φραγκῖσκος-Εὐτύχιος***. Γάλλος νευρολόγος, πολωνικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1857. Διετέλεσεν ἐπιμελητὴς ἐν Σαλπετριέρῃ καὶ εἶτα ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων Παρισίων (1890). Κατέστη γνωστὸς ἐκ τῶν ἀξιολόγων ἐργασιῶν του ἐπὶ τοῦ νευρικοῦ συστήματος. Εἰς αὐτὸν ὀφείλονται ἀνακαλύψεις πλείστων σημείων ἐν τῇ νευρολογίᾳ πρὸς διάκρισιν τῶν ὀργανικῶν παθήσεων τοῦ νωτιαίου μυελοῦ καὶ τοῦ ἐγκεφάλου. Ἐπίσης καθώρισε διαταραχάς τινας τῶν ἀνακλαστικῶν φαινομένων τῆς κόρης, δηλωτικῶν τῆς συφίλιδος τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος, παρασχὼν οὕτω τὰ μέσα τῆς καταπολεμήσεως τῆς νόσου ἅμα τῇ ἐμφανίσει της. Αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ ἐπὶ τῆς παρεγκεφαλιδικῆς ἀσυνεργείας, τῆς στατικῆς καὶ κινητικῆς ἰσορροπίας, τῆς παρεγκεφαλιδικῆς καταληψίας κλπ., ἀνεκαίνισαν σημαντικῶς τὴν φυσιολογίαν καὶ παθολογίαν τῆς παρεγκεφαλίδος. Τέλος αἱ ἔρευναι αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ βολταϊκοῦ ἰλίγγου συνετέλεσαν πρὸς ἀνεύρεσιν μέσου καταπολεμήσεως τοῦ ἰλίγγου τῶν ὤτων, κατὰ τοῦ ὁποίου ἡ θεραπευτικὴ ἦτο ἀνίσχυρος μέχρι τῆς ἐποχῆς του. Ο. Ρ.

— **Μπαμπίνσκι *σημεῖον***. Καλεῖται οὕτως ἡ παρατηρουμένη εἴς τινας παθήσεις μετ' ἐρεθισμὸν τοῦ ἔξω χείλους τοῦ πέλματος (διὰ καρφίδος συρομένης) ἔκτασις τοῦ μεγάλου δακτύλου, ἀντὶ κάμψεως, ἥτις παρατηρεῖται ἐν φυσιολογικῇ καταστάσει. Τὸ σημεῖον τοῦτο διακρίνεται εἰς *περιφερικόν*, ὅταν ὀφείλεται εἰς παράλυσιν τῆς 1ης ἱερᾶς κινητικῆς ῥίζης ἢ τοῦ νεύρου, εἰς ὃ φέρεται αὕτη, ἢ τῶν ἀντιστοίχων μυῶν, καὶ εἰς *κεντρικόν*, τὸ καὶ κύριον σημεῖον Μπαμπίνσκι, ὅταν παράγεται ἐκτὸς πάσης βλάβης τῆς 1ης ἱερᾶς κινητικῆς ῥίζης, καὶ ὅπερ δηλοῖ τότε προσβολὴν τοῦ κεντρικοῦ νευρῶνος, εἴτε ἐν τῇ κινητικῇ ζώνῃ τοῦ ἐγκεφάλου, εἴτε κατὰ τὴν διαδρομὴν τοῦ πυραμιδικοῦ δεματίου. Τότε ἐνέχει μεγίστην σημασίαν, οὐ μόνον διότι καταδεικνύει τὴν ῥηθεῖσαν ἐντόπισιν τῆς παθήσεως, ἀλλὰ καὶ διότι διαπιστοῖ τὸ γεγονὸς ὅτι πρόκειται περὶ ὀργανικῆς νόσου, διὸ καλεῖται καὶ μέγα κριτήριον τῶν ὀργανικῶν νόσων. Τοῦ σημείου Μπαμπίνσκι διακρίνουσι παραλλαγὰς ἢ ἰσοδύναμα, εἴτε ὡς πρὸς τὸν τρόπον παραγωγῆς, ἤτοι διὰ τῶν χειρισμῶν Oppenheim Scheiffert, Gordon, εἴτε ὡς πρὸς τὴν ἐκδήλωσιν, ἧς ἔχομεν πλείστας ποικιλίας, ἐν αἷς τὸ σημεῖον ῥιπιδίου, ἤτοι ἡ ἔκτασις καὶ διάνοιξις τῶν δακτύλων, ἡ ἔκτασις τῶν λοιπῶν δακτύλων, ἡ προσαγωγὴ τοῦ ποδός, ἡ ἀπαγωγὴ τοῦ ποδὸς εἶναι αἱ κυριώτεραι παραλλαγαί. Ἡ ὕπαρξις τοῦ κεντρικοῦ σημείου Μπαμπίνσκι δεικνύει σπασμωδικὴν συνδρομήν, ἥτις εἶναι κατὰ κανόνα ἀνίατος, ἂν ἐγκατασταθῇ μονίμως. Τ. Α. Ζ.

**μπαμπισμὸς** (ὁ) *[Θρησκειολ.]*. Θρησκεία ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τοῦ Μπὰμπ ἐν Περσίᾳ (βλ. λ. *βαβισμός*).

**Μπαμπιῶλος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μανωλιοπούλου τῆς ἐπαρχίας Κυδωνίας τοῦ νομοῦ Χανίων. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 110. Ε. Γ.

**Μπάμπο** (Babo), ***Αὔγουστος-Γουλιέλμος***. Γερμανὸς γεωπόνος, γεννηθεὶς τῷ 1827. Συνέγραψε: «Φύσις καὶ καλλιέργεια», «Ἐγχειρίδιον ἀμπελοκομίας». Α. Δ.

— **Μπάμπο** (Babo), ***Ἰωσὴφ-Μάριος***. Γερμανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς (1756—1822). Ἔγραψεν ἱπποτικὰ δράματα κατὰ τὸ ὑπόδειγμα τοῦ «Γκαῖτς» τοῦ Γκαῖτε. Ἐκ τῶν δραμάτων αὐτοῦ ἄξια λόγου εἶναι: «Otto von Wittelsbach», «Schauspiele», «Neue Schauspiele». Α. Δ.

— **Μπάμπο** (Babo), ***Λάμπερτ-Ἰωσὴφ-Λεοπόλδος, βαρῶνος***—. Γερμανὸς ἀγρονόμος καὶ χημικὸς (1790—1862). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Φριβούργου καὶ ἔγραψεν: «Ἡ καλλιέργεια τῆς ἀμπέλου» (1842), «Ἀγρονομικὴ χημεία» (1850), «Περὶ τοῦ τρόπου τῆς κατασκευῆς καὶ διατηρήσεως τοῦ οἴνου» (1851), «Γενικαὶ ἀρχαὶ τῆς γεωπονίας» (1851). Α. Δ.

**μπαμπόγρια** (ἡ)· δημοτ., ἐμπαικτικὴ προσηγορία γραίας, οἱονεὶ κακή, πονηρὰ γραῖα: «σοῦ εἶναι μιὰ μπαμπόγρια!» (ἐκ τοῦ *μπάμπω* καὶ *γριά*).

**μπαμποῦ** (Bambusa) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βαμβοῦσα* (βλ. λ.).

**Μπαμποῦ** (Babou), ***Ἱππόλυτος***. Γάλλος φιλόλογος (1824—1878). Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς: «La vérité sur le cas de M. Chamfleury», «Lettres artistiques et critiques, avec un defi au lecteur», «Les Païens innocents», «Les amoureux de Mme de Sévigné» καὶ «Les sensations d' un juré». Α. Δ.

— **Μπαμποῦ** (Babou) *ντὲ* ***Μπουρνταιζιέρ***. Γάλλος διπλωμάτης καὶ πολιτικός, ἀποθανὼν τῷ 1569. Ὑπῆρξε πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ, διοικητὴς τοῦ Μπλουᾶ, δικαστικὸς τοποτηρητὴς τῆς Τυραίνης, ἀρχηγὸς τοῦ πυροβολικοῦ. Ἡ σύζυγός του καὶ αἱ ἑπτὰ θυγατέρες του, αἱ καλούμεναι τὰ «ἑπτὰ θανάσιμα ἁμαρτήματα», εἶναι γνωσταὶ διὰ τὸ ἔκπαγλον κάλλος των καὶ τὰς ἐρωτικάς των περιπετείας. Μία ἐξ αὐτῶν, ἡ σύζυγος τοῦ Ἀντωνίου ντ' Ἐστρέ, εἶναι ἡ μήτηρ τῆς πολυθρυλήτου Γαβριέλλας. Α. Δ.

— **Μπαμποῦ** (Babou), ***Φιλιβέρτος***. Γάλλος κληρικὸς καὶ διπλωμάτης, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, ἀποθανὼν τῷ 1570. Ὑπῆρξεν ἐπίσκοπος τῆς Ἀγγουλέμης καὶ τοῦ Ὠξέρ. Τῷ 1558 διωρίσθη πρεσβευτὴς παρὰ τῷ πάπᾳ. Προαχθεὶς εἰς καρδινάλιον, διέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του ἐν Ρώμῃ. Διεκρίθη διὰ τὴν διπλωματικήν του δεξιότητα, τὴν θεολογικὴν σοφίαν καὶ τὸν ἔρωτά του πρὸς τὰ γράμματα, τὰς ἐπιστήμας καὶ τὰς τέχνας. Α. Δ.

**Μπαμπουγιάναι *νῆσοι*** (Babuyanes) *[Γεωγρ.]*. Συστὰς νήσων ἐν τῷ ἀρχιπελάγει τῶν Φιλιππίνων, ἀνήκουσα εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Β. Ἀμερικῆς. Κεῖται πρὸς Β. τῆς νήσου Λουσὸν καὶ ἀποτελεῖται ἐκ πέντε μεγαλυτέρων νήσων καὶ 14 μικροτέρων, ὧν ἡ περιφέρεια κυμαίνεται ἀπὸ 40 μέχρι 50 χλμ. Ὅλαι ὁμοῦ ἔχουν ἔκτασιν 620 τ. χλμ. καὶ 10.000 κατ. Εἶναι ἡφαιστειογενεῖς καὶ ἀπεκλήθησαν οὕτω ἐκ τοῦ κυριωτέρου ἐνεργοῦ ἡφαιστείου των, τοῦ *Μπαμπουγιὰν Κλάρο*, εὑρισκομένου ἐπὶ ὁμωνύμου νησῖδος. Ἐξ αὐτοῦ ἐξάγεται θεῖον, ἀρωματικὰ καὶ ἰαματικὰ φυτά. Μ. Ε. Β.

**μπαμπουῖνος** (ὁ) (Babuin) *[Ζῳολ.]*. Γένος πιθήκων (βλ. λ. *βαβουῖνος*).

**Μπαμπούκ**, ἢ ***Μπαμποὺ*** (Bambouk ἢ Bambou) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς δυτικῆς γαλλικῆς Ἀφρικῆς (Σενεγάλη), μεταξὺ τῶν ποταμῶν Μπάφιγκ, παραποτάμου τοῦ Σενεγάλη, καὶ Φαλέμε καὶ τῆς γαλλικῆς Γουϊνέας. Τὸ ἔδαφος, κατὰ τὸ πλεῖστον, ἀ ο τελεῖται ἀπὸ ἀμμώδεις λόφους ὕψους 300 μ., διὰ μέσου τῶν ὁποίων ῥέουν τὰ ὕδατα τῶν ποταμῶν, παρασύροντα ἄφθονα ψήγματα χρυσοῦ. Κάτοικοι 800.000, διάγοντες βίον πατριαρχικόν, ὑπὸ τοπικὸν ἀρχηγὸν ἐν ἑκάστῳ χωρίῳ, ἄνευ ἐξαρτήσεως ἐκ κεντρικῆς τινος διοικήσεως. Ἡ χώρα κατελήφθη τῷ 1706—1724 ὑπὸ τῆς Γαλλοαφρικανικῆς Ἑταιρείας, τῷ δὲ 1851 ἐτέθη ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῆς Γαλλίας. Θ. Κ.

**μπάμπουλα** (Bamboula). Εἶδος πρωτογόνου τυμπάνου τῶν μαύρων, ὡσαύτως δὲ καὶ χορός, τὸν ὁποῖον ἐκτελοῦν οὗτοι ὑπὸ τοὺς ἤχους τοῦ ὀργάνου τούτου. Π. Γ. Λ.

**μπαμπούλας** (ὁ)· δημοτ., φανταστικὸν δαιμόνιον κακοποιόν, δι' οὗ ἐκφοβίζουν τοὺς παῖδας: «μὴν πὰς ἐκεῖ, γιατὶ εἶναι ὁ μπαμπούλας» (λ. πεποιημένη).

**Μπὰμπ-οὐλ-ἐμπουὰπ** (=ἡ πύλη τῶν πυλῶν) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα διδόμενον ὑπὸ τῶν Εὐρωπαίων εἰς τὴν ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Κασπίας παρὰ τὰς ὑπωρείας τοῦ Καυκάσου πόλιν *Ντερμπέντ* (βλ. λ.). Εἶναι αἱ *Κάσπιαι πύλαι* τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων. Ν. Μ.

**Μπάμπουνα** *[Θρησκ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία, ὑπὸ τὴν ὁποίαν εἶναι γνωστὴ εἰς τὰς σλαβικὰς χώρας ἡ αἵρεσις τῶν *Βογομίλων* (βλ. λ.).

Digitized by Google

**Μπάμπουνα** [*Γεωγρ.*]. —1) Ὄρος τῆς σερβικῆς Μακεδονίας, μεταξὺ Περλεπὲ καὶ Βελεσσῶν, ΝΑ. τοῦ Σκάρδου, οὗτινος εἶναι διακλάδωσις. Χωρίζει τὰ ὕδατα τοῦ Ἀξιοῦ ἀπὸ τὰ τοῦ μέσου Ἐριγῶνος. Διὰ διόδου, ἣν διέρχεται ἡ ἀπὸ Περλεπὲ εἰς Βελεσσὰ ὁδός, διακρίνεται τὸ ὄρος εἰς δύο τμήματα, εἰς τὸ ΒΔ. (ὄρος *Μοῦκος*, ὕψ. 1445 μ.) καὶ τὸ ΝΑ (κορ. *Συλάβιε*, ὕψ. 1513 μ.).

—2) Ποτάμιον πηγάζον ἐκ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ ὁμωνύμου ὄρους· ἀκολουθεῖ ΒΑ. διεύθυνσιν καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀξιόν, ὀλίγον κάτωθεν τῶν Βελεσσῶν. Κατὰ τὸ θέρος εἶναι σχεδὸν ξηρόν, ἐνῷ κατὰ τὸν χειμῶνα εἶναι ἀδιάβατον. Ι. Σ. Σ.

—[*Στρατ. Ἱστορ.*] Τὸ ὄρος *Μπάμπουννα* δὲν παρέχει διαβάσεις εἰμὴ μόνον διά τινων αὐχένων αὐτοῦ, ἀποτελούσας κατὰ φυσικὸν λόγον ἡμιονικὰς τοιαύτας, φερομένας ὑπὸ τὸ ὄνομα *στενὰ τοῦ Μπάμπουννα*. Διὰ τοῦ ὀρεινοῦ τούτου ὄγκου διέρχεται ὁ ὁμώνυμος ποταμός, ἐπὶ τῆς κοιλάδος τοῦ ὁποίου ἔχει κατασκευασθῆ ἡ μοναδικὴ ἁμαξιτὸς ὁδὸς Κιοπρουλοῦ (Βελεσσὰ)—Περλεπές. Διάφορα μέσα συγκοινωνίας, ὡς π. χ. ντεκωβίλ, εἶχον κατασκευασθῆ ὑπὸ τῶν συμμάχων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Κατὰ τὸν Σερβοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912, οἱ Τοῦρκοι, θέλοντες ν' ἀμυνθῶσι τοῦ Περλεπέ, ἔταξαν μικρά τινα προκαλυπτικὰ ἀποσπάσματα πρὸς τὰς διαβάσεις τοῦ Μπάμπουνα, ἅτινα παρεκώλυσαν τὴν πρὸς Περλεπὲν προέλασιν τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς, διεξαχθέντων ἀρκετῶν ἀγώνων ἐπὶ τῶν ὀρεινῶν τούτων διαβάσεων. Διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, κατὰ τὴν τραγικὴν ὑποχώρησιν τῶν Σέρβων, τὸ φθινόπωρον 1915, βουλγαρικὴ φάλαγξ προερχομένη ἐκ Κιοπρουλοῦ (Βελεσῶν) ἐστράφη τὰς ἀρχὰς Νοεμβρίου 1915 πρὸς τὰ στενὰ τοῦ Μπάμπουνα, ἵνα ἀποκόψῃ τήν, ἔστω καὶ διὰ τῶν ὀρέων, ἐπαφὴν τῶν Σέρβων μετὰ τῶν ἐν Μακεδονίᾳ συμμάχων, και τότε διεξήχθη (14 Νοεμβρίου) σοβαρὸς ἀγὼν εἰς τὴν στενωπὸν τοῦ Ἰσβόρ, ἀπολήξας εἰς τὴν πλήρη ἀπώθησιν τῶν Σέρβων πρὸς δυσμάς. Κατὰ τὴν περὶ τὸ τέλος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου καταδίωξιν ὑπὸ τῶν συμμαχικῶν στρατευμάτων τῶν γερμανοβουλγαρικῶν στρατευμάτων, διεξήχθησαν σοβαροὶ ἀγῶνες, τὰς 24—26 Σεπτεμβρίου 1918, εἰς τὰ στενὰ τοῦ Μπάμπουνα μεταξὺ τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς καὶ τῶν ὑποχωρούντων Βουλγάρων. Ν. Θ. Κ.

**Μπαμπούρα** [*Γεωγρ.*]. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Βρουχᾶ τῆς ἐπαρχίας Μεραμβέλλου τοῦ νομοῦ Λασηθίου. Κάτ. (1928) 39. Κυριώτερον προϊόν του εἶναι τὰ ἀμύγδαλα, ἐξαιρέτου ποιότητος. Ε. Γ.

**Μπαμποῦρεν**, ἢ *Μπαμπύρεν* (Baburen), ***Θεόδωρος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Βαβύρεν*).

**Μπαμποῦρι** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς Ἠπείρου· βλ. λ. *Βαβοῦρι*.

**μπαμποῦσα** (ἡ) (Bambusa) [*Βοτ.*]· βλ. λ. *βαμβοῦσα*.

**μπαμπτσίνα** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *νήριον τὸ κοινόν*.

**μπάμπω** (ἡ)· ἡ γραῖα (βλ. λ. *βάβω*).

**Μπαμπὼ** (Babaud), ***Λαριμπιὲρ-Λεωνίδας***. Γάλλος συγγραφεὺς (1819—1873). Ἔγραψε: «Histoire de l' Assemblée nationale constituante» (1850), «Htudes historiques et administratives» (1863) καὶ «Lettres charantaises» (1865—1866). Α. Δ.

**μπαμπώτης** (ὁ) [*Ναυτ.*]. Ὄρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαῖνον (πιθανῶς ἐκ παραφθορᾶς τοῦ ἀγγλικοῦ bumboat) τὴν τε λέμβον καὶ τὸν λεμβοῦχον αὐτῆς, ὅταν φέρουν εἰς τὴν πλευρὰν τοῦ πλοίου φαγώσιμα, ἀναψυκτικά, σιγαρέττα κτλ. πρὸς πώλησιν εἰς τοὺς ἄνδρας τοῦ πληρώματος κατὰ τὰς ὥρας τῶν συσσιτίων των. Σ. Ε. Λ.

**μπὰμ-τερλελὲ** (τό)· λέξις σημαίνουσα μικρὸν γένειον ὑπὸ τὸ κάτω χεῖλος.

**μπαν** (ὁ), καὶ *μπάνος* (Banus)· βλ. λ. *βάνος*.

**Μπὰν** (Bann) [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τῆς Ἰρλανδίας, ἐν Ὀλστερ. Πηγάζει ἐκ τῆς ὀροσειρᾶς Μούρν, ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντάουν καὶ διασχίζων τὴν λίμνην Νηγκ, ἥτις χωρίζει αὐτὸν εἰς *Ἄνω Μπάν*, μήκους 38 χλμ., καὶ *Κάτω Μπάν*, μήκους 48 χλμ., χύνεται εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανόν, παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ Βορείου πορθμοῦ. Εἶναι πλωτὸς μέχρι τοῦ Κόλραιην. Μ. Δ. Β.

**Μπανὴ** (Bagnes) [*Γεωγρ.*]. Κοιλὰς καὶ πόλις τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τοῦ Βαλαί. Ἡ κοιλὰς διαρρέεται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ντρὰνς καὶ ἔχει μῆκος 25 χλμ., περιβαλλομένη ὑπὸ ὑψηλῶν κορυφῶν τῶν Ἄλπεων, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι ἡ *Ρουΐνὲτ* (3.879 μ. ὕψος), ἡ *Μὸν Πλερὲρ* (3.706 μ.), ἡ *Πιὲρ-ἀ-Βουὰρ* (2.476 μ.) καὶ ἡ *Γκρὰν-Κομπὲν* (4.317 μ.). Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει καὶ ὁ Γκετρόζ, ὁ ὁποῖος προκαλεῖ συχνὰς παγετῶν Γκετρόζ, ὁ ὁποῖος προκαλεῖ συχνὰ τάτας πλημμύρας. Ἡ πόλις, ἔχουσα πληθυσμὸν 5.000 κατ., ἦτο παλαιοτάτη, καταστραφεῖσα ὑπὸ πλημμυρῶν τῷ 1545 καὶ τῷ 1818. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν ἰαματικαὶ πηγαὶ καὶ ἐγκαταστάσεις λουτρῶν, μεταλλεῖα κοβαλτίου, ἀνακαλυφθέντα τῷ 1760, καθὼς καὶ χαλκοῦ καὶ μολύβδου. Μ. Δ. Β.

**Μπὰν** (Ban), ***Ματθαῖος***. Σέρβος ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1818. Καθηγητὴς τῆς γαλλικῆς καὶ τῆς ἰταλικῆς ἐν Βελιγραδίῳ, ἔγραψε τραγῳδίας: «Φινγκάλ», «Ραδίμιρος ὁ Μοσχοβίτης», τὸ δρᾶμα «Νερτσίμα» (1851), συλλογὴν ποιημάτων (1853). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης καὶ πολιτικὴν μελέτην «Περὶ τῆς λύσεως τοῦ ἀνατολικοῦ ζητήματος ὑπὸ τῆς Εὐρώπης ἢ ὑπὸ τῆς Πύλης» (1886). Θ. Κ.

**Μπάνα** (Bâna). Περιώνυμος Ἰνδὸς λογοτέχνης, ἀκμάσας κατὰ τὸν Γ' ἢ Δ' αἰῶνα π. Χ. Θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν κλασσικῶν τῆς σανσκριτικῆς φιλολογίας. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Χάρτσα-Τσάρντα» ἱστορία τοῦ Σρὶ-Χάρτσα-Σιλαντίτυα, ἡ μυθιστορία του «Καντα-μπάρι» καὶ οἱ ὕμνοι του πρὸς τὴν θεὰν Ντούργκα Τσάντι. Α. Δ.

**Μπανὰζ** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἕδρα ὁμωνύμου δήμου τῆς ὑποδιοικήσεως Οὐσὰκ τοῦ νομοῦ Κιουταχείας (τέως ἐξαρτωμένης ἐκ τῆς γενικῆς διοικήσεως Προύσης), εἰς ἀπόστασιν 22 χλμ. Α. τοῦ Οὐσάκ, ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σμύρνης-Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ.

Ὁ δῆμος Μπανὰζ κεῖται εἰς τὰ Α. τῆς ὑποδιοικήσεως Οὐσάκ, ἔχει ἐπιφάνειαν 1.050 τετρ. χλμ. καὶ περιλαμβάνει 39 χωρία, μὲ 12.000 περίπου κατοίκους. Εἶναι κατὰ μέγα μέρος ὀρεινός. Τὰ πεδινὰ μέρη εἶναι εὔφορα. Ἔχει καὶ μίαν θειοῦχον πηγὴν εἰς Χαμὰμ-μπογαζί. Ν. Μ.

— [*Στρατ. Ἱστορ.*] Διαρκούσης τῆς Μικρασιατικῆς ἐκστρατείας, τὸ χωρίον Μπανὰζ κατελήφθη τὸ πρῶτον τῇ 18 Ὀκτωβρίου 1920 ὑπὸ τῆς ΙΙ ἑλληνικῆς μεραρχίας, ἥτις ἐπιτεθεῖσα ἀπώθησε τὰς ἐκεῖ δυνάμεις τοῦ ΧΙΙ τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ ὑπὸ τὸν Φαχρεδὶν βέην. Ἡ τοιαύτη προέλασις ἐγένετο πρὸς ἀνακούφισιν τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας, καθ' ἧς εἶχον ἐπιτεθῆ οἱ Τοῦρκοι εἰς Τζεντίς, καὶ ἣν εἶχον τότε ἐξαναγκάσει νὰ ὑποχωρήσῃ προσωρινῶς εἰς Χάν. Τῇ 2 Ἰανουαρίου 1921 ἐξεκενώθη τὸ Μπανάζ, τοῦ κατέχοντος αὐτὸ ἑλληνικοῦ τμήματος ἀποσυρθέντος εἰς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως, ἀνατολικῶς τοῦ Οὐσάκ. Τὴν 10 Μαρτίου 1921 τὸ Α' ἑλληνικὸν σῶμα στρατοῦ προήλασεν ἐξ Οὐσὰκ πάλιν πρὸς Ἀφιὸν-Καρᾶ Χισάρ, καταλαβὸν πρῶτον τὸ Μπανάζ, ὃ καὶ διετήρησεν ἔκτοτε ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς μέχρι τοῦ Αὐγούστου 1922, ὁπότε τὰς περὶ τὸ Μπανὰζ θέσεις ἐπὶ βραχὺ μόνον ἐκράτησεν ἡ ὁμὰς μεραρχιῶν τοῦ ὑποστρατήγου Φράγκου (Ι, ΙΙ, ΙV, (πλὴν μικροῦ αὐτῆς τμήματος) καὶ VII μεραρχίαι πεζικοῦ, ἀπόσπασμα τοῦ 5/42 συντάγματος εὐζώνων καὶ ἡ μεραρχία ἱππικοῦ). Μετὰ συμπλοκὴν αὐτῆς εἰς Ἀχάτκιοϊ πρὸς δυνάμεις τοῦ Α' τουρκικοῦ σώματος στρατοῦ, ὑπεχώρησεν ἡ ὁμὰς ἐκείνη ταχέως πρὸς δυσμάς. Ν. ΣΣ

— **Μπανὰζ-τσάϊ**, ἢ ***Μπανὰζ-σού***. Ποταμὸς τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Οὐσὰκ τοῦ νομοῦ Κιουταχείας, πηγάζων ἐκ τοῦ Μουρὰτ-δὰγ (Διν-δύμου ὄρους) καὶ χυνόμενος ἐκ δεξιῶν μετὰ ροῦν 140 χλμ. εἰς τὸν Μαίανδρον. Ν. Μ.

— [*Στρατ. Γεωγρ.*] Διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Μπανὰζ-τσάϊ διανοίγεται δίοδος ἀπὸ τοῦ ὑψιπέδου Τουμλοὺ Μπουνὰρ-Μπανὰζ πρὸς τὴν κοιλάδα τοῦ Μαιάνδρου, πρὸς νότον. Ν. ΣΣ

**Μπανὰζ** (Basnage). Μεγάλη προτεσταντικὴ οἰκογένεια ἐκ Νορμανδίας, πολλὰ μέλη τῆς ὁποίας διεκρίθησαν ὡς ἐκκλησιαστικοί, νομικοὶ καὶ λογοτέχναι. Τὰ γνωστότερα τῆς οἰκογενείας ταύτης μέλη εἶναι:

***Νικόλαος Μπανάζ***, πάστωρ ἐν Ἐβρέ, βραδύτερον δὲ—μετὰ τὴν νύκτα τοῦ ἁγίου Βαρθολομαίου—ἐν Νόργουϊτς τῆς Ἀγγλίας.

***Βενιαμὶν Μπανάζ***, πάστωρ ἐν Καραντάν, κατόπιν ἐν Ρουέν. Διεδραμάτισε σημαντικὸν πρόσωπον κατὰ τὰς συνόδους καὶ τὰς διαπραγματεύσεις παρὰ τῆς αὐλῆς τῆς Γαλλίας μέχρι τοῦ θανάτου του (1652).

***Ἐρρῖκος Μπανάζ***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1615. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν μεγαλυτέρων καὶ εὐφραδεστέρων δικηγόρων τῆς Νορμανδίας. Ἔγραψε δύο ἔργα ἐπιβολῆς: «La coutume de Normandie» καὶ «Traité des hypothèques».

***Ἰάκωβος Μπανάζ***, υἱὸς τοῦ Ἐρρίκου (1653—1725). Βοηθούμενος ὑπὸ τῆς ἐμπιστοσύνης καὶ τῆς συμπαθείας, ἣν ἔτρεφε πρὸς αὐτὸν ὁ Εὐγένιος, συνετέλεσεν εἰς τὴν σύναψιν τῆς τριπλῆς συμμαχίας τῆς Χάγης.

***Ἐρρῖκος Μπανάζ***, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1656—1710). Ὑπῆρξε συνεργάτης τοῦ Μπαὺλ, εἰς ὃν προσέφερε πολυτίμους ὑπηρεσίας. Α. Γ.

**Μπανὰμ** (Banam) [*Γεωγρ.*]. Ἐπαρχία τῆς Καμπότζης, ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἰνδοκίνᾳ, παρὰ τὰ σύνορα τῆς Κοχιγκίνας. Κάτ. 9.000. Ἔχει ὁμώνυμον πρωτεύουσαν ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ *Μεκόγκ*, κειμένην εἰς ἀπόστασιν 160 χλμ. ΝΔ. τῆς Σαϊγκόν. Μ. Δ. Β.

**μπανάνα** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ καὶ τοῦ καρποῦ τῆς *βανανέας* (βλ. λ.).

**Μπανάνα** (Banana) [*Γεωγρ.*]. Πόλις καὶ διαμέρισμα τοῦ ἰταλικοῦ Κονγκό. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ ἀμμώδους ὁμωνύμου χερσονήσου πρὸς Β. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Κονγκό, ἔχουσα ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ θαυμάσιον φυσικὸν λιμένα. Εἶναι πόλις νέα μετὰ πολλῶν ἀποθηκῶν καὶ κτηρίων εὐρωπαϊκῶν οἴκων καὶ κέντρον ἐξαγωγῆς ἐλεφαντόδοντος καὶ ἐγχωρίων προϊόντων. Κάτ. 10.000 περίπου. Μ. Δ. Β.

— ***Μπανάνα νῆσοι*** (Bananas) [*Γεωγρ.*]. Σύστημα νήσων εἰς ἀπόστασιν 42 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς ἀκτῆς τῆς Σιέρρα-Λεόνε τῆς Δ. Ἀφρικῆς. Αἱ νῆσοι, ἀνήκουσαι εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἔχουν ἔδαφος γόνιμον, κλῖμα ὑγιεινὸν καὶ 2.200 κατοίκους. Μ. Δ. Β.

**Μπανανὰλ** (Bananal) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Βραζιλίας, ἐν τῇ πολιτείᾳ τοῦ *Σὰν-Πάολο*. Κάτ. 15.000. Μ. Δ. Β.

**Μπαναρλῆ** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς Ραιδεστοῦ ἐν Ἀν. Θράκῃ, ὀνομασθὲν ἐπὶ ἑλληνικῆς κατοχῆς *Βρυσούλα* (βλ. λ.).

**Μπανὰτ** (οὑγγρ. Bansag) [*Γεωγρ.*]· βλ. λ. *Βανᾶτον*.

**Μπανβὶλ** (Banville), ***Θεόδωρος, Φωλλαὶν*** πι-. Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1823 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1891. Υἱὸς πλοιάρχου, ἦλθε νεώτατος εἰς Παρισίους καὶ περατώνων τὰς σπουδάς του ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην ποιητικὴν συλλογήν του «Les Cariatides» (1842), ἡ ὁποία ἔτυχε πολλῆς προσοχῆς. Ταύτην ἐπηκολούθησε μετὰ τετραετίαν νέα ὑπὸ τὸν τίτλον «Stalactites» (1846). Τῷ 1856 ἐξέδωκε τὰς «Odelettes», τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος τὰς «Odes funambulesqnes» ἀνωνύμως, αἱ ὁποῖαι διεκρίνοντο διὰ τὴν σατιρικήν των δηκτικότητα καὶ τὴν εὐχέρειαν τοῦ στίχου, καὶ τὰς «Poésies complètes». Τὰς συλλογὰς ταύτας ἠκολούθησαν: «Exilés» (1866), «Nouvelles odes funambulesques» (1869), «Idylles prussiennes» (1871), «Princesses» (1874), «Trente-six ballades joyeuses» (1875). Τῶν συλλογῶν τούτων ἐγένετο καὶ ὁμαδικὴ ἔκδοσις ὑπὸ τὸν τίτλον «Poésies complètes». Ὁ Μπανβὶλ ἔγραψεν ἐπίσης σειρὰν διηγημάτων καὶ πεζῶν φαντασιῶν: «Les salâbanques» (1853), «Esquisses parisiennes» (1859, ἀνατύπωσις ὑπὸ τὸν τίτλον: «Les Parisiennes de Paris» 1866), «Contes pour les femmes» (1881), «Contes féeriques» (1882), «Contes héroïques» (1884), «Contes bourgeois» (1885) κλπ. Εἰς τὸ θέατρον ὁ Μπανβίλ, ἐκτὸς ἄλλων, ἔδωσε καὶ τὴν ὀπεραν-μπαλλέτον «Les Nations» (μουσικὴ A. Adam 1851), «Feuilleton d'Aristophane» (1852) μετὰ τοῦ P. Boyer, «Le cousin du Roi» (1857) μετὰ τοῦ αὐτοῦ, «Le beau Léandre» (κωμειδύλλιον 1856), «Diane au bois» (ἡρωϊκὴ κωμῳδία 1863), «Les fourberies de Nérine» (κωμειδύλλιον 1864), «La Pomme» (1865), «Gringoire» (1866), «Déidamia» (1876). Τὰ θεατρικὰ ταῦτα ἔργα ἐξεδόθησαν ὁμοῦ πλὴν τῶν «Nations», ὑπὸ τὸν τίτλον: «Comédies» (1879). Τῷ 1850 ἐχρημάτισε θεατρικὸς κριτικὸς τοῦ «Pouvoir», ἀπὸ δὲ τοῦ 1869 μέχρι τοῦ 1878 τοῦ «National». Ὑπὸ τὸν τίτλον «Mes souvenirs» (1882) ἐξέδωκε συλλογὴν παρατηρήσεων ἐπὶ τῶν συγχρόνων του. Τὰς περὶ μετρικῆς θεωρίας του ἀνέπτυξεν εἰς τὸ ἔργον του: «Petit traité de versification française» (1872). —Δ.

**Μπὰνγκ** (Bang), ***Ἀντώνιος-Χριστιανός***. Νορβηγὸς ἱστορικὸς καὶ θεολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1840. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Χριστιανίας. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Ὁ Ν. Χάουγκε καὶ ἡ ἐποχή του» (1875), «Ἡ ἱστορικὴ ἀλήθεια τῆς ἀναστάσεως τοῦ Σωτῆρος» (1878), «Ἡ Βαλούσπα καὶ οἱ σιβυλλικοὶ χρησμοί» (1879), «Ἡ Ἐκκλησία καὶ τὸ Ρωμαϊκὸν κράτος μέχρι τοῦ Κωνσταντίνου» (1879), «Ἰουλιανὸς ὁ Παραβάτης» (1881), «Ἡ ἱστορία τῆς Νορβηγίας μέχρι τῆς θρησκευτικῆς μεταρρυθμίσεως». Α. Δ.

— **Μπὰνγκ** (Bang), ***Ἑρμάννος-Ἰωακείμ***. Δανὸς συγγραφεὺς (1858—1912). Εἰκοσαετὴς ἐδημοσίευσε κριτικὰς μελέτας καὶ ἐν ἔτει 1880 τὸ μυθιστόρημά του «Οἰκογένειαι ἄνευ ἐλπίδος», ἔργον προκαλέσαν τὸ ἐνδιαφέρον τοῦ κοινοῦ. Περιηγήθη ἔπειτα τὴν Νορβηγίαν καὶ Σουηδίαν δίδων διαλέξεις καὶ τέλος ἐγκατεστάθη εἰς Κοπεγχάγην, ἔνθα ἤρχισε δημοσιεύων διηγήματα καὶ ἱστορίας, ἐκ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτεραι εἶναι αἱ «Φαίδρα» (1883) καὶ «Τίνα» (1889). Μεταξὺ τῶν ἄλλων ἔργων του τὰ καλύτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Τὸ ἄσπρο σπίτι» (1886), «Ζωὴ καὶ Θάνατος», εἷς τόμος «Ποιημάτων» (Digte, 1889) κλπ. Γ. Ι. Β.

— **Μπὰνγκ** (Bang), ***Ἱερώνυμος***. Γερμανὸς χρυσοχόος καὶ χαράκτης (1553—1630). Εἰργάσθη ἐν Νυρεμβέργῃ, διεκρίθη δὲ διὰ τὰ διακοσμητικὰ

Digitized by Google

μοτίβα του καὶ ἰδίᾳ διὰ μίαν ὡραίαν σύνθεσιν ἀπεικονίζουσαν ἐρωτιδεῖς κρατοῦντας πολεμικὰ ὅπλα. — Α. Δ.

**— Μπάνγκ** (Bang), ***Ἰωάννης.*** Δανὸς ἰατρὸς καὶ καλλιτέχνης (1737—1808). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ καὶ καλὰς τέχνας ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Κοπεγχάγης, ἥτις ἐτίμησεν αὐτὸν διὰ πολλῶν βραβείων, ὡς ἀρχιτέκτονα, σχεδιαστὴν καὶ χαράκτην. Ὁ Μπάνγκ ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς ἀνατομίας καὶ συγχρόνως τῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ τῆς προοπτικῆς. Ἐν τῷ «Danemarks Lager» τοῦ Ἰγκερλεβ ἀναφέρονται πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ, ἐν οἷς διακρίνονται: «Disputatio de hominis proportione» (1762), «Theses obstetriciae» (1764), «De parte secundo» (1765), «Tabula synoptica myologiae» (1766), «De mechanismo partus perfecti» (1774). — Α. Δ.

**— Μπάνγκ** (Bang), ***Νίνα - Ἑρριέττα - Βενδελίνη.*** Δανὶς δημοσιογράφος καὶ πολιτικὸς (1866—1928). Ἠσχολήθη μὲ τὰ οἰκονομικά, ἀνεμείχθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ τῷ 1918 ἐγένετο μέλος τῆς Ἄνω βουλῆς. Τῷ 1924 μετέσχε τῆς πρώτης σοσιαλ-δημοκρατικῆς κυβερνήσεως ὑπὸ τὸν Θεόδωρον Στάουνινγκ, ἀναλαβοῦσα τὸ ὑπουργεῖον τῆς Παιδείας. — Γ. Ι. Β.

**— Μπάνγκ** (Bang), ***Παῦλος.*** Γερμανὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1879. Μέχρι τῆς γερμανικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1918 ἀνῆκεν εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν τῆς Σαξωνίας, φθάσας εἰς βαθμὸν ἀνωτέρου οἰκονομικοῦ συμβούλου. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν ἔδρασεν ἐν Βερολίνῳ ὡς οἰκονομολόγος καὶ πολιτικός, ἰδίᾳ ὡς ἡγέτης τοῦ «Παγγερμανικοῦ συνδέσμου» καὶ διευθυντὴς τῆς «Deutsche Zeitung». Τῷ 1924 συνετέλεσεν εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ «Βιομηχανικοῦ συνδέσμου», μέλος τῆς διοικήσεως τοῦ ὁποίου ἀπέβη. Ἔγραψε: «Volkswirtschaft und Volkstum», «Staat und Volkstum», «Politik und Wirtschaft». — Α. Δ.

**—Μπάνγκ** (Bang), ***Πέτρος.*** Σουηδὸς θεολόγος (1633—1696). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Οὐψάλης, ἐν τῷ ὁποίῳ διωρίσθη βραδύτερον καθηγητής. Τῷ 1681 ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Βιπούργου. Ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἵδρυσε τὸ δεύτερον τυπογραφεῖον τῆς Φινλανδίας, ἐκτυπώσας ἐν αὐτῷ μίαν κατήχησιν καὶ ἕνα ἐπικήδειον λόγον του. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ἐκ τῆς συγγραφῆς αὐτοῦ «Priscorum Sveo-Gothorum» (1675), περιεχούσης σημαντικὰ στοιχεῖα σχετικὰ πρὸς τὴν προϊστορίαν τῆς Σουηδίας καὶ πλεῖστα παλαιὰ μαγικὰ ᾄσματα τῶν Φινλανδῶν. — Α. Δ.

**—Μπάνγκ** (Bang), ***Πέτρος-Γεώργιος.*** Δανὸς πολιτικὸς καὶ νομικὸς (1797—1861). Τῷ 1834 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς νομικῆς ἐν Κοπεγχάγῃ καὶ σύμβουλος τῆς Ἐπικρατείας, βραδύτερον δὲ (1836) διοικητὴς τῆς δανικῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης. Τῷ 1848 ἐξελέγη μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν. Τῷ 1853, γενόμενος πρόεδρος τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου, εἰσηγήθη καὶ ἐπέτυχε τὴν ψήφισιν νέου Συντάγματος. Ὑπῆρξε συγγραφεὺς νομικῶν ἔργων, σχετικῶν πρὸς τὸ δίκαιον τῶν Ρωμαίων καὶ τῶν Δανῶν. — Α. Δ.

**—Μπάνγκ** (Bang), ***Φρειδερῖκος-Λουδοβῖκος.*** Περιφανὴς Δανὸς ἰατρὸς (1747—1820). Ὑπῆρξε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου καὶ ἐσωτερικὸς ἰατρὸς ἐν τῷ νοσοκομείῳ Φρειδερίκου τῆς Κοπεγχάγης. Κατὰ τὴν μεγάλην πυρκαϊάν, ἥτις ἐξερράγη τῷ 1807 εἰς τὴν δανικὴν πρωτεύουσαν, συνεπείᾳ τοῦ βομβαρδισμοῦ αὐτῆς ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ στόλου, ἐχάθη μέγα μέρος τῶν εἰς χειρόγραφα ἔργων του. Ἐκ τῶν περισωθέντων ἄξια λόγου εἶναι: «Pharmacopea in usum nosocomii Fredericiani Hafniensis» (1788), «Selecta diarii nosocomii Fredericiani Hafniensis» (1789) καὶ «Praxis medica systematica exposita» (1789). — Α. Δ.

**Μπανγκαάϊ** (Bangaai) *[Γεωγρ.].* Ἰθαγενὲς κράτος τῆς νήσου Κελέμπ τῶν Ὁλλανδικῶν Ἰνδιῶν. Ἀποτελεῖται ἐκ περιοχῆς κατεχούσης τὸ ΒΑ. τμῆμα τῆς Κελέμπ καὶ ἑνὸς μικροῦ ἀρχιπελάγους, περιλαμβάνοντος τὴν νῆσον *Τιέλιγκ* καὶ τὰς νησῖδας *Μπανγκααΐ, Λαμπόμπο* καὶ *Μπανγκουλί.* Οἱ κάτοικοι εἶναι κατὰ πλειονότητα Μουσουλμᾶνοι, ἀσχολοῦνται δὲ μὲ τὴν ἁλιείαν καὶ γεωργίαν. Ἡ δουλεία κατηργήθη κατὰ τὸ ἔτος 1879.

Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα ἀριθμεῖ 1.600 κατοίκους. — Π. Γ. Λ.

**Μπανγκάλα** (Bangala) *[Γεωγρ.].* Ὀνομασία ὑπὸ τὴν ὁποίαν ἀναφέρεται ἐνίοτε ἡ ἐν τῇ κεντρῴᾳ Ἀφρικῇ χώρα τοῦ *Βελγικοῦ Κόνγκο,* ἡ μεταξὺ τῶν ποταμῶν Μομπάνγκι καὶ Μονγκάλλα, λόγῳ τοῦ ὅτι κατοικεῖται ὑπὸ τοῦ ἰθαγενοῦς λαοῦ τῶν *Μπανγκάλας.* Τὸ ἴδιον ὄνομα δίδεται ἐπίσης συχνὰ καὶ εἰς τὸν σημαντικὸν σταθμόν, ὅστις ἱδρύθη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κόνγκο, τὸν ἄλλως καλούμενον *Ἰμπόκο,* ἀποτελοῦντα κύριον διοικητικὸν καὶ ἐμπορικὸν κέντρον τῆς χώρας. — Ω.

**Μπανγκάλας** (Bangalas). Φυλὴ ἰθαγενῶν τῆς κεντρῴας Ἀφρικῆς, κατοικοῦσα ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Βελγικοῦ Κόνγκο. Ἀποτελεῖται ἐκ δύο κεχωρισμένων ὁμάδων, ἐξ ὧν ἡ μία ζῇ βορείως τοῦ Ἰσημερινοῦ ἐπὶ τῶν δύο ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Κόνγκο καὶ μεταξὺ τούτου καὶ τοῦ Οὐμπάνγκι· ἡ ἄλλη εἶναι ἐγκατεστημένη εἰς τὸ ἀνατολικὸν ἄκρον τῆς Ἀγκόλας, βορείως τοῦ Κασσανγκέ. Οἱ Μπανγκάλας εἶναι ὑψηλοῦ ἀναστήματος, εὔσωμοι, μὲ χαρακτηριστικὰ κανονικώτερα καὶ χρῶμα ἀνοικτότερον ἀπὸ τοὺς ἄλλους Νέγρους τῶν χωρῶν ἐκείνων. Διαιροῦνται εἰς μουκούζις=ἐλευθέρους καὶ μουντάμπας=δούλους, εἶναι ἀπεριορίστως πολύγαμοι καὶ φετιχισταὶ τὸ θρήσκευμα. Τὸ ἔνδυμά των ἀποτελεῖται ἐξ ἁπλοῦ καλύμματος τῶν σκελῶν, στολίζονται δὲ μὲ βαρέα βραχιόλια καὶ περιδέραια, ἐκ σιδήρου διὰ τοὺς ἄρρενας καὶ ἐξ ὀρειχάλκου διὰ τὰς γυναῖκας. Οἱ ἄνδρες ἀγοράζουν τὰς συζύγους των εἰς ὅσον πλῆθος ἐπιτρέπει ἡ οἰκονομικὴ ἑκάστου κατάστασις· ἡ πρώτη ὅμως ἐξ αὐτῶν ἄρχει ἐπὶ τῶν ἄλλων. Τὰ κάτω τοῦ Ἰσημερινοῦ χωρία τῶν Μπανγκάλας εἶναι αὐτοτελῆ, ὑπὸ τὴν διοίκησιν ἕκαστον ἑνὸς ἀρχηγοῦ, ὅστις εἶναι συνήθως καὶ ὁ πλουσιώτερος τῶν προκρίτων. Οἱ οἰκοῦντες ὅμως τὰς ὄχθας τοῦ Κόνγκο ἀναγνωρίζουν καὶ ἄλλους ἀρχηγοὺς κατὰ διαμερίσματα, καθὼς καὶ ἕνα ἀνώτατον ἄρχοντα, κυβερνῶντα τὴν ὅλην περιοχήν. Μολονότι ἀνθρωποφάγοι ἀκόμη κατὰ τὸ πλεῖστον, οἱ Μπανγκάλας φαίνονται ἐν τούτοις ἔχοντες ἀρκετὴν εὐφυΐαν καὶ ζῆλον μαθήσεως· πολλοὶ ἔχουν διδαχθῆ ἀνάγνωσιν καὶ γραφήν, ἐκμανθάνουν δ' εὐχερῶς διαφόρους χειροτεχνίας. Μεταξὺ αὐτῶν στρατολογεῖ ἡ βελγικὴ κυβέρνησις τὸ πλεῖστον τοῦ ἰθαγενοῦς στρατοῦ τῆς ἀποικίας τοῦ Κόνγκο. — Ω.

**Μπανγκαλόρε** (Bangalore) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα τοῦ ἰθαγενοῦς κράτους τοῦ *Μυσὸρ* ἢ *Μαϊσοὺρ* (Mysore, Maisur), καὶ τοῦ ὁμωνύμου διαμερίσματος. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς, ἀνερχόμενος εἰς 118.556 κατ. μέχρι τοῦ 1901, ἐδιπλασιάσθη ἔκτοτε, λόγῳ τῆς μεγάλης ἀναπτύξεως τῆς βιομηχανίας καὶ τοῦ ἐμπορίου της. Ἡ Μπανγκαλόρε ἀποτελεῖται ἀπὸ τὴν παλαιὰν πόλιν, τὴν ἀγγλικὴν συνοικίαν καὶ τὴν συνοικίαν τοῦ λόφου τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου. Ἐν τῇ παλαιᾷ πόλει ὑπάρχουν πολλὰ τεμένη καὶ ἰνδικὸς ναός, ἐν τῷ ὁποίῳ φυλάσσεται περίφημον ἄγαλμα τῆς Ὡραιότητος. Ἐν τῇ ἀγγλικῇ συνοικίᾳ ὑπάρχουν πολλὰ νέα κτήρια, μεγαλοπρεπὲς διοικητήριον, μουσεῖα, λύκεια καὶ βοτανικὸς κῆπος μετὰ ὀνομαστοῦ πάρκου. Εἶχεν ἄλλοτε ἀνθοῦσαν βιομηχανίαν μετάξης, ἥτις παρήκμασε σήμερον, παραχωρήσασα τὴν θέσιν της εἰς τὴν ταπητουργίαν, τὴν ὑφαντουργίαν, τὴν μεταλλουργίαν καὶ τὴν βυρσοδεψίαν. Τὸ ἐμπόριον αὐτῆς εἶναι ζωηρότατον χάρις εἰς τὰς πολλὰς σιδηροδρομικὰς συγκοινωνίας της πρὸς ἁπάσας διευθύνσεις. Ἔχει 29 τραπέζας καὶ τραπεζικὰ καταστήματα καὶ εἶναι ἕδρα τῆς σημαντικῆς «Τραπέζης τῆς Μπανγκαλόρε». Παρὰ τὴν πόλιν ὑπάρχει μέγα φρούριον μετὰ ὁπλοστασίου, ἀνεγερθὲν τῷ 1537 ὑπὸ τοῦ εἰς τὴν πόλιν ταύτην καταφυγόντος Χαϊντὲρ Ἀλῆ, μετὰ τὴν ἐξορίαν του εἰς Σεριγκαπατάμ. Τῷ 1791 τὸ φρούριον τοῦτο κατελήφθη κατόπιν σφοδρᾶς ἐπιθέσεως ὑπὸ τοῦ λόρδου Κορνουάλλις καὶ κατεστράφη κατὰ μέγα μέρος, ἐπισκευασθὲν τῷ 1881 ὑπὸ τοῦ ρατζᾶ τῆς Μυσόρ. Τὸ διαμέρισμα ἔχει ἔκτασιν 6.628 τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 788.379 κατ. — Μ. Δ. Β.

**Μπάνγκορ** (Bangor) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Ἀγγλίας, ἐν τῇ κομητείᾳ *Ντάουν* τοῦ διαμερίσματος Ὤλστερ τῆς Ἰρλανδίας, ἐπὶ τοῦ κόλπου τοῦ Μπέλφαστ καὶ εἰς ἀπόστασιν 17 χλμ. ΒΑ. τῆς ὁμωνύμου αὐτῷ πόλεως. Κάτ. 7776. Διεξάγει σημαντικὸν ἐμπόριον βάμβακος, λίνου καὶ μουσουλίνας. Ἔχει ἀββαεῖον, ἱδρυθὲν τῷ 555, τὸ ὁποῖον κατεστράφη κατὰ τὸν Θ' αἰῶνα ὑπὸ τῶν Βικίγγων, ἀριθμοῦν τότε περὶ τοὺς 3.000 μοναχούς. Ἡ Μπάνγκορ εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον πολυσυχνάστων λουτροπόλεων τοῦ Ὤλστερ.

—2) Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ *Κάρναρβον* τῆς Οὐαλλίας. Κάτ. 11.029. Ἔχει παλαιὰν μητρόπολιν τοῦ 525, καταστραφεῖσαν τῷ 1071 καὶ ἀνοικοδομηθεῖσαν τῷ 1496, πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1884, θεολογικὴν σχολὴν καὶ ἄλλας ἀνωτέρας σχολάς. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν σημαντικὰ λατομεῖα σχιστολίθου.

—3) Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς *Μαίην* καὶ τῇ κομητείᾳ τοῦ *Πένομπσκοτ.* Κάτ. 26.644. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Πένομπσκοτ, κατὰ τὸ ἄνω μέρος τοῦ πλωτοῦ τμήματος αὐτοῦ, εἰς ἀπόστασιν 100 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἀτλαντικοῦ. Εἶναι πυρετώδες κέντρον βιομηχανικὸν κέντρον πλουσίας γεωργικῆς περιφερείας καὶ ἔχει ἐργοστάσια ὑφασμάτων, μηχανουργεῖα, χυτήρια, ἐξάγει δὲ καὶ μεγάλας ποσότητας κτηνοτροφικῶν προϊόντων. Εἶναι ἐπίσης σημαντικὸν ἐκπαιδευτικὸν κέντρον, μὲ ἀνωτέρας σχολάς, σεμινάριον, βιβλιοθήκην ἐξ 100.000 τόμων, φρενοκομεῖον κ. τ. λ. — Μ. Δ. Β.

**Μπανγκουέλο** (Bangouélo) *[Γεωγρ.].* Μεγάλη λίμνη τῆς νοτίου Ἀμερικῆς. Δέχεται ἐξ Α. τὰ ὕδατα τοῦ ποταμοῦ Ζαμβέζη καὶ ἐκχύνεται πρὸς Ν. εἰς τὸν Λουαπούλα. Κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος της ἀποτελεῖται ἐκ τελμάτων, μόνον δὲ πρὸς τὰ ΒΔ. τὸ βάθος της γίνεται κάπως μεγαλύτερον. Περιλαμβάνει πολλὰς καλῶς καλλιεργουμένας νήσους, τῶν ὁποίων τὸ κλῖμα εἶναι ὀλιγώτερον νοσηρὸν παρ' ὅσον θὰ ἐνόμιζέ τις, διότι αἱ ἀπὸ ΝΑ. πνέουσαι αὖραι σαρώνουν τὰ ἑλειογενῆ μιάσματα κατὰ τοὺς ἓξ μῆνας τοῦ ἔτους. Εἰς τὴν περιβάλλουσαν τὴν λίμνην περιοχὴν διαβιοῦν μεγάλαι ἀγέλαι ἀπὸ ἀντιλόπας. Τὴν Μπανγκουέλο ἐξηρεύνησε τῷ 1868 ὁ Λίβινγκστον, ὅστις καὶ ἀπέθανεν εἰς Ἰλαλά, ἐπὶ τῆς μεσημβρινῆς ὄχθης τῆς λίμνης ταύτης, τῷ 1873. — Ω.

**μπανέλα** (ἡ)· παρεφθαρμένος τύπος τῆς λ. *μπαλαίνα.*

**Μπάνερ** (Banér), ***Ἰωάννης.*** Σουηδὸς στρατηγὸς (1598—1641). Ἁπλοῦς ἱππεὺς κατ' ἀρχὰς (1615), προήχθη ἐντὸς πενταετίας εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ ἰλάρχου, φθάσας τῷ 1631 εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Ἠκολούθησε τὸν Γουσταῦον Ἀδόλφον εἰς Γερμανίαν, ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ σουηδικοῦ στρατοῦ, ἐκέρδισε τὴν μάχην τοῦ Βίττστοκ (1636), εἶτα τὴν περίφημον παρὰ τὸ Κέμνιτς (1639) μάχην ἐναντίον τῶν Σαξώνων, κατέλαβε τὴν Βοημίαν (1640), ἀπέτυχεν ὅμως, λόγῳ τῆς τήξεως τῶν χιόνων, νὰ κυριεύσῃ τὸ Ρέγκενσμπουργκ, ἔνθα εἶχον συγκεντρωθῆ ὁ Γερμανὸς αὐτοκράτωρ καὶ αἱ ἀρχαὶ τοῦ κράτους. — Γ. Ι. Β.

**Μπανζ** (Bange), ***Κάρολος - Βαλεράν - Ραγκὸν*** (Ragon) ντὲ —. Γάλλος στρατιωτικός, ἐφευρέτης τῶν φερωνύμων του πυροβόλων, γεννηθεὶς τῷ 1833 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1914.

*Κάρολος Μπάνζ.*

Ἐξελθὼν τῆς Πολυτεχνικῆς Σχολῆς πρὸ τοῦ πέρατος τῶν σπουδῶν του, λόγῳ τοῦ πολέμου τῆς Κριμαίας, συνεπλήρωσε κατόπιν τὴν ἐκπαίδευσίν του ἐν τῷ σχολείῳ ἐφαρμογῆς τοῦ Μὲτς καὶ ἐβαθμολογήθη ἀνθυπολοχαγὸς τῷ 1856. Μετέσχε τῷ 1859 τῆς εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατείας, ἐφεξῆς δέ, ἀπεσπασμένος πάντοτε εἰς τεχνικὰς ὑπηρεσίας τοῦ πυροβολικοῦ (τὰ ὁπλουργεῖα τοῦ Châtellerault, τὴν Πυροτεχνικὴν Σχολὴν κ.λ.π.), ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς μελέτας ἀφορώσας τὴν μετατροπὴν καὶ βελτίωσιν τῶν ἐν χρήσει πυροβόλων, ἅτινα ἦσαν ἀκόμη τότε ἐμπροσθογεμῆ καὶ ὀρειχάλκινα. Ὁ πόλεμος τοῦ 1870, κατὰ τὸν ὁποῖον τὸ γαλλικὸν πυροβολικὸν ἀπεδείχθη μειονεκτοῦν τοῦ γερμανικοῦ, ἐνῷ ἐξ ἄλλου τὸ μεγαλύτερον αὐτοῦ τμῆμα περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν ἀντιπάλων, ἔθεσεν ἐπιτακτικὸν διὰ τὴν Γαλλίαν τὸ ζήτημα τοῦ ἀνεφοδιασμοῦ εἰς πυροβόλα, ἡ δὲ κυβέρνησις τῆς χώρας ἐκάλεσε τότε πάντας τοὺς εἰδικοὺς νὰ ὑποβάλουν συναφῆ σχέδια καὶ μελέτας. Ἐδοκιμάσθη ἐν πρώτοις εἰς εὐρυτέραν κλίμακα τὸ πυροβόλον τοῦ ἀντισυνταγματάρχου Reffye, τοῦ ὁποίου εἶχε γίνει ἤδη περιωρισμένη χρῆσις κατὰ τὴν τελευταίαν φάσιν τοῦ πολέμου. Μετὰ τοῦτο τὰ πυροβόλα τῶν 95 χλστμ. τοῦ ταγματάρχου Lahitolle. Τέλος δέ, κατὰ Ἰανουάριον 1877, τὰ τῶν 80 καὶ 90 χλστμ. τοῦ Μπάνζ, τὰ ὁποῖα καὶ ἔγιναν τελειωτικῶς δεκτά. Τὰ πυροβόλα τῶν δύο τύπων δὲν διέφερον μεταξύ των παρὰ κατὰ τὰς διαστάσεις μόνον· ἦσαν ἀμφότερα ἐκ χάλυβος καὶ ὀπισθογεμῆ, μετὰ κοχλιωτοῦ κλείστρου καὶ ἐμφρακτῆρος ἐκ πλαστικῆς ὕλης.

Τὸ πυροβόλον τῶν 90 χλστμ. εἶχε μῆκος 2μ.80, ὁλικὸν βάρος μετὰ τοῦ κιλλίβαντος αὐτοῦ 2 περίπου τόννων, ἔβαλλε δὲ ὀβίδας συνήθεις ἢ βολιδοφόρους, βάρους 8 χιλγρ., ἐξ ὧν ἄλλαι μὲν ἐξερρήγνυντο κατὰ τὴν πρόσκρουσιν των εἰς ἐμπόδιον (κρουσιφλεγεῖς), ἄλλαι δὲ μετὰ πάροδον χρόνου τινὸς ἀπὸ τῆς ἐκπυρσοκροτήσεως, ρυθμιζομένου δι' εἰδικοῦ ὀργάνου κατὰ δέκατα τοῦ δευτερολέπτου (ἐγκαιροφλεγεῖς ὀβίδες). Ἡ γόμωσις ἀπετελεῖτο ἐκ 1900 γραμμαρίων πυρίτιδος ἐντὸς σακκιδίου ἐξ ὑφάσματος ἀμιάντου. Ἡ ἀρχικὴ ταχύτης τοῦ βλήματος ἦτο 455 μ., τὸ δὲ βεληνεκὲς 7.000 μ., μὲ τελικὴν ταχύτητα 230 μ. Τὸ πεδινὸν πυροβόλον τῶν 80 χλστμ. ἦτο σημαντικῶς ἐλαφρότερον τοῦ προηγουμένου, ἔχον ὁλικὸν βάρος, μετὰ τοῦ κιλλίβαντος, 1.590 χιλιογράμμων. Ἡ γόμωσίς του, ἐκ 1500 γραμμ. πυρίτιδος, ἐδίδεν εἰς βλῆμα βάρους 5.600 γραμμ. ἀρχικὴν ταχύτητα 590 μ. Κατεσκευάσθησαν δ' ἐπίσης καὶ ἄλλοι τύποι τοῦ ἰδίου συστήματος μέχρι διαμετρήματος 270 χλστ. Ἡ Γαλλία εἶχεν ἀντικαταστήσει ἀπὸ τοῦ 1878 ὁλόκληρον τὸ πυροβολικόν της διὰ τῶν πυροβόλων τούτων, ἡ δὲ Ἀγγλία, ἥτις ἐπὶ μακρὸν δὲν ἀπεφάσιζε ν' ἀκολουθήσῃ τὸ παράδειγμα τῶν ἄλλων κρατῶν εἰς τὴν ἀντικατάστασιν τῶν ἐμπροσθογεμῶν πυροβόλων δι' ὀπισθογεμῶν, εἰσήγαγεν ἐν τέλει καὶ αὐτή, τῷ 1884, εἰς τὸν στρατόν της τὰ πυροβόλα Μπάνζ. Τὸ ἴδιον ἔτος ὁ σερβικὸς στρατός, κατόπιν συγκριτικῶν δοκιμῶν μεταξὺ

Digitized by Google

τῶν συστημάτων Ἄρμστρογκ, Κρούπ καὶ Μπάνζ, ἐφωδιάσθη διὰ πυροβόλων τοῦ τελευταίου τούτου. Ὁ Μπάνζ, ἀποστρατευθεὶς τῷ 1882 μὲ τὸν βαθμὸν συνταγματάρχου, ἐγένετο διευθυντὴς τῶν ἐν Γκρενὲλ ἐργοστασίων (1882—1889). Βραδύτερον ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις τὸν ἀπέστειλεν εἰς Ρωσίαν, ὅπως προβῇ εἰς μελέτας ἐπὶ τοῦ ὑλικοῦ τοῦ ρωσικοῦ πυροβολικοῦ. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ὁ Μπάνζ ἐπενόησε καὶ διαφόρους τελειοποιήσεις διὰ σιδηροδρομικὰς ἁμάξας καὶ ἀτμομηχανάς, τὰς ὁποίας ὅμως δὲν ἐπρόλαβε νὰ θέσῃ εἰς πρακτικὴν ἐφαρμογήν. Γ. Ζ.

**Μπανζὰ** (Banza). Φυλὴ τοῦ γαλλικοῦ καὶ βελγικοῦ Κόνγκο, κατοικοῦσα ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Οὐμπάγκι. Τὰ χαρακτηριστικὰ τῶν Μπανζὰ ὁμοιάζουν πρὸς τὰ τῶν λευκῶν· δὲν ἔχουν τὸν προγναθισμὸν τῶν ἄλλων μαύρων, τὰ χείλη των δὲν εἶναι παχέα, οἱ ὀφθαλμοί των εἶναι μεγάλοι καὶ ὡραῖοι, ἡ δὲ ρὶς σχεδὸν κανονική. Δὲν εἶναι ἀνθρωποφάγοι, εἶναι εὔθυμου χαρακτῆρος καὶ ἐπιδίδονται κυρίως εἰς τὴν ἁλιείαν. Αἱ γυναῖκές των εἶναι ὑπερήφανοι καὶ εἰλικρινεῖς. Ἡ μοιχεία εἶναι ἄγνωστος παρ' αὐταῖς. Π. Λ.

**Μπάνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος *Πίδνης* τῆς ἐπαρχίας Πιερίας (Κατερίνης) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κεῖται ἐγγὺς τοῦ Κίτρους καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 552. Χ. Δ

**μπάνι** (ρουμαν. bani)· πληθ. τοῦ banu, ὅπερ σημαίνει τὸ ἑκατοστὸν τοῦ *λέϊ* (βλ. λ. *Ρουμανία* [Νομισμ.].

**Μπάνι** *[Γεωγρ.]*. —1) *Ἄνω* —. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Περάνθη* (βλ. λ.). —2) *Κάτω* —. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Λουτρότοπος* (βλ. λ.).

**Μπάνι** (Bagni) *[Γεωγρ.]*. Ἰταλικὴ λέξις σημαίνουσα «λουτρά» καὶ χρησιμοποιουμένη ὡς πρῶτον συνθετικὸν τοῦ ὀνόματος πολλῶν δήμων, πόλεων καὶ χωρίων ἐν Ἰταλίᾳ, ὧν κυριώτερα:

***Μπάνι ντελλὰ Πορρέττα*** (della Porretta). Δῆμος τοῦ νομοῦ τῆς *Βολωνίας*, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Φλωρεντίας—Βολωνίας, εἰς ὕψος 349 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Κάτ. 4.000. Ἔχει ἰαματικὰς θερμοπηγὰς χλωριούχου νατρίου, ἐνδεικνυομένας διὰ μυϊκὰς παθήσεις.

***Μπάνι ντὶ Κασιάνα*** (di Casciana). Δῆμος τοῦ νομοῦ τῆς *Πίζης*. Κάτ. 3.648. Ἔχει θειουχο-ασβεστουχο-ανθρακούχους θερμὰς πηγάς, γνωστὰς καὶ ἀπὸ τῆς ρωμαϊκῆς ἐποχῆς.

***Μπάνι ντὶ Καστελλιέρε*** (di Castelliere). Λουτροθεραπευτικὸς σταθμὸς τῆς Βενετίας Τριδεντίνας, γνωστὸς πρὸ τῆς ἰταλικῆς κατοχῆς ὡς *Βιλντμπαντ Μπουργκσταλ* (Wildbad Burgstall). Κεῖται εἰς ὕψος 1.040 μ. ἐν τῷ νομῷ τοῦ *Μπολτσάνο* καὶ ἔχει πηγὴν ἧς τὰ σιδηροῦχα ὕδατα χρησιμοποιοῦνται πρὸς πόσιν καὶ διὰ λουτρά, ἐνδεικνύομενα εἰς γαστρικὰς καὶ νευρικὰς παθήσεις καὶ κατὰ τῆς ἀναιμίας.

***Μπάνι ντὶ Λοῦκα*** (di Lucca). Δῆμος τοῦ νομοῦ τῆς *Λούκκας*. Κάτ. 12.145. Ἔχει 13 ἰαματικὰς ἀλκαλικὰς πηγάς, ὧν τὰ ὕδατα χρησιμοποιοῦνται πρὸς πόσιν καὶ διὰ λουτρά. Αἱ πηγαὶ αὗται ἦσαν γνωσταὶ καὶ εἰς πολὺ παλαιοτέρους χρόνους, ὁπότε ὑπῆρχον σημαντικαὶ ἐγκαταστάσεις, ὧν ἴχνη σῴζονται ἔτι σήμερον. Ἀποτελεῖ λίαν πολυσύχναστον λουτροθεραπευτικὸν κέντρον, ἰδίᾳ τῶν εἰς Φλωρεντίαν κατερχομένων ξένων.

***Μπάνι ντὶ Μοντεκατίνι*** (di Montecatini)· βλ. λ. *Μοντεκατίνι*.

***Μπάνι ντὶ Σὰν-Τζιουλιάνο*** (di San Giuliano). Δῆμος τοῦ νομοῦ τῆς Πίζης. Κάτ. 20.943. Ἔχει 12 θερμοπηγὰς 37—40°, περιεχούσας θεῖον, ὑδροχλώριον, ἀνθρακοῦχον ἀσβέστιον καὶ μαγνήσιον, ὀνομαστὰς καὶ ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος. Μ. Δ. Β.

**Μπάνια** *[Γεωγρ.]*. —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος *Ἁγιάσματος* (Λατορίστης) τῆς ἐπαρχίας Βοΐου (Ἀνασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, μετονομασθεὶς *Ἁγία Παρασκευή*. Κάτ. (1928) 26.

2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Λουτροχώρι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπανιακαβάλλο** (Bagnacavallo), ***Βαρθολομαῖος Ραμένγκι ντὰ*** —. Ἰταλὸς ζωγράφος ἐκ Φεράρας (1484—1542). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς παρὰ τῷ Φράντσια, εἶτα δέ, μεταβὰς εἰς Ρώμην, ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τοῦ Ραφαὴλ καὶ ἀπέβη εἷς ἐκ τῶν πιστοτέρων μιμητῶν του. Τὰς γιγαντιαίας μορφὰς τῶν ἔργων του χαρακτηρίζει μεγάλη κίνησις καὶ λαμπρὸς χρωματισμός. Κάλλιστα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ἡ παρθένος προσκυνουμένη ὑπὸ τεσσάρων ἁγίων» (μουσεῖον Δρέσδης), «Ὁ ἅγιος Πετρώνιος, ὁ ἅγιος Λουδοβῖκος καὶ ἡ ἁγία Ἁγνή» (μουσεῖον Βερολίνου), σειρὰ διακοσμητικῶν παραστάσεων ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Μιχαὴλ ἐν Μπόσκο τῆς Βολωνίας, «Ἡ Παρθένος μετὰ ἁγίων» (Πινακοθήκη Βολωνίας), κ. ἄ. Χ. Α.

**Μπανιακαβάλλο** (Bagnacavallo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς *Ραβέννης*, ἧς ἀπέχει 19 χλμ. Κάτ. 16.000. Εἶνε ἡ ἀρχαία ρωμαϊκὴ πόλις Tiberiacum. Διεξάγει ἐμπόριον οἴνων καὶ μεταξωτῶν. Ἔχει τεχνικὴν σχολὴν καὶ ναὸν τοῦ Θ' αἰῶνος. Μ. Δ. Β.

**Μπανιαλούκα** (Banjaluka) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας ἐν Βοσνίᾳ, πρωτεύουσα τοῦ βανάτου *Βερμπάς*, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου τῷ βανάτῳ ποταμοῦ, παραποτάμου τοῦ Σαύου, 140 χλμ. βορειοδυτικῶς τοῦ Σεραγέβου. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν πρὸς τὴν Γκραντίσκα, τὸ Σεράγεβον κλπ., διεξάγει ζωηρότατον ἐμπόριον τῶν προϊόντων τῆς περιοχῆς (καπνοῦ, σιτηρῶν, κτηνῶν κλπ.) καὶ ἔχει ἀξιόλογον ὑφαντουργίαν. Κάτ. (1921) 18.001, ἐξ ὧν οἱ ἡμίσεις περίπου Μουσουλμᾶνοι, οἱ δὲ λοιποὶ Χριστιανοὶ (ὀρθόδοξοι καὶ καθολικοί) καί τινες Ἑβραῖοι. Ἔχει 33 μουσουλμανικὰ τεμένη, ὧν ἓν παλαιότατον, κτισθὲν τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, καὶ πολλὰς μονὰς φραγκισκανῶν καὶ τραππιστῶν εἰς τὰ πέριχωρα. Ἐπίσης ἔχει ἀξίας λόγου θειούχους θερμοπηγάς.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ Μπανιαλούκα εἶναι πιθανῶς τὸ ρωμαϊκὸν φρούριον Castrum, τὸ ὁποῖον ἀναφέρεται κείμενον ἐπὶ τῆς ἀπὸ τῆς Ἀδριατικῆς πρὸς τὴν Παννονίαν ὁδοῦ. Μετὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Σλάβων ἡ πόλις ἐγένετο ἕδρα τῆς περιοχῆς τοῦ Βερμπάς, ἥτις ἀνῆκεν εἰς τὴν Κροατίαν μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἀκολούθως εἰς τὴν Βοσνίαν. Τῷ 1528 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Τούρκων, καθ' ἣν ἐποχὴν εἶχε προαχθῆ σημαντικῶς, ἀποτελοῦσα τὸ μεγαλύτερον ἐμπορικὸν κέντρον τῆς Βοσνίας. Τῷ 1683 τὴν κατέλαβεν ὁ πρίγκιψ Λουδοβῖκος τῆς Βάδης, διατηρήσας αὐτὴν ἐπὶ βραχὺ μόνον διάστημα. Βραδύτερον, τῷ 1737, οἱ Αὐστριακοὶ ὑπέστησαν δεινὴν ἧτταν πρὸ τῶν τειχῶν τῆς πόλεως ἥτταν ἐκ μέρους τῶν Τούρκων. Τῷ 1878 κατελήφθη μεθ' ὁλοκλήρου τῆς Βοσνίας καὶ τῆς Ἐρζεγοβίνης ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν καὶ παρέμεινεν ὑπ' αὐτοὺς μέχρι τοῦ τέλους τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (1918), μεθ' ὃ περιῆλθεν εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν. Κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν κατάληψιν τῆς ἡ Μπανιαλούκα παρουσίαζεν ὄψιν τουρκοπόλεως τῆς Ἀνατολῆς, εἰς διάστημα ὅμως ὀλίγων ἐτῶν προσέλαβε χαρακτῆρα εὐρωπαϊκὸν καὶ εἶναι σήμερον μία ἐκ τῶν ὡραιοτέρων νοτιοσλαβικῶν πόλεων.

Τὸ ὄνομά της σημαίνει κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην «Λουτρὰ τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ». Χ. Δ.

**Μπάνιαν** (Banians). Ἰνδικὴ φυλὴ κατοικοῦσα τὴν περιφέρειαν τοῦ Καντζεράτ (Δυτικαὶ Ἰνδίαι). Οἱ Μπάνιαν ἀνήκουν κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν βραχμανικὴν αἵρεσιν τῶν Βαϊκούας, τινὲς δὲ εἰς τὴν τῶν Βισνουϊτῶν. Ἀσχολοῦνται μὲ τὸ ἐμπόριον, εἰς τὸ ὁποῖον δεικνύουν ἐξαιρετικὴν ἐπιδεξιότητα, καὶ ἀποτελοῦν σήμερον τὸ σπουδαιότερον ἀστικὸν στοιχεῖον τῆς Βομβάης καὶ τοῦ Καντζεράτ. Τὸ ὄνομα Μπάνιαν τοῖς ἐδόθη ὑπὸ τῶν Εὐρωπαίων, οἵτινες ὠνόμαζον γενικῶς οὕτω τὰς ἰθαγενεῖς ἐμπορικὰς τάξεις τῶν Δυτικῶν Ἰνδιῶν. Π. Γ. Λ.

**Μπανιάρα** (Bagniara) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ *Ρέτζιο* τῆς Καλαβρίας, μετὰ μικροῦ λιμένος παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ στενοῦ τῆς Μεσσήνης. Κάτ. 11.500. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὴν ὡραιότητα τῶν γυναικῶν της καὶ τὸν ἀνθοσμίαν οἶνόν της. Κατὰ τὸν σεισμὸν τοῦ 1908 ὑπέστη μεγάλας ζημίας. Οἱ κάτοικοι, ἐκτὸς τῆς ἀμπελουργίας, ἀσχολοῦνται ἐπίσης καὶ εἰς τὴν ἁλιείαν. Μ. Δ. Β.

**Μπανιὰς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Παλαιστίνης (βλ. λ. *Καισάρεια* ἡ Φιλίππου).

**Μπανιγιαμπαντὶ** (Baniyambadi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ *Μαδράς*. Κάτ. 15.400. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Παλάρ καὶ εἶναι κέντρον ἐμπορίου βάμβακος. Μ. Δ. Β.

**Μπανίγκο** (Baningo) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Ἀγγλικῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Μασσοϊ. Εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τῶν λιμνῶν τῆς περιφερείας, ἀνεξάρτητος τῶν λιμνῶν Βικτωρίας καὶ Νυάνζα. Πρῶτοι τὴν ἐπεσκέφθησαν οἱ περιηγηταὶ Τέλακ, φὸν Χίνελ Πέτερς καὶ Γκρέγκορι. Π. Γ. Λ.

**Μπανιὲ** (Bagneux) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ *Σηκουάνα*, κείμενον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ καὶ εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Σὼ (Sceaux). Κάτ. 2.270.

— *[Ἱστορ.]* Ἐνταῦθα συνεκροτήθη ἡ φερώνυμος μάχη τῆς 13ης Ὀκτωβρίου 1870, διαρκούσης τῆς ὑπὸ τῶν πρωσσικῶν στρατευμάτων πολιορκίας τῶν Παρισίων. Τὸ ΙΓ' γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ ἐπεχείρησε κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἔξοδον πρὸς ἀπώθησιν τῶν Γερμανῶν ἀπὸ τοῦ κατεχομένου ὑπ' αὐτῶν ὀροπεδίου τοῦ Σατιγιόν, μία δὲ ταξιαρχία ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ντελασαριέρ, διὰ ταχείας προελάσεως, ὑποστηριζομένης ὑπὸ τῶν πυροβόλων τοῦ φρουρίου Μονρούζ, ἐπέτυχε ν' ἀφαιρέσῃ ἀπ[ὸ] τοὺς Γερμανοὺς τὸ Μπανιέ. Ἡ δεξιὰ ὅμως πτέρ[υξ] τῶν Γάλλων, ἡ ἐπιτεθεῖσα κατὰ τοῦ Σατιγ[ιόν] δὲν ἠδυνήθη νὰ συνεχίσῃ τὴν προέλασίν τ[ης] καμφθεῖσα ἐν τέλει ὑπὸ τὸ ἰσχυρὸν πῦρ τοῦ γε[ρ]μανικοῦ πυροβολικοῦ. Τοῦτο ἠνάγκασε τὸν διοι[κη]τὴν τοῦ γαλλικοῦ σώματος στρατηγὸν Βινουά ν[ὰ] διατάξῃ τὴν ἐκ νέου ἐκκένωσιν τοῦ Μπανιέ, ὅ[περ] καταληφθέντος ἀμέσως ὑπὸ τῶν Γερμανῶν. —[ι]

**Μπανιὲ** (Banier), *ἀββᾶς **Ἀντώνιος***. Γάλλο[ς λο]γοτέχνης, μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφ[ῶν] (1673—1741). Κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὸ [ὑπὸ] τὸν τίτλον «Ἐξήγησις ἱστορικὴ τῶν μύθων» ἀξιολ[ο]γώτατον σύγγραμμα, ἐπανεκδοθὲν διὰ τρίτην φ[ο]ρὰν τῷ 1738—1740 ὑπὸ τὸν νέον τίτλον «Ἡ μ[υ]θολογία καὶ οἱ μῦθοι ἐξηγούμενοι ὑπὸ τῆς ἱστορ[ίας]». Χ. Δ.

**Μπανιὲρ** (Banières). Γάλλος λόγιος ἐκ Τουλ[ού]ζης, ζήσας κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνο[ς]. Δὲν εἶναι γνωστὸς τόσον διὰ τὰ ἔργα του, ἐν [οἷς] αἱ τραγῳδίαι «Βελισσάριος» καὶ «Θάνατος τοῦ Ἰο[υ]λίου Καίσαρος», ὅσον διὰ τὴν παραδόξως πολυσχ[ιδῆ] σταδιοδρομίαν του. Διετέλεσε κληρικός, δικηγόρο[ς], γεωμέτρης, στρατιωτικός, ποιητὴς καὶ κωμῳδιογράφος. Ὁ Ἀλέξανδρος Δουμᾶς τὸν ἀπηθανάτισε εἰς ἓν διήγημά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Olympe de Clèves». —Ι

**Μπανιὲρ - *ντὲ - Λυσὸν*** (Bagnères-de-Luchon) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ *Ἄνω Γαρούνα*, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Ὂν καὶ Πίκ. Κάτ. 3.740. Τὰ θειοῦχα ἰαματικὰ ὕδατά της, χρησιμοποιούμενα πρὸς πόσιν καὶ διὰ λουτρά, ἐνδείκνυνται ἐναντίον τῶν δερματικῶν ἀσθενειῶν, τῶν παθήσεων τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων, τῆς ἀναιμίας, τῶν παθήσεων τῶν ὀστῶν, τῶν ρευματισμῶν κλπ. Χ. Δ.

— **Μπανιὲρ-*ντὲ - Μπιγκὸρ*** (Bagnères-de-Bigorre) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ *Ἄνω Πυρηναίων*, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἀντούρ, εἰς ἀπόστασιν 20 χλμ. ἀπὸ τῆς Τάρμπ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ὀνομαστὰς θειοασβεστούχους καὶ σιδηρούχους ἰαματικὰς πηγάς, ἐνδεικνυομένας ἐναντίον τῆς ἀναιμίας, τῶν γαστρεντερικῶν παθήσεων, τῶν καταρρων, τῶν ρευματισμῶν κλπ. Λατομεῖα μαρμάρων καὶ πλακῶν. Κάτ. 8.460. Χ. Δ.

**μπανίζω**· κοιτάζω μετὰ ἰδιαζούσης προσοχῆς συλλαμβάνω λαιμάργως καὶ διερευνητικῶς διὰ τοῦ βλέμματος κακὸν προτιθέμενος· ‖ διακρίνω· φρ. «τὸν ἐμπάνισε τὸν μπεζαχτᾶ», «τὸν ἐμπάνισα πισόπλατα», «τὴν ἐμπάνισα, ὁποῦ λές, καὶ τῆς ρίχτηκα».

**μπάνικος**, *—η, —ο*· ὁ ἑλκυστικός, ἐκεῖνος τὸ ὁποῖον ὀρέγεταί τις διά τι· ὁ κόμματος.

**Μπάνιμ** (Banim), ***Ἰωάννης***. Ἰρλανδὸς μυθιστοριογράφος (1798—1842). Συνέγραψε μετὰ τοῦ πρεσβυτέρου ἀδελφοῦ του *Μιχαὴλ* (1796—187[4]) σειρὰν διηγημάτων, ἐν οἷς εἰκονίζεται ἡ ἰρλανδικὴ ζωή. Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν εἰς Λονδῖνον, ἤρχισε γράφων εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ διὰ τὸ θέατρον. Τῷ 1825 ἐδημοσιεύθη συλλογὴ διηγημάτων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορία τῆς οἰκογενείας Ὄχαρα». Δευτέρα σειρὰ ἐδημοσιεύθη τῷ 1826 ὑπὸ τὸν τίτλον «Οἱ Νόυλανς» (The Nowlans).

Τῷ 1829 μετέβη εἰς Γαλλίαν, ὅπου λόγῳ μακρᾶς ἀσθενείας περιῆλθεν εἰς μεγάλην ἔνδειαν, τέλος δὲ διὰ συνεισφορῶν φίλων του καὶ κυβερνητικῆς ἐπιχορηγήσεως ἐπέστρεψε τῷ 1835 εἰς Ἰρλανδίαν. Ὁ Μπάνιμ ἀπεκλήθη ὑπό τινων κριτικῶν ὁ «Σκὼτ τῆς Ἰρλανδίας». Γ. Ι. Ε.

**μπάνιο** (τὸ)· δημοτ., λουτρὸν οἱονδήποτε, θαλάσσιον, ἰαματικόν, καθαριστικόν: «κάμνω—, παίρνω μπάνιο», «ἀδυνάτισα ἀπὸ τὰ μπάνια» ‖ «πηγαίνω εἰς τὰ μπάνια», μεταβαίνω εἰς τὸν τόπον τῶν λουτρῶν· «γύρισα ἀπὸ τὰ μπάνια». (Ἡ λ. ἐκ τοῦ ἰταλ. bagno καὶ τοῦτο ἐκ τοῦ λατ. balneum, προελθόντος ἐκ τοῦ ἀρχ. ἑλλην. *βαλανεῖον*).

— **μπάνιο** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸν *ποδίσκον* ἀρτέμονος ἐπιδρόμου ἢ ἡμιολίων. Σ. Ε. Λ.

**Μπάνιο - ἀ-Ρίπολι** (Bagno-a-Ripoli) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς *Φλωρεντίας* ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 6 χλμ. Κάτ. 16.000. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Ἄρνο καὶ ἔχει θερμοπηγὰς καὶ ἐρείπια ἀρχαίων θερμῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπανιόλ**, ἢ ***Μπανιὸλ - λὲ - Μπαὶν*** (Bagnols ἢ Bagnols - les - Bains) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Λοζέρ, εἰς ὕψος 800 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Κάτ. 370. Ἔχει δροσερὸν κλῖμα καὶ 6 ὀνομαστὰς θειούχους καὶ σιδηρούχους ἰαματικὰς πηγὰς 35°—42°, μὲ θαυμασίας τεχνικὰς ἐγκαταστάσεις καὶ μεγαλοπρεπῆ ξενοδοχεῖα, συχνάζεται δὲ ὑπὸ πολλῶν ξένων κατὰ τὸ θέρος. Τὰ ὕδατα τῶν πηγῶν της, κατάλληλα πρὸς πόσιν καὶ λουτρά, ἐνδείκνυνται εἰς τὰς παθήσεις τῆς καρδίας καὶ τὴν ἀρτηριοσκλήρωσιν. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπανιόλας,** ἢ ***Μπαννόλας*** (Bañolas ἢ Banyolas) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν Καταλωνίᾳ καὶ τῷ νομῷ τῆς *Χερόνα*, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τέρρι. Κάτ. 5.000. Ἔχει παρ' αὐτὴν πολλὰς θερμοπηγὰς καὶ μικρὰν λίμνην, ἧς τὰ ὕδατα χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν ἠλεκτροκίνησιν πολλῶν ἐργοστασίων χάρτου, ὑφαντουργείων, βυρσοδεψείων κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπανιόλι** (Bagnoli), *ἀββᾶς* ***Πέτρος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1767—1847). Συνέθεσε πλεῖστα ποιήματα, κατὰ προτίμησιν ἐπικὰ καὶ λυρικά, καί τινα θεολογικοῦ χαρακτῆρος, θεωρεῖται δὲ ἐκ τῶν καλυτέρων νεωτέρων στιχουργῶν τῆς χώρας του. Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων του ἔργων εἶναι: «Ὁ Κάδμος», «Ὁ σοφὸς Ὀρλάνδος» κτλ. Ἐπίσης μετέφρασεν ἐμμέτρως τὴν Αἰνειάδα τοῦ Βιργιλίου. Μ. Δ. Β.

**Μπανιουβάνγκι** (Banjuwangi) *[Γεωγρ.]*. —1) Χώρα τῆς Ἀνατολικῆς Ἰάβας ἐν τῇ ὁλλανδικῇ ἐπαρχίᾳ *Μπεζοῦκι*. Κεῖται ἐπὶ τοῦ πορθμοῦ τοῦ Μπάλι, μέχρι δὲ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἦτο ἕδρα τοῦ βραχμανικοῦ κράτους *Μπαλαμπάνγκαν*. Μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ κράτους τούτου καὶ τὴν σφαγὴν τοῦ μεγαλυτέρου μέρους ἐκ τῶν κατοίκων του συνῳκίσθη διὰ κατοίκων τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν. —2) Πόλις τῆς ὁμωνύμου χώρας, σπουδαῖος σταθμὸς τῶν πρὸς τὴν Αὐστραλίαν (λιμὴν *Ντάρβιν*) μεγάλων τηλεγραφικῶν καλῳδίων. Κάτ. 16.000. Χ. Δ.

**Μπανιουόλο** (Bagnuolo), *κόμις καὶ πρίγκιψ τοῦ —*. Νεαπολιτᾶνος στρατηγός, ζήσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Διετέλεσεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Ἱσπανίας κατὰ τὴν βασιλείαν Φιλίππου Δ' καὶ διεκρίθη μεγάλως κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Βραζιλίας ἐναντίον τοῦ Μαυρικίου τῆς Σαξωνίας, νικήσας καὶ ἐξαναγκάσας αὐτὸν νὰ λύσῃ τὴν πολιορκίαν τοῦ Ρίου Ἰανεΐρου τῷ 1638. Εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του ὁ βασιλεὺς τῆς Ἱσπανίας ἔδωσεν εἰς τὸν Μπανιουόλο τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος. Μ. Δ. Β.

**Μπανιούμας** (Banjoemas) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῆς νήσου *Ἰάβας*. Ἡ πόλις ἔχει 5.500 κατ., ἐξάγει ὄρυζαν, καφὲν καὶ ζάκχαριν καὶ εἶναι ἕδρα Ὁλλανδοῦ διοικητοῦ. Τὸ διαμέρισμα ἔχει ἔκτασιν 5.588 τ. χλμ. καὶ 1.767.529 κατ. Τὸ ἔδαφος αὐτοῦ εἶναι εὔφορον καὶ παράγει ὄρυζαν, τέϊον, καπνόν, ζάκχαριν, ἔχει δὲ καὶ λίαν ἀνεπτυγμένην κτηνοτροφίαν βουβάλων καὶ βοῶν. Μ.Δ.Β.

**μπάνισμα** (τό)· γοργὴ σύλληψις διὰ τοῦ βλέμματος· φρ. «μωρέ, μπάνισμα !».

**Μπάνιστερ** (Banister). Οἰκογένεια Ἄγγλων μουσικῶν, ἧς τὰ κυριώτερα μέλη εἶναι οἱ:

—1) ***Τζὼν Μπάνιστερ***, διακεκριμένος δεξιοτέχνης τοῦ βιολοντσέλλου (1630—1679), μουσικὸς διευθυντὴς τῆς ἀγγλικῆς αὐλῆς μέχρι τοῦ 1666 καὶ εἶτα ὀργανωτὴς συναυλιῶν. Ἔγραψε τὴν μουσικὴν τῆς «Κίρκης» τοῦ Ντάβεναντ, ὡς καὶ τὴν τῆς «Τρικυμίας» τοῦ Σαίξπηρ (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Humphrey).

—2) ***Τζὼν Μπάνιστερ***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1663—1735). Βιολιστὴς καὶ συνθέτης, ἔγραψε τὴν μουσικὴν πλείστων θεατρικῶν ἔργων.

— 3) ***Ἐρρῖκος Μπάνιστερ*** (1831—1897), υἱὸς τοῦ βιολοντσελλιστοῦ *Ἰωσουᾶ Μπάνιστερ* (1803—1847). Ἐχρημάτισε καθηγητὴςς ἐν τῇ μουσικῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Λονδίνου καὶ διεκρίθη ὡς συνθέτης διὰ 4 συμφωνιῶν, 5 εἰσαγωγῶν, τεμαχίων κλειδοκυμβάλου, μουσικῆς δωματίου κτλ. Ἐξέδωκεν ἐπίσης πλεῖστα θεωρητικὰ καὶ κριτικὰ συγγράμματα. Γ. Σ.

**μπανιστὴς** (ὁ)· ὁ ἐν τοῖς τυχεροῖς παιγνίοις ἁρπάζων κακοβούλως διὰ τοῦ βλέμματος τὰς κινήσεις καὶ τοὺς μορφασμοὺς τῶν συμπαικτῶν.

**Μπάνιτσα** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται πρὸς Α. τῆς Φλωρίνης, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, καὶ ἐγγὺς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Θεσσαλονίκης—Μοναστηρίου, εἰς τὸ 175,5 χιλιόμετρον ἀπὸ Θεσσαλονίκης. Ἔχει ἀστυνομικὸν τμῆμα, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παράγει κυρίως σιτηρὰ ἐπὶ καλλιεργουμένης ἐκτάσεως 2.500 περίπου στρεμμάτων. Μετωνομάσθη *Βεύη* ἐκ τῆς ἀρχαίας ὁμωνύμου πόλεως τῆς Λυγκηστίδος. Κάτ. (1928) 1.995. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν τοῦ ὁμωνύμου σιδηροδρομικοῦ σταθμοῦ (κάτ. 151). Χ.Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ περιοχὴ τῆς Μπάνιτσας εἶναι σημαίνουσα ἀπὸ στρατιωτικῆς ἀπόψεως, ἅτε εὑρισκομένη εἰς τὴν βορείαν ἔξοδον τῆς στενωποῦ Κιρλὶ δερβέν, ἔνθα ἡ ἐκ Μοναστηρίου ἁμαξιτὴ ὁδὸς διακλαδοῦται, ἀφ' ἑνὸς μὲν πρὸς νότον, ἄγουσα διὰ Κιρλὶ δερβὲν καὶ Σόροβιτς πρὸς Κοζάνην, ἀφ' ἑτέρου δὲ πρὸς ἀνατολάς, ἄγουσα διὰ Γκορνίτσεβο καὶ Ὀστρόβου πρὸς τὴν πεδιάδα Γιαννιτσῶν. Διὰ τοῦτο ἐπὶ τῆς ἐν λόγῳ περιοχῆς διεξήχθησαν πολλάκις μάχαι κατὰ τὸν τρέχοντα αἰῶνα.

***Α.*** Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ **1912, ἡ 5η** ἑλληνικὴ μεραρχία ὑπὸ τὸν συνταγματάρχην Ματθαιόπουλον εἶχεν ὁρισθῆ ὡς πλαγιοφυλακὴ τοῦ ἀριστεροῦ πλευροῦ τῆς πρὸς Γιαννιτσὰ προελαυνούσης στρατιᾶς, καὶ συγχρόνως διὰ τὴν ἐξασφάλισιν τῶν μετὰ τῆς Λαρίσης γραμμῶν συγκοινωνιῶν τῆς στρατιᾶς ταύτης. Ἡ μεραρχία αὕτη, ἔχουσα πλήρη πρωτοβουλίαν ἐνεργείας, ἔκρινεν ὅτι, πρὸς ἐκπλήρωσιν τῆς ἐντολῆς της, ὤφειλε νὰ προχωρήσῃ ἐφ' ὅσον τῇ ἦτο δυνατὸν καὶ μέχρι Μοναστηρίου, ἅμα δὲ ὡς, προχωροῦσα πρὸς βορρᾶν, ἔφθασε τὸ ἀπόγευμα τῆς 19ης Ὀκτωβρίου 1912 εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Μπάνιτσας, ἐγκατεστάθη ἐπὶ καταλλήλων ἀμυντικῶν θέσεων, ἐξασφαλίσασα τὸ μὲν δεξιὸν πλευρόν της διὰ τῆς καταλήψεως τῶν ὑψωμάτων Ζαμπέρδανης, προκαλυφθείσης τοιουτοτρόπως τῆς πρὸς Γκορνίτσεβο ὁδοῦ, τὸ δ' ἀριστερόν της διὰ τῆς καταλήψεως τῆς Νεγκοβάνης, προκαλυφθέντος οὕτω τοῦ αὐχένος Νεγκοβάνη—Ἀϊτός, δι' οὗ θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ προσβληθῇ τὸ ἀριστερὸν πλευρὸν τῆς μεραρχίας ὑπὸ τουρκικοῦ στρατεύματος προερχομένου ἐκ Φλωρίνης.

Ἐν τοιαύτῃ ἀμυντικῇ καταστάσει παρέμεινεν ἡ μεραρχία καθ' ὅλην τὴν ἡμέραν τῆς 20ῆς Ὀκτωβρίου· τὴν πρωΐαν ὅμως τῆς 21ης Ὀκτωβρίου διέταξεν ὁ μέραρχος προχώρησιν πρὸς τὴν πεδιάδα Μοναστηρίου διὰ τεσσάρων φαλάγγων, μὲ τὴν ἐντολὴν νὰ κατευθυνθῶσι πρὸς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας κατευθύνσεις. Καθ' ὃν ὅμως χρόνον ἐσχηματίζοντο αἱ φάλαγγες πορείας, ἐδέχθησαν αὗται, περὶ τὴν 11ην ὥραν τῆς ἡμέρας ταύτης, αἰφνιδιαστικὴν ἐπίθεσιν ἐκ μέρους τῆς 18ης τουρκικῆς μεραρχίας, ἥτις ἠδυνήθη νὰ μεταφερθῇ σιδηροδρομικῶς ἐκ Μοναστηρίου εἰς Φλώριναν πρὸς ἀντιμετώπισιν τῆς 5ης ἑλληνικῆς, καθ' ὅσον οἱ Σέρβοι, μολονότι εἰδοποιηθέντες ἐγκαίρως ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατηγείου περὶ τῆς θέσεως τῆς 5ης ἑλληνικῆς μεραρχίας, ἀντὶ νὰ ἐντείνωσι τὰς κατὰ τῶν Τούρκων ἐπιθέσεις καὶ τὴν κατ' αὐτῶν καταδίωξιν, τοὐναντίον ἀνέκοψαν ἐπ' ὀλίγον ταύτας, καὶ τοιουτοτρόπως ἀφῆκαν ἐλεύθερον τὸν τουρκικὸν στρατὸν νὰ χρησιμοποιήσῃ δυνάμεις κατὰ τοῦ ἑλληνικοῦ. Ὁ Ἕλλην μέραρχος διέταξε τότε νὰ ταχθῶσιν ἐκ νέου αἱ μονάδες ἐπὶ τῶν ἀμυντικῶν των θέσεων, τοῦθ' ὅπερ συνετελέσθη μέχρι τῆς μεσημβρίας περίπου τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀλλ' ἐν πλήρει ἀταξίᾳ καὶ σχετικῷ συμφυρμῷ.

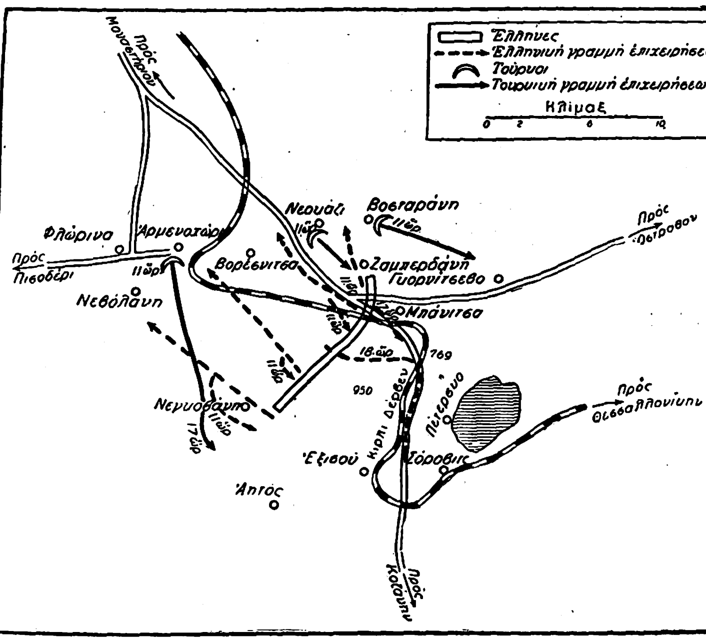

*Μάχη Μπάνιτσας 21ης Ὀκτωβρίου 1912.*

Οἱ Τοῦρκοι προὐχώρησαν διὰ τριῶν φαλάγγων, ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, ἐπὶ τῷ σκοπῷ ὅπως διὰ τῶν ἀκραίων ὑπερκεράσωσι τὴν ἑλληνικὴν μεραρχίαν κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρά, τῆς μείζονος ὅμως ἐντάσεως ἐκδηλωθείσης ὑπὸ τῆς ἀκραίας ἀριστερᾶς, ἵνα ἀπειληθῇ τὸ δεξιὸν πλευρὸν τῆς ἑλληνικῆς μεραρχίας καὶ τοιουτοτρόπως ἀποκοπῶσιν αἱ γραμμαὶ ὑποχωρήσεως. Τὸ ἐν Ζαμπέρδανῃ ἑλληνικὸν στράτευμα ἠναγκάσθη, ὑπὸ τὴν ἀπειλὴν τῆς ὑπερκεράσεως, νὰ ὑποχωρήσῃ ὀλίγον κατ' ὀλίγον ἐντὸς τοῦ ἀπογεύματος τῆς ἡμέρας ταύτης μέχρι Μπάνιτσας, ἣν τέλος ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ περὶ τὴν 17ην ὥραν. Ἀλλὰ καὶ πρὸς τὸ ἀριστερὸν ἡ κατάστασις τῆς ἑλληνικῆς μεραρχίας δὲν ἦτο διόλου εὐχάριστος, καθ' ὅσον τουρκικὰ τμήματα, ἐκκινήσαντα ἐξ Ἀρμενοχώρι, ἤρχισαν ἀπειλοῦντα τὸ ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Νεγκοβάνης ἑλληνικὸν στράτευμα. Εὑρεθεὶς τότε ὁ Ἕλλην μέραρχος ὑπὸ τὴν ἀπειλὴν τῆς κατ' ἀμφότερα τὰ πλευρὰ ὑπερκεράσεως, διέταξε, περὶ τὴν 18ην ὥραν, τὴν γενικὴν ὑποχώρησιν τῆς μεραρχίας διὰ τῆς στενωποῦ Κιρλὶ δερβὲν πρὸς Σόροβιτς, δηλαδὴ πρὸς τὴν νοτίαν ἔξοδον τῆς ἐν λόγῳ στενωποῦ.

***Β.*** Κατὰ τάς, διαρκοῦντος τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου 1912, ἐπιχειρήσεις τοῦ *Ὀστρόβου* (βλ. λ.), ἡ Μπάνιτσα ἀνακατελήφθη ἀμαχητὶ τὴν 7ην Νοεμβρίου 1912 ὑπὸ τῆς 6ης ἑλληνικῆς μεραρχίας.

***Γ.*** Κατὰ τάς, διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἐπιχειρήσεις ἐν τῷ βαλκανικῷ θεάτρῳ τῷ 1916, ἡ περιοχὴ τῆς Μπάνιτσας κατελήφθη ὑπὸ τῶν Βουλγάρων τὴν 19ην Αὐγούστου 1916 μετὰ ἀγῶνα, καθ' ὃν οἱ μέχρις ὥρας κατέχοντες ταύτην Σέρβοι ἀπωθήθησαν πρὸς τὰ περὶ τὴν στενωπὸν Κιρλὶ Δερβὲν ὑψώματα. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν ὅμως ἀμέσως συμμαχικὴν ἀντεπίθεσιν κατελήφθη ὑπὸ σερβικῶν στρατευμάτων ἡ περιοχὴ τῆς Μπάνιτσας, τὴν 16ην Σεπτεμβρίου 1916. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μπάνιτσα** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Συμβολὴ* (βλ. λ.). 2)— Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Καρυαὶ* (βλ. λ.).

**Μπανίτσκι** (Banicki), ***Ἰωάννης-Κλήμης***. Περιώνυμος Πολωνὸς στρατηγὸς (1688—1771). Ἦτο τὸ τελευταῖον μέλος μεγάλης πολωνικῆς οἰκογενείας, ὑπῆρξε δὲ ἀρχηγὸς τῆς συνομοσπονδίας ἐκείνης, ἥτις ἐξηνάγκασε τὸν βασιλέα Αὔγουστον Β' ν' ἀπομακρύνῃ τὰ σαξωνικὰ συντάγματά του (1717). Ἐπίσης κατεπολέμησε τὴν ρωσικὴν ἐπιρροήν. Ἐξορισθεὶς λόγῳ τῆς τοιαύτης πρὸς τὴν Ρωσίαν στάσεώς του, ἐπανῆλθεν εἰς τὴν πατρίδα του τὸ πρῶτον μετὰ τὴν ἐπὶ τὸν θρόνον ἀνάβασιν τοῦ γαμβροῦ του Πονιατόβσκι. Α. Δ.

**Μπὰνκ** (Banck), ***Κάρολος***. Γερμανὸς συνθέτης καὶ μουσικοκριτικὸς (1809—1889). Ἐγένετο γνωστὸς διὰ σειρᾶς μελῳδιῶν, τεμαχίων κλειδοκυμβάλου, χορῳδιῶν κτλ. Ἐπεμελήθη ἐπίσης τῆς ἐκδόσεως πλείστων παλαιῶν ἀνεκδότων ἔργων διὰ κλειδοκύμβαλον, τοῦ Σκαρλάττι, Μαρτίνι κ.ἄ. Γ.Σ.

— **Μπὰνκ** (Bank), ***Ὄθων***. Γερμανὸς κριτικὸς καὶ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1824. Εἰργάσθη ὡς συντάκτης τῆς «Ἡμερησίας» τῆς Δρέσδης, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐδημοσίευε κριτικὰς θεατρικάς, φιλολογικάς, μουσικὰς κλπ. Συλλογὴν τῶν κριτικῶν του ἐξέδωκε τῷ 1865 ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀνὰ τὰ βασίλεια τῶν τεχνῶν» (Kritische Wanderungen in drei Kunstgebieten). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης τόμον ποιημάτων (ὕμνους, ᾠδάς, ἐπιγράμματα, βαλλίσματα). Γ. Ι. Β.

**μπάνκα** (ἡ)· βλ. *μπάγκα*.

**Μπάνκα** (Banka) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν πρὸς τὴν ΝΑ. ἀκτὴν τῆς Σουμάτρας. Ἔχει ἐπιφάνειαν 11.782 τ. χλμ., μῆκος 230 χλμ. καὶ μέγιστον πλάτος 100. Κάτ. 160.358. Τὸ ἔδαφός της εἶναι μᾶλλον πεδινόν, μὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ ὄρος *Μάρας*, ὕψους 700 μ. Ἡ πανὶς αὐτῆς ὁμοιάζει πρὸς τὴν τῶν νήσων Σουμάτρας, Βόρνεο καὶ Μαλάκκας, μετὰ τῶν ὁποίων ὑπολογίζεται ὅτι ἦτο ἡνωμένη εἰς παρῳχημένους χρόνους. Ἡ χλωρὶς δὲν εἶναι πλουσία εἰς ποικιλίας, ἀλλὰ περιλαμβάνει ἄφθονα καὶ πυκνὰ δάση, τὰ ὁποῖα ὁλονὲν σμικρύνονται λόγῳ τῆς συνεχοῦς ἀνεγέρσεως πολλῶν συνοικισμῶν ἐξ αἰτίας τῶν ἀφθόνων μεταλλείων της. Παράγει ὄρυζαν, πέπερι, καφὲν καὶ κοκοφοίνικας. Τὸ κυριώτερον ὅμως προϊὸν τῆς νήσου εἶναι ὁ κασσίτερος, ὁ ὁποῖος ἐξάγεται ἐκ 330 ὀρυχείων, εἰς τὰ ὁποῖα ἐργάζονται περὶ τὰς 20.000 ἐργάται. Τῷ 1806 ἡ νῆσος περιῆλθεν εἰς τὴν ὁλλανδικὴν ἑταιρείαν τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1810—1814 κατείχετο ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, εἰς τοὺς ὁποίους εἶχε παραχωρήσει αὐτὴν ὁ σουλτᾶνος τοῦ Παλεμπὰνκ τῆς Σουμάτρας. Κατόπιν ὅμως ἡ Ἀγγλία ἀντήλλαξεν αὐτὴν μὲ τὴν Κόχιν τῶν Ἰνδιῶν καὶ ἔκτοτε ἀποτελεῖ ὁλλανδικὴν κτῆσιν. Πρωτεύουσα αὐτῆς εἶναι ἡ *Μοῦντοκ* μὲ 24.000 κατ. Μ. Δ. Β.

**Μπάνκαλανγκ** (Bankalang) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, ἐπὶ τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τῆς νήσου Μαντούρα, τῆς ὁποίας ἄλλοτε ἦτο πρωτεύουσα. Κάτ. 15.000. Ἐξάγει φοινικέλαιον καὶ μπαχαρικά. Μ. Δ. Β.

**μπανκανότα** (ἡ)· τὸ τραπεζογραμμάτιον· || εἰδικώτερον ἡ τουρκικὴ λίρα.

**Μπάνκερτ** (Bankert), ἐπιλεγόμενος ***Γιούσι βὰν Τράππεν*** (Joost van Trappen). Ὁλλανδὸς ναύαρ-



Digitized by Google

χος, ἀποθανὼν τῷ 1646. Ἁπλοῦς ναύτης κατ' ἀρχάς, προήχθη τῷ 1637 εἰς διοικητὴν τῶν ἀκτῶν τῆς Σχαιλλάνδης. Ὡς πλοίαρχος μετέσχεν εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ «ἀργυροῦ στόλου» τῆς Ἱσπανίας. Τῷ 1645 διωρίσθη ἀρχιναύαρχος τοῦ εἰς Βραζιλίαν ἀποσταλέντος στόλου τῆς Ἑταιρείας τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν.

**—Μπάνκερτ** (Bankert), ***Ἀδριανός.*** Ὁλλανδὸς ναύαρχος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Διεκρίθη τῷ 1666 ἐναντίον τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Μόνκ, ἀρνηθείς, μολονότι ἐβυθίζετο τὸ πλοῖόν του, νὰ παραδοθῇ εἰς αὐτόν. Τῷ 1672 ἐπολέμησεν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ Ρόϋτερ κατὰ τῶν Ἄγγλων καὶ Γάλλων. Γ. Ι. Β.

**Μπανκιέρι** (Banchieri), ***Ἀδριανός.*** Ἰταλὸς μουσικὸς (1565—1634). Ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς Accademia de Floridi ἐν Βολωνίᾳ. Ὁ Μπανκιέρι φέρεται μεταξὺ τῶν πρώτων ἐπινοητῶν τοῦ ἐνάριθμου βασίμου. Τὰ θεωρητικὰ του συγγράμματα εἶναι: «Conclusioni del suono d'organo» (1591—1609), «L'organo suonarino» (1605—1607), «La Banchierina ovvero Cartella picciola del canto figurato» (1623) κλπ. Ἔγραψεν ἐπίσης πλεῖστα μελοδράματα εἰς τὸ ὕφος τοῦ μαδριγαλίου: «La pazzia senile» (1598), «La prudenza giovenile» (1607), «Il Zabajone» (1604), «La barca di Venezia per Padova» (1605), ὡς καὶ σειρὰν θρησκευτικῶν ἔργων, τεμάχια δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπάνκο** (Banquo ἢ Banco). Διοικητὴς τῆς ἐν τῇ Β. Σκωτίᾳ ἐπαρχίας τοῦ Λότσαμπερ ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Δούγκαν. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μάκβεθ, ἐξαδέλφου τοῦ βασιλέως, διήγειρεν ἐπανάστασιν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ του. Βραδύτερον μεταστραφεὶς ἔδειξε μεγάλην πρὸς τὸν Δοῦγκαν ἀφοσίωσιν καὶ πίστιν. Ὅτε ὅμως ὁ Μάκβεθ ἐδολοφόνησε τὸν βασιλέα διὰ νὰ σφετερισθῇ τὸν θρόνον του, ἔμεινεν ἀπαθὴς θεατὴς τοῦ φόνου καὶ τῆς ἁρπαγῆς (1040). Μετὰ δεκαετίαν περίπου ἔπεσε καὶ αὐτὸς θῦμα τοῦ Μάκβεθ, ὅστις τὸν ἐστραγγάλισε κατὰ τὴν διάρκειαν ἑνὸς γεύματος. Τὸ ἐπεισόδιον τοῦτο τῆς ἱστορίας τῆς Σκωτίας ἐχρησίμευσεν εἰς τὸν Σαίξπηρ ὡς πρότυπον διὰ μίαν τρομερὰν σκηνὴν τῆς τραγῳδίας του «Μάκβεθ». Εἰς ἓν γεῦμα, προσφερθὲν ὑπὸ τοῦ Μάκβεθ εἰς ὁλόκληρον τὴν αὐλήν, ἐμφανίζεται τὸ φάσμα τοῦ δολοφονηθέντος Μπάνκο, ὁρατὸν μόνον εἰς αὐτόν, καὶ τοῦ μεταδίδει τοιοῦτον φόβον, ὥστε οἱ συνδαιτυμόνες ὑπολαμβάνουσιν αὐτὸν παραφρονήσαντα. Χ. Δ.

**—Μπάνκο** (Banco), ***Ἀντώνιος Νάννι ντὶ —.*** Φλωρεντῖνος γλύπτης (1373—1421). Εἰς τὴν συντεχνίαν τῶν λιθοξόων εἰσῆλθε τῷ 1405 εἰς προκεχωρημένην ἤδη ἡλικίαν, ὑπῆρξε δὲ κατὰ τὸν Βαζάρι μαθητὴς τοῦ κατὰ πολὺ νεωτέρου του Ντονατέλλο. Τὸ πιθανώτερον ὅμως εἶναι ὅτι ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Νικκολὸ ντ' Ἀρέτζο, καὶ ὅτι ὑπῆρξε διδάσκαλος τοῦ Ντονατέλλο, ἐπηρεασθεὶς βραδύτερον ὑπὸ τῆς μεγάλης τοῦ μαθητοῦ προσωπικότητος. Ὁ Μπάνκο εἶναι ἐκ τῶν κυριωτέρων ἀντιπροσώπων τῆς μεταβατικῆς ἀπὸ τοῦ ΙΔ' πρὸς τὸν ΙΕ' αἰῶνα περιόδου τῆς τέχνης, καθ' ἣν οἱ Φλωρεντῖνοι γλύπται ἀποσπῶνται ἀπὸ τῆς τεχνοτροπίας τοῦ Πιζάνο καὶ τοῦ Τζιότο καὶ προσεγγίζουσι πρὸς τοὺς ἀρχαίους ἀγαλματοποιούς. Χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ εὐγένεια τῆς φυσιογνωμίας καὶ τὸ διὰ μεγαλοπρεπῶν ἐνδυμάτων περιβεβλημένον ἀθλητικὸν παράστημα τῶν μορφῶν του, αἱ ὁποῖαι ὁμοιάζουσι καταπληκτικῶς πρὸς τὰς τῶν Ρωμαίων εὐπατριδῶν τῆς ἀρχαιότητος. Ἀπὸ τῶν πρώτων ἔργων του κατέκτησε τὴν ἐκτίμησιν τῶν συμπατριωτῶν του, τῷ δὲ 1408 μετέσχε μετὰ τοῦ Ντονατέλλο καὶ τοῦ Πιέτρο Λαμπέρτι τοῦ διαγωνισμοῦ πρὸς διακόσμησιν τοῦ μητροπολιτικοῦ ναοῦ τῆς Φλωρεντίας. Ὁ εὐαγγελιστὴς Λουκᾶς τῆς μητροπόλεως ταύτης, μὲ τοὺς ἡμικλείστους ὀφθαλμοὺς καὶ τὸ ἐμπνευσμένον βλέμμα, ἔχει περισσοτέραν κίνησιν καὶ ἔκφρασιν ἀπὸ τοὺς ἄλλους εὐαγγελιστὰς τῶν συναγωνιστῶν του, ἀκόμη καὶ ἀπὸ τὸν Ἰωάννην τοῦ Ντονατέλλο. Ἀκολούθως εἰργάσθη ὡραῖα ἀγάλματα ἁγίων διὰ τὸν ναὸν τοῦ Ὂρ Σὰν Μικέλε τῆς Φλωρεντίας. Ἡ τελευταία ἐργασία του, τὸ μέγα ἀνάγλυφον τῆς Μαντόνα ντέλλα Τσίντολα, εἶναι μία ἐκ τῶν πρώτων συνθέσεων, εἰς τὰς ὁποίας θριαμβεύει ἡ νέα τεχνοτροπία τῆς Ἀναγεννήσεως (1414). Ἡ ἐπ' αὐτοῦ ἐπίδρασις τοῦ Ντονατέλλο εἶναι καταφανὴς ἰδίως εἰς τὴν ἀβίαστον καὶ ἐλευθέραν κίνησιν τῶν ἱπταμένων ἀγγέλων. Ὁ Νάννι ντὶ Μπάνκο ἠσχολήθη ἐπίσης μὲ τὴν ἀρχιτεκτονικήν, τῷ δὲ 1416 ὑπέβαλεν ἓν σχέδιον τρούλλου διὰ τὴν μητρόπολιν τῆς Φλωρεντίας. Χ. Δ.

**μπάνκος** (ὁ)· βλ. *μπάγκος.*

**Μπανκούρα** (Bankura) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Βεγγάλῃ, εἰς ἀπόστασιν 150 χλμ. ΒΔ. τῆς Καλκούτας. Κάτ. 23.453. Ἔχει ἐργοστάσια βαμβακερῶν καὶ μεταξωτῶν καὶ διεξάγει ἐμπόριον ξυλείας. Εἶναι πρωτεύουσα διαμερίσματος, ὅπερ ἔχει ἐπιφάνειαν 6.788 τ. χλμ. καὶ 1.136.670 κατ., ὧν ἐπὶ τὸ πλεῖστον Ἰνδοί. Μ. Δ. Β.

**Μάνκροφτ** (Bancroft), ***Γεώργιος.*** Ἀμερικανὸς ἱστορικὸς καὶ πολιτικὸς (1800—1891). Ἐφοίτησεν εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Χάρβαρντ, εἶτα δὲ μετέβη δι' ἀνωτέρας σπουδὰς εἰς Γοτίγγην τῆς Γερμανίας, ὅπου ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ ἱστορικῷ Χέερεν. Ἀνακηρυχθεὶς διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας (1820), ἐπεσκέφθη διαδοχικῶς τὸ Βερολῖνον, τοὺς Παρισίους καὶ τὸ Μιλᾶνον, κατὰ τὴν διάρκειαν δὲ τῶν ταξιδίων του τούτων συνεδέθη μετὰ τῶν Βόλφ, Χοῦμπολντ, Β. Κουζέν, Μαντζόνι, Μποῦνσεν καὶ ἄλλων μεγάλων ἀνδρῶν. Τῷ 1822 ἐπέστρεψεν εἰς Χάρβαρντ, ὅπου ἐδίδαξε τὴν ἑλληνικήν, εἶτα δ' ἵδρυσεν εἰς Νόρθαμπτον τὴν σχολὴν τοῦ Ράουντ-Χίλλ. Συγχρόνως ἐδημοσίευσε ποιήματα (1823), ὑμνῶν τὰ θαυμάσια τῆς Ἑλβετίας καὶ τῆς Ἰταλίας, καὶ μετάφρασιν τῶν ἔργων τοῦ Χέερεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Heeren's historical treatises» (1824). Μετ' ὀλίγον κατέλιπε τὴν διδασκαλίαν καὶ ἠσχολήθη μὲ τὴν σπουδὴν τῶν πολιτικῶν ζητημάτων πρὸς συγγραφὴν τοῦ ἔργου του «Ἱστορία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν». Τῷ 1845 ὁ πρόεδρος Πὸλκ ἀνέθεσεν εἰς τὸν Μπάνκροφτ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ναυτικῶν, εἶτα δ' ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς Λονδῖνον ὡς πρεσβευτήν. Ἐπιστρέψας εἰς Ἀμερικὴν τῷ 1849 ἐγκατεστάθη εἰς Ν. Ὑόρκην, ἐξέδωκε δ' ἐκεῖ τὸ προαναφερθὲν ἱστορικὸν ἔργον του, τὸ ὁποῖον τὸν κατέστησε διάσημον. Τῷ 1867 ἀπεστάλη πρεσβευτὴς εἰς Βερολῖνον, ὅπόθεν ἐπιστρέψας τῷ 1874 παρέμεινεν ἐφεξῆς ἰδιωτεύων μέχρι τοῦ θανάτου του.

Ἡ ἱστορία του «History of the United States» ἀποτελεῖται ἐκ 12 τόμων, διαιρεῖται δὲ εἰς 3 τμήματα, ἐξ ὧν τὸ μὲν πρῶτον περιλαμβάνει τὴν ἱστορίαν τῆς Ἀμερικῆς ἀπὸ τῆς ἀνακαλύψεως αὐτῆς μέχρι τοῦ 1748, τὸ δεύτερον τὰ αἴτια τοῦ πολέμου τῆς ἀνεξαρτησίας καὶ τὸ τρίτον τὰ γεγονότα τοῦ πολέμου τούτου. Εἰς τὴν τελευταίαν αὐτῆς ἔκδοσιν (1882) συνεπληρώθη διὰ τῆς «Ἱστορίας τοῦ καταρτισμοῦ τοῦ πολιτεύματος τῶν Ἡνωμ. Πολιτειῶν». Τὸ ὅλον ἔργον διακρίνεται διὰ τὴν φωτεινὴν ἔκθεσιν τῶν γεγονότων, τὴν ἀφθονίαν τῶν φιλοσοφικῶν ἀπόψεων καὶ τὸ πάθος τῆς ἐθνικῆς ἀνεξαρτησίας, ὑπὸ τοῦ ὁποίου διαπνέεται ὁ συγγραφεύς. Μόνον ψεκτὸν ἐν αὐτῷ κρίνεται τὸ ἐξαιρετικῶς πομπῶδες ὕφος του. Χ. Δ.

**— Μπάνκροφτ** (Bancroft), ***Οὐμβέρτος - Χόου.*** Ἀμερικανὸς ἱστορικὸς (1832—1918). Ἦτο κατ' ἀρχὰς ὑπάλληλος βιβλιοπωλείου ἐν Μπούφφαλο, ἀπὸ δὲ τοῦ 1856 ἵδρυσεν ἴδιον βιβλιοπωλεῖον εἰς Ἅγιον Φραγκῖσκον, ἐκ τῶν κερδῶν τοῦ ὁποίου κατέστη ταχέως πλούσιος. Ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας, ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς: «Οἱ ἰθαγενεῖς λαοὶ τῶν πολιτειῶν τοῦ Εἰρηνικοῦ», «Ἱστορία τῶν πολιτειῶν τοῦ Εἰρηνικοῦ ἐν Β. Ἀμερικῇ» (1882), «Ἱστορία τῶν κτηρίων τῆς ὁμοσπονδίας» (1891—1892), «Τὸ βιβλίον τῆς Ὑγιείας» (1910) κ. ἄ. Ἐπίσης ἐπεμελήθη τὴν ἔκδοσιν σειρᾶς 39 τόμων περὶ τῆς ἱστορίας τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν καὶ κατήρτισε τῷ 1900 βιβλιοθήκην ἐξ 60 000 τόμων καὶ 500 χειρογράφων διὰ τὸ πανεπιστήμιον τῆς Καλιφορνίας. Χ. Δ.

**—Μπάνκροφτ** (Bancroft), ***Ριχάρδος.*** Ἄγγλος θεολόγος, ἀρχιεπίσκοπος Κανταβρίας (1544 — 1610). Ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Λονδίνου (1597), ἀλλ' ἦτο ὁ πραγματικὸς ἀρχηγὸς τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας, διότι ἡ ἡλικία ἠμπόδιζε τὸν γηραιὸν ἐπίσκοπον τῆς Κανταβρίας Οὐάϊτγκιφτ νὰ ἀναμειχθῇ ἐνεργῶς εἰς τὴν διοίκησιν. Κατὰ τὴν ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἰακώβου Α' προεδρευομένην σύνοδον τοῦ Χάμπτον-Κὼρτ (1603) ὑπερήσπισε τὰ προνόμια τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας ἐναντίον τοῦ πρεσβυτεριανικοῦ κλήρου. Τῷ 1604, ἀποθανόντος τοῦ Οὐάϊτγκιφτ, διεδέχθη αὐτὸν εἰς τὸν θρόνον τῆς Κανταβρίας. Ὡς πριμᾶτος τῆς Ἐκκλησίας τῆς Ἀγγλίας ἐπέτυχε τὴν προσάρτησιν τῆς ἐπισκοπικῆς Ἐκκλησίας τῆς Σκωτίας καὶ εἶχε τὴν ἀνωτάτην ἐποπτείαν τῆς εἰς Χάμπτον-Κὼρτ ἀποφασισθείσης μεταφράσεως τῆς Βίβλου. Κυρίως ἐγένετο γνωστὸς ὡς θερμὸς ὑπερασπιστὴς τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας ἐναντίον τῶν πουριτανῶν. Ἔγραψεν: «A survey of the pretended holy discipline» (1593) καὶ «Daungerous positions and proceedings, published and practised within this iland of Brytaine under pretence of Reformation and for the presbiterial discipline» (1593). Χ. Δ.

**Μπάνκς** (Banks) *[Γεωγρ.].* —1) Νῆσος τοῦ Β. Παγωμένου ὠκεανοῦ, πρὸς Β. τοῦ Καναδᾶ, ἀνήκουσα εἰς τὴν Μεγάλην Βρεττανίαν. Κεῖται μεταξὺ 71° 10' καὶ 74° 25' Β. πλάτους καὶ 114° καὶ 125° Δ. μήκους. Πρὸς Β. τὸ στενὸν τοῦ Μπάνκς χωρίζει ταύτην ἀπὸ τῆς νήσου Μέλβιλ. Ἀπέχει πρὸς Ν. ἀπὸ τῆς ἀμερικανικῆς ἀκτῆς 135 χλμ. Ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ Πάρρυ τῷ 1820 καὶ ἐξηρευνήθη ὑπὸ τοῦ Μὰκ Κλοὺρ τῷ 1850 καὶ τοῦ Χάρρισον τῷ 1907. Ὠνομάσθη Μπάνκς πρὸς τιμὴν τοῦ Ἄγγλου φυσιοδίφου καὶ ἐξερευνητοῦ *Ἰωσὴφ Μπάνκ.* Ὁ Μὰκ Κλοὺρ ὅμως ἔδωσεν εἰς αὐτὴν τὸ ὄνομα *Μπάριγκ,* ὑπὸ τὸ ὁποῖον φέρεται ἐνίοτε. —2) Ἀρχιπέλαγος 17 νήσων ἐν τῷ Ν. Εἰρηνικῷ ὠκεανῷ, πρὸς Β. τῶν Νέων Ἑβρίδων, μεταξὺ τούτων καὶ τῆς νήσου Σάντα - Κρούζ. Αἱ κυριώτεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι ἡ *Ἁγία Μαρία* ἢ *Γκάουα* καὶ ἡ *Βάνουα - Λάβα,* ἐπὶ τῆς ὁποίας ὑπάρχει ἡφαίστειον ἐν ἐνεργείᾳ ὕψους 936 μ. Ἔχουν ἔκτασιν 794 τ. χλμ. καὶ 5.000 κατ. Παράγουν ἐρυθρόξυλον καὶ καφέν. Ἀνεκαλύφθησαν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Μπλάϊγκ καὶ διὰ τῆς συμφωνίας τοῦ Λονδίνου τοῦ 1907 ἐτέθησαν ὑπὸ τὴν συγκυριαρχίαν τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Ἀγγλίας. —3) Χερσόνησος τῆς Νέας Ζηλανδίας. Ἔχει μῆκος 45 χλμ. καὶ πλάτος 28 χλμ. Ἐπ' αὐτῆς ὑπάρχουν πολλὰ ἐσβεσμένα ἡφαίστεια.—4) Πορθμὸς μεταξὺ τῆς νήσου Τασμανίας καὶ τῶν νήσων Φουρνώ, ἐν Αὐστραλίᾳ. Ἔχει πλάτος 24 χλμ.—5) Ὄνομα πολλῶν νήσων εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Βρεττανικῆς Κολομβίας τοῦ Καναδᾶ, καθὼς καὶ πόλεων καὶ κομητειῶν ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις τῆς Β. Ἀμερικῆς καὶ ἐν Αὐστραλίᾳ. Μ. Δ. Ι.

**Μπάνκς** (Banks), ***Θωμᾶς.*** Ἄγγλος γλύπτης καὶ χαράκτης (1735—1805), μέλος τῆς βασιλικῆς Ἀκαδημίας. Γνωστότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὰ μνημεῖα τοῦ δουκὸς τῆς Κορνουάλλης καὶ τοῦ πλοιάρχου Μπλαίυντον Οὐέστκοτ, φονευθέντος παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Νέλσωνος ἐν Τραφαλγκάρ, ἓν ἀνάγλυφον παριστῶν τὸν Σαίξπηρ ἐν τῷ μέσῳ τῶν μουσῶν καὶ πολλὰ ἀγάλματα τοῦ ἀββαείου Οὐεστμίνστερ καὶ τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Παύλου ἐν Λονδίνῳ. Χ. Ι.

**— Μπάνκς** (Banks), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος δραματικὸς συγγραφεὺς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, περὶ τοῦ ὁποίου ἐλάχισται πληροφορίαι ὑπάρχουσιν. Ἀπὸ τοῦ 1677 μέχρι τοῦ 1696 ἐδημοσίευσεν ἑπτὰ τραγῳδίας, ὧν σπουδαιοτέρα ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ δυστυχὴς ἐνοούμενος». Χ. Ι.

**— Μπάνκς** (Banks), ***Ἰωσήφ.*** Περίφημος Ἄγγλος φυσικὸς (1743—1820), τοῦ ὁποίου ὁ πάππος ἦτο σουηδικῆς καταγωγῆς. Ἦτο κάτοχος μεγάλης περιουσίας, χάρις εἰς τὴν ὁποίαν ἠδυνήθη νὰ ἀφοσιωθῇ εἰς τὴν σπουδὴν τῆς φυσικῆς ἱστορίας, πρὸς τὴν ὁποίαν ᾐσθάνετο μεγάλην κλίσιν. Κατ' ἀρχὰς ἐπεσκέφθη τὴν Νέαν Γῆν καὶ τὸ Λαμπραντόρ, εἶτα δ' ἔλαβε μέρος εἰς τὸ πρῶτον ταξίδιον τοῦ πλοιάρχου Κὼκ (1768—1771), ἀποκομίσας πλούσιον διὰ τὴν ἐπιστήμην του ὑλικόν. Τῷ 1772 ἐπεσκέφθη τὰς χώρας τοῦ Βορρᾶ καὶ μάλιστα τὴν Ἰσλανδίαν, ἔκαμε δὲ σπουδαιοτάτας παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς περιέργου βασαλτικῆς συστάσεως τῆς νήσου Στάφφα. Ἐπιστρέψας, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς ἐπιστημονικὰς ἐρεύνας

*Ἰωσὴφ Μπάνκς.*

τῆς Βασιλικῆς Ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου, τῷ δὲ 1778 ἐγένετο πρόεδρος αὐτῆς. Τῷ 1797 ἐγένετο σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ μέλος τοῦ ἰδιαιτέρου συμβουλίου τοῦ βασιλέως. Ἐπὶ ὁλόκληρον τριακονταετίαν ἡ Ἀγγλία κατέστη, χάρις εἰς τὸν Μπάνκς, τὸ κέντρον τῆς βοτανολογικῆς ἐπιστήμης καὶ ἡ κυριωτέρα ἀγορὰ βοτανῶν τοῦ κόσμου. Διὰ τοῦ κύρους καὶ τῆς περιουσίας του ἐπροστάτευσε καὶ διηυκόλυνε πᾶσαν ἐπιχείρησιν ἀποβλέπουσαν εἰς τὴν προαγωγὴν τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, ἐβοήθησεν οἰκονομικῶς πλείστους πενομένους φυσικοὺς καὶ ἀπέδωσεν εἰς τὴν Γαλλίαν τὰς ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καταδρομέων ἁρπαγείσας συλλογάς. Ἀποθνήσκων ἐκληροδότησεν εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον τὴν πλουσίαν εἰς ἔργα φυσικῆς ἱστορίας βιβλιοθήκην του, τῆς ὁποίας κατάλογον ἐδημοσίευσεν ὁ Dryander (Λονδῖνον 1796—1800, 5 τόμοι). Ὁ Μπάνκς, ἐκτὸς τῆς μεγάλης ἐπιστημονικῆς του ἐργασίας, ἀπεδείχθη ἐπίσης μέγας φιλάνθρωπος καὶ ἐκπολιτιστής, φροντίσας διὰ τὴν βελτίωσιν τῆς ζωῆς τῶν ἀνὰ τὸν κόσμον ἀγρίων, διὰ τὴν βελτίωσιν καὶ τελειοποίησιν τῶν γεωργικῶν ἐργαλείων κλπ. Πρὸς τιμήν του ὠνομάσθησαν πλεῖστα γεωγραφικὰ τοπωνύμια (νῆσοι, πορθμοὶ κλπ.) ἀνακαλυφθέντα ἐπὶ τῶν χρόνων του. Χ. Λ.

**— Μπάνκς** (Banks), ***Ναθαναὴλ-Πρέντις.*** Ἀμερικανὸς πολιτικὸς καὶ στρατιωτικὸς (1816—1894). Εἰργάζετο κατ' ἀρχὰς ὡς ἁπλοῦς ἐργάτης εἰς ἐργοστάσιον βάμβακος καὶ εἶτα ὡς τεχνίτης εἰς μηχανουργεῖον, ἠσχολεῖτο ὅμως πάντοτε μὲ τὴν πολιτικήν, ὢν δὲ πεπροικισμένος διὰ σπανίων χαρισμάτων εὐγλωττίας, ἐνεφανίζετο συχνὰ ὡς ἀγορητὴς εἰς τὰς λαϊκὰς συγκεντρώσεις. Βραδύτερον ἐξέδωσε μικρὰν ἐφημερίδα ἐν τῇ πατρίδι του καὶ προσέφερε πλείστας ὑπηρεσίας εἰς τὸ δημοκρατικὸν κόμμα. Ἐπιτυχὼν νὰ ἐκλεγῇ μέλος τοῦ κογκρέσσου, κατεπολέμησε σφοδρότατα τὴν δουλείαν, ὅτε δὲ τέλος ἐξερράγη ἕνεκα τοῦ λόγου τούτου ὁ ἐμφύλιος πόλεμος, ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν σώματος ἐθελοντῶν, ὑπαγομένου εἰς τὴν πέμπτην στρατιὰν τοῦ Ποτομάκ, καὶ μετέσχεν ἐπιτυχῶς τῶν εἰς Βιργινίαν καὶ ἰδίως τὴν κοιλάδα τοῦ Σενάντωχ ἐπιχειρήσεων. Ἐπιφορτισθεὶς μὲ τὴν ἄμυναν τῆς πρωτευούσης Οὐάσιγκτων, διωρίσθη βραδύτερον (1862) εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Μπάτλερ, διοικητὴς τῆς μὲ ἕδραν τὴν Νέαν Ὀρλεάνην περιοχῆς τοῦ Μεξικανικοῦ κόλπου. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐπέτυχε τὴν εἰρήνευσιν τῆς χώρας, τὸν δὲ Ἰούλιον τοῦ 1863 κατέλαβε τὸ σπουδαιότατον ἀπὸ στρατηγικῆς ἀπόψεως φρούριον Πὸρτ-Χούντσον. Ἐπιφορτισθεὶς τῷ 1864 μὲ ἀποστολὴν εἰς τὴν βορείαν

Digitized by Google

υτικὴν Λουϊζιάναν, καθ' ἣν ἠτύχησεν, ἀπηλλάγη ῶν στρατιωτικῶν αὐτοῦ καθηκόντων. Βραδύτερον 1872) ἐξελέγη καὶ πάλιν ἀντιπρόσωπος τοῦ κογρέσσου καὶ διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν πρόεδρος τοῦ πὶ τῶν ἐξωτερικῶν ὑποθέσεων συμβουλίου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Χ. Δ.

**Μπάνμπουρυ** (Banbury) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὀξφόρδης, 123 χλμ. ΒΔ. τοῦ Λονδίνου. Κάτ. 13.458. Ἔχει ὑφαντουργεῖα καὶ ἀλευρομύλους, εἶναι δὲ ὀνομαστὰ τὰ ἐν αὐτῇ κατασκευαζόμενα κέϊκς. Μ. Δ. Β.

**Μπάνμπριτζ** (Banbridge) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἐν Ὥλστερ τῆς Ἰρλανδίας καὶ κομιτείᾳ Ντάουν. Κάτ. 5.101. Κεῖται παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Μπὰν καὶ ἔχει μεγάλα ἐργοστάσια ὀνομαστῶν λινῶν ὑφασμάτων. Μ Δ.Β.

**Μπαννὲν** (Banning), ***Αἰμίλιος***. Βέλγος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1836—1898). Συνετέλεσεν εἰς τὴν προπαρασκευὴν τῆς διασκέψεως τοῦ Βερολίνου, δι' ἧς ἐδημιουργήθη τὸ ἀνεξάρτητον κράτος τοῦ Κόνγκο. Ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Βρυξελλῶν καὶ ἔγραψεν ἀξιόλογα πολιτικοϊστορικὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Τὸ Βέλγιον ἀπὸ στρατιωτικῆς καὶ διεθνοῦς ἀπόψεως» (1901) ἐκδοθὲν μετὰ θάνατον. Γ.Ι.Β.

**Μπαννεράλι** (Bannerali), ***Δαυΐδ***. Διάσημος Ἰταλὸς ἀοιδὸς (1789—1849), δρέψας δάφνας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων θεάτρων τῆς Εὐρώπης. Νέος ἀκόμη ἀπεσύρθη τῆς σκηνῆς, ἵνα ἐπιδοθῇ εἰς τὴν διδασκαλίαν τοῦ ᾄσματος, ἀρχικῶς μὲν ἐν τῷ ᾠδείῳ τοῦ Μιλάνου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1828 ἐν τῷ ᾠδείῳ τῶν Παρισίων. Γ. Σ.

**Μπάννινγκ** (Banning)· βλ. *Μπαννέν*.

**Μπὰν-ντὲ-λὰ-Ρὸς** (γαλ. Ban-de-la-Roche, λατιν. Dynastia Rupis vallensis, γερμ. Steinthal) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ περιοχὴ τῆς Ἀλσατίας, κειμένη μεταξὺ Κάτω Ἀλσατίας καὶ Λωρραίνης, μὲ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Ροτάου*. Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ παλαιοῦ ὀχυροῦ πύργου καλουμένου *Ρὸς* ἢ *Στάϊν* (γαλ. Roche, γερμ. Stein=βράχος), τοῦ ὁποίου τὰ ἐρείπια σῴζονται μέχρι σήμερον. Ὁ πύργος οὗτος ἐχρησίμευεν ἐπὶ μακρὸν ὡς φωλεὰ λῃστῶν. Προσαρτηθεῖσα ὑπὸ τῆς Γαλλίας διὰ τῆς συνθήκης τῆς Βεστφαλίας (1648), παρέμεινε σχεδὸν ἀπολίτιστος μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἀπὸ τοῦ 1871 μέχρι τοῦ 1918 κατείχετο, ὡς καὶ ὁλόκληρος ἡ Ἀλσατία, ὑπὸ τῆς Γερμανίας. Χ. Δ.

**Μπανσέα** (Banshea). Θεότης τῶν Σκώτων καὶ τῶν Ἰρλανδῶν. Θεωρεῖται ὡς προστάτρια τῆς οἰκογενειακῆς ἑστίας, παρέχουσα τὴν βοήθειάν της κατὰ τὴν στιγμὴν τοῦ θανάτου ἑνὸς τῶν μελῶν αὐτῆς. Α. Δ.

**Μπάνσεν** (Bahnsen), ***Ἰούλιος-Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1830—1881). Ἐνθουσιώδης ὀπαδὸς τοῦ Σοπεγχάουερ, ἀνέπτυξε τὰς θεωρίας αὐτοῦ καὶ προσεπάθησε νὰ τὰς συνδέσῃ πρὸς τὸν ἀτομικισμόν. Ἔγραψε: «Beiträge zur Charakterologie»' (1867, 2 τόμ.) καὶ «Der Widerspruch im Wissen und Wesen der Welt» (1882, 2 τόμ.). Α.Δ.

**Μπάνσκα Μπύστριτσα,** ἢ ***Μπέστερτζεμπάννα,*** ἢ ***Νόϋζολ*** (σλοβακ. Banska Bystrica, οὑγγρ. Beszterczebanya, γερμ. Neusohl) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἀνήκουσα μέχρι τοῦ 1919 εἰς τὴν Οὑγγαρίαν. Κεῖται 108 χλμ. πρὸς Β. τῆς Βουδαπέστης καὶ ἔχει βιομηχανίας χάρτου, εἰδῶν κιγκαλλερίας, ὑφασμάτων κλπ. Κάτ. 10.587, κατὰ τὸ πλεῖστον Σλοβᾶκοι. Χ. Δ.

**Μπάνσκο** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βουλγαρίας ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Νευροκοπίου-Μαχομίας. Κάτ. 4.540. Τ. Β.

**Μπάνσντα** (Bansda) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς ἰνδικὸν κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Βομβάῃ, κείμενον εἰς ἀπόστασιν 25 χιλιομ. ΝΑ. τοῦ Σουράτ, εἰς 20° 44′ βόρ. πλάτ. Ἔχει ἔκτασιν 840 τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 24.050 κατοίκους. Π. Γ. Λ.

**Μπανσουάρα** (Banswara) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ Ρατζπουτάνᾳ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 3.898 τ. χλμ. καὶ 190.362 κατ. Πρωτεύουσα αὐτοῦ εἶναι ἡ ὁμώνυμος πόλις, ὅπου ἑδρεύει ὁ Βρεττανὸς ἀντιπρόσωπος καὶ ὑπάρχει ἀνάκτορον τοῦ μαχαραγιᾶ καθὼς καὶ πολλοὶ ἰνδικοὶ ναοί. Κάτ. 8.588. Μ. Δ. Β.

**Μπάνστεντ** (Banstead) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ Σόρρεϋ. Κάτ. 6.731. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 22 χλμ. ΝΔ. τοῦ Λονδίνου καὶ εἶναι κέντρον πολλῶν βιομηχανικῶν σχολῶν καὶ διαφόρων ἀσύλων, ἐγκατεστημένων εἰς τὰ περίχωρα αὐτῆς. Μ. Δ. Β.

**Μπὰντ** (Bant) *[Γεωγρ.]*. Ἀγροτικὸς συνοικισμὸς τῆς Γερμανίας παρὰ τὸ Βιλελμσχάφεν, προσαρτηθεὶς τῷ 1911 εἰς τὴν πόλιν Ρύστριγγεν. Κάτ. 25.000. Γ. Ι. Β.

**μπάντα** (ἡ)· πλευρόν: «γέρνεις ἀπὸ τὴ μιὰ μπάντα», «καθάρισε τὰ τζάμια ἀπὸ τὴ μιὰ μπάντα»· || τὸ ἄκρον, ἀπόμερον: «κάνε 'ς τὴν μπάντα νὰ περάσω», «τοῦ 'δωσε σαρδέλλες ἀπὸ τὴν μπάντα»· || φρ. «κάτσε 'ς τὴν μπάντα σου καὶ μὴ μιλᾷς»· || ὁ ἀναρτώμενος εἰς τὸν τοῖχον παρὰ τὴν κλίνην τάπης ἢ ἄλλο ἐργόχειρον: «ἡ μπάντα τοῦ κρεβατιοῦ»· || ὁμὰς μουσικῶν ἀποτελούντων ἓν σύνολον (βλ. κατ. *[Μουσ.]*).

— *[Μουσ.]* Διὰ τῆς λέξεως *μπάντα* (banda) οἱ Ἰταλοὶ χαρακτηρίζουν τὰς *φιλαρμονικὰς* (βλ. λ.) ἢ τὰς ὀρχήστρας χαλκίνων ὀργάνων (φανφάρας), ἢ ἐν τέλει τὸ σύνολων χαλκίνων καὶ κρουστῶν ὀρχήστρας τινὸς μελοδράματος. Ὑπὸ τὴν σημασίαν τῆς φιλαρμονικῆς ἢ τῆς φανφάρας, ἡ λέξις παρέμεινε καὶ ἐν τῇ κοινῇ ἑλληνικῇ γλώσσῃ. Παλαιότερον ἡ μπάντα ἐσήμαινεν ὀρχήστραν πνευστῶν ἢ καὶ ἐγχόρδων ἀκόμη ὀργάνων. Τοιαύτη ἡ «μεγάλη μπάντα» τῶν 24 βιολίων καὶ ἡ «μικρὰ μπάντα» τῶν 16 βιολίων τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ. Διὰ τὸν καταρτισμὸν τῆς μπάντας βλ. *ἐνοργάνωσις* καὶ *μουσικὴ* στρατιωτική. Γ. Σ.

**Μπάντα** (Banda) *[Γεωγρ.]*. Διαμέρισμα καὶ πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ νομῷ Τζάνσι τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν. Τὸ *διαμέρισμα* ἔχει ἔκτασιν 7.928 τ. χλμ. καὶ 613.114 κατ. Παράγει βάμβακα φημιζόμενον ἐν τῇ διεθνεῖ ἀγορᾷ, σιτηρά, ὄρυζαν καὶ δημητριακά. Εἶναι ὅμως χώρα γενικῶς πτωχή, διότι ἡ παραγωγὴ αὐτῆς συχνάκις καταστρέφεται ὑπὸ πλημμυρῶν. Ἡ *πόλις* κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Κὲν καὶ ἔχει 20.029 κατ., 65 μουσουλμανικὰ τεμένη, 168 βραχμανικὰς παγόδας καὶ ἕνα χριστιανικὸν ναόν. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον ἐμπορίου βάμβακος. Μ. Δ. Β.

— **Μπάντα** (Banda) *[Γεωγρ.]*. Συστὰς νήσων τῶν Ὀλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ θαλάσσῃ τῆς Μπάντα, μεταξὺ 3°50′ καὶ 4°40′ Ν. πλάτους, πρὸς Ν. τῆς νήσου Τσέραμ τῶν Μολούκων. Ἀποτελεῖται ἀπὸ τὰς τρεῖς μεγάλας νήσους, *Μπάντα-Νέϊρα, Λόντορ* ἢ *Μεγάλη Μπάντα* καὶ *Γκάνονγκ-Ἄπι* καὶ τινων ἄλλων μικροτέρων. Ἡ ὁλικὴ ἐπιφάνεια αὐτῶν εἶναι 86 τ. χλμ. Ἔχουν ἔδαφος ἡφαιστειογενὲς καὶ βουνῶδες, κεκαλυμμένον ὑπὸ ἀφθόνου βλαστήσεως. Αἱ τρεῖς μεγάλαι νῆσοι εἶναι διατεταγμέναι κατὰ τρόπον προσομοιάζοντα πρὸς τὸ σύμπλεγμα τῆς νήσου Θήρας, φαίνεται δὲ ὅτι ἀπετέλουν ἄλλοτε τμῆμα ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ κρατῆρος. Ὁ μεταξὺ αὐτῶν χῶρος ἀποτελεῖ ἀσφαλὲς ἀγκυροβόλιον, εἰς ὃ καταφεύγουν τὰ πλοῖα τῆς περιοχῆς κατὰ τοὺς μουσσῶνας. Ἐπὶ τῆς Γκάνονγκ-Ἄπι ὑπάρχει ἡφαίστειον ἐν ἐνεργείᾳ, ὕψους 671 μ. Αἱ ἐκρήξεις αὐτοῦ κατὰ τὸ 1820 καὶ 1852 προεκάλεσαν μεγάλας καταστροφὰς εἰς τὰ πέριξ χωρία καὶ τὰ ἐν τῷ λιμένι πλοῖα. Ὁ ὁλικὸς πληθυσμὸς τῶν νήσων ἀνέρχεται εἰς 10.364 κατ., ὧν οἱ 6.000 κατοικοῦν εἰς τὴν Μπάντα Νέϊρα, τὴν πρωτεύουσαν τῆς συστάδος, ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου νήσου. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῶν εἶναι μικτός, ἀποτελούμενος ἀπὸ ἀπογόνους φυλῶν προελθουσῶν ἐκ τῶν γειτονικῶν νήσων καὶ ἀπὸ ὀλίγους Ἄραβας καὶ Κινέζους. Τὸ κυριώτερον εἶδος τοῦ ἐμπορίου εἶναι τὰ μοσχοκάρυα. Αἱ νῆσοι ἀνεκαλύφθησαν τῷ 1512 ὑπὸ τοῦ Πορτογάλου Ἀμπρέου καὶ περιῆλθον εἰς χεῖρας τῶν Ἱσπανῶν καὶ τῷ 1621 τῶν Ὀλλανδῶν. Ἀπὸ τούτους ἀφῄρεσαν αὐτὰς οἱ Ἄγγλοι τῷ 1796, ἐπανέδωσαν δὲ τῷ 1814. Μ. Δ. Β.

— **Μπάντα *θάλασσα*** (Banda) *[Γεωγρ.]*. Θάλασσα ἐν ταῖς Ὀλλανδικαῖς Ἀνατολικαῖς Ἰνδίαις, περιλαμβανομένη μεταξὺ τῶν Μολούκων νήσων, τῶν νήσων τῆς Σόνδης καὶ τῆς νήσου Κελέβης. Ὠνομάσθη ἐκ τῆς ἐν αὐτῇ συστάδος τῶν νήσων *Μπάντα* καὶ ἔχει βάθος ὑπερβαῖνον τὰ 5.000 μ. Διασχίζεται ὑπὸ ὁρμητικῶν ρευμάτων καὶ προσβάλλεται ὑπὸ σφοδρῶν ἀνέμων, οἵτινες καθιστοῦν δύσκολον καὶ λίαν ἐπικίνδυνον τὴν ναυσιπλοΐαν. Αἱ κατὰ τὸ 1899 γενόμεναι βυθομετρήσεις ἀπέδειξαν ὅτι εἰς παλαιοτέρας γεωλογικὰς περιόδους αἱ νῆσοι τῆς Σόνδης, αἱ Μολοῦκαι, ἡ Νέα Γουϊνέα καὶ αἱ ἐνδιάμεσοι τούτων ἀπετέλουν συνεχῆ ξηράν. Μ. Δ. Β.

— **Μπάντα,** ἢ ***Ντὰρ-Μπάντα*** (Dar-Banda) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Γαλλικῆς Ἀφρικῆς τοῦ Ἰσημερινοῦ ἐν Οὐμπάγκι-Σαρύ, μεταξὺ τῶν συνόρων τοῦ Βελγικοῦ Κόνγκο καὶ τοῦ Σουδάν, εἰς 7° Β. πλάτ. καὶ 23° Α. μήκ. Κατοικεῖται ὑπὸ τῆς φυλῆς τῶν Νιὰμ-Νιάμ. Δι' αὐτῆς διέρχεται ἡ ἀρχαιοτάτη ὁδὸς καραβανίων Κάνγκα-Ματάνγκα-Φόρο-Νιέμπο-Λοάνγκο καὶ τοῦ Μόνο. Μ. Δ. Β.

**Μπαντὰ** (Benda), ***Ἰουλιανός***· Βλ. λ. *Μπεντά*.

**Μπανταλένια** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ἀλλ' ἀσφαλὴς ὅρμος ἐπὶ τῆς χερσονήσου Τραχείας, τῆς καὶ ἄλλως Περαίας καλουμένης, πρὸς Β. τῆς Ρόδου καὶ κατέναντι τῆς Σύμης, ἐν Καρίᾳ (πλάτ. 36° 41′ Β., μῆκ. 28° 05′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1604: Gulfs of Kos, Doris and Symi) ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Σύμης. Σ. Ε. Λ.

**Μπανταλόκκιο** (Badalocchio), ***Σῖξτος***. Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης ἐκ Πάρμας (1581—1647). Εἶναι ἐκ τῶν ἀρίστων μαθητῶν τοῦ Ἀννίβα Καρράτσι. Κατ' ἀρχὰς συνώδευσεν αὐτὸν εἰς Ρώμην διὰ νὰ τὸν βοηθήσῃ εἰς τὴν διὰ πινάκων διακόσμησιν τοῦ Φαρνεσίου μεγάρου, ἐκεῖ δὲ εἰργάσθη, ἐπὶ τῇ βάσει σχεδίων τοῦ Φ. Ἀλμπάνι, τέσσαρας μεγάλας νωπογραφίας μὲ μυθολογικὰ θέματα, εἰς τὸ ἀνάκτορον Βερόσπι. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Καρράτσι ἐπέστρεψεν εἰς Βολωνίαν. Τῷ 1613 διεκόσμησε διὰ νωπογραφιῶν τὸ μέγαρον Μπεντιβόλιο εἰς Γκουαλτιέρι, εἶτα δὲ εἰργάσθη ἐπὶ μακρὸν εἰς Ρήγιον, ὅπου διεκόσμησε μεταξὺ ἄλλων καὶ τὸν τροῦλλον τοῦ ναοῦ Σὰν Τζοβάννι. Μεταβὰς ἐκεῖθεν εἰς Πάρμαν ἐξετέλεσε πλείστους πίνακας, ἐξ ὧν γνωστότερος εἶναι ὁ παριστῶν τὸν ἅγιον Φραγκῖσκον. Ἦτο ἄριστος ἀπεικονιστὴς ἀλλ' ἐστερεῖτο ἐντελῶς φαντασίας. Διεκρίθη ἐπίσης ὡς χαράκτης, διεσώθησαν δὲ μέχρις ἡμῶν ὑπερτριάκοντα θαυμασταὶ ἀντιγραφαί του, ὧν γνωστότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Ἡ Βίβλος» τοῦ Ραφαὴλ εἰς 23 πίνακας, εἰς τοὺς ὁποίους συνειργάσθη μετὰ τοῦ Λανφράνκο, «Ἡ Ἁγία Οἰκογένεια» τοῦ Σιντόνε, «Αἱ ζωγραφίαι τοῦ τρούλλου τῆς Μητροπόλεως τῆς Πάρμας» τοῦ Κορρέτζιο εἰς ἓξ πίνακας καὶ «Ὁ Λαοκόων» ἐξ ἀρχαίας παραστάσεως, κάλλιστον πάντων, σχεδιασθὲν μετὰ θαυμαστῆς δεξιοτεχνίας (Ρώμη, 1606). Χ. Δ.

**Μπανταλόνα** (Badalona) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βαρκελώνης, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 10 χλμ. ΒΑ. Κάτ. 29.361. Εἶναι βιομηχανικὸν προάστειον τῆς Βαρκελώνης ἔχον ἐργοστάσια βαμβακερῶν, διπυρίτου, ζαχάρεως καὶ ὑαλίνων προϊόντων. Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἐκαλεῖτο Betula καὶ ἀπετέλει μίαν τῶν σημαντικωτέρων πόλεων τῆς Ταρρακωνικῆς. Μ. Δ. Β.

**Μπάνταμ** (Bantam) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία, πόλις καὶ παλαιὸν βασίλειον τῆς νήσου Ἰάβας. Ἡ *ἐπαρχία* κεῖται πρὸς τὸ Δ. τμῆμα τῆς νήσου, ἔχει 6.387 τ. χλμ. ἔκτασιν καὶ 918.497 κατ. κατὰ τὸ πλεῖστον Σονδαίους καὶ Κινέζους καὶ ὀλίγους Εὐρωπαίους. Ἔχει ἔδαφος ὀρεινὸν καὶ ἡφαιστειογενὲς καὶ παράγει ὄρυζαν, καφέν, ζαχαροκάλαμον καὶ βάμβακα. Τῷ 1883 ὑπέστη μεγίστας καταστροφὰς συνεπείᾳ τῆς ἐκρήξεως τοῦ ἡφαιστείου Κρακατόα. Κατὰ τὸ 1927 ἔλαβε χώραν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ ταύτῃ σοβαρὰ κομμουνιστικὴ ἐπανάστασις κατὰ τῆς ὀλλανδικῆς διοικήσεως, ἥτις κατεστάλη διὰ τῆς ἀποστολῆς ὀλλανδικῶν πολεμικῶν καὶ στρατοῦ. Πρωτεύουσα αὐτῆς εἶναι ἡ *Σέραγκ*. Ἡ *πόλις* κεῖται πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς νήσου ἐπὶ ὁμωνύμου κόλπου καὶ ἦτο ἄλλοτε πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας καὶ παλαιότερον τοῦ ὁμωνύμου βασιλείου, μὲ ἀκμάζον ἐμπόριον καὶ σημαντικὰς ἐγκαταστάσεις τῶν Ὀλλανδῶν. Καταστραφεῖσα τῷ 1883 ὑπὸ Μωαμεθανῶν ἐπιδρομέων καὶ περιελθοῦσα ἔκτοτε εἰς ἐρείπια, ἠρημώθη καὶ σχεδὸν ἐγκατελείφθη. Μ. Δ. Β.

**Μπαντάμας** (Bandama) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ γαλλικῇ ἀποικίᾳ τῆς Ἀκτῆς τοῦ Ἐλεφαντόδοντος. Σχηματίζεται ὑπὸ τῶν χειμάρρων *Λευκοῦ* καὶ *Ἐρυθροῦ Μπαντάμα*, ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Κενεντούγκου, δέχεται κατὰ τὸν ροῦν αὐτοῦ τὰ ὕδατα τοῦ ποταμοῦ Ἀζινὶ καὶ τινων ἄλλων παραποτάμων μικροτέρας σημασίας καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν κόλπον τῆς Γουϊνέας, μεταξὺ τοῦ Γκρὰν-Μπασσὰμ καὶ τῶν λιμνοθαλασσῶν Λαχός. Μ. Δ. Β.

**μπαντανᾶς** (ὁ)· ἡ διὰ γαλακτώματος ἀσβέστου ἐπίχρισις τοῦ τοίχου, ὑδροχρωματισμὸς (τουρκ. badana).

**μπαντανατζῆς** (ὁ)· ἰδιωματ., αὐτὸς ποῦ κάμνει τὸν μπαντανᾶν, ὁ ἐργάτης ὁ ἀναλαμβάνων νὰ ἐπιχρίσῃ τοὺς τοίχους τῆς οἰκίας διὰ γαλακτώματος ἀσβέστου.

**μπαντὰρ** (bandar). Ἔγχορδον ὄργανον τῶν Ἀράβων, ἀποτελούμενον ἐκ ξυλίνου ἠχείου, κυκλοτεροῦς σχήματος, κεκαλυμμένον ὑπὸ μεμβράνης. Γ. Σ.

**Μπαντάρ, *Μπαντέρ, Μπεντέρ,*** καὶ ***Μπουντούρ***. Λέξις περσικὴ σημαίνουσα λιμήν. Χρησιμοποιεῖται συνήθως ὡς πρῶτον συνθετικὸν γεωγραφικῶν ὀνομάτων ἐν Ἀσίᾳ καὶ Ἀφρικῇ ὡς *Μπαντὰρ-Ζιαντά, Μπαντὰρ-Ἀλούλα, Μπαντὰρ-Μπέλα, Μπαντὰρ-Σάχ, Μπαντὰρ-Μασχοὺρ* κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπαντὰρ-Ἀμπᾶς** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας ἐπὶ τοῦ Περσικοῦ κόλπου, ἔχουσα ἐνδιαφέροντα λιμένα μὲ σημαντικὴν ἐμπορικὴν κίνησιν.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ πόλις, καλουμένη ἄλλοτε *Γκομπρούν*, κατείχετο ὑπὸ τῶν Πορτογάλων, οἵτινες εἶχον κτίσει αὐτόθι καὶ ὀχυρὸν φρούριον. Τῷ 1614 ὅμως ὁ σάχης Ἀμπᾶς ἐπέτυχε νὰ ἐκδιώξῃ τούτους, ἔκτοτε δὲ ἐδόθη εἰς τὴν πόλιν τὸ νέον αὐτῆς ὄνομα πρὸς τιμὴν τοῦ ἐλευθερωτοῦ. Ἀπὸ τοῦ 1620 ἡ Περσία ἐπέτρεψεν εἰς Ἄγγλους καὶ Ὀλλανδοὺς ἐμπόρους νὰ ἐγκατασταθῶσιν εἰς τὴν Μπαντὰρ-Ἀμπᾶς, ἥτις ἀπέβη κατὰ μικρὸν σημαντικὸν ἐμπορικὸν κέντρον καὶ διετήρησε τὴν ἀκμήν της μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ὁπότε μέγα μέρος τοῦ ἐμπορίου της ἀπερρόφησεν ἡ Μπουσσίρ. Τῷ 1740 ἡ πόλις παρεχωρήθη ὑπὸ τῆς περσικῆς κυβερνήσεως εἰς τὴν φυλὴν τῶν Μαΐνι καὶ τῷ 1780 διὰ συνθήκης εἰς τὸν σουλτᾶνον τῆς Μασκάτης. Τῷ 1856 ὅμως ἡ Περσία ἤγειρεν ἀξιώσεις κυριαρ-

Digitized by Google

χίας ἐπ' αὐτῆς, διεκανονίσθη δὲ τότε τὸ ζήτημα δι' ἀνανεώσεως τῆς συνθήκης. Βραδύτερον προεκλήθησαν νέαι προστριβαὶ μεταξὺ τῶν δύο χωρῶν καὶ ἐγένετο μὲν καὶ πάλιν, ἐπεμβάσει τῆς Ἀγγλίας, τρίτη ἀνανέωσις τῆς συνθήκης, ἀλλὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ σουλτᾶνος τῆς Μασκάτης ἐξεθρονίζετο δι' ἐπαναστάσεως ἐκραγείσης ἐν τῇ χώρᾳ του, ἡ δὲ Περσία, ἐπωφελουμένη τῆς εὐκαιρίας, κατέλαβε τὴν πόλιν, τὴν ὁποίαν καὶ κατέχει ἔκτοτε ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν της. —Ω.

**Μπαντάρα** (Bhandara ἢ Bandara) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ γενικῇ διοικήσει τῆς Ναγκπούρ. Ἡ πόλις ἔχει 13.200 κατ. καὶ βιομηχανίαν ἐργαλείων καὶ ἄλλων τεχνουργημάτων ἐξ ὀρειχάλκου. Τὸ διαμέρισμα ἔχει ἔκτασιν 10.257 τ. χλμ. καὶ 753.000 κατ. Τὸ ἔδαφος εἶναι γόνιμον καὶ ὑγρὸν μετὰ πολλῶν δασῶν, παράγει δὲ κυρίως βάμβακα καὶ ξυλείαν. Μ. Δ. Β.

**Μπαντάρι** (Badari) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἄνω Αἰγύπτου ἐν τῷ νομῷ τοῦ Ἀσσιούτ. Κάτ. 6.500. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ὄχθης τοῦ Νείλου καὶ εἶναι σταθμὸς καραβανίων πρὸς τὸ ἐσωτερικόν. Μ. Δ. Β.

**Μπαντὰρ Λίγκα** (Bandar Liga) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας ἐν τῷ νομῷ Λαριστάν. Κάτ. 10.000. Κεῖται ἐπὶ τῶν Β. ἀκτῶν τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ ἔχει λιμένα μετὰ ζωηρᾶς κινήσεως εἰσαγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς. Κατείχετο ἄλλοτε ὑπὸ τῶν Ἀράβων, οἵτινες ἐξεδιώχθησαν ἐκεῖθεν ὑπὸ τῶν Περσῶν τῷ 1868. Μ. Δ. Β.

**Μπαντάρρα** (Bandarra), *Γόνζαλο Ἄουνες*. Πορτογάλος λαϊκὸς ποιητὴς (1500—1556). Ὑποδηματοποιὸς τὸ ἐπάγγελμα, ἀφιερώθη εἰς τὴν ἀνάγνωσιν τῆς Γραφῆς, ἐκ τοῦ ὕφους τῆς ὁποίας ἐμπνευσθεὶς ἤρχισε γράφων στίχους μὲ θέματα ἐκ τῶν ἀρχαίων πορτογαλικῶν παραδόσεων. Ἡ φήμη του ὀφείλεται κυρίως εἰς ἀλληγορικὰ πατριωτικὰ ποιήματα, ἅτινα τόσῳ ἐξῆψαν τὰ πνεύματα τοῦ λαοῦ, ὥστε νὰ κληθῇ ὁ ποιητὴς ὑπὸ τῆς Ἱερᾶς Ἐξετάσεως εἰς δίκην. Τὰ ποιήματα ταῦτα, πολλὰ ἔτη βραδύτερον, ἐχρησίμευσαν ὡς ἐθνεγερτήρια ᾄσματα, καὶ μετὰ τὴν ἐπιτευχθεῖσαν ἀποτίναξιν τοῦ ἰσπανικοῦ ζυγοῦ καὶ τὴν ἀνάκτησιν τῆς ἐλευθερίας ἀπέβησαν εἶδος ἐθνικοῦ ἐγκολπίου διὰ τὸν πορτογαλικὸν λαόν. Γ. Ι. Β.

**Μπαντάυαν** (Bantayan) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ ἀμερικανικοῦ ἀρχιπελάγους τῶν Φιλιππίνων. Κεῖται μεταξὺ τῶν νήσων Σεμποῦ καὶ Νέγκρος, μεταξὺ 11°9' Β. πλάτους καὶ 123°44' Α. μήκους καὶ ἔχει 6 χλμ. μῆκος καὶ 3 χλμ. πλάτος, μετὰ 18.300 κατ. Πρωτεύουσα αὐτῆς εἶναι ἡ ὁμώνυμος πόλις, ἔχουσα 13.300 κατ. Μ. Δ. Β.

**Μπανταχὸς** (Bandajoz) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς καὶ πόλις τῆς Ἱσπανίας. Ὁ νομὸς κεῖται παρὰ τὰ πορτογαλικὰ σύνορα καὶ ἔχει ἐμβαδὸν 21.848 τ. χλμ. καὶ 644.625 κατ. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γκουαντιάνα, παρὰ τὴν συμβολὴν αὐτοῦ πρὸς τὸν Ριβίλιας, παρὰ τὴν μεθόριον τῆς Πορτογαλίας. Εἶναι πόλις ὠχυρωμένη καὶ πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. 41.982. Ἔχει λατομεῖα μαρμάρου, κεραμοποιεῖα, βυρσοδεψεῖα, ἀλευρομύλους. Λόγῳ τῆς γεωγραφικῆς καὶ στρατιωτικῆς της θέσεως ὑπέστη πολλὰς πολιορκίας ὑπὸ Πορτογάλων, Γάλλων καὶ Ἄγγλων. Τῷ 1811 κατελήφθη ἐξ ἐφόδου ὑπὸ τῶν Γάλλων ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Σοὺλτ καὶ τῷ 1812 ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ὑπὸ τὸν Οὐέλλιγκτων. Ἔχει ὀνομαστὴν παλαιὰν μητρόπολιν καὶ ἐρείπια ἀρχαίου πύργου, καθὼς καὶ ρωμαϊκὴν γέφυραν ἐπὶ τοῦ Γκουαντιάνα. Μ. Δ. Β.

**Μπανταχσὰν** *[Γεωγρ.]*. Ἡμιανεξάρτητον διαμέρισμα τοῦ Ἀφγανικοῦ Τουρκεστάν. Κεῖται μεταξὺ Βουχάρας καὶ Παμὲρ, περιβάλλεται δὲ πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Ἰνδοῦ-Κοὺχ καὶ πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ Ἄμου-Νταριὰ καὶ περιλαμβάνει τὴν περιοχὴν τοῦ Βάκχαν, ἔχουσαν ἔκτασιν 8.500 τετρ. μιλλίων καὶ πληθυσμὸν 100.000 κατοίκων, κατὰ τὸ πλεῖστον Ταΐκς, ὁμιλούντων τὴν περσικήν. Πρωτεύουσαν ἔχει τὴν *Φαϊζαμπάτ*. Οἱ μέχρι τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἡγεμόνες τῆς χώρας ταύτης ἐθεώρουν ἑαυτοὺς ἀπογόνους τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι ὀρεινόν, διαρρεόμενον ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Κόκχα, καὶ εἶναι περίφημον διὰ τὰ πολύτιμα ὀρυχεῖα σπανίων μετάλλων καὶ πολυτίμων λίθων (ρουβινίων καὶ λαζουλίτου). —Ω.

**Μπανταχσὴ** *Μελουάνα*. Πέρσης ποιητὴς τοῦ Ι' αἰῶνος. Κατέλιπε συλλογὴν ποιημάτων μεγάλης ἐμπνεύσεως. Γ. Ι. Β.

**Μπαντὲ** (Bader), *Κλαρίσσα*. Γαλλὶς λογία ἐκ Στρασβούργου (1840—1902). Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν μελέτην τῆς ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καὶ τῇ συγχρόνῳ κοινωνίᾳ θέσεως τῆς γυναικὸς καὶ ἔγραψεν: «Ἡ γυνὴ εἰς τὰς ἀρχαίας Ἰνδίας» (1864), «Ἡ γυνὴ τῆς Βίβλου» (1865), «Ἡ Ἑλληνὶς γυνή» (1871), «Ἡ Ρωμαία γυνή» (1877), «Ἡ Γαλλὶς κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους» (1884), «Ὁ δοὺξ τοῦ Νεμοὺρ» (1896) κλπ. Χ. Δ.

**Μπάντελ** (Bandel), *Ἐρνέστος ντὲ —*. Γερμανὸς γλύπτης (1800—1876). Τὰ πρῶτα ἔργα του, διὰ τῶν ὁποίων προσείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ καλλιτεχνικοῦ κόσμου, εἶναι: «Ὁ κοιμώμενος Ἄρης» (1820), «Ἡ ἐλεημοσύνη», «Ὁ φαῦνος» κ. ἄ. Τῷ 1825 μετέβη εἰς Ἰταλίαν παρὰ τῷ Θορβάλντσεν, εἰργάσθη δ' ἐκεῖ τὰς πρὸς διακόσμησιν τοῦ μνημείου τῆς Βαλχάλλα προοριζομένας μορφάς. Ἀπὸ τοῦ 1827 μέχρι τοῦ 1834 διέτριψεν εἰς Μόναχον, ὅπου διεκόσμησε δι' ἀγαλμάτων τὴν πρόσοψιν τῆς Γλυπτοθήκης. Ἔκτοτε τὸν ἀπαντῶμεν εἰς Ἀννόβερον Γοττίγγην καὶ ἄλλας γερμανικὰς πόλεις. Ἄριστα ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του θεωροῦνται τὰ ἑξῆς: «Ἡ Θουσνέλδα», σύζυγος τοῦ Ἑρμάννου, ὁδηγουμένη δεσμία πρὸς τοὺς Ρωμαίους, «Τὸ κοιμώμενον πνεῦμα», κοσμοῦν ἐπιτύμβιον μνημεῖον ἐν Βερολίνῳ, «Ὁ Χριστὸς» εἰς φυσικὸν μέγεθος ἀνδρός, καὶ τὸ κάλλιστον πάντων βρούντζινον ἄγαλμα τοῦ ἐθνικοῦ ἥρωος τῶν Γερμανῶν Ἑρμάννου, ὕψους 13 μέτρων. Ἐπίσης ὁ Μπάντελ εἰργάσθη πλῆθος ἀξιολόγων προτομῶν. Χ. Δ.

**Μπαντελιὲ** (Baudelier), *Ἀδόλφος-Ἀλφόνσος*. Ἀμερικανὸς ἀρχαιολόγος, ἑλβετικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1840 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1914. Ἐπεδόθη ἰδίως εἰς ἀρχαιολογικὰς καὶ ἐθνολογικὰς μελέτας περὶ τῆς φυλῆς καὶ τοῦ πολιτισμοῦ τῶν ἐρυθροδέρμων τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ τοῦ Μεξικοῦ καὶ θεωρεῖται ὡς ἡ μεγαλυτέρα αὐθεντία εἰς τὰ προϊστορικὰ ζητήματα τῆς Ἀμερικῆς. Τὰ κυριώτερα τῶν συγγραμμάτων του εἶναι: «On the art of war of the old nation», «Of Mexiko» καὶ «On the Distribution of land and heir». Β. Δ. Θ.

**Μπαντέλλο** (Bandello), *Βικέντιος*. Ἰταλὸς θεολόγος (1435—1506). Ἐθεωρεῖτο μεταξὺ τῶν σοφωτέρων καὶ εὐγλωττοτέρων θεολόγων τῆς ἐποχῆς του καὶ τῷ 1501 ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ τάγματος τῶν δομινικανῶν, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνῆκε. Διεκρίθη κυρίως καὶ ἐγένετο ὀνομαστὸς διὰ τὴν σφοδρὰν πολεμικήν του μετὰ τῶν φραγκισκανῶν εἰς τὸ ζήτημα τοῦ δόγματος τῆς ἀμώμου συλλήψεως τῆς Θεοτόκου, τοῦ ὁποίου ἦτο σφοδρότατος πολέμιος. Λόγῳ τῆς ὀξύτητος, τὴν ὁποίαν ἔλαβεν ἡ πολεμικὴ μεταξὺ τῶν δύο ταγμάτων, ἠναγκάσθη νὰ ἐπέμβῃ ὁ πάπας Σίξτος Δ', ὁ ὁποῖος κατεδίκασε τὰς δοξασίας τοῦ Μπαντέλλο. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, λίαν περιζήτητα μεταξὺ τῶν βιβλιοφίλων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Libellus recollectorius de veritatae conceptionis B. Mariae Virginis» (1475), «Tractatus de singulari puritate praerogativae conceptionis Salvatoris Dom. nostris Jesu-Cristi» (1481). Μ. Δ. Β.

— **Μπαντέλλο** (Bandello), *Ματθαῖος*. Ἰταλὸς διηγηματογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1480 εἰς Καστελνόβο. Μετὰ σπουδὴν τῆς φιλολογίας, εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἱεροκηρύκων, ὅπου ἀρχηγὸς ἦτο ὁ θεῖος του *Βικέντιος*. Βραδύτερον εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Πύρρου Γκοντζάγα, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη ὡς διδάσκαλος τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς τῆς περιφήμου θυγατρὸς αὐτοῦ Λουκρητίας. Μετὰ τὴν μάχην τῆς Παβίας ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ Μιλᾶνον, ὡς ἀνήκων εἰς τοὺς γαλλοφίλους, καὶ μετὰ περιπλάνησιν εἰς τὰς ἰταλικὰς πόλεις εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Καίσαρος Φρεγκόζου. Μεταβὰς δὲ εἰς Γαλλίαν παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ πολλὰ ἔτη καὶ τῷ 1550 ὠνομάσθη ὑπὸ τοῦ Ἑρρίκου τοῦ Β' ἐπίσκοπος τοῦ Ἄγκεν. Ἔζησε καὶ πέραν τοῦ 1561. Ὁ Μπαντέλλο εἶναι γνωστὸς κυρίως διὰ τὰ διηγήματά του, 214 τὸ ὅλον, ἐκδοθέντα τὸ πρῶτον εἰς 4 τόμους. Θεωρεῖται ὡς ὁ ἀξιολογώτερος Ἰταλὸς διηγηματογράφος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ τὰ διηγήματά του, χαρακτῆρος βοκκακιακοῦ, ζωγραφίζουσι μετὰ ζωηρότητος τὰ ἤθη καὶ ἔθιμα τῆς κοινωνίας τῆς ἐποχῆς του. Γ. ΣΠ.

**Μπάντελχαντ**, ἢ *Μπάντελ-Κὰντ* (Bandelk(h)and, ἢ Bundelkhand καὶ Bundelcund) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν ταῖς Κεντρικαῖς Ἰνδίαις, μεταξὺ 23°52' καὶ 26°26' Β. πλάτους καὶ 77°53' καὶ 81°39' Δ. μήκους. Ἔχει ἐπιφάνειαν 26.837 τετρ. χλμ. καὶ 2.260.000 κατ. Εἶναι χώρα ὀρεινὴ μὲ ὑψώματα 650 μ., διαρρέεται ὑπὸ πολλῶν ποταμῶν καὶ ἔχει πολλὰς μικρὰς λίμνας, τινὲς τῶν ὁποίων εἶναι τεχνηταί, σχηματισθεῖσαι ἐντὸς κοιλάδων, ὧν ἡ κατωφερὴς διέξοδος ἐκλείσθη διὰ φράγματος. Εἶναι ὀνομαστὴ κυρίως διὰ τὰ ἐν αὐτῇ ὑπάρχοντα ἄφθονα κοιτάσματα καὶ μεταλλεῖα ἀδάμαντος, ὧν τὰ σπουδαιότερα εἶναι ἐν Μαχαραϊπούρ, Ρατζπούρ, Κιμερὰ καὶ Γκαντασία. Ἔχει ἐπίσης καὶ μεταλλεῖα σιδήρου καὶ χαλκοῦ καὶ πυκνὰ δάση. Παράγει ξυλείαν, ζαχαροκάλαμον, βάμβακα, ἰνδικὸν κλπ. Κατοικεῖται ὑπὸ τῆς φυλῆς τῶν Μπαντέλα, ἡ ὁποία ἀποτελεῖ κλάδον τῆς φυλῆς τῶν Ρατζπούτι. Ἡ γλῶσσα τῶν κατοίκων της κατάγεται ἐκ τῆς σανσκριτικῆς. Ἀπετέλει ἄλλοτε ἀνεξάρτητον περιοχήν, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπῆρχον περὶ τὰς 30 ἡγεμονίαι, αἵτινες τῷ 1750 ὑπετάγησαν εἰς τὸν ἀρχηγὸν τῆς φυλῆς τῶν Μαράτα-Πέσβα, ἀπὸ τὸν ὁποῖον τῷ 1817 οἱ Ἄγγλοι ἐξηγόρασαν πάντα τὰ δικαιώματά του ἐπὶ τῶν Μπάντελχαντ. Μ. Δ. Β.

**μπαντέμι** (τὸ) (ἐκ τοῦ τουρκικοῦ *μπαντέμ*) ἀμύγδαλον.

**Μπάντεν** (Baden) *[Γεωγρ.]*. —1) Δύο λουτροπόλεις, ἐν Ἑλβετίᾳ καὶ Αὐστρίᾳ (βλ. λ. *Βάδεν*). — Κράτος τῆς γερμανικῆς ὁμοσπονδίας (βλ. λ. *Βά*...

— **Μπάντεν-Μπάντεν** (Baden-Baden) *[Γεωγρ.]* Λουτρόπολις τῆς Βάδης (βλ. λ. *Βάδεν-Βάδεν*).

**Μπαντενβάϊλλερ** (Badenweiller) *[Γεωγρ.]* Λουτρόπολις τῆς Βάδης (βλ. *Βαδενβάϊλλερ*).

**Μπάντεν** (Baden), *Γουσταῦος-Λουδοβῖκος*. Δανὸς νομομαθὴς καὶ ἱστορικὸς (1764—1840). Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων «Ἱστορίαν τοῦ βασιλείου τῆς Δανίας», «Ἱστορικὴν Δανο-νορβηγικὴν βιβλιοθήκην» κ.λπ. Χ. Δ.

—**Μπάντεν** (Baden), *Λουδοβῖκος-Γουλιέλμος*. Μαργράβος τοῦ Μπάντεν. Γερμανὸς πρίγκιψ (16..—1707), περίφημος διὰ τοὺς ἐναντίον τῶν Τούρκων ἀγῶνάς του. Υἱὸς τοῦ Μαξιμιλιανοῦ τοῦ Μπάντεν-Μπάντεν, ἐπολέμησεν ὑπὸ τὸν Μοντεκούκολι καὶ τὸν δοῦκα τῆς Λωρραίνης κατὰ τῆς Γαλλίας. Κατήγαγε νίκας ἐναντίον τῶν Τούρκων (Nissa ... Vidin καὶ Salankelem 1691) καὶ διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1693 ἀρχηγὸς τοῦ παρὰ τὸν Ρῆνον κατὰ τῶν Γάλλων ἀγωνιζομένου αὐτοκρατορικοῦ στρατοῦ. Τῷ 1704 προήχθη εἰς στρατάρχην. —

**Μπαντενβάϊλλερ** (Badenweiller) *[Γεωγρ.]* Λουτρόπολις τῆς Βάδης ἐν Γερμανίᾳ (βλ. λ. *Βαδενβάϊλλερ*).

**Μπαντένι** (Badeni), *Καζίμιρος-Φῆλιξ*, κόμης. Αὐστριακὸς πολιτικὸς (1846—1909). Πολωνὸς τὴν καταγωγήν. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κρακοβίας νομικά. Τῷ 1866 εἰσῆλθεν εἰς τὴν διοικητικὴν ὑπηρεσίαν καὶ τῷ 1879 ἐγένετο κυβερνητικὸς ἐπίτροπος Κρακοβίας καὶ κατόπιν τῷ 1895 διοικητὴς τῆς Γαλικίας. Μετὰ τὴν παραίτησιν τῶν κυβερνήσεων Βίντεσγκρατς καὶ Κίλμανσεγκ, συνεπείᾳ τῶν ἀντισημιτικῶν ταραχῶν, ὁ αὐτοκράτωρ ἀνέθεσεν εἰς αὐτόν, τῷ 1895, τὸν σχηματισμὸν κυβερνήσεως, λόγῳ τῆς μεγάλης φήμης ἧς ἔχαιρε διὰ τὴν δραστηριότητα καὶ τὴν ἀφοσίωσίν του εἰς τὰς συντηρητικὰς ἀρχάς. Ὁ Μπαντένι ἠρνήθη νὰ συνεργασθῇ μὲ τὰ κόμματα καὶ ἐσχημάτισεν ὑπηρεσιακὴν κυβέρνησιν μὲ πρόγραμμα τὴν καταστολὴν τῶν ἀντισημιτικῶν ταραχῶν, τὴν μεταβολὴν τοῦ ἐκλογικοῦ συστήματος, τὴν ἐπέκτασιν τοῦ δικαιώματος τῆς ψήφου καὶ εἰς ἄλλας τάξεις καὶ τὴν φορολογίαν τῆς ζαχάρεως. Τὰ δικτατορικὰ ὅμως μέτρα αὐτοῦ καὶ ἰδίως ἡ ἄρνησίς του ὅπως ἐπικυρώσῃ τὴν ἐκλογὴν ὡς δημάρχου Βιέννης τοῦ ἀρχηγοῦ τῶν σοσιαλιστῶν καὶ ἀντισημιτῶν Λοῦγκερ, προεκάλεσαν μέγαν ἀναβρασμὸν ἐναντίον του καὶ τὴν ἀποτυχίαν του εἰς τὰς ἐκλογάς. Ἡ συνελθοῦσα βουλὴ ἠρνήθη εἰς αὐτὸν ψῆφον ἐμπιστοσύνης καὶ ἠνάγκασε τὸν αὐτοκράτορα νὰ ζητήσῃ τὴν παραίτησίν του, τῷ 1897. Ἔκτοτε ὁ Μπαντένι παρέμεινεν ἰδιωτεύων. Μ. Δ. Β.

**Μπάντερ** (Bader), *Κάρολος-Ἀδάμ*. Γερμανὸς ὀξύφωνος (1789—1870). Ἐξαίρετος ἀοιδὸς καὶ δεκεκριμένος ὀργανοκρούστης, ὑπῆρξε μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας δόξας τοῦ γερμανικοῦ θεάτρου καὶ ἰδίως τοῦ Μελοδράματος τοῦ Βερολίνου, ἐν τῷ ὁποίῳ πρωτηγωνίστει ἐπὶ ὁλόκληρον εἰκοσαετίαν. Ἀπὸ τοῦ 1845 ἐξηκολούθει τὴν καλλιτεχνικήν του δρᾶσιν ὡς σκηνοθέτης τοῦ αὐτοῦ Μελοδράματος. Γ. Σ.

**μπαντεριλιέρο** (ὁ) (banderillero). Οὕτω καλεῖται ἐν Ἱσπανίᾳ τὸ πρόσωπον τὸ ὁποῖον ἐμπηγνύει εἰς τὸν τράχηλον τοῦ ταύρου τὰς μπαντερίλιας, ἤτοι βραχέα ἀκόντια (70—78 ἑκατ.), φέροντα κατὰ τὸ ἄκρον πολυχρώμους μικρὰς σημαίας (ἢ καὶ ἄνθη). Τὸ ἔργον τοῦ μπαντεριλιέρο συνίσταται κυρίως εἰς τὸ νὰ ἐξερεθίζῃ τοὺς ταύρους πρὸ τῆς εἰσόδου τοῦ ταυρομάχου εἰς τὸν στίβον, εἶναι δὲ ἐξ ἴσου ἐπικίνδυνον, ἰδίως ὅταν μεταχειρίζεται βραχύτατα ἀκόντια (25 ἑκατ.). Γ. Σ.

**Μπάντερμα** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τῆς ἐν... τῆς Προποντίδος πόλεως *Πανόρμου*.

**Μπαντέσκο** (Badesco), *Ἰωάννης-Σκιπίων*. Ρουμᾶνος ποιητὴς καὶ δημοσιογράφος ἐκ Τρανσυλβανίας, γεννηθεὶς τῷ 1847. Σπουδάζων ἐν Π... στῇ ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην ποιητικὴν συλλογὴν «Πρωτότυπα ποιήματα» καὶ τινὰς μεταφράσεις ... γων ἐκ τῆς μαγυαρικῆς γλώσσης (1868). Περιηγηθεὶς τὴν Τρανσυλβανίαν συνέλεξε λαϊκὰ ποιήματα, τῶν ὁποίων ἐξέδωσε περιφήμους μεταφράσεις. Ὡς δημοσιογράφος ἔγραψε κριτικὰς εἰς τὴν «Κονβορμπίρι λιτεράρε» καὶ διηύθυνεν ὡς ἀρχισυντάκτης τὸν «Ταχυδρόμον τοῦ Ἰασίου», τὸν ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθέντα τῷ 1872 «Νέον ρουμανικὸν ταχυδρόμον τοῦ Ἰασίου» καὶ τὴν «Σάλπιγγα τῶν Καρπαθίων» τοῦ Βουκουρεστίου. Χ. Δ.

**Μπὰντζ** (Banz) *[Γεωγρ.]*. Ὀχυρὸν ἀνάκτορον τῆς Βαυαρίας ἐν Ἄνω Φραγκονίᾳ, κείμενον ἐπὶ τοῦ Μοίνου εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τοῦ Λίχτενστάϊν. Εἶναι περίφημον ἐκ τοῦ ἐν αὐτῷ παλαιοντ...

Digitized by Google

ου μοναστήριου βενεδικτίνων, τὸ ὁποῖον ἱδρύθη ῷ 1071 ὑπὸ τῆς Ἀλμπαρέντα, συζύγου τοῦ Ἀλέρτου Μπάμπεμπεργκ. Τὸ ἀββαεῖον τοῦτο ἤνησε κατὰ τὸν ΙΔ΄ ἰδίᾳ αἰῶνα, καταστὰν παγκομίως γνωστὸν διὰ τὴν πλουσίαν βιβλιοθήκην του αὶ τὰς συλλογὰς μεταλλίων, ἔργων τέχνης καὶ υσικῆς ἱστορίας. Τῷ 1802 ἡ μονὴ αὕτη διελύθη, αὶ ἡ μὲν βιβλιοθήκη αὐτῆς μετεφέρθη εἰς Βαμέργην, αἱ δὲ συλλογαὶ μεταλλίων εἰς Μόναχον. Μόον τὸ πλουσιώτατον εἰς ἀπολιθώματα, συλλεγέντα κ τῶν περιχώρων, μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας αρέμεινεν ἐν Μπάντζ. Τὸ ἀββαεῖον εἶναι ἐκ τῶν ραιοτέρων ἡγεμονικῶν ἱδρυμάτων τῆς Φρανκοίας, ἀγορασθὲν δὲ ὑπὸ τοῦ δουκὸς Γουλιέλμου ῆς Βαυαρίας εἶχε καταστῆ τόπος θερινῆς αὐτοῦ ιαμονῆς. Ἐν τῷ ναῷ τοῦ πύργου τοῦ Μπάντζ πάρχει τὸ μνημεῖον τοῦ Γάλλου στρατηγοῦ Λπερτιέ. Χ. Δ.

**Μπαντζάρας** (οἱ) (Bandjaras). Νομαδικὴ φυλὴ ῶν κεντρικῶν Ἰνδιῶν. Εἶναι ὡραῖοι ἄνδρες ἀξιοημειώτου μυϊκῆς δυνάμεως. Πιστεύεται ὅτι ἐξ ὐτῶν κατάγονται οἱ Ἀτσίγγανοι, οἵτινες ἐξηπλώησαν εἰς τὴν Εὐρώπην. Π. Γ. Λ.

**Μπαντζερμάσινγκ** (Banjermassing, ἢ Banjermassing, ἢ Benjermassing) *[Γεωγρ.]*. Ἡγεμονία καὶ πόλις τῆς νήσου Βόρνεο, ὑπὸ ὀλλανδικὴν ροστασίαν. Ἡ ἡγεμονία κεῖται πρὸς τὸ νότιον μῆμα τῆς νήσου καὶ ἔχει ἔκτασιν 375.094 τετραγ. λμ., μὲ 600.000 κατ., ὧν πολλοὶ Κινέζοι καὶ ὀλίοι Εὐρωπαῖοι. Ἔχει μεταλλεῖα χρυσοῦ, σιδήρου αὶ χαλκοῦ καὶ ἐξάγει πέπερι, ὄρυζαν, ἀρωματώεις οὐσίας, καμφορὰν κτλ. Ἡ πόλις εἶναι πρωεύουσα τῆς ἡγεμονίας καὶ ἔχει 42.500 κατ. Κεῖαι παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μπαρίτο καὶ ῖναι σημαντικὸς ἐξαγωγικὸς λιμήν. Μ. Δ. Β.

**μπάντζο** (τὸ) (banjo). Ἔγχορδον ὄργανον ἀφριανικῆς καταγωγῆς, λίαν διαδεδομένον μεταξὺ τῶν Μαύρων τῆς Ἀμερικῆς. Ἡ κροῦσις ἐπιτυγχάνεται

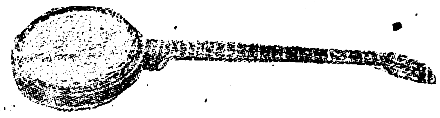

*Μπάντζο.*

εἴτε διὰ τῶν δακτύλων, ὡς εἰς τὴν κιθάραν, εἴτε δι᾽ εἰδικοῦ πλήκτρου. Εἰς τὰ πραγματικὰ μπάντζο αἱ στρόφιγγες τοῦ χορδίσματος εὑρίσκονται εἰς τὸ μέσον τῆς λαβῆς. Τὰ πεντάχορδα μπάντζο χορδίζονται ὡς ἑξῆς:

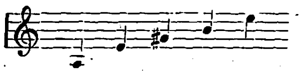

τὰ δὲ ἑξάχορδα:

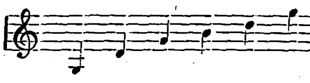

Οἱ πραγματικοὶ ὅμως φθόγγοι τοῦ ὀργάνου ἀντηχοῦσι μίαν ὀγδόην βαρυτέραν τῶν σημειουμένων. Τὸ μπάντζο ἀπετέλει τὸ κατ᾽ ἐξοχὴν ὄργανον τῆς πρωτογενοῦς ὀρχήστρας τῶν Μαύρων τῆς Ἀμερικῆς καὶ ἀπηντᾶτο ἐν συνδυασμῷ μετὰ τυμπάνων, μεγάλων κολοκυνθῶν πεπληρωμένων χαλίκων, σιαγόνων ἵππων ἢ βοῶν, τὰς ὁποίας οἱ αὐτόχθονες μουσικοὶ ἔκρουον δαιμονιωδῶς μετὰ σιδηροῦ πλήκτρου κτλ. Σήμερον ἀνήκει ἐπίσης εἰς τὴν δύναμιν τῆς *τζὰζ-μπάντ*. Σ. Γ.

**Μπάντι** (Bandi), ***Γκουΐντο***. Διαπρεπὴς Ἰταλὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Montebicchieri τῷ 1852 καὶ ἀποθανὼν ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1925. Διετέλεσεν ἐν Φλωρεντίᾳ βοηθὸς τῆς ἀνατομοπαθολογίας (1878—1882), ἰατρὸς τοῦ νοσοκομείου Santa Maria-Nuova (1883), ἀρξάμενος ἅμα ἐλευθέρων μαθημάτων κατ᾽ ἀρχὰς ἰατρικῆς κλινικῆς καὶ εἶτα παθολογίας. Τῷ 1890 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀνατομοπαθολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Φλωρεντίας, παραμείνας μέχρι τοῦ τέλους του ἐν τῇ θέσει ταύτῃ καὶ ἀφοσιωθεὶς εἰς τὴν διδασκαλίαν τοῦ κλάδου του, ὡς καὶ εἰς τὰς ἐπιστημονικάς του ἐρεύνας. Ἐκ τῶν ἐργασιῶν του ἀναφέρομεν τὴν περὶ ἐνδοκαρδιτίδων καὶ νεφριτίδων (1895), ἐπὶ τῆς παθολογίας τῶν πνευμόνων (1902), ἐπὶ τῆς αἰτιολογίας τῆς ἰνώδους πνευμονίας, ἐπὶ τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ σηψαιμικῆς μορφῆς, ἐπὶ τῆς λευχαιμίας καὶ ψευδολευχαιμίας, ἐπὶ τῆς αἱμολυτικῆς σπληνομεγαλίας, καὶ τέλος τὴν ἐργασίαν αὐτοῦ τὴν γνωστὴν ἐν τῇ ἰατρικῇ ὡς «νόσον τοῦ Μπάντι», τὴν παρουσιάζουσαν σπληνομεγαλίαν καὶ προϊοῦσαν ἀναιμίαν, ἀκολουθουμένην ὑπὸ ἡπατικῆς κιρρώσεως. Εἰς τήν, χρονίας μορφῆς καὶ ἀγνώστου αἰτιολογίας, νόσον ταύτην, τὴν συνοδευομένην ἔτι καὶ ὑπὸ πυρετοῦ καὶ ὀδυνηρῶν κρίσεων κατὰ τὸ ἀριστερὸν ὑποχόνδριον, ἡ ἐφαρμοσθεῖσα ὀποθεραπεία οὐδὲν ἐνθαρρυντικὸν ἀποτέλεσμα παρέσχε, τοὐναντίον δὲ ἡ σπληνεκτομὴ ἐν πολλοῖς ὑπῆρξεν ἐπιτυχὴς μέθοδος θεραπείας. Ο. Ρ.

**Μπαντία *ὑ Λέβλιτς*** (Badia y Leblich), ***Δομίνικος***. Ἱσπανὸς τυχοδιώκτης, γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἀλῆ-βέη* (1766—1818). Ἐκμαθὼν τὴν ἀραβικὴν ἀπεφάσισε νὰ μεταβῇ εἰς Ἀφρικὴν καὶ Ἀσίαν. Λέγεται ὅτι ἐπέτυχε τὴν χρηματικὴν συνδρομὴν τῆς κυβερνήσεως του ὑπὸ τὸ πρόσχημα ἐκτελέσεως κυβερνητικῆς ἀποστολῆς διὰ πολιτικοὺς καὶ ἐμπορικοὺς σκοπούς. Ἐπεσκέφθη τὴν Αἴγυπτον, τὸ Μαρόκκον, τὴν Τριπολίτιδα, τὴν Κύπρον, τὴν Μέκκαν, τὴν Ἱερουσαλήμ, τὴν Δαμασκὸν καὶ τὴν Κωνσταντινούπολιν, προσλαβὼν τὸ ὄνομα Ἀλῆ-βέης καὶ διαδίδων ὅτι εἶναι ἀπόγονος οἰκογενείας τῶν Ἀββασιδῶν χαλιφῶν. Ἐπανελθὼν εἰς Ἱσπανίαν διωρίσθη νομάρχης. Ἀλλὰ καὶ πάλιν ὠθούμενος ὑπὸ τοῦ τυχοδιωκτικοῦ του πνεύματος ἐταξίδευσεν εἰς Ἀνατολήν, ἔνθα ἀπέθανε δηλητηριασθείς. Ἔγραψε λίαν ἐνδιαφέρουσαν ἀφήγησιν τῶν ταξιδίων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ταξίδιον Ἀλῆ-βέη-ἐλ-Ἀβασσῆ». Γ. Ι. Β.

**Μπαντία Πολεζίνε** (Bandia Polezine) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Ροβίγκο τῆς Βενετίας παρὰ τὸν ποταμὸν Ἀδίγην. Κάτ. 7.387. Ἔχει ἐμπόριον σιτηρῶν, μετάξης καὶ τεύτλων. Ἐκτίσθη κατὰ τὸν Ι΄ αἰῶνα εἰς τὴν πέριξ ὀνομαστῆς μονῆς, ἐξ ἧς ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα. Τῆς μονῆς ταύτης σῴζεται πρόσοψις (τοῦ 1340) καὶ κεκλιμένον κωδωνοστάσιον (τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος). Μ. Δ. Β.

**Μπαντιάλι** (Badiali), ***Καῖσαρ***. Διάσημος Ἰταλὸς ἀοιδὸς (1810—1870). Πεπροικισμένος μὲ ὑπέροχον φωνὴν βαθυφώνου, ἔδρεψε δάφνας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων ἰταλικῶν θεάτρων, ἐπίσης δὲ ἐν Μαδρίτῃ, Λισσαβῶνι, Λονδίνῳ, Παρισίοις. Γ. Σ.

**Μπαντιάτ-ἀλ-τζὶν** (=ἔρημος τῶν δαιμονίων) *[Γεωγρ.]*. Μυθικὴ μουσουλμανικὴ χώρα, εἰς τὴν ὁποίαν ὁ Θεὸς ἐξώρισε τοὺς δαίμονας, εἰς οὓς εἶχεν ἀναθέσει πρότερον νὰ κυβερνῶσι τὸν κόσμον. Πολὺς περὶ αὐτῆς γίνεται λόγος εἰς τὰ παραμύθια τῆς Χαλιμᾶς, ἐξ ὧν μετηνέχθη καὶ εἰς τοὺς φραγκικοὺς ἱπποτικοὺς μύθους τοῦ Μεσαίωνος. Ν. Μ.

**μπαντίδοι** (οἱ). Τάξις λαϊκῶν τύπων, ὡς οἱ κουτσαβάκηδες τῶν Ἀθηνῶν, ζήσασα ἐν Ἰωαννίνοις μέχρι τοῦ 1885. Περὶ τῆς προελεύσεως τῶν τύπων τούτων οὐδὲν εἶναι καθωρισμένον. Τινὲς παράγουσι τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ bandito, τοῦ σημαίνοντος κακοποιόν, συμμορίτην. Ἐνίοτε καλοῦνται καὶ *καραμπέρηδες* καὶ *καραμπεριά*. Οἱ μπαντίδοι ἐπηγγέλλοντο συνήθως τὸν κρεοπώλην, τὸν βυρσοδέψην, τὸν τσαρουχᾶν, τὸν ταχυδρόμον καὶ ἄλλα ἐπαγγέλματα. Χαρακτηριστικόν των γνώρισμα ἦτο ἡ ὁμοιόμορφος των ἐνδυμασία, ἀποτελουμένη ἀπὸ κεντητὸν πεσλί, ὑποκάμισον μὲ φαρδυὰ μανίκια, φουστανέλλα, σαλβάρι, κάλτσες καὶ τσαρούχια μὲ μεγάλες φοῦντες. Οἱ μπαντίδοι ἐχαρακτηρίζοντο διὰ τὸν παλληκαρισμόν των, τὴν ἐντιμότητά των καὶ τὴν πλατωνικὴν παιδεραστίαν. Αἱ χεῖρες καὶ οἱ βραχίονές των ἔφερον διαστίκτους ἐπιγραφὰς καὶ παραστάσεις, εἰς δὲ τὸ μέτωπον σταυρόν. Μετὰ τὸ πέρας τῆς ἐργασίας συνηθροίζοντο εἰς τὰ οἰνοπωλεῖα καὶ ἐπεδίδοντο εἰς τὴν διασκέδασιν. Εἰς τοὺς μπαντίδους ὀφείλονται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὰ ἠπειρωτικὰ *στιχοπλάκια*. Διεκρίνοντο ἐπίσης καὶ διὰ τὸ φιλότιμον, τὸ φίλεργον καὶ ἀτρόμητον αὐτῶν καὶ διὰ τοῦτο ἦσαν στοιχεῖα ἐπίφοβα εἰς τὴν τουρκικὴν ἀστυνομίαν, τὴν ὁποίαν πολλάκις ἐτρομοκράτουν. Παρ᾽ ὅλα ταῦτα εἶχον καὶ ψυχικὰς ἀρετάς. Ἦσαν ἀκέραιοι, φιλελεύθεροι καὶ εὐσυνείδητοι, οὐδέποτε κατεχρῶντο τῆς δυνάμεώς των, εἶχον ἱπποτισμόν, λιτότητα εἰς τὴν τροφὴν καὶ τὸν ἐν γένει βίον, ἐθνικὸν φρόνημα, ἐσατίριζον μετὰ λεπτότητος τὰ κοινωνικὰ σκάνδαλα τῶν Ἰωαννίνων καὶ εἶχον μίαν δυσεξήγητον ὡραιοπάθειαν, ἂν καὶ ἐμίσουν τὴν ἀκολασίαν καὶ ἐσέβοντο τὴν οἰκογενειακὴν τιμήν. Εἶχον μεγάλην εὐχέρειαν εἰς τὸ στιχουργεῖν, διὰ τοῦτο πολλάκις κατὰ τὰς διασκεδάσεις των διεξήγοντο ὁλόκληροι ποιητικοὶ ἀγῶνες διὰ διστίχων μεταξὺ τῶν συνδαιτυμόνων. Ἡ τάξις αὕτη ἐξέλιπεν ἤδη ὁλοσχερῶς ἐκ τῶν Ἰωαννίνων. Χ. Ι. ΣΟΥΛΗΣ

**Μπαντὶ-ἐζ-ζεμάν**. Ἄραψ ποιητής, ἀποθανὼν τῷ 1007. Ἔγραψε μακαμάτ, ἤτοι στροφὰς καταδεικνυούσας πλοῦτον λέξεων. Ἐξ αὐτῶν ἐνεπνεύσθη ὁ διάσημος Ἄραψ ποιητὴς Χαριρί. Χειρόγραφον τῶν ποιημάτων του εὑρίσκεται ἐν τῇ Ἐθνικῇ βιβλιοθήκῃ τῶν Παρισίων. Ν. Μ.

**μπαντιέρα** (ἡ), καὶ ***παντιέρα*** δημοτ., σημαία: «ἑλληνική —, γαλλικὴ παντιέρα» || φρ. «σήκωσε παντιέρα» ἔγινε ἀντάρτης, ἐπαναστάτης, δὲν ὑπακούει εἰς κανένα (ἰταλ. bandiera).

**Μπαντιέρα** (Bandiera). Ἐπώνυμον δύο ἀδελφῶν, Ἰταλῶν πατριωτῶν, τοῦ *Ἀττιλίου* (1811—1844) καὶ τοῦ *Αἰμιλίου* (1819—1844). Ἦσαν υἱοὶ τοῦ βαρώνου Μπαντιέρα, ναυάρχου τοῦ αὐστριακοῦ ναυτικοῦ, εἰς ὃ καὶ οὗτοι ὑπηρέτουν. Εἰς ἄκρον φιλοπάτριδες, προσεχώρησαν ἀμέσως εἰς τὴν ὑπὲρ ἀπελευθερώσεως τῆς Ἰταλίας ἀρξαμένην κίνησιν συνεννοούμενοι μετὰ τοῦ Ἰωσὴφ Μαντζίνι καὶ ἄλλων Ἰταλῶν πατριωτῶν. Ἀνέλαβον συνάμα τὸν προσηλυτισμὸν καὶ ἄλλων ἀξιωματικῶν καὶ ἀνδρῶν ἐν τῷ αὐστριακῷ ναυτικῷ, οἵτινες κατὰ τὸ πλεῖστον ἦσαν Ἰταλοί. Ἐσχεδίασαν τέλος νὰ καταλάβωσι πολεμικόν τι καὶ νὰ βομβαρδίσωσι τὴν Μεσσήνην, προδοθέντες ὅμως κατέφυγον εἰς Κέρκυραν (1844). Ἐκεῖ μαθόντες ὅτι ὑπῆρχεν ἐπαναστατικὸς ὀργανισμὸς ἐν τῷ βασιλείῳ τῆς Νεαπόλεως καὶ ὅτι οἱ κάτοικοι θὰ ἐξηγείροντο μόλις ἐνεφανίζετο ἀρχηγός τις, ἀνεχώρησαν ἐκ Κερκύρας καὶ ἀπεβιβάσθησαν εἰς Καλαυρίαν, ἔχοντες μεθ᾽ ἑαυτῶν 19 μόνον ἄνδρας. Μὴ εὑρόντες ὅμως ἐπαναστάτας, οἵτινες θὰ τοὺς ἀνέμενον, καὶ προδοθέντες ὑπὸ τοῦ ἐκ Κορσικῆς ὁμοϊδεάτου των Μποκετσιάμπι, ἠχμαλωτίσθησαν ὑπὸ τοῦ νεαπολιτικοῦ στρατοῦ καὶ τὴν 23 Ἰουλίου 1844 οἱ ἀδελφοὶ Μπαντιέρα μετὰ ἑπτὰ συντρόφων των ἐτυφεκίσθησαν. Τὸν θάνατον αὐτῶν ὕμνησεν ὁ Ἕλλην ποιητὴς Ζαλοκώστας. Γ. Ι. Β.

**Μπαντίλι**, ἢ ***Μπαντίλε*** (Badili ἢ Badile). Οἰκογένεια Ἰταλῶν ζωγράφων ἐκ Βερώνης, τῆς ὁποίας τὰ μέλη ἤκμασαν κατὰ τὸν ΙΕ΄ καὶ ΙΣΤ΄ αἰῶνα. Σπουδαιότερος πάντων εἶναι ὁ *Ἰωάννης-Ἀντώνιος Μπαντίλι* (1516—1560), εἷς ἐκ τῶν πρώτων καλλιτεχνῶν οἱ ὁποῖοι ἐγκατέλειψαν τὸν παλαιὸν στερεότυπον καὶ ξηρὸν ρυθμὸν τῆς ζωγραφικῆς καὶ προσήγγισαν τὴν φύσιν καὶ τὴν πραγματικότητα. Διακρίνεται διὰ τὸν πλούσιον καὶ λαμπρὸν χρωματισμόν του. Κάλλιστα ἔργα του εἶναι: «Τὰ εἰσόδια τῆς Θεοτόκου» (Τουρῖνον), «Ὁ ἐνταφιασμὸς τοῦ Χριστοῦ», μία Παναγία καὶ «Ἡ ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου» (ἅπαντα ἐν Βερώνῃ). Ἦτο διδάσκαλος, θεῖος καὶ πενθερὸς τοῦ διασήμου καλλιτέχνου Παύλου Βερονέζε. Χ. Δ.

**Μπαντινέλλι** (Bandinelli), ***Μπάτσιο*** ἢ ***Βαρθολομαῖος***. Διάσημος Ἰταλὸς γλύπτης ἐκ Φλωρεντίας (1493—1560). Ἦτο υἱὸς τοῦ Μιχαὴλ Ἀνιόλα ντὶ Βιβιάνο, ἑνὸς ἐκ τῶν ἐπιδεξιωτέρων χρυσοχόων

*Μπάτσιο Μπαντινέλλι.*
[Αὐτοπροσωπογραφία.]

τῆς αὐλῆς τῶν Μεδίκων, ἐπέδειξε δὲ ἀπὸ παιδικῆς ἡλικίας μεγάλην κλίσιν πρὸς τὴν γλυπτικήν. Μαθητεύσας παρὰ τῷ γλύπτῃ Φραγκίσκῳ Ρούστιτσι ἐσημείωσε ταχέως σημαντικὰς προόδους καὶ ἐπῃνέθη ὑπὸ τοῦ φίλου τοῦ διδασκάλου του, Λεονάρδου ντὰ Βίντσι. Ὅτε ἐξετέθη εἰς τὴν αἴθουσαν τοῦ παλαιοῦ ἀνακτόρου τῆς Φλωρεντίας τὸ περίφημον σχέδιον «Ὁ πόλεμος τῆς Πίζης», τὸ ὁποῖον εἶχε ζωγραφήσει ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος συναγωνιζόμενος πρὸς τὸν Λεονάρδον ντὰ Βίντσι, ὁ Μπαντινέλλι, ὡς ὅλοι οἱ νεαροὶ ἐν Φλωρεντίᾳ ζωγράφοι, ἔσπευσε νὰ ἀντιγράψῃ τὸ ἔργον τοῦτο καὶ κατώρθωσε νὰ ὑπερβῇ ὅλους τοὺς συμμαθητάς του, ἐν οἷς τὸν Ἀνδρέαν ντὲλ Σάρτο, Σανσοβῖνο, Ρόσσο κ. ἄ. Οἱ ἐκ τῆς ἐπιτυχίας ταύτης ἔπαινοι ἐνέβαλον τοσαύτην οἴησιν εἰς τὸν νεαρὸν καλλιτέχνην, ὥστε ἐνόμισεν ὅτι θὰ κατώρθωνε νὰ καταστῇ ἐφάμιλλος καὶ ἀνώτερος τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ἠσχολήθη μετὰ ζήλου εἰς τὴν ζωγραφικήν, ἀλλ᾽ οἱ τραχεῖς χρωματισμοὶ καὶ ἡ ξηρὰ ἐκτέλεσις τῶν ἔργων του δὲν ἔσχον τὴν ἀναμενομένην ἐπιτυχίαν. Ἠναγκάσθη τότε νὰ καταλίπῃ τὸν χρωστῆρα καὶ νὰ ἀναλάβῃ τὴν σμίλην. Ἀκάματος ἐργάτης, παρήγαγε καθ᾽ ὅλην τὴν μακρὰν σταδιοδρομίαν του μέγαν ἀριθμὸν ἐκλεκτῶν ἔργων. Ὁ ἀπότομος ὅμως, ἀδιάλλακτος καὶ ζηλότυπος χαρακτήρ του κυριαρχεῖ καὶ εἰς τὰς συνθέσεις τῶν ἔργων του, τῶν ὁποίων τὰ βαρέα καὶ ἀθλητικὰ σώματα μεγάλως ὑστεροῦσι τῶν καλλιγράμμων δημιουργημάτων τοῦ ἐνδόξου

Digitized by Google

ἀντιζήλου του Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Γενικῶς τὰ ἔργα τοῦ Μπαντινέλλι διακρίνονται διὰ τὴν δύναμιν τῆς ἐκφράσεως καὶ τὸ ἄνετον τοῦ ρυθμοῦ, ἀλλὰ στεροῦνται χάριτος, λεπτότητος καὶ εὐκινησίας, ἡ ὅλη δ' ἐκτέλεσις προδίδει μᾶλλον βαθεῖαν γνῶσιν τῆς τέχνης παρὰ καλαισθησίαν. Ἐκ τῶν πρώτων ἔργων του εἶναι εἷς κολοσσιαῖος, ἀθλητικωτάτων διαστάσεων, Ἡρακλῆς, τοποθετημένος πρὸ τοῦ παλαιοῦ ἀνακτόρου τῆς Φλωρεντίας, διὰ τὴν ἀξίαν τοῦ ὁποίου πολλαὶ ἐγεννήθησαν ἀμφισβητήσεις καὶ ἔριδες μεταξὺ αὐτοῦ καὶ πολλῶν μεγάλων συγχρόνων του καλλιτεχνῶν. Ἄλλα ἀξιόλογα ἔργα τῆς νεότητός του εἶναι: εἷς Ἑρμῆς ἀπολεσθείς, εἷς Ἅγιος Πέτρος ἐν τῷ μητροπολιτικῷ ναῷ τῆς Φλωρεντίας, «Ὁ Ὀρφεύς», ἀπομίμησις τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ Μπελβεντέρε, μία ἀντιγραφὴ τοῦ κλασσικοῦ συμπλέγματος τοῦ Λαοκόοντος κ. ἄ. Ὁ Μπαντινέλλι λόγῳ τοῦ χαρακτῆρός του εἶχεν ἐπισύρει τὴν μῆνιν πολλῶν Φλωρεντίνων καλλιτεχνῶν καὶ δημιουργήσει πολλοὺς ἐχθρούς. Ἡ ὑπεροψία του ηὐξήθη ἰδίως ἀφ' ἧς ἐποχῆς ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ Καρόλου Ε' διὰ τοῦ παρασήμου τοῦ τάγματος τοῦ Ἁγίου Ἰακώβου. Διετείνετο τότε ὅτι κατήγετο ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας καὶ προσέθετεν εἰς τὸ ὄνομά

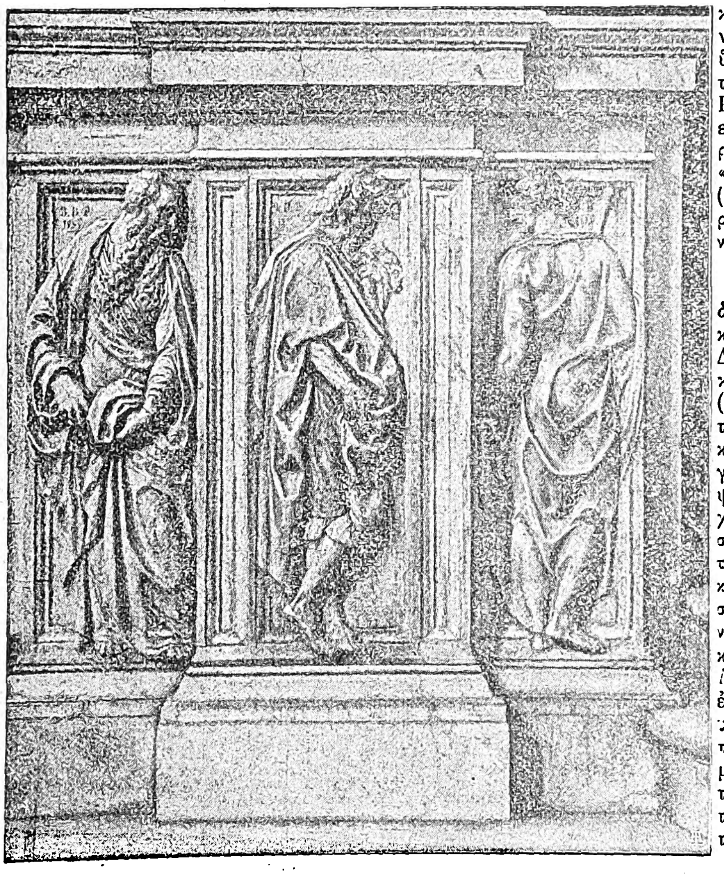

*Μπάτσιο Μπαντινέλλι: Ἀνάγλυφον.*
[Καθεδρικὸς ναὸς τῆς Φλωρεντίας.]

του ἄλλοτε μὲν τὴν προσωνυμίαν *Μπαντίνι*, ἄλλοτε δὲ τὴν ἐπικρατήσασαν Μπαντινέλλι.

Παρ' ὅλην τὴν πολεμικὴν τῶν ἀντιπάλων του, κατώρθωσεν ἐν τούτοις νὰ ἐκτιμᾶται ὑπὸ τῶν ἰσχυρῶν ἡγεμόνων τῆς ἐποχῆς του, μεταξὺ δὲ τῶν κυριωτέρων πελατῶν του κατελέγοντο ὁ πάπας Κλήμης Ζ', ὁ Κάρολος Ε', οἱ Μέδικοι κ. ἄ.

Ὁ Βαζάρι χαρακτηρίζων αὐτὸν λέγει ὅτι «πρέπει νὰ λησμονήσωμεν τὰ ἐλαττώματα χάριν τῶν μεγάλων ἱκανοτήτων του, αἵτινες τάσσουσιν αὐτὸν μεταξὺ τῶν ἐπιδεξιωτέρων καλλιτεχνῶν, οἱ ὁποῖοι προορίζονται νὰ ζήσωσιν αἰωνίως». Ἄλλα μεγάλα ἔργα τοῦ Μαντινέλλι εἶναι: «Ἡ στέψις τοῦ Καρόλου Ε'» (ἀνάγλυφον), τὰ παριστῶντα τοὺς «Προφήτας» καὶ τὰς «Ἀρετὰς» ἀνάγλυφα τοῦ καθεδρικοῦ ναοῦ τῆς Φλωρεντίας, τὰ ὑπὸ τοῦ Κλήμεντος παραγγελθέντα ἀγάλματα τοῦ ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ καὶ τῶν ἀποστόλων Ἰωάννου, Πέτρου καὶ Παύλου, τὸ ἐν τῇ πλατείᾳ Σὰν Λορέντζο τῆς Φλωρεντίας μνημεῖον τοῦ «Κοντοττιέρου Ἰωάννου Μεδίκου», «Ὁ Ἀδάμ», «Ἡ Εὔα», «Ὁ νεκρὸς Χριστός», τὰ ἀγάλματα τοῦ Λέοντος Ι' καὶ τοῦ δουκὸς Ἀλεξάνδρου καὶ πολλαὶ διακοσμήσεις τοῦ μεγάρου Πίττι. Χ. Δ.

**Μπαντίνι** (Bandini), ***Ἄγγελος-Μαρία.*** Ἰταλὸς ἀρχαιολόγος (1726—1800). Τῷ 1756 διωρίσθη βιβλιοθηκάριος τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Λαυρεντιανῆς βιβλιοθήκης. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων αὐτοῦ ἔργων ἀξιόλογος εἶναι ὁ «Κατάλογος τῶν χειρογράφων Ἑλλήνων, Λατίνων καὶ Ἰταλῶν συγγραφέων ἐν τῇ Λαυρεντιανῇ Βιβλιοθήκῃ». Γ. Ι. Β.

— **Μπαντίνι** (Bandini), ***Ἰωάννης,*** ἐπονομαζόμενος *Ντέλλ' Ὄπερα.* Ἰταλὸς γλύπτης (1540—1600). Ἦτο μαθητὴς τοῦ Μπάτσιο Μπαντινέλλι, τοῦ ὁποίου ἀκολουθεῖ τὴν τεχνοτροπίαν, εἰργάσθη δὲ κυρίως ἐν Φλωρεντίᾳ. Γνωστότερα ἔργα του εἶναι: τὰ ἐν τῷ καθεδρικῷ ναῷ τῆς Φλωρεντίας ἀγάλματα τῶν ἁγίων Φιλίππου καὶ Ἰακώβου, δύο ἀνάγλυφα ἐκ μαρμάρου παριστῶντα τὰ «Εἴσοδια» καὶ τὴν «Νύμφευσιν» τῆς Παρθένου ἐν τῷ ναῷ τῆς Σάντα Μαρία Νοβέλλα, μία προτομὴ τοῦ Τάσσου, ἓν ἄγαλμα τῆς «Ἀρχιτεκτονικῆς» διὰ τὸν τάφον τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου ἐν Σάντα-Κρότσε κ. ἄ. Χ. Δ.

— **Μπαντίνι** (Bandiui), ***Σαλλούστιος-Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς κληρικὸς καὶ οἰκονομολόγος (1677—1760). Κατ' ἀρχὰς στρατιωτικός, ἀπεσύρθη ἔπειτα τοῦ στρατοῦ καὶ ἀφιερώθη εἰς τὴν γεωργίαν. Τῷ 1705 ἐχειροτονήθη ἀρχιδιάκονος καὶ τῷ 1731 ἔγραψε τὸ περίφημον ἔργον του «Οἰκονομικὸς» («Discorso economico»), δι' οὗ ἐπρότεινε διαφόρους οἰκονομικὰς μεταρρυθμίσεις (ἑνιαίαν φορολογίαν γῆς, ἐλευθερίαν ἐμπορίου) καὶ ἐκήρυξε θεμελιώδη τινὰ ἀξιώματα, ἅτινα βραδύτερον ἐνέπνευσαν τὴν πολιτικὴν τοῦ Πέτρου Λεοπόλδου, μεγάλου δουκὸς τῆς Τοσκάνης. Γ. Ι. Β.

**Μπάντκε** (Bandtke), ***Γεώργιος-Σαμουήλ.*** Πολωνὸς ἱστορικὸς (1765—1835). Τῷ 1811 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς βιβλιοθήκης τοῦ ἐν Κρακοβίᾳ πανεπιστημίου καὶ τῷ 1814 ὑφηγητὴς τῆς φιλοσοφίας τοῦ αὐτοῦ πανεπιστημίου. Κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἀνάλεκτα τῆς ἱστορίας τῆς Ἀνατολῆς» (1802), «Ἱστορία τοῦ πολωνικοῦ λαοῦ» (1810, 1820 καὶ 1835) «Ἱστορία τῆς βιβλιοθήκης τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κρακοβίας». Γ. Ι. Β.

**Μπάντλ** (Bandl), ***Λουδοβῖκος.*** Αὐστριακὸς γυναικολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1842. Διετέλεσεν ὑφηγητὴς (1875) καὶ ἔκτακτος καθηγητὴς (1886) ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης. Τῷ 1886 ἐκλήθη ὡς τακτικὸς καθηγητὴς εἰς Πράγαν. Ἔγραψε: «Ῥῆξις μήτρας καὶ μηχανισμὸς ταύτης» (1875), «Σύστασις τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας κατὰ τὴν ἐγκυμοσύνην καὶ τὸν τοκετὸν» (1878), «Νόσος σαλπίγγων, πυελοπεριτοναίου καὶ κυψελώδους ἱστοῦ» κ.ἄ. Ὡς *δακτύλιος τοῦ Μπάντλ* (1875) καθορίζεται ἐν τῇ μαιευτικῇ ἡ ζώνη τοῦ μυϊκοῦ ἱστοῦ τῆς μήτρας εὑρισκομένης ἐν τέρματι, ἡ ἀποτελουμένη ἐκ τοῦ κάτω χείλους τοῦ ἄνω τμήματος τοῦ τοιχώματος τῆς μήτρας. Ο. Ρ.

**Μπαντοέρο** (Badoero). Οἰκογένεια εὐγενῶν τῆς Βενετίας, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη ἀνῆλθον εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ δόγη. Σημαντικώτεροι ἐκ τῶν ἀνηκόντων εἰς αὐτὴν ὑπῆρξαν οἱ κατωτέρω:

— 1) ***Ἄγγελος** ἢ **Παρτετσιπάτσιο,*** ὅστις ἐξελέγη δόγης τῷ 809.

— 2) ***Ἰουστινιανός,*** υἱὸς καὶ διάδοχος τοῦ προηγουμένου. Ὑπῆρξεν ὁ οἰκοδομήσας τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Μάρκου.

— 3) ***Ἰωάννης,*** δόγης ἀπὸ τοῦ 829, ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ ὁποίου οἱ Ἐνετοὶ ἐπανεστάτησαν.

— 4) ***Ὄρσος,*** δόγης ἀπὸ τοῦ 864, νικήσας τοὺς λεηλατοῦντας τὰ δαλματικὰ παράλια Σαρακηνούς.

— 5) ***Πέτρος,*** δόγης καὶ οὗτος (939—942). Ἐπ' αὐτοῦ ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰταλίας Βερεγγάριος Β' ἀνεγνώρισε τὴν Ἐνετίαν ὡς ἀνεξάρτητον δημοκρατίαν μετὰ τοῦ δικαιώματος νὰ κόπτῃ ἰδικά της ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ νομίσματα.

— 6) ***Φρειδερῖκος*** (1518—1593). Πρεσβευτὴς τῆς Ἐνετικῆς δημοκρατίας εἰς τὰς αὐλὰς τοῦ Καρόλου Ε' καὶ Φιλίππου Β'. Ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς Ἀκαδημίας τῆς Φήμης (della Fama). — Ω.

**Μπάντοκ** (Badoc) *[Γεωγρ.].* Νῆσος τῶν Φιλιππίνων, εἰς ἀπόστασιν 340 μιλλίων ἀπὸ τῆς Μανίλλης. Κάτ. 11.665. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1714. Π. Γ. Λ.

**Μπάντοκ** (Bantock), ***Γκράνβιλ.*** Διακεκριμένος Ἄγγλος μουσικοσυνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1868. Γονιμώτατος μουσουργός, συνέθεσεν ἔργα, εἰς τὰ ὁποῖα κυριαρχεῖ πολλάκις ἰσχυρὸν ἀνατολικὸν χρῶμα, ὡς εἶναι τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Λάλλα Ρούκ», τὸ μελόδραμα «Ὁ Μαργαρίτης τοῦ Ἰρὰν» καὶ ἰδίως ὁ κύκλος ποιημάτων διὰ μονῳδίαν, χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν «Ὀμὰρ Καγιάμ», ὁ ὁποῖος θεωρεῖται ὡς τὸ σημαντικώτερόν του ἔργον. Ἐπίσης ἔγραψε διάφορα συμφωνικὰ ποιήματα: τὸ μπαλλέτο «Αἴγυπτος», τὴν μουσικὴν σκηνὴν «Τὸ ὄνειρον τῆς Θορβένδας», τὴν ῥαψῳδίαν διὰ χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν «Τὸ πνεῦμα τοῦ χρόνου», τὸ ὀρατόριον «Ὁ Ἰησοῦς ἐν τῇ ἐρήμῳ», 6 σειρὰς ἀνατολικῶν μελῳδιῶν, ἀραβικῶν, ἰαπωνικῶν, αἰγυπτιακῶν, περσικῶν, ἰνδικῶν καὶ κινεζικῶν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Songs of the East», λειτουργίας, ἀνθέμια, χορῳδίας, ἓν κουαρτέττο ἐγχόρδων, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπαντόλιο** (Badoglio), ***Πέτρος.*** Ἰταλὸς στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1871. Κατὰ τὸν Ἰταλοτουρκικὸν πόλεμον (1911) ὑπηρέτησεν ἐν τῷ ἐπιτελείῳ τοῦ στρατοῦ τῆς Τριπολίτιδος. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐσχεδίασε καὶ ἐξετέλεσε τὴν ἐπιτυχῆ ἐπίθεσιν εἰς τὸ ὄρος Σαμποτίνο, ἥτις προηγήθη τῆς πτώσεως τῆς Γκορίτσια (Αὔγουστος 1916). Εἰς τὴν μάχην τοῦ Καπορέττο διώκει τὸ 27ον σῶμα στρατοῦ. Τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1918 προσεκολλήθη εἰς τὸ γενικὸν ἐπιτελεῖον ὡς ὑπαρχηγὸς ὑπὸ τὸν Διάζ. Διηύθυνε τὰς προκαταρκτικὰς διαπραγματεύσεις τῆς ἀνακωχῆς, ἣν καὶ ὑπέγραψεν ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1919 ἐγένετο στρατηγός, μετὰ τέσσαρα ἔτη ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Βραζιλίαν, ἀνακληθεὶς δὲ ἐκεῖθεν διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου. Γ. Ι. Β.

**Μπαντὸν** (Badon), ***Ἐδμόνδος.*** Γάλλος δραματικὸς καὶ διηγηματογράφος (1808—1849). Ἔγραψεν: «Une aventure sous Charles IX», «Montbrun ou les Huguenots en Danphiné» καὶ «Gingenes ou Lyon» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπαντονβιλλὲ** (Badonviller) *[Γεωγρ.].* Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μὲρτ καὶ Μοζέλλα, κειμένη ἐπὶ τοῦ Μπλέτ, παραποτάμου τοῦ Βενούζ, εἰς ἀπόστασιν 33 χλμ. ἀπὸ τῆς Λουλεβίλλης. Κάτ. 1.880. Ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ χωρίου τούτου συνήφθησαν πολλαὶ τοπικαὶ μάχαι μεταξὺ Γερμανῶν καὶ Γάλλων, διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Χ. Δ.

**Μπαντοὺ** (οἱ). Ἄθροισμα φυλῶν τῆς Ἀφρικῆς, περιλαμβάνον ὅλους σχεδὸν τοὺς λαοὺς τοὺς κατοικοῦντας τὸ νότιον αὐτῆς τμῆμα, ἐξαιρέσει τῶν Βουσμάνων καὶ τῶν Ὀττεντότων. Ἐπακριβέστερον τὸ τμῆμα τῆς ἀφρικανικῆς ἠπείρου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐξαπλοῦνται αἱ φυλαὶ τοῦ ἀθροίσματος τῶν Μπαντοὺ καθορίζεται ὑπὸ γραμμῆς ἀρχομένης, ἐκ δυσμῶν, ἀπὸ Β. πλάτος 5° τῆς ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ παραλίας καὶ ἐξικνουμένης ἀκανονίστως πρὸς ἀνατολὰς μέχρι τῆς λίμνης τοῦ Ἀλβέρτου, συνεχιζομένης δ' ἐκεῖθεν πρὸς τὰ νοτιοανατολικὰ μέχρι τῆς παραλίας τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ (εἰς θέσιν 2° Ν. πλάτους).

Ἡ ὁμὰς Μπαντοὺ εἶναι κυρίως οἰκογένεια γλωσσική, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπεκράτησε νὰ ὑπάγωνται λαοὶ ἐλαχίστην ἢ καὶ οὐδεμίαν ἔχοντες μεταξύ των φυλετικὴν σχέσιν. Οὕτω οἱ Κάφροι, ἐπὶ παραδείγματι, οὔτε ἀπὸ ἀπόψεως φυσικῆς κατασκευῆς οὔτε ἀπὸ ἀπόψεως ἠθῶν καὶ ἐθίμων συγγενεύουν πρὸς τοὺς οἰκοῦντας τὸ ἐσωτερικὸν τῆς ἠπείρου λαούς, οὔτε πρὸς τοὺς τῆς κάτω Γουϊνέας. Κατὰ τὰς ἐκφερομένας ὑποθέσεις, φαίνεται ὅτι κατὰ τὰ μέσα τῆς πρώτης πρὸ Χριστοῦ χιλιετηρίδος φυλή τις Νέγρων, προερχομένη ἐκ τοῦ κυρίως κέντρου τῆς Ἀφρικῆς, ἀπὸ τὰς περιοχὰς δηλαδὴ τῶν καταρρακτῶν τοῦ Σάρυ, τοῦ Κόνγκο καὶ τοῦ δυτικοῦ Νείλου, κατῆλθε πρὸς τὰς νοτίας ἀφρικανικὰς χώρας καὶ ἐπιβληθεῖσα ἐπὶ τῶν κατοικούντων ταύτας ἀραιῶν λαῶν μετέδωκεν εἰς αὐτοὺς τὴν γλῶσσάν της, ἀλλαχοῦ μὲν μετὰ καὶ ἀλλαχοῦ ἄνευ ἄλλης ἐπιμιξίας.

Οἱ Μπαντού, ἀπὸ γλωσσικῆς ἰδίως ἀπόψεως, διαιροῦνται: 1) Εἰς τοὺς Δυτικοὺς Μπαντού, τοὺς κατοικοῦντας τὴν λεκάνην τοῦ Κόνγκο καὶ τὴν πλησιόχωρον ἀκτὴν ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ. 2) Τοὺς Ἀνατολικοὺς Μπαντού, τοὺς κατοικοῦντας τὸ ἀνατολικὸν τμῆμα τῆς χώρας, τὸ κείμενον κάτωθεν τῆς γραμμῆς, ἥτις ἑνώνει τὴν λίμνην Ἀλβέρτου μετὰ τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ· καὶ 3) Τοὺς Νοτίους Μπαντού, κατοικοῦντας πρὸς νότον τοῦ Ζαμβέζη καὶ τοῦ Κουνένε καὶ περιλαμβάνοντας τοὺς Κάφρους, Βετσουάνος καὶ Σερέρος. —α.

— *[Γλωσσ.]* Αἱ γλῶσσαι τῶν *Μπαντοὺ* ἀπαρτίζουν ἰδίαν γλωσσικὴν ὁμοεθνίαν, τὴν *μπαντουϊκήν*, καὶ ὁμιλοῦνται εἰς τὸ μέγιστον μέρος τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς, ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου τῆς Καλῆς Ἐλπίδος μέχρι γραμμῆς διηκούσης νοτίως τοῦ Σουδάν, ἀπὸ τῶν ἀκτῶν τῆς Σομάλης πρὸς Α. μέχρι τῆς Ντουάλας πρὸς Δ., παρὰ τὸν κόλπον τῆς Γουϊνέας. Αἱ μπαντουϊκαὶ γλῶσσαι ἐκλήθησαν οὕτως ἐκ τῆς ἐγχωρίου λέξεως *μπὰ ντοὺ* (=οἱ ἄνθρωποι), ἡ ὁποία, προταθεῖσα τῷ 1856 ὑπὸ τοῦ William Bleek, κατέστη ἤδη κοινὴ τούτων ὀνομασία. Διαιροῦνται δὲ ὑπ' ἄλλων μὲν γλωσσοδιφῶν εἰς τὴν ἀνατολικήν, τὴν κεντρικὴν καὶ δυτικὴν ὁμάδα, ὑπ' ἄλλων δὲ εἰς τὴν *τεκικήν*, τὴν *σογγικήν*, τὴν *πογγικήν*, τὴν *σουαελικήν*, τὴν *κονδικήν*, τὴν *μακουϊκὴν* καὶ τὴν *σοθοϊκὴν* ὁμάδα, ἑκάστη τῶν ὁποίων περιλαμβάνει πληθὺν γλωσσῶν καὶ διαλέκτων, ἀνερχομένων ἐν ὅλῳ (κατὰ τὸν Harry Johnston)

Digitized by Google

ς τετρακοσίας περίπου. Παρὰ τὸν μέγαν ὅμως ριθμόν των καὶ τὴν μεγάλην ἔκτασιν, ἐπὶ τῆς τοίας ὁμιλοῦνται, αἱ μπαντουΐκαὶ γλῶσσαι παουσιάζουν τοιαύτην ἑνότητα καὶ ὁμοιομορφίαν, τοίαν δὲν δυνάμεθα νὰ εὕρωμεν εἰς καμμίαν λωσσικὴν ὁμοεθνίαν ὁμοίας γεωγραφικῆς ἐκτάεως. Ἐπειδὴ δὲ ὅλαι αἱ ῥηθεῖσαι γλῶσσαι ἐγράησαν πρὸ μικροῦ διὰ τῶν ἐνεργειῶν τῶν ἱεραοστόλων, στεροῦνται φυσικὰ γραπτῆς παραδόεως, δι' ὃ καὶ ἡ ἱστορική των ἐξέτασις μόνον ιὰ τῆς συγκριτικῆς ἐρεύνης των εἶναι κατὰ τὸ ἄλλον ἢ ἧττον δυνατή. Αἱ μπαντουΐκαὶ γλῶσσαι, ς πρὸς τὸν γραμματικὸν διάκοσμόν των, ἀνήκουν ς τὰς *παρατακτικὰς* λεγομένας γλώσσας, ἤτοι εἰς ἀς γλώσσας ἐκείνας, εἰς τὰς ὁποίας τὰ τυπικὰ τοιχεῖα τῶν λέξεων παρατάσσονται, ἤτοι συνάτονται χαλαρώτερόν πως πρὸς τὰς ῥίζας των, αἱ ποῖαι μένουν ἀμετάβλητοι. Εἰδικὸν χαρακτηριστιὸν τῶν περὶ ὧν ὁ λόγος γλωσσῶν εἶναι τὰ ἀνωνυμικὰ προθήματα τὰ προτασσόμενα τῶν οὐιαστικῶν. Διὰ τούτων δηλοῦται ὁ ἀριθμὸς ὀνόατός τινος: «um-fama» = παιδὶ — «aba-fama» = αιδιά, «in-komo» = βόδι — «izin-komo» = βόδια, ili-zwi»=λέξις—«ama-zwi»=λέξεις κτλ. Τὰ προήματα ταῦτα (τῶν ὁποίων ὁ ἀριθμὸς ποικίλλει ατὰ τὰς διαφόρους γλώσσας) χρησιμοποιοῦνται αὶ πρὸς σχηματισμὸν ἐπιθέτων, κτητικῶν ἢ ἀναορικῶν ἀντωνυμιῶν, ἔτι δ' εὐχρηστοῦν καὶ ὡς ροσωπικαὶ ἀντωνυμίαι πρὸς δήλωσιν τοῦ ὑποκειένου ἢ ἀντικειμένου τῶν ῥημάτων, ὁπότε καὶ υμφωνοῦν πρὸς τὸ ὄνομα, εἰς τὸ ὁποῖον ἀναφέονται: aba-fama b-ami aba-kulu=τὰ παιδιά μου ὰ μεγάλα, «ba-tanda=οὗτοι ἀγαποῦν κτλ. Ἄλλα ἀξιοσημείωτα χαρακτηριστικὰ τῶν μπαντουΐκῶν λωσσῶν εἶναι τὰ ἑξῆς: 1) Αἱ λέξεις συνηθέστατα ιρχίζουν ἀπὸ φωνῆεν (ὀλίγαι εἶναι αἱ μπαντουΐαὶ λέξεις αἱ ἀρχίζουσαι ἀπὸ σύμφωνον). 2) Αἱ υλλαβαί, σχεδὸν κατὰ κανόνα, λήγουν εἰς φωῆεν. 3) Τὰ μόνα δυνατὰ εἰς τὰς μπαντουΐκὰς λώσσας συμφωνικὰ συμπλέγματα εἶναι τὰ ἀποτελούμενα ἀπὸ ἐνρίνου καὶ ἄλλου τινὸς συμφώνου ἢ ἀπὸ συμφώνου τινὸς μετὰ τοῦ w (ba-ntu, kuwa), διὰ τοῦτο δὲ αἱ λέξεις αἱ πολιτογραφούμεναι ἐξ ἄλλων γλωσσῶν καὶ περιέχουσαι συμφωνικὰ υμπλέγματα ἀλλότρια τῶν ἀχρηστούντων εἰς τὰς ηθείσας γλώσσας ἀποχωρίζονται διὰ τῆς μεταξὺ τούτων παρεμβολῆς διαφόρων φωνηέντων (Χριστὸς—Kirisiti, ἀγγλ. silver—silivera κτλ.) 4) Ὁ τοιοῦτος ἢ τοιοῦτος τονικὸς χρωματισμὸς τῶν φωνηέντων ἔχει καὶ σημασιολογικὴν σπουδαιότητα, διὰ τοῦτο δὲ ἡ λέξις λ. χ. mba, ἀναλόγως τοῦ τονισμοῦ καὶ τοῦ κατὰ τὴν προφορὰν χρωματισμοῦ τοῦ ληκτικοῦ της φωνήεντος σημαίνει ὁτὲ μὲν ἐγώ, ὁτὲ δὲ σύννεφον καὶ ἄλλοτε ἄλλο. 5) Πτωτικαὶ καὶ ῥηματικαὶ καταλήξεις, μὲ ἄλλας λέξεις ἡ κλίσις τῶν ὀνομάτων καὶ τῶν ῥημάτων, εἶναι σχεδὸν ἄγνωστοι εἰς τὰς γλώσσας τῶν Μπαντού, ἀντ' αὐτῶν δὲ εὐχρηστοῦν ποικίλα ἀντωνυμικὰ καὶ ἄλλα προθήματα: mu—ntu=ὁ ἄνθρωπος, ba—ntu=οἱ ἄνθρωποι, mu—logo=ὁ μάγος, ba—logo=οἱ μάγοι. 6) Διὰ ποικίλων ἐπιθημάτων σχηματίζεται σειρὰ ὁλόκληρος συζυγιῶν τῶν μπαντουΐκῶν ῥημάτων, ἀνάλογος πρὸς τὴν ὁποίαν εἶναι ἡ παρατηρουμένη εἰς τὰ ῥήματα τῆς τουρκικῆς καὶ τῶν συγγενῶν πρὸς αὐτὴν γλωσσῶν. Οὕτω, παρὰ τὸ ῥῆμα penda (=ἀγαπᾶν) ἀπαντοῦν καὶ τὰ διὰ διαφόρων ἐπιθημάτων ἐξ αὐτοῦ σχηματισθέντα ῥήματα: pendana=ἀγαπᾶν ἀλλήλους, pendea=ἕνεκά τινος ἀγαπᾶν, pendeka=ἀξιαγάπητον εἶναι, pendeza=ἀρέσκειν, pendezea=προσπαθεῖν ἀξιαγάπητον εἶναι, κολακεύειν, pendekeza=ἑαυτὸν ἀγαπητὸν ποιεῖν κ. λ. Καὶ παρὰ τὸ bona (=βλέπειν) λέγονται καὶ τὰ ἐξ αὐτοῦ παραχθέντα bonisa=δεικνύειν, bonana=βλέπειν ἀλλήλους, bonisana=δεικνύειν ἀλλήλους, bonwa =βλέπεσθαι κ. τ. λ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *G. di Gregorio*, Cenni di glottologia Bantu (Turino 1882).—*L. Homburger*, Phonétique historique du bantou (Paris 1913).—*Jacottet*, Bantu phonetics, (Lodevale 1907).—*H. Johnston*, A comparative study of the Bantu and semi-Bantu languages (London 1919).—*K. Meinhof*, Grundriss einer Lautlehre der Bantusprachen (β'. ἔκδ., Berlin 1910).—*Τοῦ αὐτοῦ*, Grundzüge einer vergleichenden Grammatik der Bantusprachen (Berlin 1906).

Γ. Π. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπαντοῦλα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης συνοικισμοῦ *Ἀπόμερον* (βλ. λ.).

**μπαντούρα** (ἡ) (bandoura). Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο καὶ τὰς παραφθοράς του (bandora, bandolon, bandola, *πανδώρα, πανδουρᾶς, πανδουρίνα, μανδόρα, μανδόλα, μανδούρα*) εὕρηνται ἐν Ἀνατολῇ καὶ ἐν τῇ μεσημβρινῇ Εὐρώπῃ πληθὺς ὀργάνων τῆς οἰκογενείας τοῦ *λαούτου*. Εἰδικώτερον ἡ μπαντούρα εἰσήχθη εἰς Οὐκρανίαν διὰ τῆς Πολωνίας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα· σήμερον εἶναι τὸ κατ' ἐξοχὴν ὄργανον τῶν τυφλῶν ἐπαιτῶν, ἀποτελούντων ἰδίαν τάξιν, γνωστὴν ἐν Μικρᾷ Ῥωσίᾳ ὑπὸ τὴν προσωνυμίαν *κομπζάρ*. Ἡ μπαντούρα ἀποτελεῖται ἐκ θολωτοῦ ἠχείου καὶ πεπλατυσμένης ἠχητικῆς πλακός, φερούσης εἰς τὸ μέσον κυκλοτερῆ κοχλίαν (ὀπήν). Αἱ χορδαί της, 6 κύριαι καὶ 6 δευτερεύουσαι, αὐξανόμεναι πολλάκις μέχρις 20, ἐκτείνονται πὶ τῆς ἠχητικῆς πλακὸς καὶ παίζονται διὰ πλήκτρου ἐξ ὀστοῦ. Τὸ σύνηθες χόρδισμά των εἶναι τὸ ἑξῆς:

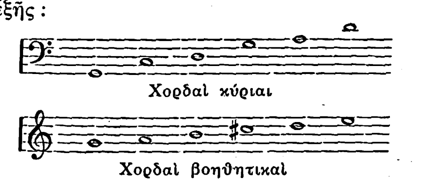

Χορδαὶ κύριαι

Χορδαὶ βοηθητικαὶ

(βλ. καὶ λ. *μαντοῦρα*). Γ. Σ.

**Μπαντοῦρι** (Banduri), ***δὸν Ἄνσελμος*** (1671—1743). Βενεδικτῖνος, γεννηθεὶς ἐν Δαλματίᾳ καὶ ἐγκατασταθεὶς ἐν Παρισίοις, ὅπου τῷ 1715 ἔγινε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ βιβλιοθηκάριος τοῦ δουκὸς τῆς Ὀρλεάνης. Ἔγραψε λατινιστί: «Ἡ αὐτοκρατορία τῆς Ἀνατολῆς» (1712, τόμ. 2) καὶ «Νομίσματα τῶν Ῥωμαίων αὐτοκρατόρων ἀπὸ τοῦ Τραϊανοῦ μέχρι τῶν Παλαιολόγων» (1718, τόμ. 2, β' ἔκδ. 1719). Ε. Β.-Χ.

**Μπαντούρια** (Baduria) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ διαμερίσματι τῆς *Καλκούτας*. Κάτ. 13.000. Κεῖται πρὸς Α. τῆς πόλεως Καλκούτας, ἐπὶ βραχίονος τοῦ Γάγγου, καὶ εἶναι πόλις ἐμπορικὴ καὶ σημαντικὸς λιμὴν ἐξαγωγῆς βάμβακος. Μ. Δ. Β.

**Μπάντρη** ***ἀγᾶς***. Ἐπίσημος Τουρκοκρὴς ἐκ τοῦ χωρίου Φρὲ τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου, ἐκ τῶν πρώτων πεσόντων κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866. Τοῦτον μετ' ἄλλων τινῶν ἀπέστειλεν ὁ Ἰσμαὴλ πασᾶς πρὸς τὴν ἐπαναστατικὴν ἐπιτροπήν, ἵνα φέρῃ τὴν ἀπάντησιν τοῦ σουλτάνου εἰς τὴν ἀναφορὰν τῶν ἐπαναστατῶν. Ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Μπάντρηζαδές*, δήμαρχος ὢν Χανίων (1897), ἦτο ἐκ τῶν πρωταιτίων τῆς πυρκαϊᾶς καὶ τῆς σφαγῆς τῶν Χριστιανῶν τῶν Χανίων τοῦ 1897. ΕΡ. Μ.

**Μπαντρινὰθ** (Badrinath) *[Γεωγρ.]*. Κορυφὴ τῶν Ἰμαλαΐων ἐν τῷ διαμερίσματι Γκάρβαλ τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν τῶν Ἰνδιῶν. Φθάνει μέχρις ὕψους 6.980 μ. Περίφημοι εἶναι οἱ ἐπὶ τοῦ ὄρους τούτου καὶ εἰς ὕψος 3.086 μ. πέντε ναοὶ τοῦ θεοῦ Βισνοῦ, μετὰ μικροῦ χωρίου, ὅπου διαμένουσιν οἱ ἱερεῖς μετὰ τοῦ ἀρχιερέως. Ὁ ἀριθμὸς τῶν κατ' ἔτος ἐπισκεπτομένων τοὺς ναοὺς τοῦ Μπαντρινὰθ προσκυνητῶν ἀνέρχεται εἰς 50.000. Χ. Δ.

**Μπάντυς-*Καμίνσκυ*** (Bantych-Kaminsky). —1) ***Νικόλαος Νικολάϊεβιτς***. Ῥῶσος ἱστορικὸς (1737—1814). Διευθυντὴς τῶν ἀρχείων Μόσχας, διέσωσε ταῦτα κατὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Γάλλων μετακομίσας εἰς τὸ Νίζνι-Νόβγκοροντ. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα ἰδίως ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς Πολωνίας. —2) ***Δημήτριος Νικολάϊεβιτς***. Ῥῶσος συγγραφεὺς (1788—1850). Υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ταξίδιον εἰς Μολδαυΐαν, Βλαχίαν καὶ Σερβίαν» (1810), «Βίοι τῶν στρατηγῶν καὶ ὑπουργῶν τοῦ Μεγάλου Πέτρου» (1812), «Ἱστορία τῆς Μικρᾶς Ῥωσίας» (1822), «Βιογραφία τῶν Ῥώσων ἀρχιστρατήγων καὶ στρατάρχων» (1840) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπανυάϊς** (οἱ) (Banyaïs). Λαὸς Νέγρων τῆς Ἀφρικῆς, οἰκῶν τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ζαμπέζη. Ἡ φυλὴ αὕτη ἔχει ὑποστῆ πολλὰς ἐπιμιξίας μετὰ λευκῶν, πολλὰ δὲ μέλη της ἔχουσι χρῶμα ὑπόφαιον καὶ ὠχρόν. Εἶναι κυρίως κυνηγοὶ τρεφόμενοι ἐκ τῶν θηραμάτων καὶ τῶν ἁρπαγῶν, τὰς ὁποίας διενεργοῦσιν εἰς βάρος τῶν γειτόνων των. Τὸ πολίτευμά των εἶναι εἶδος φεουδαρχικῆς δημοκρατίας, ὡς διάδοχος δὲ τοῦ ἀρχηγοῦ, μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ, ἐκλέγεται ὁ υἱὸς τῆς ἀδελφῆς του, ἀντὶ τοῦ ἰδίου αὐτοῦ κληρονόμου. Ἂν καὶ ἰσχύει ἡ πολυγαμία, αἱ γυναῖκες ἀσκοῦσι μεγάλην ἐπιρροήν, τὴν ὁποίαν δὲν ἀπαντᾷ τις εἰς τοὺς γειτονικοὺς λαούς. Χ. Δ.

**Μπανυάνζι** (Banyanzi) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ἰσημερινῆς Ἀφρικῆς ἐν Κόνγκο, ἐκτεινομένη μεταξὺ τοῦ ῥοῦ τοῦ ποταμοῦ Κόνγκο καὶ τῆς λίμνης Λεοπόλδου Β'. Οἰκεῖται ὑπὸ τῆς φυλῆς Μπανυάνζις. Χ. Δ.

**Μπανυὺλ-σὺρ-Μὲρ** (Banyuls-sur-Mer) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς λιμὴν τῆς Μεσογείου ἐν τῷ νομῷ τῶν Ἀνατολικῶν Πυρηναίων τῆς Γαλλίας. Εἶναι γνωστὸς ἐκ τοῦ φερωνύμου ἐκλεκτοῦ οἴνου, ὅστις παράγεται εἰς τὴν πέριξ οἰνοφόρον περιοχήν. Κάτοικοι 3.300. Χ. Δ.

**Μπὰνφ** (Banff) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία καὶ πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἐν Σκωτίᾳ. Ἡ κομιτεία ἔχει ἔκτασιν 164 τ. χλμ. καὶ 58.200 κατ. Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Ντίβερον, Σπέη καὶ Ἄβον. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς καταγίνονται εἰς τὴν κατεργασίαν δερμάτων καὶ εἰς τὸ ἐμπόριον ἐρίου. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τῆς ΝΑ. ἀκτῆς ὁμωνύμου κόλπου ἐπὶ τῆς Α. παραλίας τῆς Σκωτίας καὶ ἔχει καλὸν λιμένα καὶ ἀκμάζουσαν ἁλιείαν. Κάτ. 8.000. Μ. Δ. Β.

**Μπάνφφυ** (Banffy). Ὄνομα οἰκογενείας Οὕγγρων εὐπατριδῶν ἐκ Τρανσυλβανίας. Ἐπισημότερα μέλη τῆς οἰκογενείας εἶναι:

— 1) ***Στέφανος***. Οὗτος ἔσωσε τὴν πόλιν Τέμεσβαρ ἀπὸ τῶν πολιορκούντων αὐτὴν Τούρκων, ἀποθανὼν τῷ 1552 ἐκ τῶν τραυμάτων.

— 2) ***Γεώργιος*** (1747—1822), διατελέσας διοικητὴς Τρανσυλβανίας.

— 3) ***Δεζιβέριος*** (οὑγγρ. Deszö). Πολιτικὸς (1843—1911). Τὸ στάδιόν του ἤρχισε κυρίως τῷ 1892, ὅτε ἐγένετο πρόεδρος τῆς βουλῆς. Ὑπῆρξε σφοδρὸς ἀντίπαλος τῶν ῥιζοσπαστικῶν, μετὰ τὴν πτῶσιν δὲ τῆς κυβερνήσεως Βέκερλε ἐγένετο πρωθυπουργός. Ἐπέτυχε τὴν ψήφισιν τῶν ἐκκλησιαστικῶν νομοσχεδίων του, παρὰ τὴν ἀντίδρασιν τοῦ παπικοῦ νουντσίου Ἀλιάρντι. Κατὰ τὰς βουλευτικὰς ἐκλογὰς τοῦ 1896, ἂν καὶ ἐπέτυχε καταπληκτικὴν πλειοψηφίαν, δὲν ἠδυνήθη νὰ κατανικήσῃ μέχρι τέλους τὴν σθεναρὰν πολεμικὴν τῆς ἀντιπολιτεύσεως, ἥτις, ἐκμεταλλευθεῖσα τὰς δυσχερείας τῆς κυβερνήσεως εἰς τὰς μετὰ τῆς Αὐστρίας διαπραγματεύσεις, κατώρθωσε νὰ διεξάγῃ ἀποτελεσματικὴν κωλυσιεργίαν ἐν τῷ κοινοβουλίῳ. Ἡ Βουλὴ ἠρνήθη τὴν ψήψισιν τοῦ προϋπολογισμοῦ πρὸ τῆς περατώσεως τῶν διαπραγματεύσεων ἐκείνων. Ἐν τῷ μεταξὺ τὰ πολιτικὰ πάθη ηὐξήθησαν εἰς μέγαν βαθμόν, ὁ δὲ Μπάνφφυ ἐμονομάχησε τότε μετὰ τοῦ ἀπηνεστέρου τῶν ἀντιπάλων του Χοράνσκυ (3 Ἰανουαρίου 1899). Ἐν τέλει, διὰ νὰ ἐξαγάγῃ τὴν χώραν του ἐκ τῆς ἀντισυνταγματικῆς καταστάσεως, εἰς ἣν εἶχε περιέλθει, παρῃτήθη. Βραδύτερον ὁ Μπάνφφυ συνέβαλεν εἰς τὴν ἀνατροπὴν τοῦ ὑπουργείου Στεφάνου Τίσσα καὶ τὸν Μάϊον τοῦ 1905 μετέσχε τῆς κυβερνήσεως Κοσσούθ. Ἐν τῇ ἐξωτερικῇ πολιτικῇ ἦτο ὑπὲρ τῆς Τριπλῆς Συμμαχίας καὶ τῆς διατηρήσεως τοῦ καθεστῶτος ἐν τῇ χερσονήσῳ τοῦ Αἵμου. Γ. Ι. Β.

**Μπὰξ** (Bax), ***Ἐρνέστος-Μπέλφορτ***. Ἄγγλος κοινωνιολόγος (1854—1926). Νεαρώτατος μετέβη εἰς Γερμανίαν, ἵνα σπουδάσῃ μουσικήν. Ἐκεῖ ὅμως ἐμυήθη εἰς τὰς κοινωνιστικὰς θεωρίας, ἐπιστρέψας δὲ εἰς Ἀγγλίαν ἀνεμείχθη εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν κίνησιν τῆς χώρας του. Ἐβοήθησε τὸν Μόρρις, τῷ 1883, ἵνα ἱδρύσῃ τὸν σοσιαλιστικὸν σύνδεσμον καὶ ἐξέδωκε τὴν ἐφημερίδα τοῦ κόμματος «Commonweal». Ὅταν ὅμως τὸ κόμμα ἤρχισε νὰ τρέπεται εἰς τὴν πολιτικὴν τῶν ἄκρων, ὁ Μπὰξ ἀποσχισθεὶς τούτου προσεχώρησεν εἰς τὴν δημοκρατικὴν ὁμοσπονδίαν καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς «Δικαιοσύνης», ὀργάνου τοῦ κόμματος τούτου. Τῷ 1894 ἐξέδωκε τὸ βιβλίον του «Ὁ σοσιαλισμός». Ὁ Μπὰξ διακρίνεται μᾶλλον διὰ τὰ φιλοσοφικὰ αὐτοῦ ἔργα. Αἱ σοσιαλιστικαί του ἰδέαι δὲν περιωρίζοντο εἰς τὴν ἀναδιοργάνωσιν τῆς ὑλικῆς μόνον πλευρᾶς τῆς ζωῆς. Ἐπίστευεν ὅτι σὺν τῷ χρόνῳ θὰ ἀναπτυχθοῦν δεσμοὶ συμπαθείας μεταξὺ τῶν λαῶν, εἰς τρόπον ὥστε νὰ μὴ εἶναι δύναται πλέον ἐν τῷ μέλλοντι φυλετικαὶ μεταξὺ αὐτῶν συρράξεις. Τῷ 1882 ἐξέδωκε τὰ «Προλεγόμενα» τοῦ Καντίου μετὰ βιογραφίας καὶ εἰσαγωγικῶν παρατηρήσεων. Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων του ἀξιολογώτερα εἶναι: «Ἐγχειρίδιον ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας» (1884), «Τὸ πρόβλημα τῆς πραγματικότητος» (1893), «Ἡ ῥίζα τῆς πραγματικότητος» (1907), «Τὰ ζητήματα τοῦ ἀνθρώπου, τοῦ πνεύματος καὶ τῆς ἠθικῆς» (1912), «Τὸ πραγματικόν, τὸ λογικὸν καὶ τὸ ἄλογον» (1920). Ἔγραψεν ἐπίσης ἱστορικὰς πραγματείας, ὡς περὶ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, τῆς γερμανικῆς κοινωνίας κατὰ τὸ τέλος τοῦ μεσαίωνος, περὶ ἀναβαπτιστῶν, περὶ τοῦ πολέμου τῶν χωρικῶν, καὶ αὐτοβιογραφίαν. Γ.Ι.Β.

**Μπαξάρ**, ἢ ***Μπουξὰρ*** (Baxar ἢ Buxar) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῶν ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ διαμερίσματι Σαχαμπὰντ τῆς Βεγγάλης, ἐπὶ τῆς μεσημβρινῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Γάγγου. Κάτ. 15.000. Παρ' αὐτὴν ἐνίκησαν οἱ Ἄγγλοι τοὺς ἰθαγενεῖς καὶ κατέλαβον τὴν Κάτω Βεγγάλην. Γ.Ι.Β.

**Μπαξὲ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ συνοικισμοῦ *Κῆπος* (βλ. λ.) τῆς κοινότητος Καισαρείας τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κοζάνης.

**μπαξεβάνης** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἐπιμελούμενος τοῦ κήπου, κηπουρός, περιβολάρης (τουρκ. bahçivan).

**μπαξὲς** (ὁ)· δημοτ., κῆπος, τόπος περιπεφραγμένος, ἐν ᾧ κηπεύονται εἴτε ποώδη φυτὰ εἴτε δένδρα (τουρκ. bahçé).

**Μπαξιλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Παραπόταμος* (βλ. λ.).

**μπαξίσι** (τό)· δημοτ., δῶρον, φιλοδώρημα (τουρκ. bachchich).

**Μπάξτ**, ἢ ***Μπὰκστ*** (Bakst), ***Λέων-Νικολάϊεβιτς***. Ῥῶσος σχεδιαστής, ζωγράφος καὶ σκηνογράφος (1866—1924). Ἐπέδειξε λίαν ἐνωρὶς μεγάλην καλλιτεχνικὴν ἰδιοφυΐαν, βραβευθεὶς κατὰ τὴν παιδικήν του ἡλικίαν εἰς διαγωνισμὸν προσωπογραφίας τοῦ ποιητοῦ Τσουκόφσκιϊ, ἀπὸ ἡλικίας δὲ 16 ἐτῶν, καθ' ὑπόδειξιν τοῦ γλύπτου Ἀντοκόλσκι, ἤρχισε νὰ σπουδάζῃ ζωγραφικήν. Ἐφοίτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν αὐτοκρατορικὴν Ἀκαδημίαν τῆς Πετρουπό-

Digitized by Google

λεως, ὁπόθεν ἀπεβλήθη μετὰ τὴν ζωγράφησιν μιᾶς ὑπερρεαλιστικῆς «Ἀποκαθηλώσεως», καὶ ἀνεμίχθη κατόπιν εἰς τὴν ὁμάδα τῶν νεωτεριστῶν τοῦ ζωγράφου καὶ κριτικοῦ Ἀλεξάνδρου Μπενουά, ὅπου ἐγνώρισε καὶ τὸν περίφημον καλλιτέχνην καὶ θιασάρχην Σέργιον Ντιαγκίλεφ. Ἐγένετο βραδύτερον μέλος τῆς ἑταιρείας τῶν ὑδατογράφων καὶ καθηγητὴς τῆς ζωγραφικῆς τῶν τέκνων τοῦ μεγάλου δουκὸς Βλαδιμίρου. Προσεχώρησεν ἔπειτα εἰς τὴν νεωτεριστικὴν τεχνοτροπίαν τῆς ὁμάδος «Ὁ κόσμος τῆς τέχνης» (»Μὶρ Ἰσκούσστβα»), τῆς ὁποίας διηύθυνε καὶ τὸ καλλιτεχνικὸν περιοδικόν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1900, ὅτε, τῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ πρίγκιπος Βολριγραφὴν τοῦ ταξιδίου του καὶ ζωγραφήσας τὸν περίφημον πίνακά του «Terror Antiquus», ὅπου ἐπὶ τοῦ πρώτου ἐπιπέδου ὑπάρχει κολοσσιαία ἀρχαϊκὴ Κύπρις, ὄπισθεν τῆς ὁποίας ἐκτείνεται τὸ Ἀρχιπέλαγος ὑπὸ οὐρανὸν διασχιζόμενον ὑπὸ κεραυνοῦ. Τῷ 1906 ἐξέθεσε τὰ πρῶτα ἔργα του εἰς τὸ ρωσικὸν τμῆμα τοῦ «Φθινοπωρινοῦ Σαλὸν» τῶν Παρισίων καὶ ἐγκατασταθεὶς κατόπιν εἰς τὴν γαλλικὴν πρωτεύουσαν, ἀπὸ τοῦ 1908, ἀπέκτησε μεγάλην φήμην, ὡς ὁ κυριώτερος σκηνοθέτης ρωσικῶν μπαλλέτων καὶ ἰδίως τοῦ Ντιαγκίλεφ, ὧν κυριώτερα ἡ «Κλεοπάτρα» καὶ ἡ «Σεχεραζὰντ» (1909), ἅτινα ἐνεψύχωσεν ἡ ὀνομαστὴ χορεύτρια Ἴντα Ρουμ-

*Μπάξτ: Μακέττες ἐνδυμασιῶν τῶν ρωσικῶν μπαλλέτων.*
[1 καὶ 2 τοῦ μπαλλέτου «Νάρκισσος», 3 καὶ 4 τοῦ «Γαλάζιου θεοῦ».]

κόνσκι, ὁ Ντιαγκίλεφ προσεκάλεσε καὶ τὴν ὁμάδα ταύτην νὰ συνεργασθῇ εἰς τὰ αὐτοκρατορικὰ θέατρα, ὁ Μπὰξτ ἐπεδόθη εἰς τὴν σκηνογραφίαν, γενόμενος σκηνογράφος τοῦ βασιλικοῦ θεάτρου τοῦ Ἐρμιτὰζ καὶ κατόπιν τοῦ αὐτοκρατορικοῦ θεάτρου Μαρία, ὅπου κατήγαγε τοὺς πρώτους θριάμβους. Βραδύτερον συνέθεσε τὰς σκηνογραφίας τῶν τραγῳδιῶν τοῦ Σοφοκλέους, ἀναβιβασθεισῶν κατὰ μετάφρασιν τοῦ Μερεσκόφσκι εἰς τὸ αὐτοκρατορικὸν θέατρον τοῦ Ἀλεξάνδρου, ἐπὶ τῇ βάσει ἀρχαϊκῶν προτύπων. Πρὸς μελέτην τῶν προτύπων τούτων καὶ διὰ τὰς κατόπιν σκηνοθεσίας του κατῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Κρήτην, γράψας περιπινσταΐν. Διὰ τῆς «Σεχεραζὰντ» ὁ Μπὰξτ κατώρθωσε νὰ πραγματοποιήσῃ τὴν ὀπτικὴν ἑνότητα τοῦ θεάματος, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἀπετέλεσε τὸν κυριώτερον λόγον τῆς μεγάλης του ἐπιτυχίας. Ἐσκηνοθέτησε κατόπιν πλεῖστα ἄλλα μπαλλέτα καὶ θεατρικὰ ἔργα διαφόρων ἐμπνεύσεων, ὡς τά: «Δάφνις καὶ Χλόη», «Ἡ Ἑλένη τῆς Σπάρτης» τοῦ Βεράρεν, «Ὁ Νάρκισσος», «Τὸ ἀπόγευμα ἑνὸς φαύνου», «Ὁ γαλάζιος θεὸς» κτλ. Μετὰ πολλῶν ἐτῶν παραμονὴν εἰς Παρισίους ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ρωσίαν καὶ ἵδρυσεν ἐλευθέραν ζωγραφικὴν σχολήν. Μεταβὰς ἐκ νέου εἰς Παρισίους ἐσκηνοθέτησε διάφορα ἔργα τοῦ Ντ' Ἀννούντσιο καὶ τοῦ Βεράρεν, εἰς τὰ ὁποῖα τὸ ἀρχιτεκτονικὸν στοιχεῖον κυριαρχεῖ τοῦ ζωγραφικοῦ, καὶ τὸ 1921 τὸ μπαλλέτον τοῦ Τσαϊκόφσκυ «Ἡ κοιμωμένη πριγκίπισσα» εἰς τὸ Λονδῖνον. Ὁ Μπὰξτ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων σκηνογράφων τοῦ θεάτρου τῆς Ὄπερας τῶν Παρισίων καὶ θεωρεῖται ἐκ τῶν μεγαλυτέρων σκηνογράφων τῶν τελευταίων χρόνων, ὁ κυριώτερος δημιουργὸς καὶ ἐμψυχωτὴς τοῦ νεωτέρου μπαλλέτου, διακοσμητής, δημιουργὸς ἐνδυμασιῶν καὶ σκηνοθέτης συγχρόνως, προικισμένος μὲ ἰσχυροτάτην φαντασίαν ἐν συνδυασμῷ πρὸς ἄμεσον ἀντίληψιν ὅλων τῶν τεχνῶν συντονισμένων εἰς μίαν συνολικὴν ἔκφρασιν γραμμῆς, ἤχου, κινήσεως καὶ χρώματος.

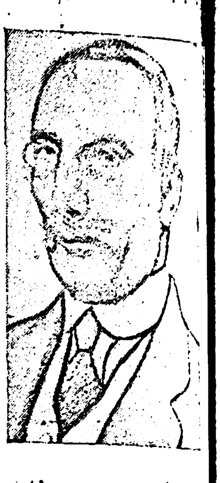

*Αὐτοπροσωπογραφία τοῦ Λέοντος Μπάξτ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Levinson*, Histoire de Léon Bakst (1924).—*A. Maseras*, Léon Bakst.—*Pawel Barcham*, Léon Bakst und das Theater (1925).— *Gregor Fülöp-Muller*, Das Russische Theater (1927).—Design in the Theatre, Special winter number of «The Studio» 1927—1928. Μ. Δ. Ε.

**Μπάξτερ** (Baxter), ***Γεώργιος.*** Ἄγγλος τυπογράφος (1804—1867). Τῷ 1836 ἐφεῦρεν ἐν Λονδίνῳ μέθοδον χρωμοτυπίας, ἥτις καλεῖται ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ *βαξτεροτυπία* (βλ. λ.). Πλήρης συλλογὴ τῶν ἔργων τοῦ Μπάξτερ, τὰ ὁποῖα ἐνδιαφέρουσιν ἀπὸ τεχνικῆς μᾶλλον ἢ καλλιτεχνικῆς ἀπόψεως, εὑρίσκεται ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ. Γ. Ι. Ε.

—**Μπάξτερ** (Baxter), ***Ριχάρδος.*** Ἀγγλικανὸς ἱερεὺς (1615—1691). Ἕνεκα τῆς ἀσθενικῆς αὐτοῦ κράσεως καὶ τῆς ἐλλείψεως ὑλικῶν μέσων, δὲν ἔτυχε θεολογικῆς πανεπιστημιακῆς μορφώσεως, ἀνεπλήρωσεν ὅμως τὴν ἔλλειψιν ταύτην διὰ τῆς κατ' ἰδίαν μελέτης. Χειροτονηθεὶς τῷ 1638 ἱερεύς, ἔδρασεν ὡς τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του, διακριθεὶς ἰδίᾳ διὰ τὰ κηρύγματά του. Κατ' ἀρχὰς πρεσβυτεριανός, κατεδιώχθη ἔπειτα ἕνεκα τῶν ἐλευθέρων αὐτοῦ κηρυγμάτων καὶ ἐφυλακίσθη. Τῷ 1647 ἀσθενήσας βαρέως ἠναγκάσθη νὰ ἀποχωρήσῃ τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας, περιθαλπόμενος ὑπὸ τῶν θαυμαστῶν του. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην, παλαίων πρὸς τὸν θάνατον, ἤρχισε νὰ συγγράφῃ τὸ πρῶτον αὐτοῦ ἔργον «Ἡ αἰωνία ἀνάπαυσις τῶν ἁγίων», ὅπερ μετὰ τὴν ἀνάρρωσίν του ἐκδοθὲν (1649) εὗρεν εὐμενεστάτην ὑποδοχήν, ὥστε ἐντὸς 13 ἐτῶν ἀνετυπώθη ἐννεάκις, μετεφράσθη δὲ καὶ εἰς πλείστας γλώσσας. Ἐκ τῶν ἄλλων ἔργων αὐτοῦ ἄξια ἰδίας μνείας εἶναι: «Ἐγερτήριον πρὸς τοὺς μὴ ἐπιστραφέντας», «Ὁ εὐαγγελικὸς ἱερεύς», «Ἡ Ἐκκλησία ἐν πᾶσι τοῖς σχίσμασι», «Μέθοδος θεολογίας». Τὰ ἐποικοδομητικὰ ἔργα τοῦ Μπάξτερ ἔχουσι μεγάλην ἀξίαν, τοὐναντίον τὰ ἐπιστημονικὰ πολλὰς ἐλλείψεις. Ὁ Μπάξτερ ἐμετρίασε τὸν καλβινισμὸν καὶ ἐν ἄλλοις καὶ ἐν τῷ ἀπολύτῳ προορισμῷ, δεχόμενος προορισμὸν μόνον διὰ τοὺς μακαρίους, οὐχὶ δὲ καὶ τοὺς καταδεδικασμένους. Ἡ αὐτοβιογραφία τοῦ Μπάξτερ ἐξεδόθη ὑπὸ τοῦ φίλου αὐτοῦ Ματθαίου Sylvester ἐν τοῖς «Reliquiae Baxterianae» τοῦ 1696 ἐν Λονδίνῳ.

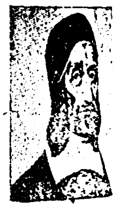

*Ριχάρδος Μπάξτερ*

[*Orwe,* Life and times of R. Baxter, 1830] Κ. Ι. Λ.

**Μπάξτον** (Buxton), σὲρ ***Θωμᾶς-Φάουελ.*** Ἄγγλος πολιτικὸς (1786—1845). Τῷ 1818, γενόμενος μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων, κατέβαλε πᾶσαν προσπάθειαν πρὸς ἀνακούφισιν τῶν πασχουσῶν τάξεων. Τῷ 1822 ἀντέδρασε κατὰ τοῦ θεσμοῦ τῆς δουλείας τῶν Μαύρων τῶν ἀγγλικῶν ἀποικιῶν καὶ ηὐτύχησε νὰ τὴν ἴδῃ καταργουμένην εἰς πάσας τὰς βρεττανικὰς ἀποικίας διὰ τοῦ ἐν ἔτει 18 δημοσιευθέντος νόμου. Α. Σ.

— **Μπάξτον** (Buxton), ***Κάρολος.*** Ἄγγλος πολιτικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1823—1871). Τῷ 1857 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἔδρασεν ὡς πολιτικὸς ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ προγράμματος τοῦ πατρός του. Ἐδημοσίευσε: «Τὰ ἀπομνημονεύματα τοῦ σὲρ Θωμᾶ Μπάξτον Φάουελ» καὶ ἔγραψε: «Δουλεία καὶ ἐλευθερία εἰς τὰς Βρεττανικὰς Δυτικὰς Ἰνδίας» (1860), «Ἰδέαι περὶ τῆς πολιτικῆς ἰδέαι τῆς ἡμέρας» (1868) κ.ἄ. Α. Σ.

**μπαομπὰμπ** *[Βοτ.]* βλ. λ. *ἀδανσωνία.*

**Μπάουαν,** ἢ ***Μπάουανγκ*** (Bauan ἢ Bauang) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν Φιλιππίνων ἐν τῇ νήσῳ Λουσόν, κειμένη παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου Μπατάνγκας. Ἔχει βιομηχανίαν καλάθων, ψιαθίων

Digitized by Google

..λων, ριπιδίων κλπ. καὶ κτηνοτροφίαν χοίρων ..ὶ ἵππων. Κάτ. 39.094. Χ. Δ.

**Μπάουερ** (Bauer), ***Ἀδόλφος-Φῆλιξ***. Γερμανὸς ..ρατηγὸς τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ (1667—1717). ..ατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν ἐν τῷ σουηδικῷ στρατῷ ..ὶ τῷ 1700 εἰσῆλθεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν ὑπη..σίαν Πέτρου τοῦ Μεγάλου. Εἰσήγαγε πολλὰς ..ταρρυθμίσεις ἐν τῷ ρωσικῷ ἱππικῷ καὶ μετέ..εν εἰς πάντας τοὺς πολέμους τοῦ Μεγάλου Πέ..ου ἐναντίον Καρόλου τοῦ ΙΒ', νικήσας τοὺς Σουη..ὺς εἰς Κάλιτς τῆς Πολωνίας. Κατὰ τὴν μάχην ..ς Πολτάβας διώκει πτέρυγα τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ. Γ. Ι. Β.

—**Μπάουερ** (Bauer), ***Ἀνδρέας-Φρειδερῖκος***. Γερ..νὸς μηχανικὸς (1783—1860). Ἐσπούδασε μαθη..ατικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Θουρυγγίας καὶ ..ιτόπιν ἐν Ἀγγλίᾳ, ὅπου ἐσχετίσθη μὲ τὸν Φρει..ερῖκον Καίνιγκ, τὸν ἐφευρέτην τῆς ταχυτυπίας, ..ετὰ τοῦ ὁποίου κατέγινεν εἰς τὴν τελειοποίησιν ..ῶν τυπογραφικῶν μηχανῶν, ἰδίως δὲ ὅπως κατα..ήσουν ταύτας ταχυτέρας. Εἰς μίαν τῶν τοιούτων ..ηχανῶν ἐτυπώθησαν διὰ πρώτην φορὰν καὶ οἱ «Τάϊμς» τοῦ Λονδίνου τὴν 29 Ὀκτωβρίου 1814. ..ῷ 1818 ἵδρυσεν ἐν Βυρσμπούργῃ ἐργοστάσιον τα..υπιεστηρίων, ὅπερ προώδευσε μεγάλως. Τῷ 1847 ..ατεσκεύασε τὸ πρῶτον κυλινδρικὸν ταχυπιεστή..ιον δυνάμενον νὰ τυπώνῃ 6.000 φύλλα καθ' ὥραν. Μ. Δ. Β.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Ἀντώνιος***. Γερμανὸς νομο..αθής, γεννηθεὶς ἐν Μαρβούργῳ τῷ 1772 καὶ ἀπο..ανὼν τῷ 1843. Ἐχρημάτισε κατ' ἀρχὰς καθηγη..ὴς τοῦ δικαίου ἐν Γοτίγγῃ καὶ κατόπιν νομικὸς ..ύμβουλος τοῦ κράτους. Ἀπὸ τοῦ 1813 μετέσχε ..ῆς ἐπιτροπῆς πρὸς μεταρρύθμισιν τοῦ ποινικοῦ ..ώδικος. Ὁ Μπάουερ ὑπῆρξε κυρίως ποινικολό..ος, συνέγραψε δὲ καὶ «Ἐγχειρίδιον τοῦ γαλλικοῦ ..ικαίου» (6' ἔκδ. 1812).

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Γεώργιος-Λαυρέντιος***. Γερ..ανὸς θεολόγος καὶ ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ ..755 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1806. Σπουδάσας τὰς κλασ..ικὰς καὶ ἀνατολικὰς γλώσσας, διωρίσθη τῷ 1776 ..εροκήρυξ εἰς τὴν ἐκκλησίαν τοῦ φρουρίου τῆς ..υρεμβέργης, τῷ 1786 καθηγητὴς ἐν τῇ σχολῇ ..οῦ Ἁγίου Σεβάλδου καὶ τῷ 1788 καθηγητὴς τῶν ..νατολικῶν γλωσσῶν καὶ τῆς ἠθικῆς εἰς τὸ πανε..ιστήμιον τοῦ Ἄλτντορφ. Τῷ 1805 ἐκλήθη εἰς ..Αϊδελβέργην ὡς καθηγητὴς τῆς λογοτεχνίας καὶ ..ῆς βιβλικῆς ἑρμηνείας. Ἐδημοσίευσε πολυπληθῆ ..ργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Lehrbuch ..er hebraïschen Alterthümer des Alten und Neuen ..estament» (1797), «Archaeologie der gottesdien..tlichen Gebräuche» (τόμ. 2, 1805), «Entwurf einer ..istorische kritischen Einleitung in di Schriften ..les A. Testament» (1794 καὶ 1806), «Hebraïsche ..Mythologie des Alten und Neuen Testament mit ..arallelen aus der Mythologie anderer Völker» ..1802) κ.λ.π.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Γουσταῦος***. Γερμανὸς πο..ιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1870. Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας ..ἀνεμίχθη εἰς τὸ ἐργατικὸν κίνημα καὶ τῷ 1908 ..ξελέγη πρόεδρος τῆς γενικῆς ἐπιτροπῆς τῶν ἐργα..ικῶν σωματείων τῆς Γερμανίας. Τῷ 1912 ἐξελέγη ..βουλευτὴς τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος καὶ ..ῷ 1918 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Ἐργασίας εἰς τὴν ..υβέρνησιν τοῦ Μὰξ τῆς Βάδης, καὶ πάλιν ὑπὸ ..ὴν δημοκρατίαν, τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1919 καὶ ..τὸν Ἰούνιον τοῦ ἰδίου ἔτους, πρωθυπουργὸς διὰ ..ὴν ἀποδοχὴν τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν, λα..ὼν μετ' ὀλίγον καὶ τὸν τίτλον τοῦ καγκελλαρίου. Μετὰ τὸ πραξικόπημα τοῦ Μαρτίου 1921 ἔφυγε μετὰ τοῦ Ἔμπερτ, προέδρου τῆς δημοκρατίας, εἰς Δρέσδην καὶ κατόπιν εἰς Στουττγάρδην. Ἐπιστρέ..ψας ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν εἰς τὴν ..υβέρνησιν Μύλλερ καὶ κατόπιν τοῦ Ἐμπορίου. Ἀπὸ τοῦ Μαΐου 1921 μέχρι τοῦ Νοεμβρίου 1923 ..χρημάτισε συγχρόνως ἀντικαγκελλάριος καὶ ὑπουρ..γὸς τῶν Οἰκονομικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Βίρτ.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Ἔντγκαρ***. Γερμανὸς δημο..σιολόγος, ἀδελφὸς τοῦ φιλοσόφου *Μπροῦνο Μπά..ουερ*, γεννηθεὶς τῷ 1821 ἐν Σαρλόττενμπουργκ. Συνεμερίζετο τὰς ἰδέας τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ κα..τεδικάσθη εἰς τεσσάρων ἐτῶν φυλάκισιν διὰ τὸ ἔργον «Der Streit der Kritik mit Kirche und Staat». Κατὰ τὸ διάστημα τῆς φυλακίσεώς του, συνέγραψε μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του μίαν ἱστορίαν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος «Denkwürdigkeiten zur Geschichte der neuern Zeit seit der Französischen Revolution» (Σαρλόττενμπουργκ 1843—1844 εἰς 12 βιβλία), μίαν κριτικὴν τῆς «Ἱστορίας τῆς γαλλικῆς ἐπαναστάσεως» τοῦ Dahlmann (1846) καὶ τὸ ἔργον «Die liberalen Bestrebungen in Deutschland» (Ζυρίχη 1843). Κατόπιν ἐγκατεστάθη ἐν Λονδίνῳ, ὅπου συνέγραψε περὶ τοῦ ζητήματος τῶν δουκάτων (Slesvig-Holstein) καὶ τέλος ἐπανῆλθεν εἰς Γερμανίαν, ὅπου μετέβαλεν ἀποτόμως φρονήματα, γενόμενος συντηρητικός, ὀπαδὸς τῆς κυβερνητικῆς πολιτικῆς.

—**Μπάουερ** (Bauer), ***Ἰωάννης-Γοδοφρεῖδος***. Γερμανὸς νομομαθής, γεννηθεὶς ἐν Λειψίᾳ τῷ 1695 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1763. Συνέγραψεν ἐνδιαφερούσας μελέτας ἐπὶ τῆς ἱστορίας καὶ τοῦ δικαίου, μεταξὺ τῶν ὁποίων σπουδαιότεραι εἶναι: «De indole et natura investiturae feudalis» (Leipzig 1746), «De ducibus et comitibus Germaniae sub Merovingis et Carolingis» (Leipzig 1747), «De plebeiis qua ratione feuda equestria comparare possint» (Leipzig 1748).

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Καρολίνα***. Γερμανὶς ἠθοποιός, γεννηθεῖσα ἐν Αϊδελβέργῃ τῷ 1807 καὶ ἀποθανοῦσα ἐν Broelberg τῷ 1877, περίφημος μᾶλλον διὰ τὰς περιπετείας της ἢ διὰ τὸ τάλαντόν της. Ἀπομείνασα ἐνωρὶς ὀρφανὴ πατρός, εἰσῆλθεν ἀπὸ ἡλικίας 14 ἐτῶν εἰς τὸ θέατρον παρὰ τὴν ἀντίστασιν τῶν συγγενῶν της. Διεκρίνετο διὰ τὴν χάριν καὶ τὴν κομψότητά της εἰς τὰς κωμῳδίας ἰδίως καὶ διὰ τὸ δραματικόν της τάλαντον εἰς τὰς τραγῳδίας. Ἐν Βερολίνῳ εὑρισκομένη συνεδέθη μὲ τὸν πρίγκιπα τοῦ Κοβούργου, ὁ ὁποῖος ἐφιλοδόξει τότε νὰ γίνῃ βασιλεὺς τῆς Ἑλλάδος καὶ βραδύτερον ἔγινε βασιλεὺς τοῦ Βελγίου ὑπὸ τὸ ὄνομα Λεοπόλδος ὁ Α'. Ἠκολούθησεν αὐτὸν εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου ἔλαβε τὸν τίτλον τῆς κομίσσης τοῦ Μοντγκόμερυ, ἀπομακρυνθεῖσα τῆς σκηνῆς ἐπὶ διετίαν. Μετὰ τὴν διακοπὴν τῶν σχέσεών της μὲ τὸν πρίγκιπα, ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ἀρχικόν της ἐπάγγελμα, συνῆψε τριετὲς συμβόλαιον μὲ τὸ θέατρον τῆς Πετρουπόλεως, ἐπεχείρησε κατόπιν ἐπιτυχεῖς περιοδείας ἀνὰ τὴν Γερμανίαν καὶ τέλος ἐγκατεστάθη ἐν Δρέσδῃ, ὅπου ἐγνώρισε τὸν περίφημον ποιητὴν Λουδοβῖκον Τὶκ (Tieck), μὲ τὸν ὁποῖον καὶ συνεδέθη. Τέλος, μετὰ περιπετειώδη νεότητα, συνεζεύχθη τῷ 1844 τὸν Πολωνὸν κόμιτα Λαδίσλαον τοῦ Broël-Plater, κατέλιπε τὸ ἐπάγγελμα τῆς ἠθοποιοῦ καὶ ἀπεσύρθη μετὰ τοῦ συζύγου της παρὰ τὴν λίμνην τῆς Ζυρίχης, ὅπου ἐπεδόθη εἰς τὴν καλλιέργειαν τῶν γραμμάτων. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο συνέγραψε δύο ἔργα, εἰς τὰ ὁποῖα περιέγραφεν ἐπιχαρίτως τὰ διάφορα περιστατικὰ τῆς ἐντόνου ζωῆς της καὶ τὰς σκανδαλώδεις ἐρωτικὰς περιπετείας της. Τὰ ἔργα ταῦτα ἐτιτλοφοροῦντο: «Aus meinen Bühnenleben. Erinnerungen» (Ἡ θεατρική μου ζωή. Ἀπομνημονεύματα) καὶ «Komoediarten Fahrten» (Δραματικαὶ περιοδεῖαι). Τὰ ἔργα ταῦτα προεκάλεσαν μέγαν θόρυβον, τόσον ἐν Γερμανίᾳ, ὅσον καὶ ἐν Ἀγγλίᾳ, ὅπου μετεφράσθησαν καὶ ἐξεδόθησαν ἐπανειλημμένως. —Ω.

—**Μπάουερ** (Bauer), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Λειψίᾳ τῷ 1799. Ἐχρημάτισε ρέκτωρ τοῦ γυμνασίου τοῦ Χέρσμπεργκ ἐν Σιλεσίᾳ. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Glossarium Theodoreteum» ἐν τῇ ἐκδόσει τοῦ Θεοδωρήτου τοῦ Schulze (τ. Δ', Χάλλη 1774), ἡ ἀποπεράτωσις τῆς ὑπὸ τοῦ Gottleber ἀρξαμένης ἐκδόσεως τοῦ Θουκυδίδου (Λειψία 1790) καὶ διάφορα σχολικὰ βιβλία.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Κλάρα***. Γερμανὶς μυθιστοριογράφος, γεννηθεῖσα τῷ 1836 ἐν Πομερανίᾳ καὶ ἀποθανοῦσα τῷ 1876 ἐν Μπρεσλάου. Ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ρωσίᾳ καὶ μετὰ τὴν ἐπάνοδόν της ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Κὰρλ Ντέτλεφ* τὰ πρῶτα διηγήματά της, τὰ ὁποῖα διεκρίνοντο διὰ τὴν ἀκριβῆ καὶ συγκινητικὴν περιγραφὴν τῆς ρωσικῆς ζωῆς. Τὰ καλύτερα ἔργα της εἶναι: «Ἀκατάλυτα δεσμά» (1869), «Μέχρι τῶν στεππῶν» (1869), «Νόρα» (1871), «Ἔπρεπε;» (1873), «Ἕνα ντοκουμέντο» (1876). Μετὰ τὸν θάνατόν της ἐξεδόθησαν καὶ τὰ ἔργα της: «Ἡ μυστηριώδης ἀοιδός» καὶ «Ρωσικὰ εἰδύλλια» (1878).

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Μαρία - Βερνάρδος***. Γάλλος πρωθιερεὺς τοῦ Κεραμεικοῦ καὶ περίφημος ἱεροκήρυξ, γεννηθεὶς τῷ 1829 ἐν Πέστῃ τῆς Οὐγγαρίας ἐξ ἰσραηλιτικῆς οἰκογενείας. Μετὰ περιπετειώδη νεότητα, καθ' ἣν ἐδοκίμασε πλεῖστα ἐπαγγέλματα, μετεστράφη εἰς τὸν καθολικισμὸν καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν καρμηλιτῶν, τὸ ὁποῖον ὅμως ἐγκατέλειψε μετ' ὀλίγον. Ἡ φήμη του ὡς ἱεροκήρυκος ἤρχισεν ἐν Γερμανίᾳ. Κατόπιν ἔκαμεν ἐν Βιέννῃ ἐπιτυχεῖς διαλέξεις, αἱ ὁποῖαι ἐξεδόθησαν ὁμοῦ εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁ Ἰουδαϊσμὸς ὡς ἀπόδειξις τοῦ Χριστιανισμοῦ» (1866). Κληθεὶς εἰς Παρισίους ὅπως κηρύξῃ τὸν θεῖον λόγον εἰς τὴν αὐλήν, ἤρεσεν εἰς τὴν αὐτοκράτειραν καὶ τῷ 1867 διωρίσθη εἰς τὸν Κεραμεικόν. Εἰς τὴν περίοδον ταύτην τῆς ζωῆς του ἀναφέρονται πολλοὶ λόγοι του, δημοσιευθέντες ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁ σκοπὸς τῆς ζωῆς» (1869) καὶ μία πολιτικὴ μελέτη: «Ναπολέων ὁ Γ' καὶ ἡ Εὐρώπη κατὰ τὸ 1867».

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Μπροῦνο***. Γερμανὸς φιλόσοφος καὶ κριτικὸς τῆς θρησκείας, γεννηθεὶς ἐν Ἀϊζεμπεργκ τῆς Σαξωνίας τῷ 1809 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ρίξντορφ, πλησίον τοῦ Βερολίνου, τῷ 1882. Ἐσπούδασεν ἐν Βερολίνῳ καὶ ἀνῆκε κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν δεξιὰν ἑγελιανὴν πτέρυγα. Εἰς τὸ ἔργον του «Darstellung Kritische der Religion des Alten Testaments» (Berlin 1838, τόμ. 2), ὅπερ ἀνήκει εἰς τὴν περίοδον ταύτην, ὑποστηρίζει τὴν αὐθεντίαν τῆς θρησκευτικῆς ἀποκαλύψεως. Εἰς τὴν περίοδον ταύτην ἀνήκουν ἐπίσης μία «Κριτικὴ τοῦ Βίου τοῦ Ἰησοῦ» τοῦ R. Strauss» καὶ διάφορα ἄρθρα δημοσιευθέντα ἀπὸ τοῦ 1836 μέχρι τοῦ 1838 εἰς τὴν «Ἐφημερίδα θεωρητικῆς θεολογίας». Γενόμενος ἔκτακτος καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βόννης, μετέστη αἰφνιδίως εἰς τὴν ἄκραν ἀριστερὰν ἐγελιανὴν πτέρυγα. Τὸ ἔργον του: «Διδασκαλία τοῦ Ἑγέλου ἐπὶ τῆς θρησκείας καὶ τῆς τέχνης», ἐξεδόθη τὸ πρῶτον ἀνωνύμως ἐν Λειψίᾳ τῷ 1842. Εἰς τὴν «Kritik der evangelischen Synoptiker» (1841—1842, τόμ. 2) κατηγορεῖ τὸν Strauss ἐπὶ ἀνακολουθίᾳ καὶ καταπολεμεῖ μετὰ φανατισμοῦ τὴν θεολογίαν. Ἀπολυθεὶς τῆς θέσεώς του λόγῳ τῶν ἰδεῶν του τῷ 1842 ὑπὸ τῆς πρωσσικῆς κυβερνήσεως, ἐγκατεστάθη ἐν Βερολίνῳ καὶ ἀφιερώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς κριτικὰς καὶ ἱστορικὰς μελέτας. Τῷ 1843, παραδόξως, διαφωνῶν πρὸς τοὺς φιλελευθέρους φίλους του, κατεπολέμησε βιαίως τὴν χειραφέτησιν τῶν Ἑβραίων εἰς ἔργον του τιτλοφορούμενον «Τὸ ἰουδαϊκὸν ζήτημα», ὑπὸ τὸ πρόσχημα ὅτι οὗτοι, ἀποτελοῦντες αἵρεσιν καθυστερημένης καὶ φανατικῆς θρησκείας, ἐξ ἧς ἐγεννήθη ὁ Χριστιανισμὸς καὶ ἡ ὁποία οὐδέποτε οὐδὲν ἔπραξε διὰ τὴν χειραφέτησιν τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος, δὲν δύνανται νὰ δικαιοῦνται ἐλευθερίας δι' ἑαυτούς. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων ἱστορικῶν ἐπὶ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως: «Geschichte der Französischen Revolution» (Leipzig 1847, τόμ. 3), «Geschichte Deutschlands unter der Französischen Revolution und der Herrschafts Napoleons» (Charlottenburg 1846, τόμ. 2), «Geschichte der Politik... Kultur und Aufklärung der XVIII en Jahrhunderts» (Charlottenburg 1843—1845, τόμ. 4) κλπ. Εἰς τὰ ἔργα του: «Ἡ Ρωσία καὶ ὁ γερμανισμός» (1847), «Περὶ τῆς δυτικῆς δικτατορίας» (1855), «Ἡ σημερινὴ θέσις τῆς Ρωσίας» (1855), «Ἡ Γερμανία καὶ ἡ Ρωσία» (1855), «Ἡ Ρωσία καὶ ἡ Ἀγγλία» (1855), ὑποστηρίζει ἀπαισιοδόξους προβλέψεις διὰ τὸ μέλλον τῆς Γερμανίας, θεωρῶν τὴν Ρωσίαν ὡς προωρισμένην νὰ βαδίσῃ ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ πολιτισμοῦ καὶ τῆς ἀνθρωπότητος. Ὁ Μπροῦνο Μπάουερ ὑπῆρξε καθηγητὴς καὶ φίλος τοῦ Κ. Marx, τοῦ ἱδρυτοῦ τοῦ ἐπιστημονικοῦ σοσιαλισμοῦ. Ὁ Κ. Marx, ἀριστερὸς ἐγελειανὸς ὑλιστής, δὲν συνεφώνει πρὸς τὰς ἱστορικὰς ἀντιλήψεις τοῦ Μπάουερ, ὅστις διετήρει πολλὰ ὑπολείμματα τοῦ ἐγελειανοῦ ἰδεαλισμοῦ. Ἐξ ἀφορμῆς τῆς διαφωνίας ταύτης ἐγράφη τῷ 1844 ὑπὸ τοῦ Κ. Marx ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ F. Engels τὸ ἔργον «Die heilige Familie oder Kritik der kritischen Kritik gegen Bruno Bauer und Konsorten» (Ἡ ἁγία Οἰκογένεια ἢ κριτικὴ τῆς κριτικῆς κριτικῆς κατὰ τοῦ Μπροῦνο Μπάουερ καὶ συντροφίας). Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ περιλαμβάνει ὅλα τὰ σπέρματα τῆς κατόπιν ἀναπτυχθείσης ὑλιστικῆς ἀντιλήψεως τῆς ἱστορίας, καταπολεμεῖται ἡ ἱστορικὴ ἀντίληψις τοῦ Μπάουερ. «Χωρίζουσα αὐτη, ἔγραφεν ὁ Κ. Μάρξ, τὴν νόησιν ἀπὸ τῆς ὕλης, τὴν ψυχὴν ἀπὸ τοῦ σώματος, χωρίζουσα ἑαυτὴν ἀπὸ τοῦ κόσμου, χωρίζει τὴν ἱστορίαν ἀπὸ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς βιομηχανίας καὶ δὲν βλέπει τὰς πηγὰς ἐν τῇ ἱστορίᾳ, ἀλλ' ἐν ταῖς νεφέλαις».

Ὁ Μπάουερ ἐπίστευεν εἰς τὴν παντοδυναμίαν τῆς ἰδέας καὶ ἠρνεῖτο εἰς τὰς μάζας κάθε ἱκανότητα δράσεως. «Ὅλα τὰ μεγάλα κινήματα τῆς ἱστορίας, ἔγραφε, ἦσαν μέχρι τοῦδε προωρισμένα εἰς ἀποτυχίαν ἢ μᾶλλον ὤφειλον ν' ἀποτύχουν οἰκτρῶς, διότι ἡ ἰδέα, τὴν ὁποίαν περιεῖχον, εἶχε τόσον ἐπιπόλαιον χαρακτῆρα, ὥστε ἔπρεπε νὰ ὑπολογίζῃ εἰς τὴν ἐπιδοκιμασίαν τῶν μαζῶν». Εἰς τοῦτο ἀπήντα ὁ Κ. Marx: «Ὅλα τὰ μεγάλα κινήματα τῆς ἱστορίας ἐνεπνεύσθησαν ὑπὸ τῶν συμφερόντων τῶν μαζῶν καὶ μόνον ἐν ᾧ μέτρῳ ἀντεπροσώπευον αὐται τὰ συμφέροντα ταῦτα τῶν μαζῶν κατωρθώνον νὰ μεταβληθοῦν εἰς πράξεις· ἄνευ τούτου αἱ ἰδέαι δύνανται ἴσως νὰ γεννήσουν τὸν ἐνθουσιασμόν, ἀλλ' εἶναι ἀπολύτως ἀνίκανοι νὰ προκαλέσουν οἱανδήποτε δρᾶσιν».

Περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου του ὁ Μ. Μπάουερ μετεβλήθη ἐκ νέου εἰς ἀντιδραστικὸν καὶ ἐξυμνητὴν τοῦ ἔργου τοῦ Βίσμαρκ. Ἀπὸ τὸ πνεῦμα τοῦτο ἐμφοροῦνται καὶ τὰ τελευταῖα ἔργα του: «Zur Orienterung über die Bismarxsche Aera» (Chemnitz 1880), «Disraelis romantischen und Bismarks socialistischen Imperialismus» (Chemnitz 1882). Θ. Π.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Στέφανος***. Ἑλβετὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Βιέννῃ τῷ 1865. Ἀπὸ τοῦ 1899 καθηγητὴς ἐν Βασιλείᾳ, ἐπεχείρησε χάριν μελέτης τῆς διεθνοῦς καταστάσεως τῆς ἐργατικῆς τάξεως μακρὰ ταξίδια σπουδῶν. Τῷ 1901 ἐξελέγη γενικὸς γραμματεὺς τῆς «Διεθνοῦς ἑνώσεως διὰ τὴν προστασίαν τῶν ἐργατῶν», διατελεῖ δὲ ἤδη διευθυντὴς τοῦ «Διεθνοῦς Γραφείου Ἐργασίας». Αἱ περιοδικαὶ δημοσιεύσεις τοῦ ἱδρύματος τούτου ἐκδίδονται ἐπιμελείᾳ τοῦ Μπάουερ. Α. Λ. Τ.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Φεντὸρ-Βίλμοβιτς***. Ρῶσος στρατηγὸς καὶ μηχανικός, σουηδικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1731 ἐν Hanau τῆς Γερμανίας καὶ ἀποθανὼν τῷ 1783. Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν στρατὸν τῆς Ἔσσης καὶ κατόπιν τῆς Πρωσσίας. Τῷ 1769 εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Ρωσίας. Ἡ Αἰκατερίνη ἡ Β', ἡ ὁποία ἐξετίμα μεγάλως τὸ τάλαντόν του ὡς μηχανικοῦ, τὸν ὠνό-



Digitized by Google

μασεν ἀρχηγὸν τοῦ ἐπιτελείου. Διεκρίθη εἰς τὸν κατὰ τῆς Τουρκίας πόλεμον, ἀναδιωργάνωσε τὸ γενικὸν ἐπιτελεῖον καὶ διηύθυνεν ἐπιτυχῶς σημαντικὰ ἔργα ἐν Μόσχᾳ, Ρίγᾳ, Κρονστάνδῃ κλπ.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Φερδινάνδος-Λουκᾶς.*** Αὐστριακὸς χαράκτης καὶ φωτογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1760 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1826. Ἀνῆκεν εἰς οἰκογένειαν καλλιτεχνῶν καὶ ἀφιερώθη ἐνωρὶς εἰς τὴν σπουδὴν τῆς φύσεως. Συνεδέθη μετὰ βοτανολόγων καὶ ἀναλαβὼν τὴν εἰκονογράφησιν τῶν ἔργων των ἀφωσιώθη εἰς τὴν ζωγραφικὴν τῶν φυτῶν. Αἱ πολυάριθμοι σπουδαί του ἠγοράσθησαν ὑπὸ τοῦ αὐτοκρατορικοῦ μουσείου τῆς Βιέννης. Παρέμεινεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἔκαμε τὸν γῦρον τοῦ κόσμου.

—**Μπάουερ** (Bauer), ***Φρὰντς-Ἀνδρέας.*** Αὐστριακὸς φωτογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1758 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1840. Μετέβη εἰς Ἀγγλίαν τῷ 1788 καὶ ἔγινε ζωγράφος τῆς αὐλῆς Γεωργίου τοῦ Γ′. Τὸ κύριον ἔργον του συνίσταται εἰς σχέδια διὰ τὴν εἰκονογράφησιν τῆς «Hortus Kewensis» τοῦ Aiton (Λονδῖνον 1810—1813, τόμ. 5). Τὰ πρωτότυπα τῶν σχεδίων του φυλάσσονται εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον.

— **Μπάουερ** (Bauer), ***Χρυσόστομος.*** Διάσημος Γερμανὸς κατασκευαστὴς ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων, γεννηθεὶς ἐν Βυρτεμβέργῃ καὶ ἀκμάσας κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος. Πρὸ αὐτοῦ οἱ φυσητῆρες τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου ἦσαν μικρότατοι καὶ παρουσίαζον, ὡς ἐκ τούτου, μεγάλας δυσκολίας. Ὁ Μπάουερ κατεσκεύασε πρῶτος μεγάλους φυσητῆρας, τοῦτο δ' ἀπετέλεσε μεγάλην πρόοδον ἐν τῇ μουσικῇ μηχανικῇ.—Ἕτερος *Μπάουερ* (Bauer), μουσικὸς ἐπίσης, ἔζησε περὶ τὸ 1786 ὡς σύμβουλος τῆς αὐλῆς τῆς Πρωσσίας. Οὗτος ἐφεῦρεν ἐν κλειδοκύμβαλον, κληθὲν «Crescento», πυραμιδοειδοῦς μορφῆς, μετὰ τριῶν ποδοπλήκτρων (pédale) καὶ ἑνὸς μετατοπιστικοῦ κλαβιέ. Κατεσκεύασεν ἐπίσης ἓν ἕτερον εἶδος κλειδοκυμβάλου, τὸ «Royal Crescendo» μετὰ σωλήνων αὐλῳδίας καὶ μουσικῶν ὡρολογίων. Θ. Π.

**Μπαουὲρ** (Baüer), ***Ἐρρῖκος.*** Γάλλος δημοσιογράφος, λόγιος καὶ κριτικός, γεννηθεὶς τῷ 1852. Εἰργάσθη κυρίως ὡς κριτικὸς εἰς διαφόρους ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ καὶ ἐξέδωσε μεταξὺ ἄλλων: «Ἀπομνημονεύματα μιᾶς σιδηρᾶς χάννης ὅπλου» (1879), «Ἀναμνήσεις νεανίου» (1895), «Ζωὴ καὶ ὄνειρον» (1896), «Ἡ μαιτρέσσα» (1903) κωμῳδία κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπάουερνφελντ** (Bauernfeld), ***Ἐδουάρδος φὸν—.*** Γερμανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς (1802—1890). Διεκρίθη ἰδίᾳ διὰ τὰς κωμῳδίας του: «Ἐξομολογήσεις», «Οἱ ἀστοὶ καὶ ὁ ρωμαντισμός», «Βιομηχανία καὶ καρδία». Ἀλλὰ καὶ ὡς δραματικὸς κατέχει σημαντικὴν θέσιν ἐν τῇ λογοτεχνίᾳ τῆς πατρίδος του. Ἐκ τῶν δραμάτων του ἀξιοσημείωτα εἶναι τά: «Ὁ Γερμανὸς μαχητής» καὶ «Ὁ Φραγκῖσκος φὸν Σίκκιγγεν». Α. Δ.

**Μπάουερφάϊντ** (Bauerfeind), ***Κάρολος-Μαξιμιλιανός.*** Γερμανὸς μηχανικὸς καὶ γεωδαίτης (1818 — 1894). Εἰργάσθη ὡς μηχανικὸς παρὰ τῇ διευθύνσει τῶν κρατικῶν σιδηροδρόμων καὶ διετέλεσε καθηγητὴς καὶ κατόπιν διευθυντὴς (1880—1889) τοῦ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν σχεδίων του ὀργανωθέντος πολυτεχνείου τοῦ Μονάχου. Τῷ 1846 ἐξέδωκεν ἀναλυτικὴν ἐπεξεργασίαν τῆς θεωρίας τοῦ Πάουλι, ἥτις ἴσχυσεν ἐπὶ μακρὸν πρὸς ὑπολογισμὸν τῶν θόλων τῶν γεφυρῶν. Τῷ 1851 ἐφεῦρε νέον ὄργανον διοπτεύσεων καὶ τὸ πρισματικὸν διαστημόμετρον. Τῷ 1857, κατόπιν βαρομετρικῶν του ὑψομετρήσεων ἐπὶ τῶν Βαυαρικῶν Ἄλπεων, κατεδείχθη τὸ πρῶτον ἡ ἐπίδρασις τῆς ἀκτινοβολίας τῆς θερμότητος τοῦ ἐδάφους καὶ ἡ ἡμερησία περιοδικότης τῶν βαρομετρικῶν μετρήσεων. Μεταξὺ ἄλλων ἔγραψε τὰ ἑξῆς: «Στοιχεῖα γεωδαιτικῆς» (1856 — 1858), 7 ἔκδ. 1890), ἔργον σημαντικώτατον, «Γεφυροποιΐα» (1854· 3η ἐπεξεργασία ὑπὸ *Frauenholz* καὶ *Asimont*, 1878, τ. 2), «Ὑδραυλικὴ» (1866), «Παρατηρήσεις καὶ ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἀκριβείας τῶν βαρομετρικῶν ὑψομετρήσεων» (1862). Γ. Ε. Κ.

**μπαουλάδικο** (τό)· δημοτ., ἐργαστήριον κατασκευῆς μπαούλων, πρατήριον μπαούλων.

**μπαουλᾶς** (ὁ)· δημοτ., ὁ κατασκευαστὴς ἢ πωλητὴς μπαούλων, κιβωτιοποιός, κιβωτιοπώλης.

**Μπαουλὲ** (Baoulé) *[Γεωγρ.].* Ποταμὸς τῆς Δ. Ἀφρικῆς ἐν Σενεγάλῃ, εἷς ἐκ τῶν δύο βραχιόνων τοῦ Μπακόϋ, ὅστις ἑνούμενος παρὰ τὸ Μπαφουλαμπὲ μετὰ τοῦ Μπάφινγκ σχηματίζει τὸν ποταμὸν Σενεγάλην. Τὸ ὄνομα Μπαουλὲ φέρει ἐπίσης μικρὰ χώρα τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ ἀκτῇ τοῦ Ἐλεφαντόδοντος, διασχιζομένη ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Μπαντάμα. Χ. Δ.

**μπαοῦλο** (τό)· δημοτ., κιβώτιον πρὸς ἐναπόθεσιν ἰδίᾳ ἐνδυμάτων, ἄλλως *σεντοῦκι, κασέλλα:* «ἔχει μπαοῦλα γεμᾶτα ρουχισμό», «τὰ μπαοῦλα της προικός της», «τά 'χει κρυμμένα 'ς τὸ μπαοῦλο» || φρ. «παίρνω—, σηκώνω τὰ μπαουλά μου» φεύγω εἰς ἄλλον τόπον, μετατίθεμαι.

**Μπαουμάϊστερ** (Baumeister). Γερμανὸς φιλόλογος καὶ παιδαγωγὸς (1830—1922). Ἀπὸ τοῦ 1853 μέχρι τοῦ 1855 διέμεινεν εἰς τὴν Ἑλλάδα, Ἰταλίαν καὶ Γαλλίαν. Τῷ 1868 ὠνομάσθη διευθυντὴς τοῦ ἐν Γκέρᾳ ἀνωτέρου γυμνασίου, τῷ δὲ 1870 μετετέθη ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα εἰς Χάλμπερσταντ. Τῷ 1871 ἐξελέγη μέλος τοῦ ἐποπτικοῦ συμβουλίου τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως καὶ σύμβουλος τοῦ κράτους, ὑπῆρξε δὲ ὡς τοιοῦτος μεταρρυθμιστὴς καὶ ἀνακαινιστὴς τῆς ἀνωτέρας ἐκπαιδεύσεως ἐν Ἀλσατίᾳ καὶ Λωρραίνῃ. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὰ κυριώτερα εἶναι: «Εἰκόνες ἐκ τῆς θρησκείας καὶ τῆς τέχνης τῶν Ἑλλήνων» (1868), «Μνημεῖα τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος» (1884—1888, 3 τόμ.) καὶ «Ἐγχειρίδιον παιδαγωγικῆς» (1894—1898). Α. Δ.

**Μπάουμαν** (Baumann), ***Ὀσκάρ.*** Αὐστριακὸς ἐξερευνητὴς (1864—1899). Κατόπιν γεωγραφικῶν καὶ φυσικῶν σπουδῶν, ἤρχισεν ἐξερευνητικὰ ταξίδια, μεταβὰς ἐν πρώτοις εἰς Μαυροβούνιον. Τῷ 1885 συνώδευσε τὸν δόκτορα Λὲντζ εἰς Κογκό, ἀνῆλθε τὸν ποταμὸν μέχρι τῶν καταρρακτῶν Στάνλεϋ, ὁπόθεν ἠναγκάσθη, λόγῳ ἀσθενείας, νὰ ἐπιστρέψῃ. Τῷ 1888 ἠκολούθησε τὸν Χὰνς Μάγερ ἐν τῇ ἀποτυχούσῃ ἀποπείρᾳ του ὅπως φθάσῃ εἰς Κιλιμαντζάρο. Τῷ 1890 ἐξηρεύνησε τὸ Οὐζαμπάρα μετὰ τῶν γειτονικῶν χωρῶν καὶ κατὰ τὰ ἑπόμενα ἔτη (1891—1893) τὰς νοτίως καὶ δυτικῶς τῆς Βικτωρίας λίμνης κειμένας χώρας, ἀποκαλύψας ὅτι ὁ Καγκερὰ εἶναι ὁ μεγαλύτερος φορεὺς ὑδάτων τῆς λίμνης καὶ ὁ πηγαῖος ποταμὸς τοῦ Νείλου. Ἀκολούθως μετέβη εἰς Ζανζιβάρην, Πεμπὰ καὶ Μαφία. Τὰς ἐκ τοῦ ταξιδίου ἐντυπώσεις καὶ παρατηρήσεις του ἐδημοσίευσεν εἰς τὰ ἑξῆς βιβλία: «Ἐν τῇ Γερμανικῇ Ἀνατολικῇ Ἀφρικῇ» (1890), «Οὐζαμπάρα καὶ αἱ περὶ αὐτὴν χῶραι» (1891), «Διὰ τῆς χώρας τῶν Μασσαὶ εἰς τὰς πηγὰς τοῦ Νείλου (1894) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

— **Μπάουμαν** (Baumann), ***Φραγκῖσκος-Λουδοβῖκος.*** Γερμανὸς ἱστοριοδίφης (1846—1915). Τῷ 1873 ἐγένετο ἀρχειοφύλαξ ἐν Ντονάου-Ἐσσίγκεν καὶ τῷ 1903 διευθυντὴς τοῦ βαυαρικοῦ ἀρχείου τοῦ κράτους. Ἀπὸ τοῦ 1904 ἐξέδωκε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Archivarische Zeitung» περιοδικόν. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Πηγαὶ τῆς ἱστορίας τοῦ πολέμου τῶν ἀγροτῶν τοῦ Ρότεμπουργ» (1878), «Ἀρχεῖα διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ πολέμου τῶν ἀγροτῶν τῆς ἄνω Σουαβίας» 1877), «Ἱστορία τοῦ Ἀλγαίου», (3 τόμοι), «Necrologia germaniae» (ἐν «Monumenta germanica historia» 1888). Α. Δ.

**Μπαουμγκαῖρτνερ** (Baumgärtner), ***Ἰούλιος.*** Γερμανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Φρειβούργῃ τῷ 1837. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ γενετείρᾳ καὶ ἐν Γαλλίᾳ, Ἀγγλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῷ 1860. Διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1864 γυναικολογικὴν ἰδιωτικὴν κλινικὴν ἐν Baden-Baden, ἔδρασεν ἐνεργῶς ὡς ἀρχίατρος κατὰ τὸν πόλεμον 1870—1871, τῷ 1879 διηύθυνε τὸ δημοτικὸν νοσοκομεῖον τῆς πόλεως Baden-Baden καὶ ἀπὸ τοῦ 1891 τὸ γυναικολογικὸν καὶ χειρουργικὸν τμῆμα τοῦ σανατορίου Quisisana. Αἱ ἐπιστημονικαὶ αὐτοῦ ἐργασίαι ἀφοροῦσι τὰς νόσους τοῦ λάρυγγος καὶ θυρεοειδοῦς ἀδένος, ὡς καὶ τὰς διαφόρους ἐγχειρήσεις τῆς βρογχοκήλης, τῶν προπτώσεων τῶν γεννητικῶν ὀργάνων τῆς γυναικός, τῶν συριγγίων τῆς οὐροδόχου κύστεως, τῶν αἱμορροΐδων κ.λ. Ο. Ρ.

—**Μπάουμγκαῖρτνερ** (Baumgaertner), ***Κάρολος-Ἐρρῖκος.*** Διάσημος Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Pforzheim τῷ 1798 καὶ ἀποθανὼν ἐν Baden-Baden τῷ 1886. Ἐσπούδασεν ἐν Τυβίγγῃ καὶ Ἀϊδελβέργῃ, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ ἐν Ἀϊδελβέργῃ τῷ 1818. Τῷ 1824 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς κλινικῆς ἐν Φρειβούργῃ, ἀποσυρθεὶς τῷ 1866 τῆς ἐνεργοῦ του δράσεως μὲ τὸν τίτλον τοῦ αὐλικοῦ μυστικοσυμβούλου ἰατροῦ. Κατέστη γνωστὸς διὰ τὰς ἐμβρυολογικάς του παρατηρήσεις, ὡς καὶ διὰ τὰς ἐπὶ τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος. Ὑπῆρξεν ὁ πρόδρομος τοῦ Schwann, ὅστις διετύπωσεν ὁριστικῶς τὴν κυτταρικὴν θεωρίαν. Αἱ πολυπληθεῖς ἐργασίαι του ποικίλλουν ὡς πρὸς τὴν κατεύθυνσιν, ἀφορῶσαι διάφορα θέματα, θεραπευτικῆς μορφῆς, βιολογικῆς, ὡς καὶ φιλοσοφικῆς. Σπουδαιότεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Περὶ τῆς φύσεως καὶ θεραπείας τῶν πυρετῶν» (Φρειβούργη 1827), «Νέα θεραπευτικὴ μέθοδος τῶν πνευμονιῶν» (Στουτγάρδη 1850), «Νέαι ἔρευναι ἐπὶ τῆς φυσιολογίας καὶ πρακτικῆς θεραπευτικῆς» (Φρειβούργη 1845), «Δυαδικὸν σύστημα ἰατρικῆς» (1835—1837), «Στοιχεῖα φυσιολογίας καὶ γενικῆς νοσολογίας καὶ θεραπευτικῆς» (1835, τόμ. 2, 4η ἔκδ. 1842), «Φυσιογνωμίαι ἀσθενῶν μετὰ κειμένου καὶ 72 εἰκόνων» (Στουτγάρδη 1839), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν νεύρων καὶ τοῦ αἵματος» (Φρειβούργη 1830), «Σύγγραμμα φυσιολογίας μετ' ἄτλαντος» (Στουτγάρδη 1853), «Ἀνάπτυξις ἐμβρυϊκὴ διὰ διαιρέσεως τοῦ ᾠαρίου» (1854), «Φυσιολογικὴ ἱστορία τῆς γενέσεως» (1855), «Τὰ κύτταρα τοῦ σύμπαντος» (1865), «Ἡ φύσις καὶ ὁ Θεὸς» (1870) κλπ. Ο. Ρ.

**Μπαουμγκάρτεν** (Baumgarten), ***Ἀλέξανδρος-Γκόττλιμπ.*** Περιφανὴς Γερμανὸς φιλόσοφος καὶ αἰσθητικὸς (1714—1762). Ἐδίδαξε κατ' ἀρχὰς ὡς ὑφηγητὴς ἐν Χάλλῃ, εἶτα δὲ ὡς τακτικὸς τῆς φιλοσοφίας καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Φραγκφούρτης. Ἀνήκει εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Λεϊβνιτίου καὶ τοῦ Βόλφ, ἡ μεγάλη δὲ σημασία του συνίσταται εἰς τὸ ὅτι ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς *αἰσθητικῆς* (βλ. λ.). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται τά: «Aesthetica» (1750), «Philosophia generalis» (1730), «Metaphysica» (1739), «Ethica philosophica» (1740), «Jus naturae» (1765), «De nonnullis ad Poema pertinentibus» (1735). Α. Δ.

—**Μπαουμγκάρτεν** (Baumgarten), ***Μιχαήλ.*** Γερμανὸς διαμαρτυρόμενος θεολόγος (1812—1899). Τῷ 1846 ὠνομάσθη πάστωρ ἐν Σλέσβιγκ, τῷ δὲ 1850 τακτικὸς καθηγητὴς ἐν Ροστόκ. Καίτοι ἐνθουσιώδης λουθηρανός, ἦλθεν εἰς ῥῆξιν, ὡς ἐχθρὸς πάσης ἱεραρχίας, μετὰ τοῦ ἀνωτέρου ἐκκλησιαστικοῦ συμβούλου τοῦ Μεκλεμβούργου, λόγῳ τῆς ὁποίας ἠναγκάσθη νὰ ὑποβάλῃ τὴν παραίτησίν του ὡς πάστορος καὶ καθηγητοῦ. Αἱ σχετικαὶ πρὸς τὴν ῥῆξιν ταύτην πραγματεῖαί του ἔσχον ὡς ἀποτέλεσμα τὴν εἰς φυλάκισιν καὶ πρόστιμον καταδίκην του. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἐδημοσίευσε πολλὰ ἔργα καὶ ἔκαμε πολλὰς διαλέξεις, δι' ὧν ὑπεστήριξε τὴν ἰδέαν τῆς μεταρρυθμίσεως τῆς εὐαγγελικῆς Ἐκκλησίας. Τῷ 1874 καὶ 1877, ἐκλεγεὶς μέλος τοῦ Ράϊχσταγ προσεχώρησεν εἰς τὸ κόμμα τῶν προοδευτικῶν, βραδύτερον δὲ εἰς τὸ τοῦ Λέβε. Ὁ Μπαουμγκάρτεν ἔλαβε μέρος ἐνεργὸν εἰς τὴν κίνησιν ὑπὲρ τῆς αὐτονομήσεως τῶν δουκάτων Σλέσβιγκ-Ὁλοτάϊν. Ἔγραψε: «Σχόλια εἰς τὴν Παλαιὰν Διαθήκην» (1843—1844), «Ἱστορία τῶν Ἀποστόλων ἢ ἐξελικτικὴ πορεία τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τῆς Ἱερουσαλὴμ μέχρι τῆς Ρώμης» (1859), «Ἡ ἱστορία τοῦ Ἰησοῦ» (1859), «Lutherus redivivus ἢ ἀντίδρασις τῆς Ἐκκλησίας» (1878), «Ὁ δόκτωρ Μαρτῖνος Λούθηρος, βιβλίον διὰ τὸν λαόν» κλπ. Α. Δ.

—**Μπαουμγκάρτεν** (Baumgarten), ***Παῦλος-Κλήμης.*** Γερμανὸς ἀνατομοπαθολόγος καὶ μικροβιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Δρέσδῃ τῷ 1848. Ἀνηγορεύθη διδάκτωρ ἐν Λειψίᾳ τῷ 1873. Διετέλεσε βοηθὸς ἀνατομικῆς ἐν Λειψίᾳ (1873), ἐπιμελητὴς τῆς ἀνατομοπαθολογίας ἐν Καινιξβέργῃ (1874—1880), ἀπὸ τοῦ 1881 ἔκτακτος καθηγητὴς αὐτόθι καὶ ἀπὸ τοῦ 1889 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομοπαθολογίας, γενικῆς παθολογίας καὶ μικροβιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Τυβίγγης. Ἐδημοσίευσεν ἐργασίας ἐπὶ τῆς θρομβώσεως, εἰς ἃς ἔδωκε νέας ὅλως κατευθύνσεις πρὸς τὴν λύσιν τοῦ ζητήματος τούτου («Die sogenannte Organisation des Thrombus», Λειψία 1877), ἐπὶ τῆς φυματιάσεως ἐν γένει, ἐπὶ τῆς ἐπιλύσεως τοῦ προβλήματος τῆς ἱστογενέσεως τῆς φυματιώδους ἐπεξεργασίας («Über Tuberkel und Tuberkulose», Βερολῖνον 1885, «Über latente Tuberkulose» «Über die Wage der tuberculösen Infection»), ἐπὶ τῆς θεωρίας τοῦ Μέτσνικωφ («Zur Kritik der Metschnikoffschen Phagocytentheorie) κ. ἄ. Ο. Ρ.

—**Μπαουμγκάρτεν** (Baumgarten), ***Σιγισμοῦνδος-Ἰάκωβος.*** Γερμανὸς διαμαρτυρόμενος θεολόγος (1706—1757). Ἀνατραφεὶς ἐν τῷ εὐσεβισμῷ, ἀλλὰ συγχρόνως ὑποστὰς τὴν ἐπίδρασιν τῆς σχολῆς τοῦ Βόλφ, δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς πρόδρομος τοῦ γερμανικοῦ ὀρθολογισμοῦ. Ἔγραψεν: «Auszug der Kirchengeschichte» (3 τόμ., Χάλλη 1743—1762), «Primae lineae breviarii antiquitatum christianarum» (1747) καὶ «Geschichte der Religionsparteien» (1760). Α. Δ.

— **Μπαουμγκάρτεν-*Κρούζιους*** (Baumgarten-Crusius), ***Κάρολος-Γουλιέλμος.*** Γερμανὸς φιλόλογος (1786—1845). Ὡς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας διεκρίθη διὰ τὸν ἀκραιφνῆ πατριωτισμόν του, ἰδίᾳ δὲ διὰ τὰ ἐμπνευσμένα καὶ ἐνθουσιώδη κηρύγματά του πρὸς τὴν νεολαίαν τῆς πατρίδος του. Τῷ 1833 ἐγένετο διευθυντὴς τῆς σχολῆς τοῦ Μάϊσεν. Ὡς συγγραφεὺς διεκρίθη ἐκ τῶν «Vier Reden an die Deutsche Jugend über Vaterland, Freiheit, e.t.c.», ὡς φιλόλογος δὲ ἐκ τῶν σχολίων του εἰς τὸν Ξενοφῶντα, τὸν Ὅμηρον, τὸν Ὀβίδιον κ.τ.λ. Α. Δ.

**Μπαουμγκάρτνερ** (Baumgartner), ***Ἀνδρέας, βαρῶνος φὸν—.*** Αὐστριακὸς φυσικὸς καὶ πολιτικὸς (1793—1865). Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν Ὄλμουτς, βραδύτερον δὲ ἐν Βιέννῃ, ὅπου ἐδίδαξε τὴν βιομηχανικὴν μηχανικὴν καὶ ἵδρυσεν ἐν ἔτει 1826 τὸ περιοδικὸν «Zeitschrift für Physik und Mathematik». Κατόπιν ὠνομάσθη ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων ἔργων (1848), πρόεδρος τοῦ τελωνειακοῦ συνεδρίου τῆς Βιέννης (1851), ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου καὶ τῶν Δημοσίων ἔργων (1851), τῶν Οἰκονομικῶν (1854—1855) καὶ σύμβουλος τοῦ κράτους (1861). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται τὰ κατωθι: «Ἀραιομετρία» (1820), «Ἡ μηχανικὴ ἐν τῇ ἐφαρμογῇ αὐτῆς εἰς τὰς τέχνας καὶ τὴν βιομηχανίαν

Digitized by Google

323), «Φυσικὴ ἱστορία» καὶ «Ὁδηγὸς διὰ τοὺς θερστὰς ἀτμομηχανῶν». Α. Δ.

**Μπάουμσταρκ** (Baumstark), ***Ἀντώνιος.*** Γερ- ...νὸς φιλόλογος (1800—1875). Ἀπὸ τοῦ 1836—71 ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς φιλολογίας καὶ διευντὴς τοῦ φιλολογικοῦ φροντιστηρίου τοῦ Φρειύργου. Ἐξέδωκε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνται: «Σχόλια εἰς τὸν Ὁράτιον» (1841), «Μελέτη ... ἀρχαιότητος ἐπὶ τῷ τέλει κατανοήσεως τῶν ποιητων τοῦ Ὁρατίου» (1841), «Ἑλληνικὴ ἀνθολογία» (...340), «Ρωμαϊκὴ ἀνθολογία» (1841), «Ἐλευθέρα ἑρ... νεία τῆς θρησκείας» (1846). Ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον ...ρμαν φὸν Μποῦσσε ἔγραψε: «Μνημεῖα τῆς γερ...νικῆς αὐτοκρατορίας» (1873), «Ἑρμηνεία τῆς «Γερ...νίας» τοῦ Τακίτου ὡς πρὸς τὰ ἐν αὐτῇ οἰκονομολο...κὰ ζητήματα».

— **Μπάουμσταρκ** (Baumstark), ***Ἐδουάρδος.*** Γερ...νὸς οἰκονομολόγος (1807—1889). Ὑπῆρξε κα...γητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Γκράϊφσβαλντ, ...λος τοῦ κοινοβουλίου τῆς Ἐρφούρτης καὶ κα...πιν τῆς Πρωσσίας. Ὑπεστήριξε τὰς συνταγματι...ς ἀρχάς, ὡς βουλευτὴς δὲ τοῦ Ράϊχσταγ ὑπῆρ...ν εἷς τῶν ἀρχηγῶν τοῦ ἐθνικοῦ φιλελευθέρου ...μματος. Ἔγραψεν: «Ἱστορίαν τῶν ἐργατικῶν τά...ων», πολλὰ ἔργα σχετικὰ πρὸς τὴν ἀγροτικὴν οἰ...νομίαν, ἐξέδωκεν ἀπάνθισμα λαϊκῶν ᾀσμάτων κτλ. Α. Δ.

**Μπαουνάγκαρ,** ἢ ***Μπαβνάγκαρ*** (Bhaunaghar Bhavnaghar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῶν ...ρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ περιοχῇ Καθιαβὰκ τῆς ...ομβάης, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου ἰθαγενοῦς ...ρατιδίου. Ἱδρύθη τῷ 1743, ταχέως δ' ἀνεπτύχθη ...ημαντικῶς χάρις εἰς τὸ ἐμπόριον τοῦ βάμβακος ...αὶ τὸν ἀσφαλέστατον λιμένα της. Κάτ. 60.694. Τὸ ...ράτος τοῦ Καθιαβὰκ ἔχει ἔκτασιν 7.000 περίπου ...τρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 441.367 κατ. Χ. Δ.

**Μπάουνταιρτ,** ἢ ***Βαουδάρτιος*** (Baudaert, Bau...artius), ***Γουλιέλμος.*** Φλαμανδὸς ἱστορικὸς (1564—...340). Κατ' ἐντολὴν τῆς συνόδου τοῦ Ντοντρέχτ με...έφρασε τὰς ἁγίας Γραφὰς εἰς τὴν ὀλλανδικὴν ...λῶσσαν. Ἔγραψεν ἀπομνημονεύματα σχετικὰ πρὸς ...ην εὐρωπαϊκὴν ἱστορίαν τῶν ἐτῶν 1602—1624 «Polemographia auraico-belgica» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπαουντίσσιν** (Baudissin), *κόμις* ***Βὸλφ-Ἑρρῖ...ος-Λουδοβῖκος-Κάρολος.*** Γερμανὸς λογοτέχνης (1789—1878). Μετέφρασεν εἰς τὴν γερμανικὴν τὰ ...ργα τοῦ Σαίκσπηρ, παλαιὰ ἀγγλικὰ δράματα, κω...ῳδίας τοῦ Μολιέρου, θεατρικὰ ἔργα τοῦ Γκολ...δόνι κτλ. Ἐπίσης συνέγραψε σημαντικὸν ἔργον ...ερὶ τοῦ Μπὲν Τζόνσον.

—**Μπαουντίσσιν** (Baudissin), *κόμις* ***Ὄθων-Φρει...ερῖκος-Μάγνος.*** Γερμανὸς στρατηγὸς (1792—1865). ...ιεκρίθη κατὰ τὸν πόλεμον ἐναντίον τῆς Δανίας ...αὶ τῶν δουκάτων Σλέσβιγκ-Ὁλστάϊν (1848—1851), ...ίᾳ δὲ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Κόλντιγκ (1849). Α. Δ.

**Μπάουντιτς** (Bauditz), ***Σόφους - Γουσταῦος.*** ...ανὸς λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἤρχισε τὴν ...ιλολογικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὰ διηγήματα «Στὸ ἀκρογιάλι», «Μέσα στὸ δάσος» καί τινα θεα...ρικὰ ἔργα. Ἀλλὰ τὴν μεγάλην φήμην αὐτοῦ ὀφεί...ει πρὸ παντὸς εἰς τὸ μυθιστόρημα «Ὁ οἰκίσκος ...οῦ θυροφύλακος» καὶ τὰ «Χρονικὰ μιᾶς πόλεως μὲ ...ουράν». Α. Δ.

**Μπάουρ** (Baur), ***Ἀλβέρτος.*** Γερμανὸς ζωγρά...ος ἱστορικῶν πινάκων (1835—1906). Ἐσπούδασε ...ατ' ἀρχὰς τὴν ζωγραφικὴν εἰς Ντύσσελντορφ καὶ ...τα εἰς Μόναχον, τῷ δὲ 1872 ἐγένετο καθηγητὴς ...ῆς ζωγραφικῆς ἱστορικῶν θεμάτων ἐν Βεϊμάρῃ. ...ὸ πρῶτον ἐκ τῶν μεγάλων ἔργων του εἶναι «Ἡ ...ακομιδὴ τοῦ σώματος τοῦ αὐτοκράτορος Ὄθωνος Γ' ...πὸ τῆς Ἰταλίας εἰς Γερμανίαν». Ἄλλα σημαντικὰ ...πίσης ἔργα του εἶναι: «Χριστιανοὶ κομίζοντες τὸ λεί...ανον μιᾶς μάρτυρος ἐκτὸς τοῦ ἱπποδρομίου», «Ὁ ...γιος Παῦλος κηρύσσων τὸ Εὐαγγέλιον εἰς Ρώμην», «Ὁ Ὄθων Α' πρὸ τοῦ πτώματος τοῦ ἀδελφοῦ του ...άνκμαρ», «Μετὰ τὴν τοποθέτησιν τοῦ νεκροῦ σώμα...ς ἐντὸς τοῦ φερέτρου» κ. ἄ. Κυριώτερα χαρακτη...ριστικὰ τῆς τέχνης τοῦ Μπάουρ εἶναι ὁ ἁγνὸς ρεα...λισμὸς καὶ ὁ καλὸς χρωματισμός, παραβλάπτει ...ως σημαντικῶς τὴν σύνθεσιν ὁ μέγας φόρτος ...ς εἰκόνος. Χ. Δ.

—**Μπάουρ** (Baur), ***Φερδινάνδος-Χριστιανός.*** Ἐπι...ανὴς Γερμανὸς θεολόγος (1792—1860). Διορισθεὶς ...ὸ τοῦ 1826 καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν τῷ πα...νεπιστημίῳ τῆς Τυβίγγης, ἐγένετο ὁ ἱδρυτὴς τῆς ...λουμένης σχολῆς τῆς Τυβίγγης. Τὸ πρῶτον ἔρ...ον, ὅπερ ἐξέδωκε: «Συμβολικὴ καὶ μυθολογία ἢ ἡ ...ικὴ θρησκεία τῆς ἀρχαιότητος» (3 τόμ. 1824 καὶ 1825), διατελεῖ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς θεολογίας ...ου Σλαϊερμάχερ, πρὸς ἣν ἦλθε μετ' ὀλίγον εἰς ...ντίθεσιν, ἐπηρεασθεὶς ὑπὸ τῆς φιλοσοφίας τοῦ ...έγγελ. Ἀφορμὴν λαβὼν ἐκ τῆς συμβολικῆς τοῦ ...έλερ, ἔγραψε «Περὶ τῆς ἀντιθέσεως τοῦ καθολι...σμοῦ καὶ προτεσταντισμοῦ» (1831), προσπαθῶν νὰ ...ντικρούσῃ τὰς ἰδέας αὐτοῦ. Ἔπειτα ἔγραψε δύο ...α: «Ὁ Μανιχαϊσμὸς» (1831) καὶ «Ἡ χριστιανικὴ ...ῶσις» (1835), ἐν τῇ ὁποίᾳ περιλαμβάνει οὐ μόνον τὴν ἀρχαιοτέραν γνῶσιν, ἀλλὰ καὶ τὰ νεώτερα συστήματα, τὴν θεοσοφίαν τοῦ Μπέμε, τὴν φυσικὴν φιλοσοφίαν τοῦ Σέλλινγκ, τὴν περὶ πίστεως διδασκαλίαν τοῦ Σλαϊερμάχερ καὶ τὴν φιλοσοφίαν τῆς θρησκείας τοῦ Χέγγελ.

Φερδινάνδος Μπάουρ.

Ἐκ τῶν μετὰ ταῦτα ἔργων του ἄξια ἰδίᾳ μνείας εἶναι: «Ἱστορία τῆς διδασκαλίας περὶ τῆς ἐξιλεώσεως» (1838), «Ἱστορία τῆς διδασκαλίας περὶ τῆς ἁγίας Τριάδος καὶ τῆς ἐνανθρωπήσεως τοῦ Θεοῦ» (3 τόμ. 1841 — 1843), «Ἐγχειρίδιον τῆς ἱστορίας τῶν δογμάτων» (1847), «Ἡ χριστιανικὴ Ἐκκλησία τῶν τριῶν πρώτων αἰώνων» (1853), «Ἱστορία τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ Δ'—ΣΤ' αἰῶνος» (1859) καὶ τὰ μετὰ θάνατον αὐτοῦ ἐκδοθέντα: «Ἡ χριστιανικὴ Ἐκκλησία τοῦ μεσαίωνος» (1861), «Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία τοῦ ΙΘ' αἰῶνος» (1862) καὶ «Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία τῶν νεωτέρων χρόνων» (1863). Γνωστότερα καὶ σπουδαιότερα τῶν ἱστορικῶν αὐτοῦ ἔργων εἶναι αἱ κριτικαὶ αὐτοῦ ἔρευναι, αἱ ἀναφερόμεναι εἰς τὸν κανόνα τῆς Καινῆς Διαθήκης καὶ ἡ ἐξέτασις τῆς σχέσεως τῶν βιβλίων αὐτῆς πρὸς τὰ ἔργα τῆς ἀρχαιοτάτης ἐκκλησιαστικῆς φιλολογίας. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἀνηκόντων εἰς τὴν τάξιν ταύτην ἔργων αὐτοῦ εἶναι: «Περὶ τῶν καλουμένων ποιμαντορικῶν ἐπιστολῶν τοῦ ἀποστόλου Παύλου» (1835), «Περὶ τοῦ σκοποῦ καὶ τῆς ἀφορμῆς τῆς πρὸς Ρωμαίους ἐπιστολῆς» (1836), «Περὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἐπισκοπικοῦ ἀξιώματος» (1838), «Ὁ ἀπόστολος Παῦλος» (1845), «Κριτικαὶ ἔρευναι περὶ τῶν κανονικῶν εὐαγγελίων» (1847) καὶ «Περὶ τοῦ εὐαγγελίου τοῦ Μάρκου μετὰ παραρτήματος περὶ τοῦ εὐαγγελίου τοῦ Μαρκίωνος» (1851).

Ὁ Μπάουρ νομίζει ὅτι ἐν τῇ ἀρχαιοτάτῃ Ἐκκλησίᾳ ὑπῆρχεν ἀντίθεσις μεταξὺ τῶν ἰδεῶν τοῦ ἀποστόλου Παύλου, ἀποδίδοντος εἰς τὸν Χριστιανισμὸν παγκόσμιον χαρακτῆρα, καὶ τῶν λοιπῶν ἀποστόλων, καὶ δὴ τοῦ Πέτρου, ὡς καὶ τῶν ἐξ Ἰουδαίων Χριστιανῶν συγγραφέων, ἀποδιδόντων εἰς αὐτὸν ἰουδαϊκὸν χαρακτῆρα καὶ ἑπομένως ἡ ἀρχαιοτάτη ἱστορία τῆς χριστιανικῆς Ἐκκλησίας εἶναι ἡ ἱστορία τοῦ ἀνταγωνισμοῦ τῶν δύο τούτων ἰδεῶν, ὅστις ἀπὸ τοῦ Β' μ.Χ. αἰῶνος ἀμβλύνεται. Ἐπὶ τῇ βάσει ταύτῃ κρίνων τὰ βιβλία τῆς Καινῆς Διαθήκης καταλήγει εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι ἐκ τῶν ἐπιστολῶν τοῦ ἀποστόλου Παύλου μόνον ἡ πρὸς Γαλάτας, ἡ πρὸς Ρωμαίους καὶ αἱ δύο πρὸς Κορινθίους εἶναι γνήσιαι, τῶν λοιπῶν γραφεισῶν κατὰ τὸν Β' μ.Χ. αἰῶνα. Διὰ τὸν αὐτὸν ἀκριβῶς λόγον δέχεται ὅτι αἱ Πράξεις τῶν ἀποστόλων, αἵτινες ἐγράφησαν ὅπως ἀμβλυνθῇ ἡ ἀντίθεσις αὕτη, δὲν ἐγράφησαν ὑπὸ τοῦ συνοδοιπόρου τοῦ ἀποστόλου Παύλου Λουκᾶ, ἀλλ' ὑπ' ἄλλου ἀκμάσαντος κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Β' αἰῶνος, ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ δὲ ἐγράφη καὶ τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Λουκᾶ, ἕνεκα τῆς ὁμοιότητος τῶν ἰδεῶν καὶ τοῦ ὕφους. Τοὐναντίον ἡ Ἀποκάλυψις, ἐν ᾗ αὐστηρότατος ἐμφανίζεται ὁ ἰουδαϊκὸς χαρακτήρ, εἶναι γνωστὸν ἔργον τοῦ Ἰωάννου, ὅστις δὲν εἶναι ὁ συγγραφεὺς τῶν τριῶν ἐπιστολῶν τῶν ἀποδιδομένων εἰς αὐτόν, οὐδὲ τοῦ Εὐαγγελίου, γραφέντος ὑπὸ πεπαιδευμένου Ἀλεξανδρινοῦ, ἀκμάσαντος κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Β' αἰῶνος. Καὶ τὸ εὐαγγέλιον τέλος τοῦ Ματθαίου καὶ Μάρκου ὡς καὶ αἱ καθολικαὶ ἐπιστολαὶ δὲν εἶναι γνήσιαι.

Τὰ συμπεράσματα ταῦτα τοῦ Μπάουρ, ὡς ἐπὶ σφαλερᾶς βάσεως στηριζόμενα, δὲν ἠδύναντο τελικῶς νὰ ἐπικρατήσωσιν, ὡς δὲν ἐπεκράτησε καὶ ἡ ἐπὶ τῇ βάσει τῆς φιλοσοφίας τοῦ Χέγγελ ἱστορικὴ ἐξέτασις τοῦ Χριστιανισμοῦ. Παρ' ὅλα ὅμως ταῦτα οὐδεὶς δύναται νὰ ἀρνηθῇ τὴν ἐπιστημονικὴν ἀξίαν αὐτοῦ καὶ τὰς ὑπηρεσίας, ἃς προσέφερε διὰ τῶν ἐρευνῶν αὐτοῦ εἰς τὴν θεολογικὴν ἐπιστήμην. Ἰδιαζόντως πρέπει νὰ τονισθῇ ἡ ὑπὸ τοῦ Μπάουρ ἔξαρσις τῆς ἀξίας τῆς ἱστορικῆς ἐρεύνης ἐν τῇ θεολογίᾳ καθόλου καὶ δὴ καὶ ἐν τῷ δόγματι καὶ ἑπομένως τῆς μεγάλης ἀξίας τῆς ἱστορίας τῶν δογμάτων. Κ. Ι. Δ.

**Μπαοὺρ-Λορμιὰν** (Baour-Lormian), ***Πέτρος.*** Γάλλος λόγιος καὶ δραματικὸς ποιητὴς (1770—1854). Υἱὸς ἑνὸς βιβλιοπώλου-τυπογράφου τῆς Τουλούζης, ἤρχισε τὸ φιλολογικόν του στάδιον μὲ σατίρας τινὰς κατὰ τῶν ἀκαδημαϊκῶν τῆς πόλεως ταύτης καὶ μίαν ἔμμετρον μετάφρασιν τῆς «Ἀπελευθερωθείσης Ἱερουσαλὴμ» (1795). Μολονότι ὄχι σημαντικῆς ἀξίας ἡ μετάφρασις ἐκείνη, ἐξήγειρε τὴν ζηλοτυπίαν τοῦ ποιητοῦ Διον. *Λεμπρὲν* (βλ.λ.), εὑρισκομένου τότε ἐν πλήρει λάμψει τῆς προσκαίρου δόξης του, ἐπηκολούθησε δ' ἐντεῦθεν μεταξύ των ἕνας πόλεμος ἐπιγραμμάτων, εἰς τὸν ὁποῖον ὁ νεαρὸς Μπαοὺρ δὲν ἦτο πάντοτε ὁ ἡττημένος. Ἀπεκόμισεν ἄλλωστε ἐξ αὐτοῦ σημαντικὸν κέρδος φήμης, εἰς τὴν ὁποίαν συνέβαλεν ἐπὶ μᾶλλον ἡ μετ' οὐ πολὺ ἐκδοθεῖσα σάτιρά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Αἱ τρεῖς λέξεις» (1798), ἡ μετάφρασις τῶν «Ποιήσεων τοῦ Ὀσσιανοῦ» (1801) καὶ ἡ τραγῳδία του «Ὁ Ἰωσὴφ ἐν Αἰγύπτῳ», ἀναβιβασθεῖσα ὑπὸ τοῦ Γαλλικοῦ Θεάτρου τῷ 1807. Ἔγραψεν ἀκόμη ποιήματά τινα: «Ἡ ἑορτὴ τοῦ ὑμεναίου» (1810), «Ἡ στέψις τοῦ Καρόλου Γ'» (1825) κλπ., σατίρας κατὰ τῶν νεωτεριστῶν: «Ὁ κλασσικὸς καὶ ρωμαντικὸς» (1825), «Οἱ νέοι μάρτυρες» (1820) κ. ἄ. καὶ ἓν ἱστορικὸν μυθιστόρημα ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ντουράντι, ὁ πρῶτος πρόεδρος τῆς βουλῆς τῆς Τουλούζης» (1828). Ἀπὸ τοῦ 1815 ὁ Μπαοὺρ-Λορμιὰν εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, διῆλθεν ὅμως τὰ γηρατειά του ἐν μεγάλῃ πενίᾳ, μὴ ἔχων ἄλλον πόρον παρεκτὸς μικρᾶς τινος συντάξεως, τὴν ὁποίαν τῷ εἶχεν ἀπονείμει ἡ κυβέρνησις μερίμνῃ τοῦ Λαμαρτίνου. —Π.

**Μπάουρινγκ** (Bowring), *σὲρ* ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος οἰκονομολόγος, πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1792—1872). Ἦτο υἱὸς ὑφαντουργοῦ, τοῦ ὁποίου ἐξηκολούθησε κατ' ἀρχὰς τὰς ἐργασίας, διατρέχων, ὡς περιοδεύων ἀντιπρόσωπος, τὰ περισσότερα τῶν κρατῶν τῆς Εὐρώπης καὶ μανθάνων σχεδὸν πάσας τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας, ἐνῷ συγχρόνως ἐλάμβανε μαθήματα κινεζικῆς, ἀραβικῆς, σανσκριτικῆς, σενεγαλεζικῆς. Κατώρθωνε νὰ συνεννοῆται εἰς 100 περίπου διαλέκτους. Τῷ 1822 συνελήφθη εἰς τὸ Καλαὶ ὡς κατάσκοπος, ἀλλὰ χάρις εἰς τὴν ἐπέμβασιν τοῦ Κάννινγκ ἀφέθη ἐλεύθερος. Κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐγένετο μέλος τῆς ὁμάδος τῶν ριζοσπαστῶν μεταρρυθμιστῶν. Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Ἱερεμίου Μπένταμ, μετὰ τοῦ ὁποίου ἐξέδωσε τὴν «Ἐπιθεώρησιν τοῦ Οὐεστμίνστερ» (1824), τὴν ὁποίαν διηύθυνε μέχρι τοῦ 1830. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐγκατέλειψεν ἐντελῶς τὸ ἐμπόριον καὶ μετέβη εἰς τὴν Ὀλλανδίαν πρὸς μελέτην τῆς οἰκονομικῆς καὶ πνευματικῆς αὐτῆς καταστάσεως, δημοσιεύσας τῷ 1829 «Δοκίμιον περὶ τῆς γλώσσης καὶ τῆς λογοτεχνίας τῆς Ὀλλανδίας». Τῷ 1832 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ὑπεστήριξεν ἐν τῇ βουλῇ τὴν ἐλευθερίαν τοῦ ἐμπορίου καὶ τὴν κατάργησιν τῶν σωματικῶν ποινῶν ἐν τῷ στρατῷ. Βραδύτερον ἐταξίδευσεν εἰς τὸ Βέλγιον, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Αἴγυπτον καὶ τὴν Συρίαν ἐπὶ εἰδικῇ οἰκονομικῇ ἀποστολῇ τῆς κυβερνήσεως καὶ τῷ 1838 ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἀγγλίαν εἰς τὴν τελωνειακὴν διάσκεψιν τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1849, ἀπολέσας τὴν περιουσίαν του εἰς διαφόρους βιομηχανικὰς ἐπιχειρήσεις, διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Πάλμερστον πρόξενος ἐν Καντὼν τῆς Κίνας, ὅπου προσέφερε μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τὸ ἀγγλικὸν ἐμπόριον. Τῷ 1855 μετέβη εἰς Μπανγκὸκ πρὸς σύναψιν ἐμπορικῆς συνθήκης μετὰ τοῦ βασιλέως τοῦ Σιὰμ καὶ ἔγραψε τὰς ἐντυπώσεις τοῦ ταξιδίου του ἐκείνου εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ βασίλειον καὶ ὁ λαὸς τοῦ Σιάμ» (1857). Τῷ 1856, συνεπείᾳ προσβολῆς τῆς ἀγγλικῆς σημαίας, διέταξεν, ἄνευ προηγουμένης κηρύξεως τοῦ πολέμου οὔτε εἰδοποιήσεως τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως, τὸν βομβαρδισμὸν τῆς Καντών, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε τὴν πτῶσιν τοῦ ὑπουργείου Πάλμερστον καὶ τὸν πόλεμον τῆς Ἀγγλίας καὶ Γαλλίας κατὰ τῆς Κίνας. Ὁ Μπάουρινγκ ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας κατεγίνετο καὶ εἰς φιλολογικὰς μελέτας καὶ εἶχεν ἀφιερωθῆ μετὰ πολλοῦ ζήλου εἰς τὴν μελέτην τῆς λαϊκῆς ποιήσεως τῶν χωρῶν τὰς ὁποίας ἐπεσκέπτετο, δημοσιεύσας ἐνδιαφερούσας μελέτας καὶ μεταφράσεις ποιημάτων, παραδόσεων καὶ θρύλων ρωσικῶν (1821 — 1823), ἱσπανικῶν (1824), ὀλλανδικῶν (1830), ἐσθονικῶν (1832) κτλ. Ἐσχεδίαζεν ἐπίσης τὴν συγγραφὴν μεγάλης γενικῆς ἱστορίας τῶν δημοτικῶν τραγουδιῶν τῶν διαφόρων ἐθνῶν, ἀλλὰ δὲν κατώρθωσε νὰ φέρῃ αὐτὴν εἰς πέρας. Ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ ὑπάρχει ἐπίσης συλλογή του 81.000 κολεοπτέρων συλλεγέντων κατὰ τὰ πολυάριθμα ταξίδιά του εἰς διαφόρους χώρας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, τὰ ὁποῖα ἀνέρχονται εἰς 34 τόμους, τὰ κυριώτερα εἶναι, πλὴν τῶν ἀναφερθέντων: «Σερβικὰ δημοτικὰ τραγούδια» (1827), «Ἡ μαγυαρικὴ ποίησις» (1830) κτλ. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν: «Ἡ θρησκευτικὴ ποίησις» (1873) καὶ «Αὐτοβιογραφικαὶ ἀναμνήσεις». Μ.Δ.Β.

**Μπαουσιοὶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 360. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Πλαίσια (Τσαρκοβίτσα)*. Χ. Δ.

**Μπάουσκα** (Bauska) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Λεττονίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῇ διοικήσει Κουρζέμε (παλαιᾷ Κουρλανδίᾳ), κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἄα ἢ Λιεποῦλε. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν. Κάτ. 4.841. Χ. Δ.

**Μπάουσνερν** (Baussnern), ***Βάλντεμαρ.*** Γερμανὸς μουσουργός, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἐγένετο γνωστὸς ὡς συνθέτης διὰ τῶν μελοδραμάτων «Dichter und Welt», «Dürer in Venedig», «Herbort und Hilde», «Der Buntschuh». Ἔγραψεν ἐπίσης πολλὰς μπαλλάντας, μουσικὴν δωματίου, 2 συμφωνίας κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπαουσσὲ-*Ρουσσὲ*** (Baoussé-Roussé) *[Γεωγρ.]*. Ἐν τῇ μαντονικῇ διαλέκτῳ ὀνομάζονται οὕτως οἱ κατὰ τὰ σύνορα Ἰταλίας—Μονακὸ (Ventimiglie), ἀνατολικῶς τῆς πόλεως Menton, εὑρισκόμενοι βράχοι λόγῳ τοῦ ἐρυθροῦ χρώματος αὐτῶν. Ἐγένοντο

Digitized by Google

δὲ περίφημοι μετὰ τὴν ἐν τοῖς σπηλαίοις αὐτῶν ἀνακάλυψιν παλαιοντολογικῶν ἰχνῶν, ἰδίᾳ τοῦ ἀνθρώπου καὶ δὴ τοῦ νεγροειδοῦς τύπου, τοῦ χαρακτηρίζοντος τὴν κληθεῖσαν φυλὴν *Γκριμάλντι* (βλ. λ.). Ι. Γ. Κ.

**Μπάουτς** (Bautch) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Μπαίρν τῆς Μοραβίας. Ἔχει καπνοβιομηχανίαν, κτηνοτροφίαν καὶ ὑφαντουργίαν. Κάτ. 4.601. Χ. Δ.

**Μπάουτσεν** (Bautzen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ ἐν Σαξωνίᾳ, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Σπρέε, 60 χλμ. πρὸς Α.ΝΑ. τῆς Δρέσδης. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἔχει ἀξιολογωτάτας βιομηχανίας χάρτου, σιγαρέττων, ὑφασμάτων, ἀγγείων, σιδήρου κλπ. καὶ ἐμπόριον τῶν γεωργικῶν προϊόντων τῆς περιφερείας καὶ τῶν βιομηχανικῶν εἰδῶν αὐτῆς. Ἔχει σπουδαῖον μητροπολιτικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Πέτρου (ΙΕ' αἰῶνος) καὶ ὡραῖον ἀνάκτορον καλούμενον «Ὀρτεμπουργκ». Κάτ. (1925) 40.335. Ὁ νομὸς *Μπάουτσεν* ἔχει ἔκτασιν 2.470 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν (1925) 461.155 κατοίκων. Ἡ πόλις πρὸ τῆς εἰσβολῆς τῶν Γερμανῶν ἀνῆκεν εἰς τὸν λαὸν τῶν Βένδων καὶ ὠνομάζετο *Μπαουντίσσιν* ἢ *Μπουντίσσιν*, τὸ ὄνομα δὲ τοῦτο διετήρει ὡς ἐπίσημον μέχρι τοῦ 1868. Κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ τοὺς μετ' αὐτὸν χρόνους ἀπετέλει σπουδαιότατον ὀχυρόν, τὸ ὁποῖον πολλάκις ἐπολιορκήθη καὶ κατελήφθη διαρκούντων τῶν συχνῶν πολέμων, τῶν ὁποίων ἡ Σαξωνία ἐγένετο θέατρον. Ἰδιαιτέρως ἀξία λόγου εἶναι ἡ νίκη τοῦ Ναπολέοντος (20 καὶ 21 Μαΐου 1813) ἐναντίον τοῦ συμμαχικοῦ στρατοῦ τῶν Ρώσων καὶ τῶν Πρώσσων (βλ. κατωτ.). Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Σαξωνίας τοῦ 1813 (βλ. λ. *Ναπολεόντειοι πόλεμοι*), οἱ Ρωσσοπρῶσσοι, μετὰ τὴν ἧτταν των εἰς τὴν μάχην τῆς Lützen, τὴν 2αν Μαΐου 1813, ὑπεχώρησαν πρὸς ἀνατολάς, καὶ μετὰ τὰς διχογνωμίας τὰς ἐκδηλωθείσας μεταξὺ τῶν ἀρχηγῶν τῶν συμμάχων (Ρώσου Γκορτζακώφ, Πρώσσου Μπλύχερ) ἐπὶ τῆς ἀκολουθητέας κατευθύνσεως ὑποχωρήσεως, ἐγκατεστάθησαν τὴν 12ην Μαΐου 1813 παρὰ τὸ χωρίον *Μπάουτσεν*, ὀργανώσαντες δύο ἀμυντικὰς τοποθεσίας, τὴν μὲν κυρίαν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μπλαΐζερ, τὴν δὲ προκεχωρημένην ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σπρέε, μὲ τὸ χωρίον Μπάουτσεν ὡς κύριον σημεῖον στηρίγματος, ἑκάστην ἐξ αὐτῶν προβάλλουσαν τὸν σχετικὸν ποταμὸν ὡς κώλυμα, ἀμφοτέρας δὲ στηριζούσας τὸ μὲν δεξιόν των ἐπὶ ἑλῶν, τὸ δ' ἀριστερόν των ἐπὶ δασῶν.

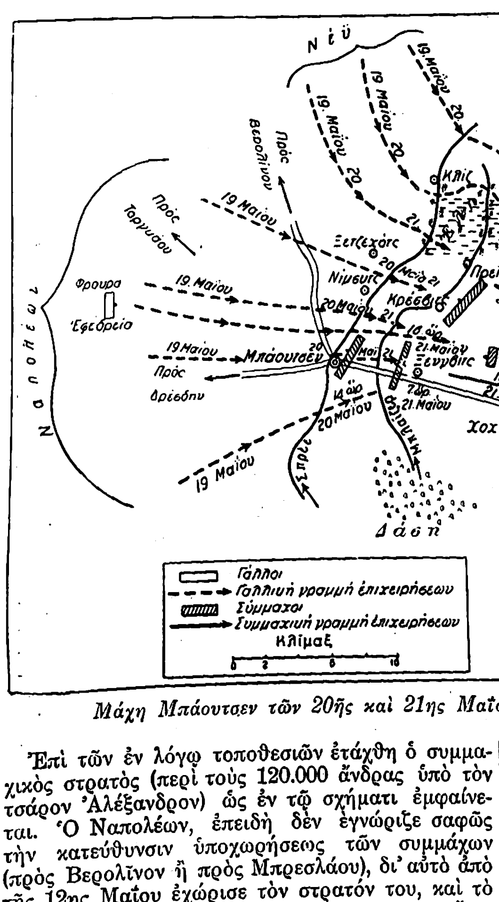


*Μάχη Μπάουτσεν τῶν 20ῆς καὶ 21ης Μαΐου 1813.*

Ἐπὶ τῶν ἐν λόγῳ τοποθεσιῶν ἐτάχθη ὁ συμμαχικὸς στρατὸς (περὶ τοὺς 120.000 ἄνδρας ὑπὸ τὸν τσάρον Ἀλέξανδρον) ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται. Ὁ Ναπολέων, ἐπειδὴ δὲν ἐγνώριζε σαφῶς τὴν κατεύθυνσιν ὑποχωρήσεως τῶν συμμάχων (πρὸς Βερολῖνον ἢ πρὸς Μπρεσλάου), δι' αὐτὸ ἀπὸ τῆς 12ης Μαΐου ἐχώρισε τὸν στρατόν του, καὶ τὸ μὲν μεῖζον μέρος (πέντε σώματα στρατοῦ, ἤτοι περὶ τὰς 100.000 ἄνδρες) ταχθὲν ὑπ' αὐτὸν κατηυθύνθη πρὸς τὸ Μπάουτσεν, δηλαδὴ πρὸς τὴν ὁδὸν τοῦ Μπρεσλάου, τὸ δὲ μικρότερον (τρία σώματα στρατοῦ, περὶ τὰς 50.000 ἄνδρες) ὑπὸ τὸν Νέϋ κατηυθύνθη διὰ Τοργκάου πρὸς Βερολῖνον. Ἅμα ὅμως τὴν 15ην Μαΐου ἐπληροφορήθη θετικῶς ὁ Ναπολέων ὅτι οἱ σύμμαχοι εἶχον ἐγκατασταθῆ περὶ τὸ Μπάουτσεν, διέταξεν ἀμέσως τὸν Νέϋ ν' ἀναστραφῇ, καὶ τότε κατέστρωσε τὸ σχέδιον τῆς ἐπιθέσεως διὰ μὲν τοῦ ὄγκου κατὰ τοῦ μετώπου τῶν συμμάχων, διὰ δὲ τοῦ στρατοῦ τοῦ Νέϋ κατὰ τοῦ δεξιοῦ συμμαχικοῦ πλευροῦ, μὲ τὴν ἐντολὴν προσπαθείας πρὸς ὑπερκέρασιν καὶ ἀποκοπὴν τῆς γραμμῆς ὑποχωρήσεως (τῆς μοναδικῆς διὰ τῆς στενωποῦ τοῦ Hochkirch). Κατόπιν τούτων, τὴν 19ην Μαΐου, ὁ γαλλικὸς στρατὸς προὐχώρησε κατὰ τῶν συμμάχων πρὸς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας κατευθύνσεις, σκοπεύων νὰ ἐπιτεθῇ τὴν μὲν 20ὴν κατὰ τῆς προκεχωρημένης γραμμῆς (τῆς τοῦ Σπρέε), τὴν δὲ 21ην κατὰ τῆς κυρίας γραμμῆς ἀμύνης (τῆς τοῦ Μπλαΐζερ), μὴ ἀρχίζων τὴν ἐπίθεσιν ἀπὸ τῆς 19ης, ἵνα τοιουτοτρόπως δώσῃ χρόνον εἰς τὸν Νέϋ νὰ φθάσῃ ἐντὸς τοῦ τακτικοῦ πεδίου. Ἡ ἐπίθεσις τῆς 20ῆς Μαΐου ἤρχισε περὶ τὴν μεσημβρίαν, ἵνα παρεμβληθῇ ἡ νὺξ 20—21 Μαΐου μέχρι τῆς ἐπιθέσεως τῆς κυρίας γραμμῆς ἀμύνης. Ἡ ἄκρα δεξιὰ φάλαγξ (ἡ τοῦ στρατηγοῦ Οὐντινό), προσεπέρασεν ἐσπευσμένως ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σπρέε, ἵνα προσελκύσῃ τὴν προσοχὴν τῶν συμμάχων πρὸς τὸ ἀριστερόν των. Ἐντὸς τοῦ ἀπογεύματος τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας ἅπαντα τὰ σώματα τοῦ μετώπου εἶχον προσπεράσει τὸν Σπρέε, καὶ τοιουτοτρόπως τὴν ἑσπέραν τῆς 20ῆς οἱ Γάλλοι ἦσαν κύριοι ἁπάσης τῆς προκεχωρημένης γραμμῆς, τοῦ χωρίου Μπάουτσεν συμπεριλαμβανομένου, καθ' ὃν χρόνον τὰ σώματα τοῦ Νέϋ εἶχον ἤδη φθάσει εἰς τὸ ἄκρον δεξιὸν τῶν συμμάχων, χωρὶς ὅμως νὰ ἐκδηλώσωσιν οὐδεμίαν πρόθεσιν. Τὴν 21ην Μαΐου ἡ ἐπίθεσις ἐπανελήφθη ἀπὸ τῆς χαραυγῆς, ὁπότε τὸ σῶμα τοῦ ἄκρου δεξιοῦ (στρατηγοῦ Οὐντινὸ) ἐπετέθη σθεναρῶς κατὰ τοῦ ἀριστεροῦ τῶν συμμάχων, ἀναγκασθέντων νὰ μεταφέρωσιν ἐσπευσμένως δυνάμεις ἐκ τοῦ δεξιοῦ των. Ὁ Ναπολέων, καθ' ὃν χρόνον τὸ κέντρον προὐχώρει, συνετόνισε τὰς προσπαθείας κατὰ τοῦ δεξιοῦ τῶν συμμάχων, διατάσσων ἐρρωμένην ἐπίθεσιν ὑπὸ τῶν σωμάτων τοῦ Νέϋ τῇ ἀμέσῳ ὑποστηρίξει ὑπὸ τοῦ ἀκραίου ἀριστεροῦ σώματος τοῦ μετώπου. Μέχρι τῆς 11ης ὥρας τὰ σώματα τοῦ Νέϋ εἶχον φθάσει εἰς τὸ ὕψος τοῦ χωρίου Πρέϊτιτς μὲ τὰ δύο σώματα τοῦ ἄκρου ἀριστεροῦ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μπλαΐζερ, διεισδύσαντα τοιουτοτρόπως μεταξὺ τῶν συμμαχικῶν στρατευμάτων, πρωσσικοῦ τοῦ Μπλύχερ καὶ ρωσικοῦ του Μπάρκλεϋ Τόλυ. Τὸ στράτευμα τοῦ Μπλύχερ εὑρέθη τότε εἰς πολὺ δύσκολον θέσιν, θὰ ἐκυκλοῦτο δὲ καὶ θὰ συνελαμβάνετο ἀφεύκτως αἰχμάλωτον, ἂν ὁ Νέϋ δὲν ἔδρα διστακτικῶς, καὶ τοῦτο, διότι, μὴ εὑρισκόμενος ἐν ἀμέσῳ ἐπαφῇ μετὰ τοῦ Ναπολέοντος καὶ μὴ γνωρίζων καλῶς τὴν κατάστασιν, ἐφοβήθη μήπως ἐμπλακῇ εἰς ἀγῶνα κατὰ πολὺ ἀνωτέρων δυνάμεων. Ὁπωσδήποτε τὸ δεξιὸν τῶν συμμάχων ἀπωθήθη πλήρως, χωρὶς ὅμως νὰ τὸ ἀποκοπῶσιν αἱ γραμμαὶ ὑποχωρήσεως. Περὶ τὴν 16ην ὥραν ἀνέλαβεν ὁ Ναπολέων τὴν ἀποφασιστικὴν ἐπίθεσιν διὰ τῶν σωμάτων τοῦ κέντρου καὶ διὰ τῆς φρουρᾶς, καὶ τότε οἱ σύμμαχοι ἐξεκένωσαν καὶ τὴν κυρίαν γραμμὴν ἀμύνης (τὴν τοῦ Μπλαΐζερ), ὑποχωρήσαντες ἐν τάξει πρὸς ἀνατολάς, ἅτε μὴ καταδιωχθέντες τὸ παράπαν ὑπὸ τῶν Γάλλων. Κατὰ τὴν μάχην ταύτην ἀπώλεσαν, οἱ μὲν Γάλλοι περὶ τοὺς 13.000 ἄνδρας, οἱ δὲ σύμμαχοι περὶ τοὺς 15.000. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπάουτσερ** (Bourchier), **Ἰάκωβος-Δαυΐδ.** Ἄγγλος δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Λίμερικ τῆς Ἰρλανδίας (1850 — 1920). Διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1892 ἀνταποκριτὴς τῶν «Times» τοῦ Λονδίνου εἰς τὰ Βαλκανικὰ κράτη καὶ ἐθεωρεῖτο εἷς τῶν βαθυτέρων μελετητῶν τῶν ζητημάτων τῶν κρατῶν τούτων καὶ τῶν λαῶν τῆς Βαλκανικῆς χερσονήσου. Κατὰ τὸ 1896—1898 ἀνεμείχθη ἐνεργῶς εἰς τὸ κρητικὸν ζήτημα καὶ ὑπερμυνθη θερμῶς τῶν δικαίων τῶν ἐπαναστατῶν καὶ κατόπιν ἐγένετο ἡμιεπίσημος σύμβουλος τοῦ ὑπάτου ἁρμοστοῦ Κρήτης πρίγκιπος Γεωργίου τῆς Ἑλλάδος. Τῷ 1903 ἐκηρύχθη ὑπὲρ τῶν ἐπαναστατησάντων Μακεδόνων καὶ τῷ 1911—1912 συνέβαλεν εἰς τὰς διαπραγματεύσεις περὶ τῆς συνάψεως τῆς ἑλληνοβουλγαρικῆς συμμαχίας. Καίτοι κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου κατέκρινε τὴν ἔξοδον τῆς Βουλγαρίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Κεντρικῶν Δυνάμεων, παρέμεινε μέχρι τέλους τῆς ζωῆς του θερμὸς φίλος τῶν Βουλγάρων, τοὺς ὁποίους ὑπεστήριζε πάντοτε διὰ τῶν τηλεγραφημάτων καὶ τῶν ἀνταποκρίσεών του ἐκ Σοφίας, ὅπου εἶχεν ἐγκατασταθῆ κατὰ τὰς τελευταίας δύο δεκαετηρίδας, ἀναδειχθεὶς ὁ κυριώτερος κῆρυξ τῶν βουλγαρικῶν ἀξιώσεων καὶ τοῦ προγράμματος τοῦ βουλγαρικοῦ μακεδονικοῦ κομιτάτου. Λόγῳ τοῦ μεγάλου δημοσιογραφικοῦ του κύρους καὶ τῆς ἐμπιστοσύνης τὴν ὁποίαν ἐνέπνεεν εἰς τὸ ἀγγλικὸν κοινόν, τοὺς πολιτικοὺς καὶ τοὺς διπλωματικοὺς κύκλους, προσέφερε πολλάκις μεγίστας ὑπηρεσίας εἰς τὴν Βουλγαρίαν. Ἀπέθανεν ἐν Σόφιᾳ καὶ ἐτάφη μετὰ μεγάλων τιμῶν ἐν τῷ μοναστηρίῳ τοῦ Ρίλο. Μ. Δ. Ε.

**Μπάπ**, ἢ **Ἐλ-Μπὰπ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας, ἕδρα ὁμωνύμου διοικήσεως τῆς χώρας τῶν Ἀλαουϊτῶν (Χαλεπίου), εἰς ἀπόστασιν 38 χλμ. Α τῆς πόλεως τοῦ Χαλεπίου. Κάτοικοι 5.700 περίπου. Ν. Μ.

**Μπάπ**, ***Σεΐτ-Ἀλῆ-Μιρζᾶ-Μωχάμμετ.*** Πέρσης αἱρεσιάρχης, ἱδρυτὴς τῆς αἱρέσεως τοῦ βαβισμοῦ (βλ. *Βάβ*).

**Μπαπὼμ** (Bapaume) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πὰ-ντὲ-Καλαί, κειμένη 22 χλμ. πρὸς Ν.ΝΑ. τοῦ Ἀρράς. Εἶναι γνωστὴ διότι ὑπῆρξε κατὰ καιροὺς θέατρον διαφόρων μαχῶν (βλ. κατωτ.). Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Βορρᾶ, τὰς ἐκτελεσθείσας κατὰ τὴν δευτέραν περίοδον τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου 1870—1871, θελήσας ὁ Γάλλος στρατηγὸς Φαιντέρμπ (Faidherbe) νὰ βοηθήσῃ τὴν ὑπὸ τῶν γερμανικῶν στρατευμάτων τοῦ στρατηγοῦ Μαντόϋφελ κυκλωθεῖσαν Περόν, προὐχώρησε τὴν 2αν Ἰανουαρίου 1871 διὰ δύο σωμάτων στρατοῦ καὶ μιᾶς μεραρχίας ἱππικοῦ ἐκ τῆς περιοχῆς τοῦ Ἀρρὰς κατευθυνθεὶς πρὸς νότον. Βορείως τῆς *Μπαπὼμ* συνήντησε γερμανικὸν προκαλυπτικὸν στράτευμα ἐκ μιᾶς μεραρχίας καὶ δύο μεραρχιῶν ἱππικοῦ, ὅπερ ἀπώθησεν ἐντὸς τῆς ἡμέρας ταύτης πρὸς τὴν πόλιν, τὴν ἐκ τῶν προτέρων ἀμυντικῶς ὀργανωθεῖσαν. Τὴν 3ην Ἰανουαρίου ἐπανελήφθη ὁ ἀγών, καὶ τότε οἱ Γάλλοι κατώρθωσαν νὰ ὑπερκεράσωσι τὴν Μπαπώμ, ἀπειλήσαντες τὰς γραμμὰς ὑποχωρήσεως τῶν Γερμανῶν, ὁπότε, εὑρεθέντες οὗτοι ὑπὸ τοιαύτην κατάστασιν, ἐξεκένωσαν τὴν πόλιν καὶ ὑπεχώρησαν πρὸς νότον κατὰ τὴν νύκτα 3—4 Ἰανουαρίου, χωρὶς νὰ καταδιωχθῶσιν ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἀναστραφέντων εἰς τὰς περὶ τὴν Ἀρρὰς θέσεις των. Ἡ μάχη αὕτη τῆς Μπαπὼμ ἔχει τὸ σπουδαῖον χαρακτηριστικὸν ὅτι, καίτοι οἱ Γάλλοι ἦσαν οἱ νικηταί, μολαταῦτα ἡ νίκη των διαμφισβητεῖται ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, καθ' ὅσον οὔτε ἐξεμεταλλεύθησαν τὴν παροδικὴν νίκην των, οὔτε ἐξεπλήρωσαν τὸν σκοπὸν δι' ὃν διεξήχθη ἡ μάχη, δηλαδὴ τὸν τῆς ἀπελευθερώσεως τῆς Περόν.

Κατὰ τὴν πρὸς Πικαρδίαν συμμαχικὴν ἐπίθεσιν τοῦ θέρους 1918, διεξήχθη τὰς 26—29 Αὐγούστου σφοδρὸς ἀγὼν ὑπὸ τῆς 3ης ἀγγλικῆς στρατιᾶς ἐναντίον τῆς 17ης γερμανικῆς τοιαύτης πρὸς ἐξάλειψιν μικρᾶς τινος ἐξεχούσης τοῦ γερμανικοῦ μετώπου, σχηματιζομένης περὶ τὴν Μπαπώμ, ἀπολήξας εἰς τὴν κατάληψιν τῆς πόλεως ταύτης τὴν 29 Αὐγούστου 1918 (βλ. λ. *Πικαρδία* [Στρατ. Ἱστορ.]). Ν. Θ. Κ.

**μπὰρ** (τὸ) (bar). Λέξις ἀγγλικὴ σημαίνουσα ἐν τοῖς ἄλλοις φράγμα καὶ χρησιμοποιουμένη διεθνῶς ὡς ὀνομασία εἰδικῶν τινων ποτοπωλείων, ἐκ τῆς ἐπικρατούσης ἐν αὐτοῖς συνηθείας νὰ τοποθετοῦνται τὰ πρὸς πώλησιν εἴδη ἐπὶ ἐπιμήκους ὑψηλοῦ μπάγκου, διαχωρίζοντος ἐν εἴδει φραγμοῦ τὸ μέρος ὅπου μένει ὁ πωλητὴς ἀπὸ τὸ μέρος τῶν πελατῶν. Συνήθως εἰς τὰ καταστήματα ταῦτα τὰ ποτὰ σερβίρονται εἰς τὸν μπάγκον, τῶν καταναλωτῶν ἱσταμένων ἐπὶ ποδὸς ἢ καθημένων ἐπὶ ὑψηλῶν πρὸ αὐτοῦ καθισμάτων, ἄνευ τραπεζίων. Ὁ ὅρος ἐπεξετάθη κατόπιν καὶ εἰς τὰ ἐν γένει ποτοπωλεῖα καὶ ζυθοπωλεῖα, ἀκόμη δὲ καὶ εἰς καταστήματα ὅπου προσφέρονται κρύα φαγητὰ καὶ ὑπάρχει καὶ ἑστιατόριον. Ἐν Εὐρώπῃ καὶ Ἀμερικῇ κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας τὰ μπὰρ ηὐξήθησαν μεγάλως, ἰδίως τὰ σερβίροντα ἐπὶ ποδὸς εἴδη καφφενείου καὶ κρύα φαγητά, ἀντικαταστήσαντα κατὰ μέγα μέρος τὰ συνήθους τύπου καφφενεῖα καὶ ζυθοπωλεῖα. Μ. Δ. Ε.

**μπὰρ** (τό). Λέξις περσικὴ σημαίνουσα χώρα καὶ ἀπαντῶσα ὡς κατάληξις εἴς τινα τοπωνύμια: *Ζαρζιμπάρ, Μαλαμπὰρ* κτλ. Α. Δ.

**μπὰρ** (τὸ) (bar) *[Φυσ.—Μετεωρολ.]*. Μονὰς πιέσεως ἢ δυνάμεως, ἥτις ἰσοῦται πρὸς 1.000.000 βαρίδας (βλ. λ.) Κατά τινας ἡ μονὰς αὕτη ἐν τῷ συστήματι C. G. S. ἀντιστοιχεῖ πρὸς αὐτὴν τὴν βαρίδα. Ἐπειδὴ δὲ τὸ μπὰρ εἶναι λίαν μεγάλη μονὰς διὰ τὰς πρακτικὰς ἐφαρμογάς, διὰ τοῦτο οἱ μετεωρολόγοι χρησιμοποιοῦσι τὸ *μιλλιμπὰρ* (βλ. λ.) ὅπερ ὀρθότερον δέον νὰ ἀποδίδεται διὰ τοῦ ὅρου *χιλιοβαρίς* ἢ *χιλιοστόβαρον* καὶ ἂν ὁ ὅρος μπὰρ ἀποδοθῇ διὰ τοῦ βαρίς, τότε δέον νὰ καλῆται χιλιοστοβαρίς.

Ἡ κανονικὴ ἀτμοσφαιρικὴ πίεσις ἰσοῦται πρὸς 1.013300 βαρίδας ἢ 10133 μπὰρ ἢ 1103.3 μιλλιμπάρ.

Ἡ εἰσαγωγὴ τοῦ μπὰρ ἐν τῇ πρακτικῇ μετεωρολογίᾳ ὀφείλεται εἰς τὸν V. Bjerknes, παρὰ τὰς σοβαρὰς ἀντιρρήσεις τοῦ Ἀμερικανοῦ μετεωρολόγου Μακιώντι ὅτι ὁ ὅρος οὗτος ἐχρησιμοποιήθη

Digitized by Google

...ρηγουμένως ὑπὸ τῶν χημικῶν καὶ φυσικῶν. θ. θ. φ.

**Μπὰρ** (Bar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας (Σοβιετικῆς Ἑνώσεως) ἐν τῷ Οὐκρανικῷ κυβερνείῳ τῆς Ποδολίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ρόφ, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σμερίνκα—Ὄκνιτζα. Κάτ. 22.500, Οὐκρανοὶ καὶ Ἰσραηλῖται. Ὀνομαζομένη ἄλλοτε *Ρόφ*, ἐκ τοῦ διαρρέοντος αὐτὴν ποταμοῦ, ὑπέστη πολλὰς κατὰ τὸν μεσαίωνα καταστροφὰς καὶ δηώσεις ἐκ μέρους τῶν Τατάρων. Τῷ 1537 περιῆλθεν εἰς τὴν κυριότητα τῆς βασιλίσσης τῆς Πολωνίας Μπόνα Σφόρτζα, συζύγου τοῦ Σιγισμούνδου Α', ἡ ὁποία ἵδρυσεν ἐκεῖ ἀνάκτορον ὀνομασθὲν *Μπάρ*, ἐκ τῆς ἰταλικῆς πόλεως Μπάρι. Περὶ τὸ ἀνάκτορον τοῦτο ἐσχηματίσθη βαθμηδὸν ἀνθοῦσα πόλις, ἥτις κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα πολλάκις ὑπέφερεν ἐκ τῶν πρὸς τοὺς Τούρκους καὶ τοὺς Κοζάκους πολέμων τῆς Πολωνίας. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ἐγένετο ὀνομαστὴ ἕνεκα τοῦ συνομολογηθέντος ἐν αὐτῇ φερωνύμου συνασπισμοῦ (βλ. κατωτ.). Χ. Γ.

—**Μπάρ, *συνασπισμὸς*** — *[Ἱστορ.]*. Ἕνωσις Πολωνῶν πατριωτῶν ἱδρυθεῖσα τῷ 1768 ἐν Μπάρ, μετὰ τὴν ἐκλογὴν ὡς βασιλέως τῆς Πολωνίας τοῦ Στανισλάου - Αὐγούστου Πονιατόφσκι, ὅστις ἦτο πιστὸν ὄργανον τῶν ρωσικῶν συμφερόντων, μὲ σκοπὸν τὴν προστασίαν τῆς ἐθνικῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Πολωνίας, ἐναντίον τῶν ξενικῶν ἐπεμβάσεων. Ὁ συνασπισμὸς οὗτος, τὸν ὁποῖον ἐβοήθησαν καὶ πολλοὶ ξένοι καὶ ἰδίως Γάλλοι ἀξιωματικοὶ ὑπὸ τὸν Ντυμουριέ, δὲν ἠδυνήθη να ἐπιτύχῃ τοῦ σκοποῦ του παρ' ὅλον τὸν ἡρωϊσμὸν τὸν ὁποῖον ἐπέδειξαν οἱ ἀποτελοῦντες αὐτόν, ἀσύντακτοι καὶ πλημμελῶς ὡπλισμένοι, Πολωνοί. Ὑποστάντες οὗτοι τὴν ἐπίθεσιν τῶν τακτικῶν στρατευμάτων τῆς Ρωσίας, τῆς Πρωσσίας καὶ τῆς Αὐστρίας, αἵτινες ἐν τῷ μεταξὺ εἶχον συνομολογήσει τὴν συνθήκην τοῦ διαμελισμοῦ τῆς Πολωνίας (1772), ἠναγκάσθησαν μετὰ συνεχεῖς ἀποτυχίας νὰ διαλυθῶσι (βλ. καὶ λ. *Πολωνία* [Ἱστορ.]). Χ. Δ.

**Μπὰρ** (Bar) ***κομιτεία*** ἢ ***δουκᾶτον*** *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Μπαρρουά*).

—**Μπὰρ** (Bar), ***δοὺξ τοῦ*** —· βλ. λ. *Λωρραίνης οἶκος*.

**Μπὰρ** (Barre) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Οὐάσιγκτων τῆς πολιτείας Βέρμον. Ἔχει ἀξιόλογον ἐξαγωγὴν γρανιτολίθου, χυτήρια κλπ. Κάτ. 10.734. Χ. Δ.

**Μπὰρ** (Burr), ***Ἀαρών***. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπὲρ* Ἀαρών).

—**Μπὰρ** (Bar), ***Ἀδριανὸς-Αἰμέ, κόμις τοῦ*** —. Γάλλος στρατηγὸς (1783—1861). Κατετάχθη ἐθελοντὴς τῷ 1805 καὶ μετασχὼν τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Πορτογαλίας καὶ τῆς Γερμανίας ἐκέρδισε ταχέως τοὺς πρώτους βαθμοὺς τοῦ ἀξιωματικοῦ. Κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μπάουτζεν (1813), τραυματισθεὶς βαρέως ᾐχμαλωτίσθη, κατὰ τὴν μάχην δὲ τοῦ Βατερλὼ διώκει ἐν σύνταγμα τῆς γραμμῆς. Μετέσχε κατόπιν τῆς ἐκστρατείας τῆς Ἰσπανίας τοῦ 1823. Ἀλλ' ἐκεῖ ὅπου ἰδίως διεκρίθη ὁ Μπὰρ ὑπῆρξεν ἡ ἐν Ἀφρικῇ δρᾶσίς του ἀπὸ τοῦ 1830 καὶ ἐφεξῆς. Φέρων τότε βαθμὸν ἀντιστρατήγου, κατενίκησε τὸν Ἀβδ-ἐλ-Καδὲρ πρὸ τοῦ Σερσὲλ καὶ ἀντικατέστησε κατ' ἐπανάληψιν τὸν γενικὸν διοικητὴν τοῦ Ἀλγερίου στρατηγὸν Μπυζώ. Ἀποστρατευθεὶς τῷ 1848 ἐξελέγη μέλος τῆς νομοθετικῆς συνελεύσεως ὡς ἀντιπρόσωπος τοῦ νομοῦ τοῦ Σηκουάνα (1849), μετὰ τὴν ἄνοδον δὲ τοῦ Ναπολέοντος Γ' εἰς τὸν θρόνον διωρίσθη γερουσιαστὴς (1852). —Ω.

**Μπὰρ** (Bahr), ***Ἕρμανν***. Αὐστριακὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1863 ἐν Λίντς. Ἐσπούδασε φιλοσοφίαν, νομικὰ καὶ πολιτικὰς ἐπιστήμας, διετέλεσε συντάκτης διαφόρων ἐφημερίδων καὶ περιοδικῶν ἐν Βιέννῃ καὶ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν κυριωτέρων πολεμίων τοῦ νατουραλισμοῦ. Ὁ Μπάρ, ὅστις θεωρεῖται ὡς εἷς ἐκ τῶν ἡγετῶν τῆς συγχρόνου φιλολογικῆς κινήσεως ἐν Αὐστρίᾳ, διακρίνεται πρὸ παντὸς διὰ τὸ πλῆρες λεπτότητος κριτικὸν του πνεῦμα. Μεταξὺ ἄλλων ἔγραψε καὶ τὰ ἑξῆς: «Κριτικὴ τῆς συγχρόνου ἐποχῆς» (1890), «Ὑπερνίκησις τοῦ νατουραλισμοῦ» (1891), «Μπαϊρὸϋτ» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῆς συζύγου του, 1912), «Ἐξπρεσσιονισμὸς» (1916), «Οἱ νέοι ἄνθρωποι» (1888), «Τὸ μέγα ἁμάρτημα (1889), «Ἡ μητέρα» (1891), «Ὁ ἀθλητὴς» (1899), «Ὁ ἀπόστολος» (1901), «Ἡ καλὴ σχολὴ» (1890), «Τὸ θέατρον» (2 ἔκδ. 1897), «Fin de Siècle» (1890), «Ταξίδι εἰς Ρωσίαν» (1891), «Ἡ ὡραία γυναῖκα» (1899), «Ἀναγέννησις» (1897), «Θέατρον τῆς Βιέννης» (1899), «Ὁ κράμπους» (1901), «Τὸ κοντσέρτο» (1909) κ.λ.π., ὡς καὶ τὴν αὐτοβιογραφίαν «Αὐτοπροσωπογραφία» (1923). Γ. Ε. Κ.

—**Μπάρ**, ἢ **Μπάερ** (Bahr ἢ Baehr), ***Κάρολος-Ἰωάννης***. Γερμανὸς ζωγράφος καὶ συγγραφεύς. Ἐγεννήθη ἐν Ρίγᾳ τῷ 1801, ἀπέθανε δ' ἐν Δρέσδῃ τῷ 1869. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ματτέϊ, επεσκέφθη πολλάκις τὴν Ἰταλίαν καὶ διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1840 καθηγητὴς ἐν τῇ καλλιτεχνικῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Δρέσδης. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Δάντης καὶ ὁ Βιργίλιος εἰς τὰς πύλας τῆς κολάσεως», «Οἱ ἀναβαπτισταὶ τοῦ Μύνστερ», «Οἱ Φίννοι μάντεις προλέγοντες εἰς Ἰβὰν τὸν Τρομερὸν τὸν θάνατόν του», «Ὁ θάνατος τοῦ Σίκιγκεν». Ὁ Μπὰρ συνέγραψε καὶ κριτικὰς μελέτας, ἐν αἷς «Περὶ τῆς θείας κωμῳδίας τοῦ Δάντου» καὶ «Διδασκαλία περὶ τῶν χρωμάτων τοῦ Γκαῖτε». Ι. Μ. Π.

— **Μπὰρ** (Bar), ἢ ***Ντεμπὰρ*** (Debar), ***Ἰωάννης-Πέτρος***. Γάλλος πλαστογράφος γενεαλογικῶν τίτλων, γεννηθεὶς τῷ 1630 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ φυλακῇ τῆς Βαστίλλης τῷ 1708. Συνεργασθεὶς μετὰ τοῦ γενεαλόγου Μπουσὲ εἰς ἐρεύνας ἀναφερομένας εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ οἴκου τῶν Ντὲ λὰ Τούρ, ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ καρδιναλίου Μπουϊγιόν, ἐπέδειξε πολλὴν ἱκανότητα περὶ τὴν ἀνεύρεσιν γενεαλογικῶν στοιχείων καὶ κατέκτησεν ἀμέριστον τὴν ἐκτίμησιν τόσον τοῦ καρδιναλίου, ὅσον καὶ τοῦ Μπουσέ. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ τελευταίου (1684) προσεκόμισεν εἰς τὸν καρδινάλιον ἓν ἀπόσπασμα ἔγγραφον τοῦ χαρτοφύλακος τῆς Μπριουύτ, τὸ ὁποῖον ἐκολάκευεν ἐξαιρετικῶς τὸν οἶκον Μπουϊγιόν, ἀνάγον ἀπ' εὐθείας τὴν καταγωγὴν αὐτοῦ, μέσῳ τοῦ οἴκου Ντὲ λὰ Τούρ, εἰς τοὺς δοῦκας τῆς Γουϊέννης, κόμιτας τῆς Ὠβέρνης. Τὸ ἔγγραφον τοῦτο ὑποβληθὲν ὑπὸ τὴν κρίσιν τῶν ἱκανωτέρων παλαιογράφων τῆς ἐποχῆς, ἐκρίθη ἀνεπιφυλάκτως ὡς αὐθεντικόν. Βραδύτερον ἐν τούτοις ἀπεδείχθη ὅτι ἦτο ἐξ ὁλοκλήρου πλαστὸν κατασκεύασμα τοῦ Μπάρ, ὅστις παραπεμφθεὶς εἰς δίκην, καθ' ἣν ἀπεδείχθησαν καὶ ἄλλαι παρόμοιαι πλαστοποιήσεις αὐτοῦ, κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἡ ποινή του μετετράπη εἰς ἰσόβια δεσμά, ἐσυντόμευσεν ὅμως ὁ ἴδιος τὰς ἡμέρας του θραύσας τὴν κεφαλήν του ἐπὶ τῶν τοίχων τῆς φυλακῆς. Ἡ δικογραφία καὶ τὰ κατασκευασθέντα ἢ παραποιηθέντα ὑπ' αὐτοῦ ἔγγραφα φυλάσσονται εἰς τὰ ἀρχεῖα τοῦ γαλλικοῦ κράτους. —Ω.

—**Μπὰρ** (Bar), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος φὸν*** —. Γερμανὸς νομομαθὴς (1836—1913), γεννηθεὶς ἐν Ἀννοβέρῳ. Διετέλεσε τακτικὸς καθηγητὴς εἰς πολλὰ πανεπιστήμια τῆς Γερμανίας καὶ μέλος τοῦ Ράϊχσταγ (1890—1893). Κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Τὸ διεθνὲς ἰδιωτικὸν καὶ ποινικὸν δίκαιον» (1862· εἰς τὴν δευτέραν ἔκδοσιν ὡς: «Θεωρία καὶ πρᾶξις τοῦ ἰδιωτικοῦ διεθνοῦς δικαίου» 1889, τόμ. 2), «Δίκαιον καὶ ἀπόδειξις εἰς τὰ ὁρκωτὰ δικαστήρια» (1865), «Δίκαιον καὶ ἀπόδειξις ἐν τῇ πολιτικῇ δίκῃ» (1867), «Αἱ ἀρχαὶ τοῦ ποινικοῦ δικαίου» (1869), «Ἡ θεωρία περὶ τῆς αἰτιώδους συναφείας ἐν τῷ δικαίῳ» (1871), «Τὸ περὶ ὑποθηκῶν δίκαιον ἐν Ἀννοβέρῳ» (1871), «Ἐγχειρίδιον τοῦ γερμανικοῦ ποινικοῦ δικαίου» (1882), «Τὸ κράτος καὶ ἡ καθολικὴ Ἐκκλησία ἐν Πρωσσίᾳ» (1883), «Τὸ ἀστικὸν δικονομικὸν δίκαιον τῆς Γερμανίας» (2 ἔκδ. 1890), «Ἐγχειρίδιον τοῦ διεθνοῦς ἰδιωτικοῦ καὶ ποινικοῦ δικαίου» (1892), «Νόμος καὶ ἐνοχὴ ἐν τῷ ποινικῷ δικαίῳ» (1906 — 1909, τόμοι 3). Γ. Ε. Κ.

—**Μπὰρ *Μπρίκα***. Νεστοριανὸς ἐπίσκοπος τῆς Νισίβιος (βλ. λ. *Ἐβεδ*-Ἰησοῦ).

— **Μπὰρ** (Bar), ***Παῦλος***. Γάλλος μαιευτήρ, γεννηθεὶς τῷ 1853. Τῷ 1876 διετέλεσεν ἐσωτερικὸς ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων Παρισίων καὶ τῷ 1881 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ, γενόμενος ἅμα καὶ ἐπιμελητής. Ἀργότερον ἐγένετο καθηγητὴς τῆς μαιευτικῆς ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ Παρισίων. Ἔγραψε: «Un cas d'eclampsie», «Embryotomie céphalique», «Notes d'obstétrique», «Influence de la position de la femme sur la forme, l'inclination et les dimentions du bassin» κλπ. Ο. Ρ.

**μπάρα** (ἡ)· βλ. λ. *μπάρρα*.

**Μπάρα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πενταλόφου τῆς ἐπαρχίας Ὀρεστιάδος τοῦ νομοῦ Ἔβρου. Κάτ. (1928) 36 Χ. Δ.

**Μπαρὰ** (Bara) *[Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὸς σταθμὸς τοῦ Κορδοφὰν ἐν τῷ ἀνατολικῷ Σουδάν, ὁπόθεν διέρχονται ἀναγκαστικῶς τὰ καραβάνια τὰ διεξάγοντα τὰς μεταξὺ Νείλου καὶ Κορδοφὰν συγκοινωνίας. Παρ' αὐτὸν συνήφθη τῷ 1821 μάχη, κατόπιν τῆς ὁποίας οἱ Αἰγύπτιοι ἐγένοντο κύριοι τοῦ Κορδοφάν. Χ. Δ.

**Μπαρὰ** (οἱ) (Bara). Λαὸς τοῦ μεσημβρινοῦ τμήματος τῆς Μαδαγασκάρης, κατοικῶν ἐπὶ ὀροπεδίου, μέσου ὕψους 600 περίπου μέτρων, κειμένου κάτωθεν τῆς κεντρικῆς ὀροσειρᾶς καὶ περιοριζομένου ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Τσιμαντάο πρὸς Β., τοῦ 24° νοτίου παραλλήλου πρὸς Ν. καὶ τῶν παραλιακῶν ὀροσειρῶν πρὸς Α. καὶ Δ. Οἱ Μπαρὰ εἶναι ὑψηλοῦ ἀναστήματος μὲ δέρμα βαθύχρουν καὶ κόμην οὔλην, προσομοιάζουσι δὲ πρὸς τὸν ἀφρικανικὸν τύπον. Ζῶσιν ἀνεξάρτητοι, κατανεμημένοι εἰς μικρὰς ὁμάδας καὶ εἶναι ἐλάχιστα πεπολιτισμένοι, ἀποφεύγοντες τὴν μετὰ τῶν Εὐρωπαίων ἐπαφήν. Χ. Δ.

**Μπαρὰ** (Bara), ***Ἰούλιος***. Γάλλος διακεκριμένος νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1835—1900). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Βρυξελλῶν, τῷ δὲ 1862 ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Τουρναί, διακριθεὶς ὡς ἔξοχος ῥήτωρ. Τῷ 1865 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης. Βραδύτερον ἐγένετο ἐκ νέου ὑπουργὸς καὶ παρέμεινε τοιοῦτος μέχρι τοῦ 1884.

— **Μπαρὰ** (Barat), ***Νικόλαος***. Γάλλος ἑβραϊστὴς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1706. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ ἑβραιολόγῳ Ριχάρδῳ Σιμὸν καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Π. Τομασσὲν εἰς τὸ «Glossarium universale hebraicum», τοῦ ὁποίου τὴν δευτέραν ἔκδοσιν ἐδημοσίευσε βραδύτερον μόνος. Ἐπίσης συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ντυαμὲλ εἰς τὴν ἔκδοσιν τῆς Βίβλου (1706). Διετέλεσε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθη τῷ 1714 τὸ ἔργον του «Nouvelle bibliothèque choisie». Χ. Δ.

— **Μπαρὰ** (Bara), ***Φραγκῖσκος - Ἰωσήφ***. Γάλλος στρατιώτης γεννηθεὶς ἐν Παλαιζῷ (1779—1793). Δεκατριετὴς κατετάχθη εἰς τὸν δημοκρατικὸν στρατὸν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὰς μάχας ἐν τῇ ἐπαναστατημένῃ Βανδέᾳ εἰς τὰς τάξεις τῶν Κυανῶν. Καταπληκτικῆς διὰ τὴν ἡλικίαν του γενναιότητος, ἐδέχθη νὰ συμπεριληφθῇ μεταξὺ τῶν τυμπανιστῶν, οὓς ὁ διοικητής του ἐσκόρπισεν εἰς διάφορα σημεῖα ὅπως κρούοντες τὰ τύμπανα δώσωσι τὴν ἐντύπωσιν ὅτι ἀφικνοῦνται σοβαραὶ ἐνισχύσεις ἀπὸ διάφορα σημεῖα. Διὰ τοῦ μέτρου τούτου ὁ διοικητὴς προσεδόκα ὅτι θὰ διεσκορπίζοντο πολυάριθμοι ἐπαναστάται χωρικοί, οἵτινες εἶχον περικυκλώσει ἓν τάγμα τοῦ συντάγματός του. Τὸ στρατήγημα ἐπέτυχε καὶ αἱ ἀνοργάνωτοι μᾶζαι τῶν χωρικῶν ὑπεχώρησαν. Κατὰ σύμπτωσιν, φεύγοντες οἱ στασιασταὶ διῆλθον ἀπὸ τὸ σημεῖον ἐκεῖνο, ὅπου ὁ Μπαρὰ προχωρῶν ἀτάραχος ἔκρουε τὸ τύμπανόν του. Τὸν ἐκύκλωσαν καὶ συγκινηθέντες ἐκ τῆς νεότητός του καὶ τοῦ θάρρους του προσεπάθησαν νὰ τὸν διάσουν ὅπως ζητωκραυγάσῃ ὑπὲρ τῆς βασιλείας. Εἰς τὴν πρόσκλησιν τῶν ὁ γενναῖος Μπαρὰ ἐξητωκραύγασεν ὑπὲρ τῆς δημοκρατίας, ὅτε σφαιρῶν σφαιρῶν τὸν ἔρριψε νεκρὸν ἐπὶ τοῦ τυμπάνου του, τὸ ὁποῖον δὲν ἔπαυσε μέχρι τῆς τελευταίας στιγμῆς νὰ κρούῃ. Οἱ ἐπαναστάται βλέποντες τὸ νεαρὸν πτῶμα τοῦ Μπαρὰ συνῆλθον καὶ τεθλιμμένοι διὰ τὴν πρᾶξίν των ἤγειραν κλαίοντες τὸν νεκρὸν καὶ σκεπασμένον με ἄνθη τὸν ἀπέστειλαν εἰς τὸ στρατόπεδον τῶν Κυανῶν. Ἡ γαλλικὴ συνέλευσις ἐδέχθη ὅπως μεταφερθῇ ὁ νεκρὸς τοῦ Μπαρὰ εἰς τὸ Πάνθεον καὶ ἀποσταλῇ εἰς τὰ σχολεῖα χαλκογραφία παριστάνουσα τὸν θάνατόν του. Ὁ Δαβὶδ ντ' Ἀνζὲ ἐξέθεσεν ὡραιότατον ἄγαλμα εἰς τὴν ἔκθεσιν τοῦ 1839 παριστάνον τὸν Μπαρὰ ἐκπνέοντα, ὁ δῆμος τῶν Παρισίων ἐκόσμησε μὲ τὸ ὄνομά του μίαν τῶν ὁδῶν τῆς πόλεως καὶ ἡ ἰδιαιτέρα πατρίς του ἤγειρε τῷ 1881 τὸν ἀνδριάντα του. Θ. Β.

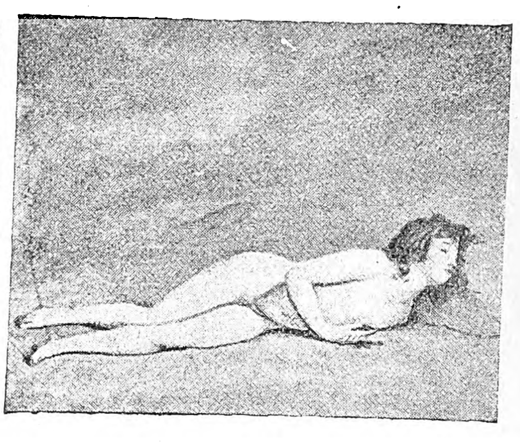

*Ὁ θάνατος τοῦ Μπαρά.*
[Πίναξ τοῦ Λουδ. Δαυΐδ, ἐν τῷ Μουσείῳ τῆς Ἀβινιόν.]

**Μπαραβαί**. Γλωσσικὴ ὁμὰς φυλῆς τῆς τροπικῆς Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Βακουάσοι*).

**Μπαραβὰς** (Baravas), ***Μιχαήλ***. Οὔγγρος ζωγράφος (1810—1898). Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος. Ἐξεικόνισε πάσας σχεδὸν τὰς πολιτικὰς προσωπικότητας τῆς δυαδικῆς μοναρχίας κατὰ τὸ μέσα τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Ἔργα του ἀπόκεινται εἰς πλεῖστας ἰδιωτικὰς καὶ δημοσίας πινακοθήκας. Ι. Μ. Π.

**Μπαραγκαὶ ντ' Ἰλλιὲ** (Baraguay d' Hilliers), ***Ἀχιλλεὺς κόμις*** —. Γάλλος στρατάρχης, υἱὸς τοῦ *Λουδοβίκου Μπαραγκαὶ* (1795—1878). Κατὰ τὴν μάχην τῆς Λειψίας (1813) ἀπώλεσε τὴν ἀριστερὰν παλάμην. Τῷ 1823 ἐπολέμησεν εἰς Ἰσπανίαν, τῷ δὲ 1830 εἰς Ἀλγέριον, ὁπότε προήχθη εἰς συνταγματάρχην. Ἀφοῦ διώκησεν ἐπὶ μακρὸν τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Σαὶν-Σύρ, μετέθη τῷ 1841 εἰς Ἀλγέριον καὶ προήχθη εἰς ὑποστράτηγον (1843). Ἐκλεγεὶς βουλευτὴς τοῦ νομοῦ Ντούμπς εἰς τὴν συντακτικὴν ἐθνοσυνέλευσιν τοῦ 1848 καὶ

Digitized by Google

τὴν νομοθετικὴν τοῦ 1849, συνετάχθη μετὰ τοῦ προέδρου Λουδοβίκου, Ναπολέοντος Βοναπάρτου ὅστις ἀπέστειλεν αὐτὸν ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ γαλλικοῦ ἐκστρατευτικοῦ σώματος τῆς Ῥώμης (1849), εἶτα δὲ τὸν διώρισε διοικητὴν τοῦ στρατοῦ τῶν Παρισίων. Ἐπὶ τῆς αὐτοκρατορίας διῴκησε τὸ εἰς Βαλτικὴν ἀποσταλὲν ἐκστρατευτικὸν σῶμα, κατέλαβε τὸ Μπόμαρσουντ (1854), προήχθη εἰς στρατάρχην τῆς Γαλλίας καὶ ἐγένετο μέλος τῆς συγκλήτου. Κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἰταλίας κατέλαβε τὸ Μαλενιάνο (1859). Διαρκοῦντος τοῦ Γαλλοπρωσσικοῦ πολέμου (1870) ἦτο διοικητὴς τῶν Παρισίων, μετὰ δὲ τὴν γαλλικὴν ἧτταν προήδρευσε τῆς ἐπιτροπῆς διὰ τὴν εἰρήνην.

—**Μπαραγκαὶ ντ' Ἰλλιὲ** (Baraguay d'Hilliers), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος στρατιωτικὸς (1764—1812). Τῷ 1789 ὑπηρέτει ὡς ὑπολοχαγὸς εἰς τὸ σύνταγμα τῆς Ἀλσατίας. Ἀσπασθεὶς τὰς ἀρχὰς τῆς ἐπαναστάσεως μετέσχε τῶν ἐν τῷ Παλατινάτῳ ἐπιχειρήσεων, καθ' ἃς τοσαύτην ἐπεδείξατο ἱκανότητα, ὥστε προήχθη ταχέως εἰς ἀρχηγὸν τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ τοῦ Ῥήνου καὶ εἶτα εἰς ὑποστράτηγον (1793). Ὑπηρετῶν ὑπὸ τὸν Κυστὶν συνελήφθη, ὅτε ὁ τελευταῖος οὗτος περιέπεσεν εἰς δυσμένειαν (1793), ἀθῳωθεὶς ὅμως ὑπὸ τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου ἀπεφυλακίσθη μετὰ τὴν 9 Θερμιδὼρ καὶ ἐπανῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν τῷ 1795 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας διέπρεψε πολεμῶν ὑπὸ τὸν Βοναπάρτην (1796—1797) καὶ προήχθη εἰς στρατηγόν. Μετέχων τῆς εἰς Αἴγυπτον ἐκστρατείας ἀνέλαβε μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Μάλτας νὰ μεταφέρῃ εἰς Γαλλίαν μέρος τῶν ἐν τῇ νήσῳ ταύτῃ εὑρεθέντων θησαυρῶν, συλληφθεὶς ὅμως καθ' ὁδὸν ὑπὸ τῶν Ἄγγλων παρέμεινεν ἐπὶ μικρὸν αἰχμάλωτος. Ἀπελευθερωθεὶς διεκρίθη εἰς Ἀούστερλιτς καὶ Ἱσπανίαν (1810), μετέχων ὅμως τῆς εἰς Ῥωσίαν ἐκστρατείας (1812) ᾐχμαλωτίσθη μετὰ τοῦ μεγαλυτέρου μέρους τοῦ στρατοῦ του καὶ ἀπέθανε μικρὸν μετὰ ταῦτα αἰχμάλωτος ἐν Βερολίνῳ. Τινὲς ἀποδίδουσιν εἰς αὐτὸν τὰ «Μεταθανάτια ἀπομνημονεύματα τοῦ Κυστίν, συνταχθέντα ὑφ' ἑνὸς τῶν ὑπασπιστῶν του». Χ. Δ.

**Μπαράϊγ** (Du Barail), ***Φραγκῖσκος-Κάρολος ντὺ —***. Γάλλος στρατηγὸς (1820—1902). Τῷ 1839 κατετάχθη εἰς τὸ σῶμα τῶν σπαχήδων καὶ ἐπολέμησεν εἰς τὰς ἀφρικανικὰς ἀποικίας, τῷ δὲ 1860, μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, μετέσχε τῆς εἰς Μεξικὸν ἐκστρατείας. Προαχθεὶς εἰς στρατηγὸν ἐνεκλείσθη, κατὰ τὸν Γαλλοπρωσσικὸν πόλεμον (1870) εἰς τὸ φρούριον τοῦ Μέτς, μετὰ δὲ τὴν λῆξιν αὐτοῦ διῴκει ἓν σῶμα στρατοῦ κατὰ τοῦ ἐναντίον τῆς Κομμούνας πολέμου. Ὡς ὑπουργὸς τοῦ πολέμου (1873—1874) προσέφερε πολλὰς ὑπηρεσίας διὰ τὴν διοργάνωσιν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ. Καταληφθεὶς ὑπὸ τοῦ ὁρίου ἡλικίας (1885) ἀπεσύρθη ἐκ τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ βοναπαρτικοῦ κόμματος. Ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα (1894). Χ. Δ.

**Μπαρὰκ** (Barac), ***Ἰωάννης***. Ῥουμᾶνος ποιητὴς (1772—1848), γεννηθεὶς ἐν Μπράσοβ τῆς Τρανσυλβανίας. Ἐπί τινα χρόνον ἐξέδιδεν ἑβδομαδιαῖον περιοδικὸν «Τὸ κυριακάτικον φύλλον». Ἔγραψεν ἐμπνεόμενος πάντοτε ἐκ τῶν λαϊκῶν παραδόσεων καὶ ἐθίμων. Μεταξὺ τῶν ἔργων του διακρίνονται τὰ ἑξῆς: «Ὁ Ἀργύρης καὶ ἡ Ἑλένη» (1800), «Οἱ τρεῖς καμπούρηδες ἀδελφοί» (1843), «Αἱ περιπλανήσεις τοῦ Ὀδυσσέως» (παράφρασις τῆς Ὀδυσσείας τοῦ Ὁμήρου), ὁ «Δευκαλίων καὶ ἡ Πύρρα» καὶ ἄλλα κατ' ἔμπνευσιν ἐκ τῶν «Μεταμορφώσεων» τοῦ Ὀβιδίου. Γερμανιστὶ ἔγραψε τὴν τραγῳδίαν «Σαμφών», ἥτις ἐπαίχθη ἐν τῷ αὐτοκρατορικῷ θεάτρῳ τῆς Βιέννης (1876). Ἐπίσης μετέφρασε μέρος τῶν «Χιλίων καὶ μιᾶς νυκτῶν». Γ. Ι. Β.

**μπαράκα** (ἡ) καὶ ***μπαράγκα***, καὶ ***παράγκα***· ξύλινον παράπηγμα, καλύβη ἐκ σανίδων: «κάθονται σὲ μπαράγκες» (ἰταλ. baracca).

**Μπαρακάλντο** (Baracaldo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ Βασκικῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Βισκαΐας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Νερβίον. Ἔχει βιομηχανίας σιδήρου. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπαρακὰν** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης, ἡ ἀρχαία *Ἴσιδος* νῆσος (βλ. λ.).

**Μπαρακὰ-Χάν**, ***Μελὴκ ἀλ-Σαΐντ - Ναζὲρ - ἐντ-Ντὶν-Μωχάμμετ***. Ἕβδομος σουλτᾶνος Βαχαρίτης τῆς Αἰγύπτου. Νέος καὶ ἄπειρος, ἀνετράπη ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Σελαμές, ἀνατραπέντος καὶ τούτου βραδύτερον. Γ. Ι. Β.

—**Μπαρακὰ - Χάν**. Μογγόλος ἡγεμών· βλ. *Μπερεκὲ-Χάν*.

**Μπὰρ Ἀχιμπᾶ**, ***Μπὲν-Γιωσέφ***. Διάσημος ραβῖνος καὶ ἱεροδιδάσκαλος (βλ. λ. *Ἀχιμπᾶ*).

**Μπαρακλῆ** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Στενωπὸ* (βλ. λ.).

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Ἐξοχὴ* (βλ. λ.).

—3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Βαλτερὸ* (βλ. λ.).

—4) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Χαλκιδικῆς συνοικισμοῦ *Κερασιὰ Νέα* (βλ. λ.).

**Μπαράκοα** (Baracoa) *[Γεωγρ.]*. Παράλιος πόλις τῆς Κούβας, παλαιὰ πρωτεύουσα αὐτῆς. Εἶναι σπουδαῖος σταθμὸς ἀσυρμάτου, ἔχει μικρὸν λιμένα καὶ ἐξάγει βανάνας καὶ κοκκοφοίνικας. Ἱδρύθη τῷ 1512 ὑπὸ τοῦ Διέγου, ἀδελφοῦ τοῦ Χριστοφόρου Κολόμβου. Κάτ. 5.630. Χ. Δ.

**Μπαρᾶκον**, ἢ ***Μπαράκου*** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Μάκκιστος* (βλ. λ.).

**«Μπάραλονγκ»** («Baralong»). Ἀγγλικὸν βοηθητικὸν πλοῖον, ὅπερ ἐξοπλισθὲν πρὸς καταδρομὴν κατὰ τὸν Εὐρωπαϊκὸν πόλεμον ἐγένετο περιώνυμον διὰ τὴν πρὸς τὸ ἀγγλικὸν ἀτμόπλοιον «Νικόζιαν» συνδρομήν του καὶ τὸ ἕνεκα ταύτης ἐπισυμβὰν ἐπεισόδιον: Γερμανικὸν ὑποβρύχιον εἶχε σταματήσει ἔξωθεν τῆς Κουηνστάουν (19 Αὐγούστου 1915) τὸ προμνησθὲν ἀγγλικὸν καὶ ἀπειλεῖ ἐπ' αὐτοῦ ἄγημα, ἵνα τὸ καταβυθίσουν διὰ βομβῶν δυναμίτιδος. Καταφθάσαν ὅμως ἐγκαιρότατα τὸ «Μπάραλονγκ» καὶ τὸ ὑποβρύχιον κατεβύθισε καὶ τὸ «Νικόζιαν» ἐπρόφθασε νὰ σώσῃ, ἀποστεῖλαν ἐπ' αὐτοῦ ἄγημα καὶ αἰχμαλωτίσαν τοὺς ναύτας τοῦ γερμανικοῦ ἀγήματος. Κατὰ τοῦ πληρώματος τοῦ «Μπάραλονγκ» διετυπώθη ὑπὸ τῆς γερμανικῆς κυβερνήσεως κατηγορία ἐπὶ σκληρότητι πρὸς τοὺς αἰχμαλωτισθέντας Γερμανούς, καὶ ἐζητήθη ἡ παραπομπὴ αὐτοῦ εἰς δίκην, μὴ παραλειφθεισῶν καὶ ἀπειλῶν ἀντιποίνων διὰ βομβαρδισμῶν ἀπὸ ζέππελιν. Τὸ ἐπεισόδιον τοῦτο ἐπροκάλεσε μακρὰν ἐν τῷ τύπῳ, ἰδίως τῷ ἀμερικανικῷ, συζήτησιν, ἐγένετο δὲ ἀντικείμενον εὐρυτάτης ἐκμεταλλεύσεως. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρὰλτ** (Baralt), ***Ῥαφαὴλ - Μαρία***. Ἱσπανοαμερικανὸς ἱστορικὸς καὶ ποιητὴς (1810—1860). Ἐγεννήθη εἰς Βενεζουέλαν, ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς ὁποίας ἐπολέμησε τῷ 1830—1831. Εἰσελθὼν κατόπιν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Καράκας ἐγένετο ἀξιωματικὸς καὶ ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ λοχαγοῦ. Τῷ 1841 μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐξέδωσε τὸ ἔργον του «Ἱστορία τῆς Βενεζουέλας», ὅπερ κατέταξεν αὐτὸν μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἱστορικῶν διὰ τὴν ἀκρίβειαν τῆς ἐκθέσεως τῶν γεγονότων καὶ διὰ τὴν σαφήνειαν τοῦ ὕφους. Βραδύτερον ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ὅπου ἀφιερώθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ τὰ γράμματα, ἐκδώσας καὶ ἐφημερίδα «Ὁ ΙΘ' αἰών». Τὰ ποιήματα αὐτοῦ ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν, ἰδίως ἡ περίφημος «Ὠδὴ εἰς τὸν Χριστόφορον Κολόμβον» (1850). Ἐξέδωσε καὶ «Λεξικὸν γαλλισμῶν» (1833), ἀπὸ τῶν ὁποίων ἤθελε νὰ ἐκκαθαρίσῃ τὴν ἱσπανικὴν γλῶσσαν. Παρεσκεύασεν ἐπίσης ἄφθονον ὑλικὸν διὰ μέγα λεξικὸν τῆς ἱσπανικῆς γλώσσης, ὅπερ ὅμως δὲν ἐπρόφθασε νὰ ἐκδώσῃ. Μ. Δ. Β.

**Μπαράμ**. Ὄνομα πέντε Σασσανιδῶν βασιλέων τῆς Περσίας (βλ. λ. *Βαράμ*).

**Μπαραμπά**, ἢ ***Μπαραμπίν***, καὶ ***Μπαραμπίνσκαϊα-στὲπ*** (Baraba) *[Γεωγρ.]*. Στέππη τῆς Ῥωσίας ἐν Σιβηρίᾳ, ἐν ταῖς περιοχαῖς τοῦ Τόμσκ, Ἀκμολινσκ καὶ Τομπόλσκ, μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ὄμπι καὶ Ἴρτυς. Τὸ Β. τμῆμα αὐτῆς καλεῖται στέππη *Βαζιούγκα*, τὸ δὲ Ν. στέππη *Κουλουντινσκάϊα*. Τὴν κυρίως στέππην Μπαραμπὰ ἀποτελεῖ τὸ κεντρικὸν αὐτῆς τμῆμα, ὅπερ καλύπτεται κατὰ τὸ πλεῖστον ὑπὸ ἑλῶν καὶ λιμνῶν ἁλμυρῶν ἢ γλυκέων ὑδάτων. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι ἀργιλλῶδες καὶ ἀδιάβατον κατὰ τὰς βροχερὰς περιόδους. Ἔχει κλῖμα ἀνθυγιεινόν, ἡ δὲ χλωρὶς αὐτῆς, καίτοι σπανιωτάτη, εἴς τινα σημεῖα παρουσιάζει μεγάλην ἀνάπτυξιν καὶ ποικιλίαν. Διασχίζεται ὑπὸ τῆς στρατιωτικῆς ὁδοῦ ἀπὸ Ὄμσκ εἰς Κολιβὰν καὶ εἶναι ἀραιότατα κατῳκημένη ἀπὸ νομάδας ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον κτηνοτρόφους, καλουμένους *Μπαραμπίντσου*, ἀνήκοντας εἰς τὴν ταταρικὴν φυλὴν τοῦ Τουρακίντσις. Ἀπὸ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἐκτελοῦνται βαθμιαίως διάφορα ἀποξηραντικὰ ἔργα ἐν αὐτῇ, ἀποδώσαντα μεγάλα τμήματα εἰς τὴν καλλιέργειαν. Μ. Δ. Β.

**Μπάρα Μπάνκι** (Bara Banki) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Φεϊζαμπὰντ τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν. Ἡ *ἐπαρχία* ἔχει ἔδαφος πεδινὸν καὶ βαλτῶδες, διαρρεόμενον ὑπὸ τῶν ποταμῶν Γκούμτι καὶ Γκόγκρα, παράγει σιτηρά, σάκχαριν κλπ. Ἔχει ἔκτασιν 4.500 περίπου τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 1.083.897 κατ., κατὰ τὰ $^4/_5$ Ἰνδῶν. Ἡ πρωτεύουσα *Μπάρα Μπάνκι* ἢ *Ναβαμπγκάνι* εἶναι σιδηροδρομικὸς σταθμὸς κείμενος ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Γκόγκρα. Χ. Δ.

**μπαραμπαρίζω**· ἰδιωμ., προσομοιάζω τινί.

**Μπαραμπὸ** (Barabo) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ χώρα τῆς Δυτικῆς Γαλλικῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ ἀκτῇ τοῦ Ἐλεφαντόδοντος, γνωστὴ ἐκ τῆς ἐναντίον αὐτῆς ἐπιδρομῆς τῶν Σαμορὺ κατὰ τὸ 1895, καθ' ἣν ὑπέστη πολλὰς ζημίας. Χ. Δ.

**Μπαράμπου** (Baraboo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ Οὐϊσκόνσιν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου κομητείας. Κάτ. 6.000. Κεῖται παρὰ τὸν ὁμώνυμον ποταμὸν εἰς ὕψος 350 μ., καὶ λόγῳ τοῦ ὑγιεινοτάτου κλίματός της ἀποτελεῖ ἕνα τῶν μᾶλλον πολυσυχνάστων κλιματολογικῶν σταθμῶν τῆς περιοχῆς. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν μεταλλεῖα σιδήρου. Ἔχει πριονιστήρια καὶ ἐργοστάσια μαλλίνων ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπαρὰμ-Τσουμπίν**, ἢ ***Βαραράμ***. Πέρσης στρατηγός, βασιλεύσας ἐπὶ μικρὸν τῷ 590 μ. Χ. Ἦτο στρατηγὸς τοῦ Ὁρμίσδα Δ' καὶ κατήγετο ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας. Ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως ἐναντίον τῶν εἰς τὸ περσικὸν κράτος εἰσβαλόντων Ἀράβων, κατώρθωσε νὰ κατανικήσῃ αὐτοὺς καὶ νὰ καταλάβῃ τὴν πόλιν Μπάλκ. Ἀκολούθως ὅμως ἡττήθη δὶς εἰς Κολχίδα, παρὰ τὸν Ἀράξην, ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν. Παυθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὁρμίσδα, ἐπανεστάτησε κατ' αὐτοῦ, ἐνώπιον ὅμως τοῦ κινδύνου τοῦ ἐναντίον αὐτοῦ ἀποσταλέντος στρατοῦ ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Χοσρόου, υἱοῦ τοῦ βασιλέως, προσεπάθησε νὰ ἔλθῃ μετὰ τοῦ τελευταίου εἰς διαπραγματεύσεις, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῶν ὁποίων ἀνεκηρύχθη βασιλεὺς καὶ ἐβάδισεν ἐναντίον τῆς Κτησιφῶντος. Ἡττηθεὶς ὅμως ἐπανειλημμένως ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ πρὸς τοὺς Τούρκους. Χ. Δ.

**Μπαρὰντ** (Barante), ***Πέτρος-Ἀμάμπλ-Πρόσπερος Μπρυγιὲρ*** (Brugières), *βαρῶνος ντὲ —*. Γάλλος πολιτικὸς καὶ ἱστοριογράφος (1782—1866). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ εἰς διαφόρους δημοσίας θέσεις, μετὰ τὴν παλινόρθωσιν δὲ τῶν Βουρβώνων ἐγένετο σύμβουλος τῆς Ἐπικρατείας καὶ γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐσωτερικῶν, ἐκλεγεὶς ταυτοχρόνως βουλευτής. Βραδύτερον διωρίσθη γενικὸς διευθυντὴς τῶν ἀμέσων φόρων, ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του δὲ ταύτην ὑπῆρξεν ὁ εἰσαγωγεὺς ἐν Γαλλίᾳ τὸ μονοπώλιον τοῦ καπνοῦ (1818). Μετέσχεν ἀπὸ τοῦ 1819 τῆς βουλῆς τῶν ὁμοτίμων, ἐχρημάτισε δὲ κατόπιν πρεσβευτὴς ἐν Τουρίνῳ (1830) καὶ Πετρουπόλει (1835) καὶ ἐπεφορτίσθη μὲ διαφόρους κατὰ καιροὺς διπλωματικὰς ἀποστολὰς μέχρι τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848, ὁπότε ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον. Τὸ συγγραφικὸν ἔργον τοῦ Μπαρὰντ ὑπῆρξεν ἄφθονον. Τῷ 18.. ἐδημοσίευσε τὰς ἐπιστολὰς τῆς δίδος Ἀϊσσὲ .. τῶν κυριῶν Λαφαγιέτ, Τενσὲν καὶ Βιλλάρ. Τῷ 18.. ἐξέδωκε «Πίνακα τῆς γαλλικῆς φιλολογίας κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα», τῷ 1814 «Τὰ διάφορα σχέδια Συντάγματος ἐν Γαλλίᾳ», τῷ 1815 «Τὰ ἀπομνημονεύματα τῆς μαρκησίας ντὲ λὰ Ροσ' ζακλέν», ἐπίσης μετάφρασιν τοῦ Σίλλερ (1821) καὶ «Ἱστορίαν τῶν δουκῶν τῆς Βουργουνδίας» (1824). Τῷ 1836 ἐδημοσίευσε .. συλλογὰς διαφόρων συντόμων πονημάτων του .. τοὺς τίτλους «Ἱστορικὰ καὶ φιλολογικὰ ἀνάλεκτα» (1836, 3 τόμοι) καὶ «Συνταγματικὰ ζητήματα». Μετὰ τὴν ἀποχώρησίν του ἀπὸ τῆς πολιτικῆς ζωῆς ἐδημοσίευσεν: «Ἱστορία τῆς Συμβατικῆς Ἐθνοσυνελεύσεως» (1851), «Ἱστορία τοῦ Διευθυντηρίου» (185.), «Ἱστορικαὶ καὶ βιογραφικαὶ μελέται» (1857), «Ἱστορικαὶ καὶ φιλολογικαὶ μελέται» (1858) κλπ. Ὁ Μπαρὰντ ἦτο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας.

**Μπαρανὼφ** ***μηχάνημα*** *[Πυροβολ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐφευρεθὲν μηχάνημα ὑπὸ τοῦ πρώην ὑπολοχαγοῦ τοῦ πυροβολικοῦ τοῦ αὐτοκρατορικοῦ ῥωσικοῦ στρατοῦ Ἀλεξ.. *Μπαρανώφ*, δι' οὗ ἐκτελεῖται εἰκονικὴ βολὴ πυροβολικοῦ ἐν αἰθούσῃ. Τὸ σύνολον τοῦ μηχανήματος τούτου ἀποτελεῖται: 1) Ἐκ τοῦ κυρίως μηχανήματος, τοῦ ἐκτελοῦντος τὰ ὑπὸ ἐκτελεστοῦ τῆς βολῆς διδόμενα παραγγέλματα, διαστάσεων 2 ἐπὶ 1,50 μέτρα. 2) Ἐκ τοῦ ἀναγλύφου, παριστῶντος ἔδαφος .. τινα περιοχήν, διαστάσεων 2 ἐπὶ 2 χλμ. ὑπὸ κλίμακα $^1/_{1000}$, ἐπὶ τῆς ὁποίας εὑρίσκονται οἱ στόχοι .. τὸ ἀνάγλυφον τοποθετεῖται παραπλεύρως τοῦ κυρίως μηχανήματος. 3) Ἐκ τῆς περιοχῆς τῶν .. λουσῶν πυρβολαρχιῶν καὶ τῶν παρατηρητηρίων, ἥτις ἔχει διαστάσεις 3 ἐπὶ 4 μέτρα.

Ἐπὶ τῶν παρατηρητηρίων τοποθετοῦνται εἰδικὰ περισκόπια, δι' ὧν ἐκτελεῖται ἡ παρατήρησις .. τῶν ὁποίων ἡ μεγέθυνσις εἶναι τοιαύτη, ὥστε .. φαίνωνται οἱ στόχοι ὡς ἐὰν τὸ παρατηρητήριον εὑρίσκετο ἐπὶ τοῦ πραγματικοῦ ἐδάφους καὶ εἰς ἀπόστασιν χιλιαπλασίαν. Ἐντὸς τῆς αἰθούσης ὑπάρχει τηλεφωνικὴ ἐγκατάστασις καὶ εἰς μίαν τῶν γωνιῶν αὐτῆς θαλαμίσκος συνδεόμενος τηλεφωνικῶς μετὰ τοῦ κυρίου μηχανήματος καὶ τῶν παρατηρητηρίων, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ἐγκαθίσταται ὁ ἐκτελεστὴς τῆς βολῆς, ὅταν πρόκειται νὰ ἐκτελέσῃ βολὴν χωρὶς νὰ παρατηρῇ ὁ ἴδιος. Δύναται νὰ ἐκτελεσθῇ ἐναέριος παρατήρησις ἀπὸ ἀεροπλάνου ἢ ἀεροστάτου, χρησιμοποιουμένου πρὸς τοῦτο εἰδικοῦ ὑψηλοῦ βάθρου. Ἐπὶ πλέον ὑπάρχει μηχάνημα διὰ τοῦ ὁποίου ἀναπαράγονται κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν τῆς βολῆς αἱ λάμψεις καὶ οἱ κρότοι τῶν πυροβόλων, οἵτινες κανονίζονται ὥστε νὰ ἀκούωνται μετὰ .. ροδον μεταβλητοῦ χρόνου ἀπὸ τῆς πυροδοτήσεως καὶ ἀναλόγως τῆς ἀποστάσεως ἐφ' ἣν εὑρίσκ..

Digitized by Google

ἀπὸ τῆς βαλλούσης πυροβολαρχίας ὁ ἐκτελεστὴς τῆς βολῆς. —Ω.

**Μπαραόνα** (Barahona) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς δημοκρατίας τοῦ Ἁγίου Δομίγκου ἐν τῇ νήσῳ Ἁϊτῇ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος. Κάτ. 5.000. Παράγει ὀνομαστῆς ποιότητος καφὲν καὶ ἐξάγει ξυλείαν πολυτελείας. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει γραφικὴ λιμνοθάλασσα. Εἶναι πατρὶς τοῦ Μποναβεντούρα Μπαές. Μ. Δ. Β.

**Μπαρὰντ** (Barhad) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν τῆς ἐπαρχίας Ἄγκρα-Ὕ-Οὔντχ τῆς περιφερείας Γκοραζπούρ. Κάτ. 12.000. Διεξάγει ἐμπόριον σακχάρεως καὶ καρπῶν. Π. Γ. Λ.

**Μπαραντιὲ** (Barandier). Γάλλος φιλέλλην ἐκ Σαβοΐας, κατελθὼν εἰς τὴν ἐπαναστατημένην Ἑλλάδα τῷ 1821 καὶ λαβὼν μέρος εἰς τὰς κατὰ τὴν νῆσον Κέαν πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις. Τ. Ε. Ε.

**Μπάρανυ** (Barany), ***Ροβέρτος***. Αὐστριακὸς ὠτορινολαρυγγολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1876. Τῷ 1909 διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1917 διατελεῖ καθηγητὴς ἐν Οὐψάλᾳ. Τῷ 1914 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς ἰατρικῆς διὰ τὸ ἔργον αὐτοῦ «Physiologie und Pathologie des Bogengang=Apparats beim Menschen». Ἐπίσης ἀξιοσημείωτος ὑπῆρξεν ἡ συμβολὴ αὐτοῦ εἰς τὴν σημειολογίαν ἰδίως τῆς παρεγκεφαλίδος καὶ τῶν ἡμικυκλίων σωληναρίων. Ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ὀνομάζονται δύο πειράματα ἀφορῶντα τὸν τρόπον ἐρεύνης τῆς λειτουργικῆς καταστάσεως τοῦ λαβυρίνθου καὶ τῆς παρεγκεφαλίδος: 1) Τὸ θερμαντικὸν πείραμα, καθ' ὃ ἔγχυσις 50—100 γραμμαρίων λίαν θερμοῦ ἢ ψυχροῦ ὕδατος ἐντὸς τοῦ ὠτὸς φυσιολογικοῦ ἀνθρώπου ἐπιφέρει ἀπόκλισιν τοῦ ὀφθαλμοῦ πρὸς τὸ ἀντίθετον οὖς (ὁριζόντιος νυσταγμός), τοῦ πειραματιζομένου δὲ ἐγειρομένου ἐν ὀρθίᾳ στάσει μὲ συνημμένα τὰ σκέλματα, ἐπέρχεται ἡ πτῶσις αὐτοῦ πρὸς τὸ μέρος τοῦ ὠτός, ἐν ᾧ ἐγένετο ἡ ἔγχυσις. Ἐπὶ παθήσεων τοῦ λαβυρίνθου τοῦ ὠτός, νόσου τοῦ Friedreich, σκληρύνσεως κατὰ πλάκας, ἀρτηριακῆς ὑπερτάσεως ἐξ ἐγκεφαλικοῦ ὄγκου, τὸ ἄνω πείραμα καθίσταται ἐντονώτερον καὶ δι' ὀλιγωτέρας ποσότητος ὕδατος. Ἐπὶ τελείας καταστροφῆς τοῦ λαβυρίνθου καὶ τοῦ ἀκουστικοῦ νεύρου οὐδεμία ἀντίδρασις ἐπέρχεται. Ὅταν δὲ ἡ κατεύθυνσις τῆς πτώσεως γίνεται πάντοτε πρὸς τὴν ἰδίαν πλευράν, τότε πρόκειται περὶ παθήσεως τῆς παρεγκεφαλίδος. 2) Τὸ πείραμα τῆς ἐκτροπῆς τοῦ δείκτου τῆς χειρός, καθ' ὃ ὁ πάσχων ἀδυνατεῖ κεκλεισμένους ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς νὰ ψαύσῃ διὰ τοῦ δείκτου ὑποδειχθὲν ἀντικείμενον, ὁ δὲ δάκτυλος αὐτοῦ ἐκτρέπεται πρὸς τὰ ἄνω-κάτω, ἔσω-ἔξω κλπ. τοῦ ἀντικειμένου. Ο. Ρ.

**Μπάρανυα**, ἢ ***Μπώρωννα*** (Baranya) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς Οὐγγαρίας παρὰ τὰ νοτιοσσλαβικὰ σύνορα. Ἔχει ἔκτασιν 3.964 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 240.043 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Πὲκς* (γερμ. *Φυνφκίρχεν*). Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον πεδινὸν καὶ εὐφορώτατον, τὰ δὲ ἐν αὐτῷ ὑψώματα *Ζένγκας* ἐγκλείουσι μάρμαρον, γαιάνθρακας καὶ ἄλλα μεταλλεύματα. Ἡ κομιτεία ὠνομάσθη ἐκ τοῦ ἐν αὐτῇ παλαιοῦ ὀχυροῦ πύργου. Ἱστορικωτέρα τοποθεσία της εἶναι τὸ *Μόχακς*, ὅπου τῷ 1526 ὁ Σουλεϋμὰν ὁ Μεγαλοπρεπὴς ἐνίκησε τοὺς Οὔγγρους, Χ. Δ.

**Μπαραόνα ὺ *Σόρο*** (Barahona y Soro), ***Λουδοβῖκος ντὲ*** —. Ἱσπανὸς ποιητής, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ἔγραψε τὴν συνέχειαν τοῦ «Ὀρλάνδου» τοῦ Ἀριόστου, σατίρας καὶ βουκολικὰ ποιήματα. Ὁ Θερβάντες ποιεῖται εὔφημον μνείαν τοῦ Μπαραόνα ἐν τῷ «Δὸν Κιχώτῃ». Α. Δ.

**Μπαράτα** (Bharata). Ὄνομα παλαιᾶς ἰνδικῆς φυλῆς μνημονευομένης ἐν τῇ Ρὶγκ-Βέδᾳ. Τὸ ὄνομα τοῦτο ἐπίσης φέρουσιν ἥρωες τῶν ἐπικῶν παραδόσεων, ἐξ ὧν σπουδαιότεροι εἶναι:

1) Ὁ υἱὸς τοῦ Ντουχμάντα καὶ τῆς Σακουντάλα, ὅστις ἦτο προπάτωρ τῶν Παντάβας τῆς Μαχαβαράτα.

2) Ὁ υἱὸς τοῦ Νταζαράτα καὶ τῆς Καϊκέγι. Ἡ μήτηρ του Καϊκέγι διὰ νὰ ἐξασφαλίσῃ εἰς αὐτὸν τὸν θρόνον ἐζήτησε καὶ ἐπέτυχε παρὰ τοῦ Νταζαράτα τὴν ἄδικον ἐξορίαν τοῦ ἐξ ἄλλου γάμου γεννηθέντος υἱοῦ του Ράμα. Ἀλλ' ὁ Μπαράτα ἠρνήθη τὴν κατὰ τοιοῦτον τρόπον ἀποκτηθεῖσαν ἐξουσίαν καὶ προσεκάλεσε τὸν ἀδελφόν του εἰς τὸν θρόνον, ἐπειδὴ δὲ αὐτὸς δὲν ἐδέχθη, ἐξηκολούθησε μὲν κυβερνῶν τὴν χώραν ἀλλ' ἐτοποθέτησεν ἐπὶ τοῦ θρόνου τὰ σανδάλια τοῦ Ράμα, διὰ νὰ δείξῃ ὅτι ἐκυβέρνα διὰ λογαριασμὸν αὐτοῦ. Ὅτε δὲ ἔληξεν ὁ χρόνος τῆς ἐξορίας τοῦ Ράμα, παρέδωσεν εἰς αὐτὸν τὸν θρόνον καὶ ἔζησε πλησίον του ὡς πιστὸς ὑποτελής.

3) Ἐπίσης εἷς σοφὸς (μούνι) φέρων τὸ ὄνομα Μπαράτα, θεωρεῖται ὡς ἱδρυτὴς τῆς δραματικῆς τέχνης, τῆς ὁποίας τοὺς κανόνας ἐδιδάχθη παρὰ τῶν Βράχμα, Σίβα καὶ Ντούργκα. Τοὺς κανόνας τούτους ἐξέθηκεν εἰς μίαν ἐκ τῶν βεδῶν, καλουμένην Γκαντάρβα-βέδα ἢ Νάτυα-βέδα. Τὸ ἔργον τοῦ Μπαράτα, θεωρούμενον ἄλλοτε ὡς μυθικόν, ἀνευρέθη κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐπὶ σπανίων τινῶν χειρογράφων, ἔχουσι δὲ ἐκδοθῆ καὶ μερικὰ κεφάλαιά του. Ἀποτελεῖ τοῦτο ἀληθῆ ἐγκυκλοπαίδειαν τοῦ θεάτρου, περιλαμβάνουσαν τὰ τῆς κατασκευῆς αὐτοῦ, ἀνάλυσιν τοῦ δραματικοῦ πάθους, μετρικήν, μιμικήν, ρυθμόν, χορογραφίαν, μουσικὴν τῆς φωνῆς καὶ τῶν ὀργάνων κτλ., διαιρεῖται δὲ εἰς 36 κεφάλαια. Χ. Δ.

**Μπαρατάρια** (Barataria, ἐκ τῆς ἱσπαν. λέξεως barato=μερίδιον τῶν ἐκ χαρτοπαιγνίου κερδῶν) *[Γεωγρ.]*. —1) Ἀναπεπταμένος κόλπος τῆς μεσημβρινῆς παραλίας τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἀνοιγόμενος ἐν τῷ Μεξικανικῷ κόλπῳ, πρὸς Δ. τοῦ δέλτα τῆς ἐκβολῆς τοῦ Μισσισσιπῆ. Ἐν αὐτῷ κεῖνται αἱ πόλεις Τζέφφερσον, Λὰ Φοὺρς καὶ Πλακομὶν τῆς Λουϊζιάνας, πολλαὶ δὲ μικραὶ νησῖδες καὶ σκόπελοι ἀναδύονται κατὰ μῆκος τῆς παραλίας του. Παλαιότερον ἦτο φωλεὰ πειρατῶν καὶ δουλεμπόρων, περίφημος δὲ κατέστη ὁ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἀρχηγός των Ἰωάννης Λαφίτ. Τῷ 1814 ἀποστολὴ ἀμερικανικοῦ στρατοῦ ὑπὸ τὸν μοίραρχον Πάτερσον ἐπέτυχε νὰ ἐξολοθρεύσῃ αὐτούς. Ὁ Λαφὶτ μετὰ πολλῶν ἐκ τῶν ἀνδρῶν του κατετάχθη τότε εἰς τὸν στρατὸν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ προσέφερε μεγάλας ὑπηρεσίας, πολεμῶν ἐναντίον τῶν Ἄγγλων (1815).

—2) Τὸ ὄνομα τοῦτο δίδει ὁ Θερβάντες ἐν τῷ περιφήμῳ μυθιστορήματί του εἰς φανταστικὴν νῆσον, τὴν ὁποίαν ὑπεσχέθη ὡς βασίλειον ὁ Δὸν Κιχώτης εἰς τὸν ἱπποκόμον του Σάντσον Πάντσαν. Χ. Δ.

**Μπαρατιὲ** (Baratier), ***Ἀλβέρτος***. Γάλλος στρατιωτικὸς (1864—1917). Ἐξῆλθεν ἀξιωματικὸς τοῦ ἱππικοῦ ἐκ τῆς σχολῆς τοῦ Σαὶν-Σύρ, ὑπηρέτησε δὲ κατ' ἀρχὰς εἰς Ἀλγέριον καὶ κατόπιν εἰς τὰς γαλλικὰς ἀποικίας τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς. Ἐκεῖ μετέσχε τῆς ὑπὸ τὸν λοχαγὸν Μαρσὰν ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς ἀφρικανικῆς ἠπείρου, καθὼς καὶ εἰς ἄλλας ἐν αὐτῇ ἐξερευνήσεις, τὰ ἐκ τῶν ὁποίων πορίσματα ἐδημοσίευσε μετὰ τὴν ἐπάνοδόν του εἰς Γαλλίαν. Βραδύτερον ἠσχολήθη ἰδιαιτέρως εἰς χαρτογραφικὰς ἐργασίας μέχρι τῆς ἐκρήξεως τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, τοῦ ὁποίου μετέσχεν ὡς συνταγματάρχης ἐν ἀρχῇ τοῦ ἱππικοῦ. Προαχθεὶς ἐπ' ἀνδραγαθίᾳ εἰς ὑποστράτηγον καὶ κατόπιν εἰς ἀντιστράτηγον, διῴκησε μεγάλας μονάδας καὶ διεκρίθη πάντοτε διὰ τὰ πολλαπλᾶ στρατιωτικά του προσόντα, ἀπέθανε δ' ἐκ συγκοπῆς τῆς καρδίας κατὰ τὴν διάρκειαν μιᾶς ἐπιθεωρήσεώς του ἀνὰ τὰ χαρακώματα τοῦ προκεχωρημένου γαλλικοῦ μετώπου.

—**Μπαρατιὲ** (Baratier), ***Ἰωάννης-Φίλιππος***. Παιδίον τοῦ ὁποίου ἡ πρόωρος πνευματικὴ ἀνάπτυξις ἀναφέρεται ὡς ἐξαιρετικὸν ὅλως φαινόμενον. Υἱὸς μετριωτάτου Γάλλου λογίου, ἐγεννήθη τῷ 1721 ἐν Ἄνσπαχ τῆς Γερμανίας, εἰς ἡλικίαν δὲ ἑπτὰ ἐτῶν εἶχεν ἐκμάθει τὴν γαλλικήν, τὴν γερμανικήν, τὴν λατινικήν, τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν ἑβραϊκήν. Τῷ 1734, δεκατριετὴς μόλις, ἐξέδωκεν ἐν Ἀμστελλοδάμῳ μετάφρασιν τοῦ ἑβραϊκοῦ ἔργου «Τὸ ταξίδιον τοῦ Βενιαμὶν τοῦ ἐκ Τουδέλας», τὴν ὁποίαν ἐπηκολούθησαν ἄλλαι ἐνδιαφέρουσαι πραγματεῖαί του. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε σπουδάσει μαθηματικὰ καὶ ἀστρονομίαν, ὑπέβαλε δὲ τῷ 1738 εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν ἀξιόλογα ὑπομνήματα ἐπὶ θεμάτων ἀναγομένων εἰς τὰς ἐπιστήμας ταύτας, ἐνῷ ἐξ ἄλλου ἐξέδιδε μελέτην του περὶ διαδοχῆς τῶν παπῶν. Ὅπως ὅμως συμβαίνει συνήθως εἰς παρομοίας περιπτώσεις, ὁ Μπαρατιὲ ὑπέκυψε τάχιστα εἰς τὸν κάματον τῆς ὑπερφυσικῆς διανοητικῆς του ἀναπτύξεως, ἀποθανὼν τῷ 1740, εἰς ἡλικίαν 19 ἐτῶν. —Ω.

**Μπαρατιέρι** (Baratieri), ***Ὀρέστης***. Ἰταλὸς στρατηγὸς καὶ στρατιωτικὸς συγγραφεὺς (1841—1901). Εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῶν χιλίων τοῦ Γαριβάλδη εἰς τὴν Σικελίαν καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν μάχην τῆς Καπούης τῷ 1860, ὅπου ἔλαβε καὶ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ, τῷ 1866 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν κατὰ τῆς Αὐστρίας ἐκστρατείαν καὶ τῷ 1872 εἰσῆλθεν εἰς τὸν τακτικὸν ἰταλικὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ. Φθάσας μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου τῶν βερσαλλιέρων, ὑπηρέτησεν εἰς τὴν Ἐρυθραίαν ἀπὸ τοῦ 1887—1888 καὶ τῷ 1890. Τῷ 1891 διωρίσθη ἀρχηγὸς τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων τῆς Ἀφρικῆς καὶ τῷ 1892 διοικητὴς τῆς ἀποικίας τῆς Ἐρυθραίας, ἣν ἀναδιωργάνωσεν ἀπὸ πάσης ἀπόψεως, ἐπιτυχὼν πλήρη ἐλευθερίαν ἐνεργείας ἐκ μέρους τῆς κυβερνήσεως. Πρὸς πραγματοποίησιν τῆς ἀποικιακῆς πολιτικῆς τῆς κυβερνήσεως Κρίσπι, ὁ Μπαρατιέρι, παρὰ τὰς μετὰ τοῦ Μενελὶκ ὑπογραφείσας τῷ 1899 συνθήκας, ἤρχισε νὰ προελαύνῃ εἰς τὸ ἐσωτερικὸν μετὰ σημαντικῶν δυνάμεων, καταλαβὼν τῷ 1894 τὴν Κασσάλα. Μετὰ τὴν κήρυξιν τοῦ πολέμου κατὰ τοῦ Τιγκρὲ προήλασεν εἰς τὴν χώραν ταύτην καὶ κατενίκησε τὸν ρὰς Μανγκασσιὰ ἐν Κοατὶτ καὶ Σεναφὲ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1895. Τὸν Μάρτιον τοῦ ἰδίου ἔτους κατέλαβε τὴν Ἀντιγκρὰντ καὶ ἔφθασε μέχρι τῆς Ἄντουα καὶ τῆς ἱερᾶς πόλεως τῶν Ἀβησσυνῶν Ἀξούμης. Αἱ ἐπιτυχίαι αὗται, διὰ τὰς ὁποίας προήχθη εἰς στρατηγόν, ἐνεθάρρυναν τὸν Μπαρατιέρι καὶ ἐνέπνευσαν εἰς αὐτὸν τὴν ἐλπίδα τῆς ὁλοσχεροῦς καθυποτάξεως τῆς περιοχῆς.

*Ὀρέστης Μπαρατιέρι.*

Ἐπειδὴ ὅμως κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἡ κυβέρνησις, ἀπησχολημένη μὲ τὰς ἐκλογὰς καὶ οὖσα ἠναγκασμένη νὰ κάμῃ οἰκονομίας, δὲν ἠδύνατο νὰ ἀποστείλῃ τὰς ἀπαιτουμένας ἐνισχύσεις, ὁ Μπαρατιέρι μετέβη εἰς τὴν Ρώμην, ὅπου ἐγένετο θριαμβευτικῶς δεκτὸς ὑπὸ τοῦ λαοῦ καὶ ἐπέτυχε μικρὰν σχετικῶς αὔξησιν τοῦ ἀποικιακοῦ στρατοῦ. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Ἐρυθραίαν τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1895, διέταξε γενικὴν ἐπιστράτευσιν καὶ συνεπλήρωσε τὴν κατάκτησιν τοῦ Τιγκρέ, ἐνῷ ὁ ρὰς Μανγκασσιὰ ἀπεσύρετο ἐν τάχει πρὸς νότον. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως, ὁ ρὰς τῆς Ἀβησσυνίας Μακάνεν εἶχε συναθροίσει ὑπὲρ τὰς 100.000 στρατοῦ, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπετέθη, τὴν 7 Δεκεμβρίου 1895, κατὰ τῶν προφυλακῶν τῶν Ἰταλῶν ὑπὸ τὸν ταγματάρχην Τοζέλλι, τὸν ὁποῖον κατετρόπωσεν ἐν Ἄμπα Ἀλατζί. Ὁ Μπαρατιέρι συνεκέντρωσε τότε πάσας τὰς δυνάμεις του εἰς Ἀντιγκράτ, ἐνῷ ὁ πρωθυπουργὸς τῆς Ἰταλίας Κρίσπι κατώρθωνε νὰ ἐπιτύχῃ παρὰ τῆς βουλῆς πίστωσιν 20 ἑκατομμυρίων λιρεττῶν πρὸς ἀποστολὴν ἐνισχύσεων καὶ καθυπόταξιν τῶν Ἀβησσυνῶν. Ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ οἱ Ἀβησσυνοὶ ἤρχισαν ν' ἀπειλοῦν τὸ δεξιὸν τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων, ὁ δὲ Μπαρατιέρι ἠναγκάσθη νὰ ὀπισθοχωρήσῃ, ἀφήσας εἰς τὸν ἐχθρὸν τὴν Μακαλλὲ (21 Ἰανουαρίου 1896). Φοβούμενος δὲ μήπως ἡ γενικὴ ὀπισθοχώρησις ἐνσπείρῃ τὸν πανικὸν εἰς τὰ στρατεύματά του, ἐστράφη κατὰ τοῦ παρὰ τὴν Ἄντουα συγκεντρουμένου κυρίου σώματος τῶν Ἀβησσυνῶν, διοικουμένου ὑπὸ τοῦ βασιλέως Μενελίκ. Σκοπὸς τοῦ Μπαρατιέρι δὲν ἦτο νὰ ἐμπλακῇ εἰς γενικὴν μάχην, ἀλλὰ νὰ ἐκφοβίσῃ μόνον τὸν ἐχθρὸν δι' ἐπιδείξεως. Κατὰ τὴν διάρκειαν ὅμως τῶν ἐπιχειρήσεων τὰ ἰταλικὰ στρατεύματα δὲν ἠδυνήθησαν ν' ἀποφύγουν τὴν μάχην, ἡ ὁποία γενικευθεῖσα ἀπέληξεν εἰς ὁλοσχερῆ ἧτταν τῶν Ἰταλῶν, μὲ ἀπώλειαν 250 ἀξιωματικῶν, 7.000 ὁπλιτῶν καὶ ὁλοκλήρου τοῦ πυροβολικοῦ των. Ἡ ἧττα αὕτη προεκάλεσε τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως Κρίσπι, ὡς ἐμπνευσάσης τὴν προέλασιν εἰς τὸ ἐσωτερικόν, ὁ δὲ Μπαρατιέρι παρεπέμφθη εἰς δίκην ὡς ὑπεύθυνος τῆς ἥττης, ἀλλ' ἠθωώθη ὑπὸ τοῦ στρατοδικείου τῆς Ἀσμάρας. Τεθεὶς εἰς ἀποστρατείαν, ἐδημοσίευσε τὸ ἑπόμενον ἔτος, πρὸς δικαιολογίαν τῆς ἥττης του, τὰ «Ἀπομνημονεύματα ἐξ Ἀφρικῆς» (1897). Βραδύτερον ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἐξηκολούθει νὰ ἐκλέγηται τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του.

Ὁ Μπαρατιέρι ἔχαιρε φήμης ὡς διακεκριμένου στρατιωτικοῦ συγγραφέως, ἔγραψε δὲ διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἀπὸ Βάϊσσεμπουργκ εἰς Μὲτς» (1870), κριτικὴν τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου, «Οἱ ἑλιγμοὶ τοῦ πεζικοῦ ἐν Αὐστρίᾳ καὶ Πρωσσίᾳ» (1873), «Ἡ στρατιωτικὴ κατάστασις τῆς Σουηδίας» (1872), «Διαδρομαὶ ἀπὸ Κερὲν εἰς Κασσάλα» (1892), «Ὁ ἐμφύλιος πόλεμος ἐν Ἱσπανίᾳ» (1873—1874), «Τὸ ζήτημα τοῦ Κόνγκο» κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπαρατίνσκι**, ***Εὐγένιος-Ἀβράμοβιτς***. Ρῶσος ποιητὴς (1800—1844). Καταταχθεὶς (1820—1824) ὡς ἁπλοῦς στρατιώτης εἰς τὴν αὐτοκρατορικὴν φρουρὰν καὶ γενόμενος ἀξιωματικὸς (1825), παρῃτήθη καὶ ἀπεσύρθη εἰς Μόσχαν, ἀναλαβὼν τὴν διεύθυνσιν τοῦ περιοδικοῦ «Πολικοῦ Ἀστέρος». Ἔγραψε πολυάριθμα λυρικὰ καὶ ἐλεγειακὰ ποιήματα, τὰ ὁποῖα προεκάλεσαν καλὴν ἐντύπωσιν. Ἀπὸ τοῦ 1833 διέμενεν εἰς τὴν ἀλλοδαπήν, διήρχετο δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ χρόνου εἰς Παρισίους καὶ Νεάπολιν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ὁ νεκρός του μετεκομίσθη εἰς Πετρούπολιν καὶ ἐτάφη εἰς τὴν μονὴν τοῦ Ἁγίου Ἀλεξάνδρου τοῦ Νιέβσκι. Ὁ Μπαρατίνσκι εἶναι ὁ ὡριμώτερος ἐκ τῶν συγχρόνων τοῦ Ποῦσκιν ποιητῶν τῆς Ρωσίας. Τὸ κυριώτερον ἰδανικὸν τῆς τέχνης του εἶναι ἡ ἕνωσις τῆς σκέψεως καὶ τοῦ αἰσθήματος, συμφώνως μὲ τὰς ἀντιλήψεις τοῦ Γκαῖτε, τοῦ ὁποίου τὸν θάνατον ὕμνησε διὰ περιφήμου ποιήματος. Ὅσῳ ὡρίμαζεν ἡ τέχνη τοῦ Μπαρατίνσκι, ἐπὶ τοσοῦτον ἀπέβαλλε τὰς ρωμαντικὰς ὑπερβολὰς καὶ τὰς ἀπιθάνους περιπετείας, ἀλλὰ καθίστατο ὀλιγώτερον ἀρεστὴ εἰς τὸ κοινόν. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν πλήρη εἰς ἓξ τόμους τῷ 1868 ἐν Μόσχᾳ. Θ. Β.

**Μπαρατὼ** (Barateau), ***Αἰμίλιος***. Γάλλος ᾀσματογράφος (1792—1870). Ἔγραψε πλέον τῶν 3.000 ἐλεγείων καὶ ᾀσματίων, τῶν ὁποίων πολλά, ὡς τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Jenny l'ouvrière», ἔσχον μεγάλην δημοτικότητα. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε δύο συλλογὰς ποιημάτων μὲ τοὺς τίτλους «Bagatelles» (1831) καὶ «Bigarrures» (1833) κ. ἄ. Χ. Δ.

Digitized by Google

**Μπαρβάνι** (Barwani) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ περιοχῇ τῶν Μποπαβὰρ τῶν Κεντρικῶν Ἐπαρχιῶν. Ἔχει ἔκτασιν 2.950 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 108.583 κατ. Τὸ τέταρτον περίπου ἐκ τοῦ ἐδάφους του εἶναι καλλιεργημένον, περιλαμβάνον φυτείας βάμβακος κυρίως καὶ σησάμου. Ὁ ἡγεμὼν φέρων τὸν τίτλον «ράνα», ἔχει τὸ δικαίωμα χαιρετισμοῦ διὰ 11 βολῶν πυροβόλου. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα κεῖται παρὰ τὸν ποταμὸν Ναρμπάντα, ἐκτίσθη δὲ περὶ τὸ 1650 ὑπὸ τοῦ Ράνα-Τσάντρα-Σίνγκ. Χ. Δ.

**Μπαργιαμῆτσι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Βάθδου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς. Κάτ. (1828) 53. Χ. Δ.

**Μπάργκα** (Barga) *[Γεωγρ.]*. Πόλις της Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ *Λούκκας* τῆς Τοσκάνης. Κάτ. 9.316. Ἔχει μητρόπολιν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος μὲ ἔργα τοῦ Λούκκα ντέλλα Ρόμπια, χαρτοποιεῖα, κλωστήρια καὶ ὑφαντουργεῖα. Ἐν τῇ ὁμωνύμῳ κοινότητι περιλαμβάνεται τὸ χωρίον *Καστελβέκκιο*, ὅπερ ἔψαλεν ὁ Πάσκολι καὶ ὅπου ὑπάρχει ὁ τάφος τοῦ ποιητοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μπαργκαῖος** (Bargaeus)· βλ. Πέτρος ντέλλι *Ἀγγέλι* (βλ. λ.).

**Μπαργκὰς-ἴμπν-Σαΐντ**. Σουλτᾶνος τῆς Ζανζιβάρης (1835—1888), ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῷ 1870. Παρέσχε πολλὰς διευκολύνσεις εἰς τοὺς ξένους ἱεραποστόλους καὶ ἐξερευνητάς, συγχρόνως ὅμως ηὔξησε σημαντικῶς ἡ ἐν τῇ χώρᾳ του ἐπιρροὴ τῶν ξένων Δυνάμεων καὶ ἰδίως τῆς Μεγάλης Βρεττανίας. Ὁ Μπαργκὰς τῷ 1873, ὑπὸ τὴν πίεσιν τῶν Ἄγγλων, κατήργησε τὴν δουλείαν τῶν Μαύρων. Τῷ 1885 ἠναγκάσθη νὰ ὑποκύψῃ εἰς τὰς ἀξιώσεις τῆς Γερμανικῆς Ἑταιρείας τῆς Ἀφρικῆς καὶ νὰ δεχθῇ ὅπως τὰ ὅρια τοῦ κράτους του καθορισθοῦν ὑπὸ ἀγγλογαλλογερμανικῆς ἐπιτροπῆς. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐζήτησε καὶ ἡ Ἰταλία καὶ μετὰ δύο ἔτη ἡ Πορτογαλία νὰ ἐπιτύχωσι παραχωρήσεις παρὰ τοῦ Μπαργκάς. Ὁ σουλτᾶνος κατώρθωσε μὲν ν' ἀποκρούσῃ ταύτας, κατέστη ὅμως ὑποχείριος τῶν προξένων τῆς Ἀγγλίας καὶ Γερμανίας, κατὰ τὰς ὑποδείξεις τῶν ὁποίων καὶ ἐνήργει. Γ. Ι. Β.

**Μπάργκας** (Bargas), ***Μαρτῖνος***. Ἱσπανὸς ἐκκλησιαστικὸς μεταρρυθμιστὴς (βλ. λ. *Βάργκας Μαρτῖνος*).

**Μπάργκιελ** (Bargiel), ***Βάλντεμαρ***. Γερμανὸς μουσουργὸς (1828—1897). Ἐκ τῶν ἔργων του, γεγραμμένων εἰς τὸ ὕφος τοῦ Σοῦμαν, διακρίνονται αἱ εἰσαγωγαὶ «Μήδεια» καὶ «Προμηθεύς». Ἐξαιρετικῶς ἐκτιμῶνται ἐπίσης αἱ συνθέσεις του διὰ μουσικὴν δωματίου. Γ. Σ.

**Μπαργκουζῖν** (Bargusin, ἢ Barguzin) *[Γεωγρ.]*. —1) Ποταμὸς τῆς Σιβηρίας, πηγάζων ἐκ τῶν ὁμωνύμων ὀρέων καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν λίμνην Βαϊκάλην. —2) Ὀροσειρὰ ἐν Ρωσίᾳ παρὰ τὴν λίμνην Βαϊκάλην, ὕψους 2.100—2.400 μέτρων.

**Μπαργκουζῖνσκ** *[Γεωγρ.]*. —1) Ἐπαρχία τῆς Ρωσίας ἐν Σιβηρίᾳ καὶ τῇ δημοκρατίᾳ τῶν Βουριατῶν. Ἔχει ἔκτασιν 169.023 τετρ. χλμ. καὶ περὶ τοὺς 30.000 κατοίκων. —2) Πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας εἰς ἀπόστασιν 50 χλμ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Μπαργκουζῖν. Κάτ. 2.000. Γ. Ι. Β.

**μπαρδαβῖτσα** (ἡ)· βλ. *ἀκροχορδόνες*.

**μπαρδάκι** (τό)· μικρὰ λάγυνος (τουρκ. *μπαρντάκ*)·

**Μπαρδάκι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κοκορᾶ τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας. Κάτ. (1928) 45. Χ. Δ.

**Μπάρδι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μιδέας (Γκέρμπεσι) τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, μετονομασθὲν εἰς *Ἀμυγδαλίτσα*. Κάτ. (1928) 103. Χ. Δ.

**Μπαρδικῶστα** *[Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 243. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Τσιμπάτα*. Χ. Δ.

**Μπαρδούνια, *Παλιὰ*—***[Γεωγρ.]*. Μικρὸς συνοικισμός, καλούμενος καὶ *Μποσινέικα*, τῆς κοινότητος Ἁγίου Νικολάου τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 15. Παρ' αὐτὸν σῴζονται ἐρείπια μεσαιωνικοῦ πύργου, ὑπῆρχε δὲ αὐτόθι καὶ ἀρχαῖος χριστιανικὸς ναὸς κατερειπωθείς. ΚΑΨ.

**Μπαρδούνιας κάστρο** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἁγίου Νικολάου τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 21. Ὠνομάσθη οὕτως ἀπὸ τοῦ κάστρου τῆς Μπαρδούνιας, ἀρχαίου μεσαιωνικοῦ φρουρίου, τὸ ὁποῖον κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Τουρκοκρατίας ἦτο ἡ ἑστία τῶν ἐμπειροπολέμων Τουρκαλβανῶν Μπαρδουνιωτῶν, διότι εἶναι ἐκτισμένος εἰς τοὺς πρόποδας αὐτοῦ. ΚΑΨ.

**Μπαρδουνιῶτες** (οἱ). Οὕτως ἐκαλοῦντο κυρίως οἱ Μουσουλμᾶνοι κάτοικοι τῆς περιοχῆς τῶν *Μπαρδουνοχωρίων* (βλ. λ.), ἐν τῇ ὁποίᾳ κατῴκουν καὶ πολλοὶ Ἕλληνες Χριστιανοί. Οἱ Μπαρδουνιῶτες, Ἀλβανοὶ ἐξισλαμισθέντες, ἐφημίζοντο διὰ τὴν ἀνδρείαν των καὶ ἦσαν ἡ μάστιξ ὄχι μόνον τῶν συγχωρίων των Χριστιανῶν, ἀλλὰ πολλάκις καὶ τῶν ὁμοθρήσκων των Τούρκων τοῦ Μυστρᾶ, ὡς ἀντάρται καὶ ἐπιδρομεῖς. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Ἀγῶνος τοῦ 1821 οἱ Μπαρδουνιῶτες ὑπελογίζοντο εἰς 1.500 «γερὰ ντουφέκια» καὶ θὰ ἦσαν δυσυπέρβλητον κώλυμα διὰ τὴν ἐπικράτησιν τῆς Ἐπαναστάσεως ἐν Λακεδαίμονι, ἂν διὰ τεχνάσματος τῶν ἐπαναστατῶν Ἑλλήνων δὲν κατελαμβάνοντο οὗτοι ὑπὸ πανικοῦ καὶ δὲν ἔσπευδον νὰ κλεισθοῦν εἰς τὴν Τρίπολιν καὶ ἐν μέρει καὶ εἰς τὸ φρούριον τῆς Μονεμβασίας. Κανονιοβολισμοὶ δηλαδὴ ριφθέντες ἐκ τοῦ ὁρμοῦντος ἐν τῷ λιμένι Γυθείου πλοίου τοῦ Μυκονίου πλοιάρχου Φραγκιᾶ, πρὸς χάριν τοῦ διασκεδάζοντος Κυριακούλη Μαυρομιχάλη, ἔγιναν ἀφορμὴ νὰ διαδοθῇ εἰς τὰ Μπαρδουνοχώρια ὅτι ἔφθασαν εἰς τὸ Μαραθονήσι (Γύθειον) καράβια τῆς Φραγκιᾶς, διὰ νὰ βοηθήσουν τοὺς ραγιάδες. Ἐκ τῶν Μπαρδουνιωτῶν διασημότερος ὑπῆρξεν ὁ Ρουμπῆς, ὅστις μὲ 3.500 Τούρκους ἐπετέθη κατὰ τῶν ὀχυρωθέντων εἰς τὸ Βαλτέτσι Ἑλλήνων τὴν 12ην Μαΐου 1821. ΚΑΨ.

**μπαρδουνιώτικο** (τό). Οὕτω καλεῖται εἶδος φαγητοῦ ἐπιχωριάζοντος ἐν τῇ περιοχῇ τῶν Μπαρδουνοχωρίων. Εἶναι γιαχνιστὸ κοτόπουλο μὲ τυρὶ καὶ βούτυρον. Ἐκτὸς αὐτοῦ παρασκευάζεται ἐν τῇ αὐτῇ περιοχῇ καὶ τὸ «φτωχὸ μπαρδουνιώτικο», τὸ ὁποῖον εἶναι γιαχνιστὰ κολοκυθάκια μὲ τυρὶ καὶ βούτυρον. ΚΑΨ.

**Μπαρδουνοχώρια** *[Γεωγρ.]*. Οὕτως ἐκαλεῖτο κατὰ τοὺς χρόνους τῆς τουρκοκρατίας ὁμὰς χωρίων τῆς Λακωνίας, κειμένων κατὰ τὰ ὅρια τῆς ἐλευθέρας τότε Μάνης καὶ τῆς τουρκοκρατουμένης Λακεδαίμονος. Τὰ χωρία ταῦτα, ἐκτισμένα ἐπὶ τῶν κλιτύων τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ταϋγέτου καὶ ἀποκρήμνων ἀντηρίδων αὐτῆς καὶ κείμενα περὶ ἓν παλαιὸν φρούριον, τὸ *Κάστρο τῆς Μπαρδούνιας*, ἀπετέλουν φύσει δυσπόρθητον περιοχήν, τὴν ὁποίαν καθίστων ὀχυρωτέραν ἀκόμη οἱ καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν διεσπαρμένοι πύργοι της (περὶ τοὺς 50), πλησίον ἀλλήλων κείμενοι καὶ ἐφωδιασμένοι πάντοτε μὲ ἱκανὰς τροφὰς καὶ πολεμεφόδια. Τὰ Μπαρδουνοχώρια, εἰς τὰ ὁποῖα οἱ Τοῦρκοι, μετὰ τὴν κατάκτησιν τῆς Πελοποννήσου, εἶχον ἐγκαταστήσει τοὺς ἐξισλαμισθέντας Ἀλβανοὺς τῆς Ἀρκαδίας, ὑπῆρξαν πάντοτε τὸ μῆλον τῆς ἔριδος μεταξὺ Μανιατῶν καὶ Τούρκων κατὰ τοὺς μακροὺς μεταξύ των ἀγῶνας (βλ. λ. *Μάνη* τ. ΙΣΤ', σ. 605). Τὴν περιοχὴν ταύτην διασχίζουν διάφοροι ὁρμητικοὶ χείμαρροι, ἐκ τῶν ὁποίων κυριώτεροι εἶναι τὸ *ποτάμι τῆς Μπαρδούνιας* (ὁ *Σμῆνος* τῶν ἀρχαίων). Ἐκ τῶν Μπαρδουνοχωρίων ἡ *Καστάνια*, ἀποτελοῦσα τὸν ἀκραῖον σταθμὸν τῆς Μάνης, ἦτο πάντοτε ἐλευθέρα καὶ ἐφημίζετο διὰ τὴν ἀνδρείαν τῶν κατοίκων της, ἡ *Στρουντζὰ* ἦτο ὁ τόπος τῆς κατασκευῆς τῆς πυρίτιδος καὶ ἡ *Ἄρνα* ἐπρομήθευεν εἰς τοὺς Μπαρδουνιῶτας τὰ βόλια.

Τὰ Μπαρδουνοχώρια, ἀποτελοῦντα σήμερον τὰς κοινότητας τῶν τέως δήμων Μελιτίνης καὶ Φελλίας, καὶ ἐν μέρει καὶ τῶν Κροκεῶν, ἦσαν τὰ ἑξῆς: *Καστάνια, Σελεγοῦδι, Ποτάμι, Παλιὰ Μπαρδούνια* (ἢ *Μποσινέικα*), *Τσεσφίνα, Ἅγιος Νικόλαος, Κάστρο τῆς Μπαρδούνιας, Κόκκινα Λουριά, Μαλτσίνα, Ἀρχοντικό, Σίνα, Στρουντζά, Ρόζοβα, Ζελίνα, Τσέρια, Ἄρνα, Κοτσατίνα, Γόλα* (Μονή), *Γοράνοι, Πυλοβίτσα, Κουρτσούνα, Λιαντίνα, Ποταμιά, Πρίτσα, Τάραψα, Πετρίνα*. Γ. Δ. ΚΑΨΑΛΗΣ

**Μπαρὲ** (Baret), ***Εὐγένιος***. Γάλλος φιλόλογος (1816—1887). Ἐπεδόθη ἰδιαιτέρως εἰς τὴν σπουδὴν τῆς ἱσπανικῆς φιλολογίας, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐδημοσίευσε πάμπολλα ἔργα. Μεταξὺ τούτων ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Μελέται περὶ τῆς φιλολογίας τῆς μεσημβρινῆς Εὐρώπης» (1857), «Ἱστορία τῆς ἱσπανικῆς φιλολογίας ἀπὸ τῶν ἀπωτέρων αὐτῆς ἀρχῶν μέχρι σήμερον» (1857), «Ἱσπανικὴ ἀνθολογία» (1884), μεταφράσεις εἰς τὴν γαλλικὴν τῶν «Δραματικῶν ἔργων τοῦ Λόπεθ ντὲ Βέγκα» (1869) κλπ. Ὁ Μπαρὲ διετέλεσε πρύτανις τῆς ἀκαδημίας τοῦ Σαμπερὺ καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἱστορίας τῆς Μαδρίτης. Ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Μεξικοῦ Μαξιμιλιανὸς τὸν ἐχρησιμοποίησεν ὡς ὑπουργὸν τῆς Παιδείας ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ. — Ω.

**Μπὰρ-Ἑβραῖος**. Ἐπίσκοπος τῶν Ἰακωβιτῶν καὶ ἱστορικὸς (βλ. λ. *Ἀβουλφαράζ*).

**Μπαρὲζ** (Barèges) *[Γεωγρ.]*. Ἰαματικὰ λουτρὰ τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Πυρηναίων, κείμενα εἰς ἀπόστασιν 34 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἀρζελές. Τῷ 1907 κατεστράφησαν ὑπὸ τρομερᾶς χιονοστιβάδος. Ἐνδείκνυνται ἐναντίον τῶν δερματοπαθειῶν, παραλυσιῶν, ρευματισμῶν, τῶν παλαιῶν πληγῶν κτλ. Χ. Δ.

**Μπαρέλι**, ἢ ***Μπαρέϊλλυ*** (Bareli, ἢ Bareil[ly]) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, π[ρω]τεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας καὶ διοικήσεως τ[ῶν] Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν. Κάτ. 117.521, ἐξ ἡμισ[είας] Μουσουλμᾶνοι καὶ Ἰνδοί. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Ραμ[γκά]γκα, ἀριστεροῦ παραποτάμου τοῦ Γάγγου, καὶ εἶ[ναι] σπουδαιότατος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγ[κοι]νιῶν. Ἔχει ἀνωτέρας σχολάς, εἶναι κέντρον [βιο]μηχανίας ὑφασμάτων καὶ ἐβενουργίας καὶ διε[ξά]γει ἐμπόριον σιτηρῶν, βάμβακος καὶ σακχάρ[εως]. Ἡ Μπαρέλι ἦτο κατὰ τὸν μεσαίωνα σπουδαιό[τα]τος στρατιωτικὸς σταθμὸς καὶ ὀχυρὰ θέσις. Ἡ νεωτέρα πόλις ἱδρύθη τῷ 1657 ὑπὸ τοῦ ρα[τζᾶ] Μακρὰντ-Ράϊ κατέστη δ' ἐνωρὶς ἡ κυριωτέρα πό[λις] τῆς Ροχιλκλάνδης. Τῷ 1801 οἱ Ἄγγλοι, οἱ ὁποῖ[οι] καὶ προηγουμένως εἶχον καταλάβει τὴν χώραν, πρ[οσ]ήρτησαν ὁριστικῶς ὁλόκληρον τὴν περιοχὴν με[τὰ] τῆς πόλεως. Ἡ διοίκησις (division) Μπαρέλι, ἡ [ὁποία] περιλαμβάνει ὁλόκληρον τὴν Ροχιλκλάνδην, ἔ[χει] ἔκτασιν 27.000 περίπου τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμ[ὸν] 5.650.518 κατ. Χ. [Δ.]

**μπάρεμ** ἐπίρ. δημ. (ἐκ τοῦ τουρκ.) τουλάχιστον.

**Μπάρεμ** (Barham), ***Ριχάρδος-Χάρρις***. Ἄγγ[λος] κληρικὸς καὶ εὐθυμογράφος (1788—1845), γνωσ[τὸς] ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Θωμᾶς *Ἴνγκολντσμπυ*. Γ. Ι. [Β.]

**Μπαρεμπάλα** *[Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ τὸν Ἄρα[βα] γεωγράφον Ἐδριζὶ ὀνομασία τῆς ἐν τῷ Αἰγ[αίῳ] νήσου *Βελοπούλας* (βλ. λ.).

**Μπάρεντς** (Barentz) *[Γεωγρ.]*. Τὸ ὄνομα τ[οῦ] θαλασσοπόρου *Μπάρεντς* φέρουσι τὰ ἑξῆς τοπω[νύ]μια τοῦ Β. Παγωμένου ὠκεανοῦ: —1) Μικρὰ ἀ[κα]τοίκητος νῆσος τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ, ἀνήκου[σα] εἰς τὸ σύμπλεγμα τῆς Σπιτσβέργης καὶ κατα[λαμ]βάνουσα τὸ νοτιώτερον αὐτοῦ τμῆμα. —2) Περιο[χὴ] τοῦ βορείου τμήματος τῆς Νέας Ζέμλιας, τ[ὴν] ὁποίαν πρῶτος ἐξηρεύνησεν ὁ Μπάρεντς. —3) Ὄ[νο]μα τμήματος τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ, ἐκτεινο[μέ]νου μεταξὺ Λαπωνίας, Σπιτσβέργης, Χώρας τ[οῦ] Φραγκίσκου Ἰωσὴφ καὶ Νέας Ζέμλιας. Εἶναι πά[ν]τοτε σχεδὸν κατειλημμένον ὑπὸ τῶν πάγων, ἐκ[τὸς] τοῦ νοτίου περὶ τὴν χώραν τοῦ Μούρμαν τμήμα[τος], ἐν τῷ ὁποίῳ ἡ ναυσιπλοΐα καθίσταται εὐ[κο]ρεστέρα, χάρις εἰς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ μεξικαν[ικοῦ] ρεύματος. Χ. [Δ.]

**Μπάρεντς** (Barendzs ἢ Barentz), ***Γουλιέλμος***. Ὁλλανδὸς θαλασσοπόρος (1560—1598). Τῷ 1[594] ἀνετέθη εἰς αὐτὸν ἡ διοίκησις στολίσκου, ἐπιφ[ορ]τισμένου μὲ τὴν ἐξερεύνησιν τῶν ἀνεξερευνή[των] εἰσέτι πρὸς Β. τῶν σκανδιναυϊκῶν καὶ ρωσ[ικῶν] παραλίων θαλασσῶν, ἐπεσκέφθη δὲ πρῶτος τ[ὴν] Νέαν Ζέμλιαν καὶ ἐξηρεύνησε τὴν δυτικὴν πα[ρα]λίαν ἐπὶ μήκους 6 μοιρῶν καὶ τὴν βορείαν μέ[χρι] τοῦ ἀκρωτηρίου Νασσάου. Μετὰ δευτέραν ἀπο[τυ]χοῦσαν ἀποστολὴν τοῦ 1595, ἀνέλαβε καὶ τρίτ[ην] τοιαύτην (1596), καθ' ἣν ἀνεκάλυψε τὴν Σπιτσ[βέρ]γην καὶ ἐπεσκέφθη ἐκ νέου τὴν Νέαν Ζέμλ[ιαν], ἐνῷ ὅμως ἐπεχείρει νὰ ἀποπερατώσῃ τὴν ἐξερεύ[νησιν] τῆς ὑπολοίπου βορείου παραλίας της, ἀ[πε]κλείσθη ὑπὸ τῶν πάγων. Ἠναγκάσθη τότε νὰ δ[ια]χειμάσῃ ἐν μέσῳ τῆς ἀφιλοξένου ταύτης χώ[ρας] ἐπὶ 10 σχεδὸν μῆνας, καθ' οὓς τὸ πλήρωμα ὑ[πέ]στη πολλὰ ἐκ τῶν στερήσεων καὶ τοῦ ψύχ[ους]. Ὅτε, μετὰ τὴν τῆξιν τῶν πάγων, ἐπεχείρησαν ν' ἐπιστρέψωσι, τὸ πλοῖόν των εἶχε καταστῆ ἀκί[νη]τον καὶ ἠναγκάσθησαν νὰ ἐπιβιβασθῶσι ε[ἰς] λέμβων, μετὰ πολλὰς δὲ περιπετείας συνήντη[σαν] ἓν ὀλλανδικὸν πλοῖον, τὸ ὁποῖον τοὺς περισυ[νέ]λεξε. Διαρκοῦντος τοῦ ταξιδίου ὁ Μπάρεντς ἀπέ[θα]νεν ἐκ τῶν κακουχιῶν. Χ. [Δ.]

**Μπαρὲρ** (Barère), ***Βερτράνδος***, ἄλλως γνω[στὸς] ὡς *Μπαρὲρ ντὲ Βιεζὰκ* (Vieuzac). Γάλλος πολιτι[κὸς] καὶ ἐπαναστάτης (1755—1841). Ἀπὸ τοῦ 17[..] [ἤρ]χισεν ἀσκῶν μετ' ἐξαιρετ[ικῆς] ἐπιτυχίας τὸ ἐπάγγελμα τοῦ [συνη]γόρου ἐν Τουλούζῃ, ἐνῷ τα[υ]τοχρόνως ἐπεδίδετο εἰς τὴν σ[υγ]γραφὴν ἱστορικοπολιτικῶν ἔ[ρ]γων. Τῷ 1789 ἐξελέγη βουλ[ευ]τὴν εἰς τὴν συνέλευσιν τῶν Τ[ά]ξεων (États Cénéraux), ἱδρ[ύσας] δὲ τότε τὴν ἐφημερίδα «Ὄρθρ[ος]» (Point du jonr), εἰς τὴν ὁποί[αν] ἐδημοσίευσε τὰ πρακτικὰ τ[ῆς] συνελεύσεως καὶ ἄρθρα ἀπ[ηχ]οῦντα τὰς μεταρρυθμιστικὰς τοῦ ἀντιλήψεις. Μετὰ τὴν λ[ῆξιν] τῆς συνόδου διωρίσθη μέλος τ[οῦ] ἀναθεωρητικοῦ δικαστηρίου, ἐξελέγη δὲ κατό[πιν] ἀντιπρόσωπος τοῦ νομοῦ τῶν Ἄνω Πυρηναί[ων] εἰς τὴν συμβατικὴν ἐθνοσυνέλευσιν. Καὶ εἰς τ[ὴν] συνέλευσιν ταύτην, ὅπως καὶ εἰς τὴν προηγου[μέ]νην, ὁ Μπαρὲρ ἐπέδειξεν ἐξαίρετον μὲν εὐγ[λω]δειαν λόγου, ἀλλὰ καὶ μεγάλην ἀστάθειαν χα[ρα]κτῆρος, ἐναλλασσομένου ἀναλόγως ἑκάστοτε τ[ῶν] συμφερόντων τῆς στιγμῆς. Ἐνῷ προϋπῆρξε μ[ο]ναρχικός, ἐζήτησεν ἀπὸ τὴν συνέλευσιν τὴν κε[φα]λὴν τῆς Μαρίας Ἀντωανέτας, ἐκηρύχθη φίλος τ[οῦ] Ροβεσπιέρρου, τὸν ὁποῖον ἄλλοτε εἶχεν ἐμπαθῶς π[ο]λεμήσει, καὶ ἐψήφισεν ὑπὲρ τῆς θανατώσεως τ[οῦ]

*Βερτράνδος Μπαρὲρ ντὲ Βιεζάκ.*

Digitized by Google

ιρονδίνων, εἰς τὰς τάξεις τῶν ὁποίων προηγουμένως νῆκεν. Τὴν μεγάλην φήμην του ἀπέκτησεν ἰδίως πὶ τῆς δευτέρας ἐπιτροπῆς τῆς Κοινῆς Σωτηρίας. Ἐχρησιμοποίει τὴν μεγάλην εὐγλωττίαν του διὰ ὰ ὑποστηρίζῃ εἰς ὕφος πομπῶδες καὶ περίτεχνον ὰς πλέον τραγικὰς προτάσεις, ἐξ οὗ καὶ ἐπωνο-άσθη «Ἀνακρέων τῆς γκιλλοτίνας». Τὴν 9ην Θερ-ιδὼρ ἐταλαντεύθη ἐπὶ πολὺ μεταξὺ τοῦ νὰ ὑπο-τηρίξῃ ἢ νὰ καταπολεμήσῃ τὸν Ροβεσπιέρρον, ἡ ὲ παράδοσις ἀνέφερεν ὅτι εἶχεν εἰς τὰ θυλάκιά ου δύο λόγους, τὸν ἕνα ὑπὲρ καὶ τὸν ἄλλον κατὰ οῦ παλαιοῦ του φίλου. Ἡ καθυστερήσασα ὅμως ποσκίρτησίς του δὲν τὸν διέσωσεν ἀπὸ τὴν ἐκ-ίκησιν τῶν ἀντιδραστικῶν, τὴν ὁποίαν ἐπλήρωσε ι' ὀκταμήνου φυλακίσεως. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύ-ης ἡ πολιτικὴ δρᾶσις τοῦ Μπαρὲρ περιπίπτει εἰς ὴν ἀφάνειαν. Ἐπὶ τοῦ Διευθυντηρίου ἡ ἐκλογή ου ὡς βουλευτοῦ ἠκυρώθη, λόγῳ τῆς γενικῆς ποδοκιμασίας, τὴν ὁποίαν ἤγειρε τὸ ὄνομά του. Ὑπὸ τὴν αὐτοκρατορίαν ἐχρησιμοποιήθη ὡς μυ-τικὸς πράκτωρ, ἀλλ' ἀπεπέμφθη μετ' οὐ πολὺ βριστικῶς, κατὰ δὲ τὴν παλινόρθωσιν προεγράφη ος βασιλοκτόνος. Ἐπανελθὼν ἐκ τῆς ἐξορίας εἰς Γαλλίαν μετὰ τὸ 1830, ἐπέτυχε νὰ ἐκλεγῇ πάλιν ουλευτὴς τῷ 1832, ἀλλ' ἡ ἐκλογή του δὲν ἐπεκυ-ώθη ὡς παράτυπος. Ἔκτοτε δὲν ἀνεφάνη πλέον ἰς τὸ πολιτικὸν στάδιον μέχρι τοῦ θανάτου του. Ὁ Μπαρὲρ ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ἐν οἷς ἀξιο-ογώτερα: «Τὸ πνεῦμα τῶν συνεδριάσεων τῆς συνε-εύσεως τῶν τάξεων (États Généraux)» (1789), «Ὁ Μοντεσκιὲ ἀπεικονιζόμενος διὰ τῶν ἔργων του» (1797), «Ἡ ἐλευθερία τῶν θαλασσῶν» (σφοδρὰ ἐπίκρισις τῆς ἀγγλικῆς πολιτικῆς, 1798), «Ἀπάντησις ἑνὸς Γάλλου πολίτου πρὸς τὸν λόρδον Γκρἀνβιλλ» (1800), «Ἡ συμπεριφορὰ τοῦ οἴκου τῶν Βουρβώνων κατὰ τὴν διάρ-κειαν τῆς ἐξορίας» (1804), «Αἱ ἐποχαὶ τοῦ γαλλικοῦ ἔθνους καὶ αἱ τέσσαρες δυναστεῖαι» (1815), «Παρατη-ρήσεις περὶ τῆς βουλῆς τῶν ὁμοτίμων» (1815), κτλ. Εἰς τὰ «Ἀπομνημονεύματά» του, δημοσιευθέντα τῷ 1843, εὑρίσκει τις, ἀναμέσον τῶν ὑπερβολῶν καὶ τῶν ἀντιφάσεων, περιέργους καὶ ἐνδιαφερού-σας πληροφορίας περὶ τοῦ ἔργου τῆς ἐπιτροπῆς τῆς Κοινῆς Σωτηρίας. —Ω.

**Μπαρὲστ** (Bareste), ***Εὐγένιος.*** Γάλλος λογογρά-φος (1814—1861). Τὸ πρῶτόν του ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Βιογραφία τῶν πολιτικῶν ἀνδρῶν», ἐκδοθὲν τῷ 1834, ἀνετυπώθη πολλάκις. Συνειργάσθη κα-τόπιν εἰς τὸν «Καλλιτέχνην», τὴν «Γενικὴν ἐφημερίδα τῆς Γαλλίας» καὶ ἰδίᾳ εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τοῦ Ιθ' αἰῶνος». Τῷ 1840 ἐδημοσίευσεν ἔργον περὶ τοῦ Νοστραδάμου, ἐξέδιδε δὲ ἀπὸ τοῦ ἔτους τούτου μέχρι τοῦ 1848 τὸ «Προφητικὸν ἡμερολόγιον». Τὴν αὐτὴν ἑσπέραν τῆς ἐκρήξεως τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848 ἐξέδωκε τὴν καθημερινὴν ἐφημερίδα «Δη-μοκρατία», τῆς ὁποίας ὅμως ἡ ἔκδοσις ἀπηγορεύθη μετὰ τὸ πραξικόπημα τῆς 2ας Δεκεμβρίου. Ἔκ-τοτε ὁ Μπαρὲστ ἠσχολήθη εἰς ὑποθέσεις βιομη-χανικοῦ χαρακτῆρος. —Ω.

**μπαρέτα** (ἡ)· βλ. *μπαρρέτα.*

**Μπαρέττι** (Baretti), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1719—1789). Διῆγε κατ' ἀρχὰς πλάνητα βίον καὶ κατόπιν ἐγκατεστάθη εἰς τὸ Λον-δῖνον ὡς καθηγητὴς τῆς ἰταλικῆς καὶ διευθυντὴς τοῦ ἐκεῖ ἰταλικοῦ θεάτρου (1751), γενόμενος βρα-δύτερον γραμματεὺς τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τῆς ζωγραφικῆς καὶ καταστὰς γνωστὸς κυρίως ἐκ τῶν σφοδρῶν ἐπιθέσεών του κατὰ τοῦ Ρουσσώ. Τῷ 1763 μετέβη εἰς τὴν Βενετίαν, ὅπου ἐξέδωκε τὸ περιοδικὸν «Φιλολογικὴ μάστιξ», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐδη-μοσίευσεν, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Ἀρίσταρχος Σκαν-ναμπούε, σφοδρὰς κριτικὰς καὶ διεξήγαγε φιλολο-γικοὺς ἀγῶνας, ἕνεκα τῶν ὁποίων κατεδιώχθη καὶ ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὸ Λονδῖνον. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Ποιήματα» (1750), «Τὰ φάρμακα τοῦ ἔρωτος» (1763), «Ἤθη καὶ ἔθιμα τῆς Ἰταλίας» (1768), «Σάτιραι» (1777) κτλ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν τῷ 1713 -1838. Μ. Δ. Β.

**Μπαρζουκᾶτα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοι-νότητος Φισκάρδου τῆς ἐπαρχίας Σάμης τοῦ νο-μοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 58. Χ. Δ.

**Μπαρθελεμὺ** (Barthélemy)· βλ. λ. *Μπαρτελεμύ.*

**Μπαρθενὶ** *[Γεωγρ.].* Ποταμὸς ἐκβάλλων εἰς τὸν Εὔξεινον (πλατ. 41° 43' Β., μῆκ. 32° 16' Ἀν., ἀρτ. ἀγγλ. 2238: Bosporus to Kerempeh), μεταξὺ Ἀμάστρας καὶ Ζογκουλντάκ. Εἶναι ὁ τῆς Παφλα-γονίας ποταμὸς *Παρθένιος* (*Ἀρριαν.* Εὐξ. Περίπλ. § 0) διασώσας παρεφθαρμένην τὴν ὀνομασίαν του. Σ. Ε. Λ.

**Μπάρι** (Bari) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας βλ. *Βάρι*).

**Μπάρι,** ἢ *Μπάρις* (Bari ἢ Baris). Ἰθαγενὴς νι-γριτικὸς λαὸς τοῦ βρεττανικοῦ προτεκτοράτου τῆς Οὐγκάντα, ζῶν παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Λευκοῦ Νεί-λου καὶ διακρινόμενος ἀπὸ τῶν ἄλλων Νέγρων διὰ τὴν κανονικότητα τῶν χαρακτηριστικῶν του. Ζῶσι σχεδὸν ἐντελῶς γυμνοί, προστρίβουσι δὲ τὸ σῶμα δι' ἐρυθρᾶς ὤχρας ἢ στιγματίζουσιν αὐτό. Ἔχουσιν ἐν χρῷ κεκαρμένην τὴν κόμην, μόνοι δὲ οἱ ἄνδρες ἀφίνουσιν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς μικρὸν θύσανον τριχῶν. Λατρεύουσι τοὺς ὄφεις καὶ τι-μῶσι τοὺς νεκρούς, εἶναι δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον κτη-νοτρόφοι, τρέφοντες μεγάλας ἀγέλας ζῴων, καὶ ζῶσιν ἐντὸς μονίμων οἰκιῶν. Ἐκμεταλλεύονται τὰ εἰς Μπίλλιγκοντ μεταλλεῖα σιδήρου, οἱ δὲ σιδη-ρουργοὶ αὐτῶν χαίρουσι καλῆς φήμης. Τοὺς Μπάρι ἐπεσκέπτοντο κατὰ καιροὺς ἔμποροι δούλων, δη-οῦντες κυριολεκτικῶς τὴν χώραν των. Ἡ σπου-δαιοτέρα παλαιὰ πόλις των ἦτο ἡ *Γκοντοκόρο*, ὅπου διέτριψαν ἐπὶ δεκαετίαν σχεδὸν Αὐστριακοὶ ἱερα-πόστολοι (1851—1860), ἐλάχιστα κατορθώσαντες πρὸς ἐκχριστιανισμὸν τῶν κατοίκων. Τῷ 1871 ὁ Μπάκερ κατέλαβε τὴν χώραν, προσαρτίσας αὐ-τὴν εἰς τὴν Αἴγυπτον, βραδύτερον ὅμως, μετὰ τὴν ἐξέγερσιν τοῦ Σουδάν, οἱ Μπάρι ὑπήχθησαν εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Σήμερον πρωτεύουσα τῆς χώρας εἶναι ἡ *Λάντο.* Χ. Λ.

**Μπαριακλῆ** (τουρκ. *Μπαϊρακλῆ*) *[Γεωγρ.].* Προά-στειον τῆς Σμύρνης εἰς τὸν ἀνατολικὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. Κατῳκεῖτο ἀποκλειστικῶς ὑπὸ Ἑλλήνων, δισχιλίων περίπου. Συνεδέετο μετὰ τῆς Σμύρνης διὰ τοῦ τοπικοῦ σιδηροδρόμου Σμύρνης—Κορδε-λιοῦ καί, θαλασσίως, διὰ τῶν ἀτμοπλοίων τῆς ἑταιρείας τοῦ Κόλπου. Ἦτο ἐκ τῶν καλυτέρων θερινῶν διαμονητηρίων τῶν Σμυρναίων. Ἡ κοινό-της συνετήρει σχολεῖον καὶ ἐκκλησίαν, τὴν τῆς Ἀ-ναλήψεως. Ἐπὶ βυζαντινῆς ἐποχῆς ἐκαλεῖτο Βάρη. Μνημονεύεται ὡς δωρηθεῖσα τῷ 1228 ὑπὸ τοῦ Ἰωάννου Δούκα Βατάτζη εἰς τὴν μονὴν τῆς Πα-ναγίας τῶν Λέμβων.

**Μπαριατίνσκι,** ***Ἀλέξανδρος-Ἰβάνοβιτς,*** *πρίγ-κιψ* —. Ρῶσος στρατηγὸς (1814—1879). Ἐξεπαι-δεύθη εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τῆς Πετρου-πόλεως, νεώτατος δὲ διεκρίθη κατὰ τὸν μακρὸν πόλεμον τοῦ Καυκάσου. Διετέλεσεν εἶτα ὑπασπι-στὴς τοῦ διαδόχου τῆς Ρωσίας, κατόπιν αὐτο-κράτορος Ἀλεξάνδρου Β', τῷ δὲ 1846 ὡς διοικη-τὴς τάγματος ἐτραυματίσθη ἐν Καυκάσῳ, ἔνθα διέμεινεν ἐπὶ μακρὰ ἐπὶ μακρὰ, προαχθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Κατὰ τὸν Ἀνατολικὸν πόλεμον (1856) ἐγένετο ἀρχηγὸς τῶν καυκασιανῶν στρα-τευμάτων καὶ ἀντιβασιλεὺς τοῦ Καυκάσου καὶ ἔλαβε τὸν βαθμὸν τοῦ στρατάρχου. Τῷ 1862 ἀπε-σύρθη τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας. Τῷ 1872 μετέσχε τῆς ἐπιτροπῆς τῆς ἀναδιοργανώσεως τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ καὶ εἰς αὐτὸν ὀφείλεται κυρίως ἡ εἰσα-γωγὴ τῆς γενικῆς στρατολογίας. Θ. Β.

**—Μπαριατίνσκι,** ***Δανιὴλ Ἀλεξέγιεβιτς,*** *πρίγκιψ*—. Ρῶσος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ τῷ 1604 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βλαδιμὶρ τῷ 1675. Διεκρίθη ἐπὶ Ἀλεξίου Ρωμανὼφ εἰς τοὺς κατὰ τῶν Σουη-δῶν καὶ Τούρκων πολέμους. Θ. Β.

**— Μπαριατίνσκι,** ***Ἰβὰν Μιχαήλοβιτς,*** *πρίγκιψ* —. Ρῶσος βογιάρος, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ περὶ τὸ 1530 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1603. Ὑπηρέτησεν ὡς στρατηγὸς καὶ διπλωμάτης ἐπὶ τῆς βασιλείας Ἰβὰν τοῦ Τρομεροῦ καὶ τοῦ διαδόχου του Θεοδώρου Ἰβάνοβιτς, μετέσχε δὲ εἰς τὴν κατάληψιν τοῦ Καζάν. Θ. Β.

**— Μπαριατίνσκι,** ***Ἰβὰν Σεργιέβιτς,*** *πρίγκιψ* —. Ρῶσος στρατάρχης καὶ διπλωμάτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει (1738—1811). Μετέσχε πλείστων πολέμων, ἐπὶ δὲ Αἰκατερίνης Β' διωρί-σθη πρεσβευτὴς τῆς Ρωσίας ἐν Παρισίοις, κατα-πλήξας τὴν γαλλικὴν κοινωνίαν διὰ τῆς πολυτε-λείας τοῦ βίου του. Θ. Β.

**— Μπαριατίνσκι,** ***Ἰούριος Νικήτιτς,*** *πρίγκιψ* —. Ρῶσος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ τῷ 1610 καὶ ἀποθανὼν ἐν Κιέβῳ τῷ 1678. Ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τῆς Μόσχας, καθυπέταξε τοὺς Ζαπορό-γας Κοζάκους καὶ κατενίκησε τοὺς ἐπαναστάτας τοῦ περιφήμου Στένκο Ραζίνα. Εἶτα ἐγένετο βοε-βόδας τοῦ Κιέβου. Θ. Β.

**Μπαριγιόν,** ἢ ***Μπαρριγιὸν*** (Barillon ἢ Barril-lon), ***Παῦλος,*** *μαρκήσιος ντὲ* ***Μπράνζ.*** Γάλλος δι-πλωμάτης (1630—1691). Διετέλεσε σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ διοικητὴς ἐν Πικαρδίᾳ, εἶχε δὲ συνδεθῆ διὰ φιλίας μετὰ τῶν Τυρέν, κυρίας Μαιν-τενόν, κυρίας ντὲ Σεβινιέ, Λὰ Φονταὶν καὶ ἄλλων μεγάλων συγχρόνων του προσωπικοτήτων. Τῷ 1668 ἀπετέλεσε μέλος διπλωματικῆς ἀποστολῆς διὰ τὸν διακανονισμὸν τῶν ὑπὸ τῆς συνθήκης τοῦ Ἀκυϊσ-γράνου προβλεπομένων συνόρων. Ἀκολούθως (1673) μετέσχε τῆς ἀντιπροσωπείας, ἥτις ἀπεστάλη εἰς τὸ συνέδριον τὸ συγκληθὲν εἰς Πολωνίαν, μεσολαβήσει τῆς Σουηδίας, πρὸς διακανονισμὸν τῶν μεταξὺ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ Ὁλλανδίας διαφωνιῶν. Ἡ διά-σκεψις αὕτη διελύθη μετὰ δεκαμήνους ματαίας συ-ζητήσεις, χωρὶς νὰ καταλήξῃ εἰς ἀποτελέσματα. Τῷ 1677 ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Λονδῖνον, καθ' ὃν χρόνον διήρκει ἀκόμη ὁ πρὸς τὴν Ὁλλανδίαν πό-λεμος, ἡ δὲ διατήρησις τῶν μετὰ τῆς Ἀγγλίας φι-λικῶν σχέσεων ἐνδιέφερεν ὅσον ποτὲ τὸν Λουδο-βῖκον. Ἡ ἀποστολή του αὕτη ἀπέτυχε κατόπιν τοῦ γάμου τοῦ Γουλιέλμου τῆς Ὀράγγης μετὰ τῆς θυ-γατρὸς τοῦ δουκὸς τῆς Ὑόρκης, μετ' ὀλίγον δὲ εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην νὰ διαβιβάσῃ εἰς Παρι-σίους πρότασιν τῆς Ἀγγλίας περὶ γενικῆς εἰρήνης. Τὴν ἀποτυχίαν ὅμως ταύτην διεδέχθη εἷς ἀληθὴς διπλωματικὸς θρίαμβος τοῦ Μπαριγιόν. Κατανοῶν οὕτως ὅτι ἡ κοινὴ γνώμη ἠμπόδιζε τὸν Κάρολον Β' τῆς Ἀγγλίας νὰ ἐκδηλώσῃ τὰς πρὸς τὴν Γαλ-λίαν συμπαθείας του, διέφθειρε διὰ χρημάτων πολλὰ μέλη τοῦ κοινοβουλίου, κατορθώσας οὕτω νὰ παραλύσῃ πᾶσαν ἀγγλικὴν ἐπέμβασιν κατὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς συνθήκης τῆς Νιμέγης (1678). Καθ' ὅλον τὸ ὑπόλοιπον διάστημα τῆς ἐν Λονδί-νον πρεσβείας του ἤσκησε τεραστίαν ἐπιρροὴν ἐπὶ τῶν αὐλῶν τοῦ Καρόλου Β' καὶ τοῦ διαδόχου αὐ-τοῦ Ἰακώβου Β'· ὁ Γουλιέλμος ὅμως τῆς Ὀράγ-γης, ἅμα τῇ ἀναρρήσει του εἰς τὸν ἀγγλικὸν θρό-νον, διέταξε τὸν Μπαριγιὸν νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ ἔδαφος τῆς Ἀγγλίας. Ἐπιστρέψας τότε εἰς Γαλ-λίαν ἀπεσύρθη τοῦ λοιποῦ εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον. Χ. Δ.

**Μπαρίγκο** (Barin go) *[Γεωγρ.].* Λίμνη τῆς Ἀ-φρικῆς τοῦ Ἰσημερινοῦ, εἰς τὴν ἀγγλικὴν ἀνατολι-κὴν Ἀφρικήν, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Μασσάϊ. Εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τῶν λιμνῶν τῆς περιφερείας μετὰ τὴν λίμνην τοῦ Ροδόλφου. Πρῶτος τὴν ἐνεκάλυψεν ὁ ἐξερευνητὴς Θόμψων, ὅστις καὶ ἀπέδειξεν ὅτι ἦτο ἀνεξάρτητος τῆς λίμνης τῆς Βικτωρίας, βραδύτε-ρον δὲ τὴν ἐπεσκέφθησαν ἐπίσης οἱ ἐξερευνηταὶ Τελέκι Φὸν Χένελ, Πήτερς καὶ Γκρέγκορυ. Π.Γ.Λ.

**μπάριζα** (ἡ) *[Ναυτ.].* Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτι-κῆς γλώσσης, ἐκ τοῦ ρωσικοῦ *μπάρζα*, σημαίνων ἀβαθῆ, ἀλλὰ μεγάλης χωρητικότητος φορτηγίδα, ἀτμήλατον ἢ διὰ ρυμουλκίας προωθουμένη, πρὸς μεταφορὰν σιτηρῶν ἰδίως εἰς ἀβαθῆ πρόσγεια λι-μένων τῆς Ἀζοφικῆς. Κατ' ἐπέκτασιν καὶ εἰδικὰ τοῦ Δουνάβεως ποταμόπλοια. Παρά τινων ἐτυμο-λογεῖται ἡ λέξις ὡς προελθοῦσα ἐκ παραφθορᾶς τοῦ *βάρις* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπαρίλε** (Barile) *[Γεωγρ.].* Κοινότης τῆς Ἰτα-λίας, ἐν τῷ νομῷ *Ποτέντσας* τῆς Βασιλικάτας. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα κεῖται ἐπὶ δύο λόφων τῶν ἀνατολικῶν πλευρῶν τοῦ ὄρους Βουλτούρε, εἰς ὕψος 600 μ. Ἡ περιοχὴ ἀναφέρεται ἀπὸ τοῦ 1152 ὡς ἀραιοκατῳκημένον φέουδον, ὑπὸ τὸ ὄνομα Ba-rilis. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς ηὐξήθησαν τῷ 1748 διὰ τῆς μεταναστεύσεως Ἀλβανῶν προσφύγων ἐκ Σκου-τάρεως καὶ Κρόϊας καὶ τῷ 1533 ὑπὸ Ἑλλήνων ἐκ Κορώνης. Τῷ 1597 μετηνάστευσαν ἐκεῖ ἄλλοι Ἀλ-βανοὶ ἐκ Μέλφι, τῷ δὲ 1647 ἄλλοι Ἕλληνες ἐκ Μάνης ἐγκατεστάθησαν ἐν τῷ χωρίῳ τῆς κοινό-τητος *Πάλιαρι*, ὅπου ὑπάρχει καὶ ὁδὸς Μάνης. Τὰ πρῶτα καταφύγια τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν Ἀλβα-νῶν ἐν Μπαρίλε ὑπῆρξαν σπήλαια διανοιγέντα ἐν τῷ ἡφαιστειογενεῖ ἐδάφει τοῦ λόφου Σέσιο, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐρείδεται ἡ ἀνατολικὴ πλευρὰ τοῦ χω-ρίου. Τὰ σπήλαια ταῦτα μετεβλήθησαν κατόπιν εἰς ἀποθήκας, σταύλους κτλ., πρὸ τῶν ὁποίων ἐκτί-σθησαν αἱ οἰκίαι. Οἱ κάτοικοι κατὰ τοὺς παρεχομέ-νους ἀριθμοὺς ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν ἐγγράφων, ἀνήρ-χετο τῷ 1562 εἰς 1200, τῷ 1627 εἰς 1500, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1800 εἰς 3.000, τῷ 1861 εἰς 3.763, τῷ 1901 ἠλαττώθησαν κατὰ 1% λόγῳ τῆς μετα-ναστεύσεως, ἀλλὰ τῷ 1921 ἀνῆλθον εἰς 3.829, ζῶσι δὲ σχεδὸν πάντες συγκεντρωμένοι εἰς τὴν πρω-τεύουσαν, ἡ ὁποία ἔπαθε μεγάλας ζημίας κατὰ τοὺς σεισμοὺς τοῦ 1694, τοῦ 1731, τοῦ 1851 καὶ τοῦ Ἰουλίου τοῦ 1930. Ἀπὸ τοῦ ὕψους τῶν δύο λόφων αὐτῆς ἡ θέα εἶναι ὡραιοτάτη, φθάνουσα μέχρι τῆς Ἀδριατικῆς. Ἡ κοινότης παράγει ἀφθό-νους οἴνους καὶ κάστανα. Οἱ κάτοικοι διατηροῦν εἰσέτι τὸν ἐθνικὸν ὑπερήφανον καὶ φιλοπόλεμον ἑλληνοαλβανικὸν τύπον, διάλεκτον ἀνάμεικτον μὲ ἑλληνικάς, ἀλβανικὰς καὶ ἰταλικὰς λέξεις, ἑλληνο-αλβανικὰ ἤθη καὶ ἔθιμα. Αἱ γυναῖκες φέρουν ἑλ-ληνοαλβανικὰς ἐνδυμασίας καὶ συνηθίζουν νὰ πα-ρακολουθοῦν τὰς κηδείας μὲ λελυμένην τὴν κόμην καὶ μὲ μοιρολόγια.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Bozza*, Il Vulture (1889). Μ. Δ. Β.

**Μπαρὶν Ἀρβὲντ** (Barine Arvède), ***Λουΐζα Καικιλία.*** Γαλλὶς λογία (βλ. λ. *Ἀρβὲντ* Μπαρίν).

**Μπάρινγκ** (Baring). Μεγάλη ἀγγλικὴ οἰκογέ-νεια τραπεζιτῶν καὶ ἐμπόρων (βλ. λ. *Μπέαριν*).

**Μπάρισαλ** (Barisal) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν ἀγ-γλικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα τοῦ διαμερίσματος *Μπάκεργκαντζ.* Κάτοικοι 19.000. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, παραποτάμου τοῦ Τιτάλια, ἐν τῷ δέλτα τοῦ Γάγγου.

**Μπαριτίου** (Baritiu), ***Γεώργιος.*** Ρουμᾶνος δη-μοσιολόγος ἐκ Τρανσυλβανίας (1812—1893). Ἵδρυσε τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Τρανσυλβανίας» καὶ φιλολογι-κὸν περιοδικόν. Κατὰ τὸ ἐναντίον τῶν Οὔγγρων κίνημα τοῦ ἔτους 1848 ἀπετέλεσε μέλος τῆς ἐθνι-κῆς ἐπιτροπῆς τοῦ Σίμπιου (Ἕρμανσταντ), κατέ-φυγε δὲ εἰς Βουκουρέστιον, ὁπόθεν ἀπηλάθη λόγῳ τῶν ἄκρως φιλελευθέρων ἰδεῶν του. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του ἵδρυσε τὴν «Τρανσυλβανικὴν Ἑταιρείαν» (1861), ἥτις ὑπῆρξεν ὁ πρόδρομος τῆς



Digitized by Google

Γενικῆς Συνελεύσεως καὶ τῆς τρανσυλβανικῆς Διαίτης. Ἀπὸ τοῦ ἔτους 1875 ἐξέδιδεν ἐν Σίμπιου τὸν «Παρατηρητήν». Ἔγραψε διαφόρους ἱστορικὰς μελέτας καὶ συνέταξε τρία λεξικά (οὑγγρορρουμανικόν, ρουμανογερμανικὸν καὶ γερμανορρουμανικόν). Γ. Ι. Β.

**Μπαρίτο** (Barito) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ὁλλανδικῆς *Βόρνεο*, πηγάζων ἐκ τῶν ὀρέων Μύλλερ, καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 800 χλμ. εἰς τὴν θάλασσαν τῆς Ἰάβας παρὰ τὸ Μπανγιερμάσσιν. Ἀρδεύει περιοχὴν ἐκτάσεως 90.000 τετρ. χλμ. Χ. Δ.

**Μπάρκα** (Barca, Barka, Barcah, Barkah) *[Γεωγραφ.]*. Ἰταλικὴ κτῆσις ἐν Τριπολίτιδι (βλ. λ. *Βάρκη*).

**μπαρκάρισμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μπαρκάρω*, ἡ διὰ τῆς λέμβου ἐπιβίβασις ἀνθρώπων ἢ φόρτωσις ἐμπορευμάτων.

**μπαρκαρόλλα** (ἡ) *[Μουσ.]*· βλ. λ. *βαρκαρόλλα*.

**μπαρκάρω**, *ἀόρ. ἐ)μπάρκαρισα καὶ ἐ)μπάρκαρα, παθ. μετχ. μπαρκαρισμένος*· δημοτ., ἐπιβιβάζω διὰ τῆς λέμβου εἰς πλοῖον: «μπαρκάρισα τὴν οἰκογένειά μου γιὰ τὸ νησί», «μπαρκάρω τὰ ἐμπορεύματα,— τὰς ἀποσκευάς»· || ἀμετβ., ἐπιβιβάζομαι εἰς πλοῖον: «γιὰ ποῦ μπαρκάρεις;», «μπαρκάρω γιὰ τὴν Εὐρώπη».

**Μπαρκγιαρόκ**, ἢ ***Μπερκγιαρόκ***. Τέταρτος σουλτᾶνος τοῦ ἐν Περσίᾳ βασιλεύσαντος κλάδου τῶν Σελτζουκιδῶν Τούρκων, υἱὸς τοῦ Μαλὲκ-Σὰχ καὶ ἔγγονος τοῦ Ἄλπ-Ἀρσλάν. Διεδέχθη τὸν πατέρα του τῷ 1093 καὶ ἐβασίλευσε δώδεκα ἔτη. Διεξήγαγεν ἐμφυλίους πολέμους πρὸς τοὺς ἀδελφούς του Μεχμὲτ καὶ Σιντζάρ, οἵτινες κατέλαβον πολλὰς ἐπαρχίας τοῦ κράτους του. Ἀπέθανε τῷ 1104, εἰς ἡλικίαν 25 ἐτῶν. Ν. Μ.

**Μπάρκε** (Burke)· βλ. λ. *Μπέρκ*.

**Μπάρκερ** (Barker), ***Ἐδμόνδος-Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος φιλόλογος καὶ ἑλληνιστὴς (1788—1839). Ἠσχολήθη ἰδίως μὲ τὰ ἔργα τῶν ἀρχαίων κλασσικῶν· διεκρίθη δὲ διὰ τὰς γενομένας ὑπ' αὐτοῦ λίαν δοκίμους ἐκδόσεις Ἑλλήνων καὶ Λατίνων συγγραφέων, καθὼς καὶ τοῦ «Thesaurum linguae graecae» τοῦ Ἐρρίκου Στεφάνου. Προσέτι συνέγραψε λεξικὸν ἑλληνογαλλικὸν καὶ περισπούδαστον πραγματείαν, δι' ἧς ἀνασκευάζει τὴν γνώμην, ὅτι αἱ «Ἐπιστολαὶ τοῦ Ἰουνίου» εἶναι ἔργον τοῦ σερ Φιλίππου Φράντσις. Ὁ Μπάρκερ ὑπῆρξε συνεργάτης τοῦ περιοδικοῦ κλασσικῶν σπουδῶν τοῦ Βάλπυ. Α. Δ.

— **Μπάρκερ** (Barker), ***Θωμᾶς-Ἰωάννης-Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος ζωγράφος (1815—1882). Τὰ πρῶτα μαθήματα ἐδιδάχθη παρὰ τοῦ πατρός του Θωμᾶ Μπάρκερ, ρωπογράφου. Μετὰ ταῦτα (1835), μεταβὰς εἰς Παρισίους, εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Ὁρατίου Βερνέ. Ἀπὸ τοῦ 1837 μέχρι τοῦ 1850 ἐξέθηκε τακτικῶς εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν ἔργα του. Ἐπανελθὼν εἰς Ἀγγλίαν ἐπεδόθη εἰς τὴν ἀπεικόνισιν μαχῶν, ζῴων, ἱστορικῶν σκηνῶν καὶ ἐπεισοδίων τοῦ καθημερινοῦ βίου. Παρακολουθήσας τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870, ἐνεπνεύσθη ἐξ αὐτοῦ ἐνδιαφέροντας πίνακας· δι' ὃ ἐπεκλήθη «Ἄγγλος Ὁράτιος Βερνέ». Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ θάνατος Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ'», «Σκηνὴ κυνηγίου», «Αἱ καλλοναὶ τῆς αὐλῆς Καρόλου τοῦ Β'», «Ἡ μνηστὴ τοῦ θανάτου», «Νεκρὸν θήραμα». Ι. Μ. Π.

— **Μπάρκερ** (Barker), ***Κάρολος Σπάκμαν***. Ἄγγλος κατασκευαστὴς μουσικῶν ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων, γεννηθεὶς τῷ 1806. Εἶναι γνωστὸς ὡς ἐφευρέτης νέου συστήματος, ἀποσκοποῦντος τὸν εὐχερέστερον χειρισμὸν τῶν πλήκτρων τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου.

— **Μπάρκερ** (Barker), ***Μαρία-Ἄννα Στέγουαρτ, λαίδη Μπρούμ***. Ἀγγλὶς συγγραφεύς, γεννηθεῖσα τῷ 1835. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτῆς, πολλὰ τῶν ὁποίων εἶναι παιδικὰ διηγήματα, διακρίνονται: «Ἡ ζωὴ εἰς τὰ ἱδρύματα τῆς Νέας Ζηλανδίας» (1869), «Σύντομοι ἱστορίαι» (1870) καὶ τὰ «Πρῶτα μαθήματα τῆς μαγειρικῆς».

— **Μπάρκερ-Οὐέμπ** (Barker-Webb). Ἄγγλος φυσιοδίφης καὶ ἐξερευνητὴς (1793—1854). Ἐπεσκέφθη τὰς Καναρίους νήσους καὶ τὴν Ἀνατολήν, εἶτα δ' ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Φυσικὴ ἱστορία τῶν Καναρίων νήσων» (1836—1850), βαρυσήμαντος καὶ ἐμβριθεστάτη συγγραφή, καὶ «Τοπογραφία τῆς παλαιᾶς καὶ τῆς νέας Τροίας». Α. Δ.

**Μπαρκέττα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Σκόπελος τοῦ βορείου στομίου τῆς Κερκυραϊκῆς θαλάσσης (πλάτ. 39°47' Β., μήκ. 19°58' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channels of Corfu), ἥμισυ μίλιον ἀνατολικῶς τῆς νησῖδος *Καπαρέλλι* (ἀρχ. *Πυθιονία*). Σπουδαῖον σημεῖον διὰ τοὺς πρὸς Ἁγίους Σαράντα διὰ τῆς Κερκυραϊκῆς θαλάσσης πλέοντας, ἐφωτίσθη τῷ 1919 διὰ φάρου «Ἄγκα», ἑδραζομένου ἐπὶ κτίσματος προσομοίου πρὸς τὸ μνημεῖον τοῦ Λυσικράτους. Σπανίας ὅμως σφοδρότητος τρικυμία ἀπέκοψεν αὐτὸ σύρριζα, καταποντισθέντος τοῦ φάρου, ἤδη δὲ μόλις προέχει τῆς θαλάσσης ἡ Μπαρκέττα. Οἱ ἐντόπιοι τὴν ὀνομάζουν Ψύλλον. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρκιζιμέτο** (Barquisimeto) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βενεζουέλας, πρωτεύουσα τῆς πολιτείας *Λάρα*, κειμένη εἰς ὑψηλὴν θέσιν (541 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν) ἐπὶ τῶν ὄχθων ὁμωνύμου αὐτῇ ποταμοῦ καὶ εἰς ἀπόστασιν 165 χλμ. νοτιοδυτικῶς ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τῆς παραλίας καὶ παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου Τρίστε κειμένου ἐπινείου αὐτῆς *Τουκάκας*. Εἶναι ἕδρα καθολικοῦ ἐπισκόπου καὶ ἔχει ὡραῖον μητροπολιτικὸν ναὸν καὶ πλείστας δημοσίας σχολάς. Κεῖται ἐντὸς εὐφόρου εἰς καφέν, κακάον, ζάχαριν κλπ. περιοχήν, διεξάγει δὲ ζωηρότατον ἐμπόριον τῶν προϊόντων τούτων. Ἱδρύθη τῷ 1522 ὑπὸ τοῦ Χουὰν ντὲ Βιλλιέγκας καὶ ἔλαβε κατ' ἀρχὰς τὸ ὄνομα *Νέα Σεγοβία* (Nueva Segovia). Τῷ 1812 κατεστράφη ὑπὸ μεγάλου σεισμοῦ. Μέχρι τοῦ 1881 ἦτο ἕδρα ὁμωνύμου πολιτείας, ἥτις συνεχωνεύθη τότε μετὰ τῆς Λάρας. Κάτ. (1926) 23.109. Χ. Δ.

**Μπάρκινγκ** (Barking) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ *Ἔσσεξ*, παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ ποταμοῦ Ρόντιγκ πρὸς τὸν Τάμεσιν. Κάτ. 35.523. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τοῦ Λονδίνου, τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ προάστειον καὶ ἔχει μέγα ἄλσος, ὅπου κατὰ Σάββατον διοργανοῦται σημαντικὴ ἐμποροπανήγυρις. Ἔχει ἐρείπια ὀνομαστῆς μονῆς βενεδικτίνων καλογραιῶν, ἱδρυθείσης τῷ 670 καὶ ἀνακαινισθείσης τῷ 970 ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἔδγαρ, 100 ἔτη μετὰ τὴν καταστροφὴν αὐτῆς ὑπὸ τῶν Δανῶν. Ἐν τῇ πόλει ὑπάρχουν ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, πλεκτῶν ὑφασμάτων καὶ ναυπηγεῖα ξυλίνων ἰδίως πλοίων. Μ. Δ. Β.

**Μπάρκλα** (Barkla), ***Κάρολος-Γκλόβερ***. Ἄγγλος φυσικός, γεννηθεὶς τῷ 1877. Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Λίβερπουλ καὶ τῆς Κανταβριγίας καὶ ἀπὸ τοῦ 1909—1913 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λονδίνου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1913 ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου. Τῷ 1917 ἀπενεμήθη εἰς αὐτὸν τὸ βραβεῖον Νόμπελ τῆς φυσικῆς διὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἀνακάλυψιν τῆς χαρακτηριστικῆς ἀκτινοβολίας Ραῖντγκεν παρὰ τοῖς στοιχείοις. Ἐδημοσίευσε διαφόρους ἐργασίας του ἐπὶ τῶν ἠλεκτρικῶν κυμάτων, ἐπὶ τῶν ἀκτίνων Χ κ.τ.λ. εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ (βλ. λ. *ἀκτῖνες Ραῖντγκεν*). Μ. Δ. Β.

**Μπάρκλαιυ** (Barclay), ***Ἀλέξανδρος***. Σκῶτος φιλόλογος, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ὡς μεταφραστὴς ἔργων τοῦ Σαλλουστίου καὶ ὡς συγγραφεὺς τοῦ σατιρικοῦ ποιήματος «Navis stultifera», συνταχθέντος κατ' ἀπομίμησιν ὁμοίου λογοτεχνήματος τοῦ Σεβαστιανοῦ Μπράντ.

— **Μπάρκλαιυ** (Barclay), ***Ἀρθοῦρος***. Πολιτικὸς τῆς Λιβερίας, γεννηθεὶς εἰς τὰς Ἀγγλικὰς Ἀντίλλας τῷ 1857. Τῷ 1894 μετέβη εἰς τὴν Γουϊνέαν, ὅπου εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ὡς λογιστὴς καὶ κατόπιν ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Εὐφυέστατος, ἐνεργητικώτατος καὶ φιλοπρόοδος εἰς τὸ ἄκρον, ἐξελέγη τῷ 1898 βουλευτής, διωρίσθη μετὰ πάροδον ἑνὸς ἔτους ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ τέλος ἐγένετο πρόεδρος τῆς δημοκρατίας. Κατέβαλε πᾶσαν δυνατὴν προσπάθειαν πρὸς βελτίωσιν τῶν οἰκονομικῶν τῆς χώρας, τὴν ὁποίαν ἤνοιξεν εἰς τοὺς Εὐρωπαίους, μὴ ἔχοντας πρότερον δικαίωμα ἰδιοκτησίας ἐν αὐτῇ. Κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1907, συνοδευόμενος ὑπὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῆς Δικαιοσύνης καὶ τοῦ στρατηγοῦ Τζῶνσον, μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου διεπραγματεύθη μετὰ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Γαλλίας καὶ ἐπέτυχε διαρρύθμισίν τινα τῶν συνόρων τῆς Λιβερίας πρὸς τὴν γαλλικὴν Γουϊνέαν.

— **Μπάρκλαιυ** (Barclay), ***Γουλιέλμος***. Σκῶτος νομομαθὴς (1541—1605). Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν ἐν Μπούρζ, διωρίσθη δὲ ὑπὸ τοῦ δουκὸς Καρόλου Η' τῆς Λωρραίνης καθηγητὴς τοῦ Δικαίου εἰς τὸ παρ' αὐτοῦ ἱδρυθὲν πανεπιστήμιον ἐν Πὸν-ἀ-Μουσσόν, καὶ βραδύτερον σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας. Ἀναγκασθεὶς νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν Λωρραίνην, λόγῳ διενέξεως του πρὸς ἰησουΐτας, μετέβη εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου εἰσῆλθεν εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἰακώβου τοῦ Α'. Βραδύτερον τῷ ἐπροτάθη νὰ διορισθῇ καθηγητὴς τῆς νομικῆς ὑπὸ τὸν ὅρον ν' ἀπαρνηθῇ τὸν καθολικισμόν, ἀλλ' ὁ Μπάρκλαιυ ἀπέρριψε τὴν πρότασιν καὶ ἐγκαταλιπὼν τὴν Ἀγγλίαν ἐγκατεστάθη ἐν Γαλλίᾳ, ὅπου τῷ ἐδόθη ἡ ἕδρα τοῦ Δικαίου εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἀνζέ. Α. Δ.

—**Μπάρκλαιυ** (Barclay), ***Θωμᾶς***. Σύγχρονος Ἄγγλος νομομαθής, γεννηθεὶς τῷ 1853 ἐν Dunfermline τῆς Σκωτίας. Σπουδάσας εἰς Λονδῖνον, Παρισίους καὶ Ἰένναν, ἤσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ταυτοχρόνως ἐν Παρισίοις καὶ Λονδίνῳ, διακριθεὶς μεταξὺ τῶν νομικῶν κύκλων τόσον τῆς Ἀγγλίας ὅσον καὶ τῆς Γαλλίας διὰ τὴν εὐρυμάθειαν καὶ δικανικότητα αὐτοῦ καὶ ἀποκτήσας ἰδιάζον κῦρος ἐπὶ τῶν ζητημάτων διεθνοῦς δικαίου. Ἀπὸ τοῦ 1876 μέχρι τοῦ 1883 διετέλεσεν ἀνταποκριτὴς τῶν «Τάϊμς» ἐν Παρισίοις, βουλευτὴς ... πιν ἐπί τινα χρόνον ἐν τῇ βουλῇ τῶν Κοινοτήτων, εἶτα πρόεδρος τοῦ ἐν τῇ γαλλικῇ πρωτευούσῃ βρεταννικοῦ ἐμπορικοῦ ἐπιμελητηρίου (1899–19..), ἱδρυτὴς καὶ ἀντιπρόεδρος τοῦ γαλλο-σκωτικοῦ ἐπιμελητηρίου, πρόεδρος τοῦ ἰνστιτούτου διεθνοῦς δικαίου, ἀντιπρόεδρος τῆς ἐν Λονδίνῳ Διεθνοῦς νομικῆς ἑνώσεως κλπ. Εἰς αὐτὸν ἀνετέθη ἡ σύνταξις πάντων τῶν ἀναφερομένων εἰς τὸ διεθνὲς δίκαιον ἄρθρων τῆς «Βρεττανικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας», ἔγραψε δ' ἐπίσης: «Problems of International Practice and Diplomacy», «New Methods, Thirty years», «Turco-Italian Work» κλπ. καὶ εἰς γαλλικὴν γλῶσσαν «Les effets de commerce dans le droit anglais» (1884). Μετέφρασεν ἐξ ἄλλου εἰς τὴν γαλλικὴν πολλὰ ἐνδιαφέροντα ἀγγλικὰ ἔργα ἀναγόμενα ἰδίως εἰς τὰς διεθνεῖς μεταξὺ τῶν διαφόρων χωρῶν σχέσεις.

— **Μπάρκλαιυ ντὲ *Τόλλυ*** (Barklay de Tolly), ***Μιχαήλ, πρίγκιψ —***. Ρῶσος στρατηγὸς (17..-1818). Ἀνήκων εἰς ἀρχαίαν σκωτικὴν οἰκογένειαν καταφυγοῦσαν εἰς Ρίγαν, υἱοθετήθη ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Βερμοῦλεν, εἰσαχθεὶς δὲ εἰς τὸ ρωσικὸν σύνταγμα τῶν θωρακοφόρων διεκρίθη εἰς τὰς ἐναντίον τῶν Τούρκων ἐκστρατείας τῷ 17.. καὶ 1789, κατὰ τῶν Σουηδῶν τῷ 1790 καὶ τῷ 1792 κατὰ τῶν Πολωνῶν. Τῷ 1806, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, ... κει εἰς Πουλτοὺσκ τὰς προφυλακὰς τοῦ Μπέννιγκσεν καὶ ... πώλεσε τὸν βραχίονά του κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ἐϋλῶ. Τῷ 18.. διωρίσθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἀλεξάνδρου Α' ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν. Τῷ 1812 ... νέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς δυτικῆς στρατιᾶς ἐναντίον τῆς εἰσβολῆς τοῦ Ναπολέοντος εἰς Ρωσίαν. Ἀπολέσας τὴν μάχην τοῦ Σμόλενσκ, ἐτέθη ... τὰς διαταγὰς τοῦ στρατάρχου Κουτούζωφ καὶ ... τέσχε τῆς περιφήμου μάχης τοῦ Μποροντίνο, ... δὲ τὴν μάχην τοῦ Μόζαϊσκ διῴκει τὴν δεξιὰν πτέρυγα τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ. Περιελθὼν εἰς διαφωνίαν μετὰ τοῦ Κουτούζωφ, παρῃτήθη τῆς διοικήσεως τοῦ σώματός του. Μετὰ τὸν θάνατον ἐκείνου ὁ Μπάρκλαιυ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς δεκάτης τρίτης στρατιᾶς, κατέλαβε τὸ Θῶρν, ... κησεν εἰς Καίνιγκσμπεργκ καὶ διοικῶν τὴν δεξιὰν πτέρυγα τοῦ συμμαχικοῦ στρατοῦ μετέσχε τῆς μάχης τοῦ Μπάουτζεν καὶ πρωτηγωνίστησε κατὰ τὰς μάχας τῆς Δρέσδης, τοῦ Κοὺλμ καὶ τῆς Λειψίας. Ὁ τσάρος ἀπένειμε τότε εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ κόμητος. Τῷ 1814 διῴκει τὰ ρωσικὰ στρατεύματα εἰς τὰς μάχας τοῦ Μπριέν, τοῦ ... σίς, καὶ εἰσῆλθε μετὰ τῶν συμμάχων εἰς Παρισίους. Προήχθη τότε εἰς στρατάρχην καὶ ... τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος. Μετὰ τὴν εἰρήνην ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ ἑδρεύοντος εἰς ... λίχωφ στρατοῦ. Ὁ αὐτοκράτωρ Νικόλαος ... ἤγειρεν εἰς αὐτὸν μνημεῖον ἐν Πετρουπόλει ... ἕτερον εἰς Δορπὰτ καὶ ἐτίμησε μὲ τὸ ὄνομα ... ἓν σύνταγμα τῶν καραβινιέρων.

*Μιχαὴλ Μπάρκλαιυ ντὲ Τόλλυ.*

**Μπαρκμάδι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα ... ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Καστρίτσα* (βλ. ...

**μπάρκο** (τὸ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *μυοδρόμων*.

**Μπάρκο** (Punta del Barco) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Ἱσπανίας, σχηματίζον τὸν μεταξὺ Καρθαγένης καὶ ἀκρωτηρίου Πάλος λιμένα *Πορμὰν* (Porman bay: πλάτ. ... 34' Β., μήκ. 0° 50' Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 774: ... Cartagena), τὸν Portus Magnus τῶν Λατίνων γεωγράφων. Σ. Ε. Λ.

**μπαρκομπέστια** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Ἱστιοφόρον ... στηλον, διαφέρον τοῦ μυοδρόμωνος καὶ τοῦ ... μωνος, κατὰ τὸ ὅτι μόνον ὁ ἀκάτιος ἱστὸς ... σταυρωτὰς κεραίας, ἀπὸ ἀκατίου ἕως ... ἐνῷ ὁ μέγας ἱστὸς καὶ ὁ τοῦ ἐπιδρόμου φέρουν μόνον τραπεζοειδὲς ἱστίον (δηλαδὴ μέγα ἡμιόλιον καὶ ἐπίδρομον), λαίφη καὶ ἀναδρομικὰ ... (βελλαστράλια) καὶ προτονίδας (σταντζιέρες). Ὁ ... βολος εἶναι ὡς ὁ τῶν δρομόνων. Ἐπίσημος ... συνώνυμος τοῦ μπαρκομπέστια δὲν ὑπάρχει, ... ἐδοκιμάσθη ἀνεπιτυχῶς ὁ «*ἡμιμυοδρόμων*» (Γ. ... τσοβίλλη «Περὶ ἐξαρτισμοῦ πλοίων», Ἑρμούπολις 18.. ἐν ᾧ ἔργῳ, σελ. 25—30, πᾶσαι αἱ ἀναλογίαι ... ἐξαρτισμὸν τοιούτων). Σ. Ε. Λ.

**Μπάρκοσης**, ***Νικόλαος***. Ἕλλην διδάσκαλος ... συγγραφεὺς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος (βλ. λ. *Βάρκοσης* ... κόλαος).

**Μπὰρ-Κοσιμπᾶ**. Ὀνομασία κατὰ τὰς ραββινικὰς πηγὰς τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς ἐπαναστάσεως ... Ἑβραίων κατὰ τῆς Ρώμης ἐπὶ Ἀδριανοῦ. Εἶναι ... *Βαρχωχέβας* (βλ. λ.) τῶν χριστιανικῶν πηγῶν.

**Μπάρκου** (Barcoo) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Αὐστραλίας (βλ. λ. *Κοῦπερς-Κρήκ*).

Digitized by Google

**Ιπαρκούκ, *'Ελ-Μελὲκ - 'Ελ - Ζάχερ*.** Σουλτᾶνος, Αἰγύπτου (1382—1399) ἱδρυτὴς τῆς Β' δυναίας τῶν Μαμελούκων Κιρκασίων (βλ. λ. *Αἴγυ-* τ. Β' σ. 592 *α'*).

**Ιπαρκοὺλ** (Barkul) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Σιοῦ Τουρκεστάν, κειμένη εἰς τὸ κέντρον σχεδὸν 'Ασίας παρὰ τὰ ΒΑ. σύνορα τῆς ἐπαρ- *Σὶν Κιάνγκ*, ἐπὶ τῆς ἀπὸ Πεκίνου εἰς Κού- βορείας ὁδοῦ καὶ ἐπὶ τῶν ἀνατολικωτάτων εκτάσεων τῶν ὀρέων Τιὰν - Χάν. Κάτ. (1920) 78. Νοτίως αὐτῆς εἰς ἀπόστασιν 16 περί- χλμ. κεῖται μικρὰ ὁμώνυμος ἁλμυρὰ λίμνη, ὕψος 1.550 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, μεταξὺ τῶν ων Τιὰν-Χὰν καὶ τῆς ἐρήμου Γκόμπι, ἔχουσα άλην ἀπὸ στρατηγικῆς καὶ ἱστορικῆς ἀπόψεως ιασίαν, λόγῳ τοῦ ὅτι κεῖται εἰς τὸ μεταίχμιον ν χωρῶν Κίνας, Μογγολίας, Τζουγγαρίας καὶ υρκεστάν. χ. Δ.

**Μπὰρ-Κοχεμπᾶ·** βλ. λ. *Βαρχωχέβας*.

**Μπαρκχχάουζεν** (Barkhausen), ***'Ιωάννης - Κονδος***. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ χημικὸς (1666—1723). ξέδωκεν ἐν Φραγκφούρτῃ τῷ 1690 «Φαρμακευτι- σύνοψιν», μετέβη δὲ κατόπιν μετὰ ἐνετικοῦ ρατοῦ εἰς Τουρκίαν καὶ τῷ 1698 ἐπανελθὼν ἐγτέστη ἐν Οὐτρέχτῃ, ὅπου ἤρχισε διδάσκων ἰδιωῶς μαθήματα χημείας. Τῷ 1703 ἱδρύθη δι' αὐ- ἔκτακτος ἕδρα χημείας ἐν τῷ ἐκεῖ πανεπιστηρ. Ἂν καὶ ἦτο πολυμαθέστατος, αἱ συγγραφαὶ ὁποίας ἀφῆκε δὲν θεωροῦνται πολλάκις πραχῆς ἀξίας. 'Αξιολογώτεραι μεταξὺ αὐτῶν κρίνον- αἱ: «Historia medicinae inqua si non om-, pleraque saltum medicorum rutiocinia, dogata, hypotheses etc. pertractantur ebe» καὶ «De edicinae origine et progressu dissertationes». ἔργον αὐτοῦ «Collecta medicinae practicac geralis» ('Αμστελλόδαμον 1715) σφοδρῶς ἐπολεθη ὑπὸ τοῦ Haller καὶ ἄλλων. 'Εν πάσῃ περιώσει δὲν δύνανται νὰ θεωρηθῶσιν ἀσήμαντοι, δὴ διὰ τὴν ἐποχήν του, αἱ ἐργασίαι τοῦ παρκχάουζεν περὶ τὴν ἀναλυτικὴν ἔρευναν τοῦ ματος, τῆς χολῆς, τῆς πέψεως καὶ τῶν τελικῶν ύτης προϊόντων. Ο. Ρ.

**Μπαρλαὰμ** (Barlaam), ***Βερνάρδος***. Σοφὸς μοχὸς ἐκ Καλαβρίας, ἀποθανὼν τῷ 1348. Μεταs εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν πρὸς ἐκμάθην τῆς ἑλληνικῆς καὶ συνδεθεὶς μετὰ τοῦ 'Ανδροίου τοῦ Νεωτέρου (1339) ἐστάλη παρ' αὐτοῦ εἰς βινιόν, ὅπως ἑνώσῃ τὰς δύο 'Εκκλησίας καὶ ζησῃ τὴν βοήθειαν τῶν ἡγεμόνων τῆς Δύσεως αντίον τῶν Μωαμεθανῶν. Κατὰ τὴν ἐπάνοδόν υ εἰς τὴν 'Ανατολήν, ἔσχε βιαίας προστριβὰς τὰ τοῦ μοναχοῦ Γεωργίου Παλαμᾶ καί, καταδιισθεὶς ὑπὸ τῶν συνόδων, ἠναγκάσθη νὰ ἐπιρέψῃ εἰς τὴν Καλαβρίαν, ὅπου τῇ παρεμβάσει ῦ Πετράρχου διωρίσθη ἐπίσκοπος. Περὶ τῶν γων αὐτοῦ ὁμιλεῖ ὁ Φαβρίκιος. Α. Δ.

**Μπαρλαῖοι.** Δολοφονηθέντος τοῦ Καποδιστρίου ήφθησαν ἔτι μᾶλλον αἱ ἐν Ναυπλίῳ πολιτικαὶ ιτρίαι, διῃρημέναι κυρίως εἰς τρία κόμματα. Ἓν ὶν πολιτικῶν τούτων κομμάτων, τὸ τῶν ἀγγλολων, ἀπεκλήθη κόμμα τῶν *Μπαρλαίων* καὶ οἱ ύτου ὀπαδοὶ *Μπαρλαῖοι*. 'Απεκλήθη οὕτως ἐκ ῦ *Βασιλείου Μπαρλᾶ*, διατελέσαντος καὶ πληρεουσίου, φανατικοῦ δὲ ὀπαδοῦ τοῦ κόμματος τῶν γγλοφίλων. 'Ο Μπαρλᾶς καὶ οἱ εὐάριθμοι ὀπαοί του τοσοῦτον ἦσαν φανατικοί, ὥστε καὶ ἔνολον σοβαρὰν ἀντίστασιν εἶχον ἀντιτάξει κατὰ τῆς υβερνητικῆς πολιτοφυλακῆς καὶ δὲν κατέπαυσαν ν ἀγῶνα εἰμὴ κατόπιν ἐπεμβάσεως τοῦ Κωλέττη, στις καὶ ἐφυγάδευσεν αὐτούς. Μετὰ τὴν μεταφοὰν τῆς πρωτευούσης εἰς 'Αθήνας ἐξηκολούθησεν τί τινα ἔτη τὸ κόμμα τῶν ἀγγλοφίλων νὰ φέρῃ ὴν προσωνυμίαν Μπαρλαῖοι, μέχρις ἐμφανίσεως ῶν μετέπειτα πολιτικῶν κομμάτων, ὁπότε καὶ πειῆλθεν εἰς ἀφάνειαν. Γ. Θ. Δ.

**Μπαρλαῖός**, ἢ ***Μπάερλε*** (Barlaeus ἢ Baerle), ***άσπαρος βὰν —***. Βέλγος σοφὸς καὶ ποιητὴς ἐξ ᾿Αμβέρσης (1584—1648). Φεύγων εἰς 'Ολλανδίαν ετὰ τῆς οἰκογενείας του, ἐπειδὴ ὁ πατήρ του ίχεν ἀσπασθῆ τὸν καλβινισμόν, ἐσπούδασε θεοογίαν εἰς Λούγδουνον, ὅπου διετέλεσε κατ' ἀρχὰς νώτερος διοικητικὸς ὑπάλληλος εἶτα δὲ καθηγηής τῆς λογικῆς εἰς τὸ αὐτόθι πανεπιστήμιον. Επειδὴ ὅμως ἀνεμίχθη εἰς τὴν μεταξὺ 'Αρμινίου αἰ Γομάρου ἔριδα ταχθεὶς ὑπὲρ τοῦ πρώτου, ἠναγάσθη νὰ φύγῃ ἐξ 'Ολλανδίας καὶ μετέβη εἰς Καέν, που ἤσκει τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ. Τῷ 1631 ροσεκλήθη εἰς τὴν πατρίδα του καὶ διωρίσθη αθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ οῦ Ἄμστερνταμ. Ἔγραψε συγγράμματα ἰατρικῆς αἰ φυσικῆς, κυρίως ὅμως κατέστη γνωστὸς ἐκ ῶν λογοτεχνικῶν αὐτοῦ ἔργων. Τὰ ποιήματά του Poemata» ἐξεδόθησαν τῷ 1628 καὶ 1631 ἐν Λουδούνῳ καὶ τῷ 1645 ἐν Ἄμστερνταμ, οἱ δὲ θαυαστοὶ διὰ τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους λόγοι του Orationes» τῷ 1643 καὶ 1652. 'Απέθανε παάφρων. Χ. Δ.

**μπάρλακ** (τό), ἢ ***μπάσλικ***. Εἶδος καλύμματος τῆς κεφαλῆς (κουκούλα) ἐκ πολὺ χονδροῦ ὑφάσματος, τὸ ὁποῖον ἔφερον οἱ Καυκάσιοι στρατιῶται πρὸς προφύλαξιν ἀπὸ τῶν σπαθισμῶν τῶν ἀντιπάλων των κατὰ τὴν μάχην.

**Μπαρλᾶς, *Βασίλειος*.** Πολιτικός, διατελέσας πληρεξούσιος κατὰ τὸ 1831. 'Εξημμένος καὶ φανατικὸς ὀπαδὸς τῆς πολιτικῆς μερίδος τῶν ἀγγλοφίλων (κατὰ τὰς πολιτικὰς τοῦ 1832 ἐν Ναυπλίῳ διενέξεις), ἀνηγόρευσεν ἑαυτὸν ἀρχηγὸν τοῦ κόμματος τούτου. Ἔκτοτε οἱ ὀπαδοὶ τῆς ἀγγλοφίλου μερίδος ἀπεκλήθησαν ἐκ τοῦ ὀνόματός του *Μπαρλαῖοι*. Γ. Θ. Δ.

— **Μπαρλᾶς, *Τάκης*.** Λόγιος, γεννηθεὶς τῷ 1895 ἐν Λευκάδι. 'Εσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον 'Αθηνῶν, κατόπιν δὲ διετέλεσεν ὑπάλληλος τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν, ἀπομακρυνθεὶς αὐτοῦ τῷ 1922 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ τμηματάρχου. Εἶτα εἰσῆλθεν εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, ἐργασθεὶς διαδοχικῶς εἰς πολλὰς ἐφημερίδας. Τὸ ποιητικόν του ἔργον, ἐμφανισθὲν ἀπὸ τοῦ ἀθηναϊκοῦ περιοδικοῦ «Λόγος» (1917) καὶ τῶν ἀλεξανδρινῶν «Νέα Ζωή» καὶ «Γράμματα», συνεχισθὲν δ' ἀραιῶς καὶ εἰς ἄλλα λογοτεχνικὰ ἢ ἡμερήσια φύλλα, συνάπτεται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον στενῶς πρὸς τὰ γεγονότα τῆς δεκαετίας 1910—1920. 'Εδημοσίευσεν ἐπίσης σειρὰν μεταφράσεων ἐκ τοῦ ἔργου τοῦ Μπωντελαίρ, κριτικὰ ἄρθρα καὶ μελέτας. Τ. Α.

**Μπὰρ-λὲ-Ντὺκ** (Bar-le-Duc) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Μόζα, κειμένη ἐπὶ τοῦ 'Ορναίν, παραποτάμου τοῦ Μάρνη. Ἔχει πιλοποιεῖα καὶ ἐργοστάσια γλυκῶν κατασκευαζομένων ἐκ τῶν ἐκλεκτῶν ὀπωρῶν τῆς περιφερείας καὶ ἰδίως τῶν φραουλῶν. Κάτ. 17.100. Χ. Δ.

**Μπαρλέττα** (Barletta) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς 'Ιταλίας, ἐν τῷ νομῷ *Βάρι* τῆς 'Απουλίας, εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. πρὸς τὰ ΒΔ. τοῦ Βάρι. Κάτ. 46.500. Εἶναι τὸ μεγαλύτερον κέντρον οἴνων τῆς 'Απουλίας, παράγουσα ἐπίσης σιτηρὰ καὶ ἐλαίας καὶ ἔχουσα βιομηχανίαν χημικῶν προϊόντων, σάπωνος, οἰνοπνευμάτων, τσιμέντων, κεράμων, σιδηρῶν κλινῶν καὶ ἐπίπλων. Ἔχει ἐπίσης σημαντικὴν ἁλιείαν. 'Ο λιμὴν τῆς Μπαρλέττας, ὠχυρωμένος καὶ ἐκ τῶν ἀσφαλεστέρων τῆς Ν. 'Αδριατικῆς, εὑρίσκετο εἰς μεγίστην ἀκμὴν κατὰ τὸν μεσαίωνα. Ἡ πόλις ἔχει πολλὰς παλαιὰς ἐκκλησίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ τοῦ 'Αγίου Τάφου, γοτθικοῦ ρυθμοῦ, μὲ βυζαντινίζουσας νωπογραφίας τοῦ ΙΓ' αἰῶνος· πρὸ αὐτῆς ὑπάρχει ὀρειχάλκινον ἄγαλμα ὕψους $4 \frac{1}{2}$ μ. παριστάνον τὸν αὐτοκράτορα 'Ηράκλειον ἢ τὸν Θεόδωρον. Ἔχει ἐπίσης παλαιὰ μεσαιωνικὰ μέγαρα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι τὸ Λὰ Μάρρα καὶ τὸ 'Αφφαϊτάτι, μουσεῖον, φρούριον τοῦ ΙΓ' αἰῶνος κτλ. Κατὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἐποχὴν ἡ Μπαρλέττα ἐκαλεῖτο Barulum καὶ ἦτο πολυσύχναστος λουτρόπολις καὶ προάστειον τῆς πλησίον κειμένης πόλεως Κανόσας. 'Ο Στράβων ἀναφέρει αὐτὴν ὡς Baretum. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας περιῆλθεν ἀλληλοδιαδόχως εἰς τοὺς Γότθους, τοὺς Βυζαντινούς, τοὺς Λογκοβάρδους καὶ ἐπὶ πολλοὺς αἰῶνας παρέμεινεν εἰς χεῖρας τῶν 'Ελλήνων. Κατόπιν περιῆλθεν εἰς τοὺς Νορμανδοὺς καὶ κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ὑπῆρξε τὸ θέατρον σφοδρῶν ἀγώνων μεταξὺ Γάλλων καὶ 'Ισπανῶν. Παρ' αὐτὴν ἔλαβε χώραν, κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς πόλεως ὑπὸ τῶν Γάλλων τῷ 1503, περίφημος ἱπποτικὴ μονομαχία μεταξὺ 13 'Ιταλῶν καὶ ἰσαρίθμων Γάλλων ἱπποτῶν, καταλήξασα ὑπὲρ τῶν πρώτων, τὴν ὁποίαν ὕμνησεν ὁ Μάσσιμο ντ' 'Ατζέλιο ἐν τῷ ἔργῳ αὐτοῦ «Disfida di Barletta». Μ. Δ. Β.

**Μπάρλοου** (Barlow), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος φυσικός, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα. Εἶναι ὁ πρῶτος, ὅστις ἔγραψε περὶ τῶν ἰδιοτήτων τῶν μαγνητῶν, δημοσιεύσας τὸ ἔργον «Παρατηρήσεις περὶ τῆς φύσεως καὶ τῶν ἰδιοτήτων τῶν μαγνητῶν». Α. Δ.

— **Μπάρλοου** (Barlow), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος παιδίατρος, γεννηθεὶς τῷ 1850. Διετέλεσεν ἰατρὸς τοῦ ἐν Λονδίνῳ νοσοκομείου τῶν παίδων καὶ ἐδημοσίευσε: «Notes on pleuritic effusion in childhood Subcutaneous nodules in rheumatism of childhood» (1881), «Fatal myelitis occuring in the exanthem stage of measles», «Raynauds disease, erythromelalgia, tuberculous meningitis u. simple meningitis» κ.ἄ. (βλ. καὶ λ. *σκορβοῦτον*). Ο. Ρ.

— **Μπάρλοου** (Barlow), ***Θωμᾶς - Ὄλντχαμ***. Ἄγγλος σχεδιαστὴς (1824—1889). Μαθητὴς τοῦ Στίφενσον καὶ τοῦ Ρόυστον, ἐγκατεστάθη ἐν Λονδίνῳ, ὅπου διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἰχνογραφίας ἐν τῷ μουσείῳ Σάουθ-Κένσιγκτον. Τῷ 1873 ἐξελέγη μέλος τῆς ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Α. Δ.

— **Μπάρλοου** (Barlow), ***'Ιωήλ***. 'Αμερικανὸς ποιητής· βλ. *Μπάλοου*.

—**Μπάρλοου** (Barlow), ***νόσος τοῦ —*** βλ. λ. *σκορβοῦτον*.

—**Μπάρλοου** (Barlow), ***Πέτρος***. Ἄγγλος συγγραφεὺς τῶν θεωρητικῶν καὶ ἐφηρμοσμένων μαθηματικῶν (1780—1862). Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων αὐτοῦ εἶναι: «Στοιχειώδης ἔρευνα ἐπὶ τῆς θεωρίας τῶν ἀριθμῶν» (1811), «Νέον μαθηματικὸν καὶ φιλοσοφικὸν λεξικὸν» (1814), «Διατριβὴ ἐπὶ τῶν μαγνητικῶν ἕλξεων» (1820).

Αἱ ἔρευναι τοῦ Μπάρλοου ἐπὶ τοῦ μαγνητισμοῦ ἤγαγεν αὐτὸν εἰς ἀνακάλυψιν μέσου διὰ τὴν διόρθωσιν καὶ ἀντιστάθμισιν τῶν σφαλμάτων τῆς πυξίδος τῶν πλοίων. 'Ο Μπάρλοου ἐξελέγη μέλος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας καὶ ἐτιμήθη διὰ τοῦ μεταλλίου Coplus καὶ ἐν γένει ἔλαβε πλείστας ἐπιστημονικὰς τιμητικὰς διακρίσεις ἐκ μέρους τῆς 'Αγγλίας καὶ ἄλλων κρατῶν. Κ. Π.

—***Μπάρλοου τροχός***. Συσκευὴ χρησιμεύουσα πρὸς παραγωγὴν συνεχοῦς κινήσεως ὑπὸ ἠλεκτρομαγνητικῆς δυνάμεως, καὶ ἥτις ἀποτελεῖ τὴν ἀρχὴν τῶν ἠλεκτροκινητήρων. 'Αποτελεῖται ἐκ μεταλλικοῦ ἀκτινωτοῦ δίσκου στρεφομένη περὶ ὁριζόντιον ἄξονα, ὅστις συγκοινωνεῖ πρὸς τὸν ἕνα τῶν πόλων στήλης, ἐνῷ μία τῶν ἀκτίνων τοῦ δίσκου βυθίζεται ἐν λεκάνῃ πλήρει ὑδραργύρου, συγκοινωνοῦντος πρὸς τὸν ἕτερον τῶν πόλων τῆς στήλης. 'Ο δίσκος ἐπομένως διαρρέεται κατὰ τὴν μίαν τῶν ἀκτίνων ὑπὸ τοῦ ρεύματος. 'Εὰν ἑκατέρωθεν τοῦ δίσκου τεθῶσιν οἱ πόλοι πεταλοειδοῦς μαγνήτου, ἡ ἀναπτυσσομένη ἠλεκτρομαγνητικὴ δύναμις θέτει εἰς συνεχῆ περιστροφικὴν κίνησιν τὸν δίσκον, καθ' ὅσον τὴν απωθουμένην ὑπὸ τῆς ἠλεκτρομαγνητικῆς δυνάμεως ἀκτῖνα τοῦ δίσκου διαδέχεται ἡ ἀμέσως ἑπομένη κ.ο.κ. Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

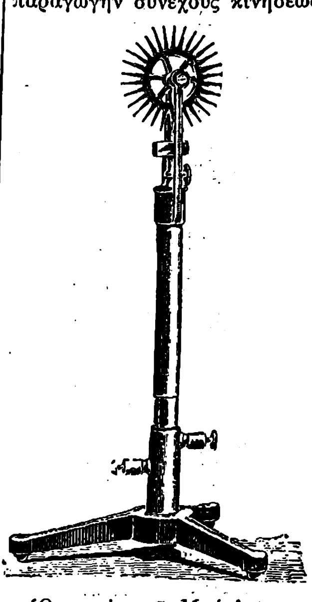

*'Ο τροχὸς τοῦ Μπάρλοου.*

**Μπάρμα Γκράντε** (Barma-Grande) *[Γεωγρ.]*. 'Εν ἐκ τῶν περιφήμων σπηλαίων *Γκριμάλντι* (βλ. λ.), τὸ σπουδαιότερον ἴσως τῆς ὁμάδος, εἰς ὃ εἰργάσθη ἐξ ἀρχῆς αὐτὸς ὁ πρίγκιψ 'Αλβέρτος Α' τοῦ Μονακό. Ι. Γ. Κ.

**Μπαρμάκι.** Νομαδικὴ φυλὴ ἀτσιγγάνων τῆς Αἰγύπτου (βλ. λ. *Γκαβαζί*).

**μπαρμαχλίκι** (τό). Κοινὸς ὅρος σημαίνων τοὺς χειραγωγοὺς τῶν κλιμάκων τῶν φάρων καὶ τοὺς σιδηροῦς προφυλακτῆρας τῶν ἐξώστων των. Σ.Ε.Λ.

**Μπάρμεν** (Barmen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Ρήνου, ἐπὶ τῶν ὄχθων τοῦ ποταμοῦ Βούππερ ἔναντι τοῦ Ἔλμπερφελντ, μεθ' οὗ συνέχεται. Κάτ. 190.000. 'Αποτελεῖ ἓν τῶν μεγαλυτέρων βιομηχανικῶν κέντρων τῆς Γερμανίας, ἔχουσα ἐργοστάσια ταινιοπλεγμάτων, κλωστήρια, μηχανοποιεῖα, μεγάλα ζυθοποιεῖα κλπ. Ἡ πόλις κοσμεῖται ὑπὸ μεγαλοπρεποῦς δημαρχείου, θεάτρου, πινακοθήκης, ἐθνολογικοῦ μουσείου καὶ πολλῶν δημοσίων μνημείων. Γ. Ι. Β.

**Μπάρμπα** (Barba), ***'Αλβαρὲς - 'Αλόνσος***. 'Ισπανὸς κληρικὸς καὶ ὀρυκτολόγος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Γνωστότατον ἔργον του εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «L'arte de los metalles» (1640) ἀξιολογωτάτη διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην πραγματεία, ἥτις μετεφράσθη καὶ γαλλιστί. Χ. Δ.

**Μπαρμπαγιώργος.** Εἷς τῶν σταθερῶν τύπων τοῦ ἑλληνικοῦ Καραγκιόζη, ἀνάλογος πρὸς τὸν *Μπαμπᾶν* τοῦ τουρκικοῦ τοιούτου καὶ τὸν *Ρουστὲμ* τοῦ περσικοῦ Κετσὲλ-Πεχλιβάν. 'Ο Μπαρμπαγιῶργος εἶναι πάντοτε ἀπλοϊκὸς φουστανελλοφόρος Ρουμελιώτης μὲ τὴν ἰδιάζουσαν αὐτοῦ προφορὰν καὶ θεῖος τοῦ Καραγκιόζη, ὑφιστάμενος πάντοτε τὰς πανουργίας καὶ κακοηθείας τοῦ ἀνεψιοῦ του, ἔχοντος διαρκῶς πρὸς τοῦτο σύμμαχον καὶ συμπράκτορα τὸν ἀχώριστον σύντροφόν του Χατζαϊβάτην. Ν. Ι. Λ.

**Μπαρμπαζὰν** (Barbazan), ***'Αρνόλδος***. Περίφημος διὰ τὴν ἀνδρείαν του Γάλλος πολεμιστὴς τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ 'Εκατονταετοῦς πολέμου (1360—1431). Τῷ 1402 ἦτο ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ἑπτὰ Γάλλων ἱπποτῶν, οἵτινες προκληθέντες ἀπὸ ἰσαρίθμους Ἄγγλους ἱππότας ἐνίκησαν αὐτοὺς ἐν Σαινονὺ πρὸ τοῦ πύργου τοῦ Montendre. Ἐγένετο κατόπιν ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως ἐν Καμπανίᾳ. Ἔντιμος καὶ γενναιόφρων, ὅσον ρωμαλέος καὶ ἀνδρεῖος, εἶχεν ἀποκτήσει πρῶτος αὐτὸς τὸν τί-

Digitized by Google

τλὸν τοῦ «ἀψόγου ἱππότου», ὅστις ἐδόθη βραδύτερον εἰς τὸν *Μπαγιάρ* (βλ. λ.). Ὁ Μπαρμπαζὰν ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην τῆς Μπουλνιεβίλ, καθ' ἣν ὁ Ρενάτος ὁ Ἀνδεγαυικὸς ἡττήθη, διότι δὲν ἤκουσε τὰς συμβουλάς του. — Ω.

**Μπαρμπακόβι** (Barbacovi), ***Φραγκῖσκος-Βίγιλος.*** Ἰταλὸς συγγραφεὺς καὶ νομομαθὴς (1739—1825). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ δικαίου ἐν Τρέντο, τῷ δὲ 1784 ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωσὴφ Β' νὰ ἐπιμεληθῇ τὰς μεταρρυθμίσεις τοῦ κώδικος τοῦ Τρεντίνου. Βραδύτερον ἀπενεμήθη εἰς αὐτὸν ὁ τίτλος τοῦ κόμιτος καὶ διωρίσθη (1792) καγγελάριος τοῦ πριγκιπάτου τοῦ Τρέντο. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Παρατηρήσεις χρήσιμοι διὰ τὴν ἱστορίαν τῶν πολέμων τῆς βασιλείας τοῦ αὐτοκράτορος Φραγκίσκου Α'», «Πολιτικαὶ καὶ λογοτεχνικαὶ σκέψεις ἢ ἠθικαὶ παροιμίαι». Χ. Δ.

**Μπαρμπαλὶ** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λακωνίας συνοικισμοῦ *Βαφειό* (βλ. λ.).

**μπαρμπαλιᾶς.** Ἄκμων σιδηροῦς σχήματος ὀρθῆς γωνίας, χρησιμοποιούμενος διὰ τὴν ἐπιδιόρθωσιν παλαιῶν ὑποδημάτων. Σ. Κ.

**Μπαρμπανὲγκρ** (Barbanègre), *Ἰωσήφ, βαρῶνος* —. Γάλλος στρατηγὸς (1772—1830). Καταταχθεὶς νεώτατος εἰς τὸν στρατόν, ἐπολέμησεν ὡς συνταγματάρχης εἰς τὸ Ἀούστερλιτς καὶ ὡς στρατηγὸς εἰς Βαγκράμ. Κυρίως εἶναι γνωστὸς διὰ τὴν ἡρωϊκὴν ὑπεράσπισιν τοῦ Ὑνίγκ κατὰ τὸ Ἑκατονθήμερον, ὁπότε ἐπὶ κεφαλῆς 135 ἀνδρῶν ἀνέστη ἐπιτυχῶς ἐναντίον 30.000 Αὐστριακῶν ὑπὸ τὸν ἀρχιδοῦκα Ἰωάννην. Τέλος ὑποχρεωθεὶς νὰ συνθηκολογήσῃ, ἐξῆλθε τοῦ φρουρίου μεθ' ὅλων τῶν τιμῶν. Τὸ ἐπεισόδιον τοῦτο ἀπηθανάτισεν εἰς ὡραῖον πίνακα ὁ Γάλλος ζωγράφος Ντεταῖγ. Χ.Δ.

**Μπάρμπανος.** Ὄνομα μεγάλης ἀθηναϊκῆς οἰκογενείας ἀπαντώσης ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Γόνοι αὐτῆς γνωστοὶ εἶναι: —1) *Νικόλαος,* διακριθεὶς κατὰ τὸν Τουρκοβενετικὸν πόλεμον τῷ 1688. —2) *Δημήτριος.* —3) *Νικόλαος* καὶ *Σωτήριος,* συλληφθέντες τῷ 1789 καὶ θανατωθέντες ὑπὸ τοῦ φοβεροῦ τυράννου τῶν Ἀθηνῶν Χασεκῆ. —4) *Σωφρόνιος,* ἱερολογιώτατος διδάσκαλος της σχολῆς Ντέκα (1767—1774), ἀποθανὼν τῷ 1776. —5) *Γεώργιος,* ὅστις κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 συλληφθεὶς μετὰ τῶν δημογερόντων ἤχθη εἰς τὸν κουλὰν τῆς Ἀκροπόλεως, ἔνθα καὶ ἐφονεύθη μετὰ τῶν ἄλλων ἐν αὐτῷ τῇ 30 Μαΐου 1821. Τ. Ε. Ε.

**Μπαρμπανσὸν** (Barbançon) *Μαρία ντὲ* —. Γαλλὶς ἡρωῒς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, θυγάτηρ τοῦ Μιχαὴλ Μπαρμπανσόν, ἄρχοντος τοῦ Κανύ, καὶ σύζυγος τοῦ Ἰωάννου ντὲ Μπαρρὲ αὐθέντου τοῦ Νεβύ, ἑνὸς τῶν ἀρχηγῶν τοῦ κόμματος τῶν Οὐγενότων ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Μπερρύ. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου αὐτῆς, ἐπολιορκήθη εἰς τὸν ἐν Μπανεγκὸν πύργον της, διαρκοῦντος τοῦ ἐμφυλίου πολέμου τοῦ 1569, ὑπὸ ἰσχυροῦ ἀποσπάσματος βασιλικοῦ στρατοῦ. Ἐπὶ κυφαλῆς πεντήκοντα ἀνδρῶν ἡ Μαρία Μπαρμπανσὸν ἀντέστη ἐπὶ δεκαπενθήμερον, ἀποκρούουσα τὰς ἀλλεπαλλήλους ἐφόδους τῶν πολυαρίθμων ἀντιπάλων, μόνον δὲ ὅταν ἐξηντλήθη τελείως ἐκ τῆς πείνης ἐδέχθη νὰ παραδώσῃ τὸν κατηρειπωμένον πύργον της εἰς τοὺς πολιορκητάς, ὑπὸ τὸν ὅρον δὲ καὶ πάλιν ὅτι θὰ σεβασθῶσιν ἀπολύτως τὴν ζωὴν τῶν ὑπερασπιστῶν αὐτοῦ. Ὁ βασιλεὺς συγκινηθεὶς ἐκ τοῦ ἡρωϊσμοῦ της τὴν ἀπήλλαξε τῆς καταβολῆς λύτρων καὶ τῆς ἀπέδωκε τὴν ἐλευθερίαν.

Ὁ ἀδελφὸς αὐτῆς *ντὲ Μπαρμπασόν,* μαχόμενος καὶ οὗτος εἰς τὰς τάξεις τῶν προτεσταντῶν, ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σαὶν Ντενὶς (Νοέμβριος 1567). —Ω.

**Μπαρμπάντος** (Barbádos) *[Γεωγρ.].* Νῆσος τῶν Βρεττανικῶν Δυτικῶν Ἰνδιῶν, ἡ ἀνατολικωτάτη τῶν προσηνέμων (lewards islands) μικρῶν Ἀντιλλῶν, 150 χλμ. πρὸς Α. τῆς νήσου τοῦ Ἁγίου Βικεντίου (13°4' Β. πλάτ. καὶ 59°37' Δ. μῆκ. Γκρήνουϊτς). Ἔχει σχῆμα τριγωνικόν, μὲ λίαν ἀκανόνιστον τὴν πρὸς Ν. ἐστραμμένην πλευρὰν αὐτοῦ, μέγιστον μῆκος ἀπὸ Β. πρὸς Ν. 34 χλμ. καὶ πλάτος 23 χλμ., καταλαμβάνει δὲ ἔκτασιν 430 τετρ. χλμ. καὶ ἀριθμεῖ (1929) 170.391 κατ., ἐξ ὧν μόνον τὸ δέκατον εἶναι λευκοί. Πρωτεύουσα *Μπριτζτάουν* (κάτ. 13.486). Τὸ ἔδαφος τῆς νήσου εἶναι ἀσβεστώδους συστάσεως, ἔχει δὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ ὄρος Χίλλαιμπυ (349 μ.). Ἡ παράλια καθ' ὅλον σχεδὸν τὸ μῆκος αὐτῆς φράσσεται ὑπὸ κοραλλιογενῶν φραγμῶν, οἱ ὁποῖοι δυσχεραίνουν σημαντικῶς τὴν κοσιπλοΐαν. Ἐκ τοῦ ΒΑ. τμήματος τῆς νήσου, τὸ ὁποῖον εἶναι μᾶλλον ὀρεινόν, πηγάζουσι μικροί τινες ποταμοί, ὧν σπουδαιότερος ὁ Σκότλαντ, ἐκβάλλων εἰς τὴν Α. παραλίαν.

Ἡ νῆσος ἀνεκαλύφθη πιθανῶς τὸ πρῶτον ὑπὸ τῶν Πορτογάλων, ἀλλ' ἄγνωστον εἰς ποίαν ἀκριβῶς χρονολογίαν. Τῷ 1605 ἓν ἀγγλικὸν πλοῖον κατέλαβεν αὐτὴν ἐξ ὀνόματος τοῦ Ἰακώβου Α', μετὰ 19 δὲ ἔτη ὁ κόμης Μάρλμπορω, εἰς τὸν ὁποῖον περιῆλθεν, ἀπέστειλε τοὺς πρώτους Εὐρωπαίους ἀποίκους. Ἐπιδικασθεῖσα τῷ 1629 εἰς τὸν κόμιτα Κάρλαϊλ, ἐγένετο μετὰ 34 ἔτη ἀποικία τοῦ στέμματος. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς ηὔξανε βαθμηδὸν δι' ἀποίκων φευγόντων τὰς πολιτικὰς καὶ θρησκευτικὰς διώξεις, εἶχε δὲ ἀναπτυχθῇ σημαντικῶς ἡ καλλιέργεια τοῦ σακχαροκαλάμου καὶ τοῦ βάμβακος.

Σήμερον ἡ νῆσος ἀποτελεῖ ἀπὸ τοῦ 1885 ἀνεξάρτητον ἀποικίαν τοῦ βρεττανικοῦ στέμματος, διοικεῖται δὲ ὑφ' ἑνὸς ἀνωτάτου ἄρχοντος (διοικητοῦ) διοριζομένου ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας, ἑνὸς ἐννεαμελοῦς νομοθετικοῦ συμβουλίου (legislarive council), διοριζομένου ἐπίσης ὑπὸ τοῦ βασιλέως, καὶ μιᾶς 24μελοῦς βουλῆς (house of assembly) ἐνιαυσίας θητείας. Ὁ διοικητὴς βοηθεῖται εἰς τὴν ἄσκησιν τῆς ἐκτελεστικῆς ἐξουσίας ὑπὸ 4μελοῦς ἐκτελεστικοῦ συμβουλίου, διοριζομένου ὑπὸ τοῦ βασιλέως, καὶ ὑπὸ τῆς ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς ἀποτελουμένης ἐκ τῶν μελῶν τοῦ ἐκτελεστικοῦ συμβουλίου καὶ 4 βουλευτῶν διοριζομένων ὑπὸ τοῦ διοικητοῦ. Διοικητικῶς ὑποδιαιρεῖται ἡ νῆσος εἰς 11 ἐπαρχίας. Γλῶσσα τοῦ λαοῦ εἶναι ἡ ἀγγλική, θρησκεία δὲ ἡ χριστιανικὴ τοῦ διαμαρτυρομένου κυρίως δόγματος. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται κυρίως μὲ τὴν καλλιέργειαν τοῦ σακχαροκαλάμου καὶ τοῦ βάμβακος. Τὸ σύνολον τοῦ ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου ἀνῆλθε (1929) εἰς 1.281.000 λίρ. στερλίνας, τοῦ δὲ εἰσαγωγικοῦ εἰς 2.039.000. Ὁ προϋπολογισμὸς τῆς χρήσεως 1929—1930 ἀνῆλθεν εἰς 453.802 λίρ. στερλίνας διὰ τὰ ἔσοδα καὶ 450.606 διὰ τὰ ἔξοδα. Τὸ δημόσιον χρέος ἐπίσης εἶναι (1929) λίρ. στερλῖναι 654.000. Αἱ ἐσωτερικαὶ συγκοινωνίαι ἐξυπηρετοῦνται κυρίως ὑπὸ μιᾶς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς μήκους 45 χλμ. καὶ 1500 περίπου αὐτοκινήτων (1928). Ἡ ναυσιπλοΐα διὰ τὸ ἔτος 1929 ἐσημείωσε κατάπλους καὶ ἀπόπλους πλοίων χωρητικότητος 4.013.562 τόννων, ἐξ ὧν οἱ 3.006.418 βρεττανικοί. Ἐκτὸς τῆς πρωτευούσης ἄλλη ἀξιόλογος πόλις εἶναι ὁ λιμὴν *Σπεϊκτστάουν.* Χ. Δ.

**Μπάρμπαρα** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ἡ ΒΑ. ἄκρα τῆς Κερκύρας, ἀφορίζουσα μετὰ τῆς νησῖδος Καπαρέλλι (ἀρχ. Πυθιονία) τὸν δυτικὸν διάπλουν τοῦ Β. στομίου τῆς Κερκυραϊκῆς θαλάσσης, ὃν ἀκολουθοῦν τὰ πρὸς τὸν Ἀδρίαν ἀτμόπλοια. Διὸ καὶ ἐφωτίσθη ἀπὸ τοῦ 1923 διὰ φάρου «Ἄγκα» (πλάτ. 39°46'50" Β., μῆκ. 19°57'50" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channels of Corfu), ἐκπέμποντος πρασίνας λευκὰς ἐκλάμψεις. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρμπαρέλλι** (Barbarelli), ***Γεώργιος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Τζιορτζιόνε*).

**μπαρμπαρέσσα** (ἡ) *[Ναυτ.].* Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸ *ἀπολάβειον* καὶ πᾶν τὸ πρὸς *ὀυροδέτησιν* χρησιμεῦον σχοινίον. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρμπάρι** (Barbari) *Ἰάκωβος ντὰ* — (ἐπονομαζόμενος καὶ Jacob Walch ἢ Walsch). Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, πιθανῶς ἐκ Βενετίας καταγόμενος (1445—1515). Ὑπῆρξε καλλιτέχνης ἀνωμάλου, παραδόξου καὶ ἐξαιρέτως ἐκφραστικοῦ ταλάντου. Συνεδύαζε τὴν γερμανικὴν ἐκζήτησιν τοῦ φανταστικοῦ πρὸς τὸν λεπτολόγον ρεαλισμὸν τῶν ὀλλανδῶν διδασκάλων. Εἰργάσθη ἐπὶ μακρὸν ἐν Βενετίᾳ καὶ ἐν Νυρεμβέργῃ, κατέλιπε δὲ πλῆθος ἐλαιογραφιῶν καὶ χαλκογραφιῶν, αἵτινες εὑρίσκονται κατεσπαρμέναι εἰς τὰ μουσεῖα τοῦ Λουγκσμπουργ, τῆς Δρέσδης, τοῦ Βερολίνου καὶ ἀλλαχοῦ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἰουδήθ», «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων», «Ἡ Κλεοπάτρα ἀποθνήσκουσα», «Ἄρης καὶ Ἀφροδίτη», «Θυσία εἰς τὸν Πρίαπον», «Ὁ θρίαμβος τοῦ Χριστοῦ». Ι. Μ. Π.

**Μπαρμπαριὰ** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Βαρβαρία* καὶ λ. *Βερβερία.*

**Μπαρμπαρίγκο** (Barbarigo). Ὀνομαστὴ οἰκογένεια εὐπατριδῶν τῆς Βενετίας, ἐξ ἧς προῆλθον πολλοὶ καρδινάλιοι καὶ δόγαι, σημαντικώτεροι τῶν ὁποίων εἶναι οἱ κατωτέρω. (Κλάδος τῆς οἰκογενείας ταύτης ἐγκατεστάθη κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἐν τῇ νήσῳ Θήρᾳ, ὅπου βαθμιαίως ἐξελληνίσθη [βλ. λ. *Βαρβαρῆγος*].)

1) ***Μᾶρκος.*** Δόγης τῆς Βενετίας, διαδεχθεὶς τὸν Ἰωάννην Μοτσενῖγον τῷ 1485 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1486 μετὰ ἐννεάμηνον παραμονὴν εἰς τὴν ἀρχήν.

2) ***Αὐγουστῖνος.*** Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, τὸν ὁποῖον διεδέχθη εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ δόγη τῷ 1486. Ἐξηκολούθησε τοὺς ἀγῶνας κατὰ τῶν Τούρκων καὶ συνέπηξε τὸν σύνδεσμον διαφόρων κρατῶν κατὰ τοῦ Καρόλου Η' τῆς Γαλλίας. Ἐπ' αὐτοῦ ἡ Αἰκατερίνη Κορνάρου, διάδοχος τῶν Λουζινιάν, παρεχώρησεν εἰς τὴν Βενετίαν τὴν Κύπρον, ἔναντι ἐτησίας ἐπιχορηγήσεως 8.000 δουκάτων. Ὁ Αὐγουστῖνος Μπαρμπαρίγκο ἀπέθανε τῷ 1501, διεδέχθη δ' αὐτὸν ὡς δόγης ὁ Λεονάρδος Λορεντάνο. Μ. Δ. Β.

**Μπάρμπαρο** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἀκρωτηρίου *Κυνόσουρα* τῆς Σαλαμῖνος (βλ. λ. *Βάρβαρο*).

**Μπάρμπαρο** (Barbaro) Οἰκογένεια εὐπατρι[δῶν] τῆς Βενετίας, ἧς πολλὰ μέλη διέπρεψαν εἰς [τὰ] γράμματα, τὴν πολιτικὴν καὶ τὴν διπλωματίαν. [Ἐκ] τούτων τὰ σημαντικώτερα εἶναι:

— 1) ***Φραγκῖσκος.*** Φιλόλογος καὶ συγγρα[φεὺς] (1398—1454). Μετέφρασε τὸν «Ἀριστείδην» καὶ [τὸν] «Κάτωνα τὸν πρεσβύτερον» τοῦ Πλουτάρχου [καὶ] ἔγραψε πραγματείαν «De re uxoria», ὅπου ἐκ[θέτει] τὰς περὶ γάμου ἰδέας τῆς ἐποχῆς (1513). Ἐ[πιφανοῦς] φήμης δεινοῦ ῥήτορος, διετέλεσε δὲ δήμαρχος [Βε]ρώνης, Βιτσέντσας, Βενετίας καὶ Βρεσκίας [καὶ] ὑπερήσπισε κατὰ τῶν ἐπιθέσεων τοῦ Πιτσ[ινίνου] στρατηγοῦ τοῦ δουκὸς τοῦ Μιλάνου. Ἔγρα[ψε] «Ἱστορίαν τῆς πολιορκίας τῆς Βρεσκίας» καὶ [...] ὀγκώδη συλλογὴν ἐπιστολῶν ἀναφερομένων εἰς [τὰ] πολιτικὰ συμβάντα τῆς ἐποχῆς του.

— 2) ***Ἰωσάφατ.*** Περιηγητὴς καὶ διπλωμ[άτης] (1413—1494). Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ἐπιδοθῆ εἰς [τὸ] ἐμπόριον καὶ ἐπὶ 16 ἔτη περιηγήθη τὴν [...] καὶ κεντρικὴν Ρωσίαν, τὸν Καύκασον καὶ [τὰς] γειτονικὰς χώρας καὶ ἐπιστρέψας εἰς τὴν πα[τρίδα] του διωρίσθη προβλεπτὴς τῆς Ἀλβανίας καὶ [κα]τόπιν πρεσβευτὴς ἐν Περσίᾳ. Ἐξέδωκεν ἀφ[ηγή]σεις τῶν ταξιδίων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ταξίδ[ια ἐκ] Βενετίας εἰς Τάνα, Περσίαν, Ἰνδίας καὶ Κωνσταντινού[πολιν]» (1543).

— 3) ***Νικόλαος.*** Συγγραφεὺς καὶ διπλωμ[άτης] ζήσας κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα. Ἦτο πρεσβευτὴς [τῆς] Βενετίας ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ τὴν ἅ[λωσιν] αὐτῆς ὑπὸ τῶν Τούρκων τῷ 1453, ἐδημοσίευ[σε δὲ] ἱστορίαν τῆς πολιορκίας καὶ τῶν στερήσεων [τὰς] ὁποίας ὑπέφερεν ἡ πόλις πρὸ τῆς πτώσεως. [Τὸ] ἔργον τοῦτο, καίτοι στερεῖται τάξεως καὶ [ἐλέγ]χει ἀνακριβείας, μὲ περιγραφὰς σφαλερὰς [ὡς] πρὸς τὴν ἀφήγησιν τῶν κατὰ ξηρὰν γεγονότ[ων] καὶ δυσμενεῖς πρὸς τοὺς Ἕλληνας καὶ τοὺς [Γε]νουηνσίους, ὧν ἀποσιωπῶνται τὰ ἀνδραγαθήματα, ἀποτελεῖ ἐν τούτοις πολύτιμον πηγὴν ἀναφ[ορικῶς] πρὸς τὰ γεγονότα τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. [Βλ. *E[...] Cornet,* Giornale dell' Assedio di Constantinopoli 1453 di Nicolo Barbaro (Βιέννη 1856).]

— 4) ***Ἑρμόλαος.*** Φιλόσοφος καὶ ποιητὴς (1[...] —1493). Ἐσπούδασεν ἐν Ρώμῃ καὶ Παδούῃ [καὶ] ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν Παδ[ούῃ], ὅπου κατέστη ὀνομαστὸς διὰ τὴν διδασκαλίαν [του] τοῦ ἐπὶ τοῦ Ἀριστοτέλους. Τῷ 1479 μετέβ[η εἰς] τὴν Βενετίαν, ὅπου ἐξηκολούθησε τὰς μελέτας του ἐπὶ τῶν Ἑλλήνων κλασσικῶν. Κατόπιν δι[ωρί]σθη πρεσβευτὴς ἐν Γαλλίᾳ, Αὐστρίᾳ, Μιλάνῳ [καὶ] Ρώμῃ. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα (πάντα εἰς [λα]τινικὴν γλῶσσαν), τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων [εἶ]ναι: «Πραγματεία περὶ ἀγαμίας» (1472), «Castigationes Plinianae» (1492) καὶ αἱ μεταφράσεις [...] σχολίων τοῦ Ἀριστοτέλους.

— 5) ***Ἀντώνιος,*** ζήσας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰ[ῶνα]. Ὑπηρέτησεν ἐν Κρήτῃ ὡς προβλεπτὴς μέ[χρι τῆς ἁλώσεως] αὐτοῦ τὸ Ἡράκλειον. Ἀντικατεστάθη ὑπὸ [τοῦ] Βερνάρδου Νάνι τῷ 1668.

— 6) ***Δανιήλ.*** Κληρικὸς ἐκ τῶν μᾶλλον ἀ[...] μένων τῆς ἐποχῆς του (1513—1570). Διεκρίθη [ὡς] θεολόγος, φιλόσοφος, μαθηματικός, ἀρχαιο[λόγος] καὶ διπλωμάτης, διωρίσθη δὲ ἐπίσημος ἱστο[ριογράφος] τῆς δημοκρατίας τῆς Βενετίας πρὸς ἐξακολ[ούθη]σιν τοῦ ἔργου τοῦ Μπέμπο. Τῷ 1548 ἀπεστ[άλη] ὡς πρεσβευτὴς εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ ἔγραψε [πλεῖ]στα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: [...] προοπτικῆς» (1568), μετάφρασις τῆς «Ἀρχιτε[κτονι]κῆς» τοῦ Βιτρουβίου, μετὰ σχολίων ἐπὶ τῆς [...], «Ρητο[ρικῆς ...]ρωματικῆς τέχνης, μετάφρασις τῆς «Ρητ[ορικῆς]» τοῦ Ἀριστοτέλους κλπ.

— 7) ***Ἑρμόλαος.*** Βενετὸς ποιητὴς (1770–1[...]). Μ. Σ. Ξ.

**Μπαρμπαρὸς** (Barbaros) *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ἀκρωτήριον Ἀδριατικὸν τῆς νήσου Λαγ[όστα] (πλάτ. 42° 45' Β. μῆκ. 16° 44' Ἀν., χάρτ. [ἀγγλ.] 2712: Zironna to Curtzola) κέρας τοῦ λιμένος [...] Λάγκο Γκράντε. Σ. Ε.

**Μπαρμπαρόσσας.** Δύο περιώνυμοι Τοῦ[ρκοι] πειραταὶ ἀδελφοὶ (βλ. λ. *Βαρβαρόσσας*).

**Μπαρμπαρόσσας,** ***Φρειδερῖκος.*** Αὐτοκρά[τωρ] τῆς Γερμανίας (βλ. λ. *Φρειδερῖκος Α'*).

**Μπαρμπαροὺ** (Barbaroux), ***Κάρολος-Ἰωάννης-Μαρία.*** Γάλλος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Μασσαλίᾳ τῷ 1767 καὶ καρατομηθεὶς τῷ 1794. Ἐσπούδασε τὴν νομικήν, πλήρης δὲ ἐπαναστατικῶν ἰδεῶν ἐξέ[δ]ιδεν ἐν Μασσαλίᾳ τὴν ἐφημερίδα «Observateur Marseillais, journal patriotique», δι' ἧς ἐξῆπτε τὴν φιλοπατρίαν καὶ τὸν ἐνθουσιασμὸν τῶν Μασσαλιωτῶν. Ἐκλεχθεὶς ὑπ' αὐτῶν πληρεξούσιος εἰς τὴν συντακτικὴν συνέλευσιν, μετέβη εἰς Παρισίους καὶ συνήντησε τὸν Ροβεσπιέρρον, ὅστις τὸν εἰσήγαγεν εἰς τὴν λέσχην τῶν Ἰακωβίνων, ὅπου [...]ψε τὰς πρώτας ῥητορικάς του δάφνας. Εἰς Παρισίους μετέσχεν ὅλων τῶν συνωμοσιῶν καὶ [...] εἷς τῶν πρωτουργῶν τῆς 10 Αὐγούστου 1792, καθ' ἣν ἡλώθησαν τὰ ἀνάκτορα τοῦ Κεραμεικοῦ καὶ κατέπεσε κατ' οὐσίαν ἡ βασιλεία. Θερμὸς [...]

Digitized by Google

ιράτης, διέσωσε τὴν ἡμέραν ἐκείνην πολλοὺς τῶν Ἑλβετῶν τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς. Κατ' ἀρ- ; ἠκολούθησε τὸν Ροβεσπιέρρον, ἀλλ' ἀμέσως μετέστη εἰς τὴν πολιτικὴν μερίδα τῶν Γιρονδίνων καὶ ἐγένετο εἷς τῶν σπουδαιοτέρων ρητόρων αὐτῆς. Κατὰ τὴν ἐξέγερσιν τῶν Παρισίων τὴν 31 Μαΐου ὁ Μπαρμαρού προεγράφη μετὰ τῶν λοιπῶν εἴκοσι δύο Γιρονδίνων, διαλαθὼν ὅμως τοὺς φύλακας αὐτοῦ ἐδραπέτευσε· καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν κατέφυγεν εἰς Καλβαντός, ὅπου μετὰ τῶν λοιπῶν δραπετευσάντων Γιρονδίνων κατέστησαν τὴν πόλιν Κὰν κέντρον τῆς ἀποστασίας των, ἐσχημάτισαν

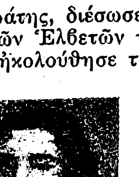

άρολος Μπαρμπαρού.

ρατὸν καὶ προετίθεντο νὰ βαδίσουν κατὰ τῶν Παρισίων καὶ τῆς Ἐθνικῆς συνελεύσεως. Ἀλλ' ὁ στρα- ς αὐτῆς κατέστειλεν ἐντὸς μικροῦ τὴν ἐπανάασιν καὶ κατέλαβε τὴν Κάν. Ὁ Μπαρμπαροὺ μετὰ ὂν ἄλλων Γιρονδίνων διωκόμενοι προσέφευγον τὸ τόπου εἰς τόπον, μέχρις ὅτου ὁ Μπαρμπαροὺ τογοητευθεὶς ἐπυροβόλησε καθ' ἑαυτοῦ τραυματισθεὶς εἰς τὴν σιαγόνα. Ἐγκαταλειφθεὶς ὑπὸ τῶν ντρόφων του ἤχθη ὑπὸ τῶν ἀνευρόντων αὐτὸν ωκτῶν του αἱμόφυρτος εἰς Βορδώ, ὅπου καὶ ἐκαιτομήθη. Ὁ Μπαρμπαροὺ ἀφῆκεν ἀπομνημονεύατα, δημοσιευθέντα ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του τῷ 1822.

θ. β.

**μπάρμπας** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἀδελφὸς ἢ ὁ ἐξάδελφος οῦ πατρὸς ἢ τῆς μητρός, θεῖος: «τὸν ἔχω μπάρπα ἀπὸ τὸν πατέρα μου, — ἀπὸ τὴ μάννα μου»· || ροσηγορία πρὸς πρεσβυτέρους χάριν σεβασμοῦ: μπάρμπα, ποῦθε πάει ὁ δρόμος γιὰ τὴ Θήβα;»· || πὸ τὴν σημασίαν ταύτην συνήθως λέγεται ἐν λευμένη συνθέσει: «ὁ μπάρμπα-Γιάννης», «ὁ μπάρμπαώστας».

**Μπάρμπας** *[Γεωγρ.]*. Ἡ νοτία τῆς ἐν τῷ οτίῳ Αἰγαίῳ ὑπεραποκέντρου συστάδος Τρία Νηιὰ νησὶς (πλάτ. 36°16'50" Β., μῆκ. 26°45'40" Ἀν., άρτ. ἀγγλ. 872: Kalimno to Rhodos), 26 μίλ. ΝΔ. ῆς Κῶ.

Σ. Ε. Λ.

**Μπαρμπάσαινα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Ηλείας (βλ. λ. *Βαρβάσαινα*).

**Μπαρμασένα** (Barbacena), ***Φιλισμπέρτος - Καλντέϊρα - Μπρὰντ - Πόντες,*** *μαρκήσιος ντὲ* —. Βραζιλιανὸς στρατηγὸς καὶ πολιτικὸς (1772—1841). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ναυτικὸν καὶ κατόπιν εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν τῆς ξηρᾶς, ὅπου αχέως ἔφθασε τοὺς ἀνωτάτους βαθμούς, διακριθεὶς διὰ τὴν μεγάλην δραστηριότητα καὶ πολιτιὴν καὶ διπλωματικὴν ἱκανότητα. Ἕνεκα τούτου τῷ 1823, ὅτε ὁ ἀντιβασιλεὺς τῆς Βραζιλίας ἀνεκήρυξε τὴν ἀνεξαρτησίαν του καὶ τὴν αὐτοκρατορίαν, ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν τὴν ἀρχηγίαν τῆς ἀποστολῆς εἰς Πορτογαλίαν πρὸς διαπραγμάτευσιν τῆς ἀναγνωρίσεως τῆς νέας καταστάσεως ἐν Βραζιλίᾳ καὶ συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὸν ἀποχωρισμὸν τοῦ βραζιλιανοῦ στέμματος ἀπὸ τοῦ τῆς Πορτογαλίας. Ἀνέλαβεν ἐπίσης διαφόρους ἄλλας διπλωματικὰς ἀποστολὰς καὶ ἐγένετο δὶς ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Εἶχε φήμην δεινοῦ ῥήτορος καὶ τῷ 1826 ὠνομάσθη γερουσιαστής.

Μ. Δ. Β.

**Μπαρμπάστρο** (Barbastro) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Οὐέσκα τῆς Ἀραγωνίας. Εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει ὡραῖον καθεδρικὸν ναόν, διεξάγει δὲ ἐμπόριον δερμάτων. Κάτ. (1920) 8.191. Παρ' αὐτὴν συνήφθη τὴν 27 Ἰουνίου 1837 αἱματηρὰ μάχη μεταξὺ τῶν καρλιστῶν καὶ τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων. Τῷ 1064 περιῆλθεν ἀπὸ τῶν Ἀράβων εἰς τὰ νορμανδικὰ στρατεύματα, σῴζεται δὲ ὡραῖον ἡρωϊκὸν ποίημα τῆς ἐποχῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ πολιορκία τοῦ Μπαρμπάστρο» περιγράφον τὰ κατορθώματα τῶν Χριστιανῶν.

Χ. Δ.

**Μπαρμπάτ.** Βοεβόδας τῆς Βλαχίας, διαδεχθεὶς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Λιτεὰν (1282). Κατὰ τὸν μεταξὺ τοῦ Λιτεὰν καὶ τῶν Οὔγγρων πόλεμον ὁ Μπαρμπὰτ μαχόμενος παρὰ τὸν ἀδελφόν του, ὅστις καὶ ἐφονεύθη, ἔπεσεν αἰχμάλωτος εἰς χεῖρας τοῦ Οὔγγρου βασιλέως Λαδισλάου τοῦ Δ'. Κατώρθωσεν ὅμως ν' ἀποκτήσῃ τὴν ἐλευθερίαν του διὰ καταβολῆς ὑπερόγκου ἀποζημιώσεως καὶ ἀφοῦ παρέσχεν ἐνόρκους διαβεβαιώσεις φιλίας καὶ ὑποταγῆς ἐπέστρεψεν εἰς Τιργκοβίστο καὶ κατέλαβε τὴν ἀρχήν.

Γ. Ι. Β.

**Μπαρμπάτε** (Barbate) *[Γεωγρ.]*. Ποτάμιος κόλπος καὶ φρούριον τῆς Ἱσπανίας κατὰ τὰ ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ πρόσγεια τοῦ Γιβραλτὰρ (πλάτ. 36°11' Β., μῆκ. 5° 56' Δ., χάρτ. ἀγγλ. 142: Strait of Gibraltar). Εἶναι ἡ *Βαισίππω* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων.

Σ. Ε. Λ.

**Μπαρμπάτο** (Barbato), ***Ἱερώνυμος.*** Ἰταλὸς ἰατρὸς ἀκμάσας κατὰ τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἐν Παδούῃ. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις τοῦ ὀρροῦ τοῦ αἵματος. Ἡ σχετικὴ διατριβὴ τῆς ἀνακαλύψεώς του ταύτης φέρει τὸν τίτλον: «Dissertatio elegantissima de sanguine et ejus sero etc.» (Πάδουα καὶ Φραγκφούρτη 1667, Λιέγη 1736). Ἄλλαι ἐργασίαι του εἶναι: «Die arthritide libri II, (Venedig 1665), «Dissertatio anatomica de formatione, organisatione, conceptu et nutritione foetus in utero» (Πάδουα 1676).

Ο. Ρ.

**Μπάρμπεκ** (Barmbeck) *[Γεωγρ.]*. Μέγα βιομηχανικὸν προάστειον τοῦ Ἁμβούργου ἐν Γερμανίᾳ. Αἱ κυριώτεραι βιομηχανίαι του εἶναι οἱ τοῦ λευκοσιδήρου καὶ τοῦ καουτσούκ. Κάτ. (1919) 128.749.

Χ. Δ.

**Μπαρμπελώ**, ἢ ***Βαρβηλώ,*** ἢ ***Βαρβηρώ,*** καὶ ***Βαρβηλὼθ*** (ἡ) *[Θρησκειολ.]*. Ὄνομα τοῦ αἰῶνος εἰς τὰ συστήματα τῶν γνωστικῶν. Κατὰ τὸν ἅγιον Εἰρηναῖον (βιβλ. 1 κεφ. κθ') ἡ Μπαρμπελὼ ἦτο αἰὼν θῆλυς καὶ παρθένος. Ὁ πατὴρ αὐτῆς ἦτο ὁ Ἄρρητος. Οὗτος θελήσας ν' ἀποκαλυφθῇ εἰς τὴν θυγατέρα του, ἐδημιούργησε μετ' αὐτῆς τὴν Πρόγνωσιν, τὸ Ἀδιάφθορον καὶ τὴν Αἰωνιότητα. Ἡ Μπαρμπελὼ ἐχάρη τόσον πολὺ διὰ τὴν δημιουργίαν ταύτην, ὥστε συνέλαβε καὶ ἔτεκε τὸ φῶς. Αἱ πληροφορίαι τοῦ ἁγίου Ἐπιφανίου συμπίπτουν ἐν μέρει πρὸς τὰς τοῦ Φιλάστρου. Κατ' αὐτὰς ἡ Μπαρμπελὼ κατὰ τὸ πλήρωμα τῶν γνωστικῶν κατῴκει τὸν ὄγδοον οὐρανὸν καὶ ἦτο ἀπόρροια τοῦ πατρός της. Ἦτο μήτηρ τοῦ Ἰαλδαβαώθ, ὅστις κατέλαβε τὸν οὐρανὸν καὶ ἐκήρυξεν ἑαυτὸν μόνον θεόν, τοῦθ' ὅπερ ὑπῆρξε διὰ τὴν Μπαρμπελὼ ἀφορμὴ πικρῶν παραπόνων. Εἰς ἄλλα χωρία ὁ Ἐπιφάνιος συγχέει τὴν Μπαρμπελὼ μὲ τὸν Προυνικὸν τοῦ ὀφιτικοῦ συστήματος. Ἡ Μπαρμπελὼ φέρεται ἐπισκεπτομένη συχνάκις τὸν κόσμον τῶν γνωστικῶν, πολλάκις ὑπὸ μορφὴν γυναικὸς ἐκπάγλου κάλλους. Αἱ πνευματικαὶ ψυχαὶ ὁδηγοῦνται μετὰ τὸν θάνατον ἐνώπιον αὐτῆς ὡς βασιλίσσης τοῦ κόσμου, εὑρίσκουν δὲ πλησίον της τὴν ὑπερτάτην καὶ ἄρρητον ἡδονὴν τῆς τελικῆς ἀπολυτρώσεως. Ταῦται εἶναι ἐν συντόμῳ αἱ πληροφορίαι, ἃς ἀρυόμεθα ἐκ τῶν Ἑλλήνων καὶ Λατίνων πατέρων τῆς Ἐκκλησίας. Ἀλλὰ βιβλίον τι τῶν γνωστικῶν εἰς κοπτικὴν μετάφρασιν, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Πίστις Σοφίας», παρέχει καὶ ἄλλας σχετικὰς πληροφορίας. Κατὰ τὸ βιβλίον τοῦτο ἡ Μπαρμπελὼ εἶναι ἡ μήτηρ τῆς Πίστεως Σοφίας, οἰκοῦσα ἐν μιᾷ τῶν ὑψηλοτέρων σφαιρῶν καὶ ἀσκοῦσα μεγάλην ἐξουσίαν. Ἀναμφίβολον εἶναι ἐν προκειμένῳ ὅτι ἡ Μπαρμπελὼ ἀποτελεῖ ἓν τῶν κυριωτέρων προσώπων τοῦ πληρώματος, ἔχον ὑπὸ τὰς διαταγὰς αὐτοῦ πλῆθος παραδόξων δυνάμεων, αἵτινες ἀπορρέουσιν ἐξ αὐτῆς ἀμέσως ἢ ἐμμέσως. Ἐκ πάντων τῶν χαρακτηριστικῶν γνωρισμάτων τούτων, ἅτινα φαίνονται ἐν πρώτοις ἀντιφατικά, δεδομένου ὅτι τὰ μὲν ἀναφέρονται εἰς τὸ σύστημα τοῦ Βασιλείδου, τὰ δὲ εἰς τὸ τοῦ Οὐαλεντινιανοῦ, δύναταί τις νὰ συναγάγῃ τὸ συμπέρασμα, ὅτι ἡ Μπαρμπελὼ εἶναι εἷς τῶν θηλυκῶν αἰώνων, ἀνήκων εἰς τὴν Οὐαλεντινιανὴν δωδεκάδα καὶ ἓν τῶν ὀνομάτων τῶν δοθέντων βραδύτερον εἰς τὴν Σοφίαν, τὴν γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα Σοφίαν Ἀχαμὼθ κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὴν Σοφίαν Ἀβορτόν, ἣν ἡ πρώτη ἔπλασε διὰ μόνης τῆς δυνάμεώς της καὶ αἱ περιπέτειαι τῆς ὁποίας περιγράφονται διεξοδικῶς ἐν τῷ ἔργῳ «Πίστις Σοφίας». Ἡ Μπαρμπελώ, ὡς Σοφία Ἀχαμώθ, ἀπετέλει μέρος τοῦ ἀνωτέρου πληρώματος καὶ κατῴκει εἰς τὸν ὀγδοάδα καλούμενον κόσμον. Ἐν τελευταίᾳ ἀναλύσει ἡ Μπαρμπελὼ συμβολίζει τὴν σοφίαν ἐν τῇ Γνώσει. Εἶναι ἡ παθητικὴ ἢ θηλυκὴ δύναμις, ἡ συντελοῦσα μὲν εἰς τὴν δημιουργίαν τῶν ὄντων, ἀλλὰ μὴ δυναμένη νὰ φέρῃ τι εἰς πέρας ἄνευ τῆς παρεμβάσεως τῆς ἄρρενος καὶ ἐνεργητικῆς ἀρχῆς, δηλαδὴ τοῦ Ἀρρήτου Πατρός, τοῦ Παλαιοῦ τῶν ἡμερῶν ἢ τῆς Ἀβύσσου.

Α. Δ.

**Μπαρμπὲ-Μαρμπουὰ** (Barbé-Marbois), ***Φραγκῖσκος,*** *μαρκήσιος ντὲ* —. Γάλλος πολιτικὸς (1745—1837). Διετέλεσε κατ' ἀρχὰς γενικὸς πρόξενος εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας καὶ εἶτα διοικητὴς εἰς Ἅγιον Δομίγκον. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν (1787) συνελήφθη μετὰ τὴν ἐπανάστασιν, ἀπελευθερωθεὶς δὲ ἐξελέγη δήμαρχος τοῦ Μέτς. Ἀναμειχθεὶς ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν, συνελήφθη ἐκ νέου μετὰ τὴν 18 Φρουκτιδὼρ καὶ ἀπεστάλη εἰς Γουυάνην, ὁπόθεν ἀνεκλήθη μετὰ τὴν 18 Ὁμιχλώδους καὶ διωρίσθη, χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ φίλου του Λεμπρέν, ὑπουργὸς τοῦ Θησαυροφυλακίου (1 02). Ἐν τῇ ἰδιότητί του ταύτῃ διεπραγματεύθη τὴν πώλησιν τῆς Λουϊζιάνας εἰς τὴν Ἱσπανίαν (1803). Τῷ 1805 ἀπηλλάγη τῶν καθηκόντων του, διωρίσθη δὲ πρῶτος πρόεδρος τοῦ Ἐλεγκτικοῦ συνεδρίου (1808) καὶ γερουσιαστής. Συμμετέσχεν ἐνεργῶς τῶν πολυειδῶν δολοπλοκιῶν, αἱ ὁποῖαι ἐπέφερον τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, καὶ συνειργάσθη ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς μετὰ τῶν Βουρβώνων. Τῷ 1815 διετέλεσεν ἐπὶ ἓν ἔτος ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης ἐν τῷ ὑπουργείῳ Ρισελιέ. Ἔκτοτε παρέμεινε μέχρι τοῦ 1834 εἰς τὸ Ἐλεγκτικὸν συνέδριον. Ἔγραψε διάφορα ἔργα ἱστορικά, φιλοσοφικὰ καὶ γεωγραφικά.

Χ. Δ.

**Μπαρμπὲ-ντὲ-Ζουὺ** (Barbet de Jouy), ***Ἰωσὴφ-Ἐρρῖκος.*** Γάλλος λογοτέχνης καὶ ἀρχαιολόγος (1812—1896). Διετέλεσε διευθυντὴς πλείστων μουσείων, τῷ δὲ 1880 ἐξελέγη ἐλεύθερον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Ἔγραψε πλεῖστα ἀρχαιολογικὰ καὶ ἄλλα ἔργα, ἀναφερόμενα εἰς τὰς συλλογάς, τῶν ὁποίων ἡ ἐπιμέλεια εἶχεν ἀνατεθῆ εἰς αὐτόν. Σπουδαιότερα τούτων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Οἱ Ντέλλα Ρόμπια, γλύπται ἔργων ἐπὶ ἐσμαλτωμένου πηλοῦ» (1855), «Περιγραφὴ τῶν νεωτέρων γλυπτῶν, τῶν τῆς ἀναγεννήσεως καὶ τοῦ μεσαίωνος, τοῦ αὐτοκρατορικοῦ μουσείου τοῦ Λούβρου» (1856), «Τὰ χριστιανικὰ μωσαϊκὰ τῶν βασιλικῶν καὶ τῶν ἐκκλησιῶν τῆς Ρώμης» (1857), «Οἱ πολύτιμοι λίθοι καὶ τὰ κοσμήματα τοῦ στέμματος» (1865) κ. ἄ.

Χ. Δ.

**Μπαρμπεντὲτ** (Barbedette), ***Πέτρος - Ἱππόλυτος.*** Γάλλος λογοτέχνης καὶ πολιτικὸς (1827—1901). Ἤσκησε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου, διατελέσας εἶτα καὶ δικαστής. Ἐγένετο γνωστὸς ὡς μουσικὸς καὶ λογοτεχνικὸς κριτικὸς διὰ τῶν ἑξῆς ἔργων του: «Μπετόβεν» (1859), «Σοπὲν» (1861), «Μελέται ἐπὶ τῆς συγχρόνου λογοτεχνίας καὶ τῶν νέων ἰδεῶν» (1865), «Σοῦμπερτ» (1865), «Μέντελσον» (1868), «Βέμπερ» (1873), «Χάϋντ» (1874), «Γκλοὺκ» (1882), «Στέφεν Χέλλερ» (1876) κλπ. Διετέλεσεν ἐπίσης βουλευτὴς (1872 καὶ 1881) καὶ γερουσιαστὴς (1885).

Χ. Δ.

**Μπαρμπὲ ντ' Ὡρβιγὺ** (Barbey d'Aurevilly), ***Ἰούλιος-Ἀμεδαῖος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1808 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1889. Τὰ πρῶτά του ἔργα ὑπῆρξαν μία ἐλεγεία «Aux héros des Thermopyles» (1825) καὶ τὸ διήγημα «Lea», δημοσιευθὲν εἰς τὸ μοναδικὸν φύλλον τῆς «Revue de Caen» (1832). Ἀλλ' ἡ πραγματική του ἐμφάνισις εἰς τὸν κόσμον τῶν γραμμάτων ἐγένετο τῷ 1841 διὰ τοῦ μυθιστορήματος «L'amour impossible» (β' ἔκδ. 1859). Ταυτοχρόνως συνειργάζετο εἰς τὸ «Journal des Débats» καὶ εἰς τὴν ἐφημερίδα «Le nouvelliste». Δύο ἄλλα δημοσιεύματά του: «La bague d'Annibal» (1843), εἶδος πεζοῦ ποιήματος περιέχοντος πολλὰς αὐτοβιογραφικὰς νύξεις, καὶ «Du dandysme et de G. Brummel» (1845), βιογραφία διασήμου κομψευομένου, εἶχον προσελκύσει τὴν προσοχὴν ἑνὸς μικροῦ κύκλου ἀνθρώπων τῶν γραμμάτων, ὅταν παρουσίασεν ἓν νέον μυθιστόρημα: «Une vielle maîtresse» (1851), τοῦ ὁποίου χωρία τινά, διορθωθέντα εἰς τὰς κατόπιν ἐκδόσεις, ἐπροκάλεσαν ἐντόνους κατηγορίας ἐπὶ ἀνηθικότητι. Τὸ μυθιστόρημα τοῦτο διεδέχθη σειρὰ φιλολογικῶν μελετῶν ὑπὸ τὸν τίτλον «Les prophètes du passé» (1851), δι' ὧν ὁ συγγραφεὺς κατετάσσετο μεταξὺ τῶν πρώτων ἀγωνιστῶν τοῦ μαχομένου καθολικισμοῦ. Τῷ 1854 ἐδημοσίευσε τὸ μυθιστόρημα «L'Ensorcelée» (τόμ. 2), ἐμπνευσμένον ἐκ τῶν νορμανδικῶν ἀγώνων, ὅπερ εἶναι τὸ ἀριστούργημά του καὶ τὸ καλύτερον μυθιστόρημα τοῦ αἰῶνος. Ἔτη τινὰ βραδύτερον ἐξέδωκεν ἀντίστοιχον τοῦ προηγουμένου ἔργον, τῆς αὐτῆς ἐμπνεύσεως, ὑπὸ τὸν τίτλον «Le chevalier Destouches» (1864). Τὴν σπανίαν συγγραφικήν του δεξιότητα ἐμαρτύρησαν καὶ τὰ ἔργα του: «Un prêtre marié» (1864, τόμ. 2), «Une histoire sans nom» (1882), «Ce qui ne meurt pas» (1884). Τῷ 1874 ἐξέδωκε συλλογὴν διηγημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Les diaboliques», τὰ ὁποῖα ἐπροκάλεσαν καταδιώξεις εἰς βάρος τοῦ συγγραφέως. Ἐπίσης ἐξέδωκε τά: «Memorandum» (1856), «Deux rythmes oubliés» (1858), «Le pacha» (1869), πεζὰ ποιήματα, διάφορα σατιρικά, φιλολογικὰ πορτραῖτα, μελέτας ἐπὶ τῶν ἠθῶν καὶ ἐδημοσίευσε πλείστας κριτικὰς μελέτας εἰς τὰς ἐφημερίδας «Pays», «Reveil» (1858), «Constitutionnel», «Nain jaune» κλπ.

Ὁ Μπαρμπὲ ντ' Ὡρβιγὺ ἀνῆκεν εἰς τὸ εἶδος ἐκεῖνο τῶν δυνατῶν καὶ ἐξαιρετικῶν συγγραφέων, οἱ ὁποῖοι κινοῦν τὸν θαυμασμὸν ἢ τὴν ἀντιπάθειαν, ἀλλὰ δὲν δύνανται νὰ ἱδρύσουν σχολήν, διότι οἱ μιμηταί των μόνον παρῳδοί των εἶναι δυνατὸν νὰ γίνουν. Πρωτότυπος, δηκτικός, ἐντελῶς προσωπικός, ἰδιοτρόπως καθολικὸς καὶ βασιλόφρων, ὁ συγγραφεὺς οὗτος ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων συγγραφέων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος.

Θ. Π.

**Μπαρμπὲρ** ***μπουρνοῦ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Εὐρωπαϊκῆς (δυτ.) ἀκτῆς τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 40°06' ½ Β., μῆκ. 26°23' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles), ἔχον φάρον. Εἰς τοὺς ἀγγλικοὺς χάρτας σημειοῦται ὡς Kephez burnu.

Σ. Ε. Λ.

**μπαρμπέρης** (ὁ)· δημοτ., ὁ κουρεὺς (Ἰταλ. barbiere).

**Μπάρμπερι** *[Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ τοὺς ξένους παλαιὰ τῆς ἀνατολικῆς ἐσχατιᾶς τῆς νήσου Σαλαμῖνος ὀνομασία. Κατὰ τοὺς ναυτικούς μας, *Κάβο Βάρβαρο* καὶ *Σεντούκια*· ἡ *Κυνόσουρα* τῶν ἀρχαίων.

Σ. Ε. Λ.

**Μπαρμπερῖγο** (Barberigo), ***Ἰάκωβος.*** Βενετὸς γενικὸς προβλεπτὴς τῆς Πελοποννήσου. Ὅτε οἱ Τοῦρκοι ἐπῆλθον κατὰ τῶν Πατρῶν, ὁ προβλεπτής, ἐν συνεννοήσει μετὰ τοῦ τοπάρχου τῆς Μάνης Μιχαὴλ Ράλλη, ἐπὶ κεφαλῆς μεγάλης δυνάμεως, κατ' Αὔγουστον τοῦ 1466, ἐπῆλθε καὶ διεξήγαγεν ἐπιτυχῶς τὸν κατ' αὐτῶν ἀγῶνα· ἐνῷ ὅμως κατεδίωκε τὸν Ὀμὲρ πασᾶν μετὰ τοῦ στρα-

Digitized by Google

τοῦ του ἐκ 12.000 ἀνδρῶν, ἐνεπλάκη εἰς στηθεῖσαν ἐνέδραν ὑπὸ τῶν Τούρκων, οἵτινες καὶ κατέσφαξαν ἀνηλεῶς τὸν στρατὸν τοῦ Μπαρμπερίγου καὶ αὐτὸν τὸν ἴδιον. Τ. Ε. Ε.

**μπαρμπερίζω·** δημοτ., ξυρίζω τὸ γένειον: «πάω νὰ μπαρμπεριστῶ».

**Μπαρμπερίνι** (Barberini). Ἐπιφανὴς ἰταλικὴ οἰκογένεια τῆς Φλωρεντίας, διαδραματίσασα σπουδαιότατον ρόλον εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ θρησκευτικὴν κίνησιν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Γενάρχης αὐτῆς ὑπῆρξεν ὁ *Ἀντώνιος Μπαρμπερίνι*, ἀποθανὼν ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1571, ὅστις ἔσχε τρεῖς υἱούς, τὸν Κάρολον, Μαφφέο καὶ Ἀντώνιον. Ἐκ τούτων ὁ δεύτερος ἀνῆλθε τῷ 1623 εἰς τὸν παπικὸν θρόνον ὑπὸ τὸ ὄνομα *Οὐρβανὸς Η'* (βλ. λ.).

Ἐκ τῶν ἄλλων ὁ ***Ἀντώνιος***, ὁ ἐπικληθεὶς *Γέρων* (1569—1646), ἁπλοῦς καπουκῖνος ὅταν ὁ ἀδελφός του ἐγένετο πάπας, προήχθη ὑπὸ τούτου εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ καρδιναλίου καὶ ἐπισκόπου τῆς Σινιγκάλια (1624). Ἔγραψεν: «Εἰσηγήσεις συνοδικάς», πραγματείαν περὶ τοῦ τρόπου τῆς ἐκλογῆς εἰς τὸ μοναχικὸν τάγμα τῶν καπουκίνων καὶ κανονισμοὺς διὰ τὸ τάγμα τοῦτο.

Ἐκ τῶν τριῶν υἱῶν τοῦ Καρόλου, οἱ μὲν ***Φραγκίσκος*** (1597—1679) καὶ ***Ἀντώνιος*** ὁ *Νεώτερος* (1607—1671) ἐγένοντο, χάρις καὶ οὗτοι εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ θείου των, καρδινάλιοι, ὁ δὲ ***Θαδδαῖος*** (ἀποθανὼν τῷ 1647) διωρίσθη στρατηγὸς τοῦ στρατοῦ τοῦ Βατικανοῦ. Τὸ προκεχωρημένον τῆς ἡλικίας καὶ ἡ ἐκ τούτου πνευματικὴ ἀδυναμία τοῦ Οὐρβανοῦ Η' συνετέλεσαν ὥστε ἡ διοίκησις τῆς Ἐκκλησίας νὰ περιέλθῃ ἐν τῇ πραγματικότητι, εἰς τοὺς τρεῖς αὐτοῦ ἀνεψιούς. Μεγαλοπρεπεῖς, εὐφυεῖς καὶ φίλοι τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν, συνεκέντρωσαν πέριξ των πάντας σχεδὸν τοὺς σοφοὺς τῆς ἐποχῆς των, ἐν οἷς καὶ τοὺς Γαλιλαῖον, Οὖγον Γρότιον, Ντυπύϋ, Ὁλστένιον κλπ., τὸ δὲ περίφημον μέγαρόν των (βλ. κατωτ. *Μπαρμπερίνι ἀνάκτορον*) ἀπετέλεσεν ἓν τῶν θαυμασιωτέρων μουσείων τῆς ἐποχῆς. Πρὸς συγκέντρωσιν ὅμως τῶν ἐν αὐτῷ καλλιτεχνημάτων διέπραξαν ποικίλας ἁρπαγὰς καὶ αὐθαιρεσίας, μὴ φεισθέντες οὐδὲ τῶν ἀρχαίων μνημείων, ἐξ οὗ καὶ τὸ εἰς βάρος των λογοπαίγνιον τῆς ἐποχῆς: «quo non barbari fecerunt, Barberini fecere» (=ὅ,τι δὲν ἔκαμαν οἱ βάρβαροι, τὸ ἔκαμαν οἱ Μπαρμπερίνι). Καὶ αὐτοὶ δὲ οἱ ἴδιοι ἠσχολήθησαν μὲ τὰ γράμματα, ἰδίως ὁ Φραγκῖσκος, ὅστις ἐθεωρεῖτο σοφὸς ἀνατολιστὴς καὶ μετέφρασε τὸν Μᾶρκον Αὐρήλιον. Ὡς διπλωμάται ἠγωνίσθησαν νὰ διατηρήσωσι τὴν εἰρήνην μεταξὺ τῶν καθολικῶν ἡγεμόνων καὶ ὁ μὲν Φραγκῖσκος προσεπάθησε νὰ συμβιβάσῃ τὴν Γαλλίαν μετὰ τῆς Ἱσπανίας, ὁ δὲ Ἀντώνιος εἰρήνευσε τὴν Ἰταλίαν, τὴν ὁποίαν ἐτάρασσε τὸ ζήτημα τῆς Μονφερράτης. Ἡ μεγάλη ὅμως αὐτῶν προσπάθεια καὶ βλέψις πρὸς καθυπόταξιν τῆς Ἰταλίας εἰς τὴν ἁγίαν Ἕδραν εἶχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὴν καταστροφήν των. Θελήσαντες νὰ καταλάβωσι τὰ δουκᾶτα τοῦ Κάστρο καὶ τοῦ Ρονσιλιόνε, τὰ ὁποῖα ἀνῆκον εἰς τὸν Ἐδουάρδον Φαρνέζε, ἐνεπλάκησαν μετ' αὐτοῦ εἰς πόλεμον, καθ' ὃν τὰ παπικὰ στρατεύματα, διοικούμενα ὑπὸ τοῦ Θαδδαίου, μετὰ μικρὰς ἐν ἀρχῇ ἐπιτυχίας, ὑπέστησαν δεινὰς ἥττας καὶ ἠναγκάσθησαν νὰ τραπῶσιν εἰς φυγήν, ἀνερχόμενα εἰς 18—20.000 ἀνδρῶν, ἐνώπιον τριῶν μόνον χιλιάδων ἱππέων. Καὶ αὐτὴ ἡ Ρώμη ἠπειλήθη κατόπιν τοῦ ἐκ τῆς ἥττης ταύτης κινδύνου, οἱ δὲ Μπαρμπερίνι ἠναγκάσθησαν τότε νὰ σπεύσωσιν εἰς ἀπόδοσιν τῶν δουκάτων. Ὁ λαὸς πιεζόμενος ὑπὸ τῆς βαρείας φορολογίας, ἤρχισεν ἐξεγειρόμενος κατόπιν τῆς ἥττης ταύτης, ὅτε δὲ τῷ 1644, ἀποθανόντος τοῦ Οὐρβανοῦ, ἐξελέγη πάπας ὁ καρδινάλιος Πανφίλι ὑπὸ τὸ ὄνομα Ἰννοκέντιος Ι', ἡ κοινὴ γνώμη τοσαύτην ἤσκησεν ἐπ' αὐτοῦ πίεσιν, ὥστε ἠναγκάσθη νὰ ζητήσῃ ἀπὸ τοὺς ἀορφανισθέντας τοῦ προστάτου των Μπαρμπερίνι, τὸν λόγον τῶν πράξεών των. Οἱ τρεῖς ἀδελφοὶ μετὰ τοῦ θείου των Ἀντωνίου τοῦ Γέροντος ἔσπευσαν τότε νὰ καταλίπωσι τὸ ἰταλικὸν ἔδαφος, διαπεραιωθέντες εἰς Γαλλίαν. Ὁ Ἰννοκέντιος ἠθέλησε νὰ κηρύξῃ τοὺς δύο καρδιναλίους ἐκπτώτους τοῦ ἀξιώματός των, ἀλλ' ὁ Μαζαρῖνος ἀνέλαβε τὴν ἐνεργὸν καὶ θερμὴν ὑποστήριξίν των. Ὁριστικὴ συμφωνία ἐπῆλθε μόλις τῷ 1653, διὰ τοῦ γάμου μιᾶς μικρανεψιᾶς τοῦ πάπα μετὰ τοῦ ἐκ τῶν νεωτέρων γόνων τῆς οἰκογενείας *Μαφφέο Μπαρμπερίνι*, εἰς ὃν ἐδόθη τὸ πριγκιπᾶτον τῆς Παλεστρίνα. Ὁ Ἀντώνιος ὁ Γέρων καὶ ὁ Θαδδαῖος εἶχον ἀποθάνει ἤδη εἰς Παρισίους, οἱ Ἀντώνιος ὅμως ὁ Νεώτερος καὶ Φραγκῖσκος ἐπανῆλθον εἰς Ρώμην, ὅπου καὶ ἔζησαν μέχρι τοῦ θανάτου των. Τῷ 1736 ἐξέλιπε καὶ ὁ τελευταῖος γόνος τῆς οἰκογενείας, ἡ δὲ περιουσία αὐτῆς περιῆλθεν εἰς τὸν οἶκον Κολόννα. Χ. Δ.

— **Μπαρμπερίνι ἀνάκτορον** (Palazzo Barberini). Μέγαρον ἀναγερθὲν ἐν Ρώμῃ ἐπὶ πάπα Οὐρβανοῦ Η' ὑπὸ τῆς οἰκογενείας τῶν Μπαρμπερίνι. Ἡ οἰκοδόμησις αὐτοῦ ἤρχισε τῷ 1624 ἐπὶ σχεδίων τοῦ ἀρχιτέκτονος Καρόλου Μαντέρνο καὶ συνεχίσθη ὑπὸ τῶν Μπορρομίνι καὶ Μπερνίνι, εἰς ρυθμὸν μπαρρόκ. Εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς ΒΔ. κλιτύος τοῦ Κυριναλίου λόφου καὶ περιβάλλεται ὑπὸ κήπου. Εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων μεγάρων τῆς Ρώμης, πρὸς κατασκευὴν δὲ αὐτοῦ ἐληφθησαν, πλὴν ἄλλων ὑλικῶν ἀρχαίων μνημείων, καὶ μάρμαρα καὶ λίθοι ἐκ τοῦ Κολοσσαίου, καθὼς καὶ ὁλόκληρος ἡ στέγη τοῦ Πανθέου. Τὸ ἐσωτερικόν του διεκοσμήθη ὑπὸ τῶν καλυτέρων καλλιτεχνῶν τῆς ἐποχῆς. Ἐπὶ τῆς ὀροφῆς τῆς μεγάλης αἰθούσης ὁ ζωγράφος Πέτρος ντὰ Κορτόνα ἀπεικόνισεν ἱστορικὰ γεγονότα τῆς οἰκογενείας, τοῦ πίνακος τούτου θεωρουμένου ὡς τοῦ ἀριστουργήματος τοῦ καλλιτέχνου. Ἡ μεγαλοπρεπὴς κλῖμαξ καὶ αἱ αἴθουσαι κοσμοῦνται μὲ ἀρχαῖα ἀγάλματα. Ἐπὶ πολλὰ ἔτη, μέχρι τοῦ 1920, ὁ ἄνω ὄροφος τοῦ μεγάρου ἐχρησίμευεν ὡς ἕδρα τῆς ἑλληνικῆς πρεσβείας, ὁ δὲ πρῶτος ὄροφος ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι ἕδρα τῆς ἱσπανικῆς πρεσβείας παρὰ τῷ Κυριναλίῳ.

— **Μπαρμπερίνι** ***βιβλιοθήκη***. Ἱδρύθη κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἐν Ρώμῃ ὑπὸ τοῦ καρδιναλίου Φραγκίσκου Μπαρμπερίνι καὶ ἦτο ἡ πλουσιωτέρα, ἀπὸ ἀπόψεως ἀριθμοῦ τόμων καὶ σημαντικότητος ὑλικοῦ, πασῶν τῶν συγχρόνων της. Μέχρι τοῦ 1902 ἦτο ἰδιοκτησία τῆς οἰκογενείας Μπαρμπερίνι καὶ ἦτο τοποθετημένη εἰς ἰδιαιτέρας αἰθούσας τοῦ ὁμωνύμου ἀνακτόρου. Ἔκτοτε ὅμως ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ πάπα Λέοντος ΙΓ' καὶ ἀπετέλεσεν ἐφεξῆς πολύτιμον τμῆμα τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Βατικανοῦ, χωρὶς νὰ συγχωνευθῇ μετὰ ταύτης. Λέγεται ὅτι περιελάμβανεν ἄλλοτε 100.000 τόμους καὶ 10.000 χειρόγραφα. Ἤδη ἀποτελεῖται ἀπὸ 31.671 τόμους καὶ 10.652 χειρόγραφα, ὧν πλεῖστα μεγάλης σπουδαιότητος. Μεταξὺ ἄλλων περιέχει χειρόγραφα τοῦ Δάντου, τοῦ Γαλιλαίου, τοῦ Μπέμπο, τοῦ Τάσσου, σχέδια τοῦ Σανγκάλλο κτλ. Περιέχει ἐπίσης καὶ πολλὰ χειρόγραφα τῆς βιβλιοθήκης τῆς παρὰ τὴν Ρώμην ἄλλοτε βυζαντινῆς μονῆς Γκροτταφερράτα. Μ. Δ. Β.

— **Μπαρμπερίνι** ***πινακοθήκη*** (Galleria Barberini). Ἡ πινακοθήκη αὕτη ἦτο ἐκ τῶν σημαντικωτέρων τῆς Ρώμης καὶ περιελάμβανε σπουδαιότατα ἔργα μεγάλων ζωγράφων. Συνεπείᾳ ὅμως τῶν πωλήσεων καὶ τῆς διανομῆς τῶν πινάκων μεταξὺ τῶν διαφόρων κληρονόμων, τὰ ἔργα αὐτῆς ἠλαττώθησαν καὶ καταλαμβάνουν σήμερον τρεῖς μόνον αἰθούσας τοῦ ἰσογείου τοῦ ἀνακτόρου Μπαρμπερίνι. Ἐν τούτοις οἱ ἐν αὐτῇ ἐναπομείναντες πίνακες ἐξακολουθοῦν νὰ παρουσιάζουν ἐξαιρετικὸν ἐνδιαφέρον, περιλαμβάνοντες ἐν τοῖς ἄλλοις πολλὰ ἀριστουργήματα τοῦ Καραβάτζιο, τοῦ Παρμετζάνο, τοῦ Λανφράνκο, τοῦ Γκουερτσίνο, τοῦ Τιτσιανοῦ, τοῦ Καράτσι, τὸ Ντομινικίνο, τοῦ Μένγκς, τοῦ Καναλέττο, τοῦ Κλαυδίου Λωρραίν, τοῦ Ἀλβέρτου Ντύρερ, τοῦ Ραφαήλου («Φορναρίνα»), τοῦ Γκουΐντο Ρένι (ἡ ὑποτιθεμένη προσωπογραφία τῆς Βεατρίκης Τσέντσι), τοῦ Πουσσέν, τοῦ Μπρουτσίνο, τοῦ Πάλμα τοῦ πρεσβυτέρου κτλ. Τὰ περίφημα ἀγγεῖα Μπαρμπερίνι ἢ «κύπελλα Πόρτλαντ» εὑρίσκονται νῦν εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον. Μ. Δ. Β.

**Μπαρμπερίνο** (Barberino), ***Ἀνδρέας*** *ντὰ* —. Ἰταλὸς λογοτέχνης ἐκ τῆς οἰκογενείας Μαγκαμπόττι, καταγομένης ἐκ τοῦ Μπαρμερίνο τῆς Τοσκάνης. Οὐδὲν περὶ τοῦ βίου του εἶναι γνωστόν, φαίνεται ὅμως ὅτι ἤκμασε μεταξὺ τοῦ τέλους τοῦ ΙΔ' καὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Ἠσχολήθη μὲ τὴν συλλογὴν τῶν ἐν Γαλλίᾳ διαδεδομένων παρὰ τῷ λαῷ μεσαιωνικῶν ἐπικῶν ποιημάτων (chansons de geste), τὰ ὁποῖα μετέφερεν εἰς τὴν ἰταλικήν, παραφράζων κατὰ τὸ πλεῖστον, μεταβάλλων καὶ συμπληρῶν πολλάκις αὐτὰ κατὰ τὴν ἰδίαν αὐτοῦ ἔμπνευσιν. Κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων τούτων, τὰ ὁποῖα ἔσχον μεγάλην κατὰ τὸν μεσαίωνα διάδοσιν παρὰ τῷ ἰταλικῷ λαῷ, εἶναι τὰ ἑξῆς: «Aiolfo del Barbicone», «Aspramonte», «Guerino il Meschino», «I Nerbonesi», «I Reali di Francia» κ. ἄ. Ἐλάχιστα τούτων ἔχουσιν ἐκδοθῆ, ἐν οἷς τὸ Aiolfo (Βολωνία 1864), τὸ Reali (Βενετία 1821). Σήμερον κυκλοφοροῦσιν ἐν Ἰταλίᾳ εἰς μεγάλην κλίμακα διάφορα, μὲ τοὺς ἀνωτέρω συνήθως τίτλους, λαϊκὰ ἀναγνώσματα, ἐμπνευσμένα ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μπαρμπερίνο. Χ. Δ.

**Μπαρμπερίνο** ***ντὶ Βὰλ ντ' Ἔλσα*** (Barberino di Val d' Elza) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Φλωρεντίας. Κάτ. 10.300. Ἐντεῦθεν κατήγετο ἡ οἰκογένεια τῶν *Μπαρμπερίνι*, τῆς ὁποίας πύργος σῴζεται ἐγγὺς τῆς πόλεως. Μ. Δ. Β.

— **Μπαρμπερίνο** ***ντὶ Μουτζέλλο*** (Barberino di Mugello) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς *Φλωρεντίας*, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 32 χλμ. Κάτ. 11.500. Εἶναι σημαντικὸν γεωργικὸν κέντρον. Μ. Δ. Β.

— **Μπαρμπερίνο** (Barberino), ***Φραγκῖσκος*** *ντὲ* —. Ἰταλὸς συγγραφεὺς (1264—1348), καταγόμενος ἐκ τῆς πολίχνης Μπαρμπερίνο τῆς Τοσκάνης. Συμπληρώσας τὰς σπουδάς του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παδούης, εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ἐνετικῆς δημοκρατίας, εἰς ἣν ἐποχὴν ὁ πάπας εἶχεν ἀφορίσει αὐτὴν (1309), μετέσχε δὲ τῆς εἰς Ἀβινιὸν σταλείσης πρεσβείας διὰ τὴν ἄρσιν τοῦ ἀφορισμοῦ. Αἱ διαπραγματεύσεις παρετάθησαν ἐπὶ τετραετίαν, καθ' ὅλον δὲ τοῦτο τὸ διάστημα ἐδόθη εἰς τὸν Μπαρμπερίνο ἡ εὐκαιρία νὰ μελετήσῃ τὴν πολὺ προβηγκιανὴν λογοτεχνίαν καὶ νὰ ἐπισκεφθῇ τὸ πλεῖστον τῆς Ν. Γαλλίας καὶ τοὺς Παρισίους. Ἐπιστρέψας εἰς Ἰταλίαν ἐγκατεστάθη βραδύτερον εἰς Φλωρεντίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν ἐκ τῆς χολέρας. Ἐκ τῶν ἔργων του περιεσώθησαν, τὰ ἑξῆς: «Del reggimento e costumi di donna», ἔργον συντεταγμένον ἀναμὶξ εἰς στίχους καὶ πεζόν, περιέχον πλείστας περιέργους καὶ διδακτικὰς πληροφορίας περὶ τῆς ζωῆς τῶν γυναικῶν ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του (ἐδημοσιεύθη τῷ 1815 ὑπὸ τοῦ Μάντζι), καὶ «I documenti d'amore», ἔμμετρος ἐγκυκλοπαιδεία ἠθικῶν διδαγμάτων, μεταφρασθεῖσα ὑπὸ τοῦ συγγραφέως καὶ εἰς τὴν λατινικὴν καὶ συνοδευομένη ὑπὸ πλήθους σημειωμάτων, χρησιμωτάτων διὰ τὴν μελέτην τῆς λογοτεχνίας καὶ τῶν ἠθῶν τοῦ μεσαίωνος. Τοῦ ἔργου τούτου ἐδημοσιεύθη τῷ 1640 μόνον τὸ ἰταλικὸν κείμενον, τὸ χειρόγραφον ὅμως τοῦ λατινικοῦ κειμένου καὶ τῶν σχολίων φυλάσσεται ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ Μπαρμπερίνι. Ι. Ι.

**Μπαρμπερῖνοι** (οἱ)· βλ. *Βέρβεροι*.

**μπαρμπεριὸ** (τό)· δημοτ., τὸ ἐργαστήριον τοῦ μπαρμπέρη, τοῦ κουρέως, κουρεῖον.

**μπαρμπέρισμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπαρμπερίζω, ξύρισμα: «μὲ κ... 'ς τὸ μπαρμπέρισμα», «κάμνει καλὸ στρωτὸ μπαρμπέρισμα».

**Μπάρμπερτον** (Barberton) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν. Ἀφρικῆς ἐν τῇ χώρᾳ τοῦ Τράνσβααλ. Ἡ κτίσις της (1886) ὀφείλεται εἰς τὴν κατὰ τὴν περιοχὴν ταύτην ἀνακάλυψιν χρυσοφόρων πηγῶν. Κατὰ τὸν πόλεμον τῶν Μπόερς συνήφθη παρ' αὐτὴν τὴν μεγάλη μάχη τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1900. Κάτοικοι 4.400. Ι. Ι.

**Μπαρμπερῶ** (Barbereau), ***Βαλτάσαρ***. Γάλλος μουσικός, πρῶτον βραβεῖον τῆς Ρώμης, τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων (1799, 1879). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς συνθέσεως καὶ τῆς ἱστορίας τῆς μουσικῆς ἐν τῷ ᾠδείῳ τούτῳ καὶ ἐξέδωκεν: «Πρακτικὸν καὶ πρακτικὸν ἐγχειρίδιον τῆς μουσικῆς συνθέσεως» καὶ «Μελέτην περὶ τῶν πηγῶν τοῦ μουσικοῦ συστήματος» (1852), ἀμφότερα ἡμιτελῆ. Ι. Ι.

**Μπάρμπες** *[Γεωγρ.]*. Εἷς τῶν δύο συνοικισμῶν ἐκ τῆς ἑνώσεως τῶν ὁποίων ἀπετελέσθη τὸ χωρίον *Βεργίνα* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης.

**Μπαρμπὲς** (Barbès), ***Ἀρμάνδος***. Γάλλος πολιτικὸς καὶ διάσημος ἐπαναστάτης, γεννηθεὶς ἐν Γουαδελούπᾳ τῷ 1809 καὶ ἀποθανὼν ἐν Χάγῃ τῷ 1870. Ἐγκατεστάθη ἐν Γαλλίᾳ ἀπὸ τῆς παιδικῆς του ἡλικίας, μετέβη δὲ εἰς Παρισίους τῷ 18.., ὅπου ἐσπούδασε νομικὰ καὶ συνεδέθη μὲ τοὺς πρωτοπόρους τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος. Μετασχὼν ὅλων τῶν ἐπαναστατικῶν κινήσεων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης καὶ τῶν ἐναντίον τοῦ Λουδοβίκου Φιλίππου συνωμοσιῶν, συνελήφθη τῷ 1834 καὶ ἐφυλακίσθη τὸ πρῶτον ἐπὶ πεντάμηνον. Ὑπῆρξε κατόπιν ὁ πρωτεργάτης τῆς ἀποδράσεως τῶν ἐν Ἁγίᾳ Πελαγίᾳ κρατουμένων δημοκρατικῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ Γκινάρ, ὁ Καβαινιὰκ καὶ ὁ Ἀρμάνδος Μαρράστ. Τῷ 1839 συλληφθεὶς ὑπὸ τῆς ἀστυνομίας, ὡς κατασκευάζων λαθραίως πυρίτιδα, κατεδικάσθη εἰς ἑνὸς ἔτους φυλάκισιν. Ἐπανεμφανίζεται κατόπιν πρωταγωνιστῶν εἰς τὴν ἕνωσιν τῶν «Δικαίων τοῦ ἀνθρώπου» καὶ παρασκευάζων μετὰ τῶν Μπερνάρ, Μπλανκί, Γκινιὸ καὶ ἄλλων τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1839. Οἱ συνωμόται δὲν ὑπερέβαινον τοὺς χιλίους καὶ τὰ ἐφόδιά των περιωρίζοντο εἰς 12.000 φυσίγγια μόνον· δὲν ἐδίστασαν ἐν τούτοις νὰ προβοῦν εἰς τὸ κίνημα τῆς 12ης Μαΐου, ἐλπίζοντες εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ λαοῦ. Πρὸς στιγμὴν κατώρθωσαν νὰ καταλάβουν τὸ δημαρχεῖον, ὁπόθεν ὁ Μπαρμπὲς ἀνέγνωσε τὴν ἐπαναστατικὴν προκήρυξιν, ἀλλὰ τὸ ἐγχείρημά των μετά τινα αἱματηρὰ συμβάντα, κατεστάλη ἐντὸς εἰκοσιτετραώρου. Κατὰ τὴν γενομένην μετὰ ἕνα περίπου μῆνα δίκην των, ὁ Μπαρμπές, μὴ θελήσας νὰ δεχθῇ συνήγορον καὶ ὁμιλήσας ὑβριστικῶς πρὸς τὸ δικαστήριον, κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἡ ἀπόφασις προὐκάλεσεν ἐξαιρετικὴν συγκίνησιν. Τρεῖς χιλιάδες σπουδαστῶν μετέβησαν ἐν σώματι εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῆς Δικαιοσύνης ζητοῦντες δι' αὐτὸν χάριν, μία ἄλλη δὲ διαδήλωσις ἐμπόρων, ὑπαλλήλων καὶ ἐργατῶν ἐπέμενε νὰ κατευθυνθῇ εἰς τὰ ἀνάκτορα, ἕως ὅτου διελύθη διὰ τῆς βίας. Ἀντιθέτως ὁ Μπαρμπὲς ἠρνεῖτο νὰ ὑποβάλῃ αἴτησιν χάριτος. Τὴν προτεραίαν ὅμως τῆς ἐκτελέσεως συνέπεσαν δύο σημαντικὰ διὰ τὴν αὐλὴν γεγονότα, ὁ θάνατος ἀφ' ἑνὸς τῆς πριγκιπίσσης Μαρίας καὶ ἡ γέννησις ἀφ' ἑτέρου τοῦ ἐγγόνου τοῦ Λουδοβίκου-Φιλίππου (τοῦ κόμητος τῶν Παρισίων). Ὁ Βίκτωρ Οὐγκώ, ἐκμεταλλευόμενος τὴν ψυχολογικὴν ἐκείνην στιγμήν, ἐδημοσίευσεν ἀμέσως ἔμμετρον ἔκκλησιν πρὸς τὸν βασιλέα, ὑπὲρ χάριν διὰ τὸν Μπαρμπές, «ἐν ὀνόματι τοῦ νέου τάφου—ἐν ὀνόματι τοῦ νέου λίκνου», ὁ δὲ Λουδο...

Digitized by Google

-Φίλιππος ἔστερξε τέλος νὰ μετατρέψη τὴν ...νὴν αὐτοῦ ἐν ἀρχῇ μὲν εἰς ἰσόβια δεσμὰ καὶ ...χ εἰς ἀπέλασιν. Ὁ Μπαρμπὲς ἔμεινεν ἐν τού...ς εἰς τὴν Γαλλίαν κρατούμενος εἰς τὸ φρούριον ... Ντουλλὰν καὶ βραδύτερον εἰς τὴν φυλακὴν ...; Νίμ, ἕως οὗ ἡ ἐπανάστασις τοῦ 1848 τῷ ...έδωκε τὴν ἐλευθερίαν.

Ἐπιστρέψας τότε εἰς Παρισίους ἐξελέγη πρόε...ος τῆς ἐπαναστατικῆς λέσχης, διωρίσθη διοι...τὴς τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Λουξεμβούργου καὶ συν...γματάρχης τῆς 12ης λεγεῶνος. Ἐκλεγεὶς μέλος ...; ἐθνοσυνελεύσεως, διεμαρτυρήθη ἐν αὐτῇ σφο...ῶς κατὰ τοῦ ἀνηλεοῦς τρόπου, δι' οὗ κατεστά...σαν αἱ ταραχαὶ τοῦ Ρουέν, ὅπου ἡ ἐθνοφρουρὰ ...φέκισε κατὰ τὴν ἡμέραν τῶν ἐκλογῶν τοὺς ...σιαλιστὰς ἐργάτας. Μετασχὼν τοῦ κινήματος ...; 15ης Μαΐου 1848, διωρίσθη μέλος τῆς στα...ιστικῆς κυβερνήσεως, ἥτις ὅμως δὲν ἐπρόλαβε ... συγκροτηθῇ. Συλληφθεὶς τὴν ἑσπέραν τῆς ...ας ἐκείνης ἡμέρας καὶ δικασθεὶς ἐπὶ συνωμο...χ κατὰ τῆς δημοκρατίας κατεδικάσθη εἰς ἰσόβια ...σμά. Τῷ 1854 ὁ ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον Να...λέων Γ' ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν χάριν, ἀλλ' ὁ Μπαρ...πὲς δὲν ἤθελε νὰ ζήσῃ πλέον εἰς τὴν ἐκ νέου ...σιλευομένην Γαλλίαν. Ἀνεχώρησεν εἰς Βρυξέλ...ς καὶ ἐκεῖθεν μετέβη εἰς Ἱσπανίαν, ὁπόθεν ...ιως ἀπηλάθη εἰς Πορτογαλίαν. Ἐκεῖθεν μετέβη ...; Χάγην, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανά...υ του.

Ὁ Μπαρμπὲς ὑπῆρξεν ἁγνὸς καὶ ἀληθινὰ ἰδεο...γος ἐπαναστάτης, διαπνεόμενος ἀπὸ θερμὴν ἀγά...ην διὰ τὸν λαὸν καὶ πονῶν εἰλικρινῶς τὴν θέ...ν τοῦ προλεταριάτου, χωρὶς ἀτομικὰς φιλοδο...ας καὶ συμφεροντολογικοὺς ὑπολογισμούς. Ὁ ...ρουντὸν τὸν ἐχαρακτήρισε παραστατικώτατα, ...ομάσας αὐτὸν «Μπαγιὰρ τῆς δημοκρατίας». Δὲν ...ρῆκε συγγράμματα, παρεκτὸς μικρῶν τινων πο...ημάτων πολιτικοῦ περιεχομένου, ὧν γνωστότερον ...ναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Δύο ἡμέραι καταδίκης εἰς ...άνατον» (Παρίσιοι 1848), εἶδος πολιτικῆς διαθή...ης, ἐπανεκδοθὲν τῷ 1849 μὲ πρόλογον τοῦ Λου...δβίκου Μπλάν. Γ. Ζ.

**Μπαρμπεϋρὰκ** (Barbeyrac), ***Ἰωάννης***. Γάλλος ...ομομαθὴς καὶ φιλόσοφος (1674—1744). Ὡς νομικὸς ...χρεδέχετο τὸν θεσμὸν τοῦ διαζυγίου διὰ κοινῆς ...ναινέσεως, τὴν πολυγαμίαν καὶ τὴν ἀπόλυτον ...ουσίαν τοῦ πατρὸς ἐπὶ τῶν τέκνων του, τὰ ὁποῖα ...ικαιοῦτο καὶ νὰ πωλήσῃ. Ὡς φιλόσοφος ἀνῆκεν ...ς τὴν σχολὴν τοῦ Λόκκε, μὴ παραδεχόμενος τὰς ...φύτους ἰδέας καὶ ἀποκρούων πάντα ἐν γένει ...πριορισμόν. Διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς μεταφραστὴς ἔργων ...οῦ Γροτίου, τοῦ Πούφεντορφ, τοῦ Κούμπερλαντ, ...οῦ Μπύνκερσχαικ κτλ. Α. Δ.

**Μπαρμπιάνο** (Barbiano). Ἰταλικὴ οἰκογένεια ...γενῶν, ἀκμάσασα κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα. Γενάρχης ...ὐτῆς φέρεται ὁ *Ἀλβερῖκος Μπαρμπιάνο*, καταγό...ενος ἐκ Βολωνίας. Εἶναι κυρίως γνωστὸς ὡς διά...σημος στρατιωτικὸς ἀρχηγὸς καὶ ὡς ὁ ἱδρυτὴς ...οῦ περιφήμου «Μεγάλου τάγματος τοῦ Ἁγίου Γεωρ...ίου», ὅπερ ἔφερεν ὡς σῆμα τὸ ῥητὸν «Italia libe...ata dai barbari» καὶ εἶχεν ὡς σκοπὸν τὴν ἐκδίω...ιν τῶν διαφόρων βαρβαρικῶν ὀρδῶν μισθοφόρων, ...ἵτινες ἐλυμαίνοντο κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην τὴν ...ώραν. Τὸ τάγμα τοῦτο ἀπετελέσθη ἀποκλειστι...ῶς ἀπὸ Ἰταλοὺς καὶ κατώρθωσεν εἰς βραχὺ χρο...ικὸν διάστημα νὰ ἐκκαθαρίσῃ τὴν περιοχὴν τῆς ...Β. Ἰταλίας ἀπὸ τὰ ἄτακτα στίφη. Ἐπίσης τὸ ...άγμα τοῦ Ἁγίου Γεωργίου ἀπετέλεσε τὴν πρώτην ...ταλικὴν σχολὴν στρατιωτικῆς τέχνης, ἐν τῇ ὁποίᾳ ...ξεπαιδεύθησαν οἱ διασημότεροι Ἰταλοὶ πολεμι...ταὶ καὶ ἀρχηγοὶ τῶν μισθοφόρων τοῦ μεσαίωνος. ...Ὁ ἀδελφὸς τοῦ Ἀλβερίκου *Ἰωάννης*, ἀποθανὼν ...τῷ 1401, ἐγένετο ἰδίως γνωστὸς ἐκ τῆς πίστεως, ...μετὰ τῆς ὁποίας ὑπηρέτησε τὸν Ἄτσο ντὲ Ἔστε, ...όμιμον κληρονόμον τῆς Φερράρας, ἐναντίον τοῦ ...σφετεριστοῦ Νικολάου Γ'. Κατόπιν τούτου παρε...χωρήθη εἰς αὐτὸν ἡ κομιτεία τοῦ Λοῦγκο ἐν Ρω...μανίᾳ καὶ ἡ περιοχὴ τῆς Μπελτζιογιόζο ἐν Πα...βίᾳ. Βραδύτερον οἱ ἀπόγονοι τοῦ Ἀλβερίκου ἐπέ...τυχον νὰ ἀναγνωρισθοῦν ὡς πατρίκιοι τοῦ Μιλά...νου καὶ νὰ λάβουν τὸν κληρονομικὸν τίτλον τοῦ ...πρίγκιπος. Ὁ *Κάρολος Μπαρμπιάνο*, ἀποθανὼν ...τῷ 1514, ἐγκατασταθεὶς εἰς τὸ Μιλᾶνον προσέθεσε ...πρῶτος τὸν τίτλον τῶν Μπελτζιογιόζο εἰς τὸ ...ὄνομά του, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ πρίγκιψ *Ἀλβερῖκος* (1725—1813), προσήρτησε καὶ τὸ ὄνομα τοῦ μαρ...κησίου Ἔστε, κατόπιν τοῦ γάμου του μετὰ τῆς ...μαρκησίας Ἄννης, θυγατρὸς Καρόλου Φιλιβέρτου Ἔστε. Μ. Δ. Β.

— **Μπαρμπιάνο ντὶ *Μπελτζιογιόζο*** (Barbiano di Belgioioso). Ὄνομα οἰκογενείας Ἰταλῶν πατρικίων τοῦ Μιλάνου, ἀποτελούσης συνέχειαν τῆς οἰκογε...νείας τῶν *Μπαρμπιάνο*. Τὰ κυριώτερα τῶν μελῶν ...αὐτῆς, ἀκμάσαντα ἰδίως κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, εἶναι: —1) *Λουδοβῖκος*, κόμις. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1803—1885). Διετέλεσε δήμαρχος τοῦ Μιλάνου καὶ ὑπὸ τὴν ἰδιότητα ταύτην ὑπεδέχθη τῷ 1859 ἐξ ὀνόμα...τος τῆς πόλεως τὸν βασιλέα Βίκτωρα Ἐμμανουὴλ Β' κατὰ τὴν εἴσοδόν του ἐν τῇ πόλει μετὰ τὴν μά...χην τῆς Μαγέντας. Ἐγένετο γερουσιαστὴς καὶ εἶχεν ὀνομαστὴν συλλογὴν νομισμάτων. Εἶναι γνωστὸς ἐπίσης διὰ τὰς σχέσεις του μὲ τὸν Ἰωσὴφ Γαριβάλδην καὶ τὴν βοήθειαν τὴν ὁποίαν παρέσχεν εἰς τοὺς ἀγῶνάς του.—2) *Χριστίνα*, πριγκίπισσα (1808—1871). Ἰταλὶς πατριῶτις καὶ συγγραφεὺς (βλ. λ. *Τριβούλτσιο*, πριγκίπισσα τοῦ Μπελτζιογιόζο).—3) *Κάρολος*, κόμις (1815—1887). Διετέλεσε γερουσιαστὴς καὶ διεκρίθη ὡς ζωγράφος καὶ συγγραφεύς, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Τὸ σχολεῖον καὶ ἡ οἰκογένεια», «Οἱ πρόσφυγεες τῆς Πάργας», «Τσίκο Σιμωνέττα» ἱστορικὸν δρᾶμα κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπαρμπιὲ** (Barbier), ***Ἀντώνιος-Ἀλέξανδρος***. Γάλλος βιβλιογράφος (1765—1825). Ὑπῆρξε βιβλιοθηκάριος τοῦ διευθυντηρίου, τοῦ συμβουλίου τῆς ἐπικρατείας καὶ τοῦ Ναπολέοντος, συνετέλεσε δὲ τὰ μέγιστα εἰς τὴν διάσωσιν τῶν βιβλιογραφικῶν θησαυρῶν τῆς Γαλλίας. Ἔγραψε «Λεξικὸν τῶν συνωνύμων καὶ τῶν ψευδωνύμων», «Κριτικὸν ἔλεγχον τῶν μᾶλλον ἐν χρήσει ἱστορικῶν λεξικῶν» κλπ. —Ω.

**Μπαρμπιὲ** (Barbier), ***Ἐρρῖκος-Αὔγουστος***. Διάσημος Γάλλος λογογράφος καὶ ποιητὴς (1805—1882). Εἶχε δημοσιεύσει μετὰ τοῦ Ἀλφ. Ρουαγιὲ τὰ «Κακὰ παιδιά» (1830, εἰς 2 τόμ.), ἱστορικὸν μυθιστόρημα ἐπὶ τῶν ἠθῶν τοῦ μεσαίωνος, ὅταν ἐξερράγη ἡ Ἰουλιανὴ ἐπανάστασις. Ἔγραψε τότε εἰς τὴν «Παρισινὴν Ἐπιθεώρησιν» τὸ περίφημον ποίημά του «Λαφυραγωγία» (Curée), ἀνηλεὲς μαστίγωμα τῶν μνηστήρων τῆς νέας ἐξουσίας, προκαλέσαν βαθεῖαν ἐντύπωσιν καὶ καταστῆσαν αὐτὸν διάσημον. Ἄλλα ποιήματά του, ὄχι ὀλιγώτερον ἀξιοσημείωτα διὰ τὴν τραχύτητα τῆς γλώσσης καὶ τὴν ὠμότητα τῶν εἰκόνων, ὑπῆρξαν: ἡ «Δημοτικότης», τὸ «Εἴδωλον», «Παρίσι», ὁ «Δάντης», ἡ «Βαρσοβία», συνεκδοθέντα ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἴαμβοι», μολονότι διαφόρου μεταξύ των ρυθμοῦ. Ἐδημοσίευσε βραδύτερον συλλογὴν ποιημάτων, ἄλλων μελαγχολικῆς καὶ ἄλλων σατιρικῆς διαθέσεως, ἐμπνευσθέντων ἐκ δύο ταξιδίων του εἰς Ἰταλίαν καὶ Ἀγγλίαν· σημαντικώτερα ἐκ τούτων, θεωρούμενα ὑπό τινων ὡς τ' ἀριστουργήματά του, εἶναι ὁ «Κλαυθμὸς» καὶ ὁ «Λάζαρος». Ἐκ τῶν εἰς πεζὰ ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως δύο συλλογαὶ διηγημάτων ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Τρεῖς ἔρωτες» (1867) καὶ «Βραδινὰ παραμύθια» (1879), «Ταξιδιωτικὲς ἱστορίες» (1880), «Περίπατος 'ς τὸ Λοῦβρο» (1884) κ. λ. π. Ἐν ἀρχῇ ὁ Μπαρμπιὲ δὲν εἶχεν ἀσχοληθῆ μὲ τὸ θέατρον παρ' ἅπαξ μόνον, γράψας ἐν συνεργασίᾳ μὲ τὸν Λέοντα Βαϊγὺ τὸ λιμπρέτο τοῦ διπράκτου μελοδράματος «Benvenuto Cellini» τοῦ Μπερλιόζ, ἀναβιβασθέντος τῷ 1838 ἀπὸ σκηνῆς τῆς Ὄπερας τῶν Παρισίων. Τῷ 1848 ὅμως μετέφρασε τὸν «Ἰούλιον Καίσαρα» τοῦ Σαίξπηρ καὶ βραδύτερον «Τὸ τραγούδι τοῦ γέρο ναύτη» τοῦ Κόλεριτζ (1876). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης μετάφρασιν τοῦ «Δεκαημέρου» τοῦ Βοκκακίου (1845). Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν τὰ «Τελευταῖά του τραγούδια» (1884).

Ὁ Μπαρμπιὲ εἶχεν ἀπὸ τοῦ 1869 ἐκλεγῆ μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. —Ω.

— **Μπαρμπιὲ** (Barbier), ***Ἰούλιος-Κλαύδιος***. Γάλλος δικαστικὸς καὶ συγγραφεὺς (1815—1901). Εἰσελθὼν ἀπὸ τοῦ 1835 εἰς τὸ δικαστικὸν στάδιον, ἔφθασε τῷ 1884 εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ προέδρου τοῦ Ἀρείου Πάγου. Σημαντικὸν θεωρεῖται τὸ δικανικὸν ἔργον του «Οἱ νόμοι τοῦ ὁρκωτοῦ δικαστηρίου, ἁρμοδιότης καὶ ὀργάνωσις αὐτοῦ» (1873). Ἀσχολούμενος ταυτοχρόνως μὲ τὴν φιλολογίαν, ἐδημοσίευσεν ἔμμετρον μετάφρασιν τῆς «Ἰλιάδος» τοῦ Ὁμήρου (1880), μελέτην ὑπὸ τὸν τίτλον «Αἱ δύο ποιητικαὶ τέχναι» (1874), καθὼς καὶ διαφόρους μονογραφίας ἱστορικοῦ περιεχομένου, ἐν αἷς: «Ἡ δίκη τοῦ Σωκράτους», «Δύο Ρωμαῖαι δέσποιναι τοῦ Γ' αἰῶνος», «Βαρνάβας καὶ Ἀσπασία», «Ἡ διαθήκη τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'» κλπ. —Ω.

— **Μπαρμπιὲ ντὲ *Μεϋνὰρ*** (Barbier de Meynard), ***Καζιμὶρ-Ἀδριανός***. Γάλλος ἀνατολιστὴς (1827—1908). Ἠκολούθησεν ἐν ἀρχῇ τὸ διπλωματικὸν στάδιον καὶ ὑπηρέτησεν ὡς ἀκόλουθος τῆς ἐν Περσίᾳ γαλλικῆς πρεσβείας. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους διωρίσθη καθηγητὴς τῆς τουρκικῆς εἰς τὴν σχολὴν τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν καὶ βραδύτερον καθηγητὴς τῆς περσικῆς καὶ εἶτα τῆς ἀραβικῆς εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Ἐδημοσίευσε «Λεξικὸν τῆς γεωγραφίας, ἱστορίας καὶ φιλολογίας τῆς Περσίας καὶ τῶν ὁμόρων αὐτῇ χωρῶν» (1861) ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἔργων τοῦ διασήμου Ἄραβος γεωγράφου Γιακοὺτ καὶ ἄλλων ἀνεκδότων ἀραβικῶν καὶ περσικῶν πηγῶν. Ἐπίσης: «Ἀπάνθισμα τοῦ περσικοῦ χρονικοῦ τοῦ Χερὰτ» (1861), «Συμπλήρωμα τῶν ὑπαρχόντων μέχρι σήμερον τουρκικῶν λεξικῶν» (1881), «Τρεῖς περσικαὶ κωμῳδίαι» (κείμενον καὶ μετάφρασις 1886) κλπ. Μετέφρασεν ἐξ ἄλλου καὶ ἐδημοσίευσε τοὺς «Χρυσοῦς λειμῶνας» τοῦ Μασσουντί. —Ω.

— **Μπαρμπιὲ ντὲ *Μοντὼ*** (Barbier de Montault), ***Ξαβέριος***. Γάλλος διαπρεπὴς κληρικὸς καὶ ἀρχαιολόγος (1830—1901). Ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ρώμῃ, ὅπου κατέλαβεν ἀνωτέρους βαθμοὺς ἐν τῇ ἱεραρχίᾳ τοῦ Βατικανοῦ. Ἀσχοληθεὶς ἐντατικῶς μὲ τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν καὶ ἀρχαιολογίαν, ἔγραψε μέγα πλῆθος μελετῶν καὶ συγγραμμάτων, τῶν ὁποίων κατάλογος ἐξεδόθη τῷ 1879, περιλαμβάνων τριακοσίας περίπου πραγματείας του. Κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι, ἐκ μὲν τῶν ἀναγομένων εἰς τὴν θρησκευτικὴν ἀρχαιολογίαν: «Ὁ καθεδρικὸς ναὸς τοῦ Anagui» (Παρίσιοι 1858), «Τὰ ὑπόγεια καὶ ὁ θησαυρὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου τῆς Ρώμης» (Ρώμη 1866), «Ἡ βιβλιοθήκη τοῦ Βατικανοῦ» (Ρώμη 1867), «Οἱ ναοὶ τῆς Ρώμης ἀπὸ ἀρχαιολογικῆς ἀπόψεως» (Ἀρρὰς 1877), «Τὰ ἀριστουργήματα τῆς θρησκευτικῆς γλυπτικῆς ἐν Ρώμῃ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ἀναγεννήσεως» (Ρώμη 1878, μετὰ 141 χαλκογραφιῶν), «Τὰ μωσαϊκὰ τοῦ Μιλάνου» (Ἀρρὰς 1881), «Ἀπογραφὴ τῆς βασιλικῆς τῆς Μόνζας» (Τοὺρ 1885) κτλ.· ἐκ δὲ τῶν ἀναγομένων εἰς τὴν λειτουργικὴν καὶ τὸ κανονικὸν δίκαιον: «Ἡ στολὴ καὶ τὰ διάσημα τοῦ πάπα» (Ἀμιέννη 1874), «Συλλογὴ τῶν αὐθεντικῶν κανόνων τῶν ἐν Ρώμῃ ἱερῶν συνόδων» (Παρίσιοι 1878, εἰς 10 τόμους), «Πρακτικὸν ἐγχειρίδιον τῆς κατασκευῆς, ἐπιπλώσεως καὶ διακοσμήσεως τῶν ναῶν συμφώνως πρὸς τοὺς κανόνας τῆς Ἐκκλησίας καὶ τὰς ρωμαϊκὰς παραδόσεις» (Παρίσιοι 1878, 2 τόμ.) κτλ. —Ω.

— **Μπαρμπιὲ** (Barbier), ***Παῦλος-Ἰούλιος***. Γάλλος θεατρικὸς συγγραφεὺς (1822—1901). Ἔγραψεν ἐν ἀρχῇ ἔμμετρα ἔργα: «Ἕνας ποιητὴς» (δρᾶμα εἰς 5 πράξεις, 1848), «Ἡ σκιὰ τοῦ Μολιέρου» (μονόπρακτον, 1849), «Ἀνδρέας Σενιὲ» (εἰς τρεῖς πράξεις, 1849), βραδύτερον δὲ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ἀδριανοῦ Ντεκουρσὲλ («Ἡ ἐργάτις Τζέννυ», δρᾶμα εἰς 5 πράξεις, 1850) μετὰ τοῦ Θ. Μπαρριὲρ («Λαυρέντιος», 1850), καὶ τοῦ Ἐδ. Φουσσιὲ («Ὁ οἰκοδεσπότης», κωμῳδία πεντάπρακτος, 1866). Ἀλλὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς παραγωγῆς του ἀπέδωκεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μιχ. Καρρέ, μετὰ τοῦ ὁποίου ἔγραψε πολυάριθμα δράματα καὶ λιμπρέττα μελοδραμάτων καὶ ὀπερεττῶν· μεταξὺ τῶν πρώτων ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως τά: «Οἰκογενειακὴ τραγῳδία» (1849), «Τὰ ἀνδρείκελα τοῦ γιατροῦ» (1852), «Μάξουελ» (1867) κλπ. Ἐκ δὲ τῶν λιμπρέττων: «Γαλάτεια» (1852), «Οἱ γάμοι τῆς Ζανέττας» (1854), «Παῦλος καὶ Βιργινία» διὰ τὸν συνθέτην Βίκτ. Μασσὲ (1876), «Ἡ βασίλισσα τοῦ Σαβὰ» (1862), «Πολύευκτος» διὰ τὸν Γκουνώ. «Τὸ ἀσημένιο κουδούνι» διὰ τὸν Σαὶν-Σαὲν κλπ. Ἔγραψεν ἐπίσης ὁ Μπαρμπιὲ ἓν λυρικὸν δρᾶμα «Ἰωάννα ντ' Ἄρκ» (1873), τοῦ ὁποίου τὰ χορικὰ συνέθεσεν ὁ Γκουνώ, καὶ ἕνα τόμον ποιημάτων «Τραγούδια τοῦ πολέμου» (1871). Γ. Ζ.

— **Μπαρμπιὲ ντὺ *Μποκὰζ*** (Barbié du Bocage), ***Ἰωάννης-Διονύσιος***. Γάλλος γεωγράφος (1760—1825). Σπουδάσας εἰς τὸ Κολλέγιον Μαζαρίνου, ἐπέδειξεν ἐκ νεαρᾶς ἡλικίας ἰδιάζουσαν κλίσιν πρὸς τὰς γεωγραφικὰς σπουδὰς καὶ ἰδιαιτέρως τὰς ἀφορώσας τὴν ἀρχαίαν γεωγραφίαν. Ἦτο δεκαεπταετὴς μόλις, ὅταν ὁ Σουαζὲλ-Γκουφφιὲ (Choiseul-Gouffier), ἐπανελθὼν ἐκ τῆς ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα περιοδείας του, τὸν ἐπεφόρτισε τὴν ταξινόμησιν τοῦ ἐκ ταύτης ἀποκομισθέντος ὑλικοῦ. Ὁ Μπαρμπιὲ ντὺ Μποκὰζ προσέθηκεν εἰς αὐτὸ πολλοὺς ἀξιολόγους χάρτας καὶ τὸ ἔργον ἐτιτλοφορήθη «Γραφικὸν ταξίδιον εἰς τὴν Ἑλλάδα ὑπὸ τοῦ Choiseul-Gouffier». Ἡ πρώτη αὕτη ἐργασία του, ἐκ τῆς ὁποίας ἐγένετο διάσημος, τὸν ἀπησχόλησε μέχρι τῶν γηρατείων του, περατωθεῖσα μόλις τῷ 1824. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ ἀββᾶς *Μπαρτελεμὺ* (βλ. λ.), ὅστις τὸν εἶχε διορίσει ἀπὸ τοῦ 1785 εἰς τὸ βασιλικὸν μουσεῖον τῶν μεταλλίων, τοῦ ἐνεπιστεύθη τὴν ἐκπόνησιν τοῦ ἄτλαντος, τοῦ συνοδεύοντος τὸ γνωστότατον ἔργον του «Ταξίδιον τοῦ νέου Ἀναχάρσιδος», ἐκδοθὲν τῷ 1878. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ὁ Μπαρμπιὲ ντὺ Μποκὰζ συνελήφθη ὡς ὕποπτος καὶ ἀπώλεσε τὴν θέσιν του, ἐξηκολούθησεν ὅμως ἀσχολούμενος εἰς τὰς γεωγραφικάς του μελέτας καὶ ἐξέδωκε τῷ 1807 ἕνα χάρτην τοῦ Μορέως (Πελοποννήσου), ὅστις ἐχρησίμευσε βραδύτερον ὡς ὁδηγὸς εἰς τὰ στρατεύματα τοῦ Μαιζῶνος κατὰ τὴν εἰς Ἑλλάδα κάθοδόν των. Ἐξεπόνησεν ἐπίσης χάρτας, ὑπομνήματα καὶ σχεδιάσματα ἐπὶ τῶν ἔργων τοῦ Θουκυδίδου, τοῦ Ἀρριανοῦ καὶ τοῦ Ξενοφῶντος, ἀποτελοῦντα πολύτιμον συμβολὴν διὰ τὴν μελέτην τῆς ἀρχαίας γεωγραφίας.

Ὁ Μπαρμπιὲ ντὺ Μποκὰζ ἦτο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας (ἀπὸ τοῦ 1806) καὶ πολλῶν ἐπιστημονικῶν ὀργανώσεων, ὑπῆρξε δὲ εἷς τῶν ἱδρυσάντων τῷ 1821 τὴν γεωγραφικὴν ἑταιρείαν, ἧς ἐξελέγη πρόεδρος. Τῷ 1806 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γεωγραφίας ἐν Σορβόνῃ. Παρεκτὸς τῶν προαναφερθέντων ἔργων του ἐξέδωκε: «Ταξίδιον τοῦ Τσάντλερ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ» (Παρίσιοι 1806, εἰς 3 τόμ.), «Σημείωμα ἐπὶ ἑνὸς χειρογράφου τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ταλλεϋράνδου» (1807), ἐν τῷ ὁποίῳ προσπαθεῖ ν' ἀποδείξῃ ὅτι ἡ Νέα Ζηλανδία εἶχεν ἤδη ἀνακαλυφθῆ ὑπὸ τῶν Πορτογάλων ἀπὸ τοῦ 1525 κλπ.

Ὁ υἱὸς αὐτοῦ ***Ἀλβέρτος-Φρειδερῖκος*** (1798—1834) διεδέχθη τὸν πατέρα του εἰς τὴν ἕδραν τῆς γεωγραφίας ἐν Σορβόνῃ καὶ ἔγραψε «Γεωγραφικὸν λεξικὸν τῆς Ἁγίας Γραφῆς». Τούτου δὲ ὁ υἱός του ***Λουδοβῖκος-Βίκτωρ-Ἀμεδαῖος***, ἱστορικὸς καὶ γεωγράφος ἐπίσης (1832—1890), ἐδημοσίευσεν: «Ἱστορικὴν μελέτην περὶ τοῦ ἐμπορίου τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν», «Μαρόκκον», «Μαδαγασκάρη» κλπ. —Ω.

Digitized by Google

**Μπαρμπιέρε** (Barbiere), *Δομίνικος ντὲλ* —. Ἰταλὸς γλύπτης καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1501 καὶ ἀποθανὼν μετὰ τὸ 1565. Ἦτο γνωστὸς ὡς *Δομίνικος ὁ Φλωρεντῖνος,* ὄνομα μὲ τὸ ὁποῖον ὑπέγραφε τὰ ἔργα του. Κληθεὶς ἦλθεν εἰς Γαλλίαν περὶ τὸ 1530, ὅπου συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ρόσσο. Ἀπὸ τοῦ 1537 μέχρι τοῦ 1540 ἐχρησιμοποιήθη εἰς τὴν διακόσμησιν τῶν ἀνακτόρου τοῦ Φονταινεμπλώ, εἶτα δέ, ἀπὸ τοῦ 1541, διέτριψεν ἐπὶ μακρὸν εἰς Τρουά, εἰς τὴν γλυπτικὴν σχολὴν τῆς Καμπανίας, ἥτις εἶχεν ἤδη σοβαρῶς ἐπηρεασθῆ ὑπὸ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ τῶν ἄλλων μεγάλων καλλιτεχνῶν τῆς ἰταλικῆς ἀναγεννήσεως. Ἐκεῖ συνεδέθη μετὰ τοῦ διασήμου Πριμάτιτσε, μεθ' οὗ συνειργάσθη εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦ Πολιζὺ (1544) καὶ εἰς πλεῖστα ἄλλα ἔργα, προοριζόμενα πρὸς διακόσμησιν ναῶν τῆς Καμπανίας. Ἀπὸ τοῦ 1549 μέχρι τοῦ 1555 εἰργάσθη, μετὰ τοῦ γαμβροῦ του ἀρχιοικοδόμου Γαβριὴλ Φαβερώ, τὰ περίφημα γλυπτὰ τοῦ βήματος τοῦ Ἁγίου Στεφάνου, ὧν τέσσαρα σῴζονται μέχρι σήμερον. Τὸ κάλλιστον ἔργον του εἶναι ὁ τάφος τοῦ Κλαυδίου Γκίζη καὶ τῆς συζύγου του ἐν Σαὶν Λωρὰν ντὲ Ζουανβίλ, τὸν ὁποῖον εἰργάσθη μετὰ τὸ 1550 ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ἰωάννου Πικάρ, τοῦ ἐπιλεγομένου Λὲ Ρού. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν κατεστράφη τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν καλλιτεχνημάτων τούτων, διεσώθησαν δὲ μόνον δύο καρυάτιδες, ἡ «Δικαιωσύνη» καὶ ἡ «Ἐγκράτεια», φυλασσόμεναι εἰς τὸ δημαρχεῖον τοῦ Ζουανβίλ, δύο ἀνάγλυφα εἰς τὸ μουσεῖον Σωμὸν καὶ ἕτερα δύο εἰς τὸ Λοῦβρον, παριστῶντα τὰς «Μάχας καὶ τὸν θρίαμβον τοῦ Κλαυδίου Γκίζη». Τῷ 1560, ἐπανελθὼν εἰς Φονταινεμπλώ, εἰργάσθη 9 ἀγάλματα ἐκ ξύλου διὰ τὸν κῆπον τῆς βασιλίσσης, τῷ δὲ 1561 συνειργάσθη μετ' ἄλλων καλλιτεχνῶν διὰ τὴν κατασκευὴν τοῦ μνημείου τοῦ Ἐρρίκου Β'. Ὁ Μπαρμπιέρε διεκρίθη ἐπίσης ἐπιτυχῶς ὡς ζωγράφος καὶ χαράκτης, ἀντέγραψε δὲ πλείστας γραβούρας ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, Γιτσιανοῦ, Μπόσσο, Πριμάτιτσε κ.ἄ. Κ.Δ.

**Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Ἰωάννης-Μαρία.*** Ἰταλὸς φιλόλογος (1519—1574). Ἦτο ἐκ τῶν σοφωτέρων ἀνδρῶν τῆς ἐποχῆς του καὶ διετέλεσε παιδαγωγὸς τοῦ κόμητος Λουδοβίκου ντελλὰ Μιράντολα, τὸν ὁποῖον ἠκολούθησεν εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Γαλλίας, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ 8 ἔτη. Κατὰ τὸ χρονικὸν τοῦτο διάστημα ἐμελέτησε τὴν προβηγκιανὴν γλῶσσαν καὶ τὰ ἔργα τῶν τρουβαδούρων. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του Μοδένην ἔγραψε τὰ «Χρονικὰ τῆς Μοδένης» καὶ κριτικὴν τοῦ ποιήματος τοῦ Νικολάου Καζόλα «Ὁ πόλεμος τοῦ Ἀττίλα» (1568). Τὸ κυριώτερον ἐκ τῶν πολυπληθῶν αὐτοῦ ἔργων εἶναι: «Ἡ τέχνη τῆς στιχουργίας».

— **Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς κληρικός, ποιητής, φιλόσοφος καὶ ὀνομαστὸς ῥήτωρ (1774—1852). Ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς μοναχὸς τῆς μονῆς τοῦ Μόντε Κασσῖνο καὶ κατόπιν ἐγένετο καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παδούης, ὅθεν ἀπεσύρθη τῷ 1815 διὰ νὰ ἐπανέλθῃ τῷ 1848. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἔγραψε τὰ κυριώτερα ἔργα του: «Ἐκκλησιαστικοὶ λόγοι», «Αἱ ἐποχαὶ» ἐκ τῶν καλυτέρων ποιητικῶν του ἔργων, «Μπασσάνο», «Ἐπιστολαὶ» κτλ.

— **Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Κάρολος-Ἐμμανουήλ.*** Ἰταλὸς συνθέτης (1822—1867). Ἐκ τῶν μελοδραμάτων του ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν ἐσημείωσεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν περισσοτέρων γερμανικῶν θεάτρων τὸ «Perdita» (1865).

— **Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Φραγκῖσκος-Ἀσένχο.*** Ἱσπανὸς συνθέτης (1823—1894). Ἐπεβλήθη ὡς συνθέτης ζαρζουελῶν, εἰς ὃ εἶδος ἐδημιούργησεν ἴδιον ἐθνικὸν λαϊκὸν τύπον, γενόμενος τάχιστα δημοφιλέστατος. Κατόπιν ἐξηκολούθησεν ἐργαζόμενος εἰς τὸ ἐλαφρὸν θέατρον, γράψας ἐν ὅλῳ 77 σκηνικὰ ἔργα. Ἐξέδωκεν ἐπίσης τὰ συγγράμματα: «Sobre el canto de Utreja», «La musica religiosa» κ. ἄ. Ὁ Μπαρμπιέρι ἐγένετο καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Γ. Σ.

— **Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Φραγκῖσκος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Γκουερτσῖνο*).

—**Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Φραγκῖσκος,*** ὁ ἐπικαλούμενος «il Segnano». Ἰταλὸς ζωγράφος (1623—1698). Ἠκολούθησε τὴν βενετικὴν σχολὴν τῆς ἐποχῆς του καὶ διεκρίθη ὡς ζωγράφος τοπογραφιῶν καὶ ἱστορικῶν σκηνῶν.

—**Μπαρμπιέρι** (Barbieri), ***Φραγκῖσκος.*** Ἱσπανὸς μουσικοσυνθέτης (1824—1894). Ἔγραψε πλεῖστα μουσικὰ ἔργα ἀνίσου ἀξίας, τὰ ὁποῖα χαρακτηρίζει τάσις πρὸς ἐκλαΐκευσιν τῆς μουσικῆς. Ἐγένετο ἰδίως γνωστὸς τῷ 1850 διὰ τοῦ ἀναβιβασθέντος ἐν Μαδρίτῃ κωμειδυλλίου του «Gloria y peluca», τὸ ὁποῖον ἠκολούθησε τὸ «Fugar con fuego» καὶ 77 ἄλλα, ὧν τινα συνέθεσεν ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης τὸ ἔργον «Cancionero musicae de los siglos XV καὶ XVI» καὶ μελέτην ἐπὶ τῆς θρησκευτικῆς μουσικῆς. Τῷ 1868 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἁρμονίας καὶ τῆς ἱστορίας τῆς μουσικῆς εἰς τὸ Ὠδεῖον τῆς Μαδρίτης καὶ τῷ 1873 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Ὑπῆρξεν ἐπίσης ἱκανὸς διευθυντὴς ὀρχήστρας καὶ χορῳδιῶν, ἱδρυτὴς ἑταιρείας συναυλιῶν κλασσικῆς μουσικῆς καὶ συνειργάσθη εἰς διαφόρους ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ τῆς Ἱσπανίας ἐπὶ μουσικῶν θεμάτων. Μ. Δ. Β.

—**Μπαρμπιέρι-*Νίνι*** (Barbieri-Nini), ***Ἄννα*** ἢ ***Μαριάννα.*** Ἰταλὶς ἀοιδὸς (1820—1887). Ἦτο προικισμένη μὲ θαυμασίαν φωνὴν ὑψιφώνου καὶ μὲ ἐξαιρετικὴν δραματικὴν τέχνην, καίτοι δὲ μειονεκτοῦσα ἀπὸ ἀπόψεως φυσικῆς διαπλάσεως, κατέστη ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων δραματικῶν ἀοιδῶν τῆς ἐποχῆς της. Ἤρχισε τὸ στάδιόν της εἰς τὸ θέατρον Πέργκολα τῆς Φλωρεντίας καὶ κατόπιν διέτρεξε θριαμβευτικῶς τὰς κυριωτέρας πόλεις τῆς Εὐρώπης. Διεκρίθη ἰδίως εἰς τὴν «Λουκρητίαν Βοργίαν», τοὺς «Δύο Φόσκαρι» καὶ τὸν «Μάκβεθ», ἅτινα ἔγραψεν ἀποκλειστικῶς δι' αὐτὴν ὁ Βέρδι. Μ.Δ.Β.

**Μπαρμπιζὸν** (Barbizon) *[Γεωγρ.]*. Γραφικώτατον χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σηκουάνα-Μάρνη, παρὰ τὸ δυτικὸν ἄκρον τοῦ δάσους τοῦ Φονταινεμπλώ. Κατέστη ὀνομαστὸν ὡς τόπος διαμονῆς διασήμων τοπιογράφων, ὡς τοῦ Θ. Ρουσώ, Κορό, Τρουαγιόν, κ, ἄ. Κάτ. 480. Χ. Δ.

**Μπαρμπίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Ἀμπελάκι* (βλ. λ.).

**Μπαρμπιτσιώτης,** ***Ζαχαριάς*** βλ. λ. *Ζαχαριᾶς* Μπαρμπιτσιώτης.

—**Μπαρμπιτσιώτης,** ***Πέτρος.*** Ἀγωνιστὴς ἐκ Λακεδαίμονος (βλ. λ. *Βαρβιτσιώτης* Πέτρος).

**Μπάρμπο** (Barbo). Μία τῶν ἀρχαιοτέρων βενετικῶν οἰκογενειῶν. Ἐξ αὐτῆς κατήγετο ὁ πάπας *Παῦλος Β'* (1416—1471), ὅστις εἰργάσθη ἵνα ἐγείρῃ σταυροφορίαν κατὰ τῶν Τούρκων, ἀλλὰ δὲν τὸ κατώρθωσεν. Ἄλλα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης σχετιζόμενα πρὸς τὴν ἑλληνικὴν ἱστορίαν εἶναι: —1) ***Πανταλέων,*** ὅστις βάϊλος τυγχάνων τῶν Βενετῶν ἐν Βυζαντίῳ δὲν ἐπέτρεψε τὴν παραχώρησιν τῆς Τενέδου εἰς τοὺς δυνάστας τῆς Σαβοΐας, ἀλλ' ἐν τέλει παρεδόθη ἡ νῆσος, τῶν κατοίκων μετοικισθέντων εἰς τὰς βενετοκρατουμένας Κρήτην καὶ Κάρυστον καὶ κρημνισθέντων καὶ τῶν φρουρίων κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα. —2) ***Πέτρος*** (il Zanco), βάϊλος ἐν Εὐβοίᾳ, διαιρέσας τὴν ὅλην νῆσον εἰς 3 ἀρχοντίας καὶ ἑκάστην εἰς 2 βαρωνίας. Τ. Ε. Ε.

**Μπαρμπὸ** (Barbot), ***Μαρία-Στέφανος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1770—1839). Καταταχθεὶς εἰς τὸν στρατὸν ἀπὸ τοῦ 1792, διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Τουλῶνος, εἰς τὴν Βανδέαν καὶ τὰς Ἀντίλλας. Εἶναι κυρίως γνωστὸς διὰ τὴν φιλανθρωπίαν, τὴν ὁποίαν ἐπέδειξε μετὰ τὴν μάχην τοῦ Ἐϋλάου (1807), ὁπότε, διαταχθεὶς ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος νὰ καύσῃ τὴν πόλιν Χέρσφελντ, νὰ σφάξῃ 30 ἐκ τῶν κατοίκων της καὶ νὰ ἀποστείλῃ 100 ἄλλους ὡς ὁμήρους εἰς Γαλλίαν, περιωρίσθη εἰς τὴν πυρπόλησιν ὀλίγων μόνον οἰκιῶν. Χ. Δ.

**Μπάρμπογλης,** καὶ ***Μπάρμπογλους.*** Ἑλληνικὴ οἰκογένεια διαπρέψασα ἐπὶ τουρκοκρατίας ἐν Πελοποννήσῳ (βλ. λ. *Βάρβογλης*).

**Μπαρμπόζα** (Barbosa), ***Ντουάρτε.*** Πορτογάλος θαλασσοπόρος, γεννηθεὶς ἐν Λισσαβῶνι κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, σύντροφος τοῦ Μαγελάνου, μετὰ τοῦ ὁποίου ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν ἀγρίων ἰθαγενῶν τῆς Σεμπού τῶν Φιλιππίνων (1521). Ἀφῆκεν ἐνδιαφέρουσαν ἐξιστόρησιν τῶν ταξιδίων τοῦ μεγάλου ἐξερευνητοῦ, δημοσιευθεῖσα ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἔκθεσις τῶν ὅσων εἶδα καὶ ἔζησα εἰς τὴν Ἀνατολὴν» ( Livro emque dà relação do que viu e ouviou no Oriente) ἐν τῇ «Συλλογῇ στοιχείων διὰ τὴν ἱστορίαν καὶ γεωγραφίαν τῶν ὑπερωκεανίων ἐθνῶν» (Λισσαβὼν (1813).

—**Μπαρμπόζα-*Μασσάντο*** (Barbosa-Machado).—1) ***Διέγος.*** Διάσημος Πορτογάλος βιογράφος, βιβλιογράφος καὶ ἱστορικὸς (1682—1772). Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν αὐτοῦ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κοΐμβρας, περιεβλήθη τὸ ἱερατικὸν σχῆμα καὶ ἐγένετο ἀββᾶς τοῦ Santo Adrias ἐν Σέβερ, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἔγραψεν ἐν πρώτοις μέγα ἱστορικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Memorias para a historia de Portugal» (Λισσαβὼν 1736—1751, εἰς 4 τόμους), εἶτα δ' ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν τοῦ γιγαντιαίου συγγράμματός του «Bibliotheca lusitana, historica, critica e chronologica», ὅπερ ἀποτελεῖ λεπτομερῆ βιο - βιβλιογραφίαν ἁπάντων τῶν μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης Πορτογάλων συγγραφέων. Τὸ ἔργον του τοῦτο ἐξεδόθη ἐν Λισσαβῶνι (1741—1759) εἰς τέσσαρας τόμους, ἐξ ὧν οἱ τρεῖς πρῶτοι ἐγένοντο σπανιώτατοι, διότι πάντα σχεδὸν τὰ ἀντίτυπα αὐτῶν ἠφανίσθησαν κατὰ τὸν καταστρέψαντα τὴν πόλιν ταύτην μέγαν σεισμόν. Βραδύτερον ὁ Bento José Farinha ἐξέδωκε κεχωρισμένως τὸ βιβλιογραφικὸν μόνον μέρος τοῦ ἔργου τοῦ Μπαρμπόζα ὑπὸ τὸν τίτλον «Summario da Bibliotheca lusitana» (1786—1787 εἰς 3 τόμους).

— 2) ***Ἰγνάτιος.*** Πορτογάλος ἱστορικός, ἀδ[...] τοῦ προηγουμένου καὶ ἱερεὺς ἐπίσης (1686—17[...]). Ἀφῆκε πολλὰ ἱστορικὰ ἔργα, ὧν κυριώτερ[...] ὑπὸ τὸν τίτλον: «Πολιτικὰ καὶ ἱστορικὰ γεγον[...] ἀρχαίας καὶ νέας Λουζιτανίας» (Λισσαβών, 17[...]).

— **Μπαρμπόζα - *Μπασελὰρ*** (Barbosa - Ba[...]) ***Ἀντώνιος.*** Πορτογάλος ποιητὴς καὶ ἱστο[...] (1610—1663). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ [...] ἐν Κοΐμβρᾳ καὶ διωρίσθη εἰς διαφόρους [...] ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Δ', χωρὶς ὅμως [...] τούτου νὰ βελτιωθῇ ἡ δυσχερὴς οἰκονομικὴ [...]στασις, ὑπὸ τὴν ὁποίαν διῆλθεν ὅλον του τὸν [...]. Τὰ ποιήματα αὐτοῦ ἐσημείωσαν ἐξαιρετικὴν [...]τυχίαν, δι' ὃ καὶ ἐπωνομάσθη «νέος Βιργίλιος». [...]μοσιεύθησαν δὲ τὰ πλεῖστα ἐν τῇ συλλογῇ [...] Περέϊρα ντὰ Σίλβα «A Fenis renascida» (Λισσα[...]βὼν 1716—1746). Ἐκ τῶν πολιτικοϊστορικῶν [...] ἔργων ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως αἱ ἐκθέσεις [...] περὶ τῆς νικηφόρου ἐκστρατείας τοῦ Ἀλφ[...] ΣΤ' κατὰ τοῦ βασιλέως τῆς Καστίλλης («Rela[...] da vittoria», 1650) καὶ περὶ τῆς ἐναντίον [...] Ὁλλανδῶν ἐκστρατείας ἐν Βραζιλίᾳ («Relaç[...] diario do sitio κλπ.», 1654).

—**Μπαρμπόζα-*ντὺ-Μποκὰζ*** (Barbosa-du-Boca[...]) ***Μανουήλ.*** Διάσημος Πορτογάλος ποιητὴς (17[...]—1805). Προικισμένος μὲ καταπληκτικὴν εὐχέ[...] στιχουργίας, κατέλαβε νεώτατος ἀκόμη σημαν[...]σαν θέσιν μεταξὺ τῶν ὁμοεθνῶν του ποιητῶν [...] δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Βραδύτε[...] περιῆλθεν εἰς διάστασιν γνωμῶν πρὸς τοὺς ἀ[...]τίσαντας τῷ 1790 ἐν Λισσαβῶνι τὸν φιλολο[...] σύνδεσμον «Νέα Ἀρκαδία», τοῦ ὁποίου σκοπὸς [...] ἡ προαγωγὴ τῆς πορτογαλικῆς ποιήσεως, συ[...]τρώσας δὲ τότε περὶ ἑαυτὸν τοὺς συμφωνοῦ[...] πρὸς τὰς ἰδικάς του ἀντιλήψεις, συνεκρότησε [...] ὁμάδα τῶν «Ἐλμανιστῶν», ὀνομασθεῖσαν οὕτω [...] τοῦ φιλολογικοῦ ψευδωνύμου τοῦ ἀρχηγοῦ [...]. Αἱ συνθέσεις του ἐκτείνονται εἰς ὅλα τὰ ποιη[...] εἴδη, διέπρεψεν ὅμως ἰδίως εἰς τὰ σοννέτα. [...] δὲ Πορτογάλος ποιητὴς μετὰ τὸν Καμόενς [...]κτησεν ὅσην αὐτὸς δημοτικότητα. Πλήρης [...]σις τῶν ἔργων του («Rimas») ἐγένετο μετὰ τὸν [...]νατόν του ἐν Λισσαβῶνι (1806—1814) εἰς 5 τόμους.

**Μπάρμπολντ** (Barbauld), ***Ἄννα Λαιτητία.*** [...]γλὶς λογία (βλ. λ. *Μπάρμπαλντ*).

**Μπαρμποτὰν** (Barbotan) *[Γεωγρ.]*. Λουτρό[...]λις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ζέρς, κειμένη εἰς ἀ[...]στασιν 35 χλμ. ἀπὸ τοῦ Κοντόμ. Ἔχει θειο[...] ὕδατα καὶ ἰλυόλουτρα, ἐνδεικνυόμενα ἐναντίον [...] κινητικῆς ἀταξίας, τῶν ῥευματισμῶν κλπ. Κάτ. [...]

**Μπαρμποὺ** (Barboux), ***Ἐρρῖκος.*** Γάλλος νο[...]μαθὴς (1834—1910). Ἐσπούδασε νομικὴν εἰς Π[...]ρισίους, ὅπου ἤσκησεν ἐπὶ μακρὸν τὸ δικηγο[...] ἐπάγγελμα, γενόμενος συνήγορος εἰς πάσας σχ[...] τὰς μεγάλας δίκας τὰς ἐκδικασθείσας ἐν Γα[...] κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, ἐν [...] καὶ εἰς τὴν ὑπόθεσιν τῆς χρεοκοπίας τῆς ἑ[...]ρείας τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ Παναμᾶ. Ὡς πρόεδρος [...] δικηγορικοῦ συλλόγου τῶν Παρισίων (1880) [...] μετέσχεν ἐνεργῶς εἰς τὴν ἵδρυσιν τῆς ἑται[...] τῆς συγκριτικῆς νομοθεσίας. Αἱ ἀγορεύσεις το[...] ὁποῖαι, ἐκτὸς τῆς ἐπιστημονικῆς ἀξίας των, δια[...]νονται καὶ διὰ τὴν ῥητορικὴν ἀρτιότητα αὐ[...] ἐξεδόθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Discours et P[...] doyers» (1889—1894).

**μπαρμπούνι** (τὸ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία [...] ἰχθύος *τρίγλη*.

**Μπαρμπούντα** (Barbuda) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ [...]σος τῶν Βρεττανικῶν Δυτικῶν Ἰνδιῶν, ἀνήκο[...] εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν προσηνέμων (leeward Is[...]lands) μικρῶν Ἀντιλλῶν, ὑπαγομένη διοικητ[...] εἰς τὴν νῆσον Ἀντίγκουα, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχ[...] χλμ. πρὸς Β. (17°33' Β. πλάτ. καὶ 61°40' Δ. μ[...] Γκρήνουϊτς). Εἶναι χθαμαλή, ὑψουμένη μέχρις [...] μόλις μ. καὶ ἔχει πλουσίας φυτείας καπνοῦ, [...]κοῦ, ζαχαροκαλάμου, βάμβακος κλπ. Ἔκτασις [...] τετρ. χλμ., κάτ. (1921) 871 κατὰ μέγα μέρος [...]γροι. Κυριώτερος συνοικισμὸς τῆς νήσου εἶναι [...] λιμὴν *Κόρτινγκτων*, κείμενος ἐντὸς στενοῦ καὶ [...]θέος κόλπου εἰς τὸ βόρειον τμῆμα τῆς νήσου.

**Μπάρμπουρ** (Barbour), ***Ἰωάννης*** βλ. Μπάρ[...]

**μπαρμπούτι** (τὸ) *[Ἐγκυκλ.]*. Τυχηρὸν παίγ[νιον] παιζόμενον ὑπὸ δύο ἢ καὶ περισσοτέρων παικτ[ῶν] διὰ δύο κύβων. Ἀντικειμενικὸς σκοπὸς τοῦ πα[ι]γνιδίου εἶναι τὸ κέρδος τῶν ἑκάστοτε καταβαλλο[...]μένων χρημάτων, τῆς «πόστας», ἥτις δύναται καὶ [...] αὐξηθῇ διαρκοῦντος τοῦ παιγνιδίου. Πρὸς τοῦτο [...] παῖκται ῥίπτουσι κατ' ἀρχὰς ἕνα κύβον, ὅστις [...] φέρῃ τὸν μεγαλύτερον ἀριθμὸν παίζει πρῶτος [...] «ἔχει τὴν πρώτη ζαριά», ὁπότε ῥίπτει καὶ τοὺς δύο [...]βους, μέχρις ὅτου χάσῃ ἢ κερδίσῃ τὰ καταβληθέντα χρήματα. Ἐκ τῶν εἴκοσι συνδυασμῶν τῶν δύο [κύ]βων κερδίζουν τὰ δύο ἕξ («ἐξάρες»), τὰ δύο πέντε («πεντάρες»), τὰ δύο τρία («τριάρες»), καὶ ὁ συ[...]

Digitized by Google

...ασμὸς ἕξ-πέντε. Χάνουν οἱ συνδυασμοὶ 1×1 ...ίσσοι)», τὰ δύο δύο («δυάρια»), τὰ δύο τέσσαρα ...εσσάρες» ἢ «ντόρτια»), καὶ ὁ συνδυασμὸς 1×2. ... ὑπόλοιποι συνδυασμοὶ εἶναι ἀδιάφοροι. Ἡ ...στα συνήθως χωρίζεται εἰς δύο μέρη, ἴσα ἢ ...ισα, εἰς «μπρὸς» καὶ «πίσω». Εἰς περίπτωσιν ...θ' ἣν ὁ παίζων φέρῃ διπλῆν (ἄσσους, ἑξά...ς κτλ.), τότε χάνει ἢ κερδίζει ἀμφότερα τὰ ...ήματα, ἂν πάλιν φέρῃ ἄλλον συνδυασμὸν κερ...ζοντα ἢ χάνοντα, τότε κατὰ κανόνα χάνει ἢ ...ρδίζει τὰ «μπρὸς» μόνον. Μὲ τὸν τρόπον αὐ...ν τοῦ παιξίματος ὁ παίκτης ἐκτὸς τοῦ ὅτι εἰς ...ρίπτωσιν χασίματος χάνει μόνον τὸ ἓν τμῆμα ...ῶν χρημάτων του, ἔχει καὶ τὴν ὠφέλειαν ὅτι συν...ίζει παίζων, μέχρις ὅτου χάσῃ φέρων διπλῆν, ...ε λαμβάνει τοὺς κύβους ὁ κερδίσας, συνεχίζων ...ετ' ἄλλου παίκτου, μὴ τηρουμένης ἑτέρας σειρᾶς. ...ἂν κατὰ τὸ παιγνίδιον δὲν χωρισθῇ ἡ «πόστα» ...λλὰ παίζουν «ὅ,τι ἔρθῃ», τότε ὁ παίζων χάνει ἢ ...ερδίζει ὁλόκληρον τὸ καταβαλλόμενον ποσὸν καὶ ...αραδίδει τὰ «ζάρια» εἰς τὸν κερδίζοντα εὐθὺς ὡς ...ίσῃ μὲ οἱονδήποτε συνδυασμόν. Πολλοὶ παῖκται ...αίζοντες χωρίζουν τὴν πόσταν, κρατοῦντες «πίσω» ...ν μόνον λεπτόν, ποσὸν μὴ παρακρατούμενον, ἀλλ' ...πλῶς παρέχον τὸ δικαίωμα εἰς τὸν χάνοντα μὲ ...λλον συνδυασμὸν (ὄχι διπλῆν) παίκτην, νὰ συνε...ίσῃ παίζων, ρίπτων δηλαδὴ αὐτὸς τοὺς κύβους, ...ιότι δύναται νὰ μετέχῃ τοῦ παιγνιδίου πάντοτε ...ντικρύζων τὰ ὑπὸ τοῦ ρίπτοντος τοὺς κύβους κα...αβαλλόμενα χρήματα.

**Μπάρμπυ** (Barby) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερ...μανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σαξωνίας τῆς Πρωσσίας, ...ειμένη ἐπὶ τοῦ Ἔλβα μικρὸν μετὰ τὴν συμβο...ὴν τοῦ Σάαλ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινω...ίαν, μικρὸν ποτάμιον, λιμένα, ναυπηγεῖα καὶ ἐρ...οστάσια ζαχάρεως. Κάτ. (1919) 4.932. Χ. Δ.

**Μπαρμπὺς** (Barbusse), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος συγ...γραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Asnières (Seine) τῷ 1873. Μετὰ κλασσικὰς σπουδάς, εἰς τὰς ὁποίας ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ προλύτου τῆς φιλοσοφίας, ἤρ...χισε νὰ δημοσιογραφῇ ἀπὸ τοῦ 1889 ἐν τῷ «Siè...cle». Τῷ 1895 ἐξέδωκε τὸ πρῶτον του ἔργον, συλ...λογὴν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Pleureuses». Τῷ 1903 ἐδημοσίευσε τὸ μυθιστόρημα «Οἱ ἱκέται» (Les suppliants) καὶ διετέλεσε δραματικὸς κριτι...κὸς τῆς «Grande Revue». Τῷ 1905 ἵδρυσε μετὰ τοῦ P. Lafitte τὸ περιοδικὸν «Je sais tout», τοῦ ὁποίου ἐγένετο ἀρχισυντάκτης. Μεγάλην ἐπιτυχίαν ἔσχε τὸ κατὰ τὸ 1908 δημοσιευθὲν δραματικώτατον μυθιστόρημά του «Ἡ κόλασις» (L' Enfer), τὸ ὁποῖον μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν ἑλληνικὴν τῷ 1923. Τῷ 1914 ἐδημοσίευσε τὰ διηγήματα «Ἡμεῖς οἱ ἄλλοι...» (Nous autres). Ὅταν ἐξερράγη ὁ Παγκόσμιος πόλεμος, ὁ Μπαρμπὺς ἐστρατεύθη καὶ ἐπολέμησε γενναίως, τραυματισθεὶς ἐπανειλημμένως. Ἐκ τοῦ πολέμου ἐνεπνεύσθη καὶ τὸ περίφημον μυθιστόρημά του «Φωτιὰ» (Feu), τὸ ὁποῖον, ἐκδοθὲν κατὰ τὸ 1916, ἐβραβεύθη τὸ ἑπόμενον ἔτος ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας Γκονκοὺρ καὶ ἐπροκάλεσε πολλὰς διαμαρτυρίας τῶν ἐχόντων ἐκ τοῦ πολέμου συμφέροντα, λόγῳ τῆς ζωηρᾶς εἰκόνος τῶν ἀγριοτήτων τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, τὴν ὁποίαν ἔδιδε. Μετὰ τὴν σύναψιν τῆς εἰρήνης, ὁ Μπαρμπύς, διεθνιστὴς πλέον καὶ ἄκρως ἀντιμιλιταριστής, ἀφωσιώθη εἰς τὸν ἀντιπολεμικὸν ἀγῶνα, ἵδρυσε τὴν διεθνῆ ἕνωσιν παλαιῶν πολεμιστῶν, προσεχώρησεν εἰς τὸν κομμουνισμόν, καὶ ἀπὸ τοῦ 1925 ἐγένετο φιλολογικὸς διευθυντὴς καὶ κριτικὸς τῆς «Humanité», ἐπισήμου ὀργάνου τοῦ γαλλικοῦ κομμουνιστικοῦ κόμματος. Τὰ ἔργα του τῆς περιόδου ταύτης εἶναι τὸ μυθιστόρημα «Clarté» (1919), τὰ διηγήματα «Μερικὲς γωνιὲς τῆς καρδιᾶς» (Quelques coins du coeur) καὶ τὰ πολιτικοκοινωνικὰ φυλλάδιά του: «Λόγοι πολεμιστοῦ» (Paroles d'un combattant, 1920), «Φῶς εἰς τὴν ἄβυσσον» (La lueur dans l'abîme, 1921), «Μὲ τὸ μαχαίρι στὰ δόντια» (Le couteau entre les dents, 1922, ἑλλην. μετάφρ. 1931). Ὁ Μπαρμπὺς δὲν ἠσχολήθη μόνον μὲ τὴν λογοτεχνίαν καὶ τὴν συγγραφήν, ἀλλὰ καὶ ἐμπράκτως ὑπεστήριξε καὶ ὑποστηρίζει τὰς κοινωνικάς του πεποιθήσεις. Ἐπανειλημμένως διέτρεξε τὴν Εὐρώπην διὰ νὰ παρευρεθῇ εἰς δίκας κομμουνιστῶν ἢ νὰ μελετήσῃ τὴν δρᾶσιν τῆς λευκῆς τρομοκρατίας ἢ τὴν πολιτικὴν καὶ κοινωνικὴν κατάστασιν. Μετέσχε διαφόρων συνεδρίων, ὡμίλησεν ἀπειράκις εἰς διαφόρους δημοσίας συγκεντρώσεις καὶ τῷ 1928 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Monde», σκοπὸς τοῦ ὁποίου εἶναι ἡ πάλη κατὰ τοῦ φασισμοῦ καὶ τῆς λευκῆς τρομοκρατίας καὶ ἡ διάδοσις τῶν προοδευτικῶν κοινωνικῶν ἰδεῶν. Νεώτερα ἔργα του εἶναι: «Τὰ δεσμὰ» (Les enchaînements, 1925), δίτομον φιλοσοφικὸν μυθιστόρημα, «Οἱ δήμιοι εἰς τὰ Βαλκάνια. Ἡ λευκὴ τρομοκρατία» (Les bourreaux dans les Balkans. La Terreur Blanche 1926), ἔνθα καταγγέλλονται τρομοκρατικαὶ φρικαλεότητες βαλκανικῶν δικτατοριῶν ἐναντίον τῶν ἀγωνιστῶν τῆς ἐργατικῆς τάξεως καὶ τῶν φιλελευθέρων διανοουμένων, «Δύναμις» (1926) διηγήματα, «Ἰησοῦς» (1927), πραγματεία περὶ τοῦ Ἰησοῦ γεγραμμένη εἰς βιβλικὸν ὕφος καὶ ἐμφανίζουσα αὐτὸν ὑπὸ νέον ὅλως φῶς, «Οἱ Ἰοῦδαι τοῦ Ἰησοῦ» κλπ. Θ. Π.

**Μπαρμπὼ** (Barbault), ***Ἰωάννης***. Γάλλος χαράκτης, ζωγράφος καὶ σχεδιαστὴς (1705—1766). Ἀπεστάλη ὑπότροφος τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας εἰς Ρώμην, ὅπου διῆλθεν ὁλόκληρον τὴν ζωήν του, ἐπιδοθεὶς κυρίως εἰς τὴν μελέτην τῶν πολυαρίθμων ἐρειπίων τῆς πόλεως, τὰ ὁποῖα ἀπέδωκεν εἰς θαυμασίας χαλκογραφίας. Τὴν περιλαμβάνουσαν αὐτὰς συλλογὴν ἐξέδωσε τῷ 1761 ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ ὡραιότερα μνημεῖα τῆς ἀρχαίας Ρώμης». Εἰς αὐτὰς προέχει ἡ ἔξαρσις τῆς γραφικότητος ἀπὸ τὴν πιστὴν ἀπὸ ἀρχαιολογικῆς ἀπόψεως ἀναπαράστασιν. Μετὰ τὸν θάνατόν του χαράκται μετρίας ἀξίας ἐξέδωσαν, ἐπὶ τῇ βάσει σχεδίων του, δύο συλλογὰς («Ἀρχαῖα μνημεῖα τῆς Ἰταλίας» 1770 καὶ «Ἀρχαῖα ἀνάγλυφα καὶ θραύσματα αἰγυπτιακά, ἑλληνικά, ρωμαϊκά, ἐτρουσκικὰ κλπ.» 1783), εἰς τὰς ὁποίας ὅμως παρεμορφώθη σημαντικῶς ἡ λεπτὴ τέχνη τοῦ Μπαρμπώ. Ὡς ζωγράφος κατέλιπε σειρὰν σπουδῶν ἐκ τοῦ φυσικοῦ, κάλλιστος δ' ἐκ τῶν ζωγραφικῶν πινάκων του εἶναι ἡ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Μπεζανσὸν «Μασκαράτα». Χ. Δ.

**Μπάρμπωλντ** (Barbauld), ***Ἄννα - Λαιτιτία***. Ἀγγλὶς ποιήτρια καὶ συγγραφεὺς (1743—1825). Ἔγραψε τὸ περίφημον καταστὰν ἔργον της «Ὕμνος εἰς πεζὸν» (1781) διὰ παιδία καὶ διαφόρους μικρὰς ἱστορίας. Συλλογὴν τῶν ἔργων της ἐξέδωκε τῷ 1825 ἡ ἀνεψιά της Λουκία Ἄϊκιν (Aikin). Γ. Ι. Β.

**Μπάρνα** (Barna), ***Μιχαήλ***. Ἀτσίγγανος πρακτικὸς μουσικός, συνθέσας τὸ περίφημον «Ἐμβατήριον Ρακότσκυ» ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ τῆς εἰσόδου τοῦ πρίγκιπος Φρειδερίκου Β' Ρακότσκυ εἰς Ἐπερὶ τῆς Οὐγγαρίας. Ἡ πρώτη μουσικὴ σήμανσις τοῦ ἐμβατηρίου ὀφείλεται εἰς τὸν ἱερέα Karl Vaczek de Yaszo, ἀποθανόντα εἰς ἡλικίαν 93 ἐτῶν, τῷ 1828, ὅστις τὸ ἤκουσε παιζόμενον ἀπὸ τὴν ἀνεψιὰν τοῦ συνθέτου Πάννα Κτζίνκα. Ὁ βιολιστὴς *Ρούτζισκα* (Ruzsitska) προσέθεσε δύο ἀκόμη στροφὰς εἰς τὸ ἀρχικὸν ἐμβατήριον καὶ οὕτω συνεπληρώθη οἷον ὑπάρχει σήμερον. Ὁ Μπερλιὼζ παραλαβὼν αὐτὸ αὐτούσιον τὸ εἰσήγαγεν εἰς τὴν «Καταδίκην τοῦ Φάουστ» καὶ ἐξησφάλισεν εἰς αὐτὸ τὴν ἀθανασίαν. Λ.

**Μπαρνὰβ** (Barnave), ***Ἀντώνιος-Πέτρος-Ἰωσὴφ-Μαρία***. Γάλλος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Γκρενόμπλ τῷ 1761 καὶ ἀποκεφαλισθεὶς ἐν Παρισίοις τὴν 29 Νοεμβρίου 1793. Ἀκολουθήσας τὸ ἐπάγγελμα τοῦ πατρός του ἐσπούδασε νομικά, νεώτατος δὲ κατέκτησε διαπρεπῆ θέσιν ἐν τῷ νομικῷ κόσμῳ. Πρεσβεύων ὅτι ἡ ἀπόλυτος μοναρχία ἦτο θεσμὸς παρακμάσας, ὑπεστήριζε τὸ κοινοβουλευτικὸν πολίτευμα καὶ ἐδημοσίευσε πραγματείαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ πνεῦμα τῶν θεσμῶν» (L'esprit des édits), ἥτις εἶναι ἐκδήλωσις θαυμασμοῦ πρὸς τὸ ἀγγλικὸν Σύνταγμα, ἄγνωστον εἰς τὸ γαλλικὸν κοινὸν τότε. Ἡ πραγματεία του αὕτη τοῦ προσεπόρισε μεγάλην δημοτικότητα εἰς τὴν ἐπαρχίαν του, ἥτις ἀπέστειλεν αὐτὸν ἀντιπρόσωπόν της εἰς τὴν συνέλευσιν τῶν Τριῶν τάξεων τῷ 1789. Εἰς τὴν συνέλευσιν διεκρίθη ἀπὸ τῶν πρώτων ἡμερῶν διὰ τὴν σταθερότητα τοῦ χαρακτῆρός του καὶ τὰς φιλελευθέρας ἀρχάς του. Ἡ καταπλήσσουσα εὐγλωττία του, τὸ φιλοσοφικόν του πνεῦμα, ἡ ψυχραιμία του καὶ ἡ ἀντίθεσις τῶν ριζοσπαστικῶν του ἀρχῶν πρὸς τὴν ἠρεμίαν τοῦ λόγου του, ἐδείκνυον ὅτι ταχέως θὰ καθίστατο εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς συνελεύσεως. Ἡ ἀντίστασις τῆς αὐλῆς πρὸς τὰς ἀποφάσεις τῆς συνελεύσεως τὸν κατέστησε πολέμιον αὐτῆς. Ἐτάχθη εἰς τὸ ἐθνικὸν λεγόμενον κόμμα καὶ ἀπετέλεσε τὴν περίφημον τριανδρίαν μετὰ τοῦ Ντυπὸρ καὶ τοῦ Λαμέτ, οἵτινες διηύθυνον αὐτό. Αἱ ἀρχαὶ τοῦ Μπαρνὰβ ἦσαν προοδευτικώτεραι τῆς πρώτης περιόδου τῆς ἐπαναστάσεως. Εἶχεν ὡς στήριγμα ἐν τῇ συνελεύσει τὰ μέλη τῆς ἄκρας ἀριστερᾶς, ἐκτὸς δ' αὐτῆς τὰς λέσχας καὶ εἰς τὴν κοινωνίαν τὸν λαόν, ὅστις, συντελέσας εἰς τὴν μεταβολὴν τῆς 14 Ἰουλίου, δὲν ἠνείχετο νὰ ὠφεληθῇ μόνον ἡ μεσαία τάξις ἐκ τῆς νίκης. Ἔχων μεγάλην εὐχέρειαν ν' ἀγορεύῃ ἐκ τοῦ προχείρου καὶ ν' ἀνατρέπῃ τὰ ἐπιχειρήματα τῶν ἀναγινωσκόντων τοὺς λόγους των εἰς τὴν συνέλευσιν, κατέκτησε μεγάλην δημοτικότητα παρὰ τῷ λαῷ καὶ ἐγνώρισε σπανίους θριάμβους ρητορικούς. Ἀπὸ τῶν πρώτων ἀγορεύσεών του, ὁ Μιραμπὼ ἔλεγεν ὅτι ἦτο νέον δένδρον, ὅπερ ταχέως θὰ μετεβάλλετο εἰς ἱστὸν μεγάλου σκάφους. Ὁ Μπαρνὰβ κατεπολέμησε τὰς προσπαθείας τοῦ Μιραμπώ, ζητοῦντος νὰ συνδιαλλάξῃ τὴν βασιλείαν μετὰ τῆς ἐπαναστάσεως καὶ ν' ἀποτρέψῃ τὴν ἐνδεχομένην ἀναρχίαν. Μετὰ τὴν σύλληψιν τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας εἰς Βαρέν, ὁ Μπαρνὰβ μετὰ τοῦ Πετιὸν καὶ τοῦ Λατοὺρ-Μωμποὺργκ ἐνετάλησαν ὅπως μεταφέρωσιν εἰς Παρισίους ταύτην. Ἐπιστρέφων ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἁμάξης μετὰ τῶν μελῶν τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας, συνεκινήθη ἐκ τῆς δυστυχίας τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' καὶ τῶν θελγήτρων τῆς Μαρίας Ἀντωανέττας, ὥστε ἐστράφη πρὸς τὰς δοξασίας τοῦ Μιραμπὼ περὶ συνδιαλλαγῆς τοῦ στέμματος πρὸς τὴν ἐπανάστασιν. Ἤρξατο πρὸς τοῦτο συνεννοούμενος μετὰ τῆς αὐλῆς καὶ μετεῖχε τῶν ἰδιαιτέρων συμβουλίων τοῦ Κεραμεικοῦ, πᾶσα δὲ προσπάθειά του ἔτεινεν εἰς τὴν σωτηρίαν τοῦ βασιλέως. Μέχρι τοῦ Ἀπριλίου 1792 παρέμεινεν εἰς Παρισίους, εἶτα δὲ μετέβη εἰς Γκρενόμπλ, ὅπου ἔμαθε τὴν σύλληψιν τῶν βασιλέων τὴν 10 Αὐγούστου. Εἰς τὸ σιδηροῦν ἑρμάριον τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' εὑρέθησαν ἐνοχοποιητικαὶ ἐπιστολαὶ αὐτοῦ καὶ τὴν 19 Αὐγούστου συλληφθεὶς παρέμεινεν ἐγκάθειρκτος ἐπὶ 15 μῆνας εἰς Γκρενόμπλ. Ὁ Δαντὼν ἠθέλησε νὰ σώσῃ τὸν μέγαν πολίτην, ἀλλὰ δὲν τὸ κατώρθωσε. Μεταφερθεὶς ὁ Μπαρνὰβ εἰς Παρισίους ἐδικάσθη ὑπὸ τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Τὰ φιλολογικά του ἔργα ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1842 ἐν Παρισίοις εἰς 4 τόμους. Θ. Β.

*Ἀντώνιος Μπαρνάβ.*

**Μπάρναμ** (Burnham): βλ. λ. *Μπέρναμ*.

**Μπάρναρντ** (Barnard), ***Γεώργιος-Γκρέϋ***. Βορειοαμερικανὸς γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1863. Ἐφοίτησεν εἰς τὸ καλλιτεχνικὸν ἰνστιτοῦτον τοῦ Σικάγου, μετέβη δὲ κατόπιν εἰς Παρισίους (1883), ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ 12 ἔτη καὶ μετέσχεν ἐπανειλημμένως τῶν ἐκθέσεων τοῦ Salon. Ἐπιστρέψας εἰς Νέαν Ὑόρκην (1896) διωργάνωσε μεγάλην ἔκθεσιν, τῆς ὁποίας ἡ ἐπιτυχία ἦτο καταπληκτική, τὸ δὲ Μητροπολιτικὸν μουσεῖον τῆς πόλεως ἠγόρασεν ἓν ἐκ τῶν καλυτέρων ἔργων του, τὴν ἀλληγορικὴν παράστασιν «Δύο φύσεις». Τῷ 1912 ἀπεπεράτωσε δύο μεγάλα συμπλέγματα, ἀποτελούμενα ἐκ 31 ἀγαλμάτων, δι' ὧν διεκοσμήθη τὸ ἐν Χάρρισμπουργκ Καπιτώλιον τῆς Πενσυλβανίας. Κάλλιστα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ ἀδελφικὴ ἀγάπη» (1887), «Δύο φίλοι» (1887), «Ὁ θεὸς Πᾶν» κοσμῶν τὸ Central park τῆς Νέας Ὑόρκης (1902), ὁ ἐν Κινκιννάτι χαλκοῦς ἀνδριὰς τοῦ Λίνκολν (1917), «Ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὔα» (1923), καὶ τὸ ὡραῖον γύψινον «Μνημεῖον τῆς δημοκρατίας», ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἰκονίζονται 400 μορφαί. Χ. Δ.

— **Μπάρναρντ** (Barnard), ***Ἐδουάρδος Ἔμερσον***. Ἀμερικανὸς ἀστρονόμος (1857—1923). Καταγόμενος ἐκ πτωχῶν γονέων, ἠναγκάσθη ἀπὸ μικρᾶς ἡλικίας νὰ ἐργασθῇ διὰ νὰ πορίζεται τὰ πρὸς τὸ ζῆν. Προσληφθεὶς εἰς τὸ ἐργαστήριον ἑνὸς φωτογράφου καὶ κατὰ τύχην εὑρὼν ἕνα χάρτην τοῦ οὐρανοῦ, ταχέως κατώρθωσε νὰ ἀναγνωρίζῃ εὐχερῶς τοὺς ἀστερισμοὺς καὶ νὰ ἐκμάθῃ τὰ ὀνόματα τῶν ἀπλανῶν. Ἐπιδοθεὶς κατόπιν εἰς τὴν σπουδὴν τῶν μαθηματικῶν καὶ τῆς φυσικῆς, ἔλαβε τῷ 1887 τὸ πτυχίον τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Vanderbilt, ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ τοῦ ὁποίου εἰργάζετο ἀπὸ τεσσάρων ἐτῶν. Τὸ αὐτὸ ἔτος προσελήφθη ὡς ἀστρονόμος ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ τοῦ Λίκ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1895 μέχρι τοῦ θανάτου του διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πρακτικῆς ἀστρονομίας καὶ ἀστρονόμος ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ τοῦ Yerkes. Κατὰ τὸ 1901 ἠκολούθησε τὴν εἰς Σουμάτραν ἀποστολὴν τοῦ ναυτικοῦ ἀστεροσκοπείου τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν πρὸς παρατήρησιν τῆς ἐκεῖθεν ὁρατῆς ὁλικῆς ἐκλείψεως τοῦ Ἡλίου. Ἡ συμβολή του εἰς τὴν ἀποστολὴν ταύτην, ὅπως καὶ εἰς τὴν προαγωγὴν ἐν γένει τῆς πρακτικῆς ἀστρονομίας, ὑπῆρξε μεγάλη καὶ πολύτιμος. Ὁ Μπάρναρντ διεκρίθη κυρίως εἰς τὸν κλάδον τῆς ἀστρονομικῆς φωτογραφίας, ἐκ τῶν ἐπιστημονικῶν του δὲ ἐργασιῶν κυριώτεραι εἶναι ἡ ἀνακάλυψις τοῦ πέμπτου δορυφόρου τοῦ Διὸς καὶ ἡ ἀνακάλυψις (1916) τοῦ ἀπλανοῦς, ὅστις ἔχει τὴν μεγίστην μέχρι τοῦδε γνωστὴν ἰδίαν κίνησιν. Ὁ Μπάρναρντ ἦτο συνεργάτης εἰς τὴν ἔκδοσιν τῆς «Astronomical Journal», πλὴν δὲ τῶν παρατηρήσεών του ἐδημοσίευσε καὶ ὑπόμνημα ἐπὶ τῶν μικρομετρικῶν παρατηρήσεων τοῦ Ἔρωτος κατὰ τὴν ἀντίθεσιν αὐτοῦ τῷ 1900—1901. Σ. Π.

— **Μπάρναρντ** (Barnard), ***Ἐρρῖκος***. Ἀμερικανὸς συγγραφεὺς καὶ παιδαγωγὸς (1811—1900). Ἐχρημάτισε μέλος καὶ κατόπιν πρόεδρος τοῦ ἀνωτάτου ἐκπαιδευτικοῦ συμβουλίου (1838—1854), πρύτανις τοῦ ἐν Βίσκονσιν κρατικοῦ πανεπιστημίου καὶ διευθυντὴς τοῦ κολλεγίου τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου ἐν Ἀνναπόλει (Μαίρυλαντ). Εἰς τὸν Μπάρναρντ ὀφείλονται σημαντικώταται μεταρρυθμίσεις ἐν τῷ ἐκπαιδευτικῷ συστήματι τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἔγραψε: «School Architecture» (1839), «National Education» (1840), «National Education in Europe» (1854), «Papers of teachers» (8 τόμ.), «Military schools» (1872) κ. ἄ. Α. Δ.



Digitized by Google

— **Μπάρναρντ** (Barnard), ***Φρειδερῖκος-Αὔγουστος Πόρτερ.*** Ἀμερικανὸς σοφὸς καὶ παιδαγωγὸς (1809—1889). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Ἀλαμπάμα καὶ τοῦ Μισσισιπῆ· καὶ πρόεδρος τῆς «Ἐπιστημονικῆς ἑταιρείας διὰ τὴν πρόοδον τῆς γνώσεως». Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἀναλυτικὴ γραμματική» (1836), «Σχέσεις μεταξὺ τῶν μηχανικῶν καὶ βιομηχανικῶν τεχνῶν» (1869), «Πρόοδοι τῆς συγχρόνου ἐπιστήμης» (1869), «Τὸ μετρικὸν σύστημα» (1871). Α. Δ.

**Μπάρναρντ Κἄσλ** (Barnard Cartle) *[Γεωγρ.].* Ἐμπορικὴ πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντώρχαμ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τής. Τῆς πόλεως δεσπόζει μεσαιωνικὸν φρούριον, κτισθὲν τῷ 1112—1132 ὑπὸ τοῦ Γουΐδωνος Μπάλιολ Μπάρναρντ, προπάτορος τοῦ βασιλέως τῆς Σκωτίας Ἰωάννου Μπάλιολ, τὸ ὁποῖον κατεστράφη τῷ 1569. Ἔχει καλλιτεχνικὸν μουσεῖον καὶ κλωστήρια λίνου. Κάτ. 4.757. Χ. Δ.

**Μπαρνάρντο** (Barnardo), *Θωμᾶς-Ἰωάννης.* Ἄγγλος φιλάνθρωπος καὶ ἱδρυτὴς ἀσύλων δι' ἐγκατελελειμμένα παιδιά (1845—1905). Οἱ πρῶτοι «παιδικοὶ οἶκοι Μπαρνάρντο» ἱδρύθησαν τῷ 1867, ἔκτοτε δὲ ηὐξήθησαν, εἰς τρόπον ὥστε κατὰ τὸν θάνατον τοῦ φιλανθρώπου ὑπῆρχον παιδικὰ ἄσυλα εἰς 112 συνοικίας τοῦ Λονδίνου, ἐκτὸς τῶν ἐπαρχιακῶν τμημάτων, τὰ ὁποῖα ὠργανώθησαν καθ' ἅπασαν τὴν Μεγάλην Βρεττανίαν. Σκοπὸς τῶν ἱδρυμάτων τούτων ἦτο ἡ περισυλλογὴ καὶ περίθαλψις ἀνεστίων ἢ ἐγκατελελειμμένων παίδων ἢ ἀλητοπαίδων καὶ ἡ ἐπαγγελματικὴ αὐτῶν ἀνατροφή. Τῷ 1872 ἱδρύθη ὁ «οἶκος τοῦ χωρίου διὰ θήλεα» ἐν Μπάρκινσάϊδ, καὶ τῷ 1901 διὰ δωρεᾶς ἰδιώτου ναυτικὴ σχολὴ εἰς τὸ Νὸρθ Ἔλμαμ, εἰς ἣν εἰσήγοντο ἐκ τῶν ἀσύλων παῖδες πρὸς ἐκπαίδευσιν διὰ τὸ ἐμπορικὸν ναυτικόν. Κατὰ τὸ ἔτος 1899 τὰ διάφορα ταῦτα ἱδρύματα ἀνεγνωρίσθησαν διὰ νόμου, ἀπαρτίσαντα ἑνιαῖον ὀργανισμὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐθνικὴ ἑταιρεία περισυλλογῆς ἐγκαταλελειμμένων παίδων». Ὁ Μπαρνάρντο ἰδιαιτέραν κατέβαλε μέριμναν διὰ τὴν θρησκευτικὴν μόρφωσιν τῶν παίδων. Ἕκαστον τούτων ἀνετρέφετο εἰς τὸ δόγμα, τὸ ὁποῖον ἐξηκριβοῦτο ὅτι εἶχον οἱ γονεῖς. Ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τῶν πρώτων ἀσύλων μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ φιλανθρώπου περισυνελέγησαν περὶ τοὺς 60.000 παῖδας. Ὁ Μπαρνάρντο ἔγραψε καὶ βιβλία σχετικὰ μὲ τὸ ἔργον του. Γ. Ι. Β.

**Μπαρνάτο** (Barnato), *Μπάρνεϋ.* Ἄγγλος ἐπιχειρηματίας (1852—1897). Τῷ 1881 συνέπηξε τὴν πρώτην ἑταιρείαν ἐκμεταλλεύσεως ἀδαμάντων, τῷ 1889 ἵδρυσεν ἑταιρείαν χρυσωρυχείων εἰς Ράννt (Rand) καὶ μετὰ ταῦτα τράπεζαν (Barnardo bank). Ἐτερμάτισε τὸν βίον του ῥιφθεὶς εἰς τὴν θάλασσαν. Γ. Ι. Β.

**Μπάρνεβελτ** (Van Olden Barneveldt), ***Ἰωάννης.*** Ὀλλανδὸς πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπάρνεφελτ Ἰωάννης*).

**Μπάρνες** (Barnes), ***Ροβέρτος.*** Ἄγγλος γυναικολόγος, γεννηθεὶς κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἐπεδόθη ἰδίᾳ εἰς τὴν θεραπείαν τῶν σπασμωδῶν νόσων τῶν γυναικῶν, τοῦ ἐπιλοχείου πυρετοῦ, τῆς παρὰ φύσιν προσφύσεως τοῦ πλακοῦντος, τῶν ὀπισθομητρικῶν ὄγκων κλ. Ἐδημοσίευσεν ἀξιόλογον πραγματείαν περὶ παθήσεως τοῦ πλακοῦντος, «Lectures on obstetric operations» (γ' ἔκδ. 1875), περὶ τῆς χρήσεως τοῦ σφυγμογράφου κατὰ τὴν λοχείαν, περὶ τῆς λευκῆς ἐπωδύνου φλεγμονῆς κ.ἄ. Τοῦ Μπάρνες ὑπάρχει συσκευὴ πρὸς τεχνητὴν πρόκλησιν τοκετοῦ διὰ διαστολῆς τοῦ τραχήλου τῆς μήτρας (ἐλαστικὴ σφαῖρα τοῦ Μπάρνες). Ο. Ρ.

**Μπάρνετ** (Barnet) *[Γεωγρ.].* Ἐμπορικὴ πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Χέρτφορντ, κειμένη 18 χλμ. ΒΔ. τοῦ Λονδίνου. Εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων κτηνοτροφικῶν πόλεων τῆς Ἀγγλίας, ἔχει δὲ σημαντικὰ ἱπποτροφεῖα. Κάτ. 10.440. Τὴν πόλιν κοσμεῖ ὀβελίσκος στηθεὶς εἰς ἀνάμνησιν τῆς μεγάλης φερωνύμου μάχης, ἥτις συνήφθη παρ' αὐτὴν τῷ 1471, διαρκοῦντος τοῦ πολέμου τῶν «Δύο Ρόδων» μεταξὺ τῶν στρατευμάτων τῶν δύο ἀντιπάλων οἴκων, Λαγκαστριανῶν καὶ Ὑορκιστῶν. Κατ' αὐτὴν ἐνίκησαν οἱ Ὑορκισταὶ καὶ ἐφονεύθη ὁ τρομερὸς ἀρχηγὸς τῶν Λαγκαστριανῶν κόμης Οὐώρουικ, ὅστις ἐπωνομάζετο «ὁ δημιουργὸς τῶν βασιλέων», τοιουτοτρόπως δ' ἐστερεώθη ὁριστικῶς ὁ θρόνος τοῦ Ἐδουάρδου Δ'. Χ. Δ.

**Μπάρνετ** (Burnett)· βλ. λ. *Μπέρνετ.*

**Μπάρνετ** (Barnett), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος φυσικός, γεννηθεὶς τῷ 1833. Εἶναι ἰδίως γνωστὸς διὰ τὰς ἐργασίας αὐτοῦ ἐπὶ μηχανῶν ἐσωτερικῆς καύσεως. Μ. Δ. Β.

— **Μπάρνετ ἀποτέλεσμα** (effet Barnett) *[Φυσ.].* Ἐὰν σιδηρᾶ ῥάβδος κυλινδρική, καταχορύφως διατεταγμένη, τεθῇ εἰς περιστροφικὴν κίνησιν περὶ τὸν ἄξονα αὐτῆς, ἡ ῥάβδος μαγνητίζεται· τὸ φαινόμενον τοῦτο χαρακτηρίζεται ἐν τῇ φυσικῇ ὡς «ἀποτέλεσμα Μπάρνετ». Ἡ ἐμφανιζομένη ἔντασις μαγνητίσεως εἶναι τὸ ἥμισυ τῆς ἐκ τῆς θεωρίας τοῦ φαινομένου ἀναμενομένης. Ἀντίστροφον τοῦ ἀποτελέσματος Μπάρνετ εἶναι τὸ «ἀποτέλεσμα Ἀϊνστάϊν», καθ' ὃ σιδηρᾶ ῥάβδος κυλινδρικὴ ἐξαρτωμένη καταχορύφως διὰ λεπτοῦ νήματος παραλλήλως τῷ ἄξονι αὐτῆς καὶ ὑποβαλλομένη εἰς ἀπότομον διαμήκη μαγνήτισιν τίθεται εἰς περιστροφικὴν κίνησιν.

Τὰ δύο ταῦτα «ἀποτελέσματα», ὧν τὸ μὲν πρῶτον συνίσταται εἰς μαγνήτισιν διὰ περιστροφικῆς κινήσεως, τὸ δὲ δεύτερον εἰς περιστροφικὴν κίνησιν διὰ μαγνητίσεως, καλοῦνται συλλήβδην «γυρομαγνητικὰ φαινόμενα». Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

— **Μπάρνετ** (Barnett), ***Τζῶν.*** Ἄγγλος μουσικοσυνθέτης, γερμανικῆς καταγωγῆς (1802—1890). Ἀρχικῶς ἀοιδός, ἐπεδόθη κατόπιν ὁριστικῶς εἰς τὴν σύνθεσιν, ἰδίως ἀφ' ἧς ἡ ὀπερέττα του «Πρὸ τοῦ προγεύματος» ἐσημείωσεν ἐν Λονδίνῳ πολλὴν ἐπιτυχίαν (1828). Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ἡ νύμφη τοῦ ὄρους», «Ὡραία Ροζεμόνδη» (1837) καὶ «Φαρινέλλι» (1838).

— **Μπάρνετ** (Barnett), ***Τζῶν - Φραγκῖσκος.*** Ἄγγλος μουσικοσυνθέτης καὶ κλειδοκυμβαλιστής, γεννηθεὶς τῷ 1837. Ἐκ τῶν ἔργων του ἄξια ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι: μία συμφωνία, εἰσαγωγὴ διὰ τὸ «Χειμωνιάτικο παραμύθι» τοῦ Σαίξπηρ, ἡ σουΐτα δι' ὀρχήστραν «Τὸ τραγούδι τοῦ τελευταίου τρουβαδούρου», αἱ καντάται: «Ὁ γέρω-ναύτης», «Ὁ καλὸς βοσκός», «Ἡ ναυπήγησις τοῦ πλοίου», τὸ ὀρατόριον «Ἡ ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου», κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπάρνεϋ** (Burney), ***Κάρολος.*** Ἄγγλος μουσικολόγος (1726—1814). Ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς συνθέτης διὰ τῆς μουσικῆς τῶν δραμάτων «Ἀλφρέδος», «Ρόμπιν Χοὺντ» καὶ «Βασίλισσα Μάμπ», εἶτα δ' ἐπεχείρησε ταξίδια ἀνὰ τὴν Γαλλίαν, Ἰταλίαν, Κάτω Χώρας, Γερμανίαν καὶ Αὐστρίαν, ἵνα συλλέξῃ στοιχεῖα πρὸς συγγραφὴν τοῦ μνημειώδους του ἔργου «Γενικὴ ἱστορία τῆς μουσικῆς» (1776—1789, εἰς 4 τόμ.). Ἐκ τῶν λοιπῶν συγγραμμάτων τοῦ Μπάρνεϋ σημαντικώτερα εἶναι: «Βιογραφία τοῦ Μεταστασίου», «Plan of a public music school», «An account of the musical performances in Westminster Abbey in commemoration of Haendel» κ. ἄ. Ὁ Μπάρνεϋ εἶχεν ὀνομασθῆ διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀξφόρδης. Γ. Σ.

— **Μπάρνεϋ** (Burney), ***Φραγκίσκα.*** Ἀγγλὶς δημοσιογράφος (1752—1840). Τὸ πρῶτον διήγημά της, γραφὲν κατὰ τὸ ἐπιστολικὸν εἶδος τοῦ Ρίχαρντσον, ἐγένετο ἐνθουσιωδῶς ἀποδεκτὸν ὑπὸ τοῦ Τζόνσον καὶ τοῦ κύκλου του. Τὸ διήγημα τοῦτο φέρει τὸν τίτλον «Ἐβελίνα» καὶ εἶναι ἱστορία νεαρᾶς γυναικὸς κατὰ τὴν εἴσοδόν της εἰς τὴν κοσμικὴν ζωήν. Ἠκολούθησαν τὰ μυθιστορήματα: «Καικιλία» (1792) καὶ «Καμίλλη» (1796), τὰ ὁποῖα κατέστησαν τὴν Μπάρνεϋ μίαν τῶν δημοφιλεστέρων συγγραφέων τῆς Ἀγγλίας. Α. Δ.

**Μπάρνεφελτ** (Barneveldt), ***Ἰωάννης***· βλ. *Ὀλντενμπάρνεφελτ.*

**Μπαρνὶ** (Barni), ***Ἰούλιος-Ρωμανός.*** Γάλλος φιλόσοφος (1818—1878). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ρουὲν καὶ ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Γενεύης, ἐγένετο δὲ καὶ ἰδιαίτερος γραμματεὺς τοῦ Βίκτορος Κουζέν. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ὡς συνεργάτης τῶν περιοδικῶν «Avenir» καὶ «Revue de Paris», ὡς μεταφραστὴς πολλῶν ἔργων τοῦ Καντίου καὶ ὡς συγγραφεὺς ἀξιολόγων ἔργων, ἐν οἷς: «Philosophie de Kant, examen de la Critique du Jugement», «Philosophie de Kant, examen des Fondements de la métaphysique pure», «Les moralistes français au XVIIIe siècle: Vauvenargues, Duclos, Helvétius, Saint-Lambert, Volney» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπάρνουμ** (Barnum), ***Φινέας - Ταίϋλορ.*** Περιβόητος Ἀμερικανὸς ἐπιχειρηματίας δημοσίων θεαμάτων (1810—1891). Ἐγένετο διάσημος διὰ τὰς ἀγυρτικὰς μεθόδους του περὶ τὸν χειρισμὸν τῆς διαφημίσεως καὶ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῆς εὐπιστίας τοῦ κοινοῦ, ἐπονομασθεὶς ὁ «βασιλεὺς τῆς ρεκλάμας». Ἦτο υἱὸς χωρικοῦ καπήλου καὶ ἤρχισε νεώτατος τὸν τυχοδιωκτικὸν βίον του ἐξασκῶν διάφορα ἐπαγγέλματα. Εἰς ἡλικίαν 19 ἐτῶν ἵδρυσε καὶ διηύθυνε τὸν «Κήρυκα τῆς ἐλευθερίας» ἐν Ντάνμπερυ, ῥιζοσπαστικὴν ἐφημερίδα, συνεπείᾳ τῶν δημοσιευμάτων τῆς ὁποίας ἐφυλακίσθη ἐπὶ συκοφαντίᾳ ἐπὶ δύο μῆνας. Τῷ 1834 μετέβη εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην, ὅπου διενοήθη ν' ἀγοράσῃ ἀντὶ 1000 δολλαρίων τὴν γηραιὰν Μαύρην Τζόϊς Χέθ, τὴν ὁποίαν, διὰ καταλλήλου ρεκλάμας, ἐξέθεσεν ὡς τροφὸν τοῦ Βάσιγκτων καὶ ἐνεφάνιζεν ὡς ἔχουσαν ἡλικίαν 160 ἐτῶν. Ἡ Μαύρη αὕτη ἀπέθανε τῷ 1836 καὶ ἀπεδείχθη κατόπιν ὅτι εἶχεν ἡλικίαν μόνον 70 ἐτῶν. Τὰ ἐκ τῆς ἀπάτης ταύτης μεγάλα κέρδη του ἐχρησίμευσαν εἰς αὐτὸν ὡς βάσις τῶν πολλαπλῶν κατόπιν ἐπιχειρήσεών του, πανοραμάτων, ἱπποδρομίων, ἐκθέσεων διαφόρων ἀξιοπεριέργων καὶ τερατωδῶν θεαμάτων κτλ. Τὰ οὕτως ὅμως κερδηθέντα ποσὰ ἀπώλεσε μετ' ὀλίγον εἰς διαφόρους ἐπισφαλεῖς ἐπιχειρήσεις. Ἀλλὰ τῷ 1841 ἠγόρασεν ἐπὶ πιστώσει τὸ περίφημον «Scudder's American Museum» τῆς Νέας Ὑόρκης, εἰς τὸ ὁποῖον ἔδωσε τὸ ὄνομα «Μουσεῖον Μπάρνουμ», ἐπηύξησε δ' αὐτὸ διὰ νέων ἐκθεάτων συλλογῶν καὶ θαυμαστῶν φαινομένων εἰς τρόπον ὥστε ἐχρειάζετο διὰ τὴν μεταφοράν του ὑπὲρ τὰ 100 βαγόνια σιδηροδρόμου. Η νέα αὕτης ἐπεχείρησις, χάρις εἰς τὴν τεραστίαν καὶ πρωτοφανῆ διαφήμησιν, κατέστη ταχέως δημοφιλὴς καὶ ἀπέδωσεν εἰς αὐτὸν νέα μυθώδη κέρδη. Μεταξὺ τῶν φαινομένων, τὰ ὁποῖα ἐπεδείκνυεν εἰς τὸ πρωτότυπον μουσεῖόν του ἦσαν καὶ μία δῆθεν σειρὴν ἐκ Πολυνησίας, σχηματισθεῖσα ἐξ ἰχθύος καὶ κορμοῦ πιθήκου, τὴν ὁποίαν ὅμως εἶχε κατασκευάσει ὁ ἴδιος, μία μαύρη κατὰ τὸ πρόσωπον μὲ λευκὴν ἐπιδερμίδα, εἷς ἵππος με τρίχωμα προβάτου, ὁ περίφημος νᾶνος Τὸμ Πούς, ὁ ὁποῖος διετείνετο ὅτι ἦτο ἡλικίας 16 ἐτῶν, ἐν τῇ πραγματικότητι ἦτο μόνον 6 κτλ. Ὁ Μπάρνουμ περιῆλθε μὲ τὸ μουσεῖόν του τὰς κυριωτέρας πόλεις τῆς Ἀμερικῆς καὶ τῆς Εὐρώπης καὶ ἐγένετο δεκτὸς καὶ εἰς διαφόρους αὐλάς. Τῷ 1849 ἐγένετο ὁ θεατρώνης τοῦ περιφήμου ἀοιδοῦ Τζέννυ Λίντ, ὃν συνεφώνησεν ἀντὶ τοῦ τεραστίου, διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ποσοῦ τῶν 1000 δολλαρίων δι' ἑκάστην συναυλίαν. Ἐκ τῆς ἐπιχειρήσεως ταύτης ἐκέρδισε 712.160 δολλάρια. Τῷ 1855 ἀπεσύρθη εἰς τὴν πόλιν Μπρίτζπορτ, ὅπου ἐσπατάλησε τεράστια ποσὰ διὰ τὸν ἐξωραϊσμὸν τῆς ἐπαύλεώς του καὶ διαφόρων σημείων τῆς πόλεως, ἱδρύσας παρ' αὐτὴν τὸ προάστειον Ἠστ Μπρίτζπορτ, ὅπερ κατέστησε μίαν τῶν ὡραιοτέρων ἐξοχικῶν διαμονῶν τῆς περιοχῆς. Τῷ 1857 ὅμως, περιπλακεὶς εἰς διαφόρους χρηματιστηριακὰς ἐργασίας, ἐχρεοκόπησε καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Κατορθώσας ἐν τούτοις νὰ κερδίσῃ ἐκ νέου χρήματα, ἀνέλαβε καὶ πάλιν τῷ 1871 τὴν διεύθυνσιν τοῦ μουσείου του, εἰς τὸ ὁποῖον προσέθεσεν ἱπποδρόμιον καὶ διάφορα ἀθλητικὰ θεάματα καὶ τὸ ὁποῖον ὠνόμασε διὰ τοῦ πομπώδους τίτλου «Τὸ μεγαλύτερον μουσεῖον τῆς οἰκουμένης». Δι' αὐτοῦ ἐξετέλεσε τὸν γῦρον τοῦ κόσμου, ἐνῷ συγχρόνως διέδιδε διαφόρους διαφημιστικὰς τερατολογίας. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του εἶχεν ἀποσυρθῆ εἰς τὴν ἔπαυλίν του ἐν Μπρίτζπορτ, ἐγκαταλείψας τὰς ἐπιχειρήσεις καὶ καταγινόμενος εἰς τὴν συγγραφὴν διαφόρων ἔργων, ἐχόντων ἰδίως ὡς θέμα τὸν πολυκύμαντον βίον του, ἐν οἷς: ἡ «Αὐτοβιογραφία» του (1855), ἥτις διακρίνεται διὰ τὴν εἰλικρίνειάν της, «Αἱ ἀγυρτεῖαι τοῦ κόσμου» (1865), «Ἀγῶνες καὶ θρίαμβοι», «Λεὸν Τζὰκ» (1876), «Πῶς κερδίζεται τὸ χρῆμα» (1883), κλπ.

Ὁ Μπάρνουμ εἶχεν ἐκλεγῇ τετράκις βουλευτής, καθὼς καὶ δήμαρχος Μπρίτζπορτ. Ἀποθανὼν κατέλιπε περιουσίαν 5.000.000 δολλαρίων. Μ. Δ. Β.

**Μπαρνούτιου** (Barnutiou), ***Συμεών.*** Ρουμάνος φιλόσοφος, νομομαθὴς καὶ πατριώτης ἐκ Τρανσυλβανίας (1808—1864). Ἐφοίτησεν εἰς τὸ ἑλληνικὸν κολλέγιον τοῦ Μπλασιού, διωρίσθη ἔπειτα καθηγητὴς τούτου, ἀλλὰ παρῃτήθη (1845) κατόπιν ἀναμείξεώς του εἰς πατριωτικὰς ἐκδηλώσεις ἐναντίον τῶν Οὔγγρων. Τῷ 1848 ἠγήθη τῆς ἐπαναστάσεως, ὑπογράψας διαμαρτυρίαν ἐναντίον τῆς ἑνώσεως τῆς πατρίδος του μετὰ τῆς Οὐγγαρίας καὶ θέσας, ἰδίᾳ διὰ τοῦ ἐκφωνηθέντος ἐν τῷ «Πεδίῳ τῆς Ἐλευθερίας», ἐνώπιον 40000 ἀκροατῶν, λόγου του, τὰς βάσεις ἐθνικῆς πολιτικῆς. Ἐπεδόθη κατόπιν εἰς νομικὰς μελέτας ἐν Βιέννῃ καὶ Παβίᾳ. Τῷ 1863 ἐδίδαξε φιλοσοφίαν καὶ δίκαιον ἐν Ἰασίῳ. Ὡς φιλόσοφος ὁ Μπαρνούτιου ἐζήτησε νὰ ἱδρύσῃ καθαρῶς ἐθνικὴν σχολήν, κηρυχθεὶς ἐναντίον τῶν κοσμοπολιτικῶν πνευματικῶν τάσεων. Μεταξὺ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Πραγματεία περὶ φιλοσοφίας» (ἐν χειρογράφῳ), «Τὸ δημόσιον δίκαιον τῶν Ρουμάνων» «Φυσικὸν ἰδιωτικὸν δίκαιον» «Διεθνὲς δίκαιον» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπὰ(ρ)νς** (Barnes) *[Γεωγρ.].* Ἀστικὴ περιοχὴ τοῦ Μείζονος Λονδίνου, κειμένη εἰς τὴν περιοχὴν τῆς κομιτείας Σώρρεϋ, ἐπὶ τοῦ Ταμέσεως, 11 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς πόλεως τοῦ Λονδίνου. Χρησιμεύει κυρίως ὡς κέντρον ἐκδρομῶν τῶν κατοίκων τῆς βρεττανικῆς μητροπόλεως. Κάτ. 30.377. Χ. Δ.

**Μπὰρνς** (Burns)· βλ. λ. *Μπέρνς.*

**Μπὰρνς** (Barnes), ***Ἀλβέρτος.*** Ἀμερικανὸς θεολόγος (1798—1870). Ἔγραψε: «Manual of Prayer» (18..), «How shall Man be just with God?» (1854), «The Church and Slavery» (1856), «Way of Salvation Illustrated» (1856) κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπὰρνς** (Barnes), ***Βαρνάβας.*** Ἄγγλος ποιητής, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ἔγραψε: «A divine century of spiritual sonnets» (1595), «Τὸ σύνταγμα τοῦ διαβόλου», δρᾶμα τοῦ ὁποίου θέμα εἶναι ἡ ζωὴ τοῦ πάπα Ἀλεξάνδρου ΣΤ'. Α. Δ.

— **Μπὰρνς** (Barnes), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος ποιητὴς καὶ γλωσσολόγος (1800—1886). Ἤρχισε τὴν φιλολογικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὴν δημοσίευσιν

Digitized by Google

...ῶν «Poems of rural life in the Dorset dialect, with a dissertation and glossary», τὰ ὁποῖα ἐξετιμήθησαν μεγάλως. Ἐπίσης μεγάλην ἐντύπωσιν ἐποίησαν τὰ «Poems of rural life in common English» καὶ τὰ «Hwomely rhyms». Διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἐρωτικὴν καὶ τὴν εἰδυλλιακὴν ποίησιν. Γνώστης ξένων γλωσσῶν, ἐδημοσίευσε πολλὰς γλωσσολογικὰς πραγματείας, ἐν αἷς τονίζει ἰδιαζόντως τὸν γερμανικὸν χαρακτῆρα τῆς ἀγγλικῆς. Κυριώτεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Gefylsta,, an Anglo-Saxon delectus», «A philological grammar, grounded upon English and formed from a comparison of more than 60 languages», «Early English and the Saxon English», «An outline of English speech-craft» κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπάρνς** (Barnes), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος δημοσιογράφος (1786—1841). Κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ σταδίου του ὑπῆρξε διαπρύσιος κῆρυξ τῶν μᾶλλον φιλελευθέρων ἰδεῶν, τὰς ὁποίας ὅμως ἀπεκήρυξε μετέπειτα. Οἱ «Τάϊμς», τοὺς ὁποίους διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1817 μέχρι τοῦ θανάτου του, εἰς αὐτὸν ὀφείλουσι κατὰ μέγα μέρος τὸ διεθνές των κῦρος. Α. Δ.

— **Μπάρνς** (Barnes), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος θεολόγος, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Τῷ 1534 ὠνομάσθη ἀνακτορικὸς ἱερεὺς τοῦ Ἑρρίκου Η'. Ἐπειδὴ ἀντέδρασε κατὰ τοῦ συνοικεσίου τοῦ μονάρχου, ἴσως δὲ καὶ διότι ἠσπάσθη τὸν προτεσταντισμόν, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Γερμανίαν, γενόμενος ἐκ τῶν ἐνθουσιωδεστέρων μαθητῶν καὶ ὀπαδῶν τοῦ Λουθήρου. Μετά τινα χρόνον ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ὅπου συνελήφθη καὶ ἐκάη ζῶν τὴν 30 Ἰουλίου 1540, χωρὶς νὰ ἐπιτραπῇ εἰς αὐτὸν ν' ἀπολογηθῇ. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ κυριώτερον εἶναι: «Vitae romanorum Pontificum» (Βυρτεμβέργη 1536). Α. Δ.

**Μπά(ρ)νσλυ** (Barnsley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν Οὐέστ Ρίντινγκ τῆς κομιτείας Ὑόρκης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ντήαρν. Περιβάλλεται ὑπὸ πλουσίας εἰς γαιάνθρακας περιοχῆς καὶ εἶναι κέντρον βιομηχανιῶν ἐρίου, σιδήρου, χάρτου, ὑάλου, χημικῶν προϊόντων κλπ. Ἐξυπηρετεῖται ὑπὸ πολλῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καὶ διώρυγος διευθυνομένης πρὸς τὸ Λήντς. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐλειτούργουν ἐν αὐτῇ δύο ἐργοστάσια πυρομαχικῶν. Κάτ. (1921) 53.661. Χ. Δ.

**Μπά(ρ)νσταιπλ** (Barnstaple) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντέβον, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος τοῦ Μπρίστολ. Εἶναι ἀξιόλογον συγκοινωνιακὸν κέντρον καὶ κοσμεῖται ὑπὸ πλήθους παλαιοτάτων κτηρίων καὶ ναῶν. Ἔχει μικρὰν ναυτιλιακὴν κίνησιν καὶ βιομηχανίαν τριχάπτων καὶ ἀγγείων. Κάτ. 14.409. Χ. Δ.

**Μπάρντ** (Bahrdt), ***Κάρολος - Φρειδερῖκος***. Ὀρθολογιστὴς Γερμανὸς θεολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1741 ἐν Bischofswerda. Ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν Λειψίᾳ, ὅπου τῷ 1766 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ· μετὰ βιαίαν ὅμως ἐπαύθη, λόγῳ τῆς σκανδαλώδους συμβιώσεώς του μετὰ πόρνης. Τῷ 1768 διωρίσθη ἄμισθος καθηγητὴς τῆς βιβλικῆς ἀρχαιολογίας ἐν Ἐρφούρτῃ, διὰ νὰ ἀντεπεξέρχεται δὲ εἰς τὰ ἔξοδα συνετήρει πανδοχεῖον· τῷ 1771 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ ἐν Giessen πανεπιστημίου· λόγῳ ὅμως τοῦ ἀνηθίκου βίου καὶ τῶν ἄγαν ὀρθολογιστικῶν δοξασιῶν του ἐπαύθη τῷ 1775. Τῷ 1776 διωρίσθη πρόεδρος τοῦ κονσιστορίου ἐν Duerkheim, ἀλλὰ καὶ ἐκεῖθεν ἠναγκάσθη μετὰ ἓν ἔτος νὰ ἀποχωρήσῃ. Ὑποστηριζόμενος ὑπὸ τοῦ Πρώσσου ὑπουργοῦ Zedlitz ἐγκατέστη ὁ Μπάρντ ἐν Χάλλῃ, ὅπου ἐδίδασκε λατινικὴν φιλολογίαν, ἑβραϊκὴν γραμματικήν, λογικήν, μεταφυσικήν, ῥητορικὴν καὶ ἠθικήν, πρὸ πυκνοτάτου ἀκροατηρίου 900 φοιτητῶν· τότε ἀνέπτυξε καὶ μεγίστην συγγραφικὴν δρᾶσιν, τόσον ὥστε μόνον κατὰ τὸν χειμῶνα 1786—1787 ἐτύπωσεν 160 τυπογραφικὰ φύλλα. Ἀπορρίψας τὴν πίστιν εἰς τὴν ἀποκάλυψιν, ἐδίδασκε φυσικήν τινα θρησκείαν καὶ ἀπεδέχετο τὸν Χριστιανισμὸν ὡς ἠθικὴν ἁπλῶς θρησκείαν. Ταχέως ὅμως παθὼν ἐξ ὑπερκοπώσεως, κατέλιπε τὴν διδακτικὴν καὶ συγγραφικὴν δρᾶσιν καὶ ἤνοιξε παρὰ τὴν Χάλλην πανδοχεῖον, ὅπερ διηύθυνε μετὰ τῆς ὑπηρετρίας του, μεθ' ἧς συνέζη, ἐκδιώξας τὴν σύζυγόν του. Γράψας τῷ 1789 ἀνωνύμως κωμῳδίαν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Religionsedikt», ἐν ᾗ κατειρωνεύετο τὴν πρωσσικὴν κυβέρνησιν διὰ τὴν θρησκευτικήν της πολιτικήν, κατεδικάσθη εἰς φυλάκισιν ἑνὸς ἔτους ἐν Μαγδεμβούργῳ, καθ' ἣν ἔγραφεν αἰσχρὰ μυθιστορήματα καὶ τὴν αὐτοβιογραφίαν του, πλήρη ψευδῶν καὶ χυδαιοτήτων. Ἀποφυλακισθεὶς μετ' ὀλίγον ἀπέθανεν ἐν Χάλλῃ, τῷ 1792, ἐξ ἀφροδισίου νόσου. Τὰ συγγράμματά του, πλεῖστα τὸν ἀριθμόν, στεροῦνται πάσης ἀξίας· τὰ γνωστότερα τούτων εἶναι: «Ἐπιστολαὶ περὶ τῆς συστηματικῆς θεολογίας» (1770—1772) καὶ «Νεώτεραι ἀποκαλύψεις τοῦ Θεοῦ ἐν ἐπιστολαῖς καὶ διηγήσεσι» (1774)· τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ ἐθεώρει ὡς ὑποδειγματικὴν ἔκδοσιν τῆς Βίβλου, ἐκίνησε τὴν ἀγανάκτησιν πάντων τῶν ἐχεφρονούντων καὶ τὰς εἰρωνείας τοῦ Goethe. Δ.Σ.Μ.

— **Μπάρντ** (Bard), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος ἰατρὸς (1857—1930). Τῷ 1892 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ὑγιεινῆς εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τῆς Λυῶνος, τῷ δὲ 1900 ἀνέλαβε τὴν ἕδραν τῆς κλινικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γενεύης. Ἡ ἐπιστημονικὴ παραγωγὴ τοῦ ὑπῆρξεν ἀξιολογωτάτη. Ἐδημοσίευσεν ὑπὲρ τὰς 400 πραγματείας, ἀναφερομένας εἰς τὴν κυτταρολογίαν, τὸν καρκίνον, τὴν φυματίωσιν τῶν πνευμόνων, τὴν νευρολογίαν κτλ. Τῷ 1888 μετὰ τοῦ βοηθοῦ του Adrien Pic περιέγραψεν ἰδιαίτερον κλινικὸν τύπον καρκίνου τῆς κεφαλῆς τοῦ παγκρέατος. Ὡς σύμμικτον κύτταρον τοῦ Μπάρντ νοεῖται κύτταρον περικλεῖον ἐν ἀσταθεῖ προσεταιρισμῷ τὰ ἀρχικὰ στοιχεῖα ἰδιομόρφων κυττάρων· διά τινος διχασμοῦ ἕκαστον τῶν στοιχείων τούτων μετὰ τῶν ἰδιαζόντων αὐτῷ χαρακτήρων διαχωρίζεται καὶ δύναται νὰ ἀναπτυχθῇ περαιτέρω κατὰ ἰδίους ὅλως νόμους. Διὰ δὲ τῆς θεωρίας τοῦ συνθέτου κυττάρου τοῦ Μπάρντ παρέχεται ἡ ἐξήγησις τῆς διαμορφώσεως τῶν δερμοειδῶν κύστεων. Ἐὰν σύμμεικτόν τι κύτταρον δὲν ἀνεπτύχθη καὶ παρέμεινεν ἐγκεκλεισμένον ἐν λανθανούσῃ καταστάσει ἔν τινι ὀργάνῳ, ἀναλαμβάνει ὑπό τινας συνθήκας τὴν διακοπεῖσαν ἐξέλιξίν του, παρέχον γένεσιν πρὸς διαφόρους ἱστούς, οὓς θὰ διεμόρφωνε κατὰ τὴν ἐμβρυϊκὴν του περίοδον, ἂν δὲν διεκόπτετο ἡ ἀνάπτυξίς του. Οὕτως οἱ ἐκ πολλαπλῶν ἱστῶν ὄγκοι προέρχονται ἐκ τοιούτων συνθέτων κυττάρων. Ο.Ρ.

*Λουδοβῖκος Μπάρντ.*

**Μπάρντ-Δαμάνα Μαχαβίρα** *['Ινδ. Θρησκ.]* βλ. λ. *γιανισμός*.

**Μπαρνταΐ** (Bardai) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαῖος σταθμὸς ἐν τῇ ὀάσει τοῦ Τιμπέστι ἐν τῇ Κεντρικῇ Σαχάρᾳ, κείμενος 900 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν καὶ ἔχων σπουδαιοτάτας φυτείας φοινίκων καὶ θερμοπηγάς. Ἔχει 1500 περίπου μονίμους κατοίκους καὶ ὑπάγεται εἰς τὰς γαλλικὰς κτήσεις τῆς Ἀφρικῆς, χρησιμεύει δὲ ὡς κέντρον τοῦ ἐμπορίου καὶ τῶν συγκοινωνιῶν μεταξὺ Μπορνοῦ, Οὐαντὶ καὶ τῶν λοιπῶν χωρῶν τῆς περιοχῆς τῆς Τσάντ. Χ. Δ.

**Μπαρνταμάνα**, ἢ *Μαχαβίρα* *['Ινδ. Θρησκ.]*. Ἱδρυτὴς τοῦ *γιανισμοῦ* (βλ. λ.).

**Μπαρντβάν**, ἢ *Μπουρντβάν* (Bardwan ἢ Burdwan) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διοικήσεως καὶ ἐπαρχίας ἐν τῇ προεδρίᾳ τῆς Βεγγάλης. Ἀποτελεῖται ἐξ 70 περίπου συνοικισμῶν συγκεντρουμένων περὶ τὸ ἀνάκτορον τοῦ μαχαραγιὰ καὶ ἔχει 108 ναούς. Κάτ. (1921) 33.345, ἐξ ὧν τὰ $^3/_4$ Ἰνδοί, οἱ δὲ λοιποὶ Μωαμεθανοί.

—2) Διοίκησις (division) τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Βεγγάλῃ, ἐκτάσεως 36.145 τ. χλμ., κειμένη πρὸς Δ. τοῦ ποταμοῦ Χούγκλι καὶ τοῦ κόλπου τῆς Βεγγάλης καὶ ἔχουσα πλουσιωτάτας καλλιεργείας ὀρύζης, καπνοῦ, σακχαροκαλάμου, ἰνδικοῦ κλπ. καὶ ὀρυχεῖα χρυσοῦ, ἀργύρου, χαλκοῦ κλπ. Ἐπίσης παρὰ τὸ Ρανιγκάνι ἀνορύσσεται γαιάνθραξ. Κάτ. (1921) 8.050.642, κατὰ τὸ πλεῖστον Ἰνδοί, ὑπὲρ τὸ ἓν δὲ ἑκατομμύριον Μωαμεθανοί.

—3) Ἐπαρχία τῆς διοικήσεως Μπαρντβάν, κειμένη περὶ τὴν ὁμώνυμον πόλιν καὶ ἔχουσα ἔκτασιν 4.000 περίπου τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 1.538.371 κατ., κατὰ τὰ $^4/_5$ Ἰνδούς. Χ. Δ.

**Μπαρντὲ** (Bardet), ***Ἐδουάρδος - Γοδεφρῖδος***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ χημικός, γεννηθεὶς ἐν Dreux τῷ 1852 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1923. Ὑπῆρξε διευθυντὴς τοῦ ἐργαστηρίου τοῦ Dujardin-Beaumetz καὶ συνεργάτης τοῦ Martin-Damourette. Ἡ βαθεῖά του ἐπιστημονικὴ μόρφωσις ὡς καὶ αἱ χημικαί του γνώσεις ἤγαγον τοῦτον πρὸς τὸν κλάδον τῆς θεραπευτικῆς καὶ πρὸς ἰατροχημικὰς ἐρεύνας. Οὕτω μετὰ τοῦ Trillat ἀνεκάλυψε τὰς ἰδιότητας τῆς ἑξαμεθυλενοτετραμίνης, ἣν εἰσήγαγεν εἰς τὴν θεραπευτικὴν ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν φορμίνη, ἀλλ' ἥτις διεδόθη εἰσαχθεῖσα βραδύτερον ἐκ Γερμανίας μὲ τὸ ὄνομα τῆς ουροτροπίνης. Ὁ αὐτὸς εἰσήγαγεν ἐν Γαλλίᾳ τὴν πυραμιδόνην, μετὰ δὲ τοῦ Albert-Robin τὴν χρῆσιν εἰς τὴν ἰατρικὴν τῶν κολλοειδῶν μετάλλων, αὐτὸς δὲ πρῶτος ἔθεσε τὰς ἀρχὰς τῆς χημειοθεραπείας. Πρὸς μελέτην τῶν ἰαματικῶν ὑδάτων διέτρεξε τὴν Γαλλίαν, τὴν Γερμανίαν, τὴν Βοημίαν καὶ τὴν Ἰταλίαν, ἱδρύσας ἐν Παρισίοις τὸ ὑδρολογικὸν ἰνστιτοῦτον. Συντάκτης τοῦ «Λεξικοῦ θεραπευτικῆς καὶ ἰατρικῆς» τοῦ Dujardin-Beaumetz, ἀρχισυντάκτης τοῦ «Θεραπευτικοῦ δελτίου», τῶν «Νέων φαρμάκων» καὶ τῆς «Ἐπιστημονικῆς ἐκλαϊκεύσεως» καὶ διευθυντὴς τοῦ «Savoir» παρήγαγε πληθὺν ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν, ὧν αἱ κυριώτεραι εἶναι: «Traité d'électricité médicale», «Notions d' hydrologie moderne», «Villes d' eaux de France et d' Allemagne», «Stations d' Allemagne et de Bohême», «Régime des arthritiques», ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Bouloumié «Alimentation rationelle» κλπ. Ο. Ρ.

**Μπαρντελέμπεν** (von Bardeleben), ***Ἐρρῖκος-Ἀδόλφος***. Γερμανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Φραγκφούρτῃ (1819 — 1895). Διετέλεσε κατ' ἀρχὰς μαθητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν Γκραϊσβάλδῃ, δίδαξας ἐκτὸς ταύτης καὶ ἄλλους κλάδους τῆς ἰατρικῆς. Τῷ 1868 διεδέχθη ἐν Βερολίνῳ τὸν καθηγητὴν Jüngen, ἀσχοληθεὶς μεταξὺ ἄλλων καὶ εἰς τὴν τροποποίησιν καὶ ἁπλοποίησιν τῆς ἀντισηπτικῆς θεραπείας τῶν τραυμάτων, δι' ὧν παρέσχε πλείστας ὑπηρεσίας εἰς τὸ κεφάλαιον τοῦτο τῆς χειρουργικῆς. Ὡς θεράπων ἰατρὸς τοῦ αὐτοκράτορος Φρειδερίκου τοῦ Γ' τῷ 1888 ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ εὐγενοῦς. Ἀνῆκεν εἰς τὴν χορείαν τῶν διαπρεπῶν χειρουργῶν καὶ διδασκάλων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ὑπῆρξεν ἱδρυτὴς καὶ πρόεδρος τῆς «Γερμανικῆς ἑταιρείας τῆς χειρουργικῆς» καὶ ἐπὶ μακρὸν προήδρευσε τῆς «Ἰατρικῆς Ἑταιρείας Βερολίνου», αἱ δὲ ἀνακοινώσεις αὐτοῦ ἐν ταύτῃ ἐμπεριέχονται ἅπασαι ἐν τῇ βερολιναίᾳ ὡς καὶ ἐν τῇ γερμανικῇ «Ἑβδομαδιαίᾳ Ἰατρικῇ Ἐπιθεωρήσει». Ἐκτὸς τῶν διαφόρων αὐτοῦ ἐπιστημονικῶν πραγματειῶν ἀναφέρομεν καὶ τὸ ὀγκῶδες σύγγραμμα αὐτοῦ τῆς «Χειρουργικῆς καὶ ἐγχειρητικῆς» (Βερολῖνον 1879). Ο. Ρ.

—**Μπαρντελέμπεν** (Bardeleben), ***Κάρολος-Ἐρρῖκος***. Διαπρεπὴς Γερμανὸς ἀνατόμος, υἱὸς τοῦ *Ἐρρίκου - Ἀδόλφου Μπάρντελέμπεν*, γεννηθεὶς ἐν Γκίσσεν τῷ 1849. Διετέλεσε βοηθὸς τοῦ His ἐν Λειψίᾳ, εἶτα τῷ 1873 ἐγένετο ἐπιμελητής, τῷ 1878 ἔκτακτος καὶ τῷ 1888 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἰένης. Τῷ 1898 ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ αὐλικοῦ συμβούλου. Ἔγραψε μέγαν ἀριθμὸν λίαν ἐνδιαφερουσῶν πραγματειῶν εἰς τὸν κλάδον τῆς ἀνατομικῆς ὡς καὶ πραγματείας περὶ τοῦ Γκαῖτε ὡς ἀνατόμου («Goethe als Anatom», 1892, «Goethes anatomische Schriften», 1893). Ὑπῆρξε συνεργάτης εἰς τὰ «Πρακτικὰ ἀνατομικῆς» τοῦ v. Hofmann καὶ Schwalbe, εἰς τὸ Βιογραφικὸν λεξικὸν ἰατρῶν (1884), εἰς τὴν πρακτικὴν ἐγκυκλοπαίδειαν τοῦ Eulenburg, εἰς τὸ σύγγραμμα τῆς Χειρουργικῆς τοῦ πατρός του, ὡς καὶ εἰς τὰ «Πρακτικὰ ἀνατομικῆς» τοῦ Merkel καὶ Bonnet. Ἵδρυσε τὴν Ἀνατομικὴν ἑταιρείαν Ἰένης καὶ ἐξέδιδε τὰ πρακτικὰ ταύτης. Πλὴν τούτων συνέγραψε «Γενικὴν ἀνατομικὴν καὶ ἱστολογίαν τῶν ὀστῶν» (1887), «Ἄτλαντα τοπογραφικῆς ἀνατομικῆς τοῦ ἀνθρώπου» μετὰ τοῦ Haekel (1894) καὶ «Ἀνατομικὴ τοῦ ἀνθρώπου» (ὀκτάτομον, 1896). Ο.Ρ.

**Μπαρντὲν** (Bardin), ***Ἰωάννης***. Γάλλος ζωγράφος (1732—1809). Διετέλεσε μαθητὴς τοῦ Λαγκρενέ, ἐτιμήθη δὲ διὰ τοῦ βραβείου τῆς Ρώμης καὶ ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ζωγραφικῆς τῷ 1788. Ἦτο ἐπιδέξιος καλλιτέχνης, ἡ κατάπτωσις ὅμως ἡ χαρακτηρίζουσα τὴν γαλλικὴν ζωγραφικὴν κατὰ τοὺς χρόνους τῆς ἐπαναστάσεως ἔχει καὶ ἐπ' αὐτοῦ ἐπιδράσει ζωηρῶς. Κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Ἀνδρέου» (1770), «Ἡ ἁγία Αἰκατερίνη ἐν τῷ μέσῳ τῶν ἰατρῶν» (1779), «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων» (1781), «Ἡ Ἀνδρομάχη κλαίουσα ἐπὶ τῆς τέφρας τοῦ Ἕκτωρος», «Ἡ ἁρπαγὴ τῶν Σαβίνων» κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπάρντενχόϋερ** (Bardenheuer), ***Βερνάρδος***. Γερμανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Lamersdorf τῷ 1839. Τῷ 1884 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν τῇ πανεπιστημιακῇ σχολῇ τῆς Κολωνίας. Τῷ 1895 ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ μυστικοσυμβούλου ἰατροῦ. Ἔγραψε πλεῖστα χειρουργικὰ θέματα ἀφορῶντα τὴν παροχέτευσιν τῆς περιτοναϊκῆς κοιλότητος, νεφρεκτομάς, λαρυγγεκτομάς, ἐκτομὰς τῆς ἄνω καὶ κάτω γνάθου, ἀρθρεκτομάς, ὁλικὴν ἐκτομὴν τῆς κατ' ἰσχίον ἀρθρώσεως, θεραπείαν καταγμάτων καὶ ἐξαρθρημάτων κλπ. Ἐπίσης εἰς τὴν χειρουργικὴν τοῦ Billroth-Lücke ἐπραγματεύθη τὸ περὶ τραυματισμοῦ τῶν ἄκρων κεφάλαιον. Ἡ μέθοδος *Μπάρντενχόϋερ* ἀφορᾷ τροποποίησιν τῆς ἐγχειρήσεως Kraske, καθ' ἣν τὸ ἱερὸν ὀστοῦν τέμνεται ἐγκαρσίως ἀμέσως κάτωθεν τοῦ 3ου ἱεροῦ τρήματος, πρὸς μείζονα διεύρυνσιν τοῦ ἐγχειρητικοῦ πεδίου. Ο. Ρ.

**Μπαρντέρα** (Bardera) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀν. Ἀφρικῆς, ἐν τῇ ἰταλικῇ *Σομαλίᾳ*, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Τζιούμπα, εἰς ἀπόστασιν 300 χλμ. ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς του. Κάτ. 2.000. Εἶναι πρωτεύουσα διοικητικῆς περιοχῆς καὶ ἕδρα Ἰταλοῦ ἀντιπροσώπου, διαμένοντος μετὰ τῶν ἄλλων Εὐρωπαίων εἰς ἰδιαιτέραν συνοικίαν μὲ λιθοκτίστους οἰκοδομάς, ἐνῷ αἱ κατοικίαι τῶν ἰθαγενῶν εἶναι καλύβαι περιβαλλόμεναι ὑπὸ τείχους. Ἐκτίσθη τῷ 1819 ὑπὸ τοῦ ἰθαγενοῦς ἀρχηγοῦ Μογκαντίγκο καὶ ἦτο κλειστὴ εἰς τοὺς Εὐρωπαίους μέχρι τοῦ 1893. Τῷ 1865 ἐσφάγη ἐν αὐτῇ ὁ περίφημος ἐξερευνητὴς βαρῶνος Κάρολος Κλάους φὸν ντὲρ Ντέκκεν. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπαρντζίνσκι** (Bardzinski), ***Ἰωάννης - Ἄλαν.*** Πολωνὸς θεολόγος καὶ λογοτέχνης (1657—1708). Ἐσπούδασεν εἰς Βαρσοβίαν καὶ ἀνεκηρύχθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς θεολογίας, εἶτα δὲ τακτικὸς τοιοῦτος εἰς Κρακοβίαν καὶ Λουμπλῖνον. Ἔγραψεν εἰς τὴν πολωνικὴν πλεῖστα ἔργα καὶ λατινιστὶ ἔμμετρά τινα πονημάτια (Breve compendium summae Angelicae, Ordo ac series summorum Pontificum romanorum). Μετέφρασε καὶ ἔργα τοῦ Λουκάνο, Σενέκα καὶ Βοηθίου. Διεκρίθη ἐπίσης ὡς εὔγλωττος ῥήτωρ. Χ. Δ.

**Μπάρντι** (Bardi), ***Ἐρρῖκος - Κάρολος - Λουδοβῖκος, πρίγκιψ τῶν Βουρβόνων, κόμις τοῦ —.*** Ἰνφάντης τῆς Ἱσπανίας, πρίγκιψ τῆς Πάρμας, τῆς Πλακεντίας καὶ τῆς Γκουαστάλλας (1851—1905). Ἦτο δεύτερος υἱὸς τοῦ δουκὸς τῆς Πάρμας, δολοφονηθέντος τῷ 1854, καὶ ἀνεψιὸς τοῦ κόμιτος τοῦ Σάμπορντ, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἐκληρονόμησε τὸν ὁμώνυμον πύργον. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῶν Καρλιστῶν, τῷ 1875, ἐπολέμησεν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ δὸν Κάρλου καὶ διεκρίθη εἰς τὴν ἐν Λάκαρ συγκροτηθεῖσαν μάχην. —Ω.

—**Μπάρντι** (Bardi), ***Ἰωάννης, κόμις τοῦ Βέρνιο.*** Ἰταλὸς εὐγενής, ποιητὴς καὶ μουσικὸς (1534—1612). Τὸ ἐν Φλωρεντίᾳ ἀνάκτορόν του εἶχε γίνει, περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, τὸ ἐντευκτήριον τῶν διανοουμένων τῆς ἐποχῆς του. Εἰς τὸν Μπάρντι καὶ τὸν περὶ αὐτὸν ὅμιλον ὀφείλεται ἡ δημιουργία τοῦ μελοδράματος, κατ' ἀπομίμησιν τῆς ἀρχαίας τραγῳδίας. Ἐκ δύο περισωθέντων πενταφώνων μαδριγαλίων ἀποδεικνύεται ὅτι ὁ Μπάρντι ἦτο ἐπίσης ἱκανώτατος μουσικὸς (βλ.λ. *μελόδραμα*). Γ.Σ.

**Μπαρντίλι** (Bardili), ***Χριστόφορος - Γοδεφρεῖδος.*** Γερμανὸς φιλόσοφος (1761—1808). Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων του εἶναι «Λογική, ἀπηλλαγμένη τῶν σφαλμάτων, τὰ ὁποῖα τὴν μετεμόρφωσαν, ἰδίᾳ δὲ τῶν πλανῶν τῆς λογικῆς τοῦ Καντίου» (1800). Ἀξιόλογοι εἶναι ἐπίσης αἱ πραγματεῖαι: «Νόμοι τοῦ συνειρμοῦ τῶν ἰδεῶν», «Περὶ τῆς ἀρχῆς καὶ τῆς ἰδέας τοῦ αὐτεξουσίου», «Γενικὴ πρακτικὴ φιλοσοφία». Α. Δ.

**μπαρντίλιο** (τὸ) (Bardiglio). Ὀνομάζεται οὕτως ἡ σκοτεινόχρους παραλλαγὴ τῶν μαρμάρων τῆς Καρράρας ἐν Ἰταλίᾳ (βλ. λ. *μάρμαρον*). Γ. Β.

**Μπαρντὶς** (Bardis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Αἰγύπτου ἐν τῇ μουδιρίᾳ Γκιργκὲ παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Νείλου. Κάτ. 6.200. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῆς παρ' αὐτὴν νίκης τῶν Γάλλων τοῦ Ναπολέοντος ἐναντίον τῶν Αἰγυπτίων τῆς 6 Ἀπριλίου 1799. Χ.Δ.

**Μπάρντο** (Bardo) *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Τύνιδος, εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. πρὸς τὰ ΒΔ. αὐτῆς. Συνδέεται διὰ σιδηροδρόμου μετὰ τῆς πρωτευούσης καὶ εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὸ ἐν αὐτῷ ἀνάκτορον τοῦ βέη τῆς Τύνιδος, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπεγράφη ἡ συνθήκη τοῦ Μπάρντο (βλ. κατωτέρω). Τὸ ἀνάκτορον εἶναι ἐκ τῶν πολυτελεστέρων, περιέχον μεγάλης ἀξίας πίνακας ζωγραφικῆς, τάπητας καὶ ἄλλας διακοσμήσεις, καθὼς καὶ ἐνδιαφέρον μουσεῖον.

— **Μπάρντο** (Bardo) ***συνθήκη.*** Οὕτω καλεῖται περιληπτικῶς ἡ ἐν *Κὰσρ-ἐλ-Σάϊτ-Μπάρντο* (Casr-el Said Bardo) συνομολογηθεῖσα συνθήκη τῇ 12 Μαΐου 1881 μεταξὺ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως καὶ τοῦ βέη τῆς Τύνιδος, δι' ἧς ἡ Τύνις κατέστη γαλλικὸν προτεκτορᾶτον. Ἐν τῷ προοιμίῳ τῆς συνθήκης ταύτης δηλοῦται ὅτι τὰ συμβαλλόμενα μέρη κατήρτισαν τὴν συνθήκην ταύτην ἐκ τῆς ἐπιθυμίας ὅπως ἀποφευχθῇ διὰ παντὸς «ἡ ἐπανάληψις τῶν διχονοιῶν αἵτινες προεκλήθησαν» μεταξύ των καὶ ἐπανανεώσωσι «τὰς παλαιάς των σχέσεις φιλίας καὶ καλῆς γειτονίας». Ἡ συνθήκη αὕτη ἀποτελεῖται ἐξ 9 ἄρθρων ἐν ὅλῳ, ἐκ τοῦ συνδυασμοῦ τῶν ὁποίων καταδείκνυται ἡ κατάστασις τοῦ προτεκτοράτου, εἰς ἣν περιέπεσεν ἡ Τύνις διὰ τῆς τοιαύτης συμβάσεως. Οὕτω διὰ τοῦ ἄρθρου 6 ὁρίζεται ὅτι «οἱ διπλωματικοὶ πράκτορες καὶ πρόξενοι τῆς Γαλλίας εἰς ξένα κράτη ἐπιφορτίζονται διὰ τῆς προστασίας τῶν συμφερόντων τῆς Τύνιδος καὶ τῶν ὑπηκόων τῆς ἀντιβασιλείας», ἐξ οὗ καταδηλοῦται ὅτι ἡ Τύνις ἀπεδέχετο νὰ παραιτηθῇ τοῦ δικαιώματος αὐτῆς ν' ἀποστείλῃ ἰδίους διπλωματικοὺς καὶ προξενικοὺς ὑπαλλήλους ἐν τῷ ἐξωτερικῷ. Διὰ τοῦ αὐτοῦ ἄρθρου, ἐξ ἄλλου, ὁ βέης τῆς Τύνιδος «ὑπεχρεοῦτο νὰ μὴ συνομολογήσῃ πρᾶξίν τινα διεθνοῦς φύσεως πρὶν γνωρίσῃ τοῦτο εἰς τὴν γαλλικὴν κυβέρνησιν καὶ πρὶν ἐπέλθῃ μετ' αὐτῆς συμφωνία»· οὕτως ἀπώλετο ἕτερον δικαίωμα τῆς Τύνιδος τοῦ νὰ συνάπτῃ ἀπ' εὐθείας συνθήκας μετὰ ξένων κρατῶν, μόνον τῆς Γαλλίας δικαιουμένης νὰ συνθηκολογῇ διὰ λογαριασμὸν αὐτῆς. Διὰ τοῦ ἄρθρου 5 τῆς αὐτῆς συνθήκης ὡρίσθη ὅτι ἡ «γαλλικὴ κυβέρνησις θέλει ἀντιπροσωπεύεσθαι παρὰ τῷ βέῃ τῆς Τύνιδος διὰ γενικοῦ διοικητοῦ, ὅστις θὰ ἐπαγρυπνῇ ἐπὶ τῆς ἐκτελέσεως τῆς παρούσης πράξεως καὶ θὰ εἶναι ὁ μεσάζων μεταξὺ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως καὶ τῶν ἀρχῶν τῆς Τύνιδος ἐπὶ πάσης κοινῆς ὑποθέσεως»· οὕτω πως ὁ παρὰ τῷ βέῃ Γάλλος ἀντιπρόσωπος ἀνεγνωρίζετο συγχρόνως ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Τύνιδος. Διὰ τοῦ 3 ἐξ ἄλλου ἄρθρου τῆς συνθήκης ἡ Γαλλία ἀνελάμβανε νὰ παράσχῃ πᾶσαν ἀρωγὴν εἰς τὸν βέην τῆς Τύνιδος προκειμένου περὶ παντὸς κινδύνου, ὅστις θὰ ἠπείλει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἢ τὴν δυναστείαν του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Bahar*, Le protectorat Tunisien (1901). Τὸ κείμενον τῆς ἐν λόγῳ συνθήκης βλ. παρὰ *Fleischmann*, Völkerrechtsquellen (1905, σ. 168 ἑπ.). Η. Γ. Κ.

**Μπάρντολι** (Bardoli), ***Δανιήλ.*** Ἐγεννήθη εἰς Φερράραν τῷ 1608. Τῷ 1623 εἰσῆλθεν ὡς ἱεροκῆρυξ εἰς τὸ τάγμα τῶν Ἰησουϊτῶν, ἐκθέσας μάλιστα εἰς ἔργον του τὰς πράξεις τούτων εἰς τὰ διάφορα μέρη τοῦ κόσμου. Τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ μᾶλλον ὡς ἐγκωμιαστικὸν παρὰ ὡς ἱστορικὸν δύναται νὰ θεωρηθῇ, ἔχει χαρίσματα ἐξαιρετικά. Ὁ Μπάρντολι ἔγραψε καὶ διάφορα ἔργα ἐπιστημονικά, ἠθικὰ καὶ φιλολογικά. Τὸ ἔργον αὐτοῦ «Torto e Diritto», ὅπερ ἐξεδόθη ὑπὸ ψευδώνυμον, ἐθεωρήθη ὑπὸ πολλῶν ὡς ὑψῶνον τὴν σημαίαν τῆς ἀκολασίας, τὸ δὲ «Περὶ τῆς ἰταλικῆς ὀρθογραφίας» θεωρεῖται ὡς ἓν ἐκ τῶν ὡραιοτέρων ἔργων του. Ἀπέθανε τῷ 1685. Γ. ΣΠ.

**Μπαρντονέκκια** (Bardonecchia) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἰταλίας, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Τουρίνου. Κάτ. 740. Ἀποτελεῖ τὸν ἀκρότατον σιδηροδρομικὸν σταθμὸν τῆς Ἰταλίας πρὸς τὴν Γαλλίαν. Κεῖται παρὰ τὸν ὁμώνυμον μικρὸν ποταμόν, εἰς ὕψος 1312 μ. εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ αὐχένος τοῦ Φρεζοὺς καὶ τοῦ ὄρους Σενίς, κάτωθεν τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ἡ σῆραγξ Φρεζοὺς μήκους 12.849 μ., δι' ἧς διέρχεται ὁ σιδηρόδρομος Τουρίνου-Μοδάνας. Τὸ χωρίον ἀπέβη κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ὁ σημαντικώτερος τῆς περιοχῆς τόπος θερινῆς διαμονῆς καὶ χειμερινῶν σπόρ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχει μνημεῖον ἀνεγερθὲν τῷ 1881 πρὸς τιμὴν τοῦ μηχανικοῦ τῆς σήραγγος Φρεζούς, Μοντάϊγ. Μ. Δ. Β.

**Μπαρντοννὼ** (Bardonnaut), ***Μαρκελῖνος.*** Γάλλος μηχανικὸς καὶ συγγραφεὺς (1792—1873). Ἐκτὸς τῶν ἐπὶ ἐπιστημονικῶν θεμάτων πραγματειῶν του ἔγραψε καὶ διάφορα λογοτεχνικὰ καὶ φιλοσοφικὰ ἔργα, τῶν ὁποίων γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Σκέψεις ἠθικοπολιτικαί» (1848), «Τὸ διαμάντι» (1854), συλλογὴ διηγημάτων καὶ «Συνέχεια στὸ διαμάντι» (1864), «Οἰκογενειακαὶ συζητήσεις» (1856—1862, 2 τόμοι), «Μελέτη περὶ τῶν εἰσακτέων εἰς τὴν ἐκπαίδευσιν μεταρρυθμίσεων» (1858), «Δραματικαὶ σκηναὶ καὶ παροιμίαι» (1868), «Μικρὸν πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν λεξικὸν τῶν εὐχρηστοτέρων εἰς τὴν θρησκευτικήν, ἠθικὴν καὶ πολιτικὴν φιλολογίαν λέξεων» (1872) κ. ἄ. Ἐκ τῶν ἔργων τούτων ἄλλα μὲν ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Μιλνὰρ Μπωραντὸν* (Baurandont), ἄλλα δὲ ὡς «εἷς παλαιὸς μηχανικὸς γεφυροποιός». Χ. Δ.

**Μπαρντοὺ** (Bardoux), ***Ἀγήνωρ.*** Γάλλος νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1829—1897). Ἀσκῶν τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ἐν Κλερμὸν-Φεράν, διεκρίθη κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας διὰ τὰς φιλελευθέρας ἀρχάς του καὶ ἐξελέγη τῷ 1871 ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν. Τῷ 1875 ἐχρημάτισεν ἐπὶ βραχὺ διάστημα ὑφυπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης. Ἐκλεγεὶς τὸ ἴδιον ἔτος βουλευτής, κατέστη εἷς ἐκ τῶν σημαντικωτέρων ἀρχηγῶν τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος, ἐγένετο δὲ μετά τινα χρόνον ὑπουργὸς τῆς Παιδείας ἐν τῇ κυβερνήσει Ντυφὼρ (1877—1879). Ἀποτυχὼν κατὰ τὰς ἑπομένας ἐκλογάς, ὠνομάσθη ἰσόβιος γερουσιαστὴς τῷ 1882. Ἀπὸ τοῦ 1890 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Μπαρντοὺ διαπρέψας ὡς ῥήτωρ ἐν τῷ πολιτικῷ αὐτοῦ σταδίῳ, διεκρίθη ἐπίσης καὶ ὡς συγγραφεὺς πολλῆς ἀξίας. Ἔγραψεν: «Οἱ νομικοὶ καὶ ἡ ἐπίδρασίς των ἐπὶ τῆς γαλλικῆς κοινωνίας», «Ἡ κόμισσα Παυλίνα ντὲ Μπωμόν», «Ἡ γαλλικὴ ἀστικὴ τάξις ἀπὸ τοῦ 1789 μέχρι τοῦ 1848» κ. λ. π.

— **Μπαρντοὺ** (Bardoux), ***Ἰάκωβος.*** Σύγχρονος Γάλλος δημοσιολόγος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1874. Σπουδάσας νομικὰ καὶ φιλολογίαν ἐν Παρισίοις καὶ Λονδίνῳ, διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ ἐλευθέρᾳ σχολῇ τῶν πολιτικῶν ἐπιστημῶν καὶ συντάκτης ἐπὶ τῆς ἐξωτερικῆς πολιτικῆς ἐν τῇ «Ἐφημερίδι τῶν Συζητήσεων», ὑπῆρξε δὲ εἷς τῶν πρωτεργατῶν τῆς ἱδρύσεως τῶν λεγομένων λαϊκῶν πανεπιστημίων ἐν Γαλλίᾳ. Ἔγραψεν ἔργα ἀναφερόμενα ἰδίως εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὰ ζητήματα τῆς Μ. Βρεττανίας, ἐν οἷς: «Δοκίμιον ψυχολογίας τῆς συγχρόνου Ἀγγλίας» (3 τόμοι), «Ἡ βασίλισσα Βικτωρία» (4 τόμ.), «Ὁ Ἄγγλος ἐργάτης τῆς σήμερον», «Ἀναμνήσεις ἐξ Ὀξφόρδης» κ.λ.π. —Ω.

**Μπάρντσυ** (Bardsey) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νησὶς τῆς Οὐαλλίας, κειμένη ἐγγύτατα τῆς παραλίας καὶ ἀποτελοῦσα γεωγραφικῶς προέκτασιν τῆς λοφοσειρᾶς τῆς κομιτείας Κάρναρβον. Σήμερον φέρει ἐπ' αὐτῆς φάρον καὶ κατοικεῖται ὑπὸ τῶν φαροφυλάκων καὶ πεντηντάδος περίπου ἄλλων κατοίκων, τὸ πλεῖστον ἁλιέων. Πάμπολλαι μεσαιωνικαὶ παραδόσεις ἐκ τῶν περὶ τὸν μάγον Μερλῖνον καὶ τοὺς ἱππότας τῆς Στρογγύλης τραπέζης συνδέονται μὲ τὴν νησῖδα ταύτην. Χ. Δ.

**Μπαρὸ** (Baro), ***Βαλτάσαρ.*** Γάλλος ποιητὴς καὶ μυθιστοριογράφος, ἀποθανὼν τῷ 1649 ἢ 1650. Ἦτο ἐκ τῶν πρώτων μελῶν τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, διετέλεσε δὲ καὶ γραμματεὺς τοῦ Ὀνωρίου ντ' Ὑρφέ, συγγραφέως τοῦ ἔργου «Ἀσ..., τοῦ ὁποίου τὸ μὲν τέταρτον μέρος ἐδημοσ... μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ὑρφέ, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ... λειφθέντων χειρογράφων, τὸ δὲ πέμπτον καὶ τε... ταῖον ἔγραψεν ἐξ ἰδίας ἐμπνεύσεως. Ἐκ τῶν ... ἔργων αὐτοῦ σώζονται ὀλίγα ποιήματα καὶ ... τραγῳδίαι, ἱλαροτραγῳδίαι καὶ ποιμενικὰ εἰδ... μὲ τοὺς ἑξῆς τίτλους: «Célinde» (1629), «la C...rise» (1631), «Saint-Eustache» (1648), «Caris... les Charmes de la beauté» (1651), «Rosemon...» (1651) καὶ «L'amant vindicative» (1652). Χ. Δ.

— **Μπαρὸ** (Barot), ***Φραγκῖσκος - Ὀδυσσεύς.*** Γάλλος λογοτέχνης καὶ δημοσιογράφος (1830—1...). Τῷ 1855 ἵδρυσε τὴν ἐπιθεώρησιν «Revue des cours scientifiques et littéraires» καὶ συνειργάσθη εἰς πλείστας ἐφημερίδας («Presse», «Liberté», «France», «Marseillaise» κ. ἄ.). Ἔγραψε: «Lettres sur la philosophie de l'histoire» (1864), «Émile de Girardin» (1866), «Histoire de la littérature contemporaine en Angleterre» (1874) καὶ πολυάριθμα μυθιστορήματα. Χ. Δ.

**Μπαροβίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Καστανερὴ* (...).

**Μπαρόγκα** (οἱ). Λαὸς τῆς ἀνατολικῆς πορτογαλλικῆς Ἀφρικῆς, κατοικῶν περὶ τὸν κόλπον τῆς Ντελαγκόας. Ἀνήκει εἰς τὴν μεγάλην γλωσσικὴν οἰκογένειαν τῶν *Μπαντοὺ* (βλ. λ.) καὶ περιλαμβάνει τὰ φῦλα τῶν *Μαποῦτος, Τέμπες, Ματόλος, Μ...μπας, Μαμπότας* καὶ *Μανίκας*. Τὸ σύνολόν τ... ἀνέρχεται εἰς 100.000 περίπου ἀτόμων, ῥωμαλ... κατὰ τὸ σῶμα, ὑψηλοῦ ἀναστήματος καὶ εὐφ... φυσιογνωμίας, τῶν ὁποίων τὸ χρῶμα ποικίλ... ἀπὸ τοῦ βαθέος καστανοῦ μέχρι τοῦ μέλανος. Κατοικοῦσιν εἰς μικρὰς στρογγύλας καλύβας ... ἀσχολοῦνται εἰς τὴν γεωργίαν, τὴν διατροφὴν ... μνίων καὶ τὴν καλαθοπλεκτικήν, αἱ δὲ γυναῖ...των καὶ εἰς τὴν ἀγγειοπλαστικήν. Ἡ θρησκεία τ... εἶναι εἶδος προγονολατρείας. Ἡ καταγωγή τ... φαίνεται ὅτι ἀνάγεται εἰς αὐτόχθονα λαὸν ...χθέντα μετὰ τῶν Ζουλού. ...

**μπαρὸκ** (γαλλ. καὶ ἀγγλ. baroque, ἰταλ. baroc..., ἱσπαν. barroco, γερμαν. barock). Διὰ τοῦ ὀνόματος τούτου χαρακτηρίζεται ὁ σύνθετος καλλιτεχνικὸς ῥυθμός, ὁ κρατήσας κατὰ τὴν μακρὰν περίοδον, ἥτις, διαδεχθεῖσα ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος τὴν λαμπρὰν δημιουργικὴν ἐπανάστασιν τῆς ἀν...γεννήσεως, διήρκεσε μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Τὸ μπαρὸκ ἐκπροσωπεῖ μίαν ἐποχὴν ...κμῆς, καθ' ἣν οἱ καλλιτέχναι τῆς Εὐρώπης ... ρούμενοι ἰσχυρᾶς δημιουργικότητος, παρακο...θοῦσιν, ὡς μικροὶ μεγάλον, τὸ ἔργον τοῦ μεγάλου καλλιτέχνου τῆς Ἀναγεννήσεως Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Γενικῶς τὸ μπαρὸκ χαρακτηρίζει τι τὸ βαρύ, ἀκανόνιστον καὶ θεατρικόν, ἐπιδεικτικόν, ἀντίθετον πρὸς τοὺς κλασσικοὺς τῆς τέχνης κα...νας. Ἡ παραγωγὴ τοῦ ὀνόματος προῆλθε, κατὰ τὴν ἐπικρατεστέραν γνώμην, ἐκ τῆς πορτογαλλικῆς λέξεως barroco, δι' ἧς οἱ κοσμηματοπῶλαι ... μαζον τοὺς ἀκατεργάστους καὶ ἀκανονίστους μαργαρίτας.

Ὁ ῥυθμὸς μπαρὸκ ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ... Ἰταλίᾳ, ἡ ὁποία ἐξηκολούθει καὶ μετὰ τὴν Ἀναγέννησιν νὰ κατέχῃ ἐπὶ μακρὸν τὰ σκῆπτρα ... ἐν Εὐρώπῃ καλλιτεχνικῆς κινήσεως. Ἐν αὐ... συνέρρεον οἱ μεγαλύτεροι ξένοι ζωγράφοι, ἀρχιτέκτονες καὶ γλύπται, διὰ νὰ λάβωσι τὸ χρίσμα ... τέχνης, οἱ δὲ Ἰταλοὶ συνάδελφοί των ἦσαν περιζήτητοι εἰς ὅλας τὰς αὐλὰς καὶ τὰ μεγάλα ἔρ... προτιμώμενοι τῶν πρώτων, ἂν καὶ πολλάκις κατώτεροί των. Χαρακτηριστικὸν τῆς τοιαύτης ... τοὺς Ἰταλοὺς καλλιτέχνας ἐμπιστοσύνης εἶναι ... ὅτε ἡ Μαρία τῶν Μεδίκων, ἡ ὁποία ἄλλωστε ... Ἰταλίς, ἠθέλησε νὰ ἀναθέσῃ εἰς τὸν μέγαν Φλαμανδὸν ζωγράφον Ρούμπενς τὴν διακόσμησιν τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Λουξεμβούργου, ὁ Ρισελιὲ συ...στησεν εἰς αὐτὴν νὰ προτιμήσῃ Ἰταλὸν καλλιτέχνην καὶ ὅτι βραδύτερον ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' με...κάλεσε τὸν Μπερνίνι διὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τοῦ Λούβρου. Τοιουτοτρόπως λοιπὸν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας ... χάρις εἰς τὴν μεγάλην φήμην τῶν καλλιτεχνῶν ... τῆς, διεδόθη βαθμηδὸν ἡ τεχνοτροπία τοῦ μπαρὸκ καὶ εἰς τὴν λοιπὴν Εὐρώπην, ἰδίως δὲ εἰς τὴν Γαλλίαν, τὴν Γερμανίαν, τὴν Ἱσπανίαν καὶ Ὁλλανδίαν. Εἰς τὴν πρώτην ἐκ τῶν χωρῶν τούτων ... χάρις εἰς τὴν μεγάλην καλλιτεχνικὴν ὤθησιν, ἥτις ἐδόθη ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ τῶν διαδόχων του, ... διεμορφώθη βαθμηδὸν (μέσα ΙΗ' αἰῶνος) ὁ συ...χειαν τοῦ μπαρὸκ ἀποτελῶν λεπτὸς διακοσμητικὸς ῥυθμὸς τοῦ *ῥοκοκὸ* (βλ. λ.), ὅστις ἔδωσε τὰ ... ἀριστουργήματα διακοσμητικῆς γλυπτικῆς, ἐπιπλοποιίας καὶ χρυσοχοΐας, τὰ κοσμοῦντα τὰ πολυάριθμα ἀνάκτορα τῶν Παρισίων (Βερσαλλιῶν, Κομπιενικοῦ, Τριανὸν κλπ.). Καὶ εἰς πάσας δὲ σχεδὸν τὰς λοιπὰς χώρας τῆς Εὐρώπης (Ἀγγλίαν, ...κὰς χώρας, Πολωνίαν κλπ.) ζωηρὰ ἐπίσης ... ξεν ἡ διάδοσις τοῦ μπαρόκ, ὑφισταμένου ... τὴν τοπικὴν ἐπίδρασιν καὶ προσαρμοζομένου ... τὰς τοπικὰς συνηθείας.

Τὴν κυρίαν ἐκδήλωσιν τοῦ ῥυθμοῦ μπαρὸκ, ἥτις ..., εὑρίσκομεν εἰς τὴν ἀρχιτεκτονικήν,

Digitized by Google

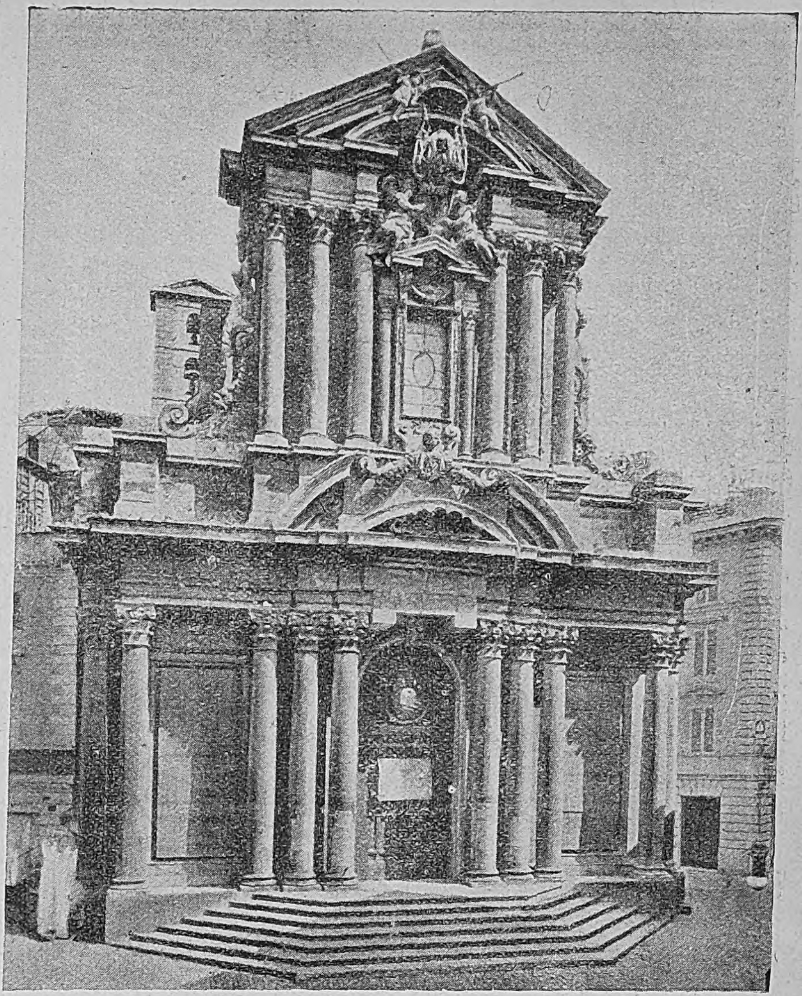

1) *Κάρλο Μαντέρνα:* Πρόσοψις τοῦ ναοῦ τῆς Ἁγίας Σουζάνης ἐν Ρώμῃ. 2) *Μαρτίνο Λόνγκι ἰλ Τζιοβάνε:* Πρόσοψις τοῦ ναοῦ τῶν Ἁγίων Βικεντίου καὶ Ἀναστασίου ἐν Ρώμῃ.

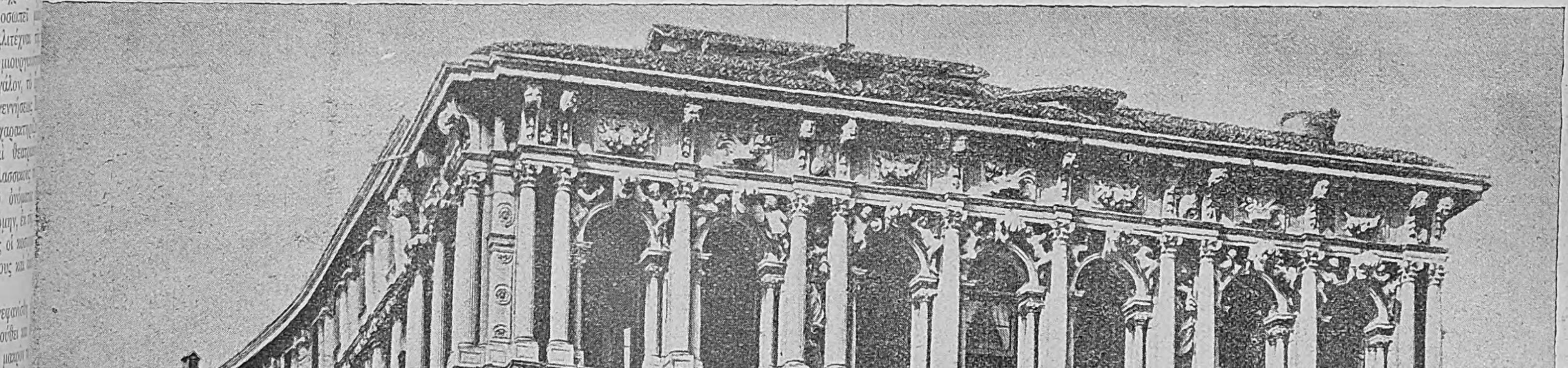

*Μπαλντασσάρι Λονγκένα:* Τὸ ἀνάκτορον Πέζαρο ἐν Βενετίᾳ.

Digitized by Google

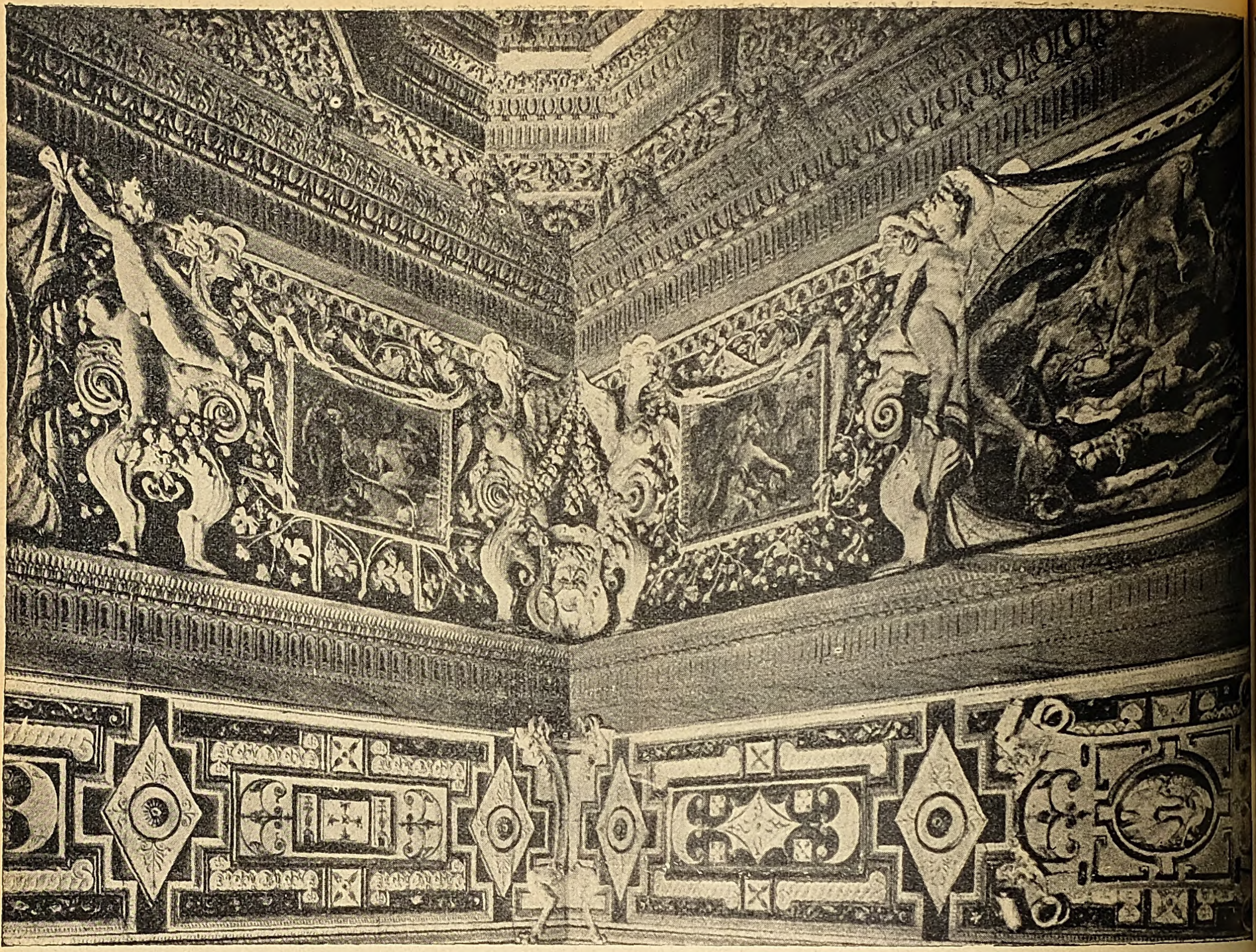

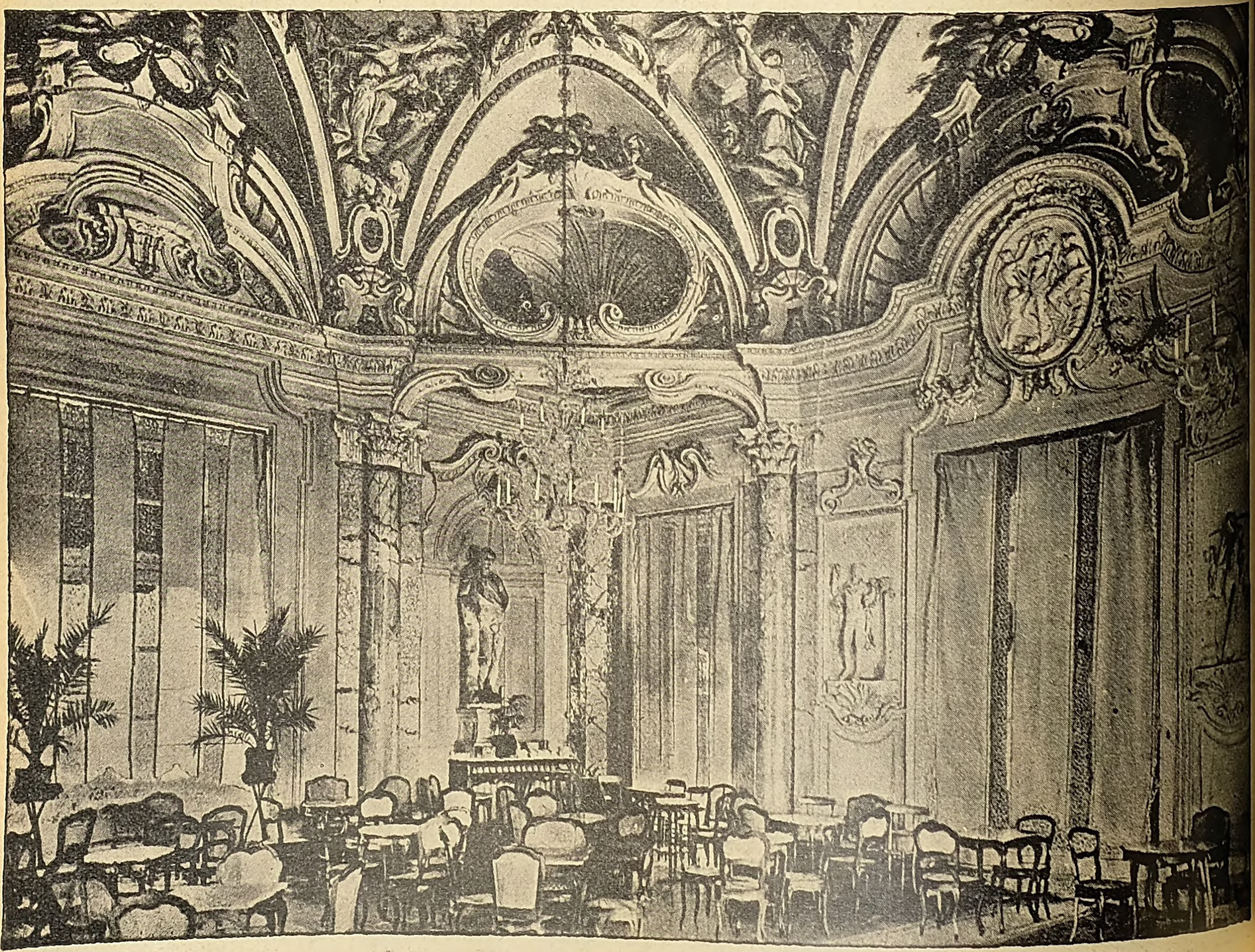

Διακόσμησις δύο αἰθουσῶν τῶν ἀνακτόρων Φαρνέζε (ἄνω) καὶ Κολλόνα (κάτω) ἐν Ρώμῃ.

Digitized by Google

*Πιέτρο ντὰ Κορτόνα*: Ἡ ὀροφὴ τοῦ ἀνακτόρου Μπαρμπερίνι ἐν Ῥώμῃ.

Digitized by Google

Digitized by Google

λουθεῖ τὰς ὑπὸ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου εἰσαχθείσας πρωτοτυπίας. Ὁ μέγας οὗτος καλλιτέχνης, θέλων νὰ προσδώσῃ εἰς τὴν σεμνήν, σοβαρὰν καὶ εὐθύγραμμον τέχνην τῶν πρώτων χρόνων τῆς Ἀναγεννήσεως *(Μπραμάντε)* περισσοτέραν κίνησιν καὶ πλαστικότητα, εἶχεν εἰσαγάγει εἰς τὰ ἀρχιτεκτονήματά του ποικίλας διακοσμητικὰς πρωτοτυπίας (καμπυλόγραμμα ἢ τεθλασμένα ἀετώματα, κεκοσμημένας ζωοφόρους κλπ.). Οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἀκολουθοῦντες τὸ παράδειγμά του, ἀπεμακρύνθησαν ἐντελῶς τῆς κλασσικῆς ἁπλότητος καὶ προσεπάθησαν διὰ τῆς ποικιλίας καὶ τῆς ἐπιβολῆς νὰ προκαλέσωσι τὴν ἐπιζητουμένην ἐντύπωσιν. Χαρακτηριστικὰ γνωρίσματα τῶν οὕτω προκυψάντων κτηρίων εἶναι ἐξωτερικὰ μὲν ἡ σύμπτυξις τῆς ἐκτάσεως πρὸς ἐναργεστέραν ἔκφρασιν δυνάμεως καὶ ὄγκου, ἡ κατάργησις τῆς λίαν ἐν χρήσει κατὰ τὴν πρώτην ἀναγέννησιν λιθοδομίας διὰ κανονικῶν γυμνῶν κυβολίθων καὶ ἡ εὐρυτάτη χρησιμοποίησις τοῦ κονιάματος, ἐσωτερικὰ δὲ ἡ ἐξαφάνισις ἢ ἐπιμήκυνσις τῆς αὐλῆς, ὁ περιορισμὸς τῶν εἰς τὸ κύριον οἰκοδόμημα προσαρτωμένων πτερύγων καὶ ἀνοικτῶν στοῶν καὶ ἡ ἔξαρσις τῆς καταλαμβανούσης τὸ κέντρον τοῦ κτηρίου ὑψηλῆς καὶ ἐπιμήκους αἰθούσης, εἰς ἣν ἄγει μεγαλοπρεπὴς κλῖμαξ κατὰ τὸ πλεῖστον ἡμικυκλική. Ἐπίσης μεγάλη σημασία ἀποδίδεται εἰς τὴν ἐμφάνισιν τῆς προσόψεως τοῦ κτηρίου, ὅλαι δὲ αἱ λεπτομέρειαι μελετῶνται μετὰ πολλῆς ἀκριβείας καὶ προσοχῆς. Ἡ ἐξωτερικὴ ὄψις ἀποτελεῖ ἀληθῆ ἀνάγλυφον πίνακα μὲ φωτεινὰς καὶ σκιερὰς ἐπιφανείας, μὲ προεξεχούσας, ἐπιμελῶς εἰργασμένας κόγχας, παραστάδας, γεῖσα καὶ ἀετώματα, ἐφ' ὧν κυριαρχοῦσι λεπτότατα προεξέχοντα κοσμήματα. Ἄριστα ἐκ τῶν ἰταλικῶν κτηρίων τῆς περιόδου ταύτης εἶναι ἡ ἐν Ρώμῃ αὐλὴ τῆς βίλλα Μποργκέζε, ἔργον τῶν Μαρτίνο Λόγκι τοῦ πρεσβυτέρου καὶ Φλαμίνιο Πόντζιο, τὸ ἐν Ρώμῃ παλάτσο Ματτέϊ, ἔργον τοῦ Μαντέρνο, τὸ ἐν Βενετίᾳ παλάτσο Πεζάρο, ἔργον τοῦ Λογκένα, τὸ ἐν Γενούῃ παλάτσο Μπάλμπι, ἔργον τοῦ Ματθαίου Μπιάνκο, ἡ θαυμασία ἐν Ρώμῃ κιονοστοιχία τοῦ Ἁγίου Πέτρου, ἔργον τοῦ Μπερνίνι κλπ.

Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἀστικὴν ἀρχιτεκτονικήν, ὅπου ὁ ῥυθμὸς μπαρὸκ ἐσημείωσεν ἀναμφισβητήτως πολλὰς ἐπιτυχίας, ἡ χρησιμοποίησίς του εἰς ἐκκλησιαστικὰ ἀρχιτεκτονήματα ἀπέβη μᾶλλον ἐπιζημία. Οἱ νέοι ναοὶ διὰ τοῦ κολοσσιαίου ὄγκου των, τῆς ἀνεξαρτήτου προσόψεως καὶ τῆς ἐν πολλοῖς ἐλλείψεως ἁρμονίας καὶ ἑνότητος, μειονεκτοῦσι κατὰ πολὺ ἀπὸ αἰσθητικῆς ἀπόψεως τῶν θαυμασίων δημιουργημάτων τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἐξαίρεσιν δύναται νὰ ἀποτελέσῃ ὁ ἐν Βενετίᾳ θαυμάσιος ναὸς τῆς Σάντα Μαρία ντέλλα Σαλοῦτε (1631—1681), ἔργον τοῦ Λογκένα, ἀποτελῶν ἀληθὲς κομψοτέχνημα. Ὅ,τι ἀπεναντίας δύναταί τις νὰ θαυμάσῃ εἰς τοὺς ναοὺς τούτους εἶναι ἡ πλουσία καὶ μεγαλοπρεπὴς ἐσωτερικὴ διακόσμησις, ἥτις παρατηρεῖται ἐπίσης καὶ εἰς τὰ μνημονευθέντα ἀστικὰ κτήρια. Πρότυπα τοιαύτης ἐσωτερικῆς διακοσμήσεως ἀποτελοῦσιν οἱ ἐν Ρώμῃ ναοὶ τοῦ Ἁγίου Πέτρου καὶ τοῦ Ἁγίου Ἰγνατίου. Ἐκτὸς τῆς καθαυτὸ δομικῆς ἀρχιτεκτονικῆς, μεγάλας ἐπίσης ἐπετέλεσε προόδους καὶ ἡ ἀρχιτεκτονικὴ τῶν κήπων, μὲ τὴν πλουσίαν διὰ κρηνῶν μετ' ἀναβρυτήρων καὶ δι' ἄλλων ἔργων τέχνης διακόσμησιν. Σπουδαιότερα πρότυπα αὐτῆς εἶναι οἱ κῆποι τοῦ Κυριναλίου, ἔργον τοῦ Μαντέρνο, οἱ τῆς βίλλας Λουντοβίζι, διακοσμηθέντες ἐπὶ τῇ βάσει σχεδίων τοῦ καρδιναλίου Λουντοβίζι (1622), ὁ τῆς βίλλας Μποργκέζε παρὰ τὸ Φρασκάτι, ἔργον τοῦ Ἰωάννου Φοντάνα, κυρίως δὲ ὁ τῆς βίλλας Μαμφίλι, ἔργον τοῦ Ἀλ. Ἀλγκάρντι (1650). Μεταξὺ τῆς πλειάδος τῶν ἀρχιτεκτόνων τῆς περιόδου τοῦ ῥυθμοῦ μπαρὸκ ἐξέχουσιν αἱ φυσιογνωμίαι τῶν Λαυρεντίου Μπερνίνι (1598—1680) καὶ Φραγκίσκου Μπορρομίνι (1599—1667).

Τὰ κυριώτερα ἐκτὸς τῆς Ἰταλίας κτήρια ῥυθμοῦ μπαρὸκ εἶναι τὸ μέγαρον τῶν Ἀπομάχων εἰς Παρισίους ἔργον τοῦ Ἰουλίου Μανσάρ, ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Καρόλου Βορρομαίου εἰς Βιέννην, ἔργον τοῦ Φίσερ φὸν Ἔρλαχ, ὁ τεράστιος ναὸς τοῦ Ἁγίου Παύλου ἐν Λονδίνῳ, ἔργον τοῦ Βρέν, ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Νικολάου ἐν Πράγᾳ, ὁ ἐν Δρέσδῃ ναὸς «Φραουενκίρχε» καὶ ἄλλα, ἀπαντώμενα ἰδίως ἀνὰ τὰς μεγάλας πόλεις τῆς Γερμανίας, τῶν Κάτω Χωρῶν καὶ τῆς Γαλλίας.

Παραλλήλως πρὸς τὴν ἀρχιτεκτονικήν, ἡ γλυπτικὴ ἐπηρεάζεται ἐπίσης πλήρως ἀπὸ τὰς ὑπερανθρώπους, πλήρεις μυϊκοῦ σφρίγους, μορφὰς τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ἀλλ' αἱ χαρακτηριστικαὶ ἁρμονικαὶ κινήσεις τῶν δυνατῶν μορφῶν του ἐξαίρονται αὐθαιρέτως πολλάκις καὶ θεατρικῶς, παντοῦ δὲ κυριαρχεῖ τὸ ὀγκῶδες καὶ ἐπιβλητικὸν καὶ ἐπιδιώκονται αἱ παθητικαὶ καταστάσεις. Αἱ μορφαὶ τῶν ἔργων παρίστανται εἰς στιγμὰς ἰσχυρῶν καὶ ταραφόρων συναισθημάτων, πάθους, ἐκστάσεως, ἀπελπισίας, ὀργῆς. Κυριαρχοῦσαι προσωπικότητες τῆς περιόδου ταύτης τῆς γλυπτικῆς εἶναι ἐν μὲν τῇ Ἰταλίᾳ ὁ Μπερνίνι, τοῦ ὁποίου τὰ ὑπέροχα ἔργα: «Ἡ ἔκστασις τῆς ἁγίας Θηρεσίας», «Ἡ ἁρπαγὴ τῆς Περσεφόνης» κλπ. κυριαρχοῦσι τῆς ἐποχῆς ταύτης τῆς παρακμῆς, ὁ Πυζὲ δὲ ἐν Γαλλίᾳ καὶ ὁ Σλύτερ ἐν Γερμανίᾳ. Τὴν ἐκ τῆς καταπτώσεως τῆς περιόδου τοῦ μπαρὸκ ἀναζωογόνησιν τῆς γλυπτικῆς ἀνέλαβεν ἡ γαλλικὴ τέχνη, ἡ ὁποία, ἐπιτυχοῦσα βαθμηδὸν τὴν ἐπὶ τὸ κομψότερον ἀπόδοσιν τῶν μορφῶν, ἐπέτυχε κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν περίοδον τοῦ ῥοκοκὸ νὰ δημιουργήσῃ γλυπτὰ ἔργα πλήρη χάριτος.

Τὴν ζωγραφικὴν τέλος κίνησιν τῆς ἐποχῆς τοῦ μπαρὸκ χαρακτηρίζει ἄφθονος παραγωγή, ἀλλὰ μικρὰ δημιουργικότης, ἡ δὲ μίμησις τῶν μεγάλων διδασκάλων τῆς Ἀναγεννήσεως, καὶ μάλιστα τοῦ Ραφαὴλ καὶ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, εἶναι πανταχοῦ καταφανής. Οἱ νέοι καλλιτέχναι εἶναι εὐσυνείδητοι καὶ φιλόπονοι ἐργάται, ἐκλεκτικοὶ καὶ πραγματισταί, στεροῦνται ὅμως τοῦ ἰδανισμοῦ καὶ τῆς πρωτοτυπίας τῶν μεγάλων προδρόμων των. Εἶναι ἡ ἀλεξανδρινὴ ἐποχὴ τῆς ζωγραφικῆς. Βαθμηδὸν παρατηρεῖται μεγάλη τροπὴ πρὸς τὸν χαρακτηρίζοντα καὶ τὴν γλυπτικὴν νατουραλισμόν. Τὰ ἀνθρώπινα πάθη καὶ ἡ πραγματικὴ ἀλήθεια ἀπεικονίζονται μετὰ μεγάλης ζωηρότητος καὶ ὠμότητος ὑπὸ τῶν Καραβάτσιο, Στρότσι κλπ., οἱ ἐκλεκτικοὶ ἀντιπροσωπεύονται ὑπὸ τῶν Καρράτσι, Γκουΐντο Ρένι, Γκουερτσῖνο κλπ., ἡ δὲ τοπιογραφία καὶ ἡ διακόσμησις τῶν ὀροφῶν σημειώνει σοβαρὰν πρόοδον ὑπὸ τοὺς Κορτόνα, Τιέπολο, Α. Κανάλε, Φ. Γκριμάλντι κλπ. Οἱ Ἰταλοὶ καλλιτέχναι, διασκορπιζόμενοι πρὸς ὅλας τὰς χώρας τῆς Εὐρώπης, ἀσκοῦσι σοβαρὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἐν αὐταῖς καλλιτεχνικῆς ζωῆς, ἡ Ἱσπανία ὅμως καὶ αἱ Κάτω Χῶραι ἐπιτυγχάνουσι τὴν ἀπόκτησιν ἰδίας ἑκάστη ἀνεξαρτησίας, ἀναδεικνύουσαι ἰδικούς των ἐνδόξους καλλιτέχνας, ὡς τοὺς Βελάσκεθ, Μουρίλλο, Ριμπέρα, Θεοτοκόπουλον κ. ἄ. ἡ πρώτη, καὶ τοὺς Ροῦμπενς, Βὰν Ντάϋκ, Γιορντάενς, Ρέμπραντ κ. ἄ. ἡ δευτέρα. Ἡ Γαλλία, βραδέως ἐργαζομένη ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς Ἰταλίας, δίδει τὰς μικροτέρας μέν, ἀλλ' οὐχ ἧττον ἀξίας λόγου προσωπικότητας τῶν προσωπογράφων Πουσσέν, Φιλίππου ντὲ Σαμπαίνι, Μινιάρ, Λεμπραὶν κλπ., ἡ δὲ Γερμανία παρουσιάζει βραδέως μικρὰν σειρὰν ζωγράφων τῆς ἱστορίας καὶ προσωπογράφων. Τελευταία ἡ Ἀγγλία, λόγῳ τῆς μεγάλης ἐξαπλώσεως τοῦ πουριτανισμοῦ, ἀρχίζει νὰ ἐμφανίζεται μὲ σειρὰν μικρογράφων καὶ καλλιτεχνῶν ἱστορικῶν θεμάτων, οἱ ὁποῖοι μαθητεύουσι κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὰς Κάτω Χώρας (βλ. καὶ λ. *γλυπτική, ἀρχιτεκτονικὴ καὶ ζωγραφική*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *C. Gurlitt.* «Geschichte des Barokstils» (1887 — 1889). — *B. Croce,* «Storia dell'età barocca» (Bari, 1928). Χ. Δ.

**μπαρόκο** (baroco) *[Λογικ.]*. Τεχνητὴ λατινικὴ λέξις ἀντίστοιχος τῇ ἑλληνικῇ *ἄχολον*, πλασθεῖσα ὑπὸ τοῦ Πέτρου τοῦ Ἱσπανοῦ πρὸς ἀπομνημόνευσιν τοῦ δευτεροσχήμονος ἐκείνου συλλογισμοῦ, ἐν ᾧ ἡ μὲν μείζων πρότασις εἶναι γενικὴ καταφατική (Α), ἡ ἐλάσσων μερικὴ ἀποφατικὴ (Ο) καὶ τὸ συμπέρασμα μερικὸν ἀποφατικόν. Π. χ.: Πᾶσα ἀρετὴ εἶναι μεσότης—Ἡ ἀκολασία δὲν εἶναι μεσότης—Ἡ ἀκολασία, ἄρα, δὲν εἶναι ἀρετή. —Ω.

**Μπαρὸν** (Baron), ***Αὔγουστος-Ἀλέξανδρος***. Βέλγος φιλόλογος (1794—1861). Μαθητὴς καὶ βραδύτερον ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς Ἐκὸλ Νορμάλ, συμμετέσχεν εἰς τὴν σύνταξιν τῆς «Ἐφημερίδος τῶν Κάτω Χωρῶν», εἶτα δὲ ὠνομάσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς γαλλικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Βρυξελλῶν. Ἔγραψεν: «Ἐπιστολαὶ καὶ διάλογοι περὶ τῶν ἀρχαίων καὶ νέων χορῶν» (1824), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν λαῶν τῆς ἀρχαιότητος τοῦ Χέρεν» (1834), «Περίληψις τῆς ἱστορίας τῆς γαλλικῆς λογοτεχνίας» (1835) κτλ. Α. Δ.

— **Μπαρὸν** (Baron), ***Βερνάρδος***. Γάλλος χαράκτης ἐκ Παρισίων, ἀκμάσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἐγκατεστάθη εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἀπέθανε τῷ 1762, κατέλιπε δὲ μέγαν ἀριθμὸν χαρακτικῶν ἔργων ἐξ ἀντιγραφῶν τῶν Βὰν Ντάϋκ, Βαττώ, Τισιανοῦ, Χολμπάϊν, Τενιέ, Ἄλλαν Ράμσαιυ, Χόγκαρδ κ.ἄ. Χ. Δ.

—**Μπαρὸν** (Baron), ***Βικέντιος-Ἀλφρέδος***. Γάλλος δραματικὸς ἠθοποιὸς καὶ γλύπτης (1820—1892). Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Ὀντεὸν εἰς ἔργα δραματικά, σημειώσας μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ὡς γλύπτης εἰργάσθη μετὰ πολλῆς τέχνης προτομάς, ὧν κάλλισται τοῦ Φρ. Σουλιὲ καὶ τοῦ Ντεμπυρὼ καὶ διάφορα μετάλλια. Ἡ ἀδελφή του *Δελφίνη Μπαρὸν* (1829—1895) διεκρίθη ἐπίσης ὡς δραματικὴ ἠθοποιός. Χ. Δ.

— **Μπαρὸν** (Baron), ***Ἔρνστ-Γκόττλιμπ***. Γερμανὸς δεξιοτέχνης τοῦ λαούτου (1696—1760). Μουσικὸς ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Γκότα, θεορβιστὴς ἀπὸ τοῦ 1734 τοῦ πρίγκιπος διαδόχου τῆς Πρωσσίας Φρειδερίκου, ἔδειξεν ἐξαιρετικὸν συγγραφικὸν τάλαντον διὰ τῆς «Ἱστορικῆς καὶ θεωρητικῆς μελέτης τῶν ὀργάνων τῆς οἰκογενείας τοῦ λαούτου» (1727). Μεριναὶ ἀκόμη συγγραφαὶ τοῦ Μπαρὸν πραγματεύονται τὸ αὐτὸ θέμα. Γ. Σ.

— **Μπαρὸν** (Baron), ***Ἰουλία***. Γαλλὶς ἠθοποιὸς ἐκ Παρισίων, γεννηθεῖσα περὶ τὸ 1836. Ἔπαιξε κυρίως ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν θεάτρων Πὸρτ-Σαὶν-Μαρτὲν (1865), Μποὺφ-Παριζιὲν (1866—1868) καὶ Παλαὶ-Ρουαγιὰλ (1868—1874). Διεκρίνετο διὰ τὴν ἔκπαγλον καλλονὴν καὶ τὸν ἐνθουσιώδη οἶστρόν της. Τῷ 1874 ἀπεσύρθη τῆς σκηνῆς.

— **Μπαρὸν** ἢ ***Μπαρόνιος*** (Baron ἢ Baronius), ***Ἰωάννης***, ἐπιλεγόμενος *Τολσάνο*. Γάλλος χαράκτης ἐκ Τουλούζης, ἀκμάσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Εἰργάσθη εἰς Ρώμην, ὅπου ἐζωγράφησε πλείστους πίνακας ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Κ. Μπλαίμαιρτ. Ἐχάραξε πλεῖστα ἔργα, οἷα: «Ἡ χολέρα τῶν Φιλισταίων» τοῦ Ν. Πουσσέν, «Τὸ μαρτύριον τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου» καὶ «Τὸ μαρτύριον τοῦ Ἁγίου Στεφάνου» τοῦ Νικ. ντὲλ Ἀμπάτε κ. ἄ. Ἐπίσης εἰργάσθη πολυαρίθμους προσωπογραφίας. Χ. Δ.

— **Μπαρὸν** (Baron), ***Κάρολος-Ἀντώνιος-Ἐρρῖκος***. Γάλλος ζωγράφος ἐκ Μπεζανσὸν (1816—1885). Διεκρίθη ὡς ζωγράφος σκηνῶν, ὧν κάλλισται θεωροῦνται αἱ ἑξῆς: «Τὸ ἀναλόγιον τοῦ Παλεστρίνα» (1847), «Θερινὴ βραδιὰ» (1847), «Παιδίον πωλούμενον ὑπὸ πειρατῶν» (1848), «Ἡ ἄνοιξις ἐν Τοσκάνῃ» (1848), «Εἴσοδος ἑνετικοῦ καμπαρέ, ὅπου οἱ ζωγράφοι μεταβαίνουν διὰ νὰ ἑορτάσωσι τὸν πάτρωνα αὐτῶν ἅγιον Λουκᾶν» (1859). Χ. Δ.

—**Μπαρὸν** (Baron), ***Λουδοβῖκος***-*Μπουσνέ, ἐπιλεγόμενος*—. Γάλλος κωμικὸς ἠθοποιὸς (1837—1920). Τῷ 1857 ἀνῆλθεν ἐπὶ τῆς σκηνῆς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κλεοφὰς* (Cléophas), ὑπὸ τὸ ὁποῖον ἦτο γνωστὸς μέχρι τοῦ 1866, ὁπότε προσληφθεὶς εἰς τὸ παρισινὸν θέατρον «Βαριετὲ» μετωνομάσθη εἰς *Μπαρόν*. Ἀπὸ τοῦ 1886 ἐγένετο εἷς τῶν διευθυντῶν τοῦ θεάτρου Βαριετέ. Χ. Δ.

—**Μπαρὸν** (Baron), ***Μιχαήλ***. Διάσημος ἠθοποιὸς τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1653. Οἱ γονεῖς αὐτοῦ ἦσαν ἠθοποιοὶ τὸ ἐπάγγελμα, τὸ δὲ πραγματικόν των ὄνομα ἦτο Boyron, ὅπερ ὅμως μεταγενεστέρως ἀντήλλαξαν διὰ τοῦ Baron, λόγῳ τοῦ ὅτι οὕτως τοὺς εἶχεν ἀποκαλέσει κατ' ἐπανάληψιν ὁ Λουδοβῖκος ΙΓ'. Εἰς ἡλικίαν δώδεκα ἐτῶν κατετάχθη εἰς τὸν θίασον τῶν μικρῶν ἠθοποιῶν τοῦ Δελφίνου, ἐν τῷ ὁποίῳ εὐδοκίμως διέπλασεν ἀρκετοὺς ῥόλους. Ἐκτιμηθεὶς ὑπὸ τοῦ Μολιέρου προσελήφθη ἐν τῷ θιάσῳ του, ἐν ᾧ διέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ μεγάλου κωμῳδιογράφου, ὅστις ὑπῆρξε καὶ ὁ διδάσκαλός του, μεθ' ὅ, τέλειος πλέον ἠθοποιός, εἰσῆλθεν εἰς τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν, ἐν ᾗ διηρμήνευσεν ἀριστοτεχνικῶς τοὺς πρώτους ῥόλους τῶν τραγῳδιῶν τοῦ Ρακίνα, ἐπονομασθεὶς διὰ τοῦτο ὑπὸ τῶν συγχρόνων του «ἡ τιμὴ καὶ τὸ θαῦμα τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου». Ἀποσυρθεὶς ἐν τῇ ἀκμῇ τῆς δράσεώς του ἐκ τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας τῷ 1691, ἐπανῆλθεν ἐν αὐτῇ τῷ 1720 καὶ διέμεινε δρέπων ἀφθόνους δάφνας μέχρι τοῦ θανάτου του (1729). Ὁ Μπαρὸν ἔγραψε καὶ πολλὰς κωμῳδίας, αἱ ἐπιτυχέστεραι τῶν ὁποίων εἶναι αἱ ἑξῆς: «Ἡ συνέντευξις τοῦ Κεραμεικοῦ», ὁ «Τυχερός» «Κοκέττα ἢ ψευδοσεμνότυφος», «Ζηλιάρης» «Ἀνδρεία» κατ' ἀπομίμησιν τῆς ὁμωνύμου κωμῳδίας τοῦ Τερεντίου καὶ «Ἀδελφοὶ ἢ τὸ σχολεῖον τῶν πατέρων», κατ' ἀπομίμησιν ἐπίσης τῆς ὁμωνύμου κωμῳδίας τοῦ Τερεντίου. Ἐπαίχθησαν ἀπὸ τοῦ 1685—1703. Ν. Ι. Λ.

**«Μπαρὸν Κὰλλ»** («Baron Kall»), ***περίπτωσις***. Καλεῖται οὕτω ἐν τῷ Διεθνεῖ δικαίῳ ἡ περίπτωσις τοῦ ὁμωνύμου αὐστριακοῦ πλωτοῦ νοσοκομείου, προσβληθέντος τὴν 6 Αὐγούστου 1918 ἐν τῷ λιμένι τοῦ Δυρραχίου, ὅπου ἠγκυροβόλει, ὑπὸ ἐχθρικοῦ ἀεροπλάνου, τὴν αὐτὴν δὲ ἡμέραν καὶ ὑπὸ ὑποβρυχίου.

**Μπαρόνι** (Baroni), ***Ἐλεονώρα***. Περίφημος Ἰταλὶς ἀοιδὸς ἐκ Μαντούης, ἀκμάσασα κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἦτο θυγάτηρ τῆς περιφήμου ἐπίσης ἀοιδοῦ τῆς γνωστῆς ὑπὸ τὸ ὄνομα Ἀδριανὴ (Adriana), Κεκτημένη φωνὴν σπανίας ἐκτάσεως, ἀκριβῆ, ἠχηρὰν καὶ ἁρμονικήν, εἶχε προσελκύσει πολυαρίθμους θαυμαστάς, ἐκ τῶν ὁποίων εἷς Βικέντιος Κοστατζούτι συνέλεξε καὶ ἐξέδωκε πάντας τοὺς δι' αὐτὴν γραφέντας εἰς διαφόρους γλώσσας ὕμνους, ὑπὸ τὸν τίτλον «Applausi poetici alle glorie della signora Leonora Baroni». Τῷ 1645 προσεκλήθη εἰς Παρισίους ὑπὸ τοῦ καρδιναλίου Μαζαρίνου, διὰ νὰ τραγουδήσῃ τὰ μελοδράματα τοῦ Καβάλλι, τοσαύτην δ' ἔσχεν εἰς αὐτὰ ἐπιτυχίαν, ὥστε προσελήφθη εἰς τὴν ἰδιαιτέραν βασιλικὴν μουσικὴν ὁμάδα, εἰς ἣν παρέμεινεν ἐπί τινα ἔτη, ἐπιστρέψασα εἶτα εἰς Ἰταλίαν. Χ. Δ.

**Μπαρόνιος** (Baronius), ***Καῖσαρ***. Ἐγεννήθη τῷ 1553 ἐν τῇ παρὰ τὴν Νεάπολιν Sora καὶ ἐτελεύτησε τῷ 1607. Διὰ τοῦ περιφήμου αὐτοῦ ἔργου «Ἐκκλησιαστικὰ χρονικά», καταπολεμήσας τὰς Μαγδεμβουργικὰς ἑκατονταετηρίδας, δι' ὧν διεσείοντο αἱ βάσεις τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, ἀπέκτησε τὴν εὔνοιαν τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, οὕτως ὥστε ἐξελέγη καρδινάλιος καὶ μικροῦ δεῖν ἐξελέγετο καὶ πάπας. Τὰ «Ἐκκλησιαστικὰ χρονικά», ἀποτελούμενα ἐκ δώδεκα ὀγκωδῶν τόμων, ὧν ὁ πρῶτος ἐξεδόθη τῷ 1588 καὶ ὁ δωδέκατος τῷ 1607, περιλαμβάνουσι τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν ἀπὸ τῆς γεννήσεως



Digitized by Google

τοῦ Χριστοῦ μέχρι τοῦ 1198, ἑκάστου τόμου περιλαμβάνοντος τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν μιᾶς ἑκατονταετηρίδος. Τὸ ἔργον ἐκρίθη ὑπό τινων μὲν εὐμενῶς, ὑπ' ἄλλων δὲ δυσμενῶς. Τῶν κριτικῶν τούτων ἄξια ἰδίας μνείας εἶναι ἡ τοῦ φραγκισκανοῦ Ἀντωνίου Pagi ὑπὸ τὴν ἐπιγραφὴν «Critica in Baronii annales». Ἀναμφιβόλως ἡ ἀξία τοῦ ἔργου τούτου τοῦ Μπαρονίου ἔγκειται ἰδίᾳ ἐν τ ο ύ τ ῳ, ὅτι διέσωσε πλεῖστα καὶ σπουδαιότατα ἔγγραφα ἀποκείμενα εἰς διαφόρους βιβλιοθήκας καὶ δὴ τοῦ Βατικανοῦ. Ἐκτὸς τοῦ ἔργου τούτου ἔγραψε καὶ πολλὰ ἄλλα, ὧν ἄξια ἰδίας μνείας εἶναι ὁ βίος τοῦ ἁγίου Γρηγορίου τ ο ῦ Ναζιανζηνοῦ καὶ τὸ ρ ω μ α ϊ κ ὸ ν μαρτυρολόγιον. Τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔργον ἐξεδόθη τὸ πρῶτον ἐν Ῥώμῃ τῷ 1586 καὶ ἔπειτα ἐν Βενετίᾳ τῷ 1587. Τῶν δύο ὅμως τούτων ἐκδόσεων ἐλάχιστα ἀντίτυπα διεσώθησαν, διότι ὁ συγγραφεὺς ἀπέσυρε ταῦτα ἐκ τῆς κυκλοφορίας, ἀφοῦ ὑπεδείχθησαν αὐτῷ πλεῖστα σφάλματα, εἰς ἃ εἶχε περιπέσει ἕνεκα τῆς ἐλλιποῦς γνώσεως τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης. Μετὰ τὴν διόρθωσιν ὑπὸ τοῦ συγγραφέως τοῦ μαρτυρολογίου, ἐξεδόθη τοῦτο ἐν Ἀμβέρσῃ τῷ 1589, ἐν Ῥώμῃ τῷ 1598 καὶ ἐν Παρισίοις τῷ 1607. Ὑπὸ τοῦ γνωστοῦ τέλος καρδιναλίου Albericius ἐξεδόθησαν Epistolae et opuscula τοῦ Μπαρονίου μετὰ συντόμου βιογραφίας αὐτοῦ (1759—1770). Κ. Ι. Δ.

*Καῖσαρ Μπαρόνιος.*

**Μπαρόντα** (Baroda) *[Γεωγρ.]*. Ἡγεμονία καὶ ὁμώνυμος πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν. Ἡ χώρα — ὀνομαζομένη παλαιότερον Γκαϊκοβὰρ — κεῖται περὶ τὸν κόλπον τοῦ Cambaye, ἔχει ἔκτασιν 21.190 τετρ. χλμ. καὶ 2.126.522 κατοίκους, ἐξ ὧν 162.328 Μουσουλμᾶνοι, διοικεῖται δὲ ὑπὸ ἐντοπίου ἡγεμόνος, ἀνεξαρτήτου μὲν κατ' ὄνομα, πράγματι ὅμως ὑποτεταγμένου ὑπὸ τὴν βρεττανικὴν διοίκησιν τῆς Βομβάης. Τὸ ἔδαφος, γόνιμον κατὰ τὸ βόρειον τῆς χώρας τμῆμα, παράγει δημητριακά, βάμβακα, καπνόν, ὄπιον, ὄρυζαν, σακχαροκάλαμον κτλ. Σημαντικὴ ἐξ ἄλλου εἶναι ἡ ἐν Μπαρόντα διατροφὴ βοῶν καὶ ἵππων. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα τῆς ἡγεμονίας κεῖται οὐχὶ μακρὰν τῆς θαλάσσης, ἐντὸς κοιλάδος περιβαλλομένης ὑπὸ τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Βισβανίτρι, εἰς ἀπόστασιν 370 περίπου χιλιομέτρων βορείως τῆς Βομβάης. Διασχίζεται ἀπ' ἄκρου εἰς ἄκρον ὑπὸ δύο μεγάλων ὁδῶν, τεμνομένων κατ' ὀρθὴν γωνίαν καὶ διαιρουσῶν αὐτὴν εἰς τέσσαρας συνοικίας. Ἡ πόλις εἶναι ἀνθυγιεινή, καὶ ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τοῦ κλίματος, ἰδίᾳ δὲ διὰ τὴν ἐλλιπῆ ἀπὸ φρεάτων ὑδρευσίν της, καὶ διὰ τὴν ἐλαττωματικὴν κατασκευὴν τῶν οἰκιῶν καὶ τὸν ἐν αὐταῖς συνωστισμὸν τῶν κατοίκων. Ὁ πληθυσμός της, ἄλλοτε κατά τι μεγαλύτερος, συμποσοῦται ἤδη εἰς 95.000, μὲ ἀναλογίαν 80 % περίπου Ἰνδῶν καὶ 20 % Μουσουλμάνων. Ἔξω τῆς πόλεως κεῖται τὸ ἀνάκτορον Ναζὰρ - Μπάγκ, χρησιμεῦον ὡς θησαυροφυλάκιον τοῦ ἡγεμόνος. Εἰς τὰ περίχωρα αὐτῆς ἔχουσιν ἱδρυθῆ νοσοκομεῖα, σχολεῖα στοιχειώδους ἐκπαιδεύσεως καὶ ἀγγλικὸν κολλέγιον, βιβλιοθήκη, πάρκα κτλ., λειτουργοῦσι δὲ καὶ ἐργοστάσιά τινα βαμβακερῶν καὶ μεταξωτῶν ὑφασμάτων. —Ω.

**Μπαρότς**, ἢ *Μπρότς* (Baroach, ἢ Broats, καὶ Baruch) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ διαμερίσματι τοῦ Γκουτζαράτ, ἐγγὺς τῆς θαλάσσης, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ναρμπάντα. Μολονότι τὸ στόμιον τοῦ ποταμοῦ ἔχει πλάτος 4 χιλιομέτρων, ὁ λιμὴν τῆς Μπαρότς δὲν εἶναι προσιτὸς παρὰ εἰς μικροῦ μόνον βυθίσματος πλοῖα. Ἡ πόλις συνδεομένη σιδηροδρομικῶς μὲ τὴν Βομβάην, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 366 χλμ. περίπου, ἤνθει ἄλλοτε οἰκονομικῶς, ἤδη ὅμως εὑρίσκεται ἐν καταπτώσει. Διατηρεῖ ἐν τούτοις ἀκόμη σημαντικὸν ἐμπόριον βάμβακος, ὀρύζης καὶ σιτηρῶν, ἔχει δὲ βιομηχανίαν φημισμένων δαμασκηνῶν ὑφασμάτων. Κάτοικοι 43.400, ἐξ ὧν 30.000 περίπου Ἰνδοί, 12.000 Μουσουλμᾶνοι καί τινες Εὐρωπαῖοι.

Ἡ Μπαρότς ἀνήκουσα ἐπὶ μακροὺς αἰῶνας εἰς τὸ βασίλειον τῶν Μογγόλων, περιῆλθε κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος εἰς τοὺς Μαχράττας, κατελήφθη δὲ δι' ἐφόδου ὑπὸ τῶν Ἄγγλων τῷ 1772. Τῷ 1783 ἠναγκάσθησαν οὗτοι νὰ τὴν ἐγκαταλίπουν καὶ πάλιν εἰς τοὺς Μαχράττας, μέχρι τοῦ 1803, ὁπότε τὴν ἀνακατέλαβον ὁριστικῶς. —Ω.

**Μπαρότσε**, ἢ *Μπαρότσελαντ* (Barotse, Barotseland) ἄλλως *Μαροῦτσε* *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Κεντρῴας Ἀφρικῆς ἀνήκουσα εἰς τὴν Βόρειον Ῥοδεσίαν (βλ. λ. *Μαροῦτσε*).

**— Μπαρότσε** (οἱ), ἢ *Μαροῦτσε* (Barotse, ἢ Maroutse). Ἰθαγενὴς λαὸς τῆς Κεντρῴας Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μαροῦτσε*).

**Μπαρότσι** ἢ *Μπαρότσιο* (Barocci ἢ Baroccio), ***Φρειδερῖκος***, ὁ ἐπιλεγόμενος *Φιόρε ντ' Οὔρμπινο* (=ἄνθος τοῦ Οὐρμπίνο). Ἰταλὸς ζωγράφος ἐξ Οὐρμπίνο, ὅπου παρέμεινε τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς ζωῆς του (1528—1612). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς παρὰ τῷ Φραγκίσκῳ Μεντζόκκι, εἶτα δὲ παρὰ τῷ Βατίστᾳ Φράνκο, ὅστις παρέμενε τότε ἐν Οὐρμπίνο, διακοσμῶν διὰ τοιχογραφιῶν τὸν μητροπολιτικὸν ναόν. Εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν μετέβη εἰς Ῥώμην διὰ νὰ γνωρίσῃ τὰ ἔργα τοῦ ἐνδόξου συμπατριώτου του Ῥαφαήλ, ἐκεῖ δέ, συνδεθεὶς μετὰ τοῦ Θαδδαίου Τσούκκερο, ἐγνώρισε μέσῳ αὐτοῦ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον. Ἐκ Ῥώμης ἐπέστρεψεν εἰς Οὔρμπίνο, ὅπου ἐζωγράφησε διὰ τὴν ἀδελφότητα «Corpus Domini» μίαν ἁγίαν Μαργαρίταν, ἓν ἐκ τῶν ἀρίστων ἔργων τῆς νεότητός του. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην τῷ ἐδόθη εὐκαιρία νὰ γνωρίσῃ τὸ πρῶτον τὰ ἔργα τοῦ Κορρέτζιο, τοιαύτην δ' ἐνεποίησαν εἰς αὐτὸν ἐντύπωσιν, ὥστε κατέστη ἔκτοτε πιστὸς μιμητὴς τοῦ μεγάλου καλλιτέχνου. Ἐπιστρέψας εἰς Ῥώμην τῷ 1560 προσελήφθη ὑπὸ τοῦ πάπα Πίου Δ' διὰ τὴν διακόσμησιν τοῦ ἀνακτόρου Μπόσκο ντὶ Μπελβεντέρε, εἰς ἣν συνειργάσθη μετὰ τοῦ Φ. Τσούκκερο. Ὁ Μπαρότσι, ἐξαιρέσει ὀλίγων προσωπογραφιῶν καί τινων πινάκων, ἐζωγράφησε κυρίως ἁγιογραφίας καὶ βιβλικὰς σκηνάς, διακρινομένας διὰ τὸν λαμπρὸν χρωματισμόν των. Ἰδιαιτέρως εἰς τὸ ἔργον αὐτοῦ θαυμάζεται ἡ χάρις τῶν παιδικῶν καὶ τῶν γυναικείων μορφῶν καὶ αἱ ἐπιτυχεῖς ἀποχρώσεις, ἡ φυσικότης καὶ ἡ ἁρμονία τῶν πτυχώσεων τῶν ἐνδυμάτων. Ἐκ τῶν σῳζομένων πινάκων του κάλλιστοι εἶναι οἱ ἑξῆς: ἡ «Ἀποκαθήλωσις» ἐν τῷ μητροπολιτικῷ ναῷ τῆς Περουγίας, «Ἡ Παρθένος καὶ τὸ παιδίον Ἰησοῦς προσκυνούμενοι ὑπὸ τοῦ ἁγίου Ἀντωνίου καὶ τῆς ἁγίας Λουκίας» καὶ «Ἡ ἁγία Αἰκατερίνη», ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λούβρου· οἱ εἰς Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας «Μαντόννα ντὲλ Πόπολο», θεωρούμενος ὡς ὁ ἄριστος πάντων, «Ἅγιος Φραγκῖσκος» καὶ «Ἡρῳδιάς», ἡ αὐτοπροσωπογραφία του καὶ μία προσωπογραφία γυναικός, ὁ ἐν τῇ βίλλᾳ Μποργκέζε πίναξ ὁ παριστῶν τὸν «Αἰνείαν βαστάζοντα τὸν πατέρα του Ἀγχίσην»· τέλος δὲ ἡ ἐν τῷ Παλάτσο Πίττι τῆς Φλωρεντίας προσωπογραφία τοῦ πρίγκιπος Φρειδερίκου ντ' Οὔρμπίνο. Χ. Δ.

*Μπαρότσι:* Ἡ *Ἀποκαθήλωσις* (ἐν τῇ Μητροπόλει τῆς Περουγίας).

**Μπάροτσυ** (Baroczy), ***Ἀλέξανδρος***. Οὗγγρος συγγραφεὺς (1735—1809). Διετέλεσεν ἀξιωματικὸς τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς, τὴν ὁποίαν συνέστησεν ἡ Μαρία Θηρεσία, ἵνα προσελκύσῃ εἰς Βιέννην τοὺς νεαροὺς Οὔγγρους εὐγενεῖς. Ὁ Μπάροτσυ συνέπηξε μετὰ τῶν συμπατριωτῶν του Μπέσσενυεῖ καὶ Μπάρτσαϋ φιλολογικὸν σύλλογον, μὲ σκοπὸν τὴν ἀνάπτυξιν τῆς οὐγγρικῆς γ λ ώ σ σης καὶ φιλολογίας. Ὁ σύλλογος οὗτος ὠνομάσθη «Γαλλικὴ σχολή», διότι ἔλαβεν ὡς φιλολογικὰ πρότυπα τοὺς Γάλλους συγγραφεῖς τοῦ ΙΖ' καὶ ΙΗ' α ἰ ῶ ν ο ς. Ὁ Μπάροτσυ διεκρίθη ὡς εἷς τῶν καλυτέρων πεζογράφων τῆς Οὐγγαρίας. Γ. Ι. Β.

**μπαροῦμα** (ἡ) *[Ναυτ.]* Ὅρος τῆς κ ο ι ν ῆ ς ναυτικῆς γλώσσης, σ η μ α ί νων τὸ *πεισμάτιον*, δι' οὗ, προσδεδεμένου εἰς κρίκον ἢ πόρπην κατὰ τὴν πρῷραν τῶν ἐφολκίων, προσδένομεν ταῦτα εἰς τὰς κλιμακίδας τοῦ λεμβούχου εἴτε τῆς κορώνης, ἢ καὶ πρὸς ρυμουλκίαν. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρουξῆς**, *Παναγιώτης*. Ἐπώνυμον τοῦ ἀγωνιστοῦ *Δημητρακοπούλου* Παναγιώτου (βλ. λ.).

**Μπαρούσι** *[Γεωγραφ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ ἐν τῷ ν ο μ ῷ Λακωνίας χωρίου *Βαρούσια* (βλ. λ.).

**μπαρούτι** (τό), καὶ *μπαρούτη* (ἡ)· δημοτ., π υ ρ ῖ τ ι ς: «μπαρούτι γιὰ κυνήγι, — γιὰ φουρνέλλο» || φρ. μυρίζει—, βρομάει μπαρούτι» ἐπὶ φοβουμένου νὰ μεταβῇ που' ἡ μεταφορὰ ἀπὸ τῆς μάχης: «δὲν πάει 'ς τὸν πόλεμο, γιατὶ βρομάει μπαρούτι» (ἡ λ. ἀραβική, ἐξελληνισθεῖσα εἰς πυρῖτις, βλ. λ.).

**μπαρουτόβολα** (τά)· δημοτ., μπαρούτι καὶ βόλια, πβλ. *μπαρουτόσκαγα*.

**μπαρουτόλασπη** (ἡ)· δημοτ., λάσπη τοῦ μπαρουτιοῦ, ἡ ἐκ τῆς πολλῆς χρήσεως τοῦ πυροβόλου ὅπλου καταλειπομένη εἰς τὸν σωλῆνα ἀκαθαρσία, καὶ πρὸ πάντων ἐκ χρήσεως κακῆς πυρίτιδος.

**μπαρουτόσκαγα** (τά)· δημοτ., μπαρούτι καὶ σκάγια: «ἀγόρασα μπαρουτόσκαγα γιὰ τσίχλες».

**Μπαροῦτσος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς Ν.Δ. ἀκτῆς τῆς Ἀργολίδος μεταξὺ τοῦ ὅρμου Βουρλιὰ καὶ τοῦ λιμένος Χαϊδάρι (πλάτ. 37° 30' 50" Β., μῆκ. 22° 48' 55" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1518: Gulf of Nauplia) εἰς 2 μίλ. ἀνατολικῶς τοῦ δευτέρου. Λέγεται καὶ *Σταυρός*. Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλ. χάρτην. Σ. Ε. Λ.

**Μπαρουτζῆ-***μπασῆ*. Ἐπιφανὴς ἀρμενικὴ οἰκογένεια (βλ. λ. *Δαδιάν*).

Digitized by Google

**μπαρουτίλα** (ἡ)· ἡ ὀσμὴ τῆς καιομένης πυρίτιδος.

**μπαρρούφα** (ἡ)· ἔωλος λόγος, ἀερολογία, συν. *μποῦρδες*· ‖ καυχησιολογία, φανφαρονισμός.

**Μπαρόχα, ἢ** ***Νέσσι*** (Baroja ἢ Nessi), ***Πίος.*** Ἱσπανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1872. Ἀπροκατάληπτος, ἀπαισιόδοξος, ψυχρός, πραγματεύεται θέματα ἀναφερόμενα εἰς τοὺς ἐπαναστάτας καὶ τοὺς παρίας τοῦ κόσμου. Τὸ ὕφος του εἶναι στυγνὸν καὶ ὠμόν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων του διακρίνονται: «Ὁ ἀγὼν διὰ τὴν ζωὴν» (1904), «Αἱ πόλεις» (1920), «Ἀπομνημονεύματα ἑνὸς ἀνδρὸς δράσεως», «Ἡ θάλασσα» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**μπαρμπαροσυκιά** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὀπουντία ἡ συκῆ ἡ ἰνδική*.

**μπάρρα** (ἡ) (ἰταλ. barra)· ὁ ξύλινος ἢ σιδηροῦς μοχλὸς τῆς θύρας, ἄλλως *ἀμπάρρα*· ‖ λοξὴ γραμμὴ τιθεμένη κανονικῶς ἀντὶ τῆς συνήθους εἰς κλασματικὰς παραστάσεις ὁριζοντίας, ἰδίᾳ πρὸς δήλωσιν ἑκατοστῶν, χιλιοστῶν κτλ.: $1/2$ ἀντὶ $\frac{1}{2}$, 5%, 5‰ κττ.

**Μπάρρα** (Barra) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Νεαπόλεως. Κάτ. 14.858. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 5 χλμ., πρὸς Α. τῆς Νεαπόλεως, ἐπὶ τῶν ΒΑ. προπόδων τοῦ Βεζουβίου καὶ παρὰ τὰ ἐρείπια τοῦ Ἡρακλείου. Ἔχει ὀνομαστοὺς ἀμπελῶνας καὶ ἐργοστάσια μεταξωτῶν. Μ. Δ. Β.

**—Μπάρρα** (Barra) *[Γεωγρ.]*. Συστὰς 12 σκωτικῶν νήσων καὶ νησίδων, ἀνηκουσῶν εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν Ἑβρίδων. Ἔκτασις 347 τετρ. μίλλια. Κάτοικοι 2.161, ἀσχολούμενοι με τὴν ἁλιείαν, τὴν κτηνοτροφίαν καὶ τὴν κατασκευὴν σόδας. Εἰς τὴν βορειοτέραν ἐξ αὐτῶν εὑρίσκεται ὁ ὑψηλότερος φάρος τῆς Ἀγγλίας, 1.207 μέτρα ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Ν. Γ. Λ.

**—Μπάρρα** (Barra) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς βασίλειον ἐν τῇ Δυτικῇ Ἀφρικῇ, κατὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Γαμβία, νοτίως τοῦ Σαλούμ, περιλαμβανόμενον εἰς τὰς βρεττανικὰς κτήσεις. Τὸ ἔδαφος τῆς περιοχῆς, πεδινὸν καθόλου, ἑλῶδες δὲ κατὰ τὰ παράλια, παράγει ἰδίως ἀραβόσιτον καὶ περιέχει κοιτάσματα ἅλατος καὶ χρυσοφόρους ἄμμους. Οἱ κάτοικοι, 200 000 περίπου, ἀνήκουσιν εἰς τὰς φυλὰς τῶν Μαντίγκων καὶ τῶν Γιολόφ, εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον εἰδωλολάτραι, ἀσχολοῦνται δέ, παρεκτὸς τῆς καλλιεργείας τοῦ ἀραβοσίτου, μὲ τὸ ἐμπόριον τοῦ χρυσοῦ καὶ τοῦ ἐλεφαντόδοντος. —Ω.

**— Μπάρρα ντὸ** ***Πιράϋ*** (Barra do Pirahy) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Ρίο ντὲ Ἰανέϊρο. Εἶναι κέντρον πλουσίας γεωργικῆς περιφερείας καὶ διεξάγει κυρίως ἐμπόριον καπνοῦ καὶ οἰνοπνευμάτων. Κάτ. 25.000. Χ. Δ.

**— Μπάρρα ντὸ** ***Ρίο Γκράντε*** (Barra do Rio Grande) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Μπαΐα. Εἶναι κέντρον εὐφόρου γεωργικῆς περιφερείας, ὀνομαστῆς διὰ τοὺς ἐκλεκτοὺς οἴνους της, καὶ διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον. Κάτ. 22.000. Χ. Δ.

**— Μπάρρα ντὸ** ***Ρίο Νέγκρο*** (Barra do Rio Negro) *[Γεωγρ.]*. Ἕτερον ὄνομα τῆς ἐν τῇ Βραζιλίᾳ πόλεως *Μανάος* (βλ. λ.).

**Μπαρρὰ** (Barras), ***Παῦλος-Φραγκῖσκος-Ἰωάννης-Νικόλαος, ὑποκόμης ντὲ*** —. Γάλλος πολιτικὸς (1755—1829). Καταγόμενος ἐξ ἀρχαίας εὐγενοῦς οἰκογενείας, ἐγένετο τῷ 1775 ἀξιωματικὸς τοῦ πεζικοῦ, ἠναγκάσθη ὅμως μετ' ὀλίγα ἔτη, ἀφοῦ κατεσπατάλησε τὴν πατρικήν του περιουσίαν, νὰ παραιτηθῇ τοῦ στρατεύματος καὶ ἐπωφελήθη τῆς ἐκραγείσης τότε ἐπαναστάσεως διὰ ν' ἀναμειχθῇ εἰς τὴν πολιτικήν. Ἐκλεγεὶς ἀντιπρόσωπος τοῦ διαμερίσματος τοῦ Βὰρ εἰς τὴν συμβατικὴν ἐθνοσυνέλευσιν, ἀπετέλεσε μέλος τῆς κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις ἀπεστάλη πλησίον τοῦ δημοκρατικοῦ στρατοῦ τοῦ πολιορκοῦντος τὸ Τουλών, εἰς αὐτὸν δὲ ἀνήκει μέγα μέρος τῆς εὐθύνης διὰ τὰς αἱματηρὰς ἀγριότητας, αἵτινες ἐπηκολούθησαν τὴν ἐκπόρθησιν τῆς πόλεως εἰς βάρος τῶν ἀντεπαναστατῶν ἀξιωματικῶν τοῦ ναυτικοῦ. Ἐκεῖ συνεδέθη στενῶς μετὰ τοῦ Βοναπάρτου, φέροντος ἀκόμη τότε τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους ἔτυχεν εὐμενοῦς ὑποδοχῆς ἐκ μέρους τοῦ Ροβεσπιέρρου, τοῦ ὁποίου διὰ τοῦτο ἐκηρύχθη ἔκτοτε ἄσπονδος ἐχθρός. Κατὰ τὴν συνεδρίασιν τῆς 9ης Θερμιδώρ (27 Ἰουλίου 1794) διωρίσθη ὑπὸ τῆς συνελεύσεως γενικὸς διοικητὴς τῶν στρατευμάτων τῶν Παρισίων, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ καθαιρεθέντος στρατηγοῦ Ἀνριό. Εἰσῆλθε τότε εἰς τὸ δημαρχεῖον καὶ συνέλαβεν αὐτοπροσώπως τὸν Ροβεσπιέρρον καὶ τοὺς ἀπομείναντας εἰς αὐτὸν πιστοὺς ὀπαδούς. Τὴν 12ην Θερμιδὼρ παρῃτήθη ἀπὸ τῆς ἀρχηγίας τοῦ στρατοῦ καὶ τὴν 16ην διωρίσθη γραμματεὺς τῆς συνελεύσεως. Βραδύτερον, κατὰ τὸ 3ον ἔτος τῆς δημοκρατίας, διωρίσθη καὶ πάλιν διοικητὴς τῶν δυνάμεων τῶν Παρισίων καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ἐπρότεινε δὲ τότε ὡς ὑποστράτηγον τοῦ στρατοῦ τοῦ ἐσωτερικοῦ τὸν Βοναπάρτην. Ἐκλεγεὶς μέλος τοῦ Διευθυντηρίου, ἔπαιξεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς θορυβώδη ρόλον καὶ προσεπάθησε νὰ ὑποσκελίσῃ τοὺς συναδέλφους του, δὲν ἐπέτυχεν ὅμως παρὰ ν' ἀνατεθῇ εἰς αὐτὸν ἡ ἀστυνομία. Ἰδικὴ του πάλιν ὑπῆρξεν ἡ πρότασις ν' ἀνατεθῇ τότε εἰς τὸν Βοναπάρτην ἡ ἀρχηγία τοῦ στρατοῦ διὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας. Ἐν τῷ μεταξὺ διῆγε βίον ἡγεμονικῆς πολυτελείας ἐν Παρισίοις, ἀγοράσας δὲ μέγα ἀγρόκτημα ἐν Γκροσμπουά, τέως ἰδιοκτησίαν ἑνὸς τῶν ἀδελφῶν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ', ἤρχισεν ὀργανώνων ἐκεῖ μεγαλοπρεπεῖς ἑορτὰς καὶ βασιλικὰ κυνήγια. Ἡ ἐν Λουξεμβούργῳ κατοικία του εἶχε γίνει τὸ κέντρον τῆς «χρυσῆς νεολαίας», περίφημοι δὲ ἀπέμειναν αἱ δεξιώσεις του, εἰς τὰς ὁποίας προεξῆρχε καὶ ἔδιδε τὸν τόνον ἡ ὀνομαστὴ Τερέζια Καμπαρρούς, τότε κυρία Ταλιέν, καὶ ἐσύχναζον μεταξὺ τῶν ἄλλων ἡ σύζυγος τοῦ Βοναπάρτου, πρώην κόμισσα Μπωαρναί, ἡ κυρία Στάελ, ἡ κυρία Ρεκαμιέ, ὁ Ταλιέν, ὁ Μαρά, ὁ Ταλλεϋράνδος, ὁ Σιεγιές, ὁ Φουσσὲ καὶ πλῆθος ἄλλων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς. Τὴν 18ην Φρυκτιδὼρ ὁ Μπαρρὰ περιεβλήθη διὰ τρίτην φορὰν τὴν δικτατορίαν καὶ ἐπὶ μίαν διετίαν ὑπῆρξεν ὁ πραγματικὸς ἀρχηγὸς τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως. Μικρὸν κατὰ μικρὸν ὅμως ἡ ἐναντίον του καταφορὰ ὠγκοῦτο, ἀναγκασθεὶς δὲ νὰ τεθῇ ὑπὸ τὴν ἐπιρροὴν τοῦ Σιεγιὲς κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς 30ῆς Μαΐου τοῦ 7ου ἔτους τῆς δημοκρατίας, μετέστη ἔκτοτε εἰς δευτερεύοντα ὅλως ρόλον. Μετὰ τὴν 18ην Ὀμιχλώδους ὁ Βοναπάρτης τὸν ἐγκατέλιπε, καὶ ἠναγκάσθη τότε ν' ἀποσυρθῇ εἰς τὸ ἐν Γκροσμπουὰ κτῆμά του, μετά τινα δὲ χρόνον ἐλάμβανεν ἐκ μέρους τοῦ Ναπολέοντος τὴν διαταγὴν ν' ἀπομακρυνθῇ τεσσαράκοντα λεύγας μακρὰν τῶν Παρισίων. Παραμείνας ἐπί τινα καιρὸν εἰς Βρυξέλλας, ἐγκατεστάθη εἰς ἓν προάστειον τῆς Μασσαλίας. Ἦτο δ' ἐφεξῆς ἡ ἀσημότης του τόση, ὥστε κατὰ τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβόνων οὐδεὶς τὸν ἠνώχλησεν.

Ὁ Μπαρρὰ κατὰ τὰ ἔτη τῆς ἐν Μασσαλίᾳ διαμονῆς του συνέταξε σημειώματα ἀναμνήσεων, τὰ ὁποῖα ἐνεπιστεύθη εἰς τὸν φίλον του Ρουσσ'λὲν ντὲ Σαιντ-Ἀλμπέν, ἵνα καταρτίσῃ ἐξ αὐτῶν τὰ «Ἀπομνημονεύματα» του. Τμῆμα τούτων ἐδημοσιεύθη ἐν ἔτει 1873 ὑπὸ τὸν τίτλον «Στοιχεῖα σχετικὰ πρὸς τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν», τὸ δὲ σύνολον ἐν ἔτει 1895 εἰς 4 τόμους. Εἰς τὰ ἀπομνημονεύματα τοῦ Μπαρρὰ εὑρίσκει τις, παρεκτὸς τῆς πομπώδους ἀφηγήσεως τῶν κατὰ τὴν ἰδίαν αὐτοῦ δρᾶσιν, πληθὺν ἄλλων ἐνδιαφερουσῶν πληροφοριῶν, ἀναφερομένων εἰς τὴν ἐποχὴν τοῦ Διευθυντηρίου, εἰς τὴν νεότητα τοῦ Βοναπάρτου καὶ τὴν ζωὴν τῆς πρώτης αὐτοῦ συζύγου. Γ. Ζ.

**— Μπαρρὰ ντὲ Λὰ Πὲν** (Barras de La Penne), ***Ἰωάννης-Ἀντώνιος.*** Γάλλος ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1750. Διεκρίθη κατὰ τὸν βομβαρδισμὸν τῆς Γενούης, ἐγένετο δὲ βραδύτερον διοικητὴς τοῦ λιμένος τῆς Μασσαλίας καὶ ἐπιθεωρητὴς τῶν ναυτικῶν κατασκευῶν. Ἔγραψε πολλὰς μελέτας περὶ τοῦ ναυτικοῦ τῶν ἀρχαίων, τῆς μορφῆς τῶν τριήρεων κλπ. —Ω.

**μπαρράγκος** (Barrancos) *[Ἡφαιστ.]*. Ἱσπανικὴ λέξις, σημαίνουσα τὰς βαθείας, ἀκτινοειδῶς διατεταγμένας, αὔλακας καὶ φάραγγας, αἱ ὁποῖαι γεννῶνται ἐπὶ τῶν ἐξ ἐκλύτων ἡφαιστείων ἀναβλημάτων συνισταμένων πλευρῶν τῶν ἡφαιστείων διὰ τῆς διαβρωτικῆς ἐνεργείας τῶν ἀπορρεόντων ὀμβρίων ὑδάτων. Γ. Κ. Γ.

**Μπάρρακπουρ** (Barrackpur) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν Βεγγάλῃ, 32 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Β. τῆς Καλκούττας. Ἀποτελεῖ τὸ κατὰ προτίμησιν συχναζόμενον ὑπὸ τῶν Εὐρωπαίων τῆς Καλκούττας ἐξοχικὸν κέντρον ἀναψυχῆς καὶ ἔχει ἀνάκτορον τοῦ ἀντιβασιλέως, κείμενον ἐν μέσῳ θαυμασίου πάρκου. Κάτ. 39.090. Χ. Δ.

**Μπαρράλ** (Barral), ***Ἰωάννης-Αὐγουστῖνος.*** Γάλλος γεωπόνος καὶ χημικὸς ἐκ Μὲτς (1819—1884). Ἀπὸ τοῦ 1849 μέχρι τοῦ 1866 διηύθυνε τὴν ἐπιθεώρησιν «Journal d'agriculture pratique», εἶτα δὲ ἵδρυσε τὴν «Journal d'agriculture». Σπουδαιοτέρα χημικὴ ἐργασία του εἶναι ἡ ἀπομόνωσις τῆς νικοτίνης τοῦ καπνοῦ. Ἔγραψεν: «Ἐγχειρίδιον περὶ ἀποξηράνσεως τῶν ἀρωσίμων γαιῶν» (1854), «Ἡ γεωργία τῆς Β. Γαλλίας» (1867—1870) κ. ἄ. Ὁ Φ. Ἀραγκὸ τὸν εἶχεν ὁρίσει διὰ τὴν ἔκδοσιν τῶν «Ἀπάντων» του, τὰ ὁποῖα ἐδημοσίευσεν ἀπὸ τοῦ 1854 μέχρι τοῦ 1869. Ἀπὸ τοῦ 1880 εἶχεν ἐπιδοθῆ εἰς τὴν σύνταξιν μεγάλου «Λεξικοῦ γεωργικοῦ», τοῦ ὁποίου τὴν ἀποπεράτωσιν ἐθεώρει ὡς τὴν κατακλεῖδα τῆς σταδιοδρομίας του, ὁ θάνατος ὅμως προέλαβεν αὐτὸν εἰς τὴν ἀρχὴν τῆς ἐργασίας. Τὸ λεξικὸν τοῦτο συνεπληρώθη βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Ἐρρίκου Σανιέ. Χ. Δ.

**—Μπαρράλ** (Barral), ***ἀββᾶς Πέτρος.*** Γάλλος συγγραφεὺς (1702 — 1772). Ὀπαδὸς τῆς ἰανσενικῆς αἱρέσεως ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς τὸ «Ἱστορικόν, λογοτεχνικὸν καὶ κριτικὸν λεξικὸν τῶν διασήμων ἀνδρῶν» (1758), ἀπεκλήθη «Μαρτυρολόγιον τοῦ ἰανσενισμοῦ», διότι ἐγράφη ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἰανσενικῶν ἰδεῶν τοῦ συγγραφέως. Χ. Δ.

**Μπαρρανκίλλια** (Baranquilla) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κολομβίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ἀτλάντικο. Εἶναι τὸ μεγαλύτερον ἐμπορικὸν κέντρον τῆς χώρας, ἔχει ἐμπορικὸν ἐπιμελητήριον καὶ ἐξάγει πάντα τὰ ἐν Κολομβίᾳ παραγόμενα προϊόντα (καφέν, βανάνας, δέρματα, πολύτιμα μέταλλα κ. ἄ.). Κάτ. 64.543, μετὰ τοῦ *Πουέρτο Κολόμπια*. Χ. Δ.

**Μπαρρὰς** (Barras), ***Παῦλος.*** Γάλλος πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπαρρά*).

**Μπαρραφράνκα** (Barrafranca) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Καλτανισέττας τῆς Σικελίας. Κάτ. 12.195. Παράγει σιτηρά, λαχανικά, οἴνους, ἐλαίας καὶ ἔχει παρ' αὐτὴν ὀρυχεῖα θείου. Μ. Δ. Β.

**Μπαρρὲ** (Barré), ***Γουλιέλμος.*** Γάλλος ἱστοριογράφος (1760—1829). Ἐγεννήθη ἐν Γερμανίᾳ ἐκ γαλλικῆς οἰκογενείας προσφύγων διαμαρτυρομένων, μετέβη δὲ εἰς Γαλλίαν κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἐπαναστάσεως καὶ μετέσχε τῶν πρώτων εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατειῶν ὑπὸ τὸν Βοναπάρτην. Προαχθεὶς εἰς βαθμὸν λοχαγοῦ, ἐχρησιμοποιήθη λόγῳ τῆς γλωσσομαθείας του ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος ὡς διερμηνεύς, κατηγγέλθη ὅμως ὡς γράψας εἰς βάρος αὐτοῦ σατιρικοὺς στίχους καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Ἀγγλίαν. Ἐκεῖ ἐδημοσίευσε δύο ἔργα, διαπνεόμενα ὁμοίως ἀπὸ πνεῦμα δυσφημισμοῦ τοῦ Ναπολέοντος, ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Ἱστορία τῆς ἐν Γαλλίᾳ ὑπατείας τοῦ Βοναπάρτου» (Λονδῖνον 1807) καὶ «Ἀρχή, ἀκμή, παρακμὴ καὶ πτῶσις τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Βοναπάρτου» (Λονδῖνον 1815). Εἰς τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔργον του ὁ Μπαρρὲ ἐπρόκειτο νὰ προσθέσῃ καὶ δεύτερον τόμον, πρὸ τῆς ἐκδόσεως ὅμως αὐτοῦ ηὐτοκτόνησεν. —Ω.

**— Μπαρρὲ** (Barré), ***Λουδοβῖκος - Αὔγουστος.*** Γάλλος μηχανικὸς καὶ συγγραφεὺς (1827—1899). Ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς ἐργάτης ψηκτροποιός, κατώρθωσε δὲ διὰ τῆς φιλοπονίας καὶ τῆς φιλομαθείας του νὰ μορφωθῇ τόσον, ὥστε νὰ εἰσαχθῇ εἰς τὴν σχολὴν Τεχνῶν καὶ Βιομηχανιῶν, ἐκ τῆς ὁποίας ἐξῆλθε μηχανικὸς τῷ 1851. Συνέγραψεν ἀρκετὰ τεχνικὰ ἔργα, εἰς αὐτὸν δ' ὀφείλονται πολλοὶ μαθηματικοὶ τύποι, χρήσιμοι ἐν τοῖς ὑπολογισμοῖς τῆς ἀντιστάσεως τῆς ὕλης, καθὼς καὶ τὸ φερώνυμον αὐτοῦ θεώρημα, ἐφαρμοζόμενον ἐν τῇ κατασκευῇ τῶν γεφυρῶν. —Ω.

**μπάρρελ** (barrel) (τό). Ἀγγλικὸν μέτρον χωρητικότητος καὶ βάρους, ποικίλλον κατὰ τὰ διάφορα εἴδη. Οὕτω ἐν μπάρρελ ζύθου ἰσοδυναμεῖ πρὸς 36 γαλόνια, οἴνου πρὸς 33 $1/2$ γαλόνια, ἀλεύρου πρὸς 196 ἀγγλ. λίβρας (τῶν 453.5 γραμμ.), βουτύρου πρὸς 224 λίβρας κλπ. Ἀνάλογον εἶναι τὸ ἐν Ἑλλάδι χρησιμοποιούμενον μέτρον χωρητικότητος *βαρέλα* (βλ. λ.), ἰσούμενον συνήθως πρὸς 48 ὀκάδας, εἴς τινας δὲ περιφερείας πρὸς 54 καὶ 53. —Ρ.

**Μπαρρὲμ** (Barrême), ***Βερτράνδος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος μαθηματικὸς (1640—1703), ἀσχοληθεὶς ἰδικῶς εἰς τὴν ἐκπόνησιν μεθόδων καὶ πινάκων εὐχεροῦς ἀριθμητικοῦ λογισμοῦ. Ἐχρημάτισεν ἐν ἀρχῇ καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν εἰς σχολὰς τῶν Παρισίων, ἔλαβε δὲ κατόπιν τὸν τίτλον τοῦ «καθηγητοῦ τῶν μαθηματικῶν τοῦ βασιλέως» καὶ διωρίσθη ἐμπειρογνώμων παρὰ τῷ Γενικῷ Λογιστηρίῳ τοῦ κράτους. Ἐδημοσίευσε πολλὰ βιβλία ἀφιερωμένα τὰ πλεῖστα εἰς τὸν προστάτην του Κολμπέρ, τὰ ὁποῖα ἐπανεξεδόθησαν πολλάκις, τόσον ἐπὶ τοῦ ἰδίου, ὅσον καὶ μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ. Μεταξὺ τούτων μεγάλην διάδοσιν ἰδίως εἶχον ἡ «Ἀριθμητική» του, μεθοδικὸς ὁδηγὸς πρὸς ἐκμάθησιν τῆς ἀριθμητικῆς ἄνευ διδασκάλου, καὶ τὸ «Βιβλίον λογαριασμοῦ» περιλαμβάνον πολλοὺς πίνακας ἐκτελεσμένων λογαριασμῶν (πολλαπλασιασμοί, διαιρέσεως, τόκων, ἐξαγωγῆς ριζῶν κλπ.). Τὰ παρόμοια πρὸς τὸ τελευταῖον τοῦτο βιβλίον του πρακτικὰ λογιστικὰ βοηθήματα ἐπεκράτησε νὰ ὀνομάζωνται καὶ σήμερον ἔτι «μπαρέμ» (barrêmes ἢ barèmes). Γ. Ζ.

**Μπάρρεν νῆσος** (Barren Island) *[Γεωγρ.]*. Ἡφαιστειογενὴς νησὶς τοῦ κόλπου τῆς Βεγγάλης. Ἔχει μῆκος 3 περίπου χλμ., ἡ δὲ κορυφὴ τοῦ ἐπ' αὐτῆς ἡφαιστείου φθάνει μέχρι 1.005 ποδῶν. Τὸ ἡφαίστειον τοῦτο ἐσημείωσε περιόδους ἐνεργείας κατὰ τὰ ἔτη 1789, 1803 καὶ 1832. Χ. Δ.

**Μπαρρὲρ** (Barrère), ***Κάμιλλος.*** Γάλλος διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1851. Τῷ 1871 ἐξωρίσθη ὡς συμμετασχὼν τῆς κομμούνας καὶ κατέφυγεν εἰς Βερολῖνον, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1878. Ἀμνηστευθεὶς τότε, ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν καὶ ἐπεδόθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον. Τῷ 1880 διωρίσθη μέλος τῆς εὐρωπαϊκῆς ἐπιτροπῆς τοῦ Δουνάβεως καὶ τῷ 1883 γενικὸς πρόξενος ἐν Αἰγύπτῳ καὶ μέλος τῆς διεθνοῦς ἐπιτροπῆς τῆς

Digitized by Google

διώρυγος τοῦ Σουὲζ (1884). Ὑπηρέτησε κατόπιν ἀπὸ τοῦ 1885 μέχρι τοῦ 1897 ὡς πρεσβευτὴς ἐν Στοκχόλμῃ, Βέρνῃ καὶ Ρώμῃ, συνετέλεσε δὲ μεγάλως εἰς τὴν βελτίωσιν τῶν σχέσεων Γαλλίας καὶ Ἰταλίας, τὰς ὁποίας ἡ Τριπλῆ Συμμαχία καὶ ἡ πολιτικὴ τοῦ Κρίσπη εἶχον καταστήσει σχεδὸν ἐχθρικάς. Τῷ 1895 εἰς αὐτὸν εἶχεν ἀνατεθῆ ἡ διεξαγωγὴ τῶν διαπραγματεύσεων ἐπὶ τῆς γαλλοελβετικῆς συμφωνίας καὶ ἡ ὑπογραφὴ αὐτῆς, τῷ δὲ 1922 ἀντιπροσώπευσε τὴν γαλλικὴν κυβέρνησιν κατὰ τὴν διάσκεψιν τῆς Λωζάννης. —ω

**Μπαρρὲς** (Barrès), ***Μαυρίκιος-Αὔγουστος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Charmes τῶν Βοσγίων τῷ 1862 καὶ ἀποθανὼν ἐν Neuilly-sur-Seine τῷ 1923. Ἡ μήτηρ του κατήγετο ἐκ Λωρραίνης.

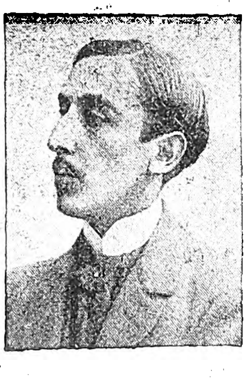

*Μαυρίκιος Μπαρρές.*

Ἐφοίτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν κολλέγιον τῆς Malgrange, κατόπιν εἰς τὸ λύκειον τοῦ Νανσὺ καὶ τέλος εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τῆς αὐτῆς πόλεως. Ὡς φοιτητὴς τῆς νομικῆς ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτόν του ἄρθρον περὶ τοῦ Paul de Sainte-Victor ἐν «Journal de Meurthe-et-Moselle» καὶ συνειργάζετο εἰς τὸ περιοδικὸν «Jeune France». Τῷ 1883 ἔλαβε τὸ δίπλωμα τῆς νομικῆς ἐν Παρισίοις, καὶ μετ' ὀλίγον ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Les taches d' encre», τὸ ὁποῖον ὅμως ὑπῆρξε βραχύβιον. Τὸ πρῶτόν του βιβλίον ἐξέδωκε τῷ 1888 ὑπὸ τὸν τίτλον «Sensations de Paris. Le Quartier latin». Ἓν ἕτερον ἔργον του: «Huit jours cher M. Renan», ἐκδοθὲν κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος, ἐπροκάλεσε μέγα ἐνδιαφέρον. Τὸ ἔργον τοῦτο ἀπετέλει φανταστικὸν διάλογον μεταξὺ τοῦ Renan, τοῦ συγγραφέως καὶ ἄλλων τινῶν. Παρομοίας φύσεως εἶναι καὶ τὸ ἔργον «M. Taine en voyage». Τῷ 1888 διὰ τοῦ τόμου «Sous l'oeil des barbares» ἐγκαινίασε τὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Le culte du moi» τριλογίαν του, ἧς τὰ δύο ἄλλα ἔργα ἦσαν: «Un homme libre» (1889) καὶ «Le jardin de Bérénice» (1891), τὸ ὁποῖον ἔχει μεταφρασθῆ καὶ εἰς τὴν ἑλληνικήν. Εἰς τὴν τριλογίαν ταύτην ὁ συγγραφεὺς ἀναδεικνύεται ἄκρως ἀτομικιστὴς καὶ στενῶς προσδεδεμένος εἰς τὴν ἀγάπην τοῦ πατρίου ἐδάφους. Ταυτοχρόνως ὅμως ἐφαίνετο ἀποκλίνων πρὸς εἶδός τι σοσιαλισμοῦ παραπλησίου πρὸς τὸν τοῦ A. Comte καὶ τοῦ Proudhon, τὸν ὁποῖον προσεπάθει νὰ συμφιλιώσῃ πρὸς τὸν ἐθνικισμόν. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικήν, ἐξετέθη ὡς ὑποψήφιος τοῦ κόμματος τοῦ Μπουλανζὲ καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Νανσύ. Ὡς βουλευτής, δὲν διεδραμάτισε σπουδαῖον πρόσωπον. Τῷ 1891 ἐξέδωκε τὴν μελέτην «Trois stations de psychothérapie», εἰς τὴν ὁποίαν ὁμιλεῖ περὶ τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι, τοῦ Κεντὲν ντὲ λὰ Τοὺρ καὶ τῆς Μ. Μπασκίρτσεφ. Ἀκολουθοῦν τὰ ἔργα «Toute licence sauf contre l' amour» (1892), ἐγελειανῆς φιλοσοφίας, τὸ συμπλήρωμα τῆς τριλογίας: «Le culte du moi», ὑπὸ τὸν τίτλον: «Examen de trois idéologies» (1892), καὶ τὸ ἀναρχικῆς ὑποθέσεως: «L'ennemi des lois (1893).

Ἀποτυχὼν εἰς τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1 93 ἐν Παρισίοις, διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1894 μέχρι τοῦ 1895 τὴν «Cocarde», ὅπου ἀνέπτυξε πολιτικὰς ἰδέας, αἱ ὁποῖαι ἀπετέλουν μεῖγμα ἀτομικισμοῦ, φεντεραλισμοῦ, ἐγελειανισμοῦ, προυντωνικοῦ σοσιαλισμοῦ κτλ. Τῷ 1894 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς καὶ τὴν τρίπρακτον κωμῳδίαν ἠθῶν: «Une journée parlementaire». Περὶ τὰ τέλη τοῦ 1894 ἐξεδόθη τὸ ἔργον του «Du sang, de la volupté et de la mort», διακρινόμενον διὰ τὸν ἁγνὸν λυρισμὸν καὶ τὸν ἡδονιστικὸν ρωμαντισμόν του. Ἀπὸ τοῦ 1894 ἐσχεδίαζε τὴν συγγραφὴν ἑνὸς «ρωμάντζου ἐθνικῆς ἐνεργείας», τὸ ὁποῖον ἐξεδόθη εἰς τρεῖς τόμους. Ὁ πρῶτος ὑπὸ τὸν τίτλον «Les déracinés» (1897) περιγράφει τὴν λυπηρὰν ἱστορίαν ἑπτὰ νέων ἐκ Λωρραίνης, οἱ ὁποῖοι ἐλθόντες εἰς Παρισίους πρὸς ἀνεύρεσιν τύχης ἀπέτυχον, διότι ἀπεχωρίσθησαν τῆς πατρῴας γῆς καὶ τῶν νεκρῶν των. Ὁ δεύτερος: «L' appel au soldat» (1900), πολιτικοῦ περιεχομένου, ἐμφανίζει τὸν μπουλανζισμὸν ὡς μίαν ἐξ ἐκείνων τῶν κρίσεων, καθ' ἃς ἔθνος τι ἔχει ἔντονον τὴν αἴσθησιν τῆς ἀντιθέσεώς του πρὸς τὸ ἐξωτερικὸν καὶ τῆς ἰδίας του παραδόσεως. Ὁ τρίτος τόμος: «Leurs figures» (1902) εἶναι μᾶλλον ἱστορικὸς πίναξ, εἰς τὸν ὁποῖον παρελαύνουν τὰ σκάνδαλα τοῦ Παναμᾶ, αἱ θορυβώδεις συνελεύσεις τῆς βουλῆς, ἡ ἀγωνία τῶν πολιτικῶν ἀρχηγῶν κτλ.

Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μπαρρὲς εἶχε γίνει μέλος τῆς «Ἑνώσεως τῶν πατριωτῶν». Κατὰ τὴν ὑπόθεσιν Ντρεϋφοὺς ἐπρωτοστάτησεν εἰς τὴν ἵδρυσιν τῆς «Ἑνώσεως τῆς γαλλικῆς πατρίδος», ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τοῦ κόμματος τῶν ἐθνικοφρόνων, καὶ ἵδρυσε μετὰ τοῦ Déroulède τὴν ἐφημερίδα «Le drapeau». Ἐκ τῆς ὑποθέσεως Ντρεϋφούς, εἰς τὴν ὁποίαν ἐτήρησεν ἀντιδραστικὴν στάσιν, εἶναι ἐμπνευσμένον καὶ τὸ ἔργον: «Scènes et doctrines du nationalisme» (1902). Τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξέδωκε καὶ τὸ «Amori et dolori sacrum», συλλογὴν ἐξ ἐκτάκτως ρωμαντικῶν τεμαχίων. Τῷ 1903 ἐξέδωκε τὸ βιβλίον: «Les amitiés françaises: notes sur l' acquisition par un petit Lorrain des sentiments qui donnent un prix à la vie» τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖ ὑποθήκας πρὸς τὸν υἱόν του καὶ κηρύττει τὴν ἀγάπην τῆς γῆς, τὴν μνήμην τῶν προγόνων καὶ τὴν ἀνάγκην πεποιθήσεως ἐν τῇ ζωῇ. Ἄλλα δύο ἔργα: «Au service de l'Allemagne» (1905) καὶ «Colette Baudoche, histoire d'une jeune fille de Metz» (1909), ἐγράφησαν ὑπὸ τὴν ἔμπνευσιν τῆς ἀγάπης πρὸς τὴν ἀλύτρωτον τότε πατρίδα του Λωρραίνην. Εἰς τὸ μεταξὺ διάστημα, τῷ 1906, ἐξέδωκε τὸ «Voyage à Sparte», ὅπου ὁμιλῶν περὶ πλείστων καὶ διαφόρων πραγμάτων διαφωνεῖ πρὸς τὴν καθιερωμένην ἀρχαιολατρείαν, ἀποθαυμάζων περισσότερον τὰ ἐρείπια ἀπὸ τὸν Παρθενῶνα.

Τῷ 1906 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἀπομακρυνθεὶς τοῦ κοινοβουλίου ἀπὸ τοῦ 1893, ἐπανῆλθεν εἰς αὐτὸ τῷ 1906 ὡς βουλευτὴς Παρισίων καὶ ἠγωνίσθη εἰς τὰ ζητήματα τοῦ χωρισμοῦ τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ κράτους καὶ τῶν ἱερατικῶν ταγμάτων, ὑπεραμυνθεὶς τοῦ καθολικισμοῦ. Τῷ 1911 ἐξέδωκε πραγματείαν περὶ τοῦ Δομινίκου Θεοτοκοπούλου, ὑπὸ τὸν τίτλον «Greco, le secret de Tolède», μετὰ δύο δ' ἔτη «La colline inspirée», ὅπου περιγράφει τὴν ἱστορίαν τριῶν αἱρετικῶν ἱερέων τῆς Λωρραίνης. Ὅταν ἐκηρύχθη ὁ Παγκόσμιος πόλεμος, ὁ Μπαρρὲς ἦτο πρόεδρος τῆς «Ἑνώσεως τῶν πατριωτῶν» καὶ ὡς τοιοῦτος εἰργάσθη καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν αὐτοῦ διὰ τὴν διατήρησιν καὶ ἀνύψωσιν τοῦ ἠθικοῦ τοῦ γαλλικοῦ ἔθνους, καταπολεμῶν κάθε ἐκδήλωσιν ἡττοπαθείας καὶ κάθε τάσιν εἰρηνιστικήν. Τὰ κατὰ τὸ διάστημα τοῦ πολέμου δημοσιευθέντα πολεμοχαρῆ ἄρθρα του ἐν τῇ «L'écho de Paris», ἐξεδόθησαν εἰς 12 τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον: «L'âme française et la guerre» (1915—1919) καὶ βραδύτερον εἰς 14 τόμους ὑπὸ νέον τίτλον: «Chronique de la grande guerre» (1922—1924). Κατὰ τὴν πολεμικὴν περίοδον ἐδημοσίευσεν ἐπίσης καὶ τὰ ἔργα: «Autour de Jeanne d'Arc» (1916), «Dix jours en Italie» (1916), «Les divers familles spirituelles de la France» (1917), «Les traits éternels de la France» (1918). Μετὰ τὴν ἀνακατάληψιν τῆς Ἀλσατίας καὶ Λωρραίνης ὑπὸ τῆς Γαλλίας ἐδημοσίευσε τὸ βιβλίον «L'appel du Rhin; la minute sacrée» (1919). Μολονότι ἡ συνθήκη τῆς εἰρήνης δὲν ἱκανοποίει τὴν ἰμπεριαλιστικήν ὁρμήν του, δὲν ἀντέδρασεν ὅμως καὶ κατ' αὐτῆς, ἀλλὰ περιωρίσθη εἰς ρηνανικὴν πολιτικήν: «La France dans les Pays rhénans; une tache nouvelle» (1919), «Le genie du Rhin» (1921). Τῷ 1920 ἐπανεξελέγη βουλευτὴς Παρισίων εἰς τὸ ἐθνικὸν μπλὸκ καὶ ὡς τοιοῦτος ἠγωνίσθη ὑπὲρ τῆς Ἐκκλησίας, συγγράψας καὶ σχετικὰ ἔργα περὶ τῶν ἱεραποστόλων καὶ τῶν διαφόρων μοναχικῶν ταγμάτων. Τὸ τελευταῖόν του μυθιστόρημα ὑπῆρξε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Un jardin sur l'Oronte» (1922), ἐμπνευσθὲν ἐκ ταξιδίου του ἀνὰ τὴν Ἀνατολήν, ὅπερ εἶναι τρυφερὰ ἐρωτικὴ ἱστορία τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ὁ Μπαρρὲς ὑπῆρξεν ὡς λογοτέχνης μὲν λεπτὸς ψυχολόγος, λυρικός, συναισθηματικός, ρωμαντικὸς εἰς ἐποχὴν κυριαρχίας τοῦ ρεαλισμοῦ, πλήρης ἰδεαλισμοῦ καὶ ἀγάπης πρὸς τὸ παρελθόν, ὡς πολιτικὸς δὲ συντηρητικὸς εἰς τὸ ἔπακρον, ἰμπεριαλιστής, φιλοπόλεμος, ἔνθερμος πατριώτης καὶ κληρικόφρων. θ. π.

**Μπαρρεσβὶλ** (Barreswill), ***Κάρολος - Λουδοβῖκος.*** Γάλλος χημικὸς (1817 — 1870). Διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ ἐργαστηρίου τοῦ διδασκάλου του Πελοὺζ καὶ ἐδίδαξε χημείαν ἐν τῇ ἀνωτάτῃ ἐμπορικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων. Τῷ 1865 ἵδρυσε τὴν «Ἑταιρείαν προστασίας τῶν ἐν ταῖς βιομηχανίαις ἐργαζομένων ἀνηλίκων». Σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ ἐργασίαι του ἐπὶ τοῦ θειικοῦ ὀξέος καὶ τῶν χρωμάτων, ἐδημοσίευσε δέ, παρεκτὸς τῶν εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ μελετῶν αὐτοῦ, δεκάδα ἔργων εἰς τόμους, ἐν οἷς: «Φωτογραφικὴ χημεία» (1854), «Λεξικὸν τῆς βιομηχανικῆς χημείας» (1861—1868), «Σύνοψις ἐφηρμοσμένης χημείας» (1866) κτλ. —ω.

**Μπάρρετ** (Barret), ***Ἀρθοῦρος.*** Ἄγγλος στρατάρχης, γεννηθεὶς τῷ 1857. Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν ἐναντίον τῶν Ἀφγανῶν πόλεμον, εἶτα δὲ ἐτοποθετήθη εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ ἐν Ἰνδίαις ἀγγλικοῦ ἀποικιακοῦ στρατοῦ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διετέλεσεν ἀρχηγὸς μεραρχίας ἐν Μεσοποταμίᾳ καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις ἐν Μπάστρᾳ. Ἐπιστρέψας εἰς τὰς Ἰνδίας ἐπολέμησεν ἐναντίον τῶν Μαχσοὺντ (Αὔγουστος 1917) καὶ τῷ 1919 διεπραγματεύθη τοὺς ὅρους τῆς συνθήκης. Προήχθη εἰς στρατηγὸν τῷ 1917 καὶ ὠνομάσθη στρατάρχης τῷ 1918. Α. Δ.

—**Μπάρρετ** (Barrett), ***Ἐλισάβετ.*** Ἀγγλὶς ποιήτρια (βλ. λ. *Μπράουνινγκ*).

**Μπαρρέτα** (ἡ) (Barrette), barretto). Κάλυμμα τῆς κεφαλῆς τῶν λατίνων κληρικῶν, εἶδος τρικώχου ἢ τετρακώχου σκούφου. Ἡ μπαρρέτα τῶν καρδιναλίων εἶναι τρίκωχος ἐρυθροῦ χρώματος, αἱ δὲ τῶν λοιπῶν βαθμούχων μαῦραι.

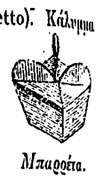

*Μπαρρέτα.*

**Μπάρρι** (Barrie) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Καναδᾶ ἐν τῇ πολιτείᾳ Ὀντάριο, 100 χλμ. ΒΒΔ. τοῦ Τορόντο. Εἶναι σπουδαιότατος κόμβος τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς ἀρτηρίας τοῦ Εἰρηνικοῦ. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν, ξυλείας, ζύθου, ἐρίου κλπ. Κάτ. 6.420. Χ. Δ.

**Μπάρρι** (Barrie), ***Ἰάκωβος-Ματθαῖος.*** Ἄγγλος μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1860. Ἠκολούθησε τὴν παράδοσιν τοῦ Βάλτερ Σκῶττ καὶ τοῦ Τζὼν Γκὼλτ ἐν τῇ ἀπεικονίσει τῶν ἀγροτικῶν ἐθίμων τῆς Σκωτίας. Ἤρχισε τὴν λογοτεχνικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὰ μυθιστορήματα: «Προτιμότερος ὁ θάνατος», «Εἰδύλλιον ποὺ φωτίζει μιὰ περασμένη μέρα» καὶ «Τὸ κασσιτερωμένο παράθυρο». Ὡς θεατρικὸς συγγραφεὺς διεκρίθη ἐκ τῶν δραμάτων «Walker London», «Ὁ ἔρως ἑνὸς καθηγητοῦ», «Ὁ μικρὸς ὑπουργὸς» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπαρριὰ** (Barrias), ***Λουδοβῖκος-Ἐρνέστος.*** Γάλλος γλύπτης (1841—1905). Λίαν ἐνωρὶς ἐτράπη πρὸς τὴν γλυπτικὴν καὶ εἰσῆλθε πρὸς μαθητείαν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Καβελιὲ καὶ τοῦ Ζουφφρουᾶ· ἐπὶ πλέον ἠκολούθησε τὰ μαθήματα τῆς ἐν Παρισίοις σχολῆς τῶν καλῶν τεχνῶν. Τῷ 1865 ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης, τῷ δὲ 1870 ἐβραβεύθη διὰ τὸ ἐκτεθὲν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν ἔργον του «Νεᾶνις ἐκ Μεγάρων». Τῷ 1872 ἐξέθηκε τὸν «Ὅρκον τοῦ Σπαρτάκου» καὶ τὴν «Τύχην μετὰ τοῦ Ἔρωτος», ἔργα ἄκρως ἐκτιμηθέντα καὶ βραβευθέντα διὰ πρώτου βραβείου. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ὁ Μπαρριὰ παρήγαγε μέγα πλῆθος συμπλεγμάτων, μεμονωμένων ἀγαλμάτων καὶ προτομῶν, δι' ὧν κατέλαβεν ἐξέχουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν νεωτέρων Γάλλων καλλιτεχνῶν. Τῷ 1884 ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἡ θρησκεία», «Ἡ ἐλεημοσύνη», «Ἐπιτάφιον μνημεῖον», «Ἡ πρώτη κηδεία» (ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὔα ἀποκομίζοντες πρὸς ταφὴν τὸν νεκρὸν τοῦ Ἄβελ), «Βερνάρδος Παλισσύ», «Μόζαρτ», «Ἡ ἄμυνα τῶν Παρισίων», τὸ ἀναμνηστικὸν μνημεῖον τῆς ἐκστρατείας τῆς Μαδαγασκάρης κλπ. Ι. Μ. Π.

—**Μπαρριὰ** (Barrias), ***Φῆλιξ-Ἰωσήφ.*** Γάλλος ζωγράφος (1822—1907). Ἐδιδάχθη τὸ σχέδιον παρὰ τοῦ πατρός του, ζωγράφου ἐπὶ πορσελλάνης, μετὰ ταῦτα δ' εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Λέοντος Κονιὲ καὶ τῷ 1844 ἔτυχε τοῦ πρώτου μεγάλου βραβείου Ρώμης. Μετέσχε τακτικῶς τῶν παρισινῶν ἐκθέσεων ἀπὸ τοῦ 1840, ἐξετέλεσε δ' ἐξαιρέτους τοιχογραφίας ἐν τῷ παρεκκλησίῳ τῆς Ἁγίας Γενεβιέβης (ναὸς Ἁγίας Τριάδος) ἐν Παρισίοις. Ἡ τέχνη του διακρίνεται διὰ τὴν εὐχέρειαν τῆς ἐκτελέσεως, τὴν ζωηρότητα τοῦ χρωματισμοῦ, τὴν ὁρμητικότητα τῶν κινήσεων καὶ τὴν καθόλου ἐνάργειαν τῆς ἐκφράσεως. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Οἱ ἐξόριστοι τοῦ Τιβερίου» (1851, Μουσεῖον Λουξεμβούργου), «Ὁ Ὀδυσσεὺς καὶ ἡ τροφός του» (Λίλλη), «Ἀνθοπῶλις» (Νάντη). Ι. Μ. Π.

**Μπαρριὲρ** (Barrière), ***Θεόδωρος.*** Γάλλος δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1823 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1877. Κατ' ἀρχὰς ἐγένετο χαράκτης χαρτῶν καὶ εἰργάσθη ὡς τοιοῦτος ἀπὸ τοῦ 1834 μέχρι τοῦ 1843. Τὸ πρῶτόν του ἔργον ὑπῆρξε τὸ κωμειδύλλιον «Rosière et Nourrice», τὸ ὁποῖον ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ἐντὸς τριακονταετίας ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς, εἴτε μόνος του εἴτε μετ' ἄλλων, περὶ τὰ ἑκατὸν ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «La vie de Bohême» (1849) μετὰ τοῦ H. Murger, εἰς πράξεις πέντε, εἰλημμένον ἐξ ὁμωνύμου μυθιστορήματος καὶ σχὸν μακρὰν σειρὰν παραστάσεων, «Un monsieur qui suit les femmes» (1850) μετὰ τοῦ A. Decourcelle, «Manon Lescaut» (1851), δρᾶμα μετὰ τοῦ M. Fournier, «Le piano de Berthe» (1852), κωμῳδία εἰς πρᾶξιν μίαν μετὰ τοῦ J. Lorin, «Le Lys dans la vallée» (1853) μετὰ τοῦ A. de Beauplan, δρᾶμα εἰλημμένον ἐκ τοῦ μυθιστορήματος τοῦ Balzac, «Les filles de marbre» (1853) μετὰ τοῦ L. Thiboust, δρᾶμα εἰς πέντε πράξεις, σχὸν μεγίστην ἐπιτυχίαν, «Les faux bonshommes» (1856) μετὰ τοῦ H. Capendu, ἐπίσης καταπληκτικῆς ἐπιτυχίας, «Les fausses bonnes femmes» (1857), «L'héritage

*Θεόδωρος Μπαρριέρ.*

Digitized by Google

de M. Plumet» (1857), «L'outrage»(1858) δρᾶμα, μετὰ τοῦ E. Plouvier, «Le feu an couvent» (1860) κωμῳδία μονόπρακτος, ἐπιτυχεστάτη, «La maison du Pont-Notre-Dame» (1861) μετὰ τοῦ H. de Kock, «Le bout de l'an de l'amour» (1863), «Le démon du jeu» (1863) μετὰ τοῦ H. Crisafulli, «Aux crochets d'un gendre» (1864) καὶ «Les jocrisses de l'amour» (1865) μετὰ τοῦ L. Thiboust, «Théodoros» (1868) δρᾶμα, «Le crime de Faverne» (1868), «Le sacrifice» (1869) μετὰ τοῦ L. Beauvallet, «Le Gascon» (1878) δρᾶμα, μετὰ τοῦ Davil. Ἐπίσης ἐξέδωκε καὶ τὴν κωμῳδίαν «Malheur aux vaincus», τῆς ὁποίας ἀπηγορεύθη ἡ ἐπὶ σκηνῆς ἀναβίβασις τῷ 1865 διὰ λόγους πολιτικούς. Θ. Π.

**Μπαρρίλι** (Barrili), ***Ἀντώνιος-Ἰούλιος***. Ἰταλὸς λογογράφος, πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος (1836—1908). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν στρατὸν καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὰ γράμματα καὶ τὴν δημοσιογραφίαν. Διηύθυνεν ἐν Γενούῃ τὰς ἐφημερίδας «Movimento», «Κάφφαρο» (ἣν ἵδρυσε τῷ 1876) καὶ «Κολόμπο» καὶ ἐθεωρεῖτο ὁ κυριώτερος ἑρμηνευτὴς τῶν ἰδεῶν τοῦ Γαριβάλδι. Τῷ 1876 ἐξελέγη βουλευτής, ἀλλὰ παρῃτήθη κατόπιν, καὶ τῷ 1894 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἰταλικῆς λογοτεχνίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον της Γενούης, τοῦ ὁποίου ἐγένετο τῷ 1903 πρύτανις. Ὑπῆρξε πολυγραφώτατος καὶ ἔγραψε ποικίλης φύσεως ἔργα, διακρινόμενος διὰ τὴν σαφήνειαν τοῦ ὕφους, τὴν περιγραφικὴν δύναμιν καὶ τὴν ζωηρότητα τῆς φαντασίας. Ἐκ τῶν ἔργων του, μεταξὺ τῶν ὁποίων καταλέγονται καὶ 70 μυθιστορήματα, τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ὁ καπετὰν Ντοντέρο» (1865), «Ἁγία Καικιλία» (1866), «Κοιλὰς ἐλαιῶν» (1873), «Σεμίραμις» (1873), «Σὰν ὄνειρο» (1875), «Σιδηρᾶ καρδία καὶ χρυσῆ καρδία» (1877), ἡ τετραλογία ἡ στρεφομένη περὶ τὸν βίον τοῦ Χρ. Κολόμβου: «Αἱ δύο Βεατρίκαι», «Οἱ υἱοὶ τοῦ οὐρανοῦ», «Χρυσοῦν ἄνθος», «Ἀκτὶς θεοῦ» (1891—1894). Τὸ τελευταῖον μυθιστόρημα ὑπῆρξεν «Ἡ γέφυρα τοῦ παραδείσου» (1904). Ἐπίσης ἔγραψε δεκάτομον φιλολογικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀπὸ τοῦ Βιργιλίου εἰς τὸν Δάντην», τὰς πολεμικὰς ἀναμνήσεις «Μὲ τὸν Γαριβάλδην πρὸ τῆς Ρώμης» (1895) καὶ διαφόρους ποιητικὰς συλλογάς. Τὰ ἔργα τοῦ Μπαρρίλι ἐξεδόθησαν εἰς πολλὰς ἐκδόσεις. Μ.Δ.Β.

**Μπάρρινγκτον** (Barrington), ***Δανιήλ***. Ἄγγλος νομικός, ἀρχαιολόγος καὶ φυσιοδίφης (1727—1800). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς νομικά, ἀλλὰ βραδύτερον ἀφιερώθη εἰς μελέτας ἀρχαιολογικὰς καὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας, ἀναδειχθεὶς εἷς τῶν σοφωτέρων μελετητῶν τῆς ἐποχῆς του. Κατέλαβεν ἐν ἀρχῇ ἀνωτάτας δικαστικὰς θέσεις καὶ ἐγένετο σύμβουλος τοῦ βασιλέως, γενόμενος καὶ μέλος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Λονδίνου καθὼς καὶ τῆς ἀρχαιολογικῆς. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν καταστατικῶν χαρτῶν καὶ ἰδίως ἐπὶ τῶν παλαιοτέρων τοῦ Μεγάλου χάρτου» (1766), ἔργον τὸ ὁποῖον ἐξεδόθη πολλάκις καὶ ἐκτιμᾶται μεγάλως μεταξὺ τῶν νομομαθῶν τῆς Ἀγγλίας, «Τὸ καλανδάριον τοῦ φυσιοδίφου» (1767), «Ἀνάμεικτα» (1780), συλλογὴ μελετῶν νομικῶν καὶ ἱστορικῶν, γεωγραφικῶν, φυσικῆς ἱστορίας κτλ. Τὸ ἔργον αὐτοῦ «Πιθανότητες μεταβάσεως εἰς τὸν Β. Πόλον», ἐκδοθὲν τῷ 1775, προεκάλεσε τὴν ἐξερεύνησιν τοῦ Β. Πόλου ὑπὸ τοῦ πλοιάρχου Φίλιπς. Ο. Ρ.

**Μπάρριος** (Barrios), ***Γεράρδος***. Πολιτικὸς τοῦ Σὰν Σαλβατὸρ (1809—1865). Μετέσχε τοῦ ἐναντίον τῶν πειρατῶν τοῦ Οὐῶλκερ πολέμου καὶ τοῦ ἀποτυχόντος κατὰ τοῦ προέδρου Κάμπο (1877) πραξικοπήματος. Ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ἐπὶ Σαντέν, ὃν καὶ ἀνέτρεψε (1859), καὶ πρωθυπουργὸς ὑπὸ δύο προσωρινοὺς προέδρους. Κατώρθωσε καὶ ἐξελέγη προσωρινὸς καὶ εἶτα (1860) τακτικὸς δι' ἓξ ἔτη πρόεδρος τῆς δημοκρατίας, περιβληθεὶς εὐθὺς ἀπὸ τοῦ δευτέρου μηνὸς τῆς ἐκλογῆς του δικτατορικὴν ἐξουσίαν. Ἀναδιωργάνωσε τὴν διοίκησιν, προήγαγε τὴν παιδείαν, τὴν βιομηχανίαν καὶ τὸ ἐμπόριον, καὶ ἐδημοσίευσε τὸν ἀστικὸν καὶ ποινικὸν κώδικα. Ἐλθὼν εἰς ῥῆξιν πρὸς τὸν συντηρητικὸν πρόεδρον τῆς Γουατεμάλας Καρρέρα, ἐκήρυξε πόλεμον κατ' αὐτοῦ, ἡττηθεὶς ὅμως κατέφυγεν εἰς Νικαράγουαν καὶ ἐπεχείρησε νὰ προπαρασκευάσῃ ἐκεῖθεν κίνημα πρὸς ἀνακατάληψιν τῆς ἀρχῆς ἐν τῇ χώρᾳ του. Ἐκδοθεὶς ὅμως ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως τῆς Νικαράγουας εἰς τὴν κυβέρνησιν τοῦ Σὰν-Σαλβατόρ, παρεπέμφθη εἰς τὸ στρατοδικεῖον καὶ ἐτυφεκίσθη.

—**Μπάρριος** (Barrios), ***Ἰοῦστος-Ρουφῖνος***. Πολιτικὸς τῆς Γουατεμάλας (1835—1885). Σπουδάσας νομικά, ἐγκατέλειψε τὴν ἐπιστήμην του καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατόν, λαβὼν μέρος εἰς τὸ ἐναντίον τοῦ προέδρου Τσέρνα κίνημα (1871). Προσχωρήσας εἰς τὸ προοδευτικὸν δημοκρατικὸν κόμμα, διωρίσθη ἀρχιστράτηγος καὶ τῷ 1873 διὰ πραξικοπήματος ἀνέλαβε τὴν προεδρίαν τῆς δημοκρατίας, κυβερνήσας δικτατορικῶς μέχρι τοῦ ἔτους 1885. Ἐξαιρέσει τῶν ὑπεράγαν αὐστηρῶν μέτρων, ἅτινα διέκρινον τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἄσκησιν τῆς ἐξουσίας, ὁ Μπάρριος συνέβαλε πολὺ εἰς τὴν πρόοδον τῆς χώρας του, τὴν ἀνάπτυξιν τῶν συγκοινωνιῶν καὶ τῶν δημοσίων ἔργων. Φιλοδοξῶν ὅπως καταρτίσῃ ὁμοσπονδίαν τῶν δημοκρατιῶν τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς, ἀνεμείχθη εἰς τὰ ἐσωτερικὰ πολλῶν κρατῶν αὐτῆς. Τότε συνησπίσθησαν ἐναντίον του τινὰ τούτων, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὸ Σαλβατόρ. Ὁ Μπάρριος τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στρατοῦ ἐβάδισε κατ' αὐτῶν, πεσὼν ὅμως εἰς ἐνέδραν ἐφονεύθη. Γ. Ι. Β.

—**Μπάρριος** (Barrios), ***Ἰωσὴφ-Μαρία-Ρέϊνα***. Στρατηγὸς καὶ πρόεδρος τῆς Γουατεμάλας, δολοφονηθεὶς τὴν 8 Φεβρουαρίου 1898. Ἀνέλαβε τὴν προεδρίαν τῷ 1892, ἀναγκασθεὶς νὰ διαλύσῃ μετὰ ἓν ἔτος τὴν βουλὴν λόγῳ τῆς ὑπ' αὐτῆς ἀσκουμένης σφοδρᾶς ἐναντίον του ἀντιπολιτεύσεως. Ἐκυβέρνησεν ἔκτοτε δικτατορικῶς. Προέβη εἰς ἀπελευθέρωσιν τῶν Ἰνδιῶν, ἐρρύθμισε τὸ ζήτημα τῆς μεταναστεύσεως καὶ συνῆψε συμφωνίαν μετὰ τοῦ Μεξικοῦ ἀφορῶσαν τὸν κανονισμὸν τῶν συνόρων. Ὡς πρὸς τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικὴν ἦτο ὑπὲρ τῆς ἱδρύσεως ὁμοσπονδίας τῶν κρατῶν τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς.

**Μπαρρὸ** (Barrot), ***Κάμιλλος-Ὑάκινθος-Ὀντιλόν***. Γάλλος πολιτικὸς (1791—1873). Ἀφωσιωμένος εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ 1789 καὶ τὰς συνταγματικὰς ἰδέας, παρέμενε συγχρόνως φίλος τῆς μοναρχίας καὶ εἶδε μετ' εὐχαριστήσεως τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων. Ἀποθαρρυνθεὶς τελείως ἐκ τοῦ πραξικοπήματος τοῦ Ναπολέοντος Γ', ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς καὶ προσεπάθησε νὰ παρασκευάσῃ τὸ ἔδαφος πρὸς ἓν αὐτοκρατορικὸν πολίτευμα, ἐμπνεόμενον ὑπὸ συνταγματικῶν ἰδεῶν. Μετὰ τὴν ἀνατροπὴν τοῦ Ναπολέοντος (1870) ὁ Θιέρσος διώρισεν αὐτὸν πρόεδρον τοῦ συμβουλίου τῆς ἐπικρατείας. Ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα, δημοσιευθέντα ὑπὸ τὸν τίτλον «Mémoires postumes d'Odilon Barrot» (1875—1876). Χ. Δ.

**Μπάρροου** (Barrow) *[Γεωγρ.]*. —1) Μέγας διέκπλους τοῦ Βορείου Παγωμένου ὠκεανοῦ, θέτων εἰς ἐπικοινωνίαν τὸν κόλπον Μπούθια μετὰ τοῦ κόλπου Μέλβιλλ. Εἶναι πλάτους 200 περίπου χλμ. καὶ μήκους 320, ἔχει διεύθυνσιν ἀπὸ Α. πρὸς Δ. καὶ ἀνοίγεται μεταξὺ τῶν νήσων Νὸρθ Ντέβον, Κορνουῶλλις καὶ Μπάθωρστ πρὸς Β. καὶ Σόμμερσετ καὶ Πρίγκιπος τῆς Οὐαλλίας πρὸς Ν. Πρὸς Α. τὸ στενὸν τοῦ Μπάρροου συνεχίζεται ὑπὸ τοῦ στενοῦ τοῦ Λανγκάστερ, τὸ ὁποῖον ἐξέρχεται εἰς τὴν θάλασσαν τοῦ Μπάφφιν. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1819 ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου ἐξερευνητοῦ Πήρρυ, ὅστις ἔδωσεν αὐτῷ τὸ ὄνομα τοῦ θερμοῦ ὑποστηρικτοῦ τῶν ἐξερευνήσεων σὲρ Ἰωάννου Μπάρροου, γενικοῦ γραμματέως τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου.

—2) Ποταμὸς τῆς Ἰρλανδίας, πηγάζων ἐκ τῶν ὀρέων Σλῆμπ Μπλοὺμ καὶ ἐκβάλλων μετὰ ῥοῦν 191 χλμ. εἰς τὸν Ἀτλαντικόν, παρὰ τὸ Οὐάτερφορντ. Χ.Δ.

**Μπάρροου** (Barrow), ***Ἰσαάκ***. Ἄγγλος μαθηματικὸς (1630—1677). Τῷ 1664 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γεωμετρίας ἐν Κανταβριγίᾳ, παραιτηθεὶς μετὰ πέντε ἔτη ὑπὲρ τοῦ μαθητοῦ του Ἰσαὰκ Νεύτωνος. Ὁ Μπάρροου θεωρεῖται ὡς ἔξοχος μαθηματικός. Ἐν τῇ «Μεθόδῳ τῶν ἐφαπτομένων» προσήγγισε τὸν μαθηματικὸν λογισμόν, δι' οὗ βραδύτερον ὁ Νεύτων διετύπωσε τὴν θεωρίαν τῶν ἐσχάτων λόγων. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος, ὅστις παρετήρησε τὴν ἀμοιβαίαν σχέσιν μεταξὺ διαφορίσεως καὶ ὁλοκληρώσεως, θεωρεῖται δὲ ὡς ὁ πρόδρομος τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ διαφορικοῦ λογισμοῦ. Ἐκ τῶν πολλῶν ἐπιστημονικῶν του ἔργων σημαντικώτερα εἶναι: «Δεκατρεῖς παραδόσεις γεωμετρίας», «Μαθηματικαὶ παραδόσεις». Γ. Ι. Β.

— **Μπάρροου** (Barrow), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος γεωγράφος (1764—1848). Διετέλεσε γραμματεὺς τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου καὶ συνετέλεσε σημαντικῶς εἰς τὴν ἐξακολούθησιν τῶν ἀνὰ τὸν Βόρειον Πόλον ἐξερευνητικῶν ταξιδίων. Ἐπίσης τῇ ὑποκινήσει αὐτοῦ ἱδρύθη ἡ ἀφρικανικὴ ἑταιρεία, ἐξ ἧς προῆλθε τῷ 1830 ἡ γεωγραφικὴ ἑταιρεία τοῦ Λονδίνου. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ταξίδια εἰς Κίναν» (1804), «Ταξίδια εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς» (1801—1803), «Χρονολογικὴ ἱστορία τῶν ταξιδίων εἰς τὰς ἀρκτικὰς χώρας» (1818, β' ἔκδ. 1846), «Αὐτοβιογραφία» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

— **Μπάρροου** (Barrow), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος συγγραφεὺς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Συνέταξε «Γεωγραφικὸν λεξικὸν» καὶ «Ἐπίτομον χρονογραφίαν» περιέχουσαν ἱστορίαν τῶν γενομένων εἰς διάφορα μέρη τοῦ κόσμου ἀνακαλύψεων ὑπὸ Εὐρωπαίων. Γ. Ι. Β.

**Μπάρρος** (Barros), ***Ἰωάννης ντὲ—***. Πορτογάλος ἱστορικὸς (1496—1570). Ὡς μαθητὴς ἐν τῇ αὐλῇ Ἐμμανουὴλ τοῦ Μεγάλου, διεκρίθη διὰ τὴν πρόωρον ἰδιοφυΐαν του. Ὁ βασιλεὺς Ἰωάννης Γ' διώρισεν αὐτὸν διοικητὴν τῶν ἐπὶ τῶν ἀκτῶν τῆς Γουϊνέας πορτογαλικῶν κτήσεων, βραδύτερον δὲ τοῦ ἔδωσεν ἐντολὴν ν' ἀποικίσῃ τὴν περιοχὴν Μαρανιὰκ ἐν Βραζιλίᾳ. Τὰ διάφορα ὑπουργήματα παρέσχον εἰς αὐτὸν τὰ μέσα νὰ συντάξῃ τὸ μέγα ἔργον του: «Ἱστορία τῶν ὑπερωκεανίων πορτογαλικῶν κτήσεων» (1552—1615). Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ ἐνέπνευσε τὸν Καμόενς, ὀφείλει ὁ Μπάρρος τὴν μεγάλην φήμην του. Α. Δ.

— **Μπάρρος** (Barros), ***Μιχαὴλ-Ἀντώνιος***. Πορτογάλος ποιητὴς (1772—1827). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ πρωτεύουσι τὰ ἀλληγορικὰ δράματα: «Ἡ ἀπελευθερωθεῖσα Ὀδύσσεια», «Ὁ θρίαμβος», «Ὁ ναὸς τοῦ Ἄρεως». Α. Δ.

— **Μπάρρος** ***Ἀράνα*** (Barros Arana), ***Διέγος***. Χιλιανὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1830. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε νομικά, ἔπειτα ὅμως ἀφιερώθη εἰς ἱστορικὰς καὶ φιλολογικὰς μελέτας. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Σαντιάγου καὶ ἔγραψε πάμπολλα ἔργα, ἐν οἷς: «Γενικὴ ἱστορία τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Χιλῆς», «Στοιχεῖα φιλολογίας», «Ἱστορία τοῦ πολέμου τοῦ Εἰρηνικοῦ», «Γενικὴ ἱστορία τῆς Χιλῆς» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπαρρόσο** (Barroso), ***Μιχαὴλ ντὲ —***. Ἱσπανὸς ζωγράφος (1538—1590). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Becerra, μαθητῇ τοῦ Ραφαὴλ καὶ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, διεκρίθη δ' ὡς ζωγράφος, ἀρχιτέκτων, μουσικὸς καὶ γλωσσομαθής. Τῷ 1585 ἐξεπόνησεν ἐν Τολέδῳ πίνακα, δι' ὃν ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ ζωγράφου τοῦ βασιλέως. Φίλιππος ὁ Β' ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν διαφόρους διακοσμήσεις ἐν τῇ μονῇ τῶν Εὐαγγελιστῶν, εἰς τὸ Ἐσκουριάλ. Μεταξὺ τῶν διακοσμήσεων τούτων καταλέγονται: «Ἡ ἀνάληψις τοῦ Χριστοῦ», «Ὁ Ἰησοῦς ἐμφανιζόμενος μετὰ τὴν ἀνάστασίν του εἰς τοὺς μαθητάς», «Τὸ κήρυγμα τοῦ ἁγίου Πέτρου» κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπαρρουά**, ἢ ***Μπὰρ*** (Barrois ἢ Bar) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας ἐν Λωρραίνῃ, καταλαμβάνουσα σήμερον ὁλόκληρον σχεδὸν τὸν νομὸν τοῦ Μόζα. Σπουδαιότεραι πόλεις της ἦσαν τὸ *Μπὰρ-λὲ-Ντύκ*, τὸ *Κομμερσύ*, τὸ *Πὸντ-ὰ-Μουσσὸν* κλπ. Τὸ ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Μόζα τμῆμα της, λεγόμενον ἄλλως καὶ βασιλικὸν Μπαρρουά, προσηρτήθη εἰς τὴν Γαλλίαν ἐπὶ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου, ἐνῷ τὸ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ἠκολούθησε τὰς τύχας τῆς Λωρραίνης, προσαρτηθὲν μετ' αὐτῆς εἰς τὴν Γαλλίαν τῷ 1766. Χ. Δ.

**Μπάρρυ** (Barry), ἐπονομαζόμενος ***Γιράλδος Καμπρένση***. Ἄγγλος σοφὸς (1146—1220). Κατώρθωσε, χάρις εἰς τὴν προσωπικὴν ἀξίαν του, νὰ γίνῃ καγκελλάριος τοῦ βασιλέως Ἑρρίκου Β' (1185), γραμματεὺς καὶ σύμβουλος τοῦ πρίγκιπος Ἰωάννου ἐν Ἰρλανδίᾳ. Τῷ 1188 ἐκήρυξε τὴν σταυροφορίαν εἰς τοὺς συμπολίτας του ἐναντίον τῶν Μωαμεθανῶν, βραδύτερον δὲ διῴκησε τὸ βασίλειον κατὰ τὴν ἀπουσίαν Ριχάρδου τοῦ Λεοντοκάρδου. Ἔγραψε: «Topographia Hiberniae», «Historia vaticinalis de enpugnatione Hiberniae», «Itinerarium Cambriae» κτλ. Α. Δ.

— **Μπάρρυ** (Barry), ***Ἐδουάρδος Μίδδλετον***. Ἄγγλος ἀρχιτέκτων, υἱὸς καὶ μαθητὴς τοῦ Καρόλου Μπάρρυ (1830—1880). Συνειργάσθη μετὰ τοῦ πατρός του εἰς τὴν οἰκοδόμησιν τοῦ Νέου Κοινοβουλίου, διετέλεσε δὲ ἀντιπρόεδρος τοῦ βασιλικοῦ ἰνστιτούτου τῶν Βρεττανῶν ἀρχιτεκτόνων καὶ μέλος τῆς Βασιλικῆς ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου, ἐν ᾗ ἐδίδαξεν ἀρχιτεκτονικὴν ἀπὸ τοῦ 1873. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων οἰκοδομημάτων, ἅτινα ἤγειρεν ὁ Μπάρρυ, τάσσονται: τὸ Θέατρον τοῦ Κόβεν-Γκάρντεν (1858) καὶ ἡ Νέα Ἐθνικὴ Πινακοθήκη, ἐν Λονδίνῳ, τὸ Crew Hall ἐν Cheshire καὶ τὸ Grammar School τῆς Βιρμιγχάμης. Ι. Μ. Π.

— **Μπάρρυ** (Barry), ***Κάρολος***. Ἄγγλος ἀρχιτέκτων (1795—1860). Ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ, πρὸς συμπλήρωσιν δὲ τῆς καλλιτεχνικῆς του καταρτίσεως περιηγήθη τῷ 1816 τὴν Γαλλίαν, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Ἑλλάδα, τὴν Αἴγυπτον κλπ. Ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν τῷ 1820. Ὠκοδόμησεν ἐν Λονδίνῳ καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Ἀγγλίας πλεῖστα δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ μέγαρα, ἅτινα τὸν κατέστησαν ἕνα τῶν διασημοτέρων Ἄγγλων ἀρχιτεκτόνων. Τὸ σημαντικώτερον ἔργον τοῦ Μπάρρυ εἶναι τὸ νέον κοινοβούλιον (House of parliament), δι' ὃ ἐτιμήθη διὰ τίτλου εὐγενείας καὶ ἐνεταφιάσθη εἰς τὸ Οὐεστμίνστερ. Ἕτερα ἔργα τοῦ ἀρχιτέκτονος τούτου εἶναι: ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου ἐν Μπράϊτον, τὸ Ἀθήναιον τοῦ Μάντσεστερ (ἑλληνικοῦ ῥυθμοῦ), ἡ λέσχη τῶν ταξιδιωτῶν, ἡ λέσχη τῆς Μεταρρυθμίσεως κλπ. Ι. Μ. Π.

—**Μπάρρυ** (Barry) ***Τζέϊμς***. Ἰρλανδὸς ζωγράφος (1741—1806). Ἐσπούδασεν ἐπὶ πενταετίαν ἐν Ἰταλίᾳ δαπάναις τοῦ Burk, ὅστις ἐγοητεύθη ἐξ ἑνὸς τῶν πρώτων ἔργων τοῦ καλλιτέχνου, τὸν «Θρῦλον τοῦ ἁγίου Πάτρικ», ἐκτεθὲν ἐν Δουβλίνῳ. Ἐπανελθὼν εἰς Λονδῖνον ἐξειργάσθη πίνακάς τινας κλασσικίζοντας, ὡς «Ἡ Ἀφροδίτη ἀναδυομένη ἐκ τῆς θαλάσσης», «Ὁ Ζεὺς καὶ ἡ Ἥρα», «Ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὕα». Τῷ 1773 ἐγένετο μέλος τῆς Βασιλικῆς ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου, τῷ δὲ 1776 ἐξέθηκεν ἓν τῶν σημαντικωτέρων του ἔργων, τὸν «Θάνατον τοῦ στρατηγοῦ Βόλφφ». Ὀλίγῳ βραδύτερον ἀνέλαβε νὰ ἐκτελέσῃ δι' ἐξόδων του εἰς τὸ μέγαρον τῆς ἑταιρείας τῶν Φιλοτέχνων τοῦ Λονδίνου ἓξ μεγάλας συνθέσεις (13 μέτρων μήκους ἑκάστην) ἀπεικονι-

Digitized by Google

ζούσας τὴν «Πρόοδον τῆς ἀνθρωπότητος». Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ ὑπὸ πολλῶν ἐπεκρίθη, κατηνάλωσεν ἓξ ὁλόκληρα ἔτη. Τῷ 1782 ὠνομάσθη καθηγητὴς ἐν τῇ Βασιλικῇ ἀκαδημίᾳ. Ι. Μ. Π.

**Μπαρρὺ** (Barry), ***Ἰωάννα Μπενέν**, κόμισσα ντὲ —*. Εὐνοουμένη τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ΄ βλ. λ. *Ντυμπαρρύ*.

— **Μπαρρὺ** (Barry), ***Φραγκῖσκος-Πέτρος***. Γάλλος ζωγράφος (1813—1892). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἐν τῇ γενετείρᾳ του Μασσαλίᾳ Σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν ὑπὸ τὸν Ὠμπέρ, διευθυντὴν τῆς σχολῆς ταύτης. Βραδύτερον μεταβὰς εἰς Παρισίους εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Gudin. Διέπρεψεν ἰδίᾳ ὡς θαλασσογράφος, ἐξαίρεται δὲ ἰδιαιτέρως ἡ ζωηρότης καὶ ἡ διαφάνεια τῶν κυμάτων, ἅτινα ἀπεικόνιζε. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἐσωτερικὸν σιδηρουργείου», «Ναυάγιον», «Θαλασσογραφία», «Ψαρόβαρκες», «Τὸ λιμάνι τῆς Μασσαλίας», «Ψάρεμα τόννου ἀπὸ Καταλανούς». Ι. Μ. Π.

**Μπαρρχέηντ** (Parrhead) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σκωτίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ρένφριου, κειμένη ἐπὶ τοῦ Λέβεν, 12 χλμ. ΝΔ. τῆς Γλασκώβης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει χυτήρια σιδήρου καὶ ὀρειχάλκου, βιομηχανίαν βάμβακος κ. λ. π. Ἱδρύθη τῷ 1773. Κάτ. 11.387. Χ. Δ.

**Μπαρρὼ** (Barrault) ***Αἰμίλιος***. Γάλλος ῥήτωρ καὶ συγγραφεὺς (1799—1869). Καθηγητὴς ἐν ἀρχῇ τῆς ῥητορικῆς εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Σορὲζ (1825—1829) ἐγκατεστάθη κατόπιν εἰς Παρισίους, ὅπου ἐνεφανίσθη ὡς θεατρικὸς συγγραφεὺς δι' ἑνὸς ἔργου του ἀναβιβασθέντος ἀπὸ σκηνῆς τοῦ Γαλλικοῦ θεάτρου (1829). Τὸ αὐτὸ ἔτος προσεχώρησεν εἰς τὸν κύκλον τῶν ὀπαδῶν τοῦ φιλοσόφου *Σαὶν-Σιμὸν* (βλ. λ.), τοῦ ὁποίου τὴν διδασκαλίαν ἐπροπαγάνδισεν ἐντονώτατα διὰ διαλέξεων καὶ δημοσιευμάτων. Ἀπὸ τοῦ 1833 μέχρι τοῦ 1836 ἐταξίδευσε διὰ τὸν ἴδιον σκοπὸν ἀνὰ τὴν Ἀνατολὴν ἐπὶ κεφαλῆς δωδεκαμελοῦς ὁμάδος σαινσιμονιστῶν. Μετέσχε κατόπιν τῆς ἐπιστημονικῆς ἐπιτροπῆς ἥτις ἐμελέτησε τὴν τομὴν τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ Σουέζ, μετὰ δὲ τὸ 1848 ἀνεχώρησε καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Ἀλγερίαν, ὁπόθεν ἀπεστάλη τῷ 1850 ὡς ἀντιπρόσωπος τοῦ Ὀρὰν εἰς τὴν νομοθετικὴν ἐθνοσυνέλευσιν. Ἀποσχὼν τῆς πολιτικῆς μετὰ τὸ πραξικόπημα τοῦ Ναπολέοντος Γ', διετέλεσεν ἐφεξῆς διευθυντὴς τῶν ἐφημερίδων «Πατρὶς» καὶ «Ταχυδρόμος τῆς Γαλλίας», συντάκτης δὲ κατόπιν εἰς τὴν «Ἐθνικὴν» ἀπὸ τῆς ἐπανεκδόσεώς της (1869). Ἔγραψε πολλὰ συγγράμματα, ἱστορικά, πολιτικὰ καὶ οἰκονομικά, ἐν οἷς: «Τὸ παρελθὸν καὶ τὸ μέλλον τῶν καλῶν τεχνῶν» (1830), «Δύσις καὶ Ἀνατολὴ» (1835), «Ἡ ἱστορία τοῦ πολέμου τοῦ Μωχάμμετ-Ἄλη ἐν Συρίᾳ» (1859), κλπ., ἐπίσης δὲ ἓν μυθιστόρημα «Εὐγένιος» (1839), μίαν φιλοσοφικοθρησκευτικὴν μελέτην «Ὁ Χριστὸς» (1864) καὶ πλεῖστα ἄλλα.

— **Μπαρρὼ** (Barault), ***Ἀλέξανδρος***. Γάλλος μηχανικὸς (1812—1865). Διεκρίθη εἰδικώτερον εἰς τὸν κλάδον τῆς σιδηροδρομικῆς καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Αἰμιλίου Μπαρρὼ* (βλ. ἀνωτ.) εἰς τὴν μελέτην τῆς τομῆς τοῦ πορθμοῦ τοῦ Σουέζ. Ἐδημοσίευσεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν Φλασσὰ καὶ Πετιὲ σύγγραμμα περὶ σιδήρου καὶ χυτοσιδήρου (1842), ἐπίσης δὲ τεχνικὰς μελέτας περὶ τοῦ πορθμοῦ τοῦ Σουὲζ (1855) καὶ τοῦ σιδηροδρόμου τῆς Βασσόρας (1856). —Ω.

— **Μπαρρὼ** (Barrau), ***Θεόδωρος-Ἐρρῖκος***. Γάλλος παιδαγωγὸς καὶ φιλόσοφος (1794—1865). Ἐκ τῶν ἔργων του, πολλὰ τῶν ὁποίων ἐβραβεύθησαν ὑπὸ τοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Γαλλίας, διακρίνονται: «Ἠθικὴ διαπαιδαγώγησις τῶν νέων» (1840), «Περὶ τῆς δράσεως τῆς οἰκογενείας ἐν τῇ ἀγωγῇ» (1852), «Νομοθεσία τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως» (1851), «Περὶ τῆς παρὰ τῇ οἰκογενείᾳ καὶ ἐν τῷ ἐκπαιδευτηρίῳ ἀγωγῆς» (1852), «Ἡ πατρίς: περιγραφὴ καὶ ἱστορία τῆς Γαλλίας» (1859). Α. Δ.

**Μπάρσι** (Barsi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἰνδιῶν τῆς περιφερείας τοῦ Σαλπούρ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σινάχ, παραποτάμου τοῦ Μπινάχ, εἰς ἀπόστασιν 68 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σολαπούρ. Κάτοικοι 27.334. Τὸ Μπάρσι κεῖται ἐν τῷ μέσῳ μιᾶς τῶν πλουσιωτέρων βαμβακοπαραγωγικῶν περιφερειῶν τοῦ Ντεκὰν καὶ εἶναι σημαντικὴ ἀγορὰ βάμβακος. Π.Γ.Λ.

**Μπαρσοῦ ντὲ Πενὲν** (Barchou de Penhoen), ***Αὔγουστος-Θεόδωρος-Ἰλαρίων**, βαρῶνος ντὲ —*. Γάλλος φιλόσοφος καὶ ἱστορικὸς (1801—1855). Ἦτο λοχαγὸς τοῦ ἐπιτελείου κατὰ τὴν εἰς Ἀλγέριον ἐκστρατείαν, μετὰ τὴν ἐπανάστασιν ὅμως τοῦ 1830, μὴ θέλων νὰ ὑπηρετήσῃ τὴν κυβέρνησιν τοῦ Λουδοβίκου Φιλίππου, παρῃτήθη τοῦ στρατοῦ καὶ ἐπεδόθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς ἱστορικὰς καὶ φιλοσοφικὰς μελέτας. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πρώτων συντακτῶν τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τῶν Δύο Κόσμων», δημοσιεύσας ἐν αὐτῇ περισπουδάστους πραγματείας, αἱ πλείονες τῶν ὁποίων ἐξεδόθησαν βραδύτερον εἰς τόμους. Ἐξελέγη ἀκαδημαϊκός, μετὰ δὲ τὴν Ἰουλιανὴν ἐπανάστασιν, τὴν ὁποίαν ἐπεκρότησεν ὁλοψύχως, ἀντεπροσώπευσε τὸ διαμέρισμα τοῦ Φινιστέρου εἰς τὴν Νομοθετικὴν Ἐθνοσυνέλευσιν. Μετὰ τὸ πραξικόπημα ὅμως τοῦ Ναπολέοντος Γ' (1851) ἐπανῆλθεν εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον, ἀφοσιωθεὶς καὶ πάλιν εἰς τὰς μελέτας αὐτοῦ. Ἐκ τῶν πολλῶν καὶ σημαντικῶν ἔργων τοῦ Μπαρσοῦ ντὲ Πενὲν ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ἀναμνήσεις ἐκ τῆς εἰς Ἀφρικὴν ἐκστρατείας» (1832), συμπληρωθεῖσαι μὲ τὰ «Ἀπομνημονεύματα ἑνὸς ἀξιωματικοῦ τοῦ ἐπιτελείου ἐν τῷ στρατῷ τῆς Ἀφρικῆς» (1835). «Ἡ φιλοσοφία τοῦ Σέλινγκ» (1834), «Γουλιέλμος τῆς Ὀράγγης καὶ Λουδοβῖκος Φίλιππος, 1688—1830» (1835), «Ἱστορία τῆς Γερμανικῆς φιλοσοφίας» (1836, τόμ. 2), «Ἱστορία τῆς ἀγγλικῆς κυριαρχίας ἐπὶ τῶν Ἰνδιῶν» (1841, εἰς 6 τόμ.), «Δοκίμιον φιλοσοφίας τῆς ἱστορίας» (1854, τόμ. 2) κλπ. —Ω.

**Μπὰρτ** (Barth) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ πρωσσικῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Πομμερανίας, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Βαλτικῆς παρὰ ὁμώνυμον λιμνοθάλασσαν, χωριζομένην ἀπὸ τοῦ ἀνοικτοῦ πελάγους διὰ τῆς νήσου Τσίνγκστ καὶ τῆς χερσονήσου Ντάρς. Ἔχει μικρὸν λιμένα, σιδηρουργεῖα καὶ ἰχθυοτροφεῖα, διεξάγει δ' ἐμπόριον σιτηρῶν. Κάτ. (1924) 7.200. Τῷ 1630 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Σουηδῶν καὶ παρέμεινεν ὑπ' αὐτοὺς μέχρι τοῦ 1815. Χ. Δ.

**Μπὰρτ** (Barth), ***Αἰμίλιος***. Γερμανὸς κομμουνιστής. Ἀνῆκεν εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Κ. Λήμπκνεχτ ἱδρυθεῖσαν κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐπαναστατικὴν ὀργάνωσιν «Σπάρτακος» καὶ ἵδρυσε τῷ 1917 τὰς «παρανόμους ὀργανώσεις», αἱ ὁποῖαι ἐσκόπουν τὴν βιαίαν ἀνατροπὴν τοῦ κεφαλαιοκρατικοῦ καθεστῶτος ἐν Γερμανίᾳ καὶ τὴν ἐγκαθίδρυσιν τοῦ κομμουνισμοῦ. Συνειργάσθη μετὰ τῆς κυβερνήσεως Ἔμπερτ, ἀλλ' ἀπεχώρησε τῷ 1918. —Ω.

— **Μπὰρτ** (Barth), ***Αὔγουστος***. Ἐπιφανὴς Γάλλος ἰνδολόγος. Ἐγεννήθη παρὰ τὸ Στρασβοῦργον τῷ 1834 καὶ ἀπέθανεν ἐν Παρισίοις τῷ 1916. Μετὰ τὰς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου φιλολογικὰς σπουδάς του ἐπεδόθη ἰδιαιτέρως εἰς τὴν μελέτην τῆς ἀρχαίας ἰνδικῆς φιλολογίας καὶ γλώσσης. Ἕνεκα τῆς ὑπὸ τῶν Γερμανῶν καταλήψεως τοῦ Στρασβούργου (κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870—1871) ἐγκατεστάθη κατ' ἀρχὰς ἐν Γενεύῃ, κατόπιν δὲ ἐν Παρισίοις (1874). Ὁ Μπὰρτ ἐδημοσίευσε πολλὰς καὶ ποικίλας ἐπιστημονικὰς πραγματείας εἰς διάφορα γαλλικὰ ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ (τὴν «Journal des savants», τὴν «Journal asiatique», τὴν «Revue critique», τὴν «Revue de l'histoire des religions», εἰς τὸ «Bulletin de l'école française de l'Extrême Orient» καὶ ἄλλα). Ἐκ τούτων σπουδαιότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Les religions de l'Inde» (1879), «Le gérondif sanscrit en tva» (1874), «L'inscription sanscrite de Han Chey» (1883), «Inscriptions sanscrites de Cambodge» (1885), «Deux chapitres de Saura purâna» (1896), τὸ ὄνομα τοῦ Μπὰρτ ἐχαράχθη ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου, κατ' ἀπόφασιν τῆς ἐν Παρισίοις Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Γ. Π. Α.

— **Μπὰρτ** (Barth), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς φιλόλογος, βιβλιοπώλης καὶ ἐκδότης, γεννηθεὶς ἐν Βεστφαλίᾳ (1856) καὶ ἐγκατασταθεὶς ἀπὸ τοῦ 1882 ἐν Ἀθήναις. Ἤσκει τὸ ἐπάγγελμα τοῦ βιβλιοπώλου ἐν Γερμανίᾳ, ἐξηκολούθησε δὲ τοῦτο καὶ μετὰ τὴν ἐν Ἑλλάδι ἐγκατάστασίν του μέχρι τοῦ 1924. Τῷ 1901 ἐγένετο διδάκτωρ τῆς φιλολογίας τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν. Διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ τρίτου τόμου τὸ ἑξάτομον μετὰ συμπληρώματος «Ἐγκυκλοπαιδικὸν Λεξικὸν» (1889—1898), τοῦ ὁποίου ἦτο εἷς ἐκ τῶν ἐκδοτῶν, καὶ τὸ περιοδικὸν «Ἁρμονία» κατὰ τὰ ἔτη 1900—1902. Ἔγραψε, γερμανιστὶ μὲν «Μέθοδον νέας ἑλληνικῆς διὰ τοὺς Γερμανοὺς» (1896), ἕτεραν ἐπίτομον μέθοδον (1912) καὶ διαφόρους περὶ Ἑλλάδος ἱστορικάς, πολιτικὰς καὶ ἄλλας μελέτας εἰς τὴν «Βερολίνειον Ἡμερησίαν», ἑλληνιστὶ δὲ διαφόρους φιλολογικὰς καὶ ἀρχαιολογικὰς ἐργασίας εἰς τὰ περιοδικὰ «Ἀθηνᾶ» καὶ «Ἁρμονία». Ἐπίσης μετέφρασεν εἰς τὴν γερμανικὴν τὰ ἔργα τοῦ Ἰ. Σβορώνου περὶ «Νομισμάτων τῶν Πτολεμαίων» καὶ «Ἐθνικοῦ Μουσείου». —Ω.

—**Μπὰρτ** (Barth), ***Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς ἐξερευνητὴς καὶ γεωγράφος (1821—1865). Ἀφοῦ ἐσπούδασεν ἐν Βερολίνῳ ἀρχαιολογίαν καὶ γλωσσολογίαν, ἐπεχείρησε διάφορα ταξίδια εἰς Ἰταλίαν, Σικελίαν, Μαρόκκον, Ἀλγέριον, Τύνιδα καὶ Τριπολίτιδα, ἀρχαίαν Κυρηναϊκὴν καὶ τὴν κοιλάδα τοῦ Νείλου. Κατόπιν ἐπιθέσεως λῃστῶν εἰς τὰ σύνορα τῆς Αἰγύπτου, καθ' ἣν ἐτραυματίσθη βαρέως, ἐσυνέχισε τὰς ἐξερευνήσεις του εἰς Συρίαν, Παλαιστίνην, Κύπρον, νότια καὶ δυτικὰ παράλια τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, Κωνσταντινούπολιν καὶ Ἑλλάδα. Ἐπιστρέψας, κατόπιν τριετοῦς ἀπουσίας, εἰς τὴν πατρίδα του, διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου (1848). Τὸ ἑπόμενον ἔτος (1849) μετέσχε τῆς ὑπὸ τὸν Richardson ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς εἰς τὰ ἐνδότερα τῆς Β. Ἀφρικῆς, μεθ' ἧς ἥνωθη καὶ ὁ Adolf Overweg. Κατόπιν ἐξαετῶν πολυμόχθων καὶ ἐπικινδύνων ἐξερευνήσεων, αἵτινες ἀποτελοῦν τὸν πρῶτον σημαντικὸν σταθμὸν διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς ἀνακαλύψεως τῆς Ἀφρικῆς, ἐπέστρεψεν εἰς Εὐρώπην, ὅπου ἀπήλαυσεν ὅλως ἐξαιρετικῶν τιμῶν. Ἀφοῦ ἀνέλαβε πάλιν τὰ καθήκοντά του ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου, ἐταξίδευσεν ἐκ νέου εἰς Μ. Ἀσίαν, Πυρηναῖα, Ἱσπανίαν, ἀνατολικὴν Τουρκίαν, Βαλκάνια, Θεσσαλίαν μέχρι Ὀλύμπου, τοῦ ὁποίου, διὰ πρώτην φοράν, ὑπελόγισε τὸ ὕψος ἀκριβῶς. Ἐδημοσίευσε σπουδαιοτάτας περιγραφὰς ἐκ τῶν ἐξερευνήσεών του: «Περιπλανήσεις ἀνὰ τὰς παραλίους χώρας τῆς Μεσογείου, κατὰ τὰ ἔτη 1845—1846 καὶ 1847» (1849), «Ταξίδια καὶ ἀνακαλύψεις εἰς τὴν βόρειον καὶ κεντρικὴν Ἀφρικήν, κατὰ τὰ ἔτη 1849—1855» (1857—1859, 5 τόμ.), «Ταξίδιον ἀπὸ Τραπεζοῦντος μέχρι Σκούταρι» (1860), «Ταξίδιον διὰ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Εὐρωπαϊκῆς Τουρκίας» (1864) κλπ. —Ω.

— **Μπὰρτ** (Barth), ***Θεόδωρος***. Γερμανὸς πολιτικὸς (1849—1909). Ἀφοῦ ἐσπούδασε νομικὰ καὶ πολιτικὴν οἰκονομίαν, εἰργάσθη ὡς δικηγόρος ἐν Βρέμῃ, διετέλεσε γενικὸς γραμματεὺς τῆς γεωργικῆς ἑταιρείας πρὸς σωτηρίαν ναυαγῶν καὶ ἐταξίδευσε, χάριν οἰκονομολογικῶν μελετῶν, εἰς Ἀγγλίαν, Γαλλίαν καὶ Β. Ἀμερικήν. Διετέλεσε συντάκτης τοῦ περιοδικοῦ «Τὸ ἔθνος» καὶ μέλος τοῦ Ράϊχσταγ (1881—1884 καὶ 1885—1898), ἀνήκων εἰς τὴν γερμανικὴν φιλελευθέραν ὁμάδα. Μετὰ τὴν διάσπασιν ταύτης (1893) ἀπετέλεσε μέλος τῆς φιλελευθέρας ἑνώσεως καὶ τῷ 1908 ἵδρυσε τὴν δημοκρατικὴν ἕνωσιν. Μεταξὺ ἄλλων ἔγραψεν: «Ἀμερικανικὴ οἰκονομικὴ ζωὴ» (1887) καὶ «Ἐντυπώσεις ἐξ Ἀμερικῆς» (1907). —Ω.

—**Μπὰρτ** (Bart), ***Ἰωάννης***. Ἔνδοξος Γάλλος καταδρομεὺς (1650—1702), γόνος ναυτικῆς οἰκογενείας, εἰς τὴν ὁποίαν ὁ πάππος του καὶ ὁ πατήρ του ἐφονεύθησαν πολεμοῦντες τοῦ Ἄγγλους. Καταταχθεὶς ὡς ναυτόπαις εἰς τὸ γαλλικὸν ναυτικὸν δωδεκαετὴς μόλις, κατόπιν δὲ εἰς τὸ ὁλλανδικόν, μετέσχε τῶν κατὰ τῆς Ἀγγλίας ἐκστρατειῶν τοῦ 1666 καὶ 1667 ὑπὸ τὸν ναύαρχον Μιχαὴλ Ρόϋτερ, ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του τῷ 1679. Εἶχε τότε κηρυχθῆ ὑπὸ Λουδοβίκου ΙΔ΄ ὁ πόλεμος κατὰ τῆς Ἀγγλίας καὶ ὁ Μπὰρτ ἔσπευσε νὰ μετάσχῃ αὐτοῦ ὡς καταδρομεύς, διασχίζων τὴν Μάγχην καὶ συνάγων λείας ἐπὶ ἑξαετίαν, ἐπισύρας τὸν θαυμασμὸν τοῦ βασιλέως, κατατάξαντος αὐτὸν εἰς τὰ στελέχη τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ ὑπὸ βαθμὸν ἀντιπλοιάρχου. Ὡς ἀρχηγὸς ἐλαφροῦ στόλου φρεγατῶν καὶ κορβεττῶν μετέφερε πολεμεφόδια εἰς Βρέστην. Τὴν 22 Μαΐου 1689, κυβερνῶν τὴν φρεγάταν «Railleuse», ἥτις συνώδευε, μετὰ τῆς φρεγάτας «Les Jeux», κυβερνωμένης ὑπὸ τοῦ Φορμπέν, παραπομπὴν 14 ἐμπορικῶν πλοίων ἀπὸ Χάβρης εἰς Βρέστην, συνηντήθη μετὰ δύο μεγάλων ἀγγλικῶν φρεγατῶν, συνελήφθη αἰχμάλωτος μετὰ τοῦ Φορμπὲν καὶ ἤχθη εἰς Πλύμμουθ. Δραπετεύσαντες μετ' ὀλίγον ἐπὶ μικρᾶς λέμβου καὶ διασχίσαντες τὰς γραμμὰς τῶν ἀγγλικῶν πλοίων καὶ τῶν ἀκταιωρῶν τοῦ ναυστάθμου, διέπλευσαν τὴν Μάγχην καὶ ἔφθασαν εἰς Σαὶν Μαλώ. Ὁ Μπὰρτ προήχθη τότε εἰς πλοίαρχον καὶ ὡς ἀρχηγὸς μοίρας 7 φρεγατῶν διέσπα τὸν ὑπὸ τῶν Ἀγγλοολλανδῶν ἀποκλεισμὸν τῆς Δουνκέρκης (1692), πυρπολήσας μετὰ τοῦτο 100 ἐμπορικὰ σκάφη καὶ ἐνεργήσας ἀποβατικὴν ἐπιδρομὴν παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Τάϋν, ὅπου κατέστρεψε 200 οἰκίας. Ἐπαναπλεύσας εἰς Δουνκέρκην (1693) ἀνέλαβε τὴν κυβέρνησιν τοῦ «Glorieux» (1694). Ἠπειλεῖτο τότε ἐκ λιμοῦ ἡ Γαλλία λόγῳ τοῦ ἐν τῷ μεταξὺ ἐπισυμβάντος ἀποκλεισμοῦ τῆς Δουνκέρκης. Αἰφνιδιαστικὸς ὅμως ἔκπλους τοῦ Μπάρτ, κατα[...] στρέψαντος 7 τῶν πλοίων τοῦ ἀποκλεισμοῦ, ἐπέτρεψε τὸν κατάπλουν εἰς τὸν λιμένα ἐκεῖνον 100 σιταγωγῶν, δι' ὃν ἆθλόν του παρεχώρησεν αὐτῷ Λουδοβῖκος ὁ ΙΔ΄ τίτλους εὐγενείας (1694). Τελευταῖός του ἆθλος ὑπῆρξεν ἡ διάσπασις τοῦ ἀγγλοολλανδικοῦ στόλου καὶ αἱ καταστροφαί, ἃς κατέφερεν εἰς τὸ ὁλλανδικὸν ἐμπόριον καὶ αἵτινες ἐξετιμήθησαν εἰς 1 ἑκατομμύριον λιρῶν (1697). Ἐπαθε ὅμως ἐκ τῶν κακουχιῶν πλευρίτιδα, ἥτις ἔφερεν αὐτὸν βραδέως πρὸς τὸν θάνατον (1702). Ὑπάρχει μέγα γαλλικὸν εὔδρομον μάχης φέρον τὸ ὄνομά του. Σ. Ε. Λ.

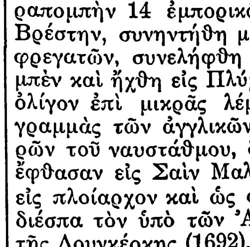

*Ἰωάννης Μπάρτ.*

—**Μπὰρτ** (Barth), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν τῷ Κάτω Ρήνῳ (1806—1877). Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καὶ διετέλεσεν ἐσωτερικὸς ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων Sain-Louis καὶ Pitié, διδάξας μετὰ λαμπρᾶς ἐπιτυχίας ἀνατομικοπαθολογίαν εἰς τοὺς σπουδαστάς. Τῷ 1840 ἐγένετο ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων Παρισίων καὶ ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του ταύτην ἐπὶ τριακονταετίαν ἔδρασεν εἰς πλεῖστα νοσοκομεῖα ὡς ἰατρὸς καὶ διδάσκαλος. Μαθητὴς τῆς σχολῆς St-Louis, ἐφήρμοσε τὰς ἀρχὰς ταύτης, ἤτοι τὸν παραλληλισμὸν τῶν κλινικῶν παρατηρήσεων μετὰ τῶν εὑρημάτων τῶν νε[...]

Digitized by Google

κροφιών, πρὸς ἐξαγωγὴν ἀνατομοπαθολογικῶν διδαγμάτων ἐπὶ τῆς κλινικῆς. Ἐκ τῶν ἐργασιῶν του ἀναφέρομεν τὸ μετὰ τοῦ Roger ἐκδοθὲν σύγγραμμά του τῆς ἀκροάσεως «Traité pratique de l'auscultation» (1841), σχὸν ὀκτὼ ἐκδόσεις μέχρι τοῦ 1874 καὶ μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικήν, ἀγγλικὴν καὶ ἰταλικήν. Πλείστας ἐξ ἄλλου ἀνατομοπαθολογικὰς ἐργασίας του περὶ ἀποφράξεως τῆς ἀορτῆς, ῥήξεως καρδίας, βρογχεκτασίας καρκίνου κλπ. ἐδημοσίευσεν εἰς τὸ «Δελτίον τῆς ἀνατομικῆς ἑταιρείας» Παρισίων. Ἐπλούτισε τὸ μουσεῖον Dupuytren δι' ἑκατὸν παθολογικῶν παρασκευασμάτων. Διαπρεπῆ καταλαβὼν θέσιν μεταξὺ τοῦ ἰατρικοῦ κόσμου τῶν Παρισίων, ἐξελέγη ἀντιπρόεδρος τῆς ἰατρικῆς Ἀκαδημίας Παρισίων (1871) καὶ ἀργότερον πρόεδρος ταύτης. Ο. Ρ.

— **Μπάρτ** (Barth), ***Κάρολος***. Ἐπιφανὴς Γερμανοελβετὸς διαμαρτυρόμενος θεολόγος, ἀρχηγὸς τῆς λεγομένης διαλεκτικῆς θεολογίας. Ἐγεννήθη τῷ 1886 ἐν Βασιλείᾳ. Διατελέσας ἐπὶ σειρὰν ἐτῶν ἐφημέριος ἐν Ἑλβετίᾳ, λόγῳ τῆς μεγάλης φήμης, ἣν ἀπέκτησε διὰ τοῦ ὑπομνήματος εἰς τὴν πρὸς Ρωμαίους ἐπιστολὴν τοῦ Παύλου, δι' οὗ ἐξήγγειλε τὴν νέαν αὐτοῦ θεολογίαν, ἐκλήθη τῷ 1921 ὡς καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Γοττίγγης, ἐκεῖθεν εἰς Μύνστερον καὶ ἐκεῖθεν εἰς Βιέννην, ἔνθα καὶ μέχρι σήμερον διδάσκει. Πρὸς τῷ ὑπομνήματι του εἰς τὴν πρὸς Ρωμαίους, ὅπερ ἀριθμεῖ ἀπὸ τοῦ 1921 μέχρι σήμερον ἓξ ἐκδόσεις, ἐδημοσίευσε καὶ ἄλλα ἔργα, οἷα «Das wort Gottes und die Theologie» (β' ἐκδ. 1925), «Die Auferstehung der Toten» (β' ἐκδ. 1926), «Erklärung des Philippenbriefes» (1928), «Dogmatik I» (1927) καὶ ἄλλα πολλά. Π. Ι. Μ.

**Μπαρτὰς** (Bartas), *Γουλιέλμος ντὲ Σαλλοὺστ* (Salluste), *αὐθέντης* τοῦ —. Γάλλος ποιητὴς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος (1544—1590). Ἀνῆκεν εἰς εὐγενῆ οἰκογένειαν Οὐγενότων, μετέσχε τῶν τελευταίων ἐμφυλίων θρησκευτικῶν πολέμων, κατόπιν δὲ ὑπηρέτησε τὴν μερίδα τῶν ὁμοδόξων του ὡς διπλωμάτης εἰς διαφόρους ἀποστολάς, μὲ τοὺς ὁποίους τὸν ἐπεφόρτισεν ὁ Ἐρρῖκος τῶν Βουρβόνων, ὁ κατόπιν βασιλεὺς Ἐρρῖκος Δ'. Τὸν Μπαρτὰς διακρίνει ἰδίως ἀπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ὁ θρησκευτικὸς καὶ ἠθικὸς χαρακτὴρ τῆς ἐμπνεύσεώς του. Ἐν τῇ ἐξωτερικῇ μορφῇ εἶναι μαθητὴς τοῦ Ρονσάρ, λείπει ὅμως ἀπὸ τὸν στίχον του ἡ χάρις, ἐνῷ ἀπεναντίας ἀφθονεῖ ἐν αὐτῷ ἡ ἐπιτήδευσις. Εἶναι περίεργος ἡ προσπάθειά του πρὸς ἐξεύρεσιν λέξεων νέων καὶ ἡ συσσώρευσις παραδόξων ἐπιθέτων καὶ λογοπαικτικῶν συνηχήσεων (ὡς ἐπὶ παραδείγματι εἰς μίαν περιγραφὴν τοῦ ἵππου, ὅστις «le champ bat, abat, destrape, grape, atrape, le vent qui va devant...»). Ἡ δημοτικότης του ἐν τούτοις ὑπῆρξε τόση, ὥστε νὰ θέσῃ πρὸς στιγμὴν ἐν κινδύνῳ τὴν δόξαν καὶ αὐτοῦ ἀκόμη τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς Πλειάδος. Εἰς τὸ ἐξωτερικὸν ἰδίως ὁ Μαρτὰς ἔτυχεν ἐξαιρετικῆς ἐκτιμήσεως, οἱ δὲ Γερμανοὶ δὲν ἐδίσταζον νὰ τὸν ὀνομάζουν «βασιλέα τῶν Γάλλων ποιητῶν». Αὐτὸς οὗτος ὁ Γκαῖτε τὸν ἐξετίμησεν ἰδιαιτέρως καὶ κατέκρινε τοὺς Γάλλους τῆς ἐποχῆς του, οἱ ὁποῖοι κατεφρόνουν τὸ ἔργον τοῦ Μπαρτάς. Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι, ἂν ἀπὸ τοὺς στίχους του λείπει ἡ χάρις τοῦ ὕφους, ἂν τὸν ἀσχημίζουν αἱ ἐμφάσεις καὶ αἱ χονδροειδεῖς ἐνίοτε παραδοξομορφίαι, δὲν λείπει ὅμως ἀπὸ αὐτὸν οὔτε ἡ δύναμις τῆς ἐμπνεύσεως, οὔτε ἡ φαντασία οὔτε τὸ αἴσθημα. Τὰ πρῶτα του ποιήματα τοῦ Μπαρτὰς ἐξεδόθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Χριστιανικὴ μοῦσα» (Βορδὼ 1573), πολυαρίθμους δὲ ἐκδόσεις ἐσημείωσεν ἡ πλήρης συλλογὴ τῶν ἔργων του, ἐξ ὧν ἀρτιωτέρα ἡ τοῦ 1579 (ἐν Παρισίοις) καὶ ἡ τοῦ 1611 (ἐν Βορδῷ).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Gorthe*, «Des hommes célèbres de la France» (Παρίσιοι 1823).—*Saint-Beuve*, «Tableau de la poésie française au XVI siècle (Παρίσιοι 1843).—*Godefroy*, «Littérature française du XVI siècle» (Παρίσιοι 1878). Γ. Ζ.

**Μπαρτάχα** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Μαρδάχα*.

**Μπαρτελεμὺ** (Bartélemy), ***Ἀνατόλιος-Ἰωάννης Βαπτιστὴς-Ἀντώνιος ντὲ*** —. Γάλλος ἀρχαιολόγος καὶ ἱστορικὸς (1821—1888). Μετὰ τὰς σπουδάς του, κατέλαβε διαδοχικῶς διάφορα διοικητικὰ ἀξιώματα, ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ Γραμμάτων (1887), μέλος τῆς ἐπιτροπῆς ἱστορικῶν ἐργασιῶν τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας καὶ ἐπίτιμος πρόεδρος τῆς γαλλικῆς Νομισματικῆς ἑταιρείας. Ἠσχολήθη μὲ τὴν γαλατικὴν νομισματολογίαν ἰδίως καὶ ἔγραψε: «Manuel numismatique du moyen âge» (1852), «Numismatique mérovingienne» (1845), «Vases, sigilles et épigraphiques» (1878), «Études héraldiques» (1888), κ. ἄ. Συνειργάσθη τακτικῶς εἰς τὴν «Bibliothèque de l'École des Chartres» τὴν «Révue Numismatique», τὴν «Révue Archéologique» καὶ ἄλλα ἐπιστημονικὰ περιοδικά. —Ω.

— **Μπαρτελεμὺ** (Barthélemy), ***Αὔγουστος - Μαρσέϊγ***. Γάλλος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Μασσαλίᾳ τῷ 1796 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1867. Τὸ πρῶτον του ἔργον ὑπῆρξε μία σάτιρα τῶν καπουκίνων. Ἐλθὼν εἰς Παρισίους τῷ 1825 συνέθεσεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ συμπατριώτου του Méry τὸ ποίημα «Les Sidiennes» (1825), μετ' αὐτὸ δὲ τὰ ἀκόλουθα: «La Villéliade» (1827), «Les Grecs», «Les jésuites», «Rome à Paris», «La Peyronnéide», «La censure ou le congrès des ministres» κλπ. Ἐπὶ κυβερνήσεως Μαρτινιὰκ συνέγραψαν τὸ ἔπος «Napoléon en Égypte» (1829), εἰς ὀκτὼ ᾄσματα, τὸ ὁποῖον συγκαταλέγεται μεταξὺ τῶν καλυτέρων δημιουργημάτων τῆς γαλλικῆς ἐπικῆς ποιήσεως. Ἐφάμιλλον τούτου εἶναι καὶ τὸ «Waterloo» (1829). Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ἰουλίου, ὁ Μπαρτελεμὺ μετὰ τοῦ Μερὺ ἐξύμνησαν τὴν νίκην εἰς τὸ ποίημά των «L'insurrection». Ἀλλὰ μετὰ τὰς πρώτας στιγμὰς τοῦ ἐνθουσιασμοῦ ὁ Μπαρτελεμὺ μετεπήδησεν εἰς τὴν ἀντιπολίτευσιν καὶ ἵδρυσε τὴν περίφημον «Némésis», ἑβδομαδιαίαν ἐφημερίδα, εἰς ἣν κατεπολέμησε δι' ἐμμέτρου καὶ πεζοῦ λόγου τὴν κυβέρνησιν. Ἡ «Némésis» ἔσχε τεραστίαν διάδοσιν. Βραδύτερον, ἐγκαταλείψας τὴν πολιτικήν, ἀφωσιώθη εἰς τὴν καθαρὰν λογοτεχνίαν καὶ συνέγραψε τὸ ἔργον «Les douze journées de la Révolution» (1831—1835) καὶ μετέφρασεν ἐπιτυχῶς εἰς τὴν γαλλικὴν τὴν «Αἰνειάδα» τοῦ Βιργιλίου (1838). Τὰ μεταγενέστερα ποιήματά του: «La bouillotte» (1839), «La syphilis», μετάφρασις τοῦ ποιήματος τοῦ Fracastor (1844), «La vapeur» (1845) κλπ. εἶναι κατωτέρας ἀξίας. —Ω.

*Αὔγουστος-Μαρσέϊγ Μπαρτελεμύ.*

— **Μπαρτελεμὺ** (Barthélemy) *ἀββᾶς*, ***Ἰάκωβος-Ἰωάννης***. Γάλλος σοφός, λογοτέχνης καὶ ἀρχαιοδίφης (1716—1795). Ἐσπούδασε θεολογίαν, μαθηματικά, ἀστρονομίαν, νομισματολογίαν καὶ ἀνατολικὰς γλώσσας: τὴν ἑβραϊκήν, τὴν ἀραβικήν, τὴν χαλδαϊκήν. Ἐν Παρισίοις συνεδέθη μετὰ τοῦ Γκρὸ ντὲ Μπόζ, διευθυντοῦ τοῦ μουσείου μεταλλίων, ὅστις προσέλαβεν αὐτὸν συνεργάτην του καὶ τὸν εἰσήγαγεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιγραφῶν (1747). Τῷ 1753 ὁ Μπαρτελεμὺ διεδέχθη τὸν διδάσκαλον καὶ προστάτην του καὶ ἐπλούτισε τὸ μουσεῖον διὰ μεγάλου ἀριθμοῦ σημαντικῶν μεταλλίων. Ἵνα διευκολύνῃ τὰς ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς νομισματολογίας ἐρεύνας του, ὁ Σουαζέλ, πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ, παρέλαβε τὸν Μπαρτελεμὺ μεθ' ἑαυτοῦ εἰς τὴν Ἰταλίαν. Ὁ Μπαρτελεμὺ συνέγραψεν ἔργα σχετικὰ πρὸς τὴν ἀρχαιολογίαν καὶ τὰς ἀνατολικὰς γλώσσας. Ἰδίᾳ διεκρίθη διὰ τὰς ἐρεύνας αὐτοῦ περὶ μεταλλίων. Τὸ κλασσικὸν ἔργον του εἶναι: «Τὸ ταξίδιον τοῦ Νέου Ἀναχάρσιδος», ἐκδοθὲν τῷ 1789 (βλ. λ. *Ρήγας*). Ὀλίγους μῆνας μετὰ τὴν δημοσίευσιν τοῦ ἔργου τούτου ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Πλὴν τοῦ «Νέου Ἀναχάρσιδος», ὁ Μπαρτελεμὺ ἔγραψε βαρυσημάντους πραγματείας καὶ ἐπιστολάς, ἐξ ὧν τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι: «Σκέψεις περὶ τοῦ ἀλφαβήτου τῆς Παλμύρας» (1754), «Ἐπιστολὴ περὶ τῶν μεταλλίων τῆς Παλαιᾶς Τουλούζ» (1764), «Ἐπιστολὴ πρὸς τὸν μαρκήσιον ντ' Ὀλιβιὲρ ἐν σχέσει πρὸς τινα μνημεῖα τῶν Φοινίκων», «Ταξίδιον τοῦ ἀββᾶ Μπαρτελεμὺ εἰς τὴν Ἰταλίαν», δημοσιευθὲν τῷ 1801 ὑπὸ τοῦ Σεριέ. Α. Δ.

*Ἰάκωβος-Ἰωάννης Μπαρτελεμύ.*

— **Μπαρτελεμὺ** (Barthélemy), ***Ραϋμόνδος***. Γάλλος γλύπτης (1833—1902). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ντυρέ, ἐτιμήθη δὲ τῷ 1860 διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης διὰ τὸ ἔργον του «Ὁ Ὀρέστης καταφεύγων εἰς τὸν βωμὸν τῆς Ἀθηνᾶς». Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1859. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Φαῦνος παίζων μετ' ἐρίφου» (ἐν τῷ κήπῳ τοῦ Λουξεμβούργου), «Γανυμήδης», «Ὁ καρδινάλιος ντὲ Λὰ Ροσφουκὼ» (βιβλιοθήκη Ἁγίας Γενεβιέβης), «Ἠλίας ντὲ Μπωμὸν» (Μεταλλειολογικὴ Σχολή), «Ὁ ζωγράφος Μπασελιὲ» (Σχολὴ διακοσμητικῶν τεχνῶν), «Σεβαστιανὸς Μπουρντὸν» (εἰς τὴν πρόσοψιν τοῦ μουσείου τοῦ Μονμπελλιέ), «Ὁ ἠλεκτρισμὸς» κλπ. Ι. Μ. Π.

— **Μπαρτελεμὺ-Σαὶντ-Ἰλαὶρ** (Barthélemy-Saint-Hilaire), ***Ἰούλιος***. Περιώνυμος Γάλλος φιλόσοφος καὶ πολιτικὸς (1805—1895). Διδαχθεὶς τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν σανσκριτικὴν ὑπὸ τοῦ Μπυρνοὺφ καὶ τὴν φιλοσοφίαν ὑπὸ τοῦ Βίκτωρος Κουζέν, ἤρχισε τὴν φιλοσοφικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὴν μετάφρασιν τῶν συγγραφῶν τοῦ Ἀριστοτέλους, ἥτις ἀπησχόλησεν ὁλόκληρον τὴν ζωήν του. Τὰ «Πολιτικά», δημοσιευθέντα τῷ 1837, ἐγένοντο αἰτία ὅπως δοθῇ εἰς τὸν σοφὸν μεταφραστὴν ἡ ἕδρα τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας καὶ ὅπως οὗτος ἐκλεγῇ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Μπαρτελεμὺ Σαὶντ-Ἰλαὶρ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικὴν τῷ 1848, ὡς διευθυντὴς τῆς γραμματείας τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως, βραδύτερον δ' ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῆς Σὲν-ἐ-Οὐὰζ εἰς τὴν συνταγματικήν, εἶτα δὲ εἰς τὴν νομοθετικὴν συνέλευσιν. Μετὰ τὸ πραξικόπημα τῆς 2 Δεκεμβρίου παρητήθη τῆς θέσεως τοῦ καθηγητοῦ καὶ ἔζησε μέχρι τοῦ 1869 ἰδιωτεύων. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ὁ νομὸς τῆς Σαὶν-ἐ-Οὐὰζ ἐξέλεξεν αὐτὸν μέλος τοῦ νομοθετικοῦ σώματος, ὅπου ἐψήφισε κατὰ τῆς αὐτοκρατορίας. Ἀλλ' ἡ μεγάλη καὶ σπουδαία πολιτικὴ δρᾶσις αὐτοῦ ἤρξατο ἰδίᾳ ἀπὸ τοῦ ἔτους 1871. Ἐκλεγεὶς μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως, ἔλαβε τὴν ἐντολὴν νὰ βοηθήσῃ τὴν κυβέρνησιν εἰς τὰς διαπραγματεύσεις τῆς εἰρήνης, εἰς αὐτὸν δ' ἔλαχεν ὁ κλῆρος ν' ἀνακοινώσῃ εἰς τὴν συνέλευσιν τοὺς βαρεῖς ὅρους τῆς εἰρήνης, τοὺς ἐπιβληθέντας ὑπὸ τῶν Γερμανῶν. Φίλος τοῦ Θιέρσου, ὅστις διώρισεν αὐτὸν πρόεδρον τοῦ συμβουλίου τῆς ἐπικρατείας, δὲν ἔπαυσεν ὑποστηρίζων τὸ δημοκρατικὸν πολίτευμα. Ὀνομασθεὶς γερουσιαστὴς ἰσόβιος τῷ 1875, ἐγένετο ἐν ἔτει 1880 ἀντιπρόεδρος τῆς ἐθνικῆς συνελεύσεως, εἶτα δὲ ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ὑπὸ τὴν κυβέρνησιν Ἰουλίου Φερρύ, ὅπου διεκρίθη διὰ τὴν φιλειρηνικὴν πολιτικήν του.

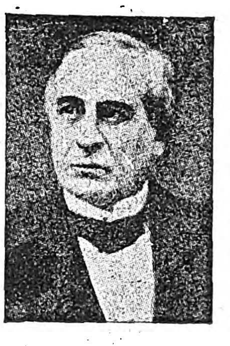

*Ἰούλιος Μπαρτελεμὺ-Σαὶντ-Ἰλαίρ.*

Ὡς συγγραφεύς, ὁ Μπαρτελεμὺ-Σαὶντ-Ἰλαὶρ εἶναι γνωστὸς διὰ τὴν ὑπέροχον αὐτοῦ μετάφρασιν τῶν ἔργων τοῦ Ἀριστοτέλους ὡς καὶ διὰ τὰς πραγματείας: «Ἡ ἀλεξανδρινὴ σχολὴ» (1838), «Ὁ βουδισμὸς» (1855), «Ἐπιστολαὶ περὶ Αἰγύπτου» (1856), «Ὁ Βούδδας καὶ ἡ θρησκεία του» (1859), «Ὁ Μωάμεθ καὶ τὸ Κοράνιον» (1865), «Ἡ μεταφυσικὴ» (1879), καὶ «Αἱ Βρεττανικαὶ Ἰνδίαι» (1887). Α. Δ.

— **Μπαρτελεμὺ** (Barthélemy), ***Φραγκῖσκος***, *μαρκήσιος ντὲ* —. Γάλλος πολιτικὸς (1747—1830). Ἀναδειχθεὶς φροντίδι τοῦ θείου του ἀββᾶ Μπαρτελεμύ, μετέσχε διπλωματικῶν ἀποστολῶν ὑπὸ τὸν βαρῶνον Μπρετέϋ εἰς Σουηδίαν καὶ Ἑλβετίαν, κατόπιν δὲ ὑπηρέτησεν εἰς τὴν ἐν Λονδίνῳ πρεσβείαν ἐπὶ σειρὰν ἐτῶν. Πληρεξούσιος εἶτα τῆς Γαλλίας ἐν Ἑλβετίᾳ κατὰ τὰ ἔτη τῆς Ἐπαναστάσεως, ὑπέγραψε τὴν συνθήκην τῆς Βασιλείας (1795) καὶ τῷ 1798 ἀντικατέστησε τὸν Λατουρνὲρ εἰς τὸ Διευθυντήριον. Εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦτο παρέμεινεν ὀλίγον διάστημα, συλληφθεὶς καὶ ἐξορισθεὶς ἐνεργείᾳ τῶν ἀντιπάλων του εἰς Γουϊάναν, ὁπόθεν δραπετεύσας εἰς Ἡνωμένας Πολιτείας κατέφυγεν εἶτα εἰς Ἀγγλίαν. Τῷ 1800 ἐπιστρέψας διωρίσθη γερουσιαστὴς ὑπὸ τοῦ Βοναπάρτου, λαβὼν ἅμα τὸν ταξίαρχην τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς καὶ τὸν τίτλον τοῦ κόμητος, καὶ ἐγένετο ἀντιπρόεδρος τῆς γερουσίας. Τῷ 1814 μετέσχε τῆς Συνταγματικῆς Ἐπιτροπῆς. Κατὰ τὴν Παλινόρθωσιν (1815) ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, παρητήθη ὅμως τῷ 1817 λόγῳ τῆς ἀντιδράσεως κατὰ τοῦ νομοσχεδίου του περὶ τροποποιήσεως τοῦ ἐκλογικοῦ νόμου ὑπὸ πνεῦμα ἀριστοκρατικόν. Ἔκτοτε παρέμεινεν ἀφανής, ἂν καὶ τὰ νομοσχέδιά του ἐψηφίσθησαν ἐπὶ τῆς δευτέρας κυβερνήσεως Ρισελιέ.

**Μπαρτένεφ, *Πέτρος Μιχαήλοβιτς***. Ρῶσος ἱστοριοδίφης, γεννηθεὶς τῷ 1829 εἰς Ταμπὼφ καὶ ἀποθανὼν ἐν Μόσχᾳ τῷ 1898. Σπουδάσας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Μόσχας, διετέλεσεν ἐπί τινα χρόνον βιβλιοθηκάριος τῆς δημοσίας βιβλιοθήκης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1863 ἤρξατο τὴν ἔκδοσιν τοῦ περιοδικοῦ «Ρωσικὸν ἀρχεῖον», εἰς τὸ ὁποῖον ἐδημοσίευεν ἀνέκδοτα ἔγγραφα σχετικὰ πρὸς τὴν ρωσικὴν ἱστορίαν ἀπὸ τοῦ ΙΖ' μέχρι τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἐκτὸς τούτου ἐδημοσίευσεν εἴκοσι τόμους ἱστορικῶν ἐγγράφων, ἅτινα ἐπέχυσαν φῶς ἐπὶ τῶν γενονότων καὶ τῶν πολιτικῶν προσώπων, ἰδίως τῆς περιόδου τῆς βασιλείας Αἰκατερίνης Β'. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε δίτομον βιογραφίαν τοῦ Ἀλεξάνδρου Πούσκιν. Φ. Β.

**Μπαρτενστάϊν** (Bartenstein) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Πρωσσίᾳ (ἐπαρχία Φρήντλαντ), κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Ἄλλε, 55 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Ν. τῆς Καινιξβέργης. Ἔχει βιομηχανίας σιδήρου καὶ ἐμπόριον σιτηρῶν. Κάτ. (1919) 7.300. Ἱδρύθη τῷ 1241 ὑπὸ Τευτόνων ἱπποτῶν καὶ κατέστη πρωτεύουσα τῆς Μπαρτονίας ἢ Μπαρτενλάνδης, μιᾶς ἐκ τῶν 11 χωρῶν τῆς παλαιᾶς Πρωσσίας. Τῷ 1807, ἀπὸ τοῦ Ἀπριλίου μέχρι τοῦ Ἰουνίου, διετέλεσεν ἕδρα τῶν στρατηγείων Ρώσων καὶ Πρώσσων, τὴν δὲ 26 Ἀπριλίου 1807 ὑπεγράφη ἐκεῖ καὶ συνθήκη μεταξὺ τῶν δύο συμμάχων. Χ. Δ.

**Μπάρτζελι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Μυρωνία* (βλ. λ.).

Digitized by Google

**Μπαρτζέλλο** (Bargello). Μέγαρον ἐν Φλωρεντίᾳ, ὅπου σήμερον ἔχει ἐγκατασταθῆ τὸ Ἐθνικὸν μουσεῖον τῆς πόλεως, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχουν σπουδαῖαι συλλογαὶ ὅπλων, ἔργα μεγάλων Φλωρεντινῶν γλυπτῶν, μαγιόλικαι, κρυστάλλινα καλλιτεχνήματα κτλ. Τὸ μέγαρον εἶναι γοτθικοῦ ρυθμοῦ καὶ ἐκτίσθη τῷ 1255, χρησιμοποιηθὲν ἀπὸ τοῦ 1261 μέχρι τοῦ 1700 ὡς ἕδρα τοῦ ποδεστὰ τῆς πόλεως. Κατόπιν μετεβλήθη εἰς φυλακὴν καὶ ἕδραν τοῦ διευθυντοῦ τῆς ἀστυνομίας μέχρι τοῦ 1859, ὁπότε ἐξεκενώθη καὶ διαρρυθμισθὲν καταλλήλως μετεβλήθη εἰς μουσεῖον. Μ. Δ. Β.

**Μπάρτζι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Δαφνοῦλα* (βλ. λ.).

**Μπαρτὶν** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Κασταμονῆς, κειμένη ἐπὶ τοῦ Παρθενίου ποταμοῦ, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα. Πάλαι ἐκαλεῖτο *Παρθενία*. Ἀπέχει 8 περίπου χλμ. ἀπὸ τοῦ Κιουζελτζέ, ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου, χρησιμεύοντος ὡς ἐπινείου τῆς Θεοδωρουπόλεως (Ζαφφράμπολου) καὶ ἔχει κλῖμα εὐκραέστατον. Κάτ. 10.000, ἐξ ὧν 2.000 Ἕλληνες πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς. Πλησίον τοῦ Μπαρτὶν κεῖται ἡ περιώνυμος ἀρχαία πόλις Ἄμαστρις (Ἀμάσρα). Ἡ ὑποδιοίκησις Μπαρτὶν ἔχει ἐπιφάνειαν 1480 τ. χλμ., 209 χωρία καὶ 64.227 κατοίκους (1927). Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι ὀρεινὸν καὶ δασῶδες. Παράγει πολλὴν ξυλείαν, χρησιμεύουσαν εἰς ναυπήγησιν πλοίων, ἔχει δὲ καὶ ἀνθρακοφόρα κοιτάσματα.

—**Μπαρτὶν-τσάϊ** ***(Παρθένιος)*** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς Τουρκίας, διαρρέων τὴν πόλιν Μπαρτίν. Πηγάζει ἐκ τῶν ἀνατολικῶν τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως ὀρέων καὶ ρέων μὲ διεύθυνσιν ΒΑ. ἐκβάλλει εἰς τὸν Εὔξεινον. Ἔχει μῆκος 75 χλμ., εἶναι δὲ πλωτὸς μέχρι τῆς πόλεως. Ν. Μ.

**Μπάρτλετ** (Bartlett), ***Παῦλος-Βαίυλαντ***. Βορειοαμερικανὸς γλύπτης (1865—1925), υἱὸς τοῦ τεχνοκρίτου καὶ γλύπτου Τρᾶμαν Μπάρτλετ. Εἰς ἡλικίαν 15 ἐτῶν ἐστάλη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Φρεμιέ. Τῷ 1887 ἐβραβεύθη εἰς τὴν ἔκθεσιν τοῦ Salon. Ἐπιδοθεὶς κυρίως εἰς τὴν ἀπεικόνισιν ζῴων, ἐσημείωσε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν, μεγάλως δὲ ἐκτιμῶνται περίεργοι μικροσκοπικαὶ κατὰ τὸ πλεῖστον παραστάσεις του, αἵτινες ἀποτελοῦσιν ἀληθῆ κομψοτεχνήματα. Γνωστότερα ἔργα του εἶναι: «Ὁ δαμαστὴς τῶν ἄρκτων» (Μητροπολιτικὸν μουσεῖον τεχνῶν τῆς Νέας Ὑόρκης), ὁ ἐν τῇ πλατείᾳ Καρουζὲλ τῶν Παρισίων ἔφιππος ἀνδριὰς τοῦ Λαφαγιέτ, οἱ ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Κογκρέσσου τῆς Οὐάσιγκτων ἀνδριάντες τοῦ Κολόμβου καὶ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, «Ὁ θνήσκων λέων» ὁ ἐν Φιλαδελφείᾳ ἔφιππος ἀνδριὰς τοῦ Μὰκ Κλέλλαν, ὁ ἐν Βοστώνῃ ἀνδριὰς τοῦ Οὐάρρεν καὶ πλεῖστα ἄλλα, κοσμοῦντα τὰς μεγάλας πόλεις τῶν Ἡν. Πολιτειῶν. Μικρὸν πρὸ τοῦ θανάτου του ἐτιμήθη διὰ τοῦ ταξιάρχου τῆς γαλλικῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς. Χ. Δ.

**Μπάρτοκ** (Bartock), ***Μπέλα***. Οὖγγρος συνθέτης καὶ κλειδοκυμβαλιστὴς (1881). Ἀπόφοιτος τῆς μουσικῆς Ἀκαδημίας τῆς Βουδαπέστης, ὠνομάσθη τῷ 1907 καθηγητὴς τοῦ κλειδοκυμβάλου ἐν αὐτῇ. Σήμερον εὑρίσκεται ἐπὶ κεφαλῆς τῶν συνθετῶν τῆς πατρίδος του, ἡ μοῦσα τῆς ὁποίας διαπνέει ὁλόκληρον τὸ ἔργον του. Ρυθμοὶ καὶ μελῳδίαι οὐγγρικαί, ἐξευγενιζόμεναι ἀπὸ τὴν τέχνην του καὶ παρουσιαζόμεναι μὲ μοναδικὴν τολμηρότητα, ἀλλὰ καὶ λογικὴν ταυτοχρόνως, ἐνέπνευσαν εἰς τὸν Μπάρτοκ σειρὰν ἐθνικῶν μουσικῶν ἔργων, ὧν τὰ σημαντικώτερα εἶναι: σκέρτσο δι' ὀρχήστραν (1900), «Κοσσοῦθος», συμφωνικὸν ποίημα, κουϊντέττο μετὰ κλειδοκυμβάλου, ραψῳδία διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ ὀρχήστραν, σκέρτσο δι' ὀρχήστραν (1904), 2 σουΐται δι' ὀρχήστραν, «Deux Portraits» διὰ μικρὰν ὀρχήστραν, 1 κουαρτέττο ἐγχόρδων, «Deux images» δι' ὀρχήστραν, τὸ μελόδραμα «Die Burg des Herzogs Blaulart» (Βουδαπέστη 1918), 4 τεμάχια δι' ὀρχήστραν, παντομίμα «Der wunderbare Prinz» (1922), τὸ χορευτικὸν παιχνίδι «Der holzgeschnitzte Prinz» (1922), τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, μελῳδίαι, ἔργα μουσικῆς δωματίου κτλ. Ἐκτὸς τούτων ὁ Μπάρτοκ κατήρτισεν ἀξιολόγους συλλογὰς οὐγγρικῶν, σλοβακικῶν καὶ ρουμανικῶν δημωδῶν ᾀσμάτων. Γ. Σ.

**Μπάρτολι** (Bartoli), ***Ἀδόλφος***. Ἰταλὸς φιλόλογος (1833—1894). Ἐσπούδασε τὴν νομικήν. Ἀπὸ τοῦ 1856 μέχρι τοῦ 1859 ὑπῆρξε συντάκτης τοῦ «Ἰταλικοῦ ἱστορικοῦ ἀρχείου» (Archivio storico italiano). Τῷ 1874 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ σχολῆς ἀνωτέρων σπουδῶν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ ἄξια μνείας εἶναι: «Περιηγήσεις τοῦ Μάρκου Πόλο» (1859), «Οἱ δύο πρῶτοι αἰῶνες τῆς ἰταλικῆς φιλολογίας» (1870—1879), «Οἱ πρόδρομοι τοῦ Βοκκακίου» (1876), «Οἱ πρόδρομοι τῆς Ἀναγεννήσεως» (1877), «Ἱστορία τῆς ἰταλικῆς λογοτεχνίας» (1878—1879) καὶ «Τὰ ἰταλικὰ χειρόγραφα τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης τῆς Φλωρεντίας» (1880). Α. Δ.

**Μπαρτολίνι** (Bartolini), ***Λαυρέντιος***. Διάσημος Ἰταλὸς γλύπτης (1777 — 1850). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς μὲν παρὰ τῷ Γάλλῳ ζωγράφῳ Ντεμαρέ, βραδύτερον δὲ ἐν ἐργαστηρίῳ κομψοτεχνημάτων καὶ ἀντικειμένων ἐξ ἀλαβάστρου. Εἰκοσαετὴς μόλις ἀπῆλθεν εἰς Παρισίους, ἔνθα ἐσπούδασε τὴν γλυπτικὴν πλησίον τοῦ Lemot, μετασχὼν δὲ διαγωνισμοῦ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν ἔτυχε τοῦ δευτέρου βραβείου διὰ τὸ ἀνάγλυφον του «Κλέοβις καὶ Βίτων». Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἡ φήμη του ἔβαινε διαρκῶς αὐξανομένη. Ἀνέλαβε τὴν ἐκτέλεσιν ἑνὸς ἀναγλύφου τῆς στήλης Βαντὸμ καὶ μιᾶς προτομῆς τοῦ Ναπολέοντος διὰ τὸ Ἰνστιτοῦτον. Ἠκολούθησε τὸν Ναπολέοντα, παρ' οὗ ἐξαιρέτως ἐτιμᾶτο, εἰς τὴν Ἔλβαν καὶ μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ Βατερλὼ ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν Φλωρεντίᾳ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων τοῦ Μπαρτολίνι τάσσονται: «Ἡ εὐσπλαγχνία», ἐν ἀντίγλυφον τῆς «Ἀφροδίτης τῶν Μεδίκων», τὸ ἄγαλμα τοῦ Μακκιαβέλη καὶ αἱ προτομαὶ τοῦ Ντενόν, τῆς Κας ντὲ Σταέλ, τοῦ λόρδου Βύρωνος, τοῦ Μέττερνιχ, τοῦ Θιέρσου, τοῦ Καζιμὶρ Ντελαβίν, τοῦ Λίστ, Πίου τοῦ Θ', κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπαρτολῖνος** (Bartholinus Malmogiensis), ***Γάσπαρ***. Δανὸς σοφὸς (1585—1629). Ἐσπούδασεν εἰς διάφορα εὐρωπαϊκὰ πανεπιστήμια, ἡ ἐπίδοσίς του δὲ εἰς τὰς ἐπιστήμας καὶ ἡ ἐκ ταύτης φήμη του ὑπῆρξε τοιαύτη, ὥστε τῷ ἀπενεμήθησαν οἱ τίτλοι τοῦ καθηγητοῦ τῆς φιλοσοφίας ἐν Βασιλείᾳ (1607), τῆς ἀνατομικῆς ἐν Νεαπόλει (1609) καὶ τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης ἐν Μομπελλιὲ (1610). Γενόμενος κατόπιν καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κοπεγχάγης, κατέλαβε διαδοχικῶς τὰς ἕδρας τῆς ρητορικῆς (1611), τῆς ἰατρικῆς (1613) καὶ τῆς θεολογίας (1623). Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του διαμένων ἐν τῷ ἐξωτερικῷ κατέγινεν ἰδιαιτέρως εἰς ἀνατομικὰς μελέτας καὶ ἐδημοσίευσεν: «Institutiones anatomicae» (1611) καὶ «Controversiae anatomicae» (1631). Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Precepta totius physicae breviter explicata», «De principiis rerum naturalium», «De natura systema physicum» «De studio medico inchoendo continuando et absolvendo», «Rhetorica major» (1616). Ο. Ρ.

— **Μπαρτολῖνος** (Bartholinus), ***Θωμᾶς***. Διάσημος Δανὸς ἀνατόμος (1616—1680), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Πολυμαθὴς ὡς ὁ πατήρ του, ἐπεδόθη ὅλως ἰδιαιτέρως εἰς τὴν ἀνατομικήν, προβὰς ἐν Λιέγῃ εἰς ἐπιστημονικὰς ἐρεύνας ἐπὶ τῶν λυμφατικῶν ἀγγείων καὶ ἐπὶ τῆς θεωρίας τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος τοῦ Χάρβεϋ. Τῷ 1648 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κοπεγχάγης. Ἠσχολήθη μὲ μελέτας καὶ ἐρεύνας ἀνατομικάς, ἀνακαλύψας τὰ λυμφατικὰ τῶν ἄκρων ἀγγεῖα, τὸν θωρακικὸν πόρον, προήγαγε τὸ ζήτημα τῆς σχέσεως τῶν λυμφατικῶν μετὰ τῶν χοληφόρων καὶ αἱμοφόρων ἀγγείων, καὶ περιέγραψε τοὺς παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ κόλπου δύο πλαγίους αἰδοιοκολπικοὺς ἀδένας *(Βαρθολίνειοι ἀδένες)*. Ἡ ἀνατομική του αὕτη ἐργασία, ἡ συγγραφική του παραγωγὴ καὶ ἡ ἐξαίρετος διδασκαλία του τῷ προσεπόρισαν φήμην μεγάλου ἀνατόμου, διατηρηθεῖσαν ἐπὶ μακρὸν χρόνον καὶ μετὰ τὸν θάνατόν του. Ἐκ τοῦ πλήθους τῶν συγγραφῶν του διακρίνονται τὸ πεντάτομον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Acta medica et philosophica» (1673—1680) καὶ ἡ «Ἀνατομική», ἣν ἐπεξειργάσθη μετὰ τοῦ πατρός του. Ο. Ρ.

**Μπαρτολντὶ** (Bartholdi), ***Φρειδερῖκος-Αὔγουστος***. Γάλλος γλύπτης (1834—1904). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἀρὺ Σεφφέρ, εἵλκυσε δὲ διὰ πρώτην φορὰν ἐντόνως τὴν προσοχὴν τοῦ φιλοτέχνου κοινοῦ διὰ τοῦ κολοσσικοῦ ἀγάλματος τοῦ Ράππ, ἐκτεθέντος τῷ 1855. Ἀφιερώθη ἐπαλλήλως εἰς ποικίλους κλάδους τῆς γλυπτικῆς, διέπρεψεν ὅμως εἰς τὰς κολοσσικὰς δημιουργίας, ἐν αἷς ἡ τέχνη του εὑρίσκε τὴν εὐκαιρίαν νὰ ἐκδηλώνῃ ὅλην τὴν τραχεῖάν της ρώμην. Ἡ γενέτειρα τοῦ Μπαρτολντὶ Κολμὰρ κατέχει μερικὰ ἄκρως ἐνδιαφέροντα ἔργα τοῦ καλλιτέχνου τούτου. Ἐκ τῆς καθ' ὅλου παραγωγῆς του σημειοῦμεν τὸ «Μνημεῖον τοῦ Μαρτίνου Σαὶν» καὶ τὸν «Νεαρὸν ἀμπελουργὸν» ἐν Κολμάρ, τὸν ὀνομαστὸν «Λέοντα τοῦ Μπελφόρ», τὴν πολὺ περισσότερον ὀνομαστὴν «Ἐλευθερίαν φωτίζουσαν τὸν κόσμον» τῆς Νέας Ὑόρκης, ἐκτελεσθεῖσαν τῷ 1886, τὸ θαυμάσιον σύμπλεγμα «Ἡ Ἑλβετία περιθάλπουσα τὴν Ἀλσατίαν κατὰ τὸ 1870» (ἐν Βασιλείᾳ) καὶ τὰ ἀγάλματα τοῦ Ρουζὲ ντὲ Λίλ, τοῦ Οὐερκιγγετόριγος, τοῦ Λαφαγὲτ κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπαρτόλντυ** (Bartholdy). Πρῶσσος διπλωμάτης καὶ περιηγητής, γεννηθεὶς ἐν Βερολίνῳ τῷ 1779 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1825. Σπουδάσας νομικὰ καὶ φιλολογίαν, ἐχρησιμοποιήθη εἰς διαφόρους διπλωματικὰς ἀποστολάς, διέμεινε δ' ἐφ' ἱκανὸν χρόνον εἰς Παρισίους, Ρώμην καὶ Νεάπολιν. Ἠσπάσθη τὸν προτεσταντισμὸν (1805) καὶ ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Ναπολέοντος. Ἐπισκεφθεὶς τὴν Ἑλλάδα ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς περὶ αὐτῆς ἔργα: «Voyage en Grèce fait dans les années 1803—1804» (Traduit de l'allemand par A. du C...., Paris 1807, τ. 1—2), καὶ «Mémoires pour servir à la connaissance de la Grèce moderne et de la République Ionienne» (1814). Ἐφιλοπόνησε δὲ καί τινα ἄλλα ἔργα. Περὶ τῶν Ἑλλήνων ἔγραψεν ὑπὸ τὸ κράτος δυσμενοῦς προκαταλήψεως καὶ μὲ ἐμπάθειαν, στηλιτευθεὶς διὰ τοῦτο δριμέως ὑπὸ τοῦ Κοραῆ. Ἡ ἀσχημία του ἦτο παροιμιώδης. Ἡ πλουσία βιβλιοθήκη του, περιέχουσα πολύτιμα καὶ σπάνια ἔργα, ἠγοράσθη παρὰ τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας, σήμερον δ' εὑρίσκεται ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Βερολίνου. Δ. Π. Π.—Γ. Ε. Κ.

— **Μπαρτόλντυ - *Μέντελσον*** (Mendelssohn-Bartoldy), ***Κάρολος***. Γερμανὸς ἱστορικὸς (βλ. λ. *Μέντελσον*-Μπαρτόλντυ, Κάρολος).

— **Μπαρτόλντυ - *Μέντελσον*** (Mendelssohn-Bartholdy), ***Φῆλιξ-Ἰάκωβος-Λουδοβῖκος***. Μουσικὸς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος (βλ. λ. *Μέντελσον*-Μπαρτόλντυ, Φῆλιξ-Ἰάκωβος-Λουδοβῖκος).

**Μπάρτολο *ντὰ Σασσοφερράτο***, ἢ ***Μπάρτουλο*** καὶ ***Μπάρτολος*** (Bartolo da Sassoferrato, Bartulo, Bartolus, Bartholus). Περίφημος Ἰταλὸς νομοδιδάσκαλος, γεννηθεὶς τῷ 1314 ἐν Σασσοφερράτο τῆς Οὐμβρίας καὶ ἀποθανὼν τῷ 1357. Θεωρεῖται ὁ ἀρχηγὸς τῆς σχολῆς τῶν σχολιαστῶν. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βολωνίας νομικά, ἐνῷ συγχρόνως κατεγίνετο εἰς τὴν ἐκμάθησιν τῆς γεωμετρίας καὶ τῆς ἑβραϊκῆς γλώσσης. Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν ὡς διοικητικὸς ὑπάλληλος, κατόπιν δὲ ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ δικαίου εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Πίζης, Παδούης, Βολωνίας καὶ Περουγίας, ἀποκτήσας μεγάλην φήμην μεταξὺ τῶν συγχρόνων του καὶ τυχὼν ἐξαιρετικῶν τιμῶν ἐκ μέρους τοῦ Καρόλου Δ', ὁ ὁποῖος προσέλαβεν αὐτὸν τὸν ἰδιαίτερον σύμβουλόν του καὶ τὸν διώρισε μεταξὺ τῶν συντακτῶν τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθείσης Χρυσῆς βούλλας. Ἡ διανοητικὴ αὐτοῦ ἀνάπτυξις ἦτο τόσον πρόωρος, ὥστε εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν ἠδύνατο νὰ συζητῇ μετὰ κύρους μὲ τοὺς ὀνομαστοτέρους ἐπιστήμονας καὶ νομοδιδασκάλους τῆς ἐποχῆς του, ἡ δὲ ἔκτασις καὶ τὸ βάθος τῶν γνώσεών του, ἡ διαλεκτικὴ δεινότης τῆς διδασκαλίας του καὶ ἡ μεθοδικότης καὶ ἐπιστημονικότης τῶν ἔργων του εἶχον δημιουργήσει πέριξ αὐτοῦ φήμην νέου Ἀριστοτέλους. Τὰ ἔργα αὐτοῦ, ἀναφερόμενα κυρίως εἰς σχόλια ἐπὶ τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου καὶ εἰς διάφορα δοκίμια ἐπὶ τοῦ δημοσίου, τοῦ ἰδιωτικοῦ καὶ τοῦ ποινικοῦ δικαίου, ἀντικατέστησαν τὰς γλώσσας (glossae) καὶ ἐθεωροῦντο ὡς ἡ αὐθεντικωτέρα ἑρμηνεία τῶν νόμων, εἰς τρόπον ὥστε, ζῶντος ἔτι αὐτοῦ, ἀνεφέρετο ὡς ἀξίωμα τὸ ρητὸν «nemo bonus jurista nisi sit Bartulista». Ἕνεκα τούτου τὰ ἔργα αὐτοῦ εἶχον ἐπικρατήσει εἰς ὅλα τὰ πανεπιστήμια, ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τῆς Ἰταλίας, καὶ ἐχρησιμοποιοῦντο διὰ τὴν διδασκαλίαν τῶν φοιτητῶν. Ἐνιαχοῦ εἶχον δημιουργηθῆ καὶ εἰδικαὶ ἕδραι πρὸς ἐξήγησιν αὐτῶν καὶ εἶχον συνταχθῆ διάφοροι περιλήψεις διὰ τὴν εὐχερεστέραν διδασκαλίαν καὶ μελέτην των. Ἡ ἐπίδρασις αὐτοῦ ἐξηκολούθησε ζωηρὰ μέχρι τῶν μέσων τοῦ Θ' αἰῶνος, παρὰ τὰς ἐπιθέσεις καὶ κατακρίσεις τῶν ὀπαδῶν τῆς νεωτέρας ἱστορικοκριτικῆς σχολῆς, οἵτινες κατηγόρησαν αὐτὸν ὡς ἀπομακρυνθέντα ἀπὸ τῆς ἀληθοῦς ἐπιστήμης διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως τῶν ἑρμηνευτικῶν γλωσσῶν ὡς βάσεως τῶν ἔργων του ἀντὶ τῶν κειμένων τῶν νόμων. Τὸ κυριώτερον ἔργον του, τὸ ὁποῖον ἀπετέλεσε καὶ τὴν βάσιν τῆς παγκοσμίου φήμης του, ὑπῆρξαν τὰ ὀγκώδη «Σχόλια» (Commentarii) τῶν διαφόρων μερῶν τοῦ Corpus Juris, τὰ ὁποῖα διεδόθησαν μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην. Ἔγραψεν ἐπίσης πολυαρίθμους πραγματείας ἐπὶ τοῦ ἰδιωτικοῦ, ἐπὶ τοῦ αστικοῦ, ἐπὶ τοῦ ποινικοῦ δικαίου κτλ., καθὼς καὶ πολυαρίθμους «Quaestiones», «Consilia», «Tractatus» κτλ. Τὰ ἔργα αὐτοῦ ἔσχον πλείστας ἐκδόσεις, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι ἡ τῆς Λυῶνος (1544), ἡ τοῦ Τουρίνου (1577), ἡ τῆς Βενετίας (1590, 1603 καὶ 1615) καὶ ἡ τῆς Βασιλείας (1588—1589, εἰς 10 τόμους), ἡ πληρεστέρα πασῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *L. Rossi*, Le idee politiche di Bartolo (1917).—*A. C. Jemolo*, Il Liber Minoritatum di Bartolo (1922). Μ. Δ. Β.

**Μπαρτολομαῖο, *Φρὰ*** — (Fra Bartolomeo). Φλωρεντῖνος ζωγράφος (*Βαρθολομαῖος*, Φρά-).

**Μπαρτολομὲ** (Bartholomé), ***Παῦλος-Ἀλβέρτος***. Γάλλος γλύπτης καὶ ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1848. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ζερὸμ καὶ ἐξέθηκεν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν ἀπὸ τοῦ 1879 μέχρι τοῦ 1886 ἐνδιαφερούσας ρωπογραφίας. Τῷ 1891 ἐνεφανίσθη ὡς γλύπτης διὰ προτομῶν καὶ πλαστικῶν συμπλεγμάτων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων τῆς δευτέρας ταύτης περιόδου τοῦ καλλιτεχνικοῦ του σταδίου τάσσονται: «Σύμπλεγμα δύο μορφῶν» (1892), «Νεᾶνις κλαίουσα» (1892), «Τὸ μυστικόν», «Νεᾶνις κλαίουσα» (1892). «Τὸ μυστικόν», «Νεᾶνις ... δεομένη» (1894), «Τὸ μνημεῖον εἰς τοὺς νεκροὺς» (στηθὲν τῷ 1899 εἰς τὸ παρισινὸν νεκροταφεῖον Père Lachaise) καὶ τὸ ἄγαλμα τῆς Νίκης (ἐν τῇ παρισινῇ πλατείᾳ τοῦ Καρρουζέλ). Ι. Μ. Π.

**Μπαρτολομμέϊ** (Bartolommei), *Μαρκήσιος Φερδινάνδος*. Ἰταλὸς πολιτικὸς ἐπαναστάτης (1821—1869). Ἀνῆκεν εἰς παλαιὰν φλωρεντινὴν οἰκο-

Digitized by Google

νειαν εὐγενῶν, τοὺς ὁποίους ἐγκατέλειψε λίαν ἐνωρίς, διὰ νὰ ἀφοσιωθῇ εἰς τοὺς ἀγῶνας ὑπὲρ τῶν ἐλευθεριῶν τοῦ λαοῦ καὶ τῆς ἰταλικῆς ἑνότητος. Τῷ 1847—1848 εἶχε καταστήσει τὴν οἰκίαν του κέντρον ἐπαναστατικῶν συγκεντρώσεων. Ἕνεκα τούτου ἐξωρίσθη καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἀγγλίαν. Μετὰ τὴν κήρυξιν τοῦ πολέμου μεταξὺ Πεδεμοντίου καὶ Αὐστρίας ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ συγκροτήσας ἐθελοντικὸν σῶμα προσεπάθησε νὰ ἐξεγείρῃ καὶ τὴν Τοσκάνην. Τὴν 29 Αὐγούστου 1859 ἐπέτυχε νὰ ἐπαναστατήσῃ τὸν λαὸν τῆς Φλωρεντίας κατὰ τοῦ μεγάλου δουκός, ὁ ὁποῖος ἠναγκάσθη ν' ἀναχωρήσῃ ἐκ τῆς πόλεως, μεθ' ὃ ὁ Μπαρτολομμέϊ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν σχηματισθεῖσαν τότε προσωρινὴν κυβέρνησιν, ἥτις ἐκήρυξε τὴν ἕνωσιν μὲ τὸ Πεδεμόντιον. Βραδύτερον ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ κατόπιν γερουσιαστὴς καὶ διῆλθε τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του καταγινόμενος εἰς φιλανθρωπικὰ ἔργα. Μ. Δ. Β.

**Μπάρτον-ὤπον-Χάμπερ** (Barton-upon-Humber) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λίνκολν, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Χάμπερ. Εἶναι πόλις βιομηχανική, ἔχουσα βιομηχανίας κεραμουργικάς, ἀγγειοπλαστικάς, βυρσοδεψικὰς κλπ. Κάτ. 6.673.

**Μπάρτον** (Barton), ***Βερνάρδος.*** Ἄγγλος ποιητὴς (1784—1849). Κατήγετο ἐκ γονέων Κουακέρων καὶ εἶναι κοινῶς γνωστὸς ἐν Ἀγγλίᾳ ὡς «ὁ Κουάκερος ποιητής» (the Quaker poet). Ἡ πρώτη του ποιητικὴ συλλογὴ «Μετρικαὶ διαχύσεις» (1812) ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ ἐγένετο ἀφορμὴ νὰ γνωρισθῇ μὲ διαφόρους προσωπικότητας καὶ ὀνομαστοὺς ποιητὰς τῆς ἐποχῆς, οἱ ὁποῖοι τὸν ὑπεστήριξαν κατόπιν θερμῶς. Ἀκολούθως ἐξέδωκε τὰ «Τραγούδια ἐρασιτέχνου» (1818), ἅτινα θεωροῦνται ἡ καλυτέρα του ποιητικὴ παραγωγή, τὰ «Τραγούδια» (1820), τοὺς «Στίχους ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ Σέλλεϋ» (1822), «Τὰ λείψανα» (1828) κ. ἄ.

—**Μπάρτον** (Barton), ***Σὲρ Ἐδμόνδος***. Αὐστραλὸς πολιτικὸς καὶ νομομαθὴς (1849—1920). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Σίδνεϋ καὶ τῷ 1879 ἐξελέγη βουλευτής, ἀναδειχθεὶς ἐν τῇ βουλῇ εἷς τῶν ἐνθερμοτέρων ὀπαδῶν τῆς συμπήξεως τῆς αὐστραλιανῆς ὁμοσπονδίας. Τῷ 1899 ἀπεστάλη εἰς Λονδῖνον, ὅπως διαπραγματευθῇ τὴν σύμπηξιν τῆς ὁμοσπονδίας ταύτης καὶ κατόπιν τῆς ἐπιτυχίας τῶν ἐνεργειῶν του διωρίσθη πρῶτος πρωθυπουργὸς τῆς νεοσυσταθείσης αὐστραλιανῆς ὁμοσπονδίας καὶ ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν αὐτῆς. Καθ' ὅλον τὸ πολιτικόν του στάδιον ἐπέδειξε μεγάλην πολιτικὴν φρόνησιν καὶ εἶχεν ἀποκτήσει τὴν γενικὴν ἐμπιστοσύνην καὶ ἀγάπην, ἀποκαλούμενος κοινῶς «ὁ πατέρας τῆς Αὐστραλίας» (the father of Australia).

—**Μπάρτον** (Barton), ***Ἐλισάβετ.*** Ἀγγλὶς ψευδοπροφῆτις (1506—1534). Κατήγετο ἐκ τῆς κομιτείας τοῦ Κὲντ καὶ ἐκαλεῖτο ὡς ἐκ τούτου κοινῶς «ἡ κόρη τοῦ Κὲντ» καὶ «ἡ ἁγία τοῦ Κέντ». Ἦτο κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτρια εἴς τινα οἰκίαν, ὅπου ἠσθένησε καὶ προσβληθεῖσα ὑπὸ ὑστερίας καὶ θρησκευτικῆς καταληψίας ἤρχισε νὰ προβαίνῃ εἰς προφητείας, αἵτινες ἐφείλκυσαν τὴν προσοχὴν τοῦ ἀρχιεπισκόπου Οὗτος, ἐπειδὴ ἡ φήμη αὐτῆς ὁλονὲν ηὔξανε, διέταξε δύο μοναχοὺς νὰ τὴν ὑποβάλουν εἰς ἐξέτασιν. Φαίνεται ὅτι οἱ μοναχοὶ οὗτοι, πιθανῶς καὶ ὁ ἀρχιεπίσκοπος, ἠθέλησαν νὰ ἐκμεταλλευθοῦν αὐτὴν ὑπὲρ τῆς βασιλίσσης. Οὕτω δὲ τὴν ἐνέκλεισαν εἰς μοναστήριον, ὅπου, ὑπὸ τὴν καθοδήγησιν τῶν μοναχῶν, αἱ προφητεῖαί της ἐγένοντο ἀληθοφανέστεραι καὶ ἤρχισαν νὰ δημιουργοῦν μέγαν φανατισμὸν παρὰ τῷ λαῷ, ὁ ὁποῖος ἐπίστευεν ὅτι εὑρίσκεται εἰς ἄμεσον ἐπικοινωνίαν πρὸς τὴν Παναγίαν. Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ φίλοι τῆς βασιλίσσης ὑπέβαλον εἰς αὐτὴν νὰ προαγγείλῃ τὴν θείαν ὀργὴν κατὰ τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἑρρίκου τοῦ Η', ἐν ᾗ περιπτώσει οὗτος ἐπέμενε νὰ διαζευχθῇ τὴν βασίλισσαν καὶ νὰ νυμφευθῇ τὴν ἐρωμένην του Ἄνναν Βόλεϋν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε τὴν ἐξέγερσιν τῶν φίλων τοῦ βασιλέως, οἵτινες ἔπεισαν τοῦτον νὰ διατάξῃ τὴν σύλληψίν της. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν δίκην ἡ Μπάρτον, ὑποβληθεῖσα εἰς βασανιστήρια, ὡμολόγησεν ὅτι τὰς κατὰ τοῦ βασιλέως προφητείας ὑπέβαλεν εἰς αὐτὴν ὁ μοναχὸς Μπόκκινγκ, ἕνεκα δὲ τούτου κατεδικάσθη μετ' αὐτοῦ εἰς θάνατον.

—**Μπάρτον** (Barton), ***Κλάρα***. Ἀμερικανὸς φιλάνθρωπος (1821—1912). Κατ' ἀρχὰς ἦτο διδασκάλισσα, μετὰ τὴν ἔκρηξιν ὅμως τοῦ ἐμφυλίου ἀμερικανικοῦ πολέμου ἐγκατέλειψε τὸ ἐπάγγελμά της καὶ κατέγινεν εἰς τὴν περίθαλψιν τῶν τραυματιῶν καὶ τῶν ἀσθενῶν. Ἔκτοτε ἀφιερώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς ἔργα εὐποιίας καὶ μετὰ τὸ πέρας τοῦ πολέμου ἵδρυσεν ἐν Βασιγκτῶνι γραφεῖον ἀνευρέσεως ἀπολεσθέντων κατὰ τὸν πόλεμον στρατιωτῶν. Συνέβαλε κατόπιν εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ ἀμερικανικοῦ Ἐρυθροῦ σταυροῦ καὶ ἔλαβε μέρος ὡς μέλος αὐτοῦ εἰς τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον (1870—1871), εἰς τὸν πόλεμον τῆς Κούβας καὶ εἰς τὸν Νοτιοαφρικανικὸν πόλεμον τῶν Μπόερς (1899—1902). Τῷ 1881, ὡς πρόεδρος τοῦ ἀμερικανικοῦ Ἐρυθροῦ σταυροῦ, ἀντεπροσώπευσε τοῦτον εἰς τὰ διεθνῆ συνέδρια τῆς Καρλσρούης (1887), τῆς Ρώμης (1892), τῆς Βιέννης (1897) καὶ τῆς Πετρουπόλεως (1903). Τῇ εἰσηγήσει ταύτης ὠργανώθη ἡ παροχὴ συνδρομῆς κατὰ τὴν ἐπιδημίαν τῆς Φλόριντα (1887), τὸν λιμὸν τῆς Ρωσίας (1891), τὰς σφαγὰς τῆς Ἀρμενίας (1896) κλπ. καὶ μετερρυθμίσθη τὸ καταστατικὸν τοῦ ἀμερικανικοῦ Ἐρυθροῦ σταυροῦ, εἰς τρόπον ὥστε ἡ συνδρομὴ αὐτοῦ νὰ μὴ περιορίζεται μόνον ἐν καιρῷ πολέμου, ἀλλὰ νὰ ἐκτείνεται καὶ εἰς ἄλλας συμφοράς, ὡς ἐπιδημίας, κυκλῶνας, σεισμοὺς κτλ. Τὴν ἐπέκτασιν τῆς μεταρρυθμίσεως ταύτης καὶ εἰς τοὺς Ἐρυθροὺς σταυροὺς τῶν ἄλλων ἐθνῶν ἀνέλαβε κατόπιν ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπάρτον** (Burton)· βλ. λ. *Μπέρτον.*

**Μπαρτοὺ** (Barthou), ***Ἰωάννης-Λουδοβῖκος.*** Σύγχρονος Γάλλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Ὀλορὸν-Σαὶντ-Μαρὶ τῶν Κάτω Πυρηναίων τῷ 1862. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μπορντὼ νομικὰ καὶ δεκαεννεαετὴς μόλις ἐγένετο δικηγόρος. Ἐκλεγεὶς βουλευτὴς εἰς ἡλικίαν 27 ἐτῶν, ἐχρημάτισεν ἐπανειλημμένως ὑπουργὸς ἀπὸ τοῦ 1894 μέχρι τοῦ 1914, ἀναλαβὼν τὰ ὑπουργεῖα τῶν Δημοσίων Ἔργων (1894—1895 καὶ 1906—1909), τῶν Ἐσωτερικῶν (1896—1898) τῆς Δικαιοσύνης (1909—1910 καὶ 1913). Ἀπὸ τοῦ Μαρτίου μέχρι τοῦ Δεκεμβρίου τοῦ 1913 διετέλεσε πρωθυπουργὸς καὶ ὑπουργὸς τῆς Παιδείας, διακριθεὶς διὰ τὴν ἐπιμονὴν αὐτοῦ πρὸς ἐπιψήφισιν τοῦ νόμου περὶ καθιερώσεως τῆς τριετοῦς στρατιωτικῆς θητείας, ὁ ὁποῖος μετὰ ἓν ἔτος ἐπέπρωτο νὰ φανῇ τοσοῦτον χρήσιμος εἰς τὴν Γαλλίαν, ἐπιτρέψας εἰς αὐτὸν νὰ ἐμφανισθῇ μὲ ἐνισχυσμένας τὰς προφυλακὰς κατὰ τὴν προσβολὴν τῶν Γερμανῶν. Ὁ νόμος κατεπολεμήθη σφοδρότατα ὑπὸ τῆς ἀριστερᾶς ἐν τῇ βουλῇ, ὅπου αἱ συζητήσεις διήρκεσαν ἐπὶ τρεῖς μῆνας καὶ ὅπου ἔλαβε χώραν λίαν ἐνδιαφέρουσα ῥητορικὴ μονομαχία μεταξὺ τοῦ Μπαρτοὺ καὶ τοῦ ἀρχηγοῦ τῶν σοσιαλιστῶν Ζωρές. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐχρημάτισεν ἐπ' ὀλίγον τῷ 1917 ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τῷ 1921—1922 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, τῷ 1922—1924 καὶ τῷ 1926—1929 καὶ πάλιν ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης. Κατὰ τὸ 1922 ἐξελέγη γερουσιαστὴς καὶ πρόεδρος τῆς ἐπιτροπῆς τῶν ἐπανορθώσεων καὶ ὑπῆρξε κατόπιν ὁ πρῶτος ἀντιπρόσωπος τῆς Γαλλίας εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς Γενούης, εἰς τῆς ὁποίας τὴν ἀποτυχίαν συνέβαλε μεγάλως διὰ τῆς ἀδιαλλαξίας του ἔναντι τῆς Γερμανίας.

Ὁ Μπαρτοὺ διεκρίθη ἐπίσης καὶ ὡς λόγιος καὶ συγγραφεὺς καὶ ἐξελέγη ἀπὸ τοῦ 1918 μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων τὰ ἔργα: «Ἡ συνδικαλιστικὴ δρᾶσις» (1904), «Μιραμπὼ» (1913), «Ὁ Λαμαρτῖνος ὡς ῥήτωρ» (1916), «Οἱ ἔρωτες ἑνὸς ποιητοῦ» (1921), μελέτη περὶ τοῦ Βίκτωρος Οὐγκώ, «Ταξίδιον διὰ μέσου τῶν βιβλίων μου» (1925), «Ραχὴλ» (1926), «Ἡ ἐρωτικὴ ζωὴ τοῦ Ριχάρδου Βάγνερ», «Ὁ στρατηγὸς Οὐγκώ, 1773—1828» (1926), «Μελέτη καὶ ἀνάλυσις» (1929) κ.τ.λ. Μ. Δ. Β.

**Μπαρτρίχαρι** (Bhartrihari ἢ Bartrihari). Ἰνδὸς γραμματικὸς καὶ ποιητής, ἀποθανὼν πιθανῶς τῷ 650. Ἔγραψε σανσκριτικὴν γραμματικὴν καὶ συνέθεσε τρεῖς σειρὰς ἐξ ἑκατὸν μονοστρόφων φιλοσοφικῶν ποιημάτων («σατάκα»), αἵτινες φέρουν τοὺς τίτλους: «Τὰ ἑκατὸν (ποιήματα) τῆς ἀγάπης», «Τὰ ἑκατὸν (ποιήματα) τῆς ζωῆς» καὶ «Τὰ ἑκατὸν (ποιήματα) τῆς ἀπαρνήσεως τῶν ἐγκοσμίων». Τὰ ποιήματα ταῦτα, συντεταγμένα εἰς ἀποφθεγματικὸν ὕφος, ἐξεδόθησαν εἰς γερμανικὴν μετάφρασιν ἐν τοῖς «Ἰνδικοῖς γνωμικοῖς» τοῦ Böhtlingk (β' ἔκδ. 1870—1873), εἰς γαλλικὴν ὑπὸ Fanche («Les Centuries de Bhartrihari» 1852) καὶ εἰς ἀγγλικὴν ὑπὸ R. T. H. Griffith καὶ I. M. Kennedy (1913). Μ. Δ. Β.

**Μπὰρτς** (Bartsch) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς ἀρδεύων τὴν Πολωνίαν καὶ Σιλεσίαν καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ὀδέρου, ἐγγὺς τοῦ Γκλογκάου, μετὰ ῥοῦν 165 χλμ. Χ. Δ.

**Μπὰρτς** (Bartsch), ***Ἀδὰμ*** *φὸν* —. Αὐστριακὸς συγγραφεύς, σχεδιαστὴς καὶ χαράκτης (1757—1821). Διετέλεσεν ἀρχιφύλαξ τῆς βιενναίας αὐστριακῆς βιβλιοθήκης καὶ μέλος τῆς ἐν Βιέννῃ Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὴν τεχνικὴν τῆς χαρακτικῆς, ἐν οἷς «Ὁ ζωγράφος-χαράκτης» (1802—1821) καὶ ὁ κατάλογος τῶν ἔργων τῶν πλείστων μέχρι τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἀκμασάντων χαρακτῶν. Ὁ Μπὰρτς κατέλιπε πλείονας τῶν πεντακοσίων χαλκογραφιῶν καὶ ξυλογραφιῶν. Ι. Μ. Π.

— **Μπὰρτς** (Bartsch), ***Ἀδὰμ-Ἰωσήφ,*** υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1798—1873). Ἠσχολήθη εἰς τὴν περιγραφήν, ταξινόμησιν καὶ τὸν ὑπομνηματισμὸν τοῦ ἔργου τοῦ πατρός του. Ι. Μ. Π.

—**Μπὰρτς** (Bartsch), ***Κάρολος-Φρειδερῖκος-Ἀδόλφος-Κορράδος.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς γλωσσολόγος (1832—1888). Σπουδάσας κατ' ἀρχὰς κλασσικὴν φιλολογίαν ἐν Μπρεσλάου καὶ ταξιδεύσας εἰς τὴν Ἀγγλίαν, Γαλλίαν καὶ Ἰταλίαν, πρὸς μελέτην κυρίως τῶν διαφόρων διαλέκτων, ἐπεδόθη κατόπιν εἰς τὴν μελέτην τῶν ῥωμανικῶν καὶ γερμανικῶν φιλολογιῶν καὶ γλωσσῶν. Τῷ 1855 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς βιβλιοθήκης τῆς Νυρεμβέργης καὶ τῷ 1858 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ῥωμανικῆς καὶ γερμανικῆς φιλολογίας ἐν Ροστόκ, ἔνθα ἐδίδαξε μέχρι τοῦ 1871, ὁπότε ἐγένετο καθηγητὴς ἐν Ἁϊδελβέργῃ. Τῷ 1869 ἀντικατέστησε τὸν Πφάϊφφερ εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς φιλολογικῆς ἐπιθεωρήσεως «Γερμανία». Ἐκ τῶν πολλῶν ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν του ἀξιολογώτεραι εἶναι αἱ ἑπόμεναι: «Denkmäler der provençalischen Litteratur» (Stuttgart 1856), «Chrestomathie de l'ancien français» (Leipzig 1866, δ' ἔκδ. 1880), «Altfranz. Romanzen und Pastorellen» (Leipzig 1870), «Mitteldeutschen Gedichte (Stuttgart 1860), «Meisterlieder der Kolmarer Handschrift» (Stuttgart 1862), «Untersuchungen über das Niebelungslied» (Wien 1865) (μεγάλη κριτικὴ ἔκδοσις αὐτοῦ εἰς τρεῖς τόμους ἐγένετο ἐν Λειψίᾳ, 1870—1880), «Der saturnische Vers und die altdeutsche Langzeile» (Leipzig 1867) κλ. Πολλὰς καὶ ποικίλας πραγματείας ἐδημοσίευσεν εἰς ἔγκριτα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ («Germania», «Jahrbuch für romanische Litteratur» κλ.), πρὸς δὲ καὶ μεταφράσεις ξένων φιλολογικῶν ἔργων (τοῦ Dante καὶ ἄλλων). Γ. Π. Α.

**μπάρτσαμος** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πύρεθρον τὸ παρθενικόν.*

**Μπαρτσελλόττι** (Barzellotti), ***Ἰάκωβος.*** Ἰταλὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1854. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῶν πανεπιστημίων τῆς Παβίας, τῆς Νεαπόλεως καὶ τῆς Ρώμης. Τὰ περισσότερα τῶν ἔργων αὐτοῦ στρέφονται περὶ τὴν μελέτην τῆς ἠθικῆς καὶ τῆς πολιτικῆς τῆς ἐποχῆς του, ὡς καὶ περὶ τὸν κριτικὸν ἔλεγχον τῶν φιλοσοφικῶν συστημάτων τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Αἱ κυριώτεραι τῶν συγγραφῶν του εἶναι: «Ἅγιοι, ἀσκηταί, φιλόσοφοι», «Μελέται καὶ εἰκόνες», «Ὁ Ἱππόλυτος Ταίν», «Ἡ φιλοσοφία τοῦ Φ. Γ. Νίτσε». Ἐπίσης ἐδημοσίευσε περισπουδάστους πραγματείας ἀναφερομένας εἰς τὴν ἠθικήν, πολιτικὴν καὶ κοινωνικὴν κατάστασιν τῆς Ἰταλίας τοῦ ΙΘ' αἰῶνος: «Ἡ λογοτεχνία καὶ ἡ ἐπανάστασις ἐν Ἰταλίᾳ», «Ἐκ τῆς ἀναγεννήσεως εἰς τὴν παλιγγενεσίαν» κτλ. Α. Δ.

**Μπάρτσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μανωλιάσης τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, μετονομασθὲν εἰς ***Ἐπισκοπικόν***. Κάτ. (1928) 156.

**Μπαρτσιλάϊ** (Barzilaï), ***Ἰωσήφ.*** Ιταλὸς ἑβραϊστὴς καὶ νομομαθὴς (1828—1902). Ἔγραψε σημαντικὰς πραγματείας ἐπὶ βιβλικῶν θεμάτων ἐν αἷς «Βεεμώθ», «Θρῆνοι τοῦ Ἱερεμίου», «Λεβιάθαν», «Κρίσις τοῦ Σολομῶντος» κ. ἄ.

— **Μπαρτσιλάϊ** (Barzilai), ***Σαλβατόρε.*** Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Τεργέστῃ τῷ 1860. Καταδιωχθεὶς διὰ τὰς πολιτικάς του ἰδέας ὑπὸ τῶν αὐστριακῶν ἀρχῶν, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Βολωνίαν, ὅπου ἐσπούδασε νομικά. Κατόπιν μετέβη εἰς τὴν Ρώμην, ὅπου κατέγινεν εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ διεκρίθη ὡς πολιτικὸς καὶ καλλιτεχνικὸς συντάκτης τῆς «Τριμπούνας». Τῷ 1890 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ τῷ 1915 ἐγένετο ὑπουργός. Μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον μετέσχε τῆς Συνδιασκέψεως τῆς εἰρήνης τοῦ 1919, ὡς εἷς τῶν ἀντιπροσώπων τῆς Ἰταλίας, καὶ κατόπιν διετέλεσε πρόεδρος τῆς ὁμοσπονδίας τῶν ἰταλικῶν δημοσιογραφικῶν σωματείων. Ἐν τῇ βουλῇ διεκρίθη ὡς ῥήτωρ καὶ ἐγένετο εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῶν Ἰταλῶν ῥιζοσπαστῶν. Ἔχει ἐπίσης φήμην ὡς εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων δικηγόρων τῆς Ρώμης. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ ἐγκληματικότης ἐν Ἰταλίᾳ» (1885), «Ὁ ἀλτρουϊσμός, ἰδοὺ ὁ ἐχθρός» (1890), «Ἀπὸ τῆς Τριπλῆς Συμμαχίας εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον» (1914). Μ. Δ. Β.

**Μπαρτσίνι** (Barzini), ***Λουδοβῖκος.*** Ἰταλὸς δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1874. Ἤρχισε τὸ δημοσιογραφικόν του στάδιον ὡς συντάκτης τῆς «Fanfulla» καὶ κατόπιν ἀπεστάλη τῷ 1904 κατὰ τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον ὡς πολεμικὸς ἀνταποκριτὴς τοῦ «Ἑσπερινοῦ Ταχυδρόμου» τοῦ Μιλάνου εἰς τὴν Ἄπω Ἀνατολήν, ὅπου διεκρίθη διὰ τὴν ἐνημερότητα, τὴν ἀκρίβειαν καὶ τὴν γλαφυρότητα τῶν ἀνταποκρίσεών του, καθὼς καὶ διὰ τὴν μεγάλην του παρατηρητικότητα καὶ εὐρυμάθειαν, ἀποκτήσας παγκόσμιον φήμην. Ἐταξίδευσε κατόπιν ἀνὰ τὸν κόσμον καὶ ἰδιατέρως εἰς τὴν Ἀμερικήν, τὴν Ἄπω Ἀνατολήν, τὴν Παλαιστίνην, τὴν Ἰαπωνίαν, τὴν Σερβίαν, κτλ. καὶ τῷ 1907 συνώδευσε τὸν πρίγκιπα Σκηπίωνα Μποργκέζε εἰς τὸ ταξίδιόν του ἐπ' αὐτοκινήτου ἀπὸ Παρισίων εἰς Πεκῖνον. Βραδύτερον ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην, ὅπου ἐκδίδει ἰδίαν καθημερινὴν ἰταλικὴν ἐφημερίδα, τὸν «Ταχυδρόμον τῆς Ἀμερικῆς». Τὰς περισσοτέρας τῶν ἀνταποκρίσεών του ἐξέδωσε κατόπιν εἰς τόμους, ὧν ὁ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ μάχη τοῦ Μοῦκδεν» (1907), περιλαμβάνων τὰς ἀναφερομένας εἰς τὸν Ρωσοϊαπωνικὸν πόλεμον,



Digitized by Google

εἰσήχθη εἴς τινας ξένας στρατιωτικὰς σχολάς, ὡς πολύτιμος πηγὴ στρατιωτικῶν πληροφοριῶν πάσης φύσεως. Ἐξέδωκεν ἐπίσης τὰς «Σκηνὰς τοῦ Μεγάλου πολέμου» (Βελγίου, Γαλλίας, 1914—1915), ἐπίσης δύο τόμους περιλαμβάνοντας ἀνταποκρίσεις του ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ μετώπου (1915—1916—1917) κ.τ.λ.

Μ. Δ. Β.

**Μπάρτσον** (Baertsoen), ***Ἀλβέρτος.*** Βέλγος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἐσπούδασεν ἐν Γάνδῃ καὶ Παρισίοις, ἐξειργάσθη δὲ ἐλαιογραφίας καὶ χαλκογραφίας, αἵτινες ἀποδίδουν μετ' εἰλικρινοῦς αἰσθήματος τὴν μελαγχολικὴν γαλήνην τῶν γηραιῶν φλαμανδικῶν πόλεων («Μικρὴ αὐλὴ κοντὰ στὸ νερό», «Μικρὴ φλαμανδικὴ πλατεῖα» κλπ.). Ι. Μ. Π.

**Μπάρτφα,** ἢ ***Μπάρντιο,*** ἢ ***Μπάρτφελντ*** (οὐγγρ. Bartfa, σλοβακ. Bardio, γερμ. Bartfeld) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Σάρις τῆς ἀνατολικῆς Σλοβακίας, ὑπαγομένη μέχρι τοῦ 1918 εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Παρὰ τὴν πόλιν ὑπάρχουν ὁμώνυμα λουτρὰ (ὑψόμ. 310 μ.) μετὰ πλουσίων σιδηρούχων ἀλκαλοπηγῶν. Κάτ. (1921) 6.592, κατὰ τὸ πλεῖστον Σλοβάκοι. Χ. Δ.

**Μπάρυ** (Bary), ***Ἐρβῖνος φὸν —.*** Γερμανὸς ἐξερευνητὴς (1846—1877). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν κατὰ τῶν Γάλλων ἐκστρατείαν τοῦ 1870, μεθ' ὃ μετέβη εἰς Μάλταν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Τριπολίτιδα καὶ εἰς τὰ ἐνδότερα τῆς Ἀφρικῆς, μέχρι Γκὰτ καὶ Ἄϊρ, τῷ 1877. Τὸ ἡμερολόγιόν του ἐδημοσιεύθη ἐν τῷ «Περιοδικῷ τῆς ἐν Βερολίνῳ Γεωγραφικῆς ἑταιρείας» (τόμος 15ος, 1880). — Ω.

— **Μπάρυ** (Bary), ***Ἐρρῖκος-Ἀντώνιος ντὲ —.*** Γερμανὸς βοτανικὸς (1831—1888). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου ἐν Φράϊμπουργκ (1855), Χάλλῃ (1867) καὶ Στρασβούργῳ (1872), ὅπου ἀνηγορεύθη ὁ πρῶτος πρύτανις. Εἰργάσθη πρὸ παντὸς ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως καὶ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τῶν ὀργάνων γονιμοποιήσεως καὶ ἐπὶ τῶν μυκήτων. Σημαντικώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Οἱ ζωομηκύτες» (2α ἐκδ. 1864), «Συμβολαὶ εἰς τὴν μορφολογίαν καὶ φυσιολογίαν τῶν μυκήτων» (1864—1872, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Woronin*), «Συγκριτικὴ ἀνατομία τῶν ὀργάνων βλαστήσεως τῶν φανερογάμων» (1877), «Συγκριτικὴ μορφολογία καὶ βιολογία τῶν ζῳομυκήτων, μυκήτων καὶ βακτηρίων» (1882), «Μαθήματα ἐπὶ τῶν βακτηρίων» (2α ἐκδ. 1887). Ἀπὸ τοῦ 1867 ἐξέδιδε τὴν «Botanische Zeitung». — Ω.

*Ἐρρῖκος Μπάρυ.*

**Μπαρὺ** (Barye) ***Ἀντώνιος-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος γλύπτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1795—1875). Κατ' ἀρχὰς ἐμαθήτευσε παρά τινι κοσμηματοποιῷ, μετὰ ταῦτα δ' εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ γλύπτου Μπόζιο καὶ τοῦ ζωγράφου Γκρό. Κατ' ἀρχὰς ὁ Μπαρὺ ἐνεφανίσθη εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν (1827) μὲ προτομάς, αἵτινες δὲν παρήγαγον βαθεῖαν αἴσθησιν. Ἀλλὰ μεγίστην φήμην ἀπέκτησεν, ἀφ' ἧς ἐνεφανίσθη ὡς γλύπτης ζῴων· ἦτο τόσον αὐθόρμητος, τόσον ἰσχυρά, τόσον ἐκφραστική, ἀλλὰ συγχρόνως καὶ τόσον λιτὴ καὶ ἁπλῆ ἡ τέχνη του, ὥστε δικαίως ἀπεκλήθη «ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος τῶν θηρίων». Παραλλήλως πρὸς τὴν προσπάθειάν του ταύτην ὁ Μπαρὺ δὲν ἔπαυσε ν' ἀσχολῆται καὶ εἰς ἄλλους κλάδους τῆς τέχνης μὲ ἀξιόλογον ἐπιτυχίαν. Κατέλιπεν ἐνδιαφερούσας ἐλαιογραφίας καὶ ὑδατογραφίας, ἐπὶ πλέον δὲ ἐξαίρετα σχέδια. Ἀλλ' ἡ μεγάλη του δόξα εἶναι τὰ πλαστικὰ συμπλέγματα ζῴων, τὰ ὁποῖα πολλάκις εἰκονίζει ταρασσόμενα ἀπὸ βίαια πάθη ἢ χειμαζόμενα εἰς ἐπωδύνους καὶ ἐπικινδύνους ἀγῶνας, χωρίς, ἐν τούτοις, ν' ἀφίσταται οὐδέποτε ἑνὸς εἴδους κλασσικῆς ἐντελείας καὶ ἁρμονικῆς λιτότητος, αἱ ὁποῖαι ἀποτελοῦν τὰ κυριώτερα χαρακτηριστικὰ τῆς τέχνης του. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων τοῦ Μπαρὺ τάσσονται: «Τίγρις καταβροχθίζουσα κροκόδειλον», «Λέων κατασπαράσσων ὄφιν», «Λέων ἐν ἀναπαύσει», «Ὁ Κένταυρος καὶ ὁ Λαπίθης» (τὸ ἔργον τοῦτο ἀπόκειται νῦν ἐν τῷ Μουσείῳ τοῦ Puy), «Λέων βαδίζων» (Στήλη Ἰουλίου, ἐν Παρισίοις), «Ὁ πόλεμος», «Ἡ εἰρήνη», «Ἡ δύναμις», «Ἡ τάξις» (τὰ τέσσαρα ταῦτα ἔργα τοῦ Μπαρὺ εὑρίσκονται εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Καρρουζέλ), «Ἡ ἁγία Κλοτέλδη» (ἐν τῷ ναῷ τῆς Ἁγίας Μαγδαληνῆς), «Τίγρις καταβροχθίζουσα δορκάδα», «Γιαγουαρούνδης καταβροχθίζων λαγωόν», «Ἀφρικανικὸς ἐλέφας». Τῷ 1854 ὁ Μπαρὺ ὠνομάσθη καθηγητὴς εἰς τὸ Muséum, τῷ δὲ 1868 ἐξελέγη μέλος τῆς Παρισινῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ι. Μ. Π.

***Ἀντών. Μπαρύ:*** *Μάχη μεταξὺ Κενταύρου καὶ Λαπίθου.*

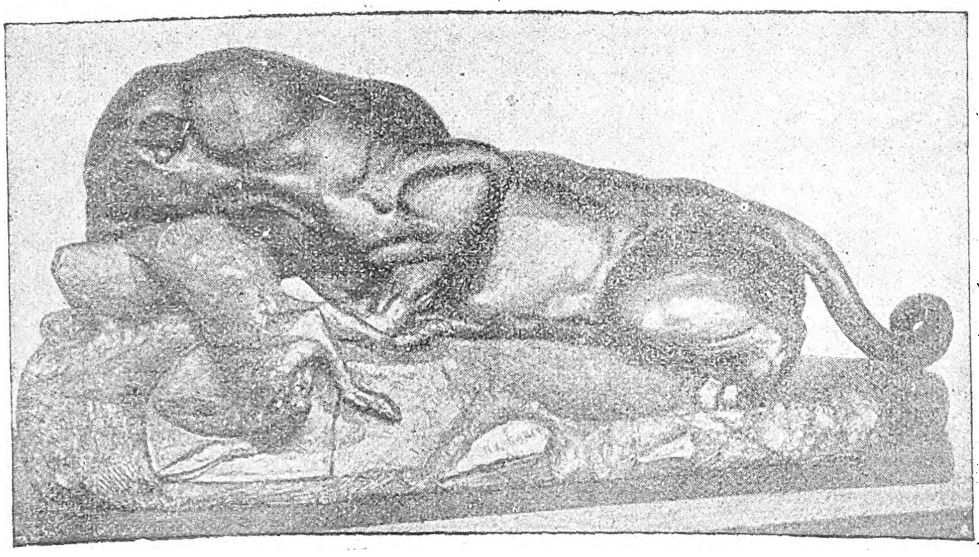

***Ἀντών. Μπαρύ:*** *Γιαγουαρούνδης καταβροχθίζων λαγωόν.*

**Μπαρύλοβιτς** (Barylovicz), ***Δημήτριος.*** Μητροπολίτης τῆς Μολδαυΐας καὶ περίφημος Ρουμᾶνος συγγραφεὺς καὶ ἐκκλησιαστικὸς ποιητὴς (1630—1693). Ὡς συγγραφεὺς εἶναι ἐπίσης γνωστὸς καὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ντοσοφτεῖ* ἢ *Ντοσιφτεῖ*. Τῷ 1649 ἐγένετο μοναχὸς καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῆς φιλοσοφίας καὶ φιλολογίας. Τῷ 1658 ἐγένετο ἐπίσκοπος καὶ τῷ 1678 μητροπολίτης, ἠναγκάσθη ὅμως μετ' ὀλίγον νὰ παραιτηθῇ διὰ λόγους πολιτικοὺς καὶ κατέφυγεν εἰς Πολωνίαν. Ἀποκατασταθεὶς εἰς τὴν ἕδραν του τῷ 1685, ἵδρυσε, τῇ ἐπιχορηγήσει τοῦ πατριάρχου τῆς Κωνσταντινουπόλεως, τυπογραφεῖον ἐν Ἰασίῳ, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐξετύπωσε τὰ περισσότερα τῶν ἔργων του. Τῷ 1686, παραιτηθεὶς ἐκ νέου, κατέφυγε καὶ πάλιν εἰς τὴν Πολωνίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Ρωσίαν, ὅπου ὁ Πέτρος ὁ Μέγας προσέφερεν εἰς αὐτὸν τὴν ἀρχιεπισκοπὴν τοῦ Ἀζώφ. Ὁ Μπαρύλοβιτς ὅμως, δὲν ἐδέχθη αὐτήν, ἀλλ' ἀπεσύρθη εἴς τι μοναστήριον τῆς Μόσχας, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του καταγινόμενος εἰς τὴν συγγραφὴν διαφόρων ἔργων καὶ εἰς τὴν ποίησιν. Θεωρεῖται ἐκ τῶν με-

Digitized by Google

γαλυτέρων ἐκκλησιαστικῶν ποιητῶν τῆς Ρουμανίας, τὰ δὲ ἔργα αὐτοῦ ἀποτελοῦν πολυτιμότατα μνημεῖα τῆς ρουμανικῆς φιλολογίας τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Τὸ κυριώτερον ἐξ αὐτῶν εἶναι τὸ «Psaltirea in versuri» (1673). Ἐπίσης ἐξαίρονται τά: «Acatist» (1673), «Liturghia» (1679), «Euchologium» (1680), «Molitvelnic» (1681), «Paremie» (1683), «Vietile sfintilor» (1683) κ. τ. λ. Μ. Δ. Β.

**Μπὰρφ** (Barff), ***Σαμουήλ.*** Ἄγγλος τραπεζίτης. Ἐγκατασταθεὶς ἐν Ζακύνθῳ τῷ 1816, συνέστησεν ἴδιον ἐμπορικὸν οἶκον, καταστάντα ἐκ τῶν πρωτευόντων ἐν Ἑλλάδι καὶ διατηροῦντα κλάδους ἐν Λονδίνῳ, Λίβερπουλ, Πάτραις καὶ Κεφαλληνίᾳ. Κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ἐχρημάτισε πράκτωρ ἀποστολῆς χρημάτων ἐξ Ἀγγλίας εἰς τὴν ἀγωνιζομένην Ἑλλάδα, διατηρῶν ἰδιαιτέραν πρὸς τοῦτο ἀλληλογραφίαν μετὰ τοῦ λόρδου Βύρωνος. Ἐνυμφεύθη Ζακυνθίαν ἐκ τοῦ εὐγενοῦς οἴκου τῶν Βολτέρρα. Ἀπέθανεν ὑπέργηρως ἐν Ζακύνθῳ τῷ 1880.

**Μπαρφερούς**, ἢ ***Μπαρφρούς*** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Μαζανταράν, εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τῶν παραλίων τῆς Κασπίας. Ἔχει 50.000 κατοίκους περίπου, ὁδοὺς εὐρείας καὶ οἰκίας καλῶς ἐκτισμένας. Τὸ ὄνομά της, σημαῖνον ἀποβάθρα ἀγορᾶς, ὀφείλει εἰς τὴν μεγάλην ἀγοράν της, ἐκτεινομένην εἰς μῆκος 1½ χλμ. Ἔχει ἐργοστάσιον σακχάρεως καὶ πολλὰ βαμβακοτροφεῖα. Ἐν αὐτῇ σῴζονται τὰ ἐρείπια τοῦ μεγάρου *Μπὰγ-ἀλ-Ἀράμ* (= κῆπος τοῦ παραδείσου), κτισθέντος ὑπὸ τοῦ διασήμου σέχου Ἀμπάς. Ν. Μ.

**Μπαρφλὲρ** (Barfleur) *[Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μάγχης. Εἶναι κέντρον θαλασσίων λουτρῶν. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἦτο ἀξιόλογος ὠχυρωμένη πόλις, ἐκεῖ δ' ἐπεβιβάσθη ὁ Γουλιέλμος ὁ Κατακτητὴς μεταβαίνων πρὸς κατάληψιν τῆς Ἀγγλίας. Κάτ. 1.270. Χ. Δ.

**Μπάρφοντ** (Barfod), ***Παῦλος-Φρειδερῖκος.*** Δανὸς ἱστορικὸς (1811—1896). Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Φρειδερίκου ΣΤ' ἤρχισε διὰ διαφόρων δημοσιευμάτων, συστάσεως συλλόγων κτλ., νὰ κηρύσσῃ τὴν ἰδέαν τῆς ἑνώσεως τῶν σκανδιναυϊκῶν χωρῶν (Δανίας, Σουηδίας καὶ Νορβηγίας) εἰς ἑνιαῖον κράτος. Διετέλεσε βουλευτὴς κατὰ τὰ ἔτη 1848—1869. Κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Ὁ κλῆρος τῆς Δανιμαρκίας» (1848), «Ἱστορία τῆς Δανίας καὶ Νορβηγίας ἐπὶ Φρειδερίκου τοῦ Γ'». Γ. Ι. Β.

**Μπάρχαμ**, ***Ριχάρδος Χάρρις.*** Ἄγγλος εὐθυμογράφος, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἰγκολντσμπυ* (βλ. λ.).

**Μπαρχὰρ** (Barhar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρετανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ βορειοδυτικῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Γκορακπούρ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ράπτι, παραποτάμου τοῦ Γάγγη. Κάτ. 11.700. Π. Γ. Λ.

**Μπαρὼ** (Bareau), ***Γεώργιος-Μαρία-Βαλεντῖνος.*** Γάλλος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Gauthier καὶ τῷ Thomas. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ θάνατος τοῦ Λεάνδρου» (Μουσεῖον Νάντης), «Ἡ ἀφύπνισις τῆς ἀνθρωπότητος» (Petit Palais), τὸ μνημεῖον τοῦ Ἰακώβου Καρτιὲ ἐν Σαὶν Μαλό, «Ὁ Δαβὶδ ψάλλων πρὸ τοῦ Σαούλ», «Διὰ τὴν σημαίαν», «Ὁ χρόνος καὶ ἡ σοφία». Ι. Μ. Π.

**μπαρῶνος** (ὁ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ πτηνοῦ *αἰγιαλίτης ὁ ἀμερικανικός.*

**μπάς.** Λέξις τουρκική, σημαίνουσα κεφαλή. Ὡς πρῶτον συνθετικὸν σημαίνει ὁ πρῶτος, ὁ ἐπὶ κεφαλῆς, π. χ. *μπὰς-μαμπεϊντζῆ*=ἀρχιθαλαμηπόλος. Ἐκφέρεται καὶ εἰς τὸ τέλος τῶν λέξεων ὡς δεύτερον συνθετικὸν μὲ τὸν τύπον *μπασῆ*, π. χ. *ἀστζῆ-μπασῆ*= ἀρχιμάγειρος. Τὸ μπασῆ προστιθέμενον εἰς τὸ τέλος τῆς ὀνομασίας ἑνὸς ἐπαγγελματίου ἐσήμαινε τὸν προμηθευτὴν τῆς σουλτανικῆς αὐλῆς ἢ τὸν ἰδιαίτερον τοῦ σουλτάνου, π. χ. *χεκίμ-μπασῆ* =ἀρχίατρος, *δζεβαερτζῆ-μπασῆ*=προμηθευτὴς κοσμημάτων τῆς αὐτοκρατορικῆς αὐλῆς κλπ. Ν. Μ.

**Μπάς**, ἢ ***Μπὰς-Ρὸκ*** (Bass ἢ Bass-Rock) *[Γεωγραφ.]*. Ἀκατοίκητος βραχώδης νησὶς τῆς ἀνατολικῆς παραλίας τῆς Σκωτίας, κειμένη παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ στενοῦ τοῦ Φόρθ, ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς κομητείας Χάντινγκτον. Ἔχει περιφέρειαν 1.500 περίπου μέτρων, ἡ δὲ ἀπότομος παραλία τῆς ὕψους 120 μέτρων καθιστᾷ αὐτὴν σχεδὸν ἀπροσπέλαστον. Τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἐκτίσθη ἐπ' αὐτοῦ ὀχυρὸς πύργος, ὅπου ἐφυλακίζοντο οἱ ἐπιφανεῖς Σκῶτοι οἱ ἐμμένοντες εἰς τὰς παλαιὰς θρησκευτικὰς παραδόσεις. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1688 ἡ ἐκ 14 μόνον ἀνδρῶν φρουρὰ τοῦ πύργου ἐτάχθη ὑπὲρ τοῦ ἐκπτώτου βασιλέως Ἰακώβου Β' καὶ ἀντέστη ἐπὶ μακρὸν ἐπιτυχῶς ἐναντίον τοῦ Γουλιέλμου τῆς Ὀράγγης, παραδοθεῖσα τέλος ὑπὸ ἐντίμους ὅρους. Τῷ 1701 αἱ ὀχυρώσεις κατηδαφίσθησαν, τῷ δὲ 1902 ἀνηγέρθη ἐπὶ τῆς νήσου μέγας φάρος. Σήμερον ἐπισκέπτονται πολλάκις τὴν νῆσον κυνηγοὶ θαλασσίων πτηνῶν. Ἐν σπήλαιον διαπερᾷ αὐτὴν ἀπ' ἄκρου εἰς ἄκρον. Χ. Δ.

— **Μπὰς στενὸν** *[Γεωγρ.]*. Πορθμὸς ἀνοιγόμενος μεταξὺ τῆς ΝΑ. παραλίας τῆς Αὐστραλίας καὶ τῆς ἀπέναντι αὐτῆς μεγάλης νήσου Τασμανίας καὶ ἑνώνων τὴν Τασμανικὴν θάλασσαν μετὰ τοῦ νοτίου Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ. Ἔχει πλάτος 220 χλμ. καὶ μῆκος 320. Εἶναι δ' ἐγκατεσπαρμένος διὰ νησίδων καὶ κοραλλιογενῶν ὑφάλων καὶ σκοπέλων, αἵτινες δυσχεραίνουσι σημαντικῶς τὴν ναυσιπλοΐαν. Δεσπόζοντες ἄνεμοι εἶναι οἱ ἀπὸ Δ., ἡ πλημμυρὶς ἀνέρχεται μέχρι 3—4 μ., τὰ δὲ σχηματιζόμενα ρεύματα ἔχουσι ταχύτητα 4—5 χλμ. καθ' ὥραν. Ὠνομάσθη οὕτω ἐκ τοῦ πρώτου ἐξερευνήσαντος αὐτὸν Ἄγγλου περιηγητοῦ Γεωργίου Μπάς. Χ. Δ.

**Μπὰς** (Bach), ***Βίκτωρ.*** Γάλλος ἰατρὸς καὶ πολιτικὸς (1770—1799). Ἐγκατασταθεὶς ἐν Παρισίοις κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν, διεδραμάτισεν ἐνεργὸν πρόσωπον καθ' ὅλας τὰς ἐσωτερικὰς διαμάχας, ἀπελπισθεὶς ὅμως ἐκ τῆς ἐγκαθιδρύσεως τῆς στρατοκρατίας ηὐτοκτόνησεν ἐπὶ τοῦ βάθρου τοῦ ἀγάλματος τῆς Ἐλευθερίας εἰς τὴν πλατεῖαν τῆς Ἐπαναστάσεως. Ο. Ρ.

— **Μπὰς** (Basch), ***Βίκτωρ - Γουλιέλμος.*** Γάλλος φιλόσοφος καὶ αἰσθητικός, οὑγγρικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Βουδαπέστῃ τῷ 1863. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Σορβόννῃ, ἐν τῇ ὁποίᾳ διωρίσθη κατόπιν καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας καὶ τῆς αἰσθητικῆς. Κατέγινε κυρίως εἰς φιλοσοφικάς, αἰσθητικὰς καὶ μουσικοκριτικὰς μελέτας, θεωρούμενος εἷς τῶν ἀξιολογωτέρων Γάλλων αἰσθητικῶν καὶ μελετητῶν τῆς γερμανικῆς φιλοσοφίας. Εἶναι ἀντιπρόεδρος τοῦ γαλλικοῦ συλλόγου πρὸς προστασίαν τῶν δικαιωμάτων τοῦ ἀνθρώπου. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Τὰ πολιτικὰ δόγματα τῶν κλασσικῶν φιλοσόφων τῆς Γερμανίας» (1928), ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκθέτει τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Κάντ, τοῦ Λεϊβνιτίου, τοῦ Φίχτε καὶ τοῦ Ἑγέλου, «Ἡ γερμανικὴ φιλοσοφία κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα» (1912), «Ὁ ἀναρχικὸς ἀτομικισμὸς τοῦ Μὰξ Στίρνερ» (1904, 2α ἔκδ. 1927), «Κριτικὴ μελέτη ἐπὶ τῆς αἰσθητικῆς τοῦ Κάντ» (1896, 2α ἔκδ. 1927), «Ἡ ποιητικὴ τέχνη τοῦ Σίλλερ» (1896), «Γουλιέλμος Σχέρερ» (1889), «Ἡ φαντασία ἐν τῇ καντιανῇ θεωρίᾳ τῆς γνώσεως» (1904), «Ὁ πόλεμος τοῦ 1914 καὶ τὸ δίκαιον» (1915), «Ἡ αὐγή» (1918), «Τιτσιανός» (1920), «Μελέται αἰσθητικῆς τοῦ δράματος» (1920), «Τὸ κυριαρχοῦν πρόβλημα τῆν αἰσθητικῆς» (1921) κτλ. Ὡς μουσικοκριτικὸς θεωρεῖται ἐκ τῶν σημαντικωτέρων τῆς Γαλλίας, ἰδίως διὰ τοὺς δύο αὐτοῦ τόμους περὶ τοῦ Σοῦμαν, ὑπὸ τοὺς τίτλους «Σοῦμαν» (1826) καὶ «Ἡ θλιβερὰ ζωὴ τοῦ Σοῦμαν» (1928). Ἔγραψεν ὡσαύτως διαφόρους μελέτας εἰς φιλοσοφικὰ περιοδικά, κυρίως δὲ εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῆς μεταφυσικῆς καὶ τῆς ἠθικῆς» τῶν Παρισίων. Μ. Δ. Β.

— **Μπὰς** (Bass), ***Γεώργιος.*** Ἄγγλος ἐξερευνητὴς ἀκμάσας περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Προσληφθεὶς ὡς χειρουργὸς ἐπὶ πολεμικοῦ σκάφους, μεταβαίνοντος εἰς Αὐστραλίαν, ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ ἐπιβαίνοντος τοῦ πλοίου θαλασσοπόρου Φλίντερς καὶ ἐπέτυχε νὰ τῷ ἐπιτραπῇ, ὅπως ἐξερευνήσῃ τὴν νοτίαν παραλίαν τῆς Αὐστραλίας. Τῷ 1798 ἀνεχώρησε πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον μετὰ 6 μόνον ἀνδρῶν καὶ ἀνεκάλυψε τὸν μεταξὺ Τασμανίας καὶ τῆς ἠπειρωτικῆς χώρας φερώνυμον πορθμόν. Οὐδὲν ἄλλο εἶναι περὶ αὐτοῦ γνωστόν. Χ. Δ.

**Μπὰς** (de Bas), ***Φίλιππος ντὲ —.*** Ὁλλανδὸς στρατιωτικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἀφοῦ ἐσπούδασεν ἐν τῇ στρατιωτικῇ Ἀκαδημίᾳ ἐν Breda, διετέλεσε διευθυντὴς τῶν ἱστορικῶν ἀρχείων τοῦ ὁλλανδικοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου καὶ ἔγραψεν: «Ὁ πρίγκιψ Φρειδερῖκος καὶ ἡ ἐποχή του», «Ὁ Δανογερμανικὸς πόλεμος», «Ἱστορία καὶ τακτικὴ τοῦ ἱππικοῦ» κ. ἄ. —Ω.

**Μάσαμ** (Masham), ***Σαμουήλ.*** Ἄγγλος ἐφευρέτης (1815—1906). Ἤρχισε τὴν σταδιοδρομίαν του ὡς ὑπάλληλος ὑφαντουργείου. Κατώρθωσε νὰ ἐφεύρῃ ἰδίαν πλεκτικὴν μηχανὴν καὶ νὰ ἐπιφέρῃ πολλὰς τελειοποιήσεις εἰς τὴν ὑφαντουργίαν. Τῷ 1891 ὠνομάσθη πατρίκιος. Π. Γ. Λ.

**Μπασάνι** (Bassani, ἢ Bassano), ***Ἰωάννης.*** Ἰταλὸς συνθέτης καὶ ᾠδός, ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων δημιουργῶν τῆς ὀργανικῆς μουσικῆς ἐν Ἰταλίᾳ, δράσας περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐκ τῆς μουσικῆς του παραγωγῆς περιεσώθησαν: «Ricercate Passagie e Cadentie» δι' ὄργανον καὶ κλαβικύμβαλον (1598), «Capricci musicali per sonar» (1588), «Motetti per Concerti ecclesiastici» (1598).

—**Μπασάνι** (Bassani), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς συνθέτης (1657—1716), ἐκ τῶν περιφημοτέρων βιολιστῶν τῆς ἐποχῆς του. Ἡ παραγωγή του περιλαμβάνει 3 μελοδράματα, 9 ὀρατόρια, πλεῖστα θρησκευτικὰ ἔργα, 12 sonate da chiesa διὰ 2 βιολία καὶ κλαρινέτου βάσιμον κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπασανλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Διάσελον* (βλ. λ.).

**Μπασαράμπα** (Basaraba). Ἡγεμονικὴ οἰκογένεια τῆς Βλαχίας (βλ. λ. *Βεσσαράβας*).

**Μπασβὶλλ** (Bassville), ***Νικόλαος-Ἰωάννης*** ἢ ***Ἰάκωβος Ἰωσὴφ Οὔγων ντὲ —.*** Γάλλος συγγραφεὺς καὶ διπλωμάτης (1753—1793). Ἐσπούδασε θεολογίαν, ἣν ἐπὶ μακρὸν ἐδίδαξεν ἐν Παρισίοις. Ὑποστηριζόμενος ὑπὸ τοῦ Κοντὲ καὶ περιηγηθεὶς τὴν Ὁλλανδίαν καὶ Πρωσσίαν, ἐγένετο μέλος τῆς Βασιλικῆς ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1788 ἐδίδαξεν ἐν τῇ Πολυσοφικῇ Ἑταιρείᾳ τῶν Παρισίων, ἔκτοτε δὲ ἀσπασθεὶς τὰς ἐπαναστατικὰς ἰδέας ἐπεδόθη εἰς τὴν διπλωματίαν καὶ ἐγένετο γραμματεὺς τῶν πρεσβειῶν Νεαπόλεως καὶ Ρώμης (1792). Ἐφονεύθη κατὰ τὴν ὀχλαγωγίαν ἐν Ρώμῃ, κατὰ δὲ τὴν συνθήκην τοῦ Τολεντίνου ἀπεζημιώθη ἡ οἰκογένειά του (1798) ὑπὸ τοῦ πάπα διὰ ποσοῦ 60.000 λιρῶν. Ὁ υἱός του *Ὑγὸν ντὲ Μπασβὶλλ* ἐγένετο στρατηγός. Ἔγραψε: «Στοιχεῖα μυθολογίας» (1784), «Βίος τοῦ Λεφόρ» (1785), «Ἱστορικὰ σύμμεικτα» (1785), «Ἱστορικὰ ἀπομνημονεύματα (1790) καὶ «Πολιτικὰ ἀπομνημονεύματα». —Π.

**Μπασδέκης.** Ὄνομα μεγάλης οἰκογενείας ἁρματολῶν τοῦ Πηλίου. Πρῶτος ἁρματολὸς ἀναφέρεται ἀπὸ τὴν παράδοσιν ὁ *Ἀστέρης Μπασδέκης*, ὁ ὁποῖος ἐπολέμησε καὶ κατὰ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ. Μετ' αὐτὸν τὸ ἁρματολίκιον τοῦ Πηλίου περιῆλθεν εἰς τὸν *Θανάσην Μπασδέκην*, ὅστις κατὰ τὸ 1804 ἔκτισε, κατὰ τὸ μέσον περίπου τῆς ἀπὸ Ζαγορᾶς εἰς Βόλον ἀγούσης ὁδοῦ, φυλακεῖον-παρατηρητήριον, σῳζόμενον μέχρι σήμερον ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μπασδέκη-Καλύβα*. Κατόπιν ἀνεγνωρίσθη ὡς ἁρματολὸς ὁ *Κυριάκος*, ὁποῖος κατηχηθεὶς ὑπὸ τοῦ Γαζῆ εἰς τὴν Φιλικὴν Ἑταιρείαν ἀνεκηρύχθη στρατιωτικὸς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Θετταλομαγνησίας (7 Μαΐου 1821). Τοῦ Κυριάκου πληγωθέντος βαρέως καὶ ἀπελθόντος εἰς Εὔβοιαν, ἀνεκηρύχθη ἀρχηγὸς - ἁρματολὸς ὁ υἱός του *καπετὰν Μῆτρος*, ὅστις καὶ ἐδολοφονήθη ἀπὸ τοὺς κοτζαμπάσηδες τῆς Ζαγορᾶς κατὰ τὸ 1828.

[*Γ. Κορδάτου*, Τὸ ἁρματολίκι τοῦ Πηλίου, ἐν «Θεσσαλικοῖς Χρονικοῖς» τόμ. Α'.] Γ. Κ. ΚΟΡ.

**Μπασελερὶ** (Bachelerie) ***ντὲ λὰ — Οὖγος***, ὁ καὶ *Μπαχαλαριά* (βλ. λ.).

**Μπασελιὲ** (Bachelier), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος.*** Γάλλος ζωγράφος (1724—1805). Κατόπιν συστάσεως τῆς κυρίας ντὲ Πομπαδούρ, ἥτις ἐθαύμαζε τὸ ταλαντόν του καὶ ἰδίως τὴν δεξιοτεχνίαν του εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν ἀνθέων καὶ τὴν ἀναπαράστασιν ἱστορικῶν σκηνῶν, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ διακοσμητικοῦ τμήματος τῶν κεραμουργείων τῶν Σεβρῶν. Τῷ 1765 ἵδρυσε τὴν μέχρι σήμερον ὑφισταμένην «Σχολὴν τῶν διακοσμητικῶν τεχνῶν» καὶ ἀνεκάλυψε τὴν κατὰ τὴν ἀρχαιότητα χρησιμοποιηθεῖσαν καὶ μετὰ ταῦτα περιπεσοῦσαν εἰς ἀφάνειαν «ἐγκαυστικήν», διὰ τῆς ὁποίας ἐζωγράφησε τὸν «Ζέφυρον», προκαλέσαντα τὸν γενικὸν θαυμασμόν. Ὁ Μπασελιὲ ἐγένετο καὶ μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ι. Μ. Π.

— **Μπασελιὲ** (Bachelier), ***Νικόλαος.*** Γάλλος ἀρχιτέκτων καὶ γλύπτης. Ἐγεννήθη ἐν Τουλούζῃ περὶ τὸ 1487 ἐκ οἰκογενείας καταγομένης ἐκ Λούκκας, μεταβὰς δ' εἰς Ἰταλίαν ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Μιχαὴλ Ἀγγέλῳ. Βραδύτερον ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Τουλούζην, ἀνεχώρησε δ' ἐκεῖθεν εἰς Ἰσπανίαν, ἔνθα καὶ ἀπέθανε τῷ 1550. Ἔργα του ἀπόκειται ἐν Φλωρεντίᾳ, Ρώμῃ καὶ Τουλούζῃ. Ι. Μ. Π.

**Μπάσεντοου** (Basedow), ***Ἰωάννης-Βερνάρδος.*** Γερμανὸς παιδαγωγός, ἱδρυτὴς τοῦ φιλανθρωπισμοῦ (1723—1790). Ἐσπούδασεν ἐν Λειψίᾳ φιλοσοφίαν καὶ θεολογίαν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1749—1753 διετέλεσεν οἰκοδιδάσκαλος. Τῷ 1753 ἀνηγορεύθη καθηγητὴς τῆς ρητορικῆς καὶ τῆς φιλοσοφίας ἐν Σόρῳ τῆς Δανίας, ὁπόθεν, λόγῳ ἑτεροδόξων ἀντιλήψεων, μετετέθη τῷ 1761 εἰς τὸ γυμνάσιον τῆς Ἀλτόνας. Ἐνταῦθα, μεταξὺ ἄλλων φιλοσοφικοῦ καὶ θεολογικοῦ περιεχομένου ἔργων συνέγραψε καὶ τὸ πρῶτον ἀπὸ παιδαγωγικῆς ἀπόψεως ἐνδιαφέρον ἔργον «Φιλαλήθεια» (1763, τόμ. 2), ἐν ᾧ ἐκθέτει τὰ κύρια σημεῖα τῶν παιδαγωγικῶν ἀντιλήψεών του. Ἀσχολούμενος ἰδίως περὶ τὰ θεολογικά, περιῆλθεν εἰς ἔριδας πρὸς τοὺς κληρικοὺς τοῦ Ἀμβούργου, ὁπότε κατηγορηθεὶς ἀπεκλείσθη τῆς θείας μεταλήψεως. Ἡ πίεσις μιᾶς τοιαύτης μισαλλοδοξίας ἰδίως ὅμως ἡ ἐπ' αὐτοῦ ἐπίδρασις τοῦ «Αἰμιλίου» τοῦ Ρουσσὼ (1762), ὡδήγησαν αὐτὸν τῷ 1768 εἰς τὴν ἀπόφασιν νὰ ἀφοσιωθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν μεταρρύθμισιν τῆς παιδείας. Οὕτω, κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος, ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Ἔκκλησις πρὸς τοὺς φιλανθρώπους καὶ τοὺς πλουσίους», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκθέτων τὰ μεταρρυθμιστικὰ του σχέδια συνοψίζει καὶ συμπληρώνει τὰς προηγουμένας ἐπὶ τοῦ ἰδίου θέματος πραγματείας του. Ἐπίσης ἐκθέτει σχέδιον συγγραφῆς στοιχειώδους βιβλίου, ὅπερ θὰ περιλάμβανεν ἁπάσας τὰς πραγματολογικὰς καὶ ὀνοματικὰς γνώσεις τὰς ἀπαιτουμένας διὰ τὴν μόρφωσιν νεολαίας, ἐπικαλεῖται δ' ἐν τέλει τὴν ὑλικὴν συνδρομὴν τοῦ κοινοῦ, ἀπαραίτητον διὰ τὴν πραγμάτωσιν τῶν σχεδίων του.

Digitized by Google

Ἡ ἔκκλησις αὕτη ἐκίνησε τὸ ἐνδιαφέρον τῆς δημοσίας γνώμης καὶ ἀπέφερε τὸ ποσὸν τῶν 15.000 ταλλήρων.

Τῷ 1771 ὁ Μπάσεντοου προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Λεοπόλδου εἰς Ντεσσάου, ὅπως ἀναλάβῃ τὴν μεταρρύθμισιν τῶν αὐτόθι σχολείων καὶ ἐπιληφθῇ τῆς συγγραφῆς τοῦ «Στοιχειώδους βιβλίου», ὅπερ καὶ ἐξεδόθη τῷ 1744. Τὸ ἔργον τοῦτο, ἐπηρεασμένον κυρίως ἐκ τῶν περὶ ἀγωγῆς ἀντιλήψεων τοῦ Ρουσσῶ καὶ τοῦ Κομμενίου, ἐσημείωσε τὴν ἀρχὴν τῆς φιλανθρωπιστικῆς κινήσεως ἐν Γερμανίᾳ. Τὸ αὐτὸ ἔτος ἵδρυσεν ὁ Μπάσεντοου ἐν Ντεσσάου τὸ «Φιλανθρωπεῖον» (Philanthropium), εἶδος οἰκοτροφείου διὰ παιδία 6—18 ἐτῶν. Ὁ ἐνθουσιασμὸς τοῦ κοινοῦ διὰ τὸ ἵδρυμα τοῦτο ὑπῆρξε μέγας. Ἀλλ' ὁ ἱδρυτής του, περιελθὼν εἰς ἔριδας πρὸς τοὺς συνεργάτας του, ἠναγκάσθη τῷ 1776 νὰ παραιτηθῇ τῆς διευθύνσεως, ἔζησε δὲ ἔκτοτε ἐν Ντεσσάου, Λειψίᾳ καὶ Χάλλῃ, ἐργαζόμενος καὶ δρῶν ἀόκνως διὰ τὴν ἐφαρμογὴν τῶν ἰδεῶν του.

Ὁ Μπάσεντοου, πνεῦμα δημιουργικῶς ἀνήσυχον καὶ παράφορον, ἀπεκάλυψε καὶ ἐκαυτηρίασε μὲ φλογερὰν ἀδιαλλαξίαν τὰς ἐλλείψεις τῆς ἀγωγῆς τῆς ἐποχῆς του (ἐντελὴς παραμέλησις τῆς σωματικῆς ἀγωγῆς, τῶν πραγματιστικῶν μαθημάτων, τῆς μητρικῆς γλώσσης, ὡς καὶ τῶν νέων γλωσσῶν), ἀπέβη δὲ κύριος συντελεστὴς τῆς προόδου εἰς τὸ ζήτημα τῆς ἀγωγῆς, οὐχὶ τόσον διὰ τῶν μεθοδολογικῶν βιβλίων καὶ ἐργασιῶν του, ὅσον διὰ τῆς δράσεως αὐτοῦ ὡς κριτικοῦ. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀξιόλογα εἶνα: «Πρακτικὴ φιλοσοφία δι' ὅλας τὰς τάξεις» (1758), «Θεωρητικὸν σύστημα τοῦ ὑγιοῦς λόγου» (1765), «Ἐπιτομὴ τῆς θρησκείας» (1764), «Μεθοδικὴ διδασκαλία» (1764), «Ἔκκλησις πρὸς τοὺς φιλανθρώπους καὶ τοὺς πλουσίους» (1768), «Συνομιλίαι μετὰ φιλανθρώπων» (1768—1771), «Βιβλίον μεθόδων διὰ πατέρας, μητέρας» κλπ. (1770, νέα ἔκδοσις 1913) καὶ τὸ βασικὸν παιδαγωγικόν του βιβλίον «Στοιχειῶδες βιβλίον» (τόμ. 4, μετὰ 100 χαλκογραφιῶν τοῦ *Κοντοβγέτσκι*, νέα ἔκδ. 1913).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Pinloche*, Basedow et le Philanthropisme (1890).—*Diestelmann*, Joh. Bernh. Basedow (1897). Ι.Ι.Ι.

—**Μπάσεντοου** (Basedow) ***Κάρολος φὸν—***. Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Ντεσσάου (1799—1854). Ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς ἐν Merseburg. Τὴν ἐναίσεμον αὐτοῦ διατριβὴν Commentationes in novam amputationes cruris panniculatae encheiresin» ἠκολούθησαν διάφοροι χειρουργικο-καζουϊστικαὶ ἀνακοινώσεις ἀλλ' ἡ κυρίως ἐργασία, ἥτις κατέστησε τοῦτον γνωστόν, εἶναι ἡ ἀναφερομένη εἰς τὴν ἐξόφθαλμον βρογχοκήλην τὴν συνοδευομένην ἅμα ὑπὸ ταχυκαρδίας καὶ τρόμου, ἥτις ἀπὸ τοῦ ὀνόματός του ἐκλήθη νόσος τοῦ Μπάσεντοου. Ὁ τίτλος τῆς ἐργασίας του ταύτης, καταχωρισθείσης τὸ πρῶτον εἰς τὸ ἑβδομαδιαῖον περιοδικὸν τοῦ Casper τῷ 1840, εἶναι ὁ ἀκόλουθος: «Exophthalmus durch Hypertrophie des Zellgewebes in der Augenhöhle». Ο. Ρ.

—**Μπάσεντοου *νόσος***. Εἰδικὸν σύνδρομον συμπτωμάτων, προκαλουμένων ἐκ τῆς ηὐξημένης ἐκκριτικῆς λειτουργίας τοῦ *θυρεοειδοῦς ἀδένος*. Αἱ κλασσικαὶ ἐπὶ τῆς νόσου ἔρευναι χρονολογοῦνται ἀπὸ αἰῶνος καὶ πλέον. Πρῶτος ὁ Γερμανὸς *Basedow*, κατὰ τὸ 1840, παρετήρησε τὸν *ἐξόφθαλμον*, τὸ ἰδιόρρυθμον τῆς νόσου σύμπτωμα, ὡς καὶ τὸ πλεῖστον τῶν ἄλλων δευτερευόντων κλινικῶν συμπτωμάτων καὶ ἀπετελέσθη οὕτω ὁμοῦ μετὰ τῶν δύο ἄλλων κυριωδῶν συμπτωμάτων, τῆς *διογκώσεως τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος* καὶ τῆς *ταχυσφυγμίας*, ἡ συμπτωματικὴ τριὰς τοῦ νοσήματος. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν αἰτιολογίαν καὶ παθογένειαν, ὑφίσταται σειρὰ ὑποθέσεων, ἐξ ὧν ἡ θεωρία τοῦ *Aran* (1860) περὶ ἀλλοιώσεως τοῦ συμπαθητικοῦ νευρικοῦ συστήματος κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον διετηρήθη καὶ μέχρι σήμερον. Διάφοροι χειρουργοὶ καὶ μετ' αὐτοὺς ὁ *Moebius* (1886) ἐξέφεραν τὴν γνώμην ὅτι ἡ ἐξόφθαλμος βρογχοκήλη ὀφείλεται εἰς ἀλλοίωσιν αὐτοῦ τοῦ ἀδένος, ἐκδηλουμένην δι' ὑπερπαραγωγῆς ἐκκρίματος (*ὑπερθυρεοειδισμός*). Παρ' ὅλην τὴν λειτουργικὴν σχέσιν ἀδένος καὶ συμπαθητικοῦ, ἡ ἔλλειψις ἀνατομικῶν ἀλλοιώσεων τοῦ νευρικοῦ τούτου συστήματος ἐπέφερε κλονισμὸν τῆς συμπαθητικῆς θεωρίας, περιληφθείσης ἐντὸς τοῦ πλαισίου τοῦ θυρεογενοῦς. Ἐπίσης καὶ ἀλλοιώσεις ἄλλων *ἐνδοκρινῶν* ἀδένων συμβάλλουσιν εἰς παραγωγὴν τῆς νόσου. Αὗται εἶναι συνήθως δευτεροπαθεῖς, ἐνίοτε καὶ σύγχρονοι, ὁπότε ἀποβαίνει δύσκολος καὶ ἡ κλινικὴ διάγνωσις, ἄλλοτε δὲ ἐμφανίζονται καὶ πρὸ τῆς ἐκδηλώσεως τοῦ κυρίου νοσήματος (ἀλλοιώσεις ἐπινεφριδίων καὶ θύμου ἀδένος) καὶ προπαρασκευάζουσιν οὕτως εἰπεῖν τὸ ἔδαφος πρὸς παραγωγὴν τῆς ἐξοφθάλμου βρογχοκήλης.

Τὰ αἴτια τῆς νόσου διαιροῦνται εἰς δύο κατηγορίας: *νευρογενῆ* καὶ *τοξικά*. Ἡ ἐπίδρασις τῶν νευρικῶν ἢ νευρογενῶν αἰτίων εἶναι ἀπότομος ἢ βραδεῖα, ἐφ' ἅπαξ ἢ κατ' ἐπανάληψιν. Πόνος, θλῖψις, φόβος, ὀργή, μεγάλη χαρά, καταχρήσεις γενετήσιοι καὶ οἰνοπνεύματος, ἀτυχήματα διάφορα καὶ γενικῶς σωματικαὶ καὶ ψυχικαὶ κοπώσεις καὶ κλονισμοί, εἶναι κατ' ἐξοχὴν συντελεστικὰ αἴτια τῆς νόσου. Ἡ ἐκ τῶν αἰτίων αὐτῶν ἐπερχομένη ἐν τῷ ἀδένι μεγάλη ὑπεραιμία ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου ὁ ἐρεθισμὸς τῶν ἐκκριτικῶν νεύρων αὐτοῦ ἐπιφέρουσιν ἔντονον λειτουργικὴν ἐνέργειαν, ἐκδήλωσις τῆς ὁποίας εἶναι ἡ ὑπερπαραγωγὴ ἐκκρίματος. Εἰς τὰ τοξικὰ αἴτια ὑπάγονται αἱ *μικροβιακαὶ τοξῖναι* ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου διάφοροι χημικαὶ οὐσίαι. Χρόνιαι φλεγμοναὶ—φυματίασις, σύφιλις, χρονία νεφρῖτις—εἶναι συχνὰ τὰ αἴτια τῆς νόσου. Ἡ μετὰ χρῆσιν παρασκευασμάτων θυρεοειδοῦς ἀδένος (*θυρεοειδίνης*) ἐπερχομένη ἐξόφθαλμος βρογχοκήλη εἶναι γεγονὸς γνωστὸν ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς *ὀργανοπαθείας*, ἐνισχύει δὲ καὶ τὴν θεωρίαν τοῦ ὑπερθυρεοειδισμοῦ, ὡς αἰτίου τῆς νόσου. Ἡ χρῆσις *ἰωδίου* ἢ σκευασιῶν αὐτοῦ καὶ ἡ εἰδικὴ διάθεσις τοῦ ἀδένος πρὸς ἀποταμίευσιν αὐτοῦ ἐπιφέρει καὶ μετὰ μακρὸν ἔτι χρόνον ἀπὸ τῆς δι' ἰωδίου θεραπείας ἐκδήλωσιν, ἐνίοτε καὶ βαρεῖαν, τῶν κλινικῶν τῆς νόσου συμπτωμάτων. Καὶ ἄλλα τυχαῖα ἐντελῶς αἴτια, μάλαξις, ἀκτινοβολία, ἐπέμβασις χειρουργικὴ ἁπλῆς βρογχοκήλης, ἐγχειρήσεις γυναικολογικαί, προκαλοῦσιν ἔκδηλον Basedow. Λεπτομερὴς ἔρευνα τῶν περιπτώσεων ἀποδεικνύει ὅτι ἀνήκουσιν εἰς μίαν τῶν ἀνωτέρω δύο κατηγοριῶν· πάντως ὅμως προαπαιτεῖται καὶ ὡρισμένη προδιάθεσις αὐτοῦ τοῦ ἀδένος, δι' ὃ καὶ ἡ πειραματικὴ ἐπὶ ζῴων πρόκλησις τοῦ νοσήματος δὲν ἀπέβη δυνατή.

Οἱ προδιαθετικοὶ ὅροι ἐν τῷ ἀδένι συνίστανται εἰς διόγκωσιν καὶ ηὐξημένην λειτουργίαν, ὑπερπλασίαν τοῦ παρεγχύματος, σχηματισμὸν νεοπλάστων ἀγγείων καὶ εἰδικὴν ἀποταμιευτικὴν διάθεσιν τοῦ ἀδένος πρὸς τὸ ἰώδιον, ἰδίᾳ κατὰ τὴν ἐφηβικὴν ἡλικίαν, ἐγκυμοσύνην, θηλασμόν, κλιμακτηρικὴν ἐποχήν· ἐπίσης καὶ ἡ διαταραχὴ τῆς ἀμοιβαίας σχέσεως. ἐκ προηγηθείσης νόσου, πρὸς ἄλλους *ἐνδοκρινεῖς ἀδένας*. Ὅσον ἀφορᾷ τὸ φῦλον, ἀπαντᾷ τὸ νόσημα κατ' ἐξοχὴν εἰς ἀναιμικὰς καὶ νευρικὰς γυναῖκας καὶ σπανιώτερον εἰς ἄνδρας· προσβάλλει κατὰ προτίμησιν ἄτομα μέσης ἡλικίας καὶ κατ' ἐξαίρεσιν παιδία καὶ πρεσβύτας.

Τρία εἶναι τὰ κύρια τῆς νόσου συμπτώματα· ὁ *ἐξόφθαλμος*, ἡ *βρογχοκήλη* καὶ ἡ *ταχυκαρδία*. Ὁ ἐξόφθαλμος, ἡ πρόωσις ἢ προπέτεια τουτέστι τῶν βολβῶν, συνήθως ἀμφοτερόπλευρος ἢ καὶ ἑτερόπλευρος κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς νόσου, ἀπαντᾷ εἰς τὰς ὀξείας μορφάς· ἐνίοτε ἐλλείπει καὶ τελείως, ἄλλοτε δὲ εἶναι λίαν ἔκδηλος, μετὰ ἰδιορρύθμου ἐκφράσεως διαρκοῦς προσηλώσεως τοῦ βλέμματος, περιγραφεὶς καὶ ὡς «ἐξάρθρωσις βολβική». Ἡ μεσοβλεφαριδικὴ σχισμὴ εἶναι ἀσυνήθως διευρυσμένη (σημεῖον Dalrymple), συντελεῖται δὲ δυσκόλως ἡ σύμπτωσις τῶν βλεφάρων. Σύμπτωμα ὀφθαλμικὸν πρώϊμον εἶναι καὶ τὸ σημεῖον τοῦ Graefe· κατὰ τὴν ἀνύψωσιν καὶ ἰδίᾳ κατὰ τὴν βραδεῖαν κατάνευσιν τοῦ βλέμματος ἐλλείπει ἡ φυσιολογικῶς ταυτόχρονος κίνησις τοῦ βολβοῦ μετὰ τοῦ ἄνω βλεφάρου· τὸ φαινόμενον τοῦτο ὀφείλεται πιθανῶς εἰς νεύρωσιν τοῦ ἀνυψωτῆρος τῶν βλεφάρων· ἡ διαγνωστικὴ ὅμως σημασία αὐτοῦ κατέπεσε, διότι ἀπαντᾷ καὶ εἰς εἰδικῶς νευρικὰ ἄτομα καὶ εἴς τινας δηλητηριάσεις (ἀνάρρωσις ἐκ δυσεντερίας, δηλητηρίασις ἐκ μολύβδου). Ἕτερον ὀφθαλμικὸν σύμπτωμα, κατὰ τὸν ἔκδηλον ἐξόφθαλμον, εἶναι τὸ σημεῖον τοῦ Moebius, συνιστάμενον εἰς ἀνεπαρκῆ σύγκλισιν τῶν ὀπτικῶν ἀξόνων κατὰ τὴν προσαγωγὴν ἀντικειμένου· καὶ τὸ φαινόμενον ὅμως αὐτὸ εἶναι ἀσταθὲς ὡς ἐπερχόμενον καὶ ἐπὶ *μυωπίας*· πρὸς δὲ τὸ σημεῖον τοῦ Joffroy, καθ' ὃ κατὰ τὴν ἀνύψωσιν τοῦ βλέμματος συχνὰ ἐλλείπει ἡ παρατηρουμένη φισιολογικῶς συνοφρύωσις. Ὡς ἰδιαίτερον ὀφθαλμικὸν σύμπτωμα θεωρεῖται τὸ σημεῖον τοῦ Clifford, κατὰ τὸ ὁποῖον, ὡς ἐκ τῆς προπετείας πιθανῶς τοῦ βολβοῦ, ἀποβαίνει δυσχερὴς ἡ ἀναστροφὴ τοῦ ἄνω βλεφάρου. Παράλυσις τῶν ἐξωτερικῶν ὀφθαλμικῶν μυῶν, ἀνώμαλοι κινήσεις τῶν βολβῶν, καθὼς καὶ παροδικὸς στραβισμός, εἶναι συνήθη φαινόμενα. Ὡς αἴτιον τοῦ ἐξοφθάλμου θεωρεῖται ἡ ὀπισθοβολβικὴ οἰδηματώδης διόγκωσις τοῦ λιπώδους ἱστοῦ· ὀφείλεται δὲ ἡ ἐξοίδησις αὕτη κυρίως εἰς σύσπασιν, ἐξ ἐρεθισμοῦ τοῦ συμπαθητικοῦ, τῆς κογχικῆς μυϊκῆς μεμβράνης τοῦ Müller, ἥτις διέρχεται ὑπὲρ τὴν ὑποκόγχιον αὔλακα, εἰς ἣν εὑρίσκονται φλέβες καὶ λεμφικὰ ἀγγεῖα τοῦ κόγχου· πιέζει ταῦτα καὶ προκαλεῖται οὕτω στάσις καὶ οἴδημα ὀπισθοβολβικόν.

Ἀπὸ τῶν πρώτων παρατηρήσεων ἰδιαιτέρως ἐπέσυρε τὴν προσοχὴν ἡ διόγκωσις τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος, ἡ *βρογχοκήλη*· εἶναι σύμπτωμα σταθερὸν εἰς τὰς τυπικὰς ἰδίᾳ μορφάς. Ἡ σύστασις τοῦ ἀδένος εἶναι μαλακή, ἐμφανίζει δὲ σφύξεις ἐκ τοῦ διευρυσμοῦ τῶν ἀγγείων· ἡ δ' ἀκρόασις ἐπὶ τοῦ ἀδένος ἀνακαλύπτει συχνὰ *φύσημα συστολικὸν* ρυθμικὸν καὶ σύγχρονον πρὸς τὰς καρδιακὰς σφύξεις· διὰ δὲ τῆς ἐπαφῆς, ἀντιλαμβάνεταί τις ἐνίοτε καὶ *ροῖζον*. Ἔστιν ὅτε ἡ διόγκωσις τοῦ ἀδένος ἐλλείπει ἢ εἶναι ἀσήμαντος, ἰδίᾳ εἰς τὰς κατόπιν χρήσεως ἰωδίου ἐπερχομένας μορφάς, καθὼς καὶ εἰς ἐκείνας εἰς ἃς ἐμφανίζεται ἡ νόσος ἐπὶ προϋπάρχοντος ἤδη ἀδενώματος. Ἡ ἐκ τῆς διογκώσεως τοῦ θυρεοειδοῦς ἐπερχομένη στένωσις τῆς τραχείας εἶναι ἀσυνήθης, ἡ δὲ πρὸς θεραπείαν ἐκτελουμένη *τραχειοτομία* ἀπολήγει κακῶς κατὰ κανόνα.

Σύνηθες κλινικὸν σύμπτωμα καὶ πρωϊμώτερον τῶν ἄλλων, δυνάμενον νὰ διατηρηθῇ ἐπὶ μακρόν, καὶ ἐπὶ ἔτη ἀκόμη, μὴ ἐπηρεαζόμενον δ' οὐδόλως ἐκ τῆς πιέσεως τῶν βολβῶν ἢ ἐκ κατακλίσεως, εἶναι ἡ *ταχυκαρδία*· αἱ σφύξεις ἀνέρχονται εἰς 90—140 καὶ ἐπέκεινα ἔτι. Ἀποδοχὴ τοῦ φαινομένου τῆς ταχυκαρδίας ὡς *συμπαθητικοτονίας* μετὰ ἐρεθισμοῦ τοῦ ἐπιταχυντικοῦ δὲν φαίνεται ἐπαρκής, διότι ἔρευναι ἐπὶ τῶν πασχόντων Basedow ἀπέδειξαν ὅτι ἄλλοι μὲν αὐτῶν ἐμφανίζουσι συμπτώματα συμπαθητικοτονίας καὶ ἄλλοι *παρασυμπαθητικοτονίας*. Ἀπὸ τῆς καρδίας ἐπέρχονται φαινόμενα ἐντόνου ὑπερτροφίας τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας, βραδύτερον δὲ ὑπερτροφία καὶ ἀνεύρυνσις τῆς ὅλης καρδίας καὶ αἴσθησις ὑποκειμενικὴ τῶν καρδιακῶν ὤσεων. Ἐπίσης ἐμφανίζονται καὶ φυσήματα κατὰ τὴν βάσιν τῆς καρδίας, περιοδικὰ ἢ καὶ μόνιμα, οὐχὶ ἐκ βολβιδικῆς ἀλλοιώσεως (λειτουργικὴ στένωσις τῆς μιτροειδοῦς), ἀλλ' ὀφειλόμενα εἰς μετάδοσιν ἐκ τῶν ἐν αὐτῷ τῷ θυρεοειδεῖ ἀδένι παραγομένων. Ἐξέτασις ἀντικειμενικὴ ἀνευρίσκει καὶ φαινόμενα *μυοκαρδίτιδος* μὲ πλήρη ἀρρυθμίαν, εἰς ἣν ὀφείλεται καὶ ὁ ἐνίοτε ἀπότομος θάνατος τῶν ἐκ τῆς νόσου πασχόντων. Ἡ ἀρτηριακὴ πίεσις παραλλάσσει· ἡ δὲ διαφορὰ μεταξὺ συστολικῆς καὶ διαστολικῆς συχνότατα εἶναι μεγάλη.

Αἱ καρωτίδες καὶ μικρότεραι ἔτι ἀρτηρίαι ζωηρῶς σφύζουσιν, ἐμφανίζονται δ' ἐκ τούτου σύγχρονοι πρὸς τὰς σφίξεις ἐλαφραὶ τῆς κεφαλῆς κινήσεις (σημεῖον τοῦ Musset).

Διαταραχαὶ ἀγγειοκινητικαί, ὠχρότης καὶ ὑπεραιμία τοῦ προσώπου καὶ αἴσθημα θερμότητος εἶναι συνήθεις· ἐπίσης ἐμφανίζεται τὸ δέρμα ὑγρὸν ἐκ τοῦ ἀσυνήθως ἀφθόνου ἱδρῶτος, καθὼς καὶ *δερμογραφισμὸς* καὶ οἰδηματώδης ἐξόγκωσις τοῦ δέρματος καὶ τῶν ἀρθρώσεων (*οἴδημα Quincke, ὕδρωψ ὑπόστροφος*).

Διαταραχαὶ πεπτικαὶ εἶναι συνήθεις· διαρροϊκαὶ κενώσεις ἄνευ *τεινεσμοῦ* ὑδαρεῖς μετὰ βλέννης, σπανίως δ' αἱμορραγικαί· σπανιώτερον ἐπέρχεται καὶ ἔμετος, ἔστιν ὅτε παροξυστικός, ὑπὸ μορφὴν *γαστρικῶν κρίσεων*. Αἱ πεπτικαὶ διαταραχαὶ προεξάρχουσιν ἐνίοτε ἀπ' ἀρχῆς ἔτι τῶν λοιπῶν συμπτωμάτων. Ἡ ὄρεξις εἶναι καλή, ἐνίοτε δ' ἐμφανίζεται ἔκδηλος βουλιμία· ἐπίμονος ἀνορεξία εἶναι βαρὺ προγνωστικὸν σημεῖον. *Ταχύπνοια* καὶ εἰς ἐλαχίστην ὑπέγερσιν τοῦ θώρακος (σύμπτωμα Brysous) ἀπαντᾷ ἰδίᾳ εἰς ὀξείας καταστάσεις. Τροφικὴ σακχαρουρία καὶ ὑπεργλυκαιμία ἀπαντᾷ εἰς 30 % τῶν περιπτώσεων, ἐξαλείφεται δὲ κατὰ κανόνα μετὰ θεραπευτικὴν ἐπέμβασιν. Τὰ προϊόντα καύσεως εἶναι ηὐξημένα· τὸ δὲ διὰ τὴν ἀνταλλαγὴν τῶν ἀερίων ἀναλισκόμενον ὀξυγόνον ἀνέρχεται εἰς τὸ διπλάσιον. Ἀπίσχνανσις ἔντονος καὶ σωματικὴ καταβολὴ ἐμφανίζονται εἰς περιπτώσεις βαρείας μὲ ταχεῖαν τῆς νόσου ἀνάπτυξιν. Ἔκδηλος παχυσαρκία εἶναι δεῖγμα λειτουργικῆς διαταραχῆς καὶ ἑτέρων ἐνδοκρινῶν ἀδένων. Τὸ αἷμα ἐμφανίζει κατὰ κανόνα *λυμφοκυττάρωσιν*, εἰς βαρείας δὲ μορφὰς καὶ *λευκοπενίαν*· ὁ δὲ χρόνος πήξεως εἶναι βραχὺς κατὰ τὴν βελτίωσιν, μακρὸς δὲ κατὰ τὴν ἐπιδείνωσιν. Ὁ σπλὴν διογκοῦται καὶ σκληρύνεται. Διαταραχαὶ τῆς ἐμμήνου ρύσεως ἢ καὶ ἀμηνόρροια εἶναι συνήθεις· γενικῶς δ' ἐπέρχεται λειτουργικὴ μείωσις τῶν ᾠοθηκῶν ἢ καὶ ἀτροφία αὐτῶν καθὼς καὶ τῶν μαστῶν· τοιαῦται ἀλλοιώσεις ἐπέρχονται καὶ ἐπὶ τῶν γεννητικῶν ὀργάνων τοῦ ἄρρενος.

Εἰς τὰς ἀνωμάλους μορφὰς τῆς νόσου, καθὼς καὶ εἰς τὰς βαρείας, ἐπέρχεται ἰδιόρρυθμος τρόμος (σημεῖον Pierre Marie), εἴτε ὁλοκλήρου τοῦ σώματος ἢ τῶν ἄκρων, ἄλλοτε ἐλαφρός, ἐνίοτε δ' ἀποβαίνει τοσοῦτον ἰσχυρός, ὥστε ἀποτελεῖ τὴν μόνην αἰτίασιν τῶν ἀρρώστων. Νευρικαὶ ἀνησυχίαι καὶ ἔντονος νευρικὴ διεγερσιμότης εἶναι συχνὸν φαινόμενον· ἀϋπνία, κεφαλαλγία, ἴλιγγος εἶναι συνήθη· κατ' ἐξαίρεσιν δ' ἐμφανίζονται καὶ φαινόμενα ἀληθοῦς μανιακῆς καταστάσεως καὶ μελαγχολίας.

Αἱ διαταραχαὶ τοῦ δέρματος συνίστανται εἰς ἀπάλειψιν τῆς *μελαγχρωστικῆς* (ἀλφὸς - vitiligo) ἢ κατὰ τμήματα ἢ εἰς διάχυτον ὑπόφαιον χρῶσιν (ἄνευ προηγηθείσης θεραπείας δι' ἀρσενικοῦ) ὁλοκλήρου τοῦ σώματος καὶ τῶν βλεννογόνων, ὅπως περίπου εἰς τὴν *νόσον Addison*. Ὡς ἐκ τοῦ ἐκκρινομένου ἀφθόνου ἱδρῶτος τὸ δέρμα παρέχει ἔκδηλον μείωσιν τῆς ἀντιστάσεως πρὸς τὴν γαλβανικὴν ἀγωγιμότητα (σημεῖον Vigouroux).

Κλινικῶς διαστέλλονται αἱ μορφαὶ τῆς ἐξοφθάλμου βρογχοκήλης: 1) Εἰς τὰς *τυπικὰς* μετὰ τῶν περιγραφέντων κλασσικῶν συμπτωμάτων καὶ μετὰ ἐξελίξεως συνήθως βραδείας. 2) Τὰς *ἰωδοθυρεοτοξικώσεις*, αἱ ὁποῖαι ἐπέρχονται εἰς φαινομενικῶς ὑγιῆ ἄτομα προδιατεθειμένα ὅμως πρὸς τὸ νόσημα ἢ ἀφορῶσι περιπτώσεις ἐλαφράς, αἱ ὁποῖαι ἐπιδεινοῦνται ἐπὶ τῇ λήψει καὶ μικρῶν δόσεων ἰωδίου. 3) Τὰς *ἀτελεῖς* ἢ *ἀνωμάλους* μορφὰς (formes frustes), καθ' ἃς ἐλλείπουσι μονίμως ἓν ἢ καὶ πλείονα τῶν κλινικῶν συμπτωμάτων. Αἱ μορφαὶ αὗται εὕρηνται ἐν στενῇ σχέσει πρὸς τὰς ὑπο-

Digitized by Google

τοῦ Stern κληθείσας «Basedowoid», ἀφορώσας ἄτομα νευρικὰ ἢ καὶ κληρονομικῶς βεβαρημένα, εἰς ταύτας δὲ οὐδέποτε ἐξελίσσεται ἡ πλήρης βαρεῖα κλινικὴ εἰκὼν τῆς νόσου.

Ἐνῷ πρότερον ἐθεωρεῖτο ἡ νόσος Μπάσεντοου ὡς εἰδικὴ νεύρωσις ἄνευ καθορισμοῦ εἰδικῶν παθολογοανατομικῶν ἀλλοιώσεων, νεώτεραι ἔρευναι ἀπέδειξαν ὅτι τὸ νευρικὸν σύστημα (συμπαθητικὸν) οὐδεμίαν εἰδικὴν ἀλλοίωσιν ἐμφανίζει, ἐνῷ ἀνευρίσκονται ἀνατομικαὶ βλάβαι πρῶτον ἐν αὐτῷ τῷ θυρεοειδεῖ ἀδένι, συνιστάμεναι εἰς τοπικὴν ἢ καὶ καθολικὴν διόγκωσιν αὐτοῦ τοῦ ἀδένος, ἐξ ὑπερτροφίας καὶ ὑπερπλασίας τοῦ ἐπιθηλίου, ἀλλοιώσεως τῶν κυστιδίων καὶ ἐλαττώσεως τοῦ περιεχομένου ἐν αὐτοῖς ἐκκρίματος· καὶ δεύτερον ἀλλοιώσεις ἄλλων ἐνδοκρινῶν ἀδένων: σπληνός, λεμφικῶν ἀδένων, ἀμυγδαλῶν, πλακῶν τοῦ Peyer, κατ' ἐξοχὴν συχνὰ τοῦ θύμου ἀδένος, τῶν γεννητικῶν ἀδένων καὶ ὑποπλασία τῆς μυελώδους οὐσίας τῶν ἐπινεφριδίων, τοῦ παγκρέατος καὶ τῆς ὑποφύσεως (ηὐξημένη λειτουργία καὶ ἐλάττωσις τῶν χρωμιοφίλων κυττάρων). Πλὴν αὐτῶν, ἀνευρίσκονται καὶ ἀνατομικαὶ βλάβαι ἄλλων ὀργάνων· ὑπερτροφία καὶ διαστολὴ τῆς καρδίας, λιποειδὴς ἐκφύλισις τῶν νεφρῶν, στάσις καὶ ἐκφύλισις τοῦ ἥπατος, λιπώδης διήθησις ἢ καὶ ἐκφύλισις τῶν γραμμωτῶν μυϊκῶν ἰνῶν, μαλάκυνσις τῶν ὀστῶν ἐνίοτε ἢ καὶ ἀσυνήθης αὐτῶν αὔξησις, ἰδίᾳ εἰς νεαροὺς πάσχοντας, καθὼς καὶ πρώϊμος συνοστέωσις τῶν χόνδρων τῶν ἐπιφύσεων. Ἡ πορεία τοῦ νοσήματος, εἰς τὰς πλείστας τῶν περιπτώσεων, εἶναι χρονία· σπανίως δὲ ἐπέρχονται καὶ ἰδεῖαι μορφαὶ μὲ διαδρομὴν βαρεῖαν. Θεραπεία τῆς νόσου κυριωτέρα εἶναι ἡ χειρουργική· τὰ ἐκ ταύτης ἀποτελέσματα εἶναι πράγματι εὐνοϊκά, ἀλλὰ καὶ οἱ ἐκ τῆς ἐπεμβάσεως κίνδυνοι ἐπίσης συχνοί.

Ὁ Sudeck συνιστᾷ, ἐπὶ περιπτώσεων εἰς ἃς ἐλλείπει ἡ διόγκωσις τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος, νὰ ἀποφεύγηται ἡ ἐγχειρητικὴ ἀγωγή. Ἡ δι' ἀκτίνων Röntgen θεραπευτικὴ ἀγωγὴ εἶναι ἡ κατ' ἐξοχὴν προτιμωμένη. Ἐκ τῶν ἐν χρήσει φαρμάκων ἡ ἀντιθυρεοειδίνη Moebius ἐπιδρᾷ λίαν ἐπωφελῶς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ.—*A. Kocher*. «Ueber Basedowsche Krankheit und Thymus» (Verh. de D. Ges f. Chir. 1924). — *Alquier*, «Basedowisme ou névrose vasomotrice» (Rev. neurol. 1914 No 6).— *Caro*, «Blutbefunde bei Morbus Basedow» (Berl. Kl. Woch. 1908 No 32). — *Chwostek*, «Morbus Basedowii und die Hyperthyreosen» (Encycl. d. Kl. Med. 1917).— *Curschmanu*, «Thyreotoxische Diarrhöen» A. f. Verd. Krank. 1914 XX).— *Kuhn*, «Ueber das häufige Vorkommen leichter Basedowfälle» (Med. Klin. 1923 No 21).—*Landstroem*, Ueber Morbus basedowii. —*Schlessinger*, «H. Neue deutsche Klinik von Klemperet» (1928).—*Sudeck*, «Zur pathol. Anatomie und Klinik des Morbus Basedowii» (B. z. Kl. Chir. 1914 σ. 104).

† Α. ΤΣΙΒΙΔΗΣ

— *[Κτηνιατρ.]* Ἐκ τῆς *νόσου τοῦ Μπάσεντοου* προσβάλλονται ὅλα τὰ ζῷα, ὁ ἵππος, ὁ ἡμίονος, ἡ ἀγελὰς καὶ ἐν γένει τὰ μεγάλα καὶ τὰ μικρὰ μηρυκαστικά, ὁ κύων καὶ ἡ γαλῆ. Τὰ πάσχοντα ζῷα παρουσιάζουν τὰς αὐτὰς μορφὰς τοῦ νοσήματος, αἵτινες ἀπαντῶσι καὶ εἰς τὸν ἄνθρωπον. Αἰτία τοῦ νοσήματος τούτου εἶναι διάφορα ἄλλα νοσήματα τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος. Ὁ ἀδὴν ἐξογκοῦται ὁτὲ μὲν κατὰ τὸν ἕνα, ὁτὲ δὲ κατὰ τὸν ἄλλον λοβὸν καὶ ἄλλοτε καὶ κατὰ τοὺς δύο συγχρόνως. Ὁ ὄγκος τοῦ ἀδένος γίνεται ἐνίοτε ὑπερμεγέθης καὶ τὸ σχῆμα αὐτοῦ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ κρεμαστόν. Τὸ ἐπικείμενον δέρμα εἶναι κατ' ἀρχὰς ἀναλλοίωτον, προϊούσης ὅμως τῆς αὐξήσεως τοῦ ὄγκου ἐξογκοῦνται συγχρόνως καὶ αἱ φλέβες καὶ κατ' ἀκολουθίαν κιρσοῦνται. Τότε ἔχομεν τὴν ὑπερτροφίαν τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος, ἥτις παρουσιάζεται εἰς τοὺς κύνας καὶ κατὰ τὴν νεαρὰν αὐτῶν ἡλικίαν μεγάλη τὸν ὄγκον. Εἰς τὸν ἵππον ὁ ὄγκος δὲν λαμβάνει μεγάλας διαστάσεις. Φθάνει συνήθως τὸ μέγεθος φοῦ. Παρετηρήθη ἐν τούτοις καὶ εἰς τὸν ἵππον ὄγκος μεγέθους κεφαλῆς μικροῦ παιδίου. Ἐν ὅσῳ ὁ ὄγκος οὗτος εἶναι μικρός, οὐδεμίαν σχεδὸν ἐνόχλησιν προξενεῖ εἰς τὸ ἄρρωστον ζῷον· ὅταν ὅμως ἐξογκωθῇ ἐπὶ πολύ, πιέζει τὸν φάρυγγα, τὸν λάρυγγα, τὴν τραχεῖαν καὶ τὰς φλέβας καὶ ἐπιφέρει τὴν δύσπνοιαν, τὸν βῆχα, τὴν δυσκαταποσίαν, συχνὰ δὲ καὶ αὔξησιν τῆς καρδίας.

Ἡ διάγνωσις τῆς βρογχοκήλης εἶναι εὔκολος, ἡ πρόγνωσις ὅμως λίαν ἀμφίβολος. Ὡς θεραπεία ἐνδείκνυται τὸ ἰώδιον καὶ δὴ τὰ ἐξ αὐτοῦ παρασκευάσματα.

Δ. Φ. Π.

**μπασέτο** (τό) *[Μουσ.]*. Ξύλινον μουσικὸν πνευστὸν ὄργανον (βλ. λ. *βομβάρδα)*.

**Μπάσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 395.

Χ. Δ.

**Μπασιά** *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία δοθεῖσα ἐπὶ ἑλληνικῆς κατοχῆς εἰς τὸ ἐν Α. Θρᾴκῃ (περιφέρεια Χαριουπόλεως τοῦ νομοῦ Ραιδεστοῦ) χωρίον *Αὐλοῦ Μπασῆ*, ἀριθμοῦν (1920) 199 κατ.

**μπασιά** (ἡ)· δημοτ., ἡ εἴσοδος: «ἡ μπασιὰ τοῦ σπιτιοῦ», «νὰ καθαρίσῃς τὴ μπασιά» *(ἔμπασια ἐκ τοῦ ἔμβασις)*.

**Μπασιᾶς**. Ὄνομα μιᾶς τῶν ἐπιφανεστέρων πολεμικῶν οἰκογενειῶν τῆς Κρήτης, καταγομένη ἐκ τοῦ χωρίου Ἀπανωχώρι. Διασημότεροι ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης ἀναφέρονται οἱ ἑξῆς:

—1) ***Σταμάτιος***. Ἐγεννήθη τῷ 1728. Λαβὼν τὰ ὅπλα ἅμα τῇ κηρύξει τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1770 καὶ τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τῶν συνεπαρχιωτῶν του ἔδραμεν εἰς Σφακιὰ καὶ συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐκεῖ μάχας κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων Τούρκων, ἐν τέλει δέ, μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς ἐπαναστάσεως, πολιορκηθεὶς μετ' εὐαρίθμων ἀνδρῶν εἴς τι παρὰ τὴν Ἀνώπολιν Σφακίων σπήλαιον ἠμύνθη γενναίως καὶ τέλος, ἐκτελέσας ξιφήρης ἔξοδον, ἔπεσεν ἡρωϊκῶς μαχόμενος μετὰ πάντων τῶν ὀπαδῶν του. Ἔκτοτε τὸ σπήλαιον ἐκεῖνο καλεῖται ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων «ὁ σπήλιος τοῦ Μπασιᾶ».

—2) ***Ἀντώνιος** ἢ **Μπασιαδαντώνης***. Ἔγγονος ἢ ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Ὑποχρεωθεὶς τῷ 1870 νὰ ἐκτελέσῃ ἀγγαρείαν τινὰ ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν δύο ἐνόπλων γενιτσάρων, ἐφόνευσε διὰ τῆς ράβδου του τὸν ἕνα ἐξ αὐτῶν, λαβὼν δὲ τὰ ὅπλα του ἐφόνευσε καὶ τὸν ἕτερον, μεθ' ὃ ἐξελθὼν εἰς τὰ ὄρη ὡς ἁρματολός, ἐπὶ κεφαλῆς εὐαρίθμων τινῶν συνεπαρχιωτῶν του, ἐτρομοκράτει τοὺς Τούρκους τοῦ Σελίνου. Ἐμπεσὼν εἰς τουρκικὴν ἐνέδραν ἐφονεύθη τῷ 1817.

—3) ***Μᾶρκος***. Ὁπλαρχηγὸς διακριθεὶς διὰ τὴν ἀνδρείαν του κατὰ τὰς ἐπαναστάσεις 1821—1830, 1841 καὶ 1858.

—4) ***Νικόλαος***. Υἱὸς τοῦ Σταματίου, διακριθεὶς ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὰς ἐπαναστάσεις 1821—1830, 1841 καὶ 1858.

—5) ***Κωνσταντῖνος***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Ἀπανωχωρίῳ τῷ 1826. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πρώτων ὑποκινητῶν καὶ τῶν κυριωτέρων ἀρχηγῶν κατὰ τὴν ἐπανάστασιν του 1858. Ἔκτοτε διὰ τῆς θαρραλέας στάσεώς του ἐπρωτοστάτησεν εἰς πᾶσαν ἐν Κρήτῃ κίνησιν κατὰ τῶν τουρκικῶν αὐθαιρεσιῶν. Ἀλλ' ἡ μεγάλη αὐτοῦ δρᾶσις ἐσημειώθη κατὰ τὴν ἐπανάστασιν του 1866—1869, καθ' ἣν διετέλεσεν εἷς τῶν κυριωτέρων ἀρχηγῶν τῆς ἐπαρχίας του, διακριθεὶς εἰς πλείστας μάχας διὰ τὴν σύνεσιν, τὴν στρατιωτικὴν ἐμπειρίαν του καὶ τὸν ἡρωϊσμόν του μέχρι τέλους τοῦ Ἀγῶνος. Διεκρίθη ὡσαύτως ὡς ἀρχηγὸς κατὰ τὰς ἐπαναστάσεως 1878, 1889 καὶ 1896—1897. Τῷ 1901 διωρίσθη πρόεδρος τῆς ἐπιτροπῆς πρὸς ταξινόμησιν τῶν ἀγωνιστῶν. Ἀπέθανε τῷ 1916.

*Κωνσταντῖνος Μπασιᾶς.*

—6) ***Ἀντώνιος***. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1820. Συμμετέσχεν ὡς ὁπλαρχηγὸς εἰς τὰς ἐπαναστάσεις 1858 καὶ 1866. Τραυματισθεὶς εἰς τὴν μάχην τῆς Κράπης (Ἀποκορώνου) τὴν 23 Ἀπριλίου 1867, ἀπέθανε μετ' ὀλίγας ἡμέρας.

—7) ***Ἐμμανουήλ***. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1822. Διεκρίθη ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1858 καὶ ἰδίως κατὰ τὴν του 1866—1869, καθ' ἣν ἐτραυματίσθη σοβαρῶς εἰς τὴν μάχην Θερίσου (Φεβρουάριος 1867). Ἀπέθανε μετὰ τετραετίαν (1871) ἐκ τῶν τραυμάτων του.

—8) ***Θεόδωρος***. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1824. Συμμετέσχεν ὡς ὁπλαρχηγὸς εἰς τὰς ἐπαναστάσεις 1858, 1866—1869, 1878, 1889 καὶ 1896—1897, διακριθεὶς εἰς πλείστας μάχας διὰ τὴν ἀνδρείαν του. Ἀπέθανε τῷ 1910.

—9) ***Σταμάτιος***. Ἐγεννήθη ἐν Ἀπανωχωρίῳ περὶ τὸ 1830. Συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐπανάστασιν 1858 καὶ εἶτα ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν τοῦ 1866—1869. Ἀπέθανε μετὰ τὴν ἐπανάστασιν ἐκείνην ἐκ τῶν κακουχιῶν καὶ τῶν τραυμάτων του.

—10) ***Βαρδῆς***. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1835. Διεκρίθη ὡς ὁπλαρχηγὸς Κισάμου κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1866—1869.

—11) ***Ἀντώνιος***. Υἱὸς τοῦ Κωνσταντίνου, ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1894—1897, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἐπίθεσιν τῶν ἐν Καντάνῳ συγκεντρωθέντων Τούρκων (Μάϊος 1897). Μετὰ τὴν συνθηκολόγησιν τῶν ἐκεῖ Τούρκων, συνοδεύων αὐτοὺς εἰς Παλιοχώριον, ἵνα ἐπιβιβασθῶσιν ἐπὶ τῶν ἐκεῖ καταπλευσάντων πλοίων, ἐτραυματίσθη σοβαρῶς ὑπὸ ὀβίδος κατὰ τὸν βομβαρδισμόν, ὃν ἤρξαντο κατὰ τῶν Ἑλλήνων τὰ παρόντα κατὰ τὴν ἐπιβίβασιν εὐρωπαϊκὰ πλοῖα.

—12) ***Νικόλαος***. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, διακριθεὶς ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1894—1897, καθ' ἣν ἀντεπροσώπευσε καὶ ἐπανάληψιν, ὡς πληρεξούσιος, τὴν ἐπαρχίαν του εἰς τὰς ἐπαναστατικὰς συνελεύσεις. Ἀπέθανε τῷ 1917.

—13) ***Ἰωάννης***. Ὁπλαρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας Σελίνου κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1894—1896.

—14) ***Γεώργιος***. Ὁπλαρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας Σελίνου κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1894—1896.

Μ. ΚΛΣ

—**Μπασιᾶς *Θάνος Τυπάλδος***—. Ἕλλην νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς ἐκ Κεφαλληνίας (1868—1924). Ἐσπούδασε νομικὰς καὶ πολιτικὰς ἐπιστήμας, ἐγένετο δὲ βουλευτὴς Κεφαλληνίας, ὑπουργὸς τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας (1916) καὶ ἀντιπρόεδρος τῆς βουλῆς. Ἔγραψε γαλλιστί: «Αἱ ἐργατικαὶ τάξεις ἐν Ρώμῃ», «Αἱ ἀσφάλειαι ζωῆς», «Ἡ βιομηχανικὴ προστασία» κ. ἄ.

—Π.

**Μπασιλὰν** (Basilan) *[Γεωγρ.]*. Ἄθροισμα ἑξήκοντα περίπου μικρῶν νήσων τῆς ὁμάδος τῶν Φιλιππίνων, κείμενον πρὸς ΝΔ. τῆς Μιντανάο. Μεγίστη ἐξ αὐτῶν εἶναι ἡ *Μπασιλὰν* ἐπίσης καλουμένη, ἐκτάσεως 1.100 περίπου χλμ., τῆς ὁποίας τὰ ὄρη ὑψοῦνται μέχρι 1.000 περίπου μ. Ἐπ' αὐτῆς κεῖται ἡ πόλις *Ἰσαβέλα*, πρωτεύουσα τοῦ συμπλέγματος καὶ ἀξιόλογος ναυτικὴ βάσις. Αἱ Μπασιλὰν οἰκοῦνται ὑπὸ 8.000 κατοίκων, ἀσχολουμένων μὲ τὴν ἁλιείαν καὶ τὴν καλλιέργειαν τοῦ σακχαροκαλάμου, βάμβακος, καπνοῦ, ὀπωροφόρων, δένδρων κλπ.

Χ. Δ.

**μπάσιμο**, —ατος (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μπαίνω* ἢ *μπάζω*, εἰσαγωγή, ἄλλως *βάσιμο*: «'ς τὸ μπάσιμο καὶ 'ς τὸ βγάλσιμο» || ἡ πῆξις τοῦ ὑφάσματος, ἡ κρουστότης, ἡ πυκνότης τῆς ὑφῆς: «αὐτὴ ἡ φανέλλα δὲν φορεῖται ἀπὸ τὸ μπάσιμο».

**μπασὶ-μπαγλὶ** (τό). Εἶδος ἐπεξεργασίας τῶν μυρωδάτων καπνῶν, (βλ. λ. *καπνὸς* τ. ΙΓ' σ. 757).

**μπασιμποζούκ**, ἡ ***μπασιμποζοῦκος*** *['Εγκυκλ.]*. βλ. λ. *βασιβουζοῦκος*.

**Μπάσιν, *Πέτρος Βασίλειεβιτς***. Ρῶσος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1799 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1861. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν καλῶν τεχνῶν τῆς Πετρουπόλεως καὶ εἶτα εἰς Παρισίους καὶ Ρώμην. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Ρωσίαν διωρίσθη καθηγητὴς τῆς Ἀκαδημίας. Οἱ ἄριστοι τῶν πινάκων αὐτοῦ εἶναι: ἡ «Σουσάνα», «Ὁ Σωκράτης διδάσκων τὸν Ἀλκιβιάδην», «Σκηνὴ ἐκ τοῦ σεισμοῦ τοῦ Μόντε Κάβο» καὶ ὁ «Ἰταλὸς κακοῦργος», εὑρισκόμενοι εἰς τὸ Ἐρμιτὰζ τῆς Πετρουπόλεως.

Θ. Β.

**Μπὰς Ἰσκαλεσσὶ** *[Παρ. Γεωγρ.]*. Ὁ ΝΑ. μυχὸς τῆς ἐσωτάτης κολπώσεως τοῦ κόλπου τῆς Νικομηδείας (πλάτ. 40° 42' 40" Β., μῆκ. 29° 55' 30" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 497: Gulf of Ismid) ἐπίνειον τοῦ Ὀβαζίκ.

Σ. Ε. Λ.

**Μπασὶς *Μετόχι*** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Πατριαρχικὸν* (βλ. λ.).

**Μπασισλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Σχολάριον* (βλ. λ.).

**Μπασίτι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος καὶ τῆς ἐπαρχίας Ἁλμυροῦ τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 41.

Χ. Δ.

**Μπὰς-Καλὲ** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας, ἕδρα τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Βάν. Πρόκειται περὶ θέσεως ὀχυρᾶς πρὸς τὸ μέρος τῶν περσικῶν συνόρων, τῶν ὁποίων ἀπέχει 25 χλμ. Ἦτο ἄλλοτε ἕδρα τοῦ νομοῦ Χαχιάρι. Κάτ. 500 (1927). Ἡ ὁμώνυμος ὑποδιοίκησις (καλουμένη ἄλλοτε *Ἐλμπάκ*) ἔχει ἐπιφάνειαν 3.430 τ. χλμ. καὶ 5.164 (1927) κατ. Κατὰ τὰς παλαιὰς τουρκικὰς στατιστικὰς ἡ ὑποδιοίκησις εἶχε 42.870 κατ., ἐξ ὧν 22.580 Κοῦρδοι, 10.000 Νεστοριανοὶ καὶ 3.000 Ἀρμένιοι. Ἡ ἐλάττωσις αὕτη τοῦ πληθυσμοῦ εἶναι ἀποτέλεσμα τῶν ἀρμενικῶν σφαγῶν καὶ τῶν συνεπειῶν τῶν κουρδικῶν ἐπαναστάσεων.

Ν. Μ.

**Μπασκάρα** (Bhaskara). Ἰνδὸς σοφὸς ἀποτελῶν μετὰ τῶν Ἀρυαμπχάττα καὶ Μπραχμαγκούπτα τὴν τριάδα τῶν κλασικῶν μαθηματικῶν τῶν Ἰνδιῶν. Γνωστὸν εἶναι ὅτι ἐγεννήθη τῷ 1114, ἄγνωστος δὲ ἡ ἐποχὴ τοῦ θανάτου του. Ὁ Μπασκάρα ἐφημίσθη ἰδίως διὰ τὸ μέγα μαθηματικὸν σύγγραμμά του «Σιντχαντατσιρομάνι», τοῦ ὁποίου τὰ κύρια μέρη «Λιλαβάτι» (=ἡ Χαριτωμένη) καὶ «Βιγιαγκανίτα» (=ὑπολογισμὸς τῶν ριζῶν) ἐδημοσιεύθησαν εἰς ἀγγλικὴν μετάφρασιν τοῦ Burgess, μετὰ σχολίων τοῦ Witney, εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Ἀμερικανικῆς Ἀνατολικῆς Ἑταιρείας». Εἰς τὸ «Λιλαβάτι» ὁ Μπασκάρα διδάσκει τὴν ἀριθμητικὴν εἰς ὑποθετικὴν ὡραίαν νεάνιδα (ἐξ οὗ καὶ ὁ τίτλος τοῦ κεφαλαίου), θέτων εἰς αὐτὴν τὰ διάφορα προβλήματα κατὰ τὸν ἑξῆς, ἐπὶ παραδείγματι, τρόπον: «Ὡραία νέα μὲ τὰ ἀκτινοβολοῦντα μάτια, εἰπέ μου, ἂν κατέχῃς τὸν νόμον τῆς ἀναστροφῆς, ποῖος εἶναι ὁ ἀριθμὸς ὁ ὁποῖος, ἀφοῦ πολλαπλασιασθῇ ἐπὶ 3 καὶ τὸ γινόμενον αὐξηθῇ κατὰ $^3/_4$, διαιρεθῇ εἶτα δι' 7, μειωθῇ κατὰ τὸ $^1/_3$, ὑψωθῇ εἰς τὸ τετράγωνον, ἀφαιρεθῇ ἀπ' αὐτοῦ ὁ ἀριθμὸς 52, ἐξαχθῇ ἡ τετραγωνικὴ ρίζα τοῦ ὑπολοίπου, προστεθῇ εἰς αὐτὸ ὁ ἀριθμὸς 8 καὶ διαιρεθῇ τὸ ἄθροισμα διὰ 10, μᾶς δίδει τὸν ἀριθμὸν 2». Ὡς εἶναι εὐνόητον πρόκειται ἁπλῶς νὰ ἐκτελεσθῶσι, κατ'

Digitized by Google

ἀντίστροφον τάξιν, ἐπὶ τοῦ τελικοῦ ἀριθμοῦ 2 αἱ ἀντίθετοι τῶν ἐξαγγελλομένων πράξεων (ἤτοι: $2\times10=20$, $20-8=12$, $12^2=144$, $144+52=196$, $\sqrt{196}=14$, $14+\frac{14}{2}=21$, $21\times7=147$, $147\times\frac{4}{7}=84$, $84:3=28$). Ὁ Μπασκάρα διδάσκει ὁμοίως ἐν τῷ αὐτῷ κεφαλαίῳ τὴν μέθοδον τῶν τριῶν, τὸν μερισμὸν εἰς μέρη ἀνάλογα, ἐξαγωγὴν τοῦ μέσου ὅρου κλπ., ἀσχολεῖται δ' ἐπίσης μὲ τὰς ἀριθμητικὰς καὶ γεωμετρικὰς προόδους καὶ τοὺς συνδυασμούς· εἶναι γνώστης τοῦ συμβολισμοῦ τῶν ἀρνητικῶν ἀριθμῶν καὶ τῶν περιπτώσεων καθ' ἃς ἡ λύσις τῶν ἐξισώσεων τοῦ β' βαθμοῦ εἶναι ἀόριστος ἢ ἀδύνατος. Γνωρίζει ἐπίσης ὁ Μπασκάρα νὰ μετατρέπῃ εἰς σύμμετρον ἀριθμὸν τὸν παρονομαστὴν ἑνὸς κλάσματος ἔχοντος ἀσυμμέτρους ὅρους, θίγει δ' ἀκόμη εἰς τινας περιπτώσεις καὶ τὰς ἐξισώσεις γ' καὶ δ' βαθμοῦ. Διὰ τὴν λύσιν τῶν ἐξισώσεων τοῦ β' βαθμοῦ τῆς μορφῆς $xy=\alpha x+\beta y+\gamma$ χρησιμοποιεῖ μέθοδον, εἰς τὴν ὁποίαν ἡ εἰσαγωγὴ τῆς γεωμετρίας φαίνεται ἑλληνικῆς προελεύσεως, τὰς δὲ τῆς μορφῆς $\alpha x^2+\beta=\gamma y^2$ λύει διὰ τῆς κυκλικῆς μεθόδου τὴν ὁποίαν ἐπανεῦρε τὸν ΙΗ' αἰῶνα ὁ Λαγκράνζ. Παράδοξον εἶναι ὅτι ἐνῷ τόσας προόδους ἐπετέλεσεν ἐν σχέσει πρὸς τοὺς προγενεστέρους του, παρατηροῦνται παρ' αὐτῷ περίεργοί τινες πλάναι, ὡς προκειμένου περὶ τῆς διαιρέσεως καὶ τοῦ πολλαπλασιασμοῦ τοῦ μηδενός.

Ἡ γεωμετρία τοῦ Μπασκάρα εἶναι σχετικῶς ὀλιγώτερον προηγμένη ἀπὸ τὴν ἄλγεβράν του. Ἂν κατορθώνῃ νὰ λύῃ περίπλοκά τινα προβλήματα τοῦ τριγώνου καὶ τοῦ ὀρθογωνίου, τὸ ἐπιτυγχάνει κατ' οὐσίαν διὰ τοῦ λογισμοῦ. Γενικῶς ἄλλως τε οἱ Ἰνδοὶ δὲν διεκρίθησαν διὰ κανονικὰς γεωμετρικὰς ἀποδείξεις. Ὅσον ἀφορᾷ τὸν λόγον τῆς περιφερείας πρὸς τὴν διάμετρον, ὁ Μπασκάρα ἐγνώριζεν, ἐκτὸς τῆς προσεγγίσεως τοῦ Ἀρχιμήδους, δύο ἀκόμη, τὰς ἑξῆς: $\frac{3927}{1250}$ καὶ $\frac{754}{240}$. Ἡ πρώτη, ἰσουμένη πρὸς 3,1416 ἔχει δοθῆ ἤδη ὑπὸ τοῦ Ἀρναμπχάττα ὑπὸ ἄλλην μορφήν, φαίνεται δὲ ὅτι εἶχεν ἐξαχθῆ διὰ τῆς μεθόδου τοῦ Ἀρχιμήδους ἐκ τοῦ πολυγώνου τῶν 384 πλευρῶν. Ἡ δευτέρα δὲν εἶναι ἄλλη ἀπὸ τὴν ἐξαγομένην ἀπὸ τοὺς «πίνακας τῶν χορδῶν» τοῦ Πτολεμαίου. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν τριγωνομετρίαν, ὁ Μπασκάρα διδάσκει πῶς δύνανται νὰ καταρτισθῶσι πίνακες τῶν ἡμιτόνων καὶ συνημιτόνων διὰ τὰ τόξα ἀκεραίου βαθμοῦ. Ἀσχολεῖται ἐπίσης εἰς τὸ ἔργον του καὶ μὲ τοὺς ἀστρονομικοὺς λογισμούς.

Ἐν συνόψει ὁ Μπασκάρα παρέχει ἐν τῷ συγγράμματί του πλήρη τὴν εἰκόνα τῆς ἐπιστήμης τῶν Ἰνδῶν μαθηματικῶν, οἵα αὕτη ἐξειλίχθη ἀπὸ τοῦ Ε' μέχρι τοῦ ΙΒ' αἰῶνος, ἐμφανίζουσα σημαντικὴν πρωτοτυπίαν ἐν τῷ πεδίῳ τῆς ἀλγέβρας, ἐξ ἀντιθέτου δὲ ἐμφανῆ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐξάρτησιν ἀπὸ τῶν ἑλληνικῶν πηγῶν καθ' ὅσον ἀφορᾷ τὴν γεωμετρίαν καὶ τὴν ἀστρονομίαν. Οἱ μεταγενέστεροι αὐτοῦ Ἰνδοὶ μαθηματικοί, ἐξ ὧν ἀξιολογώτεροι οἱ Γκανγκαντχάρα (ΙΕ' αἰών), Σουρυαντάζα καὶ Γκανέζα (ΙΣΤ' αἰών), Ρανγκανάθα καὶ Ράμα-Κρίσνα (ΙΖ'), δὲν προσέθεσαν οὐδὲν ἄξιον λόγου εἰς τὴν προχωρημένην μορφὴν τῶν μαθηματικῶν γνώσεων τοῦ Μπασκάρα, ἐκ τῶν ὁποίων ἐν τούτοις δὲν γνωρίζομεν πόσον μέρος ἀνήκει εἰς τὸν ἴδιον καὶ πόσον εἰς τοὺς προγενεστέρους του. Γ. Ζ.

**Μπάσκερβιλ** (Baskerville), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος τυπογράφος (1706—1775). Ἐξαίρετος καλλιγράφος καὶ λιθογράφος, ἵδρυσε τυπογραφεῖον καὶ ἐξέδωκε τῷ 1757 ὡς πρῶτον ἔργον τὸν Βιργίλιον καὶ μετὰ ἓν ἔτος τὴν περίφημον ἔκδοσιν τοῦ Μίλτωνος. Ἐπηκολούθησαν θαυμάσιαι ἐπίσης ἐκδόσεις τοῦ Ὁρατίου καὶ ἄλλων Λατίνων κλασσικῶν. Ἐπίσης ἐξέδωκε τὸν «Μαινόμενον Ὀρλάνδον» τοῦ Ἀριόστο μετὰ καλλιτεχνικῶν χαλκογραφιῶν. Γ. Ι. Β.

**μπάσκετ** (τὸ) (basket). Μέτρον χωρητικότητος ὀρύζης ἐν Βιρμανίᾳ, ἴσον πρὸς 38,8 λίτρας.

**μπάσκετ μπώλλ** (basket ball) *[Ἀθλητ.]*· βλ. λ. *καλαθοσφαίρισις*.

**Μπάσκι**, ἢ ***Μπάσσι*** (Baschi ἢ Bassi), ***Ματθαῖος***. Ἰταλὸς μοναχός, ἱδρυτὴς τοῦ τάγματος τῶν καπουκίνων, γεννηθεὶς ἐν Μπάσιο τοῦ Οὐρβίνου τῷ 1495 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1552, καλούμενος ἐπίσης καὶ *Ματθαῖος ὁ ἐκ Μπάσσιο* (Matteo da Bascio). Κατ' ἀρχὰς εἶχε καταταχθῆ εἰς τὸ τάγμα τῶν φραγκισκανῶν καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ μοναστήριον τοῦ Μοντεφαλκόνε. Λόγῳ ὅμως τῆς μεγάλης ἐκλύσεως, ἡ ὁποία ἐβασίλευε κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην παρὰ τοῖς φραγκισκανοῖς, ἐσκέφθη νὰ προβῇ εἰς τὴν μεταρρύθμισιν τοῦ τάγματος ἐπὶ τῇ βάσει τῶν πρώτων αὐστηρῶν κανόνων τοῦ ἁγίου Φραγκίσκου. Ὁ Μπάσκι μετέβη πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον εἰς Ρώμην καὶ παρουσιάσθη εἰς τὸν πάπα Κλήμεντα Ζ', ὅστις ἐπεδοκίμασε τὴν προταθεῖσαν ὑπ' αὐτοῦ μεταρρύθμισιν τοῦ τάγματος τῶν φραγκισκανῶν καὶ ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ ἀποδυθῇ εἰς τὴν διὰ κηρύγματος προπαγάνδαν πρὸς προσέλκυσιν ὀπαδῶν. Ὁ Μπάσκι κατώρθωσε νὰ προσελκύσῃ ἀρκετοὺς ὀπαδούς, ἀλλὰ συγχρόνως ἐδημιούργησε καὶ ἀσπόνδους ἐχθροὺς μεταξὺ τῶν μοναχῶν, οἱ ὁποῖοι δὲν ἔστεργον νὰ ὑποβληθοῦν εἰς τὸν αὐστηρότατον βίον, ὃν ἐπέβαλλεν εἰς τοὺς προσηλύτους, καθὼς καὶ μεταξὺ ἄλλων, οἱ ὁποῖοι ᾐσθάνοντο ἀπέχθειαν πρὸς τὸ ὀξύκωχον κάλυμμα τῆς κεφαλῆς, ἐκ τοῦ ὁποίου ὠνομάσθη τὸ νέον τάγμα. Προεκάλεσε δὲ τοιαύτην ἐξέγερσιν ἐναντίον του, ὥστε αἱ ἀρχαὶ ἠναγκάσθησαν νὰ τὸν φυλακίσουν. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του ὁ πάπας ἀνεγνώρισεν ἐπισήμως τῷ 1528 τὴν μεταρρύθμισιν ταύτην. Τῷ 1529 ἐξελέγη ἀρχηγὸς τοῦ ὑπ' αὐτοῦ συσταθέντος τάγματος τῶν καπουκίνων, ἀλλὰ μετὰ δύο μῆνας παρῃτήθη, ἐγκατέλειψε τὸ μοναστήριόν του καὶ ἐπεδόθη ἐκ νέου εἰς τὸ κήρυγμα, ἀποθανὼν εἰς τὴν Βενετίαν. Μ. Δ. Β.

**μπασκὶ** (τό)· λέξις ληφθεῖσα ἐκ τῆς τουρκικῆς, ἐν χρήσει δὲ παρὰ τοῖς καπνοπαραγωγοῖς, σημαίνουσα κυρίως τὴν πρὸ τῆς δεματοποιήσεως τῶν καπνῶν ἐργασίαν, καθ' ἣν τὰ φύλλα τοῦ καπνοῦ στοιβάζονται κατὰ ὁρμαθοὺς εἰς ξηρὸν μέρος (βλ. λ. *καπνὸς*—καλλιέργεια, τ. ΙΓ' σ. 754 β κἑξ.). Εἰς τὴν καπνοβιομηχανίαν τὸ μπασκὶ εἶναι ἀπαραίτητον πρὸ τῆς ἀναμίξεως (χαρμάνι) τῶν καπνῶν. Τὸ μπασκὶ κατὰ τὸ στοίβαγμα πρέπει νὰ βραχῇ ἐπαρκῶς, ἀναλόγως πάντοτε πρὸς τὴν ἐπικρατοῦσαν καιρικὴν ὑγρασίαν. Δ. Μ. Γ.

**Μπάς-κιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Κεφαλοχώρι* (βλ.λ.).

—**Μπάς-κιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον περὶ τὴν Ἀπολλωνίαν (Ἀμπολιὸντ γκιὸλ) λίμνην τὴν παρὰ τὴν Προῦσαν, ἄλλοτε ἑλληνικόν.

**Μπασκίρτσεφ** (Bashkirtseff ἢ Bachkircef), ***Μαρία***. Ρωσὶς ζωγράφος (1861—1884). Ὁ πατήρ της ἦτο ἀρχηγὸς τῶν εὐπατριδῶν τῆς Πολτάβας. Ἐκ παιδικῆς ἡλικίας ἀφωσιώθη εἰς τὴν ζωγραφικὴν καὶ τὰ γράμματα, μεταβᾶσα δὲ εἰς Παρισίους ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ζυλιάν, Μπαστιὰν-Λεπὰζ καὶ ἄλλους. Τῷ 1881 ἐξέθηκεν εἰς τὸ Salon τῶν Παρισίων τὴν «Ἀφορμὴν τοῦ διαζυγίου» καὶ ἀκολούθως τὸν «Ἰωάννην καὶ τὸν Ἰάκωβον» καὶ τὸ «Συλλαλητήριον», (πινακοθήκη Λουξεμβούργου). Μετὰ τὸν θάνατον τῆς ἐξετέθη ὁ «Ἀπρίλιος» καὶ ἡ αὐτοβιογραφία της. Κατεγίνετο ἐπίσης εἰς τὴν γλυπτικήν. Ἀφῆκε χειρόγραφον «Ἡμερολόγιον» γεγραμμένον γαλλιστί, ὅπερ ἐδημοσιεύθη εἰς δύο τόμους ὑπὸ τῆς οἰκογενείας της ὑπὸ τὸν τίτλον «Journal de Marie Bashkirtseff» (Paris 1887). Τὸ ἡμερολόγιον τοῦτο, ὅπερ ἀποκαλύπτει τὴν ἐξαιρετικῶς πρόωρον αὐτῆς ἀνάπτυξιν καθὼς καὶ τὴν παθητικὴν καὶ ἐνθουσιώδη ψυχήν της, ἀνήσυχον νὰ φθάσῃ τὰς ὑψηλοτέρας πηγὰς τῆς χαρᾶς, τὰς ὁποίας δύναται νὰ προσφέρῃ ἡ ζωή, ἐνῷ συγχρόνως ἐμφανίζει ταύτην ἀφελῆ καὶ εὐαίσθητον ὀνειροπόλον καὶ διαρκῶς δραματιζομένην, καὶ τὴν ὁποίαν ἡ ἀκαταπαύστως ὑπονομεύουσα αὐτὴν φθοροποιὸς ἀσθένεια ὤθει συνεχῶς εἰς ἀφαντάστως πυρετώδη ἔξαρσιν, τὴν κατέστησεν εὐρύτατα γνωστὴν καὶ ὡς καλλιτέχνιδα, ἐπισκιάσαν τὸ ἔργον αὐτῆς ὡς ζωγράφου. Ἀποτελεῖ συνάμα τὸ ἔργον τοῦτο πολύτιμον πηγὴν πληροφοριῶν περὶ τῆς κοινωνικῆς ζωῆς τῆς τάξεως, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἔζη ἡ ἐξαιρετικῆς φύσεως Ρωσὶς αὕτη, ἡ λάτρις τοῦ δυτικοῦ πολιτισμοῦ, καὶ περὶ τοῦ τρόπου κατὰ τὸν ὁποῖον εἶδε τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἰταλίαν κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη μετὰ τὸ 1870. Θ. Β.

*Μαρία Μπασκίρτσεφ.*

**Μπασκὸζ** ***Τσάϊ*** *[Γεωγρ.]*. Ποταμός, ὁ *Ἀρύκανδος* τῶν ἀρχαίων, ρέων ἀπὸ τὰς πρὸς Ν. παραφυάδας τοῦ Λυκιακοῦ Ταύρου καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν κόλπον τοῦ Φοίνικος.

**μπασμάκι** (τό), καὶ *πασουμάκι*· δημοτ., εἶδος πολυτελοῦς ἐμβάδος παλαιοτέρας ἐποχῆς, ἐκ τοῦ τουρκ. basma.

**Μπασμὰν** (Bachmann). Ἑλβετικὴ οἰκογένεια, ἧς κλάδοι ἀπαντῶσιν εἰς πλεῖστα καντόνια τῆς Ἑλβετίας. Γόνοι τῆς οἰκογενείας διετέλεσαν ἐπίσκοποι, βαΐλοι καὶ στρατιωτικοί. Μεταξὺ τούτων διεκρίθη ὁ: ***Νικόλαος - Φραγκῖσκος*** (1740—1831). Εἰσελθὼν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, ἐγένετο τῷ 1789 συνταγματάρχης. Ἦτο ἐπὶ κεφαλῆς τῆς φρουρᾶς κατὰ τὴν ἐπίθεσιν τοῦ λαοῦ κατὰ τῶν ἀνακτόρων τοῦ Κεραμεικοῦ. Κατορθώσας νὰ δραπετεύσῃ εἰς Σαρδηνίαν, ἐτέθη ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ βασιλέως αὐτῆς, ὅστις τότε ἐτέλει εἰς πόλεμον πρὸς τὴν Γαλλίαν. Τῷ 1793 ἀνέλαβεν ὑπηρεσίαν εἰς τὸν ἀγγλικὸν στρατόν. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τῶν γαλλοφώνων καντονίων τῆς Ἑλβετίας ἦτο ἀρχιστράτηγος τῶν ὁμοσπονδιακῶν στρατευμάτων, ἀλλ' ἡττηθεὶς κατέφυγεν εἰς Σουηβίαν. Εἰς Παρισίους ἐπανῆλθε τῷ 1814 καὶ διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου τοῦ ΙΗ' διοικητὴς σώματος Ἑλβετῶν μισθοφόρων. Γ. Ι. Β.

**μπασμᾶς** (ὁ). Ὕφασμα λευκὸν ἀρχικῶς, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐκτυποῦνται διάφορα πολύχρωμα σχέδια (ἡ λ. τουρκική)· || τρόπος ἐπεξεργασίας τῶν μυραδάτων καπνῶν (βλ. λ. *καπνός*). Ν. Μ.—Δ. Μ. Γ.

**Μπὰς - μαχαλὲ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Κεφαλοχώρι* (βλ. λ.).

**Μπασμᾶ-Χανὲ** *[Γεωγρ.]*. Ὁ μεγαλύτερος τῶν δύο σιδηροδρομικῶν σταθμῶν τῆς Σμύρνης, ἀνήκων εἰς τὴν γαλλικὴν ἑταιρείαν τῆς γραμμῆς Σμύρνης—Κασαμπᾶ. Εὑρίσκεται εἰς τὸ νότιον καὶ ἀνατολικὸν μέρος τῆς πόλεως καὶ διαθέτει πολλὰ ὑπόστεγα διὰ τὴν στάθμευσιν τῶν τραίνων καὶ τεραστίας ἀποθήκας. Ἀνήκων κατ' ἀρχὰς εἰς ἀγγλικὴν ἑταιρείαν, ἐκτίσθη ἐπὶ τῆς θέσεως ἐργαστηρίων μπασμάδων ἐκ τούτου δὲ καὶ ἡ ὀνομασία του. Τῷ 1897 περιῆλθεν εἰς τὴν γαλλικὴν ἑταιρείαν. Ἦτο ὁ κεντρικὸς σταθμὸς τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν Σμύρνης—Ἀφιὸν Καραχισάρ, Σμύρνης—Πανόρμου, καὶ τῶν τοπικῶν Σμύρνης—Βουρνόβα, καὶ Σμύρνης-Κορδελιοῦ, συνεκέντρωνε δὲ μεγάλην κίνησιν ἐπιβατῶν καὶ ἐμπορευμάτων.

**Μπάσνα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Νῆσος μικρὰ τῆς πρὸς τὸν Βόσπορον μικρασιατικῆς τοῦ Εὐξείνου ἀκτῆς, 3 μίλλ. ΝΔ. τοῦ ὅρμου Κεφκένι (πλάτ. 41° 08' Β., μῆκ. 30° 07' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2238: Bosporos to Kerempeh). Σ. Ε. Λ.

**μπάσο**, καὶ ***μπάσος*** (ὁ)· βλ. *μπάσσο* καὶ *μπάσσος*.

**Μπασόρα** (Bassorah, Bassora, Bussora) *[Γεωγρ.]*. Πόλις της Μεσοποταμίας (βλ. λ. *Βασόρα*).

**Μπασουτολάνδη** (Basutoland) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς, προσαρτηθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1871 εἰς τὸ συγκρότημα τῶν Βρεττανικῶν ἀποικιῶν τοῦ Ἀκρωτηρίου, ἀλλ' ἀποτελέσασα βραδύτερον ἀνεξάρτητον ἀπ' αὐτοῦ ἀποικίαν. Κεῖται μεταξὺ 28° 35'—30° 30' νοτ. πλάτους καὶ 27°—29° 25' ἀνατ. μήκους, καθορίζεται δὲ ἀπὸ Ν., ΝΑ, καὶ ΒΑ. ὑπὸ τῶν ὀρέων Ντράκενσμπεργκ, ἀπὸ Β. καὶ ΒΔ. ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Καληδόνος καὶ ἀπὸ ΝΔ. ὑπὸ χθαμαλῆς λοφοσειρᾶς καὶ τοῦ ποταμοῦ Τέλλ. Ἡ θέσις αὐτῆς ὡς πρὸς τὰς λοιπὰς βρεττανικὰς νοτιοαφρικανικὰς ἀποικίας εἶναι νοτίως τῆς Ὀράγγης, ἀνατολικῶς τῆς Νατὰλ καὶ βορειοδυτικῶς τοῦ Ἀκρωτηρίου. Ἔχει ἔκτασιν 30.343 τετρ. χλμ. καὶ 500.000 περίπου κατοίκους, πάντας σχεδὸν τῆς ἰθαγενοῦς φυλῆς τῶν *Μπασοῦτος* (βλ. λ.), παρεκτὸς μόνον 1.500 περίπου Εὐρωπαίων, 2.000 Ἰνδῶν καὶ 1.000 μιγάδων. Εἰς τὴν γλῶσσαν τῶν ἰθαγενῶν ἡ χώρα ὀνομάζεται *Λεζοῦτο*.

Τὸ ἔδαφος τῆς Μπασουτολάνδης ἀποτελεῖται ἐξ ὀροπεδίου, μέσου ὕψους 2.000 μέτρων, καταλήγοντος πρὸς Α. καὶ Ν. εἰς τὰ ὄρη Ντράκενσμπεργκ. Ὑψηλοτέρα κορυφὴ εἶναι τὸ ὄρος *Μὸντ-ὠ-Σούρς* (3.350 περίπου μ.), ἀπὸ τοῦ ὁποίου πηγάζει ὁ ποταμὸς Ὀράγγης, καὶ τὸ νοτιώτερον κείμενον ὄρος *Μαλοῦτι*, διασχίζον μέγα τμῆμα τῆς χώρας. Ἐκτὸς τοῦ περιρρέοντος αὐτὴν *Καληδόνος*, ἄλλους ποταμοὺς μικροτέρους ἔχει τὸν *Σεγκὸν* καὶ τὸν *Τουγκέλα*, πλείστους δὲ τούτων παραποτάμους διαρρέοντας εὐφορωτάτας κοιλάδας, ἐν ταῖς ὁποίαις ἀσκεῖται ἰδίως ἐκτεταμένη κτηνοτροφία, ἀλλὰ καὶ γεωργία ἐπίσης μὲ σημαντικὴν ἀπόδοσιν σιτηρῶν. Ὁ ὀρυκτὸς πλοῦτος τῆς χώρας περιλαμβάνει μεταλλεῖα σιδήρου, γαιάνθρακος καὶ χαλκοῦ. Ἔχει καλὸν κλῖμα καὶ ἀφθονίαν φυσικῶν χαλλονῶν.

Ὡς προανεφέρθη, ἡ Μπασουτολάνδη προσηρτήθη εἰς τὰς Βρεττανικὰς ἀποικίας τοῦ Ἀκρωτηρίου ἀπὸ τοῦ 1871. Κατὰ τὰ ἔτη ὅμως 1879 καὶ 1880 οἱ Μπασοῦτος ἐπανεστάτησαν καὶ ἐπέτυχον ἰδιότυπον καθεστὼς διοικήσεως, κεχωρισμένης ἀπὸ τῆς τοῦ ὅλου συγκροτήματος τῶν ἐν Ν. Ἀφρικῇ Βρεττανικῶν κτήσεων. Κατ' αὐτὸ εἰς τὴν διοίκησιν συμμετέχει ὡς συμβουλευτικὸν σῶμα ἑκατονταμελὴς βουλὴ ἐξ ἰθαγενῶν, ἀπαγορεύεται δὲ ἡ ἐν τῇ χώρᾳ εἴσοδος καὶ ἐγκατάστασις ἄλλων Εὐρωπαίων ἢ ὁπωσδήποτε ξένων, παρεκτὸς μόνον τῶν Ἄγγλων ἀξιωματικῶν, τῶν διδασκάλων καὶ τῶν ἱεραποστόλων, καθὼς καὶ ἐμπόρων τινῶν διαμενόντων ἀπὸ πολλοῦ αὐτόθι καὶ ἀποκτησάντων εἰδικὰ προνόμια. Ἤδη λειτουργοῦσιν ἐν Μπασουτολάνδῃ 522 σχολεῖα ἰθαγενῶν μὲ 42.000 μαθητὰς καὶ 8 σχολεῖα διὰ τὰ τέκνα τῶν Εὐρωπαίων.

Ἡ πρωτεύουσα *Μαζεροῦ* εἶναι κωμόπολις πληθυσμοῦ 2.500 μόλις κατοίκων, συνδέεται δὲ διὰ σιδηροδρομικῆς διακλαδώσεως μετὰ τῆς μεγάλης γραμμῆς Μπλομφοντέϊν—Νατάλης. Τὸ ὑπόλοιπον τῆς χώρας ἀποτελεῖται ἀπὸ μικρότερα χωρία καὶ συνοικισμούς, εἰς μικρὰς ὅμως κείμενα ἀπ' ἀλλήλων ἀποστάσεις.

Digitized by Google

**Μπασοῦτος** (Basutos ἢ Bassoutos) (οἱ). Ἄθροισμα ἰθαγενῶν φύλων τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς, κατοικούντων σήμερον τὴν χώραν ἥτις περιλαμβάνεται μεταξὺ τῶν ἀποικιῶν τῆς Ὀράγγης, τῆς Νατάλης καὶ τοῦ Ἀκρωτηρίου (βλ. λ. *Μπασουτολάνδη*). Μέχρι τοῦ 1835 οἱ Μπασοῦτος ἐξετείνοντο καὶ ἐπὶ ὁλοκλήρου τῆς περιοχῆς τῆς ἀποτελούσης ἤδη τὴν ἀποικίαν τῆς Ὀράγγης, οἱ Μπόερς ὅμως ἀφήρεσαν ἀπὸ αὐτοὺς τότε τὰ εὐφορώτερα τμήματα τῆς χώρας των. Τὸ ἄθροισμα τῶν Μπασοῦτος, λεγομένων ἐπίσης καὶ *Μπακόνις*, συναποτελεῖται ἐκ πολυαρίθμων φύλων, τῶν ὁποίων κυριώτερα εἶναι: οἱ κυρίως Μπασοῦτος, οἱ Μπαποῦτις, οἱ Μπατλοκούας, οἱ Μακολόλος, οἱ Μπαπίρις, οἱ Μπαμακακάνας, οἱ Μακάτλας κ. ἄ. Πάντες οὗτοι ἀποτελοῦσι διακλαδώσεις τῆς φυλῆς τῶν *Κάφρων*, μὲ τοὺς ὁποίους ἔχουσι κοινὰ τὰ φυσικὰ γνωρίσματα, εἶναι δὲ εὐφυεῖς, γενναῖοι καὶ φιλόξενοι. Σήμερον μεγάλη μερὶς αὐτῶν ἔχει προσχωρήσει εἰς τὸν Χριστιανισμὸν (100.000 περίπου διαμαρτυρόμενοι καὶ 40.000 καθολικοί), χάρις εἰς τὴν ἔντονον προπαγάνδαν τῶν ἀγγλικανῶν καὶ τῶν παπικῶν ἱεραποστόλων, οἵτινες ἔχουσι μεταφράσει εἰς τὴν γλῶσσαν τῶν ἰθαγενῶν ὄχι μόνον τὴν Γραφήν, ἀλλὰ καὶ τὸ λειτουργικὸν τυπικὸν ἑκάστου δόγματος. Οἱ λοιποί, οἱ παραμένοντες πιστοὶ εἰς τὰς παλαιάς των δοξασίας, εἶναι πολύγαμοι, ἔχουν ἀντὶ ἱερέων μάγους καὶ ἀσκοῦν τὴν περιτομὴν δι' ἀμφότερα τὰ φῦλα. Καὶ αὐτοὶ ἐν τούτοις δὲν ὑπολείπονται εἰς τὴν παρακολούθησιν τῶν ἐκπολιτιστικῶν τάσεων, αἵτινες ραγδαίως προοδεύουσιν ἐν τῇ χώρᾳ, χάρις ἰδίως εἰς τὰ ἱδρυθέντα ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως ἄφθονα σχολεῖα καὶ τὴν προαγωγὴν τῆς γεωργίας. Πολλοὶ εἶναι σήμερον μεταξὺ τῶν Μπασοῦτος οἱ ὁμιλοῦντες καὶ γράφοντες τὴν ἀγγλικὴν καὶ τὴν ὁλλανδικὴν καὶ οἱ ἐπιδιδόμενοι εἰς τὸ ἐμπόριον.

Μολονότι ἡ Μπασουτολάνδη κυβερνᾶται ἤδη κατὰ μεικτὸν σύστημα, μὲ τὴν συμμετοχὴν δηλαδὴ εἰς τὴν ἀγγλικὴν διοίκησιν ἑκατονταμελοῦς συμβουλευτικοῦ σώματος ἰθαγενῶν, ἐξακολουθοῦσιν ἐν τούτοις νὰ ὑφίστανται οἱ κατὰ τόπους ἀρχηγοί, ἔχοντες ὡρισμένα δικαιώματα κυριαρχίας ἐν τῇ περιοχῇ των καὶ ἀπονέμοντες τὴν δικαιοσύνην. Τὰ ἐγκλήματα καὶ ἰδίως ὁ φόνος τιμωροῦνται αὐστηρῶς, ἡ δὲ δολοφονία πάντοτε διὰ θανάτου. Γ. Ζ.

**Μπὰς-Πουὰντ** (Basse-Pointe) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Μαρτινίκας, κειμένη ἐπὶ τῆς βορείας παραλίας ἐντὸς πλουσίας εἰς καλλιέργειαν ζαχαροκαλάμου περιοχῆς. Κάτ. 5.000. Χ. Δ.

**Μπάσρα** (Basra) *[Γεωγρ.]*. Ἀραβικὴ ὀνομασία τῆς ἐν Μεσοποταμίᾳ πόλεως *Βασόρα* (βλ. λ.).

**μπὰς-ρεΐζης** (ὁ). Ὅρος τῶν ναυτικῶν τοῦ Ἀγῶνος, κατὰ παραφθορὰν τοῦ τουρκικοῦ, ἀντίστοιχος πρὸς τὸν παρ' ἡμῖν ἀνεπίσημον «κυβερνήτης τῆς σημαίας» καὶ σημαίνων τὸν κυβερνήτην τοῦ πλοίου, οὗ ἐπέβαινε Τοῦρκος ναύαρχος. Τὰς ὑψηλὰς ταύτας θέσεις κατελάμβανον ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος μέχρι τῆς Ἐπαναστάσεως Ὑδραῖοι, πλείστων δὲ τούτων τὰ ὀνόματα φαίνονται εἰς τὰ ἀρχεῖα τῆς Ὕδρας, ἀπὸ τῆς ναυαρχίας τοῦ Κουτσοὺκ Χουσεῒν καὶ κατόπιν. Σ. Ε. Λ.

**Μπασρίκιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἡ *Βινδία* τῶν ἀρχαίων, κείμενον ἀνατολικῶς τοῦ Σαγγαρίου καὶ βορείως τοῦ Πολατλῆ.

—*[Στρατ.-Ἱστορ.]* Κατ' Αὔγουστον τοῦ 1921, προχωρήσασα ἡ 7η ἑλληνικὴ μεραρχία τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ ἀπώθησε τοὺς Τούρκους καὶ κατέλαβε τὸ *Μπασρίκιοϊ*, ἐγκατασταθεῖσα διὰ τοῦ 23ου συντάγματος πεζικοῦ αὐτῆς ἐπὶ τῶν βορειότερον αὐτοῦ κειμένων ὑψωμάτων (*Διδύμων λόφων* ἀποκληθέντων) ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου Μπεΐτζᾶ, ἐνῷ ἐπὶ τοῦ ἑτέρου πλευροῦ τῆς στενωποῦ τοῦ Πολατλῆ (ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου Ἰλιτζᾶ) εἶχεν ἡ μεραρχία τάξει τὸ 22ον σύνταγμα πεζικοῦ, τηρήσασα ἐν δευτέρᾳ γραμμῇ ὡς ἐφεδρείαν τὸ 37ον. Ἀλλ' οἱ Τοῦρκοι ἐκτελέσαντες μεγάλην ἀντεπίθεσιν κατὰ τῆς ἀριστερᾶς πτέρυγος τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς (28—30 Αὐγούστου 1921), ἤτοι κατὰ τοῦ Γ΄ σώματος στρατοῦ, διὰ 14 μεραρχιῶν, ἐξετόπισαν τὸ 23ον σύνταγμα πεζικοῦ ἀπὸ τῶν Διδύμων λόφων τοῦ Μπασρίκιοϊ, καταλαβόντες καὶ μίαν πυροβολαρχίαν Σκόντα. Πρὸς στιγμὴν ἠπειλήθη οὕτως τὸ Μπεΐλικ Κιοπροῦ καὶ ἡ παρὰ τὸ Καρὰ Ἐλιὰξ πηχθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ μηχανικοῦ ἐπὶ τοῦ Σαγγαρίου γέφυρα (29 Αὐγούστου 1921). Ἀλλ' ἐπενέβησαν τότε ἐγκαίρως πρῶτον μὲν ἡ 7η μεραρχία διὰ τοῦ 37ου συντάγματος, εἶτα δὲ καὶ τὸ Γ΄ σῶμα στρατοῦ (ὑποστράτηγος Πολυμενάκος) διὰ 4 ταγμάτων τῆς ἐν ἐφεδρείᾳ τηρουμένης 3ης μεραρχίας αὐτοῦ, διὰ τοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς 11ης μεραρχίας καὶ διὰ τοῦ βαρέος πυροβολικοῦ. Οὕτω δὲ συνεκρατήθη πᾶσα περαιτέρω προχώρησις πρὸς δυσμὰς τῶν Τούρκων καὶ ἐσώθη ἡ ὅλη στρατιὰ ἀπὸ τοῦ κινδύνου ν' ἀποκοπῶσιν αἱ συγκοινωνίαι μετὰ τῆς βάσεως αὐτῆς πρὸς δυσμάς. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπασσὰκ** (Bassac) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸν βασίλειον ἀνῆκον εἰς τὸ Σιὰμ καὶ τὴν γαλλικὴν Ἰνδοκίναν. Διὰ τῆς Γαλλοσιαμαίας συνθήκης τοῦ 1904 ὑπήχθη εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Καμπότζ, ἀποτελέσαν ἐπαρχίαν αὐτοῦ. Ὁ πληθυσμός του ὑπολογίζεται εἰς 76.000 κατ. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μέκονγκ, εἰς 15° Β. πλάτους, καὶ ἔχει 6000 περίπου κατ. Τὸ ὄνομα Μπασσὰκ φέρει ἐπίσης ὁ μεσημβρινὸς βραχίων τοῦ δέλτα τοῦ Μέκονγκ, πλάτους 2 χλμ., ὅστις καλεῖται καὶ *Χὸμ-Γκιάνγκ*. Χ. Δ.

**Μπασσανέλλο** (τὸ) ἰταλ. (basssanello). Πνευστὸν ξύλινον ὄργανον τῆς οἰκογενείας τῶν βαρυαύλων μετὰ διπλῆς γλωττίδος. Ἀπετέλει οἰκογένειαν ἐκ τριῶν ὀργάνων, διαφόρου μεγέθους: τοῦ ὀξέος, τοῦ μέσου καὶ τοῦ βαθέος. Σήμερον περιῆλθεν εἰς ἀχρηστίαν. Γ. Σ.

**Μπασσάνο** (Bassano) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Βικεντίας τοῦ Βένετο, παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Μπρέντα ποταμοῦ. Κάτ. 17.000. Περιβάλλεται ὑπὸ ἀρχαίων τειχῶν μὲ ἓξ πύλας καὶ δεσπόζεται ὑπὸ φρουρίου κτισθέντος ὑπὸ τοῦ Ἐγγελίνου τῆς Ρωμανίας, ἔχει δὲ μητρόπολιν μὲ ἐνδιαφέροντας πίνακας ζωγραφικῆς τῶν ζωγράφων τῆς οἰκογενείας ντὰ Πόντε καὶ ἀγάλματα, ἀνωτέραν σχολήν, μουσεῖον, βιβλιοθήκην μὲ 40.000 τόμους καὶ πολυάριθμα χειρόγραφα, θέατρον κτλ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ τὰ πρότυπα τῆς Ἀφροδίτης καὶ τῆς Ἥβης τοῦ Κανόβα. Ἔχει σημαντικὴν βιομηχανίαν μετάξης καὶ ἀλεύρων, παράγει δὲ ὀνομαστοὺς οἴνους, ἔλαιον, καπνὸν κτλ. Εἶναι πατρὶς τῶν ζωγράφων *ντὰ Πόντε*, οἵτινες ἕνεκα τούτου ἐπονομάζονται καὶ *Μπασσάνο*. Ἡ πόλις χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ Ι΄ αἰῶνος. Λόγῳ τῆς σημαντικῆς της γεωγραφικῆς θέσεως ἔλαβον χώραν ἐν αὐτῇ πολλαὶ μάχαι, πλεῖστοι δὲ στρατοὶ διεξεδίκησαν τὴν κυριαρχίαν της. Ὁ Ναπολέων τῇ 8 Σεπτεμβρίου 1796 ἐνίκησε παρ' αὐτὴν τοὺς Αὐστριακούς. Μ. Δ. Β.

**Μπασσάνο** (Bassano). Οἰκογένεια Ἰταλῶν ζωγράφων. λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ τόπου τῆς καταγωγῆς της. Σημαντικώτεροι ἐκπρόσωποι αὐτῆς ὑπῆρξαν οἱ ἀκόλουθοι:

— 1) ***Ἰάκωβος ντὰ Πόντε*** (1510—1592). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ πατρί του Φραγκίσκῳ, ἀπῆλθε

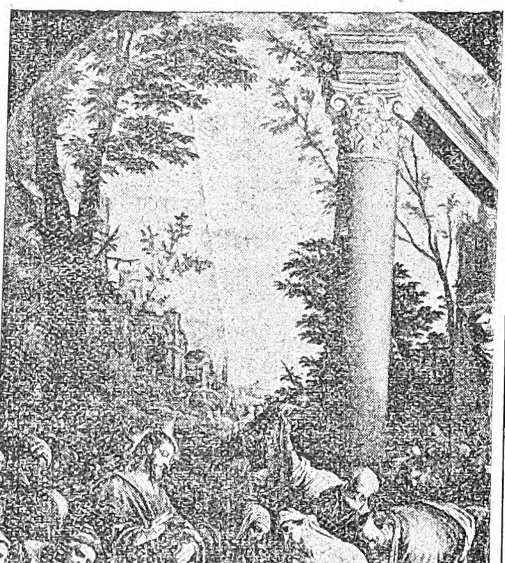

*Ἰακώβου Μπασσάνο: Ἡ ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου.*
[Ἀκαδημία Βενετίας.]

δὲ λίαν ἐνωρὶς εἰς Βενετίαν, ἔνθα ὑπέστη βαθέως τὴν ἐπίδρασιν τῆς τέχνης τοῦ Τισιανοῦ. Εἰργάσθη κατὰ τὸ πλεῖστον ἐπὶ θρησκευτικῶν θεμάτων, ἅτινα συνεπλήρου διὰ τοπίων, ἐν οἷς παρεισῆγε στοιχεῖα ζωηρῶς τοπικοῦ χαρακτῆρος. Ἀλλὰ καὶ τοπία μεμονωμένα καὶ ζῷα ἐξεικόνισεν ὁ Μπασσάνο. Ὑπῆρξε δεξιώτατος χρωματιστὴς καὶ ἐξαίρετος φωτιστής· ἡ τέχνη του εἶναι πλήρης γραφικοῦ ρεαλισμοῦ, μετασχηματίζοντος τὰ ἀκαμπτότερα τῶν βιβλικῶν θεμάτων εἰς ἐπεισόδια τοῦ καθ' ἡμέραν βίου. Ἐκ τῶν ἔργων τοῦ καλλιτέχνου τούτου ἀξιοσημείωτα εἶναι: «Ἡ εἴσοδος τῶν ζῴων εἰς τὴν κιβωτόν», «Τὸ κτύπημα τοῦ βράχου», «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων», «Ὁ ἐν Κανᾷ γάμος», «Ἡ ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου», «Ὁ Ἰησοῦς πορευόμενος εἰς τὸν Γολγοθᾶν», «Οἱ πορευόμενοι εἰς Ἐμμαοὺς μαθηταί», «Προσωπογραφία τοῦ Ἰωάννου ντὲ Μπουλόνι» (Μουσεῖον Λούβρου), «Ἡ παρθένος περιβαλλομένη ὑπὸ ἁγίων», «Ἡ φυγὴ εἰς Αἴγυπτον», «Ἡ γέννησις τοῦ Χριστοῦ», «Ὁ ἅγιος Μαρτῖνος ἔφιππος» (ἐν Μπασσάνο), «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ Ἰακώβ», «Τὸ κτύπημα τοῦ βράχου», «Ἡ εἴσοδος εἰς τὴν κιβωτόν», «Ὁ καλὸς κηπουρός», «Ὁ ἅγιος Ἐλευθέριος», «Ἡ θυσία τοῦ Νῶε» (ἐν Βενετίᾳ), «Ὁ ἅγιος Ρὼχ ἐπισκεπτόμενος τοὺς πανωλοβλήτους» (ἐν Βικεντίᾳ), «Τὸ ἅγιον πάθος» (διάζωμα εἰς 9 τμήματα διῃρημένον, ἐν Βρεσκίᾳ), «Ὁ ἐνταφιασμὸς τοῦ Χριστοῦ» (ἐν Παδούῃ), «Ἡ κιβωτὸς τοῦ Νῶε», «Ὁ ἐπίγειος παράδεισος», «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων», «Οἱ ἔμποροι ἐκδιωκόμενοι τοῦ ναοῦ» (ἐν Μαδρίτῃ). Πολυπληθῆ ἕτερα ἔργα τοῦ καλλιτέχνου τούτου εὑρίσκονται κατεσπαρμένα ἀνὰ τὰ μουσεῖα τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Εὐρώπης καθόλου.

— 2) ***Φραγκῖσκος***. Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1549—1592). Ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν Βενετίᾳ καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Τιντορέττο καὶ τοῦ Βερονέζε εἰς τὴν διακόσμησιν τοῦ δουκικοῦ παλατίου. Εἰς τὴν αἴθουσαν τοῦ μεγάλου συμβουλίου τοῦ παλατίου τούτου ὁ Φραγκῖσκος Μπασσάνο ἀπεικόνισε τὸν «Πάπαν δίδοντα ξίφος εἰς τὸν δόγην», τὴν «Νίκην τῶν Βενετῶν κατὰ τοῦ δουκὸς τῆς Φερράρας», «Τὸ βενετικὸν ἱππικὸν τρέπον εἰς φυγὴν τὸ στράτευμα τοῦ δουκὸς Βισκόντι», τὴν «Νίκην τοῦ Βίκτωρος Μπαρμπάρο κατὰ τοῦ Βισκόντι», τὴν «Νίκην τοῦ Κορνάρο κατὰ τῶν Γερμανῶν». Ἕτερα ἔργα τοῦ καλλιτέχνου τούτου εἶναι: «Ἰχθυαγορὰ παρὰ τὴν θάλασσαν» (Λοῦβρον), «Ὁ Χριστὸς φέρων τὸν σταυρόν», «Ὁ ἅγιος Ἰωάννης ἐν Πάτμῳ», «Οἱ ποιμένες» (Βενετία), «Ἡ ἀποκαθήλωσις» (ἐν Τουρίνῳ), «Ὁ Χριστὸς ἐπὶ τοῦ σταυροῦ» καὶ «Ὁ Χριστὸς ἐν τῷ τάφῳ» (Φλωρεντία), «Ὁ μυστικὸς δεῖπνος» καὶ «Ὁ ἐν Κανᾷ γάμος» (Μαδρίτη), «Ὁ ἀγαθὸς Σαμαρείτης» καὶ «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» (Βερολῖνον). Ὁ Φραγκῖσκος Μπασσάνο θὰ ἐδημιούργει ἀσφαλῶς εὐρύτερον καὶ πολὺ ἀξιολογώτερον ἔργον, ἂν δὲν κατείχετο ὑπὸ μανίας καταδιώξεως, ἥτις καὶ τὸν ὡδήγησεν εἰς οἰκτρότατον θάνατον.

— 3) ***Λέανδρος***. Υἱὸς καὶ οὗτος τοῦ Ἰακώβου (1558—1623). Συνειργάσθη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Φραγκίσκου εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῆς κολοσσικῆς ἀπεικονίσεως τοῦ «Πολλαπλασιασμοῦ τῶν πέντε ἄρτων», συνεπλήρωσε δ' ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ τῆς Βενετίας ἔργα τινὰ καταλειφθέντα ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του ἡμιτελῆ καὶ ἐξεπόνησεν ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ μεγάλου συμβουλίου τοῦ αὐτοῦ παλατίου σειρὰν προσωπογραφιῶν τῶν δογῶν τῆς Βενετίας. Ἕτερα, λίαν ἀξιομνημόνευτα, ἔργα τοῦ Λεάνδρου Μπασσάνο εἶναι: «Ὁ Ὀρφεύς», «Ἡ ἁρπαγὴ τῆς Εὐρώπης», «Ἡ φυγὴ εἰς Αἴγυπτον», «Ὁ ἀκάνθινος στέφανος», «Ἡ ἄποψις τῆς Βενετίας» (ἐν Μαδρίτῃ), «Ὁ Χριστὸς βαστάζων τὸν σταυρόν», «Ὁ Ἰησοῦς θεραπεύων τὸν ἐκ γενετῆς τυφλὸν» καὶ «Ἡ εἴσοδος τῶν ζῴων εἰς τὴν κιβωτὸν» (ἐν Δρέσδῃ).

—4) ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Ἕτερος υἱὸς τοῦ Ἰακώβου (1553—1613). Κατέγινε κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν ἐκπόνησιν ἀντιγράφων τῶν ἔργων τοῦ πατρός του. Οὐδεμίαν ἀπέκτησε φήμην.

—5) ***Ἱερώνυμος***. Τέταρτος υἱὸς τοῦ Ἰακώβου (1560—1622). Ἐμιμήθη κατὰ μέγα μέρος τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ ἀδελφοῦ του Λεάνδρου, διεκόσμησε δὲ διαφόρους ναοὺς ἐν Βενετίᾳ καὶ Μπασσάνο καὶ διεφημίσθη ὡς ἱκανὸς καλλιτέχνης. Ἐν Ἁγίῳ Ἰωάννῃ τοῦ Μπασσάνο ἀπόκειται τὸ ἀξιόλογον ἔργον του: «Ἡ ἁγία Βαρβάρα μεταξὺ δύο παρθένων ὑψοῦσα τοὺς ὀφθαλμοὺς πρὸς τὸν οὐρανόν, ἔνθα ἐμφανίζεται πρὸς αὐτὴν ἡ Θεοτόκος». Ι. Μ. Π.

— **Μπασσάνο** (Bassano). — 1) ***Ἀντώνιος***. Κατήγετο ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ χωρίου Τσερβιόνε τῆς νήσου Κορσικῆς καὶ ὑπηρέτει παρὰ τῷ Ἀλῇ πασᾷ Τεπελενλῇ. Ἐκραγέντος τοῦ Ἑλληνικοῦ Ἀγῶνος κατῆλθεν εἰς Ἑλλάδα καὶ διωρίσθη διοικητὴς στολίσκου ἔν τε τῷ Ἀμβρακικῷ καὶ Κορινθιακῷ κόλπῳ. Ἠχμαλωτίσθη ἐν Πρεβέζῃ, ἠλευθερώθη καὶ φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ πλοιάρχου ἀπέθανεν ἐν Ναυπλίῳ τῷ 1836. — 2) ***Πασχάλης***. Ἀδελφὸς τοῦ Ἀντωνίου, πολεμήσας ὑπὸ τὸν Φαβιέρον ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Χαϊδαρίου. Ἐφονεύθη τῇ 6 Μαΐου 1827 παρὰ τοὺς Τρεῖς Πύργους (Κωλιάδα). Τ. Ε. Ε.

**Μπασσαράμπας** (Basaraba). Ἡγεμονικὴ οἰκογένεια τῆς Βλαχίας (βλ. λ. *Βεσσαράβας*).

**Μπασσὲ** (Bassée) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Γαλλίας, κειμένη ἐν τῷ νομῷ τοῦ Βορρᾶ ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου διώρυγος, ἥτις συνδέει τὸν Λὺς μετὰ τοῦ Ντὲλ καὶ εἰς ἀπόστασιν 24 χλμ. ἀπὸ τῆς Λίλλης. Κάτ. 4.630. Ἔχει κλωστήρια βάμβακος, ξυλοποιεῖα, ἐργοστάσια ζαχαροπλαστικῆς κλπ. Περὶ αὐτὴν συνήφθησαν, διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, σκληραὶ μάχαι, ἰδίως δ' ἑκατέρωθεν τῆς διώρυγος. Σπουδαιότεραι ἐκ τῶν συγκρούσεων τούτων εἶναι ἡ τῆς 18—22 Ὀκτωβρίου 1914, τοῦ

Digitized by Google

Μαΐου 1915 καὶ τοῦ Ἀπριλίου καὶ Ἰουλίου 1918. Ἡ πόλις κατελήφθη ὁριστικῶς ὑπὸ τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων τὴν 3 Ὀκτωβρίου 1918. Χ. Δ.

**Μπασσὲ** (Baschet), ***Ἀνδρέας-Μάρκελλος.*** Σύγχρονος Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Gagny τῷ 1862. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Boulanger καὶ τῷ Lefebvre καὶ ἐτιμήθη τῷ 1883 διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης. Διέπρεψεν ὡς προσωπογράφος. Τῷ 1913 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του προσωπογραφιῶν τάσσονται αἱ τοῦ Φραγκ. Σαρσαί, τοῦ Ἀμβροσίου Τομά, τοῦ Λαβεντάν, τοῦ Γάστωνος Ντουμέργκ καὶ τοῦ στρατάρχου Φαγιόλ. Ι. Μ. Π.

—**Μπασσὲ** (Baschet), ***Ἀρμάνδος.*** Γάλλος λόγιος καὶ δημοσιογράφος (1829—1886). Ἐμελέτησεν ἐθνικῇ δαπάνῃ τὰ ἑνετικὰ ἀρχεῖα, χειρόγραφα παρισινὰ κ. ἄ. Ἔγραψεν «Ἀπομνημονεύματα μιᾶς ἀποστολῆς» (1858), «Οἱ πρίγκιπες τῆς Εὐρώπης κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα» (1862), «Ἄλδος Μανούτιος» (1867), «Τὰ ἑνετικὰ ἀρχεῖα» (1870), «Ἡμερολόγιον τοῦ Συμβουλίου τῶν Τριάκοντα» (1870), «Ὁ δοὺξ τοῦ Σαὶν-Σιμὸν» (1874), «Ἱστορία τοῦ ἀρχείου τῶν ἐξωτερικῶν ὑποθέσεων» (1875), κ. ἄ. —Π.

— **Μπασσὲ** (Basset), ***Ρενὲ-Μαρία-Ἰωσήφ.*** Γάλλος ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1855. Διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1880 τὴν ἀνωτέραν φιλολογικὴν σχολὴν τοῦ Ἀλγερίου, ὑπῆρξε κύριος διοργανωτὴς τοῦ ΙΔ' Διεθνοῦς Συνεδρίου τῶν Ἀνατολιστῶν καὶ ἔγραψεν: «Ἡ προϊσλαμικὴ ἀραβικὴ ποίησις» (1880), «Ἱστορία τῆς Αἰθιοπίας» (1882), «Λαϊκοὶ βερβερικοὶ θρῦλοι» (1887), «Τὰ αἰθιοπικὰ ἀπόκρυφα» (10 τόμ. 1900), «Μελέται ἐπὶ τῆς βερβερικῆς διαλέκτου» κ. ἄ., ἀφορῶντα ἰδίως τὴν Β. Ἀφρικήν. —Π.

—**Μπασσὲ** (Baschet), ***Ρενέ.*** Γάλλος δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1860. Υἱὸς τοῦ Λουδοβίκου Μπασσέ, διευθυντοῦ σημαντικοῦ καλλιτεχνικοῦ βιβλιοπωλείου, εἰργάσθη παρὰ τῷ πατρί του ἀπὸ τοῦ 1880 καὶ ἔλαβεν ἀλληλοδιαδόχως μέρος εἰς τὴν ἔκδοσιν τῶν περιοδικῶν «Paris Illustré» (1883), «Revue Illustrée», τὴν ὁποίαν διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1887 μέχρι τοῦ 1903, «Panorama», ὅπερ εἰσήγαγεν ἐκ τῶν πρώτων μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας τὴν διὰ φωτογραφιῶν εἰκονογράφησιν (1895), «Portofolio d'Art» κλπ. Τῷ 1901 ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ Ἀδόλφου Μπρισσὸν ὡς διευθυντὴς τῶν «Annales politiques et littéraires» καὶ τῷ 1904, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λ. Μάρκ, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς «Illustration». Εἶναι μέλος τοῦ συνδικάτου τοῦ παρισινοῦ τύπου καὶ ἐχρημάτισε πρόεδρος τοῦ συνδικάτου τοῦ περιοδικοῦ τύπου. Μ. Δ. Β.

**Μπασσὲνζ** (Bassenge), ***Ἰωάννης-Νικόλαος.*** Βέλγος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1758—1811). Ἠσχολήθη ἀρχικῶς μὲ τὴν ποίησιν, διωχθεὶς δὲ ὑπὸ τοῦ κλήρου, ὡς συγγραφεὺς ἀσέμνων στίχων, ἐπροστατεύθη ὑπὸ τοῦ φιλολογοῦντος ἐπισκόπου-πρίγκιπος τοῦ Βέλμπρουκ. Ἐκπατρισθείς, ἵδρυσεν εἰς Παρισίους πατριωτικὴν ἑταιρείαν κατὰ τῆς ἐπισκοπικῆς κυβερνήσεως τῆς Λιέγης, μετὰ τὴν ἀνατροπὴν τῆς ὁποίας μετέσχε τῆς διοικήσεως. Μετὰ τὴν παλινόρθωσιν τοῦ ἐπισκοπικοῦ θρόνου ἐξηφανίσθη μέχρι τοῦ 1792, ὅτε ἐτάχθη ὑπὲρ τῆς γαλλικῆς προσαρτήσεως, γενόμενος ὑποδιοικητὴς τῆς Λιέγης, μέλος τοῦ συμβουλίου τῶν Ἑκατὸν Πεντήκοντα καὶ τοῦ νομοθετικοῦ σώματος, ἐξ οὗ ἀπεβλήθη ὑπὸ τοῦ Βοναπάρτου ὡς φίλα φρονῶν πρὸς τὸ κίνημα τῆς 18ης Ὁμιχλώδους. Τὰ ποιητικά του ἅπαντα ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Destriveau («Loisirs de trois amis», 1822). —Π.

**Μπασσέττι** (Bassetti). Ἰταλὸς φιλέλλην ἐκ Πάρμας, λαβὼν μέρος εἰς πλείστας μάχας ὑπὸ τὸν Παπαφλέσσαν καὶ φονευθεὶς ἐν τῇ παρὰ τὸ Παιδεμένον μάχῃ τῷ 1825. Τ. Ε. Ε.

**Μπασσὴν** (Bassein) *[Γεωγρ.].* Πόλις καὶ λιμὴν τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, εἰς τὸ νότιον ἄκρον ὁμωνύμου νησῖδος, 67 χλμ. πρὸς Β. τῆς πόλεως Βομβάης. Εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν ἡ πόλις αὕτη ἠρίθμει πληθυσμὸν 70.000 κατ. καὶ ἦτο ἐκ τῶν κυριωτέρων κέντρων ἐμπορίου ὀρύζης. Καταληφθεῖσα τῷ 1534 ὑπὸ τῶν Πορτογάλων, περιῆλθε τῷ 1765 εἰς τοὺς Μαχράττας καὶ μετὰ πέντε ἔτη ὑπὸ τὴν ἀγγλικὴν κυριαρχίαν. Διατηρεῖ ἀκόμη πλείστους ναοὺς καὶ ὀχυρώσεις. Κάτ. 9.598, ὧν τὰ $^2/_3$ Ἰνδοί, οἱ δὲ λοιποὶ Χριστιανοί.

— **Μπασσήν**, ἢ ***Μπασσίμ*** (Bassein ἢ Bassim) *[Γεωγρ.].* Πόλις καὶ ποτάμιος λιμὴν τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας τῆς Κάτω Βιρμανίας, κειμένη ἐπὶ ὁμωνύμου ποταμοῦ, 95 χλμ. περίπου πρὸ τῆς εἰς τὴν θάλασσαν ἐκβολῆς. Εἶναι σπουδαῖον στρατιωτικὸν καὶ ἐμπορικὸν κέντρον καὶ ἐξάγει μεγάλας ποσότητας ὀρύζης. Ἱδρύθη τῷ 1250, τῷ δὲ 1852 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων. Κάτ. 37.081. Ἡ ἐπαρχία ἔχει ἔκτασιν 10.500 περίπου τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 440.988 κατ., τῶν ὁποίων τὸ μεγαλύτερον μέρος εἶναι Βιρμανοὶ βουδισταί. Χ. Δ.

**Μπάσσι** (Bassi), ***Αὐγουστῖνος.*** Διάσημος Ἰταλὸς φυσιοδίφης καὶ βιολόγος (1775—1856). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Παβίας, κατόπιν δὲ ἠσχολήθη εἰς μελέτας φυσικάς, φυσιολογικὰς καὶ ἰατρικὰς καὶ ἐδημοσίευσε διάφορα ὑπομνήματα ἀνατυπωθέντα ὑπὸ ἐπιτροπῆς τῆς ἰατροχειρουργικῆς ἑταιρείας τῆς Παβίας τῷ 1925. Ἀποτέλεσμα τῶν ἐρευνῶν του ὑπῆρξε καὶ ἡ ὑπ' αὐτοῦ γενομένη κλασσικὴ περιγραφὴ νόσου καταστρεπτικῆς τῶν μεταξοσκωλήκων ὑπὸ τὸ ὄνομα calinatio ἢ moscardino, ὀφειλομένης εἰς εἰδικὸν μύκητα (Botrytis Bassiana). Τοῦ μύκητος τούτου τὰ σπέρματα εὕρηνται διάχυτα ἐν τῷ ἀέρι, αὐξανόμενα καὶ πολλαπλασιαζόμενα, καὶ διαβιοῦσι παρασιτικῶς ἐντὸς τῶν μεταξοσκωλήκων, οἵτινες μεταδίδουσι ταῦτα καὶ εἰς τοὺς λοιποὺς ὑγιεῖς μεταξοσκώληκας. Τῷ 1851 ἐξήνεγκε τὴν παρασιτικὴν θεωρίαν, καθ' ἣν «πᾶσαι αἱ μολυσματικαὶ νόσοι ζῴων καὶ φυτῶν, μηδὲ καὶ τοῦ ἀνθρώπου ἐξαιρουμένου, προέρχονται ἐκ παρασίτων». Ἡ διὰ πρώτην φορὰν διατυπωθεῖσα θεωρία αὕτη, ἥτις ὑπῆρξε πρόδρομος τῶν νῦν ἐν χρήσει νέων μεθόδων τῆς παρασιτολογίας καὶ βακτηριδιολογίας, παρέμεινεν ἄγνωστος ἐπὶ ἱκανὸν χρόνον. Ο. Ρ.

— **Μπάσσι** (Bassi), ***Ματθαῖος·*** βλ. λ. *Μπάσκι.*

**Μπασσίνι** (Bassini), ***Ἐδουάρδος.*** Διαπρεπὴς Ἰταλὸς χειρουργὸς (1846—1924). Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς διάφορα νοσοκομεῖα, τῷ δὲ 1882 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς παθολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Παδούης καὶ τῷ 1888 τῆς χειρουργικῆς κλινικῆς. Τῷ 1904 ἐξελέγη γερουσιαστής.

Ἐκ τῶν λαμπρῶν χειρουργῶν καὶ δεξιῶν ἐγχειρητῶν τῆς Ἰταλίας, εἰσήγαγε πλείστας ἐγχειρητικὰς μεθόδους εἰς τὰς ἐγχειρήσεις τῆς νεφροπηξίας (1882), τῆς αἱματηρᾶς θεραπείας τοῦ συγγενοῦς κατ' ἰσχίον ἐξαρθρήματος, τῶν ρινοφαρυγγικῶν πολυπόδων (1887), τῆς κοιλιακῆς ὑστερεκτομίας (1889), τῆς εἰλεοκολοστομίας (1889), τῆς μηροκήλης (1893) κ. ἄ. Ἰδίως ὅμως ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῆς ριζικῆς ἐγχειρήσεως τῆς βουβωνοκήλης, δι' ἣν εἰσήγαγεν ἰδίαν μέθοδον (1890), σκοποῦσαν τὴν δι' εὐρείας διανοίξεως τοῦ βουβωνικοῦ πόρου τελείαν διὰ συνεχοῦς ραφῆς ἀποκατάστασιν τοῦ ὀπισθίου καὶ προσθίου τοιχώματος τούτου. Ο. Ρ.

**Μπασσ'λὲν** (Basselin), ***Ὀλιβιέ.*** Γάλλος τραγουδιστὴς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἐκ Βίρ, μεθ' οὗ συνδέεται ἡ προέλευσις τοῦ ὅρου «Βωδεβίλ» ἐκ τῆς λέξεως *Βὼ-ντὲ-Βίρ.* Νέος, ἦτο στρατιώτης ἢ ναυτικός, εἶτα ἰδιοκτήτης γραφείου, θεωρεῖται δὲ ὑπ' ἄλλων ἀγράμματος καὶ ὑπ' ἄλλων βαθὺς γνώστης καὶ τῆς λατινικῆς. Τὰ πρῶτά του ποιήματα, τὰ περίφημα «Vaudéries», εὐθύμου χαρακτῆρος, ἅτινα ἐξήγειρον τὴν ἀντίδρασιν τοῦ κλήρου, στρέφονται περὶ τοὺς πότους καὶ τὸν ἔρωτα, φέρονται δὲ ὡς συντασσόμενα ὑπὸ προσχάρου συντροφίας, τῶν «Compagnons virois», ὧν ἀρχηγὸς ἦτο ὁ Μπασσ'λέν. Ὑπάρχουν ἄπειροι ἐκδόσεις αὐτῶν (1811, 1821, 1833, 1858 κ.ἄ.), πλεῖστα ὅμως θεωροῦνται μὴ αὐθεντικά, ἐν οἷς τὰ «Vaux de Vire nouveaux» συνταχθέντα ὑπὸ τοῦ J. Le Houx. —Ω.

**μπάσσο γάπια** (ἡ) *[Ναυτ.].* Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸν κατώτερον, τὸν καὶ σταθερόν, *δόλωνα* (*δολωνίδα* ἢ *δολώνιον*). Δεδομένου ὅτι τὸ ἱστίον τοῦτο ἐκπετάννυται κατὰ τὴν ἄπαρσιν διὰ νὰ πτυχθῇ κατὰ τὴν ἀγκυροβολίαν, φέρει καὶ ὑπὸ τὰς σκληροτέρας καταιγίδας ἀποτελεῖ ἄριστον ἱστίον ἀντιμονῆς, οἱ πόδες του δὲν εἶναι σχοίνινοι, ὡς οἱ τῶν ἁπλῶν δολώνων, ἀλλ' ἐξ ἁλύσεως. Ἰσοδυναμεῖ δὲ ἡ ἐπιφάνειά του πρὸς τὴν τῶν ἁπλῶν δολώνων, σειροδετημένων ὁλοσείρως. Σ. Ε. Λ.

**μπάσσο μοῦδα** (ἡ) *[Ναυτ.].* Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων ἱστίον ὁλοσείρως σειροδετημένον. Σ. Ε. Λ.

**Μπασσομπιὲρ** (Bassompierre), ***οἶκος τοῦ —.*** Ἀρχαιότατος λωρραινικὸς οἶκος, συγγενὴς τῶν Κλέβε γνωστὸς ἰδίως ἀπὸ τοὺς πολέμους τῶν δουκῶν τῆς Βουργουνδίας πρὸς τοὺς Γάλλους βασιλεῖς. Εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῶν πρώτων καὶ τῶν δουκῶν τῆς Λωρραίνης, κατώρθωσαν οἱ Μπασσομπιὲρ νὰ ἀνέλθουν εἰς ὕψιστα ἀξιώματα ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Νανσύ. Ἐξ αὐτῶν ὡς σπουδαιότεροι ἀναφέρονται: ὁ *Χριστόφορος*, ὅστις κατεῖχε μεγίστας ἐκτάσεις ἐν Νορμανδίᾳ ἐξ ἀμοιβῶν τῶν πολεμικῶν του ὑπηρεσιῶν, καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Φραγκῖσκος* (βλ. κατωτ.).

—**Μπασσομπιὲρ** (Bassompierre), ***Φραγκῖσκος ντὲ—.*** Γάλλος βαρῶνος, αὐλικὸς καὶ στρατάρχης (1575—1646). Ἐσπούδασεν ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἰταλίᾳ καὶ εἰσήχθη εἰς τὴν αὐλὴν τῷ 1598, ὅπου νεώτατος ὢν ἔσχε περιφήμους κατακτήσεις. Ἐκ τῆς ἀδελφῆς τῆς βασιλικῆς ἐρωμένης Καρλόττας - Μαρίας ντὲ Μπαλσὰκ ντ' Ἀντράγκ ἀπέκτησε νόθον υἱόν, ὀλίγον δ' ἔλειψε νὰ νυμφευθῇ τὴν κατόπιν πριγκίπισσαν τοῦ Κοντὲ Μαρίαν ντὲ Μονμορανσύ, ἣν κατέλιπεν ἐπεμβάσει τοῦ βασιλέως. Ὅτε βραδύτερον ἐδιώκετο, ἔκαυσεν ἐξ χιλιάδας ἐρωτικὰς ἐπιστολὰς διασήμων γυναικῶν τῆς αὐλῆς. Εἰς τὴν τοιαύτην εὐρύτητα τῶν ἐπιτυχιῶν του συνέτεινεν ἡ μεγάλη οἰκειότης του μὲ τὸν Ἑρρῖκον Δ' καὶ Λουδοβῖκον ΙΓ', κοινωνοὺς τῶν ἐρωτικῶν του ἐπιχειρήσεων. Ἐχρημάτισε βασιλικὸς ἀπεσταλμένος παρὰ τῷ δουκὶ τῆς Λωρραίνης κατὰ τὸ ἀποτυχὸν συνοικέσιον τῆς θυγατρὸς τούτου μετὰ τοῦ δελφίνου. Μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Σαβοΐας (1600) καὶ τῆς Οὑγγαρίας (1603), κατὰ τὴν στάσιν δὲ τῶν εὐγενῶν ἐτέθη εἰς τὴν διάθεσιν τῆς ἀντιβασιλείας (1614), ὁπότε καὶ ἠγόρασεν ἀπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Ροάνης τὸ ἀξίωμα τοῦ διοικητοῦ τῆς φρουρᾶς τῶν Ἑλβετῶν. Μετέσχεν ἐπίσης τῆς πολιορκίας τοῦ Σατὼ-Πορσιὲν (1617) καὶ τῷ 1621 ὑπέγραψε τὴν συνθήκην τῆς Μαδρίτης, ὅπου ἀπεστάλη ὡς ἔκτακτος πρέσβυς. Ἐπιστρέψας μετέσχεν ὡς στρατηγὸς εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Μοντωμπὰν καὶ εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίνου, Λυνέλ, Μονπελλιὲ κ. ἄ., καθ' ἃς ἔλαβε τὴν στραταρχικὴν ῥάβδον (1622). Τῷ 1625 ἀπεστάλη ἔκτακτος πρέσβυς εἰς Ἑλβετίαν, ὁπόθεν ἀπεχώρησε (1626), λόγῳ ἀντιζηλιῶν μὲ τὸν μαρκήσιον τοῦ Κέβρ, ἀποσταλεὶς ἀμέσως εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου διεχειρίσθη τὸ ζήτημα τῆς ἀποκαταστάσεως τῶν Γάλλων κληρικῶν. Ἀκολούθως ἐπολέμησεν εἰς τὴν πολιορκίαν τῆς Ροσέλλης (1627—1628), εἰς τὸ Πὰ-ντὲ-Σὺζ (1629), τὴν πολιορκίαν τοῦ Πριβά, τὴν ἐκστρατείαν τῆς Λαγγεντὸκ καὶ τελευταίως τὴν ἐν Σαβοΐᾳ. Τῷ 1631 συλληφθεὶς εἰς Σανλὶ ἐνεκλείσθη εἰς τὴν Βαστίλλην, ὁπόθεν ἐξῆλθε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ρισελιὲ (1643). Ἰδιωτεύσας ἔκτοτε ἀπέθανε καταβεβλημένος καὶ κατέλιπε δύο υἱούς, τὸν Λουδοβῖκον ἐκ τῆς Καρλόττας-Μαρίας καὶ τὸν Φραγκῖσκον ντὲ Τοὺρ ἐκ μυστικοῦ γάμου του μετὰ τῆς πριγκιπίσσης Κοντί. Ἔγραψεν «Ἀπομνημονεύματα» περίφημα διὰ τὰς διπλωματικάς, στρατιωτικὰς καὶ ἄλλας ἐν αὐτοῖς πληροφορίας (α' ἔκδ. 1665, αὐθεντ. ἔκδ. ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἱστορ. Ἑταιρείας τῷ 1877), ἀτελῆ ἀφήγησιν τῶν ἀποστολῶν του (ἔκδ. Κολωνίας 1668) καὶ ἄλλας ἀνεκδότους ἐκθέσεις. Αἱ εἰς αὐτὸν ἀποδιδόμεναι «Παρατηρήσεις» ἐπὶ τῆς ζωῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ' ἀπεδείχθησαν νόθοι. —Π.

*Φραγκῖσκος Μπασσομπιέρ.*

**Μπασσουὰν** (Bassouan) *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ὅρμος τῆς Κυρηναϊκῆς, ταυτιζόμενος πρὸς τὸν ὅρμον *Διάχερσις* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων.

**Μπασσὼ** (Bassot), ***Ἰωάννης-Ἀντωνῖνος-Λέων.*** Γάλλος στρατηγός, γεωγράφος καὶ ἀστρονόμος (1841—1917). Ἐσπούδασεν εἰς πολυτεχνικὴν σχολὴν (1861) καὶ ἐγένετο λοχαγὸς (1870) καὶ ἐπιτελὴς τοῦ Δ' σώματος, ἀπὸ δὲ τοῦ 1871 ἐπεδόθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὰς ἐργασίας τῆς γεωδαιτικῆς ὑπηρεσίας. Διηύθυνε τὰς τριγωνομετρήσεις τῶν πλείστων σημείων τοῦ μεσημβρινοῦ τῶν Παρισίων, μετέσχε τῶν τριγωνομετρικῶν ἐργασιῶν τοῦ Μαρόκκου (1879), ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν (1893) καὶ διευθυντὴς τῆς γεωγραφικῆς ὑπηρεσίας τοῦ Στρατοῦ (1899). Καθ' ὅλον τὸ διάστημα τοῦτο ἐμελέτησε τὴν ἀστρονομίαν, μετέσχε δὲ τῆς ἀποστολῆς εἰς Φλωρίδα πρὸς παρατήρησιν τῆς διελεύσεως τῆς Ἀφροδίτης πρὸ τοῦ ἡλίου (1882) καὶ ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ Ἀστεροσκοπείου τῆς Νικαίας (1904). Στρατηγὸς ἐγένετο τῷ 1899 καὶ πρόεδρος τῆς Διεθνοῦς Γεωδαιτικῆς ἑταιρείας τῷ 1903. Ἔγραψε διαφόρους γεωδαιτικὰς καὶ ἀστρονομικὰς πραγματείας δημοσιευθείσας ἰδίᾳ εἰς τὸ «Annuaire du Bureau des longitudes». —Π.

**Μπάστα** *[Γεωγρ.].* —1) Χωρίον τῆς κοινότητος *Ρετούνης* τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 224.

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας (κοινότης Χελιδονίου) χωρίου *Κρυονέρι* (βλ. λ.).

—3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Πλατὺ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**μπάσταινα** (ἡ). Κληρονομικὴ νομὴ ἀγροκτήματος ἐπὶ μορτῇ, ἤτοι δικαίωμα τοῦ κολλήγου νὰ καλλιεργῇ ἐπ' ἄπειρον ὡρισμένην ἔκτασιν γῆς ἔναντι καταβολῆς τοῦ κατ' ἔθιμον γεωμόρου, χωρὶς νὰ ἔχῃ δικαίωμα ὁ ἰδιοκτήτης νὰ ἀποβάλῃ αὐτὸν ἢ νὰ κανονίζῃ κατὰ βούλησιν τὴν κατανομὴν τῶν κλήρων. Τοὐναντίον, μάλιστα, ὁ κολλήγος, μπασταινοῦχος καλούμενος, ἔχει κληρονομικὸν δικαίωμα ἐπὶ τοῦ κλήρου του, δυνάμενος νὰ μεταβιβάζῃ τοῦτο καὶ εἰς τρίτους. Ἡ μπάσταινα ἐπεκράτει καὶ ἀπαντᾶται ἀκόμη ἐν Ἠπείρῳ, ὡς καὶ εἰς τινα μέρη τῆς Μακεδονίας. Ἴσως νὰ ἐφηρμόζετο ἄλλοτε καὶ ἐν Θεσσαλίᾳ, ἐκφυλισθεῖσα κα-

Digitized by Google

τόπιν εἰς τὴν κοινὴν μαρτιτικὴν σχέσιν διὰ τῆς βιαίας δυνάμεως τῶν τσιφλικούχων.

Δ. Χ. ΜΑΡΓΕΤΗΣ

**μπάστακας** (ὁ), ἡ *μπαστάκας*· ὀγκώδης λίθος χρησιμοποιούμενος εἰς τὸ παίγνιον τῆς «ἀμάδας» πρὸς σήμανσιν τῆς θέσεως, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἕκαστος τῶν παικτῶν ρίπτει τὴν ἀμάδαν του· || ἀνάλογον ἐκ λίθου ὁρόσημον εἰς ἄλλα παιδικὰ παίγνια· || μεταφ., ὁ παραμένων ἀκίνητος εἴς τινα θέσιν ἐν μακρᾷ ἀναμονῇ: «κάθομαι μιὰ ὥρα μπαστάκας 'ς τὴν πόρτα σου»· || ἀντὶ *μάστακας*, κοινῆς ὀνομασίας τῆς ἀκρίδος.

**Μπάσταν**, ἡ **Μπάθταν** (Bastan, ἡ Baztan) *[Γεωγρ.]*: Ὡραία κοιλὰς τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς *Ναβάρρας*, διαρρεομένη ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Μπιντασσόα. Περικλείει 14 χωρία οἰκούμενα ὑπὸ 8.500 περίπου κατ., τρέφει ὀνομαστῆς γενεᾶς μεγάλα κτήνη καὶ παράγει ἐκλεκτὰς ὀπώρας, κάστανα καὶ ὀλίγα σιτηρά. Χ. Δ.

**μπαστανάκλα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία εἴδους τινὸς τοῦ φυτοῦ *δαῦκος* (Daucus carota).

**Μπαστὰρ** (Fastar) *[Γεωγρ.]*. Ὑποτελὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, κείμενον εἰς τὴν ΝΑ. γωνίαν τῶν Κεντρικῶν ἐπαρχιῶν. Εἶναι τὸ μεγαλύτερον κράτος τῶν Κεντρικῶν Ἰνδιῶν, ἔχον ἐπιφάνειαν 33.800 τ. χλμ. καὶ 464.407 κατ. Πρωτεύουσα αὐτοῦ εἶναι ἡ *Τζαγκνταλπούρ*, ἕδρα δὲ τοῦ Ἄγγλου πολιτικοῦ πράκτορος ἡ *Ραΐπουρ*. Οἱ κάτοικοι ἀνήκουν εἰς τὴν φυλὴν Γκόντ, τμήματα τῆς ὁποίας παραμένουν εἰσέτι εἰς ἡμιαγρίαν κατάστασιν. Τὸ κεντρικὸν μέρος τῆς χώρας εἶναι ὀρεινὸν καὶ δασῶδες καὶ παράγει μέταξαν, ὄρυζαν, ρητίνην, ξυλείαν, δέρματα, γόμαν, μέλι κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπαστάρδα θάλασσα** *[Γεωγρ.]*. Οὕτω καλεῖται λίμνη ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, σχηματισθεῖσα δι' ἀποφράξεως τοῦ στομίου τοῦ Λατμικοῦ κόλπου ὑπὸ τοῦ Μαιάνδρου. Οἱ Τοῦρκοι καλοῦσιν αὐτὴν *Βαφαγκιὸλ* καὶ *Ἀκὶρ-τσάϊ-γκιόλ*. Ἔχει μῆκος 18 χλμ. καὶ πλάτος 5 χλμ. Τὸ ὕδωρ της εἶναι ἁλμυρόν, οἱ δὲ ἐν αὐτῇ ἰχθύες θαλάσσιοι.

**μπασταρδεύω**· δημοτ., χάνω τὴν γνησιότητά μου, ἀλλοιοῦμαι: «τὸ ρωσικὸ σιτάρι 'ς τὸν τόπο μας μπασταρδεύει».

**μπαστάρδικος**, —η, —ο· δημοτ., ὁ ἐκ νοθείας προερχόμενος, ὁ μὴ γνήσιος· || συνήθ. τὸ οὐδ. *μπαστάρδικο*· τὸ μὴ γνήσιον τέκνον, τὸ ἐκ κλεψιγαμίας προερχόμενον, ἄλλως *μούλικο*: «γέμισε ὁ κόσμος μπαστάρδικα».

**Μπασταρδοβουνί**, ἡ **Μπάσταρδον** *[Γεωγρ.]*. Χαμηλὸν ὄρος τῆς βορ. Εὐβοίας, ὑψούμενον ΒΔ. τῆς Αἰδηψοῦ καὶ κατὰ τὸν ἰσθμὸν ὅστις συνδέει τὴν χερσόνησον Κήναιον (Λιθάδα) μετὰ τῆς λοιπῆς Εὐβοίας. Ἡ ὑψίστη αὐτοῦ κορυφή, ὁ *Κορακόλιθος*, ἔχει ὕψος 327 μ. Ι. Σ. Σ.

**μπάσταρδος** (ὁ), θηλ. —*άρδα*, οὐδ. —*άρδικο*· δημοτ., ὁ ἐκ κλεψιγαμίας, ὁ νόθος, ἄλλως *μοῦλος* (ἐκ τοῦ ἰταλ. bastardo).

**Μπάστας** (ἢ **Βάστας**), **Ἀντώνιος**. Ἰατρὸς ἐκ Κύθνου, γεννηθεὶς τῷ 1830. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῷ 1854, συνεπλήρωσε δὲ τὰς ἐπιστημονικάς του σπουδὰς ὡς ὑπότροφος τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως ἐν Παρισίοις. Ἐπανελθὼν κατετάχθη εἰς τὴν ὑγειονομικὴν ὑπηρεσίαν τοῦ στρατοῦ καὶ τῷ 1863 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἐγχειρητικῆς. Ἀπαλλαγεὶς μετὰ δεκαήμερον τῆς ὑπηρεσίας, ἀνα-διωρίσθη αὖθις κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1864. Ἀπεβίωσεν ὅμως τὸ ἐπιὸν ἔτος 1865 χωρὶς νὰ διδάξῃ. Δ. Α. Δ.

**Μπαστάτικα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος *Λευκίμμης* (Ἁγίου Θεοδώρου) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κερκύρας. Κάτ. (1928) 103. Χ. Δ.

**μπαστέκα** (ἡ)· βλ. λ. *ἔντροχον*.

**Μπὰς-Τὲρ** (Basse-Terre) *[Γεωγρ.]*. —1) Πρωτεύουσα τῆς γαλλικῆς νήσου τῶν μικρῶν Ἀντιλλῶν *Γουαδελούπης*, κειμένη εἰς τὸ ΝΔ. ἄκρον τοῦ δυτικοῦ τμήματος τῆς διδύμου ταύτης νήσου καὶ ἔχουσα μικρὸν λιμένα. Εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει κατ. 8.656.

— 2) Πρωτεύουσα τῆς βρεττανικῆς νήσου *Ἅγιος Χριστόφορος* τῶν μικρῶν προσηνέμων Ἀντιλλῶν, κειμένη ἐπὶ τῆς Δ. παραλίας αὐτῆς. Ἔχει καλὸν λιμένα καὶ ὡραῖον βοτανικὸν κῆπον, ἐμπόριον ζαχάρεως, ρουμίου, βάμβακος κλπ. Κάτ. 8.159. Χ. Δ.

**Μπάστι** (Basti) *[Γεωγ.]*. Πόλις καὶ ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐκ *Γκορακπούρ* τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τοῦ Κουάνα, παραποτάμου τοῦ Γκόγκρα, 64 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Δ. τοῦ Γκοραπούρ, ἐν τῷ μέσῳ ἑλώδους ἀλλ' εὐφορωτάτης πεδιάδος, τῆς ὁποίας ἡ καλλιέργεια ἀγνοοῦνται ὁλονὲν ἀρτιώτερον. Ἀποτελεῖ κέντρον ζωηροῦ ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου ὀρύζης, ζαχάρεως καὶ ἄλλων προϊόντων τῆς ἐπαρχίας, τὰ ὁποῖα διοχετεύονται ἐκεῖθεν πρὸς τὸ Νεπάλ. Κάτ. 11.447, ἐξ ὧν τὰ ²/₃ Ἰνδοί, οἱ δὲ λοιποὶ Μουσουλμᾶνοι. Ἡ ἐπαρχία ἔχει ἔκτασιν 7.250 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν (1830), 421 κατ., ἐξ ὧν τὰ ⁵/₆ Ἰνδοί. Χ. Δ.

**Μπαστία** (Bastia) *[Γεωγρ.]*. Παράλιος πόλις τῆς Κορσικῆς κατὰ τὴν ἀπόληξιν τοῦ ἀκρωτηρίου Κάπο Κόρσο (9° 26' Ἀν. μηκ., 42° 42' βόρ. πλάτ.), κατέναντι τοῦ Λιβόρνου, ἀφ' οὗ ἀπέχει περὶ τὰς 4 ὥρας διὰ θαλάσσης. Κάτ. 33.094. Χάρις εἰς τὴν θέσιν της εἶναι τὸ οἰκονομικὸν κέντρον τῆς νήσου, ἔχουσα βιομηχανίαν καπνοῦ, σάπωνος, ταννίνης, ἐξειργασμένων δερμάτων, ζαχαροπλαστικῆς, ζυμαρικῶν καὶ χυτήρια. Εἶναι ἕδρα ἐφετείου καὶ στρατιωτικῆς διοικήσεως τῆς νήσου, συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Αἰακείου (150 χλμ.) καὶ θαλασσίως μετὰ τῆς Μασσαλίας, Νικαίας καὶ Λιβόρνου. Ἡ παλαιὰ πόλις εἶναι ἐκτισμένη ἀμφιθεατρικῶς ἐπὶ ὑψώματος ἐν μέσῳ πυκνῶν κήπων, ἡ δὲ νέα ἐκτείνεται περὶ τὸν λιμένα καὶ ἔχει εὐρυτάτας ὁδοὺς μὲ ἀξιολόγους ἀρχαιότητας τῆς νήσου κ. ἄ.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ *Μπάστια* ἀπετέλει ἀρχικῶς ναυτικὸν συνοικισμὸν καλούμενον *Μαρία ντὶ Κάρντο*. Τοῦτον τῷ 1383 ὠχύρωσαν οἱ Γενοβέζοι διὰ πύργου (ἰταλ. Bastia), πέριξ τοῦ ὁποίου ἐκτίσθη πλῆθος οἰκίσκων, οἵτινες τῷ 1453 ἀπετέλεσαν τὴν ἕδραν τῶν γενοατικῶν ἀρχῶν τῆς νήσου. Τῷ 1521 ἐκτίσθη ἡ ἀκρόπολις καὶ τῷ 1617 ἡ πόλις διεχωρίσθη εἰς δύο κοινότητας, τὰς κατόπιν συνοικίας *Τέρρα Νουόβα* καὶ *Βέκκια*. Τῷ 1745 κατελήφθη διὰ βομβαρδισμοῦ ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ τοῦ βασιλέως τῆς Σαρδηνίας, Δομινίκου Ριβαρόλα, βοηθουμένου ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Κοῦπερ, ἀλλ' ἀπεδόθη εἰς τὴν Γένουαν τὸ ἑπόμενον ἔτος. Τῷ 1764 κατέλαβεν αὐτὴν ὁ Γάλλος στρατηγὸς Μαρμπέφ. Τῷ 1793—1796 διῴκειτο ὑπὸ ἰθαγενοῦς ἀγγλοκορσικανῆς κυβερνήσεως, ἔκτοτε δὲ περιῆλθεν ὁριστικῶς εἰς τὴν Γαλλίαν. Ὁ θυρεὸς τῆς Μπάστιας εἰκονίζει πολύπλευρον πύργον μετ' ἐπάλξεων, φέρει δὲ τὴν ρῆσιν «nihil difficile» (οὐδὲν τὸ δύσκολον). Π. Ν. Π.

**Μπαστιὰ** (Bastiat), **Φρειδερῖκος**. Γάλλος οἰκονομολόγος (1801—1850). Ἐκληρονόμησε μεγάλην ἀγροτικὴν περιουσίαν, ἀλλ' ἀποτυχὼν εἰς τὰς προσπαθείας του πρὸς αὐτοπρόσωπον αὐτῆς ἐκμετάλλευσιν εἰσῆλθεν εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν. Ἀσχοληθεὶς εἰς οἰκονομικὰς μελέτας, ἠκολούθησε τὴν φιλελευθέραν σχολήν, γενόμενος τὸ πρῶτον γνωστὸς διὰ τοῦ ὑπὸ τὸν τίτλον «De l'influence des tarifs français et anglais sur l'avenir des deux peuples» ἄρθρου του, δημοσιευθέντος εἰς τὴν «Journal des Économistes» (1843). Συνεδέθη μετὰ τοῦ Κόμπντεν καὶ ὑπεστήριξε μετὰ πολλοῦ ζήλου τὴν ὑπὲρ τῆς καταργήσεως τῶν εἰσαγωγικῶν δασμῶν καὶ τῆς ἐλευθερίας τοῦ ἐμπορίου κίνησιν, ἐν Μπορντὼ κατ' ἀρχὰς καὶ κατόπιν ἐν Παρισίοις. Ἐξελέγη δὲ καὶ πληρεξούσιος εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν τοῦ 1848.

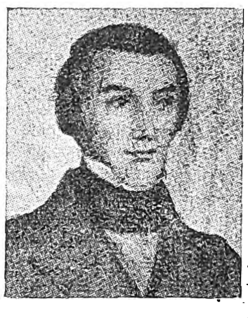

*Φρειδερῖκος Μπαστιά.*

Ἀντιπρόσωπος αἰσιοδόξου κατευθύνσεως ἐν τῷ πλαισίῳ τῆς κλασσικῆς σχολῆς, προσεπάθησε ν' ἀντικρούσῃ τὰ δεδομένα, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐστηρίχθησαν δυσμενεῖς προβλέψεις περὶ τῆς οἰκονομικῆς ἐξελίξεως («Harmonies économiques» 1850). Ἐναντίον τῶν περὶ ἐγγείου προσόδου ἀπόψεων τοῦ Ricardo—κατὰ τὰς ὁποίας τὸ εἰσόδημα τῶν γαιοκτημόνων, κατὰ τὰς διαφόρους του διαβαθμίσεις, πηγάζει ἐκ τῆς μονοπωλιακῆς παρ' αὐτῶν ἐκμεταλλεύσεως τοῦ βαθμοῦ τῆς φυσικῆς εὐφορίας τοῦ ἐδάφους, ὑψούμενον ὡς ἐκ τῆς περιωρισμένης ἀποδόσεως του καὶ ἕνεκα τῆς αὐξήσεως τοῦ πληθυσμοῦ καὶ τῆς κατὰ συνέπειαν μεγαλυτέρας ζητήσεως τῶν γεωργικῶν προϊόντων, εἰς βάρος τῶν εἰσοδημάτων τῆς ἐργασίας καὶ τοῦ κεφαλαίου—, ὑπήγαγε τὰ σχετικὰ φαινόμενα εἰς τὴν γενικήν περὶ ἀξίας θεωρίαν του, ὑποστηρίξας ὅτι καὶ τὰ προϊόντα τῆς γῆς, εἰς τὴν ἀνθρωπίνην ἐργασίαν καὶ οὐχὶ εἰς τὸ μονοπώλιον τῆς ἐγγείου ἰδιοκτησίας ἀποκλειστικῶς ὀφειλόμενα, ἀνταλλάσσονται συμφώνως πρὸς τὸ ποσὸν τῆς ὑπ' αὐτῶν ἐνσωματουμένης ἐργασίας. Τῆς ἐν τῷ ἀντάλλαγμάτι τῶν γεωργικῶν προϊόντων ἐμπεριεχομένης ἐγγείου προσόδου τοῦ ἰδιοκτήτου ἀποτελούσης κατὰ ταῦτα καρπὸν ἐργασίας, τὸ ποσὸν της δὲν εἶναι ἐπιδεκτικὸν ἀπεριορίστου αὐξήσεως εἰς βάρος τῶν λοιπῶν κλάδων τοῦ ἐθνικοῦ εἰσοδήματος, ὡς ἐκ τῆς (ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν Ricardo) προϋποτιθεμένης ἰσχύος τοῦ νόμου τῆς αὐξούσης ἀποδόσεως τῆς ἐργασίας, ἐλαττούσης κατὰ πολὺ τὴν ἐπήρειαν τοῦ προνομίου τῆς ἐγγείου ἰδιοκτησίας.

Κατ' ἀκολουθίαν ἀντετάχθη ὁ Μπαστιὰ κατὰ τῆς θεωρίας περὶ τῆς αὐξούσης ὑπερτιμήσεως τῶν γεωργικῶν προϊόντων, τῆς ταύτην ἐπακολουθούσης ἐλαττώσεως τοῦ εἰσοδήματος τῶν ἐργατῶν καὶ τῆς χειροτερεύσεως τῆς θέσεώς των, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐστηρίχθησαν αἱ ἀπαισιοδοξότεραι προβλέψεις περὶ τοῦ μέλλοντος τῶν βιομηχανικῶν ἐθνῶν, προβλέπων τοὐναντίον ὅτι ἐν τῇ φορᾷ τῆς οἰκονομικῆς προόδου, ὄχι μόνον τὰ γεωργικὰ προϊόντα διαρκῶς θὰ ὑποτιμῶνται, αὐξανομένης τοιουτοτρόπως τῆς μερίδος τῶν ἐργατῶν ἐπὶ τοῦ ἐθνικοῦ εἰσοδήματος, ἀλλὰ καὶ ὅτι ἡ θέσις τοῦ ἐργατικοῦ πληθυσμοῦ καὶ ἐξ ἄλλης πλευρᾶς, τῆς προϊούσης αὐξήσεως τοῦ κεφαλαίου, ἐλαττώσεως συνεπῶς τοῦ ἐπιτοκίου καὶ συνεπῶς τῆς μερίδος τοῦ τόκου ἐκ τοῦ λαϊκοῦ εἰσοδήματος, διαρκῶς θὰ καλυτερεύῃ. Τὴν εἰς βάρος τῆς ἐργαζομένης τάξεως διὰ τῆς αὐξήσεως τῶν τιμῶν τῶν γεωργικῶν προϊόντων καὶ ἐλαττώσεως τῶν ἡμερομισθίων ὕπαρξιν κινδύνου διαταράξεως τῆς οἰκονομικῆς ἁρμονίας ἀποκρούει κατὰ ταῦτα ὁ Μπαστιά, ὑποστηρίζων, τοὐναντίον, ὑπὸ τὴν προϋπόθεσιν ἀπαρεγκλίτου τηρήσεως τῶν ἀρχῶν φιλελευθέρας οἰκονομικῆς πολιτικῆς, τὴν δυνατότητα ἀπροσκόπτου ἐξελίξεως τῆς οἰκονομικῆς προόδου ἄνευ ἐπιζημίων διαταραχῶν ἐν τῇ διανομῇ τοῦ ἐθνικοῦ εἰσοδήματος.

Αἱ ἀπόψεις αὐτοῦ, ἐπὶ ἀναποδείκτων προτάσεων κατὰ τὸ πλεῖστον στηριζόμεναι, στεροῦνται βαθυτέρας ἐπιστημονικῆς ἀξίας, ὑστεροῦσαι κατὰ τοῦτο τῶν συγγενῶν ἰδεῶν τοῦ Κάρεϋ, καὶ ἡ ἐπίδρασίς των δὲν ὑπῆρξε μακρά, ἂν καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἐξαγγελίας των ὁ εὔληπτος τρόπος καθ' ὃν ἐξετέθησαν συνετέλεσεν εἰς τὴν εὐρεῖαν διάδοσίν των.

[Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων τοῦ Μπαστιὰ βλ. Cobden et la ligue (1845), Sophismes économiques καὶ πλεῖστα ἄρθρα ἐν τῇ «Journal des économistes».]

Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**Μπαστιὰν** (Bastian). Περιώνυμος Γερμανὸς ἐθνογράφος (1826—1905). Εἶναι γνωστὸς διὰ τὰς περιηγήσεις αὐτοῦ εἰς τὴν Αὐστραλίαν, τὴν Νέαν Ζηλανδίαν, τὸ Περού, τὴν Κίναν, τὰς Ἰνδίας κλπ. Τῷ 1861 ἐξηρεύνησε τὴν Ἰνδοκίναν, βραδύτερον δὲ τὸν Ἰνδικὸν ὠκεανὸν καὶ τὴν Ἰαπωνίαν, τὴν ἔρημον Γκόμπι, τὴν μεσημβρινὴν Σιβηρίαν, τὰ Οὐράλια, τὸν Καύκασον καὶ τὰς ἀκτὰς τῆς Κασπίας καὶ τῆς Μαύρης Θαλάσσης. Διορισθεὶς καθηγητὴς τῆς ἐθνολογίας καὶ διευθυντὴς τοῦ Ἐθνολογικοῦ μουσείου τοῦ Βερολίνου, ἐξετέλεσεν ἐν τῇ ἰδιότητί του ταύτῃ πολλὰ ταξίδια ἐπὶ τῷ τέλει νὰ ὀργανώσῃ τὸν σταθμὸν τοῦ Κινχόξο ἐπὶ τῶν ἀκτῶν τοῦ Λοάγκο καὶ νὰ συμπληρώσῃ τὴν ἐθνολογικὴν συλλογὴν τοῦ βασιλικοῦ μουσείου τοῦ Βερολίνου. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα: «Ὁ ἄνθρωπος ἐν τῇ ἱστορίᾳ» (1860), «Οἱ λαοὶ τῆς Ἀνατολικῆς Ἀσίας» (1871), «Συμβολαὶ εἰς τὴν συγκριτικὴν ἐθνολογίαν» (1868), «Ψυχολογία τοῦ Βουδισμοῦ» κτλ. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Βίρχωβ ἵδρυσε τὴν «Zeitschrift für Ethnologie», ὄργανον τῆς «Ἀνθρωπολογικῆς Ἑταιρείας» τοῦ Βερολίνου. Α. Δ.

**Μπαστιάς**, **Κωνσταντῖνος Ἰωάννου**. Ἕλλην δημοσιογράφος καὶ θεατρικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Σύρῳ τῷ 1901. Ἐσπούδασε νομικὰ εἰς τὸ πανεπιστήμιον Ἀθηνῶν καὶ ἀπὸ τοῦ 1919 εἰσῆλθεν εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, κατ' ἀρχὰς ὡς συντάκτης τῆς «Ἀκροπόλεως», ἐργασθεὶς κατόπιν εἰς διαφόρους ἄλλας ἐφημερίδας («Δημοκρατίαν», «Ἑσπέραν», «Ἐλεύθερον Τύπον», «Ἔθνος», «Πρωΐαν», «Πρώτην» κτλ.). Ἐξέδωκε τὰ περιοδικὰ «Ἀναγέννησις» ἐν Σύρῳ τῷ 1917 ἐπὶ ἓν ἔτος, «Ἑλληνικὰ Γράμματα» ἐν Ἀθήναις ἀπὸ τοῦ Ἰουνίου τοῦ 1927 μέχρι τοῦ Μαΐου τοῦ 1930, κατ' ἀρχὰς δεκαπενθήμερον καὶ βραδύτερον ἑβδομαδιαῖον καὶ ἀπὸ τοῦ Ἀπριλίου μέχρι τοῦ Ἰουνίου τοῦ 1931 τὴν ἑβδομαδιαίαν φιλολογικὴν ἐφημερίδα «Τὰ Νέα». Τῷ 1920 ἐξέδωκε σειρὰν διηγημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Κόκκινα σημάδια» καὶ τῷ 1921 τὸ πρῶτόν του δρᾶμα ὑπὸ τὸν τίτλον «Μοντέλλο». Τῷ 1923 ὁ θίασος Κυβέλης ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὸ δρᾶμά του «Πέτρα σκανδάλου», ὁ δὲ θίασος Κοτοπούλη ἔπαιξε τῷ 1924 τὸ «Πουλὶ τῆς νύχτας», καὶ τῷ 1925 τὴν σατιρικὴν κωμῳδίαν «Ἡ Α. Μ. τὸ Ταλέντο». Τῷ 1930 διωρίσθη γενικὸς γραμματεὺς τοῦ Ἐθνικοῦ Θεάτρου. —Ω.

**Μπαστιὲν-Λεπὰζ** (Bastien-Lepage), **Ἰούλιος**. Περίφημος Γάλλος ζωγράφος (1848—1884). Ὁ πατήρ, ἁπλοῦς ἐρασιτέχνης, εἶχε διδάξει εἰς αὐτὸν τὰ πρῶτα μαθήματα σχεδιαστικῆς. Τῷ 1867 ἦλθεν εἰς Παρισίους κατόπιν συμβουλῆς τοῦ ἐν τῷ κολλεγίῳ τοῦ Βερντὲν καθηγητοῦ τῆς ἰχνογραφίας, ὅστις διεῖδε τὸ ζωγραφικὸν τάλαντόν του, καὶ ἐφοίτησεν εἰς τὴν σχολὴν Καλῶν τεχνῶν παρὰ τῷ Καμπανέλ. Καταταχθεὶς εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἐλεύθερος σκοπευτὴς μετέσχε τοῦ πρὸς τὴν Πρωσσίαν ἀτυχοῦς πολέμου τοῦ 1870 καθ' ὃν ἐτραυματίσθη. Ἐπιστρέψας μετὰ τὴν ἀποστράτευσιν εἰς Παρισίους ἐξηκολούθησε φοιτῶν παρὰ τῷ Καμπανέλ, τῷ δὲ 1873 ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον εἰς τὸ Salon διὰ τῆς μικρᾶς ἀλληγορικῆς συνθέσεως «Κατὰ τὴν ἄνοιξιν». Τὸ ἑπόμενον ἔτος τὸ ἔργον του «Προσωπογραφία



Digitized by Google

τοῦ πάππου» ἐνεποίησε βαθεῖαν εἰς τοὺς εἰδικοὺς ἐντύπωσιν, διὰ τῆς διακρινούσης αὐτὸ εὐσυνειδησίας. Μεγάλην ἐπίσης ἐπιτυχίαν ἔσχον τὰ ἐκτεθέντα τῷ 1875 ἔργα του «Ἡ πρώτη κοινωνία» καὶ «Προσωπογραφία τοῦ κυρίου Χάγιεμ» (μουσεῖον Λουξεμβούργου). Τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ πίναξ του «Ἀγγελία εἰς τοὺς ποιμένας» ἐκέρδιζε τὸ δεύτερον βραβεῖον ἐν Ρώμῃ, ἀλλὰ τὴν ἐπομένην τῆς ἀνακηρύξεως τοῦ νικητοῦ οἱ θαυμασταί του ἐτοποθέτησαν πρὸ τοῦ πίνακος κλάδον φοίνικος, μὴ ἱκανοποιηθέντες ἐπαρκῶς ὑπὸ τῆς κρίσεως τῆς ἐπιτροπῆς.

Διάσημος πλέον ἐξέθεσε κατὰ τὰ ἐπακόλουθα ἔτη ἀξιοθαύμαστα καλλιτεχνήματα, τῶν ὁποίων γνωστότερα εἶναι: «Ὁ Πρίαμος πρὸ τῶν ποδῶν τοῦ Ἀχιλλέως» (1876), «Βαλλὸν» (1876), «Προσωπογραφία τοῦ πατρὸς καὶ τῆς μητρός μου» (1877), «Αἰμίλιος Μπαστιὲν-Λεπάζ», «Ἀνδρέας Τεριέ», «Σάρα Μπερνάρ», «Κυρία Ἰουλιέττα Ντρουέ», «Ὁ πρίγκιψ τῆς Οὐαλλίας», «Τὰ ἄχυρα» (μουσεῖον Λουξεμβούργου, 1878), «Αἱ συλλέκτριαι τῶν γεωμήλων» (μουσεῖον Λουξεμβούργου), «Ἡ Ἰωάννα Ντ' Ἄρκ ἀκροωμένη τὰς φωνάς» (μουσεῖον Νέας Ὑόρκης, 1880), «Ὁ ζητιᾶνος» (1881), «Ὁ μπάρμπα Γιακουμῆς» (1882), «Ὁ ἔρως στὸ χωριὸ» (1883) κ. ἄ. Τῷ 1883 μετέβη εἰς Λονδῖνον, ὅπου ἐζωγράφησε διαφόρους ἀγοραίους τύπους, καπνοδοχοκαθαριστάς, ἀνθοπώλιδας κλπ., προσβληθεὶς ὅμως ὑπὸ βαρυτάτης ἀσθενείας ἀπέθανε μετ' ὀλίγον εἰς Παρισίους εἰς ἡλικίαν 34 ἐτῶν. Ὁ Μπαστιὲν-Λεπὰζ ὑπῆρξε ρεαλιστὴς καὶ φυσιογράφος καλλιτέχνης μεγάλης δυνάμεως, χαρακτηριζόμενος ἀπὸ μεγάλην θέλησιν, εὐφυΐαν καὶ εὐθύτητα, τὰ δὲ ἔργα του καὶ ἰδίως αἱ προσωπογραφίαι διακρίνονται διὰ τὴν μεγάλην εὐσυνειδησίαν καὶ ἀκρίβειαν, δι' ἧς εἶναι εἰργασμένα καὶ διὰ τὴν λεπτὴν ἔκφρασιν τῶν μορφῶν. Ἀπ' ἐναντίας εἰς τὰς μεγάλας συνθέσεις ἔψεξαν τὴν μονότονον καὶ ἐξαιρετικῶς λεπτομερῆ ἐκτέλεσιν, ἐθαυμάσθη ὅμως ἰδιαιτέρως ἡ γραφικὴ καὶ πιστὴ ἀπεικόνισις τῆς φύσεως, τῶν ἐνδυμάτων καὶ τῶν μορφῶν. Ὁ Μπαστιὲν-Λεπὰζ παρ' ὅλην τὴν βραχεῖαν σταδιοδρομίαν του ἤσκησε μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ ὅλων σχεδὸν τῶν συγχρόνων νεαρῶν ζωγράφων, ἐν οἷς καὶ οἱ βραδύτερον ἐξόχως διακριθέντες Ζερβέ, Ντυέ, Ραφαὴλ Κολλὲν κλπ. x. δ.

*Μπαστιὲν-Λεπάζ: Συλλέκτρια γεωμήλων.*

**Μπαστὶντ** (La Bastide) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πλείστων γαλλικῶν πόλεων καὶ ὀχυρῶν συνοικισμῶν, ἰδίως ἐν Ν. Γαλλίᾳ, ὀνομασθέντων ἀπὸ τῆς λέξεως bastide (=μηχάνημα ἐκπολιορκήσεως ἀλλὰ καὶ σύστημα ὀχυρωμάτων), ἀναλόγου τῆς ἐν Β. Γαλλίᾳ ἐπιχωριαζούσης bastille (βαστίλλη). Τούτων σπουδαιότεραι αἱ: *Μπαστὶντ-Κλαιρὰνς* (Bastide-Clairanse) τοῦ νομοῦ Κάτω Πυρηναίων (ἴδρ. 1312, κάτ. 1.350), *Μπαστὶντ Ντ' Ἀρμανιὰκ* (Bastide d'Armagnac) τοῦ νομοῦ Λὰνς (ἴδρ. 1290, κάτ. 1.050), *Μπαστὶντ-Ντενὰ* (Bastide-Dénat) τοῦ νομοῦ Τὰρν (κάτ. 268), *Μπαστὶντ-Ντὲ-Σερού* (Bastide de Sérou) τοῦ νομοῦ Ἀριὲζ (ἴδρ. 1.254, κάτ. 2.400), *Μπαστὶντ-ντὲ-Φεγιὰντ* (Bastide des Feuillants) τοῦ νομοῦ Κάτω Πυρηναίων (ἴδρ. 1162), *Μπαστὶντ-Γκαμπὼς* (Bastide-Gabausse) τοῦ νομοῦ Τὰρν (κάτ. 545) καὶ ἄλλαι πλεῖσται, σπουδαιότητα κυρίως ἔχουσαι μόνον ἱστορικὴν καὶ ἀρχαιολογικὴν (βλ. καὶ λ. *βαστίλλη*). —π.

**Μπαστὶντ** (Bastide), ***Ἰούλιος***. Γάλλος πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος (1800—1879). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ Λύκειον τοῦ Ἐρρίκου Δ' καὶ ἀρχικῶς ἐπεδόθη εἰς τὸ ἐμπόριον. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πρώτων καρβονάρων τῆς παλινορθώσεως καὶ κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 ἐξελέγη ἀρχηγὸς τοῦ πυροβολικοῦ τῆς ἐθνικῆς φρουρᾶς, ἀποτελουμένης ἐκ δημοκρατικῶν. Συλληφθεὶς κατὰ τὴν στάσιν τῆς Γρενόβλης (1832) ἀπελύθη, ἀλλὰ μετὰ τὰς σκηνὰς τῆς κηδείας τοῦ στρατηγοῦ Λαμάρκ, εἰς ἃς ἐνεργῶς μετέσχε, κατεδικάσθη ἐρήμην εἰς θάνατον, δι' ὃ καὶ ἐξεπατρίσθη. Ἐπιστρέψας τῷ 1834 καὶ παρουσιασθεὶς ἐνώπιον τοῦ δικαστηρίου ἠθῳώθη. Τῷ 1836 ἐγένετο διευθυντὴς τῆς «National» καὶ εἶτα μετὰ τοῦ Μπυσὲ τῆς «Revue Nationale». Τῷ 1848 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως, ἀπὸ τοῦ κινήματος δὲ τοῦ Δεκεμβρίου τοῦ ἰδίου ἔτους ἀπεσύρθη τοῦ δημοσίου βίου. Ἔγραψε: «Περὶ τῆς δημοσίας παιδείας ἐν Γαλλίᾳ» (1847), «Ἱστορία τῆς νομοθετικῆς συνελεύσεως» (1847), «Ἡ γαλλικὴ δημοκρατία καὶ ἡ Ἰταλία τῷ 1848» (1858), «Ἱστορία τῶν θρησκευτικῶν πολέμων ἐν Γαλλίᾳ» (1859). —π.

**Μπαστὶτ** *[Αἰγυπτ. Μυθολ.]*. Τοπικὴ φαραωνικὴ θεότης τῆς Βουβάστεως (βλ. λ. *Βαστίτ*).

**μπαστούνα** (ἡ)· δημοτ., μεγάλο μπαστούνι, μεγάλη βακτηρία.

**μπαστούνι** (τό)· δημοτ., ῥάβδος, βακτηρία: «χοντρό, λειανὸ μπαστοῦνι» || δοράτιον τῶν ἱστιοφόρων πλοίων || ἐπὶ τῶν παιγνιοχάρτων, μία τῶν τεσσάρων φυλῶν: «τὸ δέκα—ὁ ρήγας μπαστούνι» || μεταφ., «τὰ βρῆκα μπαστούνια» προσκόπτω, εὑρίσκω δυσκολίας.

— *[Χαρτοπαιγν.]* Τὰ *μπαστούνια* εἶναι μία τῶν τεσσάρων φυλῶν, εἰς ἃς διαιρεῖται ἑκάστη δέσμη παιγνιοχάρτων (μπαστούνια, σπαθιά, καρά, κοῦπες). Εἰς τὰς σήμερον κυκλοφορούσας ἐν Ἑλλάδι δεσμίδας διεθνοῦς τύπου εἰκονίζονται διὰ πεπλατυσμένων αἰχμῶν δόρατος (ἐξ οὗ καὶ ἡ γαλλικὴ ὀνομασία των «piques»), ἀλλ' εἶχον ἤδη ὀνομασθῆ «μπαστούνια» ἐκ παλαιοτέρων ἰταλικῶν καὶ κερκυραϊκῶν ἐκδόσεων, εἰς τὰς ὁποίας εἰκονίζοντο διὰ ῥάβδων (ὅπως αἱ «κοῦπαι» δια ποτηρίων καὶ τὰ «σπαθιὰ» διὰ ξιφῶν). —ρ.

**μπαστουνιὰ** (ἡ)· δημοτ., πλῆγμα, κτύπημα μὲ μπαστούνι· «ἔφαγε μιὰ μπαστουνιὰ 'ς τὸ κεφάλι».

**μπαστουνόβλαχος** (ὁ)· ὁ κατ' ἐπάγγελμα ποιμὴν (βλ. λ. *Βλάχος*) || ὁ ἀγροῖκος τοὺς τρόπους.

**μπάστρα** (ἡ) *[Βοτ.]* βλ. λ. *ἐρυσίβη*.

**μπὰς-τσαούσης** (ὁ)· ἐπιλοχίας τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ.

**Μπὰς-τσεσμὲ λιμὰν** *[Παραλ. Γεωγρ.]* Ὅρμος τῆς Εὐρωπαϊκῆς (δυτικῆς) ἀκτῆς τοῦ πρὸς τὴν Προποντίδα στομίου τοῦ Βοσπόρου (πλάτ. 45° 25' 00" Β., μήκ. 26° 41' 30" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles), διανοιγόμενος μεταξὺ τοῦ φάρου τῆς Καλλιπόλεως καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου *Ἐσκὴ Φενὰρ μπουρνού*. Σ. Ε. Λ.

**Μπὰσφορντ** (Basford) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Νόττιγκαμ. Κάτ. 43.101. Ἔχει ἀκμάζουσαν βιομηχανίαν βάμβακος καὶ πλεκτικῆς. Π. Ν. Π.

**Μπὰς-χὰν** *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ κώμη ἐν Λυκαονίᾳ τῆς Μ. Ἀσίας, κειμένη κατὰ τὴν πρὸς Β. ἀκτὴν τῆς λίμνης Τάττας (Δοὺζ γκιόλ). Κατῳκεῖτο πρότερον ὑπὸ Ἑλλήνων αἱρετικῶν, ἀντιμαχομένων πρὸς τοὺς ὀρθοδόξους, τούτων δ' ἀπόγονοι εἶναι οἱ νῦν κάτοικοι τοῦ χωρίου καὶ τῆς πέριξ περιοχῆς, καλούμενοι Ντελῆ Μπάσηδες.

**Μπασωμὸν** (Bachaumont), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος συγγραφεὺς (1690—1771). Τὸ ἔργον του «Mémoires secrets» περιέχει σημαντικὰ στοιχεῖα διὰ τὴν ἱστοριογραφίαν τῆς ΙΗ' ἑκατονταετηρίδας.

— **Μπασωμὸν** (Bachaumont), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος λογοτέχνης τοῦ ΙΖ' αἰῶνος (1624—1702). Ἔγραψεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Σαπὲλ τὸ πολλὴν ἐπιτυχίαν σημειώσαν εὔθυμον ἔργον «Ταξίδι», ἐναντίον τοῦ ὁποίου ἐξηγέρθησαν οἱ αὐστηροὶ ἠθικολόγοι καὶ οἱ θρησκόληπτοι. Μολονότι εἶχε χαρακτηρισθῆ ὡς ἄθεος, κατὰ τὰ τελευταῖα ἐν τούτοις ἔτη τῆς ζωῆς του ὁ Μπασωμὸν ἐπέδειξεν ἀφοσίωσιν εἰς τὴν θρησκείαν καὶ τοὺς τύπους αὐτῆς. —ρ.

**μπατάγια** (ἡ) δημοτ., ξυλοκόπημα καὶ κατ' ἐπέκτασιν αὐστηρὰ ἐπίπληξις, ἐπιτίμησις: «ἔφαγε μιὰ μπατάγια ποῦ τοῦ 'πρεπε» (ἰταλ. bataglia=συμπλοκή, μάχη).

**Μπατάϊγ** (Bataille), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος ποιητὴς καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1872—1922). Νεαρώτατος ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις, ὅπου ἐφοίτησεν εἰς τὰ λύκεια τοῦ Ἐρρίκου Δ' καὶ Janson, κατόπιν δὲ ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐκμάθησιν τῆς ζωγραφικῆς, εἰς τὴν ὁποίαν ἔσχεν ἀρκετὴν ἐπιτυχίαν. Ἀλλ' ἡ κυρία του κλίσις ἦτο ἡ λογοτεχνία. Τῷ 1894 ἀνεβίβασεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ R. d'Humières, τὸ λυρικὸν δρᾶμα «La belle au bois dormant» πλῆρες λεπτοῦ καὶ νεφελώδους συμβολισμοῦ, ὅπερ ὅμως ἔτυχε ψυχροτάτης ὑποδοχῆς. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐξέδωκε συλλογὴν ποιημάτων «La chambre blanche», τὰ ὁποῖα διακρίνονται διὰ τὸν λεπτὸν λυρισμὸν καὶ τὴν ἐλαφρὰν μελαγχολίαν των. Ἐφεξῆς ἡ ποίησις τοῦ Μπατάϊγ διετήρησε τὰ αὐτὰ χαρακτηριστικὰ εἰς τὰς μεταγενεστέρας συλλογάς: «Le beau voyage» (1905), «La divine tragédie» (1917), «La quadrature de l'amour» (1920).

Ἡ ἀποτυχία τοῦ πρώτου του σκηνικοῦ ἔργου δὲν ἀπεγοήτευσε τὸν Μπατάϊγ. Δύο ἔτη βραδύτερον ἀνεβίβασε τὴν θρυλικὴν τραγῳδίαν «La lepreuse» (1896), τὴν ὁποίαν ἐνεπνεύσθη ἐκ τῶν παλαιῶν δημωδῶν ᾀσμάτων τῆς Βρετάνης. Ἡ τραγῳδία αὕτη ἔσχεν ἱκανὴν ἐπιτυχίαν. Ἐν τούτοις ὁ Μπατάϊγ δὲν παρέμεινε πλέον προσκεκολλημένος εἰς τὸν κόσμον τῶν θρύλων καὶ ἤρχισε νὰ ἀναζητῇ τὰ θέματά του ἀπὸ τὴν σύγχρονον ζωήν. Τὸ πρῶτον δρᾶμα συγχρόνου ἐμπνεύσεως ἦτο τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ton sang» (1899), τὸ ὁποῖον ἐν τούτοις διατηρεῖ ἴχνη τινὰ συμβολισμοῦ. Τῷ 1900 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὴν κωμῳδίαν «L'enchantement» (1900) μὲ ψυχοπαθολογικὴν ὑπόθεσιν. Ἠκολούθησε ταύτην τῷ 1902 τὸ δρᾶμά του «Le masque», ὅπερ ὅμως ἀπέτυχε. Τὴν πρώτην μεγάλην δραματικὴν ἐπιτυχίαν κατήγαγεν ὁ Μπατάϊγ διὰ τοῦ ψυχολογικοῦ του ἔργου «Maman Colibri» (1904). Ἐπηκολούθησαν τὰ δράματα: «La marche nuptiale» (1905), «Poliche» (1905), «La femme nue» (1908). «Le scandale» (1909), «Le songe d'un soire d'amour» (1910), «La vierge folle» (1910), «L'enfant de l'amour» (1911), «Le phalène» (1913), «L'Amazone» (1917), «Notre image» (1918), «Les soeurs d'amour» (1919), «L'animateur» (1920), «La tendresse» (1921) «L'homme à la rose» (1921), «La possession» (1922) καὶ «La chair humaine» (1922), τὰ ὁποῖα ἔσχον ἐπίσης μεγάλην ἐπιτυχίαν.

Τὸ χαρακτηριστικὸν τοῦ θεάτρου τοῦ Μπατάϊγ εἶναι ἡ πρωτοτυπία του. Οἱ ἥρωές του εἶναι μοιραῖοι ἄνθρωποι, ἀδυνατοῦντες ν' ἀντισταθοῦν εἰς τὰς ὑπαγορεύσεις τοῦ ἐνστίκτου των, μετρίας ἠθικότητος, ἄξιοι τοῦ οἴκτου ἀλλ' ὄχι καὶ τῆς ἀγάπης τοῦ θεατοῦ. Ὁ Μπατάϊγ εἶναι ὁ ποιητὴς τῆς ἀνθρωπίνης ὀδύνης, ἐκ τῆς ὁποίας συγκινεῖται ὁπουδήποτε καὶ ἂν τὴν συναντήσῃ. Ὁ ρεαλισμός του, δονούμενος ὑπὸ ἁγνοῦ λυρισμοῦ, ἀποτελεῖ μετ' αὐτοῦ μίαν εὐχάριστον σύνθεσιν, ἡ ὁποία κατατάσσει τὸν Μπατάϊγ μεταξὺ τῶν καλυτέρων δραματικῶν ποιητῶν τῶν νεωτέρων χρόνων. —ρ.

**μπατάκι** (τό)· (λ. τουρκ.) τέλμα || μεταφ., *μπατάκ παρᾶ*=χρῆμα ὀφειλόμενον, ἀλλὰ χαμένον διὰ τὸν δανειστήν, ἀπαίτησις ἀμφίβολος. Ἐκ τούτου παράγεται καὶ ἡ λέξις *μπατακτσῆς*.

**μπατακτσῆς** (ὁ), καὶ *μπαταξῆς*· ὁ μὴ πληρώνων τὰ χρέη του, κακοπληρωτής.

**Μπατάλα** (Batala) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Πεντζὰπ καὶ εἰς τὴν ἐπαρχίαν τῆς Λαχώρης. Κάτ. 27.250. Ἔχει βιομηχανίαν βάμβακος, μεταξουργίας, δερματίνων εἰδῶν καὶ μεταλλικῶν σκευῶν. Π. Ν. Π.

**μπαταλεύω**· δημοτ., γίνομαι μπατάλικος, παχύς, δυσκίνητος: «μπατάλεψε ἀπὸ τὸ πολὺ πάχος» || προστυχεύομαι καὶ προστυχεύω || ἀπεκμηδενίζομαι.

**μπατάλης** (ὁ), θηλ. *μπατάλα* (ἡ)· δημοτ., ἄλλως *μπατάλικος* (βλ. λ.).

**Μπατάλια** (Batalha) *[Γεωγρ.]*. Πόλις μικρὰ τῆς Πορτογαλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Λειρίας, 12 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πόλεως Λειρίας ἐπὶ τῆς ἀπὸ Λισαβῶνος εἰς Κοΐμπρα ὁδοῦ. Εἶναι περιώνυμος διὰ τὸ ἐν αὐτῇ μοναστήριον δομινικανῶν τῆς «Σάντα Μαρία ντὰ Μπατάλια», τὸ ὁποῖον ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Πορτογαλλίας Ἰωάννου Α' εἰς ἀνάμνησιν τῆς νίκης τῆς Ἀλχουμπαρρότα (1385). Ἀπὸ ἀρχιτεκτονικῆς ἀπόψεως εἶναι ἐκ τῶν καλυτέρων κτισμάτων τῆς Πορτογαλίας, ἀποτελοῦν κρᾶμα μαυριτανικοῦ καὶ εὐρωπαϊκοῦ ρυθμοῦ, περικλείει δὲ μεταξὺ ἄλλων καὶ τοὺς τάφους τεσσάρων Πορτογάλων βασιλέων καὶ τοῦ ἰνφάντου Ἐρρίκου τοῦ Θαλασσοπόρου. Κάτ. 4.000. x. δ.

**μπατάλικος**, *—η, —ο*, καὶ *μπατάλης, —α*· δημοτ., χονδροειδής, δυσκίνητος, ἄκομψος, ἄχαρις: «μπατάλικο παιδί» (λ. τουρκ.).

Digitized by Google

**μπαταλματζῆς** (ὁ)· (ἐκ τοῦ τουρκ. *μπεὶτ-οὐλ-μὰλ* =δημόσιος θησαυρὸς) εἰσπράκτωρ φόρων τοῦ Δημοσίου.

**Μπαταλπασνὶσκ** (Batalpaschinsk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς δημοκρατίας τῶν Κιρκασίων ἐν τῇ περιφερείᾳ *Κουμπάν*, κειμένη ἐπὶ τῆς μεγάλης ἀπὸ Σταβροπὸλ εἰς Σουχὰν ὁδοῦ. Κάτ. 17.000. Διεξάγει ἐμπόριον δημητριακῶν καὶ κτηνῶν. Χ. Δ.

**Μπαταμπάνο** (Batabano) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κούβας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ *Ἀβάνας*, κειμένη ἐπὶ τῆς Ν. παραλίας καὶ ἐξυπηρετουμένη διὰ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τοῦ Σὰν Φελίπε. Ἔχει ἀξιόλογον ἁλιείαν καὶ διεξάγει ἐμπόριον τῶν ἐν τοῖς πέριξ καλλιεργουμένων προϊόντων (ζαχαροκαλάμου, καπνοῦ, ὀπωρῶν κλπ.). Κάτ. 15.500. Χ. Δ.

**Μπατὰν** (Batan) *[Γεωγρ.]*. Σύμπλεγμα νήσων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *Φιλιππίνων*, κείμενον πρὸς Β τοῦ συμπλέγματος τῶν Μπαμπούγιαν καὶ πρὸς ΝΑ. τῆς Φορμόζας, ὑπαγόμενον δὲ διοικητικῶς εἰς τὴν ἐπαρχίαν Καγκαγιάν. Ἔχουσι συνολικὴν ἔκτασιν 205 τετρ. χλμ. Μεγαλυτέρα καὶ σπουδαιοτέρα πασῶν εἶναι ἡ *Ἰμπαγιὰτ* (90 τετρ. χλμ.), ἐφ' ἧς ἡ πρωτεύουσα πόλις *Σάντο Ντομίνγκο*. Κάτ. 11.000 Χ. Δ.

**Μπάτανγκ**, ἢ ***Μπάτταμ*** (Batang ἢ Battam) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῶν Ὁλλανδικῶν Ἰνδιῶν, κειμένη 23 χλμ. νοτιοανατολικῶς τῆς Σιγκαπούρης καὶ ἔχουσα ἔκτασιν 410 περίπου τ. χλμ. Ἔχει ἔδαφος εὐφορώτατον καὶ ὀνομαστὸν φυσικὸν λιμένα, τὸν *Μπούλανγκ μπαίυ*. Χ. Δ.

**Μπατάνγκα** (Batanga) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς δυτικῆς παραλίας τῆς κεντρικῆς Ἀφρικῆς, ἐκτεινομένη περὶ τὸν κόλπον Μπιάφρας μεταξὺ τῶν παραλλήλων 2° καὶ 4° Β. πλάτους καὶ οἰκουμένη ὑπὸ τοῦ λαοῦ τῶν *Μπανόκος*. Καταληφθεῖσα τῷ 1884 ὑπὸ τῆς Γερμανίας, ὑπήγετο εἰς τὴν ἀποικίαν τοῦ Καμερούν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1918 ἀνήκει εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἰσημερινὴν Ἀφρικήν. Χ. Δ.

**Μπατάνγκας** (Batangas) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Φιλιππίνων ἐν τῇ νήσῳ *Λουσόν*, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας. κειμένη παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Καλουμπάνγκ, 115 χλμ. πρὸς Ν. τῆς Μανίλλιας. Κάτ. 33.131. Ἡ ἐπαρχία ἔχει ἔκτασιν 3.000 τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 257.115 κατ., παράγει δὲ καφέν, κακάο, ἀραβόσιτον, ὄρυζαν, ζάχαριν, βανάνας, ἑσπεριδοειδῆ κλπ. Χ. Δ.

**Μπατανούν**, ἢ ***Μπετανοὺν*** (Batanun ἢ Betanun) *[Γεωγρ.]*. Πόλις της Κάτω Αἰγύπτου ἐν τῇ μουδιρίᾳ *Μενουφίας*, παρὰ τὴν ἀπὸ ταύτης εἰς Σιμπὶν-ἐλ-Κὸμ σιδηροδρομικὴν γραμμήν. Κάτ. 11.500. Χ. Δ.

**μπαταρία** (ἡ)· δημοτ., συστοιχία ὁμοίων ὀργάνων (ἰταλ. batteria, γαλλ. batterie). Λέγεται ἰδίως ἐπὶ συστοιχίας πυροβόλων, ἠλεκτρικῶν συσσωρευτῶν, ἀεροφυλακίων τῶν αὐτομάτων φάρων κλπ.· || ὁμαδικὴ συμπυρσοκρότησις πυροβόλων: «τοὺς ρίξαμε μιὰ μπαταρία».

**μπατάρισμα** (τό)· ἡ πρᾶξις καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μπατάρω*.

**μπατάρω**, *ἀόρ. ἐμπάταρα καὶ ἐμπατάρισα*· κλίνω πρὸς τὸ πλευρὸν μέχρις ἀνατροπῆς (ἰδίως ἐπὶ πλοίων): «ἡ βάρκα μας ἐμπατάρισε», «φοβοῦμαι μὴ μπατάρῃ τὸ κάρρο 'ς τὴ στροφή»· || ἐνεργ. ἀνατρέπω: «τοὺς μπατάραμε»· || συμψηφίζω τὰ ἀλληλοφειλόμενα, ἐξοφλῶ.

— *[Ναυτ.]* Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων: 1) Ἐπὶ ἱστίων, τὸ μεταβάλλειν πέτασμα πρὸς ἀλλαγὴν τῶν προπόδων αὐτοῦ κατὰ τὰς ἀναστροφάς, τὰς ὑποστροφὰς καὶ τὰς ἀνακωχάς. 2) Ἐπὶ σκάφους, τὸ ἀνατρέπεσθαι. Σ. Ε. Λ.

**Μπάτασεκ**, ἢ ***Μπάττασεκ*** (Bátaszék ἢ Battaszék) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Τόλνα, συνδεομένη σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Ντομποβὰρ καὶ ἔχουσα μεγάλας ἀμπελοφυτείας. Κάτ. (1920) 7.498, Οὔγγροι καὶ Γερμανοί. Χ. Δ.

**μπατάτα** (ἡ) (Batatas) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *βατάτα*.

**Μπατατάες** (Batataes) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Σὰν Πάμπλο, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σαπουκάϋ. Ἐν τῇ περιφερείᾳ ἀνευρίσκονται ἀδάμαντες, τουρμαλίνης κλπ., ἐπίσης δ' ὑπάρχουσι λατομεῖα ἐκλεκτοῦ οἰκοδομικοῦ λίθου. Κάτ. 7.000. Χ. Δ.

**Μπάτγκανγκ** (Bhatgung ἢ Bhatgaon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἰνδιῶν ἐν Νεπάλ, 9 χλμ. Ν.Α. τοῦ Χατμαντού. Κάτ. 75.000 Ἔχει μεγαλοπρεπῆ κτήρια καὶ εἶναι κέντρον τῶν Βραχμάνων ὁλοκλήρου τοῦ Νεπάλ. Ἐν τῇ πόλει ταύτῃ διαφυλάσσονται πλεῖστα σανσκριτικὰ κείμενα. Π. Ν. Π.

**Μπατεκὲ** (οἱ) (Bateke). Νεγροειδὴς φυλὴ τῆς ὁμογλωσσίας τῶν Μπαντού, οἰκοῦσα τὴν κοιλάδα τοῦ μέσου Κόνγκο, ἐν τῷ Γαλλικῷ Ἰσημερινῷ τῆς Ἀφρικῆς. Μετρίου μᾶλλον ἀναστήματος, ρωμαλέοι, ἐπιθετικοί, μεταχειριζόμενοι μαχαίρας, δηλητηριασμένα βέλη καὶ ἀκόντια. Κατοικοῦσιν εἰς τετραγώνους καλύβας παρὰ τὰς ὄχθας ποταμῶν, καταγίνονται εἰς τὴν γεωργίαν καὶ εἶναι εἰδωλολάτραι. Γ. Ι. Β.

**Μπατὲμ-*Τσιφλίκι*** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Ἀμυγδαλιῶνας* (βλ. λ.).

**Μπατενῖται** (οἱ)· βλ. λ. *Ἰσμαηλῖται*.

**μπάτζ**, ἢ ***μπάτζεν*** (batz ἢ batzen). Ὄνομα παλαιῶν ἑλβετικῶν καὶ γερμανικῶν μικρῶν νομισμάτων, τῶν ὁποίων ἡ ἀξία ἦτο ἴση πρὸς 13—17 ἑκατοστὰ (λεπτὰ) τοῦ νεωτέρου φράγκου. Ἡ ὀνομασία διετηρήθη παρὰ τῷ λαῷ ἐν Ἑλβετίᾳ εἰς τὰ σημερινὰ δεκάλεπτα κέρματα. Χ. Δ.

**Μπὰτζ** (Batz) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῆς Γαλλίας ἐν τῇ Μάγχῃ, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 1.000 μ. ἀπὸ τοῦ Ροσκὸφ καὶ ὑπαγομένη εἰς τὸν νομὸν Φινιστέρ. Ἔχει ἔκτασιν 307 στρεμμάτων καὶ πληθυσμὸν 1.400 κατοίκων, ἁλιέων καὶ ναυτικῶν, καὶ χρησιμεύει ὡς κέντρον θαλασσίων λουτρῶν. Χ. Δ.

**Μπὰτζ** (Batz), ***Ἰωάννης**, βαρῶνος ντὲ* —. Περίφημος Γάλλος βασιλόφρων τῆς ἐποχῆς τῆς ἐπαναστάσεως (1760—1822). Ἀνῆκεν εἰς μίαν τῶν ἐπιφανεστέρων οἰκογενειῶν τοῦ Μπεάρν καὶ ἦτο ἀντιπρόσωπος τοῦ βασιλέως (sénéchal) ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Νερὰκ καὶ τοῦ δουκάτου τοῦ Ἀλμπρὲ ὅταν ἡ ἐπανάστασις ἐξερράγη. Ἀποσταλεὶς εἰς τὴν Συνέλευσιν τῶν Τάξεων ὡς ἀντιπρόσωπος τῶν εὐγενῶν, διετέλεσε μέλος τῆς ἐπὶ τῶν Οἰκονομικῶν ἐπιτροπῆς, ἐν τῇ ὁποίᾳ κατεπολέμησε ζωηρῶς τὴν ἔκδοσιν χαρτονομίσματος, ἀντιπολιτευόμενος δὲ ἀπὸ συστήματος πᾶν ἐπαναστατικὸν μέτρον, ὑπέγραψε τὰς διαμαρτυρίας τοῦ Σεπτεμβρίου 1791 ἐναντίον τῶν ἀποφάσεων τῆς Ἐθνοσυνελεύσεως καὶ δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν Γαλλίαν. Διετήρησεν ὅμως στενὴν συνεννόησιν μετὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' καὶ ἐπανῆλθε πολλάκις ἐν μυστικότητι εἰς Παρισίους. Μετὰ τὴν καταδίκην τοῦ βασιλέως διωργάνωσε συνωμοσίαν μὲ τὸν σκοπὸν ν' ἀπαγάγῃ τὸν Λουδοβῖκον καὶ δὴ κατὰ τὴν ὥραν τῆς μεταφορᾶς αὐτοῦ εἰς τὸν τόπον τῆς θανατικῆς ἐκτελέσεως. Οἱ συνωμόται εἶχον λάβει θέσιν παρὰ τὴν πύλην τοῦ Σαὶν-Ντενίς, ὅταν δὲ τὸ κάρρον ἐπὶ τοῦ ὁποίου μετεφέρετο οὗτος ἔφθασεν ἐκεῖ, ὁ Μπάτζ καὶ μερικοὶ νέοι ἐκ τῶν ὁμοφρόνων του ἐκραύγασαν: «Ἐδῶ, Γάλλοι! Μαζί μας ὅσοι θέλουν νὰ σώσουν τὸν βασιλέα!» Ἀλλ' ἡ ἐπίκλησίς των δὲν εὗρεν ἀπήχησιν μεταξὺ τοῦ πλήθους, τὸ ὁποῖον κατεπλάγη μόνον ἐκ τῆς τόλμης τῶν συνωμοτῶν, τόσον δέ, ὥστε νὰ κατορθώσουν οἱ ἀρχηγοί των νὰ διαφύγουν. Δύο νέοι ὅμως ἐκ τῶν συντρόφων των κατεκρεουργήθησαν τὴν στιγμὴν ποῦ κατέφευγον εἴς τινα παρακειμένην οἰκίαν, καὶ τρίτος συνένοχός των συλληφθεὶς κατεδικάσθη βραδύτερον καὶ ἐθανατώθη. Ὁ Μπάτζ, κατορθώσας νὰ ἐξαφανισθῇ, δὲν ἐβράδυνε ν' ἀρχίσῃ παρασκευάζων νέας συνωμοσίας πρὸς διάσωσιν τοῦ δελφίνου, τῆς βασιλίσσης καὶ τῶν πριγκιπισσῶν. Ἐπέτυχε μάλιστα νὰ προσεταιρισθῇ μέλη τινὰ τῆς Συνελεύσεως καὶ τῆς Κομμούνας, νὰ εἰσέλθῃ εἰς τὴν φυλακὴν τοῦ Τὰμπλ καὶ νὰ ἐξαγοράσῃ τριάκοντα ἐκ τῶν φρουρῶν μὲ τὸν σκοπὸν τῆς φυγαδεύσεως τῶν κρατουμένων. Ἀλλ' ἡ συνωμοσία ἀπέτυχεν ἐν τέλει καὶ ὁ Μπὰτζ ἐξηφανίζετο καὶ πάλιν. Μετὰ τὴν μεταφορὰν τῆς Μαρίας Ἀντουανέττας εἰς τὴν Κονσιερζερί, ἐπανέλαβε καὶ τρίτην νέαν προσπάθειαν, ἀλλὰ χωρὶς περισσοτέραν ἐπιτυχίαν καὶ τὴν φορὰν αὐτὴν ἀπὸ τὰς δύο προηγουμένας. Κατὰ Ἰούνιον τοῦ 1794 ὁ Λακὸστ ἀνέγνωσεν ἐνώπιον τῆς Συμβατικῆς ἐθνοσυνελεύσεως μακρὰν ἔκθεσιν ἐπὶ τῆς συνωμοσίας τοῦ Μπάτζ, ἑξήκοντα δὲ πρόσωπα συνελήφθησαν καὶ κατεδικάσθησαν τότε, ἐξ ὧν πολλοὶ ἀθῷοι. Ὁ Μπάτζ, ἀντιθέτως, ἐξηκολούθει νὰ παραμένῃ ἀσύλληπτος ἐν Παρισίοις, μολονότι ἡ ἀστυνομία τὸν εἶχεν ἐπικηρύξει· εὕρισκε μάλιστα καὶ τυπογραφεῖον εἰς τὴν διάθεσίν του διὰ νὰ ἐκτυπώσῃ ἀπάντησιν εἰς τὰς καταγγελίας τοῦ Λακόστ. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1795 εὑρίσκετο ἐπὶ κεφαλῆς στρατιωτικῶν τμημάτων ἐπαναστατησάντων κατὰ της συνελεύσεως. Συλληφθεὶς τὴν φορὰν ταύτην ἐνεκλείσθη εἰς τὴν φυλακὴν τοῦ Πλεσσίς, ἀπὸ τὴν ὁποίαν ὅμως ἐπέτυχε νὰ δραπετεύσῃ. Τὸ σκάνδαλον ἦτο μέγα καὶ ἡ ἀστυνομία κατέβαλε κάθε προσπάθειαν πρὸς σύλληψίν του· ἀλλ' ἐπὶ ματαίῳ. Ὁ Μπὰτζ εἶχεν ἀναχωρήσει ἐκ Γαλλίας, εἰς τὴν ὁποίαν ἐπανῆλθεν ἐπὶ τῆς ὑπατείας τοῦ Ναπολέοντος. Ἐξηκολούθησε καὶ τότε τὰς φιλοβασιλικὰς προσπαθείας του, ἀλλὰ κουρασθεὶς ἐν τέλει καὶ ἀποκαρδιωθεὶς ἐκ τῶν ἀποτυχιῶν του κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ παρὰ τοῦ Φουσσὲ τὴν ὑπόσχεσιν ὅτι δὲν θὰ ἠνωχλεῖτο, ἐφόσον καὶ αὐτὸς θὰ παρῃτεῖτο τῶν κινημάτων του. Ἡ παλινόρθωσις τὸν ἀντήμειψεν, ὀνομάσασα αὐτὸν στρατηγὸν καὶ διοικητὴν τοῦ διαμερίσματος τοῦ Καντὰλ (1817). Ἀλλ' ἡ ὑγεία του εἶχε κλονισθῆ καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος, λαβὼν τὴν σύνταξίν του, ἀπεσύρθη εἰς ἐξοχικόν του κτῆμα, ὅπου καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του.

Ὁ ντὲ Μπὰτζ ἐδημοσίευσεν ἑκατοντασέλιδον τεῦχος ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἡ συνωμοσία τοῦ Μπὰτζ ἢ ἡ ἡμέρα τῶν ἑξήκοντα», ἀποτελοῦν τὴν προαναφερθεῖσαν ἀπάντησίν του εἰς τὴν ἔκθεσιν τοῦ Λακὸστ (1795), «Ἱστορίαν τοῦ βασιλικοῦ οἴκου τῆς Γαλλίας καὶ τῆς ἀρχῆς αὐτοῦ» (1815), ἐκτυπωθεῖσαν εἰς 12 μόνον ἀντίτυπα, καὶ γενεαλογικοὺς πίνακας τῶν εὐγενῶν τῆς Γαλλίας (1820). Εἶχε προαναγγείλει, ὅτι θὰ γράψῃ καὶ ἱστορίαν τῶν θρησκευτικῶν πολέμων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἐν τῇ ὁποίᾳ θ' ἀπεδείκνυεν ὅτι οἱ προτεστάνται εἶχον σχεδιάσει τὴν παραχώρησιν τοῦ γαλλικοῦ θρόνου εἰς ἕνα πρίγκιπα τοῦ οἴκου τῆς Βρουνσβίκης, ἀλλὰ τὴν συγγραφὴν ταύτην δὲν ἐπραγματοποίησεν. —Ω.

**μπατζάκι** (τό)· δημοτ., τὸ ποδωνάρι τοῦ πανταλονιοῦ εἰς τὸ ἄκρον καὶ ἰδίᾳ αἱ λωρίδες τοῦ ἐσωτερικοῦ πανταλονίου· || εἰς τὴν φρ. «τρομάρα 'ς τὰ μπατζάκια σου» (ἐπὶ ἀνθρώπου, τὸν ὁποῖον ἐλεεινολογεῖ τις) σημαίνει τοὺς πόδας.

**μπατζανάκης** (ὁ)· ὄνομα συγγενικόν, ὁ σύγγαμβρος: «εἶναι μπατζανάκηδες» αἱ γυναῖκές των εἶναι ἀδελφαί.

**Μπάτζελλ** (Budgell), ***Εὐστάθιος***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1685—1737). Συγγενὴς τοῦ Ἄδδισων, προσελήφθη ὑπ' αὐτοῦ, διορισθέντος γραμματέως τοῦ λόρδου τοποτηρητοῦ τῆς Ἰρλανδίας Χουώρτον, εἰς τὰ γραφεῖα τῆς τοποτηρητείας. Ὁ Μπάτζελλ ἤρχισε τότε ν' ἀποστέλλῃ συνεργασίας εἰς τὸν «Θεατὴν» καὶ τὸν «Φύλακα». Προήχθη βραδύτερον εἰς γενικὸν ἐπιθεωρητὴν τῶν προσόδων τῆς Ἰρλανδίας, γράψας ὅμως σάτιραν ἐναντίον τοῦ Οὐέμπστερ, γραμματέως τοῦ νέου λόρδου τοποτηρητοῦ τῆς Ἰρλανδίας Μπόλτον, ἐπαύθη. Ἀπώλεσεν εἶτα τὴν περιουσίαν του εἰς ἀτυχεῖς ἐπιχειρήσεις. Τῷ 1733 ἐξέδωκε περιοδικὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Μέλισσα» καὶ μετά τινα ἔτη ηὐτοκτόνησε ριφθεὶς εἰς τὸν Τάμεσιν. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν διακεκριμένων δημοσιογράφων τῆς ἐποχῆς του. Γ. Ι. Β.

**Μπατζέττι** (Bagetti), *ἱππότης* ***Ἰωσὴφ-Πέτρος***. Ἰταλὸς ζωγράφος (1764—1831). Ἀπὸ τοῦ 1800 μέχρι τῆς Παλινορθώσεως διετέλεσεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ χαρτογραφικοῦ σώματος καὶ ἐξετέλεσε κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν γαλλικῶν εἰς τὴν Ἰταλίαν ἐκστρατειῶν σειρὰν ἐξαιρέτων ὑδατογραφιῶν, ὧν πλεῖσται φυλάσσονται εἰς τὸ Φονταινεμπλώ. Πλὴν τούτων καὶ ἄλλων ὀλιγώτερον ἀξιολόγων, ἐξεπόνησεν ἀπέραντον ὑδατογραφίαν εἰκονίζουσαν τὴν Ἰταλίαν ἀπὸ τῶν Ἄλπεων μέχρι τῆς Νεαπόλεως. Ι. Μ. Π.

**μπάτης** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἀπὸ τῆς θαλάσσης πνέων ἄνεμος, *ἐμβάτης* (βλ. λ.): «φύσηξε μπάτης καὶ δρόσισε».

**μπατικὰ** (τά). Λέγονται ἐν Μεσολογγίῳ αἱ εἰδικαὶ ἐγκαταστάσεις τῶν ἰχθυοτροφείων πρὸς τὴν ἀνοικτὴν θάλασσαν διὰ τὴν ἁλιείαν τῶν ἰχθύων τῆς ἀνοικτῆς θαλάσσης.

**μπατικὸ** *κτίσιμο*. Κοινὴ ὀνομασία τῆς μετ' ἐναλλαγῆς *διατόνων* λίθων (βλ. λ.) δομῆς.

**Μπατινὶ** (οἱ)· βλ. λ. *Ἰσμαηλῖται*.

**Μπατινιὸλ** (Batignolles) *[Γεωγρ.]*. Ἓν τῶν βορείων διαμερισμάτων τῶν Παρισίων, προσαρτηθὲν τῷ 1860 εἰς τὴν γαλλικὴν πρωτεύουσαν. Ἀναφέρεται τὸ πρῶτον εἰς τὰ ἀρχεῖα τῆς ἐπισκοπῆς τῆς Μονμάρτρης τῷ 1617 ὡς γαῖαι εὑρισκόμεναι μεταξὺ τοῦ προαστείου Πορσερὸν καὶ τοῦ χωρίου Κλισὺ καὶ ἀνήκουσαι εἰς τοὺς μοναχοὺς τῆς Μονμάρτρης. Μόλις τῷ 1814 τὸ ὄνομά του ἐγένετο γνωστόν, ὅτε διεξήχθησαν ἐκεῖ πολύνεκροι συγκρούσεις μεταξὺ τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ καὶ τῶν συμμάχων, οἵτινες ἔβαινον κατὰ τῶν Παρισίων. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο εἰς Μπατινιὸλ ἐλάχισται ὑπῆρχον οἰκίαι, εἰς αὐτὸ δὲ ὁ στρατηγὸς Μονσαὶ ἀντέστη κατὰ τῶν ἐπιθέσεων τοῦ Ρώσου στρατηγοῦ Λανζερών. Ἀπὸ τοῦ ἔτους τούτου ἤρξατο ἡ καταπληκτικὴ ἀνάπτυξις αὐτοῦ. Ἐπιχειρηματίαι τινές, ἐπωφελούμενοι τῆς ἐφθηνείας τῶν γηπέδων, ἤγειραν κατοικίας, εἰς ἃς κατῴκησαν διάφοροι ἀπόστρατοι, συνταξιοῦχοι καὶ μικροεισοδηματίαι. Ὁ διάσημος ἰατρὸς Λεμερσιὲ ἤγειρε νοσοκομεῖον, μετὰ μικρὸν δὲ ἐχαράχθησαν πολυάριθμοι ὁδοὶ καὶ ἠγέρθησαν ὡραῖαι οἰκίαι, τῷ δὲ 1850 μετεσχηματίσθη εἰς πόλιν, ἀριθμοῦσαν περὶ τοὺς 50.000 κατοίκους, καὶ ἀπετέλεσεν ἰδίαν κοινότητα. Κατὰ τὴν συγχώνευσιν αὐτοῦ μετὰ τῶν Παρισίων, τῷ 1860, ὁ πληθυσμός του εἶχεν αὐξήσει εἰς 75.000, σήμερον δὲ ἔχει τριπλασιασθῆ. Τὸ Μπατινιὸλ κοσμεῖται ἀπὸ θαυμασίας λεωφόρους, περικαλλῆ μέγαρα, εἶναι δὲ ἡ προτιμωμένη συνοικία ὑπὸ τῶν φιλολόγων, τῶν καλλιτεχνῶν καὶ τοῦ κομψοῦ κόσμου. Ο. Β.

**Μπατιούσκωφ**, ***Κωνσταντῖνος*** *Νικολάγιεβιτς*. Ρῶσος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Βολόγκντα τῷ 1787 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1855. Εἰσαχθεὶς κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν διοίκησιν καὶ εἶτα εἰς τὸν στρατόν, μετέσχε

Digitized by Google

τῆς ἐκστρατείας τῆς Πρωσσίας τῷ 1807. Ἐν τῇ μάχῃ τῆς Χαϊλσμπεργκ ἔλαβε τραῦμα οὐδέποτε ἰαθέν. Ἀποσυρθεὶς τοῦ στρατοῦ ἕνεκα τούτου, ἐπανῆλθεν εἰς αὐτὸν ὅπως μετάσχῃ τῶν ἐκστρατειῶν τοῦ 1812 ἕως τοῦ 1815, ὅτε εἰσῆλθε μετὰ τῶν ρωσικῶν στρατευμάτων εἰς Παρισίους. Εἶτα ὑπηρέτησεν ὡς γραμματεὺς τῆς ρωσικῆς πρεσβείας ἐν Νεαπόλει καὶ τῷ 1820 ἐπέστρεψεν εἰς Ρωσίαν, κατεχόμενος ὑπὸ ἀθεραπεύτου ψυχικῆς νόσου, διῆλθε δὲ ἐπὶ 35 ἔτη ἔγκλειστος εἰς φρενοκομεῖον. Τὸ ποιητικὸν ἔργον του εἶχεν ἐξασφαλίσει εἰς αὐτὸν περίβλεπτον θέσιν. Ἀνῆκεν εἰς τὴν νεοκλασσικὴν σχολὴν καὶ μετέφρασε πλεῖστα ποιήματα τοῦ Τιβούλλου καὶ τοῦ Πετράρχου εἰς τὴν ρωσικήν. Μεταξὺ τῶν πρωτοτύπων ποιημάτων του διακρίνονται ἰδίως «Ἡ Βαχχίς», «Ἡ πηγή», «Οἱ ἐφέστιοι θεοί μου», «Ὁ θάνατος τοῦ Τάσσου» κτλ. Τὰ ἅπαντά του ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1850 ἐν Πετρουπόλει, τὴν ἔκδοσιν δὲ ταύτην ἠκολούθησαν πλεῖσται ἄλλαι. Θ. Β.

**μπατίστα** (ἡ)· λινὸν ὕφασμα (βλ. λ. *βατίστα*).

**Μπάτκα** (Batka), ***Ριχάρδος***. Τσεχοσλοβάκος μουσικολόγος (1868—1922). Συνειργάσθη εἰς πλείστας ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ τῆς Πράγας καὶ τῆς Βιέννης καὶ ἔγραψεν εἰς γερμανικὴν γλῶσσαν σειρὰν μουσικοκριτικῶν καὶ ἱστορικῶν ἔργων, ὡς τά: βιογραφίαι τοῦ Μπὰχ καὶ τοῦ Σοῦμαν, «Aus der Musik und Theater Welt», «Die Musik der Griechen», Die mehrstimmige Kunstmusik des Mittelalters», «Studien zur Geschichte der Musik in Böhmen», «Aus der Opernwelt», «Allgemeine Geschichte der Musik» κτλ. Ὁ Μπάτκα ἔγραψεν ἐπίσης τὰ λιμπρέττα πλείστων μελοδραμάτων. Γ. Σ.

**Μπάτλερ** (Bulter) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν Πενσυλβανίᾳ, 30 μίλλια βορείως τοῦ Πιτσβούργου. Κάτ. 30.000. Κεῖται ἐπὶ πλουσίας πετρελαιοφόρου περιοχῆς καὶ ἔχει βιομηχανίαν ἄνθρακος, σιδήρου, χάλυβος, αὐτοκινήτων, ἀλεύρου καὶ πηγὰς φυσικοῦ φωταερίου. Π. Ν. Π.

**Μπάτλερ** (Butler), ***Ἄλμπαν***. Ἄγγλος καθολικὸς θεολόγος (1710—1773). Ἐσπούδασεν εἰς Ντουαὶ καὶ κατόπιν ἐδίδαξεν αὐτόθι ὡς καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας καὶ τῆς θεολογίας. Συνδεθεὶς μετὰ πολλῶν μεγάλων προσωπικοτήτων κατέστη ὁ κύριος παράγων τοῦ καθολικισμοῦ ἐν τῇ κεντρικῇ καὶ βορείῳ Ἀγγλίᾳ. Βραδύτερον κατέλαβε τὴν ἐπίζηλον θέσιν τοῦ διευθυντοῦ τοῦ κολλεγίου Σαίντ-Ὀμέρ, εἰς ἣν παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Μελετηρὸς ἐπιστήμων καὶ ὑπομονητικὸς ἐρευνητής, ἠσχολήθη μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας εἰς ἱστορικὰς καὶ θεολογικὰς μελέτας, ἔγραψε δὲ πλεῖστα ἔργα, ὧν σπουδαιότερα εἶναι: «Βίοι τῶν ἁγίων» (1745 5 τόμ.) πλειστάκις ἐπανεκδοθὲν καὶ μεταφρασθὲν εἰς ἄλλας γλώσσας, «Περιηγήσεις εἰς Γαλλίαν, Ἰταλίαν καὶ μέρος τῆς Αὐστρίας καὶ τῶν Κάτω Χωρῶν κατὰ τὰ ἔτη 1745—1746» (1803), «Στοχασμοὶ καὶ λόγοι περὶ τῶν ὑψηλοτέρων ἀληθειῶν καὶ τῶν κυριωτέρων γεγονότων τοῦ Χριστιανισμοῦ» (1791) κ. ἄ.

—**Μπάτλερ** (Butler), ***Βενιαμὶν-Φραγκλῖνος***. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς καὶ στρατηγὸς (1818—1893). Ἀναμειχθεὶς ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν, ἐξελέγη μέλος τοῦ νομοθετικοῦ σώματος τῆς Μασσαχουσέττης (1853) καὶ τῆς συγκλήτου αὐτῆς (1859). Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ ἐμφυλίου πολέμου (1861) διωρίσθη ἀνώτερος ἀξιωματικὸς τοῦ στρατοῦ τῆς Μασσαχουσέττης καὶ τὴν 17 Ἀπριλίου κατέλαβε τὴν Ἀννάπολιν καὶ κατώρθωσε νὰ σώσῃ διὰ ταχείας πρὸς τὴν Βαλτιμόρην προελάσεως τὴν ἀπειλουμένην ὑπὸ τῶν ἀνθενωτικῶν Οὐάσιγκτων. Τὸν Μάϊον τοῦ 1862 κατέλαβε τὴν Νέαν Ὀρλεάνην, τὰ κατ' ἐξοχὴν ὅμως αὐστηρὰ μέτρα, τῶν ὁποίων ἔκαμε χρῆσιν διὰ νὰ ἐπιβάλῃ τὴν τάξιν, ἔσχον ὡς ἀποτέλεσμα τὴν δημιουργίαν πολλῶν δυσαρεσκειῶν, δι' ὃ καὶ ἀντικατεστάθη. Ἀφοσιωθεὶς κατόπιν εἰς τὴν πολιτικήν, διετέλεσε μέλος τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ κογκρέσσου (1866) καὶ διοικητὴς τῆς πολιτείας Μασσαχουσέττης (1882—1884).

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Ἐλισάβετ Σαουθέρντεν, λαίδη***—. Σύγχρονος Ἀγγλὶς ζωγράφος, γεννηθεῖσα τῷ 1850 ἐν Λωζάνῃ. Ἐσπούδασε ζωγραφικὴν εἰς Φλωρεντίαν καὶ Ρώμην, ὁ πρῶτος δὲ ἀξιόλογος πίνας της ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐπίσκεψις» ἔτυχεν εὐμενοῦς κριτικῆς κατὰ τὴν ἔκθεσιν τοῦ Βατικανοῦ (1870). Τῷ 1873 ἀπεπεράτωσε τὸ πρῶτον σπουδαῖον ἔργον της «Roll Call» (ἀνάκτορον Μπάκιγχαμ), παριστῶν σκηνὴν ἐκ τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου, τὸ ὁποῖον ἐγένετο δημοτικώτατον ἐν Ἀγγλίᾳ. Ἀκολούθως ἐζωγράφησε μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας πλείστους πολεμικοὺς πίνακας, ὧν σπουδαιότεροι εἶναι οἱ ἑξῆς: «Quatre Bras» (1875) «Μπαλακλάβα» (1876), «Ἴνκερμαν» (1877), «Τὰ ὑπολείμματα ἑνὸς στρατοῦ» (1881) «Ἡ ἐπαύριον τοῦ Βατερλῶ» (1895) «Ἡ ἀπελευθέρωσις τῶν τραυματιῶν» (1905) κ. ἄ. Τῷ 1877 ἐνυμφεύθη τὸν σὲρ Γουλιέλμον Μπάτλερ. Ἐπίσης εἰκονογράφησε διὰ θαυμασίων παραστάσεων τὰ ποιήματα τῆς μικροτέρας ἀδελφῆς της *Ἀλίκης Μέϋνελ*. Χ. Δ.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Ἰωσήφ***. Ἄγγλος θεολόγος καὶ φιλόσοφος (1692—1752). Νεώτατος ἔτι ἀπηρνήθη τοὺς πρεσβυτεριανοὺς καὶ προσῆλθεν εἰς τὴν ἐπισκοπιανὴν Ἐκκλησίαν. Τῷ 1737 ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Μπριστὸλ καὶ τῷ 1750 ἐπίσκοπος τοῦ Ντῶρχαμ. Εἰς ἡλικίαν 22 ἐτῶν ἔγραψε τὰς μνημειώδεις πρὸς τὸν Κλάρκ πέντε ἐπιστολάς του ἐπὶ τοῦ ζητήματος τῆς ὑπάρξεως τοῦ Θεοῦ, ἃς οὗτος ἐξέδωκε μετ' ἀπαντήσεως. Εἰς τὴν χορείαν ὅμως τῶν φιλοσόφων τῆς ἐποχῆς του ἐτάχθη ἀφ' ἧς ἐδημοσιεύθησαν (1726) οἱ 15 λόγοι του. Θεωρεῖται εἰς τῶν προδρόμων τῆς σκωτικῆς σχολῆς εἰς τὴν λογικὴν καὶ ἠθικήν, τὸ δὲ ὕφος του ἐξαίρεται διὰ τὴν ἐνάργειαν τῆς ἐκφράσεως. Τῶν πραγματειῶν του ἀρίστη ἔκδοσις εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου τοῦ Γκλόστερ λόρδου Χάλιφαξ (Λονδῖνον 1809). Π. Ν. Π.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Ἰωσηφίνη-Ἐλισάβετ***. Ἀγγλὶς φιλάνθρωπος (1828—1906). Ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς μεγάλης προπαγάνδας ἀποσκοπούσης εἰς τὴν προστασίαν τῶν νεαρῶν ἐργατριῶν τῆς Ἀγγλίας καὶ τῶν λοιπῶν πεπολιτισμένων κρατῶν, ἱδρύσασα πρὸς τοῦτο ἄσυλα καὶ ἄλλα ἀγαθοεργὰ καταστήματα. Ἐπίσης κατέβαλε μεγάλας προσπαθείας πρὸς περιστολὴν τῆς πορνείας καὶ τῶν ἐξ αὐτῆς κοινωνικῶν κινδύνων καὶ πρὸς καταπολέμησιν τοῦ ἐμπορίου τῆς λευκῆς σαρκός, ἱδρύσασα πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον καὶ σύλλογον ἐν Λονδίνῳ. Ἔγραψεν: «Ἀναμνήσεις ἐκ μιᾶς μεγάλης σταυροφορίας» (1896), «Ρεβέκκα Τζάρρετ» (1886), «Ἰθαγενεῖς καὶ πόλεμος» (1900), ἔργον δι' οὗ ὑπερασπίζεται τὴν ἀγγλικὴν διοίκησιν ἐν Ἀφρικῇ, κ. ἄ.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Κάρολος***. Ἄγγλος νομομαθὴς καὶ θεολόγος, ἀνεψιὸς τοῦ Ἄλμπαν (1750—1832). Καθολικὸς τὸ δόγμα, ἐσπούδασεν εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ντουαί, εἶτα δὲ διωρίσθη δικηγόρος (1791). Ἐθεωρεῖτο ὡς αὐθεντία εἰς τὸ ἐπάγγελμά του καὶ ἔγραψε μνημειώδη νομικὴν πραγματείαν περὶ τοῦ δικαίου τῆς ἰδιοκτησίας ἐν Ἀγγλίᾳ, ὑπὸ τὸν τίτλον «Notes to Coke upon Littleton» (1787). Κυρίως ὅμως ἠσχολήθη μὲ τὴν ὑποστήριξιν τῶν καθολικῶν, γράψας πλεῖστα σχετικὰ ἔργα, ὧν σπουδαιότερα: «Πρόσκλησις πρὸς τοὺς διαμαρτυρομένους τῆς Μεγάλης Βρεττανίας καὶ Ἰρλανδίας», βιογραφίαι τοῦ Φενελὸν (1810), τοῦ ἀββᾶ Ρανσὲ (1814), συνέχεια τῶν Βίων τῶν ἁγίων τοῦ θείου του Ἄλμπαν (1823) κ. ἄ.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Νικόλαος-Μῶρραιν***. Ἀμερικανὸς παιδαγωγὸς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ἐσπούδασε φιλοσοφίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Κολούμπια τῆς Νέας Ὑόρκης καὶ κατόπιν ἐν Παρισίοις καὶ Βερολίνῳ (1884—1885). Ἀνακηρυχθεὶς διδάκτωρ, διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Κολούμπια, τοῦ ὁποίου ἐγένετο μετ' ὀλίγον πρόεδρος. Εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦτο ἐφήρμοσε νέον παιδαγωγικὸν σύστημα, συμφώνως πρὸς τὸ ὁποῖον περιωρίσθη ἡ ἀποκλειστικῶς μέχρι τότε ἐφαρμοζομένη διανοητικὴ μόνον μόρφωσις καὶ εἰσήχθη ἡ γενικωτέρα ἐπαγγελματικὴ ἐκπαίδευσις τοῦ μαθητοῦ. Ἡ νέα αὕτη ἐκπαιδευτικὴ μέθοδος ἐγένετο ἀσμένως δεκτή, ὁ δὲ ἀριθμὸς τῶν σπουδαστῶν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κολούμπια ηὐξήθη εἰς 30.000 περίπου. Συνειργάσθη εἰς πλεῖστα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ καὶ ἀνέλαβεν ἀπὸ τοῦ 1920 τὴν διεύθυνσιν τῆς «Παιδαγωγικῆς ἐπιθεωρήσεως». Ἔγραψε πολυάριθμα παιδαγωγικὰ καὶ ἄλλα ἔργα κοινωνικῆς καὶ πολιτικῆς φιλοσοφίας. Σπουδαιότερα τούτων εἶναι: «Ἀληθὴς καὶ ψευδὴς δημοκρατία» (1907), «Ἡ ἐκπαίδευσις εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας» (1910), «Διατί νὰ μεταβάλωμεν τὴν μορφὴν τοῦ πολιτεύματός μας;» (1912), «Ἡ σημασία τῆς ἐκπαιδεύσεως» (1915), «Ἕνας κόσμος ὑπὸ σχηματισμὸν» (1918), «Ἡ Ἀμερικὴ ἀξίζει νὰ σωθῇ;» (1920), «Ἀνθρωπισμὸς καὶ φιλοπατρία» (1912), «Σχηματισμὸς τοῦ ἀμερικανικοῦ λαοῦ» (1923) κ. ἄ.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Σαμουήλ***. Ἄγγλος σατιρικὸς ποιητὴς (1612—1680). Ἦτο υἱὸς κτηματίου καὶ ἠσχολήθη κατ' ἀρχὰς μὲ τὴν ζωγραφικήν, διατελέσας μαθητὴς τοῦ Σαμουὴλ Κοῦπερ. Βραδύτερον διετέλεσε γραμματεὺς εἰρηνοδικείου, εἶτα δὲ εταξίδευσεν ἐπὶ μακρὸν εἰς Γαλλίαν καὶ Ὁλλανδίαν. Προσληφθεὶς εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς κομίσσης τοῦ Κέντ, ἐγνώρισε τὸν πουριτανὸν σὲρ Σαμουὴλ Λώκ, ὅστις ἀσφαλῶς ἐνέπνευσεν εἰς αὐτὸν τὴν ἰδέαν τῆς περιφήμου κωμικῆς ἐποποιίας του: «Hudibras». Τὸ ἔργον τοῦτο, τοῦ ὁποίου τὸ μὲν πρῶτον μέρος ἐδημοσιεύθη τῷ 1663, τὰ δὲ δύο ἕτερα τῷ 1664 καὶ 1668, ἀποτελεῖ μακροτάτην σάτιραν στρεφομένην ἐναντίον τοῦ πουριτανισμοῦ. Ἡ διάδοσις τοῦ ποιήματος τούτου παρὰ τῷ ἀγγλικῷ λαῷ ἦτο τεραστία, ἐκυκλοφόρησαν δὲ πολυάριθμοι ἐκδόσεις, ὡς καὶ ἔμμετρος μετάφρασις γαλλιστὶ ὑπὸ Ἰωάννου Τάουνλεϋ. Ἀξιοσημείωτος εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Χόγκαρδ γενομένη καλλιτεχνικὴ εἰκονογράφησίς του. Ἀξιόλογα εἶναι ἐπίσης τὸ πρὸς τιμὴν τῶν Στούαρτ συντεθὲν ποίημα «Mola Asinaria» καὶ ἡ ἐναντίον τῶν σχολαστικῶν τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας σάτιρα «Ἐλέφας στὴ σελήνη». Ἐν τῷ ἀββαείῳ τοῦ Οὐεστμίνστερ ἀνηγέρθη τῷ 1721 πρὸς τιμήν του ἀναμνηστικὸν μνημεῖον.

— **Μπάτλερ** (Butler), ***Σαμουήλ***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1835—1902). Μετὰ λαμπρὰς σπουδὰς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Καῖμπριτς ἀνεχώρησε (1859) εἰς Νέαν Ζηλανδίαν, ὅπου ἐγένετο κτηνοτρόφος. ἐκεῖ δ' ἔγραψε τὸ ἔργον του «Πρῶτον ἔτος εἰς Καντερμπαίρυ Σέττλεμεντ» (1863), ἐν τῷ ὁποίῳ περιγράφει τὴν ἀποικιακὴν ζωήν. Τῷ 1864 ἐπέστρεψεν εἰς Εὐρώπην καὶ ἐσπούδασε τὴν ζωγραφικὴν ἐν Λονδίνῳ, συγχρόνως ὅμως ἐνδιεφέρετο μετ' ἀληθοῦς πάθους διὰ τὴν φυσικὴν ἱστορίαν, τὴν ἱστορίαν, τὴν ψυχολογίαν καὶ τὰ θρησκευτικὰ ζητήματα, μετ' ὀλίγον δὲ (1865) ἐδημοσίευε πραγματείαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Κριτικὴ ἔρευνα τῆς ἀποδείξεως περὶ τῆς ἀναστάσεως τοῦ Χριστοῦ». Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὸ οὐτοπιστικὸν μυθιστόρημα «Erewhon» (1872), οὗτινος ὁ τίτλος εἶναι ἀναγραμματισμὸς τοῦ nowhere (= πουθενά). Τὸ ἔργον τοῦτο ἀποτελεῖ συνδυασμὸν τῶν «Ταξιδίων τοῦ Γκιούλιβερ» καὶ τῆς «Οὐτοπίας» τοῦ Θωμᾶ Μώρου, ἐξιστορεῖ δὲ τὰς περιπετείας καὶ τὰς σκέψεις ἑνὸς περιηγητοῦ περιπλανηθέντος ἐντὸς φανταστικῆς χώρας.

Ἐν αὐτῷ ὁ συγγραφεὺς ἐλέγχει μὲ πικρὰν καὶ σκληρὰν εἰρωνείαν τὰς παραδοξολογίας καὶ προλήψεις τῶν Ἄγγλων ἐπὶ τῆς βασιλείας τῆς Βικτωρίας καὶ ἀνατρέπει διὰ τῆς εἰς ἄτοπον ἀπαγωγῆς τὰς δαρβινικὰς θεωρίας. Μετὰ τριάκοντα ἔτη ἐδημοσίευσε τὴν «Δευτέραν παραμονὴν εἰς Erewhon», ἐν ᾗ σατιρίζει τὰς λαϊκὰς θρησκευτικὰς πεποιθήσεις. Ἄλλα ἀξιόλογα ἔργα του εἶναι: «Ὁ ὡραῖος λιμὴν» (1873), «Ἡ ζωὴ καὶ ἡ συνήθεια» (1877), ἐν τῷ ὁποίῳ καταρρίπτει δι' ἐπιχειρημάτων τὴν θεωρίαν τῆς ἐπιλογῆς τῶν εἰδῶν, «Πρόοδος, παλαιὰ καὶ νέα» (1879), ἀποτελοῦν νέαν ἐναντίον τῶν θεωριῶν τοῦ Δαρβίνου πολεμικήν, «Θεὸς γνωστὸς καὶ θεὸς ἄγνωστος» (1880), «Ἡ ἀσυνείδητος μνήμη» (1880), «Τύχη ἢ ἐπιδεξιότης» κ. ἄ. Ἐπίσης ἔγραψε δύο τεχνοκριτικὰς μελέτας: «Αἱ Ἄλπεις καὶ τὰ ἱερὰ τοῦ Πεδεμοντίου» (1882) καὶ «Ex voto» (1888), πραγματείαν «Περὶ τοῦ συγγραφέως τῆς Ὀδυσσείας» (1897), ἐν τῇ ὁποίᾳ πειρᾶται νὰ ἀποδείξῃ ὅτι ἡ Ὀδύσσεια τοῦ Ὁμήρου εἶναι ἔργον γυναικός, μετέφρασεν εἰς πεζὸν τὴν Ἰλιάδα (1898) καὶ τὴν Ὀδύσσειαν (1900) κτλ. Ἐπισφράγισιν τοῦ ἔργου του ἀποτελεῖ τὸ μέγα μυθιστόρημα «Ἔτσι περνᾷ κάθε σάρκα» (1903), εἶδος αὐτοβιογραφίας, ἐν τῷ ὁποίῳ σατιρίζει κυρίως τὰς ἐκπαιδευτικὰς μεθόδους τῆς ἐποχῆς. Χ. Δ.

**Μπάτλη** (Batley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης, 13 χλμ. ΝΔ. τοῦ Λήντς. Κάτ. 36.137. Ἔχει μεγάλην βιομηχανίαν ἐπεξεργασίας ἐρίου, ὑφαντουργεῖα, χυτήρια καὶ ἐργοστάσια μηχανῶν καὶ ἀτμολεβήτων. Π. Ν. Π.

**μπατμάνι** (τὸ)· παλαιὰ τουρκικὴ μονὰς βάρους ἐν χρήσει μέχρι πρό τινων ἐτῶν ἐν Ἀνατολῇ διὰ τὰ ὑγρὰ καὶ τὰ σιτηρά. Ἡ ἀξία της ἐποίκιλλε κατ' ἐπαρχίας ἀπὸ 2 μέχρις 8 ὀκάδων. Συνήθως ἦτο 6 ὀκάδων. Ν. Μ.

**Μπατμὲζ - Βορδῶνας** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπικίνδυνος σκόπελος τῶν ἐν τῇ Προποντίδι μικρασιατικῶν προσγείων τοῦ Βοσπόρου (πλάτ. 40° 56' Β., μῆκ. 29° 06' ½ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2286: Prinkipo channel) μεταξὺ τῆς ἀκτῆς Μὰλ τεπὲ καὶ τῆς Πρώτης τῶν Πριγκιπονήσων. Σ. Ε. Λ.

**Μπὰτν *Ροὺς*** (Bâton Rouge) *[Γεωγρ.]* Ἰδ. *Μπατὸν* Ρούζ.

**Μπάτνος** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου δήμου ἐν τῷ νομῷ Βαγιαζὶτ (Μπαγιαζίτ), εἰς ἀπόστασιν 21 χλμ. ΒΔ. τῆς ὄχθης τῆς λίμνης τοῦ Βάν. Ὁ δῆμος ἔχει 25 χωρία. Ν. Μ.

**Μπάτοβα** (Batova) *[Γεωγρ.]*. Ὁ ΒΔ. μυχὸς τοῦ κόλπου τῆς Βάρνας (πλάτ. 43° 18' Β., μῆκ. 28° 08' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2230: Bosporus to Kaliakra), ἀμέσως πρὸς Δ. τοῦ Μπαλτζίκ. Σ. Ε. Λ.

**Μπατόνι, ἢ Μπαττόνι** (Batoni ἢ Battoni), ***Πομπήιος-Ἱερώνυμος***. Ἰταλὸς ζωγράφος ἐκ Λούκκας (1708—1787). Ἦτο υἱὸς χρυσοχόου, αἰσθανόμενος δὲ μεγάλην πρὸς τὴν ζωγραφικὴν κλίσιν μετέβη εἰς Ρώμην ὅπου ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν τῶν ἔργων τῆς παλαιᾶς σχολῆς τοῦ Ραφαήλ. Ἐζωγράφησε κυρίως κατ' ἀρχὰς διαφόρους ἁγιογραφίας ὧν ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Ὁ Χριστὸς περιβαλλόμενος ὑπὸ ἀγγέλων καὶ ἁγίων» (ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Κέλσου), «Ἡ ἐμφάνισις τοῦ Ἰησοῦ εἰς τὸν ναὸν» (διὰ τὸν ναὸν τῆς Βρεσκίας), «Ὁ Εὐαγγελισμὸς» (διὰ τὸν ναὸν τοῦ Κιάρι, παρὰ τὴν Βρεσκίαν), «Τὸ μαρτύριον τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου καὶ τῆς Ἁγίας Αἰκατερίνης τῆς Σιέννης» (ἐν Λούκκᾳ) κλπ. Ἡ φήμη του ἐξηπλώθη βαθμηδὸν καὶ εἰς τὸ ἐξωτερικόν, οἱ πλεῖστοι δ' ἐκ τῶν ἡγεμόνων τῆς Εὐρώπης ἔσπευσαν νὰ ἀναθέσουν εἰς αὐτὸν διαφόρους ἐργασίας. Οἱ μυθολογικοὶ πίνακές του οὐδόλως ὑστεροῦσι τῶν ἁγιογραφικῶν, μιμεῖται δ' εἰς αὐτοὺς μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας τοὺς ἀρτιστεῖς τῆς γαλλικῆς ζωγραφικῆς σχολῆς. Κάλλιστος ἐκ τῶν πινάκων του τοῦ εἴδους τούτου εἶναι «Ἡ Ἀφροδίτη θωπεύουσα τὸν Ἔρωτα». Ὡς προσωπογράφος

Digitized by Google

φος ἐπίσης ἔχαιρε μεγάλης φήμης, ἀπεικονίσας ὅλας σχεδὸν τὰς μεγάλας προσωπικότητας τῆς ἐποχῆς του, ἐν οἷς τοὺς πάπας Βενέδικτον ΙΔ΄, Κλήμεντα ΙΓ΄ καὶ Πῖον ΣΤ΄, τὸν αὐτοκράτορα Ἰω-

*Μπατόνι: Αὐτοπροσωπογραφία.*
[Ἐν τῇ πινακοθήκῃ Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας.]

σὴφ Β΄, τὸν μέγαν δοῦκα τῆς Τοσκάνης, τὸν αὐτοκράτορα καὶ τὴν αὐτοκράτειραν τῆς Ρωσίας, τὸν πρίγκιπα Κάρολον-Θεόδωρον τῆς Βαυαρίας κλπ. Διετέλεσε πρόεδρος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ, ἐπιμελητὴς τῶν καλλιτεχνικῶν συλλογῶν τοῦ πάπα καὶ ἐτιμήθη διὰ μεγάλων τιμῶν καὶ ἀξιωμάτων, ἔσχεν ὅμως τὸ ἀτύχημα νὰ χάσῃ τὴν ὅρασιν περὶ τὰ τέλη τῆς λαμπρᾶς σταδιοδρομίας του. Ὁ Μπατόνι ἦτο ὁ δημοτικώτερος Ἰταλὸς καλλιτέχνης τῆς ἐποχῆς του. Τὸ ἔργον του δὲν χαρακτηρίζεται μὲν ἀπὸ μεγάλην δημιουργικότητα, διακρίνεται ἐν τούτοις διὰ τὴν ἀκαταμάχητον χάριν του. Ἀντίζηλος τοῦ μεγάλου Γερμανοῦ ζωγράφου Ραφαὴλ Μένγκς, ὑπελείπετο μὲν αὐτοῦ ὡς πρὸς τὰς γνώσεις καὶ τὴν μεγάλην ἀναμορφωτικὴν δύναμιν, ἀλλ᾽ ὑπερεῖχεν ὅσον ἀφορᾷ τὴν φαντασίαν καὶ τὴν καλλιτεχνικὴν διάθεσιν. Χ. Δ.

**Μπατὸν Ροὺζ** (Bâton Rouge, ἀγγλ. προφ. *Μπάτν Ρούζ*) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς Βορειαμερικανικῆς πολιτείας Λουϊζιάνας ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Μισσισιπῆ, 79 χλμ. ΒΔ. τῆς Νέας Ὀρλεάνης. Κάτ. 42.000. Ἔχει ἀκμάζουσαν βιομηχανίαν ἀποστάξεως βενζίνης (Στάνταρ Ὄϊλ), βαμβακουργίαν κ. ἄ. Ἦτο ἀρχικῶς ἐμπορικὸς γαλλικὸς σταθμὸς κυριευθεὶς διαδοχικῶς ὑπὸ τῶν Ἄγγλων (1763) καὶ Ἱσπανῶν (1775). Μετέσχε τῆς βορειαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας τῷ 1817 καὶ τῷ 1848 ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς πολιτείας. Π. Ν. Π.

**Μπατόπουλος, *Δημήτριος*.** Ἀγωνιστὴς ἐξ Ἐλασσόνος (βλ. λ. *Ἐλασσώνας Δημήτριος*).

**Μπάτορυ** (Báthory)· βλ. λ. *Μπάτχορυ*.

**Μπατού,** ἢ *Ρὸκ νῆσοι* (Batu ἢ Rock Islands) *[Γεωγρ.]*. Ὁμὰς νήσων τῆς Μαλαισίας, ἀνήκουσα εἰς τὰς Ὁλλανδικὰς Ἰνδίας καὶ κειμένη ἐπὶ τοῦ ἰσημερινοῦ πρὸς Δ. τῆς Σουμάτρας μεταξὺ 0°10΄ Β.—0°45΄ Ν. πλάτους καὶ 97°50΄—98°35΄ Α. μήκους Γκρήνουιτς. Ἀποτελεῖται ἐκ 3 μεγάλων, αἵτινες εἶναι κατὰ σειρὰν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. αἱ: *Πίνι ἢ Μιντάο, Μάσα* καὶ *Μπάλα*, καὶ 48 μικρῶν, ἐξ ὧν 20 περίπου εἶναι ἀκατοίκητοι. Χωρίζονται ἀπὸ τοῦ ἀθροίσματος τῶν Μεντάβι ὑπὸ τοῦ διέκπλου Σιμπιρούτ καὶ ἔχουσιν ἔκτασιν 1.100 τ. χλμ. περίπου. Καλύπτονται κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ὑπὸ δασῶν κοκκοφοινίκων καὶ κατοικοῦνται ὑπὸ 3.000 περίπου κατοίκων τῆς μαλαϊκῆς ὁμάδος. Διεξάγουσιν ἐμπόριον καρπῶν καὶ ἐλαίου τῶν κοκκοφοινίκων, ὡς καὶ διαφόρων ἄλλων προϊόντων τῶν τροπικῶν δασῶν. Χ. Δ.

**Μπατουάνας** (οἱ). Φυλὴ τῆς Ν. Ἀφρικῆς (βλ. *Μπακαλαχάρις*).

**Μπατούας** (οἱ) βλ. *Βάτβα*.

**Μπατουδιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀντικυθήρων τῆς ἐπαρχίας Κυθήρων τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Κάτ. (1928) 36. Χ. Δ.

**Μπατουέκας** (Las Batuecas) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία κοιλάδων ἐν Ἱσπανίᾳ μεταξὺ τῶν ὀροσειρῶν τῆς Σιέρρα ντὲ Φράνθια ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σαλαμάνκας. Διαρρέονται ὑπὸ τοῦ Ἀλαγῶνος καὶ κατοικοῦνται ὑπὸ ἀραιοτάτου πληθυσμοῦ, ἄλλοτε φημιζομένου διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἠθῶν, διὰ τὰ ὁποῖα πλεῖσται παραδόσεις διασῴζονται. Π. Ν. Π.

**Μπατούϊας** (οἱ) (Batujas). Φυλὴ Καβύλων, ἐγκατεστημένων πρὸς Δ. τοῦ Ὀρὰν μεταξὺ τῆς ἁλμυρᾶς λίμνης Σέμπκα καὶ τῆς θαλάσσης. Γ. Ι. Β.

**Μπατοὺμ** (Batoum) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας (βλ. λ. *Βατούμ*).

**Μπατούτα, *ἔμπου-Ἀμπντουλλὰχ - Μωχάμμετ μπὲν-Μωχάμμετ ἴμπν*—.** Διάσημος Ἄραψ περιηγητὴς καὶ γεωγράφος. Ἐγεννήθη τῷ 1303 ἐν Ταγγέρῃ (Τάγγα ἢ Τάντζα) τοῦ Μαρόκκου καὶ ἀπέθανε τῷ 1378 ἐν Φέζ. Εἰς ἡλικίαν 23 ἐτῶν ἐπεχείρησε τὴν πρώτην μεγάλην αὐτοῦ περιοδείαν, ἐπισκεφθεὶς τὴν Αἴγυπτον, Ἀραβίαν, Παλαιστίνην, Συρίαν, Μεσοποταμίαν, Μικρὰν Ἀσίαν (τὸ βασίλειον τῶν Σελτζουκιδῶν), Περσίαν, Τουρκεστάν, Ἀφγανιστάν, Βουχάραν, Ἰνδίας, Σουμάτραν καὶ τὰς ἄλλας νήσους τῆς Σόνδης, τὰς Μαλδίβας νήσους, τὴν Νότιον Ρωσίαν, τὴν Κριμαίαν, τὴν Νότιον καὶ τὴν Κεντρικὴν Ἀφρικήν. Ἐπανελθὼν μετὰ εἰκοσιπενταετῆ περιήγησιν, καθ᾽ ἣν τρὶς μετέβη εἰς Μέκκαν καὶ Μεδίναν, εἰς τὴν πατρίδα του, διῆλθεν εἰς Ἱσπανίαν καὶ ἐπεσκέφθη τὴν Γαλλίαν. Τρίτην περιήγησιν ἐπεχείρησεν εἰς Σουδὰν καὶ Σαχάραν μέχρι Τουμπουκτοῦ, ἐπισκεφθεὶς οὕτω σχεδὸν ὁλόκληρον τὸν τότε γνωστὸν κόσμον, μεταξὺ δ᾽ ἄλλων καὶ τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου συνδιελέχθη μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος Ἀνδρονίκου τοῦ Γ΄. Αἱ μακραὶ αὗται περιηγήσεις του δεικνύουσι τὴν δύναμιν τῶν ἀραβικῶν ἐλευθεροτεκτονικῶν ὀργανώσεων τῆς ἐποχῆς του, χάρις εἰς τὰς ὁποίας εἷς κοινὸς Ἄραψ ταξιδιώτης ἠδυνήθη να ταξιδεύσῃ ἐπανειλημμένως εἰς τόσον μεμακρυσμένας χώρας μὲ τὰ ἀτελῆ μέσα τῶν τότε χρόνων. Ἔγραψε λεπτομερέστατον «Ὁδοιπορικὸν» (Σεγιαχατναμέ), τὸ ὁποῖον διετηρεῖτο ἐν Καΐρῳ ἢ κατ᾽ ἄλλην φήμην ἐν Φέζ, ἀλλὰ δὲν ἀνευρέθη ἀκόμη. Τὸ ὑπάρχον θεωρεῖται ὑπὸ τῶν Ἀράβων ὡς ἁπλῆ περίληψις τοῦ μεγάλου, γραφὲν ὑπὸ τοῦ Μαροκκηνοῦ σοφοῦ Μωχάμμετ Δζουζάϊ Κελεμπῆ, χάριν τοῦ βασιλέως τοῦ Μαρόκκου Μουτεβεκκὶλ - Ὀλλάχ. Κατ᾽ ἄλλην ἐκδοχὴν ἡ περίληψις αὕτη ὑπηγορεύθη εἰς τὸν Δζουζάϊ ὑπ᾽ αὐτοῦ τοῦ Μπατούτα κατὰ διαταγὴν τοῦ βασιλέως. Τὸ «Ὁδοιπορικὸν» τοῦτο χαρακτηρίζεται ὑπὸ τῶν Ἀράβων κριτικῶν ὡς ἐστερημένον κρίσεως, περιορισθὲν ἁπλῶς εἰς τὸ νὰ περισυλλέξῃ ὅσα ἤκουσε καὶ εἶδεν ὁ περιηγητής, πολλάκις παράδοξα, ὡς τὰ περὶ τοῦ κολοσσιαίου ὀρνέου ροὺχ (ὑπενθυμίζοντος τὸ *ρὸκ* τῆς «Χαλιμᾶς»), τὸ ὁποῖον ἴσως νὰ ἦτο κάποια νῆσος ἐμφανισθεῖσα εἰς τὰ ὕψη ὡς ἐκ τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ κατοπτρισμοῦ. Περιέχει ὅμως πολυτίμους πληροφορίας περὶ Κεντρικῆς Ἀφρικῆς καὶ τῶν Μαλδίβων νήσων. Οἱ Ἄραβες ὑποθέτουσιν, ὅτι ἂν ἀνευρεθῇ τὸ μέγα «Ὁδοιπορικὸν» του θὰ γνωσθῶσιν ἄγνωστοι λεπτομέρειαι περὶ τοῦ ἀραβικοῦ καὶ μουσουλμανικοῦ ἐν γένει κόσμου τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Τὸ μικρὸν «Ὁδοιπορικὸν» τοῦ Ἴμπν-Μπατούτα, γνωστὸν γενόμενον κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος ἐκ περιλήψεων καὶ ἀποσπασμάτων, ἐδημοσιεύθη ὁλόκληρον τῷ 1853—1858 μετὰ γαλλικῆς μεταφράσεως εἰς 4 τόμους ἐπὶ τῇ βάσει χειρογράφου τοῦ Τζουζάϊ, ἀνακαλυφθέντος ὑπὸ τῶν Γάλλων κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντίνης (Ἀλγερίου). Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπατοὺ Χάν.** Ἡγεμὼν τῆς Μογγολίας, ἔγγονος τοῦ Δζεγκὶς - Χάν, λαβὼν κατὰ τὴν διανομὴν τοῦ μεγάλου μογγολικοῦ κράτους ὡς κληρονομικὴν μερίδα τὴν χώραν τοῦ Κιπτσάκ. Τῷ 1235 ἀνετέθη εἰς αὐτὸν ἡ ἀρχηγία τοῦ ἐναντίον τῆς Ρωσίας πολέμου τῶν Μογγόλων. Τῷ 1237 ἐκυρίευσε τὴν Ριαζάν, τῷ 1238 τὸ Βλαδιμίρ, τὸ Κοζέλσκ καὶ τὰ παράλια τοῦ Εὐξείνου, καὶ τῷ 1240 συνετέλεσε τὴν ὑποδούλωσιν τῆς Ρωσίας διὰ τῆς καταστροφῆς τοῦ Κιέβου. Κατόπιν ἐστράφη πρὸς τὴν Οὐγγαρίαν, ὅπου κατήγαγε τῷ 1241 αἱματηρὰν νίκην κατὰ τοῦ ἀρχιδουκὸς τῆς Αὐστρίας Φρειδερίκου τοῦ Πολεμιστοῦ. Κατόπιν ὅμως, ἡττηθέντος τοῦ μογγολικοῦ στρατοῦ παρὰ τὴν Βααλστάτ, ἐπέστρεψεν εἰς Κιπτσάκ, διότι ἐν τῷ μεταξὺ ἐπληροφορήθη τὸν θάνατον τοῦ μεγάλου χάνου τῶν Μογγόλων Ὀγοτάϊ. Ἀπέθανε τῷ 1256 ἐν Κιπτσάκ. Ν. Μ.

**Μπατροὺν** *[Γεωγρ.]*. Ὕφορμος τῆς Συρίας καὶ πόλισμα (πλάτ. 34° 16΄ Β., μήκ. 35° 35΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2633: Markhab to Ras-en-Nakura), 14 μίλλ. ΝΔ. τῆς Τριπόλεως καὶ 23 βορείως τῆς Βηρυτοῦ τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως. Εἶναι πόλις ἀρχαία, ἱδρυθεῖσα ὡς θέσις ὀχυρὰ ὑπὸ τῶν Φοινίκων. Κάτ. 2.500. Διακρίνονται πλεῖστα λείψανα τῆς ἀρχαίας πόλεως *Βότρυς*, ἧς τὴν θέσιν ἐπέχει. Ἡ ὑποδιοίκησις ἔχει 64.000 κατοίκους, κεῖται δὲ εἰς τὰ ΒΔ. τῆς χώρας τοῦ Λιβάνου. Σ. Ε. Λ.—Ν. Μ.

**Μπὰχ** (Bache), ***Ἀλέξανδρος - Ντάλλας*.** Ἀμερικανὸς ὑδρογράφος καὶ φυσικὸς (1806—1867). Προήδρευσε τῆς ἐπιτροπῆς ἐξερευνήσεως τῶν ἀμερικανικῶν ἀκτῶν (1843), ἔγραψε δὲ πολλὰς πραγματείας καὶ ἐδημοσίευσε παρατηρήσεις σχετικὰς πρὸς τὸν μαγνητισμὸν τῆς γῆς, τὰ μετεωρολογικὰ φαινόμενα κτλ. Α. Δ.

**μπάτσα** (ἡ), καὶ *μπάτσος* (ὁ)· κτύπημα ἐπὶ τῶν παρειῶν δι᾽ ἀνοικτῆς παλάμης, κόλαφος, ῥάπισμα: «ἔφαγε μιὰ μπάτσα καὶ τοῦ φάνηκε ὁ οὐρανὸς σφοντύλι» || μεταφ., προσβολή, ἀποδοκιμασία.

**Μπάτσαν,** ἢ *Μπάτγιαν* (Batschan ἢ Batjan) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς ὁμάδος τῶν Μολουκῶν, κειμένη πρὸς ΝΔ. τῆς Ἀλμαχέρα καὶ ἀποτελοῦσα μετ᾽ ἄλλων τινῶν παρ᾽ αὐτὴν νησίδων σουλτανᾶτον ὑποτελὲς εἰς τὴν Ὁλλανδίαν. Ἔχει ἔκτασιν 2.367 τ. χλμ., πληθυσμὸν περίπου 13.000 κατ., Μωαμεθανῶν τὸ θρήσκευμα, καὶ εἶναι ὀρεινὴ (μέγιστον ὕψ. 2.180 μ.). Τὸ ἰθαγενὲς κράτος τῆς Μπάτσαν ἔχει ἔκτασιν 2.643 τ. χλμ. Χ. Δ.

**Μπάτσανυ** (Bacsanyi), ***Ἰωάννης*.** Οὔγγρος ποιητὴς (1763—1845). Μετὰ τὴν δημοσίευσιν τοῦ πατριωτικοῦ ποιήματος «Ἡ ἀρετὴ τῶν Οὔγγρων» (1785), ὅπερ εἶναι καὶ τὸ πρῶτον ἔργον του, διωρίσθη οἰκονομικὸς ὑπάλληλος εἰς τὸ Κάσαου τῆς Σλοβακίας καὶ ἐκεῖ μετὰ δύο Οὔγγρων πατριωτῶν ἐξέδωκε τὸ «Οὐγγρικὸν μουσεῖον». Ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν συνωμοσίαν τοῦ ἐπισκόπου Μαρτίνοβιτς ἐφυλακίσθη, ἀπολυθεὶς δὲ ἐγένετο ὁ κυριώτερος ἐκδότης τῆς «Οὐγγρικῆς Ἀθηνᾶς». Τῷ 1809 μετέφρασε τὴν προκήρυξιν τοῦ Ναπολέοντος, ἀναγκασθεὶς κατόπιν τούτου νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους. Ὁ Μπάτσανυ ἔγραψε ποιήματα, ᾠδὰς κλπ. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1865 ὑπὸ τοῦ Toldy. Γ. Ι. Β.

**Μπατσέλλι** (Baccelli), ***Ἀλφρέδος*.** Ἰταλὸς ποιητής, κριτικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ρώμῃ τῷ 1863. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς (1887) καὶ τῆς φιλολογίας (1888), ἐχρημάτισε βουλευτὴς τοῦ Τίβολι (1895), ὑπουργὸς τῶν Τ. Τ. Τ. (1906) καὶ τῆς Παιδείας (1919—1920), τέλος δὲ γερουσιαστὴς (1921). Ποιητικὰ αὐτοῦ ἔργα εἶναι: «Τζερμίνα» (1883), «Ὁ θρῦλος τῆς καρδιᾶς» (1888), «Θεία φύσις» (1885), «Θύματα καὶ ἐπαναστάται» (1894), «Αἰσθήματα» (1905) κ. ἄ. Ἔγραψεν ἐπίσης «Σακούνταλα» (1889), λυρικὸν δρᾶμα, τὰ μυθιστορήματα: «Εἰς τὴν σκιὰν τῶν ἡττημένων» (1909), «Ὁ δρόμος τοῦ φωτὸς» (1914), τὰς πραγματείας: «Νομικαὶ μελέται» (1904), «Αἱ ἐμπορικαὶ συμβάσεις» κ. ἄ. Ἡ ποιητικὴ του ἐργασία ἐξεδόθη πλήρης ἐν Βολωνίᾳ τῷ 1929. Π. Ν. Π.

**Μπατσέλλι** (Baccelli), ***Γκουΐντο*.** Ἐπιφανὴς Ἰταλὸς ἰατρὸς καὶ πολιτικός, γόνος μεγάλης ρωμαϊκῆς οἰκογενείας, γεννηθεὶς ἐν Ρώμῃ (1832—1916). Τῷ 1854 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατροδικαστικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ρώμης, διδάξας ἅμα βοτανικὴν καὶ γενικὴν παθολογίαν καὶ τῷ 1863 καὶ ἰατρικὴν κλινικήν. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπεδόθη μετὰ ζήλου εἰς ἀνατομοπαθολογικὰς σπουδάς, ὧν συνέπεια ὑπῆρξεν ἡ ἵδρυσις ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ρώμης, ἕδρας ἀνατομοπαθολογίας, ἣν οὗτος πρῶτος κατέλαβε. Τῷ 1870 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς κλινικῆς τοῦ ρωμαϊκοῦ πανεπιστημίου, διατηρήσας τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ θανάτου του. Καὶ ὡς συγγραφεὺς ὑπῆρξε λίαν γόνιμος καὶ ὡς κλινικὸς παρουσίασεν ἱκανὰς ἀνακαλύψεις. Ἀναφέρομεν τὸ τετράτομον σύγγραμμά του τῆς παθολογίας καρδίας καὶ ἀορτῆς «La patologia del cuore e dell' aorte» (1863—1867), ὡς καὶ «Lezioni cliniche sulla malaria—la perniciosità» (1869), «La subcontinua tifoidea» (Ρώμη 1876), «Sull empiema vero» (1863), «De primitivo splenis carcinomate» (Ρώμη 1876). Ἐκ δὲ τῶν διαφόρων αὐτοῦ μεθόδων σημειοῦμεν τὴν τῆς θεραπείας τοῦ ἀνευρύσματος τῆς ἀορτῆς «Di un nuovo metodo di cura per gli anevrismi aortici» (1876), ὡς καὶ τοῦ τετάνου. Ἐπίσης τὸ διαγνωστικὸν αὐτοῦ σημεῖον τῶν κύστεων φωθήκης «Di un nuovo segno dei tumori ovarici in genere ed in specie del cistovario» (1876) καὶ τέλος τὴν ὑπ᾽ αὐτοῦ ἀνακάλυψιν τῆς ἐν τῷ πλευρίτιδι κατὰ τὴν ἀκρόασιν αἰσθητῆς γινομένης ἀφώνου στηθολαλιᾶς «Sulla transmissione dei suoni attraverso i liquidi endopleurici di differente natura». Μεγάλη ἐπίσης ὑπῆρξε καὶ ἡ συμβολή του εἰς τὴν θεραπευτικήν, εἰσαγαγὼν ἐν ταύτῃ τὸ ὀξυγόνον, τὰς ἐνδοφλεβίους ἐνέσεις ἁλάτων κινίνης διὰ τὴν ἑλονοσίαν, τὰς ἐνδοφλεβίους ἐνέσεις τοῦ ὑδραργύρου διὰ τὴν θεραπείαν τῆς συφίλιδος, τοῦ ἐρυσιπέλατος καὶ τῆς σηψαιμίας, τὰς ἀφαιμάξεις διὰ τὴν ὀξεῖαν νεφρίτιδα κλπ. Τῷ 1874 ἐξελέγη βουλευτής, διατελέσας τοῖς ὑπουργὸς τῆς Παιδείας (1880—1884,

*Γκουΐντο Μπατσέλλι.*

Digitized by Google

1893—1896 καὶ 1898—1900) καὶ ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας, Βιομηχανίας καὶ Ἐμπορίου (1901—1903). Ο. Ρ.

**Μπατσὶ** *[Γεωγρ.]*. Παράλιον χωρίον τῆς νήσου Ἄνδρου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 346. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ οἱ συνοικισμοὶ *Στιβάρη, Δαμασκηνό, Μακροτεῖχι, Μπιόδες, Μπισιάκοι, Στοιχειωμένο* καὶ *Σκούμπη*. Εἰς τὴν περιφέρειαν τῆς κοινότητος ὑπάγεται καὶ ἡ ἱδρυθεῖσα τῷ 1560 μ. Χ. ἱστορικὴ μονὴ τῆς *Ζωοδόχου Πηγῆς* ἢ *Ἁγίας*, ἐν ᾗ σῴζονται βαρύτιμα καὶ ἱστορικὰ βυζαντινὰ κειμήλια καὶ χειρόγραφα. Ἐν αὐτῇ μονάζουν 35 μοναχαί, διατηροῦσαι ἀξιόλογον ἐργαστήριον χειροτεχνικῶν προϊόντων. Συγκοινωνεῖ ἀτμοπλοϊκῶς μετὰ τοῦ Πειραιῶς μέσῳ Καρύστου-Γαυρείου (ὥρ. 6) καὶ δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ (ὑπὸ κατασκευὴν) μετὰ τῆς πόλεως Ἄνδρου (χλμ. 24). Δ. Ε. Μ.

**Μπατσιαρέλλι** (Bacciarelli), ***Μαρκελλῖνος***. Ἰταλὸς ζωγράφος (1731—1818). Μετέβη εἰς Δρέσδην, κατὰ πρόσκλησιν τοῦ ἐκλέκτορος τῆς Σαξωνίας Αὐγούστου τοῦ Γ', ἀκολουθήσας δὲ τοῦτον εἰς Πολωνίαν ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν Βαρσοβίᾳ, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν, ἀφοῦ διετέλεσεν αὐλικὸς ζωγράφος τοῦ Στανισλάου - Αὐγούστου Πονιατόφσκι. Ἐξετέλεσεν ἱστορικοὺς πίνακας («Ἀπελευθέρωσις τῆς Βιέννης ὑπὸ τοῦ Σομπιέσκι», «Ὁ Στανίσλαος - Αὔγουστος θνήσκων ἐν Πετρουπόλει»), θρησκευτικοὺς («Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ»), μυθολογικοὺς («Ὁ Ἀπόλλων καὶ αἱ Μοῦσαι») καὶ πολυαρίθμους προσωπογραφίας. Ι. Μ. Π.

**μπατσίζω**· δημοτ., δίνω μπάτσα, κολαφίζω.

**μπάτσικα** (ἡ) *[Ἐγκυκλ.]*. Δύο παιγνίδια παιζόμενα τὸ μὲν διὰ σφαιριστηρίου (μπιλλιάρδου), τὸ δὲ διὰ παιγνιοχάρτων. Ἡ διὰ τοῦ σφαιριστηρίου παιζομένη μπάτσικα εἶναι τεχνικὸν παίγνιον, ἀντικειμενικὸς σκοπὸς τοῦ ὁποίου εἶναι ὁ σχηματισμὸς παρ' ἑκάστου παίκτου τριάκοντα καὶ ἑνὸς *πόντων*, ὁπότε κερδίζει καὶ λαμβάνει τὰ πρὸς τοῦτο καταβαλλόμενα χρήματα. Κατ' ἀρχὰς οἱ παῖκται, δύο συνήθως, λαμβάνουσι κλῆρον ἐκ κληρωτίδος, τὸν ὁποῖον κρατοῦσι μυστικόν. Ἐν τῇ κληρωτίδι περιέχονται κλῆροι ἀπὸ τοῦ ἀριθμοῦ 1 μέχρι τοῦ 16. Εἰς τὸ κέντρον τοῦ σφαιριστηρίου τοποθετοῦνται πλησίον ἀλλήλων καὶ σταυροειδῶς πέντε *τζινέττα* (μικροὶ ἐκ ξύλου ἢ ἐλεφαντοστοῦ πεσσοί), φέροντα τοὺς ἀριθμοὺς ἀπὸ τοῦ 1—5 καὶ εἰς τρόπον ὥστε κατὰ τὸ διάμηκες τοῦ σφαιριστηρίου νὰ δίδωσιν ἄθροισμα 9, ἐγκαρσίως δὲ 11 (1, 5, 3 καὶ 2, 5, 4). Ἕκαστος παίκτης προσπαθεῖ, ρίπτων διὰ τῶν σφαιρῶν τοῦ σφαιριστηρίου τὰ πρὸς τοῦτο ἀπαιτούμενα τζινέττα, νὰ σχηματίσῃ ἀριθμόν, ὅστις προστιθέμενος εἰς τὸν κλῆρόν του ν' ἀποτελῇ τὸν 31, ὁπότε «κάνει μπάτσικα». Εἰς περίπτωσιν καθ' ἣν, ρίπτων περισσότερα τζινέττα, σχηματίσῃ μεγαλύτερον τοῦ 31 ἀριθμόν, «καίεται» ἢ «μορτάρει» (χάνει). Ἀντιθέτως ὅμως δύναται νὰ «σταθῇ» ἢ νὰ «κρατήσῃ φέρμος» εἰς μικρότερον τοῦ 31 ἀριθμὸν (π. χ. εἰς τοὺς 28, 29 ἢ 30 πόντους), ὁπότε κερδίζει, ἐὰν καὶ ὁ ἀντίπαλός του σταθῇ εἰς μικρότερον ἀριθμὸν πόντων. Ἡ μπάτσικα παίζεται διὰ τεσσάρων σφαιρῶν (τριῶν λευκῶν καὶ μιᾶς ἐρυθρᾶς), τὰς ὁποίας ὁ παίκτης μεταχειρίζεται ἀδιακρίτως, πλὴν τοῦ ἀρχίζοντος τὸ παιγνίδιον, ὅστις παίζει διὰ τῶν τριῶν, τῆς τετάρτης προστιθεμένης εὐθὺς κατόπιν ὑπὸ τοῦ δευτέρου, ὅστις καὶ κτυπᾷ αὐτὴν διὰ τῆς *στέκας* σκοπεύων τὴν ἐρυθρὰν σφαῖραν, τοποθετουμένην εἰς τὴν ἀπέναντι τοῦ παίκτου στενὴν πλευρὰν τοῦ σφαιριστηρίου. Μόνον δεξιοτέχναι δύνανται νὰ παίξωσι τὸ τεχνικώτατον τοῦτο παιγνίδιον, ἀπαραίτητος προϋπόθεσις τοῦ ὁποίου εἶναι ἡ πλήρης κατοχὴ τῶν διαφόρων κτυπημάτων, φάλτσων καὶ συνδυασμῶν ἐπιτεύξεως καραμπόλας (βλ. λ. *σφαιριστήριον*). Ρῖψις τῶν τεσσάρων περιφερικῶν τζινέττων καλεῖται *μπατσικότο*, ρῖψις δὲ καὶ τῶν πέντε *παράγκα*.

Ἡ διὰ παιγνιοχάρτων παιζομένη *μπάτσικα* παίζεται ὑπὸ δύο παικτῶν καὶ διὰ 40 παιγνιοχάρτων (ἀφαιρουμένων ἐκ τῆς δεσμίδος τῶν ὀκταριῶν, τῶν ἐννιαριῶν καὶ τῶν δεκαριῶν). Ἡ ἀξία τῶν παιγνιοχάρτων εἶναι ἡ ἐπὶ ἑκάστου ἀναγεγραμμένη πλὴν τῶν «γραμμένων» (φιγοῦρες), αἵτινες ἰσοῦνται πρὸς 10 πόντους. Τὸ παιγνίδιον παίζεται περίπου ὡς τὸ *τριάντα ἕνα*, ὅπερ εἶναι καὶ εἰς τὴν μπάτσικαν τὸ ἀνώτατον ὅριον τοῦ ἀθροίσματος τῶν φύλλων, ἅτινα ἕκαστος παίκτης δύναται νὰ φέρῃ. Οἱ πόντοι ἑκάστου παιγνιδίου εἶναι ἑπτά, ἀριθμοῦνται δὲ κατὰ διαφόρους συνδυασμούς, οἵτινες κατ' ἀξίαν εἶναι οἱ ἑξῆς: 1) ὁ *γκελές*, σχηματιζόμενος ἐκ δύο ὁμοίων φύλλων καὶ μετρῶν 1 πόντον, 2) τὰ ἄθροισμα τῶν φύλλων, ἅτινα ἕκαστος παίκτης ἔχει· ὁ ἔχων ἄθροισμα τριάντα ἕνα μετρεῖ δύο πόντους, ἄλλως ὁ ἔχων ἐκ τῶν δύο παικτῶν τὸ μεγαλύτερον ἄθροισμα μετρεῖ 1 πόντον. ἐνῷ ὁ ὑπερβαίνων τὸ 31 «καίγεται», 3) ἡ *μπάτσικα*, σχηματιζομένη ἐκ τῶν τριῶν πρώτων μοιρασθέντων φύλλων, ἐφόσον τὸ ἄθροισμα δὲν ὑπερβαίνει τὸ 9 (π. χ. 4+4+1 ἢ 2+2+3 ἢ 1+2+3 κ.ο.κ.) καὶ μετροῦσα 2 πόντους, 4) τὰ τρία ὅμοια φύλλα, ἐφ' ὅσον ταῦτα σχηματισθοῦν ὄχι κατὰ τὸ ἀρχικὸν μοίρασμα ἀλλὰ μετὰ τὸ τράβηγμα τοῦ χαρτιοῦ καὶ μετροῦντα 3 πόντους· καὶ 5) τὸ *μπατσικότο*, σχηματιζόμενον ἐκ τῶν τριῶν ἐπίσης πρώτων φύλλων, ἐφόσον ταῦτα εἶναι ὅμοια μεταξύ των ἢ ἐκ τεσσάρων ὁμοίων μετὰ τὸ τράβηγμα τῶν χαρτιῶν. Τὸ μπατσικότο ἰσοδυναμεῖ πρὸς 7 πόντους, ἤτοι πρὸς τὸν ἀνώτατον ἀριθμὸν πόντων τοῦ παιγνιδίου, ὅπερ παίζεται ὡς ἑξῆς:

Ὁ μοιράζων δίδει ἐν ἀρχῇ τρία κλειστὰ φύλλα, μοιραζόμενα ἀνὰ ἓν ἐκ τοῦ κάτω μέρους τῆς τράπουλας. Ὅστις τῶν παικτῶν σχηματίζει διὰ τῶν τριῶν πρώτων φύλλων *μπάτσικαν*, δηλοῖ ταύτην ἀμέσως. Ἐὰν οὐδεὶς ἔχῃ μπάτσικαν, δύνανται οἱ παῖκται κατόπιν κοινῆς συνεννοήσεως νὰ ἀνταλλάξουν ὅσα φύλλα θέλουν διὰ νὰ κάνουν μπάτσικαν. Ὅταν συμπέσῃ καὶ οἱ δύο παῖκται νὰ κάνουν μπάτσικαν, κερδίζει ἡ δίδουσα τὸ μικρότερον ἄθροισμα. Μετὰ τὴν δήλωσιν τῆς μπάτσικας ἐπακολουθεῖ ἡ κυρία φάσις τοῦ παιγνιδίου. Ὁ πρῶτος δικαιούμενος νὰ λάβῃ φύλλα ζητεῖ διαδοχικῶς τοιαῦτα, φροντίζων ὥστε τὸ ἄθροισμα αὐτῶν νὰ μὴ ὑπερβῇ τὸν ἀριθμὸν τριανταένα, ὁπότε καίγεται. Τὸ αὐτὸ πράττει καὶ ὁ δεύτερος παίκτης, ἀφοῦ δὲ λάβῃ ὅσα φύλλα θέλει, φανερώνουν τὰ χαρτιά των καὶ μετροῦν τοὺς πόντους των. Ὅταν εἷς τῶν παικτῶν «κάνῃ μπατσικότο», γράφει 7 πόντους, ἐνῷ ὁ ἀντίπαλός του γράφει 0. Ὅταν εἷς παίκτης «καῇ» ὄχι μόνον χάνει τοὺς πόντους του, ἀλλὰ σβύνει ἕνα πόντον ἐκ τοῦ ἀθροίσματος τῶν προηγουμένων παιγνιδίων, ἐκτὸς ἐὰν εἶχεν ἀρχικῶς δηλώσει μπάτσικαν.

Σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν μπάτσικαν παίζει τὸ 7 καρρό, τὸ ὁποῖον καλεῖται *κουμουδί*, δύναται δέ, ὅπως τὸ *τζόκερ* εἰς ἄλλα παίγνια, νὰ λάβῃ οἱανδήποτε ἀξίαν ἐπιθυμεῖ ὁ παίκτης. Ὅταν οἱ παῖκται τραβοῦν φύλλα πρὸς σχηματισμὸν 31, ὁ ἔχων τὸ κουμουδὶ ὀφείλει νὰ δηλώσῃ ποίαν ἀξίαν ἐπιθυμεῖ νὰ τοῦ δώσῃ. Ἑκάστη παρτίδα ἀποτελεῖται ἐκ σειρᾶς παιγνιδίων, ἀναλόγως τοῦ ὁρίου ὅπερ οἱ παῖκται ἔθεσαν μεταξύ των (συνήθως 21). Ὅταν ἀμφότεροι οἱ παῖκται πλησιάζουν νὰ «βγοῦν», τότε κερδίζει ἐκεῖνος, ὅστις πρῶτος θὰ συμπληρώσῃ τοὺς πόντους του. —Ω.

**Μπάτσικα** (Bacska, Backa) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπάτσκα*.

**μπατσικότ(τ)ο** (τὸ) *[Παιγν.]*· βλ. λ. *μπάτσικα*.

**μπατσινάκα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *δαῦκος* τὸ καρωτὸν (βλ. λ.).

**Μπατσίνι** (Bazzini), ***Ἀντώνιος***. Διακεκριμένος Ἰταλὸς βιολιστὴς καὶ συνθέτης (1818—1897). Τῇ συμβουλῇ τοῦ Παγκανίνι ἐπεχείρησε καλλιτεχνικὰ ταξίδια, ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν, Γερμανίαν, Ἱσπανίαν καὶ Γαλλίαν, προκαλῶν πανταχοῦ ἐνθουσιασμόν. Ἀπὸ τοῦ 1852 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις καὶ τέλος ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του διωρίσθη τῷ 1873 καθηγητὴς τῆς συνθέσεως ἐν τῷ ᾠδείῳ τοῦ Μιλάνου, τῷ δὲ 1882 διευθυντὴς αὐτοῦ. Ἡ ἐπίδρασις τῆς τέχνης τοῦ Μπὰχ καὶ τοῦ Μπετόβεν, ἣν ὁ Μπατσίνι ὑπέστη κατὰ τὴν ἐν Λειψίᾳ διαμονήν του, γίνεται ἔκδηλος εἰς τὰς συνθέσεις του, αἵτινες εἶναι μὲν μεσταὶ ἰταλικῆς μελῳδικότητος, ἀλλὰ ταυτοχρόνως, ἀπὸ ἀπόψεως ἁρμονίας, καθαρῶς γερμανικαί. Μεταξὺ τῶν ἔργων ἰδιαιτέραν θέσιν κατέχουσιν αἱ εἰσαγωγαί: «Σαούλ» καὶ «Βασιλεὺς Λήρ», ἡ συμφωνία-καντάτα «Σεναχερίμπ», οἱ 51 καὶ 56 ψαλμοί, τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Φραντζέσκα τοῦ Ρίμινι», 6 κουαρτέττα, ἓν κουϊντέττο ἐγχόρδων κτλ. Τὸ μελόδραμα τοῦ Μπατσίνι «Τουραντότ», παιχθὲν τῷ 1867 εἰς τὴν «Σκάλαν» τοῦ Μιλάνου, ἔσχε μικρὰν ἐπιτυχίαν. Γ. Σ.

**Μπατσιόκι** (Bacciochi), ***Φῆλιξ***. Γάλλος ἐκ Κορσικῆς, ἀνεψιὸς τοῦ *Φήλικος-Πασχάλη Μπατσιόκι* (βλ. κατωτ.), ἀποθανὼν τῷ 1866. Ἐπὶ Ναπολέοντος Γ' ἐπέμφθη ἐπὶ ἐκτάκτῳ ἀποστολῇ εἰς τὰς αὐλὰς τῆς Ἑλλάδος, τῆς Τουρκίας καὶ Αἰγύπτου, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Γαλλίαν διωρίσθη πρῶτος θαλαμηπόλος τοῦ αὐτοκράτορος καὶ γενικὸς ἐπόπτης τῶν αὐτοκρατορικῶν θεάτρων.

— **Μπατσιόκι** (Bacciochi), ***Φῆλιξ - Πασχάλης***. Ἀξιωματικὸς ἐκ Κορσικῆς (1762—1841), σύζυγος τῆς ἀδελφῆς τοῦ Ναπολέοντος Α' Ἐλίζας, τὴν ὁποίαν εἶχε νυμφευθῆ τῷ 1797 φέρων τότε βαθμὸν λοχαγοῦ. Τῷ 1804 ὁ Ναπολέων τὸν διώρισε γερουσιαστήν, ὅταν δὲ ἀπένειμεν εἰς τὴν Ἐλίζαν τὸν τίτλον τῆς πριγκιπίσσης τοῦ Πομπίνο καὶ τῆς Λούκας, ὁ Μπατσιόκι ἐστέφθη καὶ αὐτὸς πρίγκιψ. Ἐκ τοῦ γάμου των ἐγεννήθησαν τρία τέκνα: ἡ *Ναπαλεόνη-Ἐλίζα* (1806—1869), ὁ *Ἱερώνυμος-Κάρολος* (1810—1830) καὶ ὁ *Φρειδερῖκος - Ναπολέων* (1815—1833). Ὁ Μπατσιόκι ἐφημίζετο ὡς ἄνθρωπος ἀσθενοῦς χαρακτῆρος καὶ πειθήνιον νευρόσπαστον εἰς χεῖρας τῆς συζύγου του (περὶ ἧς βλ. λ. *Βοναπάρται*, τόμ. Ζ', σ. 532 α' κ. ἑξ.). —Ω.

**Μπάτσιο ντὰ Μόντε-Λοῦπο** (Baccio da Monte-Lupo). Ἰταλὸς γλύπτης καὶ ἀρχιτέκτων ἐκ Φλωρεντίας (1445—1533). Πολλοὶ ὑποθέτουσιν ὅτι τὸ πραγματικόν του ὄνομα ἦτο *Βαρθολομαῖος Λοῦπι* καὶ ὅτι ἔλαβε τὴν προσωνυμίαν ἐκ τοῦ Μόντε-Λοῦπο, ἀνακτόρου κειμένου εἰς ἀπόστασιν 12 μιλίων ἀπὸ τῆς Φλωρεντίας, ἐγγὺς τοῦ ὁποίου ἐγεννήθη πιθανῶς. Ἐμαθήτευσε κατὰ τὸν Μπαλντινοῦτσι εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Λαυρεντίου Γκιμπέρτι, ἐτελειοποιήθη δὲ μελετῶν τὰ ἔργα τοῦ Μιχαὴλ-Ἀγγέλου. Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ἐν Φλωρεντίᾳ, ὅπου ἐφιλοτέχνησε κατὰ παραγγελίαν τοῦ Πέτρου Μεδίκου γιγαντιαῖον ἄγαλμα τοῦ Ἡρακλέους ἀπολεσθέν, τὸ κοσμοῦν τὴν μεσημβρινὴν πρόσοψιν τοῦ ναοῦ Ὂρ-Σὰν-Μικέλε βρούντζινον ἄγαλμα τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Εὐαγγελιστοῦ, τοῦ ὁποίου τὴν κατασκευὴν ἐπέτυχε κατόπιν διαγωνισμοῦ, καὶ πλείστους ξυλίνους καὶ μαρμαρίνους ἐσταυρωμένους εἰς φυσικὸν καὶ γιγαντιαῖον μέγεθος. Ἄγνωστον τυγχάνει πότε κατεσκεύασε τὸ περίφημον ἄγαλμα τοῦ «Ἄρεως» τὸ κοσμοῦν τὸν τάφον τοῦ στρατηγοῦ Βενεδίκτου Πεζάρο ἐν τῷ ναῷ Σάντα Μαρία ντεΐ Φράρι τῆς Βενετίας. Κατὰ τὸ γῆράς του ὁ Μπάτσιο ἀπεσύρθη εἰς Λούκαν, ὅπου εἰργάσθη πλεῖστα ἀρχιτεκτονικὰ σχέδια ναῶν, ἰδίᾳ δὲ τὸ τοῦ Ἁγίου Παυλίνου, ὅπου καὶ ἐτάφη. Χ. Δ.

**Μπάτσκα** (Backa) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ κομιτεία τῆς οὐγγρικῆς Βοϊβοδίνας, ἀνήκουσα ἀπὸ τοῦ 1918 εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν καὶ ὑπαγομένη εἰς τὸ βανάτον τοῦ Δουνάβεως. Ἐκτείνεται μεταξὺ τοῦ Δουνάβεως καὶ τοῦ παραποτάμου αὐτοῦ Τάϊλ, εἶναι ἐντελῶς πεδινὴ καὶ διασχίζεται ὑπὸ πλείστων ποταμίων καὶ τῶν διωρύγων *Φράντσεν* καὶ *Ἀλεξανδρώφ*. Ἔχει ἔκτασιν 7.266 τετρ. χλμ., κατ. 590.500 καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Σαμπόρ*, ἄλλας δὲ ἀξίας λόγου πόλεις τὴν *Μαρίαν Θηρεσιούπολιν* (νῦν Σαμπότικα) καὶ τὸ *Νόβι-Σάντ*, σημερινὴν πρωτεύουσαν τοῦ βανάτου τοῦ Δουνάβεως. Ἔχει ἀξιόλογον γεωργίαν καὶ κτηνοτροφίαν ἐξυπηρετεῖται δὲ ἄριστα ἀπὸ συγκοινωνιακῆς ἀπόψεως. Χ. Δ.

**Μπάτσκοβο** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Βουλγαρίας παρὰ τὴν Στενήμαχον, γνωστὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ μονῆς τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου, κτισθείσης ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ αὐτοκράτορος Ἀλεξίου τοῦ Κομνηνοῦ ἐν ἔτει 1084 ἐπὶ ὡραίας τοποθεσίας. Τ. Β.

**Μπὰτς-Μπόντρογκ** (Bacs-Bodrog) *[Γεωγρ.]*. Κομιτεία τῆς Οὐγγαρίας, ἐκτεινομένη πρὸς Α. τοῦ ροῦ τοῦ Δουνάβεως καὶ ἀποτελοῦσα τὸ καταλειφθὲν εἰς τὴν Οὐγγαρίαν μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον μικρὸν τμῆμα τῆς παλαιᾶς κομιτείας *Μπάτσκα*, ἥτις περιῆλθεν εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν. Ἔχει ἔκτασιν 1709 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 95.171 καὶ πρωτ. τὴν *Μπάγια*. Χ. Δ.

**Μπατσόννι** (Bazzoni), ***Ἰωάννης - Βαπτιστής***. Ἰταλὸς μυθιστοριογράφος (1803—1850). Κατ' ἀρχὰς δικαστικός, ἠσχολήθη κατόπιν μὲ τὴν λογοτεχνίαν καὶ ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος Ἰταλὸς μιμητὴς τοῦ Οὐώλτερ Σκώτ, καλλιεργήσας τὸ ἱστορικὸν μυθιστόρημα καὶ θεωρούμενος πρόδρομος τοῦ Μαντσόνι. Τὰ ἔργα του: «Ὁ πύργος τοῦ Τρέτσο», «Ὁ ἱέραξ τοῦ βράχου», μετεφράσθησαν εἰς πλείστας γλώσσας, αἱ δὲ «Ἱστορικαὶ διηγήσεις» (2 τόμοι 1832—1839) καὶ ἄλλα συναφῆ εἶναι πολύτιμα διὰ τὰς ἱστορικάς των πληροφορίας. Ἄλλα αὐτοῦ ἔργα εἶναι: «Ἡ ὡραία Τσελέστε τῶν Σπαντάρι» (1830), «Τσαγκρανέλλα» (1845) κτλ. Π. Ν. Π.

**μπάτσος** (ὁ)· ἄλλως *μπάτσα* (βλ. λ.)· || συνθημ. γλῶσσ., τὸ ὄργανον τῆς καταδιώξεως, ὁ ἀστυφύλαξ.

**Μπὰττ** (Batt). Λαϊκοὶ βάρδοι τοῦ Ἰνδοστὰν καὶ ἰδίως ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Γκουτζεράτ. Περιτρέχουν τὴν χώραν διηγούμενοι ὡραίους μύθους καὶ παραδόσεις καὶ μετερχόμενοι τὸ ἐπάγγελμα τῶν μάντεων, ἰατρῶν, θαυματοποιῶν, κυρίως δὲ ἐπαιτοῦντες. Θεωροῦνται ὑπὸ τῶν μαζῶν πρόσωπα περιβεβλημένα θείαν δύναμιν, ἐνίοτε δὲ αἱ θελήσεις των ὑπερισχύουν τῶν διοικητικῶν μέτρων. Ἀποτελοῦν ἕνωσιν, ἧς τὰ μέλη ἀντικαθίστανται μόνον ὑπὸ τῶν κληρονόμων των. Π. Ν. Π.

**Μπαττὰ** (Batta) *[Γεωγρ.]*. Εὐρεῖα χώρα τῆς νήσου Σουμάτρας, ἐκτεινομένη κατὰ μῆκος τῆς παραλίας καὶ πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς νήσου καὶ οἰκουμένη ὑπὸ ὁμωνύμου λαοῦ ἀριθμοῦντος 200.000 περίπου ψυχῶν. Τὸ ἔδαφος τῆς χώρας ταύτης, ἥτις τελεῖ ὑπὸ τὴν ὁλλανδικὴν κυριαρχίαν, εἶναι λίαν ὀρεινὸν μετὰ πολλῶν λιμνῶν, ὧν μεγαλυτέρα ἡ Τόμπα, καλύπτεται δὲ ὑπὸ ἐκτεταμένων καὶ ἀδιαπεράστων δασῶν, ἐντὸς τῶν ὁποίων διανοίγονται ὡραῖαι καὶ εὔφοροι πεδιάδες καὶ κοιλάδες. Κυριώτερα προϊόντα εἶναι ἡ καμφορὰ καὶ ἡ βενζοΐνη, πολύτιμος ἀρωματικὴ ρητινώδης οὐσία. Ὁλόκληρος ἡ χώρα εἶναι διῃρεμένη εἰς πέντε μεγάλας περιοχάς, ὧν ἑκάστη διοικεῖται ὑπὸ μονάρχου καλουμένου *ρατζά*, εἰς τὸν ὁποῖον ὑπακούουσιν οἱ ἐν τῷ τόπῳ του ἀρχηγοὶ τῶν φυλῶν. Ἡ ἐξουσία τοῦ μονάρχου περιστέλλεται ὑπὸ τοῦ συμβουλίου τῶν γερόντων.

Ὁ λαὸς τῶν *Μπαττὰ* ἢ *Μπαττὰκ* ἀνήκει εἰς τὸ ἰνδονησιακὸν ἄθροισμα, εἶναι δὲ συγγενὴς πρὸς τοὺς Μαλαίους. Τὰ χαρακτηριστικὰ γνωρίσματά του εἶναι: ἀνάστημα μέτριον, δέρμα βαθύχρουν, κόμη μέλαινα καὶ πυκνή, κρανίον ἐλαφρῶς ἐπίμ-

Digitized by Google

κες, πρόσωπον μακρόν, ρὶς εὐθεῖα καὶ ὀφθαλμοὶ ὁριζοντίως διατεταγμένοι. Ἐνδύονται διὰ δύο μεγάλων τεμαχίων ὑφάσματος καλουμένων «σαρρόνγκ», καὶ διὰ μὲν τοῦ ἑνὸς περιβάλλουσι τὴν ὀσφύν, διὰ δὲ τοῦ ἑτέρου καλύπτουσι τοὺς ὤμους. Διὰ τρίτου μικροῦ τεμαχίου ὑφάσματος διαστάσεων μανδηλίου περιβάλλουσι τὴν κεφαλὴν ἐν εἴδει κιδάρεως (σαρικίου). Κείρουσιν ἐντελῶς τὴν κεφαλήν, ἀφίνοντες μικρὸν μόνον ἐπ' αὐτῆς θύσσανον τριχῶν, καὶ ρινίζουσι τοὺς ὀδόντας καθιστῶντες αὐτοὺς ὀξυτάτους. Αἱ οἰκίαι των στηρίζονται ἐπὶ πασσάλων καὶ ἔχουσιν ὀξυκόρυφον στέγην κοσμουμένην διὰ κεράτων βουβάλου. Εἰς ἕκαστον συνοικισμὸν ὑπάρχουσι καὶ κοινὰ οἰκοδομήματα, ἐξ ὧν ἄλλα μὲν χρησιμεύουσιν ὡς πρατήρια ὀρύζης, ἄλλα δὲ ὡς αἴθουσαι συγκεντρώσεων. Οἱ Μπαττὰ ἦσαν ἄλλοτε ἀνθρωποφάγοι, ἐξακολουθοῦσι δὲ καὶ σήμερον νὰ διατηροῦσι λείψανα τῆς παλαιᾶς ταύτης συνηθείας. Κυρίως ἔτρωγον τοὺς αἰχμαλώτους τοῦ πολέμου καὶ τοὺς καταδίκους, πολλάκις δὲ καὶ τοὺς λόγῳ γήρατος ἀνικάνους πρὸς ἐργασίαν συγγενεῖς των. Εἶναι κυρίως καλλιεργηταί, νυμφεύονται δὲ ἀγοράζοντες τὰς γυναῖκάς των ἀντὶ ἁδροτάτης πολλάκις ἀμοιβῆς. Ὁμιλοῦσι γλῶσσαν διάφορον μὲν τῆς μαλαϊκῆς, παρουσιάζουσαν ὅμως πολλὰς πρὸς αὐτὴν ὁμοιότητας. Γνωρίζουσι γραφὴν ὁμοίαν πρὸς τὴν τῶν ἱερῶν βιβλίων των, γεγραμμένων ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τὰ δεξιά, ἐπὶ χάρτου κατασκευαζομένου ἐκ φλοιῶν δένδρου. Τὰ τέκνα τῶν ἀρχηγῶν καὶ τῶν πλουσίων παραδίδονται εἰς νεαρὰν ἡλικίαν εἰς διδασκάλους, παρὰ τοῖς ὁποίοις ἐκμανθάνουσιν ἀνάγνωσιν καὶ γραφήν. Χ. Δ.

**Μπαττὰκ** (Battak). Λαὸς τῆς Σουμάτρας (βλ. λ. *Μπαττά*).

**Μπαττάλια** (Battaglia) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Παδούης, παρὰ τὴν ὁμώνυμον διώρυγα· Κάτ. 1.114. Συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Παδούης καὶ Βολωνίας καὶ ἔχει χλωριοσοδιούχους θερμοπηγὰς (60°—72° Κ.) Παρ' αὐτὴν κεῖται ὁ πύργος Καττάγιο τοῦ Φραγκίσκου Φερδινάνδου Ἔστι μὲ πλουσίαν ἀρχαιολογικὴν συλλογήν. Π. Ν. Π.

**Μπατταλίνι** (Bataglini), ***Μᾶρκος***. Ἰταλὸς κληρικὸς καὶ ἱστορικὸς (1645—1717). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ περιεβλήθη τὸ σχῆμα εἰς ἡλικίαν 16 ἐτῶν. Ἐγένετο ἐπίσκοπος Νότσερας (1690) καὶ Τσιζένας (1716) καὶ ἔγραψε: «Παγκόσμιος ἱστορία ὅλων τῶν συνόδων» (1686), «Χρονικὰ τοῦ παπικοῦ κράτους καὶ τῆς αὐτοκρατορίας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα» (4 τόμ. 1701—1711), «Ὁ φιλόσοφος νομοθέτης» (1680), κ.ἄ. Π. Ν. Π.

**Μπατταμπάνγκ**, ἢ ***Μπατταμπόνγκ*** (Battambang ἢ Battambong) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Καμπότζ ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἰνδοκίνᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σὸν-Κέ. Εἶναι πρωτεύουσα τοῦ ΒΔ. τμήματος τοῦ Καμπότζ, περιβάλλεται ὑπὸ εὐφόρου γεωργικῆς περιφερείας καὶ διεξάγει ζωηρὸν τοπικὸν ἐμπόριον. Αἱ οἰκίαι εἶναι κατεσκευασμέναι ἐκ καλάμου μπαμπού, προσδίδουσαι ἰδιάζουσαν ὄψιν εἰς τὴν πόλιν. Κατὰ τὸν ΙΗ' καὶ ΙΘ' αἰῶνα περιῆλθε διαδοχικῶς ἀπὸ τοῦ κράτους τοῦ Σιὰμ εἰς τὸ τοῦ Καμπότζ, τῷ δὲ 1904 ὑπήχθη ὑπὸ τὴν γαλλικὴν ἐπιρροήν, προσαρτηθεῖσα ὁριστικῶς ἀπὸ τοῦ 1907, κατόπιν συνθήκης μετὰ τοῦ Σιάμ, εἰς τὰς γαλλικὰς κτήσεις τῆς Ἰνδοκίνας. Κάτ. 5.000. Χ. Δ.

**Μπαττάρα** (Battara), ***Ἰωάννης-Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς βοτανικὸς καὶ ἀγρονόμος (1709—1789). Ἦτο ἐφημέριος τοῦ Ρίμινι καὶ εἶχεν ἀφιερωθῆ εἰς τὴν μελέτην τῆς ἰατρικῆς καὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας, καταπολεμήσας τὰς τότε ἰσχυούσας θεωρίας ὅτι οἱ μύκητες γεννῶνται ἐκ τῆς ἀποσυνθέσεως ἄλλων φυτῶν, ἕνεκα τοῦ ὁποίου ἐδόθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ εἰς εἶδός τι μυκήτων, τὸ ὁποῖον ἀνεκάλυψεν ὁ Πῆρσον. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἱστορία τῶν μυκήτων τῶν ἀγρῶν τοῦ Ρίμινι» (1757 καὶ 1759), «Rerum naturalium historia» (1773—1783), «Πραγματεία περὶ γεωργίας» (1778) κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπάττασεκ** (Battaszék) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας (βλ. λ. *Μπάτασεκ*).

**Μπαττάτζια** (Battagia)· βλ. *Μπαττάλια*.

**Μπαττὲ** (Batteux), *ἀββᾶς* ***Κάρολος***. Γάλλος φιλόσοφος καὶ παιδαγωγὸς (1713—1780). Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἐν Reims ἐχειροτονήθη ἱερεὺς καὶ ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν ἐκπαίδευσιν. Τῷ 1740 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ρητορικῆς εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Ναβάρρας καὶ κατόπιν καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ γαλλικὸν κολλέγιον. Τῷ 1748 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον: «Des Beaux-arts réduits à un même principe», τὸ ὁποῖον ἐπὶ μακρὸν ἀπέλαυε μεγάλης ἐκτιμήσεως ἐν Εὐρώπῃ. Χάρις εἰς τὸ ἔργον τοῦτο ἐγένετο τῷ 1765 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῷ 1761 τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τῷ 1761 ἐξέδωκε τὸ «Cours de belles-lettres» (εἰς πέντε τόμους) καὶ τῷ 1768 τὸ «Traité de la construction oratoire». Αἱ μελέται αὗται ἐξεδόθησαν καὶ ὁμοῦ ὑπὸ τὸν κοινὸν τίτλον: «Principes abrégés de littérature à l'usage des élèves de l'école royale militaire» (1777 τόμ. 6, νεωτ. ἔκδ. 1824 εἰς 6 τόμ.). Φιλοσοφικὰ ἔργα τοῦ Μπαττὲ εἶναι: «Morale d'Épicure tirée de ses propres écrits» (1758), «Histoire des causes premières, exposé sommaire des pensées des philosophes sur le principe de l'être» (1769 τόμ. 2). Ὡς γραμματικὸς ἐξέδωκε τὸ «Traité de la construction oratoire» καὶ «Nouvel examen du préjugé de l'inversion» (1767). Εἰς τὸ περὶ τῶν καλῶν τεχνῶν ἔργον του ὁ Μπαττὲ ὑποστηρίζει ὅτι ἡ ἀρχὴ αὐτῶν εἶναι ἡ μίμησις. Ἡ τέχνη δὲν ἀποκτᾷ κάλλος εἰμὴ διὰ τῆς ἀληθείας, ἡ δὲ ἀλήθεια δὲν εἶναι ἐπιτευκτὴ ἄλλως ἢ διὰ τῆς μιμήσεως τῆς φύσεως. Ἀλλὰ δὲν ἀξίζουν νὰ τυγχάνουν μιμήσεως πάντα τὰ ἐν τῇ φύσει· μόνον τὰ διὰ κάλλους πεπροικισμένα πρέπει νὰ ἐμπνέουν τὴν τέχνην. Θ. Π.

**Μπάττενμπεργκ** (Battenberg) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γερμανίας ἐν τῇ περιοχῇ Βισβάδεν τῆς πρωσσικῆς ἐπαρχίας τοῦ Ἔσσε-Νασσάου, ἐπὶ τῆς ὄχθης τοῦ Ἔντερ. Κάτ. 1.045. Ἔχει βιομηχανίαν ἐρίου, παρ' αὐτὸ δὲ εὑρίσκεται ὁ πύργος τοῦ Κέλλερμπεργκ, παλαιὰ ἕδρα τῶν κομίτων τοῦ *Μπάττενμπεργκ* (βλ. κατωτ.). Π. Ν. Π.

**Μπάττενμπεργκ** (***κόμιτες*** καὶ ***πρίγκιπες τοῦ***—). Οἱ κόμιτες τοῦ Μπάττενμπεργκ τὸ πρῶτον ἀναφέρονται περὶ τὸ 1227 ὡς ὑπήκοοι τῶν λανδγράβων τῆς Ἔσσης, ἐκλιπόντος τοῦ τίτλου τῷ 1314. Τῷ 1858 ὁ τίτλος τῆς κομίσσης Μπάττενμπεργκ ἐδόθη ὑπὸ τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Ἔσσης εἰς τὴν μοργανατικὴν σύζυγον τοῦ υἱοῦ του πρίγκιπος Ἀλεξάνδρου τῆς Ἔσσης καὶ Ρήνου Ἰουλίαν-Θηρεσίαν, χήραν τοῦ κόμιτος Μαυρικίου Χάουκε, ἥτις κατόπιν ὠνομάσθη πριγκίπισσα τοῦ Μπάττενμπεργκ, ὁ τίτλος δὲ διεβιβάσθη εἰς τὰ τέκνα της, ἅτινα εἶναι:

***Μαρία-Καρολίνα*** (γενν. 1852), σύζυγος τοῦ κόμιτος Γουσταύου τοῦ Ἔρμπαχ Σαϊνμπεργκ.

***Λουδοβῖκος-Ἀλέξανδρος*** (1854—1921), σύζυγος τῆς Βικτωρίας, θυγατρὸς τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ', μεγάλου δουκὸς τῆς Ἔσσης. Κατετάγη εἰς τὸ ἀγγλικὸν ναυτικὸν (1868) καὶ κατέλαβε διαδοχικῶς τὸ ἀξίωμα τοῦ κυβερνήτου (1891), διοικητοῦ τῆς γ' καὶ δ' ναυτικῆς μοίρας (1911), δευτέρου λόρδου τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου (1911) καὶ πρώτου τοιούτου (1912) μέχρι τῆς κηρύξεως τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου, ὅτε παρῃτήθη λόγῳ τῆς καταγωγῆς του. Τῷ 1917 ἐξήγγλισε τὸν τίτλον εἰς κόμιτα τοῦ *Μάουντμπάντεν* (Mountbaden), ὀνομασθεὶς πατρίκιος καὶ μαρκήσιος τοῦ Μίλφορδ Χάβεν (Milford Haven). Τέκνα του εἶναι ἡ *Βικτωρία-Ἀλίκη-Ἰσαβέλλα Ἰουλία-Μαρία* (γενν. 1885), σύζυγος τοῦ πρίγκιπος Ἀνδρέου τῆς Ἑλλάδος, ὁ *Λουδοβῖκος-Βίκτωρ-Γεώργιος-Ἐρρῖκος-Σέργιος* (γενν. 1892) καὶ ὁ *Ἀλβέρτος-Βίκτωρ-Νικόλαος-Λουδοβῖκος - Φραγκῖσκος* (γεννηθεὶς τῷ 1900).

***Ἀλέξανδρος-Ἰωσήφ***. Βλ. *Ἀλέξανδρος* τῆς Βουλγαρίας (τόμ. Γ', σ. 677α').

***Ἐρρῖκος-Μαυρίκιος*** (1858—1896). Σύζυγος τῆς πριγκιπίσσης Βεατρίκης θυγατρὸς τῆς Βικτωρίας βασιλίσσης τῆς Ἀγγλίας, λαβὼν τὸν τίτλον τῆς «βασιλικῆς ὑψηλότητος». Ἐγένετο κυβερνήτης τῆς νήσου Wight (1896) καὶ διοικητὴς τοῦ φρουρίου Κάρλσμπρουκ καὶ μετέσχε τῆς κατὰ τῶν Ἀσαντὶ ἐκστρατείας (1895). Τέκνα του εἶναι ὁ *Ἀλέξανδρος Ἀλβέρτος* (γενν. 1886), ἀξιωματοῦχος τοῦ ἀγγλικοῦ ναυτικοῦ, ἡ *Βικτωρία-Εὐγενία-Ἰουλία-Ἔννα* (γενν. 1887), ἔκπτωτος βασίλισσα τῆς Ἱσπανίας, σύζυγος τοῦ Ἀλφόνσου ΙΓ', ὁ *Λεοπόλδος-Ἀρθοῦρος-Λουδοβῖκος* (γενν. 1891) καὶ ὁ *Μαυρίκιος-Βίκτωρ-Δονάλδος* (γενν. 1891).

***Φραγκῖσκος-Ἰωσὴφ*** (1861—1924). Σύζυγος τῆς Ἄννας, θυγατρὸς τοῦ Νικολάου Α' βασιλέως τοῦ Μαυροβουνίου. Ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν τῇ βουλγαρικῇ αὐλῇ καὶ ἔγραψε: «Die Volkswirtschaftliche Entwicklung Bulgariens von 1879 bis zur Gegenwart» (1891). Π. Ν. Π.

— **Μπάττενμπεργκ, *δείκτης***. Ναυτικὸν ἐργαλεῖον, δι' οὗ ἐπιλύονται πολλὰ προβλήματα τοῦ *ἀβακίου* (βλ.λ.). Ἀποτελεῖται ἀπὸ ὀρειχάλκινον δακτύλιον ΔΔΔΔ βεβαθμονομημένον ὡς ἀνεμολόγιον πυξίδος. Ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τοῦ δακτυλίου περιστρέφεται δίσκος ΚΚ, ἐφ' οὗ εἶναι κεχαραγμένη μέλαινα διάμετρος ΑΒ καὶ παράλληλοι ταύτῃ χορδαὶ ἐναλλὰξ μέλαιναι καὶ ἐρυθραί. Περὶ τὸ κέντρον Ο τοῦ δίσκου ΚΚ περιστρέφονται δύο ὀρειχάλκινα στελέχη Ρ καὶ Σ, ὧν ἡ μία πλευρά, καταλήγουσα εἰς ἀκμήν, δύναται νὰ τεθῇ εἰς οἱανδήποτε τῶν διαιρέσεων τοῦ δακτυλίου Δ. Ὡσαύτως δρομεῖς α καὶ β, φέροντες κάτωθεν αἰχμήν, ὀλισθαίνουσιν ἐπὶ τῶν στελεχῶν Ρ καὶ Σ, ἐφ' ὧν εἶναι κεχαραγμέναι διαιρέσεις. Περὶ τὸ κέντρον Ο περιστρέφεται καὶ τρίτον στέλεχος, τὸ Π, φέρον κεχαραγμένας διαιρέσεις καὶ κύκλον Γ ὀλισθαίνοντα ἐπ' αὐτοῦ. Ὁ κύκλος Γ εἶναι βεβαθμονομημένος εἰς μοίρας ἀπὸ 0°—180° δεξιὰ καὶ ἀριστερὰ τοῦ στελέχους Π. Ἕτερον στέλεχος Ε, φέρον διαιρέσεις καὶ δρομέα καὶ καταλῆγον εἰς αἰχμήν, περιστρέφεται περὶ τὸ κέντρον τοῦ κύκλου Γ. Καὶ τῶν τεσσσάρων ὡς ἄνω στελεχῶν αἱ διαιρέσεις εἶναι αἱ αὐταὶ καθὼς καὶ ὀρειχαλκίνου κανόνος χρησιμοποιουμένου κατὰ τὰς ἐπιλύσεις τῶν διαφόρων προβλημάτων τοῦ ἀβακίου. Γ. Ν. Ν.

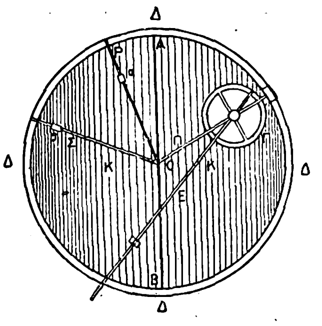


*Μπάττενμπεργ δείκτης.*

**Μπάττερση** (Battersea) *[Γεωγρ.]*. Ἀγγλικὴ πόλις τῆς διοικητικῆς περιφερείας τοῦ Λονδίνου ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ταμέσεως καὶ παρὰ τὰς γεφύρας Μπάττερση, Γκρόσβενορ, Βικτωρίας (ἢ Τσέλση) καὶ Ἀλβέρτου· κάτ. 167.739. Ἔχει χυτήρια, ἐν οἷς τὰ περίφημα χωνευτήρια Μόργκαν (Morgan Crucible Works), μηχανουργεῖα, ἀλευροβιομηχανίαν καὶ ἀκμαῖον ποταμεμπόριον. Ἔχει περίφημον πάρκον 75 ἑκταρίων μετὰ λίμνης καὶ νήσου, περιλαμβάνει δὲ καὶ τὴν τῷ 1872 ἱδρυθεῖσαν ἐργατικὴν ἀλσούπολιν Σάφτσμπουρυ Πάρκ. Π.Ν.Π.

**Μπάττεϋ** (Battey), ***Ροβέρτος***. Ἀμερικανὸς χειρουργὸς (1828—1895). Ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῆς διπλῆς *ᾠοθηκεκτομῆς*, ἣν ἐξετέλεσε κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1872 ἐπὶ ὑγιῶν ᾠοθηκῶν πρὸς διάλυσιν ἰνωμάτων τῆς μήτρας. Ἡ διπλῆ αὕτη ᾠοθηκεκτομὴ ἐκλήθη ἔκτοτε ἐγχείρησις τοῦ Μπάττεϋ. Ο. Ρ.

**Μπαττίστα** (Battista), ***Βικέντιος***. Ἰταλὸς συνθέτης (1823—1873). Ἔγραψε δωδεκάδα μελοδραμάτων, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Anna la Prie», «Rosvina de la forest», «Emo» καὶ «Mudarra» καὶ ἐμελοποίησε δι' ᾆσμα καὶ κλειδοκύμβαλον τὸ πέμπτον ᾆσμα τῆς «Κολάσεως τοῦ Δάντη». Γ. Σ.

**Μπαττίστι** (Battisti), ***Καῖσαρ***. Ἰταλὸς γεωγράφος καὶ πολιτικὸς ἐκ Τρεντίνου (1875—1917). Ἐνωρὶς ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν καὶ ἀντιαυστριακὴν κίνησιν τῆς πατρίδος του, ὑπῆρξεν ἱδρυτὴς τῆς ἑταιρείας τῶν σπουδαστῶν τοῦ Τρεντίνου καὶ τῶν ἐφημερίδων «Λαϊκὴ ἐπιθεώρησις τοῦ Τρεντίνου» (1895), «Τὸ Μέλλον τοῦ Ἐργάτου» (1896) καὶ «Ὁ Λαὸς» (1900), ἁπασῶν σοσιαλιστικῆς χροιᾶς. Μετέσχε τῶν στασιαστικῶν ταραχῶν τοῦ 1901, τῷ 1911 ἀπεστάλη εἰς τὸ κοινοβούλιον τῆς Γενεύης, ἐνεργῶς δὲ δράσας κατὰ τῶν Αὐστριακῶν διαρκοῦντος τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου ἐτυφεκίσθη. Ἡ γεωγραφικὴ αὐτοῦ ἐργασία ἔχει ἐπίσης πατριωτικὸν χαρακτῆρα. Ἐξέδιδε τὰ περιοδικά: «Βενέτσια Τριντεντίνα», «Τριντέντο», «Ἀννουάριο ντέλλ Ἄλπι Τριντεντίνι», κ. ἄ., ἔγραψε δὲ ἀρκετὰς πραγματείας. Τῷ 1923, ἐθνικῇ δαπάνῃ, ἐξεδόθησαν τὰ ἅπαντά του εἰς δύο σειράς: «Scritti politici» καὶ «Scritti geografici». —Π.

**Μπαττιφέρι** (Battiferi), ***Λαύρα***. Ἰταλὶς ποιήτρια, σύζυγος τοῦ διασήμου ἀρχιτέκτονος Βαρθολομαίου Ἀμμανάτι. Διεσώθη αὐτῆς ἡ λυρικὴ συλλογὴ «Τὸ πρῶτον βιβλίον τῶν τοσκανικῶν» (1560) καὶ ἄλλοι διάσπαρτοι στίχοι, ἐπισύραντες εὐμενεῖς κρίσεις τοῦ Βάρκι, Κάρο, Τάσσο κ. ἄ. —Π.

**Μπάττλ** (Battle) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ *Σῶσσεξ*. Κάτ. 3.200. Κεῖται περὶ τὰ 10 χλμ. ΒΔ. τοῦ Ἄστιγξ καὶ ὠνομάσθη οὕτω διότι ἐκεῖ ἐδόθη ἡ περίφημος μάχη (ἀγγλ. battle), καθ' ἣν ὁ Γουλιέλμος ὁ Κατακτητὴς ἐφόνευσε τὸν βασιλέα τῆς Σαξωνίας Χάρολδ Β' τὴν 14 Ὀκτωβρίου 1066. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν καὶ τὰ ἐρείπια τοῦ περιφήμου ἀββαείου, ὅπερ ὁ Γουλιέλμος εἶχε κτίσει εἰς ἀνάμνησιν τῆς νίκης του. Μ. Δ. Β.

**Μπάττλ-Κρὴκ** (Battle-Creek) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας Μίτσιγκαν ἐν τῇ κομιτείᾳ Καλχάουν, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Μπάττλ-Κρὴκ καὶ Καλαμάτσω, 185 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Ντητρόϊτ. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἔχει ἀξιόλογον ἀερολιμένα. Ἰδιαιτέρως ὀνομαστὰ εἶναι τὸ ἐν αὐτῇ σανατόριον, ἱδρυθὲν τῷ 1866 καὶ δυνάμενον νὰ περιλάβῃ 1.200 ἀσθενεῖς καὶ τὸ πλούσιον εἰς ἐγκαταστάσεις καὶ ἐπιστημονικὰ ἐργαστήρια κολλέγιον. Κειμένη ἐν μέσῳ πλουσίας γεωργικῆς περιοχῆς, διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον σιτηρῶν. Ἱδρύθη τῷ 1835 ἀπὸ δὲ τοῦ 1869 προήχθη εἰς πόλιν. Κάτ. (1926) 43.500. Χ. Δ.

**μπαττόγκ.** Δέσμη λεπτῶν ραβδίων, ἀνερχομένων εἰς εἴκοσι πέντε, ἐκ τῶν ὁποίων ἀπετελεῖτο τὸ *κνοῦτον*, δι' οὗ ἐξετελεῖτο κατὰ τοὺς χρόνους τῆς δουλοπαροικίας ὁ ραβδισμὸς ἐν Ρωσίᾳ τῶν ἀνυποτάκτων χωρικῶν. Ἡ ποινὴ αὕτη, ἥτις ὠνομάζετο καὶ *μπαττόγκ*, ὑπῆρξε μία τῶν κυριω-

Digitized by Google

τέρων ἀφορμῶν τῶν διαφόρων ἐπαναστάσεων τῆς Ρωσίας. ε. β.

**Μπαττὸν** (Batton), ***Ντεζιρὲ-'Αλέξανδρος.*** Γάλλος συνθέτης (1797—1855). Ἀνεβίβασεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Κωμικοῦ μελοδράματος τῶν Παρισίων μετὰ μετρίας ἐπιτυχίας τὰ μελοδράματα: «Τὸ μυστικὸ παράθυρο» (1818), «Ἐθελβίνα» (1828), «Ὁ αἰχμάλωτος τοῦ κράτους» (1828), «Ὁ ἀντικαταστάτης» καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ἐρόλ, Ὠμπὲρ κ.ἄ., εἰς τὴν σύνθεσιν τῆς «Μαρκησίας τοῦ Μπρενβιλλιέ» (1831). Γ. Σ.

**Μπάττονυα** (Battonya) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Τσάναντ, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σεγκεντὶν - Ἀράνε. Κάτ. (1920) 13.731. Χ. Δ.

**μπαττούτα** (ἡ) *[Μουσ.].* βλ. *μέτρον.*

**Μπάττχυανυ** (Batthyány). Παλαιὰ οὐγγρικὴ οἰκογένεια εὐπατριδῶν, ἀνάγουσα τὴν καταγωγήν της εἰς τὸν Ἔαιρσι, συμπολεμιστὴν τοῦ Ἀρπάδου. Ἀρχηγὸς τῆς οἰκογενείας φέρεται ὁ κόμης *Μίσκα* (1207—1227). Τὸ ὄνομα *Μπάττχυανυ* προσέλαβεν ἡ οἰκογένεια ἀπὸ τῆς ἐν ἔτει 1398 καταλήψεως τοῦ πύργου Μπάττχυαν ὑπὸ τοῦ Γεωργίου Κίς. Οἱ ἐπιφανέστεροι γόνοι τῆς οἰκογενείας εἶναι:

—1) ***Κάρολος-Ἰωσήφ.*** Στρατάρχης τῆς Αὐστρίας (1697—1772). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν καλυτέρων στρατηγῶν τῆς αὐτοκρατορίας. Κατὰ τὸν περὶ διαδοχῆς πόλεμον ἐπολέμησεν ἐναντίον Φρειδερίκου τῆς Αὐστρίας, ἐνίκησεν ἐν τῇ μάχῃ Πφάφφενχόφεν τοὺς Γάλλους καὶ τοὺς Βαυαροὺς (1745) καὶ κατὰ τὸ 1764 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος, ὀνομασθεὶς βάνος τῆς Κροατίας.

—2) ***Καζίμιρος.*** Πολιτικὸς (1807—1854). Διεκρίθη εἰς τὴν Δίαιταν διὰ τὰς φιλελευθέρας αὐτοῦ ἰδέας. Ὑπῆρξε διαπρύσιος κήρυξ τῆς οὐγγρικῆς ἀνεξαρτησίας, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν δὲ τοῦ 1848 ἐπολέμησε κατὰ τῶν Κροατῶν. Ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ἐν τῇ ὑπὸ τοῦ Κοσσοὺθ σχηματισθείσῃ μετὰ τὴν προκήρυξιν τῆς οὐγγρικῆς ἀνεξαρτησίας κυβερνήσει. Μετὰ τὴν ἐν Βιλάγκος ἧτταν (1849) κατέφυγε μετὰ τοῦ Κοσσοὺθ εἰς Τουρκίαν, περιορισθεὶς ὑπὸ τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως εἰς Σούμλα καὶ μετὰ ταῦτα μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα καὶ ἀπέθανε.

—3) ***Λουδοβῖκος.*** Πολιτικὸς (1809—1849). Ὑπηρέτησεν ὡς ἀνθυπολοχαγὸς τῶν οὐσσάρων εἰς αὐστριακὴν φρουρὰν ἐν Ἰταλίᾳ. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς ἐκεῖ διατριβῆς του ἀπεδέχθη πάσας τὰς νέας ἐν τῇ ἐποχῇ του οἰκονομικὰς καὶ πολιτικὰς ἰδέας, γενόμενος ἀρχηγὸς τῆς ἐν τῇ Διαίτῃ ἀντιπολιτεύσεως. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος συνταγματικὸς πρωθυπουργὸς τῆς Οὐγγαρίας (1848), προσεπάθησε δὲ τότε νὰ συμβιβάσῃ τὰ ἐθνικὰ δίκαια τῆς Οὐγγαρίας μετὰ τῶν ἀπολυταρχικῶν τάσεων τῆς Αὐστρίας. Εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς εὑρέθη ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν Κοσσούθ, τὸν ἐπὶ τῶν Οἰκονομικῶν ὑπουργόν του. Αἱ δυσχέρειαι τοῦ Μπάττχυανυ ηὐξήθησαν, ὅταν οἱ Κροάται ὑπὸ τὸν βάνον Γέλλατσιτς ἥρπασαν τὰ ὅπλα ἐναντίον τῆς Οὐγγαρίας, ἡ δὲ Αὐστρία δὲν ἀπεδέχθη τὴν πρότασιν τοῦ Μπάττχυανυ ὅπως ἀφοπλισθῶσιν οἱ στασιασταί. Εἰσβαλόντος ἀκολούθως τοῦ Γέλλατσιτς εἰς τὴν Οὐγγαρίαν, ὁ Μπάττχυανυ παρητήθη καὶ ὠργάνωσεν ἐθνοφυλακὴν ἐναντίον τῶν εἰσβαλόντων Κροατῶν, πεσὼν ὅμως ἐκ τοῦ ἵππου καὶ τραυματισθεὶς εἰς τὴν χεῖρα δὲν ἠδυνήθη νὰ λάβῃ ἐνεργὸν μέρος καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Πέστην. Ὅτε μετά τινα χρόνον ὁ στρατὸς τοῦ Βιντισγκραιτς εἰσήλασεν εἰς Οὐγγαρίαν, ὁ Μπάττχυανυ ἀπετέλεσε μέλος τῆς πρεσβείας, ἥτις ὡρίσθη νὰ διαπραγματευθῇ μετὰ τοῦ Αὐστριακοῦ πρίγκιπος τὴν εἰρήνην. Ὁ Μπάττχυανυ ὅμως ὄχι μόνον δὲν ἐγένετο δεκτὸς ὑπὸ τοῦ Βιντισγκραιτς ἀλλὰ καὶ διαταγῇ αὐτοῦ ἐφυλακίσθη μετ' ὀλίγας ἡμέρας καὶ κατεδικάσθη εἰς τὸν δι' ἀγχόνης θάνατον ἐπὶ ὑποθάλψει ἐπαναστάσεως ἐναντίον τῆς Αὐστρίας. Τὴν προηγουμένην τῆς ἐκτελέσεως ηὐτοκτόνησεν ἐν τῇ φυλακῇ. Γ. Ι. Β.

**Μπάτυ.** Μογγόλος ἡγεμὼν (βλ. λ. *Μπατοὺ-Χάν).*

**Μπατχὰ** (Batha) *[Γεωγρ.].* Ποταμὸς τοῦ Ἀνατολικοῦ Σουδὰν (γαλλικὴ ἰσημερινὴ Ἀφρικὴ) πηγάζων ἐκ τοῦ Α. τμήματος τῆς χώρας τοῦ Οὐαντάϊ, καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν λίμνην Φίττρι. Σπουδαιότερος παραπόταμός του εἶναι ὁ Μπετχέκα. Χ. Δ.

**Μπάτχορυ** (Báthory). Παλαιὰ οὐγγρικὴ οἰκογένεια, ἐκλιποῦσα ἤδη, πολλοὶ γόνοι τῆς ὁποίας διετέλεσαν ἡγεμόνες, εἷς δὲ καὶ βασιλεὺς τῆς Πολωνίας. Ἀρχηγὸς τῆς οἰκογενείας φέρεται ὁ *Μπέρετσκ* (Bereczk, 1279—1321). Ἐκ τῶν τεσσάρων υἱῶν τούτου ὁ *Ἀνδρέας* ἐγένετο ἐπίσκοπος Βάραντ, οἱ δὲ *Ἰωάννης* καὶ *Λαΐκαις* ἐγένοντο οἱ ἀρχηγοὶ δύο κλάδων τῆς οἰκογενείας: τῶν Μπάτχορυ τοῦ Σόμγυο (Somlyó) καὶ τῶν Μπάτχορυ τοῦ Ἔτσεντ (Ecsed). Ἐκ τοῦ πρώτου κλάδου κατάγονται οἱ ἐπιφανέστεροι ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῶν Μπάτχορυ:

1) ***Στέφανος.*** Ἡγεμὼν τῆς Τρανσυλβανίας (1533—1586) καὶ ἀπὸ τοῦ 1575 βασιλεὺς τῆς Πολωνίας (βλ. *Στέφανος* βασιλεὺς τῆς Πολωνίας).

2) ***Σιγισμόνδος.*** Ἡγεμὼν τῆς Τρανσυλβανίας (1572—1613), ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Προσεχώρησεν εἰς τὸν σύνδεσμον τῶν ἡγεμόνων ἐναντίον τῶν Τούρκων καὶ τῷ 1595 ὑπέταξε τὴν Βλαχίαν καὶ κατετρόπωσε τὸν στρατὸν τοῦ Σινὰν πασᾶ εἰς Γιούργεβον (28 Ὀκτωβρίου). Τῷ 1599 διεζεύχθη τὴν σύζυγόν του, ἀρχιδούκισσαν τῆς Αὐστρίας, καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος παρῃτήθη τῆς ἡγεμονίας περιβληθεὶς τὸ ἱερατικὸν σχῆμα. Τὸν θρόνον τῆς Τρανσυλβανίας παρεχώρησεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα Ροδόλφον Β' τῆς Αὐστρίας, λαβὼν εἰς ἀντάλλαγμα τὸ δουκᾶτον τοῦ Ὄππελν (ἐν Σιλεσίᾳ). Μετὰ ἓν ἔτος ὅμως μετανοήσας ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς Πολωνῶν καὶ Κοζάκων καὶ ἐπειράθη νὰ ἀνακαταλάβῃ τὸν θρόνον τῆς Τρανσυλβανίας, ἀλλ' ἡττήθη ὑπὸ τοῦ βοεβόδα τῆς Μολδαυΐας Μιχαήλ. Τῷ 1601 ἡ δίαιτα τοῦ Κλάουζενμπουργκ τὸν ἀποκατέστησεν εἰς τὰ ἐπὶ τοῦ θρόνου δικαιώματά του, ἀλλ' ὁ Σιγισμόνδος ἀπεκρούσθη ἐκ νέου ὑπὸ τοῦ Μιχαὴλ καὶ ἀπέθανεν ἐν Πράγᾳ.

3) ***Γαβριήλ.*** Τελευταῖος ἡγεμὼν τῆς Τρανσυλβανίας (1598—1613), ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Ἡγεμόνευεν ἐπὶ τῆς Τρανσυλβανίας ἀπὸ τοῦ 1608. Λόγῳ τοῦ ἐκλύτου βίου του καὶ τῆς ὠμότητός του ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ κυριωτέρου τῶν ἀντιπάλων του, τοῦ Γαβριὴλ Μπέτχλεν, ὅστις καὶ ἐξελέγη βοεβόδας.

Μετ' αὐτοῦ ἐξέλιπεν ὁ πρῶτος κλάδος τῶν Μπάτχορυ τοῦ Σόμγυο.

4) ***Ἐλισάβετ.*** Ἀνεψιὰ τοῦ Στεφάνου βασιλέως τῆς Πολωνίας καὶ σύζυγος τοῦ Φραγκίσκου Νάντασντυ (1560—1614). Κατέστη διαβόητος διὰ τὴν θηριωδίαν της. Ἔζη ἐν τῷ πύργῳ της εἰς Τσέϊβχε, ἡμέραν δέ τινα μαστιγώσασα μίαν τῶν ἀκολούθων της μέχρις αἵματος παρετήρησεν ὅτι αἱ ἐπὶ τοῦ δέρματός της πεσοῦσαι ρανίδες κατέστησαν τὸ δέρμα λευκότερον καὶ ἁπαλώτερον. Συνέλαβε τότε τὴν ἰδέαν νὰ λούεται δι' ἀνθρωπίνου αἵματος. Προσείλκυεν ὅθεν ἐν τῷ πύργῳ της χωρικὰς νεάνιδας, τὰς ἀπεκεφάλιζε καὶ ἐλούετο εἰς τὸ αἷμά των. Καταληφθεῖσα ὅμως ἐπ' αὐτοφώρῳ ὑπὸ τοῦ παλατίνου Γεωργίου Τχοῦρζο κατεδικάσθη εἰς ἰσόβια δεσμά, αἱ δὲ συνεργοί της (δύο θεραπαινίδες καὶ εἷς εὐνοῦχος) εἰς τὸν διὰ πυρὰς θάνατον.

Ἐκ τοῦ ἑτέρου κλάδου τῶν Μπάτχορυ τοῦ Ἔτσεντ διεκρίθησαν εἷς *Στέφανος*, ὅστις ἀπέθανεν ἐν τῇ μάχῃ τῆς Βάρνας, ἕτερος *Στέφανος*, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, διακριθεὶς εἰς τὴν μάχην τοῦ Κένυερμεζαϊ (1479) ἐναντίον τῶν Τούρκων, ἕτερος *Στέφανος*, γενόμενος τῷ 1519 παλατῖνος τῆς Οὐγγαρίας, καὶ τέλος ὁ τελευταῖος τοῦ κλάδου τούτου καὶ οὗτος *Στέφανος*, κατ' ἀρχὰς πολεμήσας ὑπὲρ τοῦ Φερδινάνδου Α' τῆς Αὐστρίας καὶ εἶτα ὑπὲρ τοῦ Ζαπόγυα. Οὗτος ὑπῆρξεν ὁ χορηγὸς τῶν ἐξόδων τῶν πρώτων ἐν τῇ οὐγγρικῇ γλώσσῃ, ἐπιμελείᾳ τοῦ Γασπὰρ Κάρογυ, τῷ 1590 ἐκδοθεισῶν ἁγίων Γραφῶν. Γ. Ι. Β.

**Μπαυ—.** βλ. καὶ *Μπαγ—.*

**Μπάϋ** (Bay) *[Γεωγρ.].* Λίμνη τῆς νήσου Λουσὸν τοῦ συμπλέγματος τῶν Φιλιππίνων, ἔχουσα μῆκος 50 χλμ., πλάτ. 35 καὶ μέσον βάθος 36 μ. περίπου. Δέχεται τὰ ὕδατα πολλῶν ποταμῶν, ὧν σπουδαιότερος ὁ Λούμπανγκ, ὅστις εἶναι πλωτός. Ἐκρέει εἰς τὸν κόλπον τῆς Μανίλια διὰ βραχίονος καλουμένου *Πάζιγκ* καὶ εἶναι πλουσία εἰς ἰχθῦς. Ἐντὸς αὐτῆς ἀναδύεται ἡ νῆσος *Ταλίμ* καὶ αἱ νησῖδες *Ὀλαγκιπάρ, Χουσάν, Κολάμπα* κτλ., παρὰ τὴν Ν. δὲ ὄχθην ὑψοῦται τὸ ἡφαίστειον Μακιλίνγκ. Χ. Δ.

**Μπάϋχ** (οἱ) (Baya). Λαὸς νέγρων τῆς κεντρικῆς Ἀφρικῆς, ἐν τῷ γαλλικῷ Κογκό, κατοικῶν εἰς ὀρεινὴν καὶ δασώδη χώραν κειμένην μεταξὺ τοῦ 4ου καὶ 6ου νοτίου παραλλήλου. Οἱ Μπάϋα εἶναι μεγαλόσωμοι, ζῶσιν ἐντὸς καλυβῶν, εἰς τὰ ἄδενδρα μέρη τῶν δασῶν, καὶ ἀσχολοῦνται εἰς τὴν γεωργίαν. Ἡ χώρα των ἐξηρευνήθη καὶ ἐμελετήθη ὑπὸ τῆς ἀποστολῆς τοῦ Μόλλ. Γ. Ι. Β.

**Μπαϋαμὸν** (Bayamon) *[Γεωγρ.].* Πρωτεύουσα ἐπαρχίας τῆς εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας ἀνηκούσης νήσου τοῦ Πόρτο Ρίκο, κειμένη ἐπὶ τῆς ΒΑ. παραλίας αὐτῆς. Κάτ. (1930) 12.986. Χ. Δ.

**Μπαϋὰν-Καρὰ** (Bayan Khara) *[Γεωγρ.].* Ὀροσειρὰ τῆς Κίνας, ἀποτελοῦσα τὸ Α. τμῆμα τοῦ μεγάλου ὀρεινοῦ συστήματος τοῦ Κουὲν - Λούν. Ἐκτείνεται μεταξὺ τῶν ποταμῶν Μουρούνι - Οὐσσοῦ (Κυανοῦ), κεντρικοῦ βραχίονος τοῦ ἄνω ροῦ τοῦ Γιάνγκ-τσὲ-Κιάνγκ καὶ τῶν πηγῶν τοῦ Χοάνγκ-Χὸ (Κιτρίνου), ὑψοῦται δὲ μέχρι 4.000 περίπου μέτρων. Πρὸς Α. τὰ ὄρη ταῦτα συνενοῦνται μετὰ τῆς ὀροσειρᾶς Γιοὺν-Λίνγκ καὶ τῶν ὑψιπέδων τῆς κυρίως Κίνας.

**μπαϋαντέρα** (ἡ) (bailadeira) *[Ἐγκυκλ.]* βλ. λ. *μπαγιαντέρα.*

**Μπαϋὲ** (Bayeux), ***Ἀδόλφος - Αὔγουστος,*** γνωστότερος ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Marc.* Γάλλος λογοτέχνης (1829—1882). Ἐσπούδασε νομικήν, τὴν ὁποίαν ὅμως ἐγκατέλιπε, διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν φιλολογίαν καὶ τὴν δημοσιογραφίαν. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς μάχας τῶν δρόμων. Κατόπιν ἐδημοσίευσεν ἄρθρα εἰς τὸν «Φιγκαρῶ», εἰς τὸν «Αἰῶνα» καὶ τὸν «Ταχυδρόμον τῶν Παρισίων», συνεδέθη μετὰ τοῦ Πρυντὸν καὶ ἐπροπαγάνδισεν ὑπὲρ τοῦ σοσιαλισμοῦ. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς τὴν ἐθνοφρουρὰν καὶ ἐτραυματίσθη. Ἐδημοσίευσε πληθὺν φιλολογικῶν ἔργων, ἐν οἷς: «Μιὰ γυναῖκα ποὺ πνίγεται» (Παρίσιοι 1862), «Οἱ ἄνθρωποι τοῦ νόμου» (1862), «Οἱ ἄνθρωποι τῆς Ἐκκλησίας» (1863), «Νεανικοὶ ἔρωτες» (1885), «Ἡ θετὴ κόρη» (1885) κτλ., ἐπίσης δὲ καὶ τὰ θεατρικὰ ἔργα: «Ἰωάννα ντὲ Λινιερὶς», πεντάπρακτον ἔμμετρον δρᾶμα (1868) καὶ «Οἱ πρόγονοί μας», ἔμμετρος ἐπίσης τραγῳδία εἰς 3 πράξεις (1885). —α.

—**Μπαϋὲ** (Bayet), ***Κάρολος.*** Γάλλος ἱστορικὸς καὶ βυζαντινολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1849. Σπουδάσας ἐν Παρισίοις καὶ πολιτογραφηθεὶς Γάλλος, εἰργάσθη ἀπὸ τοῦ 1872 εἰς τὴν γαλλικὴν Ἀρχαιολογικὴν σχολὴν τῆς Ρώμης καὶ βραδύτερον εἰς τὴν τῶν Ἀθηνῶν. Αἱ μελέται του περιεστράφησαν ἰδίως περὶ τὴν βυζαντινὴν ἀρχαιολογίαν, πολλὴν δ' ἐντύπωσιν ἔκαμε τὸ πρῶτόν του δημοσίευμα, ἔκθετον τὰ συμπεράσματα ἑνὸς ταξιδίου του εἰς Ἅγιον Ὄρος, δημοσιευθὲν εἰς τὰ «Ἀρχεῖα τῶν ἐπιστημονικῶν ἀποστολῶν». Τῷ 1876 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Λυὼν εἰς τὴν ἕδραν τῆς χριστιανικῆς ἀρχαιολογίας, μετατραπεῖσαν βραδύτερον εἰς ἕδραν τῆς ἱστορίας καὶ ἀρχαιολογίας τοῦ μεσαίωνος. Ἀπὸ τοῦ ἰδίου ἔτους διωρίσθη ἐπίσης καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης ἐν τῇ σχολῇ Καλῶν τεχνῶν τῆς ἰδίας πόλεως. Ἐκ τῶν δημοσιευθέντων ἔργων του θεωροῦνται ποιοτικά: «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς χριστιανικῆς ζωγραφικῆς ἐν Ἀνατολῇ πρὸ τῆς αἱρέσεως τῶν εἰκονοκλαστῶν (Παρίσιοι 1879), «Ἡ βυζαντινὴ τέχνη» (ἐν τῇ «Βιβλιοθήκῃ διδασκαλίας Καλῶν τεχνῶν»), «Σύνοψις τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης» (ὁμοίως 1886) κλπ. Πολλὰ καὶ σημαντικὰ ἄρθρα του ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὴν «Ἱστορικὴν Ἐπιθεώρησιν», τὴν «Κριτικὴν Ἐπιθεώρησιν», τὴν «Μεγάλην Γαλλικὴν Ἐγκυκλοπαιδείαν» κ. ἄ. —α.

**Μπαϋὲ** (Bayeux) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Μπαγιέ*).

**Μπαϋέου ὑ Σουμπίας** (Bayeu y Subías), ***Φραγκίσκος.*** Ἱσπανὸς ζωγράφος ἐκ Σαραγόσσας (1734—1795). Εἰς νεαρὰν ἡλικίαν ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ ζωγράφῳ Λούχαν, ἐπιτυχὼν δὲ εἰς διαγωνισμὸν ἐστάλη διὰ νὰ τελειοποιηθῇ εἰς Μαδρίτην δαπάναις τῆς Ἀκαδημίας Σὰν-Φερνάντο. Ὁ Μένγκς, ἐπιμελητὴς τότε τῶν καλλιτεχνικῶν ἐργασιῶν τῆς αὐλῆς τοῦ Καρόλου Γ', γνωρίσας τὸν Μπαϋέου, ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν πλείστας ἀξίας λόγου ἐργασίας ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τῆς Μαδρίτης. Ἐκεῖ ἐργαζόμενος παρὰ τὸ πλευρὸν καὶ ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν τοῦ μεγάλου τούτου διδασκάλου, διεμορφώθη βαθμηδὸν εἰς πιστὸν μιμητὴν αὐτοῦ. Χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ Μένγκς, ὅστις ἐξαιρετικῶς συνεπάθει αὐτόν, διωρίσθη ζωγράφος τοῦ βασιλέως, ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας Σὰν-Φερνάντο καὶ εἶτα ἀντιπρόεδρος αὐτῆς καὶ ἐγένετο διευθυντὴς τῶν σπουδῶν τῆς σχολῆς Καλῶν τεχνῶν. Διεκρίθη κυρίως ὡς διακοσμητὴς τοιχογραφιῶν καὶ Μαδρίτης ζωγραφίας. Ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τῆς Μαδρίτης σῴζονται πολλὰ ἐκ τῶν εἰς τὴν κατηγορίαν ταύτην ἀνηκόντων ἔργων του, ὧν κάλλιστα εἶναι «Ἡ κατάληψις τῆς Γρενάδης ὑπὸ τῶν καθολικῶν βασιλέων», «Ἡ πτῶσις τῶν Γιγάντων», «Ἡ ἀποθέωσις τοῦ Ἡρακλέους», «Ὁ Ἀπόλλων προστάτης τῶν τεχνῶν» καὶ πολλαὶ ἀλληγορίαι. Ἐπίσης εἰργάσθη μέγαν ἀριθμὸν ἐλαιογραφιῶν, παριστωσῶν θρησκευτικὰ θέματα, ἀλληγορίας, σκηνὰς τῶν Γραφῶν, προσωπογραφίας, ἀπόψεις τῆς Μαδρίτης, τοπία κτλ. Εἰκοσιπέντε ἐκ τῶν ἔργων τούτων φυλάσσονται εἰς τὸ μουσεῖον τῆς Μαδρίτης. Ὁ Μπαϋέου εἶναι καλλιτέχνης εὐσυνείδητος, ἀλλὰ μετρίας ἀξίας χρωματιστής. Τὰ ἔργα του εἶναι ἐπηρεασμένα ἀφ' ἑνὸς μὲν ἀπὸ τὴν τεχνοτροπίαν τῆς σχολῆς τῆς Νεαπόλεως, εἰς ἣν ἀνῆκον οἱ πρῶτοι διδάσκαλοί του, καὶ ἀφ' ἑτέρου ἀπὸ τὸν Μένγκς, πρὸς τὸν ὁποῖον ἔτρεφεν ἀληθῆ λατρείαν. Ἦτο γυναικάδελφος καὶ φίλος τοῦ Γκόγια, πρὸς τὸν ὁποῖον ὅμως ἐμειονέκτει· ἠρίζε, σῴζεται δὲ εἰς τὸ μουσεῖον Πράντο θαυμασία προσωπογραφία του, ἔργον τοῦ Γκόγια. Χ. Δ.

**Μπάϋερ** (Bayer). Γερμανικὸς οἶκος φαρμακευτικῶν καὶ χημικῶν προϊόντων. Τὸ ἐργοστάσιον Μπάϋερ ἱδρύθη περὶ τὰ μέσα τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ὑπὸ τοῦ Φρειδερίκου Μπάϋερ ὡς χρωματουργεῖον πρὸς παρασκευὴν ὀργανικῶν χρωστικῶν ἐκ τῆς λιθανθρακοπίσσης. Ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τῆς ὀγδόης δεκαετηρίδος τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἤρχισε καὶ ἡ λήψη εἰς τὴν παρασκευὴν φαρμάκων. Δύναται νὰ εἴπῃ τις ὅτι ἡ πρόοδος τῶν ὀργανικῶν φαρμακευτικῶν σκευασμάτων εἶναι στενῶς συνδεδεμένη πρὸς τὸ ὄνομα Μπάϋερ, διότι τὰ περισσότερα τῶν φαρμάκων, ἅτινα ἐτέθησαν εἰς κυκλοφορίαν ὑπὸ τοῦ οἴκου τούτου, ἀφῆκαν πράγματι ἐποχήν.

Digitized by Google

ὑπὸ τοῦ Μπάϋερ ἱδρυθεὶς οἶκος «Farbenfabriken Friedrich Bayer καὶ Co» συνεχωνεύθη βραδύτερον μὲ τὸ μέγα γερμανικὸν «Trust J. G. Farbenindustrie Aktiengesellschaft». Τὸ φαρμακευτικὸν τμῆμα τούτου φέρει τὸ ὄνομα «Bayer—Meister Lucius». Τῆς φαρμακευτικῆς ταύτης βιομηχανίας εἶναι γνωστότατα πλεῖστα ὅσα προϊόντα, ὡς ἡ ἀσπιρίνη, ἡ πρωταργόλη, ἡ φαινασετίνη, ἡ λουμινάλη, ἡ βερονάλη κλπ., ἅτινα τυγχάνουν εὐρυτάτης διαδόσεως. Ἡ φαρμακευτικὴ βιομηχανία (Bayer - Meister Lucius» εἶναι μία τῶν μεγαλυτέρων τοῦ κόσμου, διαθέτουσα πλεῖστα ἐπιστημονικὰ ἐργαστήρια καὶ μέγα ἐπιτελεῖον εἰδικῶν ἐπιστημόνων. Τὰ ἐργοστάσια τοῦ γερμανικοῦ τούτου Trust διαθέτουν κεφάλαια πλέον τοῦ ἑνὸς δισεκατομμυρίου μάρκων χρυσῶν, ἀπασχολοῦν δὲ περὶ τὰς 10.000 ἐργάτας. Κ. Γ. Μ.

**Μπάϋερ** (Bayer), ***Θεόφιλος-Σίγκφριντ.*** Εἷς ἐκ τῶν διαπρεπεστάτων ἀνατολιστῶν τῆς ΙΗ' ἑκατονταετηρίδος. Ἐγεννήθη ἐν Καινιξβέργῃ τῆς Γερμανίας τῷ 1694 καὶ ἀπέθανε τῷ 1738. Διὰ τῆς ἐν τῷ τρίτῳ τόμῳ τῶν πρακτικῶν τῆς Ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως δημοσιευθείσης (1732) περὶ τῆς θιβετικῆς γλώσσης πραγματείας του διεφώτισε τὰ μάλιστα τὴν τέως ἀπρόσιτον σχεδὸν εἰς τὴν ἐπιστήμην ἀσιατικὴν ταύτην γλῶσσαν, διὰ δὲ τῶν συγκριτικῶν μελετῶν του ἀνεκάλυψε τὴν εἴς τινα μέρη τῆς γραμματικῆς των (ἰδίως τὰ ἀριθμητικὰ) ὁμοιότητα τῆς ἰνδικῆς, τῆς περσικῆς καὶ τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης καὶ οὕτως ἔγινεν ὁ πρόδρομος τοῦ διασήμου Μπόπ. Ἀλλὰ τὸ πόρισμα, εἰς τὸ ὁποῖον κατέληξεν ὁ Μπάϋερ ἐκ τῶν ῥηθεισῶν συγκριτικῶν μελετῶν του, ὅτι δηλαδὴ ἡ ὁμοιότης αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης, διὰ τῆς ἑλληνομακεδονικῆς κυριαρχίας ἐπὶ τοῦ Ἰρὰν καὶ τῆς Βακτριανῆς (*Bayer*, «Historia regni Graecorum Bactriani», σ. 112), ἀπεδείχθη ὅτι εἶναι ἐντελῶς ἐσφαλμένον. Γ. Π. Α.

—**Μπάϋερ** (Bayer), ***Ἰωάννης.*** Γερμανὸς ἀστρονόμος, γεννηθεὶς τῷ 1572 ἐν Rain τῆς Βαυαρίας καὶ ἀποθανὼν τῷ 1625. Λόγῳ τῶν ἀξιοσημειώτων ἀστρονομικῶν παρατηρήσεών του ἔλαβε τῷ 1669 ἀπὸ τὸν αὐτοκράτορα Λεοπόλδον τὸν τίτλον τοῦ εὐγενοῦς. Ἐκ τῶν ἔργων του σπουδαιότατον εἶναι τὸ φερόμενον ὑπὸ τὸν τίτλον «Uranometria», ὅπερ ἀποτελεῖ συλλογὴν χαρτῶν τοῦ οὐρανοῦ. Οἱ χάρται οὗτοι εἶναι οἱ πρῶτοι τέλειοι χάρται τῶν ἀπλανῶν ἐν συγκρίσει πρὸς τοὺς ἐκδοθέντας μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης (Augsburg 1603). Ὁ Μπάϋερ ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος, ὅστις εἰσήγαγε τὴν ὀνομασίαν τῶν ἀπλανῶν διὰ τῶν γραμμάτων τοῦ ἑλληνικοῦ καὶ τοῦ λατινικοῦ ἀλφαβήτου. Σ. Π.

—**Μπάϋερ** (Bayer), ***Φρειδερῖκος.*** Δανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1837—1922). Ἀπὸ τοῦ 1872—1895 ἐξελέγετο βουλευτής, τῷ δὲ 1882 ἵδρυσε τὴν δανικὴν Ἕνωσιν εἰρήνης καὶ τῷ 1891 τὸ διεθνὲς γραφεῖον Βέρνης, οὗ καὶ ἐξελέγη πρόεδρος. Τῷ 1908 ἔλαβε μετὰ τοῦ Σουηδοῦ συγγραφέως Ἄρνολντσον τὸ βραβεῖον Νόμπελ τῆς εἰρήνης. Γ. Ι. Β.

**Μπάϋερλάϊν** (Beyerlein), ***Φραγκῖσκος - Ἀδάμ.*** Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1871. Κατετάγη εἰς τὸν στρατὸν καὶ ἔφθασεν εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ. Ἀφιερωθεὶς εἰς τὴν φιλολογίαν, ἐγένετο γνωστὸς εὐθὺς ἀπὸ τοῦ πρώτου ἔργου του, ἐμπνευσμένου ἐκ τῆς στρατιωτικῆς του ζωῆς, «Τέννα ἢ Σεδάν;» (1903, 253η ἔκδοσις 1914), καὶ ἀπὸ τοῦ δράματος «Ἀποχώρησις». Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ὁ μεγαλόδουλος», «Ὁ δαίμων Ὀθέλλος», «Τὰ νικητήρια», «Ἡ παλιὰ ζωή», «Σιμίλδη Χέγκεβαλτ» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπαϋὸλ** (Bayol), ***Ἰωάννης.*** Γάλλος ἐξερευνητὴς (1849—1905). Εἶχε μετάσχει μιᾶς τῶν πρώτων ἀποστολῶν τοῦ Γκαλλιενὶ εἰς Σουδὰν ὡς ἰατρὸς τοῦ ναυτικοῦ, εὑρισκόμενος δ' ἐν Σενεγάλῃ τῷ 1881 ἐνετάλη νὰ μεταβῇ εἰς Φούτα - Τζαλλὸν (τῆς Γαλλικῆς Γουϊνέας), ὅπου διεπραγματεύθη μετὰ τῶν ἰθαγενῶν φυλάρχων συνθήκην, δι' ἧς ἡ Γαλλία ἀπέκτα δικαιώματα προστασίας ἐπὶ τῆς χώρας, λαμβάνουσα ἅμα εἰς τὴν κατοχήν της σημαντικὸν τμῆμα ἐδάφους ἐπὶ τῶν δυτικῶν συνόρων. Ἐπανερχόμενος ἐκεῖθεν εἰς Σενεγάλην ἐξηρεύνησε διὰ πρώτην φορὰν τὴν κοιλάδα τοῦ Μπάφιγκ. Τῷ 1883 ἐξετέλεσε νέας ἐξερευνήσεις τῶν ὀχθῶν τοῦ Ἄνω Νίγηρος καὶ προὐχώρησε μέχρι σχεδὸν τοῦ Τομπουκτοῦ. Τῷ 1887, ὡς ὑποδιοικητὴς τῆς Σενεγάλης, ἐπεφορτίσθη νὰ διαπραγματευθῇ τὸν καθορισμὸν τῶν συνόρων μεταξὺ τῆς Τογκολάνδης καὶ τῶν χωρῶν αἵτινες ἀποτελοῦσι σήμερον τὴν ἀποικίαν τῆς Δαχομέης, διεξήγαγε δὲ τὴν ἀποστολήν του μετὰ πλήρους ἐπιτυχίας. Τῷ 1889 εἶχε διορισθῆ διοικητὴς της ἐπαρχίας τῶν Νοτίων Ποταμῶν, μεταβὰς δὲ τότε εἰς Ἀμπόμεϋ τῆς Δαχομέης, ἵνα ζητήσῃ ἐξηγήσεις παρὰ τοῦ ἰθαγενοῦς βασιλέως Γκλεγκλὲ διὰ τὴν στάσιν, ἣν οὗτος ἐτήρει ἀπέναντι τῆς Γαλλίας, διέτρεξε τὸν κίνδυνον νὰ κρατηθῇ αἰχμάλωτος. Βραδύτερον διωρίσθη διοικητὴς τῆς Γαλλικῆς Γουϊνέας, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Γαλλίαν τῷ 1904 ἐξελέγη γερουσιαστής. Ὁ Μπαϋόλ, προικισμένος καὶ διὰ ποιητικοῦ ταλάντου, ἔγραψεν ὄχι ἀνάξια λόγου στιχουργήματα. —Ω.

**Μπαϋὸν** (Bayonne) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Γαλλίας. —2) Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μπαγιόν*).

**Μπάϋρον** (Byron), ***Γεώργιος-Γόρδων.*** Ἀγγλικὴ προφορὰ τοῦ ὀνόματος τοῦ Ἄγγλου φιλέλληνος καὶ ποιητοῦ λόρδου *Βύρωνος* (βλ. λ.).

— **Μπάϋρον** (Byron), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος ναύαρχος καὶ ἐξερευνητὴς (βλ. λ. *Βύρων*).

**Μπαϋρόϋτ** (Bayreuth) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομαστὴ πόλις τῆς Γερμανίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ἄνω Φρανκονίας ἐν Βαυαρίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἐρυθροῦ Μοίνου, 92 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς Νυρεμβέργης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν καὶ ἵππων καὶ ἔχει ἀξίαν λόγου βιομηχανίαν (κλωστήρια, βαφεῖα, βυρσοδεψεῖα, ἐργοστάσια εἰδῶν κιγκαλλερίας καὶ πορσελλάνης, χαρτοποιεῖα κλπ.). Εἰς τὸ πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως κείμενον προάστειον τοῦ Ἁγίου Γεωργίου ὑπάρχουσι λατομεῖα μαρμάρου. Κυριώτερα κτήρια εἶναι τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον Σοφίενμπουργκ (ΙΣΤ' αἰῶνος), τὸ νέον ἀνάκτορον (ΙΗ' αἰῶνος), ὁ καθεδρικὸς ναὸς τῶν διαμαρτυρομένων, γοτθικοῦ ῥυθμοῦ (ΙΕ' αἰῶνος), ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχουσιν οἱ τάφοι τῶν μαργράβων τοῦ Μπαϋρόϋτ, καὶ τέλος τὸ περίφημον «Θέατρον Βάγνερ». Κάτοικοι (1925) 35.312.

Τὸ Μπαϋρόϋτ ἦτο πρωτεύουσα ἀνεξαρτήτου ὁμωνύμου πριγκιπάτου, τὸ ὁποῖον προσηρτήθη τῷ 1791 εἰς τὸ βασίλειον τῆς Πρωσσίας. Βραδύτερον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων (1807), μετὰ τριετίαν δὲ ἐδόθη εἰς τὴν Βαυαρίαν, εἰς ἣν παραμένει ἔκτοτε. Ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Ριχάρδου Βάγνερ κεῖται ἡ οἰκία τοῦ μουσουργοῦ, ἐντὸς δὲ τοῦ κήπου αὐτῆς ἔχει ταφῆ τὸ λείψανόν του. Ἐν Μπαϋρόϋτ ἔχουσι ταφῆ καὶ οἱ Φραγκῖσκος Λὶστ καὶ Παῦλος Φρειδερῖκος Ρίχτερ.

Τὸ «Θέατρον τοῦ Μπαϋρόϋτ». Κεῖται ἐκτὸς τῆς πόλεως εἰς ἀπόστασιν μιλλίου καὶ ἐκτίσθη δαπάνῃ τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου Β' τῆς Βαυαρίας, κατόπιν ὑποδείξεως τοῦ Ριχάρδου Βάγνερ. Εἶναι ἐπίσης γνωστὸν ὡς «Θέατρον Βάγνερ» καὶ ὡς «Ἐθνικὸν θέατρον». Ἀποπερατωθὲν τῷ 1876, ἐγκαινιάσθη τὴν 13 Αὐγούστου διὰ τῆς πρώτης παραστάσεως τοῦ πρώτου μέρους τῆς τετραλογίας «Τὸ δακτυλίδι τῶν Νιμπελοῦνγκεν». Τῷ 1882 ἐδόθη ἡ δευτέρα μεγάλη παράστασις τοῦ «Πάρσιφαλ» ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τῶν Ἑρμάννου Λέβι καὶ Φραγκίσκου Φίσερ, ἔκτοτε δὲ ἀνὰ διετίαν ἐδίδοντο τακτικῶς παραστάσεις, διευθυνόμεναι ὑπὸ τῆς συζύγου τοῦ μουσουργοῦ Κοζίμας καὶ τοῦ υἱοῦ του Σίγκφριντ, αἱ ὁποῖαι ἐλάμβανον τὸν χαρακτῆρα ἱερῶν τελετῶν διὰ τοὺς ἀνὰ τὸν κόσμον πιστοὺς ὀπαδοὺς τῆς βαγνερείου μουσικῆς. Τὸ πρόγραμμα περιελάμβανε 3 ἔργα, ὧν τὸ ἓν ἦτο κατὰ κανόνα τὸ «Πάρσιφαλ», διὰ τὴν παράστασιν τοῦ ὁποίου τὸ θέατρον τοῦ Μπαϋρόϋτ εἶχεν ἀποκλειστικότητα μέχρι τοῦ 1913. Ἀπὸ τοῦ 1914 διεκόπησαν αἱ παραστάσεις, ἐπαναληφθεῖσαι τῷ 1924 (βλ. καὶ λ. *ἀκουστική* τ. Γ', σ. 146 β', γ' καὶ σ. 145). Χ. Δ.

**Μπαϋρχόφφερ** (Bayrhoffer), ***Κάρολος - Θεόδωρος.*** Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ φιλόσοφος (1812—1888). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν τῇ ἰδιαιτέρᾳ αὐτοῦ πατρίδι Μάρμπουργκ, παυθεὶς τῷ 1846 λόγῳ τῶν φιλελευθέρων θρησκευτικῶν καὶ πολιτικῶν του ἀρχῶν. Κατὰ τὴν ἐπὶ μικρὸν ἐπικράτησιν τῶν φιλελευθέρων, ἐξελέγη πρόεδρος τῆς βουλῆς τῆς Ἔσσης, ἠναγκάσθη ὅμως, μετὰ τὴν ἐπάνοδον τοῦ ἐκλέκτορος, νὰ καταφύγῃ εἰς Ἀμερικήν. Ὡς φιλόσοφος, ἀνῆκεν εἰς τὴν ἑγελιανὴν σχολὴν καὶ ἔγραψε τὰ ἑξῆς: «Θεμελιώδη προβλήματα τῆς μεταφυσικῆς» (1835), «Ἰδέα καὶ ἱστορία τῆς φιλοσοφίας» (1838), ἔργα εἰς τὰ ὁποῖα ὑπεστήριξεν ὅτι ὁ Ἕγελος κατώρθωσε νὰ φθάσῃ εἰς τὴν ἀπόλυτον ἰδέαν. Κατόπιν ἐνεφανίσθη ὡς ὑπέρμαχος τοῦ γερμανικοῦ καθολικισμοῦ καὶ ἐπραγματεύθη τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἐπιδιωκομένην «θρησκείαν τῆς ἐλευθερίας» εἰς τὰς «Ἐρεύνας ἐπὶ τῆς οὐσίας, ἱστορίας καὶ κριτικῆς τῆς θρησκείας» («Ἐπετηρίδες διὰ τὴν ἐπιστήμην καὶ ζωήν» (1849). Γ. Ε. Κ.

**μπάφα** (ἡ)· ὁ θῆλυς ἰχθὺς *κέφαλος* (βλ. λ.), ἐκ τοῦ ὁποίου ἐξάγεται τὸ αὐγοτάραχον. Χ. Γ. Ε.

**Μπάφας, *Γεώργιος*** ἢ ***Διαμάντης.*** Χρυσοχόος καλλιτέχνης, γεννηθεὶς ἐν Καλαρρύταις τῆς Ἠπείρου κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Μετὰ τὴν καταστροφὴν τῆς γενετείρας του, τὴν 30 Ἰουνίου 1821, ὑπὸ τῶν Τούρκων, ὁ Μπάφας μετὰ πολλῶν συμπατριωτῶν του κατέφυγεν εἰς Ζάκυνθον, ὅπου ἐγένετο περίφημος διὰ τὴν χρυσοχοϊκήν του δεινότητα καὶ δημοφιλέστατος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Διαμάντης*, ὄνομα τοῦ πατρός του, ἀρίστου ἐπίσης ἀργυροτέχνου καὶ χρυσοχόου. Τὸ σπουδαιότερον τῶν ἔργων του εἶναι ἡ μεγάλη ἀργυρᾶ εἰκὼν τοῦ ἁγίου Διονυσίου, ἣν ἐπεξειργάσθη τῷ 1822. Ἐν τῇ εἰκόνι ταύτῃ αἱ ἐκφράσεις τοῦ προσώπου καὶ ἡ πτύχωσις τῶν ἐνδυμάτων εἶναι καλλιτεχνικώταται. Τοῦ ἰδίου ἐπίσης ἔργον εἶναι καὶ ἡ λάρναξ (ἐπεξεργασία 1829), εἰς τὴν ὁποίαν ἐναπόκειται τὸ λείψανον τοῦ ἁγίου. Ἀμφότερα τὰ ἔργα ταῦτα ἐγένοντο ἐπὶ σχεδίων τοῦ Ζακυνθίου ζωγράφου Καντούνη. Τοῦ ἰδίου ὑπάρχουν εἰς τὴν Ζάκυνθον ἰδίως καὶ ἄλλα ἔργα, ὡς ἐπενδύσεις εὐαγγελίων, θυμιατήρια, κανδῆλαι καὶ ἄλλα. Μετὰ τῶν συμπατριωτῶν του Ἀθαν. Τσιμούρη καὶ Δ. Παπαγεωργίου ἀποτελεῖ τὴν ὁμάδα τῶν μεγαλυτέρων ἀριστοτεχνῶν τῆς καλαρρυτιώτικης χρυσοχοΐας καὶ ἀργυροτεχνίας. Ἀπέθανεν ἐν Ζακύνθῳ τῷ 1854. Χ. Ι. Σ.

**Μπάφι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀχαρνῶν (Μενιδίου) τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Κάτ. (1928) 192.

— 2) Χωρίον τῆς κοινότητος Μαρκοπούλου Ὠρωπίων τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Κάτ. (1928) 306.

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἄνω Φαναρίου τῆς ἐπαρχίας Τροιζηνίας τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας. Κάτ. (1928) 205. Χ. Δ.

**Μπάφινγκ** (Bafing) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ περιοχῇ Ἄνω Σενεγάλη-Νίγηρος τῆς Γουϊνέας. Πηγάζει ἐκ τοῦ Φουτὰ-Ντζαλὸν καὶ ἑνούμενος μετὰ τοῦ Μπάκοϋ παρὰ τὸ Μπαφουλαμπὲ σχηματίζει τὸν *Σενεγάλην*. Ἔχει μῆκος 450 περίπου χλμ. Χ. Δ.

**Μπαφουλαμπὲ** (Bafoulabé) *[Γεωγρ.]*. Ἐμπορικὸς σταθμὸς τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ περιοχῇ Ἄνω Σενεγάλη-Νίγηρος τῆς Γουϊνέας, κείμενος παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Μπάφινγκ καὶ Μπακόϋ. Εἶναι πρωτεύουσα τῆς περιφερείας καὶ ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν. Κάτ. 1.700. Χ. Δ.

**μπάφρα** (ἡ). Ποιότης μυρωδάτων καπνῶν, ὀνομασθεῖσα ἐκ τῆς παραγούσης αὐτὴν ὁμωνύμου πόλεως τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Τοιαῦτα καπνὰ παράγονται καὶ ἐν Ἑλλάδι, ἐκ γνησίου σπόρου Μπάφρας, οὐχὶ ὅμως ὅμοια καὶ πρὸς τὴν ποιότητα τῶν καπνῶν ταύτης. Δ. Μ. Γ.

**Μπάφρα,** ἢ ***Πάφρα,*** ἢ ***Βάφρα*** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Σαμψοῦντος, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως, εἰς ἀπόστασιν 41 χλμ. ΒΔ. τῆς Σαμψοῦντος καὶ 20 χλμ., Ν. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἅλυος (Κιζὶλ Ἰρμάκ), παρὰ τὴν Α. αὐτοῦ ὄχθην. Λόγῳ τῶν τελμάτων τοῦ ποταμοῦ τὸ κλῖμά της εἶναι νοσηρόν. Ἡ πόλις κεῖται εἰς τὸ μέσον χώρας εὐφορωτάτης, περιφήμου διὰ τὰ καπνά της. Κάτ. 8.192 (1927). Ἐπίνειον αὐτῆς ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου, εἰς ἀπόστασιν 12 χλμ., εἶναι τὸ χωρίον Κουμτζουγὰζ (τὸ ἀρχαῖον Κανοπήϊον, τοῦ Ἀρριανοῦ).

Τόσον εἰς τὴν πόλιν, ὅσον καὶ εἰς τὴν ὁμώνυμον ὑποδιοίκησιν κατῴκουν πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς (1923) πολλοὶ Ἕλληνες, οἱ πλεῖστοι τουρκόφωνοι, μεταναστεύσαντες εἰς Ἑλλάδα. Ν. Μ.

— **Μπάφρα** *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου (πλάτ. 41°44' Β., μῆκ. 35°59' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2237: Kerempeh burùn to cape Yasùn), χθαμαλὸν καὶ πλατύ, ὅπερ διαχωρίζει ὁ καθ' αὐτὸ ἀκριβῶς ἐκβάλλων Κιζὶλ-Ἰρμάκ. Σ.Ε.Λ.

—**Μπάφρα, *Νέα*—** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κορμίστης τῆς ἐπαρχίας Φυλλίδος (Ζίχνης) τοῦ νομοῦ Σερρῶν. Κάτ. (1928) 407. Χ. Δ.

**Μπαφφιὲ** (Baffier), ***Ἰωάννης.*** Γάλλος γλύπτης (1851—1920). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν τοῦ Νεβὲρ καὶ ἐν Παρισίοις εἰς τὰ ἐργαστήρια τοῦ Αἰμὲ Μιλλὲ καὶ τοῦ Ἰωάννου Γκαρνιέ. Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1881. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Λουδοβῖκος ΙΑ' εἰς τὸ Πλεσσὶ-λὲ-τούρ», «Ἰάκωβος Μπονόμ», αἱ προτομαὶ τοῦ πατρὸς καὶ τῆς μητρὸς τοῦ καλλιτέχνου, «Μνημειῶδες ἑστιατόριον», «Ἰωάννης-Ἰάκωβος Ρουσσώ», «Μιχαὴλ Σερβὲ» κλπ. Ἐξέδωκε τὸ «Ἑσπερινὸν μουσεῖον» καὶ «Προκήρυξιν τῆς ὁμάδος τῶν τεχνιτῶν τῆς Λεπούρζ». Ι. Μ. Π.

**Μπάφφιν** (Baffin), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος θαλασσοπόρος (1584—1622), εἰς τὸν ὁποῖον ὀφείλεται ὁ διάπλους τῆς ὁμωνύμου θαλάσσης. Τὸ πρῶτον συνώδευσεν ὡς ἀξιωματικὸς τὸν Ἰάκωβον Hall εἰς τὸ κατὰ τὰς Δ. ἀκτὰς τῆς Γροιλανδίας ταξίδιόν του (1612). Τῷ 1615 ὡς μέλος τῆς ἀποστολῆς Rob. Bylot καὶ κυβερνήτης τοῦ πλοίου «Discovery» διέπλευσε τὸν κόλπον τοῦ Οὔδσωνος, προέβη εἰς μετρήσεις εἰς τὰς ἀκτὰς τοῦ Σούθαμπτον, ἐπιβεβαιωθείσας κατόπιν ὑπὸ τοῦ Ed. Parry (1821), καὶ διῆλθε τὸν διέκπλουν Φὸξ Τσάννελ. Τῷ 1616 ἐξετέλεσε τὸν μέγαν αὐτοῦ πλοῦν· διαπλεύσας καὶ πάλιν τὰς δυτικὰς ἀκτὰς τῆς Γροιλανδίας ἐστράφη πρὸς Β., ἀνελθὼν μέχρι τῆς ἀπ' αὐτοῦ ὀνομασθείσης *Θαλάσσης τοῦ Μπάφφιν*, 300 μίλλια βορείως τοῦ βορειοτέρου σημείου τοῦ πλοῦ τοῦ Ντάβις (77° 45' Β. πλ.). Ἐπιστρέψας εἰς Ἀγγλίαν ἐτέθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Ἑταιρείας τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν. Ἐταξίδευσεν εἰς Σουράτ (1617—1619), ἐκτελέσας ἀναγνωρίσεις εἰς τὸν Περσικὸν κόλπον καὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν, καὶ τῷ 1620 μετέσχε



Digitized by Google

τῶν ἀγγλοπερσικῶν ἐπιδρομῶν κατὰ τοῦ πορτογαλικοῦ φρουρίου Κίσμ εἰς τὸν Περσικὸν κόλπον, ὅπου τραυματισθεὶς ἀπέθανε. Τὴν ἀφήγησίν του ἐδημοσίευσε πρῶτος ὁ Pourchas, ἦτο δὲ αὐτὴ ὡς καὶ ὁ ὑπ' αὐτοῦ συνταχθεὶς χάρτης σπουδαιότατον βοήθημα τῶν ναυτιλλομένων ἐπὶ μακρὰ ἔτη. Πᾶσαι αἱ μετρήσεις του ἀπεδείχθησαν ἀκριβεῖς, ἡ καταμέτρησις δὲ θαλασσίου μήκους διὰ παρατηρήσεων τῆς σελήνης ἐγένετο τὸ πρῶτον ὑπ' αὐτοῦ. Κυρία ἔκδοσις εἶναι ἡ ὑπὸ Cl. Markham γενομένη: «Voyages of William Baffin (Λονδῖνον 1881) εἰς τὴν σειρὰν τῆς Hakluyts Society. Π.Ν.Π.

**Μπάφφιν γῆ** (ἀγγλ. Baffinland, γαλλ. Terre de Baffin) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ ἀμερικανικοῦ πολικοῦ ἀρχιπελάγους, ἐν τῷ Β. Παγωμένῳ ὠκεανῷ. Κεῖται μεταξὺ 60° καὶ 90° Δ. μήκους καὶ 62° καὶ 74° Β. πλάτους καὶ ἔχει ἐπιφάνειαν 611.900 τετρ. χλμ. Χωρίζεται ἀπὸ τῆς ἀμερικανικῆς ἠπειρωτικῆς γῆς ὑπὸ τοῦ πορθμοῦ τοῦ Χούδσωνος καὶ τῶν στενῶν τοῦ Φόξ, Φούρυ, καὶ Χέκλ. Τὸ στενὸν τοῦ Ἀντιβασιλέως χωρίζει ταύτην ἀπὸ τοῦ Νορντσόμερσετ καὶ τὸ τοῦ Λανκάστερ ἀπὸ τῆς Γροιλανδίας. Διασχίζεται ὑπὸ πολλῶν φιὸρδ καὶ ὑπὸ ὀροσειρῶν, ὧν τὸ ὕψος φθάνει τὰ 2.000 μ. καὶ ὅπου ἀφθονοῦν διάφορα μέταλλα. Ἔχει πολλὰς μεγάλας λίμνας καὶ κατοικεῖται ὑπὸ Ἐσκιμώων. Μ. Δ. Β.

— **Μπάφφιν κόλπος,** ἢ **θάλασσα** — (ἀγγλ. Baffin bay ἢ sea, γαλλ. Baie ἢ mer de Baffin) *[Γεωγρ.]*. Τμῆμα τοῦ Β. Παγωμένου ὠκεανοῦ μεταξὺ τῶν νήσων τῆς Γροιλανδίας, τῆς Γῆς τοῦ Μπάφφιν, τῆς Νὸρθ Ντέβον καὶ τῆς Ἐλλεσμηρλαντ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 620.000 τ. χλμ. καὶ μέγιστον βάθος 5.200 μ. Ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ κόλπου τοῦ Ντίσκο καὶ τοῦ Χὸμ μέχρι 78° Β. πλάτους, ὅπου συγκοινωνεῖ μὲ τὸν κόλπον τοῦ Καῖην διὰ τοῦ στενοῦ τοῦ Σμὶθ καὶ ἐκεῖθεν διὰ τοῦ στενοῦ τοῦ Κέννεντυ πρὸς τὴν Β. πολικὴν λεκάνην. Πρὸς Ν. συγκοινωνεῖ μὲ τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανὸν διὰ τοῦ στενοῦ τοῦ Νταῖβις καὶ πρὸς Δ. μὲ τὸ ἀρχιπέλαγος Πῆρυ διὰ τῶν στενῶν τοῦ Λανκάστερ καὶ τοῦ Τζόνς. Ἐν αὐτῷ ἀφθονοῦν αἱ φάλαιναι καὶ αἱ φῶκαι, ἐπικρατεῖ δὲ συχνάκις πυκνὴ ὁμίχλη καὶ ἐπιπλέουν πλεῖστα παγόβουνα, παρεμποδίζοντα τὴν ναυσιπλοΐαν. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1615, ὅπως καὶ ἡ ὁμώνυμος νῆσος, ὑπὸ τοῦ θαλασσοπόρου *Μπάφφιν*, ἐξ οὗ ἔλαβον καὶ τὸ ὄνομα. Μ. Δ. Β.

**Μπάφφο** (Baffo), **Γεώργιος.** Βενετὸς ποιητὴς (1694—1768). Κατήγετο ἐκ τῆς αὐτῆς οἰκογενείας, ἐξ ἧς κατήγετο καὶ ἡ εὐνοουμένη τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Γ', σουλτάνα Σαφιγιὲ Μπάφφο. Ἔγραψε ποιήματα εἰς βενετικὴν διάλεκτον πλήρη χάριτος, πνεύματος καὶ εὐθυμίας, ἀλλ' ὑπερβαλλόντως ἐλευθεριάζοντα. Ὁ ἴδιος ἐν τούτοις διῆγε βίον ἄμεμπτον, ἀποφεύγων καὶ κατακρίνων τὴν παραλυσίαν τῆς ἐποχῆς, ἐξ οὗ ἔλεγετο περὶ αὐτοῦ ὅτι ὡμίλει ὡς παρθένος καὶ ἔγραφεν ὡς σάτυρος. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν εἰς τέσσαρας τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον: «Συλλογὴ τῶν ἔργων τοῦ Γεωργίου Μπάφφο» (Κυσμόπολις [ἤτοι Βενετία] 1787). Μ. Δ. Β.

— **Μπάφφο** (Baffo), **Σαφιγιέ.** Βενετὶς γεννηθεῖσα τῷ 1552 καὶ ἀποθανοῦσα ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1615. Ἀνῆκεν εἰς περιφανῆ οἰκογένειαν, πλέουσα δὲ ἀπὸ Βενετίας εἰς Κέρκυραν, ὅπου ὁ πατήρ της ἦτο διοικητής, ᾐχμαλωτίσθη ὑπὸ πειρατῶν εἰς παιδικὴν ἡλικίαν καὶ παρεδόθη εἰς τὸν γυναικωνίτην τοῦ μετέπειτα σουλτάνου Μουρὰτ Γ', μετωνομάσθη δὲ *Σαφιγιέ*, ἤτοι *Ἁγνή*. Ἐπὶ τοῦ Μουρὰτ ἤσκει τοιαύτην γοητείαν, ὥστε, καίπερ ἦτο οὗτος εἰς ἄκρον φιλήδονος, ἠράτο μόνον αὐτῆς. Καὶ ἐπί τινα μὲν χρόνον ἡ ὑπὸ τῆς μητρὸς τοῦ Μουρὰτ (ἥτις ἤθελε ν' ἀποσπάσῃ τὸν υἱόν της ἀπὸ τῆς ἐπιρροῆς τῆς Σαφιγιὲ) εἰσαχθεῖσα εἰς τὸ χαρέμιον Οὐγγρὶς χορεύτρια ἠδυνήθη ν' ἀπομακρύνῃ τὴν Σαφιγιὲ τῆς ἀγάπης τοῦ σουλτάνου, ἀλλ' ὅτε αὕτη ἐγένετο μήτηρ τοῦ κατόπιν σουλτάνου Μωάμεθ Γ', μάλιστα δὲ μετὰ τὸν θάνατον τῆς μητρὸς τοῦ Μουρὰτ Γ', τῆς διασήμου Νοὺρ-Βανοῦ, ἐκυριάρχησεν ἐπ' αὐτοῦ. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην τῆς ἰσχύος της διεδραμάτισε μέγα πρόσωπον εἰς τὴν πολιτικὴν τῆς Ὀθωμανικῆς αὐτοκρατορίας, ἠδυνήθη δὲ νὰ προσφέρῃ μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τὴν Βενετίαν καὶ διὰ τῆς κραταιᾶς προστασίας της κατώρθωσε ν' ἀποτρέψῃ τὸν κατ' αὐτῆς πόλεμον καὶ τὰς σφαγὰς τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει Βενετῶν, ὅτε ὁ Βενετὸς ναύαρχος Ἔμμο διήρπασε περὶ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν γαλέραν τοῦ Ραμαζὰν πασᾶ τῆς Τριπόλεως σφάξας 250 ἄνδρας, ἐν οἷς καὶ αὐτὸν τὸν Ραμαζὰν καὶ τὸν ἀνήλικον υἱόν του εἰς τὰς ἀγκάλας τῆς μητρὸς αὐτοῦ. Τῷ 1592 ἡ Μπάφφο ἀπέτρεψε καὶ δεύτερον πόλεμον κατὰ τῆς Βενετίας, διὰ τὰς λῃστείας Βενετῶν τινων φυγάδων, καὶ ἔστρεψε τὴν ὀργὴν τοῦ σουλτάνου κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Αὐστρίας Ροδόλφου Β'. Μετὰ τὴν ἄνοδον εἰς τὸν θρόνον τοῦ υἱοῦ της τοῦ Μωάμεθ Γ', ἡ Μπάφφο ἐγένετο ἡ ψυχὴ τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως. Ἡ Βενετὶς σουλτάνα ἐμισθοδοτεῖ ἐκ τοῦ ἰδίου της ταμείου στρατεύματα. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ υἱοῦ της (1603), ὁ διαδεχθεὶς αὐτὸν υἱός του Ἀχμὲτ Α' διέταξεν ὅπως ἡ ἐπὶ 28 ἔτη διοικήσασα τὸ κράτος Σαφιγιὲ ἀποσταλῇ μετὰ πάσης τῆς ἀκολουθίας τῶν δούλων καὶ εὐνούχων εἰς τὸν παλαιὸν γυναικωνίτην, ἐκεῖ δὲ ἀπομεμονωμένη διῆλθε τὸ ὑπόλοιπον τοῦ βίου. της Θ. ΒΕΛΛΙΑΝΙΤΗΣ

**Μπὰχ** (Bach). Ὄνομα μεγάλης οἰκογενείας μουσικῶν ἐκ Θουριγγίας, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπὶ τρεῖς σχεδὸν αἰῶνας ἐκαλλιεργήθη ἡ τέχνη τῶν ἤχων καὶ ἐκ τῆς ὁποίας προῆλθον καλλιτέχναι μοναδικῆς δυνάμεως καὶ μεγαλοφυΐας.

Ἡ μουσικὴ προδιάθεσις τῆς οἰκογενείας Μπὰχ ἀποτελεῖ φαινόμενον, τὸ ὁποῖον οὐδέποτε πλέον ἐπανελήφθη εἰς τοιαύτην ἔκτασιν. Ὁ Σπίττα, ὅστις ἀφιέρωσε τὴν ζωήν του εἰς τὴν μελέτην τῶν Μπάχ, ἀνεκάλυψε μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης εἰς πλείστας πόλεις τῆς Θουριγγίας καὶ καθώρισε τὸ γενεαλογικόν της δένδρον ὡς ἑξῆς: Ἀρχηγὸς τῆς οἰκογενείας φέρεται ὁ *Χὰνς Μπάχ*, ὅστις ἔζη περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος εἰς Βέχμαρ, παρὰ τὸ Γκότα. Τούτου υἱὸς φαίνεται ὅτι ἦτο ὁ *Φάϊτ* (Γουΐδος) *Μπάχ*, ἀρτοποιὸς ἐγκατασταθεὶς εἰς Βέχμαρ τῷ 1590, περὶ οὗ ἔχομεν τὰς πρώτας συγκεκριμένας πληροφορίας. Ἐγεννήθη μεταξὺ 1550—1560, ἐξήσκησε τὸ ἐπάγγελμά του ἐν Οὐγγαρίᾳ, ὁπόθεν ὡς διαμαρτυρόμενος ἐξηναγκάσθη νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν πατρίδα του (τὸ Βέχμαρ), ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1619. Ὁ Φάϊτ Μπὰχ ἦτο καλὸς ἐρασιτέχνης, ᾄδων καὶ παίζων κιθάραν, τὴν ἀγάπην δὲ ταύτην πρὸς τὴν μουσικὴν μετέδωκε πρὸς τοὺς ἀπογόνους του. Ἐκ τούτων ἀναφέρονται ἰδίως οἱ κατωτέρω:

—1) ***Ἰωάννης Μπάχ.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Φάϊτ, ὁ πρῶτος δ' ἐξ ἐπαγγέλματος μουσικὸς τῆς οἰκογενείας. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1580, ἐχρημάτισεν ἐπί τινα χρόνον ἐπίσης ἀρτοποιός, ἐσπούδασε μουσικὴν παρά τινι θείῳ του εἰς Γκότα καὶ ἐλάμβανε μέρος εἰς πλανοδίους ὀρχήστρας, διατρέχων τὸ Ἄρνσταντ, τὸ Ἔρφουρτ, τὸ Ἄϊζεναχ καὶ ἄλλας πόλεις τῆς Θουριγγίας. Εἶχε γίνει λίαν δημοφιλής, ἀποκληθεὶς «Ὁ Χὰνς μὲ τὴν ὡραίαν γενειάδα». Ἀπέθανε τῷ 1626 ἐκ πανώλους. Οἱ τρεῖς υἱοί του, Ἰωάννης, Χριστόφορος καὶ Ἐρρῖκος, ὑπῆρξαν ἐπίσης μουσικοί:

—2) ***Ἰωάννης Μπάχ*** (1604—1673). Ἐμορφώθη ὑπὸ τὸν πατέρα του καὶ τῷ 1635 διωρίσθη διευθυντὴς τῶν «μουσικῶν τοῦ συμβουλίου» τῆς Ἐρφούρτης, τῷ δὲ 1647 ὀργανοκρούστης. Αἱ συνθέσεις του, περισωθεῖσαι ἐν χειρογράφῳ, ἀποδεικνύουν βαθείας μουσικὰς γνώσεις. Οἱ τρεῖς υἱοί του, Ἰωάννης-Χριστιανός, Ἰωάννης-Αἰγίδιος καὶ Ἰωάννης-Νικόλαος, ὑπῆρξαν διακεκριμένοι μουσικοί.

—3) ***Ἰωάννης-Χριστόφορος Μπάχ*** (1613—1661). Δευτερότοκος υἱὸς καὶ μαθητὴς τοῦ Χὰνς καὶ πάππος τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ Μπάχ. Διετέλεσεν ὀργανοκρούστης καὶ μουσικὸς τῆς αὐλῆς ἐν Βαϊμάρῃ καὶ διεκρίθη ὡς συνθέτης τεμαχίων δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον. Εἶχεν ἐπίσης τρεῖς υἱούς, τούς: Γεώργιον-Χριστόφορον, Ἰωάννην-Ἀμβρόσιον καὶ Ἰωάννην-Χριστόφορον.

—4) ***Ἐρρῖκος Μπάχ.*** Τριτότοκος υἱὸς τοῦ Χὰνς (1615—1692). Ἔπαιζε πλεῖστα ὄργανα, μετεῖχε δὲ καὶ οὗτος μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἰωάννου τῆς πλανοδίου ὀρχήστρας τῆς Ἐρφούρτης. Τῷ 1641 διωρίσθη ὀργανοκρούστης εἰς Ἀρνστάτην, ἣν θέσιν διετήρησεν ἐπὶ ἥμισυν αἰῶνα. Ἀπέθανε τυφλὸς καὶ πένης, παρὰ τὴν μεγάλην του ἀξίαν. Ἐκ τῶν ἔργων του ἔχουσι περισωθῇ ἐν χειρογράφῳ διάφορα τεμάχια δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, ἔχουσιν ὅμως ἀπολεσθῆ τὰ καλύτερα, παρὰ τοῦ Φιλίππου-Ἐμμανουὴλ Μπὰχ ἀναφερόμενα: «Repleatur os meum laude tua» καὶ τὸ μοτέττο: «Als der Tag der Pfingsten erfüllt war». Ὁ Ἐρρῖκος Μπὰχ εἶχε τρεῖς υἱούς, τούς: Ἰωάννην-Χριστόφορον, Ἰωάννην-Μιχαὴλ καὶ Γκούντερ.

—5) ***Ἰωάννης-Χριστιανὸς Μπάχ.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ἀριθ. 2) (1640—1682). Ἐγκατεστάθη ἐν Ἀΐζεναχ, ἔνθα διετέλεσε διευθυντὴς τῆς Μουσικῆς ἑταιρείας.

—6) ***Ἰωάννης-Αἰγίδιος Μπὰχ*** (1645—1717). Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου Μπάχ, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Μουσικὸς τοῦ συμβουλίου τῆς Ἐρφούρτης καὶ ὀργανοκρούστης τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγ. Μιχαὴλ τῆς πόλεως ταύτης. Ἠσχολήθη μὲ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικὴν καὶ ἀφῆκε πολυφωνικάς τινας συνθέσεις.

— 7) ***Ἰωάννης-Νικόλαος Μπὰχ*** (1653—1682). Τριτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου Μπάχ, ἀδελφὸς τῶν δύο προηγουμένων. Μουσικὸς ὀρχήστρας. Ἀπέθανε νέος, πρὶν ἡ δώσῃ δείγματα τῆς ἀξίας του.

— 8) ***Γεώργιος - Χριστόφορος Μπὰχ*** (1642 — 1697). Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Χριστοφόρου (ἀριθ. 3). Διεκρίθη ὡς συνθέτης εἰς Σβάϊνφουρτ, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν. Ἀφῆκε τρεῖς υἱούς, τούς: Ἰωάννην-Βαλεντῖνον, Ἰωάννην - Χριστιανὸν καὶ Ἰωάννην-Γεώργιον.

— 9) ***Ἰωάννης-Ἀμβρόσιος Μπὰχ*** (1645—1695). Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐγεννήθη ἐν Ἀΐζεναχ καὶ μετέβη τῷ 1667 εἰς Ἐρφούρτην, ἔνθα κατέλαβε τὴν θέσιν τοῦ ἐξαδέλφου του Ἰωάννου-Χριστιανοῦ, μεθ' ὃ ἐπανῆλθε τῷ 1671 εἰς τὴν γενέθλιόν του πόλιν, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Διακεκριμένος βιολιστής, ὀργανοκρούστης καὶ συνθέτης, ὑπῆρξεν ὁ εὐτυχὴς πατὴρ τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ Μπάχ.

— 10) ***Ἰωάννης - Χριστόφορος Μπάχ.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἐρρίκου καὶ ἐκ τῶν διασημοτέρων μελῶν τῆς οἰκογενείας. Ἐγεννήθη ἐν Ἀρνστάτῃ τῷ 1642 καὶ ἀπέθανεν ἐν Ἀΐζεναχ, ἔνθα διετέλεσεν ὀργανοκρούστης, τῷ 1703. Δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς εἷς τῶν σημαντικωτέρων συνθετῶν ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἐκ τῶν κυριωτέρων προδρόμων τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ Μπάχ. Δι' αὐτοῦ τὸ εἶδος τοῦ μοτέττου ἔλαβε τὴν ὁριστικὴν μορφήν, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου ἡ τεχνοτροπία του, συνδυάζουσα τοὺς παλαιοὺς τρόπους τῆς Ἐκκλησίας ἐκ παραλλήλου μετὰ τῶν νέων, δημιουργεῖ τὸν ἰδιαίτερον ἐκεῖνον χαρακτῆρα τῆς μουσικῆς του. Ὁ Ἰωάννης-Χριστόφορος Μπὰχ ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν φωνητικὴν μουσικὴν καὶ ἐκληροδότησεν εἰς τὴν τέχνην, ἐκτὸς τῶν ἀπαραμίλλων μοτέττων του, 44 πρελούντια χορικῶν (chorals) δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, καντάτας, ἓν εἶδος ὀρατορίου «Es erhob sich ein Streit» κλπ. Ὑπῆρξεν ἐπίσης ὁ διδάσκαλος τῶν τριῶν υἱῶν του: *Ἰωάννου-Νικολάου* (1669—1753), ἐπὶ πεντηκονταετίαν μουσικοῦ διευθυντοῦ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ἰένας *Ἰωάννου - Χριστοφόρου*, μουσικοδιδασκάλου ἐν Ἐρφούρτῃ, Ἁμβούργῳ, Ρότερνταμ καὶ Ἀγγλίᾳ, ἔνθα καὶ ἀπέθανε, καὶ *Ἰωάννου-Φρειδερίκου*, ὀργανοκρούστου ἐν Μυλούζῃ, ἀποθανόντος τῷ 1731.

— 11) ***Ἰωάννης - Μιχαὴλ Μπάχ.*** Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1648—1694). Διετέλεσεν ὀργανοκρούστης εἰς Γκέρεν, παρὰ τὴν Ἀρνστάτην, καὶ διεκρίθη ὡς συνθέτης ὀργανικῆς μουσικῆς, χορικῶν, μοτέττων κτλ. Ἡ νεωτέρα του κόρη *Μαρία-Βαρβάρα* ὑπῆρξεν ἡ πρώτη σύζυγος τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπάχ.

— 12) ***Ἰωάννης - Βερνάρδος Μπάχ.*** Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Αἰγιδίου (1676—1749). Διετέλεσεν ὀργανοκρούστης ἐν Ἐρφούρτῃ, Μαγδεμβούργῳ καὶ τέλος ἐν Ἀΐζεναχ, ἔνθα καὶ ἀπέθανε.

— 13) ***Ἰωάννης - Χριστόφορος Μπάχ.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Ἀμβροσίου (1671—1721). Ὀργανοκρούστης ἐν Ὄρντρουφ, ἐπροστάτευσε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του τοὺς νεωτέρους του ἀδελφούς, Ἰωάννην-Σεβαστιανὸν καὶ Ἰωάννην-Ἰακώβ.

— 14) ***Ἰωάννης Σεβαστιανὸς Μπάχ.*** Τὸ ἐνδοξότερον μέλος τῆς οἰκογενείας, εἷς τῶν μεγαλυτέρων μουσικοδιδασκάλων ὅλων τῶν ἐποχῶν. Ἐγεννήθη ἐν Ἀΐζεναχ τὴν 21 Μαρτίου 1685 καὶ ἀπέθανεν ἐν Λειψίᾳ τὴν 28 Ἰουλίου 1750. Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου - Ἀμβροσίου Μπὰχ καὶ τῆς Ἐλισάβετ, τὸ γένος Λαίμμερχιρτ, ἔχασεν εἰς ἡλικίαν ἐννέα ἐτῶν τὴν μητέρα του καὶ ἓν ἔτος ἀργότερον καὶ τὸν πατέρα καὶ πρῶτον διδάσκαλόν του. Προστατευθεὶς ὁμοῦ μετὰ τοῦ νεωτέρου ἀδελφοῦ Ἰωάννου - Ἰακώβου παρὰ τοῦ πρεσβυτέρου του ἀδελφοῦ Ἰωάννου - Χριστοφόρου, ὀργανοκρούστου ἐν Ὄρντρουφ, ἐσυνέχισεν ἐν τῇ πόλει αὐτῇ τὰ γυμνασιακὰ μαθήματα, ἐνῷ παραλλήλως ἐξηκολούθει τὰς μουσικὰς σπουδάς, πρῶτον μὲν ὑπὸ τὸν ἀδελφόν του, μαθητὴν τοῦ διασήμου Πάχελμπελ, εἶτα δὲ εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Ἁγίου Μιχαὴλ τοῦ Λούνεμπουργκ, ὑπὸ τὸν διακεκριμένον ὀργανοκρούστην Γεώργ. Μπαῒμ. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ αἰσθηματικοῦ, βαθέος καὶ πρωτοτύπου τούτου διδασκάλου, τόσον εἰς τὴν σύνθεσιν ὅσον καὶ εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, ὑπῆρξε μεγίστη ἐπὶ τοῦ νεαροῦ μουσικοῦ. Ἐκ Λούνεμπουργκ ὁ Μπὰχ συχνάκις μετέβαινε πεζῇ εἰς Ἁμβοῦργον, ἵνα ἀκούσῃ τὸν ὀνομαστὸν ὀργανοκρούστην τῆς Ἁγίας Αἰκατερίνης τῆς πόλεως ταύτης, Ἰωάννην Ἀδὰμ Ράϊνκεν (Reinken), οὗτινος ἡ δεξιοτεχνία ἐπροκάλει τὸν θαυμασμόν του. Ἐν Λούνεμπουργκ ἔλαβεν ἐπίσης τὴν εὐκαιρίαν ὁ Μπὰχ νὰ ἀκούσῃ πολλὴν γαλλικὴν μουσικήν, παρὰ πλειάδος Γάλλων μουσικῶν καταφυγόντων ἐκεῖ, καὶ νὰ μορφώσῃ οὕτω τὸ ὕφος του καὶ εἰς τὴν γαλλικὴν σχολήν, ἡ ἐπίδρασις τῆς ὁποίας θέλει φανῆ ἀργότερον εἰς τὰς «γαλλικὰς σουΐτας». Ὁ πόθος του ὅπως μορφωθῇ εἰς τὸ γαλλικὸν ὕφος, τὸν ὡδήγησεν ἀκόμη τῷ 1700 καὶ τῷ 1703 εἰς Celle, ἐκεῖ δὲ ἐγνώρισε τὰ ἔργα τοῦ Λούλλυ, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου ἡ πλουσία βιβλιοθήκη τῆς ἐκκλησίας τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, τοῦ Λούνεμπουργκ, τῷ παρεῖχε τὴν εὐκαιρίαν ὅπως ἐγκύψῃ εἰς τὴν μελέτην καὶ τῶν ἰταλικῶν συνθέσεων, ἰδίως δὲ τῶν τοῦ Μοντεβέρντι, Καρίσσιμι, Φρεσκομπάλντι κ. ἄ. Τῷ 1703 ὁ Μπὰχ προσελήφθη ὡς βιολιστὴς εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Βαϊμάρης, ὀλίγους δὲ μῆνας ἀργότερον διωρίζετο ὀργανοκρούστης εἰς τὴν Ἀρνστάτην, ἥτις ἐκέκτητο λαμπρὸν ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον. Ποθῶν ἐξ ἄλλου ν' ἀκούσῃ τὸν διάσημον ὀργανοκρούστην τῆς Λυβέκης Μπουξτεχοῦντε (Buxtehunde), ἔλαβε, τὸ φθινόπωρον τοῦ 1705, μηνιαίαν ἄδειαν καὶ μετέβη πεζῇ εἰς τὴν πόλιν ταύτην. Τοσοῦτον δὲ ἐσαγηνεύθη ἐκ τοῦ μεγάλου ἐκείνου καλλιτέχνου, ὥστε ἐπανῆλθεν εἰς Ἀρνστάτην τέσσαρας ὅλους μῆνας μετὰ τὴν ἀναχώρησίν του, πρ-

Digitized by Google

καλέσας οὕτω τὴν πρώτην ψυχρότητα πρὸς τὸ συμβούλιον τῆς πόλεως. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ Μπουξτεχοῦντε ἐπὶ τῆς τέχνης τοῦ Μπὰχ ὑπῆρξε μεγίστη καὶ ἐγένετο ἔκδηλος οὐχὶ μόνον ἐπὶ τῶν συνθέσεων τοῦ τελευταίου, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τοῦ τρόπου τοῦ ἐκτελεῖν καὶ αὐτοσχεδιάζειν ἐπὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου. Τῷ 1707 ὁ Μπὰχ ἀνέλαβε καθήκοντα ὀργανοκρούστου τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Βλασίου τῆς Μυλούζης, ὡς διάδοχος τοῦ διακεκριμένου μουσικοῦ καὶ συνθέτου Ἰω. Ἄλε (Ahle), περὶ τὰ τέλη δὲ τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἐνυμφεύθη τὴν ἐξαδέλφην του *Μαρίαν-Βαρβάραν*, κόρην τοῦ Μιχαὴλ Μπάχ, ὀργανοκρούστου εἰς Γκέρεν. Αἱ νεωτεριστικαὶ ἐν τούτοις ἰδέαι τοῦ Μπὰχ καὶ ἰδίως ἡ εἰσαγωγὴ τῆς μουσικῆς δωματίου εἰς τὰς ἱεροτελεστίας, δὲν ἤρεσκον πολὺ εἰς τοὺς κατοίκους τῆς Μυλούζης, δι᾽ ὃ οὗτος ἐδέχθη τῷ 1708 τὴν θέσιν τοῦ ὀργανοκρούστου τοῦ δουκὸς τῆς Σάξ-Βαϊμάρης, ἵνα τῷ 1714 διορισθῇ μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς. Ἀλλὰ καὶ ἐκεῖθεν ἀποχωρεῖ τῷ 1717, ἵνα προσφέρῃ τὰς ὑπηρεσίας του εἰς τὸν πρίγκιπα τοῦ Ἄνχαλτ-Καῖτχεν. Ἐν τῇ αὐλῇ ταύτῃ αἱ ἀσχολίαι του συνίσταντο μόνον εἰς τὴν σύνθεσιν καὶ τὴν ἐκτέλεσιν μουσικῆς δωματίου, δι᾽ ὃ καὶ ἡ περίοδος αὕτη ὑπῆρξεν ἐκ τῶν εὐτυχεστέρων τῆς ζωῆς του. Τῷ 1720 ὁ Μπάχ, ἐπανερχόμενος ἔκ τινος ταξιδίου, εὗρε νεκρὰν τὴν σύζυγόν του Μαρίαν-Βαρβάραν. ἕν δὲ ἔτος ἀργότερον, ἵνα δώσῃ μητέρα εἰς τὰ ἀνήλικα τέκνα του, ἐνυμφεύετο τὴν *Ἄνναν-Μαγδαληνὴν Βύλκεν,* καλὴν μουσικόν, ἀοιδὸν καὶ κλαβικυμβαλίστριαν. Τῷ 1723, ἀποθανόντος ἐν τῷ μεταξὺ τοῦ Κούναου, ὁ Μπὰχ διηγωνίζετο ἐπιτυχῶς διὰ τὴν θέσιν κάντορος τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Θωμᾶ τῆς Λειψίας, θέσιν ἣν διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του, ἐπὶ εἴκοσιν ἑπτὰ ἔτη. Μετ᾽ αὐτῶν συμπίπτει ἡ περίοδος τῆς μεγάλης του ἀκμῆς καὶ γονιμότητος, κατὰ τὴν ὁποίαν παρήγαγε τὰ σημαντικώτερα ἔργα του. Ἔχων πάντοτε ἀδυνάτους τοὺς ὀφθαλμούς, προσεβλήθη κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη της ζωῆς του ὑπὸ ὀφθαλμίας, ἐξ ἧς μικρὸν κατὰ μικρὸν ἐτυφλώθη. Ἀνέβλεψεν ἐν τούτοις ὀλίγας ἡμέρας πρὸ τοῦ θανάτου του, προελθόντος ἐξ ἀποπληξίας. Ἀλλὰ καὶ κατὰ τὴν περίοδον τῆς τυφλώσεώς του εἰργάζετο πάντοτε μέχρι τῆς τελευταίας του στιγμῆς, ὑπαγορεύων συνθέσεις του εἰς τὸν γαμβρόν του Ἀλτνίκολ. Τὸ τελευταῖόν του οὕτω γραφὲν ἔργον ἦτο χορικὸν δι᾽ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον ἐπὶ τῆς ψαλμῳδίας «Ὅταν εὑρισκώμεθα πρὸ τῶν μεγάλων κινδύνων», τῆς ὁποίας τὸ κείμενον ἤλλαξεν ὁ Μπὰχ εἰς: «Ἐμφανίζομαι πρὸ τοῦ θρόνου σου».

Ἐκ τοῦ πρώτου γάμου του ὁ Ἰω. Σεβ. Μπὰχ εἶχεν ἀποκτήσει ἑπτὰ τέκνα, ἐξ ὧν τρία ἐπέζησαν τοῦ πατρός των: ἡ πρεσβυτέρα κόρη *Αἰκατερίνη-Δωροθέα* (1708—1774), ὁ *Γουλιέλμος-Φρίντμαν* καὶ ὁ *Κάρολος-Φίλιππος-Ἐμμανουήλ*. Ἀπὸ δὲ τῆς Ἄννας-Μαγδαληνῆς ἐγέννησε δεκατρία τέκνα, ἐξ ὧν διεκρίθησαν οἱ: *Ἰωάννης-Χριστόφορος-Φρειδερῖκος* (1732—1795) καὶ *Ἰωάννης-Χριστιανὸς* (1735—1782). Ἡ χήρα ἐπέζησε τοῦ συζύγου της μέχρι τοῦ 1760, ἐν ἐσχάτῃ ἐνδείᾳ καὶ συντηρουμένη ἀπὸ ἐλεημοσύνας.

Ἡ ἱστορία τῆς μουσικῆς τέχνης πρὸ ὀλίγων μόνον δεκαετηρίδων ἐτοποθέτησεν εἰς τὸ αὐτὸ μὲ τὸν Μότσαρτ καὶ τὸν Μπετόβεν βάθρον τὸν Ἰω. Σεβ. Μπάχ. Ἐὰν δὲ σήμερον θεωρῆται γενικῶς ὁ τελευταῖος οὗτος ὡς ὁ πατριάρχης τῆς νεωτέρας τέχνης, ἐλάχιστοι, ζῶντος τοῦ συνθέτου, διησθάνθησαν τὴν μεγαλοφυΐαν του. Αὐτὸς ὁ Μπάχ, τύπος ἀγαθοῦ Γερμανοῦ καὶ φρονίμου οἰκογενειάρχου, πολὺ ὀλίγον ἐφαντάζετο, ἐν τῇ μετριοφροσύνῃ του, ὅτι τὰ ἔργα του θὰ ἐπέζων τοῦ δημιουργοῦ των. Μικρὸν μετὰ τὸν θάνατόν του εἶχεν ἤδη λησμονηθῆ καὶ ὅταν τῷ 1829 ὁ Μένδελσων ἀνέσυρεν ἐκ τῆς λήθης τὸ καταπληκτικὸν ἐκεῖνο «Πάθος κατὰ Ματθαῖον», ὁ μουσικὸς κόσμος εὑρέθη πρὸ ἀποκαλύψεως. Σήμερον, εἰς ἀντάλλαγμα, ἡ πρὸς τὴν τέχνην τοῦ Μπὰχ ἀγάπη φθάνει εἰς λατρείαν καὶ ἡ μουσική του θεωρεῖται οὐχὶ μόνον ὡς δημιούργημα ὑπερόχου καλλιτέχνου, ἀλλὰ καὶ ὑπόδειγμα τεχνικῆς, ἣν οὐδεὶς εἰς τὸν κόσμον μουσουργὸς ὑπερέβαλεν ἔκτοτε. Ἡ ἀντιστικτική του δεξιοτεχνία ἐγγίζει τὰ ὅρια τοῦ θαύματος, δείγματα δὲ αὐτῆς μᾶς παρέχει ἡ «Μουσικὴ προσφορὰ» (Musikalische Opfer), ἡ γραφεῖσα τῷ 1747 ἐπὶ θέματος δοθέντος ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας Φρειδερίκου τοῦ Β΄, κατὰ τὴν πρὸς αὐτὸν ἐπίσκεψιν τοῦ Μπάχ, ἐν Βερολίνῳ. Μὲ τὸ ἀσήμαντον τοῦτο θέμα ὁ μουσουργὸς συνέθεσε: μίαν τρίφωνον φυγήν· μίαν δευτέραν ἑξάφωνον φυγήν· ἓξ κανόνας· μίαν τρίφωνον φυγὴν τύπου κανόνος· μίαν σονάταν εἰς τέσσαρα μέρη διὰ κλαβικύμβαλον, πλαγίαυλον καὶ βιολίον καὶ ἕνα δίφωνον κανόνα μετὰ ἐναρίθμου βασίμου. Τὸ κορύφωμα δὲ τῆς ἀντιστικτικῆς του δεξιοτεχνίας μᾶς παρέχει ἡ «Τέχνη τῆς φυγῆς», ἣν ὁ Μπὰχ ἔγραψε διὰ τοὺς μαθητάς του ἓν ἔτος πρὸ τοῦ θανάτου του καὶ ἥτις περιλαμβάνει 15 φυγὰς καὶ 4 κανόνας ἐπὶ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ θέματος. Ἡ καταπληκτικὴ αὕτη τεχνική, ἡ οὐδεμίαν δυσκολίαν γνωρίζουσα, δὲν εἶναι ἐν τούτοις ἀποτέλεσμα σχολαστικῶν συνδυασμῶν, οὐδὲ στερεῖται μουσικῆς οὐσίας. Ζωογονεῖται ἀπὸ αὐτὸ τὸ πνεῦμα τοῦ Μπάχ, ὅστις δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς πολυσύνθετος μεγαλοφυΐα, συγκεντροῦσα τὴν τέχνην τῶν πολυφωνιστῶν καὶ τῆς Ἀναγεννήσεως, καὶ διὰ τοῦτο ἀνήκουσα εἰς τὸ παρελθόν, ἀλλὰ ταυτοχρόνως μεγαλοφυΐα ἐγκαταλείπουσα τοὺς παλαιοὺς τρόπους, ἀσπαζομένη τὰ νέα τονικὰ συστήματα, ἐπιζητοῦσα τὴν ἔκφρασιν, τὴν ὡραίαν μελῳδικὴν γραμμήν, τοὺς ποικίλους ρυθμοὺς καὶ τὴν πλουσίαν ἁρμονίαν —καὶ ὡς ἐκ τούτου ἀνοίγουσα τὴν ὁδὸν πρὸς τὴν νέαν τέχνην. Ἴσως ἀπὸ τὴν μουσικήν του λείπει τὸ συνταρακτικὸν πάθος τοῦ Μπετόβεν, εἰς ἀντάλλαγμα ὅμως πόση ὀλυμπία γαλήνη!

Ὁ Μπὰχ ὑπῆρξεν ἐπίσης μέγας ὀργανοκρούστης, τὰ δὲ ἐπὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου ἀνεξάντλητα αὐτοσχεδιάσματα ἐλάμβανον πολλάκις διαστάσεις μεγαλοφυῶν συνθέσεων. Ἐκ τῶν καταπληκτικωτέρων πολυγράφων τῆς μουσικῆς, συνέ-

*Ἰωάννης-Σεβαστιανὸς Μπάχ.*

θεσε τὰ ἑξῆς ἔργα: «Καντάτας ἐκκλησίας», πέντε σειράς, δι᾽ ὅλας τὰς Κυριακὰς καὶ τὰς ἑορτὰς τοῦ ἔτους, δηλαδὴ περὶ τὰς 300 (ἐξ ὧν ἔχουσι περισωθῆ μόνον τὰ δύο τρίτα), πέντε «Πάθη», ἐκ τῶν ὁποίων σῴζονται τὸ γιγάντειον «Πάθος κατὰ Ματθαῖον» καὶ τὸ «Πάθος κατὰ Ἰωάννην»· ἓν τρίτον «Πάθος κατὰ Λουκᾶν» εἶναι ἀμφισβητησίμου γνησιότητος. Ἐκ τῶν πολλῶν του λειτουργιῶν περιῆλθον μέχρις ἡμῶν τέσσαρες «Βραχεῖαι λειτουργίαι» καὶ ἡ μνημειώδης «Λειτουργία εἰς σι ἔλασσον». Μεταξὺ τῶν μεγάλων του φωνητικῶν ἔργων συγκαταλέγονται ἐπίσης τὸ «Ὀρατόριον τῶν Χριστουγέννων», τὸ τῆς «Ἀναλήψεως», τὸ τοῦ «Πάσχα» καὶ τὸ πεντάφωνον «Magnificat». Ἡ ὀργανικὴ μουσικὴ τοῦ Μπὰχ περιλαμβάνει: διὰ κλειδοκύμβαλον, ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, ἢ κλειδοκύμβαλον καὶ ἓν ἀκόμη ὄργανον: πρελούντια καὶ φυγάς, φαντασίας, σονάτας, τοκκάτας, παρτίτας, σουΐτας, κοντσέρτα, παραλλαγάς, πρελούντια χορικῶν κτλ.· ἐπίσης τὸ «Καλῶς συγκεκραμένον κλειδόχορδον» (Das wolhtemperierte Klavier), περιλαμβάνον 48 πρελούντια καὶ φυγάς, εἰς ὅλους τοὺς μείζονας καὶ ἐλάσσονας τόνους, θεωρούμενον ὡς τὸ εὐαγγέλιον παντὸς κλειδοκυμβαλιστοῦ· τὴν «Τέχνην τῆς φυγῆς». Συνθέσεις διὰ βιολίον μόνον: 3 παρτίτας καὶ 3 σονάτας, ἔργα μοναδικὰ εἰς τὸ εἶδός των, καθὼς καὶ διάφορα ἀκόμη τεμάχια δι᾽ ὄργανα σήμερον ἐγκαταλειφθέντα. Τὴν ἔκδοσιν τῆς πλήρους σειρᾶς τῶν ἔργων τοῦ Μπὰχ ἀνέλαβεν ἡ ἐν Λειψίᾳ τῷ 1850 ἱδρυθεῖσα «Ἑταιρεία Μπὰχ» (Bach-Gesellschaft), ἥτις ἔφερεν εἰς πέρας τὸν σκοπόν της, ἐκδώσασα ἀπὸ τοῦ 1851 μέχρι τοῦ 1900 τὰς συνθέσεις τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ, εἰς 59 τόμους.

—15) ***Ἰωάννης-Λουδοβῖκος Μπάχ.*** Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Μιχαὴλ (1677—1730). Διετέλεσε μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς τοῦ Σὰξ-Μάϊνινγκεν.

—16) ***Ἰωάννης-Βερνάρδος Μπάχ.*** Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Χριστοφόρου καὶ ἔγγονος τοῦ Ἰωάννου-Ἀμβροσίου (1700—1742), χρηματίσας ὀργανοκρούστης ἐν Ὄρντρουφ.

—17) ***Γουλιέλμος-Φρίντμαν Μπάχ.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ Μπάχ, ἐπονομαζόμενος καὶ «Μπὰχ τῆς Χάλλης» (1710—1784). Ἔκδοτος καὶ ἄσωτος, ἐγέννησε πολλὰς θλίψεις εἰς τὸν πατέρα του, ὅστις τὸν ὑπερηγάπα. Παρ᾽ ὅλον τὸ καταπληκτικόν του τάλαντον, οὐδέποτε κατώρθωσε νὰ διατηρήσῃ μόνιμον θέσιν καὶ διῆλθε τὸν βίον του καταλαμβάνων ἀλληλοδιαδόχως τὴν θέσιν τοῦ ὀργανοκρούστου ἐν Λειψίᾳ, Βερολίνῳ, Μπρούνσβικ, Γοττίγγῃ, Δρέσδῃ, Δαρμστάτῃ κλπ. Διαμοιρασθεὶς μετὰ τοῦ νεωτέρου του ἀδελφοῦ Καρόλου-Φιλίππου-Ἐμμανουὴλ τὰ χειρόγραφα τοῦ πατρός του, δὲν ἐφρόντισε νὰ τὰ διατηρήσῃ, γενόμενος οὕτω πρόξενος τεραστίας ἀπωλείας διὰ τὴν τέχνην. Ἀλητεύων, ἀπέθανεν ἐν ἐσχάτῃ ἐνδείᾳ. Τὸ ὕφος του, ἀπομακρυνόμενον τοῦ τοῦ πατρός του, διακρίνεται διὰ τὴν βαθεῖαν ἔκφρασιν καὶ τὴν συχνὴν ἐπιζήτησιν τῆς μεγαλοπρεπείας, ὅπως εἰς τὸ θαυμάσιον «Κοντσέρτο διὰ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον εἰς ρε ἔλασσον», τὸ διασκευασθὲν διὰ κλειδοκύμβαλον ὑπὸ τοῦ Α. Στραντάλ. Ἡ πλειονότης τῶν ἔργων του εὑρίσκεται εἰς χειρόγραφα ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Λονδίνου· ἐκ τούτων ἐξεδόθησαν διὰ κλειδοκύμβαλον κοντσέρτα, σονάται, φαντασίαι, μία σουΐτα κ. ἄ.

—18) ***Κάρολος-Φίλιππος-Ἐμμανουὴλ Μπάχ.*** Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ, γεννηθεὶς ἐν Βαϊμάρῃ τῷ 1714 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀμβούργῳ τῷ 1788. Ἐπωνομάζετο «Μπὰχ τοῦ Βερολίνου» ἢ «Μπὰχ τοῦ Ἀμβούργου» καὶ θεωρεῖται ὡς ὁ ἐνδοξότερος ἐκ τῶν υἱῶν τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ. Μαθητὴς τοῦ πατρός του, ἀπεμακρύνθη παρὰ τοῦτο τοῦ ὕφους ἐκείνου καὶ τὰ ἔργα του δύνανται νὰ χαρακτηρισθῶσιν ὡς ἀνήκοντα εἰς τὴν μεταβατικὴν περίοδον, τὴν ὑφισταμένην μεταξὺ τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ Μπὰχ καὶ τῶν κλασσικῶν τῆς Βιέννης. Σύγχρονος τοῦ Στάμιτς καὶ τῶν λοιπῶν μουσικῶν τῆς σχολῆς τῆς Μάνγχαϊμ, συνέτεινε μετ᾽ αὐτῶν εἰς τὴν ὁριστικὴν διαμόρφωσιν τοῦ τύπου τῆς σονάτας. Αἱ 90 περίπου συνθέσεις του τοῦ εἴδους τούτου περιλαμβάνουν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τρία μέρη: ἀλλέγκρο, ἀντάντε καὶ πρέστο ἢ ἀλλέγκρο. Μορφικῶς δὲ τὸ πρῶτον ἀλλέγκρο διαιρεῖται εἰς δύο μέρη ἐπαναλαμβανόμενα, μετὰ παρεμβαλλομένων ἐπεισοδίων καὶ μετὰ μεταθέσεως εἰς τὴν τονικήν, εἰς τρόπον ὥστε τὸ κύριον θέμα νὰ ἐμφανίζηται ὀκτάκις. Οὕτω λοιπὸν τὸ σύνολον τοῦ ἀλλέγκρο παρουσιάζει τὴν ἔκθεσιν, τὴν ἀνάπτυξιν καὶ τὴν ἀνακεφαλαίωσιν μετὰ καταλήξεως εἰς τὴν τονικήν, περιέχει δηλαδὴ ὅλα τὰ στοιχεῖα τῆς ἐπὶ θύραις κλασσικῆς σονάτας, ἧς μόνον ὑστερεῖ εἰς τὰς δευτερευούσας κυρίως ἰδέας.

Ἡ σταδιοδρομία τοῦ Καρόλου-Φιλίππου-Ἐμμανουὴλ Μπὰχ ὑπῆρξεν ἁπλῆ. Ἀρχικῶς φοιτητὴς τῆς νομικῆς, ἐγκατέλειψεν ἐν τέλει τὴν ἐπιστήμην, ἵνα ἐπιδοθῇ εἰς τὴν μουσικήν. Μεταβὰς τῷ 1738 εἰς Βερολῖνον, ὠνομάσθη μετὰ διετίαν κλαβικυμβαλιστὴς τοῦ Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου, ὃν συνώδευεν ὁσάκις ὁ ἐστεμμένος οὗτος ἐρασιτέχνης ἔπαιζε πλαγίαυλον. Κατὰ τὸν Ἑπταετῆ πόλεμον ἐγκατεστάθη ἐν Ἀμβούργῳ (1767), ἔνθα καὶ ἀπέθανε φυματικός. Τὰ ἔργα του, καθαρῶς μελῳδικὰ καὶ γοητευτικά, ἐξετιμήθησαν περισσότερον ἐν Γαλλίᾳ καὶ Ἀγγλίᾳ ἢ ἐν τῇ ἑαυτοῦ πατρίδι. Συνίστανται δὲ εἰς 210 τεμάχια, 52 κοντσέρτα καὶ πλείστας σονάτας διὰ κλαβικύμβαλον, 22 πάθη, πλείστας καντάτας, τὰ ὀρατόρια: «Οἱ Ἰσραηλῖται ἐν τῇ ἐρήμῳ» καὶ «Ἀνάστασις καὶ Ἀνάληψις», θρησκευτικὰ ᾄσματα, μελῳδίας καὶ πολλὰ μικρὰ τεμάχια.

—19) ***Ἰωάννης-Χριστόφορος-Φρειδερῖκος Μπάχ,*** ἐπονομαζόμενος «Μπὰχ τοῦ Μπούκεμπουργκ», τέταρτος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Σεβαστιανοῦ (1732—1795). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἐκ παραλλήλου μουσικὴν ὑπὸ τὸν πατέρα του καὶ τὸν ἀδελφόν του Φρίντμαν. Ἀπὸ τοῦ 1756 μέχρι τοῦ θανάτου του διετέλεσε μουσικὸς διευθυντὴς τοῦ κόμιτος τοῦ Λίππε ἐν Μπούκεμπουργκ. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰ ὀρατόρια: «Ἡ παιδικὴ ἡλικία τοῦ Χριστοῦ,» «Ἡ Ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου» καὶ ἓν τρίτον ἀπολεσθέν, 6 κουαρτέττα διὰ πλαγίαυλον καὶ ἔγχορδα, τὴν καντάταν «Πυγμαλίων», τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον κτλ.

—20) ***Ἰωάννης-Χριστιανὸς Μπάχ,*** ὁ ἐπονομαζόμενος ἐπίσης «Μπὰχ τοῦ Μιλάνου» ἢ «Μπὰχ τῆς Ἀγγλίας». Ἑνδέκατος υἱὸς τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπάχ, γεννηθεὶς ἐν Λειψίᾳ τῷ 1735 καὶ ἀποθανὼν ἐν Λονδίνῳ τῷ 1782. Μαθητὴς τοῦ ἀδελφοῦ του Καρόλου-Φιλίππου-Ἐμμανουήλ, ὠνομάσθη τῷ 1754 μουσικὸς διευθυντὴς τοῦ κόμιτος Λίττα, ὅστις καὶ τὸν ἐβοήθησε νὰ συμπληρώσῃ τὰς σπουδάς του ἐν Βολωνίᾳ, ὑπὸ τὸν πάτερ-Μαρτίνι. Τῷ 1760 κατέλαβε τὴν θέσιν τοῦ ὀργανοκρούστου τοῦ καθεδρικοῦ ναοῦ τοῦ Μιλάνου καὶ δύο ἔτη ἀργότερον, μεταβὰς εἰς Λονδῖνον, ἐπεβλήθη τάχιστα καὶ διωρίσθη μουσικὸς τῆς βασιλίσσης. Ἐν τῇ ἀγγλικῇ πρωτευούσῃ ἵδρυσε μετὰ τοῦ ὀνομαστοῦ βιολιστοῦ Ἄμπελ τὰς συμφωνικὰς συναυλίας «Μπὰχ-Ἄμπελ», ὧν ἡ φήμη ἡπλώθη καὶ ἐκτὸς τῆς Ἀγγλίας. Ὁ Ἰωάννης-Χριστιανὸς Μπὰχ εἶνε ὁ μόνος σχεδὸν ἐκ τῆς οἰκογενείας του ἀσχοληθεὶς μὲ τὸ θέατρον. Ἐν Ἰταλίᾳ εὑρισκόμενος ἀνεβίβασεν ἀπὸ σκηνῆς τὰ μελοδράματα: «Ὁ Κάτων ἐν Οὐτικᾳ» (1761) καὶ «Ὁ Ἀλέξανδρος ἐν Ἰνδίαις», μετὰ μεγαλυτέρας δὲ ἀκόμη ἐπιτυχίας τῷ 1763 ἐν Λονδίνῳ τὸ μελόδραμα «Ὠρίων». Τὰ σκηνικά του ἔργα ἀνέρχονται ἐν ὅλῳ εἰς 20, τὰ δὲ λοιπὰ εἶναι: καντάται, μελῳδίαι, χορῳδίαι, 2 ὀρατόρια, συμφωνίαι, κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ διάφορα ἄλλα ὄργανα, σονάται καὶ πολλὴ ἀκόμη μουσικὴ δωματίου. Ὁ Ἰωάννης-Χριστιανὸς Μπάχ, ὀπαδὸς τῆς τεχνοτροπίας καὶ τῶν θεωριῶν τοῦ Στάμιτς καὶ τῶν ἄλλων μουσι-

Digitized by Google

κῶν τῆς Μαγγχάϊμ, συνέτεινε πολὺ εἰς τὴν ἐπιβολὴν τοῦ νέου συμφωνικοῦ ὕφους· ἡ μουσική του, ἀπομακρυνθεῖσα ὁριστικῶς τῆς τοῦ πατρός του, προαναγγέλλει τὸν Μότσαρτ, μεθ' οὗ ἐνίοτε ὁμοιάζει καταπληκτικῶς.

— 20) ***Ἰωάννης-Ἔρνστ Μπάχ.*** Μόνος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Βερνάρδου (1722—1777). Διετέλεσε διηγόρος καὶ ὀργανοκρούστης ἐν Ἄϊζεναχ καὶ μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς τῆς Σὰξ-Βαϊμάρης. Ἔγραψε συλλογὴν μύθων μελοποιημένων, σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον, καντάτας, μοτέττα κ. τ. λ.

— 21) ***Γουλιέλμος-Φρειδερῖκος-Ἐρνέστος Μπάχ.*** Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου-Χριστοφόρου-Φρειδερίκου, δηλαδὴ τοῦ Μπὰχ τοῦ Μπούκεμπουργκ, καὶ τελευταῖος ἄρρην γόνος τῆς οἰκογενείας (1759—1845). Μαθητὴς τοῦ πατρός του καὶ τοῦ θείου του Ἰωάννου-Χριστιανοῦ, διεκρίθη ὡς δεξιοτέχνης τοῦ κλειδοκυμβάλου καὶ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου. Ἀφοῦ παρέμεινεν ἐπί τινα χρόνον ἐν Λονδίνῳ καὶ Παρισίοις, ἐγκατεστάθη τῷ 1792 ἐν Βερολίνῳ, ἔνθα προσελήφθη ὡς κλαβικυμβαλιστὴς τῆς αὐλῆς τοῦ Φρειδερίκου-Γουλιέλμου Β', μουσικὸς διευθυντὴς παρὰ τῇ βασιλίσσῃ καὶ διδάσκαλος τῶν νεαρῶν πριγκίπων. Ἔγραψε σονάτας διὰ κλαβικύμβαλον, καθὼς καὶ διὰ κλαβικύμβαλον καὶ βιολίον, μελῳδίας κ. τ. λ. Δι' αὐτοῦ κλείει ὁ κύκλος τῆς μουσικῆς δυναστείας Μπάχ, ἧς οὐδεὶς ἄμεσος ἀπόγονος ὑφίσταται πλέον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. Fr. Agricola* καὶ *Ph. Em. Bach*, Denkmal dreyer verstorbenen Mitglieder der Sorietät der musikalischen Wissenschaften. . .(1754).—*Forkel*, Ueber Bach's Leben (1802).—*Bitter*, J. S. Bach (4 τόμοι).—*Ernest David*, La vie et les œuvres de J. S. Bach (1882).—*H. Barth*, J. S. Bach (1902).—*R. Batka*, J. S. Bach (1902).—*A. Pirro*, Bach (1907).—*Ph. Spitta*, J. S. Bach, τὸ κλασσικώτερον καὶ λεπτομερέστερον σύγγραμμα περὶ τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ (1873—1880, 2 τόμοι).—*W. Cart*, Étude sur J. S. Bach (1899).—*A. Pirro*, L'orgue de J. S. Bach (1895) καὶ L'Esthétique de J. S. Bach (1907).—*Alb. Schweitzer*, J. S. Bach, le musicien-poète (1905).—*Ph. Wolfrum*, J. S. Bach (1906 καὶ 1910).—*Alf. Heuss*, J. S. Bach's Matthäuspassion (1909).
Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**Μπαχαβαλποὺρ** (Bahawalpur, Bhawalpur) *[Γεωγραφ.]* Κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν μεταξὺ τῶν ἐπαρχιῶν Παντζάμπ καὶ Ρατζπουτάνα καὶ τῶν ποταμῶν Σατλὲτζ καὶ Ἰνδοῦ. Ἔχει ἔκτασιν 15.903 τετρ. μιλίων μὲ 781.191 κατοίκους, ὧν 647.207 Μωαμεθανοί. Ἀρδεύεται ὑπὸ πυκνοῦ δικτύου διωρύγων καὶ παράγει δημητριακά, σάκχαριν, ἰνδικὸν καὶ βάμβακα. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα κεῖται παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Σατλὲτζ, ἔχει 18.494 κατ. καὶ ὡραιότατα ἀνάκτορα. Ἡ Μπαχαβαλποὺρ ἐγένετο ὑποτελὴς εἰς τοὺς Ἄγγλους ἀπὸ τοῦ 1838. Τὸ ἐκ καμήλων μεταγωγικὸν σῶμα αὐτῆς κατέστη διάσημον κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Π. Ν. Π.

—**Μπαχαεντὶν** ***Σενταντί.*** Ἄραψ σοφὸς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Ἔγραψεν ἱστορίαν τοῦ Σαλαδδίνου, μεταφρασθεῖσαν λατινιστὶ ὑπὸ τοῦ A. Schultens (1732 καὶ 1755) καὶ ἀγγλιστὶ (1897). Ν. Μ.

**Μπαχάμας** (Bahamas) *[Γεωγρ.]*. Σύμπλεγμα νησίδων ἐν τῷ Ἀτλαντικῷ ὠκεανῷ (βλ. λ. *Βαχάμαι νῆσοι*).

**μπαχάμι** (τό), ἢ ***μπακάμι*** *[Βοτ.]*. Δημώδης ὀνομασία τοῦ *αἱματοξύλου* (βλ. λ.).

**Μπαχὰν** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας συνοικισμοῦ *Τρίγωνον* (βλ.λ.).

**Μπαχαντούρ.** Πρωθυπουργὸς τοῦ μαχαραγιᾶ τῆς Νεπάλης, γεννηθεὶς τῷ 1816. Ἀκολουθήσας συμβιβαστικὴν πρὸς τοὺς Ἄγγλους πολιτικήν, κατώρθωσε νὰ διατηρήσῃ κάποιαν ἀνεξαρτησίαν τῆς χώρας του ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς Ἀγγλίας. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῶν σιπαΐδων τοῦ 1857 ἐβοήθησε διὰ στρατοῦ τοὺς Ἄγγλους, εἰς ἀμοιβὴν δὲ τῶν ὑπηρεσιῶν τούτων ἀπενεμήθη εἰς αὐτὸν ὁ τίτλος βαρωνέτου (sir) μὲ τὸ ἐπίθετον Young (νέος). Ἀπέθανε τῷ 1887, ἀφήσας κολοσσιαίαν περιουσίαν καὶ πλουσίαν συλλογὴν ἀδαμάντων. Ν. Μ.

— **Μπαχαντοὺρ-*Σὰχ Α'*.** Μογγόλος αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν, ἐκ τῆς δυναστείας τῶν Τιμουριδῶν, ἀπογόνων τοῦ Ταμερλάνου. Ἐγεννήθη τῷ 1643 ἐν Μπερχανμποὺρ τῆς χώρας τοῦ Δεκάν, διεδέχθη δὲ τῷ 1706 τὸν πατέρα του Σὰχ-Ἀλεμγκὶρ τὸν Α', ἀφοῦ ἐνίκησεν εἰς δύο μάχας τὸν ἀδελφόν του Ἀαζάμ. Ἀπέθανε τῷ 1712. Ὁ τάφος του σῴζεται ἐν Δελχί.

—**Μπαχαντοὺρ-*Σὰχ Β'*.** Τελευταῖος Μογγόλος αὐτοκράτωρ τῶν Ἰνδιῶν, ἀνελθὼν τὸν θρόνον τῷ 1837. Ἡ πρωτεύουσα τοῦ κράτους του, ἡ Δελχί, εἶχε πρὸ πολλοῦ καταληφθῆ ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, οὕτως ὥστε ἡ ἐξουσία του ἦτο σκιώδης. Ἐδέχθη παχεῖαν ἐπιχορήγησιν τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως, ἀλλὰ τῷ 1858 θεωρηθεὶς ὕποπτος κατὰ τὴν ἐκραγεῖσαν τότε ἐπανάστασιν τῆς Δελχὶ συνελήφθη μετὰ τῶν δύο υἱῶν του καὶ ἐξωρίσθη ἐν Καλκούτᾳ. Οὕτως ἐτέθη ὁριστικῶς τέρμα καὶ εἰς τὴν ὀνομαστικὴν ἐξουσίαν τῆς ἐν Ἰνδίαις μογγολικῆς δυναστείας. Ν. Μ.

**Μπαχὰ-οὺτ-ντὶν** ***Ζουχαΐρ.*** Ἄραψ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1186 παρὰ τὴν Μέκκαν. Ἔζησεν ἐν Μεσοποταμίᾳ καὶ Αἰγύπτῳ. Τὰ ποιήματά του εἶναι κυρίως πανηγυρικαὶ ᾠδαί, αἵτινες διακρίνονται διὰ τὴν στιχουργικήν των κομψότητα. Μετεφράσθησαν ἐμμέτρως ἀγγλιστὶ ὑπὸ τοῦ E. H. Palmer καὶ ἐξεδόθησαν τῷ 1877. Ν. Μ.

**Μπαχὰ-οὺτ-ντοβλέ.** Ἑνδέκατος ἡγεμὼν τῆς ἐν Περσίᾳ βασιλευσάσης δυναστείας τῶν Βουϊδῶν. Ἀνῆλθε τὸν θρόνον τῷ 991 μ. Χ. καὶ ἀπέθανε τῷ 1014. Ἐπέβαλε τὰς θελήσεις του εἰς τοὺς χαλίφας τῆς Βαγδάτης καὶ ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Γασνεσίδου σουλτάνου Μαχμούτ. Ν. Μ.

**Μπαχὰρ** (Behar) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μπεχάρ*).

**μπαχάρι** (τό), καὶ ***μπαχαρικὰ*** (ἐκ τοῦ τουρκ. *μπαχάρ*) ἄρωμα || τὰ διάφορα ἀρωματικὰ τῶν φαγητῶν.

— **μπαχάρι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἰνδοπέπερι*.

**Μπαχαρία** *[Γεωγρ.]*. Ὄασις τῆς Λιβυκῆς ἐρήμου ἐν Αἰγύπτῳ, κειμένη εἰς Β. πλ. 28° 23' καὶ Ἀν. μῆκ. 28° 19'. Ἔχει μῆκος 18 χλμ. καὶ πλάτ. 9, μὲ πληθυσμὸν 7.000 περίπου. Τὸ ἀραβικὸν της ὄνομα *Μπαχρίγιε* σημαίνει «βορεία», λέγεται δὲ καὶ *Οὐὰχ ἐλ Βεχνέσα*, ἤτοι ὄασις τῆς Βεχνέσας, διότι ἀπὸ τῆς πόλεως ταύτης ἐνίοτε μεταβαίνουν εἰς αὐτήν. Οἱ ἀρχαῖοι τὴν ὠνόμαζον «μικρὰν ὄασιν», κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν τῆς Σίβας, ὅπου τὸ μαντεῖον τοῦ Ἄμμωνος Διός. Γ. Λ. Α.

**μπαχαρικὸ** (τό)· βλ. *μπαχάρι*.

**Μπαχαρτποὺρ** (Bhartpur) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κρατίδιον τῆς Ρατζπουτάνα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, τελοῦν ὑπὸ τὴν ἀγγλικὴν προστασίαν. Κάτ. 743.710. Π. Γ. Λ.

**Μπάχερ** (Bacher), ***Γουλιέλμος.*** Ἑβραῖος θεολόγος καὶ ἀνατολιστὴς (1850—1913). Ἐσπούδασεν ἐν Βουδαπέστῃ, Λειψίᾳ καὶ Μπρεσλάου. Τῷ 1876 ἐξελέγη ραββῖνος Βουδαπέστης καὶ καθηγητὴς τῆς ἐκεῖ ραββινικῆς σχολῆς. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων συγγραφῶν του, τῶν πλείστων γερμανιστὶ γεγραμμένων, ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Ὁ βίος καὶ τὰ ἔργα τοῦ Νιζαμί» (1871), «Ἀφορισμοὶ καὶ ψαλμοὶ τοῦ Σαντί» (1879), «Ὁ Ἀβραὰμ Ἴμπν Ἔσρα ὡς γραμματικός» (1882), «Ἡ ἀρχαιοτέρα ὁρολογία εἰς τὴν ἐξήγησιν τῆς ἰουδαϊκῆς Βίβλου» (1889), «Ἡ ἐξήγησις τῆς Βίβλου κατὰ τοὺς Ἰουδαίους θεολόγους τοῦ Μεσαίωνος πρὸ τοῦ Μαϊμωνίδου» (1892), «Ἡ ἐξήγησις τῆς Βίβλου ὑπὸ τοῦ Μωϋσέως Μαϊμωνίδου» (1896), «Ἡ ἑβραϊκὴ γλῶσσα ἀπὸ τοῦ Ι'—ΙΣΤ' αἰῶνος» (1893), «Αἱ ἀρχαὶ τῆς ἑβραϊκῆς γραμματικῆς» (1895). Γ. Ι. Β.

**Μπαχία** (Bahia) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπαΐα*.

**Μπαχίμα** (οἱ). Φυλὴ τῆς κεντρῴας Ἀφρικῆς, κατοικοῦσα κατὰ τὸ μεγαλύτερον αὐτῆς μέρος τὸ βρεττανικὸν προτεκτοράτον τῆς Οὐγκάντα, κείμενον μεταξὺ τοῦ Ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδὰν καὶ τῆς ἀποικίας Κέννα καὶ μεταξὺ τῆς Ἀβησσυνίας καὶ τοῦ Βελγικοῦ Κόνγκο. Εἶναι χαμιτικὴ φυλὴ μειχθεῖσα μετὰ λευκῶν εἰς ἀρχαιοτάτους καθὼς φαίνεται χρόνους, ἀσχολεῖται δὲ ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν κτηνοτροφίαν. Οἱ Μπαχίμα (εἰς τὸν ἑνικὸν *Μουχίμα*) εἶναι εὔσωμοι καὶ ρωμαλέοι, αἱ δὲ γυναῖκές των, μόναι αὐταὶ ἐκ τῶν γυναικῶν τῆς κεντρῴας Ἀφρικῆς ἔχουσι τὸ σῶμα αὐστηρῶς κεκαλυμμένον. — Ω.

**Μπαχίρα, *Ἐλ*** — (El-Bahira) *[Γεωγρ.]*. Λιμνοθάλασσα τῆς Τύνιδος (βλ. λ. *Ἐλ-Μπαχίρα*).

**Μπάχμαν** (Bachmann), ***Ἀδόλφος.*** Αὐστριακὸς ἱστορικὸς καὶ πολιτικὸς (1849—1914). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς Αὐστρίας ἐν τῷ γερμανικῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πράγας καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων μελῶν τοῦ ἐν Βοημίᾳ γερμανικοῦ προοδευτικοῦ κόμματος. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Ἓν ἔτος ἱστορίας τῆς Βοημίας. Ἐκλογή, στέψις καὶ ἀναγνώρισις τοῦ Γεωργίου φὸν Podiebrad» (1876), «Ἡ Βοημία καὶ αἱ γειτονικαὶ χῶραί της ὑπὸ τὸν Γεώργιον φὸν Podiebrad, 1458—1461» (1878), «Ἱστορία τοῦ γερμανικοῦ κράτους κατὰ τὴν ἐποχὴν Φρειδερίκου τοῦ Γ' καὶ Μὰξ τοῦ Α'» (1884—1894, τόμ. 2), «Ἐγχειρίδιον τῆς ἱστορίας τοῦ αὐστριακοῦ κράτους» (1896). Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ ἱστορίαν τῆς Βοημίας μέχρι τοῦ 1526 (1899—1905, 2 τ.). Γ. Ε. Κ.

—**Μπάχμαν** (Bachmann), ***Γεώργιος-Χριστιανός.*** Γερμανὸς δεξιοτέχνης τοῦ εὐθυαύλου, ζήσας ἐν Βρυξέλλαις, ἔνθα ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ αὐτόθι ᾠδείου (1804—1842).

—**Μπάχμαν** (Bachmann), ***Γκόττλομπ.*** Γερμανὸς ὀργανοκρούστης καὶ συνθέτης πολυαρίθμων ἔργων (1763—1840). Ἔγραψε τὰ κωμικὰ μελοδράματα: «Ὀρφεὺς καὶ Εὐρυδίκη», «Δὸν Σύλβιο τῆς Ροζάλβας», πλείστας μελῳδίας, μουσικὴν δωματίου, τεμάχια δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπαχμέτιεφ,** ***Πορφύριος Ἰβάνοβιτς.*** Ρῶσος φυσιολόγος (1860—1913). Ἀνήκων εἰς οἰκογένειαν δουλοπαροίκων, κατώρθωσε νὰ σπουδάσῃ φυσικὰς ἐπιστήμας ἐν Μόσχᾳ καὶ Ἑλβετίᾳ. Ἐπεδόθη εἶτα εἰς εὐρείας μελέτας καὶ πειράματα ἐπὶ τοῦ ζητήματος τῆς ἀναβιώσεως τοῦ ἀνθρωπίνου ὀργανισμοῦ, ὡς καὶ τῆς θεραπείας τῆς φυματιάσεως διὰ τῆς ἐπιδράσεως τοῦ ψύχους ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ. Αἱ θεωρίαι του ἐγένοντο ἀποδεκταὶ ἐν Ρωσίᾳ καὶ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας συνεστήθη ἐργαστήριον πρὸς μελέτην τῆς ἀναβιώσεως. Ὁ Μπαχμέτιεφ ἐκλήθη ὡς καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Σόφιας τῷ 1900, ὅπου διετήρησε τὴν ἕδραν τῆς φυσιολογίας μέχρι τοῦ 1907. Θ. Β.

**Μπαχμοὺτ** (Bakhmut) *[Γεωγρ.]*. Βιομηχανικὴ πόλις καὶ σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν ἐν τῇ ὁμοσπόνδῳ σοβιετικῇ δημοκρατίᾳ τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀρτεμόφσκ (48° 34' Β. πλάτους καὶ 38° Α. μήκους Γκρήνουϊτς). Ἔχει μεγάλα ἁλατωρυχεῖα, γνωστὰ ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἐξ ὧν τῷ 1925 ἐξήχθησαν 403.000 τόννοι ἅλατος. Ἐπίσης ἀνορύσσονται γαιάνθρακες, ἀλάβαστρον καὶ ὑδράργυρος. Κάτ. (1926) 37.354. Ἤδη μετωνομάσθη εἰς *Ἀρτεμόφσκ*. Χ. Δ.

**Μπάχοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Πρόμαχοι* (βλ. λ.).

**Μπαχόφεν** (Bachofen), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος.*** Ἑλβετὸς νομομαθὴς (1815—1887). Ἐδίδαξε ρωμαϊκὸν δίκαιον ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς πατρίδος του Βασιλείας (1841—1843), ἀποσυρθεὶς δὲ μετὰ ταῦτα κατέλαβεν αὐτόθι διαφόρους δικαστικὰς θέσεις. Διὰ τῆς μελέτης του «Das Mutterrecht; eine Untersuchung über die Gynaikokradie der alten Welt und ihre religiöse und rechtliche Natur (1861), ἔδωσε τὴν πρώτην ὤθησιν εἰς τὴν ἀπὸ ἐθνολογικῆς καὶ κοινωνιολογικῆς ἀπόψεως βαθυτέραν μελέτην τῆς ἱστορικῆς ἐξελίξεως τοῦ θεσμοῦ τῆς οἰκογενείας. Διὰ τῆς ἐφαρμοσθείσης δὲ ἐν τῷ ἔργῳ του τούτῳ μεθόδου ἔθεσεν ὁ Μπαχόφεν τὰς βάσεις τῆς συγκριτικῆς νομικῆς ἐπιστήμης. Συνέγραψεν ἐπίσης καὶ πλείστας μελέτας ἐπὶ τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου. Α. Α. Τ.

**μπάχρ.** Λέξις ἀραβικὴ σημαίνουσα θάλασσα καὶ ἀπαντῶσα ὡς συνθετικὸν εἰς τοπωνύμια. Σημαίνει καὶ ποταμός, ἰδίᾳ δὲ μέγας, ὡς ὁ Νεῖλος. Ν. Μ.

**Μπὰχρ *Ἀσσὰλ*** (Bahr-Assal) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Γαλλικῆς Σομαλίας (βλ. λ. *Ἀσσάλ*).

**Μπαχρὰ** ***Τσιοσμπίν.*** Πέρσης βασιλεὺς (βλ. λ. *Μπαρὰμ* Τσουμπίν).

**Μπαχράμ.** Ὄνομα πέντε Περσῶν βασιλέων τῆς δυναστείας τῶν Σασανιδῶν.

— **Μπαχρὰμ Α'** (274—277). Ἦτο υἱὸς Σαπὼρ τοῦ Α'. Ὑποκινούμενος ὑπὸ τῶν μάγων ἐφόνευσε τὸν προφήτην Μανί, τὸν ἱδρυτὴν τοῦ μανιχαϊσμοῦ.

— **Μπαχρὰμ Β'** (277—294). Υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Κατὰ τὴν βασιλείαν του ὁ Ρωμαῖος αὐτοκράτωρ Κάρος ἐπετέθη κατὰ τῶν Περσῶν καὶ κατέκτησε τὴν Κτησιφῶντα (283).

— **Μπαχρὰμ Γ'.** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, ἐβασίλευσε μόνον τέσσαρας μῆνας, μεθ' ὃ ἀνῆλθε τὸν θρόνον ὁ Ναρσῆς.

— **Μπαχρὰμ Δ'** (389—399). Υἱὸς καὶ διάδοχος Σαπὼρ τοῦ Γ'. Ἐπ' αὐτοῦ ἡ Ἀρμενία διεμελίσθη μεταξὺ τοῦ Ρωμαϊκοῦ κράτους καὶ τῆς Περσίας. Ἐφονεύθη κατά τινα συνωμοσίαν δυσηρεστημένων.

— **Μπαχρὰμ Ε'** (420—439). Υἱὸς Γιζδεγὲρτ τοῦ Α', ὃν καὶ διεδέχθη. Ὑποσχεθεὶς νὰ διοικήσῃ κατὰ τρόπον διάφορον τοῦ πατρός του, ὅστις ἦτο ἀνεξίθρησκος, κατεδίωξε τοὺς Χριστιανούς, ἐκ τούτου δὲ περιεπλάκη εἰς πόλεμον μετὰ τοῦ Ρωμαϊκοῦ κράτους. Ἡττηθεὶς ὅμως, ἠναγκάσθη νὰ ὑποσχεθῇ ἀνεξιθρησκείαν. Προσήρτησε τὸ περσικὸν μέρος τῆς Ἀρμενίας, καθαιρέσας τὸν τελευταῖον ὑποτελῆ αὐτοῦ ἡγεμόνα. Τὰ περσικὰ παραμύθια τὸν παριστάνουν ὡς ὡραῖον καὶ ρωμαλέον καὶ ἀναφέρουν πολλὰ ἀνδραγαθήματά του. Ν. Μ.

**Μπαχραμαμπὰτ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν. Περσίας, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Κιρμάν. Κάτ. 10.000 περίπου.

**Μπὰχρ Γιοῦσσεφ** (= διῶρυξ Ἰωσήφ) *[Γεωγρ.]*. Διῶρυξ ἀποσπωμένη μικρὸν νοτιώτερον τοῦ Δεϊρούτ ἀπὸ τῆς ἀριστερᾶς (δυτικῆς) ὄχθης τῆς διώρυχος Ἰβραημίε (τοῦ Νείλου). Πλησιάζει πολὺ τὴν Λιβυκὴν ὀροσειρὰν καὶ φθάνουσα εἰς πλάτ. 29° 15' κάμπτεται πρὸς Δ. καὶ διὰ στενῆς διακοπῆς τῆς ὀροσειρᾶς παρὰ τὸν ἀρχαῖον Λαβύρινθον εἰσδύει εἰς τὴν ὄασιν τοῦ Φαγιούμ, τὴν ὁποίαν ἀρδεύει διὰ τῶν ἀπείρων της διακλαδώσεων. Γ. Λ. Α.

**Μπαχρέϊν,** ἢ ***Μπάρεν*** (Bahrein) *[Γεωγρ.]*, ἄλλως ***Ἄουαλ*** (Aoual) καὶ ***Χατζὰρ*** (Hadjar). Ἀρχιπέλαγος τοῦ Περσικοῦ κόλπου παρὰ τὴν ἀραβικὴν ἀκτήν, κληθὲν οὕτως ἀπὸ τῆς ὁμωνύμου νή-

Digitized by Google

σου καὶ κλεῖον ὁμώνυμον ἐπίσης τριγωνικὸν κόλπον, οὗ τὰς δύο πλευρὰς ἀποτελοῦν ἡ χερσόνησος Κάτρ ἀπὸ Α. καὶ ἡ ἀκτὴ Χαζὰ ἀπὸ Δ. Ἔκτασις 550 τετρ. χλμ. Κάτ. 100.000, ὧν 11.000 μαῦροι καὶ οἱ λοιποὶ Ἄραβες. Κυριώτεραι νῆσοι εἶναι: ἡ *Μπαχρεΐν*, μήκους 27 μιλλίων μὲ ὡραιοτάτας ὀάσεις φοινίκων, μὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ *Ντζεμπὲλ Ντουχὰν* (130 περίπου μέτρων) καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Μανάμα* (κάτ. 40.000). Αὐτόθι διαιτᾶται ὡραῖον γένος λευκῶν ὄνων· ἡ *Μωχαρράκ*, μήκους 4 μιλλ. (κάτ. 20.000), καὶ ἡ *Σίτρα* (3 μιλλ.). Τὰ ὕδατα τοῦ κόλπου βρίθουν μαργαριτοφόρων ὀστράκων, διὰ τὴν ἁλιείαν τῶν ὁποίων ἀσχολοῦνται 1.000 πλοιάρια καὶ 20.000 ἄνθρωποι· ἐξάγονται μαργαρῖται ἀξίας 1.500.000 ἀγγλικῶν λιρῶν ἐτησίως, εἶναι δὲ ἀπὸ τοὺς ὡραιοτέρους γνωστούς.

Λόγῳ τῆς θέσεώς των αἱ νῆσοι Μπαχρεΐν ἔχουν ἀξιόλογον ἱστορίαν. Ἐδῶ δέον νὰ τοποθετηθοῦν αἱ ἀρχαῖαι *Τύλος* καὶ *Ἄραδος*. Ἀναρίθμητοι διθάλαμοι τυμβοειδεῖς τάφοι ἐκτείνονται καθ' ὅλην τὴν Β. Μπαχρεΐν, βρίθοντες εὑρημάτων κεραμικῆς ἀβεβαίας ἐποχῆς, ἴσως φοινικικῶν. Ὁ σημερινὸς πληθυσμὸς συνίσταται κυρίως ἐξ Ἀράβων ὑπὸ σεΐχην ἑδρεύοντα εἰς Μωχαρρὰκ καὶ ὑπαγόμενον εἰς τὸν ἰμάμην τῆς Μασκάτης, ὑπάρχει δὲ καὶ εὐάριθμος παροικία Περσῶν καὶ Ἰνδῶν ἐμπορευομένων. Αἱ νῆσοι κατελήφθησαν τῷ 1507 ὑπὸ Πορτογάλων, ἐκδιωχθέντων τῷ 1602 ὑπὸ τῶν Περσῶν. Τῷ 1807 κατελήφθησαν ὑπὸ τῶν Περσῶν, ἱδρυσάντων περίφημον ἐμπορεῖον μαργαριτῶν, τῷ 1875 περιῆλθον εἰς τὴν κυριαρχίαν τῆς Τουρκίας, καθιδρυσάσης τοὺς σεΐχας, καὶ τῷ 1893 εἰς τὴν ὁριστικὴν κατοχὴν τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἥτις διατηρεῖ αὐτόθι πολιτικὸν διοικητήν. Ἔκτοτε δὲν κατέπαυσαν αἱ διπλωματικαὶ παρεμβάσεις τῶν σουλτάνων τοῦ Ὀμάν, τῶν Βαχαμπί, τῆς Πύλης καὶ ἰδίως τῆς Περσίας. Ἡ τελευταία ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς συνθήκης Ἀγγλίας καὶ Ἰρὰκ (1926), ἐν ᾗ πρῶτον ἀναφέρονται αἱ νῆσοι ὡς ἀγγλικὸν προτεκτοράτον, ἀπηύθυνε δριμεῖαν διακοίνωσιν (1927, Νοέμβριος), ἥτις περιῆλθεν εἰς τὴν Κοινωνίαν τῶν Ἐθνῶν (1928, Ἰανουάριος) μετὰ τῆς ἀπαντήσεως τῆς Μ. Βρεττανίας ἐμμενούσης εἰς τὴν ἀνάγκην τῆς προασπίσεως τῶν ἰθαγενῶν ἀπὸ τῆς δουλείας εἰς ξένους. — Π.

**Μπάχρ ἐλ Ἄμπιατ** (= Ποταμὸς ὁ Λευκὸς ἢ Λευκὸς Νεῖλος) [*Γεωγρ.*]. Οὕτως ὀνομάζεται ἀραβιστὶ ὁ κλάδος τοῦ Νείλου ἀπὸ τῆς συμβολῆς τῶν δύο μεγάλων ποταμῶν Μπάχρ ἐλ Δζέμπελ καὶ Μπάχρ ἐλ Γκάταλ, ὅπου ἡ νῆσος Νῶ μέχρι τοῦ Χαρτούμ, ὅπου συμβάλλει μετὰ τοῦ ἀπὸ τῆς λίμνης Τσάνας τῆς Ἀβησσυνίας καταρρέοντος Μπάχρ ἐλ Ἄζρακ. Ἀπὸ Νῶ μέχρι Χαρτοὺμ εἶναι πλωτὸς καὶ δέχεται πρὶν ἢ φθάσῃ τὸν ἐπίσης μέγαν ποταμὸν Σομπάτ. Γ. Λ. Α.

**Μπάχρ-ἐλ-Ἀράμπ** (=Ποταμὸς τῶν Ἀράβων) [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τοῦ ΝΑ. ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδάν, ὅστις ἑνούμενος μετὰ τοῦ Ντζοὺρ σχηματίζει τὸν *Μπάχρ-ἐλ-Γκαζάλ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπάχρ-ἐλ-Γκαζάλ** (= Ποταμὸς τῶν γαζελλῶν) [*Γεωγρ.*]. —1) Ποταμὸς τοῦ Ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδάν, σχηματιζόμενος διὰ τῆς παρὰ τὸ Μεσρὰ-ἐλ-Ρὲκ συνενώσεως τῶν ποταμῶν Μπάχρ-ἐλ-Ἀρὰμπ καὶ Ντζούρ, καὶ συμβάλλων μετὰ ῥοῦν 214 χλμ. εἰς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Λευκοῦ Νείλου. Δέχεται σπουδαιότερον παραπόταμον τὸν *Μπάχρ-ἐλ-Δζεμπὲλ* καὶ διασχίζει ἐκτεταμένην βαλτώδη χώραν, ἥτις σήμερον ἀπεξηράνθη διὰ μεγάλων τεχνητῶν ἔργων καὶ χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν καλλιέργειαν τοῦ βάμβακος.

—2) Ἐπαρχία τοῦ ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδάν, συνορεύουσα πρὸς Δ. μετὰ τῆς γαλλικῆς ἀποικίας Οὐμπανγκὶ-Σαρῆ-Τσὰντ καὶ πρὸς Ν. μετὰ τοῦ βελγικοῦ Κόνγκο. Ἔχει ἔκτασιν 295.500 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 2.500.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Βάου*. Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ διαρρέοντος αὐτὴν ποταμοῦ, εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ ὁποίου καλλιεργεῖται ἐντατικῶς ὁ βάμβαξ. Ἔχει ἐπίσης ἐκτεταμένα δάση. Πρὸ τῆς ὑπὸ τῶν Σβάϊνφουρτ καὶ Γιοῦνκερ ἐξερευνήσεώς της, ἡ χώρα αὕτη εἶχε κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ὑποταχθῇ εἰς τὴν Αἴγυπτον ὑπὸ τῶν ἐκ μέρους τῶν διαδόχων τοῦ Μωχαμὲτ Ἀλῆ ἐκπεμφθεισῶν κατὰ καιροὺς ἀποστολῶν. Τῷ 1894 (12 Μαΐου), διὰ συμβάσεως μεταξὺ Ἀγγλίας καὶ Κόνγκο, ἀνεγνωρίσθη ὡς ἀνήκουσα εἰς τὴν πρώτην. Ἐπηκολούθησαν ἔριδες διὰ τὴν κατοχὴν καὶ τὸν διακανονισμὸν τῶν συνόρων της μεταξὺ Ἄγγλων καὶ Γάλλων, τέλος δὲ τῷ 1906 (8 Μαΐου) τὰ δικαιώματα τῶν πρώτων ἀνεγνωρίσθησαν ὁριστικῶς. Χ. Δ.

**Μπάχρ ἐλ Ντζεμπὲλ** (=Ποταμὸς τοῦ ὄρους) [*Γεωγραφ.*]. Οὕτως ὀνομάζεται ὁ *Νεῖλος* ἀπὸ τῆς λίμνης τοῦ Ἀλβέρτου μέχρι τῆς συμβολῆς του μετὰ τοῦ Μπάχρ ἐλ Γκαζάλ. Γ. Λ. Α.

**Μπάχρ-ἐρ-Ροὺμ** (=Θάλασσα τῶν Ἑλλήνων) [*Γεωγρ.*]. Ὄνομα διδόμενον ἐνίοτε ὑπὸ τῶν Ἀράβων εἰς τὴν *Μεσόγειον* θάλασσαν.

**Μπαχρία** (Baharieh) [*Γεωγρ.*] Ὄασις τῆς Λιβυκῆς ἐρήμου (βλ. λ. *Μπαχαρία*).

**Μπαχρίγιε** [*Γεωγρ.*]. Ὄασις τῆς Αἰγύπτου· βλ. λ. *Μπαχαρία*.

**Μπάχρι-Μπὶ-Νὲτζμ** [*Γεωγρ.*]. Λίμνη τῆς Μεσοποταμίας παρὰ τὴν Βαγδάτην, δεξιόθεν τοῦ Εὐφράτου. Ν. Μ.

**Μπάχρι-Νεντζὲφ** [*Γεωγρ.*]. Λίμνη τῆς Μεσοποταμίας μεταξὺ Κερμπελᾶ καὶ Χῆλε, σχηματιζομένη ἐκ διαφόρων διωρύγων τοῦ Εὐφράτου. Ν. Μ.

**Μπάχτιαρ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν συνοικισμοῦ *Δενδρόφυτον* (βλ. λ.).

**Μπαχτιάροι** (οἱ) (ἐκ τῆς λέξ. *μπαχτιὰρ*=εὐτυχής). Νομαδικὴ φυλὴ τῆς Περσίας, οἰκοῦντες εἰς τὴν ὁμώνυμον ἐπαρχίαν, ἐκτεινομένην ἐκ Τσαχὰρ-μαχάλι, δυτικῶς τοῦ Ἰσπαχάν, μέχρι τοῦ εἰς τὰ ΝΔ. Λουριστάν, ὑπαγομένην δὲ εἰς τὸν γενικὸν διοικητὴν τοῦ περσικοῦ Ἀραβιστάν. Ἄλλοτε μέρος αὐτῶν κατῴκει καὶ εἰς τὸ Λουριστάν, ὠνομάζοντο δὲ οὗτοι *Λοῦροι (Λουρί), μικροὶ* καὶ *μεγάλοι*. Λέγεται ὅτι οἱ Λοῦροι οὗτοι ἦλθον εἰς Περσίαν ἐκ Συρίας κατὰ τὸν Ι' π. Χ. αἰῶνα, φαίνεται ὅμως ὅτι ὑπῆρχον εἰς τὰς περσικὰς χώρας πολὺ παλαιότερον. Ὁμιλοῦσι τὴν λουρικὴν γλῶσσαν, διάλεκτον τῆς περσικῆς. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῶν ὑπολογίζεται εἰς 200.000 κατ., οἵτινες διακρίνονται κυρίως ὡς ἱππεῖς. Κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἐξηγέρθησαν ἐπανειλημμένως κατὰ τῆς κυβερνήσεως τῶν σαχῶν. Ν. Μ.

**Μπαχτίσουα** (=ὑπηρέτης τοῦ Ἰησοῦ). Οἰκογένεια Χριστιανῶν Περσῶν ἰατρῶν, οἵτινες ἀπὸ τῆς Η' μέχρι τῆς ΙΑ' μ. Χ. ἑκατονταετηρίδος διεκρίθησαν ὡς ἰδιαίτεροι ἰατροὶ χαλιφῶν καὶ ὡς μεταφρασταὶ ἑλληνικῶν ἰατρικῶν ἔργων εἰς τὴν ἀραβικήν. Ἐκ τούτων ὁ *Τζώρτζης* (Γεώργιος) *μπὲν Τζαμπρὶλ* (Γαβριὴλ) *μπὲν Μπαχτίσουα* ὑπῆρξε διευθυντὴς τῆς ἐν Δζοντισαποὺρ (Σαπωροπόλει) ἰατρικῆς ἀκαδημίας, ἐν ᾗ ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ *Μπαχτίσουα*, ὁπόταν κληθεὶς μετέβη εἰς Βαγδάτην πρὸς θεραπείαν τοῦ χαλίφου Ἀλ-Μανσούρ. Ἀρνηθεὶς μετὰ τὴν ἐπιτυχῆ θεραπείαν τούτου ν' ἀπαρνηθῇ τὸν Χριστιανισμόν, ἐπανῆλθεν εἰς Δζοντισαπούρ. Μετέφρασε πολλὰ συγγράμματα ἑλληνικὰ εἰς τὴν ἀραβικήν, ἧς ὑπῆρξε βαθὺς γνώστης. Ἄδηλον ἂν ταῦτα μετέφρασεν ἀπ' εὐθείας ἀπὸ ἑλληνικοῦ κειμένου ἢ συριακῆς μεταφράσεως. Μαθητὴς τούτου ὑπῆρξεν ὁ Ἰσὰ μπὲν Σαχλατᾶ, ὅστις καὶ τὸν ἀντικατέστησε παρὰ τῷ χαλίφῃ, ἀναγκασθέντι εἶτα ὅμως ὅπως ἐκδιώξῃ τοῦτον, ὡς καταχρώμενον τὴν ἐμπιστευτικὴν θέσιν, ἣν εἶχε παρ' αὐτῷ.

Υἱὸς τοῦ Γεωργίου ὑπῆρξεν ὁ ῥηθεὶς *Μπαχτίσουα*, ὅστις ἐγένετο μετέπειτα ἰατρὸς τοῦ χαλίφου Χαροὺν-ἀλ-Ρασὶδ καὶ τοῦ βεζύρου αὐτοῦ Δζαφέρ. Ἔγραψε συγγράμματά τινα, ἐν οἷς πανδέκτας ἰατρικούς. Ὁ *Γαβριὴλ* ὑπῆρξεν υἱὸς τούτου καὶ ἐγένετο διὰ τοῦ ῥηθέντος βεζύρου ἰατρὸς τοῦ αὐτοῦ χαλίφου, ὃν ἐθεράπευσεν ἐξ ἐγκεφαλικῆς συμφορήσεως διὰ φλεβοτομίας. Ὀνομαστὴ ὑπῆρξε καὶ ἡ θεραπεία παραλύσεως ὑστερικῆς τοῦ βραχίονος μιᾶς τῶν γυναικῶν τοῦ χαλίφου. Τελικῶς ὅμως οὐ μόνον ἀπώλεσε τὴν εὔνοιαν τοῦ χαλίφου, ἀλλὰ καὶ εἰς θάνατον κατεδικάσθη, σωθεὶς ὑπὸ τοῦ βεζύρου Ἐλ Φαδὲλ ἐλ Ραμπί, ὅστις μάλιστα, μετὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα θάνατον τοῦ χαλίφου, ἐπέτυχε νὰ ἐπαναδιορίσῃ τὸν Γαβριὴλ ὡς ἰατρὸν τοῦ διαδόχου ἐκείνου Ἐλ-Ἀμίν. Ἐκθρονισθέντος τούτου ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ Ἐλ-Μαμούν, ὁ Γαβριὴλ ἐφυλακίσθη, μέχρις οὗ, θεραπεύσας τὸν βεζύρην ἐκεῖνον, ἔτυχε χάριτος παρὰ τοῦ χαλίφου. Ἀλλὰ καὶ πάλιν ἐστερήθη τῆς εὐνοίας τούτου καὶ ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ αὐτοῦ Μιχαήλ· ἀλλὰ καὶ πάλιν ἐπιτυχὼν νὰ θεραπεύσῃ τὸν Ἀλ-Μαμοὺν ἐκ νόσου, ἐπανέκτησε τὰ ὑπάρχοντα καὶ τὰ ἀξιώματα αὐτοῦ. Τῷ 828 ἀπέθανε καὶ ἐτάφη μετὰ πολλῶν τιμῶν ἐν τῷ μοναστηρίῳ τοῦ Ἁγίου Σεργίου. Ἔγραψε διάφορα συγγράμματα, ἐν οἷς: «Περὶ σιτίων καὶ ποτῶν» πρὸς Ἀλ Μαμούν, «Εἰσαγωγὴν εἰς τὴν λογικήν» (τὴν ἰατρικὴν κατὰ Wüstenfeld) καὶ «πανδέκτας ἰατρικούς».

Ἰατρὸς ἐπίσης ὑπῆρξε καὶ ὁ ἀδελφὸς τούτου *Τζωρτζῆς μπὲν Μπαχτίσουα* ὡς καὶ ὁ υἱὸς τοῦ Γαβριὴλ *Μπαχτίσουα*, ὅστις τῷ 829 μ. Χ. ἐγένετο ἰατρὸς τοῦ Ἀλ Μαμούν, ὃν καὶ ἠκολούθησε κατὰ τὰς στρατείας αὐτοῦ εἰς Ἑλλάδα. Μέχρι τοῦ 858 ἐτύγχανε τῆς αὐτῆς τιμῆς παρὰ τοῖς διαδόχοις τοῦ χαλίφου τούτου, τέλος ὅμως ἐξωρίσθη δημευθείσης τῆς περιουσίας αὐτοῦ. Ἀπέθανε τῷ 870.

Ὁ υἱὸς τούτου *Γιαχγία* (Ἰωάννης) καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Μπαχτίσουα* ὑπῆρξαν καὶ οὗτοι ἰατροί. Εἰς τὴν οἰκογένειαν ταύτην ἀνῆκον καὶ ὁ *Ὀβειδαλᾶ Μπὲν Τζαβρὶλ μπὲν Μπαχτίσουα*, ἰατρὸς τοῦ χαλίφου ἐλ-Μοτάκι (919 μ. Χ.), συγγραφεὺς συνόψεως ἰατρικῆς («Hortus medicus») εἰς 50 κεφάλαια, καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Γαβριὴλ* (+1006), ἰατρὸς τοῦ σουλτάνου Ἀδάδ, διευθυντὴς τοῦ ἰδρυθέντος ὑπ' αὐτοῦ ἐν Βαγδάτῃ νοσοκομείου καὶ συγγραφεὺς πολλῶν ἰατρικῶν ἔργων, ἐν οἷς «Πανδέκται ἰατρικοί», «Περὶ ὄσων τῶν ὀφθαλμῶν» κτλ. ΑΡ. Π. Κ.

**Μπαχτκιὰν** [*Γεωγρ.*]. Ἁλμυρὰ λίμνη ἐν Περσίᾳ μεταξὺ τοῦ Φὰρς καὶ τοῦ Κιρμάν. Ἔχει μῆκος 80 χλμ., περίμετρον δὲ 240 χλμ. Ἂν καὶ εἰσδέχεται πολλοὺς ποταμούς, τὰ ὕδατά της εἶναι ἁλμυρά. Ἔχει καὶ πολλὰς ἀκατοικήτους νησῖδας. Ν. Μ.

**Μπαχτσὲ** [*Γεωγρ.*]. Κωμόπολις, πρωτεύουσα τῆς διοικήσεως Μπουλανὶκ τοῦ νομοῦ Ἀδάνων. Κάτ. 3.500, ὧν τὸ τρίτον Ἕλληνες πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς. Πλησίον τοῦ Μπαχτσὲ ὑπάρχει μικρὰ τις λίμνη, ἣν οἱ Τοῦρκοι καλοῦσι *Γκιαοὺρ γκιόλ*.

**Μπαχτσετζὶκ** [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Μ. Ἀσίας ἐν τῷ βιλαετίῳ Κοτζὰ-Ἐλί, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης (κόλπος τῆς Νικομηδείας). Ἔχει ὁμώνυμον ἐπὶ τῆς παραλίας ἐπίνειον, κείμενον ΒΔ. καὶ κατέναντι τοῦ λιμένος Νικομηδείας, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει 2 μίλλια καὶ συγκοινωνεῖ διὰ λέμβων. Κάτ. 10.000, πάντες σχεδὸν Ἀρμένιοι Γρηγοριανοί. — Ω.

**Μπαχτσῆ-Σεραΐ** [*Γεωγρ.*]. Ρωσικὴ πόλις ἐν Κριμαίᾳ, παλαιὰ πρωτεύουσα τῶν Ταττάρων χανῶν. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 32 χλμ. τῆς Συμφεροπόλεως ἐπὶ πεδιάδος βαθείας καὶ μακρᾶς, τῆς ὁποίας κατέχει σχεδὸν ὅλον τὸ μῆκος, διαιρεῖται δὲ εἰς δύο μέρη ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Τσουρουκσοῦ. Κάτ. 13.000, ἐκ τῶν ὁποίων ἱκανοὶ εἶναι Ἕλληνες, ἐγκατασταθέντες ἀπὸ τοῦ 1786, πολλοὶ Ἑβραῖοι καὶ Κοραΐται. Ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἐχρησίμευσεν ὡς πρωτεύουσα τῶν χανῶν τῆς Κριμαίας καὶ διετέλεσε τοιαύτη μέχρι τῆς καταλήψεως αὐτῆς ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Ποτέμκιν, παρέμεινε δὲ καὶ μετὰ τὴν ῥωσσικὴν κατάκτησιν ἡ προσφιλὴς πόλις τῶν Ταττάρων. Εἰς τὴν πόλιν ταύτην ἀκμάζει μεγάλη βιομηχανία μαροκινῶν δερμάτων, ἐριουργίας καὶ μεταξουργίας, ὑπάρχουσι δὲ μεγάλαι ἀμπελοφυτεῖαι καὶ παράγεται ἐξαίρετος οἶνος. Ἀριθμοῦνται τρεῖς ὀρθόδοξοι ἐκκλησίαι, ἐξ ὧν ἡ μία ἑλληνική, τριάκοντα πέντε τεμένη καὶ μία συναγωγή. Τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον τῶν χανῶν, ἄριστα συντηρούμενον καὶ ἐπιπλωμένον κατ' ἀνατολικὸν ῥυθμόν, εὑρίσκεται εἰς τὸ κέντρον τῆς πόλεως καὶ παραβάλλεται πρὸς τὴν Ἀλάμπραν, περικλείει δὲ πολυαρίθμους πίδακας καὶ κρήνας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ «Κρήνη τῶν κλαυθμῶν», ἀπαθανατισθεῖσα ὑπὸ τοῦ Πούσκιν. Θ. Β.

**Μπαχτσιβάνης,** ***Τριαντάφυλλος***. Ἀγωνιστὴς ἐξ Αἴνου τῆς Θρᾴκης, φονευθεὶς κατὰ τὴν κατὰ τοῦ Ὀμὲρ-μπέη, διοικητοῦ τῆς Καρύστου, ἐκστρατείαν τοῦ Φαβιέρου. Α. Θ. Σ.

**Μπγε—,** ***Μπγια—,*** ***Μπγιο—*** (Bje—, Bja—, Bjo—). Τὰ οὕτως ἀρχόμενα σλαβικὰ καὶ σκανδιναυϊκὰ ὀνόματα βλ. εἰς *Μπιε—, Μπια—, Μπιο—*.

**Μπεαὶν** (Behaine), ***Πέτρος***. Γάλλος ἱεραπόστολος (1741—1799). Ἀπὸ τοῦ 1765 δρῶν ὡς ἱεραπόστολος, ἐγένετο τῷ 1770 ἐπίσκοπος in partibus τοῦ Adran καὶ βοηθὸς τοῦ ἐπισκόπου τοῦ Canathe, ὃν διεδέχθη τῷ 1771. Παρασχὼν τῷ 1774 ἐν Cambodge ἄσυλον τῷ ἡγεμόνι Nguyan-Ahn, καταδιωκομένῳ ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν ὑπηκόων του, διωρίσθη ὑπ' αὐτοῦ ὑπερισχύσαντος πρῶτος ὑπουργός του. Ὅτε δέ, τῷ 1783, ὁ ἡγεμὼν οὗτος δι' ἐπαναστάσεως ἔχασε τὸν θρόνον του, ὁ Μπεαὶν ἦλθε (1787) εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπως ζητήσῃ τὴν βοήθειαν τοῦ Λουδοβίκου τοῦ ΙΣΤ' ὑπὲρ αὐτοῦ. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος συνήφθη, τῇ μεσολαβήσει τοῦ Μπεαίν, συνθήκη μεταξὺ τοῦ διωκομένου βασιλέως καὶ τῆς Γαλλίας, καθ' ἣν ἡ μὲν Γαλλία θὰ ἔστελλε στρατὸν πρὸς ὑποστήριξίν του, οὗτος δὲ ἀποκαθιστάμενος ἐν τῷ θρόνῳ του θὰ παρεῖχεν εἰς τὴν Γαλλίαν ἐμπορικὴν ἐλευθερίαν καί τινα ἔδαφη ἐκ τῆς χώρας του. Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς συνθήκης ταύτης ἐδόθη ἐντολὴ εἰς τὸν Γάλλον διοικητὴν τῶν μερῶν ἐκείνων, ὅπως παράσχῃ εἰς τὸν Μπεαὶν σῶμα στρατοῦ. Τοῦτο ἡτοιμάσθη τῷ 1789, ἐπὶ κεφαλῆς δ' αὐτοῦ τεθεὶς ὁ Μπεαὶν ἠγωνίσθη μέχρι τοῦ 1793, ὅτε, κατατροπωθέντων τῶν ἐπαναστατῶν, ἤρχισε νὰ διοργανοῖ τὴν χώραν ἐπὶ τῇ βάσει τῆς συνθήκης. Τὸ διοργανωτικὸν τοῦτο ἔργον τοῦ Μπεαὶν διέκοψεν ὁ θάνατος αὐτοῦ. Ὁ τάφος αὐτοῦ ἐν Saigon ἐκηρύχθη ὡς ἐθνικὸν κτῆμα μετὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ναπολέοντος Γ' εἰς τὴν Κοχιγχίναν. Κ. Ι. Δ.

**Μπέαιτχυ** (Beöthy). Ἐπίσημος οὐγγρικὴ οἰκογένεια, ἧς κυριώτερα μέλη ὑπῆρξαν:

—1) ***Εὐγένιος*** (Ödön). Πολιτικὸς καὶ στρατιωτικὸς (1796—1854). Μέλος τῆς διαίτης (1832—1836), ἠγωνίσθη ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τῆς συνειδήσεως καὶ τῆς ἐλευθέρας ἀσκήσεως τῆς λατρείας.

—2) ***Σιγισμόνδος***. Δραματικὸς συγγραφεὺς (1819—1896). Ἐκ τῶν ἔργων του ἰδιαιτέραν ἐπιτυχίαν ἔσχον αἱ κωμῳδίαι: «Στέφανος Κόμπορλ» (1840) καὶ «Βουλευτικαὶ ἐκλογαί» (1843).

—3) ***Ζόλταν*** (Zoltán). Ποιητής, μυθιστοριογράφος καὶ κριτικὸς (1848—1922), υἱὸς τοῦ προηγου-

Digitized by Google

μένου. Τῷ 1882 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βουδαπέστης καὶ ταυτοχρόνως ἐξελέγη μέλος τῆς οὐγγρικῆς Ἀκαδημίας. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Διηγήματα» (1871), «Λὲξ Ράσκαϊ» (1881), «Τὸ τραγικὸν» (1885), «Περὶ τῆς οὐγγρικῆς φιλολογίας», ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς οὐγγρικῆς Ἀκαδημίας, «Ἱστορία τῆς οὐγγρικῆς πεζογραφίας», «Οὐγγρικὰ βαλλίσματα», «Σκοποὶ καὶ μέσα ἐν τῇ ποιήσει» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπεάουαρ** (Beawar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρετανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ διαμερίσματι Ἄτζμηρ-Μερβάρα τῆς Ρατζπουτάνας, παρὰ τοὺς πρόποδας τῶν ὀρέων Ἀραβάλλι. Κάτ. 21.928. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον ἐμπορίου ἀκατεργάστου βάμβακος. Συνῳκίσθη τῷ 1835 ὑπὸ τοῦ συνταγματάρχου Ντίξον. Μ. Δ. Β.

**Μπέαρ Λαὶκ** (Bear Lake) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη λίμνη τοῦ Καναδᾶ, πρὸς τὸ ΒΔ. αὐτοῦ τμῆμα, ἐν τῷ διαμερίσματι τοῦ Μακκένζι. Ἔχει ἔκτασιν 29.000 τ. χλμ. καὶ σχῆμα ἀκανόνιστον, μετὰ πολλῶν κολπώσεων. Περιβάλλεται ὑπὸ δασῶν καὶ τέμνεται πρὸς τὸ νοτιώτατον αὐτῆς ἄκρον ὑπὸ τοῦ βορείου πολικοῦ κύκλου. Ἔχει κλῖμα δριμύτατον καὶ καλύπτεται κατὰ τὸ πλεῖστον ὑπὸ πάγων καθ' ὅλας τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους. Χύνονται εἰς αὐτὴν πολλοὶ μικροὶ ποταμοί, ἐκ τῆς ΒΔ. δὲ αὐτῆς ἄκρας σχηματίζεται ὁ ποταμὸς *Μπέαρ Λαὶκ Ρίβερ*, διὰ τοῦ ὁποίου τὰ ὕδατα τῆς λίμνης χύνονται εἰς τὸν ποταμὸν Μακκένζι. Ὠνομάσθη οὕτως (ἤτοι *Μεγάλη Λίμνη τῶν Ἄρκτων*) ὑπὸ τῶν Ἄγγλων διὰ τὴν ἐν αὐτῇ ἀπαντωμένων ἀφθονίαν ἄρκτων. Μ. Δ. Β.

— **Μπέαρ Ρίβερ** (Bear River) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν ποταμῶν τῆς Ἀμερικῆς, ἐκ τῶν ὁποίων κυριώτεροι εἶναι: —1) Ὁ καλούμενος καὶ *Μπέαρ-Λαὶκ-Ρίβερ*. Ποταμὸς τοῦ Καναδᾶ ἐν τῷ διαμερίσματι τοῦ Μακκένζι, σχηματιζόμενος διὰ τῆς ἐκροῆς τῶν ὑδάτων τῆς λίμνης Μπέαρ Λαὶκ, ἐξ ἧς λαμβάνει καὶ τὸ ὄνομα. Χύνεται εἰς τὸν ποταμὸν Μακκένζι καὶ ἔχει μῆκος 300 χλμ. καὶ πλάτος 120. —2) Ποταμὸς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. Πηγάζει ἐκ τῆς ὀροσειρᾶς Οὐάζατς τῆς πολιτείας Γουαϊόμινγκ καὶ κατευθυνόμενος πρὸς Β. εἰσέρχεται εἰς τὴν πολιτείαν Ἀϊντάχο καὶ κατόπιν εἰς τὴν πολιτείαν Γιούτα, χυνόμενος εἰς τὴν μεγάλην Ἁλμυρὰν Λίμνην μετὰ ροῦν 600 χλμ. Μ. Δ. Β.

**Μπέαριν** (Baring). Μεγάλη καὶ ὀνομαστὴ οἰκογένεια Ἄγγλων τραπεζιτῶν, ἐμπόρων καὶ πολιτικῶν, καταγομένη ἐκ τοῦ Γερμανοῦ πάστορος *Ἰωάννου Μπέαριν* ἐκ Βρέμης, ὁ ὁποῖος ἐγκατεστάθη τῷ 1717 ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἵδρυσε παρὰ τὸ Ἔξετερ μικρὰν βιομηχανίαν ὑφασμάτων. Οἱ δύο υἱοὶ αὐτοῦ *Φραγκίσκος* καὶ *Ἰωάννης* μετέφερον κατόπιν τὸ κέντρον τῶν ἐργασιῶν τοῦ πατρός των εἰς τὸ Λονδῖνον, ὅπου τῷ 1770 ἵδρυσαν τὸν περίφημον τραπεζικὸν οἶκον «Baring Brothers». Ὁ σὲρ Φραγκίσκος Μπέαριν (1740—1810) ὑπῆρξε διευθυντὴς τῆς ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν καὶ ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ Πίττ, τῆς πολιτικῆς τοῦ ὁποίου ἦτο ἔνθερμος ὀπαδός, διὰ τοῦ τίτλου τοῦ βαρωνέττου. Ἦτο ἐκ τῶν μεγαλυτέρων τραπεζιτῶν τῆς ἐποχῆς του, κατὰ δὲ τὸν θάνατόν του ἡ περιουσία του ὑπελογίζετο εἰς ἑπτὰ ἑκατομμύρια λιρῶν Ἀγγλίας. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ τῆς τραπέζης τῆς Ἀγγλίας» (1797). Ὁ πρεσβύτερος υἱὸς αὐτοῦ *Θωμᾶς* (1772—1848) κατεγίνετο ὄχι μόνον εἰς τραπεζικὰς ἐργασίας, ἀλλὰ καὶ εἰς τὰς τέχνας καὶ τὰ γράμματα καὶ εἶναι γνωστὸς διὰ τὴν πολύτιμον συλλογήν του πινάκων ζωγραφικῆς, ὁ δὲ νεώτερος, *Ἀλέξανδρος* (1773—1848), διεδέχθη τὸν πατέρα του ἐν τῇ διευθύνσει τοῦ τραπεζικοῦ οἴκου τῷ 1810. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ τῷ 1835 ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου, ἐπὶ τῆς πρωθυπουργίας τοῦ Πήλ, ὁ ὁποῖος ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ λόρδου Ἄσμπαρτον. Τῷ 1842 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Βασιγκτῶνι καὶ ἀνέλαβε τὴν διεξαγωγὴν τῶν διαπραγματεύσεων μετὰ τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς πρὸς διευθέτησιν τοῦ ἀναφυέντος μεταξὺ αὐτῶν καὶ τοῦ Καναδᾶ συνοριακοῦ ζητήματος καὶ τινων ἄλλων ζητημάτων, ἐξ ὧν ἠπειλεῖτο σοβαρῶς ἡ ῥῆξις τῶν σχέσεων μεταξὺ Ἡν. Πολιτειῶν καὶ Μεγάλης Βρεττανίας. Ἡ ὑπογραφεῖσα συνθήκη, τὸν Αὔγουστον τοῦ 1842, καλουμένη συνθήκη τοῦ Ἄσμπαρτον, κριθεῖσα εὐνοϊκωτάτη διὰ τὴν Ἀγγλίαν, προεκάλεσε τὴν ψήφισιν ὑπὸ τῆς βρεττανικῆς βουλῆς ψηφίσματος ἐπαίνου καὶ συγχαρητηρίων πρὸς τὸν Ἀλέξανδρον Μπέαριν. Τῷ 1844, κατὰ τὴν δημιουργηθεῖσαν τότε οἰκονομικὴν κρίσιν, ἐπῆλθε διαφωνία αὐτοῦ πρὸς τὸν Πήλ, συνεπείᾳ τῆς ψηφίσεως τοῦ νόμου περὶ μεταρρυθμίσεως τοῦ καταστατικοῦ τῆς Τραπέζης τῆς Ἀγγλίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Ἐμπορικὴ καὶ τραπεζικὴ κρίσις», κατόπιν τοῦ ὁποίου ὁ Πὴλ ἀπέσυρε τὸ ψηφισθὲν νομοσχέδιον. Ὁ *Φραγκίσκος Τόρνχιλλ Μπέαριν*, υἱὸς τοῦ Θωμᾶ Μπέαριν, ἀνεμίχθη ἐπίσης εἰς τὴν πολιτικὴν (1790—1866) καὶ ἐγένετο βουλευτὴς τῷ 1826 καὶ ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ τῶν Ναυτικῶν, λαβὼν τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου Νόρθμπρουκ. Ὁ *Γουλιέλμος Μπίνγκαμ Μπέαριν* (1799—1864) ἦτο ὀπαδὸς τοῦ Πὴλ καὶ ἐγένετο κατ' ἀρχὰς βουλευτὴς ἐν τῇ βουλῇ τῶν Κοινοτήτων, μετὰ τὸν θάνατον δὲ τοῦ πατρός του Ἀλεξάνδρου Μπέαριν εἰσῆλθε τῷ 1848 εἰς τὴν βουλὴν τῶν Λόρδων καὶ διετέλεσε πρόεδρος τῆς Βασιλικῆς γεωγραφικῆς ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου. Ὁ *Θωμᾶς* (1800—1873) διετέλεσε βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1844 μέχρι τοῦ θανάτου του καὶ ἀφῆκε μεγάλην περιουσίαν. Ὁ *Θωμᾶς-Γεώργιος* (1826—1904) ἦτο υἱὸς τοῦ Φραγκίσκου Τόρνχιλλ Μπέαριν καὶ ἐγένετο πρῶτος λόρδος του Νόρθμπρουκ. Ἀπὸ τοῦ 1857—1858 καὶ 1880—1885 ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν, τῷ 1859 ὑπουργὸς τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῷ 1861 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν καὶ κατόπιν ἁρμοστὴς ἐν Αἰγύπτῳ. Ὁ *σὲρ Ἔβελιν Μπέαριν* (1841—1917) ἐγένετο κατόπιν λόρδος *Κρόμερ* (βλ. λ.). Μ. Δ. Β.

**Μπεάρν** (Béarn, λατιν. Pagus Bearnensis ἢ Beneharnum) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς ΝΔ. Γαλλίας, ἐκτεινομένη πρὸς Β. τῶν Πυρηναίων καὶ περιλαμβάνουσα τὰς κοιλάδας Ὀσσὼ καὶ Ἄσπ καὶ τὸ μεταξὺ Ὀρτὲζ καὶ Πὼ ἐκτεινόμενον ὑψίπεδον. Πρωτεύουσα τὸ *Πώ*.

Ἡ χώρα αὕτη ὑπήγετο κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους εἰς τὴν Ἀκουϊτανίαν, ὑπέστη δὲ πολλὰς δῃώσεις κατὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Βανδήλων, τῶν Βησιγότθων καὶ τῶν Σαρακηνῶν. Ἀπὸ τοῦ ΙΑ' αἰῶνος ἀναφέρεται ὡς κληρονομικὴ ὑποκομιτεία, περιελθοῦσα διαδοχικῶς εἰς τοὺς οἴκους Γκαμπαρὲ, Φουὰ καὶ Ἀλμπρέ. Τῷ 1620 προσηρτήθη εἰς τὴν Γαλλίαν ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ', διετήρησεν ὅμως μέχρι τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως τὸ κοινοβούλιον τῆς Ναβάρρας, συνεδριάζον ἐν Πώ. Χ. Δ.

**Μπέβαν** (Bevan), ***Ἐντγουὶν-Ροβέρτος***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1870. Εἶναι ἐπίτιμον μέλος τοῦ Νέου Κολλεγίου τῆς Ὀξφόρδης, ἐπίτιμος διδάκτωρ τῆς φιλολογίας καὶ νομικῆς, ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας καὶ ἱστορίας ἐν τῷ βασιλικῷ κολλεγίῳ τοῦ Λονδίνου. Τῷ 1894 διετέλεσε μέλος τῆς ἐν Ἀθήναις ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, τῷ δὲ 1895 εἰργάσθη εἰς τὰς ἀνασκαφὰς τῆς Ἀλεξανδρείας ἐν Αἰγύπτῳ. Μετέφρασε τὸν «Προμηθέα δεσμώτην» καὶ τοὺς «Ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας» τοῦ Αἰσχύλου εἰς στίχους ἀγγλικοὺς καὶ ἔγραψεν: «Ὁ οἶκος τοῦ Σελεύκου» (1902), «Ἡ Ἱερουσαλὴμ ὑπὸ τοὺς ἀρχιερεῖς» (1904), «Ὁ ἐθνισμὸς τῶν Ἰνδῶν» (1913), «Στωϊκοὶ καὶ σκεπτικισταί» (1913), «Ἡ γερμανικὴ σοσιαλδημοκρατία κατὰ τὸν πόλεμον» (1918), «Ἑλληνισμὸς καὶ Χριστιανισμὸς» (1921), «Μεταγενεστέρα ἑλληνικὴ θρησκεία» (1927), «Ἱστορία τῆς Αἰγύπτου ὑπὸ τοὺς Πτολεμαίους» κτλ. Α. Δ.

**Μπέβερβεϊκ** (Beverwijk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ζάανταμ, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἄαρλεμ, Χοὺϊτγκεστ. Ἔχει λατομεῖα γρανίτου καὶ ἐργοστάσια ἐκλεκτοῦ τυροῦ. Παρὰ τὴν πόλιν κεῖνται τὰ λουτρὰ Βέϊκ-ἀαν-Ζέε. Κάτ. 5.800. Χ. Δ.

**Μπεβερὲν** (Beveren) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Φλάνδρᾳ, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἀμβέρσης—Γάνδης· κάτοικοι 11.623. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον ἐμπορίου τῶν γεωργικῶν εἰδῶν τῆς περιφερείας καὶ ἔχει ὑφαντουργίαν καὶ βυρσοδεψίαν. Ἤκμασε κατὰ τὸν Ι' αἰῶνα, σῴζονται δὲ ἐν αὐτῇ δύο φρούρια. —Π.

**Μπεβερίνι** (Beverini), ***Βαρθολομαῖος***. Ἰταλὸς συγγραφεὺς καὶ κληρικὸς (1629—1686). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς θεολογίας καὶ τῆς ρητορικῆς καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Στίχοι» (1654), «Θρησκευτικοὶ λόγοι» (1658), «Σύστημα μέτρων καὶ σταθμῶν» (1711) καὶ ἔμμετρον μετάφρασιν τῆς Αἰνειάδος. Μ. Δ. Β.

**Μπέβεριτζ** (Beveridge), ***Ἀλβέρτος-Ἰερεμίας***. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1862—1927). Κατήγετο ἐκ ταπεινῆς οἰκογενείας γεωργῶν καὶ κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν μετῆλθε διάφορα χειρωνακτικὰ ἐπαγγέλματα, συγχρόνως ὅμως κατεγίνετο εἰς μελέτας καὶ κατώρθωσεν ἐν τέλει νὰ λάβῃ τὸ δίπλωμα δικηγόρου. Ἀναδειχθεὶς ταχέως εἰς τὸ ἐπάγγελμα τοῦτο, ἀνεμίχθη κατόπιν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ βραδύτερον γερουσιαστής, διατελέσας τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἐθεωρεῖτο ὡς εἷς τῶν ἀρχηγῶν τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος καὶ ἐκ τῶν μᾶλλον ἐξεχουσῶν πολιτικῶν φυσιογνωμιῶν τῆς Ἀμερικῆς. Τῷ 1912 ἀνέλαβε μετὰ τοῦ Ρούσβελτ τὴν ὀργάνωσιν τοῦ προοδευτικοῦ κόμματος, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν δὲ τῆς προσπαθείας ἐκείνης ἔπαυσε πλέον νὰ ἀναμιγνύεται ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ ρωσικὴ προέλασις» (1903), «Οἱ νέοι καὶ ὁ κόσμος» (1905), «Οἱ Ἀμερικανοὶ τῆς σήμερον καὶ τῆς αὔριον» (1908), «Ἡ ἀόρατος κυβέρνησις» (1912), «Τί κρύπτεται ὄπισθεν τοῦ πολέμου» (1915), «Ὁ βίος τοῦ Τζὼν Μάρσαλλ» (1916), «Τὸ κράτος καὶ τὸ ἔθνος» (1924), «Ἡ τέχνη τοῦ ὁμιλεῖν δημοσίᾳ» (1924) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπέβερλαντ** (Beverland), ***Ἀδριανός***. Ὁλλανδὸς συγγραφεὺς (1654—1712). Λόγῳ τοῦ ἔργου του «Τὸ προπατορικὸν ἁμάρτημα», εἰς τὸ ὁποῖον ἐζήτησε νὰ καταδείξῃ ὅτι τὸ ἁμάρτημα τοῦ Ἀδὰμ ἦτο ἡ μετὰ τῆς Εὔας σαρκικὴ σχέσις, ὑπέστη πολλὰς καταδιώξεις καὶ ἐξωρίσθη ἐκ τῆς πατρίδος του καταφυγὼν εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν ἐν δυστυχίᾳ. Ἔγραψε προσέτι: «Peccatum originale» (1678), «Vox clamantis in deserto, De stolatae virginatis jure lucubratio academica» (1680), «De Prostitutis veterum» καὶ «De Fornicatione cavenda admonitio» (1697). —Π.

**Μπέβερλυ** (Beverley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης, ἐπικοινωνοῦσα διὰ διώρυγος μετὰ τοῦ ποταμοῦ Χούλ. Κάτ. 13.469. Κεῖται ἐπὶ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἔχει βυρσοδεψίαν, χημικὰς βιομηχανίας, μηχανουργίαν καὶ ζωηρότατον ἐμπόριον, ἰδίως σιτηρῶν. Εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει σπουδαιοτάτους διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν των γοτθικοὺς ναούς, τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου (ΙΓ' αἰὼν) καὶ τῆς Παναγίας (ΙΕ' αἰών). Ἤκμαζεν ὡς ἐμπορικὸν κέντρον καθ' ὅλον τὸν μεσαίωνα. —Π.

— **Μπέβερλυ** (Beverly) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἐπαρχίας Ἔσσεξ τῆς πολιτείας Μασσαχουσέττης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν· κάτ. 27.000. Κεῖται ἐπὶ νησῖδος κατέναντι τοῦ Μάρμπλ Χὴντ, συγκοινωνεῖ μετὰ τῆς Βοστώνης (18 μιλ.), καὶ τοῦ Μαὶν σιδηροδρομικῶς καὶ εἶναι πολυσύχναστον θέρετρον. Ἔχει ἀκμαίαν ὑποδηματοποιίαν, ἁλιείαν καὶ διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον. —Π.

**Μπέβερλυ** (Feverley), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος θεολόγος, ἀποθανὼν τῷ 721. Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ, ἐγένετο ἀββᾶς τῆς μονῆς τῆς Ἁγίας Χίλδας, εἶτα δὲ ἐπίσκοπος τοῦ Χέξαν (684) καὶ ἀρχιεπίσκοπος τῆς Ὑόρκης (705) καὶ ἵδρυσε τὸ σεμινάριον εἰς Μπέβερλυ τῆς Ὑόρκης (704), ἔνθα ἀπεσύρθη. Ἡ μνήμη του ἑορτάζεται ἀποφάσει τῆς συνόδου τοῦ Λονδίνου (1416). Εἰς αὐτὸν ἀποδίδονται: «Homiliae in Evangelia», «Pro Luca exponendo», «Epistolae ad Hildam abbatissam», «Epistolae ad Herebaldum Andenum et Bertinum». —Π.

**Μπέβερνινγκ** (Beverningk), ***Ἱερώνυμος φὰν***—. Ὁλλανδὸς βοτανικὸς καὶ πολιτικὸς (1614—1690). Διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ πανεπιστημίου Λέϋντεν καὶ ἔγραψε «Περὶ σπανίων φυτῶν». Τῷ 1654 ἀντεπροσώπευσε τὴν Ὁλλανδίαν κατὰ τὴν σύναψιν καὶ ὑπογραφὴν τῆς εἰρήνης μετὰ τῆς Ἀγγλίας. Ὑπῆρξεν ὡσαύτως μέλος τῆς ὁλλανδικῆς ἀντιπροσωπείας, ἡ ὁποία διεπραγματεύθη καὶ συνῆψε τὴν μετὰ τῶν Γάλλων εἰρήνην καὶ ἐμπορικὴν σύμβασιν τοῦ ἔτους 1677. Γ. Ι. Β.

**Μπεγάκης**, ***Μεχμέτ***. Τουρκοκρὴς ἐκ Ρεθύμνης, ἀρχηγὸς σώματος 150 ἀνδρῶν κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821. Ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν κατά τινα σύγκρουσιν παρὰ τὴν θέσιν Μοναχὴ Ἐλιά, μετὰ 30 ἐκ τῶν ἀνδρῶν του. ΕΡ. Μ.

**Μπεγγάζη** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Βεγγάζη*.

**Μπεγγάλη**, ἢ ***Μπεγκὰλ*** (Bengale) *[Γεωγρ.]*. Χώρα καὶ κόλπος τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Βεγγάλη*).

**μπεγεντῆ**. Ὄνομα φαγητοῦ παρασκευαζομένου ἀπὸ μελιτζάνες. Τὸ πλῆρες ὄνομα αὐτοῦ εἶναι *χουνγκιὰρ μπεγεντῆ* (=αὐτὸ ποῦ ἤρεσεν εἰς τὸν βασιλέα). Ν. Μ.

**μπεγεντίζω**· δημοτ., ἐκτιμῶ, ἐπιδοκιμάζω, ἀποδέχομαι· || ἐπιθυμῶ, ὀρέγομαι (τουρκ. begenmek, ἐκ τοῦ ἀορ. begentim καὶ τῆς καταλ. *-ίζω*).

**Μπέγια** (Beja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πορτογαλίας (βλ. λ. *Μπέζα*).

**Μπεγιὰζ *μπουρνοῦ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Προποντίδος (πλάτ. 40°38' Β., μῆκ. 27°45 1/2 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara) ἀνατολικὴ ἐσχατιὰ τῆς Προκονήσου. Ἄντικρυ τοῦ ἀκρωτηρίου εἰς ἀπόστασιν ἡμίσεος μιλλίου ὁ φάρος τῆς νησῖδος Φενὰρ ἀντασσί. Σ. Ε. Λ.

**μπεγιάζι** (τό). Εἶδος σαλάτας ἀπὸ φασόλια νερόβραστα μὲ ψιλοκομμένο κρεμμύδι. Λέγεται καὶ *πεγιάζι* ἢ *πιάζι*. Ν. Μ.

**Μπεγιουκὰλ** (Bejucal) *[Γεωγρ.]*. Μεσόγειος πόλις τῆς Α. Κούβας εἰς ἀπόστασιν 26 χλμ. τῆς Ἀβάνας. Κάτ. 6.239. Εἶναι σπουδαιότατον σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ διεξάγει ἐμπόριον καπνοῦ, ὀπωρῶν καὶ ἀσφάλτου. —Π.

**μπεγίρι** (τό)· ἰδιωματ., ἵππος, ἄλογον.

**Μπεγκ—** (Benk—)· βλ. λ. *Μπενκ—*.

**Μπέγκα** (Bega), ***Κάρολος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1620—1664). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἀδριανῷ βὰν Ὀστάντε καὶ διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου. Ἡ τέχνη του διακρίνεται διὰ τὴν ἀκρίβειαν εἰς τὸ σχέ

Digitized by Google

διον καὶ τὴν λεπτότητα εἰς τὴν καθόλου ἐξεγρασίαν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Ἀγροτικὴ συναυλία*», «*Ἡ προσευχὴ μετὰ τὸ γεῦμα*» (Βασιλικὸν μουσεῖον Ἄμστερνταμ), «*Χωρικοὶ εἰς καπηλεῖον*» (Πινακοθήκη Μονάχου), «*Ἀγροτικὸν ἐσωτερικὸν*» (Λοῦβρον). Ἕτερα ἔργα τοῦ Μπέγκα ἀπόκεινται ἐν Δρέσδῃ, Βερολίνῳ, Λένινγκραντ κλπ. Ὡς χαράκτης ὁ καλλιτέχνης οὗτος κατέλιπε τριάκοντα πέντε ἔργα λίαν ἀξιόλογα. Ι. Μ. Π.

**Μπεγκαρέλλι** (Begarelli), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς γλύπτης (1479 — 1565). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Γκουΐντο Ματζόνι καὶ ἐξετέλεσε πολυπληθῆ πλαστικὰ ἔργα εἰς τοὺς ναοὺς τῆς γενετείρας του Μοδένης, τῆς Πάρμας, τῆς Μάντουας καὶ ἄλλων ἰταλικῶν πόλεων. Ἡ τέχνη του εἶναι πλήρης ἁρμονίας καὶ χάριτος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσεται «*Ὁ Χριστὸς εἰς τὸν τάφον*» ἐν Μοδένῃ. Ὡς ἀξιόλογος γλύπτης μνημονεύεται καὶ ὁ ἀνεψιὸς τοῦ καλλιτέχνου τούτου *Λουδοβῖκος Μπεγκαρέλλι*. Ι. Μ. Π.

**Μπέγκας** (Begas), ***Ἀδαλβέρτος-Φραγκῖσκος-Εὐγένιος***. Γερμανὸς ζωγράφος (1836—1883) υἱὸς τοῦ Καρόλου Μπέγκας τοῦ πρεσβυτέρου. Ἐσπούδασε τὴν χαρακτικὴν ἐν τῇ Βερολινείῳ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν τεχνῶν καὶ ἐν Παρισίοις, βραδύτερον ὅμως κατέλιπε τὴν τέχνην ταύτην καὶ ἀφιερώθη εἰς τὴν ζωγραφικήν. Ἔζησεν ἐν Βαϊμάρῃ καὶ Βερολίνῳ, ἐξεπόνησε δὲ πολυπληθῆ ἀντίγραφα πινάκων τῶν μεγάλων, Ἰταλῶν ἰδίᾳ, διδασκάλων τῆς Ἀναγεννήσεως. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων πρωτοτύπων του ἔργων τάσσονται: «*Μητέρα καὶ παιδί*», «*Ὁ Ἔρως εὑρίσκων τὴν Ψυχήν*», «*Ἡ ἀνάστασις τοῦ Χριστοῦ*» καὶ τινες προσωπογραφίαι. Ι. Μ. Π.

— **Μπέγκας** (Begas), ***Κάρολος***, ὁ ἐπιλεγόμενος *πρεσβύτερος*. Γερμανὸς ζωγράφος (1794—1854). Ἐμαθήτευσεν ἐν Μπὸνν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Philipart κατ' ἀρχάς, μετὰ ταῦτα δ' ἐν Παρισίοις εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Γκρό. Ἑλκύσας τὴν προσοχὴν τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας ἔλαβε παρ' αὐτοῦ γενναίαν ἐπιχορήγησιν. Τῷ 1822 μετέβη εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἔνθα ὑπέστη βαθεῖαν ἐπίδρασιν ἀπὸ τὸν ἰδεαλισμὸν τοῦ Ὄβερμπεκ καὶ τῶν ὀπαδῶν του. Ἀπὸ τοῦ 1825 διέμεινεν ἐν Βερολίνῳ ὡς αὐλικὸς ζωγράφος τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας, καθηγητὴς καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ἐξετέλεσε πολυπληθεῖς ἐλαιογραφίας (θρησκευτικαὶ συνθέσεις καὶ προσωπογραφίαι) καὶ ὑδατογραφίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Ὁ Χριστὸς εἰς τὸν κῆπον τῶν Ἐλαιῶν*», «*Ἡ ἀνάστασις τοῦ Χριστοῦ*», «*Ἡ μεταμόρφωσις τοῦ Χριστοῦ*», «*Ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὔα πρὸ τοῦ νεκροῦ τοῦ Ἄβελ*» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

— **Μπέγκας** (Begas), ***Κάρολος*** ὁ νεώτερος. Γερμανὸς γλύπτης (1845—1916), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ ἀδελφῷ του Ραϊνόλδῳ, συνεπλήρωσε δὲ τὴν καλλιτεχνικήν του μόρφωσιν ἐν Ἰταλίᾳ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Σάτυρος καὶ Βάκχος*», «*Αἱ ἀδελφαί*» (Ἐθνικὴ Πινακοθήκη Βερολίνου), «*Ἡ νίκη*» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

— **Μπέγκας** (Begas), ***Ὄσκαρ***. Γερμανὸς ζωγράφος (1828—1883), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐταξίδευσε χάριν σπουδῶν εἰς Ἰταλίαν, Γαλλίαν καὶ Ἀγγλίαν, ἐπιστρέψας δ' εἰς Βερολῖνον διέπρεψεν ὡς ζωγράφος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Ἡ συνομιλία*», «*Ἡ ἀποκαθήλωσις*», *Ἡ μάχη τοῦ Χέρμανν ἐντὸς τοῦ Τευτοβουργείου δρυμοῦ*», «*Ἡ ὑποδοχὴ τῶν διαμαρτυρομένων ἐκ μέρους Φρειδερίκου - Γουλιέλμου τοῦ Α΄ ἐν Πότσδαμ*», «*Προσωπογραφία Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου*» κλπ. Ι.Μ.Π.

— **Μπέγκας** (Begas), ***Ραϊνόλδος***. Γερμανὸς γλύπτης (1831—1911), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐμαθήτευσε παρὰ τοῖς Βίχμαν καὶ Ράουχ, ἔζησε δ' ἐπὶ μακρὸν ἐν Ρώμῃ, ἔνθα ἐμελέτησε μετὰ πάθους τὸ ἔργον τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ἀπὸ τοῦ 1860 μέχρι τοῦ 1862 διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ σχολῇ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Βαϊμάρης. Ἐπεξειργάσθη ἰδίως εὐρείας ἱστορικὰς συνθέσεις, ἐν αἷς μετὰ καταπλησσούσης ῥώμης καὶ ἐξόχου ἐντελείας ἐξέφρασε τὰ σφοδρὰ πάθη, τὴν κίνησιν, τὴν ζωὴν καὶ τὴν σκέψιν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Ἡ Ἄγαρ καὶ ὁ Ἰσμαήλ*», «*Ὁ Πὰν παρηγορῶν τὴν ἐγκαταλελειμμένην ψυχήν*», «*Τὸ μνημεῖον τοῦ Σίλλερ*» ἐν Βερολίνῳ, «*Τὸ μνημεῖον τοῦ Φρειδερίκου Γουλιέλμου*», «*Ἡ Ἀφροδίτη παρηγοροῦσα τὸν Ἔρωτα*», «*Ἡ Σωσάννα εἰς τὸ λουτρόν*», «*Κένταυρος καὶ Νύμφη*», «*Ὁ Ἑρμῆς ἁρπάζων τὴν ψυχήν*», αἱ προτομαὶ τοῦ Μόλτκε, τοῦ Γουλιέλμου Α΄ καὶ τοῦ Φρειδερίκου Γ΄, «*τὸ μνημεῖον τοῦ Χοῦμπολντ*» «*τὸ ἐθνικὸν μνημεῖον Γουλιέλμου τοῦ Α΄*». Τὸ τελευταῖον τοῦτο, ἱδρυθὲν ἐν Στρασβούργῳ, κατεστράφη τῷ 1918 ὑπὸ τῶν Ἀλσατῶν. Ι. Μ. Π.

**Μπέγκλ** (Bègles) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γιρόνδης, κειμένη ἐγγὺς τοῦ Γαρούνα καὶ εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπορντώ. Ἔχει ἐκλεκτοὺς οἴνους. Κάτ. 12.590. Χ. Δ.

**μπεγκούμ** (ἡ) **βεγούμ**). Θηλυκὸν (κατὰ τὸν ἀρχαῖον τουρκικὸν τύπον εἰς *ούμ*) τοῦ *βέης* ἢ *μπέης*. ἡγεμονίς, πριγκίπισσα, ἀρχηγίνα. Τίτλος ἰνδικὸς διδόμενος εἰς τὰς μητέρας, τὰς ἀδελφὰς καὶ τὰς χήρας τῶν Ἰνδῶν ἡγεμόνων. Ν. Μ.

**Μπεγλὲρ μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς τοῦ πρὸς τὸν Εὔξεινον στομίου τοῦ Βοσπόρου (πλάτ. 41° 13΄ 00΄΄ Β., μῆκ. 29° 06΄ 10΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus) μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Καριμπτζὲ -μπουρνοῦ καὶ Παπὰζ - μπουρνοῦ. Εἶναι ἡ *Λιχνιὰς* τῶν ἀρχαίων. Ἀμέσως βορείως αὐτοῦ φερώνυμος ὕφορμος, Begler road εἰς τοὺς ἀγγλικοὺς χάρτας φερόμενος. Σ. Ε. Λ.

**μπεγλεράω**· ἰδιωμ., κινῶ, ἀνακινῶ: εἰς τὴν φρ. «*μπεγλέρα τα*» (σύστασις εἰς τὸν παίκτην ζαριῶν, ὅπως ἀνακινῇ ζωηρῶς ταῦτα).

**Μπέγνα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀρνίσσης (Ὀστρόβου) τῆς ἐπαρχίας Ἐδέσσης τοῦ νομοῦ Πέλλης. Κάτ. (1928) 168. Μετωνομάσθη εἰς Κεδρῶνας. Χ. Δ.

**Μπεγουλάκι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον ἐγγὺς τῶν Πατρῶν, ὑπαγόμενον εἰς τὸν δῆμον Πατρέων τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 510. Χ. Δ.

**Μπεδγιὰ** (οἱ). Λαὸς τῆς Ἀβησσυνίας (βλ. λ. *Βλέμμυες*).

**Μπεδρόνι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀχαΐας χωρίου *Ἀχαϊκὸν* (βλ. λ.).

**Μπέερ** (Beer), ***Γουλιέλμος***. Ἐγεννήθη ἐν Βερολίνῳ τῷ 1797 καὶ ἀπέθανε τῷ 1850. Ἦτο ἀρχικῶς τραπεζίτης καὶ μέλος τῆς πρωσσικῆς βουλῆς, ἀπὸ δὲ τοῦ 1846 ἠσχολήθη εἰς τὴν ἀστρονομίαν, ἱδρύσας ἴδιον ἀστεροσκοπεῖον παρὰ τὸ Βερολῖνον. Κατέγινε κυρίως εἰς τὰς παρατηρήσεις τῆς Σελήνης καὶ ἐξέδωκε διάφορα ἀξιόλογα ἔργα, ὧν κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «*Παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ Ἄρεως*» (1830), λεπτομερὴς χάρτης τῆς σελήνης («Mappa Selenographica», 1830) καὶ «*Γενικὴ καὶ συγκριτικὴ σεληνογραφία*» (1837), ἐν τῇ ὁποίᾳ παρέχει ἐξηγήσεις καὶ σχόλια τοῦ τοπογραφικοῦ χάρτου τῆς Σελήνης. Σ. Π.

**Μπέερεν**, ἢ ***Μπαΐρεν*** (Beeren Island, ἢ Bärenisland=*Ἄρκτων νῆσος*) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ, ἀνακαλυφθεῖσα τὴν 1 Ἰουλίου 1596 ὑπὸ τοῦ Ὁλλανδοῦ Μπάρεντς. Κεῖται πρὸς Ν. τῆς Σπιτσβέργης καὶ πρὸς Β. τῶν νορβηγικῶν παραλίων εἰς 74° 30΄ Β. πλάτ. καὶ 19° Α. μήκ. Γκρήνουϊτς. Ἔχει ἔκτασιν 670 τετρ. χλμ. καὶ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ ὄρος Μίζερυ (536 μ.), χρησιμεύει δὲ ὡς κέντρον τῶν Νορβηγῶν ἁλιέων τῆς Ἀρκτικῆς θαλάσσης. Μέση ἐτησία θερμοκρασία —5° Κ. (Ἰανουάριος—15° Κ., Ἰούλιος+4° Κ.). Ὁ Ἄγγλος θαλασσοπόρος Μπέννετ ὠνόμασεν αὐτὴν *Τσέρι*. Ἀνήκει εἰς τὴν Νορβηγίαν. Χ. Δ.

**Μπεερνάερτ** (Beernaert), ***Αὔγουστος***. Βέλγος πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπερνάρ*).

**Μπέερς** (Van - Beers), ***Ἰωάννης Βὰν*** —. Ὁλλανδὸς ποιητὴς (βλ. λ. *Βὰν Μπέερς Ἰωάννης*).

**Μπὲ - ἐστεράχ** *[Γεωγρ.]*. Ἑβραϊκὴ ὀνομασία τῆς πόλεως *Βοσορὰ* (βλ. λ.).

**Μπέετς** (Beets), ***Νικόλαος***. Ὁλλανδὸς λογοτέχνης (1814—1903). Ἀφοῦ ἐσπούδασε θεολογίαν, διετέλεσεν ἱεροκήρυξ καὶ κατόπιν καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς Ἐκκλησίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Οὐτρέχτης. Τὰ πρῶτά του τραγούδια καὶ διηγήματα: «José» (1834), «Kuser» (1835) καὶ «Guy de Vlaming» (1837), ἀποτελοῦν ἀπομιμήσεις τοῦ Βύρωνος. τὸν ὁποῖον καὶ μετέφρασεν εἰς τὴν ὁλλανδικήν. Ὡς συγγραφεὺς διεκρίθη διὰ τῶν, εἰς πεζόν, θαυμασίων εἰκόνων του ἐκ τῆς ζωῆς: «Camera obscura» (Σκοτεινὸς θάλαμος), τὰς ὁποίας ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Hildebrand (1839, 30ή ἔκδ. 1919). Τὸ ἔργον τοῦτο, τὸ ὁποῖον διακρίνεται διὰ τὴν λεπτότητα τῆς παρατηρήσεως καὶ τὴν ζωηρότητα καὶ πρωτοτυπίαν τοῦ ὕφους, ἀποτελεῖται ἐκ διηγημάτων καὶ περιγραφῶν ὁλλανδικῶν τύπων. Κατόπιν ἔγραψεν ἔργα ἀνήκοντα εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς φιλολογίας, τὴν κριτικὴν καὶ τὴν θεολογίαν. Ὡς ποιητὴς ἐξετιμήθη ὅλως ἐξαιρετικῶς διὰ τὸν ἀριστοτεχνικὸν χειρισμὸν τῆς γλώσσης, καὶ ὡς πεζογράφος κατέστη κλασσικός. Συλλογὴ τῶν ποιητικῶν του ἔργων ἐξεδόθη εἰς 5 τόμους (1866—1891). Γ. Ε. Κ.

**Μπὲζ** (Bèze), ***Θεόδωρος ντὲ***—. Γάλλος καλβινιστὴς (βλ. λ. *Βέζας Θεόδωρος*).

**Μπέζα** (οἱ) (Beja). Ἄθροισμα νομάδων χαμιτικῶν φυλῶν τοῦ Ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδάν. Ἡ χώρα ἐν τῇ ὁποίᾳ κατοικοῦσιν ἐκτείνεται πρὸς Α. μέχρι τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης, πρὸς Δ. μέχρι τοῦ Νείλου, πρὸς Β. μέχρι τῶν συνόρων τῆς Αἰγύπτου καὶ πρὸς Ν. μέχρι τοῦ Ἀτμπάρα καὶ τῶν ἀβησσυνιακῶν συνόρων, μεταξὺ 14° καὶ 15° παραλλήλων Β. πλάτ., καλύπτεται δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον ὑπὸ τῆς ἐρήμου τῆς Νουβίας. Οἱ Μπέζα ὑποδιαιροῦνται εἰς τρεῖς ὁμάδας: α΄) Τοὺς *Μπίσαριν*, συγκεντρωμένους περὶ τὰ αἰγυπτιακὰ σύνορα. β΄) Τοὺς *Χαντεντόα*, οἰκοῦντας πρὸς Ν. καὶ Α. τῶν Μπίσαριν, ἐπὶ τοῦ μεγαλυτέρου μέρους τῆς χώρας, καὶ γ΄) Τοὺς *Μπένι Ἀμέρ*, οἰκοῦντας τὴν παραλίαν τῆς Ἐρυθραίας. Ἐκ τούτων οἱ μὲν Μπίσαριν καὶ Χαντεντόα ὁμιλοῦσι τὴν χαμιτικὴν διάλεκτον Μπεντάβι, οἱ δὲ Μπένι Ἀμπὲρ σημιτικὴν διάλεκτον ὁμοίαν πρὸς τὴν ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Τίγρητος. Οἱ Μπέζα εἶναι ὑψηλοῦ ἀναστήματος, δολιχοκέφαλοι, μὲ κανονικὰ καὶ ὡραῖα χαρακτηριστικά, μὲ δέρμα μελαψὸν ἐρυθρωπὸν καὶ πρόσωπον κανονικὸν φοειδές, καθαροῦ καυκασίου τύπου. Εἶναι Μωαμεθανοὶ τὸ θρήσκευμα, τὰ δὲ ἤθη των ὁμοιάζουν πρὸς τὰ τῶν νομάδων τοῦ Κορδοφάν. Πολλοὶ θεωροῦσιν αὐτοὺς ὡς τοὺς *Βλέμμυας* τοῦ Στράβωνος ἢ τοὺς *Μακροβίους* τοῦ Ἡροδότου ἢ τοὺς *Αἰθίοπας* τοῦ ἰδίου, οἵτινες ἔκτισαν τὴν Μερόην. Χ. Δ.

**μπέζα** (ἡ)· δημώδ. ναυτ., ὁ ναυτικὸς δεσμὸς *σφενδόνη*.

**Μπέζα** (Beja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν. Πορτογαλίας ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Ἀλεμτέζας. Κάτ. 10.113. Κεῖται ἐπὶ ὑψώματος περιβαλλομένου ὑπὸ ῥωμαϊκῶν τειχῶν καὶ ἔχει ἀκρόπολιν, ἱδρυθεῖσαν τῷ 1275—1325, ἐφ' ἧς περίφημος πύργος ἐκ λευκοῦ μαρμάρου. Εἶναι πιθανῶς ἡ ῥωμαϊκὴ Pax Julia. Εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Λισσαβῶνος—Λάγκου καὶ ἔχει ἀκμάζουσαν ὑφαντουργίαν, ἐλαιουργίαν καὶ ἀγγειοπλαστικήν. Ἐν τῇ ὁμωνύμῳ πεδιάδι, ἀρδευομένῃ ὑπὸ τοῦ Γκουαντιάνα, ὑπάρχουν ὀρυχεῖα σιδήρου, μαγνησίου καὶ χαλκοῦ. —Π.

**Μπέζα κῶδιξ**· βλ. λ. *Βέζα* κῶδιξ.

**Μπεζαΐδε** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Τρίκορφος* (βλ. λ.).

**Μπεζαΐτη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Κεραμιδιὰ* (βλ. λ.).

**Μπεζάνοι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται παρὰ τὸ Μαρμάρι καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 177. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Μπαθαῖος* καὶ *Φρύγανη*. Χ. Δ.

**Μπεζανσὸν** (Besançon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Ντούμπς, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Ντούμπς, εἰς ἀπόστασιν 407 χλμ. ἀπὸ τῶν Παρισίων, μεθ' ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἕδρα ἀρχιεπισκοπῆς καὶ ἔχει ἀκαδημίαν, πανεπιστήμιον, σχολὴν ὡρολογοποιῶν καὶ ἐφετεῖον. Ἀποτελεῖ ἀξιολογώτατον ὀχυρόν, προωρισμένον, ἐν περιπτώσει πτώσεως τοῦ ὀχυροῦ τοῦ Μπελφόρ, νὰ ὑπερασπίσῃ τὴν δίοδον ἀπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Ρήνου εἰς τὰς πεδιάδας τοῦ Σών. Εἶναι ἐκτισμένη εἰς ὕψος 245 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, ἐπὶ ἐδάφους περιβαλλομένου ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ ἡμικυκλικῶς, εἰς τρόπον ὥστε νὰ φαίνεται τοῦτο ὡς μικρὰ χερσόνησος. Ἡ Μπεζανσὸν εἶναι κυρίως βιομηχανικὴ πόλις, ἔχουσα ἐργοστάσια ἐπίπλων, ἐπεξεργασίας τεύτλων, ὑλικοῦ σιδηροδρόμων, εἰδῶν κιγκαλλερίας, χυτήρια, σιδηρουργεῖα, καρφοβελονοποιεῖα κλπ., κυρίως ὅμως εἶναι τὸ κέντρον τῆς γαλλικῆς ὡρολογοποιίας, συναγωνιζομένη ἐπιτυχῶς τὴν Γενεύην. Μεταξὺ τῶν παλαιῶν κτηρίων τῆς ἄριστον εἶναι τὸ ῥυθμοῦ ἱσπανικῆς ἀναγεννήσεως μέγαρον Γκρανβὲλ (1534—1540). Εἰς τὸ προάστειον Μουγιὲρ ὑπάρχουσι πολυσύχναστοι θερμοπηγαί. Κάτ. (1926) 58.525.

— *[Ἱστορ.]* Τὸ Μπεζανσὸν (λατιν. Vesontio, ἢ Bisontium) εἶναι ἐκ τῶν ἀρχαιοτάτων πόλεων τῆς Γαλατίας, διατελέσασα ἐπὶ μακρὸν πρωτεύουσα τῶν ὑπὸ τοῦ Καίσαρος ὑποταχθέντων τῷ 58 π.Χ. Βεζοντίων. Καταστραφεῖσα κατὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν βαρβάρων, ἀνέλαβε βραδύτερον. Τῷ 1190, κατόπιν σκληροῦ πολέμου ἐναντίον τῆς ἐπισκοπικῆς κυριαρχίας, ἐπέτυχε παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος Ἐρρίκου Δ΄ τὴν ἀνακήρυξιν αὐτῆς εἰς ἀνεξάρτητον αὐτοκρατορικὴν πόλιν. Ἐπηκολούθησαν νέαι πρὸς τοὺς ἐπισκόπους ἔριδες, καθ' ἃς κατώρθωσε νὰ παραμείνῃ ἐλευθέρα. Βραδύτερον ὑπετάγη εἰς τοὺς Ἱσπανούς, ὑφ' οὓς παρέμεινε μέχρι τοῦ 1674, ὁπότε κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ΄. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἱδρύθη καὶ τὸ πανεπιστήμιον (1681). Τῷ 1814 ἀντέστη ἐπὶ τρίμηνον εἰς τὰς ἐπιθέσεις τῶν συμμαχικῶν στρατευμάτων. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἐπειδὴ τὸ Μπεζανσὸν ἦτο κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον 1870—1871 μικρὸν φρούριον, δι' αὐτὸ ἡ γαλλικὴ στρατιὰ τοῦ Βούρβαχη ἐζήτησε πρὸς στιγμὴν στήριγμα παρ' αὐτῷ μὴ δυνηθεῖσα ὅμως ν' ἀνέλθῃ, ἅτε ὑπερκερωθεῖσα πανταχόθεν ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς Ποντερλιέ. Ν. Θ. Κ.

Digitized by Google

**Μπέζαντ** (Besant), ***Άννα***. Ἀγγλὶς συγγραφεὺς καὶ πρόεδρος τῆς διεθνοῦς Θεοσοφικῆς Ἑταιρείας μὲ κέντρον τὸ Adyar τῶν Ἰνδιῶν. Γεννηθεῖσα εἰς τὸ Λονδῖνον (1847) ἀνετράφη εἰς χριστιανικὸν περιβάλλον, λόγῳ δὲ καὶ τῆς ἐμφύτου κλίσεώς της ἔγινεν ἀφωσιωμένη Χριστιανὴ καὶ ἐνυμφεύθη πολὺ νέα τὸν πάστωρα Μπέζαντ. Ἡ ζωή της ὅμως μετὰ τοῦ πάστωρος ἦτο ἀφόρητος. Ἡ πρώτη της αὐτὴ μεγάλη ἀπογοήτευσις τὴν ἔκαμε νὰ χάσῃ τὴν πίστιν της εἰς τὴν θρησκείαν, ἀργότερον δὲ ἠναγκάσθη νὰ τὸν ἐγκαταλείψῃ μετὰ τῆς θυγατρός της καὶ νὰ ἐργασθῇ. Μὲ τὸ τάλαντον τοῦ ρήτορος καὶ τοῦ συγγραφέως, τὸ ὁποῖον κατεῖχεν, ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ τὴν πολιτικὴν καὶ κατέληξεν εἰς τὴν ἀθεΐαν καὶ τὴν ἐλευθέραν σκέψιν. Ἔνθερμος σοσιαλίστρια, ἀφωσιώθη μὲ ὅλην της τὴν ψυχὴν εἰς τὸν ἐργατικὸν ἀγῶνα. Κάποτε ὁ διευθυντὴς τῆς ἐφημερίδος, εἰς τὴν ὁποίαν εἰργάζετο, τῆς ἀνέθεσε νὰ γράψῃ μελέτην περὶ τῆς «Μυστικῆς Διδασκαλίας» τῆς Μπλαβάτσκυ. Ἡ ἀνάγνωσις τοῦ βιβλίου τούτου τὴν κατέστησεν ἔνθερμον ὀπαδὸν τῆς θεοσοφίας. Τῷ 1907 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Θεοσοφικῆς Ἑταιρείας καὶ παραμένει ἔκτοτε εἰς τὴν θέσιν αὐτήν, ἐργαζομένη συγχρόνως ὑπὲρ τῆς ἀναγεννήσεως καὶ τῆς αὐτοδιοικήσεως τῶν Ἰνδιῶν. Τὰ συγγράμματά της εἶναι πάρα πολλά. Τὰ κυριότερα εἶναι: «Ἡ ἀρχαία σοφία», «Ἡ δύναμις τῆς σκέψεως», «Μελέτη ἐπὶ τῆς συνειδήσεως», «Ὁ θάνατος καὶ τὸ ὑπερπέραν», «Ἐσωτερικὸς Χριστιανισμός», «Ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ σώματά του» κλπ. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Κ. Β. Λεντμπῆτερ: «Ἡ ἀπόκρυφος χημεία», «Ὁ ἄνθρωπος», «Αἱ σκέψεις-μορφαὶ» κλπ.

*Ἄννα Μπέζαντ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. An Autobiography (London).— *A. Blech*, Annie Besant (Paris 1921). π. π. χ.

— **Μπέζαντ** (Besant), ***Οὐώλτερ***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1838—1901). Κατ' ἀρχὰς ἱερεὺς διαμαρτυρόμενος καὶ καθηγητής, ἐγκατέλιπε βραδύτερον τὴν ἐκκλησιαστικὴν καὶ τὴν παιδαγωγικὴν σταδιοδρομίαν του, ἵνα ἀφιερωθῇ ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν μυθιστοριογραφίαν, εἰς ἣν ἀνεδείχθη εἷς τῶν μεγαλυτέρων τῆς Ἀγγλίας λογοτεχνῶν. Ἐπίσης διεκρίθη καὶ ὡς ἱστορικὸς τῆς λογοτεχνίας. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι τά: «Ἡ παλαιοτέρα γαλλικὴ ποίησις» (1868), «Οἱ Γάλλοι οὑμορισταὶ» (1873) καὶ «Ἡ ἱστορία τῆς Ἱερουσαλήμ». Ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του διακρίνονται τά: «Ἡ ἐπανάστασις τοῦ ἀνθρώπου», «Διὰ τὴν ἀλήθειαν καὶ τὴν ἐλευθερίαν», «Οἱ κώδωνες τοῦ Ἁγίου Παύλου» κτλ. Α. Δ.

**Μπεζάρ** (Béjart). Οἰκογενειακὸν ὄνομα πέντε ἠθοποιῶν συνεργατῶν τοῦ Μολιέρου, δύο ἀνδρῶν καὶ τριῶν γυναικῶν, ἐκ τῶν ὁποίων μία ἐρωμένη καὶ ἄλλη σύζυγος τοῦ μεγάλου κωμῳδοῦ.

—1) ***Μαγδαληνὴ Μπεζάρ***. Γεννηθεῖσα ἐν Παρισίοις τῷ 1618, ἐγένετο ἠθοποιὸς ἀπὸ τοῦ 1640 καὶ περιώδευσε τὰς ἐπαρχίας τῆς Γαλλίας ἐπὶ κεφαλῆς θιάσου, εἰς τὸν ὁποῖον μετεῖχον δύο ἀδελφοί της καὶ ἡ νεωτέρα της ἀδελφή. Ἐπιστρέψασα τῷ 1646 μετὰ τοῦ θιάσου της εἰς Παρισίους, ἐγνωρίσθη μὲ τὸν Μολιέρον, ὅστις ἔπαιζε τότε εἰς τὸ θέατρον Σαὶν-Πώλ, καὶ συνεχώνευσε τὸν θίασόν της εἰς τὸν ἰδικόν του. Ἦτο ἠθοποιὸς ἱκανοῦ ταλάντου, μὴ σημειώσασα μεγάλην ἐπιτυχίαν εἰς ρόλους βασιλισσῶν ἐν ταῖς τραγῳδίαις, διακριθεῖσα ὅμως ὡς σουμπρέττα εἰς τὰς κωμεντί. Βραδύτερον ἐγένετο ἐρωμένη τοῦ Μολιέρου, χωρὶς ἐκ τούτου νὰ μεταβάλῃ ὁλοκληρωτικῶς τὴν προτέραν διαγωγήν της, ἥτις, κατὰ γενικὴν γνώμην, δὲν ἦτο καθόλου ἄμεμπτος.

— 2) ***Ἰωσὴφ Μπεζάρ*** (1622—1659), ἀδελφὸς τῆς προηγουμένης. Μετέσχεν ὁμοῦ μετ' αὐτῆς τοῦ θιάσου τοῦ Μολιέρου, ὑπῆρξε δὲ ἠθοποιὸς μετρίας ἀξίας. Εἰς αὐτὸν ἀποδίδεται μία «Συλλογὴ τῶν τίτλων καὶ οἰκοσήμων τῶν ἱεραρχῶν καὶ βαρώνων τοῦ Λανγκεντόκ» (ἐκτυπωθεῖσα ἐν Λυὼν τῷ 1655).

— 3) ***Γενεβιέβη Μπεζὰρ*** (1624—1675). Ἀδελφὴ τοῦ Ἰωσὴφ καὶ τῆς Μαγδαληνῆς, μέλος καὶ αὐτὴ τοῦ θιάσου τοῦ Μολιέρου. Διὰ νὰ διακρίνεται ἀπὸ τῆς πρεσβυτέρας ἀδελφῆς της ἀνεγράφετο εἰς τὰ προγράμματα μὲ τὸ μητρικόν της ὄνομα, ὡς *Δνὶς Ἐρβέ*. Ἦτο ἠθοποιὸς μετρίου ταλάντου καὶ μόνον εἰς τὰ πολυπρόσωπα ἔργα ἐνεφανίζετο εἰς σημαίνοντας ὁπωσοῦν ρόλους.

— 4) ***Λουδοβῖκος Μπεζὰρ*** (1630—1678), τέταρτος ἀδελφὸς τῶν προηγουμένων, μέλος καὶ οὗτος τοῦ ἰδίου θιάσου. Ἀνωτέρου ταλάντου ἀπὸ τὸν Ἰωσήφ, μετεῖχε σχεδὸν τῶν ἔργων τοῦ Μολιέρου εἰς πρωτεύοντας ρόλους. Ἐγκατέλιπεν ἐν τούτοις τὸ θέατρον ἀπὸ τοῦ 1670, διὰ νὰ καταταχθῇ εἰς τὸν στρατόν, καὶ ἐγένετο ἀξιωματικός.

— 5) ***Ἀρμάνδη-Κλαίρη-Ἐλισάβετ Μπεζάρ***, γεννηθεῖσα πιθανῶς τῷ 1642 καὶ ἀποθανοῦσα τῷ 1700. Περὶ τῶν γονέων της δὲν ὑπῆρχον βέβαιαι πληροφορίαι. Ἡ Μαγδαληνὴ τὴν ἐνεφάνιζεν ὡς ἀδελφήν της, ὑπῆρχον ὅμως καὶ οἱ διαδίδοντες ὅτι ἦτο θυγάτηρ αὐτῆς, γεννηθεῖσα καθ' ἣν ἐποχὴν ἡ Μαγδαληνὴ ἦτο συνδεδεμένη μετά τινος μεγάλου χωροδεσπότου, τοῦ δουκὸς τῆς Μοδένης, τὸν ὁποῖον ἤλπιζε νὰ νυμφευθῇ, δι' ὃ καὶ συμφέρον εἶχε ν' ἀποκρύψῃ τὴν ἐγκυμοσύνην της. Ὅταν ὁ Μολιέρος ἐνυμφεύθη τὴν Ἀρμάνδην, τῷ 1662, οἱ ἐχθροί του ἐξεμεταλλεύθησαν τὰς φήμας ταύτας, διὰ νὰ τὸν κατηγορήσουν ὡς αἱμομείκτην, ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' ὅμως ἀπεστόμωσε τοὺς συκοφάντας, δεχθεὶς νὰ παραστῇ ἀνάδοχος τοῦ πρώτου ἐκ τοῦ γάμου τούτου τέκνου. Ἐξηκριβώθη ἐξ ἄλλου βραδύτερον ὅτι τὸ πρακτικὸν τοῦ γάμου των ἀναγράφει τὴν Ἀρμάνδην θυγατέρα τῆς κυρίας Ἐρβέ, μητρὸς καὶ τῶν ἄλλων Μπεζάρ. Καὶ παρὰ ταῦτα ὅμως ἀπέμειναν ἀμφιβολίαι ὅσον ἀφορᾷ τὴν πραγματικὴν καταγωγήν, διότι κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς γεννήσεώς της ἡ κυρία Ἐρβὲ εἶχεν ἡλικίαν ἄνω τῶν πεντήκοντα ἐτῶν.

Εἰς τὸ θέατρον τοῦ Μολιέρου ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἡ Ἀρμάνδη, κατ' ἄλλους τῷ 1661 καὶ κατ' ἄλλους τῷ 1663. Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι διεκρίθη ἀμέσως διὰ τὸ ἐξαιρετικόν της τάλαντον εἰς σειρὰν ρόλων, ἐξ ὧν τὴν ἐδόξασε πλειότερον ὁ τῆς Ἐλμίρας εἰς τὸν «Ταρτοῦφον» καὶ ὁ τῆς Κελιμένης εἰς τὸν «Μισάνθρωπον». Εἰς τὰ κατόπιν ἔργα του ὁ Μολιέρος ἐπεφύλασσε πάντοτε διὰ τὴν σύζυγόν του ἕνα ρόλον πρωταγωνιστρίας, προσαρμοζόμενον πρὸς τὸ τάλαντόν της, καὶ δύναταί τις νὰ εἴπῃ ὅτι ἡ Ἀρμάνδη συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὸ νὰ κάμῃ γονιμωτέραν τὴν μεγαλοφυΐαν του. Δὲν ὑπῆρξεν ὅμως φαίνεται ἐξ ἴσου πολύτιμος καὶ διὰ τὴν συζυγικὴν του εὐτυχίαν. Αἱ περισσότεραι πληροφορίαι τὴν παριστάνουν ὡς κάτι πλέον παρὰ φιλάρεσκον καὶ ἀναφέρουν κρυφίους δεσμούς της μὲ τὸν δοῦκα τοῦ Λωζαίν, μὲ τὸν κόμιτα Γκύζην, μὲ τὸν ἠθοποιὸν Μπαρόν. Καὶ ἐπὶ τοῦ προκειμένου ὅμως ἡ ἀμφιβολία καὶ ἡ ἀβεβαιότης καλύπτει τὴν πραγματικότητα τῆς συζυγικῆς ἠθικῆς τῆς Ἀρμάνδης Μπεζάρ, ὅπως καὶ τὴν ἱστορίαν τῆς γεννήσεώς της. Δὲν ἀποκλείεται δὲ τὸ ὅτι ἡ κοινὴ εἰς βάρος της φήμη ἐδημιουργήθη ἐκ τῶν ὑστέρων, ἐκ τοῦ γεγονότος καὶ μόνον ὅτι δὲν ἐπένθησεν ὅσον ἔπρεπε τὸν θάνατον τοῦ Μολιέρου, νυμφευθεῖσα μετὰ τινα ἔτη χηρείας ἕνα ἀσήμαντον ἠθοποιόν, τὸν Γκερέν, ἔχοντα ὡς μόνον προσὸν τὸ ὅτι ἦτο ὡραῖος. Ἡ Ἀρμάνδη ἀπεσύρθη τοῦ θεάτρου τῷ 1694. —Ω.

**μπεζαχτᾶς** (ὁ) δημοτ., τὸ συρτάρι τοῦ μπάγκου οἱουδήποτε πωλητοῦ, εἰς τὸ ὁποῖον ἀποτίθενται αἱ εἰσπράξεις (τουρκ.).

**μπεζέδες** (οἱ) *[Ζαχαρ.]*. Εἶδος γλυκίσματος παρασκευαζόμενον ὅπως οἱ *μαρέγγες* (βλ. λ.).

**Μπέζελερ** (Beseler), ***Γουλιέλμος-Χάρτβιγκ***. Πολιτικὸς ἐκ Σλέσβιχ-Ὁλστάϊν (1806—1884). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ὡς δικηγόρος ἀντεπροσώπευσε τὴν πόλιν Toudern ἐν τῇ συνελεύσει τοῦ Σλέσβιχ, ἐκλεγεὶς μάλιστα πρόεδρος ταύτης. Πολέμους τοῦ χωρισμοῦ τοῦ Σλέσβιχ ἀπὸ τοῦ Ὁλστάϊν, διετέλεσε (1848) πρόεδρος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τῶν δύο τούτων δουκάτων καὶ τῆς κατόπιν ἐγκαθιδρυθείσης γερμανικῆς διοικήσεως. Ἀποσταλεὶς εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν τῆς Φραγκφούρτης, ἐξελέγη ἀντιπρόεδρος ταύτης. Ἔγραψεν: «Ἐπὶ τῆς ὑποθέσεως Σλέσβιχ-Ὁλστάϊν» (1856) κλπ. καὶ μετέφρασε τὴν «Ἱστορίαν τῆς Ἀγγλίας» τοῦ Μακώλεϋ (1852—1860). —Ω.

**Μπεζενῖκος** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας κώμης *Βλαχέρνα* (βλ. λ.).

**μπεζερῶ** (*—άω*), καὶ ***μπεζερίζω*** δημοτ., μοχθῶ, κοπιάζω, ἀποκάμνω (τουρκ.)

**μπεζεστένι** (τὸ). Καλοῦνται οὕτω αἱ ἐστεγασμέναι ἀγοραὶ τῶν τουρκικῶν καὶ ἀραβικῶν πόλεων, κυρίως δὲ ἐκεῖναι εἰς τὰς ὁποίας πωλοῦνται ὑφάσματα, κοσμηματα καὶ ψιλικά. Αἱ ἀγοραὶ αὗται, ἀποτελοῦσαι διόδους προσιτὰς μόνον εἰς τοὺς πεζούς, δύνανται νὰ ὦσιν ἐστεγασμέναι διὰ στέγης ἀμφικλινοῦς εἴτε διὰ συνεχοῦς θόλου, κλειόμεναι διὰ μεγάλων θυρῶν.

**Μπεζιὲ** (Béziers) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Ἐρρώ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ὀρμπ καὶ τῆς διώρυγος τοῦ Νότου, εἰς ἀπόστασιν 72 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μομπελλιέ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Διεξάγει ἐμπόριον ἐκλεκτῶν οἴνων, οἰνοπνεύματος, κτηνῶν, ὀπωρῶν κλπ. καὶ ἔχει βιομηχανίαν βαρελοποιίας. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν κτηρίων της εἶναι ἡ παλαιὰ μητρόπολις, κτισθεῖσα ἀπὸ τοῦ ΙΒ' μέχρι τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ὁ ναὸς τῆς Ἁγίας Μαγδαληνῆς, ἐν τῷ ὁποίῳ κατὰ τὴν παράδοσιν ἐσφάγησαν, τῷ 1209, 7000 ἐκ τῶν κατοίκων της, καὶ τὸ θέατρον τοῦ ὁποίου τὴν πρόσοψιν διεκόσμησεν ὁ Δαυῒδ ντ' Ἀνζέ. Σῴζονται ἐρείπια ἀρχαίου ρωμαϊκοῦ θεάτρου. Κάτ. (1926) 65.654.

—*[Ἱστορ.]*. Ἡ Μπεζιὲ (λατιν. Beterrae) εἶναι παλαιοτάτη γαλατικὴ πόλις τῶν Οὐόλσκων, κατελήφθη δὲ τῷ 120 π. Χ. ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, οἵτινες τῷ 52 π. Χ. ἵδρυσαν ἐν αὐτῇ ἀποικίαν. Ὁ Χριστιανισμὸς εἰσήχθη ὑπὸ τοῦ ἁγίου Ἀφροδισίου, ὅστις διετέλεσε καὶ πρῶτος ἐπίσκοπος αὐτῆς. Κατὰ τὰς βαρβαρικὰς ἐπιδρομὰς κατελήφθη τῷ 418 ὑπὸ τῶν Βησιγότθων καὶ τῷ 725 ὑπὸ τῶν Σαρακηνῶν, κατεστράφη δὲ τέλος τῷ 736 ὑπὸ τοῦ Καρόλου Μαρτέλου. Κατὰ τὴν σταυροφορίαν τῶν Ἀλβιγείων ἐπολιορκήθη καὶ καταληφθεῖσα ἐπυρπολήθη καὶ κατεστράφη ὑπὸ τῶν σταυροφόρων, διότι οἱ κάτοικοι αὐτῆς ἠρνήθησαν νὰ παραδώσωσι τοὺς αἱρετικοὺς (1209). Περιῆλθεν εἶτα εἰς τὸν Σίμωνα ντὲ Μονφὸρ καὶ τέλος εἰς τὸν Λουδοβῖκον Η'. Κατὰ τοὺς ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνας μετέσχε τῶν θρησκευτικῶν πολέμων ὑπὲρ τῶν διαμαρτυρομένων. Χ. Δ.

**Μπέζινγκστοκ** (Basingstoke) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας εἰς Χάμπσαϊρ, ἐπὶ τῆς διασταυρώσεως πλείστων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν. Κάτ. 11.540. Συγκοινωνεῖ μετὰ τοῦ Λονδίνου διὰ τῆς διώρυγος τοῦ *Μπέζινγκστοκ* καὶ σιδηροδρομικῶς. Διεξάγει τὸ ἐμπόριον ὁλοκλήρου τῆς περιοχῆς καὶ ἔχει μηχανουργίαν, ὑφαντουργίαν καὶ ζυθοβιομηχανίαν. —Π.

**Μπέζολντ** (Bezold), ***Γουλιέλμος φὸν—***. Γερμανὸς φυσικὸς (βλ. λ. *Μπέτσολντ* Γουλιέλμος).

**Μπεζομπράζωφ**, ***Βλαδίμιρος Νικολάγιεβιτς***. Ρῶσος οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Βλαδιμὶρ τῷ 1829 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1898. Ἐσπούδασεν ἐν Μόσχᾳ καὶ εἰς τὸ λύκειον τοῦ Τσάρσκογιε-Σέλο. Ἐπιδοθεὶς εἰς τὰς οἰκονομικὰς καὶ πολιτικὰς ἐπιστήμας, ἐξελαίκευσε ταύτας ἐν Ρωσίᾳ δι' ἐπιστημονικῶν ἔργων ἐχόντων μορφὴν φιλολογικήν. Ἐκ τῶν ἀρίστων ἔργων του θεωροῦνται: «Μελέται περὶ τῆς κοινωνικῆς φυσιολογίας», «Ὁ πόλεμος καὶ ἡ ἐπανάστασις», ἔργον ὅπερ κατέστησε δημοφιλέστατον τὸν συγγραφέα. Ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῆς Πετρουπόλεως καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τοῦ Ἰνστιτούτου τοῦ διεθνοῦς δικαίου τῆς Γάνδης. Θ. Β.

**Μπεζοὺ** (Bezut), ***Στέφανος***. Γάλλος μαθηματικὸς (1730—1783). Εἶναι γνωστὸς ἰδίως ἐκ τῶν συγγραμμάτων του, τὰ ὁποῖα εἶχον ἀπομείνει ἐν εὐρείᾳ χρήσει μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἀπὸ τοῦ 1758 εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν διὰ τὴν περὶ τῶν ἐξισώσεων θεωρίαν του. Ἔγραψε: «Μαθήματα μαθηματικῶν» διὰ ναυτικὰς σχολὰς (6 τόμους) καὶ διὰ τὸ σῶμα τοῦ πυροβολικοῦ (4 τόμους). Τὸ σημαντικώτερον ὅμως τῶν συγγραμμάτων αὐτοῦ εἶναι ἡ «Γενικὴ θεωρία τῶν ἀλγεβρικῶν ἐξισώσεων» (Παρίσιοι 1779), ἐν τῇ ὁποίᾳ περιλαμβάνεται καὶ τὸ γνωστὸν «θεώρημα τοῦ Μπεζού». Ἡ ἀρχικὴ διατύπωσις, ἣν εἶχε δώσει ὁ Μπεζοὺ εἰς τὸ θεώρημά του, ἦτο ἀρκούντως περίπλοκος, κουραστικὴ δὲ ἡ ἀπόδειξίς του· βραδύτερον ὅμως ἠπλουστεύθη τοῦτο παρ' ἄλλων, διατυποῦται δὲ σήμερον ὑπὸ τὴν ἁπλουστέραν αὐτοῦ μορφὴν ὡς ἀκολούθως: «Σύστημα δύο ἀλγεβρικῶν ἐξισώσεων μετὰ δύο ἀγνώστων, βαθμοῦ *μ* καὶ *ν*, ἐπιδέχεται ἐν γένει *μ. ν* λύσεις». Ὁ Μπεζοὺ ἐξετιμᾶτο πολὺ ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος, ὅστις εἶχε διδαχθῆ τὰ μαθηματικὰ ἀπὸ τὰ συγγράμματά του. —Π.

**Μπεζούκι** (Besuki, Besoeki) *[Γεωγρ.]*. Διοικητικὴ περιοχὴ τῆς Ὁλλανδικῆς Α. Ἰάβας, ὁριζομένη ἐκ Β. ὑπὸ τῆς Μαντούρα, ἀπὸ Α. ὑπὸ τοῦ Μπαλί, ἀπὸ Ν. ὑπὸ τῆς θαλάσσης τῆς Ἰάβας καὶ ἀπὸ Δ. ὑπὸ τῆς ἐπαρχίας Προμπολίνγκο. Ἐμβ. 10.159 τετρ. χλμ. Κάτ. 1.498.865 (Μαντουρήσιοι πλὴν ὀλίγων Εὐρωπαίων, Κινέζων καὶ Ἀράβων). Κατ' ἐξοχὴν ὀρεινὴ χώρα, ἔχει κορυφὰς τὴν *Ἀργκοπούρα* (3.090 μ.) μετὰ τοῦ ἡφαιστειογενοῦς συστήματος Ρίνγκι καὶ τὸ *Κλεντὰγκ* (3.300 μ.), ποταμοὺς δὲ τοὺς *Κάλι-Βαννουπούτι, Σεταΐλ, Ταντσοὺγκ* κ. ἄ. Κύρια προϊόντα σακχαροκάλαμον ὄρυζα, κακάον, τέϊον, καπνός. Πρωτεύουσα ὁμώνυμος ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Μαντούρα. —Π.

**Μπεζούλα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Νευροπόλεως καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 562. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Νεράϊδα*. Χ. Δ.

**Μπεζπορόντκο**, ***Ἀλέξανδρος Ἀλεξάνδροβιτς***, *κόμις—*. Ρῶσος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1742 ἐν Κιέβῳ καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1799. Εἰσαχθεὶς εἰς τὸν στρατὸν διέπρεψε κατὰ τὴν ἔφοδον τῆς Σιλιστρίας (1774). Εὐνοηθεὶς ὑπὸ τῆς Αἰκατερίνης Β' ἐγένετο στρατηγὸς καὶ μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῶν ἐξωτερικῶν ὑποθέσεων τοῦ κράτους. Μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τοῦ Ἰασίου ἠμείφθη γενναίως ὑπὸ τῆς αὐτοκρατείρας, ἐξήσκει δὲ μεγάλην ἐπιρροήν, ἥτις ἐγένετο ἔτι μεγαλυτέρα ἐπὶ τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Παύλου Α', χάριν τοῦ ὁποίου λέγεται ὅτι ἐξηφάνισε

Digitized by Google

διαθήκην τῆς Αἰκατερίνης, δι' ἧς ἀπέκλειεν αὐτὸν τοῦ θρόνου. Θ. Β.

**Μπέη** *Μύλοι* *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Τυρνάβου τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 38. Χ. Δ.

**Μπὲη-'Αχμάρ.** Ἡ τελευταία τῶν ἐν Ἱσπανίᾳ βασιλευσασῶν ἀραβικῶν δυναστειῶν. Ἱδρύθη τῷ 1236 ὑπὸ τοῦ Ἄμπου-'Αμπνταλλὰχ Μωχάμμετ μπὲν-Ἄχμετ καὶ διήρκεσε μέχρι τοῦ 1412. Καθέδρα αὐτῆς ἦτο ἡ Γρενάδα. Οἱ ἡγεμόνες τῆς δυναστείας ταύτης ἀριθμοῦνται εἰς 23. Τελευταῖος ἦτο ὁ Ἄμπου-'Αμπνταλλὰχ (γνωστὸς ἐν τῇ ἱστορίᾳ ὡς Μποαμπντὶλ ἢ Βοαβδὶλ) ἐλ-Σαφίρ, ἐκθρονισθεὶς καὶ ἐκδιωχθεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς 'Αραγωνίας Φερδινάνδου τοῦ Ε', ὅστις ἔθεσε τέρμα εἰς τὴν ἀραβικὴν κυριαρχίαν ἐν Ἱσπανίᾳ. Ν. Μ.

**Μπέηκος**, ἢ *Μπέϊκος* *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπὶ τῆς ἀσιατικῆς παραλίας τοῦ Βοσπόρου, εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. Β. τῆς κυρίως πόλεως, ἕδρα τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως. Κεῖται εἰς τὸ βάθος τοῦ ὁμωνύμου κολπίσκου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου συνεκεντρώθη κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον (1854—1856) ὁ κατὰ τῆς Ρωσίας ἐνεργῶν ἀγγλογαλλικὸς στόλος. Τὸ χωρίον κεῖται ἐν μέσῳ καταφύτων κήπων, ὡραίων λειμώνων καὶ δασυλλίων. Εἰς τὸ *Μπέηκος* ὑπῆρχε κατά τινα ἀρχαῖον μῦθον ὁ οἶκος τοῦ *'Αμύκου* (βλ. λ.) καὶ ἡ μαινομένη δάφνη, κληθεῖσα οὕτω διότι οἱ πίνοντες οἶνον ἀρωματιζόμενον διὰ τῶν φύλλων αὐτῆς ἐμαίνοντο. Παρὰ τὸ χωρίον ὑπάρχει καὶ τὸ σουλτανικὸν κιόσκιον τοῦ Χουνκιὰρ-ἰσκελεσῆ, οὐχὶ μακρὰν τῆς ὁμωνύμου πεδιάδος, ὅπου ἐστρατοπέδευσε τῷ 1833 ρωσικὸς στρατὸς ἐλθὼν εἰς βοήθειαν τῆς Τουρκίας, ἀπειλουμένης τότε ὡς ἐκ τῆς προελάσεως τοῦ σατράπου τῆς Αἰγύπτου Μωχάμμετ Ἄλη. Ἐκεῖ ὑπεγράφη καὶ ἡ ὁμώνυμος ρωσοτουρκικὴ συνθήκη συμμαχίας καὶ ἐπιμαχίας (8 Ἰουλίου 1833), δι' ἧς ἡ Τουρκία ἀνελάμβανε νὰ κλείῃ τὰ Δαρδανέλλια καὶ τὸν Βόσπορον, ὁσάκις ἀπῄτει τοῦτο ἡ Ρωσία, ἔναντι στρατιωτικῆς εἰς τὴν Τουρκίαν βοηθείας.

Παρὰ τὸ Μπέηκος ὑψοῦται τὸ λεγόμενον Ὄρος τοῦ Γίγαντος (τουρκ. Γιουσᾶ-Δαγ=Ὄρος τοῦ Ἰησοῦ τοῦ Ναυῆ, ἢ τοῦ Ἰωσίου), ἔχον ὕψος 195 μ., ἐφ' οὗ ὑπάρχει μονὴ (ἢ τεκκές) Τούρκων δερβισῶν καὶ ἐντὸς τῆς περιοχῆς αὐτοῦ τὸ «μνῆμα τοῦ Ἕλληνος» ἢ τοῦ «Γίγαντος», ἄλλως «κλίνη τοῦ Ἡρακλέους», ὅπερ κατὰ τὴν γνώμην πολλῶν περιηγητῶν δέον νὰ θεωρηθῇ ὡς τὸ τοῦ Ἀμύκου. Παρὰ τὸ μνῆμα ὑπάρχει φρέαρ ὕδατος γλυκυτάτου καὶ παρὰ τὸν τεκκὲν κιόσκιον. Ἐπὶ τῶν κλάδων τῶν πέριξ δενδρυλλίων, καὶ ἐπὶ τῶν κιγκλίδων τῶν παραθύρων τοῦ τεκκὲ προσδένουσιν οἱ ἐπισκέπται ράκη ἐκ τῶν φορεμάτων των, πιστεύοντες ὅτι οὕτω συναποθέτουσι πᾶσαν νόσον. Ἐπὶ τῶν κλιτύων τοῦ ὄρους ἀναβρύει πηγή, ἡ «Ἄμπου-χαγιάτ (=ὕδωρ ζωῆς), ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καλουμένη «Ἀθάνατο νερό».

Ὁ κόλπος, ὁ μεγαλύτερος τοῦ Βοσπόρου, διανοίγεται μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Κάλλιντζε-μπουρνοὺ καὶ Σέλβι-μπουρνοὺ καὶ ἀντικρύζει τὴν χερσονησίζουσαν προβολὴν Γενὴ-κιοϊ τῆς εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς. Ἐν τῇ κολπώσει ταύτῃ (πλάτ. 41° 08' Β., μῆκ. 29° 05' ½ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus), δύναται νὰ ἀγκυροβολήσωσιν ἀσφαλῶς πολλὰ πλοῖα συγχρόνως, τοῦ κυρίου ρεύματος μὴ εἰσδύοντος ἐν αὐτῇ παρὰ ὑπὸ ἐκδήλωσιν ἀσθενῶν ἀντιρρευμάτων. Εἶναι ὁ *'Αμύκου κόλπος* τῶν ἀρχαίων. Λεπτομερείας ὡς πρὸς τοὺς ἐλάσσονας τῆς κολπώσεως ὅρμους βλ. εἰς λ. *Βόσπορος* (τόμ. Ζ, 576 γ). Ν. Μ. — Σ. Ε. Λ.

**Μπεηλέρμπεη** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ. λ. *Βεηλέρβεη*).

**μπεηλίκι** (τό)· βλ. λ. *βεηλίκι*.

**Μπεηλὶκ-**ντερεσῆ *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν ποτάμιον τῆς Α. Θράκης ἐν τῇ διοικήσει Καλλιπόλεως, καταλῆγον εἰς τὴν λιμνοθάλασσαν Λιμὰν-γκιολοῦ. Ν. Μ.

**μπεηλίκικος**, —η, —ο· ἰδιωμ., ὁ ἀνήκων εἰς τὸν μπέην· λέγεται ἐπὶ τῶν ἀγρῶν: «μπεηλίκικα χωράφια» ἀγροὶ φεουδάρχου μπέη. Ι. Δ. Μ.

**Μπὲη-Ὂν-Μπασῆ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Δέκαρχον* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ροδόπης.

**Μπὲη-παζαρὶ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα τῆς ὁμωνύμου διοικήσεως τοῦ νομοῦ 'Αγκύρας, εἰς ἀπόστασιν 80 χλμ. ΒΔ. τῆς ὁμωνύμου πόλεως. Κάτ. 5.294. Παράγει ἐξαίρετα ἄπια καὶ σταφυλάς, ὧν γίνεται μεγάλη ἐξαγωγή· ἐπίσης πεπόνια, τῆς 'Αγκύρας καλούμενα, καὶ μοῦστον. Καλλιεργεῖται ὡσαύτως καὶ ὄρυζα εἰς μεγάλας ποσότητας. Ἐν τῇ περιοχῇ ἀφθονοῦσι καὶ αἱ ὀνομασταὶ αἶγες τῆς 'Αγκύρας, ἔχουσαι τρίχωμα λευκόν, μετάξινον, μικρὰν κεφαλὴν καὶ ρύγχος ροδόχρουν. Τὸ μῆκος τῶν τριχῶν αὐτῶν φθάνει τὰ 0,30 τοῦ μ.

Εἰς ἀπόστασιν 50 χλμ. πρὸς Δ. κεῖται τὸ Ναλλῦχὰν (Ἰουλιούπολις), παρὰ τὴν θέσιν τοῦ ἀρχαίου Γορδίου.

Ἡ ὑποδιοίκησις *Μπὲη-παζαρί*, κειμένη μεταξὺ τῶν ὑποδιοικήσεων 'Αγιὰς καὶ Ναλλῦ-χάν, ἔχει 1525 τετρ. χιλιομ. καὶ 21.195 κατοίκους, ἅπαντας Μουσουλμάνους, ἀριθμεῖ δὲ 46 χωρία καὶ 24 τσιφλίκια. Ν. Μ.—Κ. ΛΣ

**Μπὲη-σεχὶρ** *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Ἰκονίου, κειμένη μεταξὺ τῶν λιμνῶν 'Εγερτίρ, κειμένης πρὸς τὰ ΒΔ., ἀφ' ἧς χωρίζεται ὑπὸ τοῦ ὄρους Διπολὰς δάγ, καὶ τῆς λίμνης Ἂκ σεχήρ, κειμένης πρὸς τὰ ΒΑ., ἀφ' ἧς χωρίζεται ὑπὸ τοῦ ὄρους Σουλτὰν δάγ. Ἡ λίμνη Μπὲη-σεχὶρ ἔχει περιφέρειαν 20 ὡρῶν, περικλείει δὲ πολλὰς νήσους κατοικουμένας ὑπὸ ἁλιέων. Μιᾶς τῶν νησίδων τούτων οἱ κάτοικοι ὑπερβαίνουσι τοὺς 1.500. Πᾶσα ἡ περὶ τὴν λίμνην χώρα εἶναι εὐφορωτάτη.

— **Μπέη - Σεχίρ**, ἢ *Μπέη - Σεχὶ* *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Τουρκίας (βλ. *Βεησεχρί*).

**μπέης** (ὁ)· βλ. *βέης*.

**Μπεθέρρα** (Becerra), *Γάσπαρος*. Ἱσπανὸς ἀρχιτέκτων, ζωγράφος καὶ γλύπτης (1520—1570). Καταλιπὼν εἰς νεαρὰν ἡλικίαν τὴν πατρίδα του μετέβη εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἔνθα ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Γ. Βαζάρι καὶ ἐμελέτησε τὸ ἔργον τῶν μεγάλων Ἰταλῶν διδασκάλων τῆς 'Αναγεννήσεως, ὑποστὰς ἰδίᾳ τὴν ἐπίδρασιν τῆς τέχνης τοῦ Ραφαήλ, τοῦ Μιχαὴλ 'Αγγέλου καὶ τοῦ Δανιὴλ ντὲ Βολτέρρα. Τῷ 1556, ἐπιστρέψας εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ὠνομάσθη ἐπίσημος ζωγράφος καὶ γλύπτης Φιλίππου τοῦ Β' καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐκτέλεσιν διαφόρων σημαντικῶν ἔργων. Διεκόσμησε διὰ τοιχογραφιῶν εἰκονιζουσῶν μυθολογικὰς ἢ ἀλληγορικὰς σκηνὰς καὶ ἀραβουργήματα τὸ 'Αλκαζὰρ τῆς Μαδρίτης. Αἱ τοιχογραφίαι αὗται κατεστράφησαν κατὰ τὴν πυρκαϊὰν τοῦ 1735. Ἐπὶ πλέον ὁ Μπεθέρρα κατέλιπε θαυμάσια ἀνάγλυφα καὶ ἀγάλματα εἰς ναοὺς καὶ μονὰς τῆς Ἱσπανίας (ἰδίᾳ δ' ἐν 'Αστόργᾳ, Σαραγόσσῃ, Θαμόρᾳ καὶ Γρανάδᾳ). Τὸ ὡραιότερον τῶν ἀγαλμάτων του ὑπῆρξεν ἡ «Παναγία τῆς Μονώσεως» (Nuestra Senora de la Soledad), καταστραφεῖσα κατὰ τοὺς ναπολεοντείους ἐν Ἱσπανίᾳ ἀγῶνας. Ι. Μ. Π.

**Μπέθλεεμ** (Bethlehem) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπέτλεεμ*.

**Μπὲθ - ντίν.** Ἰσραηλιτικὸν θρησκευτικὸν δικαστήριον (βλ. *ἰσραηλιτικαὶ κοινότητες*).

**Μπεθούλκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Δραγάνου τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ 'Αχαΐας. Κάτ. (1928) 67. Χ. Δ.

**Μπέϊκον** (Bacon), *Φραγκῖσκος*. Ἄγγλος φιλόσοφος (βλ. λ. *Βάκων Φραγκῖσκος*).

**Μπέϊκος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἀσιατικῆς ἀκτῆς τοῦ Βοσπόρου (βλ. λ. *Μπέηκος*).

**Μπεϊκοὺτς** *λιμὴν* *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν ρωσικὸς τῆς Χερσῶνος ἐν τῇ ἀνατολικῇ ὄχθῃ τῆς στομαλίμνης τοῦ Μπερεζὰν (ἀρχ. Βορυσθένης). Ἐν τῷ μυχῷ του φερώνυμος πόλις (πλάτ. 46° 38' Β., μῆκ. 31° 28' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2214: Sea of Azov). Σ. Ε. Λ.

**Μπεϊλὰν** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας, 5 μίλ. ΝΑ. τῆς 'Αλεξανδρέττας ἐπὶ τοῦ στενοῦ Μπεϊλὰν (ἀρχ. 'Αμανίδες πύλαι, Πύλαι τῆς Συρίας)· κάτ. 5.000. Ἐχρησιμοποιήθησαν τὰ στενὰ ταῦτα ὑπὸ τοῦ Μεγάλου 'Αλεξάνδρου καὶ τῶν Σταυροφόρων, αὐτόθι δὲ ἔπαθον πανωλεθρίαν οἱ Τοῦρκοι (1832) ἀπὸ τὰ αἰγυπτιακὰ στρατεύματα τοῦ Ἰμπραΐμ - πασᾶ. —Π.

**Μπεϊλερλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ξερόλακκος* (βλ. λ.).

**Μπεϊλὶκ - μαχαλὲ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Βαλτοτόπι* (βλ. λ.).

**Μπεϊογλοῦ.** Τουρκικὸν ὄνομα τοῦ *Σταυροδρομίου* ἢ *Πέραν* (Κωνσταντινουπόλεως). Τὸ ὄνομα τοῦτο ἐδόθη, κατὰ τὴν κοινῶς παραδεδεγμένην γνώμην, ἀπὸ τῆς ἐκεῖ διαμονῆς τοῦ βασιλόπαιδος 'Αλεξίου, υἱοῦ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Τραπεζοῦντος Καλο-Ἰωάννου τοῦ Κομνηνοῦ, ἀνεψιοῦ τοῦ τελευταίου αὐτοκράτορος Δαυΐδ. Κατὰ τὸν Χάμμερ ὅμως τὸ Μπεϊογλοῦ εἶναι κυρίως *Μπεϊγιολοῦ* (=ὁδὸς πριγκίπων) καὶ ὀφείλεται εἰς τὸ ὅτι ἡ πρὸς ἐκεῖ ὁδὸς ἦγεν εἰς τὰς κατοικίας τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει παρεπιδημούντων ξένων πρεσβευτῶν ἢ πριγκίπων, οὓς οἱ Τοῦρκοι ἐνόμιζον ἅπαντας ἡγεμονικῆς καταγωγῆς. Ν. Μ.

**Μπεῖρα**, ἢ *Μπέρα* (Beira) *[Γεωγρ.]*. —1) Ἓν τῶν ἓξ μεγάλων διαμερισμάτων τῆς Πορτογαλλίας. Ἔχει ἐπιφάνειαν 23.942 τ. χλμ. καὶ 1.800.000 κάτ. Διασχίζεται ὑπὸ τῆς ὀροσειρᾶς *Σιέρρα ντὰ 'Εστρέλλα* καὶ διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Μοντέγκος*, *Βφουγκας* καὶ *Ταμπόρας*, παραποτάμων τοῦ Τάγου καὶ τοῦ Ντουέρο. Ἔχει ἔδαφος εὔφορον, παράγον οἶνον, ἔλαιον, σιτηρὰ καὶ κάστανα. Τὸ ὑπέδαφος περιέχει μεταλλεῖα σιδήρου, γαιανθράκων, ἅλατος καὶ λατομεῖα. Πρωτεύουσα εἶναι ἡ *Κοΐμπρα*.

—2) Πόλις καὶ λιμὴν τῆς 'Ανατολικῆς 'Αφρικῆς ἐν τῇ πορτογαλλικῇ ἀποικίᾳ τῆς Μοζαμβίκης. Κάτ. 11.900, ἐξ ὧν 1.150 Εὐρωπαῖοι. Κεῖται παρὰ τὰς ἐκβολὰς τῶν ποταμῶν Πουγγουὲ καὶ Μπούζι καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Ροδεσίας καὶ τῆς λίμνης Νυάνζας καὶ ἐκεῖθεν μετὰ τοῦ Καΐρου καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Καλῆς 'Ελπίδος. Εἶναι σημαντικὸς λιμήν, διὰ τοῦ ὁποίου διεξάγεται σχεδὸν ὁλόκληρον τὸ ἐμπόριον τῆς Κεντρικῆς Μοζαμβίκης, τῆς Ροδεσίας, τῆς Νυαζαλάνδης καὶ τοῦ ΝΑ. Κόνγκο. Ἔχει κλῖμα ἀνθυγιεινὸν καὶ στερεῖται καλοῦ ποσίμου ὕδατος. Μ. Δ. Β.

**Μπεϊσοὺγκ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ρωσίας (Δουσκάγο) ἐκβάλλων εἰς τὸ μέσον τῆς Α. ἀκτῆς τῆς 'Αζοφικῆς καὶ σχηματίζων κατὰ τὴν ἐκβολήν του μεγίστην στομαλίμνην *Μπεϊσοὺγκλιμάν*, βρίθουσαν ἰχθύων, ἀφ' ὧν ἐξάγεται χαβιάριον ἐκλεκτόν. Ὢν δεύτερος μέγας ποταμὸς τῶν νοτίως τοῦ Δὸν ἐκβαλλόντων (πλάτ. 46° 02' 30" Β., μῆκ. 38° 36' 20" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: Sea of Azov), εἶναι ὁ τῶν ἀρχαίων *Θεοφάνιον*, δν ὁ Πτολεμαῖος (Ε, θ, 2 Nobbe) φέρει δεύτερον «μετὰ τὰς τοῦ Ταναΐδος ποταμοῦ ἐκβολάς». Σ. Ε. Λ.

**Μπεϊτ-ἐλ-Φακιὲ** *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δύο πόλεων τῆς Ὑεμένης (ΝΔ. 'Αραβίας), ὧν ἡ πρώτη, ἡ ἐπικαλουμένη *Κεμπὶρ* (μεγάλη), κεῖται εἰς ἀπόστασιν 40 μιλλίων ΒΑ. τῆς Χοδεΐδας καὶ 15 μιλλίων ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἡ δὲ δευτέρα ἡ *Δσγὶρ* (μικρὰ) εἰς ἀπόστασιν 85 μιλλίων Β. τῆς Μόκας.

**Μπεϊτὸς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Δραγουμῆς τῆς ἐπαρχίας Παραμυθίας τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτοικοι (1928) 93.

**Μπεϊτ-οὐλ-λὰχ** (=οἶκος τοῦ Θεοῦ). Τὸ ἱερὸν προσκύνημα τῶν Μουσουλμάνων ἐν Μέκκᾳ (βλ. λ. *Κaάβα*).

**Μπὲκ** (Becque), *'Ερρῖκος*. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1837. Πρωτοενεφανίσθη ὡς ποιητής, τῷ δὲ 1867 συνέθεσε τὸ κείμενον τοῦ μελοδράματος τοῦ V. Joncières «Σαρδανάπαλος». Τῷ 1870 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὸ δρᾶμα: «Michel Pauper», τὸ ὁποῖον ἐδείκνυε πρωτότυπον καὶ ἰσχυρὸν τάλαντον. Μετὰ ἐννεαετῆ σιωπὴν ἀνεβίβασε τὰ δράματα: «Navette» (1879), «Honnêtes femmes» (1880) καὶ «Corbeaux» (1882), τὰ ὁποῖα ἦσαν προικισμένα μὲ τὰς αὐτὰς ἀρετάς. Ἡ τρίπρακτος κωμῳδία του: «La Parisienne» (1885) ἔτυχε θερμοτάτης ὑποδοχῆς καὶ ἀνεβιβάσθη ἐπανειλημμένως ἐπὶ σκηνῆς. Θ. Π.

—**Μπὲκ** (Beck), *'Ιάκωβος-Σιγισμοῦνδος*. Γερμανὸς φιλόσοφος (1761—1842). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν Χάλλῃ καὶ Ρόστοκ. Μαθητὴς καὶ συνεχιστὴς τῆς κριτικῆς φιλοσοφίας τοῦ Καντίου, πειρᾶται νὰ ἄρῃ διὰ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν ἀντινομίαν τοῦ μεγάλου φιλοσόφου τῆς Καινιξβέργης, καθ' ἥν, καίτοι τὰ ὄντως ὄντα, τὰ πραγματικὰ ἀντικείμενα, ὑπάρχουσιν ἀνεξαρτήτως τοῦ χρόνου, τοῦ χώρου καὶ τῆς αἰτιότητος, ἐν τούτοις προσβάλλουσι τὰς αἰσθήσεις ἡμῶν καὶ καθορίζουσι τὴν ὕλην τῶν παραστάσεών μας. Ὡς πρὸς τὴν θρησκείαν, ὁ Μπὲκ παραδέχεται, ὅτι αὕτη εἶναι ἡ ὑπακοὴ εἰς τὴν φωνὴν τῆς συνειδήσεως, συμβολιζομένης ὑπὸ τοῦ Θεοῦ. Ἔγραψεν: «Ἑρμηνευτικὸν ἀπόσπασμα ἐκ τῶν κριτικῶν ἔργων τοῦ καθηγητοῦ Καντίου» (Ρίγα 1793), «Στοιχεῖα κριτικῆς φιλοσοφίας» (1796) κτλ. Α. Δ.

—**Μπὲκ** (Beck), *'Ιωάννης-Νεπομουκιανός*. Γερμανὸς ἀοιδὸς (1828—1904). Κεκτημένος λαμπρὰν φωνὴν βαρυτόνου, ἐδημιούργησεν ἐν Μονάχῳ, τῷ 1868, τὸν ρόλον τοῦ Χὰνς Σὰξ ἐκ τῶν «Ἀρχιτραγουδιστῶν τῆς Νυρεμβέργης» καὶ ἔδρεψε δάφνας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων θεάτρων τῆς Γερμανίας καὶ Αὐστρίας. Ἀπὸ τοῦ 1853 ἐγκατασταθεὶς εἰς Βιέννῃ ἐγένετο μόνιμον μέλος τοῦ ἐκεῖ μελοδράματος. Ὁ υἱός του, *Ἰωσὴφ Μπὲκ* (1850—1903) ὑπῆρξεν ἐπίσης διακεκριμένος βαρύτονος.

— **Μπὲκ** (Beck), *Φραγκῖσκος*. Γερμανὸς συνθέτης τῆς σχολῆς τῆς Μαγχάϊμ (1730—1809). Ἐν Γαλλίᾳ, ἔνθα καὶ ἐγκατεστάθη, ἐξετέλεσε τὸ μελόδραμα «Ἡ ἔρημος νῆσος» καὶ ἄλλα σκηνικὰ ἔργα, ἐν «Stabat Mater» κτλ. Ἐκ τῆς παραγωγῆς του ἐκτὸς περισωθῇ: 19 συμφωνίαι, 6 ὀρατόρια, τεμάχια διὰ κλαβικύμβαλον κτλ. Γ. Σ.

—**Μπέκ**, *Κάρολος*. Ἐγεννήθη (1855) καὶ ἐξεπαιδεύθη ἐν Ἀθήναις, ἀκολούθως δ' ἐταξίδευσεν εἰς Γερμανίαν, ὅπου ἐπὶ βραχὺ διέμεινεν, ἐργασθεὶς παρὰ βιβλιοπωλείῳ. Ἐπανελθών, κατέλαβε θέσιν ἐν τῷ βιβλιοπωλείῳ Βίλμπεργ. Τῷ 1883 ἵδρυσεν ἴδιον ἐκδοτικὸν κατάστημα, ὅπερ διηύθυνε μέχρι τοῦ 1902. Ὑπῆρξεν ὁ ἐκδότης τῆς εἰκονογραφημένης «Ἱστορίας τῆς Ἑλλάδος» τοῦ Σπ. Λάμπρου, τῆς



Digitized by Google

ὑπὸ τοῦ Ἀρ. Προβελεγγίου μεταφράσεως τοῦ «Φάουστ» (Α' μέρος) τοῦ Γκαῖτε, κοσμουμένης ὑπὸ τῶν ἀπαραμίλλων ξυλογραφιῶν τοῦ Ἀ. Κρέλιγγ, τοῦ «Βασιλείου τῶν ζῴων» τοῦ Ν. Ἀποστολίδου. Ἀπὸ τοῦ 1902 συνεταιρισθεὶς μετὰ τοῦ Γουλ. Μπάρτ, ἤρχισε μετ' αὐτοῦ τὴν ἔκδοσιν τοῦ «Ἐθνικοῦ Ἀρχαιολογικοῦ Μουσείου» ὑπὸ Ἰω. Σβορώνου, ἵδρυσε δ' ἐν τῷ μεταξὺ τὴν «Ἑλληνικὴν ἐκδοτικὴν ἑταιρείαν», ἥτις ἀνέλαβεν ἀκολούθως ἁπάσας τὰς ἐκδόσεις ἀμφοτέρων τῶν ἐκδοτῶν, ὡς καὶ τὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐκλεκτὰ ἔργα-Πανδώρα» σειράν. Τῷ 1910 ἐπώλησε τὴν συνεταιρικήν του μερίδα εἰς τὸν Κ. Ἐλευθερουδάκην, συνεταιρισθέντα τότε μετὰ τοῦ ἑτέρου συνεταίρου Γ. Μπάρτ, περιωρίσθη δ' ἐπί τινα ἔτη ἔκτοτε εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς ῥηθείσης «Ἑλληνικῆς ἐκδοτικῆς ἑταιρείας». Μετ' οὐ πολύ, ἀποσυρθεὶς καὶ τῆς ἐργασίας ταύτης, ἀνέλαβεν ἀντιπροσωπείας εὐρωπαϊκῶν ἐμπορικῶν καὶ βιομηχανικῶν οἴκων. Τ. Α.

**Μπέκ, *ἀββαεῖον*** (Abbaye de Bec). Περίφημος μονὴ τῆς Νορμανδίας, ἱδρυθεῖσα περὶ τὸ 1034 ἐν τῇ περιοχῇ ἀρχικῶς τῆς Μποννεβὶλ τοῦ διαμερίσματος τοῦ Μοτφόρ, μεταφερθεῖσα δὲ βραδύτερον εἰς Μπὲκ-Ἑλλουὲν (Bec Hellouin) τοῦ διαμερίσματος τῆς Μπριόνν, ἐντὸς κοιλάδος διαρρεομένης ὑπὸ τοῦ ποταμίσκου Μπέκ. Αὐτόθι σῴζονται καὶ σήμερον ἐρείπια τοῦ οἰκοδομήματος καὶ τοῦ ναοῦ τῆς μονῆς, καθὼς καὶ ὁ τάφος τοῦ πρώτου ἱδρυτοῦ αὐτῆς μοναχοῦ Ἑρλουὲν (Herluin).

Ἀπὸ τῶν πρώτων ἤδη ἐτῶν τῆς ἱδρύσεώς του τὸ ἀββαεῖον Μπὲκ εἶχε καταλάβει τὴν πρώτην θέσιν μεταξὺ τῶν μονῶν τῆς Νορμανδίας, περίφημος δὲ κατέστη ἡ ἐν αὐτῷ σχολή, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐδίδαξαν μεταξὺ τῶν ἄλλων ὁ *Λανφρὰν* καὶ ὁ ἅγιος *Ἄνσελμος*. Πλεῖστοι διαπρεπεῖς κληρικοὶ τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας ἐξῆλθον ἐξ αὐτῆς, ἄλλοι διευθύναντες μοναστήρια καὶ ἄλλοι γενόμενοι ἐπίσκοποι τῶν ἐκκλησιῶν τῆς Νορμανδίας καὶ τῆς Ἀγγλίας, τοῦ Σάρτρ, τοῦ Ρότσεστερ, τοῦ Ροάν, τῆς Καντερβουρίας κλπ., ἐν οἷς καὶ ὁ κατόπιν πάπας Ἀλέξανδρος Β'. Σημαντικὴ ὑπῆρξεν ἐξ ἄλλου ἡ πολιτικὴ δρᾶσις τοῦ ἀββαείου, παρὰ τῷ ὁποίῳ οἱ βασιλεῖς τῆς Ἀγγλίας εὗρον πάντοτε δεδοκιμασμένους συμβούλους. Τὸ μοναστήριον ἦτο ἀριστούργημα οἰκοδομικῆς, ἀπέραντοι δὲ αἱ εἰς αὐτὸ ἀνήκουσαι κτήσεις· ἐν Γαλλίᾳ εἶχε τέσσαρας βαρωνείας, δεκαοκτὼ μετόχια, δεκαὲξ παρεκκλήσια καὶ δικαίωμα φόρου δεκάτης ἐπὶ 160 ἐνοριῶν, αἵτινες ἐξηρτῶντο ὑπ' αὐτοῦ. Ἐν Ἀγγλίᾳ ἐξ ἄλλου διετήρησε μέχρι τῆς βασιλείας τοῦ Ἐρρίκου Η' πολυάριθμα μετόχια. Καταστραφὲν κατὰ μέγα μέρος ἐκ πυρκαϊᾶς τῷ 1252, τὸ ἀββαεῖον Μπὲκ παρήκμασε κατὰ τὸ δεύτερον τμῆμα τοῦ μεσαίωνος, μετὰ τὴν ὁριστικὴν δ' ἕνωσιν τῆς Νορμανδίας εἰς τὴν Γαλλίαν ὁ πολιτικὸς αὐτοῦ ῥόλος κατέπαυσεν ὁμοῦ μετὰ τῆς κυριαρχίας τῶν Ἀγγλονορμανδῶν πριγκίπων. Ἡ μονὴ ἐδῃώθη ὅπως καὶ ὅλα τὰ ἐν Νορμανδίᾳ μοναστήρια κατὰ τὸν Ἑκατονταετῆ πόλεμον, ἀπὸ τῶν ἀρχῶν ὅμως τοῦ ΙΖ' αἰῶνος εἰσῆλθε καὶ πάλιν εἰς περίοδον ἀκμῆς. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα ὁ δὸν Μπεσσὲν καὶ ὁ δὸν Μασσουὲ ἐδίδαξαν εἰς τὸ ἀββεῖον τοῦ Μπέκ, εἰς τὸ ὁποῖον ἐμαθήτευσεν ὡς δόκιμος μοναχὸς ὁ Πρεβῶ, ὁ συγγραφεὺς τῆς «Μανὸν Λεσκὼ» καὶ πολλοὶ ἄλλοι διακριθέντες βενεδικτῖνοι. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν ἐπανάστασιν οἱ μοναχοὶ τοῦ ἀββαείου διεσκορπίσθησαν καὶ ἡ ἱστορία τῆς διασήμου ταύτης μονῆς ἐτερματίσθη ὁριστικῶς. —Ω.

**μπεκάτσα** (ἡ), ἡ ***ξυλόκοττα*** [*Ζωολ.*]. Καλεῖται οὕτω κοινῶς τὸ πτηνὸν *σκολόπαξ ὁ ἀγροδίαιτος* ἢ *δασόβιος*.

**μπεκατσόνι** (τό), ἡ ***μπεκατσίνι***, ἢ καὶ ***μπεκανότο*** (τὸ) [*Ζωολ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ πτηνοῦ *σκολοπακίς*.

**Μπεκατωράτα** [*Γεωγρ.*]. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος *Λιβαράτων* τῆς ἐπαρχίας Σάμης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 102. Χ. Δ.

**Μπέκερ** (Becker καὶ Bekker)· βλ. λ. *Μπέκκερ*.

**Μπέκες** (Bekes) [*Γεωγρ.*]. Οὐγγρικὴ κομιτεία διαρρεομένη ὑπὸ τῶν ὑδάτων τοῦ Κέρες (Köros), ἐκτάσεως 3.670 τετρ. χιλιομ. Κάτ. 298.710. Παράγει δημητριακά, καπνὸν καὶ ὀπώρας. Πρωτεύουσα ἡ *Μπέκες-Τζούλα*. — Π.

— **Μπέκες** (Bekes) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῇ ὁμωνύμῳ κομιτείᾳ, ἐπὶ τῆς συμβολῆς τοῦ Λευκοῦ καὶ Μέλανος Κέρες. Κάτ. 28.161. Παράγει σιτηρὰ καὶ μέλι. Συνδέεται σιδηροδρομικῶς μὲ τὴν Μπέκες-Τζούλα (16 χλμ.), ἦτο δὲ ἄλλοτε σπουδαιοτάτη αὐτοκρατορικὴ πόλις. — Π.

— ***Μπέκες-Τζούλα*** (Bekes-Gyula) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Μπέκες. Κάτ. 24.908. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Γκροσβαρντάιν, ἔχει ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον, ὡραῖα κτήρια καὶ μνημεῖον εἰς τὸν μουσικοσυνθέτην Ἔρκελ. — Π.

— ***Μπέκες Τσάμπα*** (Bekes-Csaba) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Μπέκες. Κάτ. 46.633 (Οὔγγροι, Σλοβάκοι). Σπουδαιότατον σιδηροδρομικὸν κέντρον τῶν γραμμῶν Βουδαπέστης-Ἀρὰκ καὶ Γκροσβαρντάιν-Σέγκεντιν. Διεξάγει ἐμπόριον σταφυλῶν, σιτηρῶν κ. ἄ. καὶ ἔχει βιομηχανίαν λινῶν ὑφασμάτων. — Π.

**Μπεκές, *Ὅμηρος***. Σύγχρονος Ἕλλην ποιητής, γεννηθεὶς (1886) καὶ ἐκπαιδευθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει εἰς τὸ ἐκεῖ γαλλικὸν γυμνάσιον καὶ εἶτα τὸ «Ἐθνικὸν Λύκειον». Ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν μελέτην τῆς γαλλικῆς φιλολογίας, διετέλεσεν ἐπὶ σειρὰν ἐτῶν καθηγητὴς τῆς γαλλικῆς γλώσσης εἰς γυμνάσια τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ μετέπειτα τῶν Ἀθηνῶν. Ὁ Μπεκὲς ἐνεφανίσθη νέος εἰς τὴν ἑλληνικὴν ποίησιν ἀπὸ τοῦ «Νουμᾶ», συνειργάσθη δ' ἔκτοτε εἰς τὸ περιοδικὸν τῆς Κωνσταντινουπόλεως «Λόγος» (ὅπερ ἐξέδιδεν ὁ ἴδιος μετὰ τοῦ Γ. Χαλκούση, 1918—1922, καὶ ὅπου ἐδημοσιεύθη ἡ κυριωτέρα αὐτοῦ ποιητικὴ ἐργασία), εἰς τὴν «Νέαν Ζωὴν» τῆς Ἀλεξανδρείας καὶ ἄλλα περιοδικὰ τῶν Ἀθηνῶν. Βιβλία ἐξέδωκε τὰ ἑξῆς: «Ρίμες καὶ Ρυθμοί» (Κωνσταντινούπολις, 1914), «Στίχοι» («Τὰ Νικητήρια»—«Ἀνατολίτικα»—«Ὁ Θρίαμβος τοῦ Λόγου»—«Ἡ λιτανεία τοῦ ἀνθρώπου» κλπ., 1924), «Ὁ Πανηγυρικὸς τῆς Ἀγάπης» (ἔπος φιλοσοφικοῦ χαρακτῆρος, 1929) καὶ «Στὴ χαρὰ τοῦ βουνοῦ» (ταξιδιωτικαὶ ἐντυπώσεις, 1931). Ποιήματά του μετεφράσθησαν ἀγγλιστὶ ὑπὸ τοῦ John Edwards καὶ τοῦ Γ. Κατσίμπαλη, γαλλιστὶ ὑπὸ τοῦ Jean Michel («Anthologie des Poètes néo-grecs, 1930) καὶ γερμανιστὶ ὑπὸ ὁμίλου Γερμανῶν διανοουμένων («Europäische Lyrik der Gegenwart 1900—1925», 1930). Τ. Α.

**Μπεκὴ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος χωρίου *Σταυρὸς* (βλ. λ.).

**Μπεκῆρος** [*Γεωγρ.*]. Ὕφορμος τῆς Κυνουρίας (πλάτ. 36°56' Β., μῆκ. 23°01 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Venetico to Spezzia), 3 μιλ. παράπλου ἀπὸ τοῦ *Κυπαρίσσι* καὶ ἀμέσως ὑπὸ τὸ ἀκρωτήριον *Κουρμάζι*. Σ. Ε. Λ.

**Μπεκηρτζιλὲρ** [*Γεωγρ.*]. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Ἱππικὸν* (βλ. λ.).

**Μπεκὴρ-Σαμὴ *βέης***. Τοῦρκος πολιτικός, διατελέσας ἐπὶ σουλτανικοῦ καθεστῶτος διοικητὴς διαφόρων ἐπαρχιῶν τῆς Τουρκίας (Τριπολίτιδος, Συρίας κ. ἄ.). Γνωστὸς ἐγένετο ἐκ τοῦ ὅτι, τῷ 1921, ἐνεφανίσθη ἐν Λονδίνῳ ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἀντιπροσωπείας τῆς κυβερνήσεως τῆς Ἀγκύρας κατὰ τὰς διαπραγματεύσεις περὶ συμβιβαστικῆς εἰρήνης μετὰ τῆς Ἑλλάδος διὰ τροποποιήσεως τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν (1920). Συγχρόνως μετὰ τῆς ἀντιπροσωπείας τῆς Ἀγκύρας εἶχεν ἐμφανισθῆ ἐκεῖ τότε καὶ ἄλλη τουρκικὴ ἀντιπροσωπεία ὑπὸ τὸν μέγαν βεζύρην Τεβφὶκ πασᾶν, ἐκπροσωποῦσα τὴν σουλτανικὴν κυβέρνησιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, μετά τινας δὲ δισταγμοὺς αἱ δύο ἀντιπροσωπεῖαι συνεννοήθησαν ὑπὸ τὸν Μπεκὶρ Σαμῆ. Ἀποτυχούσης τῆς συνδιασκέψεως ταύτης, ὁ Μπεκὶρ Σαμῆ ἐπανῆλθεν εἰς Ἄγκυραν, ὅπου περιῆλθεν ἐφεξῆς εἰς τὴν προτέραν του ἀφάνειαν. Ν. Μ.

**Μπέκι** (Bechi) ***ἀντίδρασις*** [*Χημ. Τροφ.*]. Ἡ δι' ἐπιδράσεως ἀλκοόλης καὶ νιτρικοῦ ἀργύρου ἀνίχνευσις τοῦ βαμβακελαίου εἰς τὰ ἔλαια. Ἐπιφέρει μελάνωσιν τοῦ ὑγροῦ. Σ. Γ.

**Μπεκιάνικα** [*Γεωγρ.*]. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος *Σολωμοῦ* τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 40. Χ. Δ.

**μπεκιάρης** (ὁ)· ἀνὴρ ἄγαμος, ζῶν κατὰ μόνας· || ἐν γένει ὁ ἄγαμος, ἄλλως *ἐργένης* (τουρκ. bekâr).

**μπεκιάρικος,** —η, —ο· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μπεκιάρην: «μπεκιάρικη ζωή».

**μπεκιαρλίκι** (τό)· τὸ νὰ εἶναί τις μπεκιάρης, ἄγαμος, ἐργένης.

**Μπεκίδες** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς κοινότητος *Λαζάρ Μπούγα* τῆς ἐπαρχίας Φαρσάλων τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 290. Χ. Δ.

**Μπεκκαντέλλι** (Beccadelli), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1394—1471). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Βολωνίᾳ καὶ ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ δουκὸς τοῦ Μιλάνου Φιλίππου-Μαρία Βισκόντι, βραδύτερον δὲ καθηγητὴς τῆς ῥητορικῆς εἰς τὴν Πλακεντίαν, τὴν Παβίαν, τὴν Πάδουαν καὶ τὴν Βολωνίαν, ὅπου ἐστέφθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Σιγισμούνδου. Συνέβαλε μεγάλως εἰς τὴν ἀναγέννησιν τῶν ἰταλικῶν γραμμάτων, ἱδρύσας ἐν Νεαπόλει τὴν «Accademia Panormita», ἡ ὁποία κατόπιν μετεβλήθη εἰς «Accademia de Pontano». Ὁ βίος αὐτοῦ ἦτο λίαν περιπετειώδης. Εἶναι κυρίως γνωστὸς διὰ τὰ βωμολοχικά του ἐπιγράμματα. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἑρμαφρόδιτος», ποίημα αἰσχρογραφικόν, «Ἐπιστολάς» εἰς πέντε τόμους, «Περὶ τῶν ἔργων καὶ ἡμερῶν τοῦ βασιλέως Ἀλφόνσου» (1485) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπεκκάρι** (Beccari), ***Αὔγουστος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1509—1590). Τούτου εἶναι γνωστὸν τὸ ποιμενικὸν δρᾶμα «Θυσία», ὅπερ ἐμελοποιήθη ὑπὸ τοῦ Ἀλφόνσου ντέλλα Βιόλα καὶ παρεστάθη διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1554 ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τοῦ δουκὸς τῆς Φερράρας Ἡρακλέους Β'. Τὸ ἔργον τοῦτο εἶναι τὸ πρῶτον γραφὲν ἐν Ἰταλίᾳ ποιμενικὸν θεατρικὸν ἔργον. Μ. Δ. Β.

— **Μπεκκάρι** (Beccari), ***Ἐδουάρδος***. Ἰταλὸς βοτανικός, γεννηθεὶς τῷ 1843 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1920. Κατὰ καιροὺς ἐπεσκέφθη πρὸς ἐπιστημονικὰς μελέτας τὰς Ἰνδίας, τὴν Βόρνεο, τὴν Ἰάβαν, τὴν Νέαν Ζηλανδίαν καὶ τὴν Αὐστραλίαν. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων του συγγραμμάτων εἶναι ἡ «Μαλαισία» (1877—1890), ἐν τῷ ὁποίῳ περιγράφει πλῆθος ἐξωτικῶν φυτῶν καὶ ἐκθέτει τὰ ἐκ τῶν ταξιδίων του βοτανικὰ συμπεράσματα. Δ. Ν. Π.

**Μπεκκαρία** (Beccaria), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***· βλ. λ. *Βεκκαρίας*.

**Μπεκκαφοῦμι** (Beccafumi), ***Δομένικος-Μεκερῖνο***, ἢ ***Μικαρῖνο,*** μᾶλλον γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα—. Ἰταλὸς καλλιτέχνης (1484—1551). Ἔτυχε προστασίας ὑπὸ τοῦ ἐκ Σιέννας πλουσίου Λαυρεντίου Μπεκκαφοῦμι, οὗ τὸ ἐπώνυμον ἐξ εὐγνωμοσύνης προσέθηκεν εἰς τὸ ἴδιον ὄνομα, ἐμαθήτευσε δὲ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Καπάννα καὶ διεκρίθη ὡς ζωγράφος, γλύπτης, χαλκοχύτης, ψηφοθέτης καὶ χαράκτης. Ἐμελέτησε μετὰ παθους τὸ ἔργον τοῦ Ραφαήλ, τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ τοῦ Περουτζῖνο καὶ διεκόσμησε διὰ τοιχογραφιῶν καὶ ψηφοθετημάτων τινὰ τῶν ὡραιοτέρων μνημείων τῆς Ἰταλίας. Τοιουτοτρόπως ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Σιέννας ἐξεικόνισε τοὺς «Εὐαγγελιστὰς» καί τινα ἐπεισόδια ἐκ τοῦ βίου τοῦ Μωυσέως, ἔτι δὲ τὴν «Θυσίαν τοῦ Ἀβραάμ», τὸν «Μωυσέα θραύοντα τὰς πλάκας τοῦ νόμου», τὸ «Κτύπημα τοῦ βράχου» καὶ ἄλλας βιβλικὰς σκηνάς. Αἱ τελευταῖαι αὗται συνθέσεις ἀποτελοῦσιν ὡραιότατα ψηφοθετήματα. Ἐν τῷ παλατίῳ Ντόρια τῆς Γενούης ὁ Μπεκκαφοῦμι συνεπλήρωσε διάζωμα εἰκονίζον παῖδας, ὅπερ εἶχον ἀρχίσει ὁ Πιερῖνο ντὲλ Βάγκα καὶ ὁ Πορντενόνε. Ἐκ τῶν πινάκων του μνημονεύομεν: τὸν «Χριστὸν εἰς τὸν κῆπον τῶν Ἐλαιῶν» (Λοῦβρον), τὴν «Ἀποκαθήλωσιν τοῦ Χριστοῦ» (Νεάπολις), τὴν «Ἁγίαν οἰκογένειαν», τὴν «Αὐτοπροσωπογραφίαν» του καὶ ἑτέραν «Ἁγίαν οἰκογένειαν» (Φλωρεντία). Ι. Μ. Π.

**Μπέκκερ** (Becker), ***Ἀλβέρτος-Ἀντώνιος***. Γερμανὸς μουσουργὸς (1834—1899), καθηγητὴς τῆς συνθέσεως εἰς τὸ ἐν Βερολίνῳ ᾠδεῖον Σαρβένκα καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν τῆς γερμανικῆς πρωτευούσης. Εἵλκυσε τὸ ἐνδιαφέρον τοῦ κοινοῦ διὰ σειρᾶς ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ «Μεγάλη λειτουργία εἰς σι ὕφ.», σειρὰ μελῳδιῶν, ἡ βραβευθεῖσα «συμφωνία εἰς σολ ἔλ.», ἡ «Καντάτα τῆς μεταρρυθμίσεως», τὸ μελόδραμα «Λορελάϊ» (1898) κτλ. Γ. Σ.

— **Μπέκκερ** (Becker), ***Αὔγουστος***. Γερμανὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1828—1891). Ἀφοῦ ἐσπούδασεν ἐν Μονάχῳ φιλοσοφίαν καὶ ἱστορίαν, ἀφωσιώθη κατόπιν εἰς τὴν φιλολογίαν. Ἐξέδωκεν ἀπὸ τοῦ 1859—1864 τὴν «Tsarzeitung» καὶ ἐδημοσίευσε συλλογὴν διηγημάτων καὶ τὰ μυθιστορήματα: «Χέντβιχ» (1868), «Ἡ ἀδελφή μου» (1874, 4 τ.), «Ὁ ζωγράφος Σαίνμπαρτ» (3η ἔκδ. 1878), «Εἰς δρόμους τῶν δασῶν» (1881), «Πρὸ ἑκατὸν χρόνων» (δύο διηγήματα 1891), κτλ. Γ. Ε. Κ.

— **Μπέκκερ** (Becker), ***Αὔγουστος***. Γερμανὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1837. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ σκηνογράφῳ τοῦ αὐλικοῦ θεάτρου τῆς γενετείρας του Δαρμστάττης Ἐρρίκῳ Σίλμπαχ καὶ ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Βαυαρίαν, τὸ Τυρόλον, τὴν Ἑλβετίαν καὶ τὴν Νορβηγίαν. Τῷ 1852 ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Δυσσελδόρφην, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Ἀπὸ τοῦ 1864 μέχρι τοῦ 1869 ἐφιλοξενήθη ὑπὸ τῆς βασιλίσσης τῆς Ἀγγλίας ἐν Μπάλμοραλ. Διεκρίθη ὡς τοπιογράφος, ὑπῆρξε δὲ παραγωγικώτατος, καταλιπὼν ἄνω τῶν τετρακοσίων πινάκων, ὧν πολλοὶ εὑρίσκονται εἰς τὴν κατοχὴν τῶν βασιλικῶν οἰκογενειῶν τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς Ρουμανίας. Ι. Μ. Π.

— **Μπέκκερ** (Becker) ***Βαλτάσαρ***. Ὀλλανδὸς θεολόγος καὶ συγγραφεὺς (1634—1698). Ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῆς θεολογίας, διωρίσθη ἀπὸ τοῦ 1666 ἱερεὺς τῆς μετερρυθμισμένης Ἐκκλησίας, ὑπηρετήσας ὡς τοιοῦτος καὶ ἀλλαχοῦ καὶ ἀπὸ τοῦ 1679 ἐν Ἀμστελλοδάμῳ. Φανατικὸς ὀπαδὸς τῆς φιλοσοφίας τοῦ Καρτεσίου, ἐζήτει τὴν ἐφαρμογὴν αὐτῆς ἐπὶ τῆς θεολογίας, ἐκδοὺς καὶ ἴδιον ἔργον «De philosophia cartesiana admonitio» (1668). Ὅτε ὁ κατὰ τὸ 1680—1681 ἐμφανισθεὶς κομήτης διήγειρε τὴν δεισιδαιμονίαν καὶ τὸν φανατισμὸν τοῦ ὄχλου, ἐξέδωκεν ἴδιον ἔργον «Περὶ κομητῶν», ἐν τῷ ὁποίῳ, ὡς καὶ ἐν τῷ μετὰ ταῦτα ἐκδοθέντι ἔργῳ αὐτοῦ «Ὁ μαγεμένος κόσμος» (1691—1693 εἰς τέσσαρας τόμους), κατεπολέμησε θαρραλέως τὴν δεισιδαιμονίαν τῆς ἐποχῆς αὐτοῦ, διισχυρισθεὶς μεταξὺ ἄλλων ὅτι δὲν ὑπάρχει διάβολος. Τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔργον, γραφὲν ἀρχικῶς εἰς ὀλλανδικὴν γλῶσσαν καὶ μεταφρασθὲν μετ' ὀλίγον εἰς τὴν γαλλικήν,

Digitized by Google

γερμανικὴν καὶ λατινικήν, διήγειρε μέγαν θόρυβον, **πολλῶν καταχρινόντων αὐτὸ μέχρις οὗ κατεδικάσθη ὑπὸ τοῦ κονσιστορίου τοῦ Ἀμστελλοδάμου, ὅπερ κατεδίκασε καὶ αὐτὸν τὸν συγγραφέα (1692). Ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του ἐξέδωκεν ὁ Μπέκκερ ἐλευθεριάζον, ἀλλ' ὀξυνούστατον ἔργον, τὴν ἑρμηνείαν τῆς κατηχήσεως τῆς Ἀϊδελβέργης (1696).** Κ. Ι. Δ.

— **Μπέκκερ** (Becker), ***Γουλιέλμος-Ἀδόλφος.*** Γερμανὸς ἀρχαιολόγος καὶ συγγραφεὺς (1796—1846). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας καὶ ἐδημοσίευσεν, ἐκτὸς ἄλλων, τὰ ἑξῆς: «Γάλλος, ἢ ρωμαϊκαὶ σκηναὶ ἐκ τῆς ἐποχῆς τοῦ Αὐγούστου» (1838, νεωτ. ἐκδ. 1863 καὶ 1880—1882), «Χαρικλῆς, ἢ εἰκόνες ἐκ τῶν ἠθῶν τῆς ἑλληνικῆς ἀρχαιότητος» (1840, νεωτ. ἐκδ. 1854 καὶ 1877—1878) καὶ τὸ κυριώτερον ἐκ τῶν ἔργων του, «Ἐγχειρίδιον τῶν ρωμαϊκῶν ἀρχαιοτήτων» (1843—1846, συνεχισθὲν ὑπὸ τοῦ Marquardt, 1849—1868, καὶ διὰ τοῦ «Δικαίου τῆς Πολιτείας τῶν Ρωμαίων, ὑπὸ Mommsen). Γ. Ε. Κ.

**Μπέκκερ** (Bekker), ***Ἐλισάβετ.*** Ὀλλανδὴ συγγραφεὺς (1738—1804). Τὸ φιλολογικόν της στάδιον ἤρχισε μὲ μικρὰ σατιρικὰ συνθέματα καὶ ἐγένετο γνωστὴ διὰ τοῦ, πλήρους πνεύματος, ἠθογραφικοῦ διηγήματός της: «De menuet en de Dominées-Pruik» καὶ διὰ τῶν λαϊκο-φιλοσοφικῶν ποιημάτων της. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της, τοῦ προτεστάντου κληρικοῦ Ἀδόλφου Βόλφ, ἐξέδωκε μετὰ τῆς φίλης της *Ἀγάθης Ντέκεν* συλλογὴν λαϊκῶν τραγουδιῶν καὶ μυθιστορήματα, τὰ ὁποῖα διακρίνονται πρὸ παντὸς διὰ τὴν ἁπλότητα τοῦ ὕφους. Κυριώτερον ἐκ τούτων εἶναι «Historie van mejuffrouw Sara Burgerhart» (1782). Γ.Ε.Κ.

— **Μπέκκερ** (Bekker, καθ' ἑλληνικὴν ἀπόδοσιν *Βεκκῆρος*), ***Ἐμμανουὴλ-Αὔγουστος.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Βερολίνῳ (1785—1871). Ἐκ πτωχῆς οἰκογενείας προερχόμενος, κατώρθωσε νὰ περατώσῃ τὰς γυμνασιακάς του σπουδάς, μεθ' ὃ ἐνεγράφη εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Χάλλης, ὅπως σπουδάσῃ ἀρχαιολογίαν. Ὑπὸ τὴν καθοδήγησιν τοῦ διασήμου φιλολόγου Φρ. Βόλφ ἐπετέλεσεν ἀρίστας σπουδάς, μετὰ τὸ πέρας τῶν ὁποίων, τῇ συστάσει αὐτοῦ, διωρίσθη (1810) ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου. Συγχρόνως ἀπεστάλη εἰς Παρισίους πρὸς μελέτην τῶν ἐν ταῖς αὐτόθι βιβλιοθήκαις ἀρχαίων χειρογράφων. Προαχθεὶς εἰς τακτικὸν καθηγητὴν ἐπανῆλθεν εἰς Βερολῖνον (1812) καὶ μετὰ τριετίαν ἐξελέγη μέλος τῆς αὐτόθι ἀκαδημίας, ἐντολῇ τῆς ὁποίας μετέβη καὶ πάλιν εἰς Παρισίους πρὸς ἀντιβολὴν διαφόρων ἀρχαίων χειρογράφων· ἐπὶ πλέον δὲ ἐπεφορτίσθη ὅπως ἀπαιτήσῃ τὴν ἐπιστροφὴν τῶν προερχομένων ἐκ γερμανικῶν βιβλιοθηκῶν. Τῷ 1817 ἐπεσκέφθη τὰς βιβλιοθήκας τῆς Ἰταλίας καὶ ἰδίως τῆς Βερώνας, Βενετίας, Ρώμης, Μιλάνου, τῷ δὲ 1819 τοῦ Τουρίνου καὶ διὰ τρίτην φορὰν τῶν Παρισίων. Μετὰ ἓν ἔτος ἐπεσκέφθη τὴν Ὀξφόρδην, τὸ Καίμπριτζ καὶ τὸ Λονδῖνον. Ἡ φιλολογικὴ δρᾶσις τοῦ Μπέκκερ ὑπῆρξε πολυμερὴς καὶ πλουσία. Διακρινόμενος διὰ τὸ κριτικὸν πνεῦμά του «ἑλληνομαθέστατος καὶ διὰ μεγάλης φρονήσεως πεπροικισμένος», κατὰ τὸν χαρακτηρισμὸν τοῦ Γοδ. Ἕρμαν, βαθὺς δὲ γνώστης τῶν ἀρχαίων ποιητῶν καὶ συγγραφέων, ἤρξατο σειρᾶς ἐκδόσεων κριτικῶς ἐπεξειργασμένων, αἵτινες τῷ προσεπόρισαν φήμην ἐξόχου φιλολόγου. Τῶν ἐν ταῖς ξέναις βιβλιοθήκαις ἐρευνῶν του καρπὸς ἦτο ἡ ἔκδοσις τῶν «Anecdota graeca» (Βερολῖνον 1814—1821 εἰς 3 τόμ.). Ἐξέδωκεν ἐπὶ πλέον τὸ «Περὶ ἀντωνυμίας» τοῦ Ἀπολλωνίου τοῦ Ἀλεξανδρέως, τὸν Θουκυδίδην (Ὀξφόρδη 1821), τοὺς Ἀττικοὺς ῥήτορας (1822) καὶ τὸν Ἀριστοφάνην (1825), τὸν Πλάτωνα (Βερολῖνον 1823), τὴν «Μυριόβιβλον» τοῦ Φωτίου, τὸν Ἡρωδιανόν, τὸν Παυσανίαν, τὰ σχόλια εἰς τὸν Πλάτωνα καὶ τὴν Ἰλιάδα, τὸν Ἀριστοτέλην, τὸν Ἡρόδοτον, Σέξτον τὸν Ἐμπειρικόν, τὸν Ὅμηρον, τὸν Πολύβιον, Δίωνα τὸν Κάσιον, εἴκοσι καὶ τέσσαρας τόμους Βυζαντινῶν ἱστορικῶν τῆς ἐκδόσεως τῆς Βόννης («Corpus Scriptorum historiae byzantinae»), ἐκ δὲ τῶν Λατίνων συγγραφέων τὸν Λίβιον καὶ τὸν Τάκιτον. Ἠσχολήθη ὡσαύτως καὶ εἰς τὴν ἀρχαίαν γαλλικὴν καὶ προβηγκιανὴν λογοτεχνίαν καὶ ἐξέδωκε: «Le Fierabras», «La Vie de saint Thomas martyr» κ.ἄ.

[*V. Sauppe,* Zur Erinnerung an Meineke und Bekker, Göttingen 1872.] Ι. Φ. Δ.

**Μπέκκερ** (Becquer), ***Γουσταῦος-Ἀδόλφος.*** Ἱσπανὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1836—1870). Διετέλεσε συντάκτης εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας καὶ ἐταξίδευσεν εἰς πολλὰς πόλεις τῆς Ἰταλίας καὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ. Τὸ κυριώτερον αὐτοῦ ἔργον εἶναι ἡ συλλογὴ λυρικῶν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Στίχοι». Τὰ ποιήματα ταῦτα κατέστησαν δημοτικώτατα παρὰ τῇ νεολαίᾳ τῆς Ἱσπανίας, χάρις εἰς τὴν ἁρμονίαν, τὸ τρυφερὸν αἴσθημα καὶ τὴν ἀληθινὴν ποιητικὴν πνοήν, ἥτις τὰ διέπει, καὶ παραβάλλονται πρὸς τὰ τοῦ Μυσσέ, τοῦ Χάϊνε, τοῦ Λαμαρτίνου, τοῦ Μπαϊνβὶλ, τοῦ Στεκέττι κτλ., θεωρούμενα ἐκ τῶν καλυτέρων τῆς νεωτέρας Ἱσπανικῆς ποιήσεως. Ἔγραψεν ἐπίσης σημαντικὴν «Ἱστορίαν τῶν ναῶν τῆς Ἱσπανίας», συλλογὴν 22 παραμυθιῶν εἰς πεζὸν λόγον, τόμον ἐννέα ἐπιστολῶν κτλ. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1872 καὶ 1898, πολλὰ δὲ τῶν ἔργων του μετεφράσθησαν εἰς διαφόρους εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Μ. Δ. Β.

— **Μπέκκερ** (Becker), ***Ἰωάννης-Φίλιππος.*** Γερμανὸς ἐπαναστάτης (1809—1886). Νεώτατος ἀνεμείχθη εἰς τὸν ἀγῶνα τῶν προοδευτικῶν κομμάτων καὶ ἐφυλακίσθη (1830). Βραδύτερον μετέβη εἰς Ἑλβετίαν, ὅπου ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὰς διαταγάς τοῦ Ὀξενμπάϊν κατὰ τῶν καθολικῶν καντονίων τοῦ Ζόντερμπουντ. Τῷ 1848 διὰ σώματος Ἑλβετῶν καὶ Γερμανῶν ἐθελοντῶν ἐβοήθησε τὸ κίνημα τοῦ Χέκερ εἰς τὸ δουκᾶτον τῆς Βάδης, ἀκολούθως δὲ ἐβοήθησε τοὺς φιλελευθέρους τῆς Ρώμης καὶ Σικελίας καὶ ἔλαβε μέρος εἰς διάφορα ἄλλα κινήματα (Παλατινάτου κλπ.), ἐπιδείξας μεγάλην ἱκανότητα. Ἀργότερον προσεχώρησεν εἰς τὸ ἀναφαινόμενον τότε σοσιαλιστικὸν κόμμα καὶ ὑπῆρξεν ἐνθουσιώδης προπαγανδιστὴς τῶν ἀρχῶν τῆς διεθνοῦς ἑνώσεως τῶν ἐργατῶν καὶ τοῦ μαρξισμοῦ. Σπουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἱστορία τῆς ἐν Ν. Γερμανίᾳ ἐπαναστάσεως τοῦ 1849» (1866), «Νέα μαθήματα προσευχῶν: δημοιοκατάληκτοι σατιρικοὶ ψαλμοὶ» (1868) κ. ἄ. Π. Ν. Π.

—**Μπέκκερ** (Becker), ***Κάρολος.*** Γερμανὸς φιλέλλην, μετασχὼν τῆς ἐν Κωλιάδι Ἄκρᾳ (Τρεῖς Πύργοι τῆς Ἀττικῆς) μάχης μετὰ 18 ἄλλων φιλελλήνων.

—**Μπέκκερ** (Becker), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος-Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς ζωγράφος (1820—1900). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Βερολίνῳ σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν κατ' ἀρχὰς καὶ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Α. φὸν Κλαῖμπερ μετὰ ταῦτα, μεταβὰς δὲ τῷ 1841 εἰς Μόναχον συνεπλήρωσε παρὰ τῷ Ἕς τὰς καλλιτεχνικάς του σπουδάς, εἰδικευθεὶς εἰς τὴν τοιχογραφίαν. Ἀπὸ τοῦ 1842 ἐταξίδευσεν εἰς Παρισίους, Ρώμην, Βενετίαν καὶ ἄλλας πόλεις. Διεκρίθη διὰ τὴν ἱστορικὴν ἀκρίβειαν, τὸν ἁρμονικὸν χρωματισμὸν καὶ τὴν λεπτότητα τῆς ἐκφράσεως τῶν πινάκων του. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Προσωπίδες ἐν Βενετίᾳ», «Ἡ ἐπίσκεψις τοῦ Καρόλου Κουίντου παρὰ τῷ Φούγγερ» (Ἐθνικὴ Πινακοθήκη Βερολίνου), «Μία σκηνὴ ἐκ τοῦ Γκαῖτς φὸν Μπερλίχιγκεν» (Πινακοθήκη Στρασβούργου), «Ἡ Ἱερὰ Ἐξέτασις» (Πινακοθήκη Καινιξβέργης), «Ἡ εὐγενὴς κυρία καὶ ὁ ἀκόλουθος», «Ἡ ἐπίσκεψις παρὰ τῷ δόγῃ» κλπ. Ι. Μ. Π.

—**Μπέκκερ** (Becker), ***Κωνσταντῖνος-Ἰούλιος.*** Γερμανὸς συνθέτης (1811—1859). Ἔγραψε πλεῖστα μελοδράματα, ἔργα χορῳδίας καὶ ὀρχήστρας, διάφορα θεωρητικὰ βιβλία καὶ μετέφρασεν εἰς τὴν γερμανικὴν τὸ «Ταξίδιον εἰς Γερμανίαν» τοῦ Μπερλιὸζ (1843). Γ. Σ.

—**Μπέκκερ** (Becker), ***Νικόλαος.*** Γερμανὸς ποιητὴς (1809—1845). Ἐσπούδασε νομικά, ὑπηρέτησε δ' ἐν ἀρχῇ ὡς γραμματεὺς πρωτοδικείου. Διάσημος ἐγένετο ἀπὸ τοῦ 1840, ὁπότε συνέθεσε τὸ περίφημον «Ἆσμα τοῦ Ρήνου» («Sie sollen ihn nicht haben, den frein, deutschen Rhein»), προκληθὲν ἐκ τῶν περὶ πολέμου ἀπειλῶν τοῦ Θιέρσου καὶ γενόμενον δεκτὸν μετ' ἐξάλλου πατριωτικοῦ ἐνθουσιασμοῦ ὑπὸ τοῦ γερμανικοῦ λαοῦ. Τὴν ἀπάντησιν εἰς τὸ ᾆσμα τοῦτο, τὸ ὁποῖον ἔθιγε τὴν ἐθνικὴν ὑπερηφάνειαν τῶν Γάλλων, ἔδωσε διαλλακτικώτερον ὁ Λαμαρτῖνος καὶ μᾶλλον ἰταμῶς ὁ Ἀλφρέδος ντὲ Μυσσὲ διὰ τοῦ «Nous l' avons eu, votre Rhin allemand». Συλλογὴ «Ποιημάτων» τοῦ Μπέκκερ ἐξεδόθη τῷ 1841. Γ. Ε. Κ.

— **Μπέκκερ** (Becker), ***Ὄθων.*** Γερμανὸς ὀφθαλμολόγος (1828—1900). Ἐπεδόθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν θεολογίαν ἐν Ἐρλάγκεν καὶ εἰς τὰς μαθηματικὰς καὶ φυσικὰς ἐπιστήμας ἐν Βιέννῃ, μὴ ἔχων ὅμως τ' ἀπαιτούμενα πρὸς τὸ ζῆν ἠναγκάσθη νὰ εἰσέλθῃ ὡς οἰκοδιδάσκαλος παρὰ τῷ τραπεζίτῃ Figdor τῆς Βιέννης, οὗτινος τὴν θυγατέρα ἐνυμφεύθη τῷ 1851. Τὸ ἴδιον ἔτος ἤρχισε τὰς ἰατρικάς του σπουδὰς καὶ ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς ἐν Βιέννῃ τῷ 1859. Εἰς τὴν ὀφθαλμολογίαν ἐτελειοποιήθη παρὰ τῷ Jaeger καὶ κυρίως παρὰ τῷ Ault. Τῷ 1868 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ὀφθαλμολογίας ἐν Ἀϊδελβέργῃ, ἕδραν ἣν ἐκράτησε μέχρι τοῦ θανάτου του. Τὸ πρῶτον ὀφθαλμικὸν ἔργον τοῦ Μπέκερ εἶναι τὸ περὶ τῆς τοπογραφίας τοῦ ἀκτινωτοῦ σώματος (1863). Ἐκ τῶν λοιπῶν ὑπερπεντήκοντα ἐργασιῶν αὐτοῦ ἀναγράφομεν τάς: περὶ σφύξεων τῆς κεντρικῆς ἀρτηρίας τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς κατὰ τὴν ἀνεπάρκειαν τῆς ἀορτῆς (1871) καὶ κατὰ τὴν ἐξόφθαλμον βρογχοκήλην (1873—1880)· περὶ λευχαιμικῆς ἀμφιβληστροειδίτιδος (1869)· περὶ στενώσεως τῶν δακρυφόρων ἀγωγῶν καὶ τῶν ἐκ ταύτης συνεπειῶν (1874)· περὶ ἐγχειρήσεως τοῦ συμβλεφάρου (1874)· περὶ συγγενοῦς ἑτεροπλεύρου ἀχρωματοψίας (1880) κτλ. Ἀλλ' ἐκεῖνο ὅπερ ἀνύψωσε τὸν Becker εἶναι αἱ σπουδαῖαι αὐτοῦ μελέται περὶ τοῦ φακοῦ (περιγραφή, τοπογραφία καὶ ἱστοπαθολογία) καὶ περὶ καταρράκτου ἐν γένει, τῶν ὁποίων τὰ πορίσματα ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1883 εἰς ἴδιον κλασσικὸν σύγγραμμα. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ἐργασιῶν, ὁ Μπέκκερ ἐδημοσίευσε καὶ ἀνατομοπαθολογικὸν ἄτλαντα τοῦ ὀφθαλμοῦ (1874—1878). Α. Γ.

— **Μπέκκερ** (Bekker), ***Παῦλος.*** Γερμανὸς μουσικολόγος (1882). Βιολιστὴς τῆς φιλαρμονικῆς τοῦ Βερολίνου, διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν Γκαῖρλιτς καὶ ἀλλαχοῦ, ἐπεδόθη εἰς τὴν μουσικὴν φιλολογίαν, τάχιστα ἐπιβληθεὶς ὡς κριτικὸς εἰς πλείστας ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ τῆς γερμανικῆς πρωτευούσης. Κυριώτερα του ἔργα παραμένουσι: μία ἐπὶ νέων κριτικῶν βάσεων γεγραμμένη καὶ μεστὴ πνεύματος μονογραφία περὶ τοῦ Μπετόβεν (1911), τὸ σημαντικώτερον ἐπὶ τοῦ θέματος τούτου ἔργον τῶν τελευταίων χρόνων, ὡς καὶ ἡ ἐσχάτως ἐκδοθεῖσα καὶ ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ βάθρου ἱσταμένη μονογραφία περὶ τοῦ Βάγνερ. Τὰ λοιπὰ συγγράμματά του, ἐκτὸς τῶν ἀναλυτικῶν προγραμμάτων τῆς φιλαρμονικῆς τοῦ Βερολίνου, εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἡ γερμανικὴ μουσικὴ ζωὴ» (1916), «Ἔρευνα περὶ κοινωνιολογικῆς μουσικῆς», «Αἱ συμφωνίαι τοῦ Μάλερ» (1921), «Τὸ μουσικὸν δρᾶμα» (1909), μονογραφίαι περὶ τῶν Ὄσκαρ Φρὶντ (1907) καὶ Ὀφφενμπαχ (1909), «Ἡ συμφωνία ἀπὸ Μπετόβεν μέχρι Μάλερ» (1918), «Τέχνη καὶ ἐπανάστασις» (1919) κτλ. Ὁ Μπέκκερ ἔγραψεν ἐπίσης εἰδικῶς διὰ τὴν «Μεγάλην Ἑλληνικὴν Ἐγκυκλοπαιδείαν» τὸ ἄρθρον περὶ *Μπετόβεν.* Γ. Σ.

**Μπεκκὲρ** (Becker, ἢ Bajert-Becker), ***Λεονάρδος-Νικόλαος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1770—1840). Ἡ οἰκογένειά του τὸν προώριζε πρὸς θεολογικὰς σπουδάς, ἀλλ' αὐτός, αἰσθανόμενος ἀκατανίκητον κλίσιν πρὸς τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, ἐδραπέτευσεν ἐκ τῆς σχολῆς τῶν ἰησουϊτῶν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐσπούδαζε, καὶ κατετάχθη ἐθελοντὴς εἰς ἓν σύνταγμα δραγόνων. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως προήχθη εἰς ἀνθυπολοχαγόν, μετέσχε δὲ ὅλων τῶν μέχρι τοῦ 1796 ἐκστρατειῶν, διακρινόμενος πάντοτε διὰ τὴν γενναιότητα καὶ τὰ διοικητικὰ του προσόντα καὶ προαγόμενος ἀλλεπαλλήλως εἰς ἀνωτέρους βαθμούς. Κατὰ τὴν μάχην τοῦ Καρράνο ὁ ἐπιτελὴς αὐτοῦ ἀξιωματικὸς καὶ οἱ δύο ὑπασπισταί του ἔπεσαν παρὰ τὸ πλευρόν του, δύο δὲ ἵπποι του ἐφονεύθησαν καὶ ὁ ἴδιος ἐτραυματίσθη βαρέως διὰ σπάθης· περισυλλεγεὶς ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν ἀναίσθητος ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης, μετεφέρθη εἰς Μιλᾶνον καὶ παρέμεινεν ἐκεῖ ὑπὸ θεραπείαν ἐπὶ πεντάμηνον, μεθ' ὃ τῷ ἐπετράπη νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν Γαλλίαν. Κατὰ τὸν γάμον του μετὰ τῆς θυγατρὸς τοῦ στρατηγοῦ Desaix (1800) παρέστη ὡς παράνυμφος ὁ Βοναπάρτης. Προαχθεὶς εἰς ὑποστράτηγον ἐξηκολούθησε μετέχων ἐνεργῶς τῶν Ναπολεοντείων πολέμων, ἐπιδείξας δὲ ἐξαιρετικὴν γενναιότητα κατὰ τὴν μάχην τῆς Ἀουστερλίτσης προήχθη τότε εἰς ἀντιστράτηγον. Μετὰ τὴν μάχην τῆς Ἰένας αὐτὸς πρῶτος, μετὰ τοῦ Grouchy, εἰσῆλθεν εἰς τὸ Βερολῖνον. Καταδιώξας εἶτα τὸν στρατηγὸν Bila, καταφυγόντα εἰς τὴν Πομερανίαν μετὰ τμήματος πρωσσικοῦ στρατοῦ, τὸν κατενίκησε παρὰ τὸ Ἄνκλαμ, συλλαβὼν 4.000 αἰχμαλώτους, ἐν οἷς τὸ φημισμένον διὰ τὴν γενναιότητά του σύνταγμα τῶν οὐσσάρων τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας. Τῷ 1809 μετέσχε της ἐκστρατείας κατὰ τῆς Αὐστρίας καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ἔσσλινγκ. Βραδύτερον ὅμως ἐκηρύχθη ἐναντίον τῆς ἐκστρατείας κατὰ τῆς Ἱσπανίας, περιελθὼν δ' ἐκ τούτου ὑπὸ τὴν δυσμένειαν τοῦ Ναπολέοντος, ἐστάλη παρ' αὐτοῦ, εἰς ἐξορίαν τρόπον τινά, ὡς διοικητὴς τῆς Belle-Isle-en-Mer. Ἐπὶ τῆς παλινορθώσεως ἀνεκλήθη εἰς ἐνεργὸν δρᾶσιν, μετὰ τὴν δευτέραν δὲ παραίτησιν τοῦ Βοναπάρτου εἰς αὐτὸν ἀνετέθη ἡ μέριμνα ἐπὶ τῆς ἀσφαλείας του καὶ ἡ μεταφορά του εἰς Ροσσ'φόρ. Ὅταν εὑρέθη ἀπέναντι τοῦ ἐκπτώτου αὐτοκράτορος, ὁ Μπεκκὲρ δὲν ἠδυνήθη νὰ συγκρατήσῃ τὰ δάκρυά του, διακρούσης δὲ τῆς πλησίον αὐτοῦ παραμονῆς του ἐν Μαλμαιζὸν ἐμεσίτευσε θερμῶς παρὰ τῇ προσωρινῇ κυβερνήσει ὑπὲρ τῆς ἀποδοχῆς τοῦ γνωστοῦ αἰτήματος τοῦ Ναπολέοντος, ὅπως τῷ ἀνατεθῇ ἡ διοίκησις τοῦ στρατοῦ, ὄχι ὑπὸ τὴν ἰδιότητα τοῦ αὐτοκράτορος, ἀλλὰ τοῦ στρατηγοῦ μόνον, μὲ τὴν ὑπόσχεσιν ὅτι μετὰ τὴν νίκην του ἐπὶ τῶν ἐχθρῶν θὰ ἔφευγεν εἰς Ἀμερικήν. Ἡ αἴτησις ὅμως ἀπερρίφθη καὶ ὁ Μπεκκὲρ συνώδευσε τὸν Ναπολέοντα εἰς Ροσσ'φόρ. Ὅταν δέ, κατὰ τὴν ἰδίαν τὸν ἐπιθυμίαν, ὁ Βοναπάρτης ἐπρόκειτο νὰ παραδοθῇ εἰς τὸν ἀγγλικὸν στόλον, ὁ Μπεκκὲρ ἐξέφρασε τὴν ἐπιθυμίαν νὰ τὸν συνοδεύσῃ μέχρι τῆς ἐπιβιβάσεως του εἰς τοῦ σκάφους, ἀλλ' ἐκεῖνος ἠρνήθη, λέγων ὅτι δὲν ἤθελε νὰ δημιουργηθῇ εἰς βάρος τῆς Γαλλίας ἡ ὑπόνοια ὅτι τὸν παραδίδει αὐτὴ εἰς τοὺς Ἄγγλους. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΗ' ὁ Μπεκκὲρ, τεθεὶς ἐν ἀρχῇ ὑπὸ δυσμένειαν διὰ τὴν ἀξιοπρεπῆ στάσιν τὴν ὁποίαν ἐτήρησεν ἀπέναντι τοῦ ἐκπτώτου αὐτοκράτορος, διωρίσθη κατόπιν μέλος τοῦ βασιλικοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, τῷ 1818, καὶ ἔλαβε τὸ ἑπόμενον ἔτος τὸν τίτλον τοῦ ὁμοτίμου. —Ω.

**Μπεκκερὲλ** (Becquerel). Γαλλικὴ οἰκογένεια διαπρεπῶν ἐπιστημόνων, ἐξ ἧς ἀνεδείχθησαν **τρεῖς**

Digitized by Google

ἐκ τῶν μεγαλυτέρων φυσικῶν τοῦ ΙΘ' καὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ Κ' αἰῶνος.

—1) *Ἀντώνιος - Καῖσαρ - Μπεκκερὲλ* (1788—1878). Ἐξελθὼν τῆς πολυτεχνικῆς σχολῆς μετέσχεν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ τῶν ἐν Ἱσπανίᾳ καὶ Γαλλίᾳ πολέμων καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν ἐξ ἐφόδου ἅλωσιν τοῦ φρουρίου Francoli. Φέρων βαθμὸν ταγματάρχου τῷ 1815, παρῃτήθη τοῦ στρατοῦ διὰ ν' ἀφοσιωθῇ εἰς τὴν ἐπιστήμην, ἔστρεψε δ' ἐξ ἀρχῆς τὰς ἐρεύνας του πρὸς τὸν ἠλεκτρισμὸν ἰδίως. Αὐτὸς κατεσκεύασε τὴν πρώτην στήλην σταθεροῦ ρεύματος (στήλην μετὰ δύο ὑγρῶν), καθὼς καὶ τὸν ἠλεκτρομαγνητικὸν ζυγόν, σημαντικαὶ δὲ ὑπῆρξαν αἱ ἔρευναί του ἐπὶ τῆς ἠλεκτρικῆς ἀγωγιμότητος τῶν μετάλλων, ἐπὶ τῶν γαλβανομέτρων, τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ ἠλεκτρισμοῦ κτλ. Ἔνδοξον ὅμως τὸν κατέστησαν κυρίως αἱ ἐργασίαι του εἰς τὸν κλάδον τῆς ἠλεκτροχημείας, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυρίων ἱδρυτῶν. Πλῆθος ἐφαρμογῶν αὐτῆς ἐπενόησε διὰ τὴν ἐπιχρύσωσιν, ἐπαργύρωσιν καὶ τὰς ἐν γένει ἐπιμεταλλώσεις, ἐπέτυχε δὲ ν' ἀποχωρήσῃ διὰ βραδείας ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας ἀπὸ τῶν ἑνώσεων αὐτῶν τὸ ἀργίλιον, τὸ πυρίτιον, τὸ θεῖον, τὸ ἰώδιον ὑπὸ κρυσταλλικὴν μορφήν, τὸν θειοῦχον ἄργυρον κτλ. Συνέβαλεν ἐξ ἄλλου εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς τηλεγραφίας, ἐπενόησε τὴν θερμοηλεκτρικὴν βελόνην ἐπιτρέπουσαν τὸν καθορισμὸν τῆς θερμοκρασίας εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ σώματος, τὸ ἠλεκτροχημικὸν ἀκτινόμετρον διὰ τὸν καθορισμὸν τῆς φωτεινῆς ἀκτινοβολίας εἰς τὰ βάθη τῶν θαλασσῶν, τὸ διαφορικὸν γαλβανόμετρον κλπ. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἐμελέτησε τὰς ἠλεκτροτριχοειδεῖς δυνάμεις καὶ τὸν ρόλον αὐτῶν ἀπὸ φυσιολογικῆς καὶ μετεωρολογικῆς ἀπόψεως. Ἐδίδαξε πειραματικὴν φυσικὴν εἰς τὸ μουσεῖον φυσικῆς ἱστορίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1829 ἐγένετο ἀκαδημαϊκός. Παρεκτὸς τῶν δημοσιευθεισῶν ὑπερπεντακοσίων μελετῶν αὐτοῦ ἐξέδωκεν εἰς τόμους: «Ἐγχειρίδιον ἠλεκτρισμοῦ καὶ μαγνητισμοῦ» (1834, 1840, 1855), «Στοιχεῖα ἠλεκτροχημείας», «Στοιχεῖα γεωφυσικῆς καὶ μετεωρολογίας»(1847), «Περὶ ἀνοργάνων λιπασμάτων», «Περὶ τῶν κλιμάτων καὶ τῆς ἐπιδράσεως αὐτῶν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους» (1853), «Περὶ τῶν φυσικοχημικῶν δυνάμεων καὶ τῆς παρεμβάσεως αὐτῶν ἐν τῇ παραγωγῇ τῶν φυσικῶν φαινομένων» (1875). Εἰς τὸν τελευταῖον τοῦτον τόμον ἐκτίθενται πᾶσαι αἱ ἀπὸ τοῦ 1823 ἔρευναι αὐτοῦ περὶ τῶν ἠλεκτροχημικῶν φαινομένων καὶ ἠλεκτροτριχοειδῶν ρευμάτων.

*Ἀντώνιος Μπεκκερέλ.*

—2) *Λουδοβῖκος - Ἀλφρέδος Μπεκκερέλ.* Ἰατρός, πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1814—1862). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων, διεκρίθη δὲ ἰδίως ὡς συγγραφεύς, δημοσιεύσας πλῆθος ἔργων, ἐν οἷς: «Κλινικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τῆς μηνιγγίτιδος τῶν παιδίων» (1838), «Ὁ ἐμπειρισμὸς ἐν τῇ ἰατρικῇ» (1844), «Ἐγχειρίδιον ἀτομικῆς καὶ δημοσίας ὑγιεινῆς» (1854), «Περὶ τῶν ἐφαρμογῶν τοῦ ἠλεκτρισμοῦ ἐν τῇ θεραπευτικῇ» (1853). κ. ἄ.

—3) *Ἀλέξανδρος - Ἐδμόνδος Μπεκκερέλ*, δεύτερος υἱὸς τοῦ Ἀντωνίου-Καίσαρος Μπεκκερὲλ καὶ πολύτιμος αὐτοῦ συνεργάτης (1820—1891). Τῷ 1876 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσικῆς καὶ τῆς μετεωρολογίας εἰς τὸ νεοσύστατον τότε Ἀγρονομικὸν Ἰνστιτοῦτον, διεδέχθη κατόπιν τὸν πατέρα του τῷ 1878 εἰς τὴν ἕδραν τῆς φυσικῆς ἐν τῷ μουσείῳ φυσικῆς ἱστορίας καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῷ 1863. Παρεκτὸς τῆς σημαντικῆς συμβολῆς αὐτοῦ εἰς τὸ ἐπιστημονικὸν ἔργον τοῦ πατρός του, ἐξετέλεσεν ἰδίας ἐνδιαφερούσας ἐρεύνας ἐπὶ τοῦ μαγνητισμοῦ, τῆς ὀπτικῆς καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, προήγαγε δὲ τὴν χρωμοφωτογραφίαν διὰ χρησιμοποιήσεως πλακῶν χλωριούχου ἀργύρου. Μεγάλης σημασίας ὑπῆρξαν αἱ παρατηρήσεις καὶ τὰ πειράματά του ἐπὶ τοῦ ἡλιακοῦ φάσματος, ἐπὶ τῆς συνθέσεως τοῦ ἠλεκτρικοῦ φωτὸς καὶ ἐπὶ τῶν μαγνητικῶν καὶ διαμαγνητικῶν φαινομένων. Μεταξὺ τῶν μελετῶν τὰς ὁποίας ἐδημοσίευσε, σπουδαιότεραι θεωροῦνται αἱ ἀκόλουθοι: «Τὸ ἡλιακὸν φάσμα καὶ ἡ σύνθεσις τοῦ ἠλεκτρικοῦ φωτὸς» (1839, 1840, 1841), «Τὰ μαγνητικὰ καὶ διαμαγνητικὰ φαινόμενα» (1845, 1855), «Περὶ τῶν νόμων τῆς ἠλεκτροχημικῆς διασπάσεως τῶν σωμάτων» (1849), «Αἱ ἰσόθερμοι γραμμαὶ ἐν Γαλλίᾳ», «Ἠλεκτρικὴ ἀγωγιμότης καὶ ἀντίστασις», «Τὸ φῶς, τὰ αἴτια καὶ τὰ ἀποτελέσματά του» (1867, 1868).

—4) *Ἀντώνιος - Ἐρρῖκος Μπεκκερέλ*, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1852—1908). Εἰσελθὼν τῷ 1872 εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολὴν καὶ κατόπιν εἰς τὴν τῶν γεφυροποιῶν, ἐξῆλθε μηχανικὸς τῷ 1877. Διωρίσθη τῷ 1892 καθηγητὴς τῆς φυσικῆς εἰς τὸ μουσεῖον φυσικῆς ἱστορίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1895 καὶ εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολήν. Εἰς τὸν Ἐρρῖκον Μπεκκερὲλ ἀνήκει ἡ δόξα τῆς ἀνακαλύψεως τῆς ἀοράτου ἀκτινοβολίας τῶν λεγομένων ἀκτινεργῶν σωμάτων, τῆς ὁποίας συνέχειαν ἀπετέλεσαν αἱ ἐργασίαι τοῦ ζεύγους Κιουρί. Διὰ τὴν μεγάλην ταύτην συμβολὴν του εἰς τὴν πρόοδον τῆς ἐπιστήμης ἐτιμήθη τῷ 1903 διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς φυσικῆς, ἐξελέγη δὲ τῷ 1903 ἰσόβιος γραμματεὺς τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, τῆς ὁποίας εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος ἀπὸ τοῦ 1889. Ἐδημοσίευσε πληθὺν μελετῶν εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας», εἰς τὰ «Χρονικὰ τῆς Χημείας καὶ Φυσικῆς» καὶ ἄλλα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, ἐν αἷς: «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς περιστροφικῆς μαγνητικῆς πολώσεως, ἀνακάλυψις τοῦ φαινομένου ἐν τοῖς ἀερίοις» (1876, 1879), «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἀτμοσφαιρικῆς πολώσεως· ἐπενέργεια τοῦ γηΐνου μαγνητισμοῦ ἐπὶ τῆς ἀτμοσφαίρας» (1879), «Ἔρευναι ἐπὶ τοῦ φωσφορισμοῦ» (1882, 1897), «Μελέτη τῶν ὑπερύθρων φασμάτων καὶ τῶν φασμάτων τῶν διαπύρων μεταλλικῶν ἀτμῶν» (1883, 1884), «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἀπορροφήσεως τοῦ φωτὸς ἐν τοῖς κρυστάλλοις» (1888), «Ἀνακάλυψις ἀοράτων ἀκτινοβολιῶν (ἀκτινεργειῶν) ἐκπεμπομένων ὑπὸ τοῦ οὐρανίου», «Φωτογραφίαι διὰ μέσου σκιερῶν σωμάτων» (1896, 1897), «Μελέται ἐπὶ τῶν φαινομένων τῶν Faraday καὶ Zeeman» (1897, 1898), «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς περιστροφικῆς μαγνητικῆς δυνάμεως διαπύρων τινῶν ἀτμῶν», «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς ραδιενεργείας» (1896, 1904) κλπ. Γ. Ζ.

**Μπέκκερς** (Beckers), *Οὐμβέρτος*. Γερμανὸς φιλόσοφος (1806—1889). Ὑπῆρξε τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου καὶ μέλος τῆς Βαυαρικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Αἱ φιλοσοφικαὶ θεωρίαι του στηρίζονται εἰς τὰς τοῦ Σέλλινγκ, οὗτινος ὑπῆρξεν ἐνθουσιώδης ὀπαδός. Ἔγραψε μεγάλην σειρὰν ἔργων: «Περὶ τῆς ἀρνητικῆς καὶ θετικῆς φιλοσοφίας τοῦ Σέλλινγκ», «Ὁ Σέλλινγκ καὶ ἡ σχέσις αὐτοῦ πρὸς τὴν σημερινὴν φιλοσοφίαν», «Σημασία τῆς μεταφυσικῆς τοῦ Σέλλινγκ», «Ἡ διπλῆ πνευματικὴ ζωὴ» κ. τ. λ. Α. Δ.

**Μπέκκετ** (Becket), *Θωμᾶς*. Ἐγεννήθη τῷ 1117 ἐν Λονδίνῳ καὶ ἐσπούδασε θεολογίαν καὶ νομικά, γενόμενος κληρικός. Τῷ 1156 ὁ Ἐρρῖκος ὁ Β' τὸν προσέλαβε καγκελλάριον. Ὡς τοιοῦτος ἐξώντωσε τὴν λῃστείαν, περιέστειλε τὴν τοκογλυφίαν καὶ ἐνίσχυσε τὴν γεωργίαν. Ἀποθανόντος τοῦ ἀρχιεπισκόπου Καντερβουρίας Thibaut, ὁ Μπέκκετ ὑπεδείχθη ὡς διάδοχός του καὶ ἐγένετο ἀρχιεπίσκοπος (1162). Ἀλλὰ μετὰ ἓν ἔτος ἦλθεν εἰς ρῆξιν πρὸς τὸν βασιλέα, ὅστις ἐπὶ τῇ προφάσει ὅτι τὰ δικάζοντα τοὺς κληρικοὺς δικαστήρια ἐφαίνοντο λίαν ἐπιεικῆ, ὑπέβαλε (1163) εἰς τὴν βουλὴν νομοσχέδιον, δι' οὗ εἰς τὰ ἐκκλησιαστικὰ δικαστήρια ἤθελε παρεδρεύει ἐφεξῆς καὶ ἀντιπρόσωπος τοῦ βασιλέως, πᾶς δὲ καταδικαζόμενος κληρικὸς θὰ εἶχε τὸ δικαίωμα τῆς ἐφέσεως εἰς τὰ πολιτικὰ δικαστήρια. Ὁ Μπέκκετ ἠρνήθη νὰ ἐφαρμόσῃ τὸν νόμον. Ἀλλ' ὁ βασιλεὺς θυμωθεὶς ἀπῄτησε παρ' ὅλων τῶν ἐπισκόπων ἔγγραφον δήλωσιν ἀναγνωρίσεως τῶν πατροπαραδότων ἐθίμων (consuetudines avitae). Καὶ ὑπεγράφη μὲν ἡ δήλωσις αὕτη, ἀλλ' ὑπὸ τὴν αἵρεσιν ὅτι ἐξ αὐτῆς οὐδαμῶς θὰ ἐθίγοντο τὰ δίκαια τῆς Ἐκκλησίας. Τῷ 1164 ὁ Ἐρρῖκος ἐδημοσίευσε τὰ περίφημα «16 ἄρθρα τῆς Clarendon», δι' ὧν ἡ ἀγγλικὴ Ἐκκλησία ὑπετάσσετο εἰς τὸ κράτος. Ὁ Μπέκκετ ἀντέστη σφοδρῶς κατὰ τῆς πράξεως, ἀλλ' ἐγκαταλειφθεὶς ἐν τῷ ἀγῶνι ὑφ' ἁπάντων σχεδὸν τῶν ἐπισκόπων τῆς Ἀγγλίας ὑπέκυψεν. Ἀλλὰ μετενόησε κατόπιν διὰ τὴν ὑποχώρησίν του καὶ ἐξήτησε συγγνώμην παρὰ τοῦ πάπα Ἀλεξάνδρου τοῦ Γ', ἐγκαταλιπὼν δὲ τὴν Ἀγγλίαν μετέβη εἰς Γαλλίαν, ὅπου ἔτυχεν εὐμενοῦς ὑποδοχῆς καὶ προστασίας παρὰ τῷ βασιλεῖ Λουδοβίκῳ τῷ Ζ'. Ἡ παραίτησίς του δὲν ἐγένετο δεκτὴ ὑπὸ τοῦ πάπα, προτρέψαντος αὐτὸν ν' ἀποσυρθῇ εἰς τὴν μονὴν τοῦ Pontigny. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς ἑκουσίας ἐξορίας τοῦ Μπέκκετ ὁ Ἐρρῖκος προέβη εἰς ἀπηνεῖς καταδιώξεις τῶν ἐν Ἀγγλίᾳ συγγενῶν καὶ φίλων του. Ἀλλὰ τῷ 1170, βλέπων ὅτι ἠπειλεῖτο δι' ἀναθέματος ὑπὸ τοῦ πάπα, ἠναγκάσθη νὰ συμφιλιωθῇ μετὰ τοῦ Μπέκκετ, ὅστις ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν καὶ κατέλαβε τὸν θρόνον του. Ἐπειδὴ δ' ἐτιμώρησεν αὐστηρῶς ἐπισκόπους τινὰς παρεκτραπέντας κατὰ τὰ ἔτη τῆς ἀπουσίας του, οὗτοι κατέφυγον πρὸς τὸν Ἐρρῖκον. Ὁ βασιλεὺς ἀκούσας τὰ παράπονά των ἀνεφώνησε: «Δὲν θὰ εὑρεθῇ λοιπὸν κανεὶς νὰ μὲ ἀπαλλάξῃ ἀπὸ αὐτὸν τὸν καλόγηρον;». Παρευθὺς τέσσαρες ἐκ τῶν ἀξιωματικῶν τῆς αὐλῆς, μεταβάντες εἰς τὴν ἀρχιεπισκοπήν, ἐφόνευσαν τὸν Μπέκκετ ἐντὸς τοῦ ναοῦ κατὰ τὴν ὥραν τοῦ ἑσπερινοῦ τῆς 29 Δεκεμβρίου 1170. Ὁ βασιλεὺς καταθορυβηθεὶς ἐκ τῆς ἐκρήξεως τῆς ἀγανακτήσεως τοῦ λαοῦ καὶ φοβηθεὶς τὸν ἀφορισμὸν τῆς Ἁγίας Ἕδρας, ἔπεμψε παραχρῆμα εἰς τὴν Ρώμην ἀπεσταλμένους, ὅπως ἐκφράσωσι πρὸς τὸν πάπαν τὴν λύπην του ἐπὶ τῷ φόνῳ τοῦ ἀρχιεπισκόπου, ἀπέδωκε τὰ δημευθέντα κτήματα εἰς τοὺς συγγενεῖς καὶ φίλους τοῦ Μπέκκετ καὶ ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἦτο κεκλεισμένος ἐντὸς τῶν ἀνακτόρων του νηστεύων καὶ προσευχόμενος. Ὅτε δέ, τῷ 1173, ὁ πάπας κατέταξε τὸν Θωμᾶν Μπέκκετ εἰς τοὺς μάρτυρας τῆς πίστεως, μετέβη καὶ ὁ Ἐρρῖκος μετὰ πολλῶν ἄλλων προσκυνητῶν εἰς τὸν τάφον αὐτοῦ καὶ ἐκεῖ ἔνδυμα μετανοίας φορῶν καὶ γυμνόπους ἐξεδήλωσε τὴν συντριβήν του. Ε. Γ. Π.

*Θωμᾶς Μπέκκετ.*

**Μπέκκι** (Buckie) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας ἐν Σκωτίᾳ. Κάτ. 8.764. Ἔχει καλὸν λιμένα καὶ εἶναι κέντρον ἁλιείας, ἰδίως ρεγγῶν καὶ βακαλάου, ἔχει δὲ ἀκμαίαν βιομηχανίαν ἁλιευτικῶν ἐργαλείων (ἱστίων, δικτύων, σχοινίων κτλ.). Ἀποτελεῖται ἐκ δύο τμημάτων: τοῦ *Ἀνατολικοῦ* καὶ τοῦ *Βορείου Μπέκκι*, ἐξ ὧν τὸ δεύτερον εὑρίσκεται πρὸς Α. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σπέϋ, ἐν τῷ κόλπῳ τοῦ Μόραϋ. Μ. Δ. Β.

**Μπέκκιγχαμ** (Buckingham) βλ. *Μπάκκιγχαμ*.

**Μπέκκλ** (Buckle), *Γεώργιος*. Ἄγγλος δημοσιογράφος καὶ λογογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1854. Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ, εἰσῆλθε δὲ τῷ 1880 εἰς τὸ συντακτικὸν προσωπικὸν τοῦ λονδινείου «Χρόνου», τοῦ ὁποίου ἐγένετο, μετὰ τέσσαρα ἔτη, διευθυντής. Ἐκ τῆς θέσεως ταύτης ἀπεσύρθη τῷ 1912, ὁπότε, ἀποθανόντος τοῦ Μόννπεννυ, βιογράφου τοῦ Δισραέλη, ὁ Μπέκκλ ἀνέλαβε νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὴν βιογραφίαν τοῦ μεγάλου Ἄγγλου πολιτικοῦ καὶ ἔγραψε τοὺς τέσσαρας τελευταίους ἐκ τῶν ἓξ τόμων αὐτῆς (1914—1920). Ὁ Μπέκκλ ἐξέδωκεν ἐπίσης τὴν ἀλληλογραφίαν τῆς βασιλίσσης Βικτωρίας (The Letters of Queen Victoria).

— **Μπέκκλ** (Buckle), *Ἐρρῖκος-Θωμᾶς*. Ἄγγλος ἱστορικὸς (1821—1862). Υἱὸς πλουσίου ἐμπόρου ἐν Λονδίνῳ, ἦτο ἀσθενοῦς κράσεως καὶ διὰ τὸν λόγον τοῦτον ὀλίγον χρόνον ἐφοίτησεν εἰς τὸ σχολεῖον. Νεαρώτατος ἐπέδειξεν ἰδιαιτέραν ἱκανότητα εἰς τὸ ζατρίκιον, ἀποκτήσας εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν φήμην ἑνὸς τῶν καλυτέρων παικτῶν τοῦ κόσμου. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του (1840) διέτριψεν ἐπὶ τέσσαρα ἔτη ἐν τῇ ἠπειρωτικῇ Εὐρώπῃ καὶ τότε συνέλαβε τὴν ἰδέαν ὅπως ἀφιερωθῇ εἰς τὴν συγγραφὴν μεγάλου ἱστορικοῦ ἔργου. Τῷ 1851 ἤρχισε συγγράφων τὴν περίφημον «Ἱστορίαν τοῦ πολιτισμοῦ», τῆς ὁποίας ὁ πρῶτος τόμος ἐξεδόθη τῷ 1857, ὁ δὲ δεύτερος τῷ 1861. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος μετέβη εἰς Αἴγυπτον, ἔνθα διέμεινε μέχρι τοῦ Μαρτίου τοῦ 1862 καὶ διεπεραιώθη κατόπιν ἐκεῖθεν διὰ τῆς ἐρήμου Σινᾶ εἰς Συρίαν καὶ Ἱερουσαλήμ. Ἐπανακάμπτων εἰς Ἀγγλίαν ἀπέθανεν ἐν Δαμασκῷ.

Τὸ ἡμιτελὲς ἔργον τοῦ Μπέκκλ ἀποτελεῖ μεγαλειώδη εἰσαγωγὴν εἰς τὴν σπουδὴν τοῦ πολιτισμοῦ τῆς ἀνθρωπότητος. Ὁ συγγραφεὺς ἐζήτησε νὰ καθορίσῃ ἐν πρώτοις τοὺς νόμους, οἵτινες διέπουσι τὴν ἐξέλιξιν τῆς προόδου τῆς ἀνθρωπότητος, καὶ νὰ ἐξηγήσῃ κατόπιν τοὺς νόμους τούτους διὰ δεδομένων ἀπορρεόντων ἐκ τῆς ἱστορίας λαῶν τινων, οἵτινες παρουσιάζουσι διακεκριμένους ἢ ἰδιάζοντας χαρακτῆρας. Ὁ Μπέκκλ ὅθεν, ὡς ἱστορικός, δὲν προσεκόμισέ τι τὸ καινὸν εἰς τὴν ἐπιστήμην τῆς ἱστορίας, ἀλλ' ἀπέδειξε τὸ δυνατὸν τῆς ἐφαρμογῆς τῆς ἐπιστημονικῆς μεθόδου πρὸς ἐξήγησιν τῶν ἱστορικῶν προβλημάτων. Γ. Ι. Β.

**Μπέκκλς** (Beccles) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ πολιτείᾳ *Σῶφφολκ*. Κάτ. 10.000. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὐαίβνεϋ καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Λονδίνου. Ἔχει ἐνδιαφέροντα γοτθικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, ἐργοστάσια τυπογραφικῶν μηχανῶν, γεωργικῶν εἰδῶν, κεραμοποιεῖα, κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπέκκουμ** (Beckum) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν *Βεστφαλίᾳ* ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Χόννε. Κάτ. 9.221. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Νοϋμπέκουμ καὶ Λίππσταντ καὶ ἔχει βιομηχανίαν ἀσβέστου καὶ τσιμέντου. Ἀναφέρεται ἀπὸ τοῦ 1151, ἀνεκηρύχθη πόλις τῷ 1231, κατὰ δὲ τὸν μεσαίωνα ἀπετέλει ἡ περιοχὴ αὐτῆς ἐλευθέραν πολιτείαν. Ἔχει ὡραίας ἐκκλησίας τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. —Π.

**Μπεκλὰρ** (Béclard), *Ἰούλιος*. Γάλλος φυσιολόγος (1818—1887), υἱὸς τοῦ ἀνατόμου Πέτρου Μπεκλάρ. Τῷ 1845 ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς καὶ τῷ 1872 ἐξελέγη καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων. Διετέλεσε μέλος καὶ γραμματεὺς τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ συνεργάτης τοῦ λεξικοῦ τῶν ἰατρικῶν ἐπιστημῶν. Αἱ φυσιολογικαὶ αὐτοῦ ἔρευναι ἀφορῶσι, τὸ πλεῖστον, τὴν λειτουργίαν τῶν μυῶν ὑπὸ τὴν ἔποψιν τῆς συστολῆς αὐτῶν κατὰ τὴν ἐργασίαν καὶ τῆς ἐκ ταύτης παραγωγῆς θερμότητος. Κατέγινεν ἐπίσης καὶ εἰς πειραματικὰς ἐρεύνας ἐπὶ τῆς λειτουργίας τοῦ σπληνὸς καὶ τῆς πυλαίας φλεβός. Συνέγραψε: «Φυσιολογία τοῦ ἀνθρώπου μετὰ τῶν κυριωτέρων γνώσεων τῆς πειραματικῆς φυσιολογίας» (2α ἔκδ. 1870), μεταφρασθεῖσα καὶ εἰς τὴν γερμανικήν, «Ἐπίδρασις τοῦ φωτὸς ἐπὶ τῶν ζῴων», καὶ

Digitized by Google

ἐξεπόνησε πλουσίαν ἔκδοσιν τῶν «Στοιχείων γενικῆς ἀνατομικῆς» τοῦ πατρός του, κλπ. Ο. Ρ.

— **Μπεκλὰρ** (Béclard), ***Πέτρος-Αὐγουστῖνος***. Γάλλος ἀνατόμος (1785—1825). Τῷ 1818 ἐξελέγη καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων. Αἱ πλεῖσται τῶν διατριβῶν του ἀφορῶσι τὸν στόμαχον, τὸν πεπτικὸν σωλῆνα, ὡς καὶ τὰ κοιλιακὰ τοιχώματα ἐδημοσιεύθησαν δὲ εἰς τὸ «Δελτίον τῆς ἰατρικῆς σχολῆς» (1812—1816). Ἔγραψεν: «Ἀνατομική», ἥτις μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν ἀγγλικήν, «Στοιχεῖα γενικῆς ἀνατομικῆς» (1852—1865), «Mem. sur les foetus acéphales», «Recherches et experiences sur les blessures des artères». Κατεχώρισεν ἐπίσης πλεῖστα ἀνατομικὰ ἄρθρα εἰς τὸ ἰατρικὸν λεξικόν, ὡς καὶ εἰς διάφορα περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς του, ἐδημοσίευσε διατριβὰς περὶ ἐμβρυολογικῶν ἐρευνῶν, παθολογίας, ἀνατομίας τῶν νεύρων κτλ. καὶ διετέλεσεν ἀρχισυντάκτης τῆς «Nouveau journal de médecine». Εἰσήγαγε πλείστας μεθόδους ἐγχειρητικὰς διὰ μερικοὺς ἀκρωτηριασμοὺς τοῦ ποδός, ἀπεξαρθρώσεως τῶν μετακαρπίων, τοῦ βραχιονίου καὶ μηριαίου ὀστοῦ, ὡς καὶ νέαν μέθοδον θεραπείας τοῦ συριγγίου τοῦ στενωνιανοῦ πόρου. Ἡ ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ καλουμένη κήλη ἀφορᾷ τὴν διὰ τοῦ δακτυλίου τῆς σαφηνοῦς φλεβὸς σχηματιζομένην τοιαύτην. Ο. Ρ.

**Μπεκλεμὴς** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Διαλεχτὸν* (βλ. λ.).

**Μπέκμαν** (Beckmann), ***Ἐρνέστος***. Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1853. Ἀπὸ τοῦ 1890 ὑπῆρξε καθηγητὴς εἰς τὴν Λειψίαν, εἶτα εἰς Giessen καὶ Erlangen καὶ ἀπὸ τοῦ 1897 πάλιν εἰς Λειψίαν. Τῷ 1912 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ χημικοῦ ἰνστιτούτου τῆς ἑταιρείας «Αὐτοκράτωρ Γουλιέλμος» εἰς Dahlem (Βερολῖνον). Ἐργάζεται κυρίως εἰς τὸν κλάδον τῆς φυσικοχημείας. Σ. Γ.

— Μπέκμαν, ***θερμόμετρον*** — *[Φυσ.]*· βλ. λ. *θερμόμετρα* Μπέκμαν.

— Μπέκμαν ***μετάθεσις*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται ἡ διὰ τῆς ἐπιδράσεως διαφόρων σωμάτων (ὡς λ. χ. πυκνοῦ θειικοῦ καὶ ὀξικοῦ ὀξέος, ἀκετυλοχλωριδίου, χλωριούχου φωσφόρου κλπ.) δι' ἐνδομοριακῆς μεταθέσεως μετατροπὴ κετοξιμῶν εἰς ἀλκυλιωμένα ἀμίδια. Ἔχει σπουδαίαν σημασίαν διὰ τὴν συνθετικὴν χημείαν. Σ. Γ.

**Μπὲξ** (Beckx), ***Ἰωάννης-Πέτρος***. Διάσημος Βέλγος ἰησουΐτης, γενόμενος ἀρχηγὸς (στρατηγὸς) τοῦ τάγματος (1795—1887). Εἶχεν ἐνωρὶς διακριθῆ διὰ τὴν μόρφωσιν καὶ ἱκανότητά του καὶ εἶχε γίνει ἐξομολογητὴς τοῦ δουκὸς τοῦ Anhalt-Koetlen (1847), κατώρθωσε δέ, χάρις εἰς τὴν ἐπιρροήν του, νὰ ἐπανεγκαταστήσῃ τὸ τάγμα του ἐν Οὐγγαρίᾳ. Ὅταν, τῷ 1853, ἀπέθανεν ὁ Roothaan, ἀντικατέστησεν αὐτὸν εἰς τὴν ἀρχηγίαν τοῦ τάγματος. Προικισμένος μὲ πνεῦμα ὀξὺ καὶ ἐπιτήδειον, ἤσκησε μεγάλην ἐπιρροὴν ἐπὶ τῆς ἐποχῆς Πίου Θ' καὶ διεδραμάτισε σημαντικὸν ρόλον εἰς τὴν κίνησιν, ἥτις ἀπέληξεν εἰς τὸν δογματικὸν καθορισμὸν τῆς ἀμώμου συλλήψεως καὶ τοῦ ἀλαθήτου τοῦ πάπα. —Π.

**μπέκος** (ὁ)· ἀνόητος, μωρός, εὐήθης (ἰταλ. becco).

**μπεκρηλίκι** (τό), καὶ *μπεκρουλίκι*· δημοτ., τὸ γνώρισμα τοῦ μπεκρῆ, τὸ νὰ εἶναι τις μέθυσος, φιλοποσία: «τό 'ριξε 'ς τὸ μπεκρηλίκι» (τουρκ. bekrilik).

**μπεκρῆς** (ὁ), θηλ. *μπεκροῦ*· δημοτ., ὁ οἰνοπότης καὶ ἐν γένει ὁ μεθυσκόμενος ὑπὸ οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν, μέθυσος (τουρκ. bekri).

**Μπεκρί**, ἢ ***Ἀλ-Μπεκρὶ Ἔμπου-Οὐμπεϊντουλλὰχ Ἄμπτ-Ἀλλάχ***. Ἄραψ γεωγράφος, ἀκμάσας ἐν Σεβίλλῃ τῆς Ἱσπανίας καὶ διατελέσας ὑπουργὸς (βεζύρης) τῶν Ἀράβων ἡγεμόνων τῆς Σεβίλλης. Ἀπέθανε τῷ 1094. Ἔγραψε γεωγραφικὴν περιγραφὴν τῆς Ἱσπανίας καὶ τῆς Ἀφρικῆς, λεξικὸν γεωγραφικὸν τῆς Ἀραβίας καὶ μέρους τῆς Ἱσπανίας κ. ἄ. Ν. Μ.

**μπεκροκανάτα** (ἡ)· δημοτ., ἐπὶ μεθύσου: «εἶναι μιὰ μπεκροκανάτα».

**μπεκρολόγημα** (τό), καὶ *μπεκρολόϊ*· τὸ γνώρισμα τοῦ μπεκρῆ, ἡ φιλοποσία, ἄλλως *μπεκρηλίκι*: «καθημερινὸ μπεκρολόγημα».

**μπεκρολογῶ**, καὶ *μπεκρολογάω*· εἶμαι μέθυσος, πίνω οἶνον ἢ ἄλλα οἰνοπνευματώδη ποτά: «εἶναι 'ς τὴν ταβέρνα καὶ μπεκρολογάει», «μπεκρολογάει καθημερινῶς».

**μπεκρόμουτρο** (τό)· δημοτ., μοῦτρο μπεκρῆ, πρόσωπον μεθύσου: «τί μπεκρόμουτρο εἶν' αὐτό»! ‖ ὁ μέθυσος, ὁ μπεκρῆς.

**μπέκρος** (ὁ)· μεγεθυντικὸν τοῦ *μπεκρῆς*: ὁ σφόδρα, ὁ ἀεὶ μεθυσκόμενος: «εἶναι ἕνας μπέκρος ποῦ δὲν λέγεται».

**μπεκρούλιακας** (ὁ)· δημοτ., εὐτελιστικωτέρα προσηγορία τοῦ μπεκρῆ: «γυρίζει τὶς ταβέρνες ὁ μπεκρούλιακας».

**Μπεκτὰς** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας συνοικισμοῦ *Σκληρόπετρα* (βλ. λ.).

**Μπεκτὰς** ***(Χατζῆ-Μπεκτὰς-βελῆ)***. Μουσουλμᾶνος ἅγιος, ἱδρυτὴς τοῦ δερβισικοῦ τάγματος τῶν *Μπεκτασήδων* (βλ. λ.), ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΔ' μ.Χ. αἰῶνα. Ν. Μ.

**Μπεκτασῆδες**, ἢ ***Μπεκτασῖται*** (Bektachi). Διάσημον μουσουλμανικὸν δερβισικόν, ἤτοι καλογηρικόν, τάγμα, ἄλλοτε πολὺ διαδεδομένον καὶ λίαν ἰσχυρὸν ἐν Τουρκίᾳ, ἱδρυθὲν τῷ 1357 ὑπὸ τοῦ *Χατζῆ-Μπεκτὰς βελῆ*. Οὗτος ἐγεννήθη ἐν Νισαποὺρ τῆς Περσίας, ἦλθε δὲ εἰς Μικρὰν Ἀσίαν ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Ὀσμανίδου Σουλτάνου Ὀρχὰν (1326—1359) καὶ ἐγκατεστάθη εἰς ἐρημητήριον παρὰ τὸ χωρίον Σουλουτζά, οὐχὶ μακρὰν τῆς Ἀμασείας. Ἀκούσας τὴν φήμην αὐτοῦ ὡς ἁγίου ὁ σουλτᾶνος Ὀρχάν, τὸν ἐπεσκέφθη εἰς τὸν τεκκέν του καὶ ἐζήτησε τὴν εὐλογίαν του διὰ τὸ ἀρτισύστατον τότε στρατιωτικὸν σῶμα τῶν γενιτσάρων. Λέγεται μάλιστα ὅτι ὁ Μπεκτὰς ἔδωκε καὶ τὸ ὄνομα *γενῆτσερῆ* (ἤτοι *νέον στράτευμα*), εἰς τὸν καινοφανῆ ἐκεῖνον στρατόν, γενόμενος οὕτως ὁ ἀνάδοχος αὐτοῦ. Ἐπειδὴ δὲ ὁ Βεκτάς, εὐλογῶν τὸν ἐπὶ τούτῳ παρουσιασθέντα εἰς αὐτὸν γενίτσαρον, ἐπέθεσε τὴν χεῖρα του ἐπὶ τοῦ ράσου του (χιρκᾶ) ἐπὶ τοῦ καλύμματος τῆς κεφαλῆς τοῦ ὁπλίτου τούτου, καθιερώθη τὸ ἔθιμον νὰ προστίθεται ὄπισθεν τοῦ γενιτσαρικοῦ σκούφου τεμάχιον ὑφάσματος ἢ μάλλον πιλήματος (κετσέ), ὅμοιον πρὸς χειρίδα, εἰς ἀνάμνησιν τῆς καλογηρικῆς χειρίδος τοῦ Χατζῆ Μπεκτάς. Ἐκτὸς τούτου ἡ σημαία τῶν γενιτσάρων ἔφερε τὰ ὑπὸ τοῦ Μπεκτὰς ὑποδειχθέντα ἐμβλήματα, ἤτοι λευκὴν ἡμισέληνον καὶ λευκὸν δίστομον ξίφος ἐπὶ ἐρυθροῦ ἐδάφους. Λόγῳ τῆς συμμετοχῆς ταύτης τοῦ Μπεκτὰς εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ σώματος αὐτῶν, ὅλοι οἱ γενίτσαροι ἀνῆκον εἰς τὸ δερβισικὸν τάγμα τῶν Μπεκτασήδων, ὁ δὲ μέγας ἡγούμενος (σεϊχης) τούτων ἦτο ἀρχηγὸς τοῦ 99ου γενιτσαρικοῦ συντάγματος (ὀρτᾶ). Ὀκτὼ δὲ δερβῖσαι Μπεκτασῆδες, διαμένοντες εἰς τοὺς στρατῶνας τοῦ σώματος, προσηύχοντο νυκτὸς καὶ ἡμέρας ὑπὲρ τῆς εὐημερίας τοῦ κράτους καὶ ὑπὲρ τῆς νίκης τῶν γενιτσάρων.

Ὁ Μπεκτὰς ἀπέθανεν ἐπὶ σουλτάνου Μουρὰτ τοῦ Α' καὶ ἐτάφη παρὰ τὸ Κὺρ-Σεχῆρ τοῦ νομοῦ Σεβαστείας (Σιβάζ), εἰς θέσιν εἰς τὴν ὁποίαν ἐδόθη τὸ ὄνομά του: *Χατζῆ-Μπεκτὰς* καὶ ὅπου ἱδρύθη τεκκὲς (ἐρημητήριον) τῶν Μπεκτασήδων, χρησιμεύων ὡς τόπος προσκυνήσεως, οὐχὶ μόνον τῶν Μουσουλμάνων ἀλλὰ καὶ ἐντοπίων Χριστιανῶν, διότι ἐθεωρεῖτο ὑπὸ τούτων ὡς ὁ ἅγιος Χαράλαμπος. Καὶ οἱ μὲν Χριστιανοὶ εἰσερχόμενοι εἰς τὸν τεκκὲν ἔκαμνον τὸ σημεῖον τοῦ σταυροῦ, ἐνῷ οἱ Μουσουλμᾶνοι προσηύχοντο εἰς τὸ παρακείμενον τζαμίον. Ὅλοι ὅμως, ἀνεξαιρέτως, οἱ ἐπισκέπται ἐφιλοξενοῦντο καθ' ὅλην τὴν διαμονὴν αὐτῶν ὑπὸ τῶν Μπεκτασήδων, τρώγοντες τσορβᾶν (ζωμόν), πιλάφιον καὶ ἄλλα ἐθνικὰ φαγητὰ τῶν Τούρκων, χωρὶς ποτὲ νὰ γίνεται δεκτὴ ἡ ἐλαχίστη πληρωμή. Μόνον εἰς τὸν μέγαν λέβητα τοῦ μαγειρείου τοῦ τεκκὲ κατετίθετο μικρὰ προσφορά. Πρὸς συντήρησιν τοῦ τεκκὲ διετίθετο ὑπὸ τῆς σουλτανικῆς κυβερνήσεως τὸ προϊὸν τοῦ φόρου δεκάτης 42 χωρίων, ὑπόλοιπον παλαιᾶς ἀφιερώσεως 362 χωρίων. Ὁ ἀριθμὸς οὗτος ἐδικαιολογεῖτο ἐκ τοῦ ὅτι, κατά τινα παράδοσιν, κάποιος Μπεκτασῆς ἐθεράπευσεν ἕνα σουλτᾶνον ἐπιθέσας 362 φορὰς τὸν πόδα του ἐπὶ τῆς κεφαλῆς του. Ἐκ τῶν προσόδων τῶν 42 χωρίων τὸ ἥμισυ ἐδίδετο εἰς τὸν *τσελεμπῆν* τοῦ τάγματος. Ἐκτὸς τούτου εἰς τὸν τεκκὲν ἐδίδοντο 1435 χιλιόγραμμα ἅλατος κατ' ἔτος ἐκ τοῦ παρακειμένου ἁλατωρυχείου τοῦ Τούζ-κιοϊ (Ἁλατοχωρίου), ὡς δικαίωμα ἀνακαλύψεως τοῦ ὀρυχείου, γενομένης ὑπὸ τοῦ Χατζῆ Μπεκτάς.

Οἱ δερβῖσαι τοῦ τάγματος τῶν Μπεκτασήδων ἔφερον ἰδιαιτέραν διακριτικὴν στολήν, ἰδίᾳ δὲ ἀστέρα ἐξ ὀφίτου λίθου εἰς τὸ στῆθος καὶ σκοῦφον ἐκ λευκοῦ πιλήματος, τὸ ὁποῖον ὀνομάζουσι τὰτζ (ἤτοι στέμμα) κατασκευαζόμενον ἐντὸς τῶν τεκκέδων των, πρὸς τούτοις δὲ δακτύλιον ἐξ ὀφίτου εἰς τὸ δεξιὸν οὖς. Κατά τινα τουρκικὴν λαϊκὴν παράδοσιν, τὸ αἷμα τοῦ Χατζῆ-Μπεκτὰς-βελῆ εἶχε γονιμοποιὸν δύναμιν, ἐπιστεύετο δὲ ὅτι τοιαύτη ὑπάρχει καὶ εἰς τὸ αἷμα τῶν δερβισῶν τοῦ τάγματος. Ὡς ἐκ τούτου τὸ αἷμα τὸ προερχόμενον ἐκ τοῦ ὠτὸς τῶν Μπεκτασήδων, ὅταν τρυπῶσι ταῦτα ἵνα εἰσαχθῇ τὸ ἐνώτιον, ἐχρησιμοποιεῖτο εἰς παρασκευὴν καταποτίων διδομένων εἰς τὰς στείρας γυναῖκας. Λέγεται ἀφ' ἑτέρου ὅτι οἱ Μπεκτασῆδες δερβῖσαι δὲν ἐπλησίαζον γυναῖκας, διατηροῦντες τὴν παρθενίαν των.

Ὡς πρὸς τὰς θρησκευτικὰς αὐτῶν δοξασίας λέγονται πανθεϊσταί, παραδεχόμενοι καὶ τὴν μετεμψύχωσιν, ἂν καὶ ἐξωτερικῶς πρεσβεύουσι τὸν Ἰσλαμισμόν. Γενικῶς ἐδίδασκον θρησκευτικὴν ἀνοχήν, διὰ τοῦτο δὲ καὶ ἕνεκα ἄλλων λόγων ἐθεωροῦντο ὑπὸ τῶν ἀκραιφνῶν Μουσουλμάνων ὡς **αἱρετικοί, μὴ νηστεύοντες ἄλλως τε τὸ Ραμαζάνιον.**

Τὰ ἀνωτέρω βασίζονται ἐπὶ τῶν ἐκ τουρκικῶν καὶ εὐρωπαϊκῶν πηγῶν πληροφοριῶν περὶ Μπεκτασήδων. Ἐκ τῶν ἡμετέρων ὅμως τινὲς ἀναφέρουσιν εἰκασίαν, καθ' ἣν οἱ Μπεκτασῆδες προῆλθον ἐκ τῶν *Εὐσταθιανῶν*, ἤτοι τῶν ὀπαδῶν τοῦ ἡμιαρειανοῦ Εὐσταθίου, συγχρόνου τοῦ Βασιλείου τοῦ Μεγάλου, ὁ δὲ Μπεκτὰς διετέλεσεν ἁπλῶς ἀρχηγὸς τῶν ὀπαδῶν τῆς αἱρέσεως ταύτης.

Τὸ δερβισικὸν τοῦτο τάγμα ἐθεωρεῖτο καταργηθὲν ἀπὸ τοῦ 1826, ὅτε ὁ σουλτᾶνος Μαχμοὺτ ὁ Β' κατήργησε καὶ ἐξώντωσε τὸ σῶμα τῶν γενιτσάρων. Μπεκτασῆδες ὅμως ἐξηκολούθουν ὑπάρχοντες καθ' ὅλην τὴν Τουρκίαν, ἰδίᾳ δὲ εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς αὐτῆς ἐπαρχίας καὶ κυρίως ἐν Ἀλβανίᾳ. Ἐν τῇ νῦν δημοκρατικῇ Τουρκίᾳ, διὰ τῆς καταργήσεως καὶ καταδιώξεως ὅλων τῶν δερβισικῶν ταγμάτων (1925), ἔπαυσεν ὑφιστάμενον ἐν Ἀνατολῇ τὸ τάγμα τῶν Μπεκτασήδων. Ἐξακολουθεῖ ὅμως ὑπάρχον ἐν Ἀλβανίᾳ, ὅπου οἱ ὀπαδοὶ τοῦ μπεκτασισμοῦ θεωροῦνται ἀνήκοντες εἰς ἰδίαν τινὰ θρησκείαν διάφορον τοῦ Ἰσλαμισμοῦ. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπεχτερέφ** (Bechterew), ***Βλαδίμιρος Μιχαήλοβιτς***. Μέγας Ρῶσος νευρολόγος, ψυχίατρος καὶ ψυχολόγος (1857—1927). Μαθητὴς τοῦ Flessig, τοῦ Wundt καὶ τοῦ Charcot, διωρίσθη κατ' ἀρχὰς (1885) καθηγητὴς εἰς Καζὰν καὶ εἶτα εἰς τὴν στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν τῆς Πετρουπόλεως (1894), ἔνθα ὠργάνωσεν ἐργαστήριον νευρολογικῆς κλινικῆς καὶ ἱστολογίας, καὶ ἰνστιτοῦτον ψυχονευρολογικὸν καὶ ψυχοπαιδολογικόν. Τὰ ἔργα αὐτοῦ θεωροῦνται κλασσικὰ εἰς τὸ εἶδός των. Ὑπῆρξεν ἀντίπαλος τοῦ Pawlow, ὡς πρὸς τὴν σημασίαν τῶν κατὰ συνθήκην ἀνακλάσεων, ἃς ἐγενίκευσεν εἰς τὴν ψυχορεφλεξολογίαν αὐτοῦ. Κατὰ τὸ 1921 προσελήφθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῶν Σοβιὲτ καὶ διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ ἰνστιτούτου πρὸς ἐπιστημονικὴν μελέτην τῆς ἐργασίας. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Αἱ ὁδοὶ τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ» (1882, 3 ἔκδ. 1926), «Αἱ λειτουργίαι τῶν νευρικῶν κέντρων» (1909), «Ἐμπειρικὴ ψυχολογία» (1910), «Σύστημα ἀνθρωπίνης ρεφλεξολογίας» (3 ἔκδ. 1926), «Ὁμαδικὴ ρεφλεξολογία» (1921). Ἔγραψεν ἐπίσης περὶ τὰ 500 ἄρθρα καὶ μελέτας εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ καὶ διηύθυνε πολλὰ περιοδικὰ τῆς εἰδικότητός του καὶ ἰδίως τὸ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθὲν «Νευρολογιτσέσκι Βέστνικ».

Ὁ Μπεχτερὲφ ὑπῆρξεν εἷς τῶν μεγίστων ψυχιάτρων, ψυχολόγων καὶ νευρολόγων τῆς τελευταίας πεντηκονταετίας. Τ. Α. Ζ.

**μπεχτζῆς** (ὁ) (τουρκ. *μπεκτζῆ* = φύλαξ). Ἐν Κωνσταντινουπόλει *μπεχτζῆς* ἐκαλεῖτο ὁ νυκτοφύλαξ μιᾶς ὁδοῦ (ἢ καὶ πλειόνων μικροτέρων), εἰς δὲ τὰς ἐπαρχίας ὁ ἀγροφύλαξ καὶ δασοφύλαξ. Ὁ νυκτοφύλαξ ἦτο ἄνθρωπος τοῦ λαοῦ, ὑποδεικνυόμενος ὑπὸ τῶν κατοίκων ἢ ὑπὸ τῆς ἀστυνομίας, ἔχων μικρὸν παράπηγμα ὡς φυλάκιον καὶ κοιτῶνα καὶ ὑποχρεωμένος νὰ ἀγρυπνῇ καὶ φρουρῇ περιφερόμενος τὴν εἰς αὐτὸν ἀνατεθειμένην ὁδόν. Ἐκράτει εἰς χεῖρας χονδρὴν βακτηρίαν, φέρουσαν εἰς τὸ ἄκρον σιδηρᾶν ἐπένδυσιν. Τὸ ἄκρον τοῦτο πληττόμενον ἐπὶ τοῦ λιθοστρώτου παρῆγε διαπεραστικὸν ἦχον. Ἕκαστος κτύπος ἐσήμαινε μίαν ὥραν, ἓξ κτύποι ἐσήμαινον τὴν ἕκτην ὥραν, οὕτως ὥστε ὁ καθείς, ἀκούων τοὺς κτύπους τοῦ νυκτοφύλακος, ἐμάνθανε τὴν ὥραν χωρὶς νὰ ἔχῃ ἀνάγκην νὰ συμβουλευθῇ τὸ ὡρολόγιόν του. Ἐν περιπτώσει νυκτερινῆς πυρκαϊᾶς, οἱ μπεχτζῆδες, συγκεντρούμενοι εἰς τὸν ἀστυνομικὸν σταθμὸν ἢ εἰς ἄλλο μέρος καὶ πληροφορούμενοι παρὰ τῶν δρομέως ἐκ τῶν δύο κουλάδων (σκοπιῶν), τοῦ Γαλατᾶ καὶ τῆς Πόλεως, ἐρχομένων *νομπετζήδων*, ποῦ ἦτο ἡ πυρκαϊά, διελάλουν αὐτὴν διὰ στεντορείας φωνῆς καθ' ὅλην τὴν εἰς αὐτοὺς ἀνατεθειμένην ὁδὸν ἢ συνοικίαν, οὕτως ὥστε ἐντὸς ὀλίγου ὅλοι οἱ κάτοικοι τῆς πόλεως, ἂν καὶ κοιμώμενοι, ἐξύπνουν καὶ ἐμάνθανον ποῦ εἶναι ἡ πυρκαϊά. Οἱ δ' ἔχοντες συγγενεῖς ἢ φίλους εἰς τὴν συνοικίαν τῆς πυρκαϊᾶς μετέβαινον ἐν σπουδῇ εἰς τὸν τόπον τοῦ δυστυχήματος ὅπως βοηθήσωσι. Ταῦτα, γινόμενα εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν τῆς παλαιᾶς Τουρκίας, κατηργήθησαν βαθμιαίως ἀπὸ τῆς νεοτουρκικῆς μεταπολιτεύσεως (1908). Ν. Μ.

**Μπεχτσῆ-ἀντὰ** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος μικρὰ τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Κῶ (πλάτ. 37° 00 Β., μήκ. 28° 17' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1533: Sehir Oghlan islands) κατὰ τὸ στόμιον τοῦ λιμένος τῆς Καλλιπόλεως. Σ. Ε. Λ.

**Μπέκφορντ** (Beckford), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος λογοτέχνης (1759—1844). Κάτοχος κολοσσιαίας περιουσίας, περιῆλθε τὴν Εὐρώπην, ἐξέμαθε ξένας γλώσσας καὶ ἐμελέτησε τὰ ἤθη καὶ τὰ ἔθιμα πολλῶν εὐρωπαϊκῶν λαῶν. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Bibliographical memoirs of extraordinary painters» (1780), «Βατέκ», διήγημα ἀραβικῆς ὑποθέσεως συνταχθὲν εἰς τὴν γαλλικήν, καὶ «Italy with Schetches of Spain and Portugal» (1834). Α. Δ.

Digitized by Google

**Μπὲλ** (Beyle), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος συγγραφεύς, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Σταντάλ* (βλ. λ.).

—**Μπὲλ** (Bel), ***Ἰωάννης***. Βέλγος χρονικογράφος, γεννηθεὶς κατὰ τὸ τέρμα τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1370. Ἔγραψε χρονικὰ σχετικὰ πρὸς τὰ γεγονότα καὶ τοὺς πολέμους τῆς ἐποχῆς του, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐστηρίχθη ὁ Γάλλος ἱστορικὸς Φρουασσάρ. Τὰ χρονικὰ ταῦτα ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ Λ. Πολαὶν ὑπὸ τὸν τίτλον «Les vrayes chroniques de messire Jehan Le Bel» (1863). Α. Δ.

**Μπὲλ** (Bell)· βλ. λ. *Μπέλλ*.

**Μπέλα** (Bela) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τοῦ ἡμιαυτονόμου κρατιδίου Λὰς Μπέλα ἐν Βελουχιστάν. Κάτ. 5.500. Κεῖται ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Πουράλι καὶ Κοὺντ καὶ ἔχει ἀκμαῖον ἐμπόριον, ἰδίᾳ ζαχαροκαλάμου. Μ. Δ. Β.

**Μπέλα** (Béla). Ὄνομα τεσσάρων βασιλέων τῆς Οὐγγαρίας, ἀνηκόντων εἰς τήν, πρώτην ἐν τῇ χώρᾳ, δυναστείαν τῶν Ἀρπαδιδῶν.

— ***Μπέλα Α'***, βασιλεὺς ἀπὸ τοῦ 1061, ἀποθανὼν τῷ 1063. Ἦτο ἀρχηγὸς τοῦ οὐγγρικοῦ στρατοῦ ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ ἀδελφοῦ του Ἀνδρέα Α', εἶχε δὲ λάβει παρ' αὐτοῦ τὴν ὑπόσχεσιν, ὅτι θὰ τὸν διεδέχετο εἰς τὸν θρόνον. Ἀλλ' ὁ Ἀνδρέας, μεταβαλὼν γνώμην, ἔστεψε βασιλέα τὸν υἱόν του Σολομῶντα (1059). Ὁ Μπέλα προσέφυγε τότε εἰς τὸν βασιλέα τῆς Πολωνίας Καζιμίρ, τοῦ ὁποίου ἐνυμφεύθη τὴν ἀδελφήν, καὶ ἐπιτυχὼν τὴν συνδρομήν του ἐπῆλθε μετὰ στρατοῦ, ἐνίκησε τὸν Ἀνδρέαν, φονευθέντα κατὰ τὴν μάχην, καὶ κατέλαβε τὸν θρόνον. Κατὰ τὴν διετῆ διάρκειαν τῆς βασιλείας του μετῆλθεν εἰρηνικὴν πολιτικήν, ἐπανέφερε τὸν θεσμὸν τῶν ἐθνοσυνελεύσεων ὑπὸ μορφὴν προσομοιάζουσαν πρὸς τὸ βραδύτερον ἰσχῦσαν ἀντιπροσωπευτικὸν σύστημα, ἐμείωσε τοὺς φόρους, ἐγκαθίδρυσεν ὁμοιομορφίαν νομίσματος, μέτρων καὶ σταθμῶν, καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ ἐν Οὐγγαρίᾳ. Περὶ τοῦ θανάτου του ὑπάρχουν δύο ἐκδοχαί: κατ' ἄλλους ἐφονεύθη κατὰ τὴν καταστολὴν ἑνὸς ἐπαναστατικοῦ κινήματος, κατ' ἄλλους δὲ κατεπλακώθη ὑπὸ καταρρευσάσης στέγης μιᾶς αἰθούσης τῶν ἀνακτόρων του. Εἰς τὸν θρόνον τὸν διεδέχθη ὁ ἔκπτωτος υἱὸς τοῦ Ἀνδρέα Α', Σολομών.

— ***Μπέλα Β' ὁ Τυφλός***, δισέγγονος τοῦ προηγουμένου, βασιλεὺς ἀπὸ τοῦ 1131, ἀποθανὼν τῷ 1141. Ὅταν ἦτο παιδίον ἀκόμη, ὁ ἐξάδελφός του Στέφανος Β' υἱὸς τοῦ βασιλέως Κολομάν, τοῦ ἐξώρυξε τοὺς ὀφθαλμούς, διὰ νὰ ἐξασφαλισθῇ ἀπὸ πάσης ἀξιώσεώς του ἐπὶ τοῦ θρόνου. Ὁ ἴδιος ἐν τούτοις ὁ δήμιός του ἀποθνήσκων ὑπέδειξεν αὐτὸν ὡς διάδοχον. Ὁ Μπέλα Β' ἦτο ἀσθενοῦς χαρακτῆρος καὶ πειθήνιον ὄργανον εἰς χεῖρας τῆς συζύγου του Σερβίδος πριγκιπίσσης Ἑλένης, ἥτις ἅμα τῇ ἀνόδῳ του εἰς τὸν θρόνον ἐφρόντισε νὰ ἐξαφανίσῃ διὰ γενικῆς σφαγῆς ὅλους σχεδὸν τοὺς συμβούλους τοῦ τέως βασιλέως. Ἐδημιουργήθη ἐκ τούτου ἐξέγερσις καὶ ἐξυφάνθη συνωμοσία πρὸς ἀνατροπήν του. Οἱ συνωμόται, ἔχοντες ἐπὶ κεφαλῆς τὸν νόθον υἱὸν τοῦ Στεφάνου Β' πρίγκιπα Βόρν, ὑπεστηρίχθησαν ὑπὸ τῶν Πολωνῶν, ἀλλὰ τὰ σχέδιά των ἐματαιώθησαν χάρις εἰς τὴν παρασχεθεῖσαν εἰς τὸν Μπέλα συνδρομὴν ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ του Σοβιεσλαύου, βασιλέως τῆς Βοημίας. Ὁ Μπέλα Β', διατηρήσας ἀγαθὰς σχέσεις πρὸς τὰ γερμανικὰ κράτη καὶ τὴν ἑλληνικὴν αὐτοκρατορίαν τοῦ Βυζαντίου, ἐβασίλευσεν ἐν σχετικῇ ἠρεμίᾳ μέχρι τοῦ θανάτου του, τὸν ὁποῖον ἐπέσπευσε τὸ πρὸς τὴν μέθην πάθος του.

— ***Μπέλα Γ'***, βασιλεὺς ἀπὸ τοῦ 1173, ἀποθανὼν τῷ 1196. Ἦτο ἔγγονος τοῦ Μπέλα τοῦ Τυφλοῦ καὶ διεδέχθη εἰς τὸν θρόνον τὸν ἀδελφόν του Στέφανον Γ'. Διεκρίθη μεταξὺ ὅλων τῶν ἡγεμόνων τῆς δυναστείας τῶν Ἀρπαδιδῶν διὰ τὴν κατ' ἀπομίμησιν τῶν Βυζαντινῶν αὐτοκρατόρων διοικητικήν του μεθοδικότητα, τὴν φρόνησιν, τὴν ἐγκράτειαν καὶ τὴν ἀρετήν του. Καθ' ὅλην του τὴν νεότητα ὑπῆρξε προστατευόμενος τοῦ Ἕλληνος αὐτοκράτορος Μανουὴλ Α' Κομνηνοῦ, εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ὁποίου ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν καὶ ὅστις ἐν τέλει τὸν ἐνύμφευσε μετὰ τῆς ἐκ δευτέρου γάμου θυγατρός του Ἁγνῆς. Ἐκράτει τότε γενικῶς ἡ γνώμη ὅτι ὁ Μανουήλ, μὴ ἔχων ἀκόμη υἱόν, ἀπέβλεπε νὰ καταστήσῃ τὸν Μπέλα διάδοχόν του, αὐτοκράτορα τοῦ Βυζαντίου ἡνωμένου μετὰ τῆς Οὐγγαρίας. Αἱ προβλέψεις ὅμως αὗται, αἵτινες εἶχον ἀνησυχήσει τοὺς Οὔγγρους κληρικούς, φοβουμένους συγχώνευσιν τῆς δυτικῆς ἐκκλησίας τῆς χώρας των εἰς τὴν ὀρθόδοξον ἐκκλησίαν τοῦ Βυζαντίου, δὲν ἐπηλήθευσαν. Ἡ Ἑλληνὶς ἄλλως τε σύζυγος τοῦ Μπέλα ἀπέθανε μετ' οὐ πολύ, ἐνυμφεύθη δὲ οὗτος τὴν πριγκίπισσαν Μαργαρίταν τῆς Γαλλίας ἀδελφὴν τοῦ βασιλέως Φιλίππου-Αὐγούστου. Ὅταν ὁ Φρειδερῖκος Βαρβαρόσσας διῆλθε δι' Οὐγγαρίας ἀναχωρῶν εἰς Παλαιστίνην, ὁ Μπέλα τὸν ὑπεδέχθη μετὰ πολλῆς λαμπρότητος, ὑπεσχέθη δὲ νὰ τὸν μιμηθῇ καὶ αὐτός, τοῦθ' ὅπερ δὲν ἐπρόλαβε μὲν αὐτὸς νὰ πράξῃ, ἐπραγματοποίησεν ὅμως ὁ υἱός του Ἀνδρέας Β', ἡγηθεὶς βραδύτερον τῆς Ε' Σταυροφορίας. Ὁ Μπέλα ἐπολλαπλασίασε τὰ θρησκευτικὰ ἱδρύματα καὶ ἀνωργάνωσε τὴν δικαιοσύνην, σημαντικῶς προαχθεῖσαν ἐπὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ. Παραμείνας πάντοτε πιστὸς σύμμαχος τῆς Βυζαντινῆς Αὐτοκρατορίας, ἐπολέμησε κατὰ τῶν Βουλγάρων μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰσαακίου Β' Ἀγγέλου, εἰς τὸν ὁποῖον εἶχε δώσει ὡς σύζυγον τὴν θυγατέρα του Μαργαρίταν.

— ***Μπέλα Δ'***, βασιλεὺς ἀπὸ τοῦ 1235, ἀποθανὼν τῷ 1270, υἱὸς τοῦ Ἀνδρέα Β' καὶ ἔγγονος τοῦ Μπέλα Γ'. Ζῶντος ἔτι τοῦ πατρός του εἶχεν ἀντιπαλαίσει, μεθ' ὑπερβολικῆς ἐνίοτε αὐστηρότητος, κατὰ τῶν καταχρήσεων τῶν ἀριστοκρατῶν, οἵτινες ἐλυμαίνοντο τὰς λαϊκὰς τάξεις. Γενόμενος βασιλεὺς ἐξηκολούθησε διατηρῶν τὴν στάσιν ταύτην τοῦ ὑπερασπιστοῦ τοῦ λαοῦ καὶ τῆς ἀξιοπρεπείας τοῦ στέμματος, στάσιν ἥτις ἐδημιούργησεν εἰς αὐτὸν πολλοὺς ἐχθροὺς καὶ ἐν αὐτῇ ἀκόμη τῇ αὐλῇ του. Ταυτοχρόνως ἀπέκρουσε τὰς ἐπιδρομὰς τοῦ δουκὸς τῆς Αὐστρίας καὶ τὰς ἀξιώσεις τοῦ Φρειδερίκου Β', ὅστις ἠναγκάσθη ἐν τέλει νὰ παραιτηθῇ τῶν σχεδίων του τοῦ νὰ καταστήσῃ τὴν Οὐγγαρίαν φόρου ὑποτελῆ. Δὲν ἠδυνήθη ὅμως ὁ Μπέλα ν' ἀποφύγῃ τὴν δεινὴν συμφορὰν τῆς ἐπιδρομῆς τῶν μογγολικῶν ὀρδῶν, ὁδηγουμένων ὑπὸ τοῦ Μπάτυ-χάν. Τὸ πρῶτον κῦμα τῆς λαίλαπος ταύτης ὑπῆρξεν ἡ εἰς Οὐγγαρίαν καταφυγὴ τεσσαράκοντα χιλιάδων Κουμάνων προσφύγων. Ὁ Μπέλα τοὺς ἐδέχθη εὐμενῶς, τοὺς ἐβάπτισε Χριστιανοὺς καὶ ἐγένετο ὁ ἴδιος ἀνάδοχος τοῦ ἀρχηγοῦ των Κοῦθεν. Ἡ γενναιοφροσύνη του ὅμως αὕτη ἀπετέλεσε πρόσχημα διὰ τὸν Μπάτυ-χάν, ὅστις ἀξιῶν νὰ τῷ παραδοθῶσιν οἱ νομάδες οὗτοι ὡς στασιασταὶ δοῦλοί του, εὗρεν ἐντεῦθεν τὴν ἀφορμὴν νὰ πραγματοποιήσῃ τὴν ἣν ἐμελέτα εἰσβολήν του εἰς Οὐγγαρίαν. Τὸν διηυκόλυνεν ἄλλως τε ἐν προκειμένῳ αὐτὸς οὗτος ὁ οὐγγρικὸς λαός, ὅστις θεωρῶν τοὺς Κουμάνους ὡς εἰδωλολάτρας καὶ κατασκόπους, ἐξηγέρθη ἐναντίον των καὶ κατέσφαξε τοὺς ἀρχηγούς των. Οἱ Κουμάνοι τότε διεσκορπίσθησαν πρὸς πάσας τὰς διευθύνσεις καὶ ἐγένοντο ἄμεσοι ἢ ἔμμεσοι βοηθοὶ τῆς μογγολικῆς εἰσβολῆς. Εἰς τὴν συγκροτηθεῖσαν παρὰ τὸ Σάγιο μάχην (1248) ὁ οὐγγρικὸς στρατὸς κατενικήθη ὑπὸ τῶν Μογγόλων, οἵτινες ὅμως ὑπέστησαν ἐπίσης τεραστίας ἀπωλείας. Δύναται νὰ λεχθῇ ὅτι ἡ Οὐγγαρία ἀπέσβεσε τὸν ΙΓ' αἰῶνα τὸν χείμαρρον ἐκεῖνον τοῦ ὀλέθρου, ὅπως τὸν ΙΔ' αἰῶνα τὸν τῆς τουρκικῆς ἐπιδρομῆς. Ὁ Μπέλα προσέφυγεν ἐν ἀρχῇ πρὸς τὸν Φρειδερῖκον τῆς Αὐστρίας, ὅστις ὅμως ἐπωφελήθη τῆς εὐκαιρίας διὰ νὰ ἐπιβάλῃ χεῖρα ἐπὶ τριῶν οὐγγρικῶν κομιτειῶν, μετέβη δὲ κατόπιν εἰς Κροατίαν· καταδιωχθεὶς ὅμως καὶ ἐκεῖ ὑπὸ τῶν Μογγόλων, κατέφυγεν ἐν τέλει εἰς τὴν πόλιν Τράου τῆς Δαλματίας.

Ὅταν οἱ ἐπιδρομεῖς ἀπεχώρησαν, ὁ Μπέλα ἐπανελθὼν εἰς τὴν χώραν του εὗρεν αὐτὴν μεταβεβλημένην εἰς ἐρείπια, ἐπεδόθη ὅμως μετὰ θάρρους εἰς τὴν ἀναγέννησίν της. Οἱ Κουμάνοι ἐγκαθιδρύθησαν ὁριστικῶς ἐν αὐτῇ, ἐκλήθησαν ξένοι ἄποικοι, αἱ πόλεις ἀνεκτίσθησαν καὶ ἐχωρίσθησαν διὰ φρουρίων, ἐκκλησίαι δὲ νέαι ᾠκοδομήθησαν κατὰ τὸ πρότυπον τῶν γαλλικῶν καθεδρικῶν ναῶν. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ δοὺξ τῆς Αὐστρίας Φρειδερῖκος εἶχε φονευθῇ ἐν τῇ μάχῃ τῆς Leitha, ὁ δὲ θάνατός του ἐτερμάτιζε τὴν δυναστείαν τῶν Μπάμπενμπεργκ. Ἔκτοτε ἡ διαδοχὴ τοῦ θρόνου του διεξεδικεῖτο ὑπὸ τῆς Οὐγγαρίας καὶ τῆς Βοημίας καὶ ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς πόλεμον μεταξὺ τῶν δύο χωρῶν, καθ' ὃν οἱ Οὔγγροι ἡττήθησαν ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Marche τῷ 1260 ὑπο τοῦ ἀνδρείου ἀρχηγοῦ τῶν Βοημῶν Πρζεμὺσλ-Ὀττοκὰρ καὶ ἠναγκάσθησαν νὰ παραιτηθῶσι πάσης πρὸς δυσμὰς βλέψεως. Ἐπετύγχανεν ὅμως ἐκ τῆς ἄλλης πλευρᾶς ὁ Μπέλα ν' ἀνακαταλάβῃ τὴν Δαλματίαν, τὴν ὁποίαν ἀπαύστως διεξεδίκουν οἱ Ἑνετοί, ἐνῷ συγχρόνως συνεδέετο διὰ συγγενικῶν δεσμῶν μετὰ τοῦ Γάλλου βασιλέως τῆς Νεαπόλεως Καρόλου τοῦ Ἀνδεγαυικοῦ. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς βασιλείας του ἦλθεν εἰς σύγκρουσιν πρὸς τὸν πρίγκιπα Στέφανον, διεκδικοῦντα τὴν διαδοχὴν τοῦ θρόνου, ἐνῷ ὁ Μπέλα ἐπέμενε διαδεχθῇ αὐτὸν ὁ ὁμώνυμος υἱός του. Ἀλλὰ πατὴρ καὶ υἱὸς ἀπέθανον σχεδὸν συγχρόνως καὶ εἰς τὸν θρόνον ἀνῆλθεν ἀκωλύτως ὁ Στέφανος. Ὁ Μπέλα Δ' εἶχε λάβει σύζυγον τὴν θυγατέρα τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου Θεοδώρου Λασκάρεως. Γ. Ζ.

**μπελάζω**, καὶ ***βελάζω***· ἐπὶ τῶν προβάτων καὶ τῶν αἰγῶν, φωνάζω μπὲ μπέ, βληχῶμαι.

**Μπελάϊα**, ἢ ***Μπιελάϊα*** (Bélaïa ἢ Bielaia) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας (λεκάνη τοῦ Βόλγα), πηγάζων ἐκ τῶν Οὐραλίων καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 1000 χλμ. εἰς τὸν ποταμὸν Κάμα. Κυριώτερος παραπόταμός του εἶναι ὁ Οὔφα. Χ. Δ.

**Μπελάϊεφ** (Belaïeff), ***Μητροφάνης Πέτροβιτς***. Ρῶσος μουσικὸς ἐκδότης (1836—1904). Πρὸς ἐνθάρρυνσιν τῆς ἐθνικῆς ρωσικῆς μουσικῆς παραγωγῆς, ἵδρυσε τῷ 1885 ἐν Λειψίᾳ ἐκδοτικὸν οἶκον, ἐξ οὗ εἶδον τὸ φῶς τὰ περισσότερα ἔργα τοῦ «Ὁμίλου τῶν Πέντε» (Μπαλακίρεφ, Μπορόντιν, Μουσσόργκσκι, Κούϊ, Ρίμσκυ-Κορσακώφ), ὡς καὶ πολλῶν ἄλλων νεωτέρων Ρώσων συνθετῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων οἱ: Γκλαζούνωφ, Λιάντωφ, Σκριάμπιν, Τανέϊεφ, Τσερέπνιν, Γκρετσανίνωφ κ. ἄ. Ὁ Μπελάϊεφ ἵδρυσεν ἐπίσης ἐν Πετρουπόλει τὰς «Ρωσικὰς συμφωνικὰς συναυλίας» καὶ τὰς «Ἑσπερίδας ρωσικῆς μουσικῆς δωματίου». Ὁ οἶκος Μπελάϊεφ, καὶ τὰ παραρτήματα αὐτοῦ, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἱδρυτοῦ, ἔλαβε, συμφώνως τῇ διαθήκῃ του, τὴν μορφὴν εὐαγοῦς ἱδρύματος, διευθυνομένου ὑπὸ ὁμάδος Ρώσων συνθετῶν. Γ. Σ.

**Μπελαὶν ντ' *Ἐναμπὺκ*** (Belain d' Esnanbuc), ***Πέτρος***. Γάλλος θαλασσοπόρος (1585—1636). Εἷς ἐκ τῶν πρώτων Γάλλων ἀποίκων τῶν Ἀντιλλῶν, καθιδρυθεὶς εἰς τὰς νήσους Σὰν Κριστομπάλ, Μαρτινίκαν καὶ Γουαδελούπην, πρόδρομος τῶν μεγάλων ἀποικιστῶν τῶν ἀκολούθων αἰώνων. —Π.

**Μπέλα *Κοὺν*** (Kun)· βλ. *Λοὺν* Μπέλα.

**μπελαλῆς** (ὁ) καὶ ***μπελαλίδικος***· αὐτὸς ποὺ κάμνει μπελᾶν, ποῦ φέρει ἐνόχλησιν: «μπελαλίδικες δουλειές».

**μπελαλίδικος,—η,—ο**· ἄλλως *μπελαλῆς* (βλ. λ.).

**Μπελαλκάθαρ** (Belalcazar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Κορδούης τῆς Ἀνδαλουσίας. Κάτ. 8.000. Παράγει σιτηρά, ἔλαιον, οἶνον, ὀπώρας καὶ λαχανικά. Ἔχει ὀνομαστὸν ναὸν τῆς Ἁγίας Κλάρας τοῦ Θ' αἰῶνος καὶ περίφημον μεσαιωνικὸν φρούριον, ὅπερ ἡμικατεστράφη τῷ 1813. Μ. Δ. Β.

**Μπέλα-Μπόντα** *[Γεωγρ.]*. Σλαβικὴ ὀνομασία κορυφῆς τοῦ ὄρους *Βαρνοῦντος* (Δυτ. Μακεδονία), ὑψουμένης βορείως τοῦ χωρίου Πισοδερίου εἰς ὕψος 2.130 μ. Ι. Σ. Ι.

**Μπελαντόρ**· βλ. *Μπαλαντούρ*.

**μπελᾶς** (ὁ)· δημοτ., ἐνόχλησις, ἀμηχανία, στενοχωρία, φροντίς: «αὐτὲς οἱ δουλειὲς ἔχουν μεγάλο μπελᾶ», «μὴ μοῦ γίνεσαι μπελᾶς», «διαρκῶς μὲ βάζεις σὲ μπελᾶδες»· || φρ. «βρίσκω τὸ μπελᾶ μου» ἐνοχλοῦμαι πολύ, περιέρχομαι εἰς ἀμηχανίαν: «μ' αὐτὸν τὸν ἄνθρωπο διαρκῶς βρίσκω τὸν μπελᾶ μου», «βρῆκα τὸν μπελᾶ μου μὲ σένα» (τουρκ. belâ).

**Μπελάσκο** (Belasco), ***Δαυΐδ***. Ἀμερικανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ θεατρώνης, γεννηθεὶς ἐν Ἁγίῳ Φραγκίσκῳ τῷ 1859. Υἱὸς Ἑβραίων πλανοδίων ἠθοποιῶν, ἔζησε τὰ πρῶτα ἔτη τῆς ζωῆς του περιπλανώμενος εἰς διαφόρους πολιτείας, ἐνῷ συγχρόνως κατεγίνετο εἰς κατ' ἰδίαν μελέτας. Κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν ἀνῆλθεν εἰς τὴν σκηνὴν καὶ μετ' ὀλίγον ἤρχισε νὰ γράφῃ θεατρικὰ ἔργα. Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν εἰς τὸν Ἅγιον Φραγκῖσκον, ἤρχισε νὰ γίνεται εὐφήμως γνωστὸς καὶ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ Μεγάλου Μελοδραματικοῦ θεάτρου καὶ τοῦ θεάτρου Μετροπολιταίν, εἰς ἡλικίαν δὲ 29 ἐτῶν μετέβη εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην, ὅπου κατώρθωσε νὰ ἀποβῇ εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων θεατρικῶν συγγραφέων τῆς χώρας του καὶ ἐκ τῶν δημοφιλεστέρων διευθυντῶν θεάτρων. Ἐδημιούργησεν ἐν ὅλῳ περὶ τοὺς 170 ρόλους, ἔγραψεν ἢ μετεποίησε περὶ τὰ 100 θεατρικὰ ἔργα καὶ ἵδρυσεν ἐν τέλει ἓν τῶν καλυτέρων θεάτρων τῆς Νέας Ὑόρκης, ὑπὸ τὸ ὄνομα «Θέατρον Μπελάσκο». Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων του ἔργων εἶναι: «Ἡ καρδιὰ τῆς Μαίρυλαντ» (1895), μελόδραμα τῆς ἐποχῆς τοῦ ἐμφυλίου πολέμου, «Ἡ κυρία Μπάττερφλάϋ» (1900), διασκευὴ τοῦ γνωστοῦ ἔργου τοῦ Λόνγκ, «Ὁ ἀγαπημένος τῶν θεῶν» (1902), «Ἡ σύζυγος», «Ἄνδρες καὶ γυναῖκες», «Ἡ ὡραία Ρωσίς», «Ἡ ἐπιστροφὴ τοῦ Πέτερ Γκρίμ» (1921), «Ὁ υἱός; θυγάτηρ» (1919), «Κικὶ» (1921), «Ὁ κωμῳδὸς» (1923), «Γέλα, παλιάτσο, γέλα!» (1923) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπελβεντέρε** (Belvedere) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Ἰρλανδίας, ἄλλως καλουμένη *Ἔννελ* (βλ. λ.).

**Μπελβεντέρε** (Belvedere). Μουσεῖον ἐν Ρώμῃ, τμῆμα τῆς ὅλης οἰκοδομῆς τοῦ Βατικανοῦ. Ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Μπραμάντε κατ' ἐντολὴν τοῦ πάπα Ἰννοκεντίου Η' καὶ ἦτο κατ' ἀρχὰς χωριστὴ οἰκοδομή, μετὰ τριῶν ὑπερκειμένων ἀλλήλαις στοῶν, ὧν ἡ πρώτη ἦτο δωρικοῦ ρυθμοῦ, ἡ δευτέρα ἰωνικοῦ καὶ ἡ τρίτη κορινθιακοῦ. Κατόπιν ὁ πάπας Κλήμης ΙΔ' συνέδεσε καὶ τὸ κτήριον τοῦτο πρὸς τὸ κεντρικὸν οἰκοδόμημα τοῦ Βατικανοῦ, διὰ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, ὁ ὁποῖος τὸ διερρύθμισεν ἐπὶ τὸ στερεώτερον. Βραδύτερον τὸ κτήριον ὑπέστη καὶ ἄλλας μεταρρυθμίσεις. Τὸ μουσεῖον τοῦ Μπελβεντέρε ἱδρύθη ἐν τῷ ὁμωνύμῳ κτηρίῳ ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος ΙΔ', ὁ ὁποῖος ἀνέθεσε τὴν ὀργάνωσιν καὶ κατάταξιν αὐτοῦ εἰς τὸν διάσημον Γερμανὸν ἀρχαιολόγον Βίνκελμαν. Τὸ μουσεῖον τοῦτο ἤνοιξε τὰς πύλας του ἐπὶ τοῦ διαδόχου τοῦ Κλήμεντος, πάπα Πίου τοῦ ΣΤ'. Σύγκειται νῦν ἐκ πέντε δωματίων, τὰ ὁποῖα ἀπο-

Digitized by Google

τελοῦν χωριστὰ μουσεῖα φέροντα τὰ ὀνόματα: 1) Galleria lapidaria (συλλογὴ λιθίνων ἀντικειμένων, περιλαμβάνουσα ἔργα ῥωμαϊκῆς ἐποχῆς, προερχόμενα κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν ἀνασκαφῶν τῆς Ὀστίας, ἤτοι ἀγάλματα, ἀνάγλυφα, ἀγγεῖα, σαρκοφάγους κτλ.). 2) Museo Chiaramonti (μουσεῖον Κιαραμόντι) ὀνομασθὲν οὕτω ἐκ τοῦ πάπα Πίου Ζ', ὅστις κατήγετο ἐκ τῆς οἰκογενείας τῶν κομίτων Κιαραμόντι, καὶ περιλαμβάνον ἀγάλματα, προτομάς, μικρὰς στήλας, τοιχογραφίας, ἀνάγλυφα κτλ. οὐχὶ μεγάλης καλλιτεχνικῆς ἀξίας, πλὴν τοῦ ἀγάλματος τῆς Ἀθηνᾶς τῆς βίλλα Ἰουστινιάνι, τῆς ἀναδυομένης Ἀφροδίτης καὶ τοῦ συμπλέγματος τοῦ Νείλου)· 3) Giardino della Pigna (Κῆπος τῆς κουκουνάρας), ὀνομασθεὶς οὕτω ἐκ τεραστίου κώνου πεύκης ἐξ ὀρειχάλκου, τοποθετημένης ἐντὸς τῆς αὐλῆς ἡ ὁποία σχηματίζεται μεταξὺ τοῦ κτηρίου τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Βατικανοῦ, τοῦ μουσείου Κιαραμόντι καὶ τοῦ μουσείου τοῦ «νέου βραχίονος»· 4) Tor de' Venti (Πύργος τῶν Ἀνέμων) μουσεῖον, περιλαμβάνον διαφόρους αἰθούσας μὲ αἰγυπτιακὰς κυρίως ἀρχαιότητας, μομίας καί τινα ἔκτυπα γλυπτῶν τοῦ Παρθενῶνος· καὶ 5) Museo Pio-Clementino (μουσεῖον Πίου-Κλήμεντος), ὀνομασθὲν οὕτω ἐκ τῶν παπῶν Πίου καὶ Κλήμεντος καὶ ἀποτελοῦν τὴν πλουσιωτέραν συλλογὴν ἀρχαιοτήτων τοῦ κόσμου, περιλαμβάνον μεταξὺ ἄλλων τὸ περίφημον ἄγαλμα τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ Μπελβεντέρε, τὸ σύμπλεγμα τοῦ Λαοκόοντος, τὸν κορμὸν τοῦ Μπελβεντέρε, τὸν Ἀντίνοον τοῦ Μπελβεντέρε, τὸν Μελέαγρον κτλ. (βλ. καὶ λ. *Βατικανόν*, μουσεῖον ΣΤ' 826 γ'). Μ. Δ. Β.

— **Μπελβεντέρε** (Belvedere). Μέγα ἀνάκτορον ἐν Βιέννῃ, κτισθὲν τῷ 1714 εἰς ῥυθμὸν ροκοκὸ ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Χίλντεμπραντ διὰ τὸν πρίγκιπα Εὐγένιον τῆς Σαβοΐας καὶ περιλαβὸν κατόπιν σημαντικωτάτας καλλιτεχνικὰς συλλογάς. Μ. Δ. Β.

— **Μπελβεντέρε, κορμὸς τοῦ** — (torso di Belvedere). Ὠνομάσθη οὕτω κορμὸς ἀγάλματος εὑρισκόμενος εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Πίου-Κλήμεντος τοῦ Βατικανοῦ. Ὁ κορμὸς οὗτος θεωρεῖται ἐκ τῶν σημαντικωτέρων μνημείων τῆς ἑλληνορρωμαϊκῆς τέχνης, ὑπεμφαίνων ἐπίδρασιν τῶν καλλιτεχνικῶν παραδόσεων τῆς πλαστικῆς σχολῆς τῆς Ῥόδου. Παριστάνει ἄγαλμα ἀνδρὸς καθημένου ἐπὶ βράχου, ἄνευ κεφαλῆς, χειρῶν καὶ κνημῶν. Τὸ ἔργον τοῦτο μαρτυρεῖ τόσον βαθεῖαν μελέτην καὶ τοιαύτην γνῶσιν τῆς ἀνατομίας καὶ ἐντέλειαν ἐξεργασίας, ὥστε νὰ θαυμάζηται γενικῶς ὡς εἷς τῶν ἀξιολογωτέρων θησαυρῶν τοῦ Βατικανοῦ. Δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένον τί παριστάνει, οἱ δὲ εἰδικοὶ δὲν συμφωνοῦν

*Ὁ κορμὸς τοῦ Μπελβεντέρε.*

πάντες εἰς τὰς ἐξενεχθείσας ὑποθέσεις. Κατά τινας εἰκονίζει τὸν Ἐπιτραπέζιον Ἡρακλέα, ὁ ὁποῖος ἐκράτει κιθάραν, ἐνῷ κατ' ἄλλους εἰκονίζει Σάτυρον. Λέγεται ὅτι εὑρέθη εἰς τὴν θέσιν Κάμπο ντε' Φιόρι τῆς Ῥώμης ἢ τὴν Πομπηΐαν. Ὁ κορμὸς οὗτος ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος Ζ' ἀπὸ τὴν οἰκογένειαν τῶν πριγκίπων Κολόννα, καὶ φέρει ἐπὶ τοῦ βράχου τὴν ὑπογραφὴν τοῦ φερομένου ὡς γλύπτου αὐτοῦ Ἀπολλωνίου Νέστορος Ἀθηναίου (βλ. λ. *Ἀπολλώνιος ὁ Ἀθηναῖος*). Ὁ κορμὸς ἦτο ἤδη γνωστὸς κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, ὁ ὁποῖος λέγεται ὅτι τὸν ἐθαύμαζε καὶ τὸν ἐμελέτα συνεχῶς, μιμηθεὶς τὸν ἀνατομικὸν αὐτοῦ ῥεαλισμὸν εἰς πλεῖστα ἀγάλματά του καὶ ἔργα ζωγραφικῆς. Μ. Δ. Β.

**μπέλγκα** (ἡ) (belga). Βελγικὴ νομισματικὴ μονὰς (βλ. λ. *Βέλγιον*, τ. ΣΤ', 915 α').

**Μπέλγκοροντ** (Bielgorod) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ῥωσίας (βλ. λ. *Μπιέλγκοροντ*).

**Μπέλγκραμ** ἢ **Μπίλγκραμ** (Belgram ἢ Bilgram) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῷ νομῷ Σιταποὺρ τοῦ διαμερίσματος Χάρντουΐ τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν. Κάτ. 16.000. Κεῖται παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Γάγγου. Ἔχει ἐρείπια ἀρχαίου ναοῦ καὶ φρουρίου καὶ ἐξάγει σιτηρὰ καὶ νομήν. Μ. Δ. Β.

**Μπελγκρὰν** (Belgrand), ***Μαρία-Φραγκῖσκος-Εὐγένιος***. Γάλλος μηχανικός, πατὴρ τῆς ὑδρολογίας ὡς ἐπιστήμης (1810—1878). Ἐσπούδασεν εἰς τὰ κολλέγια Σωμὸν καὶ Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου, τὸ Πολυτεχνεῖον καὶ τὴν σχολὴν τῶν γεφυροποιῶν (1831). Μετὰ δεκαπενταετεῖς μελέτας ὑπέβαλε (1846) εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιστημῶν «Ὑδρολογικὰς μελέτας ἐπὶ τοῦ ἄνω λεκανοπεδίου τοῦ Σηκουάνα», διὰ τῶν ὁποίων ἀναδειχθεὶς ἐγένετο (1852) ἀρχιμηχανικὸς τῆς ἐν τῷ Σηκουάνᾳ ναυσιπλοΐας καὶ (1854) μηχανικὸς τῆς πόλεως τῶν Παρισίων, μεθ' ἧς στενῶς συνεδέθη τὸ ὄνομά του. Κατὰ τὰ σχέδιά του ἐκτίσθησαν τὰ δύο μεγάλα ὑδραγωγεῖα τῶν πηγῶν Ντυῒ καὶ Βάνν, μήκους 304 χλμ., καταλήγοντα εἰς τὰς δεξαμενὰς Μενιλμοντὰν καὶ Μονσουρί, χωρητικότητος 375.000 κυβ. μέτρων, ἐνῷ πρότερον ἡ πόλις ὑδρεύετο δι' ἀθλίου ὕδατος τοῦ Σηκουάνα, εἶχε δεξαμενὰς 90.000 κυβ. μ. μόνον καὶ ἁπλούστατον σύστημα ὑδρεύσεως. Τὰ ἔργα ἐκεῖνα ἐστοίχισαν 100 ἑκατομμ. φράγκα. Τῷ 1856 ὁ Μπελγκρὰν ὑπέβαλε τὰ σχέδια ἀποχετεύσεως τῶν Παρισίων, καθ' ἃ τὸ μῆκος τῶν ὑπονόμων τῆς πόλεως ηὐξήθη μέχρι τοῦ 1870 ἀπὸ 200 εἰς 600 χλμ., εἰσήχθη δ' ἅμα ἐν χρήσει θαυμάσιον σύστημα βόθρων. Τέλος, συνεργασίᾳ τοῦ Λεμουὰν καὶ ἐντολῇ τῆς ὑδρομετρικῆς ὑπηρεσίας τοῦ Σηκουάνα, πρῶτος αὐτὸς ὠργάνωσεν ὑπηρεσίαν προγνώσεως τῆς ἀνυψώσεως τῶν ὑδάτων. Πλεῖσται πόλεις τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Εὐρώπης ἐξετέλεσαν ἔργα κατὰ τὰ σχέδιά του, ἐγένετο δὲ διαδοχικῶς γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῶν γεφυρῶν καὶ διευθυντὴς τῶν ὑδάτων καὶ ὑπονόμων τῶν Παρισίων (1817), ταξίαρχος τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς διὰ τὰς κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς πόλεως ἐργασίας του καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν (1871). Ἐδημοσίευσε πλῆθος μελετῶν εἰς τὰ μηχανικά, γεωλογικά, μετεωρολογικὰ κλπ. περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς του, ἐργασίας βροχομετρικάς, ὑδρολογικάς, ἐκ τῶν ἐπίσης δὲ πολυπληθῶν συγγραμμάτων του ἐξέχουν: «Travaux souterrains de Paris», «Eaux nouvelles», κ. ἄ. (Βλ. καὶ λ. *Παρίσιοι*). —Π.

**Μπελγκράνο** (Belgrano), ***Ἐμμανουήλ***. Ἀργεντινὸς στρατηγὸς (1770—1820). Ἐσπούδασε νομικὰ εἰς τὴν Μαδρίτην καὶ τὸ Βαλλαδολίδον, ἐπιστρέψας δὲ εἰς τὴν πατρίδα του, καίτοι οὐδεμίαν ἔσχε στρατιωτικὴν προπαίδευσιν, ἐτέθη τῷ 1806, κατὰ τὴν κατάληψιν τοῦ Μπουένος Ἄϋρες ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, ἐπὶ κεφαλῆς ὁμάδος πολιτοφυλακῆς καὶ διεκρίθη ἀνελθὼν μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ λοχαγοῦ. Τῷ 1810 ὠνομάσθη στρατηγὸς τοῦ ἀργεντινοῦ στρατοῦ ἐν Παραγουάη καὶ κατόπιν ἐν Χιλῇ καὶ ἐν Περού, ὅπου διεκρίθη κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας ἀγῶνος τῆς Ἀργεντινῆς. Γενόμενος ἀρχιστράτηγος, ἐπολιόρκησε τῷ 1812 τὸ Μοντεβίδεο καὶ κατήγαγε τὴν νίκην τοῦ Τουκουμὰν καὶ τῷ 1813 τὴν νίκην τῆς Σάλτα. Εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του ἡ συνταχτικὴ συνέλευσις τῆς Ἀργεντινῆς ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν γενναῖον χρηματικὸν ποσόν, τὸ ὁποῖον οὗτος δὲν ἐδέχθη, δωρήσας αὐτὸ ὑπὲρ τῆς ἀνεγέρσεως τεσσάρων σχολῶν. Τῷ 1813 ἡττήθη εἰς τὴν μάχην τοῦ Βιλκαποῦχο ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν μετὰ εἴκοσιν ἡμέρας, συγκεντρώσας τὰ στρατεύματά του, ἔδωσε νέαν μάχην ἐν Ἀγιοούμα, ἀλλὰ καὶ πάλιν ἡττήθη. Ἕνεκα τούτου ἀχθεὶς ἐνώπιον τοῦ πολεμικοῦ συμβουλίου καθῃρέθη καὶ ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ Σὰν Μαρτίν. Βραδύτερον ἀπεστάλη εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ὅπως διαπραγματευθῇ τὴν ἀναγνώρισιν τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἀργεντινῆς. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν ὅμως τῶν προσπαθειῶν του ἐπέστρεψεν εἰς τὴν χώραν του καὶ ἀνέλαβεν ἐκ νέου τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἀργεντινοῦ στρατοῦ ἐν Περού, ὅπου κατώρθωσε νὰ καταπνίξῃ τὴν ἐκραγεῖσαν ἐπανάστασιν καὶ νὰ νικήσῃ τὰ ἐκεῖ ἱσπανικὰ στρατεύματα, ἐναντίον τῶν ὁποίων ἠγωνίσθη ἐπὶ τετραετίαν. Τῷ 1819 ἀπεστάλη εἰς Σάντα Φὲ πρὸς καταστολὴν τῆς ἐκεῖ ἐκραγείσης ἐπαναστάσεως, ἀλλ' ἀσθενήσας μετεφέρθη εἰς Μπουένος Ἄϋρες, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ὁ Μπελγκράνο θεωρεῖται ἐκ τῶν ἱκανωτέρων καὶ γενναιοτέρων στρατιωτικῶν ἀνδρῶν τῆς Ἀργεντινῆς, εἰς τὸν ὁποῖον ὀφείλεται κατὰ μέγα μέρος ἡ ἀνεξαρτησία τῆς πατρίδος του. Ἐν τῇ πλατείᾳ τοῦ Μαΐου τοῦ Μπουένος Ἄϋρες ἐστήθη ἔφιππος αὐτοῦ ἀνδριάς. Μ. Δ. Β.

**Μπελὲ** (Beulé), ***Κάρολος-Ἐρνέστος***. Γάλλος ἀρχαιολόγος καὶ πολιτικὸς ἐκ Σωμὺρ (1826—1874). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ κολλέγιον Ῥολλὲν καὶ τὴν École Normale (1845), ἐγένετο δὲ καθηγητὴς τῆς ῥητορικῆς εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Μουλὲν καὶ εἶτα μέλος τῆς Γαλλικῆς σχολῆς Ἀθηνῶν. Ἀπὸ τοῦ 1851 μελετῶν, ὑποδείξει τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν, τὴν ἀρχαιολογίαν τῆς Ἀκροπόλεως, ἤρχισεν ἀνασκαφάς, αἵτινες ἔφερον εἰς τὸ φῶς τὴν ἀπ' αὐτοῦ ὀνομασθεῖσαν «Πύλην Μπαλὲ» (4 Μαΐου 1852). Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Γαλλίαν ἀνηγορεύθη διδάκτωρ (1853) καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας εἰς τὴν Αὐτοκρατορικὴν βιβλιοθήκην, καταλαβὼν τὴν θέσιν τοῦ Ῥαοὺλ Ροσὲτ (1854). Τῷ 1857, ἰδίαις δαπάναις, ἐνήργησεν ἀνασκαφὰς ἐν Καρχηδόνι, ἐπιστρέψας δὲ εἰς Παρισίους ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ γραμμάτων (1860), διαδεχθεὶς τὸν Κ. Λενορμάν, καὶ ἰσόβιος γραμματεὺς τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν (1861), διάδοχος τοῦ Ἁλεβύ. Ἀναμιχθεὶς ἀπὸ τοῦ 1870 εἰς τὴν πολιτικήν, διετέλεσε πληρεξούσιος τοῦ Μαὶν καὶ Λουὰρ εἰς τὴν ἐθνικὴν συνέλευσιν (1871) καὶ ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν (1873). Ὑπῆρξε τακτικὸς συνεργάτης τῶν ἐπιθεωρήσεων «Journal des Savants», «Gazette des Beaux-Arts» καὶ «Revue de Deux Mondes». Ἔγραψεν: «Ἡ ἀκρόπολις τῶν Ἀθηνῶν» (1853), «Περὶ τῆς ὑπάρξεως δημώδους γλώσσης παρ' ἀρχαίοις Ἕλλησι» (1853), «Αἱ τέχναι καὶ ἡ ποίησις ἐν Σπάρτῃ κατὰ τὴν νομοθεσίαν τοῦ Λυκούργου» (1853), «Μελέται ἐπὶ τῆς Πελοποννήσου» (1855), «Νομίσματα τῶν Ἀθηνῶν» (1858), «Ἀνασκαφαὶ εἰς Καρχηδόνα» (1861) καὶ ἄλλα ἀρχαιολογικά, ἔτι δὲ τὰ εὐρύτερον προορισμοῦ ἐκλαϊκευτικὰ ἔργα: «Συζητήσεις ἐπὶ τῆς τέχνης» (1867), «Ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς τέχνης πρὸ τοῦ Περικλέους» (1868), «Τὸ δρᾶμα τοῦ Βεζουβίου» (1872), «Φειδίας» (1873), δρᾶμα ἐπὶ ἀρχαίου θέματος, «Αὔγουστος» (1867), «Τιβέριος καὶ ἡ κληρονομία τοῦ Αὐγούστου» (1868), «Τὸ αἷμα τοῦ Γερμανικοῦ» (1869), «Ὁ Τίτος καὶ ἡ δυναστεία του» (1870), καὶ ἄλλα. Μέγα μέρος τῶν εἰς περιοδικὰ δημοσιευμάτων του περιελήφθη εἰς τὴν συναγωγὴν «Ἀνασκαφαὶ καὶ ἀνακαλύψεις» (1875). Π. Ν. Π.

*Κάρολος Μπελέ.*

**Μπελὲζ** (Béleze), ***Γουλιέλμος-Λουδοβῖκος-Γουσταῦος***. Γάλλος παιδαγωγὸς (1806—1878). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν École Normale (1821—1823) καὶ μετὰ βραχεῖαν ἐξάσκησιν τοῦ ἐπαγγέλματος τοῦ ἰδιωτικοῦ παιδαγωγοῦ ἐγένετο ἐπὶ εἰκοσαετίαν διευθυντὴς τοῦ ἱδρύματος Μορέν. Ἔγραψε: «Πλήρη μαθήματα στοιχειώδους διδασκαλίας», εἰς 20 τόμους, πλειστάκις ἐκδοθέντα, «Λεξικὸν τῆς πρακτικῆς ζωῆς εἰς τὴν πόλιν καὶ τὴν ὕπαιθρον» (1859 καὶ 1872), «Λεξικὸν τῶν βαπτιστικῶν ὀνομάτων» (1863), «Λεξικὸν τῆς κατωτέρας ἐκπαιδεύσεως» (1877), «Παίγνια τῶν ἐφήβων» (1855) καὶ ἄλλα. Μετέφρασεν ἐπίσης τὸν «Ἰουγούρθαν» τοῦ Σαλουστίου εἰς τὴν σειρὰν τῶν «Λατίνων κλασσικῶν» τοῦ Νιζάρ. —Π.

**μπελελὸς** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὑοσκύαμος ὁ μέλανος*.

**Μπελὲμ** (Belem) *[Γεωγρ.]*.—1) Πόλις καὶ πολιτεία τῆς Βραζιλίας (βλ. λ. *Παρά*).

— 2) Προάστειον ἄλλοτε τῆς Λισσαβῶνος, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπεῖχεν 7 χλμ. Σήμερον ἀποτελεῖ μίαν τῶν ἀκραίων συνοικιῶν καὶ ἔχει 10.250 κατοίκων. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τάγου καὶ περιελήφθη ἐντὸς τοῦ σχεδίου τῆς πόλεως ἀπὸ τοῦ 1885. Ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Πορτογαλίας Ἐμμανουὴλ τοῦ Εὐτυχοῦς, ὁ ὁποῖος ἔκτισε κατ' ἀρχὰς ἐκεῖ θερινὸν ἀνάκτορον. Βραδύτερον ἐκτίσθησαν καὶ μοναστήρια, σημαντικώτερον τῶν ὁποίων εἶναι τὸ τῶν Ἱερωνυμιτῶν, ἱδρυθὲν τῷ 1409 εἰς ἀνάμνησιν τῆς ἀνακαλύψεως τῆς θαλασσίας ὁδοῦ πρὸς τὰς Ἰνδίας ὑπὸ τοῦ Βάσκο ντὲ Γκάμα. Μέχρι τοῦ 1903 ἐφυλάσσοντο ἐν τῷ μοναστηρίῳ τούτῳ αἱ ἀρχαιολογικαὶ συλλογαί, αἵτινες ἀπετέλεσαν τὸ ἐθνολογικὸν μουσεῖον τῆς Πορτογαλίας. Τμῆμα τοῦ μοναστηρίου χρησιμοποιεῖται ἀπὸ τοῦ 1834 ὡς ἄσυλον ὀρφανῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπέλεν** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Σίλλη* (βλ. λ.).

**Μπελὲν** (Belin), ***Φραγκῖσκος-Ἀλφόνσος***. Γάλλος ἀνατολιστὴς (1817—1877). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ τὴν σχολὴν ἀνατολικῶν γλωσσῶν. Διετέλεσε διορθωτὴς τῶν ἀνατολιστικῶν ἐκδόσεων τοῦ Φερμὲν-Ντιντὸ καὶ Ντοντὲ-Ντυπρὲ (1836). Ὑπηρέτησε βραδύτερον εἰς διάφορα προξενεῖα ἐν Τουρκίᾳ καὶ Αἰγύπτῳ καὶ ἐπὶ μακρὸν ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἐξέμαθε τελείως τὰς μουσουλμανικὰς γλώσσας (ἀραβικήν, περσικήν, τουρκικὴν) καὶ ἐμελέτησε τὴν τουρκικὴν ἱστορίαν καὶ φιλολογίαν. Ἔγραψεν: «Ἐπὶ τῆς καταγωγῆς καὶ τῆς ὀργανώσεως τῆς κληρονομικῆς διαδοχῆς εἰς τὰς μουσουλμανικὰς χώρας» (1861), «Ἱστορικὸν καὶ φιλολογικὸν σημείωμα περὶ τοῦ Μὶρ Ἀλὴ Σὶρ Νεβαβὶ» (1862), «Μελέτη ἐπὶ τῆς ἐγγείου ἰδιοκτησίας παρὰ Μουσουλμάνοις» (1865), «Ἡ δημοσία παιδεία καὶ ἡ διανοητικὴ κίνησις ἐν Τουρκίᾳ» (1865), «Πραγματεία ἐπὶ τῆς οἰκονομικῆς ἱστορίας τῆς Τουρκίας» (1865), «Ἀνατολῖται

Digitized by Google

ἠθικολόγοι» (1866), «Ὀθωμανικὴ βιβλιογραφία κατὰ τὰ ἔτη 1281—1285 ἀπὸ Ἐγείρας» (1868), «Ἱστορία τῆς Λατινικῆς Ἐκκλησίας τῆς Κωνσταντινουπόλεως» (1872) κ. ἄ. Τούτων τὰ πλεῖστα ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὴν «Journal Asiatique». Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Βίον τοῦ Δζεγκὶζ Χάν», «Ἱστορίαν τῶν Σασανιδῶν» κ. ἄ. ἀνατολικὰ κείμενα. —π.

—**Μπελὲν ντὲ Μπαλλὺ** (Belin de Ballu), ***Ἰάκωβος-Νικόλαος***. Γάλλος ἑλληνιστὴς ἐκ Παρισίων (1753—1815). Μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας. Ἔγραψεν: «Ἀναμνήσεις καὶ ταξίδια ἑνὸς μετανάστου», «Κριτικὴ ἱστορία τῆς ρητορικῆς παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι καὶ Ρωμαίοις» (1803), «Ἑλληνικὸν λεξικὸν» καὶ διαφόρους μεταφράσεις Ἑλλήνων συγγραφέων. —π.

**Μπελέντ, *Μπελάντ,*** ἢ ***Μπλὰντ*** *[Γεωγρ.]*. Λέξις ἀραβική, σημαίνουσα πόλιν. Ἀπαντᾷ ὡς πρῶτον ἢ δεύτερον συνθετικὸν εἰς τοπωνύμια.

**μπελεντιὲς** (ὁ) (ἀραβοτουρκικὸν *μπελεντιγιέ*): δημοτικὴ ἀρχή, δημαρχία.

**Μπελεντούγκου** (=Πετρώδης χώρα) (Beledougou) *[Γεωγρ.]* Χώρα τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς ἐν Σουδάν, ἐκτεινομένη πρὸς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Νίγηρος καὶ ὑποτελὴς εἰς τὴν χώραν Κουλούμπα. χ. Δ.

**Μπέλες,** ἢ ***Μπέλεσι*** *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς Μακεδονίας, ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ παραποταμίου στενοῦ τοῦ Στρυμόνος Κλειδίου, παρὰ τὸ ἔρυμα ἀνασχέσεως Ρούπελ, μέχρι τοῦ αὐχένος Κωστουρίνου, κειμένου ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Δοϊράνης—Στρωμνίτσης. Ἡ ὀροσειρὰ αὕτη ἐπὶ τῶν νεωτέρων ἑλληνικῶν χαρτῶν φέρεται ὑπὸ τὸ ἀρχαῖον ὄνομα αὐτῆς *Κερκίνη*. Τὸ μῆκος τῆς ὀροσειρᾶς εἶναι 70 περίπου χιλ., τὸ δὲ πλάτος ποικίλλει μεταξὺ 10—15 χιλ. Τὸ μέγιστον ὕψος αὐτῆς εἰς τὴν κορυφὴν *Καλαμπάκα* εἶναι 2030 μ., αἱ δὲ κλίσεις τῶν τε βορείων καὶ νοτίων κλιτύων λίαν ἀπότομοι, κυρίως τοῦ κεντρικοῦ τμήματος αὐτῆς.

Ἐπὶ τῆς Κερκίνης ἔχει χαραχθῆ ἡ χωρίζουσα τὰ τρία ὅμορα κράτη ὁροθετικὴ γραμμὴ Ἑλλάδος, Γιουγκοσλαβίας καὶ Βουλγαρίας. Καὶ μέχρι μὲν τοῦ 1914 ἡ συνάντησις τῶν τριῶν συνόρων ἐγένετο εἰς τὴν βορείως τῆς λίμνης Δοϊράνης κορυφὴν *Παλαιὸν Τριεθνὲς* (ὕψ. 1474 μ.), νῦν δέ, κατόπιν τῶν συνθηκῶν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἀνατολικώτερον εἰς τὸ σημεῖον *Τριεθνὲς* (ὕψ. 1883 μ.), βορειοδυτικῶς τῶν Πορροΐων (βλ. ἐπιτελ. χάρτ. Ἑλλάδος φυλλ. Πορροΐων—Πετρίτσι Κλ. 1/100000) Διὰ τῆς νέας χαράξεως τμῆμα τῆς κοιλάδος τοῦ παραποτάμου τοῦ Στρυμόνος Στρωμνίτσης περιῆλθεν εἰς τὴν Γιουγκοσλαβίαν. (περὶ τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ Μπέλες βλ. κατωτ.). Ν. Ι. Κ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἐπειδὴ ἡ ὀροσειρὰ Μπέλες ἔχει κατεύθυνσιν ἀπὸ ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς, συνεπῶς κατὰ πᾶσαν προέλασιν, εἴτε ἐκ νότου πρὸς βορρᾶν, εἴτε ἀντιθέτως, πρέπει πάντως νὰ προσπερασθῇ ἡ ὀροσειρὰ αὕτη καθέτως, δι' αὐτὸ κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ παρόντος αἰῶνος πολλάκις ἐγένετο αὕτη θέατρον ἐπιχειρήσεων.

Κατὰ τὸν Βουλγαροτουρκικὸν πόλεμον 1912 ἐλάχιστοι καὶ ἀσήμαντοι ἀγῶνες διεξήχθησαν ἐπὶ τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες, διότι οἱ Τοῦρκοι δὲν εἶχον τότε δυνάμεις ἵνα ἀμυνθῶσι κατὰ τῆς βουλγαρικῆς προελάσεως, καθ' ὅσον τὸ μεῖζον μέρος τῶν τουρκικῶν δυνάμεων τῆς περιοχῆς ταύτης (ὁμάδος κοιλάδος Στρυμόνος) εἶχεν ἀποσταλῆ ἀπὸ τῶν μέσων Ὀκτωβρίου πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ κατὰ τῶν Ἑλλήνων τουρκικοῦ στρατοῦ εἰς πεδιάδα Γιαννιτσῶν, καὶ τοιουτοτρόπως κατελήφθη ἀμαχητὶ ἡ ὀροσειρὰ αὕτη ὑπὸ τῶν Βουλγάρων περὶ τὸ τέλος Ὀκτωβρίου 1912.

Κατὰ τὸν Ἑλληνοβουλγαρικὸν πόλεμον 1913, εὐθὺς μετὰ τὴν ἑλληνικὴν νίκην Δοϊράνης—Κιλκὶς—Λαχανᾶ, διετάχθη ὁ ἑλληνικὸς στρατὸς νὰ συνεχίσῃ τὴν ἀπηνῆ καταδίωξιν τῶν Βουλγάρων (τμήματος τῆς 2ας στρατιᾶς, τεταγμένου ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Τάνεφ) πρὸς τὰς διαβάσεις τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες, καὶ τότε διεξήχθησαν κατὰ τὰς 24—26 Ἰουνίου 1913 μάχαι, φερόμεναι ὑπὸ τὸ ὄνομα «ἐπιχειρήσεις Μπέλες». Τὴν ἑσπέραν τῆς 23ης Ἰουνίου 1913 διετάχθη ἡ προχώρησις τῶν ἑλληνικῶν μεραρχιῶν, 4ης, 2ας, 5ης, 3ης, 10ης πρὸς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας κατευθύνσεις. Τὴν 24ην Ἰουνίου ἡ προχώρησις ἐξετελέσθη ὁμαλῶς, ἐξαιρέσει τῆς 3ης μεραρχίας, τῆς βληθείσης ὑπὸ βουλγαρικοῦ πυροβολικοῦ ἐκ τῆς κατευθύνσεως τοῦ Κωστούρινο. Ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης ἤρχισε καθισταμένη ἀδύνατος ἡ παρακολούθησις τοῦ πεδινοῦ πυροβολικοῦ διὰ τῶν ὁδεύσεων τῶν ἀκολουθουμένων ὑπὸ τῶν σχετικῶν μεραρχιῶν, δι' ὃ διετάχθησαν τὰ πυροβολικὰ ταῦτα νὰ πορευθῶσι διὰ τῆς ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ Δοϊράνης—Στρωμνίτσης. Τὴν ἑσπέραν τῆς ἡμέρας ταύτης διετάχθησαν αἱ ἑλληνικαὶ μεραρχίαι νὰ ἐξακολουθήσωσι τὴν καταδίωξιν, ἀλλ' ἐπὶ μικροῦ μήκους, ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, ἐξαιρέσει τῆς 4ης μεραρχίας, διαταχθείσης νὰ μὴ προχωρήσῃ διόλου. Κατὰ τὴν νύκτα 24—25 Ἰουνίου διετάχθη τὸ βουλγαρικὸν στράτευμα τοῦ Τάνεφ ν' ἀμυνθῇ ἰσχυρῶς τῆς διαβάσεως τοῦ Κωστούρινο, ἵνα πάσῃ θυσίᾳ ἀνακοπῇ ἐπ' ὀλίγον ἡ ἑλληνικὴ προέλασις, ἵνα τοιουτοτρόπως παρασχεθῇ ὁ χρόνος πρὸς ὑποχώρησιν τῆς 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς τῆς ἐξαναγκασθείσης νὰ ὑποχωρήσῃ, οὐχὶ λόγῳ σερβικῆς πιέσεως, ἀλλὰ λόγῳ τῆς ραγδαίας πρὸς βορρᾶν ἑλληνικῆς προελάσεως τῆς ἀπειλησάσης ἀμέσως τὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν τῆς κατὰ τοῦ δεξιοῦ τῶν Σέρβων δρώσης 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς· πρὸς καλυτέραν δὲ ἐκτέλεσιν τῆς τοιαύτης βουλγαρικῆς ἀμύνης, ἀπεσύρθη μία μεραρχία ἐκ τοῦ κατὰ τῶν Σέρβων βουλγαρικοῦ στρατοῦ καὶ διὰ ταύτης ἐνισχύθη ὁ κατὰ τῶν Ἑλλήνων.

Κατὰ τὴν 25ην Ἰουνίου διεξήχθησαν σφοδροὶ ἀγῶνες, καθόσον οἱ Βούλγαροι ὁλονὲν ἐνισχυόμενοι ἤρχισαν ἐκτελοῦντες ἀντεπιθέσεις, χωρὶς ὅμως τὸ τοιοῦτον ν' ἀνακόψῃ οὐδ' ἐπ' ἐλάχιστον τὴν ἑλληνικὴν προχώρησιν, καθ' ἣν μάλιστα ἡ 3η μεραρχία κατέλαβε καὶ ἀριθμόν τινα βουλγαρικῶν πυροβόλων. Τὴν ἑσπέραν τῆς ἡμέρας ταύτης διετάχθησαν αἱ ἑλληνικαὶ μεραρχίαι νὰ ἐξακολουθήσωσι τὴν προχώρησίν των ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται, ἐξαιρέσει τῆς 4ης, ἐνταλείσης νὰ παραμείνῃ εἰς τὰς θέσεις της μέχρι τῆς καταλήψεως τοῦ Κωστούρινο. Ἡ 2α μεραρχία διετάχθη νὰ προσπαθήσῃ ν' ἀποκόψῃ τὰς πρὸς Στρώμνιτσαν γραμμὰς ὑποχωρήσεως τῶν Βουλγάρων. Ἐτονίσθη προσέτι ὑπὸ τῆς διαταγῆς τοῦ Ἕλληνος ἀρχιστρατήγου ὅτι ἡ ἐπίθεσις τῆς 26ης Ἰουνίου πρέπει νὰ εἶναι λίαν ἐρρωμένη, ἵνα τοιουτοτρόπως ἀποκοπῇ ἡ πρὸς Πετρίτσι ὑποχώρησις τοῦ ἐξ Ἰστὶπ ὑποχωροῦντος πρὸς ἀνατολὰς βουλγαρικοῦ στρατοῦ (ἐκ τοῦ κατὰ τῶν Σέρβων).

Ἐπειδὴ ἀπὸ τῆς ἑσπέρας τῆς 25ης Ἰουνίου ἀντελήφθησαν οἱ ἀμυνόμενοι τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες Βούλγαροι ὅτι ἠπειλοῦντο ν' ἀποκοπῶσιν ἐν αὐτῇ, δι' αὐτὸ κατὰ τὴν νύκτα 25—26 Ἰουνίου ἐγκατέλειψαν τὰς ἐν Κωστούρινο θέσεις των καὶ ὑπεχώρησαν πρὸς βορρᾶν, τοιουτοτρόπως δὲ κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην κατέλαβον οἱ Ἕλληνες ἀμαχητὶ ἁπάσας τὰς βορείας ἐξόδους τῶν διαβάσεων τοῦ Μπέλες, ὁπότε ἡ περαιτέρω ἑλληνικὴ προχώρησις ἀποτελεῖ τὴν μάχην τῆς *Στρωμνίτσης* (βλ. λ.). Οἱ Βούλγαροι ἀντέταξαν σθεναρὰν ἄμυναν ἐπὶ τοῦ Μπέλες, διότι ἡ διὰ τῶν στενωπῶν τῆς ὀροσειρᾶς ταύτης προσπέρασις τῶν Ἑλλήνων καὶ ἡ πρὸς Στρώμνιτσαν προέλασις ἔθετεν εἰς ἄμεσον κίνδυνον τὴν κατὰ τῶν Σέρβων 4ην βουλγαρικὴν στρατιάν, καθόσον θὰ ἠδύναντο οἱ Ἕλληνες νὰ τὴν προσβάλωσι κατὰ νῶτα καὶ νὰ τῇ ἀποκόψωσι τὴν πρὸς ἀνατολὰς ὑποχώρησιν.

Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, μετὰ τὴν ἔξοδον τῆς Βουλγαρίας ὑπὲρ τῶν κεντρικῶν συμμάχων, ἐπεζητήθη εὐθὺς ἀμέσως ὑπὸ ταύτης ἡ ἐξ ὁλοκλήρου κατάληψις τῆς σερβικῆς περιοχῆς τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες (τῆς δυτικῆς)· ἐπειδὴ δὲ πρὸς ἐνίσχυσιν τῶν Σέρβων μετεφέρθησαν ἐκ Θεσσαλονίκης σιδηροδρομικῶς εἰς Χούδοβο γαλλοαγγλικαὶ δυνάμεις, δι' αὐτὸ ἀπὸ τοῦ Ὀκτωβρίου—Νοεμβρίου 1915 διεξήχθησαν ἀγῶνες εἰς τὴν περιοχὴν ταύτην, τοπικῆς ὅμως πάντοτε σημασίας, ἀπολήξαντες ὑπὲρ τῶν Βουλγάρων, ἀπωθησάντων ἐν ἀρχῇ τοὺς Ἄγγλους, οὓς ἐξηναγκάσθησαν νὰ παρακολουθήσωσιν ἐν τῇ ὑποχωρήσει καὶ οἱ Γάλλοι, ὁπότε τὰς ἀρχὰς Δεκεμβρίου διεκόπησαν αἱ ἐπιχειρήσεις. Καὶ οἱ μὲν Βούλγαροι δὲν ἐπροχώρησαν πέραν τῆς ἑλληνοβουλγαρικῆς μεθορίου, οἱ δ' Ἀγγλογάλλοι ἐχρησιμοποίησαν τὸ ἑλληνικὸν ἔδαφος καὶ ὑπεχώρησαν πρὸς Θεσσαλονίκην.

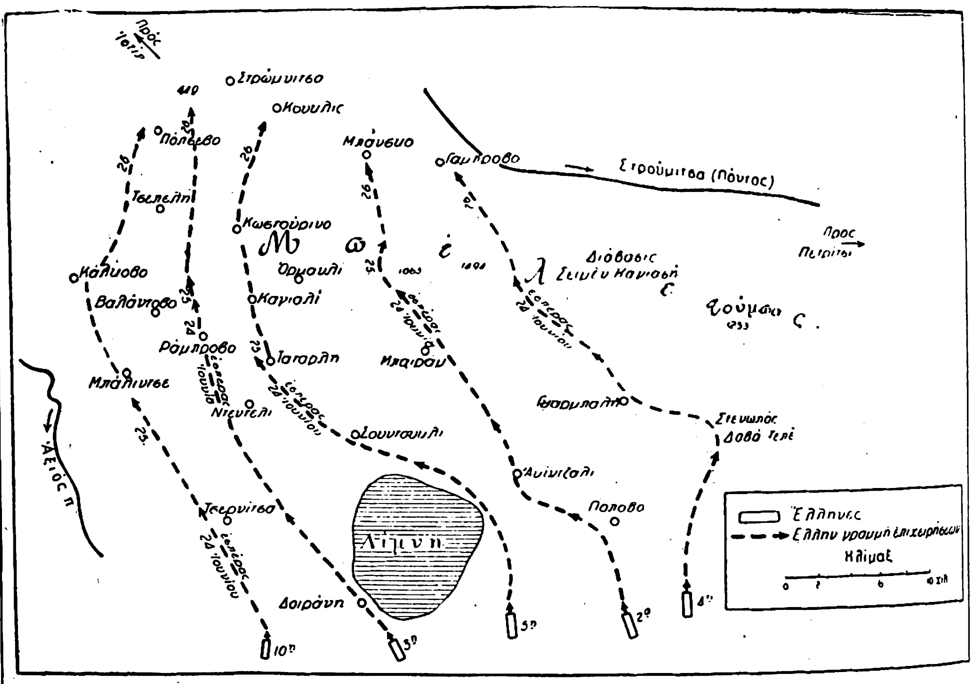


*Μάχη τοῦ Μπέλες 24—26 Ἰουνίου 1913.*

Μετὰ τὴν διάρρηξιν τοῦ γερμανοβουλγαρικοῦ βαλκανικοῦ μετώπου ἐπηκολούθησε κατὰ τὰς 21—30 Σεπτεμβρίου 1918 ἀπώθησις καὶ καταδίωξις τῆς 1ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς (στρατηγοῦ Νερέζωφ) ἐκ τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες ὑπὸ τῶν ἀγγλοελληνικῶν στρατευμάτων (ἐν συνόλῳ δύο σωμάτων στρατοῦ, ἐν οἷς ἦσαν ἐντεταγμέναι καί τινες ἑλληνικαὶ μεραρχίαι). Λόγῳ τῆς δυσκόλου θέσεως, εἰς ἣν εἶχον περιέλθει οἱ Βούλγαροι μετὰ τὴν διάρρηξιν τοῦ μετώπου, διετάχθη τὴν 20ὴν Σεπτεμβρίου 1918 ὑπὸ τοῦ Γερμανοῦ στρατηγοῦ Σχόλτς (Scholtz) ἡ ἐκκένωσις τῆς ὀροσειρᾶς Μπέλες· ἀλλ' ἅμα τὴν 21ην Σεπτεμβρίου ἐγένετο ἀντιληπτὴ ἡ διὰ τῆς ὁδοῦ Κωστούρινο—Στρώμνιτσα ὑποχώρησις, εὐθὺς ἐβλήθησαν αἱ βουλγαρικαὶ φάλαγγες ὑπὸ τῆς συμμαχικῆς ἀεροπορίας ἀπὸ μικροτάτου ὕψους. Κατὰ τὴν νύκτα 21—22 Σεπτεμβρίου ἐγκατέλειψαν οἱ Βούλγαροι τὰς πρώτας αὐτῶν γραμμὰς ἀμύνης, ἃς εἶχον ἰσχυρότατα ὀχυρώσει κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 1916—1918. Κατὰ τὰς ἑπομένας ἡμέρας ἐξηκολούθησεν ἡ βουλγαρικὴ ὑποχώρησις ὑπὸ τὴν πίεσιν τῆς ἀγγλοελληνικῆς καταδιώξεως, μέχρις οὗ, τὴν 25ην Σεπτεμβρίου, ἔφθασαν εἰς τὴν κορυφογραμμὴν τοῦ Μπέλες καὶ ἐκεῖθεν οἱ Βούλγαροι κατεδιώχθησαν μέχρι τῆς 29ης Σεπτεμβρίου πρός τε τὴν πεδιάδα τῆς Στρωμνίτσης καὶ βορειοανατολικώτερον διὰ μιᾶς μεραρχίας (τῆς ἑλληνικῆς τῆς Κρήτης) στραφείσης πρὸς ἀνατολάς. Τὴν πρωΐαν τῆς 30ῆς Σεπτεμβρίου ἀνεκόπη ἡ ἀγγλοελληνικὴ καταδίωξις ἐπὶ τοῦ Μπέλες, λόγῳ τῆς συναφθείσης κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνακωχῆς. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπέλεσι** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Τριποταμιὰ* (βλ. λ.). —2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Λοκρίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, μετονομασθὲν εἰς *Ἀνθοχώρι*. Κεῖται παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Κηφισοῦ ἐπὶ τῆς θέσεως πιθανῶς τῆς ἀρχαίας φωκικῆς πόλεως *Παραποταμίας* ἢ *Παραποταμίων* καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 327.

—**Μπέλεσι, *Ἄνω*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας χωρίου *Κεφαλόβρυσον* (βλ. λ.).

—**Μπέλεσι, *Κάτω*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας χωρίου *Λύρκεια* (βλ. λ.). χ. Δ.

**Μπελετσέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ξυλοπαροίκου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων. Κάτ. (1928) 69. χ. Δ.

**Μπελέτσι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Παλιομοναστήρι* (βλ. λ.).

— **Μπελέτσι** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἀττικῆς, ἀνατολικὴ παραφυὰς τῆς Πάρνηθος, ἄνωθεν τοῦ χωρίου Ἀφίδνης (Κιούρκων), ὕψους 841 μ. Εἶναι πιθανῶς τὸ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων καλούμενον *Φελλεύς*. Ὑπὸ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους καὶ πρὸς τὴν Ἁγίαν Τριάδα ὁ γεωλόγος Ρὲντς εὗρε στρώματα *βερφένια* μὲ μάζας ἀπολιθωμάτων διθύρων καὶ γαστεροπόδων. Ι. Σ. Σ.

**Μπελέτσκι, *Στέφανος Πέτροβιτς*.** Ρῶσος πολιτικὸς (1867—1918). Διετέλεσε γερουσιαστής, τῷ

Digitized by Google

δὲ 1915 ὁ τσάρος Νικόλαος Β′ διώρισεν αὐτὸν ὑφυπουργὸν τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τοῦ ἀνέθεσε τὴν ἀσφάλειαν τῆς αὐτοκρατορικῆς οἰκογενείας καὶ τοῦ Ρασπούτιν. Ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν ὑπόθεσιν τοῦ χειρογράφου τοῦ μοναχοῦ Ἡλιοδώρου, εἰς ὃ ἐξετίθεντο τὰ σκάνδαλα τοῦ Ρασπούτιν, ἀπελύθη τῆς θέσεώς του τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1916. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη, ὅτε δὲ ἐπεκράτησαν οἱ Μπολσεβῖκοι τὸν ἐτυφέκισαν. Ὁ Μπελέτσκι συνέγραψεν εἰς τὴν φυλακὴν ἀπομνημονεύματα, εἰς τὰ ὁποῖα ἐξέθεσε τὴν κρατοῦσαν κατάστασιν τότε εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Τσάρσκογιε-Σέλο καὶ παρουσίασε ζωντανὴν τὴν εἰκόνα τῆς δράσεως τοῦ Ρασπούτιν. θ. β.

**Μπελθούκι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων συνοικισμοῦ *Πυξαρία* (βλ.λ.).

**Μπελιβάνης, *Στρατῆς*.** Ἀγωνιστὴς ἐκ τῆς ἐπαρχίας Σφακίων Κρήτης. Συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐν τῇ μονῇ τῆς Παναγίας Θυμιανῆς συνέλευσιν τῆς 29 Μαΐου 1821, καθ' ἣν ἐτέθησαν αἱ βάσεις τῆς ἐπαναστάσεως καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς τριμελοῦς ἐπιτροπῆς, ἥτις ἀπεστάλη εἰς Ὕδραν πρὸς προμήθειαν ὅπλων καὶ πολεμοφοδίων. Ν. ΚΛΣ

**Μπελιέσκι, *Ἀλέξανδρος Ἰβάνοβιτς*.** Ρῶσος ζωγράφος (1730—1796). Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Πετρουπόλεως καὶ κατόπιν ἐν Ἰταλίᾳ. Ἐπιστρέψας εἰς Ρωσίαν ἐγένετο ἀκαδημαϊκός. Πλεῖστα τῶν ἔργων του εὑρίσκονται εἰς τὰ μουσεῖα τῆς Πετρουπόλεως καὶ τῆς Μόσχας. θ. β.

**Μπέλιζ** (Bélize) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κεντρικῆς Ἀμερικῆς, πρωτεύουσα τῆς Βρεττανικῆς Ὁνδούρας. Κάτ. 12.681. Κεῖται ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῶν Ἀντιλλῶν, παρὰ τὰς ἐκβολὰς ὁμωνύμου ποταμοῦ, καὶ εἶναι ὁ κυριώτερος λιμὴν εἰσαγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς καφέ, βάμβακος, ἐσπεριδοειδῶν, σακχάρεως καὶ βανάνας. Ἔχει ὀχυρὸν φρούριον καὶ ὡραῖον κυβερνητικὸν μέγαρον. Κατὰ τὸν ΙΗ′ αἰῶνα τὸ ὄνομα αὐτῆς ἐχρησιμοποιεῖτο καὶ ὡς ὄνομα ὁλοκλήρου τῆς χώρας. Μ. Δ. Β.

**Μπέλινγκ** (Beling), ***Ἐρνέστος***. Διακεκριμένος Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ διδάσκαλος τοῦ ποινικοῦ δικαίου, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἀπὸ τοῦ 1913 διατελεῖ τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου. Ἀνήκει εἰς τὴν νεοκλασσικὴν σχολήν. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων συγγραφῶν του καταλέγεται τὸ ἔργον «Lehre vom Verbrechen» (1916), ὅπερ διήνοιξε νέας ὁδοὺς ἐπιστημονικῆς ἐρεύνης τῆς ἐννοίας τοῦ ἐγκλήματος, συμπληρωθὲν διὰ τῆς εὐρυτέρας ἀναπτύξεως τῆς ἐννοίας τῆς «τυπικῆς μορφῆς» (Tatbestand) ἐν τῷ «Die Lehre von Tatbestand» (1930). Χ. Ν. Τ.

**Μπελίνσκι, *Βησσαρίων Γρηγόροβιτς*.** Ρῶσος κριτικός, γεννηθεὶς εἰς τὸ χωρίον Μπελίνι τοῦ κυβερνείου Πένζα τῷ 1810 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1848. Ὁ πάππος του ἦτο ἱερεύς, ὁ δὲ πατήρ του ἰατρός, ὑπηρετῶν εἰς τὸ ναυτικόν. Παραιτηθεὶς ἀποκατεστάθη εἰς τὴν πόλιν Τσεμπὸρ ὡς δημοτικὸς ἰατρός, ἐκεῖ δ' ἐδιδάχθη τὰ πρῶτα γράμματα ὁ Μπελίνσκι. Ἕνεκα τοῦ ἐπαγγέλματος τοῦ πατρός του, ἡ οἰκογένεια προεξεῖχεν ἐν τῇ κοινωνίᾳ τῆς μικρᾶς πόλεως. Ἀλλ' ὁ πατὴρ τοῦ Μπελίνσκι δὲν ἐσύχναζεν εἰς τὴν ἐκκλησίαν καὶ ἀνεγίνωσκε τὸν Βολταῖρον, τοῦτο δ' ἤρκεσεν ὅπως θεωρηθῇ ἄθρησκος καὶ κατέληξε ν' ἀπολέσῃ τὴν πελατείαν τῶν πλουσίων οἰκογενειῶν τοῦ τόπου καὶ νὰ περιέλθῃ εἰς οἰκονομικὰς δυσχερείας. Τὸ γεγονὸς ὅμως τοῦτο δὲν ἠμπόδισε τοὺς γονεῖς του νὰ ἐπιμεληθῶσι τὴν μόρφωσιν τοῦ τέκνου των. Ἐντὸς ὀλίγου ὁ μικρὸς Μπελίνσκι, εὑρὼν ἀφθονίαν βιβλίων εἰς τὴν πατρικὴν βιβλιοθήκην, εἶχεν ἀναγνώσει πλῆθος ἐξ αὐτῶν. Ὁ μυθιστοριογράφος Λαζέτσνικωφ, σχολικὸς ἐπιθεωρητής, παραστὰς εἰς τὰς ἐξετάσεις του, ἐξεπλάγη διὰ τὰς γνώσεις του, αἵτινες ἦσαν πολὺ ὑπέρτεραι τῶν διδασκομένων εἰς τὸ σχολεῖον. Ὅτε ἐνεγράφη εἰς τὸ γυμνάσιον τῆς Πένζας, ἔζη ἐν μεγάλῃ πενίᾳ. Ἤριζε μετὰ τῶν ἱεροσπουδαστῶν, κατέκρινε τὰ ἔργα τοῦ Χερσάκωφ καὶ τοῦ Σουμαρύκωφ καὶ ἀνεγίνωσκε μὲ πάθους τὸν Οὐάλτερ Σκώττ. Κατὰ τὴν περίοδον τῶν, γυμνασιακῶν του σπουδῶν ἀνέγνωσεν ἄπειρα βιβλία ἄνευ ἐπιλογῆς. Τῷ 1829 ἐνεγράφη εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας, ὡς τρόφιμος αὐτοῦ, ἐλάμβανε δὲ μέρος εἰς τὰς διαμάχας τῶν φοιτητῶν, διῃρημένων εἰς ὀπαδοὺς τῆς κλασσικῆς καὶ τῆς ρωμαντικῆς σχολῆς, καὶ ἐσύχναζεν εἰς τὸ θέατρον, ὅπου ὁ διάσημος ὑποκριτὴς Μοτσάλωφ ὑπεδύετο τοὺς ἥρωας τῶν σαιξπηρείων δραμάτων. Οὕτω ἡ φιλολογία καὶ τὸ θέατρον ἐγένοντο τὸ κέντρον τῶν σκέψεών του. Ἔγραψε τότε ἓν κοινωνικὸν δρᾶμα, ἀσθενὲς μέν, ἀλλ' ἔχον τὴν μεγάλην ἀρετὴν ὅτι ἀποτελεῖ δριμύτατον φιλιππικὸν κατὰ τοῦ συστήματος τῆς δουλοπαροικίας. Ἐκβληθεὶς ἕνεκα τούτου τοῦ πανεπιστημίου καὶ στερηθεὶς τῆς ὑποτροφίας του εὑρέθη εἰς τὰς ὁδοὺς πένης καὶ ἄστεγος. Εἰς τὴν δυστυχίαν του ταύτην δέον νὰ ἀναζητήσῃ τις τὰ πρῶτα σπέρματα τῆς νόσου του καὶ «τὴν πρώτην γειτνίασιν πρὸς τὸ κοιμητήριον», ὡς ἔγραφεν ὁ ἴδιος ἀργότερον. Ὅπως κερδίζῃ τὰ πρὸς τὸ ζῆν, μετέφραζε γαλλικὰ μυθιστορήματα, ἤρξατο δὲ ταυτοχρόνως νὰ δημοσιογραφῇ· ἀνέλυε τὰ λογοτεχνικὰ ἔργα καὶ ὑπέβαλλεν εἰς κρίσιν καὶ φιλοσοφικὴν ἀνάλυσιν πάντα τὰ φλέγοντα κοινωνικὰ ζητήματα. Ἄρθρον αὐτοῦ δημοσιευθὲν εἴς τι τῶν περιοδικῶν τῆς Μόσχας ποσείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ Ναγγέζντιν, ἐκδότου τῆς φιλολογικῆς ἐπιθεωρήσεως «Φήμης», ὅστις προσέλαβεν αὐτὸν καὶ τοῦ ἀνέθεσε τὸ κριτικὸν τμῆμα τοῦ περιοδικοῦ του. Ἕνα μῆνα κατόπιν ἐδημοσίευσε τὰς «Φιλολογικὰς μελέτας», αἵτινες ἔθεσαν τὸν Μπελίνσκι ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ἱστορικῆς κριτικῆς τῆς νέας ρωσικῆς λογοτεχνίας. Εἰσῆλθε τότε εἰς τὸν περίφημον κύκλον τοῦ Στανκιέβιτς, ὅπου ὁ πλουσιώτατος οὗτος νεανίας συνεκάλει τοὺς λογοτέχνας εἰς πολυτελέστατα δεῖπνα, κατὰ τὰ ὁποῖα συνεζήτουν θέματα λογοτεχνικά, φιλοσοφικὰ καὶ θεολογικά. Εἰς τὸν κύκλον ἐκεῖνον ἐμυήθη ὁ Μπελίνσκι τὰ φιλοσοφικὰ συστήματα τοῦ Σέλιγκ καὶ τοῦ Ἔγγελ καὶ ἐγένετο φανατικὸς ὀπαδὸς τοῦ δευτέρου. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐμελέτησε κατὰ βάθος τὸν Σαίξπηρ, τὸν Σίλλερ, τὸν Γκαῖτε καὶ τὸν Ὅφμαν, συνεδέθη μετὰ τοῦ Μπότκιν, τοῦ Μπακοῦνιν καὶ τοῦ Χέρστεν, καὶ μετὰ τοσούτους χρόνους δυστυχίας ἠδυνήθη νὰ εὕρῃ ψυχικὴν καὶ ὑλικὴν ἄνεσιν. Ἀλλ' ἡ ἔκδοσις τῆς «Φήμης» ἀπηγορεύθη ὑπὸ τῆς λογοκρισίας, λόγῳ τῆς ἐν αὐτῇ δημοσιεύσεως τῆς «Φιλοσοφικῆς ἐπιστολῆς» τοῦ Τσαντέγιεφ, ὁ δὲ Μπελίνσκι ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ «Παρατηρητοῦ τῆς Μόσχας», τὸν ὁποῖον κατέστησε τὸ ἄριστον τῶν περιοδικῶν τῆς Ρωσίας. Κληθεὶς κατόπιν εἰς τὴν Πετρούπολιν ἀνέλαβε τῷ 1839 τὴν κριτικὴν ἐπιθεώρησιν τῶν «Πατριωτικῶν Σημειώσεων». Αὐτόθι εὗρε πλῆθος θαυμαστῶν, οἵτινες ἀπέβλεπον πρὸς αὐτὸν ὡς πρὸς τὴν μεγαλυτέραν φιλολογικὴν δύναμιν τῆς ἐποχῆς. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐνυμφεύθη τὴν Μαρίαν Ὀρλώφ. Ἐν Πετρουπόλει αἱ περὶ φιλολογίας γνῶμαί του ὑπέστησαν μεγάλην διαμόρφωσιν, ἡ δὲ σειρὰ τῶν μελετῶν του περὶ Ποῦσκιν προεκάλεσαν ἀληθῆ ἐπανάστασιν εἰς τὸν πνευματικὸν κόσμον τῆς Ρωσίας. Ὁ Μπελίνσκι κατέστησε τὸ περιοδικόν, ὅπερ διηύθυνε, πανίσχυρον ὄργανον τῆς πνευματικῆς καὶ κοινωνικῆς κινήσεως τῆς Ρωσίας. Ἀποσυρθεὶς κατόπιν αὐτοῦ, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ «Συγχρόνου». Ὅταν ἐνεφανίσθησαν τὰ πρῶτα τεύχη τοῦ περιοδικοῦ τούτου, περιέχοντα μελέτας τοῦ Μπελίνσκι, ἔργα οἷα «Ποῖος ὁ πταίων» τοῦ Χέρτσεν, «Συνήθης ἱστορία» τοῦ Γκοντσαρώφ, τὰς «Σημειώσεις τοῦ Κυνηγοῦ» τοῦ Ἰβὰν Τουργκένιεφ, διηγήματα τοῦ Γκρεγκόροβιτς, τοῦ Ντρουζίνιν καὶ τοῦ Ντοστογιέβσκι, τὰς «Ἀναμνήσεις» τοῦ Στσέπκιν καὶ ποιήματα τοῦ Νεκράσωφ, ἐνεποίησαν κατάπληξιν. Ἡ μεγάλη αὕτη ἐπιτυχία ἦτο ἔργον τοῦ Μπελίνσκι, τοῦ ὁποίου ἡ αὐθεντία συνεκέντρωσεν ὅλας τὰς λογοτεχνικὰς δυνάμεις τῆς ἐποχῆς περὶ αὐτόν. Ἀλλ' ἐνῷ ἡ ἐπιρροὴ τοῦ Μπελίνσκι καθίστατο κολοσσιαία, ἡ φθίσις ὑπέσκαπτε τὴν ὕπαρξίν του. Κατὰ τὸν Μάϊον τοῦ 1847 μετέβη πρὸς θεραπείαν εἰς Βερολῖνον, ὅπου τὸν ἀνέμενεν ὁ Τουργκένιεφ, ἐκεῖ δ' εὑρισκόμενος ἔγραψε τὴν πρὸς τὸν Γκόγκολ περίφημον ἐπιστολὴν ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς δημοσιεύσεως τῆς «Φιλικῆς ἀλληλογραφίας». Ἡ ἐπιστολὴ αὕτη τοῦ προσεπόρισε τὴν φήμην, καθ' ὅλην Ρωσίαν, μεγάλου καὶ ἀκαταγωνίστου μαχητοῦ τῆς λαϊκῆς ἐλευθερίας. Τῷ 1848 ἠδυνήθη ὁ Μπελίνσκι νὰ χορηγήσῃ ὕλην διὰ τέσσαρα τεύχη τοῦ «Συγχρόνου», μετ' αὐτῶν δ' ἔληξε καὶ ἡ λογοτεχνική του δρᾶσις καὶ τὴν 22αν Μαΐου τοῦ ἔτους τούτου ἐκομίζετο ὁ νεκρός του εἰς τὸ νεκροταφεῖον Βολκώφ. Ἡ μόνη του θυγάτηρ ὑπανδρεύθη ἐν Κερκύρᾳ τὸν εἰσαγγελέα ἐφετῶν Γεώργιον Μπένσην καὶ ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1903.

Τὸ ἔργον τοῦ Μπελίνσκι ὑπῆρξε μέγα. Δύναταί τις νὰ εἴπῃ ὅτι ἡ πλειὰς τῶν μεγάλων Ρώσων συγγραφέων, ἡ ἀρχομένη ἀπὸ τοῦ Γκόγκολ, Γκρεγκόροβιτς, Ἰβὰν Τουργκένιεφ, Γκοντσαρώφ, Νεκράσωφ, Λέοντος Τολστόη, Ντοστογιέβσκι καὶ συνεχισθεῖσα εἰς τὰ μετέπειτα ἔτη, ἐμορφώθη μὲ τὰς ἰδέας καὶ τὰς ἀρχὰς αὐτοῦ, αἵτινες ἐξεπήγασαν ἀπὸ τοῦ φιλοσοφικοῦ συστήματος τοῦ Ἔγγελ, καίτοι ὁ πραγματισμὸς τοῦ Μπελίνσκι δὲν εἶναι κοσμοπολιτικός, ἀλλ' ἔχει αὐτόχθονα ὅλως χαρακτῆρα. Ἀναλύων τὰ ἔργα τῶν Ρώσων καὶ τῶν Εὐρωπαίων συγγραφέων, εἶχεν ἀσπασθῇ κατ' ἀρχὰς τὸ δόγμα «ἡ τέχνη διὰ τὴν τέχνην», τὴν ὁποίαν ἔθετεν ὑπεράνω τῶν συμβαινόντων ἐν τῇ πολιτείᾳ καὶ τῇ κοινωνίᾳ. Ἀλλ' αἱ ἀρχαί του αὗται μετεβλήθησαν ἐντελῶς, ὅταν ἤρξατο νὰ εἰσδύῃ εἰς τὴν ρωσικὴν ζωὴν καὶ νὰ ἐξετάζῃ τὴν τέχνην ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τῆς κοινωνικῆς αὐτῆς ὠφελείας καὶ τῆς σχέσεώς της πρὸς τὴν σύγχρονον ζωήν. Δὲν εἶχεν ἴσως τὴν συστηματικὴν καὶ εὐρεῖαν παιδείαν ὁ Μπελίνσκι τῶν ἀπὸ καθηγητικῆς ἕδρας Γερμανῶν φιλοσόφων, ἀλλ' ἦτο πεπροικισμένος δι' ὅλως ἐκτάκτου ἐνστίκτου, ὡς λέγει ὁ Τουργκένιεφ, καὶ οὐδεὶς ἠδύνατο βαθύτερον αὐτοῦ νὰ διαγνώσῃ τὴν ἀξίαν λογοτεχνίας τινός. Ἦτο κατ' ἐξοχὴν φιλοσοφικὸν πνεῦμα, ἀλλ' οὐχὶ φιλόσοφος ἠθικολόγος ὑπὸ τὴν συνήθη ἔννοιαν τῶν λέξεων τούτων. Τὸ ὅτι δὲν ἐγένετο πολιτικός, τοῦτο προῆλθεν ἐκ τῶν συνθηκῶν τοῦ τότε πολιτικοῦ βίου τῆς Ρωσίας καὶ ἐκ τῶν ὁρμητικῶν τάσεων αὐτοῦ πρὸς τὴν λογοτεχνίαν, εἰς τὴν ὁποίαν διὰ τῆς διδασκαλίας του εἰσήγαγε πάντα τὰ πολιτικὰ καὶ κοινωνικὰ ζητήματα, διὰ τῆς λύσεως τῶν ὁποίων ἐπῆλθεν ἡ ρωσικὴ ἀναγέννησις.

Καθ' ἣν ἐποχὴν ἤρξατο τῆς δράσεώς του ὁ Μπελίνσκι, ὁ ψευδοκλασσικισμός, εἰσαχθεὶς ἐκ Γαλλίας εἰς τὴν Ρωσίαν, ἐκυριάρχει ἀκόμη, ὁ δὲ ρωμαντισμὸς εἶχεν ἀρχίσει νὰ ἐκλείπῃ ἐπὶ τῇ ἐμφανίσει τοῦ Ποῦσκιν, ὅστις πρῶτος προσήγγισε τὴν λαϊκὴν ζωήν. Οἱ ψευδοκλασσικισταὶ εὕρισκον τὸ ἔργον τοῦ Ρώσου ποιητοῦ ὡς ἐφημέρου λάμψεως. Τὸν Ποῦσκιν ὁ ρωσικὸς λαὸς ἠννόησε καὶ ᾐσθάνθη διὰ τοῦ Μπελίνσκι, ἡ δὲ πραγματικὴ σχολὴ εἰσήχθη, ἐστηρίχθη καὶ ἐδοξάσθη δι' αὐτοῦ. Αἱ θεωρίαι του ἐν γένει περὶ ποιήσεως καὶ λογοτεχνίας συνοψίζονται εἰς τὴν ἀρχὴν ὅτι αὗται εἶναι σύμφωνοι πάντοτε πρὸς τὴν ζωὴν τῶν λαῶν καὶ ὅτι διατελοῦσιν εἰς πλήρη διάστασιν κατὰ τὴν νηπιώδη αὐτοῦ ἡλικίαν πρὸς τὴν πραγματικότητα, ἡ δὲ ἀλήθεια τῆς ζωῆς εἶναι ἀπρόσιτος εἰς αὐτόν. Ἀναλύων τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν ποίησιν ὁ Μπελίνσκι, εὑρίσκει αὐτὴν σύμφωνον πρὸς τὸν βίον τοῦ ἔθνους, ἐξ οὗ παρήχθη αὕτη. Ἡ «Ἰλιὰς» λέγει, ἐπλάσθη ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ λαοῦ, ἐν αὐτῇ δὲ κατοπτρίζεται ἡ ζωὴ τῶν Ἑλλήνων· ἦτο αὕτη δι' αὐτοὺς ἱερὰ βίβλος καὶ θρησκευτικὴ καὶ ἠθικὴ πηγή, δι' αὐτὸ δὲ ἔμεινεν ἀθάνατος. Ἀλλ' αἱ «Αἰνειάδες», αἱ «Ἐλευθερωθεῖσαι Ἱερουσαλὴμ» οἱ «Ἀπολεσθέντες παράδεισοι», αἱ «Μεσσιάδες», δὲν εἶναι εἰμὴ παραπλανήσεις κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον μεγάλων ἰδιοφυϊῶν, αἱ ὁποῖαι σήμερον ὁμοιάζουν πρὸς τοὺς γηραιοὺς ἐκείνους ὑπαλλήλους, πρὸς οὓς ἀπονέμεται σεβασμός, οὐχὶ χάριν τῶν ὑπηρεσιῶν των, ἀλλὰ χάριν τοῦ γήρατος αὐτῶν.

Οὕτω κρίνων τὴν νεοκλασσικὴν λογοτεχνίαν, κατέρριπτε τὰ ἀρχαῖα εἴδωλα καὶ ἐκλόνιζε τὰς δόξας τῶν ψευδοκλασσικῶν ποιητῶν τῆς Ρωσίας, κατέληγε δὲ λέγων ὅτι ποιηταὶ καὶ συγγραφεῖς, μὴ ἐρχόμενοι εἰς ἐπαφὴν μετὰ τῆς ζωῆς, δὲν ἦσαν ἀληθεῖς ποιηταί. Ἀπέσπα τὴν λογοτεχνίαν ἀπὸ τῆς πλάνης καὶ εἰσῆγεν αὐτὴν εἰς κύκλον συμφωνοῦντα πρὸς τὰς συγχρόνους ἰδέας καὶ πρὸς τὰς μεταρρυθμίσεις ἐν τῇ τέχνῃ, τὰς ὁποίας ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ′ αἰῶνος εἰσήγαγον ὁ Θερβαντὲς καὶ ὁ Σαίξπηρ, οἱ καταρρίψαντες τὴν ψευδοϊδανικὴν τάσιν τῆς ποιήσεως. Αἱ θεωρίαι τοῦ Μπελίνσκι, περιλαμβάνονται εἰς δώδεκα ὀγκωδεστάτους τόμους. Εὐγλωττοτέραν συνηγορίαν τῆς πραγματικῆς λογοτεχνίας εἶναι ἀδύνατον νὰ εὕρῃ τις ἀλλαχοῦ.

Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Μπελίνσκι, ἡ ζωὴ εἶναι πρόβλημα, τοῦ ὁποίου ζητοῦμεν τὴν λύσιν· δὲν εἶναι δι' ἡμᾶς τέρψις, ὅπως παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησιν, ἀλλὰ στάδιον ἐργασίας, πάλης, στερήσεων καὶ πόνων. Ἐντεῦθεν εὑρίσκει ὅτι ἀπορρέει ἡ θλῖψις, ἡ μελαγχολία καὶ μετ' αὐτὴν ἡ σκέψις, αἵτινες διέπνεον τὸν λυρισμὸν τῆς ἐποχῆς του. «Ἐὰν τὸ ᾆσμα τῶν συγχρόνων ποιητῶν, λέγει, στρέφεται πρὸς τὴν ἐξωτερικὴν φύσιν, οὗτοι δὲν θαυμάζουν αὐτήν, ἀλλὰ ζητοῦν ν' ἀποκαλύψουν τὸ μυστήριον τῆς ὑπάρξεως. Φαίνονται εἰς αὐτοὺς στενὰ τὰ ὅρια τῆς ἀρχαίας ᾠδῆς, διὸ μεταφέρουν τὸν λυρισμὸν εἰς τὸ δρᾶμα καὶ τὸ μυθιστόρημα, ὅπερ εἶναι ἡ σύγχρονος ἐποποιία, ὡς διέπλασαν αὐτὴν αἱ συνθῆκαι τῆς σημερινῆς ζωῆς». Οὕτω ὁ Μπελίνσκι, μὴ εὑρίσκων τὴν ἀξίαν τῆς ποιήσεως καὶ τῆς λογοτεχνίας ἐν γένει πέραν τῆς πραγματικῆς ζωῆς καὶ τῆς ἀληθείας, τὰς ἔκρινε ὑπὸ τὰς ἀρχὰς ταύτας. Ὑπὸ τὰς ἐμπνεύσεις αὐτοῦ ἤρξαντο ἀναπτυσσόμενα τὸ μυθιστόρημα, τὸ διήγημα καὶ τὸ δρᾶμα ἐν Ρωσίᾳ. Οἱ μέχρις αὐτοῦ συγγραφεῖς ἦσαν ἀπομιμηταὶ ξένων μυθιστοριογράφων, δὲν εἶχον τὴν ἀντίληψιν τῆς ζωῆς, στοιχεῖα ἅτινα κατεῖχεν εἰς μέγιστον βαθμὸν ὁ Γκόγκολ καὶ οἱ μετ' αὐτὸν συγγραφεῖς, οἱ ἀκολουθήσαντες τὴν διδασκαλίαν τοῦ Μπελίνσκι. Ἐκ ταύτης προέκυψε τὸ ρωσικὸν μυθιστόρημα τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, ρεαλιστικὸν διὰ συνδυασμοῦ τῆς τέχνης μετὰ τῆς ζωῆς κατὰ τοὺς ὅρους οὓς διέγραψεν ὁ Μπελίνσκι, ὅστις δύναταί τις νὰ εἴπῃ ὅτι ὑπῆρξεν ὁ μέγας ἐπαναστάτης τῆς ρωσικῆς φιλολογίας. Δι' αὐτῆς εἰσήχθησαν αἱ δημοκρατικαὶ ἰδέαι, ἐμελετήθη ὁ λαϊκὸς βίος καὶ ἀνεπτύχθη ὑφ' ὅλας τὰς μορφάς του καὶ μέχρι τῶν ἐσχάτων λεπτομερειῶν τὸ μέγα πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν ζήτημα τῆς δουλοπαροικίας, ὅπερ ἀπετέλει ὄνειδος εἰς τὴν Ρωσίαν τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος. Καίτοι ὁ βίος τοῦ Μπελίνσκι ἦτο βραχύς, τὸ ἔργον του ὑπῆρξε μέγα. Διότι ὄχι μόνον ἐχάραξε τὴν ὁδὸν ἣν ἠκολούθησαν οἱ μεγάλοι μαθηταί του, ἀλλ' ἔδωκε νέαν πνοὴν εἰς τὰς φιλελευθέρας ἰδέας τῆς χώρας καὶ ἐγένετο ὁ μέγας κῆρυξ τῆς καταλύσεως τῆς δουλείας τοῦ ἀγροτικοῦ κόσμου τοῦ ἀποτελοῦντος τὰ ἐννέα δέκατα τοῦ πληθυσμοῦ τῆς χώρας.

Τὰ ἅπαντα τοῦ Μπελίνσκι ἐξεδόθησαν ἐν Μόσχᾳ εἰς 12 τόμους (1859—1860), πολλάκις δ' ἐξετυπώθησαν κεχωρισμένως αἱ περὶ ρωσικῆς φιλολογίας ἱστορικοκριτικαί του μελέται. Θ. ΒΕΛΛΙΑΝΙΤΗΣ

**Μπέλιος,** ἢ ***Βέλιος, Κωνσταντῖνος,*** *βαρῶνος* —. Μέγας ἐθνικὸς εὐεργέτης. Ἐγεννήθη εἰς τὸ μὴ



Digitized by Google

σωζόμενον σήμερον χωρίον Λινοτόπι τῆς Μακεδονίας τῇ 25 Φεβρουαρίου 1772 καὶ ἀπέθανε πιθανῶς ἐν Βιέννῃ τῇ 11 Δεκεμβρίου 1838. Λεπτομερεῖς πληροφορίαι περὶ τῆς ζωῆς του δὲν ὑπάρχουσι. Φαίνεται ὅμως ὅτι ἔτυχεν ἐπιμελοῦς μορφώσεως, διότι νεαρὸς ἔτι μετέφρασεν ἐκ τοῦ γερμανικοῦ τὸ ἔργον «Τοῦ νέου Ρομπινσὸν συμβάντα» (ἐν Βιέννῃ 1792, τόμ. 2). Ἀπὸ τοῦ 1808 ἦτο ἔμπορος ἐν Βιέννῃ καὶ ἐγένετο πλουσιώτατος· ἔλαβε δὲ καὶ τὴν αὐστριακὴν ὑπηκοότητα. Ὁ αὐτοκράτωρ τῆς Αὐστρίας Φραγκῖσκος Α΄ ὠνόμασεν αὐτόν, δι᾿ αὐτογράφου αὐτοκρατορικοῦ γράμματος τῇ 24 Φεβρουαρίου 1817, βαρῶνον τῆς Αὐστρίας (Konstantin Freiherr von Bellio)· ἐν δὲ τῷ διπλώματι ἀνεφέροντο καὶ οἱ λόγοι δι᾿ οὓς ἀπενεμήθη αὐτῷ ὁ τίτλος οὗτος τῆς εὐγενείας. Εἰς τὴν Ἑλλάδα ὁ βαρῶνος Μπέλιος κατῆλθεν ἐν ἔτει 1836, ὁ δὲ βασιλεὺς Ὄθων ἐτίμησεν αὐτὸν διὰ τῆς φιλίας αὐτοῦ καὶ τὸν ἐπαρασημοφόρησεν. Ἐπ᾿ ἐσχάτων δὲ ἀπεδείχθη ὅτι ὁ Μπέλιος ἐγένετο ὁ ἱδρυτὴς τῆς ἐν Ἀθήναις «Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας», ἧς ὑπῆρξε καὶ ὁ πρῶτος ἑταῖρος. Αἱ πρὸς τὸ ἑλληνικὸν ἔθνος δωρεαί του εἶναι πολλαὶ καὶ μεγάλαι, ἀλλὰ κυρίως ἐγένετο μέγας εὐεργέτης τῆς ὑπὸ τὸν τουρκικὸν ζυγὸν Μακεδονίας. Ἐδωρήσατο εἰς τὸν δῆμον Ἀθηναίων κτήματα ἀξίας 50.000 δραχμῶν. Τὸ δημοτικὸν νοσοκομεῖον «Ἐλπὶς» ὀφείλει κατὰ μέγα μέρος τὴν περιουσίαν αὐτοῦ εἰς μεγάλην δωρεὰν τοῦ Μπέλιου. Διὰ συγκινητικοῦ ἐξ ἄλλου δωρητηρίου ἐγγράφου κατέλιπε ζῶν εἰς τὴν Μακεδονίαν τὴν πλουσίαν αὐτοῦ βιβλιοθήκην, ἥτις ἀπόκειται νῦν εἰς τὴν ἐν Ἀθήναις Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην· διὰ τοῦ γνωστοῦ δὲ «Βελιείου κληροδοτήματος» ἐξεπαιδεύθησαν μέχρι τοῦδε ὡς ὑπότροφοι ἐν Ἑλλάδι καὶ τῇ Ἑσπερίᾳ πολλαὶ ἑκατοντάδες Μακεδόνων. Ἐπὶ πλέον δὲ ἐμερίμνησε καὶ περὶ τῆς ἐγκαταστάσεως τῶν Μακεδόνων πολεμιστῶν παρὰ τὴν Ἀταλάντην. Ὁ Μπέλιος εἶχε κτήματα καὶ ἐν Βλαχίᾳ τῆς Ρουμανίας, ἔνθα ζῶσιν ἀπόγονοι τῆς οἰκογενείας του.

*Κωνσταντῖνος Μπέλιος.*
[Ἐλαιογραφία ἀποκειμένη ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις δημοτικῷ νοσοκομείῳ «Ἐλπίς».]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Δ. καὶ Ν. Ἀργυριάδου*, Πρακτικὰ τοῦ εὐγενεστάτου βαρώνου κυρίου Κωνσταντίνου Μπέλιου Μακεδόνος (Βιέννη τῆς Ἀουστρίας 1838). Τὸ βιβλίον τοῦτο ἐγράφη τῇ συνεργασίᾳ τοῦ Μπέλιου καὶ ἐξεδόθη ζῶντος αὐτοῦ.— *Ἰ. Δελλίου*, Ὁ βαρῶνος Κωνσταντῖνος Μπέλλιος («Μακεδονικὸν Ἡμερολόγιον» 1910, σ. 19—36). — *Κ. Ζαβιτσάνου*, Ἀρχεῖα ἐθνικῶν εὐεργετῶν (Ἀθῆναι 1929, τ. Α΄ τεῦχ. β, σ. 81—85). — *Δ. Χατζῆ*, Περὶ τοῦ ἀληθοῦς ἱδρυτοῦ τῆς Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας (ἐν «Πρακτικοῖς Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας» τοῦ ἔτους 1929). Ι. Φ. Δ.

**Μπέλκα** (*Ἐλ*—) (El Belka) [*Γεωγρ.*]. Χώρα τῆς Παλαιστίνης ἐν τῇ ἀνατολικῇ Ἰορδανίᾳ μεταξὺ Τσέρκα καὶ Μοντσίμπ. Πρωτεύουσα *Ἐς Σάλτ.* Χ. Δ.

**Μπὲλ Καβὲ** [*Γεωγρ.*]. Αὐχὴν παρὰ τὴν ἀρχαίαν Αἰγειρόεσσαν, Α. τῆς Σμύρνης καὶ παρὰ τὸ Νυμφαῖον. Μία τῶν ἀξιολογωτέρων διαβάσεων, δι᾿ ὧν ἐπικοινωνεῖ ἡ Σμύρνη μετὰ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς χερσονήσου Μικρᾶς Ἀσίας. Διέρχεται δι᾿ αὐτοῦ ἡ ἁμαξιτὸς Σμύρνης - Κασαμπᾶ καὶ εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *δίοδος τοῦ Νυμφαίου*. Ἀπ᾿ αὐτοῦ ἄρχεται ὁ Νὺφ τσάϊ, ῥέων μεταξὺ τοῦ Σιπύλου (πρὸς Β.) καὶ τοῦ Νυμφαίου ὄρους (πρὸς Ν.). Ἡ διάβασις τοῦ Μπὲλ Καβέ, συναρτήσει τῆς στενωποῦ Νυμφαίου ἀνατολικώτερον, συνιστᾷ μίαν ἐκ τῶν ὑπαρχουσῶν 5 διαβάσεων ἐπὶ τῆς ὀρεινῆς ἁλύσεως, ἥτις περιβάλλει τὸν κόλπον τῆς Σμύρνης. Αἱ διαβάσεις αὗται εἶναι: α) Ἡ τῆς Μαινεμένης, μεταξὺ τῆς θαλάσσης καὶ τοῦ ὄρους Γιαμανλάρ. Δι᾿ αὐτῆς διέρχεται ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ καὶ ἡ ἁμαξιτὸς Σμύρνης - Μαγνησίας ἢ Περγάμου. β) Ἡ τῆς Σαμπάντζας, μεταξὺ τοῦ ὄρους Γιαμανλὰρ καὶ τοῦ Σιπύλου. Δι᾿ αὐτῆς διέρχεται ἡ ἁμαξιτὸς Σμύρνης - Μαγνησίας. γ) Ἡ τοῦ Μπὲλ Καβὲ (Νυμφαίου) μεταξὺ τοῦ Σιπύλου καὶ τοῦ ὄρους Νυμφαίου, ὡς προείρηται. δ) Ἡ τοῦ Σεβδίκιοϊ μεταξὺ τοῦ Νυμφαίου ὄρους καὶ τοῦ Κιζὶλ νταγ· δι᾿ αὐτῆς διέρχεται ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ καὶ ἡ ἁμαξιτὸς Σμύρνης-Ἀϊδινίου· καὶ ε) Αἱ περὶ τὸ ὄρος Ἰκὶ Καρντὰς (Δύο Ἀδέλφια) διαβάσεις, δι᾿ ὧν διέρχονται ἡ παραλιακὴ καὶ ἡ ἐσωτερικὴ ἁμαξιτὸς Σμύρνης - Βούρλων (Βρυούλων) - Ἐρυθραίας. Ἡ κατὰ τὸ 1920 γενομένη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς Μικρᾶς Ἀσίας μελέτη ὀχυρώσεως τοῦ ὀρεινοῦ περιβόλου τῆς Σμύρνης ἐστηρίζετο ἀκριβῶς ἐπὶ τῆς εἰρημένης ἁλύσεως ὀρεινῶν σπονδύλων (Γιαμανλάρ, Σιπύλου, Νυμφαίου, Κιζὶλ νταγ) ὡς κυρίων πυρήνων ἀντιστάσεως μὲ κύρια συγκροτήματα ὀχυρωτικῶν ἔργων πρὸς ἄμυναν ἐπὶ διαφόρων τοποθεσιῶν εἰς τὰς ῥηθείσας ἐπιμήκεις στενωπούς. Αἱ λοιπαὶ ὑπάρχουσαι διαβάσεις ἐπὶ τῆς ὀροσειρᾶς τῆς περικλειούσης τὴν Σμύρνην εἶναι δευτερεύουσαι. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπελκαμένη** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Δροσοπηγή* (βλ. λ.).

**Μπέλλ** (Bell), ***Ἀλέξανδρος Γκράχαμ***. Διάσημος φυσικὸς καὶ ἠλεκτρολόγος (1847—1922), πρῶτος ἐφευρέτης τοῦ τηλεφώνου. Ἄγγλος τὴν καταγωγὴν ἐξ Ἐδιμβούργου, ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς πόλεως ταύτης καὶ βραδύτερον ἐν Γερμανίᾳ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βυρτσβούργης, ὅπου ἔλαβε δίπλωμα διδάκτορος τῆς φιλοσοφίας. Ἐταξίδευσε κατόπιν εἰς Καναδᾶν καὶ μετά τινα ἔτη ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς εἰς τὰς Ἡν. Πολιτείας. Ὁ Μπέλλ εἶχε γίνει ἤδη γνωστὸς ἀπὸ τοῦ 1874 μεταξὺ τῶν ἐπιστημονικῶν κύκλων διὰ τὴν ἐπιτυχῆ ἐπίδοσίν του εἰς τὴν διδασκαλίαν τῶν κωφαλάλων καὶ τὴν ἐπινόησιν ἰδίων πρὸς ταύτην μεθόδων. Ἦτο τόση ἡ συμπάθειά του πρὸς τὰ ἄτυχῆ αὐτὰ ὄντα, ὥστε δὲν ἐδίστασε νὰ νυμφευθῇ μίαν κωφάλαλον κόρην, λέγεται δὲ ὅτι, προσπαθῶν χάριν αὐτῆς νὰ ἐφεύρῃ τεχνικὰ μέσα ἀκοῆς, ἤχθη εἰς τὴν ἀνακάλυψιν, ἥτις τὸν κατέστησεν ἔνδοξον. Τὴν 14ην Φεβρουαρίου 1876 ὁ Μπέλλ κατέθετεν ἐν τῷ γραφείῳ εὑρεσιτεχνιῶν τῆς Νέας Ὑόρκης αἴτησιν παραχωρήσεως διπλώματος δι᾿ ἐπινόησίν του, ἣν ὁ ἴδιος ὠνόμαζε «τηλέφωνον». Τὸ περίεργον εἶναι ὅτι ἐντὸς τῆς ἰδίας ταύτης ἡμέρας, μὲ διαφορὰν ὡρῶν τινων μόνον, ὁ Ἀμερικανὸς φυσικὸς Ἐλιζὰ Γκραῦ κατέθετεν εἰς τὸ ἴδιον γραφεῖον δήλωσιν ὁμοίας σχεδὸν ἰδικῆς του ἐφευρέσεως. Προέκυψαν ἐκ τούτου δίκαι μεταξὺ τῶν δύο ἐφευρετῶν καὶ τὰ ἀμερικανικὰ δικαστήρια ἀνεγνώρισαν ἐν τέλει, διὰ τυπικοὺς λόγους, τὴν προτεραιότητα εἰς τὸν Γκραῦ. Κατ᾿ οὐσίαν ὅμως κατίσχυσεν ὁ Μπέλλ, ὅστις, λαβὼν τάχιστα νέα διπλώματα εὑρεσιτεχνίας διὰ τελειοποιήσεις τὰς ὁποίας ἐπήνεγκεν εἰς τὴν πρωταρχικήν του ἐπινόησιν, ἀνεγνωρίσθη παγκοσμίως ὡς ὁ πρῶτος πραγματικὸς ἐφευρέτης τοῦ τηλεφώνου, δι᾿ ὃ καὶ ἔλαβε παρὰ τῆς Γαλλικῆς ἀκαδημίας τὸ βραβεῖον Βόλτα. Ἤδη ἐντὸς τοῦ 1877 εἶχε δώσει εἰς τὸ τηλέφωνον τοὺς ἀρτίαν καὶ πρακτικὴν μορφήν, ἀπὸ τοῦ ἰδίου δὲ ἔτους ἐτίθετο τοῦτο εἰς γενικὴν χρῆσιν καθ᾿ ὅλας τὰς χώρας.

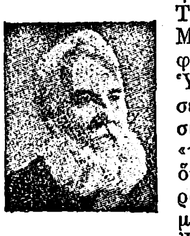

*Γκράχαμ Μπέλλ.*

Τὸ τηλέφωνον τοῦ Μπέλλ, τελειοποιοῦν τὰς πολὺ προγενεστέρας ἀλλ᾿ ἄνευ πρακτικοῦ ἀποτελέσματος προσπαθείας τοῦ Reis, συνίστατο κατ᾿ οὐσίαν ἐκ μιᾶς χοάνης, τῆς ὁποίας ὁ πυθμὴν ἐκλείετο διὰ μεμβράνης (λεπτοτάτου σιδηροῦ ἐλάσματος), καὶ ἑνὸς μαγνήτου φέροντος ἐπαγωγικὴν περιέλιξιν καὶ οὗτινος ὁ ἕτερος τῶν πόλων εὑρίσκετο εἰς ἐλαχίστην ἀπὸ τῆς μεμβράνης ἀπόστασιν. Τὰ ἐκ τῆς φωνῆς τοῦ πρὸ τῆς χοάνης ὁμιλοῦντος δημιουργούμενα ἠχητικὰ κύματα ἔθετον εἰς παλμικὴν κίνησιν τὴν μεμβράναν, ἥτις οὕτω προσεγγίζουσα καὶ ἀπομακρυνομένη ἀπὸ τῶν πόλων τοῦ ἠλεκτρομαγνήτου, ἐδημιούργει εἰς τὸ περιέλιγμα αὐτοῦ ἀντίστοιχον ἐναλλαγὴν ἠλεκτρικῶν ῥευμάτων ποικίλης συχνότητος, ῥυθμοῦ καὶ ἐντάσεως. Διὰ καταλλήλου ἀγωγοῦ ὁ «ὁμιλητὴς» οὗτος συνεδέετο πρὸς παραπλησίαν συσκευὴν τοῦ «δέκτου», ἐν τῇ ὁποίᾳ τὰ ἐκ τοῦ πρώτου ἐκπεμπόμενα ῥεύματα, ἐπιδρῶντα ἐπὶ τοῦ ἠλεκτρομαγνήτου, προὐκάλουν ἀντιστοίχους ἕλξεις καὶ ἀπώσεις τῆς μεμβράνης, κραδασμοὺς δηλαδὴ ὁμοίους πρὸς τοὺς τῆς μεμβράνης τοῦ ὁμιλητοῦ καὶ ἀναπαράγοντας διὰ τοῦτο τοὺς ἰδίους ἤχους. Τὰ σημερινὰ τηλέφωνα δὲν διαφέρουσιν ἀπὸ τῆς ἀρχικῆς ἐπινοήσεως τοῦ Μπέλλ παρὰ μόνον κατὰ τὰς λεπτομερείας, τῶν ὁποίων σημαντικωτέρα εἶναι ἡ προσθήκη τοῦ μικροφώνου διὰ τὴν ἐνίσχυσιν τῆς φωνῆς.

Τὴν πρώτην ταύτην ἐφεύρεσιν τοῦ Μπέλλ ἐπηκολούθησαν καὶ πολλαὶ ἄλλαι ἐν τῷ πεδίῳ τῶν ἐφαρμογῶν τοῦ ἠλεκτρισμοῦ. Τῷ 1878 ἐπενόησε τὸ «ἀκτινόφωνον», δι᾿ οὗ καθίστατο δυνατὴ ἡ παραγωγὴ ἤχων διὰ συχνῆς παρεμβολῆς σκιεροῦ σώματος διακόπτοντος τὴν ἐπενέργειαν τοῦ φωτὸς ἐπὶ μιᾶς πλακὸς σεληνίου. Ἡ συσκευὴ αὕτη, χάρις εἰς τὴν ὁποίαν ἠδύνατο νὰ μεταδοθῇ ἡ ἀνθρωπίνη φωνὴ εἰς μακρὰν ἀπόστασιν μέσῳ φωτεινῆς ἀκτῖνος, δὲν ἔσχεν οὐσιώδη ἐφαρμογὴν ἐν τῇ πράξει· ἀπετέλεσεν ὅμως τὴν βάσιν ἄλλων μεταγενεστέρων σημαντικῶν ἐπινοήσεων, ἐν αἷς καὶ ἡ τῆς ἠχητικῆς καὶ ὁμιλούσης κινηματογραφικῆς ταινίας. Εἰς ὑπόμνημά του ὑποβληθὲν εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν τῶν Παρισίων ὁ Μπέλλ ἐξέθετεν ἐξ ἄλλου τὰ συμπεράσματα διαφόρων πειραματισμῶν του, καθ᾿ οὓς φύλλα χρυσοῦ, ἀργύρου, ἐλαστικοῦ κόμμεως, ξύλου καὶ πολλῶν ἄλλων οὐσιῶν ἀπεδίδουσιν εὐδιάκριτον ἦχον, ὅταν προσβάλλωνται διὰ διαλλειπόντως φωτεινοῦ κραδασμοῦ. Μεταξὺ τῶν ἐπινοήσεων τοῦ Μπέλλ περιλαμβάνεται ἀκόμη καὶ ὁ λεγόμενος «ἐπαγωγικὸς ζυγός».

Ἐκτὸς τῶν σχετιζομένων πρὸς τὰς ἀνακαλύψεις καὶ ἐφευρέσεις του πραγματειῶν, ὁ Μπέλλ ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα βιβλία καὶ ἄρθρα περὶ μεθόδων διδασκαλίας τῶν κωφαλάλων. Γ. Ζ.

[Βλ. καὶ λ. *Μπέλλ ὀργάνωσις* καὶ *τηλέφωνον*.]

—**Μπὲλλ** (Bell), ***Ἀνδρέας***. Ἄγγλος παιδαγωγικὸς καὶ κληρικὸς (1753—1832). Μέλος τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας, διωρίσθη διευθυντὴς σχολῆς τινος ὀρφανῶν ἐν Ἔγκμορ τῶν Ἰνδιῶν, ὅπου ἐφήρμοσε τὴν ἀλληλοδιδακτικὴν μέθοδον. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν Ἀγγλίαν συνέγραψε μελέτην ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ ἀγωγὴ τῶν ἀρρένων ἐν Μαντρὰς» (1797), ἣν ἠκολούθησε περισπούδαστος πραγματεία ἐπιγραφομένη «Ὁδηγίαι διὰ τοὺς διευθυντὰς σχολῶν κατὰ τὸ σύστημα τοῦ Μαντράς». Τὰ ἔργα ταῦτα δὲν ἐλήφθησαν κατ᾿ ἀρχὰς ὑπὸ σοβαρὰν ἔποψιν. Τὸ σύστημα τοῦ Μπέλλ εἰσήχθη βραδύτερον εἰς πάντα τὰ ἀγγλικὰ ἐκπαιδευτήρια. Ὁ Μπέλλ κατέλιπε τρία ἑκατομμύρια διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν καὶ διὰ φιλανθρωπικὰ ἔργα. Λ. Δ.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Βενιαμίν***. Ἐπιφανὴς Ἄγγλος ἰατρὸς τοῦ Ἐδιμβούργου (1749—1806). Χειρουργὸς τοῦ Βασιλικοῦ νοσοκομείου τῆς πόλεως, ἐδημοσίευσεν ἑξάτομον Χειρουργικήν, μεταφρασθεῖσαν εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ γερμανικὴν «System of surgery» (1783), δίτομον ἔργον ἀφροδισίων νόσων, μεταφρασθὲν ὁμοίως εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ γερμανικήν, «Treatise on gonorrhoea virulenta and lues venerea» (Ἐδιμβοῦργον 1793), ἐπίσης περὶ ὑδροκήλης καὶ καρκίνου, «A treatize on the hydrocele, on sarcocele, on cancer, and other diseases of the testes» (1794), κ. λ. π. Ἐκ τῶν ὑπηρεσιῶν ἃς οὗτος προσέφερεν εἰς τὴν χειρουργικὴν ἡ κυριωτέρα εἶναι ὅτι εἰς πάσας σχεδὸν τὰς ἐγχειρήσεις, ἰδίως δὲ κατὰ τὰς ἐκτομὰς ὄγκων, ἐπιμόνως ἀπῄτει τὴν κατὰ τὸ ἑνὸν διατήρησιν ἀρκετοῦ ὑγιοῦς δέρματος. Ο. Ρ.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Ἐρρῖκος***. Περιώνυμος Ἄγγλος μηχανικὸς καὶ ναυπηγὸς (1767—1840). Εἶναι ὁ πρῶτος ἐν Εὐρώπῃ, ὅστις εἰσήγαγε τὸν ἀτμὸν εἰς τὴν ναυτιλίαν. Τῷ 1812 κατεσκεύασε τὸ πρῶτον ἀτμόπλοιόν του.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος ἰατρὸς καὶ ζῳολόγος (1792—1880). Ἐδίδαξεν ἐν τῷ νοσοκομείῳ Guy τοῦ Λονδίνου ἀπὸ τοῦ 1816 μέχρι τοῦ 1860 μαθήματα συγκριτικῆς ἀνατομικῆς, χειρουργικῆς καὶ ὀδοντιατρικῆς. Τῷ 1837 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ζῳολογίας εἰς τὸ Βασιλικὸν Κολλέγιον. Διετέλεσε γραμματεὺς τῆς βασιλικῆς ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου, μέλος τοῦ βασιλικοῦ χειρουργικοῦ Κολλεγίου ὡς καὶ πλείστων ἄλλων ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «The anatomy and diseases of the teeth» (Λονδῖνον 1830), «A history of the British quatrupeds» (Λονδῖνον 1836), «Natural history of British reptiles» (1849), «Natural history of the British crustacea» (1853). Τῷ 1872 ἐδημοσίευσε νέαν ἔκδοσιν τοῦ ἔργου τοῦ White «Περὶ φυσικῆς ἱστορίας καὶ ἀρχαιοτήτων τῆς Σελμπόρνης». Ο. Ρ.

— **Μὲλλλ** (Bell), σὲρ ***Ἰσαὰκ-Λοούθιαν***. Ἄγγλος μεταλλειολόγος καὶ χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1904. Ἐγένετο ἱδρυτής, μετὰ τῶν ἀδελφῶν του, τῆς ἑταιρείας «Ἀδελφοὶ Μπέλλ», ἥτις ἐκμεταλλεύεται τὰ μεγάλα ἐργοστάσια χάλυβος ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τάϋν. Ἵδρυσεν ἐπίσης τὰ μεγάλα ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων παρὰ τὸ Γκαίητσχεντ καὶ συνέγραψε πλεῖστα συγγράμματα.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος χειρουργὸς καὶ ἀνατόμος, ἐξ Ἐδιμβούργου (1762—1820), πρεσβύτερος ἀδελφὸς τοῦ *Καρόλου Μπέλλ* (βλ. κατωτ.). Τὰς ἰατρικάς του σπουδὰς συνεπλήρωσεν εἰς τὴν Ρωσίαν καὶ τὰς βορείας χώρας τῆς Εὐρώπης. Κατὰ τὴν ἐπάνοδόν του ἐδίδαξεν εἰς Ἐδιμβοῦργον ἀνατομικὴν χειρουργικὴν καὶ μαιευτικήν, συνέγραψε δὲ πλεῖστα ἀξιόλογα ἐπιστημονικὰ ἔργα, ἰδίως ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του. Τὰ πλεῖστα τούτων ἀναφέρονται εἰς τὴν ἀνατομικήν, τὰ δὲ λοιπὰ εἰς τὴν χειρουργικήν. Ἀναφέρομεν μεταξὺ αὐτῶν: «The anatomy of the human body» (Λονδῖνον 1793), τρίτομον ἔργον κατ᾿ ἐπανάληψιν ἐκδοθέν, «Engravings explaining the anatomy of the bones, muscles and joints» (1794), «—of the brain» (1802), «—of the nerves» (1803), «—of the viscera» (1804), τρίτομον χειρουργικὴν «Principles of surgery» (Λονδῖνον, 1801)· «Περὶ τῆς φύσεως καὶ θεραπείας τῶν τραυμάτων» (Ἐδιμβοῦργον 1795) κλ. Ο. Ρ.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος γλύπτης (1811—1895). Διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἐπεξεργασίαν μυθολογικῶν θεμάτων, συνέγραψε δὲ καί τινα βιβλία, ἀναφερόμενα εἰς τὰς καλὰς τέχνας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Δωροθέα», «Ἡ πληγωμένη Κλορίνδη», «Τὰ παιδία εἰς τὸ δάσος», «Ἡ Ἀνδρομέδα», «Ἡ ὡπλισμένη ἐπιστήμη», «Ἡ ψυχὴ ἀναρπαζομένη ὑπὸ τοῦ Ζεφύρου», «Ψυχὴ καὶ κύκνος», «Ἅγιος Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής», «Ὁ λόρδος Φάλκλαντ», «Ὁ σὲρ Ροβέρτος Οὐῶλπολ», τὸ «Μνημεῖον τῶν ἐν Κριμαίᾳ πεσόντων στρατιωτῶν» (ἐν Woolwich) καὶ τὸ ἄγαλμα τοῦ κόμιτος Κλάρεντον εἰς τὸ Foreign Office. Ι. Μ. Π.

Digitized by Google

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Ἰωάννης-Ἀδὰμ-Σὰλλ φὸν*** —. Γερμανὸς ἀστρονόμος καὶ ἀνατολιστὴς (1591—1666). Ἰησουΐτης καὶ ἱεραπόστολος ἐν Κίνᾳ, ἔλαβεν ἐντολὴν παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος νὰ προβῇ εἰς τὴν διόρθωσιν τοῦ σινικοῦ ἡμερολογίου. Ἔγραψε πολλὰς πραγματείας εἰς τὴν κινεζικὴν καὶ ἐπωφελήθη τῆς εὐνοίας τοῦ μονάρχου πρὸς διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ εἰς τὴν Ἄπω Ἀνατολήν. Α. Δ.

— **Μπὲλλ** (Bell), *σὲρ* ***Κάρολος***. Διάσημος Ἄγγλος ἰατρός, νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ ἀνατόμου *Ἰωάννου Μπέλλ*, γεννηθεὶς ἐν Doun τῆς Σκωτίας τῷ 1774 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1842. Ἤδη κατὰ τὰ ἔτη τῶν σπουδῶν του ἐξέδωκε τὸ ἀξιόλογον δίτομον ἔργον του, σχὸν πλείστας ἐκδόσεις καὶ μεταφράσεις: «A system of dissections explaining the anatomy of the human body etc.» (1798—1800), βραδύτερον δὲ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του τὴν ἀνατομικὴν τοῦ ἀνθρώπου («Anatomy of the human body», 1802—1804). Τῷ 1799 ἐγένετο ὑφηγητὴς τοῦ χειρουργικοῦ κολλεγίου, ἅμα δὲ εἰσῆλθε καὶ εἰς τὸ βασιλικὸν νοσοκομεῖον τοῦ Ἐδιμβούργου, ἐν ᾧ διέπρεψε διὰ τὴν χειρουργικήν του δεξιότητα. Τῷ 1806 μετέβη εἰς Λονδῖνον, ἀφοῦ ἤδη προηγουμένως εἶχεν ἐκδώσει σειρὰν ἀνατομικῶν ἐργασιῶν ἐπὶ τῶν ἀρτηριῶν καὶ τῶν χειρουργιῶν αὐτῶν, τοῦ ἐγκεφάλου, τῆς διαδρομῆς τῶν νεύρων κλπ. καὶ ἤρξατο μαθημάτων ἐπὶ τοῦ νευρικοῦ συστήματος, ἅτινα, ὁμοῦ μετὰ τῶν λαμπρῶν αὐτοῦ σχετικῶν ἐρευνῶν, ἀνέδειξαν τοῦτον φυσιολόγον περιωπῆς καὶ τὸν κατέστησαν διάσημον. Συνάμα ἔφερεν εἰς πέρας καὶ τὴν σύνταξιν τῆς ἀνατομικῆς αὐτοῦ διὰ τοὺς καλλιτέχνας, ἡ ἀνατομικὴ τῆς ἐκφράσεως («Essay on the anatomy of expression in painting» 1805, «Essay on the anatomy and philosophy of expression», 1824), ὡς καὶ τὴν δίτομον ἐγχειρητικήν του, σχοῦσαν πλείστας ἐκδόσεις καὶ μεταφράσεις («A system of operative surgery founded on the basis of anatomy», 1807—1809—1814—1816). Τῷ 1811 ἐξέδωκε σύγγραμμα, ἐν ᾧ ἀναφέρονται αἱ πρῶται ἀγγελίαι τῆς μεγάλης ἀνακαλύψεώς του περὶ τῶν διαφόρων λειτουργιῶν τῶν ῥιζῶν τῶν ῥαχιαίων νεύρων, καὶ τῶν σχέσεων τούτων μετὰ τῶν διαφόρων μερῶν τοῦ ἐγκεφάλου («An idea of a new anatomy of the brain; submitted for the observations of his friends»). Τῷ 1814 ἐξελέγη χειρουργὸς τοῦ νοσοκομείου Middllesex. Ἐκ τῶν φυσιολογικῶν του ἐρευνῶν ἀναφέρομεν τὰς περὶ τῶν μυῶν τῶν οὐρητήρων καὶ τῆς μήτρας, περὶ τῆς δυνάμεως δι' ἧς ἐπιτελεῖται ἡ κυκλοφορία τοῦ αἵματος (1819) κλπ. Ἀλλ' ἰδίως ἀξία μνείας εἶναι ἡ μεγάλη ἀνακάλυψίς του περὶ ἰδιοτήτων τῶν προσθίων καὶ ὀπισθίων νωτιαίων νεύρων, ἃς εἶχεν ἤδη διαισθανθῆ ὁ Ἐρασίστρατος καὶ ἰδίως ὁ Γαληνός, διετύπωσε δὲ εἶτα ὁ Boerhaave, ἀλλ' ἄνευ ἀποδείξεων. Ἡ ἀνακάλυψίς του, ἀφορῶσα τὴν διάκρισιν τῶν ῥαχιαίων νεύρων εἰς αἰσθητικὰ καὶ κινητικά, διετυπώθη διὰ τοῦ ἀφορισμοῦ: «αἱ πρόσθιαι ῥίζαι τοῦ νωτιαίου μυελοῦ εἶναι κινητικαί, αἱ δὲ ὀπίσθιαι αἰσθητικαί» (νόμος τοῦ Μπέλλ καὶ Magendie). Εἶναι μία ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας ἀνακαλύψεις τοῦ ΙΘ' αἰῶνος μετὰ τὴν τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος ὑπὸ τοῦ Harvey, ἀπετέλεσε δὲ ἀλήθειαν φυσιολογικήν, ἀναμφήριστον κατέστασαν ἐκ τῶν μετέπειτα ἐρευνῶν τοῦ Magendie, Müller, Longet κλπ. Τὴν σχετικὴν ἀνακοίνωσίν του (1821) ἠκολούθησαν πλεῖσται ἄλλαι. Τῷ 1824 τὸ κολλέγιον τῆς χειρουργικῆς τῷ προσέφερε τὴν πρώτην ἕδραν τῆς ἀνατομικῆς καὶ χειρουργικῆς. Τῷ 1828 ἐγένετο ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λονδίνου καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας, ἐγκατέλειψεν ὅμως τὴν θέσιν του καὶ ἐπεδόθη εἰς τὰς φυσιολογικάς του ἐρεύνας, δημοσιεύσας σειρὰν πραγματειῶν. Τῷ 1833 ὁ Γουλιέλμος ὁ Δ' ὠνόμασε τὸν Μπέλλ ἱππότην καὶ μετὰ ἓν ἔτος ἡ Λονδίνειος Βασιλικὴ Ἑταιρεία τῷ ἀπένειμε χρυσοῦν μετάλλιον. Τῷ 1835 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου. Ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρονται τὰ ἀκόλουθα: 1) Νεῦρον ἀναπνευστικὸν τοῦ Μπέλλ, ἢ ἀνώτερον μέγα θωρακικὸν νεῦρον· νεῦρον τοῦ μεγάλου ὀδοντωτοῦ μυός, ἀποτελοῦν κλάδον τοῦ βραχιονίου πλέγματος. 2) Παράλυσις τοῦ Μπέλλ. Παράλυσις τοῦ 7ου ζεύγους (προσωπικοῦ). 3) Φαινόμενον τοῦ Μπέλλ (1824), καθ' ὃ ὁ ἐκ βαρείας προσωπικῆς περιφερικῆς παραλύσεως κατεχόμενος ἀσθενὴς ἀδυνατεῖ νὰ κλείσῃ τὰ βλέφαρα πρὸς τὸ παράλυτον τμῆμα, ἐὰν μὴ κατευθύνῃ ταυτοχρόνως τὸν ὀφθαλμικὸν βολβὸν πρὸς τὰ ἄνω καὶ ἐλαφρῶς πρὸς τὰ ἔξω. 4) Σπασμὸς τοῦ Μπέλλ (1842). Ἡ γνωστὴ ἀνώδυνος σπασμώδης συστολὴ μυῶν τινων τοῦ προσώπου. Ο. Ρ.

Κάρολος Μπέλλ.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Κάρολος-Φρειδερῖκος Μόμπερλυ***. Ἄγγλος δημοσιογράφος (1847—1911). Ἐγεννήθη ἐν Ἀλεξανδρείᾳ τῆς Αἰγύπτου καὶ ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ, ὁπόθεν ἐπιστρέψας ἐγένετο ἀνταποκριτὴς τῶν «Τάϊμς» τοῦ Λονδίνου τῷ 1865 ἐν Ἀλεξανδρείᾳ καὶ Καΐρῳ, ὅπου ἵδρυσε καὶ τὴν ἀγγλόφωνον ἐφημερίδα «The Egyptian Gazette». Τῷ 1890 ἐκλήθη εἰς τὸ Λονδῖνον ὡς ὑποδιευθυντὴς τῶν «Τάϊμς», κατώρθωσε δὲ διὰ τῆς δραστηριότητος, τῆς διορατικότητος καὶ τοῦ διοργανωτικοῦ του πνεύματος νὰ ἀνακαινίσῃ τελείως τὴν μεγάλην ἀγγλικὴν ἐφημερίδα καὶ νὰ προσδώσῃ εἰς αὐτὴν νέαν ζωὴν καὶ μεγαλύτερον κῦρος. Μετὰ τὴν ἀνασύστασιν τῆς ἑταιρείας τῆς ἐφημερίδος ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν αὐτῆς. Τῷ 1908 ἀντέστη εἰς τὴν ἐξαγορὰν τῆς ἐφημερίδος ὑπὸ τοῦ λόρδου Νόρθκλιφ καὶ ἐγένετο ὁ κύριος αὐτῆς ἐκδότης. Κατὰ τὴν ἐν Αἰγύπτῳ παραμονήν του εἶχεν ἐπιδοθῆ εἰς μελέτας περὶ τῆς χώρας ταύτης καὶ ἔγραψε: «Κεδίβαι καὶ πασάδες» (1884). «Οἰκονομικὰ τῆς Αἰγύπτου» (1887), «Ἀπὸ τῶν Φαραὼ εἰς τοὺς Φελλάχους» (1889). Βιογραφίαν αὐτοῦ ἔγραψε μετὰ τὸν θάνατόν του ἡ θυγάτηρ του Ε. Μπέλλ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ ζωὴ καὶ ἡ ἀλληλογραφία τοῦ Καρόλου Μόμπερλυ Μπέλλ (1927). Μ. Δ. Β.

Μόμπερλυ Μπέλλ.

— **Μπὲλλ** (Bell), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος λογοτέχνης καὶ δημοσιονόμος (1800—1867). Συνειργάσθη εἰς πλείστας ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ καὶ ἐδημοσίευσεν ἐν τῇ «Ἐγκυκλοπαιδείᾳ τοῦ Λάρντνερ» ἱστορίαν τῆς Ρωσίας καὶ βιογραφίας Ἄγγλων ποιητῶν. Ἐπίσης ἔγραψε βιογραφίαν τοῦ Γεωργίου Κάνιγγος καὶ σειρὰν μυθιστορημάτων, ἐν οἷς διακρίνονται τὰ ἑξῆς: «Χρυσῆ κλῖμαξ», «Ἀναμνήσεις τοῦ ἐμφυλίου πολέμου». Ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων του ἄξια λόγου εἶναι «Ὁ γάμος» (1842), «Μητέρες καὶ θυγατέρες» κτλ. Α. Δ.

**Μπὲλλ** (Bell) *μονάς*. Πρὸς τιμὴν τοῦ ἐφευρέτου τοῦ τηλεφώνου A. G. Bell ὑπάρχει σχετικὴ μονὰς γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *δεκατομπέλλ* (decibell). Εἶναι δὲ αὐτὴ ἡ κατὰ τὸ ἀγγλοαμερικανικὸν σύστημα μονὰς μετρήσεως τῶν ἀπωλειῶν μεταδόσεως μιᾶς ἀποσβεννυμένης ἠλεκτρικῆς κυμάνσεως διὰ χρήσεως τῶν δεκαδικῶν καὶ οὐχί, ὡς συνήθως γίνεται, τῶν νεπερείων τοιούτων. Λ. Ν. Κ.

— **Μπὲλλ** (Bell), *ὀργάνωσις*. Τεραστία βιομηχανικὴ καὶ ἐπιστημονικὴ ὀργάνωσις ἑδρεύουσα ἐν Ἀμερικῇ, μὲ διακλαδώσεις εἰς ὅλας τὰς χώρας τῆς γῆς, ἀσχολουμένη μὲ ὅ,τι ἀφορᾷ τὴν μελέτην, κατασκευὴν καὶ ἐκμετάλλευσιν ἠλεκτρικῆς τηλεπικοινωνίας (τηλεφώνων, τηλεγράφων ἐνσυρμάτων καὶ ἀσυρμάτων, τηλεοράσεως κτλ.). Ἡ ὀργάνωσις αὕτη εἶναι ἡ μεγαλυτέρα καὶ ἡ σοβαρωτέρα ἐν τῷ κόσμῳ. Ἐν Ἀμερικῇ αἱ κυριώτεραι ἑταιρεῖαι αἱ ἀνήκουσαι εἰς αὐτὴν εἶναι ἡ «American Telephon and Telegraph Co», συγκεντροῦσα τὰ 95 % τῆς σχετικῆς κινήσεως διαδόσεως καὶ ἐκμεταλλεύσεως τῆς ἠλεκτρικῆς τηλεπικοινωνίας, καὶ ἡ «Western Electric Co», ἑταιρεία κατασκευῆς τῶν εἰδῶν τηλεπικοινωνίας. Διὰ τὰς ἐκτὸς τῆς Ἀμερικῆς ἐργασίας τῆς ἄνω ὀργανώσεως ἔχει συσταθῆ ὑπ' αὐτῆς διὰ μὲν τὰ ζητήματα ἐκμεταλλεύσεως ὁ ὀργανισμὸς «International Telephon and Telegraph Company», διὰ δὲ τὰ ζητήματα κατασκευῆς ὁ ὅμιλος «The International Standard Electric Corporation», ὅστις ἔχει ἐργοστάσια εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς χώρας τῆς γῆς, γνωστὰ ὑπὸ διαφόρους τίτλους περιέχοντας συνήθως τὴν λέξιν «Standard».

Τὸ πρῶτον ἱδρυθὲν ἐν Εὐρώπῃ ἐργοστάσιον τῆς ὀργανώσεως Μπέλλ εἶναι τὸ ἐν Ἀμβέρσῃ τοῦ Βελγίου ἐγκατασταθὲν τῷ 1882, γνωστὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «The Bell Telephone Manufacturing Company».

Ἡ ὀργάνωσις Μπέλλ διαθέτει θαυμάσια ἐργαστήρια μελετῶν καὶ προαγωγῆς τῶν σχετικῶν τεχνικῶν ζητημάτων, ἐξ ὧν ἐξεπήγασαν ἢ ἐτελειοποιήθησαν αἱ πλεῖσται ἐφευρέσεις, αἱ τόσον προαγαγοῦσαι τὴν ἠλεκτρικὴν τηλεπικοινωνίαν κατὰ τὰ τελευταῖα 25 ἔτη. Τὰ κυριώτερα τῶν ἄνω ἐργαστηρίων εἶναι ἐν Ἀμερικῇ μὲν τά: «The Bell Telephone Laboratories» καὶ «The Americau Telephone and Telegraph Research Laboratories», ἑδρεύοντα ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ, ἐν Εὐρώπῃ δὲ τὰ θαυμάσια ἐν Hendon τῆς Ἀγγλίας γνωστὰ ἐργαστήρια: «International Telephon and Telegraph Laboratories, Incorporated» καὶ ἐν Παρισίοις τὸ «Laboratoire International de Téléphonie et Télégraphie». Τέλος ἡ ὀργάνωσις Μπέλλ ἐκδίδει πλῆθος περιοδικῶν γενικοῦ καὶ εἰδικοῦ ἐνδιαφέροντος, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ «Bell System Technical Journal» καὶ «Electrical Communication» δημοσιεύουν συχνάκις μελέτας, πορίσματα καὶ ἀνακοινώσεις ὑψίστης τεχνικῆς σημασίας. Λ. Ν. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μπὲλλ** (Bell), *σημεῖον τοῦ* —. Ὀνομάζεται οὕτω ἡ φορὰ τοῦ βολβοῦ πρὸς τὰ ἄνω καὶ ἔξω καθ' ἣν στιγμὴν ὁ σφιγκτὴρ τῶν βλεφάρων τίθεται εἰς ἐντατικὴν ἐνέργειαν ἵνα κλείσῃ τὰ βλέφαρα. Α. Γ.

**Μπέλλα** (Bella) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Ποτέντσαλ τῆς Βασιλικάτας. Κάτ. 5.000. Ἔχει θειοῦχα λουτρά. Τῷ 1857 κατεστράφη ὑπὸ σεισμοῦ, ἀνοικοδομηθεῖσα κατόπιν. Μ. Δ. Β.

**Μπελλὰ** (Bella), ***Αὔγουστος***. Γάλλος ἀγρονόμος ἐκ Στρασβούργου (1777—1856). Μετέσχεν ὡς ἐθελοντὴς εἰς τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις τῆς δημοκρατίας καὶ τῆς αὐτοκρατορίας, λαβὼν μέρος ὡς ἀντισυνταγματάρχης εἰς τὴν μάχην τοῦ Βατερλὼ καὶ τιμηθεὶς διὰ τοῦ σταυροῦ τῆς Λεγεῶνος τῆς Τιμῆς. Μετὰ τὸ 1815 ἀποστρατευθεὶς ἐπεδόθη εἰς τὴν γεωργίαν εἰς Ροβὶλλ καὶ ἐγένετο (1827) διευθυντὴς τοῦ γεωργικοῦ ἰνστιτούτου τῆς ἀγρονομικῆς ἑταιρείας τοῦ Γκρινιόν. Αἱ ἐργασίαι του περιέχονται εἰς τὰ «Annales de la Société agronomique de grignon». —Π.

**Μπέλλα** (Bella), ***Ἰωάννης ντέλλα***—. Φλωρεντῖνος πολιτικὸς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Καίτοι εὐγενής, ἐτάχθη μὲ τὸν λαόν, ὑπὲρ τοῦ ὁποίου εἰσήγαγε πολλὰς μεταρρυθμίσεις. Οὕτως εἰσήγαγε τὴν λεγομένην μεταρρύθμισιν τῆς 18ης Ἰανουαρίου 1293, καθ' ἥν, πρὸς τὰς ὑπαρχούσας πέντε «μείζονας τέχνας» ἀνεγνωρίσθησαν ἰσάριθμοι «ἐλάσσονες» καὶ παρὰ τοὺς ἓξ κοσμήτορας ὡρίσθη καὶ εἷς «δικαστικὸς σημαιοφόρος» («γκονφαλονιέρο ντέλλα τζουστίτσια»), τοῦ ὁποίου ἡ δύναμις ηὐξήθη σὺν τῷ χρόνῳ, ὥστε νὰ ἀποβῇ ὁ πραγματικὸς κυβερνήτης τῆς Φλωρεντίας. Τῷ 1294 εἰσήγαγε τὰ ordinamenta justitiae («κανονισμοὶ τῆς δικαιοσύνης») εἰς 14 παραγράφους, ἀφορῶντα τὰς ἐκλογὰς τῶν κοσμητόρων καὶ τοῦ γκονφαλονιέρου, τὴν ὀργάνωσιν τῶν συντεχνιῶν καὶ τὸ σπουδαιότερον τῆς κυβερνήσεως («σινιορία»). Ὁ Μπέλλα ἐν τῷ ἀγῶνί του, συκοφαντηθεὶς ὑπὸ τῶν εὐγενῶν ὡς σχεδιάζων νέας τολμηρὰς μεταρρυθμίσεις, ἀπέθανεν ἐν τῇ ἐξορίᾳ (1294). Τὸ ἔργον του ἐπὶ αἰῶνας ἀπετέλεσε πραγματικὸν συνταγματικὸν χάρτην τῆς φλωρεντινῆς πολιτείας. —Π.

—**Μπέλλα** (Bella), ***Στέφανος ντέλλα***—. Διάσημος Ἰταλὸς χαράκτης ἐκ Φλωρεντίας (1610—1664), υἱὸς τοῦ γλύπτου Francesco Bella καὶ μαθητὴς τοῦ Canta-Gallina. Ἐξεπόνησεν ἰδίᾳ πολεμικὰς σκηνὰς τῶν χρόνων Λουδοβίκου τοῦ ΙΓ' δι' ἐντελείας καὶ ἐκφραστικῆς δυνάμεως ἀξιοθαυμάστου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται οἱ πίνακες τῶν πολιορκιῶν τοῦ Ἀρράς, τοῦ Σαίντ-Ὀμὲρ καὶ τῆς Ροσέλλ. Ι. Π. Π.

**Μπελλαβίστα** (ἰταλ. Bellavista = Καλλιθέα) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα συνηθέστατον εἰς τοπωνύμια πόλεων, χωρίων, συνοικιῶν, ἐξοχῶν, κειμένων εἰς θέσιν δεσπόζουσαν καὶ παρέχουσαν ὡραίαν θέαν. Ἀπαντᾷ κυρίως εἰς τὰς λατινικὰς χώρας καὶ μάλιστα τὴν Ἰταλίαν, Ἱσπανίαν, Πορτογαλίαν καὶ Ν. Ἀμερικήν, ἀλλὰ καὶ παρ' ἡμῖν, ἰδίως εἰς τὰς νήσους καὶ παραθαλασσίους πόλεις. Γνωστότεραι *Μπελλαβίσται* ἐκ τῶν παρ' ἡμῖν εἶναι ἡ συνοικιακὴ τῆς *Σμύρνης* μεταξὺ Πούντας καὶ Τράσων, ἥτις εἶχε δώσει τὸ ὄνομά της εἰς ὁλόκληρον τὴν περιοχὴν ταύτην τῆς πόλεως καὶ ἡ παραλιακὴ ἐπίσης ἐξοχικὴ ὁδὸς τῆς πόλεως *Χίου*, ἡ συνεχίζουσα πρὸς Ν. τὴν προκυμαίαν τοῦ λιμένος. Χ. Δ.

**Μπελλαβίτης** (Bellavitis) ***Ἰοῦστος, κόμις*** —. Ἰταλὸς μαθηματικὸς ἐκ Μπασσάνο τῆς Ἑνετίας (1803—1880). Υἱὸς πτωχῶν γονέων, ἠναγκάσθη κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν ν' ἀναλάβῃ ταπεινήν τινα θέσιν εἰς τὴν δημαρχίαν τῆς γενεθλίου του πόλεως, διὰ νὰ πορίζεται τὰ πρὸς τὸ ζῆν, κατώρθωσεν ὅμως, μελετῶν κατ' οἶκον ἄνευ διδασκάλου, νὰ ἐκμάθῃ τὴν λατινικήν, τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν καὶ ἄλλας γλώσσας καὶ νὰ μορφωθῇ ἐπιστημονικῶς εἰς τὴν φυσικήν, τὴν χημείαν καὶ τὰ μαθηματικά. Τῷ 1842 χάρις εἰς τὰς ἐργασίας του ἐπὶ τῆς γεωμετρικῆς ἀναλύσεως διωρίσθη καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν καὶ τῆς στοιχειώδους μηχανικῆς εἰς τὸ λύκειον Βιτσέντσε, ὀλίγον δὲ βραδύτερον (1845) ἐξελέγετο μέλος τοῦ Ἑνετικοῦ Βασιλικοῦ Ἰνστιτούτου καὶ ἀνελάμβανε τὴν ἕδραν τῆς περιγραφικῆς γεωμετρίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παδούης. Προηγουμένως τὸ ἴδιον πανεπιστήμιον τὸν εἶχε, τιμῆς ἕνεκεν, ἀνακηρύξει διδάκτορα τῶν μαθηματικῶν ἄνευ ἐξετάσεων. Ἐκ τῶν ἑκατοντάδων τῶν δημοσιευθεισῶν μελετῶν αὐτοῦ ἀναφέρομεν: «Ἔκθεσις νέων μεθόδων ἀναλυτικῆς γεω-

Digitized by Google

μετρίας (1860), «Μελέται ἐπὶ τῆς ἀριθμητικῆς λύσεως τῶν ἐξισώσεων» (1859—1860), «Ἀριθμητικὸς καθορισμὸς τῶν φανταστικῶν ριζῶν τῶν ἀλγεβρικῶν ἐξισώσεων» (1864) κλπ. Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Μαθήματα περιγραφικῆς γεωμετρίας» (1851) καὶ «Μαθήματα ἀναλυτικῆς γεωμετρίας» (1870). —Ω.

**Μπελλαγκάττα** (Bellagatta), ***Ἄγγελος-Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Μιλάνῳ (1704—1742). Κατ' ἀρχὰς ἤρξατο θεολογικῶν σπουδῶν, ἃς ἐγκατέλειψε χάριν τῆς ἰατρικῆς. Ἐκ τῶν ἐργασιῶν του ἰδιαιτέρας μνήμης ἄξιαι τυγχάνουσιν ἡ περὶ ἐπιδημίας ἰνφλουέντσας, ἐπεκταθείσης τῷ 1730 καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην, πραγματεία του ὑπὸ τὸν τίτλον «Due lettere filosofiche scritte ad un amico etc.» (Μιλᾶνον 1730), ὡς καὶ ἡ δριμεῖα σάτιρά του κατὰ τοῦ πολλαπλοῦ συστήματος τῆς ἰατρικῆς, τῶν προκαταλήψεων τῶν ἀμαθῶν κλ., τιτλοφορουμένη «Le disavanture della medicina trettenimento fisico» (Μιλᾶνον 1730). Τὰ ἄλλα του ἔργα δὲν σχετίζονται μὲ τὴν ἰατρικήν. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ βίου του ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἱερωσύνην. Ο. Ρ.

**Μπελλαὶ** (Bellay), ***Γουλιέλμος ντὺ —.*** Γάλλος διπλωμάτης καὶ στρατηγὸς Φραγκίσκου τοῦ Α' (1491—1543). Εἰσήχθη εἰς τὴν αὐλὴν τῷ 1515, μετέσχεν εἰς τὴν μάχην τῆς Παβίας, καὶ τῷ 1526 ἀπεστάλη παρὰ τῷ πάπᾳ δι' ὑποθέσεις τοῦ καγκελαρίου Ντυπρὰ καὶ τοῦ Νεντβίλλ. Ἐξετέλεσε ἐπίσης μετ' ἐπιτυχίας διαφόρους διπλωματικὰς ἀποστολὰς εἰς Γένουαν (1528), Ἀγγλίαν (1529) καὶ Γερμανίαν (1532). Συνῆψε τὴν συνθήκην τοῦ Ἄουγκσμπουργκ (1534), μετέσχε δὲ τῆς πολιορκίας τοῦ Μονκαλιέρι (1537) ὁπότε διωρίσθη ἀντιβασιλεὺς τοῦ Πεδεμοντίου. Ἔγραψεν: «Ἐπιτομὴ γαλατικῆς ἀρχαιολογίας» (1556), «Ἐγχειρίδιον στρατιωτικῆς πειθαρχίας» (1548) καὶ σειρὰν ἀπομνημονευμάτων (Ε'-Η' βιβλίον τῶν «Ἀπομνημονευμάτων τοῦ Μαρτίνου ντὺ Μπελλαί»). —Π.

—**Μπελλαὶ** (Bellay), ***Ἰωακεὶμ ντὺ—.*** Γάλλος ποιητὴς καὶ πεζογράφος, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1525 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1560. Ἦτο υἱὸς στρατιωτικοῦ, ἀπώλεσε δ' ἐνωρὶς τοὺς γονεῖς του καὶ ἐπροστατεύθη ὑπὸ τοῦ πρεσβυτέρου ἀδελφοῦ Ρενάτου, ὁ ὁποῖος ὅμως ἀπέθανε σχετικῶς νέος καὶ ἄφησε μόνον τὸν ποιητήν. Ὁ Ἰωακεὶμ ἠσθένησεν ἐκ τῶν φροντίδων, ἡ ἀσθένειά του δὲ ἔσχεν ὁριστικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς κατευθύνσεώς του. Ἀποκλείσας ἀπὸ τῆς ζωῆς του τὴν πολιτικὴν καὶ τὸν στρατόν, εἰς τὰ ὁποῖα εἶχον δοξασθῆ πολλὰ μέλη τῆς οἰκογενείας του, ἀπεφάσισε νὰ ἀφιερωθῇ ἀποκλειστικῶς εἰς τὰ γράμματα καὶ ἐνεγράφη εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Πουατιέ, ἓν ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τῆς Γαλλίας κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ὅπου ἐγνώρισε τὸν Ρονσὰρ καὶ τὸν Μπαΐφ. Ἔκτοτε ἐγένετο ἓν ἐκ τῶν μελῶν τῆς περιφήμου «Πλειάδος» καὶ μετέσχε τῆς μεγάλης λογοτεχνικῆς κινήσεως τῶν μέσων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Εἶχεν ἤδη δημοσιεύσει ἀρκετὰ ἔργα, ὅταν ὁ θεῖός του καρδινάλιος Ἰωάννης ντὺ Μπελλαὶ τὸν ἐκάλεσεν εἰς Ρώμην διὰ νὰ τὸν καταστήσῃ ἔφορον τοῦ οἴκου του περὶ τὸ 1550. Ἐνταῦθα παρέμεινεν ἐπὶ τετραετίαν. Διάφοροι λόγοι, οἱ ὁποῖοι παρέμειναν σκοτεινοί, ἴσως δὲ ἐρωτική του περιπέτεια μετ' εὐγενοῦς Ρωμαίας, τὸν ἠνάγκασαν νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Γαλλίαν τῷ 1555, ὅπου ἐγένετο μοναχὸς τῆς Παναγίας τῶν Παρισίων. Ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε μείνει ἄνευ προστατῶν, μετὰ τὴν ρῆξιν πρὸς τὸν θεῖόν του, εἶχε γηράσει προώρως καὶ εἶχε κωφαθῇ. Οἱ λόγοι οὗτοι τὸν ὡδήγησαν εἰς τὸν τάφον πολὺ νέον, εἰς ἡλικίαν τριάκοντα πέντε ἐτῶν, καθ' ἣν στιγμὴν ἐπρόκειτο νὰ ὀνομασθῇ ἀρχιεπίσκοπος τοῦ Βορδῶ.

*Ἰωακεὶμ ντὺ Μπελλαί.*

Τὸ πρῶτον του ἔργον ἦτο συλλογὴ ποιημάτων ἀφιερωμένων εἰς τὴν πριγκίπισσαν Μαργαρίταν, ἀδελφὴν Ἐρρίκου Β', τὰ ὁποῖα ἐξεδόθησαν τῷ 1549. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐξέδωκε τὸ ἔργον: «Défence et illustration de la langue française» ὑπὸ τὰ ἀρχικὰ I. D. A. B., τὸ ὁποῖον ἀπετέλεσε τὸ μανιφέστον τῆς νέας σχολῆς. Τὸ ἔργον τοῦτο διαιρεῖται εἰς δύο βιβλία. Τὸ πρῶτον, ὅπερ περιλαμβάνει δώδεκα κεφάλαια, εἶναι ἀφιερωμένον εἰς τὴν ὑπεράσπισιν τῆς γαλλικῆς γλώσσης. Τὸ δεύτερον ἀποτελεῖ εἶδος ἰδεώδους πορτραίτου τοῦ ποιητοῦ, ὅπως τὸν ἀντελαμβάνοντο οἱ νεωτερισταὶ τῆς «Πλειάδος». Τὸ ἐν λόγῳ σύγγραμμα, γραφὲν μετὰ θέρμης καὶ περιλαμβάνον ὀρθὰς γνώμας εἰς τὰ περισσότερα σημεῖα, ἐξήσκησε μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν συγχρόνων. Μετ' ὀλίγον, ἐντὸς τοῦ 1550, ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Olive» συλλογὴν ἐρωτικῶν σοννέτων μὲ ἡρωΐδα τὴν Olive, ἡ ὁποία κατὰ τινας **μὲν εἶναι** φανταστικὴ κυρία τῶν λογισμῶν **του, κατ' ἄλλους δὲ ἡ** πραγματική, κρυπτομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο, ὅπερ προῆλθεν ἐξ ἀναγραμματισμοῦ τοῦ Viole. Τρία ἔτη μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του ἐκ Ρώμης, ὁ ντὺ Μπελλαὶ ἐδημοσίευσε τὰ «Jeux rustiques» (1558) καὶ «Regrets», τὰ ὁποῖα κατ' ἀρχὰς ἐκυκλοφόρησαν ἐν χειρογράφῳ καὶ βραδύτερον ἐξεδόθησαν ἔντυπα (1558). Ὁ Ἰωακεὶμ ντὺ Μπελλαὶ κατέλιπεν ἐπίσης καὶ ἐπιστολὰς καὶ ἔργα λατινιστὶ συντεταγμένα, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν δύο συλλογάς: «Joachimi Bellaii Andini poematum libri quatuor» (Parisiis 1558) καὶ «Joachimi Bellaii Andini poetae clarissimi Xenia seu illustrium quorumdam nominum allusiones» (Paris 1569). Ἅπαντα τὰ λατινικὰ ποιήματα τοῦ ντὺ Μπελλαὶ ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ R. Grehus (Gruter) τῷ 1609 εἰς τὴν συλλογήν: «Deliciae Poetarum Gallorum». Ἐκ τῶν νεωτέρων ἐκδόσεων τῶν γαλλικῶν ἔργων τοῦ ντὺ Μπελλαὶ καλυτέρα εἶναι ἡ ὑπὸ Ch. Marty-Laveaux, γενομένη τῷ 1866.

— **Μπελαὶ** (Bellay), ***Ἰωάννης ντὺ —.*** Γάλλος ἱεράρχης καὶ πολιτικὸς (1492—1560). Τῷ 1528 εἶχε γίνει ἐπίσκοπος τῆς Μπαγιόνν. Ἀπὸ τοῦ 1529 μέχρι τοῦ 1534 ὑπεστήριξε μετ' ἄκρας ἐπιμονῆς τὴν ἀκύρωσιν τοῦ γάμου τοῦ Ἐρρίκου Η' τῆς Ἀγγλίας μετὰ τῆς Αἰκατερίνης τῆς Ἀραγωνίας, θείας τοῦ Καρόλου Κουΐντου, ἀποσκοπῶν εἰς τὸ νὰ προσοικειωθῇ ἡ Γαλλία τὸν Ἐρρῖκον εἰς τὰς ἀδιαλλείπτους πρὸς τὸν Κάρολον διενέξεις της. Ὁ Φραγκίσκος Α' ἀμείβων τάς, ἀκάρπους ἄλλως, ὑπηρεσίας του ταύτας, τὸν προήγαγε τῷ 1535 εἰς ἐπίσκοπον Παρισίων, τῷ δὲ 1545 εἰς ἀρχιεπίσκοπον Βορδῶ. Μετὰ τὸ θάνατον τοῦ Φραγκίσκου ἀπεσύρθη εἰς Ρώμην, ὅπου τῷ ἐδόθη ἡ χωροεπισκοπὴ τῆς Ὀστίας, διεκρίθη δὲ τόσον μεταξὺ τῶν ἐκεῖ ἐκκλησιαστικῶν κύκλων, ὥστε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μαρκέλλου Β' (1555) ἐγένετο πολὺς λόγος περὶ ἀναρρήσεώς του εἰς τὸ παπικὸν ἀξίωμα. —Ω.

**Μπελλαίγκ** (Bellaigue), ***Κάμιλλος.*** Γάλλος μουσικολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1858. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ παραλλήλως μουσικὴν ἐν τῷ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων, ἔνθα ἔτυχε πρώτου βραβείου εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον. Διετέλεσε μουσικοκριτικὸς τοῦ «Χρόνου», τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τῶν Δύο Κόσμων», ὡς καὶ πολλῶν ἄλλων περιοδικῶν. Τὰ ἔργα του, διακρινόμενα διὰ τὴν εὐγένειαν τοῦ ὕφους των, τὴν βαθεῖαν κριτικὴν καὶ τὰς αἰσθητικὰς των παρατηρήσεις, εἶναι τὰ ἑξῆς: «Τὸ «μουσικὸν ἔτος» (1887, 1888, 1889, 1890, 1891, 1892, 1893), «Εἷς αἰὼν γαλλικῆς μουσικῆς» (1887), «Μουσικὴ ψυχολογία» (1893), «Εἰκόνες μουσικῶν» (1896, ἀγγλ. 1897 καὶ γερμ. 1903), «Μουσικαὶ καὶ φιλολογικαὶ ἐντυπώσεις» (1900), «Μουσικαὶ σπουδαί» (1911), «Αἱ ἐποχαὶ τῆς μουσικῆς» (1909), βιογραφία τῶν Μόζαρτ (1906), Μένδελσων (1907) καὶ Γκουνὼ (1910) κ.ἄ. Ὁ Μπελλαίγκ ἔτυχε τῷ 1894 τοῦ βραβείου Βιτὲ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Γ. Σ.

**Μπελλαὶρ** (Bellair) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, κειμένη ἐν τῇ κομιτείᾳ Μπέλμοντ τῆς πολιτείας Ὀχάϊο. Ἱδρύθη τῷ 1794. Κάτ. 12.946. Χ. Δ.

**Μπὲλλ-Ἀλλιὰνς** (Belle Alliance) *[Γεωγρ.]*. Ἱστορικὸν χωρίον τοῦ Βελγίου, κείμενον ἐν τῷ πεδίῳ ἔνθα διεξήχθη ἡ μάχη τοῦ Βατερλώ. Τὸ σημεῖον τοῦτο ἦτο τὸ κέντρον τῶν ἐπιχειρήσεων κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς 18 Ἰουνίου 1815, ἐκεῖθεν δὲ ὁ Ναπολέων διηύθυνε τὴν μάχην. Οἱ Πρῶσσοι ἐκάλουν διὰ τὸν λόγον τοῦτον ἐπὶ μακρὸν τὴν μάχην τοῦ Βατερλὼ καὶ μάχην τῆς Μπὲλλ-Ἀλλιάνς. Χ. Δ.

**μπελλαμάνα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτῶν γλώσσης, σημαίνων τὸ ἐπισημότερον τῶν εἰδῶν ἱματισμοῦ τοῦ ναύτου τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, τὸ ἄνευ κομβίων ἔνδυμα, ὅπερ φορεῖται περώμενον ἐκ τῶν ἄνω. Συνδυάζεται δὲ πάντοτε ἡ *μπελλαμάνα* μὲ τὴν *κολαρίνα* (περιτραχήλιον) καὶ τὸ μεταξωτὸν μανδήλιον. Ὑπάρχουν δὲ καὶ ἡ χειμερινὴ μπελλαμάνα *ἐξόδου* ἢ *ἐπιθεωρήσεως* (ἐπισ. «χιτὼν ἐξ ἐρέας»), ἡ θερινὴ τοιαύτη, *λεζεννάκι* (ὡς ἐλέγετο ἄλλοτε ἀπὸ τοῦ εἰσαγαγόντος αὐτὴν Γάλλου ὀργανωτοῦ Λεζέν), καὶ ἡ τῆς *ἀγγαρείας* («χιτὼν ἐργασίας»). Εἰς τὰ περιτραχήλια τῶν δύο τελευταίων φέρεται ὁ ἀριθμὸς μητρῴου τοῦ ναύτου δι' ἀνεξιτήλου μελάνης τυπωμένος. Σήμερον ἡ μπελλαμάνα ἀφίνεται νὰ κρέμαται ἐλευθέρως περὶ τὰ ἰσχία· παλαιότερον ὅμως εἰσήγετο (ἰδίως εἰς τοὺς κωπηλάτας καὶ τοὺς θωρακίτας τῶν ἱστίων) τὸ κάτω μέρος της ἐντὸς τῆς περισκελίδος. Σ. Ε. Λ.

**Μπελλαμὺ** (Bellamy), ***Ἐδουάρδος.*** Ἀμερικανὸς συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος (1850—1898). Κατ' ἀρχὰς ἤσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, ἀλλὰ μετὰ ταῦτα ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, κατ' ἀρχὰς ὡς συνδιευθυντὴς τῆς «Σπρίνφηλντ Γιούνιον» καὶ εἶτα ὡς ἀρχισυντάκτης τοῦ «Ἑσπερινοῦ Ταχυδρόμου τῆς Νέας Ὑόρκης». Τῷ 1888 ἐδημοσίευσε τὸ περίφημον ἔργον του «Ἓν βλέμμα πρὸς τὰ ὀπίσω». Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ὁ Μπελλαμὺ ἐσκιαγράφησε τὰ στάδια τῆς ἐξελίξεως τοῦ κοινωνικοῦ καθεστῶτος ἀπὸ τῆς κεφαλαιοκρατίας εἰς τὸν κοινωνισμόν. Τὸ ἔργον τοῦτο ἔσχεν εὐρυτάτην διάδοσιν ἐν Ἀμερικῇ καὶ Εὐρώπῃ, μεταφρασθὲν εἰς πλείστας γλώσσας. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ἰσότης» (1897), «Ὁ δοὺξ Στόκμπηρτζ» ἐκδοθὲν τῷ 1900, μετὰ τὸν θάνατόν του, καί τινα μυθιστορημάτια. Γ. Ι. Β.

— **Μπελλαμὺ** (Bellamy), ***Ἰάκωβος.*** Ὀλλανδὸς ποιητὴς (1757—1786). Ὡς μαθητευόμενος ἀρτοποιός, ἐκίνησε τὴν προσοχὴν διὰ τὰς πνευματικάς του ἱκανότητας καὶ κατώρθωσε, διὰ διαφόρων βοηθημάτων, νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν σπουδὴν τῆς θεολογίας. Ἐξέδωκε τὸ πρῶτον τά: «Gezangen mijner jeugd» (1782) καὶ κατόπιν τὰ πλήρη ἐνθουσιασμοῦ: «Vaterlandsche gezangen» (1783) καὶ τά: «Gezangen» (1785). Ἡ ποίησίς του: «Roosje» (1784), μία ἐκ τῶν ὡραιοτέρων τῆς φιλολογίας τῶν Κάτω Χωρῶν, διακρίνεται διὰ τὴν συγκινοῦσαν ἁπλότητα καὶ τὴν βαθύτητα τοῦ αἰσθήματος. Τὰ ἅπαντα τῶν ποιημάτων του ἐξεδόθησαν τῷ 1816 καὶ τῷ 1826. Γ. Ε. Κ.

**Μπελλανζὲ** (Belanger), ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Κάρολος-Ἰωσήφ.*** Γάλλος μαθηματικὸς (1789—1874). Ἐγένετο ἐπιθεωρητὴς τῆς κεντρικῆς σχολῆς τῶν τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων, καθηγητὴς τῆς ἐφηρμοσμένης μηχανικῆς εἰς τὴν σχολὴν τῶν γεφυροποιῶν (1841) καὶ καθηγητὴς τοῦ πολυτεχνείου (1851). Τῷ 1844 ὠνομάσθη ἱππότης τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς. Ἔγραψε: «Πραγματείας ἐπὶ τῆς ἀριθμητικῆς λύσεως ἐνίων προβλημάτων» (1828), περιέχον νέαν μέθοδον ὑπολογισμοῦ, «Πραγματεία ἐπὶ τῆς συνεχοῦς κινήσεως τῶν ρεόντων ὑδάτων» (1828), «Πλῆρες σχέδιον τοῦ σιδηροδρόμου Παρισίων—Ρουένης—Διέππης—Χάβρης διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Σηκουάνα» (1836) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Πολονσώ, «Ἀναλυτικὴ γεωμετρία» (1842), «Μαθήματα μηχανικῆς», περιλαμβάνοντα δυναμικὴν καὶ γενικὴν στατικὴν (1847), κ. ἄ. —Π.

—**Μπελλανζὲ** (Bellangé), ***Ἰωσὴφ-Λουδοβῖκος-Ἱππόλυτος.*** Γάλλος ζωγράφος (1800—1866). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Γκρὸ καὶ ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1822 διὰ πινάκων εἰργασμένων ἐπὶ στρατιωτικῶν θεμάτων. Ὁ Μπελλανζὲ κατέλαβεν ἐξαίρετον θέσιν μεταξὺ τῶν Γάλλων πολεμικῶν ζωγράφων, κατέλιπε δὲ πλέον τῶν ἑκατὸν εἴκοσι πολεμικῶν πινάκων, ἐν οἷς λίαν ἀξιομνημόνευτοι εἶναι οἱ ἀκόλουθοι: «Ἀνάπαυσις», «Τὸ ἀμάξι τῶν πληγωμένων», «Ἡ ἐπιστροφὴ ἀπὸ τὴν Ἔλβαν», «Ἡ μάχη τοῦ Φλερύ», «Ἡ μάχη τοῦ Βαγκράμ», «Ἡ μάχη τοῦ Λοάνο», «Ἡ μάχη τοῦ Ἀλτενκίρχεν», «Ἡ μάχη τῆς Ὀχάνας», «Μαλτκόφφ», «Σολφερῖνο», «Ἡ φρουρὰ ἀποθνήσκει» κλπ. Ὁ υἱὸς τοῦ καλλιτέχνου τούτου *Εὐγένιος Μπελλανζὲ* (1837—1895), μαθητεύσας παρὰ τῷ πατρί του, διεκρίθη ὁμοίως ὡς ζωγράφος πολεμικῶν σκηνῶν. Ι. Μ. Π.

**Μπελλάνο** (Bellano) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κόμο τῆς Λομβαρδίας. Κάτ. 2.682. Ἔχει πολλὰ ἐργοστάσια μεταξωτῶν καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων. Παρ' αὐτὴν ὁ ποταμὸς Πιοβέρνα, χυνόμενος εἰς τὴν λίμνην τοῦ Κόμο, σχηματίζει δύο ὡραίους καταρράκτας ὕψους 64 μ. Συχνάζεται ὑπὸ πολλῶν Ἰταλῶν καὶ ξένων διὰ τὸ ὡραῖόν της κλῖμα καὶ τὰ λουτρά της. Μ. Δ. Β.

**μπελλαντόνα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄτροπος ἡ δελεαστική*.

**Μπελλαπαΐς** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Πελλαπαΐς.*

**Μπέλλα Πόλα** (Bella Pola) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία ὑφ' ἣν φέρεται εἰς παλαιοὺς χάρτας ἡ ἐν τῷ Αἰγαίῳ ἐρημόνησος *Βελοπούλα* (βλ. λ.).

**Μπελλαρμῖνο** (Bellarmino), ***Ροβέρτος-Φραγκῖσκος-Ρώμουλος.*** Ἰταλὸς κληρικὸς καὶ θεολόγος (βλ. λ. *Βελλαρμῖνος*).

**Μπέλλαρυ** (Fellary) *[Γεωγρ.]*.—1) Ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Μαδράς, κειμένη μεταξὺ τῶν ὀροσειρῶν τῶν Ἀνατολικῶν καὶ Δυτικῶν Γκάτς. Ἔχει ἔκτασιν 14.400 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 969.430 κατ., Ἰνδῶν τὸ πλεῖστον, καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν. Εἶναι χώρα ὑψηλὴ καὶ ὑγιεινή, ὑποφέρει ὅμως συχνὰ ὑπὸ λιμῶν λόγῳ ξηρασίας. Ἔχει καλλιεργείας σιτηρῶν, ὀσπρίων, βάμβακος κλπ. καὶ μεταλλεῖα σιδήρου καὶ χαλκοῦ.

— 2) Ὀχυρὰ πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας *Μπέλλαρυ* τοῦ Μαδράς. Εἶναι στρατιωτικὸς σταθμὸς καὶ κέντρον σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, ἔχει δὲ πελώριον ὀχυρόν, κείμενον ἐπὶ βράχου ὕψους 450 ποδῶν. Εἶναι κέντρον βιομηχανίας καὶ ἐμπορίου βάμβακος. Κάτ. 34.956, ὧν τὰ $^{3}/_{5}$ εἶναι Ἰνδοί, τὸ $^{1}/_{8}$ Μωαμεθανοί, οἱ δὲ λοιποὶ Χριστιανοί. Χ. Δ.

**Μπελλάτζιο** (Bellaggio) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κόμο καὶ ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου λίμνης. Κάτ. 2.683. Ἔχει ἐργοστάσια σάπωνος καὶ ἐργαστήρια ξυλογλυπτικῆς. Εἶναι ὀνομαστὸς κλιματολογικὸς σταθμός, περιβάλλεται δὲ ὑπὸ ὡραίων κήπων καὶ ἀφθόνου βλαστήσεως καὶ ἔχει ὀνομαστὰς ἐπαύλεις διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν των καὶ τὸν πλοῦτον τῆς διακοσμήσεώς των, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ἡ Μέλτσι, ἡ Μπελμόντε, ἡ Τζούλια κτλ. Ἡ ὡραιοτέρα ὅμως πασῶν εἶναι ἡ ἔπαυλις Σερμπελλόνι, μὲ εὐρὺ πάρκον, μετὰ πιδάκων, καταρρακτῶν, τεχνητῶν σπηλαίων κτλ. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπελλάτριξ** (Bellatrix) *[Ἀστρον.]*. Ὀνομασία ὑπὸ τὴν ὁποίαν φέρεται ὁ ἀστὴρ γ τοῦ ἀστερισμοῦ τοῦ Ὠρίωνος.

**Μπελλβὶλ** (Belleville) *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιὸν προάστειον τῶν Παρισίων, περιλαμβανόμενον, ἀπὸ τοῦ 1860, εἰς τὸ ἐντὸς τῶν ὀχυρώσεων σχέδιον τῆς πόλεως. Κεῖται ἐπὶ ὑψηλοῦ λόφου δεσπόζοντος τοῦ ΒΑ. τμήματος τῶν Παρισίων.

—2) Πόλις καὶ λιμναῖος λιμὴν τοῦ Καναδᾶ, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Χέϊστινξ τῆς πολιτείας Ὀντάριο. Ἔχει καλὸν λιμένα καὶ ἐξάγει ξυλείαν καὶ σιτηρά. Εἶναι ἀξιόλογον βιομηχανικὸν κέντρον, ἔχουσα χυτήρια σιδήρου, ἀγγειοπλαστεῖα, τσιμεντοποιεῖα κλπ. Μεγάλως χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν βιομηχανίαν ἡ δύναμις τῶν ὑδάτων τοῦ Μόϊρα. Κάτ. 9.878.

—3) Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς συνομοσπονδίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Σαὶν Κλαὶρ τῆς πολιτείας Ἰλλινόϊς. Ἔχει δημοσίαν βιβλιοθήκην, μεγάλας ἀλευροβιομηχανικὰς ἐγκαταστάσεις, ὑφασματοποιεῖα, ὑελουργεῖα, ἐργοστάσια ἀντλιῶν καὶ θεριστικῶν μηχανῶν καὶ ὀρυχεῖα γαιανθράκων. Κάτ. 21.154, τὸ πλεῖστον γερμανικῆς καταγωγῆς. Χ. Δ.

**Μπελλβὺ** (Bellevue=Καλλιθέα) *[Γεωγρ.]*. Ἐξοχικὸς συνοικισμὸς ἐν τῷ νομῷ Σὲν καὶ Οὐάζ τῆς Γαλλίας, κείμενος εἰς ἀπόστασιν 9 χλμ. ἀπὸ τῶν Παρισίων, ἐπὶ τῆς πρὸς τὸ Μεντὸν σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Κάτ. 4.600. Κοσμεῖται ὑπὸ πολυαρίθμων ἐξοχικῶν μεγάρων καὶ ἔχει ὡραῖον ναὸν τῆς Παναγίας τῶν Φλογῶν, κτισθέντα εἰς ἀνάμνησιν μεγάλου σιδηροδρομικοῦ δυστυχήματος, τὸ ὁποῖον ἔσχεν ὡς θῦμα, μεταξὺ ἄλλων, καὶ τὸν ἐπιφανῆ θαλασσοπόρον Ντυμὸν Ντ' Ὑρβίλ. Τὸ Μπελλβὺ εἶναι κυρίως γνωστὸν ἐκ τοῦ ἐν αὐτῷ περιφήμου ἀνακτόρου, τὸ ὁποῖον ἀνήγειρε τῷ 1748 ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' χάριν τῆς εὐνοουμένης του κυρίας Πομπαδούρ. Ἡ οἰκοδόμησίς του διήρκεσε δύο ἔτη, ἐστοίχισε δὲ 2.500.000 χρυσᾶ φράγκα. Τῷ 1794 κατηδαφίσθη, ἀφοῦ ἐχρησιμοποιήθη ἐπὶ μικρὸν ὡς στρατών. Χ. Δ.

**Μπελλγκάρντ** (Bellegarde). Παλαιὰ ἡγεμονία τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Γαρούνα καὶ φερώνυμος αὐτῇ οἶκος εὐπατριδῶν, τοῦ ὁποίου ἡ τελευταία ἀπόγονος συνεζεύχθη τὸν Ραϋμόνδον ντὲ Σαὶν-Λαρὺ (1498). Ἔκτοτε τὰ μέλη τοῦ οἴκου Σαὶν-Λαρὺ ἔλαβον τὸν τίτλον τῶν «ἀρχόντων τοῦ Μπελλγκάρντ». Κυριώτεροι ἐκ τῶν ἀρχόντων τούτων τοῦ Μπελλγκάρντ εἶναι οἱ ἑξῆς:

***Ρογῆρος Α' Σαὶν-Λαρύ, ἄρχων τοῦ* —**. Γάλλος πολεμιστής, ἀποθανὼν τῷ 1579. Ἦτο εὐνοούμενος τοῦ δουκὸς τῆς Ἀνδηγαυΐας καὶ ἐπολέμησεν ὑπ' αὐτὸν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ πεζικοῦ εἰς Πολωνίαν. Ὅτε ὁ δοὺξ ἐγένετο βασιλεὺς τῆς Γαλλίας, ὑπὸ τὸ ὄνομα Ἑρρῖκος Γ', ἔδωσεν εἰς αὐτὸν τὴν ῥάβδον τοῦ στρατάρχου, διότι κατώρθωσε νὰ συνενώσῃ εἰς συμμαχίαν διαφόρους Ἰταλοὺς ἡγεμονίσκους, φίλους τοῦ στέμματος (1574). Περιπεσὼν ὑπὸ δυσμένειαν, ἐπεδόθη μετὰ τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας εἰς διαφόρους μηχανορραφίας, ἀπέθανεν ὅμως αἰφνιδίως μετ' ὀλίγον, δηλητηριασθεὶς πιθανῶς.

***Καῖσαρ ντὲ Σαὶν-Λαρύ, ἄρχων τοῦ* —** (1562—1587). Γάλλος πολεμιστής, μονογενὴς υἱὸς τοῦ προηγουμένου, φονευθεὶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Κουτράς.

***Ρογῆρος Β' ντὲ Σαὶν-Λαρύ, ἄρχων καὶ εἶτα δοὺξ τοῦ* —** (1562—1646). Ἀνεψιὸς τοῦ Ρογήρου Α', διατελέσας ἐπὶ μὲν τοῦ Ἑρρίκου Γ' ἱματιοφύλαξ τοῦ βασιλέως, πρῶτος εὐγενὴς τῆς αὐλῆς καὶ μέγας σταβλάρχης, ἐπὶ δὲ τοῦ Ἑρρίκου Δ' διοικητὴς τῆς Βουργουνδίας. Ἔζησε βίον πλήρη σκανδάλων, πολλὰ τῶν ὁποίων ἀναφέρει ὁ Ταλλεμὰν εἰς τὸ ἔργον του «Ἱστοριοῦλες». Ἦτο ἐρωμένος τῆς περιωνύμου Γαβριέλλας ντ' Ἐστρέ, τὴν ὁποίαν εἶτα παρεχώρησεν εἰς τὸν Ἑρρῖκον Δ'. Τῷ 1619 ἡ μαρκιωνία τοῦ Σαὶρ (Seurre) προήχθη χάριν αὐτοῦ εἰς δουκᾶτον ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μπελλγκάρντ*. Ἀναμειχθεὶς εἰς τὰς ἐναντίον τοῦ Ρισελιὲ δολοπλοκίας, ἐξωρίσθη τῷ 1631, τῷ δὲ 1639 ἀπώλεσε τὸν τίτλον τοῦ στρατάρχου. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ' ἀνεκλήθη εἰς τὴν αὐλήν, ὅπου ἔζησε τρία ἀκόμη ἔτη, ἀποθανὼν ἄνευ ἀπογόνων. Τοὺς τίτλους καὶ τὴν μεγάλην περιουσίαν του ἐκληρονόμησεν ὁ ἀνεψιός του *Ἰωάννης-Ἀντώνιος ντὲ Παρναγιὰν ντὲ Γκοντρέν, μαρκήσιος τοῦ Μοντεσπάν*. —Ω.

**Μπέλλγκαρντ** (Bellegarde), ***Ἑρρῖκος-Ἰωσὴφ-Ἰωάννης, κόμης φὸν* —**. Αὐστριακὸς στρατάρχης καὶ πολιτικὸς (1756—1845). Ἔλαβε μέρος εἰς διαφόρους μάχας (Aspern, Wagram, Znaim) καὶ διωρίσθη, μετὰ τὴν εἰρήνην τῆς Βιέννης, διοικητὴς τῆς Γαλικίας, πρόεδρος τοῦ πολεμικοῦ συμβουλίου τῆς αὐλῆς, ἀνώτατος διοικητὴς τῆς αὐτοκρατορικῆς στρατιᾶς ἐν Ἰταλίᾳ καὶ γενικὸς διοικητὴς τῆς Λομβαρδίας καὶ Βενετίας. —Ω.

**Μπελλὲ** (Belley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Αἰν. Διεξάγει ἐμπόριον λιθογραφικῶν πλακῶν, αἵτινες θεωροῦνται αἱ κάλλισται τῆς Γαλλίας. Κάτ. 6.200. Χ. Δ.

**Μπελλεβὰλ** (Belleval), ***Πέτρος Ρίχερ ντὲ* —**. Γάλλος ἰατρὸς καὶ βοτανικός, γεννηθεὶς ἐν Chalons-sur-Marne (1558—1625). Θεωρεῖται ὡς ὁ πρῶτος εἰσηγητὴς τῆς διδασκαλίας τῆς βοτανικῆς ἐν Γαλλίᾳ, καταλαβὼν τὰς νεοϊδρυθείσας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μομπελλιὲ σχετικὰς ἕδρας. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα συγγράμματα, ἐν οἷς: «Onomatologia» (1585), «Recherche des plantes du Languedoc» (1603), «Remontrance et supplication au roi Henri IV» κλπ. Ἡμιτελὲς παρέμεινεν, ὡς ἐκ τοῦ θανάτου του, τὸ μέγα αὐτοῦ λατινιστὶ γεγραμμένον σύγγραμμα μετὰ 400 χαλκογραφιῶν, περὶ τῆς «Ἱστορίας τῶν φυτῶν τοῦ Λανγκεντόκ». Εἰσήγαγεν ἐπίσης καὶ νέον ὀνοματολόγιον φυτῶν, ὅπερ ὅμως δὲν ἐγένετο ἀσπαστόν. Ὁ Villars πρὸς τιμήν του ἀπεκάλεσε διὰ τοῦ μικροῦ ὀνόματός του («Richeria») εἶδός τι κυναροειδῶν. Ἐπίσης ἀπεκλήθη «Bellevalie» ὑάκινθος ὁ ῥωμαϊκός. Ὁ ἀνεψιός του *Μαρτῖνος Ρίχερ ντὲ Μπελλεβὰλ* διεδέχθη τοῦτον ἐν Μονπελλιὲ εἰς τὴν διδασκαλίαν τῆς βοτανικῆς καὶ ἀνατομικῆς, ἀποθανὼν τῷ 1644. Ο. Ρ.

**Μπέλλεντς** (Bellenz) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τοῦ ἑλβετικοῦ καντονίου τοῦ Τεσσίνου (βλ. λ. *Μπελλιντσόνα*).

**Μπέλλερμαν** (Bellermann), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος-Ἑρρῖκος***. Γερμανὸς συνθέτης καὶ μουσικολόγος (1832—1903). Υἱὸς ἱστορικοῦ τῆς μουσικῆς *Ἰωάννου-Φρειδερίκου Μπέλλερμαν*. Ὠνομάσθη καθηγητὴς τοῦ μουσικῆς τοῦ πανεπιστημίου του Βερολίνου καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Τὰ ἔργα του, κυρίως φωνητικά, εἶναι μοτέττα, ψαλμοί, χορῳδίαι, τὸ «Τραγοῦδι τῶν πνευμάτων ἐπὶ τῶν ὑδάτων» διὰ χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν, ἓν μελόδραμα μὴ ἐκτελεσθὲν κτλ. Ὁ Μπέλλερμαν ἔγραψεν ἐπίσης διὰ χορῳδίαν ἄνευ συνοδείας τὰ χορικὰ τῶν τραγῳδιῶν: «Αἴας», «Οἰδίπους τύραννος» καὶ «Οἰδίπους ἐπὶ Κολωνῷ». Ἰδιαιτέρας σημασίας εἶναι τὸ σύγγραμμά του περὶ τῆς ἀναλογικῆς σημειογραφίας: «Οἱ ἀναλογικοὶ φθόγγοι καὶ τὰ μετρικὰ σημεῖα τοῦ ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνος». Γ. Σ.

— **Μπέλλερμαν** (Bellermann), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς ἱστορικὸς τῆς μουσικῆς (1795—1874). Εἰς αὐτὸν ὀφείλονται αἱ περιώνυμοι περὶ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς μελέται: «Αἱ κλίμακες καὶ οἱ μουσικοὶ φθόγγοι τῶν Ἑλλήνων» (1847), «Οἱ ὕμνοι Διονυσίου καὶ Μεσομήδους» (1840), «Fragmentum graecae scriptionis de musica» (1840), «Anonymi scriptio de musica et Bacchii Senioris introductio» (1841). Γ. Σ.

**Μπέλλι** (Belli), ***Βαλέριος***. Ἰταλὸς χαράκτης (1468—1546), ἀποκληθεὶς «πρίγκιψ τῶν χαρακτῶν». Εἰργάσθη πλησίον τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ ἄλλων καλλιτεχνῶν τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ ἐξετέλεσεν ἔργα διὰ τοὺς καρδιναλίους Πέτρον Μπέμπο καὶ Φαρνέζι, διὰ τοὺς πάπας Κλήμεντα Ζ' καὶ Παῦλον Β'. Κατεσκεύασεν ἐπίσης ἐξ ὀρυκτοῦ κρυστάλλου κιβωτίδιον φυλασσόμενον εἰς τὴν Γκαλερίαν ντέλλι Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας, καὶ ἄλλα ἔργα εὑρισκόμενα εἰς τὰ μουσεῖα τοῦ Βερολίνου, τῆς Βενετίας, τῆς Φλωρεντίας καὶ τὴν πινακοθήκην Κολόννα τῆς Ρώμης. Ἐπίσης ἐχάραξεν 75 μετάλλια, καθὼς καὶ πολλὰ ἔργα εἰς πολυτίμους λίθους καὶ κρύσταλλα καὶ θεωρεῖται ὁ σημαντικώτερος τῶν χαρακτῶν καὶ λιθογλύφων τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἐκαλεῖτο ἐπίσης καὶ *Βαλέριος Βιτσεντῖνο*.

—**Μπέλλι** (Belli), ***Ἰωσὴφ-Ἰωακεὶμ***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1791—1863). Τῷ 1813 ἵδρυσε μετ' ἄλλων τὴν «Accademia Tiberina». Τὰ πρῶτα αὐτοῦ ποιήματα ἔγραψεν εἰς τὴν καθαρὰν ἰταλικὴν γλῶσσαν, κατόπιν ὅμως ἤρχισε νὰ γράφῃ εἰς τὴν διάλεκτον τῆς Ρώμης. Ἔγραψεν ὑπὲρ τὰς 2000 σονέττα, τὰ ὁποῖα ἐκυκλοφόρουν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον χειρόγραφα. Μετὰ τὸν θάνατόν του, ὁ υἱός του *Κῦρος* ἐξέδωκε συλλογὴν τούτων εἰς τέσσαρας τόμους τῷ 1865. Ἀλλ' ἡ συλλογὴ αὕτη περιέχει πολλὰ ποιήματα διωρθωμένα, πρὸς ἀποφυγὴν τῆς ἀπαγορεύσεως τῆς κυκλοφορίας ὑπὸ τῶν παπικῶν ἀρχῶν. Ἡ πρώτη πλήρης ἔκδοσις τῶν ἁπάντων αὐτοῦ ἐγένετο τῷ 1886 εἰς ἓξ τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον «I sonetti romaneschi». Τὰ ἰταλικὰ αὐτοῦ ποιήματα ἐδημοσιεύθησαν χωριστὰ ὑπὸ τὸν τίτλον «Versi» (1839) καὶ «Poesie inedite» (1865). Ὁ Μπέλλι θεωρεῖται εἷς τῶν καλυτέρων ποιητῶν τῆς περιόδου τῆς ἰταλικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ ΙΘ' αἰῶνος καὶ ὁ ἀρχηγὸς τῆς ποιήσεως ἐν τῇ ῥωμανικῇ διαλέκτῳ. Τὰ ποιήματά του χαρακτηρίζει ζωηρὸς χρωματισμὸς καὶ πιστὴ ἀπόδοσις τῆς πραγματικότητος. Ἦτο ὁ κατ' ἐξοχὴν ποιητὴς τοῦ λαοῦ, παρ' ᾧ ἦτο ἀγαπητότατος, ἐνῷ συγχρόνως ἐσατίριζε δηκτικώτατα τὰς καταχρήσεις τῆς παπικῆς ἐξουσίας κατὰ τὰ τελευταῖα της ἔτη. Μετὰ τὸν θάνατον του ἐστήθη ὁ ἀνδριάς του ἐν πλατείᾳ τῆς λαϊκῆς συνοικίας τῆς Ρώμης Τραστέβερε, εἰς δὲ τὸν λόφον τοῦ Πιντσίου ἡ προτομή του.

— **Μπέλλι** (Belli), ***Ὀνώριος***. Ἰταλὸς ἰατρὸς καὶ βοτανικός, ἀποθανὼν τῷ 1604. Ἐταξίδευσεν εἰς Κρήτην καὶ Αἴγυπτον, ὅπου ἐμελέτησε διάφορα φυτὰ καὶ ἐξέθεσε τὰ ἀποτελέσματα τῶν μελετῶν του εἰς τὰς «Epistolae de rarioribus quibusdam plantis Creticis», ἐκδοθείσας ὑπὸ τοῦ Κλουσίου ἐν τῷ περιφήμῳ αὐτοῦ «Rariorum Historia Plantarum» (1584). Ἡ συμβολὴ τὴν ὁποίαν προσέφερεν ὁ Μπέλλι εἰς τὴν μελέτην τῶν φυτῶν τῆς Κρήτης καὶ τῆς Αἰγύπτου ὑπῆρξε διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην σημαντικωτάτη καὶ κατέταξεν αὐτὸν μεταξὺ τῶν ἐξοχωτέρων Ἰταλῶν βοτανικῶν τῆς Ἀναγεννήσεως. Ὁ Μπέλλι ἐγνώριζε καλῶς τὴν νέαν ἑλληνικὴν γλῶσσαν καὶ εἶχεν ἐγκατασταθῆ ἐν τέλει εἰς τὴν Κρήτην, ὅπου ἐπηγγέλλετο τὸν ἰατρόν.

— **Μπέλλι** (Belli), ***Πέτρος***. Ἰταλὸς νομομαθὴς (1502—1575). Διετέλεσε σύμβουλος Καρόλου τοῦ Ε', Φιλίππου τοῦ Β' καὶ Μανουὴλ Φιλιμπέρτου τῆς Σαβοΐας διὰ ζητήματα σχέσιν ἔχοντα μὲ τὸ διεθνὲς δίκαιον. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων του εἶναι τὸ ἐπιγραφόμενον «Περὶ τῶν στρατιωτικῶν πραγμάτων καὶ τῶν συνθηκῶν τοῦ πολέμου», ἐκδοθὲν τῷ 1563 ἐν Βενετίᾳ καὶ περιλαμβάνον μεταξὺ ἄλλων συστηματικὴν ἔκθεσιν τῶν ἰσχυουσῶν κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην στρατιωτικῶν διεθνῶν κανονισμῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπελλιὰρ** (Belliard), ***Αὐγουστῖνος-Δανιήλ***. Γάλλος στρατηγὸς (1769—1832). Διετέλεσεν ἐπιτελάρχης τοῦ Ντυμουριὲ εἰς Ζεμμάπ, καθαιρεθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ στρατηγοῦ του, ἀνακατετάγη ὡς ἐθελοντὴς στρατιώτης καὶ ἀνέκτησε τοὺς βαθμούς του εἰς τὰ πεδία τῶν μαχῶν. Ἐπολέμησεν ὡς ὑποστράτηγος εἰς Ἀρκόλαν (1796) καὶ εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, ὅπου ἐγένετο ἀντιστράτηγος καὶ διοικητὴς τοῦ Καΐρου. Ἐνταῦθα ἐπολιορκήθη στενῶς ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καὶ Μαμελούκων, ἐπέτυχεν ὅμως ν' ἀποχωρήσῃ κατόπιν συμφωνίας μετὰ τῶν ὅπλων καὶ πολεμοφοδίων. Ἀκολούθως διετέλεσεν ἐπιτελάρχης τοῦ Μαρὰ (1805) καὶ μετέσχεν εἶτα τῶν Ναπολεοντείων πολέμων. Κατὰ τὴν εἰς Ρωσίαν ἐκστρατείαν ἦτο ἀρχηγὸς τῶν θωρακοφόρων. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΗ' ὠνομάσθη γενικὸς ἐπιτελάρχης τοῦ στρατεύματος καὶ πατρίκιος τῆς Γαλλίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Ἑκατονθημέρου ὑπεστήριξεν ἐκ νέου τὸν Ναπολέοντα, δι' ὃ καὶ συνελήφθη κατὰ τὴν δευτέραν Παλινόρθωσιν, ἐπανέκτησεν ὅμως μετ' οὐ πολὺ τοὺς βαθμούς του. Τέλος ἀπεστάλη πρεσβευτὴς εἰς Βέλγιον ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου-Φιλίππου καὶ ὑπέγραψε τὴν συνθήκην τοῦ χωρισμοῦ Βελγίου καὶ Ὁλλανδίας. —Ω.

**Μπελλιὲ *Ντὲ Λονουὰ*** (Belliet de Launoy). Πρώσσος φιλέλλην κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα καὶ συμμετασχὼν τῶν ἐν Μεσολογγίῳ ἐπιχειρήσεων.

**Μπελλιὲ** (Bellier) ***ἀντίδρασις*** *[Χημ. Τροφ.]*. Ἡ δι' ἐπιδράσεως νιτρικοῦ ὀξέος καὶ διαλύματος ρεζορκίνης ἐν βενζολίῳ ἀνίχνευσις τῆς παρουσίας σπορελαίων εἰς τὰ λίπη καὶ ἔλαια. Σ. Γ.

**Μπελλιὲβρ** (Bellièvre), ***Πομπώνιος ντὲ* —**, αὐθέντης τοῦ ***Γκρινιόν***. Γάλλος πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης (1529—1607). Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Τουλούζης καὶ Παδούης καὶ ἐγένετο δικαστὴς ἐν Σαμπερύ. Παρέστη εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Λὰν (1562) ὡς ἀντιπρόσωπος τοῦ βαΐλου τῆς Βερμαντουά, μεθ' ὃ ἀπεστάλη πρέσβυς εἰς Γρισωνίαν (1564—1565), ἐπιτυχὼν ἀνανέωσιν τῆς μετὰ τῶν καντονίων αὐτῆς συνθήκης τῆς Γαλλίας, καὶ εἶτα εἰς Ἑλβετίαν (1566—1773). Αὐτόθι εὑρισκόμενος ὠνομάσθη ἀρχιδικαστὴς ἐν Λάν, ἀξίωμα τὸ ὁποῖον οὐδέποτε κατέλαβεν. Ἦτο σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας. Ἀπὸ τοῦ 1570, συνώδευσεν ὡς πρέσβυς Καρόλου τοῦ Θ' Ἑρρῖκον τὸν Ἀνδεγαυὸν εἰς Πολωνίαν, διετέλεσεν ἐκ νέου πρέσβυς εἰς Ἑλβετίαν (1574), καὶ εἶτα ἀνώτερος οἰκονομικὸς ἐπιθεωρητὴς τοῦ κράτους (1575), πρόεδρος τοῦ δικαστηρίου τῶν Παρισίων (1576). Πρέσβυς τοῦ βασιλέως πρὸς τὸν Κονδὲ καὶ εἰς Ἀγγλίαν. Μετέσχε τῶν διασκέψεων τῆς Συρὲν (1599), διεπραγματεύθη τὴν εἰρήνην τοῦ Βερβὲν (1598). —Π.

**Μπὲλλ Ἴλ** (Belle Isle) *[Γεωγρ.]*. —1) Βρεττανικὴ νῆσος τοῦ Ἀτλαντικοῦ, κειμένη μεταξὺ τῶν ἀκτῶν τοῦ Λαμπραντὸρ καὶ τῆς νήσου Νέας Φουντλάνδης παρὰ τὴν ΒΑ. εἴσοδον τοῦ διέκπλου Μπὲλλ Ἴλ. Τὸ ἔδαφός της εἶναι βραχῶδες, φθάνον μέχρις ὕψους 250 μέτρων ἀπὸ τῆς θαλάσσης καὶ ἔχει περιφέρειαν 21 μιλλίων. Ἐπ' αὐτῆς λειτουργοῦσι σταθμοὶ ἀσυρμάτου καὶ δύο φάροι.

—2) Βρεττανικὴ νῆσος τοῦ Ἀτλαντικοῦ, κειμένη ἐντὸς τοῦ κόλπου Κονσέπσιον τῆς νήσου Νέας Φουντλάνδης. Ἔχει μῆκος 6 μιλ. καὶ πλάτος 3. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς περικλείει κοιτάσματα σιδήρου.

—3) Διέκπλους ἀνοιγόμενος μεταξὺ τῶν Α. ἀκτῶν τοῦ Λαμπραντὸρ καὶ τῆς Β. παραλίας τῆς νήσου Νέας Φουντλάνδης. Θέτει εἰς ἐπικοινωνίαν τὸν Β. Ἀτλαντικὸν μετὰ τοῦ κόλπου τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου καὶ ἀποτελεῖ τὴν συντομωτέραν θαλασσίαν ὁδὸν μεταξὺ τῆς Εὐρώπης καὶ τῶν ἐν

Digitized by Google

τῷ κόλπῳ καὶ τῷ ποταμῷ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου μεγάλων καναδικῶν λιμένων. Ἔχει μῆκος 85 μιλ. καὶ πλάτος 12, ἀλλ' εἶναι ἀνοικτὸς μόνον κατὰ τὸ θέρος, φρασσόμενος τὸν χειμῶνα ὑπὸ τῶν πάγων. χ. λ.

— **Μπέλλ-Ἴλ** ἢ ***Μπὲλλ-Ἴλ-ὰν-Μὲρ*** (Belle-Île ἢ Belle-Île-en Mer καὶ βρετονιστὶ Guerveur) *[Γεωγρ.]*. Γαλλικὴ νῆσος κειμένη παρὰ τὴν Ν. παραλίαν τῆς Βρετάνης εἰς ἀπόστασιν 12 χλμ. ἀπὸ τῆς χερσονήσου Κιμπερόν. Εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τῶν νήσων τῆς Βρετάνης, ἔχουσα ἔκτασιν 89,5 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 9.700 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν κώμην *Παλαί*. Διοικητικῶς ὑπάγεται εἰς τὸν νομὸν Μορμπιάν. Εἶναι ἡ ἀρχαία Vindilis τῶν Ρωμαίων. Ἡ κωμόπολις Παλαὶ ὑπερασπίζεται ὑπὸ φρουρίου μετὰ πυροβολείων προστατευόντων τὴν νῆσον. χ. λ.

**Μπελλίνι** (Bellini), ***Βικέντιος***. Ἰταλὸς συνθέτης (1801—1835). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ ᾠδείῳ τῆς Νεαπόλεως, ταχέως δ' ἐπετέλεσε καταπληκτικὰς προόδους. Μαθητὴς ἔτι ὢν συνέθεσεν, ἐκτὸς ἄλλων θρησκευτικῶν ἔργων, τὸ τρίπρακτον κωμικὸν μελόδραμα «Ἄντελσον καὶ Σαλβίνι», τὸ ὁποῖον παιχθὲν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ ᾠδείου ἐσημείωσε μεγάλην ἐπιτυχίαν. Μετὰ ἓν ἔτος τῷ ἀνετέθη νὰ γράψῃ διὰ τὸ «Σὰν Κάρλο» τῆς Νεαπόλεως τὸ μονόπρακτον μελόδραμα «Μπιάνκα καὶ Φερνάντο», χάρις εἰς τὴν ἐπιτυχίαν τοῦ ὁποίου ἔλαβεν ὡς παραγγελίαν ἀπὸ τὴν «Σκάλαν» τοῦ Μιλάνου νὰ γράψῃ τὸν «Πειρατήν», ἔργον παιχθὲν αὐτόθι τὴν 27 Ὀκτωβρίου 1827, μὲ πρωταγωνιστὰς τὴν Μερὶκ-Λαλὰντ καὶ τοὺς Ρουμπίνι καὶ Ταμπουρίνι. Ἐπιβληθεὶς ἤδη εἰς τὴν μουσικωτέραν πόλιν τῆς Ἰταλίας, ὁ Μπελλίνι γράφει δι' αὐτὴν δεύτερον μελόδραμα, τὴν «Ξένην» (La Straniera). Ἡ ἐπιτυχία κατὰ τὴν πρώτην παράστασιν (14 Φεβρουαρίου 1829) ὑπερέβαλε πᾶσαν προσδοκίαν, ὁ δὲ συνθέτης ἐκλήθη τριακοντάκις ἀπὸ σκηνῆς, ἐν μέσῳ φρενιτιωδῶν ἐπευφημιῶν. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἔδωσεν εἰς τὸ θέατρον τῆς Πάρμας τὸ ἐπὶ στίχων τοῦ Ρομάνι, εἰς δύο μόνον μῆνας συντεθέν, νέον μελόδραμά του «Ζαΐρα», ὅπερ ὅμως ἀπέτυχε καὶ ἐσφυρίχθη. Μετ' ὀλίγους μῆνας εἶχεν ἤδη ἕτοιμον διὰ τὴν Βενετίαν τὸ μελόδραμα «Οἱ Καπουλέτοι καὶ οἱ Μοντέκοι», ἐπὶ στίχων ἐπίσης τοῦ Ρομάνι, ὅπερ ἐπαίχθη ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων θεάτρων τῆς Ἰταλίας. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1831 ὁ Μπελλίνι ἀνεβίβασεν εἰς Μιλᾶνον τὸ νέον του μελόδραμα «Ἡ ὑπνοβάτις», οὕτινος ἡ ἐπιτυχία ὑπῆρξεν ἄνευ προηγουμένου· δὲν ἀφώπλισεν ὅμως τοὺς ἐχθροὺς τοῦ συνθέτου, οἵτινες κατέκρινον τὴν ὑπερβολικὴν ἁπλότητα τῆς συνοδευούσης ὀρχήστρας καὶ τὴν ἀφελῆ μελῳδικὴν γραμμὴν τοῦ ἔργου τούτου. Ἐντὸς δραματικοῦ πλαισίου γεγραμμένη ἡ «Νόρμα» τοῦ Μπελλίνι, εὑρίσκεται εἰς τοὺς ἀντίποδας τοῦ προηγουμένου μελοδράματος. Συντεθειμένη ἐπὶ τῶν πράγματι ὑπερόχων στίχων τοῦ Φελίτσε Ρομάνι, πραγματοποιεῖ τὴν ἑνότητα τῆς μουσικῆς μετὰ τῆς ποιήσεως καὶ παρέχει στιγμὰς ὑπερόχου μελῳδικότητος καὶ τραγικοῦ πάθους· ἐπὶ πλέον δ' ἐμφανίζει πρόοδον τῶν τεχνικῶν μέσων τοῦ συνθέτου. Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν ἐν Παρισίοις, ἔγραψε διὰ τὸ «Ἰταλικὸν Μελόδραμα» τῆς πόλεως ταύτης τὸ τελευταῖόν του ἔργον «Οἱ πουριτανοί», ὅπερ ἐπροκάλεσε τὸν ἐνθουσιασμὸν τοῦ κοινοῦ. Μετά τινας μῆνας ἀπέθνησκεν αὐτόθι. Γ.Σ.

*Βικέντιος Μπελλίνι.*

—**Μπελλίνι** (Bellini), ***Ἰάκωβος***. Διάσημος Ἰταλὸς ζωγράφος, ἀρχηγέτης τῆς καλλιτεχνικῆς δυναστείας τῶν Μπελλίνι καὶ ἱδρυτὴς τῆς δευτέρας (ἡ πρώτη ἐκπροσωπεῖται ὑπὸ τοῦ Βιβαρίνι) «πρωτογόνου» καλλιτεχνικῆς σχολῆς τῆς Βενετίας. Δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστὸν πότε ἐγεννήθη. Ἀλλ' ἂν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ὅτι ἡ δόξα του εἶχεν ἤδη μεταξὺ 1430 καὶ 1440 ὑπερβῆ τὰ ὅρια τῆς Βενετικῆς δημοκρατίας καὶ ὅτι μερικὰ ἔτη προηγουμένως, κατὰ τὸ 1424, εἶχε κατασταθῆ κύριος τῆς πατρικῆς κληρονομίας, δύναται νὰ τεθῇ μετὰ σχετικῆς βεβαιότητος ὡς ἔτος τῆς γεννήσεώς του τὸ 1400 περίπου. Ὁ πατήρ του, Νικόλαος Μπελλίνι, ἦτο ἁπλοῦς ἀγγειοπλάστης. Ὁ δὲ υἱός, ἀναπτυσσόμενος εἰς ἐποχὴν καθ' ἣν ἡ βενετικὴ ζωγραφικὴ δὲν εἶχεν ἀκόμη παρουσιάσει ἐμφανῆ προοίμια τῆς μεταγενεστέρας ἀνθήσεως της καὶ καθ' ἣν ὁ μόνος ἀξιόλογος ἐν Βενετίᾳ ζωγράφος ἦτο ὁ Jacobello del Fiore, θὰ ἠκολούθει ἴσως τὸ ταπεινὸν ἐπάγγελμα τοῦ πατρός του, ἂν ἡ εἰς Βενετίαν ἄφιξις δύο διασήμων καλλιτεχνῶν, τοῦ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο καὶ τοῦ Πιζανέλλο, οἵτινες κατὰ τὴν δευτέραν δεκαετίαν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἀνέλαβον τὴν ἐκτέλεσιν τοιχογραφιῶν ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ, δὲν ἀφύπνιζε μέσα εἰς τὴν ψυχήν του τὸν λανθάνοντα ἔρωτά του πρὸς τὴν ζωγραφικήν. Ὅπως διηγεῖται ὁ Βαζάρι, ὁ νεαρὸς Ἰάκωβος, γοητευθεὶς ἀπὸ τὴν αἴγλην τῆς λαμπρᾶς δόξης τοῦ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο, πρὸς τιμὴν τοῦ ὁποίου βραδύτερον ὠνόμασε τὸν υἱόν του Τζεντίλε, προσεκολλήθη πάραυτα πλησίον του καὶ τὸν ἠκολούθησεν εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ἔνθα παρέμεινε παρ' αὐτῷ διδασκόμενος, ἀπὸ τοῦ 1420 μέχρι τοῦ 1423. Ὁπωσδήποτε καὶ ἂν συμβαίνῃ, παραμένει ἀδιαφιλονίκητον τὸ γεγονὸς ὅτι ὁ Ἰάκωβος Μπελλίνι ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο, οὗ ὑπερηφάνως ὡμολόγει ἑαυτὸν μαθητὴν καὶ ὀπαδὸν ἐν τῇ ἐπιγραφῇ τῆς «Σταυρώσεως τοῦ Χριστοῦ», τὴν ὁποίαν ἐξεπόνησεν ἐν Βερώνῃ κατὰ τὸ 1429. Εἶναι ἄλλως τε ἀπολύτως ἐμφανὴς ἡ στενὴ σχέσις, ἡ ὁποία ὑφίσταται μεταξὺ τῆς τέχνης τοῦ Μπελλίνι καὶ τοῦ ντὰ Φαμπριάνο.

Τῷ 1428 ὁ Μπελλίνι ἐνυμφεύθη κόρην καταγομένην ἀπὸ τὸ Πέζαρο, μετὰ δὲ τὸν γάμον του ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Βενετίαν, ἔνθα συνήντησε καλλιτέχνην ἰσχυροῦ ταλάντου, τὸν Οὐτσέλλο. Ὀκτὼ ἔτη βραδύτερον τὸν συναντῶμεν εἰς τὴν Βερώναν, ὅπου μετέβη κατὰ πρόσκλησιν τοῦ ἐπισκόπου Γκουίντο Μέμμο. Εἰς τὴν ἐποχὴν αὐτὴν ἀνήκουν δύο ἐκ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων τοῦ Ἰακώβου Μπελλίνι: «Ἡ Σταύρωσις» τῆς Βερώνης, μνημονευθεῖσα ἤδη, ἥτις κατεστράφη καθ' ὁλοκληρίαν τῷ 1759, καὶ «Ὁ Ἐσταυρωμένος», ὅστις ἐπέκειτο προηγουμένως εἰς τὸ ἐπισκοπικὸν μέγαρον τῆς Βερώνης, εὑρίσκεται δὲ τώρα εἰς τὸ Museo Civico τῆς αὐτῆς πόλεως.

Ἐκ Βερώνης ὁ Μπελλίνι ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Βενετίαν· τῷ 1437 τὸν εὑρίσκομεν ἐγγεγραμμένον εἰς τὴν συντεχνίαν, «σχολήν», κατὰ τὴν τότε ἐπικρατοῦσαν ὀνομασίαν, τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Εὐαγγελιστοῦ· ὀλίγῳ δὲ βραδύτερον πληροφορούμεθα ὅτι ἐκλήθη ὑπὸ Νικολάου τοῦ Γ' τῆς Ἔστης, μεγάλου προστάτου τῶν γραμμάτων καὶ τῶν τεχνῶν, εἰς τὴν Φερράραν. Ἐκεῖ συνήντησε τὸν Πιζανέλλο, εἰς τὸ ζενὶθ τότε τῆς δόξης του εὑρισκόμενον, καὶ διηγωνίσθη μετ' αὐτοῦ εἰς τὴν κατασκευὴν τῆς προσωπογραφίας τοῦ νεαροῦ Λιονέλλου τῆς Ἔστης. Ποίημα δεκατετράστιχον τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὀφειλόμενον εἰς τὸν Ὀδυσσέα Ἀλλεόττι, περιγράφει διὰ λυρικῶν ἐκφράσεων τὸν ἀγῶνα τοῦτον, καθ' ὃν ὁ Νικόλαος ἀπένειμε τὸ βραβεῖον εἰς τὸν Ἰάκωβον. Δυστυχῶς μόνον τὸ ἔργον τοῦ Πιζανέλλο ἐσώθη (Ἀκαδημία τοῦ Μπέργκαμο), τὸ δὲ τοῦ Μπελλίνι κατεστράφη. Συνεπῶς οὐδεμία κρίσις εἶναι δυνατὴ περὶ τῆς καλαισθησίας καὶ τῆς καλλιτεχνικῆς ὀξυδερκείας τοῦ Νικολάου τῆς Ἔστης. Εἰς τὴν αὐτὴν ἐποχὴν φαίνονται ἀνήκουσαι καὶ αἱ δύο συλλογαὶ σχεδιασμάτων τοῦ Μπελλίνι, ἐφ' ὧν κυρίως στηρίζεται ἡ ἐπὶ τοῦ ἔργου του γνῶσις καὶ κρίσις ἡμῶν, διότι, πλὴν τούτων, μόνον τρεῖς ἐνυπόγραφοι πίνακές του ἐσώθησαν. Ὁ χρόνος καὶ οἱ ἄνθρωποι ἐξηφάνισαν πᾶν ἄλλο πραγματικὸν στοιχεῖον, ὅπερ θὰ ἠδύνατο νὰ μᾶς διαφωτίσῃ πλήρως ἐπὶ τῆς καλλιτεχνικῆς ἐξελίξεως τοῦ ἀνδρός. Ἐκ τῶν δύο τούτων συλλογῶν ἡ μία ἀπόκειται νῦν εἰς τὸ Λοῦβρον, ἡ δ' ἄλλη εἰς τὸ Βρεττανικὸν Μουσεῖον τοῦ Λονδίνου. Ἡ πρώτη ἀνευρέθη τῷ 1884 εἰς ἕνα πύργον τῆς Γκυγιάννας, δὲν εἶναι δὲ οὔτε ὑπογεγραμμένη οὔτε χρονολογημένη· ἡ δευτέρα ἀπεκτήθη ὑπὸ τοῦ Βρεττανικοῦ Μουσείου τῷ 1814. Εἶναι δύσκολον νὰ ὁρισθῇ ποία ἐξ αὐτῶν εἶναι ἡ παλαιοτέρα· δέον μόνον νὰ σημειωθῇ ὅτι ἡ δευτέρα φέρει ἐν τῇ πρώτῃ σελίδι τὴν ἔνδειξιν: «Χειρὶ τοῦ messer Ἰακώβου Μπελλίνι, 1430, ἐν Βενετίᾳ», ἀλλ' ἡ αὐθεντικότης τῆς ἐνδείξεως ταύτης εἶναι ἀμφίβολος. Ἡ ἐπίδρασις τῆς τέχνης τοῦ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο καὶ τοῦ Πιζανέλλο εἶναι φανερὰ εἰς τὰ σχεδιάσματα ταῦτα τοῦ Μπελλίνι, ἀλλ' εἶναι ἐπίσης φανερὰ καὶ ἄφθονα καὶ τὰ χαρακτηριστικά, προσωπικὰ ἐκεῖνα στοιχεῖα τῆς τέχνης τοῦ Ἰακώβου Μπελλίνι, τὰ ὁποῖα μᾶς ἐπιτρέπουν ν' ἀνασυστήσωμεν τὴν φυσιογνωμίαν του. Μεταξὺ τῶν θεμάτων, ἅτινα συχνάκις ἐπαναλαμβάνονται εἰς τὰς δύο αὐτὰς σειρὰς τῶν σχεδιασμάτων τοῦ Μπελλίνι, σημειοῦμεν τὴν «Προσκύνησιν τῶν Μάγων», τὸν «Ἅγιον Γεώργιον καταβάλλοντα τὸν δράκοντα», τὸν «Ἅγιον Εὐστάθιον», τὸν «Ἅγιον Ἱερώνυμον», τὸν «Ἅγιον Σεβαστιανὸν» καὶ τὸν «Ἅγιον Χριστόφορον».

Ἐπὶ πόσον χρόνον παρέμεινεν ὁ Ἰάκωβος Μπελλίνι ἐν Φερράρᾳ δὲν εἶναι ἀκριβῶς γνωστόν. Πάντως εἶναι βέβαιον ὅτι κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ὁ ἀρχηγὸς οὗτος τῆς βενετικῆς σχολῆς ἦτο ἐκ νέου ἐγκατεστημένος εἰς τὸ ἐν Βενετίᾳ ἐργαστήριόν του, ὄχι μακρὰν τῆς πλατείας τοῦ Ἁγίου Μάρκου, περιβαλλόμενος ἀπὸ πολυπληθεῖς καὶ ἀφωσιωμένους μαθητάς, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὑπερεῖχον οἱ δύο υἱοί του, ὁ *Τζεντίλε* καὶ ὁ *Ἰωάννης*. Βραδύτερον ἐπισκέπτεται τὴν Πάδουαν (πρὸ τοῦ 1460). Μετὰ δὲ τὸ 1460, μάλιστα δὲ περὶ τὸ 1466, τὸν ἐπανευρίσκομεν πυρετωδῶς ἐργαζόμενον ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Σκουαρτσιόνε ἐν Βενετίᾳ. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ἥτις ὑπῆρξε καὶ ἡ γονιμωτέρα τοῦ καλλιτεχνικοῦ του σταδίου, εἰργάσθη εἰς τὴν διακόσμησιν τῆς Scuola di San Marco καὶ τῆς Scuola di San Giovanni Evangelista, ἐξετέλεσε δὲ πολυάριθμα καὶ ἀξιολογώτατα ἔργα, ἐκ τῶν ὁποίων μέχρις ἡμῶν ἔφθασαν μόνον «Ὁ γάμος τῆς Θεοτόκου» καὶ «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων». Οἱ πίνακες οὗτοι εὑρίσκονται σήμερον εἰς τὴν Ἀμερικήν. Ἀξιομνημόνευτοι εἶναι καὶ αἱ δύο «Παρθένοι», ἐξ ὧν ἡ πρώτη, μεταγενεστέρα τοῦ ἔτους 1437, ἀπόκειται νῦν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Βενετίας, ἡ δὲ δευτέρα, ἀνήκουσα εἰς τὴν μεταξὺ τοῦ 1440 καὶ 1450 ἐποχήν, εὑρίσκεται εἰς τὴν πινακοθήκην Ταντίνι, ἐν Lovere. Ὁ Ἰάκωβος Μπελλίνι ἀπέθανε κατὰ τὸ 1470. Ἡ τελευταία ἡμερομηνία, καθ' ἣν τὰ χρονικὰ τῆς Βενετίας ὁμιλοῦν περὶ αὐτοῦ, εἶναι ἡ 26η Αὐγούστου 1470.

Ὁ καλλιτέχνης οὗτος ἀποτελεῖ μίαν μεγάλην φυσιογνωμίαν ἀρχηγοῦ. Ἐπέδρασεν, ὅσον ὀλίγοι, ἐπὶ τῆς μετέπειτα καλλιτεχνικῆς ἐξελίξεως, ἐθεμελίωσεν οὕτως εἰπεῖν, τὴν ἀληθῆ βενετικὴν σχολὴν καὶ ἀφῆκε βαθύτατα ἴχνη εἰς τὸ ἔργον καλλιτεχνῶν τοῦ μεγέθους ἑνὸς Μαντένια ἢ ἑνὸς Καρπάτσιο. Ὑπῆρξε σχεδὸν αὐτοδίδακτος, ἂν ἐξαιρέσῃ τις τὴν παρὰ τῷ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο σύντομον μαθητείαν του, καὶ διετήρησε πάντοτε τὴν ἁγνότητα, τὴν δροσερότητα καὶ τὴν ἁρμονικὴν χάριν τῆς παρθενικῆς του ἰδιοσυγκρασίας. Μέσα εἰς τὴν ἀφελῆ φαντασίαν του ἀνεμείγνυε τὰς ἐκ τῆς πραγματικότητος ἐντυπώσεις μὲ παντοειδῆ ὀνειροπολήματα, τὴν φύσιν μὲ τὴν μυθολογίαν, τὴν ἱστορίαν μὲ τὴν ἀλληγορίαν καὶ μὲ τὸν συμβολισμόν, τὸ παρελθὸν μὲ τὴν σύγχρονόν του ἐποχήν. Δεξιοτέχνης εἰς τὴν προοπτικήν, ἐκαλλιέργησε μὲ τὴν αὐτὴν ἐπιτυχίαν καὶ τὸν δροσερὸν καὶ ἁρμονικὸν χρωματισμὸν καὶ τὸ μαλακὸν καὶ ἐκφραστικὸν σχέδιον· ἐπὶ πλέον δὲ διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπόδοσιν τῶν ἀρχιτεκτονημάτων. Ἡ τέχνη του ὁμοιάζει μὲ ἄνοιγμα εὐρέος παραθύρου πρὸς τὸ φῶς καὶ πρὸς τὴν ζωήν. Εἶναι ἀφελής, ἀλλὰ μὲ ἀξιοθαύμαστον ἐπιμονὴν συμπληρώνει καὶ εὐρύνει τὴν τεχνικήν του· ἀποδίδει τὸν ἀγῶνα καὶ τὴν πάλην δι' ὁρμητικῶν κινήσεων, στάσεων καὶ χειρονομιῶν· ἐγκαταλείπεται εἰς συνειδητὴν καὶ ἐπιτυχῆ σπουδὴν τοῦ γυμνοῦ· ἀπορρίπτει τὴν νεκρὰν παράδοσιν, διὰ νὰ δημιουργήσῃ ἔργον, τὸ ὁποῖον θὰ χρησιμεύσῃ ὡς στερρὰ βάσις τῆς βενετικῆς ἀναγεννήσεως, ἀλλὰ καὶ δὲν ἀπαρνεῖται τὰ στοιχεῖα ἐκεῖνα τοῦ παρελθόντος, τὰ ὁποῖα συμβιβάζονται μὲ τὴν φύσιν τῶν αἰσθητικῶν του προτιμήσεων. Κριτικοί τινες ἔφθασαν εἰς τὸ σημεῖον νὰ ἴδουν ἐν τῷ προσώπῳ του ἕνα προκεχωρημένον ρεαλιστήν, ἐνῷ δὲν εἶναι παρὰ εἷς εὐρύνους ἀναμορφωτὴς τῆς τέχνης διὰ τῆς φυσικῆς ἀληθείας περασμένης μέσα ἀπὸ τὸ φίλτρον τῆς ἱκανῶς ἀπλοϊκῆς φαντασίας του.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *B. Berenson*, The Venetian painters (3η ἐκδ. Λονδῖνον 1897).—*L. Venturi*, Pittura Veneziana (Βενετία 1907).— *E. - M. Philips*, The Venetian School, (Λονδῖνον 1912).— *G. Gronau*, Die Bellini 1909.— *E. Cammaerts*, Les Bellini, Παρίσιοι, 1912). Ι. Μ. Π.

—**Μπελλίνι** (Bellini), ***Ἰωάννης***, *ὁ νεώτερος*. Ὁ διασημότερος ἐκπρόσωπος τῆς καλλιτεχνικῆς οἰκογενείας τῶν Μπελλίνι. Ἐγεννήθη πιθανῶς τῷ 1430, τὰ δὲ πρῶτα μαθήματα ἔλαβε παρὰ τοῦ πατρός του, ὅστις τὸν ἐχρησιμοποίησε καὶ ὡς συνεργάτην του ὁμοῦ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Τζεντίλε. Σπουδαίως ἐπέδρασεν ἐπὶ τῆς ἀναπτύξεως τοῦ ταλάντου του καὶ ὁ Μαντένια, τοῦ ὁποίου δύναται νὰ θεωρηθῇ ἂν οὐχὶ κατὰ κυριολεξίαν μαθητής, τοὐλάχιστον ὅμως ὀπαδός.

Ἡ τέχνη τοῦ Ἰωάννου Μπελλίνι, διαρκῶς ἀναπτυσσομένη καὶ μετασχηματιζομένη, καλύπτει ὁλόκληρον τὴν περίοδον τῆς σημαντικωτέρας ἐξελίξεως τῆς βενετικῆς σχολῆς, ἀπὸ τοῦ «primitif» Ἰακώβου Μπελλίνι μέχρι τοῦ Τζιορτζόνε καὶ τοῦ Τισιανοῦ. Δύναται δὲ νὰ κατανεμηθῇ εἰς τέσσαρας περιόδους, αἵτινες κατὰ τὸν E. Cammaerts, εἶναι αἱ ἀκόλουθοι: Ἡ νεανικὴ περίοδος (μέχρι τοῦ 1460)· αὕτη περιλαμβάνει ἔργα ἀβεβαίας εἰσέτι πρωτοτυπίας, φέροντα δὲ βαθυτάτην τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Μαντένια. Ἡ περίοδος, εἶτα, ἡ ἐκτεινομένη ἀπὸ τοῦ 1460 μέχρι τοῦ 1480· κατ' αὐτὴν ἡ πρωτοτυπία τοῦ καλλιτέχνου ἐλευθερώνεται ἀπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Μαντένια. Ἡ περίοδος τῆς ὡρίμου ἡλικίας τοῦ Ἰ. Μπελλίνι, ἀπὸ τοῦ 1480 μέχρι τοῦ 1500· κατ' αὐτὴν ἡ μεγαλοφυΐα τοῦ καλλιτέχνου ἀνθίζει ἁρμονικῶς καὶ δίδει τὸ μέτρον τοῦ θελγήτρου ἐκείνου τῆς κάπως κοσμικῆς θρησκευτικότητος, ἡ ὁποία τὸν διακρίνει ἀπὸ τοὺς ἄλλους καλλιτέχνας τῆς σχολῆς του. Ἡ περίοδος τοῦ γήρατος τέλος, ἀπὸ τοῦ 1500 μέχρι τοῦ 1514, κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὁποίας ὁ καλλιτέχνης, μολονότι ἀφήνεται ἐπὶ μᾶλλον εἰς τὸ ρεῦμα τῆς Ἀναγεννήσεως, ἐμφανίζει ἐνίοτε κάποιον κάματον εἰς τὴν ἔμπνευσιν» (*Camnaerts* «Les Bellini», σελ. 94—95). Χρονολογίαι πολυπληθέστεραι δυνάμεναι νὰ διαφωτίσουν περισσότερον τὰ καθέκαστα τῶν περιόδων τούτων ἐλλείπουν· ἀλλὰ τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του κατατάσσονται αὐτομάτως ἐξ ἀφορμῆς ἐντόνων τινῶν χαρακτηριστικῶν.

Ὅλαι αἱ πηγαί, τὰς ὁποίας εἶναι δυνατὸν νὰ ἔχωμεν ὑπ' ὄψιν μας, μᾶς πληροφοροῦν ὅτι ὁ Ἰωάννης Μπελλίνι λίαν ταχέως ἀνεδείχθη καὶ καθ' ὅλον του τὸν βίον, μέχρι τῶν παραμονῶν τοῦ θανάτου του, διετήρησε τὴν αἴγλην ἑνὸς μεγάλου διδασκάλου καὶ ἀρχηγοῦ. Εἰς ἡλικίαν πεντήκοντα ἐτῶν εἶχεν ἀποκτήσει κάθε ἐπιθυμητὴν ἱκανοποίησιν. Ἀνέλαβε τὴν ἐκτέλεσιν, τῶν νέων τοιχογραφιῶν τῆς

Digitized by Google

) *Ἰακώβου Μπελλίνι:* Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ τέκνου της (Ἀκαδημία Βενετίας). 2) *Τζεντίλε Μπελλίνι:* Λαυρέντιος Ἰουστινιάνης (Ἀκαδημία Βενετίας).

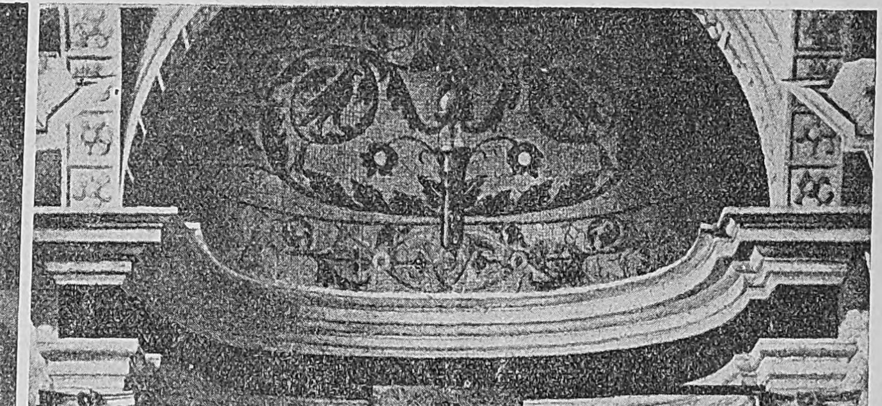

*οβάννι Μπελλίνι:* 1) Οἱ Ἅγ. Χριστόφορος καὶ Αὐγουστῖνος (Βενετία, ναὸς Ἁγ. Χριστοφόρου). 2) Ἡ Παναγία τῶν Τεσσάρων Ἁγίων (Βενετία, ναὸς Ἁγ. Ζαχαρίου).

Digitized by Google

αἰθούσης τοῦ Μεγάλου Συμβουλίου ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ τῆς Βενετίας καὶ ὠνομάσθη ἐπίσημος ζωγράφος τῆς Γαληνοτάτης Δημοκρατίας. Τὸ ἐργαστήριόν του ἔσφυζεν ἀπὸ κίνησιν καὶ ζωήν. Καὶ παρὰ τὴν ἀπεριόριστον γονιμότητά του, παρὰ τὴν ἀκάματον ἐργατικότητά του καὶ τὴν ἀφωσιωμένην ἐπικουρίαν ἐπιλέκτων μαθητῶν δὲν ἠδύνατο ν' ἀντεπεξέλθῃ εἰς τὰς ἀπαιτήσεις τῆς πολυπληθοῦς πελατείας του, ἐν ᾗ τὴν πρωτεύουσαν κατεῖχε θέσιν ἡ βενετικὴ πολιτεία καὶ ἐν ᾗ, παρὰ τὰς διαφόρους «σχολάς», ἡμιλλῶντο εἰς τὴν ἐπίδειξιν φιλοτέχνων αἰσθημάτων πάντες οἱ πάμπλουτοι ἡγεμόνες τῶν γειτονικῶν ἐπικρατειῶν. Ἔζησεν ἐπὶ ὀγδοήκοντα ἓξ ἔτη, κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ὁποίων οὐδέποτε ἐγνώρισε τὴν ἀνάπαυσιν. Περὶ τὸ τέλος τοῦ βίου του ἐδοκίμασεν εὐλόγους πικρίας ἐξ ἀφορμῆς τῆς ἀντιδράσεως, τὴν ὁποίαν ἐκίνησε κατ' αὐτοῦ ἡ νέα βενετικὴ σχολή, ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁποίας μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Τζιορτζόνε εἶχε τεθῆ ὁ Τισιανός. Ἐν τούτοις ὅμως οὐδέποτε ἔπαυσε νὰ ὑφίσταται ὁ ἀπεριόριστος ἐκεῖνος σεβασμὸς πρὸς τὸ ἔργον του, ὅστις ἠνάγκαζε τὸν Ντύρερ, ἤδη κατὰ τὸ 1506, νὰ τὸν τάσσῃ μόνον καὶ ἀκαταμάχητον εἰς τὴν κορυφὴν τῆς βενετικῆς σχολῆς. Τὰς τελευταίας δυνάμεις ὁ Ἰωάνης Μπελλίνι ἀφιέρωσεν εἰς τὴν πραγμάτωσιν τῶν προθέσεων τοῦ ἀδελφοῦ του, ὅστις εἶχεν ἀρχίσει, ὡς γνωστόν, τὴν ἀνανέωσιν τῶν διακοσμήσεων τῆς «Σχολῆς τοῦ ἁγίου Μάρκου». Ὁ Ἰωάννης ὄχι μόνον συνεπλήρωσε «Τὸ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ κήρυγμα τοῦ ἁγίου Μάρκου» τοῦ Τζεντίλε, ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ὁ ἴδιος ἤρχισε τῷ 1515 τὴν ἐκπόνησιν μεγάλης συνθέσεως εἰκονιζούσης τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Μάρκου ἐν Ἀλεξανδρείᾳ. Ὁ θάνατός του, συμβὰς τῇ 29ῃ Νοεμβρίου 1516, τὸν ἠμπόδισε νὰ περατώσῃ τὸ ἔργον τοῦτο.

Ἡ τέχνη τοῦ Ἰωάννου Μπελλίνι ἀρχίζει, καθὼς παρετηρήθη ἤδη, ἀπὸ τὴν ἐφαρμογὴν τῶν ἰδεωδῶν, τὰ ὁποῖα διεθέρμαναν τὸν Μαντένια, διὰ νὰ καταλήξῃ εἰς τὴν αὐθυπόστατον καὶ αὐτόνομον δημιουργίαν. Εἶναι εὐχερὲς νὰ παρακολουθήσῃ κανεὶς κατὰ ποῖον τρόπον ὁ καλλιτέχνης ἀπομακρύνεται σὺν τῷ χρόνῳ ἀπὸ τὴν ξηρότητα ἐκείνην, τὸν πρωτόγονον, οὕτως εἰπεῖν, ἀσκητισμόν, τὴν ὑπερβολικὴν ἔξαρσιν τῶν μυῶν, ὅπως μᾶς παρουσιάζονται εἰς τοὺς χαρακτηριστικωτέρους πίνακας τοῦ Μαντένια, διὰ νὰ καταλήξῃ εἰς ἕνα ἰδεῶδες θαυμασίας κομψότητος καὶ θελκτικῆς γλυκύτητος. Ἡ τεχνική του ὑφίσταται διηνεκεῖς μεταβολάς. Κατὰ τὴν ὥριμον ἡλικίαν του φθάνει εἰς μίαν τελειότητα, ἡ ὁποία ἔχει τόσην αὐτάρκειαν, ὥστε δὲν ἔχει σχεδὸν τίποτε νὰ ἐπιθυμήσῃ· δὲν τῆς λείπει οὔτε τὸ θέλγητρον τοῦ χρωματισμοῦ τοῦ Τζιορτζόνε. Κατὰ τὴν περίοδον αὐτὴν ὁ Μπελλίνι δὲν εἶναι πλέον «primitif»· εἶναι εἷς ἐξαίρετος διδάσκαλος ὕφους: ἔχει ἤδη διευρύνει τὴν προοπτικήν του· ἔχει δημιουργήσει «βάθη» πινάκων, τὰ ὁποῖα δύνανται ν' ἀποτελέσουν μεμονωμένους πίνακας ἀξίας τῶν ὀνομαστοτέρων τοπιογράφων ἢ τῶν σπουδαιοτέρων ζωγράφων ἀρχιτεκτονημάτων· ἔχει τόσον ἐξανθρωπίσει τὰ θρησκευτικὰ θέματά του, ὥστε ἡ ἀτμόσφαιρα τῆς οἰκειότητος καὶ τοῦ θάλπους, ἐντὸς τῆς ὁποίας τὰ παρουσιάζει, νὰ συνδεθῇ ἀρρήκτως μὲ τὸ ὄνομά του· δὲν ἔχει παρὰ μόνον ἕνα ἐλάττωμα, ἀπὸ τὸ ὁποῖον οὐδέποτε κατορθώνει ν' ἀπαλλαγῇ ἐξ ὁλοκλήρου: εἶναι «στατικός»· δὲν ὑπάρχει εἰς τὰς συνθέσεις του κίνησις· ἀγνοεῖ τὰς ταραχώδεις ζωηρὰς χειρονομίας· γνωρίζει μόνον τὰς στάσεις τὰς ἄλλοτε ἀφελεῖς, ἄλλοτε ἐπιβλητικὰς καὶ μεγαλοπρεπεῖς, ἄλλοτε πλήρεις κοσμικῆς σχεδὸν ἁβρότητος, ἄλλοτε ἐμπνεομένας ἀπὸ σιγαλόν, συγκεκρατημένον, γαλήνιον πάθος. Ἡ παρατήρησις αὐτὴ ἐπαληθεύεται, ἄν τις παρατηρήσῃ τὸν «Ἅγιον Γεώργιον» τοῦ Πέζαρο ἢ τὴν «Μεταμόρφωσιν» τοῦ Μουσείου τῆς Νεαπόλεως καὶ τὰς ἀπειροπληθεῖς «Παρθένους» τοῦ Μπελλίνι. Ἐν τῇ πρώτῃ τῶν συνθέσεων τούτων, διὰ νὰ περιορισθῶμεν εἰς αὐτὴν καὶ μόνην, ἡ ὅλη παράστασις λούεται ἐντὸς ἀτμοσφαίρας ὀνείρου· αὐτὸς ἔτι ὁ ἵππος τοῦ ἁγίου Γεωργίου ἀνυψώνει τοὺς προσθίους πόδας πρὸ τοῦ δράκοντος μὲ ἔκφρασιν ὑπνοβάτου.

Ὁ Ἰωάννης Μπελλίνι εἶναι ὁ κατ' ἐξοχὴν ζωγράφος τῆς Θεοτόκου. Ἀπειροπληθεῖς εἶναι αἱ ἀπεικονίσεις ταύτης, τὰς ὁποίας ἐξειργάσθη, ποικίλαι δὲ κατὰ τὴν ἔκφρασιν καὶ τὴν στάσιν ὡς ἐπὶ τὸ πολύ, ἀλλὰ καὶ ἐπαναλαμβανόμεναι ἐνίοτε μὲ τόσον λεπτομερειακὰς παραλλαγάς, ὥστε νὰ μὴ καθίσταται εὐχερὴς αἰσθητικῶς ἡ διάκρισίς των. Τὴν Θεοτόκον ὁ Ἰ. Μπελλίνι ἐξεικόνισεν εἴτε φέρουσαν ἐν ἀγκάλαις τὸν Χριστὸν νεκρὸν (Pietà), εἴτε κρατοῦσα τοῦτον ἐν χερσὶ παῖδα. Αἱ τελευταῖαι αὗται συνθέσεις εἶναι καὶ αἱ πολυπληθέστεραι. Γενικὸν χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τῶν «Παρθένων» τοῦ καλλιτέχνου τούτου εἶναι ἡ ἐρασμιότης καὶ ἡ περιπαθὴς γλυκύτης τῆς ἐκφράσεως· φυσικά, δὲν πρόκειται περὶ πινάκων ἐμπνεομένων ἀπὸ ἀληθῆ θρησκευτικὴν κατάνυξιν, ἀπὸ τὸ ἀσκητικὸν ἐκεῖνο πνεῦμα τῆς βυζαντινῆς παραδόσεως, τὸ ὁποῖον τοποθετεῖ ἐξ ὁλοκλήρου καὶ ἀποκλειστικῶς τὴν τέχνην εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ δόγματος καὶ τῆς θείας λατρείας· πρόκειται περὶ ζωγραφικῶν σελίδων, εἰς τὰς ὁποίας τὸ ἀνθρώπινον στοιχεῖον ὑπερτερεῖ καταφανῶς τοῦ θείου καὶ εἰς τὰς ὁποίας ἐμφανίζεται κοσμικότης τις ἐκφράσεως, πάντοτε σεμνή, ἀλλ' ἐνίοτε ὑπερβολική.

Ἐκ τῶν πολυαρίθμων πινάκων, τοὺς ὁποίους κατέλιπεν ὁ Ἰωάννης Μπελλίνι, μνημονεύομεν ἐνταῦθα τοὺς ἀκολούθους: «Ὁ Χριστὸς εἰς τὸν κῆπον τῶν Ἐλαιῶν» (θαυμάσιον τοπίον, προφανέστατα ἀφιστάμενον τῆς βιβλικῆς παραδόσεως· μορφαὶ μαντενίζουσαι· Ἐθνικὴ Πινακοθήκη Λονδίνου), «Pietà» (προφανὴς ἐπίδρασις τῆς τέχνης τοῦ Μαντένια, Μουσεῖον Μπρέρα, Μιλᾶνον), «Ἡ στέψις τῆς Θεοτόκου» (ναὸς Ἁγίου Φραγκίσκου, ἐν Πέζαρο), «Ἡ μεταμόρφωσις τοῦ Χριστοῦ» καὶ «Ἡ Σταύρωσις» (Μουσεῖον Correr, Βενετία), «Ὁ Χριστὸς μεταξὺ τῆς Θεοτόκου καὶ τοῦ ἁγίου Ἰωάννου» (δουκικὸν παλάτιον Βενετίας), «Ὁ Χριστὸς ἐν μέσῳ δύο ἀγγέλων» (Μουσεῖον Correr), «Pietà» (Kaiser Friebrich Museum, Βερολῖνον), ἑτέρα «Pietà» (συλλογὴ Mond, ἐν Λονδίνῳ), ἑτέρα «Pietà» (δημοτικὴ πινακοθήκη Ρίμινι), «Τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Πέτρου», «Ἡ Γέννησις τοῦ Χριστοῦ», «Ὁ ἅγιος Ἱερώνυμος εἰς τὴν ἔρημον» κλπ. (Πέζαρο), «Χριστιανικὴ ἀλληγορία» (Πινακοθήκη Οὐφφίτσι, Φλωρεντία), «Ἡ βάπτισις τοῦ Χριστοῦ» (διὰ τὸν ναὸν τῆς Santa Corona τῆς Βικεντίας), «Ἡ Παρθένος μεταξὺ τῶν ἁγίων Παύλου καὶ Γεωργίου» καὶ «Ἡ Παρθένος μεταξὺ τῆς ἁγίας Μαγδαληνῆς καὶ τῆς ἁγίας Αἰκατερίνης» (Ἀκαδημία Βενετίας). Ἐκ τῶν «Παρθένων» τοῦ Ἰωάννου Μπελλίνι σημειοῦμεν ἐνταῦθα τὰς τοῦ Νιοῦπορτ, τῆς συλλογῆς Τζόνσον ἐν Φιλαδελφείᾳ, τὴν ἐπονομαζομένην Frizzoni τοῦ Μιλάνο, τὴν «Madonna dell'Orto» (ἐν τῷ ὁμωνύμῳ ναῷ τῆς Βενετίας), τὴν τοῦ μουσείου Μπρέρα τοῦ Μιλάνου καὶ τὰς τοῦ Μουσείου τοῦ Βερολίνου, τῆς ἐν Βενετίᾳ Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν, τοῦ Μουσείου τοῦ Τορίνου, τῆς Πινακοθήκης Μορέλλι ἐν Μπέργκαμο κλπ. (βλ. καὶ *Μπελλίνι* Ἰάκωβος).

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

—**Μπελλίνι** (Bellini), ***Λαυρέντιος***. Διαπρεπὴς Ἰταλὸς ἀνατόμος (1643—1704). Ἐσπούδασεν ἐν Πίζῃ ἰατρικήν, ἐν νεαρᾷ δὲ ἡλικίᾳ ἐδημοσίευσε τὸ διάσημον περὶ νεφρῶν σύγγραμμά του «Exercitatio de structura et usu renum» (1662), ἐν ᾧ ἀντιθέτως πρὸς τὰ κοινῶς παραδεδεγμένα ἀνέπτυσσεν ὅτι ὁ νεφρὸς δὲν ἀποτελεῖ αὐτούσιον στερεὸν ὄργανον, ἀλλ' εἶναι ἄθροισμα σωληναρίων. Τὰ σωληνάρια ταῦτα, κείμενα εἰς τὰς πυραμίδας τοῦ Μαλπὶγκ καὶ χρησιμεύοντα πρὸς συλλογὴν οὔρων, ἐκλήθησαν ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ *βελλίνεια σωληνάρια*. Τὸ αὐτὸ ἔτος ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας καὶ τῆς θεωρητικῆς ἰατρικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον Πίζης, λόγῳ δὲ τῆς μεγάλης του ἐπιδόσεως καὶ εἰς τὴν ἀνατομικήν, τῷ ἀνετέθη συγχρόνως καὶ ἡ διδασκαλία τοῦ μαθήματος τούτου. Συνέγραψε: «De urinis et pulsibus, de missione sanguinis de febribus, de morbis capitis et pectoris» (1863), «Opuscula aliquot ad Archibaldum Pitcarnium» (1737) καὶ ἄλλα, εἰς τὰ ὁποῖα προσπαθεῖ διὰ τῆς μηχανικῆς νὰ ἐξηγήσῃ τὰ φαινόμενα τῆς ζωῆς καὶ εἰδικῶς τὴν κυκλοφορίαν τοῦ αἵματος ἀκολουθῶν κατὰ τοῦτο τὰς θεωρίας τοῦ διδασκάλου του Borelli, τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς ἰατρομαθηματικῆς σχολῆς. Εὐρεῖαν διάδοσιν εἰς τοὺς ἰατρικοὺς κύκλους ἔσχε τὸ ἔργον του «Περὶ τῶν φλεβοτομιῶν καὶ τῶν ἐνδείξεων αὐτῶν». Τὴν φλεγμονὴν ἐθεώρει προκαλουμένην οὐχὶ ἔκ τινος ὀξέος, ὡς ἐδόξαζον οἱ ἰατροχημικοί, ἀλλ' ἐξ ἀταξίας τῆς κινήσεως τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος, διὰ τὴν ρύθμισιν τῆς ὁποίας ἡ φλεβοτομία, ὡς μέσον διεγερτικὸν τῆς ταχύτητος τῆς κινήσεως τοῦ ἀρτηριακοῦ αἵματος, ἦν λίαν ἐνδεδειγμένη. Ὁ Μπελλίνι ὤφειλε τὴν μεγάλην φήμην του μᾶλλον εἰς τὰς ἀνατομικάς του γνώσεις ἢ εἰς τὰς ἰατρομηχανικὰς καὶ ἰατροχημικὰς θεωρίας του.

Ο. Ρ.

—**Μπελλίνι** (Bellini), ***Τζεντίλε***. Διάσημος Ἰταλὸς ζωγράφος, υἱὸς τοῦ *Ἰακώβου Μπελλίνι*. Δὲν εἶναι μετὰ βεβαιότητος γνωστόν, ἂν πράγματι οὗτος εἶναι ὁ πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ πατρός του. Ἄλλως τε ἱστορικοί τινες ἠθέλησαν νὰ δεχθοῦν ὅτι εἶναι ἴσως ὁ μόνος υἱὸς αὐτοῦ, ἀμφισβητοῦντες τὴν σχέσιν τοῦ Ἰωάννου Μπελλίνι πρὸς τοὺς λοιποὺς συνεπωνύμους του. Αἱ διασωθεῖσαι περὶ τῆς παιδικῆς του ἡλικίας πληροφορίαι εἶναι ἐξ ἴσου ἀσαφεῖς. Δυνάμεθα ὅμως νὰ γνωρίζωμεν ὅτι ἤρξατο μαθητεύων πλησίον τοῦ πατρός του μετὰ τὴν ἐκ Φερράρας ἐπάνοδον τούτου εἰς Βενετίαν, δὲν ἐβράδυνε δὲ νὰ καταστῇ βοηθὸς καὶ συνεργάτης του. Πρὸ τοῦ 1460 τὸν εὑρίσκομεν ὑπογράφοντα μετὰ τοῦ πατρὸς καὶ ἀδελφοῦ του πίνακα ἀποκείμενον ἐν τῷ Ἁγίῳ Ἀντωνίῳ τῆς Παδούης, κατὰ τὴν αὐτὴν δὲ περίπου ἐποχὴν φέρεται ἐξεργαζόμενος τὰς εἰκόνας τῶν ἁγίων Μάρκου, Θεοδώρου, Ἱερωνύμου καὶ Φραγκίσκου ἐν Ἁγίῳ Μάρκῳ τῆς Βενετίας. Προφανὴς εἶναι ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ἡ ἐπίδρασις τῆς τέχνης τοῦ Μαντένια.

Τὸ πρῶτον ἀσφαλῶς χρονολογημένον ἔργον τοῦ Τζεντίλε Μπελλίνι εἶναι ἡ προσωπογραφία τοῦ Λαυρεντίου Ἰουστινιάνι, ἥτις ἀπόκειται νῦν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Βενετίας καὶ ἥτις ἀνήκει εἰς τὸ ἔτος 1465. Πολὺ ἐνωρίτερον δυνάμεθα νὰ εἴμεθα βέβαιοι ὅτι ὁ Τζεντίλε εἶχεν ἀποκτήσει πλήρη καλλιτεχνικὴν αὐτενέργειαν, διακόψας πᾶσαν ἀπὸ τοῦ πατρός του ἐξάρτησιν, μολονότι δὲν ἔπαυσε νὰ συνεργάζηται μετ' αὐτοῦ. Τῷ 1466 ἀνέλαβε τὴν ἐκτέλεσιν δύο πινάκων διὰ τὴν σχολὴν τοῦ Ἁγίου Μάρκου. Ἦτο ἤδη προσωπικότης. Ὀκτὼ ἔτη μετὰ ταῦτα προῆλθεν εἰς συνεννοήσεις μετὰ τῆς ἐνετικῆς πολιτείας διὰ τὴν ἀνακαίνισιν τῶν τοιχογραφιῶν τῆς αἰθούσης τοῦ Μεγάλου Συμβουλίου ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ, τὰς ὁποίας εἶχον ἐκτελέσει οἱ Τζεντίλε ντὰ Φαμπριάνο καὶ Πιζανέλλο καὶ αἱ ὁποῖαι ἀπὸ τοῦ 1422 ἤδη διέτρεχον τὸν κίνδυνον ὁλοσχεροῦς καταστροφῆς.

Ὁ Τζεντίλε Μπελλίνι προσεφέρθη ν' ἀνακαινίσῃ τὰς τοιχογραφίας ταύτας ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ λάβῃ τὰ ἔξοδά του καὶ νὰ τοῦ ἀπονεμηθῇ μισθὸς 120 δουκάτων κατ' ἔτος, ἱδρυομένου τρόπον τινὰ τοῦ ἀξιώματος τοῦ ἐπισήμου ζωγράφου τῆς Γαληνοτάτης Δημοκρατίας, ἀξιώματος ὅπερ ἐτίμησαν βραδύτερον ὁ Ἰωάννης Μπελλίνι, ὁ Τισιανὸς καὶ ὁ Τιντορέττο. Ὀλίγον βραδύτερον (1479) ἐπεχείρησε τὸ περίφημον ταξίδιόν του εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου μετέβη κατ' ἐπιθυμίαν τοῦ σουλτάνου Μωάμεθ Β' τοῦ Πορθητοῦ, ζητήσαντος παρὰ τοῦ δόγη τῆς Βενετίας τὴν ἀποστολὴν τοῦ καλυτέρου ζωγράφου τῆς χώρας του εἰς τὴν πρωτεύουσάν του. Πληροφορίας περὶ τοῦ ταξιδίου τούτου διέσωσεν εἷς δοῦλος τοῦ Μουσταφᾶ, πρωτοτόκου υἱοῦ τοῦ σουλτάνου, ὀνόματι Ἰωάννης Μαρία Ἀντζιονέλλο. Ὁ Μωάμεθ τὸν ἐπλήρωσε παραγγελιῶν καὶ τιμῶν. Δὲν εἶναι γνωστὸν κατὰ ποῖον τρόπον ὁ Τζεντίλε Μπελλίνι ἐξεπλήρωσε τὰς ἐπιθυμίας τοῦ σουλτάνου. Τὸ διάστημα ἄλλως τε, καθ' ὃ παρέμεινε πλησίον του, ὑπῆρξεν ἱκανῶς βραχύ. Διότι ἤδη κατὰ τὰ τέλη τοῦ 1480 εὑρίσκετο εἰς τὴν Βενετίαν φέρων μεθ' ἑαυτοῦ τὴν θαυμασίαν ἐκείνην προσωπογραφίαν τοῦ Μωάμεθ, ἥτις ἀπόκειται νῦν εἰς τὴν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ συλλογὴν Λαγιὰρ καὶ ἥτις, διὰ τῆς τελείας ἐπεξεργασίας τῶν λεπτομερειῶν, τῆς ἄκρας ἐπιτυχίας εἰς τὸν χρωματισμὸν καὶ τῆς ἐντόνου ἐσωτερικῆς ζωῆς, τὴν ὁποίαν ἀποδίδει, δι' ἐκφράσεως ἐν ταὐτῷ πονηρᾶς καὶ ὀνειροπόλου, δὲν ἁμιλλᾶται ἁπλῶς πρὸς τὰ κάλλιστα σχετικὰ ὑποδείγματα τῆς παλαιᾶς φλαμανδικῆς τέχνης, ὡς παρετήρησε κριτικός τις, ἀλλ' εἶναι ἰδιότυπον ἀριστούργημα εἰς τὴν περιοχὴν τῆς διὰ ζωγραφικῶν μέσων ἀποδόσεως τῆς προσωπικότητος καὶ ἀποκαλύψεως τῆς ψυχῆς.

Δὲν γνωρίζομεν κατὰ τίνα τρόπον ὁ Τζεντίλε Μπελλίνι, ἐπανελθὼν ἀπὸ τὴν Κωνσταντινούπολιν, εἰργάσθη εἰς τὴν διακόσμησιν τῆς αἰθούσης τοῦ Μεγάλου Συμβουλίου ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ. Φαίνεται ὅτι τὸ μέγιστον μέρος τῆς ἀνακαινίσεως ταύτης ἐξετελέσθη ὑπὸ τοῦ Ἰωάννου Μπελλίνι καὶ τῶν διαδεχθέντων τοῦτον Καρπάτσιο, Τισιανοῦ, Βερονέζε καὶ Τιντορέττο. Εἰς τὴν περίοδον ταύτην τοῦ βίου τοῦ Τζεντίλε Μπελλίνι ἀνήκει ἡ θαυμασία «Παρθένος» τῆς συλλογῆς Mond τοῦ Λονδίνου, ἐπὶ πλέον δ' αἱ συνθέσεις ἐκεῖναι, ἐφ' ὧν ἰδίως στηρίζεται ἡ σπουδὴ τοῦ ἔργου του. Εἶναι δ' αὗται αἱ διακοσμήσεις τῆς «antisala» τῆς σχολῆς τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Εὐαγγελιστοῦ, ἀναφερόμεναι εἰς τὰ κυριώτερα θαύματα, ἅτινα ἐπετελέσθησαν ὑπὸ τεμαχίου τοῦ τιμίου σταυροῦ, ἀποκτηθέντος ὑπὸ τῆς σχολῆς κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα. Ὁ πρῶτος τῶν πινάκων τούτων, ἀποκείμενος νῦν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Βενετίας καὶ ἀνήκων εἰς τὸ ἔτος 1496, εἰκονίζει τὸ θαῦμα τῆς ἰάσεως τοῦ υἱοῦ τοῦ Jacomo Salis, πλουσίου ἀστοῦ τῆς Μπρέσκια, κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἑορτῆς τοῦ ἁγίου Μάρκου τοῦ ἔτους 1444. Ὁ δεύτερος πίναξ, ἀνήκων εἰς τὸ ἔτος 1500 καὶ ἀποκείμενος ὁμοίως εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Βενετίας, εἰκονίζει βενετικὴν διώρυγα περιβαλλομένην ὑπὸ παλατίων καὶ πλήρη κόσμου ἐν ἡμέρᾳ τελέσεως θαύματος ὑπὸ τοῦ προμνημονευθέντος τεμαχίου τοῦ τιμίου σταυροῦ. Ὁ τρίτος πίναξ, τέλος, ὀφειλόμενος ἐν μέρει μόνον εἰς τὸν Τζεντίλε Μπελλίνι καὶ χρονολογούμενος ἀπὸ τοῦ 1501, εἰκονίζει τὴν θαυματουργὸν ἴασιν τοῦ Πιέρο ντὶ Λοντοβῖκο κατὰ τὴν πρώτην Κυριακὴν τοῦ Ἰανουαρίου τοῦ ἔτους 1447. Καὶ τὰ τρία ταῦτα ἔργα, μάλιστα δὲ τὰ δύο πρῶτα, διακρίνονται διὰ τὰς μεγάλας καλλιτεχνικάς των ἀρετάς. Ἡ ἀπόδοσις τῶν τοπίων καὶ τῶν ἀρχιτεκτονημάτων ἀποκαλύπτουσα αὐτὸ τὸ ὁποῖον δικαίως ὀνομάζεται «ψυχὴ μιᾶς πόλεως», ἡ ταξιθέτησις τοιούτων πολυπροσώπων συνόλων, ἡ ἔκφρασις τῶν συνόλων τούτων, ἡ δύναμις τοῦ σχεδίου, ἡ εὐρύτης τῆς προοπτικῆς, ἡ ἐνδελεχὴς σπουδὴ τῶν φυσιογνωμιῶν, ἐν αἷς συχνάκις περιλαμβάνονται γνωστὰ πρόσωπα τῆς βενετικῆς κοινωνίας, ἡ ἄκρως ἐπιτυχὴς ἑρμηνεία τῆς ἀτμοσφαίρας, τὴν ὁποίαν δημιουργεῖ ἡ βενετικὴ χλιδή, εἶναι μερικαὶ ἀπὸ τὰς ἀρετὰς ταύτας.

Περὶ τὸ τέλος τοῦ βίου του ὁ Τζεντίλε Μπελλίνι ἀνέλαβε τὴν ἀνακαίνισιν τῆς διακοσμήσεως τῆς σχολῆς τοῦ Ἁγίου Μάρκου. Ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐργασίαν ταύτην τῷ 1504, δύο ἔτη δὲ μετὰ ταῦτα ἀνέθηκε τὴν ἀποπεράτωσιν τῆς συνθέσεως, τὴν ὁποίαν εἶχε κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκτελέσει καὶ ἥτις ἀπεικονίζει τὸ «Κήρυγμα τοῦ ἁγίου Μάρκου ἐν Ἀλεξανδρείᾳ», εἰς τὸν ἀδελφόν του Ἰωάννην. Ἀποθανὼν τῷ 1507 **κατέλιπε τὰ σχέδιά** του εἰς τοὺς μα-

Digitized by Google

θητὰς του Ventura καὶ Girolamo da Santa Croce. Ἄλλους μαθητὰς δὲν γνωρίζομεν ἀσφαλῶς ἂν ἔσχε. Πάντως ὡς συνεργάτας του ἐχρησιμοποίησε τὸν Σεμπαστιάνι, τὸν Μανσουέτι καὶ τὸν Καρπάτσιο.

Ὁ Τζεντίλε Μπελλίνι, ὡς παρατηρεῖ εἷς εὐσυνείδητος βιογράφος καὶ κριτικός του, ὁ E. Gammaerts, ἔμεινε καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ καλλιτεχνικοῦ του σταδίου πιστὸς εἰς τὰς πατρικὰς παραδόσεις, ἀφ' ὧν ἀπέστη, τολμηρὸς ἀνανεωτής, ὁ Ἰωάννης Μπελλίνι. Ὑπῆρξε «primitif» καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν καὶ καθ' ὅλον τὸ βάθος τοῦ ὅρου· ἡ ἁπλοϊκότης του συνεδυάζετο μὲ τὴν δροσερότητα μιᾶς φαντασίας θελγομένης ἀπὸ τὸν θρῦλον καὶ ἐξαπτομένης ἀπὸ τὴν πίστιν. Θηρεύει τὴν γραφικότητα καί, ἐνῷ τεχνικῶς ἐξελίσσεται συνεχῶς, εἰς τὰς ἰδέας καὶ τὰ αἰσθήματα δὲν ἀποδέχεται ἀποτόμους ἀνανεώσεις. Πάντα ταῦτα ὅμως δὲν τὸν ἐμποδίζουν νὰ εἶναι διεισδυτικὸς καὶ ὀξύς, ὅπως ἀπέδειξεν εἰς τὴν προσωπογραφίαν τοῦ Μωάμεθ καὶ εἰς τὴν προσωπογραφίαν τῆς Αἰκατερίνης Κορνάρο, ἥτις ἀπόκειται νῦν εἰς τὸ μουσεῖον τῆς Βουδαπέστης (βλ. *Μπελλίνι*. Ἰάκωβος).

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπελλιντσιόνι** (Bellincioni), ***Τζέμα***. Διάσημος Ἰταλὶς ἀοιδός, γεννηθεῖσα τῷ 1866. Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἐν Νεαπόλει, ταχέως δὲ ἐξελιχθεῖσα εἰς ἐξαιρετικὴν ἀοιδὸν καὶ πρώτης τάξεως ἠθοποιόν, ἐγένετο περιζήτητος ὡς πρωταγωνίστρια τῶν μεγαλυτέρων λυρικῶν θεάτρων τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀμερικῆς. Τῷ 1906 ἔπαιξε καὶ εἰς τὰς Ἀθήνας. Ἤδη διαμένει ἐν Βερολίνῳ ὡς καθηγήτρια τοῦ ᾄσματος.

Γ. Σ.

**Μπελλιντσόνα**, ἢ ***Μπέλλεντς*** (ἰταλ. Bellinzona, γερμ. Bellenz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἑλβετίας, πρωτεύουσα τοῦ καντονίου τοῦ Τεσσίνου, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τεσσίνου, 168 χλμ. πρὸς Ν. ΝΑ. τῆς Λουκέρνης καὶ 32 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Λουγκάνο. Κατέχουσα σπουδαιοτάτην ἀπὸ στρατηγικῆς ἀπόψεως θέσιν, ὑπερησπίζετο ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος ὑπὸ σπουδαιοτάτων φρουρίων καὶ ὀχυρώσεων σῳζομένων μέχρι σήμερον. Κάτ. (1929) 12.050, ἀνήκοντες εἰς τὸ καθολικὸν δόγμα καὶ ὁμιλοῦντες τὴν ἰταλικὴν γλῶσσαν.

Χ. Δ.

**Μπέλλιος**, ἢ ***Βέλλιος, Κωνσταντῖνος, βαρῶνος***—. Μέγας ἐθνικὸς εὐεργέτης (βλ. *Μπέλιος* ἢ Βέλιος Κωνσταντῖνος).

**Μπέλλιου** (Bellew), ***Ἐρρῖκος - Οὐῶλτερ***. Ἄγγλος ἐξερευνητὴς καὶ ἀνατολιστὴς (1834—1892). Ἐχρημάτισεν ἰατρὸς τοῦ στρατοῦ τῶν Ἰνδιῶν, ἐπισκεφθεὶς τὸ Ἀφγανιστάν, Κασμὶρ καὶ Περσίαν. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ἡμερολόγιον πολιτικῆς ἀποστολῆς εἰς Κανταχὰρ τῷ 1857—1858» (1862), «Ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὸν Τίγρητα» (1874), «Τὸ Ἀφγανιστὰν καὶ οἱ Ἀφγανοί» (1879), «Αἱ φυλαὶ τοῦ Ἀφγανιστὰν» (1880).

Γ. Ι. Β.

**Μπέλλμανν** (Bellmann), ***Κάρολος - Μιχαήλ***. Σουηδὸς ποιητὴς (1740—1795). Διετέλεσεν ὑπάλληλος τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης καὶ εἰς διαφόρους ἄλλας ὑπηρεσίας, τὰς ὁποίας ἐγκατέλειψεν, ὡς μὴ δυνάμενος νʼ ἀφοσιωθῇ εἰς συστηματικὴν ἐργασίαν. Μολονότι ἔτυχεν ἐπιχορηγήσεων ἐκ μέρους τοῦ βασιλέως Γουσταύου τοῦ Γ', ἀπέθανεν ἐν δυστυχίᾳ. Τὸ στάδιόν του ἤρχισε μὲ θρησκευτικὰ (Zion Högtig) καὶ ἠθικοσατιρικὰ ποιήματα. Τὰ τελευταῖα εἶναι πλήρη βαθείας θρησκευτικῆς μετανοίας. Ὁ Μπέλλμανν ὑπῆρξεν ὁ δημοτικώτατος ποιητὴς τῶν εὐθύμων ᾀσμάτων τοῦ Βάκχου καὶ τοῦ ἡδυπαθοῦς ἔρωτος. Εἰς τὰ συμπόσια τῆς αὐλῆς καὶ εἰς κύκλους φίλων του συνέθετεν ὅλως αὐτοσχεδίως καὶ ἔψαλλε τὰ πλήρη ζωῆς καὶ χάριτος τραγούδια του, τὰ ὁποῖα ἀνεγράφοντο ὑπὸ τῶν παρισταμένων. Εἰς τὰ «Fredman's Epistlar» καὶ «Fredman's Sanger» ἐμφανίζει ἄλλοτε μὲν πλήρεις χιοῦμορ καὶ ἐναργείας περιγραφὰς τῆς φύσεως καὶ τῆς ζωῆς τῶν κέντρων, ἄλλοτε δὲ σατιρικὰς εἰκόνας τῶν ἐθιμοτυπιῶν τῆς αὐλῆς, τῶν ἄνευ ἠθικῆς ἀστῶν καὶ κολάκων, τῶν στρατιωτικῶν καὶ τῆς ἀθλιότητος τῶν λαϊκῶν μαζῶν. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν εἰς πολυτελῆ ἔκδοσιν ὑπὸ Carlén (1861 εἰς 5 τόμ. καὶ 1881 εἰς 4 τόμ.). Τελευταία ἔκδοσις ὑπὸ R. Steffen (1916). Εἰς τὸν δημόσιον κῆπον τῆς Στοκχόλμης ἀνηγέρθη κολοσσιαία ἐκ χαλκοῦ προτομὴ τοῦ Ἀνακρέοντος τούτου τῆς Σουηδίας τῷ 1829 καὶ ἀνδριὰς τῷ 1872.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *N. Erdmann*, Carl Michael B. (1899).— *F. Niedner*, C. M. B. Der schwedische Anakreon (1905).

Γ. Ε. Κ.

**Μπελλντὸν** (Belledonne) *[Γεωγρ.]*. Ὀρεινὸς ὄγκος γρανιτώδους συστάσεως, ὑψούμενος ἐν τῷ νομῷ Ἰζὲρ τῆς Γαλλίας καὶ ἀποτελῶν τμῆμα τῶν Δελφινικῶν Ἄλπεων. Περιλαμβάνεται μεταξὺ τῶν κοιλάδων Γκραιζιβοντὰν καὶ Ρομὰνς καὶ ἔχει ὑψηλότερον σημεῖον τὴν ὁμώνυμον αὐτῷ κορυφὴν (2.981 μ.).

Χ. Δ.

**Μπέλλο** (Bello), ***Ἀνδρέας***. Ἱσπανοαμερικανὸς ποιητής, φιλόλογος, δημοσιογράφος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Καρακὰς τῆς Βενεζουέλας τῷ 1781 καὶ ἀποθανὼν ἐν Σαντιάγο τῆς Χιλῆς τῷ 1865. Ἦτο υἱὸς διαπρεποῦς δικηγόρου τῆς Βενεζουέλας καὶ ἔτυχεν ἀρίστης κλασσικῆς παιδεύσεως. Τὸ ποιητικόν του τάλαντον ἐξεδηλώθη εἰς ἐπιτυχεῖς μιμήσεις τοῦ Βιργιλίου, τοῦ Ὁρατίου καὶ τοῦ Βολταίρου καὶ εἴς τινα πρωτότυπα ποιήματα, τὰ ὁποῖα ὅμως ἔχουν ἀρκετὸν φόρτον κλασσικῆς σοφίας. Μελετῶν, ἐξ ἄλλου, ἀπὸ τὴν νεότητά του τὸν Καλδερόν, διετήρησε πάντοτε εἰς τὸ ὕφος καὶ τὴν στιχοποιίαν ζωηρὰν τὴν σφραγῖδα τοῦ διδασκάλου καὶ ἠγάπησε τὴν καστιλλιανὴν γλῶσσαν, τῆς καθαρότητος τῆς ὁποίας ἀπέβη ζηλότυπος φύλαξ. Περὶ τὸ 1810 συνέγραψε μίαν «Analisis ideologica de los tiempos de la conjugacion castellana», ἥτις ἐξεδόθη μόλις τῷ 1841 ἐν Βαλπαραΐζο. Γενόμενος δεύτερος γραμματεὺς τῆς κυβερνήσεως τῆς Βενεζουέλας καὶ κατόπιν ἐπίτροπος τοῦ πολέμου, κατεῖχε τὴν θέσιν ταύτην ὅταν τὸ Καρακὰς ἐπανεστάτησε κατὰ τῆς μητροπόλεως (1810). Δύο μῆνας βραδύτερον κατέλιπε διὰ παντὸς τὴν γενέτειράν του, ὡς γραμματεὺς τῆς διπλωματικῆς ἀποστολῆς τῆς ἐπαναστατικῆς κυβερνήσεως τοῦ Καρακάς, ὅπως ἐπιτύχῃ τὴν ὑποστήριξιν τῆς βρεττανικῆς κυβερνήσεως. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἀποστολῆς ταύτης καὶ τὴν κατάπνιξιν τοῦ κινήματος ἀνεξαρτησίας τῆς Βενεζουέλας, ὁ Μπέλλο παρέμεινεν ἐν Λονδίνῳ, ὅπου ἤσκει τὸ ἐπάγγελμα τοῦ καθηγητοῦ διὰ νὰ ζήσῃ. Συνειργάσθη ἐνεργῶς εἰς τὰ περιοδικά, τὰ ὁποῖα ἵδρυσαν οἱ Ἱσπανοαμερικανοὶ φυγάδες ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, παρέχων ἴδια ἄρθρα λογοτεχνικῆς κριτικῆς καὶ φιλολογίας. Μετέφρασε τότε δεκατέσσαρα ᾄσματα τοῦ «Orlando» τοῦ Boiardo, ἓν τεμάχιον ἐκ τῶν «Jardins» τοῦ Delisle καὶ ἐδημοσίευσε (1823—1826) ἀποσπάσματα ἑνὸς ποιήματος περὶ τῆς Ἀμερικῆς, τὸ ὁποῖον οὐδέποτε ἐτελείωσε. Τὰ ἀποσπάσματα ταῦτα, τιτλοφορούμενα «Alocution à la poesia» καὶ «Silva à la Agricultura de la zona torrida», εἶναι ἐκ τῶν τελειοτέρων τεμαχίων τῆς ἱσπανικῆς ποιήσεως.

*Ἀνδρέας Μπέλλο.*

Ἦτο γραμματεὺς τῆς ἐν Λονδίνῳ πρεσβείας τῆς Κολομβίας, ὅταν προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ προέδρου τῆς Χιλῆς διὰ νὰ καταλάβῃ ἐπίσημον θέσιν εἰς τὴν χώραν ταύτην (1829). Ὁ Μπέλλο ἐδέχθη καὶ μεταβὰς εἰς Χιλὴν εὗρε τὴν νεαρὰν δημοκρατίαν φθίνουσαν ἐκ βραδείας κρίσεως, κακῶς ὑποστηριζομένην ὑπὸ ἀσθενοῦς κυβερνήσεως καὶ ἀδιαφοροῦσαν διὰ τὰ γράμματα. Γενόμενος ἀμέσως διευθυντὴς τῆς ἐπισήμου ἐφημερίδος «El Araucano» καὶ ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, προσέφερεν ἐξαιρετικὰς ὑπηρεσίας εἰς τὴν νέαν του πατρίδα. Ἐγένετο ὑποκινητὴς πλείστων μεταρρυθμίσεων καὶ βελτιώσεων ἐν τῇ πολιτικῇ, κοινωνικῇ καὶ διανοητικῇ ζωῇ. Ἐπεδόθη εἰς τὴν λογοτεχνικὴν καὶ φιλολογικὴν διαπαιδαγώγησιν τοῦ λαοῦ τούτου, τὸν ὁποῖον μακροὶ αἱματηροὶ ἀγῶνες εἶχον καταστήσει ἡμιβάρβαρον. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἵδρυσε τὸ κολλέγιον τοῦ Σαντιάγο, ὅπου ἐδίδασκεν ὁ ἴδιος κλασσικὴν φιλολογίαν, ρωμαϊκὸν δίκαιον καὶ πολιτικὰς ἐπιστήμας. Τὸ ἵδρυμα τοῦτο ἀπέβη τῷ 1843 πανεπιστήμιον καὶ ὁ Μπέλλο ὑπῆρξε πρύτανις αὐτοῦ μέχρι τοῦ θανάτου του. Τῷ 1836 ἐδημοσίευσε τὰ μαθήματά του ἐπὶ τῆς «Ortologia y Metrica», ἀπὸ δὲ τοῦ 1842 μέχρι τοῦ 1844 μετέφρασεν ἐλευθέρως καὶ ἀριστοτεχνικῶς τὰ ποιήματα τοῦ V. Hugo: «Fantômes», «Olimpio», «Djinns», «Moise sur le Nil» καὶ «Prière pour tous». Κατόπιν ἐδημοσίευσεν εἰς τὴν ἐφημερίδα: «El crepusculo» τὴν «Teoria del entendimiento», διʼ ἧς ἐγένετο πρόδρομος τῆς σκωτικῆς φιλοσοφίας, εἰς τὸ ἐπίσημον ὄργανον τὸ ὁποῖον διηύθυνε, ἕνα «Proyesto de codigo civil», καὶ βραδύτερον ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν κυριωτέρων συντακτῶν τῆς κωδικοποιήσεως τῶν νόμων τῆς Χιλῆς.

Τῷ 1840 ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον τμῆμα μιᾶς πραγματείας του ἐπὶ τοῦ διεθνοῦς δικαίου («Principios de derecho internationale»), ἥτις ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν, ἐκδοθεῖσα ἐπανειλημμένως. Ἡ ἐφημερὶς «El crepusculo» περιλαμβάνει δύο ἀξιολόγους μελέτας: «Περὶ τῶν ἀρχῶν τῶν ἱπποτικῶν μυθιστορημάτων» καὶ «Περὶ τῆς ἐπιδράσεως τῆς γερμανικῆς ποιήσεως ἐπὶ τῆς ρωμανικῆς ποιήσεως». Ἐπίσης εἰργάσθη ἐπὶ ἔτη διὰ τὴν φιλολογικὴν ἀποκατάστασιν τοῦ μεσαιωνικοῦ ἔπους «Poème du Cid» (ἡ σχετικὴ μελέτη ἐξεδόθη μετὰ θάνατον) καὶ συνέταξε «Gramatica de la lengua castillana» (1847), ἡ ὁποία εἶναι κλασσικὴ εἰς τὸ εἶδός της.

Ὁ Μπέλλο ἀπεκλήθη δικαίως πρίγκιψ τῶν λυρικῶν ποιητῶν τῆς ἱσπανικῆς Ἀμερικῆς. Εἰς τὰ ποιήματά του κυριαρχεῖ μία ὀλυμπία γαλήνη, συνδυασμένη μὲ λεπτὴν μελαγχολίαν, πηγαίαν κομψότητα καὶ ἄφθαστον καθαρότητα γλώσσης. Εἶναι εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων συγγραφέων, οἱ ὁποῖοι ἔχουν χρησιμοποιήσει τὴν καστιλλιανὴν γλῶσσαν, ταυτοχρόνως δὲ καὶ μέγας ἐκπολιτιστὴς καὶ ἀπόστολος τοῦ εὐρωπαϊκοῦ πολιτισμοῦ.

Θ. Π.

—**Μπέλλο** (Bello), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1440—1497). Ἔζησεν ἐν Μαντούῃ καὶ ἐν Φερράρᾳ, ὅπου ἐτυφλώθη καὶ ἀπεκλήθη «Ὁ τυφλὸς τῆς Φερράρας» (Il cieco da Ferrara). Τὸ κυριώτερον ἔργον του, ὅπερ περιεσώθη μέχρις ἡμῶν, εἶναι τὸ ποίημα «Μαμπριάνο», ἀποτελούμενον ἐκ 45 ραψῳδιῶν, ἐν τῷ ὁποίῳ ψάλλονται αἱ περιπέτειαι τῶν ἡρώων τοῦ Καρλομάγνου. Ἀποτελεῖ κυρίως σειρὰν ἐπεισοδίων καὶ διηγημάτων καὶ θεωρεῖται ὅτι ὑπῆρξεν ἡ κυριωτέρα πηγὴ ἐμπνεύσεως τοῦ «Μαινομένου Ρολάνδου» τοῦ Ἀριόστο.

Μ. Δ. Θ.

**Μπελλὸ** (Bellot), ***Ρενὲ-Ἰωσήφ***. Γάλλος θαλασσοπόρος ἐκ Παρισίων (1826—1853). Μετέσχε τῆς εἰς Μαδαγασκάρην ἐκστρατείας καὶ μετὰ μακρὰς θαλασσίας ἐξερευνήσεις μετέσχε τῆς ἀποστολῆς τοῦ Ἄγγλου Κέννεντυ πρὸς ἀνεύρεσιν τοῦ Φραγκλίνου (1851). Βραδύτερον συνώδευσε τὸν Ἰγγλφιλντ κατὰ τὴν πρὸς τὸν αὐτὸν σκοπὸν ἀποστολήν του, ὁπότε καὶ ἀπωλέσθη. Ἔγραψεν: «Ἡμερολόγιον ταξιδίου εἰς τὰς πολικὰς χώρας» (1854). Πρὸς τιμήν του ἐστήθη στήλη ἐπὶ τῆς νήσου Μπῆτσι καὶ μνημεῖον εἰς Γρήνουϊτς, ἀπʼ αὐτοῦ δὲ ὠνομάσθη τὸ μεταξὺ τῶν νήσων Σόμερσετ καὶ Μπούθ στενόν.

—Π.

**Μπελλοβέζος** Γαλάτης ἀρχηγός, ἀκμάσας κατὰ τὸν Τίτον Λίβιον (V, 34) περὶ τὰ τέλη τοῦ Ζ' π. Χ. αἰῶνος. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ γαλατικὸς λαὸς τῆς Κελτικῆς, τοῦ ὁποίου ἐβασίλευεν ὁ Ἀμβιγᾶτος, εἶχεν ἐπὶ τοσοῦτον αὐξηθῆ, ὥστε παρέστη ἀνάγκη μέρος ἐκ τῶν κατοίκων νὰ μετοικήσῃ εἰς ἄλλας χώρας. Ἐσχηματίσθησαν τότε δύο ὁμάδες, αἵτινες ἐτέθησαν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τῶν δύο ἀνεψιῶν τοῦ Ἀμβιγάτου, Σιγοβέζου καὶ Μπελλοβέζου. Καὶ ἡ μὲν πρώτη ἐτράπη πρὸς ΒΑ. καὶ ἐγκατεστάθη εἰς τὰς περὶ τὸν Ἑρκύνιον δρυμὸν (τὸν σημερινὸν Μέλανα δρυμὸν τῆς Γερμανίας) χώρας, ἡ δὲ ὑπὸ τὸν Μπελλοβέζον πρὸς τὴν Ἰταλίαν. Ὁ στρατὸς αὐτοῦ ἀφοῦ ἐπολέμησε πρὸς τοὺς Σαλλουβίους, εὑρισκομένους τότε εἰς πόλεμον πρὸς τοὺς Φωκαεῖς, οἵτινες εἶχον ἀποβιβασθῆ ἐπὶ τῆς παραλίας διὰ νὰ κτίσωσι τὴν πόλιν Μασσαλίαν, διέβη τὰς Ἄλπεις, κατενίκησε τοὺς Ἐτρούσκους, οἵτινες κατῴκουν τὰς κοιλάδας τοῦ Πάδου, καὶ ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Ἰταλίαν, κτίσας τὴν πόλιν Μεδιόλανον (Μιλᾶνον). Βραδύτερον, κατόπιν ἀδείας τοῦ Μπελλοβέζου, νέαι ὁμάδες ἦλθον καὶ ἐγκατεστάθησαν εἰς τὰς πέριξ χώρας, ἱδρύσαντες τὰς πόλεις Βρεσκίαν (Brixia) καὶ Βερώνην.

Χ. Δ.

**Μπελλὸκ** (Belloc), ***Ἰωάννης-Ἱλαρίων***. Γάλλος ζωγράφος (1787—1866). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Γκρὸ καὶ τῷ Ρενιώ. Τῷ 1810 ἐβραβεύθη διὰ πίνακά του εἰκονίζοντα τὸν «Θάνατον τοῦ Gaul, φίλου τοῦ Ὄσσιαν». Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης μέχρι τοῦ 1850 μετέσχε τακτικῶς τῶν παρισινῶν ἐκθέσεων, διηύθυνε δʼ ἐπὶ τεσσαρακονταετίαν μίαν σχολὴν σχεδίου ἐν Παρισίοις. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ταξιδιώτης ἀποπλανηθεὶς ἐν Αἰγύπτῳ» (1812), «Ἡ ἀνάπαυσις τῆς ἁγίας Οἰκογενείας» (1831), «Ὁ θάνατος τοῦ ἁγίου Λουδοβίκου» (1838).

Ι. Μ. Π.

—**Μπελλὸκ** (Belloc), ***Ἰωσὴφ-Ἱλάριος-Πέτρος***. Ἄγγλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1870. Εἶναι υἱὸς τοῦ Γάλλου δικηγόρου Λουδοβίκου Μπελλὸκ καὶ τῆς Μπέσσυ Ραίυνερ Πὰρκς (1829—1925), ἥτις διεδραμάτισε σπουδαῖον πρόσωπον ὑπὲρ τῆς παροχῆς δικαιώματος ψήφου εἰς τὰς γυναῖκας. Ὁ Μπελλὸκ ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης, τῷ δὲ 1902 ἐπολιτογραφήθη Ἄγγλος ὑπήκοος. Ἀπὸ τοῦ 1906 μέχρι τοῦ 1910 διετέλεσε βουλευτής, ἀνήκων κατʼ ἀρχὰς μὲν εἰς τὸ κόμμα τῶν φιλελευθέρων, εἶτα δὲ εἰς τοὺς ἀνεξαρτήτους. Ἔγραψε: «Στίχοι καὶ σοννέτα» (1896), ἱστορικὰς πραγματείας περὶ τοῦ Δαντὸν (1899) καὶ τοῦ Ροβεσπιέρρου ( 901), «Τὸ σύστημα τῶν κομμάτων» (1911), «Τὸ δουλικὸν κράτος» (1912), «Οἱ Ἑβραῖοι» (1922), «Ἡ Εὐρώπη καὶ ἡ θρησκεία».

Α. Δ.

**Μπελλόνα** (Bellona) *[Μυθολ.]*. Ρωμαϊκὴ θεότης τοῦ πολέμου, ἡ αὐτὴ πιθανῶς πρὸς τὴν σαβινικὴν θεότητα Nerio. Θεωρεῖται ἄλλοτε ὡς σύζυγος καὶ ἄλλοτε ὡς ἀδελφὴ τοῦ Ἄρεως. Ἡ λατρεία της ἐκομίσθη εἰς Ρώμην ὑπὸ τῆς σαβινικῆς οἰκογενείας τῶν Κλαυδίων. Τῷ 495 π. Χ. ὁ ὕπατος Ἄππιος Κλαύδιος Ρήγιλλος ἵδρυσε ναὸν τῆς Μπελλόνας, εἰς τὸν ὁποῖον ἀφιέρωσε τὰς εἰκόνας τῶν προγόνων του. Τῷ 296 π.Χ. ὁ Ἄππιος Κλαύδιος Καῖκος, ἐκπληρῶν ὑπόσχεσιν τὴν ὁποίαν εἶχε δώσει κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου κατὰ τῶν Ἐτρούσκων καὶ τῶν Σαμνιτῶν, ἔκτισε νέον ναὸν τῆς Μπελλόνας, ὅστις ἔκειτο ἔξω τῆς πόλεως εἰς τὸ ἄκρον τοῦ πεδίου τοῦ Ἄρεως. Ἐνταῦθα ἡ σύγκλητος ὑπεδέχετο τοὺς νικητὰς στρατηγούς, οἱ ὁποῖοι ἐτέλουν θρίαμβον, καὶ τοὺς πρέσβεις ξένων ἐθνῶν, ὅταν ταῦτα δὲν εἶχον τοιούτους πρὸς τὴν Ρώμην δεσμούς, ὥστε νὰ γίνωνται δεκτοὶ οἱ πρέσβεις των ἐντὸς τοῦ πωμηρίου.

Ἡ Μπελλόνα εἰκονίζετο ὡπλισμένη μὲ δόρυ, μάστιγα καὶ πυρσόν. Αὕτη προφανῶς εἶναι ἡ ἐν τῇ ἑτέρᾳ ὄψει τῶν μεταλλίων τοῦ Βρουττίου καὶ τῆς Λουκανίας, τὰ ὁποῖα εἰκονίζουν τὸν Ἄρην

Digitized by Google

Ἡ ἰταλικὴ αὐτὴ θεότης ἔχει ἐκεῖ ὅλα τὰ χαρακτηριστικὰ τῆς ἑλληνικῆς Ἐνυοῦς, μὲ τὴν ὁποίαν τὴν ἐταύτισαν οἱ Ρωμαῖοι. Μπελλόνα ἐκαλεῖτο ἐπίσης καὶ ἡ μεγάλη σεληνιακὴ θεότης, ἡ λατρεία τῆς ὁποίας, διαδεδομένη καθ' ὅλην τὴν Μ. Ἀσίαν, τὸν Πόντον καὶ τὴν Θρᾴκην, ἔσχε τὴν ἑστίαν της ἐν Κομάνοις τῆς Καππαδοκίας. Ἡ λατρεία αὐτὴ εἰσήχθη εἰς Ρώμην μετὰ τοὺς ἐναντίον τοῦ Μιθριδάτου πολέμους. Ἱδρύθη τότε ναὸς πρὸς τιμὴν τῆς ξενικῆς θεότητος, ἡ ὁποία καὶ ἐταυτίσθη πρὸς τὴν ἰταλικὴν Μπελλόναν. Ἐξυπηρετεῖτο ὑπὸ συλλόγου Καππαδόκων ἱερέων καὶ ἱερειῶν, οἱ ὁποῖοι ἐκαλοῦντο «bellonarii» ἢ «fanatici de aede Bellonae pulvinensis». Κατὰ τὴν ἑορτὴν τῆς θεᾶς οἱ μπελλονάριοι διέτρεχον τὴν πόλιν ὑπὸ τὸν ἦχον σαλπίγγων καὶ τυμπάνων, ἐνδεδυμένοι μέλανα ἐνδύματα, φέροντες κάλυμμα τῆς κεφαλῆς ἐξ ἐρίου καὶ ἀμφίστομον πέλεκυν. — Ω.

**Μπέλλο Ὁριζόντε** (Bello Horizonte) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βραζιλίας, πρωτεύουσα τῆς πολιτείας Μίνας Ζεράες, κειμένη ἐπὶ ὑψιπέδου (1.000 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν), παρὰ τοὺς πρόποδας τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ἐσπινάσο καὶ εἰς ἀπόστασιν 77 χλμ. ΒΔ. ἀπὸ τῆς τέως πρωτευούσης τῆς πολιτείας Οὔρο Πρέτο. Μετὰ τοῦ Ρίου Ἰανεῖρου συνδέεται διὰ τῆς μεγάλης κεντρικῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τῆς Βραζιλίας, ἀπέχει δ' αὐτοῦ πρὸς Β. 625 χλμ. Ἔχει νομικὴν σχολήν, ὡραῖον προεδρικὸν μέγαρον, ἐκτεταμένα πάρκα, θέατρα καὶ συγκοινωνίαν δι' ἠλεκτρικῶν τροχιοδρόμων, εἶναι δὲ ἐκ τῶν ὡραιοτέρων πόλεων τῆς Βραζιλίας. Ἔχει ἐργοστάσια βαμβακερῶν ὑφασμάτων καὶ καπνοβιομηχανίας, εἰς δὲ τὰ περίχωρα ἀνευρίσκεται χρυσός. Κάτοικοι 55.563. Χ. Δ.

**Μπελλόρι** (Bellori), ***Ἰωάννης-Πέτρος***. Ἰταλὸς ἀρχαιολόγος (1615—1696). Ὑπῆρξε βιβλιοθηκάριος τῆς βασιλίσσης Χριστίνας τῆς Σκωτίας κατὰ τὴν διαμονὴν αὐτῆς ἐν Ρώμῃ, ὁ δὲ πάπας ὠνόμασεν αὐτὸν «βιβλιοθηκάριον τῆς πόλεως τῆς Ρώμης». Εἶχε καταρτίσει θαυμασίαν καὶ πλουσιωτάτην βιβλιοθήκην, ἀγορασθεῖσαν μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τοῦ ἐκλέκτορος τοῦ Βραδεμβούργου, ἀποκειμένην δὲ νῦν ἐν ταῖς συλλογαῖς τοῦ μουσείου τοῦ Βερολίνου. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Σημειώσεις περὶ τῆς ἀψῖδος τοῦ Τίτου» (1656), «Βίοι τῶν νεωτέρων ζωγράφων, γλυπτῶν καὶ ἀρχιτεκτόνων» (1672), «Εἰκόνες τῶν παλαιῶν ἐνδόξων φιλοσόφων, ποιητῶν, ρητοροδιδασκάλων καὶ ρητόρων» (1685), «Οἱ ἀρχαῖοι τάφοι, ἤτοι τὰ εὑρεθέντα ἐν Ρώμῃ ρωμαϊκὰ καὶ ἐτρουσκικὰ μαυσωλεῖα» (1704) κτλ. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων τοῦ Μπελλόρι ὑπάρχουν ἐν τῷ «Thesaurus antiquitatum» τῶν Graevius καὶ Gronovius. Μ. Δ. Β.

**Μπελλὸστ** (Belloste), ***Αὐγουστῖνος***. Γάλλος στρατιωτικὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1654 καὶ ἀποθανὼν ἐν Τουρίνῳ τῷ 1730. Ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἀρχιχειρουργὸς καὶ ἔγραψε: «Le chirurgien d'hôpital enseignant la manière douce et facile de guérir promptement touts sortes de playes etc.» (1696), «Suite du chirurgien d'hôpital, du mercure, des maladies des yeux etc.» (1734), «Περὶ ὑδραργύρου» (1756) μετ' ἐπισυνημμένων ὁδηγιῶν περὶ τῆς χρήσεως τῶν ὑδραργυρικῶν καταποτίων (καταπότια Μπελλόστ), ἅτινα κατέστησαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ γνωστόν. Κατὰ τὰς νεκρώσεις τῶν ὀστῶν προέβαινεν εἰς ἀνατρήσεις τούτων διὰ τρυπάνου, πρὸς ἐξαίρεσιν τῶν νεκρωτικῶν παρασχίδων, ἐπαλείφων τὴν τραυματικὴν ἐπιφάνειαν δι' ἰσχυρᾶς μετὰ νιτρικοῦ ὀξέος ὑδραργυρικῆς διαλύσεως, κληθείσης ὑγρὸν τοῦ Μπελλόστ. Ο. Ρ.

**Μπελλόττο** (Bellotto), ***Βερνάρδος***. Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Καναλέττο ὁ νεώτερος*).

**μπελλοῦ** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Πλοιάριον ἱστιοφόρον, ἔχον ὡς μόνον ἱστίον σακκολαίφην. Ἡ ἐπίσημος ὀνομασία του ἦτο *λιβυρνίς*, περιπεσοῦσα ἤδη εἰς ἀχρηστίαν. Εἶναι ὀξύπρυμνον καὶ ἔχει κατάστρωμα. Τοῦ προσπίπτοντος ἀνέμου σχηματίζοντος κατὰ τὴν κόλπωσιν τοῦ ἱστίου σάκκον στρέφοντα τὸν κυρτὸν πυθμένα πρὸς τὰ ἄνω, σχηματίζεται συνιστῶσα κατευθυνομένη πρὸς τὰ ἄνω, ἥτις καθιστᾷ ἀφ' ἑνὸς μὲν τὴν μπελλοῦ ἐλαφρὰν κατὰ τὴν ἐν τῷ κοίλῳ τοῦ κύματος πτῶσίν της, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἀδύνατον τὴν ἀνατροπήν της· διὰ τοῦτο, ἐνῷ μεγάλα πλοῖα δὲν ἐκπλέουν ἐξ Ἑρμουπόλεως λόγῳ κακοκαιρίας, ἡ διὰ τῶν μπελλούδων ἐπικοινωνία τῆς Μυκόνου καὶ τῆς Τήνου πρὸς τὴν Σῦρον οὐδόλως παρακωλύεται. Εἰς τοὺς στόλους μας κατὰ τὸν Ἀγῶνα ἐχρησιμοποιοῦντο αἱ *μπελλοῦδες* ὡς ἀπόστολα ἢ δι' ἄλλας ἐπειγούσης φύσεως ὑπηρεσίας. Σ. Ε. Λ.

**Μπελλουὰ** (Belloy), ***Αὔγουστος***, *μαρκήσιος τοῦ—*. Γάλλος ποιητὴς (1815—1871). Σχετισθεὶς μὲ τὸν Μπαλζάκ, φέρεται ὡς βελτιώσας πρὸ τῆς ἐκδόσεως τὸ πρῶτον τούτου ἔργον «Ὁ ἀφωρισμένος». Ἔγραψε τὰς ἐμμέτρους κωμῳδίας «Καρὰλ Ντυζαρντὲν» (1844), «Δάμων» (1847), ἀναβιβασθείσας ὑπὸ τοῦ θεάτρου Odéon, δράματα, ποιήματα, μυθιστορήματα κλπ., ἓν εἶδος αὐτοβιογραφίας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ ἱππότης τοῦ Ἀι» καὶ μεταφράσεις στίχων τοῦ Τερεντίου (1862) καὶ Πλαύτου (1870). Ἐξέδιδε (1837) τὴν θεατρικὴν ἐπιθεώρησιν «Κουρριὲ ντὲ Παρί». 

—**Μπελλουὰ** (Belloy), ***Ντορμὸν ντὲ —***. Φιλολογικὸν ὄνομα τοῦ Γάλλου δραματικοῦ συγγραφέως *Πέτρου-Λαυρεντίου Μπουυρὲτ* (Buyrette) (1727—1775). Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του, μετέβη εἰς Ρωσίαν, καταλαβὼν διακεκριμένην θέσιν παρὰ τῇ αὐτοκρατείρᾳ Ἐλισάβετ. Τὸ πρῶτόν του ἔργον «Τῖτος» ἐπαίχθη ἐν Πετρουπόλει (1757) καὶ εἰς τὴν Γαλλικὴν κωμῳδίαν (1758), εἰς ἣν ἐσημείωσεν ἀποτυχίαν. Ἐπιτυχίαν ἀντιθέτως ἔσχον τὰ ἑπόμενα ἔργα του «Ζελμίρα» (1762) καὶ «Πολιορκία τοῦ Καλαί» (1770). Διετέλεσε μέλος της Γαλλικῆς Ἀκαδημίας (1771) καὶ ὑπότροφος Λουδοβίκου τοῦ ΙΣΤ'. Ἔγραψεν ἀκόμη τὰ ἔργα: «Γαστὼν καὶ Μπαγιὰρ» (1771), «Πέτρος ὁ Σκληρὸς» (1772), «Γαβριέλλα ντὲ Βερζὺ» (1877) καὶ ἱστορικὰ ἀπομνημονεύματα διὰ τοὺς οἴκους Κουσὺ κ. ἄ. Τὰ ἅπαντά του ἐξέδωκεν ὁ φίλος του Γκαγιὰρ (1779, 6 τόμ.).

— **Μπελλουὰ** (Belloy), ***Πέτρος ντὲ—***. Γάλλος νομομαθής, γεννηθεὶς τῷ 1540. Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ δικαίου εἰς Τουλούζην, διεκρίθη δὲ διὰ τὴν πρὸς τοὺς Βουρβώνους ἀφοσίωσίν του, πολεμῶν τοὺς Γκίζας καὶ ὑποστηρίξας τὰ δικαιώματα Ἐρρίκου τοῦ Δ'. Τοῦ ἀπεδόθη τὸ σύγγραμμα «Καθολικὴ ἀπολογία κατὰ τῶν δυσφημιστικῶν λιβέλλων» (1585) ἐν ᾧ διημφισβητεῖτο τὸ δικαίωμα τοῦ πάπα νὰ γνωματεύῃ ἐπὶ τῆς διαδοχῆς τοῦ γαλλικοῦ θρόνου. Τῷ 1587 ἐδημοσίευσεν ἀνωνυμογράφως «Συλλογὴ στοιχείων περὶ τῆς καταγωγῆς, τῶν συμμαχιῶν καὶ τῆς διαδοχῆς τοῦ βασιλικοῦ οἴκου τῶν Βουρβώνων κτλ», δι' ὃ κατηγορηθεὶς ἐπ' ἀθεΐᾳ καὶ αἱρετισμῷ ἐνεκλείσθη ἐπὶ διετίαν εἰς τὴν Βαστίλλην. Διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ἐρρίκου Δ' ἀντεισαγγελεὺς εἰς τὰ δικαστήρια τῆς Τουλούζης. Ἔγραψε: «Περὶ τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας» (1588), «Περὶ τῆς καταγωγῆς καὶ τῶν ἐθίμων τῶν διαφόρων ἐκκλησιαστικῶν καὶ λαϊκῶν ἱπποτικῶν ταγμάτων» (1604), «Συλλογὴ στοιχείων κατὰ τῶν Ἰησουϊτῶν πρὸς χρῆσιν τῶν πανεπιστημίων» (1552—1624) κ. ἄ. — Π.

**Μπελλοῦνο** (Belluno) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ ἐν Βενέτο. Κάτ. 30.189. Ἔχει βιομηχανίαν ψιαθίνων εἰδῶν, πίλων, δερμάτων, ζύθου, εἰδῶν κεραμευτικῆς καὶ διεξάγει ἀκμαῖον ἐμπόριον ξυλείας, ζῴων, οἴνων καὶ ὀπωρῶν. Εἶναι πόλις παλαιὰ μὲ ὡραίαν μητρόπολιν ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως, κτισθεῖσαν τῷ 1515, γοτθικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Στεφάνου, δημαρχεῖον τοῦ 1400, νομαρχεῖον ἐν τῷ παλαιῷ ἀνακτόρῳ Ρεττόρι καὶ θριαμβευτικὴν ἀψῖδα τοῦ 1815. Ἡ κτίσις τῆς πόλεως ἀποδίδεται εἰς τοὺς Ἐτρούσκους, ἐπὶ δὲ τῶν Ρωμαίων ὠνομάζετο Bellunum (*Βελλοῦνον*). Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀπετέλεσεν ἐλευθέραν κοινότητα, κατόπιν δὲ περιῆλθεν εἰς τὴν δημοκρατίαν τῆς Βενετίας τῷ 1404. Κατὰ τὴν ναπολεόντειον ἐποχὴν ἐγένετο πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ τοῦ Πιάβε (1806—1814), κατὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1917, οἵτινες ἐξεκένωσαν αὐτὴν μετὰ τὸ πέρας τοῦ πολέμου. Τῷ 1873 ὑπέστη μεγάλας καταστροφὰς ἐκ σεισμῶν. Εἶναι πατρὶς πολλῶν ἐξεχόντων ἀνδρῶν τῆς Ἰταλίας καὶ μεταξὺ ἄλλων τοῦ Μάουρο Καππελλάρι, γνωστοῦ ὑπὸ τὸ ὄνομα πάπας Γρηγόριος ΙΣΤ'.

Ὁ *νομὸς* εὑρίσκεται ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Βένετο, μεταξὺ τῶν νομῶν τοῦ Οὔντινε, τῆς Βικεντίας καὶ τοῦ Τρεβίζο. Ἔχει ἔκτασιν 3.675 τ. χλμ. καὶ 234.583 κατ. Διασχίζεται ὑπὸ τῶν Καδορικῶν Ἄλπεων, ὧν αἱ ὑψηλότεραι κορυφαὶ εἶναι ἡ Μαρμολάτα (3.324 μ.) καὶ ἡ Ἀντελάο (3.256 μ.). Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Πιάβε, Ἀντσιέτ, Μποϊτία καὶ Κορνεοβόλε καὶ ἔχει καταστήματα σιδήρου, μολύβδου, χαλκοῦ καὶ θειικοῦ χαλκοῦ. Ἔχει ἄφθονα δάση καὶ ἐξάγει ξυλείαν καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα. Μ. Δ. Β.

**Μπελλφὸν** (Bellefonds), ***Βερναρδῖνος Ζιγκὼ*** (Gigault) *μαρκήσιος τοῦ—*. Γάλλος διπλωμάτης καὶ στρατιωτικὸς (1630—1694). Κατὰ τὰς ταραχὰς τῆς Σφενδόνης κυβερνήτης τοῦ φρουρίου Βαλόνι ἀντέστη μέχρι τῆς εἰρήνης (1649). Ἐπολέμησεν εἰς Καταλωνίαν (1650) καὶ Γουϋέννην (1651) ὑπὸ τὸν κόμητα Ντ' Ἀρκούρ, ὑπερήσπισε τὸ Κονιάκ, ὡς ὑποστράτηγος κατὰ τῶν στασιαστῶν, μετέσχε τῶν ἐπιχειρήσεων τῆς Καστελαμάρε (1654), καὶ διηύθυνε τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Τουρναὶ ὡς ἀντιστράτηγος (1659). Ὑπηρέτησε τὸν δοῦκα τῆς Πάρμας, ἀπεστάλη πρέσβυς εἰς Ἱσπανίαν (1665) καὶ Ὁλλανδίαν (1666), ὅπου ἐπέτυχε συμμαχίαν τοῦ ὁλλανδικοῦ στόλου κατὰ τῶν Ἄγγλων, ἔλαβε τὴν στρατάρχικὴν ράβδον τῷ 1668, διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῶν στρατευμάτων τῆς Ὁλλανδίας (1684) καὶ τῆς Καταλωνίας βραδύτερον, ὅπου ἡττήθη ἐν Ζιρόν. — Π.

**Μπελλφορὲ** (Belleforest), ***Φραγκίσκος ντὲ—***. Γάλλος ἱστορικὸς (1530—1583). Διετέλεσεν «ἱστοριογράφος τοῦ βασιλέως», τὸ ἔργον του δὲ εἶναι σπουδαιότατον διὰ τὴν μελέτην τῆς ἀρχαίας ἱστορίας τῆς Γαλλίας. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῶν ἐννέα Καρόλων τῆς Γαλλίας» (1568) καὶ «Τὰ μεγάλα χρονικὰ τῆς γενικῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας ἀπὸ τῆς καθόδου τῶν Φράγγων» (2 τόμ. 1575), τὸ κυριώτερον αὐτοῦ ἔργον. Ἐπίσης ἐξέδωκεν ἐν διασκευῇ καὶ συμπληρώσει τὰ «Χρονικὰ» τοῦ Καρόλου Ζὶλλ (1573) καὶ τὰς «Ἱστορίας» τοῦ Μπαντέλλο (1580). — Π.

**Μπελλῶ** (Belleau), ***Ρεμί***. Γάλλος ποιητὴς (1528—1577), εἷς τῶν ἑπτὰ τῆς «Πλειάδος». Αἱ κυριώτεραι συλλογαί του ὑπῆρξαν: «Petites inventions» (1557), ἐν τῇ ὁποίᾳ περιγράφει μετὰ πολλῆς χάριτος καὶ πιστότητος ἄνθη, φυτά, ἔντομα κλπ., ἡ «Bergerie» (1565 καὶ 1572), συλλογὴ πεζῶν καὶ ἐμμέτρων ἀναμὶξ συνθέσεων, πολλαὶ ἐκ τῶν ὁποίων θεωροῦνται ὡς μικρὰ ἀριστουργήματα ἀγροτικῆς ποιήσεως, ἰδίως ὁ περίφημος ἀπομείνας «Ἀπρίλης» του, κ. ἄ. Ὁ Ρονσὰρ ἀπεκάλει τὸν Μπελλῶ «ζωγράφον τῆς φύσεως». — Ω.

**Μπέλλως** (Bellows), ***Ἐρρῖκος Οὐΐτνεϋ***. Ἀμερικανὸς κληρικὸς καὶ ἱεροκῆρυξ (1814—1882). Ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Χάρβαρτ, τῷ δὲ 1839 διωρίσθη ἐφημέριος ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ, ὅπου ἀπέκτησε μεγίστην φήμην διὰ τὰ ἀπὸ τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ ἄμβωνος κηρύγματά του καὶ τὰς σχολικὰς παραδόσεις του. Ἐπὶ πολλὰ ἔτη ἀπὸ τοῦ 1846 ἐξέδιδε τὸν «Χριστιανικὸν ἐρευνητήν», καὶ ἐπί τινα χρόνον διηύθυνε τὸν «Χριστιανικὸν ἐξεταστήν». Τῷ 1857 ἔδωκε σειρὰν διαλέξεων ἐν τῷ ἱδρύματι Λόουελλ «Περὶ θεραπείας τῶν κοινωνικῶν νόσων». Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ ἐμφυλίου πολέμου εἰσηγήθη τὴν σύστασιν «Ὑγειονομικῆς Ἐπιτροπῆς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν», τῆς ὁποίας καὶ ὑπῆρξεν ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τέλους τοῦ πολέμου πρόεδρος (1861—1878). Διετέλεσεν ἐπίσης πρόεδρος τῆς πρώτης πρὸς μεταρρύθμισιν τῶν πολιτικῶν ὑπηρεσιῶν συσταθείσης ἐν Ἡνωμέναις Πολιτείαις ἐπιτροπῆς (1877), διωργάνωσε διαφόρους συνδέσμους, καὶ τῷ 1865 προεκάλεσε καὶ διωργάνωσε τὴν διεθνῆ διάσκεψιν τῶν Μοναδιστικῶν καὶ ἄλλων χριστιανικῶν Ἐκκλησιῶν, διετέλεσε πρόεδρος τοῦ συμβουλίου ἀπὸ τοῦ ἔτους 1865 μέχρι 1880. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀξιολογώτερα εἶναι: «Τὸ χριστιανικὸν δόγμα εἰς 24 λόγους» (1860), «Νομιμοφροσύνη ἄνευ ὅρων» (1863), «Ὁ παλαιὸς κόσμος ἐν τῇ νέᾳ αὐτοῦ μορφῇ: Ἐντυπώσεις ἐξ Εὐρώπης τῷ 1867—1868» (1868—1869), «Εἴκοσι τέσσαρες λόγοι» (1886). Γ. Ι. Β.

—**Μπέλλως** (Bellows), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος φιλάνθρωπος καὶ λεξικογράφος (1831—1902). Κατ' ἀρχὰς τυπογράφος, ἐπεχείρησε κατόπιν πολλὰ ταξίδια εἰς Ρωσίαν καὶ Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ἔσπευσε πρὸς βοήθειαν τῶν Ἀρμενίων, τῷ δὲ 1870 διένειμε μετ' ἄλλων τρόφιμα καὶ ἐνδύματα εἰς τὰ θύματα τοῦ πολέμου ἐν Γαλλίᾳ. Εἰργάσθη ἐπὶ πλέον μετὰ ζήλου πρὸς βοήθειαν τῶν εἰς Καναδᾶν ἐκπατρισθέντων Ρώσων *Ντουχομπόρτσιοι* (1898). Ὁ Μπέλλως συνέγραψε: «Λεξικὸν πρὸς χρῆσιν τῶν ἱεραποστόλων, ἐξερευνητῶν καὶ σπουδαστῶν γλωσσῶν», ὡς καὶ μικρὸν ἀγγλογαλλικὸν καὶ γαλλοαγγλικὸν λεξικόν. Γ. Ι. Β.

**Μπέλμεθ** (Belmez) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Κορδούης, κειμένη ἐπὶ τῆς Σιέρρα Μορένα. Δεσπόζει πλουσίας καὶ ἐκτεταμένης γαιανθρακοφόρου περιοχῆς. Κάτ. 10.151. Χ. Δ.

**Μπέλμοντ** (Belmont) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Νοτιοαφρικανικῆς Ἑνώσεως ἐν τῇ χώρᾳ τοῦ Ἀκρωτηρίου, 80 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Κιμπερλέϋ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς, καὶ 40 χλμ. πρὸς Β. τοῦ ποταμοῦ Ὀράγγη. Παρ' αὐτὴν συνήφθη τὴν 11 Νοεμβρίου 1899 ἡ πρώτη μάχη τοῦ Ἀγγλοβοερικοῦ πολέμου, καθ' ἣν οἱ Ἄγγλοι, προελαύνοντες πρὸς τὸ Κιμπερλέϋ, ἀπώθησαν τοὺς Μπόερς πρὸς τὸ Μόντερ-Ρίβερ.

—2) Πόλις τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομητείᾳ Μίντλεσεξ τῆς πολιτείας Μασσαχουσέττης, κειμένη 9,5 χλμ. ΒΔ. τῆς Βοστώνης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Χρησιμεύει ὡς διαμονητήριος περιοχὴ τῆς Βοστώνης καὶ τοῦ Καῖμπριτς καὶ ἔχει ἔκτασιν 13.000 τ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 12.256 κατ. Ἐν αὐτῇ κεῖται τὸ μέγα δι' ἀναρρωννύοντας γενικὸν νοσοκομεῖον τῆς Μασσαχουσέττης, ἱδρυθὲν τῷ 1876, καὶ ἄλλα νοσοκομεῖα καὶ ἀναρρωτήρια. Χ. Δ.

**Μπέλμοντ** (Belmont), ***Αὔγουστος***. Ἀμερικανὸς τραπεζικὸς καὶ διπλωμάτης (1816—1890). Τῷ 1837 ἐγκατεστάθη ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Τραπέζης Ρότσχιλδ, τῷ 1853 διωρίσθη ἐπιτετραμμένος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ἐν Χάγῃ καὶ τῷ 1855 προήχθη εἰς πρεσβευτήν. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον ἐν Ἀμερικῇ πόλεμον ὑπεστήριξε τοὺς Ἑνωτικούς, ἤσκησε δὲ πᾶσαν τὴν ἐπιρροήν του παρὰ τοῖς ἐμπόροις καὶ τραπεζίταις τῆς Ἀγγλίας καὶ Γαλλίας ὑπὲρ τῶν Βορείων.

—**Μπέλμοντ** (Belmont), ***Πέρρυ***. Ἀφρικανὸς πολιτικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1851. Διετέλεσε μέλος τοῦ κογκρέσσου (1881—1889), πρόεδρος τῆς ἐπὶ τῶν Ἐξωτερικῶν ἐπιτροπῆς καὶ τῷ 1889 διωρίσθη πρεσβευτὴς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς ἐν Ἱσπανίᾳ. Γ. Ι. Β.

**μπέλμπερης** (ὁ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὴν *φωσωνίδα*. *Κοντραμπέλμπερης* καλεῖται ἡ *σιπαρίς*. Σ. Ε. Λ.

Digitized by Google

**Μπέλντιμαν** (Beldiman), ***Ἀλέξανδρος.*** Μολδαυὸς λόγιος (1750—1825). Ἀνῆκεν εἰς ἀρχαίαν καὶ ἐπιφανῆ οἰκογένειαν καὶ ἔγραψεν: «Αἱ τραγωδίαι», ἐν ᾧ ἔργῳ περιγράφει τὰς περιπετείας τῆς Μολδαυΐας κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821, «Ὁ θάνατος τοῦ Ἄβελ» (1818), «Νουμᾶς Πομπίλιος» (1820), «Ὀρέστης» (1820). Γ. Ι. Β.

**Μπελντιτσεάνο** (Beldiceano), ***Νικόλαος.*** Ρουμᾶνος ποιητὴς (1844—1896). Ἔγραψε βουκολικὰ ποιήματα καὶ ἄλλα πλήρη μελαγχολικοῦ καὶ απαισιοδόξου τόνου. Γ. Ι. Β.

**Μπελογκραντσὶκ** *[Γεωγρ.].* Κώμη τῆς Βουλγαρίας εἰς ἀπόστασιν 50 χλμ. ΝΔ. τοῦ Βιδδινίου, παρὰ τὰ σύνορα τῆς Γιουγκοσλαυίας. Ν. Μ.

**Μπελογκραντσίσκο** ***βαστάνιε.*** Βουλγαρικὴ ἐπανάστασις κατὰ τοῦ τουρκικοῦ ζυγοῦ, γενομένη τῷ 1860. Κυρία ἀφορμὴ ταύτης ὑπῆρξεν ἡ φορολογική ἐπιβάρυνσις, ἡ ἐπιβληθεῖσα ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν εἰς τὰς περιφερείας τῶν πόλεων Λόμ, Μπελογκράντσικ καὶ Βιδδινίου καὶ γενικώτερον ἡ πιεστικὴ διοίκησις τοῦ Χουσεῒν πασᾶ. Ὡς ἡμέρα ἐξεγέρσεως ὡρίσθη ἡ τῆς ἑορτῆς τῆς Μεταμορφώσεως τοῦ Σωτῆρος, καθ' ἣν συγχρόνως ἔδει νὰ ἐκραγῇ ἡ ἐπανάστασις καὶ εἰς τὰς τρεῖς ὡς ἄνω πόλεις. Πρὸ ταύτης ὅμως οἱ πρωταίτιοι συλληφθέντες ὑπὸ τῶν ἀρχῶν κατεκρεουργήθησαν. Ἡ ἐπανάστασις ἐξερράγη τὴν ὁρισθεῖσαν ἡμέραν καὶ εἰς τὰς τρεῖς πόλεις, ἔλαβον δὲ μέρος εἰς ταύτην ἄνω τῶν δεκαπέντε χιλιάδων ἐπαναστατῶν, τῶν περισσοτέρων ὡπλισμένων διὰ πελέκεων καὶ δρεπάνων. Ἡ κινητοποίησις τουρκικοῦ στρατοῦ κατέστειλεν εὐκόλως τὴν ἐπανάστασιν, ἀντιπροσωπεία δὲ τῶν τριῶν πόλεων μεταβᾶσα εἰς Κωνσταντινούπολιν, κατώρθωσε νὰ ἀποσπάσῃ ἐκ τῆς Ὑψηλῆς Πύλης βεράτιον, δυνάμει τοῦ ὁποίου αἱ γαῖαι, ἀφαιρούμεναι ἐκ τῶν Τούρκων κτηματιῶν καὶ σπαχήδων, ἀπεδίδοντο εἰς τοὺς Χριστιανούς, θεωρούμεναι κοινοτικαί. Τ. Β.

**Μπελὸν** (Belon), ***Πέτρος.*** Γάλλος βοτανολόγος καὶ φυσιολόγος (βλ. λ. *Βελλώνιος* Πέτρος).

**Μπελόττο** (Belotto ἢ Bellotto), ***Βερνάρδος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Καναλέττο ὁ νεώτερος*).

**μπελοῦ** (ἡ): εἶδος λιβυρνίδος (βλ. λ. *μπελλοῦ*).

**Μπελοῦσι** *[Γεωγρ.].* —1) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Αἰτωλικοῦ τῆς ἐπαρχίας Μεσολογγίου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας. Κάτ. (1928) 45.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ζακύνθου, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει Τ. Τ. Τ. γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 780.

— 3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Συκιές* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπελουτσιστὰν** (Béloutchistan) *[Γεωγρ.].* Κράτος τῆς Ἀσίας (βλ. λ. *Βελουχιστάν*).

**Μπέλοχ** (Beloch), ***Κάρολος - Ἰούλιος.*** Γερμανὸς ἱστορικὸς (1854—1929). Ἐγκατασταθεὶς ἐν Ἰταλίᾳ, ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἱστορίας, τῆς γεωγραφίας καὶ τῆς ἱστορίας τῶν πληθυσμῶν τοῦ ἐν Ρώμῃ πανεπιστημίου (1879). Κατ' ἀρχὰς ἠσχολήθη μὲ τὴν γεωγραφίαν καὶ τὴν φυσιογνωσίαν. Ἡ τελευταία αὐτὴ ἔφερε τοῦτον ἐγγὺς εἰς τὸ πρόβλημα τοῦ πληθυσμοῦ ἐν τῇ ἀρχαιότητι. Μὲ τὸ ζήτημα τοῦτο, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τοὺς πολέμους, τὴν διατροφὴν καὶ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς γεωργίας, ἠσχολήθη ὅλως ἰδιαιτέρως ὁ Μπέλοχ, παραμένει δὲ κλασσικὸς ὁ ὑπ' αὐτοῦ γενόμενος ὑπολογισμὸς τοῦ πληθυσμοῦ τοῦ ἀρχαίου κόσμου. Κατὰ τὰς ἱστορικάς του ἐρεύνας δὲν περιορίζεται μόνον εἰς τὴν πολιτικὴν ἱστορίαν, ἀλλ' ἐπεκτείνεται καὶ ἐπὶ τῆς ἱστορίας τοῦ πολιτισμοῦ, τῆς κοινωνίας καὶ τῆς οἰκονομίας. Ἡ ἐπιστήμη, ἡ θρησκεία, ἡ τέχνη, ἡ ἀτομικὴ καὶ ἐθνικὴ οἰκονομία ἐξετάζονται πάντοτε εἰς τὸ ἔργον του. Ἕνεκα δὲ τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἐκτιμήσεως τῆς σπουδαίας θέσεως τῆς οἰκονομίας ἐν τῇ ἱστορικῇ ἐξελίξει, ἐθεωρήθη παρά τινων ὡς ὀπαδὸς τοῦ ἱστορικοῦ ὑλισμοῦ. Τοῦτο ὅμως δὲν ἀνταποκρίνεται εἰς τὴν ἀλήθειαν, διότι, ὡς ὁ ἴδιος ὁμολογεῖ, οὐσιῶδες θεωρεῖ τὴν πνευματικὴν ἐξέλιξιν, χωρὶς τοῦτο νὰ τὸν ἐμποδίζῃ ὅπως ἐκτιμήσῃ πλήρως καὶ τὸν οἰκονομικὸν συντελεστήν. Ὁ Μπέλοχ ὑπῆρξε μέγας φιλέλλην, ἐπεσκέφθη πολλάκις τὴν Ἑλλάδα καὶ ἀνεκηρύχθη τῷ 1912 ἐπίτιμος διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῶν Ἀθηνῶν. Ἐκ τῶν ἔργων του διακρίνονται: «Καμπανία, ἱστορία καὶ τοπογραφία τῆς ἀρχαίας Νεαπόλεως καὶ τῶν περιχώρων της» (1879, 2α ἔκδ. 1890), «Ἡ Ἰταλικὴ ἕνωσις, ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τῆς Ρώμης» (1880), «Ἡ ἀπὸ τοῦ Περικλέους ἀττικὴ πολιτική» (1884), «Ὁ πληθυσμὸς τοῦ ἑλληνικοῦ καὶ ἰταλικοῦ κόσμου» (1886), «Storia greca» (1ον μέρος: «La Grecia antichissima» (1891), «Ἑλληνικὴ ἱστορία» (1893—1927).

[*Δ. Καλιτσουνάκι,* Ἰούλιος Beloch ἐν «Ἀρχ. οἰκονομ. καὶ κοινων. ἐπιστημῶν» 1929]. —Ω.

**Μπελπάσσο** (Belpasso) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κατάνης τῆς Σικελίας. Κάτ. 10.525. Κεῖται ἐπὶ τῶν νοτίων πλευρῶν τῆς Αἴτνης καὶ ἔχει ἀκμάζουσαν ἀμπελουργίαν. Ἐκτίσθη τῷ 1695 ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς πόλεως Μαλπάσσο, καταστραφείσης τῷ 1669 ἐξ ἐκρήξεως τῆς Αἴτνης. Μ. Δ. Β.

**Μπέλπερ** (Belper) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντέρμπυ. Ἔχει βιομηχανίας βαμβακερῶν ὑφασμάτων καὶ χάρτου. Κάτ. 11.640. Χ. Δ.

**Μπέλτ** (Belte) *[Παραλ. Γεωγρ.].* Δύο πορθμοὶ ἑνοῦντες τὸν Καττεγάτην μὲ τὴν Βαλτικὴν θάλασσαν (βλ. λ. *Βέλται*).

**μπελτὲς** (ὁ), ἢ *πελτές*· παρασκεύασμα ἐκ τοῦ χυμοῦ τῆς τομάτας, χρησιμοποιούμενον ἐν τῇ μαγειρικῇ ‖ γλυκὸ τοῦ βάζου παρασκευαζόμενον ἐκ τοῦ χυμοῦ ὀπωρῶν καὶ σακχάρεως, π. χ. *μπελτὲς κυδώνι* (βλ. λ.).

— *[Μαγειρ.]* Πρὸς παρασκευὴν τοῦ *μπελτὲ* ἐκλέγομεν τομάτες ὥριμες, τὰς πλύνομεν, τὰς ἁλατίζομεν καὶ τὰς ἀφίνομεν ἐπ' ὀλίγον εἰς τὸν ἥλιον νὰ μαρανθοῦν. Κατόπιν τὰς στίβομεν ἐντὸς λεπτοῦ τρυπητοῦ, οὕτως ὥστε νὰ διέλθῃ ἐκ τῶν ὀπῶν αὐτοῦ ὁ χυμὸς ἀπηλλαγμένος τῶν σπόρων καὶ τοῦ φλοιοῦ τῆς τομάτας. Τὸν χυμὸν ἁλατίζομεν καὶ βράζομεν μέχρις ὅτου πολτοποιηθῇ ἢ τὸν ἐκθέτομεν εἰς τὸν ἥλιον ἐπὶ ἡμέρας, ἀναταράσσοντες αὐτὸν καθ' ἑκάστην μέχρις ὅτου λάβῃ τὴν ἀπαιτουμένην πυκνότητα. Ὁ μπελτὲς φυλάσσεται εἰς δοχεῖα ὑάλινα ἢ πήλινα. Εἰς ἕκαστον δοχεῖον θέτομεν ὀλίγον ἔλαιον, διὰ νὰ μὴ πιάσῃ μούχλα, καὶ τὸ πωματίζομεν καλῶς. Μ. ΔΡ.

**Μπελτζιογιόζο** (Belgiojoso) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Παβίας τῆς Λομβαρδίας. Κάτ. 3.571. Ἔχει μεγαλοπρεπὲς παλαιὸν καὶ ἀνακαινισθὲν ἐσχάτως ἀνάκτορον τῆς οἰκογενείας τῶν Μπελτζιογιόζο καὶ εἶναι σημαντικὸν ἐμπορικὸν καὶ γεωργικὸν κέντρον τυροῦ, σιτηρῶν καὶ χοιρινῶν ἀλιπάστων. Ἔχει ἐπίσης χυτήριον σιδήρου καὶ ἐργοστάσια μετάξης. Μ. Δ. Β.

**Μπελτζιογιόζο** (Belgiojoso), ***Χριστίνα,*** *κόμισσα* —. Ἰταλὶς λογία (1808—1871) (βλ. λ. *Τριβούλτσιο, πριγκίπισσα τοῦ Μπελτζιογιόζο*).

**Μπελτράμε** (Beltrame). Ἐν τῶν πολλῶν σταθερῶν προσώπων τῆς παλαιᾶς ἰταλικῆς κωμῳδίας, δημιουργηθὲν ὑπὸ τοῦ ἐκ Βερτσέλλι τῆς Ἰταλίας κωμικοῦ ἠθοποιοῦ καὶ θεατρικοῦ συγγραφέως Νικολάου Μπαρμπιέρι, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἡ ἐκ τοῦ προχείρου ἢ ἔντεχνος λεγομένη κωμῳδία (commedia dell'arte) ἦτο δημοτικωτάτη, ἰδίως ἐν Γαλλίᾳ, ὅπου ὁ καρδινάλιος Μαζαρῖνος, θέλων νὰ κολακεύσῃ τὴν Μαρίαν τῶν Μεδίκων, εἶχε καλέσει ἐπανειλημμένως διαφόρους θιάσους ἐξ Ἰταλίας πρὸς διασκέδασιν τῆς βασιλίσσης διὰ τῆς παραστάσεως εἰς τὴν αὐλὴν διαφόρων ἔργων καὶ κυρίως κωμῳδιῶν εἰς τὴν μητρικήν της γλῶσσαν. Τὸ πρόσωπον τοῦτο ἐνεφανίζετο εἰς τὰς κωμῳδίας ὁτὲ μὲν ὡς πατὴρ ὀλίγον τι ἀπότομος καὶ φιλάργυρος, ἀλλ' ἐπιεικὴς καὶ λογικός, ὁτὲ δὲ ὡς σύζυγος ἀνεξίκακος καὶ μακρόθυμος, προσποιούμενος ὅτι πιστεύει ὅσα ψεύδη τοῦ διηγοῦντο πρὸς παραπλάνησιν, ἀλλ' ἐκδικούμενος πάντοτε ἐπιστάσης τῆς ὥρας. Εἶχε ποιάν τινα ἀναλογίαν πρὸς τὸν Πανταλόν, ἀλλ' ἦτο ὀλιγώτερον αὐτοῦ ἁπλοϊκὸς καὶ γελοῖος, κρύπτων ὀξύνοιαν καὶ λεπτότητα ὑπὸ τὸ προσποιητὸν ἁπλοϊκόν του ὕφος.

*Ὁ τύπος τοῦ Μπελτράμε ὡς τὸν ἐδημιούργησεν ὁ Μπαρμπιέρι.*

**Μπελτραμέλλι** (Beltramelli), ***Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς συγγραφεὺς (1880—1930). Ἐσπούδασε πολιτικὰς ἐπιστήμας ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν ἐν Ρώμῃ, συνεργασθεὶς εἰς τὴν «Τριμποῦνα», τὴν «Πάτρια», «Γκαζέττα ντὲλ Πόπολο» τοῦ Τουρίνου, «Ρέστο ντὲλ Καρλῖνο» τῆς Βολωνίας, «Μεσσατζέρο», «Ἰντέα Νατσιονάλε» τῆς Ρώμης κτλ. καὶ τέλος εἰς τὸ σατιρικὸν περιοδικὸν τῆς Ρώμης «Τραβάζο ντέλλε Ἰντέε». Διετέλεσε πολεμικὸς ἀνταποκριτὴς τοῦ «Ἑσπερινοῦ Ταχυδρόμου» τοῦ Μιλάνου ἐν Ἀνατολῇ, Β. Εὐρώπῃ καὶ Λιβύῃ καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς τὸ γραφεῖον τύπου τοῦ γενικοῦ ἰταλικοῦ ἐπιτελείου. Ἵδρυσε καὶ διηύθυνε τὸ παιδικὸν περιοδικὸν «Τζίρο, τζίρο τόντο» καὶ ἔγραψε πλεῖστα μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ γριὰ μητέρα» (1900), «Οἱ πρωτότοκοι» (1905), «Τρία κοριτσάκια γιὰ πούλημα» (1920) κτλ. Ἐπίσης ἐξέδωκε τὰς ποιητικὰς συλλογάς: «Τραγούδια τοῦ Φαύνου» (1908), «Ἱστορίες εἰκόνων» (1915) κτλ., ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις, μονογραφίας, βιβλία διὰ παιδιὰ («Τὸ δένδρον τῶν μαγισσῶν» 1907, «Ἡ εὔθυμη Κακίπολι» 1920 κτλ.), τινὰ τῶν ὁποίων ἔσχον μεγάλην δημοτικότητα, καθὼς καὶ τὰ ἔργα «Ὁ νέος ἀνὴρ» (Μουσσολίνι) (1923), «Αἱ τρεῖς περίοδοι» (1929) κτλ. Ἔλαβεν ἐπίσης μέρος εἰς τὴν πολιτικήν, ταχθεὶς πρὸς τὸ μέρος τῶν ἐθνικοφρόνων κατ' ἀρχὰς καὶ τῶν φασιστῶν κατόπιν, ἔγραψε δὲ τὰ σατιρικὰ διὰ τοὺς ἀντιπάλους του ἔργα: «Οἱ ἐρυθροὶ» (1904) καὶ «Ὁ ἱππότης τῆς μουστάκας» (1921). Τῷ 1929 εἶχεν ἐκλεγῇ μέλος τῆς βασιλικῆς Ἀκαδημίας τῆς Ἰταλίας. Μ. Δ Β.

**Μπελτράμι** (Beltrami), ***Εὐγένιος.*** Διακεκριμένος Ἰταλὸς μαθηματικὸς (1835—1900). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ἀναλύσεως εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βολωνίας (1862), τῆς γεωδαισίας εἰς τὸ τῆς Πίζας (1863) καὶ τῆς μηχανικῆς εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Βολωνίας (1866) καὶ τῆς Ρώμης (1873), ἀπὸ δὲ τοῦ 1876 ἐδίδαξε φυσικὴν μετὰ μαθηματικῶν ἀποδείξεων εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παυίας. Πολλαὶ καὶ σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ πρωτότυποι ἐργασίαι αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γεωμετρίας καὶ τῆς ἀναλύσεως, δημοσιευθεῖσαι εἰς τὰ «Μαθηματικὰ Χρονικὰ» καὶ τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Μαθηματικῶν» τῆς Νεαπόλεως, καθὼς καὶ εἰς τὰ «Πρακτικὰ τοῦ Λομβαρδικοῦ Ἰνστιτούτου» τοῦ Μιλάνου. Τὸν ἀπησχόλησαν ἐπίσης αἱ θεωρίαι τῆς ἐλαστικότητος, τοῦ ἠλεκτρισμοῦ καὶ τῆς ὑδροδυναμικῆς, ἐδημοσίευσε δὲ ἐνδιαφερούσας μελέτας ἐπὶ τῆς κινητικῆς τῶν ὑγρῶν, τῆς ἕλξεως τῶν ἐλλειψοειδῶν, τῆς δυναμικῆς συναρτήσεως κ. ἄ. Ὑπῆρξε μέλος τῆς ἀκαδημίας τῶν Λυγκέων (τῆς Ρώμης) καὶ τῆς ἀκαδημίας τῆς Βολωνίας καὶ ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς ἀκαδημίας τῶν Παρισίων. —Ω.

— **Μπελτράμι** (Beltrami), ***Λουκᾶς.*** Σύγχρονος Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς ἐν Μιλάνῳ τῷ 1854. Διέμεινεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Παρισίοις, ἐπιστρέψας δὲ τῷ 1880 εἰς τὴν γενέτειραν ἀνέλαβε κατ' ἀρχὰς ὑπηρεσίαν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ Μπρέρα, μετὰ ταῦτα δ' ἐγένετο διευθυντὴς τῆς ὑπηρεσίας διὰ τὴν διατήρησιν τῶν λομβαρδικῶν μνημείων. Ἔλαβεν ἐπιτυχῶς μέρος εἰς διαγώνισμα διὰ τὴν ἀνακαίνισιν τῆς προσόψεως τοῦ περιφήμου μητροπολιτικοῦ ναοῦ τοῦ Μιλάνου, διέσωσε δ' ἀπὸ τῆς πλήρους κατερειπώσεως τὸ ὀνομαστὸν φρούριον τῶν Σφόρτσα ἐν τῇ αὐτῇ πόλει, διευθύνας τὰς ἐργασίας τῆς ἀνακαινίσεώς του. Εἰς τὸν Μπελτράμι ἡ λομβαρδικὴ τέχνη ὀφείλει τινὰς τῶν σοφωτέρων, διεξοδικωτέρων καὶ αἰσθητικωτέρων μελετῶν, ὅσαι ἐγράφησαν περὶ αὐτῆς, ἡ δὲ Ρώμη καὶ τὸ Μιλᾶνον ἀξιολογωτάτας οἰκοδομὰς (Ἐμπορικὴ τράπεζα τῆς Ἰταλίας ἐν Ρώμῃ καὶ Μιλάνῳ, Νέα Πινακοθήκη τοῦ Βατικανοῦ). Ὁ Μπελτράμι ἐξελέγη τρὶς βουλευτής, ἀπὸ δὲ τοῦ 1905 γερουσιαστής. Ἐκ τῶν μελετῶν του μνημονεύομεν τὰς ἀκολούθους: «Il codice di Leonardo da Vinci nella biblioteca del principe Trivulzio in Milano trascritto ed annotato» (Μιλᾶνον 1891), «La Certosa di Pavia» (Μιλᾶνον, 3η ἔκδ. 1924), «Ambrogio Fossano detto il Bergognone» (Μιλᾶνον, 1895), «Roma Finis Saeculi» (Τουρῖνον, 1899), «Il Cenacolo di Leonardo» (Μιλᾶνον, 1908), «Il Pantheon rivendicato ad Adriano» (Μιλᾶνον, 1929), «La cupola vaticana» (ἐν τῇ πόλει τοῦ Βατικανοῦ, 1929). Ι. Μ. Π.

**Μπέλτσεβα,** ***Ἐλισάβετ.*** Βουλγαρὶς ποιήτρια γνωστὴ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Μπαγγριάνα* (βλ. λ.).

—**Μπέλτσεβα,** ***Μάρα.*** Βουλγαρὶς ποιήτρια, γεννηθεῖσα τῷ 1868. Τῷ 1918 ἐδημοσίευσε συλλογὴν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Βήματα στὸ κατώφλι» καὶ τῷ 1925 τὴν συλλογὴν «Σοννέτα». Ἡ Μπέλτσεβα εἶναι μία τῶν πρώτων γυναικῶν ἐν Βουλγαρίᾳ τῶν ἀσχοληθεισῶν μὲ τὴν ποίησιν, τὸ δὲ ἔργον της διακρίνεται διὰ τὴν ἐσωτερικότητα καὶ τὴν βαθεῖαν φιλοσοφικὴν διάθεσιν. Φίλη τοῦ ποιητοῦ Π. Π. Σλαβέϊκωφ, ἐξέδωκε τὰς «Ἐπιστολάς» του. Τ. Β.

**Μπέλτσερ** (Belcher), *σὲρ* ***Ἐδουάρδος.*** Βρεττανὸς θαλασσοπόρος (1799—1877), ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ. Τῷ 1825 μετέσχε τῆς εἰς τὸν Εἰρηνικὸν καὶ τὸν Βερίγγειον πορθμὸν ἀποστολῆς τοῦ Γουλιέλμου Μπήτσεϋ, ἀκολούθως δ' ἐταξίδευσεν ὡς κυβερνήτης πλοίου εἰς τὰς βορείους καὶ δυτικὰς ἀκτὰς τῆς Ἀφρικῆς καὶ τὰς βρεττανικὰς θαλάσσας. Τῷ 1832 ἀνέλαβε τὴν συνέχισιν τοῦ ἔργου, τὸ ὁποῖον ὁ Μπήτσεϋ εἶχεν ἀφήσει ἡμιτελὲς ἐν ταῖς ἐπὶ τοῦ Εἰρηνικοῦ ἀκταῖς τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς. Τῷ 1852 ἐγένετο ὁ ἀρχηγὸς τῆς κυβερνητικῆς πρὸς τὸν Βόρειον Πόλον ἀποστολῆς πρὸς ἀναζήτησιν τοῦ Ἰωάννου Φραγκλίνου. Τῷ 1867 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου καὶ μετὰ πέντε ἔτη ἐγένετο ναύαρχος. Ἐδημοσίευσεν ἐντυπώσεις τῶν ταξιδίων

Digitized by Google

του: «Διήγησις ταξιδίου περὶ τὸν κόσμον ἐπὶ τοῦ πολεμικοῦ Sulphur 1836—1842» (1843), «Ἐπὶ τοῦ πολεμικοῦ Samarang κατὰ τὰ ἔτη 1843—1846», «Τὸ τελευταῖον τῶν ἀρκτικῶν ταξιδίων» (1855). Γ. Ι. Β.

**Μπέλτσεφ, *Χρῖστος*.** Βούλγαρος πολιτικός, σύζυγος τῆς ποιητρίας Μάρα Μπέλτσεβα. Διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν ἐπὶ κυβερνήσεως Σταμπολόφ (1890), φονευθεὶς τῷ 1891 διὰ πολιτικοὺς λόγους. Ἐδημοσίευσε μελέτας εἰς τὸ περιοδικὸν «Blgarski Pregled» ὑπὸ τὸν τίτλον «Σκέψεις». Τ. Β.

**Μπελτσόνι** (Belzoni), ***Ἰωάννης - Βαπτιστής*.** Διάσημος Ἰταλὸς περιηγητής, γεννηθεὶς εἰς τὴν Πάδουαν τῷ 1778 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1823. Κατ' ἀρχὰς μετέβη εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου διὰ νὰ ζήσῃ ἐπηγγέλθη τὸν ἠθοποιόν, ἀλλὰ ταὐτοχρόνως κατέγινεν εἰς τὴν ὑδρομηχανικὴν καὶ ἰδίως τὰ ἀρδευτικὰ ἔργα. Κατόπιν ἐταξίδευσεν εἰς Ἱσπανίαν καὶ Πορτογαλίαν καὶ τῷ 1815 μετέβη εἰς τὴν Αἴγυπτον, ὅπου κατ' ἀρχὰς ἐξετέλει παντομίμας. Ἀλλ' εὑρεθεὶς ἐκεῖ καθ' ἣν ἐποχὴν ὁ Μωχάμμετ Ἄλη, ἐμπεδωθεὶς ὡς ἰδιοκτήτης τῆς χώρας, πυρετωδῶς εἰργάζετο νὰ ἀναπτύξῃ τοὺς πόρους αὐτῆς καὶ ἐ χ ρ η σ ι μ ο π οίει τοὺς ξένους ἐπιστήμονας, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἀρδευτικῶν ἔργων. Ἠναγκάσθη οὕτω νὰ περιέλθῃ τὴν χώραν, θαυμάσας δὲ τὰ τεράστια μνήματα τὰ διεσπαρμένα ἀνὰ τὴν νειλωτικὴν κοιλάδα, ἀπεφάσισε νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν ἐξερεύνησίν των καὶ τὴν ἀναζήτησιν ἀρχαιοτήτων. Ἤνοιξε πολλοὺς βασιλικοὺς τάφους τῶν Θηβῶν, ἐξέχωσε τὸν ναὸν τῆς Ἰψαμπούλ, ἤνοιξε τὰς πυραμίδας τῆς Γκίζης, ἀπέστειλεν εἰς Λονδῖνον τὴν περίφημον προτομὴν Μέμνονος τοῦ νεωτέρου, ἀνεῦρε τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας πόλεως Βερενίκης, τὰ ὀρυχεῖα τῶν σμαράγδων τῆς Ζουβάρας καὶ διέδραμε καὶ τὴν μεγάλην ὄασιν τοῦ Ἄμμωνος. Ἠθέλησε τέλος νὰ διασχίσῃ τὴν Σαχάραν καὶ νὰ φθάσῃ εἰς Τομπουτοῦ, ἀλλ' ἀπέθανεν εἰς Γάτο. Τὸ ὁδοιπορικόν του ἐδημοσιεύθη ἀγγλιστὶ εἰς τὸ Λονδῖνον τῷ 1821, μετὰ χαρτῶν καὶ ἐγχρώμων εἰκόνων, ἡ δὲ χήρα του ἐξέδωκε τῷ 829 τὰ σχέδιά του τῶν τάφων τῆς Γκούρνας. Γ. Λ. Α.

*Ἰωάν. Μπελτσόνι.*

**Μπέλυ, *Ἀνδρέας*.** Φιλολογικὸν ψευδώνυμον τοῦ Ρώσου συγγραφέως *Βόριδος Νικολάγιεβιτς Μπουγκάγιεφ*, γεννηθέντος ἐν Μόσχᾳ τῷ 1880. Ἐσπούδασε φυσικομαθηματικὰ καὶ εἶτα φιλολογίαν. Ἤρξατο τοῦ φιλολογικοῦ του σταδίου διὰ τῆς δημοσιεύσεως τῆς «Δραματικῆς Συμφωνίας» (1902), ἣν ἠκολούθησαν αἱ «Συμφωνίαι» καὶ τρεῖς συλλογαὶ ποιημάτων: «Ὁ χρυσὸς εἰς τὸ κυανοῦν» (1904), «Ἡ σποδὸς» (1908) καὶ «Ἡ πρώτη συνάντησις» (1921). Εἰς τὰ ἔργα του ταῦτα διακρίνεται μυστικισμός τις, μᾶλλον φιλολογικὸς ἢ θρησκευτικός. Εἰς τοὺς στίχους του θέλει νὰ φαίνεται μᾶλλον παθητικός, χωρὶς νὰ εἶναι πράγματι τοιοῦτος. Ἀπὸ τῆς ἐκρήξεως ὅμως τῆς πρώτης ρωσικῆς ἐπαναστάσεως ἡ προσοχή του ἐστράφη πρὸς τὸν βίον καὶ τὰ συμφέροντα του ρωσικοῦ λαοῦ, εἰς τὴν «Σποδὸν» δὲ βλέπει τις τὴν ἀνάμιξιν τῶν πολιτικῶν καὶ κοινωνικῶν γεγονότων τῆς ἱστορικῆς ἐκείνης περιόδου καὶ τὴν ἀπομάκρυνσιν αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ συμβολισμοῦ.

Τῷ 1910 ἐδημοσιεύθη τὸ πρῶτόν του μεγάλον μυθιστόρημα: «Τὸ ἀσημένιο περιστέρι», ἱστορία ρωσικῆς τινὸς αἱρέσεως. Εἰς τὸ ἔργον αὐτὸ ὁ Μπέλυ μεταβάλλεται εἰς ρεαλιστὴν καὶ ἀκολουθεῖ τὸν Γκόγκολ, τὸν Τολστόη καὶ τὸν Δοστογιέβσκι. Τῷ 1916 ἐδημοσιεύθη ἕτερον αὐτοῦ μυθιστόρημα, «Ἡ Πετρούπολις», ὅπερ θεωρεῖται ὡς ἓν τῶν σπουδαιοτέρων ἔργων τῆς ρωσικῆς λογοτεχνίας. Τῷ 1922 εἶδε τὸ φῶς ὁ «Κοτὶκ Λεβάγιεφ» τῷ δὲ 1926 «Ἡ Μόσχα», «Ὁ Ἰδιόρρυθμος Μοσχοβίτης» καὶ «Ἡ Μόσχα ὑπὸ τὰ πλήγματα». Εἰς τὰ ἔργα ταῦτα εἰκονίζεται ἡ ρωσικὴ ζωὴ μετὰ τῶν προσώπων τῆς ἐπαναστατικῆς περιόδου. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ἀναμνήσεις περὶ τοῦ ποιητοῦ Μπλόκ», τὰ «Ἀραβουργήματα», «Κριτικαὶ μελέται» κτλ. Θ. Β.

**Μπελφάστ** (Belfast) *[Γεωγρ.]*. Ἡ σπουδαιοτέρα βιομηχανικὴ πόλις καὶ λιμὴν τῆς Ἰρλανδίας, πρωτεύουσα τῆς ἀπ' εὐθείας εἰς τὸ Ἡνωμένον βασίλειον ὑπαγομένης Βορείου Ἰρλανδίας (Ὤλστερ). Εἶναι ἕδρα τῆς κομιτείας Ἄντριμ, ἀποτελεῖ δ' ἅμα ἰδίαν ὁμώνυμον κομιτείαν, περιλαμβάνουσαν τὴν περιοχὴν τῆς πόλεως (60 τετρ. χλμ.). Κεῖται ἐπὶ τῆς ΒΑ. παραλίας τῆς μεγαλονήσου, 180 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Β. τοῦ Δουβλίνου παρὰ τὴν εἰς τὸν μυχὸν τοῦ βαθέος ὁμωνύμου κόλπου (Belfast lough) ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Λάγκαν, τοῦ ὁποίου καταλαμβάνει ἀμφοτέρας τὰς ὄχθας. Κάτ. (1926) 415.151 ἐξ ὧν τὰ 25% μόνον καθολικοί, οἱ δὲ λοιπαὶ διαμαρτυρόμενοι.

Τὸ Μπελφάστ κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἦτο ἁπλοῦν χωρίον ἁλιέων, φθίνοντος ὅμως τοῦ ἑπομένου αἰῶνος ἤρχισε προαγόμενον ἁλματωδῶς ἀπὸ ἀπόψεως ἰδίως ἐμπορικῆς κινήσεως. Τῷ 1758 ἦτο ἤδη μία τῶν κυριωτέρων ἀκροπόλεων τοῦ προτεσταντισμοῦ ἐν Ἰρλανδίᾳ. Ὁ πληθυσμὸς αὐτοῦ, ἀνερχόμενος τότε εἰς 8.500 κατοίκους, ἤρξατο αὐξανόμενος σημαντικῶς καὶ ταχέως· τῷ 1841 εἶχε φθάσει εἰς 70.447 κατοίκους, οἵτινες τῷ 1881 ἀνῆλθον εἰς 208.122, ὑπερεδιπλασιάσθησαν δ' ἔκτοτε μέχρι σήμερον, μὲ τάσιν διαρκοῦς αὐξήσεως. Ἀπὸ τῆς 23 Δεκεμβρίου 1920 τὸ Μπελφάστ εἶναι πρωτεύουσα τοῦ τότε ἀποχωρισθέντος τῆς λοιπῆς αὐτονόμου Ἰρλανδίας τμήματος καὶ εἶναι ἕδρα τοῦ διοικοῦντος αὐτὸ διοικητοῦ, τῆς συγκλήτου (senate) καὶ τῆς διαίτης (house commons).

Ἡ πόλις εἶναι ἐκτισμένη κατὰ τὸ πλεῖστον ἐπὶ προσχωσιγενοῦς χθαμαλοῦ ἐδάφους, ἐλάχιστα ὑπερβαίνοντος τὴν στάθμην τῆς θαλάσσης. Ἔχει εὐρείας καὶ εὐθείας ὁδούς, καλῶς διατεταγμένας, κοσμεῖται δὲ ὑπὸ πολλῶν καὶ ὡραίων κτηρίων, ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὸ δημαρχεῖον, κλασσικοῦ ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως, ὁ καθεδρικὸς ναὸς τῶν πρεσβυτεριανῶν, γοτθικοῦ ρυθμοῦ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, τὸ πανεπιστημιακὸν μέγαρον, ἀνεγερθὲν τῷ 1849, καὶ πλεῖστα ἰδιωτικὰ κτήρια καὶ καταστήματα τραπεζῶν καὶ μεγάλων ἑταιρειῶν.

Τὸ Μπελφάστ εἶναι κυρίως βιομηχανικὸν κέντρον ὑψίστης σημασίας, τὸ μεγαλύτερον τῆς Ἰρλανδίας καὶ ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων τοῦ Ἡνωμένου βασιλείου. Κυρία βιομηχανία ἐν αὐτῷ εἶναι ἡ τοῦ ἐρίου, ἀπασχολοῦσα 85.000 ἐργατῶν ἀμφοτέρων τῶν φύλων καὶ διαθέτουσα 40.000 ὑφαντικοὺς ἱστοὺς καὶ ἓν περίπου ἑκατομμύριον ἀτράκτων. Εἰς τὸν ἀνωτέρω ἀριθμὸν τῶν ἐργατῶν περιλαμβάνονται καὶ οἱ ἀπασχολούμενοι μὲ τὰς συναφεῖς καὶ βοηθητικὰς βιομηχανίας τοῦ ἐρίου. Τὰ παραγόμενα εἴδη εἶναι μάλλινα ὑφάσματα καὶ νήματα, μανδήλια, λεπτὰ ὑφάσματα δι' ἐσώρουχα, φανέλλαι κλπ. Ἐπίσης μεγάλως προηγμέναι εἶναι αἱ ναυπηγικαὶ βιομηχανίαι, ἀπασχολοῦσαι 25.000 περίπου ἐργατῶν. Εἰς δευτερεύουσαν, ἀλλ' οὐχ ἧττον σοβαρὰν μοῖραν ἔρχονται τὰ χυτήρια σιδήρου καὶ χαλκοῦ, ἡ ζυθοποιία, αἱ χημικαὶ βιομηχανίαι, τὰ διυλιστήρια κλπ. Ἐκ τῆς ἁπλῆς συγκρίσεως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν ἐργατῶν πρὸς τὸν ὅλον πληθυσμὸν τῆς πόλεως καταφαίνεται ἡ τεραστία βιομηχανικὴ ἀνάπτυξις αὐτῆς. Ἐπίσης τὸ ἐμπόριον, ἐξυπηρετούμενον ἄριστα διὰ τῶν τριῶν ἐκ Μπελφάστ ἐκκινουσῶν μεγάλων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν (Northern Counties, Great Northern καὶ Belfast and Contry Down Rlys), καὶ διὰ θαλάσσης, εὑρίσκεται εἰς μεγάλην ἀκμήν. Ὁ λιμήν του, ἄριστα διερρυθμισμένος, περιλαμβάνει τὴν μακρὰν διώρυγα τῆς Βικτωρίας, πλάτους 100 μ., ἡ ὁποία ὠρύχθη τῷ 1840, μετὰ πολλῶν ἀποβαθρῶν καὶ φορτοεκφορτωτικῶν ἐγκαταστάσεων. Ὁ λιμὴν περιλαμβάνει πολλὰς καὶ μεγάλας δεξαμενάς, ὧν μία, ἡ τῆς Ἀλεξάνδρας, ἱδρυθεῖσα τῷ 1911, εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τοῦ κόσμου. Ἡ κίνησις τοῦ λιμένος εἶναι τεραστία, σημειώσασα τῷ 1922 ἐκ μὲν τοῦ ἐξωτερικοῦ 820 κατάπλους πλοίων χωρητικότητος 1.200.000 τόννων, ἐκ δὲ τοῦ ἐσωτερικοῦ 17.008 κατάπλους, χωρητικότητος 5.300.000 τόννων.

Ἡ ἐκπαιδευτικὴ καὶ πνευματικὴ ἐν τῇ πόλει κίνησις, λίαν προηγμένη, περιλαμβάνει ἓν πανεπιστήμιον (Queen's College), ἱδρυθὲν τῷ 1849, καὶ ἀριθμοῦν (1924) 79 καθηγητὰς καὶ 1240 σπουδαστάς, τὸ θεολογικὸν κολλέγιον τῶν πρεσβυτεριανῶν (1853), τὸ κολλέγιον τῶν μεθοδιστῶν (1868), ἓν βασιλικὸν ἀκαδημαϊκὸν ἰνστιτοῦτον, βασιλικὴν ἀκαδημίαν καὶ πλείστας σχολὰς μέσης καὶ τεχνικῆς ἐκπαιδεύσεως. Ἀξιομνημόνευτος εἶναι ἡ καλλιτεχνικὴ πινακοθήκη τῆς πόλεως (City Art Gallery), περιλαμβάνουσα ἀξιόλογα ἔργα νεωτέρας τέχνης, τὸ μουσεῖον ἐν τῷ ὁποίῳ φυλάσσεται σπουδαιοτάτη νεολιθικὴ συλλογὴ καὶ ἄλλαι ἀρχαιότητες, ἡ δημοσία βιβλιοθήκη (40.000 τόμοι), ὁ βοτανικὸς κῆπος, τὸ θέατρον τοῦ Ὤλστερ καὶ τὰ κοσμοῦντα τὴν πόλιν ἐκτεταμένα πάρκα. Κατὰ μῆκος ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν τοῦ κόλπου κεῖνται διαμονητήριοι συνοικισμοί, ἀναρρωτήρια, ἐπαύλεις, ἐξοχικὰ κέντρα κλπ., δύο δὲ σιδηροδρομικαὶ γραμμαὶ βαίνουσαι κατὰ μῆκος τῆς παραλίας ἐξυπηρετοῦσι τὴν μετ' αὐτῶν συγκοινωνίαν.

[Πρβλ. *M. Lowry*, «The Story of Belfast and its Surroundings» (1913).] Χ. Δ.

**Μπελφόρ,** ἢ *Μπεφὸρ* (Belfort) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σαβουρέζ, παραποτάμου τοῦ Ἀλλαίν, εἰς ἀπόστασιν 69 χλμ. ἀπὸ τοῦ Κολμὰρ καὶ 443 χλμ. ἀπὸ τῶν Παρισίων, μεθ' ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἀξιόλογον γεωργικὸν καὶ βιομηχανικὸν κέντρον ἔχουσα ἐργοστάσια γεωργικῶν μηχανῶν, σιδηρουργεῖα, ὡρολογοποιεῖα, κλωστήρια ἐρίου καὶ βάμβακος, σχοινοποιεῖα, πιλοποιεῖα κλπ. Κάτ. (1926) 40.516.

—*[Ἱστορ.]* Τὸ Μπελφὸρ προῆλθεν ἔκ τινος παλαιοῦ ὀχυροῦ πύργου τῶν κομίτων τοῦ Μπὰρ-λὲ-Ντύκ. Βραδύτερον περιῆλθε διαδοχικῶς εἰς τοὺς δύο πρωτοτόκους κλάδους τῆς οἰκογενείας τοῦ Μπάρ, τοὺς κόμιτας Μομπελλιὰρ καὶ τοὺς κόμιτας Φερρέτ. Κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα μετέπεσε, κληρονομικῷ δικαιώματι, ἀπὸ τοῦ οἴκου τῶν Φερρὲτ εἰς τὸν τῆς Αὐστρίας. Καταληφθὲν ὑπὸ τῶν Γάλλων κατὰ τὸν Τριακονταετῆ πόλεμον, περιῆλθεν ὁριστικῶς διὰ τῆς συνθήκης τῆς Βεστφαλίας εἰς αὐτοὺς (1648). Βραδύτερον ἐδόθη ὡς φέουδον εἰς τὸν Μαζαρῖνον, ἐγένετο δὲ κατόπιν κτῆμα τῶν κληρονόμων του δουκῶν ντὲ Λὰ Μεγιεραί. Σήμερον ὁ πρίγκιψ τοῦ Μονακὸ φέρει, σὺν τοῖς ἄλλοις, καὶ τὸν τίτλον τοῦ «κόμιτος τοῦ Μπελφόρ».

Ἡ πόλις ὀχυρωθεῖσα ὑπὸ τοῦ Βωμπὰν κατώρθωσε ν' ἀντιστῇ νικηφόρως εἰς τρεῖς μεγάλας πολιορκίας (1814, 1815 καὶ 1870). Σήμερον εἶναι ἓν τῶν 18 ὀχυρῶν τῶν περιβαλλόντων τὸ ἐκτεταμένον περικεχαρακωμένον στρατόπεδον τὸ φράσσον τὴν μεταξὺ Ρήνου καὶ Σὼν διάβασιν. Εἰς ἀνάμνησιν τῆς ἐνδόξου πολιορκίας τοῦ 1870 ἐστήθησαν ἐν τῇ πόλει δύο μνημεῖα, τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Quand même!» ἔργον τοῦ Α. Μερσιὲ καὶ ὁ ἐπὶ τοῦ βράχου τῆς ἀκροπόλεως λαξευθεὶς ὑπὸ τοῦ γλύπτου Μπαρτολντὶ γιγαντιαῖος λέων. Χ. Δ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ Μπελφὸρ ὑπῆρξεν ἀνέκαθεν σημαντικὸν φρούριον, δι' ὃ καὶ συχνάκις ἀναφέρεται ἐν τῇ στρατιωτικῇ ἱστορίᾳ τῆς Γαλλίας. Ἰδιαιτέρας ὅμως μνείας ἄξιαι ὑπῆρξαν ἡ μακρὰ πολιορκία του καὶ αἱ ἐν τῇ περιοχῇ του διεξαχθεῖσαι μάχαι κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον 1870—1871.

*Α')* Ὅταν κατ' Αὔγουστον 1870 τὸ 7ον γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ μετεφέρθη ἐκ Μπελφὸρ εἰς Σαλόν, ἵνα ἀποτελέσῃ μέρος τῆς στρατιᾶς τοῦ Σαλόν, ἀπέμειναν πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῆς ἀμύνης τοῦ φρουρίου τούτου τὰ 300 πυροβόλα του καὶ μικραί τινες μονάδες ἐξ ἐθελοντῶν, ἐλευθέρων σκοπευτῶν, γαριβαλδινῶν κλπ., συνολικῆς δυνάμεως 12.000 ἀνδρῶν περίπου, ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Καμπριέλ, ὀργανωθέντων τὸν Σεπτέμβριον εἰς σῶμα στρατοῦ (τὸ 20όν). Κατὰ τὴν ἐποχὴν ὅμως ἐκείνην δὲν ἐξετελέσθησαν εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Μπελφὸρ εἰμὴ μόνον μικροί τινες ἀσήμαντοι ἀγῶνες, τοπικῆς καθαρῶς σημασίας. Κατὰ τὴν δευτέραν περίοδον τοῦ πολέμου, συνεκρότησαν οἱ Γερμανοὶ τὸ 14ον βαυαρικὸν σῶμα στρατοῦ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Βέρντερ, ὅπερ, μετὰ τὴν παράδοσιν τοῦ φρουρίου τοῦ Στρασβούργου (28 Σεπτεμβρίου 1870), προὐχώρησε πρὸς νότον καί, μετὰ μικρούς τινας ἀγῶνας εἰς Μπουργκόν, Μπρυγιέρ, Ὠξόν, Σατιγιὸν κτλ., διεξαχθέντας ἐντὸς τοῦ Ὀκτωβρίου, ἐπολιόρκησε τὴν 3ην Νοεμβρίου 1870 τὸ φρούριον τοῦ Μπελφόρ. Διὰ τὴν κυρίαν πολιορκίαν ἐτάχθη μικρὸν μόνον τμῆμα τοῦ βαυαρικοῦ σώματος, ἡ δὲ μείζων αὐτοῦ δύναμις ἐχρησιμοποιήθη ὡς ἐπιτηρητικὸν σῶμα, ἐγκατασταθὲν εἰς Βεζοὺλ καὶ κατορθῶσαν ἐντὸς τοῦ Νοεμβρίου ν' ἀπωθήσῃ τὸ 20ὸν γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ πρὸς τὴν Μπεζανσὸν καὶ τοιουτοτρόπως ν' ἀποκόψῃ πάντα μετὰ τοῦ φρουρίου Μπελφὸρ σύνδεσμον αὐτοῦ, ὁπότε ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις διέταξε τὴν μεταφοράν του εἰς Λίγηρα, ἐπικειμένης τότε σοβαρᾶς πρὸς Παρισίους δράσεως. Κατὰ Δεκέμβριον 1870 ἡ εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Μπελφὸρ γαλλικὴ «στρατιὰ τῆς Ἀνατολῆς» (15ον, 18ον, 20όν, 24ον σώματα στρατοῦ, γαριβαλδινοὶ κτλ. ὑπὸ τὴν γενικὴν ἀρχηγίαν τοῦ Βούρβαχη), ἀντὶ νὰ χρησιμοποιηθῇ διὰ τὸν ἀρχικὸν σκοπόν, δι' ὃν ἀπεστάλη ἐκεῖ, δηλαδὴ εἰς ἀπασχόλησιν τῶν ἐκ Στρασβούργου γραμμῶν συγκοινωνιῶν τῶν πολιορκούντων τοὺς Παρισίους γερμανικῶν στρατευμάτων, ἐχρησιμοποιήθη πρὸς ἀπελευθέρωσιν τοῦ Μπελφόρ, διότι παρὰ τοῖς Γάλλοις πληρεξουσίοις εἶχε βασικῶς ἐπικρατήσει ἡ πεπλανημένη ἀντίληψις ὅτι διὰ τῆς ἀπελευθερώσεως τῶν διαφόρων πολιορκουμένων φρουρίων θὰ ἔληγεν ὁ πόλεμος. Πληροφορηθεῖσα τότε ἡ γερμανικὴ διοίκησις τὰς προθέσεις τῶν Γάλλων ἐκ τῆς ἀκριτομυθίας τοῦ γαλλικοῦ τύπου, συνεκρότησε, τὰς ἀρχὰς Ἰανουαρίου 1871, τὴν στρατιὰν τοῦ Νότου (2ον, 7ον, 14ον σώματα στρατοῦ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μαντόϋφελ), μὲ τὴν ἐντολὴν τῆς παρακωλύσεως πάσης γαλλικῆς ἀποπείρας πρὸς διάσπασιν τοῦ γερμανικοῦ πολιορκητικοῦ σώματος τοῦ Μπελφόρ. Πρὶν ἢ ὅμως συγκεντρωθῇ ἡ γερμανικὴ αὕτη στρατιὰ εἰς τὴν περιορχὴν τῆς πόλεως, οἱ Γάλλοι, ἔχοντες τὴν προτεραιότητα καὶ συγκεντρώσαντες ἀσυγκρίτῳ τῷ λόγῳ μείζονας δυνάμεις ἀπὸ τὰς τοῦ στρατηγοῦ Βέρντερ (140.000 Γάλλοι ἀπέναντι 35.000 Γερμανῶν κατά τινας συγγραφεῖς, κατ' ἄλλους δὲ 120.000 Γάλλοι ἀπέναντι 60.000 Γερμανῶν), ἤρχισαν πιέζοντες τοῦτον. Κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 3 Ἰανουαρίου—16 Φεβρουαρίου 1871 διεξήχθησαν ἐπιχειρήσεις, φερόμεναι ὑπὸ τὸ ὄνομα «Ἐπιχειρήσεις τοῦ Μπελφόρ». Τὰς ἀρχὰς Ἰανουαρίου 1871 ὁ Βέρντερ, εὑρεθεὶς πρὸ μεγάλης ἀριθμητικῆς ὑπεροχῆς τῶν Γάλλων, ἐσκέφθη ὅτι ὤφειλε νὰ ἐγκατασταθῇ εἰς κεντρικὴν θέσιν δυτικῶς τοῦ Μπελφόρ, ὡς τοιαύτην δὲ ἐξέλεξε τὴν περιοχὴν Βεζοὺλ—Βιλλερσεξέλ, εἰς τρόπον ὥστε νὰ δύναται νὰ προσβάλῃ τὸ δεξιὸν πλευρὸν παντὸς γαλλικοῦ στρατεύματος ἐπιζητοῦντος τὴν πρὸς Μπελφὸρ προχώρησιν. Κατὰ τὴν ἰδίαν ἐποχὴν ὁ Βούρβαχης ἀπεφάσισε νὰ προχωρήσῃ πρὸς ἀνατολάς, ἵνα καταλάβῃ τὴν Βεζοὺλ καὶ τὴν Βιλλερσεξέλ, ἵνα κατόπιν, στηριζόμενος ἐπ' αὐτῶν, ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ ἐπιτηρητικοῦ γερμανικοῦ στρατεύματος, μετὰ τὴν

Digitized by Google

καταστροφὴν τοῦ ὁποίου θὰ ἐστρέφετο κατὰ τοῦ κυρίως πολιορκητικοῦ στρατεύματος τοῦ Μπελφόρ. Ὡραῖον ὡς σχέδιον, ἀλλὰ δυσεκτέλεστον, ἅτε ἀπαιτοῦν ταχύτητα ἑλιγμῶν πρὸς πραγματοποίησιν τῶν σχεδιασθέντων, πρὸ τῆς ἀφίξεως γερμανικῶν ἐνισχύσεων. Τοιουτοτρόπως, τὰς ἀρχὰς Ἰανουαρίου 1871, τὰ ἀντίπαλα στρατεύματα εὑρίσκοντο ὡς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαίνεται. Ὁ γαλλικὸς στρατός, ἀκολουθήσας τὴν κοιλάδα τοῦ Ὀνιόν, κατέλαβε τὴν μὲν 4ην Ἰανουαρίου τὴν Βεζούλ, τὴν δὲ 5ην τὴν Βιλλερσεξέλ· ἀλλὰ τότε, ἀντὶ νὰ ἐξακολουθήσῃ ἀκάθεκτος τὴν προχώρησιν, τοὐναντίον ἐσταμάτησε κατὰ τὰς 6—8 Ἰανουαρίου, ἵνα ἀναμείνῃ τὰς ἐφοδιοπομπάς, τούτου δ' ἐπωφεληθεὶς ὁ Βέρντερ ἀφῆκε μίαν μεραρχίαν πρὸς ἀπασχόλησιν τῶν Γάλλων, διὰ δὲ τῶν ἑτέρων δύο ὑπεχώρησε πρὸς τὸν Λιζαὶν καὶ ἐτάχθη ὄπισθεν αὐτοῦ (ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης), προκαλύπτων πάντοτε τὸ Μπελφόρ. Ἐπηκολούθησε τότε, κατὰ τὰς 15—17 Ἰανουαρίου ἡ μάχη τοῦ *Ἐρικούρ* (βλ. λ.), ἡ κατὰ Γερμανοὺς φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα μάχη τοῦ *Λιζαίν*, καθ' ἣν ὑπεχώρησαν οἱ Γάλλοι ὅλως ἀδικαιολογήτως πρὸς Μπεζανσὸν τὴν νύκτα 16—17 Ἰανουαρίου, πρὸς ἣν κατεύθυνσιν ἐπῆλθε τότε ὁ Βέρντερ (14ον σῶμα) καταδιώκων. Τὰ 2ον καὶ 7ον γερμανικὰ σώματα, τὰ ἀποτελοῦντα μέρος τῆς στρατιᾶς τοῦ Νότου, εὑρίσκοντο τὴν 11ην Ἰανουαρίου εἰς τὰς ἐν τῷ σχήματι ἐμφαινομένας θέσεις, ὁπότε ὁ Μαντόϋφελ ἐπεζήτησε νὰ σπεύσῃ τὸ ταχύτερον νὰ ἔλθῃ εἰς βοήθειαν τῶν πολιορκητῶν τοῦ Μπελφόρ· ἅμα ὅμως ἔφθασεν εἰς Γκραίυ, τὴν 19ην Ἰανουαρίου, μετὰ τῶν σωμάτων τούτων καὶ ἐπληροφορήθη τὴν ὑποχώρησιν τῶν Γάλλων ἐκ Λιζαίν, ἀπεφάσισε νὰ στραφῇ πρὸς τὰς γραμμὰς ὑποχωρήσεως τῶν Γάλλων, ἵνα τοιουτοτρόπως ἀπωθήσῃ τούτους πρὸς τὴν ὀροσειρὰν τοῦ Ἰούρα, δηλαδὴ πρὸς τὴν ἑλβετικὴν μεθόριον, παρ' ὅλον τὸ παρακεκινδυνευμένον τῆς ἐκτελέσεως, λόγῳ τοῦ ὅτι ὁ γερμανικὸς οὗτος στρατὸς ἐπρόκειτο νὰ ἑλιχθῇ ἐντὸς τοῦ τετραπλεύρου τῶν γαλλικῶν φρουρίων Λάνγκρ—Μπεζανσὸν—Ὠξὸν—Ντιζόν. Ἀφοῦ ἀφῆκεν ὁ Μαντόϋφελ μίαν μόνον ταξιαρχίαν πρὸ τοῦ Ντιζὸν πρὸς πλαγιοφύλαξιν, ἔλαβε τὴν 20ὴν Ἰανουαρίου ὁριστικὴν κατεύθυνσιν πρὸς νότον καὶ τότε, τὴν μὲν 22αν προσεπέρασεν ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ντούμπ, τὴν 23ην κατέλαβε τὴν Κιντζέϋ, τὴν δ' 24ην τὸ Μουσσάρ, ἀποκόψας τοιουτοτρόπως τὴν κυρίαν γραμμὴν ὑποχωρήσεως τῶν Γάλλων. Ὁ κατὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας ἐν ὑποχωρήσει στρατὸς τοῦ Βούρβαχη εἶχε παραμείνει ἀδρανῶν εἰς Μπεζανσὸν ἐπὶ 4 ἡμέρας, μέχρις οὗ ἀπεκλείσθη πλέον ἀπὸ πάσης ὑποχωρήσεως πρὸς δυσμὰς ἢ νοτιοδυσμάς, καὶ μὲ μόνην ἐλευθέραν ὁδὸν ὑποχωρήσεως τὴν πρὸς Ποντραλιέ, δηλαδὴ πρὸς τὴν ὀροσειρὰν τοῦ Ἰούρα. Τὴν 25ην Ἰανουαρίου διέταξεν ὁ Βούρβαχης τὴν πρὸς Ποντραλιέ ὑποχώρησιν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, μὲ τὴν ἐλπίδα τῆς δυνατῆς διολισθήσεως διὰ Μοὺτ (Mouthe) πρὸς Λυὼν κατὰ μῆκος τῆς ἑλβετικῆς μεθορίου, ἀλλὰ συγχρόνως, στενοχωρηθεὶς μεγάλως ἐκ τῆς καταστάσεως ταύτης, ηὐτοκτόνησε, καὶ τότε τὴν διοίκησιν τῆς γαλλικῆς στρατιᾶς τῆς Ἀνατολῆς ἀνέλαβεν ὁ στρατηγὸς Κλενσὰν (Clinchant). Τὴν 29ην Ἰανουαρίου ἡ γαλλικὴ αὕτη στρατιὰ ἔφθασεν εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Ποντραλιέ, ἀφοῦ καθ' ὁδὸν διεσπάρησαν περὶ τοὺς 30.000 βραδυποροῦντες, ἀλλ' εὗρε τὴν διὰ Μοὺτ ὅδευσιν ἀποκλεισθεῖσαν ἤδη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν. Ἐπειδὴ ἡ ἐν τῷ μεταξὺ τούτῳ συναφθεῖσα ἀνακωχὴ τῆς 27ης Ἰανουαρίου 1871 δὲν συμπεριελάμβανε τὰ στρατεύματα τῆς Ἀνατολῆς, δι' αὐτὸ ὁ Κλενσάν, εὑρεθεὶς πρὸ ἀδιεξόδου, διέταξε τὴν 1ην Φεβρουαρίου 1871 τὴν εἴσοδον τῶν λειψάνων τῆς γαλλικῆς ταύτης στρατιᾶς (περὶ τοὺς 80.000 ἄνδρας) εἰς Ἑλβετίαν. Τὸ φρούριον τοῦ Μπελφὸρ ἐξηκολούθησεν ἀμυνόμενον μέχρι τῆς 16ης Φεβρουαρίου 1871, ὁπότε, διαταγῇ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως, παρεδόθη εἰς τοὺς Γερμανούς, διατελέσαν τοιουτοτρόπως ἐν πολιορκίᾳ ἐπὶ 104 ἡμέρας, ὑπὸ τὴν διοίκησιν τοῦ συνταγματάρχου Denfert Rochereau.

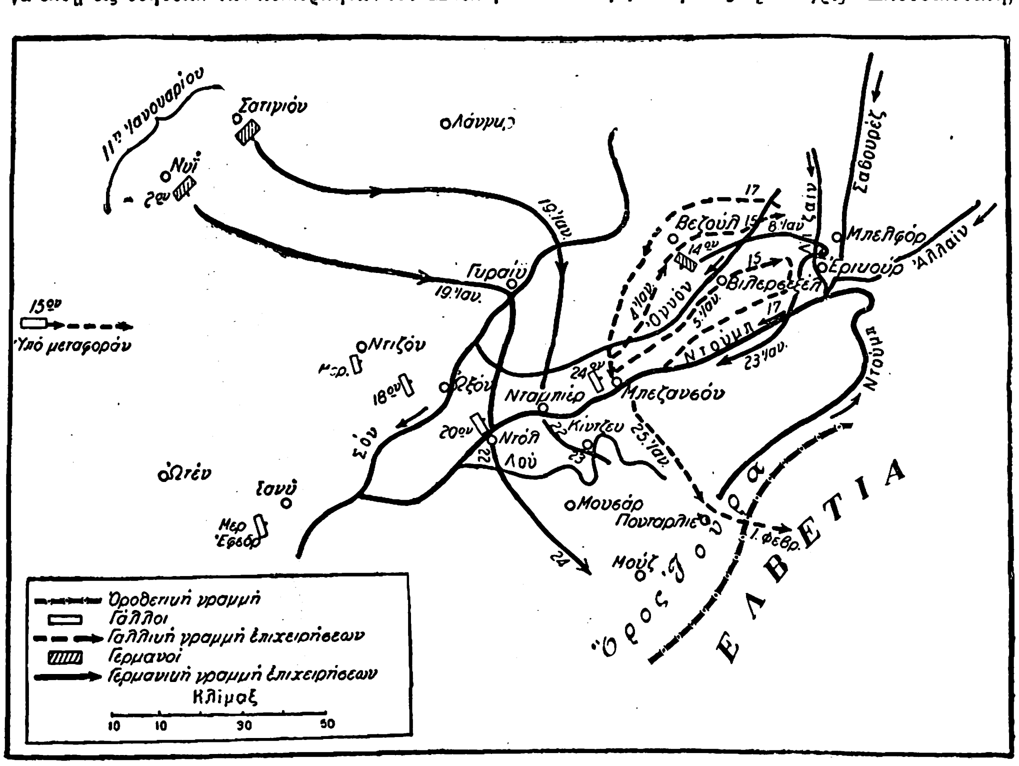


*Ἐπιχειρήσεις Μπελφὸρ 3 Ἰανουαρίου—16 Φεβρουαρίου 1871.*

*B)* Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ἀνέλαβον οἱ Γάλλοι ἐπιχειρήσεις ἐν τῇ Ἄνω Ἀλσατίᾳ διὰ τοῦ 7ου σώματος στρατοῦ, ἐξορμήσαντες ἐκ Μπελφὸρ τὴν 7ην Αὐγούστου 1914 πρὸς τὰς κατευθύνσεις Ἀλτκίρχ καὶ Ντορνὰχ καὶ ἐκεῖθεν πρὸς Μυλούζην, ἐπὶ τῷ σκοπῷ τῆς προσελκύσεως γερμανικῶν δυνάμεων πρὸς τὰς κατευθύνσεις ταύτας. Μέχρι τῆς 20ῆς Αὐγούστου οἱ Γάλλοι εἶχον προχωρήσει ἐπαρκῶς πρὸς ἀνατολάς, εἰς τρόπον ὥστε ἐπεκράτουν ἁπασῶν τῶν διαβάσεων τοῦ Ρήνου, ἀλλ' ἡ ἐξέλιξις τῶν ἐπιχειρήσεων τῶν συνόρων ἐξηνάγκασεν αὐτοὺς νὰ ὑποχωρήσωσι, τὸ τέλος Αὐγούστου 1914, πρὸς τὰς περὶ τὸ Μπελφὸρ θέσεις των. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

— **Μπελφὸρ διάβασις** [*Γεωγρ.*]. Σπουδαιοτάτη, ἀπὸ στρατηγικῆς ἰδίως ἀπόψεως, διάβασις, ἀνοιγομένη εἰς ὕψος 353 μ. μεταξὺ τῶν νοτιωτάτων προεκτάσεων τῶν Βοσγίων καὶ τῶν βορείων τοῦ Ἰούρα, μέσῳ τῆς ὁποίας συγκοινωνοῦσιν αἱ λεκάναι τοῦ Ρήνου καὶ τοῦ Σών. Ὀνομάζεται ἐπίσης «Πύλαι τῆς Βουργουνδίας». Χ. Δ.

— **Μπελφὸρ διαμέρισμα** (Territoire de Belfort) [*Γεωγρ.*]. Ἀνεξάρτητος περιοχὴ τῆς Γαλλίας, ἀποτελοῦσα πρὸ τοῦ 1870 ἐπαρχίαν τοῦ εἰς τὴν Γερμανίαν περιελθόντος τότε νομοῦ Ἄνω Ρήνου. Ἔχει ἔκτασιν 608 τ. χλμ., πληθυσμὸν (1926) 96.594 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Μπελφόρ*. Τὸ ἔδαφος αὐτοῦ περιλαμβάνει τρία τμήματα: τὴν βορειοτέραν, δασώδη καὶ ὀρεινήν, περιοχὴν τῶν Βοσγίων, τὴν νοτιωτέραν, δασώδη ἐπίσης καὶ ὀρεινήν, περιοχὴν τοῦ Ἰούρα καὶ τὴν μέσην, πεδινὴν καὶ εὔφορον περιοχὴν τοῦ Βαλντιέ. Τὸ κλῖμα εἶναι δριμύ, οἱ ἄνεμοι ἰσχυρότατοι καὶ ἡ ὑγρασία σημαντική. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται μὲ τὴν κτηνοτροφίαν, τὴν καλλιέργειαν τοῦ σίτου καὶ τῶν γεωμήλων καὶ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν δασικῶν προϊόντων. Κυρίως ὅμως ἀκμάζει ἡ βιομηχανία τοῦ σιδήρου καὶ τοῦ γαιάνθρακος, ἡ ὡρολογοποιία, ἡ μηχανοποιία, ἡ ὑφαντουργία κλπ.

— **Μπελφὸρ συνωμοσία.** Ἐξυφάνθη αὕτη περὶ τὰ τέλη τοῦ 1821 μεταξὺ διαφόρων ἐν ἐνεργείᾳ καὶ ἀποστρατείᾳ Γάλλων ἀξιωματικῶν, ἐν συμφωνίᾳ μετὰ τῶν πολιτικῶν ἀρχηγῶν τῆς φιλελευθέρας ἀντικαθεστωτικῆς παρατάξεως Λὰ Φαγιέτ, ντ' Ἀρζανσόν, Καρὲλ κλπ. Ἡ ἐπανάστασις ἐπρόκειτο νὰ ἐκραγῇ κατὰ τὴν νύκτα τῆς 1 Ἰανουαρίου 1822, ἀνακαλυφθεῖσα ὅμως κατὰ τὴν προηγουμένην ἡμέραν ἐματαιώθη. Οἱ ἐπὶ κεφαλῆς αὐτῆς ἀξιωματικοὶ συλληφθέντες καταδικάσθησαν καὶ ἐθανατώθησαν. Οἱ πολιτικοὶ ἀρχηγοὶ διεσώθησαν ἐλλείψει ἐπαρκῶν ἀποδείξεων. Οἱ σκοποὶ τῆς συνωμοσίας ταύτης δὲν ἦσαν ἐντελῶς καθωρισμένοι, διότι ὑπῆρχε μεγάλη μεταξὺ τῶν συνωμοτῶν διχογνωμία. Χ. Δ.

**μπελχὰρ** (belhar). Τίτλος, ὃν ἐλάμβανεν ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰνδιῶν ἐκεῖνος, ὅστις προΐστατο τῶν λοιπῶν ἡγεμόνων. Ἀνταποκρίνεται πρὸς τὸν ἀντίστοιχον περσικὸν τίτλον παντισᾶ ἢ σερχυάρ. Α. Δ.

**Μπέλωφ** (Below), ***Ὄθων φὸν —***. Γερμανὸς στρατηγός, ἀδελφὸς τοῦ Φρειδερίκου, γεννηθεὶς τῷ 1855. Ἀποφοιτήσας τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς κατετάχθη τῷ 1875 εἰς τὸν γερμανικὸν στρατὸν ὡς ὑπολοχαγὸς τοῦ πεζικοῦ. Τῷ 1909 προήχθη εἰς στρατηγὸν καὶ διώκει τὴν ἐν Ἰνστερμπουργκ τῆς Ἀ. Πρωσσίας ἐδρεύουσαν 2αν μεραρχίαν. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐπολέμησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ἀνατολικὸν μέτωπον, κατὰ Μάϊον δὲ τοῦ 1915 διώκει τὰ στρατεύματα τοῦ Νιέμεν, ἅτινα κατέλαβον τὸ Λιμπάου, τὸ Βιντάου καὶ τὸ Μιτάου. Τῷ 1916 ἀντικατέστησε τὸν στρατηγὸν φὸν Μπύλωφ εἰς τὴν διοίκησιν τῶν πρὸ τοῦ Ἀρρὰς καὶ τοῦ Σουασσὸν στρατευμάτων, εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1917 διοικῶν τὴν 14ην γερμανικὴν στρατιὰν διηύθυνε τὴν ἐναντίον τῆς Ἰταλίας αὐστρογερμανικὴν ἐπίθεσιν εἰς τὸ μέτωπον τοῦ Ἰζόντζο καὶ ἐκέρδησε τὴν μεγάλην μάχην τοῦ Καπορέττο. Ἐκεῖθεν μετετέθη ἐκ νέου εἰς τὸ Δυτικὸν μέτωπον καὶ διώκησε τὴν 17ην γερμανικὴν στρατιάν, λαβὼν μέρος εἰς τὴν δευτέραν μάχην τοῦ Σὸμ κατὰ Μάρτιον τοῦ 1918. Χ. Δ.

— **Μπέλωφ** (Below), ***Φρειδερῖκος φὸν—***. Γερμανὸς στρατηγός, υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ Φερδινάνδου φὸν Μπέλωφ, γεννηθεὶς τῷ 1853. Ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν κατετάχθη εἰς τὸν γερμανικὸν στρατὸν τῷ 1873 ὡς ὑπολοχαγὸς τῆς φρουρᾶς. Τῷ 1912 προήχθη εἰς στρατηγὸν καὶ ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ 19ου σώματος στρατοῦ. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, διώκει τὴν 8ην γερμανικὴν στρατιάν. Διεκρίθη εἰς τὸ ἀνατολικὸν μέτωπον εἰς τὰς πρώτας ἐπιχειρήσεις τῆς Ἀ. Πρωσσίας, ὅπου ἐκέρδησε τὴν μάχην τοῦ Λύκ. Τῷ 1917 μετετέθη εἰς τὸ Δυτικὸν μέτωπον, τῷ δὲ 1918 διώκει τὰ γερμανικὰ στρατεύματα κατὰ τὴν τρίτην μάχην τοῦ Αἲν (Μάϊον—Ἰούνιον). Ἀποτυχὼν εἰς τὴν ἐπίθεσιν κατὰ τοῦ Ρέμς, ἀντικατεστάθη. Χ. Δ.

**Μπὲμ** (Behm), ***Ἐρνέστος.*** Γερμανὸς γεωγράφος καὶ στατιστικὸς (1830—1884). Ἀφοῦ κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασεν ἰατρικήν, ἐπεδόθη κατόπιν εἰς γεωγραφικὰς μελέτας. Τῷ 1866 ἐπανήρχισε τὴν ἔκδοσιν τῆς «Γεωγραφικῆς Ἐπετηρίδος», ἐκ τῆς ὁποίας τῷ 1872 ἀπεσπάσθη τὸ τμῆμα τῆς στατιστικῆς τῶν πληθυσμῶν, ὅπερ ἔκτοτε ἐκδίδεται ὡς συμπλήρωμα τῶν «Ἀνακοινώσεων τοῦ Πέτερμανν» ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁ πληθυσμὸς τῆς γῆς». Ἀπὸ τοῦ 1876 διηύθυνε τὸ τμῆμα στατιστικῆς τοῦ «Ἡμερολογίου Γκότα». Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Πέτερμανν ἀνέλαβε τὴν σύνταξιν τῶν «Ἀνακοινώσεων». Γ. Ε. Κ.

— **Μπὲμ** (Bem), ***Ἰωσήφ.*** Πολωνὸς στρατηγὸς (1795—1850). Ἔλαβε μέρος ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ ἐν τῷ γαλλικῷ στρατῷ εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ρωσίας τοῦ 1812. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐν Βαρσοβίᾳ ἐπαναστάσεως τοῦ Νοεμβρίου 1830 ἐβαθμολογήθη ταγματάρχης, διεκρίθη δὲ κατὰ τὰς ἐν Iganie καὶ Ostrolenka μάχας καὶ προήχθη ταχέως εἰς στρατηγόν. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Βαρσοβίας ἔζησεν ἐν Λειψίᾳ καὶ ἀπὸ τοῦ 1832 ἐν Παρισίοις. Τῷ 1848 ἀνέλαβε τὴν ὀργάνωσιν ἀμύνης τῆς Βιέννης, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν δὲ καὶ τῆς ἐπαναστάσεως ταύτης κατέφυγεν εἰς Οὐγγαρίαν, ὅπου τῷ ἀνετέθη ἡ ὀργάνωσις καὶ διοίκησις τῶν ἐν Τρανσυλβανίᾳ ἐπαναστατικῶν δυνάμεων. Μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Τέμεσβαρ (1849) κατέφυγεν εἰς Τουρκίαν καὶ ἀσπασθεὶς τὸν Ἰσλαμισμὸν ἐγένετο πασᾶς, ἡγούμενος δὲ τουρκικῶν στρατευμάτων κατέστειλε τὴν ἐναντίον τῶν Χριστιανῶν ἀραβικὴν ἐπανάστασιν τοῦ Χαλεπίου (1850). Γ. Ε. Κ.

**μπεμὸλ** (τὸ) (bemol) [*Μουσ.*]· βλ. λ. ὕφεσις.

**Μπεμὸν** (Bémont), ***Κάρολος.*** Γάλλος ἱστορικός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1848. Ἐδίδαξεν ἐν ἀρχῇ ἱστορίαν εἰς διαφόρους σχολάς, ἐγένετο δὲ ἀπὸ τοῦ 1876 γραμματεὺς τῆς «Ἱστορικῆς ἐπιθεωρήσεως» καὶ βραδύτερον συνδιευθυντὴς αὐτῆς, μετὰ τοῦ Γαβρ. Μονὸ ἐν ἀρχῇ καὶ κατόπιν μετὰ τοῦ Καρ. Πφίστερ. Ὁ Μπεμὸν ἐπεδόθη ἰδίως εἰς μελέτας ἐπὶ τῆς μεσαιωνικῆς ἱστορίας τῆς Ἀγγλίας, ἐδημοσίευσε δὲ ἐν τῷ κλάδῳ τούτῳ σημαντικὰ ἔργα, ἐν οἷς τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Συνταγματικοὶ χάρται τῶν ἀγγλικῶν ἐλευθεριῶν», ὅπου ἔχει συγκεντρώσει πάντα τὰ κείμενα τῶν συνταγματικῶν νόμων καὶ διαταγμάτων τῶν ἐκδοθέντων ὑπὸ τῶν βασιλέων τῆς Ἀγγλίας ἀπὸ τοῦ 1100 μέχρι τοῦ 1305, μεταξὺ αὐτῶν εἶναι καὶ ἡ «Magna Carta libertatum», δι' ἧς τῷ 1215 ὁ Ἰωάννης ὁ Ἀκτήμων, ὑπὸ τὴν πίεσιν τοῦ ἀνωτέρου κλήρου καὶ τῶν βαρώνων, ἔδωκεν ἐπίσημον κύρωσιν εἰς τὰς λαϊκὰς ἐν Ἀγγλίᾳ ἐλευθερίας. Ἕτερον σημαν-

Digitized by Google

τικὸν ἔργον τοῦ Μπεμὸν εἶναι οἱ «Γασκονικοὶ ρόλοι» (ἐν τῇ «Συλλογῇ ἀνεκδότων στοιχείων τῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας», 3 τόμοι 1896, 1901, 1906). Διὰ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ἐπεκράτησε νὰ χαρακτηρίζωνται τὰ κείμενα τῶν ἀποφάσεων τῆς ἐν Γασκόνῃ ἀγγλικῆς διοικήσεως κατὰ τὴν περίοδον 1152—1453, καθ' ἣν ἡ ἐπαρχία αὕτη ἐτέλει ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Ἄγγλων βασιλέων. Εἶναι δὲ αἱ ἀποφάσεις αὗται γεγραμμέναι ἐπὶ 1847 φύλλων περγαμηνῆς, συνερραμμένων ἐν συνεχείᾳ πρὸς ἄλληλα κατὰ τὰς πλευράς των, ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία «ρόλοι». Τὸ ὀγκῶδες τοῦτο ὑλικὸν εἶναι πολύτιμον ὄχι μόνον διὰ τὴν μελέτην τῶν τοπικῶν ἐν Γουϊέννῃ συνθηκῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης (ἐθίμων, δικαστηρίων, καταστάσεως τοῦ κλήρου, τῶν εὐγενῶν καὶ τοῦ λαοῦ), ἀλλὰ καὶ διότι διαφωτίζει προσθέτως τὴν ἱστορίαν τῶν σχέσεων Γαλλίας καὶ Ἀγγλίας κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Ἀντλῶν ἐξ αὐτοῦ ὁ Μπεμὸν ἐδημοσίευσεν ἐξ ἄλλου πλείστας εἰδικὰς μελέτας, ἐν αἷς: «Μυστικαὶ ἐπιστολαὶ ἀποσταλεῖσαι ὑπὸ τῆς καγκελαρίας τοῦ πρίγκιπος Ἐδουάρδου (τοῦ βραδύτερον βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐδουάρδου Α') κατὰ τὰ ἔτη 1254 καὶ 1255», «Τὰ δημοτικὰ ἱδρύματα τοῦ Βορδὼ κατὰ τὸν Μεσαίωνα», κ. ἄ. Ἐκ τῶν ἄλλων ἔργων αὐτοῦ προέχουσιν: «Αἱ ἐν Ἀγγλίᾳ ἐπαναστάσεις τοῦ 1553 καὶ 1554» (1912), «Τὸ πρῶτον διαζύγιον τοῦ Ἑρρίκου Η' καὶ τὸ ἀγγλικὸν σχίσμα» (1916), «Ἱστορία τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Γαλλίας ἀπὸ τοῦ 395 μέχρι τοῦ 1270», «Κριτικὴ βιβλιογραφία τῆς ἱστορίας τῆς Ἀγγλίας» (δημοσιευθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1891 εἰς τὰ ἐτήσια δελτία τῆς «Ἱστορικῆς Ἐπιθεωρήσεως») κλπ. Ἀπὸ τοῦ 1919 ὁ Μπεμὸν ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Γ. Ζ.

**Μπεμπὲ** (Bébé). Ὄνομα μὲ τὸ ὁποῖον εἶναι γνωστὸς ὁ περίφημος νᾶνος τοῦ Στανισλάου Λετζίνσκι δουκὸς τῆς Λωρραίνης, *Νικόλαος Φερρύ*. Ἐγεννήθη εἰς τὰ Βόσγια (1739—1764) καὶ εἶχεν ὕψος 70 ἑκατοστῶν τοῦ μέτρου. Ἦτο μικρᾶς διανοητικῆς ἀναπτύξεως, οὐδέποτε δὲ κατώρθωσε νὰ μάθῃ οὐδὲ ἀνάγνωσιν. Χ. Δ.

**μπεμπέκα** (ἡ)· θωπευτικὴ ὀνομασία τῶν θηλέων νηπίων, ἄλλως *μπέμπη* καὶ *μπέμπα* (βλ. *μπέμπης*).

**Μπεμπέκι** *(Βεβέκιον) [Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Κωνσταντινουπόλεως, κείμενον ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς παραλίας ἐντὸς λιμένος σχηματιζομένου ὑπὸ ὑφαλογλώσσης ἐν τῷ κόλπῳ τῶν Χηλῶν. Κατέχει τὴν θέσιν τῶν ἀρχαίων Χηλῶν καὶ ἔχει πρὸς Β. μὲν τὸ Ρούμελι Χισάρ (Ἕρμαιον), πρὸς Ν. δὲ τὸ Ἀρναοὺτ-κιοϊ (Ἑστίαι). Ἐν αὐτῷ ὑπάρχει παλαιὸν σουλτανικὸν περίπτερον, κτισθὲν τῷ 1725 ἐπὶ Σελὴμ Α', τὸ ὁποῖον ἐχρησίμευεν ἐπὶ τῆς αὐτοκρατορίας ὡς τόπος συναντήσεων τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν μετὰ τῶν Εὐρωπαίων πρεσβευτῶν. Μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ Ρούμελι Χισὰρ κεῖται ἐπὶ ὑψώματος ἡ περίφημος Ροβέρτειος σχολὴ (βλ. καὶ λ. *Βόσπορος* καὶ *Κωνσταντινούπολις*).

— *[Παραλ. Γεωγρ.]* Ὁ ὁμώνυμος ὕφορμος (πλάτ. 41° 04' ½ Β, μῆκ. 29° 03' Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus) κεῖται μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Ἀρναοὺτ Μπουρνοῦ καὶ Ρούμελι Χισάρ, 5 μίλ. βορ. τῆς Κωνσταντινουπόλεως (ἀπὸ τῆς Σταμπούλ). Ἔχει ναυτικὸν φανὸν λευκοῦ σταθεροῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μπέμπελ** (Bebel), ***Ἑρρῖκος***. Περιώνυμος Γερμανὸς λατινιστὴς (1472—1518). Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Τυβίγγης καὶ ἔγραψε: «Facetiae» ἐναντίον τοῦ κλήρου (1506), «Proverbia germanica in latinum traducta» (1508), «Triumphus Veneris», σατιρικὸν ποίημα κτλ. Α. Δ.

**Μπέμπελ** (Bebel), ***Φερδινάνδος - Αὔγουστος***. Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἡγετῶν τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κινήματος, γεννηθεὶς τῷ 1840 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1913. Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ὡς βοηθὸς ξυλουργοῦ, τῷ δὲ 1864 μετέβη ἐκ τῆς πατρίδος του Κολωνίας εἰς Λειψίαν, ὅπου καὶ ἐγκατεστάθη μονίμως. Ἐν τῷ μεταξὺ μετέσχεν ἐνθουσιωδῶς τοῦ κινήματος τοῦ γερμανικοῦ προλεταριάτου, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἤδη ἀπὸ τοῦ Λασσὰλ σαφῶς σοσιαλιστικὸν χαρακτῆρα. Τῷ 1865 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς «Ἑταιρείας πρὸς μόρφωσιν τῶν ἐργατῶν» καὶ μέλος τῆς μονίμου ἐπιτροπῆς τῶν γερμανικῶν ἐργατικῶν σωματείων, ἧς προήδρευσε τῷ 1867. Ὁ Μπέμπελ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τοῦ γερμανικοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος, τὸ ὁποῖον συνεπήχθη τῷ 1869 εἰς τὸ συνέδριον τοῦ Ἀϊζεναχ.

*Φ. Αὔγουστος Μπέμπελ.*

Τῷ 1867 ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς εἰς τὸ Ράϊχσταγ καὶ ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν συνομοσπονδίαν τοῦ Βορρᾶ, ἀρνηθεὶς νὰ ψηφίσῃ τὰς πολεμικὰς πιστώσεις κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Γερμανίας πρὸς τὴν Γαλλίαν (1870). Ἐπίσης κατεπολέμησε τὴν κυριαρχίαν τῆς Πρωσσίας ἐν Γερμανίᾳ καὶ τὴν προσάρτησιν τῆς Ἀλσατίας καὶ Λωρραίνης, ἐκδηλωθεὶς ἀναφανδὸν ὀπαδὸς τῆς Κομμούνας τοῦ 1871 καὶ τῆς Α' Διεθνοῦς. Τῷ 1872 κατηγορήθη ἐπὶ ἐσχάτῃ προδοσίᾳ καὶ κατεδικάσθη μετὰ τοῦ Γ. Λῆμπκνεχτ εἰς διετῆ φυλάκισιν. Τῷ 1877 ἐστάλη ὡς ἀντιπρόσωπος τῶν Γερμανῶν ἐργατῶν εἰς τὸ συνέδριον τῆς Δρέσδης καὶ τῷ 1881 τῆς Λειψίας. Ἐξορισθεὶς βραδύτερον ἐκ Λειψίας, ἕνεκα τοῦ νόμου τοῦ Βίσμαρκ κατὰ τῶν σοσιαλιστῶν, ἐγκατεστάθη εἰς Πλιάνυν πλησίον τῆς Δρέσδης. Τῷ 1886 κατεδικάσθη μετ' ἄλλων ἐπιφανῶν σοσιαλιστῶν εἰς νέαν φυλάκισιν ἐννεάμηνον. Μετὰ τὴν ἀκύρωσιν τοῦ κατὰ τῶν σοσιαλιστῶν νόμου ἐγκατεστάθη ἐν Βερολίνῳ, ὅπου ἀφωσιώθη εἰδικῶς εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ «Vorwärts», ἐπισήμου ὀργάνου τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος. Ὁ Μπέμπελ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων ρητόρων καὶ καλυτέρων θεωρητικῶν τῆς ἀκμαζούσης προπολεμικῆς σοσιαλδημοκρατίας. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Ungere Ziele» (ι' ἔκδ. 1893), «Der deutsche Bauernkrieg» (Leipzig 1876) «Die parlamentarische Thätigkeit des Deutschen Reichstags und der Landtage» (Berlin 1876), «Christentum und Socialismus», «Die Frau in der Vergangenheit-Gegenwart und Zukunft» (Zurich 1883), «Die mohammed-arab. Kulturperiode im Orient und Spanien» (Stuttgart 1884), «Charles Fourier» (Stuttgart 1888), «Die Sonntagsarbeit» (Stuttgart 1888), «Zur Lage der Arbeiter in den Bäckereien» (Stuttgart 1890), »Die Socialdemokratie und das allgemeine Wahlrecht» (Berlin 1895), «Die Handhabung des Vereins und Versammlungsrecht in Königsreich Sachsen» (Berlin 1897), «Akademiker und Sozialismus» (Berlin 1898), «Attentate und Sozialdemocratie» (Berlin 1898), «Sozialdemocratie und Centrum» (Berlin 1903), «Die Sozialdemocratie in deutschen Reichstag» (Berlin 1909), «Aus meinem Leben» (Berlin 1910). —Ω.

**Μπέμπελης**, ***Ἐμμανουήλ***. Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς εἰς Κάτω Χωρίον τῆς Φουρνῆς Μεραμβέλλου τῷ 1826. Ἀπὸ τοῦ 1846 ὑπῆρξε χαΐνης (κλέφτης), ἐπὶ ἔτη δὲ ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις τὸν εἶχεν ἐπικηρύξει ὡς ληστήν, χωρὶς νὰ κατορθώσῃ νὰ τὸν συλλάβῃ. Ἡ δρᾶσίς του ὡς καπετάνιου τῆς Φουρνῆς εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866 ὑπῆρξε σημαντική. Ἔλαβε μέρος καὶ διεκρίθη εἰς πολλὰς μάχας, τῶν ὁποίων σπουδαιοτέρα ἡ τοῦ Λασηθίου ὑπὸ γενικὸν ἀρχηγὸν τὸν Μιχ. Κόρακαν. Βραδύτερον μὲ τὸν Κοκκίνην, τὸν Κοζύρην καὶ τὸν Μουρελλογιάννην κατώρθωσε νὰ κερδίσῃ μίαν σοβαρὰν μάχην εἰς Δράσι τοῦ Μεραμβέλλου. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ἐπαναστάσεως, τῷ 1869, κατέφυγεν εἰς Ἀθήνας. Εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1878 ἔσπευσε μεταξὺ τῶν πρώτων νὰ ἡγηθῇ τῶν Φουρνιωτῶν, προσήνεγκε δὲ σημαντικὴν εἰς τὴν ἐπιτυχίαν της συμβολήν. Ἀπέθανε τῷ 1885. Ι. Δ. Μ.

**Μπεμπεντέρο** (Bebedero) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς ἐπαρχίας *Σὰν-Λουΐς* τῆς Ἀργεντινῆς, εἰς ὕψος 400 μέτρων πρὸς Α. τοῦ ὄρους Ἄλτο-Πεγκόζο. Ἔχει μῆκος 30 χλμ. ἀπὸ βορρᾶ πρὸς νότον καὶ πλάτος 15 χλμ. ἀπὸ ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς. Τὰ ὕδατά της τροφοδοτοῦνται ὑπὸ πολλῶν μικρῶν ποταμῶν, οἵτινες ἐκβάλλουν εἰς αὐτήν. Π. Γ. Λ.

**μπέμπης** (ὁ), θηλ. *μπέμπη, μπέμπα* καὶ *μπεμπέκα*· θωπευτικὴ ὀνομασία ἰδίᾳ τῶν νηπίων καὶ τῶν μικρᾶς ἡλικίας παιδίων.

**Μπεμπίκι** *[Γεωγρ.]*. Νησίον τοῦ Σαρωνικοῦ, ἐν τῷ ΝΑ. στομίῳ τοῦ κόλπου τῆς Ἐλευσῖνος (πλάτ. 37° 59' 10" Β., μῆκ. 23° 33' 45" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1657: Gulf of Athens), προσκείμενον τῇ ἀκτῇ τοῦ Σκαραμαγκᾶ. Ὀνομαζόμενον καὶ Ἁρπηδόνι ἦτο γνωστὸν παλαιότερον καὶ ὡς Κεφκένι καὶ ὡς Ζεβελλέκι. Θέλει (1931) φωτισθῇ δι' αὐτομάτου φάρου Ἄγκα. Σ. Ε. Λ.

**Μπέμπο** (Bembo). Οἰκογένεια εὐγενῶν ἐκ Βενετίας, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη διέπρεψαν εἰς τὸν στρατόν, τὴν πολιτικήν, τὸν κλῆρον καὶ τὰ γράμματα.

— **Μπέμπο** (Bembo), ***Ἀμβρόσιος***. Βενετὸς περιηγητὴς (1652—1705). Κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν ἔλαβε μέρος ὡς κυβερνήτης γαλέρας εἰς τὸν κατὰ τῆς Κρήτης πόλεμον καὶ τῷ 1671 συνώδευσε τὸν θεῖόν του Μᾶρκον, μεταβαίνοντα εἰς τὴν θέσιν του ὡς προξένου τῆς Βενετίας εἰς τὸ Χαλέπιον. Ἐκεῖθεν ἀνεχώρησε τῷ 1672 καὶ ἐταξίδευσεν εἰς τὰς Ἰνδίας, μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του δὲ ἐπεχείρησε καὶ ταξίδιον εἰς τὴν Περσίαν καὶ κατόπιν εἰς τὴν Ἀραβίαν. Μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του περιέγραψε τὰ ταξίδιά του ταῦτα, παρασχὼν πολυτίμους πληροφορίας διὰ τὰς χώρας τὰς ὁποίας ἐπεσκέφθη κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Αἱ περιγραφαὶ συνωδεύοντο ὑπὸ πεντήκοντα πρωτοτύπων σχεδίων.

— **Μπέμπο** (Bembo), ***Βερνάρδος***. Βενετὸς πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης (1433—1519). Ὑπῆρξε γερουσιαστὴς καὶ ἀπεστάλη εἰς πολλὰς διπλωματικὰς ἀποστολάς, διετέλεσε δὲ καὶ διοικητὴς τῆς Ραβένης, ὅπου ἤγειρε μαυσωλεῖον εἰς τὸν Δάντην. Ἐκαλλιέργει μετὰ ζήλου τὰ γράμματα καὶ ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἅτινα παρέμειναν ἐν χειρογράφοις. Ἦτο φανατικὸς συλλογεὺς χειρογράφων καὶ ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς περιφήμου βιβλιοθήκης, ἡ ὁποία ἐχρησίμευσεν ὡς βάσις τῆς βιβλιοθήκης τοῦ υἱοῦ του *Πέτρου Μπέμπο*.

— **Μπέμπο** ( embo), ***Ἰωάννης***. Βενετὸς ἑλληνιστὴς καὶ λατινιστὴς (1473—1545). Τῷ 1498 μετέβη εἰς τὴν Κέρκυραν, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1499, ὁπότε, συνεπείᾳ τῆς καταλήψεως τῆς Ναυπάκτου ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἠναγκάσθη νὰ ἀναχωρήσῃ καὶ νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Ραγούζαν καὶ τὸ Πέζαρο. Κατόπιν μετέβη εἰς τὴν Βενετίαν, ὅπου ἐξέδωσε σχόλια εἰς διαφόρους Λατίνους συγγραφεῖς καὶ βραδύτερον ἐπέβη ἐμπορικοῦ πλοίου, διὰ τοῦ ὁποίου ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἰστρίαν, τὴν Δαλματίαν, τὴν Ἀπουλίαν, τὴν Καλαβρίαν, τὴν Σικελίαν, τὴν Ἀφρικὴν καὶ τὴν Ἱσπανίαν, ὅπου συνέλεξε καὶ ἐμελέτησε πλείστας ἀρχαίας ἐπιγραφάς. Τῷ 1508 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Βενετίαν καὶ τῷ 1525 ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς Βενετίας εἰς τὴν Σκίαθον καὶ τὴν Σκόπελον ὡς διοικητὴς αὐτῶν. Τὰς ἐντυπώσεις ἐκ τῶν διαφόρων ταξιδίων του καὶ τὰ σχόλια καὶ τὰς ἑρμηνείας του τῶν διαφόρων ὑπ' αὐτοῦ ἀνευρεθεισῶν ἐπιγραφῶν ἔγραψε λατινιστί. Ἐκ τούτων μόνον ἀποσπάσματα ἐδημοσιεύθησαν.

— **Μπέμπο** (Bembo), ***Ἰωάννης***. Δόγης τῆς Βενετίας (1534—1618). Διεδέχθη τὸν Μᾶρκον Ἀντώνιον Μέμμον τῷ 1615 καὶ ὑπεστήριξε τὸν δοῦκα τῆς Σαβοΐας Κάρολον Ἐμμανουὴλ κατὰ τοῦ ἀρχιδουκὸς Φερδινάνδου τῆς Στυρίας. Ἐπίσης ἐπολέμησε κατὰ τοῦ δουκὸς τοῦ Ὀσσούνα, ἀντιβασιλέως τῆς Νεαπόλεως, ὁ ὁποῖος διεξεδίκει τὴν κυριαρχίαν τῆς Ἀδριατικῆς, καὶ συνῆψε συμμαχίαν πρὸς τὴν Ὁλλανδίαν. Συνεπείᾳ τῆς πολιτικῆς του ταύτης ἐξυφάνθη ἡ συνωμοσία, ἡ γνωστὴ μὲ τὸ ὄνομα τοῦ πρεσβευτοῦ τῆς Ἱσπανίας Μπεντμάρ, πρὸς ἀνατροπὴν τοῦ Μπέμπο καὶ κατάλυσιν τῆς βενετικῆς δημοκρατίας, ἡ ὁποία ὅμως ἐξερράγη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μπέμπο.

— **Μπέμπο** (Bembo), ***Μᾶρκος Ἰακ.***, ὁ ἐπιλεγόμενος «ὁ σοφός». Τῷ 1275 ὑπῆρξεν ἐκλέκτωρ ἐν Βενετίᾳ καὶ κατόπιν διετέλεσε πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ. Τῷ 1289 εἶχε διορισθῆ ἀρχηγὸς τοῦ στόλου τῶν σταυροφόρων, ὁ ὁποῖος εἶχε συγκεντρωθῆ εἰς τὴν Ἀγκῶνα. Κατόπιν διετέλεσε βαΐλος τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατὰ τὴν περίοδον τῶν καταδιώξεων τῶν Βενετῶν, αἵτινες εἶχον λάβει χώραν ὡς ἀντίδρασις κατὰ τῆς ἐπιδρομῆς τοῦ Ρογήρου Μοροζίνι εἰς τὰ ὕδατα τῆς Ἀνατολῆς τῷ 1296 καὶ ἐκρεουργήθη μετὰ μεγάλου ἀριθμοῦ Βενετῶν.

— **Μπέμπο** (Bembo), ***Ντάρντι***. Βενετὸς πολιτικὸς καὶ φιλόλογος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1633. Κατέλαβε τὰ ἀνώτατα ἀξιώματα τῆς δημοκρατίας, ἀνῆκεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Ἀγνώστων καὶ μετέφρασε τὰ ἔργα τοῦ Πλάτωνος.

—**Μπέμπο** (Bembo), ***Πέτρος***. Ἰταλὸς καρδινάλιος καὶ φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Βενετίᾳ (1470—1547). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν σημαντικωτέρων δημιουργῶν τῆς ἰταλικῆς ἀναγεννήσεως. Ἦτο υἱὸς τοῦ Βερνάρδου Μπέμπο, ὁ ὁποῖος ἦτο πρεσβευτὴς τῆς Βενετίας ἐν Φλωρεντίᾳ, καὶ ἤρχισε τὰς σπουδάς του ἐκεῖ ὑπὸ τὸν περίφημον Λάσκαριν, ὁ ὁποῖος ἐδίδαξεν εἰς αὐτὸν τὴν ἑλληνικήν. Ἐξηκολούθησε τὰς σπουδάς του κατόπιν εἰς τὴν Πάδουαν καὶ τὴν Φερράραν, παρὰ τῷ Ἀλφόνσῳ ντ' Ἔστε καὶ τῇ συζύγῳ αὐτοῦ Λουκρητίᾳ Βοργίᾳ, ἡ ὁποία ἐπροστάτευσεν αὐτὸν ἐξαιρετικῶς. Μεταβὰς βραδύτερον εἰς Βενετίαν συνεδέθη μετὰ τοῦ Ἄλδου Μανουτίου, τοῦ γνωστοῦ σοφοῦ καὶ τυπογράφου, καὶ ἀπετέλεσεν ἓν τῶν σημαντικωτέρων καὶ δραστηριωτέρων μελῶν τῆς ὑπ' αὐτοῦ συσταθείσης Ἀκαδημίας. Μετὰ τοῦ Ἄλδου Μανουτίου ἐπεχείρησε νὰ ρυθμίσῃ διάφορα ἀμφισβητούμενα ζητήματα τῆς ἰταλικῆς ὀρθογραφίας, εἰσαγαγών, μεταξὺ ἄλλων, εἰς τὴν ἰταλικὴν γλῶσσαν τὴν ὑπ' αὐτοῦ, ὡς λέγεται, ἐφευρεθεῖσαν ἀπόστροφον καὶ ἄνω τελείαν. Ἀκολούθως μετέβη εἰς Οὐρβῖνον, ὅπου συνῆψε στενὴν φιλίαν μετὰ τοῦ Ραφαήλου καὶ κατόπιν ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Ρώμην, ὅπου ὁ καρδινάλιος Ἰωάννης τῶν Μεδίκων, γενόμενος πάπας ὑπὸ τὸ ὄνομα Λέων Ι', προσέλαβεν αὐτὸν ὡς ἰδιαίτερον γραμματέα. Ὁ Μπέμπο συνεδέθη στενότατα μετὰ τοῦ πάπα Λέοντος Ι', μετὰ τοῦ ὁποίου συνεφώνει εἰς τὰς ἰδέας, ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἀναβίωσιν τῆς κλασσικῆς λατινικῆς γλώσσης καὶ τὴν χρησιμοποίησιν αὐτῆς γενικῶς εἰς τὸν γραπτὸν λόγον, καὶ ἀποστρεφόμενος τὴν χυδαίαν λατινικὴν τῆς ἐποχῆς του ὡμίλει καὶ ἔγραφε τὴν γλῶσσαν τοῦ Κικέρωνος, παροτρύνων καὶ τοὺς ἄλλους νὰ πράττουν τὸ

Digitized by Google

ἴδιον. Ὁ πάπας ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν πλείστους τίτλους καὶ μεγάλας παροχάς, αἵτινες τὸν κατέστησαν πλουσιώτατον καὶ ἐπέτρεψαν εἰς αὐτὸν νὰ διάγῃ ἄνετον καὶ ἐπιδεικτικὴν ζωήν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ προστάτου του Λέοντος Ι' ἀπεσύρθη μετὰ τῆς ἐρωμένης του ὡραίας Μοροζίνης καὶ τῶν τριῶν ἐξ αὐτῆς ἀποκτηθέντων τέκνων εἰς τὴν φιλολογικὴν τότε πρωτεύουσαν τῆς Βενετίας Παδούην, ὅπου ἐχρησιμοποίησε τὸν πλοῦτόν του εἰς τὸ νὰ καταρτίσῃ ὡραίαν νομισματικὴν συλλογὴν καὶ συλλογὴν μεταλλίων καὶ νὰ πλουτίσῃ τὴν ὑπὸ τοῦ πατρός του καταρτισθεῖσαν βιβλιοθήκην διὰ νέων πολυτίμων τόμων καὶ σημαντικωτάτων χειρογράφων. Ἐν Παδούῃ ὁ Μπέμπο ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἱστοριογράφου τῆς Βενετικῆς δημοκρατίας καὶ ἔγραψε τὴν ἱστορίαν αὐτῆς ἀπὸ τοῦ 1486 μέχρι τοῦ 1513, δημοσιευθεῖσαν μετὰ τὸν θάνατόν του. Βραδύτερον μετέβη εἰς τὴν Βενετίαν, ὅπου ἐγένετο βιβλιοθηκάριος τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ἁγίου Μάρκου, τὴν ὁποίαν εἶχε δημιουργήσει ὁ Πετράρχης καὶ πλουτίσει κατόπιν ὁ καρδινάλιος Βησσαρίων. Τῷ 1539 μετέβη εἰς τὴν Ρώμην, ὅπου ὁ πάπας Παῦλος Γ' ὠνόμασεν αὐτὸν καρδινάλιον εἰς ἡλικίαν 69 ἐτῶν. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἐπῆλθε μεγίστη μεταβολὴ εἰς τὴν ζωὴν καὶ τὴν ἰδεολογίαν του. Διότι, ἐνῷ πρότερον ἦτο ἐκ τῶν φανατικωτέρων ἀρχαιολατρῶν, φθάνων μέχρι τοῦ σημείου νὰ ἀποφεύγῃ τὴν κακὴν λατινικὴν μετάφρασιν τῆς ἁγίας Γραφῆς καὶ νὰ ζητῇ ἀπὸ τὸν πάπαν τὴν ἄδειαν νὰ ἀναγινώσκῃ ταύτην εἰς τὴν ἑλληνικήν, ἐγένετο κατόπιν φανατικὸς καθολικὸς καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ἄγγλου καρδιναλίου ντὲ λὰ Πούλ, τοῦ Σαντολὲ καὶ τοῦ Καράφφα εἰς τὴν ἀναστήλωσιν τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας, καταστὰς εἷς τῶν μᾶλλον γενναιοφρόνων Μαικηνῶν τοῦ κλήρου καὶ χρησιμοποιήσας τὰς πολυτίμους γνώσεις του, τὴν μεγάλην ὡς ἐκ τῆς ἀρετῆς του ἐπιβολὴν καὶ τὸν πλοῦτόν του εἰς πλεῖστα ἔργα κοινωνικῆς ὠφελείας.

Ὁ Μπέμπο κατέλιπεν ἱκανὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα κατέταξαν αὐτὸν μεταξὺ τῶν ἐξοχωτέρων συγγραφέων τῆς Ἀναγεννήσεως. Πλὴν τῆς ἱστορίας τῆς Βενετίας, ἔγραψε καὶ πολλὰ φυλλάδια, εἰς τὰ ὁποῖα περιέλαβε τὰς διαφόρους μελέτας καὶ συζητήσεις ἐπὶ διαφόρων φιλολογικῶν θεμάτων. Ἐπίσης ἀφῆκεν ὀγκώδη ἀλληλογραφίαν, περιεργοτάτην καὶ πολυτιμοτάτην διὰ τὰ ἤθη τῆς ἐποχῆς του, διαλόγους κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Πλάτωνος καὶ ἱκανὰ ποιήματα πλήρη χάριτος, αἰσθήματος καὶ φιλοσοφικῶν ἰδεῶν. Τὰ ποιήματά του ταῦτα εἶναι γεγραμμένα, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Πετράρχου, τοῦ ὁποίου ἦτο ἐνθουσιώδης ὀπαδός. Μεταξὺ τῶν διαλόγων του οἱ κυριώτεροι εἶναι οἱ ἐπιγραφόμενοι: «Gli Asolani», μὲ θέμα τὸν πλατωνικὸν ἔρωτα. Οἱ διάλογοι οὗτοι ὠνομάσθησαν οὕτως ἐκ τῆς Ἄζολα, παρὰ τὸ Τρεβίζο, ὅπου λαμβάνουν χώραν, ἐν τῷ μεγάρῳ τῆς ἐνορίας τοῦ του Αἰκατερίνης Κορνάρο, πρῴην βασιλίσσης τῆς Κύπρου, μεταξὺ τῶν συνδαιτημόνων της. Οἱ διάλογοι διαρκοῦν ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας· κατὰ τὴν πρώτην ἡμέραν ἐκτίθενται τὰ ὑπὲρ τοῦ ἔρωτος ἐπιχειρήματα· κατὰ τὴν δευτέραν περιγράφονται διὰ μακρῶν τὰ ἐξ αὐτοῦ κακά· καὶ κατὰ τὴν τρίτην ὁ σοφώτερος τῶν παρισταμένων ἀνακεφαλαιώνει τὰ ὑπὲρ καὶ τὰ κατὰ καὶ προσπαθεῖ νὰ διορθώσῃ τὰς ὑπερβολάς, διὰ τῆς ἀναμείξεως εἰς τὸ γήϊνον πάθος ὑψηλοτέρων αἰσθημάτων. Τὰ ἅπαντα τοῦ Μπέμπο ἐξεδόθησαν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1729 εἰς τέσσαρας τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον «Opere di P. Bembo», ὧν ὁ πρῶτος περιλαμβάνει τὴν «Ἱστορίαν τῆς Βενετίας», ὁ δεύτερος τοὺς «Ἀζολάνους», ὁ τρίτος τοὺς «Στίχους» καὶ ὁ τέταρτος τὰς «Ἐπιστολάς», αἵτινες ἐξεδόθησαν ἐπίσης τῷ 1743 εἰς πέντε τόμους. Ὁ Μπέμπο ἐξέδωσεν ἐπίσης καὶ πολλὰ ἔργα ἄλλων, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰς «Terze Rime» τοῦ Δάντου. Μ. Δ. Β.

**μπέν.** Ἀραβικὴ λέξις σημαίνουσα υἱὸς (θηλ. *μπίντι*=θυγάτηρ). Τίθεται μεταξὺ τοῦ κυρίου ὀνόματος καὶ τοῦ ὀνόματος τοῦ πατρός, ἐνίοτε δὲ ἐκφέρεται καὶ ὡς πρῶτον συνθετικὸν τοῦ οἰκογενειακοῦ ὀνόματος. Ἄλλος τύπος τῆς αὐτῆς λέξεως εἶναι τὸ *ἰμπν* (=υἱός), ἀπαντῶν ὡσαύτως εἰς πατρωνυμικὰ ἀραβικά. Πληθυντικὸς ἀμφοτέρων εἶναι τὸ *μπενί* (καὶ *ἐμπνά*), τιθέμενον ὡς πρῶτον συνθετικὸν τῶν ἐθνικῶν, π. χ. *Μπενὶ-Ἰσραήλ*=οἱ υἱοὶ τοῦ Ἰσραήλ, ἤτοι οἱ Ἑβραῖοι. Ν. Μ.

**Μπεναβέντε** (Benavente) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς *Θαμόρα*. Κάτ. 5.700. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 54 χλμ. πρὸς Β. τῆς πόλεως Θαμόρα καὶ εἰς ὕψος 700 μ. ἐπὶ γραφικῶν λόφων μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ὁρμπίγκο καὶ Ἔσλα. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται κυρίως εἰς τὴν κτηνοτροφίαν. Ἐν τῷ μέσῳ τῆς πόλεως ὑπάρχει λοφίσκος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εὑρίσκονται τὰ ἐρείπια τοῦ ἀρχαίου ἀνακτόρου τῶν δουκῶν τοῦ Μπεναβέντε, μετὰ φρουρίου κτισθέντος μετὰ τὴν ἐκδίωξιν τῶν Σαρακηνῶν καὶ ἡμικαταστραφέντος κατὰ τὸν πόλεμον τῆς ἀνεξαρτησίας. Εἶναι πιθανὸς ἡ Interamnium Flavium τῶν Ρωμαίων, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Πτολεμαίου. Μ. Δ. Β.

**Μπεναβέντε** (Benavente), ***Λουδοβῖκος Κινόνες ντὲ —***. Ἱσπανὸς θεατρικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Τολέδῳ περὶ τὸ τέλος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἐπεδόθη κατ' ἀρχὰς εἰς νομικὰς μελέτας, τὰς ὁποίας ἐγκατέλειψε διὰ νὰ τραπῇ εἰς τὸ θέατρον, πρὸς τὸ ὁποῖον ᾐσθάνετο ἰσχυρὰν κλίσιν καὶ ὅπου ἔσχε λίαν ἐνωρὶς μεγάλας ἐπιτυχίας. Ἔγραψε κυρίως μικρὰ ἔργα, (σκηνικὰ παίγνια, προλόγους καὶ εἰκόνας μονοπράκτους), ἅτινα παρενετίθεντο κατὰ τὰ διαλείμματα τῶν μεγάλων θεατρικῶν ἔργων καὶ ἕτερπον πολλάκις τοὺς θεατὰς περισσότερον ἐκείνων, λόγῳ τῆς χάριτος καὶ τοῦ εὐφυοῦς διαλόγου των. Τὰ ἔργα του ταῦτα ἔδωκαν εἰς τὸν Μπεναβέντε μεγίστην δημοτικότητα, ὀφειλομένην κυρίως εἰς τὰς χαριτολογίας καὶ τὸ ἐλευθεριάζον ὕφος του, ὅπερ ἔχει πάντοτε βάσιν ἠθικὴν καὶ φιλοσοφικήν. Τινὰ τῶν ἔργων του συγκρίνονται πρὸς τὰ καλύτερα τοῦ Θερβάντες, τοῦ Γκόνγκορα, τοῦ Κεβέντο καὶ τοῦ Λόπε ντὲ Βέγκα. Ὁ Μπεναβέντε εἶχε παραμελήσει τὴν ἐκτύπωσιν καὶ τὴν διάδοσιν τῶν ἔργων του, τὰ ὁποῖα κατὰ τὸ πλεῖστον παρέμειναν ἀνέκδοτα ἢ ἐχάθησαν. Εὐτυχῶς κατὰ τὸ 1645 ὁ φίλος του Μανουὴλ Ἀντόνιο ντὲ Βάργκας περισυνέλεξε τινὰ τούτων, τὰ ὁποῖα καὶ ἐξέδωκεν ἐν Μαδρίτῃ ὑπὸ τὸν τίτλον «Burlas veras, o reprehension moral y festiva de los desordenes publicos: en doze entremeses representados in veinte y quatro cantados».

**— Μπεναβέντε - ὐ - Μαρτίνεθ** (Benavente-y-Martinez), ***Ὑάκινθος***. Ἱσπανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ κριτικός, γεννηθεὶς ἐν Μαδρίτῃ τῷ 1866. Ἤρχισε σπουδάζων νομικά, τὰ ὁποῖα ὅμως ἐγκατέλειψε, τῷ 1885, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του, διὰ ν' ἀκολουθήσῃ μίαν ἠθοποιὸν ἱπποδρομίου. Μετ' αὐτῆς ἐταξίδευσεν εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἱσπανίαν καὶ κατόπιν περιῆλθε τὴν Γαλλίαν, Ἀγγλίαν καὶ Ρωσίαν, ὅπου ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ ἱπποδρομίου καὶ ἑνὸς θεατριδίου τύπου «Γκινιόλ», ἀνῆλθε δὲ καὶ ἐπὶ τῆς σκηνῆς, ἀλλ' ἄνευ μεγάλης ἐπιτυχίας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον του ἔργον, μίαν συλλογὴν ποιημάτων, τὴν ὁποίαν ἠκολούθησεν ἡ μελέτη «Τὸ φανταστικὸν θέατρον» (1892). Κατόπιν ἐξέθεσε τὸ πρῶτον κριτικὸν ἔργον «Γυναικεῖαι ἐπιστολαί» (1893), λίαν ἀξιόλογον δοκίμιον ψυχολογίας. Ἡ πρώτη καὶ ὀνομαστοτέρα αὐτοῦ κωμῳδία «Ἡ ξένη φωλιά», παρεστάθη τῷ 1894, ἀλλὰ τὸ ἔργον δὲν ἤρεσεν εἰς τὸ κοινὸν καὶ τὴν κριτικήν, μόνον δὲ μετὰ παρέλευσιν ὀλίγων ἀκόμη ἐτῶν ἤρχισε νὰ ἀναγνωρίζεται ἡ ἀξία τοῦ νέου συγγραφέως, ὁ ὁποῖος βραδύτερον ἀνεδείχθη ὁ μεγαλύτερος δραματικὸς τῆς συγχρόνου Ἱσπανίας. Αἱ πρῶται θεατρικαὶ του ἐπιτυχίαι ἐσημειώθησαν τῷ 1896 μὲ τὴν κωμῳδίαν «Γνωστοὶ ἄνθρωποι» καὶ τῷ 1898 μὲ «Τὸ φαγητὸν τῶν θηρίων». Κατόπιν ἤρχισε νὰ γράφῃ συνεχῶς, μὲ παραγωγικότητα ἀξιοθαύμαστον. Ὁ ἀριθμὸς τῶν κωμῳδιῶν καὶ τῶν δραμάτων ὑπερέβη τὰ ἑκατόν, ἔγραψε δ' ἐπίσης μυθιστορήματα καὶ κριτικὰς μελέτας, εἰς ἰδιαιτέρους τόμους, εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐγένετο τῷ 1899 διευθυντὴς τοῦ περιοδικοῦ «Φιλολογικὴ Ζωὴ» καὶ βραδύτερον τῆς «Κωμικῆς Μαδρίτης» καὶ συνειργάσθη εἰς τὴν «Σύγχρονον ἐπιθεώρησιν» (1898), εἰς τὴν «Ἱσπανικὴν εἰκονογραφημένην» (1897—1899), εἰς τὴν «Τέχνην τοῦ θεάτρου» (1902), εἰς τὰ «Ἀναγνώσματα» καὶ τὸν «Ἥλιον» (1903—1904), καὶ ἰδίως εἰς τὴν ἐφημερίδα «Ὁ Ἀνεξάρτητος» (L'imparcial), τῆς ὁποίας ἦτο ὁ φιλολογικὸς ἀρθρογράφος καὶ κριτικὸς ἀπὸ τοῦ 1906—1908 καὶ ἀπὸ τοῦ 1914—1916. Κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ σταδίου του ὑπέστῃ ζωηρὰν τὴν ἐπίδρασιν τῶν Γάλλων συγγραφέων τῆς ἐποχῆς καὶ μάλιστα τοῦ Λαβεντάν, τοῦ Ντονναὶ καὶ τοῦ Καπύς, ἀλλὰ σὺν τῷ χρόνῳ ἀπηλλάγη ταύτης καὶ ἐδημιούργησεν ἰδίαν προσωπικότητα, ἥτις ἐπεβλήθη, παρὰ τὴν ἀντίδρασιν τῶν ὀπαδῶν του, ἐκτοπίσασα τὸν Ἐτσεγκαράϋ καὶ τοὺς ὀπαδούς του, ἐναντίον τῶν ὁποίων τὸ ἔργον τοῦ Μπεναβέντε ἀπετέλεσε ζωηρὰν ἐπανάστασιν. Εἰς τὴν παλαιὰν τεχνοτροπίαν τοῦ ρωματισμοῦ καὶ τῶν πολυπλόκων περιπετειῶν καὶ ραδιουργιῶν ὁ Μπεναβέντε ἀντέταξε τὴν πιστὴν ἀπόδοσιν τῆς ζωῆς μετὰ κλασσικῆς ἁπλότητος καὶ διαυγείας ὕφους. Ἰδιαίτερον χαρακτηριστικὸν τῶν ἔργων του εἶναι ἡ λεπτὴ εἰρωνεία καὶ ἡ διάπλασις πλείστων τύπων εἰλημμένων ἐκ τῆς ζωῆς μετὰ πολλῆς ἐκλεκτικότητος. Χάρις εἰς τὰ προσόντα του ταῦτα ἀπέκτησε μεγάλην φήμην ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τῆς Ἱσπανίας, ἐκλεγεὶς τῷ 1912 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Ἱσπανίας καὶ λαβὼν τῷ 1922, καθ' ἣν ἐποχὴν εὑρίσκετο εἰς τὴν Ἀμερικὴν ἐπὶ κεφαλῆς θιάσου παριστάνοντος τὰ ἔργα του, τὸ βραβεῖον Νόμπελ τῆς φιλολογίας. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του μετεφράσθησαν εἰς πολλὰς ξένας γλώσσας καὶ ἐπαιχθησαν ἐπανειλημμένως εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Μεταξὺ τούτων εἶναι, πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων, καὶ τὰ ἑξῆς: «Ἡ οἰκοδέσποινα» (1901), «Ἡ νὺξ τοῦ Σαββάτου» (1903), «Τὸ φθινοπωρινὸν ρόδον» (1905), «Τὰ καλὰ καὶ συμφέροντα» (1907), «Ἡ κτηνώδης βία» (1908), «Ὁ πρίγκιψ ποῦ τὰ ἔμαθεν ὅλα ἀπὸ τὰ βιβλία» (1909), ἔργον γραφὲν ἐπίτηδες διὰ τὸ παιδικὸν θέατρον, «Ἡ φωτισμένη νύχτα» (1927) κτλ. Ἡ πλήρης σειρὰ τῶν θεατρικῶν ἔργων του ἤρχισεν ἐκδιδομένη ἀπὸ τοῦ 1913 ἐν Μαδρίτῃ ὑπὸ τὸν τίτλον «Πλῆρες θέατρον». Πρότερον, ἀπὸ τοῦ 1906 μέχρι τοῦ 1910, εἶχον ἐκδοθῆ ἐν Μαδρίτῃ τὰ μέχρι τότε ἔργα του εἰς 20 τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον «Obras completas». Μ. Δ. Β.

Μπεναβέντε-ῦ-Μαρτίνεθ.

**Μπὲν Ἀϊσσᾶ** (Ben Aïssa). —1) Ἀλγερῖνος ἰμάμης ἐκ Κωνσταντίνης, ἀποθανὼν τῷ 1835. Ἦτο ἐκ τῶν ἀσπόνδων πολεμίων τῆς ἐν Ἀλγερίᾳ ἐγκαταστάσεως τῶν Γάλλων, ἀξιομνημόνευτος δ' εἶναι ἡ ὑπ' αὐτοῦ, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Σίντι Σαΐντ, διοργανωθεῖσα τῷ 1830 ἐξέγερσις, τὴν ὁποίαν μετὰ πολλὰς δυσχερείας κατώρθωσε νὰ καταπνίξῃ ὁ στρατηγὸς Μπερτεζέν.

—2) Ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Κωνσταντίνης ὑπὸ τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων (1836—1837), διῴκησεν ἐπιτυχῶς τὴν φρουρὰν τῆς πόλεως. Μετὰ τὴν κατάληψιν ὅμως αὐτῆς κατέβαλε μεγάλας φροντίδας διὰ τὴν εἰρήνευσιν τῆς χώρας. Οἱ Γάλλοι εἰς ἀνταμοιβὴν διώρισαν αὐτὸν χαλίφην τοῦ Σαχέλ. Χ. Δ.

**Μπεναζὲ** (Bénazet), ***Παῦλος***. Γάλλος πολιτικὸς καὶ λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1876. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Σαὶν-Σύρ, ὁπόθεν ἐξῆλθεν ἀνθυπολοχαγὸς τῷ 1898, ἀλλὰ παρῃτήθη τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ τῷ 1902 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ καὶ λαβὼν δίπλωμα νομικῆς, ἐπεδόθη εἰς τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ εἰς τὴν πολιτικήν, γενόμενος βουλευτὴς καὶ κατόπιν γερουσιαστής, εἰσηγητὴς τῆς κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς ἐπὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ τῶν στρατιωτικῶν καὶ τῶν ἐξοπλισμῶν ἀπὸ τοῦ 1914—1918 καὶ πρόεδρος τῆς ἐπιτροπῆς τῶν ἐξοπλισμῶν κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως εἰς Ἀθήνας καὶ Θεσσαλονίκην, ὅπως διαπραγματευθῇ τὴν ἔξοδον τῆς Ἑλλάδος παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ. Εἶναι μέλος τῆς Γεωγραφικῆς Ἑταιρείας τῆς Γαλλίας καὶ τῆς ἑταιρείας τῶν Γάλλων θεατρικῶν συγγραφέων. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων τὸ δραματικὸν ἔργον «Σιμόνη» (1902), τὸ διήγημα «Ὁ φάρος» (1905) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπενάκειον *μουσεῖον***. Μουσεῖον ἐν Ἀθήναις ἱδρυθὲν τῷ 1931 ὑπὸ τῶν κληρονόμων τοῦ Ἐμμανουὴλ Μπενάκη (Ἀλεξάνδρας Κ. Χωρέμη, Ἀντωνίου Ἐμμ. Μπενάκη, Πηνελόπης Σ. Δέλτα, Ἐργίνης Μ. Σαλβάγου καὶ Βιργινίας Ρωμάνου, τὸ γένος Ἀλεξάνδρου Ἐμμ. Μπενάκη). Τὸ μουσεῖον εὑρίσκεται ἐντὸς τῆς πρὸς τοῦτο δωρηθείσης πατρικῆς οἰκίας τῆς οἰκογενείας Μπενάκη ἐπὶ τῆς γωνίας τῆς Λεωφόρου Κηφισίας καὶ τῆς ὁδοῦ Κουμπάρη, καταλλήλως ἐπεκταθείσης καὶ διαρρυθμισθείσης διὰ τῆς προσθήκης τριωρόφου πτέρυγος. Τὴν ἐπέκτασιν καὶ τὴν καθόλου διασκευὴν εἰς μουσεῖον ἐπετέλεσεν ἰδίαις δαπάναις ὁ Ἀντώνιος Ἐμμ. Μπενάκης, παρασχὼν καὶ τὰς ἀναγκαίας διὰ τὴν συντήρησιν καὶ λειτουργίαν του πόρους. Τὰ ἐγκαίνια αὐτοῦ καὶ ἡ ἐπίσημος παράδοσίς του ὑπὸ τῶν δωρητῶν εἰς τὸ Ἑλληνικὸν κράτος ἐγένοντο τὴν 22 Ἀπριλίου 1931.

Τὸ μουσεῖον Μπενάκη ἀπηρτίσθη: 1) Ἐκ τῶν ἀτομικῶν συλλογῶν τοῦ Ἀντωνίου Μπενάκη. Αἱ συλλογαὶ αὗται, τὰς ὁποίας συνεκέντρωνεν ἐπὶ τριάκοντα συνεχῆ ἔτη ὁ δωρητὴς καὶ αἵτινες ἐστοίχισαν περὶ τὰς 500.000 λίρας Ἀγγλίας, ἀποτελοῦνται κυρίως ἐξ εἰδῶν καὶ ἀντικειμένων μουσουλμανικῆς, βυζαντινῆς καὶ χριστιανικῆς τέχνης παντὸς κλάδου—ὑφασμάτων, κεντημάτων, κοσμημάτων, ὅπλων κτλ.—, ἐξ ἱστορικῶν κειμηλίων καὶ ἐνθυμίων τοῦ Ἀγῶνος, ὡς καὶ ἀρτίας συλλογῆς ἑλληνικῆς λαογραφικῆς τέχνης. 2) Ἐκ τοῦ εἰδικοῦ τμήματος τῆς βιβλιοθήκης. Ἡ βιβλιοθήκη αὕτη, καταρτισθεῖσα εἰδικῶς διὰ τὸ μουσεῖον, δαπάναις Ἀντωνίου Μπενάκη, ἀποτελεῖται ἐκ 3.000 περίπου τόμων, ἀφορώντων τὰς τέχνας καὶ τὴν ἱστορίαν, ἰδίως τὴν ἑλληνικήν. 3) Ἐκ συλλογῆς εἰδῶν κεραμουργίας τῶν λεγομένων ροδιακῶν. Ἡ συλλογὴ αὕτη, ἀποτελουμένη ἐξ 100 τεμαχίων, ἐσχηματίσθη ἀρχικῶς ὑπὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου Ἐμμ. Μπενάκη, ἠγοράσθη δὲ μετὰ τὸν θάνατον τούτου ὑπὸ τοῦ πατρός του Ἐμμανουὴλ Μπενάκη, δωρήσαντος αὐτὴν εἰς τὸ ἔθνος. 4) Ἐκ συλλογῆς σινικῆς κεραμουργίας. Αὕτη, συγκειμένη ἐκ 400 τεμαχίων, ἐδωρήθη εἰς τὸ μουσεῖον Μπενάκη, ὑπὸ τοῦ ἐν Λονδίνῳ ὁμογενοῦς Γεωργίου Εὐμορφοπούλου. 5) Ἐκ τῶν ἐκ-

Digitized by Google

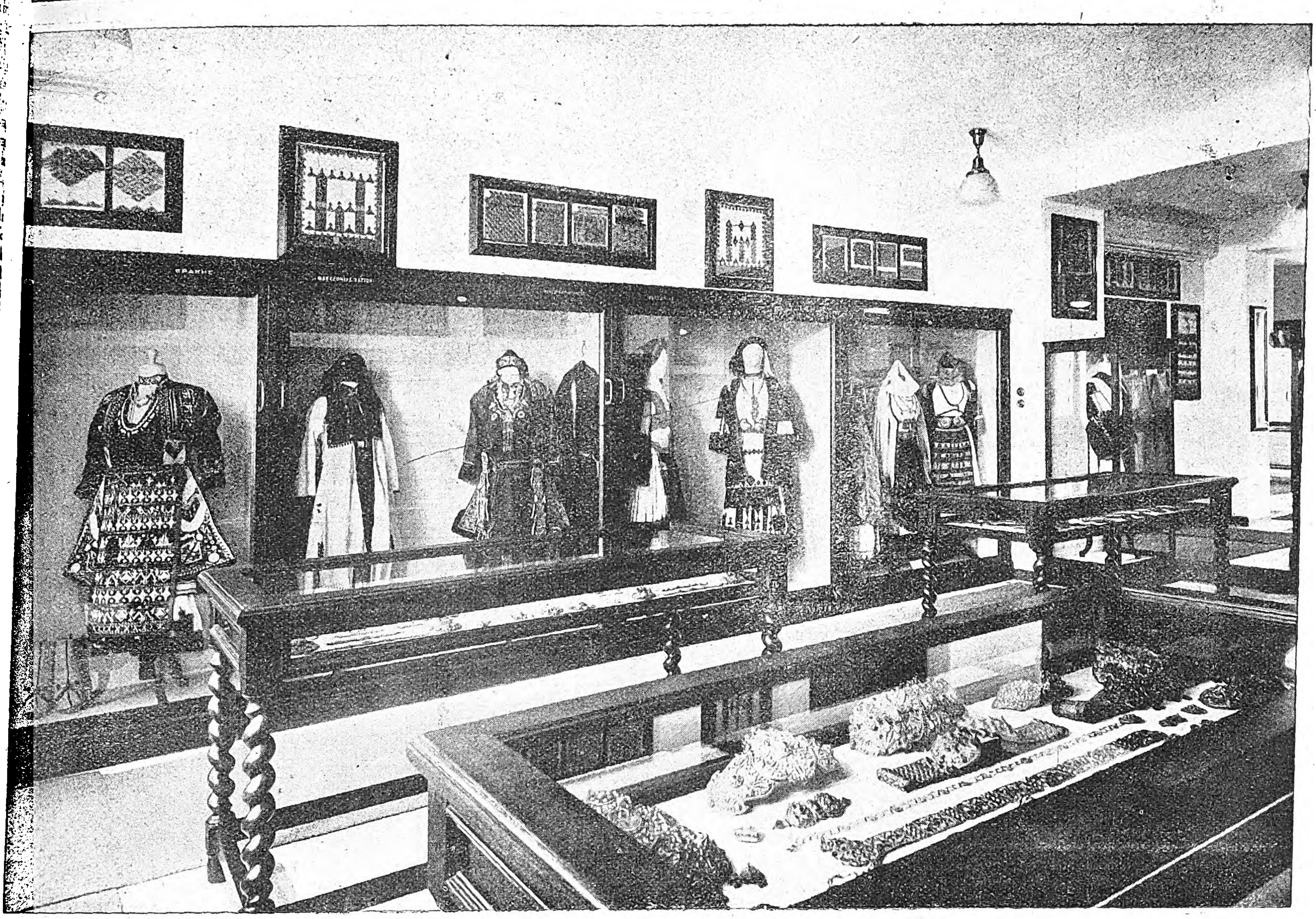

Ἡ αἴθουσα τῆς ἑλληνικῆς λαϊκῆς τέχνης.

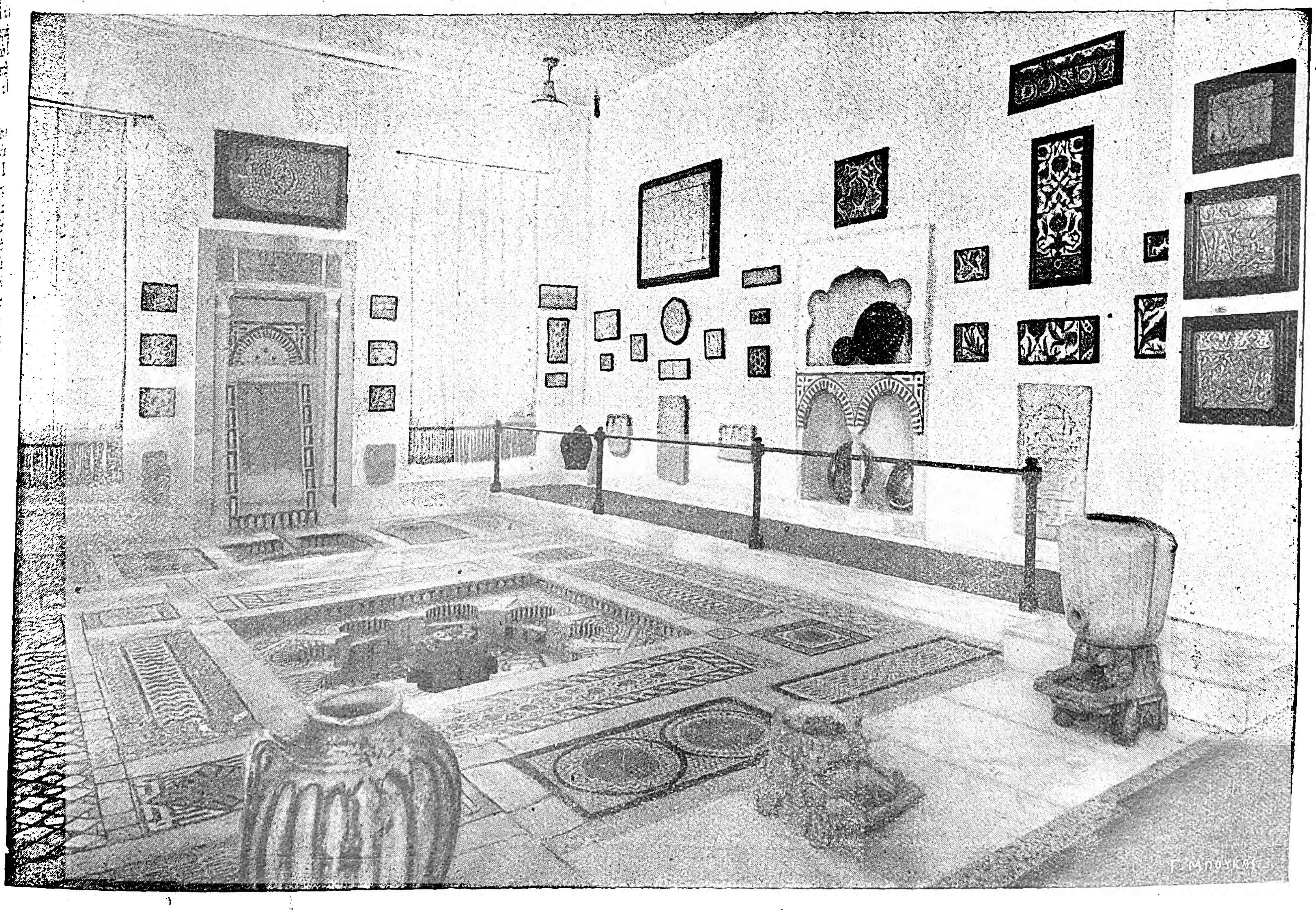

Ἡ αἴθουσα τῆς ἀραβικῆς τέχνης καὶ τῆς ῥοδιακῆς κεραμουργίας.



Digitized by Google

Πλευρὰ γλυπτοῦ κυτίου ἐξ ἐλεφαντόδοντος περσικῆς τέχνης ΙΣΤ' καὶ Ζ' αἰῶνος.

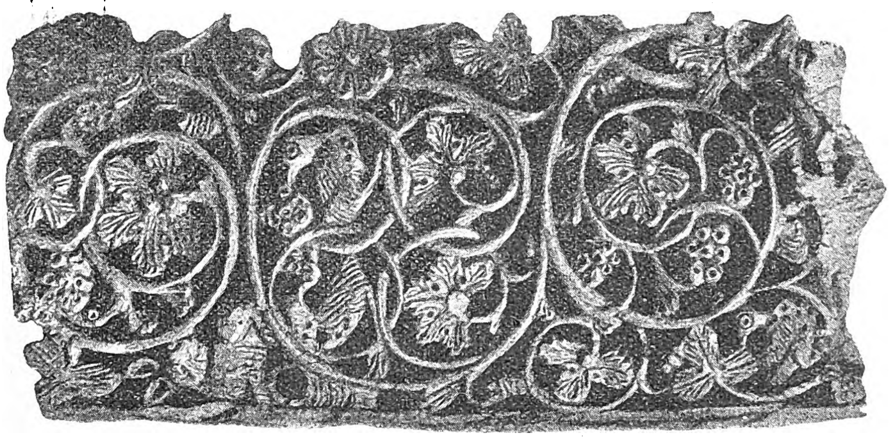

Γλυπτὸν ἐλεφαντόδουντον κοπτικῆς τέχνης.

Ἀραβικὸν ξυλόγλυπτον ἁγιοφιβιδικῆς τέχνης Ζ'—Η' αἰῶνος

Κοπτικὸν μάλλινον κέντημα.

Χάλκινον βυζαντινὸν μπρίκι μετ' ἐπιγραφῆς.

Digitized by Google

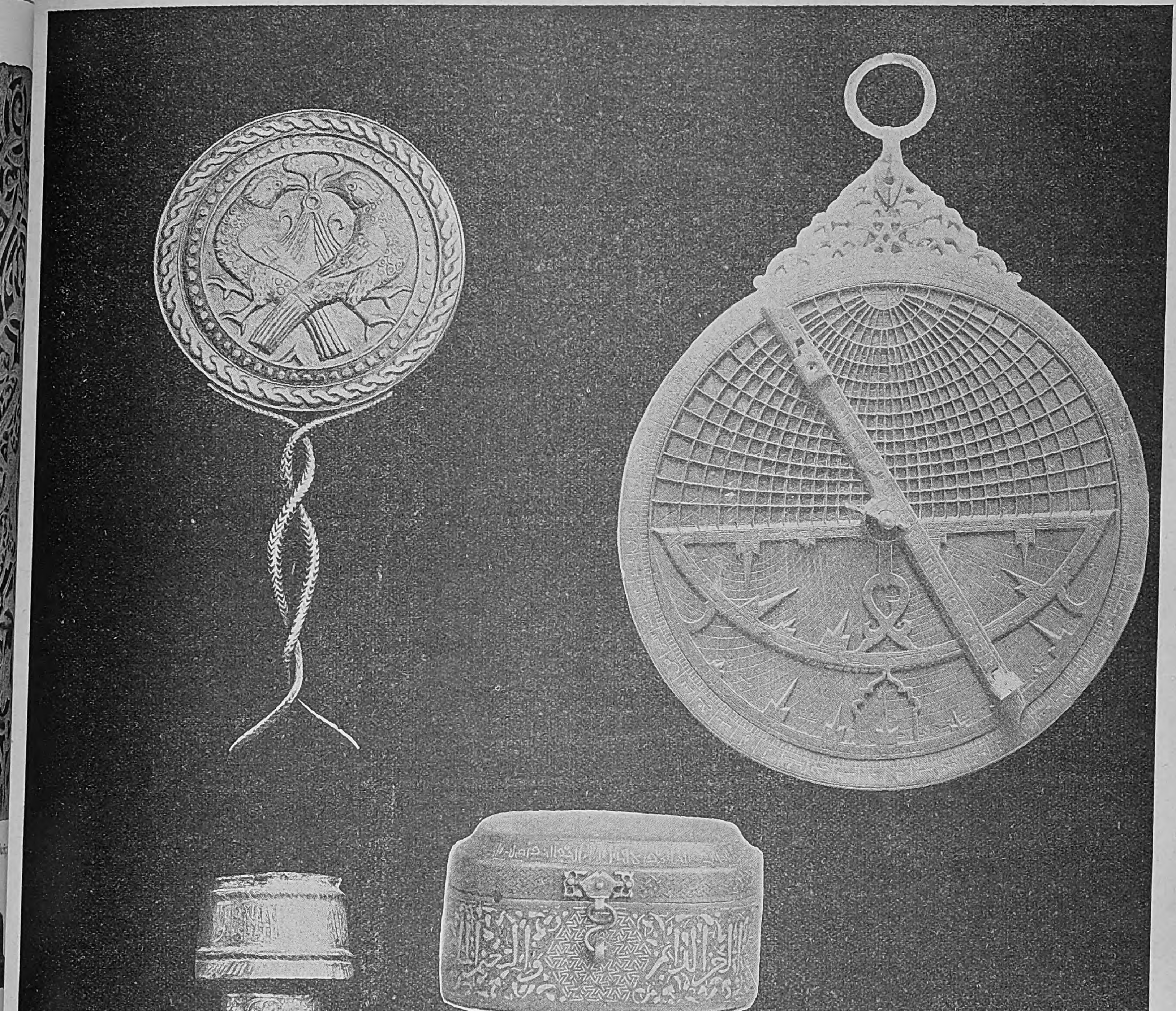

*Μπενάκειον Μουσεῖον:* Ἄνω: 1) Ἐλεφάντινος ἐπένδυσις περσικοῦ κατόπτρου ΣΤ΄—Ζ΄ αἰῶνος. 2) Ὀρειχάλκινον ἀστρολάβιον συρο-αιγυπτιακῆς τέχνης Η΄ αἰῶνος. Εἰς τὸ μέσον: Χάλκινον κυτίον μὲ ἀργυροῦν ἐγκόλλητον διάκοσμον μεσοποταμιακῆς τέχνης Μουσούλης τοῦ ΙΓ΄ αἰῶνος. Κάτω: 1) Κηροστάτης τοῦ Μαμελούκου σουλτάνου Καϊτ-Μπαΐ (ΙΓ΄ αἰών). 2) Γνώμων ἐξ ἐλεφαντοστοῦ αἰγυπτιακῆς τέχνης ΙΔ΄ αἰῶνος.

Digitized by Google

λεκτοτέρων προσφυγικῶν κειμηλίων Μ. Ἀσίας, Πόντου καὶ Θρᾴκης, ἅτινα ἐνεπιστεύθη πρὸς φύλαξιν εἰς τὸ μουσεῖον Μπενάκη τὸ «Ταμεῖον ἀνταλλαξίμων κοινοτικῶν καὶ κοινωφελῶν περιουσιῶν». 6) Ἐκ διαφόρων ἀντικειμένων, δωρηθέντων εἰς τὸ μουσεῖον ὑπὸ ἰδιωτῶν.

Τὴν διασκευὴν καὶ ἐπέκτασιν τῆς οἰκοδομῆς, ἥτις ἦτο ἀρχικῶς ἔργον τοῦ ἀρχιτέκτονος Ἀν. Μεταξᾶ, ἐσχεδίασε καὶ ἐξετέλεσεν ὁ ἴδιος. Ἡ ὅλη δὲ ἐπίπλωσις τοῦ μουσείου, ἐξαιρουμένων τῶν μεταλλικῶν προθηκῶν, εἶναι ἔργον Ἑλλήνων χειροτεχνῶν.

Τὸ Μπενάκειον μουσεῖον εἶναι τὸ πλουσιώτερον καὶ σημαντικώτερον τῆς Ἐγγὺς Ἀνατολῆς εἰς τὸ εἶδός του, περιέχον κειμήλια, ἅτινα ἀποτελοῦν ἀληθινοὺς καλλιτεχνικοὺς θησαυρούς, μοναδικοὺς ἐν τῷ κόσμῳ. Τοιαῦτα εἶναι ἡ «Πόρτα τῆς Βαγδάτης» (τοῦ 9ου αἰῶνος), ἡ «Ψάθα τῆς Γαλιλαίας» (τοῦ 10ου αἰῶνος), δύο τεμάχια μεταξωτὰ τῆς Προύσσης μὴ εὑρισκόμενα εἰς κανὲν ἄλλο μουσεῖον, ἡ συλλογὴ σπανιωτάτων ἀραβικῶν ὑφασμάτων, ἡ πλουσιωτέρα τοῦ κόσμου μετὰ τὴν τοῦ μουσείου τοῦ Καΐρου, αἱ βυζαντιναὶ εἰκόνες τοῦ Λαμπράδου, τοῦ Δαμασκηνοῦ, τοῦ Φορνάρη, ἡ Ὡραία Πύλη τοῦ Τσαγκαρόλα, τὰ σπανιώτατα βυζαντινὰ ἀντικείμενα ἀπὸ στεατίτιδα καὶ ἐλεφαντόδοντα τοῦ Ι', ΙΑ' καὶ ΙΒ' αἰῶνος, τὰ χειρόγραφα τοῦ Εὐαγγελίου ἀπὸ τοῦ Γ' μέχρι τοῦ ΙΔ' αἰῶνος μὲ ἔγχρωμα ποικίλματα, τὰ ὑφάσματα Κοπτικῆς τέχνης τοῦ Δ'—Η' μ. Χ. αἰῶνος, τὰ ἀγγεῖα νεολιθικῆς ἐποχῆς 3.000 π. Χ., τὰ κεντήματα Ρόδου, Ἰωαννίνων, Κυκλάδων, Βουχάρας, Μαρόκου, τὰ θαυμάσια ροδιακὰ ἀγγεῖα κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπενάκης.** —1) *Ἐμμανουὴλ Ἀντ.* Ἐθνικὸς εὐεργέτης, γεννηθεὶς ἐν Σύρῳ τῷ 1843 καὶ ἀποθανὼν ἐν Κηφισιᾷ τῇ 20ῇ Ἰουνίου 1929. Ἡ οἰκογένειά του κατήγετο ἐκ Μεσσηνίας. Ἀποφοιτήσας τοῦ γυμνασίου Σύρου, ἐξηκολούθησε τὰς σπουδάς του ἐν Ἀγγλίᾳ. Τῷ 1866 μετέβη εἰς Αἴγυπτον, τῷ δὲ 1870, νυμφευθεὶς ἐν Χίῳ τὴν Βιργινίαν Κωνστ. Χωρέμη, εἰσῆλθεν εἰς τὸν ἐν Αἰγύπτῳ οἶκον ἐξαγωγῆς βάμβακος «Χωρέμη, Μέλλωρ καὶ Σίας», ὅστις ἔλαβε μετά τινα χρόνον τὴν ἐπωνυμίαν «Χωρέμης, Μπενάκης καὶ Σία». Τὸν οἶκον τοῦτον κατέστησε ταχέως τὸν πρῶτον μεταξὺ τῶν ἐξαγωγικῶν οἴκων τῆς Αἰγύπτου. Ἐχρημάτισε πρόεδρος τῆς ἐν Ἀλεξανδρείᾳ Ἑλληνικῆς κοινότητος ἐπὶ δεκαετίαν, ἵδρυσε τὸ «Μπενάκειον ὀρφανοτροφεῖον θηλέων» καὶ τὸ «Μπενάκειον συσσίτιον». Τῷ 1910 ἀνεχώρησεν ἐξ Αἰγύπτου διὰ νὰ ἐγκατασταθῇ ἐν Ἀθήναις. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξελέγη

*Ἐμμανουὴλ Μπενάκης.*

βουλευτὴς Ἀττικοβοιωτίας καὶ προσελήφθη ὡς ὑπουργὸς τοῦ ἀρτισυστάτου ὑπουργείου Γεωργίας, Ἐμπορίου καὶ Βιομηχανίας ἐν τῇ πρώτῃ κυβερνήσει τοῦ Βενιζέλου. Παραιτηθεὶς τοῦ ὑπουργικοῦ ἀξιώματος τῷ 1913, ἐξελέγη τὸ ἑπιὸν ἔτος δήμαρχος Ἀθηναίων. Τὸν Νοέμβριον τοῦ 1916, κατὰ τὰς πολιτικὰς ταραχάς, κατεδιώχθη, ἐκακοποιήθη καὶ ἐφυλακίσθη. Κατὰ τὸ 1920 ἀπεδήμησεν εἰς Γαλλίαν, ὅπόθεν ἐπέστρεψεν εἰς Ἑλλάδα τῷ 1924, ἰδιωτεύσας ἔκτοτε μέχρι τοῦ θανάτου του. Εἶχε τιμηθῇ διὰ τοῦ ἀνωτέρου ταξιάρχου τοῦ Σταυροῦ τοῦ Σωτῆρος, ἐκηδεύθη δὲ δημοσίᾳ δαπάνῃ, απονεμηθεισῶν αὐτῷ τιμῶν ἀντιστρατήγου ἐν ἐνεργείᾳ, λόγῳ τῶν πολλαπλῶν πρὸς τὴν πατρίδα ὑπηρεσιῶν του. Ὁ Ἐμμανουὴλ Μπενάκης ἀπὸ τῆς Μικρασιατικῆς καταστροφῆς ἐδαπάνησεν ἑκατομμύρια ὑπὲρ τῶν προσφύγων, τοῦ Προσφυγικοῦ Νοσοκομείου, τοῦ Προσφυγικοῦ Ταπητουργείου τῆς Αἰγίνης, τοῦ Προσφυγικοῦ Ἐργαστηρίου Χειροτεχνημάτων, ὑπὲρ τοῦ Νοσοκομείου τῆς Θεσσαλονίκης κλπ. Κατόπιν ὑπὲρ τῆς Ἀεροπορικῆς Ἀμύνης, τοῦ Πατριωτικοῦ Ἱδρύματος Περιθάλψεως, τοῦ κοινοτικοῦ σχολείου Κηφισιᾶς, τῆς Ἐθνικῆς Πινακοθήκης, δι' ὑποτρόφους σπουδάζοντας ἐπιστήμας ἢ καλλιτεχνίαν, ὑπὲρ ἐκκλησιαστικῶν σχολῶν, πρὸς ἵδρυσιν τοῦ «Κολλεγίου Ἀθηνῶν» κ. ἄ. Ἔκτισεν ἰδίαις δαπάναις τὸ νοσοκομεῖον τοῦ Ἐρυθροῦ Σταυροῦ, τὸν Δημοτικὸν Σταθμὸν πρώτων βοηθειῶν, τὸ Παιδικὸν Ἄσυλον Κηφισιᾶς, τὸ Φυτοπαθολογικὸν Ἰνστιτοῦτον Κηφισιᾶς, τὸ ὁποῖον καὶ ἐπροικοδότησε, τὴν Βιβλιοθήκην τῆς Βουλῆς, εἰς τὴν ὁποίαν καὶ ἐδωρήσεν ἀκολούθως τὴν ἰδιωτικὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ψυχάρη, καὶ ἐδώρησε κεφάλαιον λιρῶν στερλινῶν 10.000 διὰ τὴν ἵδρυσιν διαφόρων βραβείων ἐκ τῶν εἰσοδημάτων του εἰς τὴν Ἀκαδημίαν Ἀθηνῶν, ἥτις, τὴν 29ην Δεκεμβρίου 1927 ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸ χρυσοῦν αὐτῆς μετάλλιον.

— 2) *Βιργινία Ἐμμ.* Θυγάτηρ τοῦ Κ. Χωρέμη, γεννηθεῖσα ἐν Χίῳ τῷ 1848 καὶ ἀποθανοῦσα ἐν Κηφισιᾷ τῷ 1928. Νυμφευθεῖσα τῷ 1870 τὸν Ἐμμανουὴλ Μπενάκην, μετέβη μετ' αὐτοῦ εἰς Αἴγυπτον. Ἀφιέρωσεν ὁλόκληρον τὸν βίον αὐτῆς εἰς τὴν περίθαλψιν πτωχῶν καὶ ὀρφανῶν, εἰς τὴν ἵδρυσιν καὶ ἐνίσχυσιν φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων κλπ. Ἐτιμήθη διὰ τοῦ Σταυροῦ τοῦ Σωτῆρος.

— 3) *Ἀντώνιος Ἐμμ.* Υἱὸς τῶν ἀνωτέρω, γεννηθεὶς τῷ 1873 ἐν Ἀλεξανδρείᾳ. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς ἐν Ἀθήναις, εἶτα ἐν Ἀλεξανδρείᾳ, ἐτελειοποίησε δὲ τὰς σπουδάς του ἐν Ἀγγλίᾳ, ὅπου καὶ παρέμεινε κατόπιν ἐργαζόμενος. Ἐπέστρεψεν εἶτα καὶ εἰργάσθη ἐν Αἰγύπτῳ. Τῷ 1926 ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς εἰς Ἀθήνας. Ἐνωρὶς ἐσημείωσε φιλανθρωπικὴν δρᾶσιν τόσον ἐν Αἰγύπτῳ ὅσον καὶ Ἀθήναις, ὑποστηρίζων τὴν τέχνην καὶ ἀποστέλλων εἰς τὸ ἐξωτερικὸν καλλιτέχνας πρὸς συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν των δι' ἐξόδων του. Διετέλεσε γενικὸς ἔφορος εἰς τὸ Σῶμα τῶν Ἑλλήνων Προσκόπων. Τὰς συλλογάς του, ἀξίας 500 χιλιάδων λιρῶν, ἐδώρησεν εἰς τὸ κράτος, γενόμενος ἱδρυτὴς τοῦ «Μουσείου Μπενάκη».

— **Μπενάκης,** ***Νικόλαος.*** Ἰατρὸς γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ τῷ 1860. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λυῶνος καὶ ἔγραψε: «Περὶ τῆς ἰατρικῆς παρ' Ὁμήρῳ» («Ἰατρ. Χρον.» 1930), «Du sens chromatique dans l'Antiquité» (Paris 1897), οὗτινος ἑλληνιστὶ ἔκδοσις ἐδημοσιεύθη τῷ 1914 ὑπὸ τὸν τίτλον «Περὶ τῆς αἰσθήσεως τῶν χρωμάτων παρὰ τοῖς ἀρχαίοις». — Ω.

— **Μπενάκης,** ***Παναγιώτης.*** Ἐπιφανὴς πρόκριτος τῆς Πελοποννήσου, διαδραματίσας σπουδαιότατον πρόσωπον κατὰ τὴν ἐπὶ Αἰκατερίνης Β' ἐπανάστασιν τοῦ 1770, τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτάτων ὑποκινητῶν. Εἷλκε τὴν καταγωγήν του ἐκ τοῦ χωρίου Βάθια τῆς Μάνης καὶ ἦτο δισέγγονος τοῦ ἐπὶ τῶν Βενετῶν περιβοήτου γενομένου Λιμπεράκη Γερακάρη. Ἐν Καλάμαις, ἔνθα εἶχεν ἐγκατασταθῆ, ἐπέτρεψαν εἰς αὐτὸν οἱ Τοῦρκοι νὰ ἀνεγείρῃ ὀχυρὸν πύργον, προσομοιάζοντα μᾶλλον πρὸς φρούριον, ὅπως ἀπὸ τούτου ἀποκρούῃ δῆθεν τοὺς Μανιάτας, λαφυραγωγοῦντας τὴν Μεσσηνίαν καὶ λυμαινομένους καὶ αὐτὰ ἔτι τὰ προάστεια τῶν Καλαμῶν. Ὑπερβάλλων πάντας τοὺς ἐν Πελοποννήσῳ ἐπὶ πλούτῳ καὶ πολιτικῇ δυνάμει ὁ Μπενάκης, ἀπέλαυε τῆς ἰδιαιτέρας εὐνοίας τῶν Τούρκων, διὸ καὶ μόνος οὗτος ἐκ τῶν Ἑλλήνων ἐδικαιοῦτο νὰ ἐμφανίζεται εἰς τὴν ἐν Τριπολιτσᾷ αὐλὴν τοῦ Μόρα-βαλεσῆ συνοδευόμενος ὑπὸ πολυαρίθμου ἀκολουθίας. Ἤσκει δὲ τοσαύτην ἐν Μάνῃ ἐπιρροήν, ὥστε οἱ Τοῦρκοι ἦσαν πεπεισμένοι ὅτι ὁ Μπενάκης ἠδύνατο νὰ ἐξεγείρῃ ἢ νὰ εἰρηνεύσῃ τοὺς Μανιάτας κατὰ βούλησιν. Τούτου ἕνεκα εἶχε τὴν εὔνοιαν ὅλων τῶν κατὰ καιροὺς πασάδων τῆς Πελοποννήσου, τὴν ὁποίαν πάντοτε ἐξεμεταλλεύετο πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ὁμοφύλων του. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1770 κατήχησε τοὺς ἐν Τριπολιτσᾷ προκρίτους καὶ συνεννοήθη μετὰ τοῦ περιωνύμου ἐκ Σφακιῶν ἥρωος Δασκαλογιάννη πρὸς ἐξέγερσιν καὶ τῆς Κρήτης. Καταρτίσας δ' ἐν Καλάμαις σῶμα στρατιωτικὸν πολυάριθμον, ἐν ᾧ περιελαμβάνοντο δισχίλιοι Μανιᾶται, ὡπλισμένοι ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ δι' ἐξόδων του, μετέσχεν ἐνεργῶς εἰς τὸν ἀγῶνα. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἐπαναστάσεως καὶ τὴν ἀποχώρησιν τῶν Ρώσων, ὁ Μπενάκης μετέβη εἰς τὰ Κύθηρα, ἔνθα ἀφῆκε τὴν οἰκογένειάν του, μετὰ ταῦτα δ' εἰς Νάξον, ἔνθα καὶ διέμενε κατὰ τὴν ρωσικὴν κατοχήν. Μετὰ τὴν συναφθεῖσαν εἰρήνην, ὁ Ρῶσος ναύαρχος Ἀλέξιος Ὀρλὼφ παρέλαβεν αὐτὸν μεθ' ἑαυτοῦ. Ὁ Μπενάκης ἐσκόπευε νὰ μεταβῇ εἰς Ρωσίαν, ὅπως παρουσιασθῇ εἰς τὴν Αἰκατερίνην Β', ἀλλ' ἀπέθανεν ἐν Λιβόρνῳ, δηλητηριασθείς, ὡς ἐλέχθη, διὰ νὰ μὴ ἐκθέσῃ εἰς τὴν αὐτοκράτειραν τὰ ὑπὸ τοῦ Ὀρλὼφ διαπραχθέντα ἐν Πελοποννήσῳ σφάλματα. Τὸν υἱὸν αὐτοῦ *Λιμπεράκην* συναντῶμεν τῷ 1776 ἐν Κωνσταντινουπόλει μετ' ἄλλων προκρίτων Πελοποννησίων, μεταβάντα ἐκεῖ ὅπως διὰ τοῦ Ρώσου πρέσβεως Στακιέφ ἀπαιτήσῃ τὰ ὑπὸ τῶν Τούρκων δημευθέντα ἀπέραντα κτήματά του, ἅτινα διὰ τῆς συνομολογηθείσης μετὰ τῆς Ρωσίας συνθήκης ἡ Τουρκία ὑπεχρεοῦτο νὰ ἐπιστρέψῃ, τοῦθ' ὅπερ καὶ ἔπραξεν. Ἐκ Κωνσταντινουπόλεως μετέβη εἰς Κριμαίαν. Βραδύτερον διετέλεσε γενικὸς πρόξενος τῆς Ρωσίας ἐν Κερκύρᾳ. Διετήρησε δὲ τὴν φιλογένειαν τοῦ πατρός του τιμώμενος ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, εἰς οὓς προθύμως παρεῖχε τὴν συνδρομήν του. Ἀπέθανε δὲ ὀλίγον πρὸ τοῦ 1825 ἐν Νεαπόλει τῆς Ἰταλίας, ἔνθα εἶχε μετατεθῆ ὡς γενικὸς πρόξενος. Δ. Π. Π.

**Μπενὰν** (Benan) *[Ἀστρον.]*. Ἀραβικὴ ἐπωνυμία τοῦ ἀστέρος η Μεγάλης Ἄρκτου. Ὁ ἀστὴρ οὗτος εἶναι δευτέρου μεγέθους περίπου καὶ ἀποτελεῖ τὸν τελευταῖον τῆς οὐρᾶς τῆς Μεγάλης Ἄρκτου. Σ. Π.

**Μπὲν-αντάτ,** ἡ ***Βεναδάδ*** (Ben-Adad). Ὄνομα τριῶν βασιλέων τῆς Συρίας, ἡγεμονευσάντων κατὰ τὸν Ι' π. Χ. αἰῶνα:

***Μπεναντὰτ Α'***, ὅστις συνεμάχησε μετὰ τοῦ Ἀσᾶ, βασιλέως τοῦ Ἰούδα, κατὰ τοῦ Βαασᾶ, βασιλέως τοῦ Ἰσραήλ.

***Μπεναντὰτ Β'***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐπολέμησε κατὰ τοῦ Ἀχάβ, βασιλέως τοῦ Ἰσραήλ, κατόπιν δὲ ἐπολιόρκησε τὸν Ἰωρὰμ ἐν Σαμαρείᾳ, ἀλλ' ἀπεκρούσθη συνεπείᾳ ἐπεμβάσεως τοῦ προφήτου Ἐλισαίου.

***Μπεναντὰτ Γ'***, υἱὸς τοῦ Χαζαέλ. Ἐνίκησε τὸν Ἰοάχαζ, βασιλέα τοῦ Ἰσραήλ, κατόπιν ὅμως ἐνικήθη ὑπὸ τοῦ Ἰωὰζ καὶ ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ τὰς πόλεις, τὰς ὁποίας ὁ πατήρ του ἀφήρεσεν ἀπὸ τῶν Ἰσραηλιτῶν. Ν. Μ.

**Μπεναντὶρ** (Benadir) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα χρησιμοποιούμενον πρὸς ὑποδήλωσιν τῆς παραλιακῆς περιοχῆς τῆς ἰταλικῆς ἀποικίας τῆς Σομαλίας, ἐν τῇ Α. Ἀφρικῇ ἐπὶ τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ, ἥτις περιλαμβάνεται μεταξὺ Ἴταλα καὶ Κιζιμάϊο, ἀπὸ τῆς 3°30' Β. πλάτους μέχρι τῆς 0°40' Ν. πλάτους. Ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ εἶχον ἱδρυθῆ κατὰ τὸν μεσαίωνα αἱ ἐμπορικαὶ ἐγκαταστάσεις τῶν Ἀράβων καὶ οἱ λιμένες τῶν πλοίων των, κατὰ τὴν περιοδικὴν ναυσιπλοΐαν των μεταξὺ τοῦ Ὀμάν, τοῦ Χαντραμάουτ, τῆς Ζανζιβάρης καὶ τῆς Σοφάλα. Πράγματι ἡ λέξις *Μπεναντὶρ* εἶναι ὁ πληθυντικὸς τῆς ἀραβοποιηθείσης περσικῆς λέξεως *μπεντέρ*, ἡ ὁποία σημαίνει λιμήν. Ἡ ὅλη περιοχὴ ἐκτείνεται μεταξὺ τῆς θαλάσσης καὶ τῆς ὀροσειρᾶς τῶν Οὐέμπι-Σεμπέλι, ἔχει ἐπιφάνειαν 250.000 τ. χλμ. μετὰ 450.000 κατ.; εἶναι χώρα λοφώδης μὲ ἀμμολόφους ἐν μέρει κινητούς, ὕψους μέχρι 150 μ., καὶ διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Οὐέμπι-Σεμπέλι* καὶ *Τζούμπα*. Παρὰ τὰς ἀκτὰς ὑπάρχουν λίαν ἐπικίνδυνοι διὰ τὴν ναυσιπλοΐαν σκόπελοι, συχνότατα μεταβαλλόμενοι εἰς ὑφάλους. Αἱ κυριώτεραι πόλεις αὐτῆς εἶναι ἡ *Ἴταλα* (*ἐλ Ἀντέλε* τῶν Ἀράβων), ἡ *Οὐαρσέχ*, ἡ *Μογκαντίσιο*, ἡ *Μέρκα*, ἡ *Μπράβα*, καὶ ἡ *Κισιμάϊο*. Διοικητικῶς διαιρεῖται εἰς τέσσαρας περιφερείας: τὴν παραμεθόριον μὲ πρωτεύουσαν τὴν *Ὀντούρ*, τὴν περιφέρειαν τοῦ Τζούμπα μὲ πρωτεύουσαν τὴν Κιζιμάϊο, τὴν κεντρικὴν μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μέρκα καὶ τὴν περιφέρειαν Οὐέμπι-Σεμπέλι μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μαχαντέϊ.

Ἡ χώρα κατοικεῖται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὑπὸ νομάδων καὶ εἶναι σημαντικὴ διὰ τὸ ἐν αὐτῇ διενεργούμενον ἐμπόριον, ἰδίως διὰ τῶν λιμένων τοῦ Μογκανήσιο καὶ Μπράβα, ὁπόθεν ἐξάγονται δέρματα, βούτυρον, ἐλεφαντοστοῦν, κτήνη καὶ σιτηρὰ καὶ εἰσάγονται ὑφάσματα βαμβακερά, ζάχαρις καὶ πετρέλαιον. Ὑπήχθη ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς Ἰταλίας διὰ τῶν συνθηκῶν τοῦ 1885 καὶ 1889, τὰς ὁποίας συνῆψεν αὕτη μετὰ τοῦ σουλτάνου τῆς Ὄμπια Γιουσοὺφ Ἀλῆ, αἵτινες ἐκυρώθησαν ὑπὸ τοῦ ἐπικυριάρχου τοῦ Μπεναντὶρ Σαΰὲτ-Ἀλῆ-Μπεν-Σαΐντ, σουλτάνου τῆς Ζανζιβάρης. Μ. Δ. Β.

**Μπενὰρ** (Benard), ***Κάρολος.*** Γάλλος συγγραφεύς (1807—1898), Ἐσπούδασεν εἰς τὴν École Normale καὶ ἐξέδωκε: «Μαθήματα αἰσθητικῆς τοῦ Ἐγέλου» (1840—1851), «Ἡ φιλοσοφία εἰς τὴν κλασσικὴν ἐκπαίδευσιν» (1862). «Ἡ σύγχρονος διδασκαλία τῆς φιλοσοφίας» (1863), «Λογικὴ» (1858), «Ἡ ἀρχαία φιλοσοφία. Γενικὴ ἱστορία τῶν συστημάτων αὐτῆς» (1885). Π.Ν.Π.

—**Μπενὰρ** (Besnard), ***Παῦλος-Ἀλβέρτος.*** Σύγχρονος Γάλλος ζωγράφος. Ἐγεννήθη ἐν Παρισίοις τῷ 1849 ἐκ πατρὸς ζωγράφου, μαθητοῦ τοῦ Ἔνγκρ, καὶ μητρὸς μικρογράφου, πεπροικισμένης δι' ἐξαιρέτου καλλιτεχνικῆς εὐαισθησίας καὶ τυχούσης εὐρείας μορφώσεως. Εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Καμπανέλ. Ἀλλὰ δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ λεχθῇ ὅτι εἰς τὸν διδάσκαλον τοῦτον ὁ Μπενὰρ ὀφείλει τὴν πρώτην καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν. Καὶ τοῦτο διότι αἱ ἐκ τῆς τέχνης τοῦ Ἔνγκρ ἐπιδράσεις ἦσαν ἐπ' αὐτοῦ ἄκρως ἰσχυραί, δεδομένου ὅτι τὴν λατρείαν τοῦ μεγάλου καλλιτέχνου ἐδιδάχθη ὁ Μπενὰρ ὄχι μόνον εἰς τὴν πατρικὴν οἰκίαν, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ οἰκογενειακοῦ του φίλου Μπρεμόν, μαθητοῦ τοῦ Ἔνγκρ. καὶ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Καρνώ, μαθητοῦ καὶ τούτου τοῦ Ἔνγκρ, ὅπου μετὰ ταῦτα ἐμαθήτευσε. Χαρακτὴρ ἀνήσυχος, πνεῦμα εὐρὺ καὶ φωτεινόν, ἰδιοσυγκρασία πλήρης ἀτομικότητος, δὲν ἐβράδυνε διὰ τῆς σπουδῆς τῶν ἀριστουργημάτων τῆς μεγάλης τέχνης, διὰ τῆς παρακολουθήσεως τῶν νέων ρευμάτων, διὰ μακρινῶν ταξιδίων καὶ κυριώτατα διὰ τῆς αὐτονόμου ἀναπτύξεως τῆς ἄκρας εὐαισθησίας του, τῆς λεπτῆς διανοητικότητός του καὶ τῆς μεγίστης καλλιτεχνικῆς του δεξιοτεχνίας νὰ δημιουργήσῃ ἔργον ἐξαιρέτως προσωπικόν, τὸ ὁποῖον δὲν ἀνήκει σαφῶς εἰς ὡρισμένην σχολήν.

Τῷ 1874 ὁ Μπενὰρ ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης διὰ πίνακος εἰκονίζοντος τὸν «Θάνατον τοῦ Τιμοφάνους, τυράννου τῆς Κορίνθου». Ἡ διαμονή του εἰς τὴν Ἰταλίαν ὑπῆρξεν ἐργώδης εἰς ἀναζητήσεις καὶ γονιμωτάτη εἰς ἀποτελέσματα· ἡ στενὴ ἐπαφή του μὲ τὴν λαμπροτάτην τέχνην τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως, ἡ σπουδὴ τῶν ἔργων τοῦ Ραφαὴλ καὶ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου ἀπεκάλυψαν εἰς αὐτὸν τὴν ἀξίαν αἰωνίαν ἀλήθειαν, ἡ ὁποία ὑπάρχει εἰς τὴν

Digitized by Google

τοῦ προορισμοῦ της τέχνην. Τοιουτοτρόπως ἠδυνήθη μετὰ ταῦτα, ἐν μέσῳ τῶν μεγάλων καλλιτεχνικῶν ἀγώνων, νὰ μὴ χάσῃ τὴν ἀτομικότητά του. Ἐδοκίμασε τὴν χαρὰν τοῦ λελογισμένου σχεδίου καὶ ἀπέδωκε τὰς μορφὰς μὲ σαφῆ περιγράμματα. Τὸ χρῶμά του εἶναι ἀληθινὴ χαρμονὴ διὰ τοὺς

*Ἀλβ. Μπενάρ: Προσωπογραφία ἠθοποιοῦ.*

ὀφθαλμούς· ἐσπούδασε τὴν πραγματικότητα καὶ ἀπέδωκε τὴν ζωὴν καὶ τὴν φύσιν μὲ συνταρακτικὴν ἀληθοφάνειαν, χωρὶς νὰ κατέλθῃ εἰς βαναυσότητας· ὑπῆρξε λυρικὸς χωρὶς ἐκζητήσεις, διανοητικὸς χωρὶς ἀκροβασίας, ψυχαναλυτικὸς χωρὶς ὑπερβολάς· ἐδημιούργησε τέχνην θαυμασίως ἐκφραστικήν, πλήρη λεπτότητος καὶ ἐσωτερικῆς ἁρμονίας. Ἤνοιξε τὸν δρόμον πρὸς ἕνα «ἐπιστημονικὸν συμβολισμόν», κατὰ τὴν ἔκφρασιν τοῦ Καμίλλου Μωκλαίρ, ὅστις ἐπὶ πλέον παρατηρεῖ ὅτι «ὁ Μπενὰρ διέκρινε μέσα εἰς τὸ ἐπιστημονικὸν ἰδεῶδες τὰ στοιχεῖα μιᾶς νέας ὡραιότητος καὶ ἑνὸς νέου συμβολισμοῦ». Θαυμάσιαι εἶναι αἱ διακοσμητικαὶ συνθέσεις, τὰς ὁποίας ἐξειργάσθη ὁ Μπενάρ. Ἤδη κατὰ τὸ 1882 τὸ γαλλικὸν ὑπουργεῖον τῶν Καλῶν Τεχνῶν τὸν ἐπεφόρτισε νὰ διακοσμήσῃ τὸ μέγαρον τῆς φαρμακευτικῆς σχολῆς διὰ σειρᾶς συνθέσεων, ὧν αἱ δύο πρῶται, εἰκονίζουσαι τὴν «Νόσον» καὶ τὴν «Ἀνάρρωσιν» ἐξετέθησαν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1884. Ἕτεραι ἀξιομνημόνευτοι διακοσμητικαὶ συνθέσεις τοῦ Μπενὰρ εἶναι αἱ τοῦ δημαρχιακοῦ καταστήματος τοῦ πρώτου παρισινοῦ διαμερίσματος, αἱ τῆς ὀροφῆς τῆς αἰθούσης τῶν ἐπιστημῶν ἐν τῷ Δημαρχείῳ τῶν Παρισίων, αἱ τοῦ ἀμφιθεάτρου τῆς χημείας ἐν τῇ Νέᾳ Σορβόννῃ, αἱ τῆς ὀροφῆς τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας. Μετὰ τὸν Πυβὶ ντὲ Σαβὰν ἡ γαλλικὴ τέχνη δὲν εἶχε γνωρίσει συνθέσεις ὑψηλοτέρας καλαισθησίας, εὐγενεστέρας ἁρμονίας καὶ περισσότερον πνευματικάς. Ἀνεκτίμητοι εἶναι καὶ οἱ πίνακες τοῦ Μπενάρ, εἰς τοὺς ὁποίους λύονται κατὰ τὸν ἐπιτυχέστερον τρόπον δυσχερῆ προβλήματα φωτισμοῦ, χρωματισμοῦ, ταξιθετήσεως συνόλων ἢ ἐκφράσεως. Μνημονεύομεν τὴν «Γυναῖκα ποῦ ζεσταίνεται» (ἀληθινὸν ἀριστούργημα, ἀποκείμενον εἰς τὸ Μουσεῖον τοῦ Λουξεμβούργου), «Τὸ παζάρι ἀραβικῶν ἀλόγων», τὸν «Ἰσπανικὸν χορόν», τὸν «Καταρράκτην», «Τὸ ζεστό», τὴν «Νεκράν» κλπ. Καὶ ὡς προσωπογράφος δὲ διεκρίθη ὁ Μπενάρ. «Ἡ προσωπογραφία τῆς Κας Ροζὲ Ζουρνταίν, γράφει ὁ Κ. Μωκλαίρ, εἰς τὸ Σαλὸν τοῦ 1884, ἐδημιούργησεν ἀληθῆ ἐπανάστασιν. Θὰ παραμείνῃ ὡς τὸ κατ' ἐξοχὴν σύμβολον τοῦ ταλάντου του. Αἱ προσωπογραφίαι του εἶναι ἀνθοδέσμαι· ἡ θέα των εἶναι ἑορτὴ διὰ τοὺς ὀφθαλμούς». Ὁ Μπενὰρ ἐταξίδευσε πολὺ εἰς τὴν Ἀνατολήν, τὴν ὁποίαν ἠγάπησε μετὰ πάθους. Περιηγήθη τὸ Ἀλγέριον καὶ ἔφθασε κατόπιν μέχρι τῶν Ἰνδιῶν, ὅπου ἐνεπνεύσθη καὶ ἓν ἐξόχως ἐνδιαφέρον βιβλίον, «Τὸν ἄνθρωπον μὲ τὰ κόκκινα». Ἐν Ρώμῃ συνέγραψε κατόπιν ἀναμνήσεις: «Ὑπὸ τὸν οὐρανὸν τῆς Ρώμης». Ἐπὶ πλέον ἐδημοσίευσε πλῆθος αἰσθητικῶν ἄρθρων καὶ μελετῶν. Τῷ 1912 ἐξελέγη μέλος τῆς παρισινῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν, τῷ δὲ 1913 διεδέχθη τὸν Κάρολον Ντυρὰν εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐν Ρώμῃ γαλλικῆς σχολῆς. Τῷ 1924 ἐγένετο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἡ σύζυγός του *Καρλόττα-Γαβριέλλα Μπενάρ*, θυγάτηρ τοῦ γλύπτου Ντυμπραί, γεννηθεῖσα ἐν Παρισίοις τῷ 1855, διεκρίθη ὡς γλύπτρια, ὡς γλύπτης δ' ὡσαύτως ἐγένετο εὐφημότατα γνωστὸς καὶ ὁ υἱός του *Φίλιππος*, γεννηθεὶς τῷ 1885.

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπενάρες**, ἢ ***Κάσι*** (Benares ἢ Kasi, σανσκριτ. *Μπερανάσι*) *[Γεωγρ.]*. —1) Μεγάλη πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διοικήσεως καὶ ἐπαρχίας τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου. Κάτ. 198.447, ἐξ 50.000 περίπου Μωαμεθανοί, οἱ δὲ λοιποὶ Ἰνδοὶ καὶ ὀλίγοι Εὐρωπαῖοι. Εἶναι ἡ ἱερὰ πόλις τῶν Ἰνδῶν, ἔχουσα δι' αὐτοὺς οἵαν σημασίαν ἡ Μέκκα διὰ τοὺς Μουσουλμάνους, δέχεται δὲ κατ' ἔτος τὴν ἐπίσκεψιν χιλιάδων προσκυνητῶν, προερχομένων ἐξ ὅλων τῶν Ἰνδιῶν, τοῦ Θιβέτ, τοῦ Ἰνδοστὰν καὶ τῶν λοιπῶν ὑπὸ τῶν βραχμάνων οἰκουμένων χωρῶν. Ἡ ἱερότης τῆς πόλεως ἀνάγεται εἰς ἀπωτάτους χρόνους. Ὁ Σακυαμούνι ἐπεσκέφθη αὐτήν, ἐπὶ 18 δὲ αἰῶνας ἦτο ἱερὸς τόπος τῶν βουδιστῶν. Μετὰ τοὺς βουδιστὰς οἱ βραχμᾶνοι ἀνήγειραν λαμπρὰ ἱερὰ (παγόδας), τὰ ὁποῖα ὅμως κατόπιν τῆς ὑπὸ τῶν μουσουλμάνων καταλήψεως τῆς χώρας κατηδαφίσθησαν κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος, ἀντικατασταθέντα ὑπὸ τεμενῶν (τζαμίων). Σήμερον ἡ πόλις περιλαμβάνει περὶ τὰ 1500 βραχμανικὰ ἱερὰ καὶ ναοὺς καὶ 272 μουσουλμανικὰ τεμένη, τῶν ὁποίων κάλλιστον εἶναι τὸ περίκομψον τζαμίον τοῦ *Ἀουρανγκζέμπ*. Ἐκ τῶν βραχμανικῶν ναῶν σπουδαιότεροι εἶναι τὸ *Μπισεσβὰρ* ἢ *Χρυσοῦν Ἱερόν*, ἀφιερωμένος εἰς τὸν Σίβα, καὶ ὁ τῆς *Ντούργκα*, γνωστὸς εἰς τοὺς Εὐρωπαίους ὡς «ναὸς τῶν πιθήκων», ἐκ τῶν πολυαρίθμων πιθήκων τοὺς ὁποίους τρέφουσιν εἰς τὰ γύρω αὐτοῦ δένδρα. Ἐπίσης ἀπαντῶσι χριστιανικαὶ ἐκκλησίαι ἀνεγερθεῖσαι ὑπὸ τῶν ἱεραποστολῶν, ὡς καὶ βουδιστικὰ τεμένη. Οἱ πυραμιδοειδεῖς ἰνδικοὶ ναοί, τὰ σινικοῦ ρυθμοῦ βουδιστικὰ τεμένη, οἱ μιναρέδες καὶ οἱ τροῦλλοι τῶν μουσουλμανικῶν τζαμίων, δεσπόζοντες τῆς πόλεως, δίδουσιν εἰς αὐτὴν ὄψιν γραφικήν. Αἱ μικρόταται προκυμαῖαι κατὰ μῆκος τοῦ ποταμοῦ, ὅστις εἰς τὸ σημεῖον τοῦτο ἔχει πλάτος χιλίων περίπου μέτρων, κοσμοῦνται ὑπὸ λαμπρῶν μεγάρων τῆς ἰθαγενοῦς ἀριστοκρατίας, ἐκτισμένων ἀμφιθεατρικῶς ἐπὶ τοῦ ἐλαφρῶς πρὸς τὴν ὄχθην κεκλιμένου ἐδάφους. Πλησίον τῆς ὄχθης οἱ προσκυνηταί, βυθισμένοι μέχρι τῆς ὀσφύος ἐντὸς τοῦ ὕδατος, προσεύχονται μετὰ κατανύξεως ἐπὶ μακρὰς ὥρας. Ἀφ' ἑτέρου γραφικώτατον εἶναι τὸ θέαμα τῶν στενῶν καὶ δαιδαλωδῶν ὁδῶν τῆς παλαιᾶς πόλεως, εἰς τὰς ὁποίας κυκλοφοροῦσιν ἐν πυκνῷ συνωστισμῷ ἄνθρωποι, κάμηλοι, ἵπποι, ὄνοι, ἱεροὶ ταῦροι, ἀκόμη δὲ καὶ πίθηκοι, ἀναμιγνυόμενοι ἀνενόχλητοι μετὰ τοῦ πλήθους. Τὸ βόρειον τμῆμα τοῦ Μπενάρες καταλαμβάνουσιν αἱ νεώτεραι συνοικίαι, ἐκεῖ δὲ εἶναι συγκεντρωμένοι οἱ Εὐρωπαῖοι, αἱ διοικητικαὶ ἀρχαί, οἱ μεγάλοι ἐμπορικοὶ οἶκοι, οἱ σταθμοὶ τῶν ἐκ τῆς πόλεως ἐκπεμπομένων τριῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν πρὸς τὴν Καλκούταν, τὴν Ντελχὶ καὶ τὰς βορείους ἐπαρχίας τῶν Ἰνδιῶν. Αἱ συνοικίαι αὗται εἶναι κατὰ τὸ εὐ-

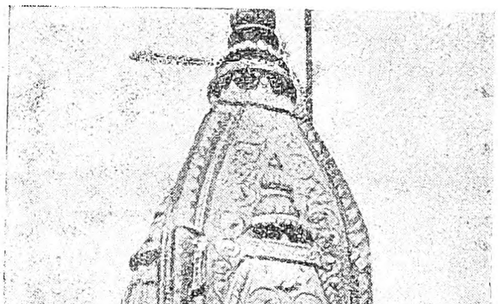

*Μπενάρες: Ὁ ναὸς τοῦ Μπισεσχβάρ, ἐπιλεγόμενος καὶ Χρυσοῦς Ναός.*

ρωπαϊκὸν σύστημα ᾠκοδομημέναι, ἔχουσι δὲ εὐρείας ὁδοὺς καὶ πάρκα. Τὰς δύο ὄχθας τοῦ ποταμοῦ συνδέει μεγάλη γέφυρα μήκους 1.180 μ. Τὸ Μπενάρες εἶναι ἀξιόλογον ἐμπορικὸν κέντρον, ἐξάγον κυρίως μεγάλας ποσότητας γεωργικῶν προϊόντων, ἀδαμάντων καὶ μεταξίνων εἰδῶν τῆς ἐγχωρίου βιομηχανίας, ἡ ὁποία ἀκμάζει ἰδιαιτέρως. Ἐπίσης ὑπάρχουσι πλεῖστα ἐργοστάσια κεντημάτων καὶ ἄλλων εἰδῶν τῆς ἰνδικῆς βιομηχανίας. Ἡ πόλις ἔχει ἰνδικὸν πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1898 καὶ ἀνώτερον ἀγγλικὸν κολλέγιον φερώνυμον, ἱδρυθὲν τῷ 1791. Ἐπίσης εἶναι τὸ μεγαλύτερον κέντρον τῆς βραχμανικῆς φιλολογίας. Τῷ 1776 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων.

—2) Διοίκησις (division) τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἀποτελοῦσα μέρος τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν, ἐκτεινομένη κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γάγγου καὶ κατὰ μῆκος αὐτῆς ἀπὸ τοῦ Νεπὰλ μέχρι τοῦ Τσότα-Νεγκπούρ. Ἔχει ἔκτασιν 26.971 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 4.443.898 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν, ὑποδιαιρεῖται δὲ εἰς 5 ἐπαρχίας (districts): *Μπενάρες, Μπάλλια, Τζαουνπούρ, Γκαζιποὺρ* καὶ *Μιρτζαπούρ*. Παράγει κυρίως κριθήν, ἀραβόσιτον, ζαχαροκάλαμον, ὄρυζαν, σῖτον κλπ. Ἡ ὁμώνυμος ἐπαρχία ἔχει ἔκτασιν 2.500 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 895.035 κατ.

—3) Ἰθαγενὲς κράτος τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἱδρυθὲν τῷ 1910 ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καὶ περιλαμβάνον τὰ κτήματα ἰθαγενοῦς μεγαλοκτηματίου, ὅστις εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν μεγάλων πρὸς τοὺς Ἄγγλους ὑπηρεσιῶν του προήχθη εἰς μαχαραγιᾶν. Περιλαμβάνεται ἐντὸς τῆς ὁμωνύμου ἐπαρχίας καὶ ἔχει ἔκτασιν 2560 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 358.528 κατ.

Χ. Δ.

**Μπενὰς - *Ρὰς*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Αἰγύπτου ἐπὶ τῆς Ἐρυθρᾶς Θαλάσσης, κατὰ τὸν νότιον τροπικὸν κύκλον, ἀποτελοῦν τὴν ἀνατολικὴν ἐσχατιὰν φερωνύμου χερσονήσου (πλάτ. 23° 54′ Β., μῆκ. 35° 39′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 8 b: Red Sea, sheet 2) σχηματιζούσης τὸν κόλπον Οὐμ-ἐλ-Κέτεφ. Εἶναι ἡ *Λεπτὴ ἄκρα* τῶν ἀρχαίων. Κατέναντι τοῦ ἀκρωτηρίου ἡ νῆσος *Ζέμπερ Ζέδ*, ἡ *Ἀγάθωνος* ἢ *Ὀφιώδης* τῶν ἀρχαίων.

Σ. Ε. Λ.

**Μπενάσκε** (Benasque) *[Γεωγρ.]*. Κοιλὰς τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Οὐέσκα, κειμένη παρὰ τὰ πρὸς τὴν Γαλλίαν σύνορα, μεταξὺ Ἀραγωνίας καὶ Καταλωνίας. Διασχίζεται ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ἔσερα καὶ περιλαμβάνει 17 χωρία.

Χ. Δ.

**Μπὲν Ἄφρα** (Behn Afra). Ἀγγλὶς ποιήτρια καὶ μυθιστοριογράφος (1640—1689). Ἔγραψε μὲ εὐστροφίαν καὶ χάριν ἔργα θεατρικὰ καὶ μυθιστορήματα, εἰς τὰ ὁποῖα συχνάκις ὑπερβαίνει τὰ ὅρια τῆς κοσμιότητος. Γνωστότερον μυθιστόρημά της εἶναι τὸ: «Ὀρόνοκο ἢ ὁ βασιλικὸς σκλάβος». Α.Δ.

**Μπενβενοῦτι** (Benvenuti), ***Πέτρος***. Ἰταλὸς ζωγράφος (1769—1844). Διετέλεσε διευθυντὴς τῆς ἐν Φλωρεντίᾳ Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Διεκόσμησε τὴν ἐν τῷ παλατίῳ Πίττι τῆς Φλωρεντίας αἴθουσαν τοῦ Ἡρακλέους διὰ συνθέσεων ἀναφερομένων εἰς τὰ κατορθώματα τοῦ ἥρωος τούτου καὶ τὸ παρεκκλήσιον τῶν Μεδίκων ἐν τῷ Ἁγίῳ Λαυρεντίῳ τῆς αὐτῆς πόλεως διὰ σκηνῶν εἰλημμένων ἐκ τῆς Παλαιᾶς καὶ Καινῆς Διαθήκης. Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων τοῦ Μπενβενοῦτι ἀξιολογώτερα εἶναι: «Τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Διονυσίου» (1794), «Ὁ θρίαμβος τῆς Ἰουδεὶθ» (1803), ἀμφότερα ἐν τῇ μητροπόλει τοῦ Ἀρέτζο, «Ὁ Χριστὸς καὶ τὰ παιδία» (Πινακοθήκη νέας τέχνης ἐν Φλωρεντίᾳ), «Ὁ Ἀπόλλων», «Ὁ Ἕκτωρ καὶ ὁ Πάρις» (ἐν τῇ προμνημονευθείσῃ πινακοθήκῃ), «Ὁ θάνατος τοῦ Πριάμου» (παλάτιον Κορσίνι), «Ὁ θάνατος τοῦ κόμιτος Οὐγολίνου» (Palazzo della Gherardesca) κτλ.

Ι. Μ. Π.

**Μπενβολιέντι** (Benvoglienti), ***Οὐμβέρτος***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς (1668—1733). Ἔγραψε: «Chronicon venense italice» καὶ «Annales venenses».

Χ. Δ.

**Μπὲν - Γεχουντά**. Ἰουδαῖος λόγιος, γεννηθεὶς ἐν Λιθουανίᾳ τῷ 1858 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παλαιστίνῃ τῷ 1923. Τὸ πραγματικόν του ὄνομα ἦτο Ἐλεάζαρ Λαζάροβιτς Ἐλιάνωφ. Ἐσπούδασεν ἐν Μόσχᾳ καὶ συνέλαβε τὴν ἰδέαν ὅτι ἦτο δυνατὸν καὶ συμφέρον, ὅπως οἱ ἁπανταχοῦ τῆς γῆς Ἑβραῖοι ἐπανέλθουν εἰς τὴν προγονικήν των γλῶσσαν, τὴν ἑβραϊκὴν τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης. Φυματιῶν καὶ πενόμενος, ἐγκατέλιπε τὴν Ρωσίαν, διέτρεξε τὴν Γερμανίαν καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις. Ἐπιδεινωθείσης ὅμως ἐκεῖ τῆς καταστάσεώς του, ἀνεχώρησε μετὰ τῆς συζύγου του διὰ τὴν Παλαιστίνην. Ὁ ἐθνικιστικὸς καὶ γλωσσικὸς οὗτος ρωμαντισμός του, ὅστις τὸν ὡδήγησε μέχρι τοιούτου βαθμοῦ φανατισμοῦ, ὥστε καὶ εἰς τὰς καθ' ἡμέραν ὁμιλίας του νὰ μὴ χρησιμοποιῇ ἄλλην γλῶσσαν ἀπὸ τὴν ἀρχαίαν ἑβραϊκήν, ἐπροκάλεσε τὸν ἐμπαιγμόν, τὴν περιφρόνησιν καὶ τὴν ἐγκατάλειψιν ἐκ μέρους τῶν ὁμοφύλων του, οἵτινες καὶ τὸν ἀνεθεμάτισαν ἀκόμη. Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ πιστὴ σύντροφος τῆς ζωῆς του ἀπέθανεν ἐξ ὀδύνης, τὰ δὲ τέκνα του ἐδοκίμασαν ὀδυνηρῶς τὰς συνεπείας τῆς οἰκονομικῆς ἀνεχείας· αὐτὸς ὅμως ἐξηκολούθει νὰ ἐπιμένῃ εἰς τὴν οὐτοπίαν του. Τὸ κήρυγμά του υἱοθετήθη ὑπὸ τοῦ περιφήμου σιωνιστοῦ Θ. Χέρτζλ, ὅστις εὕρισκεν εἰς αὐτὸ τὸ μόνον μέσον τῆς γλωσσικῆς συνενώσεως

Digitized by Google

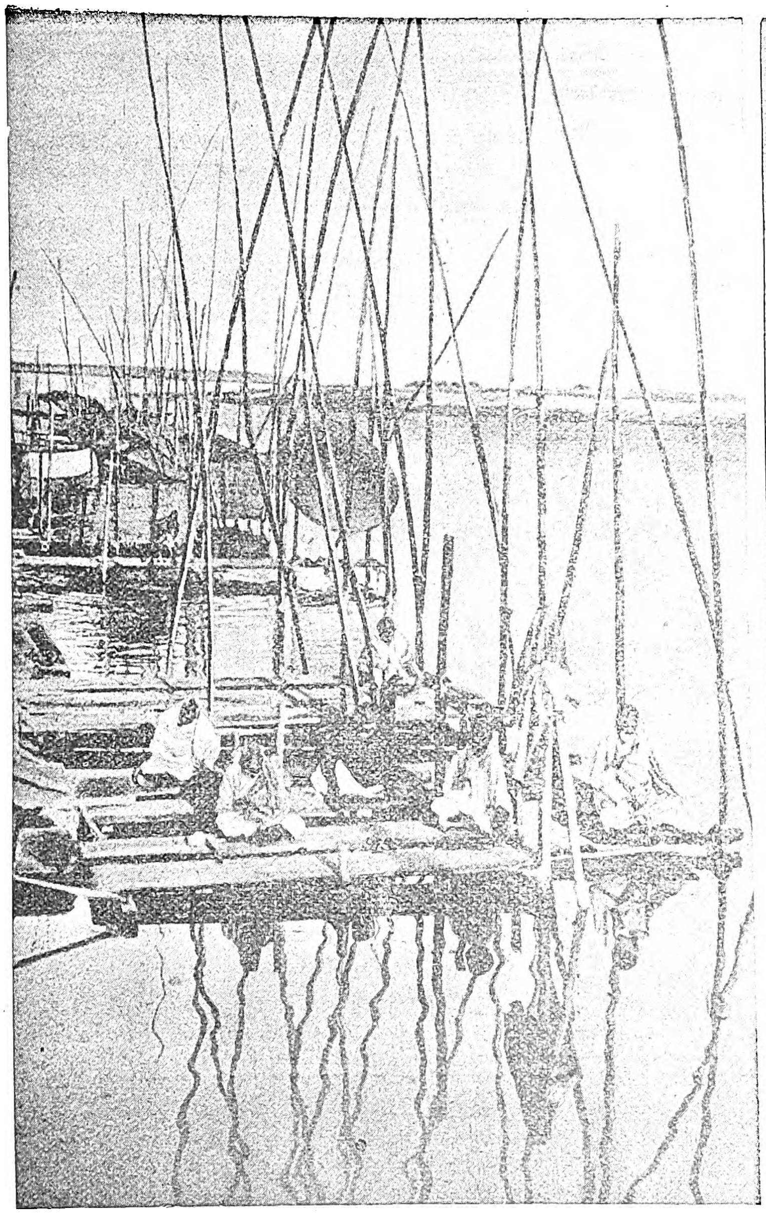

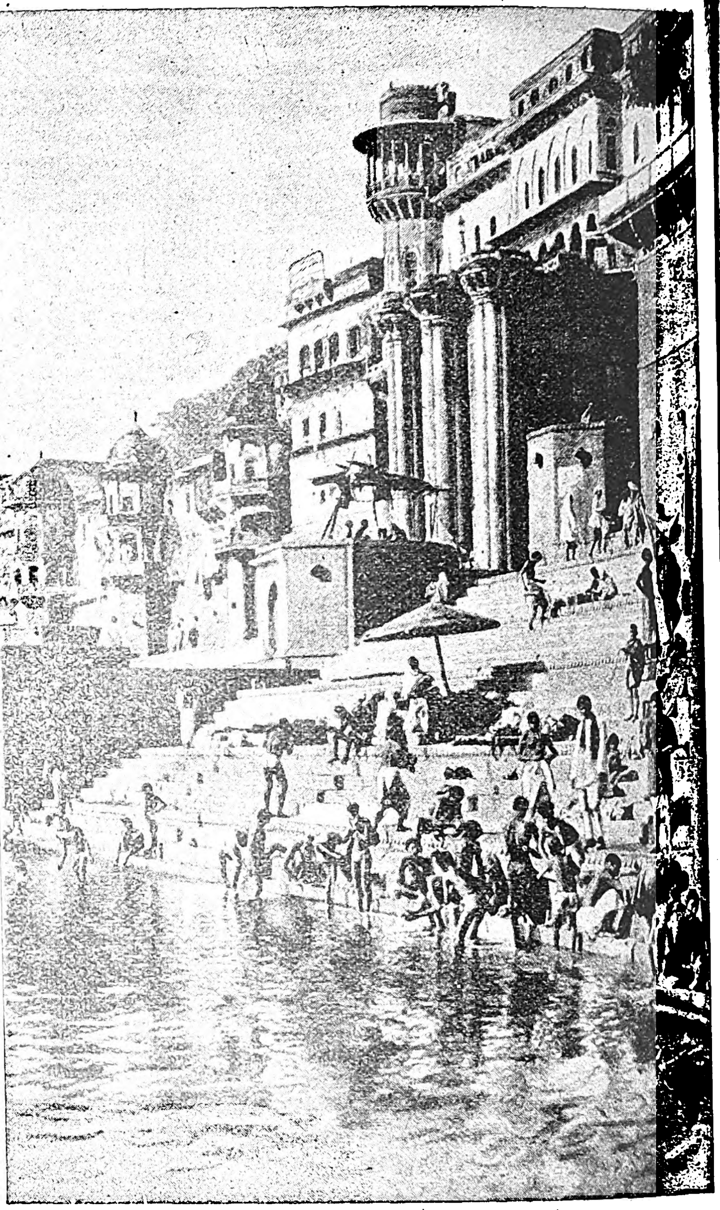

1) Προσκυνηταὶ προσευχόμενοι παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Γάγγου. 2) «Γκάτς» ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ ἱεροῦ ποταμοῦ.

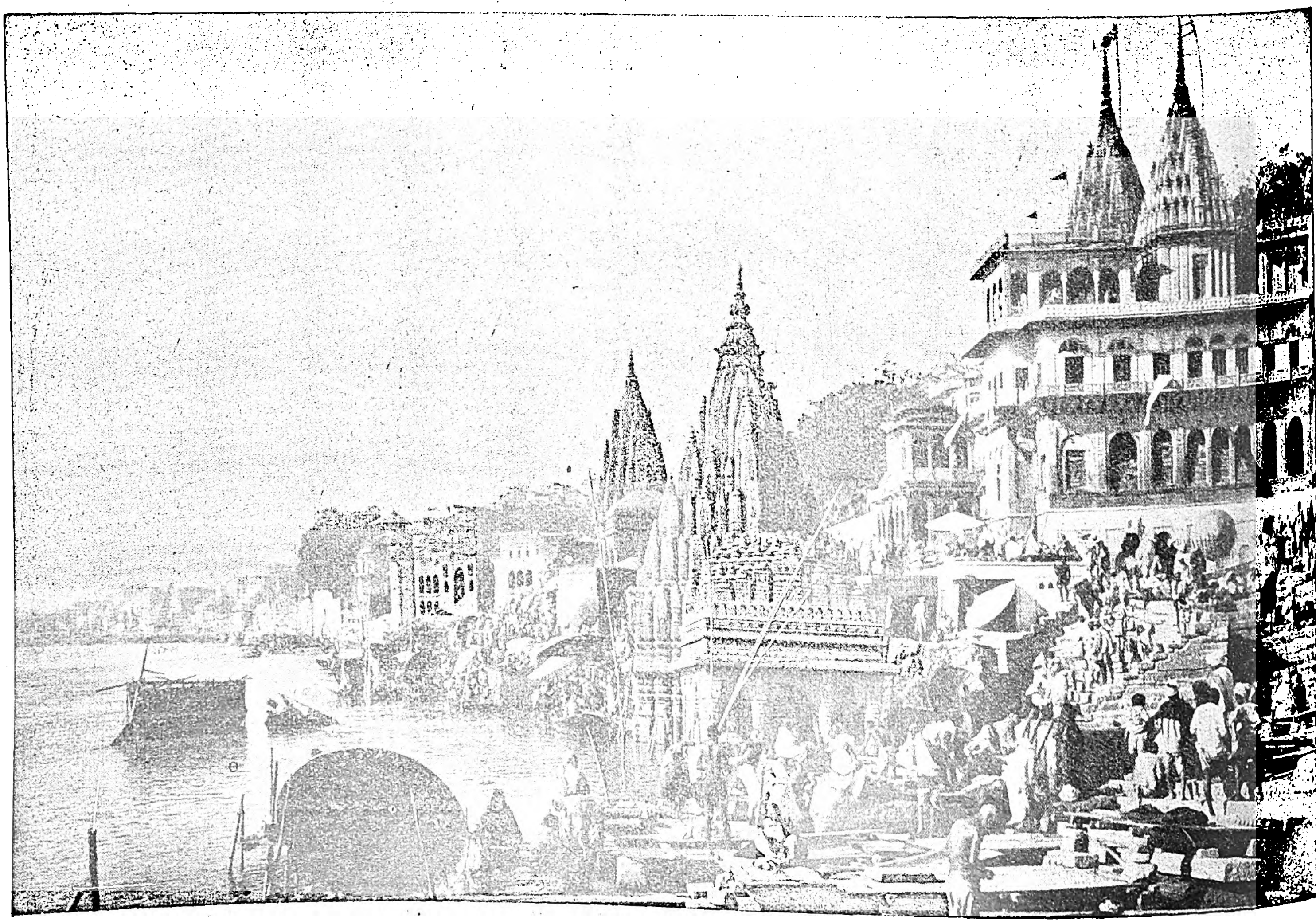

*Μπενάρες*: Ἄποψις τοῦ παρὰ τὸν Γάγγην τμήματος τῆς ἱερᾶς πόλεως.

Digitized by Google

τῶν ἁπανταχοῦ τῆς γῆς Ἑβραίων, οἱ ὁποῖοι διὰ τοῦ σιωνιστικοῦ κινήματος θὰ κατέφευγον εἰς Παλαιστίνην. Ὁ Μπὲν - Γεχουντὰ ἀνεκηρύχθη ὑπὸ τῶν σιωνιστῶν ἐθνικὸς ἥρως, ἵδρυσε σχολεῖα, προσείλκυσε πολλοὺς μαθητὰς καὶ ἐνεφύσησε πνοὴν ζωῆς εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑβραϊκήν. Τὸ κίνημα τοῦτο τῆς γλωσσικῆς ἐπιστροφῆς ἔσχε σχετικήν τινα ἐπιτυχίαν, ἐπεκταθὲν τοὐλάχιστον εἰς τοὺς ἐν Παλαιστίνῃ ἐγκατασταθέντας Ἑβραίους, οἵτινες ὁμιλοῦν πλέον τὴν γλῶσσαν τῶν προγόνων των. Ὁ Μπὲν-Γεχουντὰ συνέταξε δεκάτομον «Ἑβραϊκὸν λεξικόν», τὸ ὁποῖον θεωρεῖται ὡς ἓν ἐκ τῶν καλυτέρων σχετικῶν ἔργων.
—Ω.

**Μπένγκελ** (Bengel), ***Ἰωάννης-Ἀλβέρτος*** (1687—1752). Σπουδάσας θεολογίαν ἐν Τυβίγγῃ (1703—1707), διωρίσθη τῷ 1713 διδάσκαλος ἐν τῷ τότε ἱδρυθέντι σχολείῳ τοῦ Δεκενδόρφ, ἐν τῇ θέσει δὲ ταύτῃ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1741. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἄρχεται ἡ συγγραφικὴ δρᾶσις τοῦ Μπένγκελ. Ἐξέδωκε κατ' ἀρχὰς τὰς ἐπιστολὰς τοῦ Κικέρωνος «ad familiares» (τῷ 1719), ἔπειτα τὸν πανηγυρικὸν τοῦ Γρηγορίου τοῦ Θαυματουργοῦ εἰς τὸν Ὠριγένην (1722 ἑλληνιστὶ καὶ λατινιστὶ) καὶ τὰ τέσσαρα βιβλία τῶν «Περὶ ἱερωσύνης» λόγων τοῦ Χρυσοστόμου (1725 ἑλλην. καὶ λατιν.). Γνωστὸς ὅμως ἐγένετο ὁ Μπένγκελ διὰ τῶν κριτικῶν καὶ ἑρμηνευτικῶν αὐτοῦ ἐργασιῶν εἰς τὴν Καινὴν Διαθήκην. Κατὰ τὸ 1734 ἐξέδωκε τὸ ἑλληνικὸν κείμενον τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς δύο ἐκδόσεις, εἰς τέταρτον καὶ ὄγδοον. Εἰς τὴν πρώτην ἔκδοσιν προσέθηκε τὸν apparatus inticus, ἐν τῷ ὁποίῳ πραγματεύεται περὶ τῆς ἐννοίας καὶ τοῦ σκοποῦ τῆς κριτικῆς τῆς Καινῆς Διαθήκης, περὶ τῶν πηγῶν τοῦ κειμένου καὶ ἄλλων σχετικῶν ζητημάτων. Ἡ κριτικὴ αὕτη ἔκδοσις, γενομένη ἐπὶ τῇ βάσει τῶν μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἐκδόσεων αὐτῆς διὰ τοῦ τύπου, τῶν παραφράσεων αὐτῆς καὶ 24 χειρογράφων, εἶναι σπουδαιοτάτη, εἰ καὶ ὁ Μπένγκελ εἶχε τὴν περίεργον γνώμην ὅτι αἱ γραφαὶ τῶν διὰ τοῦ τύπου ἐκδόσεων πρέπει νὰ προτιμῶνται τῶν γραφῶν τῶν χειρογράφων. Τῷ 1742 ἐξέδωκε τὸν «Γνώμονα τῆς Καινῆς Διαθήκης» (Gnomon novi Testamenti), ὅστις ἐξεδόθη ἔπειτα πολλάκις καὶ μετεφράσθη εἰς τὴν γερμανικὴν τῷ 1853. Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ἐκθέτει τοὺς κανόνας πρὸς ὀρθὴν κατανόησιν τοῦ κειμένου τῆς Καινῆς Διαθήκης. Δεικνύων τὴν ἀξίαν τῆς γραμματικῆς καὶ ἱστορικῆς ἑρμηνείας τῆς Ἁγίας Γραφῆς, τονίζει ὅτι πρὸς ἀναγνώρισιν τῆς θειότητος αὐτῆς εἶναι ἀναγκαία ἡ ἐσωτερικὴ μαρτυρία τοῦ ἁγίου Πνεύματος (testimonium spiritus sancti internum). Τῷ 1753 ἐξέδωκεν ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀρχῶν τούτων τὸ ἔργον του «Ἡ Καινὴ Διαθήκη ἐκ τοῦ πρωτοτύπου, μεταφρασθεῖσα μετὰ παρατηρήσεων». Ὁ Μπένγκελ ἦτο χιλιαστής. Νομίζων ὅτι ἐκ τῆς ἁγίας Γραφῆς προκύπτει ὅτι ὁ κόσμος θὰ διαρκέσῃ 7777 7/9 ἔτη, ἐδέχετο ὅτι μεταξὺ τοῦ 1836 καὶ 1837 θὰ ἤρχιζεν ἡ χιλιετὴς βασιλεία τοῦ Χριστοῦ καὶ ἑπομένως μεταξὺ τοῦ 2836 καὶ 2837 θὰ ἐπήρχετο τὸ τέλος τοῦ κόσμου καὶ ἡ μέλλουσα κρίσις. Αἱ γνῶμαι αὗται, ἃς ἀνέπτυξε καὶ ἐν ἄλλοις ἔργοις καὶ ἰδίᾳ ἐν τῇ ἑρμηνείᾳ τῆς «Ἀποκαλύψεως» τοῦ Ἰωάννου (τῷ 1740) καὶ εἰς τοὺς ἑξήκοντα ἐποικοδομητικοὺς λόγους εἰς αὐτὴν (1747), εὗρον μεγάλην ἀπήχησιν παρὰ πολλοῖς κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Ἄξιον σημειώσεως εἶναι ὅτι ὁ Μπένγκελ ἦτο καὶ ἐμπνευσμένος ποιητὴς ἐκκλησιαστικῶν ᾀσμάτων. Μετὰ τὸ 1741 ἀνέλαβε διάφορα ἐκκλησιαστικὰ ἀξιώματα, τῷ δὲ 1751 ἀνεκηρύχθη ὑπὸ τῆς θεολογικῆς σχολῆς τῆς Τυβίγγης διδάκτωρ τῆς θεολογίας.

[*Burk*, «Bengels Leben und Wirken» 1831.]
Κ. Ι. Δ.

**Μπενγκουέλα** (Benguela) *[Γεωγρ.]*. —1) Ἐκτεταμένη χώρα τῆς πορτογαλικῆς ἀποικίας τῆς Ἀγγόλας ἐν τῇ Δ. Ἀφρικῇ, βρεχομένη πρὸς Δ. ἐπὶ μήκους 1000 χλμ. ὑπὸ τοῦ Ἀτλαντικοῦ. Ἔχει ἔκτασιν 250.880 τ. χλμ., πληθυσμὸν 55.000 κατ., ἀνηκόντων κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν φυλὴν Μπαντού, καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς καλύπτεται ὑπὸ εὐρέος ὑψιπέδου, σχηματίζοντος πρὸς Δ. καὶ κατὰ μῆκος τῆς παραλίας τοῦ Ἀτλαντικοῦ μακρὰν ὀροσειρὰν διήκουσαν ἀπὸ Β. πρὸς Ν. Παράγει κυρίως καουτσοὺκ καὶ καπνὸν καὶ ἔχει μεγάλα δάση, ὅπου διεξάγεται κυνήγιον ἐλεφάντων. Διασχίζεται ἀπὸ Δ. πρὸς Α. ὑπὸ μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, προεκτεινομένης μέχρι σχεδὸν τῶν πηγῶν τοῦ Κόνγκο.

—2) Πόλις καὶ λιμὴν τῆς ἐν Ἀφρικῇ πορτογαλικῆς ἀποικίας τῆς Ἀγγόλας, πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου χώρας, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Ἀτλαντικοῦ πρὸς Ν. τοῦ Ἁγίου Παύλου τῆς Λοάντα. Ὀνομάζεται ἐπίσης *Σὰν Φελίπε ντὲ Μπενγκουέλα* καὶ εἶναι ἀφετηρία τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἥτις διασχίζουσα τὴν Ἀγγόλαν ἑνοῦται μετὰ τῆς μεγάλης κατὰ μῆκος τῆς Ἀφρικῆς ἀπὸ Β. πρὸς Ν. διηκούσης ἀρτηρίας. Ἐξάγει καπνόν, ἐλεφαντόδοντα, καουτσοὺκ κλπ. Κάτ. 3.750.
Χ. Δ.

**Μπένδορφ** (Benndorf), ***Ὄθων***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1838 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1907. Περιηγηθεὶς τὴν Ἰταλίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα ἀπὸ τοῦ 1864—1868, συνέγραψε περισπουδάστους ἀρχαιολογικὰς πραγματείας, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Εὐρώπην, διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γοττίγγης, τῆς Ζυρίχης, τοῦ Μονάχου, τῆς Πράγας καὶ τελευταῖον τῆς Βιέννης, ἔνθα διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1898 καὶ διευθυντὴς τοῦ Αὐστριακοῦ Ἀρχαιολογικοῦ Ἰνστιτούτου μέχρι τοῦ θανάτου του. Κατὰ τὸ ἀρχαιολογικὸν αὐτοῦ στάδιον ὁ Μπένδορφ διενήργησεν ἀνασκαφὰς μετὰ τοῦ Konze μὲν ἐν Σαμοθρᾴκῃ, μόνος δὲ ἐν Λυκίᾳ καὶ Καρίᾳ, ὅπου ἀνέσκαψε τὸ ἱερὸν τῆς Ἑκάτης καὶ ὁπόθεν ἐκόμισεν εἰς Βιέννην τὰ περίφημα ἀνάγλυφα τοῦ Gjelbaschi. Ἐδημοσίευσε καὶ ἐξέδωκε πολλὰς πραγματείας καὶ ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Anthologiae grecae epigrammatis quae ad artes spectant» (1862), «Die antiken Bildwerke des Lateranensischen Museums» (1867) (μετὰ τοῦ Schöne), «Die Antikeu von Jurich» (1872), «Die Metopen von Selinunt» (1873), «Ueber die Bedeutung der Archäologie für das Gymnasium» (1889), «Ueber das alter der Trajasspiels» (1891), «Ephesus» (1897) κλπ. Τὸ Αὐστριακὸν Ἀρχαιολογικὸν Ἰνστιτοῦτον ἵδρυσε πρὸς τιμὴν τοῦ Μπένδορφ χαλκίνην προτομήν του πρὸ τῆς ἐν Ἀθήναις Αὐστριακῆς Ἀρχαιολογικῆς Σχολῆς.
Β. Δ. Θ.

**Μπενεβέντο** (Benevento) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας (βλ. λ. *Βενεβέντον*).

**Μπενεβίτης**, ***Ἀλοΐσιος***. Κερκυραῖος πολεμιστής. Διορισθεὶς ὑπὸ τῆς Ἑνετίας γενικὸς προβλεπτὴς καὶ καπετᾶνος Πάργας, διεκρίθη κατὰ τὴν ἐν ἔτει 1657 πολιορκίαν ταύτης ὑπὸ τῶν Τούρκων, καθ' ἣν μὲ ἐλαχίστην στρατιωτικὴν δύναμιν κατώρθωσε νὰ ἀποκρούσῃ τούτους, ἀνερχομένους εἰς 4 χιλ., καὶ νὰ διασώσῃ τὸ φρούριον τῆς πόλεως. Ὡσαύτως κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς πατρίδος του τῷ 1716 κατήρτισεν ἰδίοις ἀναλώμασι στρατιωτικὸν σῶμα ἐκ 200 ἀνδρῶν καὶ τεθεὶς ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατάρχου Σχούλεμβουργ ὑπερήσπισε τὴν πόλιν, πολεμήσας γενναιότατα.
Π. Θ. Σ.

**Μπενέβολι** (Benevoli), ***Ὁράτιος***. Ἰταλὸς συνθέτης (1602—1672). Θεωρεῖται εἷς τῶν δεινοτέρων δεξιοτεχνῶν τῆς ἀντιστίξεως καὶ ἀπὸ τὰς μεγαλυτέρας δόξας τῆς Ἰταλίας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, παραλληλιζόμενος πολλάκις πρὸς αὐτὸν τὸν Παλεστρίνα. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, ἀξία ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι ἡ περίφημος λειτουργία, ἣν ἔγραψε διὰ τὰ ἐγκαίνια τοῦ θαυμασίου μητροπολιτικοῦ ναοῦ τοῦ Σαλτσβούργου (1628). Ἡ λειτουργία αὕτη ἀποτελεῖται ἀπὸ 16 φωνάς, 34 μέρη ὀργάνων, 2 μέρη ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου καὶ ἐνάριθμον βάσιμον.
Γ. Σ.

**Μπένεκε** (Benecke), ***Ἐρνέστος - Γουλιέλμος***. Γερμανὸς γεωλόγος, γεννηθεὶς τῷ 1838. Διετέλεσεν ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου (1869), βραδύτερον δὲ τακτικὸς ἐν Στρασβούργῳ. Ἔγραψε: «Γεωλογία τῆς Ἀλσατίας καὶ τῆς Λωρραίνης» κ. ἄ.
Α. Δ.

— **Μπένεκε** (Beneke), ***Φρειδερῖκος-Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1798—1854). Ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν Χάλλῃ καὶ φιλοσοφίαν ἐν Βερολίνῳ. Τῷ 1820 ἐγένετο ὑφηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Βερολίνου, ἀλλὰ μετὰ τὴν δημοσίευσιν τοῦ ἔργου του «Ἡ θεμελίωσις τῆς φυσικῆς τῶν ἠθῶν» (1822), ἐν ᾧ ἐκηρύσσετο ὑπὲρ τῆς ἠθικῆς τῶν ἐπικουρείων, ἀπηγορεύθη εἰς αὐτὸν ἡ περαιτέρω διδασκαλία. Τῷ 1824 διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν Γοττίγγῃ, μετ' ὀλίγον δὲ τῷ ἐπετράπη νὰ συνεχίσῃ τὰς παραδόσεις του ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου, οὗτινος ἐγένετο ἔκτακτος καὶ βραδύτερον τακτικὸς καθηγητής. Θεμελιώδης ἀρχὴ τοῦ Μπένεκε εἶναι ὅτι ἡ φιλοσοφία ὀφείλει νὰ στηριχθῇ εἰς ἀμερόληπτον καὶ αὐστηρῶς ἐπιστημονικὴν μελέτην τῶν δεδομένων τῆς συνειδήσεως. Ὅθεν, κατ' αὐτόν, ἡ κυρία καὶ θεμελιώδης φιλοσοφικὴ ἐπιστήμη εἶναι ἡ ἐμπειρικὴ ψυχολογία. Καὶ αὐτὴ δὲ ἡ ἠθικὴ δέον νὰ στηριχθῇ ἐπὶ ψυχολογικῶν δεδομένων. Κατ' αὐτόν, ἠθικὸν εἶναι ὅ,τι ἐν τῇ ἀμέσῳ ἀντικειμενικῇ καὶ ὑποκειμενικῇ ἀποτιμήσει τῶν ἀξιῶν ἀποδεικνύεται ὡς ὕψιστον ἀγαθόν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Ἐμπειρικὴ ψυχολογία ὡς βάσις πάσης γνώσεως» (1820), «Γνωσιολογία συνῳδὰ τῇ συνειδήσει τῆς καθαρᾶς νοήσεως» (1820), «Νέα βάσις τῆς μεταφυσικῆς» (1822), «Ψυχολογικαὶ σκιαγραφίαι» (2 τόμ. 1825—1827), «Ψυχὴ καὶ σῶμα» (1826), «Ψυχολογία ὡς φυσικὴ ἐπιστήμη» (1833), «Σύστημα μεταφυσικῆς καὶ φιλοσοφίας τῆς θρησκείας» (1840), «Σύστημα τῆς λογικῆς ὡς τέχνης τοῦ διανοεῖσθαι» (1842), «Πραγματιστικὴ ψυχολογία ἐν τῇ ἐφαρμογῇ αὐτῆς εἰς τὴν ζωὴν» (2 τόμ. 1850), «Ἀρχεῖον πραγματιστικῆς ψυχολογίας» (3 τόμ. 1851—1853). Ὁ Μπένεκε εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ἐκ τῆς διδασκαλίας αὐτοῦ περὶ τοῦ συνειρμοῦ τῶν παραστάσεων καὶ τῆς ἐπὶ τῶν ψυχολογικῶν θεωριῶν τοῦ Ἑρβάρτου ἐρειδομένης κριτικῆς αὐτοῦ, ἀναφερομένης εἰς τὰς καλουμένας ἀφῃρημένας δυνάμεις τῆς ψυχῆς (abstrakte Seelenvermögen», ἡ ὕπαρξις τῶν ὁποίων ἐθεωρεῖτο πραγματικὴ ὑπὸ τῶν ψυχολόγων τῆς ἐποχῆς του. Ὁ Μπένεκε διεκρίθη καὶ ὡς παιδαγωγὸς διὰ τοῦ ἔργου του: «Ἀγωγὴ καὶ διδασκαλία» (2 τόμ. 1835—1836).
Α. Δ.

**μπενεκλούδι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐπίθυμον τὸ μονόγυνον*.

**Μπενέλλι** (Benelli), ***Σέμ***. Ἰταλὸς δραματικὸς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Φιλεττόλε παρὰ τὸ Πρότο τῆς Τοσκάνης τῷ 1877. Κατάγεται ἐκ πτωχῆς οἰκογενείας χωρικῶν καὶ κατ' ἀρχὰς ἠναγκάσθη νὰ γίνῃ ἐργάτης, κατορθώσας βραδύτερον, χάρις εἰς τὴν ἐπιμονήν του καὶ τὴν φιλομάθειάν του νὰ ἐγγραφῇ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Φλωρεντίας, ὅπου παρηκολούθησε φιλολογικὰς σπουδάς. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του διέκοψε τὰς σπουδάς του καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, γράφων κατ' ἀρχὰς εἰς ἀσημάντους ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, καὶ γενόμενος κατόπιν ἀρχισυντάκτης τῆς «Διεθνοῦς ἐπιθεωρήσεως». Βραδύτερον ἵδρυσεν ἐν Μιλάνῳ, τῇ συνεργασίᾳ τῶν Πόντι καὶ Μαρινέλλι, τὴν «Διεθνῆ ποιητικὴν ἐπιθεώρησιν» καὶ ἤρχισε νὰ δημοσιεύσῃ ποιήματα καὶ δραματικὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα κατέστησαν αὐτὸν σὺν τῷ χρόνῳ γνωστότατον καὶ τὸν ἀνέδειξαν ὡς ἕνα τῶν ἀξιολογωτέρων συγγραφέων τῆς συγχρόνου Ἰταλίας. Τὰ δύο πρῶτα του ἔργα, «Ἡ Γῆ» καὶ «Ἡ Εὔθυμη ἐπιστήμη», παρῆλθον σχεδὸν ἀπαρατήρητα, καθὼς καὶ τὸ ἱστορικὸν δρᾶμα «Φερδινάνδος Λασσάλ», (1902). Ἡ ἔμμετρος ὅμως ἱστορικὴ τραγῳδία «Τὸ προσωπεῖον τοῦ Βρούτου», παιχθεῖσα διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1905, ἐσημείωσε μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ ὑπῆρξε τὸ πρῶτον ἔργον, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπεβλήθη εἰς τὸ κοινὸν καὶ τὴν κριτικήν. Τὸ ἐπακολουθῆσαν δρᾶμα «Ὁ δεῖπνος μὲ τὰ σκώμματα» παιχθὲν ἐν Ρώμῃ τῷ 1909 καὶ μεταφρασθὲν εἰς πολλὰς ξένας γλώσσας (ἑλληνικὴ μετάφρασις ὑπὸ Ν.Ποριώτη, 1916), ἐστερέωσε τὴν φήμην του καὶ κατέστησεν αὐτὸν γνωστὸν καὶ εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Ἔγραψεν ἐπίσης τὴν σατιρικὴν ἠθογραφίαν ὁ «Σκῶρος» (Tignola) καὶ τὰ ὑπ' αὐτοῦ τιτλοφορούμενα «δραματικὰ ποιήματα»: «Ἔρως τριῶν βασιλέων» (1910), «Ροσιμούνδα» (1911), «Μαντελλάτσιο» (1911), «Γοργόνα» 1913), «Γάμοι τῶν Κενταύρων» (1915). Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἀνεδείχθη θερμὸς πατριώτης, πληγωθεὶς δίς, καὶ ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος Ἰταλὸς στρατιώτης, ὁ ὁποῖος εἰσῆλθεν εἰς τὴν Πόλαν. Μετὰ τὸν πόλεμον ἐπεχείρησε ν' ἀναμιχθῇ καὶ εἰς τὴν πολιτικήν, λαβὼν μέρος εἰς τὴν ἀντιμπολσεβικικὴν κίνησιν, γενόμενος τῷ 1921 βουλευτής, ἔγραψε δὲ τὰ δράματα «Φτεροῦγες» (1920», «Ἐρωτικὴ τραγῳδία» (1925), «Μὲ τ' ἀστέρια» (1927), «Ἀρτσιγκόγκολο» (1922), τὰ ὁποῖα, πλὴν τοῦ τελευταίου, εἶναι λίαν ἐπηρεασμένα ἐκ τῆς ἀνησύχου πολιτικῆς ἰδεολογίας, ἡ ὁποία ἐκυριάρχει ἐν αὐτῷ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Τὸ ἔργον του «Ὀρφεὺς καὶ Περσεφόνη» (1929), σημειοῖ νέον σταθμὸν εἰς τὴν ἐξέλιξιν τοῦ ποιητοῦ, ὁ ὁποῖος προσπαθεῖ νὰ προσδώσῃ εἰς τὴν δραματικήν του ποίησιν καὶ ποιάν τινα χροιὰν φιλοσοφικοῦ περιεχομένου. Ὁ Μπενέλλι ἵδρυσεν ἐπίσης καὶ θίασον, διὰ τοῦ ὁποίου ἔπαιξε πλὴν τῶν ἰδίων του ἔργων καὶ πολλὰ ἐκ τῶν ἀριστουργημάτων τῶν ξένων φιλολογιῶν, ἀναδειχθεὶς συγχρόνως καὶ ὡς ἐμπνευσμένος σκηνοθέτης. Ἡ μεγάλη δημοτικότης του, τὴν ὁποίαν ἐγνώρισεν εἰς νεαρὰν ἡλικίαν, δύναται νὰ παραβληθῇ μόνον μὲ τὴν τοῦ Ντ' Ἀννούντσιο, πρὸς τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ ὁποίου ἡ τέχνη του παρουσιάζει μεγάλας ἀναλογίας, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ τὴν μεγαλοπρέπειαν καὶ τὸ πομπῶδες ὕφος τῆς γλώσσης, τὴν δύναμιν τῶν εἰκόνων καὶ τὴν κλίσιν πρὸς τὰ ἱστορικὰ θέματα. Εἰς τὰ τελευταῖά του ἔργα ὁ Μπενέλλι προσπαθεῖ ν' ἀπαλλαγῇ τοῦ πομπώδους ὕφους καὶ νὰ ἐπιτύχῃ περισσοτέραν φυσικότητα τοῦ διαλόγου.
Μ. Δ. Β.

**Μπενέλλιν**, ***Γεώργιος***. Ρῶσος σλαβιστής, γεννηθεὶς ἐν Κιέβῳ τῷ 1802 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1839. Ἐσπούδασεν ἀρχικῶς θεολογίαν καὶ ἰατρικήν, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1828 ἀφωσιώθη εἰς τὴν σλαβικὴν ἀρχαιολογίαν καὶ μετεβλήθη εἰς ὄργανον τῶν σλαβοφίλων, οἵτινες ἤσκουν μεγάλην προπαγάνδαν. Τῷ 1829 ἐξέδωκε τὸ πρῶτον ἱστορικόν του ἔργον: «Παλαιά, νέα Βουλγαρία καὶ αἱ θρησκευτικαί, ἐθνολογικαί, ἱστορικαὶ καὶ πολιτικαὶ σχέσεις αὐτῆς πρὸς τὴν Ρωσίαν». Ὁ σκοπὸς τοῦ ἔργου του τούτου ὑπῆρξε ν' ἀποδείξῃ τὴν σλαβικὴν καταγωγὴν τῶν Βουλγάρων καὶ ἐζήτησε νὰ ἐξεγείρῃ τὸ ἐθνικὸν φρόνημα αὐτῶν, ὅπερ ἀπὸ τῆς ὑποταγῆς των εἰς τὴν Τουρκίαν οὐδέποτε εἶχεν ἐκδηλωθῆ. Αἱ ἐνέργειαι τοῦ Μπενέλλιν καὶ ἡ περιοδεία αὐτοῦ εἰς Βουλγαρίαν καὶ Ρουμανίαν, κατ' ἐντολὴν τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῆς Πετρουπόλεως, ἀπέβησαν λίαν καρποφόροι, τῇ ἐνεργείᾳ δὲ αὐτοῦ ἱδρύθησαν τὰ πρῶτα βουλγαρικὰ σχολεῖα ἐν Γραμπόβῳ καὶ Ὀδησσῷ. Ὁ Μπενέλλιν συνέλεξε πλεῖστα βουλγαρικὰ τραγούδια καὶ συνέθεσε τὴν πρώτην βουλγαρικὴν γραμματικήν, πρὸς δὲ καὶ «Δοκίμιον περὶ διδασκαλίας τῆς ἱστορίας τῶν σλαβικῶν γλωσσῶν καὶ τῆς σλαβικῆς φιλολογίας». Εἰς τὰ ἔργα του ταῦτα παραποιεῖ τὴν ἱστορίαν. Ἕτερον ἔργον του, μᾶλλον ἀξιοσημείωτον, εἶναι ἡ «Ἀναγέννησις τῆς βουλγαρικῆς φιλολογίας», μεθ' οὗ ἔληξε τὸ στάδιον αὐτοῦ.
Θ. Β.

Digitized by Google

**Μπενὲ-Μπερὶθ** (ἢ *Μπερεΐτ*). Ἰουδαϊκὴ ὀργάνωσις, ἑδρεύουσα εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς μὲ σκοπὸν τὴν μεταξὺ τῶν ἰουδαϊκῶν μαζῶν ἀνάπτυξιν ἀρχῶν ἀλληλεγγύης καὶ ἀδελφοσύνης, τὴν πνευματικὴν καὶ ἠθικὴν τόνωσιν τῶν Ἰουδαίων, τὴν ἐνίσχυσιν τῆς φιλοπατρίας αὐτῶν, τὴν ὑποστήριξιν τῶν καλῶν τεχνῶν καὶ ἐπιστημῶν καὶ τὴν ἀνακούφισιν τῶν ἀπόρων, ἀσθενῶν, χηρῶν καὶ ὀρφανῶν καί, ἐν τέλει, τὴν ὑπὲρ τῶν καταδυναστευομένων Ἰσραηλιτῶν ἐπέμβασιν.
Ἡ Μπενὲ-Μπερὶθ ἱδρύθη τῷ 1843 ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ ὑπό τινος Ἑβραιογερμανοῦ μηχανικοῦ, καταγομένου ἐξ Ἁμβούργου, τοῦ Ἑρρίκου Ἰωνᾶ, κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς πρὸς τὴν Ἀμερικὴν μεταναστευτικῆς κινήσεως τῶν Ἑβραίων, ὅτε καὶ συχνάκις ἀνεφύοντο ἐσωτερικαὶ ἔριδες καὶ διαμάχαι μεταξὺ τῶν ἀπὸ πάσης γωνίας τῆς ἀνατολικῆς Εὐρώπης συρρεόντων μεταναστῶν. Ὁ Ἰωνᾶς καί τινες ἄλλοι ὁμόδοξοί του, πρὸς κατάπαυσιν τῶν διχονοιῶν τούτων, ἐσκέφθησαν νὰ ἱδρύσουν, κατὰ τὸ πρότυπον τοῦ Ἐλευθέρου Τεκτονισμοῦ, τὴν ἀνεξάρτητον τάξιν τῶν Μπενὲ-Μπερίθ, τῆς ὁποίας αἱ στοαὶ ἐντὸς ὀλιγίστων ἐτῶν ἐπολλαπλασιάσθησαν εἰς ὅλα τὰ μεγάλα κέντρα τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἀρχικὸς σκοπὸς τῶν ἐν λόγῳ στοῶν ἦτο ἡ διαπαιδαγώγησις τῶν μελῶν των καὶ ἡ παρ' αὐτοῖς διαμόρφωσις συνειδήσεως περὶ τῆς ἐλευθερίας καὶ περὶ τῶν ἐξ αὐτῆς ἀπορρεόντων καθηκόντων, πρὸ παντὸς δὲ παρ' ἐκείνοις τοῖς μετανάσταις Ἰσραηλίταις, οἵτινες προήρχοντο ἀπὸ χώρας, ὅπου δὲν εἶχον γνωρίσει παρὰ τὰς ἠθικὰς καὶ ὑλικὰς διώξεις. Τὸ ἔργον τῶν στοῶν Μπενὲ-Μπερὶθ ὑπῆρξε κολοσσιαῖον, ὑποστηριχθὲν δὲ ὑπὸ ἐνθέρμων ὀπαδῶν ἔδωκεν, ἐν ἐλαχίστῳ χρονικῷ διαστήματι, θαυμασίους καρπούς. Χάρις εἰς τὸ ἐντατικὸν τοῦτο ἔργον τῶν Μπενὲ-Μπερίθ, ὅπερ ἐσυνεχίσθη, ὁ ἀμερικανικὸς Ἰουδαϊσμὸς ἀπέβη ἡ σημερινὴ δύναμις, ἡ ἀσκοῦσα τεραστίαν ἐπιρροὴν ἐπὶ τοῦ οἰκονομικοῦ μηχανισμοῦ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ὡς καὶ ἐπὶ τῆς φιλολογικῆς, καλλιτεχνικῆς καὶ ἐπιστημονικῆς κινήσεως τῆς ἀμερικανικῆς δημοκρατίας. Τὰ εὐεργετικὰ ἀποτελέσματα τῆς δράσεως τῆς Μπενὲ-Μπερὶθ ἐν Ἀμερικῇ ὤθησαν τοὺς ἰθύνοντας αὐτὴν νὰ ἐπεκτείνωσι τὸ πεδίον τῆς δράσεώς των καὶ εἰς τὰς ἄλλας ἠπείρους. Σήμερον αἱ διακλαδώσεις τῆς Μπενὲ-Μπερὶθ ἐξαπλοῦνται ἐφ' ὅλων σχεδὸν τῶν χωρῶν τῆς Εὐρώπης· στοαὶ ἱδρύθησαν ἐν Νοτίῳ Ἀμερικῇ, ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, Συρίᾳ, Παλαιστίνῃ καὶ ἀλλαχοῦ. Ἡ τάξις τῶν Μπενὲ-Μπερὶθ περιλαμβάνει 15 περιφερείας, ἐξ ὧν 7 ἐν Ἀμερικῇ καὶ 7 ἐν Εὐρώπῃ καὶ μία ἐν Παλαιστίνῃ, μὲ 800 στοὰς καὶ 100 χιλιάδας μέλη.
Ἅπασαι αἱ στοαὶ εἶναι αὐτόνομοι, ἐξαρτώμεναι ἐκ τῶν οἰκείων διαμερισμάτων. Πέντε στοαὶ ἐκ χιλίων μελῶν ἀποτελοῦν μίαν περιφέρειαν. Τὰς στοὰς διέπει ἑνιαῖος καταστατικὸς χάρτης, ἐπὶ τῆς τηρήσεως τοῦ ὁποίου ἐπαγρυπνεῖ ἡ Μεγάλη Ἐκτελεστικὴ Ἐπιτροπὴ ἑδρεύουσα ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις. Αἱ στοαὶ Μπενὲ-Μπερὶθ ἐπραγματοποίησαν μέχρι τοῦδε ἔργον μεγαλοπρεπές. Συντηροῦν πολυάριθμα νοσοκομεῖα, ὀρφανοτροφεῖα, γηροκομεῖα, ἐπιστημονικὰ ἐργαστήρια, ἐξοχικὰ ἀναπαυτήρια ὀρφανοπαίδων, βρεφοκομεῖα κλπ., συνεισφέρουν δὲ μεγάλα χρηματικὰ ποσὰ εἰς τὴν διάδοσιν τῶν ἑβραιολογικῶν ἐπιστημῶν εἰς τὰ ἀμερικανικὰ πανεπιστήμια. Μεταπολεμικῶς ἀνέλαβον τὴν συντήρησιν καὶ μόρφωσιν χιλίων ὀρφανῶν πολέμου. Παίζουν πρωτεύοντα ρόλον εἰς τὰς πολυαρίθμους ὀργανώσεις τὰς ἱδρυθείσας κατὰ καὶ μετὰ τὸν μεγάλον πόλεμον μὲ σκοπὸν τὴν παροχὴν ἀρωγῆς εἰς τοὺς Ἑβραίους τοὺς ὑποστάντας διωγμοὺς ἐν Πολωνίᾳ, Ρωσίᾳ, Ρουμανίᾳ καὶ Γαλικίᾳ, τὸ δὲ φιλανθρωπικὸν ἔργον αὐτῶν ἐπεκτείνεται καὶ ἐπὶ τῶν πληθυσμῶν τῆς Ἐγγὺς Ἀνατολῆς. Τὰ ἐν Γερμανίᾳ, Τσεχοσλοβακίᾳ, Αὐστρίᾳ, Ρουμανίᾳ κλπ. πολυάριθμα φιλανθρωπικὰ ἔργα ἐπιμαρτυροῦν τὴν εὐεργετικὴν δρᾶσιν τῶν Μπενὲ-Μπερίθ. Ἐν Ἑλλάδι ἡ στοὰ Θεσσαλονίκης ἀνέλαβε διὰ τῆς ἱδρύσεως τοῦ «Ταμείου σπουδῶν» τὴν ἀποστολὴν πτωχῶν Ἰσραηλιτῶν νεανιῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον καὶ εἰς τὰ διάφορα σχολεῖα τῆς πόλεως. Τὸ ταμεῖον τοῦτο συντηρεῖ ἤδη 54 σπουδαστάς, ἐξ ὧν 4 εἰς τὸ πανεπιστήμιον, 11 εἰς τὴν ἐμπορικὴν σχολήν, 38 εἰς τὰ διάφορα γυμνάσια τῆς πόλεως καὶ 1 ὑπότροφος τῆς ἐν Ἀθήναις σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ι. ΚΩΝ

**Μπένεντεκ** (Benedek), ***Λουδοβῖκος-Αὔγουστος φὸν***—. Αὐστριακὸς στρατηγὸς (1804—1881). Ἀφοῦ ἐπολέμησεν ἐπιτυχῶς ἐν Γαλικίᾳ, Ἰταλίᾳ, Οὐγγαρίᾳ, προήχθη τῷ 1849 εἰς ἀρχηγὸν τοῦ ἐπιτελείου τοῦ Ραντέτσκυ. Διορισθεὶς τῷ 1860 ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ, διετέλεσεν ἀνώτατος διοικητὴς τῶν ἐν Οὐγγαρίᾳ στρατιωτικῶν δυνάμεων καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῶν ἐν Ἰταλίᾳ στρατευμάτων. Τῷ 1866, κατὰ διαταγὴν τοῦ αὐτοκράτορος, ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς στρατιᾶς τοῦ βορρᾶ, ἡττηθεὶς ἐν Königgrätz. Ἀποσυρθεὶς εἰς Graz ἔκαυσε πάντα τ' ἀφορῶντα τὸν πόλεμον τοῦ 1866 ἔγγραφα, τηρήσας τὴν περὶ ἀπολύτου σιωπῆς ὑπόσχεσίν του πρὸς τὸν ἀρχιδοῦκα Ἄλμπρεχτ. —Ω.

**Μπενεντέττι** (Benedetti καὶ λατ. Benedictus), ***Ἀλέξανδρος***. Ἰταλὸς ἀνατόμος καὶ χειρουργός, γεννηθεὶς κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἐν Legnano καὶ ἀποθανὼν τῷ 1525. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν ἰατρικῶν του σπουδῶν ἐν Παδούῃ, διῆλθεν ἔτη τινὰ πρὸς ἐξάσκησιν τοῦ ἐπαγγέλματός του ἐν Πελοποννήσῳ καὶ Χανίοις τῆς ἐνετοκρατουμένης Κρήτης (1487—1490), καὶ τῷ 1490 ἐπανέκαμψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ἱδρύσας ἐν Παδούῃ ἀνατομικὸν ἀμφιθέατρον καὶ διδάξας αὐτόθι μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας. Τῷ 1497 μετέβη εἰς Βενετίαν καὶ ἐδίδαξεν ἐπίσης ἐπιτυχῶς πρακτικὴν ἰατρικήν. Ἡ ἀξία του ἔγκειται εἰς τὸ ὅτι ἀπήλλαξε τὴν ἰατρικὴν τῶν βαρβάρων μεσαιωνικῶν μεθόδων, ἐπιζητήσας τὸ φῶς τῆς ἐπιστήμης εἰς τὴν μελέτην καὶ ἔρευναν τῶν κλινικῶν καὶ ἀνατομοπαθολογικῶν δεδομένων. Ὑπὸ τοιούτων δὲ ἐμπνεόμενος ἰδεῶν ἤρξατο τῆς δημοσιεύσεως ἰατρικῆς ἐγκυκλοπαιδείας. Ὡς χειρουργός, ἐπέδειξεν ἱκανὴν δεξιότητα καὶ πλείστους εἰσήγαγε νεωτερισμοὺς εἰς τὰς ἐγχειρήσεις τῶν λίθων τῆς οὐροδόχου κύστεως καὶ τῆς ρινοπλαστικῆς, καὶ εἰς τὴν θεραπείαν τῶν τραυμάτων διὰ πυροβόλου ὅπλου, τῆς συφίλιδος καὶ τῆς γονοκοκκικῆς μολύνσεως. Τὴν δὲ ριζικὴν ἐγχείρησιν τῶν κηλῶν ἐξετέλει δι' ἰδίας μεθόδου, ἣν ἐδιδάχθη, ὡς φαίνεται, ἔκ τινος Ἱσπανοῦ. Ἔγραψεν: «Anatomiae sive historiae corporis humani» (Βενετία 1493—1498—1502), «Περὶ πανώλους», «De pestilenti febresive pestilentiae causis», «De observationibus in pestilentia» (Βενετία 1493), «De prodigiosis inediis exempla duo» (Βέρνη 1604) κλπ. Τὰ ἅπαντά του εὕρηνται ὑπὸ τὸν τίτλον «De opera omnia in unum collecta» (Βενετία 1533). Ο. Ρ.

— **Μπενεντέττι** (Benedetti), ***Βικέντιος***, *κόμις ντὲ* —. Γάλλος διπλωμάτης ἐκ Κορσικῆς (1817—1900), καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας Ἑλλήνων μεταναστῶν, ἐγκαθιδρυθέντων ἐκεῖ κατὰ τὸ τελευταῖον τέταρτον τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Τῷ 1855 ὁ Ναπολέων Γ' τὸν διώρισε διευθυντὴν τῶν πολιτικῶν ὑποθέσεων ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τῷ 1861 ἀπεστάλη πρεσβευτὴς τῆς Γαλλίας εἰς Τουρῖνον, ὅπου παρέμεινε μέχρι τῆς συνθήκης τοῦ 1864. Ἐτοποθετήθη κατόπιν πρεσβευτὴς εἰς Βερολῖνον, παραμείνας αὐτόθι μέχρι τῆς κηρύξεως τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870. Τῷ 1866 κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Γερμανίας ἐναντίον τῆς Αὐστρίας, ἐτήρησεν ἐνήμερον τὴν κυβέρνησίν του περὶ τῶν κατακτητικῶν ὀρέξεων τῆς Πρωσσίας, τῶν ὁποίων ὅμως ἡ Γαλλία δὲν κατώρθωσε ν' ἀποτρέψῃ τὴν πραγματοποίησιν.

*Βικέντιος Μπενεντέττι.*

Τῷ 1867 διεξήγαγε τὰς ἀκάρπους διαπραγματεύσεις, δι' ὧν ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ἐπεδίωξε νὰ ἐπιτύχῃ, εἰς ἀντιστάθμισμα τῶν ὑπὸ τῆς Γερμανίας γενομένων προσαρτήσεων, τὴν ἕνωσιν τοῦ Λουξεμβούργου μετὰ τῆς Γαλλίας. Ὅταν τῷ 1870 ἐγεννήθη τὸ ζήτημα τῆς διαδοχῆς ἐν Ἱσπανίᾳ, ὁ Μπενεντέττι ἐνετάλη νὰ συναντήσῃ ἐξ ὀνόματος τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως τὸν βασιλέα τῆς Πρωσίας καὶ ν' ἀξιώσῃ νὰ λάβῃ παρ' αὐτοῦ ἔγγραφον παραίτησιν ἀπὸ τῆς ὑποψηφιότητος τοῦ πρίγκιπος Χοεντζόλλερν διὰ τὸν ἱσπανικὸν θρόνον. Μεταβὰς πρὸς τοῦτο εἰς Ἔμς, ἐζήτησε νὰ παρουσιασθῇ ἐνώπιον τοῦ Γουλιέλμου Α', ὅστις ὅμως εἴτε δὲν τὸν ἐδέχθη, ὡς ἐλέχθη τότε, εἴτε ἀντέταξεν ἁπλῶς ρητὴν ἄρνησιν εἰς τὸ γαλλικὸν αἴτημα. Τὸ γεγονὸς εἶναι ὅτι τὸ περιστατικὸν τοῦτο ὑπῆρξε μία, ἡ τελειωτικὴ ἴσως, ἐκ τῶν ἀφορμῶν τοῦ ἐκραγέντος μεταξὺ τῶν δύο χωρῶν πολέμου. Μετά τινας ἡμέρας ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τῶν «Τάϊμς» τοῦ Λονδίνου τὸ κείμενον ἑνὸς σχεδίου συνθήκης μεταξὺ Γαλλίας καὶ Γερμανίας, διὰ τοῦ ὁποίου, ἐν τοῖς ἄλλοις, ἡ δευτέρα συγκατετίθετο νὰ προσαρτηθῇ εἰς τὴν πρώτην σημαντικὸν τμῆμα τοῦ Βελγίου. Ὁ Βίσμαρκ ἔσπευσε τότε νὰ δηλώσῃ ὅτι τὸ κείμενον εἶναι ὄντως αὐθεντικόν, ἀλλ' ὅτι ἐπρόκειτο ἁπλῶς περὶ γαλλικῆς προτάσεως, τὴν ὁποίαν ἡ Γερμανία δὲν ἀπεδέχθη, πρὸς ἐπικύρωσιν δὲ τῆς βεβαιώσεως ταύτης ἀπέστειλεν εἰς τοὺς «Τάϊμς» τὸ χειρόγραφον τοῦ σχεδίου, γεγραμμένον διὰ χειρὸς τοῦ Μπενεντέττι. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ τότε ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Γαλλίας δοὺξ ντὲ Γκραμὸν ἐπέρριπτεν εἰς τὸν τέως πρεσβευτὴν ὅλας τὰς εὐθύνας διὰ τὴν ἀτυχῆ διεξαγωγὴν τῶν μετὰ τῆς Πρωσσίας διαπραγματεύσεων, τῆς ὁποίας συνέπεια ἐθεωρεῖτο ὑπὸ τῆς κοινῆς γνώμης ὁ τόσον στοιχίσας εἰς τὴν Γαλλίαν πόλεμος. Ὁ Μπενεντέττι, ἀποχωρήσας κατόπιν τούτων τῆς ὑπηρεσίας, ἐδημοσίευσε (1871) ἓν βιβλίον ἀπολογίας, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ma mission en Prusse». Ἐν αὐτῷ ἰσχυρίζετο ἀφ' ἑνός, ὅτι εἶχεν ἐπιστήσει δεόντως τὴν προσοχὴν τῆς κυβερνήσεώς του ἐπὶ τῶν πολεμοχαρῶν διαθέσεων τῆς Πρωσσίας, ὅσον δ' ἀφορᾷ τὸ σχέδιον τῆς συνθήκης ἐβεβαίου ὅτι ἐγράφη μὲν ὄντως παρ' αὐτοῦ, ἀλλ' ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Γερμανοῦ καγγελαρίου καὶ καθ' ὑπαγόρευσιν ἐκείνου. Ἐπὶ τῶν ἰδίων θεμάτων ἐξέδωκε βραδύτερον καὶ νεώτερον βιβλίον του («Essais diplomatiques», Παρίσιοι 1896). Ἔγραψεν ἐπίσης ὁ Μπενεντέττι ἔργον ἀναφερόμενον εἰς τὰ ζητήματα τῆς Ἀνατολῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Nouveaux essais diplomatiques» (Παρίσιοι 1897). Γ. Ζ.

— **Μπενεντέττι** (Benedetti), ***Δομίνικος***. Ἰταλὸς ἰατρός, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν Βενετίᾳ (1745). Ἐκτὸς τῶν ἰατρικῶν του συγγραφῶν ἐπεδόθη καὶ εἰς τὴν ποίησιν καὶ τὴν συγγραφὴν θεατρικῶν ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ Θεμιστοκλῆς ἐν Περσίᾳ», διδαχθὲν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1732, «La Mode» παρασταθὲν τῷ 1754. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε καὶ ἐγχειρίδιον εἰς λατινικοὺς στίχους ὑπὸ τὸν τίτλον: «De mortibus repentinis» καὶ ἕτερον εἰς ἰταλικοὺς στίχους ἐπιγραφόμενον «Della natura delle febre». Ο. Ρ.

—**Μπενεντέττι** (Benedetti), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Ἰταλὸς μαθηματικὸς (1530—1590). Θεωρεῖται ὡς ὁ θεμελιωτὴς τῆς ἀναλυτικῆς γεωμετρίας, πολλαὶ δὲ καὶ σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ ἐπὶ ποικίλων τῆς μαθηματικῆς ἐπιστήμης θεμάτων. Ἐδημοσίευσεν ἐν τοῖς ἄλλοις: «Θεωρίαν περὶ πτώσεως τῶν βαρέων σωμάτων» καὶ «Μαθηματικὰς καὶ φυσικὰς μελέτας». Ἐπίσης βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀντιλογίαι», ἐν τῷ ὁποίῳ καταδεικνύει τὰ περὶ τὴν φυσικὴν σφάλματα τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ τῶν περιπατητικῶν φιλοσόφων. —Ω.

**Μπενεντέττο** (Benedetto), ***Ζαχαρίας***. Γενουήνσιος αὐθέντης τῆς Φωκαίας ἐν Μ. Ἀσίᾳ (βλ. λ. *Ζαχαρία* Βενέδικτος).

— **Μπενεντέττο ντὰ Ροβετσάνο** (Benedetto da Rovezzano). Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων καὶ γλύπτης, γεννηθεὶς ἐν Ροβετσάνο περὶ τὸ 1480 καὶ ἀποθανὼν περὶ τὸ 1550. Διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς τὴν διακοσμητικὴν γλυπτικήν. Τὸ σημαντικώτερον τῶν ἔργων του εἶναι μία σειρὰ πέντε ἀναγλύφων ἀναφερομένων εἰς τὸν βίον τοῦ ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Γουαλβέρτου, ἀποκειμένων νῦν εἰς τὴν πινακοθήκην Οὐφφίτσι τῆς αὐτῆς πόλεως. Ἕτερα ἀξιολογώτατα ἔργα τοῦ καλλιτέχνου τούτου εἶναι τὸ ἄγαλμα τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου (ἐν τῇ Μητροπόλει τῆς Φλωρεντίας) καὶ ἡ διακόσμησις τοῦ ναοῦ τῶν Ἁγίων Ἀποστόλων τῆς Φλωρεντίας. Ι. Μ. Π.

**Μπένεντικτ** (Benedict), ***Ἰούλιος***. Γερμανὸς συνθέτης καὶ κλειδοκυμβαλιστὴς (1804—1885). Μαθητὴς τοῦ Χοῦμμελ καὶ τοῦ Βέμπερ, διετέλεσε διευθυντὴς ὀρχήστρας τοῦ θεάτρου τῆς Καρινθίας Πύλης τῆς Βιέννης, εἶτα δὲ ἐν Νεαπόλει καὶ Λονδίνῳ, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Δραματικὸς κυρίως συνθέτης ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἐν Νεαπόλει διὰ τοῦ μελοδράματος «Giacinta ed Ernesto» (1825). Ἠκολούθησαν: «J. Portoghesi a Goa» καὶ «Un anno ed un giorno». Ἀπὸ τῆς ἐν Ἀγγλίᾳ ἐγκαταστάσεώς του ὁ Μπένεντικτ συμμορφοῦται πρὸς τὸ ἀγγλικὸν πνεῦμα καὶ παράγει σειρὰν ἔργων, ὡς «The Gypsy's Warning», «The Bride of Venice», «The Crasoders», «The Bride of song», «The Lilly of Killarney», μελόδραμα παιχθὲν καὶ ἐν Γερμανίᾳ. Ὁ Μπένεντικτ συνέθεσεν ἐπίσης τὰ ρετσιτατίβα διὰ τὸν «Ὀμπερὸν» τοῦ Βέμπερ καὶ ἔγραψε βιογραφίας τοῦ μουσουργοῦ τούτου καὶ τοῦ Μένδελσων. Γ. Σ.

— **Μπένεντικτ** (Benedikt), ***Μαυρίκιος***. Διαπρεπὴς Αὐστριακὸς νευροψυχολόγος καὶ ἱδρυτὴς μετὰ τοῦ Λομπρόζο τῆς ἐγκληματικῆς ἀνθρωπολογίας, γεννηθεὶς ἐν Eisenstadt τῆς Οὐγγαρίας τῷ 1835. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τῆς Βιέννης μαθηματικὰ καὶ φυσικὰς ἐπιστήμας, καὶ τῷ 1854 ἤρξατο αὐτόθι ἰατρικῶν σπουδῶν. Ὡς σπουδαστὴς ἐδημοτίευσε δύο δραματικὰ ἔργα καὶ ἄλλα δύο ἀναφερόμενα εἰς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας. Τῷ 1861 ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς ἠλεκτροθεραπείας, τῷ 1868 ἔκτακτος καὶ τῷ 1869 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς νευροπαθολογίας καὶ ἠλεκτροθεραπίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Βιέννης. Τῷ 1868 ἐξέδωκε τὸ σύγγραμμα αὐτοῦ «Ἠλεκτροθεραπεία» καὶ τῷ 1874 τὴν «Νευροπαθολογίαν» αὐτοῦ. Εἰσήγαγεν ἠλεκτροθεραπευτικὰς μεθόδους καὶ ἐξέδωκε σειρὰν πραγματειῶν φυσιολογικῆς καὶ παθολογικῆς ἀνατομικῆς, ἀφορώσης τὸ νευρικὸν σύστημα, ὡς καὶ μελέτας συγκριτικῆς ἀνατομικῆς τοῦ κρανίου καὶ ἐγκεφάλου τῶν ζῴων καὶ τοῦ ἐγκεφάλου τῶν ἐγκληματιῶν. Ἐκτὸς τούτων ἐδημοσίευσε καὶ δύο ψυχολογικὰς ἐργασίας: «Psychophysik der Moral» (1873) καὶ «Anthropologie des Verbrechens» (1875) μετὰ δύο συναφῶν ἀνατομικῶν μελετῶν ἐπὶ τοῦ ἐγκεφάλου τῶν κακούργων (1878), κρανιομετρικῆς καὶ κρανιοσκοπήσεως (1888), ἐπισφραγίσας ταύτας διὰ τοῦ συγγράμματός του «Ψυχολογία τοῦ ἀνθρώπου» (1895). Ἐπίσης ἐδημοσίευσε πληθὺν εἰδικῶν ἐργασιῶν νευροπαθολογίας (1869 — 1882), σύγγραμμα «Ὑπνωτισμοῦ καὶ ὑποβολῆς» (1874), μελέτην περὶ μηχανισμοῦ, φυσιολογίας καὶ παθολογίας τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος, ὀφθαλμολογικὰ καὶ ὠτιατρικὰ θέματα, ὡς «Σπουδὴ περὶ παραλύσεως τῶν μυῶν τοῦ ὀφθαλμοῦ», «Ὁ δαλτωνισμὸς ἐπὶ ἀτροφίας τοῦ ὀπτικοῦ νεύρου», «Ἠλεκτρικὴ ἐξέτασις καὶ θεραπεία τοῦ ἀκουστικοῦ νεύρου»

Digitized by Google

ρου» κλ. Ἐκ τῶν ἔργων του πλεῖστα μετεφράσθησαν εἰς διαφόρους εὐρωπαϊκὰς γλώσσας.

*Ὡς σημεῖον ἢ συνδρομὴ Μπένεντικτ* θεωρεῖται ἡ παράλυσις τοῦ κοινοῦ κινητικοῦ νεύρου τοῦ ὀφθαλμοῦ μετὰ μερικοῦ ἢ ὁλικοῦ τρόμου τῶν μελῶν τοῦ ἀντιστοίχου ἡμιμορίου τοῦ σώματος. ο. ρ.

**Μπενεντίκτις** (Benedictis), *Γιάκομπους ντὲ*—. Ἰταλὸς ποιητὴς (βλ. λ. *Γιακοπόνε ντὰ Τόντι*).

**Μπενέντικτωφ**, ***Βλαδίμιρος-Ἰβάνοβιτς***. Ῥῶσος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Καζὰν τῷ 1810 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1889. Ἠκολούθησε τὴν σχολὴν τοῦ Ἀλεξάνδρου Πούσκιν καὶ διεκρίθη διὰ τὴν μουσικότητα τῶν στίχων καὶ τὴν εὐγένειαν τῶν ἰδεῶν του. Ἰδίως ἐντύπωσιν ἐπροκάλεσαν ἐν Ῥωσίᾳ αἱ λυρικαί του ποιήσεις: «Αἱ τρεῖς μορφαί», «Ἡ θάλασσα» καὶ «Ὁ τάφος». Πλεῖστα ἄλλα λυρικά του ποιήματα περιλαμβάνονται εἰς ὅλας τὰς ῥωσικὰς ἀνθολογίας. θ. β.

**Μπένεντιξ** (Benedix), ***Ροδρῖγος***. Γερμανὸς λογοτέχνης καὶ θεατρικὸς συγγραφεὺς (1811—1873). Ἤρχισεν ὡς ἠθοποιός, διετέλεσε σκηνοθέτης καὶ διευθυντὴς διαφόρων θεάτρων καὶ συνέγραψε κωμῳδίας, πολλαὶ ἐκ τῶν ὁποίων ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν: «Δόκτωρ Βέσπε», «Τὸ γαμήλιον ταξίδιον», «Οἱ ἐχθροὶ τῶν ἀνδρῶν», «Μία κωμῳδία», «Ἡ φυλακή», «Οἱ τρυφεροὶ συγγενεῖς», «Ἡ ἐρωτικὴ ἐπιστολή», «Τὸ ψέμμα» κλπ. Ἔγραψε πρὸς τούτοις: «Εἰκόνες ἐκ τῆς ζωῆς τῶν ἠθοποιῶν» (2α ἔκδ. 1851), «Ἡ ἀπαγγελία» (8η ἔκδ. 1897), «Ἡ γερμανικὴ στιχουργική» (3η ἔκδ. 1894), «Ἡ τέχνη τοῦ λόγου» (5η ἔκδ. 1896) κλπ. Συλλογὴ τῶν δραματικῶν του ἔργων ἐξεδόθη (1846—1874) εἰς 27 τόμους. —ω.

**Μπενεντὶτ** (Bénédite), ***Γεώργιος***. Ἐγεννήθη ἐν Νὶμ τῆς Γαλλίας τῷ 1857 καὶ ἀπέθανεν ἐν Λοῦξορ τῷ 1926. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασεν ἀρχιτεκτονικήν, εἶτα δ' ἐπεδόθη εἰς τὴν αἰγυπτολογίαν. Ἤκουσε μαθήματα εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Λούβρ (1882—1884) καὶ τῷ 1887 μετέβη εἰς Αἴγυπτον ὡς μέλος τῆς γαλλικῆς ἀρχαιολογικῆς ἀποστολῆς, ὅπου εἰργάσθη πυρετωδῶς μέχρι τοῦ 1890. Τότε ἐδημοσίευσε τὰς μελέτας του περὶ τῶν τάφων τῆς βασιλίσσης Θίτι καὶ τοῦ Νεφερχοτποῦ, τῷ δὲ 1892—1895 πλήρη μελέτην τοῦ ναοῦ τῶν Φιλῶν, εἰς τὴν ὁποίαν περιέλαβε πάσας τὰς ἐπὶ τοῦ ναοῦ καὶ εἰς τὴν περιοχὴν του ἐπιγραφάς. Διωρίσθη βοηθὸς καὶ κατόπιν ἐπιμελητὴς τοῦ αἰγυπτιακοῦ μνημείου τοῦ Λούβρ. Διεδέχθη δὲ τὸν Μασπερὼ εἰς τὴν ἕδραν τῆς αἰγυπτολογίας εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας (1899—1914). Κατὰ τὴν ἐν Αἰγύπτῳ διαμονήν του περιῆλθε τὴν χερσόνησον τοῦ Σινᾶ καὶ τὴν Πετραίαν Ἀραβίαν, συλλέξας πλείστας αἰγυπτιακὰς ἐπιγραφάς. Ἀφῆκε μέγα σύγγραμμα περὶ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῶν φαραωνιτῶν. γ. λ. α.

**Μπένες** (Benes), ***Ἐδουάρδος***. Τσεχοσλοβάκος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1884 ἐν τῷ χωρίῳ Κοζλάνο τῆς Βοημίας. Υἱὸς πτωχῶν χωρικῶν, κατώρθωσε νὰ φοιτήσῃ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πράγας, οὐχὶ ἄνευ στερήσεων, καὶ νὰ σπουδάσῃ φιλοσοφίαν, ἀκολουθῶν τὰ μαθήματα τοῦ μετέπειτα προέδρου τῆς τσεχοσλοβακικῆς δημοκρατίας καθηγητοῦ Μασαρύκ. Ἐσυνέχισε κατόπιν τὰς σπουδάς του εἰς τὴν Σορβόννην καὶ εἰς τὴν σχολὴν τῶν πολιτικῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων, καθὼς καὶ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ντιζόν, ὅπου ἀνεκηρύχθη διδάκτωρ τῆς νομικῆς τῷ 1908.

*Ἐδουάρδος Μπένες.*

Τῷ 1909 ἐπιστρέψας εἰς Πράγαν διωρίσθη καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας καὶ τῶν νεωτέρων γλωσσῶν εἰς τὴν ἱστορικὴν ἀκαδημίαν. Τῷ 1912 ἐγένετο ὑφηγητὴς καὶ τῷ 1922 καθηγητὴς τῆς κοινωνιολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πράγας. Ὁ Μπένες, ὅστις ὡς φοιτητὴς εἰς τὸ ἐξωτερικὸν ἐχρημάτισεν ἀνταποκριτὴς τῆς σοσιαλιστικῆς ἐφημερίδος «Πράβο Λίντου», μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς τὴν Πράγαν ἐνεγράφη εἰς τὸ προοδευτικὸν κόμμα τοῦ Μασαρύκ, τὸν ὁποῖον, κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ πολέμου, κατώρθωσε νὰ φυγαδεύσῃ εἰς τὴν Ἑλβετίαν. Συνῆψε κατόπιν στενὰς σχέσεις μὲ τοὺς διαφόρους μυστικοὺς συλλόγους τῆς Βοημίας καὶ ἵδρυσε τὴν ἐπαναστατικὴν ὀργάνωσιν «Μαφφία», σκοπὸς τῆς ὁποίας ἦτο ἡ βοήθεια τῆς Ῥωσίας, διὰ τῆς διευκολύνσεως τῆς λιποταξίας τῶν Τσέχων ἐκ τοῦ αὐστρουγγρικοῦ εἰς τὸν ῥωσσικὸν στρατόν. Ἐκτεθεὶς ὅμως μεγάλως συνεπείᾳ τῶν ἐνεργειῶν του τούτων καὶ κινδυνεύων νὰ συλληφθῇ, κατέφυγεν εἰς τὴν Ἑλβετίαν τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1915, ὅπου συνηντήθη μὲ τὸν Μασαρύκ, μετὰ τοῦ ὁποίου κατόπιν μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐξελέγη γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ἐκεῖ συσταθέντος καὶ ἑδρεύοντος ἐθνικοῦ τσεχοσλαβικοῦ συμβουλίου καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτέρων ὀργανωτῶν μετὰ τοῦ Σλοβάκου στρατηγοῦ Στεφανὶκ τῶν τσεχικῶν ἐθελοντικῶν σωμάτων, τὰ ὁποῖα προσέφερον μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τοὺς συμμάχους.

Ἐν Παρισίοις ὁ Μπένες ἔκαμε πλείστας διαλέξεις καὶ ἐξέδωκε πολλὰ βιβλία καὶ φυλλάδια ὑπὲρ τῆς τσεχοσλοβακικῆς ἀνεξαρτησίας, ὅτε δὲ τὸ ἐθνικὸν τσεχοσλοβακικὸν συμβούλιον τῶν Παρισίων μετωνομάσθη, τῇ ἐγκρίσει τῶν συμμάχων, εἰς προσωρινὴν τσεχοσλοβακικὴν κυβέρνησιν, ἀνετέθη εἰς αὐτὸν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, τῷ 1918. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὁ Μπένες, ἐπιστρέψας μετὰ τὸ πέρας τοῦ πολέμου εἰς τὴν Πράγαν, ἐξηκολούθησε νὰ παραμένῃ ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν εἰς πάσας σχεδὸν τὰς κυβερνήσεις αἵτινες ἐπηκολούθησαν καὶ νὰ διευθύνῃ τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικὴν τῆς χώρας του, ἀναδειχθεὶς ὡς εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων πολιτικῶν καὶ διπλωματῶν τῆς μεταπολεμικῆς Εὐρώπης. Κυρίαν γραμμὴν τῆς πολιτικῆς αὐτοῦ ἀπετέλεσεν ἰδίως ὁ συνδυασμὸς τῶν συμφερόντων τῆς Τσεχοσλοβακίας πρὸς τὰ γαλλικὰ συμφέροντα. Τῷ 1919—1920 διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῆς τσεχοσλοβακικῆς ἀντιπροσωπείας εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς εἰρήνης τῶν Παρισίων καὶ ὑπέγραψεν ὡς τοιοῦτος τὰς καταρτισθείσας συνθήκας. Τῷ 1920 ἀντεπροσώπευσε τὴν χώραν του εἰς τὴν Κοινωνίαν τῶν ἐθνῶν, ἐκλεγεὶς τῷ 1923 μέλος τοῦ Συμβουλίου τῆς Κοινωνίας καὶ ἐπανεκλεγεὶς τῷ 1925. Τῷ 1920 ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτέρων ἱδρυτῶν τῆς Μικρᾶς Ἀντάντ καὶ ἐκ τῶν πρωτουργῶν τοῦ πρωτοκόλλου τῆς Γενεύης τοῦ 1924. Τῷ 1925 ἔλαβε μέρος εἰς τὰς συμφωνίας τοῦ Λοκάρνο, τὰς ὁποίας ὑπέγραψε κατόπιν εἰς Λονδῖνον, καὶ τῷ 1929—1930 ὑπεστήριξε τὰ τσεχοσλοβακικὰ συμφέροντα εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς Χάγης περὶ τῶν πολεμικῶν ἐπανορθώσεων. Χάρις δὲ εἰς τὰς ἰδικάς του κυρίως ἐνεργείας ἀπέτυχον αἱ δύο ἀπόπειραι, τοῦ Ἀπριλίου καὶ τοῦ Ὀκτωβρίου 1921, περὶ παλινορθώσεως τῶν Ἀψβούργων. Ὁ Μπένες ἔγραψε πλεῖστα ἔργα ἐπὶ πολιτικῶν καὶ κοινωνικῶν θεμάτων, εἰς τσεχικήν, γαλλικήν, ἀγγλικὴν καὶ ἰταλικὴν γλῶσσαν, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Τὸ αὐστριακὸν πρόβλημα καὶ τὸ τσεχικὸν ζήτημα» (1908), «Ἡ ἐλευθέρα σκέψις, ὁ σοσιαλισμὸς καὶ ἡ σοσιαλδημοκρατία» (1908), «Τὸ ἐθνικιστικὸν πρόβλημα» (1909), «Συνοπτικὴ ἱστορία τῆς ἐξελίξεως τοῦ νεωτέρου σοσιαλισμοῦ» (1910—1911, εἰς 4 τόμους), «Ἡ ἱστορία τῆς ἐργατικῆς κινήσεως ἐν Αὐστρίᾳ» (1913), «Μερικαὶ ἁπλαῖ ἀλήθειαι περὶ μετατροπῆς τῆς Αὐστρουγγαρίας εἰς ὁμοσπονδίαν» (1914—1918), «Ἡ Βοημία κατὰ τῆς Αὐστρουγγαρίας» (1917), «Ὁ πόλεμος καὶ ἡ παιδεία» (1922), «Τὰ προβλήματα τῆς νέας Εὐρώπης» (1924), «Ὁ διπλωματικὸς ἀγὼν ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Τσεχοσλοβακίας» (1924), «Τὰ προβλήματα τῆς σλαβικῆς πολιτικῆς» (1925), «Αἱ δυσχέρειαι τῆς δημοκρατίας» (1925), «Τὸ πρόβλημα τῶν μικρῶν ἐθνικοτήτων μετὰ τὸν εὐρωπαϊκὸν πόλεμον» (1925), «Προβλήματα σλαβικῆς πολιτικῆς» (1926) κλπ. Ἔγραψεν ἐπίσης τρίτομον ἔργον: «Ὁ παγκόσμιος πόλεμος καὶ ἡ ἐπανάστασίς μας». μ. δ. β.

**μπενετάδα** (ἡ) καὶ συνηθ. ἐν τῷ πληθ. *μπενετάδες* τὸ ἀποχαιρετιστήριον γεῦμα, κέρασμα κτλ.

**Μπενετᾶτα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Διγαλέτου τῆς ἐπαρχίας Σάμης τοῦ νομοῦ Κεφαλληνίας. Κάτ. (1928) 61. χ. δ.

**Μπενζαμὲν** ***Κωνστὰν*** (Benjamin Constant). Γάλλος ζωγράφος (βλ. *Κωνστὰν* Βενιαμίν).

— **Μπενζαμὲν** (Benjamin), ***Ρενᾶτος***. Σύγχρονος Γάλλος λογοτέχνης γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1885. Τῷ 1915 ἔλαβε τὸ βραβεῖον Γκονκοὺρ διὰ τὸ ἔργον του «Gaspard». Ἠσχολήθη μὲ τὸ διήγημα, τὴν κριτικὴν καὶ τὸ θέατρον καὶ ἐξέδωκε μέχρι τοῦδε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Paris, sa faune et ses moeurs; L'hôtel des Ventes» (1914), «Les soutiens de la société. Les justices de paix ou les vingt façons de juger dans Paris» (1913), «Le Palais et ses gens de justice» (1919), «La force de la Sorbonne» (1921), «Sous le ciel de France» (1916), «Le major Pipe et son père» (1917), «Amadou, bolchéviste» (1921), «Valentine ou la folie démocratique» (1924), «La vie prodigieuse de M. Hororé de Balzac» (1925), «Sous l'oeil en fleur de Madame de Noailles» (1929). Ἐκ τῶν θεατρικῶν του ἔργων σπουδαιότερα εἶναι: «Le Pacha» (1911), «Les plaisirs du hasard» (1922), «Il faut que chacun soit à sa place» (1924), «Esperance ou la fatalité domestique» (1930). —ω.

**Μπενζὲ** (Binger), ***Λουδοβῖκος-Γουσταῦος***. Γάλλος ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1856. Ἐπωφεληθεὶς τῆς ἐν Ἀφρικῇ μακροχρονίου στρατιωτικῆς του ὑπηρεσίας, ἐμελέτησε τὰς ἀφρικανικὰς γλώσσας καὶ ἐξετέλεσε πλείστας ἀναγνωρίσεις εἰς τὸ γαλλικὸν Σουδὰν καὶ τὴν Σενεγάλην. Κυρία αὐτοῦ ἐξερεύνησις εἶναι ἡ τῶν χωρῶν τοῦ Νίγηρος, τοῦ κόλπου τῆς Γουϊνέας καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Ἀκτῆς τοῦ Ἐλεφαντόδοντος, ἧς διωρίσθη καὶ κυβερνήτης (1893). Ἐκ τῶν ἔργων του σπουδαιότερα εἶναι: «Χάρτης τῶν χωρῶν τοῦ Δυτικοῦ Σουδὰν» (1890), «Ἀπὸ τοῦ Νίγηρος εἰς τὸν κόλπον τῆς Γουϊνέας διὰ τοῦ Κόνγκ καὶ Μοσσί» (1891), «Ὅρκος τοῦ ἐξερευνητοῦ» (1904), κ.ἄ. —π.

**Μπενζέλιους** (Benzelius). Οἰκογένεια διασήμων κληρικῶν τῆς Σουηδίας:

1) ***Ἐρρῖκος***. Γεννηθεὶς τῷ 1642 ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Οὐψάλης, ἐπίσκοπος τοῦ Στρεγκναίς, ἀρχιεπίσκοπος τῆς Οὐψάλης καὶ διδάσκαλος Καρόλου τοῦ ΙΒ'. Ἐπεστάτησεν εἰς τὴν σουηδικὴν μετάφρασιν τῶν Γραφῶν, γενομένην τῷ 1703 τῇ ἐντολῇ Καρόλου τοῦ ΙΒ'.

2) ***Ἐρρῖκος***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1675—1743). Διεκρίθη ὡς βαθὺς γνώστης τῶν κλασικῶν γλωσσῶν καὶ τῆς ἀρχαίας ἱστορίας. Ἔγραψε: «Monumenta sueco-gothica» καὶ «Ulphilas illustratus». Ὑπῆρξεν ἐπίσκοπος τῆς Οὐψάλης καὶ εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς ἀκαδημίας της.

3) ***Ἐρρῖκος***, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1689—1759). Ὑπῆρξεν ἐπίσκοπος τῆς Οὐψάλης καὶ διεκρίθη ὡς ἑλληνιστὴς καὶ ἀνατολιστής. α. δ.

**Μπενζὲρτ** *[Γεωγρ.]*. Ἡ ὑπὸ τῶν Ἀράβων ὀνομασία τῆς *Μπιζέρτας* (βλ. λ.). σ. ε. λ.

**Μπενζέσκου** (Bengescu), ***Γεώργιος***. Ρουμᾶνος διπλωμάτης καὶ βιβλιογράφος (1848—1916). Δικαστὴς κατ' ἀρχάς, ἐτράπη εἶτα εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον, καταλαβὼν διαφόρους θέσεις. Τῷ 1891 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Βρυξέλλαις καὶ ἐν Χάγῃ καὶ τῷ 1896 ἐν Ἀθήναις. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος Ρουμᾶνος πρεσβευτὴς ἐν Ἀθήναις μετὰ τὴν ἀνανέωσιν τῶν ἑλληνορρουμανικῶν σχέσεων, αὐτὸς προπαρασκευάσας καὶ διεξαγαγὼν τὰς σχετικὰς διαπραγματεύσεις. Ἦτο μέλος τῆς Ρουμανικῆς Ἀκαδημίας καὶ ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς ἑταιρείας τῆς διπλωματικῆς ἱστορίας τῶν Παρισίων καὶ τῆς φιλολογικῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερον εἶναι: «Βιβλιογραφία τῶν ἔργων τοῦ Βολταίρου» (1882), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Γαλλορουμανικὴ βιβλιογραφία τοῦ ΙΘ' αἰῶνος», «Κάρμεν Σύλβα», «Δοκίμιον βιβλιογραφίας ἐπὶ τοῦ Ἀνατολικοῦ ζητήματος». γ. ι. β.

**μπενζίνα** (ἡ) βλ. λ. *βενζίνη*.

**Μπενησὰφ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν καὶ πόλις τῆς Ἀλγερίας (πλάτ. 35° 19' Β., μῆκ. 1° 24' Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 2437: Cape Tres Forcas to Ivi). Κάτ. 6.500, Γάλλοι, Ἱσπανοὶ καὶ Ἄραβες. Ὑπὸ τῶν τελευταίων ὀνομάζεται *Μπενζούφ*. σ. ε. λ.

**Μπένθαμ** (Bentham), ***Γεώργιος***. Ἄγγλος βοτανικὸς καὶ φιλόσοφος (1800—1884). Τῷ 1858 ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην αὐτοῦ συγγραφὴν «Ἐγχειρίδιον περὶ τῆς βρεττανικῆς χλωρίδος», ὅπερ ἐξεδόθη ἐπανειλημμένως. Ἠκολούθησαν τά: «Flora Hougkongensis» (1261) καὶ «Flora Australiensis» εἰς ἑπτὰ τόμους. Ἀλλὰ τὸ μεγαλύτερον ἔργον τοῦ Μπένθαμ, εἰς ὃ ὀφείλει ἰδίᾳ τὴν φήμην αὐτοῦ, εἶναι τὸ «Genera Plantarum» (1883), ὅπερ συνέγραψεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ σὲρ *Ἰωσὴφ Χοῦκερ*. Ὁ Μπένθαμ διεκρίθη καὶ ὡς φιλόσοφος, γράψας: «Νέον σύστημα λογικῆς μετὰ κριτικῆς μελέτης τῶν στοιχείων τῆς λογικῆς τοῦ Χουέτλεϋ» καὶ πολλὰ φιλοσοφικὰ ἄρθρα, δημοσιευθέντα εἰς διάφορα περιοδικά. α. δ.

— **Μπένθαμ** (Bentham), ***Ἰάκωβος***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος (1707—1794). Ἔγραψεν: «Ἱστορία καὶ ἀρχαιότητες τοῦ καθεδρικοῦ ναοῦ τοῦ Ἔλυ, ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τοῦ μοναστηρίου τῷ 685 μέχρι τοῦ ἔτους 1771», ἐν τῷ ὁποίῳ ἀναφέρει ἐνδιαφερούσας πληροφορίας ἐπὶ τῆς σαξωνικῆς, νορμανδικῆς καὶ γοτθικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. μ. δ. β.

— **Μπένθαμ** (Bentham), ***Ἱερεμίας***. Περιώνυμος Ἄγγλος νομομαθής, φιλόσοφος καὶ οἰκονομολόγος (1748—1832). Εἰς ἡλικίαν 13 ἐτῶν ἤρχισε τὰς σπουδάς του ἐν τῷ κολλεγίῳ τοῦ Οὐεστμίνστερ, τὰς ὁποίας κατόπιν ἐξηκολούθησεν ἐν Ὀξφόρδῃ. Τῷ 1772, μετὰ τὸ πέρας τῶν νομικῶν του σπουδῶν, ἤρχισε νὰ ἀσκῇ τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Ἀλλὰ ταχέως ἀπογοητευθεὶς ἐκ τῶν ἀντιφάσεων τῶν κρατούντων νόμων, ἐγκατέλιπε τὴν δικηγορικὴν σταδιοδρομίαν, ἵν' ἀφιερωθῇ εἰς τὴν σύνταξιν συστήματος νομοθεσίας δικαίας καὶ λογικῆς.

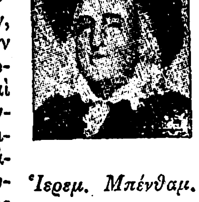

*Ἱερεμ. Μπένθαμ.*

Πρὸς πραγμάτωσιν τοῦ σχεδίου του ἐπεδόθη εἰς σοβαρὰς φιλοσοφικὰς μελέτας, ἐγκύψας πρὸ παντὸς εἰς τοὺς ἐξέχοντας φιλοσόφους τῆς ἐποχῆς του: Λόκκε, Χιοὺμ, Μοντεσκιέ, Βεκκαρίαν, Μπάρριγκτων καὶ Ἑλβέτιον, ὧν ὁ τελευταῖος ἤσκησεν οὐσιώδη ἐπίδρασιν ἐπ' αὐτοῦ.

Τὸ πρῶτον ἔργον του «A fragment of Govern-



Digitized by Google

ment», ὅπερ ἐξέδωκε τῷ 1776 ἀνωνύμως, οὐδὲν ἄλλο εἶναι εἰμὴ σχόλιον εἰς παράγραφον τῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Commentaries» πραγματείας τοῦ Μπλάκστον. Ἡ δημοσίευσις τοῦ ἔργου τούτου ἐξησφάλισεν εἰς τὸν συγγραφέα του τὴν φιλίαν τοῦ λόρδου Σέλμπουρν, ὅστις συνέστησεν αὐτὸν θερμῶς εἰς ἰσχύοντα πρόσωπα τοῦ κόμματος τῶν ούίγων. Κατόπιν ἐξεδόθη ἡ «Εἰσαγωγὴ εἰς τὰς ἀρχὰς τῆς ἠθικῆς καὶ τῆς νομοθεσίας» (Λονδῖνον, 1780), ἐν ᾗ ὁ Μπένθαμ κηρύσσει ὡς θεμελιώδη ἠθικὴν καὶ πολιτικὴν ἀρχὴν τὴν εὐδαιμονίαν δι' ὅσον τὸ δυνατὸν μεγαλύτερον ἀριθμόν. Διὰ τὸν Μπένθαμ ἡ γενικὴ εὐημερία εἶναι τὸ μοναδικὸν θέμα καὶ ὁ ἀποκλειστικὸς σκοπὸς τῆς ἠθικῆς καὶ ἡ πραγματικὴ βάσις τοῦ δικαίου (*εὐδαιμονισμός*). Ἐν τῇ «Ἀναλύσει τῆς θρησκείας» (Analysis of Religion), ὁ Μπένθαμ ἐφαρμόζει τὴν ὠφελιμιστικὴν ἀρχὴν αὐτοῦ εἰς τὴν θρησκείαν. Αἱ σχετικαὶ πρὸς τὴν νομοθετικὴν μεταρρύθμισιν προσπάθειαί του ὑπῆρξαν βραδύτερον λίαν ἀποτελεσματικαί. Ἀλλ' ἀκόμη καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν αὐτοῦ ἐξήσκησαν σημαντικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τὴν ὀργάνωσιν τῶν δικαστηρίων, τὴν πολιτικὴν καὶ ποινικὴν δικονομίαν, τὸν τρόπον τῆς ἀνακρίσεως κτλ. Τὸ ἔργον του «Plan of the organisation of the judicial establishement» (1792) εἶχε προορισθῆ κατ' ἀρχὰς ὅπως δημοσιευθῇ ἐν Γαλλίᾳ, ὅπου αἱ ἰδέαι τοῦ Μπένθαμ, χάρις εἰς τὰς σχέσεις του μετὰ τοῦ Μπρισσὸ καὶ ἄλλων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, εἶχον ἐξασκήσει μεγάλην ἐπίδρασιν καὶ ἐξασφαλίσει εἰς αὐτὸν τὴν συμπάθειαν καὶ τὸν σεβασμὸν τῶν Γάλλων νομομαθῶν. Ἐν τῷ «Panopticon, or the inspection house» (1791 εἰς 3 τόμ.) ἐκθέτει νέον σύστημα φυλακῶν, σωφρονιστηρίων, φρενοκομείων καὶ ἄλλων ἱδρυμάτων τοιαύτης φύσεως, εἰς τὰ ὁποῖα εἷς καὶ μόνος φρουρὸς δύναται νὰ ἐποπτεύῃ ἀπό τινος ἐπάλξεως ὅλους τοὺς ἐγκαθείρκτους.

Ἐπειδὴ ὁ Μπένθαμ δὲν ἠδύνατο μόνος νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὸ ἔργον του, νὰ συντάξῃ δηλαδὴ πλήρες σύστημα νομοθεσίας, ὁ μαθητὴς καὶ φίλος αὐτοῦ *Ντυμὸν* ἀνέλαβε νὰ ἐκθέσῃ συστηματικῶς τὰς ἰδέας τοῦ διδασκάλου του. Οὕτως ἦλθον εἰς φῶς τὸ «Traité de la législation civile et pénale, précédé des principes généraux de législation (1801) καὶ τὸ «Essai sur la tactique des assemblées législatives (1815). Τὰ συγγράμματα ταῦτα συνεπλήρωσαν τὸ ἔργον τοῦ Μπένθαμ καὶ κατέστησαν τὸ ὄνομά του παγκοσμίως γνωστόν. Ἐν Ἀγγλίᾳ ὁ Μπένθαμ κατεπολεμήθη ὑπὸ τοῦ κόμματος τῶν τόρεων, ὅπερ τὸν ἐφοβεῖτο, διότι ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος, ὅστις ὑπεστήριξε τὴν μεταρρύθμισιν τοῦ κοινοβουλευτικοῦ συστήματος («Plan of parlementary reform» 1817, «Radical reform» 1819), τὴν ἐλευθερίαν τοῦ ἐμπορίου, τὸν χωρισμὸν τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ κράτους καὶ τὴν κατάργησιν τῶν κατὰ τῆς τοκογλυφίας νόμων, ὡς δεσμευόντων τὴν ἐλευθερίαν τῶν συναλλαγῶν («Defense of usury» 1787). Πρὸς διάδοσιν τῶν ἰδεῶν τούτων, ἃς εἶχον ἐνστερνισθῆ οἱ ῥιζοσπάσται Κόμπετ, Γεώργιος Γκρότε, οἱ δύο Μὶλ καὶ ἄλλοι, ἱδρύθη τῷ 1824 ἐν Λονδίνῳ τὸ περιοδικὸν «Westminster Review». Μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς εἰρήνης τοῦ 1815, ὁπότε ἐτέθη εἰς πολλὰ κράτη ἐπὶ τάπητος τὸ ζήτημα τῆς κωδικοποιήσεως τῶν νόμων, Ῥῶσοι, Ἱσπανοί, Γερμανοὶ καὶ Ἀμερικανοὶ νομομαθεῖς ἐζήτησαν τὴν συνδρομὴν τοῦ Μπένθαμ, ὅστις παρέσχεν εἰς αὐτοὺς προθύμως τὰ φῶτά του.

Ὁ Μπένθαμ καλεῖται πατριάρχης τοῦ ὠφελιμισμοῦ, ἡ δ' ἐπίδρασις τῶν ἰδεῶν του ἐπὶ τῆς πολιτικῆς καὶ τῆς φιλοσοφίας τῆς πατρίδος του ὑπῆρξε σημαντικὴ μέχρι τῶν μέσων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος.

Πλὴν τῶν μνημονευθέντων ἔργων, ὁ Μπένθαμ ἔγραψεν: «Emancipate your colonies» (1793), «Tracts on poor laws» (1797), «Scotch reform, compared with English non reform (1806), «Chrestomathia» (1816), «Sophismes anarchiques», ἔργον ἀπευθυνόμενον κατὰ τῶν ἰδεῶν τῆς μεγάλης Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως περὶ τῶν δικαιωμάτων τοῦ ἀνθρώπου, κ. τ. λ. Ἡ ἔκδοσις τῶν ἔργων του ἐγένετο ὑπὸ τοῦ σὲρ Μπάουριγκ τῷ 1843 καὶ ὑπὸ τοῦ Ντυμὸν τῷ 1829 καὶ 1840.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Atkinson*, Bentham, his life and works (Λονδῖνον, 1905). — *Dumont*, «Jeremy Bentham» — *J. Hill Burton*, «Introduction to the study of Bentham's Works ('Εδιμβοῦργον, 1843). — *Τοῦ αὐτοῦ*, «Benthaniana, select Extracts from Bentham ('Εδιμβοῦργον, 1843). — *Fletcher*, «Analysis of Bentham's Theory of Legislation». — *Reeves*, «Bentham and American Jurisprudence (Λονδῖνον, 1906). — *Sidney Smith*, «Bentham's Book of Fallacies (ἐν τῇ Edinb. Rev. τόμος XLII, σελ. 367, 1825). Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

**Μπένι (*ἐλ—*)**, ἢ ***Πάρο*** (el Beni, ἢ Paro) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ν. Ἀμερικῆς ἐν Βολιβίᾳ, ἀνήκων εἰς τὴν λεκάνην τοῦ Ἀμαζονίου. Πηγάζει ἐκ τῶν Κορδιλλιερῶν τῶν Ἄνδεων, ἔχει κατεύθυνσιν πρὸς Β. καὶ ΒΑ. καὶ συμβάλλει μετὰ ροῦν 1.500 χλμ. μετὰ τοῦ Μαμορέ, μεθ' οὗ σχηματίζει τὸν Μαντεῖρα, δεξιὸν παραπόταμον τοῦ Ἀμαζονίου. Εἶναι πλωτὸς ἀπὸ τῆς πόλεως Ρέγιες μέχρι τῶν ρευμάτων Ἐσπεράνθα. Κυριώτερος παραπόταμός του εἶναι ὁ ἀριστερὸς Μάντρε ντὲ Ντίος.

— **Μπένι (*ἐλ—*)** (el Beni) *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένη διοίκησις τῆς Β. Βολιβίας, κειμένη παρὰ τὰ σύνορα τῆς Βραζιλίας καὶ ἔχουσα ἔκτασιν 247.033 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1928) 52.306 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν Τρινιντὰντ ντὲ Μόχος (κάτ. 6.923). Εἶναι ἡ δευτέρα ἀπὸ ἀπόψεως ἐκτάσεως διοίκησις τῆς Βολιβίας, ἀλλ' ἐκ τῶν μικροτέρων ἀπὸ ἀπόψεως πληθυσμοῦ, λόγῳ τοῦ ὅτι εἶναι ἀραιότατα κατῳκημένη, μὲ 0,2 μόνον κατ. κατὰ τετρ. χλμ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς, ἀνῆκον εἰς τὴν περιοχὴν τῶν νοτιοαμερικανικῶν στεππῶν, τῶν καλουμένων Λιάνος ντὲ Μόχος, ἀρδεύεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν ἐλ Μπένι καὶ Μαμορὲ καὶ καλύπτεται ὑπὸ πολλῶν τελμάτων, καθιστώντων τὸ κλῖμα ἐξαιρετικῶς ἀνθυγιεινὸν καὶ ἀπρόσιτον εἰς τοὺς Εὐρωπαίους. Οἰκεῖται κυρίως ὑπὸ ἰθαγενῶν Ἰνδῶν, ἀσχολουμένων μὲ τὴν κτηνοτροφίαν καὶ τὴν γεωργίαν, παράγει δὲ καουτσούκ, ζάχαριν, καφέν, κακάο, ἔχει ἄφθονον ξυλείαν καὶ περικλείει χρυσὸν καὶ σίδηρον. Ἡ ἐκμετάλλευσις τοῦ πλούτου της εἶναι πλημμελής, ἐλλείψει συγκοινωνιῶν. Χ. Δ.

**Μπενὶ-'Αμὲρ** (= τὰ τέκνα τῶν ὁδηγῶν), ἢ ***Ἀαμέρ***. Νομαδικὴ κτηνοτροφικὴ φυλὴ τῆς ἰταλικῆς Ἐρυθραίας, ἀνήκουσα εἰς τὴν μεγάλην χαμιτικὴν ὁμάδα τῶν Μπέζα, ἔχουσα ὅμως ἰδιόμορφους χαρακτῆρας. Ἀποτελεῖται ἐκ 200.000 ἀτόμων, Μουσουλμάνων τὸ θρήσκευμα καὶ κατοικούντων τὰ πρὸς τὴν νότιον Ἀβησσυνίαν ὑψίπεδα καὶ τὴν μεταξὺ Σουακὶν καὶ Μασσαουὰχ χώραν. Ὁμιλοῦν ἰδίαν διάλεκτον, τὴν *τιγκρέ*, καὶ διακρίνονται εἰς τοὺς ἀνοικτοχρώμους (*Νεμπτὰμπ καὶ Μπελοὺ*) καὶ τοὺς βαθυχρώμους (*Χασσὰ* ἢ *Μπενταουῒ*), ἀποτελοῦντας τὸ μέγιστον μέρος. Π. Ν. Π.

— **Μπενὶ-'Αμέρ**. Τμῆμα τῆς μεγάλης ἀραβικῆς φυλῆς Ζορμπά, ἐγκατασταθὲν ἐν Ἀλγερίῳ (1049) καὶ περιλαμβάνον τὰς μικροτέρας φυλὰς *Γιακοὺμπ*, *Σαφαὶ* καὶ *Χαμίντ*. Διεδραμάτισε σπουδαῖον πρόσωπον εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ βασιλείου Τολεμσέν, κατὰ τὴν ἄφιξιν δὲ τῶν Γάλλων εἰς Ἀλγέριον κατεῖχεν ὅλην τὴν μεταξὺ Σὶγκ καὶ Μινὰ περιοχήν, χωριζόμενον εἰς τοὺς *Μπενὶ-'Αμὲρ Σεραγκὰ* καὶ τοὺς *Μπενὶ-'Αμὲρ Σεραμπά*, ἀποτελοῦντας ὁμοσπονδίαν, εἰς ἣν ὑπήγοντο καὶ οἱ *Οὐλὰντ-Σλιμὰν* καὶ *Οὐλὰντ-Μπραχίμ*. Ἀντέστησαν κατὰ τῶν Γάλλων, μετὰ δὲ τὴν ὑποταγὴν τοῦ Ἄμπντ-ἐλ-Καντὲρ μέρος αὐτῶν μετηνάστευσεν εἰς Μαρόκον (1843). Π. Ν. Π.

**Μπενὶ-"Ασρα**. Φυλὴ τῆς μεσημβρινῆς Ἀραβίας. Διακρίνονται διὰ τὴν ἀγάπην των πρὸς τὴν ἀνεξαρτησίαν καὶ τὰ αὐστηρά των ἤθη. — Π.

**Μπενιβιένι** (Benivieni), ***Ἱερώνυμος***. Ἰταλὸς ποιητὴς (1453—1542). Ἔγραψεν ᾠδὰς θρησκευτικάς, ὧν καλυτέρα εἶναι ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Canzona dell' amo celeste e divino», καὶ μετέφρασεν εἰς τὴν ἰταλικὴν τὴν πραγματείαν τοῦ Σαβοναρόλα «Simplicitate vitae christianee». Χ. Δ.

**Μπενιγκὲ** (Béniguet) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δύο γαλλικῶν νησίδων, κειμένων παρὰ τὰς ἀκτὰς τῆς Βρετάνης. Ἡ πρώτη ὑπάγεται εἰς τὸν νομὸν Φινιστὲρ καὶ χωρίζεται ἀπὸ τῆς παραλίας διὰ τοῦ διέκπλου τοῦ Φούρ. Ἡ δευτέρα ὑπάγεται εἰς τὸν νομὸν Κὸτ-ντὺ-Νὸρ καὶ κεῖται παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Τριέ. Χ. Δ.

**Μπενιὲ** (Besnier), ***Ἐρνέστος-Ἐρρῖκος***. Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1831. Ἐδημοσίευσε μέγαν ἀριθμὸν ἄρθρων ἐπὶ τῶν δερματικῶν νόσων εἰς τὸ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθὲν περιοδικόν: «Χρονικὰ δερματολογίας». Ἐπίσης ἔγραψε περὶ λέπρας, συφίλιδος, παρασιτικῶν νόσων καὶ «Περὶ τῶν ἐσωτερικῶν ἐντερικῶν περισφίγξεων» (1860). Τῷ 1880 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Ο. Ρ.

**Μπενὶ-'Εμιέ** βλ. λ. *Ἐμιγέ*.

**Μπενιζέλοι** (οἱ). Ἡ οἰκογένεια τῶν *Μπενιζέλων* ἀνεφάνη κατὰ πρῶτον ἐν τῇ ἀθηναϊκῇ ἱστορίᾳ δρῶσα ἀπὸ τοῦ ἔτους 1370 καὶ ἑξῆς. Ὁποῖον ἦτο τὸ ἀρχικὸν ἐπώνυμον της δὲν ἐγνώσθη μέχρι τοῦδε· διότι τὸ *Μπενιζέλος* πάντως ἦτο κύριον ὄνομα μέλους τινὸς τῆς οἰκογενείας ἢ παρωνύμιόν του, ἐχρησιμοποιήθη δὲ κατόπιν ὡς ἐπώνυμον, καὶ διὰ την σημασίαν τοῦ φέροντος τὸ ὄνομα τοῦτο ἐκ τῶν προγόνων τοῦ οἴκου, ἀλλὰ καὶ διὰ τὸ ξενόφωνον καὶ ἰδιόρρυθμον αὐτοῦ. Διὰ τοῦτο βλέπομεν καὶ κατόπιν δύο Μπενιζέλους φέροντας τὸ ἐπώνυμον τοῦτο καὶ ὡς κύριον ὄνομα (Μπενιζέλος Μπενιζέλου). Οὐδὲ τὸ ἔτυμον τῆς λέξεως καθωρίσθη ἀκόμη ἀσφαλῶς. Ἡ ἐπικρατεστέρα καὶ λογιοφανὴς γνώμη εἶναι ὅτι εἶναι τοῦτο ὄνομα σύνθετον ἐκ τῆς ἀραβικῆς καὶ ἱσπανικῆς κατόπιν λέξεως μπενὶ (ἰσοδυναμούσης πρὸς τὸ ἰδικόν μας —πουλος), ἥτις πάντοτε προτάσσεται ἐν τῇ ἀραβικῇ γλώσσῃ, καὶ ἐκ τοῦ ἐπωνύμου Ζέλλος. Ἀλλὰ τοιοῦτον ἐπώνυμον μέχρι τοῦδε δὲν ἀπηντήσαμεν ἐν ταῖς ἀθηναϊκαῖς ἐρευναις ἡμῶν.

Εἰς τὰς Ἀθήνας, κατὰ μακραίωνα παράδοσιν, οἱ Μπενιζέλοι ἐθεωροῦντο ὡς οἰκογένεια ἀρχοντική. Τῶν 12 μάλιστα τοιούτων παλαιοτάτων οἰκογενειῶν τοῦ τόπου οἱ τάφοι ἐκοσμοῦντο διὰ τοῦ δικεφάλου ἀετοῦ, τὸ ὁποῖον ὁπωσδήποτε ἀποδεικνύει τὰς ἐπὶ βυζαντινῇ προελεύσει καὶ ἀριστοκρατίᾳ ἀξιώσεις των. Κατὰ σπανίαν δὲ ἐξαίρεσιν ἐκ τῶν εὐγενῶν οἰκογενειῶν τῶν Ἀθηνῶν οἱ Μπενιζέλοι ἦσαν κυρίως λόγιοι.

Παρὰ τοῖς Μπενιζέλοις ἐπικρατεῖ τὸ ὄνομα *Ἄγγελος*, ἀπὸ δὲ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ ἑξῆς καὶ τὸ *Ἀλέξανδρος*, τὸ ὁποῖον, κατὰ κοινωνικὸν ἔθιμον, οὐδέποτε ἔφερέ τις μὴ ἀνήκων εἰς οἰκογένειαν ἀρχοντικήν, ἐκ τῶν διακρινομένων καὶ διὰ τῆς περιβολῆς, τοῦ καλύμματος τῆς κεφαλῆς καὶ τοῦ ἀκάρτου τῆς κόμης. Ἀπαντᾷ ὅμως συχνὰ παρ' αὐτοῖς καὶ τὸ ὄνομα *Νεροῦτζος*, βραδύτερον δὲ καὶ τὸ *Παλαιολόγος*, λόγῳ τῆς συνυφάνσεως τῆς οἰκογενείας μετὰ τῶν Ἀθηναίων ἐπίσης Παλαιολόγων. Αἱ δὲ κόραι τῆς οἰκογενείας ἔφερον πολλάκις τὸ ὄνομα *Σηριγιανή*, τῆς πρώτης φερούσης αὐτό, ὑπὸ τὸν ἁπλούστερον τύπον *Σηρίγη*, οὔσης μητρὸς τῆς ὁσίας Φιλοθέης. Ἐπίσης συχνὰ γίνεται παρὰ τῇ οἰκογενείᾳ χρῆσις καὶ τῶν ὀνομάτων *Καρέτα*, *Κασσάνδρα (Κασσοῦ)* καὶ *Ἁπλοχεριά*.

Πρῶτος ἱστορικῶς ἀνεγνωρισμένος εἶναι ὁ ***Ἄγγελος Μπενιζέλος***, γεννηθεὶς περὶ τὸ ἔτος 14[illegible]. Αὐτὸς φαίνεται ἔχων ἀδελφὸν ***Νεροῦτζον***. Τοῦ Ἀγγέλου ἐγνώσθησαν δύο τέκνα: ὁ *Δημήτριος* καὶ ἡ ***Ρεγοῦλα (Ρηγίλλη)***, ἥτις διὰ τὰς πολλὰς αὐτῆς ἀρετὰς καὶ διὰ τοῦ μαρτυρικοῦ της θανάτου, τῷ 1589, καθηγιάσθη κατόπιν ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας διὰ τοῦ ὀνόματος *Φιλοθέη*, τὸ ὁποῖον ἔφερεν ὅταν ἔλαβε τὸ ἀγγελικὸν σχῆμα. Οἰκογενειακὴ ἐκκλησία τοῦ Ἀγγέλου Μπενιζέλου ἦτο ἡ παρὰ τὸν σημερινὸν μητροπολιτικὸν ναὸν ὑπάρξασά ποτε ἐκκλησία «Παναγία τοῦ Ἀγγέλου» (ὄχι τῶν Ἀγγέλων).

Διὰ τοῦ ἀδελφοῦ τῆς Φιλοθέης Δημητρίου συνεχίζεται ἡ οἰκογένεια ὡς ἑξῆς: Ἐξ αὐτοῦ προέρχονται, κατὰ συνεχῆ διαδοχήν, πλὴν τῶν συγγενευθέντων μετὰ τῶν Θεοτόκηδων τῆς Κερκύρας καὶ τῶν Σιγούρων τῆς Ζακύνθου, καὶ οἱ ἀπὸ τοῦ ***Ἰωάννου*** «τοῦ διδασκάλου τῶν Ἀθηναίων» καταγόμενοι, ἐν οἷς ἐκ θηλυγονίας, πλὴν ἄλλων, οἱ *Χριστομᾶνοι* καὶ οἱ *Γεννάδιοι* καὶ οἱ μετὰ τοῦ ἐπιφανοῦς τῶν *Κοδρικάδων (Κουτρικάδων)* οἴκου συγγενεύσαντες. Εἰς τὴν διακλάδωσιν αὐτὴν ἀνήκει καὶ *Ἄγγελός* τις θριαμβεύσας εἰς τὴν διὰ τοῦ ῥητορικοῦ ὅπλου μονομαχίαν πρὸς λατινίζοντα ἐπιφανῆ Ἕλληνα.

Ἐκ δὲ τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ Ἀγγέλου Μπενιζέλου (τοῦ πατρὸς τῆς Φιλοθέης) Νερούτζου προῆλθε σειρὰ Μπενιζέλων καταφυγόντων κατὰ τὰ τουρκο-βενετικὰ εἰς Πάτρας, Μυστρᾶν καὶ ἀλλαχοῦ τῆς Πελοποννήσου, εἴς τινας νήσους καὶ εἰς τὴν ξένην. Ἐκ τῶν τοῦ Μυστρᾶ, ὡς φέρεται, προέρχεται καὶ ἡ τῆς Κρήτης οἰκογένεια.

Ἐκ τῆς οἰκογενείας τῶν Ἀθηναίων Μπενιζέλων διὰ τῶν αἰώνων ἀνεδείχθησαν ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ τόπου, ἐν τοῖς γράμμασι καὶ ἐν τῇ τέχνῃ οἱ ἑξῆς:

Ἡ προαναφερθεῖσα μάρτυς τῆς πίστεως *Φιλοθέη* (1522—1589). Ὁ ἐθνομάρτυς ***Ἀλέξανδρος***, δηλητηριασθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει (1745—18[illegible]), ὁ ἐθνομάρτυς ***Ἀγγελάκης***, ἀποκεφαλισθεὶς ἐν τῇ Ἀκροπόλει (1750—1821), ὁ φονευθεὶς μαχόμενος ὑπὲρ τῆς πατρίδος ***Νεροῦτζος*** (1792—1826), ὁ ***Παλαιολόγος***, ὁμολογητὴς τῆς Πατρίδος, βασανισθεὶς ἐν τῇ Ἀκροπόλει (1790—1868), ὁ ***Προκόπιος***, ὁ μετ' αὐτοῦ ἐπίσης βασανισθεὶς (1772—1850).

Δημογέροντες ὑπῆρξαν ἐκ τῶν ἀνωτέρω οἱ Ἀλέξανδρος, Παλαιολόγος, καὶ Προκόπιος.

Λόγιοι οἱ ἑξῆς: ***Ἄγγελος*** ὁ ῥήτωρ (1590—16[illegible]), ***Μπενιζέλος***, ὁ ἐξεγερθεὶς κατὰ τῶν ἀλλαξοπιστούντων ἐν Ῥώμῃ (1682—1760). ***Δημήτριος*** Σοφὸς (1624—1710), ***Ἰωάννης ὁ Λόγιος*** ἀδελφός του (1625—1715), ***Ἰωάννης*** («ὁ Διδάσκαλος τῆς πολιτείας») (1730—1807), ***Νικόλαος ὁ Νοτάριος*** (1730—18[illegible]), ***Ἰωάννης Βασιλείου Μπενιζέλος*** ὁ λαογράφος (1819—1896), ***Θεοδόσιος ὁ συγγραφεὺς*** (1821—1900).

Καλλιτέχνης: ὁ ***Νικόλαος***, διαπρεπὴς ἁγιογράφος (1700—1770).

Ἐπιστήμονες: ὁ ***Ἀλέξανδρος Παλαιολόγου*** ἰατροφιλόσοφος καὶ καθηγητὴς (1812—1862), ***Μιλτιάδης Παλαιολόγου***, ἰατρὸς καὶ καθηγητὴς (18[illegible]—1887).

Στρατιωτικοί: ὁ ***Νικόλαος*** ὁπλαρχηγὸς (179[illegible]—1870), ὁ ***Δημήτριος*** ὁπλαρχηγὸς (1795—1865), ὁ ***Ξενοφῶν*** τοῦ τακτικοῦ στρατοῦ (1830—1890).

Πολιτευταί: ὁ ***Σπυρίδων*** δήμαρχος Ἀθηναίων (1792—1874) καὶ ὁ ***Γεώργιος Μιλτιάδου Μπενιζέλος***, πολιτευτὴς καὶ νομικὸς (1862—1909). Δ. ΓΡ. ΚΑΜΠΟΥΡΟΓΛΟΥ

**Μπενὶ-Ζιάδ**. Ἀραβικὴ δυναστεία· βλ. λ. *Ζιά...*

**Μπενὶ-Ζιάν**· βλ. *Ζιανίδαι*.

**Μπενὶ-'Ισραὲλ** (= Υἱοὶ Ἰσραὴλ) *[Γεωγρ.]*. Ἀποικία ἰουδαϊκὴ ἐπὶ τῶν παραλίων Μαλαμπὰρ τῆς ἐπαρχίας Κολάμπα τῶν Ἰνδιῶν, ἀποτελοῦσα μετὰ τοῦ Κόχιν μίαν τῶν ἀρχαιοτέρων ἰουδαϊκῶν ἀποικιῶν τῶν Ἰνδιῶν. Κατά τινας συνεπήχθη κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα, κατ' ἄλλους δὲ ἔτι παλαιότερον. Τὰ μέλη τῆς ἀποικίας ταύτης ἀνερχόμενα εἰς 5.000 ἀπέχουσι τῶν ἀκαθάρτων κρεάτων καὶ ἰχθύων, π...

Digitized by Google

ροῦν τὴν ἀργίαν τοῦ Σαββάτου ἀπαρεγκλίτως, ὁμιλοῦν τὴν γλῶσσαν Μαράθα καὶ ἀποφεύγουν τὴν συναναστροφὴν πρὸς τοὺς ἄλλους Ἰουδαίους, τοὺς ὁποίους θεωροῦν ὡς αἱρετικούς. —Ω.

**Μπενικαρλὸ** (Benicarlo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Καστελλιόν. Ἔχει μικρὸν λιμένα ἐπὶ τῆς Μεσογείου καὶ διεξάγει ἐμπόριον οἴνων καὶ οἰνοπνευμάτων. Κάτ. 7.890. Χ. Δ.

**Μπενικὲ** (Béniqué), ***Πέτρος-Ἰούλιος***. Γάλλος χειρουργός, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1806—1851). Συνέγραψε πλεῖστα βιβλία τοῦ κλάδου του καὶ εἰσήγαγε καθετῆρας μεταλλικοὺς φερομένους ὑπὸ τὸ ὄνομά του (βλ. κατωτ.). Ο. Ρ.

—**Μπενικὲ *καθετήρ***. Μεταλλικὸς ἐκ μολύβδου ἢ κασσιτέρου καθετὴρ πρὸς καθετηρισμὸν τῆς οὐρήθρας τοῦ ἀνδρός, εἰσαχθεὶς ὑπὸ τοῦ Γάλλου χειρουργοῦ *Μπενικέ*. Οἱ καθετῆρες οὗτοι παρουσιάζουσι διπλῆν κύρτωσιν διὰ τὴν δίοδον τῆς οὐρήθρας καὶ χρησιμοποιοῦνται πρὸς διαστολὴν ταύτης κατὰ τὴν θεραπείαν τῶν στενωμάτων, ἰδίως μετὰ ἐσωτερικὴν οὐρηθροτομίαν ἢ ἠλεκτρόλυσιν. Ο. Ρ.

**Μπενὶ-Λὰμ** (οἱ). Πολυάριθμος νομαδικὴ φυλὴ ἐν τῇ διοικήσει Ἀμάρα τοῦ Ἰράκ. Τὰ μέλη αὐτῆς ὁμιλοῦσι τὴν ἀραβικὴν καὶ ἀνήκουσιν εἰς τὸ σιιτικὸν δόγμα τοῦ Μουσουλμανισμοῦ.

**Μπενὶν** (Benin) *[Γεωγρ.]*. Κράτος ἡμιαγρίων Νέγρων ἐν Ἀφρικῇ εἰς τὰς Ν. ἐπαρχίας τῆς ἀγγλικῆς Νιγηρίας καὶ κατὰ τὰ Α. τοῦ κόλπου τοῦ Μπενίν. Ὁρίζεται Ν. ὑπὸ τοῦ Οὐαρί, Α. ὑπὸ τοῦ Νίγηρος, Β. καὶ ΒΔ. ὑπὸ τοῦ Ὑαρουμπὰ καὶ Δ. ὑπὸ τοῦ Ὑεμποὺ καὶ Λάγκος. Εἶναι μία τῶν μᾶλλον ἀνεξερευνήτων ἀφρικανικῶν χωρῶν, οἱ κάτοικοί της εἶναι φετιχισταί, διατηροῦντες ἐνιαχοῦ τὰς ἀνθρωποθυσίας καὶ ἔχοντες πρωτεύουσαν τὸ *Μπενίν*. Ἡ χώρα παράγει ὄρυζαν, σάκχαριν κ.ἄ. καὶ διεξάγει ἐμπόριον ἐλεφαντοστοῦ. Σπουδαιότερα κέντρα αὐτῆς εἶναι ὁ λιμὴν Ὀντί, τὸ Μαχίν, ἄλλοτε κατεχόμενον ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, καὶ οἱ παρὰ τὸν ποταμὸν Μπενὶν συνοικισμοί. Τὸ Μπενὶν ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ Πορτογάλου Ἀβέϊρο· τῷ 1500 οἱ Ὁλλανδοὶ ἐπεχείρησαν διείσδυσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ, τῷ 1536 ἐγκατεστάθησαν οἱ Ἄγγλοι, οἱ δὲ Γάλλοι κατέστησαν (1786) αὐτόθι ἐμπορικοὺς σταθμοὺς ὑπαγομένους εἰς τὴν Δαχομέην. Τὰς σημαντικὰς ἀρχαιότητας τοῦ κράτους ἐμελέτησαν οἱ Ρόθ, Λουσὰν καὶ Στρούκ.

—**Μπενὶν** (Benin) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου κράτους καὶ ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ εἰς 235 χλμ. ἀπὸ τῆς ἀκτῆς, ὅπου τὸ *Νέον Μπενίν*. Κάτ. 15.000. Ἔχει ζωηρὸν ἐμπόριον διεξαγόμενον διὰ τοῦ ποταμοῦ. Ἄλλοτε ἦτο ὀχυρὰ καὶ πολυπληθής, ἔχουσα ὡραῖα ἀνάκτορα (ΙΖ′ αἰών).

—**Μπενὶν** (Benin), ***κόλπος τοῦ —*** *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς ΝΔ. Ἀφρικῆς, τμῆμα τοῦ κόλπου τῆς Γουϊνέας, ἐκτεινόμενος ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου τοῦ Ἁγίου Παύλου μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Φορμόζο, ὅπου ἡ κυρία ἐκβολὴ τοῦ Νείλου, ἔχων ἀνάπτυγμα περίπου 900 χλμ. Χωρίζεται εἰς τὴν πρὸς Α. τοῦ μυχοῦ «Ἀκτὴν τῶν Δούλων» καὶ τὴν Δ. «Ἀκτὴν τοῦ Μπενίν», ἀμφότεραι δὲ ἀποτελοῦν βαλτώδη καὶ χθαμαλὴν ἔκτασιν. Αἱ κατὰ μῆκος τοῦ κόλπου λίμναι (Ἄνλο, Μπαγκίντα, Ἀβόν, Βό, Λάγκος κ. ἄ.) ἐχρησίμευον ὡς καταφύγιον τῶν διωκομένων Νέγρων ὑπὸ τῶν δουλεμπόρων. Ἀπὸ Α. πρὸς Δ. μικρὸν τμῆμα τοῦ κόλπου ἀνήκει εἰς τὴν χώραν τῶν Ἀσαντί, μεγαλύτερον μέρος εἰς τὴν Δαχομέην, τὸ ὑπόλοιπον δὲ εἰς τὸ προτεκτοράτον τῆς Νιγηρίας. Π. Ν. Π.

**Μπενινκόρι** (Benincori), ***Ἄγγελος-Μαρία***. Ἰταλὸς συνθέτης (1779—1821). Ἠσχολήθη μὲ ὅλα τὰ εἴδη τῆς συνθέσεως, γράψας πολλὴν μουσικὴν δωματίου καὶ θρησκευτικὰ ἔργα. Τῷ 1803 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις, ἔνθα ἀνεβίβασεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Κωμικοῦ Μελοδράματος τοὺς «Γονεῖς μιᾶς ἡμέρας» (1815), τὴν «Ὑπόσχεσιν γάμου» (1818) καὶ τοὺς «Ἀκριτομύθους συζύγους» (1819). Δύο ἄλλα μελοδράματά του: «Γαλάτεια» καὶ «Ἡσιόνη», δὲν ἐπαίχθησαν. Ἔγραψεν ἐπίσης τὰς τρεῖς τελευταίας πράξεις τῆς «Μαγικῆς λυχνίας» τοῦ ἡμιτελοῦς μελοδράματος τοῦ Νικολὸ Ἰζουάρ. Γ. Σ.

**Μπενιὸ** (Beugnot), ***Ἰάκωβος-Κλαύδιος***, *κόμις τοῦ —*. Γάλλος πολιτικὸς (1761—1835). Κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν ἦτο πρόεδρος τοῦ δικαστηρίου, τῷ δὲ 1790 ἐγένετο εἰσαγγελεὺς καὶ εἶτα μέλος τῆς νομοθετικῆς συνελεύσεως (1791), ἀνήκων εἰς τὰς τάξεις τοῦ συνταγματικοῦ κόμματος. Κατόπιν ἐγένετο ἰδιαίτερος σύμβουλος τοῦ Λουκιανοῦ Βοναπάρτου, νομάρχης, σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν τοῦ Ἱερωνύμου Βοναπάρτου, βασιλέως τῆς Βεστφαλίας. Τῷ 1808 διετέλεσε διοικητὴς τοῦ μεγάλου δουκάτου τοῦ Μπὲργκ καὶ Κλὶβ καὶ ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος. Ἐπὶ τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν (1814) καὶ ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΗ′ γενικὸς διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας καὶ ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν. Ἐπὶ τῆς δευτέρας παλινορθώσεως ἐγένετο γενικὸς διευθυντὴς τῶν Ταχυδρομείων, ὑπουργὸς ἄνευ χαρτοφυλακίου καὶ ἀντιπρόσωπος τοῦ Ἄνω Μάρνη καὶ Κάτω Σηκουάνα εἰς τὴν Νομοθετικὴν Συνέλευσιν, ἀνήκων εἰς τὴν ἀριστερὰν καὶ παραιτηθεὶς τῷ 1824. Ἡ ἰουλιανὴ κυβέρνησις ὠνόμασεν αὐτὸν πατρίκιον τῆς Γαλλίας καὶ γενικὸν διευθυντὴν τοῦ ἐμπορίου καὶ τῆς βιομηχανίας. Ἔγραψεν ἀξιόλογα «Ἀπομνημονεύματα» (1866, τόμ. 2). —Π.

**Μπενιόβσκι**, ἢ ***Μενυόβσκυ*** (Beniowski ἢ Benyovszky), ***Μαυρίκιος-Αὔγουστος***. Οὖγγρος τυχοδιώκτης (1741—1786), ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας τῆς κομιτείας Νύτρα καταγόμενος. Κατὰ τὸν Ἑπταετῆ πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς τὸν αὐστριακὸν στρατόν, εἶτα δὲ κατετάχθη εἰς τὸν πολωνικὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου. Συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν Ρώσων ἐξωρίσθη εἰς Σιβηρίαν, ὅπου κατώρθωσε νὰ κερδίσῃ τὴν ἐμπιστοσύνην τοῦ διοικητοῦ αὐτῆς στρατηγοῦ Νίλωφ καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν τέκνων του. Ἂν καὶ νυμφευμένος ἤδη ἐν Οὐγγαρίᾳ, συνῆψε καὶ δεύτερον γάμον μετὰ τῆς θυγατρὸς τοῦ στρατηγοῦ. Συγκεντρώσας περὶ ἑαυτὸν ὁμάδα ἐξορίστων, κατώρθωσε μετὰ πολλὰς περιπετείας νὰ διαβῇ τὰ σύνορα καὶ νὰ φύγῃ εἰς Κίναν, ὅπου ἀπέθανεν ἡ νεαρὰ σύζυγός του. Τῷ 1772 ἀφίκετο εἰς Παρισίους, ἡ δὲ ἐξιστόρησις τῶν περιπετειῶν τον προεκάλεσε παγκόσμιον ἐνδιαφέρον. Τῷ 1774 κατόπιν προτάσεώς του ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ἐνεπιστεύθη εἰς αὐτὸν τὴν ἵδρυσιν ἀποικίας ἐν Μαδαγασκάρῃ. Ἐκεῖ, παρ' ὅλην τὴν ἐχθρότητα τοῦ Γάλλου διοικητοῦ τῆς Ἴλ ντὲ Φράνς, κατώρθωσε νὰ ἔλθῃ εἰς συνεννόησιν πρὸς πολλοὺς ἰθαγενεῖς, οἵτινες ἀνεκήρυξαν αὐτὸν βασιλέα των, καὶ νὰ ἱδρύσῃ τὴν πόλιν Λουισμπούργκ. Ἀναχωρήσας μετ' ὀλίγον ἐκ Μαδαγασκάρης, ἐγένετο ἥρως νέων περιπετειῶν εἰς Αὐστρίαν, Λονδῖνον, Βαλτιμόρην καὶ Βραζιλίαν, τέλος δ' ἐπέστρεψεν ἐκ νέου εἰς τὴν ἀποικίαν του, ὅπου ἐφονεύθη κατά τινα μετὰ τῶν Γάλλων συμπλοκήν. Τῷ 1790 ἐδημοσιεύθησαν ἐν Λονδίνῳ τὰ ἀπομνημονεύματά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀναμνήσεις καὶ ταξίδια τοῦ Μαυρικίου Αὐγούστου Μπενιόβσκι», τὰ ὁποῖα ἔσχον καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν, μεταφρασθέντα εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Ὁ περιπετειώδης βίος του ἐνέπνευσε πολλοὺς διακεκριμένους συγγραφεῖς (Ζοκάϊ, Ἰούλ. Σλοβάκι, Κοτσέμπου, Λουδ. Μούλμπαχ)· ἰδιαιτέρως γνωστὸν εἶναι τὸ φερώνυμον τρίπρακτον μελόδραμα τοῦ Ντυβάλ, τὸ ἄλλως γνωστὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Οἱ ἐξόριστοι τῆς Καμτσιάτκας» μὲ μουσικὴν τοῦ Μποϊελντιὲ (1800). Χ. Δ.

**Μπενὶ-Σνάσσεν** (Beni-Snassen). Ἄθροισμα ἰθαγενῶν φύλων τοῦ Μαρόκκου, κατοικούντων ὁμώνυμον ὀρεινὴν περιοχὴν (βλ. κατωτ.) ἐπὶ τῶν πρὸς τὸ Ἀλγέριογ συνόρων τῆς χώρας. Εἶναι βερβερικῆς καταγωγῆς καὶ παρουσιάζουν ἀρκετὴν ὁμοιότητα χαρακτηριστικῶν πρὸς τοὺς Καβύλους τῆς Τζουρτζούρα. Πολεμοχαρεῖς ἄλλοτε καὶ ἀτίθασοι, ἀσχολοῦνται ἤδη εἰς καλλιεργείας κριθῆς, σίτου καὶ ὀπωροφόρων δένδρων καὶ εἰς τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν φελλοφόρων δρυῶν, αἵτινες ἀφθονοῦσιν ἐν τῇ χώρᾳ των.

Χάρις εἰς τὸ ὀρεινὸν καὶ δυσπρόσιτον τοῦ ἐδάφους, οἱ Μπενὶ-Σνάσσεν εἶχον κατορθώσει μέχρι τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος νὰ διατηρήσουν τὴν ἀνεξαρτησίαν των μεταξὺ τῶν Μαροκκινῶν σουλτάνων καὶ τῶν βέηδων τοῦ Ἀλγερίου. Ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ Μαρόκκου ἀναφέρεται ὅτι κατὰ τὸν ΙΖ′ αἰῶνα ὁ ἰσχυρὸς ἡγεμὼν τοῦ Φὲζ Μουλάϊ-Ἰσμαὴλ ἐπεχείρησε δύο ἐκστρατείας ἐναντίον των· καὶ κατὰ μὲν τὴν πρώτην (1679) ἐπέτυχε ν' ἀφαιρέσῃ ἀπ' αὐτῶν ὁλόκληρον τὴν πεδινήν των περιοχὴν καὶ νὰ τοὺς ἐντοπίσῃ ἐπὶ τῶν ὀρέων των καὶ μόνον, κατὰ δὲ τὴν δευτέραν (1680) τοὺς κατεδίωξε μέχρι τῶν ἀπροσίτων καταφυγίων των, τοὺς ἀφώπλισε καὶ ἔκτισεν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους των τρία ὀχυρὰ φρούρια. Βραδύτερον ἐν τούτοις οἱ Μπενὶ-Σνάσσεν ἐπέτυχον ν' ἀνακτήσουν καὶ πάλιν τὴν ἀνεξαρτησίαν των. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τῆς καταλήψεως τοῦ Μαρόκκου ὑπὸ τῶν Γάλλων συνεμάχησαν μὲ τοὺς Μαροκκινοὺς καὶ ἐδημιούργησαν πολλὰς δυσχερείας εἰς τὸν γαλλικὸν στρατόν. Παρέστη ἀνάγκη νὰ ἐκτελεσθῶσι δύο κατ' αὐτῶν ἐκστρατεῖαι (1852 καὶ 1859), ἄκαρποι σχεδόν, μόνον δὲ μετὰ τὸ 1910 ἐπετεύχθη ἡ ὁριστικὴ καθυπόταξίς των ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Lyautey.

— **Μπενὶ-Σνάσσεν** *ὄρη* (Beni-Snassen Djebel) *[Γεωγρ.]*. Ὀρεινὸν συγκρότημα τοῦ βορείου Μαρόκκου, ἐπὶ τῶν πρὸς τὴν Ἀλγερίαν συνόρων. Ἐκτείνεται μεταξὺ τῆς ὑψηλῆς πεδιάδος τῆς Οὔντζντα καὶ τῆς Μεσογείου θαλάσσης, πρὸς τὴν ὁποίαν τὰ ὄρη κατέρχονται δι' ἀποτόμων κλιτύων, ἔχει δὲ ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ Ρὰς-Φούγκα (1.420 μ.). Τὰ ὄρη ἀποτελοῦνται ἀπὸ σχιστολίθους καὶ σκληροὺς ἀσβεστολίθους, εἶναι ἐν μέρει δασώδη καὶ διασχίζονται ἀπὸ βαθείας χαράδρας, διὰ τῶν ὁποίων ρέουν ὁ Οὐὲντ Κίσσ καὶ διάφοροι παραπόταμοι τοῦ Μολούγια. —Ω.

**Μπενίτσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κερκύρας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῆς Α. παραλίας τῆς νήσου πρὸς Ν. τοῦ Γαστουρίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 450. Χ. Δ.

— **Μπενίτσα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὕφορμος τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς Κερκύρας (πλάτ. $39^{o}$ 32′ Β., μῆκ. $19^{o}$ 56′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channels of Corfu), $2^1/_2$ μίλλ. νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου Κανόνι, κατὰ τὰ κράσπεδα τῶν ὀρθοπάγων τῶν Ἁγίων Δέκα καὶ τοῦ Ἁγίου Σταυροῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μπένι-Χασὰν** *[Ἀρχ.]*. Νεκρόπολις φαραωνικὴ παρὰ τὴν Λιβυκὴν ἔρημον (βλ. λ. *Βένι-Χασάν*).

**Μπένκεντορφ** (Benckendorff), ***Ἀλέξανδρος***, *κόμις —*. Ρῶσος διπλωμάτης (1849—1917). Διετέλεσε κατ' ἀρχὰς διπλωματικὸς ὑπάλληλος ἐν Ἰταλίᾳ, εἶτα δὲ διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Κοπεγχάγῃ (1897—1903) καὶ κατόπιν ἐν Λονδίνῳ (1903—1917), ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πρωτεργατῶν τῆς ἐγκαρδίου συνεννοήσεως Ἀγγλίας, Γαλλίας καὶ Ρωσίας. Χ. Δ.

**Μπένκοβατς** (Benkovac) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γιουγκοσλαβίας ἐν Δαλματίᾳ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ζάρας—Κνίν. Κάτ. 17.245. Παρ' αὐτὴν τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας Ἀσσεσίας. —Π.

**Μπένκουλεν** (Bencoolen ἢ Benkulen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῶν Ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διοικητικῆς περιφερείας. Κεῖται ἐπὶ τῆς Δ. ἀκτῆς τῆς νήσου ἐπὶ παραλίας φρασσομένης ὑπὸ κοραλλίων, ἐντὸς ὅρμου ἐκτεθειμένου εἰς τοὺς ἀνέμους, ἐξάγει δὲ πέπερι καὶ καμφορὰν εἰς μεγάλας ποσότητας, καφφέν, ζάχαριν, κοκκοφοίνικας κλπ. Πρὸς Ν. τῆς πόλεως ὑψοῦται, προστατεῦον αὐτήν, τὸ ὀχυρὸν Μέλμπορω. Ἀπὸ τοῦ 1685 μέχρι τοῦ 1825 ἀνῆκεν εἰς τοὺς Ἄγγλους, οἵτινες τὴν παρεχώρησαν εἰς τοὺς Ὁλλανδούς, λαβόντες παρ' αὐτῶν ὡς ἀντάλλαγμα τὴν Μαλάκκαν τῆς Ἰνδοκίνας. Κάτ. (1928) 9.520. Χ. Δ.

**Μπενκόφσκι, *Γεώργιος***. Βούλγαρος ἀγωνιστὴς καὶ εἷς τῶν ὑποκινητῶν τῆς Ἀπριλιανῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1876. Κατήγετο ἐκ Κοπριβστίτσης καὶ νέος κατετάγη εἰς τὰ ἐπαναστατικὰ σώματα τῆς χώρας του, ἀναγκασθεὶς ταχέως νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν πατρίδα του καὶ νὰ ζήσῃ ὡς ἐξόριστος ἐν Ρουμανίᾳ. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς Ἀπριλιανῆς ἐπαναστάσεως ἐφονεύθη ὑπὸ Τούρκων βασιβουζούκων. Τ. Β.

**Μπένλαιβ** (Benloev), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1818. Ἐγκατασταθεὶς εἰς τὴν Γαλλίαν, διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Διζόν, βραδύτερον δ' ἐξελέγη κοσμήτωρ τῆς φιλοσοφικῆς σχολῆς τοῦ αὐτοῦ πανεπιστημίου. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ κυριώτερα εἶναι τά: «Γενικὴ ἐπισκόπησις τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας» (1858), «Ἡ θεωρία τῶν ρυθμῶν» (1862), «Οἱ Σημῖται εἰς τὸ Ἴλιον ἢ ἡ ἀληθινὴ ἱστορία τοῦ Τρωϊκοῦ πολέμου» (1863), «Ἡ Ἑλλὰς πρὸ τῶν Ἑλλήνων» (1877), «Οἱ νόμοι τῆς ἱστορίας» (1881). Α. Δ.

**Μπὲν-Μουσᾶ**. Ὄνομα τριῶν ἀδελφῶν Ἀράβων μαθηματικῶν, τοῦ *Μεχμέτ*, τοῦ *Ἀχμὲτ* καὶ τοῦ *Χασάν*, οἵτινες μετέφρασαν εἰς τὴν ἀραβικὴν τὰ συγγράμματα τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων μαθηματικῶν. Εἰς τούτους ἀνέθεσεν ὁ χαλίφης Μααμοὺν νὰ ἐξελέγξωσι τὸ μῆκος τοῦ μεσημβρινοῦ τῆς γῆς. Τὰς σχετικὰς ἐργασίας ἐξετέλεσαν οἱ τρεῖς ἀδελφοὶ εἰς τὰς ἐν Μεσοποταμίᾳ πεδιάδας τοῦ Σιντζὰρ καὶ τὴν Κούφα. Ν. Μ.

**Μπένμπω** (Benbow), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος ναύαρχος (1653—1702) Μετέσχεν εἰς τὸν βομβαρδισμὸν τοῦ Σαὶν-Μαλὸ (1693), ἐπεστάτησεν εἰς τὸν ἀποκλεισμὸν τοῦ Ντάνκιρκ (1696) καὶ διεκρίθη διὰ τὴν δρᾶσίν του εἰς τὰς Δυτικὰς Ἰνδίας. Γ. Ι. Β.

**Μπὲν Νέβις** (Ben Nevis) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Σκωτίας ὑψούμενον ἐν τῇ κομιτείᾳ Ἴνβερνες. Εἶναι ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ τοῦ Ἡνωμένου βασιλείου (1.482 μ.), ἐπὶ δὲ τῆς Β. καὶ ΒΑ. πλευρᾶς του σχηματίζονται ἀπότομοι κρημνοί, ὧν ὁ μεγαλύτερος ἔχει βάθος 500 μ. Ἀπὸ τοῦ 1883 μέχρι τοῦ 1904 ἐλειτούργησεν ἐπ' αὐτοῦ μετεωρολογικὸς σταθμός. Χ. Δ.

**Μπέννετ** (Bennett) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πολικὴ νῆσος τοῦ ἐν τῷ Ἀρκτικῷ ὠκεανῷ συμπλέγματος τῆς Νέας Σιβηρίας, κειμένη πρὸς Β. τῆς νήσου Νέας Σιβηρίας ($75^{o}$ Β. πλάτους καὶ $150^{o}$ Α. μήκους Γκρήνουϊτς). Ἀνήκει εἰς τὴν Σοβιετικὴν ὁμοσπονδίαν. Χ. Δ.

**Μπέννετ** (Bennett), ***Ἐνὼχ-Ἀρνόλδος***. Ἄγγλος μυθιστοριογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἐσπούδασε νομικὴν καὶ ἐξήσκησεν ἐπί τι χρονικὸν διάστημα τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, γράφων συγχρόνως εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ ποιήματα, διηγήματα καὶ μυθιστορήματα, τῶν ὁποίων ἡ ἐπιτυχία ὤθησεν αὐτὸν ν' ἀφιερωθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰ γράμματα. Ἐγκατασταθεὶς ὁριστικῶς ἐν Λονδίνῳ, συνειργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς

Digitized by Google

διαφόρους ἐφημερίδας καὶ ἐγένετο ἀπὸ τοῦ 1896 συνδιευθυντὴς τοῦ περιοδικοῦ «Ἡ γυναῖκα». Παραιτηθεὶς κατόπιν τῆς ἐκδόσεως ταύτης, κατέγινεν ἐφεξῆς ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν συγγραφὴν φιλολογικῶν ἔργων παντὸς εἴδους, διηγημάτων, δραμάτων, μυθιστορημάτων, κωμῳδιῶν, κριτικῶν, σατιρῶν κτλ., ἀποκτήσας μεγάλην δημοτικότητα διὰ τὸν δυνατὸν ρεαλισμόν του, τὸ δροσερὸν χιοῦμορ καὶ τὴν εὐρυμάθειαν. Ἐκ τῶν κυριωτέρων ἔργων του εἶναι: «Τὸ μέγα ξενοδοχεῖον Βαβυλὼν» (1912), «Ἡ ἀλήθεια» (1903), «Ἡ Ἄννα τῶν πέντε πόλεων» (1904), «Κλαίχανγκερ», «Χίλντα Λέσουαις» (1911), «Βιβλία καὶ πρόσωπα» (1917), «Αἱ γυναῖκές μας» (1920), «Λόρδος Ραίνγκο» (1926) κτλ. Ἐκ τῶν θεατρικῶν του ἔργων τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ἡ μεγάλη περιπέτεια», δρᾶμα ληφθὲν ἐκ τοῦ μυθιστορήματος «Ἐκάη ζωντανός», «Ὁ τίτλος» (1918), «Ἰουδὶθ» (1919), «Ἁγνὸς καὶ ἀνόσιος ἔρως» (1919) κτλ.

Ἐνὼχ-Ἀρνόλδος Μπέννετ.

—Μπέννετ (Bennett), *Ἰάκωβος-Γόρδων*. Ὀνομαστὸς Ἀμερικανὸς δημοσιογράφος (1795—1872). Ἐγεννήθη ἐν Σκωτίᾳ, ὅπου κατ' ἀρχὰς εἰσήχθη εἰς τὴν θεολογικὴν σχολὴν τοῦ Ἀμπερντήν, προοριζόμενος διὰ τὸ στάδιον τοῦ κληρικοῦ. Ἡ ἀνάγνωσις ὅμως τῆς αὐτοβιογραφίας τοῦ Φραγκλίνου ἐνέπνευσεν εἰς αὐτὸν τὴν ἰδέαν τῆς μεταναστεύσεως εἰς τὴν Ἀμερικήν, ὅπου ἀπεβιβάσθη τῷ 1819 εἰς Χάλιφαξ πρὸς ἀναζήτησιν πόρου ζωῆς. Παραμείνας ἐπί τι χρονικὸν διάστημα εἰς τὴν πόλιν ταύτην, ὅπου παρέδιδε μαθήματα γαλλικῆς, ἰσπανικῆς καὶ λογιστικῆς, μετέβη κατόπιν εἰς τὴν Βοστώνην, τὴν Νέαν Ὑόρκην, τὴν Τσάρλεστον καὶ ἐκ νέου εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην, ὅπου εἰργάζετο εἰς παντὸς εἴδους ἐργασίας καὶ ἰδίως εἰς ἐφημερίδας καὶ ἐκδοτικοὺς οἴκους ὡς διορθωτὴς καὶ μεταφραστής. Τὸ δημοσιογραφικὸν ὅμως αὐτοῦ στάδιον ἄρχεται κυρίως ἀπὸ τοῦ 1827, ὁπότε διωρίσθη ἐν Βασιγκτῶνι ἀνταποκριτὴς τῆς ἐφημερίδος «New York enquirer». διακριθεὶς τότε διὰ τὴν δραστηριότητά του καὶ τὴν ἁπλότητα τοῦ ὕφους τῶν ἀνταποκρίσεών του. Βραδύτερον ἐπέτυχε τὴν συγχώνευσιν τῶν ἐφημερίδων «New York Courier» καὶ «New York Enquirer», εἰς μίαν ἐφημερίδα, τὴν «Curier-Enquirer», τῆς ὁποίας ἐγένετο διευθυντής. Τῷ 1823 ἐξέδωκεν ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ τὴν ἐφημερίδα «Globc», ἡ ὁποία ὅμως δὲν ἔζησεν ἐπὶ πολύ. Κατόπιν τῆς ἀποτυχίας ταύτης εἰργάσθη εἰς τὴν ἐφημερίδα «Πενσυλβανίαν» τῆς Φιλαδελφείας, τῆς ὁποίας ἐγένετο συνιδιοκτήτης, καὶ τῷ 1834, παρορμηθεὶς ἐκ τῆς κολοσσιαίας ἐπιτυχίας τῆς «Sun», ἡ ὁποία ὑπῆρξεν ἡ πρώτη ἐφημερὶς τῶν Ἡν. Πολιτειῶν, ἥτις ὑπεβίβασε τὴν τιμήν της εἰς ἕνα σέντ, ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς εἰς τὴν Νέαν Ὑόρκην καὶ ἵδρυσε τῷ 1835, μὲ πεντήκοντα μόνον δολλάρια ὡς κεφάλαια, τὴν ἐφημερίδα «Nea York Herald» («Κῆρυξ τῆς Νέας Ὑόρκης»). Σκοπός του ἦτο ἡ δημιουργία ἐφημερίδος λαϊκοῦ χαρακτῆρος, ἡ ὁποία, ὡς ἡ «Sun», νὰ πωλῆται πρὸς ἕνα σέντ, νὰ εἶναι ἀνεξάρτητος, ζωηρά, πλήρης συντόμων εἰδήσεων καὶ δηκτικῶν παρατηρήσεων, ἐκ τῶν ἀρεσκουσῶν εἰς τὸ πολὺ κοινόν,—πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐπέτυχεν ἐξ ὁλοκλήρου ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος. Ὁ Μπέννετ ἦτο ἐν τῇ ἐφημερίδι του τὸ πᾶν: ἰδιοκτήτης, διευθυντής, συντάκτης, διορθωτής, ταμίας. Ἡ ἐπιτυχία τοῦ «Κήρυκος τῆς Νέας Ὑόρκης» ὑπῆρξε τεραστία. Ἐντὸς δύο ἐτῶν κατώρθωσε νὰ πωλῇ 40.000 φύλλα ἡμερησίως, ὑπερβὰς εἰς κυκλοφορίαν πᾶσαν ἄλλην ἀμερικανικὴν ἐφημερίδα. Μὴ ἐπαναπαυόμενος ἐπὶ τῆς ἐπιτυχίας ταύτης ὁ Μπέννετ προσεπάθησε νὰ αὐξάνῃ διαρκῶς τὰ μέσα τῆς ἐκδόσεως τῆς ἐφημερίδος του, συνεχῶς πλουτίζων αὐτὴν καὶ χρησιμοποιῶν πρωτοφανεῖς διὰ τὴν ἐποχήν του μεθόδους ἐξευρέσεως πληροφοριῶν καὶ διαδόσεως τοῦ φύλλου. Τῷ 1838 μετέβη εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ διωργάνωσεν ἓξ γραφεῖα ἀνταποκρίσεων, τὰ ὁποῖα ἐπροίκισε μὲ ἄφθονα μέσα. Ἦτο ὁ πρῶτος ὁ ὁποῖος εἰσήγαγεν εἰς τὴν ἀμερικανικὴν δημοσιογραφίαν τὰ οἰκονομικῆς φύσεως ἄρθρα καὶ τὰ δελτία τοῦ χρηματιστηρίου, καθὼς καὶ τὰς εὐρείας τηλεγραφικὰς ἀνταποκρίσεις. Ἐπίσης εἰσήγαγε καὶ τὴν συνήθειαν τῆς ἐξάρσεως, δι' ἐξαιρετικῶν στοιχείων καὶ τίτλων, τοῦ σπουδαιοτέρου γεγονότος τῆς ἡμέρας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε μεγίστην διάδοσιν τῆς ἐφημερίδος του παρὰ τῷ λαῷ καὶ ἔδωκεν ἀφορμὴν νὰ κατηγορηθῇ ὡς ὁ εἰσηγητὴς καὶ ὑποδαυλιστὴς τῆς σκανδαλοθηρίας ἐν τῇ ἀμερικανικῇ δημοσιογραφίᾳ. Ἐπίσης ὁ Μπέννετ ἐχρησιμοποίησεν ἐκ τῶν πρώτων εἰς εὐρεῖαν κλίμακα τὸ φωτογραφικὸν ρεπορτάζ (βλ. καὶ λ. *«Κῆρυξ τῆς Νέας Ὑόρκης»*). Ὁ Μπέννετ συνέγραψε καὶ λίαν ἐνδιαφέροντα καὶ χαρακτηριστικὰ τῆς ἐποχῆς του ἀπομνημονεύματα ὑπὸ τὸν τίτλον «Memoires of James Gordon Bennett and his times» (1855). Μ. Δ. Β.

— **Μπέννετ** (Bennett) *Ἰάκωβος-Γόρδων*. Ὀνομαστὸς Ἀμερικανὸς δημοσιογράφος, υἱὸς τοῦ Ἰακώβου-Γόρδωνος Μπέννετ (1841—1918). Ἐγεννήθη ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ καὶ κατ' ἀρχὰς εἶχεν εἰσέλθει εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικόν, πολεμήσας κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ χωρισμοῦ καὶ φθάσας μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποπλοιάρχου. Παραιτηθεὶς κατόπιν ἀνεμίχθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν ἀπὸ τοῦ 1866 καὶ ἐγένετο ὁ κυριώτερος βοηθὸς τοῦ πατρός του ἐν τῷ «Κήρυκι τῆς Νέας Ὑόρκης», ἀναλαβὼν τὴν διαχείρισιν αὐτοῦ. Τῷ 1872, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του, ἀνέλαβε μόνος τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐφημερίδος ταύτης, τῆς ὁποίας τότε ἡ κυκλοφορία ἀνήρχετο εἰς 50.000 φύλλα ἡμερησίως καὶ ἔδωσεν εἰς αὐτὴν νέαν ὤθησιν, διὰ τῆς προσθήκης νέων ὑπηρεσιῶν καὶ τῆς δημιουργίας δύο νέων ἐκδόσεων, τοῦ Λονδίνου καὶ τῶν Παρισίων. Τῷ 1868 ἵδρυσε καὶ νέαν ἐφημερίδα ἑσπερινήν, τὸν «New York Evening Telegramm», καὶ κατέστη εἷς τῶν μεγαλυτέρων ἐπιχειρηματιῶν τοῦ τύπου ἐν Ἀμερικῇ.

Ἰάκωβος Μπέννετ.

Ἀκολουθῶν τὰ διδάγματα τοῦ πατρός του καὶ πεπροικισμένος μὲ ἰσχυρὰν θέλησιν, χαρακτὴρ δὲ ἐνθουσιώδης καὶ συγχρόνως θετικώτατος, ἐγένετο ὁ εἰσηγητὴς καὶ δημιουργός, κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, πολλῶν ἐκ τῶν μᾶλλον ἰδιορρύθμων καὶ ἐξαιρετικῶν ἐπιχειρήσεων. Ἡ μεγαλυτέρα τούτων ὑπῆρξεν ἡ ἀποστολή, τῷ 1875, δι' ἐξόδων του τοῦ ὀνομαστοῦ τότε ρεπόρτερ Στάνλεϋ εἰς ἀναζήτησιν τοῦ ἐξερευνητοῦ Λίβινγκστον, τὸν ὁποῖον πάντες ἐνόμιζον ἀπολεσθέντα καὶ ὁ ὁποῖος ὅμως ἀνευρέθη ἐν τέλει εἰς τὰ βάθη τῆς Ἀφρικῆς μετὰ πολλὰς καὶ καταπληκτικὰς περιπετείας. Ἡ ἐπιχείρησις αὕτη προσέθεσεν εἰς τὴν ἐφημερίδα του νέον κῦρος καὶ τὴν ὤθησεν εἰς πρωτοφανῆ ὕψη κυκλοφορίας. Τῷ 1879 ἐγένετο ἐπίσης ὁ εἰσηγητὴς τῆς ἰδέας καὶ ὁ χρηματοδότης τῆς ἀποστολῆς εἰς τὸν Πόλον τοῦ πλοίου «Ζαννέτ», ἡ ὁποία ἔσχε μὲν τραγικώτατον ἐπίλογον διὰ τῆς ἀπωλείας τῶν ἐξερευνητῶν, ἀλλὰ παρέσχε πολυτιμότατα ἐπιστημονικὰ διδάγματα, τὰ ὁποῖα ἐβοήθησαν, μετὰ 12 ἔτη, τὸν Νάνσεν εἰς τὴν εὐτυχῆ πολικήν του ἐξερεύνησιν. Τῷ 1883, συνεταιρισθεὶς μετὰ τοῦ πολυεκατομμυριούχου Τζὼν Μάκκαιυ, ἵδρυσε τὴν «Ἑταιρείαν τοῦ ἐμπορικοῦ καλωδίου», ἡ ὁποία ἐτοποθέτησε τὸ καλώδιον μεταξὺ Εὐρώπης καὶ Ἀμερικῆς, ὅπερ ἐχρησιμοποίησε πρῶτος εἰς εὐρυτάτην κλίμακα διὰ τὴν ἐφημερίδα του. Ὁ ἴδιος μετὰ 25 ἔτη ἐγένετο ὁ θερμότερος ὑπερασπιστὴς τοῦ ἀσυρμάτου τηλεγράφου, μὴ παραλείπων νὰ ἐφαρμόζῃ πᾶσαν νέαν ἐφεύρεσιν καὶ πᾶν νέον ἐπινοούμενον μέσον, ὅπερ θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ τὸν βοηθήσῃ εἰς τὴν ταχυτέραν καὶ πληρεστέραν ἐκμετάλλευσιν τῶν δημοσιογραφικῶν πληροφοριῶν. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Κούβας, ἐγένετο ἀφορμὴ νὰ ἐπιταχυνθῇ ὁ Ἰσπανοαμερικανικὸς πόλεμος, χάρις εἰς τὰς πληροφορίας περὶ τῆς σοβαρότητος τῆς ἐπαναστάσεως, τὰς ὁποίας ἠδυνήθη νὰ συγκεντρώσῃ. Κατὰ τὸν Σινοϊαπωνικὸν πόλεμον εἶχε κατορθώσει νὰ ἔχῃ τὰς καλυτέρας πληροφορίας ἐκ τῶν ἀσφαλεστέρων πηγῶν, διότι, ὅπως ἔγραφε κατόπιν ὁ ἴδιος, εἶχεν ἐπιτύχει νὰ ἔχῃ ὡς ἀνταποκριτὰς τὸν ναύαρχον τῆς Κίνας καὶ τὸν ναύαρχον τῆς Ἰαπωνίας. Ὁ Μπέννετ ἦτο ἐπίσης μανιώδης φίλαθλος, ἐκμεταλλευθεὶς καὶ ἐν τούτῳ τὸν ἐνθουσιασμὸν τοῦ κοινοῦ εἰς τὸν ἀθλητισμὸν πρὸς αὔξησιν κυκλοφορίας τῆς ἐφημερίδος του καὶ ἵδρυσε πλείστους ὅσους συλλόγους «οὐῶτερ-πόλο», ἐρετῶν, ποδηλατοδρομιῶν, αὐτοκινήτων, ἀεροπόρων κτλ., ὀργανώσας συγχρόνως καὶ σχετικοὺς ἀγῶνας, τοὺς ὁποίους ἠθλοθέτησε καὶ μὲ διάφορα κύπελλα, γνωστὰ ὑπὸ τὸ ὄνομά του. Κατὰ τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1896 ὁ Μπέννετ εἶχε μεταβῇ αὐτοπροσώπως εἰς τὴν Κρήτην καὶ εἶχεν ἐγκαταστήσει καὶ Ἕλληνας ἀνταποκριτὰς διὰ τὸν «Κήρυκα τῆς Νέας Ὑόρκης». Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἔζη εἰς Παρισίους καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπεστήριξε θερμῶς καὶ συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἔξοδον τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν ὑπὲρ τῆς Ἀντάντ. Τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς κολοσσιαίας περιουσίας του ἀφῆκε διὰ διαθήκης ὑπὲρ τῆς ἀπονομῆς συντάξεων εἰς τοὺς γέροντας δημοσιογράφους τῆς Νέας Ὑόρκης. Μ. Δ. Β.

— **Μπέννετ** (Bennett), ***Κάρολος-Ἐδουΐν***. Ἀμερικανὸς φιλόλογος (1858—1921). Διετέλεσε καθηγητὴς τῶν πανεπιστημίων Οὐΐσκονσιν, Μπράουν καὶ Κόρνελ. Διεκρίθη κυρίως διὰ τὰς μελέτας αὐτοῦ ἐπὶ τῆς λατινικῆς γλώσσης καὶ φιλολογίας, ἡ δὲ λατινικὴ γραμματική του (1895) ἀποτελεῖ ἓν τῶν κλασσικωτέρων εἰς τὸ εἶδος της ἔργων. Ἐξέδωκε πολλοὺς Λατίνους κλασσικοὺς συγγραφεῖς καὶ ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐξ ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Διδασκαλία τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς διὰ τὰς κατωτέρας σχολὰς» (1900) καὶ «Ἡ λατινικὴ γλῶσσα» (1907), ἀμφότερα ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπρίστολ, μετάφρασις ἀγγλιστὶ τῶν Χαρακτήρων τοῦ Θεοφράστου (1902) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Χάμμοντ, «Συντακτικὸν τῆς παλαιοτέρας λατινικῆς» (1910—1914), «Συντακτικὸν τῆς νεωτέρας λατινικῆς» (1912), μετάφρασις ἀγγλιστὶ τῶν ᾠδῶν τοῦ Ὁρατίου (1924) κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπέννετ** (Bennet), *Οὐΐλλιαμ-Στέρνταλ*. Ἄγγλος συνθέτης (1816—1875). Τῷ 1849 ἵδρυσεν ἐν Λονδίνῳ τὴν «Ἑταιρείαν Μπάχ», τῷ 1856 ὠνομάσθη διευθυντὴς ὀρχήστρας τῆς φιλαρμονικῆς ἑταιρείας, τῷ δὲ 1866 διευθυντὴς τῆς Βασιλικῆς μουσικῆς ἀκαδημίας. Περὶ τὰς δυσμὰς τοῦ βίου του ἔτυχε τοῦ τίτλου τοῦ ἱππότου *(σέρ)*. Τὰ σημαντικώτερα ἔργα του εἶναι: 4 κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον, 4 εἰσαγωγαί, 1 συμφωνία, 1 καντάτα, τὸ ὀρατόριον «Ἡ Σαμαρεῖτις», μουσικὴ διὰ τὸν «Αἴαντα», ἔργα μουσικῆς δωματίου, μελῳδίαι κτλ. Ὁ Μπέννετ, σπουδάσας εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Μένδελσων καὶ τοῦ Σοῦμαν, μεθ' ὧν ἰδιαιτέρως εἶχε συνδεθῇ, ἐνεστερνίσθη καὶ τὸ ὕφος αὐτῶν, χωρὶς ὅμως ν' ἀποβάλῃ καὶ τὴν προσωπικότητά του. Ἡ τέχνη του, σαφὴς καὶ διαυγής, ἀνήκει εἰς τὴν περίοδον τοῦ εὐγενοῦς ρωμαντισμοῦ. Γ. Σ.

— **Μπέννετ** (Bennett) ***κύπελλα***. Δύο ἔπαθλα τεθέντα ὑπὸ τοῦ *Γόρδωνος Μπέννετ* πρὸς βράβευσιν τῶν ἐν διεθνεῖ κατ' ἔτος ἀγῶνι πρωτευόντων ἀεροπόρων. Τὸ πρῶτον ἐκ τῶν ἐπάθλων τούτων, ἱδρυθὲν ἀπὸ τοῦ 1906, προωρίζετο διὰ τὰ (ἄνευ κινητῆρος) σφαιρικὰ ἀερόστατα, τὸ δὲ δεύτερον, ἱδρυθὲν τῷ 1909, διὰ τὰ ἀεροπλάνα. Κατὰ τοὺς ὑπὸ τοῦ ἀθλοθέτου τεθέντας ὅρους, οἱ ἀγῶνες θὰ διεξήγοντο μεταξὺ τῶν ἀεροναυτικῶν λεσχῶν τῶν ἀνηκουσῶν εἰς τὴν Διεθνῆ Ἀεροναυτικὴν Ὁμοσπονδίαν, θὰ ἐδικαιοῦντο δὲ νὰ μετέχουν αὐτῶν ἑκάστοτε ἀνὰ τρεῖς τὸ πολὺ ἀεροπόροι ἐξ ἑκάστης λέσχης. Ὁ νικητὴς θὰ ἐλάμβανε σημαντικὸν χρηματικὸν βραβεῖον, ἡ δὲ λέσχη, εἰς ἣν οὗτος θ' ἀνῆκε, πολυτελὲς κύπελλον, ἐξαίρετον ἀριστούργημα τέχνης· θὰ παρέμενεν ὅμως τὸ κύπελλον εἰς τὴν κατοχήν της μόνον μέχρι τῶν ἀγώνων τοῦ ἐπομένου ἔτους, ὁπότε θὰ μετεβιβάζετο εἰς τὴν νέαν νικήτριαν λέσχην. Ἂν ἐν τούτοις μία ἐκ τῶν λεσχῶν ἐπετύγχανε τρεῖς κατὰ συνέχειαν νίκας, θὰ ἐγίνετο ὁριστικῶς κυρία τοῦ κυπέλλου. Τοῦτο δὲ καὶ συνέβη τῷ 1920 διὰ τὸ κύπελλον τῶν ἀεροπλάνων, τὸ ὁποῖον ἐκερδήθη τότε διὰ τρίτην φορὰν καὶ τελειωτικῶς ὑπὸ τῆς ἀεροναυτικῆς λέσχης τῆς Γαλλίας. Τὸ κύπελλον τῶν ἀεροστάτων ἐξακολουθεῖ ἀκόμη νὰ ἐπαμείβεται μεταξὺ διαφόρων χωρῶν.

Παρεκτὸς τῶν ἀνωτέρω ὁ Μπέννετ εἶχε προσφέρει ἀπὸ τοῦ 1900 ἕτερον κύπελλον δι' ἀγῶνας αὐτοκινήτων, ὡς πρόσθετον ἐν ἀρχῇ ἔπαθλον τοῦ ἀγῶνος Παρισίων-Βορδὼ καὶ εἶτα τῶν ἀγώνων Παρισίων-Λυών, Παρισίων-Βιέννης, Παρισίων-Μαδρίτης. Τὸ κύπελλον τοῦτο, περιελθὸν διαδοχικῶς εἰς τὴν Γαλλίαν, τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν Γερμανίαν, ἐκερδήθη ὁριστικῶς ὑπὸ τῆς Γαλλίας τῷ 1905. —Ρ.

**Μπέννιγκσεν** (Bennigsen), ***Ἀλέξανδρος-Λέβιν, κόμις φὸν—***. Γερμανὸς πολιτικὸς (1809—1893). Ἐσπούδασε τὴν νομικήν, τῷ δὲ 1841 ἐξελέγη μέλος τῆς συνελεύσεως τῶν τάξεων τοῦ Ἀννοβέρου. Τῷ 1808 ἐσχημάτισε κυβέρνησιν, ἀναλαβὼν καὶ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Ὡς τοιοῦτος κατέβαλε πᾶσαν δυνατὴν προσπάθειαν νὰ ἑνώσῃ τὰ μικρὰ γερμανικὰ κράτη, ὅπως ἐκμηδενίσῃ τὴν ἐπικράτησιν τῆς Αὐστρίας καὶ τῆς Πρωσσίας. Τῷ 1852 καὶ 1853 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς διαίτης. Ὁ Μπέννιγκσεν προέβη εἰς πολλὰς μεταρρυθμίσεις, συνέβαλε δὲ μεγάλως εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς βιομηχανίας τῆς πατρίδος του. Α. Δ.

— **Μπέννιγκσεν** (Bennigsen), ***Λέων-Αὔγουστος-Θεόφιλος***, μετονομασθεὶς ἐν Ρωσίᾳ ***Λεόντιος Λεοντιέφσκυ***. Ρῶσος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Βρουνσβίκῃ τῷ 1745 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1826. Ἡ οἰκογένειά του ἀνῆκεν εἰς τὴν ἀρχαίαν γερμανικὴν ἀριστοκρατίαν, αὐτὸς δὲ εἰσήχθη εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν τῷ 1773 καὶ μετέσχε τῆς κατὰ τῶν Τούρκων ἐκστρατείας ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ ἀρχιστρατήγου Ρουμιάντζωφ, διακριθεὶς δὲ προήχθη εἰς συνταγματάρχην ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Ὀτσάκεφ. Μετέσχε κατόπιν τῶν ἐναντίον τῆς Πολωνίας ἐκστρατειῶν, διέπρεψεν εἰς διαφόρους μάχας καὶ πρὸς ἀμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του τῷ παρεχωρήθησαν μεγάλας ἐκτάσεις γαιῶν ἐκ τῶν δημευθέντων πολωνικῶν κτημάτων τοῦ κυβερνείου Μίνσκ. Ἀμέσως εἶτα ἀπεστάλη εἰς Περσίαν καὶ μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ πολέμου τούτου ἐτοποθετήθη εἰς τὸ διαμέρισμα τοῦ Καυκάσου προαχθεὶς εἰς στρατηγόν. Ἐπιστρέψας εἰς Πετρούπολιν ἀνεμίχθη σπουδαίως εἰς τὴν κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος Παύλου Α' συνωμοσίαν, τὴν ἀπολήξασαν μὲ τὴν δολοφονίαν αὐτοῦ. Ἐπὶ Ἀλεξάνδρου Α' ἀνέλαβε, τῷ 1805, τὴν διοίκησιν σώματος στρατοῦ, καὶ ἀπεστάλη πρὸς ἐνίσχυσιν τῆς Αὐστρίας, ἀλλ' ἔφθασεν ἀργά, διότι εἶχε συνομολογηθῆ ἤδη ἡ συνθήκη τοῦ Πρεσβούργου. Ἐπολέμησε τῷ 180[illegible] τοὺς Γάλλους εἰς Ἐϊλώ, παρὰ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατάρχου Κάμενσι, τὸν ὁποῖον διεδέχθη εἰς τὴν ἀρχιστρατηγίαν. Δὲν ὑπῆρξεν εὐτυχέστερος εἰς τὴν μάχην τοῦ Γκούσταντ κατὰ τοῦ Νέϋ καὶ εἰς τὴν τῆς Χάϊλσμπεργκ καὶ ἡττήθη κατὰ κράτος

Digitized by Google

εἰς Φρίεντλαντ. Μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τοῦ Τιλσὶτ ἀπεσύρθη εἰς τὰ κτήματά του καὶ κατὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Γάλλων εἰς Ρωσίαν ἀνέλαβεν ἐκ νέου στρατιωτικὴν ὑπηρεσίαν, ἐπολέμησεν εἰς Μποροντῖνο καὶ Ταρεντῖνο καὶ διέπρεψε κατὰ τὴν μάχην τῆς Λειψίας, ὡς καὶ εἰς τὰς κατόπιν τοιαύτας. Ἀποστρατευθεὶς τῷ 1818 ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ἐτυφλώθη δὲ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του. Ἔγραψε πόνημα: «Περὶ τῶν χρησίμων γνώσεων εἰς ἀξιωματικὸν τοῦ ἱππικοῦ». θ. β.

— **Μπέννιγκσεν** (Bennigsen) ***Ὄθων-Γουσταῦος.*** Γερμανὸς φιλέλλην ἐξ Ἀννοβέρου, λαβὼν μέρος εἰς τὰς περὶ τὰς Πάτρας στρατιωτικὰς ἐπιχειρήσεις μεθ' ἱκανῶν ἄλλων φιλελλήνων. Ἀπέθανεν ἐν Πάτραις τῷ 1830.

— **Μπέννιγκσεν** (Bennigsen), ***Ρουδόλφος φὸν—.*** Γερμανὸς πολιτικὸς (1824—1902). Κατ' ἀρχὰς ἀνώτερος δικαστικός, ἐξελέγη βραδύτερον μέλος τῆς δευτέρας βουλῆς τοῦ Ἀννοβέρου καὶ ἐγένετο ἀρχηγὸς τῆς δημοκρατικῆς παρατάξεως. Ἀπὸ τοῦ 1856 μέχρι τοῦ 1867 ὑπῆρξε πρόεδρος τοῦ «Nationalverein» (ἐθνικοῦ συλλόγου). Μέλος τοῦ Λάντταγ τῆς Πρωσσίας (1867—1883) καὶ τοῦ Ράϊχσταγ (1879—1883), ὑπῆρξεν ἀρχηγὸς τοῦ ἐθνικοῦ φιλελευθέρου κόμματος καὶ ὑπεστήριξε τὴν πολιτικὴν τοῦ Βίσμαρκ. Κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη ὁ Μπέννιγκσεν ἔλαβε λίαν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς συζητήσεις τοῦ Ράϊχσταγ. Α. Δ.

**Μπέννιγκτον** (Bennigton) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ ΝΔ. τμήματι τῆς πολιτείας *Βέρμοντ,* κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὐάλλουμσακ, 54 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Ἄλμπανυ καὶ ἐξυπηρετουμένη ὑπὸ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ρώτλαντ. Ἔχει πλεκτικάς, ἐριουργικάς, χαρτοποιητικὰς κ. ἄ. ἐγκαταστάσεις. Κάτ. (1920) 7.230. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῆς παρ' αὐτὴν συναφθείσης τὴν 16 Αὐγούστου 1777 μάχης, καθ' ἣν οἱ Ἀμερικανοὶ ἐνίκησαν τμῆμα τοῦ στρατοῦ τοῦ Ἄγγλου στρατηγοῦ Μπαργκόϋν. Χ. Δ.

**Μπὲν-Νταβὶντ** (Ben-David), ***Λάζαρος.*** Γερμανὸς φιλόσοφος καὶ μαθηματικός, γεννηθεὶς τῷ 1762 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1832. Κατήγετο ἐξ ἰσραηλιτικῆς οἰκογενείας καὶ ἐσπούδασε μαθηματικὰ καὶ φιλοσοφίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Γοτίγγης. Ἠσχολήθη ἰδιαιτέρως μὲ τὴν ἑρμηνείαν καὶ τὴν ὑπομνημάτισιν τῶν ἔργων τοῦ Κ. Καντίου, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξε μαθητής. Σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Vorlesungen über die Kritik der reinen Vernunft» (1795), «Vorlesungen über die Kritik der praktischen Vernunft» (1796), «Vorlesungen über die kritik der Urteilskraft» (1796), «Über der Ursprung unsrer Erkenntnis» (βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Βερολίνου, 1802) καὶ «Selbstbiographie» (1804). —Ω.

**Μπενουὰ** (Benoît), ***Κάρολος.*** Γάλλος φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1815. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Νανσὺ καὶ ἔγραψεν: «Ἱστορικὴ πραγματεία περὶ τῶν πρώτων ἐγχειριδίων ρητορικῆς μέχρι τοῦ Ἀριστοτέλους» (1846), σχόλια εἰς τὸ «De officiis» τοῦ Κικέρωνος (1846), «Ἱστορικὴ καὶ φιλολογικὴ πραγματεία περὶ τοῦ Μενάνδρου» (1854), «Περὶ τῶν δημωδῶν ᾀσμάτων εἰς τὴν ἀρχαίαν Ἑλλάδα» (1857), Ὁ Σατωβριάνδος: ἡ ζωὴ καὶ τὸ ἔργον του» (1865) κ.ἄ. Π. Ν. Π.

— **Μπενουὰ** (Benoît), ***Πέτρος.*** Γάλλος διηγηματογράφος καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1886. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του, διετέλεσεν ἐπί τι διάστημα ὑπάλληλος τοῦ ὑπουργείου τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως, συνεργαζόμενος ταυτοχρόνως εἰς διάφορα λογοτεχνικὰ περιοδικά. Τῷ 1914 ἐδημοσίευσε ποιητικὴν συλλογὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Diadumène». Ταύτην ἠκολούθησαν τὰ μυθιστορήματα «Königsmark» καὶ «L' Atlantide» (μεταφρασθὲν καὶ εἰς τὴν ἑλληνικήν), διὰ τὸ ὁποῖον, σχὸν μεγίστην ἐπιτυχίαν, ἔλαβε τὸ μέγα βραβεῖον τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τῷ 1918 ἐξέδωκε νέαν ποιητικὴν συλλογήν: «Les suppliantes». Ἄλλα του ἔργα εἶναι: «Pour Don Carlos», «Le lac salé», «La Chaussée des Géants», «L'oublié», «Mademoiselle de la Ferté», «La châtelaine du Liban», «Le puits de Jacob», «Alberte», «Aexelle» (1928) κλπ. Πλὴν τοῦ «L'Atlantide» μετεφράσθησαν εἰς τὴν ἑλληνικήν, εἰς ἐφημερίδας, καὶ τὰ μυθιστορήματά του: «Königsmark» καὶ «La châtelaine du Libane». Ὁ Μπενουὰ εἶναι εἷς ἐκ τῶν περισσότερον ἀναγινωσκομένων νέων συγγραφέων τῆς Γαλλίας, διακρίνεται δὲ διὰ τὴν πλαστικὴν καὶ γόνιμον φαντασίαν του, τὴν ἐνάργειαν τοῦ ὕφους καὶ τὴν λεπτὴν ψυχολογικὴν παρατήρησιν. Τῷ 1931 ὁ Μπενουὰ ἐγένετο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Θ. Π.

*Πέτρος Μπενουά.*

—**Μπενουᾶ** (Benoît), ***Πέτρος-Λεονάρδος-Λεοπόλδος,*** ὁ ἐπιλεγόμενος *Πέτερ Μπενουᾶ.* Βέλγος συνθέτης (1834—1901). Ὑπῆρξε μέχρι φανατισμοῦ Φλαμανδὸς μουσικός, χάρις δὲ εἰς τὰς ἐθνικιστικὰς ταύτας πεποιθήσεις τῷ ἀνετέθη τῷ 1867 ἡ διεύθυνσις τοῦ ᾠδείου τῆς Ἀμβέρσης. Τῷ 1882 ἐξελέγη μέλος τῆς Βελγικῆς Ἀκαδημίας. Εἰργάσθη εἰς ὅλα τὰ εἴδη καὶ συνέθεσε: «Te Deum», «Requiem», ἓν κοντσέρτο διὰ κλειδοκύμβαλον, κοντσέρτο διὰ πλαγίαυλον, τὰ φλαμανδικὰ ὀρατόρια: «Lucifer». «De Schelde», «Drama Christi», τὴν καντάταν διὰ διπλοῦν χορόν, μονῳδοὺς καὶ ὀρχήστραν: «De Oorlog»(=ὁ πόλεμος), τὸ ὀρατόριον διὰ παιδικὰς φωνὰς «De Maaiers», μίαν συμφωνίαν, μουσικὴν διὰ διάφορα δράματα, χορῳδίας, μοτέττα, μίαν λειτουργίαν, μελῳδίας «Sagen en Balladen» διὰ κλειδοκύμβαλον κ. ἄ. Ἔγραψεν ὡσαύτως τὰ λυρικὰ δράματα: «Isa», «Τὸ χωριὸ εἰς τὰ ὄρη», «Het Melief», «Αἱ τελευταῖαι ἡμέραι τῆς Πομπηΐας», (κατὰ τὸ μυθιστόρημα τοῦ Μπούλγουερ), καὶ «Karel van Gelderland». Εἰς τὰ δύο τελευταῖα ἔργα ἐπιχειρεῖ νὰ καινοτομήσῃ, εἰσάγων ἓν εἶδος μουσικῆς ἀπαγγελίας ὁμοιαζούσης πρὸς ὁμιλίαν, συνοδείᾳ ὀρχήστρας συμφωνικῶς ἐπεξειργασμένης. Γ. Σ.

—**Μπενουὰ** ***ντὲ Σαὶν-Μὼρ*** (Benoist de Saint-Maure). Γάλλος τρουβαδοῦρος τοῦ ΙΒ' αἰῶνος. Ἔγραψε «Χρονικὸν τῶν δουκῶν τῆς Νορμανδίας», δημοσιευθὲν τῷ 1836. Ἐπίσης ἀποδίδεται εἰς αὐτὸν ἔπος περὶ τῆς πτώσεως τῆς Τροίας, γραφὲν περὶ τὸ 1160 καὶ ἐκδοθὲν τῷ 1870. Π. Ν. Π.

**Μπενουατὸν** ***ντὲ Σατωνὲφ*** (Benoiston de Ghâteauneuf), ***Λουδοβῖκος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος οἰκονομολόγος καὶ στατιστικὸς (1776—1856). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ μετέσχε διαφόρων ἐκστρατειῶν ὡς στρατιωτικὸς χειρουργός. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους (1810) ἐπεδόθη εἰς ἱστορικὰς μελέτας καὶ κατόπιν ἠσχολήθη ἀποκλειστικῶς μὲ τὴν στατιστικὴν καὶ πολιτικὴν οἰκονομίαν. Ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν (1833) καὶ ἔγραψε: «Περὶ τῆς θνησιμότητος τῶν γυναικῶν ἀπὸ 40 ἕως 50 ἐτῶν» (1822), «Περὶ τῶν μεταλλαγῶν τὰς ὁποίας ὑφίστανται οἱ νόμοι τῆς θνησιμότητος ἐν Εὐρώπῃ ἀπὸ ἡμίσεος αἰῶνος» (1826), «Περὶ τοῦ ἀποικισμοῦ τῶν κατοίκων καὶ τῆς ἐξ αὐτοῦ ὠφελείας τῆς Γαλλίας» (1827), «Περὶ τῆς ἐπιδράσεως ὡρισμένων ἐπαγγελμάτων εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς φυματιάσεως», «Περὶ τῆς διαρκείας τοῦ βίου τῶν σοφῶν καὶ λογίων», «Περὶ τῆς γονιμότητος ἐν Εὐρώπῃ». Σπουδαιοτάτη εἶναι ἡ συνεργασία του εἰς τὰ «Χρονικὰ Ὑγιεινῆς». Π. Ν. Π.

**Μπενουβὶλλ** (Benouville), ***Ἰωάννης-Ἀχιλλεύς.*** Γάλλος ζωγράφος (1815—1891). Τῷ 1845 ἐτιμήθη διὰ τοῦ πρώτου μεγάλου βραβείου τῆς ἱστορικῆς τοπιογραφίας, διήγαγε δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ἐν Ρώμῃ, ὅπου συχνάκις μετέσχε τῶν παρισινῶν ἐκθέσεων διὰ κλασσικιζουσῶν τοπογραφιῶν.

— **Μπενουβὶλλ** (Benouville), ***Φραγκῖσκος-Λέων.*** Γάλλος ζωγράφος (1821—1859), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Πικό, ἐνεφανίσθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1838. Τῷ 1845 ἐτιμήθη διὰ τοῦ πρώτου μεγάλου βραβείου τῆς ζωγραφικῆς ἐπὶ ἱστορικῶν θεμάτων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Ἑρμῆς καὶ ὁ Ἄργος», «Οἱ μάρτυρες ὁδηγούμενοι εἰς τὸ ρωμαϊκὸν ἀμφιθέατρον», «Ὁ ἅγιος Φραγκῖσκος τῆς Ἀσσίζης μεταφερόμενος ἑτοιμοθάνατος εἰς τὴν Παναγίαν τῶν Ἀγγέλων καὶ εὐλογῶν τὴν Ἀσσίζην» (ὁ πίναξ οὗτος ἀπόκειται νῦν εἰς τὸ Λοῦβρον), «Ἡ ἁγία Κλάρα δεχομένη τὸ σῶμα τοῦ ἁγίου Φραγκίσκου» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

**Μπενουδάκης.** Ὄνομα μιᾶς τῶν διασημοτέρων πολεμικῶν οἰκογενειῶν τῆς Κρήτης (βλ. λ. *Κριάρης*).

**Μπενουέ,** ἢ ***Μπινουὲ*** (Benuë, ἢ Binuë) *[Γεωγρ.].* Ποταμὸς τῆς Ἀφρικῆς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων παραποτάμων τοῦ Νίγηρος, μήκους 1400 χλμ., πηγάζων ἐν Ἀνταμαούα εἰς 7° 50' Β. πλάτους. Ρέων πρὸς Δ. διὰ μέσου τῆς Ἰόλα, διασχίζει τὸ Β. τμῆμα τῆς Βρεττανικῆς Νιγηρίας καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Νίγηρα κατέναντι τῆς Λοκότζα, Κυριώτεροι παραπόταμοι τούτου εἶναι οἱ: *Γκόνγκολα Καντέρα* καὶ *Σούνγκα,* ἐρχόμενοι ἀπὸ Β., καὶ οἱ *Φάρος, Ταράμπα* καὶ *Κατσένα* ἀπὸ Ν. Ἔχει εὐφορωτάτην λεκάνην, ὁ δὲ ρους αὐτοῦ εἶναι προσφορώτατος εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν συγκοινωνιῶν Σουδὰν-Κεντρικῆς Ἀφρικῆς. Χ. Δ.

**Μπένρατ** (Benrath) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Ρήνου, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κολωνίας-Ντύσσελντορφ. Κάτ. 26.600. Ἔχει ἀκμάζουσαν μεταλλουργίαν καὶ μεγαλοπρεπὲς πάρκον καὶ ἀνάκτορον τοῦ ἐκλέκτορος Καρόλου-Θεοδώρου (1756). —Π.

**Μπὲνς** (Binch) *[Γεωγρ.].* Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀννωνίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Αἴν. Ἔχει διυλιστήρια, ἐργαστήρια κεντημάτων, ὑελουργεῖα, βυρσοδεψεῖα, χρωματοποιεῖα κλπ., ἰδίως ὅμως εἶναι γνωστὴ διὰ τὰς ὀνομαστὰς φερωνύμους δαντέλλας της, αἵτινες ἦσαν λίαν διαδεδομέναι κατὰ τὸν ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνα. Κάτ. 12.000. Χ. Δ.

**Μπένσαϊμ** (Bensheim) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Ἔσσῃ. Κάτ. 9.636. Ἔχει ἀκμάζουσαν βιομηχανίαν χάρτου καὶ καπνοῦ καὶ εἶναι οἰκονομικὸν κέντρον τῆς ὁμωνύμου περιφερείας. Π. Ν. Π.

**Μπενσερὰντ** (Benserade ἢ Bensseradde), ***Ἰσαὰκ ντὲ —.*** Γάλλος ποιητὴς (1613—1691). Ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας προερχόμενος, ὑπεστηρίχθη ὑπὸ τοῦ Ρισελιέ, τοῦ ναυάρχου Μπρεζέ, τοῦ Μαζαρίνου, Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ', Ἄννας τῆς Αὐστριακῆς, Χριστίνας τῆς Σουηδίας κ.ἄ. καὶ διῆλθε τὸν βίον του ἐν μεγίστῃ εὐμαρείᾳ. Τῷ 1674 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ὑπῆρξεν ἀνταγωνιστὴς τοῦ Λὰ Μπρυγιέρ, τοῦ Ρακίνα τοῦ Μολιέρου καὶ τοῦ Μπουαλώ, ὅστις ἔκρινεν, ἐν τούτοις, εὐμενῶς τὸν Μπενσεράντ. Τὸ πλῆθος τῶν θαυμαστῶν του, ἡγουμένων τῶν κυριῶν Ντὲ Σκυντερὶ καὶ Μοντωζιέ, διεξήγαγε περιφήμους φιλολογικὰς διαμάχας, ἐξ αἰτίας τῶν δύο σοννέτων αὐτοῦ «Ἰὼβ» καὶ «Οὐρανία». Ἐν γένει ἡ ἐπίδρασίς του εἰς τοὺς φιλολογικοὺς καὶ αὐλικοὺς κύκλους τῆς ἐποχῆς ὑπῆρξε σημαντική. Σήμερον ὅμως θεωρεῖται ὡς μικρᾶς ἀξίας ποιητής. Ἔγραψε διάφορα θεατρικὰ ἔργα: «Κλεοπάτρα», «Ὁ θάνατος τοῦ Ἀχιλλέως», «Μελέαγρος», μετέφρασεν ἀνεπιτυχῶς τὰς «Μεταμορφώσεις» τοῦ Ὀβιδίου κ. ἄ. Π. Ν. Π.

**Μπένσης,** ***Βλαδίμιρος.*** Ἰατρός, υἱὸς τοῦ Γ. Μπένση, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1877. Ἀριστοῦχος διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων, εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν κλινικὴν τοῦ Dieulafoy, κατόπιν δὲ προσελήφθη συνεργάτης τοῦ καθηγητοῦ Chantemesse ἐν τῷ ἐργαστηρίῳ τῆς πειραματικῆς καὶ συγκριτικῆς παθολογίας, ὅτε καὶ ἐδημοσίευσε τὰς πρώτας ἐργασίας αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ καὶ τῆς χολέρας. Ἐπανελθὼν εἰς Ἀθήνας προσελήφθη ὡς ἐπιμελητὴς τῆς παθολογικῆς κλινικῆς τοῦ πανεπιστημίου (1904), κατόπιν ἐγένετο ὑφηγητὴς (1909), τακτικὸς καθηγητὴς τῆς εἰδικῆς νοσολογίας καὶ θεραπευτικῆς καὶ τέλος τακτικὸς καθηγητὴς τῆς παθολογικῆς κλινικῆς (1919). Αἱ κυριώτεραι ἐργασίαι αὐτοῦ εἶναι: «Μικροβιολογικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τῆς χλωρίδος τῶν ἐγγύων γυναικῶν», «Ἡ θεραπεία τῶν χρονίων νεφριτίδων διὰ τῆς ἀποφλοιώσεως τῶν νεφρῶν», «Συμβολὴ εἰς τὴν μελέτην τοῦ μελιταίου πυρετοῦ», «Συμβολὴ εἰς τὴν μελέτην τοῦ πνευμονοτύφου» κ. ἄ. Ἐξέδωκεν ὡσαύτως «Ἐγχειρίδιον κλινικῆς διαγνωστικῆς» (γ' ἐκδ. 1923). Προσκληθεὶς ὑπὸ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Παρισίων ἔδωκεν αὐτόθι σειρὰν διαλέξεων. — Ω.

— **Μπένσης,** ***Γεώργιος.*** Δικαστικός, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις (1838—1914). Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν νομικῶν σπουδῶν του διωρίσθη ἀνακριτὴς καὶ ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ εἰσαγγελέως ἐφετῶν. Ἐν Κερκύρᾳ ὑπηρετῶν ἐνυμφεύθη τὴν παρεπιδημοῦσαν ἐκεῖ μονογενῆ θυγατέρα τοῦ μεγάλου Ρώσου συγγραφέως Μπελίνσκυ. Ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας πολυκρότους δίκας τῆς ἐποχῆς του, ὡς εἰς τὴν λῃστείαν τοῦ Δήλεσι, τὰ Βελεντζικά, τὰ Κεφαλληνιακά, τὰ ἑβραϊκὰ τῆς Κερκύρας, τὴν δίκην τῶν ὑπουργῶν κτλ. Μετὰ τὴν ἀποχώρησίν του ἐκ τῆς ὑπηρεσίας καὶ καθ' ὃν χρόνον ἰδιώτευεν ἐν Παρισίοις, προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Γεωργίου, ὑπάτου ἁρμοστοῦ ἐν Κρήτῃ, ὅπως ὀργανώσῃ τὴν ἐκεῖ δικαιοσύνην, διορισθεὶς ἅμα καὶ γενικὸς εἰσαγγελεὺς τῆς νήσου. Διαφωνήσας πρὸς τὸν πρίγκιπα παρῃτήθη καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Ἀθήνας, ἔνθα ἰδιωτεύων ἀπεβίωσεν. Αἱ ἀγορεύσεις του εἰς διαφόρους δίκας ἀνέδειξαν αὐτὸν καὶ δικανικὸν ρήτορα. — Ω.

**Μπένσον** (Benson), ***Ἀμβρόσιος.*** Φλαμανδὸς ζωγράφος λομβαρδικῆς πιθανῶς καταγωγῆς, ζήσας ἐν Βρούγῃ κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1550. Τὰ ἔργα του ἔχουσιν ὑποστῆ τὴν ἐπίδρασιν ἀφ' ἑνὸς μὲν τοῦ Γ. Νταβὶντ καὶ ἀφ' ἑτέρου τῶν Ἰταλῶν καλλιτεχνῶν. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν ἀποδιδομένων εἰς αὐτὸν ἔργων εἶναι: «Deipara Virgo, ἢ Οἱ προφῆται εὐαγγελιζόμενοι τὴν Παρθένον» (μουσεῖον τῆς Ἀμβέρσης), τὸ ὁποῖον εἶναι ὑπογεγραμμένον διὰ τῶν ἀρχικῶν Α. Β., μία «Κεφαλὴ Σιβύλλης» (συλλογὴ Hainauer, Βερολῖνον), ἡ ὁποία ἐνομίζετο ἐσφαλμένως ὡς προσωπογραφία τῆς Ζακελίνας τῆς Βαυαρίας, ἑτέρα «Σίβυλλα» (ἐν τῇ αὐτῇ συλλογῇ), «Ὁ βίος τῆς ἁγίας Ἄννης» (μουσεῖον Πράντο, Μαδρίτης), πολύπτυχον εἰς πέντε φύλλα, προερχόμενον ἐκ Σεγοβίας, «Ἡ ἁγία Οἰκογένεια» (μουσεῖον Νυρεμβέργης), «Ἡ Παρθένος μεταξὺ δύο γυναικῶν ἁγίων» (συλλογὴ Μαρτὲν Λὲ Ρουά, Παρίσιοι), «Ἡ Μαγδαληνὴ ἀναγινώσκουσα» (ἐν τῇ αὐτῇ συλ-

Digitized by Google

λογῇ), «Ἡ ἀνάπαυσις ἐν Αἰγύπτῳ» (παλάτσο Ντουράτσο, Γένουα) καί τινες προσωπογραφίαι. χ. δ.

— **Μπένσον** (Benson), ***Ἀρθοῦρος-Χριστόφορος.*** Ἄγγλος λόγιος (1862—1925). Τὸ πρῶτον φιλολογικόν του ἔργον εἶναι τὰ «Τὰ ἀπομνημονεύματα τοῦ Ἀρθούρου Ἅμιλτον» (1866), ἔργον ὅπερ ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Χριστόφορος Κάρρ.* Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ποιήματα» (1893), «Λυρικὰ» (1895), «Ὁ διδάσκαλος» (1902), μονογραφίαι περὶ τοῦ Ροσέττι (1904), τοῦ Ἐδουάρδου Φὶτς-Τζέραλντ (1905), τοῦ Οὐῶλτερ Πέητερ (1906), «Ἀπὸ τὸ παράθυρον ἑνὸς κολλεγίου», ὅπερ ἔσχεν ἐξαιρετικὴν ἐπιτυχίαν ἐν Ἀμερικῇ.

— **Μπένσον** (Benson), ***Γουλιέλμος - Σέπχερντ.*** Ἀμερικανὸς ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1855. Τῷ 1915, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντιναυάρχου, διωρίσθη ἀρχηγὸς τῶν ναυτικῶν δυνάμεων τῆς πατρίδος του. Ἀκολούθως διετέλεσε ναυτικὸς ἀντιπρόσωπος τῆς Ἀμερικῆς κατὰ τὴν σύνταξιν τῶν ὅρων τῆς ἀνακωχῆς (1918) καὶ ναυτικὸς σύμβουλος τῆς ἀμερικανικῆς ἀντιπροσωπείας διὰ τὴν εἰρήνην. Τῷ 1919 ἀπεστρατεύθη αὐτεπαγγέλτως καὶ τῷ 1920 διωρίσθη πρόεδρος τῆς ναυτικῆς ἐπιτροπῆς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ προήχθη συγχρόνως εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ ναυάρχου.

— **Μπένσον** (Benson), ***Ἐδουάρδος-Φρειδερῖκος.*** Ἄγγλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἐπεσκέφθη τὰς Ἀθήνας καὶ τὴν Αἴγυπτον, καὶ ἔγραψε τὰ μυθιστορήματα «Dodo» (1893), «Ὁ τρυγητὸς τῶν ἀμπέλων» (1898), «The Capsina» (1899), ἔργα ἐν οἷς τὰ θέματα εἶναι εἰλημμένα ἐκ τῆς νεωτέρας Ἑλλάδος, «Οἱ Τσάλλουαρ» (1904), «David of King's» (1924), «Ὁ μεσώροφος» (1926).

— **Μπένσον** (Benson), ***Ροβέρτος-Οὖγος.*** Ἄγγλος κληρικὸς καὶ μυθιστοριογράφος (1871—1914). Ἐσπούδασεν ἐν Κανταβριγίᾳ, τῷ δὲ 1903, ἀσπασθεὶς τὸ καθολικὸν δόγμα, ἐγένετο ἱερεὺς καὶ διεκρίθη ὡς δεινὸς ἱεροκήρυξ. Ἐπίσης διεκρίθη ὡς συγγραφεύς, γράψας ἱστορικὰ ἰδίως μυθιστορήματα, τὰ ὁποῖα σκοπὸν εἶχον τὴν διάδοσιν τοῦ καθολικισμοῦ. Ἔγραψε: «Τὸ ἀόρατον φῶς», «Οἱ αἰσθηματίαι», «Οἱ κύριοι τοῦ κόσμου», «Ἐκ ποίας ἐξουσίας;», «Ριχάρδος Ράϋναλ», «Ἡ τραγῳδία τῆς βασιλίσσης».

—**Μπένσον** (Benson), ***Φρὰνκ-Οὐέστον.*** Ἀμερικανὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Μπουλανζὲ καὶ τοῦ Λεφέμπρ, ἐν Παρισίοις. Τῷ 1900 ἔλαβε τὸ ἀργυροῦν μετάλλιον ἐν τῇ καλλιτεχνικῇ ἐκθέσει τῶν Παρισίων, τῷ 1910 τὸ βραβεῖον Πόττερ Παλμὲρ τοῦ Σικάγου καὶ τῷ 1919 τὸ βραβεῖον Γουλιέλμου Κλὰρκ καὶ τὸ χρυσοῦν μετάλλιον Κόρκοραν. Ἐξελέγη μέλος τῶν «Δέκα Ἀμερικανῶν» καὶ τῆς Ἐθνικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Σχεδίου. Φημίζεται πρὸς τούτοις διὰ τὰς χαλκογραφίας καὶ τὰς ὑδατογραφίας του. γ. ι. β.

**Μπενσουᾶ** (Binchois), ***Ζὶλλ ἢ Αἰγίδιος.*** Μουσουργὸς τῆς γαλλο-βελγικῆς σχολῆς (1400—1460). Εἶναι ἐκ τῶν πρώτων συνθετῶν, οἵτινες παρήγαγον ἔργα ἄξια προσοχῆς. Ἠσχολήθη μὲ τὴν θρησκευτικὴν μουσικήν, διέτριψε δὲ καὶ εἰς τὸ τεχνικὸν τραγούδι, γράψας πλεῖστα ροντὼ καὶ μπαλλάντας εἰς ὕφος κομψὸν καὶ εὔχαρι. Ἐτελειοποίησεν ἐπίσης τὴν σημειογραφίαν καὶ τὴν πολυφωνίαν. Ἐκ τῶν ἔργων του σῴζονται πλεῖστα μοτέττα καὶ 52 κοσμικαὶ συνθέσεις. γ. σ.

**Μπὲν-Σουὲφ** *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἄνω Αἰγύπτου (βλ. λ. *Βένι-Σουέφ*).

**Μπέντα** (Benda). Μεγάλη οἰκογένεια μουσικῶν ἐκ Βοημίας, ἧς κυριώτερα μέλη ὑπῆρξαν:

— 1) ***Φραγκῖσκος*** (1709—1786). Εἷς τῶν μεγίστων βιολιστῶν τῆς ἐποχῆς του, θεωρούμενος ὡς ὁ ἱδρυτὴς τῆς σχολῆς τοῦ βιολίου ἐν Γερμανίᾳ. Ἔγραψε 2 κοντσέρτα καὶ πλείστας σονάτας διὰ βιολίον, συμφωνίας, σπουδὰς διὰ βιολίον κτλ.

— 2) ***Ἰωάννης,*** ἀδελφὸς τοῦ ἀνωτέρω (1713—1752). Ὑπῆρξεν ἐπίσης διακεκριμένος βιολιστὴς καὶ συνθέτης.

— 3) ***Γεώργιος,*** ἀδελφὸς τῶν προηγουμένων (1722—1795). Συνέθεσε τὰ μελοδράματα: «Ἡ Ἀριάδνη εἰς Νάξον», «Μήδεια», «Πυγμαλίων», «Φίλων καὶ Θεώνη», ἅτινα τοῦ προσεπόρισαν διεθνῆ φήμην.

— 4) ***Ἰωσήφ,*** νεώτερος ἀδελφὸς τῶν ἀνωτέρω (1724—1804), διαδεχθεὶς τὸν ἀδελφόν του Φραγκῖσκον, ὡς κορυφαῖος βιολιστὴς ἐν τῇ αὐλῇ Φρειδερίκου Β΄ τῆς Πρωσσίας.

— 5) ***Φρειδερῖκος - Γουλιέλμος - Ἑρρῖκος.*** Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ *Φραγκίσκου*, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Πότσδαμ (1745—1814). Διακεκριμένος βιολιστής, κλαβικυβαλιστὴς καὶ ὀργανοκρούστης, ἐγένετο εὐφήμως γνωστὸς καὶ ὡς συνθέτης διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Ὀρφεύς», «Ἡ κόρη τῶν ἀνθέων», διὰ δύο ὀρατορίων καὶ πολλῶν ἄλλων ἔργων ὀργανικῆς μουσικῆς.

— 6) ***Κάρολος - Χέρμαν - Ἑρρῖκος,*** ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1748—1836). Ἐκέκτητο ἐξαιρετικὸν τάλαντον βιολιστοῦ καὶ διετέλεσε κορυφαῖος ἐν τῇ ὀρχήστρᾳ τοῦ βασιλικοῦ μελοδράματος τοῦ Βερολίνου. Ἔγραψε τὰ κωμικὰ μελοδράματα: «Ἡ ἐμποροπανήγυρις τοῦ χωριοῦ», «Ρωμαῖος καὶ Ἰουλιέττα», τὰς καντάτας: «Θρῆνοι τοῦ Ἀμύντα». «Κέφαλος καὶ Ἠώς», «Θρῆνος τοῦ Μπέντα», σονάτας, 8 συμφωνίας κ. ἄ.

— 7) ***Φρειδερῖκος - Λουδοβῖκος,*** υἱὸς τοῦ *Γεωργίου* (1746—1793). Ἔγραψε τὰ μελοδράματα: «Τὰ ἀρραβωνιάσματα», «Ἡ μικρὴ Μαρία», «Ὁ κουρεὺς τῆς Σεβίλλης», κοντσέρτα διὰ βιολίον, καντάτας κ. ἄ. γ. σ.

**Μπεντὰ** (Benda), ***Ἰουλιανός.*** Γάλλος συγγραφεύς, μυθιστοριογράφος καὶ κριτικός, γεννηθεὶς τῷ 1868. Κατὰ πρῶτον ἔγραψε σειρὰν ἄρθρων εἰς τὴν «Λευκὴν ἐπιθεώρησιν» ἐπὶ τῆς ὑποθέσεως Δρεϋφούς. Ἀργότερον συνειργάσθη τακτικῶς εἰς τὰ «Φύλλα τοῦ δεκαπενθημέρου» τοῦ Καρόλου Πεγκύ. Τῷ 1912 ἐδημοσίευσε «Τὴν χειροτονίαν» ἀναλυτικὸν μυθιστόρημα μὲ βάθος καὶ ἀκρίβειαν ἐκφράσεως, συγχρόνως δὲ ἐνεφανίσθη ὡς πεισματώδης καὶ προκατειλημμένος πολέμιος τοῦ Μπέρξον. Τὸ σχετικὸν ἔργον του «Ὁ Μπερξονισμὸς ἢ φιλοσοφία τῆς κινήσεως» (1912) ἠκολούθησε δεύτερον «Ἐπὶ τῆς ἐπιτυχίας τοῦ μπερξονισμοῦ» (1917). Τὸν μπερξονισμὸν θεωρεῖ ὡς ἀποθέωσιν τῶν κατωτέρων ἀλόγων ἐνστίκτων, τοῦ ἀντιτάσσει δὲ ὀρθολογισμὸν τῶν ἐννοιῶν ἐνθυμίζοντα τὸν Καρτέσιον ἄνευ οὐδεμιᾶς πρωτοτυπίας. Ἐναντίον τῶν τριῶν ἀντιορθολογιστικῶν συγγραφέων Μπέρξον, Μπαρρὲς καὶ Μωρρὰς ἔγραψε τῷ 1929 «Τὸ τέλος τοῦ αἰωνίου». Ἄλλα ἔργα του, πλήρη εὐφυοῦς κριτικῆς καὶ εἰλικρινοῦς ἠθικῆς ἀγανακτήσεως, εἶναι: τὸ μυθιστόρημα «Les Amorandes» (1922), ἡ συλλογὴ διηγημάτων «Σταυρὸς ρόδων» (1923), «Belphegor», μελέτη ἐπὶ τῆς αἰσθητικῆς τῆς συγχρόνου γαλλικῆς κοινωνίας, «Τὰ αἰσθήματα τοῦ Κριτία» (1913), «Διάλογος τοῦ Ἐλευθερίου, Ἡ προδοσία τῶν γραφέων» (1927), λαμπρὸν καὶ σύντομον ἔργον, ὅπου ἐπιτίθεται ἐναντίον τῆς αἰσχρᾶς ὑποταγῆς του πνεύματος εἰς τὰ πολιτικὰ πάθη, τοῦθ' ὅπερ θεωρεῖ ὡς πραγματικὴν ἠθικὴν προδοσίαν. ε. λ.

**Μπενταριὲ** (Bédarieux) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἐρώ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ὄρμπ. Εἶναι σταθμὸς τῶν μεσημβρινῶν σιδηροδρόμων καὶ ἔχει κλωστήρια ἐρίου, μεταλλεῖα βωξίτου, διυλιστήρια κλπ. Κάτ. 6.130. χ. δ.

**Μπεντγουέλλτυ** (Bedwelly) *[Γεωγρ.].* Δῆμος τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Μονμάουθ*, περιλαμβάνων 2 πόλεις καὶ 3 χωρία, κείμενα 11 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Πόντυπουλ. Ἔχει σιδηροδρομικὰς συγκοινωνίας, γαιανθρακωρυχεῖα, ὑψικαμίνους κλπ. Κάτ. 22.547. χ. δ.

**Μπέντγουωρθ** (Bedworth) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Οὐώρουικ*, κειμένη 5 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Νιουνῆτον, ἐπὶ τῆς διώρυγος Κόβεντρυ. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, γαιανθρακωρυχεῖα καὶ μεταλλεῖα σιδήρου, ὡς καὶ βιομηχανίας πλίνθων, πίλων, ταινιῶν κλπ. Κάτ. 9.695. χ. δ.

**Μπεντέκοβιτς** (Bedekovics). Εὐγενὴς οὐγγρικὴ οἰκογένεια, καταγομένη ἐκ Κροατίας. Τὰ σπουδαιότερα τῶν μελῶν αὐτῆς εἶναι:

— 1) ***Φραγκῖσκος*** (1755—1825). Τῷ 1790 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῶν Κροατῶν, κατέλαβε δὲ διαδοχικῶς πλεῖστα ἀνώτατα ἀξιώματα ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Φραγκίσκου Α΄, τὸν ὁποῖον ἠκολούθησεν εἰς ὅλας τὰς ἐκστρατείας του (1809, 1813 καὶ 1814) κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν Ναπολεοντείων πολέμων.

— 2) ***Καζιμὶρ*** (1728—1781). Συγγραφεὺς καὶ διευθυντὴς τοῦ ἐν Βιέννῃ κροατικοῦ κολλεγίου, ἐκδώσας ἀξιολογώτατον τόμον δραμάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Hilaria Collegii Croatici ante cineres, seu dramata de Josepho, S. Bernardo et Justino» (1778). χ. δ.

**Μπεντὲλ** (Bedel), ***Μαυρίκιος.*** Γάλλος λογοτέχνης, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1884. Διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα εἰς τὸ κολλέγιον Σαὶν-Κρουά, καὶ ἐσπούδασεν ἰατρικὴν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν σπουδῶν του ἐπεδίδετο συνάμα εἰς τὴν λογοτεχνίαν, ἐμφανιζόμενος ὡς συνεργάτης ἀπὸ τῶν στηλῶν πλείστων φιλολογικῶν περιοδικῶν, κυρίως δὲ τοῦ ὑπὸ τοῦ Κορτὼ διευθυνομένου «Σεχεραζάντ». Τῷ 1913 ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην ἐπίτομον συλλογὴν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ τετράδιον τοῦ Φάνη», ἡ ὁποία ἔτυχεν εὐμενεστάτης ὑποδοχῆς. Μετασχὼν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐτραυματίσθη σοβαρῶς (1915), μετὰ δὲ τὴν ἴασίν του μετέβη εἰς Μαρόκκον, ὅπου εἰργάσθη ὡς ἰατρὸς τῆς Λεγεῶνος τῶν ξένων. Κατὰ τὴν ἐν Μαρόκκῳ διαμονήν του ἔγραψε πλεῖστα πολεμικὰ ποιήματα, δημοσιευθέντα εἰς μαροκκινὰ περιοδικά.

Μετὰ τὸ τέλος τοῦ πολέμου ἐταξίδευσεν (1920) εἰς Νορβηγίαν, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Γαλλίαν ἔγραψε τὸ βραβευθὲν (1927) μυθιστόρημά του, «Ὁ Ἱερώνυμος εἰς $60^{\circ}$ Β. πλάτους», τὸ ὁποῖον ἔτυχεν ἐνθουσιώδους ἐκ μέρους τῶν κριτικῶν καὶ τοῦ κοινοῦ ὑποδοχῆς. Τῷ 1928 ἐδημοσίευσε νέον μυθιστόρημα ὑπὸ τὸν τίτλον «Μολινώφ», «Ἔντρ-ὲ-Λουάρ», τὸ ὁποῖον ὅμως ἔσχε μικροτέραν τοῦ πρώτου ἐπιτυχίαν. χ. δ.

**μπεντέλι-ἀσκερὶ** (τό)· ὁ *κεφαλικὸς* φόρος (βλ. λ.).

**Μπέντεμανν** (Bendemann), ***Ἐδουάρδος.*** Γερμανὸς ζωγράφος (1811—1889). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σάντοβ, οὗ ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα, καὶ διεκρίθη εἰς τὴν ἐκτέλεσιν διακοσμητικῶν συνθέσεων καὶ πινάκων ἐπὶ θρησκευτικῶν καὶ ἱστορικῶν θεμάτων. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Δρέσδης καὶ διεκόσμησε διὰ τοιχογραφιῶν τὴν αἴθουσαν τοῦ θρόνου τοῦ βασιλικοῦ πύργου τῆς πόλεως ταύτης. Αἱ τοιχογραφίαι αὗται, ποικίλου περιεχομένου, ἀναπαριστάνουσι γενικῶς τὴν «Πρόοδον τοῦ ἀνθρωπίνου γένους». «Ὁ Ἱερεμίας ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς Ἱερουσαλὴμ» καὶ «Οἱ Ἰουδαῖοι ἐν ἐξορίᾳ» εἶναι ἕτερα δύο λίαν ἀξιομνημόνευτα ἔργα τοῦ Μπέντεμανν. ι. μ. π.

**μπεντένι** (τό)· (ἀραβ. *μπεντὲν*=σῶμα) θώραξ, ἔπαλξις.

**Μπεντένι** *[Γεωγρ.].* —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Διακόπι* (βλ. λ.).

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Σκοπὴ* (βλ. λ.).

— 3) Χωρίον τῆς κοινότητος Βουπρασίου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 263.

— 4) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Πεύκη* (βλ. λ.).

**Μπέντερ** (Bender), καὶ ρωσ. ***Μπεντέρυ*** *[Γεωγρ.].* Πόλις καὶ φρούριον τῆς Ρουμανίας ἐν Βεσσαραβίᾳ καὶ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Δνειστέρου. Κάτ. 38.630. Κεῖται ἐπὶ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς καὶ ἔχει βιομηχανίαν χάρτου καὶ κατεργασίας σιδήρου καὶ δερμάτων, ὀρυχεῖα ἅλατος, καὶ παράγει σιτηρὰ καὶ οἴνους. π. ν. π.

**μπεντὲρ** *[Γεωγρ.].* Λέξις περσική, σημαίνουσα λιμήν, ἀποβάθρα. Ἀπαντᾷ ὡς τοπωνύμιον καὶ ὡς πρῶτον συνθετικὸν περσικῶν τοπωνυμίων. ν. μ.

**Μπεντὲρ** *[Γεωγρ.].* Ποτάμιος λιμὴν τοῦ Δνιέστρου εἰς 70 μίλλ. ἀπὸ τοῦ στομίου τοῦ Τσαριγράδ, διὰ ποταμόπλοια βυθίσματος κάτω τῶν 6 ποδῶν. Εἰς τὴν ἐκεῖ κωμόπολιν, αἱ ἀπὸ Ἰασίου καὶ Βουκουρεστίου σιδηροδρομικαὶ ἅμαξαι ἑνοῦνται εἰς τοὺς πρὸς Ὀδησσὸν συρμούς. σ. ε. λ.

**Μπεντὲρ - Ἀμπάς,** ἢ ***Μπαντὰρ - Ἀμπᾶς*** (Bender - Abbas, ἢ Bandar Abbas) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Περσίας ἐπὶ τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ εἰς τὸ στενὸν τοῦ Ὁρμούζ. Κάτ. 15.000. Διὰ τοῦ λιμένος τῆς πόλεως διεξάγεται σημαντικὸν εἰσαγωγικὸν καὶ ἐξαγωγικὸν ἐμπόριον. Ἡ πόλις, καλουμένη πρότερον *Γκομπρούν,* ἔλαβε τὸ ὄνομα ἀπὸ τοῦ σάχου Ἀμπᾶς Α΄ κατὰ τὴν ἐκεῖθεν ἐκδίωξιν τῶν Πορτογάλων τῷ 1614 καὶ τὴν κατεδάφισιν τοῦ ὑπ' αὐτῶν ἀνεγερθέντος φρουρίου. Τῷ 1620 ἐδόθη ἄδεια ἐγκαταστάσεως Ἄγγλων ἐμπόρων καὶ κατόπιν Ὁλλανδῶν, ἤκμασε δὲ ἡ πόλις σπουδαίως μέχρι τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος. Ἀπὸ τοῦ 1740, ὅτε ἡ σ... παρεχωρήθη ὑπὸ τῆς Περσίας εἰς τὴν ἀραβικὴν φυλὴν Μαΐνι, μέγα μέρος τοῦ ἐμπορίου της μετεφέρθη εἰς Μπουσίρ. Μετὰ τεσσαράκοντα ἔτη ἡ πόλις παρεχωρήθη εἰς τὸν σουλτᾶνον τῆς Μασκάτης. Ἡ συνθήκη ἀνενεώθη τῷ 1856 καὶ τῷ 1868 συνήφθη νέα σύμβασις τῇ ἐπεμβάσει τῆς Ἀγγλίας. Ἐκθρονισθέντος ὅμως κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο τοῦ σουλτάνου τῆς Μασκάτης, ἡ Περσία ἐπωφελήθη τῆς περιστάσεως καὶ ἀνακατέλαβε τὴν πόλιν.

**Μπεντὲρ Ἐρεκλῆ** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ὅρμος τῆς πρὸς τὸν Βόσπορον μικρασιατικῆς ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου, σχηματιζόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Μπαμπᾶ (ἀρχ. Ἀχερουσίας) καὶ Καρὰ Σακάλ (πλάτ. $41^{\circ} 18'$ Β., μῆκ. $31^{\circ} 26'$ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. ΒΑ 2237: Bosporus to Kerempeh). Εἰς τὴν παραλίαν τοῦ κόλπου φερώνυμος πόλις (κάτ. περίπου 10.000), ἡ *Ἡράκλεια* τῶν ἀρχαίων καὶ ἡ *Ποντοηράκλεια* τῶν ναυτικῶν μας, ἀπὸ τοῦ λιμένος τῆς ὁποίας ἐξάγονται ἐτησίως 110 χιλ. τόννων γαιανθράκων ἐξορυσσομένων εἰς τὰ ἀνθρακωρυχεῖα Τσαμλῆ καὶ Καντιλύ, εἰς 15 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως. σ. ε. λ.

**Μπεντέρεφ.** Βούλγαρος ἀξιωματικὸς ἐκ Γκόρνα Ὀρεχοβίτσα, εἷς τῶν πρωταιτίων τῆς κινήσεως διὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ ἡγεμόνος Ἀλεξάνδρου Βάττεμπεργ. Ὡς ἐξόριστος εἰς Ρωσίαν συνέγραψε ρωσιστί: «Ἱστορίαν τοῦ Σερβοβουλγαρικοῦ πολέμου» καὶ «Στρατιωτικὴν γεωγραφίαν καὶ στατιστικὴν τῆς Μακεδονίας». τ. β.

Digitized by Google

**Μπεντερλῆς**, *Ἀλῆ πασᾶς*. Τοῦρκος βεζύρης (βλ. λ. *Ἀλῆ πασᾶς* Μπενδερλῆς).

**Μπέντερλι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ροδόπης χωρίου *Λεύκη* (βλ. λ.).

**Μπεντὲρ Λίγκα** (Bender Liga) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας (βλ. λ. *Μπαντὰρ* Λίγκα).

**Μπεντὲρ-Μπουσὶρ** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μπουσίρ*.

**Μπεντερχὰν** *πασᾶς*. Γόνος κουρδικῆς ἡγεμονικῆς οἰκογενείας. Διατελῶν διοικητὴς ἑνὸς τμήματος τοῦ Κουρδιστὰν μὲ τὸν βαθμὸν συνταγματάρχου τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ, ὑπεκίνησεν ἐπανάστασιν κατὰ τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως τῷ 1843. Νικηθεὶς ὑπὸ τοῦ στρατάρχου Ὀσμὰν συνελήφθη αἰχμάλωτος καὶ ἤχθη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου συγχωρηθεὶς μετὰ μικρὸν ἐχρησιμοποιήθη εἰς διαφόρους ὑπηρεσίας. Εἶχε 40 υἱούς. Ν. Μ.

**Μπεντέσκι** (Bedeschi), **Μάριος**. Ἰταλὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Λοῦγκο τῷ 1850. Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν Τεχνῶν καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ σχεδίου ἐν Μονκαλιέρι. Μετέσχε πλείστων ἐκθέσεων καὶ ἐβραβεύθη ἐπανειλημμένως. Τὰ κάλλιστα τῶν ἔργων του εἶναι: «Οἱ χρυσοῖ γάμοι», «Μιὰ γριὰ θυμωμένη», «Ἀγυιόπαιδες» καὶ ἡ ὡραία προσωπογραφία τοῦ ἀστρονόμου Ἰωάννου Βαπτιστοῦ Ντονάτι. Χ. Δ.

**Μπέντζα** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ *Ἀφου* (βλ. λ.).

**Μπεντζᾶ** (οἱ). Βεδουϊνικαὶ φυλαὶ ἀφρικανοχαμιτικαί, κατοικοῦσαι τὴν μεταξὺ τοῦ Νείλου καὶ Ἐρυθρᾶς θαλάσσης ἔρημον, τὴν λεγομένην Ἐδβάϊ. Θεωροῦνται ἀπόγονοι τῶν ἀρχαίων Βλεμμύων. Γ. Λ. Α.

**Μπὲν-ντζάϊ-τὲν** (Ben-dzai-ten) *[Ἰαπων. Μυθολ.]*. Θεότης τῶν Σίντο. Εἶναι θεὰ τῆς ῥητορικῆς, τῆς ἐπιστήμης, τοῦ ἔρωτος, τῆς μουσικῆς καὶ τοῦ πλούτου. Εἶναι προστάτις τῶν γυναικῶν, ἰδίᾳ τῶν μουσικῶν καὶ ἀοιδῶν (γκεϊσσῶν) καὶ πάτρων τῶν ἁλιέων καὶ λεμβούχων. Ἡ Μπὲν-ντζάϊ-τὲν ἐμφανίζεται καὶ ἐν τῷ πανθέῳ τοῦ ἰαπωνικοῦ βουδισμοῦ ὡς θεὰ τῆς εὐτυχίας. Περιβάλλεται ὑπὸ τῶν δέκα πέντε Ντὸ-ντζί, ἕκαστος τῶν ὁποίων ἐκπροσωπεῖ κλάδον τινὰ τῆς γεωργίας, τῆς βιομηχανίας καὶ τοῦ ἐμπορίου. Α. Δ.

**Μπεντζὶν** (Bendzin, Bendin) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν τῇ βοϊβοδίᾳ τοῦ Λόντς. Κάτ. 28.076. Ἔχει ὀρυχεῖα ἄνθρακος. Πρὸ τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου ἀνῆκεν εἰς τὴν Ρωσίαν. Π. Ν. Π.

**Μπεντζὸν** (Bentzon), **Θηρεσία ντὲ** —. Φιλολογικὸν ὄνομα τῆς Γαλλίδος λογίας Μαρίας-Θηρεσίας *Μπλὰν* (Blanc) (1840—1907). Κυρίως ἠσχολήθη εἰς μεταφράσεις Ἀμερικανῶν κ. ἄ. συγγραφέων (Μπρὲς Χάρτ, Ἄλντριτς, Ντίκενς), ἔγραψε δὲ μυθιστορήματα: «Τὸ βιολὶ τοῦ Ἰώβ» (1875), «Τὸ ἐμπόδιον» (1875) καὶ «Τόννυ» (1884), βραβευθέντα ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, «Ὑπεράνω τῆς ἀβύσσου» (1904) κ. ἄ. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε πλείστας κριτικὰς μελέτας εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν Δύο Κόσμων», αἵτινες ἀπετέλεσαν ἔπειτα τοὺς τόμους: «Οἱ νέοι Ἀμερικανοὶ μυθιστοριογράφοι» (1885), «Ξένα ἤθη καὶ ξένη φιλολογία» (1887), «Αἱ Ἀμερικανίδες» (1895) κτλ. —Π.

**μπέντια**. Καλοῦνται οὕτω τὰ παλαιὰ ὑδραγωγεῖα τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Κεῖνται παρὰ τὸ δάσος τοῦ Βελιγραδίου καὶ εἰς ἐλαχίστην ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ χωρίου Μπαγτσέκιοϊ. Εἶναι δὲ τρία, τὸ *Μέγα*, τὸ τοῦ *Μαχμοὺτ Α'* (1753) καὶ τὸ λεγόμενον *Βαλιδέ*. Τὸ εἰς τὰς δύο τεχνητὰς λίμνας συλλεγόμενον ὕδωρ διοχετεύεται διὰ τοῦ μεγάλου ὑδραγωγοῦ Μαχμοὺτ τοῦ Α' καὶ δι' ὑπογείων σωλήνων εἰς τὰς Β. συνοικίας τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ν. Μ.

**Μπεντιβόλιο** (Bentivoglio). Ἐπιφανὴς ἰταλικὴ οἰκογένεια ἐκ Βολωνίας, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη διεκρίθησαν, κυρίως κατὰ τοὺς ΙΕ', ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνας, διαδραματίσαντα σπουδαιότατον ῥόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Βολωνίας καὶ τῆς Ἰταλίας, καθ' ὅλου. Ἡ οἰκογένεια, κατά τινα γνώμην κατήγετο ἐκ τοῦ Ἔντσιο, νόθου υἱοῦ τοῦ αὐτοκράτορος Φρειδερίκου Β', ὅστις ἀπέθανεν ἐν Βολωνίᾳ μετὰ εἰκοσαετῆ αἰχμαλωσίαν.

Ἐπιφανέστεροι ἐκ τῶν Μπεντιβόλιο εἶναι οἱ ἑξῆς:

—1) **Ἰωάννης**, ἀκμάσας περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1402. Ἦτο ἐκ τῶν ἰσχυροτέρων πατρικίων τῆς Βολωνίας καὶ ἀρχηγὸς τῆς λαϊκῆς μερίδος, κατέλαβε δὲ τῷ 1401 τὴν πόλιν ἀπὸ τὸν Μάννον Γκοτσαντῖνο. Τὸ ἑπόμενον ὅμως ἔτος ἀνετράπη ὑπὸ τοῦ Γκαλέα Βισκόντι καὶ ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ λαοῦ.

—2) **Ἀντώνιος**, υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐπανελθὼν εἰς Βολωνίαν τῷ 1435, ἐδολοφονήθη ἅμα τῇ ἐπανόδῳ του κατὰ διαταγὴν τοῦ πάπα Εὐγενίου Δ', ὅστις ἐφοβεῖτο τὸν μεγάλην του δημοτικότητα.

—3) **Ἀννίβας Α'**, υἱὸς τοῦ Ἀντωνίου, καταλαβὼν τὴν πόλιν τῇ βοηθείᾳ τοῦ Νικολάου Πιτσινίνο. Ἐλθὼν βραδύτερον εἰς ῥῆξιν μετὰ τοῦ προστάτου του, συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη ὑπ' αὐτοῦ. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του διώχησε τὴν Βολωνίαν μέχρι τοῦ 1485, ὁπότε ἐσφάγη κατά τινα στάσιν ὑποκινηθεῖσαν ὑπὸ τοῦ δουκὸς τοῦ Μιλάνου.

— 4) **Ἰωάννης Β'**, υἱὸς τοῦ Ἀννίβα, ἀποθανὼν τῷ 1508. Διεδέχθη τὸν πατέρα του καὶ κατώρθωσεν ἐπὶ μακρὸν νὰ ἀποφύγῃ τὰς παγίδας τοῦ Καίσαρος Βοργία, ὅστις προσεπάθει νὰ καταλάβῃ τὴν ἡγεμονίαν του. Ἠναγκάσθη τέλος νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸ τοῦ πάπα Ἰουλίου Β' καὶ τῶν Γάλλων, οἵτινες κατέλαβον τὴν πόλιν (1506). Ἦτο θερμὸς ὑποστηρικτὴς τῶν τεχνῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Τούτου ἡ οἰκογένεια ἠναγκάσθη νὰ ἐκπατρισθῇ μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Βολωνίας, καὶ εἷς μὲν κλάδος αὐτῆς ἐγκατεστάθη εἰς Φερράραν, ἀναδείξας πλεῖστα διακεκριμένα μέλη ἐν οἷς δύο καρδιναλίους (βλ. κατωτ.), ἕτερος δὲ κατέφυγε κατ' ἀρχὰς εἰς Μιλᾶνον, ὁπόθεν μετῴκησε βραδύτερον καὶ αὐτὸς εἰς Φερράραν.

— 5) **Ἀννίβας Β'**. Ἐγκατασταθεὶς τῷ 1511 εἰς τὴν ἡγεμονίαν τῆς Βολωνίας ὑπὸ τῶν Γάλλων, διετήρησεν αὐτὴν ἐπὶ ἓν μόνον ἔτος.

— 6) **Ἡρακλῆς** (1506—1573). Ἀνετράφη ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Ἀλφόνσου Α' δουκὸς τῆς Φερράρας καὶ προσέφερε πολλὰς εἰς τὸν ἡγεμόνα τοῦτον ὑπηρεσίας. Διεκρίθη κυρίως ὡς ποιητὴς καὶ κατετάσσετο ὑπὸ πολλῶν ἀμέσως μετὰ τὸν Ἀριόστον. Ἔγραψε σοννέτα, σατίρας, κωμῳδίας κλπ., δημοσιευθείσας τῷ 1719 ἰταλιστὶ ἐν Παρισίοις.

— 7) **Γουΐδων**. Καρδινάλιος, ἱστορικὸς καὶ ἐπιδεξιώτατος διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Φερράρᾳ (1579—1644). Τῷ 1607 διωρίσθη ὑπὸ τοῦ πάπα Παύλου Ε' ἀρχιεπίσκοπος Ρόδου καὶ ἐστάλη ὡς ἀποστολικὸς νούντσιος εἰς Φλάνδραν καὶ εἰς Γαλλίαν (1617), ὅπου διὰ τοῦ λεπτοῦ πνεύματος καὶ τῆς ἐπιδεξιότητός του κατώρθωσε νὰ κερδίσῃ τὴν ἐμπιστοσύνην τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου, καὶ ἐτιμήθη ὑπ' αὐτοῦ μὲ τὸν τίτλον τοῦ ἐκπροσώπου τῶν γαλλικῶν ὑποθέσεων παρὰ τῇ Ἁγίᾳ ἕδρᾳ. Μικρὸν πρὸ τοῦ θανάτου τοῦ Παύλου Ε' (1621) προήχθη εἰς καρδινάλιον καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Ρώμην, ὅπου μεγάλως ἐτιμᾶτο παρὰ τοῦ νέου πάπα Οὐρβανοῦ Η' καὶ ὁλοκλήρου τῆς αὐλῆς. Ἦτο ὁ ἐνδεδειγμένος διάδοχος τοῦ παπικοῦ θρόνου. Ἐνῷ ὅμως, ἀποθανόντος τοῦ Οὐρβανοῦ, συνεδρίαζε τὸ μέλλον ν' ἀποφασίσῃ τὴν ἐκλογὴν αὐτοῦ συνέδριον τῶν καρδιναλίων (κονκλάβιον), ἀπέθανε καὶ αὐτὸς εἰς ἡλικίαν 65 ἐτῶν. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, ἱστορικὰ κυρίως, ἐξ ὧν γνωστότερα εἶναι: «Ἡ ἱστορία τοῦ πολέμου τῆς Φλάνδρας» (Παρίσιοι (1620), «Οἱ Οὐγενότοι τῆς Γαλλίας» (Γένουα 1630), «Ἀπομνημονεύματα» κ. ἄ. Τὰ ἱστορικὰ ἔργα του δὲν εἶναι ἄνευ ἀξίας, στεροῦνται ὅμως βάθους καὶ προδίδουσι τὰς φιλοπαπικὰς ἰδέας, ὑφ' ὧν ἐμφορεῖται ὁ συγγραφεύς.

—8) **Ἱππόλυτος**, *μαρκήσιος τοῦ Μαλιάνο*. Στρατιωτικὸς καὶ λογογράφος, ἀποθανὼν τῷ 1685 ἐν Φερράρᾳ. Ἔγραψε κωμῳδίας καὶ τραγῳδίας, παρασταθείσας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου τῆς ἰδίας πόλεως.

—9) **Κορνήλιος**. Καρδινάλιος καὶ παπικὸς διπλωμάτης, υἱὸς τοῦ *Ἱππολύτου* (1668—1732). Διετέλεσεν ἐπίτροπος τοῦ παπικοῦ στρατοῦ (1707), προαχθεὶς δὲ εἰς ἀρχιεπίσκοπον Καρχηδόνος, ἀπεστάλη νούντσιος τοῦ πάπα παρὰ τῇ γαλλικῇ αὐλῇ (1712). Τῷ 1719, προαχθεὶς εἰς καρδινάλιον, ἐπέστρεψεν εἰς Ρώμην, ὅπου διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Ε' ἀντιπρόσωπος καὶ προστάτης τῶν ἱσπανικῶν συμφερόντων. Ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ φυλάσσεται μακροτάτη ἀλληλογραφία αὐτοῦ μετὰ διαφόρων καρδιναλίων καὶ ἄλλων ἐπιφανῶν φίλων του. Ἔγραψε σοννέτα, ῥητορικοὺς λόγους καὶ μίαν μετάφρασιν τῆς «Θηβαΐδος». Χ. Δ.

**Μπεντιὲ** (Bedier), **Ἰωσήφ**. Γάλλος σοφός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1864. Κατόπιν λαμπρῶν σπουδῶν εἰς τὸ λύκειον Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου, εἰσήχθη εἰς τὴν École normale, ὁπόθεν ἐξῆλθε πτυχιοῦχος τῆς φιλολογίας. Τῷ 1893 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ καὶ διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν τῇ φιλολογικῇ σχολῇ τοῦ Caen καὶ κατόπιν ἐν τῇ École normale supérieure. Δέκα ἔτη βραδύτερον ἀντικατέστησεν ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας, εἰς τὴν ἕδραν τῆς μεσαιωνικῆς γαλλικῆς γλώσσης καὶ φιλολογίας, τὸν G. Paris, τοῦ ὁποίου εἶχε χρηματίσει καὶ μαθητής. Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν μεσαιωνικὴν λογοτεχνίαν καὶ μὲ λαογραφικὰ ζητήματα. Μία ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἐργασιῶν του εἶναι ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Fabliaux» (1893), εἰς τὴν ὁποίαν δεικνύει πῶς αἱ βραχεῖαι διηγήσεις τοῦ μεσαίωνος ἐπαναλαμβάνουν ὑπὸ μορφὴν τοπικὴν ἀλλ' ἀκριβῆ τινὰ ἐκ τῶν αἰωνίων θεμάτων, τὰ ὁποῖα κυκλοφοροῦν ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος μεταξὺ τῶν λαϊκῶν φιλολογιῶν. Ἐπίσης εἰς λατινιστὶ συντεταγμένην διατριβὴν ἐπεχείρησε ν' ἀποκαταστήσῃ τὸ «Μυθιστόρημα τοῦ Τριστὰν καὶ τῆς Ἰζόλδης» (1900), συνέγραψε δὲ διάφορα ἄρθρα καὶ κριτικάς, τὰ ὁποῖα ἐξεδόθησαν εἰς βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Études critiques» (1903).

**Μπεντιὲ** (Bedier ἢ Beda Natalis), **Νοέλ**. Γάλλος θεολόγος, ἀποθανὼν ἐν τῇ μονῇ τοῦ Ἁγίου Μιχαὴλ τῷ 1836. Ἦτο εἷς τῶν σφοδροτέρων ἐχθρῶν τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἐκτὸς ἄλλων ἐδημοσίευσεν ἔργον κατὰ τῶν «Παραφράσεων» τοῦ Ἐράσμου, ὃν κατηγόρει καὶ ὡς αἱρετικόν. Τὰ κυριώτερα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Contra Zohannem Fabrum et Zodochum Clichtoveum» (1519), «Apologia adversus clandestinos Lutheranos» (1529), καὶ «De unica Magdalena». Ὡς πρὸς τὰς ἰδέας τοῦ Μπεντιὲ ἄξιον προσοχῆς εἶναι τὸ ἀνωνύμως δημοσιευθὲν ἔργον «La confession de foi de maitre Beda». Κ. Ι. Δ.

**Μπέντινκ** (Bentink). Ἐπίσημος οἰκογένεια ἐκ Γκουέλντρες τῆς Ὁλλανδίας, ἀναφερομένη τὸ πρῶτον τῷ 1233. Οἱ ἀπόγονοι αὐτῆς ἐγκατεστάθησαν βραδύτερον ἄλλοι μὲν εἰς Ἀγγλίαν, ἀποτελέσαντες ἰδιαίτερον κλάδον μὲ ἀρχηγὸν τὸν *Γουλιέλμον πρῶτον κόμιτα τοῦ Πόρτλαντ*, ἄλλοι δὲ εἰς Βεστφαλίαν, ἀποτελέσαντες δεύτερον χωριστὸν κλάδον, τοῦ ὁποίου ὁ ἀρχηγὸς ἀποθανὼν τῷ 1773 ὠνομάζετο ἐπίσης *Γουλιέλμος*. Ἐκ τοῦ γάμου τῆς θυγατρὸς τοῦ ἀρχηγοῦ τοῦ βεστφαλικοῦ κλάδου μετὰ τοῦ τελευταίου κόμιτος τοῦ *Ἄλντενμπουργκ*, ἡ περιουσία καὶ οἱ τίτλοι τοῦ τελευταίου τούτου οἴκου περιῆλθον εἰς τοὺς Μπέντινκ. Δεύτερος ἀγγλικὸς κλάδος τῆς οἰκογενείας Μπέντινκ ἐδημιουργήθη ὑπὸ τοῦ δευτέρου υἱοῦ τοῦ Γουλιέλμου *Ἰωάννου Ἀλβέρτου*, ἀποθανόντος τῷ 1737, ὅστις ἐνυμφεύθη τὴν *Κορέσταν Σοφίαν τοῦ Ἄλντενμπουργκ*. Οἱ ἀρχηγοὶ τοῦ σπουδαιοτέρου ἀγγλικοῦ κλάδου τοῦ οἴκου τῶν Μπέντινκ ἔφερον τὸ ὄνομα *Κάβεντις* καὶ τὸν τίτλον *δοὺξ τοῦ Πόρτλαντ*. Κυριώτερα ἐκ τῶν μελῶν αὐτοῦ εἶναι τὰ ἑξῆς:

—1) **Γουλιέλμος**, *πρῶτος κόμις τοῦ Πόρτλαντ* (1649—1709). Ἦτο ὀλλανδικῆς καταγωγῆς, ἐπιστήθιος φίλος καὶ αὐλάρχης τοῦ Γουλιέλμου Γ' (τῆς Ὀράγγης), ἐνοσήλευσε δ' αὐτὸν μετ' ἀληθοῦς στοργῆς, ὅτε ποτὲ εἶχε προσβληθῇ ὑπὸ εὐλογίας. Ἔμπιστος θεράπων τοῦ ἡγεμόνος τούτου, ἀνέλαβε πλείστας μυστικὰς ἀποστολὰς εἰς Ἀγγλίαν καὶ Βερολῖνον παρὰ τῷ νεαρῷ ἐκλέκτορι Φρειδερίκῳ Γ', ὅστις κατόπιν ἐγένετο πρῶτος βασιλεὺς τῆς Πρωσσίας. Μετὰ τὴν εἰς τὸν ἀγγλικὸν θρόνον ἀνάρρησίν του ὁ Γουλιέλμος ἀντήμειψε τὰς ὑπηρεσίας τοῦ Μπέντινκ, τιμήσας αὐτὸν διὰ πλείστων τίτλων εὐγενείας, ἐν οἷς καὶ ὁ τοῦ κόμιτος Πόρτλαντ. Θεωρούμενος ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ὡς ξένος καὶ ὑπὸ τῶν Ὁλλανδῶν ὡς Ἄγγλος λόγῳ τῶν ἀγγλικῶν τίτλων εὐγενείας δι' ὧν εἶχε τιμηθῆ, κατώρθωσεν ἐν τούτοις νὰ ἀντεπεξέρχεται πάντοτε ἐπιτυχῶς εἰς τοὺς κοινοβουλευτικοὺς ἀγῶνάς του. Τῷ 1696 κατώρθωσε νὰ ἀνακαλύψῃ συνωμοσίαν στρεφομένην ἐναντίον τοῦ Γουλιέλμου. Ὁ ῥόλος του ὡς στρατιωτικοῦ κατὰ τὴν εἰς Φλάνδραν ἰδίως ἐκστρατείαν, ὑπῆρξε κατώτερος τοῦ πολιτικοῦ. Μετὰ τὸν πόλεμον τοῦτον διεκρίθη κατὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς εἰρήνης τοῦ Ρύσβιχ, μετὰ ταῦτα δὲ ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Παρισίους (1698) καὶ συνωμολόγησεν ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Ἀγγλίας τὴν συνθήκην διαμελισμοῦ τῆς ἱσπανικῆς μοναρχίας (Χάγη, 4 Σεπτεμβρίου 1698). Σφοδρὰ σύγκρουσις μετὰ τοῦ κόμιτος τοῦ Ἄλμπερμαλ, Κέππελ προελθοῦσα ἐξ ἀντιζηλίας, ἀπέληξεν εἰς βάρος τοῦ Μπέντινκ, ἡ δὲ βουλὴ τῶν κοινοτήτων κατεδίωξεν αὐτόν. Καὶ κατώρθωσε μὲν ν' ἀπαλλαγῇ προσαφθεισῶν κατηγοριῶν, ἀλλὰ ἀπὸ τοῦ θανάτου τοῦ Γουλιέλμου διεκόπη τὸ πολιτικὸν στάδιόν του. Αἱ περὶ τοῦ Μπέντινκ γνῶμαι εἶναι διχασμέναι μεταξὺ τῶν ἱστορικῶν· μᾶλλον ἀμερόληπτος ὅμως φαίνεται ἡ τοῦ Μακώλεϋ.

—2) **Σὲρ Ἐρρῖκος - Ἰωάννης Γουλιέλμος** (1796—1878). Ἄγγλος στρατηγός, διακριθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ σώματος τῶν φρουρῶν Γκόλστριμ κατὰ τὰς μάχας τῆς Μπαλακλάβας καὶ τοῦ Ἴνκερμαν, καθ' ἣν καὶ ἐτραυματίσθη.

—3) *Λόρδος* **Γουλιέλμος-Γεώργιος-Φρειδερῖκος Κάβεντις** (1802—1848). Ἄγγλος πολιτικός, ἀνεψιὸς τοῦ Κάννιγκ, τοῦ ὁποίου διετέλεσε γραμματεὺς εἰς νεαρὰν ἡλικίαν. Τῷ 1826 εἰσῆλθεν εἰς τὸ κοινοβούλιον ὡς βουλευτὴς τῆς περιφερείας Κίνγκς Λάϋν, εὐθὺς δ' ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς ἔδειξε σπάνια προτερήματα ἐξόχου μαχητικότητος, ὁμοίαν τῆς ὁποίας σπανίως ἔχει νὰ ἐπιδείξῃ τὸ ἀγγλικὸν κοινοβούλιον. Ὡς μέλος τοῦ κοινοβουλίου ἀντεπαρετάχθη πολλάκις μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας πρὸς μεγάλους συγχρόνους του πολιτικούς, ἐν οἷς οἱ Ροβέρτος Πὴλ καὶ Ἰωάννης Ρῶσσελ, ὁ δὲ Ντισραέλι πολλάκις ἐξῆρε τὴν μεγάλην διαλεκτικὴν ἱκανότητά του. Ἀπέθανεν αἰφνιδίως εἰς ἡλικίαν 46 ἐτῶν ἐκ καρδιακοῦ νοσήματος.

—4) **Γουλιέλμος-Ἐρρῖκος Κάβεντις**, *τρίτος δοὺξ τοῦ Πόρτλαντ* (1738—1807). Τῷ 1762 διεδέχθη τὸν πατέρα του Γουλιέλμον εἰς τὴν βουλὴν τῶν Λόρδων καὶ ὑπεστήριξεν ἐνεργητικώτατα τὸ κόμμα τῶν Οὐΐγων, ἔλαβε δὲ μέρος εἰς τὴν φιλελευθέ-

Digitized by Google

ραν κυβέρνησιν Ρόκιγχαμ τῷ 1765. Τῷ 1782 ἀπεστάλη ἀντιβασιλεὺς εἰς Ἰρλανδίαν καὶ ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ κόμματος τῶν Οὐίγων, ἀφίνων ὅμως τὴν πραγματικὴν διεύθυνσίν του εἰς τοὺς ὑπαρχηγοὺς αὐτοῦ Φὸξ καὶ Μπάρκ. Μετὰ ταῦτα προήδρευσε τῆς βραχυβίου κυβερνήσεως συνασπισμοῦ ἥτις συνωμολόγησε τὴν μετὰ τῶν ἀμερικανικῶν ἀποικιῶν εἰρήνην καὶ ἐδείχθη λίαν εὐμενὴς πρὸς τὴν τότε ἐκραγεῖσαν Γαλλικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1789. Τῷ 1794 ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ ἐγένετο τῷ 1801 διὰ δευτέραν φορὰν πρόεδρος τῆς κυβερνήσεως. Ἀπὸ τοῦ 1807 διετέλεσε λόρδος τοῦ βρεττανικοῦ Θησαυροφυλακείου.

—5) *Λόρδος* ***Γουλιέλμος Κάβεντις*** (1774—1839). Ἦτο δευτερότοκος υἱὸς τοῦ τρίτου δουκὸς τοῦ Πόρτλαντ, Γουλιέλμου-Ἑρρίκου, διετέλεσε δὲ κατὰ τὰ ἔτη 1827-1835 γενικὸς διοικητὴς τῶν Ἰνδιῶν. Ἀνεκλήθη κατόπιν τῆς ἐξεγέρσεως τοῦ Βελλόρ, καθ' ἣν ἐσφάγησαν ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν στρατιωτῶν 13 Εὐρωπαῖοι ἀξιωματικοί. Ἡ διοίκησίς του κατέστη ἱστορικὴ λόγῳ τῆς τότε καταργήσεως τοῦ ἰνδικοῦ ἐθίμου, συμφώνως πρὸς τὸ ὁποῖον αἱ σύζυγοι τῶν ἀποθνησκόντων ἐκαίοντο ζῶσαι μετ' αὐτῶν. Εἷς ἐκ τῶν κυριωτέρων συνεργατῶν του ἦτο ὁ Μακώλεϋ. Ἀπὸ τῆς εἰς Ἀγγλίαν ἐπανόδου μέχρι τοῦ θανάτου του διετέλεσε μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων. Χ. Δ.

**Μπέντιξεν** (Bendixen), ***Φρειδερῖκος*** (1864—1920). Γερμανὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἁγίῳ Φραγκίσκῳ. Ἐγκατασταθεὶς ἐν Γερμανίᾳ, διετέλεσε διοικητὴς τῆς Κτηματικῆς Τραπέζης τοῦ Ἀμβούργου (1895—1920). Τὸ ἐπιστημονικὸν ἔργον τοῦ Μπέντιξεν, εἰς τὴν θεωρίαν τοῦ χρήματος κυρίως ἀναγόμενον, βασίζεται ἐπὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Κνάπ. Εἰς τὸν Μπέντιξεν ὀφείλεται ἡ ἀκριβεστέρα διατύπωσις τῆς θεμελιώδους ἰδέας περὶ τῆς φύσεως τοῦ χρήματος ὡς μέσου παραστάσεως παρασχεθεισῶν εἰς τὴν οἰκονομικὴν ὁλότητα ὑπηρεσιῶν, ἐνσωματοῦντος δικαίωμα τοῦ κατόχου ἐπὶ ἀντιστοίχου ποσοῦ ἀγαθῶν. Ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης προκύπτει ἡ πλήρης ἄρνησις τῆς φύσεως τοῦ νομίσματος ὡς ἀνταλλακτικοῦ μέσου καὶ δὴ τοιούτου ἔχοντος ἰδίαν ἐσωτερικὴν ἀξίαν ὡς ἀπαραίτητον προϋπόθεσιν τῆς χρησιμότητός του. Βασικὴν σπουδαιότητα διὰ τὸ ἔργον τοῦ Μπέντιξεν ἔχει ἡ θεωρία του περὶ τῆς δυνατότητος δημιουργίας κλασσικοῦ χρήματος, τοιούτου δηλαδὴ τὸ ὁποῖον διὰ τοῦ τρόπου τῆς ἐκδόσεώς του να μὴ ἐπενεργῇ ὑψωτικῶς ἐπὶ τῶν τιμῶν, ἐπὶ τῇ βάσει προεξοφλήσεως ἐμπορικῶν ἀξιῶν πιστοποιουσῶν πραγματικὴν προσαύξησιν τοῦ ἐθνικοῦ πλούτου. Ἔγραψε: «Geld und Kapital» (1912, 3η ἔκδ. 1912, β' τόμος 1919), «Das Wesen des Geldes» (1908, 3η ἔκδ. 1922), «Das Inflationsproblem» (1917). Α.Δ.Τ.

**Μπέντλεϋ** (Bentley), ***Ριχάρδος.*** Ἄγγλος φιλόλογος καὶ κριτικὸς (1661—1742). Ὑπῆρξεν ἔφορος τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Σαὶν-Τζαίϊμς, καθηγητὴς ἐν τῷ κολλεγίῳ τῆς Ἁγίας Τριάδος τῆς Κανταβριγίας καὶ ἀρχιδιάκονος τῆς Ἐλυ. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται: «Κριτικαὶ παρατηρήσεις εἰς τὰς δύο πρώτας κωμῳδίας τοῦ Ἀριστοφάνους» καὶ ἡ πραγματεία του περὶ τῶν «Ἐπιστολῶν τοῦ Θεμιστοκλέους, τοῦ Σωκράτους, τοῦ Εὐριπίδου, τοῦ Φαλάρεως καὶ περὶ τῶν μύθων τοῦ Αἰσώπου». Ἐπίσης ἐξέδωκε τὰ ἔργα τοῦ Ὁρατίου, τοῦ Τερεντίου, τοῦ Φαίδρου κτλ. Ἡ λίαν ἐνδιαφέρουσα βιβλιογραφία του ἐδημοσιεύθη τῷ 1807 ἐν Λονδίνῳ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Richardi Bentley et doctorum virorum epistolae, etc.». Α. Δ.

**Μπέντλινγκτον** (Bedlington) *[Γεωγρ.].* Κοινότης τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ Νορθουμπερλαντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπλάϋθ, $6^1/_2$ χλμ. πρὸς ΝΑ. τοῦ Μόρπεθ καὶ ἔχουσα σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, ἀνθρακωρυχεῖα, σιδηρουργικὰς ἐγκαταστάσεις, ὑελουργεῖα κλπ. Ἐκτρέφει ἐκλεκτὴν γενεὰν θηρευτικῶν κυνῶν. Κάτ. 25.440. Χ.Δ.

**Μπέντμαρ** (Bedmar), ***Ἀλόνσος ντὲ λὰ Κουέβα.*** Ἱσπανὸς καρδινάλιος (ἀπὸ τοῦ 1662) καὶ ἔπειτα ἐπίσκοπος τοῦ Ὀβιέδο, γεννηθεὶς τῷ 1572 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1655. Ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Γ' πρεσβευτὴς εἰς Βενετίαν (1607), διωργάνωσεν ἐκεῖ συνωμοσίαν (1618), καθ' ἣν καταλαμβανομένη ἡ Βενετία ὑπὸ τῶν μισθοφόρων αὐτοῦ θὰ παρεδίδετο εἰς τὸν ἐν τῇ Ἀδριατικῇ ἀναμένοντα ἱσπανικὸν στόλον. Ἀποκαλυφθείσης ὅμως τῆς συνωμοσίας διὰ προδοσίας, ὁ μὲν Μπέντμαρ ἀντικατεστάθη (1619), πολλοὶ δὲ τῶν συνωμοτῶν συλληφθέντες ἐκαρατομήθησαν. Ἡ συνωμοσία αὕτη, ἣν περιγράφει καὶ ὁ Ἄγγλος ποιητὴς Otway ἐν τῷ ποιήματι αὐτοῦ «Venise preserved», θεωρεῖται ὑπό τινων φανταστική. Τὸ ἀνωνύμως κυκλοφορῆσαν ἔργον «Squitinio de la liberta venata» (1612), ὅπερ διαταγῇ τῆς βενετικῆς δημοκρατίας παρεδόθη τῷ πυρί, φαίνεται ὅτι ἐγράφη ὑπ' αὐτοῦ. Κ. Ι. Δ.

**Μπεντνούρ, ἢ Ναγκὰρ** (Bednur ἢ Nagar) *[Γεωγραφ.].* Χωρίον τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῷ κράτει τοῦ *Μυσόρ,* κείμενον 240 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Σερινγκαπατάμ. Ἦτο ἄλλοτε μεγάλη καὶ ἐξόχως ὀχυρὰ πόλις, ἔχουσα 100.000 περίπου κατοίκων καὶ ἀποτελοῦσα τὴν πρωτεύουσαν τῶν μαχαραγιάδων τοῦ Κιλάντι. Τῷ 1763 κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Χαϊντὰρ Ἀλῆ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1783 περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἄγγλους. Κάτ. 1.000. Χ. Δ.

**Μπεντολλιὲρ** (Bedollière), ***Αἰμίλιος Ζιγκὼ ντὲ λὰ —.*** Γάλλος λόγιος καὶ ἱστορικὸς (1812—1883). Ἤρξατο τοῦ σταδίου του διὰ τῆς δημοσιεύσεως ἐκλαϊκευτικῶν ἔργων, ἐγένετο συνεργάτης τοῦ «Σιὲκλ» (1850—1869) καὶ ἵδρυσε τὴν πολιτικὴν ἐφημερίδα «Νασιονάλ» (1869). Πλὴν διαφόρων ποιημάτων ἔγραψεν: «Ὁ πολιτικὸς βίος τοῦ Λαφαγιέτ» (1833), ἱστορίας τῆς ἐθνοφρουρᾶς (1848), τοῦ Μεξικανικοῦ πολέμου (1861—1868, 3 τόμ.), τοῦ Γερμανικοῦ καὶ Ἰταλικοῦ πολέμου (1866), τοῦ πολέμου τοῦ 1870—1871 (1872) κ. ἄ. Ἐπίσης μετέφρασεν ἔργα τοῦ Φ. Κοῦπερ κ. ἄ. καὶ ἐξέδωκε τοπογραφικὰς περιγραφὰς διαφόρων πόλεων καὶ περιοχῶν. —Π.

**Μπέντορφ** (Bendorf) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Ρήνου. Κάτ. 6.046. Εἶναι κατ' ἐξοχὴν βιομηχανικὴ πόλις (ὑφαντουργία) καὶ ἔχει σανατόριον νευρασθενῶν καὶ θερμοπηγάς. —Π.

**Μπεντὸς ντὲ Σὲλ** (Bedos de Celles), ***Φραγκῖσκος.*** Γάλλος βενεδικτῖνος (1706—1779). Εἰσελθὼν εἰς τὸ μοναχικὸν τάγμα τῶν βενεδικτίνων ἠσχολήθη περὶ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικήν, ἀποκτήσας μεγάλην ἱκανότητα περὶ τὴν κατασκευὴν μουσικῶν ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων. Διετέλεσεν ἀντεπιστέλλον μέλλον τῆς ἀκαδημίας τῶν Παρισίων καὶ τοῦ Βορδὼ. Τὸ σπουδαιότερον τῶν ἔργων του εἶναι «L'art du facteur d'orgues», ἐκδοθὲν ὑπὸ τῆς ἀκαδημίας (1766—1778 εἰς τρεῖς τόμους). Κ.Ι.Δ.

**Μπεντουῖνοι** (οἱ) *['Εθνολ.].* Ἀραβικὴ φυλὴ (βλ. λ. *Βεδουῖνοι*).

**Μπεντούρια** (Beduria). Εἶναι ὁ πρῶτος καὶ ὁ μᾶλλον λατρευόμενος ἐκ τῶν ἑπτὰ θεῶν τῆς Θιβετίας, τῶν καλουμένων Μὰν-λά, ἤτοι θεῶν τῆς ἰατρικῆς. Εἰς τὴν Ἰαπωνίαν ὁ θεὸς οὗτος λατρεύεται ὑπὸ τὸ ὄνομα *Μπὶν-ζοῦ-ροῦ.* Α. Δ.

**Μπέντρα** (Bedra) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἀραβίας ἐν Χετζάζῃ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Μεδίνας—Μέκκας καὶ εἰς 150 χλμ. ΝΔ. τῆς Μεδίνας. Εἶναι σπουδαῖος σταθμὸς καραβανίων καὶ κέντρον συγκομιδῆς τοῦ λεγομένου «βαλσάμου τῆς Μέκκας». Ἐνταῦθα ἐγένετο ἡ περίφημος σύγκρουσις Μωάμεθ καὶ Κορεϊσιτῶν (624). —Π.

**Μπέντρ-ἐντ-ντὶν** *Λουλού.* Ὁ τελευταῖος σουλτᾶνος τῆς Μοσούλης (1163—1259). Τοῦρκος τὴν καταγωγὴν καὶ δοῦλος τοῦ ἀταβέκου τῆς Μοσούλης ἐπὶ τῆς βασιλείας Νοὺρ-ἐντ-ντὶν Ἀρσλὰν Σὰχ τοῦ Α', κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὸ ἀξίωμα τοῦ «χατζίμπ» (εἶδος αὐλάρχου) καὶ νὰ ὀνομασθῇ ὑπὸ τοῦ θνήσκοντος βασιλέως κηδεμὼν τοῦ διαδόχου Ἀζζ-ἐντ-ντὶν-Μασσοὺντ τοῦ Β'. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μασσοὺντ (1218) ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὸ ζήτημα τῆς διαδοχῆς, ἐκλιπόντος δὲ καὶ τοῦ τελευταίου ἀταβέκου, ἐγένετο πρίγκιψ τῆς Μοσούλης κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τὸν Μαλὶκ (1222), καὶ εἶτα αὐτόνομος θανόντος τοῦ τελευταίου (1237). Ἐπὶ τοῦ Λουλοὺ ἡ Μοσούλη ἀπέκτησε δόξαν ἀνάλογον πρὸς τὸ χαλιφᾶτον τῆς Βαγδάτης. Οὗτος ὑπέταξε διαδοχικῶς τὸ Σιντζάρ, Νισιβὴ καὶ Νταροὺ, ἀντιπαρετάχθη πρὸς τοὺς Χαριζμιανοὺς καὶ τοὺς σουλτάνους τοῦ Χαλεπίου, μόνος δὲ τῶν Ἀράβων ἀντέστη νικηφόρως κατὰ τῶν Τατάρων. Μετὰ τὸν θάνατον του τὸ κράτος διένειμαν οἱ τρεῖς τῶν υἱῶν του· ἐξ αὐτῶν οἱ δύο ἔφυγον εἰς Αἴγυπτον (1259) πρὸ τῆς ταταρικῆς εἰσβολῆς καὶ ὁ τρίτος Μαλὶκ-Ἂς-Σαλὶχ-Ἰσμαὴλ ἐθανατώθη ὑπὸ τῶν ἐπιδρομέων (1262). —Π.

**Μπεντρεντὶν** *Μουζαφφέρ.* Διάσημος Ἄραψ ἰατρός, ἀκμάσας τὸν ΙΓ' μ. Χ. αἰῶνα ἐν Δαμασκῷ, ὅπου ἐδίδαξε καὶ ἐξήσκησε τὴν ἰατρικήν. Ἔγραψε διάφορα ἰατρικὰ συγγράμματα, μεταξὺ δὲ ἄλλων καὶ περὶ τῶν νοσημάτων τῆς καρδίας. Ν. Μ.

—**Μπεντρεντὶν** *Σαμαβνεβῆ.* Τοῦρκος αἱρεσιάρχης. Ἦτο γόνος τῆς σουλτανικῆς οἰκογενείας τῶν Σελτζουκιδῶν, ἐσπούδασε δ' ἐν Μέκκᾳ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ. Γενόμενος κατόπιν δερβίσης, μετέβη εἰς Ταυρίδα καὶ ἔγινε δεκτὸς ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου, παρασκευαζομένου τότε εἰς τὴν ἐναντίον τοῦ σουλτάνου τῆς Τουρκίας Βαγιαζὶτ τοῦ Α' ἐκστρατείαν. Μετὰ τὴν ὀλεθρίαν διὰ τοὺς Τούρκους μάχην τῆς Ἀγκύρας ἠκολούθησε τὸν ἐκ τῶν υἱῶν τοῦ Βαγιαζὶτ Μουσᾶ εἰς Ἀδριανούπολιν, γενόμενος ἐκεῖ στρατοδίκης· κατόπιν ὅμως προσῆλθε πρὸς τὸν ἀδελφὸν τοῦ Μουσᾶ Μεχμέτ, ὅστις ἐπικρατήσας κατὰ τὸν ἐναντίον τῶν τριῶν ἀδελφῶν του ἀγῶνα καὶ γενόμενος σουλτᾶνος διώρισε τὸν Μπεντρεντὶν δικαστὴν Νικαίας. Οὗτος, νομίσας ὅτι ἠδύνατο νὰ ἐπωφεληθῇ τῆς ἀθλίας καταστάσεως, εἰς τὴν ὁποίαν εὑρίσκετο τὸ κράτος τῶν Τούρκων μετὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ Ταμερλάνου καὶ κατόπιν τῶν μακρῶν ἐμφυλίων πολέμων, ἐνέπνευσεν εἴς τινα «ψευδοαββᾶν», ὡς τὸν ὀνομάζει ὁ Δούκας, καλούμενον Μπορεκλουτζὲ Μουσταφᾶ, καὶ εἰς ἕνα Ἑβραῖον ἐξωμότην, ὀνόματι Τορλὰκ Κεμὰλ Χὸντ-Ἀμπεντίν, τὴν ἰδέαν τῆς ἐπαναστάσεως διὰ τῆς διαδόσεως ἰδεῶν κομμουνιστικῶν, δηλαδὴ τῆς κοινοκτημοσύνης καὶ τῆς συναδελφώσεως τῶν λαῶν καὶ ἰδίᾳ Τούρκων καὶ Χριστιανῶν. Ὁ σουλτᾶνος Μεχμὲτ κατέστειλε μετὰ κόπου τὸ κίνημα. Ὁ Μπορεκλουτζὲ Μουσταφᾶς ἐσταυρώθη ἐν Ἐφέσῳ, ὁ Τορλὰκ Κεμὰλ ἐν Μαγνησίᾳ, ὁ δὲ Μπεντρεντίν, καταφυγὼν κατ' ἀρχὰς παρὰ τῷ ἡγεμόνι τῆς Κασταμονῆς Ἰσφενδιὰρ-ὀγλοῦ καὶ κατόπιν παρὰ τῷ βοεβόδᾳ τῆς Βλαχίας, συνελήφθη εἰς τὰ ὄρη τῆς Βουλγαρίας καὶ δικασθεὶς κατεδικάσθη εἰς θάνατον καὶ ἀπηγχονίσθη ἐν Σέρραις, προσυπογράψας, ὡς λέγεται, καὶ ὁ ἴδιος τὴν καταδικαστικὴν ἀπόφασιν (1418). Ἦτο βαθὺς γνώστης τοῦ μουσουλμανικοῦ δικαίου, γράψας καὶ δύο σπουδαῖα συγγράμματα. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπεντρῆ-ἀγᾶς.** Πλουσιώτατος Τουρκοκρὴς γαιοκτήτων ἐξ Ἁγ. Μύρωνος τῆς Κρήτης, παρὰ τὸν ὁποῖον σῴζονται ἔτι τὰ ἐρείπια τοῦ πύργου αὐτοῦ. Κατέστη διαβόητος διὰ τὰς κατὰ τῶν Χριστιανῶν ἀπανθρωπίας αὐτοῦ. Ὁ σουλτᾶνος, πληροφορηθεὶς περὶ τῶν μέσων δι' ὧν ἐπλούτισεν εἰς βάρος τῶν Χριστιανῶν, διέταξε τὸν πασᾶν Ἡρακλείου, ὅστις συλλαβὼν ἐστραγγάλισε τὸν Μπεντρῆ, δημεύσας καὶ ὁλόκληρον τὴν περιουσίαν αὐτοῦ. Τοῦτο ἦτο μία ἐκ τῶν ὀλίγων περιπτώσεων ἐπεμβάσεως τῆς Πύλης κατὰ τῶν Τουρκοκρητῶν. ΕΡ.Μ.

**Μπὲντρ-Ντζεμαλί.** Πρωθυπουργὸς τοῦ Φατιμίδου χαλίφου Μοστανσίρ. Ἦτο Ἀρμένιος τὸ γένος, ἀγορασθεὶς παῖς ἀκόμη ὡς δοῦλος. Διεκρίθη κυρίως κατὰ τὴν εἰρήνευσιν τῆς Αἰγύπτου καὶ τὴν ἀνάκτησιν τῆς Συρίας. Ἀπέθανε τῷ 1082 ἐν Καΐρῳ. Ν. Μ.

**Μπὲντς** (Benz), ***Κάρολος.*** Γερμανὸς μηχανικός, γεννηθεὶς τῷ 1844 ἐν Καρλσρούῃ. Κατεσκεύασε τῷ 1878 δίχρονον ἀεριομηχανὴν ἐσωτερικῆς καύσεως, καὶ βραδύτερον τετράχρονον βενζινοκινητῆρα. Εἶναι ἱδρυτὴς τοῦ ἐργοστασίου κατασκευῶν «Benz und Co», τὸ ὁποῖον κατεσκεύασε τῷ 1885 τὸ πρῶτον αὐτοκίνητον. Γ. Θ. Κ.

**Μπέντσελ-Στερνάου** (Bentzel-Sternau), ***Χριστιανὸς-Ἐρνέστος,*** *κόμις—.* Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1767—1843). Ὑπῆρξε μέλος τοῦ συμβουλίου τοῦ κράτους ἐν Βάδῃ, βραδύτερον δὲ ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν ἐν Φραγκφούρτῃ. Ὡς συγγραφεὺς εἶναι γνωστὸς ἐκ τῶν σατιρικῶν ἔργων «Πρωτεὺς» καὶ «Χρυσοῦς μόσχος». Ἀξιόλογοι εἶναι ἐπίσης αἱ «Βαυαρικαὶ ἐπιστολαί». Α. Δ.

**Μπέντσενμπεργ** (Benzenberg), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς φυσικὸς καὶ δημοσιολόγος (1777—1846). Καθηγητὴς τῆς φυσικῆς καὶ τῆς ἀστρονομίας ἐν Ντύσσελντορφ, διηύθυνε (1807) τὰς ἐργασίας τῆς κτηματολογικῆς ἐπιτροπῆς διὰ τοῦ τριγωνισμοῦ τῆς Βαυαρίας, ἵδρυσε δὲ κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο εἰδικὴν σχολὴν γεωμετρῶν. Ἐκληροδότησεν εἰς τὸ Ντύσσελντορφ τὸ ἀστεροσκοπεῖον, ὅπερ εἶχεν οἰκοδομήσει ἐν Μπίλκς. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Ἐγχειρίδιον γεωμετρίας» (1810), «Ἡ κίνησις τῆς γῆς περὶ τὸν ἄξονά της» (1845) καὶ πολλαὶ πραγματεῖαι ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς πολιτικῆς. Α. Δ.

**Μπέντσιο** (Benzio), ***Τρύφων.*** Ἰταλὸς ποιητὴς ἐξ Ἀσσίζης, ζήσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Διετέλεσε γραμματεὺς πολλῶν παπῶν, ἰδίᾳ δὲ τοῦ Ἰουλίου Β', καὶ ἤγαγεν εἰς αἴσιον πέρας μετὰ πολλῆς ἐπιδεξιότητος διαφόρους δυσκόλους ἀποστολάς, τὰς ὁποίας ἀνέλαβε (1537, 1541, 1546). Εἰδεχθὴς τὴν ὄψιν καὶ ἀφαντάστως ἀκάθαρτος, μὲ δέρμα τριχωτὸν καὶ ὀδόντας μακρούς, ἐνεποίει ἀποκρουστικὴν ἐντύπωσιν, ἀπεκαλεῖτο δὲ συχνὰ λύκος καὶ ἀγριόχοιρος. Ἡ τοιαύτη ὅμως ἐξωτερικὴ ἀσχημία του εὑρίσκετο εἰς πλήρη ἀντίθεσιν πρὸς τὸ φαιδρόν, πνευματῶδες καὶ φιλοσοφικὸν πνεῦμά του, χάρις εἰς τὸ ὁποῖον εἶχε προσελκύσει πολλοὺς φίλους, οἵτινες ἀπεκάλουν αὐτὸν «Σωκράτη τῆς Ρώμης». Κατέλιπε μέγαν ἀριθμὸν ἔργων, ἰταλιστὶ καὶ λατινιστί, ἐγκατεσπαρμένων εἰς πλείστας συλλογάς, κυρίως δὲ εἰς τὴν «Rime di diversi nobili poeti Toscani». Χ. Δ.

**Μπέντφορντ** (Bedford) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Ἀγγλίας πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου κομιτείας, κειμένη ἐπὶ ἀμφοτέρων τῶν ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Ὄουζ, 80 χλμ. πρὸς ΒΒΔ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἀξιόλογον ἐκπαιδευτικὸν κέντρον, ἔχουσα πλείστας σχολάς, ὧν σπουδαιοτάτη ἡ ἀπὸ τοῦ 1561 ἱδρυθεῖσα «Grammar school», τῆς ὁποίας τὸ κτήριον (1891) εἶναι ἐκ τῶν καλλίστων τῆς πόλεως. Ἐπίσης κοσμεῖται ὑπὸ πολυαρίθμων γοτθικῶν ἀρχιτεκτονημάτων, κτισθέντων κατὰ τὸ πλεῖστον ὑπὸ τοῦ σὲρ Γουλιέλμου Χάρπωρ ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Ἐδουάρδου ΣΤ'. Κειμένη ἐν μέσῳ πλουσίας γεωργικῆς περιοχῆς, διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ἔχει βιομηχανίας μηχανῶν καὶ γεωργικῶν εἰδῶν. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἦτο σπουδαῖον κέντρον κατασκευῆς ἀεροπλάνων. Κάτ. 39.18[illegible]

Digitized by Google

—2) Πολλαὶ ἐπίσης μικραὶ πόλεις τῆς Β. Ἀμερικῆς φέρουσι τὸ ὄνομα τοῦτο, ἐξ ὧν γνωστότεραι εἶναι ἡ ἐν τῇ κομιτείᾳ Λάγκαστερ τῆς πολιτείας τῆς Πενσυλβανίας καὶ ἡ ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Νέας Ὑόρκης.

— **Μπέντφορντ κομιτεία** (Bedfordshire) *[Γεωγρ.]*. Μεσόγειος κομιτεία τῆς κεντρικῆς Ἀγγλίας, ἐκτεινομένη ἐν τῇ πρὸς Β. τοῦ Λονδίνου χώρᾳ. Ἔχει ἔκτασιν 1.226 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1921) 206.462 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς εἶναι λοφῶδες ἰδίως κατὰ τὸ Β. αὐτοῦ τμῆμα, ἀλλ' εὐφορώτατον, ἀρδευόμενον ὑπὸ τῶν ποταμῶν Ὄουζ, Ἀΐβελ καὶ Χάϊζ. Καλῶς καλλιεργούμενον παράγει κυρίως σιτηρὰ καὶ ἔχει ἀνεπτυγμένην κτηνοτροφίαν, τροφοδοτοῦσαν τὰς ἀγορὰς τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται διὰ πυκνοῦ καὶ πλήρους συγκοινωνιακοῦ δικτύου. Χ. Δ.

**Μπέντφορντ** (Bedford). Κομιτικὸς καὶ δουκικὸς τίτλος τῆς οἰκογενείας τῶν *Ρῶσελ*, ἧς μέλη εἶναι οἱ κάτωθι:

— 1) ***Ἰωάννης Πλανταγενέτης*** (1389—1435). Τρίτος υἱὸς τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἑρρίκου τοῦ Δ' καὶ ἀδελφὸς Ἑρρίκου τοῦ Ε'. Ἅμα τῇ ἀνόδῳ τοῦ πατρός του εἰς τὸν θρόνον, ἔλαβε διάφορα ἐν τῷ κράτει ἀξιώματα. Ἅμα τῇ ἀνόδῳ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἑρρίκου τοῦ Ε' εἰς τὸν θρόνον, ὁ Ἰωάννης ὠνομάσθη δοὺξ τοῦ Μπέντφορντ. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ἑρρίκου εἰς Γαλλίαν (1415), ὁ Ἰωάννης ἐκυβέρνα ὡς ἐπίτροπος τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ τὸν Αὔγουστον τοῦ 1416 διῴκει τὸν ἀγγλικὸν στόλον, ὅστις κατεναυμάχησε τὸν γαλλικὸν κατὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Σηκουάνα. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του ἀνέλαβε τὴν διακυβέρνησιν της χώρας ὡς ἐπίτροπος τοῦ ἀνηλίκου βασιλέως Ἑρρίκου τοῦ ΣΤ' καὶ τὴν ἀντιβασιλείαν ἐπὶ τῶν ἐν Γαλλίᾳ ἀγγλικῶν κτήσεων. Ἀφήσας ἀντικαταστάτην του ἐν Ἀγγλίᾳ τὸν ἀδελφόν του δοῦκα τοῦ Γκλόστερ, ἐσυνέχισε μετ' ἐπιτυχίας τὸν κατὰ τῆς Γαλλίας πόλεμον, ἐνισχυθεὶς ἐν τούτῳ καὶ διὰ τῆς συμμαχίας του μετὰ τοῦ Φιλίππου, δουκὸς τῆς Βουργουνδίας οὗ τὴν ἀδελφὴν Ἄνναν ἔλαβεν ὡς σύζυγον. Ἡ ἐμφάνισις ὅμως τῆς Ἰωάννας Ντ' Ἄρκ καὶ ἡ ἐγκατάλειψίς του ὑπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας ἠνάγκασαν τὸν Ἰωάννην νὰ λύσῃ τὴν πολιορκίαν τῆς Ὀρλεάνης (1429). Ἡ ἔλλειψις ἐξ ἄλλου ἐνισχύσεων ἐξ Ἀγγλίας, ὁ θάνατος τῆς συζύγου του, μεθ' ὃν αἱ μεταξὺ Βουργουνδίας καὶ Ἀγγλίας φιλικαὶ σχέσεις ἠτόνησαν καὶ ἡ σύναψις εἰρήνης τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας κατέρριψαν πᾶσαν ἐλπίδα τοῦ Ἰωάννου περὶ ἡγεμονίας τῆς Ἀγγλίας ἐν Γαλλίᾳ.

— 2) ***Ἰωάννης Ρῶσελ.*** Πρῶτος κόμης (1550) τοῦ Μπέντφορντ (1486—1555). Αὐλικὸς ἐπὶ Ἑρρίκου τοῦ Ζ', ὑπηρέτησεν ὡς στρατιωτικὸς καὶ διπλωμάτης ἐπὶ Ἑρρίκου τοῦ Η', μετέβη ἐπὶ διπλωματικῇ ἀποστολῇ εἰς Ἰταλίαν πρὸς τὸν πάπαν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν μάχην τῆς Παβίας (1525). Διετέλεσε μέλος τοῦ Παρλαμέντου (1529). Τῷ 1537 ἐγένετο διαχειριστὴς τοῦ βασιλικοῦ οἴκου καὶ μετὰ ἓν ἔτος μέλος τοῦ ἰδιωτικοῦ συμβουλίου τοῦ ἄνακτος, λαβὼν μετὰ ταῦτα καὶ ἄλλα διάφορα ἀξιώματα.

— 3) ***Φραγκῖσκος Ρῶσελ.*** Πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης (1527—1585). Ἦτο υἱὸς τοῦ προηγουμένου ὃν διεδέχθη καὶ εἰς τὸν τίτλον. Ἀπὸ τοῦ 1547—1552 ἦτο μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων καὶ ἀπὸ τοῦ 1552 τῆς βουλῆς τῶν Λόρδων (ὡς *λόρδος Ρῶσελ*). Ηὐνόει τοὺς μεταρρυθμιστάς, ὧν ἠσπάζετο τὰς ἰδέας, φυλακισθεὶς μάλιστα κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τῆς βασιλείας τῆς Μαρίας διὰ τὴν ἐν τῷ θρησκευτικῷ ζητήματι στάσιν του. Ἀποφυλακισθεὶς ἐξωρίσθη εἰς Ἰταλίαν. Μετὰ τὴν ἄνοδον τῆς Ἐλισάβετ εἰς τὸν θρόνον ἀνέκτησε τὴν αὐλικὴν εὔνοιαν, ἐπιφορτισθεὶς καὶ διὰ σημαντικῶν διπλωματικῶν ἀποστολῶν εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Κατὰ τὰ τελευταῖα του ἔτη ἦτο πρόεδρος τοῦ συμβουλίου τῆς Οὐαλλίας.

— 4) ***Φραγκῖσκος Ρῶσελ.*** Ἄγγλος πολιτικός, τέταρτος κόμης τοῦ Μπέντφορντ (1593—1641). Ἦτο ἐξάδελφος τοῦ *Ἐδουάρδου Ρῶσελ* (1572—1672), τρίτου κόμητος τοῦ Μπέντφορντ. Ὅταν ἐξερράγη ἡ μεταξὺ Παρλαμέντου καὶ βασιλέως Καρόλου τοῦ Α' ἔρις, ὁ Φραγκῖσκος ἐτάχθη μὲ τὸ μέρος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων. Τῷ 1629 ἐφυλακίσθη, ὡς μετασχὼν εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ φυλλαδίου τοῦ Ντῶντλεϋ «Προτάσεις διὰ τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Α. Μεγαλειότητος». Ἦτο εἷς τῶν ἐναντίον τοῦ βασιλέως Καρόλου ἀρχηγῶν ἐν τῷ Βραχεῖ Κοινοβουλίῳ καὶ ἀρχηγὸς τοῦ κοινοβουλευτικοῦ κόμματος ἐν τῷ Μακρῷ Κοινοβουλίῳ.

— 5) ***Ἰωάννης Ρῶσελ.*** Τέταρτος δοὺξ τοῦ Μπέντφορντ (1710—1771). Ἄγγλος πολιτικός. Διακεκριμένον μέλος τοῦ κόμματος τῶν Οὐΐγων, ὑπῆρξεν ἀντίπαλος τοῦ σὲρ Ροβέρτου Βάλπολ ἐν τῇ βουλῇ τῶν Λόρδων καὶ βραδύτερον τοῦ Πίττ. Ἀπὸ τοῦ 1748—1751 διετέλεσεν ὑπουργὸς ἐπὶ κυβερνήσεως Πέλαμ, ἀντιβασιλεὺς τῆς Ἰρλανδίας (1753—1761), ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, διεπραγματεύθη δέ, ὡς πρεσβευτὴς τῆς Ἀγγλίας, τὴν μετὰ τῆς Γαλλίας εἰρήνην (1763). Κατέστη τέλος ἀρχηγὸς πολιτικῆς μερίδος, ἥτις ἀπεκλήθη, λόγῳ κακῆς ἐπὶ συναλλαγῇ φήμης, «συμμορία τοῦ Μπλούμσμπαρρυ» (Bloomsbury gang). Γ. Ι. Β.

**Μπεντὼ** (Bedeau), ***Μαρία-Ἀλφόνσος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1804—1863). Ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐκστρατείας τοῦ Βελγίου ὑπὸ τὸν στρατάρχην Gérard (1831—1832)· τῷ 1836 ἀπεστάλη εἰς Ἀλγέριον, ἔνθα διεκρίθη διὰ τὴν στρατιωτικήν του ἱκανότητα, καὶ τῷ 1837 διωρίσθη διοικητὴς τῆς Κωνσταντίνης, ὡς τοιοῦτος δὲ κατενίκα τοὺς Ἄραβας ἐπὶ δέκα σχεδὸν ἔτη. Ἔλαβε τοὺς βαθμούς του ἐπὶ τῶν πεδίων τῶν μαχῶν, προαχθεὶς μετὰ τὴν μάχην τοῦ Isly (1844) εἰς στρατηγόν.

Κατὰ τὴν δευτέραν δημοκρατίαν ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν συνταγματικὴν συνέλευσιν, ἧς ἐγένετο καὶ ἀντιπρόεδρος. Συλληφθεὶς κατὰ τὴν νύκτα τῆς 2 Δεκεμβρίου 1851 ἐξωρίσθη, ἐπανῆλθε δ' εἰς τὴν Γαλλίαν μόνον μετὰ τὴν δοθεῖσαν ἀμνηστείαν τῷ 1859. Τ. Ι. Κ.

**Μπένυαν** (Bunyan), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ ἱεροκῆρυξ (1628—1688). Πρὸς ἑρμηνείαν ἱερῶν πραγμάτων μετεχειρίζετο ἀλληγορίας. Ἐβασανίζετο καθημερινῶς ὑπὸ ψευδαισθήσεων, φανταζόμενος ὅτι τὰ πνεύματα τῆς κολάσεως, ὑπὸ τὴν μορφὴν νηρηΐδων, θέλουν νὰ τὸν ἐμβάλουν εἰς πειρασμόν. Προσελθὼν εἰς τὴν αἵρεσιν τῶν Ἀναβαπτιστῶν, κατέστη εἷς τῶν εὐγλωττοτέρων ἱεροκηρύκων τῆς Ἀγγλίας. Ἀλλὰ κατὰ τὴν παλινόρθωσιν τοῦ Καρόλου Β' τὸ κήρυγμά του θεωρεῖται στασιαστικὸν καὶ ῥίπτεται εἰς τὰς φυλακάς, ὅπου μένει δώδεκα ἔτη. Κατὰ τὴν μακρὰν ἐγκάθειρξίν του γράφει ἔργον περὶ τῆς ἀγγλικῆς Ἐκκλησίας καὶ ἀρχίζει τὴν σύνταξιν τοῦ ἀλληγορικοῦ βιβλίου του «Pilgrims Progress», ὅπερ ἔγινε σὺν τῷ χρόνῳ τὸ βιβλίον τῶν εὐσεβῶν, δεκατέσσαρα δὲ ἔτη βραδύτερον ὁ Μπένυαν, ὅστις ἐν τῷ μεταξὺ ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἐπισκόπου, ἐσχεδίασε τὸ δεύτερον μέρος τοῦ ἔργου του καὶ τὴν συγγραφὴν τοῦ «Ἱεροῦ πολέμου». Α. Δ.

**Μπενφάϋ** (Benfey), ***Θεόδωρος.*** Περιφανὴς Γερμανὸς ἀνατολιστὴς καὶ γλωσσολόγος (1809—1881). Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν Γοττίγγῃ καὶ Μονάχῳ. Τῷ 1848 ὠνομάσθη ἔκτακτος, τῷ δὲ 1862 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς σανσκριτικῆς καὶ τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γοττίγγης. Βραδύτερον ἐξελέγη ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς ἐν Παρισίοις Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ γραμμάτων. Ὁ Μπενφάϋ θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν μεγαλυτέρων σοφῶν καὶ φιλολόγων τῆς Γερμανίας, διεκρίθη δὲ ἰδίᾳ ὡς σανσκριτιστής, τὴν παγκόσμιον δὲ φήμην αὐτοῦ ὀφείλει πρὸ παντὸς εἰς τὰ ἑξῆς ἔργα: «Τὰ ὀνόματα τῶν μηνῶν παρὰ τισιν ἀρχαίοις λαοῖς» (1836), «Λεξικὸν τῶν ῥιζῶν τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης» (1840), ἔργον τιμηθὲν διὰ τοῦ βραβείου Βολνὲ τοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Γαλλίας, «Συγγένεια τῆς γλώσσης τῶν Αἰγυπτίων πρὸς τὸ σημιτικὸν γλωσσικὸν στέλεχος» (1844), «Αἱ περσικαὶ σφηνοειδεῖς ἐπιγραφαὶ μετὰ μεταφράσεως καὶ λεξιλογίου» (1848), «Γραμματικὴ τῆς Σανσκριτικῆς» (1852), «Λεξικὸν σανσκριτο-ἀγγλικὸν» (Λονδῖνον 1866), «Ἱστορία τῆς γλωσσολογίας καὶ τῆς μελέτης τῶν φιλολογιῶν τῆς Ἀνατολῆς ἐν Γερμανίᾳ ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος» (1869), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν γραμματικὴν τῆς γλώσσης τῶν Βεδῶν» (1874). Διὰ τῶν ἑρμηνευτικῶν σημειώσεων αὐτοῦ εἰς τὴν «Παντσατάντρα» ἐγκαινίασε τὴν μελέτην τῆς προελεύσεως τῶν μύθων καὶ μυθικῶν θεμάτων τῆς Ἐγγὺς καὶ Ἄπω Ἀνατολῆς, τῶν διαδεδομένων εἰς τὴν Δύσιν, τὰς ἐρεύνας δ' αὐτοῦ ταύτας ἐδημοσίευσε καὶ εἰς ἄλλα μὲν περιοδικά, ἰδίᾳ δὲ εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθεῖσαν ἐπιθεώρησιν «Orient und Occident» (τόμ. 1—3, Γοττίγγη 1863—1865). Δ. Α.

**Μπένχα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Αἰγύπτου (βλ. λ. *Βέγχα*).

**μπεξῆς** (ὁ)· ὁ ἀγροφύλαξ (βλ. λ. μεκτσῆς).

**Μπέξλεϋ** (Bexley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Κέντ, ἀπέχουσα τοῦ Λονδίνου 22 χλμ. ΝΑ. Κάτ. (1921) 21.457. Χ. Δ.

**Μπεξὸν** (Bexon), ***Γαβριὴλ-Λεοπόλδος-Κάρολος-Ἀγαπητός.*** Γάλλος ἀββᾶς, φυσικὸς καὶ ἱστορικὸς (1748—1784). Φίλος τοῦ Μπυφφὸν καὶ μετ' αὐτοῦ συνεργασθεὶς εἰς τὴν συλλογὴν καὶ μελέτην τῶν πτηνῶν, τῶν ὀρυκτῶν καὶ τῶν πολυτίμων λίθων, ἔγραψεν: «Ἀγροτικὴ κατήχησις» (1773), «Ἡ γονιμοποίησις τῆς γῆς» (1773), «Περὶ τῶν ποταμῶν ἐν σχέσει πρὸς τὴν γεωργίαν» (1797), κ. ἄ., ἰδίως δὲ «Ἱστορίαν τῆς Λωρραίνης» (1777), ὅπου συνεκέντρωσε πλῆθος ἱστορικοῦ ὑλικοῦ ἀγνώστου. —Π.

**Μπέξχιλλ** (Bexhill) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Σάσσεξ, κειμένη 8 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Χέϊστινγξ, μεθ' οὗ συνδέεται δι' ἠλεκτροκινήτου τροχιοδρόμου. Ἀποτελεῖται ἐκ τῆς παλαιᾶς πόλεως καὶ τῆς παρὰ τὴν θάλασσαν νέας λουτροπόλεως, ἐχούσης πλεῖστα κέντρα διασκεδάσεων καὶ ἀναψυχῆς. Ἀπὸ τοῦ 1919 ἔχει ἀεροπορικὴν δι' ὑδροπλάνων συγκοινωνίαν. Κάτ. (1921) 20.363. Χ. Δ.

**Μπεοβοῦλφος** (Beowulf). Ἥρως ὁμωνύμου ἀγγλοσαξωνικοῦ ἔπους. Ὁ Μπεοβοῦλφος, βασιλεὺς τῶν Γετῶν τῆς Ἰουτλάνδης, διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του εἴς τινα μάχην, καθ' ἣν ὁ θεῖός του, ὁ βασιλεὺς Κοχιλαϊκός, ἔπεσε μαχόμενος ἐναντίον τοῦ ἡγεμόνος τῆς Αὐστρασίας Θεοδωρίχου Α'. Ἐπανελθὼν ὁ Μπεοβοῦλφος εἰς τὴν πατρίδα του, ἐβασίλευσε μέχρι τῆς ἐνηλικιώσεως τοῦ διαδόχου τοῦ θρόνου, πρώτου ἐξαδέλφου του, τὸν ὁποῖον βραδύτερον διεδέχθη. Ἐκ τῶν ἐπεισοδίων τοῦ ἔπους τούτου τινὰ ἐβεβαιώθησαν ὡς γεγονότα πραγματικὰ ὑπὸ τοῦ Γρηγορίου ντὲ Τοὺρ καὶ ἄλλων Φράγκων χρονογράφων. Α. Δ.

**Μπεογκρὰντ** (Beograd) *[Γεωγρ.]*. Σερβικὴ ὀνομασία τοῦ *Βελιγραδίου* (βλ. λ.).

**Μπεόλκο**, ἢ ***Μπιόλκο*** (Beolco ἢ Biolco), ***Ἄγγελος.*** Ἰταλὸς κωμικὸς ποιητὴς ἐκ Παδούης (1502—1542). Ἐμελέτησε τὰ ἤθη, τὰ ἔθιμα καὶ τὴν γλῶσσαν τῶν χωρικῶν καὶ συνέταξεν εἰς τὴν παδουανὴν διάλεκτον μικρὰς κωμῳδίας, καταρτίσας δὲ θίασον ἐκ νεαρῶν φίλων του περιήρχετο τὰ χωρία παριστῶν αὐτάς. Τὰ μέλη τοῦ θιάσου του, ἀποκρύπτοντα τὸ πραγματικὸν ὄνομά των, παρουσιάζοντο μὲ τὰ ὀνόματα τῶν προσώπων τῶν ὁποίων τὸν ῥόλον ὑπεδύοντο. Ἐκ τούτου δὲ καὶ αὐτὸς ἐγένετο κυρίως γνωστὸς ὡς il Ruzzante, ἐκ τοῦ ῥόλου τὸν ὁποῖον ὑπεκρίνετο συνήθως. Αἱ κωμῳδίαι του ἔχουσι δημοσιευθῆ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἅπαντα τὰ ἔργα τοῦ περιφημοτάτου Ρουτσάντε», κάλλισται δ' ἐξ αὐτῶν εἶναι αἱ «Piovana», «Anconitana», «Moschetta», «Fiorina», «Vaccaria», «Rodiana» καὶ ἄλλα. Χ. Δ.

**Μπεουρούσιους** (Behurusius), ***Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς φιλόσοφος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, σύγχρονος τοῦ Ράμους, οὗτινος ὑπῆρξεν ἐνθουσιώδης ὀπαδός. Δὲν παρεδέχετο ὅτι ἦτο δυνατὸν νὰ ὑπάρξῃ σφάλμα τι ἐν τῇ διαλεκτικῇ τοῦ διδασκάλου του, ἣν ἐθεώρει ἀπολύτως ὀρθὴν καὶ τελείαν. Ὅτε δὲ ὁ Κορνήλιος Μαρτίνι ἔγραψε κατὰ τοῦ Ράμους βιαίαν διατριβήν, ὁ Μπεουρούσιους μετὰ τῶν φίλων του Χόντες καὶ Μπούσσερ, πρυτάνεων τῶν ἀκαδημιῶν τῆς Γοττίγγης καὶ τοῦ Ἀννοβέρου, ἔγραψεν ἀπολογίαν τοῦ ῥαμισμοῦ εἰς τρεῖς πραγματείας, δημοσιευθείσας τῷ 1596 ἐν Λεμγκό. Α. Δ.

**Μπὲρ** (Burr), ***Ἀαρών.*** Ἀμερικανὸς πολιτικὸς (1756—1836). Ἐσπούδασε νομικά, μετὰ τὴν ἔκρηξιν δὲ τοῦ πολέμου τῆς Ἀνεξαρτησίας (1775) κατετάγη εἰς τὰς τάξεις τοῦ στρατοῦ τοῦ Οὐάσιγκτων. Μετέσχε τῆς εἰς Καναδᾶν ἐκστρατείας καὶ μεταμφιεσθεὶς εἰς καθολικὸν ἱερέα ἐπεχείρησε κινδυνώδη διὰ μέσου τῶν βρεττανικῶν γραμμῶν πορείαν (232 χλμ.), ἵνα ἀναγγείλῃ εἰς τὸν ἐν Μοντρεὰλ εὑρισκόμενον Ἀμερικανὸν στρατηγὸν τὴν ἄφιξιν ἐπικουριῶν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ἄρνολντ. Ἐπί τι χρονικὸν διάστημα ὑπηρέτησεν εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ Οὐάσιγκτων καὶ τοῦ Πέτναμ (1776—1777), διὰ τῆς ἀγρύπνου δ' αὐτοῦ προσοχῆς κατὰ τὴν ἀποχώρησιν ἀπὸ τῆς Μακρᾶς Νήσου (Long Island) ἔσωσεν ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας ὁλόκληρον ταξιαρχίαν. Τῷ 1777 ἐγένετο ἀντισυνταγματάρχης καὶ διοικητὴς συντάγματος, κατὰ δὲ τὸν χειμῶνα τοῦ ἔτους τούτου ἐφρούρησε τὴν ἐν τῇ κοιλάδι διάβασιν «Κόλπος», προφυλάσσων ἀπὸ ἐνδεχομένης ἐπιθέσεως τὸ κύριον στράτευμα.

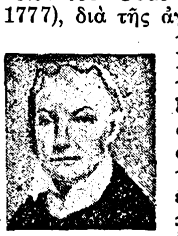

*Ἀαρὼν Μπέρ.*

Κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος διῴκει ταξιαρχίαν καὶ τῷ 1779 τὰ στρατεύματα τῆς «γραμμῆς» ἐν τῇ κομιτείᾳ Οὐεστσέστερ. Κατὰ τὸν Μάρτιον ὅμως τοῦ αὐτοῦ ἔτους παρῃτήθη τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ διὰ λόγους ὑγείας καὶ ἐπαναλαβὼν τὰς νομικὰς σπουδὰς του διωρίσθη τῷ 1782 δικηγόρος ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ. Μετὰ ταῦτα ἐχρημάτισε μέλος τῆς συνελεύσεως (1784—1785, 1798—1799, 1800—1801), γενικὸς εἰσαγγελεὺς (1789—1801) καὶ γερουσιαστὴς (1791—1797). Μετὰ τὴν ἀποσαφήνισιν τῆς ἐσωτερικῆς πολιτικῆς καταστάσεως καὶ τὴν διαμόρφωσιν διακεκριμένων ἐθνικῶν κομμάτων, ὁ Μπὲρ προσεχώρησεν εἰς τοὺς δημοκρατικο-ρεπουμπλικάνους. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1800 πρὸς ἀνάδειξιν προέδρου τῆς Ἀμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἰσοψήφισεν ἐν ἀρχῇ μὲ τὸν Τζέφφερσον, μειοψηφήσας ὅμως κατὰ τὴν ἐπανάληψιν τῆς ψηφοφορίας, ἐξελέγη ἀντιπρόεδρος. Ἡττηθεὶς κατόπιν κατὰ τὰς πρὸς ἀνάδειξιν διοικητοῦ τῆς Νέας Ὑόρκης ἐκλογὰς τοῦ 1804, ἀπέδωκε τὴν ἀποτυχίαν του εἰς τὰς ἐνεργείας τοῦ καὶ ἐν τῷ δικηγορικῷ σταδίῳ ἀντιπάλου του Χάμιλτον, τὸν ὁποῖον ὁ Μπὲρ εἰς γενομένην μονομαχίαν ἐπλήγωσε θανασίμως. Λόγῳ τῆς διὰ τὴν μονομαχίαν ταύτην (καθ' ἣν, ὡς ἐλέχθη, ὁ Χάμιλτον ἐπυροβόλησεν εἰς τὸν ἀέρα) κατακραυγῆς τῆς κοινῆς γνώμης, ὁ Μπὲρ ἀπεσύρθη, μετὰ τὴν λῆξιν τῆς ἀντιπροεδρίας του, εἰς τὰς νοτιοδυτικὰς ἐπαρχίας. Ἐκεῖ διατρίβων κατηγορήθη



Digitized by Google

ὡς ἀναμιχθεὶς εἰς συνωμοσίαν πρὸς ἀπόσχισιν τῶν δυτικῶν πολιτειῶν ἀπὸ τῆς ὁμοσπονδίας. Ἡ κατηγορία αὕτη ἱστορικῶς ἐλέγχεται ὡς ἀστήρικτος. Ἐκ τῆς ἀλληλογραφίας του μετὰ διαφόρων προσώπων φαίνεται ὅτι κυρίως ἐπεδίωξε τὸν πορισμὸν χρημάτων, εἶναι ἐν τούτοις πολὺ πιθανόν, ἐλθὼν εἰς συνεννοήσεις μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Οὐΐλκινσον, στρατιωτικοῦ διοικητοῦ τῆς Λουϊζιάνας, νὰ ἀπέβλεψεν εἰς τὴν ἵδρυσιν μεγάλου κράτους περιλαμβάνοντος τὴν κοιλάδα τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ τὸ Μεξικόν, ἀπὸ τοῦ ὁποίου θὰ ἐξεδιώκοντο οἱ Ἱσπανοί. Ὁπωσδήποτε ὁ Μπὲρ κατηγγέλθη πρὸς τὸν πρόεδρον Τζέφφερσον ὡς συνωμοτῶν καὶ διετάχθη ἡ σύλληψίς του. Ἐγκαταλειφθεὶς τότε ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν του, ἠναγκάσθη νὰ παραδοθῇ εἰς τὸν κυβερνήτην τῆς περιφερείας Μισσισσιπῆ καὶ μετά τινας μῆνας ἤχθη εἰς δίκην ἐνώπιον τοῦ ἀνωτάτου δικαστηρίου τῆς Βιργινίας, ὑπὸ τοῦ ὁποίου ἠθωώθη δι' ἔλλειψιν ἀποδείξεων. Ἔκτοτε, μέχρι τοῦ 1812, ἔζησεν εἰς τὸ ἐξωτερικόν, προσπαθῶν νὰ ἐπιτύχῃ τὴν πραγμάτωσιν διαφόρων σχεδίων πρὸς ἀποκατάστασιν τοῦ πολιτικοῦ του κύρους ἐν Ἀμερικῇ. Ἀπηλάθη ὅμως ἐξ Ἀγγλίας, ὁ δὲ Ναπολέων ἠρνήθη νὰ τὸν δεχθῇ. Τῷ 1 12 ἐπανῆλθεν εἰς Νέαν Ὑόρκην καὶ ἐπεδόθη πάλιν εἰς τὸ δικηγορεῖν.

Ἀνενδοίαστος τὸν χαρακτῆρα, ἀνειλικρινής, ἐστερημένος ἠθικῶν ἀρχῶν, ἐξ ἄλλου δὲ εὐάρεστος τοὺς τρόπους, μεγαλοπρεπὴς μέχρις ἐλαττώματος, ὁ Μπὲρ ὑπῆρξεν ἐξαιρετικὴ ἐν Ἀμερικῇ φυσιογνωμία. Χαρακτηρισθεὶς ὑπὸ τῶν μὲν ὡς τὸ πρότυπον τοῦ προδότου τῆς πατρίδος, ἄνευ οὐδενὸς ἐλαφρυντικοῦ, ἐξυμνεῖτο ὑπὸ ἄλλων ὡς πολιτικὸς ἥρως, τὸν ὁποῖον οὔτε αἱ πολιτικαὶ ἀτυχίαι, οὔτε αἱ περιουσιακαὶ καταστροφαὶ κατέβαλον. Γ. Ι. Β.

**Μπὲρ** (Behr), ***Γουλιέλμος-Ἰωσήφ.*** Γερμανὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1775—1851). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς νομικῆς τοῦ ἐν Βύρτσμπουργκ πανεπιστημίου καὶ κατόπιν πρῶτος δήμαρχος τῆς πόλεως ταύτης. Μετὰ τὴν ἐκλογήν του ὡς μέλους τῆς βαυαρικῆς διαίτης, κατεδιώχθη ὡς ἀντιπολιτευόμενος ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως καὶ ἀπελύθη ἐκ τῆς θέσεως τοῦ δημάρχου. Καταδικασθείς, μετὰ πολυετεῖς ἀνακρίσεις, ἐπὶ δημαγωγίᾳ καὶ ἐξυβρίσει τοῦ βασιλέως, διετέλεσεν, ἐπὶ δώδεκα ἔτη, κατ' ἀρχὰς μὲν ἐγκάθειρκτος, κατόπιν δὲ ὑπὸ ἀστυνομικὴν ἐπιτήρησιν. Τῷ 1848 ἔτυχεν ἀμνηστείας καὶ ἀποζημιώσεως καὶ κατόπιν ἐτιμήθη διὰ τῆς ἐκλογῆς του ὡς μέλους τῆς γερμανικῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του σπουδαιότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Σύστημα δημοσίου δικαίου» (1810), «Ἀνάγκαι, πόθοι καὶ ἐλπίδες τοῦ γερμανικοῦ ἔθνους» (1816), «Τὸ σύνταγμα καὶ ἡ διοίκησις τοῦ κράτους» (1811—1822, τόμ. 2), «Μαθήματα πολιτικῆς οἰκονομίας» (1832).

**Μπὲρ** (Bert), ***Παῦλος.*** Γάλλος φυσιολόγος καὶ πολιτικὸς (1833—1886). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ φυσικὰς ἐπιστήμας, ἐγένετο δὲ τῷ 1866 καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Βορδὼ καὶ ἀπὸ τοῦ ἑπομένου ἔτους ἐν τῇ Σορβόννῃ εἰς τὴν ἕδραν τῆς γενικῆς φυσιολογίας. Τῷ 1874 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τοῦ διαμερίσματος τῆς Yonne εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν, ἐξηκολούθησε δὲ νὰ ἐκλέγεται κατόπιν βουλευτὴς μέχρι τοῦ θανάτου του. Ταχθεὶς ἐξ ἀρχῆς παρὰ τὸν Γαμβέτταν, τοῦ ὁποίου τὴν πολιτικὴν ὑπεστήριξεν ἐνθέρμως, μετέσχεν ἐνεργῶς πάντων τῶν ἔργων τῆς ἐθνοσυνελεύσεως τῶν ἀφορώντων εἰς ἀναδιοργάνωσιν τῆς ἐκπαιδεύσεως καὶ τὴν ἐνίσχυσιν τῶν ἐπιστημῶν. Αὐτὸς ὑπῆρξε τότε ὁ εἰσηγητὴς τοῦ νομοσχεδίου περὶ ἀπονομῆς ἐτησίας συντάξεως 12.000 φράγκων εἰς τὸν Παστέρ, ὑπὸ τὴν ἔννοιαν τῆς ἐθνικῆς ἀνταμοιβῆς, ἐπρωτοστάτησε δὲ κατόπιν ἐν τῇ βουλῇ εἰς τὴν ψήφισιν τοῦ νόμου, δι' οὗ ἡ φοίτησις εἰς τὰ δημοτικὰ σχολεῖα καθίστατο ὑποχρεωτικὴ δι' ἀμφότερα τὰ φῦλα. Ὅταν τῷ 1881 ἀνετέθη εἰς τὸν Γαμβέτταν νὰ σχηματίσῃ κυβέρνησιν, ὁ Μπὲρ μετέσχεν αὐτῆς ὡς ὑπουργὸς τῆς Παιδείας καὶ τῶν Θρησκευμάτων. Ἐπὶ τῆς κυβερνήσεως δὲ τοῦ Φρεσινὲ κατόπιν, βουλευτὴς ὤν, διωρίσθη τῷ 1866 γενικὸς διοικητὴς τοῦ Ἀννὰμ καὶ τοῦ Τογκίνου, ὅπου μεταβὰς ἀπέθανε, κατὰ Νοέμβριον ἰδίου ἔτους, ἐκ δυσεντερίας, ἐν Χανόϊ.

Τὸ ἔργον τοῦ Μπὲρ δὲν περιορίζεται εἰς τὴν πολιτικὴν αὐτοῦ δρᾶσιν, εἶναι δὲ τοὐναντίον σημαντικώτερον ἐπὶ τοῦ ἐπιστημονικοῦ πεδίου. Αἱ ποικίλαι καὶ σοβαρώταται ἐπιστημονικαί του ἐργασίαι δύνανται νὰ χωρισθῶσιν εἰς τὰ ἑξῆς κύρια τμήματα: Εἰς τὰς ἐρεύνας του ἐν πρώτοις ἐπὶ τῆς μεταμοσχεύσεως ἐπὶ τῶν ζῴων καὶ ἐπὶ τῆς ζωτικότητος τῶν ἱστῶν. Διὰ τούτων ὁ Μπὲρ διεπίστωσεν ὅτι δύνανται νὰ ἐγκεντρισθῶσιν εἰς ἓν ζῷον τμήματα τοῦ δέρματος, τοῦ περιτοναίου ἢ καὶ μέλη ὁλόκληρα ἄλλου ζῴου τοῦ αὐτοῦ, ἢ καὶ διαφόρου εἴδους, καὶ ὅτι ἡ θρέψις καὶ ἡ ἀνάπτυξις τῶν ξένων τούτων μελῶν συνεχίζεται μετὰ τὴν μεταμόσχευσιν κανονικῶς. Ὅτι δὲ αἱ μεταμοσχεύσεις αὗται εἶναι κατὰ τοσοῦτον εὐχερέστεραι ὅσον μεγαλυτέρα εἶναι ἡ μεταξὺ τῶν δύο ζῴων συγγένεια. Διὰ τὰς ἐργασίας του ταύτας ὁ Μπὲρ ἔλαβε τὸ βραβεῖον τῆς πειραματικῆς φυσιολογίας (1865). Ἕτερον τμῆμα τῶν ἐπιστημονικῶν του ἐργασιῶν περιεστράφη περὶ τοῦ ἀποτελέσματος τῆς ἐλαττώσεως ἢ αὐξήσεως τῆς ἀτμοσφαιρικῆς πιέσεως ἐπὶ τῶν ζώντων ὀργανισμῶν. Διηρεύνησε τὰς συνθήκας τῆς μεταβολῆς τῆς τάσεως τῶν ἀερίων τοῦ αἵματος, λόγῳ ἐλλείψεως ὀξυγόνου, ἢ λόγῳ ἀφθονίας ἀνθρακικοῦ ὀξέος ἢ καὶ ὑπεραφθονίας ὀξυγόνου. Τὸ τελευταῖον τοῦτο εἶδος δηλητηριάσεως διεπιστώθη ὄχι μόνον ἐπὶ τῶν ζῴων, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῶν φυτῶν.

Διὰ τὴν πρακτικὴν μελέτην τῶν θεμάτων τούτων ὁ Μπὲρ εἶχε κατασκευάσει εἰδικὸν θάλαμον, τοῦ ὁποίου τὸν ἀέρα ἠραίωνεν ἢ συνεπίεζε, μεταβάλλων ἅμα κατὰ βούλησιν τὴν σύστασιν αὐτοῦ. Πειραματιζόμενος δὲ δι' αὐτοῦ, καθώρισεν ἐν τοῖς ἄλλοις τὰς ἀναπνευστικὰς συνθήκας τὰς ὁποίας συναντᾷ ὁ ἀνερχόμενος εἰς ὑψηλὰ στρώματα τῆς ἀτμοσφαίρας ἀεροναύτης καὶ τὰ πρὸς ἐξουδετέρωσιν αὐτῶν χρήσιμα μέτρα (ἐφοδιασμὸς δι' ἀσκῶν ὀξυγόνου κλπ.). Διηρεύνησεν ἐπίσης τὰς ἐπικινδύνους συνεπείας τῆς ἀποτόμου μεταβάσεως ἀπὸ ἑνὸς περιβάλλοντος ηὐξημένης ἢ μειωμένης ἀτμοσφαιρικῆς πιέσεως εἰς τὴν κανονικὴν καὶ ὑπέδειξε τὰ κατάλληλα διὰ τοιαύτας περιπτώσεις μέτρα ἀσφαλείας. Τὰ ἐκ τῶν ἀνωτέρω ἐργασιῶν συμπεράσματά του ὁ Μπὲρ διετύπωσεν εἰς τὸ ἔργον του «Βαρομετρικὴ πίεσις» (1878), βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Σημαντικαὶ ἐπίσης ὑπῆρξαν αἱ ἔρευναί του ἐπὶ τῆς ἀναπνοῆς καὶ τῆς ἀσφυξίας, συνοψισθεῖσαι εἰς τὸ ἔργον του «Μαθήματα συγκριτικῆς φυσιολογίας τῆς ἀναπνοῆς» (1870), αἱ ἐπὶ τῶν ἀναισθητικῶν φαρμάκων, αἱ τοξικολογικαί του ἀναζητήσεις καὶ τέλος αἱ ἐπὶ τῆς φυσιολογίας τῶν φυτῶν.

Ἡ συγγραφικὴ παραγωγικότης τοῦ Μπὲρ ὑπῆρξεν αὐτόχρημα καταπληκτική, τόσον ἐπὶ τῶν πολιτικῶν, ὅσον καὶ ἐπὶ τῶν ἐπιστημονικῶν θεμάτων. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του τῆς πρώτης κατηγορίας ἀναφέρομεν: «Λόγοι ἐπὶ τοῦ νόμου περὶ ἐλευθερίας τῆς ἀνωτέρας ἐκπαιδεύσεως» (1879), «Ἡ ἠθικὴ τῶν Ἰησουιτῶν» (1880), «Ἡ λαϊκὴ ἐκπαίδευσις» (1881), «Ἐπιστολαὶ ἐκ Καβυλίας· ἡ ἀλγεριακὴ πολιτική» (1885) κλπ. Αἱ ἐπὶ τοῦ ἐπιστημονικοῦ πεδίου πραγματεῖαί του μετροῦνται κατὰ δεκάδας, εἶναι δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκθέσεις καὶ ἀνακοινώσεις ἐπὶ τῶν πειραματικῶν του ἐρευνῶν. Ἔγραψεν ὅμως καὶ βιβλία ἀποσκοποῦντα εἰς τὴν ἐκλαΐκευσιν τῆς ἐπιστήμης, ἐν οἷς: «Στοιχεῖα ζῳολογίας» (1886), «Ἀνατομία καὶ φυσιολογία τῶν ζῴων» (1885), «Ἀναγνώσματα ἐπὶ τῆς φυσικῆς ἱστορίας» (1883), «Στοιχεῖα Γεωμετρίας» (1887) κλπ.

[Πρβλ. *E. Bérillon*, «Τὸ ἐπιστημονικὸν ἔργον τοῦ Παύλου Μπὲρ» (1887).] Γ. Ζ.

— **Μπὲρ** (Ber), ***ντὲ Τυρίκ.*** Οἰκογένεια Γάλλων ἰσραηλιτῶν, ἐντατικῶς ἐργασθέντων ὑπὲρ τοῦ γένους των. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν ἐπανάστασιν, ὁ *Ἰσαὰκ Μπὲρ ντὲ Τυρὶκ* ὡμίλησεν ἐνθέρμως ἐνώπιον τῆς συντακτικῆς ἐθνοσυνελεύσεως, ζητῶν τὴν παραχώρησιν πολιτικῶν δικαιωμάτων εἰς τοὺς ὁμοφύλους του, ὁ δὲ υἱὸς τούτου *Μιχαήλ*, πρῶτος Ἰσραηλίτης δικηγόρος ἐν Γαλλίᾳ, ἠγωνίσθη καὶ διὰ τοῦ λόγου καὶ διὰ τῆς γραφίδος ὑπὲρ τῆς ἰσραηλιτικῆς ὑποθέσεως. Μεταξὺ τῶν ἔργων του ἀναφέρεται ἰδιαιτέρως τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἔκκλησις πρὸς τὴν δικαιοσύνην τῶν ἐθνῶν καὶ τῶν βασιλέων», ἐκδοθὲν ἐν Στρασβούργῳ τῷ 1801. —Ω.

**Μπέρα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν εἰς τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Νιβὰλ τῆς ἐπαρχίας Ρατζπουτάνα. Κάτ. 18.456. Π. Γ. Λ.

**Μπερὰ** (Bérat), ***Εὐστάθιος.*** Γάλλος συνθέτης ἐλαφρῶν τραγουδιῶν (1791—1884). Ἔγραψε σειρὰν κωμικῶν ᾀσμάτων, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἡ μαγικὴ λυχνία», «Μπαμπέ», «Ἡ Κολέττα μου», «Ἔρως ἐπιπλοπώλης» κτλ. Ὁ νεώτερος ἀδελφός του **Φρειδερῖκος** (1801—1855) ἐγνώρισεν ἔτι μεγαλυτέραν φήμην καὶ εἶχε συνδεθῇ διὰ φιλίας μετὰ τοῦ Μπερανζέ, δι' ὃν ἔγραψε τὴν μελῳδίαν: «Ἡ Λιζέττα τοῦ Μπερανζέ». Ἀπὸ τὰ γνωστότερά του τραγούδια εἶναι: «Ἡ Νορμανδία μου», «Ὁ ἔμπορος τῶν τραγουδιῶν», «Ἡ μικρή μου Τουανέττα», «Ὁ Νορμανδὸς βοσκός» κτλ. Γ. Σ.

**Μπεράλ** (Béral), ***Βερνάρδος-Ἐλουά.*** Γάλλος μηχανικὸς καὶ πολιτικὸς (1838—1908). Ἀποφοιτήσας τῆς πολυτεχνικῆς σχολῆς, ἠκολούθησε τὸν κλάδον τῆς μεταλλειολογίας, εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν διεκρίθη καὶ προήχθη ταχέως εἰς ἀνωτέρους βαθμούς. Τῷ 1865 ἀπεστάλη πρὸς ἐκτέλεσιν μεταλλειολογικῶν μελετῶν εἰς Τουρκίαν, ὅπόθεν ἐπέστρεψε μετὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870. Ἡ κυβέρνησις τῆς ἐθνικῆς ἀμύνης τὸν διώρισε τότε νομάρχην τοῦ Lot, βραδύτερον δ' ἐπανελθὼν εἰς τὴν μηχανικὴν ὑπηρεσίαν τοῦ κράτους ἐπεφορτίσθη μὲ τὴν μελέτην τῆς κατασκευῆς διαφόρων γαλλικῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν τοπικοῦ καὶ διεθνοῦς ἐνδιαφέροντος. Τῷ 1879 προήχθη εἰς ἀρχιμηχανικόν, μετ' ὀλίγον δὲ διωρίσθη σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας. Τῷ 1883 ἐξελέγη γερουσιαστὴς ἐκ τῆς περιφερείας Lot. Ὅταν ἐξερράγη τὸ σκάνδαλον τοῦ Παναμᾶ, κατεδιώχθη καὶ αὐτὸς μετὰ πολλῶν ἄλλων πολιτευομένων, ἀλλ' ἠθωώθη κατὰ τὴν δίκην, τῷ δὲ 1906 ἐπανῆλθε καὶ πάλιν εἰς τὴν γερουσίαν. Δὲν διεκρίθη ποσῶς ὡς ῥήτωρ, πολύτιμος ὅμως ὑπῆρξεν ἡ διὰ τῶν ἐκθέσεων καὶ τῶν μελετῶν αὐτοῦ συμβολὴ εἰς τὴν ἀνοργάνωσιν τῶν σιδηροδρόμων τῆς Γαλλίας. —Ω.

**Μπεραμπὶς** (Berabich) *[Γεωγρ.]*. Ἀραβικὴ φυλὴ τῆς Ἀφρικῆς, ζῶσα εἰς τὸ γαλλικὸν Σουδάν, Ν. τῆς Σαχάρας καὶ εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Ἀζαουάτ. Ἀποτελεῖται ἐκ νομάδων κτηνοτρόφων. Οἱ Μπεραμπὶς εἶναι διάσημοι ὁδηγοὶ τῶν καραβανίων διὰ μέσου τῆς Σαχάρας.

**Μπέρανα** (Berane) *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Γιουγκοσλαβίας ἐν τῇ μπανοβίνᾳ τοῦ Βαρδάρ (τέως τουρκικῇ διοικήσει Ἰπεκίου), εἰς ἀπόστασιν 35 χιλ. ΒΔ. τῆς πόλεως τοῦ Ἰπεκίου (Πέτς), παρὰ τὸν ποταμὸν Λίμ. Ἐπὶ τουρκοκρατίας οἱ πλεῖστοι τῶν κατοίκων της ἦσαν Μουσουλμᾶνοι, ὁμιλοῦντες τὴν ἀλβανικὴν καὶ τὴν σερβικήν. Ν. Μ.

**Μπερανζὲ** (Beranger). Δύο βασιλεῖς τῆς Ἰταλίας (βλ. λ. *Βερεγγάριος*).

— **Μπερανζὲ** (Béranger), ***Ἀντώνιος.*** Γάλλος ζωγράφος (1785—1867). Διεκρίθη κυρίως διὰ τὰ ἔργα τὰ ὁποῖα ἐξετέλεσεν ἐπὶ ὑάλου καὶ πορσελλάνης, ἐργασθεὶς ἐπὶ πολὺ χρονικὸν διάστημα εἰς τὸ ἐργοστάσιον τῶν Σεβρῶν, εἰς τὴν φήμην τοῦ ὁποίου συνέβαλε κατὰ μέγα μέρος. Μεταξὺ τῶν ἐπὶ πορσελλάνης ἔργων του ἐν τῷ ἐργοστασίῳ τούτῳ ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ἡ ἄφιξις εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου τῶν καλλιτεχνικῶν ἔργων τὰ ὁποῖα κατεκτήθησαν διὰ τῶν γαλλικῶν ὅπλων», «Ὁ Ἡρόδοτος ἐν Θήβαις», «Ὁ Ἀριστοτέλης λαμβάνων ἀπὸ τὸν Ἀλέξανδρον τὰ προϊόντα τῶν Ἰνδιῶν» κτλ. Ἐζωγράφησεν ἐπίσης πολλοὺς ὑαλοπίνακας, οἱ κυριώτεροι τῶν ὁποίων εὑρίσκονται εἰς τὰς ἐκκλησίας τοῦ Ντρὲ καὶ τοῦ Τριανόν.

— **Μπερανζὲ** (Béranger), ***Ἐρρῖκος.*** Γάλλος λογογράφος καὶ δημοσιογράφος (1867). Ἐξέδωκε τὴν ποιητικὴν συλλογὴν «Ἡ νεωτέρα ψυχή», τὰ μυθιστορήματα: «Ἡ προσπάθεια», «Ἡ πνευματικὴ ἀριστοκρατία», «Ἡ λεία» κτλ. καὶ διετέλεσε συντάκτης τῆς ἐφημερίδος «Action», τῆς ὁποίας ἐγένετο διευθυντής.

— **Μπερανζὲ** (Béranger), ***Ἰωάννης-Πέτρος.*** Ἑλβετὸς συγγραφεὺς (1740—1807). Ἔγραψεν: «Ἱστορίαν τῆς Γενεύης», «Γεωγραφίαν», «Συλλογὴν πάντων τῶν ταξιδίων τοῦ γύρου τοῦ κόσμου», «Ἱστορίαν τῶν τελευταίων χρόνων τῆς Δημοκρατίας τῆς Γενεύης» καί τινα μυθιστορήματα.

— **Μπερανζὲ** (Béranger), ***Λαυρέντιος-Πέτρος.*** Γάλλος λόγιος (1749—1822). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς καὶ ἐπιθεωρητὴς τῆς Ἀκαδημίας τῆς Λυῶνος καὶ ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τὸ κυριώτερον τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ ἠθικὴ ἐν τῇ πράξει», κατ' ἐπανάληψιν ἐκδοθέν.

— **Μπερανζὲ** (Béranger). ***Πέτρος,*** ἐπικαλούμενος *Μπερανζὲ ντὲ Πουατιέ.* Ἤκμασε τὸν ΙΒ' αἰῶνα, ἦτο δὲ μαθητὴς καὶ ὀπαδὸς τοῦ Ἀβαιλάρδου. Συγγράψας «Ἀπολογητικὴν» τοῦ διδασκάλου του, ἐν ᾗ ὑποβάλλει εἰς δριμύτατον ἔλεγχον τοὺς θεολόγους τῆς ἐποχῆς του, ἰδίᾳ δὲ τὸν ἅγιον Βερνάρδον. Ὁ Μπερανζὲ ἐπεξήγησε κατόπιν, εἰς ἀπευθυνθεῖσαν πρὸς τὸν ἐπίσκοπον τῆς Μὰντ ἐπιστολήν του, ὅτι ὁ ἔλεγχος αὐτοῦ δὲν ἀφεώρα τὸν Βερνάρδον ὡς θεολόγον, ἀλλὰ μόνον ὡς συγγραφέα καὶ φιλόσοφον. Α. Δ.

— **Μπερανζὲ** (Béranger), ***Πέτρος-Ἰωάννης*** ντὲ—. Γάλλος ποιητὴς (βλ. λ. *Βερανζέρος*).

— **Μπερανζὲ** (Bérenger), ***Ραϋμόνδος.*** Ἀρχηγὸς τοῦ τάγματος τῆς Ἱερουσαλὴμ (1283—1374). Ἐγένετο γνωστὸς διὰ τοὺς ἀγῶνάς του ἐναντίον τῶν καλιφῶν τῆς Αἰγύπτου καὶ διὰ τὴν ἐν συμμαχίᾳ μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Κύπρου κατάληψιν τῆς Ἀλεξανδρείας καὶ καταστροφὴν τῆς Τριπόλεως τῆς Συρίας.

— **Μπερανζὲ** (Bérenger), ***Ρενᾶτος.*** Γάλλος δικαστικὸς καὶ πολιτικὸς (1830—1915). Ἐκλεγεὶς ἐπανειλημμένως βουλευτής, ἐγένετο γνωστὸς κυρίως διὰ τὰς προσπαθείας του πρὸς ψήφισιν νόμων ὑπὲρ τῆς περιστολῆς τοῦ ἐγκλήματος καὶ τῆς ἀνηθικότητος ἐν Γαλλίᾳ. Ἦτο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν κοινωνικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν, ἱδρυτὴς τῆς ἑταιρείας ὑπὲρ τῶν φυλακῶν καὶ πρόεδρος τῆς ἑταιρείας προστασίας καὶ ἀνορθώσεως τῶν κρατουμένων.

— **Μπερανζὲ ντὲ λὰ Ντρὸμ** (Bérenger de la Drôme), ***Ἀλφόνσος.*** Γάλλος δικαστικὸς καὶ πολιτικὸς (1785—1866). Κατέλαβεν ὑψηλὰ δικαστικὰ ἀξιώματα καὶ ἐχρημάτισε βουλευτής. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Περὶ τῆς ποινικῆς δικαιοσύνης ἐν Γαλλίᾳ», «Περὶ τοῦ συστήματος τῶν φυλακῶν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ» κ.τ.λ. Ἦτο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν κοινωνικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν.

Digitized by Google

— **Μπερανζὲ ντὲ λὰ Τοὺρ** (Bérenger de la Tour). Γάλλος ποιητὴς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἔγραψεν ἐπιγράμματα, ἐρωτικὰ καὶ σατιρικὰ ποιήματα, ἐπιθαλάμια κ. τ. λ. Μεταξὺ τῶν ποιητικῶν συλλογῶν του ἀναφέρεται ἰδιαιτέρως «Ὁ χρυσοῦς αἰών».

— **Μπερανζὲ ντὲ Τοὺρ** (Beranger de Tours). Γεννηθεὶς ἐν Τοὺρ τῆς Γαλλίας κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΑ' αἰῶνος, διηύθυνε τὴν αὐτόθι μητροπολιτικὴν σχολήν. Ἐχθρὸς τῆς θεωρίας τῆς μετουσιώσεως ἐν τῇ θείᾳ εὐχαριστίᾳ, διέβλεπεν ἐν αὐτῇ ἁπλῶς ἐχέγγυον τῆς σωτηρίας διὰ τοὺς πιστούς, διὸ ἐπολεμήθη ὑπὸ διαφόρων θεολογούντων καὶ μάλιστα τοῦ Lanfranc καὶ κατεκρίθη ὑπὸ διαφόρων συνόδων ἐν Ρώμῃ καὶ Βερκέλλῃ (1050) καὶ Παρισίοις (1051). Ἀναγνωρίσας τὴν ἐκκλησιαστικὴν διδασκαλίαν, τὴν ἀπεκήρυξε βραδύτερον καὶ πάλιν τὴν ἀπεδέχθη κατὰ τὴν ἐν Ρώμῃ σύνοδον τοῦ 1079. Τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς, βαρυνθεὶς τὰς θεολογικὰς συζητήσεις, ἀπεσύρθη εἴς τινα νησῖδα του Ἁγίου Κοσμᾶ παρὰ τὸ Tours, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1088. —Ω.

**Μπεράουν** (Beraun, τσεχ. Beroun) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν Βοημίᾳ, ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Λιτάβα καὶ Μολντάου. Κάτ. 11.444. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πίλσεν—Πράγας, δεσπόζει γονιμωτάτης πεδινῆς περιοχῆς καὶ ἔχει λατομεῖα μαρμάρου, ἀνθρακωρυχεῖα, ὑφαντουργεῖα κτλ. Παρ' αὐτὴν τῷ 1774 ἐνίκησαν τὰ αὐστριακὰ στρατεύματα τοὺς Πρώσσους. Π. Ν. Π.

**Μπερὰρ** (Berar) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἀνατολικῶς τῆς περιφερείας τῆς Βομβάης. Ἀποτελεῖ ἀπὸ τοῦ 1903 μετὰ τῶν *Κεντρικῶν Ἐπαρχιῶν* (βλ. λ.) ἑνιαίαν διοίκησιν, μὲ ἕδραν τὸ Ναγκπούρ, ὑπὸ τὸ ὄνομα «Κεντρικαὶ ἐπαρχίαι καὶ Μπεράρ» (Central Provinces and Berar). Ἔχει ἔκτασιν 46.015 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1921) 3.075.316 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Ἀμραότι* (κάτ. 40.694). Τὸ ἔδαφος αὐτῆς ἀποτελεῖται ἐξ εὐρείας κοιλάδος, ἐκτεινομένης μεταξὺ δύο λοφοσειρῶν καὶ διαρρεομένης ὑπὸ τῶν ποταμῶν Γκονταβάρι καὶ Τάπτι, εἶναι δὲ εὐφορώτατον, παράγον βάμβακα, σιτηρά, κέγχρον κλπ. Καταληφθεῖσα τῷ 1853 ὑπὸ τῆς Ἀγγλίας, διῳκεῖτο ὑπ' αὐτῆς κατ' ἀρχὰς ἐπ' ὀνόματι τοῦ ἡγεμόνος (νιζὰμ) τοῦ Χαϋνταραμπάντ. Χ. Δ.

**Μπερὰρ** (Berard) ***Βίκτωρ***. Γάλλος καθηγητὴς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἀπεφοίτησε τῆς École normale τῷ 1889 ὡς πτυχιοῦχος τῆς ἱστορίας, ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἀνατολὴν ὡς μέλος τῆς γαλλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς Ἀθηνῶν καὶ ἐπανακάμψας εἰς Γαλλίαν διωρίσθη κοσμήτωρ ἐν τῇ École normale supérieure. Τῷ 1894 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς φιλολογίας δι' αἰνεσίμου διατριβῆς ἐπὶ τῆς «Origine des cultes arcadiens», δι' ἧς ἐδείκνυε τὴν διατήρησιν εἰς τὸ ἔδαφος καὶ τὰς ἀκτὰς τῆς Ἑλλάδος φοινικικῶν ἐπιδράσεων. Εἰς τὸν αὐτὸν κύκλον μελετῶν ἀνήκει καὶ ἡ λίαν πρωτότυπος μονογραφία του «Les Phéniciens et l'Odyssée» (1902—1903), εἰς τὴν ὁποίαν διαπιστώνει τὴν ἀπόλυτον ἀκρίβειαν τῶν ὁμηρικῶν περιγραφῶν τῆς Μεσογείου. Ἐχρημάτισε καθηγητὴς εἰς τὴν ναυτικὴν σχολήν, εἰς τὴν ἀνωτάτην σχολὴν τοῦ ναυτικοῦ καὶ ἐδημοσίευσεν ἐκτὸς ἀρχαιολογικῶν μελετῶν καὶ ἄλλας σχετιζομένας πρὸς τὸ Ἀνατολικὸν ζήτημα. Σπουδαιότεραι ἐξ αὐτῶν εἶναι αἱ ἑξῆς: «La Macédoine» (1897), «Les affaires de Crète» (1898), «La politique du sultan» (1898), «L'Angleterre et l'impérialisme» (1900), «Questions extérieures» (1901—1902), «Pro Macedonia' l'action austro-russe» (1904), «La révolte de l'Asie» (1904), «L'affaire marocaine» (1906). Θ. Π.

— **Μπερὰρ** (Bérard), ***Λέων***. Σύγχρονος Γάλλος νομομαθὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1876. Ὑπηρέτησεν εἰς διαφόρους ἀνωτέρας δικαστικὰς θέσεις καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Παιδείας. —Ω.

— **Μπερὰρ** (Bérard), ***Φρειδερῖκος***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1789 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1828. Τῷ 1811 ὑπέβαλε τὴν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Plan d'une médécine naturelle, ou la nature considérée comme médecin» (Montpellier 1811) ἐναίσιμον διατριβήν του καὶ σχεδὸν ἀμέσως ἤρχισε νὰ παραδίδῃ μαθήματα ἰατρικῆς, τὰ ὁποῖα ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν. Κατόπιν ἦλθεν εἰς Παρισίους, ὅπου συνειργάσθη εἰς τὸ «Dictionnaire des sciences médicales» καὶ τῷ 1816 ἐπέστρεψεν εἰς Μομπελλιέ, μὲ τὸν σκοπὸν νὰ ἱδρύσῃ ἐκεῖ ἐφημερίδα πρὸς ἐκλαΐκευσιν τῶν θεωρητικῶν του ἀντιλήψεων. Μὴ ἐπιτυχὼν τοῦτο, ἤρχισε τὴν συγγραφὴν ἔργου, εἰς τὸ ὁποῖον ἐξέθετε τὰς ἀπόψεις τῆς ἰατρικῆς σχολῆς τοῦ Μομπελλιέ, συγκρίνων αὐτὰς πρὸς τὰς ἀπόψεις ἄλλων σχολῶν («Doctrines médicales de l'école de Montpellier etc.», Montpellier 1819, τόμ. Α'). Ταυτοχρόνως παρέδιδε μαθήματα παθολογίας καὶ θεραπευτικῆς, τὰ ὁποῖα προσείλκυσαν μέγαν ἀριθμὸν μαθητῶν. Τῷ 1825 ὠνομάσθη καθηγητὴς τῆς ὑγιεινῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μομπελλιέ. Ὁ Μπερὰρ συνέγραψεν ἐπίσης: «Doctrine des rapports du physique et du moral etc.» (Paris 1823), ὅπου προσπαθεῖ νὰ ἑνοποιήσῃ τὰς θεωρίας τοῦ αἰσθησιοκρατισμοῦ καὶ τοῦ πνευματισμοῦ καὶ νὰ καθορίσῃ τὴν ἀκριβῆ σημασίαν ἑκάστης, «Essai sur les anomalies de la variole et de la varicelle etc.» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Lavit, Montpellier 1818), «Mémoire sur les avantages politiques et scientifiques du concours en général etc.» (Paris 1920), «Discours sur les améliorations progressives de la santé publique par l'influence de la civilisation» (Montpellier—Paris 1826), «Esprit des doctrines médicales de Montpellier» (Paris 1830), καὶ ἐξέδωκεν ἐπιστολὴν τοῦ Καμπανὶς ἐπὶ τῶν πρώτων αἰτίων: «Lettre posthume et inédite de Cabanis à F. sur les causes premières» (Paris 1824) μετὰ σημειώσεων. —Ω.

**μπεράτης** (ὁ)· δημοτ., ὁ ξύλινος μοχλὸς διὰ τοῦ ὁποίου κλείεται ἡ θύρα, διήκων ἀπὸ τῆς μιᾶς παραστάδος μέχρι τῆς ἄλλης.

**Μπερὰτι** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀλβανίας (βλ. λ. *Βεράτιον*).

**μπερατλῆς** (ὁ)· ὁ ἔχων *μπερὰτ* (βλ. λ. *βεράτιον*), προνομιοῦχος. Οὕτως ἐκαλοῦντο οἱ διὰ χρημάτων ἢ ἄλλων μέσων ἐπιτυγχάνοντες ἐν τῇ παλαιᾷ Τουρκίᾳ προνόμια ὅμοια πρὸς τὰ τῶν ξένων ὑπηκόων, δυνάμει τῶν διομολογήσεων, καὶ κυρίως ἀσυδοσίαν: «εἶναι μπερατλῆς» ἀσύδοτος. Ν. Μ.

**Μπερβάλντε**, ἢ ***Μπαιρβάλντε*** (Berwalde ἢ Bärwalde) *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Πρωσσίας ἐν τῷ νομῷ *Καινιξβέργης*, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κυστρὶν - Στεττίνου. Κάτ. (1919) 3.424. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῆς φερωνύμου συνθήκης, ἥτις ὑπεγράφη ἐν αὐτῇ τὴν 23 Ἰανουαρίου 1631 μεταξὺ τοῦ πρεσβευτοῦ τῆς Γαλλίας ντὲ Σαρνασὲ καὶ τοῦ βασιλέως τῆς Σουηδίας Γουσταύου - Ἀδόλφου. Σκοπὸν εἶχε αὕτη τὴν ὑπεράσπισιν τῶν διαμαρτυρομένων ἀπὸ τῶν αὐθαιρεσιῶν τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας καὶ τὴν προστασίαν γενικῶς τῶν ἐν Γερμανίᾳ κοινῶν φίλων τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Σουηδίας. Πρὸς τοῦτο ὁ Γουσταῦος-Ἀδόλφος ἀνέλαβε νὰ διατηρῇ ἐν Γερμανίᾳ στρατὸν ἐκ 30.000 πεζῶν καὶ 6.000 ἱππέων, ἔναντι ἐτησίας ἀποζημιώσεως ἑνὸς ἑκατομμυρίου λιβρῶν, τὴν ὁποίαν θὰ κατέβαλλεν εἰς αὐτὸν ἡ Γαλλία. Ἡ συμφωνία αὕτη ἦτο πενταετοῦς διαρκείας, ἰσχύουσα μέχρι τῆς 1 Μαρτίου 1636. Διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Μπερβάλντε ἡ Γαλλία ἀνεγνώριζεν ἐπίσης διὰ πρώτην τότε φορὰν τὸν τίτλον τοῦ βασιλέως εἰς τὸν Γουσταῦον Ἀδόλφον. Χ. Δ.

**Μπεργαδῆς**, ἢ ***Μπεργαῆς***. Ὄνομα ποιητοῦ στιχουργήματος ἐπιγραφομένου «Ἀπόκοπος». Οὐδὲν ἄλλο περὶ αὐτοῦ εἶναι γνωστόν, εἰκάζεται δὲ ἐκ τῆς γλώσσης τοῦ ἔργου του ὅτι θὰ ἦτο Κρής. Ὁ «Ἀπόκοπος» (ἀπὸ—κόπος=μετὰ τὸ ἔργον, ἀνάπαυσις) ἀποτελεῖται ἐκ 500 καὶ πλέον ὁμοιοκαταλήκτων δεκαπεντασυλλάβων, ἀνήκει δὲ εἰς τὸν κύκλον τῶν ποιημάτων τῶν περιγραφόντων κατάβασιν εἰς Ἅδην. Ὁ διηγούμενος βλέπει ἐν ὀνείρῳ ὅτι κατέρχεται εἰς τὸν Ἅδην, ὅπου οἱ νεκροὶ τὸν ἐρωτοῦν τί γίνεται εἰς τὸν κόσμον, καὶ εἰδικῶς ἂν τοὺς ἐνθυμοῦνται οἱ συγγενεῖς των. Ἡ ἀποφατικὴ ἀπάντησις (ἐξαίρεσιν ἀποτελοῦν μόνον αἱ μητέρες) ἀπελπίζει τοὺς νεκρούς, οἱ ὁποῖοι ἐν τέλει τοῦ ποιήματος θέλουν νὰ ἐγχειρίσουν εἰς αὐτὸν «πιττάκια» καὶ τοῦ δίδουν διαφόρους παραγγελίας. Μέγα μέρος τοῦ ποιήματος καταλαμβάνει ἡ διήγησις δύο πνιγέντων ἀδελφῶν καὶ τῆς ἀδελφῆς των.

Τὸ ποίημα γλωσσικῶς καὶ λογοτεχνικῶς ἵσταται μεταξὺ τῶν ἐμμέτρων βυζαντινῶν μυθιστοριῶν καὶ τῶν ἔργων τῆς κρητικῆς παραγωγῆς, πλησιάζον περισσότερον πρὸς τὰ τελευταῖα. Ὁ χαρακτὴρ καὶ ἡ γλῶσσά του, παρ' ὅλα τὰ λόγια στοιχεῖα, εἶναι ἰσχυρῶς δημώδης, δι' αὐτὸν δὲ τὸν λόγον ἀνεγινώσκετο ὑπὸ τοῦ λαοῦ, ὡς ἀποδεικνύουν αἱ πολυάριθμοι ἐκδόσεις.

Ἡ δυτικὴ ἐπίδρασις («Κόλασις» Δάντου), ἣν πολλοὶ ἀνεγνώρισαν εἰς τὸ ποίημα, δὲν εἶναι ἔκδηλος, φαίνεται δὲ νὰ ἔχῃ περισσοτέραν σχέσιν πρὸς τὰς ἀποδημίας εἰς τὸν Ἅδην εἰς τὰς βυζαντινὰς των μιμήσεις (Μάζαρις).

Τὸ ὄνομα τοῦ ποιητοῦ ἐθεωρήθη ἐσφαλμένον καὶ ἐσχετίσθη πρὸς τὰ Μπεναρδῆς, Μπεναρδῆς καὶ Βερναρδάκης. Ἀλλ' ἐν τῇ «Φιλονικίᾳ Χάνδακος καὶ Ρεθύμνου» τοῦ Μαρίνου Μπουνιαλῆ ἀναφέρονται, ἐκ Ρεθύμνου, Μπεργαδῆδες ἄξιοι.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Πρώτη γνωστὴ ἔκδοσις ἐν Βενετίᾳ 1534. Ἀκολουθοῦν: 1543, 1553 (;), 1627, 1648, 1667, 1683, 1721. (*Legrand*, Bibl. hell.). Ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ κειμένου τοῦ 1667 καὶ 1721 ἔκδοσις ὑπὸ *É Legrand* ἐν Collection des monuments No 9 (1870). Δευτέρα ἔκδοσις (ἀνατύπωσις τῆς ἀρχικῆς ἐκδόσεως τοῦ 1534, παραλλαγὴ ἐκ χειρογράφου τῆς Βιέννης) ὑπὸ *τοῦ αὐτοῦ* ἐν Bibliothèque grecque vulgaire, II (1881), 94—122, LXVI—LXVIII.—Πρβλ. *Κρουμβάχερ* Γ' 68 καὶ *Καμπάνη*, Ἱστ. νέας ἑλλ. λογ. σ. 67. Λ. Ν. Π.

**Μπέργαμα** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τῆς *Περγάμου*.

— **Μπέργαμα-τσάϊ** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, διαρρέων τὴν ὑποδιοίκησιν Περγάμου (νομοῦ Σμύρνης) καὶ χυνόμενος εἰς τὸν Μπακὶρ-τσάϊ (Κάϊκον). Ν. Μ.

**μπὲργκ** (Berg). Λέξις γερμανικὴ σημαίνουσα ὄρος καὶ ἀπαντῶσα ὡς δεύτερον συνθετικὸν εἰς πολλὰ τοπωνύμια: *Καίνιγκσμπέργκ, Γιωχάννισμπέργκ*, κτλ. Α. Δ.

**Μπὲργκ** (Berg) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸν γερμανικὸν δουκᾶτον, περιλαμβανόμενον σήμερον εἰς τοὺς νομοὺς Ντύσσελντορφ καὶ Κολωνίας τῆς ρηνανικῆς Πρωσσίας. Ἦτο ἓν τῶν δευτερευόντων πριγκιπάτων τῆς Γερμανίας καὶ εἶχεν ἔκτασιν 3.000 περίπου τετρ. χλμ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ Ντύσσελντορφ. Εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν ἦτο φόρου ὑποτελὲς εἰς τὰ ἀββαεῖα τοῦ Ντόϋτς καὶ τοῦ Βέρντεν, τῷ δὲ 1068 ἐμφανίζεται τὸ πρῶτον Ἀδόλφος τις ἄρχων αὐτοῦ, φέρων τὸν τίτλον φὸν Μπέργκ, οὗτινος ὁ υἱὸς ὠνομάσθη ἀπὸ τοῦ 1101 κόμις. Ἡ πρώτη αὕτη ἀρχοντικὴ οἰκογένεια τοῦ Μπὲργκ διέμενεν εἰς Ἄλτενμπεργκ. Τῷ 1219, κατόπιν τοῦ θανάτου τοῦ τελευταίου ἄρρενος ἀπογόνου της, ἡ κομιτεία περιῆλθεν εἰς τὸν δοῦκα τοῦ Λίμπουργκ, εἶτα δέ, ἀπὸ τοῦ 1348, εἰς τοὺς πρίγκιπας Ζούλιερς. Ὁ ἐκ τῶν πριγκίπων τούτων Γουλιέλμος Β' ἔλαβε τῷ 1380 τὸν τίτλον τοῦ «δουκὸς τοῦ Μπέργκ». Ἔκτοτε αἱ χῶραι τοῦ Μπὲργκ καὶ τοῦ Ζούλιερς παρέμειναν ἡνωμέναι, περιελθοῦσαι τῷ 1511 εἰς τὸν οἶκον τῆς Κλέβης. Ὅτε καὶ ὁ οἶκος οὗτος ἐξέλιπε τῷ 1609, περιῆλθεν εἰς τὸν παλατῖνον πρίγκιπα τοῦ Νόϋμπουργκ, μετὰ ταῦτα δὲ διαδοχικῶς εἰς τὸν παλατῖνον ἐκλέκτορα (1742) καὶ τὸν δοῦκα Ντὲ-Πὸν (1799). Τῷ 1806 ἐγένετο γαλλικόν, ὁ δὲ Ναπολέων εὐρύνας τὰ ὅριά του μέχρι 17.350 τετρ. χλμ., ἔδωσεν αὐτὸ ὡς ἡγεμονίαν εἰς τὸν Ἰωακεὶμ Μυρὰτ ὑπὸ τὸ ὄνομα «μέγα δουκᾶτον τοῦ Μπέργκ». Μετὰ διετίαν ὅμως ὁ Μυράτ, γενόμενος βασιλεὺς τῆς Νεαπόλεως, παρεχώρησεν αὐτὸ εἰς τὸν νεώτερον υἱὸν τοῦ βασιλέως τῆς Ὁλλανδίας Φιλίππου. Μετὰ τὴν πτῶσιν τέλος τοῦ Ναπολέοντος περιῆλθεν εἰς τὴν Πρωσσίαν διὰ τῶν συνθηκῶν τοῦ 1815 καὶ ἔπαυσεν ἔκτοτε ὑφιστάμενον ὡς ἀνεξάρτητον κρατίδιον. Χ. Δ.

**Μπὲργκ** (Bergh); ***Ἐδουάρδος***. Σουηδὸς ζωγράφος (1828—1880). Ἐταξίδευσεν εἰς διαφόρους χώρας τῆς Εὐρώπης καὶ διεκρίθη ἰδίᾳ ὡς τοπιογράφος. Κατ' ἀρχὰς ἠκολούθησε τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Λάρσον, βραδύτερον ὅμως ἐδημιούργησεν ἔργον προσωπικοῦ χαρακτῆρος. Ἀπεικόνισε τοπία τῆς Ἰταλίας, τῆς Ἑλβετίας, τῆς Νορβηγίας καὶ τῆς Σουηδίας μὲ βαθεῖαν αἴσθησιν τῆς φύσεως καὶ διάχυτον λυρισμόν. Τοὺς πίνακάς του ἐπέγραφε συνήθως διὰ τῆς ἁπλῆς λέξεως «Τοπίον» καὶ δὲν τοὺς ἐχρονολόγει. Ἔργα του λίαν ἀξιοσημείωτα εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Ἄποψις τοῦ Uri (Ἑλβετία)» (1858), «Πευκόδασος» (1868), «Καλοκαιρινὸν τοπίον» (1877), ἀποκείμενα ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης, καὶ «Τοπίον τοῦ Τυρόλου» (1864), «Ὁ παλιὸς μύλος» (1864), «Τοπίον μὲ καταρράκτην» (1867), «Σουηδικὸν τοπίον» (1871), ἀποκείμενα εἰς τὸ Μουσεῖον τοῦ Γκαίτεμποργκ. [Βλ. *P. Lespinasse*: «La peinture suédoise contemporaine» Paris, 1928.] Ι. Μ. Π.

— **Μπὲργκ** (Bergk), ***Θεόδωρος***. Γερμανὸς φιλόλογος (1812—1881). Διετέλεσε καθηγητὴς τῶν πανεπιστημίων Μάρμπουργκ, Φράϊμπουργκ, Χάλλης καὶ Μπόνν. Ἐξέδωκεν: «Ἕλληνες λυρικοὶ ποιηταί» (1843 εἰς 3 τ., 5η ἔκδ. 1900· ἀπάνθισμα τοῦ ἔργου τούτου εἶναι ἡ «Λυρικὴ ἀνθολογία» 1854, 5η ἔκδ. 1897), «Ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας» (1872—1884 εἰς 3 τόμ.), »De Aristotelis libello de Xenophane, Zenone et Gorgia» (1843) καὶ ἐδημοσίευσεν ἐκδόσεις τοῦ Ἀνακρέοντος (1834), τῶν ἀποσπασμάτων (1840) καὶ κωμῳδιῶν τοῦ Ἀριστοφάνους (3η ἔκδ. 1872) καὶ τῶν τραγῳδιῶν τοῦ Σοφοκλέους (1858). Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν «Ἱστορία καὶ τοπογραφία τῆς παραρρηνείου χώρας, κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους» (1882), «Πέντε πραγματεῖαι ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας καὶ ἀστρονομίας» (1883). Ἐκλογὴ τῶν μικροτέρων φιλολογικῶν ἔργων του ἐξεδόθη ὑπὸ τοῦ Peppmüller (1884-1886) εἰς 2 τόμους. Γ. Ε. Κ.

— **Μπὲργκ** (Berg), ***Λέων***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1862—1908). Πλήρης πνεύματος ὀπαδὸς τῆς νεωτέρας φιλολογικῆς κινήσεως ἐν Γερμανίᾳ, ἔγραψε: «Ὁ Ἐρρῖκος Ἴψεν καὶ τὸ γερμανικὸν πνεῦμα ἐν τῇ νεωτέρᾳ φιλολογίᾳ» (1887), «Τὸ πρόβλημα τῶν φύλων ἐν τῇ συγχρόνῳ φιλολογίᾳ» (5η ἔκδ. 1900), «Ὁ νατουραλισμὸς» (1892), «Μεταξὺ δύο αἰώνων» (1896), «Ὁ ὑπεράνθρωπος ἐν τῇ συγχρόνῳ φιλολογίᾳ» (1897, καὶ ἄλλα. Γ. Ε. Κ.

— **Μπὲργκ** (Bergh), ***Ριχάρδος***. Διάσημος Σουηδὸς ζωγράφος (1858—1919). Ἦτο υἱὸς τοῦ τοπιογράφου *Ἐδουάρδου Μπέργκ*, παρὰ τοῦ ὁποίου ἔλαβε τὰ πρῶτα καὶ γονιμώτερα, ὡς ὁ ἴδιος ὁμολογεῖ βραδύτερον, καλλιτεχνικὰ μαθήματα. Ἐπὶ πλέον ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Perséus καὶ ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Στοκχόλμης. Μετὰ ταῦτα ἀνεχώρησεν εἰς Παρισίους, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1887. Εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Laurens,

Digitized by Google

ἀλλ' οἱ καλλιτέχναι, οἵτινες ἤσκησαν ἀποφασιστικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως τοῦ ταλάντου του, ὑπῆρξαν ὁ Μανὲ καὶ ὁ Μπαστιὲν-Λεπάζ. Τὸ πρῶτον ἔργον, διὰ τοῦ ὁποίου ἐγένετο εὐρύτερον γνωστός, ὑπῆρξεν ἡ «Προσωπογραφία τοῦ Νὶλς Κρόϋκερ», ἐκτεθεῖσα εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1883. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του ἐξετέλεσεν ἑτέρας τινὰς ἄκρως ἐνδιαφερούσας προσωπογραφίας, τῷ δὲ 1889, εὑρισκόμενος ἐκ νέου εἰς Παρισίους ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς παγκοσμίου ἐκθέσεως, ἐνεφάνισε τὴν «Προσωπογραφίαν τῆς δεσποινίδος Εὔας Μποννιὲ», ἥτις προὐκάλεσε βαθεῖαν ἐντύπωσιν. Διέπρεψεν ἰδίως εἰς τὴν ἀπόδοσιν τοῦ σκιόφωτος καὶ ἐξειργάσθη προσωπογραφίας πλήρεις ψυχικότητος. Ἐκ τῶν ἔργων του μνημονεύομεν: «Προσωπογραφία νεαρᾶς γυναικός» (1881), «Ὑπνωτιστικὴ συνεδρίασις» (1887), «Προσωπογραφίαι Εὔας Μποννιὲ» (1889), «Καλλιτεχνικὴ συγκέντρωσις» (1903), ἀποκείμενα ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης· «Τοπίον ἐν Halland», «Δύο γυναῖκες κοντὰ στὴ φωτιά» (μουσεῖον Γκαίτεμποργκ), «Προσωπογραφία τοῦ Νὶλς Κρόϋγκερ», «Πέρα στὴν ἀκροθαλασσιά» (μουσεῖον Κοπεγχάγης), «Αὐτοπροσωπογραφία», ἐν τῇ πινακοθήκῃ Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας κλπ. [Βλ. *P. Lespinasse*, «La peinture suédoise contemporaine», Paris 1928.] Ι. Μ. Π.

— **Μπὲργκ** (Berg), ***Φραγκῖσκος***. Γερμανὸς φιλόσοφος, καθηγητὴς τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας καὶ δεινὸς ἀντίπαλος τοῦ Σέλλινγκ, γεννηθεὶς τῷ 1753 ἐν Βυρτεμβέργῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1821. Ἐδημοσίευσεν ἐναντίον τοῦ Σέλλινγκ ὑπὸ τὸν τίτλον «Sextus» (1804) πραγματείαν περὶ τῆς ἀνθρωπίνης γνώσεως, ἔνθα ὁ ἀπόλυτος δογματισμὸς τῆς πρώτης περιόδου τοῦ Σέλλινγκ καταπολεμεῖται διὰ τοῦ σκεπτικισμοῦ. Βραδύτερον ὁ Μπὲργκ εἰς νέον ἔργον του τιτλοφορούμενον «Ἐπικριτικὴ τῆς φιλοσοφίας» (1805), ἐξέθεσε τὰς βάσεις τοῦ ἰδικοῦ του συστήματος, εἰς τὸ ὁποῖον ἡ βούλησις ἡ μετὰ λόγου, ἡ λογικὴ βούλησις, ὡς τὴν ἀποκαλεῖ, θεωρεῖται ὡς τὸ μόνον μέσον πρὸς γνῶσιν τῆς πραγματικότητος. Ἡ μοναδικὴ πηγὴ κάθε σφάλματος ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ συνίσταται εἰς τὸ ὅτι ὑπάρχει ἀσυμφωνία εἰς τὸ πρόβλημα τὸ ὁποῖον δεῖται διαλευκάνσεως. Πρὸς ἀποτροπὴν τοῦ κακοῦ τούτου ἀπαιτεῖται μεθοδικοποίησις τῆς φιλοσοφίας. Θ. Π.

— **Μπὲργκ** (Berg), ***Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος-Ρέμπερτ, κόμης*** —, γνωστὸς ὡς *Θεόδωρος Θεοδώροβιτς*. Ρῶσος στρατάρχης, καταγόμενος ἐξ εὐγενοῦς γερμανικῆς οἰκογενείας (1790—1874). Ἔλαβε μέρος εἰς τοὺς πολέμους ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος καὶ κατόπιν ἐναντίον τῶν Τούρκων (1828 καὶ 1829). Ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τῆς ἐν Πολωνίᾳ στρατιᾶς, διηύθυνε τὴν ἐπεξεργασίαν τοῦ τοπογραφικοῦ χάρτου τῆς χώρας ταύτης. Κατόπιν ἐπιτυχῶν διπλωματικῶν ἀποστολῶν ἐπέστρεψεν εἰς Πετρούπολιν πρὸς ἐξακολούθησιν τῶν ὑπὸ τὴν διεύθυνσίν του ἀρξαμένων σπουδαίων τοπογραφικῶν ἐργασιῶν. Διορισθεὶς γενικὸς διοικητὴς τῆς Φινλανδίας, ὑπερήσπισε λαμπρῶς τὴν περιοχὴν ταύτην. Καταστὰς ὅμως ἀντιδημοτικὸς λόγῳ τῆς μεγάλης αὐστηρότητός του, ἀνεκλήθη (1861) καὶ κατόπιν ἀπεστάλη εἰς Πολωνίαν (1863), ὅπου κατέστειλεν ἐκραγείσας διαφόρους ἐπαναστάσεις. Γ.Ε.Κ.

**Μπέργκα** (Berga) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Βαρκελώνης τῆς Καταλωνίας. Κάτ. 9.000. Ἔχει ἐργοστάσια βαμβακερῶν ὑφασμάτων. Τὴν 4 Ἰουλίου 1840 ἔλαβε χώραν παρ' αὐτὴν φονικὴ μάχη, κατὰ τὴν ὁποίαν οἱ ὀπαδοὶ τῆς βασιλίσσης Χριστίνας ἐνίκησαν τοὺς ὀπαδοὺς τοῦ διεκδικητοῦ τοῦ θρόνου Καρόλου, διοικουμένους ὑπὸ τοῦ Καμπρέρα, καὶ κατέλαβον τὴν πόλιν. Μ. Δ. Β.

**Μπεργκὰζ** ***Ἰσκαλεσσὶ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς ἀσιατικῆς ἀκτῆς τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 40°15' $^1/_2$ Β., μηκ. 26°33' $^1/_2$ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles), 2 μιλλ. ΝΔ. τοῦ ἀκρωτηρίου Κοντζᾶ Μπουρνοῦ, ἐπίνειον ἐξαγωγῆς τῶν προϊόντων τῆς πλουσίας πεδιάδος Μπεργκὰζ Ὀβά. Σ.Ε.Λ.

**Μπεργκαίνὶ** (Bergaigne), ***Ἄβελ***. Γάλλος ἀνατολιστὴς καὶ γλωσσολόγος (1838—1888). Τῷ 1877 διωρίσθη ἔκτακτος, τῷ δὲ 1885 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς σανσκριτικῆς καὶ τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας εἰς τὴν Σορβώννην. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ τῶν Γραμμάτων. Ἡ ἐπιστημονικὴ δρᾶσις αὐτοῦ περιεστράφη εἰς τὴν συγκριτικὴν γλωσσολογίαν καὶ τὴν ἰνδολογίαν. Ἐκ τῶν ἔργων του τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσιν αἱ πρὸς τοὺς Βέδας σχετικαὶ πραγματεῖαι: «Les figures de rhétorique dans le Rig-Veda», (Παρίσιοι 1880), «Le Religion védique d'après les hymnes du Rig-Veda», «Études sur le lexique du Rig-Veda», δι' ὧν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν γερμανικὴν σχολήν, ἀπέδειξεν, ὅτι οἱ βεδικοὶ ὕμνοι δὲν εἶναι προϊὸν πρωτογόνου, ἀλλὰ λίαν ἐξελιγμένης σκέψεως. Ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς ἰνδολογίας ὁ Μπεργκαίνὶ διεκρίθη τόσον ὡς γραμματικός, ὅσον ὡς κριτικὸς καὶ φιλόλογος. Ἐξέδωκε καὶ μετέφρασε τὴν «Μπχαμὶντ-Βιλάζα», σανσκριτικὸν ποιητικὸν ἀπάνθισμα, τὴν «Ναγκανάντα», βουδικὸν ποίημα, καὶ τὸ περιώνυμον δρᾶμα «Σακούνταλα» τοῦ Καλιντάζα. Ἀξία λόγου εἶναι ἐπίσης ἡ σανσκριτικὴ γραμματική του (Manuel pour étudier la langue sanscrite). Ὡς γλωσσολόγος διεκρίθη ἐκ τῶν ἔργων του: «La chronologie des langues indoeuropéennes», ἔργον μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικὴν ὑπὸ τοῦ Γ. Κουρτίου, καὶ «Essai sur la construction grammaticale dans les langues indoeuropéennes», ὅπερ ἐβραβεύθη ὑπὸ τοῦ Γαλλικοῦ ἰνστιτούτου (1873) καὶ ἐξεδόθη ἐν μέρει ἐν τοῖς «Mémoires de la Société de linguistique» (τόμ. III). Ὁ Μπεργκαίνι κατατάξας καὶ μελετήσας τὰς ὑπὸ τοῦ Αἰμονιὲ ἐν Καμπότζ ἀνευρεθείσας σανσκριτικὰς ἐπιγραφάς, ἐδημοσίευσε τὰ ἀποτελέσματα τῶν μελετῶν του εἰς τὸ «Journal Asiatique» (1882—1884) καὶ τὸ «Journal dea Savants» (1885). Α. Δ.

**μπεργκαμάσκα** (ἡ) (bergamasca). Παλαιὸς ἰταλικὸς χορὸς τῆς ἐπαρχίας τοῦ Μπέργκαμο, ἐξ οὗ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα. Τὰ παλαιότερα δείγματα τῆς μουσικῆς αὐτοῦ ἀνάγονται εἰς τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Ὁ χορὸς οὗτος βασίζεται εἰς διμερῆ ρυθμὸν $^2/_2$ ἢ $^6/_8$, καὶ ἄρχεται δι' ἄρσεως· ἡ μελῳδία του, ἁπλῆ καὶ ἀφελής, ὑπενθυμίζει ποιμενικοὺς σκοπούς. Γ. Σ.

**Μπεργκαμάσκο** (Bergamasco), ***Ἄλπεις τοῦ*** — *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ ἐν Λομβαρδίᾳ τῆς Ἰταλίας (βλ. *Περγαμικαὶ Ἄλπεις*, καὶ *Ἄλπεις*).

**Μπέργκαμο** (Bergamo) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Λομβαρδίᾳ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. 81.411. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. Β.Α. τοῦ Μιλάνου, παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Σὰν Βιτζίλιο. Ἀποτελεῖται ἐκ δύο τμημάτων: τῆς *Ἄνω πόλεως* (Città alta), κειμένης εἰς ὕψος 386 μ., καὶ τῆς *Κάτω πόλεως* (Città bassa ἢ borghi), ἀποτελεσθείσης ἐκ τῶν νέων συνοικιῶν, μετὰ τῶν προαστείων *Σὰν Λεονάρντο*, *Πίνιολο* καὶ *Σὰν Τομμάζο*. Ἡ παλαιὰ πόλις ἔχει ἀξιόλογα μνημεῖα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον ἡ Μπρολέττο, γοτθικοῦ ρυθμοῦ, ἡ μητρόπολις μὲ πίνακας τοῦ Τιέπολο, ὁ ναὸς τῆς Σάντα Μαρία Ματζιόρε ρωμανικοῦ ρυθμοῦ, κτισθεὶς τῷ 1131 καὶ ἀνακαινισθεὶς πολλάκις, μετὰ θαυμασίων θυρωμάτων τοῦ Τζιοβάννι ντὰ Καμπιόνε, ἡ Καπέλλα Κολλεόνι, μὲ ὡραίας τοιχογραφίας τοῦ Τιέπολο κτλ. Ἐν τῇ κάτω πόλει ὑπάρχει ἡ ἀκαδημία Καρράρας μετὰ πλουσίας πινακοθήκης, περιεχούσης ἔργα τοῦ Μποτιτσέλλι, τοῦ Μπελλίνι, τοῦ Τζιορτζιόνε, τοῦ Πάλμα τοῦ Πρεσβυτέρου, τοῦ Ραφαήλου κτλ. Τὸ Μπέργκαμο εἶναι πατρὶς τοῦ ποιητοῦ Τορκουάτου Τάσσου καὶ τοῦ μουσουργοῦ Δονιζέττι. Ἔχει ἐργοστάσια μεταξωτῶν, βαμβακερῶν ὑφασμάτων, τσιμέντων, χυτήρια, ξυλουργεῖα κτλ., τεχνικὸν ἰνστιτοῦτον, ἀνωτέρας σχολάς, βοτανικὸν κῆπον, βιβλιοθήκην μὲ 100.000 τόμους, μέγα ὀνομαστὸν ἰνστιτοῦτον γραφικῶν τεχνῶν κ.ἄ.

Εἶναι τὸ ἀρχαῖον Bergomum (*Πέργαμον*), ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων συνοικισμῶν τῶν Λιγύρων ἐν τῇ ἄνω Ἰταλίᾳ. Κατὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἐποχὴν ἐγένετο αὐτόνομος πόλις, ἐπὶ δὲ τῆς λομβαρδικῆς κατακτήσεως ἀπετέλεσε δουκᾶτον. Τῷ 1331 προσητήθη ὑπὸ τοῦ Ἄτζο Βισκόντι εἰς τὸ δουκᾶτον τοῦ Μιλάνου. Κατόπιν περιῆλθεν εἰς τὴν Βενετίαν, ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῆς ὁποίας παρέμεινεν ἀπὸ 1428 μέχρι τοῦ 1796, ὁπότε κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων καὶ τῷ 1814 ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, οἵτινες ἐξεδιώχθησαν ἐκεῖθεν κατὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς ἰταλικῆς ἑνότητος.

— 2) Νομὸς τῆς Ἰταλίας ἐν Λομβαρδίᾳ. Ἔχει ἔκτασιν 2.789 τ. χλμ. καὶ 555.686 κατ. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς διασχίζεται ὑπὸ τῶν Περγαμικῶν Ἄλπεων. Διαρρέεται παρὰ τῶν ποταμῶν Σέριο, Ἄντα, Μπρέμπο καὶ Ντιέτσο καὶ συνορεύει πρὸς τὸν νομὸν τῆς Βρεσκίας διὰ τῆς λίμνης Ἰζέο. Παράγει σιτηρά, οἶνον, γεώμηλα, μέταξαν καὶ ἔχει λατομεῖα ὀνομαστῶν μαρμάρων, μεταλλεῖα σιδήρου καὶ μεταλλικὰ ὕδατα. Μ. Δ. Β.

**Μπέργκεμ** (Berghem ἢ Berchem), ***Νικόλαος-Πέτρος***. Διάσημος Ὀλλανδὸς τοπιογράφος (1620—1683). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς μὲν πλησίον τοῦ πατρός του Pieter Claasz van Haarlem, μετρίου ζωγράφου, μετὰ ταῦτα δὲ παρὰ τῷ Βὰν Γκόγεν, τῷ Π. ντὲ Γκρέμπερ, τῷ Γιὰν Βὶλς, οὗ ἐνυμφεύθη βραδύτερον τὴν θυγατέρα, καὶ τῷ ἐξαδέλφῳ του Ἰ.-Μπ. Βεένιξ. Ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ἰταλίᾳ (1648—1655), ἐπιστρέψας δ' εἰς τὴν πατρίδα του ἐδίδαξεν ἐπιτυχῶς τὴν ζωγραφικὴν ἐν Χάαρλεμ καὶ Ἄμστερνταμ. Ἡ τέχνη του διακρίνεται διὰ τὴν λεπτότητά της, τὸν ἐξαίρετον φωτισμόν, τὴν ὀνειρώδη προοπτικήν, τὸ ποιητικὸν αἴσθημα καὶ τὴν ἁρμονίαν τοῦ χρωματισμοῦ. Ἀλλ' ἐν τῷ συνόλῳ της καταντᾷ μονότονος, διότι ὁ Μπέργκεμ ὑπέστη τὰς ἐπιδράσεις τῆς συγχρόνου του ἰταλικῆς καὶ γαλλικῆς τοπιογραφίας κατὰ τρόπον παραβλάψαντα τὸ πηγαῖον αἴσθημα τῆς φύσεως, τὸ ὁποῖον ὑπῆρχεν ἐν αὐτῷ, ὅπως καὶ εἰς ὁλόκληρον τὴν ὀλλανδικὴν ζωγραφικήν. Ἐν πάσῃ περιπτώσει οἱ πίνακες τοῦ καλλιτέχνου τούτου, εἰκονίζοντες κατὰ τὸ πλεῖστον σκηνὰς τῆς καθημερινῆς ζωῆς τῶν ὀλλανδικῶν ἀγρῶν, παραμένουσιν ἀξιολογώτατοι. Κυριώτεροι ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ποιμὴν καὶ ποιμενὶς κοντὰ εἰς μίαν καλύβην», «Τὸ πέρασμα», «Τὸ πορθμεῖον», «Τοπίον καὶ ζῷα», «Ἀνάπαυσις κυνηγῶν», «Τὸ ποτιστήρι», «Ἡ ἐπιστροφὴ τοῦ ποιμνίου». Πολλὰ ἔργα τοῦ Μπέργκεμ ἀπόκεινται εἰς τὸ Λοῦβρον, τὸ Ἐρμιτὰζ τῆς Λένινγκραντ, τὴν Χάγην, τὸ Ἄμστερνταμ καὶ ἀλλαχοῦ. Ι. Μ. Π.

**Μπέργκεν** ἢ ***Μπγιαῖργκβιν*** (Bergen, Björgvin) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη πόλις τῆς Νορβηγίας πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Εἶναι ὁ σπουδαιότερος ἐμπορικὸς λιμὴν τῆς χώρας καὶ ἡ δευτέρα ἀπὸ ἀπόψεως πληθυσμοῦ πόλις αὐτῆς. Κάτ. (1923) 95.889. Κεῖται εἰς τὸ μεσημβρινὸν τμῆμα τῆς Νορβηγίας, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Βάαγκφιορδ καὶ περιβάλλεται πανταχόθεν ὑπὸ ὀρέων μέσου ὕψους 650 μ., εἰς τὰ ὁποῖα ὀφείλει τὸ ὄνομά της (berg= ὄρος), συνδέεται δὲ σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Χριστιανίας. Ἔχει κλῖμα σχετικῶς εὔκραές, μὲ μέσην ἐτησίαν θερμοκρασίαν +7°Κ. Αἱ βροχαὶ εἶναι ἄφθονοι, τὰ δ' ἐτησίως πίπτοντα ὕδατα φθάνουν εἰς 1800—1900 χιλιοστόμ. Εἶναι ἐκτισμένη ἀμφιθεατρικῶς περὶ ἀσφαλῆ καὶ βαθὺν λιμένα καὶ ἔχει καλὴν ρυμοτομίαν εἰς τὰς ἐγγὺς τῆς παραλίας ἰδίως νεωτέρας συνοικίας. Κάλλιστα ἐκ τῶν κτηρίων της εἶναι ὁ καθεδρικὸς ναὸς (1537), ὁ ναὸς τῆς Παρθένου (ΙΒ' αἰῶνος), ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου, ὁ ναὸς τῶν Καθολικῶν, τὸ μουσεῖον φυσικῆς καὶ ἀρχαιολογίας, ὁ βιολογικὸς σταθμός, ἡ ναυτικὴ σχολὴ καὶ ἡ βιβλιοθήκη. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται κυρίως μὲ τὸ ἐμπόριον τῶν ἰχθύων, τοῦ ὁποίου ἡ Μπέργκεν ἦτο ἀνέκαθεν τὸ κυριώτερον νορβηγικὸν κέντρον. Ἐπίσης ἀκμάζει ἡ ναυτιλία, ὑπάρχουσι δ' ἐν τῇ πόλει καὶ πολλαὶ βιομηχανικαὶ ἐγκαταστάσεις, ἰδίως ναυπηγικαί. Ἡ ἀξία τῶν εἰσαχθέντων τῷ 1922 ἐμπορευμάτων ἀνῆλθεν εἰς 187.390.200 κορωνῶν, τῶν δ' ἐξαχθέντων εἰς 71.057.104. Ἡ Μπέργκεν εἶναι πατρὶς τοῦ ποιητοῦ Χόλμπεργκ, τοῦ βιολιστοῦ Ὄλε Μποὺλ καὶ τοῦ ἀνατολιστοῦ Λάσσεν.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ Μπέργκεν ἐκτίσθη τῷ 1075, ἀπὸ δὲ τοῦ ΙΒ' αἰῶνος ἐγένετο ἕδρα ἐπισκόπου καὶ προήχθη σημαντικῶς, καταστᾶσα ἓν τῶν σπουδαιοτέρων ναυτικῶν ἐμπορικῶν κέντρων τῆς Βορείου θαλάσσης. Εὑρίσκετο ἰδίως εἰς μεγάλας ἐμπορικὰς σχέσεις μετὰ τῆς Ἀγγλίας καὶ τῶν Ἀνσεατικῶν γερμανικῶν πόλεων. Τῷ 1665 ἔλαβε χώραν ἐν τῷ λιμένι της ναυμαχία μεταξὺ Ἄγγλων καὶ Ὀλλανδῶν. Τῷ 1916 μεγάλη πυρκαϊὰ ἀπετέφρωσε μέγα μέρος τῆς πόλεως, τὸ ὁποῖον ὅμως ἀνῳκοδομήθη ἔκτοτε ἐπὶ τῇ βάσει νεωτέρου σχεδίου. Χ. Δ.

**Μπέργκεν-ὀπ-Σαίμ**, ἢ ***Μπὲργκ-ὀπ-Σαὶμ*** (Bergen-op-Zoom ἢ Berg-op-Zoom) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὀλλανδίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Βορείου Βραβάντης, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Σαὶμ καὶ Σκάλδιος, 30 χλμ. πρὸς Β. τῆς Ἀμβέρσης. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον ἁλιείας σαρδελλῶν (τοῦ εἴδους ἀντσούγιες), στρειδιῶν καὶ ἄλλων ὀστράκων καὶ ἔχει βιομηχανίας ζαχάρεως ἐκ τεύτλων, σιδήρου, κεραμουργίας καὶ ἀγγειοπλαστικῆς. Κάτ. (1922) 19.113.

Ἡ Μπέργκεν-ὀπ-Σαὶμ ἦτο ἄλλοτε ἐκ τῶν ὀχυρωτέρων πόλεων τῆς Ὀλλανδίας, ἔχουσα φήμην φρουρίου ἀπορθήτου. Ἀξιομνημόνευτοι ἰδίως εἶναι τέσσαρες μεταξὺ τῶν ἐτῶν 1581 καὶ 1622, ἀλλεπάλληλοι πολιορκίαι αὐτῆς ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν, καθ' ἃς ἀντέστη ἐπιτυχῶς. Τῷ 1747 ἂν καὶ αἱ ὀχυρώσεις τῆς πόλεως εἶχον συμπληρωθῆ ἐν τῷ μεταξύ, κατελήφθη αὕτη ἐξ ἐφόδου ὑπὸ τῶν Γάλλων, μετὰ τρίμηνον κρατερὰν ἀντίστασιν. Κατὰ τοὺς πολέμους τῆς Δημοκρατίας (1795) κατελήφθη ἐκ δευτέρου ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἀλλ' ἀμαχητὶ τὴν φορὰν ταύτην. Μεγάλη ἐπίθεσις τῶν Ἄγγλων ἐναντίον τῶν κατεχόντων τὴν πόλιν Γάλλων, τῷ 1812 ἀπέβη καταστρεπτικὴ δι' αὐτούς, οἱ πλεῖστοι δὲ ἐκ τῶν ἐπιτεθέντων ἐφονεύθησαν ἢ ᾐχμαλωτίσθησαν. Μετὰ τὴν συνθήκην τῶν Παρισίων (1815) ἡ Μπέργκεν ἐξεκενώθη ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἀπὸ δὲ τοῦ 1867 ἐστερήθη τῶν παλαιῶν φρουρίων της. Χ. Δ.

**Μπέργκεντορφ** (Bergedorf) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ὁμονύμῳ ἐπαρχίᾳ, ἥτις περιλαμβάνεται εἰς τὴν περιοχὴν τῆς ἐλευθέρας πόλεως τοῦ Ἀμβούργου. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Μπίλλε, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Βερολίνου—Ἀμβούργου, ἔχει δὲ ἀξιολόγους βιομηχανίας βυρσοδεψικῆς, ὑελουργίας, μεταλλουργίας, κεραμοποιίας κλπ. Ἐπὶ τοῦ παρ' αὐτὴν ὄρους *Γκόγιεν* εὑρίσκεται τὸ ἀστεροσκοπεῖον τοῦ Ἀμβούργου, ἱδρυθὲν τῷ 1911. Κάτ. (1911) 16.731. Ἡ ὁμώνυμος ἐπαρχία, ἐκτεινομένη μεταξὺ τῶν ποταμῶν Ἔλβα καὶ Μπίλλε, ἔχει ἐπιφάνειαν 87 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν (1919) 32.223 κατ. Χ. Δ.

—*[Φιλοτελ.]* Ἡ Μπέργκεντορφ ἔχει μεγάλην ἀπὸ φιλοτελικῆς ἀπόψεως σημασίαν. Τὴν 1ην Νοεμβρίου 1861 ὁ διευθυντὴς τοῦ ταχυδρομικοῦ γραφείου τῆς πόλεως αὐτῆς ἐσκέφθη νὰ ἐκδώσῃ εἰδικὴν σειρὰν ἑπτὰ λιθογραφημένων γραμματοσήμων, ἐχόντων τό, οὐδαμοῦ ἀλλοῦ ἀπαντώμενον, χαρακτηριστικόν, ὅτι τὸ μέγεθος τῶν γραμματοσήμων ηὔξανεν ἐν ἀναλογίᾳ πρὸς τὴν ἀξίαν των. Οἱ-

Digitized by Google

τως ἡ διαφορὰ μεταξὺ τοῦ μεγέθους τοῦ πρώτου (ἥμισυ σελλίνιον) καὶ τοῦ τελευταίου (4 σελλίνια) εἶναι ἀρκετὰ μεγάλη. Τὰ γραμματόσημα ταῦτα παριστῶσι τὸ ἥμισυ ἐθνόσημον τῶν πόλεων Λιβάνης (ἀριστερὰ) καὶ Ἀμβούργου (δεξιὰ) ἐντὸς κύκλου περιβαλλομένου ὑπὸ τετραγώνου ἐνεπιγράφου πλαισίου. Τὰ γραμματόσημα τῆς Μπέργκεντορφ ἐκυκλοφόρησαν μέχρι τοῦ 1867 καὶ εἶναι σπανιώτατα σφραγισμένα, εὐθηνότατα δὲ ἀσφράγιστα, διότι τὸ ἀπομεῖναν στὸκ τῶν ἀχρησιμοποιήτων ἠγοράσθη τῷ 1868 ἀπὸ τὸν γνωστὸν Βέλγον ἔμπορον Moens. Αἱ πλάκες δι' ὧν ἐξετυπώθησαν καὶ τὰς ὁποίας ἠγόρασεν ὁ ἴδιος ἐχρησιμοποιήθησαν κατ' ἀρχὰς παρ' αὐτοῦ πρὸς ἀνατύπωσιν ἄλλων γραμματοσήμων ἔπειτα δὲ ἐχαρίσθησαν ὑπὸ τοῦ ἰδίου εἰς τὸ αὐτοκρατορικὸν ταχυδρομικὸν μουσεῖον τοῦ Βερολίνου, ὅπου καὶ εὑρίσκονται. (Ε. Φ. Ε.)

**Μπέργκερ** (Berger), ***Γουλιέλμος***. Συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1861 ἐν Βοστώνῃ τῆς Ἀμερικῆς, ἐκ γονέων Γερμανῶν. Διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν καθηγητὴς τοῦ Ὠδείου Κλίντβορτ - Σαρβένκα καὶ εἶτα διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν Μάϊνιγκεν. Ἔγραψε «Τραγούδι τῶν πνευμάτων ἐπὶ τῶν ὑδάτων», «Στοὺς μεγάλους νεκρούς», «Χορὸς τῶν νεκρῶν», «Εὐφορίων» «Ἡ θεά μου» (βραβευθὲν) κτλ. Γ. Σ.

— **Μπέργκερ** (Berger), ***Ἰωάννης - Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1772—1833). Κυριώτερον ἔργον αὐτοῦ εἶναι: «*Γενικαὶ βάσεις τῶν ἐπιστημῶν*» (1817—1827, 4 τόμοι). Ὁ Μπέργκερ εἶναι ἐκπρόσωπος πανθεϊστικῆς τινος φυσικῆς φιλοσοφίας. Α. Δ.

— **Μπέργκερ** (Berger), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς συνθέτης καὶ παιδαγωγὸς τοῦ κλειδοκυμβάλου (1777—1839). Ἐχρημάτισεν ἐν Πετρουπόλει μαθητὴς τοῦ Κλεμέντι, ὃν καὶ ἠκολούθησεν ἀργότερον ἐν Λονδίνῳ. Τῷ 1815 ἐγκατεστάθη εἰς Βερολῖνον καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν διδασκαλίαν τοῦ κλειδοκυμβάλου, ἔχων μαθητὰς τὸν τὸν Μένδελσον, τὸν Τάουμπερ, τὸν Χένσελτ κ. ἄ. Τὰ ἔργα του διὰ κλειδοκύμβαλον εἶναι ἄξια ἰδιαιτέρας μνείας καὶ ἀποτελοῦνται ἀπὸ σονάτας, σπουδὰς κλπ. Εἰς τὰ ἄλλα εἴδη τῆς μουσικῆς ὁ Μπέργκερ ἔδωκε: μελῳδίας, καντάτας, ἀνδρικὰς χορῳδίας κτλ. Γ. Σ.

**Μπεργκὶ** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Τουρκίας ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Ὀδεμησίου τοῦ νομοῦ Σμύρνης, εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. ΒΑ. τῆς πόλεως Ὀδεμησίου. Ἦτο ἄλλοτε πόλις ἱκανῆς σπουδαιότητος. Ν.Μ.

**Μπέργκμαν** (Bergmann), ***Ἐρνέστος φὸν***. — Διαπρεπὴς Γερμανὸς στρατιωτικὸς χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1836. Διετέλεσεν ἐν Dorpat ὑφηγητὴς (1864) καὶ μετά τινα ἔτη ἐγένετο αὐτόθι καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς, χρηματίσας εἶτα τοιοῦτος καὶ εἰς Πετρούπολιν καὶ Βυρτσβοῦργον (1878) καὶ τέλος ἐγένετο καθηγητὴς τῆς βασιλικῆς χειρουργικῆς κλινικῆς τοῦ πανεπιστημίου. Τῷ 1888 προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον. Ἐδημοσίευσε: «Die Lepra in Livland» (1867), «Über die Endresultate der Gelenkresektionen im Kriege» (1872), «Die Behandlung der Schusswunden des Kniegelenks im Kriege» (1878), «Die Fermeutintoxication» (1882), μετὰ τοῦ Angerer «Die Unterbindung der Vena femoralis» (1882), «Die Krankheiten der Lymphdrüsen» (1881), «Die Schicksale der Tranfusion im letzten decennium» (1883) κτλ., ὡς καὶ πλείστας ἐργασίας του εἰς διάφορα περιοδικά, συνέλεξε δὲ εἰς 14 τόμους τὰ πεπραγμένα ἐν τῇ χειρουργικῇ κλινικῇ Βερολίνου (1886—1899). Ἐκτὸς τούτων ἀναφέρομεν τὸ ἐκδοθὲν ἐν Στουτγάρδῃ ὁμοῦ μετὰ τῶν v. Bruns καὶ v. Mikulicz-Dadiecki, σύγγραμμά του τῆς «*Εἰδικῆς χειρουργικῆς*», τὴν συγγραφήν του περὶ «*Χειρουργικῆς θεραπείας τῶν νόσων τοῦ ἐγκεφάλου*» (1899) ὡς καὶ περὶ διαγνώσεως μηνιγγίτιδος, τραυμάτων ἐγκεφαλικῶν μετὰ τοπικῶν καὶ γενικῶν συμπτωμάτων, φυματιώδους ἐπεξεργασίας τῶν ἄνωτέρω τραχηλικῶν σπονδύλων περὶ τῆς θεραπείας τῆς ἐσθιομένης διὰ τῆς φυματίνης, περὶ τῆς χειρουργικῆς θεραπείας τῶν ἐγκεφαλικῶν ὄγκων κτλ. Ἐξ ἄλλου ἐξέδιδε μετὰ τοῦ König καὶ Richter τὸ περιοδικὸν «Ctrlbl.'s f. Chir.» καὶ μετὰ τοῦ Gussenbauer καὶ Körte τὰ «*Ἀρχεῖα κλινικῆς χειρουργικῆς*». Ο. Ρ.

*Ἐρνέστος φὸν Μπέργκμαν.*

—**Μπέργκμαν** (Bergmann), ***Ἰούλιος***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1840—1904). Ἐσπούδασε μαθηματικὰ καὶ φιλοσοφίαν ἐν Γοττίγγῃ. Τῷ 1870 ὠνομάσθη τακτικὸς καθηγητὴς ἐν Καινιξβέργῃ καὶ τῷ 1875 ἐν Μαρβούργῳ. Πλὴν πολλῶν ἄρθρων, δημοσιευθέντων εἰς τὰ «Philosophische Monatshefte», ἔγραψε καὶ τὰ ἑξῆς ἔργα: «*Αἱ βασικαὶ γραμμαὶ μιᾶς θεωρίας περὶ συνειδήσεως*», «*Ὁ ἔλεγχος τοῦ κριτικισμοῦ*», «*Ἡ καθαρὰ λογική*», «*Τὸ εἶναι καὶ τὸ εἰδέναι*», «*Τὰ θελιώδη προβλήματα τῆς λογικῆς*» κτλ. Ὁ Μπέργκμαν ὑπῆρξεν εἷς τῶν σπουδαιοτέρων ἐκπροσώπων τῆς ἰδεολογικῆς γνωσιολογίας καὶ μεταφυσικῆς. Α. Δ.

— **Μπέργκμαν** (Bergmann), ***Τόρμπερν Ὄλοφ***. Σουηδὸς χημικὸς καὶ ὀρυκτολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1735 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1784. Ἀπὸ τοῦ 1758 διετέλεσε καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Οὐψάλας. Καίτοι ὀπαδὸς τῆς φλογιστικῆς θεωρίας, συνετέλεσεν ἀκουσίως του διὰ τῶν περισπουδάστων αὐτοῦ ἐργασιῶν εἰς τὴν πτῶσιν αὐτῆς («Opuscula physica et chimica», Λειψία 1779—1788). Θεωρεῖται ὡς ὁ ἱδρυτὴς τῆς δι' ὑγρᾶς ὁδοῦ ποσοτικῆς ἀναλύσεως. Σ. Γ.

**Μπεργκόντσι** (Bergonzi). Οἰκογένεια κατασκευαστῶν ἐγχόρδων ὀργάνων ἐκ Κρεμώνης, ἧς διασημότερον μέλος ὑπῆρξεν ὁ *Κάρολος*, ἀκμάσας μεταξὺ τοῦ 1716—1755. Υἱὸς τούτου ἦτο ὁ *Μιχαὴλ Ἄγγελος*, τούτου δὲ ἔγγονοι ἦσαν ὁ *Νικόλαος* καὶ *Κάρολος*. Γ. Σ.

**Μπὲργκ-ὸπ Ζόομ** (Berg-op-Zoom) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας (βλ. λ. *Μπέργκεν-ὸπ-Σαίμ*).

**Μπεργκούλιε** (Berguglie) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπίσημος, διὰ τὴν ἀσφάλειαν, ἣν παρέχει εἰς τὰ καταφεύγοντα εἰς αὐτὸν πλοῖα, ὅρμος τοῦ Ἀδριατικοῦ πελάγους (πλάτ. 44°12' Β., μηκ. 14°51' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2711: Gulf of Cuarnero) κατὰ τὴν ΝΔ. ἀκτὴν τῆς νήσου Μελάντα. Σ. Ε. Λ.

**Μπέργκσαι** (Bergsoee), ***Γουλιέλμος***. Ὁλλανδὸς φυσιοδίφης καὶ λογοτέχνης (1835—1911). Θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν σημαντικωτέρων συγγραφέων τῶν βορείων εὐρωπαϊκῶν χωρῶν, ἐξίσου διακριθεὶς τόσον ἐπὶ τοῦ ἐπιστημονικοῦ ὅσον καὶ ἐπὶ τοῦ φιλολογικοῦ πεδίου. Σπουδάσας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Κοπεγχάγης ἰατρικὴν καὶ ζῳολογίαν, ἐταξίδευσε κατόπιν ἐπὶ μακρὸν εἰς τὴν μεσημβρινὴν Εὐρώπην, ἰδίως εἰς Ἰταλίαν, ὅπου ἠσχολήθη εἰς ἐνδελεχεῖς μελέτας ἐπὶ τῆς μεσογειακῆς πανίσκης. Τὰ συμπεράσματα τῶν πρώτων τούτων ἐργασιῶν του ἐξέθηκεν εἰς ἐνδιαφερούσας μονογραφίας, ἐν αἷς: «*Σιφίας ὁ φιλιχθύς*» (1864), «*Ἡ ταρεντύλη καὶ ὁ ταρεντουλισμὸς* (ἐπιδημικὴ χορεία) *κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ τοὺς παρόντας χρόνους*» (1865). Κατόπιν, ἐγκαταλιπὼν αἴφνης τὰς γεωλογικάς του μελέτας, ἐπεδόθη εἰς τὴν φιλολογίαν, γράψας ἐν ἀρχῇ ὡραίαν συλλογὴν διηγημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Fra Piazza del Popolo» (1866) ἐμπνευσμένην ἀπὸ τὴν ἐν Ῥώμῃ διαμονήν του, κατόπιν ποιήματα «*Ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρόν*» (1867), «*Ζωγραφιὲς καὶ λουλούδια*» (1874), καὶ μυθιστορήματα «*Τὸ παλιὸ ἐργοστάσιο*» (1869), «*Ἡ μνηστὴ τοῦ Ρόρβικ*» (1872) ἓν τῶν καλυτέρων ἔργων του, «*Ποιὸς ἦταν*» (1876), «*Μέσα στὴν ὁμίχλη*» (1876)· ἐπίσης ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις, ὡς «*Εἰς τὰ ὄρη τῶν Σαβίνων*» (1871), «Falksmonteren» περιγραφὴ ἰταλικῶν καὶ σκανδιναβικῶν τοπίων, «*Αἱ ἡλιόλουστοι παραλίαι*» (1886) κλπ. Ἔγραψεν ἀκόμη: «*Ἱστορία τῶν φαντασμάτων*» (1873), «*Ἰταλικὰ διηγήματα*» (1874), «*Ἱστορίαι καὶ εἰκόνες τῶν ἀρχαίων χρόνων*» (1885), κ. ἄ.

Ὁ Μπέργκσαι εἶναι ἐξαιρετικὸς λογοτέχνης, μὲ ζωηρὰν φαντασίαν, ῥέπουσαν πρὸς τὸ μυστηριῶδες καὶ τὸ παράδοξον, μὲ θελκτικὴν πρωτοτυπίαν καὶ εὔροιαν ὕφους. Οἱ στίχοι του εἶναι εὐχάριστοι, μειονεκτοῦν ὅμως εἰς παραστατικότητα. Σημαντικὸν ἐξ ἄλλου ὑπῆρξε τὸ μέγα ἱστορικὸν αὐτοῦ ἔργον: «*Ἡ Ῥώμη ἐπὶ πάπα Πίου Θ'*» (1874—1877), εἰκονογραφηθὲν πλουσίως ὑπὸ διακεκριμένων Γάλλων καλλιτεχνῶν τῆς ἐποχῆς του. — Ω.

**Μπέργκστραιμ** (Bergström). Σύγχρονος Σουηδὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1869. Διεκρίθη ὡς τοπιογράφος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσεται ὁ πίναξ «*Στὸ λιμάνι*» (1905), ἀποκείμενος ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης. Ι. Μ. Π.

**Μπέργκσον** (Bergson), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος φιλόσοφος· βλ. λ. *Μπέρξον Ἐρρῖκος*.

**Μπεργκχάους** (Berghaus), ***Ἑρμάννος***. Γερμανὸς χαρτογράφος (1828—1890). Συνέταξε πολλοὺς γεωγραφικοὺς χάρτας διὰ τοὺς γερμανικοὺς ἄτλαντας τοῦ Στήλερ καὶ τοῦ Συντόβ, ἐδημοσίευσε παγκόσμιον χάρτην κατὰ τὸ σχεδιάγραμμα τοῦ Μερκάτορος (1859), τὸν χάρτην τοῦ παγετῶνος τοῦ Αἴτσταλ (1861), χάρτας φυσικῆς γεωγραφίας κ.ἄ. Α. Δ.

—**Μπεργκχάους** (Berghaus), ***Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς γεωγράφος καὶ μηχανικὸς (1797—1884). Τῷ 1836 ἵδρυσεν ἐν Πότσνταμ εἰδικὴν γεωγραφικὴν σχολήν. Εἶναι γνωστὸς ἰδίᾳ ἐκ τῶν ἑξῆς ἔργων: «*Ἔρθα*» (1825—1829), «*Ἡ γῆ, οἱ λαοὶ καὶ τὰ ἔθνη*», «*Ἡμερολόγιον ἀφιερούμενον εἰς τοὺς φίλους τῶν γεωγραφικῶν ἐπιστημῶν*», «*Γεωγραφικὴ μελέτη περὶ τοῦ Βερολίνου*» (1847) καὶ «*Γενικὴ φυσικὴ γεωγραφία τῆς γῆς*» (1847 καὶ 1856). Α. Δ.

**Μπεργκχόλτς** (Bergholz), ***Παῦλος***. Γερμανὸς μετεωρολόγος (1845—1909). Ἐδημοσίευσε πλείστας μετεωρολογικὰς ἐργασίας καὶ παρατηρήσεις εἰς τὸ «Deutsches meteorologisches Jahrbuch» τῆς Βρέμης. Εἰδικώτερον ἠσχολήθη εἰς τὰς τροπικὰς λαίλαπας καὶ τὰς τῆς Ἄπω Ἀνατολῆς. Θ. Θ. Φ.

**μπέρδεμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπερδεύω: «*τὰ μαλλιά μου δὲ χτενίζονται ἀπὸ τὸ μπέρδεμα*».

**Μπερδεμιάρος** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Τριαντάρου τῆς ἐπαρχίας Τήνου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 24. Χ. Δ.

**Μπερδενῖκος** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Παναγοῦλα* (βλ. λ.).

**μπερδεύω**, *ἀόρ. ἐ)μπέρδεψα—ἐ)μπερδεύτηκα*, *παρακ. παθ. μετχ. μπερδεμένος*· περιπλέκω, ἐμπλέκω: «*τὰ μαλλιά σου εἶναι μπερδεμένα*», «*μπερδεύτηκε 'ς τὸ δίχτυ*» || συνεκδ., δὲν ὁμιλῶ εὐκρινῶς, ἀρθρῶ τοὺς φθόγγους κακῶς, τραυλίζω, βατταρίζω: «*μπερδεύει τὰ λόγια του*», καὶ μεταφ., δὲν ὁμιλῶ σαφῶς, περιπίπτω εἰς ἀντιφάσεις, προσπαθῶ νὰ συγκαλύψω τὴν ἀλήθειαν: «*μᾶς τὰ μπέρδεψαν οἱ μάρτυρες*» || μεταφ., περιπλέκω, κάμνω δύσκολον τὴν λύσιν: «*μὴ μὲ μπερδεύῃς, ἄφησε νὰ λύσω τὸ πρόβλημα μόνος*» || *μπερδεμένος*· περίπλοκος: «*μπερδεμένη δουλειά*, —*ὑπόθεσις*, —*ἀπαίτησις κττ.*» (ἐτυμολογεῖται ἐκ τοῦ *ἐμπεριδεύω-περιδεύω*).

**Μπερδιάνσκ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μακρὰ ἀμμώδης γλῶσσα τῆς βορείας ἀκτῆς τῆς Ἀζοφικῆς θαλάσσης, ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ μεσημβρινοῦ μὲ τὸν Κιμμέριον Βόσπορον· ἔχει φάρον καὶ ναυαγοσωστικὸν σταθμὸν (πλάτ. 46° 38' Β., μηκ. 36° 48' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: (Sea of Azov). Σχηματίζει δὲ ἡ χερσονησώδης αὕτη γλῶσσα μετὰ τῆς τοῦ ἀκρωτηρίου Νογκάϊσκ τὸν κόλπον τῆς Μπερδιάνσκ, δεχόμενον τὸν ῥοῦν τοῦ Κοῦτσε Μπερδιάνσκα, ἀνατολικῶς τῆς ἐκβολῆς τοῦ ὁποίου ἡ πόλις Μπερδιάνσκ. Σ. Ε. Λ.

**μπερὲ** (τό)· εἶδος σκούφου φορουμένου ἀπὸ μικροὺς καὶ μεγάλους, ἄνδρας καὶ γυναῖκας (γαλλ. béret καὶ ἰδίᾳ τὸ béret basque).

**Μπερεγγέλα** (Berenguela). Βασίλισσα τῆς Λεώνης καὶ τῆς Καστίλλης (βλ. λ. *Βερεγγέλα*).

**Μπερεγκσὰς** ἢ ***Μπερεγκσάζυ*** (Beregszász ἢ Beregsasy) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπόρσοβα, πρὸς Β. τοῦ Τεισίου, παλαιὰ πρωτεύουσα τῆς οὐγγρικῆς κομιτείας *Μπέρεγκ*. Ἔχει ἐκτεταμένους ἀμπελῶνας καὶ κοιτάσματα ἀλουμινίου. Κάτ. 13.000. Χ. Δ.

**Μπερεζὰν** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ βορείου μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου, προσκειμένη εἰς τὴν ἀκτὴν τῆς Χερσῶνος πρὸ τῆς στομαλίμνης τοῦ φερωνύμου ποταμοῦ (πλάτ. 46° 36' Β., μηκ. 31° 25' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2232: Odessa to Sevastopol). Εἶναι «*ἡ πρὸ τοῦ Βορυσθένους νῆσος*» τοῦ Στράβωνος (Ζ, 308). Σ.Ε.Λ.

— **Μπερεζὰν λιμὰν** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Μεγάλη στομαλίμνη κατὰ τὴν ἐν Χερσῶνι ἐκβολὴν τοῦ φερωνύμου ποταμοῦ, τοῦ Βορυσθένους τῶν ἀρχαίων (πλάτ. 46° 37' Β., μηκ. 31° 26' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2232: Odessa to Sevastopol). Ἀναφέρεται καὶ ὑπὸ τοῦ Στράβωνος (Ζ, 306). Φερώνυμον ἀκρωτήριον, ΝΑ. κέρας τῆς ἐκβολῆς. Σ. Ε. Λ.

**Μπερεζῖνα** (Beresina ἢ Berezina) *[Γεωγρ.— Στρατ. Ἱστορ.]*. Ποταμὸς τῆς Ρωσίας (βλ. λ. *Βερεζῖνα*).

**Μπερέζνα** (Berezna) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως ἐν τῷ κυβερνείῳ Τσενίγκωφ τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ντέσνα, παραποτάμου τοῦ Δνειπέρου. Κάτ. 11.000. Χ. Δ.

**Μπερεζόφκα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐκρανίας ἐν Ρωσίᾳ, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 110 χλμ. περίπου ΒΑ. τῆς Ὀδησσοῦ, καὶ ἐπὶ τῆς πρὸς Κίεβον σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἐξ Ὀδησσοῦ. Κάτ. 5.000 περίπου.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ *Μπερεζόφκα* κατέστη ὀνομαστὴ ἐκ τῶν μαχῶν, ἃς παρ' αὐτὴν καὶ ἐκτὸς αὐτῆς εἶχον συνάψει ἑλληνικὰ τμήματα στρατοῦ κατὰ τῶν μπολσεβίκων, διαρκούσης τῆς ἐκστρατείας τοῦ ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ εἰς Οὐκρανίαν. Ὁ συμμαχικὸς ἐν γένει στρατός, ὁ ἐπιχειρήσας τὴν ἐκστρατείαν εἰς Οὐκρανίαν (1919), εἶχεν ἀποβιβασθῆ εἰς Ὀδησσόν, εἰς Νικολάϊεφ καὶ εἰς Χερσῶνα, προτιθέμενος νὰ χρησιμοποιήσῃ τὴν παραλιακὴν ζώνην τοῦ Εὐξείνου μεταξὺ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Δνειστέρου καὶ Δνειπέρου ὡς βάσιν τῶν περαιτέρω πρὸς βορρᾶν ἐπιχειρήσεων αὐτοῦ. Ἐκ τοῦ εἰς Ὀδησσὸν ἀποβιβασθέντος συμμαχικοῦ στρατοῦ ἐν τμῆμα ὑπὸ τὸν Γάλλον ἀντισυνταγματάρχην Legeay, ἀποτελούμενον: α') ἐκ τῶν 1ου καὶ 3ου ταγμάτων τοῦ 1ου ἑλλην. συντάγματος πεζικοῦ καὶ τοῦ 2ου τάγματος τοῦ 34ου συντάγματος πεζικοῦ (δυνάμεως συνολικῶς 69 ἀξιωματικῶν καὶ 1.876 ὁπλιτῶν)· β') ἐκ τοῦ 1ου ἀφρικανικοῦ συντά-

Digitized by Google

γματος πεζικοῦ τῶν Γάλλων μετὰ 2 πυροβόλων τῶν 57 χλστ., οὐλαμοῦ ἱππικοῦ Ἀφρικανῶν, πεδινῆς πυροβολαρχίας τῶν 75 χλστ., οὐλαμοῦ ὀρειβατικοῦ τῶν 65 χλς., οὐλαμοῦ συνοδείας τῶν 75 χλστ. καὶ οὐλαμοῦ τεθωρακισμένων αὐτοκινήτων· καὶ γ') δύο ἰλῶν Ρώσων ἐθελοντῶν ἀντιμπολσεβίκων (συνολικῆς δυνάμεως, Γάλλων καὶ Ρώσων ὁμοῦ, 600 ἀνδρῶν), προωθήθη τῇ 7 Φεβρουαρίου 1919 (π. ἡ.) σιδηροδρομικῶς εἰς Μπερεζόφκαν, ἣν κατέλαβεν, ἐπεκτεῖναν τὴν κατοχὴν μέχρι τοῦ χωρίου Βασιλίνοβα (10 χλμ. μακράν). Τῇ 3η Μαρτίου 1919 (π. ἡ.) ἐγένετο ἀναγνώρισις πρὸς Κολοσόφκαν ὑπὸ Γάλλου λοχαγὸν μικτοῦ ἀποσπάσματος συμμαχικοῦ (ἐκ τοῦ 11ου λόχου τοῦ 1ου ἑλληνικοῦ συντάγματος πεζικοῦ, τοῦ 6ου λόχου τοῦ 34ου συντάγματος πεζικοῦ, ἱππέων τινῶν Ἀφρικανῶν καὶ οὐλαμοῦ γαλλικοῦ πυροβολικοῦ), ὅπερ ὅμως ἀπεκρούσθη καὶ κατεδιώχθη ὑπὸ πυροβολικοῦ καὶ πολυβόλων τεθωρακισμένης ρωσικῆς ἀτμομηχανῆς. Τὴν ἐπομένην, 4 Μαρτίου 1919 (π. ἡ.) ἐπίθεσις τῶν μπολσεβίκων κατηυθύνθη κατὰ τῶν ἑλληνικῶν προφυλακῶν ἐν Μπερεζόφκᾳ, ἀποκρουσθεῖσα. Διὰ τὴν 5 Μαρτίου 1919 (π. ἡ.) διετάχθη ἡ ἀντικατάστασις τῶν γαλλικῶν δυνάμεων δι' ἑλληνικῶν, ἅτε τοῦ Γάλλου ἀντισυνταγματάρχου Legeay ἑτοιμαζομένου νὰ ἐπανέλθῃ μετ' αὐτῶν εἰς Ὀδησσόν. Ἀλλ' οἱ μπολσεβῖκοι, μήπω περατωθείσης τῆς εἰρημένης ἀντικαταστάσεως, ἐπετέθησαν αὖθις διὰ πυροβολικοῦ καὶ πολυβόλων ἀπὸ τεθωρακισμένων μηχανῶν κατὰ τοῦ δεξιοῦ καὶ τοῦ κέντρου τῆς συμμαχικῆς παρατάξεως, ἀπὸ δὲ τῆς 16ης ὥρας τῆς ἰδίας ἡμέρας (5 Μαρτίου 1919) καὶ κατὰ τῆς ἀριστερᾶς ἑλληνικῆς πτέρυγος. Ἀποσυρθέντων ὅμως τῶν ζουάβων πρὸς τὰ ὀπίσω, διεσπάσθη τὸ μέτωπον. Ὑπὸ τὴν ἰσχυρὰν οὕτω πίεσιν τῶν μπολσεβίκων τὰ τμήματα τοῦ ἀριστεροῦ, ὧν τινα προσεβλήθησαν καὶ ἀπὸ τῶν οἰκιῶν τῆς πόλεως διὰ χειροβομβίδων καὶ ὅπλων, ὑπεχώρησαν πρὸς τὸ νεκροταφεῖον καὶ τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν τῆς Μπερεζόφκας. Ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τῶν σημείων τούτων ἐξεβλήθησαν τῇ 20.30' ὥρᾳ, καὶ τότε ἠναγκάσθησαν ὅλα τὰ τμήματα, καὶ τοῦ δεξιοῦ, ἐγκαταλείποντα τοὺς τραυματίας καὶ ἅπαν τὸ ὑλικὸν αὐτῶν, νὰ ὑποχωρήσωσι κατὰ τὴν νύκτα διὰ δύο φαλάγγων, ὧν ἡ μὲν μία διηυθύνθη εἰς τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν Ραούχοβα (μετὰ 5ωρον πορείαν), ἡ δὲ ἑτέρα εἰς Σέρπκαν (μετὰ 10ωρον ἐπιπονωτάτην πορείαν), ἀφοῦ ἀπωλέσθησαν ἐκ τῶν ἑλληνικῶν ταγμάτων εἰς Μπερεζόφκαν (ἐξαφανισθέντες) 9 ἀξιωματικοὶ καὶ 135 ὁπλῖται καὶ ἅπαν ἀνεξαιρέτως τὸ ὑλικὸν τῶν μονάδων ἐκείνων (βλ. καὶ λ. *Οὐκρανία*). Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπερεζόφσκι** (Berezovskii) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς Ἑνώσεως, ἐν τῷ κυβερνείῳ Πὲρμ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπερεζόφσκα, παραποτάμου τοῦ Τούρα. Ἔχει χρυσοφόρους πηγάς, σχεδὸν ἐξαντληθείσας. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπερεζόφσκι** (Berezowski). Πολωνὸς μηχανεργάτης, γεννηθεὶς τῷ 1849. Εἶναι γνωστὸς ἐκ τῆς ἀνεπιτυχοῦς δολοφονικῆς ἀποπείρας, τὴν ὁποίαν ἐπεχείρησε τῷ 1867, διαρκούσης τῆς διεθνοῦς ἐκθέσεως εἰς Παρισίους, ἐναντίον τοῦ τσάρου Ἀλεξάνδρου Β', πυροβολήσας αὐτὸν ἅπαξ διὰ πιστολίου. Προσαχθεὶς ἐνώπιον τῶν γαλλικῶν δικαστηρίων κατεδικάσθη εἰς εἰκοσαετῆ καταναγκαστικὰ ἔργα. Χ. Δ.

— **Μπερεζόφσκι, *Μάξιμος Σωζόνοβιτς*.** Ρῶσος μουσουργὸς (1745—1777). Ἀποσταλεὶς ὡς ὑπότροφος τῆς αὐτοκρατείρας Αἰκατερίνης Β' εἰς Ἰταλίαν, ἐσπούδασεν ἐν Ρώμῃ καὶ Μιλάνῳ, ἐπιστρέψας δὲ εἰς Πετρούπολιν συνέθεσε πλεῖστα ἔργα ἐκκλησιαστικῆς φύσεως. Ἐπεχείρησε νὰ μεταρρυθμίσῃ τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικὴν τῆς Ρωσίας, ἀλλὰ συναντήσας τὴν ἀντίδρασιν τοῦ κλήρου ηὐτοκτόνησεν, ἀφήσας ἡμιτελὲς τὸ ἔργον του. Θ. Β.

**Μπερέζωφ** (Beresow, προφ. *Μπεριόζωφ*) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Σιβηρίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Τσούμεν, ἔχουσα 1.300 κατ. Ἐν αὐτῇ ἀπέθανον ἐξόριστοι ὁ πρίγκιψ Μεντσικὼφ (1729) καὶ ὁ κόμις Ὄστερμαν (1747). Χ. Δ.

**Μπερεκέτης, *Πέτρος ὁ Γλυκὺς* ἢ *Μελῳδός*.** Μουσικοδιδάσκαλος, γεννηθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἀκμάσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἐμελοποίησε πλεῖστα ἔντεχνα μαθήματα, ἅτινα μετενεχθέντα ἐκ τῆς ἀρχαίας παρασημαντικῆς εἰς τὴν νῦν ἐν χρήσει τοιαύτην ὑπὸ Γρηγορίου Πρωτοψάλτου καὶ Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος ἀπόκεινται εἰς τὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει βιβλιοθήκην τοῦ ἁγιοταφικοῦ μετοχίου, πολλὰ δὲ τούτων ἐδημοσιεύθησαν εἰς διαφόρους ἀνθολογίας. Ἐκ τῶν μουσουργημάτων αὐτοῦ διακρίνεται τὸ ἐν ταῖς ἀγρυπνίαις ἔτι καὶ νῦν ψαλλόμενον ἀργόν, ὀκτάηχον, δίχορον «Θεοτόκε Παρθένε» μετὰ τοῦ κρατήματός του. Ν. Α. Χ.

**μπερεκέτι** (τό), καὶ ***μπερκέτι*** δημοτ., ἀφθονία **εἰσοδημάτων, πλοῦτος**: «καλὰ μπερκέτια» εὐχὴ λε**γομένη πρὸς τοὺς συγκομίζοντας** τὰ εἰσοδήματα.

**Μπερεκετλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Δάτον* (βλ. λ.).

— **Μπερεκετλῆ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τουρκίας, ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Νίγδης, τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, εἰς ἀπόστασιν 30 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Νίγδης. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τοῦ παρακειμένου μεταλλείου μολύβδου. Ν. Μ.

**μπερεκετλῆς** (ὁ), καὶ ***μπερεκετλίδικος*** ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸ μπερεκέτι, εἰς τὴν ἀφθονίαν, εἰς τὸν πλοῦτον, πλούσιος, ἄφθονος: «μπερεκετλίδικη χρονιά».

**Μπερεκὲ-*Χὰν*** (Bereke-khan). Μογγόλος ἡγεμὼν (1255—1265) τῶν Κιπτσὰκ ἢ τῆς «Χρυσῆς Ὀρδῆς». Τῷ 1262 ἠσπάσθη τὸν Μωαμεθανισμόν, ἐλεηλάτησε τὴν Λιθουανίαν καὶ ἐξηνάγκασε τοὺς κατοίκους αὐτῆς νὰ γίνωσι φόρου ὑποτελεῖς. Ἐναντίον αὐτοῦ προσεπάθησε νὰ κηρύξῃ σταυροφορίαν ὁ πάπας Ἀλέξανδρος Δ'. Ὁ Μπερεκὲ-Χὰν ἀπήντησεν εἰς τὸ κήρυγμα δι' εἰσβολῆς εἰς τὴν Πολωνίαν. Ἐπροχώρησε μέχρι τοῦ Ὄππελν τῆς Σιλεσίας καὶ κατὰ τὴν ἀποχώρησίν του ἀπήγαγε πολυαρίθμους Χριστιανοὺς αἰχμαλώτους. Ἦλθεν εἰς διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου καὶ τοῦ σουλτάνου τῆς Αἰγύπτου, οἵτινες τῷ ἀπέστειλαν τεχνίτας διὰ τὴν κατασκευὴν καὶ διακόσμησιν τῶν ἀνακτόρων του. Ἐδέχθη πρόσκλησιν τοῦ τελευταίου, ὅπως πολεμήσῃ τὸν Μογγόλον σουλτᾶνον τῆς Αἰγύπτου, ἀλλ' ἐνῷ παρεσκεύαζε τὴν ἐκστρατείαν ταύτην ἀπέθανεν ἐν Τιφλίδι. Γ. Ι. Β.

**Μπέρεκλα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ὀλυμπίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 448. Χ. Δ.

**Μπερενζὲ** (Beringer), ***Αἰμίλιος***. Γάλλος μηχανικὸς (1840—1881). Ἐξετέλεσε μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας τὰς μεταλλικὰς κατασκευὰς τῆς διώρυγος τοῦ Ἄνω Μάρνη, μετέσχε δὲ (1866—1869) τῶν λιμενικῶν ἔργων τοῦ Πὸρτ-Σαΐδ. Εἰσελθὼν εἶτα εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν ἠσχολήθη εἰς τὴν κατασκευὴν διαφόρων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν εἰς τὰς ἀποικίας, ἰδίως ὡς ἀρχιμηχανικὸς ἐν Περναμποῦκο (1874—1877). Συνοδεύσας τὸν Flatters εἰς τὰς δύο αὐτοῦ ἀποστολὰς εἰς Ἀφρικήν, ἐδολοφονήθη τῷ 1881 ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν Τουαρὲγκ τοῦ Ἀλγερίου. Ἀφῆκεν ἀπομνημονεύματα ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ ἐπαρχία τοῦ Περναμποῦκο» μετὰ χάρτου τῆς χώρας ταύτης. —Ω.

**Μπερενγκάριο** (Berengario)· βλ. λ. *Βερεγγάριος*.

**Μπέρενς** (Berens), ***Ἔρμαν***. Γερμανὸς συνθέτης (1826—1880). Ἔγραψε τὰ μελοδράματα: «Βιολέττα», «Ὄνειρον θερινῆς νυκτός», «Λούλλυ καὶ Κινὼ» καὶ «Ρικάρντο», πλεῖστα ἔργα μουσικῆς δωματίου κλπ. Ἐν τούτοις παρέμεινε κυρίως γνωστὸς ὡς συνθέτης τῶν ἀσκήσεων διὰ κλειδοκύμβαλον «Neueste Schule der Geläufigkeit». Γ. Σ.

**Μπέρενσον** (Berenson), ***Βερνάρδος***. Ἀμερικανὸς ἱστορικὸς καὶ τεχνοκρίτης, γεννηθεὶς τῷ 1865. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Χάρβαρδ, κατόπιν δὲ συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν Παρισίοις, Ὀξφόρδῃ καὶ Βερολίνῳ. Ἐπεσκέφθη τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Ἰταλίαν, ἔνθα ἠσχολήθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ἰταλικῆς ζωγραφικῆς. Ἐδημοσίευσε: «Περὶ τῶν Βενετῶν ζωγράφων τῆς Ἀναγεννήσεως» (1894), «Περὶ Λαυρεντίου Λόττο» (1895), «Περὶ τῶν Φλωρεντίνων ζωγράφων τῆς Ἀναγεννήσεως» (1896), «Περὶ τῶν ζωγράφων τῆς Βορείου Ἰταλίας» (1907), «Σχεδιάσματα τῶν Φλωρεντίνων ζωγράφων», «Περὶ τοῦ Ἀμίκο ντὶ Σάντρο», «Περὶ τοῦ Σασέττα», «Μελέται περὶ τῆς ζωγραφικῆς τοῦ Μεσαίωνος» (1930) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπερέντνικωφ, *Ἰάκωβος Ἰβάνοβιτς*.** Ρῶσος ἱστοριοδίφης (1793—1854). Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πετρουπόλεως, εἶτα δὲ κατέγινεν εἰς τὴν μελέτην τῆς ρωσικῆς ἱστορίας καὶ συνέγραψεν: «Ἡ Ρωσία ὑπὸ τὸν τσάρον Ἀλέξιον Μιχαήλοβιτς», «Τὸ φορολογικὸν σύστημα τῶν ἡγεμόνων τῆς Μόσχας» καὶ εἰργάσθη πρὸς περισυλλογὴν τῶν ρωσικῶν χρονικῶν καὶ εἰς τὸ σλαβικὸν λεξικὸν τῆς Ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως. Θ. Β.

**Μπέρενυ** (Berény), ***Ροδόλφος***. Οὖγγρος προσωπογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1869. Ἐφοίτησεν ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Μονάχου, ἐμελέτησε δὲ ἰδιαιτέρως τὸν Βὰν Ντὰϋκ καὶ Ρέμπραντ. Ἐζωγράφησε κατ' ἀρχὰς ἁπλᾶς προσωπογραφίας, ἐν αἷς τοῦ Ἰεζέκ. Ἀμίλτον, τοῦ Ἐρρίκου τῆς Πρωσσίας κ. ἄ., ἀκολούθως δ' ἐπεδόθη μετ' ἐπιτυχίας εἰς τὴν διακόσμησιν τῶν τοίχων καὶ τοῦ ἐδάφους αὐτῶν, ἀναδειχθεὶς δεξιοτέχνης ἄριστος. Κάλλισται ἐκ τῶν προσωπογραφιῶν τοῦ εἴδους τούτου εἶναι: ἡ τοῦ Γερμανοῦ ζωγράφου Χὰνς Τόμα, τοῦ κόμητος Μόλτκε, τοῦ Φ. Μπρυνετιέρ, τοῦ Ἰ. Λεμαίτρ, τῆς δεσποινίδος Μπινιὸν κλπ. Εἰργάσθη ἐπίσης ὀλίγας πλήρεις χάριτος κρητιδογραφίας, διακρινομένας διὰ τὸν λιτὸν χρωματισμόν των. Χ. Δ.

**μπερεσίτ.** Λέξις ἑβραϊκὴ σημαίνουσα «ἐν ἀρχῇ», διὰ τῆς ὁποίας ἄρχεται τὸ πρῶτον βιβλίον τῆς Γενέσεως. Ἐκ τῆς λέξεως ταύτης ὁλόκληρον τὸ βιβλίον καλεῖται συνήθως ὑπὸ τῶν Ἑβραίων «μπερεσίτ».

**Μπέρεσφορντ** (Beresford), ***Γουλιέλμος Κάρ..., ὑποκόμις —, δοὺξ τῆς Ἔλβας*** καὶ *μαρκήσιος τοῦ **Σάντο-Κάμπο***. Ἄγγλος στρατιωτικὸς (1768—1854). Τῷ 1785 κατετάχθη εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικὸν καὶ ὑπηρέτησεν εἰς Τουλῶνα, Μπάστια, Κάλβι, Ἰνδίας καὶ Αἴγυπτον. Τῷ 1806 μετέσχε τῆς ἐναντίον τοῦ Μπουένος Ἄϋρες ἐκστρατείας, καθ' ἣν ἠχμαλωτίσθη. Κατορθώσας νὰ διαφύγῃ, ἐπανῆλθεν εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου τῷ ἀνετέθη ἡ διοίκησις τῶν καταλαβόντων τὴν Μαδέραν στρατευμάτων (1807) καὶ διωρίσθη διοικητὴς τῆς πόλεως. Κατὰ Μάρτιον τοῦ 1809 διωρίσθη ἀρχιστράτηγος τῶν μετὰ τῶν Ἄγγλων συμμαχούντων πορτογαλικῶν στρατευμάτων καὶ περιεκύκλωσε τὴν 4 Μαΐου τὸ Μπανταγόθ, μετὰ δωδεκαήμερον δὲ ἐνίκησε τὸν στρατηγὸν Σοὺλτ εἰς Ἀλμπουφέρα καὶ ὑπεχρέωσεν αὐτὸν νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς τὴν Σεβίλλην. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐτραυματίσθη εἰς Σαλαμάνκα. Ταχθεὶς μετὰ ταῦτα ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατηγοῦ Οὐέλλιγκτων, διεκρίθη ἐξόχως εἰς τὰς μεγάλας μάχας Μπαγιόν, Τουλούζης κλπ., τὴν δὲ 13 Μαρτίου 1814 εἰσῆλθεν εἰς Μπορντώ, μετὰ τοῦ δουκὸς τῆς Ἀγγουλέμης. Προήχθη τότε εἰς βαρῶνον Μπέρεσφορντ καὶ ἐστάλη ὡς πληρεξούσιος εἰς Ρίον-Ἰανέϊρον. Κατ' αἴτησιν τῆς πορτογαλλικῆς κυβερνήσεως ἀνέλαβεν ἐκ νέου τὴν διοίκησιν τῶν πορτογαλικῶν στρατευμάτων, αἱ ἐπακολουθήσασαι ὅμως ἐπαναστάσεις τοῦ 1820 καὶ 1823 ἠνάγκασαν αὐτὸν εἰς παραίτησιν. Κατὰ Δεκέμβριον τοῦ 1826 ἐπέστρεψεν εἰς Λισσαβῶνα ἐπὶ κεφαλῆς βρεττανικῶν στρατευμάτων, διὰ νὰ ὑποστηρίξῃ τὸν δὸν Μιγκέλ, οἱ Πορτογάλοι ὅμως χολωθέντες ἐκ τῆς τοιαύτης παρεμβάσεως, ἀφῄρεσαν ἀπ' αὐτοῦ τὸν τίτλον τοῦ στρατάρχου. Ἐπιστρέψας εἰς Ἀγγλίαν ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν, ὡς μέλος τοῦ κόμματος τῶν τόρεων καὶ ἔτυχε πλείστων τιμητικῶν ἀξιωμάτων, διορισθεὶς καὶ διοικητὴς τοῦ Γούλγουιτς καὶ εἶτα τῆς Ἰερσέης.

— **Μπέρεσφορντ** (Beresford), ***Ἰάκωβος***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1764—1840). Ἔγραψε πολυάριθμα καὶ ποικίλου περιεχομένου ἔργα, ἐξ ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: μετάφρασις τῆς Ἰλιάδος εἰς ἀνομοιοκαταλήκτους στίχους (1794), τὸ μυθιστόρημα «Οἱ ἱππόται τοῦ Σβάν, ἢ ἡ αὐλὴ τοῦ Καρλομάγνου» (1796), «Τὸ τραγούδι τοῦ Ἡλίου» (1809), «Ἡ ναυμαχία τοῦ Τραφαλγκὰρ» (1805), «Αἱ δυστυχίαι τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς» (1806—1807), εἶδος θεολογικῆς πραγματείας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐξασφαλίζει ἡ πίστις καλὸν ἔργον;» (1814) κ. ἄ.

— **Μπέρεσφορντ** (Beresford), ***Κάρολος-Γουλιέλμος ντὲ λὰ Πόερ, λόρδος —***. Ἄγγλος ναύαρχος καὶ πολιτικὸς ἐξ Οὐώτερφοντ τῆς Ἰρλανδίας (1846—1919). Εἰσελθὼν εἰς τὸ ναυτικὸν εἰς νεαρὰν ἡλικίαν, μετέσχε πλείστων ἀποστολῶν, ἐν αἷς καὶ ἡ τοῦ βομβαρδισμοῦ τῆς Ἀλεξανδρείας (1882). Τῷ 1884 διωρίσθη ἀρχηγὸς μοίρας σταλείσης εἰς τὸ πολιορκούμενον ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν Χαρτούμ, διεκρίθη δὲ πολεμῶν ἐναντίον τοῦ Μαχδῆ. Μετὰ τὴν ἐκ τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας ἀποχώρησίν του μετέσχε τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων, ὅπου διεξήγαγε σφοδρότατον ἀγῶνα ἐναντίον τοῦ ναυαρχείου, τὸ ὁποῖον κατηγόρει ὡς παραμελοῦν τὸν βρεττανικὸν στόλον. Διορισθεὶς λόρδος τοῦ ναυαρχείου, παρέσχε πολλὰς εἰς τὸ ναυτικὸν ὑπηρεσίας, χάρις εἰς τὰς ὁποίας κατέστη δημοτικώτατος ἐν Ἀγγλίᾳ. Τῷ 1916 ἐγένετο ὁμότιμος. Τὰ ἀπομνημονεύματά του ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1914. Χ. Δ.

**μπερέτα** (ἡ), καὶ ***μπερέτο*** (τό)· βλ. *μπαρέτα*.

**Μπερεττίνι, *Πέτρος*.** Διάσημος Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων καὶ ζωγράφος, γνωστὸς ὡς Πέτρος ντὰ Κορτόνα (βλ. λ.) ἐκ τῆς γενεθλίου του πόλεως.

**Μπέρεττυο** (Berettyo) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Οὐγγαρίας, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Καίραις, εἰς τὸν ὁποῖον ἐκβάλλει μικρὸν μετὰ τὸ Μετζαιτούρ. Παρὰ τὴν πόλιν Μπέρεττυο-Οὔιφαλου σχηματίζει ἐκτεταμένα τέλματα.

—**Μπέρεττυο-*Οὔιφαλου*** (Berettyo-Ujfalu) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐν τῷ νομῷ Μπίχαρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπέρεττυο καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Πύσπαικ Λαντάνυ-Γκροσσβαρντάϊν. Εἶναι ἐκτισμένη εἰς ὕψος 697 μ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης καὶ ἀποτελεῖ ἀξιόλογον κτηνοτροφικὸν κέντρον. Κάτ. (1920) 9.134. Χ. Δ.

**Μπερζὲ** (Bergés), ***Ἀριστείδης***. Γάλλος μηχανικὸς (1833—1904). Θεωρεῖται ὡς ὁ κυρίως εἰσαγαγὼν τὴν χρησιμοποίησιν τοῦ «λευκοῦ ἄνθρακος», τῆς δυνάμεως δηλαδὴ τῆς πτώσεως τῶν ὑδάτων, διὰ τὴν κίνησιν μεγάλων βιομηχανικῶν ἐγκαταστάσεων. Διατηρῶν ἐργοστάσιον χαρτοποιίας εἰς Λανκρὺ ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Ἰζέρ, ἐσκέφθη νὰ ἐκμεταλλευθῇ διὰ τὴν κίνησίν του τοὺς καταρράκτας τοῦ ποταμοῦ, ἀσχοληθεὶς δ' ἐπὶ πολλὰ ἔτη

Digitized by Google

πρὸς πραγματοποίησιν τῶν σχεδίων του, κατώρθωσεν ἐν τέλει ν' ἀποκομίσῃ ἐξ αὐτῶν χρησιμοποιήσιμον δύναμιν μέχρι 4.000 ἵππων. Ὁ Μπερζὲ ἐδημοσίευσεν ἐπὶ τοῦ θέματος τούτου διαφόρους πραγματείας. —Ω.

**— Μπερζὲ** (Berger), ***Θεόδωρος.*** Γάλλος οἰκονομολόγος (1848—1900). Διορισθεὶς διευθυντὴς τῆς Ὀθωμανικῆς Τραπέζης, κατέβαλεν ἀξιολόγους προσπαθείας πρὸς ἐνίσχυσιν τῶν οἰκονομικῶν τοῦ τουρκικοῦ κράτους καὶ ἐπρωτοστάτησεν εἰς τὴν πραγματοποίησιν τῶν κυριωτέρων ἐκ τῶν ἐν Τουρκίᾳ σιδηροδρομικῶν ἔργων (γραμμαὶ Σμύρνης—Κασαμπᾶ, Βηρυττοῦ—Δαμασκοῦ καὶ Θεσσαλονίκης—Κωνσταντινουπόλεως). Ὑπῆρξεν ἐπίσης ὁ ἀναδιοργανώσας τὴν ἐν Παρισίοις Ἐθνικὴν Τράπεζαν Προεξοφλήσεων.

***—Μπερζὲ ντὲ Ξιβρὲ*** (Berger de Xivrey). Γάλλος λόγιος καὶ ἑλληνιστὴς (1801—1863). Μετὰ τὰς ἐγκυκλίους αὐτοῦ σπουδὰς διωρίσθη ὑπάλληλος ἐν τῇ διαχειρίσει τῶν δασῶν τοῦ κόμιτος τῆς Ὀρλεάνης, ἀλλὰ δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν θέσιν ταύτην διὰ ν' ἀκολουθήσῃ τὴν κλίσιν του πρὸς τὴν σπουδὴν τῆς ἀρχαίας φιλολογίας, εἰς ἣν καὶ ἀφιέρωσε τὴν ζωήν του ὅλην. Ἐγένετο βιβλιοθηκάριος τοῦ Ναυστάθμου καὶ κατόπιν ἐπιμελητὴς ἐν τῇ Ἐθνικῇ Βιβλιοθήκῃ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1839 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ τῶν Γραμμάτων. Ὁ Μπερζὲ ντὲ Ξιβρὲ ἐδημοσίευσε πολυάριθμα ἔργα εἰς τόμους, ὑπῆρξε δ' ἐξ ἄλλου εἷς τῶν παραγωγικωτέρων συνεργατῶν ὅλων τῶν φιλολογικῶν περιοδικῶν τῆς ἐποχῆς του. Μεταξὺ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: Μετάφρασις τῆς ἀποδιδομένης εἰς τὸν Ὅμηρον «Βατραχομυομαχίας» (1823), «Ἐγχειρίδιον τῆς συγχρόνου ἑλληνικῆς προφορᾶς» (1828), «Ἔρευναι περὶ τῶν πηγῶν τῆς ἀρχαίας γαλλικῆς φιλολογίας», «Τερατολογικαὶ παραδόσεις ἐκ τῆς ἀρχαιότητος καὶ τοῦ μεσαίωνος» (1836), «Σημείωμα περὶ τῶν πλείστων ἑλληνικῶν, λατινικῶν καὶ παλαιογαλλικῶν χειρογράφων τῶν περιεχόντων τὴν μυθικὴν ἱστορίαν τοῦ Ἀλεξάνδρου τοῦ Μεγάλου, τὴν γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ Ψευδοκαλλισθένους» (1838), «Ἡ ζωὴ καὶ τὰ ἔργα τοῦ Μανουὴλ Παλαιολόγου» κ.λ.π. —Ω.

**—Μπερζὲ** (Berger), ***Παῦλος.*** Γάλλος χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1845. Ὑφηγητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν Παρισίοις (1875), χειρουργὸς τῶν νοσοκομείων (1877), μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς (1893), ἐγένετο τῷ 1894 καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς κλινικῆς. Ἐδημοσίευσε: «De l'influence des maladies constitutionelles sur la marche des lésions traumatiques» (1875), «Rotule, anotomie et pathologie» κ. ἄ. Ἀνεκοίνωσεν ἐπὶ πλέον εἰς τὴν χειρουργικὴν ἑταιρείαν Παρισίων σειρὰν ἐρευνῶν περὶ μηχανισμοῦ τῶν κηλῶν, ὀστεομυελιτίδων, ἐντερεκτομῶν, ἐντερορραφῶν, καὶ κατεχώρισε πλεῖστα ἄρθρα εἰς διάφορα περιοδικά. Ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ἐγχείρησις τοῦ Berger φέρεται μέθοδος ἐγχειρητικὴ τοῦ κατάγματος τῆς ἐπιγονατίδος. Ο. Ρ.

**— Μπερζὲ** (Berger), ***Σαμουήλ.*** Γάλλος θεολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1843. Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν τῇ Σορβόννῃ καὶ θεολογίαν εἰς Στρασβοῦργον καὶ Τυβίγγην. Ἐχρημάτισε γραμματεὺς καὶ βιβλιοθηκάριος τῆς προτεσταντικῆς θεολογικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων, ἔγραψε δὲ πολλὰ καὶ πολλοῦ ἐνδιαφέροντος πρωτότυπα ἄρθρα ἐν τῇ «Ἐγκυκλοπαιδείᾳ τῶν θρησκειολογικῶν ἐπιστημῶν» (1877—1882). Ἐξέδωκεν ἐπίσης εἰς τόμους πλεῖστα ἔργα, ἐξ ὧν κυριώτερα: «Ἡ Βίβλος κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα» (1879), «De Glossariis et Compendiis biblicis quibusdam medii œvi» (1879), «Ὁ ρόλος τῆς δογματικῆς ἐν τῷ ἱερῷ κηρύγματι» (1881), «Ἡ γαλλικὴ Βίβλος κατὰ τὸν μεσαίωνα» (1884), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας κλπ. —Ω.

**— Μπερζὲ** (Berger), ***Φίλιππος.*** Γάλλος θεολόγος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1846. Ἐσπούδασε προτεσταντικὴν θεολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου, διωρίσθη δὲ τῷ 1874 ὑποβιβλιοθηκάριος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ μετὰ τρία ἔτη καθηγητὴς τῆς ἑβραϊκῆς γλώσσης εἰς τὴν προτεσταντικὴν θεολογικὴν σχολὴν τῶν Παρισίων. Τῷ 1892 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ ἀποθανόντος Ἐρνέστου Ρενάν, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν ἄλλοτε συνεργάτης, καὶ τῷ 1893 διωρίσθη καθηγητὴς εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Ἀπὸ τοῦ 1894 εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικήν, ἐκλεγεὶς γερουσιαστὴς τοῦ διαμερίσματος τοῦ Ἄνω-Ρήνου, ἐτάχθη δὲ εἰς τὴν δημοκρατικὴν ὁμάδα τῆς ἀριστερᾶς. Παρέκτὸς τῆς συνεργασίας αὐτοῦ εἰς τὸ «Corpus inscriptionum semiticarum» καὶ τὴν «Ἐγκυκλοπαιδείαν τῶν θρησκειολογικῶν ἐπιστημῶν», ἐδημοσίευσε πολυάριθμα ἐπιστημονικὰ ἄρθρα εἰς τὴν «Ἀρχαιολογικὴν ἐπιθεώρησιν», εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων» κλπ. Εἰς τόμους ἐξέδωκε μεταξὺ πολλῶν ἄλλων: «Ὁ λαὸς τοῦ Ἰσραὴλ καὶ οἱ γείτονές του» (1878), «Ἡ γραφὴ καὶ αἱ σημιτικαὶ ἐπιγραφαὶ» (1880), «Ἡ Φοινίκη» (1881), «Ἡ Ἀραβία πρὸ τοῦ «Μωάμεθ» (1885), »Ἱστορία τῆς Γραφῆς ἐν τῇ ἀρχαιότητι» (1892), «Ἡ βαβυλωνιακὴ προέλευσις τῆς ἱερᾶς ποιήσεως τῶν Ἑβραίων» (1905), «Ἡ σαρκοφάγος τοῦ Ταμπνίτ, βασιλέως τῆς Σιδῶν» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῶν Γ. Μασπερὸ καὶ Ἐρν. Ρενάν, 1887) κλπ. —Ω.

**Μπερζεβίτσυ** (Berzeviczy), ***Ἀλβέρτος.*** Οὖγγρος δημοσιογράφος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1853. Ἐταξίδευσεν ἐπὶ μακρὸν ἀνὰ τὴν Εὐρώπην, τῷ δὲ 1876 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς ἐπιστήμης καὶ τῆς κοινωνικῆς οἰκονομίας ἐν τῇ νομικῇ σχολῇ τοῦ Ἐπεργιές. Τῷ 1881 ἐξελέγη βουλευτὴς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ καὶ τῷ 1887 διωρίσθη γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας καὶ τῶν Θρησκευμάτων. Ἐπὶ κυβερνήσεως Στεφάνου Τίσζα ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Παιδείας (1903—1905). Τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξελέγη πρόεδρος τῆς οὐγγρικῆς Ἀκαδημίας. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα καὶ πραγματείας ἐπὶ τῶν ἐκπαιδευτικῶν ζητημάτων καὶ περὶ διαφόρων πολιτικῶν ἀνδρῶν. Τῷ 1905 ἐξέδωκε δίτομον ἔργον, περιλαμβάνον τοὺς λόγους καὶ τὰς μελέτας του. Χ. Δ.

**Μπερζερὰ** (Bergerat), ***Αἰμίλιος-Αὔγουστος.*** Διακεκριμένος Γάλλος λόγιος τῶν τελευταίων χρόνων (1845—1923). Ἦτο εἰκοσαετὴς μόλις, ὅταν ἐπαίχθη ἀπὸ σκηνῆς τοῦ Γαλλικοῦ θεάτρου ἡ ἔμμετρος μονόπρακτος κωμῳδία του «Μιὰ φιλενάδα» (1865), τυχοῦσα εὐμενεστάτης ὑποδοχῆς τόσον ἐκ μέρους τῆς κριτικῆς ὅσον καὶ τοῦ κοινοῦ. Ὁ πόλεμος κατόπιν τοῦ 1870 τοῦ ἐνέπνευσε τὰ πρῶτά του ποιήματα, ἐξ ὧν τινα, ὅπως «Οἱ θωρακοφόροι τοῦ Ραϊσχόφφεν», ἐσημείωσαν μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ἄλλα ὅμως θεατρικὰ ἔργα του τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, «Πατέρας καὶ σύζυγος» (1870), «Ἄγγελος Μποζάρι» (1873) κ. λ. π., δὲν ἠδυνήθησαν νὰ σταθοῦν, μολονότι τὸ πρῶτον ἐπαίχθη ὑπὸ τοῦ Κοκλέν. Μετέπειτα ὁ Μπερζερά, ζωγράφος ὁ ἴδιος καὶ ἀκουαρελλίστας, ἀνέλαβε τὴν κριτικὴν τῆς τέχνης εἰς τὴν «Ἐπίσημον Ἐφημερίδα», ὅπου, καθὼς καὶ βραδύτερον ὡς ἀρχισυντάκτης τῆς «Συγχρόνου ζωῆς», ἔγραψεν ἄρθρα ὑπέροχα, δυνάμενα νὰ θεωρηθοῦν ὡς ὑποδείγματα τοῦ εἴδους τούτου. Ταυτοχρόνως ἔγραφεν εἰς τὸν «Βολταῖρον» χρονικὰ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον «Ὁ προσωπιδοφόρος» καὶ βραδύτερον εἰς τὸν «Φιγκαρὼ» ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον «Καλιμπὰν» οὐμοριστικὰ συνθέματα σπανίου οἴστρου. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπανήρχετο ἐκ νέου εἰς τὴν θεατρικὴν φιλολογίαν, ἀνεβίβασε δέ, ἄνευ ἐπιτυχίας καὶ πάλιν, τὰ δράματα «Le Nom» (1881) καὶ «Herminie» (1882). Ἀντιθέτως τὰ χρονογραφήματά του, αἱ μελέται του περὶ τοῦ Θεοφίλου Γκωτιὲ (1879), τοῦ ὁποίου τὴν θυγατέρα εἶχε λάβει σύζυγον, τὰ μυθιστορήματά του «Faublas» (1883) καὶ «Le Viol» (1884), αἱ συλλογαὶ ποιημάτων του «Mes Moulins» (1884) καὶ «Enguerrandes» (1882) κατεδείκνυον τὴν χάριν καὶ τὴν ποικιλίαν τοῦ ταλάντου του. Μία σειρὰ νέων προσπαθειῶν του πρὸς τὸ θεατρικὸν εἶδος, μὲ τὰ ἔργα «Caron de Carrabasse» (1885), «Flore de Frileuse» (1886) καὶ «La nuit bergamasque» (1887) ἀπέβη ὁμοίως ἀτυχής, μὲ μετρίαν μόνον ἐξαίρεσιν διὰ τὸ τελευταῖον ἐκ τῶν ἔργων τούτων. Ἀφωσιώθη κατόπιν ἐπὶ πολλὰ ἔτη εἰς τὸ μυθιστόρημα καὶ ἐδημοσίευσε: «Le Cruel va-t-en guerre» (1891), «Le chèque» (1893) καὶ «La vierge» (1893), τυχόντα καλῆς ὑποδοχῆς, ἐπίσης δὲ «Ἕνα ταξεῖδι εἰς τὴν Κορσικὴν» (1891), καὶ νέαν συλλογὴν ποιημάτων «La lyre comique». Τέλος τῷ 1899 ἐπετύγχανε τὸν ἐπὶ τόσα ἔτη ματαίως ἐπιδιωχθέντα σκηνικὸν θρίαμβον μὲ τὸ ναπολεοντείου ὑποθέσεως ἔργον του «Plus que Reine», τὸ ὁποῖον ἠκολούθησεν ἡ μετριωτέρας ἀξίας «Pombadour» (1901). Τῷ 1906 ἡ Γαλλικὴ Κωμῳδία ἀνεβίβαζε «La Fontaine de Jouvence». Ὡς ποιητὴς ἔδωκεν ἀκόμη τὰς συλλογὰς «Σπασμένη λύρα» (1903) καὶ «Μπαλάντες καὶ σοννέτα» (1910), καὶ ὡς μυθιστοριογράφος «Les Contes de Caliban» (1909), «Les amours de Violette» (1910), «Le petit Moreau» (1911), ὅταν δὲ ἱδρύθη ἡ καθημερινὴ φιλολογικὴ ἐφημερὶς «Comoedia», ὁ Μπερζερὰ ἐγένετο εἷς τῶν πλέον διακεκριμένων συνεργατῶν της. Ἡ ἡλικία δὲν ἐμάρανε τὸν οἶστρόν του: «Δὲν εἶμαι τόσον ἔνδοξος—ἔλεγεν—ὥστε νὰ μοῦ ἐπιτρέπεται νὰ γηράσω»· πράγματι δὲ αἱ «Ἀναμνήσεις» του (1911—1912) εἶναι ἔργον πλῆρες σφρίγους καὶ νεανικῆς φαιδρότητος. Τῷ 1919 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Γκονκούρ, ἓν δ' ἔτος βραδύτερον ἐδημοσίευσε τὸ τελευταῖόν του βιβλίον «Contes de toutes les couleurs», ὅπου ἐπέτυχε πράγματι, ὅπως ἤθελε, νὰ συνδυάσῃ τὰ δύο κύρια χαρακτηριστικὰ τῆς γαλλικῆς ράτσας, τὴν φαντασίαν καὶ τὴν θυμόσοφον διάθεσιν. Γ. Ζ.

**Μπερζέλιους** (Berzelius), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος.*** Σουηδὸς χημικὸς (βλ. λ. *Βερζέλιος* Ἰωάννης-Ἰάκωβος).

**Μπερζερὰκ** (Bergerac) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ντορντόν· Διεξάγει ἐμπόριον ἐκλεκτῶν λευκῶν καὶ ἐρυθρῶν οἴνων καὶ ἔχει βυρσοδεψεῖα, ἐργαστήρια ὑφασμάτων, χυτήρια, ζυθοποιεῖα, κλπ. Κάτ. 16.200. Κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους ἦτο ἓν τῶν κυριωτέρων κέντρων τῶν διαμαρτυρομένων, ἀλλὰ κατελήφθη ἐν τέλει ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ', ὅστις κατηδάφισε τὰς ὀχυρώσεις της (1621).

***—Μπερζερὰκ προκήρυξις.*** Τὴν ὀνομασίαν ταύτην φέρει προκήρυξις, τὴν ὁποίαν ὁ βασιλεὺς τῆς Ναβάρρας ἐξέδωσεν ἐν Μπερζερὰκ τὴν 10 Ἰουνίου 1585, ἀπαντῶν εἰς τὴν προκήρυξιν τοῦ καρδιναλίου τῶν Βουρβώνων καὶ ἀντικρούων τὰς κατηγορίας τοῦ συνασπισμοῦ (Ligue).

***— Μπερζερὰκ συνθήκη.*** Συνωμολογήθη τὴν 17 Σεπτεμβρίου 1577 μεταξὺ τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ Ἑρρίκου Γ' καὶ τῶν ἀρχηγῶν τῶν διαμαρτυρομένων. Δι' αὐτῆς ἐξησφαλίσθη εἰς τοὺς δευτέρους ἡ ἐλευθέρα ἄσκησις τῆς θρησκείας καὶ παρεχωρήθησαν πλεῖστα προνόμια. Ἡ συνθήκη αὕτη ἀπέβλεπε κυρίως εἰς τὴν εἰρήνευσιν τοῦ Πουατιὲ καὶ τὴν μείωσιν τῆς δυνάμεως τοῦ συνασπισμοῦ καὶ τῶν δουκῶν τῆς Γκίζης. Χ. Δ.

**Μπερζερὰκ** (Bergerac), ***Συρανὸ Σαβινιανὸς ντὲ*** —· βλ. λ. *Συρανὸ* ντὲ Μπερζεράκ.

**Μπερζερὲ** (Bergeret), ***Πέτρος-Νολάσκ.*** Γάλλος ζωγράφος (1782—1863). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Βενσὰν καὶ τοῦ Δαβίδ, διεκρίθη δ' ὡς ζωγράφος ἱστορικῶν θεμάτων. Πολυπληθῆ ἔργα του ἐτοποθετήθησαν εἰς τὰ ἀνάκτορα τῶν Βερσαλλιῶν καὶ τοῦ Φονταινεμπλώ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του πινάκων τάσσονται: «Ὁ Φραγκῖσκος Α' καὶ ὁ Ἑρρῖκος Η'», «Ὁ Ἀλέξανδρος καὶ Ναπολέων εἰς τὸ Τιλσίτ», «Ἡ δημοκρατία θριαμβεύουσα». Ἐπὶ πλέον ὁ Μπερζερὲ ἐξεπόνησε τὰ σχέδια τῆς γλυπτικῆς διακοσμήσεως τῆς στήλης Βαντὼμ (ἐν Παρισίοις), καὶ ἐδημοσίευσε τὰς «Ἐπιστολὰς καλλιτέχνου ἐπὶ τῆς καταστάσεως τῶν τεχνῶν ἐν Γαλλίᾳ» (1848). Ι. Μ. Π.

**Μπερζερὸν** (Bergeron) ***νόσος.*** Τὴν νόσον ταύτην χαρακτηρίζουν ἀπότομοι καὶ ἀκαριαῖαι σπασμωδικαὶ κινήσεις (τιναγμοί), ἀνάλογοι πρὸς τὰς προκαλουμένας ὑπὸ ρεύματος ἠλεκτρικοῦ. Αἱ κινήσεις αὗται, αἱ ὁποῖαι καταλαμβάνουν κυρίως τὰ ἄνω ἄκρα, πολλάκις δὲ τοὺς μῦς τοῦ τραχήλου καὶ τοῦ προσώπου καὶ ἐνίοτε τὴν γλῶσσαν, τοὺς μῦς τοῦ λάρυγγος καὶ τὸ διάφραγμα, εἶναι ρυθμικαὶ καὶ ἐπαναλαμβάνονται κατὰ ὁμαλὰ διαστήματα, τὰ ὁποῖα εἶναι ἐνίοτε βραχύτατα, ὁσάκις μάλιστα ὁ ἄρρωστος προσπαθεῖ νὰ σταματήσῃ τὰς ἀκουσίας ταύτας κινήσεις. Ἐν πάσῃ περιπτώσει αἱ κινήσεις αὗται δὲν ἐμποδίζουν τὰς ἑκουσίας τοιαύτας καὶ παύουν προσωρινῶς κατὰ τὸν ὕπνον ἢ ὅταν ὁ ἄρρωστος ἀποσπᾷ ἀλλαχοῦ τὴν προσοχήν του.

Τὴν νόσον ταύτην πρῶτος περιέγραψεν ἐν Γαλλίᾳ, κατὰ τὸ 1880, ὁ Μπερζερόν, ὅστις ἀπεκάλεσεν αὐτὴν *ἠλεκτρικὴν χορείαν*, μολονότι ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ταύτην εἶχον ἤδη περιγραφῆ ἄλλαι ἀνάλογοι νόσοι· φαίνεται ὅμως ὅτι ἡ περιγραφὴ τῆς νόσου Μπερζερὸν εἶχε γίνει προηγουμένως ἐν Γερμανίᾳ ὑπὸ τοῦ Henoch, δι' ὃ καὶ πολλοὶ συγγραφεῖς ἀποκαλοῦν ταύτην *νόσον τῶν Henoch-Bergeron*. Ἀργότερον (1883) ὁ Tordeus προέτεινε διὰ τὴν νόσον ταύτην τὸν ὅρον *ἠλεκτρολῃψία*. Κατὰ τοὺς νεωτέρους συγγραφεῖς ἡ νόσος ἀνάγεται εἰς τὰ λεγόμενα *τίκ*, παρατηρεῖται δὲ κυρίως εἰς παιδία ἡλικίας 6—14 ἐτῶν. Κατὰ τὸν Μπερζερὸν ἡ θεραπεία ἐπιτυγχάνεται διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως τῆς ἐμετικῆς τρυγός· πάντως δὲν πρέπει νὰ λησμονῆται ὅτι ἐνταῦθα εἶναι δυνατὸν ἐνίοτε νὰ ἐφαρμοσθῇ καὶ ἡ ὑποβολή. Σ. ΒΕΡΑΣ

**Μπερζιὲ** (Bergier), ***Νικόλαος-Σίλβεστρος.*** Γάλλος θεολόγος, φιλόλογος καὶ ἀπολογητὴς τοῦ Χριστιανισμοῦ, γνωστὸς ἐκ τῆς πολεμικῆς, τὴν ὁποίαν ἤσκησε κατὰ τοῦ J. J. Rousseau καὶ τῶν φιλοσόφων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, γεννηθεὶς ἐν Λωρραίνῃ τῷ 1718 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1790. Ἐγένετο κατ' ἀρχὰς ἱερεύς, κατόπιν δὲ καθηγητὴς τῆς θεολογίας, μοναχὸς καὶ ἐξομολογητὴς τοῦ βασιλέως. Μετέφρασεν ἐπιτυχῶς τὸν Ἡσίοδον καὶ ἀπεδύθη εἰς τὸν ἀγῶνα κατὰ τῶν φιλοσόφων τῆς ἐποχῆς του. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Le déisme réfuté par lui-même» (τόμ. 2, Paris 1765 κ. ἑξ.), ὅπου ἐκτίθενται αἱ θεολογικαὶ ἀντιλήψεις ἐπὶ τῆς ζωῆς καὶ καταπολεμεῖται ὁ Rousseau, «Examen du matérialisme ou réfutation du système de la nature» (τόμ. 2, Paris 1771). Θ. Π.

**Μπερθέο** (Berceo), ***Γκονθάλο.*** Διάσημος Ἱσπανὸς ποιητὴς (1180—1246). Ἐξεπαιδεύθη ἐν τῇ μονῇ τοῦ ἁγίου Μιλάνου τῆς Κογκούλλια, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐχειροτονήθη ἱερεύς. Ὁ Μπερθέο ὑπῆρξεν εἷς τῶν παραγωγικωτέρων ποιητῶν τῆς Ἱσπανίας, θεωρεῖται δὲ ὡς πατὴρ τῆς καστιλλιανῆς ποιήσεως. Τὰ ἔργα αὐτοῦ συνίστανται ἐξ ἐννέα μακρῶν ποιημάτων θρησκευτικοῦ περιεχομένου: «Vida de sancto Domiugo de Silos», «Vida de sancta Oria», «Martirio de Sant Laurencio», «Sacrificio de la Misa», «Loores de Nuestra Señora», «Los signos que aparecian antes del Juicio», «Milagros de Nuestra Señora», «Duelo dela Virgen el dia de la pasion de su hijo Jesucristo». Τὰ ποιήματα ταῦτα ἀποτελοῦνται ἀπὸ στροφὰς ἐκ τεσσάρων δεκατετρασυλλάβων ὁμοιοκαταλήκτων στίχων. Ἀλλ' ὁ Μπερθέο ὀφείλει τὴν

Digitized by Google

*Ἀβιταμίνωσις (μπέρι - μπέρι) τῶν ὀρνίθων: Πρώτη καὶ δευτέρα ἡμέρα τῆς ἀσθενείας.*

φήμην αὐτοῦ κυρίως εἰς τοὺς ὡραίους θρύλους του, οἵτινες, συνταχθέντες εἰς γλῶσσαν λαϊκήν, «en roman paladino», ὡς λέγει ὁ ποιητής, ἀπεσκόπουν τὴν παρὰ τῷ λαῷ ἐμπέδωσιν τοῦ θρησκευτικοῦ συναισθήματος. Τὰ εἰς τὴν Παρθένον ἀφιερωμένα ποιήματά του διακρίνονται τόσον διὰ τὸ βάθος τῶν θρησκευτικῶν ἰδεῶν, ὅσον καὶ διὰ τὴν εὐστροφίαν καὶ τὴν χάριν τῆς γλώσσης. Τὰ ἔργα τοῦ Μπερθέο δημοσιευθέντα ὑπὸ τοῦ Σαντζέθ ἐν τῇ «Colecᴄion de poesias castellanas anteriores al siglo XV» (Μαδρίτη, 1790), ἐπανεξεδόθησαν τῷ 1842 ὑπὸ τοῦ Ε. ντὲ Ὀτσόα καὶ τῷ 1864 ἐν τῇ «Biblioteca Rivadeneyra». Α. Δ.

**Μπεριγκὰρ** (Bérigard), ***Κλαύδιος - Γκυγερμὲ ντὲ —***, ἄλλως ***Μπωρεγκὰρ*** (Beauregard). Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1578 ἢ 1591 ἐν Μουλὲν καὶ ἀποθανὼν ἄγνωστον πότε, πιθανῶς δὲ περὶ τὸ 1665. Σπουδάσας ἐν Αἲξ τὴν φιλοσοφίαν καὶ τὴν ἰατρικήν, ἀπέκτησε μεγάλην φήμην εἰς τὴν μεσημβρινὴν Γαλλίαν καὶ προσεκλήθη κατ' ἀρχὰς εἰς Πίζαν ὑπὸ τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Φλωρεντίας (1628) καὶ κατόπιν εἰς Πάδουαν κατὰ τὸ 1640 ὑπὸ τῆς βενετικῆς κυβερνήσεως, διὰ νὰ διδάξῃ τὴν φιλοσοφίαν τῆς φύσεως. Καταλέγεται μεταξὺ τῶν ἀνεξαρτήτων διανοητῶν τῶν νεωτέρων χρόνων, οἱ ὁποῖοι ἀπετίναξαν τὸν ζυγὸν τοῦ Ἀριστοτέλους. Τὸ σπουδαιότερον ἔργον του ἔχει τὸν τίτλον «Circuli Pisani, seu de veterum et peripateticorum philosophia dialogi» (Udine 1643—1647, Padova 1661). Εἰς τὴν φυσικὴν τοῦ Ἀριστοτέλους ὁ Μπεριγκὰρ ἀντιπροβάλλει εἰς τοὺς διαλόγους του τὰς θεωρίας τῶν Ἰώνων φιλοσόφων περὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ κόσμου. Γνωστὴ εἶναι ἐπίσης καὶ μία προγενεστέρα ἀπόπειρα ἀνασκευῆς τῶν θεωριῶν τοῦ Γαλιλαίου ὑπὸ τὸν τίτλον «Dubitationes in Dialogos Galilaei pro terrae immobilitate» (1632), ἄντικρυς ἀντιτιθεμένη πρὸς τὸν σκεπτικισμὸν τοῦ ἀντιπεριπατητικοῦ ἔργου του. Θ. Π.

**Μπέρικ - ἀπὸν - Τουὶντ** (Berwick-upon-Tweed) *[Γεωγρ.]*. Ἡ βορειοτέρα πόλις τῆς Ἀγγλίας, κειμένη ἐν τῇ κομιτείᾳ *Νορθουμπερλαντ*, ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης καὶ ἐγγὺς τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Τουὶντ, παρὰ τὰ σύνορα τῆς Σκωτίας. Ἀπὸ τοῦ 1835 ἡνώθησαν μετ' αὐτῆς καὶ τὰ ἐπὶ τῆς ἀντιπέραν ὄχθης τοῦ ποταμοῦ προάστεια *Τουινμάουθ* καὶ *Σπάϊτταλ*. Ἔχει ἀξιόλογον ποτάμιον λιμένα, σιδηροχυτήρια, ἐργοστάσια γεωργικῶν μηχανῶν κλπ., διεξάγει δ' ἐξαγωγὴν τοῦ ποτοῦ οὐίσκυ. Ἐπίσης ἔχει σημαντικὴν ἁλιείαν. Κάτ. (1921) 12.985.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ Μπέρικ, κτισθεῖσα ὑπὸ τῶν Σαξώνων βασιλέων, ἀπετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν τὸ μῆλον τῆς ἔριδος μεταξὺ Σκωτίας καὶ Ἀγγλίας, περιελθοῦσα τέλος τῷ 1482 εἰς τὴν τελευταίαν, κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν μεταξὺ τῶν Σκώτων εὐγενῶν καὶ τοῦ βασιλέως Ἰακώβου Γ' ἐρίδων. Ἡ πόλις παρέχει σήμερον ὄψιν γραφικωτάτην μὲ τὰ παλαιὰ φρούρια καὶ ὀχυρώσεις τῶν χρόνων τῆς Ἐλισάβετ καὶ τὰς τέσσαρας ζευγνυούσας τὸν Τουὶντ γεφύρας, ἐξ ὧν ἡ παλαιοτέρα, ἔχουσα 15 ἁψῖδας, ἐκτίσθη τῷ 1634. Χ. Δ.

**Μπέρικ *κομιτεία*** (Berwickshire) *[Γεωγρ.]*, Κομιτεία τῆς Σκωτίας εἰς τὸ ΝΑ. τμῆμα αὐτῆς, χωριζομένη ἀπὸ τῆς ἀγγλικῆς κομιτείας Νορθουμπερλαντ διὰ τοῦ ποταμοῦ Τουίντ. Ἔχει ἔκτασιν 1.184 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν (1923) 27.000 κατ. ἀσχολουμένων μὲ τὴν γεωργίαν καὶ τὴν ἁλιείαν σολωμῶν. Ἔχει ἔδαφος ὀρεινὸν καὶ πετρῶδες εἰς τὸ Β. αὐτῆς τμῆμα, ἀλλὰ πεδινὸν καὶ εὔφορον κατὰ τὸ νότιον καὶ παρὰ τὴν κοιλάδα τοῦ Τουὶντ καὶ τοῦ ἑτέρου ἐκ τῶν διαρρεόντων αὐτὴν ποταμῶν Μπλακάντερ. Χ. Δ.

**Μπερὶκ** (Berwick), ***Ἰάκωβος-Φὶτζ - Ζὰμ*** (Fitz-James), *δοὺξ τοῦ—*. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας (1670—1734). Ἦτο νόθος υἱὸς τοῦ Ἰακώβου Β', βασιλέως τῆς Ἀγγλίας, καὶ τῆς Ἀραβέλλας Τσώρτσιλ, ἀδελφῆς τοῦ περιφήμου δουκὸς τοῦ Μάλμπορω. Ἀνήκων οὕτω ἐκ γενετῆς εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν Στούαρτ ἀφ' ἑνὸς καὶ εἰς τὴν τοῦ πλέον ἀσπόνδου αὐτῆς ἐχθροῦ ἀφ' ἑτέρου, ἠναγκάσθη ἐκ νεανικῆς ἡλικίας νὰ ἐκπατρισθῇ καὶ ν' ἀναζητήσῃ τὰς τύχας του εἰς ἄλλας χώρας. Κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Καρόλου τῆς Λωρραίνης, ἀρχιστρατήγου τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Λεοπόλδου Α', τὸν ὁποῖον ἠκολούθησεν εἰς τοὺς ἐναντίον τῶν Τούρκων πολέμους του ἐν Οὐγγαρίᾳ. Ἦτο δεκαπενταετὴς μόλις, ὅταν ἐτραυματίσθη, μετέχων τῆς πολιορκίας τῆς Βούδα, εἶχε δὲ ἀποκτήσει ἤδη ἀρκετὴν φήμην, ὅταν, τῷ 1688, ὁ πατήρ του Ἰάκωβος Β' τὸν μετεκάλεσεν εἰς Ἀγγλίαν, διὰ νὰ τοῦ ἀναθέσῃ τὴν διοίκησιν σημαντικῆς στρατιωτικῆς δυνάμεως. Ἦτο ἡ ἐποχὴ τῶν παραμονῶν τῆς ἐναντίον τοῦ Ἰακώβου ἐπαναστάσεως, τὴν ὁποίαν ματαίως ὁ Μπέρικ ἠγωνίσθη νὰ προλάβῃ. Ἐκθρονισθέντος τοῦ πατρός του ὑπὸ τοῦ Γουλιέλμου τῆς Ὀράγγης, ἠκολούθησε τότε αὐτὸν εἰς Γαλλίαν, τεθεὶς δὲ εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ' μετέσχε τῆς ἐκστρατείας εἰς Ἰρλανδίαν καὶ βραδύτερον τῶν πολέμων τῆς Φλάνδρας, ὅπου μετασχὼν τῶν μαχῶν τοῦ Στεενκέρκε καὶ τοῦ Νεερμπίντεν ἠχμαλωτίσθη. Ἀπελευθερωθεὶς ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν καὶ ἔλαβε τῷ 1702 τὴν γαλλικὴν ὑπηκοότητα. Τῷ 1704 τῷ ἀνετέθη ἡ διοίκησις τοῦ γαλλοϊσπανικοῦ στρατοῦ τοῦ ἀποσταλέντος ὅπως ἀνακόψῃ τὴν προέλασιν τῶν Πορτογάλων ἐν τῇ Ἰβηρικῇ χερσονήσῳ καὶ τὴν ἐκεῖ πρόοδον τοῦ ἀρχιδουκὸς Καρόλου. Διεξήγεν ἐκεῖ ἐπιτυχῶς τὴν ἀποστολήν του, λόγῳ ὅμως διαβολῶν ἀνεκλήθη, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ στρατάρχου Τεσσέ. Τῷ ἀνετέθη τότε ἡ διοίκησις τοῦ Λαγκεντὸκ μέχρι τοῦ 1706, ὁπότε ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' τῷ ἀνέθηκε τὴν δυσχερῆ ἐπιχείρησιν τῆς ἀνακτήσεως τῆς Νικαίας ἀπὸ τῶν συμμάχων. Μετὰ τὴν λαμπρὰν ἐν αὐτῇ ἐπιτυχίαν του προήχθη εἰς στρατάρχην τῆς Γαλλίας καὶ ἀπεστάλη ἐκ νέου εἰς τὴν Ἰσπανίαν ὡς ἀρχιστράτηγος. Ἡ νίκη του ἐν Ἀλμάντζᾳ ἐστερέωσεν ὁριστικῶς τὴν στρατιωτικήν του δόξαν καὶ τὸ μέλλον του. Ὁ ἀποκατασταθεὶς εἰς τὸν ἰσπανικὸν θρόνον Φίλιππος Ε' τὸν ἐτιτλοφόρησε μεγιστᾶνα τῆς Ἰσπανίας καὶ τῷ ἐδώρησεν ἔκτασιν γῆς εἰσοδήματος 40.000 λιβρῶν, ἐπὶ πλέον δὲ τὰ δουκᾶτα τῆς Λίρια καὶ τῆς Ξερέκα καὶ τὸν ὠνόμασεν ἀντιβασιλέα τῆς Ἀραγῶνος. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' ἀφ' ἑτέρου τῷ παρεχώρησε τὴν διοίκησιν τῆς Λιμουζὶν καὶ τὴν ἀρχιστρατηγίαν τοῦ στρατοῦ τοῦ Ρήνου. «Εἰς μίαν πολεμικὴν χώραν—γράφει περὶ αὐτοῦ ὁ Rolingbroke,—ὁ Ἄγγλος αὐτὸς ἀνεγνωρίσθη ὡς ἰσότιμος τῶν μεγαλυτέρων τῆς στρατηγῶν». Ἔκτοτε διοικεῖ τὰ γαλλικὰ στρατεύματα ἐπὶ ὅλων τῶν συνόρων. Κατὰ ἔτη 1709—1712 ὑπερασπίζει βῆμα πρὸς βῆμα τὸ ἔδαφος τοῦ Δελφινάτου ἐναντίον τῶν συμμάχων·

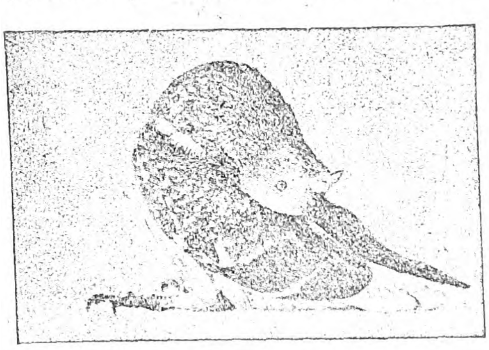

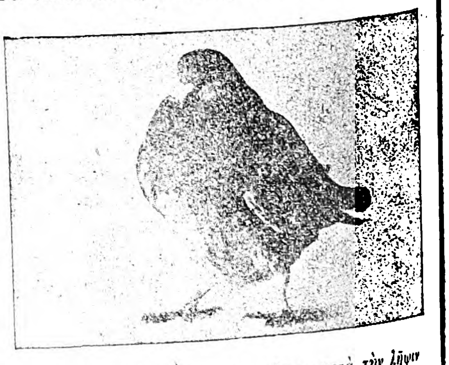

*Ὄρνις πάσχουσα ἐξ ἀβιταμινώσεως καὶ ἡ ἰδία ὄρνις θεραπευθεῖσα τρεῖς ὥρας μετὰ τὴν λῆψιν ποσότητος βιταμίνης ἐκ ζύμης.*

τῷ δὲ 1715 ἡ νίκη του κατὰ τῶν Αὐστριακῶν, καθ' ἣν ἀνακατέλαβε τὴν Βαρκελώνην, ἐξαναγκάζει τούτους νὰ ἐπιταχύνουν τὴν συνθηκολόγησιν τοῦ Ράσταντ. Τὴν στιγμὴν αὐτὴν ὁ Μπέρικ εἶχεν ἐξασφαλίσει, μετὰ δεκατριῶν ἐτῶν πολεμικοὺς ἀγῶνας, τὴν ἀνεξαρτησίαν τῆς Ἰσπανίας καὶ τὸν τελικὸν θρίαμβον τῆς πολιτικῆς τοῦ κατὰ τὸ ἴδιον ἐκεῖνο ἔτος ἀποθανόντος Λουδοβίκου ΙΔ'. Ὁ ἀντιβασιλεὺς Φίλιππος τῆς Ὀρλεάνης τῷ παραχωρεῖ τὴν διοίκησιν τῆς Γουϊέννης (1716), ὅταν δὲ ἀπεφάσισε, μὲ τὴν βοήθειαν τῶν Ἄγγλων, νὰ κτυπήσῃ τὸν Φίλιππον Ε', εἰς τὸν Μπέρικ ἀνέθηκε νὰ διευθύνῃ τὴν ἐκστρατείαν ταύτην ἐναντίον τοῦ βασιλέως τῆς Ἰσπανίας, τὸν ὁποῖον τόσον ἄλλοτε διὰ τῶν στρατιωτικῶν του ἐπιτυχιῶν ἐξυπηρέτησε. Τῷ 1720 ὁ Μπέρικ διωρίσθη μέλος τοῦ συμβουλίου τῆς ἀντιβασιλείας. Βραδύτερον ἀποσταλεὶς μετὰ τοῦ Βιλλὰρ κατὰ τῶν Αὐστριακῶν καὶ πολιορκῶν τὸ Φίλιπσμπουργκ, ἐφονεύθη αὐτόθι τῷ 1734.

Ὁ στρατάρχης Μπέρικ εἶχε γράψει ἀπομνημονεύματα μέχρι τοῦ 1715, τῶν ὁποίων τὴν ἔκδοσιν παρεσκεύαζεν ὁ Μοντεσκιέ, μὴ προλαβὼν ὅμως οὔτε τὴν ἔκδοσιν νὰ πραγματοποιήσῃ, οὔτε τὸ προλογιστικὸν ἐγκώμιόν του πρὸς τὸν στρατάρχην νὰ συμπληρώσῃ. Ἐξεδόθησαν ταῦτα τῷ 1778 ὑπὸ τοῦ ἀββᾶ Hooke, συμπληρώσαντος τὸ ἔργον τῷ 1734 δι' ἄλλων σημειωμάτων εὑρεθέντων μεταξὺ τῆς ἀλληλογραφίας τοῦ Μπέρικ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *De Courcy*, «La coalition de 1701 contre la France (Παρίσιοι 1886). «Ἀπομνημονεύματα» τῶν *Saint-Simon*, *Dangeau*, *Torey* (Παρίσιοι 1884). Γ. Ζ.

**Μπερῖκος** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Δορμῶνας* (βλ. λ.).

**Μπέρινγκ** (Bering), ***Αἰμίλιος***. Γερμανὸς μικροβιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1854. Τῷ 1894 προσεκλήθη ὡς καθηγητὴς τῆς ὑγιεινῆς εἰς τὴν Χάλλην καὶ τῷ 1895 εἰς Μαρβοῦργον ὡς διευθυντὴς τοῦ ὑγειονομικοῦ ἰνστιτούτου. Συνέγραψε: «Περὶ αἰτιολογίας καὶ θεραπείας τῶν μολυσματικῶν νόσων» (1893), «Περὶ διφθερίτιδος» (1893), «Γενικὴ θεραπεία τῶν μολυσματικῶν νόσων» (1898), «Συμβολὴ εἰς τὴν πειραματικὴν θεραπείαν» (1898) κ. ἄ. Ἡ ἀνακάλυψίς του τῆς ὀροθεραπείας (1890) ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ο. Ρ.

— **Μπέρινγκ** (Behring ἢ Béring), ***Βῖτος***. Δανὸς ἐξερευνητὴς (βλ. λ. *Βέριγκ* Βῖτος).

— **Μπέρινγκ** (Behring ἢ Bering) ***θάλασσα***, — ***νῆσος***, — ***πορθμὸς*** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βέριγκ θάλασσα*, — νῆσος, — πορθμός.

**μπέρι - μπέρι** (Beri - Beri). Νόσος ἐνδημική, ἀπαντῶσα εἰς τὰς Ἰνδίας, τὴν Ἰνδοκίναν, τὸ Ἀνάμ (ἔνθα καλεῖται καὶ *μπὶν-τάγγ*), τὴν Ἰσπανίαν (ὑπὸ τὸ ὄνομα *κάκκε*), τὴν Βραζιλίαν, τὴν Σενεγάλην καὶ τὴν Ὠκεανίαν. Τὸ αἴτιον τῆς νόσου ταύτης ἠμφισβητήθη ἐπὶ πολύ· σήμερον ἀποδίδουσι ταύτην εἰς διαταραχὰς τῆς θρέψεως ἐκ πλημμελοῦς διατροφῆς, ἤτοι εἰς τὴν ἔλλειψιν τροφίμων νωπῶν, εἰς τροφὴν ἐστερημένην λευκωματων καὶ λευκωματωδῶν οὐσιῶν καὶ κυρίως εἰς τὴν παρατεταμένην χρῆσιν ὀρύζης ἄνευ τοῦ φλοιοῦ αὐτῆς. Τὸ τοιοῦτον δὲ ἀπεδείχθη καὶ πειραματικῶς, διοτι περιστεραὶ τραφεῖσαι ἀποκλειστικῶς ἐξ ὀρύζης ἀποπεφλοιωμένης ἀπέθανον ἐκ νόσου ὁμοίας πρὸς τὸ μπέρι-μπέρι, ἐνῷ ὅταν προσετέθησαν εἰς τὴν τροφὴν αὐτῶν φλοιοὶ ὀρύζης, ἐθεραπεύθησαν αὗται καὶ δὲν ἐ ε ράνισαν οὐδὲν νοσηρὸν φαινόμενον, ἔστω καὶ ἂν ἐπὶ μακρὸν χρόνον ἐτρέφοντο ἀποκλειστικῶς δι' ὀρύζης. Ἐκ τούτου συμπεραίνουσιν ὅτι ὁ φλοιὸς τῆς ὀρύζης περιέχει οὐσίας εἰδικὰς ἀνηκούσας εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν βιταμινῶν.

Κλινικῶς ἡ νόσος ἐμφανίζεται ὑπὸ δύο μορφάς, τὴν μὲν χαρακτηριζομένην ὑπὸ συνδρομῆς πολυνευριτικῆς καὶ τὴν ἑτέραν οἰδηματώδη μετ' ἀγγειοκαρδιακῶν διαταραχῶν.

α') Τὸ *ξηρὸν ἢ πολυνευριτικὸν μπέρι-μπέρι* παρατηρεῖται συχνότερον. Ἄρχεται δὲ ὑπούλως διὰ προϊούσης ἀδυναμίας τῶν κάτω ἄκρων, ἄνευ αἰσ

Digitized by Google

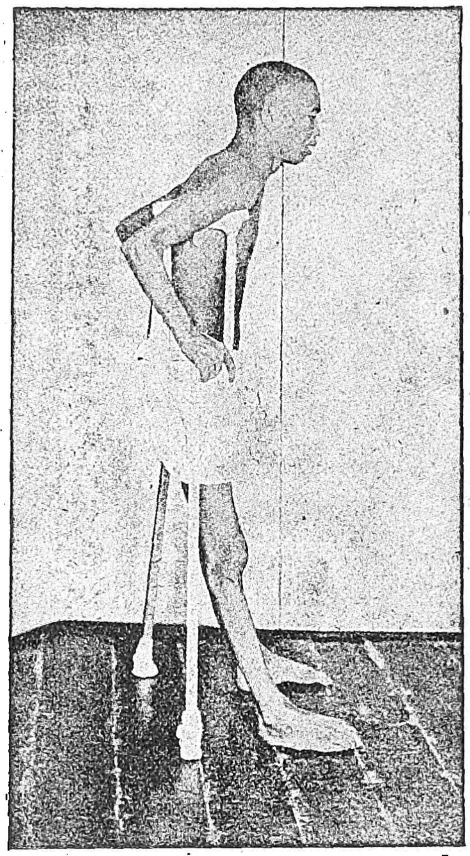
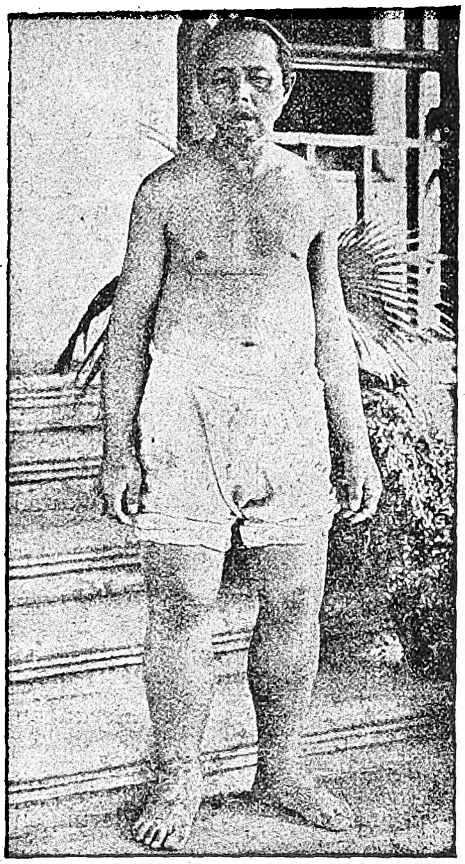

*Ἀβιταμίνωσις (μπέρι-μπέρι) εἰς τοὺς ἀνθρώπους.*
[Κατὰ σειρὰν ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τὰ δεξιά: παραλυτική, ἀτροφικὴ καὶ ὑδρωπικὴ μορφή.]

δαίων αἰσθητικῶν διαταραχῶν· σπανίως δ' ἡ ἀδυναμία αὕτη ἀπολήγει εἰς παράλυσιν ὁλικήν· καὶ ἐπὶ τῶν βαρυτέρων δ' ἔτι περιπτώσεων ὁ πάσχων δύναται νὰ ἐκτελῇ βηματισμούς τινας τῇ βοηθείᾳ βακτηριῶν. Ἐπὶ ἐλαφροτέρων περιπτώσεων δύναται νὰ βαδίσῃ ἄνευ στηρίγματος, βηματίζων ὅμως κατὰ τρόπον χορευτικόν. Οἱ ἐκτατῆρες μύες εἶναι περισσότερον προσβεβλημένοι· τὰ δὲ φαινόμενα τῆς νόσου διακρίνονται κυρίως εἰς τὰ ἄκρα. Τὰ ἀνακλαστικὰ φαινόμενα τῆς ἐπιγονατίδος καὶ τοῦ ἀχιλλείου τένοντος καταργοῦνται προώρως, ἐνῷ τὸ δερματικὸν ἀνακλαστικὸν τοῦ πέλματος παραμένει ἀνέπαφον. Κατὰ τὰς πρώτας ἑβδομάδας τῆς νόσου παρατηρεῖται σημαντικὴ ἀτροφία τῶν μυῶν τῶν κάτω ἄκρων μετὰ διαταραχῶν τῆς ἠλεκτρικῆς ἀντιδράσεως (σπανίως ὅμως μέχρις ἀντιδράσεως τελείας ἐκφυλίσεως). Μόνον κατὰ τὰς βαρείας καὶ χρονίας ἀντιδράσεις αἱ κινητικαὶ διαταραχαὶ γενικεύονται, ἐπεκτεινόμεναι εἰς τὰ ἄνω ἄκρα, τὸν κορμόν, σπανίως δὲ καὶ εἰς τοὺς μῦς τοὺς ἐννευρουμένους ἀπ' εὐθείας ἐκ τῶν ἐγκεφαλικῶν νεύρων. Ἐκ παραλλήλου πρὸς τὴν παράλυσιν ἐπεκτείνεται καὶ ἡ ἀτροφία τῶν μυῶν, μεταμορφοῦσα ἐνίοτε τὸν πάσχοντα εἰς πραγματικὸν σκελετόν. Εἰς τὰ κάτω ἄκρα παρατηρεῖται ἐλάττωσις τῆς αἰσθητικότητος. Τὸ πολυνευριτικὸν μπέρι-μπέρι συνήθως τείνει πρὸς ἴασιν· δύναται ὅμως νὰ μεταπέσῃ εἰς τὴν χρονιότητα μετὰ καχεξίας, ἥτις ἐπιφέρει ἐν τέλει τὸν θάνατον τοῦ πάσχοντος· οὐχὶ σπανίως ὅμως τὸ ξηρὸν μπέρι-μπέρι συνυπάρχει μετὰ τοῦ ὑγροῦ (οἰδηματώδους) τοιούτου, ὁπότε ἡ πρόγνωσις ἀποβαίνει πολὺ βαρυτέρα.

β') Τὸ ὑγρὸν καὶ οἰδηματῶδες μπέρι-μπέρι χαρακτηρίζεται ὑπὸ οἰδήματος τῶν κάτω ἄκρων, λευκοῦ, σκληροτέρου τοῦ νεφρικῆς προελεύσεως οἰδήματος καὶ ἐντοπιζομένου κυρίως εἰς τὰ κατὰ βάθος μυϊκὰ στρώματα. Ἐμφανίζεται τὸ πρῶτον εἰς τὴν ῥάχιν τοῦ ποδὸς καὶ τὴν ἔσω ἐπιφάνειαν τῶν κνημῶν· ἀρχικῶς εἶναι ἐλαφρόν, ἀποβαῖνον εἶτα ἐντονώτερον, ἐπεκτεινόμενον εἰς τὰς χεῖρας καὶ τὸ πρόσωπον, ἢ γενικεύεται (βλ. *ἀνασάρκα*) μετὰ ἐξιδρωμάτων τῶν ὀρογόνων καὶ ἰδίως τοῦ περικαρδίου. Κατὰ τὴν περίοδον τοῦ οἰδήματος τὰ οὖρα εἶναι συνήθως λίαν ἠλαττωμένα καὶ κατὰ τοσοῦτον ὀλιγώτερα ὅσον ταχύτερον ἀναπτύσσεται τὸ οἴδημα. Ἡ παλινδρομὴ δὲ τοῦ οἰδήματος συνεπάγεται τοὐναντίον πραγματικὴν κρίσιν πολυουρίας. Παρατηροῦνται σταθερῶς καρδιακαὶ διαταραχαί, λειτουργικαὶ καὶ ὑποκειμενικαί, ἤτοι: παροδικὴ ἢ συνεχὴς ταχυκαρδία, ἄλγη προκάρδια, δύσπνοια κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν κινήσεων ζωηρῶν, σημεῖα καρδιακῆς ἀνεπαρκείας, ἀπολήγοντα συνήθως εἰς τὸν θάνατον τοῦ πάσχοντος.

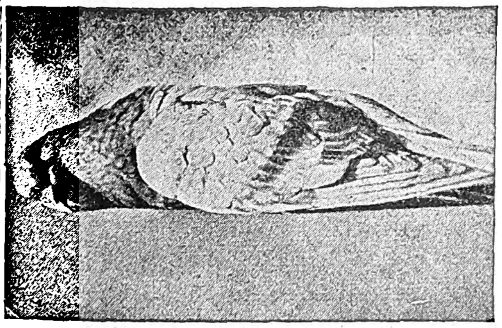
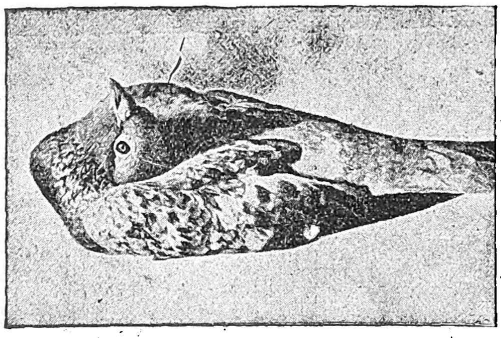
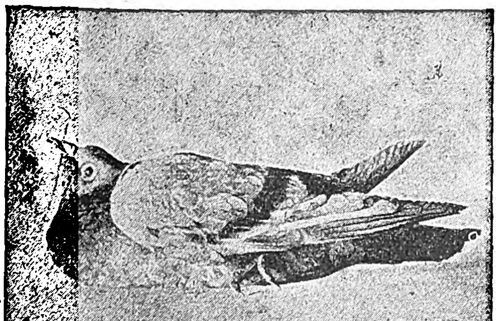
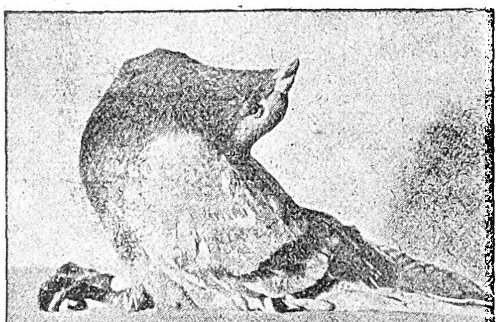

*Ἀβιταμίνωσις τῶν περιστερῶν.*
[Ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τά δεξιά: Ἄνω· ἀτροφικὴ καὶ σπαστικοπαραλυτικὴ μορφή. Κάτω· παραλυτικὴ καὶ σπαστικὴ μορφή.]

Ἀναλόγως τῆς πορείας τῆς νόσου περιγράφεται: μορφὴ κεραυνοβόλος, καθ' ἣν ὁ θάνατος ἐπέρχεται ἐντὸς ὀλίγων ὡρῶν ἐξ ὀξείας καρδιακῆς ἀνεπαρκείας· μορφὴ ὀξεῖα, καθ' ἣν ὁ θάνατος ἐπέρχεται ἐντὸς 2—3 ἡμερῶν· μορφὴ ὑποξεῖα, καθ' ἣν ἡ ἴασις δύναται νὰ ἐπέλθῃ ἐντὸς 2—3 μηνῶν, καὶ τέλος μορφὴ ὑποτροπιάζουσα. Ὑπὸ τὴν τελευταίαν ταύτην μορφὴν ἡ νόσος ἐμφανίζεται ἐν ἀναλογίᾳ πλέον τοῦ ἑνὸς τρίτου τῶν περιπτώσεων. Χαρακτηριστικὸν εἶναι ὅτι αἱ ὑποτροπαὶ ἐκδηλοῦνται ἐπὶ πασχόντων, οἵτινες ἐξακολουθοῦσι τρεφόμενοι πλημμελῶς· τὰ δὲ θηλάζοντα βρέφη γυναικῶν πασχουσῶν ἐκ μπέρι-μπέρι ἢ τρεφομένων πλημμελῶς δύνανται νὰ ἀποθάνωσιν ἐντὸς ὀλίγων ἡμερῶν ἐξ οἰδηματώδους μπέρι-μπέρι.

Κατὰ τὴν νεκροτομίαν εὑρίσκονται γενικῶς ἀλλοιώσεις νευρικαί, ἀτροφία μυϊκὴ καὶ οἴδημα ἀνασάρκα μετὰ καρδιακῆς διευρύνσεως (=νευρῖτις παρεγχυματώδης, νευρῖτις περιαξονική, βαλλεριανὴ ἐκφύλισις, ἀλλοιώσεις τῶν προσθίων κεράτων τοῦ νωτιαίου μυελοῦ). Ἡ βαρύτης τῆς νόσου ἐξαρτᾶται ἐκ τῶν περιστάσεων. Συχνάκις παρατηροῦνται ἐπιδημίαι μπέρι-μπέρι, ἐξ ὧν ἄλλαι μὲν εἶναι βαρύταται, κατὰ τὰς ὁποίας κυριαρχεῖ ἡ οἰδηματώδης μορφὴ μετὰ θνητότητος 80%, ἄλλαι δὲ ἐλαφραί, καλοήθεις, καθ' ἃς προεξάρχει ἡ πολυνευριτικὴ μορφὴ μετὰ θνητότητος οὐχὶ ἀνωτέρας τῶν 5% (ἐπιδημίαι ἰαπωνικαί).

Αἱ πλημμελεῖς ὑγιειναὶ συνθῆκαι διευκολύνουσι σημαντικῶς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς νόσου. Ἡ χορήγησις νωπῶν τροφίμων καὶ κυρίως ᾠῶν, λαχανικῶν προσφάτων καὶ δημητριακῶν καρπῶν καὶ κρέατος νωποῦ, ὡς καὶ αἱ ὑγιειναὶ περιποιήσεις, ἐπιφέρουσι πολλάκις βελτίωσιν ταχίστην ἐπὶ οἰδηματώδους προσφάτου μπέρι-μπέρι. Αἱ ὑποξεῖαι καὶ χρόνιαι μορφαί, καὶ ἰδίως αἱ παραλυτικαὶ τοιαῦται, ἐπηρεάζονται ὀλιγώτερον καὶ δυσχερέστερον ἐκ τῆς θεραπευτικῆς ταύτης. Θεραπευτικῶς δὲ συνιστᾶται ἡ ἀνάπαυσις ἐν τῇ κλίνῃ καὶ τὰ τονωτικὰ ἐν γένει, ἰδίᾳ ὁ οἶνος τῆς Κίνας, κλπ. Μ. Ν. ΚΑΪΡΗΣ

**Μπεριὸ** (Bériot), ***Κάρολος-Αὔγουστος*** *ντὲ* —. Βέλγος βιολιστής, γεννηθεὶς ἐν Λουβαὶν τῷ 1802 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1870. Ὑπῆρξε σχεδὸν αὐτοδίδακτος, ἐλάχιστα δὲ ἀνώτερα μαθήματα ἔλαβεν ἐν τῷ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων ὑπὸ τὸν Μπαγιώ. Τῇ προτροπῇ τοῦ Βιόττι ἤρχισε τὰς καλλιτεχνικάς του περιοδείας ἀνὰ τὴν Ἀγγλίαν, γενόμενος πανταχοῦ ἐνθουσιωδῶς δεκτός, μεθ' ὃ διετέλεσεν ἐπί τινα χρόνον κορυ-



Digitized by Google

φαῖος βιολιστὴς τοῦ βασιλέως τῶν Κάτω Χωρῶν. Ὁ Μπεριὸ συνεζεύχθη τὴν διάσημον ἀοιδὸν *Μαλιμπράν*. Κατόπιν νέων καλλιτεχνικῶν περιοδειῶν ἀνὰ τὴν Γερμανίαν, ἐγκατεστάθη τῷ 1843 εἰς Βρυξέλλας, ἔνθα ὠνομάσθη καθηγητὴς τοῦ βιολίου ἐν τῷ Ὠδείῳ. Ὁ Μπεριὸ ἔγραψε πλεῖστα ἔργα διὰ τὸ βιολίον, ἐν οἷς 7 κοντσέρτα, 11 ἄριας μετὰ παραλλαγῶν, πλείστας σπουδάς, διασκευὰς καὶ φαντασίας ἐκ μελοδραμάτων, 4 τρίο, μίαν «Μέθοδον διὰ βιολίον εἰς τρία μέρη» (1858) κ.τ.λ. Γ. Σ.

— **Μπεριὸ** (Bériot), ***Κάρολος-Βίλφριντ*** *νὲ* —. Υἱὸς τοῦ *Καρόλου-Αὐγούστου* (1833—1914). Ὑπῆρξεν ἐπίσης διακεκριμένος κλειδοκυμβαλιστὴς καὶ καθηγητὴς τοῦ ᾠδείου τῶν Παρισίων. Ἔγραψε 2 κοντσέρτα καὶ διάφορα τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, «Μελοδράματα ἄνευ λέξεων» διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον καὶ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ πατρός του, «Ἡ τέχνη τῆς συνοδείας ἐφηρμοσμένη εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον καὶ τὸ βιολίον» καὶ «Ἡ τέχνη τῆς συνοδείας ἐφηρμοσμένη εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον». Γ. Σ.

**Μπεριοῦτς** *[Γεωγρ.]*. Μεγίστη ἀλλὰ χθαμαλὴ χερσόνησος (πλάτ. 46° 05' Β., μῆκ. 35° 02'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: Sea of Azov) τῆς ΒΔ. ἀκτῆς τῆς Μαιώτιδος, σχηματίζουσα ΒΑ. τῆς Σαπρᾶς λίμνης (Libás) τὸν μέγαν πλὴν ἀβαθῆ κόλπον Οὐτλιούκ, ὅστις θὰ μεταβληθῇ καὶ αὐτὸς σὺν τῷ χρόνῳ εἰς σαπρὰν λίμνην, τῆς Μπεριοῦτς ὁλονὲν τεινούσης νὰ καταστῇ προσχωματικὸν βέλος περικλεῖον τὸν κόλπον. Ὑπὸ τῶν Ρώσων τοῦ τόπου (Αἰκατερινοσλάβ) ὀνομάζεται *Φεντέτοβα*. Σ. Ε. Λ.

**Μπερισλὰβ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Περίκλεια* (βλ. λ.).

— **Μπερισλὰβ** (Berislaw) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Χερσῶνος τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Δνειπέρου καὶ διεξάγουσα ἐμπόριον ξυλείας καὶ σιτηρῶν. Κάτ. 15.000 περίπου. Χ. Δ.

**Μπὲρκ** (Berck) *[Γεωγρ.]*. Παραθαλάσσια λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πὰ-ντὲ-Καλαί, κειμένη παρὰ τὰς περιβαλλούσας τὴν παραλίαν τῆς Μάγχης ἀμμοθῖνας, εἰς ἀπόστασιν 14 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μοντρέϊγ. Διαιρεῖται εἰς δύο συνοικίας, τὴν κυρίως *πόλιν* τοῦ Μπὲρκ (Berck-ville), καὶ τὴν *παραλίαν* τῶν λουτρῶν (Berck-plage) εἶναι δὲ ἐξόχως πολυσύχναστος, ἔχουσα ὡραίαν ἀμμώδη παραλίαν. Κάτ. 9.640. Χ. Δ.

**Μπὲρκ** (Burke), ***Ἐδμόνδος***. Ἄγγλος συγγραφεύς, πολιτικὸς καὶ ῥήτωρ (1728—1797). Ἐσπούδασε νομικά, κλασσικὴν φιλολογίαν καὶ φιλοσοφίαν, ἐξήσκησε δὲ κατ' ἀρχὰς ἐν Λονδίνῳ τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, τὸ ὁποῖον ταχέως ἐγκατέλιπεν, ἵν' ἀφιερωθῇ εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, ἐν ᾗ διεκρίθη διὰ τοὺς λιβέλλους του καὶ τὴν καυστικὴν σάτιράν του. Τῷ 1758 ἵδρυσε τὸ «Annual Register». Τῷ 1766 εἰσῆλθεν εἰς τὴν βουλὴν τῶν Κοινοτήτων ὡς βουλευτὴς τοῦ Οὐεντόβερ. Ἐπανεκλεγεὶς τῷ 1768, ἀνεδείχθη μεταξὺ τῶν εὐφραδεστέρων καὶ ἐπιβλητικωτέρων ῥητόρων τῆς ἀντιπολιτεύσεως. Βουλευτὴς τοῦ Μπρίστολ τῷ 1774, ἀπεξενώθη τῶν συμπαθειῶν τῶν ἐκλογέων του λόγῳ τῶν οἰκονομικῶν θεωριῶν του, ἀντιθέτων πρὸς τὰ ἀτομικὰ αὐτῶν συμφέροντα. Καταψηφισθεὶς ἐν Μπρίστολ, ἐξελέγη βραδύτερον βουλευτὴς ἐν Μάλτον. Μέλος τοῦ συμβουλίου τοῦ κράτους ὑπὸ τὴν κυβέρνησιν τοῦ Ρόκιγκαμ (1782) καὶ τοῦ Πόρτλαντ (1783), ὁ Μπὲρκ κατεπολέμησε τῷ 1785 καὶ 1786 τὴν ἰνδικὴν πολιτικὴν τοῦ Πὶττ καὶ τὰς καταχρήσεις τοῦ ἀντιβασιλέως τῶν Ἰνδιῶν Οὐάρρεν Χάστιγκς, ὃν ἠνάγκασε νὰ δώσῃ λόγον τῶν πράξεων αὐτοῦ ἐνώπιον τῆς βουλῆς τῶν Λόρδων. Ἐπέδειξε τὴν αὐτὴν ἐνεργητικότητα καὶ ῥητορικὴν δυναμικότητα κατὰ τὸν ἀγῶνα ἐναντίον τῆς μεγάλης Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, ἥτις ἔθιγε τὰς πεποιθήσεις αὐτοῦ καιρίως. Τὸ ἔργον του «Reflexions on the Revolution in France» (1790), ἐνεποίησε καταπληκτικὴν ἐντύπωσιν. Οἱ Ἄγγλοι, οἵτινες ἤδη δὲν διέκειντο εὐμενῶς πρὸς τὴν Γαλλίαν, ἐξωθήθησαν ἐκ τούτου εἰς πολεμικωτάτην κατὰ τῶν Γάλλων πολιτικήν. Ἐν τούτοις αἱ ὑπερβολαὶ τοῦ μεγάλου τούτου ῥήτορος καὶ ἡ ὑπέρμετρος μεροληψία του κατὰ τῆς Γαλλίας ἐγένοντο ἀφορμή, ὥστε ὁ Μπὲρκ νὰ ἔλθῃ εἰς προστριβὰς μετὰ τοῦ συναδέλφου καὶ φίλου του Φὸξ (1791), τοῦθ' ὅπερ ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὸν διχασμὸν τοῦ κόμματος τῶν συντηρητικῶν. Ὁ Μπὲρκ, μὴ δυνάμενος πλέον νὰ διευθύνῃ δικτατορικῶς τὸ κόμμα τοῦτο, ἀπεσύρθη τοῦ λοιποῦ τῆς πολιτικῆς. Ἐμβριθέστατος συγγραφεύς, βαθὺς φιλόσοφος, νευρικός, βίαιος, δηκτικός, ἐξήσκησεν ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του μεγίστην ἐπίδρασιν, πλεῖστοι δὲ μεταρρυθμισταὶ ἤντλησαν ἐκ τῶν βαρυσημάντων ἔργων του: «An Account of the European settlements in America» (1757), «On the cause of Present Discontents» (1770), «Speeches on the economical reforme» (1780), «Thougts on French affairs» (1791), «Remarks of the policy of the Allies» (1796) κτλ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Macknight*, «Life and times of Burke» (1861).—*Morley*, «E. Burke, a historical study» (1867).— *Τοῦ αὐτοῦ*, «E. Burke, Biography» (1879).— *Prior*, «Memoi ron the life and character of E. Burke» (1854).—*Robertson*, «Letters on the life, writings and times of E. Burke» (1876). Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

— **Μπὲρκ** (Burke), ***Ροβέρτος, Ὀ' Χάρα*** (O' Hara). Ἰρλανδὸς ἐξερευνητής (1821—1861). Ὑπηρετήσας ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὸν αὐστριακόν, εἶτα δὲ εἰς τὸν ἰρλανδικὸν στρατόν, ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του, ἵνα προβῇ εἰς ἐξερευνήσεις ἀγνώστων χωρῶν. Τῷ 1853 μετέβη εἰς τὴν Αὐστραλίαν. Τῷ 1860, ἐκκινήσας ἐκ τοῦ Μελμπούρν, μὲ τὸν σκοπὸν νὰ διασχίσῃ τὴν ἤπειρον ταύτην, ἤτοι νὰ μεταβῇ ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Κοῦπερ μέχρι τοῦ κόλπου Καρπέταρι, ἐπραγματοποίησε τὸ ταξίδιον τοῦτο μετὰ τῶν τολμηρῶν συντρόφων του Οὐίλλς, Κίγκ καὶ Γκραίϋ. Κατὰ τὴν ἐπάνοδον ὁ Γκραίϋ ἀπέθανεν ἐξ ὑπερκοπώσεως. Ὁ Μπέρκ, θελήσας ν' ἀνέλθῃ ἐπὶ τῶν ὀρέων Χόπελες, ἠσθένησε καθ' ὁδὸν ἐκ τῶν περιπετειῶν τῆς πορείας καὶ ὑπέκυψεν εἰς τὴν νόσον του. Ὁ συνοδὸς αὐτοῦ Κίγκ, νοσήσας καὶ αὐτὸς συνεπείᾳ τῶν κακουχιῶν τοῦ ταξιδίου καὶ εὑρισκόμενος μεταξὺ ζωῆς καὶ θανάτου, περισυνελέγη ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν, εἰς οὓς καὶ ὤφειλε τὴν διάσωσίν του. Οὕτω περιεσώθησαν τὰ πολύτιμα σημειώματα ἐπὶ τῆς ἐξερευνήσεως ταύτης καὶ οἱ χάρται, οἵτινες ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1862. Ἡ βουλὴ τῆς Βικτωρίας ἤγειρεν εἰς τὸν Μπέρκ καὶ τὸν Οὐίλλς ἀνδριάντας. Α. Δ.

**Μπέρκα**, ἢ ***Μπὰντ Μπέρκα*** (Berka ἢ Bad Berka) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις καὶ ἀξιόλογον κέντρον παραθερισμοῦ τῆς Γερμανίας ἐν *Θουριγγίᾳ*, κειμένη ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως (ὕψομ. 277 μ.), παρὰ τὸν ποταμὸν Ἴλμ πρὸς Ν. τῆς Βαϊμάρης. Αἱ πηγαὶ αὐτῆς εἶναι σιδηροῦχοι. Ἔχει σανατόριον, ἀναρρωτήριον, ἐγκαταστάσεις λουτρῶν, δύο δασικὰς σχολὰς καὶ βιομηχανίας τσιμέντων καὶ ξυλουργικῆς. Κάτ. 5.000, ἐξ ὧν οἱ 2.000 περίπου ξένοι. Χ. Δ.

**μπερκάλιθος** (ὁ) (Bergalith) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα πυριγενὲς πορφυριτικόν. Μακροσκοπικῶς διακρίνονται εἰς αὐτὸ κρύσταλλα νοσεάνου, κίτρινα ὑελώδη πρίσματα μελιλίθου, προσέτι δὲ καὶ μεμονωμένα βελονίδια ἀπατίτου καὶ κοκκία περοβσκίτου, ἡ δὲ θεμελιώδης μᾶζα αὐτοῦ περιέχει ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ὀρυκτολογικῶν συστατικῶν καὶ βιοτίτην, νεφελίνην, μαγνητίτην καὶ ὀλίγην φαιὰν ὑαλώδη οὐσίαν. Ἀπαντᾷ ὑπὸ μορφὴν φλεβὸς εἰς τὴν τοποθεσίαν Berga ἐν Kaiserstuhl. Γ.Β.

**Μπερκὲ-χάν**. Υἱὸς τοῦ Τζουτζῆ χάν, ἔγγονος τοῦ Δζεγκὶζ-χάν, γενόμενος χάνης τῆς Κριμαίας καὶ τῆς παρὰ τὸν Βόλγαν χώρας τῶν Κιπτσάκων Τούρκων. Τῷ 1262, διαβὰς τὸν κρυσταλλωθέντα Δούναβιν, εἰσέβαλεν εἰς Βουλγαρίαν καὶ Θρᾴκην, φθάσας μέχρι τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Παραλαβὼν τὸν εἰς Αἶνον ἐξόριστον Σελτζουκίδην σουλτάνον τοῦ Ἰκονίου Ἰζεττὶν Καϊκαοὺζ (Γκαγκαοὺζ), ἔδωκεν εἰς αὐτὸν τὴν θυγατέρα του εἰς γάμον καὶ τὸν διώρισε διοικητὴν μιᾶς ἐπαρχίας του. Ν. Μ.

**Μπερκέλεϋ** (Berkeley) βλ. λ. *Μπέρκλεϋ*.

**Μπέρκεν** (Berken ἢ Berquem), ***Λουδοβῖκος***. Φλαμανδὸς ἀδαμαντογλύφος, γεννηθεὶς ἐν Βρύγῃ καὶ ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα. Θεωρεῖται ὡς ὁ ἐφευρέτης τῆς μεθόδου καθαρισμοῦ καὶ κοπῆς τῶν ἀδαμάντων. Γ. Ι. Β.

**Μπερκὲν** (Berquin), ***Ἀρνόλδος***. Γάλλος λόγιος καὶ ποιητὴς (1747—1791), γράψας ἰδίως ἔργα διὰ παιδία μικρᾶς ἡλικίας. Τὸ βιβλίον του «Ὁ φίλος τῶν παιδιῶν» ἐβραβεύθη τῷ 1784 ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Ἀναγνώσματα διὰ παιδία» (1803), «Τὸ βιβλίον τῶν οἰκογενειῶν» (1803) κ.ἄ., περιέχοντα διηγήσεις θελκτικῆς ἁπλότητος καὶ φυσικῆς χάριτος. Ὁ Μπερκὲν ἐδημοσίευσεν ἀκόμη καὶ μεταφράσεις ἐκ τοῦ ἀγγλικοῦ. Πλήρης συλλογὴ τῶν ἔργων του ἐξεδόθη τῷ 1803 ἐν Παρισίοις. —Ω.

**Μπέρκενχεντ** (Birkenhead) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Τσέστερ*. Κάτ. 149.200. Κεῖται παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μέρσεϋ ἐπὶ τῆς Ἰρλανδικῆς θαλάσσης, ἀπέναντι τῆς πόλεως Λίβερπουλ, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ τρόπον τινὰ προάστειον, συγκοινωνοῦσα μετ' αὐτῆς διὰ μέσου ὑπογείου σήραγγος, διερχομένης κάτωθεν τοῦ ποταμοῦ. Ἔχει ἀκαδημίας ἐπιστημῶν καὶ καλῶν τεχνῶν, μεγάλα ἐργοστάσια μηχανημάτων, ναυπηγεῖα καὶ τεραστίας γαιανθρακοθήκας. Ἐκτίσθη τῷ 1820, καὶ τῷ 1821 ἠρίθμει μόνον 200 κατ. Χάρις εἰς τὴν γειτονίαν τῆς Λίβερπουλ καὶ εἰς τὸν βιομηχανικὸν πλοῦτον τῆς περιοχῆς ηὐξήθη καὶ κατέστη ἐκ τῶν βιομηχανικωτέρων πόλεων τῆς Ἀγγλίας. Μ. Δ. Β.

**Μπέρκενχεντ** (Birkenhead), ***Φρειδερῖκος Ἔντουϊν Σμίθ***, *κόμις τοῦ* —. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ νομομαθὴς (1872—1930). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ διακριθεὶς κατ' ἀρχὰς ὡς δικηγόρος καὶ καθηγητὴς τῆς νομικῆς εἰς τὰς διαφόρους σχολὰς ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος τῷ 1906. Τῷ 1919 ἐπὶ τῆς κυβερνήσεως συνασπισμοῦ τοῦ Λόϋδ Τζώρτζ ἐγένετο λόρδος καγκελάριος καὶ τῷ 1922 ἐπέτυχε τὴν ψήφισιν μεταρρυθμιστικοῦ νόμου περὶ ἰδιοκτησίας, ὁ ὁποῖος ἀνέτρεψεν ἐκ θεμελίων τὰ μέχρι τότε ἰσχύοντα ἐν Ἀγγλίᾳ. Τῷ 1922 διεφώνησε πρὸς τοὺς συντηρητικούς, διὰ τὴν ἀποχώρησιν αὐτοῦ ἐκ τῆς κυβερνήσεως συνασπισμοῦ, καὶ ἠκολούθησεν ἀνεξάρτητον πολιτικήν. Τῷ 1924 ὁ ἀρχηγὸς τῶν συντηρητικῶν Μπάλντουϊν, ὅπως ἀποφευχθῇ τὸ σχίσμα εἰς τὸ κόμμα αὐτοῦ, προσέλαβεν αὐτὸν εἰς τὴν σχηματισθεῖσαν τότε ὑπ' αὐτοῦ κυβέρνησιν ὡς ὑπουργὸν τῶν Ἰνδιῶν. Τῷ 1928 ὁ Μπέρκενχεντ παρῃτήθη, ἵνα ἀσχοληθῇ μὲ ἰδιωτικάς του ὑποθέσεις. Τῷ 1919 εἶχεν ὀνομασθῇ βαρῶνος καὶ τῷ 1922 κόμις. Τῷ 1922 εἶχεν ἐκλεγῇ πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς Γλασκώβης καὶ τῷ 1926 τοῦ τῆς Ἄμπερντην. Ἦτο ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων ῥητόρων τῆς ἀγγλικῆς βουλῆς καὶ ἐκ τῶν σημαντικωτέρων προσωπικοτήτων τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος. Ὁ Μπέρκενχεντ διεκρίθη ἐπίσης καὶ ὡς συγγραφεύς, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Διεθνὲς δίκαιον» (4η ἔκδοσις 1911), «Ἡ καταστροφὴ τῶν ἐμπορικῶν πλοίων» (1917), «Ἡ βιογραφία τοῦ Σώλσβαρυ», «Αἱ ἀγορεύσεις τοῦ λόρδου Μπέρκενχεντ» (1929) κτλ. Μ. Δ. Β.

**μπερκέτι** (τό)· ἀντὶ *μπερεκέτι* (βλ. λ.).

**Μπέρκεϋ** (Berkhey), ***Ἰωάννης-Λεφράνκ***. Ὁλλανδὸς ποιητὴς καὶ φυσικὸς (1729—1812). Ἤσκησε κατ' ἀρχὰς τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ, εἶτα δὲ διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Leiden. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Χαρακτηριστικὸν τῶν συνθέτων λεγομένων φυτῶν» (λατινιστὶ 1761), «Φυσικὴ ἱστορία τῆς Ὁλλανδίας» (1769), εἷς τόμος ποιημάτων. Γ. Ι. Β.

**μπερκιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράταιγος ὁ πυκνόλοβος*.

**Μπέρκλεϋ** (Berkeley). Ὄνομα παλαιᾶς ἀγγλικῆς οἰκογενείας, κατόχου φεουδαρχικοῦ πύργου ἐν τῇ ὁμωνύμῳ περιφερείᾳ, ἐξ ἧς ἡ οἰκογένεια ἔλαβε τὸ ὄνομα. Κατάγεται ἀπὸ τοῦ *Ροβέρτου* (ἀποθ. τῷ 1170, υἱοῦ τοῦ Χάρδινγκ), ἐκ τῶν ἀπογόνων τοῦ ὁποίου ὁ *Θωμᾶς* ἐγένετο βαρῶνος. Τῷ 1483 ὁ ἕβδομος βαρῶνος Μπέρκλεϋ ἐγένετο *κόμις Νότιγχαμ*, μετὰ τὸν θάνατον δὲ αὐτοῦ (1491), ἐκλιπόντος τοῦ πρεσβυτέρου κλάδου, τὰ κτήματα τῶν Μπέρκλεϋ περιῆλθον εἰς τὸν βασιλέα, τὰ ὁποῖα ἀπεδόθησαν ἔπειτα εἰς τὴν οἰκογένειαν τῷ 1553. Γ. Ι. Β.

—**Μπέρκλεϋ** (Berkeley), ***Γεώργιος***. Ὁ σπουδαιότερος τῶν συνεχιστῶν τῆς γνωσιολογίας τοῦ Λόκκε καὶ ἱδρυτὴς τῆς περὶ καθολικῆς ἀϋλίας θεωρίας (1684—1753). Ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς ἱεραπόστολος καὶ ἀπέθανεν ἐπίσκοπος τοῦ Κλόϋν τῆς Ἰρλανδίας. Ἦτο κάτοχος οὐ μόνον τῆς θεολογικῆς καὶ τῆς φιλοσοφικῆς γνώσεως τῶν χρόνων του, ἀλλὰ καὶ πάντων σχεδὸν τῶν κλάδων τῆς τότε ἐπιστήμης, ἰδίᾳ δὲ τῆς περὶ τὴν φύσιν, ὡς μεταξὺ ἄλλων ἀποδεικνύει ἡ περὶ ὁράσεως θεωρία του, δι' ἧς ἐγένετο εἷς τῶν προδρόμων τῆς νεωτέρας φυσιολογικῆς ψυχολογίας. Εὐθύς, ἀξιαγάπητος καὶ εὐγενὴς χαρακτήρ, πεπροικισμένος δὲ δι' ἐξαιρετικοῦ ταλάντου συγγραφικοῦ, τὸ ὁποῖον ἐν τελειοτάτῃ μορφῇ ἀνευρίσκομεν ἐκδηλούμενον εἰς τοὺς διαλόγους του, συνεδύαζεν ἐν ἑαυτῷ ὀξύνουσαν τὴν φιλοσοφικὴν κριτικὴν πρὸς ἀδιάσειστον θρησκευτικὴν πίστιν, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἐκπηγάζει καὶ εἰς τὴν ὁποίαν τελευτᾷ ὁλόκληρος αὐτοῦ ἡ φιλοσοφικὴ διανόησις. Κύρια ἔργα αὐτοῦ εἶναι τὰ ἑξῆς: «Θεωρία περὶ ὁράσεως» (1709), «Πραγματεία περὶ τῶν ἀρχῶν τῆς ἀνθρωπίνης γνώσεως» (1710), «Τρεῖς διάλογοι μεταξὺ Ὕλα καὶ Φιλονόου» (1713), «Ἀλκίφρων» (1732). Ὁ Μπέρκλεϋ συνεχίζει κατὰ τρόπον αὐτοτελῆ τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Λόκκε, καταντῶν εἰς τὰς ἐσχάτας αὐτῆς συνεπείας. Ὡς ἐκεῖνος τὴν ἔρευναν αὐτοῦ δὲν κατευθύνει ἐπὶ τὰ ἀντικείμενα αὐτά, ἀλλ' ἐπὶ τὰς παραστάσεις ἡμῶν, οὕτω καὶ ὁ Μπέρκλεϋ ὁρμᾶται ἀπὸ τῆς προϋποθέσεως ὅτι ἡ γνῶσις δὲν ἀναφέρεται εἰς τὰ πράγματα, ἀλλ' εἰς τὰς παραστάσεις ἡμῶν, τῶν ὁποίων τὴν φύσιν, τὴν πηγὴν καὶ τὰ εἴδη πειρᾶται νὰ διακριβώσῃ ἀκριβέστερον. Χωρῶν περαιτέρω τοῦ Λόκκε, δέχεται οὐ μόνον τὰς δευτερογενεῖς, ἀλλὰ καὶ τὰς πρωταρχικὰς ἰδιότητας τῶν πραγμάτων ὡς ὑποκειμενικὰς ἁπλῶς παραστάσεις. Ἐξαίρων ἐκ τῶν δύο στοιχείων τοῦ σχήματος τοῦ Λόκκε—ἐξωτερικὴ ἐμπειρία καὶ ἐσωτερικὴ ἀντίληψις—τὸ δεύτερον, καταντᾷ εἰς καθαρὸν ὑποκειμενισμόν, ὅστις θεωρεῖ ἀδύνατον τὴν ἐκτὸς τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος αὐτοτελῆ ὕπαρξιν τοῦ κόσμου, τῶν παραστάσεων ἡμῶν ἐκφραζουσῶν μόνον καταστάσεις τοῦ ἡμετέρου πνεύματος. Ὁ κόσμος χάνει ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ τοῦ Μπέρκλεϋ τὴν αὐτοτέλειαν αὐτοῦ,

*Γεώργιος Μπέρκλεϋ*

Digitized by Google

πρότερον ἐν τῇ τοῦ Μαλεμβραγχίου, ἐφ' ὅσον νον νοοῦντα πνευματικὰ ὄντα ὑπάρχουσι. Τὰ τικείμενα τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου ὑπάρχουσι μόν ἐν τοῖς πνευματικοῖς τούτοις οὖσι, ἀπὸ τῶν οίων ἐξαρτῶνται καὶ τὰ ὁποῖα εἶναι οἱ φορεῖς τῶν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς ὅσα ἐδίδασκεν ὁ Λόκκε, τις τὴν ὕπαρξιν τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου ἐδέχετο ; ἐκτὸς πάσης ἀμφιβολίας τελοῦσαν, διακρίνων νον διαφορὰν ὡς πρὸς τὸν βαθμὸν τῆς βεβαιότος ἐν τῇ γνώσει τῶν ἀντικειμένων. Ἡ πολεκὴ τοῦ Μπέρκλεϋ στρέφεται κυρίως ἐναντίον ς ὑπάρξεως τῶν γενικῶν παραστάσεων. Ἐνῷ ιτὰ τὸν Λόκκε τὰ πραγματικὰ ἀντικείμενα, ἅπερ ναι συγκεκριμένα μόνον, ἀτομικά, κατατάσσονι εἰς γένη καὶ εἴδη κατὰ τὰς πρὸς ἄλληλα ιοιότητας αὐτῶν καὶ χαρακτηρίζονται δι' ὀνομάον, εἰς τὰ ὁποῖα ἀνταποκρίνεται κατὰ συνέπειαν νική τις παράστασις ἢ ἔννοια, ὑποστηρίζει ὁ πέρκλεϋ τὴν γνώμην ὅτι τοιαῦται παραστάσεις δαμῶς ὑπάρχουσιν, ἐπικαλούμενος ὡς ἀπόδειξιν ην αὐτοπαρατηρησίαν, ἡ ὁποία διδάσκει κατ' αὐον ὅτι εἶναι ἀδύνατον νὰ παραστήσωμεν ἐν ἡμῖν ὑτοῖς τὸ τρίγωνον, λ. χ. καθ' ἑαυτό, ἄνευ συγεκριμένων πλευρῶν καὶ γωνιῶν, καὶ καταν-ῶν εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι μόνον συγκεκριένας παραστάσεις κεκτήμεθα (αἰσθησιαρχία). Παραστάσεις γενικῶν ἀντικειμένων καὶ ἰδιοτήτων οῖαι λ. χ. κίνησις, ἄνθρωπος, χρῶμα) δὲν ὑφίστανται· τῇ ἀληθείᾳ ὑπάρχουσι κατὰ τὸν Μπέρκλεϋ μόνον ἐπὶ μέρους παραστάσεις, τῶν ὁποίων ά μέρη κατάγονται ἐκ τῶν καθ' ἕκαστον αἰσθήσεων. Ἀλλ' αἱ συγκεκριμέναι αὗται παραστάσεις ῶν ἐπὶ μέρους πολὺ ἀπέχουσιν ἀπὸ τοῦ νὰ εἶναι ἴδωλα, ἀποτυπώματα ἀντικειμένων ἐκτὸς ἡμῶν παρχόντων· διότι τὸ ἀνόμοιον δὲν εἶναι δυνατὸν ά ἀσκῇ ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ ἀνομοίου, ἤ, ἄλλως, ιία παράστασις μόνον πρὸς παράστασιν δύναται ά ὁμοιάζῃ, ἓν χρῶμα ἢ σχῆμα μόνον πρὸς χρῶμα ἢ σχῆμα. Τοῦτο ἐν τούτοις δὲν σημαίνει ὅτι ὁ Μπέρκλεϋ ἀρνεῖται οἱανδήποτε ὕπαρξιν εἰς τὰ φαινόμενα· ἀπὸ ταύτης ἐμποδίζει αὐτὸν ἡ καθωρισμένη διαδοχὴ καὶ ἀλληλουχία τῶν παραστάσεων. Ὅ,τι κυρίως ἀπορρίπτει εἶναι ἡ ζήτησις τῆς πραγματικότητος τῶν παραστάσεων ἐν τῇ συμφωνίᾳ αὐτῶν πρὸς ἐξωτερικὰ ἀντικείμενα. Βάσις τῆς γνωσιολογίας αὐτοῦ καὶ ἅμα βάσις τῆς ὅλης αὐτοῦ φιλοσοφίας εἶναι ἡ ἰσοδυναμία τοῦ εἶναι καὶ τοῦ παριστάνεσθαι. Μόνον ὅ,τι συσχετίζεται πρὸς τὴν ἀντίληψιν, μόνον τοῦτο δικαιοῦται νὰ χαρακτηρισθῇ ὡς ὄν, ὡς ὑπάρχον. Esse=percipi. Δὲν περιορίζεται ὅμως κατ' αὐτὸν ἡ ὕπαρξις μόνον εἰς ὅ,τι παριστάνεται πραγματικῶς, ἀλλ' ἐκτείνεται καὶ εἰς ὅ,τι καθόλου δύναται νὰ παρασταθῇ. Κατὰ τὰ ἀνωτέρω ὁ Μπέρκλεϋ εἶναι εἷς τῶν σημαντικωτέρων διαμορφωτῶν τοῦ ὑποκειμενικοῦ ἰδανισμοῦ, περιοριζόμενος εἰς τὴν πραγματικότητα τῶν περιεχομένων τῆς ἀνθρωπίνης συνειδήσεως, ἥτις κέκτηται τὸ πλεονέκτημα τοῦ ἀδιαφιλονικήτως βεβαίου. Τὴν ἄποψιν ταύτην τοῦ Μπέρκλευ συμπληρώνει ὁ Hume, ὅστις τὸ μὲν χωρεῖ πέρα τῆς ψυχολογικῆς πραγματοκρατίας τοῦ Μπέρκλεϋ, τὸ δὲ ἀνάγει καὶ τὰς πραγματοκρατικὰς ἐννοίας τῆς οὐσίας καὶ τῆς αἰτίας εἰς στοιχεῖα καὶ νόμους τῆς συνειδήσεως ὡς τῆς μόνης πραγματικότητος, καὶ ἴχνη τῆς ῥοπῆς ταύτης εὕρηνται καὶ παρὰ Μπέρκλεϋ, οὐ μόνον τὸν χῶρον καὶ τὸν χρόνον, ἀλλὰ καὶ τὴν αἰτιότητα κηρύσσοντι ὑποκειμενικὰς καταστάσεις τῆς συνειδήσεως ἡμῶν *(Κάντιος)*. Ὁλόκληρος λοιπὸν ὁ ὑλικὸς κόσμος εἶναι περιεχόμενον τῆς συνειδήσεως ἡμῶν, ἀφοῦ ἡ ὕπαρξις τῶν ἀντικειμένων συνίσταται εἰς τὴν ὑφ' ἡμῶν παράστασιν αὐτῶν. Ταῦτα δὲν εἶναι εἰμὴ συμπλέγματα αἰσθημάτων (ὅ,τι καλοῦμεν μῆλον λ. χ. ἀποτελεῖται ἐξ ἀθροίσματος ὀπτικῶν, ὀσφρητικῶν, γευστικῶν καὶ ἁπτικῶν αἰσθημάτων). Ὕλη ὡς φορεὺς τῶν αἰσθημάτων τούτων ἢ ὡς αἰτία αὐτῶν δὲν εἶναι νοητὴ οὐσία ὥς τι πραγματικῶς καὶ ἐκτὸς ἡμῶν ὑπάρχον· εἶναι ἁπλοῦν φάντασμα. Καὶ ἂν ἀκόμη ἠθέλομεν δεχθῆ ὅτι ὑπάρχουσιν ἐκτὸς τοῦ πνεύματος ἡμῶν σταθεραὶ οὐσίαι, ἀνταποκρινόμεναι εἰς τὰς παραστάσεις ἡμῶν, θὰ ἦτο ἀδύνατον ἐν τούτοις νὰ ἀποκτήσωμεν γνῶσιν τούτου. Διότι εἰς τὴν γνῶσιν ταύτην θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ ἀχθῶμεν ἢ διὰ τῶν αἰσθήσεων ἢ διὰ τῆς νοήσεως. Ἀλλ' ἐπειδὴ αἱ αἰσθήσεις παρέχουσιν ἡμῖν μόνον τὴν γνῶσιν τῶν κατ' αἴσθησιν ἀντιλήψεων, δέον νὰ συμπεράνωμεν συλλογιστικῶς τὴν ὕπαρξιν τῶν ἐξωτερικῶν ἀντικειμένων ἐκ τῶν ἀμέσων ἐκείνων δεδομένων τῶν αἰσθήσεων. Τὸ τοιοῦτον ὅμως συμπέρασμα εἶναι ἀπατηλόν. Διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν εἶναι ἀδύνατον νὰ ἐξηγήσωμεν τὴν συνεργίαν οὐσιῶν ἐντελῶς ἑτερογενῶν, ἀφ' ἑτέρου δὲ νὰ κατανοήσωμεν τὸν τρόπον, καθ' ὃν τὰ πράγματα δύνανται νὰ ἀσκήσωσιν ἐπίδρασιν εἰς τὸ πνεῦμα. Ἐντὸς ἐὰν δεχθῶμεν ὅτι ὁ Θεὸς ἐδημιούργησε πράγματα ὅλως ἀνωφελῆ καὶ περιττά, ὅπερ ἀντιβαίνει εἰς τὴν πανσοφίαν αὐτοῦ. Αἱ ἰδιότητες τῶν πραγμάτων, οὐ μόνον αἱ δευτερογενεῖς (χρῶματα, τόνοι, ὀσμαὶ κλπ.), ἀλλ', ὡς εἴπομεν, καὶ αὗται αἱ πρωταρχικαὶ (ἔκτασις, ἀριθμός, σχῆμα, κίνησις κλπ.) εἶναί τι τὸ ὑποκειμενικόν. Ἐὰν τώρα ἀφαιρέσωμεν πάντα ταῦτα, οὐδεὶς ὑπολείπεται φορεὺς αὐτῶν, οὐδεμία οὐσία, οὐδεμία ὕλη (ἀϋλία). Ἐντεῦθεν ἕπεται ὅτι αἱ φυσικαὶ ἐπιστῆμαι ἀσχολοῦνται εἰς τὴν ἁπλῆν περιγραφὴν τῶν κατ' αἴσθησιν ἀντιλήψεων καὶ τῶν ἀντιστοίχων παραστάσεων (τῶν φαινομένων) κατὰ τὰς πρὸς ἀλλήλας καὶ κατὰ νόμους χωροῦσας σχέσεις αὐτῶν πρὸς ἀλλήλας. Γνωρίζοντες τοὺς νόμους τούτους, καθ' οὓς ἀναφαίνονται αἱ παραστάσεις ἡμῶν, συνδέονται πρὸς ἀλλήλας, διαδέχονται ἀλλήλας κλ., δυνάμεθα τὸ μὲν νὰ προγιγνώσκωμεν, τὸ δὲ νὰ ρυθμίζωμεν κατ' ἀνάλογον τρόπον τὰς ἐνεργείας ἡμῶν. Ἡ κανονικότης, μεθ' ἧς τελεῖται ἡ ἐμφάνισις, διαδοχὴ κττ. τῶν παραστάσεων ἡμῶν, εἶναι ὅ,τι καλοῦμεν αἰτιότητα ἢ νόμον τῆς αἰτίας. Οὕτω ὁ Μπέρκλεϋ καθίσταται εἰσηγητὴς φυσικῆς καθαρῶς φαινομενολογικῆς καὶ πρόδρομος τῆς νεωτέρας θετικοφροσύνης (Μάξ, Κορνέλιος κ. ἄ.). Ἀλλ' ἡ φυσικὴ αὕτη δὲν συνίσταται εἰς τὴν ἁπλῆν ἀπόκτησιν παραστάσεων, ἀλλ' εἰς τὸν καθορισμὸν ἀντικειμενικῶν καὶ ὑπὸ νόμων διεπομένων σχέσεων αὐτῶν· ὅθεν προϋποθέτει ἐνέργειαν τῆς νοήσεως, ἐπειδὴ αἱ αἰσθήσεις δὲν ὁδηγοῦσιν εἰς τὴν γνῶσιν, ἀλλὰ παρέχουσιν εἰς τὸν νοῦν τὸ πρὸς ἐπεξεργασίαν ὑλικόν. Ἐνταῦθα λοιπὸν ἐγκαταλείπει ὁ Μπέρκλεϋ τὴν αἰσθησιαρχικὴν ἄποψιν αὐτοῦ. Ἔτι δὲ σαφέστερον πράττει τοῦτο ἐν ὅσοις περὶ ψυχῆς καὶ συνειδήσεως διδάσκει, ἔνθα καὶ ἐμφανίζεται ἄκρως πραγματοκρατικός. Τοῦ Ἐγώ, λέγει, οὐδεμίαν κεκτήμεθα παράστασιν, ἀλλ' ἄμεσόν τινα καὶ ἐπὶ ἐνοράσεως στηριζομένην βεβαιότητα, δι' ἧς μανθάνομεν οὐ μόνον ὅτι ὑπάρχομεν, ἀλλὰ καὶ ὅτι εἴμεθα ἄϋλα καὶ δὴ καὶ ἐνεργὰ ὄντα. Κατὰ ταῦτα ὁ Μπέρκλεϋ χρησιμοποιεῖ τὴν ἔννοιαν τῆς οὐσίας ἐπὶ τοῦ ψυχολογικοῦ πεδίου, ἀνάγων τὰς καθ' ἕκαστον ψυχικὰς λειτουργίας εἰς ψυχικὴν οὐσίαν καὶ δεχόμενος πολλότητα πνευμάτων, ἅπερ μόνα καὶ κυρίως εἰπεῖν ὑπάρχουσι (πνευματοκρατία). Τὰ θεολογικὰ πορίσματα, ἅπερ ἐκ τῶν γνωσιολογικῶν τούτων δεδομένων συνάγει ὁ Μπέρκλεϋ, εἶναι προφανῆ. Ἐὰν αἱ παραστάσεις ἡμῶν οὔτε ὑφ' ἡμῶν αὐτῶν παράγονται, οὔτε ἐκ παθητικοῦ τινος φορέως, τῆς ὕλης, πηγάζουσιν, ἐὰν δ' ἀφ' ἑτέρου μόνον τὰ πνεύματα εἶναι ἐνεργὰ ὄντα, ἕπεται ὅτι αὗται προέρχονται ἐκ τῆς ἀμοιβαίας ἐπιδράσεως τῶν πνευμάτων ἐπ' ἄλληλα. Ἀλλὰ τὸ σύνολον αὐτῶν καὶ οἱ τὴν γέννησιν καὶ διαδοχὴν αὐτῶν διέποντες νόμοι ὀφείλονται εἰς ὕψιστόν τι πνεῦμα, τὸν Θεόν, καὶ κατὰ ταῦτα ὁ Θεός, ὡς πηγὴ τῶν ἀληθῶν καὶ πραγματικῶν ἡμῶν παραστάσεων, ἀποβαίνει ἐγγυητὴς τῆς ἀληθείας αὐτῶν (Καρτέσιος). Δὲν σχηματίζονται λοιπὸν αὐθαιρέτως, ἀλλὰ παράγονται ἐν τοῖς πνεύμασι δι' ἀμέσου ἐνεργείας τοῦ Θεοῦ, ὅστις εἶναι ἡ αἰτία αὐτῶν καὶ ὁ δημιουργός, δ' ὃ καὶ ἀντιστοιχοῦσι πρὸς ἀλλήλας. Τοῦ ὑψίστου τούτου πνεύματος ἐκδηλώσεις εἶναι ἥ τε φύσις καὶ οἱ νόμοι αὐτῆς, ἀκριβῶς ὡς αἱ κινήσεις καὶ οἱ ἔναρθροι φθόγγοι τῶν παραστατικῶν ὁμάδων, τὰς ὁποίας καλοῦμεν συνανθρώπους, εἶναι ἐκδηλώσεις τοῦ πνεύματος αὐτῶν. Ἐν τῇ φύσει ταύτῃ ὕψιστος φυσικὸς νόμος κυριαρχῶν αὐτῆς εἶναι ἡ διαρκὴς ἐπὶ τῶν πνευμάτων ἐνέργεια τοῦ Θεοῦ, διὰ τῆς ὁποίας παράγονται ἐν αὐτοῖς αἱ παραστάσεις, καὶ ἡ βούλησις αὐτοῦ, ἥτις δημιουργεῖ καὶ στηρίζει τὴν ἐν τῷ κόσμῳ κατὰ νόμους χωροῦσαν τάξιν. Τὴν ἐντεῦθεν γεννωμένην δυσχέρειαν ὡς πρὸς τὴν ἁμαρτίαν καὶ τὸ ἐν τῷ κόσμῳ κακὸν ἐν γένει, ἅπερ καὶ αὐτὰ κατὰ λογικὴν ἀκολουθίαν ἔδει νὰ ἔχωσι τὴν ἑαυτῶν αἰτίαν ἐν τῷ Θεῷ, παρακάμπτει—ὡς φρονεῖ—ὁ Μπέρκλεϋ διὰ τῆς ἀποδοχῆς τῆς πλήρως αὐταρχικῆς ἐλευθερίας τῆς βουλήσεως τοῦ ἀνθρώπου. Ἡ φιλοσοφία τοῦ Μπέρκλεϋ ἐκπηγάζει, ὡς ὑπεδηλώθη, ἐκ θρησκευτικῶν καὶ ἠθικῶν ἐλατηρίων καὶ ἐξ ἀντιθέσεως πρὸς τὴν κοσμοθεωρίαν τοῦ Hobbes ἐπιδιώκει νὰ παραστήσῃ τὴν φυσιοκρατικὴν καὶ μηχανοκρατικὴν ἀντίληψιν τοῦ κόσμου ὡς ἀποκύημα τῆς φαντασίας, ὡς σύλληψιν μὴ ἀνταποκρινομένην εἰς τὰς ἀληθεῖς, τὰς πραγματικὰς ἡμῶν παραστάσεις.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Fraser*, Berkeley (1881). — *Dieckert*, Ueber das Verhältnis des Berkeleyschen Idealismus zur Kantschen Vernunftkritik (1888). — *Loewy*, Der Idealismus Berkeley's in den Grundlagen untersucht (1891).— *Böhme*, Die Grundlagen des Berkeleyschen Immaterialismus (1893). — *Stier*, Analyse und Kritik der Berkel. Erkenntnistheorie und Metaphysik (1893). — *Mattiesen*, Philosophische Kritik bei Locke und Berkeley (1898).— *Reininger*, Locke, Berkeley Hume (1922). — *Metz*, G. Berkeley (1925).

Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**Μπέρκνταιλ** (Berkdale) *[Γεωγρ.]*. Τμῆμα τῆς πόλεως *Σάουθπορτ* τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Λαγκάστερ. Κάτ. 18.000. Ἄλλοτε ἀπετέλει ἰδιαιτέραν πόλιν ἐπὶ τῆς Ἰρλανδικῆς θαλάσσης, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1911 περιελήφθη ἐντὸς τοῦ σχεδίου πόλεως τῆς Σάουθπορτ. Ἔχει πολυσύχναστα θαλάσσια λουτρά. Μ. Δ. Β.

**«Μπερκόβσκι *βαστάνια*».** Οὕτω καλοῦνται βουλγαριστὶ δύο ἐπαναστάσεις τῶν Βουλγάρων χωρικῶν τῆς περιφερείας Μπερκόβσκο κατὰ τῆς τουρκικῆς δεσποτείας. Ἡ μία, ὑπὸ τὸ ὄνομα «Μάντσοβα μπούνα», ἐξεργάγη τὸ ἔτος 1835 καὶ διήρκεσεν ἕνα μῆνα. Εἰς ταύτην ἔλαβον μέρος περὶ τὰς τέσσαρας χιλιάδας χωρικοί, ὡπλισμένοι τὸ πλεῖστον διὰ δρεπάνων. Ἡ ἐκ μέρους τῆς Σερβίας ἀναμενομένη βοήθεια δὲν ἀπεστάλη καὶ ἡ ἐπανάστασις κατεστάλη ἐντὸς μηνός. Ἡ ἄλλη ἐγένετο εἰς τὴν αὐτὴν περιοχὴν τὸ ἔτος 1837, ἀλλὰ περιωρίσθη μόνον μεταξὺ τῶν παρὰ τὰ σερβικὰ σύνορα βουλγαρικῶν χωρίων καὶ διήρκεσεν ἐπὶ δεκαήμερον. Ἡ ἐλπὶς τῆς ἐκ μέρους τῆς Σερβίας ἐπικουρίας διεψεύσθη καὶ πάλιν καὶ οἱ ἐπαναστάται, περὶ τοὺς δισχιλίους, διεσκορπίσθησαν εἰς τὴν πρώτην ἐπίθεσιν τοῦ στρατοῦ. Πολλοὶ τούτων κατέφυγον εἰς σερβικὸν ἔδαφος, ὁ δὲ ἀρχηγὸς τοῦ κινήματος ἀπηγχονίσθη. Τ. Β.

**Μπέρκο(ν)** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κωστάνιανης τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτ. (1928) 62. Χ. Δ.

**Μπερκόφτσαλης *Γιουσούφ*.** Τοῦρκος στρατηγός (βλ. λ. *Γιουσοὺφ* Μπερκόφτσαλης).

**Μπέρκ-Χέϋντε** (Berck-Heyde), ***Γεράρδος-Ἀδριανός*** Ὀλλανδὸς ζωγράφος, ἀδελφὸς τοῦ *Ἰὼβ-Ἀδριανοῦ* (1638—1698). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Φράντς Χὰλς καὶ διεκρίθη εἰς τὴν ἀπεικόνισιν πανοραματικῶν ἀπόψεων πόλεων καὶ ἐσωτερικῶν οἰκοδομημάτων. Ἔργα του ἀπόκεινται ἐν Ἄμστερνταμ, Δρέσδῃ, Παρισίοις (Λοῦβρον), Φλωρεντίᾳ, Σβέριν, Κάσσελ, Λονδίνῳ κλπ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του πινάκων τάσσονται: «Ἄποψις τοῦ παλαιοῦ δημαρχείου τοῦ Ἄμστερνταμ», «Ἄποψις τῆς στήλης τοῦ Τραϊανοῦ», κλπ. Ι. Μ. Π.

— **Μπέρκ-Χέϋντε** (Berck-Heyde), ***Ἰὼβ-Ἀδριανός***. Ὀλλανδὸς ζωγράφος (1630—1693). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Φράντς Χὰλς καὶ διεκρίθη, ὡς καὶ ὁ ἀδελφός του Γεράρδος, εἰς τὴν ἀπεικόνισιν πόλεων, κτηρίων, ἐσωτερικῶν καὶ χωρικῶν σκηνῶν. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του ἐν Κολωνίᾳ καὶ Ἀϊδελβέργῃ. Μεταξὺ τῶν ὀλίγων σῳζομένων ἔργων του τάσσονται: «Ἐσωτερικὴ αὐλὴ τοῦ Χρηματιστηρίου τοῦ Ἄμστερνταμ», «Χειμερινὸν τοπίον», «Ἐσωτερικὸν τοῦ μεγάλου ναοῦ τοῦ Χάαρλεμ» καὶ ἡ «Αὐτοπροσωπογραφία» του. Ι. Μ. Π.

**Μπέρλαντ, *Μπάρλαντ* ἢ *Μπαρλάντου*** (Berlad, Barlad ἢ Barladu) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ρουμανίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Τούτοβα ἐν Μολδαβίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, 96 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Ἰασίου. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν καὶ ξυλείας. Ἔχει διδασκαλεῖον καὶ ἄλλα ἱδρύματα μέσης ἐκπαιδεύσεως, 12 ναούς, ἀλευροβιομηχανίαν καὶ ἐγκαταστάσεις οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν. Κατ' ἔτος διεξάγεται ἐν αὐτῇ μεγάλη ἱππικὴ ἐμποροπανήγυρις. Εἶναι ἡ ἀρχαία *Πάλοντα* τῆς Δακίας. Κάτ. 35.381.

—2) Ποταμὸς τῆς Ρουμανίας ἐν Μολδαβίᾳ, πηγάζων ἀπὸ τοῦ δάσους Γιοῦργεν, ῥέων μὲ κατεύθυνσιν πρὸς ΑΝΑ. καὶ συμβάλλων εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Σερέτη, μετὰ ροῦν 160 χλμ. Ἀπὸ τῆς ὁμωνύμου πόλεως τὴν ὁποίαν διαρρέει, μέχρι τῶν ἐκβολῶν του εἶναι πλωτός. Χ. Δ.

**Μπέρλεψ** (Berlepsch), ***Ἰωάννης-Ἐδουάρδος***. Ἐλβετὸς ζωγράφος, σχεδιαστὴς καὶ συγγραφεὺς (1849—1921). Ἐσπούδασε ζωγραφικὴν εἰς τὸ Μόναχον, μετέσχε τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ ὑπὸ τὸν πρίγκιπα Κότσεμπου στρατοῦ ἐν Τουρκίᾳ καὶ Βουλγαρίᾳ τῷ 1879 καὶ ἐπεσκέφθη τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἰσπανίαν. Ὡς σχεδιαστὴς ἐδημοσίευσεν εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ ἀπόψεις τοπίων καὶ μνημείων τῆς Ἑλβετίας. Ὡς ζωγράφος παρήγαγεν ἐλαιογραφίας καὶ ὑδατογραφίας λίαν ἐκτιμηθείσας. Ὡς συγγραφεὺς δὲ συνέγραψε, μεταξὺ πολλῶν ἄλλων, γερμανιστί: «Ἡ γερμανικὴ Ἀναγέννησις» (1873), «Αἱ χαλκογραφίαι τοῦ Ρέμπραντ» (1880), «Ἡ κεντρικὴ Ἑλβετία καὶ ἡ Ἄνω Ἰταλία» (1884) κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπερλιὲ** (Berlier), ***Ἰωάννης***. Γάλλος μηχανικὸς (1843—1911). Αὐτὸς πρῶτος ἐπενόησε σύστημα μεταφορᾶς ἐπιστολῶν καὶ ἄλλων ταχυδρομικῶν ἀντικειμένων ἐντὸς σωλήνων διὰ πεπιεσμένου ἀέρος. Εἰδικώτερον ἠσχολήθη εἰς μελέτας καὶ ἐγκαταστάσεις ὑπογείων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, ἔργον δ' αὐτοῦ ὑπῆρξεν ἡ πρώτη ὑπόγειος γραμμὴ ἠλεκτρικοῦ σιδηροδρόμου ἐν Παρισίοις. Εἰς αὐτὸν ἐπίσης ὀφείλεται τὸ πρῶτον σχέδιον ὑποθαλασσίας σήραγγος ὑπὸ τὴν Μάγχην. —Ρ.

**Μπέρλιν** (Berlin) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βερολῖνον*.

**μπερλίνα** (ἡ)· εἶδος παιγνιδίου (βλ. κατ.)· || χαρακτηριστικὸν τοῦ ἀνθρώπου διὰ τὸν ὁποῖον γελᾷ τις, ὁ ἐμπαιζόμενος, ὁ χλευαζόμενος: «ἔγινε μπερλίνα τῆς γειτονιᾶς» (ἰταλ. berlina, πβλ. mettere a la berlina= θεατρίζω)· || εἶδος τετρατρόχου ἁμάξης (βλ. κατ.).

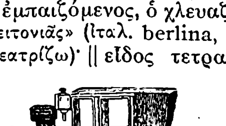

*Ἅμαξα τύπου μπερλίνας.*

—*[Ἐγκυκλ.]* Εἶδος τετρατρόχου ἁμάξης, προσομοίας πρὸς τὸ *λαντὼ* (βλ. λ.), ἀλλὰ τῆς ὁποίας μόνον τὸ ὀπίσθιον ἐπικάλυμμα εἶναι κατεσκευασμένον ἐκ δέρματος καὶ δύναται ν' ἀνοίγεται ἢ νὰ κλείεται κατὰ βούλησιν. Ἡ μπερλίνα,

Digitized by Google

τῆς ὁποίας τὸ ὄνομα ὀφείλεται εἰς τὴν ἐκ Βερολίνου ἀρχικὴν προέλευσίν της, ἔπαυσε νὰ χρησιμοποιῆται πρὸ πολλοῦ, ἀπετέλεσεν ὅμως τὴν ἀφετηρίαν τῆς ἐξελίξεως τῆς ἁμάξης πρὸς ἄλλους ἐπικρατήσαντας τύπους. —Ρ.

— *[Λαογρ.]* Ἡ *μπερλίνα* εἶναι εἶδος παιγνιδίου παιζομένου εἰς λαϊκὰς φιλικὰς συγκεντρώσεις, ἰδίᾳ κατὰ τὰς ἀπόκρεω. Ὅσοι θὰ λάβουν μέρος εἰς τὸ παιγνίδιον κάθηνται εἰς κύκλον, εἰς τὸ κέντρον τοῦ ὁποίου τοποθετεῖται εἷς τῶν παικτῶν, ὁ παίζων τὸν ρόλον τῆς «μπερλίνας». Ἕτερος ἐκ τῆς ὁμηγύρεως περιέρχεται τὸν κύκλον καὶ ἀκούει παρ' ἑνὸς ἑκάστου χαμηλοφώνως γνώμας, κρίσεις, κατηγορίας, ἐπαίνους, σκώμματα, ὑπαινιγμοὺς κτλ. σχετικῶς μὲ τὸ πρόσωπον τῆς μπερλίνας, ἅτινα καὶ μεταδίδει κατόπιν μεγαλοφώνως εἰς αὐτήν, χωρὶς νὰ ἀναφέρῃ ὀνόματα. Ἐκ τούτων ἡ μπερλίνα ἐκλέγει τὴν γνώμην, ἥτις περισσότερον τῶν ἄλλων τῆς ἐπροκάλεσε τὴν περιέργειαν, ὁ δὲ δώσας αὐτὴν λαμβάνει τὴν θέσιν τῆς μπερλίνας διὰ τὴν συνέχισιν τοῦ παιγνιδίου. Μ. ΔΡ.

**Μπερλινγκιέρι** (Berlinghieri), ***Ἀνδρέας-Βακκᾶς.*** Ἰταλὸς χειρουργὸς (1772—1826). Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις, Λονδίνῳ καὶ ἐν τῇ γενετείρᾳ του Πίζῃ, ὅπου καὶ διωρίσθη κατόπιν καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς. Ἐξέδωκε τοὺς μεγάλης ἀξίας πίνακας τῆς «Grande Anatomia» τοῦ Mascagni, εἰσήγαγε πρῶτος ἐν Ἰταλίᾳ τὴν μέθοδον θεραπείας ἀνευρυσμάτων, δημοσιεύσας πρὸς τοῦτο τὰ ἔργα: «Storia dell anevrisma etc.» (1803) καὶ «Memoria sopra l'allacciatura delle arterie» (1819), ἐφήρμοσε νέαν μέθοδον οἰσοφαγοτομίας («Dell esofagotomia e di un nuovo metodo di eseguirla» 1820), ἠσχολήθη μὲ τὰς λιθοτομίας («Memoria sopra il metodo di estrarre la pietra della vesica orinaria per la via dell intestino retto», 1821), εἰσήγαγε νέαν μέθοδον ἐγχειρήσεως τῆς τριχιάσεως («Nuovo metodo di curare lo trichiasis», 1825) κλ. Ο. Ρ.

— **Μπερλινγκιέρι** (Berlinghieri), ***Φραγκῖσκος-Βακκᾶς.*** Ἰταλὸς ἰατρὸς (1732—1812), πατὴρ τοῦ προηγουμένου. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς ἐν τοῖς πανεπιστημίοις Πίζης καὶ Παβίας καὶ ἔγραψε: «De iuflammationis morbosae, quae in humano corpore fit, natura κλπ.» (1765), «Considerationi intorno alle malattie delle volgarmente putride etc.» (1781), «Saggio intorno alle principale et piu frequenti malattie del corpo humano etc.» (1887 εἰς 2 τόμ.) κ. ἄ. Ο. Ρ.

**Μπέρλινγκτον** (Burlington) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς πολιτείας Ἀϊόβας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Μισσισσιπῆ, 207 μίλλ. ΝΔ. τοῦ Σικάγου. Ἔχει πανεπιστήμιον, βιβλιοθήκην, πάρκον 82 ἑκταρίων, χυτήρια σιδήρου, σαπωνοποιΐαν, ἀλευρομύλους κλ. Κάτ. 25.145.

— **Μπέρλινγκτον** (Burlington) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς πολιτείας τοῦ Νιοῦ-Τζέρσεϋ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, εἰς τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Ντελάουαρ, 18 μίλλ. ΒΑ. τῆς Φιλαδελφείας. Κάτ. 8.366. Εἶναι θερινὴ διαμονὴ τῶν κατοίκων τῆς Φιλαδελφείας καὶ ἔχει ἀξιόλογον βιβλιοθήκην.

— **Μπέρλινγκτον** (Burlington) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς πολιτείας Βέρμον τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. ἐπὶ τῆς λίμνης Τσέμπλιν. Ἔχει πανεπιστήμιον καὶ γεωπονικὸν κολλέγιον. Εἶναι ἀσφαλὴς λιμὴν καὶ κέντρον ἐμπορίου ξυλείας, μαρμάρων, βάμβακος, δημητριακῶν καὶ φαρμακευτικῶν εἰδῶν. Κάτ. 21.800. Π. Γ. Λ.

«**Μπερλίνερ** ***Τάγκεμπλατ***» («Berliner Tageblatt»). Γερμανικὴ ἐφημερίς, ἐκδιδομένη ἐν Βερολίνῳ (βλ. λ. «*Βερολινία Ἡμερησία*»).

**Μπερλίνχεν** (Berlinchen) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῷ νομῷ Νόϋμαρκ τῆς Πρωσσίας, κειμένη ἐπὶ γραφικῆς θέσεως ἐγγὺς μικρᾶς ὁμωνύμου λίμνης. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον παραθερισμοῦ. Κάτ. (1919) 5.764. Χ. Δ.

**Μπερλιόζ** (Berlioz), ***Λουδοβῖκος-Ἕκτωρ.*** Διάσημος Γάλλος συνθέτης, γεννηθεὶς εἰς Κὸτ-Σαὶντ Ἀντρὲ τῷ 1803 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1869. Υἱὸς ἰατροῦ, ἀφίκετο τῷ 1821 εἰς Παρισίους, ἵνα σπουδάσῃ ἰατρικήν· ἔχων ὅμως ἔμφυτον κλίσιν πρὸς τὴν μουσικήν, ἀφῆκε τὸ πανεπιστήμιον καὶ ἐνεγράφη εἰς τὸ Ὠδεῖον. Ὁ πατήρ του, ἵνα ἀποσπάσῃ αὐτὸν ἐκ τῆς σπουδῆς τῆς μουσικῆς, παύει πᾶσαν ἀποστολὴν ἐπιδόματος, καὶ ὁ νεαρὸς σπουδαστὴς ἀναγκάζεται νὰ κερδίζῃ τὰ πρὸς τὸ ζῆν ὡς μέλος χορῳδίας θεάτρου. Μαθητὴς ἔτι ὢν ὁ Μπερλιόζ, συνθέτει μίαν λειτουργίαν, ἥτις ἐκτελεσθεῖσα ἔσχεν ἱκανοποιητικὴν ἐπιτυχίαν, κατόπιν δὲ ἤρχισε νὰ γράφῃ τὸ οὐδέποτε ἀποπερατωθὲν μελόδραμα «Les Francs-Juges», ἐξ οὗ ἔχει μείνει ἡ εἰσαγωγή. Περὶ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τοῦ πνέοντος φιλελληνισμοῦ, συμπληρώνει τὴν ἡρωϊκὴν σκηνὴν διὰ μονῳδούς, χορῳδοὺς καὶ ὀρχήστραν: «Ἡ Ἑλληνικὴ ἐπανάστασις», ἣν ὁ Κρώϋτσερ, διευθυντὴς τῆς μουσικῆς τοῦ Μελοδράματος, ἀρνεῖται νὰ ἐκτελέσῃ: «Τί θὰ γίνωμεν, λέγει, ἐὰν βοηθοῦμεν τοὺς νέους;». Εἰς τὴν μαθητικήν του περίοδον ἀνήκει καὶ ἡ περίφημος «Φανταστικὴ συμφωνία», ὡς καὶ αἱ «Ὀκτὼ σκηναὶ τοῦ Φάουστ». Τῷ 1830 ἔλαβε τὸ πρῶτον βραβεῖον τῆς Ρώμης διὰ τῆς καντάτας «Σαρδανάπαλος». Μεταβαίνει κατόπιν ὡς ὑπότροφος εἰς Ρώμην, ὅπου ἐπιδίδεται εἰς τὴν σύνθεσιν διαφόρων ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ εἰσαγωγὴ τοῦ «Βασιλέως Λήρ», ἡ τοῦ «Ρὸμπ-Ρόϋ» κ.ἄ.

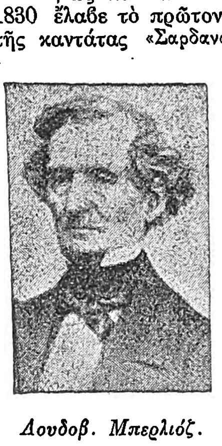

*Λουδοβ. Μπερλιόζ.*

Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο μανθάνει ὅτι ἡ μνηστή του Καμίλλη Μοὺκ ἔχει νυμφευθῇ· ἀναχωρεῖ μὲ τὸν σκοπὸν νὰ φονεύσῃ αὐτὴν καὶ εἶτα νὰ αὐτοκτονήσῃ. Καθ' ὁδὸν ὅμως μετανοεῖ καὶ ἐπανέρχεται εἰς Ρώμην. Καρπὸς τῆς αἰσθηματικῆς ταύτης περιπετείας εἶναι ὁ «Λέλιο» ἢ ἡ «Ἐπάνοδος εἰς τὴν ζωήν», συμφωνικὸν ποίημα μετὰ ᾄσματος. Πρὸ της λήξεως τῆς ὑποτροφίας του ἐπανέρχεται εἰς Παρισίους. Ἐκεῖ ὁ παλαιός του ἔρως πρὸς τὴν ἠθοποιὸν Ἑρριέττην Σμίθσον, ἥτις τῷ εἶχεν ἐμπνεύσει τὴν «Φανταστικήν», ἀναζωπυρεῖται καὶ τέλος τὴν νυμφεύεται τῷ 1833, παρὰ τὰς ἀντιρρήσεις τῶν γονέων του. Ἀλλὰ τὸ ἄστρον τῆς Ἀγγλίδος ἠθοποιοῦ ἔχει ἤδη δύσει, καὶ ὁ Μπερλιόζ, ἵνα ἐπαρκέσῃ εἰς τὰς βιωτικὰς ἀνάγκας, γίνεται συνεργάτης τῆς «Φιλολογικῆς Εὐρώπης», τῆς «Μουσικῆς ἐφημερίδος» καὶ τῆς «Ἐφημερίδος τῶν Συζητήσεων». Τῷ 1834 ἀποπερατώνει τὸν «Ἀρόλδον ἐν Ἰταλίᾳ», συμφωνίαν μετὰ βιόλας σόλο, καὶ τῷ 1836, ἐν μέσῳ ὑλικῶν στενοχωριῶν, κατορθώνει νὰ συμπληρώσῃ τὸ μελόδραμά του «Μπενβενοῦτο Τσελλίνι», τὸ ὁποῖον μετὰ διετίαν βλέπει τὸ φῶς ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῆς «Ὀπερὰ» τῶν Παρισίων. Τὰ χειροκροτήματα ἀναμιγνύονται μὲ σφυρίγματα καὶ ἡ κριτικὴ γράφει πικρόχολα ἄρθρα διὰ τὸ ἔργον. Τὸ παρισινὸν κοινὸν εἶχε λησμονήσει ταχέως τὴν ἐντύπωσιν, ἣν τῷ εἶχε προξενήσει τὸ καταπληκτικὸν ἐκεῖνο «Ρέκβιεμ» τοῦ ἰδίου συνθέτου, ἐκτελεσθὲν τὴν 5 Δεκεμβρίου 1837 ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς ἁλώσεως τῆς Κωνσταντίνης, καθ' ἣν ἐφονεύθη ὁ στρατηγὸς Ντανρεμόν. Τὸν Νοέμβριον τοῦ 1839 ὁ Παγκανίνι παριστάμενος εἰς συναυλίαν καθ' ἣν ἐξετελέσθη ἡ «Φανταστικὴ» καὶ ὁ «Ἀρόλδος», τοσοῦτον ἐνεθουσιάσθη, ὥστε μετὰ τὸ πέρας αὐτῆς ἀνελθὼν ἐπὶ τῆς σκηνῆς ἐγονυπέτησε πρὸ τοῦ Μπερλιὸζ καὶ ἀνεκήρυξεν αὐτὸν ὡς διάδοχον τοῦ Μπετόβεν. Τὴν δ' ἐπομένην ἔστειλεν εἰς τὸν Μπερλιὸζ ὡς δῶρον 20.000 φράγκα, διὰ τοῦ ποσοῦ δὲ τούτου ἠδυνήθη οὗτος νὰ ἐργασθῇ ἐν ἀνέσει καὶ νὰ φέρῃ εἰς πέρας ἓν νέον ἀριστούργημα, τὴν δραματικὴν συμφωνίαν «Ρωμαῖος καὶ Ἰουλιέττα», καὶ τὸν Μάρτιον τοῦ 1840, κατὰ κυβερνητικὴν παραγγελίαν, τὴν «Πένθιμον καὶ θριαμβευτικὴν συμφωνίαν». Τῷ 1852 διωρίσθη βιβλιοθηκάριος τοῦ Ὠδείου, τὴν θέσιν δὲ ταύτην διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του. Αἱ ἀπολαυαί του ὅμως δὲν ἦσαν ἐπαρκεῖς καὶ ὡς ἐκ τούτου ἤρχισε τὰ καλλιτεχνικά του ταξίδια ἀνὰ τὸ Βέλγιον, τὴν Γερμανίαν καὶ τὴν Αὐστρίαν, συνοδευόμενος ὑπὸ τῆς ἀοιδοῦ Μαρίας Ρέτσιο, μεθ' ἧς εἶχε συνάψει σχέσεις ζώσης ἔτι τῆς συζύγου του. Κατὰ τὰς περιοδείας ταύτας συνεδέθη μετὰ τοῦ Μένδελσων, τοῦ Σοῦμαν, τοῦ Βάγνερ, ὃν εἶχεν ἤδη γνωρίσει ἐν Παρισίοις, τοῦ Λίστ καὶ ἄλλων μουσουργῶν. Εἰς τὰς χώρας ταύτας ἐπεβλήθη καὶ ἐγνώρισε τὰς πρώτας καλλιτεχνικὰς ἐπιτυχίας. Ἐν Γερμανίᾳ αἱ θεωρίαι του περὶ προγραμματικῆς μουσικῆς ἐγένοντο ἀσπασταὶ παρὰ τοῦ Λίστ, διεδόθησαν ταχέως καὶ ἐγέννησαν νέον μουσικὸν εἶδος. Τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1846 ἀνεβιβάσθη «Ἡ καταδίκη τοῦ Φάουστ», ἀλλ' ἡ πρώτη ἐκτέλεσις τοῦ ὑπερόχου τούτου ἔργου ἐσημείωσεν ἀποτυχίαν· ὁ Μπερλιόζ, ἵνα καλύψῃ τὴν ἐκ τῆς συναυλίας ζημίαν, ἀπῆλθεν εἰς Ρωσίαν (1847), ἔνθα ἐθριάμβευσε καὶ συνεκόμισεν ἄφθονα κέρδη· τὴν ἰδίαν ἐπιτυχίαν ἔσχε κατόπιν καὶ ἐν Βερολίνῳ. Ἐπανακάμψας εἰς Παρισίους, ἵδρυσε τῷ 1850 τὴν «Φιλαρμονικὴν Ἑταιρείαν». Περὶ τὰ τέλη τοῦ αὐτοῦ ἔτους, ἵνα ἀποκαλύψῃ ὡς μεροληπτοῦντας τοὺς μουσικοὺς κριτικούς, παρουσίασεν ὡς ἀνῆκον δῆθεν εἴς τινα Ντυκρέ, ἀνύπαρκτον συνθέτην τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, τὸ ὀρατόριόν του «Ἡ φυγὴ εἰς Αἴγυπτον», τὸ ὁποῖον ἐπέτυχεν ἀπολύτως. Κατὰ τὰ δεκαπέντε τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἐξηκολούθησε τὰ καλλιτεχνικά του ταξίδια εἰς Γερμανίαν, Αὐστρίαν καὶ Ρωσίαν, πάντοτε μεμψιμοιρῶν καὶ διαρκῶς θεωρῶν ἑαυτὸν παρεγνωρισμένον καὶ παρηγκωνισμένον. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἔγραψεν ἐν τούτοις πολλὰ ἀκόμη μεγάλα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ «Te Deum» καὶ τὴν «Παιδικὴν ἡλικίαν τοῦ Χριστοῦ», ἥτις εἶναι συμπλήρωσις τοῦ ἀνωτέρω ὀρατορίου του. Ἐπὶ πλέον ἔλαβε τὴν ὑψίστην ἱκανοποίησιν νὰ ἴδῃ ἀναβιβαζόμενον ἐν Βαϊμάρῃ ὑπὸ τοῦ Λίστ τὸ μελόδραμα «Μπενβενοῦτο Τσελλίνι». Τὸ νέον του ὅμως μελόδραμα «Βεατρίκη καὶ Βενέδικτος», παιχθὲν ἐν Βάδῃ τῷ 1862, ἐσημείωσε μᾶλλον ἀποτυχίαν. Τέλος τὴν 4 Νοεμβρίου 1863 τὸ «Λυρικὸν Θέατρον» τῶν Παρισίων ἀνεβίβασε τοὺς «Τρῶας». Ἡ ἀπώλεια ὅμως τῆς πρώτης συζύγου του, τῆς Μαρίας Ρέτσιο, ἣν εἶχε νυμφευθῇ κατόπιν, καὶ τοῦ μόνου του υἱοῦ Λουδοβίκου, ἐκλόνησε τὴν ὑγείαν του· προσβληθεὶς ὑπὸ συμφορήσεως ἀπεβίωσε μετὰ τρίμηνον ἀγωνίαν.

Ὀλίγοι συνθέται ὑπῆρξαν πρωτότυποι ὡς ὁ Μπερλιόζ. Αὐθόρμητος καὶ νευρώδης ἡ μουσική του, ὑπερεκχειλίζει ἀπὸ μελῳδίαν· ἡ ἀνομοιογενὴς ρυθμική του ἀποτελεῖ τὸ ἰδιαίτερον θέλγητρον τῆς κατασκευῆς τῶν μουσικῶν του φράσεων· ἡ φλογερὰ τέλος καὶ παθητικὴ τέχνη του ἀντικατοπτρίζει τὴν τρικυμιώδη ἰδιοσυγκρασίαν τοῦ συνθέτου. Εἶναι ὁ δημιουργὸς τῆς δραματικῆς συμφωνίας, εἰς δὲ τὴν σύνθεσιν τῶν ἔργων του ἀποφεύγει τὴν ρεαλιστικὴν ἀπεικόνισιν, ἥτις δὲν εἶναι κατ' αὐτὸν σκοπὸς τῆς μουσικῆς. Ἀλλὰ τὸ μέγα πεδίον δράσεως τοῦ Μπερλιὸζ εἶναι ἡ ὀρχήστρα, ἥτις δι' αὐτὸν ἐγνώρισεν ἀγνώστους ἕως τότε συνδυασμοὺς καὶ ἐπλουτίσθη μὲ νέα χρώματα. Τὰς περὶ ἐνορχηστρώσεως δὲ ἀντιλήψεις του περιέλαβεν εἰς τὸ σύγγραμμα «Ἐγχειρίδιον ἐνοργανώσεως καὶ ἐνορχηστρώσεως», οὗτινος συμπλήρωμα εἶναι: «Ὁ διευθυντὴς ὀρχήστρας» καὶ «Τὰ νέα ὄργανα» (1839). Τὸ πολύτιμον τοῦτο ἔργον συνεπληρώθη, συμφώνως πρὸς τὰς συγχρόνους ἀνάγκας, ὑπὸ τοῦ Φ. Βαϊνγκάρτνερ τοῦ Ριχάρδου Στράους καὶ τοῦ Βιντὸρ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ τεχνικὴ τῆς συγχρόνου ὀρχήστρας» (1905). Ἄλλα ἔργα τοῦ Μπερλιὸζ εἶναι: «Ἡ πέμπτη Μαΐου», καντάτα ἐπὶ τῇ ἐπετηρίδι τοῦ θανάτου τοῦ Ναπολέοντος διὰ βαθύφωνον σόλο, χορὸν καὶ ὀρχήστραν, «Ρωμαϊκὸ καρναβάλι», δευτέρα εἰσαγωγὴ διὰ τὸν «Μπενβενοῦτο Τσελλίνι», πολλαὶ μελῳδίαι, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Θεριναὶ νύκτες», «Ἡ Αἰχμάλωτος» καὶ ἄλλα. Τὰς μελέτας, τὰς ἐντυπώσεις καὶ τὰς κριτικάς του περιέλαβεν εἰς τὰ συγγράμματα: «Μουσικὸν ταξίδιον εἰς Γερμανίαν καὶ Ἰταλίαν» (1844), «Αἱ ἑσπερίδες τῆς ὀρχήστρας» (1853), «Αἱ βαναυσότητες τῆς μουσικῆς» (1859), «Διὰ μέσου ᾀσμάτων» (1863) καὶ «Ἀναμνήσεις», αἵτινες ἐξεδόθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του. Πλήρης ἔκδοσις τῶν ἔργων του, εἰς 17 τόμους, ἐγένετο ὑπὸ τοῦ οἴκου Μπράϊτκοπφ καὶ Χαῖρτελ τῆς Λειψίας».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Edm. Hippeau*, Berlioz, l'homme et l'artiste (1883—1885).—*Τοῦ αὐτοῦ*, Berlioz et son temps.—*J. G. Prodhomme*, Le cycle Berlioz (1898).—*Τοῦ αὐτοῦ*, H. Berlioz (1905).—*J. Tiersot*, H. Berlioz et la société de son temps (1903).—*Ad. Boichot*, L'histoire d'un Romantique (Hector Berlioz, 3 τόμ. 1906, 1908 καὶ 1912).—*Kath. F. Boult*, Berlioz's life as writen by himself in his letters and memoirs (1903).—*Alfr. Ernst*, L'œuvre dramatique d'Hector Berlioz (1884).—*Paul-Marie Masson*, Berlioz (1930).

Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**Μπέρλιτζ** (Berlitz) ***μέθοδος.*** Μέθοδος πρὸς ἐκμάθησιν τῶν ζωσῶν γλωσσῶν, ὀνομασθεῖσα οὕτω ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ συγγραφέως της Μαξιμιλιανοῦ Μπέρλιτζ, γεννηθέντος τῷ 1852 ἔν τινι κώμῃ τῆς Βυρτεμβέργης. Τῷ 1869 ὁ Μπέρλιτζ μετέβη εἰς Ἀμερικήν, ὅπου ἐδίδασκε τὰς ζώσας γλώσσας μὲ τὴν κατὰ παράδοσιν γραμματικὴν μέθοδον. Ἐπειδὴ ὅμως μεταξὺ τῶν μαθητῶν του ἔσχε καὶ ἕνα, μετὰ τοῦ ὁποίου δὲν κατεῖχε κοινὴν γλῶσσαν, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς φυσικώτερα καὶ ἀμεσώτερα μέσα διδασκαλίας, ὅπως τῷ καταστήσῃ γνωστὴν τὴν νέαν γλῶσσαν, τὴν ὁποίαν ἤθελε νὰ ἐκμάθῃ. Ἡ γενικὴ ἀρχὴ τῆς *μεθόδου Μπέρλιτζ* εἶναι ἡ ἀποκλειστικὴ χρησιμοποίησις τῆς διδασκομένης γλώσσης. Κατ' αὐτὴν καταβάλλεται προσπάθεια, ὅπως ἐξοικειωθῇ «ἀμέσως» ἡ σκέψις τοῦ μαθητοῦ μὲ τὴν ξένην γλῶσσαν, ἄνευ μεσολαβήσεως τῆς μητρικῆς. Τὰ χρησιμοποιούμενα μέσα εἶναι: α') ἡ διὰ τῆς ἐποπτείας διδασκαλία (μαθήματα πραγμάτων), β') ἡ διδασκαλία διὰ τοῦ συνειρμοῦ τῶν ἰδεῶν καὶ γ') ἡ διδασκαλία τῆς γραμματικῆς διὰ τῶν παραδειγμάτων. Οὕτω ὁ καθηγητὴς τῆς γερμανικῆς, ἀντιμετωπίζων διὰ πρώτην φορὰν μαθητὴν ἀγνοοῦντα πλήρως τὴν γλῶσσαν ταύτην, θὰ τοῦ δείξῃ τὴν τράπεζαν λέγων, ὄχι: «ἡ τράπεζα καλεῖται der Tisch» ἀλλά: das ist der Tisch»· κατόπιν δέ, δεικνύων τὰς διαστάσεις τῆς τραπέζης διὰ χειρονομίας, θὰ τοῦ εἴπῃ: «der Tisch ist lang, ist breit, κλπ.». Κατόπιν θὰ ἐκτελέσῃ ἁπλᾶς πράξεις, λέγων εἰς τὴν ξένην γλῶσσαν τί πράττει καὶ θὰ καταστήσῃ οὕτω τὸν μαθητὴν ἱκανὸν νὰ χρησιμοποιῇ τὰ ῥήματα. Ὅταν βραδύτερον θὰ παραστῇ ἀνάγκη ἐκφράσεως ἀφῃρημένων ἰδεῶν ἢ ἐξαγωγῆς γραμματικῶν ἐννοιῶν ἐκ δεδομένων παραδειγμάτων, ὁ διδάσκαλος θὰ πρέπῃ νὰ καταφεύγῃ εἰς περιστροφάς, χρησιμοποιῶν πάντοτε τὴν διαισθητικὴν ἱκανότητα τοῦ μαθητοῦ. Ἡ *μέθοδος Μπέρλιτζ* εἶναι διαδεδομένη εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας καὶ τὴν Εὐρώπην, τὰ δὲ ἱδρύματα, τὰ ὁποῖα τὴν χρησιμοποιοῦν, καλοῦνται «The Berlitz schools of languages» (σχολαὶ Μπέρλιτζ ζωσῶν γλωσσῶν). [Πρβλ. *M. de Valette*, La méthode socratique et la méthode Berlitz (Perigueux 1901).] Θ. Π.

**Μπερλίχιγκεν** (Berlichingen), ***Γκαῖτς*** ἢ ***Γοδοφρεῖδος φὸν*** —, ἐπονομαζόμενος *Σιδηρόχειρ.* Γερμανὸς ἱππότης (1480—1562), μία τῶν χαρακτηριστι-

Digitized by Google

κωτέρων φυσιογνωμιῶν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν μαργράβον Φρειδερῖκον τοῦ Βρανδεβούργου καὶ τὸν ἐκλέκτορα Ἀλβέρτον Ε' τῆς Βαυαρίας, προσεχώρησε δ' εἰς τὸ κόμμα τοῦ δουκὸς Οὐλερίχου τῆς Βυρτεμβέργης ἐναντίον τῶν Σουαβῶν καὶ συνελήφθη αἰχμάλωτος ἐν Χάϊλμπρον τῷ 1519. Ἔγραψε τὴν αὐτοβιογραφίαν του, ἥτις ἐδημοσιεύθη τῷ 1775 ἐν Νυρεμβέργῃ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ βίος τοῦ Γκαῖτς φὸν Μπερλίχιγκεν, τοῦ ἐπικαλουμένου Σιδηρόχειρος». Α. Δ.

**Μπέρλυ** (Burleigh), ἢ *Μπουρλαῖος*. Ἄγγλος φιλόσοφος (1275—1357). Ὑπῆρξε διδάσκαλος τοῦ Ἐδουάρδου Γ' καὶ συμμαθητὴς τοῦ Ὄκχαμ. Φαίνεται ἀποκλίνων ὑπὲρ τοῦ πραγματισμοῦ τοῦ Θωμᾶ τοῦ Ἀκινάτου, καθ' ὃν τὰ κοινὰ κατηγορήματα (universalia) δὲν ἔχουσιν ὑπόστασιν πραγματικὴν ὡς τοιαῦτα, ἀλλ' ὡς περιεχόμενα εἰς τὰ καθ' ἕκαστον ἀντικείμενα. Οἱ ἱστορικοὶ τῆς φιλοσοφίας δὲν εἶναι σύμφωνοι ὡς πρὸς τὸ σύστημα, ὅπερ ὑπεστήριξε κατὰ τὰς μεγάλας φιλοσοφικὰς συζητήσεις τοῦ μεσαίωνος. Ὁ Μπροῦκκερ καὶ ὁ Τίντεμαν θεωροῦσιν αὐτὸν ὀνοματιστήν, ὁ Τέννεμαν δὲ πραγματιστήν. Α. Δ.

**Μπερμέο** (Bermeo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βισκάϋας. Κάτ. 10.517. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Βισκαϋκοῦ κόλπου καὶ ἔχει καλὸν λιμένα καὶ σημαντικὴν ἁλιείαν καὶ βιομηχανίαν διατετηρημένων ἰχθύων. Ἔχει ναυπηγεῖα ξυλίνων πλοίων καὶ διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ὀπωρῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπερμέχο** (Bermejo, ἢ Bermejo) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἀργεντινῆς (βλ. λ. *Βερμέχο*).

**Μπέρμοντσυ** (Bermondsey) *[Γεωγρ.]*. Διοικητικὴ περιφέρεια τοῦ Λονδίνου, ἓν τῶν εἴκοσι ὀκτὼ προαστείων τῆς πρωτευούσης. Περιβάλλεται ὑπὸ τοῦ Ταμέσεως, περιλαμβάνει δὲ δύο συνοικίας, τὴν Καμπερουὲλ καὶ τὴν Σαουθουόρκ. Κατοικεῖται ὑπὸ λαϊκῶν τάξεων, λιμενοεργατῶν ἰδίως. Εἶναι κέντρον βυρσοδεψικῶν καὶ ἄλλων βιομηχανιῶν. Τὸ Μπέρμοντσυ εἶχεν ὀργανωθῆ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον εἰς ἀμυντικὴν θέσιν πρὸς προστασίαν τοῦ Λονδίνου ἀπὸ τῶν ἐναερίων ἐπιθέσεων τῶν Γερμανῶν. Κάτ. (1921) 119.452. Α. Δ.

**Μπερμούντας** (Bermoudas, ἢ Bermudas) *[Γεωγρ.]*. Νῆσοι τοῦ Ἀτλαντικοῦ ὠκεανοῦ (βλ. λ. *Βερμοῦδαι* νῆσοι).

**Μπέρμπανκ** (Burbank), *Λοῦθηρος*. Ἀμερικανὸς φυσιοδίφης (1849—1926). Εἰς ἡλικίαν 21 ἐτῶν, παρορμηθεὶς ἐκ τῆς ἀναγνώσεως τῶν «Ζώων καὶ φυτῶν πρὸς ἐξημέρωσιν» τοῦ Δαρβίνου, ἠγόρασεν ἔκτασιν γῆς καὶ ἤρξατο πειραμάτων πρὸς βελτίωσιν καρποφόρων καὶ διακοσμητικῶν φυτῶν. Τῷ 1872 κατώρθωσε νὰ παραγάγῃ ποικιλίαν τινὰ γεωμήλου, κληθέντος ἐκ τοῦ ὀνόματός του. Κατόπιν τῆς ἐπιτυχίας ταύτης μετέβη καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Σάντα Ρόζα τῆς Καλιφορνίας, ἐξακολουθῶν τὴν καλλιέργειαν παραγωγῆς νέων ποικιλιῶν ἀνθέων, ὀπωρῶν, λαχανικῶν, ἐξ ὧν γνωστότερα εἶναι ὁ ἀνανᾶς, τὸ κυδώνιον, τὸ δαμάσκηνον ἄνευ πυρῆνος κλπ. Ἐδημοσίευσε: «Πῶς δέον νὰ καλλιεργῶνται τὰ φυτά, ἵνα ὦσι κατάλληλα πρὸς ἐξυπηρέτησιν τοῦ ἀνθρώπου» (τόμ. 8, 1921). Γ. Ι. Β.

**μπερμπαντεύω**, καὶ *μπιρμπαντεύω* δημοτ., γίνομαι μπερμπάντης, ἀναιδεύομαι ἰδίᾳ ἀφροδισιακῶς, ἀσχημονῶ: «μπερμπάντεψε τὸ παιδί».

**μπερμπάντης** (ὁ)· δημοτ., ὁ ἀναιδευόμενος ἰδίᾳ πρὸς τὰ ἀφροδίσια, ὁ ἀσχημονῶν: «οἱ μπερμπάντες πειράζουν τὰ κορίτσια» ‖ καθόλου, ἀναιδής, φαῦλος, πονηρός.

**μπερμπαντιὰ** (ἡ)· δημοτ., ἡ πρᾶξις τοῦ μπερμπάντη, ἀναιδὴς συμπεριφορὰ πρὸς γυναῖκας, ἀσχημοσύνη ‖ καθόλου, ἀναιδής, φαύλη πρᾶξις, πονηρὰ ἐνέργεια: «προσπαθεῖ νὰ ζήσῃ μὲ τὶς μπερμπαντιές».

**Μπερμπάτι** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας χωρίου *Προσύμνη* (βλ. λ.).

— 2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Χῶμα* (βλ. λ.).

**Μπερμπὲρ** (Berber) *[Γεωγρ.]* Πόλις τοῦ ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδὰν (βλ. λ. *Βερβέρ*).

— **Μπερμπὲρ - Μπουρνοῦ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἄλλη ὀνομασία τοῦ ἀκρωτηρίου *Κεφὲζ - μπουρνοῦ* (βλ.λ.).

**Μπέρμπερα** (Berbera) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς βρεττανικῆς Σομαλιλάνδης (βλ. λ. *Βέρβερα*).

**Μπέρμπις** (Berbice) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ν. Ἀμερικῆς ἐν τῇ βρεττανικῇ Γουϊάνῃ, ῥέων ἀπὸ Ν. πρὸς Β. καὶ ΒΑ. καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν παρὰ τὸ Νέον Ἄμστερνταμ μετὰ ῥοῦν 560 χλμ. Εἶναι πλωτὸς εἰς μικρὰ πλοῖα ἐπὶ μῆκος 160 περίπου χλμ. κατὰ τὸν ἀνάπλουν ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν. Ἡ ἀρδευομένη ὑπὸ τοῦ Μπέρμπις χώρα ἔχει ἔκτασιν 33.700 τετρ. χλμ.

— **Μπέρμπις** (Berbice) *[Γεωγρ.]*. Ἡ ἀνατολικωτάτη ἐπαρχία τῆς βρεττανικῆς Γουϊάνης, χωριζομένη ἀπὸ τῆς ὀλλανδικῆς Γουϊάνης ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Κόρεντυν. Ὠνομάσθη ἐκ τοῦ διαρρέοντος αὐτὴν ποταμοῦ καὶ ἔχει ἔκτασιν 54.000 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 60.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Μπέρμπις πόλιν *Νέον Ἄμστερνταμ*, παρουσιάζει δὲ ἀκτογραμμὴν μήκους 150 χλμ. Παράγει ζάχαριν, ῥούμιον, κακάον, βανίλιαν, καπνόν, ξυλείαν, καὶ ὀπώρας. Χ. Δ.

**Μπερναὶ** (Bernay) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἔρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Σαραντόν, παραποτάμου τοῦ Ρίγι, εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἐβρέ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Διεξάγει ἐμπόριον ἐρίου, ὑφασμάτων, ἵππων, σιτηρῶν κλπ. Κάτ. 8120.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ Μπερναὶ (λατ. Bernacum) ἤκμαζεν ἤδη κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα, ὁπότε ἡ Ἰουδεὶθ τῆς Βρετάνης, σύζυγος τοῦ Ριχάρδου Β', ἵδρυσεν αὐτόθι τὸ καὶ σήμερον σῳζόμενον ἀββαεῖον τῶν βενεδικτίνων (1018). Κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα περιεβάλλετο ὑπὸ ὀχυρώσεων καὶ ἐφημίζετο διὰ τὰ ἐκλεκτὰ τρίχαπτά της. Κατὰ τὸν Ἑκατονταετῆ πόλεμον ἔπαθε πολλὰς δῃώσεις. Τῷ 1378 κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Ντὲ Γκεσλέν, ὅστις ἐξεδίωξεν ἐκεῖθεν τὸν Κάρολον τὸν Κακόν. Περιελθοῦσα εἶτα (1417) εἰς τοὺς Ἄγγλους, ἔμεινεν ὑπ' αὐτοὺς μέχρι τοῦ 1449. Τῷ 1568 ἐπίσης ὑπέστη νέας δῃώσεις ὑπὸ τῶν καλβινιστῶν.

— **Μπερναὶ** *θησαυρός*. Πολυτιμοτάτη ἀρχαιολογικὴ συλλογή, ἀποτελοῦσα μέρος τῆς νομισματικῆς συλλογῆς τῆς Ἐθνικῆς βιβλιοθήκης τῶν Παρισίων. Ἀνευρέθη τῷ 1830 εἰς τοὺς ἀγροὺς παρὰ τὴν πόλιν Μπερναὶ καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ 69 ἀργυρᾶ σκεύη (ἀγγεῖα, ἀγαλμάτια, κύπελλα καὶ ἄλλα κομψοτεχνήματα) μεγάλης καλλιτεχνικῆς ἀξίας. Προέρχονται πιθανῶς ἔκ τινος πλησίον τοῦ τόπου τῆς εὑρέσεως κειμένου ναοῦ τοῦ Ἑρμοῦ, καταλέγονται δὲ μεταξὺ αὐτῶν καὶ δύο ἀγαλμάτια τοῦ θεοῦ τούτου. Ἐκ τούτων τὸ μεγαλύτερον σῴζεται ἀκέραιον καὶ ἔχει ὕψος 55 ἑκατοστῶν τοῦ μέτρου. Τὰ ἀγγεῖα καὶ τὸ κύπελλα εἶναι ἀνάγλυφα κατεσκευασμένα δι' ἐγκρούσεως, εἶναι δ' ἐπενδεδυμένα ἐσωτερικῶς χάριν στερεότητος διὰ δευτέρου στρώματος ἀργύρου. Δύο μεγάλαι οἰνοχόαι φέρουσιν ἀπεικονίσεις σκηνῶν ἐκ τῆς Ἰλιάδος, ἐπὶ δύο δὲ ζευγῶν κανθάρων ἀναπαρίστανται βακχικαὶ σκηναί. Τὰ τελευταῖα ταῦτα ἀγγεῖα ἀνήκουσι πιθανῶς εἰς τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα, ἐνῷ πάντα τὰ λοιπά, ὡς συμπεραίνεται ἐκ τῶν ἐπ' αὐτῶν ἐπιγραφῶν καὶ τοῦ ῥυθμοῦ, ἀνήκουσιν εἰς τὰ τέλη τοῦ Γ' μ. Χ. αἰῶνος. Χ. Δ.

**Μπερναϊκὰ** (τά). Οὕτως ἀπεκλήθησαν αἱ συνωμοτικαὶ ἐνέργειαι τοῦ προξένου τῆς Βαυαρίας *Μπερνάου* πρὸς παλινόρθωσιν τοῦ Ὄθωνος (βλ. λ. *Ἀθῆναι τόμ. Β'*, σελ. 158α).

**Μπερνάλτα** (Bernalda) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Ματέρα τῆς Βασιλικάτας. Κάτ. 6.668. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ποτέντσας - Μεταπόντο καὶ παράγει οἴνους καὶ βάμβακα. Ἄλλοτε εἶχε περισσοτέρους κατοίκους, μεταναστεύσαντας εἰς τὴν Τάραντα καὶ Ἀμερικὴν διὰ τὸ ἄγονον τῆς περιφερείας, μὴ επαρκούσης εἰς τὴν διατροφήν των. Μ. Δ. Β.

**Μπερνάλντεθ** (Bernaldez), *Ἀνδρέας*. Ἱσπανὸς ἐκκλησιαστικὸς καὶ ἱστορικὸς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1513. Ὑπῆρξεν ἐφημέριος τῶν Los Palacios καὶ γραμματεὺς τοῦ ἀρχιεπισκόπου τῆς Σεβίλλης Διέγου ντὲ Ντέθα, προστάτου τοῦ Χριστοφόρου Κολόμβου. Ἔγραψεν «Ἱστορίαν τῶν Καθολικῶν βασιλέων Φερδινάνδου καὶ Ἰσαβέλλης», δημοσιευθεῖσαν ἐν τῷ ἑβδομηκοστῷ τόμῳ τῆς «Biblioteca de los autores españoles» τοῦ Ριβαντενέϋρα. Τὸ ἔργον τοῦτο εἶναι ἐνδιαφέρον ἀπὸ τῆς ἐξιστορήσεως τῆς περιόδου 1454—1513, ἰδίᾳ λόγῳ τῆς παροχῆς πληροφοριῶν σχετικῶν πρὸς τὴν ζωὴν καὶ τὴν δρᾶσιν τοῦ Κολόμβου. Α. Δ.

**Μπέρναμπυ** (Burnaby), *Φρειδερῖκος - Γουσταῦος*. Ἄγγλος στρατιωτικός, ἐξερευνητὴς καὶ συγγραφεὺς (1842—1885). Τῷ 1868 ἐταξίδευσεν εἰς τὸ Μαρόκκον, εἶτα μετέβη εἰς τὴν Ρωσίαν καὶ τὴν Αἴγυπτον, ἐν ἔτει δὲ 1875 συνηντήθη μετὰ τοῦ Γκόρντον εἰς τὸ αἰγυπτιακὸν Σουδάν. Ἀφορμηθεὶς ἐκ τοῦ Χαρτοὺμ, διέτρεξε τὴν Ἀσίαν, κατὰ δὲ τὴν ἐπάνοδόν του εἰς τὸ Λονδῖνον ἐδημοσίευσεν ἔκθεσιν τῆς περιηγήσεως αὐτοῦ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ridi to Khiva» (1876). Ἄλλα ἔργα ἄξια λόγου εἶναι τά: «On horseback through Asia Minor» (1878) καὶ «Practical Instruction of staff-officers in foreign armies». Α. Δ.

**Μπερναντὸτ** (Bernadotte), *Ἰωάννης - Βαπτιστὴς - Ἰούλιος*. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας καὶ κατόπιν βασιλεὺς τῆς Σουηδίας (βλ. λ. *Κάρολος ΙΔ'* τῆς Σουηδίας, τ. ΙΓ', σ. 887α').

**Μπερνάου** (Bernau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Νηντερμπάρνιμ τοῦ Βρανδεβούργου, κειμένη πρὸς Β. τοῦ Βερολίνου. Ἔχει ὑφαντουργικὰς καὶ ἄλλας βιομηχανίας καὶ εἶναι ἀξιόλογον γεωργικὸν κέντρον. Εἰς παλαιοτέρους χρόνους ἐφημίζετο διὰ τὸν ἐκλεκτὸν ζῦθόν της. Κάτ. (1924) 9.710. Χ. Δ.

**Μπερνάουερ** (Bernauer), *Ἀγνή*. Γερμανὶς νεᾶνις τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, θυγάτηρ ἑνὸς κουρέως τοῦ Ἀουγκσμπουργ, καταστᾶσα θρυλικὴ διὰ τὴν ἐξαιρετικὴν καλλονὴν καὶ τὸν τραγικὸν θάνατόν της. Ὁ υἱὸς τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βαυαρίας πρίγκιψ Ἀλβέρτος ἠράσθη αὐτῆς μετὰ πάθους, μὴ δυνάμενος δὲ νὰ καταστήσῃ αὐτὴν ἐρωμένην του, λόγῳ τῆς ἐπιμόνου ἀρνήσεώς της, ἠναγκάσθη νὰ τὴν νυμφευθῇ κρυφίως. Κατ' ἀρχὰς ἡ Ἀγνὴ ἔζησεν εὐτυχὴς ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Φρόμπουργκ· ὅτε ὅμως ὁ πατὴρ τοῦ πρίγκιπος ἠθέλησε νὰ νυμφεύσῃ αὐτὸν μετὰ τῆς Ἄννης, θυγατρὸς τοῦ δουκὸς τῆς Βρουνσβίκης, τὸ σκάνδαλον ἀπεκαλύφθη. Ὁ ἡγεμὼν ἠρνήθη ἀσυζητητὶ τὴν ἀναγνώρισιν τοῦ γάμου καὶ προσεπάθησε παντὶ σθένει, ἀλλ' ἀνεπιτυχῶς, νὰ πείσῃ τὸν υἱόν του, ὅπως διαλύσῃ τὴν μεταξύ των ἕνωσιν. Μετά τινας ἡμέρας ἐδίδετο μεγάλη ἑορτὴ κονταρομαχίας εἰς Ρατισβόννην, εἰς τὴν ὁποίαν ὁ πρίγκιψ δὲν ἐγένετο δεκτός, μὲ τὴν δικαιολογίαν ὅτι ἀντέκειτο εἰς τὰ ἔθιμα τῶν ἱπποτῶν ἡ μετὰ γυναικὸς παράνομος συμβίωσις. Κατόπιν τῆς εἰς βάρος τῆς φιλοτιμίας του μεγάλης ταύτης προσβολῆς, ὁ πρίγκιψ, ἐμμένων εἰς τὸν ἔρωτά του, διεκήρυξε δημοσίᾳ ὅτι συνέζη νομίμως μετὰ τῆς Ἀγνῆς, ἔσπευσε νὰ τὴν παρουσιάσῃ ὡς σύζυγόν του καὶ πριγκίπισσαν τῆς Βαυαρίας καὶ νὰ ἐγκαταστήσῃ αὐτὴν εἰς τὸ ἐπὶ τοῦ Δουνάβεως ἀνάκτορον τοῦ Στράουμπινγκ. Ὁ πατήρ του ὅμως, μένεα πνέων διὰ τὸ σκάνδαλον, ἐπωφελήθη μιᾶς ἀπουσίας τοῦ υἱοῦ του, ὁπότε συστήσας δικαστήριον ἤγαγεν ἐνώπιον αὐτοῦ τὴν Ἀγνήν, μὲ τὴν κατηγορίαν ὅτι ἦτο μάγισσα καὶ ὅτι εἶχε προσελκύσει διὰ μαγγανειῶν τὸν ἔρωτα τοῦ πρίγκιπος. Τοιουτοτρόπως, προσάπτων εἰς αὐτὴν κατηγορίαν ἀποτροπιάζουσαν τοὺς πάντας κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ἐπέτυχε τὴν εἰς θάνατον καταδίκην της, πρὸ δὲ τῆς ἐπανόδου τοῦ υἱοῦ του ἐθανάτωσεν αὐτὴν διὰ κατακρημνίσεως ἀπὸ τῶν ἐπάλξεων τοῦ φρουρίου εἰς τὸν ποταμόν. Ἐπηκολούθησεν ἔρις πατρὸς καὶ υἱοῦ καὶ ἀποστασία τοῦ τελευταίου, ἡ ἐπέμβασις ὅμως τοῦ αὐτοκράτορος Σιγισμούνδου ἐπέφερε τὴν συμφιλίωσιν, καὶ μετ' οὐ πολὺ ὁ πρίγκιψ Ἀλβέρτος ἐνυμφεύετο τὴν Ἄνναν τῆς Βρουνσβίκης. Ἡ ἱστορία τῆς περιπετείας τῆς Ἀγνῆς Μπερνάουερ, ἂν καὶ εἶναι ἀπολύτως ἐξηκριβωμένη, ἐμφανίζεται ὑπὸ ποικίλας παραλλαγὰς εἰς διαφόρους γερμανικοὺς θρύλους καὶ πολλὰ λαϊκὰ ποιήματα, πολλοὶ δὲ ζωγράφοι καὶ καλλιτέχναι ἀπεικόνισαν διαφόρους σκηνὰς τοῦ βίου της, ἰδίᾳ τὴν εἰς τὸν ποταμὸν κατακρήμνισίν της. Χ. Δ.

**Μπερνὰρ** (Bernard), *Αὔγουστος - Ἰωσήφ*. Γάλλος ἱστορικὸς καὶ βιβλιογράφος (1811—1868). Καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας τυπογράφων, ἤσκησε δὲ καὶ ὁ ἴδιος τὸ ἐπάγγελμα τοῦτο ἀπὸ τῶν παιδικῶν του χρόνων. Βραδύτερον ἐπεδόθη εἰς μελέτας ἐπὶ τῆς ἱστορίας ἀφ' ἑνὸς τῆς Γαλλίας καὶ τῆς ἰδιαιτέρας του πατρίδος (τῆς ὀρεινῆς ἐπαρχίας τοῦ Φορὲζ ἐν τῇ κεντρικῇ Γαλλίᾳ) καὶ περὶ τῆς ἐξελίξεως ἀφ' ἑτέρου τῆς τυπογραφίας. Ἐπὶ τοῦ πρώτου θέματος ἔγραψεν: «Οἱ Γκρὲφ· πολιτικὴ καὶ φιλολογικὴ ἱστορία τοῦ Φορὲζ κατὰ τὸν ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνα» (Παρίσιοι, 1839), «Μελέτη ἐπὶ τῆς προελεύσεως τῶν κατοίκων τῆς Λυῶν» (Παρίσιοι, 1846) «Ἐδαφικὴ ἱστορία τοῦ διαμερίσματος Ροδανοῦ-Λείγηρος» (Λυῶν, 1865), «Ὁ ναὸς τοῦ Αὐγούστου καὶ ἡ γαλατικὴ ἑνότης» (Λυῶν, 1863) κ. λ. π. Περισσότερον ἐνδιαφέροντα εἶναι τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὴν τυπογραφίαν καὶ τὰς συναφεῖς τέχνας συγγράμματά του (ἐκδοθέντα πάντα ἐν Παρισίοις), ἐν οἷς: Ζωφρουὰ Τορύ, ζωγράφος καὶ χαράκτης, πρῶτος βασιλικὸς τυπογράφος, ἀναμορφωτὴς τῆς ὀρθογραφίας καὶ τῆς τυπογραφίας ἐπὶ Φραγκίσκου Α'» (1857, 6' ἐκδ. 1865), «Οἱ Ἐστιὲν καὶ οἱ ἑλληνικοὶ τυπογραφικοὶ χαρακτῆρες τοῦ Φραγκίσκου Α'» (1856), «Ὁ Ἀντώνιος Βιτρὲ καὶ οἱ ἀνατολικοὶ χαρακτῆρες τῆς πολυγλώσσου Βίβλου τῶν Παρισίων» (1857). «Ὁ Ἀντώνιος Βεράρ καὶ τὰ μικροσκοπικὰ βιβλία του τοῦ ΙΕ' αἰῶνος» (1860), «Ἱστορία τοῦ βασιλικοῦ τυπογραφείου τοῦ Λούβρου» (1867) κ. λ. π. Τὸ πλέον ἐνδιαφέρον ἔργον του τοῦ εἴδους τούτου ὑπῆρξε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Προέλευσις καὶ ἀπαρχαὶ τῆς ἐν Εὐρώπῃ τυπογραφίας» (1853). Ὁ Μπερνὰρ συνειργάσθη ἐξ ἄλλου τακτικῶς εἰς τὴν «Revue du Lyonnais» ἐπὶ εἰκοσαετίαν ὅλην, αἱ δὲ πολυμερεῖς μελέται του δὲν τὸν ἠμπόδισαν ν' ἀναμιχθῇ εἰς τὰς πολιτικὰς διαμάχας τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Φεβρουαρίου, με φανατισμὸν ἀγνοῦ καὶ ἐνθουσιώδους δημοκρατικοῦ. Τῷ 1862 διωρίσθη γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς τυπογραφίας καὶ τῆς βιβλιεμπορίας, ἀλλὰ τὴν θέσιν ταύτην ἡ ἐπισφαλὴς ὑγεία του δὲν τὸν ἄφησε νὰ διατηρήσῃ ἐπὶ πολύ. Ἀποθνήσκων ἐκληροδότησε τὰ βιβλία του καὶ τὰ πολυάριθμα χειρόγραφά του

Digitized by Google

εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Σαὶντ-Ἐτιέν. [Βλ. κατάλογον αὐτῆς ἐκδοθέντα ὑπὸ τοῦ *J. B. Galley* τῷ 1885, τόμ. I, ὅπου καὶ βιογραφία τοῦ δωρητοῦ.] Γ. Ζ.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος σοφός, γεννηθεὶς τῷ 1658 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1718. Ἐσπούδασε τὴν ἑβραϊκὴν καὶ τὴν θεολογίαν, εἰς ἡλικίαν δ' εἴκοσι ἑνὸς ἐτῶν ἐχειροτονήθη ἱερεύς, ἀναγκασθείς, λόγῳ κηρυγμάτων του εἰς ἀπηγορευμένα θέματα, ν' ἀποσυρθῇ εἰς Γενεύην καὶ κατόπιν εἰς Λωζάννην. Ὅταν ἡ ἀνάκλησις τοῦ ἐδίκτου τῆς Νάντης τὸν ἐστέρησε κάθε ἐλπίδος δι' ἐπιστροφήν, μετέβη εἰς Χάγην τῆς Ὁλλανδίας, ὅπου ἵδρυσεν ἀνωτέραν σχολὴν φιλολογίας, φιλοσοφίας καὶ μαθηματικῶν. Κατὰ τὰ τελευταῖά του ἔτη διηύθυνε κατὰ διαλείμματα δύο ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων φιλολογικῶν περιοδικῶν τῆς ἐποχῆς του, τὴν «Bibliothèque universelle» (1691) καὶ τὴν «République des lettres» (1693, 1710 καὶ 1716). Τῷ 1705 ἐγένετο ἔκτακτος καὶ τῷ 1712 τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Leyde. Ἐδίδασκε τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Καρτεσίου, τὴν φυσικὴν τοῦ Rohault, τὰ πρῶτα ἓξ βιβλία τῆς εὐκλειδείου γεωμετρίας, ἄλγεβραν καὶ ἱστορίαν τῆς ἀγγλικῆς φιλοσοφίας. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Dissertation où l' on fait voir qu' une société de vrais chrétiens est propre à se maintenir. Traité de la répentance tardive» (Ἀμστελλόδαμον 1712), «Traité de l'excellence de la religion» (1714), «Recueil de traités de paix, de trêves, de neutralité, suspension d'armes et alliances, et autres actes publiques faits en Europe» (Χάγη 1700, τόμ. 4), «Actes et mémoires de la négociation de la paix de Ryswick» (Χάγη 1699), «Lettres historiques contenant ce qui s'est passé de plus important en Europe» (1692—1728 τόμ. 11). Ὁ Μπερνὰρ ἔσχε καὶ περίφημον φιλολογικὴν ἔριδα πρὸς τὸν Βαῦλον, ὅστις τῷ ἀπήντησε διὰ τῆς «Réponse aux questions d'un provincial». Θ. Π.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Ἰωάννης-Γουσταῦος***. Γάλλος πολιτικὸς ἐκ Doubs (1836—1907). Σπουδάσας νομικήν, διεκρίθη ὡς δικηγόρος ἐν τῇ γενετείρᾳ του, μετέχων ἅμα ἐνεργῶς τῆς φιλελευθέρας κινήσεως, ἥτις ἐσημειώθη κατὰ τὸ τέλος τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870, εὐθὺς μετὰ τὰ πρῶτα ἀτυχήματα τῶν Γάλλων, εἰργάσθη δραστηρίως εἰς τὴν διοργάνωσιν τῆς ἐθνικῆς ἀμύνης ἐν τῇ ἄνω κοιλάδι τοῦ Σών, βαθμολογηθεὶς δὲ ταγματάρχης καὶ κατόπιν ἀντισυνταγματάρχης διῴκησε μίαν λεγεῶνα ἐπιστράτων ἐν τῷ στρατῷ τῆς Ἀνατολῆς. Μετὰ τὸν πόλεμον κατέλαβε σημαίνουσαν θέσιν μεταξὺ τοῦ κόμματος τῶν δημοκρατικῶν, ἐξελέγη δὲ δήμαρχος τῆς Baume (1875) καὶ εἶτα ἀντιπρόσωπος αὐτῆς εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν, ὅπου ἐτάχθη μὲ τὴν μερίδα τοῦ Γαμβέττα. Ἐπανεκλεγεὶς βουλευτὴς τῷ 1881 καὶ 1885, προσελήφθη ὡς ὑφυπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Φρεσινέ, συνέπηξε δὲ τότε ἐν τῇ βουλῇ τὴν ὁμάδα τῶν ριζοσπαστῶν τῆς ἀριστερᾶς, τῆς ὁποίας ἐγένετο ἀντιπρόεδρος. Ἐκλεγεὶς γερουσιαστὴς τῷ 1889, τῷ 1897 καὶ τῷ 1906, ὑπῆρξε καὶ ἐν τῇ γερουσίᾳ, ὅπως καὶ ἐν τῇ βουλῇ, εἷς ἀρχηγὸς τῶν ριζοσπαστῶν τῆς ἀριστερᾶς, ὑπερημύνθη τοῦ προστατευτικοῦ δασμολογίου, συνετέλεσεν εἰς τὴν ψήφισιν τοῦ νόμου περὶ ἐργατικῶν ἀτυχημάτων, ὑπεστήριξε τὴν πολιτικὴν τῶν Βαλδὲκ-Ρουσσὼ καὶ Κὸμπ καὶ ἐψήφισεν ὑπὲρ τοῦ χωρισμοῦ τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ κράτους. —Ω.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Κάρολος***. Γάλλος ἱστορικὸς (1571—1640). Ὑπῆρξε δικηγόρος καὶ σύμβουλος τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄, παρὰ τοῦ ὁποίου ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἱστοριογράφου τῆς Γαλλίας. Συνέγραψε πολλὰ ἔργα, ἐξ ὧν κυριώτερα: «Ἡ ἕνωσις τῶν θαλασσῶν» (Παρίσιοι, 1613), ἐν τῷ ὁποίῳ γίνεται λόγος περὶ σχεδίου ἐπικοινωνίας τοῦ Ἀτλαντικοῦ μετὰ τῆς Μεσογείου μέσῳ διώρυγος ἐν Βουργουνδίᾳ, «Λόγοι ἐπὶ τῆς οἰκονομικῆς καταστάσεως» (Παρίσιοι, 1614), «Γενεαλογικὸς χάρτης τοῦ βασιλικοῦ οἴκου τῶν Βουρβώνων» (Παρίσιοι, 1634), «Ἱστορία τῶν πολέμων τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄ ἐναντίον τῶν θρησκευτικῶν ἐπαναστάσεων». Τὸ τελευταῖον τοῦτο πόνημά του, τὸ ὁποῖον ἐξεδόθη τῷ 1633 εἰς εἰκοσάδα μόνον ἀντιτύπων, διανεμηθέντων εἰς τὸν βασιλέα καὶ τοὺς ὑπουργούς του, περιελήφθη ἀκέραιον εἰς τὴν «Ἱστορίαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄» τοῦ ἰδίου συγγραφέως, δημοσιευθεῖσαν τῷ 1646. Τὸ τελευταῖόν του τοῦτο ἔργον, γέμον ὑπερβολικῶν ἐγκωμίων διὰ τὸν ἡγεμόνα του καὶ συχνῶν παρεκβάσεων, εἶναι ἐλάχιστα ἐπαγωγόν, περιλαμβάνει ὅμως ἐνδιαφερούσας πληροφορίας περὶ τῶν ραδιουργιῶν τῆς αὐλῆς, ἐπὶ τῶν ὁποίων ὁ Μπερνὰρ ἦτο βέβαια καλῶς πληροφορημένος, λόγῳ τοῦ ὅτι ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν στενῇ ἐπικοινωνίᾳ μετὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄ καὶ τῶν περὶ αὐτόν. — Ω.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Κάρολος ντὲ*** —. Γάλλος μυθιστοριογράφος (1804—1850). Ἐσπούδασε νομικήν· ὁ Μπαλζὰκ ὅμως, μὲ τὸν ὁποῖον ἐγνωρίσθη, διέκρινεν ἐν αὐτῷ λογοτεχνικὸν τάλαντον καὶ τὸν προσέλαβε συντάκτην εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἐκδιδομένην «Chronique de Paris». Εἰς τὸ περιοδικὸν τοῦτο ὁ Μπερνὰρ ἔγραψεν ἀξιόλογα εὐθυμογραφήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Γυναῖκα ὑπὸ ἐπιτήρησιν», «Τὸ πιστοποιητικὸν τῆς ἁγνείας», «Ἡ σαραντάρα» κλπ. Ἀπὸ τοῦ 1838 μέχρι τοῦ 1847 ἐδημοσίευσε σειρὰν ἔργων, διὰ τῶν ὁποίων κατέλαβε σημαίνουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν λογοτεχνῶν τῆς ἐποχῆς του: «Περιπέτεια δικαστοῦ», «Τὸ δένδρον τῆς γνώσεως», «Ὁ Γόρδιος δεσμὸς» (συλλογὴ πέντε διηγημάτων), «Τὰ πτερὰ τοῦ Ἰκάρου», «Τὸ πήλινο πόδι», «Κυνήγι ἐραστῶν», «Ἕνας πεθερός», «Ἡ ἀθῳότης ἑνὸς καταδίκου» κλπ. —Ω.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Κλαύδιος***. Διάσημος Γάλλος φυσιολόγος (1813—1878). Γεννηθεὶς ἐν Saint-Julien τοῦ Ροδανοῦ, εἰργάσθη ἐπὶ μακρὸν ἐν τῇ γενετείρᾳ του ὡς μαθητευόμενος φαρμακείου, εἶτα δὲ μετέβη εἰς Παρισίους, ἵνα ἀσχοληθῇ εἰς τὴν φιλολογίαν, φέρων εἰς τὰς ἀποσκευάς του πεντάπρακτον τραγῳδίαν καὶ ἕτερα ἄνευ οὐδεμιᾶς ἀξίας φιλολογικά του ἔργα. Ὁ τότε ἀκαδημαϊκὸς St. Marc-Girardin, πρὸς ὃν ἐκόμιζε συστατικὴν ἐπιστολήν, κατιδὼν τὴν παρ' αὐτῷ ἔλλειψιν φιλολογικῶν προσόντων, τὸν παρώρμησε πρὸς τὰς ἰατρικὰς σπουδάς, εἰς ἃς καὶ ἐπεδόθη μετ' ἐξαιρέτου ζήλου.

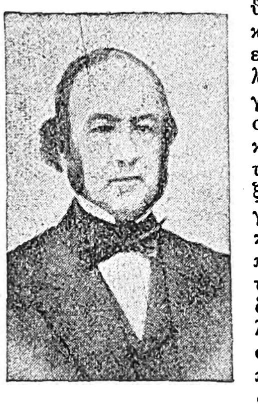

*Κλαύδιος Μπερνάρ.*

Τῷ 1837 ἐπετύγχανε θέσιν ἐσωτερικοῦ ἰατροῦ, ματαίως ὅμως ἠγωνίσθη, ἐλλείψει εὐνοιῶν καὶ ὑποστηρίξεων, πρὸς κατάληψιν θέσεως ὑφηγητοῦ. Ἀπηλπισμένος καὶ ἄνευ πόρων, ἀπεφάσισε νὰ δεχθῇ ἐπαρχιακὴν θέσιν, ὅτε ὁ γάμος του μετὰ πλουσίας κληρονόμου τὸν διηυκόλυνε πρὸς τὴν ἐπιστημονικήν του ἄνοδον. Οὕτω τῷ 1841 προσελήφθη ἐπιμελητὴς παρὰ τοῦ διασήμου Magendie, καθηγητοῦ τῆς φυσιολογίας ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας, καὶ τῷ 1843 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ. Αἱ πρῶται ἔτι ἔρευναί του κατέστησαν τὸ ὄνομά του ταχέως γνωστὸν καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην, ἂν καὶ ἐν Γαλλίᾳ ἐπὶ μακρὸν παρέμενεν ἄνευ φήμης, ἐκ διαφόρων διαβολῶν καὶ λόγων ἀντιζηλίας. Μόλις κατὰ τὸ 40ὸν ἔτος τῆς ἡλικίας του, ἀναγνωρισθείσης τέλος τῆς μεγάλης αὐτοῦ ἐπιστημονικῆς ἀξίας, διωρίζετο καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας εἰς τὴν ἐπὶ τούτῳ δημιουργηθεῖσαν ἕδραν ἐν Σορβόννῃ (1854). Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν εἰς τὸ τμῆμα τῆς ἰατρικῆς καὶ χειρουργικῆς, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Joseph Roux. Μετὰ ἓν ἔτος διεδέχθη εἰς τὴν ἕδραν τῆς πειραματικῆς ἰατρικῆς τοῦ Κολλεγίου τῆς Γαλλίας τὸν θανόντα καθηγητήν του Magendie, ὃν ἀνεπλήρου ἤδη ἀπὸ τοῦ 1847. Τῷ 1868 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς εἰς διαδοχὴν τοῦ Flourens καὶ ἰσόβιος γερουσιαστής. Ἕνεκα βαρείας χρονίας νόσου διέκοψε τὴν διδασκαλίαν του τῷ 1866 καὶ μετὰ δύο ἔτη ἀντήλλασσε τὴν καθηγητικὴν ἕδραν τῆς Σορβόννης μὲ τὴν τοῦ μουσείου φυσικῆς ἱστορίας. Ἀποθανὼν τῷ 1878 ἐξ οὐραιμίας, ἐτάφη δημοσίᾳ δαπάνῃ.

Ὁ Κλαύδιος Μπερνὰρ ἀνῆκεν εἰς τὴν χορείαν τῶν ἐξεχόντων φυσιολόγων τῶν νεωτέρων χρόνων. Καθ' ἣν ἐποχὴν ἐν Γερμανίᾳ ἡ βιολογία, μετὰ τὰς λαμπρὰς ἐργασίας τῶν ἀδελφῶν Weber, τοῦ Joh. Müller καὶ τῶν μαθητῶν του Helmoltz, Du Bois Raymond, Ludwig καὶ Brücke, εἶχεν ὑποστῇ πλήρη μεταβολὴν κατὰ τὰς πρώτας δεκαετηρίδας τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος καὶ εἶχε καταλάβει πρώτην θέσιν εἰς τὴν σειρὰν τῶν θετικῶν ἐπιστημῶν, ἐν Γαλλίᾳ ἐξηκολούθει αὕτη πορευομένη τὴν ὑπὸ τοῦ Flourens, Magendie καὶ Longet χαραχθεῖσαν ὁδὸν ἄνευ ἀκριβοῦς μεθόδου καὶ καταλλήλων ὀργάνων διὰ τὰς βιοψίας καὶ πειραματικὰς ἐρεύνας, αἵτινες ἀπέμενον στεῖραι. Ὑπὸ τὰς αὐτὰς συνθήκας ἐργασθεὶς καὶ ὁ Μπερνὰρ ἐν Γαλλίᾳ, διαθέτων μέτρια μέσα καὶ διαβιῶν ἐντὸς πενιχρῶν ἐργαστηρίων, ἀπέβη μολαταῦτα, χάρις εἰς τὴν ὅλως ἐξαιρετικήν του ἰδιοφυΐαν, ὁ εὐτυχέστατος καὶ διαπρεπέστατος φυσιολόγος, δυνάμενος νὰ θεωρηθῇ ὁ ἱδρυτὴς τοῦ κλάδου τούτου τῆς ἰατρικῆς. Ὅταν οὗτος ἤρξατο τῶν πειραματικῶν του ἐρευνῶν, ἡ φυσιολογία ἐθεωρεῖτο τρόπον τινὰ ἐξάρτημα τῆς ἀνατομικῆς· αἱ λειτουργικαὶ δράσεις τῶν διαφόρων ὀργάνων καὶ ἰδίως τοῦ ἥπατος ἠγνοοῦντο· ἡ ἀνταλλαγή, ἥτις προΐστατο τῶν ἱστῶν τοῦ σώματος, ὁ μηχανισμὸς τῶν ἀδενικῶν ἐκκρίσεων, ἡ φυσιολογία τοῦ νευρικοῦ συστήματος καὶ τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος, αἱ φυσικοχημικαὶ ἀντιδράσεις, αἵτινες διέπουσι τὸ σύνολον τῶν λειτουργιῶν τῆς ζωῆς, δὲν εἶχον ποσῶς μελετηθῆ, οὐδὲ κἂν ὑποπτευθῆ. Ἡ ἐξήγησις τῶν βιολογικῶν φαινομένων ὑπήγετο εἰς ὡρισμένας ἀρχάς, λίαν ἀμφιβόλους, καθ' ἃς ἡ μηχανικὴ καὶ ἡ δυναμικὴ δρᾶσις διεῖπον τὴν ὅλην λειτουργικὴν οἰκονομίαν (Vitalisme), δόγμα ὅπερ κατεπολέμησεν ὁ Μπερνὰρ πάσῃ δυνάμει. Ἔδει νὰ δοθῶσιν εἰς τὴν φυσιολογίαν αἱ ἀκριβεῖς ἐπιστημονικαὶ βάσεις, νὰ εὑρεθῶσι νόμοι προερχόμενοι ἐκ βεβαίων ἀποτελεσμάτων τῆς πειραματικῆς ἐρεύνης. Αὐτὸ δ' ἀκριβῶς ὑπῆρξε τὸ ἔργον τοῦ Μπερνάρ. Ἐπανελάμβανεν οὗτος ἑκάστοτε ὅτι τὰ φαινόμενα τῆς ζωῆς, ὅσον καὶ ἂν ὦσιν ἄγνωστα, ὑπόκεινται μολαταῦτα εἰς φυσικοχημικοὺς νόμους· καὶ ὅτι ἔδει ἡ φυσιολογικὴ καὶ φυσικοχημικὴ ἔρευνα νὰ κατευθύνηται πρὸς τὸν ζῶντα ὀργανισμὸν τοῦ ἀνθρώπου μέχρι τῶν λεπτεπιλέπτων αὐτοῦ μορίων, ὑπονοῶν δι' αὐτῶν τὴν φυσιολογίαν τῶν κυττάρων, εἰς ἣν διήνοιξε δίοδον. Μαθητὴς τοῦ Magendie, τοῦ δημιουργοῦ τῆς πειραματικῆς ἰατρικῆς, συνετέλεσε τὰ μέγιστα διὰ τῆς διδακτικῆς του μεθόδου καὶ τῶν ἔργων του νὰ καταστήσῃ εἰς πάντας προσιτὰς τὰς μεθόδους τῆς βιοψίας καὶ τοῦ πειραματισμοῦ ἐπὶ τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ. Ὁρμώμενος ἐκ τῆς ἀρχῆς ὅτι, πρὸς ἐξήγησιν τῶν φαινομένων τῆς ζωῆς, ἡ ἀνατομικὴ μόνη δὲν δύναται νὰ δώσῃ τὴν λύσιν τούτων καὶ συνεπῶς δὲν δύναται νὰ ἀποχωρισθῇ αὕτη τῆς παρατηρήσεως καὶ τῶν πειραμάτων ἐπὶ τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ, διήνοιξεν εἰς τὰς ἐπιστημονικάς του ἐρεύνας νέαν ὅλως ὁδόν, ἣν ἐγκαινίασε διὰ περιλάμπρων ἀνακαλύψεων. Ἤρξατο διὰ τῆς διευκρινίσεως τοῦ ἐπὶ μακρὸν διαμφισβητηθέντος ζητήματος τῆς παλινδρόμου αἰσθητικότητος καὶ ἐπηκολούθησαν ἀμέσως αἱ ἔρευναι αὐτοῦ ἐπὶ τῆς λειτουργίας τῶν διαφόρων ἐγκεφαλικῶν νεύρων, ἐκτεθεῖσαι ἀργότερον ὑπ' αὐτοῦ ἐν τῷ διασήμῳ καταστάντι ἔργῳ του «Leçons sur la physiologie et la pathologie du système nerveux» (Παρίσιοι, 1858). Μεταξὺ τῶν διαφόρων ἀνακαλύψεων αὐτοῦ δέον νὰ σημειωθῶσιν ἡ περὶ ἀγγειοκινητικῆς λειτουργίας τοῦ τραχηλικοῦ συμπαθητικοῦ νεύρου, τοῦ νεύρου τοῦ ἐκκριτικοῦ τῆς χορδῆς τοῦ τυμπάνου, καὶ ἡ παραγωγὴ σακχάρου μετὰ τὴν παρακέντησιν τῆς δ΄ κοιλίας τοῦ ἐγκεφάλου. Εἰς τὰς πρώτας ἐργασίας του ἀναφέρονται καὶ αἱ ἔχουσαι ἀντικείμενον τὸν καθορισμὸν τῆς ἐνεργείας τῶν ἐκκρίσεων τοῦ πεπτικοῦ σωλῆνος ἐπὶ τῶν φαινομένων τῆς πέψεως (γαστρικὸν ὑγρόν, σίελος, ἐντερικὸν ὑγρὸν κλπ.). Ἡ φήμη του ἐστερεώθη ἰδίως ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν ἐρευνῶν αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ παγκρέατος. Τῷ 1849 ὑπέβαλεν ὑπόμνημα εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιστημῶν, στεφθὲν διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου τῆς πειραματικῆς φυσιολογίας, ἐν ᾧ πειρᾶται νὰ ἀποδείξῃ ὅτι τὸ «παγκρεατικὸν ὑγρὸν εἶναι ἡ ἀληθὴς αἰτία τῆς πέψεως τῶν λιπαρῶν οὐσιῶν». Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐδημοσίευσε τὰς πρώτας του ἐρεύνας διὰ τὴν προέλευσιν τῆς παραγωγῆς σακχάρου ἐν τῷ ὀργανισμῷ, κατόπιν δὲ διετοῦς πειραματικῆς μελέτης ἀπέδειξε τὴν γένεσιν γλυκογόνου ἐκ τοῦ ἡπατικοῦ κυττάρου, ἐπηρεαζομένου τούτου ὑπὸ τοῦ νευρικοῦ συστήματος. Καὶ διὰ τὴν τελευταίαν ταύτην ἔτυχε τοῦ αὐτοῦ μεγάλου βραβείου, δι' οὗ ἐτιμήθη καὶ τρίτην φορὰν διὰ τὰς λαμπρὰς ἐρεύνας του ἐπὶ τοῦ μεγάλου συμπαθητικοῦ, ὅπερ ἀπέδειξεν ὡς αὐτόνομον σύστημα ἐνεργοῦν κεχωρισμένως τοῦ ἐγκεφαλονωτιαίου νευρικοῦ συστήματος καὶ διατηροῦν ἴδιον τρόπον λειτουργίας καὶ μετὰ τὸν χωρισμόν του ἔτι διὰ τομῆς ἀπὸ τούτου. Ἕτεραι ἐργασίαι του εἶναι αἱ ἐπὶ τῶν τοξικῶν οὐσιῶν, τοῦ ὀπίου καὶ τῶν ἀλκαλοειδῶν αὐτοῦ κλπ. Τὸ ὄνομα τοῦ Μπερνὰρ φέρει ἡ θεωρία, καθ' ἣν τὸ ἧπαρ ἐκκρίνει οὐσίαν ἀνάλογον πρὸς τὸ ἄμυλον, κληθεῖσαν γλυκογόνον καὶ ἣν οἱ αὐτοὶ οἷοι καὶ οἱ εἰς τὸ ἄμυλον παράγοντες δύνανται νὰ μετατρέψωσιν εἰς σάκχαρον (1855—1857), ὡς καὶ ἡ θεωρία τῆς διπλῆς ἐκκρίσεως τῶν ἀδένων, τῆς ἐξωτερικῆς καὶ τῆς ἐσωτερικῆς (1855)· οὕτω τὸ ἧπαρ κέκτηται ἐξωτερικὴν ἔκκρισιν, τὴν τῆς χολῆς διαχυνομένης εἰς τὸ ἔντερον, καὶ ἐσωτερικήν, τὴν τοῦ γλυκογόνου, διαχεομένου εἰς τὸ αἷμα. Κατὰ τὴν αὐτὴν τελευταίαν θεωρίαν τοῦ Μπερνὰρ καὶ ἕτεροι ἀδένες, ὡς ὁ σπλήν, ὁ θυρεοειδής, οἱ ἐπινεφρίδιοι, οἱ λυμφατικοὶ ἀδένες, παρουσιάζουσι λειτουργίας παρεμφερεῖς πρὸς τὰς τοῦ ἥπατος, μήπω ἔτι καθορισθείσας. Ἐκ τῶν ἐπὶ τῶν ἐργασιῶν αὐτοῦ γενομένων δημοσιεύσεων ἀναφέρομέν τινας μόνον: «Πειραματικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τοῦ μεγάλου συμπαθητικοῦ καὶ ἐπὶ τῆς ἐπιρροῆς, ἣν ἐξασκεῖ ἡ τομὴ τοῦ νεύρου τούτου ἐπὶ τῆς ζωϊκῆς θερμότητος» (1854), «Μαθήματα πειραματικῆς φυσιολογίας ἐφηρμοσμένης εἰς τὴν ἰατρικὴν» (ἔργον δίτομον 1855—1856), «Ὑπόμνημα ἐπὶ τοῦ παγκρέατος καὶ τῆς δράσεως τοῦ παγκρεατικοῦ ὑγροῦ εἰς τὰ φαινόμενα τῆς πέψεως» (1856), «Ἐπὶ τῶν τοξικῶν οὐσιῶν» (1857), «Ἐπὶ τῶν ἀναισθητικῶν» (1857), «Μαθήματα ἐπὶ τῶν φυσιολογικῶν ἰδιοτήτων καὶ τῶν παθολογικῶν ἀλλοιώσεων τῶν ὑγρῶν τοῦ ὀργανισμοῦ» (δίτομον, 1859), «Μαθήματα καὶ πειράματα φυσιολογικὰ ἐπὶ τῆς θρέψεως καὶ ἀναπτύξεως» (1860), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν πειραματικὴν ἰατρικὴν» (1866), «Ἐπὶ τῆς ζωϊκῆς θερμότητος» (1876), «Μαθήματα ἐπὶ τοῦ διαβήτου» (1877), «Μαθήματα ἐπὶ τῶν φαινομένων τῆς ζωῆς» (1878) κλπ. Ο. ΡΑΛΛΙΔΗΣ

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Παῦλος***, ὁ λεγόμενος ***Τριστὰν*** —. Γάλλος μυθιστοριογράφος, εὐθυμογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Μπε-

Digitized by Google

ζανσὸν τῷ 1866. Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1894 διὰ τόμου διηγημάτων γραφέντων ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ P. Veber ὑπὸ τὸν τίτλον: «Vous m'en direz tant». Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὴν μονόπρακτον φαντασίαν: «Les pieds nickelés», ἡ ὁποία ἐπαίχθη βραδύτερον ἐπανειλημμένως. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Fardeau de la liberté (1897), «Allez, messieurs!» (1897), «Franches lippées» (1898), «Une aimable lingère» (1899), «Le cambrioleur» (1899), «Je vais m'en aller» (1898), «Le seul bandit du village» (1898),«Le vrai courage» (1899), «L'anglais tel qu'on le parle» (1899), «La mariée du Touring Club» (1899), «L'affaire Mathieu» (1901), «Daisy» (1902), «La bande à Léon» (1902), «Le captif» (1904), «Les coteaux du Médoc» (1905), «Triplepatte» (1905), «Contes de Pantruche et d'ailleurs (1897), «Sous toutes réserves» (1898), «La mémoire d' un jeune homme rangé» (1899), «Deux amateurs des femmes» (1907), «Le Poulailler» (1908), «Les danseurs inconnus» (1910), «Les phares Soubigou» (1911), «L'école de piston» (1916), «Ce que l'on dit aux femmes» (1922), «Mots croisés» (1925), «Les moyens du bord» (1928), «Langrerin père et fils» (1930) κλπ. κλπ. Ὁ Τριστὰν Μπερνὰρ εἶναι εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων συγχρόνων εὐθυμογράφων καὶ οὑμοριστῶν τῆς Γαλλίας.
—Ω.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Πέτρος-Ἰωσήφ.*** Γάλλος ποιητὴς (βλ. λ. *Ζυντὶ-Μπερνάρ*).

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Σαμουήλ.*** Γάλλος τραπεζίτης (1651—1739). Ἀρχίσας τὸ στάδιόν του ὡς ὑφασματέμπορος, ἐπεδόθη ἀπὸ τοῦ 1686 εἰς τραπεζικὰς ἐπιχειρήσεις, ἐκ τῶν ὁποίων ἀπέκτησε μεγάλην περιουσίαν, Ἐδάνεισεν ἐπανειλημμένως μεγάλα ποσὰ εἰς τὸν Λουδοβῖκον ΙΔ΄, ὑπὸ δὲ τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ΄ τῷ ἀπενεμήθη ὁ τίτλος τοῦ τραπεζίτου τῆς αὐλῆς. Ὁ Μπερνὰρ ὑπῆρξεν ὁ χρηματοδότης τοῦ πολέμου περὶ διαδοχῆς τοῦ αὐστριακοῦ θρόνου.
Α. Α. Τ.

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Σάρρα.*** Γαλλὶς ἠθοποιὸς παγκοσμίου φήμης, γεννηθεῖσα ἐκ γονέων Ἰσραηλιτῶν ἐν Παρισίοις τὴν 22 Ὀκτωβρίου 1844 καὶ ἀποθανοῦσα ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1923.

*Σάρρα Μπερνάρ.*

Βαπτισθεῖσα δωδεκαέτις, τῇ θελήσει τῆς μητρὸς αὐτῆς Ἰουλίας Μπερνάρ, καὶ ἐκπαιδευθεῖσα ἐν τῷ ἐν Βερσαλλίαις μοναστηρίῳ Grand Champ, εἰσῆλθε κατόπιν δεκαεξαέτις, τῇ συστάσει τοῦ δουκὸς δὲ Μορνύ, φίλου τῆς μητρός της, εἰς τὸ Κονσερβατουάρ, ἐν ᾧ ἐμαθήτευσεν ἐν ταῖς τάξεσι τοῦ Προβὸστ καὶ Σαμψών. Μετὰ λαμπρὰς ἐν αὐτῷ σπουδάς, ἔτυχε κατὰ μὲν τὸ 1861 δευτέρου βραβείου κωμῳδίας, κατὰ δὲ τὸ 1862 δευτέρου τοιούτου τραγῳδίας, μεθ' ὅ, τὸν Αὔγουστον τοῦ 1862, προσελήφθη ἐν τῇ Γαλλικῇ Κωμῳδίᾳ, ἔνθα πρωτοενεφανίσθη ἐν τῇ «Ἰφιγενείᾳ», χωρὶς ὅμως νὰ τύχῃ καὶ ἐνθουσιώδους ὑποδοχῆς. Τὸ ἑπόμενον ἔτος, κατόπιν διενέξεως μετὰ τῆς συναδέλφου της δεσποινίδος Ναθαλίας, ἣν καὶ ἐρράπισεν ἐνώπιον ὁλοκλήρου τοῦ θιάσου, ἐγκατέλιπε τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν καὶ προσελήφθη εἰς τὸ θέατρον «Γυμνάσιον», ἔνθα τὴν 25 Ἰουνίου ἔκαμε τὴν ἐμφάνισίν της ἐν τῷ δράματι «Le père de la débutante»», πλὴν μετ' ὀλίγον ἐγκατέλιπε καὶ τὸ θέατρον αὐτὸ καὶ μετὰ πολλὰς περιπετείας κατώρθωσε τῷ 1867 νὰ γίνῃ δεκτὴ εἰς τὸ δεύτερον γαλλικὸν θέατρον, τὸ «Ὠδεῖον», ἐν ᾧ ἔπαιξε μετὰ σχετικῆς ἐπιτυχίας τὴν Μαριέτταν εἰς τὸν «François le Champi» καὶ ἄλλους τινὰς ρόλους εἰς τὴν «Διαθήκην τοῦ Καίσαρος Ζιροντώ», εἰς τὸν «Κῆν» καὶ τὸν «Βασιλέα Λήρ». Μέχρι τῆς ἐποχῆς αὐτῆς ἐν τούτοις ἦτο σχεδὸν ἄγνωστος, ὅτε τὴν 19 Ἰανουαρίου 1869 κατήγαγε τὸν πρῶτον θρίαμβόν της εἰς τὸν ρόλον τοῦ Ζανέττου ἐν τῷ «Διαβάτῃ» τοῦ Κοππέ. Ἔκτοτε κατέστη πασίγνωστος. Πλὴν ὁ ἐκραγεὶς πόλεμος τοῦ 1870 διέκοψε τὰς ἐπιτυχίας της, ἃς ἐσυνέχισεν ἐπὶ ἄλλου πεδίου, καθ' ὅσον μεταβαλοῦσα τὸ foyer τοῦ «Ὠδείου» εἰς νοσοκομεῖον, περιέθαλψεν ἐν αὐτῷ πλείστους ὅσους τραυματίας, ἀγρυπνοῦσα ἐπὶ συνεχεῖς νύκτας πλησίον των. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ πολέμου διέπλασε τὴν Ἰωάνναν-Μαρίαν τοῦ Τεριέ, μεθ' ὃ νέον κατήγαγε θρίαμβον (1872) μὲ τὸν ρόλον τῆς βασιλίσσης ἐν τῷ «Ρουὶ-Μπλὰς» τοῦ Οὐγκώ, ὅστις κατενθουσιασθεὶς εἶπεν: «αὐτὸς εἶναι ἀκριβῶς ὁ τύπος ποῦ ὠνειρεύθην!». Διὰ τοῦ νέου αὐτοῦ θριάμβου της, τῆς ἠνοίχθησαν καὶ πάλιν αἱ πύλαι τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας, ἐν ᾗ ἐνεφανίσθη ἐκ νέου (Νοέμβριος 1872) ἐν τῇ «Δεσποινίδι ντὲ Μπελίλ», διδάξασα κατόπιν ἐν συνεχείᾳ μετ' ἄκρας ἐπιτυχίας μέχρι τοῦ 1880 τὴν «Δαλιδᾶ» καὶ τὴν «Σφίγγα» τοῦ Ὀκταβίου Φαγιέ, τὴν «Φαίδραν» τοῦ Ρακίνα, τὴν «Κόρην τοῦ Ρολάνδου» τοῦ Ἐρ. Μπορνιέ, τὴν «Ξένην» τοῦ Δουμᾶ πατρός, τὴν «Ἀνδρομάχην», τὴν Δόνα Σόλα εἰς τὸν «Ἐρνάνην» τοῦ Οὐγκώ, τὴν Ἀλκμήνην ἐν τῷ «Ἀμφιτρύωνι» τοῦ Μολιέρου καὶ τὴν «Ζαΐραν» τοῦ Βολταίρου. Μετὰ τὴν κατ' Ἀπρίλιον τοῦ 1880 δοθεῖσαν παράστασιν τῆς «Τυχοδιώκτιδος» τοῦ Ὠζιέ, ἐπικριθεῖσα αὐστηρῶς ἐν τῷ ρόλῳ τῆς Κλορίνδης, ἐγκατέλειψεν ἀποτόμως τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν καὶ ἐπεχείρησε περιοδείαν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ κατόπιν ἐν Ἀμερικῇ, ἔνθα κυριολεκτικῶς ἀπεθεώθη, κερδίσασα καὶ ἓν ἑκατομμύριον φράγκων.

Ἔκτοτε, παλαιὸς καὶ νέος κόσμος δὲν ὡμίλει παρὰ δι' αὐτήν, τὰς ἰδιοτροπίας της, τὴν ἄφθαστον τέχνην της, τὴν παροιμιώδη ἰσχνότητά της, τὴν μεταλλικὴν φωνήν της, τὴν ἐκ τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας φυγήν της, τὸ φέρετρον ἐντὸς τοῦ ὁποίου ἐκοιμᾶτο, τὰς ἐναερίους πτήσεις της, τὴν ζωγραφικήν της καὶ τὴν γλυπτικήν της. Ἓν ἔτος μετὰ τὴν ἐν Ἀμερικῇ θριαμβευτικὴν περιοδείαν της, ὁ κόσμος ὅλος ὡμίλει καὶ διὰ τὸν μετὰ τοῦ Ἕλληνος ἠθοποιοῦ Παύλου Δαμαλᾶ ἔρωτά της καὶ τὸν συνεπείᾳ αὐτοῦ γάμον της. Εὑρισκόμενοι ἀμφότεροι τότε ἐν θεατρικῇ ἀνὰ τὴν Εὐρώπην περιοδείᾳ, καὶ δὴ ἐν Νεαπόλει τῆς Ἰταλίας ὑπὸ τὸν ἰμπρεσσάριον Σιούρμαν, διέρρηξαν ἀποτόμως τὸ μετ' αὐτοῦ συμβόλαιόν των καὶ δι' ἰδιαιτέρου τραίνου, ἀφοῦ ἐπλήρωσαν πεντήκοντα χιλιάδας φράγκων ποινικὴν ρήτραν, μετέβησαν εἰς Λονδῖνον, ἔνθα ἐτέλεσαν τοὺς γάμους των. Ἐπανελθοῦσα εἰς Παρισίους ἡ Σάρρα διέπλασεν ἐν τῷ θεάτρῳ «Βωδβὶλ» τὴν «Φαιδώραν» τοῦ Σαρδοῦ καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος (1884) τὴν «Θεοδώραν» τοῦ αὐτοῦ ποιητοῦ, ἣν ἔπαιξεν ἐπὶ ἓν ἔτος συνεχῶς. Δύο ἔτη μετὰ ταῦτα ἐπεχείρησε νέαν θριαμβευτικὴν περιοδείαν εἰς Ἀμερικήν, μετὰ τὸ πέρας τῆς ὁποίας, ἐπανελθοῦσα εἰς Παρισίους, διέπλασε τὸν Νοέμβριον τοῦ 1887 τὴν «Τόσκαν» τοῦ Σαρδοῦ, ἐν συνεχείᾳ δὲ τὴν «Λέναν» τοῦ Μπερτόν, τὴν «Ἰωάνναν ντ' Ἄρκ» τοῦ Μπαρμπιὲ καὶ τὴν «Κλεοπάτραν» τοῦ Σαρδοῦ καὶ Μορώ. Τῷ 1891 περιῆλθεν ἐκ νέου τὴν Ἀμερικὴν καὶ τὴν Αὐστραλίαν, πρὸς δὲ ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν Εὐρώπην, ἐπισκεφθεῖσα καὶ τὰς Ἀθήνας, ἔνθα ἔδωσεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Δημοτικοῦ θεάτρου τέσσαρας ἐν ὅλῳ παραστάσεις ἐνώπιον πλήθους κόσμου καὶ ὁλοκλήρου τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας. Τῷ 1893 ἠγόρασε τὸ ἐν Παρισίοις θέατρον τῆς «Ἀναγεννήσεως», τὸ ὁποῖον ἐγκαινίασε τὸν Μάϊον τοῦ 1894 μὲ τοὺς «Βασιλεῖς» τοῦ Λεμαίτρ, ἐν συνεχείᾳ δὲ ἔπαιξε μέχρι τοῦ 1900 τὴν «Σύζυγον τοῦ Κλαυδίου» τοῦ Δουμᾶ, τὴν «Μάγδαν» τοῦ Σούνδερμαν, τὸν «Λορεντζάκιον», τοῦ Μυσσέ, τὸν «Πνευματισμὸν» τοῦ Σαρδοῦ, τὴν «Σαμαριταὶν» τοῦ Ροστάν, τὴν «Νεκρὰν πόλιν» τοῦ Ντ' Ἀννούντσιο. Τῷ 1900 ἔπαιξε μετὰ καταπληκτικῆς ἐπιτυχίας τὸν «Ἀετιδέα» τοῦ Ροστὰν ἐπὶ ὁλόκληρον τὸ ἔτος, μεθ' ὃ ἐπεχείρησε νέας περιοδείας ἀνὰ τοὺς δύο κόσμους, ὅτε τῷ 1914 κατέστη ἀνάπηρος ἐξ ἀτυχήματός τινος. Πάντες ἐπίστευσαν τότε ὅτι λόγῳ τῆς καταστάσεώς της, ἀλλὰ καὶ τῆς ἡλικίας της, θὰ ἐγκατέλειπε τὴν σκηνήν, ἀλλ' ἡ γηραιὰ καλλιτέχνις ἐξηκολούθησε τὰς παραστάσεις της μέχρι τῶν τελευταίων αὐτῆς ἡμερῶν. Ἔγραψε καὶ ἀπομνημονεύματα καί τινα δραμάτια.
Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

— **Μπερνὰρ** (Bernard), ***Σίμων-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ἰατρὸς τοῦ ναυτικοῦ, γνωστὸς διὰ τὴν φανατικὴν συνωμοτικὴν δρᾶσίν του ἐπὶ τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας. Καταφυγὼν εἰς Ἀγγλίαν τῷ 1851, μετέσχεν ὅλων τῶν ἐκεῖθεν ἐξυφανθεισῶν συνωμοσιῶν ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος Γ΄, καθὼς ἐπίσης καὶ τῆς ἀναρχικῆς ἀποπείρας τοῦ Ἰταλοῦ Ὀρσίνι. Ἰδικῆς του κατασκευῆς ἦσαν αἱ βόμβαι, τῶν ὁποίων τόσα θύματα ἔπεσαν εἰς τὴν εἴσοδον τῆς «Ὄπερας» τῶν Παρισίων τῷ 1858. Μετὰ τὴν καταδίκην τῶν συνενόχων του, ὁ Μπερνὰρ παρεπέμφθη, ἐπιμόνῳ ἀξιώσει τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως, ἐνώπιον ἀγγλικοῦ κακουργιοδικείου, τὸ ὁποῖον ὅμως τὸν ἐκήρυξεν ἀθῷον, διὰ νὰ μὴ φανῇ ἐπηρεαζόμενον ἐκ ξενικῶν πιέσεων. Ἡ ἀθῴωσις αὕτη μικροῦ δεῖν νὰ ἐπιφέρῃ τότε ρῆξιν μεταξὺ Γαλλίας καὶ Ἀγγλίας.
—Ω.

**Μπερναρδάκης,** ἢ ***Βερναρδάκης, Δημήτριος.*** Μέγας ἐθνικὸς εὐεργέτης. Ἐγεννήθη τῷ 1800 ἐν Ταϊγανίῳ τῆς Ρωσίας, ἐκ πατρὸς Κρητός, καὶ ἀπεβίωσεν ἐν Πετρουπόλει τῇ 27 Μαΐου 1870. Καταταχθεὶς ἐν τῷ ρωσικῷ στρατῷ, ταχέως παρητήθη τῶν τάξεων αὐτοῦ, ἵν' ἀφιερωθῇ εἰς τὸ ἐμπόριον καὶ τὰς ἐπιχειρήσεις. Διὰ τῆς ἐργασίας του ἀπέκτησε μεγάλην περιουσίαν, δι' ἧς ἀπὸ τοῦ 1850 ἐπῆλθε πολλάκις γενναῖος ἀρωγὸς εἰς τὰς ἀνάγκας τοῦ ἑλληνικοῦ ἔθνους. Μεταξὺ τῶν πολλῶν αὐτοῦ δωρεῶν καταλέγονται ἡ πρὸς τὸ Ἐθνικὸν πανεπιστήμιον Ἀθηνῶν ἐξ 150 χιλιάδων χρυσῶν δραχμῶν, ἡ πρὸς ἀνοικοδόμησιν ἀρχαιολογικοῦ μουσείου ἐκ 250.000, διὰ τῆς ὁποίας ἐκτίσθη κατὰ μέγα μέρος τὸ Ἐθνικὸν ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον, ἡ ἀνοικοδόμησις τῆς ἑλληνικῆς ἐκκλησίας Πετρουπόλεως, ἡ ἐνίσχυσις τῶν συμπατριωτῶν του Κρητῶν κατὰ τὴν μεγάλην ἐπανάστασιν τοῦ 1866, δι' ἀποστολῆς ὅπλων, πολεμεφοδίων καὶ ἀλεύρων, ἡ ἀποστολὴ ὑποτρόφων εἰς Εὐρώπην πρὸς σπουδὴν τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας κτλ. Τὰ τέκνα αὐτοῦ κατέλαβον ἐπίλεκτον θέσιν ἐν τῇ ἀνωτάτῃ ρωσικῇ ἀριστοκρατίᾳ· μία τῶν θυγατέρων του ἐνυμφεύθη τὸν ἐν Πετρουπόλει πρέσβυν τῆς Γαλλίας Ταλλεϋράνδον, ὁ δὲ υἱός του Νικόλαος ἐγένετο σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας ἐν Ρωσίᾳ.
—Ω.

**Μπέρναρντ** (Bernard), ***Ἐδουάρδος.*** Ἄγγλος ἀστρονόμος γεννηθεὶς ἐν Perry-St Paul τῷ 1638 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1697. Ἐδίδαξεν ἐπί τινα χρόνον τὴν ἀστρονομίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης. Συνέγραψε διαφόρους πραγματείας, ὧν οὐκ ὀλίγαι ἐπὶ φιλολογικῶν θεμάτων. Ἐκ τῶν ἐργασιῶν του κυριώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Πραγματεία περὶ τῶν ἀρχαίων μέτρων καὶ σταθμῶν» (Oxford 1688) καὶ «Etymologicum britannicum», ὅπερ ἐδημοσιεύθη εἰς τὸ τέλος τῆς «Grammatica anglosaxonica» τοῦ Hickes (Oxford 1689).
Σ. Π.

**Μπερναρντὲν** (Bernardins). Μοναχικὸν τάγμα (βλ. λ. *Κιστερκιανοί*).

**Μπερναρντὲν** ***ντὲ Σαὶν-Πιὲρ*** (Bernardin de Saint-Pierre). Γάλλος φιλόσοφος καὶ κοινωνιολόγος (βλ. λ. *Σαὶν-Πιέρ*).

**Μπερνάρντες** (Bernardes), ***Αὐγουστῖνος.*** Πορτογάλος ποιητής, ἀδελφὸς τοῦ *Διέγου Μπερνάρντες*, γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κρούζ* (βλ. λ.).

— **Μπερνάρντες** (Bernardes), ***Διέγος.*** Πορτογάλος ποιητὴς (1540—1596). Μετέβη εἰς τὴν Ἀφρικήν, ὅπου, συμμετασχὼν εἰς τὴν μάχην τοῦ Ἀλκασὰρ Κιβίρ, συνελήφθη αἰχμάλωτος. Ἐπανακτήσας τὴν ἐλευθερίαν του ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Λισσαβῶνα. Ὁ Μπερνάρντες διεκρίθη κυρίως ὡς βουκολικὸς ποιητὴς καὶ καλεῖται ὑπὸ τῶν συμπατριωτῶν αὐτοῦ Θεόκριτος τῆς Πορτογαλίας. Ἐκ τῶν εἰδυλλίων του τὰ ἀξιολογώτερα εἶναι «O Lyma» καὶ «Rimas varias flores da Lyma».

— **Μπερνάρντες** (Bernardes), ***Μανουήλ.*** Πορτογάλος θεολόγος καὶ ποιητὴς (1641—1710). Ἀνήκει εἰς τὴν χορείαν τῶν κλασσικῶν τῆς πορτογαλικῆς λογοτεχνίας. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι τὰ «Nova floresta», «Ultimos fins de homem», «Luz e calor» καὶ «Exercicios espirituales». Ἐπίσης διεκρίθη καὶ ὡς ἐκκλησιαστικὸς ῥήτωρ.
Α. Δ.

**Μπερνάρντι** (Bernhardi), ***Φρειδερῖκος φὸν —.*** Γερμανὸς στρατηγὸς καὶ στρατιωτικὸς συγγραφεὺς (1849—1930). Ἐγεννήθη ἐν Πετρουπόλει, ὅπου ὁ πατήρ του, Γερμανὸς διπλωμάτης καὶ ἱστορικός, *Θεόδωρος φὸν Μπερνάρντι*, ἦτο πρεσβευτής. Ἐξελθὼν τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς τῷ 1869, ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870, ὑπῆρξε δὲ ὁ πρῶτος Γερμανὸς ἀξιωματικός, ὁ ὁποῖος εἰσῆλθεν ἔφιππος εἰς Παρισίους. Ἀπὸ τοῦ 1879 μέχρι τοῦ 1881 ὑπηρέτησεν εἰς τὸ γενικὸν ἐπιτελεῖον καὶ κατόπιν εἰς τὴν τοπογραφικὴν ὑπηρεσίαν, τῷ δὲ 1891 διωρίσθη στρατιωτικὸς ἀκόλουθος ἐν Βέρνῃ. Ἀπὸ τοῦ 1894 μέχρι τοῦ 1901 διηύθυνε τὸ ἱστορικὸν τμῆμα τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου ἐν Βερολίνῳ, τῷ 1901 διωρίσθη διοικητὴς ταξιαρχίας ἱππικοῦ, τῷ 1907 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον, τοῦ 1908 ἐγένετο διοικητὴς σώματος στρατοῦ καὶ τῷ 1909 ἀπεστρατεύθη μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ τοῦ ἱππικοῦ, ἀσχοληθεὶς ἔκτοτε ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν συγγραφὴν διαφόρων στρατιωτικῶν ἔργων. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἀνεκλήθη εἰς τὴν ἐνεργὸν ὑπηρεσίαν καὶ διηύθυνεν ἓν σῶμα στρατοῦ εἰς τὸ ἀνατολικὸν μέτωπον, νικήσας τοὺς Ρώσους ἐν Στόχοντ. Τῷ 1918 μετεφέρθη εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Ἀρμαντιέρ. Εἶναι κυρίως γνωστὸς ὡς στρατιωτικὸς συγγραφεὺς μεγάλης ἀξίας, ἐπιδράσας σημαντικῶς κατὰ τὴν προπολεμικὴν ἐποχήν, διὰ τῶν διδασκαλιῶν του καὶ τῶν συγγραμμάτων του, εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ φιλοπολέμου πνεύματος ἐν Γερμανίᾳ, ὀφείλει δὲ ἰδίως τὴν φήμην του εἰς τὰ ἔργα αὐτοῦ τὰ ἀναφερόμενα εἰς θέματα στρατηγικῆς καὶ στρατιωτικῆς ἱστορίας, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐθεωρεῖτο αὐθεντία καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην. Ἔγραψε, μεταξὺ ἄλλων, «Ἱστορία τῶν πολέμων Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου τῆς Πρωσσίας» καὶ ἐδημοσίευσε τὰ λίαν ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα τοῦ διπλωμάτου πατρός του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀπὸ τὴν ζωὴν τοῦ Θεοδώρου φὸν Μπερνάρντι» (1893—1900). Ἐκ τῶν ἄλλων συγγραμμάτων του ἀναφέρομεν: «Τὸ ἱππικόν μας καὶ ὁ προσεχὴς πόλεμος» (1899 καὶ 1903), «Σκέψεις περὶ νέου σχηματισμοῦ τῶν συνταγμάτων ἱππικοῦ» (1908), «Τακτικὴ καὶ ἐκπαίδευσις τοῦ πεζικοῦ» (1910), «Ἡ βάσις καὶ τὰ στοιχεῖα τοῦ νέου πολέμου» (1912). Τὸ κυριώτερον ὅμως ἔργον τοῦ Μπερνάρντι ὑπῆρξεν «Ἡ Γερμανία καὶ ὁ προσεχὴς πόλεμος». Τὸ ἔργον τοῦτο, ἐκδοθὲν ἓν ἔτος πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου τῷ 1914—1918 καὶ μεταφρασθὲν ἀμέσως εἰς πλείστας γλώσσας, προεκάλεσε γενικὴν κατάπληξιν διὰ τὴν ὠμὴν εἰλι-

κρίνειαν, μὲ τὴν ὁποίαν διακήρυττε καὶ ἀπεδείκνυεν ὅτι ὁ πανευρωπαϊκὸς πόλεμος ἦτο προσεχὴς καὶ ἀναπόφευκτος. «Ἐπὶ ἐδάφους σχεδὸν τῆς αὐτῆς ἐκτάσεως πρὸς τὸ γαλλικὸν—ἔγραφεν—ἡ Γερμανία συντηρεῖ 65 ἑκατομμύρια κατοίκων, ἐνῷ ἐν Γαλλίᾳ ζοῦν 40 ἑκατομμύρια. Ὁ τεράστιος οὗτος γερμανικὸς πληθυσμὸς αὐξάνεται κατὰ ἓν ἑκατομμύριον ἐτησίως. Ἐντὸς βραχέος χρονικοῦ διαστήματος θὰ εἶναι ἀδύνατον εἰς τὴν μητέρα πατρίδα νὰ ἐξασφαλίσῃ προσοδοφόρα ἐπαγγέλματα εἰς τὴν μᾶζαν αὐτὴν τῶν διαρκῶς αὐξανομένην ἀνθρώπων. Ἔχομεν λοιπὸν ἀνάγκην νὰ ἐπεκτείνωμεν τὴν ἀποικιακήν μας κυριαρχίαν, ἐφ' ὅσον δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ γίνῃ παραδεκτόν, ὅπως οἱ Γερμανοὶ μετανάσται μεταβοῦν εἰς τὰς χώρας τῶν ἀντιπάλων μας, πρὸς αὔξησιν τοῦ πληθυσμοῦ των. Λόγῳ ὅμως τῆς σημερινῆς πολιτικῆς διαρρυθμίσεως τῆς γῆς, δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἀποκτήσωμεν νέα ἐδάφη παρὰ μόνον εἰς βάρος τῶν ἄλλων κρατῶν, διὰ τοῦ πολέμου ἢ τῶν εὐνοϊκῶν συμφωνιῶν». Ἀναγνωρίζων δὲ ὅτι ἡ διπλωματία ἦτο ἀνίκανος νὰ ἐπιτύχῃ τὸν σκοπὸν τοῦτον διὰ τῶν μέσων τὰ ὁποῖα διέθετε, κατέληγεν ὅτι ὁ γερμανικὸς λαὸς ὤφειλε νὰ στηρίζεται μόνον ἐπὶ τῆς σπάθης του. Ὁ Μπερνάρντι ἀντελαμβάνετο τὸν πόλεμον τοῦτον ὡς ἀναπόφευκτον καὶ μοιραῖον, ἀνεξάρτητον ἀπὸ τὰς θελήσεις τῶν ἀνθρώπων, καὶ ἐξώρκιζε τοὺς συμπατριώτας του, εἰς τοὺς ὁποίους διέβλεπε τάσεις καὶ προθέσεις εἰρηνοφίλους, νὰ προφυλάσσωνται ἀπὸ τὰς τοιούτου εἴδους ἰδέας καὶ νὰ εἶναι πάντοτε ἕτοιμοι πρὸς μίαν σύγκρουσιν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ Γερμανία θὰ εὑρίσκετο ἀντιμέτωπος πρὸς τρομακτικὸν συνασπισμὸν ἀντιπάλων. Τὸ βιβλίον τοῦτο ἔσχε μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν Γερμανῶν ἐθνικοφρόνων καὶ ἐνίσχυσε τὸν φόβον ἐπιθέσεως τῆς Διπλῆς Συνεννοήσεως, προητοίμασε δὲ τὴν κοινὴν γνώμην εἰς τὴν μεγάλην σύρραξιν. Τῷ 1921 ὁ Μπερνάρντι ἐδημοσίευσε τὴν ἱστορίαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ ἡρωϊκὸς ἀγὼν τῆς Γερμανίας 1914—1918)». Μ. Δ. Β.

**Μπερνάρντυ** (Bernhardy), ***Γοδοφρεῖδος.*** Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Ἀντσμπεργκ τῷ 1800 καὶ ἀποθανὼν ἐν Χάλλῃ τῷ 1862. Καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου ἀπὸ τοῦ 1825, ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα καὶ ἐφιλοτεχνησεν ἔκδοσιν τοῦ Σουΐδα (Halle, 1834—1835, τόμ. 4) καὶ τοῦ πρώτου τόμου τῶν ἐλασσόνων Ἑλλήνων γεωγράφων («Geographi Graeci minores» Leipzig 1828). Ἐκ τῶν συγγραμμάτων του κυριώτερα εἶναι: «Wissenschaftliche Syntax der griechischen Sprache» (Berlin, 1829), «Grundriss der römischen Litteratur» (1872, ε' ἐκδ.) καὶ μία ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς λογοτεχνίας διῃρημένη εἰς τρία μέρη: «Innere Geschichte der griechischen Litteratur; Geschichte der griechischen Poesie; Geschichte der griechischen Prosa» (1874—1875).—Ω.

**Μπέρναρτ** (Bernaert, ἢ Beernaert), ***Αὔγουστος.*** Διακεκριμένος Βέλγος πολιτικὸς (1829—1912). Σπουδάσας φιλολογίαν καὶ νομικὰ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Λουβαίν, συνεπλήρωσε τὴν μόρφωσίν του εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Βερολίνου καὶ τῆς Ἀϊδελβέργης. Ἦτο δικηγόρος παρὰ τῷ Ἀρείῳ Πάγῳ, ὅταν τῷ 1873 ἐκλήθη ν' ἀναλάβῃ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Δημοσίων ἔργων εἰς τὴν κληρικόφρονα (καθολικὴν) κυβέρνησιν Μαλού. Ὁ νέος ὑπουργὸς διεκρίθη εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς διὰ τὴν σθεναρὰν καὶ μεμετρημένην ῥητορικήν του καὶ τὴν ἐπιδεξιότητά του κατὰ τὰς συζητήσεις, καθὼς καὶ διὰ τὴν μετριοπάθειάν του ἐν τῇ σφοδρᾷ διαμάχῃ, ἥτις ἐκράτει τότε μεταξὺ καθολικῶν καὶ

*Αὔγουστος Μπέρναρτ.*

φιλελευθέρων. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ ὑπουργείου ἐκείνου καὶ τὴν ἄνοδον τῶν ἀντιπάλων εἰς τὴν ἀρχὴν (1878), ὁ Μπέρναρτ διεκρίθη ἐπίσης ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ἀγώνων τῆς ἀντιπολιτεύσεως παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Μαλού. Ἐπανελθὼν τῷ 1884 εἰς τὴν ἐξουσίαν, ὡς ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας καὶ τῆς Βιομηχανίας, εἰς τὴν κυβέρνησιν συνασπισμοῦ τῶν καθολικῶν, εἰς τὴν ὁποίαν, ἐκτὸς τοῦ πρωθυπουργοῦ Μαλού, μετεῖχον ἐπίσης οἱ Woeste καὶ Jacobs, ἀντεπροσώπευσεν ἐν αὐτῇ καὶ τὴν φορὰν ταύτην, ὅπως καὶ κατὰ τὴν προηγουμένην, τὴν μετριοπαθεστέραν μερίδα. Μετὰ τὴν ἐπελθοῦσαν μεταξὺ τῶν μελῶν τῆς κυβερνήσεως διάσπασιν, ἀποχωρησάντων τῶν ἄλλων ἀρχηγῶν, ἀνέλαβε τὴν προεδρίαν αὐτῆς ὁ Μπέρναρτ. Μετῆλθε τότε πολιτικὴν συνδιαλλαγῆς καὶ ὑποχωρητικότητος ἀπέναντι τῶν φιλελευθέρων. Ἐφρόνει ὅτι τὸ καλύτερον μέσον πρὸς καταπολέμησιν τοῦ σοσιαλισμοῦ ἦτο ν' ἀποδειχθῇ εἰς τὸν λαόν, διὰ τολμηρῶν μεταρρυθμίσεων, ὅτι τὸ πνεῦμα τῆς κοινωνικῆς ἀδελφοσύνης καὶ ἀλληλεγγύης συμβιβάζεται πλήρως μὲ τὴν διατήρησιν τῶν θρησκευτικῶν παραδόσεων. Ἀλλ' ἐπὶ τοῦ σημείου τούτου ἠγέρθη ἔντονος ἀντίδρασις ἐναντίον του ἐκ μέρους τῶν Βέλγων παλαιοκαθολικῶν, καθ' ὅλον δὲ τὸ διάστημα τῆς παραμονῆς του εἰς τὴν ἀρχὴν ἦτο ἠναγκασμένος νὰ διεξάγῃ ἔναντι τῶν ἀντιλήψεων αὐτῶν ἐπίπονον καὶ δυσχερῆ ἀγῶνα. Ἡ κατ' αὐτοῦ ἐξέγερσις των συνεκρατεῖτο μόνον ἐκ τοῦ φόβου ὅτι ἡ πτῶσίς του θὰ ἦγεν εἰς τὴν ἄνοδον τῶν φιλελευθέρων. Ἐν τέλει ὅμως, καταπολεμούμενος ὑπὸ τῆς ἀριστερᾶς καὶ ἀποστερούμενος ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον τῆς ὑποστηρίξεως τῆς δεξιᾶς καὶ τοῦ κέντρου, ὁ Μπέρναρτ ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τῆς ἀρχῆς, τῷ 1894, χωρὶς ἐλπίδα ἐπανόδου. Ὁ βασιλεὺς Λεοπόλδος, ἀμείβων τὰς ὑπηρεσίας του, τὸν ἐτίμησε δι' ἀνωτάτων ἀξιωμάτων, ἡ δὲ βουλή, ἀποδίδουσα δικαιοσύνην εἰς τὸ νομικὸν καὶ τὸ κοινοβουλευτικόν του κῦρος, τὸν ἐξέλεξε πρόεδρόν της. Ἐν τούτοις ἡ πολιτικὴ δρᾶσις τοῦ Μπέρναρτ ὑπῆρξεν ἔκτοτε δευτερεύουσα. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του τῷ ἀνετέθη ν' ἀντιπροσωπεύσῃ τὴν χώραν του εἰς τὰς διεθνεῖς διασκέψεις τῆς Χάγης καὶ εἰς τὸ κοινοβουλευτικὸν συνέδριον τῆς Γενεύης. Εἶχεν ἐκλεγῆ ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν, ἐπίτιμον μέλος τοῦ ἰνστιτούτου Διεθνοῦς δικαίου, ἐτιμήθη δὲ τῷ 1910 διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς εἰρήνης. —Ω.

**Μπερνὲντ** (Bernède), ***Ἀρθοῦρος.*** Σύγχρονος Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς ἐν Μπεντὸν τῷ 1871. Ἔγραψε μετὰ πολλῆς δεξιότητος δραματικὰ ἰδίως ἔργα, ἐξ ὧν γνωστότερα εἶναι «Ἡ δούκισσα τοῦ Μπερρύ», «Αἱ μικραὶ Ἑστιάδες», «Ὑπὸ τὴν ἐπωμίδα», «Παραμύθια γιὰ τὴ Νισέττα». —Ω.

**Μπέρνετ** (Burnet), ***Γιλβέρτος.*** Ἄγγλος κληρικὸς καὶ ἱστορικὸς (1643—1715). Τῷ 1669 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν Γλασκώβῃ, μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν δὲ τοῦ Γουλιέλμου καὶ τὴν κατάκτησιν τοῦ στέμματος ὁ Μπέρνετ ἐγένετο ἐπίσκοπος Σαλισβουρίας καὶ μέλος τῆς βουλῆς. Ἓξ ἔτη μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθησαν τὰ ἀπομνημονεύματά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορία τῆς ἐποχῆς μου». Ἡ ἀξία τοῦ ἔργου τούτου, τὸ ὁποῖον μετὰ τὴν δημοσίευσίν του κατεκρίθη σφοδρότατα, ἔγκειται εἰς τὰ κεφάλαια, ἐν οἷς ἐξιστοροῦνται τὰ κατὰ τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν τῆς Σκωτίας, τὰ προηγηθέντα τῆς ἀποβάσεως τοῦ Γουλιέλμου εἰς τὴν Ἀγγλίαν, καὶ αἱ προσωπικαὶ αὐτοῦ σχέσεις μετὰ τοῦ βασιλικοῦ ζεύγους. Ἔργα τοῦ Μπέρνετ εἶναι ἐπίσης καὶ τά: «Ἐκκλησιαστικὴ Ἱστορία τῆς Σκωτίας», «Ἱστορία τῶν μεταρρυθμίσεων ἐν Ἀγγλίᾳ» κλπ. Γ. Ι. Β.

**Μπέρνεττ** (Burnett), ***Φραγκίσκα-Ἐλίζα,*** τὸ γένος *Χόντγκσον* (Hodgson). Ἀγγλοαμερικανὶς μυθιστοριογράφος καὶ θεατρικὴ συγγραφεὺς (1849—1924). Κατήγετο ἐκ Μάντσεστερ τῆς Ἀγγλίας, μεταναστεύσασα τῷ 1865 μετὰ τῶν γονέων της εἰς Ἀμερικήν, ὅπου συνειργάζετο εἰς διάφορα περιοδικά. Τὸ πρῶτόν της ἔργον ἦτο «Οἱ ἀρραβῶνες τῆς δεσποινίδος Κάρρουθερ», τὸ ὄνομά της ὅμως ὡς μυθιστοριογράφου ἐγένετο ἰδίᾳ γνωστὸν ἐκ τοῦ ἔργου της «Αὐτὸ τὸ κορίτσι» (1877). Τὸ ἀξιολογώτερον ἔργον της εἶναι ὁ «Μικρὸς λόρδος Φωντλερόϋ» (1886), μεταφρασθὲν εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ μικρὸς λόρδος», ἔργον ὅπερ, διασκευασθὲν διὰ τὴν σκηνήν, ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν ἐν Ἀμερικῇ, ὅπως καὶ τὸ ἕτερον θεατρικὸν ἔργον της «Ἡ Ἐσμεράλδα». Τῷ 1898 διεζεύχθη τὸν Μπέρνεττ καὶ μετὰ δύο ἔτη συνεζεύχθη τὸν ἰατρὸν *Στέφανον Τάουνσεντ,* ὅστις ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ούϊλ Ντέννις* (Will Dennis) συνειργάσθη μετ' αὐτῆς εἰς τινα τῶν ἔργων της (ὡς εἰς τὸ θεατρικὸν ἔργον «Σημαίνουσα κυρία»). Γ. Ι. Β.

**Μπέρνι** (Berni), ***Φραγκῖσκος.*** Ἰταλὸς ποιητὴς (1496—1536). Κατήγετο ἐξ εὐγενοῦς ἀλλὰ πτωχῆς οἰκογενείας καὶ ἐχρημάτισε κατ' ἀρχὰς γραμματεὺς τοῦ θείου του καρδιναλίου Μπιμπιένα. Βραδύτερον διωρίσθη ἐφημέριος ἐν Φλωρεντίᾳ, ὅπου ὁ δοὺξ Ἀλέξανδρος τῶν Μεδίκων προέτεινεν εἰς αὐτὸν νὰ δηλητηριάσῃ τὸν ἀδελφόν του καρδινάλιον Ἱππόλυτον τῶν Μεδίκων. Ὁ Μπέρνι ἠρνήθη νὰ προβῇ εἰς τὸ ἔγκλημα, ἀλλὰ μετά τινας ἡμέρας ἀπέθανε δηλητηριασθεὶς αὐτὸς ὑπὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου. Ἔγραψεν εἰς λατινικὴν γλῶσσαν ποιήματα, κυρίως σατιρικά, καλλιεργήσας ἴδιον εἶδος, ἀποκληθὲν ἐκ τοῦ ὀνόματός του «μπερνέσκο». Μεταξὺ τῶν ἔργων του, δημοσιευθέντων μετὰ τὸν θάνατόν του, τὰ κυριώτερα εἶναι: «Τὸ κυνήγι τοῦ ἔρωτος» (1537), «Σατιρικοὶ στίχοι» (1538), «Ὠδαὶ» (1562) κλπ. Διώρθωσεν ἐπίσης καὶ τὴν γλῶσσαν τοῦ «Μαινομένου Ὀρλάνδου» τοῦ Μπογιάρντο (1541). Μ. Δ. Β.

**Μπερνὶ** (Bernis), ***Φραγκῖσκος-Ἰωακεὶμ*** *ντὲ Πιὲρ ντὲ* —. Γάλλος πολιτικὸς (1715—1795). Κατήγετο ἐξ εὐγενοῦς μὲν ἀλλὰ πτωχῆς οἰκογενείας τοῦ Βιβαραὶ καὶ ἔλαβε λαμπρὰν μόρφωσιν, χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ καρδιναλίου ντὲ Φλερύ. Περατώσας τὰς σπουδάς του, ἀπέφυγε νὰ εἰσέλθῃ ἀμέσως εἰς τὸ κληρικὸν στάδιον, διὰ τὸ ὁποῖον προωρίζετο, προτιμήσας νὰ γνωρίσῃ πρῶτον τὴν κοσμικὴν ζωήν. Λεπτός, πνευματώδης καὶ ὡραῖος νεανίας, κατώρθωσε νὰ κατακτήσῃ τὴν εὔνοιαν τῶν ἰσχυροτέρων δεσποινῶν τῆς αὐλῆς. Χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τῆς κυρίας Πομπαντούρ, ἐπέτυχε τὴν ἐκλογὴν αὐτοῦ εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν εἰς ἡλικίαν 29 ἐτῶν καὶ ἔλαβε γενναίαν ἐπιχορήγησιν. Τῷ 1751 διωρίσθη πρεσβευτὴς τῆς Γαλλίας εἰς Βενετίαν, ἐπιδείξας διπλωματικὴν ὀξύνοιαν, παρέμεινε δ' ἐν τῇ θέσει ταύτῃ μέχρι τοῦ 1755, ὁπότε ἐπανελθὼν εἰς Βερσαλλίας διωρίσθη σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ διεπραγματεύθη ὡς ἐμπιστος τῆς αὐλῆς μετὰ τοῦ Στάρενμπερκ τὴν συνθήκην συμμαχίας (Γαλλίας-Αὐστρίας), ἡ ὁποία ὑπεγράφη τὴν 1 Μαΐου 1756. Κατὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς συνθήκης ταύτης μεγάλην ἐπεδείξατο ἐπιδεξιότητα. Γενικῶς ὁ Μπερνὶ ἀπεδείχθη ἔντιμος καὶ ἀνεξάρτητος πολιτικός, μόνος δὲ αὐτὸς μεταξὺ τῶν συναδέλφων του εἶχε τὸ θάρρος νὰ ἀντιταχθῇ, ἐνώπιον τοῦ συμβουλίου, εἰς τὰς θελήσεις τῆς Πομπαντοὺρ καὶ προεῖπε ποῦ θὰ ὡδήγουν τὴν Γαλλίαν αἱ σπατάλαι τοῦ δημοσίου θησαυροῦ καὶ οἱ πόλεμοι. Περιπεσὼν εἰς δυσμένειαν λόγῳ τῆς τοιαύτης στάσεώς του, ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ (1758), ὀνομασθεὶς δὲ καρδινάλιος ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἐν Βὶκ-σὺρ-Αῒν πύργον του. Τῷ 1764 διωρίσθη ἀρχιεπίσκοπος τοῦ Ἄλμπι καὶ παρέμεινεν εἰς τὴν ἕδραν τῆς διοικήσεώς του, ὅπου ἐπέδειξε προτερήματα καλοῦ ὀργανωτοῦ. Ἀποσταλεὶς μετὰ πενταετίαν πρεσβευτὴς εἰς Ῥώμην, κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ παρὰ τοῦ πάπα Κλήμεντος ΙΔ', εἰς τοῦ ὁποίου τὴν ἐκλογὴν εἶχεν ἐνεργῶς συμβάλει, τὴν κατάργησιν τοῦ τάγματος τῶν Ἰησουιτῶν (1773). Παραμένων ἐν Ῥώμῃ ἐγένετο δημοτικώτατος χάρις εἰς τὰ φιλόξενα καὶ φιλάνθρωπα αἰσθήματά του. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως ἐστερήθη τοῦ βαθμοῦ καὶ τῶν ἐπιχορηγήσεών του, διότι ἠρνήθη νὰ ἀσπασθῇ τὰς ἀρχὰς αὐτῆς, ἔζησε δὲ τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ βίου του σχεδὸν ἐν πενίᾳ. Ὁ Μπερνὶ διεκρίθη κατὰ τὴν νεότητά του ἰδίως ὡς ἱκανὸς στιχουργός, αἱ δὲ μικραὶ συλλογαί του καλούμεναι «Ποιητικαὶ ἀνθοδέσμαι» ἦσαν περιζήτητοι εἰς τοὺς κύκλους τῆς ἀριστοκρατίας. Ἐκ τῶν δημοσιευθέντων ἔργων του γνωστότερα εἶναι διάφοροι ποιητικαὶ συλλογαὶ μὲ τίτλους «Poésies de M. L.-D. B.» (1744), «Poésies» (1759), «La religion vengée» (1795), «Ἀπομνημονεύματα καὶ ἐπιστολαὶ» (1878), καὶ ἡ μετὰ τῶν Παρὶ-Ντυβερναὶ (1790) καὶ Βολταίρου (1799) ἀλληλογραφία του. Χ. Ι.

**Μπερνιὲ** (Bernier), ***Φραγκῖσκος.*** Γάλλος φιλόσοφος, περιηγητὴς καὶ ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1620 ἐν Joué, πλησίον τοῦ Angers, καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1688. Ἀπομείνας ὀρφανὸς ἐκ μικρᾶς ἡλικίας, ἐπροστατεύθη ὑπὸ τοῦ θείου του, ἐφημερίου τοῦ Σανσώ. Τῷ 1642 ἤκουσε μαθήματα φιλοσοφίας παρὰ τῷ Γκασσέντι, κατόπιν δ' ἐπεσκέφθη τὴν Πολωνίαν, Γερμανίαν καὶ Ἰταλίαν, ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Μομπελλιὲ καὶ τῷ 1656 ἀνεχώρησε διὰ Συρίαν. Ἐκεῖθεν μετέβη εἰς Αἴγυπτον καὶ κατόπιν εἰς Ἰνδίας, ὅπου ἤσκησε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ, ἐδίδαξεν ἀνατομίαν ἐπὶ τῇ βάσει τῶν νέων ἀνακαλύψεων τοῦ Χάρβεϋ καὶ τοῦ Πεκκὲ καὶ φιλοσοφίαν τοῦ Γκασσέντι καὶ Καρτεσίου, ἐμελέτησε τὴν ἰνδικὴν θρησκείαν καὶ φιλοσοφίαν καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν τῷ 1669, μετὰ ἀπουσίαν δεκατριῶν ἐτῶν. Τὰ ἀπομνημονεύματά του ἐδημοσιεύθησαν κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τὸν τίτλον «Histoire de la dernière révolution des états du Grand Mogol» (1670—1671, τόμ. 4), μετεφράσθησαν εἰς τὴν ἀγγλικήν, ἐπανεξεδόθησαν ἐπανειλημμένως καὶ τὸν ἐδόξασαν. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ῥακίνα καὶ τοῦ Μπουαλὼ συνέγραψε τὸ περίφημον «Arrêt burlesque», ὅπερ ἐπροστάτευσε τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Καρτεσίου καὶ τοῦ Γκασσέντι ἀπὸ τοῦ κινδύνου τῆς προγραφῆς. Τῷ 1674 ἐδημοσίευσε μέρος τοῦ «Abrégé de la philosophie de Gassendi», τὸ ὁποῖον ἐξεδόθη ὁλόκληρον μετὰ τέσσαρα ἔτη καὶ ἀνετυπώθη τῷ 1682 εἰς 7 τόμους. Ἕτερα ἔργα του εἶναι: «Doutes sur quelques-uns des principaux chapitres de l'Abrégé de la philosophie de Gassendi» (1682), «Eclaircissement sur le livre de M. Delaville» (1684), «Traité du libre et du volontaire» (1685), «Mémoire sur le quiétisme des Indes» (ἐν «Histoire des Savants» 1688), «Introduction à la lecture de Confucius», «Description du canal des deux Mers», «Éloge de Chapelle» κλπ. (ἐν «Journal des Savants» 1688). —Ω.

**Μπερνίνα** (Bernina) *[Γεωγρ.].* Ὀροσυστὰς τῶν Γρισωνικῶν Ἄλπεων, ὑψουμένη ΝΑ. τοῦ Κοὺαρ τῆς Ἑλβετίας. Ἀποτελεῖ ἓν τῶν μεγαλοπρεπεστέρων ἀλπικῶν συγκροτημάτων, περιβάλλεται δὲ ὑπὸ τῶν κοιλάδων τοῦ Ἴν (Ἐγκαδίνη) πρὸς ΒΔ καὶ τοῦ Ἄντα (Βαλτελίνη) πρὸς Ν. Ἡ μόνη ἑνοῦσα τὰς δύο ταύτας κοιλάδας δίοδος εἶναι ὁ ἁμαξιτὸς «αὐχὴν τοῦ Μπερνίνα» (2.334 μ.). Κυριώτεραι κορυφαὶ εἶναι ἡ *Μπερνίνα* (4.052 μ.), τῆς ὁποίας ἡ

Digitized by Google

πρώτη γνωστὴ αὐθεντικῶς ἀναρρίχησις ἐπετεύχθη τῷ 1850, καὶ ἡ *Παλὺ* (3.912 μ.). Ἡ μικροτέρα ὀροσυστὰς *Μόντε ντέλλα Ντισγκράτσια* (3.660 μ.), ἥτις κεῖται πρὸς Β. τοῦ ἑνοῦντος τὴν Ἐγκανδίνην μετὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Μπέργκελ (Μάϊρα) αὐχένος *Μαλόγια* (1811), θεωρεῖται γενικῶς ὡς ἀποτελοῦσα τμῆμα τῆς Μπερνίνα. Ἀμφότεραι αἱ ὀροσυστάδες αὗται καλύπτονται ὑπὸ ἐκτεταμένων καὶ μεγαλοπρεπῶν παγετώνων. χ. Δ.

**Μπερνίνι** (Bernini), ***Ἰωάννης-Λαυρέντιος.*** Διάσημος Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων καὶ γλύπτης, υἱὸς τοῦ γλύπτου Πέτρου Μπερνίνι, γεννηθεὶς ἐν Νεαπόλει τῷ 1599. Τὰ πρῶτα μαθήματα ἔλαβεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ πατρός του, κατὰ δὲ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος μετέβη εἰς τὴν Ρώμην, ἔνθα ἡ γλυπτικὴ εὑρίσκετο εἰς κατάπτωσιν καὶ παρακμήν. Ἡ ζωγραφικὴ ἀντεπροσωπεύετο ἀπὸ καλλιτέχνας, ὡς ὁ Ἀννίβας Καρράτσι, ὁ Ντομινικίνο καὶ ὁ Γκουΐντι, μεθ' οὗ εὑρίσκετο εἰς στενὰς σχέσεις, διότι ἦτο ὁ εὐνοούμενος ζωγράφος τοῦ καρδιναλίου Σκιπίωνος Μποργκέζε, ὅστις ὑπῆρξε καὶ ὁ πρῶτος προστάτης τοῦ Μπερνίνι. Τοιουτοτρόπως, ἐλλείψει μεγάλων γλυπτῶν, ἐπέδρασαν ἐπὶ τῆς διαμορφώσεως τοῦ ταλάντου τοῦ Μπερνίνι

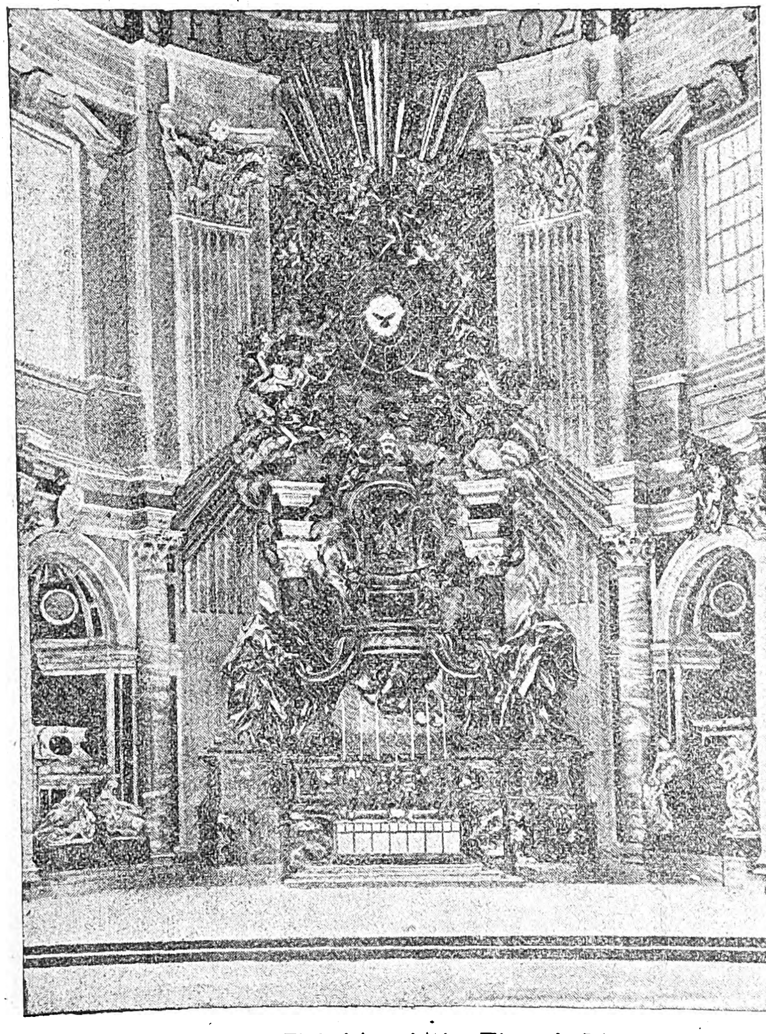

*Μπερνίνι: Τὸ ἱερὸν τοῦ Ἁγίου Πέτρου ἐν Ρώμῃ.*

ἀξιόλογοι ζωγράφοι· ἔτι δὲ ἄνθρωποι τῶν γραμμάτων, ὡς ὁ Μαρίνι, ὅστις ὑπῆρξεν ἐπιστήθιος φίλος τοῦ νεαροῦ καλλιτέχνου. Ὅλαι ὅμως αὗται αἱ ἐπιδράσεις δὲν δύνανται νὰ ἐξηγήσουν ἐπαρκῶς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς ἰδιοφυΐας τοῦ Μπερνίνι, ὅστις καὶ κατὰ τὴν ἐποχήν του καὶ μετ' αὐτὴν ἐκρίθη ὡς ἐμφάνισις ἀνεξήγητος. Ὑπῆρξε μέγας καὶ ὡς ἀρχιτέκτων καὶ ὡς γλύπτης. Πάπαι καὶ ἡγεμόνες, ὁλόκληρος ἡ ἀριστοκρατία τῆς καταγωγῆς, τοῦ πνεύματος καὶ τοῦ πλούτου τῆς ἐποχῆς του τὸν ἀπεθέωσαν. Ὁ Μπερνίνι, ἀποκληθεὶς καὶ Μιχαὴλ Ἄγγελος τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος, ἐνσαρκώνει εἰς τὸ ἔργον του τὸ πνεῦμα ἑνὸς ὁλοκλήρου αἰῶνος, καθ' ὃν ὑπῆρξεν ἀληθὴς δικτάτωρ τῆς τέχνης. Ἑπτὰ ἔτη μετὰ τὴν ἐγκατάστασιν τῆς οἰκογενείας Μπερνίνι ἐν Ρώμῃ (1605) ἐμφανίζεται τὸ παλαιότερον γνωστὸν ἔργον τοῦ Ἰωάννου-Λαυρεντίου, «Τὸ ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ ἐπισκόπου Σαντόνι», μαγιορδρόμου Σίξτου τοῦ Ε′, ἐν τῷ ναῷ τῆς Ἁγίας Πραξέδης, ἀφελὲς καὶ ἁπλοϊκὸν δημιούργημα ἑνὸς δεκαπενταετοῦς καλλιτέχνου. Ἀλλ' ὑπεμφαίνει ἤδη τινὰς τῶν ἀρετῶν, παρατηρητικότητα καὶ προσοχὴν εἰς τὴν φυσικὴν ἀλήθειαν, αἵτινες ἔμελλον ὀλίγῳ βραδύτερον νὰ τὸν δοξάσουν. Ἕτερά τινα ἔργα τοῦ Μπερνίνι ἀνήκοντα εἰς τὴν ἀπὸ τοῦ 1612 μέχρι τοῦ 1622 πρώτην περίοδον τοῦ καλλιτεχνικοῦ του σταδίου, εἶναι: «Μακαρία ψυχὴ» καὶ «Καταδικασμένη ψυχὴ» (ἀπόκεινται νῦν ἐν τῇ ἰσπανικῇ πρεσβείᾳ τῆς Ρώμης), «Ὁ ἅγιος Λαυρέντιος» τοῦ παλατίου Στρότσι τῆς Φλωρεντίας, δι' οὗ κατ' οὐσίαν ἄρχεται τὸ στάδιον τοῦ Μπερνίνι ὡς γλύπτου, «Ὁ Αἰνείας καὶ ὁ Ἀγχίσης», «Ὁ Δαβίδ», πλήρης ταραχώδους κινήσεως καὶ ἐμπαθοῦς ἐξάρσεως, «Ἡ ἁρπαγὴ τῆς Περσεφόνης», ἥτις πολλοὺς μεταγενεστέρους καλλιτέχνας ἐνέπνευσε καὶ πολὺ κατὰ τὴν ἐποχήν της ἐξετιμήθη, καὶ «Ὁ Ἀπόλλων καὶ ἡ Δάφνη». Τῷ 1623 ὁ Μπερνίνι ἐξεπόνησε τὸ σύμπλεγμα «Ποσειδῶν καὶ Γλαῦκος», χάριν τοῦ καρδιναλίου Μοντάλτο. Ἐπὶ Γρηγορίου τοῦ ΙΕ′ ὁ Μπερνίνι σχετίζεται στενῶς μὲ τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν καὶ ἐκπονεῖ, κατὰ παραγγελίαν αὐτῶν, τὸ «Ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ καρδιναλίου Μπελλαρμίνο», ἡμικατεστραμμένον ἤδη. Διὰ τοῦ ἔργου τούτου ἡ νεαρὰ δόξα τοῦ εἰκοσιπενταετοῦς καλλιτέχνου ἐνισχύεται σημαντικώτατα· πολύτιμοι φιλίαι τοῦ προσφέρονται· σπουδαιόταται παραγγελίαι σωρεύονται εἰς τὸ ἐργαστήριόν του· ἡ τέχνη του συζητεῖται ἐν Ρώμῃ μετὰ διαρκῶς αὐξανομένου ἐνδιαφέροντος· καὶ ὁ ἀκαταπόνητος καλλιτέχνης διηνεκῶς δημιουργεῖ νέα ἔργα. Ἡ πρώτη ἐργασία, τὴν ὁποίαν τοῦ ἀναθέτει ὁ Οὐρβανὸς ὁ Η′, εἷς τῶν μᾶλλον ἀφωσιωμένων θαυμαστῶν καὶ προστατῶν του, εἶναι ἡ κατασκευὴ τοῦ ὀρειχαλκίνου κουβουκλίου τοῦ Ἁγίου Πέτρου, μνημειώδους δημιουργήματος, ὅπερ θεωρεῖται ὡς τὸ μεγαλύτερον ἐν τῷ κόσμῳ ἐξ ὀρειχάλκου καλλιτέχνημα. Ἐν τῷ μεταξὺ (1625 — 1633) ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ ἰδίου Οὐρβανοῦ μὲ τὴν ἐκτέλεσιν ἄλλων σημαντικωτάτων ἔργων, ὡς τὸ μέγα θυσιαστήριον τοῦ Ἁγίου Αὐγουστίνου, τὸ παλάτιον τῆς Προπαγάνδας καὶ τὸ παλάτιον Μπαρμπερίνι, ἡ ἰδιαιτέρα κατοικία τοῦ πάπα, τοῦ ὁποίου τὴν κατασκευὴν εἶχεν ἀρχίσει ὁ Κάρολος Μαντέρνα. Παρὰ τὸ παλάτιον τοῦτο ὁ Μπερνίνι ἐξετέλεσε καὶ δύο κρήνας: τὴν «Κρήνην τῶν μελισσῶν» καὶ τὴν «Κρήνην τοῦ Τρίτωνος». Ἄλλα ἀρχιτεκτονικὰ καὶ γλυπτικὰ ἔργα τοῦ καλλιτέχνου, ἐπιτελεσθέντα ἐπὶ Οὐρβανοῦ τοῦ Η′, εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Προτομὴ τοῦ Φραγκίσκου Μπαρμπερίνι», «Προτομὴ τῆς Κωνσταντίας Μπουοναρέλλι», «Ἡ παρθένος», «Προτομὴ τοῦ πάπα Οὐρβανοῦ τοῦ Η′» (διὰ τὸ νοσοκομεῖον τῶν Προσκυνητῶν), πρόσοψις τοῦ ναοῦ τῆς Ἁγίας Βιβιανῆς (1626) καὶ ἄγαλμα τῆς ἁγίας ταύτης, προτομαὶ τοῦ Ἀντωνίου Μπαρμπερίνι καὶ τῆς Καμίλλης Μπαρμπαντόρι. Τῷ 1629 ὁ καλλιτέχνης ἀρχίζει τὴν ἐκτέλεσιν τῆς θαυμασίας διακοσμήσεως τῶν πυλώνων τοῦ θόλου τοῦ Ἁγ. Πέτρου, καταναλώσας δέκα ὁλόκληρα ἔτη ἐπιπόνων καλλιτεχνικῶν προσπαθειῶν. Ἀκολουθοῦν: ἡ προτομὴ τοῦ Ἀντωνίου Νιγρίτα (ἐν Παναγίᾳ τῇ Μείζονι), δύο ἄλλαι προτομαὶ Οὐρβανοῦ τοῦ Η′ (ἡ μία διὰ τὸ παλάτιον Μπαρμπερίνι, ἡ ἑτέρα διὰ τὸν San Lorenzo in Fonte), ἡ κρήνη τῆς βίλλας Ματτέϊ, ἡ κρήνη τοῦ παλατίου Ἀνταμόρο καὶ ἡ κρήνη τῶν κήπων Μπαρμπερίνι. Τῷ 1630 ἐξεργάζεται τὸ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Καπιτωλίου ἄγαλμα τοῦ Καρόλου Μπαρμπερίνι, κατὰ δὲ τὸ ἑπόμενον ἔτος τὸ μνημεῖον τοῦ Ἰωάννου Βιγκεβάνο. Τῷ 1632 ἐκπονεῖ δύο προτομὰς τοῦ καρδιναλίου Σκιπίωνος Μποργκέζε, μετὰ ταῦτα δὲ τὸ μνημεῖον τῆς κομίσσης Ματθίλδης (ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πέτρου), τὸ παρεκκλήσιον Ραϋμόνδι ἐν San Pietro in Montorio, τὰς προτομὰς τῆς Μεδούσης, τοῦ Παύλου Τζιορντάνο, τοῦ καρδιναλίου Βαλιέ, τοῦ Καρόλου Α′, βασιλέως τῆς Ἀγγλίας, τοῦ Οὐρβανοῦ Η′, ἄλλην τοῦ ἰδίου, τοῦ καρδιναλίου Ρισελιέ, τοῦ λόρδου Korniick. Τῷ 1642 ὁ Μπερνίνι εἶχεν ἀρχίσει νὰ κατασκευάζῃ τὸ θαυμάσιον ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ Οὐρβανοῦ, ὅπερ κοσμεῖ νῦν τὸν Ἅγιον Πέτρον τῆς Ρώμης. Ὁ Μπερνίνι εἰργάσθη καὶ ἐπὶ μυθολογικῶν θεμάτων, ἐκπονήσας τὸ ἄγαλμα τῆς «Ἀληθείας», ἀποκείμενον ἐν τῷ παλατίῳ Μπερνίνι, καὶ τὸ ἀριστουργηματικώτερον ἴσως τῶν πλαστικῶν του συμπλεγμάτων, τὴν «Ἁγίαν Θηρεσίαν», ἄφθαστον σελίδα ἀνθρωπίνου καὶ θείου πάθους, ἐν τῷ παρεκκλησίῳ τῆς ἐνετικῆς οἰκογενείας τῶν Κορνάρων ἐν τῷ ναῷ τῆς Θεοτόκου τῆς Νίκης (Ρώμη). Ἀπὸ τοῦ 1647 μέχρι τοῦ 1655 ὁ καλλιτέχνης ἐξεπόνησε, πλὴν ἄλλων, τὸ σύμπλεγμα Ἁγίας Φραγκίσκης τῆς Ρωμαίας, τὴν κρήνην τῆς πλατείας Navona, ἕνα «Ἐσταυρωμένον» χάριν τοῦ βασιλέως τῆς Ἰσπανίας Φιλίππου τοῦ Δ′, τὴν προτομὴν Φραγκίσκου τοῦ Α′ δουκὸς τῆς Ἔστης καὶ τὸ μνημεῖον τοῦ καρδιναλίου Πιμεντέλ. Ἀπὸ τοῦ 1655—1667 διεκόσμησε τὴν ἐν Ρώμῃ Πύλην τοῦ λαοῦ, κατεσκεύασε τὸν θαυμάσιον ἐξ ὀρειχάλκου θρόνον τοῦ Ἁγίου Πέτρου (1656—1665 ἐν τῷ ὁμωνύμῳ ναῷ), ἀνεκαίνισε τὸν ναὸν τῆς Παναγίας τοῦ Λαοῦ, κατεσκεύασε τὸ περίφημον περιστύλιον τοῦ Ἁγίου Πέτρου (1656—1663), διηύθυνε τὰς ἐργασίας τῆς ἐπεκτάσεως τῶν ἀνακτόρων τοῦ Κυριναλίου, ᾠκοδόμησε τὸ παρεκκλήσιον Κίτζι ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Σιέννης, ἀνεκαίνισε τὸ ποντιφικὸν παλάτιον τοῦ Καστὲλ Γκαντόλφο, ὕψωσε τὸν ὀβελίσκον τῆς πλατείας τῆς Ἀθηνᾶς ἐν Ρώμῃ. Τῷ 1665 ἐπεσκέφθη τοὺς Παρισίους, κατὰ πρόσκλησιν Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ′. Κατέστρωσε τὰ σχέδια τῆς ἀνακαινίσεως καὶ ἐπεκτάσεως τοῦ Λούβρου, κατεσκεύασε τὴν προτομὴν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ′, ἀποκειμένην εἰς τὰς Βερσαλλίας, καὶ ἐπανῆλθε μετὰ ἑξάμηνον ἀπουσίαν εἰς τὴν παπικὴν πρωτεύουσαν. Ἐπὶ Κλήμεντος Θ′ ὁ Μπερνίνι ἐξεπόνησε τὰ ἀγάλματα τῆς ἐν Ρώμῃ γεφύρας τοῦ Ἁγίου Ἀγγέλου καὶ τινα ἄλλα ἐξαιρέτως σημαντικὰ καλλιτεχνήματα, ἐπὶ δὲ Κλήμεντος τοῦ Ι′ ἀνήγειρε τὸν ἱππικὸν ἀνδριάντα τοῦ Κωνσταντίνου, τοῦ Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ′, ὅστις ἀπόκειται εἰς τὰς Βερσαλλίας, κατεσκεύασε τὸν μεγαλοπρεπῆ ἐν Ἁγίῳ Πέτρῳ τάφον Ἀλεξάνδρου τοῦ Ζ′ καὶ τὸ ἄγαλμα τῆς μακαρίας Λουΐζας Ἀλμπερτόνι ἐν τῷ San Francesco a ripa. Ἐπὶ Ἰννοκεντίου τοῦ ΙΑ′ διηύθυνε τὰς ἐργασίας τῆς ἀνακαινίσεως τοῦ παλατίου τοῦ Λατεράνου, κατεσκεύασε τὴν κρήνην τῆς πλατείας τοῦ Ἁγίου Πέτρου καὶ εἰργάσθη ἐν τοῖς ναοῖς τῆς Santa Maria de Miracoli καὶ τῆς Santa Maria in Monte Santo. Ἀπέθανε τῷ 1680. Ὁ Μπερνίνι εἶναι ὁ κατ' ἐξοχὴν ἐκπρόσωπος τοῦ «βαροκκείου» ρυθμοῦ ἐν τῇ ἀρχιτεκτονικῇ καὶ τῇ πλαστικῇ. Εἶναι μεγαλοπρεπής, καθ' ὑπερβολὴν φίλος τῆς χλιδῆς, ταραχώδης, αἰσθησιακός. Ἀγνοεῖ τὴν λιτότητα, δὲν ἔχει τὴν αἴσθησιν τοῦ περιττοῦ, προκαλεῖ δὲ τὸν κάματον διὰ τοῦ φόρτου τῶν διακοσμήσεων· κατέχει ὅμως, ὡς παρατηρεῖ ὁ Marcel Reymond: «γονιμότητα ταλάντου, δεξιοτεχνίαν ἐν τῇ ἐξεργασίᾳ, βαθεῖαν γνῶσιν τῆς ἀρχαιότητος συνδεδυασμένην μετ' ἀκριβεστάτης παρατηρήσεως τῆς φύσεως, ἀσύγκριτον ἱκανότητα εἰς τὴν προσωπογλυφίαν, θέλγητρον εἰς τὴν ἀπόδοσιν τῶν γυναικείων μορφῶν καὶ τῶν μικρῶν παιδίων, ὡραιότητα εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοῦ γυμνοῦ, κίνησιν, ζωηρότητα ἐκφράσεως ἐξικνουμένην μέχρι τῶν συγκλονιστικωτέρων δραμάτων τοῦ θρησκευτικοῦ πάθους, εὐφυΐαν ἐν τῇ τέχνῃ τοῦ συνθέτειν, τοῦ συσσωρεύειν τὰς μορφάς, τοῦ ἀντιθέτειν τὰς μὲν πρὸς τὰς δὲ καὶ τοῦ ἀντιλαμβάνεσθαι πάντα ταῦτα ὡς σκηνὰς πλήρεις ψυχικοῦ περιεχομένου».

[Πρβλ. *F. Pollac*, Lorenzo Bernini, Στουτγάρτη 1909.] Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μπερνίνι** (Bernini), ***Πέτρος.*** Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ γλύπτης (1562—1629), πατὴρ τοῦ *Ἰωάννου-Λαυρεντίου Μπερνίνι*. Ἐκ τοῦ ἔργου του ἀξίου μνείας εἶναι σειρὰ πινάκων, τοὺς ὁποίους εἰργάσθη διὰ τὸ παλάτσο Φαρνέζε ἐν Καπραρόλα. Ὡς γλύπτης εἰργάσθη καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν, ἐν Νεαπόλει (ναὸς καὶ μονὴ Σὰν Μαρτίνο), Ρώμῃ (παρεκκλήσιον Σάντο Σακραμέντο καὶ παρεκκλήσιον Παολίνα τῆς Σάντα Μαρία Ματζόρε) Φρασκάτι (βίλλα Μαντραγκόνε), Ρώμη (Βοργήσιοι κῆποι) κλπ. Θεωρεῖται ὡς εὐσυνείδητος καὶ ἐπιδέξιος καλλιτέχνης. Χ. Δ.

**Μπέρνιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Πτελέα* (βλ λ.).

**Μπέρνλεϋ** (Burnley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ *Λαγκάστερ*. Κάτ. 106.765. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 43 περίπου χλμ. Β. τοῦ Μάντσεστερ, ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Μπέρν καὶ Κάλντερ. Ἔχει παλαιὸν φρούριον, ἐκκλησίαν τοῦ Ἁγίου Πέτρου τοῦ ΙΒ′ αἰῶνος καὶ βιομηχανικὴν σχολήν. Εἶναι πόλις βιομηχανικὴ καὶ ἔχει μηχανουργεῖα, μεταλλουργεῖα, ὑφαντουργεῖα, χυτήρια κ. τ. λ. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν λατομεῖα σχιστολίθου καὶ γαιανθρακωρυχεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μπὲρν-Μπελλκοὺρ** (Berne-Bellecour), ***Στέφανος-Πρόσπερος.*** Γάλλος ζωγράφος (1838—1910). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Picot καὶ τῷ Barrias καὶ ἐκαλλιέργησε κατ' ἀρχὰς μὲν τὴν προσωπογραφίαν καὶ τὴν τοπιογραφίαν, βραδύτερον δὲ τὴν πολεμικὴν ζωγραφικήν, ἀπεικονίσας μετ' ἐπιτυχίας διαφόρους χαρακτηριστικὰς σκηνὰς τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Μέσα εἰς τὸ χαράκωμα», «Εἷς

Digitized by Google

*Δ. Μπερνίνι:* Ἡ ἔκστασις τῆς Ἁγίας Θηρεσίας (ἐν τῷ ναῷ τῆς Σάντα Μαρία ντέλλα Βιττόρια, τῆς Ρώμης). 2) Ἡ κεφαλὴ τῆς Ἁγίας Θηρεσίας ἐν τῷ ἐν λόγῳ συμπλέγματι.

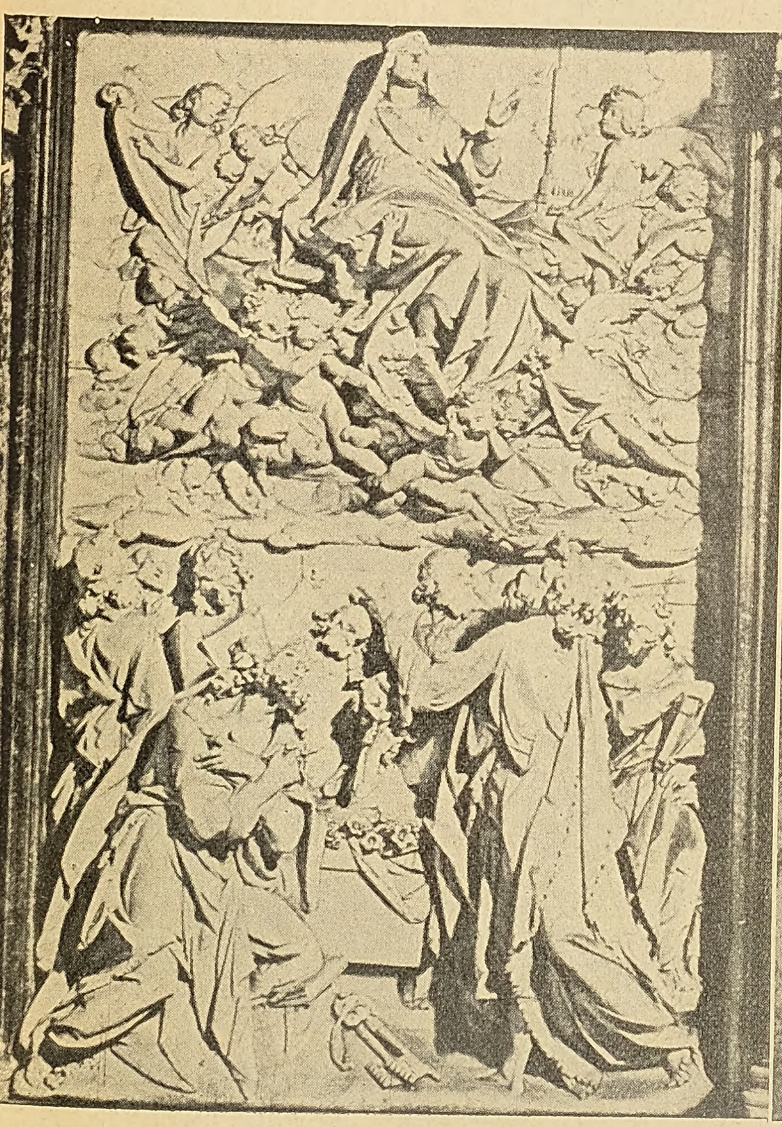

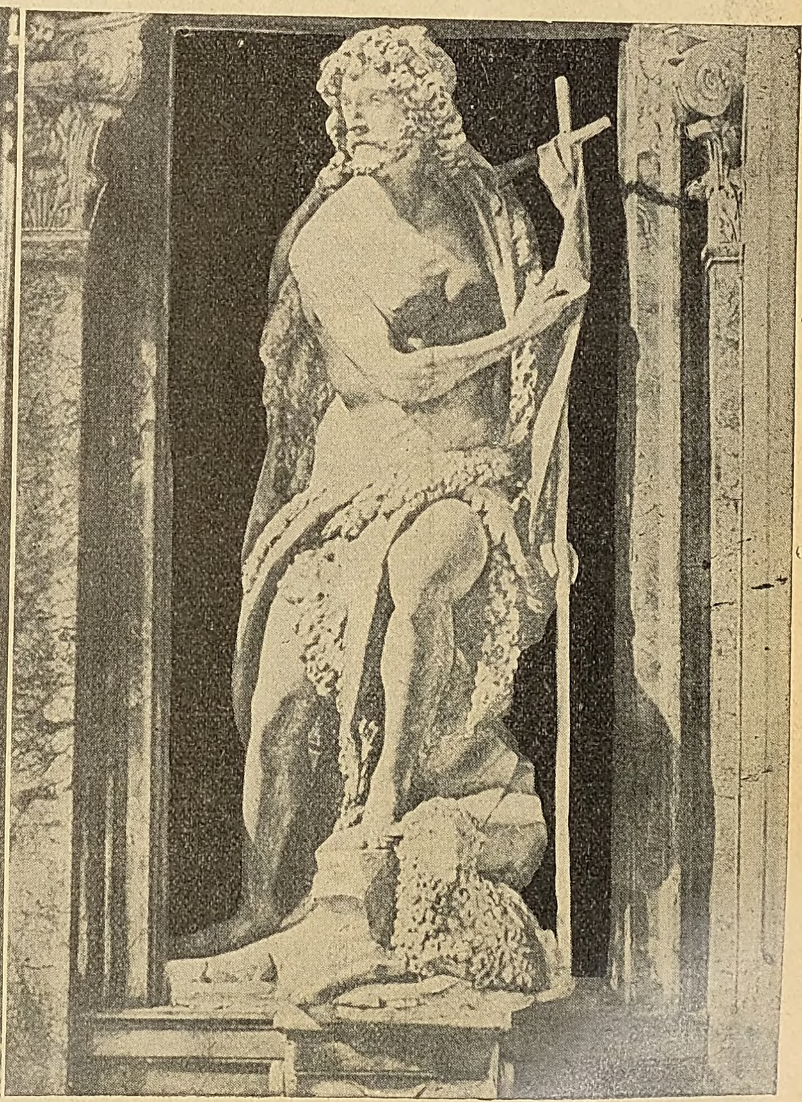

*Δ. Μπερνίνι:* 1) Ἡ προσκύνησις τῆς Ἀναλήψεως τῆς Παρθένου (ἐν τῷ ναῷ τῆς Σάντα Μαρία Ματζόρε τῆς Ρώμης). 2) Ὁ Ἅγιος Ἰωάννης ὁ Βαπτιστὴς (ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου ντέλλα Βάλλε).

Digitized by Google

δπλα !», «Μιὰ κανονιὰ» καὶ τὸ «Πανόραμα τῆς πολιορκίας τοῦ Μπελφόρ». Ι. Μ. Π.

**Μπερνὸν** (Bernon). Ἀββᾶς τοῦ Ραϊχενάου, παρὰ τὴν λίμνην Κωνσταντίαν, ἀποθανὼν τῷ 1048. Εἶναι γνωστὸς καὶ ὡς *Berno Augiensis*. Τὰ ἔργα εἰς τὰ ὁποῖα ἀσχολεῖται μὲ τὴν μουσικὴν εἶναι: «Jonale», μετὰ προλόγου ἐμπνευσμένου ἐκ τοῦ «Institutio harmonica», τοῦ Οὐβάλδου· ἐπίσης «De varia psalmorum atque cantuum modulatione» καὶ «De consona tonorum diversitate». Κατὰ τὸν Τριθέμιον ὁ Μπερνὸν εἶχε γράψει καὶ τὸ ἐγχειρίδιον «De instrumentis musicalibus». Γ. Σ.

**Μπέρνμπουργκ** (Bernburg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ χώρᾳ τοῦ Ἄνχαλτ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σάαλ. Εἶναι σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ κέντρον βιομηχανίας μηχανῶν, πλίνθων, καπνοῦ, ὑελουργίας, χαρτοποιίας κλπ. Τῆς πόλεως δεσπόζει μεγαλοπρεπὴς παλαιὸς ὀχυρὸς πύργος τῆς ἐποχῆς τοῦ Ὄθωνος Γ' (992), ἐκτισμένος ἐπὶ βράχου ὑπερκειμένου τοῦ Σάαλ. Κάτ. (1924) 33.571. Τὸ Μπέρνμπουργκ ἐκτίσθη τῷ 992 ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ὄθωνος Γ'. Κατὰ τὸν Τριακονταετῆ πόλεμον κατελήφθη δὶς ὑπὸ τῶν Σουηδῶν. Μέχρι τοῦ 1468 καὶ ἀπὸ τοῦ 1603 μέχρι τοῦ 1863 ἦτο ἕδρα τῶν δουκῶν Ἄνχαλτ. Χ. Δ.

**Μπερνορὴ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Ὡριὰ* (βλ. λ.).

**Μπερνουγὶ** (Bernoulli). Ὄνομα οἰκογενείας ἐξ Ἀμβέρσης, ἧς πάντα τὰ μέλη διεκρίθησαν ὡς ἔξοχοι μαθηματικοί. Κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἠναγκάσθη, ἕνεκα θρησκευτικῶν διωγμῶν, νὰ καταφύγῃ εἰς Βασιλείαν. Περιφημότερα μέλη τῆς οἰκογενείας εἶναι οἱ κάτωθι:

—1) ***Ἰάκωβος***, γεννηθεὶς τῷ 1654. Αἱ πρῶται ἐργασίαι του, εἰς τὴν ἀστρονομίαν, ἦσαν μικροῦ λόγου ἄξιαι· ἀλλὰ κατόπιν ἐφήρμοσε τὸν τότε ἐπινοηθέντα ἀπειροστικὸν λογισμὸν εἰς τὴν ἀναλυτικὴν γεωμετρίαν, σχῶν θαυμάσια ἐξαγόμενα. Τῷ 1687 ἐξελέγη καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βασιλείας, ἣν θέσιν κατεῖχε μέχρι τοῦ θανάτου του (1705). Τῷ 1699 ἐγένετο ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων καί, τῷ 1701, τοῦ Βερολίνου. Ὡς καθηγητὴς διέπρεψεν ὄχι μόνον διὰ τῆς ὑπερόχου διδασκαλίας του, ἀλλά, κυρίως, διὰ τῶν θαυμασίων ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν του. Τὸν διεδέχθη εἰς τὴν ἕδραν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βασιλείας ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Ἰωάννης. Ὁ Ἰάκωβος εἶναι, οὕτως εἰπεῖν, ὁ δημιουργὸς τοῦ ἀλγορίθμου τοῦ διαφορικοῦ καὶ ὁλοκληρωτικοῦ λογισμοῦ, εὑρὼν τὰς πλείστας τῶν γεωμετρικῶν ἐφαρμογῶν των, ἐν αἷς ἡ εὕρεσις τῶν ἐφαπτομένων τῶν καμπύλων, τῆς καμπυλότητος αὐτῶν, τῶν σημείων καμπῆς, τῶν ἐνειλιγμένων, τετραγωνισμῶν καμπυλογράμμων χωρίων καὶ πλήθους ἄλλων ὁμοίων ἐφαρμογῶν. Ἐκ τούτων ἤρεσεν ὑπερβολικὰ εἰς αὐτὸν ἡ εὕρεσις τῶν ἰδιοτήτων τῆς λογαριθμικῆς ἕλικος τόσον, ὥστε ἐξέφρασε τὴν ἐπιθυμίαν του, ὅπως εἰς τὸν τάφον του ἐγχαραχθῇ εἰς πλάκα ἡ ἕλιξ αὐτὴ μὲ τὴν ἐπιγραφήν: «Eadem mutata resurgo», ὑπονοῶν διὰ τούτου τὴν ἰδιότητα τῆς λογαριθμικῆς ἕλικος, καθ' ἣν ἡ ἐνειλιγμένη καὶ ἐξειλιγμέναι αὐτῆς εἶναι πάλιν ἡ ἰδία ἕλιξ.

*Ἰάκωβος Μπερνουγί.*

Αἱ κυριώτεραι ἰδιότητες τῆς λογαριθμικῆς ἕλικος, ἃς εὗρεν οὗτος διὰ τοῦ διαφορικοῦ καὶ ὁλοκληρωτικοῦ, εἶναι: α') Ὅτι ἡ ἐφαπτομένη τῆς ἕλικος εἰς πᾶν σημεῖον, ὅπως καὶ εἰς τὸν κύκλον, σχηματίζει σταθερὰν γωνίαν πρὸς τὴν πολικὴν ἀκτῖνα (ἐὰν ἡ γωνία αὐτὴ εἶναι ὀρθή ἡ ἕλιξ καταντᾷ κύκλος. β') Τὸ ἐμβαδὸν τοῦ χωρίου τοῦ περιεχομένου ὑπὸ δύο ἀκτίνων τῆς ἕλικος καὶ τόξου αὐτῆς ἐκφράζεται δι' ἀλγεβρικοῦ ἀριθμοῦ, δηλαδὴ εἶναι τετραγωνίσιμον, ὑπό τινας συνθήκας (ἐξαρτωμένας ἐκ τῆς σταθερᾶς γωνίας τῆς ἐφαπτομένης πρὸς τὴν πολικὴν ἀκτῖνα) διὰ κατασκευῆς διὰ τοῦ κανόνος καὶ διαβήτου. Πράγματι τὸ ἐμβαδὸν τοῦτο δίδεται ὑπὸ τοῦ τύπου:

$$E = \frac{(OM)^2-(OA)^2}{4\mu}$$

ἔνθα μ ἡ συνεφαπτομένη τῆς σταθερᾶς γωνίας φ. γ) Τὸ μῆκος τοῦ τόξου ἀπό τινος σημείου Μ τῆς ἕλικος πρὸς τὸν πόλον, καίτοι τὸ τόξον ποιεῖ ἀπείρους στροφὰς περὶ τὸν πόλον, ὅστις εἶναι ἀσύμπτωτον σημεῖον τῆς καμπύλης ταύτης, εἶναι πεπερασμένον.

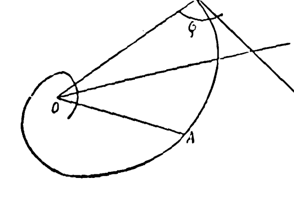


Ἐὰν τὸ Μ ληφθῇ ἐπὶ τοῦ Α (ἔνθα ΟΑ=1), τότε τὸ μῆκος τοῦ ἀπείρους στροφὰς ποιοῦντος τόξου ΑΣΣ'Σ''.... εἶναι ἴσον πρὸς $\sqrt{1+\frac{1}{\mu^2}}$

δ) Ἡ ἀκτὶς καμπυλότητος ἰσοῦται, εἰς πᾶν σημεῖον τῆς καμπύλης ταύτης, πρὸς τὴν πολικὴν κάθετον καὶ 5) Ἡ ἐνειλιγμένη τῆς ἕλικος εἶναι ἡ αὐτὴ λογαριθμικὴ ἕλιξ εἰς ἄλλην θέσιν.

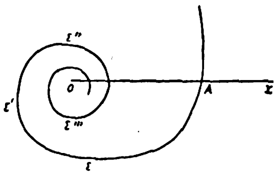


Ὑπὸ τοῦ Λεϊβνιτίου τῷ ἐτέθη πρὸς λύσιν πρόβλημά τι ἐπὶ τῶν ἰσοχρόνων καμπύλων, ὅπερ ὁ Μπερνουγὶ ἐπέλυσε πλήρως καὶ συνάμα προέβαλεν ὁ ἴδιος τὰ προβλήματα τῆς ἁλυσοειδοῦς καὶ τῶν ἰσοπεριμέτρων, ἐδημοσίευσε δὲ καὶ τὴν πρώτην ὁλοκλήρωσιν διαφορικῆς ἐξισώσεως.

Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἠσχολήθη μὲ τὸν λογισμὸν τῶν πιθανοτήτων, αἱ θαυμάσιαι δ' αὐτοῦ ἐργασίαι εἰς τὸν κλάδον τοῦτον ἐδημοσιεύθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του, ὑπὸ τοῦ ἀνεψιοῦ του Νικολάου. Μεταξὺ τῶν ἐργασιῶν αὐτῶν εἶναι καὶ τὸ περίφημον «θεώρημα Μπερνουγὶ» καθ' ὅ: Δυνάμεθα πάντοτε νὰ ὁρίσωμεν ἕνα ἀριθμὸν «δοκιμῶν-πειραμάτων» τοιοῦτον, ὥστε νὰ ὑπάρχῃ μεγάλη πιθανότης (προσεγγίζουσα τὴν βεβαιότητα ὅσον θέλομεν) ὅτι ὁ λόγος τοῦ πλήθους τῶν ἐπαναλήψεων τοῦ αὐτοῦ «φαινομένου-γεγονότος» πρὸς τὸν ἀριθμὸν τῶν πειραμάτων νὰ προσεγγίζῃ τὴν ἁπλῆν πιθανότητα τοῦ γεγονότος τούτου μὲ οἱανδήποτε προσέγγισιν. Ὑπὸ τὸ ὄνομά του φέρονται ἐπίσης ἐν τῇ μαθηματικῇ ἐπιστήμῃ καὶ ἀριθμοὶ Μπερνουγί, συναρτήσεις Μπερνουγὶ καὶ νόμοι Μπερνουγί, περὶ ὧν βλ. κατωτ.

—2) ***Ἰωάννης***, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 1691, εὑρισκόμενος εἰς Παρισίους, συνέθεσε, κατὰ παράκλησιν τοῦ περιφήμου Γάλλου μαθηματικοῦ μαρκησίου ντὲ λ' Ὀπιτάλ, τὰ μαθήματα αὐτοῦ «Διαφορικοῦ καὶ Ὁλοκληρωτικοῦ Λογισμοῦ». Τῷ 1695 ὠνομάσθη καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν εἰς Γκρονίγγην τῆς Ὁλλανδίας, ὁπότε προέτεινε τὸ περίφημον πρόβλημα τῆς βραχιστοχρόνου (βλ. *μεταβολῶν λογισμός*), ὁρίσας ἑξάμηνον προθεσμίαν διὰ τὴν λύσιν του, ἣν ἔδωκαν οἱ Λεϊβνίτιος, Νεύτων, Ἰάκωβος Μπερνουγὶ καὶ ὁ μαρκήσιος ντὲ λ' Ὀπιτάλ ἀλλ' ἡ λύσις ἣν ἔδωκεν ὁ Ἰωάννης Μπερνουγὶ κατέστησεν αὐτὸν περίφημον.

*Ἰωάννης Μπερνουγί.*

Τῷ 1697 ἀνέπτυξε τοὺς κανόνας τοῦ ἐκθετικοῦ ὑπολογισμοῦ καὶ τῆς διαφορίσεως καὶ ὁλοκληρώσεως τῶν ρητῶν συναρτήσεων. Ὠνομάσθη ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων, διεδέχθη δὲ τὸν ἀδελφόν του τῷ 1705 εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βασιλείας. Ὑπῆρξεν ἐπίσης μέλος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου, τῆς Ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως καὶ τοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Βολωνίας. Ὁ χαρακτήρ του ἔδιδεν ἀφορμὴν εἰς ζωηρὰς διαμάχας μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ ἰδίως μετὰ τοῦ Ἄγγλου μαθηματικοῦ Τέϋλορ καὶ ἄλλων, ἰδίως διὰ τὸ ζήτημα τῆς προτεραιότητος τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ διαφορικοῦ λογισμοῦ, ὃν εὗρον, ἀνεξαρτήτως ὁ εἷς τοῦ ἄλλου, ὁ Λεϊβνίτιος καὶ ὁ Νεύτων. Ἀπέθανε τῷ 1748.

—3) ***Νικόλαος***. Ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου (1687—1759). Ἐδίδαξε διαδοχικῶς τὰ μαθηματικὰ καὶ λογικὴν εἰς Πάδουαν, κατόπιν δὲ νομικὰ εἰς Βασιλείαν. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου, τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ τοῦ Ἰνστιτούτου Βολωνίας. Ἔλυσε πλῆθυν προβλημάτων, προταθέντων ὑπὸ τοῦ θείου του Ἰωάννου, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ θεωρία τῆς ὁλοκληρώσεως τῶν διαφορικῶν ἐξισώσεων, ἥτις εὑρίσκετο τότε εἰς τὰς ἀπαρχάς της.

—4) ***Νικόλαος***. Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 2), γεννηθεὶς εἰς Βασιλείαν τῷ 1695 καὶ ἀποθανὼν εἰς Πετρούπολιν τῷ 1726. Ἐκλήθη εἰς Πετρούπολιν τῷ 1725 ὡς καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν.

—5) ***Δανιήλ***. Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 2, γεννηθεὶς εἰς Γκρονίγγην τῷ 1700 καὶ ἀποθανὼν εἰς Βασιλείαν τῷ 1782. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἀλλ' ἡ μαθηματικὴ ἰδιοφυΐα του δὲν ἤργησε νὰ ἐκδηλωθῇ. Διὰ διαφόρων δημοσιεύσεων εἰς μαθηματικὰ περιοδικὰ ἀπέκτησε τοιαύτην φήμην, ὥστε νὰ τῷ προσφερθῇ, εἰς ἡλικίαν 24 ἐτῶν ἡ προεδρία μιᾶς Ἀκαδημίας, νεωστὶ τότε συσταθείσης εἰς Γένουαν· δὲν ἐδέχθη ὅμως τὴν θέσιν ταύτην καὶ ἀνεχώρησε τὸ ἑπόμενον ἔτος, μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Νικολάου (ὑπ' ἀρ. 4) διὰ Πετρούπολιν, ὅπου ἐδίδαξε μαθηματικὰ ἐπὶ ἑπτὰ ἔτη. Ἐκεῖ ἔγραψε τὸ περίφημον ἔργον του περὶ Ὑδροδυναμικῆς (Στρασβοῦργον 1738), ὅπερ ὑπῆρξεν ἡ πρώτη δόξα του.

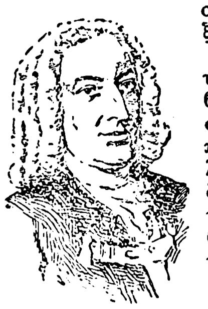

*Δανιὴλ Μπερνουγί.*

Ἐπανελθὼν εἰς Βασιλείαν τῷ 1732 ἐδίδαξεν ἀνατομίαν, βοτανικήν, φιλοσοφίαν καὶ φυσικήν, ἐγκαταλείψας τὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ ἕδραν του εἰς ἡλικίαν 77 ἐτῶν καὶ ἀφήσας διάδοχον ἐν τῇ θέσει του ταύτῃ τὸν ἀνεψιόν του Ἰάκωβον (ὑπ' ἀρ. 8). Ὑπῆρξεν ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων, μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου, τῆς Πετρουπόλεως καὶ τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου.

— 6) ***Ἰωάννης***. Τρίτος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 2), ὃν διεδέχθη εἰς τὴν ἕδραν τῶν μαθηματικῶν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βασιλείας, ἔνθα ἐγεννήθη καὶ ἀπέθανε (1710—1790). Διεκρίθη διὰ τῶν ἑξῆς ἀκαδημαϊκῶν ὑπομνημάτων του, τὰ ὁποῖα ἐβραβεύθησαν εἰς Παρισίους: «Περὶ τῆς διαδόσεως τοῦ φωτός», «Περὶ τοῦ μαγνήτου» καὶ ἄλλα. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου.

— 7) ***Ἰωάννης***. Υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 6), γεννηθεὶς εἰς Βασιλείαν τῷ 1744 καὶ ἀποθανὼν εἰς Βερολῖνον τῷ 1807. Ἐσπούδασε μαθηματικά, ἀστρονομίαν καὶ φιλοσοφίαν. Εἰς ἡλικίαν 19 ἐτῶν ἐκλήθη ὡς ἀστρονόμος εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Βερολίνου, ἀλλ' ἐγκατεστάθη ἐκεῖ μόλις τῷ 1779, μετὰ μακρὰ ἐπιστημονικὰ ταξίδια καθ' ὅλην τὴν Εὐρώπην. Ὑπῆρξε διευθυντὴς τῆς τάξεως τῶν μαθηματικῶν τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βερολίνου, βασιλικὸς ἀστρονόμος, μέλος τῶν Ἀκαδημιῶν τῆς Πετρουπόλεως καὶ τῆς Στοκχόλμης. Ἠσχολήθη ἰδίως εἰς τὴν ἀστρονομίαν, αἱ παρατηρήσεις του δ' εἰς ταύτην εἰς μέγαν ἀριθμὸν εὑρίσκονται δημοσιευμέναι εἰς τὰ ὑπομνήματα τῆς Ἀκαδημίας Βερολίνου. Ἐδημοσίευσε καὶ μίαν μετάφρασιν εἰς τὴν γαλλικὴν τῶν «Στοιχείων Ἀλγέβρας τοῦ Ὄϋλερ» (Euler).

— 8) ***Ἰάκωβος***. Δεύτερος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 6), γεννηθεὶς ἐν Βασιλείᾳ τῷ 1759 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1789. Εἰς ἡλικίαν 23 ἐτῶν ἐγκατεστάθη εἰς Πετρούπολιν, ὅπου ἐγένετο καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν καὶ ἐνυμφεύθη μίαν ἐγγόνην τοῦ Ὄϋλερ (Euler). Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως, τῆς Φυσικῆς ἑταιρείας τῆς Βασιλείας καὶ τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας τοῦ Τουρίνου, ἐδημοσίευσε δὲ ἀρκετὰ ὑπομνήματα.

Ἄλλα μέλη τῆς οἰκογενείας Μπερνουγί, ἐπιστήμονες μικροτέρας ἀξίας, ἦσαν οἱ ἑξῆς: *Ἱερώνυμος*, φυσιοδίφης, γεννηθεὶς τῷ 1745, *Χριστόφορος*, οἰκονομολόγος καὶ φυσιοδίφης, ἀνεψιὸς τοῦ Ἰωάννου (ὑπ' ἀριθ. 6), υἱὸς τοῦ Δανιήλ, γεννηθεὶς τῷ 1782, καὶ *Ἰωάννης-Ἰάκωβος*, ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1831. Ν. ΓΥΠΑΡΑΚΗΣ

— **Μπερνουγὶ** ***ἀριθμοὶ*** (Nombres de Bernoulli ou nombres Bernoulliens). Καλοῦνται οὕτω ρητοί τινες ἀριθμοί, χρησιμεύοντες ὡς συντελεσταὶ εἰς ἀναπτύγματα συναρτήσεων τῆς $e^x$ κατὰ τὰς ἀκεραίας δυνάμεις τοῦ ἀνεξαρτήτου x. Τοιοῦτοι εἶναι οἱ συντελεσταὶ εἰς τὸ ἀνάπτυγμα τῆς συναρτήσεως

$$\frac{x}{1-e^{-x}}$$

τὸ ὁποῖον εἶνε δυνατόν, ἐφ' ὅσον $|x| < 2\Pi$. Τὸ ἀνάπτυγμα τοῦτο δίδεται ὑπὸ τοῦ τύπου:

$$(1) \quad \frac{x}{1-e^{-x}} = 1 + \frac{x}{2} + 2x^2 \quad \Sigma \frac{1}{n^2(2\pi)^2} - 2x \quad \Sigma \frac{1}{n^4(2\pi)^4} \cdots\cdots$$

ἔνθα τὰ σύμβολα τοῦ ἀθροίσματος Σ ἀναφέρονται ἐπὶ τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν n (=1, 2, 3, 4,...).

Εἰς τὸν τύπον τοῦτον, ἐκτὸς τοῦ δευτέρου ὅρου τοῦ ἀναπτύγματος, ἐλλείπουσιν αἱ δυνάμεις τοῦ x μὲ περιττὸν ἐκθέτην. Διὰ τοῦτο ἐνδεικνύονται οἱ ἀριθμοὶ Μπερνουγὶ ἐνταῦθα μὲ ἄρτιον δείκτην ὡς ἑξῆς:

$$B_2 = 2\,\frac{1.2}{(2\pi)^2}\ \Sigma\ \frac{1}{n^2}$$

$$B_4 = 2\,\frac{1.2.3.4}{(2\pi)^4}\ \Sigma\ \frac{1}{n^4}$$

$$(2) \qquad \cdots\cdots\cdots\cdots$$

$$B_2\,p = 2\ \frac{1.2.3....2p}{(2\pi)^2 p}\ \Sigma\ \frac{1}{n^2 p}$$

Εἰς τοὺς τύπους τούτους (2) τῶν B (Μπερνουγὶ) ἀριθμῶν λαμβάνονται οἱ συντελεσταὶ τοῦ ἀναπτύγματος (1) πολλαπλασιασμένοι ἐπὶ τὰ γινόμενα τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν:

$$1.2.3\ldots 2p$$

ἐκδηλοῦται δὲ δι' αὐτῶν ἡ ἀναλυτικὴ φύσις τῶν ἀριθμῶν B, χωρὶς ὅμως νὰ δυνάμεθα εὐκόλως νὰ εὕρωμεν καὶ τὰς τιμὰς αὐτῶν. Καὶ μάλιστα ἐκ τῶν τύπων (2) οἱ ἀριθμοὶ B δὲν φαίνονται ὅτι εἶναι ρητοί, ἐνῷ εἶναι τοιοῦτοι.

Digitized by Google

Πρὸς ὑπολογισμὸν τῶν Β γράφομεν τὸν τύπον (1) ὡς ἑξῆς:

$$\frac{x}{1-e^{-x}}=1+\frac{x}{2}+\frac{B_2}{1.2}x^2-\frac{B_4}{1.2.3.4}x^4+\ldots$$

καὶ συνδυάζομεν μετ' αὐτοῦ τόν:

$$\frac{1-e^x}{x}=1-\frac{x}{1.2}+\frac{x^2}{1.2.3}-\frac{x^3}{1.2.3.4}\ldots$$

ἐξ ὧν (διὰ πολλαπλασιασμοῦ κατὰ μέλη τῶν ἰσοτήτων, ὅτε εἰς τὸ α΄ μέλος προκύπτει ἡ μονάς, καὶ ἐξισώσεως ἕνεκεν τούτου τῶν συντελεστῶν τῶν δυνάμεων τοῦ x εἰς τὸ β΄ μέλος πρὸς τὸ 0) εὑρίσκομεν:

$$\frac{B_2}{1.2}-\frac{1}{2}\frac{1}{1.2}+\frac{1}{1.2.3}=0$$

$$-\frac{B_4}{1.2.3.4}+\frac{B_2}{1.2}\frac{1}{1.2.3}-\frac{1}{2}\frac{1}{1.2.3.4}+\frac{1}{1.2.3.4.5}=0$$

. . . . . . . . . . . . . . . .

καὶ οὕτω καθεξῆς ἐκ τῶν σχέσεων τούτων εὑρίσκομεν τὰς τιμὰς τῶν Β

$$B_2=\frac{1}{6},\ B_4=\frac{1}{30},\ B_6=\frac{1}{42},\ B_8=\frac{1}{30}.$$

Σημειωτέον ὅτι ἀναλυτικαὶ ἐκφράσεις τῶν ἀριθμῶν Μπερνουγὶ ὑπάρχουσι πλεῖσται ὅσαι, ἐκτὸς τῶν δοθεισῶν διὰ τῶν τύπων (2). Ν. Γ.

— **Μπερνουγὶ** ***νόμοι*** (Lois de Bernnoulli). Οὗτοι εἶναι σχετικοὶ πρὸς τὴν κίνησιν τοῦ ἀέρος εἰς ἠχητικοὺς σωλῆνας, κλειστοὺς καὶ ἀνοικτούς. Ν. Γ.

— **Μπερνουγὶ** ***συναρτήσεις*** (Fonctions de Bernoulli). Αὗται εἶναι ἀκέραια πολυώνυμα ἄνευ σταθεροῦ ὅρου, τῶν ὁποίων οἱ συντελεσταὶ συνδέονται μετὰ τῶν *ἀριθμῶν Μπερνουγὶ* καὶ τὰ ὁποῖα δίδουσι τὸ ἄθροισμα τῶν ν πρώτων φυσικῶν ἀριθμῶν, αὐτῶν τε καὶ τῶν ὁμοίων δυνάμεών των, δηλαδὴ τὰ ἀθροίσματα:

$$\Sigma\nu=1+2+3\ \ldots\ldots+\nu$$
$$\Sigma\nu^2=1^2+2^2+3^2+\ \ldots\ldots+\nu^2$$
$$\Sigma\nu^3=1^3+2^3+3^3+\ \ldots\ldots+\nu^3$$
. . . . . . . . . . . . . . . . . .
$$\Sigma\nu^k=1^k+2^k+3^k\ \ldots\ldots+\nu^k$$

Σημειοῦμεν ἰδιαιτέρως τὰ ἀθροίσματα:

$$\Sigma\nu=\frac{\nu^2}{2}-\frac{\nu}{2}$$

$$\Sigma\nu^2=\frac{\nu^3}{3}-\frac{\nu^2}{2}+\frac{\nu}{6}$$

$$\Sigma\nu^3=\frac{\nu^4}{4}-\frac{\nu^3}{2}+\frac{\nu^2}{4}=\Sigma\nu^2$$

παρατηροῦντες ὅτι τὸ ἄθροισμα $\Sigma\nu^k$ εἶναι ἀκέραιον πολυώνυμον τοῦ ν, βαθμοῦ (K+1) καὶ ὅτι ὅταν γνωρίζωμεν $\Sigma\nu^{k-1}$ εὐκόλως εὑρίσκομεν τὸ $\Sigma\nu^k$. Ν. Γ.

**Μπέρνς** (Burns), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1858. Κατ' ἀρχὰς ἦτο ἁπλοῦς ἐργάτης, κατόπιν δὲ ἀφιερώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας καὶ τῆς κοινωνιολογίας καὶ ἐγένετο ἐνθουσιώδης ὑπέρμαχος τῶν σοσιαλιστικῶν ἰδεῶν. Τῷ 1884 ἐγένετο μέλος τῆς σοσιαλδημοκρατικῆς ἑνώσεως, ἀπὸ δὲ τοῦ ἔτους 1892 ἐξελέγη βουλευτὴς ὡς ἀνεξάρτητος ριζοσπάστης. Τῷ 1914 ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου, ἀλλὰ θελήσας νὰ ἐμποδίσῃ τὴν πατρίδα του ὅπως συμμετάσχῃ εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον καὶ μὴ δυνηθεὶς νὰ τὸ κατορθώσῃ, ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του. Α. Δ.

— **Μπέρνς** (Burns), ***Ροβέρτος***. Μέγας Σκῶτος ποιητὴς (1759—1796). Διῆλθε τὴν παιδικήν του ἡλικίαν ἐντὸς ἀθλίας καλύβης ἐν Ντορχόλμ παρὰ τὸ Ἄϋρ. Ἐν τούτοις κατώρθωσε νὰ ἐκμάθῃ καλῶς τὴν μητρικήν του γλῶσσαν καὶ τὴν γαλλικὴν καὶ νὰ διδαχθῇ ἀριθμητικὴν καὶ ἄλγεβραν. Ἡ ἀνάγνωσις τοῦ Ἄντισον, τοῦ Σαίξπηρ, τοῦ Πώπ, τοῦ Ἄλλαν Ραίμσεϋ, ἰδίᾳ δὲ οἱ ρωμαντικοὶ θρῦλοι καὶ τὰ ᾄσματα τῆς πατρίδος του, ἅτινα ἤκουεν ᾀδόμενα ὑπὸ τῆς μητρός του, ἀφύπνισαν πρωΐμως τὸ ἐν αὐτῷ ὑπολανθάνον ποιητικὸν δαιμόνιον. Ὄπισθεν τοῦ ἀρότρου κατὰ τὴν ὥραν τῆς ἐργασίας ἐσχεδίαζε ποιήματα εἰς τὴν γλῶσσαν τοῦ λαοῦ. Ἦτο μόλις δέκα ἑπτὰ ἐτῶν, ὅτε ἔγραψε τὸ πρῶτον ποίημά του «Handsome Nell», ὅπερ ἀπεκάλυψεν εὐθὺς ἀμέσως τὴν ποιητικὴν μεγαλοφυΐαν του. Τὰ πάντα προοιωνίζον λαμπρὰν λογοτεχνικὴν σταδιοδρομίαν, ἀλλ' ὁ Μπέρνς περιεπλάκη εἰς τὰ δίκτυα ἀθεμίτων ἐρώτων καὶ κακῶν συναναστροφῶν. Παρεπλάνησε τὴν Ζὰν Ἄρμουρ, θυγατέρα σιδηρουργοῦ, ὅστις καὶ ἐπέδωσε μήνυσιν ἐναντίον του. Τῷ 1781 ἀπέτυχεν οἰκτρῶς εἴς τινα ἀγροτικὴν ἐπιχείρησιν καὶ συνῆψε μεγάλα χρέη, τὰ ὁποῖα ὀλίγου δεῖν τὸν ὡδήγουν εἰς τὴν φυλακήν. Ἀπεφάσισεν ὅθεν νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Σκωτίαν. Λαβὼν θέσιν ἐπιστάτου φυτειῶν ἐν τῇ Ἰαμαϊκῇ καὶ μὴ δυνάμενος νὰ ἐξεύρῃ τὰ ἔξοδα τοῦ ταξιδίου του, ἐδημοσίευσε πρὸς τοῦτο τῷ 1786 ἐν Κλίμαρνοχ ποιητικὸν ἀπάνθισμα, ὅπερ ἐνεποίησε κατάπληξιν. Καθ' ὃν δὲ χρόνον ἐπρόκειτο ν' ἀναχωρήσῃ διὰ τὴν Ἰαμαϊκήν, ὁ δόκτωρ Μπλάκλοκ, ἐνθουσιασθεὶς ἐκ τῆς ἀναγνώσεως τῶν στίχων του, ἐκάλεσε τὸν Μπέρνς εἰς Ἐδιμβοῦργον καὶ παρέσχεν εἰς αὐτὸν τὰ μέσα δευτέρας ἐκδόσεως τοῦ ποιητικοῦ ἀπανθίσματός του, εἰς ὃ προσετέθησαν καὶ ἄλλα ποιήματα, ἰδίᾳ τὸ πολυθρύλητον «Tam o' Shanter». Ὁ Μπέρνς διέμεινεν ἓν περίπου ἔτος ἐν Ἐδιμβούργῳ, ὅπου συνεδέθη μετὰ τοῦ Οὐάλτερ Σκὼττ καὶ ἀπέκτησε πολλοὺς θαυμαστὰς καὶ φίλους. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν ἰδιαιτέραν πατρίδα του, ἐνομιμοποίησε τὰς ἐρωτικὰς σχέσεις του μετὰ τῆς Ζὰν Ἄρμουρ, τὴν ὁποίαν συνεζεύχθη. Τῷ 1788 διωρίσθη οἰκονομικὸς ὑπάλληλος ἐν Ντουμφράϊς. Ἐνταῦθα ἔζη μετὰ τῆς οἰκογενείας του ἐκ τῶν πενιχρῶν ἀποδοχῶν του καὶ ἐκ ριζοσπαστικῶν ἄρθρων, ἅτινα ἐδημοσίευεν εἰς ἡμερήσια πολιτικὰ φύλλα τῆς πατρίδος του. Βέβαιος ὅτι ἦτο ἀδύνατος ἡ προαγωγή του, διότι ὁ διὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ἐνθουσιασμός του εἶχε καταστήσει αὐτὸν ὕποπτον, καὶ συνεπῶς οὐδέποτε θὰ ἔβλεπε βελτιουμένην τὴν θέσιν του, παρεδόθη εἰς τὴν μέθην. Ἐπὶ πλέον ἡ ὑπερκόπωσις, ἐξ ἧς προσεβλήθη συνεπείᾳ τῆς ἐντατικῆς καὶ ἀδιακόπου διανοητικῆς ἐργασίας του, καὶ αἱ καταχρήσεις τῆς πρώτης αὐτοῦ νεότητος, ὑπέσκαψαν τὴν ὑγείαν του καὶ τὸν ὡδήγησαν ἐν νεαρωτάτῃ ἡλικίᾳ εἰς τὸν τάφον. Κατέλιπε τὴν σύζυγόν του καὶ τὰ τέσσαρα τέκνα του εἰς ἐσχάτην ἔνδειαν.

Ὁ Μπέρνς ἔγραψε: «The Vision», «The Cottars Saturday Night», «To Mary in Heaven», «The Holy Fair», The Address to the De' il», «The Petition of Bruar Water», «Scots wha hae wi Wallace bled», «John Barleycorn» κ. ἄ. Τὰ πλεῖστα τῶν ποιημάτων του εἶναι ἀληθινὰ ἀριστουργήματα. Τὸ αὐθόρμητον καὶ ἀκατάσχετον πάθος, τὸ βαθύτατον καὶ εἰλικρινέστατον συναίσθημα, ἡ καταπληκτικὴ εὐστροφία τῆς γλώσσης, ἡ ἁδρότης τοῦ ὕφους, ἡ ἀνεπιτήδευτος ἀρχιτεκτονικὴ τῶν στίχων, τὸ ἀπαράμιλλον κάλλος τῶν εἰκόνων, καθιστῶσι τὸν Μπέρνς ἕνα τῶν μεγαλυτέρων λυρικῶν τοῦ κόσμου. Ἡ λυρικὴ ποίησίς του εἶναι τὸ ᾆσμα τῆς λαϊκῆς ψυχῆς, ὁ ὕμνος τῆς ἐλευθερίας, ἡ ραψῳδία τοῦ ἔρωτος. Ὁ Μπέρνς, λέγει ὁ Μπίγκλερ, εἶναι φίλος τῶν καταιγίδων, τῶν κορυδαλλῶν, τῶν ἀγρίων ἀνθέων καὶ τῶν ἁπλοϊκῶν ψυχῶν. Εἰς τὸν Μπέρνς μνημεῖα ἠγέρθησαν ἐν τῷ κοιμητηρίῳ τοῦ Ντόμφρις, ἐν τῷ κοινοβίῳ τοῦ Οὐεστμίνστερ, ἐν Λονδίνῳ, καὶ ἐν Ἰρβῷ τῆς Σκωτίας.

Ροβέρτος Μπέρνς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Augellier*, Robert Burns, sa vie et ses oeuvres (Παρίσιοι 1893) —*Hartung*, Ueber R. Burns poetische Episteln (Βιττστὸκ 1881).— *James Mc Kie*, Bibliography of Burns (Κίλμαρνοκ 1881). Λ. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

**Μπερνστάϊν** (Bernstein), ***Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Βερολίνῳ τῷ 1850. Νεώτατος ἀνεμείχθη εἰς τὸ σοσιαλιστικὸν κίνημα τῆς πατρίδος του καὶ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἀντιπροσώπων εἰς τὸ συνέδριον τοῦ Γκόλα, τὸ ὁποῖον ἀπέληξεν εἰς τὴν ἑνοποίησιν τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Τῷ 1878 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ ὀργάνου τοῦ κόμματος «Sozialdemokrat» τὸ ὁποῖον ἐξεδίδετο ἐν Ζυρίχῃ, λόγῳ δὲ τῆς ἀρθρογραφίας του ἀπηλάθη ἐξ Ἑλβετίας καὶ Γερμανίας καὶ κατέφυγεν εἰς Ἀγγλίαν (1882), ὅπου διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1883 μέχρι τοῦ 1900 τὴν «New Times». Τῷ 1901 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν πατρίδα του καὶ τῷ 1902 ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Ράϊχσταγ. Ἀποτυχὼν εἰς τὴν βουλευτικὴν περίοδον 1907—1911 ἐπανεξελέγη τῷ 1912 καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1918. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1918 διετέλεσεν ὑφυπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν.

Ἀπὸ τοῦ 1898 ὁ Μπερνστάϊν ἀντιπροσωπεύει νέαν τάσιν ἐντὸς τῶν κόλπων τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κινήματος, γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα *ρεβιζιονισμὸς* (ἀναθεωρητισμός, révisionisme) καὶ συνισταμένην εἰς ἀπόπειραν ἀναθεωρήσεως τῶν θεμελιωδῶν ἀρχῶν τοῦ μαρξισμοῦ. Τὴν πρώτην κρούσιν κατὰ τοῦ μαρξισμοῦ ἔδωκεν ὁ Μπερνστάϊν διὰ μιᾶς ἐπιστολῆς, ἣν ἀπηύθυνε πρὸς τὸ ἐν Στουτγάρδῃ συγκληθὲν κατὰ Ὀκτώβριον τοῦ 1898 συνέδριον τοῦ γερμανικοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Κυρίως ὅμως αἱ ἀναθεωρητικαὶ τοῦ μαρξισμοῦ ἀπόψεις του ἐμπεριέχονται εἰς τὸ ἔργον του «Die Voraussetzungen des Sozialismus und die Aufgaben der Sozialdemokratie» (1899). Ὁ ρεβιζιονισμὸς τοῦ Μπερνστάϊν συνίσταται εἰς τὴν ἀπόκρουσιν δύο κυρίως θεμελιωδῶν ἀπόψεων τοῦ μαρξισμοῦ: τῆς ἀπόψεως ὅτι βασικὸς νόμος τοῦ κεφαλαίου εἶναι ἡ συγκέντρωσις καὶ συγκεντροποίησίς του καὶ τῆς ἀπόψεως ὅτι ὑπὸ τὸ κεφαλαιοκρατικὸν καθεστὼς ἡ ἐργατικὴ τάξις ὁλονὲν βαίνει ἀπαθλιουμένη οἰκονομικῶς καὶ ἠθικῶς· Συνεπείᾳ τῆς ἀναθεωρήσεως ταύτης τοῦ μαρξισμοῦ, ἐπιβάλλεται καὶ μεταβολὴ τῆς πολιτικῆς τακτικῆς, ἡ ὁποία πρέπει νὰ ἐπιδιώκῃ τὴν ἐξελικτικὴν βελτίωσιν τῆς θέσεως τοῦ ἐργάτου καὶ τὴν ἐφαρμογὴν τοῦ σοσιαλιστικοῦ προγράμματος ἐντὸς δημοκρατικοῦ πλαισίου.

Αἱ ἀπόψεις αὗται τοῦ Μπερνστάϊν ἤγειραν θύελλαν συζητήσεων ἐντὸς τῶν κόλπων τῆς γερμανικῆς σοσιαλδημοκρατίας. Πρὸς λύσιν τοῦ ζητήματος συνεκροτήθησαν πολλὰ ἐθνικὰ συνέδρια ἐν Γερμανίᾳ, ὧν σπουδαιότερον τὸ τοῦ 1903 ἐν Δρέσδῃ καὶ τὸ διεθνὲς συνέδριον τοῦ Ἄμστερνταμ τῷ 1909, εἰς τὸ ὁποῖον ἀπεκηρύχθη ὁ ρεβιζιονισμός, πρωταγωνιστοῦντος τοῦ Κ. Kautsky. Σπουδαιότερα ἔργα τοῦ Μπερνστάϊν εἶναι: «Gesellschaftliches und Privatagentum» (1891), «Die Kommunistischen und Demokratisch-Sozialistischen Bewegungen in England während des 17 Jahrhunderts» (1895), «Die Voraussetzungen des Sozialismus und die Aufgaben der Sozialdemokratie» (1899), «Zur Geschichte und Theorie des Sozialismus» (1900), «Wie ist wissenschaftl. Sozialismus möglich?» (1901), «Geschichte der Berliner Arbeiterbewegung» (1907), «D. hent. Sozialdemokratie i. Theorie und Praxis», «Volkerrecht und Völkerpolitik» (1919), «Wirtschaftswesen und Wirtschaftswerden» (1920). Εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἔχει μεταφρασθῆ τὸ ἔργον του «*Ἀπεργία*». Ἀπὸ τοῦ 1901 ἐξέδιδε τὴν μηνιαίαν ἐπιθεώρησιν «Dokumente des Sozialismus», ὅπου περιελήφθη καὶ ἡ μεταξὺ Marx καὶ Engels ἀλληλογραφία. —Ω.

— **Μπερνστάϊν** (Bernstein), ***Ἑρρῖκος-Κάρολος-Λέων***. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1876. Τὴν πρώτην ἐμφάνισίν του ἔκαμεν ἐν τῷ θεάτρῳ «Ἀντουάν» τῷ 1900 διὰ τοῦ τριπράκτου ἔργου του «Le marché», τὸ ὁποῖον ἔσχεν ἀρκετὴν ἐπιτυχίαν. Κατόπιν ἔγραψε τὰ ἔργα: «Le détour», «Joujou», «Frère Jacques» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ P. Veber, «*Μάνδρα*», «*Καταιγίς*», «*Κλέπτης*», «*Ἰσραήλ*», «*Σὰν πεθάνω*» καὶ ἄλλα. Τὰ τρία τελευταῖα ἐπαίχθησαν καὶ ἀπὸ τῆς ἑλληνικῆς σκηνῆς. Ν. Ι. Λ.

**Μπέρνσταμμ** (Bernstamm), ***Λεοπόλδος***. Σύγχρονος Ρῶσος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Μερσιὲ ἐν Παρισίοις καὶ εἰς τὴν ἐν Πετρουπόλει Ἀκαδημίαν τῶν καλῶν τεχνῶν. Ἐξεπόνησεν ἰδίᾳ προτομὰς (Σερέ, Ροντέν, Ντεσανέλ, Μποννά), θαυμαζομένας διὰ τὴν δύναμιν τῆς ἐκφράσεώς των. Ι. Μ. Π.

**Μπέρνστορφ** (Bernstorff), ***Ἄλμπρεχτ, κόμης φὸν —***. Πρῶσσος διπλωμάτης καὶ πολιτικὸς (1809—1873). Ἐσπούδασεν ἐν Γοττίγγῃ καὶ Βερολίνῳ καὶ τῷ 1830 εἰσῆλθεν εἰς τὴν διπλωματικὴν ὑπηρεσίαν, ἀντιπροσωπεύσας τὴν Πρωσσίαν ἐν Μονάχῳ καὶ Βιέννῃ, ὁπόθεν, ἀντιταχθεὶς κατὰ τῆς πολιτικῆς τοῦ πρίγκιπος Σβάρτσενμπεργκ, ἀνεκλήθη τῷ 1851. Ἀπεστάλη κατόπιν ὡς πρεσβευτὴς εἰς Νεάπολιν καὶ Λονδῖνον, διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν (1861—1862) καὶ ἀντεπροσώπευσε, μετὰ τὴν ἐπάνοδόν του εἰς τὴν ἐν Λονδίνῳ θέσιν του, τὴν Πρωσσίαν κατὰ τὴν συνδιάσκεψιν τῆς εἰρήνης τοῦ 1864. Τῷ 1906 ἐδημοσιεύθη τὸ ἔργον του: «Ἐν τῷ ἀγῶνι διὰ τὴν τιμὴν τῆς Πρωσσίας».

— **Μπέρνστορφ** (Bernstorff), ***Ἀνδρέας-Πέτρος, κόμης —***. Δανὸς πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἀννοβέρῳ τῷ 1735 καὶ ἀποθανὼν ἐν Κοπεγχάγῃ τῷ 1797. Τυχὼν ἐκτάκτου μορφώσεως, εἰσῆλθεν εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν τῆς Δανίας. Ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, ἀπὸ τοῦ 1773, ἔφερεν εἰς πέρας τὰς διαπραγματεύσεις μετὰ τῆς Ρωσίας ἐπὶ τοῦ ζητήματος τοῦ Ὀλστάϊν. Λόγῳ τῶν προσπαθειῶν του πρὸς σύναψιν φιλικῶν σχέσεων μετὰ τῆς Ἀγγλίας, προὐκάλεσε τὴν δυσαρέσκειαν τῆς Ρωσίας, τῆς Πρωσσίας καὶ τῆς ὑπὸ τὸν Γκούλντμπεργκ αὐλικῆς μερίδος καὶ ἐξηναγκάσθη εἰς παραίτησιν. Κληθεὶς ἐκ νέου εἰς τὴν ἀρχήν, ὑπῆρξε μέχρι τοῦ θανάτου του κύριος παράγων τῆς ἐσωτερικῆς καὶ ἐξωτερικῆς πολιτικῆς τῆς χώρας του. Ἐπήνεγκε πολυαρίθμους μεταρρυθμίσεις εἰς τὴν διοίκησιν, τὸ ἐμπόριον, τὴν ναυτιλίαν, τὴν βιομηχανίαν, τὰ δημόσια οἰκονομικὰ καὶ τὸν στρατόν, ἀναδειχθεὶς εἷς τῶν μεγαλυτέρων πολιτικῶν τῆς Δανίας. Παρὰ τῷ λαῷ ἀπέλαυεν ἐξαιρετικῆς δημοτικότητος, ἕνεκα τῆς καταργήσεως τοῦ ἐμπορίου τῶν δούλων, τῶν φιλελευθέρων φρονημάτων του, τῶν ἀγώνων του ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τοῦ τύπου καὶ τοῦ ὑποδειγματικοῦ ἰδιωτικοῦ του βίου.

— **Μπέρνστορφ** (Bernstorff), ***Ἰωάννης-Ἑρρῖκος, κόμης φὸν —***. Γερμανὸς διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1862 ἐν Λονδίνῳ. Εἰσελθὼν ἀπὸ τοῦ 1889 εἰς τὸ διπλωματικὸν σῶμα, διετέλεσε σύμβουλος τῆς ἐν Λονδίνῳ πρεσβείας, γενικὸς πρόξενος ἐν Καΐρῳ, πρεσβευτὴς ἐν Βάσιγκτων (1908—1917) καὶ κατόπιν μέχρι τέλους τοῦ 1918 ἐν Κωνσταντινουπόλει. Ὁ Μπέρνστορφ ἠγωνίσθη ὑπὲρ τῆς συνεννοήσεως μετὰ τῆς Ἀμερικῆς διὰ τὸ ζήτημα τοῦ ὑποβρυχίου πολέμου καὶ τῆς διατηρήσεως τῆς εἰρήνης

Digitized by Google

μετ' αὐτῆς. Τῷ 1921 ἐξελέγη ὡς δημοκρατικὸν μέλος τοῦ Ράϊχσταγ. Ὁ Μπέρνστορφ εἶναι γνωστὸς καὶ διὰ τοὺς ὑπὲρ τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν καὶ τῆς παγκοσμίου εἰρήνης ἀγῶνάς του. Ἔγραψε: «Γερμανία καὶ Ἀμερική. Ἀναμνήσεις ἐκ τοῦ πενταετοῦς πολέμου» (1920).

— **Μπέρνστορφ** (Bernstorff), ***Ἰωάννης-Χάρτβιγκ-Ἐρνέστος, κόμις*** —. Δανὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1712 ἐν Ἁμβούργῳ. Διετέλεσε πρέσβυς ἐν Ρέγκενσμπουργκ καὶ Παρισίοις καὶ ἀπὸ τοῦ 1751 ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Ἑπταετοῦς πολέμου, παρὰ τὴν προσωπικήν του ἀντιπάθειαν πρὸς τὸν Φρειδερῖκον τὸν Μέγαν, ἐτήρησεν αὐστηρὰν οὐδετερότητα καὶ κατώρθωσε νὰ προπαρασκευάσῃ τὴν διὰ συμβιβασμοῦ εὐνοϊκὴν λύσιν τῆς μετὰ τῆς Ρωσίας διαφορᾶς ἐπὶ τοῦ ζητήματος τοῦ Ὁλστάϊν. Ἡ ἐν τῷ ἐσωτερικῷ δρᾶσίς του ἐστράφη κυρίως εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἐμπορίου καὶ τῆς βιομηχανίας καὶ εἰς τὴν βελτίωσιν τῆς θέσεως τῶν ἀγροτικῶν πληθυσμῶν.

— **Μπέρνστορφ** (Bernstorff), ***Χριστιανὸς-Γκύντερ, κόμις*** —. Δανὸς πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Κοπεγχάγῃ τῷ 1769 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βερολίνῳ τῷ 1835. Υἱὸς τοῦ Ἀνδρέου Μπέρνστορφ, διετέλεσε πρεσβευτὴς ἐν Βερολίνῳ (1789—1794) καὶ κατόπιν ἐν Στοκχόλμῃ, τῷ δὲ 1897 ἐκλήθη εἰς τὴν ἀρχὴν πρὸς ἀντικατάστασιν τοῦ ἀποθανόντος πατρός του. Ἡ ἐξωτερικὴ πολιτική, τὴν ὁποίαν ἠκολούθησε κατὰ τὸ 1801 καὶ 1807, ὑπῆρξε, κατά τινας ἱστορικούς, ὀλεθρία διὰ τὴν πατρίδα του. Παραιτηθεὶς τῷ 1810, διετέλεσε κατόπιν πρεσβευτὴς ἐν Βιέννῃ (1811—1816) καὶ ἀπὸ τοῦ 1816 ἐν Βερολίνῳ. Τῷ 1818 ἐδέχθη ν' ἀναλάβῃ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Πρωσσίας, ἐργασθεὶς ἐνθέρμως ὑπὲρ τῆς Ἱερᾶς Συμμαχίας. Τῷ 1832 ἀπεχώρησεν ἐκ τῆς ἀρχῆς. Γ. Ε. Κ.

**Μπὲρντ** (Byrd, ἢ Bird, ἢ Byred), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος ἐκκλησιαστικὸς συνθέτης (1543—1623). Μεστὸς θρησκευτικοῦ αἰσθήματος καὶ κάτοχος τῆς αὐστηρᾶς ἀντιστικτικῆς τεχνοτροπίας, ἐπωνομάσθη ὁ Παλεστρίνα τῆς Ἀγγλίας. Ὁ Μπὲρντ εἶναι ἐκ τῶν πρώτων ἀσχοληθέντων μὲ τὸν τύπον τῆς *παραλλαγῆς*. Συνέθεσε: «Cantiones Sacrae» πεντάφωνοι (1575), «Psalms, Sonnets and songs 3—6 v.» (1588), «Songs of sundrie nature 3—6 v.» (1589), «Gradualia ac sacrae cantiones 3—6 v.» (1607), τρεῖς λειτουργίαι, 40 κανόνες (μετὰ τοῦ Φεραμπόσκο), τεμάχια διὰ κλαβικύμβαλον κ. ἄ. Γ. Σ.

— **Μπὲρντ** (Bird), ***Ἐδουάρδος.*** Ἄγγλος ζωγράφος (1762—1819). Ἤρχισε τὸ καλλιτεχνικόν του στάδιον ὡς διακοσμητὴς φαγεντιανῶν κομψοτεχνημάτων, βραδύτερον δ' ἐγκατεστάθη ἐν Μπρίστολ ὡς διδάσκαλος τοῦ σχεδίου. Τῷ 1815 ἐξελέγη μέλος τῆς Λονδινείου βασιλικῆς Ἀκαδημίας. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν μικρῶν σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου. Τὰ σημαντικώτερα τῶν ἔργων του ἀπόκεινται ἐν τῇ Ἐθνικῇ πινακοθήκῃ τοῦ Λονδίνου. Ι. Μ. Π.

— **Μπὲρντ** (Byrd), ***Ριχάρδος Ἔβελιν.*** Ἀμερικανὸς ναυτικὸς καὶ ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1888. Ἀπὸ μικρᾶς ἡλικίας εἶχεν ἐπιδοθῇ εἰς τὰ ταξίδια, ἐκτελέσας τὸν γῦρον τοῦ κόσμου δωδεκαετὴς μόλις. Τῷ 1904—1907 ἐφοίτησεν εἰς τὸ στρατιωτικὸν ἰνστιτοῦτον τῆς Βιργινίας, τῷ 1907—1908 εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βιργινίας καὶ τῷ 1908 εἰσῆλθεν εἰς τὴν ναυτικὴν Ἀκαδημίαν, ὁπόθεν ἐξῆλθε τῷ 1912 ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν ἐπὶ πολεμικῶν πλοίων, τὰ ὁποῖα ἐφρούρουν τὰ καναδικὰ ὕδατα, καὶ κατόπιν ἀνέλαβε τὴν ἵδρυσιν καὶ τὴν ὀργάνωσιν τοῦ ναυτικοῦ ἀεροπορικοῦ σταθμοῦ τοῦ Βορείου Σίδνεϋ καὶ τοῦ Χάλιφαξ. Τῷ 1918 προήχθη εἰς ἀνθυποπλοίαρχον καὶ τῷ 1922 εἰς ὑποπλοίαρχον. Τῷ 1925 ἔλαβε μέρος ὡς κυβερνήτης τοῦ ἀεροπλάνου τῆς ἀεροπορικῆς ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς τοῦ Μακμίλλαν εἰς τὴν Γροιλανδίαν, ὑπὸ τὴν αἰγίδα τῆς Ἐθνικῆς γεωγραφικῆς ἑταιρείας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. Ἡ πεῖρα, τὴν ὁποίαν ἀπέκτησε κατὰ τὴν πτῆσιν ταύτην, ἔπεισεν αὐτὸν ὅτι ἦτο δυνατὴ ἡ πτῆσις δι' ἀεροπλάνου εἰς τὸν Β. Πόλον, ἐὰν αὕτη ἐξετελεῖτο κατὰ τὸν μῆνα Μάϊον. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του ἐπέβλεψεν εἰς τὴν κατασκευὴν ἰδιαιτέρου μονοπλάνου τύπου Ψόκκερ μὲ τρεῖς κινητῆρας Ράϊτ καὶ ἀναχωρήσας ἐκ Νέας Ὑόρκης τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1926 ἔφθασεν εἰς τὴν Σπιτσβέργην ἄνευ ἐνδιαμέσου σταθμοῦ. Ἐκεῖθεν, συνοδευόμενος μόνον ὑπὸ τοῦ ὁδηγοῦ του Φλόϋντ Μπέννετ, ἀνεχώρησε τὴν 12 καὶ 50′ μ. μ. τῆς 9 Μαΐου 1926 πρὸς ἐπίτευξιν δύο ἀντικειμενικῶν σκοπῶν: ἀφ' ἑνὸς μὲν νὰ φθάσῃ εἰς τὸν Πόλον (ὁ ὁποῖος εὑρίσκετο εἰς ἀπόστασιν 680 μιλλίων) καὶ νὰ ἐπιστρέψῃ, καὶ ἀφ' ἑτέρου νὰ πετάξῃ ἄνωθεν τῆς γῆς τοῦ Πῆρυ. Πετάξας κατ' εὐθεῖαν γραμμὴν ἀπὸ τὸν Κίνγκς Μπαίυ τῆς νησῖδος τοῦ Ἄμστερνταμ, ἔφθασεν εἰς τὸν πόλον καὶ περιῆλθεν ἐπ' αὐτοῦ πολλάκις, ἐπαληθεύσας τὰς παρατηρήσεις τὰς ὁποίας εἶχε κάμει ὁ Πῆρυ τῷ 1909 καὶ ἐπιστρέψας εἰς τὸ Βερλέγκεν Χοὺκ ἐπὶ τῆς Νιοῦ Φρίζλαντ περὶ ὥραν 4 καὶ 20′ μ. μ. Διήνυσεν ἐν ὅλῳ 1600 μίλλια εἰς 15 ½ ὥρας. Βραδύτερον ἐπεχείρησε νὰ πετάξῃ ἀπὸ Ἀμερικῆς εἰς Εὐρώπην καὶ ἀναχωρήσας τὴν 29 Ἰουνίου ἔφθασε τὴν 1 Ἰουλίου 1927 ἀπὸ Νέας Ὑόρκης εἰς τὴν πόλιν Βὲρ-σὺρ-Μὲρ τῆς Γαλλίας μετὰ 4 ἐπιβατῶν, διανύσας ἀπόστασιν 3.744 μιλλίων εἰς 46 ὥρας καὶ 6′ ὑπὸ δραματικωτάτας περιστάσεις. Διότι, μόλις προσήγγισεν εἰς τὴν εὐρωπαϊκὴν ἀκτήν, συνήντησε πυκνὴν ὁμίχλην καὶ βροχήν, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας, μὴ δυνάμενος νὰ προσανατολισθῇ, περιεπλανήθη ἐπὶ τέσσαρας ὥρας ἐντὸς τοῦ γαλλικοῦ ἐδάφους καὶ ἀπεφάσισε τέλος νὰ κατέλθῃ πλησίον τῆς ἀκτῆς, ἀφοῦ εἶχε διανύσει ἐν ὅλῳ 4.200 μίλλια. Κατὰ τὴν κάθοδον τὸ ἀεροπλάνον αὐτοῦ ἔπεσεν εἰς τὴν θάλασσαν, χωρὶς ὅμως νὰ πάθῃ μεγάλας ζημίας καὶ χωρὶς νὰ πάθουν τι οἱ ἐπιβαίνοντες. Τῷ 1928 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Skyward», ἐν τῷ ὁποίῳ περιέγραφε τὰ ἀεροπορικά του ταξίδια καὶ τὰς ἐξερευνήσεις του καὶ διωργάνωσε, μετ' ἐφοδίων δυναμένων νὰ ἐπαρκέσουν ἐπὶ δύο ἔτη, νέαν ἀεροναυτικὴν ἀποστολὴν πρὸς ἐξερεύνησιν τοῦ Νοτίου Πόλου καὶ τῆς περὶ αὐτὸν χώρας. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἀνεχώρησεν ἐπιβαίνων εἰδικοῦ πλοίου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἶχε φορτωθῇ καὶ τὸ ἀεροπλάνον του, καὶ ἀποβιβασθεὶς μετ' αὐτοῦ εἰς προκεχωρημένον σημεῖον τῆς θαλάσσης τοῦ Βέντελ, ἤρχισε τὰς πτήσεις του πρὸς τὸν Νότιον Πόλον, μὲ βάσιν εἰδικὴν ἐγκατάστασιν, ἣν ἐδημιούργησεν ἐπὶ τῶν πάγων. Αἱ πτήσεις αὗται, διαρκέσασαι ἐπὶ πολλοὺς μῆνας κατὰ τὸ 1929, ἀπέβησαν πολυτιμόταται εἰς τὴν ἐπιστήμην, αἱ δὲ γενόμεναι παντοειδεῖς παρατηρήσεις συνέβαλον εἰς τὴν ἀκριβεστέραν γνῶσιν τῆς νοτίου πολικῆς περιοχῆς καὶ τὴν τελειοτέραν διαρρύθμισιν τῆς χαρτογραφήσεώς της. Μεταξὺ τῶν μελῶν τῆς ἀποστολῆς εὑρίσκετο ὡς βοηθὸς μηχανικὸς καὶ ὁ Ἕλλην Δῆμος (Δημόπουλος), ὃν ὁ Μπὲρντ εἰσήγαγε κατόπιν ἰδίαις δαπάναις εἰς ἀεροπορικὴν σχολὴν πρὸς τελειοποίησιν. Μ. Δ. Β.

—**Μπὲρντ** (Bird) ***νόσος.*** Ὀνομασία ἀποδιδομένη ἐνίοτε εἰς τὸ σύνολον τῶν συμβαμάτων τῶν καθοριζομένων διὰ τῆς ἀφθονίας τῶν ὀξαλικῶν ἀλάτων ἐν τῷ ὀργανισμῷ. Οὕτως ἐμφανίζονται: α′) φαινόμενα οὐρικά, ἤτοι ἄλγος κατὰ τὴν οὔρησιν, ἐρεθισιμότης τῆς κύστεως, κυστῖτις καὶ πυελῖτις· β′) φαινόμενα πεπτικά, ἤτοι ἀπώλεια τῆς ὀρέξεως, μετεωρισμὸς καὶ δυσκοιλιότης· γ′) φαινόμενα κυκλοφορικά, ἤτοι ταχυπαλμία καὶ ψευδοστηθάγχη, δύσπνοια, ἀπίσχνανσις, διεγερσιμότης γενική, κόπωσις διανοητικὴ κλπ. Συνώνυμα τῆς νόσου ταύτης εἶναι: *διάθεσις ὀξαλική, ἀρθρῖτις ὀξαλική, ὀξαλαιμία.* Μ. Ν. Κ.

**Μπερντάϊλαντ** (Berntisland) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Φάϊφ* τῆς Σκωτίας. Κάτ. 5.200. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 32 χλμ. Β. τοῦ Ἐδιμβούργου καὶ ἔχει καλὸν λιμένα, διὰ τοῦ ὁποίου διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον, ἐξάγουσα κυρίως γαιάνθρακας καὶ χάλυβα. Ἔχει ἐπίσης ναυπηγεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μπέρνταν** (Berdan) ***τυφέκιον.*** Εἶδος τυφεκίου ἐπινοηθέντος ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Μπέρνταν. Διὰ τῶν τυφεκίων τούτων, τὰ ὁποῖα ἦσαν ὀπισθογεμῆ, διαμετρήματος 11 χιλιοστομ., καὶ ἐχρησιμοποίουν φυσίγγια ἔχοντα τὸ ἐμπύρευμα εἰς τὸ κέντρον τοῦ πυθμενίου, ἦτο ὡπλισμένος ὁ ρωσικὸς στρατὸς ἀπὸ τοῦ 1871 μέχρι τοῦ 1892. Χ. Δ.

**Μπέρντγουντ** (Birdwood), ***σὲρ Γουλιέλμος-Ρίντελ.*** Ἄγγλος στρατάρχης, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ὑπηρέτησε κατὰ τὸν πρὸς τοὺς Μπόερς πόλεμον (1899—1902) καὶ κατόπιν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ λόρδου Κίτσενερ, οὗτινος ὑπῆρξεν ὑπασπιστής. Τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1915 ἔλαβε μέρος ἐπὶ κεφαλῆς τῶν αὐστραλιανῶν στρατευμάτων κατὰ τὴν ἀπόβασιν εἰς τὴν χερσόνησον τῆς Καλλιπόλεως καὶ κατόπιν ἠγωνίσθη εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον, ὅπου καὶ διεκρίθη. Μετὰ τὸν πόλεμον ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ βαρωνέτου καὶ χρηματικοῦ δώρου 10.000 λιρῶν. Τῷ 1920 ἐγένετο διοικητὴς τοῦ βορείου στρατοῦ τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῷ 1925 ὠνομάσθη στρατάρχης καὶ ἐτοποθετήθη ὡς γενικὸς ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τῶν Ἰνδιῶν. Γ. Ι. Β.

**μπερντὲς** (ὁ), καὶ ***μπερδές*** · δημοτ., παραπέτασμα ἰδίᾳ τῶν παραθύρων· ‖ ἡ αὐλαία τοῦ λαϊκοῦ θεάτρου καραγκιόζη: «καλλιτέχνης τοῦ μπερντὲ» εἰρωνικῶς· ‖ ἡ ὀφθαλμικὴ νόσος καταρράκτης.

**Μπέρντετ-*Κούττς,*** *βαρωνὶς* (Burdett-Coutts), ***Ἀγγέλα-Γεωργίνα.*** Ἀγγλὶς φιλάνθρωπος (1814—1906). Θυγάτηρ τοῦ πολιτικοῦ σὲρ Φραγκίσκου Μπέρντετ καὶ ἐγγόνη τοῦ τραπεζίτου Θωμᾶ Κούττς. Ἀφιέρωσε τὸν βίον καὶ τὴν περιουσίαν της εἰς φιλανθρωπικὰ ἔργα. Κυρίως εἰργάσθη διὰ τὴν περίθαλψιν τῆς ἐργατικῆς τάξεως, τὸ ἔργον δὲ τοῦτο ἐξετέλει χωρὶς νὰ θίγῃ τὴν ἀνεξαρτησίαν καὶ τὴν ἀξιοπρέπειαν τῶν περιθαλπομένων. Ἵδρυσεν ἐκκλησίας, σχολεῖα, ἀποικιακὰς ἐπισκοπάς, συνέδραμεν ἱεραποστόλους, νοσοκομεῖα, ἄσυλα καὶ σχολεῖα ραπτικῆς, ἀνέλαβεν ὑποτροφίας ναυτοπαίδων, μετέσχε τῆς προσπαθείας τῆς ἑτέρας Ἀγγλίδος φιλανθρώπου Νάϊτινγκαιλ, ἱδρύσασα (1877) τὸ ταμεῖον περιθάλψεως τῶν Τούρκων προσφύγων τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου. Ὑπῆρξε μεγαλόδωρος προστάτις τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν καὶ κατὰ τὴν χαρακτηριστικὴν φράσιν τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐδουάρδου τοῦ Ζ′ ἡ ἀξιολογωτέρα Ἀγγλὶς μετὰ τὴν βασίλισσαν Βικτωρίαν. Γ. Ι. Β.

— **Μπέρντετ** (Burdett), ***σὲρ Φραγκῖσκος.*** Ἄγγλος πολιτικὸς (1770—1844). Ἐξεπαιδεύθη ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ Οὐεστμίνστερ, τῷ δὲ 1796 ἐγένετο βουλευτής. Ἐν τῇ βουλῇ ἀπέβη εἷς τῶν ἐπιφανεστέρων ἀντιπάλων τοῦ Πίττ. Ὑπέρμαχος τῶν λαϊκῶν δικαιωμάτων, ἠγωνίσθη ἐπὶ 30 σχεδὸν ἔτη ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τοῦ λόγου, τῆς μεταρρυθμίσεως τοῦ ἐκλογικοῦ συστήματος, τοῦ τῶν φυλακῶν κλπ. Ὑπεραμυνθεὶς τοῦ ριζοσπάστου βουλευτοῦ Τζόνς, ὅστις κατόπιν ἀδείας τῆς βουλῆς ἐφυλακίσθη, καὶ χαρακτηρίσας τὴν ἀπόφασιν ταύτην ὡς πραξικόπημα, προὐκάλεσε τὴν μῆνιν τῆς πλειοψηφίας. Ἡ βουλὴ θεωρήσασα τὴν ἀναδημοσίευσιν τῶν ὑπὸ τοῦ Μπέρντετ λεχθέντων ἐν τῇ βουλῇ ὡς λόγον ἄρσεως τῆς βουλευτικῆς ἀσυδοσίας, ἐπέτρεψε τὴν ἔκδοσιν ἐντάλματος φυλακίσεως αὐτοῦ. Ὁ Μπέρντετ, ὀχυρωθεὶς ἐν τῇ οἰκίᾳ του, ἠρνήθη κατ' ἀρχὰς νὰ παραδοθῇ εἰς τὰς ἀρχάς, ἐνῷ τὸ συγκεντρωθὲν πλῆθος ἦτο ἕτοιμον νὰ τὸν ὑπερασπισθῇ. Τέλος, παραβιασθείσης τῆς εἰσόδου, συνελήφθη, ἀποφυλακισθεὶς μετά τινα χρόνον. Διὰ δευτέραν φορὰν ἐφυλακίσθη τῷ 1820, ὅτε, κατόπιν τῆς σφοδρᾶς πολεμικῆς του ἐναντίον τῆς κυβερνήσεως διὰ τὰς σφαγὰς τοῦ Μάντσεστερ, κατεδιώχθη ποινικῶς καὶ κατεδικάσθη εἰς φυλάκισιν τριῶν μηνῶν καὶ πρόστιμον 1000 λιρῶν. Μετὰ τὴν ἐν ἔτει 1832 ψήφισιν τῆς ἐκλογικῆς μεταρρυθμίσεως, δι' ἣν ἐπὶ ἔτη σθεναρῶς ἠγωνίσθη, μετέστη πρὸς τοὺς συντηρητικοὺς καὶ διῆλθε τὸν ὑπόλοιπον βίον του ἰδιωτεύων. Γ. Ι. Β.

**Μπὲρν-Τζόουνς** (Burne-Jones), ***σὲρ Ἐδουάρδος*** —. Διάσημος Ἄγγλος ζωγράφος, εἷς τῶν κυριωτέρων ἐκπροσώπων τῆς προρραφαηλιτικῆς σχολῆς, γεννηθεὶς τῷ 1833 ἐν Βιρμιγχάμῃ ἐκ πατρὸς Οὐαλλοῦ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1898. Ἐσπούδασεν ἐπὶ ἑπταετίαν εἰς τὸ Κολλέγιον τοῦ βασιλέως Ἐδουάρδου, μετὰ ταῦτα δ' ἐστάλη ὑπὸ τῆς οἰκογενείας του εἰς τὸ Exeter College τῆς Ὀξφόρδης, ἔνθα ἐγνωρίσθη καὶ συνεδέθη διὰ φιλίας μετὰ τοῦ Γουλιέλμου Μόρρις. Τρία ἔργα προρραφαηλιτῶν ζωγράφων, τὰ ὁποῖα ἀπεθαύμασεν ἐν Ὀξφόρδῃ, ἐθάμβωσαν τὴν νεανικὴν φαντασίαν τοῦ Μπέρν-Τζόουνς, ὅστις, αἰσθανθεὶς ἀκαταμάχητον κλίσιν πρὸς τὴν τέχνην, κατέλιπε τῷ 1855 τὴν Ὀξφόρδην καὶ μετέβη εἰς τὸ Λονδῖνον ἐπὶ τῷ σκοπῷ νὰ γνωρίσῃ τὸν Ροσσέττι, παρὰ τῷ ὁποίῳ καὶ προσελήφθη. Τῷ 1862 ἐπισκέπτεται μετὰ τοῦ Ράσκιν τὴν Ἰταλίαν· ἐπανέρχεται εἰς τὴν πατρίδα του καὶ ἐγκαθίσταται εἰς τὸ Λονδῖνον, εἰς τὴν οἰκίαν τὴν ὁποίαν ἄλλοτε κατεῖχεν ὁ μυθιστοριογράφος Ρίτσαρντσον. Ἀκαταπόνητος, ἐδημιούργει ἔργα ἀνήκοντα εἰς ποικιλωτάτους κλάδους τῆς τέχνης. Ἐξεπόνει ἐλαιογραφίας, ὑδατογραφίας, σχέδια δι' ὑαλογραφήματα καὶ τάπητας, εἰκονογραφίας λογοτεχνικῶν βιβλίων. Τῷ 1861 ὠνομάσθη μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ὑδατογράφων, ἐν ᾗ ἐπὶ πολλὰ ἔτη ἐξέθετε συνεχῶς ἔργα του, καὶ τῷ 18[illegible] ἑταῖρος τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου. Ἐνεπνέετο τόσον ἀπὸ τὴν ἑλληνικὴν καὶ ρωμαϊκὴν ἀρχαιότητα, ὅσον καὶ ἀπὸ τοὺς μεσαιωνικοὺς θρύλους, ἀπὸ τὰς βιβλικὰς παραδόσεις, ἀπὸ τὴν ἱστορίαν, τὴν θρησκείαν, τὴν φύσιν, τὴν ἀλληγορίαν, τὴν ζωήν. Ἔκφρασις γαλήνης, ἁγνότητος καὶ μακαριότης ἀπαντᾷ κατὰ τὸ πλεῖστον διάχυτος εἰς ὅλους τοὺς πίνακάς του· πρόκειται ἀσφαλῶς περὶ τέχνης ὁπωσδήποτε συμβατικῆς· ἀλλ' εἶναι τόση ἡ ψυχικότης, ἡ ὁποία τὴν διαποτίζει, καὶ τόση ἡ πνευματικότης, ἡ ὁποία τὴν μεταρσιώνει, ὥστε ἡ πρόθεσις ἐξαφανίζεται ἐνώπιον τοῦ εὐγενεστάτου περιεχομένου της. Ἀκρίβεια σχεδίου, ἁρμονικώτατος χρωματισμός, θελκτικὴ ταξινόμησις συνόλων, εἶναι μερικαὶ ἀπὸ τὰς χαρακτηριστικὰς ἀρετάς της. Ὁ Ράσκιν τὸν ἀπεκάλεσε «ζωγράφον τῆς μυθολογίας». Ἐξωογόνησε τοὺς παλαιοὺς θρύλους μὲ τὴν δημιουργικὴν δύναμιν τῆς τέχνης του καὶ ἐπραγματοποίησε τὰ μᾶλλον μεγαλέα ὁράματα· ἔδωκε σάρκα εἰς μυχίας σκέψεις καὶ ἐξέφρασε δυσπεριγράπτους διαθέσεις. Μεταξὺ τῶν πολυπληθῶν ἔργων του μνημονεύομεν τὰ ἀκόλουθα: «Ἡ χρυσῆ κλῖμαξ» (1880, συλλογὴ λαίδης Battersea, ἐν Λονδίνῳ), «Ὁ καθρέπτης τῆς Ἀφροδίτης» (1877, συλλογὴ Goldman, ἐν Λονδίνῳ), «Ὁ βασιλεὺς Cophetua» (1884, Ἐθνικὴ πινακοθήκη τῆς βρεττανικῆς τέχνης, Λονδῖνον), «Τὸ ᾆσμα τοῦ ἔρωτος» (1865). «Τὸ ᾆσμα τῶν Νιμπελούνγκεν» (1856), «Ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὔα», «Ὁ πύργος τῆς Βαβέλ» (τὰ δύο τελευταῖα ἔργα εἶναι σχέδια ὑαλογραφημάτων διὰ τὸ παρεκκλήσιον τοῦ κολλεγίου Sradfield, ἐκτελεσθέντα τῷ 1857), «Ὁ Εὐαγγελισμός», «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων» (ἀμφότερα ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Παύλου τοῦ Μπράϊτον), «Ὁ εὔσπλαγχνος ἱππότης», «Ἡ νεράϊδα Ροζαμόνδη», «Ὁ

Digitized by Google

Θεόφιλος καὶ ὁ ἄγγελος», «Τὸ ὄνειρον τοῦ Τσῶτσερ», «Ὁ Ἅγιος Γεώργιος καὶ ὁ δράκων», ἑβδομήκοντα εἰκονογραφίαι διὰ τὸν «Ἐπίγειον παράδεισον» τοῦ Γουλιέλμου Μόρρις, ἀποκτηθεῖσα βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Ράσκιν καὶ δωρηθεῖσα ὑπ' αὐτοῦ εἰς τὸ Μουσεῖον τῆς Ὀξφόρδης, ἡ σειρὰ τοῦ Πυγμαλίωνος καὶ τοῦ ἀγάλματος, «Ὁ οἶνος τῆς Κίρκης», ὅστις τῷ 1892 ἐπωλήθη ἀντὶ 29.000 φράγκων, «Ὁ κῆπος τῶν Ἑσπερίδων», «Ὁ Ἔρως εἰς τὰ ἐρείπια», «Αἱ ἡμέραι τῆς δημιουργίας», «Ὁ τροχὸς τῆς τύχης», «Αἱ ἐποχαί», «Ἡ πίστις», «Ἡ ἐλπὶς καὶ ἡ εὐσπλαγχνία», «Αἱ ὧραι»,

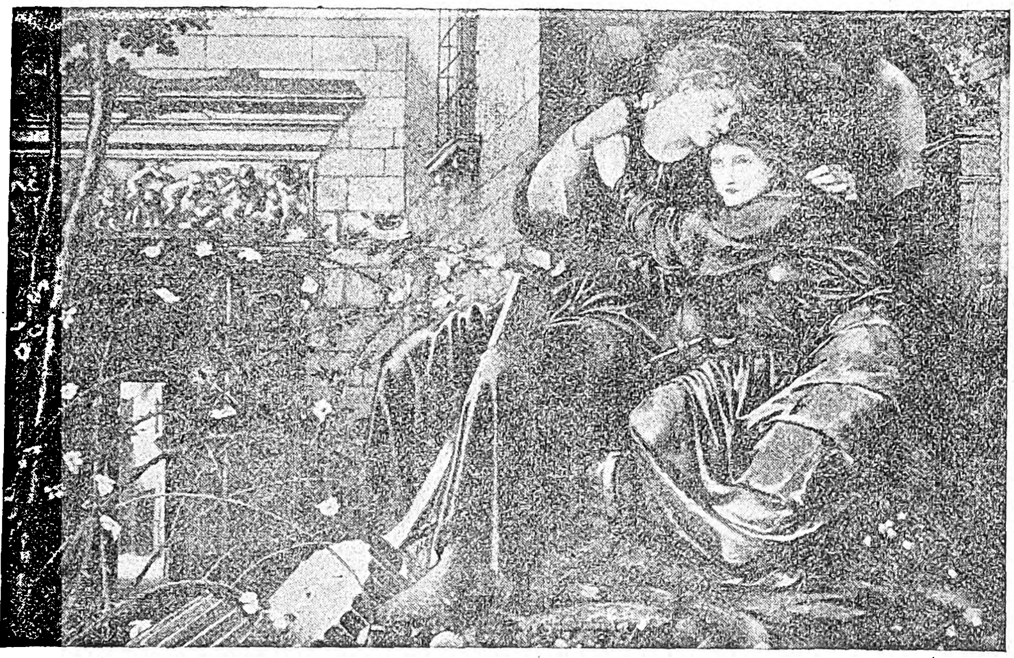

*Ἐδουάρδου Μπὲρν-Τζόουνς : «Ὁ ἔρως μέσα στὰ ἐρείπια».*

«Dies domini», «Laus Veneris» «Ἡ νύμφη τῶν δασῶν», «Ἡ σειρήν», «Ἡ ἀστρολογία», «Flamma Vestalis», «Τὸ λουτρὸν τῆς Ἀφροδίτης», «Ὁ κῆπος τοῦ Πανός», «Τὸ ἄστρον τῆς Βηθλεὲμ» ἀποκείμενον ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Βιρμιγχάμης, ἡ «Δανάη», «Vespertina Quies», «Τὰ βάθη τῆς θαλάσσης».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Malcolm Bell:* «Burne-Jones (London, 1895).— *J. Cartwright:* «Burne-Jones» (Gazette, 1900, II, σελ. 25).— *P. Leprieur:* «Burne-Jones» (Gazette, 1892, II, σελ. 381).

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπερντίανσκ** (Berdiansk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας, ἐν τῷ κυβερνείῳ Σαπορὸς τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ΒΔ. παραλίας τῆς Ἀζοφικῆς θαλάσσης (ἀκρωτηριάζουσα γλῶσσα Μπερντιανσκάγια). Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, διεξάγει ἀξιόλογον ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ἔχει μηχανουργεῖα καὶ ἀλευρομύλους. Κάτ. (1920), 37.030. Χ. Δ.

**μπερντὶς** (ἡ) ἢ ***μπαρντὶς*** (berdiche ἢ bardiche). Εἶδος δόρατος μήκους 1 μ.—1μ. 20, φέροντος προσηρμοσμένην πλευρικῶς κατὰ τὸ ἄκρον τοῦ κοντοῦ πλατεῖαν λεπίδα (εἶδος μαχαίρας) ἀπολήγουσαν εἰς ὀξεῖαν αἰχμήν. Εἶναι αἰγυπτιακῆς προελεύσεως, κατὰ δὲ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἦσαν δι' αὐτῆς ὡπλισμένοι οἱ «τραμπᾶνοι» τοῦ βασιλέως τῆς Σουηδίας Γουσταύου Βάζα καὶ οἱ Ρῶσοι «στρέλιτς». Χ.Δ.

**Μπερντίτσεφ** (Berdichev) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν Οὐκρανίᾳ, κειμένη 190 χλμ. πρὸς Δ.ΝΔ. τοῦ Κιέβου ἐπὶ τῆς πρὸς τὸ Μπρὲστ-Λιτὸφσκ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν, κτηνῶν καὶ ἵππων, ἔχει δὲ καπνεργοστάσια, χρωματουργεῖα καὶ σιδηροβιομηχανίαν. Κατ' ἔτος διεξάγονται ἐν αὐτῇ τέσσαρες μεγάλαι ἐμποροπανηγύρεις. Ἡ Μπεντίτσεφ εἶναι κέντρον τῆς ἰσχυρᾶς ἰουδαϊκῆς φατρίας τῶν Τσαζεντίμ, ἐντεῦθεν δ' ὀνομάζεται «Ἡ Ἱερουσαλὴμ τῆς Βολωνίας». Κάτ. 79.150. Χ. Δ.

**Μπέρντορφ** (Berndorf) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Αὐστρίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τρήστινγκ, παραποτάμου τοῦ Δουνάβεως. Ἔχει μεγάλα μεταλλουργικὰ ἐργοστάσια τῶν ἐπιχειρήσεων Κρούπ, μετὰ προτύπων ἐργατικῶν συνοικισμῶν καὶ ἐγκαταστάσεων. Κάτ. (1920) 7.342. Χ. Δ.

**Μπέρντσεν** (Berntlisen), ***Αὔγουστος-Ἑρρῖκος***. Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1855. Ἐπενόησε τὴν μέθοδον τῆς βιομηχανικῆς παρασκευῆς τοῦ ὑποθειώδους νατρίου καὶ τοῦ μεθυλενίου. Κατ' ἀρχὰς διετέλεσεν ὑφηγητὴς ἐν Βόννῃ ἀπὸ τοῦ 1879 καὶ Αϊδελβέργῃ (1882), εἶτα δὲ προσελήφθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ ἐν Βάδῃ μεγάλου ἐργοστασίου ἀνιλίνης καὶ σόδας (Badisce Anilin-und Sodafabrik) τοῦ ὁποίου ἐγένετο εἷς τῶν διευθυντῶν. —Ω.

**Μπέρνχάϊμ** (Bernheim), ***Ἐρνέστος***. Γερμανὸς ἱστορικός, ἑβραϊκῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἀσπασθεὶς τὸν Χριστιανισμόν, διετέλεσε καθηγητὴς πανεπιστημίου (ἀπὸ τοῦ 1889) ἐν Γκράϊφσβαλντ καὶ συνέγραψε τὰ ἑξῆς: «Λόθαρ ὁ Γ' καὶ τὸ ἐν Βὸρμς Κονκορδᾶτον» (1874), «Ἐπὶ τῆς Ἱστορίας τοῦ ἐν Βὸρμς Κονκορδάτου» (1876), «Ἱστορικὴ ἔρευνα καὶ φιλοσοφία τῆς ἱστορίας» (1880), «Ἐγχειρίδιον τῆς ἱστορικῆς μεθόδου» (1889, 2α ἔκδ. 1894) κλπ. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἔκδοσιν τῶν τριῶν πρώτων τόμων τῆς σειρᾶς τῶν «Πεπραγμένων τοῦ Ράϊχσταγ» (1882—1888) καὶ ἐδημοσίευσε μετὰ τοῦ Ἄλτμανν: «Ἐκλογὴ ἐπισήμων ἐγγράφων πρὸς ἑρμηνείαν τῆς ἱστορίας τοῦ συντάγματος τῆς Γερμανίας κατὰ τὸν Μεσαίωνα» (2α ἔκδ. 1895). —Ω.

**Μπέρνχαμ** (Burnham), ***Ἐδουάρδος-Λέβυς-Λάουσον, βαρῶνος***—. Ἄγγλος δημοσιογράφος (1833—1916). Εἰς ἡλικίαν δέκα ὀκτὼ ἐτῶν προσελήφθη ὡς συνεργάτης τοῦ «Νταίϊλυ Τέλεγκραφ», τοῦ ὁποίου ἐγένετο ἰδιοκτήτης καὶ ἐκδότης. Ο Μπέρνχαμ ἐνέπνευσε καὶ ὑπεστήριξε τὰς ἐν Ἀσσυρίᾳ ἀρχαιολογικὰς ἐρεύνας τοῦ Γεωργίου Σμὶθ καὶ ἐβοήθησε τὸν σὲρ Χάρρυ Τζόνστον ἐν τῇ ἐξερευνήσει τοῦ Κιλιμαντζάρο. Τῷ 1892 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρωνέττου καὶ τῷ 1903 τὸν τοῦ βαρώνου. Α. Δ.

— **Μπέρνχαμ** (Burnham), ***Φρειδερῖκος Ρῶσσελ***. Ἀμερικανὸς ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1861. Κατὰ Μάϊον τοῦ 1891 μετέβη εἰς Νότιον Ἀφρικήν. Τῷ 1893 ὑπηρέτησεν ὡς πρόσκοπος κατὰ τοὺς πολέμους τοῦ Ματαμπέλε καὶ ἐξηρεύνησε τὴν Ροδεσίαν. Κατὰ τὸν πόλεμον τῶν Μπόερς διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῶν προσκόπων εἰς τὸ σῶμα τοῦ λόρδου Ρόμπερτς (1900—1901), βραδύτερον δὲ ἐγένετο συνταγματάρχης τοῦ βρεττανικοῦ στρατοῦ. Αἱ κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη περιηγήσεις του εἰς τὴν κεντρῴαν Ἀμερικὴν συνέβαλον μεγάλως εἰς τὴν γνῶσιν τῆς φυλῆς τῶν Μάγιας τοῦ Γιουκατάν. Α. Δ.

— **Μπέρνχαμ** (Burnham), ***Χάρρυ-Λάουσον-Οὐέμπτερ-Λάουσον***. Ἄγγλος δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ἦτο πρωτότοκος υἱὸς τοῦ βαρώνου Μπέρνχαμ καὶ ἐξεπαιδεύθη εἰς τὴν Ὀξφόρδην. Τῷ 1904 διεδέχθη τὸν πατέρα του ὡς οἰκονομικὸς διευθυντὴς τοῦ «Νταίϊλυ Τέλεγκραφ», τὸν ὁποῖον βραδύτερον ἀντεπροσώπευσεν ὡς ἀνταποκριτὴς εἰς τὴν δυτικὴν Ἀφρικὴν καὶ τὰς Ἰνδίας. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπῆρξε πρόεδρος τοῦ συνεδρίου τοῦ τύπου (1914). Α. Δ.

**Μπέρνχαρντ** (Bernhard), ***Γεώργιος***. Γερμανὸς δημοσιογράφος, πολιτικός, συγγραφεὺς καὶ οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Βερολίνῳ ἐκ γονέων ἰσραηλιτικῆς καταγωγῆς τῷ 1875. Τῷ 1903 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Plutus» μὲ πρόγραμμα ἀσκήσεως κριτικῆς ἐπὶ τῶν μεγάλων ἐμπορικῶν καὶ ἰδίως χρηματιστικῶν συναλλαγῶν ἀπὸ τῆς ἀπόψεως κοινωνικῆς ὠφελιμότητος. Τῷ 1913 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς συντάξεως τῆς «Ἐφημερίδος τοῦ Φός», τὴν ὁποίαν διετήρησε μέχρι τοῦ 1931. Διατελεῖ μέλος τοῦ Ράϊχσταγ, τοῦ ἀνωτάτου οἰκονομικοῦ συμβουλίου τῆς Γερμανίας καὶ καθηγητὴς τῆς ἐν Βερολίνῳ ἀνωτάτης ἐμπορικῆς σχολῆς. Ἔγραψε: «Der Vernehr mit Wertpapieren» (1903, 3η ἔκδ.), «Geld und Kredit» (1903), «Wirtschaftsparlamente (1923). Α. Α. Τ.

— **Μπέρνχαρντ, *νόσος τοῦ*** — *['Ιατρ.]* βλ. λ. *μηραλγία.*

**Μπέρξον** (Bergson), ***Ἑρρῖκος - Λουδοβῖκος***. Σύγχρονος Γάλλος φιλόσοφος. Ἐγεννήθη ἐν Παρισίοις τῇ 18 Ὀκτωβρίου 1859. Ἰσραηλίτης τὴν φυλήν, καταγωγῆς ἰρλανδοπολωνικῆς, ἀπέκτησε τὴν γαλλικὴν ἰθαγένειαν ἅμα τῇ ἐνηλικιώσει του, τῷ 1880. Ἐφοίτησεν ἀρχικῶς εἰς τὸ λύκειον Κοντορσέ, διακριθεὶς τόσον εἰς τὰ μαθηματικά, ὅσον καὶ εἰς τὰ φιλολογικὰ μαθήματα καὶ λαβὼν πλεῖστα βραβεῖα. Μετὰ τῆς αὐτῆς ἐπιτυχίας διήνυσε καὶ τὰς τάξεις τῆς École Normale, εἰς ἣν ἐνεγράφη τῷ 1878, τραπεὶς εἰς τὴν φιλοσοφίαν, πρὸς δυσάρεστον ἔκπληξιν τοῦ καθηγητοῦ του τῶν μαθηματικῶν. Ὑπὸ τῶν συσπουδαστῶν του ἐθεωρεῖτο ὑλιστής. Ἐξῆλθε τῆς σχολῆς δεύτερος κατὰ σειρὰν ἐπιτυχίας τῷ 1881 καὶ διωρίσθη καθηγητὴς εἰς τὸ λύκειον τοῦ Ἀνζὲρ (1881—1883). Ἐκεῖθεν μετετέθη εἰς τὸ λύκειον τοῦ Κλερμὸν-Φερρὰν (1883—1888). Μετακληθεὶς εἰς Παρισίους, ἐδίδαξεν ἐπὶ ἓν ἔτος εἰς τὸ κολλέγιον Ρολλέν, ἀναγορευθεὶς δ' ἐν τῷ μεταξὺ διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας (1889), μετετέθη εἰς τὸ λύκειον Ἑρρίκου Δ', ὅπου ἐδίδαξε μέχρι τοῦ 1897. Χρηματίσας maître de conférences τῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν Ἀνωτέραν σχολήν, διεδέχθη ἐν τῷ Γαλλικῷ Κολλεγίῳ τὸν Κάρολον Λεβὲκ εἰς τὴν ἕδραν τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς φιλοσοφίας (1900—1904), εἶτα δὲ τὸν Γαβριὴλ Τὰρντ εἰς τὴν ἕδραν τῆς νεωτέρας φιλοσοφίας, διδάξας ἀπὸ τοῦ 1904 μέχρι τοῦ 1921, ὅτε, ἀποχωρήσας, ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ μαθητοῦ του Ἐδουάρδου Λὲ Ρουά. Τῷ 1901 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Φελὶς Ραβαισσόν, τῷ δὲ 1914 ἐξελέγη νὰ καταλάβῃ τὴν ἕδραν τοῦ Αἰμιλίου Ὀλιβιὲ εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν, ἐν τῇ ὁποίᾳ τὸν ἐδεξιώθη, τῷ 1918, λόγῳ τοῦ παρεμπεσόντος πολέμου, ὁ Ρενὲ Ντουμίκ. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀφωσιώθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς συμμαχικῆς ὑποθέσεως, μετασχὼν πολλῶν ἀποστολῶν (εἰς Ἱσπανίαν, Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς καὶ ἀλλαχοῦ). Μετὰ τὸν πόλεμον ἀνέλαβε τὴν προεδρίαν τῆς διεθνοῦς ἐπιτροπῆς πνευματικῆς συνεργασίας παρὰ τῇ Κοινωνίᾳ τῶν Ἐθνῶν, ὁπόθεν ἀπεχώρησε, τῷ 1925, διὰ λόγους ὑγείας. Τῷ 1929 τῷ ἀπενεμήθη τὸ φιλολογικὸν βραβεῖον Νόμπελ τοῦ ἔτους 1928.

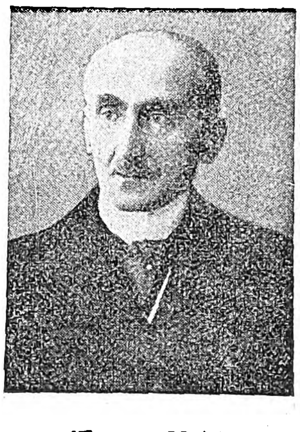

*Ἑρρῖκος Μπέρξον.*

Ὁ Μπέρξον ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς ἔργα: 1) «Ἀποσπάσματα τοῦ Λουκρητίου», σχολικὸν βιβλίον ἐκδοθὲν τῷ 1884, 2) «Quid Aristoteles de loco senserit» (Τί περὶ τόπου ἐφρόνει ὁ Ἀριστοτέλης), ἡ λατινιστὶ συντετογμένη ἐναίσιμος διατριβή του ἐπὶ διδακτορίᾳ (1889). 3) «Essai sur les données immédiates de la conscience» (Δοκίμιον περὶ τῶν ἀμέσων δεδομένων τῆς συνειδήσεως), ἡ εἰς γαλλικὴν γλῶσσαν ἐναίσιμος διατριβή του ἐπὶ διδακτορίᾳ (1889). 4) «Matière et Memoire—Essai sur la relation du corps à l'ésprit» (Ὕλη καὶ Μνήμη—Δοκίμιον περὶ τῆς σχέσεως τοῦ πνεύματος πρὸς τὸ σῶμα, 1896), 5) «Le Rire—Essai sur la signification du comique» (Ὁ Γέλως—Δοκίμιον περὶ τῆς σημασίας τοῦ κωμικοῦ, 1900). 6) «L'évolution créatrice» (Ἡ δημιουργὸς ἐξέλιξις, 1907). 7) «L'énergie spirituelle» (Ἡ πνευματικὴ ἐνέργεια), περιλαμβάνον ἄρθρα τινὰ καὶ διαλέξεις (1919). 8) Durée et simultanéité» (Διάρκεια καὶ ταυτόχρονον), ἀναφερόμενον εἰς τὴν περὶ σχετικότητος θεωρίαν τοῦ Ἀϊνστάϊν (1922). Ἀναπτύσει ἐν τούτῳ ὁ Μπέρξον ὅ,τι καὶ κατὰ τὴν ἐν τῇ Σορβόννῃ συζήτησιν μετὰ τοῦ Ἀϊνστάϊν κατὰ τὸ 1922 ὑπεστήριξε καὶ ὁ Ἀϊνστάϊν παρεδέχθη, ὅτι δηλαδὴ ἡ περὶ χωροχρόνου θεωρία τοῦ δευτέρου δὲν θίγει τὴν βασιμότητα τῆς περὶ χρόνου-διαρκείας τοῦ Μπέρξον. Τὰ ἔργα του ταῦτα, ἐκτὸς τοῦ πρώτου, ἐκδοθέντα ὑπὸ τοῦ παρισινοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου Alcan, ἐκυκλοφόρησαν εἰς πολλὰς χιλιάδας ἀντιτύπων, μετεφράσθησαν δὲ εἰς ὅλας τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας.

Παρ' ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω συγγραμμάτων αὐτοῦ, ὁ Μπέρξον καὶ δι' ἄρθρων, διαλέξεων, ἀνακοινώσεων καὶ ἐπιστολῶν ἀνέπτυξε, διηκρίβωσεν, ἐπεξήγησε τὰς θεωρίας του, ἀνεσκεύασεν ἀντιρρήσεις καὶ ἐπικρίσεις διαφόρων ἢ ἐφήρμοσε τὴν φιλοσοφίαν του εἰς ζητήματα ποικίλα, τὰ ὁποῖα παρουσίασεν ὁ πνευματικός, καλλιτεχνικὸς καὶ κοινωνικὸς βίος τῆς ἐποχῆς του. Ἐκ τούτων ἀξιοσημείωτα εἶναι: «Ἡ εἰδικότης», λόγος του κατὰ τὴν διανομὴν τῶν βραβείων ἐν τῷ λυκείῳ τοῦ Ἀνζὲρ (1882), «Ἡ εὐγένεια», λόγος του κατ' ἀνάλογον περίστασιν ἐν τῷ λυκείῳ τοῦ Κλερμὸν Φερρὰν (1884), «Ἡ εὐθυκρισία καὶ αἱ κλασσικαὶ σπουδαί», λόγος του εἰς ἀνά-

Digitized by Google

λογον περίστασιν ἐν Παρισίοις (1895), «Τὸ ὄνειρον», ἄρθρον του εἰς τὸ «Δελτίον τοῦ Διεθνοῦς ψυχολογικοῦ Ἰνστιτούτου» (Μάϊος 1901), «Ἡ φιλοσοφικὴ ἐνόρασις», ἀνακοίνωσίς του εἰς τὸ φιλοσοφικὸν συνέδριον τῆς Βουλώνης (1911), «Ἡ ἀντίληψις τῆς ἀλλαγῆς», δύο λόγοι του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ὀξφόρδης (1911), «Ἡ συνείδησις καὶ ἡ ζωή», λόγοι του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μπίρμιγχαμ (1911), «Ψυχὴ καὶ σῶμα», διάλεξις (1912) περιληφθεῖσα εἰς τὸν «Σύγχρονον ὑλισμὸν» (1920). «Φαντάσματα ζώντων καὶ ψυχικαὶ ἔρευναι», διάλεξις ἐν τῇ Ἑταιρείᾳ Ψυχικῶν Ἐρευνῶν τοῦ Λονδίνου (1913), «Ἡ φιλοσοφία τοῦ Κλὼντ Μπερνάρ», διάλεξίς του ἐν τῷ Γαλλικῷ Κολλεγίῳ (1913). Οἱ λόγοι του: «Περὶ τοῦ μηχανικοῦ χαρακτῆρος τοῦ γερμανικοῦ πνεύματος», κατὰ τὴν δεξίωσίν του εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν (1914), «Περὶ τοῦ ἔργου τοῦ Αἰμιλίου Ὀλιβιέ», κατὰ τὴν δεξίωσίν του εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν (1918) καὶ «Περὶ γαλλικῆς φιλοσοφίας», ἐν τῇ ἐκθέσει τοῦ Ἁγίου Φραγκίσκου (1916), «Σημειώσεις περὶ τῆς ψυχολογικῆς προελεύσεως τῆς πίστεώς μας εἰς τὸν νόμον τῆς αἰτιότητος», ἀνακοίνωσις εἰς τὸ διεθνὲς συνέδριον φιλοσοφίας (Παρίσιοι 1900), δημοσιευθεῖσα ἐν τῇ «Βιβλιοθήκῃ» τοῦ συνεδρίου ἐκείνου (τομ. Α') «Ὁ ψυχοφυσιολογικὸς παραλογισμός», ἀνακοίνωσις εἰς τὸ φιλοσοφικὸν συνέδριον τῆς Γενεύης (1904), ἀνακοινώσεις του εἰς τὴν γαλλικὴν Φιλοσοφικὴν ἑταιρείαν, δημοσιευθεῖσαι εἰς τὸ «Μηνιαῖον δελτίον» αὐτῆς: «Ὁ ψυχοφυσικὸς παραλληλισμὸς καὶ ἡ θετικὴ μεταφυσική» (1901), «Παρατηρήσεις περὶ τῆς θέσεως καὶ τοῦ χαρακτῆρος τῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν μέσην ἐκπαίδευσιν» (1902), «Παρατηρήσεις περὶ τῆς ἰδέας τῆς ἠθικῆς ἐλευθερίας» (1903), «Παρατηρήσεις ἐξ ἀφορμῆς τῆς κοινωνικῆς φιλοσοφίας τοῦ Κουρνὸ» (1903), «Παρατηρήσεις περὶ τῆς θεωρίας τῆς ἀντιλήψεως» (1905), «Περὶ τῆς ἐπιδράσεως τῆς φιλοσοφίας ἐπὶ τῶν μαθητῶν τῶν λυκείων» (1908), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς ὀργανώσεως τῶν φιλοσοφικῶν συνεδρίων» (1909), «Παρατηρήσεις περὶ τοῦ ἀσυνειδήτου ἐν τῷ νοητικῷ βίῳ» (1909), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς θεωρίας τῆς σχετικότητος» (1922), διάφορα ἄρθρα του εἰς τὴν Revue de Metaphysique et de Morale: «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν μεταφυσικὴν» (1903), «Ἀντίληψις καὶ ὕλη» (1896). «Ἐξ ἀφορμῆς τῆς ἐξελίξεως τῆς γεωμετρικῆς διανοίας» (1908), «Ἡ φιλοσοφικὴ ἐνόρασις» (1911)· εἰς τὴν Revue de Mois: «Περὶ τῆς δημιουργοῦ ἐξελίξεως» (1907)· εἰς τὴν Revue Philosophique: «Περὶ τῆς ἀσυνειδήτου προσποιήσεως ἐν τῇ καταστάσει ὑπνωτισμοῦ: μνήμη καὶ ἀναγνώρισις» (1896), «Ἀρχαὶ μεταφυσικῆς καὶ ψυχολογίας κατὰ τὸν Πὼλ Ζανὲ» (1897), «Ἡ διανοητικὴ προσπάθεια» (1902), «Ἡ θεωρία τῆς πραγματικῆς διαρκείας» (1905), «Ἡ ἰδέα τοῦ μηδενὸς» (1906), «Ἡ ἀνάμνησις τοῦ παρόντος καὶ ἡ ἐσφαλμένη ἀναγνώρισις» (1908), «Ὁ πλασματικὸς χρόνος καὶ ὁ ἰδεώδης χρόνος» (1924)· εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων»: «Ἀλήθεια καὶ πραγματικότης» (25 Ἀπριλ. 1911), κ.ἄ. Εἰς τὴν ἑλληνικὴν μετεφράσθησαν: 1) «Τὸ γέλιο», ὑπὸ Ν. Καζαντζάκη (Ἀθῆναι 1915). 2) «Ἡ δημιουργὸς ἐξέλιξις», ὑπὸ Κ. Θ. Παπαλεξάνδρου (Ἀθῆναι 1925). 3) Μερικὰ ἄρθρα καὶ διαλέξεις ἀπὸ τὸ βιβλίον «Ἡ πνευματικὴ ἐνέργεια», ὑπὸ Ἀνδρ. Δαλεζίου (Ἀθῆναι 1926) ὑπὸ τὸν τίτλον «Φαντάσματα καὶ ὄνειρα». Ἐκτὸς τούτων τὸ ἄρθρον τοῦ Μπέρξον «Ἡ διανοητικὴ προσπάθεια», μεταφρασθὲν ὑπὸ Ἕλλης Λαμπρίδη, ἐξεδόθη εἰς τεῦχος (1929). Ἐπίσης ἡ ἀνακοίνωσις τοῦ Μπέρξον εἰς τὸ φιλοσοφικὸν συνέδριον τῆς Βουλώνης (1911) περὶ «Φιλοσοφικῆς ἐνοράσεως», κατὰ μετάφρασιν Κ. Θ. Παπαλεξάνδρου, ἐδημοσιεύθη εἰς τὸ περιοδικὸν «Ἑλληνικὰ Γράμματα» (τόμ. Γ', ἀρ. 36 καὶ 37, 1η καὶ 15η Δεκεμβρίου 1928).

Ὁ Μπέρξον—σπάνιον φαινόμενον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς φιλοσοφίας—ηὐτύχησε, ζῶν ἀκόμη, νὰ ἴδῃ τὰς ἰδέας του διαδιδομένας εὐρύτατα εἰς ὅλον τὸν κόσμον, ὄχι μόνον ἐν τῷ στενῷ κύκλῳ τῶν φιλοσόφων, ἀλλὰ καὶ μεταξὺ τοῦ μεγάλου κοινοῦ. Τὰς παραδόσεις του ἐν τῷ Γαλλικῷ Κολλεγίῳ παρηκολούθει, ἐκτὸς τῶν σπουδαστῶν, καὶ πυκνὸν ἀκροατήριον ἀνθρώπων τῶν γραμμάτων καὶ τοῦ πνεύματος, καλλιτεχνῶν, κυριῶν καὶ ξένων πανταχόθεν τῆς γῆς συρρεόντων καὶ δύο καὶ τρεῖς ὥρας πρὸ τοῦ μαθήματος συνωθουμένων διὰ νὰ ἐξασφαλίσουν θέσιν ἐν τῇ αἰθούσῃ ἤ, ἔστω, ἐν τῷ διαδρόμῳ. Γόης τὸν λόγον, συνήρπαζε τὸ πυκνὸν καὶ ποικίλον ἀκροατήριόν του. Ὑπερβαίνει ἤδη τὴν χιλιάδα ὁ ἀριθμὸς τῶν εἰς διαφόρους γλώσσας ἐκδοθέντων βιβλίων καὶ μελετῶν περὶ ἢ ἐπὶ τῆς φιλοσοφίας του, προκαλεσάσης φανατικοὺς ἐνθουσιασμοὺς καὶ ἐφελκυσάσης ὀξυτάτας ἐπικρίσεις, γενικῶς δὲ συζητουμένης ζωηρότατα. Κατὰ τὸν Μπέρξον «φιλοσοφία εἶναι, πρὸ παντός, ψυχολογία προεκτεινομένη εἰς μεταφυσικήν», «συνειδητὴ καὶ στοχαστικὴ ἐπάνοδος εἰς τὰ δεδομένα τῆς ἐσωτερικῆς ἐμπειρίας καὶ τοῦ κοινοῦ νοῦ, ἔν τινι μέτρῳ». Ἐκ τῆς ψυχολογίας λοιπὸν ἐκκινεῖ ὁ Μπέρξον ἐν τῷ πρώτῳ του ἔργῳ: «Τὰ ἄμεσα δεδομένα τῆς συνειδήσεως», ἐξετάζων τὸ ἐγώ, τὴν συνείδησιν καθ' ἑαυτήν, καὶ διαπιστῶν ἐν πρώτοις ὅτι ὁ ἐσωτερικὸς βίος μας, συνεχὴς ὢν καὶ ἀδιαίρετος, ἀλλάσσει ἐξακολουθητικῶς. Τὴν συνεχῆ ἀλλαγὴν ταύτην ἐκφράζομεν λέγοντες ὅτι τὸ ἐγὼ ἡμῶν διαρκεῖ· «ἡ διάρκεια εἶναι τὸ ὕφασμα, ἐξ οὗ εἶναι καμωμένον τὸ εἶναί μας» (βλ. λ. *διάρκεια*) Τὸ αὐτὸ διαπιστοῦμεν προκειμένου καὶ διὰ τὸν ἔξω ἡμῶν κόσμον: «Τὸ σύμπαν διαρκεῖ». Ἡ διάρκεια εἶναι οὐ μόνον τὸ βάθος τοῦ εἶναί μας, ἀλλὰ καὶ ἡ οὐσία τῶν πραγμάτων. Ἡ συνέχεια αὕτη τοῦ ῥοῦ —ἡ διάρκεια—εἶναι ἀλληλουχία καταστάσεων, ἑκάστη τῶν ὁποίων περιλαμβάνει τὴν προηγουμένην καὶ ἐξαγγέλλει τὴν ἑπομένην· οὕτω, τὸ παρελθὸν αὐξάνει ἀδιαλείπτως, δηλαδὴ διατηρεῖται. Συνείδησις λοιπὸν σημαίνει πρωτίστως μνήμην, παρατείνουσαν τὸ πρότερον ἐντὸς τοῦ μετέπειτα. Πᾶσα συνείδησις εἶναι μνήμη, συντήρησις δηλαδὴ καὶ συσσώρευσις τοῦ παρελθόντος ἐντὸς τοῦ μέλλοντος. Συνεπῶς, εἶναι ἀδύνατον εἰς μίαν συνείδησιν νὰ διέλθῃ δὶς διὰ μιᾶς καταστάσεως: ἡ διάρκειά μας εἶναι ἀνεπίστροφος. Εἶναι ἐπίσης ἡ συνείδησις καὶ προϊδεασμὸς τοῦ μέλλοντος. Τὸ πνεῦμα ἡμῶν ἀσχολεῖται μὲ ὅ,τι ὑπῆρξε καὶ μὲ ὅ,τι ὑπάρχει, ἀλλ' ἐν ὄψει τοῦ ἐλευσομένου. Οὕτω, ἡ συνείδησις ἐμφανίζεται ὡς ἑνωτικὸν «μεταξὺ τοῦ ὑπάρξαντος καὶ τοῦ ἐσομένου, γέφυρα μεταξὺ παρελθόντος καὶ μέλλοντος». Τὸ παρὸν ἀποτελεῖται ἀπὸ τὸ ἄμεσον παρελθὸν καὶ τὸ ἄμεσον μέλλον. Εἰς τὴν ζωήν μας, ἀνὰ πᾶσαν στιγμὴν προστίθεται νέον τι καὶ ἀπρόβλεπτον. Οὐδεμία διάνοια ἀνθρωπίνη, οὐδ' ὑπεράνθρωπος, δύναται νὰ προΐδῃ τὸ μέλλον, διότι πᾶσα στιγμὴ προσθέτει νέον τι, ὅπως οὐδεὶς δύναται νὰ προΐδῃ τὰς λεπτομερείας μιᾶς προσωπογραφίας, ὅσον καὶ ἂν γνωρίζῃ τὸν καλλιτέχνην καὶ τὸ πρότυπον. Ὁ χρόνος τὸν ὁποῖον ζῶμεν, ἡ διάρκειά μας, εἶναι ἐφεύρεσις, ἐλευθέρα καὶ νεογόνος δημιουργία. Τὸ ἐγὼ ἡμῶν αἰσθάνεται ὅτι διαρκεῖ· ἡ διάρκεια εἶναι ἄμεσον δεδομένον τῆς συνειδήσεώς μας.

Ἀσκῶν ὁ Μπέρξον κριτικὴν τῆς σχολῆς τοῦ συνειρμοῦ (associationismus) καὶ τοῦ ψυχοφυσικοῦ παραλληλισμοῦ ἀποδεικνύει ὅτι ὁ ψυχικὸς ἡμῶν βίος δὲν ἀποτελεῖται ἐκ συνειρμοῦ τινος παραστάσεων, διακεκριμένων ὡς τὰ φυσικὰ φαινόμενα ἀπ' ἀλλήλων, συμπαρατεθειμένων κατὰ γεωμετρικὸν τρόπον καὶ συνεπῶς μετρησίμων ἐπιστημονικῶς εἰς χῶρον, ὡς ἀλληλεγγύων μὲ ἐγκεφαλικὰς καὶ ὀργανικὰς καταστάσεις προεκτεινομένας εἰς ἀναλόγους κινήσεις μετρησίμους ἐν τῷ χώρῳ· ἀλλ' εἶναι ῥοῦς συνεχής, ἀδιάλειπτος, ἑτερογενὴς καὶ ἀνεπίστροφος. Εἶναι ποιοτικὴ πολλαπλότης ἀδιαίρετος καὶ ὄχι ποσοτικὴ ἑνότης τεμαχίσιμος· εἶναι ἀλληλουχία καταστάσεων εἰσχωρουσῶν ἀδιαχωρίστως εἰς ἀλλήλας καὶ ὄχι διαδοχὴ διακρίτων καταστάσεων· εἶναι τάσεις καὶ ὄχι μεγέθη· ποιότης καὶ ὄχι ποσότης. Ὁ ὁμοιογενὴς χρόνος τὸν ὁποῖον μετροῦμεν εἶναι ὁ ἀφῃρημένος μαθηματικὸς χρόνος, ὁ χρόνος-μῆκος· εἶναι κενός, ἁπλῆ ἀφαίρεσις τῆς διανοίας, ἔκτασις μὲ μίαν μόνον διάστασιν, φάσμα τοῦ διαστήματος, ἐνῷ ἡ διάρκεια εἶναι ὁ πραγματικὸς χρόνος τῆς ψυχικῆς ἡμῶν ζωῆς, χρόνος-ἐφεύρεσις, μὴ δυνάμενος νὰ ἐκταθῇ διὰ μιᾶς ἐν τῷ διαστήματι, ἀλλ' ἀνελισσόμενος ἐν ᾧ μέτρῳ δημιουργεῖ, ἐλευθέρως καὶ συνεπῶς ἀπροβλέπτως. Ἀλλὰ τὸν πραγματικὸν τοῦτον χρόνον δὲν δύναται νὰ συλλάβῃ ἡ διάνοια ἡμῶν, καθόσον, διαμορφωθεῖσα ὑπὸ τῆς ζωῆς ἵνα βοηθῇ τὴν δρᾶσιν τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς ἀψύχου ὕλης, ἵνα συμπληρώνῃ διὰ τεχνητῶν ἐργαλείων τὴν ἀνεπάρκειαν τῶν ἀνθρωπίνων ὀργάνων, ἔχει λάβει τὰς ἐκτατικὰς ἕξεις τῆς ὕλης, εἶναι ἐμπεφορημένη γεωμετρικότητος· διαιρεῖ τὴν ὕλην ἐν τῷ ὁμογενεῖ χρόνῳ καὶ τῇ ὁμογενεῖ ἐκτάσει καὶ κατόπιν ἀνασυνθέτει· μὴ δυναμένη νὰ συλλάβῃ τὴν κίνησιν, λαμβάνει πολλὰς στατικὰς εἰκόνας καὶ ἑνοῦσα αὐτάς, ὡς ἐν τῷ κινηματογράφῳ, προσπαθεῖ νὰ δώσῃ τὴν κίνησιν. Τοῦτο ὅμως εἶναι παραίσθησις: μὲ στατικὰς εἰκόνας, ὁσονδήποτε πολλάς, δὲν σχηματίζεται κίνησις. Ἡ διάνοια εἶναι ἀπαραίτητος διὰ τὴν ζωήν, ἐν τῇ ὁποίᾳ «ἡ δρᾶσις εἶναι ἀνάγκη, ὁ δὲ στοχασμὸς πολυτέλεια». Διὰ νὰ συλλάβωμεν ὅμως τὴν βαθυτέραν οὐσίαν τῆς ζωῆς καὶ τοῦ κόσμου, πρέπει ν' ἀποστρέψωμεν τὴν προσοχὴν ἡμῶν ἐκ τῆς δράσεως καὶ νὰ τὴν στρέψωμεν πρὸς τὴν βαθυτέραν κατανόησιν. Αὐτὴ ἡ στροφὴ εἶναι τὸ φιλοσοφεῖν. Εἶναι ἡ βυθομέτρησις τῆς πραγματικότητος διὰ τῆς *διαισθήσεως* ἢ *ἐνοράσεως* (intuition), «Πρέπει νὰ προσπαθήσωμεν νὰ βλέπωμεν διὰ νὰ βλέπωμεν καὶ ὄχι διὰ νὰ δράσωμεν· τότε τὸ ἀπόλυτον ἀποκαλύπτεται ἐγγύτατα ἡμῶν». «Γνῶσις ἐπιλαμβανομένη τοῦ ἀντικειμένου της ἐκ τῶν ἔνδον, ἀντιλαμβανομένη τοῦτο καθ' οἷον τρόπον θ' ἀντελαμβάνετο καὶ ἑαυτήν, ἂν ἀντίληψις καὶ ὕπαρξις δὲν ἦσαν ἓν καὶ τὸ αὐτό, εἶναι γνῶσις ἀπόλυτος, γνῶσις τοῦ ἀπολύτου. Δὲν εἶναι βεβαίως γνῶσις τῆς συνόλου πραγματικότητος· ἄλλο ὅμως εἶναι γνῶσις σχετικὴ καὶ ἄλλο γνῶσις περιωρισμένη. Ἡ πρώτη ἀλλοιώνει τὴν φύσιν τοῦ ἀντικειμένου της, ἐνῷ ἡ δευτέρα τὸ ἀφήνει ἀνέπαφον, ἀλλὰ συλλαμβάνει μέρος αὐτοῦ. Ἡ διὰ τῆς διαισθήσεως γνῶσίς μας περὶ τοῦ πραγματικοῦ εἶναι περιωρισμένη, ἀλλ' ὄχι σχετική».

Ἡ *διαίσθησις* (βλ. λ.) εἶναι τὸ εἶδος ἐκεῖνο τῆς διανοητικῆς προσπαθείας, δι' ἧς μεταφερόμεθα εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῶν πραγμάτων, διὰ νὰ ταυτισθῶμεν μὲ ὅ,τι τὸ μοναδικὸν καὶ συνεπῶς τὸ ἀνέκφραστον ἔχουν. «Ἡ ἀνθρωπίνη διαίσθησις προεκτείνει, ἀναπτύσσει καὶ μεταβάλλει εἰς διαστοχασμὸν ὅ,τι παραμένει ἐν τῷ ἀνθρώπῳ ἐκ τοῦ ἐνστίκτου». «Ὑπὸ τὴν μορφὴν τῆς διαισθήσειυς τὸ ἔνστικτον δύναται νὰ ἀνακαλύψῃ ὅ,τι τὸ καθαυτό, τὸ ἄνευ αὐτῆς δηλαδὴ ἔνστικτον δὲν ἀναζητεῖ καὶ ἡ διάνοια θηρεύει, χωρὶς νὰ δύναται νὰ συλλάβῃ». Διὰ νὰ ἐπιτύχωμεν ὅμως τὴν διαίσθησιν, πρέπει νὰ ἐθισθῶμεν, δι' εὐσυνειδήτου προεργασίας, διὰ τῆς συγκεντρώσεως ἐπιστημονικῶν καὶ ψυχολογικῶν στοιχείων, πρέπει νὰ ἐξοικειωθῶμεν μὲ τὴν πραγματικότητα, ἣν μελετῶμεν. «Ἐπιστημονικὴ καὶ ἀκριβὴς γνῶσις τῶν πραγμάτων εἶναι ἡ προϋπόθεσις τῆς μεταφυσικῆς διαισθήσεως». «Ἡ διαίσθησις ἐμβάλλει εἰς τὴν μεταφυσικὴν περισσοτέραν ἐπιστήμην καὶ εἰς τὴν ἐπιστήμην περισσοτέραν μεταφυσικήν». Εἶναι τὸ κύριον ὄργανον τῆς φιλοσοφίας. «Τὸ φιλοσοφεῖν ἔγκειται εἰς τὸ τοποθετεῖσθαι ἐν αὐτῷ τούτῳ τῷ ἀντικειμένῳ, εἶναι ἡ προσπάθεια τοῦ συγχωνεύεσθαι ἐν τῷ ὅλῳ». Ἡ διαίσθησις ὅμως ἐχρησιμοποιήθη κατὰ τρόπον ἀσυνεχῆ. «Εἶναι φανός, σχεδὸν ἐσβεσμένος, ἀναδίδων λάμψιν ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρόν, διά τινα στιγμὴν μόνον». Ἀλλ' ἡ φευγαλέα ὄψις, ἣν μᾶς δίδει ἐπὶ τοῦ πραγματικοῦ, εἶναι ἡ μόνη ἀληθὴς γνῶσις περὶ τῆς οὐσίας τῆς ζωῆς καὶ τοῦ κόσμου, διὰ κοινῆς δὲ προσπαθείας θὰ ἠδύναντο νὰ λυθοῦν ὅλα τὰ φιλοσοφικὰ προβλήματα.

Βυθομετροῦντες διὰ τῆς διαισθήσεως τὴν συνείδησιν ἡμῶν, διαπιστοῦμεν τὴν ἐλευθερίαν μας ὡς γεγονὸς ἁπτόν. Μεταξὺ τῶν ἀμέσων δεδομένων τῆς συνειδήσεως, τοῦτο εἶναι τὸ σαφέστερον: ἕκαστος ἡμῶν ἔχει ἄμεσον τὸ αἴσθημα τοῦ αὐθορμήτου· αἰσθάνεται ἑαυτὸν ἐλεύθερον. Ἡ ζωὴ καὶ ἡ συνείδησις δὲν ἀναπαράγουσι μηχανικῶς καὶ παθητικῶς, ὑπὸ τὴν ἐπενέργειαν τῶν ἐξωτερικῶν ὑλικῶν αἰτίων, ἀλλ' ἀντιδρῶσι πρὸς αὐτὰ δημιουργικῶς, νεογόνως καὶ ἀπροβλέπτως — δηλαδὴ ἐλευθέρως. Βεβαίως πολλαὶ πράξεις τοῦ καθ' ἡμέραν βίου ὑπόκεινται εἰς τὴν προσδιοριστικὴν ἐπίδρασιν τῆς ἐπιθυμίας ἢ τῆς ἕξεως καὶ εἰς τὴν μηχανικὴν ἐπενέργειαν ἐξωτερικῶν αἰτίων, ὧν πάντων εἶναι δοῦλον τὸ κατ' ἐπιπολὴν ἐγώ μας (le moi superficiel). Ἀλλὰ τὸ βαθύτερον, τὸ θεμελιῶδες ἐγώ μας (le moi fondemental) εἶναι πηγὴ ἐλευθερίας. «Ἡ ἀπόφασις εἶναι ἐλευθέρα, ὅταν, μετὰ βαθὺν στοχασμόν, ἀναβλύζῃ ἐξ ὁλοκλήρου τῆς προσωπικότητός μας, ἀνταποκρινομένη πρὸς τὸ σύνολον τῶν αἰσθημάτων, τῶν σκέψεων καὶ τῶν μυχιωτέρων μας πόθων, πρὸς τὴν ἰδίαν ἡμῶν ἀντίληψιν περὶ τῆς ζωῆς καὶ πρὸς τὴν ἰδέαν ἡμῶν περὶ εὐτυχίας καὶ τιμῆς». «Ἐνεργεῖν ἐλευθέρως, ἴσον λαμβάνειν πάλιν γνῶσιν ἑαυτοῦ, τοποθετεῖσθαι πάλιν ἐν τῇ καθαρᾷ διαρκείᾳ». Ὁ χαρακτὴρ ἡμῶν, ὅστις διαφαίνεται εἰς ὅλας μας τὰς ἀποφάσεις, εἶναι ἡ σύνθεσις ὅλων τῶν παρελθουσῶν καταστάσεών μας· ὑπὸ τὴν συμπεπυκνωμένην ταύτην μορφὴν ὑφίσταται ὁλόκληρος ἡ προτέρα μας ζωή, συγκρατουμένη διὰ τῆς μνήμης.

Τὴν ψυχολογικὴν λειτουργίαν τῆς μνήμης ἐξετάζει ἐν τῷ δευτέρῳ του ἔργῳ «Ὕλη καὶ Μνήμη» ὁ Μπέρξον, διακριβῶν τὴν μεταξὺ νοήσεως καὶ ἐγκεφάλου καί, γενικώτερον, μεταξὺ σώματος καὶ πνεύματος σχέσιν. Διακρίνει δύο εἴδη μνήμης: τὴν *μνήμην - ἕξιν*, ἥτις, χρησιμοποιοῦσα τὴν ἐπανάληψιν, κρατεῖ ἔνδον ἡμῶν τὸ παρελθὸν ὑπὸ μορφὴν κινητηρίων μηχανισμῶν (ὡς ὁ μηχανισμὸς δι' οὗ ἀποστηθίζομεν ἓν μάθημα)· καὶ τὴν *μνήμην τῶν εἰκόνων - ἀναμνήσεων*, ἥτις αὐθορμήτως, χωρὶς προσπάθειαν, συγκρατεῖ τὸ παρελθὸν ὑπὸ τύπον παραστάσεων (ὅπως ἡ καταχωροῦσα καὶ ὑπενθυμίζουσα τὰ διάφορα πάντοτε συμβάντα, τὰς διαρκῶς μεταβαλλομένας λεπτομερείας τοῦ καθ' ἡμέραν βίου). Ἐκ τούτων μόνη ἡ πρώτη, ἡ μνήμη-ἕξις εἶναι στενῶς συνδεδεμένη μὲ τὸν ἐγκέφαλον· ἡ δευτέρα, ἡ μνήμη τῶν εἰκόνων - ἀναμνήσεων, ἡ καὶ πραγματικὴ μνήμη, εἶναι ἀνεξάρτητος τοῦ ἐγκεφάλου, ὅστις δὲν εἶναι ἀποθήκη τῶν ἀναμνήσεων, ἀλλ' ἁπλοῦν «ὄργανον παντομίμας», χρησιμεῦον διὰ ν' ἀνακαλῇ ἑκάστοτε τὰς ἐπικαίρους εἰκόνας - ἀναμνήσεις, ἢ μᾶλλον διὰ ν' ἀπομακρύνῃ ὅλας τὰς μὴ χρησίμους ἐν ἑκάστῃ στιγμῇ. Ὁ Μπέρξον, ἐπὶ πενταετίαν μελετήσας ὅλην τὴν βιβλιογραφίαν περὶ ἀφασίας, ἀποδεικνύει ὅτι ἐν τῇ ἀφασίᾳ ἢ ἀμνησίᾳ, τῶν λέξεων κυρίως, προέρχεται ὄχι διότι αἱ λέξεις αὗται κατεῖχον ὡρισμένην τινὰ περιοχὴν τοῦ ἐγκεφάλου, βεβλαμμένην ἤδη, ἀλλὰ διότι ἐβλάβησαν οἱ ἀνακαλοῦντες αὐτὰς κινητήριοι μηχανισμοὶ τοῦ ἐγκεφάλου. Ἡ μνήμη δὲν χάνεται, παραμένει ἐν τῷ ὑποσυνειδήτῳ, αὐξανομένη ἐν ᾧ μέτρῳ ζῶμεν· εἶναι αὐτὸ τοῦτο τὸ παρελθὸν ἡμῶν. Ἀλλὰ καὶ «πᾶσα ἀντίληψις εἶναι ἤδη μνήμη. Ἐν τῇ πράξει δὲν ἀντιλαμβανόμεθα εἰμὴ μόνον τὸ παρελθόν· τὸ καθαυτὸ παρὸν εἶναι ἡ ἀσύλληπτος πρόβασις τοῦ παρελθόντος, διαβιβρώσκοντος τὸ μέλλον». Μελετῶν ὁ Μπέρξον τὸ ψυχολογικὸν φαινόμενον τῆς *ἀντιλήψεως*, ὁρίζει τὴν ἀντίληψιν ὡς προέκτασιν καὶ ἐξέλιξιν τῆς ἐρεθισιμότητος οὐ μόνον τῶν ἐμψύχων ὄντων, ἀλλὰ καὶ τῆς ἀψύχου ὕλης, ἀντιδρώσης εἰς τὰς ἔξωθεν ἐπιδράσεις. Ἡ ἐρεθιστικότης τῶν ὑποτυπωδεστέρων πρωτοπλασματικῶν κυττάρων καὶ ἡ ἀντίληψις τῶν ἀνωτέρων ὄντων εἶναι τῆς αὐτῆς φύσεως. Πάντα τὰ σώματα ἐν τῷ κόσμῳ δρῶσι καὶ ἀντιδρῶσι πρὸς ἄλληλα, δηλαδὴ αἰσθάνονται, ἀντιλαμβάνονται ἄλληλα. Καὶ ἡ μὲν ἀντίδρασις τῶν ἀψύχων εἶναι μηχανική, τυφλή,

Digitized by Google

ὁμοιόμορφος, παθητικὴ τελείως· ἡ ἐνέργεια διέρχεται διὰ μέσου αὐτῶν, ὅπως τὸ φῶς διὰ διαφανοῦς ὑάλου, χωρὶς καμμία ἀκτίς του νὰ συγκρατῆται· ἡ ἀντίδρασις ὅμως τῶν ἐμψύχων ὄντων, ἰδίᾳ δὲ ἡ ὑψηλοτέρα αὐτῆς μορφή, ἡ ἀντίληψις τῶν τελειοτέρων ὄντων, καὶ δὴ τοῦ ἀνθρώπου, εἶναι ποικίλη, ἀπρόβλεπτος, ἔχει ἐλευθερίαν ἐκλογῆς, τόσον μεγαλυτέραν, ὅσον περισσότερον ἀνεπτυγμένος εἶναι ὁ ἐγκέφαλος καὶ τὸ αἰσθητηριοκινητικὸν σύστημα. Δὲν δύναται νὰ παρομοιασθῇ μὲ διαφανῆ ὕαλον, ἀλλὰ μὲ καθρέπτην συγκρατοῦντα καὶ ἀντανακλῶντα τὰς ἔξωθεν ἐντυπώσεις. Αἱ συγκρατούμεναι ἐντυπώσεις αὗται καὶ αἱ σχηματιζόμεναι ἐξ αὐτῶν ὑπὸ τοῦ ἐγκεφάλου εἰκόνες, αἱ παραστάσεις ἡμῶν, εἶναι ἡ *ὕλη*. Αἱ εἰκόνες αὗται εἶναι «κάτι περισσότερον τῆς παραστάσεως τῶν ἰδεαλιστῶν καὶ κάτι ὀλιγώτερον τοῦ πράγματος τῶν ρεαλιστῶν». Εἶναι μία ὑπόστασις «εὑρισκομένη εἰς τὰ μέσα τοῦ δρόμου μεταξὺ παραστάσεως καὶ πράγματος». Τοιαύτη εἶναι καὶ ἡ περὶ ὕλης ἀντίληψις τοῦ κοινοῦ νοῦ. Μολονότι δέ, ὅσον τις ἀνέρχεται τὴν κλίμακα τῶν ὄντων, ἡ βαθμιαία ἔκλειψις τῆς αὐτοματικότητος καὶ ἡ βαθμιαία αὔξησις τῆς ἐλευθερίας ἀντιστοιχοῦν εἰς τὴν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον ἀνάπτυξιν τοῦ ἐγκεφάλου, εἶναι παράλογον, λέγει ὁ Μπέρξον, νὰ ὑποτεθῇ ὅτι ἡ σκέψις εἶναι προϊὸν ἀποκλειστικὸν τοῦ ἐγκεφάλου, ἢ ὅτι ἡ ἔλλογος ἡμῶν συνείδησις εἶναι ἁπλοῦν ἐπιφαινόμενον ἐγκεφαλικῶν λειτουργιῶν. Ἡ ἐγκεφαλικὴ ἡμῶν κατάστασις μέρος μόνον τῆς συνολικῆς μας νοήσεως ἀποτελεῖ. Ὁ ἐγκέφαλος δὲν παράγει τὴν νόησιν, ἀλλὰ εἶναι ὄργανον προσαρμογῆς τοῦ πνεύματος εἰς τὴν ζωήν. «Τὸ νὰ νομίζεται ὅτι αἱ ἐγκεφαλικαὶ λειτουργίαι εἶναι τὸ σύνολον τῆς πνευματικῆς μας ἐνεργητικότητος, εἶναι ὡσὰν αἱ κινήσεις ἑνὸς ἀρχιμουσικοῦ νὰ ἐκλαμβάνωνται ὡς τὸ σύνολον μιᾶς μουσικῆς συμφωνίας». Τὸ πνεῦμα εἶναι ὀντότης ἀνεξάρτητος τοῦ σώματος, ὑπερβαίνουσα τοῦτο ἐν τῷ χρόνῳ καὶ ἐν τῷ χώρῳ· εἶναι δύναμις «ἀντλοῦσα ἐξ ἑαυτῆς περισσότερα τῶν ὅσων περιέχει, ἀποδίδουσα περισσότερα τῶν ὅσων λαμβάνει, παρέχουσα περισσότερα τῶν ὅσων κατέχει». Ἐφ' ὅσον δὲ τὸ πνεῦμα εἶναι ὑπόστασις διάκριτος τοῦ σώματος, ἡ ἐπιβίωσις τῆς ψυχῆς εἶναι δυνατὴ καὶ μάλιστα πιθανή. «Ἡ διατήρησις, ἀκόμη καὶ ἡ ἔντασις τῆς προσωπικότητος εἶναι δυνατή, καὶ μάλιστα πιθανὴ μετὰ τὴν ἀποσύνθεσιν τοῦ σώματος».

Πρὸς καθορισμὸν τῆς σχέσεως σώματος καὶ πνεύματος, ὁ Μπέρξον λαμβάνει τὴν σύνθεσιν τῆς συγκεκριμένης, τῆς κοινῶς λεγομένης, ἀντιλήψεως. Ἡ καθαρὰ κατ' αἴσθησιν ἀντίληψις εἶναι μία λειτουργία τοῦ σώματος, μορφὴ ἐξειλιγμένη τῆς ἐρεθισιμότητος τῶν ὑποτυπωδῶν ὀργανισμῶν. Ἡ δὲ καθαρὰ ἐν διαρκείᾳ μνήμη εἶναι λειτουργία ἀποκλειστικῶς πνευματική. Ἡ διανοητικὴ κατάστασις ἡμῶν ταλαντεύεται δίκην ἐκκρεμοῦς μεταξὺ τῶν δύο τούτων ἀνεφίκτων ἐν τῇ πραγματικότητι ὁρίων. Ἡ ἐγκεφαλικὴ σκέψις εἶναι τὸ σημεῖον ἐπαφῆς τῶν δύο τούτων στοιχείων, τοῦ πνευματικοῦ (τῆς μνήμης) καὶ τοῦ σωματικοῦ (τῆς κατ' αἴσθησιν ἀντιλήψεως). Σύνθεσις τῶν δύο τούτων στοιχείων εἶναι ἡ κοινῶς λεγομένη *ἀντίληψις*. Ἐν αὐτῇ, ἡ καθαρὰ μνήμη, ἡ συνείδησις δηλαδή, ἐλευθέρα δημιουργὸς ἐνεργητικότης, σύρει μεθ' ἑαυτῆς, ἀνὰ πᾶσαν στιγμήν, ὁλόκληρον τὸ παρελθόν, ἀλλ' ὁ ἐγκέφαλος δὲν ἀφήνει νὰ εἰσέλθῃ εἰς τὴν διάνοιαν παρὰ μόνον ὅσον ἐκ τοῦ παρελθόντος τούτου χρειάζεται πρὸς ἐξήγησιν τοῦ παρόντος καὶ προπαρασκευὴν τῆς ἐν τῷ ἀμέσῳ μέλλοντι δράσεως ἡμῶν. Ἀφ' ἑτέρου ἡ καθαρὰ κατ' αἴσθησιν ἀντίληψις δὲν εἶναι ἐφικτὴ ἐν τῇ πραγματικότητι· ὅσον στιγμιαία καὶ ἂν ὑποτεθῇ, πάντως προϋποθέτει διάρκειάν τινα, ἀπειροελαχίστην ἔστω, ἱκανὴν ὅμως ὁπωσδήποτε νὰ συσσωρεύσῃ καὶ παρελθὸν ἐντὸς τοῦ παρόντος. Οὕτω προκύπτει ἡ κοινῶς λεγομένη ἀντίληψις, ἡ συγκεκριμένη ἀντίληψις, ἡ σύνθεσις μνήμης καὶ κατ' αἴσθησιν ἀντιλήψεως. Καὶ οὕτω γίνεται ἡ καταχώρησις τῆς ψυχῆς ἐν τῷ σώματι, τῆς ὕλης ἐν τῷ πνεύματι. «Εἰς τὴν φιλοσοφίαν ἀπόκειται νὰ σπουδάσῃ τὸν ψυχικὸν ἡμῶν βίον καθ' ἁπάσας αὐτοῦ τὰς ἐκφάνσεις. Ἐξοικειούμενος εἰς τὸν χειρισμὸν τῆς ἐσωτερικῆς παρατηρήσεως ὁ φιλόσοφος ὀφείλει νὰ κατέλθῃ εἰς τὰ ἔγκατα ἑαυτοῦ, κατόπιν δέ, ἀνερχόμενος εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, νὰ παρακολουθήσῃ τὴν βαθμιαίαν κίνησιν, δι' ἧς ἡ συνείδησις χαλαροῦται, διεκτείνεται, προπαρασκευάζεται, ἵνα ἐξελιχθῇ ἐν τῷ διαστήματι. Παριστάμενος εἰς τὴν προοδευτικὴν ταύτην ὑλίκευσιν, κατοπτεύων τὰ διαβήματα, δι' ὧν ἡ συνείδησις ἐξωτερικεύεται, δύναται νὰ ἐπιτύχῃ διαίσθησίν τινα τοὐλάχιστον τῆς καταχωρήσεως τοῦ πνεύματος ἐν τῇ ὕλῃ, τῆς σχέσεως τοῦ σώματος πρὸς τὴν ψυχήν». «Ἔχομεν τὴν ὑπόνοιαν ὅτι ἐν τῇ διελεύσει της διὰ μέσου τῆς εὑρισκομένης ἐδῶ κάτω ὕλης, ἡ συνείδησις βάφεται, ὅπως ὁ χάλυψ ἐν τῷ ὕδατι, καὶ προετοιμάζεται δι' ἐνεργητικωτέραν δρᾶσιν, διὰ ζωὴν ἐντονωτέραν. Τὴν ζωὴν ταύτην φαντάζομαι ὡς ζωὴν νέων ἀγώνων καὶ ὡς ἀπαίτησιν ἐφευρέσεως, ὡς δημιουργὸν ἐξέλιξιν. Ἕκαστος ἐξ ἡμῶν φθάνει ἐκεῖ διὰ μόνης τῆς ἀσκήσεως τῶν φυσικῶν του δυνάμεων, διὰ νὰ λάβῃ θέσιν εἰς ἐκεῖνο τῶν ἠθικῶν ἐπιπέδων, ὅπου τὸν ὑψώνει δυναμικῶς ἐντεῦθεν ἡ ποσότης καὶ ἡ ποιότης τῆς προσπαθείας του, ὅπως ἡ ἀερόσφαιρα ἀπολυομένη ἐκ τῆς γῆς φθάνει μέχρι τοῦ ἀναλόγου εἰς τὴν πυκνότητά της ὕψους». «Ἐὰν δέ, ὡς προσεπαθήσαμεν ν' ἀποδείξωμεν, ὁ νοητικὸς βίος ὑπερβάλλῃ τὸν ἐγκεφαλικόν, ἂν ὁ ἐγκέφαλος περιορίζεται νὰ μεταφράζῃ εἰς κινήματα μικρὸν μόνον μέρος τῶν συμβαινόντων ἐν τῇ συνειδήσει, τότε ἡ ἐπιβίωσις τῆς ψυχῆς ἀποβαίνει τόσον πιθανή, ὥστε ἡ ὑποχρέωσις τῆς ἀποδείξεως ἀπόκειται εἰς τὸν ἀρνούμενον μᾶλλον παρὰ εἰς τὸν παραδεχόμενον αὐτήν».

Συνεπὴς πρὸς τὴν ἀρχήν, ἣν ἔθεσεν, ὅτι ἡ φιλοσοφία εἶναι ψυχολογία προεκτεινομένη εἰς μεταφυσικήν, ὁ Μπέρξον, εἰς τὸ ἔργον του «Ἡ Δημιουργὸς Ἐξέλιξις», διαπιστοῖ ὅτι ἡ ἐπιστήμη, προορισμὸν ἔχουσα τὴν ἄθροισιν ὠφελίμων ἐν τῇ ζωῇ ἀληθειῶν, δὲν δύναται νὰ συλλάβῃ τὴν πραγματικὴν ἀλήθειαν. Εἰς τὴν μεταφυσικὴν ἀπόκειται νὰ μᾶς δώσῃ τὴν κλεῖδα τοῦ μυστηρίου τῆς ζωῆς καὶ τοῦ κόσμου. Ἐλέγχων τὸν στενὸν ἐξελικτισμὸν τοῦ Σπένσερ καὶ τὰς μηχανιστικὰς καθὼς καὶ τὰς τελολογικὰς θεωρίας, δέχεται ὡς πιθανωτέραν ὅλων τὴν θεωρίαν τῆς ἐξελίξεως, ἐφόσον ὅλαι αἱ παρατηρήσεις ὑπὲρ αὐτῆς συνηγοροῦν, ἀλλά, λέγει, ἡ ἐξέλιξις δὲν δύναται ἄλλως νὰ ἐξηγηθῇ, εἰμὴ ἂν ὑποθέσωμεν «μίαν ἐσωτερικὴν ὤθησιν, φέρουσαν τὴν ζωήν, διὰ μορφῶν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον περιπλόκων, πρὸς πεπρωμένα ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον ὑψηλότερα», τὴν *ζωτικὴν φορὰν* (élan vital). Αὕτη εἶναι ἡ μεταφυσικὴ ἀρχὴ τῆς ζωῆς, ἀρχὴ ὑπερμηχανικὴ καὶ ὑπερδιανοητική, ἐξελισσομένη καὶ δημιουργοῦσα ἐν τῇ καθαρᾷ διαρκείᾳ. Δὲν εἶναι μηχανικὴ διαδοχὴ αἰτίων καὶ αἰτιατῶν ἡ ζωή· εἶναι δημιουργία ἐλευθέρα, νεογόνος καὶ ἀπρόβλεπτος, μὴ δυναμένη νὰ προσδιορισθῇ ἐκ τῶν προτέρων, οὐδὲ νὰ ἐξηγηθῇ πλήρως ἐκ τῶν ὑστέρων ὑπὸ τῆς διανοίας, ἥτις, διαμορφωθεῖσα ὑπὸ τῆς ζωῆς, εἰς ὡρισμένας περιστάσεις, διὰ νὰ δρᾷ ἐπὶ τῆς ὕλης—καὶ ὅταν δρᾷ ἐπὶ ὕλης ἐμψύχου ὡς ἄψυχον τὴν μεταχειρίζεται—λαμβάνει στατικὰς ἀπόψεις τῆς ζωῆς, τῆς διαφεύγει δὲ ἡ πραγματικὴ ταύτης οὐσία, τὸ ἀέναον δηλαδὴ γίγνεσθαι, ὁ συνεχὴς καὶ ἀδιάλειπτος ροῦς τοῦ πραγματικοῦ. Θὰ παρέμεινε δὲ ἄλυτον τὸ μυστήριον τῆς ζωῆς, «ἂν ἤμεθα καθαρῶς διάνοιαι, ἂν πέριξ τῆς λογικῆς καὶ ἀντιληπτικῆς νοήσεως ἡμῶν, δὲν εἶχεν ἀπομείνει ἀόριστός τις νεφέλωσις, γινομένη ἀπὸ τὴν ἰδίαν οὐσίαν—τὴν συνείδησιν—,ἀναλώμασι τῆς ὁποίας ἐσχηματίσθη ὁ φωτεινὸς πυρὴν τὸν ὁποῖον καλοῦμεν διάνοιαν. Ἐκεῖ ἑδρεύουσι συμπληρωματικαί τινες δυνάμεις τῆς νοήσεως, τῶν ὁποίων δὲν ἔχομεν παρὰ συγκεχυμένην τινὰ αἴσθησιν, ὅταν μένωμεν ἔγκλειστοι ἐν ἑαυτοῖς». Ἡ νεφέλωσις αὕτη εἶναι τὸ *ἔνστικτον*, τὸ ὁποῖον, ἀποβαῖνον ἀνιδιοτελὲς καὶ δι' ἀναστροφῆς ἀπὸ τῆς πρὸς τὰ πρόσω φορᾶς του ρίπτον βλέμμα πρὸς τὰ ὀπίσω καὶ διαστοχαζόμενον στιγμιαίως, μᾶς δίδει τὴν *διαίσθησιν*, λάμψιν ἀμυδρὰν καὶ φευγαλέαν, ἀλλὰ δίδουσαν τὴν μόνην ἀσφαλῆ ὄψιν τοῦ πραγματικοῦ.

Ἡ ζωὴ εἶναι ἡ ἐξέλιξις τῆς *ζωτικῆς φορᾶς*, ἥτις περιέχει ἐνδυνάμως, ἐν καταστάσει ἀλληλοεισχωρήσεως, διαφόρους τάσεις συμπληρωματικὰς ἀλλήλων, ἀποσχιζομένας εἰς διεστώσας κατευθύνσεις ἅμα τῇ προσκόψει ἐπὶ τῆς ὕλης, ἐξ οὗ ἐξηγεῖται καὶ ἡ πλειονότης τῶν γραμμῶν ἐξελίξεως, διισταμένων ἐν ᾧ μέτρῳ προχωροῦν. Παρέχει ἡ ζωὴ τὴν εἰκόνα «ὀβίδος ἥτις ἐξερράγη εἰς βλήματα, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦντα, ἕκαστον, εἶδος ὀβίδος καὶ αὐτά, ἐξερράγησαν πάλιν εἰς ἄλλα βλήματα προωρισμένα καὶ ταῦτα νὰ ἐκραγῶσιν εἰς ἐκρηκτικὰ βλήματα καὶ οὕτω καθεξῆς ἐπὶ μήκιστον». Ἐπὶ τοῦ πλανήτου μας ἡ ζωὴ φαίνεται οὖσα τάσις τις βαθμιαίας συλλογῆς ἐκ τοῦ ἡλίου καὶ ἀποθηκεύσεως ἐνεργείας, ὑπὸ τὴν μορφὴν ἄνθρακος, καὶ ἀθροιστικῆς, δι' ἐξαπολύσεως, καταναλώσεως αὐτῆς εἰς παραγωγὴν κινήσεως ἐν τῷ χώρῳ. Ἀλλ' εἷς καὶ ὁ αὐτὸς ὀργανισμὸς δὲν δύναται νὰ ἐπιτελέσῃ ἀμφοτέρους τοὺς ἄθλους καὶ ἡ ζωτικὴ φορὰ ἐδιχάσθη εἰς *ἀσύνειδον* καὶ *συνείδησιν*, εἰς καθήλωσιν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους καὶ εἰς κινητικότητα. Ἐνεφανίσθησαν οὕτως αἱ δύο μορφαὶ τοῦ ἐνοργάνου κόσμου: Τὰ φυτά, καθηλωμένα ἐπὶ τοῦ ἐδάφους καὶ ἀποθηκεύοντα βαθμιαίως ἄνθρακα καὶ ἀφομοιοῦντα αὐτὸν εἰς ὀργανικὰς οὐσίας, καὶ τὰ ζῷα, καταναλίσκοντα ἀθροιστικῶς τοῦτον εἰς κινητικότητα, ἀφοῦ τὸν λάβουν, ἐμμέσως ἢ ἀμέσως, ἐκ τῶν φυτῶν. Περαιτέρω ἡ ζωτικὴ φορά, ἢ μᾶλλον ὁ ἕτερος αὐτῆς κλάδος, ἡ συνείδησις, ἐδικρανώθη καὶ πάλιν: εἰς *ἔνστικτον*, ἐμφανιζόμενον, ὑπὸ τὴν ὑψίστην αὐτοῦ μορφήν, εἰς τὰ ἔντομα καὶ ἰδίᾳ εἴς τινα ὑμενόπτερα, καὶ εἰς *διάνοιαν*, ἐξιχθεῖσαν εἰς τὴν μεγίστην αὐτῆς ἀνάπτυξιν παρὰ τῷ ἀνθρώπῳ. Ἀλλ' ἡ ἀπόσχισις δὲν ὑπῆρξε πλήρης, καὶ ὅπως εἰς τὰ ἔντομα παρατηρεῖται ὑποτυπώδης τις διάνοια, οὕτω καὶ παρὰ τῷ ἀνθρώπῳ παρέμειναν ἴχνη τινὰ ἐνστίκτου. «Τὸ ἔνστικτον εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ ζωή· συγχέεται μετὰ τῆς ζωτικῆς δυνάμεως ἑκάστου ἐνβίου ὄντος καὶ προεκτείνει αὐτήν. Ἐὰν δὲ ἡ ὑπνώττουσα ἐν αὐτῷ συνείδησις ἀφυπνίζετο, ἐὰν ἠδύνατο νὰ ἐσωτερικευθῇ εἰς γνῶσιν, ἀντὶ νὰ ἐξωτερικεύεται εἰς δρᾶσιν, ἐὰν ἠδυνάμεθα νὰ τὸ ἐρωτήσωμεν καὶ ἂν ἦτο εἰς θέσιν νὰ μᾶς ἀπαντήσῃ, θὰ μᾶς ἀπεκάλυπτε τὰ βαθύτερα μυστικὰ τῆς ζωῆς». Ἤδη ὑπὸ τὴν μορφὴν τῆς διαισθήσεως (ἐνοράσεως) μᾶς δίδει ἀμυδράς τινας ὄψεις, ἐξ ὧν πρέπει νὰ συναρμολογήσωμεν τὴν θεωρίαν περὶ τῆς ζωῆς καὶ τοῦ κόσμου καὶ ν' ἀπαντήσωμεν εἰς τὰ ἐρωτήματα: τί εἴμεθα, πόθεν ἐρχόμεθα, ποῦ ὑπάγομεν.

Οὕτως, ἡ ζωὴ φαίνεται «ὡς προσπάθεια ἀναρριχήσεως εἰς τὴν κλιτύν, ἣν κατέρχεται ἡ ὕλη». Ἡ ζωὴ εἶναι μία κίνησις, ἡ ὑλικότης εἶναι ἡ ἀντίθετός της κίνησις, κύματα ἀμφότερα συνεχῆ καὶ ἀδιαίρετα. Πλημμυρὶς καὶ ἄμπωτις, ὄχι ἐκ περιτροπῆς, ἀλλὰ ταυτοχρόνως ὑπάρχουσαι. «Ἡ ζωὴ εἶναι τάσις πρὸς δρᾶσιν ἐπὶ τῆς ἀδρανοῦς ὕλης». Ἡ διαίρεσις τῆς ὕλης εἰς πράγματα εἶναι τεχνητή, γίνεται ὑπὸ τῆς διανοίας, ἵνα καταστῇ εὐχερὴς ἡ ἐπ' αὐτῆς δρᾶσίς μας. «Τὰ ὁρατὰ περιγράμματα τῶν διαφόρων σωμάτων ἀποτελοῦν τὸ σχέδιον τῆς ἐνδεχομένης ἐπ' αὐτῶν δράσεώς μας». «Ἡ ζωή, θεωρουμένη καθ' ἑαυτὴν εἶναι ἀπειρία δυνατοτήτων, συνωστισμὸς μυρίων τάσεων, αἱ ὁποῖαι ὅμως εἶναι μυρίαι, ὅταν καταστοῦν ἐξώτεραι ἀλλήλων, δηλαδὴ ὅταν ἐκτατικευθῶσιν». Εἶναι «τεραστία προσπάθεια καταβαλλομένη ὑπὸ τῆς συνειδήσεως, διὰ νὰ ἐπιτύχῃ παρὰ τῆς ὕλης κάτι τὸ ὁποῖον αὕτη δὲν θὰ ἤθελε νὰ δώσῃ», «προσπάθεια ἐγκεντρισμοῦ ὅσον τὸ δυνατὸν μεγαλυτέρου ποσοῦ ἀπροσδιοριστίας-ἐλευθερίας ἐπὶ τῆς ἀναγκαιότητος». «Ἐμπρός της μένουν ὀρθάνοικτοι αἱ πύλαι τοῦ μέλλοντος. Εἶναι δημιουργία συνεχιζομένη ἀτερμόνως, δυνάμει πρωταρχικῆς τινος κινήσεως. Ἡ κίνησις αὕτη ἀποτελεῖ τὴν ἑνότητα τοῦ ἐνοργάνου κόσμου—ἑνότητα γόνιμον, ἀπείρως δαψιλῆ, ἀνωτέραν πάσης διανοητικῆς συλλήψεως, ἀφοῦ ἡ διάνοια εἶναι μόνον μία τῶν ἀπόψεών της, ἢ ἓν τῶν προϊόντων της». Παράδοξον τῷ ὄντι τὸ ἐγχείρημα τῆς ζωῆς! «Ἐπρόκειτο νὰ δημιουργήσῃ μὲ τὴν ὕλην, ἥτις εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ ἀναγκαιότης, ἐργαλεῖον ἐλευθερίας, νὰ κατασκευάσῃ μηχανὴν κατανικῶσαν τὸν μηχανισμὸν καὶ νὰ χρησιμοποιήσῃ τὴν αἰτιοκρατίαν (determinisme) τῆς φύσεως, ἵνα διέλθῃ διὰ μέσου τοῦ δικτύου ὅπερ ἡ φύσις ἐξέτεινεν». «Ἡ ζωὴ φαίνεται ὡς ρεῦμα βαῖνον ἀπὸ σπέρματος εἰς σπέρμα, μέσῳ ἀνεπτυγμένων ὀργανισμῶν». Ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης ὁ ἄνθρωπος δύναται νὰ θεωρηθῇ τέρμα καὶ σκοπὸς τῆς ἐξελίξεως. «Ὅλα ἐν τῷ κόσμῳ συμβαίνουν ὡσὰν ὄν τι ἀπροσδιόριστον καὶ ἀβέβαιον, ὅπερ δύναταί τις νὰ ὀνομάσῃ ἄνθρωπον ἢ ὑπεράνθρωπον, νὰ ἐπεδίωξε τὴν πραγμάτωσίν του καὶ νὰ μὴ τὴν κατώρθωσεν εἰμὴ ἐγκαταλεῖπον καθ' ὁδὸν μέρος τοῦ ἑαυτοῦ του. Τὰ κατάλοιπα ταῦτα ἀντιπροσωπεύονται διὰ τῶν ἄλλων ζωϊκῶν καὶ φυτικῶν εἰδῶν ἐν τῷ κόσμῳ». «Τὰ ζῷα ὑπῆρξαν χρήσιμοι συνοδοιπόροι, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἡ συνείδησις ἐξεφορτώθη ὅ,τι βάρος τὴν ἠμπόδιζε νὰ προχωρήσῃ καὶ οὕτω κατέστη εἰς αὐτὴν δυνατὸν νὰ ἐξαρθῇ μὲ τὸν ἄνθρωπον εἰς ὕψος, ἀπὸ τοῦ ὁποίου βλέπει ἀπέραντον ὁρίζοντα ν' ἀνοίγεται πρὸ αὐτῆς».

«Ἡ φιλοσοφία μᾶς εἰσάγει οὕτως εἰς τὸν πνευματικὸν βίον καὶ μᾶς δεικνύει ταυτοχρόνως τὴν σχέσιν τοῦ πνευματικοῦ βίου πρὸς τὸν σωματικόν. Ἡ μεγάλη πλάνη τῶν πνευματικιστικῶν θεωριῶν ὑπῆρξεν ὅτι ἐπίστευον ὅτι, ἀπομονοῦσαι τὸν πνευματικὸν βίον πάντων τῶν ἄλλων καὶ ἐξαρτῶσαι αὐτὸν ἐν τῷ διαστήματι, ὅσον τὸ δυνατὸν ὑψηλότερον ὑπὲρ τὴν γῆν, τὸν προεφύλασσον ἀπὸ πάσης προσβολῆς· ὡς νὰ μὴ τὸν ἐξέθετον οὕτω κατὰ τρόπον ὥστε νὰ ἐκληφθῇ ὡς ἀποτέλεσμα ἀντικατοπτρισμοῦ! Βεβαίως ἔχουσι δίκαιον αὗται ν' ἀκούωσι τὴν συνείδησιν, ὅταν ἡ συνείδησις βεβαιοῖ τὴν ἀνθρωπίνην ἐλευθερίαν. Ἀλλ' ὑπάρχει καὶ διάνοια, ἥτις λέγει ὅτι τὸ αἴτιον προσδιορίζει τὸ ἀποτέλεσμα, ὅτι τὸ πᾶν ἐπαναλαμβάνεται καὶ ὅτι τὸ πᾶν εἶναι δεδομένον. Ἔχουσι δίκαιον νὰ πιστεύωσιν εἰς τὴν πραγματικότητα τῆς προσωπικότητος καὶ εἰς τὴν ἀνεξαρτησίαν αὐτῆς ἀπέναντι τῆς ὕλης. ἀλλ' ὑπάρχει καὶ ἡ ἐπιστήμη, ἥτις καταδεικνύει τὴν ἀλληλεγγύην τοῦ συνειδησιακοῦ βίου καὶ τῆς ἐγκεφαλικῆς ἐνεργητικότητος. Ἔχουσι δίκαιον νὰ δίδωσιν εἰς τὸν ἄνθρωπον προνομιοῦχον θέσιν ἐν τῇ φύσει, νὰ θεωρῶσιν ὡς ἄπειρον τὴν ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ ζῴου εἰς τὸν ἄνθρωπον· ἀλλ' ὑπάρχει καὶ ἡ ἱστορία τῆς ζωῆς, ἥτις μᾶς καλεῖ νὰ παραστῶμεν εἰς τὴν γένεσιν τῶν εἰδῶν, διὰ τοῦ βαθμιαίου μεταμορφισμοῦ καὶ ἥτις φαίνεται ὡσεὶ ἀποκαθιστῶσα τὸν ἄνθρωπον ἐν τῇ ζωϊκότητι. Ὅταν ἰσχυρόν τι ἔνστικτον κηρύσσῃ πιθανὴν τὴν ἐπιβίωσιν τῆς προσωπικότητος, ἔχουσι δίκαιον αἱ πνευματικισταὶ θεωρίαι νὰ μὴ κλείωσι τὰ ὦτα εἰς τὴν φωνὴν αὐτήν· ἀλλ' ἐὰν ὑπάρχωσιν οὕτω «ψυχαὶ» ἱκαναὶ δι' ἀνεξάρτητον ζωήν, πόθεν ἔρχονται αὗται; Πότε, πῶς, διατί εἰσέρχονται ἐντὸς τοῦ σώματος τούτου, τὸ ὁποῖον βλέπομεν ὑπὸ τὰ ὄμματα ἡμῶν ἐξερχόμενον, φυσικώτατα, ἐξ ἑνὸς μικτοῦ κυττάρου ληφθέντος ἀπὸ τὰ σώματα τῶν δύο γονέων; Πᾶσαι αἱ ἐρωτήσεις αὗται θὰ μείνωσιν ἄνευ ἀπαντήσεως καὶ μία διαισθητικὴ φιλοσοφία θὰ παραμείνῃ ἄρνησις τῆς ἐπιστήμης, προωρισμένη νὰ σαρωθῇ, θᾶττον ἢ βράδιον, ὑπὸ ταύτης, ἂν δὲν ἀποφασίσῃ νὰ ἴδῃ τὸν σωματικὸν βίον ἐκεῖ ὅπου πράγματι εἶναι, ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἀγούσης πρὸς τὸν πνευματικὸν βίον. Ἀλλὰ τότε



Digitized by Google

πλέον δὲν θὰ ἔχῃ ν᾿ἀσχοληθῇ μὲ ταῦτα ἢ ἐκεῖνα τὰ ὡρισμένα ἔνδια ὄντα.

«Ἡ ζωὴ ὁλόκληρος, ἀπὸ τῆς ἀρχικῆς προώσεως, ἥτις τὴν ἐξετίναξεν ἐν τῷ κόσμῳ, θὰ φανῇ ὥς τι κῦμα ἀνερχόμενον καὶ ἐναντιούμενον εἰς τὴν κίνησιν τῆς ὕλης. Ἐπὶ τοῦ μεγαλυτέρου μέρους τῆς ἐπιφανείας, εἰς διάφορα ἐπίπεδα, τὸ ρεῦμα μετετράπη ὑπὸ τῆς ὕλης εἰς δίνην τινὰ ἐπὶ τόπου. Εἰς ἓν μόνον σημεῖον διέρχεται ἐλευθέρως, παρασῦρον μεθ᾿ ἑαυτοῦ τὸ ἐμπόδιον, τὸ ὁποῖον θὰ ἐπιβραδύνῃ μὲν τὴν πορείαν του, ἀλλὰ δὲν θὰ τὴν ἀναστείλῃ. Τὸ σημεῖον αὐτὸ εἶναι ἡ ἀνθρωπότης· κατὰ τοῦτο εἶναι προνομιοῦχος ἡ θέσις ἡμῶν. Ἀφ᾿ ἑτέρου, τὸ ἀνερχόμενον τοῦτο κῦμα εἶναι συνείδησις καί, ὡς πᾶσα συνείδησις, περικλείει ἀναριθμήτους δυναμικότητας ἀλληλεισδυομένας, αἵτινες, κατὰ συνέπειαν, δὲν προσαρμόζονται οὔτε εἰς τῆς ἑνότητος τὴν κατηγορίαν, οὔτε εἰς τὴν τῆς πολλαπλότητος, ὑπαρχούσας διὰ τὴν ἀδρανῆ ὕλην. Μόνη ἡ ὕλη, τὴν ὁποίαν σύρει μεθ᾿ ἑαυτοῦ καὶ εἰς τὰ διάκενα τῆς ὁποίας εἰσχωρεῖ, δύναται νὰ διαιρέσῃ τὸ κῦμα τοῦτο εἰς διακεκριμένας ἀτομικότητας. Τὸ κῦμα διέρχεται λοιπὸν διὰ τῶν ἀνθρωπίνων γενεῶν, ὑποδιαιρούμενον εἰς ἄτομα. Οὕτω, δημιουργοῦνται ἀκαταπαύστως ψυχαί, αἵτινες, ἐν τούτοις, προϋπῆρχον ὑπό τινα ἔννοιαν. Οὐδὲν ἄλλο εἶναι αὗται, εἰμὴ ρυάκια, εἰς τὰ ὁποῖα καταμερίζεται ὁ μέγας ποταμὸς τῆς ζωῆς, ρέων διὰ τοῦ σώματος. Ἡ κίνησις ἑνὸς ρεύματος διακρίνεται ἐκείνου τὸ ὁποῖον διασχίζει, καίτοι ἀναγκαίως προσαρμόζεται πρὸς τὰς ἀνακαμπὰς τοῦ ἐδάφους. Ἡ συνείδησις εἶναι διάκριτος τοῦ ὀργανισμοῦ, τὸν ὁποῖον ἐμψυχώνει, καίτοι ὑφίσταται ἐν αὐτῷ μεταβολάς τινας. Ἡ συνείδησις εἶναι οὐσιαστικῶς ἐλευθέρα, ἀλλὰ δὲν δύναται νὰ διέλθῃ τὴν ὕλην, χωρὶς νὰ τοποθετηθῇ ἐπ᾿ αὐτῆς, χωρὶς νὰ προσαρμοσθῇ πρὸς αὐτήν. Ἡ προσαρμογὴ αὕτη εἶναι ὅ,τι καλοῦμεν *διανοητικότητα*· καὶ ἡ διάνοια, στρεφομένη πρὸς τὴν δρῶσαν, δηλαδὴ ἐλευθέραν, συνείδησιν, τὴν ἀναγκάζει φυσικὰ νὰ εἰσέλθῃ ἐντὸς τῶν πλαισίων, εἰς ἃ ἔχει τὴν ἕξιν νὰ βλέπῃ τὴν ὕλην καταχωρουμένην. Θ᾿ ἀντιλαμβάνεται λοιπὸν πάντοτε τὴν ἐλευθερίαν ὑπὸ μορφὴν ἀναγκαιότητος· πάντοτε θὰ παραμελῇ τὸν ὑπάρχοντα συμφυῆ εἰς τὴν ἐλευθέραν πρᾶξιν νεωτερισμὸν καὶ δημιουργίαν· πάντοτε θὰ ὑποκαθιστᾷ εἰς αὐτὴν ταύτην τὴν δρᾶσιν τεχνητήν τινα καὶ κατὰ προσέγγισιν μίμησιν, ἐπιτυγχανομένην διὰ συνθέσεως τοῦ παλαιοῦ μὲ τὸ παλαιὸν καὶ τοῦ αὐτοῦ μὲ τὸ αὐτό. Οὕτως, εἰς τὰ ὄμματα μιᾶς φιλοσοφίας, καταβαλλούσης προσπάθειαν ν᾿ ἀνεκροφήσῃ τὴν διάνοιαν ἐν τῇ διαισθήσει, πολλαὶ δυσχέρειαι αἴρονται ἢ ἐλαφρύνονται. Ἀλλὰ μία τοιαύτη θεωρία δὲν εὐχεραίνει μόνον τὸν διαστοχασμόν. Μᾶς παρέχει ἐν ταὐτῷ περισσοτέραν δύναμιν διὰ νὰ δράσωμεν καὶ νὰ ζήσωμεν. Διότι, μὲ αὐτήν, δὲν αἰσθανόμεθα πλέον ἑαυτοὺς ἀπομεμονωμένους ἐν τῇ ἀνθρωπότητι· ἡ ἀνθρωπότης ἐπίσης δὲν μᾶς φαίνεται ἀπομεμονωμένη ἐν τῇ φύσει, τῆς ὁποίας δεσπόζει. Ὅπως ὁ ἐλάχιστος κόκκος κόνεως εἶναι ἀλληλέγγυος ὁλοκλήρου τοῦ ἡλιακοῦ ἡμῶν συστήματος, παρασυρόμενος μετ᾿ αὐτοῦ ἐν τῇ ἀδιαιρέτῳ ταύτῃ κατιούσῃ κινήσει, ἥτις εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ ὑλικότης, οὕτω καὶ ὅλα τὰ ἐνόργανα ὄντα, ἀπὸ τοῦ κατωτάτου μέχρι τοῦ πλέον ἀνεπτυγμένου, ἀπὸ τῶν πρώτων ἀρχῶν τῆς ζωῆς μέχρι τοῦ καιροῦ μας, καὶ καθ᾿ ὅλους τοὺς τόπους καὶ καθ᾿ ὅλους τοὺς χρόνους, οὐδὲν ἄλλο παρὰ καθιστῶσιν αἰσθητὴν εἰς τοὺς ὀφθαλμοὺς ἡμῶν ἑνιαίαν τινὰ πρόωσιν, ἀντίστροφον τῆς κινήσεως τῆς ὕλης καὶ καθ᾿ ἑαυτὴν ἀδιαίρετον. Ὅλα τὰ ζῶντα συνέχονται καὶ ὅλα ὑπείκουσιν εἰς τὴν αὐτὴν φοβερὰν ὤθησιν. Τὸ ζῷον λαμβάνει ὡς ἀφαλτήριον τὸ φυτόν, ὁ ἄνθρωπος ἱππάζεται ἐπὶ τῆς ζωϊκότητος καὶ ἡ ἀνθρωπότης ὁλόκληρος, ἐν τῷ διαστήματι καὶ τῷ χρόνῳ, εἶναι τεραστία τις στρατιὰ καλπάζουσα παρὰ τὸ πλευρὸν ἑκάστου ἡμῶν, ἔμπροσθεν καὶ ὄπισθεν ἡμῶν, ἐν ἀκρατήτῳ ἐφόδῳ, ἱκανῇ ν᾿ ἀνατρέψῃ πάσας τὰς ἀντιστάσεις καὶ νὰ ὑπερβῇ πολλὰ ἐμπόδια, καὶ αὐτὸν ἔτι τὸν θάνατον ἴσως».

Συνοψίζων τὰ τρία κυριώτερά του ἔργα ὁ Μπέρξον ἐν ἐπιστολῇ του πρὸς τὸν R. P. de Tonquédec λέγει: «Οἱ ἐκτιθέμενοι εἰς τὸ «Δοκίμιον περὶ τῶν ἀμέσων δεδομένων τῆς συνειδήσεως» στοχασμοί μου καταλήγουν εἰς τὸ νὰ φέρουν εἰς φῶς τὸ γεγονὸς τῆς ἐλευθερίας. Διὰ τῶν ἐν τῇ «Ὕλῃ καὶ Μνήμῃ» καθίσταται ἁπτή, πιστεύω, ἡ πραγματικότης τοῦ πνεύματος· οἱ δὲ ἐν τῇ «Δημιουργῷ Ἐξελίξει» παρουσιάζουν τὴν δημιουργίαν ὡς γεγονός. Ἐξ ὅλων τούτων ἐξάγεται σαφὴς ἡ ἰδέα Θεοῦ, ἐλευθέρου καὶ δημιουργοῦ, γεννήτορος τῆς ὕλης καὶ τῆς ζωῆς ἐν ταὐτῷ, τοῦ ὁποίου ἡ δημιουργικὴ προσπάθεια συνεχίζεται ἀπὸ τῆς πλευρᾶς τῆς ζωῆς, διὰ τῆς ἐξελίξεως τῶν εἰδῶν καὶ τοῦ σχηματισμοῦ ἀνθρωπίνων προσωπικοτήτων».

Ὁ Μπέρξον δὲν ἐξέδωκε, καὶ πιθανὸν νὰ μὴ ἐκδώσῃ, τὸ ἀπὸ πολλοῦ ἀναμενόμενον σύγγραμμά του, ἐν τῷ ὁποίῳ θὰ ἐξέθετε τὴν ἠθικήν του, ὁλοκληρῶν οὕτω τὴν φιλοσοφίαν του. Πολλοὶ δὲ τῶν ἐπικριτῶν του ἀμφισβητοῦν καὶ τὴν δυνατότητα διατυπώσεως ἠθικῆς ἐπὶ τῇ βάσει φιλοσοφίας, τῆς ὁποίας τὰ κυριώτερα χαρακτηριστικὰ σημεῖα εἶναι ἡ κινητικότης καὶ ἡ ροϊκότης. Ἐν πάσῃ περιπτώσει ὅμως, εἰς τὰ μέχρι τοῦδε συγγράμματά του καὶ εἴς τινας τῶν διαλέξεων καὶ ἄρθρων του ὑποτυποῦται σύστημα ἠθικῆς, πηγάζον ἐκ τῆς ἐλευθερίας. «Πᾶν τὸ σοβαρὸν ἐν τῇ ζωῇ ἡμῶν προέρχεται ἐκ τῆς ἐλευθερίας μας. Ὅ,τι προέρχεται ἐξ ἡμῶν καὶ εἶναι ἰδικόν μας, αὐτὸ δίδει εἰς τὴν ζωὴν τὴν δραματικὴν ἐνίοτε, καὶ γενικῶς σοβαράν, ὄψιν της». «Ἀλλ᾿ ἂν εἴμεθα ἐλεύθεροι πάντοτε, ὁσάκις ἐπιστρέφομεν εἰς ἑαυτούς, σπανίως συμβαίνει νὰ θελήσωμεν τοῦτο». «Ἡ θεληματικὴ πρᾶξις ἀντιδρᾷ ἐπὶ ἐκείνου ὅστις θέλει, τροποποιεῖ, ἔν τινι μέτρῳ, τὸν χαρακτῆρα τοῦ προσώπου, ἐξ οὗ πηγάζει καὶ ἐπιτελεῖ, δι᾿ εἴδους τινὸς θαύματος, τὴν δημιουργίαν ἐκείνην ἑαυτοῦ ἐξ ἑαυτοῦ, ἥτις φαίνεται νὰ εἶναι αὐτὸ τοῦτο τὸ ἀντικείμενον τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς». «Εἶναι καταπονητικὸν νὰ εἶναί τις προσωπικότης. Πρέπει νὰ ἐξαγορασθῇ τὸ προνόμιον τοῦτο διὰ συνεχοῦς προσπαθείας». «Διότι ἡ ἐλευθερία ἡμῶν, εἰς αὐτὰς ταύτας τὰς κινήσεις δι᾿ ὧν διαπιστοῦται, ρίπτει τὸ σπέρμα ἕξεων, αἵτινες θὰ τὴν καταπνίξουν, ἂν δὲν ἀνανεοῦται διὰ σταθερᾶς προσπαθείας.» «Ὁ αὐτοματισμὸς τὴν παραμονεύει. Ἡ πλέον ζωντανὴ σκέψις θὰ παγώσῃ εἰς τὴν ἐκφράζουσαν αὐτὴν διατύπωσιν. Ἡ λέξις στρέφεται κατὰ τῆς ἰδέας. Τὸ γράμμα σκοτώνει τὸ πνεῦμα. Καὶ ὁ ζωηρότερος ἐνθουσιασμός μας, ὅταν ἐξωτερικεύεται εἰς πράξεις, παγώνει, ἐνίοτε δὲ τόσον φυσικῶς, εἰς ψυχρὸν ὑπολογισμὸν συμφέροντος ἢ ματαιοδοξίας καὶ ὁ εἷς λαμβάνει τόσον εὐχερῶς τὴν μορφὴν τοῦ ἑτέρου, ὥστε εἰμπορεῖ νὰ τοὺς συγχύσωμεν, ν᾿ ἀμφιβάλωμεν διὰ τὴν ἰδίαν μας εἰλικρίνειαν, ν᾿ ἀρνηθῶμεν τὴν καλωσύνην καὶ τὴν ἀγάπην, ἐὰν δὲν ἐγνωρίζομεν ὅτι ὁ θάνατος, ἐπί τινα χρόνον, διατηρεῖ τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ ζωντανοῦ». «Παρὰ τῷ ἀνθρώπῳ μόνον, παρὰ τοῖς ἀρίστοις πρὸ παντὸς ἀνθρώποις, ἡ ζωτικὴ κίνησις προεκτείνεται, ἀνεμποδίστως, συνεχίζουσα διὰ μέσου τοῦ ἔργου τέχνης, οἷον εἶναι τὸ ἀνθρώπινον σῶμα καὶ ὅπερ δημιουργεῖ κατὰ τὴν διέλευσίν του, τὸ ἀπείρως δημιουργὸν ρεῦμα τῆς ἠθικῆς ζωῆς. Οἱ μεγάλοι ἐν τῇ ἀγαθότητι ἄνθρωποι καὶ ἰδιαίτατα ἐκεῖνοι, ὧν ὁ ἐφευρετικὸς καὶ ἁπλοῦς ἡρωϊσμὸς ἐχάραξε νέας τρίβους εἰς τὴν ἀρετήν, ἀποκαλύπτουν τὴν μεταφυσικὴν ἀλήθειαν. Παρ᾿ ὅτι δὲ ἵστανται εἰς τὸ ὕψιστον τῆς ἐξελίξεως, εὑρίσκονται ἐγγύτατα τῶν ἀρχῶν της καὶ καθιστῶσιν αἰσθητὴν εἰς τὰ ὄμματα ἡμῶν τὴν ἐνόρμησιν τὴν ἐρχομένην ἐκ τοῦ βάθους. Θεωρήσωμεν αὐτοὺς προσεκτικῶς, προσπαθήσωμεν νὰ δοκιμάσωμεν, διὰ τῆς συμπαθείας ὅ,τι αἰσθάνονται, ἂν θέλωμεν νὰ εἰσδύσωμεν, διὰ τῆς διαισθήσεως, μέχρις αὐτῆς ταύτης τῆς ἀρχῆς τῆς ζωῆς».

Ἡ παραδοχὴ τοῦ Θεοῦ ὡς ἀενάου συνεχίσεως δημιουργίας εἶναι ἡ διαπίστωσις τῆς ἠθικῆς ἀρχῆς ὡς πραγματικότητος αὐτονόμου, ἀνεξαρτήτου, ἀκαταλύτου. Ἡ ἠθικὴ εἶναι τὸ βάθος τοῦ εἶναι. Τὸ κοσμικὸν γίγνεσθαι εἶναι «πορεία πρὸς τὸ τέλειον». «Κατὰ βάθος δὲν ὑπάρχουν ἄθεοι. Ὑπάρχουν μόνον πιστοί, ἀνίσως νοοῦντες τὴν πίστιν των καὶ ἀνίσως ἀντιλαμβανόμενοι ὅ,τι αὕτη συνεπάγεται». Ἀλλὰ «δὲν ἀποδεικνύεται ὁ Θεός. Ἔχει τις ἐμπειρίαν τοῦ Θεοῦ, τὸν ζῇ. Τὸν γνωρίζομεν ἐντὸς καὶ διὰ τοῦ κινήματος τῆς ἀγάπης, ὅπερ μᾶς φέρει πρὸς αὐτὸν τόσον ἐγγύτερον ὅσον περισσότερον τοῦ ὁμοιάζει τις καὶ ὅσον περισσότερον τείνει νὰ τοῦ ὁμοιάσῃ ἐπὶ μᾶλλον».

Ὁ Μπέρξον ἀρνηθεὶς εἰς τὴν ἐπιστήμην τὴν ἁρμοδιότητα ὅπως εὕρῃ τὴν μεταφυσικὴν ἀρχὴν τῆς ζωῆς καὶ φυλακίσῃ αὐτὴν εἰς λογικοὺς τύπους, ὑποστηρίζει ὅτι ἡ τέχνη δύναται νὰ μᾶς δώσῃ ἀσφαλεστέραν ἰδέαν τῆς φύσεως, τῆς διαρκείας, τῆς διαισθήσεως καὶ τῆς δημιουργοῦ ἐξελίξεως. Οἱ περισσότεροι τῶν ἀνθρώπων ἀντιλαμβάνονται τὸν κόσμον διὰ νὰ δράσουν ἐπ᾿ αὐτοῦ. Τοὐναντίον, ὁ καλλιτέχνης, μὴ προσέχων εἰς τὸν πρακτικὸν βίον, ἀντιλαμβάνεται τὴν πραγματικότητα κατὰ τρόπον παρθένον. Διὰ μίαν αἴσθησίν του τοὐλάχιστον, ἡ ἀντίληψίς του δὲν ἐπηρεάζεται ἀπὸ τὴν πρακτικὴν ἀνάγκην· ἀγαπᾷ τὸ χρῶμα διὰ τὸ χρῶμα, τὸν ἦχον διὰ τὸν ἦχον. «Ἡ τέχνη εἶναι μία ἀμεσωτέρα ὄψις τῆς πραγματικότητος. Ἡ καθαρότης ὅμως αὕτη τῆς ἀντιλήψεως ἐξυπακούει ρῆξιν πρὸς τὴν χρησιμοθηρικὴν συμβατικότητα, ἀνιδιοτέλειαν τῆς αἰσθήσεως ἢ τῆς συνειδήσεως ἔμφυτον καὶ εἰδικῶς ἐντετοπισμένην, ἀϋλότητά τινα τέλος τῆς ζωῆς, δηλαδὴ ὅ,τι καλεῖται ἰδεαλισμός, εἰς τρόπον ὥστε δύναταί τις νὰ εἴπῃ, χωρὶς νὰ παίζῃ μὲ τὰς λέξεις, ὅτι ὑπάρχει πραγματικότης εἰς τὸ ἔργον, ὅταν ὑπάρχῃ ἰδεαλιστικότης εἰς τὴν ψυχὴν καὶ ὅτι δυνάμει τοῦ ἰδεαλισμοῦ ὁ καλλιτέχνης λαμβάνει ἐπαφὴν μὲ τὴν πραγματικότητα». «Δι᾿ ἐκεῖνον ὅστις θεωρεῖ τὸ σύμπαν μὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ καλλιτέχνου, ἡ χάρις διακρίνεται διὰ μέσου τῆς ὡραιότητος καὶ ἡ καλωσύνη διαφαίνεται διὰ μέσου τῆς χάριτος. Κάθε πρᾶγμα, ἐν τῇ κινήσει ἣν διαγράφει ἡ μορφή του, ἐκφαίνει τὴν ἄπειρον γενναιότητα μιᾶς ἀρχῆς ἥτις δίδεται. Καὶ δὲν ἔχουν ἄδικον καλοῦντες μὲ τὸ αὐτὸ ὄνομα *χάρις* τὸ θέλγητρον τὸ ὁποῖον βλέπουν εἰς τὰς κινήσεις καὶ τὴν χαρακτηριστικὴν εἰς τὴν θείαν καλωσύνην ἀπολυτρώτριαν πρᾶξιν». Χάρις εἶναι ἡ ἀϋλότης διερχομένη διὰ τῆς ὕλης. Εἰς τὸ χαρίεν ἀντιτίθεται τὸ κωμικόν.

Περὶ τῆς σημασίας τοῦ κωμικοῦ ὁμιλεῖ ὁ Μπέρξον εἰς τὸ ἔργον του «Τὸ γέλιο», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκθέτει καὶ τὰς αἰσθητικὰς ἐν γένει γνώμας του. «Τὸ κωμικὸν γεννᾶται, ὅταν συνηγμένοι εἰς κοινωνίαν ἄνθρωποι στρέψωσι τὴν προσοχήν των πρὸς ἕνα μεταξὺ αὐτῶν, σιγάζοντες τὴν αἰσθηματικότητά των καὶ ἀσκοῦντες μόνον τὴν διανοητικότητά των». Εἶναι δὲ τὸ κωμικὸν «τὸ μηχανικὸν ἐπικεκολλημένον ἐπὶ τοῦ ζῶντος». Καὶ ὁ γέλως, πρᾶξις κοινωνική, προκαλεῖται, ὅταν παρατηρῆται μηχανική τις—σωματική, πνευματικὴ ἢ ἠθικὴ—ἀκαμψία ἐκεῖ, ὅπου ἀνέμενέ τις νὰ ἴδῃ τὴν προσεκτικὴν εὐλυγισίαν καὶ τὴν ζωντανὴν εὐστροφίαν ἑνὸς προσώπου.

Ἐπειδὴ ἡ γλῶσσα, διαμορφωθεῖσα ὑπὸ τῆς ἀνθρωπίνης διανοίας, δὲν δύναται νὰ περιλάβῃ εἰς τὰ πάγια, συμβατικὰ καὶ ἄκαμπτα πλαίσια τῶν ξηρῶν λέξεων τοὺς στοχασμοὺς τῆς διαισθητικῆς φιλοσοφίας, εἰμὴ μαραίνουσα τὴν ζωηρότητα αὐτῶν καὶ ἀπογυμνοῦσα αὐτοὺς πάσης πρωτοτυπίας, ὁ Μπέρξον, ἐν τῇ ἀναπτύξει τῶν ἰδεῶν του, προσφεύγει πρὸς ἐνάργευσιν καὶ ἀποσαφήνισιν αὐτῶν εἰς ἀφειδῆ χρῆσιν εἰκόνων, μὲ τὴν πεποίθησιν ὅτι κάθε συγγραφεὺς πρέπει νὰ ὑποβάλλῃ εἰς τὸν ἀναγνώστην περισσότερα τῶν ὅσων λέγει. Ἡ φιψίλεια αὕτη τῶν εἰκόνων, καίτοι δεξιώτατα διακριβουμένης τῆς ἰσχύος των ἐν τῷ προσήκοντι μέτρῳ, καὶ τὸ κατὰ πάντα λογοτεχνικὸν ὕφος τῶν ἔργων του συνέτεινον τὰ μέγιστα εἰς τὴν καὶ πέραν τοῦ φιλοσοφικοῦ κύκλου διάδοσιν αὐτῶν, προὐκάλεσαν ὅμως ἀφ᾿ ἑτέρου τὰς ἐπικρίσεις ἀντιφρονούντων φιλοσόφων, οἵτινες «φιλοσοφικὸν μυθιστόρημα» ἀπεκάλεσαν τὴν «Δημιουργὸν Ἐξέλιξιν», τὸν δὲ συγγραφέα της «ρωπογράφον τὴν ἔκφρασιν». Δὲν περιορίζεται ὅμως εἰς τοῦτο μόνον ἡ ἐπίκρισις τῶν ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον. Ἄλλοι ἠμφισβήτησαν τὴν πρωτοτυπίαν τῶν ἰδεῶν αὐτοῦ καὶ ἄλλοι ἤσκησαν κριτικὴν κατὰ τῶν κυριωτέρων σημείων τῆς φιλοσοφίας του. Ὁ René Berthelot, ἀναζητῶν μεταξὺ τῶν ἀρχαίων καὶ νέων φιλοσόφων τὴν καταγωγὴν τῶν περὶ συνεχοῦς ροῦ, ἀενάου γίγνεσθαι, δύο ἀντιθέτων κυμάτων, τῆς ζωτικῆς φορᾶς καὶ τῆς διαισθήσεως, ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον, κατατάσσει αὐτὸν μετὰ τοῦ Τζαίημς, τοῦ Νίτσε κ. ἄ., εἰς τοὺς ρωμαντικοὺς ὠφελιμιστάς. Ὁ Le Dantec τὸν κατηγόρησεν ὡς σπουδάζοντα τὴν ζωὴν ἀπὸ ἀντικειμενικῆς καὶ ὑποκειμενικῆς ταυτοχρόνως ἀπόψεως καὶ ἐκθέτοντα τὸ ὑποκειμενικὸν ἐν ἀντικειμενικῇ γλώσσῃ κατὰ τρόπον προκαλοῦντα τὸν ἴλιγγον καὶ ἄγοντα εἰς παραισθήσεις καὶ πλάνας. Σημειωτέον ὅτι καὶ αὐτὸς ὁ Μπέρξον διακηρύσσει ὅτι ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ του ἡ θεωρία τῆς γνώσεως καὶ ἡ μεταφυσικὴ ταυτίζονται καὶ ἐν τῇ «Δημιουργῷ Ἐξελίξει» του καλεῖ τὸν ἀναγνώστην νὰ παραστῇ εἰς τὴν γένεσιν τῆς γνώσεως καὶ τῆς ζωῆς ἐν ταὐτῷ. Ἐν Γερμανίᾳ κατεδικάζετο ὑπὸ πολλῶν ἡ φιλοσοφία αὐτοῦ ὡς ἐξαίρουσα ὑπὲρ τὴν διανόησιν τὴν ζωὴν καὶ ἀπειλοῦσα οὕτω τὰ ἀγαθὰ τοῦ πολιτισμοῦ. Ἐν Γαλλίᾳ κατηγορήθη ὑπό τινων ὁ Μπέρξον ὡς ἐγκαταλιπὼν τὸ στερεὸν τῆς ἐπιστήμης ἔδαφος, διὰ νὰ παραδοθῇ εἰς μεταφυσικὴν ὀνείρωσιν καὶ μυστικιστικὴν φαντασίωσιν, ὡς προδοὺς τὰς παραδόσεις τῆς γαλλικῆς φιλοσοφίας, ὡς δικαιῶν, διὰ τῶν κατὰ τῆς διανοίας καὶ τῆς ἐπιστήμης ἀφορισμῶν του, τὴν ἀπαιδευσίαν, τόσον ὥστε παιδαγωγοὶ νὰ ζητήσωσι παρὰ τῆς κυβερνήσεως τὴν λῆψιν μέτρων κατὰ τῆς διαδόσεως μεταξὺ τῶν σπουδαστῶν τῶν ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον, ἀποβαινουσῶν ἐπὶ ζημίᾳ τῆς ἐπιδόσεώς των εἰς τὰ μαθήματα καὶ τῆς σοβαρᾶς ἐν τῷ μέλλοντι ἀφοσιώσεώς των εἰς τὴν ἐπιστήμην. Τοῦτο κατὰ παρεξήγησιν τοῦ περιορισμοῦ, ὃν θέτει ὁ Μπέρξον εἰς τὰς ἀξιώσεις τῆς ἐπιστήμης, ἥτις, κατ᾿ αὐτόν, προορισμὸν ἔχουσα νὰ καθιστᾷ δυνατὴν καὶ εὐχερῆ τὴν δρᾶσιν, θηρεύει τὴν ὠφέλιμον ἀλήθειαν καὶ ὄχι τὴν πραγματικὴν ἀλήθειαν, οὕτω δὲ δίδει μὲν γνῶσιν ὁσημέραι πληρεστέραν τῆς ἀψύχου ὕλης, ἀλλὰ δὲν θὰ δυνηθῇ ποτέ, οὐδ᾿ ὀφείλει νὰ ἐπιζητῇ ὅπως φυλακίσῃ εἰς ἐπιστημονικοὺς τύπους τὴν ζωήν, τὰ μυστικὰ τῆς ὁποίας ἀπόκειται εἰς τὴν μεταφυσικὴν ν᾿ ἀποκαλύψῃ. Τὸ ροϊκὸν ἐξ ἄλλου τῆς φιλοσοφίας του ἔδωκεν ἀφορμὴν νὰ λεχθῇ ὅτι αὐτὴ δὲν ἔχει νόμους (H. Poincaré) καὶ ὅτι δὲν γνωρίζει προβλήματα· ὅτι εἶναι δοξασμός καταστάσεώς τινος τοῦ πνεύματος, ἐξ ἧς ἔχει φυγαδευθῆ πᾶν ὅ,τι λέγεται πρόβλημα (Hoeffding). Καὶ ἀντιφάσεις πολλαὶ κατελογίσθησαν εἰς τὸν Μπέρξον καὶ ἀσάφεια καὶ ἀοριστία εἰς τοὺς ὁρισμούς. Οὕτως ὁ Julien Benda συνάγει ἐκ τῶν ὁρισμῶν τῆς διαισθήσεως (ἐνοράσεως) τέσσαρας σημασίας ἀλληλοσυγκρουομένας καὶ ἀλληλαποκλειομένας, ἐλέγχων δὲ αὐτὰς ἐπάγεται ὅτι ἡ καλουμένη ὑπὸ τοῦ Μπέρξον *διαίσθησις* οὐδὲν ἄλλο εἶναι εἰμὴ ἁπλούστατα αὐτὴ αὕτη ἡ διάνοια, ἐν ἀντιθέσει πρὸς εἶδός τι γραφειοκρατικῆς λειτουργίας τοῦ πνεύματος, εἰς ἣν καὶ μόνην δίδει οὗτος τὸ ὄνομα διάνοια. Ὁ δὲ Alfred Fouillée διακρίνει ὀκτὼ διάφορα πράγματα ὀνομαζόμενα ὑπὸ τοῦ Μπέρξον διὰ τῆς αὐτῆς λέξεως *διαίσθησις*: 1) τὸ ζωϊκὸν αἴσθημα, 2) τὴν φευγαλέαν ἐντύπωσιν τὴν καταλειπομένην

Digitized by Google

πὸ παρερχομένης τινὸς καταστάσεως, 3) τὴν συγεχυμένην καὶ συνθετικὴν ἀνάμνησιν, 4) τὴν αὐόματον συνείδησιν τῆς ὑπάρξεώς μας, 5) τὸν ἐσωερικὸν στοχασμόν, 6) τὴν συμπάθειαν πρὸς τοὺς λλους, 7) τὸ μαντευτικὸν καὶ αὐτόματον ἔνστιτον, καὶ 8) τὴν δημιουργικότητα τῆς φαντασίας. Ἀνεξαρτήτως τῆς ἐπικρίσεως, ἡ ἀνατομική, οὕτως ιπεῖν, διερεύνησις αὕτη τῆς σημασίας τοῦ ὅρου ιαίσθησις παρέχει μίαν πλήρη κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ττον, ἰδέαν τῶν ἐπιτεύξεων τῆς διαισθήσεως, ἥτις, ξ αὐτῆς ταύτης τῆς φύσεώς της, δυσκόλως δίδεται ὶς ὁρισμὸν ἐντὸς διανοητικῶν, συμβατικῶν πλαισίων.

Εἰς τὰ ἐπικρίσεις ταύτας καὶ ὅσας ἄλλας διευπώθησαν πολλαχόθεν, πλεῖσται τῶν ὁποίων, ημειωτέον, δικαιολογοῦνται ἐκ τῶν ἐνθουσιωδῶν αὶ ἀκρίτων ὑπερβολῶν ὀπαδῶν τινων τοῦ Μπέρον ἐν τῇ ἀναπτύξει καὶ ἐπεκτάσει τῶν ἰδεῶν του ιᾶλλον παρὰ ἐξ ὅσων ὁ ἴδιος ὁ φιλόσοφος εἶπε αὶ ἔγραψεν, ἀντεπεξῆλθεν οὗτος δι' ἄρθρων, διαέξεων, ἀνακοινώσεων καὶ ἐπιστολῶν, διακριβώας πολλὰ ἀμφίβολα σημεῖα τῆς διδασκαλίας του, ξηγήσας ἀσαφείας, ἀντικρούσας καὶ ἀναιρέσας ατηγορίας. Γενικῶς ἡ φιλοσοφία του ἐχαρακτηίσθη ποικιλοτρόπως ὑπὸ τῶν περὶ αὐτῆς γραάντων, ὀπαδῶν καὶ ἀντιμάχων: *ζωτικοδοξία (βιαλισμός), νεοζωτικοδοξία, ἀντιδιανοητικισμός, νεόυπος ἰδεαλισμός, πνευματικισμός, ἐξελικτισμός, νεοεελικτισμός, ἀντιορθολογισμός, νεότυπος ὀρθολογιιός, πραγματισμός, ρωμαντικὸς ὠφελισμός, μυστιισμός, θεϊσμός, θεοσοφισμός, ἰδιότυπος ἐκλεκτικιμός, ψυχισμός, πανθεϊσμός, νεοσπινοζισμός, νεολατωνισμός, ἐμπειρισμός, νεοτελολογισμὸς* κ. ἄ.

Ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς φιλοσοφίας, αἱ θεωρίαι τοῦ Μπέρξον, συνεχίσαντος μετὰ μεγαλυτέρας ἐπιτυίας τὸ κίνημα τοῦ Boutroux, ἀποτελεῖ ἐπανάτασιν κατὰ τῶν μηχανιστικοϋλιστικῶν συστημάων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἀφ' ἑνὸς καὶ κατὰ τῶν διαοητικιστικῶν (νοησιαρχικῶν) καὶ ὀρθολογιστικῶν ικαμψιῶν ἀφ' ἑτέρου. Κατεπολέμησε τελεσφόρως ὸν ὑλισμόν, τρέψας τὴν φιλοσοφίαν καὶ τὴν ἐν ένει πνευματικὴν κίνησιν τῆς ἐποχῆς μας πρὸς ατευθύνσεις ἰδεολογικωτέρας. Ἀκολουθεῖ τὸν Ravaisson ἐν τῇ μεταφυσικῇ, καὶ ἐν τῇ ψυχολοίᾳ τὸν Main de Biran, μέσῳ δὲ τοῦ Boutroux δέχθη τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἀρχηγοῦ τοῦ γερμανιοῦ ρωμαντισμοῦ Schelling. Θετικιστὴς εἰς τὴν ιέθοδόν του, ἤλεγξε καὶ διεμόρφωσε τὸν ἐξελιτισμὸν τοῦ Σπένσερ εἰς πνευματικιστικὴν (spiritualiste) θεωρίαν τῆς ζωῆς. Βασίσας τὴν φιλοσοίαν του εἰς τὴν πρωτότυπον εὕρεσίν του, οἵα ἶναι ἡ διάκρισις μεταξὺ διαρκείας (durée) τοῦ υχολογικοῦ, τοῦ πραγματικοῦ χρόνου, τοῦ χρόου ἐφευρέσεως καὶ τοῦ ἀφῃρημένου χρόνου, τοῦ ιαθηματικοῦ χρόνου, τοῦ χρόνου μήκους, κηρύσει ὅτι διὰ τῆς διαισθήσεως δυνάμεθα νὰ φθάωμεν τὴν ἀπόλυτον γνῶσιν, τὸ πρᾶγμα καθ' ἑυτό. Ἡ φιλοσοφία του, παράλληλος ἄλλων υγχρόνων ἀντιϋλιστικῶν, ἀντινοησιαρχικῶν καὶ ἀντιορθολογιστικῶν συστημάτων, ὅπως ὁ πραματισμός, ἢ οὐμανισμὸς ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ, καθολικὸς καινοτροπισμὸς (modernisme), ἡ χολὴ τῆς ἠθικῆς δράσεως καὶ ὁ νεομυστικιμὸς ἐν Γαλλίᾳ, παρουσιάζει πολλὰς συγγενείας αὶ ἀναλογίας μὲ τὰς θεωρίας φιλοσόφων τῆς ρχαιότητος καὶ συγχρόνων (Ἡρακλείτου, Πρωαγόρου, στωϊκῶν, Σοπενάουερ, Ἑγέλου, Σέλλιγγ, Νίτσε, Γκυγιώ, Μπέρκλυ, Μπουτροὺ κ. ἄ.), χωρίς, ιὰ τοῦτο, νὰ δικαιολογῆται ἀμφισβήτησις τῆς ρωτοτυπίας τῶν ἰδεῶν του. Ἡ μᾶλλον ἀξιοσηιείωτος ὅμως ὁμοιότης εἶναι ἡ μὲ τὰς δοξασίας ῶν νεοπλατωνικῶν καὶ ἰδίᾳ τοῦ Πλωτίνου, μεικοὶ ὁρισμοὶ τοῦ ὁποίου ἀνακαλοῦν εἰς τὴν ινήμην τὰ περὶ διαισθήσεως, ζωτικῆς φορᾶς καὶ ιαρκείας λεγόμενα ὑπὸ τοῦ Μπέρξον. Ἡ διαίσθησις, ὡς τὴν ἐννοεῖ οὗτος, δὲν διαφέρει πολὺ ῆς «ἐκστάσεως», «συναρπαγῆς», «ἀναγωγῆς», «ἀνατάεως» τῶν νεοπλατωνικῶν, τῆς ἐλλάμψεως ἐκείης, ἣν ἐδέχοντο ὡς κρᾶμα ἐμπνεύσεως καὶ ἐπιστήμης, ποιήσεως καὶ λογικῆς, δι' ἧς ὁ νοῦς μεαβάλλεται ἀπὸ «νοῦ νοοῦντος εἰς νοῦν ὁρῶντα», μεαρσιούμενος εἰς ὕψη, ὅπου δὲν ὑπάρχει διάκριις μεταξὺ νοοῦντος καὶ νοουμένου, μεταξὺ ὁρῶνος καὶ ὁρωμένου, ἀλλ' ἀκτινοβολεῖ αὐτὴ αὕτη ἡ ὄψις τοῦ ἀνειδέου, ἡ γεννῶσα τὸν νοῦν αὐγή. Ταύτισιν δὲ γινώσκοντος καὶ γινωσκομένου λέγει τὴν ἐκ διαισθήσεως γνῶσιν ὁ Μπέρξον, ἐπαφὴν ιᾶλλον πρὸς τὸ πραγματικόν, παρὰ παράστασιν ιὐτοῦ, ἔλλαμψιν φευγαλέαν τοῦ ἐνστίκτου ἐπὶ τῆς οὐσίας τῆς ζωῆς. Ἐπίσης ἡ ζωτικὴ φορὰ τοῦ Μπέρξον ἐνθυμίζει τὴν ἐμψύχωσιν τοῦ Πλωτίνου, ἥτις ἐκδηλουμένη ὡς φύσις παρὰ τοῖς φυτοῖς, ὡς αἴσθησις (ἔνστικτον) παρὰ τοῖς ἀλόγοις, καὶ ὡς νόησις καὶ βούλησις παρὰ τοῖς ἀνθρώποις, ἀλλὰ παρὰ πᾶσιν εἶναι ἡ αὐτὴ ζωοποιὸς οὐσία, οὕτως ὥστε τὴν ψυχὴν τοῦ ζῴου καὶ αὐτοῦ τοῦ φυτοῦ δὲν δυνάμεθα νὰ νοήσωμεν ἄλλως ἢ ὡς ὁμοούσιον τῆς ἀνθρωπίνης, ἀφοῦ «ἅπασαι ὡρμήθησαν ἐκ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς, ζωὴν ἔχουσαι οἰκείαν, ἀσώματοι καὶ οὐσίαι... Ἔνεστι ἑκάστῃ φύσει τὸ μετ' αὐτὴν ποιεῖν καὶ ἐξελίττεσθαι οἷον σπέρματος». (*Πλωτίνου* Ἐννεάδες Δ', ζ', η'). Τὴν ἰδεατὴν γένεσιν τῆς ὕλης ὁ Μπέρξον παριστᾷ ὡς ἐκφυγὴν ἔκ τινος λέβητος ἀτμῶν, οἵτινες, μόλις ἀναπηδήσωσι, ψύχονται, πυκνοῦνται καὶ ὑγροποιοῦνται, καταπίπτοντες εἰς σταγονίδια ὕδατος—ἕκαστον σταγονίδιον εἶναι εἷς γεννώμενος κόσμος· ὁ δὲ Πλωτῖνος ὡς ἔκλαμψιν κεντρικοῦ τινος πυρός, ἀμυδρουμένην ἐφ' ὅσον ἀπομακρύνεται, ἕως οὗ ἐκλείψασα ἐπ' ἄκροις ἐσχάτοις καταλήξῃ εἰς σκότος-ὕλην (Ἐννεάδες Δ' γ'). Ἡ μπερξονικὴ διάρκεια ἐνθυμίζει τὸν χρόνον τῶν νεοπλατωνικῶν, ὃν ὁ Πλωτῖνος (Ἐννεάδες Γ' ζ') ὁρίζει ὡς κίνησιν, πολλαπλότητα καὶ μεταβολήν, μὴ δυνάμενον νὰ θεωρηθῇ ὡς ὑπάρχοντα ἐκτὸς τῆς ψυχῆς ἢ ὡς παρακολούθημα αὐτῆς, ἀλλὰ «συνόντα τῇ ψυχῇ δημιουργούσῃ». Ὅπως δὲ ὁ Μπέρξον δέχεται τὴν ἔκτασιν ὄχι ὡς τὸ κενὸν διάστημα τῶν μαθηματικῶν ὑπολογισμῶν, ἀλλ' ὡς τὴν ποικίλως χρωματισμένην, τὴν ἠχηράν, τὴν ἁπτήν, ἀρωματισμένην καὶ γευστικὴν συνέχειαν τοῦ κόσμου, οὕτω καὶ ὁ Πλωτῖνος ὁρίζει τὸν χῶρον ὡς μὴ ὄντα αὐθύπαρκτον, ἀλλὰ γεννώμενον ὑπὸ τῆς ψυχῆς, ἐκχυνομένης εἰς δημιουργίαν— «Τί γὰρ τόπος πρὶν κόσμον εἶναι;» (Ἐννεάδες Ε' ε').

Ὁ Μπέρξον, διὰ τῆς φιλοσοφίας του, ἤσκησε καὶ ἀσκεῖ μεγίστην ἐπιρροὴν ἐπὶ τῆς συγχρόνου σκέψεως, ἐπὶ τῆς συγχρόνου ζωῆς γενικώτερον. Εἶναι, κατὰ κοινὴν ὁμολογίαν, ὁ διασημότερος τῶν φιλοσόφων τῆς σήμερον, τὸ δὲ ἔργον του, κατὰ τὸν Édouard Le Roy «σημειώνει σταθμόν, ὃν ἡ ἱστορία οὐδέποτε θὰ λησμονήσῃ. Ἡ ἐπανάστασις, ἣν προὐκάλεσεν, εἶναι εἰς σημασίαν ἴση πρὸς τὴν καντιανὴν ἐπανάστασιν, πρὸς τὴν σωκρατικὴν μάλιστα ἐπανάστασιν». Πραγματικῶς, ἡ ἐπίδρασις τῶν ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον διακρίνεται βαθυτάτη ἐν Γαλλίᾳ καὶ ἔξω αὐτῆς εἰς ὅλας τὰς ἐκδηλώσεις τοῦ πνεύματος. Ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ ἀνέκοψε τὴν φορὰν τοῦ ὑλισμοῦ. Ἀπηλευθέρωσε τὴν ψυχολογίαν ἀπὸ τὴν τυραννίαν τῆς λογικῆς καὶ τῆς φυσιολογίας. Ἀπέδωκε τὸ κῦρος εἰς τὴν μεταφυσικὴν καὶ ἔδωκεν ἰσχυρὰν ὤθησιν πρὸς τὴν μελέτην τῶν ψυχικῶν φαινομένων, δεχθεὶς καὶ τὴν προεδρείαν τῆς Ἑταιρείας τῶν Ψυχικῶν Ἐρευνῶν καὶ διὰ λόγου του ἐν Λονδίνῳ («Φαντάσματα ζώντων καὶ ψυχικαὶ ἔρευναι» 1913) διαγράψας τὰ ὅρια τῆς νέας ταύτης ἐπιστήμης. Κατέλυσε τὴν κυριαρχίαν τῆς αἰτιοκρατίας (determinismus) ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ καὶ τῇ ἐπιστήμῃ, γενόμενος ὁ ἀπόστολος τῆς ἐλευθερίας τῆς συνειδήσεως καί, κατὰ τὸν Κάρολον Πεγκύ, «ὁδηγήσας πρὸς τὴν ψυχικότητα καὶ τὸν Θεόν», καίτοι τὰ συγγράμματά του κατεδικάσθησαν ὑπὸ τοῦ Βατικανοῦ, περιληφθέντα εἰς τὸν «Index». Σημαντικὴ ἐπίσης καὶ γόνιμος ὑπῆρξεν ἡ ἐπίδρασίς του εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ τὴν κοινωνιολογίαν (συντηρητικὸς ἐθνικισμὸς ἀφ' ἑνὸς καὶ ἐπαναστατικὸς συνδικαλισμὸς ἀφ' ἑτέρου - Γ. Σορέλ), τὴν μουσικὴν (Ντεμπουσσύ), τὴν ζωγραφικὴν (φουτουρισμός, ἰμπρεσσιονισμὸς καὶ ἄλλαι τῶν νέων τάσεων) ἀλλ' ἰδίᾳ εἰς τὴν λογοτεχνίαν διὰ τῶν Charles Peguy, Ernest Psychari, D'Esparbés, Georges Duhamel, André Suarés, Thibaudet, Gaston Rageot, Pirandello, Giovanni Papini κ. ἄ., οἵτινες, κατὰ τὸν Gaston Riou, «καλυπτόμενοι ὑπὸ τὸ κῦρος τοῦ περισσότερον λογοτέχνου ἐξ ὅλων τῶν φιλοσόφων, πρεσβεύουσι τὸ αὐθόρμητον καὶ τὸ αὐτεξούσιον, βλέποντες πέρα τῶν γεγονότων καὶ πέρα ἐπίσης αὐτῶν ἀναζητοῦντες τὴν βαθεῖαν καὶ μυστηριώδη πραγματικότητα, τῆς ὁποίας δὲν εἶναι τὰ γεγονότα εἰμὴ ἐφήμερα σύμβολα».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἐκτὸς τῶν ἀναφερομένων ἐν τῷ ἄρθρῳ μεταφράσεων ἔργων τοῦ Μπέρξον, *Ν. Καζαντζάκη*, διάλεξις περὶ Μπέρξον ἐν τῷ Ἐκπαιδευτικῷ Ὁμίλῳ (1912), ἐκδοθεῖσα εἰς τεῦχος.— *Ἠλ. Ἀναστασιάδου*, διάλεξις περὶ τῆς ἐπιδράσεως τῆς φιλοσοφίας τοῦ Μπέρξον ἐν τῇ νεωτέρᾳ ἐπιστήμῃ τοῦ δικαίου, γενομένη ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ Δικηγορικοῦ Συλλόγου Ἀθηνῶν (1916) καὶ ἐκδοθεῖσα εἰς τεῦχος ὑπὸ τὸν τίτλον: «Savigny, Bergson, Jhering».— *Χ. Ἀνδρούτσου*, διάλεξις περὶ Μπέρξον ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ «Παρνασσοῦ» (20 Μαρτίου 1920) περιληφθεῖσα εἰς τὴν Ἐπετηρίδα τοῦ Πανεπιστημίου (1916—1917), ἐκδοθεῖσα δὲ καὶ εἰς αὐτοτελὲς τεῦχος.— *Τοῦ αὐτοῦ*, ἄρθρον εἰς περιοδικὸν «Νέον Πνεῦμα» (1916).—*Κ. Θ. Παπαλεξάνδρου*, Πρόλογος εἰς τὴν μετάφρασιν τῆς «Δημιουργοῦ Ἐξελίξεως» (Ἀθῆναι 1925).—*Ἔλλης Λαμπρίδη*, «Ὁ Μπέρξον καὶ ἡ φιλοσοφία του» (1929), —*H. Wildon Carr*, «Μπέρξον, ἡ φιλοσοφία τῆς μεταβολῆς» μετάφρασις ἐκ τοῦ ἀγγλικοῦ *Α. Κ. Ι.* (Λονδῖνον, 1915).— *Εὐαγ. Παπανούτσου*, «Πραγματισμὸς ἢ Οὐμανισμὸς» (Ἀλεξάνδρεια 1924).—*Aliotta A.* «La reazione idealistica contro la scienza (1912).—*Amato F. d'*— «Il pensiero di E. B» (1921).—*Antal I.*, «Bergson und Schopenhauer» (1914).—*Babstilie*, «An Examination of Prof. Bergson's Philosophy» (1912).—*Baensch*, «Bergson» (1913).— *Benda J.*, «Le bergsonisme ou la Philosophie de la mobilité» (1912).— *Τοῦ αὐτοῦ*, «Une philosophie pathétique» (1913).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «Sur le sens du bergsonisme» (1914).— *Berthelot R.*, «Le romantisme utilitaire» (1913).— *Bleszynski C.*, «Zwot do metafysik» (1910).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «Mysl filozoficz» (1913).—*Brunschvicg L.*, «Le progrès de la conscience dans la philosophie occidentale (1927).—*Calò G.*. «Il problema della libertà nel pensiero contemporaneo» (1905).—*Carlini A.*, «La filosofia contemporanea» (1922).—*Challaye F.*, «Bergson» (ἄνευ χρονολογίας).—*Chevalier J.*, «Bergson» (1926).—*Corrance*, «Bergson's philosophy and the idea of God» (1914).—*Couchoud P.-L.*, «La métaphysique nouvelle, à propos de Matière et Memoire de M. H. B.» (1902).—*Couturat L.*, «Études sur l'espace et le temps de m. m... Bergson» (1896).—*Delbos V.*, «Matière et Mémoire, essai sur la relation du corps à l'esprit, par H. B.» (1897).— *Dwelshauvers G.*, L'inconscient (1925).— *Τοῦ αὐτοῦ*, La psychologie française contemporaine (1920). —*Essertier D.*, «L'expérience intégrale» (1929).—*Farges A.*, «La philosophie de B.» (1912).—*Fouillée A.*, «La pensée et les nouvelles écoles anti-intellectualistes» (1910).—*Gaultier P.*, «Les maîtres de la Pensée Française» (1921).— *Gillouin R.*, «La philosophie d'H. B.» (1911).—*Grandjean*, «Une révolution dans la philosophie, la doctrine de M. H. B.» (1916).— *Gronan G.*, «Die Intuitionsphilosophie H. Bergsons» (1920).—*Hoeffding H.*, «La philosophie de Bergson. Exposé et critique (γαλλ. μετάφρ. 1916).—*Ingarden R.*, «Intuition und Intellekt bei H. B.» (1922). —*Jankelevitch V.*, «Bergson» (1931).—*Joergensen*, «H. Bergson's Filosofi i Omriss» (1917).—*La Fontaine*, «La philosophie de B.» (1923).—*Lansson H.*, «Intuitionsproblesärskilt met hänssyu till H. B. teori» (1912).—*Le Dantec F.*, «Science et Conscience» (ἄνευ χρονολογίας).— *Le Roy Ed.*, «Une Philosophie Nouvelle: H. Bergson» (1912).— *Maire G.*, «H. Bergson» (1926).—*Maritain*, «La philosophie bergsonienne» (1913).—*Miller L.*, «B. and Religion» (1916).— *Morente G.*, «La filosofia de B.» (1917).— *Mourgue R.*, «Le point de vue neurobiologique dans l'œuvre de M. Bergson et les données actuelles de la science» (1920).— *Nordman*, «Notre maître le temps—Bergson ou Einstein ?» (ἄνευ χρονολογίας). —*Olgiati F.*, «La filosofia di E. B.» (β' ἐκδ. 1921).— *Olt E.*, «B. der Philosoph modern Religion» (1914).— *Parodi D.*, «Le rire, par H. B.» (1901).— *Peguy Ch.*, «Note sur M. Bergson et la philosophie bergsonienne» (1914). —*Penido*, «La méthode intuitive de M. Bergson» (1918).—*Pentimalli G.*, «E. B. la dottrina della durata reale e i sui precedenti storici» (1920).—*Prezzolini G.*, «Del linguaggio come causa di errore. Enrico Bergson» (1904).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «La filosofia di E. B.» ἐν «La teoria sindacalista» (1909).—*Reinke*, «Die schaffende Natur Mitz Bezugnahme auf Schopenhauer und B.» (1919).— *Pey A.*, «La philosophie moderne» (1921).—*Rodrigues G.*, «Bergsonisme et moralité» (1921).—*Ruggiero C. de*—, «E. Bergson» ἐν «La filosofia contemporanea» (1912).— *Τοῦ αὐτοῦ*, «Lo svolgimento della filosofia di B.» (1912).— *Ruhe y Paul.*, «H. Bergson» (1914).—*Russel B.*, «Mysticism and Logic» (1918, γαλλ. ἐκδ. 1922)· ἐπίσης ἄρθρον του ἐν «The Monist» (1912).—*Sageret J.*, La révolution philosophique et la Science» (ἄνευ χρονολογίας).— *Schrecker P.*, «H. Bergson's Philosophie der Persönlickkeit» (1912).— *Segond J.*, «L'intuition bergsonienne» (1912).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «L'Imagination» (1912).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «Intuition et amitié» (1919).—*Serini P.*, «B. e lo spiritualismo francese del secolo XIX» (1923).— *Sorel G.*, «Les illusions du progrès» (1910).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «L'utilité du pragmatisme» (1921).—*Steenbergen*, «H. Bergson's intuitive Philosophie» (1909).— *Stewart*, «A. Critical Exposition of Bergson's Philosophy» (1912).—*Thibaudet A.*, «Le bergsonisme» (1924).—*Weber L.*, «L'évolution créatrice, par H. B.» (1907).— *Weckssler*, «Der alte Geist in der französischen Lit. des 19 Jahrhundert von S. Martin bis Bergson» (1924).—Συστηματικώτερον βλ. βιβλιογραφίαν εἰς τὸ τελευταῖον τεῦχος τοῦ 1913 τῆς «Revue de Métaphysique et de Morale», εἰς τὸ *Ueberweg-Heinze* «Grundriss Gesch. der Philosophie» V 12α (1928) καὶ εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κολομβίας ἐκδοθεῖσαν τῷ 1923 «Contribution to a Bibliography of Bergson». Εἰδικώτερον, ὡς πρὸς τὴν σχέσιν τοῦ μπερξονισμοῦ πρὸς ἄλλα διαισθητικὰ συστήματα, πρβλ. τὴν ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἑταιρείᾳ τῆς Φιλοσοφίας γενομένην ἀνακοίνωσιν τοῦ *N. Lossky* καὶ τὴν ἐπακολουθήσασαν σχετικὴν συζήτησιν («Bull. de la Société Franç. de Philosophie» τεῦχ. Ἰουνίου 1928). Τέλος, ὡς πρὸς τὴν μετὰ τοῦ *Ἀϊνστάϊν* δημοσίαν κατὰ τὸ 1922 συζήτησιν ἐν τῇ αἰθούσῃ τῆς Γαλλικῆς Ἑταιρείας τῆς Φιλοσοφίας πρβλ. «Bull. de la Société Franç. de Philosophie», τεῦχος Ἀπριλίου ἰ. ἔ.

Κ. Θ. ΠΑΠΑΛΕΞΑΝΔΡΟΥ

**μπερξονισμὸς** (ὁ) Τὸ φρονεῖν τὰ τοῦ *Μπέρξον* (βλ. λ.), τὸ σύνολον τῶν ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον, καὶ ἡ καθόλου ἐπιρροὴ αὐτοῦ ἐπὶ τῆς συγχρόνου πνευματικῆς καὶ καλλιτεχνικῆς κινήσεως. Ὁ μπερξονισμὸς δὲν εἶναι κυρίως φιλοσοφικὸν σύστημα, οὔτε σχολή· εἶναι ἐπίδρασις τῶν φιλοσοφικῶν ἰδεῶν τοῦ Μπέρξον, κατὰ λίαν διάφορον τρόπον ἐκδηλωθεῖσα καὶ ἐκδηλουμένη ἐπὶ διαφόρων φιλοσόφων, ἐπιστημόνων, διανοητῶν, λογοτεχνῶν καὶ καλλιτεχνῶν.

**μπερξονιστὴς** (ὁ) ὁ ἀκολουθῶν, ὁ φρονῶν τὰ τοῦ *Μπέρξον* (βλ. λ.).

**Μπεροὰλντ ντὲ Βερβίγι** (Béroalde de Verville), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος συγγραφεὺς (1558—1623). Ἀνατραφεὶς συμφώνως πρὸς τὸ προτεσταντικὸν δόγμα ὑπὸ τοῦ πατρός του Ματθαίου, διαμαρτυρομένου θεολόγου, ἠσπάσθη μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ τὸ καθολικὸν δόγμα καὶ ἐγένετο κληρικός. Εἰς Τουρώνην, ὅπου παρέμεινεν ὡς μοναχὸς ἀπὸ τοῦ 1593, ἐμελέτησεν ὅλας τὰς ἐπιστήμας τῆς ἐποχῆς καὶ ἔγραψε ποικίλα καὶ πολυάριθμα ἔργα, τῶν ὁποίων ὅμως τὸ ὕφος εἶναι χαλαρὸν καὶ σκοτεινόν. Γνωστότερα τούτων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Οἱ ἐρωτικοὶ στεναγμοί» (1583), «Περιπέτειαι τῆς Φλωρίδος» (1594), «Περιπέτειαι τῆς Αἰλσιόννης» (1597), «Ἡ παρθένος τῆς Ὀρλεάνης» (1599), «Τὸ ταξίδιον τῶν πριγκίπων» (1610) κ. ἄ. Κάλλιστον ὅμως πάντων εἶναι τὸ ἀποδιδόμενον εἰς αὐτὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ μέσον τῆς ἐπιτυχίας», εἶδος μακροτάτου, ἀλλὰ λίαν διασκεδαστικοῦ καὶ πολλάκις σκανδαλώδους διαλόγου, μεταξὺ ποικίλων προσώπων ἀρχαίων, νέων καὶ φανταστικῶν, τὰ ὁποῖα συζητοῦσιν ἐλευθέρως περὶ πάντων ἀδιακρίτως τῶν πραγμάτων καὶ ζητημάτων. Χ. Δ.

**Μπεροάλντο** (Beroaldo). —1) ***Φίλιππος***, καλούμενος ὁ *πρεσβύτερος*. Ἰταλὸς φιλόλογος (1453—1505). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας φιλολογίας ἐν Βολωνίᾳ, διδάξας καὶ ἐν Πάρμᾳ, Μιλάνῳ καὶ Παρισίοις. Πλὴν τῶν ἀρίστων ἐκδόσεων μετὰ σχολίων τῶν κυριωτέρων Λατίνων συγγραφέων, ἔγραψε: «Declamatio ebriosi, scortatoris et aleatoris» (1599), «De impedimentis dirimentibus libri tres» κτλ. Ὁ Μπεροάλντο ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων συντελεστῶν τῆς ἀναγεννήσεως τῶν ἀρχαίων γραμμάτων κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα.

— 2) ***Φίλιππος***, ἢ *Φίλιππος ὁ νεώτερος*. Ἰταλὸς συγγραφεύς, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1472—1518). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Βολωνίᾳ καὶ βιβλιοθηκάριος τοῦ Βατικανοῦ ἐπὶ πάπα Λέοντος τοῦ Ι'. Ἔγραψε σοφὰ σχόλια εἰς τὰ «Annales» τοῦ Τακίτου καὶ πολυάριθμα ποιήματα, τὰ ὁποῖα συνεκέντρωσεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Odarum tres libri et epigrammatum liber unus (1530). Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπέροβα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης κώμης *Βερτίσκος* (βλ. λ.).

**Μπερόν, *Βασίλειος*.** Βούλγαρος πατριώτης καὶ συγγραφεύς, ἀνεψιὸς τοῦ Πέτρου Μπερόν, γεννηθεὶς εἰς Κότελ. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει σχολὴν τοῦ πατριαρχείου καὶ κατόπιν εἰς Ὀδησσόν. Ἐκεῖθεν μετέβη εἰς Γερμανίαν καὶ ἐνεγράφη εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Μονάχου. Τῷ 1856 ἐπανέκαμψεν εἰς Βουλγαρίαν καὶ εἰργάσθη διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν τῆς πατρίδος του, διατελέσας καὶ διευθυντὴς τοῦ ἐν Μπόλγκραντ τῆς Βεσσαραβίας γυμνασίου ἀπὸ τοῦ 1864—1872. Ἔγραψε πλὴν ἄλλων: «Λογικὴν» (1861), «Ἀρχαιολογικὰς καὶ ἱστορικὰς μελέτας» (1887) καὶ «Ζῳολογίαν» (1886).

— **Μπερόν, *Πέτρος Μπέροβιτς*.** Βούλγαρος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Κότελ τῷ 1797 καὶ δολοφονηθεὶς τῷ 1871. Ἐπεράτωσε τὴν ἐγκύκλιον μόρφωσίν του ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν Μονάχῳ. Ἀπὸ τοῦ 1832—1839 ἐπηγγέλλετο τὸν ἰατρὸν ἐν Ρουμανίᾳ, μεθ' ὃ ἀπεσύρθη εἰς Παρισίους καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν ἔργων. Θεωρεῖται ὡς ὁ πλέον μορφωμένος Βούλγαρος τῆς ἐποχῆς του. Ἔγραψε συγγράμματα εἰς βουλγαρικήν, γαλλικήν, ἑλληνικὴν καὶ γερμανικὴν γλῶσσαν. Τῷ 1824 ἐξέδωκεν ἀλφαβητάριον, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Ριμπένϊι μπούκβαρ», γεγραμμένον συμφώνως πρὸς τὴν ἀλληλοδιδακτικὴν μέθοδον. Γαλλιστὶ ἔγραψεν ἔργα φυσικῆς καὶ χημείας. Ἐξέδωκεν ἐπίσης ἔργον, ἐν ᾧ ἐκθέτει τὴν θεωρίαν του περὶ τῆς προελεύσεως τοῦ σύμπαντος, ἥτις ὅμως δὲν ἐγένετο δεκτὴ ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Γερμανιστὶ ἔγραψε περὶ «Σλοβενικῆς φιλοσοφίας» (1855) καὶ ἑλληνιστὶ βιβλία διαφόρων θεμάτων.

Τ. Β.

**Μπέρρελλ** (Birrell), ***Αὐγουστῖνος*.** Ἄγγλος νομομαθής, συγγραφεὺς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1850. Τῷ 1893 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κανταβριγίας. Ἡ δημοσίευσις τῶν «Obiter Dicta» (1884) κατέστησεν αὐτὸν εἰς τὸ κοινὸν γνωστὸν ὡς φιλολογικὸν κριτικὸν δοκιμώτατον καὶ εὐφυέστατον. Τῷ 1889 ἐξελέγη βουλευτής, διεκρίθη δὲ διὰ τὴν ἰδιάζουσαν σαρκαστικὴν εὐθυμολογίαν του τόσον, ὥστε νὰ εἰσαχθῶσι καὶ ἴδιαι ἐκ τοῦ ὀνόματός του σχηματισθεῖσαι λέξεις. Ἐγένετο ἀκολούθως ὑπουργὸς καὶ μετὰ ταῦτα ἀρχιγραμματεὺς τῆς Ἰρλανδίας, μέχρι τῆς ἰρλανδικῆς ἐπαναστάσεως (1916). Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς ἐπαναστάσεως ταύτης παρῃτήθη, καὶ τῷ 1918 ἀπεχώρησε τοῦ κοινοβουλίου καὶ τῆς πολιτικῆς ζωῆς. Ἐπανέλαβε τότε τὰς φιλολογικάς του ἀσχολίας, γράψας (1920) τὴν βιογραφίαν τοῦ ποιητοῦ Φρειδερίκου Λόκκερ-Λάμψον, πενθεροῦ του, «Collected Essays» (1922) καὶ «More Obiter Dicta» (1924).

Γ. Ι. Β.

**Μπερριὰ-Σαὶν-Πρὶ** (Berriat-Saint-Prix), ***Ἰάκωβος*.** Γάλλος νομομαθὴς καὶ λογοτέχνης (1769—1845). Διετέλεσε διαδοχικῶς δικηγόρος ἐν Ὀράγγῃ, ἐπίτροπος στρατοδικείου, καθηγητὴς τῆς νομολογίας καὶ τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἐν Γρενόβλῃ καὶ τέλος ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τῶν νομικῶν σχολῶν καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς καὶ ποινικῆς δικονομίας ἐν Γρενόβλῃ (1805). Τῷ 1819 προσεκλήθη ὡς καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων, ἀπὸ δὲ τοῦ 1840 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ἔγραψε πολυαρίθμους νομικὰς πραγματείας, ἐν αἷς: «Μαθήματα πολιτικῆς δικονομίας» (1808—1810), «Μαθήματα ἐγκληματικοῦ δικαίου» (1817 καὶ 1855), «Ἱστορίαν τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου» κλπ. (1821) κ. ἄ. Ἐπίσης ἠσχολήθη μὲ τὴν συγγραφὴν πλείστων ἱστορικῶν καὶ βιογραφικῶν μελετῶν καὶ ἐξεπόνησε θαυμασίαν ἔκδοσιν τοῦ Μπουαλὼ (1830—1834) μετὰ κριτικοῦ καὶ βιογραφικοῦ σημειώματος. Τῷ 1801 ἐξέδωκε καὶ ἓν πολλοῦ λόγου ἄξιον μυθιστόρημα, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἔρως καὶ φιλοσοφία».

—**Μπερριὰ-Σαὶν-Πρὶ** (Berriat-Saint-Prix), ***Κάρολος*.** Γάλλος νομομαθὴς καὶ λογοτέχνης, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1801—1870). Μετὰ λαμπρὰς νομικὰς σπουδὰς ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν τοῦ πατρός του ἀνεκηρύχθη διδάκτωρ τοῦ δικαίου, κατόπιν δὲ ἤρχισεν ἀσχολούμενος μὲ τὴν λογοτεχνίαν, δημοσιεύσας ποικίλα ἀποσπάσματα διαφόρων Γάλλων συγγραφέων ὡς καὶ τοῦ Ναπολέοντος Βοναπάρτου (1827) καὶ γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Νέα γαλλικὰ μαθήματα λογοτεχνίας καὶ ἠθικῆς» (1828). Ἀπὸ τοῦ 1830 ὑπηρέτησεν ὡς δικαστικός, καταλαβὼν διαδοχικῶς πλείστας ἀνωτάτας θέσεις. Εἶναι κυρίως γνωστὸς διὰ τὰς πολλὰς καὶ ἀξιολόγους νομικὰς πραγματείας του, ὧν σπουδαιότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Συνοπτικὴ μελέτη περὶ τῆς ἐν Γαλλίᾳ νομοθεσίας ἀπὸ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ἰουλίου καὶ ἐντεῦθεν» (1843), «Μελέτη περὶ τῶν κυριωτέρων ἐγκληματολόγων ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος» (1855), «Ἡ ἐπαναστατικὴ δικαιοσύνη εἰς Παρισίους, Μποροντώ, Βρέστην, Λυών, Νάντην, Ὀράγγην, Στρασβοῦργον κλπ. ἐπὶ τῇ βάσει αὐθεντικῶν στοιχείων (1861) κ. ἄ.

Χ. Δ.

**Μπερρουγκέτε** (Berruguete) ***Ἀλόνσος*.** Διάσημος Ἱσπανὸς ἀρχιτέκτων, ζωγράφος καὶ γλύπτης, υἱὸς τοῦ Πέτρου Μπερρουγκέτε. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1480 ἐν Paredes de Nava, εἰς τὴν Καστίλλην, καὶ ἀπέθανε τῷ 1561. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς μὲν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ πατρός του, μετὰ ταῦτα δὲ (περὶ τὸ 1503) εἰς τὴν Ἰταλίαν καὶ δὴ εἰς τὴν Φλωρεντίαν καὶ τὴν Ρώμην· ἐμαθήτευσεν ὑπὸ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον, τοῦ ὁποίου ἀντέγραψεν ἐν Φλωρεντίᾳ τὸ σχέδιον τοῦ πολέμου τῆς Πίζης καὶ τὸν ὁποῖον ἐβοήθησεν εἰς πολυάριθμα ἔργα του. Τῷ 1520 ὁ Μπερρουγκέτε ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἱσπανίαν καὶ κατ' ἀρχὰς εἰργάσθη ἐν Σαραγόσσῃ. Βραδύτερον μετέβη εἰς Καστίλλην, ὅπου ὁ Κάρολος-Κουΐντος τὸν ὠνόμασε γλύπτην καὶ ζωγράφον τῆς βασιλικῆς αὐλῆς καὶ τοῦ ἀνέθηκε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐργασιῶν τῆς οἰκοδομήσεως τοῦ παλαιοῦ Ἀλκαζὰρ τῆς Μαδρίτης καὶ τοῦ νέου ἀνακτόρου τῆς Γρενάδας. Ἐπὶ πλέον ὁ Μπερρουγκέτε διεκόσμησε διὰ ζωγραφικῶν καὶ γλυπτικῶν ἔργων τὸ κολλέγιον, ὅπερ ὁ ἀρχιεπίσκοπος τοῦ Τολέδου δὸν Ἀλφόνσος ντὲ Φονσέκα ᾠκοδόμησεν ἐν Σαλαμάγκᾳ, καὶ τὸ μοναστήριον τοῦ κολλεγίου, ὅπερ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει ἵδρυσεν ὁ ἐπίσκοπος de Cuenca. Μετὰ ταῦτα ἀνέλαβε τὴν διακόσμησιν τοῦ ἁγίου Βενεδίκτου τοῦ Βαλλαδολίδου διὰ τριάκοντα ἀγαλμάτων, ἐξ ὧν δύο (τῆς Παναγίας καὶ τοῦ ἁγίου Βενεδίκτου) εἶναι φυσικοῦ μεγέθους, τῷ δὲ 1539 ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Φιλίππου τῆς Βουργουνδίας ἐξεπόνησε τὰ στασίδια τοῦ καθεδρικοῦ ναοῦ τοῦ Τολέδου, θέσας ἄνωθι τῆς καθέδρας τοῦ ἀρχιεπισκόπου τὴν περίφημόν του «Μεταμόρφωσιν», περιλαμβάνουσαν μορφὰς εἰς φυσικὸν μέγεθος. Μεταξὺ τῶν λοιπῶν ἔργων, ἅτινα κατὰ τὸ μακρὸν καὶ ἐργῶδες καλλιτεχνικόν του στάδιον ἐξειργάσθη ὁ Μπερρουγκέτε, μνημονεύομεν τὸ ἄγαλμα τοῦ «Χριστοῦ εἰς τὸν στῦλον» (ἐν Γρενάδᾳ), τὸν «Ἅγιον Ἰωάννην τὸν Βαπτιστὴν» (ἐν τῷ ναῷ τοῦ χωρίου Santoyo), τὰ προσερείσματα τοῦ θυσιαστηρίου τῆς μονῆς τῶν Ἱερωνυμιτῶν τῆς Mejorada, τὴν προτομὴν τοῦ Ἰωάννου Τουριάνο, μηχανικοῦ-ὡρολογοποιοῦ τοῦ Καρόλου-Κουΐντου, γνωστοῦ ἐν Ἱσπανίᾳ ὡς «Χουανέλο» (Ἐπαρχιακὸν Μουσεῖον Τολέδου), τὸ ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ Ἀλόνσου Γκοντιέρρεθ, θησαυροφύλακος τοῦ Καρόλου-Κουΐντου καὶ τὸ ἐπιτάφιον μνημεῖον τῆς σύζυγον τούτου δόνας Μαρίας ντὲ Πίζα, ἀμφότερα ἱδρυθέντα τῷ 1543 ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Μαρτίνου τῆς Μαδρίτης, τὰ ἐπιτάφια μνημεῖα τοῦ Juan de Rojas, μαρκησίου de Poza, καὶ τῆς συζύγου του δόνας Μαρίας Σαρμιέντο, ἱδρυθέντα ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Δομίγκου τῆς Palencia, καὶ τὸ ἐπιτάφιον μνημεῖον τοῦ καρδιναλίου Ἰωάννου Ταβέρα, ἀληθὲς ἀριστούργημα, ἀποκείμενον ἐν τῷ ναῷ τοῦ νοσοκομείου Afuera, ἐν Τολέδῳ· τοῦτο, κατά τινα ἐκδοχήν, καταλειφθὲν ἡμιτελές, συνεπλήρωσεν ὁ υἱός του *Ἀλόνσος Μπερρουγκέτε ὁ νεώτερος*. Κατὰ τὸν Κάρολον Μπλάν, τὰ ἔργα τοῦ Μπερρουγκέτε, ἐν οἷς διαλάμπουσι κυρίως ἡ δύναμις καὶ τὸ μεγαλεῖον τῶν μορφῶν, ἀνακαλοῦσιν εἰς τὴν μνήμην διὰ τῆς σοφῆς των ἀνατομίας τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ὁ Μπερρουγκέτε ὑπῆρξε μέγας φορεὺς τοῦ πνεύματος τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως ἐν Ἱσπανίᾳ.

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μπερρουγκέτε** (Berruguete), ***Πέτρος*.** Ἱσπανὸς ζωγράφος, ζήσας κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Ἐλάχιστα εἶναι περὶ τοῦ βίου του γνωστά. Διετέλεσεν ἐπίσημος ζωγράφος Φιλίππου τοῦ Ὡραίου καὶ ἐξεπόνησεν ἐν Ἀβίλᾳ ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλου τινὸς ζωγράφου πολυαρίθμους συνθέσεις, ἐξ ὧν ἐννέα (ἐπὶ σανίδος) ἀπόκεινται νῦν ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Μαδρίτης.

Ι. Μ. Π.

— **Μπερρουγκέτε ὐ Περέδα** (Berruguete-y-Pereda), ***Ἀλόνσος* —,** ὁ ἐπικαλούμενος *Μπερρουγκέτε ὁ νεώτερος*. Ἱσπανὸς καλλιτέχνης τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, υἱὸς τοῦ Ἀλόνσου Μπερρουγκέτε. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ πατρός του εἰς τὴν ἐκτέλεσιν διαφόρων γλυπτικῶν ἔργων καὶ ἐπεράτωσε τὸ μαυσωλεῖον τοῦ καρδιναλίου Ταβέρα ἐν Τολέδῳ.

Ι. Μ. Π.

**Μπέρρυ** (Berry), *σὲρ* ***Οὐΐλλιαμ*.** Σύγχρονος Ἄγγλος ἐπιχειρηματίας ἐφημερίδων καὶ περιοδικῶν, γεννηθεὶς τῷ 1879. Διεκρίθη διὰ τὰς ἐπιτυχεῖς του ἐκδοτικὰς ἐπιχειρήσεις, τὰς ὁποίας ἤρχισεν ἀπὸ τὸ 1901 διὰ τῆς ἐκδόσεως τοῦ «Advertising World», ἐφημερίδος διαφημίσεων, ἥτις προσεπόρισεν εἰς αὐτὸν μεγάλα κέρδη. Κατόπιν ἠγόρασεν ἄλλας ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ἱδρύσας συγχρόνως καὶ νέας τοιαύτας. Τῷ 1915 ἐγένετο, μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Γκόμερ Μπέρρυ* (γεννηθέντος τῷ 1883), τοὺς «Κυριακάτικους Τάϊμς» καὶ κατόπιν τοὺς «Οἰκονομικοὺς Τάϊμς», «Τὸ Γκράφικ», τὰς ἐκδόσεις Κάσσελ καὶ Κέλλυ καὶ ἐγένετο ὁ κυριώτερος μέτοχος διαφόρων ἄλλων ἐκδοτικῶν ἑταιρειῶν καὶ ἐπιχειρήσεων, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι αἱ ἐκδόσεις Χοῦλτον καὶ τοῦ «Ἡνωμένου τύπου». Τῷ 1927 ἠγόρασε μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του τὸν «Ἡμερήσιον τηλέγραφον» τοῦ Λονδίνου, τὰ «Ἑσπερινὰ χρονικά», τὰ «Ἀθλητικὰ χρονικά» τοῦ Μάντσεστερ, τὰ «Ἀθλητικὰ νέα». Ἤδη εἶναι ὁ μόνος ἰδιοκτήτης 13 ἐν ὅλῳ καθημερινῶν ἐφημερίδων καὶ 85 περιοδικῶν ἐν Λονδίνῳ, Νιουκάσλ, Γλασκώβῃ, Κάρδιφ κτλ., καθὼς καὶ ὑπὲρ τὰς 100 ἄλλας περιοδικὰς ἐκδόσεις μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του. Τῷ 1928 ἐσημειώθη μέγας συναγωνισμὸς πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς ἐπιρροῆς ἐπὶ τοῦ ἐπαρχιακοῦ τύπου εἰς τὰ μεγάλα κέντρα, μεταξὺ τῶν ἀδελφῶν Μπέρρυ, εὑρισκομένων ἐπὶ κεφαλῆς τῆς «Ἑταιρείας τῶν συνησπισμένων ἐφημερίδων» καὶ τῆς «Ἑταιρείας τῶν συνησπισμένων ἐφημερίδων τοῦ Β...» ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀφ' ἑτέρου τοῦ λόρδου Ροδερμηρ, εὑρισκομένου ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁμάδος τῶν «Ἡ...ρησίων νέων». Τῷ 1921 ὁ Μπερρὺ ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου.

Μ. Δ. Β.

**Μπερρὺ** (Berry) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς κεντρικῆς Γαλλίας, περιλαμβάνουσα τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν νομῶν Σὲρ καὶ Ἔντρ καὶ τμήματα τῶν Λουαρέ, Ἔντρ-ἐ-Λουὰρ καὶ Κρέζ. Πρωτεύουσα *Μπούρζ*. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς περιλαμβάνει τρεῖς διακεκριμένας γεωγραφικῶς περιοχάς, τὴν μεταξὺ Λίγηρος καὶ Σατωροῦ πεδιάδα (Champagne berrichonne), καλυπτομένην ὑπὸ καλλιεργημένων ἐκτάσεων, δασῶν καὶ βοσκῶν, τὴν λοφώδη χώραν τοῦ *Σανσερρουὰ* πρὸς ΒΑ., καλῶς ἀρδευομένην καὶ καλυπτομένην ὑπὸ ἐκτεταμένων λειμώνων καὶ τὴν τοῦ *Ἄνω-Μπερρύ*, καλυπτομένην ὑπὸ ἐ... καὶ περιλαμβάνουσαν τὴν γραφικὴν κοιλάδα *Μπερισὸν* καὶ τὸ εὔφορον *Μπουασώ*. Εἶναι χώρα ἀραιῶς κατῳκημένη, ἐκτὸς τῆς περιοχῆς τοῦ Σέρ, ὁ δ' ἐκ 350.000 περίπου ἀνερχόμενος πληθυσμός της ἀσχολεῖται κυρίως μὲ τὴν γεωργίαν (σιτηρά, ἀμπελουργία κλπ.), τὴν δασοκομίαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Σὲρ ἀνορύσσεται καθαρώτατον σιδηροῦχον μετάλλευμα. Ὁ λαὸς τοῦ Μπερρὺ διατηρῶν ἰδιαίτερα ἤθη καὶ ἔθιμα, περιεγράφη ὑπὸ τῆς ἐκεῖθεν καταγομένης Γεωργίας Σάνδη.

—*[Ἱστορ.]* Τὸ *Μπερρὺ* ἔπαιξε σπουδαιότατον ῥόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν γαλατικῶν καὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, ὡς κέντρον τοῦ λαοῦ τῶν Κουμίων, Βιτουρίγων, οἵτινες εἶχον πρωτεύουσαν τὸ Ἀβαρικὸν (σημερινὴ Μπούρζ). Κατὰ τὴν καρολιγγιανὴν περίοδον ἀπετέλει ἀνεξάρτητον κομητεῖαν προσαρτηθεῖσαν εἰς τὸ γαλλικὸν στέμμα τὸν ΙΑ' αἰῶνα. Τῷ 1360 περιῆλθεν εἰς τὸν Ἰωάννην, υἱὸν τοῦ Ἰωάννου τοῦ Καλοῦ, καὶ εἶτα εἰς διαφόρους πρίγκιπας, μέχρις ὅτου ἐγένετο ἐκ νέου ἀπὸ τοῦ 1601 ἐπαρχία τοῦ στέμματος. Τὸν τίτλον τοῦ «δουκὸς τοῦ Μπερρὺ» ἔφερον διαδοχικῶς ὁ ἔγγονος τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' Κάρολος, ὁ καρατομηθεὶς βασιλεὺς Λουδοβῖκος ΙΣΤ' καὶ τέλος ὁ υἱὸς τοῦ Καρόλου Ι', δολοφονηθεὶς τῷ 1820.

— **Μπερρὺ διῶρυξ** *[Γεωγρ.]*. Διῶρυξ τῆς κεντρικῆς Γαλλίας, ὑποδιαιρουμένη εἰς τρία τμήματα. Ἐκ τούτων τὸ πρῶτον συνδέει τὸν Λίγηρα (ἀπὸ τοῦ Μπὲφ) μετὰ τοῦ Σὲρ παρὰ τὸ Σαὶντ-Ἀμὰν διερχόμενον διὰ τῶν κοιλάδων Ὠμπουὰ καὶ Ὠρόν· τὸ δεύτερον τὸν Σὲρ (ἀπὸ τοῦ Σαὶντ-Ἀμανιὰν) μετὰ τοῦ πρώτου τμήματος τῆς διώρυγος, τὸ ὁποῖον συναντᾷ ἐντὸς τῆς κοιλάδος τοῦ Ὠρόν, διέρχεται δὲ παρὰ τὴν Μπούρζ· καὶ τὸ τρίτον ἄρχεται ἀπὸ τοῦ Σαὶντ-Ἀμὰν καὶ ἀκολουθεῖ τὸν Σὲρ μέχρι τοῦ Μουλυσόν. Ἡ διῶρυξ αὕτη ἐξυπηρετεῖ τὰς βιομηχανικὰς περιοχὰς τῆς Μπούρζ καὶ τοῦ Μονλυσόν, ὡς ἐκ τοῦ μικροῦ ὅμως πλάτους της καὶ τοῦ ἐλαχίστου βάθους, χρησιμοποιεῖται μόνον διὰ φορτηγίδας συρομένας ὑπὸ ὄνων καὶ ἡμιόνων.

Χ. Δ.

**Μπερρὺ *δοῦκες*.** Ὁ τίτλος οὗτος ἐδόθη κατὰ καιροὺς ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος μέχρι τῆς πτώσεως τῶν Βουρβώνων εἰς διαφόρους εὐπατρίδας, μέλη κυρίως τοῦ βασιλικοῦ οἴκου τῆς Γαλλίας, ἐφ' ὅσον δὲ ἡ χώρα τοῦ Μπερρὺ ἦτο ἡνωμένη μετὰ τοῦ στέμματος, ὁ τίτλος μόνον τιμητικὴν σημασίαν εἶχε. Σπουδαιότεροι ἐκ τῶν λαβόντων τὸν τίτλον δουκῶν καὶ δουκισσῶν τοῦ Μπερρὺ εἶναι οἱ ἑξῆς:

***Ἰωάννης τῆς Γαλλίας*, *δοὺξ τοῦ Μπερρύ*.** Τρίτότοκος υἱὸς τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Β' τοῦ Καλοῦ καὶ τῆς Μπὸν τοῦ Λουξεμβούργου (1340-1416). Τῷ 1356 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ κόμητος τοῦ Πουατιέ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1360 τὸν τοῦ δουκὸς τῆς Ὠβέρνης καὶ τοῦ Μπερρύ. Μετὰ τὴν μάχην τοῦ Πουατιὲ παρέμεινε, συμφώνως τῇ συνθήκῃ τοῦ Μπρετινύ, ὡς ὅμηρος ἐν Ἀγγλίᾳ μέχρι τοῦ 13... Ἀπὸ τοῦ 1380 μέχρι τοῦ 1388, ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ ἀνεψιοῦ του Καρόλου ΣΤ', διοικῶν τὸ Λαγκεδὸκ ἐδείχθη κατ' ἐξοχὴν σκληρὸς καὶ ἅρπαξ... στερηθεὶς τῆς διοικήσεώς του εὐθὺς ὡς οἱ σύμβουλοι τοῦ βασιλέως Μαρμουζὲ κατώρθωσαν νὰ ἐπιβληθῶσιν ἐν τῇ ἀρχῇ. Μετ' ὀλίγον ὅμως, ὅτε ὁ Κάρολος ἔπαθε τὰς φρένας (1392), κατώρθωσε ... ἀπαλλαγῇ τῶν ἐχθρῶν του καὶ διαμοιράσας τὴν ἐξουσίαν μεταξὺ τοῦ ἀδελφοῦ του δουκὸς τῆς Βουργουνδίας καὶ τοῦ ἀνεψιοῦ του δουκὸς τῆς Ὀρλεάνης, ἔπαιξε κατ' ἀρχὰς ῥόλον συμβιβαστοῦ μεταξὺ τοῦ βουργουνδικοῦ καὶ τοῦ ὀρλεανικοῦ οἴκου. Ὅτε ὅμως ὁ ἀρχηγὸς τῶν Βουργουνδῶν Ἰωάννης ὁ Ἀτρόμητος ἐδολοφόνησε (1407) τὸν δοῦκα τῆς Ὀρλεάνης, ἀπεδοκίμασε μὲν τὴν πρᾶξιν, ἀλλὰ δὲν ἠμπόδισε τὸν Ἰωάννην νὰ δ... Μετ' ὀλίγον (1410) ἐπειδὴ ὁ Ἰωάννης ὁ Ἀτρόμητος ἀντήμειψε κακῶς τὴν εὐμενῆ πρὸς αὐτὸν στάσιν του, ἤλλαξεν ἐκ νέου πολιτικήν, εὐνοήσας τοὺς ἄρχοντας τότε τοῦ ὀρλεανικοῦ οἴκου Ἀρμανιάκ, ἐξακολουθῶν συγχρόνως τὸν ῥόλον τοῦ συμ...

Digitized by Google

του. Ὁ δοὺξ τοῦ Μπερρὺ ὑπῆρξε ματαιόδοξος, ἀδιάλλακτος καὶ φιλήδονος πρίγκιψ, ἐδείχθη ὅμως θερμὸς ὑποστηρικτὴς τῶν γραμμάτων καὶ τῶν τεχνῶν, παρὰ τῷ ὁποίῳ οἱ μεγαλύτεροι καλλιτέχναι τῆς ἐποχῆς εὗρον θερμὴν πάντοτε ὑποστήριξιν. Εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Σαντιγὺ σῴζεται τὸ περίφημον «Livre d'heures du duc de Berry» ἓν ἐκ τῶν ὡραιοτέρων χειρογράφων τῆς ἐποχῆς.

**—*Ἰωάννα ντ' Ἀρμανιάκ, δούκισσα τοῦ Μπερρύ.*** Πρωτότοκος θυγάτηρ τοῦ κόμιτος ντ' Ἀρμανιὰκ Ἰωάννου Α' καὶ τῆς Βεατρίκης τοῦ Κλερμόν, ἀποθανοῦσα τῷ 1387. Ἐνυμφεύθη τῷ 1360 τὸν τότε κόμιτα Ἰωάννην τοῦ Πουατιέ, ὅστις μετ' ὀλίγον ὠνομάσθη δοὺξ τοῦ Μπερρύ, ἀφοῦ προηγουμένως παρῃτήθη πάντων τῶν περὶ διαδοχῆς δικαιωμάτων της ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῆς Ἰωάννου Β' κόμιτος ντ' Ἀρμανιάκ.

**—*Ἰωάννα ντ' Ἀρμανιάκ, δούκισσα τοῦ Μπερρύ.*** Μονογενὴς θυγάτηρ τοῦ Ἰωάννου Β', κόμιτος τῆς Βουλώνης καὶ τῆς Ὠβέρνης, καὶ τῆς Ἐλεονώρας ντὲ Κομίν, ἀποθανοῦσα τῷ 1422. Ἐνυμφεύθη τῷ 1389 εἰς ἡλικίαν 12 ἐτῶν τὸν ἀπὸ διετίας χηρεύσαντα Ἰωάννην δοῦκα τοῦ Μπερρύ. Ἔσωσε τὴν ζωὴν τοῦ βασιλέως Καρόλου ΣΤ' κατά τινα χοροεσπερίδα μετημφιεσμένων, καθ' ἣν ἐκινδύνευσε νὰ καῇ ζῶν (1393). Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της ἐνυμφεύθη (1416) τὸν φιλόδοξον Γεώργιον ντὲ λὲ Τρεμουάγλ, τὸν ὁποῖον, λόγῳ τῆς κακῆς πρὸς αὐτὴν συμπεριφορᾶς του ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ καὶ ἀπεσύρθη εἰς τὸν πύργον τοῦ Σαὶν-Συλπὶς-σὺρ-Τάρν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν ἄτεκνος.

**— *Κάρολος, δοὺξ τοῦ Μπερρύ.*** Τὸν τίτλον τοῦτον ἔφερεν ἀπὸ τοῦ 1419 ὁ κατόπιν (1422) βασιλεὺς τῆς Γαλλίας *Κάρολος Ζ'* (βλ. λ.).

**— *Κάρολος τῆς Γαλλίας, δοὺξ τοῦ Μπερρύ, τῆς Νορμανδίας καὶ τῆς Γουυέννης.*** Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Καρόλου Ζ' καὶ τῆς Μαρίας τῆς Ἀνδηγαυικῆς (1446—1472). Ὁ πατήρ του ἔτρεφε τοιαύτην πρὸς αὐτὸν ἀδυναμίαν, ὥστε ἐσκόπευε νὰ ἀποκληρώσῃ τὸν πρωτότοκον υἱόν του Λουδοβῖκον ΙΑ' ἀπὸ τῶν ἐπὶ τοῦ θρόνου δικαιωμάτων χάριν τοῦ νεωτέρου. Καὶ τοῦτο μὲν δὲν ἐπετεύχθη, λόγῳ τοῦ προώρου θανάτου τοῦ Καρόλου Ζ', ἀλλ' ἡ προκληθεῖσα τοιουτοτρόπως μεταξὺ τῶν δύο ἀδελφῶν δυσπιστία προεκάλεσε τὰς ῥαδιουργίας τοῦ νεωτέρου καὶ τὴν προσχώρησιν αὐτοῦ εἰς τὴν «Ligue du bien public». Κατόπιν πολλῶν συνεννοήσεων ἐπετεύχθη τέλος συμβιβασμός, ὁ δὲ Κάρολος διωρίσθη διοικητὴς τῆς Νορμανδίας καὶ Γουυέννης, ὅπου ἀπέθανε μετ' ὀλίγον εἰς ἡλικίαν 26 ἐτῶν, δηλητηριασθεὶς ἴσως κατὰ διαταγὴν τοῦ βασιλέως ἀδελφοῦ του.

**— *Ἰωάννα τοῦ Βαλουᾶ, δούκισσα τοῦ Μπερρύ.*** Τὸν τίτλον τοῦτον ἔφερεν ἀπὸ τοῦ 1498, ὁπότε διεζεύχθη τὸν βασιλέα Λουδοβῖκον ΙΒ', μέχρι τοῦ θανάτου της (1505) ἡ *Ἰωάννα* τοῦ Βαλουᾶ (βλ. λ.).

**— *Λουΐζα τῆς Λωρραίνης, δούκισσα τοῦ Μπερρὺ*** βλ. λ. *Λουΐζα* τῆς Λωρραίνης).

**— *Κάρολος τῆς Γαλλίας, δοὺξ τοῦ Μπερρύ.*** Ἔγγονος τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ τριτότοκος υἱὸς τοῦ μεγάλου δελφίνου (1684—1714). Ἀσθενοῦς διανοητικότητος, εἶναι κυρίως γνωστὸς διὰ τὸν ἀτυχῆ γάμον του μετὰ τῆς *Μαρίας Λουΐζης* (βλ. κατωτ.).

**— *Μαρία - Λουΐζα - Ἐλισάβετ τῆς Ὀρλεάνης, δούκισσα τοῦ Μπερρύ.*** Πρωτότοκος θυγάτηρ τοῦ ἀντιβασιλέως τῆς Γαλλίας Φιλίππου τῆς Ὀρλεάνης (1695—1719). Ἐνυμφεύθη εἰς ἡλικίαν 15 ἐτῶν τὸν Κάρολον δοῦκα τοῦ Μπερρύ. Κατὰ τὸν Σαὶν Σιμόν, ἦτο πεπροικισμένη διὰ λαμπρῶν πνευματικῶν προτερημάτων καὶ διὰ σπανίας χάριτος, ἔζησεν ὅμως βίον ὀργιώδη καὶ μεστὸν σκανδάλων, ἰδίως ἀφ' ὅτου ὁ πατήρ της, ὅστις ἀπετέλει ἕνα τῶν πρωτεργατῶν συντρόφων τῶν ὀργίων της, ἐγένετο ἀντιβασιλεύς. Τῷ 1710 ἐνυμφεύθη τὸν Κάρολον δοῦκα τοῦ Μπερρύ, ὅστις ἀπέθανε μετὰ τετραετίαν, πιθανῶς δηλητηριασθεὶς ὑπ' αὐτῆς, λόγῳ τοῦ ὅτι ἀντετάσσετο εἰς τὸν ἔκλυτον βίον της. Ἐπίσης ἀπεδόθη εἰς αὐτὴν ὑπὸ πολλῶν ὁ ἐκ δηλητηριάσεως θάνατος τῆς δουκίσσης τῆς Βουργουνδίας. Περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου της εἶχεν ἐρωμένον βάναυσόν τινα Γασκῶνον, ὀνόματι Ριόν, ὅστις ἐκακοποίει αὐτὴν ποικιλοτρόπως. Μεταβοῦσα μιᾶς νυκτερινῆς ἑορτῆς, κατόπιν προσφάτου δυσχεροῦς τοκετοῦ, ἠσθένησε καὶ ἀπέθανεν εἰς ἡλικίαν 24 ἐτῶν.

**— *Λουδοβῖκος, δοὺξ τοῦ Μπερρύ.*** Τίτλος τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας *Λουδοβίκου ΙΣΤ'* (βλ. λ.), ὃν οὗτος ἔφερε πρὸ τῆς εἰς τὸν θρόνον ἀναρρήσεώς του.

**— *Κάρολος-Φερδινάνδος τῶν Βουρβώνων, δοὺξ τοῦ Μπερρύ.*** Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ κόμιτος τοῦ Ἀρτουὰ (Καρόλου Ι') καὶ τῆς Μαρίας-Θηρεσίας τῆς Σαβοΐας (1778—1820). Τῷ 1789 ἔφυγε μετὰ τῶν συγγενῶν του ἐκ Γαλλίας, κατετάχθη δὲ εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Κονδέ. Μετὰ διετίαν ἐγκατεστάθη εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου ἐνυμφεύθη τὴν Ἄνναν Μπράουν, ἐξ ἧς ἀπέκτησε δύο θυγατέρας, ἐπανῆλθε δὲ εἰς Γαλλίαν εὐθὺς μετὰ τὴν πρώτην παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων (1814).

Ὁ Λουδοβῖκος ΙΗ', ἐξέλεξεν αὐτὸν διοικητὴν τοῦ στρατοῦ τοῦ ταχθέντος διὰ νὰ ὑπερασπίσῃ τοὺς Παρισίους ἐναντίον τοῦ ἐξ Ἔλβας ἐπιστρέψαντος Ναπολέοντος. Ἀποτυχὼν ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ εἰς Γάνδην μετὰ τοῦ θείου του, ἐπανέκαμψε δὲ εἰς Παρισίους τὴν 8 Ἰουλίου 1815. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐνυμφεύθη κατ' ἀπαίτησιν τῆς οἰκογενείας του, ἡ ὁποία δὲν ἤθελε νὰ ἀναγνωρίσῃ τὸν πρῶτον γάμον του, τὴν πριγκήπισσαν Μαρίαν-Καρολίναν-Φερδινάνδην-Λουΐζαν τῆς Νεαπόλεως. Ἐδολοφονήθη τὴν 13 Φεβρουαρίου 1820, ὑπό τινος φανατικοῦ ὀνόματι Σαμπόρ, ἐνῷ ἐξήρχετο ἐκ τοῦ θεάτρου τῆς Ὄπερας.

***Μαρία-Καρολίνα-Φερδινάνδη-Λουΐζα τῆς Νεαπόλεως, δούκισσα τοῦ Μπερρὺ*** (1798—1870). Πρωτότοκος θυγάτηρ τοῦ βασιλέως τῆς Νεαπόλεως Φραγκίσκου Α' καὶ σύζυγος τοῦ δολοφονηθέντος τῷ 1820 δουκὸς τοῦ Μπερρύ, Καρόλου-Φερδινάνδου τῶν Βουρβώνων, μετὰ τοῦ ὁποίου ἀπέκτησε μίαν θυγατέρα, τὴν κατόπιν δούκισσαν τῆς Πάρμας, καὶ ἕνα υἱόν, τὸν κόμιτα Σαμπόρ, ὅστις ἦτο ὁ μόνος κληρονόμος τοῦ πρωτοτόκου κλάδου τοῦ οἴκου τῶν Βουρβώνων. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 ἠκολούθησε τὸν ἔκπτωτον βασιλέα Κάρολον Ι' εἰς Ἀγγλίαν, ἀλλ' ἐπέστρεψε μετ' ὀλίγον παρὰ τὴν θέλησιν αὐτοῦ εἰς Γαλλίαν, ὅπως ὑποκινήσῃ ἐπανάστασιν ἀποσκοποῦσαν εἰς τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων. Ἀποβιβασθεῖσα εἰς Προβηγκίαν ἐτράπη πρὸς τὴν Βανδέαν παρ' ὅλας τὰς πρὸς ἀποτροπὴν αὐτῆς συμβουλὰς τοῦ κόμματος τῶν βασιλοφρόνων. Ἡ ἐπιτευχθεῖσα ἐξέγερσις (Ἰούνιος —Σεπτέμβριος) οὐδὲν ἀποτέλεσμα ἐπέφερεν. Ἡ δούκισσα ἐγκαταλειφθεῖσα τότε ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν της, ἐκρύβη εἰς Νάντην, ἀλλὰ προδοθεῖσα ὑπό τινος Ἑβραίου καλουμένου Ντέτς, συνελήφθη καὶ ἐκρατήθη εἰς τὸ φρούριον τοῦ Μπλαὶ (Νοέμβριος 1832), ὅπου ἔτεκε κόρην προερχομένην κατὰ τὴν ὁμολογίαν της ἐκ μυστικοῦ γάμου συναφθέντος ἐν Ἰταλίᾳ μετὰ τοῦ κόμιτος Ἕκτορος Λουκκέζι-Πάλλι. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν της ἀπεσύρθη εἰς Παλέρμον διακόψασα ἔκτοτε πᾶσαν ἀνάμιξίν της εἰς τὴν πολιτικὴν τῆς Γαλλίας. Ἐν τῷ μουσείῳ τῶν Βερσαλλιῶν φυλάσσεται ὡραῖος πίναξ τοῦ Ζεράρ, παριστῶν τὴν δούκισσαν μετὰ τῶν δύο τέκνων της. Χ. Δ.

**— Μπερρὺ** (Berry), ***Γεώργιος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1852—1915). Ἀπὸ τοῦ 1893 ἐξελέγετο σχεδὸν συνεχῶς βουλευτὴς τοῦ κόμματος τῶν ἀνεξαρτήτων προοδευτικῶν δημοκρατικῶν. Ἐδημοσίευσε πλείστας κοινωνιολογικὰς καὶ οἰκονομικὰς μελέτας, ἐν αἷς: «Ἡ ἀναρχία καὶ ὁ ἀθεϊσμὸς ἐν τῷ κοινωνικῷ ζητήματι», «Ἡ διὰ τῆς ἐργασίας κοινωνικὴ πρόνοια εἰς Γερμανίαν» κλπ. Διεκρίθη ἐπίσης ὡς ἱκανὸς στιχουργός, δημοσιεύσας ποιητικάς τινας συλλογάς. Χ. Δ.

**Μπερρυγιὲ** (Berruyer), ***Ἰωσὴφ-Ἰσαάκ.*** Γάλλος ἰησουΐτης ἐκ Ρουένης (1681—1758). Εἶναι γνωστὸς ὡς συγγραφεὺς τετρατόμου ἱστορίας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορία τοῦ λαοῦ τοῦ Θεοῦ» (1728, 1753, 1758), ἡ ὁποία, συντεταγμένη εἰς ὕφος καὶ μὲ περιεχόμενον λίαν ἐλευθεριάζον, προεκάλεσε ζωηρὸν σκάνδαλον εἰς τοὺς κύκλους τῶν κληρικῶν καὶ τῶν θεολόγων. Ἡ Σορβόννη καὶ οἱ πάπαι Βενέδικτος ΙΔ' καὶ Κλήμης ΙΓ' ἀπεδοκίμασαν τὸ ἔργον τοῦτο, ἀλλ' οἱ ἰησουΐται ὑπεστήριξαν αὐτὸ φανερά. Ἐκ τοῦ οὕτω προκληθέντος θορύβου τὸ πρόσωπον τοῦ Μπερρυγιὲ περιεβλήθη πολὺ μεγαλυτέραν αἴγλην τῆς πραγματικῆς ἀξίας του, τὸ δὲ ἔργον αὐτοῦ ἠρίθμησε πλείστας ἐκδόσεις καὶ μεταφράσεις. Χ. Δ.

**Μπερρυὲ** (Berryer), ***Πέτρος-Ἀντώνιος.*** Γάλλος δικηγόρος καὶ διακεκριμένος πολιτικὸς ῥήτωρ, υἱὸς τοῦ *Πέτρου-Νικολάου* (1790—1868). Αἱ ἀγορεύσεις του, δι' ὧν ὑπερήσπισε τὴν ἐλευθεροτυπίαν, ἀνέδειξαν αὐτὸν μεταξὺ τῶν διαπρεπεστέρων νομομαθῶν καὶ ῥητόρων τῆς ἐποχῆς του. Τῷ 1830 ἐξελέγη βουλευτής, μετὰ δὲ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ἰουλίου ἦτο ὁ μόνος ἐκ τῶν ὀπαδῶν τῆς μερίδος τῶν νομιμοφρόνων, ὅστις ἐπανεξελέγη. Ὡς μέλος τῆς συνελεύσεως τοῦ 1848 ὑπεστήριξεν ὅτι τὸ θεόθεν πηγάζον δίκαιον τῶν βασιλέων δὲν ἐπιτρέπεται νὰ ὑποβληθῇ εἰς τὴν κρίσιν τῆς λαϊκῆς ψηφοφορίας. Τῷ 1855 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ ἐπανῆλθεν εἰς τὴν βουλὴν ἀπὸ τοῦ 1863. Ὑπερήσπιζε μέχρι τοῦ θανάτου του τὸ ἀξίωμα τῆς νομιμότητος, ἀλλ' ἐπεθύμει πάντοτε ὅπως ἡ βασιλικὴ ἐξουσία προσαρμόζεται δι' ὑποχωρήσεων εἰς τὰς νεωτέρας ἀντιλήψεις. Ἦτο ἐκ τῶν εὐγλωττοτέρων καὶ θερμοτέρων ἀγορητῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, αἱ δὲ κοινοβουλευτικαὶ ἀγορεύσεις του, ἀποτελοῦσαι ἀπαράμιλλον εἰς τὸ εἶδος τοῦτο μνημεῖον, ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1876—1878. Ἀνδριάντες αὐτοῦ ἀνηγέρθησαν εἰς τῷ 1875 εἰς Μασσαλίαν, ἔργον τοῦ Ι. Μπάρ, καὶ δεύτερος ἐν τῷ δικαστικῷ μεγάρῳ τῶν Παρισίων, ἔργον τοῦ Σαπύ.

**— Μπερρυὲ** (Berryer), ***Πέτρος - Νικόλαος.*** Γάλλος δικηγόρος (1757—1841), γενόμενος κυρίως γνωστὸς ἐκ τῆς ἐνώπιον τοῦ δικαστηρίου ὑπερασπίσεως τοῦ στρατάρχου Νέϋ, εἰς ἣν ἐβοήθησεν ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του *Πέτρου-Ἀντωνίου* καὶ τοῦ Ντυπὲν τοῦ νεωτέρου. Ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα (1839). Χ. Δ.

**Μπερσὲ** (Berchet), ***Γουλιέλμος.*** Ἰταλὸς ἱστορικὸς ἐκ Βενετίας, ἀνεψιὸς τοῦ ποιητοῦ *Ἰωάννου* (βλ. κατωτ.), γεννηθεὶς τῷ 1833. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παδούης, ἀφιέρωσεν ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν ζωήν του εἰς μελέτας καὶ ἐρεύνας, ἀφορώσας τὴν ἱστορίαν τῆς Βενετίας καὶ τὰς μετὰ τῆς Ἀνατολῆς σχέσεις αὐτῆς. Ἐδημοσίευσε: «Περὶ τοῦ ἐμπορίου τῶν Βενετῶν ἐν Ἀσίᾳ» (1864), «Ἡ βενετικὴ δημοκρατία καὶ ἡ Περσία» (1865). «Οἱ Βενετοὶ πρέσβεις ἐν Συρίᾳ» (1866), «Οἱ Βενετοὶ ἐν Ἀβησσυνίᾳ» (1869), «Μία κινεζικὴ πρεσβεία εἰς Βενετίαν τῷ 1652» (1893), «Αἱ παλαιαὶ ἰαπωνικαὶ πρεσβεῖαι ἐν Ἰταλίᾳ» (1877), «Ὁ Μάρκο Πόλο καὶ τὸ βιβλίον του» (1871) κ. ἄ. Ἔγραψεν ἐπίσης περιεργοτάτην μελέτην ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁ Κρόμβελ καὶ ἡ βενετικὴ δημοκρατία» καὶ μονογραφίαν περὶ τῆς κρύπτης τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας. Ἀπὸ τοῦ 1856 μέχρι τοῦ 1879 ἐξέδωκεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ν. Μπαρότσι 11 τόμους εἰλημμένους ἐκ τῶν βενετικῶν ἀρχείων ὑπὸ τὸν τίτλον «Relazioni lette al senato degli Ambasciatori Veneti nel secolo XVII». Χ. Δ.

**— Μπερσὲ** (Berchet), ***Ἰωάννης.*** Ἰταλὸς ποιητὴς γαλλικῆς καταγωγῆς (1783—1851). Κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν κατεγίνετο εἰς τὴν μετάφρασιν ξένων ποιημάτων καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν τακτικωτέρων συνεργατῶν τοῦ ἐν Μιλάνῳ περιοδικοῦ «Conciliador». Ἀναμιχθεὶς ἐνεργῶς εἰς τὴν πατριωτικὴν κίνησιν καὶ γενόμενος μέλος τῆς μυστικῆς ἑταιρείας τῶν Καρβονάρων, ἠναγκάσθη, κατόπιν συνεχῶν καταδιώξεων, νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Ἑλβετίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ Ἀγγλίαν, ὅπου ἐδημοσίευσε τὸ πατριωτικὸν ποίημα «Οἱ πρόσφυγες τῆς Πάργας», ὅπερ κατέστη δημοτικώτατον καὶ ἔδωσεν ἀφορμὴν νὰ ὀνομασθῇ «Ὁ Ἰταλὸς Τυρταῖος». Ἐπιστρέψας κατόπιν εἰς τὴν Ἰταλίαν διωρίσθη ὑπὸ τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως γενικὸς διευθυντὴς τῶν σπουδῶν ἐν Λομβαρδίᾳ καὶ κατόπιν ἐξελέγη βουλευτὴς εἰς τὴν βουλὴν τοῦ Πεδεμοντίου. Ἐδημοσίευσε πολλὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα κατέστησαν αὐτὸν ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων νεωτέρων ποιητῶν καὶ ἀρχηγὸν τῆς ἰταλικῆς ῥωμαντικῆς σχολῆς. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Fantasie» (1829), «Saggio sopra Sacuntala», «Giulia», «Il trovatore» κτλ. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν τῷ 1862 ἐν Μιλάνῳ ὑπὸ τὸν τίτλον «Opere edite et inedite». Μ. Δ. Β.

**Μπερσεβίτσυ** (Berzeviczy), ***Ἀλβέρτος.*** Οὗγγρος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1853. Διετέλεσε πρόεδρος τῆς βουλῆς (1910—1912) καὶ ὑπουργὸς τῆς Παιδείας (1903—1905). Συνέγραψε τὰ ἑξῆς: «Italia» μεταφρασθὲν καὶ εἰς τὴν γερμανικὴν (1898), «Βασίλισσα Βεατρίκη», μεταφρασθὲν εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ ἰσπανικὴν (1908), «Ἡ ζωγραφικὴ» (1908), «Ἡ ἱστορία τοῦ ἀπολυταρχισμοῦ» (1921) κλπ. —Ω.

**Μπερσὲρ** (Bershère), ***Νάρκισσος.*** Γάλλος ζωγράφος (1819—1891). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ρενοὺ καὶ τῷ Ρεμὸν καὶ διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοπίων καὶ σκηνῶν τοῦ βίου τῆς Ἀνατολῆς. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Καραβάνι καταληφθὲν ὑπὸ τοῦ σιμούν», «Οἱ κολοσσοὶ τοῦ Μέμνονος», «Καραβάνι διερχόμενον τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν». Ι. Μ. Π.

**Μπερσέρκεροι** (Berserker) *[Σκανδ. Μυθολ.]*. Οἱ δώδεκα υἱοὶ τοῦ Μπερσέρκου, ἐγγόνου τοῦ ὀκτάχειρος Σταρκαδδέρου καὶ τῆς Ἀλφχίλδης. Ἐν τῇ ἀρχαίᾳ νορδικῇ γλώσσῃ ἡ λέξις μπερσέρκεροι ἀπέβη συνώνυμος πρὸς τὸ ἀκατάβλητον θάρρος, βραδύτερον δὲ ἐχρησίμευσε πρὸς προσδιορισμὸν ἰδίου σώματος πολεμιστῶν. Οὕτω *μπερσέρκεροι* ὠνομάσθησαν οἱ σωματοφύλακες τῶν Σκανδιναυῶν ἡρώων. Γ. Ι. Β.

**Μπερσέτσιο** (Bersezio), ***Βίκτωρ.*** Ἰταλὸς μυθιστοριογράφος, δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ ἱστορικὸς (1830—1900). Εἰς ἡλικίαν ἕνδεκα ἐτῶν λέγεται ὅτι ἔγραφε δραματικὰ ἔργα, τῷ δὲ 1852 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὸ δρᾶμα «Πέτρος Μίκκα», ὅπερ ἐπαίχθη μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας. Ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «L' Espiro», διηύθυνε τὸ «Il Fischietto» καὶ διεδέχθη τὸν Ρομάνι εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς «Gazzetta Piemontesa», μέχρι τοῦ 1865, ὅτε ἐξελέγη βουλευτής. Διεκρίθη κυρίως διὰ τὴν πιστὴν ἀπόδοσιν τῶν ἠθῶν καὶ τῶν χαρακτήρων τοῦ Πεδεμοντίου καὶ τῆς ἐποχῆς του καὶ μεταξὺ ἄλλων ἔργων ἔγραψε: «Παλμίνα» (1855), «Τὸ μῖσος» (1859), «Ἡ ἡδονὴ τῆς ἐκδικήσεως» (1868), «Πτωχὴ Ἰωάννα» (1873), «Ἡ βασιλεία τοῦ Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ Β'» (1878—1895, εἰς 8 τόμ.), «Τριάκοντα ἔτη φιλολογικῆς ζωῆς» (1878), «Οἱ ἄγγελοι τῆς γῆς» (1879), «Ἱππόται, ὅπλα καὶ ἔρωτες» (1880), τὰ θεατρικὰ ἔργα (εἰς διάλεκτον τοῦ Πεδεμοντίου) «Τὸ γαλάζιο αἷμα», «Οἱ μιζέριες τοῦ μουσιοῦ Τραβιέ», ὅπερ ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν, καὶ εἰς τὴν ἰταλικὴν τὰ ἔργα: «Μία σαπουνόφουσκα» (1871), «Ὁ ἑκατομμυριοῦχος θεῖος» (1876), «Οἱ βίαιοι» (1881) κτλ. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπερσιὲ** (Bersier), ***Εὐγένιος***. Γάλλος διαμαρτυρόμενος συγγραφεὺς καὶ ἱεροκήρυξ (1831—1889), γεννηθεὶς ἐν Μὸρζ τῆς Ἑλβετίας ἐκ γονέων γαλλικῆς καταγωγῆς καὶ διατελέσας πάστωρ ἐν τῇ γενετείρᾳ αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ 1855. Ἔσχε μεγάλην καὶ δικαίαν φήμην ὡς διακεκριμένος ρήτωρ καὶ ἠθικολόγος, ἠσχολήθη δὲ καὶ μὲ τὴν συγγραφὴν ποικίλων ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται μία πραγματεία «Ὁ Κολινὺ πρὸ τοῦ θρησκευτικοῦ πολέμου» (1884) καὶ αἱ συλλογαὶ τῶν ἀπὸ τοῦ ἄμβωνος ὁμιλιῶν αὐτοῦ. Χ. Δ.

**Μπέρσλεμ** (Burslem) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Στάφφορντ*, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος Γκρὰν Τράνκ, 32 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Στάφφορντ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων κέντρων ἀγγειοπλαστικῆς, ὑελουργίας καὶ πορσελλανοβιομηχανίας καὶ ἔχει εἰδικὸν πρὸς τοῦτο ἰνστιτοῦτον, φερώνυμον τοῦ ἐν Μπέρσλεμ γεννηθέντος μεγάλου κεραμουργοῦ Ἰωσία Οὐέντγουντ, τὸ ὁποῖον περιλαμβάνει καλλιτεχνικὴν σχολήν, μουσεῖον καὶ βιβλιοθήκην. Κάτ. 41.566. Χ. Δ.

**Μπερσὸ** (Bersot), ***Πέτρος-Ἐρνέστος***. Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1880. Ἐσπούδασεν ἐν Βορδώ, τῷ δὲ 1833 ἀπεφοίτησε τοῦ λυκείου καὶ μετὰ τριετίαν ἐγένετο δεκτὸς εἰς τὴν École Normale. Γνωρισθεὶς ἐν τῷ μεταξὺ μετὰ τοῦ V. Cousin καὶ συνδεθεὶς διὰ φιλίας μετ' αὐτοῦ, ἐγένετο γραμματεύς του κατὰ τὴν ὑπουργίαν του ἐπὶ τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως. Τῷ 1840 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ λυκείῳ τοῦ Βορδώ, τὴν ὁποίαν ὅμως ἐκράτησεν ἐπ' ὀλίγον λόγῳ τοῦ ἐκεῖ κρατοῦντος θρησκευτικοῦ φανατισμοῦ. Τῷ 1843 ἐδημοσίευσε δύο ἐναισίμους διατριβάς του ἐπὶ διδακτορίᾳ: «De controversis quibusdam Anaxagorae doctrinis» καὶ «Doctrine de saint Augustin sur la Liberté et la Providence». Τῷ 1846 ἐξέδωκε τὸ ἔργον «Du spiritualisme et de la nature», ὅπου ὑποστηρίζει τὴν ὕπαρξιν τοῦ Θεοῦ καὶ τὴν ἀντικειμενικότητα τῆς φύσεως. Ἄλλα ἔργα τοῦ Μπερσὸ εἶναι: «Philosophie de Voltaire» (1848), «Études sur le XVIII siècle» (1851—1854, τόμ. 4), «Mesmer et le magnétisme animal» (1853), «Essai de philosophie et de morale» (1864, τόμ. 2), «Libre philosophie» (1868). Τῷ 1866 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν, τῷ δὲ 1871 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς École Normale supérieure. —Ω.

**Μπερσοὺ** (Berchoux), ***Ἰωσήφ***. Γάλλος λόγιος καὶ ποιητὴς (1762—1838). Ἀνῆκεν εἰς ἀστικὴν οἰκογένειαν μικροευγενῶν καὶ συνεπάθει πρὸς τὰς μοναρχικὰς ἀρχάς, φοβηθεὶς δὲ λόγῳ τούτου, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς τρομοκρατίας, ἔσπευσε νὰ καταταχθῇ εἰς τὸν στρατόν, ὅπου ἦτο περισσότερον ἀσφαλής. Μετὰ τὴν πάροδον τῆς περιόδου ταύτης ἐπανῆλθεν εἰς τὰ κτήματά του καὶ ἠσχολεῖτο μὲ τὴν σύνθεσιν ποιημάτων, πολλὰ ἐκ τῶν ὁποίων κατέστησαν δημοτικώτατα. Μεταβὰς τῷ 1800 εἰς Παρισίους, ἐδημοσίευσε τὸ κάλλιστον καὶ πλῆρες εὐθυμίας καὶ πνεύματος ἔργον του «Γαστρονομία», κατὰ πολὺ ὑπερέχον πάντων τῶν λοιπῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων μνημονεύομεν τὰ κατωτέρω: «Ὁ χορὸς ἢ οἱ θεοὶ τῆς Ὄπερας» (1806), «Ὁ Βολταῖρος ἢ ὁ θρίαμβος τῆς νεωτέρας φιλοσοφίας» (1814), ἀποτελοῦν ἐπίθεσιν ἐναντίον τῶν βολταιρικῶν ἰδεῶν, «Ἡ φιλοσοφία τοῦ Σαραντὸν» (1803) μυθιστόρημα, κλπ. Χ. Δ.

**Μπερσὺ** (Bercy) *[Γεωγρ.]*. Συνοικία τῶν Παρισίων, περιλαμβανομένη ἐν τῷ ΙΒ' διαμερίσματι. Ἄλλοτε ὑπήγετο εἰς τὴν ἐνορίαν Κονφλὰν καὶ ἀπετέλει παρισινὸν προάστειον, τῷ 1790 ἀπετέλεσεν ἰδίαν κοινότητα, ἀπὸ δὲ τοῦ 1860 περιελήφθη ἐντὸς τοῦ σχεδίου τῆς πόλεως. Ἐν αὐτῇ εἶχον ἀνεγείρει κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα δύο ὡραίους πύργους οἱ Μανσὰρ καὶ Φ. Λὲ Βὼ μετὰ θαυμασίου πάρκου, ἱδρυθέντος ἐπὶ σχεδίων τοῦ Λὲ Νότρ. Τὸ Μπερσὺ ἔχει μεγάλας ἀποθήκας οἴνου καὶ εἶναι ἐκ τῶν κυριωτέρων ἀγορῶν οἴνων τῆς Εὐρώπης. Ἐπὶ τῶν ὄχθῶν τοῦ Σηκουάνα ποτάμιος λιμὴν ἐμπορίου ξυλείας καὶ οἴνου. Χ. Δ.

**μπέρτα** (ἡ)· δημοτ., χειμερινὸν ἰδίᾳ φόρεμα φορούμενον ἐπὶ τῶν ὤμων, ἐπώμιον: «μπέρτα μὲ κουκούλα».

**Μπέρτα** (Bertha) *[Πυροβολ.]*· βλ. λ. *Βέρθα*.

**Μπερτὰλ** (Bertal), ***Γεώργιος-Ἀλμπὲρ*** (Albert), γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον—. Γάλλος δημοσιογράφος καὶ θεατρικὸς συγγραφεὺς (1856—1897). Ἔγραψε δράματα («Ὁ ἀποστάτης» κλπ.), ἰδίως ὅμως κωμῳδίας, ἐκ τῶν ὁποίων πλειοτέραν ἐπιτυχίαν ἐσημείωσαν αἱ: «Ἕνας γελοῖος», «Ὁ πρίγκιψ Ἥλιος», «Νεανικὸν χρέος», «Τὸ τέλος ἑνὸς ὀνείρου» κλπ. —Ω.

**Μπερτάνι** (Bertani), ***Αὐγουστῖνος***. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1812—1886). Εἶχε σπουδάσει τὴν ἰατρικήν, τὴν ἐξήσκησεν ἐν Λομβαρδίᾳ καὶ Γενούῃ καὶ τῷ 1848 εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικήν, ὑποστηρίξας τὰς δημοκρατικὰς ἰδέας. Ὅτε ὅμως ὁ Γαριβάλδης εἶχε ρίψει τὸ σύνθημα: «Ἰταλία καὶ Βίκτωρ Ἐμμανουήλ», ὁ Μπερτάνι ἐτάχθη παρὰ τὸ πλευρόν του καὶ ἐγένετο εἷς τῶν πολυτιμοτέρων συνεργατῶν του. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν διοργάνωσιν τῆς ἐκστρατείας τῶν χιλίων τοῦ Γαριβάλδη, ἐγκαταστήσας εἰς τὴν οἰκίαν του γραφεῖον κατατάξεως ἐθελοντῶν, καὶ ὅταν ὁ Γαριβάλδης εἰσῆλθεν εἰς τὴν Νεάπολιν συνοδευόμενος ἀπὸ ὀλίγους ἀξιωματικούς, ὁ Μπερτάνι ὑπῆρξε μεταξὺ αὐτῶν. Ἐκλεγεὶς βουλευτὴς τῷ 1860, ἀπετέλεσε μέλος τῆς μικρᾶς ὁμάδος τῶν δημοκρατικῶν, κατὰ τὰ τελευταῖα δὲ ἔτη τῆς ζωῆς του, χωρὶς νὰ ἐγκαταλείψῃ τὰς ἰδέας του, εἶχεν ἀρχίσει νὰ δεικνύεται λίαν μετριοπαθής. Ὡς βουλευτὴς συνέτεινεν εἰς τὴν ἀγροτικὴν μεταρρύθμισιν καὶ εἰργάσθη κατόπιν διὰ τὴν πρόοδον τῆς γεωργίας. Τῷ 1880 ἐστήθη ἐν Μιλάνῳ ὁ ἀνδριὰς αὐτοῦ. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ κυριώτερον εἶναι «Ὁ ὑγιεινομικὸς κῶδιξ». Τῷ 1890 ἐξεδόθη τόμος διαφόρων ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Συγγράμματα καὶ λόγοι». Μ. Δ. Β.

**Μπερτὲ** (Berthet), ***Ἠλίας-Βερτράνδος***. Γάλλος λογοτέχνης (1815—1891). Ἔγραψε διηγήματα καὶ μυθιστορήματα, ἠθογραφικοῦ ἰδίως τύπου, ἐν οἷς: «Ὁ λαθροθήρας», «Παλιὰ χρόνια», «Ὁ φίλος τοῦ σπιτιοῦ», «Προϊστορικὸ Παρίσι», «Ἡ φωλιὰ τῶν πελαργῶν», «Ὁ παλαιοπώλης» κλπ. Ἠσχολήθη ἐπίσης καὶ μὲ τὸ θέατρον, γράψας δύο δράματα, ἀμφιβόλου ὅμως ἀξίας. —Ω.

**Μπερτεζὲν** (Berthezène), ***Πέτρος***, *βαρῶνος ντὲ—*. Γάλλος στρατηγὸς (1775—1847). Μετέσχεν ὅλων τῶν πολέμων τῆς ἐπαναστάσεως καὶ τῆς αὐτοκρατορίας, λαβὼν μέρος εἰς τὰς μάχας τοῦ Βαγκράμ, τοῦ Λοῦτζεν, τοῦ Μπάουτζεν, τῆς Δρέσδης, τοῦ Φλερύ. Κατὰ τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων ἀπεχώρησε τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας, εἰς τὴν ὁποίαν ὅμως ἐπανῆλθε τῷ 1817. Τῷ 1830 μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τοῦ Ἀλγερίου ὑπὸ τὸν Μπουρμόν. Τὸ ἑπόμενον ἔτος διωρίσθη γενικὸς ἀρχηγὸς τῶν ἐν Ἀφρικῇ γαλλικῶν στρατευμάτων, ὁ δὲ Λουδοβῖκος-Φίλιππος τῷ ἀπένειμε τῷ 1832 τὸν τίτλον τοῦ ὁμοτίμου. Μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐδημοσιεύθησαν ἀπομνημονεύματά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Στρατιωτικαὶ ἀναμνήσεις ἀπὸ τὴν ἐπανάστασιν καὶ τὴν αὐτοκρατορίαν» (1855). —Ω.

**Μπερτελεμὺ** (Berthelemy), ***Λουδοβῖκος-Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Ἐρρῖκος*** *ντὲ —*. Γάλλος νομικός, γεννηθεὶς τῷ 1857. Τῷ 1896 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ διοικητικοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων. Εἶναι μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν καὶ μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου τῆς Γαλλίας, εἷς τῶν ἱδρυτῶν δὲ καὶ μέλος τοῦ Διεθνοῦς Ἰνστιτούτου τοῦ διεθνοῦς δικαίου, τὸ ὁποῖον ἵδρυσεν ἐν Παρισίοις τῇ 26ῃ Ἰουνίου 1927 μετ' ἄλλων νομομαθῶν διεθνοῦς κύρους. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Duguit ἐξελέγη εἰς τὴν θέσιν του καὶ μέλος τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου τοῦ Ἰνστιτούτου. Τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1928 ἐπεσκέφθη τὰς Ἀθήνας, ἔνθα ἡ νομικὴ σχολὴ τὸν ἀνεκήρυξεν ἐπίτιμον διδάκτορα. Τὴν ἡμέραν τῆς ἐπιδόσεως τοῦ σχετικοῦ ψηφίσματος (13 Μαρτίου 1928) ὡμίλησεν οὗτος «Περὶ τοῦ θεσμοῦ τοῦ Συμβουλίου τῆς Ἐπικρατείας καὶ τῶν γενικῶν ἀρχῶν τοῦ ἰσχύοντος ἐν Γαλλίᾳ διοικητικοῦ δικαίου». Ἔγραψε μονογραφίας: «Ἐπὶ τῆς καταλύσεως τῶν διαπυλίων», «Ὑπὲρ τῶν ἐμμέσων φόρων» (1903), «Περὶ τῶν φόρων τοῦ εἰσοδήματος ἐν Πρωσσίᾳ» (1907), «Συλλογὴν νόμων καὶ διοικητικῶν κανονισμῶν» (1908, 3 ἔκδοσις), «Περὶ τοῦ κανονιστικοῦ δικαιώματος τοῦ προέδρου τῆς δημοκρατίας» (1898), «Περὶ τῆς προσφορωτέρας μεθόδου πρὸς μελέτην τοῦ διοικητικοῦ δικαίου» (εἰς Méthodes juridiques, Giard 1911), «Κριτικὴν περὶ τοῦ νόμου τῆς 13 Νοεμβρίου 1917, δι' οὗ ἐπετράπη ἡ ὀργάνωσις συνδικάτων κοινοτήτων» (εἰς «Annuaire de la législation française». Amée 1918) κλπ. Ἀνήκει εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τῶν ἐπιφανῶν συνταχτῶν τῆς «Revue du Droit Public», καταχωρίσας εἰς ταύτην πλείστας μελέτας γενικοῦ δημοσίου δικαίου. Ἐπρολόγισε τῷ 1903 τὴν γαλλικὴν ἔκδοσιν τοῦ ἔργου τοῦ Otto Mayer περὶ τοῦ διοικητικοῦ δικαίου τῆς Γερμανίας. Συνέγραψε: «Traité Élémentaire du droit administratif» (δωδεκάτη ἔκδοσις 1930), καθὼς καὶ τὰ ἔργα: «L'assistance integrale» (1914), «Les pupilles de la nation» (1916), «Le fondement de l'autorité politique» (1916), «De la répression de l'avortement criminel» (1917), «Les réformes du Conseil Superieur de l'assistance publique» (1918), «L'extention de la capacité des œuvres de bienfaisance» (1922) κτλ. Τῷ 1929, κληθεὶς ὅπως συνεργασθῇ εἰς τὰ πρὸς τιμὴν τοῦ Maurice Haurien ἐκδοθέντα «Mélanges Haurion», ἐδημοσίευσεν ἐν αὐτοῖς τέσσαρα ἄρθρα ὑπὸ τὸν γενικὸν τίτλον «Ὑπεράσπισις μερικῶν παλαιῶν ἀρχῶν». Εἶναι ὑποστηρικτὴς τῆς ἀναλογικῆς ψήφου, ὑπέρμαχος τῆς γυναικείας ψήφου, πολέμιος τοῦ δημοσιοϋπαλληλικοῦ συνδικαλισμοῦ καὶ παραμερίζει συστηματικῶς εἰς τὰ ἔργα του τὰ ὑψηλὰ ζητήματα τῆς φιλοσοφίας τοῦ δικαίου, περὶ τῶν ὁποίων γράφει ὅτι ἔχουσι δευτερεύουσαν σημασίαν εἰς τὴν διοικητικὴν πρακτικήν, διότι τὸ διοικητικὸν δίκαιον κατ' αὐτὸν ἀποβλέπει εἰς τὴν μελέτην τῶν μέσων, τὰ ὁποῖα χρησιμοποιεῖ ἡ διοίκησις διὰ νὰ βουλεύῃ ἡ τάξις, καὶ τοῦ τρόπου, καθ' ὃν αὐτὴ ἀσκεῖ τὴν δύναμίν της ἐπὶ τῷ σκοπῷ νὰ προσφέρῃ ὑπηρεσίας εἰς τὰ ἄτομα. ΑΡ. ΒΡΕ[illegible]

**Μπερτελὸ** (Berthelot), ***Δανιὴλ-Παῦλος-Ἀλφρέδος***. Γάλλος φυσικὸς (1865—1927), υἱὸς τοῦ *Μαρκελίνου Μπερτελό*. Ἀσκηθεὶς ἐπὶ μακρὸν εἰς ἐργαστήρια φυσικῆς, ἰδίως ὡς βοηθὸς τοῦ Ντεζαὶν εἰς τὴν Σορβόννην, ἐγένετο διδάκτωρ τῷ 1891 μὲ τὴν ἐναίσιμον διατριβὴν «Περὶ τῶν ἠλεκτρικῶν ἀγωγιμοτήτων τῶν ὀργανικῶν ὀξέων καὶ τῶν ἁλάτων αὐτῶν». Ἀπὸ τοῦ 1892 μέχρι τοῦ 1901 ἐδίδαξεν ἱστορίαν τῶν ἐπιστημῶν εἰς τὴν λαϊκὴν σχολὴν ἀνωτέρας ἐκπαιδεύσεως, τῷ δὲ 1902 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσικῆς εἰς τὴν ἀνωτέραν φαρμακευτικὴν σχολήν, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Λερού. Αἱ πρῶται αὐτοῦ ἐργασίαι ἀναφέρονται εἰς τὴν «Μελέτην τῶν χημικῶν ἰσορροπιῶν τῶν διαλύσεων, τῇ βοηθείᾳ τῶν ἠλεκτρικῶν αὐτῶν ἀγωγιμοτήτων» (1893). Ἀπὸ τοῦ 1[illegible] ἀφωσιώθη εἰς τὴν μελέτην τῶν γενικῶν ἰδιοτήτων τῶν ἀερίων. Ὑπέδειξε μέθοδον, διὰ τῆς ὁποίας καθορίζεται κατὰ τρόπον ἀπολύτως ἀκριβῆ τὸ ἀτομικὸν βάρος τῶν ἀερίων καὶ καθώρισε τύπους γενικῶς ἐφαρμοζομένους σήμερον, διὰ τὴν ἀναγωγὴν τῶν ἐνδείξεων τῶν δι' ἀερίου θερμομέτρων εἰς τὴν ἀπόλυτον κλίμακα τῶν θερμοκρασιῶν». Ἐπέτυχεν ἐξ ἄλλου (1903) νὰ διατυπώσῃ νέαν χαρακτηριστικὴν ἐξίσωσιν, ἐφαρμόσιμον εἰς τὰ ὑπὸ μέσην ἢ ἀσθενῆ πίεσιν ἀέρια, δίδουσαν ποσοτικῶς καὶ ποιοτικῶς τὰς ἰδιότητας αὐτῶν ὑπὸ οἱανδήποτε θερμοκρασίαν. Καὶ ἡ μέθοδός του αὐτὴ εἶναι γενικῆς σήμερον χρήσεως.

Ἀπὸ τοῦ 1910 ὁ Μπερτελὸ ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς σχεδὸν εἰς τὴν μελέτην τῶν φυσικοχημικῶν ἐπιδράσεων τοῦ φωτὸς καὶ ἰδίᾳ τῶν ὑπεριωδῶν ἀκτίνων, διὰ τῶν ὁποίων δύνανται νὰ ἐπιτευχθῶσιν ὑπὸ συνήθη θερμοκρασίαν ἀποτελέσματα ὅμοια πρὸς τὰ ἐπιτυγχανόμενα δι' ὑψηλοτάτων θερμοκρασιῶν. Ὁ Μπερτελό, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Γκωντεσόν, ἐπραγματοποίησε συστηματικὴν σειρὰν πειραμάτων, ἀνοίγουσαν τὸν δρόμον εἰς μίαν φωτοχημείαν κυμάνσεων ὑψηλῆς συχνότητος, παρουσιάζουσαν ἐκπληκτικὴν ἀντιστοιχίαν πρὸς τὴν χημείαν τῶν ὑψηλῶν θερμοκρασιῶν καὶ ἐν τῇ ὁποίᾳ ἡ δι' ὑδραργύρου λυχνία τῶν ὑπεριωδῶν ἀκτίνων λαμβάνει τρόπον τινὰ τὴν θέσιν τοῦ ἠλεκτρικοῦ κλιβάνου. Διὰ τὴν μελέτην τῆς χημικῆς ἐνεργείας τῶν ἀκτίνων τούτων ἐχρησιμοποίησεν ἰδίας του ἐπινοήσεως «χημικὸν φωτόμετρον», πραγματοποιούμενον διὰ τῆς ἀποσυνθέσεως τῆς σακχαρο[illegible] (levulose). Διὰ τῶν ἰδίων ἀκτίνων ἐπέτυχεν ἐξ ἄλλου ν' ἀναπαραγάγῃ τεχνητῶς τὰ φαινόμενα τῆς χλωροφυλλικῆς ἀφομοιώσεως, τὴν σύνθεσιν δηλαδὴ ὑδατανθράκων ἐξ ὑδρατμῶν καὶ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος, καθὼς ἐπίσης καὶ διαστατικὰς ἀντιδράσεις ἄνευ παρουσίας διαστάσεων.

Ὁ Μπερτελὸ ἐδημοσίευσεν εἰς εἰδικὰς πραγματείας τὰ ἀποτελέσματα τῶν ὡς ἀνωτέρω ἐργασιῶν του, πολυάριθμοι δὲ ἀνακοινώσεις αὐτοῦ ἐπὶ τῆς χημικῆς ἐνεργείας τῶν ὑπεριωδῶν ἀκτίνων ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν» τῶν Παρισίων, τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Φυσικῆς», τὸ «Δελτίον τῆς γαλλικῆς ἑταιρείας [illegible] λόγων» κλπ. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. [illegible]

**—Μπερτελὸ** (Berthelo), ***Ἐρρῖκος-Ματθαῖος***. Γάλλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον τοῦ Σαὶν-Σὺρ καὶ εἰς τὴν ἀνωτέραν σχολὴν πολέμου, καταταγεὶς δὲ ὡς ἀξιωματικὸς τῶν ζουάβων μετέσχε μὲ τὸν βαθμὸν ὑπολοχαγοῦ κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Τονκίνου (1885—1887). Τῷ 1910 εἶχε προαχθῆ εἰς συνταγματάρχην καὶ τῷ 1913 εἰς ὑποστράτηγον. Κατὰ τὴν κήρυξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀνῆκεν εἰς τὸ ἐπιτελεῖον, ἀπὸ δὲ τοῦ 1915 προαχθεὶς εἰς ἀντιστράτηγον, μετέσχεν ὡς διοικητὴς μεραρχίας εἰς τοὺς περὶ τὴν Σουασὸν ἀγῶνας. Βραδύτερον τῷ ἀνετέθη διοίκησις σώματος στρατοῦ, ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ὁποίου ἔλαβε μέρος κατὰ τὴν ἐπίθεσιν τῆς Καμπανίας. Ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ 1[illegible] ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς εἰς Ρουμανίαν γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς, εἰς αὐτὸν δὲ κυρίως ὀφείλεται ἡ γοργὴ ἀναδιοργάνωσις τοῦ ἀποσυντεθειμένου τότε ρουμανικοῦ στρατοῦ. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν διῴκησε τὴν τρίτην στρατιὰν κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς συμμαχικῆς ἀντεπιθέσεως, κατόπιν (1918) τὴν στρατιὰν τοῦ Δουνάβεως. Τῷ 1922 διωρίσθη διοικητὴς τοῦ Στρασβούργου.

**— Μπερτελὸ** (Berthelot), ***Μαρκελῖνος***. Ἐγεννήθη ἐν Παρισίοις τῷ 1827, ἦτο δὲ υἱὸς ἰατροῦ ἐξαιρετικῶς φιλανθρώπου. Αἱ ἐντυπώσεις ἐκ τῆς ἀνθρωπίνης ἀθλιότητος, τὴν ὁποίαν ἀπὸ παιδικῆς ἡλικίας εἶχεν εὐκαιρίαν οὕτω νὰ μελετᾷ, ἤσκησαν μεγάλην ἐπιρροὴν καθ' ὅλον του τὸν βίον. Ὡς ἐπιστήμων, φιλόσοφος ἢ πολιτικός, ὑπῆρξεν ὑπερασπιστὴς τῆς ἐλευθερίας τῆς σκέψεως τοῦ ἀτόμου καὶ ἀφιέρωσεν ὅλας τὰς στιγμὰς τοῦ μακροῦ βίου του ἐπιστημονικῶς ἐργαζόμενος [illegible]

Digitized by Google

τῆς προόδου, βελτιώσεως καὶ ἐξυψώσεως τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς.

Αἱ σπουδαί του εἰς τὸ κλασσικὸν γυμνάσιον ἐστέφθησαν μὲ τὸ βραβεῖον τιμῆς τῆς φιλοσοφίας. Ἐχειρίζετο ἄριστα τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικήν. Τοῦτο τὸν ἐνέπνευσε μετὰ τεσσαράκοντα ἔτη νὰ μελετήσῃ καὶ ἑρμηνεύσῃ τοὺς Ἀλεξανδρινοὺς φιλοσόφους, τοὺς προδρόμους τῆς χημικῆς ἐπιστήμης. Ὑπῆρξεν ἐπὶ ὀκταετίαν παρασκευαστὴς τοῦ περιφήμου χημικοῦ Balard εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Γαλλίας, τὸ ὁποῖον ἵδρυσε τῷ 1864 νέαν ἕδραν τῆς ὀργανικῆς χημείας εἰδικῶς δι᾽ αὐτόν. Εἰς ἡλικίαν 36 ἐτῶν ἐξελέγετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ δέκα ἔτη βραδύτερον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν, τῆς ὁποίας ἐγένετο εἶτα ἰσόβιος γραμματεύς. Τῷ 1901 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας.

Ἐνησχολήθη εἰς ὅλους σχεδὸν τοὺς κλάδους τῆς χημείας, πανταχοῦ καταλιπὼν ζωηρὰ τὰ ἴχνη τῆς μεγαλοφυΐας του. Τὰ προβλήματα τῆς χημικῆς συνθέσεως, μὲ τὰ ὁποῖα κατὰ πρῶτον ἠσχολήθη, τοῦ προσεκόμισαν τὴν μεγαλυτέραν δόξαν. Ἡ βασιλεία τοῦ μυστηρίου δὲν εἶχεν ἀκόμη τότε ἐκχωρήσει ὅλα αὐτῆς τὰ δικαιώματα εἰς τοὺς διαδόχους τῶν ἀλχημιστῶν. Ἡ σύνθεσις τῶν ὀργανικῶν προϊόντων τῆς φύσεως ἦτο ἄγνωστος καὶ ἀπεδίδετο ἡ κατασκευή των εἰς ὑπερφυσικὴν δύναμιν, ζωϊκὴν κληθεῖσαν (vis vitalis). Τὸ εἴδωλον ταύτης κατέρριψεν ὁριστικῶς ὁ Μπερτελό, κατορθώσας νὰ συνθέσῃ τὴν ὀργανικὴν ὕλην ἐκ τῶν ἁπλουστέρων αὐτῆς συστατικῶν, ὅσα ἡ νεκρὰ φύσις μᾶς παρέχει, τὸν ἄνθρακα, τὸ ὀξυγόνον, τὸ ὑδρογόνον, τὸ ὕδωρ.

Τῷ 1853, εἰκοσιεξαετὴς μόλις, ἀποκαλύπτει τὴν σύνθεσιν τῶν λιπῶν ἐκ γλυκερίνης καὶ ὀργανικῶν ὀξέων καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐπιτυγχάνει τὴν μοριακὴν αὐτῶν ἀνασύνθεσιν. Ἔκτοτε αὐτομάτως, οὕτως εἰπεῖν, ἡ μία σύνθεσις διαδέχεται τὴν ἄλλην. Οἱ νεκροὶ τύποι τῆς χημείας ζωογονοῦνται εἰς τὰς δεξιάς του χεῖρας. Τὸ οἰνόπνευμα, ἡ ἀσετυλίνη, τὸ μυρμηκικὸν ὀξύ, τὸ ἔλαιον τοῦ σινάπεως, ἡ γλυκερίνη καὶ ἄλλαι πολυπλοκώτεραι τούτων ἑνώσεις, δημιουργήματα ἀποκλειστικὰ ἕως τότε τῆς φύσεως, ἀναπαράγονται τεχνητῶς ἐξ ἀνοργάνων συστατικῶν εἰς τὸ ἐργαστήριόν του. Ὑπῆρξεν ἐπίσης ἐκ τῶν πρώτων θεμελιωτῶν τῆς θερμοχημείας. Ἐφεῦρε τὸ θερμιδόμετρον, ὅπερ φέρει τὸ ὄνομά του καὶ χρησιμοποιεῖται καὶ σήμερον ἀκόμη. Δι᾽ αὐτοῦ ἐμέτρησε τὴν θερμιδομετρικὴν ἀπόδοσιν ἀναριθμήτων σωμάτων, διευρύνας τὴν θερμοχημικὴν θεωρίαν καὶ συμπληρώσας τοὺς θερμοχημικοὺς νόμους. Αἱ μελέται του αὗται τὸν ἔφεραν εἰς τὴν περὶ τῆς φύσεως καὶ δυνάμεως τῶν ἐκρηκτικῶν ὑλῶν καὶ σήμερον ἰσχυρὰν θεωρίαν του. Προϊὸν ταύτης ὑπῆρξεν ἡ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ φυσικοῦ Βιεΐγ μετ᾽ ὀλίγον ἀνακάλυψις τῆς ἀκάπνου πυρίτιδος. Ἠσχολήθη ἐπίσης καὶ εἰς τὴν φυσικὴν χημείαν καὶ τὴν ἠλεκτροχημείαν, ὡς καὶ τὴν ἀγρονομικήν, κυρίως εἰς τὸ Meudon, ἔνθα ἵδρυσεν εἰδικὸν σταθμὸν πρὸς μελέτας μακρὰς ἐπὶ τοῦ ζητήματος τῆς ἀφομοιώσεως τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ ἀζώτου ὑπὸ τῶν φυτῶν. Εὗρεν ὅτι τὸ κέντρον τῆς ἀφομοιώσεως τοῦ ἀζώτου εὑρίσκεται εἰς κατωτέρους μικροργανισμούς, οἱ ὁποῖοι ἀφθονοῦσι περὶ τὰς ῥίζας ὡρισμένων ἰδίᾳ φυτῶν. Ἐπλούτισε καὶ τὴν χημείαν τῶν ζυμώσεων μὲ σημαντικὰ νέα γεγονότα. Παρ᾽ ὅλην τὴν πολυσχιδῆ αὐτὴν εἰς διαφορωτάτους κλάδους τῆς χημείας ὅσον καὶ γόνιμον ἐργασίαν του, ἠσχολήθη σοβαρῶς καὶ μὲ τὴν ἱστορίαν τῆς καταγωγῆς καὶ τῶν πρώτων γνώσεων τῆς χημείας. Ἓξ ὁλοκλήρους τόμους πληροῦν αἱ ἱστορικαὶ μελέται του. Ὡς κυρίας πηγὰς αὐτῶν ἔλαβε τὴν μελέτην καὶ ἑρμηνείαν πολλῶν ἀλχημιστικῶν παπύρων, ὡς τοῦ περιωνύμου τῆς Λεύδης, ὡς καὶ τῶν Ἀλεξανδρινῶν φιλοσόφων, ἐκ τῶν ὁποίων πολλοὶ εἶχον ἀσχοληθῇ μὲ τὴν ἀλχημείαν. Εἰς τὴν ἐργασίαν ταύτην ἐβοήθησεν αὐτὸν σημαντικῶς ὁ ἑλληνιστὴς Ruelle. Διὰ τούτων κατέδειξεν ὅτι αἱ πρῶται ἐμπειρικαὶ χημικαὶ γνώσεις ἐξεπορεύθησαν ἀπὸ τοὺς Αἰγυπτίους ἱερεῖς, χρυσοχόους ἢ μεταλλευτάς, περιεβλήθησαν ὅμως τὸ ἐπιστημονικὸν ἔνδυμα διὰ τῆς ἑλληνικῆς ἐπιστήμης, ἥτις συνηρμολόγησε ταύτας ὑπὸ μίαν φιλοσοφικὴν ἐποπτείαν, τὰς περὶ ὕλης τουτέστι καὶ κοσμογονίας θεωρίας τοῦ Πλάτωνος, τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ τῶν φιλοσόφων τῆς Ἰωνίας. Τοῦτο κατέδειξεν ὁ Μπερτελὸ ὅτι ὑπῆρξεν ἔργον τῶν γνωστικῶν τῆς Ἀλεξανδρείας, τοῦ Συνεσίου ἰδίᾳ, τοῦ Ὀλυμπιοδώρου καὶ τοῦ Ζωσίμου, παρὰ τῷ ὁποίῳ ἀπαντᾷ τὸ πρῶτον καὶ τὸ σημερινὸν ὄνομα τῆς ἐπιστήμης *χημεία*.

Τὸ πολυτάραχον πνεῦμα καὶ ὁ πόθος νὰ καλλιεργήσῃ τὴν ἀλήθειαν εἰς εὐρυτέρους ὅσον τὸ δυνατὸν ὁρίζοντας, τὸν ἔφερε καὶ εἰς μελέτας φιλοσοφικάς, ἐκπαιδευτικὰς καὶ γενικωτέρου χαρακτῆρος, ὡς καὶ εἰς τὴν πολιτικήν. Εἰς τὴν πλουσίαν ἐπιστημονικὴν παραγωγὴν προσέθεσε καὶ τέσσαρα ἐνδιαφέροντα βιβλία, τήν: «*Ἐπιστήμην καὶ φιλοσοφίαν*», τὴν «*Ἐπιστήμην καὶ ἠθικήν*», «*Ἐπιστήμην καὶ ἐκπαίδευσιν*», «*Ἐπιστήμην καὶ ἐλευθέραν σκέψιν*», συνετέλεσε δὲ πολλάκις πρὸς προαγωγὴν τῆς ἐκπαιδεύσεως ἐν Γαλλίᾳ. Ἡ φιλοσοφία καὶ ἠθική του ἐβασίζετο ἐπὶ τῆς ἀπολύτου ἐλευθερίας τῆς σκέψεως καὶ τῆς συνειδήσεως, ἀπηλλαγμένην παντὸς δογματισμοῦ καὶ περιοριζομένην αὐστηρῶς ἐντὸς τῆς πραγματικότητος καὶ τῶν κανόνων τῆς λογικῆς. Ἰδιαιτέρως ἐθέλγετο φιλοσοφῶν ἐπὶ τῆς ἐπιστήμης, εἰς τῆς ὁποίας τὴν δύναμιν ἔτρεφεν ἀπεριόριστον πίστιν. Ὡς πολιτικὸς (ἐχρημάτισε γερουσιαστὴς καὶ δὶς ὑπουργὸς τῆς Παιδείας καὶ τῶν Ἐξωτερικῶν), πρῶτος ἐπισήμως ὑπέβαλε τὴν ἰδέαν τῆς διὰ διαιτησίας διαλύσεως τῶν διεθνῶν προστριβῶν.

Ὁ Μπερτελὸ ηὐτύχησε καὶ εἰς τὸν οἰκογενειακόν του βίον, ὅσον καὶ εἰς τὸν ἐπιστημονικόν. Ἡ ἀφοσίωσις τῆς συζύγου του ἐθέρμαινε τὴν ἐργασίαν αὐτοῦ, ἐνέπνεε τὴν σκέψιν του καὶ προελάμβανε τὴν καταπόνησιν ἐκ τοῦ φόρτου τῆς ἐργασίας του. Καὶ ὅταν διὰ τελευταίαν φορὰν ἠσπάσθη τὴν νεκρὰν σύζυγόν του, ἀποσυρθεὶς εἰς τὸ δωμάτιόν του ἀφῆκε τὴν τελευταίαν του πνοήν, τὴν 17ην Μαρτίου 1907, εἰς ἡλικίαν 80 ἐτῶν. Οἱ δύο μεγάλοι νεκροὶ ἐτάφησαν, τιμῆς ἕνεκα, τὸ πρῶτον ἀποδοθείσης καὶ εἰς γυναῖκα, εἰς τὸ Πάνθεον. Εὐτυχὴς ὑπῆρξε καὶ ὡς πατήρ, ἀποκτήσας τέσσαρα τέκνα, πάντα διαπρέψαντα. Ὁ υἱός του *Δανιὴλ* (βλ. ἀνωτ.) ὑπῆρξεν εἷς τῶν διαπρεπεστέρων φυσικῶν τῆς Γαλλίας, γενόμενος καθηγητὴς καὶ ἀκαδημαϊκὸς καὶ ἀποθανὼν τῷ 1927.

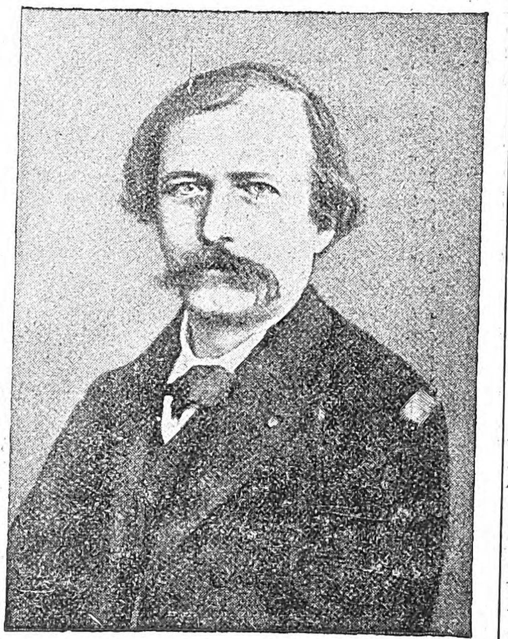

*Μαρκελῖνος Μπερτελό.*

Κατὰ τὰ 55 ἔτη τῆς ἀδιαλείπτου ἐργασίας του, ὁ Μπερτελὸ διέτρεξε τοὺς σπουδαιοτέρους σταθμοὺς τῆς χημικῆς ἐπιστήμης, τοὺς ἐγονιμοποίησε διὰ τοῦ πνεύματός του καὶ τοὺς ἐπλούτισε διὰ τῆς ἐργασίας του, ἐπιζητῶν πάντοτε τὴν ἔρευναν τῆς ἀληθείας ὑπὸ τὸν μᾶλλον ἰδεώδη αὐτῆς τύπον, τὴν ἐπωφελῆ τῆς ἐπιστήμης χρησιμοποίησιν πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῆς ἀνθρωπότητος, ἐξευγένισιν τῆς ἐργασίας καὶ τῆς ζωῆς της καὶ καταπολέμησιν τῶν δεινῶν καὶ ἀναγκῶν της. Παρ᾽ ὅλας τὰς σημαντικὰς αὐτοῦ ἐφευρέσεις, πρὸς οὐδεμίαν ἰδίαν ποτὲ χρηματικὴν ὠφέλειαν ἀπέβλεψεν, ἀλλ᾽ ἐγκατέλειπεν εἰς ἄλλους νὰ συλλέξωσι τὸν χρυσόν, ὅστις ἀνέβλυσεν ἐκ τῶν χημικῶν του χωνευτηρίων. Ὑπῆρξε πολυγραφώτατος. Πλὴν τῶν μνημονευθέντων χημικοϊστορικῶν καὶ ἠθικοφιλοσοφικῶν αὐτοῦ συγγραμμάτων, συνέγραψε πολλὰ χημικὰ συγγράμματα, ὧν τινα ὀγκώδη, ἐξ ὧν ἀναφέρομεν τὰ κυριώτερα: «La Synthèse Chimique» (1897), «Chimie organique fondée sur la Synthsse» (1860, δύο τόμοι), «Les carbnres d'hydrogène» (3 τόμοι, 1901), «Essai de Mécanique chimique» (1879, δύο τόμοι), «Sur la force des matières explosives d'après la Thermochimie» (2 τόμοι), «Chimie animale» (1899, δύο τόμοι), «Chimie végétale et agricole» (δύο τόμοι, 1899), «Traité de chimie organique» (1904, δύο τόμοι), «Traité pratique de Calosimetrie» (1905), «Traité de l'analyse des gaz» (1906). Ἐπίσης ἐξεπόνησε περὶ τὰ 1200 ὑπομνήματα καὶ ἀνακοινώσεις εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιστημῶν τῆς Γαλλίας.

Μετ᾽ ἐξαιρετικῆς ἐπιβολῆς καὶ λαμπρότητος ἑωρτάσθη τῷ 1927 ἐν Παρισίοις διεθνῶς ἡ ἑκατονταετηρὶς τῆς γεννήσεώς του. Συμμετέσχον πάντα σχεδὸν τὰ ἔθνη. Τὸ πρῶτον δὲ μετὰ τὸν πόλεμον συμμετέσχε τοιούτων διεθνῶν συνεδρίων θερμῶς τότε καὶ ἡ Γερμανία. Κατακλεὶς τῶν ἑορτῶν τούτων ὑπῆρξεν ἡ ἵδρυσις ἐν Παρισίοις τοῦ διεθνοῦς «Οἴκου τῆς Χημείας», ὅστις ἀνηγέρθη διὰ συνεισφορῶν, αἵτινες ἀνῆλθον ὑπὲρ τὰ 20 ἑκατομμύρια γαλλικῶν φράγκων, τῶν ἁπανταχοῦ τῆς γῆς πιστῶν τῆς ἐπιστήμης. Ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις καὶ οἱ Ἕλληνες χημικοὶ συνεισέφερον πρὸς τοῦτο γενναίως τὸν ὀβολόν των, ἀντεπροσωπεύθησαν δὲ κατ᾽ αὐτὰς ὑπὸ τοῦ ἐν Παρισίοις πρέσβεως καὶ τοῦ Κ. Ζέγγελη.

[Πρβλ. Centenaire de M. Berthelot (Paris 1927). —Discours de C. Zenghelis sur l'œuvre de M. B. Chimie et industrie (Paris 1927).] κ. ζ.

—**Μπερτελὸ** (Berthelot), ***Φίλιππος***. Γάλλος διπλωμάτης, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1866. Σπουδάσας φιλολογίαν καὶ νομικήν, εἰσῆλθεν εἰς τὴν διπλωματικὴν ὑπηρεσίαν ἀπὸ τοῦ 1889 καὶ ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ ὡς ἀκόλουθος τῆς ἐν Λισσαβῶνι πρεσβείας καὶ εἰς διαφόρους ἀποστολὰς ἐν Ἄπω Ἀνατολῇ. Τῷ 1904 ἐτοποθετήθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, ἐγένετο δὲ τὸ ἑπόμενον ἔτος ὑποδιευθυντὴς τοῦ πολιτικοῦ γραφείου τοῦ πρωθυπουργοῦ. Προήχθη εἰς πρεσβευτὴν τῷ 1911 καὶ τῷ 1913 εἰς διευθυντὴν τοῦ τμήματος πολιτικῶν καὶ ἐμπορικῶν ὑποθέσεων, ἀπὸ δὲ τοῦ 1920 εἰς γενικὸν γραμματέα τοῦ ὑπουργείου. Σημαντικὴ ὑπῆρξεν ἡ δρᾶσις αὐτοῦ ἐν τῇ διεξαγωγῇ τῶν διπλωματικῶν ὑποθέσεων τῆς Γαλλίας κατὰ τὰ ἔτη τοῦ Παγκοσμίου πολέμου καὶ μετ᾽ αὐτόν, μέχρι τοῦ 1922. Συνεπείᾳ ἀποδοθείσης τότε εἰς αὐτὸν μομφῆς περὶ ἀναμείξεώς του εἰς τὴν ὑπόθεσιν τῆς «Βιομηχανικῆς Τραπέζης τῆς Κίνας», διευθυνομένης ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του, ἐτέθη εἰς διαθεσιμότητα ἐπὶ κυβερνήσεως Πουανκαρέ, ἐπανῆλθεν ὅμως καὶ πάλιν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῷ 1925 ἐπὶ κυβερνήσεως Ἐρριό, μία δὲ τῶν πρώτων ἐνεργειῶν τοῦ Μπριὰν κατὰ τὴν ὑπ᾽ αὐτοῦ ἀνάληψιν τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν ἦτο νὰ ἐπαναφέρῃ τὸν Μπερτελὸ εἰς τὴν θέσιν τοῦ γενικοῦ γραμματέως. —ω.

**Μπερτὲν** (Bertin). Γαλλικὴ οἰκογένεια, τῆς ὁποίας πολλὰ μέλη διεκρίθησαν ὡς δημοσιογράφοι.

— 1) ***Λουδοβῖκος - Φραγκῖσκος Μπερτὲν*** (1766—1841). Συνεργασθεὶς εἰς διάφορα περιοδικὰ κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, ἵδρυσε τῷ 1799 τὴν «*Ἐφημερίδα τῶν συζητήσεων*» (Journal des Débats), τῆς ὁποίας ἡ ἀνεξάρτητος πολιτικὴ δὲν ὑπῆρξεν εὐάρεστος εἰς τὸν Ναπολέοντα. Τῷ 1801 ἡ ἔκδοσις αὐτῆς διεκόπη καὶ ὁ Μπερτὲν ἐξωρίσθη. Ἐπανελθὼν τῷ 1804 ἐπανέλαβε τὴν ἔκδοσιν τῆς ἐφημερίδος του, μετονομασθείσης ὅμως, κατ᾽ ἐπιταγήν, εἰς «*Ἐφημερίδα τῆς αὐτοκρατορίας*», ἥτις ἄλλως τε ἐδημεύθη τῷ 1811. Κατὰ τὴν παλινόρθωσιν ἡ «*Ἐφημερὶς τῶν Συζητήσεων*» ἀπεδόθη εἰς τὸν ἰδιοκτήτην αὐτῆς (1814), ἠκολούθησε δ᾽ ἔκτοτε φιλομοναρχικὴν πολιτικήν.

— 2) ***Λουδοβῖκος-Φραγκῖσκος Μπερτὲν ντὲ Βὼ*** (Veaux), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1771—1842). Μετέσχεν ἐνεργῶς τῆς διευθύνσεως τῆς «*Ἐφημερίδος τῶν Συζητήσεων*», ἐγένετο βουλευτὴς τῷ 1815 καὶ σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας τῷ 1827, μέλος δὲ τῆς Βουλῆς τῶν ὁμοτίμων ἀπὸ τοῦ 1830.

— 3) ***Φραγκῖσκος - Ἐδουάρδος Μπερτὲν*** (1797 1871), υἱὸς τοῦ *Λουδοβίκου* (ὑπ᾽ *ἀριθ*. 1). Ἐγένετο ζωγράφος, συνειργάσθη ὅμως πρότερον εἰς τὴν ἐφημερίδα τοῦ πατρός του καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του Ἀρμάνδου ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν αὐτῆς, ἀπὸ τοῦ 1854. Ἐν τῇ ζωγραφικῇ διεκρίθη ὡς νεωτεριστὴς τοπιογράφος, ἀπηλλαγμένος τῶν ἀκαδημαϊκῶν παραδόσεων. Καλύτερα ἐκ τῶν ἔργων του θεωροῦνται: «*Αἱ πηγαὶ τοῦ Ἀλφειοῦ*», «*Ἀπόψεις ἀπὸ τὰ Ἀπέννινα*», «*Ἀπόψεις τοῦ δάσους τοῦ Φονταινεμπλὼ*» κ. ἄ.

— 4) ***Λουδοβῖκος - Μαρία - Ἀρμάνδος Μπερτέν***, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1801—1854). Διετέλεσε διευθυντὴς τῆς «*Ἐφημερίδος τῶν Συζητήσεων*» ἀπὸ τοῦ 1841 μέχρι τοῦ θανάτου του.

— **Μπερτὲν** (Bertin), ***Ἀντώνιος***, *ἱππότης ντὲ —*. Γάλλος ποιητὴς (1752—1790). Δεκαοκταετὴς κατετάχθη εἰς τὸν στρατόν, ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἰλάρχου, ἐγένετο σταβλάρχης τοῦ κόμιτος τοῦ Ἀρτουὰ καὶ ἐπροστατεύθη ἰδιαιτέρως ὑπὸ τῆς Μαρίας Ἀντωανέττας. Ἔζησε βίον ἀφρόντιδα, διασκεδάζων μετ᾽ εὐθύμων φίλων καὶ γράφων ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν στίχους. Τὰ πρωτόλειά του ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὸ «*Ἡμερολόγιον τῶν Μουσῶν*», κατόπιν δ᾽ ἐξέδωκεν εἰς τόμους: «*Ταξίδι σ᾽ τὴ Βουργουνδία*» (1777), διήγησιν εἰς στίχους ἀναμὶξ καὶ πεζόν, καὶ μίαν συλλογὴν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «*Ἔρωτες*». Οἱ στίχοι του εἶναι θελκτικοὶ καὶ ῥέοντες, ἀλλὰ συχνὰ χωρὶς ῥυθμὸν καὶ μέτρον. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1785.

— **Μπερτὲν** (Bertin), ***Λουδοβῖκος-Αἰμίλιος***. Γάλλος μηχανικὸς καὶ ναυπηγὸς (1840—1924). Μεγάλη ὑπῆρξεν ἡ συμβολή του εἰς τὴν κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας ῥαγδαίαν ἐξέλιξιν τῆς ναυπηγικῆς τέχνης διὰ τῶν μελετῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεωρίας τοῦ κυματισμοῦ τῆς θαλάσσης, ἐπὶ τοῦ διατοιχισμοῦ τῶν πλοίων, περὶ τῶν πηδαλίων κ. λ. π. Εἰς τὰς μελέτας αὐτοῦ ὀφείλονται ἐν τοῖς ἄλλοις, κατὰ μέγα μέρος, αἱ βελτιώσεις τοῦ θωρακισμοῦ καὶ τῆς ἐν γένει ἀμύνης τῶν πολεμικῶν σκαφῶν. Διετέλεσε διευθυντὴς τῆς Ναυπηγικῆς Σχολῆς τῆς Γαλλίας καὶ ἀπὸ τοῦ 1895 διευθυντὴς τῶν Ναυτικῶν Κατασκευῶν. Τῷ

Digitized by Google

1886 εἶχε κληθῆ ὑπὸ τῆς ἰαπωνικῆς κυβερνήσεως ὡς ὀργανωτὴς τῶν ναυπηγείων καὶ τοῦ ναυτικοῦ πυροβολικοῦ, παραμείνας δὲ ἐν Ἰαπωνίᾳ μέχρι τοῦ 1890 συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὴν ἐν τῇ χώρᾳ ταύτῃ σημειωθεῖσαν τεραστίαν πρόοδον τῆς ναυπηγικῆς τέχνης κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους. Ἐκτὸς τῶν εἰς τὰ ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ δημοσιευθεισῶν μελετῶν αὐτοῦ, ἐξέδωκεν εἰς τόμους: «Θεωρητικὰ καὶ πειραματικὰ δεδομένα περὶ τῶν κυμάτων καὶ τοῦ διατοιχισμοῦ τῶν πλοίων» (1874), «Τὰ ἀτμήρη ἐμπορικὰ καὶ πολεμικὰ σκάφη» (1875), «Οἱ ναυτικοὶ ἀτμολέβητες» (1896, ἐπανεκδοθὲν τῷ 1904), «Μελέτη ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως τῆς ἀμυντικῆς δυνάμεως τῶν πολεμικῶν πλοίων» (1905—1906). Ἔγραψεν ἐπίσης «Ἱστορίαν τῶν ἐν Ἰαπωνίᾳ μεγάλων ἐμφυλίων πολέμων» (1893). Ὁ Μπερτὲν ἦτο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, εἶχε τιμηθῆ δὲ πολυτρόπως ὑπὸ τῶν κυβερνήσεων διαφόρων κρατῶν. Γ. Ζ.

— **Μπερτὲν** (Bertin), ***Πέτρος-Αὐγουστῖνος.*** Γάλλος φυσικὸς (1818—1884), ὁ ἐπιλεγόμενος *Μπερτὲν-Μουρὸ* (Bertin-Mourot). Καθηγητὴς ἐν ἀρχῇ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου (1848), ἐγένετο τῷ 1867 καθηγητὴς τοῦ Κολλεγίου τῆς Γαλλίας καὶ βραδύτερον (1868) ὑποδιευθυντὴς τῆς École Normale. Ἐδημοσίευσε πρωτοτύπους πραγματείας «Ἐπὶ τῶν φαινομένων τῆς περιστροφικῆς μαγνητικῆς πολώσεως», «Ἐπὶ τῆς πολώσεως τῶν δακτυλίων τοῦ Νεύτωνος», «Ἐπὶ τῆς κρυσταλλώσεως τοῦ ὕδατος ἐν τοῖς ψυγείοις», «Ἐπὶ τῆς μετεωρολογίας τῆς Ἀλσατίας» κλπ. Ἐπὶ δεκαετίαν καὶ πλέον ἐδημοσίευεν εἰς τὰ «Χρονικὰ τῆς Χημείας καὶ τῆς Φυσικῆς» ἐπιθεώρησιν τῶν κυριωτέρων ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν, ἐν τῷ κύκλῳ τῆς φυσικῆς, ἀνὰ τὰς διαφόρους ξένας χώρας. —Ω.

**Μπερτερουὰ** (Bertheroy)), ***Βέρθα-Ἰωάννα-Κλορίνα Λεμπαριγιὲ*** (Le Barillier), γνωστὴ ἰδίως ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἰωάννης Μπερτερουά*. Γαλλὶς λογία, γεννηθεῖσα τῷ 1868 καὶ ἀποθανοῦσα τῷ 1927. Τυχοῦσα ἐπιμελοῦς κλασσικῆς μορφώσεως, ἐπέδειξεν ἀπὸ νεαρωτάτης ἡλικίας ἐξαίρετον λογοτεχνικὴν ἰδιοφυΐαν. Εἰς ἡλικίαν δεκαεννέα ἐτῶν ἐδημοσίευσε τὴν πρώτην συλλογὴν στίχων ὑπὸ τὸν τίτλον «Παλμοί», τὴν ὁποίαν ἐπηκολούθησαν δύο ἄλλαι «Μαρία Μαγδαληνή» (1888) καὶ «Γυναῖκες τῆς ἀρχαιότητος» (1890). Ἐπιδοθεῖσα κατόπιν εἰς τὸ ἱστορικὸν μυθιστόρημα, ἔγραψεν ὡραῖα ἔργα, εἰς τὰ ὁποῖα ἡ κλασσικὴ ἀρχαιότης ἀναζῇ, ὅπως καὶ εἰς τὴν «Ἀφροδίτην» τοῦ Πιὲρ-Λουΐ, ὄχι βέβαια μὲ τὴν δύναμιν τοῦ συγγραφέως ἐκείνου, ἀλλὰ πάντως μὲ τάλαντον πολλοῦ λόγου ἄξιον. Ἡ «Κλεοπάτρα» της (1891) δίδει εἰς ἀναγλύφους εἰκόνας τὴν ἑλληνιστικὴν Αἴγυπτον, αἱ «Παρθένοι τῶν Συρακουσῶν» τὴν ἑλληνικὴν Σικελίαν κατὰ τοὺς χρόνους τῶν καρχηδονικῶν πολέμων, ἡ «Χορεύτρια τῆς Πομπηΐας» (1899) τὴν ρωμαϊκὴν ἀρχαιότητα. Ἐχρησιμοποίησεν ἐπίσης ὡς πλαίσιον τῶν μυθιστορημάτων της τὴν Ἱσπανίαν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος (εἰς τὸν «Ximenès», 1893) καὶ τὴς Φλάνδρας τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος (εἰς τὸ «Ἡμερολόγιον τῆς Μαργαρίτας Πλαντὲν» (1890). Ἡ Μπερτερουὰ ἔγραψεν ἀκόμη καὶ μυθιστορήματα συγχρόνου τύπου, ἐξ ὧν μερικὰ ἐσημείωσαν μεγάλην ἐπιτυχίαν, ὅπως «Τὸ ρωμάντσο μιᾶς ψυχῆς» (1895), «Οἱ ἐφέστιοι θεοί» (1904) κ. ἄ. Δι' ἓν ἐγκώμιόν της πρὸς τὸν Ἀνδρέαν Σενιὲ ἔλαβε τὸ βραβεῖον εὐγλωττίας τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἀνεβίβασε δὲ ἀπὸ σκηνῆς τῆς Comédie Française ἓν ἔμμετρον μονόπρακτον ἔργον της «Ἀριστοφάνης καὶ Μολιέρος» (1897). Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς της ἔγραψε νέα μυθιστορήματα, ἱστορικὰ («Ἀταλάντη ἡ ἐλαφρόπους» κ. λ. π.) καὶ ἄλλα («Ἔρωτα, ποῦ εἶναι ἡ νίκη σου;»), ἀφῆκε δὲ καὶ ἐνδιαφέρουσαν ἱστορικὴν μελέτην ὑπὸ τὸν τίτλον «Δύο διάσημοι γυναῖκες τῆς ἀρχαιότητος: Ἀσπασία καὶ Φρύνη». Γ. Ζ.

**Μπερτζοΐς** (Bourgeois), ***Φραγκῖσκος.*** Ἄγγλος ζωγράφος, ἐλβετικῆς καταγωγῆς (1756—1811). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Louthrebourg καὶ ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Γαλλίαν, τὴν Ἰταλίαν, τὴν Ὁλλανδίαν καὶ τὴν Πολωνίαν. Τῷ 1791 ὠνομάσθη ἐπίσημος ζωγράφος τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας, τῷ 1793 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου καὶ τῷ 1794 ἰδιαίτερος τοπιογράφος τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Γεωργίου τοῦ Γ'. Ἵδρυσε καὶ ἐχρηματοδότησε τὸ παρὰ τὸ Λονδῖνον ἀξιόλογον μουσεῖον τοῦ Dulwich College καὶ κατέλιπε τοπία, πολεμικοὺς πίνακας καὶ θαλασσογραφίας λίαν ἐκτιμηθείσας. Ι. Μ. Π.

**Μπέρτι** (Berti), ***Δομένικος.*** Ἰταλὸς συγγραφεὺς καὶ πολιτικὸς (1820—1897). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Τουρίνου καὶ καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ρώμης, βουλευτής, ὑπουργὸς τῆς Παιδείας τῷ 1866 καὶ 1867 καὶ ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας, τοῦ Ἐμπορίου καὶ τῆς Βιομηχανίας ἀπὸ τοῦ 1881 μέχρι τοῦ 1884. Κατ' ἀρχὰς ἀνῆκεν εἰς τὸ μετριοπαθὲς κόμμα τῆς δεξιᾶς, βραδύτερον δὲ παρεκάθησεν εἰς τὴν ἀριστεράν. Συνέταξε, κατ' ἐντολὴν τοῦ Καίσαρος Μπάλμπο, τὸν νόμον περὶ τῶν ἐθνικῶν κολλεγίων καὶ διηύθυνε πολλὰ περιοδικά. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Πίκο ντέλλα Μιράντολα», «Τζορντάνο Μπροῦνο» (1866), «Ἡ αὐθεντικὴ δικογραφία τῆς δίκης τοῦ Γαλιλαίου» (1876), «Ὁ Κοπέρνικος καὶ αἱ φάσεις τοῦ συστήματός του» (1876), «Καῖσαρ Ἀλφιέρι» (1877), «Ἡ ζωὴ καὶ τὰ ἔργα τοῦ Θωμᾶ Καμπανέλλα» (1878), «Ὁ κόμις Καβοὺρ πρὸ τοῦ 1848» (1887), «Ἡ φιλοσοφία κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἐν Ἰταλίᾳ», «Νεοπλατωνισμὸς» κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπέρτι** (Bertie), ***Φραγκῖσκος-Λέβεσον,*** *ὑποκόμις* **—.** Ἄγγλος διπλωμάτης (1844—1919). Διετέλεσεν ὑφυπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ καὶ Παρισίοις. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰργάσθη ἐκθύμως πρὸς ἐπίτευξιν πλήρους συνεννοήσεως μεταξὺ Ἀγγλίας καὶ Γαλλίας καὶ συντονισμοῦ τῶν ἐνεργειῶν τῶν δύο κρατῶν. Ἀποχωρήσας τῆς ὑπηρεσίας τῷ 1918 ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ ὑποκόμιτος. Γ. Ι. Β.

**Μπερτιγιὸν** (Bertillon), ***Ἀλφόνσος.*** Γάλλος στατιστικὸς καὶ ἐγκληματολόγος (1853—1914), ὁ ἐπινοήσας τὴν λεγομένην «ἀνθρωπομετρικὴν» μέθοδον διὰ τὴν ἀναγνώρισιν τῶν ἐγκληματιῶν. Ἀπὸ τοῦ 1877 εἶχε διορισθῆ ἐν τῇ ἀστυνομικῇ ὑπηρεσίᾳ τῶν Παρισίων, ὡς πραγματογνώμων γραφολόγος, μετὰ δύο δ' ἔτη ἀνετέθετο εἰς αὐτὸν τὸ τμῆμα τῶν φωτογραφιῶν. Ἔκτοτε ἐσκέφθη καὶ προσεπάθησε νὰ χρησιμοποιήσῃ ἐν τῇ περιγραφῇ τῶν χαρακτηριστικῶν τῶν ἐγκληματιῶν καὶ τῶν ὑπόπτων προσώπων μέθοδον νέαν, ἐπιτρέπουσαν ὥστε νὰ δύναταί τις, στιγμιαίως σχεδόν, ν' ἀνευρίσκῃ τὸν φάκελον καὶ τὰ προηγούμενα παντὸς προσώπου διελθόντος προγενεστέρως διὰ τῶν χειρῶν τῆς ἀστυνομίας. Μετά τινας δοκιμὰς κατέληξε νὰ χρησιμοποιήσῃ ὡς βάσιν τὴν κατὰ προσέγγισιν σταθερότητα τῶν διαστάσεων τοῦ ἀνθρωπίνου σκελετοῦ ἀπὸ τῆς ἡλικίας τῶν εἴκοσιν ἐτῶν καὶ ἄνω, νὰ καταμετρῇ δηλαδὴ μετὰ τῆς μεγαλυτέρας δυνατῆς ἀκριβείας τὸ ὕψος, τὴν ὀσφύν, τὸν κορμόν, τὸ κρανίον, τὸ δεξιὸν οὖς, τὸν ἀριστερὸν πόδα, τὸν μέσον καὶ τὸν μικρὸν δάκτυλον, καθὼς καὶ τὸν πῆχυν τῆς ἀριστερᾶς χειρός, συμπληρῶν τοὺς ἀριθμοὺς τούτους διὰ τοῦ χρώματος τῶν ὀφθαλμῶν, τῆς κόμης, τοῦ γενείου κλπ. Τὰ οὕτω καταρτιζόμενα δελτία κατετάσσοντο εἰς τριῶν εἰδῶν ὁμάδας, οὕτως ὥστε, ὅταν παλαιός τις ἐγκληματίας συνελαμβάνετο ἐκ νέου, ἦτο εὐχερής, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὡς ἀνωτέρω ἀνθρωπομετρικῶν στοιχείων, ἡ ἀνεύρεσις τοῦ δελτίου του καὶ ἡ ἐντεῦθεν ἀναγνώρισίς του. Τὸ σύστημα τοῦτο ἐτέθη εἰς ἐφαρμογὴν ἀπὸ τοῦ 1882, τελειοποιηθὲν δὲ διὰ τριακονταετοῦς προσπαθείας ὑπὸ τοῦ ἰδίου Μπερτιγιόν, δὲν ἐβράδυνε νὰ εἰσαχθῇ καὶ εἰς τὰς ἀστυνομίας τῶν ἄλλων χωρῶν, σὺν τῇ προσθήκῃ τῆς *δακτυλοσκοπίας* (βλ. λ.). —Ω.

— **Μπερτιγιὸν** (Bertillon), ***Λουδοβῖκος-Ἀδόλφος.*** Γάλλος ἰατρὸς καὶ στατιστικὸς (1821—1883), πατὴρ τοῦ *Ἀλφόνσου*. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1870 διωρίσθη δήμαρχος τοῦ ε' διαμερίσματος τῶν Παρισίων, ἐγένετο δ' εἶτα γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῶν φιλανθρωπικῶν ἱδρυμάτων. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς Ἀνθρωπολογικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων, εἰς τὴν ὁποίαν ἐδίδαξεν ἀπὸ τοῦ 1876, καὶ τῆς γαλλικῆς Ἀνθρωπολογικῆς ἑταιρείας. Ἔγραψεν ἐν τοῖς ἄλλοις «Δημογραφίαν τῆς Γαλλίας», ἀξιόλογον ἔργον στατιστικῆς. —Ω.

**Μπερτιὲ** (Berthier), ***Γουλιέλμος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ἰησουΐτης καὶ λόγιος (1704—1782). Διηύθυνεν ἰησουϊτικὴν ἐφημερίδα, ἐν τῇ ὁποίᾳ διεξήγαγε σφοδρὰν πολεμικὴν κατὰ τοῦ Βολταίρου καὶ τῶν Ἐγκυκλοπαιδικῶν, κατὰ τὴν παιδικὴν δὲ ἡλικίαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' ὑπῆρξεν εἷς τῶν διὰ τὴν μόρφωσιν αὐτοῦ χρησιμοποιηθέντων διδασκάλων. Ἐδημοσίευσεν ἔργα ἐναντίον τοῦ «Κοινωνικοῦ Συμβολαίου» τοῦ Ρουσσὼ καὶ συνέγραψε τοὺς ἓξ τελευταίους τόμους τῆς «Ἱστορίας τῆς Γαλλικανικῆς Ἐκκλησίας» τοῦ Λογκεβάλ. —Ω?

—**Μπερτιὲ** (Berthier), ***Λουδοβῖκος-Ἀλέξανδρος.*** Γάλλος στρατάρχης (1753—1815). Ἀπὸ ἡλικίας δεκαεπτὰ ἐτῶν εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐπιτελικὸν σῶμα, ἐγένετο δὲ συνταγματάρχης κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἀμερικῆς. Βραδύτερον διετέλεσεν ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ τοῦ Λύκνερ (1792) καὶ εἶτα τῆς εἰς Ἰταλίαν στρατιᾶς (1796). Τότε συνεδέθη στενῶς μετὰ τοῦ Βοναπάρτου, ὅστις, γενόμενος πρῶτος ὕπατος, διώρισεν αὐτὸν ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν καὶ ἐπιτολοφόρησε κατόπιν «γενικὸν ἐπιτελάρχην τῆς Μεγάλης Στρατιᾶς». Ὁ Μπερτιὲ τὸν ἠκολούθησεν εἰς ὅλας του τὰς ἐπιστρατεύσεις καὶ τὸν ἐξυπηρέτησε μετ' ἀφοσιώσεως, τὴν ὁποίαν ἀμείβων ὁ Ναπολέων τῷ ἀπένειμε διαδοχικῶς τοὺς τίτλους τοῦ στρατάρχου (1804), τοῦ πρίγκιπος τοῦ Νεφσατέλ, τοῦ δουκὸς Βαλενζέν, τοῦ πρίγκιπος τοῦ Βαγκράμ. Καὶ ὅμως, πρὸς γενικὴν κατάπληξιν, μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Βοναπάρτου, ὁ Μπερτιὲ ἐγκαταλιπὼν αὐτὸν μεταξὺ τῶν πρώτων, ἔσπευσε νὰ προσφέρῃ τὰς ὑπηρεσίας του εἰς τὸν Λουδοβῖκον ΙΗ'. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν Ἑκατονθημέρων, μὴ γνωρίζων εἰς ποῖον ἐκ τῶν δύο νὰ στραφῇ, εὑρέθη ἠναγκασμένος νὰ ἐγκαταλίπῃ τὴν Γαλλίαν καὶ νὰ καταφύγῃ εἰς Μπαμπὲργκ τῆς Βαυαρίας, ὅπου κατ' ἄλλους μὲν ηὐτοκτόνησε, πεσὼν ἐκ τοῦ παραθύρου τῆς κατοικίας του εἰς τὸ λιθόστρωτον τῆς ὁδοῦ, κατ' ἄλλους δὲ ἐδολοφονήθη ἀπὸ ἓξ προσωπιδοφόρους, ἐκδικουμένους τὰς καταδιώξεις, τὰς ὁποίας εἶχον ὑποστῇ ἄλλοτε ἐκ μέρους του αἱ μυστικαὶ ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος ὀργανώσεις. —Ω.

**Μπερτινάτσι** (Bertinazzi), ***Κάρολος-Ἀντώνιος.*** Ἰταλὸς ἠθοποιὸς (1710—1883). Ἤρχισε τὸ στάδιόν του διὰ τῆς ὑποδύσεως τοῦ ρόλου τοῦ Ἀρλεκίνου καὶ κατόπιν περιέτρεξε πάντα τὰ θέατρα τῆς Ἰταλίας καὶ τῶν Παρισίων, μετὰ θριαμβευτικῆς ἐπιτυχίας, παίζων ἰταλιστὶ καὶ γαλλιστὶ καὶ ἀναδειχθεὶς εἷς τῶν μεγαλυτέρων κωμικῶν ἠθοποιῶν τῆς ἐποχῆς του. Ἔγραψεν ἐπίσης τὸ ἔργον «Αἱ νέαι μεταμορφώσεις τοῦ Ἀρλεκίνου». Μ. Δ. Β.

**Μπερτίνι** (Bertini), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (1825—1899), υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου-Βαπτιστὰ Μπερτίνι* (1799—1849), ζωγράφου καὶ τούτου. Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Μιλάνῳ Ἀκαδημίαν τῶν καλῶν τεχνῶν καὶ εἰς ἡλικίαν εἴκοσιν ἐτῶν ἔτυχε τοῦ πρώτου βραβείου ζωγραφικῆς. Διέμεινεν ἔπειτα χρονικὸν διάστημα ἐν Ρώμῃ, συνειργάσθη δ' ἐπὶ πολὺ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Πομπέο Μπερτίνι* (1829—1899). Διέπρειψεν ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος, ἀλλ' ἐξεικόνισε μετ' ἐπιτυχίας καὶ ἱστορικὰς σκηνάς. Διεκόσμησε τὴν ἑλληνικὴν ἐκκλησίαν τῆς Τεργέστης καὶ διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν καλῶν τεχνῶν τοῦ Μιλάνου καὶ διευθυντὴς τοῦ μουσείου Μπρέρα. Μεταξὺ τῶν ἐξοχωτέρων του ἔργων καταλέγονται: «Ὀφηλία», «Παριζίνα», «Ὁ στρατάρχης Τριβούλτσιο καὶ Φραγκῖσκος ὁ Α'», «Ἡ συνάντησις τοῦ Δάντου καὶ τῆς Βεατρίκης» καὶ ἡ προσωπογραφία τοῦ δικηγόρου Καλκατέρρα. Ι. Μ. Π.

— **Μπερτίνι** (Bertini), ***Φραντσέσκα.*** Ψευδώνυμον ὑπὸ τὸ ὁποῖον ἐγένετο γνωστὴ ἡ Ἰταλὶς ἠθοποιὸς τοῦ κινηματογράφου Κεκίνα Βιτιέλλο, γεννηθεῖσα τῷ 1890 ἐν Νεαπόλει. Κατ' ἀρχὰς ἔπαιζεν εἰς διαφόρους μικροθιάσους δευτερεύοντας ρόλους. Τῷ 1911 ὅμως ὁ Ἰταλὸς συγγραφεὺς Σαλβατόρε ντὶ Τζιάκομο διεῖδε τὸ ἐξαιρετικόν της τάλαντον, προσελήφθη δὲ τότε ἡ Μπερτίνι τῇ ὑποδείξει του εἰς τὴν ἰταλικὴν κινηματογραφικὴν ἑταιρείαν «Φὶλμ ντ' Ἄρτε» καὶ διεκρίθη ἀπὸ τὰς πρώτας της ταινίας: «Τροβατόρε», «Τριστᾶνος καὶ Ἰζόλδη» καὶ «Φραντσέσκα ντὰ Ρίμινι», μεσουρανήσασα ἐπὶ δεκαετίαν περίπου ὡς ἀστὴρ πρώτης τάξεως τοῦ ἰταλικοῦ κινηματογραφικοῦ θεάτρου καὶ διαπρέψασα ἰδίως εἰς τὴν ταινίαν τῆς «Κυρίας μὲ τὰς καμελίας». Τὰ ἐτήσια αὐτῆς κέρδη εἶχον φθάσει τὰ δύο ἑκατομμύρια λιρεττῶν. Ὑπανδρευθεῖσα κατόπιν τὸν Ἐλβετὸν ἠθοποιὸν Γκαρνιέ, ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον, ἔπαιξε δὲ βραδύτερον ὀλίγα τινὰ μόνον ἔργα, ὡς τὴν «Καταστροφὴν τοῦ Μόντε Κάρλο» κ. ἄ., χωρὶς ὅμως νὰ σημειώσῃ τὰς παλαιάς της ἐπιτυχίας, λόγῳ τοῦ ἀσυμβιβάστου τῆς ἀπηρχαιωμένης ρωμαντικῆς τεχνοτροπίας της πρὸς τὰς νεωτέρας μορφὰς τῆς ἐξελίξεως τῆς κινηματογραφικῆς τέχνης. Μ. Δ. Β.

**Μπέρτιος** (Bertius), ***Πέτρος.*** Γάλλος γεωγράφος (1565—1629). Εἶχε γεννηθῇ εἰς Φλάνδραν καὶ ἦτο διαμαρτυρόμενος τὸ δόγμα, μεταβὰς ὅμως εἰς Παρισίους ἠσπάσθη τὸν καθολικισμὸν καὶ διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ' «κοσμογράφος τοῦ βασιλέως», «βασιλικὸς καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν» καὶ «ἱστοριογράφος τῆς Γαλλίας». Ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Teatrum geographiae veteris» (1618) καὶ «De aggeribus et pontibus hactenus ad mare extructis (1629). Τὸ τελευταῖον τοῦτο βιβλίον του εἶναι πλῆρες περιέργων λεπτομερειῶν περὶ τῆς κατασκευῆς τῶν ὑδραγωγῶν καὶ ἄλλων τεχνικῶν ἔργων. —Ω.

**Μπερτολάτσι** (Bertolazzi) ***Κάρολος.*** Ἰταλὸς δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1870. Ἤρχισε γράφων τὰ πρῶτά του ἔργα εἰς τὴν διάλεκτον τοῦ Μιλάνου, ἀλλὰ βραδύτερον ἐχρησιμοποίησε τὴν κοινὴν φιλολογικὴν γλῶσσαν καὶ κατέλαβε ταχέως ἐξέχουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν συγχρόνων δραματικῶν συγγραφέων. Μεταξὺ τῶν ἔργων του τὰ κυριώτερα εἶναι: «Εἰς τὸ ἐνεχυροδανειστήριον», «Οἱ πτωχοὶ» (1894), «Ἡ καταστροφή» (189.), «Λουλοὺ» (1904), «Ὁ διάβολος καὶ ὁ ἁγιασμὸς» (1904) κ. τ. λ. Μ. Δ. Β.

**Μπερτολδῖνος** βλ. *Μπερτόλδος.*

**Μπερτόλδος.** Πρόσωπον ἀγροίκου δημώδους σατίρας, τῆς ὁποίας ὁ πλήρης τίτλος ἔχει ὡς ἑξῆς: «Πανουργίαι ὑψηλόταται Μπερτόλδου, εἰς τὰς ὁποίας φανερώνεται ἕνας χωριάτης πανοῦργος καὶ ὀξύνους ὁ ὁποῖος ὕστερον ἀπὸ διάφορα παθήματα διὰ τὸν πολὺν καὶ ὀξύτατόν του νοῦν γίνεται βασιλικὸς σύμβουλος». Ἡ σάτιρα αὕτη ἐγράφη ὑπὸ τοῦ Ἰταλοῦ Ἰουλίου Καίσαρος Della Croce (1550—1620), μεταφρασθεῖσα δ' εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἔγινεν ἀγαπητὸν ἀνάγνωσμα τῶν παρελθουσῶν γενεῶν. Ὁ μισὸς Μπερτόλδος (Bertoldo), ἀγροῖκος καὶ δύσμορφος χωρικός, ἀλλὰ πεπροικισμένος μὲ ἰδιαιτέραν εὐ-

Digitized by Google

ρυΐαν. προσπαθεῖ νὰ εἰσδύσῃ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ βασιλέως Ἀλβοΐνου. Εἰς τὴν πρόσκλησιν τοῦ βασιλέως νὰ γίνῃ αὐλικός, ἀπαντᾷ ὅτι ὁ «ἐλεύθερος δὲν γυρεύει νὰ γίνῃ σκλάβος». Αἱ πανουργίαι τοῦ Μπερτόλδου προκαλοῦν τὴν προσοχὴν τοῦ Ἀλβοΐνου, ὅστις ὑποβάλλει εἰς αὐτὸν διαφόρους ἐρωτήσεις. Αἱ εὐφυεῖς καὶ αὐθάδεις πολλάκις ἀποκρίσεις τοῦ πονηροῦ χωρικοῦ προκαλοῦν σκάνδαλα εἰς τὴν αὐλήν, ἡ δὲ βασίλισσα διατάσσει νὰ τὸν κλείσουν ἐντὸς σάκκου καὶ νὰ τὸν ῥίψουν εἰς τὴν θάλασσαν. Κατορθώνει ὅμως νὰ σωθῇ, πείσας τὸν στρατιώτην, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἀναλάβει τὴν θανατικὴν ἐκτέλεσιν, νὰ τὸν ἐξαγάγῃ ἐκ τοῦ σάκκου. Δὲν ἐσωφρονίσθη ὅμως ὁ θαρραλέος χωρικός. Ἐξηκολούθησε διὰ διαφόρων πανουργιῶν νὰ παρενοχλῇ τὸν βασιλέα, ὁ ὁποῖος διέταξε νὰ τὸν θανατώσουν. Ὁ Μπερτόλδος ἤκουσεν ἀσυγκίνητος τὴν διαταγὴν τοῦ Ἀλβοΐνου καὶ ἐζήτησεν ὡς ὑστάτην χάριν νὰ τοῦ ἐπιτραπῇ νὰ ἐκλέξῃ μόνος τὸ δένδρον, ἀπὸ τὸ ὁποῖον ἔμελλε νὰ κρεμασθῇ. Μάτην, ἐννοεῖται, οἱ στρατιῶται μετὰ τοῦ Μπερτόλδου ἀνεζήτησαν τὸ δένδρον τῆς ἀγχόνης. Τοῦτο δὲν εὑρέθη, καὶ ὁ ἥρως τῆς σατίρας ἐσώθη διὰ δευτέραν φοράν. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἡ εὐφυΐα καὶ ἡ σταθερότης τοῦ Μπερτόλδου εἵλκυσαν τὴν συμπάθειαν τοῦ βασιλέως, ὁ ὁποῖος τὸν ἔκαμεν αὐλικὸν καὶ ἰδιαίτερόν του σύμβουλον. «Καὶ ποτέ, λέγει ὁ συγγραφεύς, δὲν ἔκανε [ὁ βασιλεὺς] πρᾶγμα χωρὶς τὴν συμβουλήν του καὶ ἕως ὅπου ἐκεῖνος ἐστάθη εἰς ἐκείνην τὴν αὐλήν, κάθε πρᾶγμα ἐπήγαινεν ἀπὸ καλὸν εἰς καλλίτερον». Δυστυχῶς ὅμως ἡ πολυτέλεια καὶ ἡ χλιδὴ ἔβλαψαν τὴν ὑγείαν τοῦ Μπερτόλδου, ὁ ὁποῖος «μὲ τρομεροὺς πόνους ἀπέθανε διὰ νὰ μὴν ἠμπορῇ νὰ φάγῃ ῥάβες καὶ φασούλια».

Ὁ *Μπερτολδῖνος*, ἥρως τῆς ὁμωνύμου σατίρας τοῦ αὐτοῦ συγγραφέως, ἦτο υἱὸς τοῦ Μπερτόλδου καὶ τῆς Μαρκόλφας. Ὑστέρει ὅμως πολὺ τοῦ πατρός του κατὰ τὴν εὐφυΐαν καὶ τὴν πονηρίαν. Αἱ μωραὶ ἐρωτήσεις του προὐκάλουν τὸν γέλωτα εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἀλβοΐνου. Ἐνυμφεύθη εἰς ἡλικίαν τριάκοντα ἐτῶν καὶ ἀπέκτησεν υἱὸν τὸν *Κακασσένον*.

Ἡ σάτιρα τοῦ Μπερτόλδου ἐνθυμίζει ἐν πολλοῖς τὰς σατίρας τὰς ἀναφερομένας εἰς τὰ πρόσωπα τῶν γελωτοποιῶν τῶν βασιλέων καὶ ἄλλων ἀρχόντων, αἱ ὁποῖαι ἦσαν τόσον ἀγαπηταὶ κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας εἰς τὰς λαϊκὰς μάζας. Πρέπει ὅμως νὰ σημειωθῇ ὅτι ὁ Μπερτόλδος, παρὰ τὸ ἄγροικον τῆς μορφῆς καὶ τὸ σκαιὸν τῆς ἐκφράσεως, ἔχει φιλοσοφικὴν καὶ κοινωνικὴν βάσιν. Ὁ ἥρως, λέγει προοιμιαζόμενος ὁ συγγραφεύς, «ὁμοιάζει μὲ ἕνα σακκίον ἀπὸ χοντρόπανον, ἐνδυμένον ἀπὸ μέσα μὲ μετάξιον καὶ χρυσάφιον». Θέλει νὰ δείξῃ τὴν ἀντίθεσιν τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος. Ὡς δὲ προσφυῶς παρατηρεῖ ὁ Σπ. Λάμπρος, ὁ Μπερτόλδος «εἶναι ὁ ἁπλοῦς καὶ κακοφορεμένος, ἀλλ' ἐργατικός, θαρραλέος, πολύμητις χωρικὸς τῶν μετὰ τὴν Ἀναγέννησιν χρόνων, ὁ ἐπινοῶν καὶ τολμῶν, ὁ κρημνίζων καὶ ἀνιδρύων».

[*Σπ. Λάμπρου*, «Μικταὶ Σελίδες» σελ. 572—578.] Δ. Α. Ζ.

**Μπερτολίνι** (Bertolini), ***Πέτρος***. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1859—1920). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ κατ' ἀρχὰς ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, γενόμενος κατόπιν καθηγητὴς τοῦ διοικητικοῦ δικαίου εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ῥώμης. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐκλεγεὶς βουλευτὴς τῷ 1891, ἠκολούθησε τὸ κόμμα τοῦ κέντρου παρὰ τὸν Σοννῖνο. Ἀπὸ τοῦ 1893 μέχρι τοῦ 1895 διετέλεσεν ὑφυπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν εἰς τὴν τελευταίαν κυβέρνησιν Κρίσπι καὶ κατόπιν ἀνέλαβε τὸ ὑφυπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν ἐν τῇ κυβερνήσει τοῦ στρατηγοῦ Πελλοῦ τῷ 1898. Ἀπὸ τοῦ 1907 μέχρι τοῦ 1909 διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων ἐν τῇ κυβερνήσει Τζιολίττι. Λόγῳ τῆς δράσεώς του ὡς ὑφυπουργοῦ τῶν Ἐσωτερικῶν κατὰ τὰς ταραχὰς τοῦ 1898, εἶχεν ἀποκτήσει τὴν φήμην ἀνδρὸς ἀντιδραστικοῦ καὶ ὀπισθοδρομικοῦ, τὴν ὁποίαν ὅμως ἀνέτρεψε κατόπιν, ὑποστηρίξας θερμῶς τὸν Τζιολίττι εἰς τὴν ψήφισιν τοῦ νόμου περὶ καθολικῆς ψηφοφορίας. Κατὰ τὸ θέρος τοῦ 1912 ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ Τζιολίττι εἰς τὴν Λωζάννην, μετὰ τοῦ Φουζινάτο καὶ τοῦ Βόλπι, ὅπως συζητήσῃ καὶ μετατρέψῃ εἰς ἐπίσημον συνθήκην τὰς γενομένας ἐν Κωνσταντινουπόλει συμφωνίας, ἵνα τεθῇ τέρμα εἰς τὸν Ἰταλοτουρκικὸν πόλεμον. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἦτο σφοδρὸς πολέμιος τῆς ἐξόδου τῆς Ἰταλίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντὰντ καὶ συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐπιβράδυνσιν τῆς ἐξόδου ταύτης. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Δοκίμιον περὶ τῆς ἐπιστήμης καὶ τοῦ δικαίου τῆς δημοσίας διοικήσεως» (1889—1892, τόμοι 3) καὶ «Ἡ ἀγγλικὴ κυβέρνησις καὶ αἱ σχέσεις αὐτῆς πρὸς τὴν ἐθνικὴν ζωὴν» (1899, τόμοι 2).

— **Μπερτολίνι** (Bertolini), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς (1837—1909). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἱστορίας εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Νεαπόλεως καὶ τῆς Βολωνίας. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Ἱστορία τῶν πρώτων χρόνων τῆς Ῥώμης» (1860), «Ἱστορία τοῦ μεσαίωνος» (1866), «Δοκίμιον ἰταλικῆς ἱστορίας» (1871), «Ἀρχαία ἱστορία τῆς Ἰταλίας» (1874), «Ἰταλικὴ ἱστορία τοῦ ΙΘ' αἰῶνος» (1880), «Ἀρχαία παγκόσμιος ἱστορία» (1885), «Ρωμαϊκὴ ἱστορία» (1886), μεταφρασθεῖσα εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ Σ. Λάμπρου, «Ὁ κόμις Καβοὺρ» (1886), «Ἱστορία τῆς Ῥώμης» (1890), «Ἱστορία τῆς ἰταλικῆς ἀναγεννήσεως», «Καῖσαρ Καντοὺ καὶ τὰ ἔργα του» (1896) κτλ.

Μ. Δ. Β.

**μπερτολῖτις** (ἡ) *[Χημ. Πολ.]*. Γαλλικὴ στρατιωτικὴ ὀνομασία τοῦ *χλωρίου* (βλ. λ.), ὡς πολεμικῆς οὐσίας.

**Μπερτολλὲ** (Berthollet), ***Κλαύδιος-Λουδοβῖκος***, *κόμις*—. Περίφημος Γάλλος χημικὸς (1748—1822). Τῷ 1794 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν Παρισίοις, βραδύτερον ἐγένετο συγκλητικὸς κλπ. Ἂν καὶ κατ' ἀρχὰς ἦτο ὀπαδὸς της φλογιστικῆς θεωρίας, ἐν τούτοις βραδύτερον κατέστη εἷς τῶν σπουδαιοτέρων παραγόντων τῆς ἀναγεννήσεως τῆς χημείας, προσενεγκὼν μεγίστας ὑπηρεσίας εἴς τε τὴν ἐφηρμοσμένην καὶ τὴν θεωρητικὴν χημείαν. Ὡς φίλος τοῦ Ναπολέοντος Βοναπάρτου συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Αἰγύπτου, ὅπου καὶ συνέλαβε τὴν ἰδέαν τῆς πολυκρότου θεωρίας του περὶ τῶν νόμων τῆς χημικῆς συγγενείας, τὴν ὁποίαν καὶ διεξοδικῶς διετύπωσεν εἰς τὸ περίφημον ἔργον του «Essai de statique chimique» (2 τόμ. 1803). Ὁ Μπερτολλέ, ἀγόμενος ἐκ τῆς ἀρχῆς ὅτι ἡ δρᾶσις τῆς χημικῆς συγγενείας δὲν εἶναι ἀνεξάρτητος τῆς μάζης τῶν ἀντιδρώντων σωμάτων, ἀλλ' ἀνάλογος πρὸς αὐτήν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ τότε πιστευόμενα, προὐχώρησε περαιτέρω, ἰσχυριζόμενος ὅτι τὰ σώματα δὲν ἑνοῦνται καθ' ὡρισμένας ἀναλογίας βάρους ἀλλὰ κατὰ διαφόρους, ἐξαρτωμένας ἐκ τῆς μάζης τῶν ἀλληλεπιδρώντων παραγόντων. Εἰς τὰς ἀντιλήψεις του ταύτας ἐπολεμήθη ζωηρῶς ὑπὸ τοῦ ἐν Μαδρίτῃ καθηγητοῦ Prust, διεξαχθέντος ἐντόνου ἀγῶνος, ὅστις διήρκεσεν ἐπὶ μίαν ὀκταετίαν περίπου. Τὸ ἀποτέλεσμα ἦτο νὰ ἐπικρατήσῃ ὁ Μπερτολλὲ καὶ νὰ ἐπιβεβαιωθῇ ὁ νόμος τῶν σταθερῶν ἀναλογιῶν αὐτοῦ. Ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ταύτης, λησμονηθείσης ἐπὶ χρονικόν τι διάστημα, ἐβασίσθησαν βραδύτερον κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΘ' αἰῶνος οἱ ἱδρυταὶ τῶν σήμερον ἰσχυουσῶν θεωριῶν περὶ τῆς δράσεως τῶν μαζῶν καὶ τῆς χημικῆς ἰσορροπίας. Ὁ Μπερτολλὲ ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν συνεργησάντων μετὰ τοῦ Λαβουαζιὲ εἰς τὴν διατύπωσιν τῆς νεωτέρας χημικῆς ὀνοματολογίας. Περαιτέρω καθώρισε τὴν χημικὴν σύστασιν τῆς ἀμμωνίας, τοῦ ὑδροθείου καὶ τοῦ ὑδροκυανικοῦ ὀξέος, ὑπέδειξε τὴν λεύκανσιν διὰ τῆς χρήσεως τῶν ὑποχλωριωδῶν ἁλάτων, ἀνεκάλυψε τὴν καλουμένην ἐκρηκτικὴν πυρίτιδα τοῦ Μπερτολλέ, ἥτις ἔχει βάσιν τὸ χλωρικὸν κάλιον. Ἔγραψε τά: «Recherches» (1801) καὶ «Nouvelles recherches sur les lois des affinités chimiques» (2α ἔκδ. 1806) καὶ τέλος εἰς τὰ «Mémoires de la Société d'Arcueil» ἐδημοσίευσε τὰς γενομένας κατὰ τὰ ἔτη 1807—1817 σπουδαιοτάτας ἀνακοινώσεις κατὰ τὰς ἐν τῇ ἰδιωτικῇ του ἐπαύλει ἐν Arcueil (παρὰ τοὺς Παρισίους) συγκεντρώσεις τῶν διασημοτέρων ἐπιστημόνων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης.

Σ. Γ.

*Κλαύδιος Μπερτολλέ.*

**Μπερτολόνι** (Bertoloni), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς βοτανικὸς (1775—1869). Ἐσπούδασε βοτανικὴν καὶ ἰατρικὴν ἐν Ἰταλίᾳ καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν Γενεύῃ τῷ 1811 καὶ ἐν Βολωνίᾳ ἀπὸ τοῦ 1816. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ ἰταλικὴ χλωρὶς» (1854), «Διάφορα περὶ βοτανικῆς» (1863), «Νέα ἀσιατικὰ φυτὰ» (1865) κλ.

Μ. Δ. Β.

**Μπερτόλντο** (Bertoldo), ***Ἀτεστῖνος***. Βενετὸς ἀρχιστράτηγος τῶν κατὰ ξηρὰν δυνάμεων εἰς τὸν μεταξὺ Βενετίας καὶ Τουρκίας ἀπὸ τοῦ 1463 μέχρι τοῦ 1479 πόλεμον. Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις ταύτας ὁ Μπερτόλντο καὶ ὁ Λορεδανὸς ἐπεχείρησαν τὴν πολιορκίαν τοῦ Ἀκροκορίνθου, ἀνέκτησαν τὸν περίβολον τοῦ ἰσθμοῦ καὶ ἀνῳκοδόμησαν ἐντὸς δέκα πέντε ἡμερῶν τὸ κατηδαφισμένον Ἑξαμίλιον εἰς ὕψος δώδεκα ποδῶν καὶ μετὰ τριάκοντα ἓξ πύργων. Διαρκούσης ὅμως τῆς πολιορκίας ὁ Μπερτόλντο ἐβλήθη διὰ λίθου καὶ ἀπέθανεν ἐκ τοῦ τραύματος, τοῦτον δὲ διεδέχθη ἐν τῇ ἀρχιστρατηγίᾳ ὁ Σιγισμόνδος Μαλατέστας.

Θ. Π.

—**Μπερτόλντο** ***ὁ ἐκ Μοοσβούργης***. Γερμανὸς Δομινικανὸς μοναχός, φιλόσοφος μὲ νεοπλατωνικὰς τάσεις, ἀκμάσας κατὰ τὸ α' ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Τὸ κύριόν του ἔργον εἶναι ἡ ἐν χειρογράφῳ τοῦ Βατικανοῦ σῳζομένη «Ἑρμηνεία εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Γουλιέλμου von Moerbeke γενομένην τῷ 1268 λατινικὴν μετάφρασιν τῆς θεολογικῆς στοιχειώσεως τοῦ Πρόκλου». Ἡ «Ἑρμηνεία εἰς τὰ συγγράμματα τοῦ Ἀριστοτέλους», ὡς καὶ ἡ ὑπ' αὐτοῦ γραφεῖσα «Summa Theologica» ἀπωλέσθησαν.

— **Μπερτόλντο** ***ὁ ἐκ Ρεγενσβούργης*** (τοῦ Ἄνω Παλατινάτου). Φραγκισκανὸς μοναχός, ὁ μέγιστος λαϊκὸς ῥήτωρ ἐν τῇ Δύσει κατὰ τῶν μεσαίωνα, ἀποθανὼν τῷ 1272. Τούτου σῴζονται ἄνω τῶν 470 κηρυγμάτων, ἅτινα ἀπήγγειλε περιερχόμενος πλεῖστα μέρη τῆς Εὐρώπης. Τῷ 1263 ὠνομάσθη ὑπὸ τοῦ πάπα Οὐρβανοῦ Δ' ἱεροκήρυξ τῶν σταυροφόρων. [«Τὰ κηρύγματά του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ F. Pfeiffer καὶ J. Strobl, εἰς 2 τόμ. (1862 καὶ 1880.]

—Ω.

— **Μπερτόλντο** ***ντὶ Τζιοβάννι*** (Bertoldo di Giovanni). Φλωρεντῖνος γλύπτης τῆς Ἀναγεννήσεως (1420—1491), εἷς ἐκ τῶν κυριωτέρων μαθητῶν τοῦ Ντονατέλλο, μετὰ τοῦ ὁποίου πολλάκις συνειργάσθη εἰς ἀξιόλογα ἔργα. Κυρίως φαίνεται ὅτι εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην εἰδικότητα ὡς χαλκοχύτης, τοῦτο δὲ συνάγεται ἐκ τοῦ ὅτι κατὰ τὴν διακόσμησιν τῆς βασιλικῆς τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου ἐν Παδούῃ καὶ τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου τῆς Φλωρεντίας ἀπέδωκεν ἐπὶ τοῦ χαλκοῦ τὰ προπλάσματα τοῦ διδασκάλου του. Ἡ ἐπὶ τοῦ ἔργου τοῦ Μπερτόλντο ἐπίδρασις τοῦ Ντονατέλλο εἶναι πανταχοῦ καταφανής, ὁ μαθητὴς ὅμως παρουσιάζει μείζονα τοῦ διδασκάλου κλασσικισμόν, μολονότι δὲ ὑστερεῖ εἰς τὴν ἔκφρασιν τῆς βαθείας συγκινήσεως τῶν μορφῶν, ἐπιτυγχάνει θαυμασίως εἰς τὴν δραματικὴν ἀπεικόνισιν τῶν σκηνῶν. Εἰς τὸν Μπερτόλντο, ὡς συνεργάτην τοῦ Ντονατέλλο, ἀποδίδεται ἡ σκηνὴ ἡ παριστῶσα τὸν «Ἰησοῦν πρὸ τοῦ Καϊάφα», ὡς καὶ μία «Σταύρωσις», ἥτις κατ' ἄλλους εἶναι ἔργον τοῦ Μπελλάνο. Ἐκ τοῦ ἔργου του διακρίνονται κυρίως τὰ περίφημα βρούνζινα ἀνάγλυφα καὶ τὰ μικρὰ ἐκ βρούνζου ἐπίσης ἀγαλμάτια τὰ παριστῶντα Ἐρωτιδεῖς καὶ γυμνοὺς θεούς, ἔφιππα συμπλέγματα κλπ., τὰ ὁποῖα ἐχρησίμευον πρὸς διακόσμησιν τῶν μεγάρων τῶν πλουσίων ἐρασιτεχνῶν. Ἐκ τῶν σῳζομένων ἀναγλύφων του ἄριστα εἶναι ἡ «Σταύρωσις» καὶ ἡ «Ἀποκαθήλωσις» τοῦ Ἐθνικοῦ μουσείου τῆς Φλωρεντίας, ἡ «Μαστίγωσις» καὶ ἡ «Ἀποκαθήλωσις» τοῦ Λούβρου, τὸ «Μαρτύριον τοῦ Ἁγίου Σεβαστιανοῦ» (πανεπιστημιακὸν μουσεῖον τῆς Περουγίας), κ. ἄ.

*Τζιοβάννι Μπερτόλντο: Βελλεροφόντης καὶ Πήγασος.*

[Μουσεῖον τῆς Ἱστορίας τῆς Τέχνης ἐν Βιέννῃ.]

Ἐκ τῶν ἀγαλματίων του ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὸ κλασσικοῦ τύπου ἔργον «Βελλεροφόντης καὶ Πήγασος» (Μουσεῖον τεχνῶν ἐν Βιέννῃ), οἱ πολυάριθμοι Ἡρακλεῖς τῶν μουσείων πρίγκιπος Λιχτενστάϊν, Λονδίνου, Βιέννης κλπ., «Ὁ Κένταυρος» τοῦ μουσείου Κάϊζερ Φρειδερίκου κ.ἄ. Ἐπίσης ὁ Μπερτόλντο διεκρίθη ὡς ἄριστος κατασκευαστὴς μεταλλίων, ἐργασθεὶς μέγαν ἀριθμὸν ἐξ αὐτῶν, ἐν οἷς τῶν Φρ. ντὲ Μόντε-Φέλτρο, Φρ.

Digitized by Google

Ντιέγκο, Λαιτητίας Σανούδου, Μωάμεθ Β', Ἀλφόνσου ντ' Ἔστε, Φιλίππου τῶν Μεδίκων κ. ἄ. Ὁ Μπερτόλντο διετέλεσε τεχνίτης τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ διδάσκαλος τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Χ. Δ.

**Μπερτολὸν** (Bertholon), ***Πέτρος.*** Γάλλος φυσικὸς καὶ ἰατρὸς (1742—1800). Ἠσχολήθη λίαν μὲ τὰ φαινόμενα τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, εἰς ὃν ἀπέδιδε πάσας σχεδὸν τὰς ἀτμοσφαιρικὰς καταστάσεις ὡς καὶ μέγαν ἀριθμὸν ἀσθενειῶν. Ἔγραψε: «De l'électricité des metaux et des végétaux» (1783), «Les avantages que la physique et les arts peuvent retirer des aérostats» (1784), «Théorie des incendies, de leurs causes, des moyens de les preveuir et de les éteindre» (1787). Ο. Ρ.

**Μπέρτον** (Burton), ***Ἰωάννης Χίλλ.*** Ἄγγλος ἱστορικὸς καὶ νομομαθὴς (1809—1881). Ἔγραψε: «Βίος καὶ ἀλληλογραφία τοῦ Δαυῒδ Χιοὺμ» (1846), «Πολιτικὴ καὶ κοινωνικὴ οἰκονομία» (1849), «Ἡ νομικὴ ἐπιστήμη ἐν Σκωτίᾳ», «Εἰσαγωγὴ εἰς τὰ ἔργα τοῦ Ἱερεμίου Μπένθαμ», «Ἱστορία τῆς Σκωτίας ἀπὸ τῆς ἐπαναστάσεως μέχρι τῆς τελευταίας στάσεως τῶν Ἰακωβιτῶν» (1853), «Ἱστορία τῆς βασιλίσσης Ἄννης» κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπέρτον** (Burton), ***Ριχάρδος-Φραγκῖσκος.*** Περιώνυμος Ἄγγλος ἐξερευνητὴς (1821—1890). Ἀνῆλθεν ἐπὶ τῶν Κυανῶν ὀρέων, διέσχισε τὴν ἀνατολικὴν Ἀφρικήν, τῷ δὲ 1856, μεταβὰς εἰς τὴν Αἴγυπτον πρὸς ἐξερεύνησιν τῶν πηγῶν τοῦ Νείλου, ἀνεκάλυψε τὴν λίμνην *Ταγκανίκα.* Ἔγραψε: «Personal Narrative of a pilgrimage to El Medinah and Meccah» (1855), «First footsteps in Eastern Africa» (1856), «The Lake regions of central Africa» (1860), «A. Mission to Gelele, King of Dahomey» (1864) κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπέρτον** (Burton), ***Ροβέρτος.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς (1577—1639). Ἦτο λίαν δεισιδαίμων καὶ ἀπαισιόδοξος, ἠσχολήθη μὲ τὴν ἀστρολογίαν καὶ τὰ ὡροσκόπια καὶ ἔγραψε περιεργότατον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀνατομία τῆς μελαγχολίας ὑπὸ Δημοκρίτου τοῦ νεωτέρου» (1621). Ὁ Μπέρτον καλεῖται «Ἄγγλος Μονταίνι». Ὁ Στὲρν καὶ ἄλλοι χιουμορισταὶ ἠρύσθησαν πολλὰ ἐκ τοῦ μνησθέντος ἔργου του. Α. Δ.

— **Μπέρτον** (Burton), ***σὲρ Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος.*** Ἰρλανδὸς ζωγράφος (1816 — 1900). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς Δουβλῖνον παρὰ τοῖς ἀδελφοῖς Μπρόκας, ἀκολούθως δὲ παρηκολούθησε μαθήματα ἐν Λονδίνῳ καὶ Μονάχῳ. Διετέλεσε μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ὑδατογράφων καὶ διευθυντὴς τῆς Ἐθνικῆς πινακοθήκης τοῦ Λονδίνου, ἣν ἐπλούτισε διὰ καλλίστων ἔργων τέχνης, ἐν οἷς: «Ἡ παρθένος τοῦ βράχου» τοῦ Ντὰ Βίντσι, «Οἱ πρεσβευταὶ» τοῦ Χολμπάϊν, «Ὁ Κάρολος Α' ἔφιππος» τοῦ Βὰν Ντάϋκ, «Ὁ ναύαρχος Πουλίντο Παρέχα» τοῦ Βελάσκεθ κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπερτὸν** (Berton), ***Ἀρμάνδος.*** Γάλλος ζωγράφος (1854—1917). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Παρισίοις σχολὴν τῶν διακοσμητικῶν τεχνῶν καὶ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Καμπανέλ, ἐνεφανίσθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1875. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων του καταλέγονται: «Εὔα» (1802, μουσεῖον Ντουαί), «Νεᾶνις ἀνεγείρουσα τὴν κόμην της» (Ρουέν), «Ἡ τουαλέττα μετὰ τὸ λουτρὸν» (1906). Ι. Μ. Π.

—**Μπερτὸν** (Berton), ***Ἐρρῖκος-Μοντάν.*** Γάλλος συνθέτης (1764—1844). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἁρμονίας καὶ τῆς συνθέσεως ἐν τῷ νεοσυστάτῳ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων καὶ συνέθεσε τὰ μελοδράματα: «Αἱ ὑποσχέσεις γάμου», «Ὁ ὑπὸ δοκιμασίαν ἐραστής», «Μοντάνο καὶ Στεφανία» (1799), ὅπερ ἐσημείωσε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν, «Τὸ παραλήρημα», «Ἀλίνη, βασίλισσα τῆς Γολκόνδης» (1803), «Ἡ ἁρπαγὴ τῶν Σαβίνων», «Ρογῆρος τῆς Σικελίας», «Ἡ Νινὸν παρὰ τῇ χυρίᾳ Σεβινιέ», «Φραγκίσκα τοῦ Φουά», «Ἡ γοητεία τῆς φωνῆς» κ. ἄ. Ἡ ὑπόλοιπος παραγωγή του περιλαμβάνει εἰσαγωγάς, συμφωνίας, κανόνας, θρησκευτικὰ ἔργα, 5 ὀρατόρια κτλ., ὡς καὶ τὰ σύγγραμμα «Περὶ μηχανικῆς καὶ φιλοσοφικῆς μουσικῆς». Γ. Σ.

— **Μπερτὸν** (Berton), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Γάλλος στρατηγὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1769 καὶ ἀποκεφαλισθεὶς εἰς Πουατιὲ τῷ 1822. Ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὰς σχολὰς τῆς Μωριὲν καὶ τῆς Σαλόν, ὑπηρέτησε διαδοχικῶς ὑπὸ τὸν Μορώ, τὸν Μπερναρδόττι καὶ τὸν Βικτώρ, διακριθεὶς εἰς τὴν μάχην τῆς Αὑστερλίτσης καὶ τὰς ἐκστρατείας τῆς Πρωσσίας καὶ Ἱσπανίας. Προαχθεὶς εἰς ὑποστράτηγον τῷ 1813, μετέσχε τῆς μάχης τῆς Τουλούζης καὶ ἦτο διοικητὴς τῶν δραγόνων κατὰ τὴν μάχην τοῦ Βατερλῶ. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς στρατιᾶς τοῦ Λείγηρος, ἐδημοσίευσεν «Ἱστορικὸν σημείωμα περὶ τῆς μάχης τοῦ Βατερλῶ», ἐπαινεθεὶς θερμῶς ὑπὸ τοῦ φιλελευθέρου τύπου. Κατὰ τὴν Παλινόρθωσιν διεγράφη ἐκ τῶν πινάκων τῶν ἀξιωματικῶν, μισήσας δ' ἕνεκα τούτου τοὺς Βουρβώνους ἐγένετο μέλος τῆς μυστικῆς ἰταλικῆς ἑταιρείας τῶν Καρβονάρων. Τῷ 1822 ἡ ὀργάνωσις αὐτὴ τῷ ἀνέθηκε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἐπαναστατικοῦ κινήματος, τὸ ὁποῖον ἐπρόκειτο νὰ ἐκραγῇ εἰς Σωμύρ. Μετά τινας ὅμως ἀτυχεῖς ἀποπείρας ἐν Σωμὺρ καὶ Λαροσέλ, ὁ Μπερτὸν καὶ πολλοὶ ἐκ τῶν συντρόφων του συνελήφθησαν καὶ καταδικασθέντες ὑπὸ τοῦ κακουργοδικείου τοῦ Πουατιὲ ἐστάλησαν εἰς τὴν λαιμητόμον.

— **Μπερτὸν-*Μοντὰν*** (Berton-Montan), ***Κάρολος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ἠθοποιὸς (1820—1872). Ἐξελθὼν τοῦ Κονσερβατουάρ, ἐνεφανίσθη ἀπὸ σκηνῆς τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας τῷ 1837 καὶ βραδύτερον τοῦ Βωντεβίλλ. Κατόπιν μετέβη εἰς Βιέννην καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πετρούπολιν (1845), ὅπου αἱ παραστάσεις του ἐσημείωσαν θριαμβευτικὴν ἐπιτυχίαν. Ἐπανελθὼν εἰς Παρισίους διεκρίθη ἐφεξῆς ὡς εἷς τῶν καλυτέρων Γάλλων ἠθοποιῶν τῆς ἐποχῆς του. Ἡ σύζυγός του *Καρολίνα Μπερτόν,* θυγάτηρ τοῦ ἠθοποιοῦ Σαμσόν, ἔγραψεν ἐλαφρὰ μυθιστορήματα καὶ διηγήματα θελκτικῆς χάριτος, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Περιπέτειαι μιᾶς κούκλας τῆς Νυρεμβέργης» (1845), «Οἱ εἰκοσαετεῖς φιλόσοφοι» (1851) κ. ἄ. Γ. Ζ.

— **Μπερτὸν-*Μοντὰν*** (Berton), ***Πέτρος.*** Γάλλος συνθέτης (1727—1780). Ἐγένετο γνωστὸς διά τινων μελοδραμάτων καὶ διὰ διασκευῶν διαφόρων τεμαχίων λυρικῶν ἔργων τοῦ Λούλλυ, Καμπρά, Ραμὼ κτλ. Γ. Σ.

—**Μπερτὸν - *Μοντὰν*** (Berton-Montan), ***Πέτρος-Φραγκῖσκος-Σαμουήλ.*** Γάλλος ἠθοποιὸς καὶ δραματικὸς συγγραφεύς, υἱὸς τοῦ Καρόλου-Φραγκίσκου. (1842—1912). Διδαχθεὶς τὴν δραματικὴν τέχνην ἀπὸ τὸν πάππον του ἠθοποιὸν Σαμσόν, ἔπαιξεν ἀπὸ τοῦ 1859 ρόλους πρωταγωνιστοῦ ἀπὸ σκηνῆς τῶν μεγαλυτέρων παρισινῶν θεάτρων. Ἐπί τινα χρόνον διηύθυνε τὸ θέατρον τῆς «Παρισινῆς Κωμῳδίας». Ἔγραψε πολλὰ θεατρικὰ ἔργα, ἐν οἷς: «La vertu de ma femme», κωμῳδία (1867), «Didier» τρίπρακτον δρᾶμα (1868), «Le Chouans», δρᾶμα (1894) κλπ. —Ω.

**Μπέρτον-ἀπὸν-Τρέντ** (Burton - upon - Trent) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Στάφφορντ, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Τρέντ, εἰς ἀπόστασιν 34 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Στάφφροντ. Κάτ. 55.000. Εἶναι πόλις βιομηχανικὴ καὶ τὸ ἀρχαιότερον καὶ σημαντικώτερον κέντρον ζυθοποιΐας τῆς Ἀγγλίας. Τινὰ τῶν ἐργοστασίων της χρονολογοῦνται ἀπὸ 300 ἐτῶν. Ἔχει ἐπίσης μεγάλα χυτήρια. Εἶναι σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ ἔχει ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ γέφυραν μὲ 29 τόξα, μήκους 471 μ. Ἡ γέφυρα αὐτὴ ὑφίστατο ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Νορμανδῶν καὶ εἶχε τότε 36 τόξα, ἅτινα κατεστράφησαν κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ἐδουάρδου Β' κατὰ τῶν ὀπαδῶν τοῦ Θωμᾶ τοῦ Λανκάστερ τῷ 1322, καθ' ἣν ὁ πρῶτος κατετρόπωσε τοὺς δευτέρους. Μ. Δ. Β.

**Μπερτόνι** (Bertoni), ***Φερδινάνδος-Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς συνθέτης (1725—1813). Ἔγραψε 44 μελοδράματα, ἀναβιβασθέντα ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Ἀγγλίᾳ, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ «Ὀρφεύς», ὡσαύτως 12 ὀρατόρια, ἓν Miserere καὶ πολλὰ ἄλλα ἔργα θρησκευτικά, μουσικῆς δωματίου καὶ καντάτας. Γ. Σ.

**Μπερτοὺ** (Berthoud), ***Φερδινάνδος.*** Βέλγος μηχανικὸς (1727—1807), ζήσας ἰδίως ἐν Παρισίοις καὶ ἐπιδοθεὶς ἰδιαιτέρως εἰς τὴν κατασκευὴν ὡρολογίων ἀκριβείας δι' ἐπιστημονικούς, γεωγραφικοὺς καὶ ναυτικοὺς σκοπούς. Αἱ ἐργασίαι του αὗται ὑπῆρξαν πολύτιμοι διὰ τὴν ἀστρονομίαν καὶ τὴν ναυτιλίαν τῆς ἐποχῆς του, δι' ὃ καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ τῆς Βασιλικῆς Ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ διωρίσθη μηχανικὸς καὶ ὡρολογοποιὸς τοῦ γαλλικοῦ ναυτικοῦ. Ἔγραψε διάφορα συναφῆ ἔργα, ἐν οἷς: «Γεωγραφικὰ μήκη διὰ τὴν μέτρησιν τοῦ χρόνου» (1755), «Ἱστορία τῆς μετρήσεως τοῦ χρόνου διὰ τῶν ὡρολογίων» (1802) κ. ἄ. —Ω.

**Μπερτουμῆς.** Ἐπώνυμον παλαιᾶς ἑλληνικῆς οἰκογενείας τῆς Τεργέστης, ἐκ Μπερτουμάτων τῆς Μυτιλήνης καταγομένης. Ἐγκατασταθεῖσα αὐτόθι ἀπὸ τοῦ 1804, ἔδρασε μεταξὺ τῶν ὁμογενῶν κοινωφελῶς καὶ ἀνεδείχθη μία τῶν πλουσιωτέρων καὶ ἐπιφανεστέρων οἰκογενειῶν τῆς πόλεως. Κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν Ἐπανάστασιν καὶ πρὸ αὐτῆς προσήνεγκε τεράστια ποσὰ ὑπὲρ τοῦ Ἀγῶνος καὶ κατόπιν ὑπὲρ τῆς ἀνορθώσεως τοῦ ἔθνους, ἐπροστάτευσε τοὺς ἐκεῖ καταφεύγοντας Ἕλληνας κτλ. Σημαντικώτερα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης ὑπῆρξαν:

— 1) ***Κωνσταντῖνος*** (1806—1866). Ἱδρυτὴς ἐν Τεργέστῃ τοῦ μεγαλυτέρου τότε εἰσαγωγικοῦ οἴκου ἐξ Ἀνατολῆς. Ἀνήγειρε τὸ νοσοκομεῖον καὶ ὀρφανοτροφεῖον τῆς πόλεως καὶ διετέλεσε πρόεδρος τῆς ἑλληνικῆς κοινότητος.

— 2) ***Πολυξένη.*** Θυγάτηρ τοῦ προηγουμένου. Ἐνυμφεύθη τὸν βαρῶνον Δ. Οἰκονόμον, εἰς τὴν πρωτοβουλίαν της δὲ ὀφείλονται πᾶσαι σχεδὸν αἱ δωρεαὶ τοῦ συζύγου της πρὸς τὸ ἔθνος.

— 3) ***Ἀδελαῒς*** (1853—1917). Ἀδελφὴ τῆς προηγουμένης. Σπανίας μορφώσεως καὶ γλωσσομαθής, ἵδρυσε καὶ διηύθυνεν ἐν Κερκύρᾳ τὸν ὑπὲρ τῶν πτωχῶν φυλακισμένων «Σύνδεσμον τῶν κυριῶν», ὅ[τι]νος διετέλεσε πολλάκις πρόεδρος.

— 4) ***Λουκιανός.*** Ἀδελφὸς τῶν προηγουμέν[ων]. Ἵδρυσε τὴν «Banca Commeriale Triestina» (= Ἐμπορικὴ Τράπεζα τῆς Τεργέστης) καὶ ἀνεδείχθη εἷ[ς] τῶν πλουσιωτέρων Εὐρωπαίων τραπεζιτῶν. Ὑπῆ[ρξε] σύμβουλος πολλῶν ἀγαθοεργῶν ἱδρυμάτων καὶ ἐβο[ή]θησεν ὑλικῶς καὶ ἠθικῶς τὸ ἑλληνικὸν στοιχεῖον. Π. Κ.

**Μπέρτουχ** (Bertuch), ***Φρειδερῖκος-Ἰουστῖνος.*** Γερμανὸς συγγραφεὺς (1747—1822). Εἰργάσ[θη] ὑπὲρ τῆς διαδόσεως τῆς ἱσπανικῆς φιλολογ[ίας], ἐξέδωκε μετάφρασιν τοῦ «Δὸν Κιχώτου» (1[...]) καὶ ἐδημοσίευσε διάφορα ἔργα περὶ τῆς φιλολο[γίας] καὶ τοῦ θεάτρου τῆς Ἱσπανίας καὶ Πορτο[γαλίας]. Ἐγένετο κυρίως γνωστὸς διὰ τῶν πολ[υα]ρίθμων περιοδικῶν, τὰ ὁποῖα ἵδρυσε, διὰ τοῦ [...] χιλιάδας ἀντιτύπων κυκλοφορήσαντος «Βιβλ[ίου εἰ]κόνων διὰ παιδία» (1790—1822) καὶ διὰ τῆς ἑκ[α]τόμου «Κυανῆς βιβλιοθήκης ὅλων τῶν ἐθνῶν» (1790—1797). Αἱ «Γεωγραφικαὶ Ἐφημερίδες» [...] (1798—1824) συνετέλεσαν τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἀνά[π]τυξιν τῆς σπουδῆς τῆς γεωγραφίας. Γ. Ε. Κ.

**Μπέρτραμ** (Bertram), ***σὲρ Ἀντώνιος.*** Ἄγγλος νομομαθής. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Λονδίνῳ κα[ὶ] τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κανταβριγίας καὶ τῷ 18[...] ἤρχισεν ἐξασκῶν τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Κα[τ]όπιν προσελήφθη εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσία[ν] καὶ ἀπὸ τοῦ 1902 μέχρι τοῦ 1907 διετέλεσε γεν[ι]κὸς εἰσαγγελεὺς ἐν ταῖς νήσοις Μπαχάμα τῶν Μι[κ]ρῶν Ἀντιλλῶν. Τῷ 1907 διωρίσθη πάρεδρος τοῦ Ἀνωτάτου Δικαστηρίου ἐν Κύπρῳ, παραμεί[νας] εἰς τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ 1911, ὁπότε ἀπεστάλη ὡς ἀρχιδικαστὴς ἐν Κεϋλάνῃ (1911-1918). Ἀπὸ τοῦ 1921 μέχρι τοῦ 1925 διετέλεσε πρόεδρος τῶν εἰδικῶν ἐπιτροπῶν, αἵτινες ἱδρύθησαν ὑπὸ τῆς βρεττανικῆς κυβερνήσεως πρὸς ἐξέτασιν τῶν ὑποθέσεων τοῦ ὀρθοδόξου πατριαρχείου Ἱεροσολύμων. Μετὰ τετραετῆ ἐπίπονον μελέτην ἐν Παλαιστίνῃ συνέταξε μακρὸν ὑπόμνημα περὶ τῆς ἁγιοταφικῆς ἀδελφότητος, τοῦ πατριαρχικοῦ θρόνου καὶ τῶν ἱερῶν προσκυνημάτων, ὅπερ ὑπέβαλεν εἰς τὴν ἀγγλικὴν ἀρμοστείαν καὶ εἰς τὴν βρεττανικὴν κυβέρνησιν. Διὰ τοῦ ὑπομνήματος τούτου ὁ Μπέρτραμ προτείνει διαφόρους μεταρρυθμίσεις, ἀποβλεπούσας κυρίως εἰς τὴν οἰκονομικὴν ἐξυπηρέτησιν τοῦ Πατριαρχείου, ἀλλὰ θιγούσας τὰ προνόμια τῆς ἁγιοταφικῆς ἀδελφότητος καὶ εὐνοούσας τὰς ἀπόψεις τοῦ ἀραβικοῦ στοιχείου. Τῷ 1927 ἡ Ἱερὰ Σύνοδος τοῦ πατριαρχείου Ἱεροσολύμων διεμαρτυρήθη κατὰ τῶν προτεινομένων μεταρρυθμίσεων. Τὴν διαμαρτυρίαν ταύτην ἐνίσχυσε κατόπιν καὶ ἡ Ἱερὰ Σύνοδος τῆς Ἑλλάδος, ἥτις ἐξέφερε τὴν γνώμην ὅτι ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ θὰ ἔπρεπε νὰ θιγῇ τὸ αἰ[ω]νόβιον καθεστὼς τῆς ἁγιοταφικῆς ἀδελφότητος καὶ τῶν ἱερῶν προσκυνημάτων. Τὸ ὑπόμνημα τοῦ Μπέρτραμ ἐξεδόθη ὑπὸ τῆς ἐν Παλαιστίνῃ βρεττανικῆς κατοχῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ Ὀρθόδοξον Πατριαρχεῖον Ἱεροσολύμων» ἀγγλιστί, ἀραβιστὶ καὶ ἑλληνιστί. Μ. Δ. Β.

**Μπερτρὰν** (Bertrand), ***Ἀλέξανδρος.*** Γάλλος ἀρχαιολόγος (1820—1902). Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις, συνεπλήρωσε δὲ τὴν ἀρχαιολογικήν του μόρφωσιν ἐν τῇ Γαλλικῇ σχολῇ τῶν Ἀθηνῶν. Ἠσχολήθη ἰδιαιτέρως μὲ τὴν ἑλληνικὴν ἀρχαιότητα καὶ τὴν ἔρευναν τῆς ἱστορίας τῶν Γαλατῶν ἀπὸ τῶν προϊστορικῶν χρόνων μέχρι τῆς ρωμαϊκῆς κατακτήσεως. Τῷ 1862 διωρίσθη ἐπιμελητὴς τοῦ μουσείου τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1881 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν καὶ τῶν Γραμμάτων. Τῷ 1883 ἀνετέθη ἡ διδασκαλία τῆς ἐθνικῆς γαλλικῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῇ σχολῇ τοῦ Λούβρου. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Οἱ θεοὶ-προστάται τῶν Ἑλλήνων καὶ Τρώων ἡρώων τῆς Ἰλιάδος» (1857), «Μελέται ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας καὶ ἀρχαιολογίας» (1858), «Αἱ ἐν Γαλατίᾳ ρωμαϊκαὶ ὁδοὶ» (1863), «Ἡ Γαλατικὴ καὶ Γαλατικὴ ἀρχαιολογία» (1876), «Ἡ Γαλατία πρὸ τῶν Γαλατῶν ἐπὶ τῇ βάσει τῶν μνημείων καὶ τῶν κειμένων» (1884—1886), «Ἡ θρησκεία τῶν Γαλατῶν» (1897) κ. ἄ.

— **Μπερτρὰν** (Bertrand), ***Γαβριὴλ-Αἰμίλιος.*** Γάλλος χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἀπὸ τοῦ 19[...] διηύθυνε τὸ τμῆμα βιολογικῆς χημείας ἐν τῷ ἰνστιτούτῳ Παστέρ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1905 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων. Συνετέλεσε σημαντικῶς εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς [...]γικῆς χημείας διὰ πολλῶν αὐτοῦ ἀνακαλύψεων. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἠσχολήθη εἰς τὴν τελειοποίησιν τῶν πολεμικῶν ἀερίων τῶν χρησιμοποιουμένων ὑπὸ τῶν Γάλλων καὶ τὴν ἔρευναν τῆς συστάσεως τῶν ὑπὸ τῶν Γερμανῶν χρησιμοποιηθέντων ἀερίων πρὸς ἀνακάλυψιν μέσων ἀμύνης κατὰ τῶν ἀποτελεσμάτων αὐτῶν. Ἀπὸ τοῦ 1923 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν.

— **Μπερτρὰν** (Bertrand), ***Ἐρρῖκος - Γρατιανός*** κόμις —. Γάλλος στρατηγὸς (1773—1844). Καταταχθεὶς εἰς τὸν στρατὸν τῷ 1792, μετέσχεν ὡς [...]

Digitized by Google

γὸς τοῦ μηχανικοῦ τῆς εἰς Αἴγυπτον ἐκστρατείας, ὅπου ἐκτιμηθεὶς ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος προήχθη ἀλλεπαλλήλως μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποστρατήγου. Ἠκολούθησεν ἔκτοτε τὸν Βοναπάρτην εἰς ὅλους τοὺς πολέμους αὐτοῦ καὶ διεδέχθη τῷ 1813 τὸν Ντυρὸκ εἰς τὴν θέσιν τοῦ ἀνακτορικοῦ στρατάρχου. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, μετέβη μετ' αὐτοῦ εἰς Ἔλβαν καὶ κατόπιν εἰς Ἁγίαν Ἑλένην, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1821. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγετο βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1830. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθη (1847) τὸ ἔργον του: «Αἱ εἰς Αἴγυπτον καὶ Συρίαν ἐκστρατεῖαι, ἀπομνημονεύματα χρήσιμα διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ Ναπολέοντος, ὑπαγορευθέντα ὑπὸ τοῦ ἰδίου εἰς τὸν στρατηγὸν Μπερτράν».

— **Μπερτράν** (Bertand), ***Ἰωσὴφ - Λουδοβῖκος - Φραγκῖσκος***. Διακεκριμένος Γάλλος μαθηματικὸς (1822—1900), ἀδελφὸς τοῦ ἀρχαιολόγου *Ἀλεξάνδρου Μπερτράν*. Τῷ 1839 εἰσῆλθε, πρῶτος μεταξὺ τῶν συνυποψηφίων του, εἰς τὴν Πολυτεχνικὴν Σχολήν, ἐξῆλθε δ' αὐτῆς ὡς μηχανικὸς μεταλλειολόγος. Ἐπροτίμησεν ὅμως τὴν διδασκαλίαν τῶν μαθηματικῶν καὶ κατέλαβε διαδοχικῶς θέσεις καθηγητοῦ εἰς διάφορα ἀνώτερα ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα. Τῷ 1862, ἀποθανόντος τοῦ μαθηματικοῦ *Μπιό*, διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς γενικῆς φυσικῆς καὶ τῶν μαθηματικῶν ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας. Ἀπὸ τοῦ 1866 εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν καὶ ἀπὸ τοῦ 1884 ἰσόβιος αὐτῆς γραμματεύς, τῷ δὲ 1884 ἐξελέγη εἰς τὴν θέσιν τοῦ Δουμᾶ ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἀκαδημίᾳ. Ὁ Μπερτρὰν ὑπῆρξε πρὸ παντὸς ἐξαίρετος διδάσκαλος. Τὰ μαθήματά του ὅπως καὶ τὰ βιβλία του διέκρινε πάντοτε ἐξαιρετικὴ σαφήνεια καὶ ἄκρα ἐπιμέλεια περὶ τὴν διατύπωσιν. Ἐδημοσίευσε πολυαρίθμους μελέτας καὶ πραγματείας εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν», εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Πολυτεχνικῆς Σχολῆς» καὶ ἄλλα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, εἰς τόμους δ' ἐπίσης πολλὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Ὁ Ἀραγὼ καὶ ὁ ἐπιστημονικὸς αὐτοῦ βίος» (1865), «Οἱ ἱδρυταὶ τῆς συγχρόνου Ἀστρονομίας» (1865), «Ἀκαδημία τῶν Ἐπιστημῶν καὶ οἱ ἀκαδημαϊκοὶ αὐτῆς ἀπὸ τοῦ 1666 μέχρι τοῦ 1793» (1868), «Ὁ Ντ' Ἀλαμπὲρ» (1889), «Μπλαῒζ Πασκάλ» (1790) κ.λ.π. Τὰ διδακτικὰ βιβλία τοῦ Μπερτρὰν εἶχον ἐξαιρετικὴν διάδοσιν κατὰ τὴν ἐποχήν του, δὲν λείπουν δὲ καὶ σήμερα ἀκόμη ἀπὸ τὰς βιβλιοθήκας τῶν μαθηματικῶν. Μεταξὺ τούτων σημειοῦμεν: «Ἐγχειρίδιον διαφορικοῦ καὶ ὁλοκληρωτικοῦ λογισμοῦ» (1866—1870), «Ἐγχειρίδιον θερμοδυναμικῆς» (1887), «Ἐγχειρίδιον λογισμοῦ τῶν πιθανοτήτων» (1889), «Μαθήματα ἐπὶ τῆς μαθηματικῆς θεωρίας τοῦ ἠλεκτρισμοῦ» (1889). Γ. Ζ.

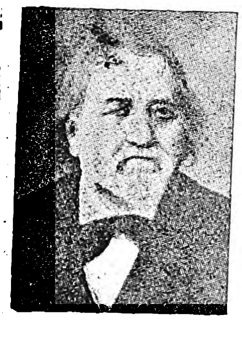

*Ἰωσὴφ Μπερτράν.*

— **Μπερτράν** (Bertrand), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος μαθηματικὸς (1731—1812). Συνέγραψεν ἓν βιβλίον στοιχειώδους γεωμετρίας, ἀσχοληθεὶς κυρίως εἰς τὴν θεωρίαν τῶν παραλλήλων καὶ προσπαθήσας ν' ἀποδείξῃ τὸ αἴτημα τοῦ Εὐκλείδου. Ἡ ἀπόδειξις ὅμως αὐτὴ δὲν ἀνταποκρίνεται πλήρως εἰς τὰς ἀξιώσεις τῆς αὐστηρᾶς λογικῆς. Ν. Γ.

— **Μπερτράν** (Bertrand), ***Λουδοβῖκος-Μαρία-Αἰμίλιος***. Γάλλος φιλόλογος καὶ λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1886. Ἐδίδαξεν ἐν ἀρχῇ εἰς διάφορα γυμνάσια, ἀπὸ δὲ τοῦ 1891 μέχρι τοῦ 1900 ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ῥητορικῆς εἰς τὸ Λύκειον τοῦ Ἀλγερίου. Ἐκεῖ εὑρισκόμενος ἔγραψε τὸ πρῶτόν του μυθιστόρημα «Τὸ αἷμα τῶν φυλῶν» (1899). Περιοδεύσας ἐπὶ μακρὸν ἀνὰ τὰ παράλια τῆς Μεσογείου, ἐνεπνεύσθη ἐκ τῶν ταξιδίων τούτων σειρὰν φιλολογικῶν ἔργων πολλῆς ἀξίας, ἐν οἷς: «Ἀνταύγεια τῆς Ἀνατολῆς» (1909), «Τὸ βιβλίον τῆς Μεσογείου» (1911), «Ἡ Ἑλλὰς τοῦ ἡλίου καὶ τῶν τοπίων» (1908), «Εἰς τὰ λουτρὰ τοῦ Φαλήρου» κλπ. Ἐκ τῶν ἄλλων του βιβλίων ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ὁ ἀντίπαλος τοῦ Δὸν-Ζουάν» (1903), «Ὁ κῆπος τοῦ θανάτου» (1905), «Ὁ ὑφάντης» (1920), μεγαλυτέραν δ' ἐξ ὅλων ἐπιτυχίαν ἐσημείωσε τὸ μυθιστόρημά του «Ὁ πολυαγαπημένος Πεπέτ» (1904), ἐπανεκδοθὲν τῷ 1920 ὑπὸ τὸν τίτλον «Πεπὲτ καὶ Βαλτασάρ». Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ ἱστορικὰς μελέτας, ἐν αἷς «Ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ'» (1923).

— **Μπερτράν** (Bertrand), ***Μάρκελλος-Ἀλέξανδρος***. Γάλλος μηχανικὸς καὶ γεωλόγος (1847—1907). Ἐσπούδασε πολιτικὸς μηχανικὸς καὶ μεταλλειολόγος, ἐδίδαξε δὲ μετέπειτα γεωλογίαν εἰς τὴν Μεταλλειολογικὴν Σχολήν. Βραδύτερον ἐτοποθετήθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Γεωγραφικοῦ χάρτου τῆς Γαλλίας, ἐν τῇ ὁποίᾳ καὶ ἐξηκολούθησεν ἐργαζόμενος μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἀπὸ τοῦ 1896 εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν. Ἐδημοσίευσεν ἀξιόλογα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἡ δροσειρὰ τῶν Ἄλπεων καὶ ὁ σχηματισμὸς τῆς εὐρωπαϊκῆς ἠπείρου» (1887), «Τὰ ὄρη τῆς Σκωτίας» (1892), «Περὶ τῆς ἀντιστοιχίας τῶν ἀνθρακοφόρων κοιτασμάτων τῆς βορείου Γαλλίας καὶ τῆς νοτίου Ἀγγλίας» (1894) κ. ἄ., καθὼς καὶ πολυαρίθμους μελέτας ἐπὶ τῆς γεωλογίας τῆς Γαλλίας καὶ τῶν Ἄλπεων κλπ.

— **Μπερτράν** (Bertrand), ***Φίλιππος***. Γάλλος μηχανικὸς καὶ γεωλόγος (1730—1811). Διετέλεσεν ἀρχιμηχανικὸς (1769) καὶ κατόπιν γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῶν ὁδῶν καὶ γεφυρῶν (1787). Ἔργον αὐτοῦ ὑπῆρξεν ἡ διῶρυξ ἡ ἑνοῦσα τὸν ποταμὸν Doubs μετὰ τοῦ Saône (1783—1790), ὁ ἴδιος δὲ εἶχεν ἀρχίσει τῷ 1890 τὴν κατασκευὴν τῆς διώρυγος Ροδανοῦ—Ρήνου. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Σύστημα ποταμίου ναυσιπλοΐας» (1793) καὶ «Νέαι ἀρχαὶ τῆς γεωλογίας» (1798).

— **Μπερτρὰν** *ντὲ* ***Μολλεβίλλ*** (Bertrand de Molleville), ***Ἀντώνιος-Φραγκῖσκος***. Γάλλος πολιτικὸς (1744—1818). Τῷ 1788 ἦτο γενικὸς διοικητὴς ἐν Βρεττάνῃ, ὑπουργὸς δὲ τῶν Ναυτικῶν τῷ 1789 κατὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, τὴν ὁποίαν ἀντεπολιτεύθη μετὰ πολλῆς ἐπιτηδειότητος, διευκολύνας τοὺς ὑπ' αὐτὸν ἀξιωματικοὺς νὰ δραπετεύσουν εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Παραιτηθεὶς τῷ 1792, ἐτέθη ὑπὸ κατηγορίαν, κατώρθωσεν ὅμως νὰ διαφύγῃ εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1814. Ἐκεῖ εὑρισκόμενος ἐδημοσίευσεν ἐνδιαφέρον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Μυστικὰ ἀπομνημονεύματα, χρήσιμα διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ τελευταίου ἔτους τῆς βασιλείας τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ'». —Ω.

**Μπερτράντ** *ντὲ* ***Μονφὸρ*** (Bertrade de Montfort). Γαλλὶς ἐρωμένη τοῦ Φιλίππου Α'. Ἦτο θυγάτηρ τοῦ κόμιτος Σίμωνος Α' τοῦ Μονφὸρ καὶ συνεζεύχθη τῷ 1089 τὸν Φοῦλκον Δ', κόμιτα τοῦ Ἀνζοῦ, τὸν ὁποῖον ἐγκατέλιπε τῷ 1092, διὰ νὰ συζήσῃ παρανόμως μετὰ τοῦ βασιλέως. Ἡ αὐστηρὰ παρέμβασις τοῦ πάπα δὲν ἴσχυσε νὰ χωρίσῃ τοὺς δύο ἐραστάς. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Φιλίππου Α' ἡ Μπερτράντ ἀπεσύρθη εἰς τὸ μοναστήριον τοῦ Φονταινεμπλώ, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1118. —Ω.

**Μπερτρὲν** (Bertrin), ***Γεώργιος***. Γάλλος κληρικὸς καὶ συγγραφεὺς (1851—1924). Μετὰ τὰς θεολογικάς του σπουδὰς ἔλαβε καὶ δίπλωμα φιλολογίας, ἐχρημάτισε δὲ καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς φιλολογίας καὶ κατόπιν τῆς γαλλικῆς φιλολογίας εἰς τὸ ἐν Παρισίοις καθολικὸν ἰνστιτοῦτον. Ἐδημοσίευσε πολλὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Μεγάλαι σύγχρονοι φυσιογνωμίαι τοῦ καθολικισμοῦ» (1895), «Τὸ ὁμηρικὸν ζήτημα» (1898), «Ὁ Κικέρων καὶ ἡ συνωμοσία τοῦ Κατιλίνα» (1905), «Ἡ ἐγκληματικότης ἐν Γαλλίᾳ» (1904), «Σαὶν - Μπὲβ καὶ Σατωβριάνδος» (1906) κτλ. —Ω.

**Μπὲρτς** (Birch), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος ἱστορικὸς (1705—1766). Διετέλεσεν ἔφορος τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου καὶ ἔγραψε: «Γενικὸν λεξικόν, ἱστορικὸν καὶ κριτικὸν» (1734—1741) ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ λεξικοῦ τοῦ Βαΰλου, βιογραφίας μεγάλων ἀνδρῶν, «Ἀπομνημονεύματα τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ» κ. ἄ.

— **Μπὲρτς** (Birch), ***Σαμουήλ***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος (1813—1885). Ἠσχολήθη περὶ τὴν αἰγυπτιακήν, τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν ρωμαϊκὴν ἀρχαιολογίαν, καὶ ἔγραψε: «Κατάλογος τῶν ἀρχαιοτήτων τοῦ Βρεττανικοῦ Μουσείου» (1842), «Ἡ θεὰ τοῦ Νείλου», «Κατάλογος τῶν ἑλληνικῶν ἀγγείων» (1851), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν μελέτην τῶν ἱερογλυφικῶν» (1857), «Ἱστορία τῆς ἀρχαίας ἀγγειοπλαστικῆς». Α. Δ.

**Μπερτσέλιους** (Berzelius), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος***. Σουηδὸς χημικὸς (βλ. λ. *Βερζέλιος*).

**Μπερτὼ** (Bertaut) ***Ἰωάννης***. Γάλλος ἱεράρχης καὶ ποιητὴς (1552—1611). Ἡ φιλία του πρὸς τὸν Ρονσάρ, τοῦ ὁποίου ἦτο ἔνθερμος θαυμαστής, ἔδωκεν εἰς αὐτὸν τὴν ἀφορμὴν νὰ προσέξῃ ὅτι δὲν ἐστερεῖτο καὶ ὁ ἴδιος ποιητικοῦ ταλάντου. Οἱ πρῶτοι δημοσιευθέντες στίχοι του ὑπερήρεσαν, τόσον δέ, ὥστε ὁ Ἐρρῖκος Γ' τὸν διώρισε γραμματέα του ἰδιαιτέρου του γραφείου καὶ ἀναγνώστην του. Ὁ Μπερτὼ εὑρίσκετο πλησίον τοῦ βασιλέως τὴν στιγμὴν τῆς δολοφονίας αὐτοῦ ὑπὸ τοῦ Ἰακώβου Κλεμάν. Ὁ Ἐρρῖκος Δ' κατόπιν τῷ παρεχώρησε τὴν πλουσίαν μονὴν τοῦ Ὠναὶ (1594), ἡ δὲ βασίλισσα Μαρία τῶν Μεδίκων τὸν προσέλαβεν ἱερέα της. Τῷ 1606 προήχθη εἰς ἐπίσκοπον ἐν Νορμανδίᾳ, ὅπου ἔζησε τὰ ὑπόλοιπα ἔτη τοῦ βίου του. Ἡ πρώτη συλλογὴ τῶν ποιημάτων του ἐξεδόθη τῷ 1602 ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ περιελάμβανεν ᾄσματα φαιδρὰ κατὰ τὸ πλεῖστον εὐφευρέσεως, ἀπὸ τὰ ὁποῖα δὲν λείπει τὸ αἴσθημα καὶ ἡ χάρις, μολονότι τὰ ἀσχημίζει ἐνίοτε ὑπερβολικὴ ἐκζήτησις. Δευτέρα συλλογή, ἐκδοθεῖσα τῷ 1605, περιελάμβανε μετάφρασιν εἰς στίχους ἡρωϊκοὺς τοῦ 6' βιβλίου τῆς «Αἰνειάδος» καὶ ἐμμέτρους παραφράσεις διαφόρων ἐκκλησιαστικῶν ψαλμῶν. Ὁ Μπερτὼ ἀφῆκεν ἐξ ἄλλου «Ἐπικήδειον λόγον εἰς τὸν Ἐρρῖκον Δ'», μετάφρασιν βιβλίων τινῶν τοῦ Ἁγίου Ἀμβροσίου, πραγματείας ἐπὶ θρησκευτικῶν ἀμφισβητουμένων θεμάτων κλπ. —Ω.

**Μπέρυ** (Bury). *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ τοῦ Λαγκάστερ εἰς ἀπόστασιν 16 χιλ. βορείως τοῦ Μάντσεστερ. Κατ. 58.000. Εἶναι ἀρχαία πόλις, εἰς τὴν ὁποίαν διασῴζονται ρωμαϊκαὶ ἀρχαιότητες. Ἐν αὐτῇ ἐγεννήθη ὁ διάσημος πολιτικὸς Ροβέρτος Πήλ, οὗτινος μέγας ἀνδριὰς κοσμεῖ τὴν κεντρικὴν πλατεῖαν τῆς πόλεως. Π. Γ. Λ.

**Μπέρυ** (Bury), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος φιλόλογος καὶ ἱστορικὸς (βλ. λ. *Μπιούρυ*).

**Μπερὺλλ** (Bérulle) ***Πέτρος ντὲ***—. Γάλλος καρδινάλιος (1575—1629). Περιεβλήθη τὸ ἱερατικὸν σχῆμα ἀπὸ νεανικῆς ἡλικίας, διεκρίθη εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς διὰ τὴν εὐρυμάθειάν του, τὴν θερμὴν του πίστιν, τὸν ἤπιον καὶ διαλλακτικὸν χαρακτῆρά του, τὴν μετριοπάθειαν καὶ τὴν ἐξαιρετικὴν ἐν ταῖς συζητήσεσιν ἱκανότητα. Ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς διαφόρους διασκέψεις ἐπὶ θρησκευτικῶν καὶ δογματικῶν ζητημάτων, αὐτὸς δὲ ὑπῆρξεν ὁ εἰσαγαγὼν ἐν Γαλλίᾳ τὰ μοναχικὰ τάγματα τῶν Καρμηλιτῶν καὶ τὴν ἀδελφότητα τῶν ὀρατοριανῶν (1613). Κατορθώσας νὰ φέρῃ εἰς συνδιαλλαγὴν τὴν βασιλομήτορα μετὰ τοῦ υἱοῦ της Λουδοβίκου ΙΓ', ἐπεφορτίσθη κατόπιν ὑπ' αὐτοῦ νὰ μεταβῇ εἰς Ρώμην καὶ ζητήσῃ παρὰ τοῦ πάπα ἄδειαν γάμου τῆς ἀδελφῆς του Ἐρριέττης μετὰ τοῦ προτεστάντου βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Καρόλου Α'. Ὁ Μπερὺλλ ἔφερεν εἰς ἀγαθὸν πέρας τὴν ἀποστολήν του ταύτην καὶ συνώδευσεν ὁ ἴδιος τὴν μελλόνυμφον πριγκίπισσαν εἰς Λονδῖνον (1625). Τῷ 1626 ἀπεστάλη πρέσβυς εἰς Ἱσπανίαν, ὅπου διεπραγματεύθη τὴν συνθήκην τοῦ Μουσον, τὸ δ' ἑπόμενον ἔτος ἔστερξε νὰ λάβῃ τὸ ἀξίωμα τοῦ καρδιναλίου, τὸ ὁποῖον, ἀπὸ ἐτῶν προσφερόμενον εἰς αὐτόν, δὲν ἐδέχετο. Ἐγένετο κατόπιν ὑπουργός, ἀλλὰ δυσαρεστηθεὶς κατὰ τοῦ Ρισελιὲ ἀπεσύρθη καὶ ἔζησε τοῦ λοιποῦ μεταξὺ τῶν ὀρατοριανῶν ἱερέων. Προστάτης τῶν γραμμάτων καὶ τῶν ἐπιστημῶν, ὑπεστήριξε τὸν Lejay νὰ δημοσιεύσῃ τὴν «Πολύγλωσσον Βίβλον» του καὶ ὑπερημύνθη τοῦ Καρτεσίου. Τὰ ἔργα τοῦ Μπερὺλλ, συγκεντρωθέντα ὑπὸ τοῦ P. Bourgoing, ἐξεδόθησαν τῷ 1644 εἰς δύο τόμους, ἀνετυπώθησαν δ' ἔκτοτε πολλάκις. Ἰδιαιτέρως μεγάλην διάδοσιν ἔσχε τὸ ἐγχειρίδιόν του «Περὶ τοῦ μεγαλείου τοῦ Ἰησοῦ».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *G. Habert*, «Vie du cardinal de Berulle» (1646).—*Nourrisson* «Le cardinal de Berulle, sa vie et ses écrits» (1859).—*Abbé Houssaye* «M. de Berulle et les carmélites de France», «M. de Berulle et le cardinal de Richelieu» (1876). Γ. Ζ.

**Μπερχαμποὺρ** (Berhampur) *[Γεωγρ.]*.—1) Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Βεγγάλῃ, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας *Μουρσινταμπάντ*, κειμένη ἐπὶ τοῦ Μπαγκιράτι, 8 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πόλεως Μουρσινταμπάντ. Ἔχει μεγάλους στρατῶνας καὶ φυλακάς, κολλέγιον καὶ νοσοκομεῖα. Ἐν αὐτῇ ἐξεράγη τὸ πρῶτον ἡ ἰνδικὴ ἐπανάστασις τοῦ 1857. Κάτ. 22.777.

—2) Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Μαντράς, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας Γκαντζάμ, κειμένη 29 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς πόλεως *Γκαντζάμ*, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἀπέχει 14,5 χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας. Διεξάγει ἐμπόριον ζαχάρεως καὶ ἔχει ἀνεπτυγμένην χρυσοχοΐαν καὶ μεταξουφαντουργίαν. Κάτ. 31.455. Χ. Δ.

**Μπέρχεμ** (Berchem) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀμβέρσης, κειμένη ἐγγὺς τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Σκάλδου, νοτιοδυτικῶς τῆς Ἀμβέρσης, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ προάστειον. Ἔχει σαπωνοποιίαν, ζυθοποιίαν, ταπητουργίαν καὶ βιομηχανίας κηρωτῶν ὑφασμάτων. Κάτ. 35.000. Παρ' αὐτὴν συνήφθη μάχη μεταξὺ Βέλγων καὶ Ὁλλανδῶν διαρκοῦντος τοῦ πολέμου τῆς βελγικῆς ἀνεξαρτησίας. Χ. Δ.

**Μπέρχεμ** (Berchem καὶ Berghem), ***Νικόλαος-Πέτρος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Μπέργκεμ*).

**Μπερχτεσγκάντεν** (Berchtesgaden) *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τῆς Γερμανίας ἐν Βαυαρίᾳ, κειμένη μεταξὺ τῶν ποταμῶν Σάαλαχ καὶ Σάλτσαχ καὶ πλαισιουμένη ὑπὸ ὑψηλῶν ὀρέων ἀνηκόντων εἰς τὰς Σαλτσβουργικὰς Ἄλπεις. Ἀποτελεῖ τὸ ΝΑ. τμῆμα τῆς Ἄνω Βαυαρίας καὶ ἔχει ἔκτασιν 400 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 24.382 κατ. Λόγῳ τῶν φυσικῶν καλλονῶν της καὶ τοῦ ὑγιεινοῦ κλίματός της, εἶναι πολυσύχναστον κέντρον ἀναψυχῆς. Χ. Δ.

**Μπέρχτολντ** (Berchtold), ***Λεοπόλδος***, *κόμις*—. Αὐστριακὸς πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1863. Εἰσῆλθεν εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον τῷ 1893 ὡς ἀκόλουθος τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀπεστάλη εἰς τὴν πρεσβείαν τῶν Παρισίων, τῷ 1899 εἰς τὴν τοῦ Λονδίνου καὶ τῷ 1903 εἰς τὴν τῆς Πετρουπόλεως, ὡς σύμβουλος, ἐπὶ πρεσβευτοῦ τοῦ βαρώνου Αἰρένταλ, ὁ ὁποῖος, γενόμενος ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, διώρισε τὸν Μπέρχτολντ ὡς ἀντικαταστά-

Digitized by Google

την του πρεσβευτὴν ἐν Ρωσίᾳ, τῷ 1906. Ἀνήκων εἰς μεγάλην οἰκογένειαν εὐγενῶν καὶ διαθέτων κολοσσιαίαν περιουσίαν, εἶχε κατορθώσει νὰ ἀποκτήσῃ μεγάλους δεσμοὺς ἐν τῇ ρωσικῇ αὐλῇ καὶ τῇ κοινωνίᾳ τῆς Πετρουπόλεως. Ἀλλ' ἡ ὑπηρεσία του ἐν τῇ ρωσικῇ πρωτευούσῃ συνέπεσε πρὸς μίαν περίοδον συνεχῶν προστριβῶν μεταξὺ Αὐστροουγγαρίας καὶ Ρωσίας, τὰς ὁποίας δὲν κατέστη δυνατὸν νὰ ἐξομαλύνῃ οὔτε ἡ ὑπ' αὐτοῦ παρασκευασθεῖσα συνάντησις Αἰρενταλ-Ἰσβόλσκυ ἐν τῷ πύργῳ του τοῦ Μπούχλαου τὸ θέρος τοῦ 1908. Τῷ 1911 ἀνεκλήθη ἐκ Ρωσίας καὶ τῷ 1912, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Αἰρενταλ, διεδέχθη αὐτὸν ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Αὐστροουγγαρίας, κληθεὶς νὰ διευθύνῃ τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικὴν τῆς δυαδικῆς μοναρχίας κατὰ τὴν δύσκολον περίοδον τῶν Βαλκανικῶν πολέμων, τῶν ὁποίων αἱ συνέπειαι δὲν ὑπῆρξαν εὐνοϊκαὶ διὰ τὴν Αὐστροουγγαρίαν, παρὰ τὰς προσπαθείας τὰς ὁποίας κατέβαλεν ὅπως ἐξασφαλίσῃ τὴν πολιτικὴν ἡγεμονίαν τῆς χώρας του εἰς τὰ Βαλκάνια. Τὸ μόνον ζήτημα ἐν τῷ ὁποίῳ ἐσημείωσε τότε ποιάν τινα ἐπιτυχίαν ὑπῆρξε τὸ ἀλβανικόν, ὅτε, ἐπειδὴ ἡ Σερβία καὶ τὸ Μαυροβούνιον, παρὰ τὰς ἀποφάσεις τῶν μεγάλων Δυνάμεων, ἐδυστρόπουν εἰς τὴν ἐκκένωσιν τοῦ Ἀλέσσιο, τοῦ Δυρραχίου καὶ τῆς Σκόδρας, αἵτινες εἶχον παραχωρηθῆ εἰς τὸ ἐλεύθερον κράτος τῆς Ἀλβανίας, ὁ Μπέρχτολντ ἠπείλησε νὰ δράσῃ μεμονωμένως δι' ἴδιον λογαριασμόν. Ἡ ἀπειλὴ ὅμως αὕτη δὲν ἐπραγματοποιήθη συνεπείᾳ τῆς ἐπεμβάσεως τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Ἰταλίας Σὰν Τζιουλιάνο, ὁ ὁποῖος τονίζων τοὺς κινδύνους τῆς μεμονωμένης δράσεως τῆς Αὐστροουγγαρίας,ὤθησε τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἀγγλίαν νὰ ἐπιμείνουν παρὰ τῇ Ρωσίᾳ ὅπως ἐπέμβῃ παρὰ τῇ Σερβίᾳ καὶ τῷ Μαυροβουνίῳ πρὸς ἐπιτάχυνσιν τῆς ἐκκενώσεως. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Βαλκανικοῦ πολέμου ὁ Μπέρχτολντ ἠγωνίσθη νὰ πείσῃ τὴν Ρουμανίαν νὰ μὴ λάβῃ μέρος εἰς τὸν συνδυασμὸν τῶν βαλκανικῶν κρατῶν κατὰ τῆς Τουρκίας, κατόπιν δέ, μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῶν διαφωνιῶν μεταξὺ Σερβίας καὶ Ἑλλάδος ἀφ' ἑνὸς καὶ Βουλγαρίας ἀφ' ἑτέρου, προσεπάθησε νὰ προσεγγίσῃ τὴν Ρουμανίαν πρὸς τὴν τελευταίαν ταύτην. Αἱ προσπάθειαί του ὅμως αὗται ἀπέτυχον. Βραδύτερον ἐνεθάρρυνε, κρυφίως, τὴν Βουλγαρίαν, ὅπως ἐπιτεθῇ κατὰ τῶν συμμάχων της, ἐλπίζων νὰ τῷ δοθῇ ἡ εὐκαιρία ἐπεμβάσεως καὶ ἀπαλείψεως τῶν πολιτικῶν καὶ διπλωματικῶν ζημιῶν, τὰς ὁποίας ὑπέστη ἡ αὐστροουγγρικὴ μοναρχία κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Μετὰ τὴν ἧτταν ὅμως τῆς Βουλγαρίας δὲν ἐτόλμησε νὰ προβάλῃ τὴν Σερβίαν, διότι ἡ Ἰταλία καὶ ἡ Γερμανία διεμήνυσαν εἰς αὐτὸν ὅτι, ἐὰν ἐπήρχοντο εὐρωπαϊκαὶ περιπλοκαί, δὲν θὰ τὸν ὑπεστήριζον, φρονοῦσαι ὅτι δὲν συντρέχουν οἱ λόγοι τοῦ «casus foederis» (Αὔγουστος 1913). Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁ Μπέρχτολντ προσεπάθησε νὰ συσφίγξῃ καὶ νὰ διατηρήσῃ καλὰς σχέσεις πρὸς τὴν Ἰταλίαν, μεταβὰς τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1912 εἰς τὴν βασιλικὴν ἔξοχὴν τοῦ Σὰν Ροσσόρε πρὸς συνεννόησιν μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Ἰταλίας Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ Γ' καὶ συναντηθεὶς ἐν Πίζῃ μετὰ τοῦ Ἰταλοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν Σὰν Τζιουλιάνο, ὁ ὁποῖος τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1914 ἀνταπέδωσε τὴν ἐπίσκεψιν εἰς τὴν Ἀμπατσίαν. Κατὰ τὰς συναντήσεις ταύτας οἱ δύο ὑπουργοὶ συνεφώνησαν διὰ τὰ ζητήματα τῆς Ἀλβανίας, ὅπου εὑρίσκετο ὡς ἡγεμὼν ὁ πρίγκιψ τοῦ Βήδ. Τὴν 5 Δεκεμβρίου 1912 ὁ Μπέρχτολντ ὑπέγραψε τὴν ἐκ τῶν προτέρων ἀνανέωσιν τῆς τριπλῆς Συμμαχίας, ἐνῷ συγχρόνως ἡ Αὐστροουγγαρία καὶ ἡ Γερμανία ἀνεγνώριζον τὴν ἰταλικὴν ἐπικυριαρχίαν ἐπὶ τῆς Τριπολίτιδος καὶ τῆς Κυρηναϊκῆς.

Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν δύο συνεργατῶν του (τοῦ κόμιτος Φόργκαχ καὶ τοῦ βαρώνου Μουζουλιν) καὶ τοῦ στρατηγοῦ Κόνραντ, ὁ ὁποῖος εἶχε διορισθῆ ἐκ νέου ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου περὶ τὰ τέλη τοῦ 1912, ὁ Μπέρχτολντ, μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ ἀρχιδουκὸς Φραγκίσκου-Φερδινάνδου, τὴν 28 Ἰουνίου 1914, ἐδέχθη ὅπως τηρηθῇ ἔναντι τῆς Σερβίας ἀδιάλλακτος στάσις, ἀκόμη καὶ μὲ τὸν κίνδυνον τῆς ἐμπλοκῆς εἰς πόλεμον πρὸς τὴν Ρωσίαν καὶ τὴν Γαλλίαν, φρονῶν ὅτι ἐπέστη ἡ στιγμὴ νὰ ματαιωθοῦν τὰ σερβικὰ σχέδια πρὸς δημιουργίαν Μεγάλης Σερβίας, ἐκτεινούσης τὴν δύναμιν αὐτῆς μέχρι τῆς Ἀδριατικῆς καὶ ἀποσπώσης ἀπὸ τῆς δυαδικῆς μοναρχίας τὰς σλαβικὰς αὐτῆς ἐπαρχίας, σχέδια πρὸς τὴν πραγματοποίησιν τῶν ὁποίων ἔβαινεν ἡ Σερβία γοργῷ τῷ βήματι, μετὰ τὰς ἐπιτυχίας τῶν Βαλκανικῶν πολέμων. Μετὰ τὴν κήρυξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ὁ Μπέρχτολντ κατηύθυνε τὰς προσπαθείας του πρὸς ἐπιτυχίαν τῆς ἐξόδου τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ρουμανίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Κεντρικῶν Αὐτοκρατοριῶν, συμφώνως πρὸς τὰς μετ' αὐτῶν προϋπαρχούσας συμφωνίας, ἀλλὰ δὲν ἐπέτυχεν εἰμὴ τὴν κήρυξιν οὐδετερότητος ἐκ μέρους των καὶ ταύτης προσωρινῶς.

Μετὰ τὴν κήρυξιν τῆς ἰταλικῆς οὐδετερότητος, ἤρχισε διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ Σὰν Τζιουλιάνο, πρὸς ἐπίτευξιν συμφωνίας ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἑρμηνείαν τοῦ ἄρθρου 7 τῆς συνθήκης τῆς τριπλῆς Συμμαχίας καὶ τὰ ἀντάλλαγματα τὰ ὁποῖα ὤφειλε νὰ προσφέρῃ εἰς τὴν Ἰταλίαν ἡ Αὐστροουγγαρία, πρὶν κάμῃ ἔναρξιν καταλήψεως, ἔστω καὶ προσωρινῶν, ἐν τῇ Βαλκανικῇ χερσονήσῳ. Ἀλλ' ὁ Μπέρχτολντ δὲν ἐφαίνετο πιστεύων εἰς τὴν χρησιμότητα τῶν διαπραγματεύσεων ἐκείνων καὶ ἐδείκνυτο ἐλάχιστα διατεθειμένος νὰ παραχωρήσῃ ἐδάφη τῆς μοναρχίας εἰς τὴν Ἰταλίαν. Αἱ διαθέσεις του αὗται, αἵτινες ἐξ ἄλλου ἦσαν σύμφωνοι καὶ πρὸς τὰς τῶν διευθυνόντων κύκλων τῆς Βιέννης, ὑπῆρξαν μία τῶν αἰτιῶν, αἵτινες προεκάλεσαν τὸν ἐξαναγκασμόν του εἰς παραίτησιν τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1915 καὶ τὴν ἀντικατάστασίν του ὑπὸ τοῦ βαρώνου Μπούριαν. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1916 διωρίσθη αὐλάρχης καὶ ὑπασπιστὴς τοῦ ἀρχιδουκὸς διαδόχου Καρόλου-Φραγκίσκου-Ἰωσήφ. Μετὰ δὲ τὴν κατάρρευσιν τῆς δυαδικῆς μοναρχίας ἀπεσύρθη τελείως ἐκ τῆς πολιτικῆς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Pribram*, Austrian foreing Policy, 1908—1918 (1923).—*T. Tittoni*, Per la verità storica (Nuova Antologia, 16 Marze—1 Aprile 1928).—*C. Avarna di Gualtieri*, L'ultimo rinnovamento della Triplice (1924).—*Franz Conrad von Hötzendorf*, Aus meiner Dienstzeit (1921—1922).

Μ. Δ. Β.

**Μπερὼ** (Béraud), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος λόγιος, γεννηθεὶς τῷ 1885. Μετὰ τὰς ἐγκυκλίους του σπουδὰς διετέλεσε διαδοχικῶς βοηθὸς δικηγορικοῦ γραφείου, σχεδιαστής, ἀρχαιοπώλης, μεσίτης πωλήσεως οἴνων, ρεπόρτερ, βαρύτονος, μεσίτης ἀσφαλειῶν καὶ ὑπολοχαγὸς τοῦ πυροβολικοῦ κατὰ τὸν πόλεμον. Ἔγραψε διηγήματα ρωμαντικὰ («Οἱ λυρικοὶ θάνατοι»), καὶ εὐθυμογραφικὰ («Τὸ μαρτύριον τοῦ χονδροῦ»), ἐπίσης δὲ καὶ μυθιστορήματα («Ὁ σταθμός») κ. ἄ. —Ω.

—**Μπερὼ** (Béraud), ***Ἰωάννης***. Γάλλος ζωγράφος. Ἐγεννήθη ἐν Πετρουπόλει ἐκ γονέων Γάλλων τῷ 1849, ἀφιερώθη δ' ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν ζωγραφικὴν μετὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1870, μαθητεύσας παρὰ τῷ Μποννά. Ἐξεπόνησε τοπιογραφίας, ἀπεικονίσεις μικρῶν σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου καὶ θρησκευτικοὺς πίνακας, προκαλέσαντας διαμάχας ἐξ ἀφορμῆς τῆς νεωτεριστικῆς των τεχνοτροπίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἐπιστροφὴ ἀπὸ τὴν ταφήν», «Μία ἑσπερίς», «Ὁ δημόσιος χορός», «Ἡ Μονμάρτρη», «Τὸ ἰντερμέδιον», «Ὁ Χριστὸς εἰς τὸν στῦλον», «Ἡ ἔξοδος ἀπὸ τὸ Λύκειον». Ι. Μ. Π.

**Μπὲς** [*Αἰγυπτ. Μυθολ.*]. Θεὸς τῆς ἀρχαίας Αἰγύπτου (βλ. λ. *Βησᾶς*).

**μπέσα** (ἡ)· δημοτ., πίστις, ἡ πρός τινα πεποίθησις, ἀφοσίωσις: «αὐτὸς δὲν ἔχει μπέσα», ἄλλως «— δὲν ἔχει πίστη» εἶναι κακόπιστος· ‖ φρ. «ἐκάναμε μπέσα» συνεφιλιώθημεν, ὑπεσχέθημεν ἀμοιβαίαν πίστιν· ‖ «μπέσα γιὰ μπέσα» ἀμοιβαία ὑπόσχεσις τηρήσεως λόγου.

**Μπεσαμὲλ** (Béchamel), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος χρηματιστής, ἀποκτήσας πολὺν πλοῦτον κατὰ τὴν ταραχώδη ἐποχὴν τῆς Σφενδόνης. Ἦτο διάσημος γαστρίμαργος, ἐγένετο δὲ παγκοσμίως γνωστὸς διὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἐπινοηθεῖσαν λευκὴν σάλτσαν, ἥτις χρησιμοποιεῖται καὶ σήμερον εὐρύτατα ἐν τῇ μαγειρικῇ. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' τὸν ὠνόμασε μαρκήσιον καὶ ἀρχιθαλαμηπόλον του. Ἀπέθανεν εἰς βαθὺ γῆρας τῷ 1703. —Ω.

**Μπεσὰν** (Bechamp), ***Πέτρος-Ἰάκωβος-Ἀντώνιος***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ χημικὸς (1816—1908). Ἐγένετο ἀλληλοδιαδόχως ὑφηγητὴς τῆς φαρμακολογίας ἐν Στρασβούργῳ, καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς χημείας καὶ φαρμακολογίας ἐν Monpellier καὶ τέλος καθηγητὴς τῆς ὀργανικῆς καὶ βιολογικῆς χημείας ἐν Λίλλῃ. Διετέλεσεν ἐπίσης ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Ἔνθερμος ὀπαδὸς τοῦ *βιταλισμοῦ* (βλ. λ.), ἐπρέσβευεν ὅτι οἱ *μοριακοὶ κόκκοι* οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ ζῶντες ὀργανισμοί, φυράματα, μικροζύμα, ἀποτελοῦντα τοὺς σπόρους τῶν μικροοργανισμῶν καὶ ὅτι εἰς πᾶν ἐνόργανον ὂν ἐνυπάρχει στοιχεῖον ζωτικὸν ἐσωτερικῆς δράσεως, ἀποτελούμενον ἐκ τῶν ειδικῶν τούτων μικροζύμων. Τὰ κυριώτερα αὐτοῦ ἔργα εἶναι: «Leçons sur la fermentation vineuse et sur la fabrication du vin» (1863), «Microzymas et microbes» (1866), «Les microzymas dans leurs rapports avec les fermentations et la physiologie» (1875), «Les microzymas dans leurs rapports avec l'hétérogénie, l'histogénie, la physiologie et la pathologie» (1883) κ. ἄ. Ο. Ρ.

**Μπέσας, *Γεώργιος*,** ἢ ***Μουρκογεώργος***. Ἀγωνιστὴς ἐκ Βρόστιανης τῆς Ναυπακτίας. Ἐχρημάτισεν ἀπὸ τοῦ 182.—1829 μπουλουξῆς εἰς τὰ Κράβαρα, τὰ ὁποῖα καὶ ἔσωσε τῷ 1825, ἀποκρούσας ἐπίθεσιν τμήματος τοῦ στρατοῦ τοῦ Κιουταχῆ.

**μπεσαχτὰς** (ὁ)· ἄλλως *μπεξαχτάς*.

**Μπεσενόβα μάρε,** ἢ *Μπέσενναι* (ρουμ. Besenova mare, οὐγγρ. Fesenyö) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν τῷ Βανάτῳ, ὑπαγομένη εἰς τὸν νομὸν *Τίμις-Τορονταλ*, παρὰ τὰ νοτιοσλαυϊκὰ σύνορα. Κάτ. (1920) 5.917, ὧν τὸ πλεῖστον Βούλγαροι. Χ. Δ.

**Μπέσενυαι** (Besenyö) [*Γεωγρ.*]. Πόλις Ρουμανίας (βλ. λ. *Μπεσενόβα μάρε*).

**Μπεσερὲ** [*Γεωγρ.*]. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 315. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Ἀστερέϊκα*, *Καμπέκια* καὶ *Παλιοάνθη*.

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πρεβέζης χωρίου *Γεφύρι* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπεσερὲλλ** (Becherelle), ***Λουδοβῖκος-Νικόλαος***. Γάλλος λεξικογράφος (1802—1884). Ἐχρημάτισε διευθυντὴς τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Λούβρου (1828—1858), συνέγραψε δὲ διάφορα ἔργα, ἐν οἷς «Ἐθνικὸν λεξικὸν» (1846), «Λεξικὸν τῆς γαλλικῆς γλώσσης» (1872), «Ἐθνικὴ γραμματικὴ» (1838) κ. ἄ.

**Μπεσίκια** [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Μέγας ἀναπεπταμένος ὅρμος τῆς ἐπὶ τοῦ Αἰγαίου ἀκτῆς τῆς Τρῳάδος, περιλαμβανόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Γιουκέρι καὶ Παλαιόκαστρο (πλάτ. 39°55' Β., μήκ. 26°09' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1599: Eski Stamboul to Kum Kalé). Ἐχρησιμοποιήθη κατ' ἐπανάληψιν ὡς σταθμὸς πολεμικῶν στόλων εἰς τὰς ἑκάστοτε κατὰ τῆς Τουρκίας ναυτικὰς ἐπιδείξεις. Μολονότι θεωρεῖται ὡς ἄριστον ἀγκυροβόλιον, ἐν τούτοις ὁ βυθός του δὲν κρατεῖ παντοῦ τὰς ἀγκύρας καὶ αἱ θύελλαι μετὰ καταιγίδων εἶναι συχναί. Σ. Ε. Λ.

—**Μπεσίκια,** ἢ ***Μπεσὶκ-γκιὸλ*** [*Γεωγρ.*]. Λίμνη τῆς Μακεδονίας (βλ. λ. *Βόλβη*).

—**Μπεσίκια *Μεγάλα καὶ Μικρὰ*** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τῶν ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίων *Βόλβη* Μεγάλη καὶ Μικρὰ (βλ. λ.).

**Μπεσὶκ-ντὰγ** [*Γεωγρ.*]. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς χαμηλῆς ὀροσειρᾶς, ἥτις διατείνεται βορείως τῆς λίμνης Βόλβης (κοιν. Μπεσικίων) ἐν τῇ ἀνατολικῇ Μακεδονίᾳ. Ἡ κυρία αὐτοῦ κορυφὴ (κοιν. *Μπεσίκια*) ἔχει ὕψος 659 μ. Ι. Σ. Σ.

**Μπεσὶκ-τάς,** ἢ ***Μπεσικτὰς*** (=πέτρα τῆς κοιτίδος). Προάστειον τοῦ Βοσπόρου, ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς ὄχθης, κατέναντι τοῦ ἐκ Προποντίδος εἰσπλέοντος. Ἑλληνιστὶ ὠνομάζετο *Διπλοκιόνιον*, ἐκ τῶν ἐπὶ τῆς παραλίας κατὰ τοὺς Βυζαντινοὺς χρόνους ὑψουμένων δύο κιόνων (ζευκτὰ κιόνια ἢ διπλοῦς κίων), λείψανα ἴσως ἀρχαίου ναοῦ ἢ ἡρῴου, πιθανῶς τοῦ Πτολεμαίου, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἔστησε κατόπιν σταυροὺς Ρωμανὸς ὁ Λεκαπηνός. Ἐκ τοῦ ἐπιθέτου Ζευκτὰ ὑποτίθεται ὅτι οἱ κίονες συνείχοντο ἄνωθεν δι' ἐπιστυλίου, ἐφ' οὗ ἐμόνασεν, ὡς λέγεται, Δανιὴλ ὁ Στυλίτης. Ἐν τούτοις Σκαρλάτος ὁ Βυζάντιος, βασιζόμενος ἐπὶ εἰκόνος τοῦ στυλίτου ἢ κιονίτου τούτου, τοποθετεῖ τὸν κίονα αὐτοῦ μᾶλλον εἰς τὴν παραλίαν τοῦ δυτικώτερον κειμένου προαστείου Καμπὰ-τάς, ὅπου ἐσῴζετο μέχρι πρό τινος ἡ βάσις τοῦ διπλοῦ κίονος.

Πρὸ τοῦ Μπεσὶκ-τὰς ἐναυλόχει κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὁ στόλος Μωάμεθ τοῦ Πορθητοῦ, νεωλκηθεὶς κατόπιν, ὡς λέγεται, εἰς τὸν Κεράτιον διὰ τῆς κοιλάδος χειμάρρου, ὅστις σήμερον λέγεται Γκιουμούς-σού.

Ὡς ἐκ τῆς γραφικῆς αὐτοῦ θέσεως τὸ Μπεσὶκ-τὰς προωρίζετο ἀνέκαθεν ὡς θερινὴ διαμονὴ τῶν σουλτάνων. Οὕτω δυτικῶς ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Δολμᾶ-Βαγτσὲ μέχρι σχεδὸν τῆς ἀποβάθρας τοῦ Μπεσὶκ-τὰς ἐκτείνονται τὰ ἀνάκτορα τοῦ Δολμᾶ-Βαγτσέ. ΒΑ. μεταξὺ Μπεσὶκ-τὰς καὶ Ὀρτάκιοϊ ὑπῆρχε τὸ ἀνάκτορον τοῦ Τσεραγάν, τοῦ ὁποίου σήμερον φαίνονται μόνον οἱ ἐρειπωμένοι τοῖχοι. Ἄλλο ἀνάκτορον ἢ μᾶλλον σειρὰ ὁλόκληρος συνεχομένων τοιούτων εἶναι τὸ ἐπὶ τοῦ λόφου τοῦ Γιλδὶζ φερώνυμον θρυλικὸν παλάτιον.

Τὸ Μπεσὶκ-τὰς εἶναι σήμερον πολυάνθρωπον προάστειον μὲ πολλὰς μεγάλας συνοικίας, ἐν μέσῳ καταφύτων κήπων, διατηροῦν μέρος τῆς κινήσεως, ἥτις ἐπεκράτει ἄλλοτε εἰς αὐτὸ ὡς ἐκ τῆς ὑπάρξεως τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων καὶ τῶν μεγάρων τῶν μεγιστάνων τῆς αὐλῆς. Ἔχει περὶ τὰ 20 τζαμία καὶ πολλὰ μεγάλα κτήρια, ὡς ἡ μεγάλη ὁπλοθήκη τῆς Μάτσκας καὶ ἡ στρατιωτικὴ μουσικὴ σχολή.

Ἐν Μπεσὶκ-τὰς ὑπάρχουσι δύο ἑλληνικαὶ κοινότητες, ἡ τοῦ κυρίως *Διπλοκιονίου* μετὰ ναοῦ τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου, καὶ ἡ τοῦ *Πασᾶ-Μαχαλὲ* μετὰ ναοῦ τοῦ Γενεσίου τῆς Θεοτόκου μετὰ παρεκκλησίου τῆς Ἁγίας Παρασκευῆς ἢ τοῦ Παλαιοῦ Μπάνιου, ὀνομασθεῖσα οὕτω διότι ἀνῆκε κατ' ἀρχὰς εἰς τοὺς ἐν τῷ Ναυστάθμῳ ἐργαζομένους Ἕλληνας δούλους του Χαϊρεδδὶν πασᾶ Βαρβαρόσσα καὶ ὡς ἐκ τούτου ἀπέλαυεν ἰδιαιτέρων προνομίων, διεκφεύγουσα τὴν δικαιοδοσίαν τοῦ πατριάρχου. Ἡ πρώτη τῶν δύο τούτων ἑλληνικῶν κοινοτήτων διατηρεῖ ἀρίστας σχολὰς ἀρρένων καὶ θηλέων, δημοτικὴν καὶ πλήρη ἐξατάξιον ἀστικήν. Ἡ τῶν ἀρρένων ἦτο ἄλλοτε ἄριστα κατηρτισμένη. Μεταξὺ Μπεσὶκ-τὰς καὶ Ὀρτάκιοϊ ὑψοῦνται ἐπὶ γραφικωτάτης θέσεως τὸ ἀσκητήριον (τεκκὲς) τοῦ Γιαχιᾶ (Ἰωάννου), ὁμογαλάκτου ἀδελφοῦ τοῦ σουλτάνου Σουλεϋμὰν τοῦ Νομοθέτου, μετὰ τοῦ τάφου

Digitized by Google

τοῦ δερβίσου τούτου. Τὸ σημερινὸν κτήριον τοῦ τεκκὲ τούτου ἦτο ἄλλοτε ναὸς φημιζόμενος εἰς ὄνομα τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ ἀποκεφαλιστοῦ, ἁγίασμα τοῦ ὁποίου, εὑρισκόμενον ἐπὶ τῆς παραλίας, παρέμενε προσιτὸν εἰς τοὺς Ὀρθοδόξους μέχρι τοῦ 1880 ἀνοιγόμενον κατὰ τὴν ἑορτὴν τοῦ ἁγίου. Κάτωθεν τοῦ λόφου, ἐφ' οὗ ὁ τεκκές, ὑπάρχει ὑπόγειος δρόμος φθάνων, ὡς λέγεται, μέχρι τοῦ Ἄνω Βοσπόρου. Τὸν δρόμον τοῦτον θρυλλεῖται ὅτι ἐχρησιμοποίησεν ὁ ὁμογενὴς Σκαλιέρης κατὰ τὴν ἀπόπειράν του πρὸς φυγάδευσιν τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ ἐκ τοῦ παρακειμένου ἀνακτόρου τοῦ Τσεραγάν, εἰς μίαν αἴθουσαν τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ἔξοδος ἐκ τῶν ὑπογείων δαιδάλων. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**μπεσιλίκι** (τὸ) *['Εγκυκλ.]*. Παλαιὸν τουρκικὸν νόμισμα, κρᾶμα χαλκοῦ καὶ ἀργύρου, ἀξίας πέντε γροσίων, ἀνῆκον εἰς τὸ πρὸ τῆς τουρκικῆς νομισματικῆς μεταρρυθμίσεως (1844) σύστημα. Τούτου ἡ ἀξία μετὰ τὴν μεταρρύθμισιν (1880) ὑπεβιβάσθη κατ' ἀρχὰς μὲν εἰς τὸ ἥμισυ, κατόπιν δὲ εἰς τὸ τέταρτον τῆς ἀρχικῆς. Τὰ μπεσιλίκια ἐκυκλοφόρουν εἰς τὰς διαφόρους πόλεις τῆς Τουρκίας μὲ τὴν ἀνωτέρω ἠλαττωμένην τιμὴν μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ὅτε ἀντικατεστάθησαν ὑπὸ χαρτονομισμάτων.

**Μπεσίριον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Παλλάντιον* (βλ. λ.).

**Μπεσίρ**, ἢ ***Μπεχίρ***. Ἐμίρης τοῦ Λιβάνου καὶ σερίφης τοῦ Χαουρὰν τῆς Συρίας, γεννηθεὶς τῷ 1763 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1850. Ἀκολουθήσας τὸν Μωχάμμετ Ἄλη τῆς Αἰγύπτου ὡς ὑποτελής, ὅτε οὗτος ἐκυριάρχει τῆς Συρίας, ἐπαύθη ὑπὸ τῆς τουρκικῆς κυβερνήσεως τῷ 1840, μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Ἄλη ἐκ Συρίας, καὶ κατέφυγεν εἰς Ἰταλίαν. Ἐπανῆλθε κατόπιν εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἀλλὰ παρέμεινεν ἔκπτωτος τοῦ τίτλου του. Ν. Μ.

**Μπεσιριτσιά** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Λουτροῦ τῆς ἐπαρχίας Γρεβενῶν τοῦ νομοῦ Κοζάνης, μετονομασθὲν εἰς *Ἄκρη*. Κάτ. (1928) 144. Χ. Δ.

**Μπέσκερεκ** (Becskerek) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δύο πόλεων τοῦ Βανάτου ἀνηκουσῶν μέχρι τοῦ 1918 εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Ἐκ τούτων ἡ μὲν μία, καλουμένη ἐπίσης *Βελίκι-Μπέσκερεκ*, ἀνήκει νῦν εἰς τὴν Νοτιοσλαβίαν, οὖσα πρωτεύουσα τῆς κομιτείας *Τόροντάλ*, ἡ δ' ἑτέρα εἰς τὴν Ρουμανίαν, ὑπαγομένη εἰς τὴν κομιτείαν *Τέμες*.

Ἡ Βελίκι-Μπέσκερεκ κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπέγκα, 73 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Βελιγραδίου, μεθ' οὗ συνδέεται διὰ διώρυγος. Ἔχει παλαιὸν φρούριον καὶ ἐμπόριον σιτηρῶν, κτηνῶν, ἀμπελουργικῶν καὶ σηροτροφικῶν προϊόντων, διεξάγονται δὲ κατ' ἔτος ἐν αὐτῇ μεγάλαι ἐμποροπανηγύρεις. Κάτ. (1921), 27.522, ἐξ ὧν 35% Μαγυάροι, 26% Γερμανοί, οἱ δὲ λοιποὶ Σέρβοι.

Ἡ ρουμανικὴ Μπέσκερεκ κεῖται 17 χλμ. βορειοδυτικῶς τοῦ Τέμεσβαρ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς καὶ ἔχει κατ. 3.666 κατὰ τὰ 70% γερμανοφώνους καθολικούς. Χ. Δ.

**Μπέσκωβ** (Beskow), ***Βερνάρδος***, *βαρῶνος* —. Σουηδὸς δραματικὸς ποιητὴς καὶ ἱστορικὸς συγγραφεὺς (1796—1868). Κατέλαβε διαφόρους ὑψηλὰς θέσεις ἐν τῇ αὐλῇ καὶ ἀπὸ τοῦ 1834 διετέλεσεν ἰσόβιος γραμματεὺς τῆς Σουηδικῆς Ἀκαδημίας. Ἔγραψε ποιήματα, δράματα καὶ ἱστορίας. Τὰ ποιήματά του εἶναι εἰς ἄκρον περίτεχνα, τὰ δὲ δράματά του εἶναι μᾶλλον ἱστορικὰ ποιήματα ὑπὸ μορφὴν δραμάτων. Μεταξὺ τούτων εἶναι τὰ: «Ἔρρῖκος ὁ ΙΔ'» (1826) καὶ «Δραματικαὶ σπουδαί». Ἀξιόλογος ἐπίσης εἶναι ἡ ἱστορικὴ του μελέτη «Περὶ Γουσταύου τοῦ Γ' ὡς βασιλέως καὶ ἀνθρώπου» (τόμ. 5, 1860—1869). Γ. Ι. Β.

**Μπεσμουτέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Φωσταίνης τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 72. Χ. Δ.

**Μπὲς-μπαρμὰκ-ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τοῦ ἐν Μ. Ἀσίᾳ ὄρους *Λάτμος* (βλ. λ.).

**Μπὲς-ντὰγ** (=Πέντε βουνά) *[Γεωγρ.]*. Ὁ ΒΑ. κλάδος τοῦ Καυκάσου, συνεχόμενος πρὸς τὸ ὄρος Ἐλμπρούς. Ἔχει πολλὰς πηγὰς μεταλλικῶν ὑδάτων. Ν. Μ.

**Μπεσὸ** (Beuchot), ***Ἀδριανὸς-Ἰάκωβος***. Γάλλος βιβλιογράφος καὶ φιλόλογος (1773—1851). Ἦτο ἀρχικῶς στρατιωτικὸς χειρουργός, ἐγκατέλιπεν ὅμως τὴν ἰατρικὴν διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς φιλολογικὰς καὶ βιβλιογραφικὰς μελέτας. Ἐχρημάτισε βιβλιοθηκάριος τῆς Βουλῆς (1831—1850), ἐδημοσίευσε τὸ «Νέον ἡμερολόγιον τῶν Μουσῶν» (1808), διηύθυνε τὴν «Ἐφημερίδα τοῦ Βιβλίου» (1811—1849) καὶ ἔδωκε τὴν καλυτέραν ἔκδοσιν τῶν ἔργων τοῦ Βολταίρου (1827—1833). Ἐδημοσίευσεν ἐν τοῖς ἄλλοις «Νέαν νεκρολογίαν τῶν ἐν Γαλλίᾳ γεννηθέντων ἢ τῇ γαλλικῇ γλώσσῃ γραψάντων, τῶν ἀποθανόντων μετὰ τὸ 1800» (Παρίσιοι, 1812). —Ω.

**Μπεσρεντκὰ** (Besredka). Σύγχρονος Γάλλος ἰατρὸς πολωνικῆς προελεύσεως. Ἔχει ἐγκύψει ἰδιαιτέρως εἰς βιολογικὰς μελέτας τῆς ἰατρικῆς, ἐργαζόμενος εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας ὡς καθηγητής. Ἀπὸ τοῦ ὀνόματός του ἐκλήθη ἡ ὑπ' αὐτοῦ ὑποδειχθεῖσα μέθοδος πρὸς ἀποσόβησιν τῶν ἀφυλακτικῶν συμβαμάτων ἐν τῇ ἐφαρμογῇ τῆς ὀροθεραπείας. Συνίσταται δ' ἡ μέθοδος αὕτη εἰς τὴν διενέργειαν ἐνέσεως ἀσθενεστάτης ποσότητος ὀροῦ δύο ὥρας πρὸ τῆς διενεργείας τῆς ἰαματικῆς ἐνέσεως. Εἰς τὴν περίπτωσιν δὲ τῆς ἐγκεφαλονωτιαίας μηνιγγίτιδος, ἡ ἀντιαφυλακτικὴ αὕτη ἔνεσις δέον νὰ γίνηται, ὡς καὶ ἡ θεραπευτικὴ τοιαύτη, ἐντὸς τοῦ ἐγκεφαλονωτιαίου σωλῆνος. Συνώνυμον τῆς μεθόδου Μπεσρεντκὰ εἶναι: *ἀνταφυλαξία* καὶ *ἀνταφυλακτικὸς ἐμβολιασμός*. Μ.Ν.Κ.

**Μπεσσαράμπας** (Besaraba). Ἀρχαία ἡγεμονικὴ οἰκογένεια τῆς Βλαχίας (βλ. λ. *Βεσσαράβας*).

**Μπεσσὲζ** (Bessèges *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γκάρντ. Κεῖται ἐντὸς τῆς γαιανθρακοφόρου λεκάνης τοῦ Γκάρντ καὶ ἔχει σιδηρουργικὰς ἐγκαταστάσεις, μηχανουργεῖα κλπ. Κάτοικοι 7.000. Χ. Δ.

**Μπέσσελ** (Bessel), ***Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος***. Διάσημος Γερμανὸς ἀστρονόμος, γεννηθεὶς ἐν Minden τῷ 1784 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1846. Τῷ 1804 ὑπελόγισε τὴν τροχιὰν τοῦ κομήτου τοῦ Χάλλεϋ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὑπὸ τοῦ Thomas Harriot γενομένων τῷ 1607 παρατηρήσεων, μεθ' ὃ προσελήφθη ὡς βοηθὸς εἰς τὸ ἐν Lilienthal ἀστεροσκοπεῖον τοῦ J. H. Schröter. Τῷ 1812 ὁ βασιλεὺς τῆς Πρωσσίας πληροφορηθεὶς τὰ τῆς ἐργασίας τοῦ Μπέσσελ ἐπὶ τοῦ κομήτου τοῦ 1807, τῷ ἀνέθεσε τὴν ἀνέγερσιν ἀστεροσκοπείου ἐν Καινιξβέργῃ, τὴν διεύθυνσιν τοῦ ὁποίου, ὡς καὶ τὴν ἕδραν τῆς ἀστρονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς ἰδίας πόλεως, διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του, σημειώσας κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο νέαν ἐποχὴν ἐν τῇ πρακτικῇ ἀστρονομίᾳ. Τῷ 1818 ἐξέδωκεν εἰς ἴδιον τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Fundamenta Astronomiae» κατάλογον 3222 ἀπλανῶν, ἐπαναλαβὼν τὰς ἀναγωγὰς τῶν ὑπὸ τοῦ James Bradley γενομένων ἐν Γκρήνουϊτς παρατηρήσεων τῶν ἀστέρων τούτων, εἰς δὲ τοὺς ἐκδοθέντας κατὰ τὸ 1830 πίνακας («Tabulae Regiomontanae») καθώρισε τὸ μέχρι τοῦδε ἐν χρήσει σύστημα ἀναγωγῆς τῶν παρατηρήσεων πρὸς προσδιορισμὸν τῶν θέσεων τῶν ἀπλανῶν. Ἐντὸς δωδεκαετίας (1821—1833) ἐξετέλεσε περὶ τὰς 50 χιλιάδας παρατηρήσεων ὅλων τῶν ἀστέρων μέχρις 9ου μεγέθους τῶν περιλαμβανομένων μεταξὺ $-15^{\circ}$ καὶ $+45^{\circ}$. Προσέτι τῷ 1831—1832 ἐμέτρησε τὸ τόξον τοῦ μεσημβρινοῦ τῆς Ἀνατολικῆς Πρωσσίας καὶ κατὰ τὸ 1841 συνήγαγεν ὅτι ἡ πλάτυνσις τῆς Γῆς ἀνέρχεται εἰς 1/299. Τῷ 1838 ἐδημοσίευσε τὴν παράλλαξιν τοῦ ἀστέρος 61 Κύκνου, ἣν ἐξ ἰδίων παρατηρήσεων εὗρεν ἴσην πρὸς 0″,31 (Astr. Nachr. 365—366). Μελετῶν τὰς ἰδίας κινήσεις τοῦ Σειρίου καὶ τοῦ Προκυνός, προεῖπε τῷ 1844 ὅτι οἱ ἀστέρες οὗτοι δέον νὰ ὦσι διπλοῖ. Ἡ χρῆσις τοῦ ἡλιομέτρου, ἡ εἰσαγωγὴ τῆς διορθώσεως τῶν παρατηρήσεων ἐκ τῆς προσωπικῆς ἐξισώσεως τῶν παρατηρητῶν καὶ ἡ συστηματικὴ ἔρευνα τῶν σφαλμάτων τῶν ὀργάνων ἀποτελοῦσι σπουδαιοτάτας καινοτομίας, τὰς ὁποίας εἰσήγαγε πρῶτον ὁ Μπέσσελ, αὐξήσας οὕτω τὴν ἀκρίβειαν τῶν ἀστρονομικῶν μετρήσεων εἰς τοιοῦτον βαθμόν, ὥστε δικαίως νὰ θεωρῆται ἡ νεωτέρα ἀστρονομία θέσεως ὡς πραγματικὸν δημιούργημά του. Μεταξὺ τῶν σπουδαίων ἐπιστημονικῶν του ἐργασιῶν καταλέγονται ἐπίσης αἱ κατὰ τὸ 1838 ἔρευναι αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ μήκους ἁπλοῦ ἐκκρεμοῦς ἐν Βερολίνῳ καὶ ἐπὶ τοῦ καθορισμοῦ πρωτύπου μέτρου ἐν Πρωσσίᾳ. Πλὴν τῶν 21 τόμων, εἰς τοὺς ὁποίους ἐδημοσίευσε τὰς παρατηρήσεις του («Astron. Beobachtungen auf der Sternwarte zu Königsberg» 1815—1844) ὁ Μπέσσελ ἐδημοσίευσε καὶ περὶ τὰς 350 πραγματείας, αἵτινες ἀφορῶσι θέματα οὐ μόνον ἀστρονομικά, ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν πρὸς αὐτὰ ἐπιστημῶν, ὡς τὰ καθαρὰ μαθηματικά, εἰς τὴν πρόαγωγὴν τῶν ὁποίων συνεισέφερε σημαντικώτατα. Μία τῶν ἀξιολογωτέρων μαθηματικῶν αὐτοῦ ἀνακαλύψεων θεωροῦνται αἱ λεγόμεναι «συναρτήσεις τοῦ Μπέσσελ», αἱ ὁποῖαι ἀποτελοῦσι λύσιν τῶν διαφορικῶν ἐξισώσεων τῆς μορφῆς

$$x^2 \frac{d^2y}{dx^2} + x\frac{dy}{dx} + (x^2 - n^2)\,y = 0.$$

Τὰς συναρτήσεις ταύτας ὁ Μπέσσελ μετεχειρίσθη τὸ πρῶτον τῷ 1817 ἐν σχέσει πρὸς τὴν λύσιν τοῦ προβλήματος τοῦ Κεπλέρου, ἀνέπτυξεν ὅμως τὰ περὶ αὐτῶν μετὰ πάροδον ἑπταετίας περίπου ἐξ ἀφορμῆς τῶν σπουδαίων ἐρευνῶν του ἐν τῷ προβλήματι τῶν παρέλξεων τῶν πλανητῶν (Πρακτικὰ Ἀκαδημίας Βερολίνου 1816—1817 καὶ 1829). Σ.Π.

**Μπέσσεμερ** (Bessemer) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Τζέφφερσον* τῆς πολιτείας Ἀλαμπάμα. κειμένη 20 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Μπίρμιγχαμ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κεῖται ἐν μέσῳ περιοχῆς πλουσίας εἰς ὀρυχεῖα γαιανθράκος καὶ σιδήρου καὶ ἔχει βιομηχανίαν σιδήρου, χάλυβος καὶ πλίνθων. Ἱδρύθη τῷ 1847. Κάτ. 10.864. Χ. Δ.

**Μπέσσεμερ** (Bessemer), ***Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος μηχανικὸς καὶ ἐφευρέτης (1813—1898). Ἐπενόησεν ἐν ἀρχῇ μηχανήματα πρὸς κονιοποίησιν τοῦ χρυσοῦ καὶ τοῦ ὀρειχάλκου, ἠσχολήθη δὲ βραδύτερον εἰς τελειοποίησιν τῶν μεταλλουργικῶν μεθόδων, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ τὴν κατασκευὴν τῶν πυροβόλων. Μὴ εὑρὼν ὑποστήριξιν εἰς τὰς ἐργασίας του ταύτας ἐκ μέρους τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως, μετέβη εἰς Γαλλίαν, ὅπου ὁ Ναπολέων Γ' τὸν συνέδραμεν, ἔφθασε δὲ τότε (1856) εἰς τὴν ἀνακάλυψιν νέας ὅλως μεθόδου ἐν τῇ παρασκευῇ τοῦ χάλυβος (βλ. κατωτ. *ἄπιον τοῦ Μπέσσεμερ*). Ἡ μέθοδος αὕτη, τεθεῖσα, ἔκτοτε καὶ παραμένουσα μέχρι σήμερον εἰς γενικὴν χρῆσιν, συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς σιδηρομεταλλουργίας. —Ω.

— **Μπέσσεμερ** (Bessemer), *ἄπιον* τοῦ—. Καλεῖται οὕτω (ἢ *στρόμβος* καὶ ὀρθότερον *μεταλλακτὴρ*) τὸ δοχεῖον, ἐν τῷ ὁποίῳ κατὰ τὴν μεταλλουργίαν τοῦ σιδήρου τελεῖται ἡ ὀξείδωσις τῶν ἐν αὐτῷ προσμίξεων τοῦ πυριτίου, μαγγανίου καὶ τοῦ πλείστου τοῦ ἄνθρακος. ἔτι δὲ καὶ τοῦ φωσφόρου. Ἡ ὀξείδωσις τελεῖται διὰ διοχετεύσεως πεπιεσμένου ἀέρος μέσῳ τοῦ τετηκότος μετάλλου, ἡ δὲ θερμότης ἡ ἐκλυομένη κατὰ τὴν ὀξείδωσιν ταύτην συντελεῖ εἰς τὴν διατήρησιν τοῦ μετάλλου ἐν ρευστῇ καταστάσει. Ἵνα δὲ ἀπομακρυνθῇ καὶ ὁ ὀξειδούμενος φωσφόρος, φέρει ὁ μεταλλακτὴρ ἐπένδυσιν ἐκ βασικοῦ ὑλικοῦ, ἀποτελουμένου ἐκ πυρωθέντος δολομίτου καὶ συνισταμένου ἑπομένως ἐξ ὀξειδίου ἀσβεστίου καὶ μαγνησίου, ἅτινα προσλαμβάνουσι τὸ κατὰ τὴν καῦσιν σχηματιζόμενον φωσφορικὸν ὀξύ. (Βλ. καὶ λ. *σίδηρος* καὶ *χάλυψ* [Μεταλλουργ.].) Σ. Χ.

**Μπεσσιὲρ** (Bessières), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***—, *δοὺξ τῆς Ἰστρίας*. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας (1766—1813). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ εἰς τὴν συνταγματικὴν φρουρὰν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' (1791—1792), ἐτοποθετήθη εἶτα εἰς τὸν στρατὸν τῶν Πυρηναίων καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας, ὁπότε προήχθη εἰς ὑποστράτηγον ὑπὸ τοῦ Βοναπάρτου. Μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Αἰγύπτου, διαπρέψας δὲ βραδύτερον κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μαρέγκο προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον τῷ 1802 καὶ εἰς στρατάρχην τῆς αὐτοκρατορίας τῷ 1804. Ἀρχηγὸς ἱππικοῦ ἀπὸ τοῦ 1805, μετέσχεν ὑπὸ τὴν ἰδιότητα ταύτην τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Αὐστρίας, τῆς Πρωσσίας, τῆς Πολωνίας καὶ τῆς Ἱσπανίας καὶ συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὰς ἐν αὐταῖς γαλλικὰς νίκας, διακριθεὶς τόσον διὰ τὴν στρατηγικὴν του ἱκανότητα ὅσον καὶ διὰ τὴν προσωπικὴν αὐτοῦ ἀνδρείαν. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ρωσίας ἐπροστάτευσεν ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ἱππικοῦ τὴν ἀποχώρησιν τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τέλος τῆς Σαξωνίας, ἔχων τὴν γενικὴν ἀρχηγίαν ὁλοκλήρου τοῦ ἱππικοῦ, ἐφονεύθη δι' ὀβίδος παρὰ τὸ Ρίππαχ, καθ' ἣν στιγμὴν μετέβαινε πρὸς ἀνίχνευσιν τῶν γερμανικῶν θέσεων τὴν παραμονὴν τῆς μάχης τοῦ Λούτζεν. Ἀπὸ τοῦ 1809 ἔφερε τὴν τίτλον τοῦ δουκὸς τῆς Ἰστρίας. Γ. Ζ.

**Μπεσσὲν** (Bessin) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας ἐν Νορμανδίᾳ, περιλαμβανομένη εἰς τοὺς σημερινοὺς νομοὺς Καλβαντὸς καὶ Μάγχης καὶ ἔχουσα πρωτεύουσαν τὸ *Μπαγιέ*. Ὑποδιῃρεῖτο εἰς τὸ κυρίως *Μπεσσέν*, τὸ *Μποκὰζ* καὶ τὴν πεδιάδα τοῦ *Καέν*. Χ. Δ.

**Μπὲς-Ταουκλῆ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ συνοικισμοῦ *Κοῖλον* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Σιντικῆς.

**Μπέστερτζιμπάνυα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας (βλ. *Μπάσκα* Μπύστριτσα).

**Μπέστερτσε** *[Γεωγρ.]*. Οὐγγρικὴ ὀνομασία τῆς ρουμανικῆς πόλεως *Μπίστριτσα* (βλ. λ.).

**Μπεστίνικα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ξυνόβρυση* (βλ. λ.).

**Μπεστούζεφ**, ***Ἀλέξανδρος-Ἰβάνοβιτς***. Ρῶσος μυθιστοριογράφος, γνωστὸς ὑπὸ τὸ φιλολογικὸν ψευδώνυμον *Μαρλίσκι*, γεννηθεὶς τῷ 1797 καὶ φονευθεὶς ἐν Καυκάσῳ τῷ 1837. Ἀξιωματικὸς τῆς αὐτοκρατορικῆς φρουρᾶς, μετέσχε τῆς ἐπαναστάσεως τῆς 14 Δεκεμβρίου 1825. Καταδικασθεὶς εἰς θάνατον, ἔλαβε χάριν καὶ ἀπεστάλη εἰς τὰ κάτεργα τῆς Σιβηρίας. Ἀπαλλαγεὶς τοῦ ὑπολοίπου τῆς ποινῆς του τῷ 1830, ἐπανῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἁπλοῦς στρατιώτης καὶ ἔπεσε μαχόμενος εἰς τὸν Καύκασον. Πρὸ τῆς ἐξορίας του εἶχε δημοσιεύσει τὸ «Ἡμερολόγιον τοῦ Πολικοῦ Ἀστέρος», κατὰ δὲ τὴν πενταετῆ ἐξορίαν του καὶ κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη συνέγραψε πολυάριθμα μυθιστορήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὰ ἄριστα εἶναι «Ὁ Ἄλματ Μπὲγκ», «Μιὰ βραδιὰ εἰς τὸ στρατόπεδον», «Ἡ φρεγάτα Ἐλπίς»,

Digitized by Google

«Μουλᾶ Νοὺρ» κτλ, ἐκδοθέντα εἰς 12 τόμους καὶ μεταφρασθέντα εἰς τὴν γερμανικήν. Ὁ Μπεστοῦζεφ θεωρεῖται ὡς ὁ πρωτεργάτης τοῦ ρωσικοῦ ρεαλιστικοῦ διηγήματος. Ἔχων εἰς μέγαν βαθμὸν τὴν ἱκανότητα τῆς διηγήσεως καὶ πλουσίαν φαντασίαν, ἔγραψε διηγήματα ἐκ τῆς ζωῆς τοῦ ρωσικοῦ λαοῦ. θ. β.

—**Μπεστοῦζεφ**, ***Μιχαὴλ - 'Αλεξάνδροβιτς***. Ρῶσος ναυτικὸς καὶ ἐφευρέτης, γεννηθεὶς τῷ 1800 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1871. Γενόμενος ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ, εἰσήγαγε τεχνικάς τινας μεταρρυθμίσεις· ὁ ναύαρχος ὅμως Μόλλερ, ἀφαιρέσας τὰ δικαιώματα αὐτοῦ ἐπὶ τῶν ἐφευρέσεών του, ἐγένετο ἀφορμὴ νὰ μετάσχῃ ὁ Μπεστοῦζεφ τῆς ἐπαναστάσεως τῶν Δεκεμβριστῶν. Κατεδικάσθη εἰς ἰσόβια δεσμά, παρέμεινε δὲ ἐξόριστος εἰς τὴν Σιβηρίαν μέχρι τοῦ 1870. Εἶχε μεγάλην ἐπιτηδειότητα εἰς τὰς μηχανικὰς τέχνας καὶ παρουσίασε πλείστας ἐφευρέσεις, ἐν αἷς στρατιωτικὴν ἅμαξαν φέρουσαν τὸ ὄνομά του (μπεστούζεβκα). Ἐδημοσίευσε τὰ «Ἀπομνημονεύματά» του τῷ 1870. θ. β.

—**Μπεστοῦζεφ-*Ρούμιν***, ***'Αλέξιος-Πέτροβιτς***, *κόμις* —. Ρῶσος πολιτικός, καταγόμενος ἐκ παλαιᾶς ἀριστοκρατικῆς οἰκογενείας, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ τῷ 1693 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1766. Εὐνοούμενος τοῦ Μεγάλου Πέτρου, ἠκολούθησεν αὐτὸν εἰς τὰ εἰς Εὐρώπην ταξίδιά του. Ἐπὶ αὐτοκρατείρας Ἄννης διωρίσθη πρέσβυς ἐν Λονδίνῳ, εἶτα δὲ ἐν Κοπεγχάγῃ καὶ τῷ 1740 ἐγένετο ὑπουργός. Ἀσπασθεὶς τὴν πολιτικὴν μερίδα τοῦ Μπίρων, μετὰ τὴν πτῶσιν αὐτοῦ καθείρχθη. Ἀποφυλακισθεὶς ὑπὸ τῆς αὐτοκρατείρας Ἐλισάβετ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐξωτερικῶν ὑποθέσεων μὲ τὸν τίτλον ὑποκαγκελλάριος καὶ εἶτα καγκελλάριος. Περιπεσὼν εἰς δυσμένειαν, ἕνεκα τῆς πρὸς τὸν Φρειδερῖκον Β' τῆς Πρωσσίας φιλίας του, κατεδικάσθη εἰς ἐξορίαν, δημευθείσης τῆς περιουσίας του. Ὁ Μπεστοῦζεφ ἐστερήθη ταυτοχρόνως τῶν τίτλων καὶ τῶν ἀξιωμάτων του, οὓς ἀνέκτησεν ἐπὶ Αἰκατερίνης Β', ἥτις ἐτοποθέτησεν αὐτὸν ὡς αὐλάρχην της. Κατὰ τὸν χρόνον τῆς ἐξορίας του ἔγραψε σύγγραμμα τιτλοφορούμενον «Ἡ παρηγορία τοῦ Χριστιανοῦ». θ. β.

— **Μπεστοῦζεφ-*Ρούμιν***, ***Κωνσταντῖνος Νικολάγιεβιτς***, *κόμις* —. Ρῶσος ἱστορικός, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ τῷ 1820 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1892. Σπουδάσας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας, συνειργάσθη μετὰ τοῦ Καλκὼφ ἀπὸ τοῦ 1856 μέχρι τοῦ 1859 εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Μόσχας». Τῷ 1865 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἱστορίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πετρουπόλεως. Ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας ἐπὶ τῆς ἐθνικῆς ἱστορίας, τὴν «Ἱστορίαν τῆς Ρωσίας», μεταφρασθεῖσαν γερμανιστί, κτλ. θ β.

—**Μπεστοῦζεφ-*Ρούμιν***, ***Μιχαὴλ 'Ανδρέγιεβιτς***, *κόμις* —. Ρῶσος ἀξιωματικός, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1795 καὶ ἀπαγχονισθεὶς τῷ 1826. Εἷς ἐκ τῶν πρωτουργῶν τῆς ἐν Πετρουπόλει ἐπαναστάσεως τῆς 14 Δεκεμβρίου 1825, ἐπολέμησεν ἀνδρείως εἰς τὰ ὁδοφράγματα, ἀλλὰ μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ἐπαναστάσεως συλληφθεὶς κατεδικάσθη εἰς θάνατον μετ' ἄλλων, θεωρηθέντων ὡς ἀρχηγῶν τῆς ἐπαναστάσεως. θ. β.

— **Μπεστοῦζεφ-*Ρούμιν***, ***Μιχαὴλ Πέτροβιτς***. Ρῶσος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Μόσχᾳ τῷ 1683 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1760. Διετέλεσε πρέσβυς τῆς Ρωσίας εἰς Παρισίους, εἶτα δὲ ἐγένετο αὐλάρχης. Οὔτε ὅμως ἡ ὑψηλὴ θέσις αὐτοῦ, οὔτε ἡ εὔνοια ἧς ἀπέλαυε παρὰ τῷ Μεγάλῳ Πέτρῳ ἠδυνήθησαν νὰ σώσουν τὴν σύζυγόν του κόμισσαν Βαρβάραν Νικολάγιεβναν ἀπὸ τῆς δημοσίας μαστιγώσεως, τῆς ἀποκοπῆς τῆς γλώσσης της καὶ τῆς ἐξορίας εἰς Σιβηρίαν, κατηγορηθεῖσαν ὅτι μετέσχεν εἴς τινα συνωμοσίαν. θ. β.

**μπεστσιφτὲς** (ὁ). Δεκάκωπον ἀκάτιον ἐξ ἐκείνων, τὰ ὁποῖα ἐχρησιμοποίουν οἱ μεγιστᾶνες καὶ οἱ πρέσβεις ἐν Τουρκίᾳ.

**Μπέσφινα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Σφήκα* (βλ. λ).

**Μπεσχένιον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Λοκρίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται παρὰ τοὺς Α. πρόποδας τοῦ Παρνασσοῦ πρὸς Β. τῆς Δαυλείας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 627. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον Κραβασαρᾶς. χ. Δ.

**Μπεσχίνι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Σχῖνοι* (βλ. λ.).

**Μπετὰν** (Bétant), ***'Ηλίας-'Αμί***. Ἑλβετὸς καθηγητής, γεννηθεὶς ἐν Γενεύῃ τῷ 1803 καὶ διακριθεὶς ὡς πολιτικὸς ἐν τῇ πατρίδι του. Κατῆλθε μετὰ τοῦ Ἰωάννου Καποδιστρίου, ὃν ἐγνώρισεν ἐν Ἑλβετίᾳ διὰ τοῦ Ἰ. Γ. Ἐϋνάρδου, εἰς Ἑλλάδα ὡς γραμματεὺς τοῦ κυβερνήτου, εἰς ὃν παρέσχε πολλὰς ὑπηρεσίας. Μετὰ ἓν ἔτος ἀσθενήσας ὁ Μπετὰν ἠναγκάσθη νὰ ἀπέλθῃ εἰς Ἑλβετίαν, ὅπου ἀνελθὼν εἰς ὑψηλὰ ἀξιώματα δὲν ἐλησμόνησε τὴν Ἑλλάδα, ὑπὲρ ἧς εἰργάσθη ὁλοψύχως μετὰ τοῦ Καποδιστρίου, ἀλλὰ πάντοτε εἰργάζετο ὑπὲρ τῶν συμφερόντων αὐτῆς, ὡς ἀποδεικνύουν αἱ δημοσιευθεῖσαι ἐπιστολαί του ἐν τῷ περιοδικῷ «L'Acropole». Δολοφονηθέντος τοῦ Καποδιστρίου (1831) οἱ συγγενεῖς αὐτοῦ ἀνέθηκαν εἰς τὸν Μπετὰν τὴν ἔκδοσιν τῆς ἀλληλογραφίας του (Γενεύη, 1839), μεταφρασθείσης καὶ ἑλληνιστὶ ὑπὸ τοῦ Μ. Σχοινᾶ εἰς 4 τόμους (Ἀθῆναι 1841—1843). Ὁ Μπετὰν μέχρι τοῦ θανάτου του (μετὰ τὸ 1869) ὑπηρέτησε τὴν Ἑλλάδα ἀφιλοκερδῶς, διορισθεὶς πρόξενος αὐτῆς καὶ ἐκλεγεὶς μέλος ἀντεπιστέλλον τῆς Ἀρχαιολογικῆς ἑταιρείας, ὑπὲρ ἧς εἰργάσθη οὐκ ὀλίγον. Τ. Ε. Ε.

**Μπέτανθος** (Betanzos) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Κορούνιας, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μαντέο. Κάτ. 8.709. Ἔχει βιομηχανίαν δερμάτων, ἐργοστάσια σάπωνος καὶ ἀγγειοπλαστικῆς καὶ ἐξάγει σιτηρά, οἴνους καὶ ὀπώρας. Εἶναι ἡ Brigantium Flavium τῶν Ρωμαίων. Μ. Δ. Β

**Μπετανκοὺρ** (Béthencourt), ***'Ιωάννης Δ'*** *ντὲ*—. Γάλλος εὐγενὴς καὶ θαλασσοπόρος τοῦ μεσαίωνος (1360—1422). Κατήγετο ἐκ παλαιοτάτης οἰκογενείας, διετέλεσε δὲ κατὰ τὴν νεότητά του αὐλικὸς θεράπων τοῦ βασιλέως Καρόλου ΣΤ'. Συλλαβὼν τὴν ἰδέαν τῆς κατακτήσεως τῶν Καναρίων νήσων, ἀπέπλευσε μετὰ 250 ἀνδρῶν ἐκ Λὰ Ροσὲλ τὴν 1 Μαΐου 1402, συμπαραλαβὼν ὡς ὑπαρχηγὸν τῆς ἀποστολῆς τὸν ἐπίσης αὐλικὸν Γκαντιφὲρ ντὲ λὰ Σάλ. Παρὰ τὰς ἀκτὰς τῆς Ἱσπανίας ἐξερράγη στάσις τοῦ πληρώματος, καθ' ἣν οἱ 200 ἐκ τῶν ναυτῶν ἐγκατέλειψαν τὸ πλοῖον. Ὁ Μπεντανκοὺρ ἐν τούτοις ἐξηκολούθησε τὸν πλοῦν μὲ τοὺς ὑπολειφθέντας, ἀλλ' ὅτε ἔφθασεν εἰς τὰς Καναρίους καὶ εὑρέθη πρὸ τῆς κρατερᾶς ἀντιστάσεως τῶν ἰθαγενῶν, ἀφῆκε τὴν ἀποστολὴν ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Γκαντιφὲρ καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Ἱσπανίαν πρὸς ἀναζήτησιν ἐνισχύσεων εἰς ἄνδρας καὶ χρήματα. Ἐπιτυχὼν τοῦ σκοποῦ του παρὰ τῇ καταλωνικῇ αὐλῇ, χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ ἐν αὐτῇ ἰσχύοντος θείου του Ροβέρτου ντὲ Μπρακεμόν, ἐπέστρεψε μετὰ πολλῶν ἀνδρῶν εἰς τὰς Καναρίους, ἀλλ' ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ἐξερεύνησις τῶν νήσων εἶχεν ἤδη ἐπιτευχθῆ κατὰ μέγα μέρος ὑπὸ τοῦ Γκαντιφέρ. Κινούμενος τότε ἐκ ζηλοτυπίας, ἤρχισε νὰ ἔρχεται εἰς συχνὰς μετὰ τοῦ ὑπαρχηγοῦ του προστριβάς, μέχρις ὅτου ἠνάγκασεν αὐτὸν νὰ φύγῃ εἰς Γαλλίαν. Ὁ Μπετανκοὺρ ἐτερμάτισε τὴν κατάληψιν τῶν νήσων καὶ ἦλθεν εἰς σχέσεις μὲ τοὺς ἰθαγενεῖς, τοὺς ὁποίους προσείλκυσεν εἰς τὸν Χριστιανισμόν. Ἐπανελθὼν εἰς Ἁρφλὲρ τῷ 1405, παρέλαβε μεθ' ἑαυτοῦ 160 νέους ἀποίκους καὶ τινας γυναῖκας καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὰς νήσους, ὅπου ἐγένετο κατανομὴ τῶν γαιῶν μεταξὺ τῶν παλαιῶν καὶ τῶν νέων οἰκιστῶν. Τῷ 1406 κατέλιπε τὴν διοίκησιν τῆς ἀποικίας εἰς τὸν ἀνεψιόν του Μασιὸ ντὲ Μπετανκοὺρ καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Τὰ τῆς καταλήψεως τῶν Καναρίων ὑπὸ τοῦ Μπετανκοὺρ ἀναγράφονται ἐπὶ μοναδικοῦ σῳζομένου χειρογράφου, δημοσιευθέντος τῷ 1630 ὑπὸ τοῦ Π. Μπερζερόν. Χ. Δ.

**Μπετελγκὲζ** *['Αστρονομ.]*. Ἀστὴρ ἐν τῷ ἀστερισμῷ τοῦ Ὠρίωνος (βλ. λ. *Βετελγκέζ*).

**Μπέτζα** (Bedjas), ἢ ***Μπέζα***. Χαμιτικὴ φυλὴ τοῦ Ἀγγλοαιγυπτιακοῦ Σουδὰν (βλ. λ. *Μπέζα*).

**Μπετζαποὺρ** *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μπιτζαπούρ*).

**Μπετζελῆ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Δρυμοῦσα* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Καβάλλας.

**Μπέτζλεϋ** (Beazley), ***Κάρολος - Ραϋμόνδος***. Σύγχρονος Ἄγγλος ἱστοριοδίφης καὶ συγγραφεύς. Εἶναι ἐπίτιμος ἀντιπρόεδρος τῆς βασιλικῆς ἑταιρείας ἱστορικῶν σπουδῶν, καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κανταβριγίας, ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς γεωγραφικῆς τῆς Λισσαβῶνος, τῆς ἀρχαιολογικῆς ἑταιρείας τῆς Γαλλίας κτλ. Τῷ 1908 ἐταξίδευσεν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας, εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Ἀφρικήν, ὅπου ἔκαμε σειρὰν διαλέξεων. Ἔγραψε: «Voyages and Travels» (1902), «Carpini and Rubruquis, Friar Travellers 1245—1255» (1903), «Directorium Passagium Transmarinum» (1907) κτλ. Α. Δ.

**Μπέτλεν** (Bethlen). Οὐγγρικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν ἐκ Τρανσυλβανίας, ἧς πολλὰ μέλη διέπρεψαν εἰς τὴν πολιτικήν, τὴν διπλωματίαν καὶ τὰ γράμματα. Κυριώτερα ἐκ τούτων εἶναι:

— 1) ***Γκάμπορ (Γαβριήλ)***. Ἡγεμὼν τῆς Τρανσυλβανίας καὶ βασιλεὺς τῆς Οὐγγαρίας (1580—1629). Διεκρίθη ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Σιγισμόνδου καὶ τοῦ Γαβριὴλ Μπαθόρυ, ἐναντίον τῶν ὁποίων ἐπανεστάτησε τῷ 1613 καὶ ἀνεκηρύχθη ἡγεμὼν τῆς Τρανσυλβανίας, τῇ βοηθείᾳ τῶν Τούρκων. Βραδύτερον, τῇ βοηθείᾳ τῆς Αὐστρίας, ἐξεδίωξε τοὺς Τούρκους ἐκ τῆς Τρανσυλβανίας. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ αὐτοκράτορος Ματθία, ἐπωφεληθεὶς τοῦ δημιουργηθέντος σάλου, ἡνώθη μετὰ τῶν ἐχθρῶν τῆς δυναστείας τῶν Ἀψβούργων καὶ βοηθούμενος ἐκ νέου ὑπὸ τῶν Τούρκων, εἰσέβαλε, τῷ 1619, εἰς τὴν Οὐγγαρίαν καὶ ἔφθασε πρὸ τῶν πυλῶν τῆς Βιέννης. Τῷ 1620 ἀνεκηρύχθη βασιλεὺς τῆς Οὐγγαρίας, ἡττηθεὶς ὅμως κατὰ τὴν μάχην τοῦ Λευκοῦ Ὄρους, ἠναγκάσθη νὰ ὑπογράψῃ, τῷ 1621, τὴν συνθήκην τοῦ Νικολσμπουργκ, διὰ τῆς ὁποίας παρῃτεῖτο τοῦ οὐγγρικοῦ θρόνου, λαμβάνων ὡς ἀντάλλαγμα διαφόρους ἐπαρχίας τῆς Ἄνω Οὐγγαρίας καὶ τὰ δουκᾶτα τοῦ Ὄππελν καὶ τοῦ Ρατιμπόρ. Τῷ 1622 κηρύξας ἐκ νέου τὸν πόλεμον κατὰ τῶν Ἀψβούργων καὶ ἡττηθεὶς ἀπώλεσε τὰ δουκᾶτα τῆς Σιλεσίας. Τῷ 1626 συνῆψε γάμον μετὰ τῆς Αἰκατερίνης τοῦ Βρανδεμβούργου καὶ ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς ἰσχυροῦ προτεσταντικοῦ συνασπισμοῦ, εἰς τὸν ὁποῖον συμμετεῖχον ὄχι μόνον οἱ λουθηρανοὶ Γερμανοὶ ἡγεμόνες, ἀλλὰ καὶ ἡ Ἀγγλία, ἡ Ὁλλανδία καὶ ἡ Δανία, πρὸς κατασυντριβὴν τῆς ἰσχύος τῶν Ἀψβούργων. Εἰς τὴν σύμπτηξιν τοῦ συνασπισμοῦ τούτου προέβη ὁ Μπέτλεν οὐχὶ μόνον ἐκ θρησκευτικοῦ μίσους, ἀλλὰ καὶ διότι ὁ αὐτοκράτωρ τῆς Οὐγγαρίας τοῦ εἶχεν ἀρνηθῆ τὴν χεῖρα τῆς θυγατρός του. Αἱ ἀλλεπάλληλοι ὅμως στρατιωτικαὶ ἀποτυχίαι, ἰδίως τῆς Δανίας, ἠνάγκασαν αὐτὸν νὰ ὑπογράψῃ εἰρήνην, διὰ τῆς ὁποίας ἀνεγνώριζε τὸ ὑφιστάμενον καθεστώς. Κατὰ τὰ ὑπόλοιπα ἔτη τῆς ζωῆς του ἔζησεν ἀσχολούμενος εἰς τὴν βελτίωσιν τῆς ἐσωτερικῆς καταστάσεως τῆς Τρανσυλβανίας, ὑποστηρίζων τὰ γράμματα, τὰς τέχνας καὶ τὰς ἐπιστήμας καὶ μετακαλῶν σοφοὺς ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ πρὸς ἀναδιοργάνωσιν διαφόρων ὑπηρεσιῶν τῆς χώρας, ἵδρυσε δ' ἐν τοῖς ἄλλοις τὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Βίσσεμπουργκ. Ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του συνῆψε συμμαχίαν μετὰ τοῦ γυναικαδέλφου του Γουσταύου Ἀδόλφου, πρὸς ἀνάληψιν νέου ἀγῶνος κατὰ τῶν Ἀψβούργων,

— 2) ***'Ιωάννης***. Καγκελλάριος τῆς Τρανσυλβανίας καὶ ἱστορικὸς (1613—1678). Ἔγραψε τὸ λίαν ἐνδιαφέρον ἱστορικὸν ἔργον «Rerum transilvanicarum libri IV» (1683).

—3) ***Φάρκας (Βόλφγκανγκ)***. Καγκελλάριος τῆς Τρανσυλβανίας καὶ ἱστορικὸς (1639—1679). Ἔγραψεν ἱστορίαν τῆς Τρανσυλβανίας εἰς 16 βιβλία, ὑπὸ τὸν τίτλον «Historia de rebus transilvanicis» (1795) καὶ διεκρίθη ὡς πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης, πολλάκις ἀντιπροσωπεύσας τὴν χώραν του εἰς δυσκόλους στιγμὰς καὶ ἰδίως παρὰ τῷ σουλτάνῳ, ὅτε οὗτος ἐπεχείρησε νὰ ἀφαιρέσῃ τὴν ἡγεμονίαν τῆς Τρανσυλβανίας ἀπὸ τὴν Ἀπάφυ, καὶ ἐπιτυχὼν νὰ ἀποσοβήσῃ τὸν κίνδυνον.

—4) ***Μικλὸς (Νικόλαος)***. Καγκελλάριος καὶ οὗτος τῆς Τρανσυλβανίας καὶ ἱστορικὸς (1642—1716). Ἐσπούδασεν ἐν Οὐτρέχτῃ, Ἁϊδελβέργῃ, Λέϋδεν, Ἀγγλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ καὶ ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του προσέφερεν εἰς αὐτὴν μεγάλας ὑπηρεσίας κατὰ τοὺς ἐναντίον τῶν Ἀψβούργων ἀγῶνας. Συνέγραψε διάφορα βιβλία καὶ κατέλαβεν ὕψιστα ἀξιώματα. Τῷ 1704 ἐδημοσίευσεν εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Φρειδερῖκος-Γοδεφρεῖδος* καὶ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ περιστερὰ τοῦ Νῶε», σχέδιον περὶ ἀνακηρύξεως της ἀνεξαρτησίας τῆς Τρανσυλβανίας ἀπὸ τῆς Αὐστρίας, ἥτις εἶχε τότε ταύτην ὑπὸ τὴν ἐπικυριαρχίαν της, ἀλλ' ἀνακαλυφθεὶς συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη ἐν Βιέννῃ μέχρι τοῦ 1713. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, τὸ σημαντικώτερον τῶν ὁποίων εἶναι ἡ «Αὐτοβιογραφία» του, γραφεῖσα εἰς τὴν φυλακὴν καὶ περιέχουσα πολυτίμους ἱστορικὰς πληροφορίας τῆς ἐποχῆς. Ἐπίσης συνέγραψεν «Ἱστορικὰ ἀπομνημονεύματα», ἐκδοθέντα τῷ 1736 ἐν Ἀμστελλοδάμῳ, τὰ ὁποῖα ὅμως θεωροῦνται ὡς γραφέντα μᾶλλον ὑπὸ τοῦ Γάλλου ἀββᾶ Ρεβεράν, ἐπὶ τῇ βάσει διηγήσεων τοῦ Μπέτλεν.

— 5) *Κόμις* ***'Ιστβὰν (Στέφανος)***. Οὔγγρος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Κορνέστι τῆς Τρανσυλβανίας τῷ 1874. Ἐσπούδασε νομικά, πολιτικὴν οἰκονομίαν καὶ γεωπονικά, καὶ παρέμεινεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ἰδίως ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Τρανσυλβανίαν ἐπεδόθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν βελτίωσιν τῶν ἀγροτικῶν κτημάτων του, διὰ τῆς δημιουργίας προτύπων ἀγροκηπίων, εἰς τὰ ὁποῖα ἐφήρμοσε πάσας τὰς νεωτέρας τότε μεθόδους τῆς καλλιεργείας. Βραδύτερον ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγη τῷ 1901 βουλευτὴς καὶ ὑπερήσπισεν ἐν τῇ βουλῇ τὴν «μαγυαρικότητα» τῆς Τρανσυλβανίας ἔναντι τῶν ρουμανικῶν ἀξιώσεων, ἠγωνίσθη δὲ κατὰ τῶν τελωνειακῶν δασμῶν, τοὺς ὁποίους εἶχεν ἐπιβάλει ἡ Βιέννη καὶ οἵτινες κατέθλιβον τοὺς Οὔγγρους γαιοκτήμονας. Ἕνεκα τούτου τῷ 1905 ἀπεχώρησε τοῦ κυβερνητικοῦ κόμματος, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνῆκε μέχρι τότε καὶ τὸ ὁποῖον ἐστηρίζετο ἐπὶ τῆς συμφωνίας τοῦ 1867 περὶ ὑπαγωγῆς τῆς Οὐγγαρίας εἰς τὴν Αὐστρίαν, καὶ ἀπετέλεσε μέλος τοῦ «κόμματος τῆς ἀνεξαρτησίας». Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὁ κόμις Τίσζα προσέφερεν εἰς τὸν Μπέτλεν χαρτοφυλάκιον ὑπουργοῦ ἐν τῇ ὑπ' αὐτοῦ σχηματισθείσῃ κυβερνήσει, τὸ ὁποῖον ὅμως οὗτος ἀπεποιήθη· ἐπίσης δὲν ἐδέχθη, καίτοι προσφερ-

Digitized by Google

θέντα εἰς αὐτόν, τὸν τίτλον τοῦ ἰδιαιτέρου συμβούλου τοῦ αὐτοκράτορος Φραγκίσκου Ἰωσὴφ τοῦ Β΄. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου ἐκηρύχθη ἀντίθετος τῆς ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως τῆς Βιέννης ἀκολουθουμένης πολιτικῆς καὶ ὑπεστήριξε τὴν ἰδέαν ὅτι ὤφειλεν ἡ Αὐστρουγγαρία νὰ κατακτήσῃ τὰς συμπαθείας τῶν Ρουμάνων τῆς Τρανσυλβανίας, διὰ συνετῆς πολιτικῆς ἐν τῇ διανομῇ τῶν γαιῶν.

Εὐθὺς μετὰ τὸν πόλεμον προσεπάθησε νὰ ὀργανώσῃ τοὺς Μαγυάρους τῆς Τρανσυλβανίας κατὰ τῆς ρουμανικῆς προελάσεως καὶ ὑπῆρξε σφοδρὸς ἀντίπαλος τοῦ Καρολύϊ, ὃν κατηγόρει ὅτι ἡ ὑπ' αὐτοῦ προεδρευομένη κυβέρνησις ὡδήγει εἰς τὸν κομμουνισμόν· ὅταν δὲ ὁ Καρολύϊ τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1919 παρέδωσε τὴν ἀρχὴν εἰς τοὺς κομμουνιστὰς τοῦ Μπέλα Κούν, ὁ Μπέτλεν ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὰς ἀντεπαναστατικὰς ὀργανώσεις καὶ ἀνέλαβε τὴν διπλωματικὴν ἀντιπροσωπείαν ἐν Βιέννῃ τῆς ἀντεπαναστατικῆς κυβερνήσεως ἥτις εἶχε σχηματισθῆ εἰς τὸ Σζέγεντ. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως τοῦ Μπέλα Κούν, κατὰ τὸ θέρος τοῦ αὐτοῦ ἔτους, εἰς τὴν ὁποίαν συνέβαλε τὰ μέγιστα ὁ Μπέτλεν, ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐργασίας τῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις εἶχεν ἀναλάβει τὴν προπαρασκευὴν τοῦ ἀναγκαίου διὰ τὰς διαπραγματεύσεις τῆς εἰρήνης ὑλικοῦ καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς ταῦ 1920 μετέβη μετὰ τῆς οὐγγρικῆς ἀποστολῆς εἰς Τριανόν. Ἐκεῖ ὑπέγραψε τὴν εἰρήνην, ἐπικυροῦσαν τὴν ἀπώλειαν τῆς Τρανσυλβανίας, ἐν τῇ ὁποίᾳ εὑρίσκοντο καὶ τὰ μεγάλα κτήματά του, κατασχεθέντα ὑπὸ τῆς ρουμανικῆς κυβερνήσεως, πλὴν τῶν ἐν αὐτοῖς τάφων τῆς οἰκογενείας τῶν Μπέτλεν.

Τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1921 ὁ ἀντιβασιλεὺς Χόρτυ, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ ὑπουργείου τοῦ κόμιτος Παύλου Τέλεκι ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν τὸν σχηματισμὸν τῆς κυβερνήσεως, εἰς ἐποχὴν μεγίστων δυσχερειῶν διὰ τὴν ἐσωτερικὴν καὶ ἐξωτερικὴν ζωὴν τῆς χώρας, συνεπείᾳ τῆς πρὸ ὀλίγων ἡμερῶν γενομένης καὶ ἀποτυχούσης ἀποπείρας τοῦ Καρόλου Δ΄ πρὸς ἀνάκτησιν τοῦ θρόνου. Ἡ ἀπομάκρυνσις τοῦ βασιλέως καὶ ἡ ἀναβολὴ τῆς λύσεως τοῦ ζητήματος τῆς μοναρχίας εἰς ἀκαθόριστον καὶ εὐθετώτερον χρόνον, ἀπέτρεψεν ἀπὸ τὴν χώραν τοὺς ἐπαπειληθέντας κινδύνους καὶ ἐπέτρεψαν εἰς τὸν Μπέτλεν ν' ἀσχοληθῇ ἀνενόχλητος εἰς τὴν ἀναδιοργάνωσιν τοῦ κράτους, ὅπερ εἶχεν ὑποστῆ σοβαρὸν κλονισμὸν ἐκ τοῦ κομμουνιστικοῦ πειράματος. Κατώρθωσε νὰ συγκρατήσῃ τὰ ἄκρα ἐπαναστατικὰ στοιχεῖα καὶ μετὰ μεγάλης συνέσεως καὶ ἀντικειμενικότητος ἐπέτυχε νὰ λύσῃ τὴν τρομερὰν οἰκονομικὴν κρίσιν, ἥτις ἐμάστιζε τότε τὴν χώραν, καὶ νὰ συνάψῃ ἐξωτερικὸν δάνειον, διὰ τοῦ ὁποίου ἠδυνήθη νὰ κάμῃ ἔναρξιν τῆς ἐσωτερικῆς ἐξυγιάνσεως. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1921 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς Βενετίας, ἐπιτυχὼν ἐν αὐτῇ τὴν σύναψιν συμφωνίας μετὰ τῆς Αὐστρίας, δι' ἧς καὶ κατόπιν δημοψηφίσματος ἐπεστράφησαν εἰς τὴν Οὐγγαρίαν ἡ πόλις Σόπρον μετὰ τῶν περιχώρων της. Κατὰ τὸν αὐτὸν μῆνα ὁ Μπέτλεν ἀπέκρουσε τὴν δευτέραν ἔνοπλον ἀπόπειραν τοῦ Καρόλου Δ΄ πρὸς ἀνάληψιν τοῦ θρόνου. Ἐπιτυχὼν κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1922 καὶ διατηρήσας τὴν πρωθυπουργίαν, ἀντεπροσώπευσε τὴν Οὐγγαρίαν εἰς τὴν εἰς Παρισίους διάσκεψιν τῶν ἐπανορθώσεων καὶ ἐδέχθη τὸν ἔλεγχον τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν διὰ τὴν οἰκονομικὴν ἀνόρθωσιν τῆς χώρας. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος, χάρις εἰς τὰς ἰδικάς του ἐνεργείας, ἡ Οὐγγαρία ἐγένετο δεκτὴ ὡς μέλος τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν καὶ ἐπέτυχε νὰ προσελκύσῃ τὴν προσοχὴν αὐτῆς ἐπὶ τῶν μαγυαρικῶν μειονοτήτων. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1926 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἀρχὴν πανίσχυρος καὶ τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1927 μετέβη εἰς τὴν Ρώμην καὶ ὑπέγραψε μετὰ τοῦ Μουσσολίνι τὴν συνθήκην φιλίας καὶ διαιτησίας καὶ ἐμπορικὴν συνθήκην, ἐπιτυχὼν τὴν παραχώρησιν ἐμπορικῆς διεξόδου ἐπὶ τοῦ λιμένος τοῦ Φιοῦμε, ἐν τῇ Ἀδριατικῇ, διὰ τὴν εἰσαγωγὴν καὶ ἐξαγωγὴν τῆς Οὐγγαρίας. Ἵνα δὲ καταστῇ πραγματοποιήσιμος ἡ ἐλευθεροκοινωνία αὐτη, συνῆψε καὶ συμφωνίας εἰδικὰς μετὰ τῆς Νοτιοσλαβίας. Ὁ Μπέτλεν ἐταξείδευσε πολλάκις εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς πρωτευούσας πρὸς ὑποστήριξιν τῶν δικαίων τῆς Οὐγγαρίας καὶ ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας συζητήσεις εἰς τὰς συνεδριάσεις τοῦ συμβουλίου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν ἐπὶ ζητημάτων ἀφορώντων τὴν χώραν του. Ἡ σύναψις τοῦ συμφώνου μετὰ τῆς Ἰταλίας, ὅπερ θεωρεῖται ἔργον του, κρίνεται ὡς μεγάλη διπλωματικὴ ἐπιτυχία, διὰ τῆς ὁποίας κατώρθωσε νὰ ἐξαγάγῃ τὴν Οὐγγαρίαν ἐκ τῆς ἀπομονώσεως καὶ νὰ ἐξεύρῃ ἔρεισμα ἔναντι των πιέσεων τῆς Μικρᾶς Ἀντάντ. Συνῆψεν ἐπίσης σύμφωνον φιλίας μετὰ τῆς Τουρκίας, μεταβὰς πρὸς τοῦτο εἰς τὴν Ἄγκυραν τῷ 1930, ὅπου συνηντήθη μετὰ τοῦ τότε μεταβάντος ἐκεῖ Ἕλληνος πρωθυπουργοῦ Ἐλ. Βενιζέλου, μετὰ τοῦ ὁποίου ἐπίσης συνῆψεν, ὀλίγας ἡμέρας βραδύτερον ἐν Βουδαπέστῃ, σύμφωνον φιλίας καὶ διαιτησίας, καθὼς καὶ ἐμπορικὴν συνθήκην. Ὁ Μπέτλεν παρῃτήθη τῆς ἀρχῆς, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ κόμιτος Καρολύϊ, τὸν Αὔγουστον τοῦ 1931.

Ἡ σύζυγος αὐτοῦ *Μαργαρίττα Μπέτλεν* εἶναι ποιήτρια καὶ συγγραφεὺς πλείστων ἔργων δημοσιευθέντων εἰς ἐφημερίδας, περιοδικὰ καὶ ἰδιαιτέρους τόμους.

Μ. Δ. Β.

**Μπέτλερ** (Butler)· βλ. λ. *Μπάτλερ*.

**Μπέτλεημ**, καὶ ***Σάουθ-Μπέτλεημ*** (Bethlehem καὶ South Bethlehem) *[Γεωγρ.]*. Δύο πόλεις τῆς Βορειομερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομιτείᾳ *Νόρθαμπτον* τῆς πολιτείας τῆς Πενσυλβανίας, κείμεναι ἀπέναντι ἀλλήλων, ἡ μὲν πρώτη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς, ἡ δὲ δευτέρα ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ πλωτοῦ ποταμοῦ Λίχαϊ (Lehigh), 90 χλμ. σιδηροδρομικῶς πρὸς Β. τῆς Φιλαδελφείας, καὶ συνδεόμεναι πρὸς ἀλλήλας διὰ δύο μεγάλων γεφυρῶν. Ἡ πρώτη ἐξ αὐτῶν εἶναι κέντρον τῆς ἐν Ἀμερικῇ χριστιανικῆς αἱρέσεως τῶν Βοημῶν ἀδελφῶν καὶ σπουδαιότατον ἐκπαιδευτικὸν καὶ μουσικὸν κέντρον. Ἔχει κολλέγια καὶ σεμινάρια ἀρρένων καὶ θηλέων καὶ εἶναι κέντρον βιομηχανίας τοῦ σιδήρου καὶ τοῦ χάλυβος. Κάτ. 68.000.

Ἡ δευτέρα *(Σάουθ Μπέτλεημ)* εἶναι ἕδρα τοῦ πανεπιστημίου Λίχαϊ καὶ ἔχει κολλέγιον θηλέων καὶ σεμινάριον ἀρρένων τῆς αἱρέσεως τῶν Βοημῶν ἀδελφῶν. Εἶναι δὲ καὶ αὐτὴ ἐπίσης σπουδαιότατον κέντρον σιδηροβιομηχανίας καὶ χαλυβοβιομηχανίας καὶ γνωστὴ διὰ τὰ μεγάλα ἐργοστάσιά της, τὰ ὁποῖα ἀνέλαβον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου τὴν κατασκευὴν πολεμικοῦ ὑλικοῦ διὰ τὴν ἀγγλικὴν κυβέρνησιν. Κατὰ Νοέμβριον ὅμως τοῦ 1915 τὰ ἐργοστάσια ταῦτα ἀνετινάχθησαν ὑπὸ πυρκαϊᾶς, ὑπὸ Γερμανῶν πιθανῶς πρακτόρων, αἱ δὲ ἐντεῦθεν προελθοῦσαι ζημίαι ἀνῆλθον εἰς 200.000 λίρας στερλίνας. Κάτ. 23.500.

Χ. Δ.

**Μπέτμαν-Χόλβεγκ** (Bethmann-Hollweg), ***Θεοβάλδος φὸν —***. Γερμανὸς πολιτικὸς (1856—1921). Κατήγετο ἐκ κλάδου τῆς τραπεζικῆς ἐκ Φραγκφούρτης οἰκογενείας τῶν Μπέτμαν, οὗ ἱδρυτὴς ὑπῆρξεν ὁ πάππος του *Ἰωάννης-Ἰάκωβος Χόλβεγκ*. Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του διωρίσθη πάρεδρος δικαστὴς ἐν Πότσδαμ, εἶτα ἐγένετο σύμβουλος ἐν Ὄμπερ-Μπαρνίμ, μετὰ ταῦτα πρόεδρος τῆς κυβερνήσεως Μπόμπεργκ καὶ εἶτα τοῦ Βραδεμβούργου, μεθ' ὃ ἐκλεγεὶς βουλευτὴς εἰσῆλθεν εἰς τὸ Ράϊχσταγ, προσχωρήσας εἰς τὴν μερίδα τῶν μετριοπαθῶν συντηρητικῶν. Τῷ 1905 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν τῆς Πρωσσίας καὶ μετὰ δύο ἔτη ἀντιπρόεδρος τῆς πρωσσικῆς κυβερνήσεως καὶ ὑφυπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν τοῦ γερμανικοῦ κράτους. Ἐξαναγκασθέντος τοῦ καγκελλαρίου πρίγκιπος Μπύλωφ εἰς παραίτησιν, ἐκλήθη τὸν Ἰούλιον τοῦ 1909 ὡς διάδοχος τούτου ὁ Μπέτμαν-Χόλβεγκ μὲ πρόγραμμα συμφιλιωτικόν. Ὁ νέος καγκελλάριος προσεπάθησεν ἰδίως νὰ ἐπιτύχῃ συνεννόησιν μετὰ τῶν καθολικῶν τοῦ κέντρου, ἀποδεχθεὶς συμβιβαστικὰς λύσεις ἐπὶ διαφόρων θεμάτων, ἀλλ' ἀπέτυχεν εἰς τὰς προσπαθείας ταύτας. Ἡ πολιτική του θέσις ἐστερεώθη μόνον μετὰ τὰς βουλευτικὰς ἐκλογὰς τοῦ 1912. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν εἰσαγάγει (1911) εἰς τὴν Ἀλσατίαν καὶ Λωρραίνην (αἵτινες ὑπήγοντο τότε εἰς τὴν Γερμανίαν) σύστημα αὐτοδιοικήσεως.

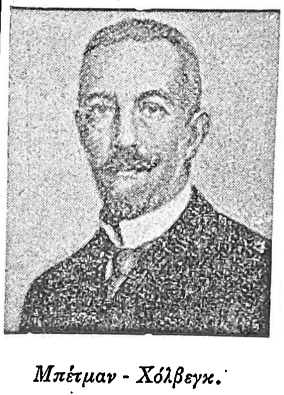

*Μπέτμαν - Χόλβεγκ.*

Εἰς τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικὴν ὁ Μπέτμαν-Χόλβεγκ δὲν ἦτο ἀπηλλαγμένος προκαταλήψεων· ἰδίως κατείχετο ὑπὸ αἰσθήματος δυσπιστίας πρὸς τὴν Ἀγγλίαν, πεπεισμένος ὢν ὅτι ὁ βασιλεὺς αὐτῆς Ἐδουάρδος ἀπέβλεπεν εἰς τὸ νὰ περικλείσῃ τὴν Γερμανίαν ἐντὸς ἰσχυροῦ πολιτικοῦ κλοιοῦ. Ἐπιζητῶν νὰ θραύσῃ τὸν κλοιὸν τοῦτον ὁ Μπέτμαν-Χόλβεγκ, ἐδέχθη νὰ διαπραγματευθῇ (Φεβρουάριον 1912) μὲ τὸν Ἄγγλον φιλελεύθερον λόρδον Χάλδαν σχέδιον συνάψεως ἀγγλογερμανικῆς συμμαχίας· ἀλλὰ καὶ ἐν τούτῳ ὁ Μπέτμαν ἀπέτυχε, λόγῳ κυρίως ἀντιρρήσεων τοῦ ναυάρχου Τίρπιτς, ἀρνηθέντος ὅπως ἡ Γερμανία ἀναλάβῃ ὑποχρεώσεις ναυτικῆς φύσεως ἀπέναντι τῆς Ἀγγλίας. Ὡς πρὸς τὴν Ρωσίαν καὶ τὴν Γαλλίαν ὁ Μπέτμαν-Χόλβεγκ ἀπέκλινε μᾶλλον εἰς τὴν πολιτικὴν τῶν δραστικῶν μέσων. Παράδειγμα τὸ ζήτημα τοῦ Μαρόκκου, ὁπότε ἠθέλησε νὰ ὑποστηρίξῃ τὰς γερμανικὰς διεκδικήσεις, ἀποστείλας εἰς Ἀγαδὶρ τὸ πολεμικὸν «Πάνθηρ». Ἔναντι τῆς Ἰταλίας ἡ πολιτικὴ τοῦ Μπέτμαν-Χόλβεγκ ἦτο μᾶλλον εὔνους. Μετὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους ηὐνόησε τὰς αὐστριακὰς ἐπιφυλάξεις ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἐπέκτασιν τοῦ σερβικοῦ ἐδάφους μέχρι τῆς Ἀδριατικῆς. Κατὰ τὴν προκαλέσασαν τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κρίσιν ἐκ τῆς δολοφονίας τοῦ ἀρχιδουκὸς Φερδινάνδου ἠκολούθησε τυφλῶς τὰς ἐπικρατησάσας ἀντιλήψεις τῶν στρατιωτικῶν κύκλων, οὐδόλως ἀντιδράσας εἰς τὸ σχέδιον τῆς διόδου τῶν γερμανικῶν στρατευμάτων διὰ τοῦ βελγικοῦ ἐδάφους. Ἱστορικὴ ἀπέμεινεν ἡ κατὰ τὰς τελευταίας συνομιλίας αὐτοῦ μετὰ τοῦ ἐν Βερολίνῳ πρεσβευτοῦ τῆς Ἀγγλίας Γκόσεν φράσις του, ὅτι δὲν πρέπει νὰ μάχωνται δύο ἀδελφοὶ λαοὶ ἐναντίον ἀλλήλων ἐξ αἰτίας ἐκείνου τοῦ «κουρελοχάρτου», τῆς ἐγγυητικῆς τουτέστι συμφωνίας τῆς Ἀγγλίας ὑπὲρ τῆς βελγικῆς οὐδετερότητος. Ἐπίσης ἱστορικὴ ἀπέμεινεν ἑτέρα φράσις αὐτοῦ: «ἡ ἀνάγκη δὲν γνωρίζει νόμους», ἣν ἀπήγγειλεν ἡμέρας τινὰς βραδύτερον (4 Αὐγούστου 1914), ὅταν ὁμιλῶν ἀπὸ τοῦ βήματος τοῦ Ράϊχσταγ ἐζήτησε νὰ δικαιολογήσῃ τὴν εἰσβολὴν τῶν γερμανικῶν στρατευμάτων εἰς τὸ Βέλγιον. Ὅταν δὲ ἡ Ἰταλία, παρὰ τὴν μετὰ τῶν Κεντρικῶν Δυνάμεων διασυμμαχίαν της, ἐκήρυξεν οὐδετερότητα, ὁ Μπέτμαν-Χόλβεγκ, μολονότι ἐξωργίσθη σφόδρα, ἔσπευσεν οὐχ ἧττον ἀκολούθως νὰ ὑποστηρίξῃ τὰς περὶ τὸ τέλος τοῦ 1914 ἀρξαμένας μεταξὺ Αὐστρίας καὶ Ἰταλίας διαπραγματεύσεις, ἀποστείλας πρὸς τοῦτο εἰς τὸ Κυρινάλιον ὡς πρεσβευτὴν τὸν πρίγκιπα Μπύλωφ, εὐνοήσας μάλιστα καὶ ἐδαφικὰς παραχωρήσεις πρὸς τὴν Ἰταλίαν καὶ τὴν ἐκ μέρους τῶν Ἰταλῶν κατάληψιν τῆς Αὐλῶνος. Ὅταν οἱ στρατιωτικοὶ κύκλοι ἐπεκράτησαν πλήρως ἐν Γερμανίᾳ ὡς πρὸς τὴν καθόλου πολιτικὴν τῆς διεξαγωγῆς τοῦ πολέμου, ὁ Μπέτμαν - Χόλβεγκ δὲν ἔσχε τὸ θάρρος νὰ ἀποκηρύξῃ τὴν ἀνάμιξιν ταύτην καὶ συγκεκριμένως νὰ ἀποκηρύξῃ τὸν ἀποφασισθέντα ἀμείλικτον ὑποβρύχιον πόλεμον, περιορισθεὶς μόνον ν' ἀποσείσῃ ἀφ' ἑαυτοῦ πᾶσαν εὐθύνην, δηλώσας εἰς τὸν κάϊζερ ὅτι οὔτε συγκατετίθετο οὔτε ἠρνεῖτο τὴν διενέργειαν ἀπεριορίστως ὑποβρυχίου πολέμου, ἐπαφιέμενος εἰς τὴν ἀπόφασιν τοῦ αὐτοκράτορος.

Ἡ ἐπικράτησις τῶν στρατιωτικῶν εἰς τὰ τῆς πολιτικῆς, ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν ἀποτυχίαν τοῦ ὑποβρυχιακοῦ πολέμου καὶ τὴν ἀδυναμίαν τῆς Αὐστρίας ὅπως ἀνθέξῃ ἐπὶ ἕνα ἀκόμη χειμῶνα εἰς τὸν πόλεμον, ἔπεισαν πολλοὺς πολιτικοὺς νὰ παύσωσι παρέχοντες τὴν κοινοβουλευτικὴν ὑποστήριξίν των εἰς τὸν καγκελλάριον. Ὁ Μπέτμαν - Χόλβεγκ προσεπάθησε διὰ μεταρρυθμίσεών τινων νὰ ἀμβλύνῃ τὸν ἀντιπολιτευτικὸν ἐρεθισμόν. Ἡ ἀριστερὰ ὅμως καὶ οἱ καθολικοὶ τοῦ Κέντρου, ἐφ' ὧν μεγάλην ἤδη εἶχεν ἀποκτήσει ἐπιρροὴν ὁ Ἔρτζμπεργκερ, ἐκήρυττον πλέον ὅτι δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ προέλθουν οἱ σύμμαχοι εἰς συνομιλίας μετὰ τῆς Γερμανίας, ἐφ' ὅσον προΐστανται αὐτῆς ἄνδρες ὡς ὁ Μπέτμαν - Χόλβεγκ καὶ ὁ Τσίμερμαν. Τὴν ἐπομένην τῆς δημοσιεύσεως τοῦ δευτέρου πρωσσικοῦ διατάγματος περὶ ἐκλογικῶν μεταρρυθμίσεων (14 Ἰουλίου 1917) κατέφθασαν εἰς Βερολῖνον οἱ Χίνδεμπουργ καὶ Λούδενδορφ διὰ νὰ συζητήσωσι μετὰ τῶν πολιτικῶν ἀρχηγῶν τὸ ζήτημα τῆς ἐπιδιώξεως τῆς εἰρήνης. Ὁ Μπέτμαν - Χόλβεγκ δὲν ἠδύνατο πλέον νὰ ἀνεχθῇ τὴν φανερὰν ἀνάμιξιν τῶν στρατιωτικῶν εἰς τὰ τῆς πολιτικῆς καὶ ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του. Ὁ κάϊζερ, κατόπιν τελεσιγράφου τῶν δύο στραταρχῶν, ἠναγκάσθη ν' ἀποδεχθῇ ταύτην. Ἔκτοτε ὁ Μπέτμαν - Χόλβεγκ δὲν ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν. Ἀποσυρθεὶς εἰς Χόχενφίνω, κατέγινεν εἰς τὴν συγγραφὴν τῶν ἀπομνημονευμάτων του, ἅτινα ἐξεδόθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Σκέψεις περὶ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου» (1919—1921, τόμ. 2).

Γ. Ι. Β.

**Μπετόβεν** (Beethoven), ***Λουδοβῖκος***. Μέγας μουσουργός. Ἐβαπτίσθη τὴν 17 Δεκεμβρίου τοῦ ἔτους 1770 ἐν Βόννῃ παρὰ τὸν Ρῆνον. Ἡ ἡμερομηνία τῆς γεννήσεως αὐτοῦ δὲν εἶναι μὲν ἀπολύτως ἐξηκριβωμένη, ἀλλ' ἐπειδὴ ὑπῆρχε συνήθεια, ὅπως ἡ βάπτισις τελῆται τὴν ἐπαύριον τῆς γεννήσεως, δυνάμεθα νὰ ὑποθέσωμεν ὅτι ὁ Μπετόβεν ἐγεννήθη τὴν 16 Δεκεμβρίου. Ὁ *Λουδοβῖκος* ἦτο ὁ δευτερότοκος υἱὸς τοῦ μουσικοῦ τῆς αὐλῆς *Ἰωάννου φὰν Μπετόβεν* (γεννηθέντος τῷ 1739) καὶ τῆς ἐν ἔτει 1767 συζευχθείσης αὐτὸν χήρας *Μαγδαληνῆς Λάϋμ* (γεννηθείσης τῷ 1746). Ὁ πρὸ τοῦ Λουδοβίκου κατ' Ἀπρίλιον τοῦ 1769 γεννηθεὶς πρωτότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου ἀπέθανε μικρὸν χρόνον μετὰ τὴν γέννησιν αὐτοῦ. Μετὰ τὸν Λουδοβῖκον ὁ Ἰωάννης Μπετόβεν ἀπέκτησεν ἀκόμη δύο υἱούς, τὸν *Γάσπαρ Ἀντώνιον Κάρολον* (1774), καὶ τὸν *Νικόλαον Ἰωάννην* (1776). Ἡ μήτηρ τοῦ Μπετόβεν κατήγετο ἐκ Ρηνλανδίας, ἦτο θυγάτηρ μαγείρου, τῷ δὲ 1787 ἀπέθανεν ἐκ φυματιάσεως. Ὡς πρὸς τὴν οἰκογένειάν της οὐδὲν ἄξιον μνείας εἶναι γνωστόν. Τοὐναντίον ὁ πατὴρ τοῦ Μπετόβεν δὲν ἦτο μόνον αὐτὸς ὁ ἴδιος μουσικός, ἀλλὰ καὶ υἱὸς μουσικοῦ, ἤτοι υἱὸς τοῦ διευθυντοῦ ὀρχήστρας *Λουδοβίκου φὰν Μπετόβεν*, γεννηθέντος ἐν Ἀντβέρπῃ τῷ 1712. Ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἦτο ράπτης. Ὁ Λουδοβῖκος Μπετόβεν διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ ἔτους 1733 μουσικὸς τῆς αὐλῆς, βραδύτερον δὲ διευθυντὴς τῆς ὀρχήστρας τοῦ μεγάλου δουκὸς - ἀρχιεπισκόπου τῆς Κολωνίας ἐν Βόννῃ. Ὅθεν αἱ συνθῆκαι, ὑφ' ἃς ὁ Μπετόβεν διῆλθε τὴν πρώτην παιδικὴν ἡλικίαν του, ὑπῆρξαν εὐμενεῖς διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς μουσικῆς ἰδιοφυΐας του. Ἡ ἀνάγκη μουσικῆς τόσον διὰ τὰς ἱεροτελεστίας ὅσον καὶ διὰ τὴν ψυχαγωγίαν τῆς δουκικῆς αὐλῆς παρέσχε παροτρύνσεις παντοειδεῖς. Οὕτως ὁ νεαρὸς Μπετόβεν εὐκόλως ἠδυνήθη νὰ μορφωθῇ ὡς μουσικός, ὑφιστάμενος καθημερινῶς τὰς ὑπὸ τὴν ἐπο-

Digitized by Google

ψιν ταύτην εὐεργετικὰς ἐπιδράσεις τοῦ περιβάλλοντος. Ὅθεν αἱ ἐξωτερικαὶ συνθῆκαι ἦσαν ὅμοιαι πρὸς ἐκείνας, ὑφ' ἃς ἔζησε καὶ ὁ νεαρὸς Μόζαρτ, ὅστις ἐπίσης ἀνετράφη, ὡς μέλος οἰκογενείας μουσικῶν, εἰς τὴν αὐλὴν ἐκκλησιαστικοῦ ἄρχοντος. Ἀλλ' ὁ πατὴρ τοῦ Μόζαρτ ἦτο παιδαγωγὸς εὐφνέστατος καὶ εὐσυνείδητος, ἐνῷ ὁ τοῦ Μπετόβεν ἦτο βίαιος καὶ μέθυσος, οὕτως ὥστε βραδύτερον ἐκηρύχθη εἰς κατάστασιν ἀπαγορεύσεως, ὁ δὲ Λουδοβῖκος, ἤδη εἰς ἡλικίαν δέκα ἐννέα ἐτῶν, ἠναγκάσθη μικρὸν μετὰ τὸν θάνατον τῆς μητρός του ν' ἀναλάβῃ τὴν ἀγωγὴν τῶν νεωτέρων αὐτοῦ ἀδελφῶν. Ἐν τούτοις, αἱ ἀντίξοοι συνθῆκαι τῆς οἰκογενείας του δὲν διετάραξαν τὴν μουσικὴν ἐκπαίδευσίν του. Πρωΐμως ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ φὰν Ἔεντεν, οὕτως ὥστε εἰς ἡλικίαν μόλις ἓξ ἐτῶν ἠδυνήθη νὰ κάμῃ τὴν ἐμφάνισίν του εἰς τὸ κοινόν, χωρὶς ὅμως νὰ προκαλέσῃ τὴν καταπληκτικὴν ἐκείνην ἐντύπωσιν, ἣν ἐνεποίησεν ὁ Μόζαρτ. Ὁ Μπετόβεν δὲν ὑπῆρξε πρόωρος μεγαλοφυΐα κατὰ τὴν κυριολεκτικὴν τῆς λέξεως ἐκδοχήν. Ἡ καλλιτεχνικὴ ἐξέλιξις αὐτοῦ ἐξηρτήθη ἐκ τῆς ἐξελίξεως τοῦ χαρακτῆρός του, χαρακτῆρος τραχέος, αὐτοτελοῦς, ἀρρενωποῦ. Οὕτω τὰ καλλιτεχνικὰ πρωτόλειά του ἐπέτρεψαν μὲν νὰ μαντεύσῃ τις τὴν μεγαλοφυᾶ φύσιν του, δὲν ἀπεκάλυψαν ὅμως αὐτὴν καθ' ὁλοκληρίαν. Ὑπῆρξεν ἀνάγκη χρόνου μακροῦ πρὸς ὡρίμανσιν, ὁ χρόνος δὲ οὗτος ἐπέστη διὰ τῆς μουσικῆς ἀγωγῆς, ἣν ἔλαβεν (ἐν τῇ συνθέσει καὶ τῷ κλειδοκυμβάλῳ) παρὰ τοῦ Χριστιανοῦ Γκόττλομπ Νεέφε, ἀνδρὸς μεγάλης κοινωνικῆς καὶ ἐγκυκλοπαιδικῆς μορφώσεως, παρὰ τοῦ Ῥοβεντίνι (ἐν τῷ βιολίῳ), τοῦ Πφάϊφερ καὶ τοῦ Κὸχ (ἐν τῷ κλειδοκυμβάλῳ καὶ τῷ ἁρμονίῳ). Πάντες οὗτοι διέμενον ἐν Βόννῃ, τῇ τότε πρωτευούσῃ τοῦ μεγάλου δουκὸς ἀρχιεπισκόπου τῆς Κολωνίας. Μέγας δοὺξ ἦτο ἀπὸ τοῦ ἔτους 1784 ὁ Μαξιμιλιανὸς Φραγκῖσκος, νεώτερος υἱὸς τῆς αὐτοκρατείρας Μαρίας-Θηρεσίας, φίλος τῶν τεχνῶν καὶ τῆς μουσικῆς. Τῇ εἰσηγήσει τοῦ ἡγεμόνος τούτου διωρίσθη ὁ Μπετόβεν ὀργανοκρούστης τῆς αὐλῆς, ἀφοῦ ἓν ἔτος πρὸ τοῦ διορισμοῦ του ἐξέδωκε, διὰ πρώτην φοράν, τρεῖς σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον.

Ταχέως ἐσχηματίσθη περὶ αὐτὸν κύκλος φίλων καὶ θαυμαστῶν. Εἰς τὴν χορείαν τῶν φίλων αὐτοῦ συγκατελέγετο ἡ οἰκογένεια Μπρόϋνιγκ. Ὁ Στέφανος Μπρόϋνιγκ συνεδέθη βραδύτερον στενῶς μετὰ τοῦ Μπετόβεν, τὸν ἀκραιφνέστατον δὲ τοῦτον δεσμὸν διετήρησε μέχρι τέλους. Ἡ ἀδελφὴ τοῦ Στεφάνου Ἐλεονώρα καὶ ὁ σύζυγος αὐτῆς, ὁ ἰατρὸς Φραγκῖσκος Βέγκελερ, διετήρησαν τὴν πρὸς τὸν Μπετόβεν λατρείαν αὐτῶν ἀμείωτον. Εἰς τὴν τάξιν τῶν θαυμαστῶν του ἀνήκει ὁ κόμης Βαλντστάϊν, τὸ ὄνομα τοῦ ὁποίου διαιωνίσθη διὰ τῆς πρὸς αὐτὸν ἀφιερώσεως τῆς μεγάλης σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον (53). Ὁ Βαλντστάϊν, ἐλθὼν ἐκ Βιέννης μετὰ τοῦ μεγάλου δουκός, ὑπῆρξεν ἐκεῖνος πιθανῶς, ὅστις παρώρμησε τὸν νεαρὸν Μπετόβεν νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν φιλόξενον μέν, ἀλλ' ἐπαρχιακὴν πρωτεύουσαν καὶ νὰ ἐγκατασταθῇ ἐν Βιέννῃ. Ἐκεῖ ἔζων ὁ Γκλούκ, ὁ Σαλιέρι, ὁ Μόζαρτ, ὁ Χάϋντν καὶ ἄλλοι πολλοὶ περιφανεῖς μουσουργοί. Ἤδη, ὡς νεανίας δεκαεπταετής, ὁ Μπετόβεν, μετέβη κατὰ τὸ ἔαρ τοῦ ἔτους 1787 εἰς τὴν αὐστριακὴν πρωτεύουσαν, ἔνθα διέμεινεν ἐπί τινα καιρόν, ἐπέστρεψεν ὅμως πάλιν εἰς τὴν Βόννην, ὅπως ἴδῃ τὴν ἀσθενοῦσαν μητέρα του. Κατὰ τὴν ἐν Βιέννῃ διαμονήν του ἐγνώρισε τὸν Μόζαρτ καὶ ἐξετέλεσεν ἐνώπιον αὐτοῦ τεμάχιά τινα ἐπὶ τοῦ κλειδοκυμβάλου. Ὁ Μπετόβεν ἠναγκάσθη νὰ μείνῃ ἐν Βόννῃ διὰ λόγους οἰκογενειακῆς φύσεως. Κατὰ τὰ ἔτη 1790 καὶ 1792 ὁ Χάϋντν, κατὰ τὴν εἰς Λονδῖνον μετάβασίν του καὶ ἐπιστροφὴν αὐτοῦ, διῆλθεν ἐκ Βόννης, ὅπου παρέστη εἰς τὴν ἐκτέλεσιν συνθέσεών τινων τοῦ Μπετόβεν. Ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ δὲ ταύτῃ συνεφωνήθη, ὡς πιστεύεται, ἵνα ὁ Μπετόβεν τὸν συνοδεύσῃ εἰς Βιένην ὡς μαθητὴς αὐτοῦ. Ὁ μέγας δοὺξ καὶ ἄλλοι φίλοι ἐβοήθησαν τὸν νεαρὸν μουσικὸν οἰκονομικῶς, ὁ ἐπιούσιος τῶν νεωτέρων ἀδελφῶν αὐτοῦ ἐξησφαλίσθη, ἡ δὲ μήτηρ του δὲν ὑπῆρχε πλέον εἰς τὴν ζωήν. Οὕτως ὁ Μπετόβεν, ἐγκαταλιπὼν κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1792 τὴν Βόννην, μετέβη εἰς τὴν Βιένην πρὸς τελειοποίησιν τῶν μουσικῶν του σπουδῶν, χωρὶς νὰ διαισθανθῇ ὅτι ἐν τῇ πόλει ταύτῃ θὰ ἐπραγματοποίει τὸν τελικὸν τοῦ βίου του σκοπὸν καὶ ὅτι οὐδέποτε πλέον θὰ ἐπανέβλεπε τὴν ἰδιαιτέραν πατρίδα του παρὰ τὸν Ῥῆνον.

Ὁ Μπετόβεν, ὅτε μετέβη εἰς τὴν Βιέννην, ἦγεν ἡλικίαν εἴκοσι δύο ἐτῶν. Κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους ἡ αὐστριακὴ πρωτεύουσα ἦτο τὸ μουσικὸν κέντρον τῆς Εὐρώπης. Ἀοιδοί, δεξιοτέχναι, μουσικοσυνθέται ἐλάμβανον εἰς τὴν πόλιν ταύτην τὸ καλλιτεχνικὸν αὐτῶν χρίσμα. Ὅστις ἐπετύγχανεν ἐν Βιέννῃ, ἐπεβάλλετο εἰς ὁλόκληρον τὴν μουσικὴν ὑφήλιον, καίτοι κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην δυσκόλως ἠδύνατό τις νὰ γίνῃ διεθνῶς γνωστός. Ἐν Βιέννῃ σπανίως ἐδίδοντο δημόσιαι συναυλίαι, ἡ δὲ μουσικὴ ζωὴ ἐξετυλίσσετο εἰς τὰς αἰθούσας τῶν εὐγενῶν καὶ τῆς αὐλῆς. Πολλαὶ κυρίαι καὶ κύριοι τῆς τάξεως τῶν εὐγενῶν εἶχον ἀρτίαν μουσικὴν μόρφωσιν καὶ ἦσαν δόκιμοι ἐκτελεσταί, ἡ καλλιέργεια δὲ τῆς μουσικῆς δωματίου ἦτο μία τῶν συνήθων ἀπασχολήσεων. Οἱ πλούσιοι διετήρουν οἰκιακὰς ὀρχήστρας, τὰ μέλη τῶν ὁποίων ἐχρησίμευον ἐνίοτε καὶ ὡς ὑπηρέται. Τοιαύτην ὀρχήστραν διηύθυνεν ὁ Ἰωσὴφ Χάϋντν ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τοῦ δουκὸς Ἐστερχάτζυ. Εἰς τοιαύτην ὀρχήστραν ἀνῆκεν ἐπίσης ὁ πατὴρ τοῦ Μόζαρτ καὶ αὐτὸς ὁ ἴδιος ὁ Μόζαρτ ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τοῦ ἀρχιεπισκόπου τοῦ Σαλσβούργου, ὑπὸ τὴν αὐτὴν δὲ ἰδιότητα ὑπηρέτησαν παρὰ τῷ ἀρχιεπισκόπῳ τῆς Κολωνίας ὁ πάππος τοῦ Μπετόβεν, ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ αὐτὸς ὁ ἴδιος ὁ Μπετόβεν. Ἐν Βιέννῃ, ὅπου οἱ πλούσιοι εὐγενεῖς τῆς Αὐστρίας, τῆς Βοημίας καὶ τῆς Οὐγγαρίας συνηθροίζοντο κατὰ τὸν χειμῶνα πέριξ μιᾶς λαμπροτάτης αὐτοκρατορικῆς αὐλῆς, ὑπῆρχε μέγας ἀριθμὸς τοιούτων μουσικῶν, οἵτινες ἐκ τῶν δημοσίων μελοδραματικῶν θεάτρων ἐλάμβανον εὐεργετικὰς παροτρύνσεις. Εἰς τὸν κόσμον τοῦτον εἰσῆλθεν ὁ νεαρὸς Μπετόβεν ὡς ἁπλοῦς μαθητὴς τοῦ Χάϋντν ἐν τῇ συνθέσει, ἀλλὰ ταχέως ἀνεδείχθη διὰ τῆς μεγαλοφυοῦς ἐπὶ τοῦ κλειδοκυμβάλου ἐκτελέσεως καὶ τῆς αὐτοπεποιθήσεως αὐτοῦ. Χωρὶς νὰ θίξῃ τὰ ὅρια τῆς εὐπρεπείας, ἀντέταξε πρὸς τὴν τότε κρατοῦσαν ἀντίληψιν περὶ τοῦ μουσικοῦ ὡς θεράποντος τὴν ἤρεμον ὑπερηφάνειαν τοῦ καλλιτέχνου. Δὲν εἶναι ἀληθὲς ὅτι ὁ Μπετόβεν ἦτο ἀνάγωγος καὶ ὅτι, στερούμενος λεπτότητος, συμπεριεφέρετο ἀπὸ σκοποῦ ἀποτόμως πρὸς τοὺς φίλους καὶ τοὺς θαυμαστὰς αὐτοῦ. Τὸ ὅτι ἐξέπληξε τοὺς πολλοὺς λόγῳ τοῦ ἀνδρισμοῦ καὶ τῆς παρρησίας τοῦ χαρακτῆρός του, δέον ν' ἀποδοθῇ εἰς τὴν ἀντίθεσιν τῆς τοιαύτης ἐμφανίσεώς του πρὸς τὴν κρατοῦσαν τότε γνώμην περὶ τοῦ ἐπαγγέλματος τοῦ μουσικοῦ. Ἤδη ὁ Μόζαρτ ἐπέδειξε τὴν αὐτὴν παρρησίαν, ἀλλ' ἐναυάγησεν ἐν τῇ ἀντιδράσει καὶ τῇ ἀδιαφορίᾳ τῶν συγχρόνων του. Ὁ Μόζαρτ ἐξεμέτρησε τὸ ζῆν ἐν Βιέννῃ, ἓν ἔτος πρὸ τῆς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἐγκαταστάσεως τοῦ Μπετόβεν, οἱ δὲ σύγχρονοί του δὲν ἔσχον συνείδησιν τοῦ μεγέθους τῆς ἀπωλείας. Ὁ Μόζαρτ ἠναγκάσθη ν' ἀγωνισθῇ τὸν ἀγῶνα τῆς ζωῆς δι' ἑαυτὸν καὶ τὴν οἰκογένειάν του. Ὁ Μπετόβεν ὑπῆρξεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ὑπὸ τὴν ἔποψιν ταύτην εὐτυχέστερος. Ἡ ὑπόληψίς του ὡς δεξιοτέχνου ὠφείλετο ἐν πρώτοις εἰς ἀσυνήθη τρόπον ἐκτελέσεως, αὐξάνοντα εἰς τὸ ἔπακρον τὴν δυναμικὴν τοῦ ὀργάνου, ἔτι δὲ μᾶλλον εἰς τὴν παρασύρουσαν ἐντύπωσιν, ἣν ἐνεποίει ἡ ἐλευθέρα καὶ ἰσχυρὰ προσωπικότης του. Τοιουτοτρόπως προπαρεσκεύασε τὸ ἔδαφος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου διεξεδίκησε τὴν ἀναγνώρισιν τῆς ἐπιβλητικῆς δυνάμεώς του. Ὡς μουσικοσυνθέτης ὁ Μπετόβεν ἔκαμε τὴν ἐμφάνισιν αὐτοῦ σχετικῶς ἀργά. Δὲν ἐβράδυνε νὰ διακόψῃ τὴν παρὰ τῷ Χάϋντν μαθητείαν του, διότι εἶχε παρατηρήσει, ὅτι ὁ διδάσκαλός του δὲν προέβαινεν εἰς τὴν διόρθωσιν σφαλμάτων τινῶν. Κατέφυγε πρὸς τὸν καθηγητὴν τῆς ἀντιστίξεως Ἀλμπρεχτσμπέργερ, πρὸς τὸν Σένκ, συνθέτην εὐθύμων μελοδραματίων καὶ τέλος πρὸς τὸν Ἰταλὸν συνθέτην μελοδραμάτων Σαλιέρι, ἐπὶ τῷ τέλει ὅπως παρ' αὐτῶν διδαχθῇ τὸν τρόπον τῆς χρησιμοποιήσεως τῆς φωνῆς διὰ τὸ θέατρον. Οὕτω κατέβαλε πᾶσαν προσπάθειαν, ὅπως ἀποκτήσῃ γνώσεις καὶ ἀπόψεις ἐν τῇ τεχνικῇ τῆς μουσικῆς ἐπὶ παντὸς πεδίου. Τὸ πρῶτον ἐν ἔτει 1795, ὅτε δηλαδὴ ἦγε τὸ εἰκοστὸν πέμπτον ἔτος τῆς ἡλικίας του, ἐγένετο ἡ δημοσία ἀναγγελία τῶν συνθέσεων, τὰς ὁποίας αὐτὸς ὁ ἴδιος ὁ Μπετόβεν ἐνεφάνισεν ὡς opus 1, δηλῶν δι' αὐτοῦ ὅτι τὰ πρὸ τῶν συνθέσεων τούτων ἔργα του δὲν ἔπρεπε νὰ συγκαταλεχθῶσιν εἰς αὐτάς. Ἐν τούτοις, ἡ πρὸ τῶν ἐν λόγῳ μουσικῶν προϊόντων δημιουργία του δὲν πρέπει νὰ θεωρηθῇ ὡς ἀσήμαντος ἢ εὐκαταφρόνητος. Ἡ ἐν ἔτει π. χ. 1790 ἐπὶ τῷ θανάτῳ τοῦ Ἰωσὴφ Β΄ γραφεῖσα πένθιμος καντάτα περιέχει τὸ μεγαλειώδους ἐμπνεύσεως τεμάχιον ἐκεῖνο, ὅπερ βραδύτερον ἐχρησιμοποιήθη ἐν τῇ δευτέρᾳ σκηνῇ συνόλου τοῦ μελοδράματος «Φιντέλιο» καὶ εἰδικῶς εἰς τὸ φινάλε: «Ὦ Θεέ μου, ὁποία στιγμή!» Ὁ Μπετόβεν, ὡς καὶ πᾶς καλλιτέχνης μεγαλοφυής, ἐνήργει ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἐκμετάλλευσιν τῶν ἐμπνεύσεών του μετὰ σώφρονος οἰκονομίας. Ὅθεν οὐδένα εἶχεν ἐνδοιασμὸν καὶ χρησιμοποιῇ διὰ τὴν μεταγενεστέραν δημιουργίαν του πολυτίμους ἐμπνεύσεις τῶν νεανικῶν χρόνων του. Ἐν τούτοις ἡ αὐτοκριτικὴ τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ δὲν ἔκρινε τὰ προγενέστερα ἔργα του ἄξια ν' ἀναγραφῶσιν εἰς τὸν κατάλογον τῆς συνολικῆς του δημιουργίας. Ἐν προκειμένῳ ἀποκαλύπτεται σχετικῶς πρὸς τὸν χαρακτῆρα τοῦ Μπετόβεν, ὡς ἀνθρώπου καὶ ὡς καλλιτέχνου, σημαντικώτατον γνώρισμα, ἤτοι ἡ τάσις αὐτοῦ πρὸς τὸν κριτικὸν ἔλεγχον τῶν ἀξιῶν.

*Λουδοβῖκος Μπετόβεν.*

[Χαλκογραφία τοῦ Eichem].

Ἡ τάσις αὐτὴ δὲν ἐκδηλοῦται μόνον ἐν σχέσει πρὸς τὰ νεανικὰ του ἔργα, ὡς ἰδιαιτέρως λεπτολόγος ζυγοστάθμισις τῶν συνθέσεων ἐν τῇ μουσικῇ, ἀλλ' ἔγκειται κατ' εὐρυτέραν ἔννοιαν, ἐν τῇ θέσει, ἣν αὐτὸς λαμβάνει ἔναντι τῶν συμβεβηκότων τῆς ζωῆς καὶ τῶν φαινομένων τοῦ κόσμου καὶ ἀποτελεῖ, γενικῶς εἰπεῖν, οὐσιωδέστατον στοιχεῖον τοῦ ἰδιοφυοῦς πνεύματός του. Εἶναι ὁ καλλιτέχνης ἐποχῆς, καθ' ἣν ὁ κριτικὸς ἔλεγχος τῶν πάντων εἶναι ἡ κινοῦσα δύναμις τῆς σκέψεως καὶ τῆς δράσεως. Ἐν τῷ σημείῳ τούτῳ ὁ Μπετόβεν εἶναι σύγχρονος τοῦ μεγάλου τῆς Καινιξβέργης φιλοσόφου Ἐμμανουὴλ Καντίου, ὅστις πάλιν ὑπῆρξεν ὁ πνευματικὸς καθοδηγητὴς τοῦ ποιητοῦ Φρειδερίκου Σίλλερ.

Ἀπὸ τῆς δημοσιεύσεως τοῦ opus 1 (τριῶν τριῳδιῶν ἀφιερωμένων εἰς τὸν Ἰωσὴφ Χάϋντν) ὁ Μπετόβεν ἐπέδειξεν ἔκτακτον παραγωγικότητα. Ἠκολούθησαν σονάτες διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολοντσέλλο, κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον, τεμάχια μουσικῆς δωματίου, μεταξὺ δ' αὐτῶν ἓν σεπτέτο, ἓν κουϊντέττο, ἓν τρίο δι' ἔγχορδα ὄργανα, τέλος τῷ 1797 ἡ πρώτη συμφωνία καὶ τῷ 1800 ἓξ κουαρτέτα δι' ἔγχορδα ὄργανα. Ὡς πρὸς τὴν διαδοχικὴν τῶν συνθέσεων τούτων ἀκολουθίαν δύο γεγονότα ἐπισύρουσι τὴν προσοχήν: ἐν πρώτοις τὸ μικρὸν ἐνδιαφέρον τοῦ Μπετόβεν διὰ τὴν σύνθεσιν ᾠδικῆς μουσικῆς, ἥτις ἐκαλλιεργεῖτο τότε μόνον εἰς ἔργα δευτερευούσης σημασίας. Ἐξαίρεσιν ἀποτελεῖ ἡ σύνθεσις τῆς «Ἀδελαΐδος» ἐπὶ στίχων τοῦ Μάττιζον, ἐνῷ τὸ πλεῖστον τῆς δημιουργικῆς του ἐργασίας ἀφιεροῦτο εἰς τὴν ἐνόργανον μουσικήν. Ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς δημιουργίας ἐνοργάνου μουσικῆς προέχει μεγάλως τὸ ἐνδιαφέρον διὰ συνθέσεις κλειδοκυμβάλου, ὁ δὲ ἀριθμὸς τῶν ἔργων τῶν προωρισμένων διὰ κλειδοκύμβαλον μόνον καὶ κλειδοκύμβαλον μετ' ἄλλων ὀργάνων κυριαρχεῖ. Τὸ γεγονὸς τοῦτο ἑρμηνεύεται ἐκ τῆς δράσεως τοῦ Μπετόβεν ὡς ἀσυναγωνίστου ἐκτελεστοῦ. Ἔγραφε πρὸ παντὸς δι' ἰδίαν χρῆσιν, πρὸς ἄσκησιν. Ἦτο δὲ αὕτη πολὺ μεγάλη, διότι ἐντὸς ὀλίγων ἐτῶν ὁ Μπετόβεν κατέλαβε θέσιν κυριαρχοῦντος δεξιοτέχνου τοῦ κλειδοκυμβάλου. Δὲν ἐθαυμάζετο δὲ τόσον ἡ τέχνη αὐτοῦ ὡς πρὸς τὴν εὐχέρειαν ἐν τῇ ἐκτελέσει, ὅσον ἡ δύναμις τῆς ἐκφράσεως, ἡ ἀπελευθέρωσις καὶ ἐνσυνειδητοποίησις ὁλοκλήρου τῆς δυναμικότητος τοῦ ὀργάνου, ἡ δύναμις καὶ συγχρόνως ἡ τρυφερότης τῆς ἐκφράσεως, ἡ ἱκανότης τῆς ἀμέσου ἀποδόσεως καὶ τῶν ὀξυτέρων ἀκόμη ἀντιθέσεων καὶ ὁ ἐκ πασῶν τῶν ἰδιορρυθμιῶν τούτων προβάλλων πλοῦτος αἰσθήματος ἐν τῇ ἐκτελέσει. Τοῦτο δὲ ἦτο μᾶλλον ἀκτινοβολία ἠθικῶς θεμελιωμένης προσωπικότητος, κεκτημένης ἀσυνήθη ἱκανότητα νὰ ἐκφράζῃ τὰ ἑαυτῆς συναισθήματα. Ἡ ἐκτέλεσις τοῦ Μπετόβεν δὲν ἐνεποίει κατάπληξιν μόνον, λόγῳ τῆς ἀπαραμίλλου δεξιοτεχνίας, ἀλλὰ συνήρπαζε καὶ ἐκυριάχει ὡς ἀποκαλύπτουσα τὴν κατεύθυνσιν τῶν συναισθηματικῶν τοῦ ἀνθρώπου καταστάσεων. Δι' ὃ καὶ ὡς ὑψίστη δεξιοτεχνία τοῦ Μπετόβεν ἐλογίζετο ἡ τέχνη αὐτοῦ ὡς αὐτοσχεδιαστοῦ. Ἐκ τῆς τοιαύτης προσωπικότητος ἑρμηνεύεται καὶ τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν ἀφιερώθη κατ' ἀρχὰς κυρίως εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον καὶ εἰς συνθέσεις κλειδοκυμβάλου. Διὰ τοῦ κειδοκυμβάλου ἠδύνατο ν' ἀποκαλύπτῃ ἑκάστοτε ἀμέσως ἑαυτόν. Ἐνταῦθα οὐδενὸς ξένου μεσάζοντος εἶχεν ἀνάγκην. Ἡ συμμετοχὴ καὶ ἄλλων πρὸς τὸ κλειδοκύμβαλον ὀργάνων

Digitized by Google

ἐν τῇ ἐκτελέσει τῆς μουσικῆς δωματίου ἐνίσχυσε μόνον τὸν χρωματισμὸν καὶ τὴν ποικιλίαν τῆς ἐκφράσεως τοῦ κλειδοκυμβάλου, χωρὶς ὅμως ν' ἀφαιρῇ ἀπ' αὐτοῦ τὴν πρωτεύουσαν θέσιν. Ἐν τούτοις, ἄλλου εἴδους μουσική, ἰδίᾳ δὲ ἡ δι' ἔγχορδα ὄργανα ἢ μόνον δι' ὀρχήστραν, ἐποιεῖτο ἐκποδὼν τὴν αὐτοτέλειαν τοῦ ἐκτελεστοῦ καὶ καθώριζε μείζονά τινα ἀντικειμενικότητα, τόσον τοῦ συνθέτου, ὅσον καὶ τοῦ ἀκροατοῦ. Ἐξ ἄλλου ὑπῆρχον ἐν προκειμένῳ δυνατότητες ἐκφράσεως, αἵτινες ὑπερέβαινον τὰς τοῦ κλειδοκυμβάλου καὶ αἱ ὁποῖαι ἦσαν πρὸ παντὸς δεκτικαὶ ἔτι μείζονος ἐντάσεως. Οὕτω καθίσταται νοητὸν τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν ἠρίθμει ἤδη τριάκοντα ἔτη, ὅτε ἐξέδωκε τὴν πρώτην συμφωνίαν του καὶ τριάκοντα δύο, ὅτε ἐδημοσίευσε τὰ πρῶτα αὐτοῦ κουαρτέττα δι' ἔγχορδα ὄργανα, μεγαλειώδεις ἀπηχήσεις ὀρχηστρικοῦ ὕφους. Ἀλλ' ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ἡ δημιουργία ἐσυνεχίσθη ἄνευ διακοπῆς ἐπὶ πάντων τῶν πεδίων καὶ ἐνετάθη σημαντικῶς. Ἡ σύνθεσις διὰ κλειδοκύμβαλον ἀποκλειστικῶς ἢ διὰ κλειδοκύμβαλον μετ' ἄλλων ὀργάνων, καίτοι συνεχισθεῖσα εἰς μεγάλα ἔργα μουσικά, ἐν τούτοις ἀπώλεσεν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον τὴν πρωταρχικὴν θεμελιώδη σημασίαν της καὶ κατέλαβεν οἱονεὶ ἡμερολογιακὴν ἐνδιάμεσον θέσιν. Τὸ γεγονὸς τοῦτο δύναται ν' ἀποδοθῇ εἰς τὸ ὅτι καὶ δι' αὐτὸν τὸν Μπετόβεν ἡ γοητεία τῆς ἐκτελέσεως ἠλαττώθη βαθμηδὸν καὶ ὅτι τὴν παρημέλησεν, ἀφοῦ αὕτη τῷ προσήνεγκε τὰς ὑπηρεσίας της, ἀποκαλύψασα εἰς αὐτὸν τὴν σφαῖραν τῆς δράσεώς του καὶ ἐξασφαλίσασα τὴν ἀγήρω δόξαν του. Τοῦτο ἐγένετο μέχρι τῆς ἐμφανίσεως τοῦ πρώτου τρίο εἰς μέγιστον βαθμόν. Ὁ Μπετόβεν κατὰ τὰ πρῶτα 3—5 ἔτη τῆς ἐν Βιέννῃ ἐγκαταστάσεώς του δὲν ἔδρεψε μόνον ἀφθόνους δάφνας μουσικάς, ἀλλ' ἐπέβαλε καὶ τὴν ἀτομικότητά του καὶ ἐξησφάλισε τὸν ἐπιούσιον ὅσον οὐδεὶς ἄλλος μουσικὸς πρὸ αὐτοῦ. Ὁ Μπετόβεν ἐσύχναζεν εἰς τοὺς κρατοῦντας κοινωνικοὺς κύκλους, πλὴν ὄχι πλέον ὡς θεράπων ἁπλοῦς καὶ μόνον ἐπὶ τῷ τέλει βιοπορισμοῦ, ἀλλ' ὡς ἴσος, ἀντιτάσσων πρὸς τὴν εὐγένειαν τῆς γεννήσεως τὴν εὐγένειαν τῆς μεγαλοφυΐας. Ἡ ἀρχομένη δημοκρατικότης ἐν τῇ πολιτικῇ, εἰς τὴν ἐπενέργειαν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ὀφειλομένη, ἡ ἀποδοχὴ τῶν ἰδεῶν τοῦ Ρουσσὼ καὶ τῶν Γάλλων ἐγκυκλοπαιδιστῶν, ἡ διακήρυξις τῶν δικαιωμάτων τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ἀγαθῶν τῆς ἐλευθερίας καὶ τῆς ἀτομικότητος ηὐνόησαν τὴν στάσιν τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ. Ἀλλὰ δὲν θὰ ἐπετυγχάνετο τοῦτο, ἐὰν ὁ Μπετόβεν δὲν ἦτο ἡ ὑπερήφανος ἐκείνη μεγαλοφυΐα, ἥτις ἠδυνήθη νὰ ἐπιβάλῃ αὐτὴ ἑαυτήν. Εἰς τὴν ἀνεξαρτησίαν αὐτοῦ ὡς ἀνθρώπου καὶ ὡς μέλους τῆς κοινωνίας προσετέθη, ὡς ἀναγκαία προϋπόθεσις, ἡ οἰκονομική. Ὁ Μπετόβεν δὲν εἶχεν ἀνάγκην θέσεως ἐν τῇ αὐλῇ ἡγεμόνος τινός. Αἱ συναυλίαι του, ἡ εἰς οἴκους πλουσίων δρᾶσις αὐτοῦ ὡς διδασκάλου καὶ τέλος αἱ μουσικαὶ συνθέσεις του, εἰς εὐπόρους ἀφιερούμεναι θαυμαστάς, πρὸς δὲ ἡ πώλησις τῶν ἔργων του εἰς τοὺς κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἐπανιδρυθέντας μουσικοὺς ἐκδοτικοὺς οἴκους, εἶχον τοσαύτην ἀπόδοσιν, ὥστε ὁ μέγας μουσουργὸς ἠδύνατο νὰ ζῇ ἀμέριμνος καὶ νὰ στηρίζεται εἰς εἰσπράξεις μεγαλυτέρας τῶν ἀναγκῶν του.

Οὕτως ἡ ζωὴ καὶ ἡ δημιουργία τοῦ Μπετόβεν ἐφαίνετο ἀκολουθοῦσα εὐθύγραμμον, προοδευτικὴν καὶ σχεδὸν ἄνευ κόπου συντελουμένην ἀνέλιξιν, ὁμοίαν πρὸς ἐκείνην, ἧς ἔτυχε μόνον ἄλλος μέγας σύγχρονος τοῦ Μπετόβεν, ὁ Γκαῖτε, ὁπότε ἐπῆλθε τροπή τις, ἥτις ἐπήνεγκε μεταβολὴν ὁλοσχερῶς ἀπροσδόκητον: ὁ Μπετόβεν ἀπώλεσε τὴν ἀκοήν. Πότε ἤρχισεν ἡ νόσος αὕτη καὶ εἰς ποίαν αἰτίαν δύναται ν' ἀποδοθῇ, οὐδέποτε ἐγνώσθη. Ὁ Μπετόβεν εἶχεν ἰσχυρὰν ἰδιοσυγκρασίαν, καίτοι δ' εὐκόλως προσεβάλλετο ἐκ διαταραχῶν τῶν κοιλιακῶν ὀργάνων, ἐν τούτοις οὐδέποτε ὑπῆρξε σοβαρῶς ἀσθενής. Ὁ τρόπος τῆς ζωῆς του καὶ αἱ ἀνάγκαι του ἦσαν ἁπλαῖ, οὐδόλως δὲ δύνανται νὰ θεωρηθοῦν ὡς αἰτία ὀργανικοῦ νοσήματος. Ἡ πρώτη μνεία τῆς παθήσεως αὐτοῦ γίνεται εἰς ἐπιστολὴν ἀπευθυνομένην πρὸς τὸν παιδικὸν φίλον του ἰατρὸν Βέγκελερ, σύζυγον τῆς ἐπίσης παιδικῆς φίλης του Ἐλεονώρας φὸν Μπρόϋνιγκ ἐν Βόννῃ. Ἡ ἐπιστολὴ αὕτη ἐγράφη τῷ 1800 ἢ τῷ 1801, ὅτε δηλαδὴ ὁ Μπετόβεν ἦγε τὸ τριακοστὸν ἔτος τῆς ἡλικίας του. Ἀπὸ τοῦ χρόνου τούτου ἡ πάθησίς του αὐξάνεται βραδέως μὲν ἀλλὰ προοδευτικῶς, οὕτως ὥστε ὁ Μπετόβεν ἤδη ἐν ἔτει 1802, ἤτοι εἰς ἡλικίαν τριάκοντα δύο ἐτῶν, ἐσχημάτισε τὴν πεποίθησιν περὶ τῆς ἐπικειμένης πλήρους ἀπωλείας τῆς ἀκοῆς του. Ἐν βαθυτάτῳ συγκλονισμῷ καὶ παλαίων μὲ τὴν ἰδέαν τῆς αὐτοκτονίας κατὰ τὴν διαμονήν του ἐν Χάϊλιγκενστατ, παρὰ τὴν Βιέννην, ὅπου παρεθέριζε, γράφει τὴν ἐξομολόγησιν ἐκείνην, ἥτις ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ διαθήκη Χάϊλιγκενστατ» ἀποτελεῖ αἰώνιον μνημεῖον τῆς πάλης τοῦ ἀνθρώπου μὲ τὴν εἱμαρμένην του. Ἐν τούτοις θὰ ἦτο ἡμαρτημένη ἡ γνώμη ὅτι ἐν τῇ ἐκρήξει ταύτῃ τοῦ συναισθήματος θὰ ἔπρεπέ τις νὰ διίδῃ σημεῖόν τι καταπτώσεως ἢ ἀπογνώσεως. Ὁ Μπετόβεν ἀνῆκεν εἰς τὴν χορείαν τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων, οἵτινες ἐκ πάσης ἐκδηλώσεως τῆς τύχης ἀντλοῦσι νέαν ἑκάστοτε ἐσωτερικὴν δύναμιν καὶ γίνονται τόσον μεγαλύτεροι ὅσον περισσότερον ἡ ἐξωτερικὴ δύναμις ζητεῖ νὰ τοὺς συντρίψῃ. Ἥρπασε τὴν τύχην ἀπὸ τὸν λαιμὸν καὶ συνέθεσε κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον, καθ' ὃν συνέταξε τὴν διαθήκην Χάϊλιγκενστατ, τὰς τρεῖς μεγάλας σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον opus 31, τὰ «μικροπράγματα» (Bagatellen) opus 33 διὰ κλειδοκύμβαλον, τρεῖς σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον opus 30, δύο λυρικὰ ᾄσματα (Romanzen) διὰ βιολίον καὶ ὀρχήστραν καί, ὡς κύριον ἔργον τοῦ ἔτους τούτου, τὴν 2 συμφωνίαν. Τὰ ἀμέσως ἀκολουθήσαντα ἔτη διακρίνονται διὰ τὴν καθημερινῶς αὐξανομένην παραγωγικότητα. Μέχρι τοῦ 1812 γεννῶνται ἐν ὅλῳ ὀκτὼ μεγάλαι συμφωνίαι, 5 μεγάλα κουαρτέττα δι' ἔγχορδα ὄργανα (opus 59, opus 74, opus 95), σονάτες καὶ τρίο διὰ κλειδοκύμβαλον, βιολίον καὶ βιολοντσέλλο, ἓν ὀρατόριον «Ὁ Χριστὸς ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν Ἐλαιῶν», μία λειτουργία, ἄπειροι μικραὶ συνθέσεις ᾠδικῆς μουσικῆς, εἰσαγωγαὶ εἰς τὸν «Κοριολανὸν» καὶ τὸν «Ἔγκμοντ» μετὰ τῆς σχετικῆς μουσικῆς σκηνῆς καὶ—ὡς μοναδικὸν θεατρικὸν ἔργον—τὸ μελόδραμα «Λεονώρα», βραδύτερον μετονομασθὲν «Φιντέλιο». Ἡ μεγάλη αὕτη παραγωγικότης δεικνύει ὅτι ἡ πάθησις τῆς ἀκοῆς οὐδεμίαν ἤσκησεν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς δημιουργικῆς ἐργασίας τοῦ Μπετόβεν. Θὰ ἠδύνατό τις μᾶλλον νὰ παραδεχθῇ τὸ ἐναντίον, δηλαδὴ ὅτι ἡ ἀναγκαστικὴ ἀπομόνωσις ἐγένετο αἰτία ἐντατικωτέρας συγκεντρώσεως εἰς τὰς ἐκφάνσεις τοῦ ἐσωτερικοῦ κόσμου καὶ εἰς τὴν δημιουργικὴν δύναμιν τοῦ μουσουργοῦ. Ἐξ ἄλλου δὲν εἶναι ὀρθὸν νὰ φαντασθῶμεν τὸν Μπετόβεν τῆς ἐν λόγῳ περιόδου ὡς μισάνθρωπον ἢ ἰδιότροπον καὶ νὰ ὑπολάβωμεν τὴν ζωὴν αὐτοῦ ἀποκλειστικῶς ὑπὸ τῆς βαθέως τραγικῆς ταύτης καταστάσεως διεπομένην. Ὁ Μπετόβεν ἠγάπα τὸν κόσμον καὶ τοὺς ἀνθρώπους νῦν ὡς καὶ πρότερον, ἐφ' ὅσον οὗτοι δὲν παρεῖχον πράγματα εἰς τὴν ἰδίαν αὐτοῦ σταδιοδρομίαν. Ἦτο εἰς τὰς συναναστροφὰς εὔθυμος, φίλος τοῦ οἴνου καὶ τοῦ χιοῦμορ, ὅπερ ἐνίοτε ἐξετραχύνετο εἰς ἀγροίκους ἀστεϊσμούς. Ὡσαύτως ὁ Μπετόβεν συχνάκις περιεπλάκη εἰς τὰ δίκτυα τοῦ ἔρωτος, ἀλλὰ περὶ τῆς πλευρᾶς ταύτης τῆς ὀντότητός του οὐδὲν ἀκριβὲς γνωρίζομεν. Εἰς τὰ κατάλοιπά του εὑρέθη μακροσκελὴς ἐπιστολὴ μετὰ πόθου διακαοῦς, πάθους σφοδροῦ καὶ τρυφερότητος συντεταγμένη. Ἡ ἔρευνα δὲν κατώρθωσε μέχρι τοῦδε ν' ἀνακαλύψῃ πρὸς ποίαν ἡ ἐπιστολὴ αὕτη ἀπηυθύνετο. Τὴν γυναῖκα ταύτην καλοῦν κατὰ τὴν ἰδίαν τοῦ Μπετόβεν ἔκφρασιν «ἀθάνατον ἀγαπημένην». Ὑπάρχουν εἰς τὴν ζωὴν τοῦ μουσουργοῦ γυναῖκες, πρὸς τὰς ὁποίας ἡ ἐν λόγῳ περιέργως μηδέποτε ταχυδρομηθεῖσα ἐπιστολὴ θὰ ἦτο δυνατὸν ν' ἀπευθυνθῇ. Ἐν τούτοις οἱ πρὸς τὸ ὡραῖον φῦλον δεσμοὶ τοῦ Μπετόβεν δύνανται νὰ χαρακτηρισθοῦν ἔκ τινος φράσεως, κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη ἐκστομισθείσης: «Ἐὰν

*Ε. Μπουρντέλ: Μπετόβεν.*

[Παρίσιοι, Μουσεῖον Λουξεμβούργου.]



Digitized by Google

κατηνάλισκον κατὰ τὸν τρόπον αὐτὸν τὴν ζωτικὴν δύναμίν μου, τί θ' ἀπέμενε διὰ τὸ εὐγενέστερον, τὸ ὑπέρτερον;»

Τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν, παρὰ τὴν αὔξουσαν πάθησιν τῆς ἀκοῆς αὐτοῦ, ἐξηκολούθει νὰ εὑρίσκεται εἰς ἐπαφὴν μετὰ τοῦ περιβάλλοντός του καὶ ὅτι τοῦτο τὸν ἐθεώρει ἀκόμη πάντοτε ὡς μέλος του, δεικνύει πρότασίς τις τοῦ πρὸ μικροῦ ἀνελθόντος ἐπὶ τὸν θρόνον βασιλέως Ἱερωνύμου τῆς Βεστφαλίας, ἀδελφοῦ τοῦ Ναπολέοντος, ὅστις τῷ 1808 ἠθέλησε νὰ διορίσῃ τὸν Μπετόβεν διευθυντὴν τῆς ὀρχήστρας τῆς αὐλῆς του. Ἦτο ἡ πρώτη καὶ ἡ τελευταία φορά, καθ' ἣν ὁ Μπετόβεν ἐσκέφθη σοβαρῶς εἰς τὴν ἐκλογὴν ταύτην καὶ καθ' ἣν ἀπεφάσισε, θυσιάζων τὴν ἐλευθερίαν του, νὰ γίνῃ ὑπάλληλος. Εἶχε δώσει σχεδὸν καταφατικὴν ἀπάντησιν ἐπὶ τῇ ἐλπίδι νὰ ἐξασφαλίσῃ τὴν ὑλικὴν ὕπαρξίν του, ὁπότε τρεῖς τῶν πλουσιωτέρων θαυμαστῶν του προσέφεραν εἰς αὐτὸν ἰσόβιον ἐπιχορήγησιν 4.000 φιορινίων, ἐπὶ τῷ ὅρῳ ὅπως ἐγκατασταθῇ ἐν Βιέννῃ ὁριστικῶς. Οὗτοι ἦσαν ὁ ἀρχιδοὺξ Ροδόλφος καὶ οἱ πρίγκιπες Λόμπκοβιτς καὶ Κίντσκυ, οἵτινες ἔδειξαν κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον εἰς τὸν Μπετόβεν τὴν ἐκτίμησιν καὶ τὴν ἀναγνώρισιν τῶν συγχρόνων του. Ὁ Μπετόβεν ἀπεδέχθη τὴν πρότασιν, χωρὶς νὰ δυνηθῇ νὰ προΐδῃ αὐτός, ὡς δὲν ἠδυνήθησαν νὰ προΐδωσι καὶ οἱ θαυμασταί του, ὅτι τὸ συμβόλαιον τοῦτο θὰ ἐγίνετο ἡ αἰτία μεγάλων περιπετειῶν. Ἤδη μετὰ πάροδον τριῶν ἐτῶν, ἤτοι τῷ 1811, λόγῳ τῆς ἀπωλείας τοῦ πολέμου, ἐξεδόθη διάταγμα, ὅπερ ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὴν γενικὴν πτῶσιν τῶν χρηματικῶν ἀξιῶν, ἡ δὲ ἐπιχορήγησις τοῦ Μπετόβεν ἠλαττώθη κατὰ τὰ δύο τρίτα. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος εἷς τῶν Μαικηνῶν, ὁ πρίγκιψ Λόμπκοβιτς, ἐτέθη ὑπὸ ἀπαγόρευσιν, ὁ δὲ Μπετόβεν ἠναγκάσθη διὰ τὸ μερίδιον, ὅπερ ἐλάμβανε παρ' αὐτοῦ, νὰ καταφύγῃ εἰς τὰ δικαστήρια, καὶ μόνον μετὰ παρέλευσιν ἐτῶν τεσσάρων ἐπηκολούθησαν νέαι πληρωμαί. Ἐν τούτοις ὁ Μπετόβεν, παρὰ τὰς δυσκολίας ταύτας, δὲν ὑπέφερεν οἰκονομικῶς, διότι αἱ εἰσπράξεις ἐκ τῶν συνθέσεών του τῷ ἐπέτρεπον ν' ἀνταποκρίνηται πρὸς τὰς ἀξιώσεις τῆς ζωῆς του, οὐχὶ μὲν πολυτελοῦς, πάντως ὅμως συναδούσης πρὸς τὰς ἀνάγκας του ὡς δημιουργοῦ. Ἡ πρώτη πραγματικὴ στενοχωρία του μετὰ τὴν πάθησιν τῆς ἀκοῆς του ὑπῆρξεν ἡ μέριμνα περί τινος ἀνεψιοῦ του, υἱοῦ τοῦ νεωτέρου ἀδελφοῦ του. Τούτου θανόντος τῷ 1815, ὁ Μπετόβεν ἀνέλαβε τὴν κηδεμονίαν τοῦ μονογενοῦς υἱοῦ αὐτοῦ Καρόλου, ὅστις ἦγε τότε τὸ ἔνατον ἔτος τῆς ἡλικίας του. Ὁ Μπετόβεν, ὅστις εἶχε προσφέρει τὰς ἀπολαύσεις της οἰκογενειακῆς ζωῆς θυσίαν εἰς τὸν βωμὸν τῆς τέχνης, συνεκέντρωσεν εἰς τὸν ἀνεψιόν του ὁλόκληρον τὴν ζωτικήν του δύναμιν. Ἐπηγρύπνει ἐπ' αὐτοῦ μετὰ τοσαύτης τρυφερότητος, ἥτις θὰ ἐκοπίαζεν ἀκόμη καὶ ἄνθρωπον γνωρίζοντα καλύτερον τὴν ζωήν. Ἐνταῦθα δέον νὰ προστεθῇ καὶ τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν ἐβδελύσσετο τὴν μητέρα τοῦ ἀνεψιοῦ του, λόγῳ τοῦ χαρακτῆρός της καὶ τοῦ τρόπου τῆς ζωῆς της, καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταβάλῃ πᾶσαν προσπάθειαν ὅπως ἀπομακρύνῃ αὐτὴν ἀπὸ τοῦ τέκνου της. Ἐντεῦθεν ἐγεννήθησαν, λόγῳ τῶν μηχανορραφιῶν τῆς γυναικὸς ταύτης, ἥτις διεξεδίκει δι' ἑαυτὴν τὸ τέκνον της, συνεχεῖς ἔριδες καὶ προστριβαί. Ὁ Μπετόβεν, ὅστις κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ ἐν Βιέννῃ συνεδρίου ἑώρτασε τοὺς θριάμβους του ὡς ἡγεμὼν τῆς τέχνης, καὶ ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ μεγάλου μονάρχου δι' ἰδιαιτέρας προσωπικῆς προσκλήσεως, ἠναγκάσθη νὰ περιπλακῇ εἰς μικροπρεπεῖς δικαστικοὺς ἀγῶνας. Τὴν κατάστασιν ταύτην ἐπεδείνωσαν καὶ φροντίδες οἰκιακῆς οἰκονομίας, διότι ὅ,τι ἐπήρκει εἰς αὐτὸν ὡς ἄτομον δὲν ἦτο ἀρκετὸν διὰ τὸν ἀνεψιόν του. Αἱ προστριβαὶ μὲ τὴν γυναικαδέλφην του — ὁ Μπετόβεν τὴν ὠνόμαζε «βασίλισσαν τῆς νυκτὸς» — δὲν ἔθιξαν τὴν πνευματικὴν αὐτοῦ δύναμιν αὗται καὶ μόναι. Αὐτὸς οὗτος ὁ ἀνεψιός του ἀπεκαλύφθη σὺν τῷ χρόνῳ ἄνθρωπος ἀσθενοῦς χαρακτῆρος. Ἦτο πολὺ ὀλίγον εὐφυής, ἀνησύχει συχνάκις τοὺς διδασκάλους του καὶ τέλος εἰς ἡλικίαν εἴκοσιν ἐτῶν ἀπεπειράθη ν' αὐτοκτονήσῃ. Τὸ τελευταῖον τοῦτο χρονικὸν διάστημα, ἀπὸ τοῦ ἔτους 1815, εἶναι ἡ ὀδυνηροτέρα περίοδος τῆς ζωῆς τοῦ Μπετόβεν. Ὁ συνεχὴς ἐκνευρισμός, λόγῳ τοῦ ἀνεψιοῦ του, συγκλονίζει αὐτὸν διηνεκῶς καὶ ὑποσκάπτει τὴν ὑγείαν του. Ἡ πάθησις τῆς ἀκοῆς του προοδεύει βαθμηδόν, ὥστε ν' ἀποκλείσῃ αὐτὸν ἀπὸ τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου. Τῷ 1814 ἐμφανίζεται διὰ τελευταίαν φορὰν ὡς ἐκτελεστὴς μουσικῆς αἰθουσῶν, κατὰ τὸ αὐτὸ δὲ ἔτος διευθύνει τὴν πρώτην παράστασιν τοῦ μελοδράματος «Φιντέλιο», ὅπερ εἶχεν ἐν τῷ μεταξὺ ἐπεξεργασθῇ. Ἀλλ' ἐπειδὴ δὲν δύναται πλέον ν' ἀκούῃ τοὺς ἀοιδούς, παρίσταται ἀνάγκη ὅπως ἕτερος ἀρχιμουσικὸς τοποθετηθῇ ὄπισθέν του, ἵνα δίδῃ τὰ σχετικὰ συνθήματα. Παντοειδεῖς ἐνδείξεις τιμῆς ἐκ τῆς ξένης, ἰδίᾳ δὲ προσκλήσεις καὶ δῶρα ἐκ τῆς Ἀγγλίας, ρίπτουν εἰς τὴν ζωήν του ὀλίγον φῶς, ἀλλ' ἡ εἰκὼν τοῦ βίου του ἀμαυροῦται καθημερινῶς περισσότερον. Τῷ 1819 ἤρχισαν τὰ «φυλλάδια στιχομυθίας», ἤτοι μικρὰ τετράδια, σχήματος 8ου, εἰς ἃ ἐπισκέπται καὶ φίλοι ὑπέβαλλον εἰς τὸν Μπετόβεν ἐρωτήματα, διότι δὲν ἠδύνατο ν' ἀκούῃ πλέον οὐδὲ τῇ βοηθείᾳ τῶν ἀκουστικῶν κεράτων, ἅτινα δύναταί τις νὰ ἴδῃ εἰς τὴν ἐν Βόννῃ οἰκίαν τοῦ Μπετόβεν ἀκόμη σήμερον. Συχνάκις ὁ μουσουργὸς ἐσημείου πιθανῶς εἰς δημοσίας συνδιαλέξεις, ἐν αὐτοῖς, τὰς ἀπαντήσεις του. Οὕτως ὑπεδείχθη εἰς τοὺς μεταγενεστέρους μέθοδός τις, δι' ἧς δύνανται ν' ἀναστρέφωνται καὶ νὰ ὁμιλῶσι κατὰ τὸν τρόπον τοῦ Μπετόβεν. Τὰ ἐν λόγῳ φυλλάδια ἀνήκουν εἰς τὰ περιεργότερα κατάλοιπα τοῦ μεγαλοφυοῦς ἀνδρός. Διάλογοι περὶ τέχνης καὶ καλλιτεχνῶν, θρησκείας καὶ φιλοσοφίας διακόπτονται ἀποτόμως ὑπὸ τῆς οἰκοδεσποίνης, ἐρωτώσης τί πρέπει νὰ μαγειρεύσῃ αὔριον, ἢ ὑπὸ τῆς φλυαρίας τῶν ὑπηρετῶν, ὁ δὲ Μπετόβεν εἰς ὅλα αὐτὰ ἀποκρίνεται μετὰ μεγάλου ἐνδιαφέροντος καὶ παραδειγματικῆς προθυμίας. Πλὴν τῶν μνησθέντων φυλλαδίων, ἅτινα κατὰ μέγα μέρος διαφυλάσσονται εἰς τὴν Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην τοῦ Βερολίνου, περιεσώθησαν καὶ τὰ ἐπίσης μοναδικὰ εἰς τὸ εἶδός των μουσικὰ βιβλία σχεδίων: μεγάλα τετράδια ἐπιμήκη 4ου σχήματος, εἰς ἃ κατέγραφεν ὁ Μπετόβεν τὰς μουσικὰς σκέψεις τῆς στιγμῆς, ἵνα τὰς ἐπεξεργασθῇ βραδύτερον συντόνως καὶ προσδώσῃ εἰς αὐτὰς τὴν ἤδη εἰς τὴν ψυχήν του προεικονιζομένην μορφήν. Ὁ Μπετόβεν ἐσυνήθιζε νὰ ἐπεξεργάζηται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὰς σκέψεις του ἐντατικῶς εἰς τὸν ἐγκέφαλόν του. Ἦτο ἐνθουσιώδης τῆς φύσεως ἐραστὴς καὶ φίλος τῶν περιπάτων, ἑκάστοτε δ' ἀκροώμενος τὴν φωνὴν τῆς ψυχῆς του καὶ συγκεντρούμενος εἰς αὐτήν, ἐλησμόνει ἐνίοτε τελείως τὸν ἐξωτερικὸν κόσμον καὶ ἑαυτόν. Ἡ κατάστασις αὕτη τῆς ἀπογειώσεως ἐπήρχετο ἰδίᾳ κατὰ τὸν χρόνον ἐντατικῆς δημιουργίας. Τότε ὁ Μπετόβεν, ὅστις ἐν γένει πάντοτε ἐφρόντιζε νὰ εἶναι ἐνδεδυμένος εὐπρεπῶς καὶ ἀναλόγως τῆς θέσεώς του, παρημέλει τὴν ἐξωτερικήν του ἐμφάνισιν.

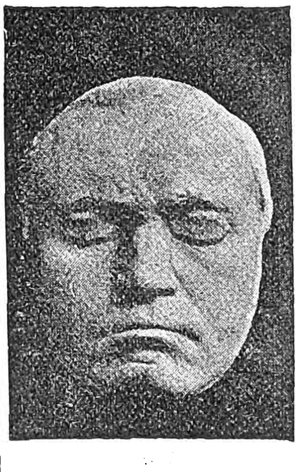

*Ἡ μάσκα τοῦ Μπετόβεν ὑπὸ Φ. Κλάϊν (1812).*

Οὕτω συνέβη, ὥστε τῷ 1821, ὅτε ὁ Μπετόβεν ἦτο ἀπησχολημένος μὲ τὴν «Μεγάλην Λειτουργίαν» του, νὰ συλληφθῇ ὑπὸ τῆς ἀστυνομίας, λόγῳ τῆς ὑπερμέτρως ἀτημελήτου ἀμφιέσεώς του, ὡς ἀλήτης καὶ νὰ τεθῇ ὑπὸ ἀστυνομικὴν ἐπιτήρησιν. Τοιούτου εἴδους περιπέτειαι εἶναι λόγῳ τῆς σπανιότητός των ἀξιομνημόνευτοι, ἀλλὰ πρέπει νὰ θεωρηθῶσιν ὄντως ὡς σπάνιαι καὶ νὰ ἑρμηνευθοῦν ἐπὶ τῇ βάσει ὅλως ἰδιαιτέρων προϋποθέσεων. Ἐν Βιέννῃ καὶ εἰς ὁλόκληρον τὴν ὑφήλιον ὁ Μπετόβεν ἐλογίζετο κατὰ τὰ ἔτη ἐκεῖνα ὡς κυρίαρχος μουσικός. Οὐ μόνον οἱ συνάδελφοί του τὸν πλησιάζουν μὲ ταπεινοφροσύνην καὶ μέγιστον σεβασμόν, ἀλλὰ καὶ πᾶς πνευματικὸς καὶ φιλόμουσος ἄνθρωπος περιβάλλει τὸν μουσουργὸν μὲ θαυμασμὸν καὶ λατρείαν. Ἡ παραγωγικότης του εἶχε μὲν λόγῳ τῶν ἐκ τῆς κηδεμονίας τοῦ ἀνεψιοῦ του φιλονικιῶν ἀνακοπῆ, ἀλλ' ἡ ἀνάπαυλα αὕτη ἦτο διὰ τὸ δαιμόνιον τοῦ Μπετόβεν προπαρασκευὴ καὶ περισυλλογὴ διὰ τὴν τελευταίαν δημιουργικὴν δρᾶσίν του. Αὕτη συνίσταται εἰς μίαν «Μεγάλην Λειτουργίαν», γραφεῖσαν ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῆς ἐνθρονίσεως τοῦ μαθητοῦ καὶ φίλου του ἀρχιδουκὸς Ροδόλφου, ἀρχιεπισκόπου τοῦ Ὀλλμύτς, μίαν μεγάλην συμφωνίαν, τὴν 9ην, πέντε μεγάλες σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον, πέντε καταπληκτικὰ κουαρτέττα, ὡς καὶ εἰς μέγαν ἀριθμὸν ἐπουσιωδεστέρων ἔργων, ἅτινα φέρουσιν οὐδὲν ἧττον τὴν σφραγῖδα ὡριμωτάτης δεξιοτεχνίας. Ὁ Μπετόβεν οὐδέποτε ἔγραψέ τι ἀσήμαντον κατὰ τὴν κυρίαν τῆς λέξεως ἐκδοχήν· οὐδέποτε ἔγραψέ τι, ὅπερ δὲν θὰ ἦτο ἀντάξιόν του καὶ θὰ εἶχε χαρακτῆρα προσωρινότητος. Ὁ,τιδήποτε οὗτος παρήγαγε: στρατιωτικὰ ἐμβατήρια, παιγνιώδεις κανόνας, ἐπεξεργασίας ᾀσμάτων λαϊκῶν, τὰ πάντα φέρουσι τὴν σφραγῖδα οὐ μόνον μεγαλοφυΐας ὑπερόχου, ἀλλὰ καὶ ἄκρως εὐσυνειδήτου ἐπιμελείας. Τῷ 1823 ἐτερματίσθη ἡ «Μεγάλη Λειτουργία» καὶ ἡ 9 συμφωνία. Ὁ Μπετόβεν, μετὰ τὴν ἀπομόνωσιν αὐτοῦ, ᾐσθάνθη καὶ αὖθις ἐπιτακτικὴν ἀνάγκην νὰ ἔλθῃ ἐκ νέου εἰς ἐπικοινωνίαν μετὰ τοῦ κόσμου καὶ νὰ ἐκτελέσῃ, τοὐλάχιστον ἐν μέρει, τὰ τελευταῖα ἔργα του. Οὕτω τὴν 7 Μαΐου 1824 ἐδόθη ἡ ἀλησμόνητος ἐκείνη συναυλία, καθ' ἣν ἀντήχησαν, διὰ πρώτην φοράν, πλὴν τῆς εἰσαγωγῆς «Τὰ ἐγκαίνια», ἡ 9η συμφωνία καὶ τρία μέρη ἐκ τῆς «Missa solemnis», ὁ δὲ Μπετόβεν, μετὰ τὴν πληρωμὴν τῶν ἐξόδων, εἰσέπραξε τὸ μικρὸν ὁλικὸν ποσὸν τῶν 420 φιορινίων. Ἡ κατὰ τὴν 23 Μαΐου ἐπανάληψις τῆς αὐτῆς συναυλίας ἀφῆκε μάλιστα ἔλλειμμα, ὅπερ ἐκάλυψεν αὐτὸς ὁ ἴδιος ὁ Μπετόβεν διὰ μικρᾶς προσωπικῆς του ἐγγυήσεως. Ἀμέσως μετὰ ταῦτα ἡ ὑγεία του διεσαλεύθη σημαντικῶς. Ὁτὲ μὲν ἔπασχεν ἐξ ὀφθαλμίας, ὁτὲ δὲ ἐκ πόνων εἰς τὰ νῶτα, συχνότατα δὲ ἐκ διαταραχῆς τῶν κοιλιακῶν ὀργάνων. Ἐν τούτοις ὁ Μπετόβεν εἰργάζετο ἀκόμη πάντοτε μετ' ἐπιμελείας παραδειγματικῆς. Σχεδιάζει τὴν 10ην συμφωνίαν του, γράφει τὰ τελευταῖα μεγάλα κουαρτέττα δι' ἔγχορδα ὄργανα. Ἀλλ' ἡ ὀδύνη του λόγῳ τοῦ ἀνεψιοῦ του, ἡ ἀπόπειρα τῆς αὐτοκτονίας τοῦ ὁποίου συμπίπτει κατὰ τὸν χρόνον τοῦτον, αὐξάνει τὴν εὐαισθησίαν του. Ἐξ ἄλλου ἡ ἀπομόνωσις γίνεται εἰς αὐτὸν περισσότερον αἰσθητή, παρὰ τὸ ἐνδιαφέρον ἀδελφικῶν φίλων του, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὴν πρώτην θέσιν κατέχει ὁ Στέφανος φὸν Μπρόϋνιγκ τῆς Βόννης. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Δεκεμβρίου 1826 ὁ Μπετόβεν μετέβη, μετά τινα διαμονὴν εἰς τὴν ἐξοχήν, πρὸς τὸν ἐν Βιέννῃ ἀδελφόν του, βαρέως ἀσθενῶν. Ὁ ἰατρὸς διέγνωσεν ὕδρωπα. Κατὰ τὸν Δεκέμβριον, Ἰανουάριον καὶ Φεβρουάριον τῷ ἐγένοντο τέσσαρες παρακεντήσεις. Ὁ Μπετόβεν παρηγορεῖται μὲ τὰς λέξεις: «καλύτερον νὰ ὑπάρχῃ νερὸν εἰς τὴν κοιλίαν μου παρὰ εἰς τὰ ἔργα μου». Κατὰ Μάρτιον τοῦ 1827 ἡ κατάστασίς του γίνεται ἀπελπιστική. Ὁ ἰσχυρὸς ὀργανισμός του ἀμύνεται ἐναντίον τῆς προϊούσης καταστροφῆς. Ὁ Μπετόβεν γνωρίζει ὅτι θ' ἀποθάνῃ. Τὴν 23 Μαρτίου συντάσσει τὴν τελευταίαν αὐτοῦ διαθήκην καὶ κλείει αὐτὴν διὰ τοῦ ἀποχαιρετισμοῦ «Plaudite amici, comedia finita est» (Φίλοι, χειροκροτήσατε, ἡ κωμῳδία ἐτελείωσεν). Ὁ Μπετόβεν μεταλαμβάνει τῶν ἀχράντων μυστηρίων, ἀπὸ δὲ τῆς 24 Μαρτίου χάνει τελείως τὰς αἰσθήσεις του μέχρι τῆς 26 Μαρτίου, ὁπότε ἡ ἐπιθανάτιος ἀγωνία τερματίζεται καὶ ὁ μέγας μουσουργὸς παραδίδει τὸ πνεῦμα, καθ' ἣν στιγμὴν ἐκρήγνυται περὶ αὐτὸν δεινὴ θύελλα. Ἡ κηδεία του ὁμοιάζει πρὸς κηδείαν ἡγεμόνος, ἑξήκοντα δ' ἔτη βραδύτερον τὰ λείψανά του μεταφέρονται εἰς τὸ κεντρικὸν κοιμητήριον τῆς Βιέννης, ὅπου ἀναπαύονται πλησίον τῶν λειψάνων τοῦ Σοῦμπερτ.

Ἐὰν θελήσῃ τις νὰ προβῇ εἰς ὅσον ἔνεστι βραχὺν χαρακτηρισμὸν τοῦ ἔργου τοῦ Μπετόβεν καὶ συνεπῶς τῆς θέσεως, ἣν κατέχει εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς μουσικῆς, ὀφείλει νὰ τὸν καλέσῃ συμπληρωτὴν τῆς κλασσικῆς ἀνθρωπιστικῆς τέχνης τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, συγχρόνως δὲ δημιουργὸν τῆς ρωμαντικῆς τοῦ ΙΘ' τέχνης. Ὅπως ἡ ζωή του ἀνήκει κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ εἰς τὸν ΙΗ' καὶ κατὰ τὸ ἕτερον ἥμισυ εἰς τὸν ΙΘ' αἰῶνα, οὕτω καὶ ἐν τῷ ἔργῳ του γίνεται ἡ συνάντησις καὶ ἡ μεταβολὴ δύο μεγάλων ἐποχῶν, δύο μεγάλων ἰδανικῶν πολιτισμοῦ, δύο κοσμοθεωριῶν. Ἐκ τοῦ διχασμοῦ τούτου ἑρμηνεύεται ἡ φαινομενικῶς πλήρης ἀντιφάσεων προσωπικότης τοῦ μουσουργοῦ. Ὁ Μπετόβεν εἶναι δημοκρατικὸς καὶ συγχρόνως ἀριστοκράτης αὐταρχικός. Εἶναι πεφωτισμένος ἐλευθερόφρων καὶ συνάμα βαθέως θρησκευτικὸς ἄνθρωπος. Ἀντιλαμβάνεται τὸν κόσμον μὲ τὸν διαφανῆ πραγματισμὸν τῶν τέκνων τῆς φύσεως, καὶ ὅμως εἶναι ἀπομεμακρυσμένος ἀπὸ τοῦ κόσμου ὀνειροπόλος. Αἱ ἰδέαι τῆς ἐλευθερίας, τῶν δικαιωμάτων τοῦ ἀτόμου, αἱ περὶ τῶν ἀξιῶν τῆς κριτικῆς ἰδεολογίας ἔννοιαι εἶναι δι' αὐτὸν βασικαί. Δὲν εἶναι μοιρολάτρης, ἀλλὰ τῆς εἱμαρμένης δαμαστής, καὶ ὅμως παραδέχεται ἀνώτερόν τινα ἀδυσώπητον νόμον, τὰ πάντα διέποντα καὶ καθορίζοντα. Εἶναι χαρακτηριστικὸν τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν, πρῶτος μετὰ τὸν Χάϋντν βαθὺς γνώστης τῆς ἐνοργάνου μουσικῆς, ἐπελήφθη ἅπαξ μόνον τῆς μελοδραματικῆς τέχνης. Καίτοι δὲ τὸ μελοδραματικὸν ἔργον του μαρτυρεῖ τὴν χεῖρα τοῦ διδασκάλου καὶ ἀποκαλύπτει τὸ δαιμόνιον αὐτοῦ, ἐν τούτοις δὲν εὑρίσκεται εἰς τὴν πρώτην γραμμὴν τῶν μουσικῶν δημιουργημάτων του. Ἄλλα ἔργα ἐπὶ τοῦ πεδίου τούτου θὰ ὡδήγουν τὸν Μπετόβεν μοιραίως εἰς τὴν σφαῖραν τοῦ ρωμαντικοῦ μελοδράματος. Ἠσχολήθη πολλαχῶς καὶ μέχρι τέλους τοῦ βίου του μὲ σχέδια μελοδραμάτων, ἀλλὰ πρὶν ἢ προβῇ εἰς τὴν πραγματοποίησίν των τὰ ἐγκατέλειπεν ἀποδειλιῶν. Ἐξ ἴσου διστακτικὸς ὑπῆρξε καὶ ἐν σχέσει πρὸς τὴν ρωμαντικὴν ἐκφραστικὴν μορφὴν τοῦ ᾄσματος, καίτοι διὰ τοῦ ἐν ἔτει 1816 γραφέντος κύκλου τῶν ᾀσμάτων «Ἡ ἀγαπημένη στὰ ξένα» ἐδημιούργησε τὸν μέγαν κύκλον ᾀσμάτων τῆς νεωτέρας ἐποχῆς. Ἀλλ' ἐνῷ ὁ νεαρὸς Φραγκῖσκος Σοῦμπερτ, ὅστις ἐπέζησεν ἓν μόνον ἔτος τοῦ Μπετόβεν, ἐδημιούργει ἀμέσως σὺν αὐτῷ τὸ νέον γερμανικὸν ᾆσμα· ἐνῷ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ὁ Σπώρ, ὁ Βέμπερ, ἀμέσως δὲ κατόπιν ὁ Μάρσνερ ἐγκαινίαζον τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνθήσεως τοῦ γερμανικοῦ ρωμαντικοῦ μελοδράματος· ἐνῷ ὁ Μπερλιὸζ ἐν Γαλλίᾳ, ὁ Μέντελσον ἐν Γερμανίᾳ, ἐκαλλιέργουν τὴν προγραμματικὴν μουσικὴν ἐν τῇ ὀρχηστρικῇ συνθέσει δι' ἔργων ἐπιβολῆς, ὁ Μπετόβεν ἠκολούθει ἀπαρεγκλίτως τὸ ὁμαλὸν αὐτοῦ πρόγραμμα. Ναὶ μὲν ἐθεώρει τὸν ἄνθρωπον ὡς ἄτομον, ἀλλὰ προσεπάθει νὰ δώσῃ εἰς αὐτὸν ὡρισμένον τύπον, ν' ἀφαιρέσῃ δηλονότι ἀπ' αὐτοῦ

Digitized by Google

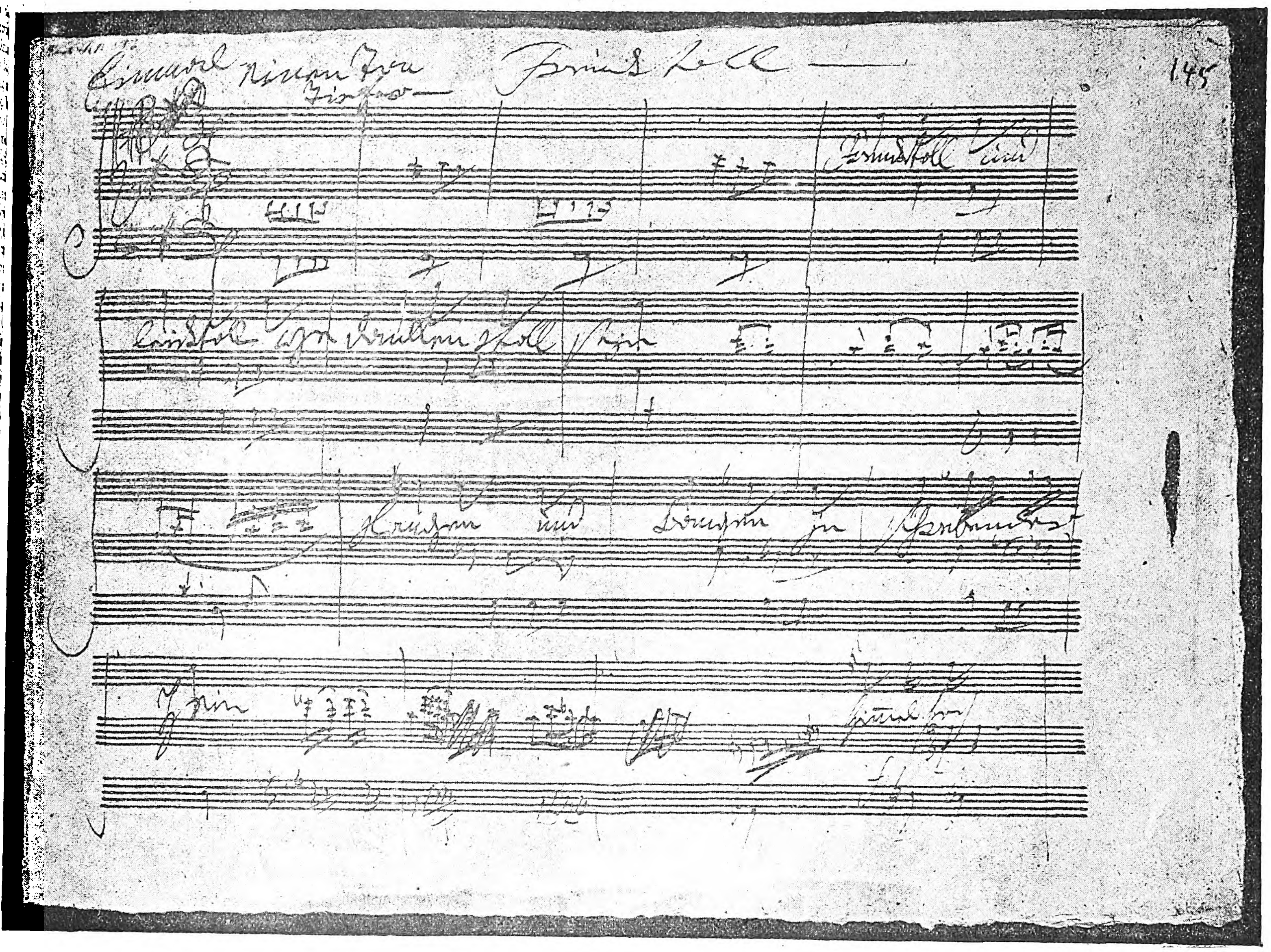

*Ἰδιόγραφον τοῦ Μπετόβεν ἀπὸ τὸν «Ἔγκμοντ».*

πᾶν τὸ ἐν περιωρισμένῃ ἐννοίᾳ προσωπικὸν καὶ ν' ἀναγάγῃ αὐτὸν εἰς περιωπὴν γενικότητος πανταχοῦ ἰσχυούσης. Ἴσως εἰς τὴν τοιαύτην ῥοπὴν πρὸς ἐξιδανίκευσιν δέον ν' ἀποδοθῇ τὸ μικρὸν ἐνδιαφέρον τοῦ Μπετόβεν διὰ τὴν φωνὴν καὶ συνεπῶς τὸ ὅτι συνθέσεις αὐτοῦ δι' ᾆσμα ἀποτελοῦν μικρὸν μόνον μέρος τοῦ συνολικοῦ ἔργου του. Ἡ μονῳδία ἰδίᾳ, ὡς ἐπὶ μέρους φαινόμενον, ἄγει πάντοτε εἰς τὴν ἔξαρσιν τῆς ὑποκειμενικῆς ἐκδηλώσεως, ἐνῷ ὁ ἐνόργανος ἦχος, ἤδη ὡς ἀκουστικὸν φαινόμενον ἀφαιρέσεως, τείνει ν' ἀπομακρύνῃ τὸν ἄνθρωπον ἀπὸ τῶν ἐρεθισμῶν τῆς αἰσθησιακῆς ἀντιλήψεως καὶ κατ' ἀκολουθίαν ἐν γένει ἀπὸ παντὸς προσωπικοῦ. Ὁ ἐνόργανος ἦχος, ὡς ἀντελήφθη καὶ διέπλασεν αὐτὸν ὁ Μπετόβεν, εἶναι ὁ ἦχος τῆς ἐξιδανικευμένης αἰσθήσεως, εἶναι, δύναταί τις εἰπεῖν, ἡ πλατωνικὴ ἰδέα ὡς ἠχητικὸν φαινόμενον, ἀπηλλαγμένη τῆς γηΐνης σωματικῆς φύσεως τῆς ἀνθρωπίνης φωνῆς. Πρὸς τ' ἀνωτέρω δὲ συνδέεται καὶ τὸ ὅτι ὁ Μπετόβεν δίδει εἰς τὴν φωνήν, ὁσάκις τὴν μεταχειρίζεται, ὕφος ἐνοργάνου μουσικῆς. Πρὸς ἑρμηνείαν τοῦ ὅτι ὁ Μπετόβεν δὲν καθοδηγεῖ τὴν φωνὴν συμφώνως πρὸς τὸν ᾠδικὸν χαρακτῆρά της τινὲς ἰσχυρίζονται ὅτι δὲν ἦτο ἱκανὸς νὰ κατευθύνῃ τὸν φωνητικὸν ἦχον. Ἀλλ' ὁ Μπετόβεν ἐνηλικιώθη ἐν μέσῳ κύκλου ἀοιδῶν, εἰργάσθη μετ' αὐτῶν ἐξ ἁπαλῶν ὀνύχων, ἀκόμη δὲ ἐν Βιέννῃ ἔλαβε παρὰ τοῦ Σαλιέρι μαθήματα δραματικῆς συνθέσεως δι' ᾠδικὴν μουσικήν. Ὅθεν δὲν πρέπει νὰ ὑποθέσωμεν ὅτι ὁ Μπετόβεν ἦτο ἀνίκανος νὰ ἐννοήσῃ τὴν ὀρθὴν χρησιμοποίησιν τῆς φωνῆς, ἀλλ' ὅτι ἡ ἀνάγκη, ἣν ᾐσθάνετο δι' εἶδός τι διαμορφώσεως, καθοριζόμενον ὑπὸ καθαρῶς ἰδεολογικῶν παραγόντων, ἦτο ἐπιτακτικωτέρα παρὰ ἡ ἔποψις τῆς ᾠδικῆς καθοδηγήσεως τῆς φωνῆς. Ἡ ἑρμηνεία δὲ αὕτη καταδείκνυται ὀρθὴ ἐκ τῆς ἀπαντήσεως τοῦ Μπετόβεν εἰς παρατήρησιν τοῦ πολυθρυλήτου βιολιστοῦ καὶ διευθυντοῦ κουαρτέττων Σούππαντζιγ σχετικῶς πρός τινα μουσικὴν φράσιν, γραφεῖσαν διὰ τὸν ἐκτελεστὴν τοῦτον ἥκιστα πρακτικῶς. «Φαντάζεσθε, ἀπεκρίθη ὁ Μπετόβεν, ὅτι σκέπτομαι τὸ ἄθλιο βιολί σας, ὅταν τὸ πνεῦμα μοῦ ὁμιλῇ;» Αἱ λέξεις αὗται δεικνύουν ὅτι τὸ πνεῦμα εἶναι ἐκεῖνο, ὅπερ καθορίζει παρὰ τῷ Μπετόβεν τὴν διατύπωσιν τῶν ἰδεῶν καὶ ὅτι ὁ μουσουργός, ὡς πρὸς τὴν φύσιν τοῦ ὀργάνου, ὅπερ μεταχειρίζεται, ἀναγνωρίζει μόνον τὰς ἀρχεγονωτέρας τῶν ἀξιώσεων. Ὡς πρὸς τὰ ὄργανα, ἡ ἄποψις αὕτη ἦτο πραγματοποιήσιμος, διότι ὑπῆρχεν ἡ δυνατότης διευρύνσεώς τινος τῆς τεχνικῆς καὶ τῆς μηχανικῆς. Ἀλλὰ τοῦτο εἶναι ἀδύνατον νὰ γίνῃ ὅσον ἀφορᾷ τὴν φωνήν, διότι αὕτη, τόσον ὡς πρὸς τὴν ἔκτασιν ὅσον καὶ ὡς πρὸς τὸν τρόπον τῆς διευθύνσεως αὐτῆς, δεσμεύεται ὑπὸ νόμων ἀνυπερβλήτων. Διὸ καὶ αὕτη καταδείκνυται ὡς μὴ δυναμένη νὰ ὑποβληθῇ εἰς τρόπον διαμορφώσεως καθοριζόμενον ὑπὸ ἀπολύτων ἰδεῶν. Εἶναι εὔθρυπτος, ἡ δὲ ἔκφρασις, ἣν θέλει νὰ δώσῃ τις εἰς αὐτήν, ἀποτυγχάνει εὐκόλως. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον τὰ μέρη τοῦ ᾄσματος τοῦ Μπετόβεν, τόσον εἰς τὸ μελόδραμα «Φιντέλιο», ὅσον καὶ εἰς τὴν 9ην συμφωνίαν καὶ τὴν «Μεγάλην λειτουργίαν», θεωροῦνται ὑπὸ τῶν ἀοιδῶν ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης μέχρι σήμερον ὡς ἐγχείρημα ἐνσπεῖρον φόβους καὶ ἐνδοιασμούς, σπανίως δ' ἀκούει τις αὐτὰ ἐκτελούμενα καθ' ἱκανοποιητικὸν τρόπον. Ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῆς ἐνοργάνου μουσικῆς τοῦ Μπετόβεν ἐπιπροσθοῦσι παρόμοια κωλύματα. Ὁ Μπετόβεν οὐδέποτε, οὐδ' εἰς αὐτὰς τὰς διὰ κλειδοκύμβαλον συνθέσεις του, λαμβάνει πρὸ ὀφθαλμῶν τὴν φύσιν τοῦ ὀργάνου, δηλαδὴ οὐδέποτε ἐπιδιώκει ἀποτελέσματα ἐκ τῶν συνθηκῶν τῆς ἐκτελέσεως. Συμβαίνει τὸ ἀντίθετον παρ' αὐτῷ: αἱ συνθῆκαι τῆς ἐκτελέσεως πρέπει νὰ προσαρμόζωνται εἰς τὰ ἐπιδιωκόμενα ἀποτελέσματα. Ἐπειδὴ δὲ τὸ ὄργανον, ὡς μέσον μηχανικόν, δύναται νὰ μεταβάλληται, διὰ τοῦτο ἐγένετο ἐν προκειμένῳ προσαρμογή τις, ἥτις δεικνύεται ὡς ἐπίδρασις τοῦ Μπετόβεν ἐπὶ τῆς κατασκευῆς τῶν ὀργάνων. Χάρις εἰς τὰς ἀξιώσεις τοῦ Μπετόβεν τελειοποιεῖται ὁριστικῶς κατὰ τὸν ΙΘ΄ αἰῶνα ἡ τέχνη τῆς κατασκευῆς τοῦ κλειδοκυμβάλου, ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἔκτασιν τοῦ πληκτροφόρου, τὴν δύναμιν τῶν χορδῶν, τὴν ἀπόδοσιν τῆς πλακὸς ἀπηχήσεως, πάντων τῶν στοιχείων τῶν ὀργάνων τῶν χρησιμευόντων εἰς τὴν κροῦσιν. Τοιαῦται ἐπιδράσεις παρετηρήθησαν καὶ ὡς πρὸς τὴν κατασκευὴν ὀργάνων δι' ὀρχήστραν. Πάντα ταῦτα ἐδοκιμάσθησαν ἐν σχέσει πρὸς τὴν δυναμικότητα καὶ τὸ πολυσχιδὲς τῆς ἐκφράσεως καὶ ἐτελειοποιήθησαν διὰ νέας τινὸς βιομηχανίας μουσικῶν ὀργάνων. Καὶ αἱ διατάξεις αὐτῶν διὰ τὴν διευκόλυνσιν τοῦ τεχνικοῦ μέρους, ὡς πρὸς τὸ ὁποῖον ὁ Μπετόβεν ἤγειρεν ἐπίσης τὰς μεγίστας τῶν ἀξιώσεων, ηὐξήθησαν ἀντιστοίχως. Ἐγένοντο καὶ ἄλλου εἴδους νεωτερισμοὶ σχετικῶς πρὸς τὴν ἀπὸ κοινωνικῆς ἀπόψεως ὀργάνωσιν τοῦ ἐπαγγέλματος τῶν μουσικῶν. Μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ Μπετόβεν τὸ μουσικὸν ἐπάγγελμα περιωρίζετο εἰς στενὸν σχετικῶς κύκλον. Ὑπῆρχον ὀργανοκροῦσται, ᾀοιδοί, καθηγηταὶ τοῦ ᾄσματος, πρὸς δὲ τούτοις οἱ διὰ τὴν ἐκτέλεσιν μελοδραμάτων ἀναγκαιοῦντες μουσικοὶ καὶ οἱ εἰς τοὺς οἴκους τῶν εὐγενῶν ὑπηρετοῦντες. Αὐτοτελὴς τις τάξις μουσικῶν δημοσίᾳ δὲν ὑπῆρχε, σπανίως δ' ἐδίδοντο δημόσιαι συναυλίαι, καὶ μόνον διὰ συμμετοχῆς ἐρασιτεχνῶν καθίσταντο αὗται δυναταί. Ἀλλὰ τὰ δι' ὀρχήστραν ἔργα τοῦ Μπετόβεν ἤγειρον ἀξιώσεις, πρὸς τὰς ὁποίας οἱ ἐρασιτέχναι δὲν ἠδύναντο πλέον ν' ἀνταποκριθοῦν, ἡ δ' ἐκτέλεσίς των δὲν ἦτο ἐφικτὴ εἰς τὰς ἰδιωτικὰς τῶν εὐγενῶν αἰθούσας. Τὰ ἔργα ταῦτα ἀπῄτουν τὴν μεγάλην, πλήρη, ὑπὸ ἱκανῶν εἰδικῶν μουσικῶν κατειλημμένην ὀρχήστραν, ἐξ ἄλλου δὲ ὅσον τὸ δυνατὸν εὐρύτερον χῶρον ὡς ὅρον ἀκουστικῆς. Πρὸς τούτοις ἀπῄτουν ἀκροατήριον, μὴ ἀπαρτιζόμενον πλέον ἐξ ἐρασιτεχνῶν ἢ διὰ τὸν κλάδον τῶν ἐνδιαφερομένων εἰδικῶν μουσικῶν, ἀλλὰ κοινωνίαν ἀνθρώπων ἱκανῶν νὰ συμμετάσχωσιν εἰς τὴν ἀναγγελίαν νέας τινὸς μουσικῆς, εἰς τὴν ἀφύπνισιν τέως ἀνεκφράστων γενικῶς ἰσχυουσῶν ἰδεῶν· ἀπῄτουν ἄλλαις λέξεσι νέαν κατὰ τὴν ἔννοιαν ταύτην κοινωνίαν. Οὕτω παρεσκευάσθη τὸ ῥῆγμα, ὅπερ ὡδήγησεν ἀπὸ τῶν πρῴην συναυλιῶν κοινωνικοῦ χαρακτῆρος εἰς τὰς πραγματικὰς συναυλίας κατὰ τὴν σημερινὴν σημασίαν τῆς λέξεως καὶ ἐδημιούργησεν ἐν γένει διὰ πρώτην φορὰν τὴν ἔννοιαν μουσικῆς τινος δημοσιότητος. Δημοσία, τουτέστι προσιτὴ εἰς πάντας, μουσικὴ ὑπῆρχεν εἰς τὴν ἐκκλησίαν, τοὺς χορούς, τὸ θέατρον, καὶ εἰς τοὺς κύκλους ἐρασιτεχνῶν, συγκροτουμένους εἰς πανεπιστήμια ὑπὸ τὸ ὄνομα «collegium musicum». Ἀλλὰ τώρα ἐσχηματίσθη περὶ τὸν πυρῆνα τῶν ἔργων του νέα τις δημοσία ὁμήγυρις. Ἡ ἔννοια τῆς δημοσίας συναυλίας, ἤτοι ἡ συνάθροισις καὶ συνένωσις πολλῶν, ἄλλως ξένων πρὸς ἀλλήλους, ἀνθρώπων, ποθούντων νὰ ἐνωτισθῶσιν ἐνοργάνου μουσικῆς, ἐξειλίχθη εἰς νέαν ὀργάνωσιν, ἥτις ἐξήσκησεν ἐπὶ τὴν μουσικὴν ζωὴν τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος καθοριστικὴν ἐπίδρασιν, ἣν καὶ σήμερον ἔτι ἐξασκεῖ. Βάσις καὶ περιεχόμενον τῶν συναυλιῶν τούτων εἶναι ἡ δι' ὀρχήστραν καὶ αἰθού-

Digitized by Google

σας μουσικὴ τοῦ Μπετόβεν. Αἱ συμφωνίαι, καὶ ὡς πρὸς αὐτὴν ἀκόμη τὴν χρονικήν των διάρκειαν, ἡ ὁποία ὑπερεπήδα τὰ μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης συνήθη ὅρια, ἀξιοῦσαι τὴν ἐκτέλεσίν των παρ' εἰδικῶν μουσικῶν, παρορμῶσιν εἰς τὴν συγκρότησιν τῶν δημοσίων συναυλιῶν δι' ὀρχήστραν. Παρὰ τὰ μέχρι τότε μόνα συνήθη μουσικὰ τεμάχια διὰ μόνον ὄργανον (σόλο), προβάλλουν ἤδη ἔργα μουσικῆς δωματίου, σονάται, δυῳδίαι, τρίο, καὶ πρὸ παντὸς κουαρτέττα δι' ἔγχορδα ὄργανα, τὰ ὁποῖα καὶ προσδίδουν νέον πνευματικὸν περιεχόμενον εἰς τὰς συναυλίας, αἵτινες μέχρι τότε διείποντο κυρίως ὑπὸ τῶν συμφερόντων τῶν δεξιοτεχνῶν. Ἀλλὰ ποῖα εἶναι τὰ πνευματικὰ περιεχόμενα, ἅτινα τόσῳ ὡς πρὸς τὸ ἐκτελεστικὸν μηχάνημα, ὅσῳ καὶ ὡς πρὸς τὸ ἀκροατήριον, ἐπήνεγκον τοιαύτην μεταβολὴν καὶ συνεπῶς κολοσσιαίαν μεταμόρφωσιν τῆς τε μηχανικῆς καὶ τῆς δυναμικῆς μορφῆς; Ἐὰν ὁ Μπετόβεν χαρακτηρίζηται ὡς μουσικὸς ἰδεῶν, ἐὰν ἐρρέθη ὅτι ἐν τῇ ῥοπῇ αὐτοῦ πρὸς ἀφαίρεσιν παρημέλησε τὸ αἰσθητικὸν ὄργανον, ἤτοι τὴν ἀνθρωπίνην φωνήν, καὶ προέκρινε νὰ στραφῇ πρὸς τὸ μηχανικὸν ὄργανον, τοῦτο οὐδόλως σημαίνει, ὅτι ἀπεπειράθη νὰ διατυπώσῃ μουσικῶς ὡρισμένας ἰδέας, δυναμένας ν' ἀποδοθῶσι σαφῶς διὰ λέξεων ἢ ἐννοιῶν, κατὰ τὸν τρόπον τῶν προγραμματικῶν μουσικῶν. Προγραμματικὴ μουσικὴ ὑπῆρχεν ἤδη χρόνον μακρὸν πρὸ τοῦ Μπετόβεν, καθὼς ὑπῆρξε τοιαύτη καὶ μετ' αὐτόν, αὐτὸς δὲ οὗτος προσήνεγκε συμβολάς τινας εἰς τὴν μουσικὴν ταύτην. Ἀλλὰ τὸ πρόγραμμα κατὰ τὴν καθιερωμένην ἔννοιαν οὐδὲν εἶχε τὸ κοινὸν πρὸς τὴν θεμελιώδη ἰδεολογικὴν γραμμὴν τῆς τέχνης τοῦ Μπετόβεν. Τὸ ἰδεολογικὸν στοιχεῖον τοῦτο εἶναι μᾶλλον ἡ ἐπενέργεια τοῦ κριτικοῦ ἐκείνου τρόπου τῆς θεωρήσεως τοῦ κόσμου, ἥτις, ἀφορμωμένη ἐκ τῆς βασικῆς ἀφετηρίας της, ἐξετάζει τὸν σκοπὸν καὶ τὴν ἀξίαν τῶν φαινομένων καὶ πειρᾶται νὰ διαγνώσῃ τὸν ἄνθρωπον ἐν τῇ σχέσει αὐτοῦ πρὸς τὸ σύμπαν, ἐν συναφείᾳ πρὸς τὸν προορισμόν, τὰ δικαιώματα, τὰ καθήκοντα αὐτοῦ. Εἶναι ἡ ἠθικῶς θεμελιουμένη κοσμοθεωρία τῆς κριτικῆς ἰδεολογίας, ἥτις ὑπῆρξεν ἔμφυτος εἰς τὴν προσωπικότητα τοῦ μουσουργοῦ καὶ ὤθησεν αὐτὸν εἰς τὴν διευκρίνισιν τῶν δεδομένων καὶ τῶν φαινομένων τῆς ζωῆς. Ἀντίθεσιν πρὸς τὸν τρόπον τοῦτον τοῦ σκέπτεσθαι ἀποτελεῖ ἡ ἁπλοϊκὴ θεώρησις, ἥτις δὲν καθορίζει ἀξίας, ἀλλὰ πειρᾶται νὰ ἑρμηνεύσῃ τὰ φαινόμενα ἐκ τῶν νόμων τῶν διεπόντων τὴν οὐσίαν των· δὲν ἐξετάζει τί εἶναι ἀγαθὸν καὶ κακόν, ἀλλὰ διαγιγνώσκει τὴν δημιουργικὴν ἀρχὴν ἐν τῇ ποικιλίᾳ τῶν φαινομένων, συνεπῶς δὲν κρίνει, ἀφορμωμένη ἐξ ὡρισμένων ἠθικῶν προϋποθέσεων, ἀλλὰ πάντα τὰ δεδομένα τῆς φύσεως ἐκλαμβάνει ὡς ἀντικατοπτρισμὸν τῆς δημιουργοῦ βουλήσεως τῆς θεότητος. Ὁ σύγχρονος τοῦ Μπετόβεν Σίλλερ χαρακτηρίζει τὰς ἀντιθέσεις ταύτας διὰ τῶν λέξεων «ἁπλοϊκὴ» καὶ «συναισθηματική». Κατὰ ταῦτα ὁ Ὅμηρος, ὁ Σαίξπηρ καί, διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, ὁ Γκαῖτε πρέπει νὰ θεωρηθῶσιν ὡς ὑποδείγματα ἁπλοϊκῆς τέχνης, καθὼς ἀκριβῶς δέον νὰ λογισθῇ ἡ τέχνη αὕτη ἐν γένει ὡς πρὸς πάντα κλασσικισμὸν βασική. Τοὐναντίον, ὡς συναισθηματικὴ θεωρεῖται πᾶσα κριτικῶς θεμελιουμένη ἑρμηνεία καθοριστικὴ ἀξιῶν μεταξὺ τοῦ κόσμου καὶ τῶν ἀνθρώπων, ὁποία ἐμφανίζεται, ἐπὶ παραδείγματι, παρὰ τῷ Μιχαὴλ Ἀγγέλῳ, τῷ Σίλλερ καὶ τῷ Μπετόβεν. Ὅθεν ἡ δημιουργικὴ ῥοπὴ τοῦ συναισθηματικῶς κριτικοῦ ἀνθρώπου δὲν ἐπιδιώκει τὴν διάγνωσιν τῶν φαινομένων, αὐτῶν καθ' ἑαυτά, ἀλλὰ τὴν γνῶσιν καὶ τὸν καθορισμὸν τῆς ἀξίας τῆς σχέσεως αὐτῶν πρὸς ἄλληλα καὶ πρὸς τὸ ἴδιον Ἐγώ, ἤτοι τὴν γνῶσιν ἐκείνου, ὅπερ ἐμφιλοχωρεῖ μεταξὺ τῶν φαινομένων, τὴν ἐνσυνειδητοποίησιν τῶν σχέσεων τῶν φαινομένων πρὸς ἄλληλα, ἀπὸ τῆς σκοπιᾶς τοῦ Ἐγὼ τοῦ παρατηρητοῦ θεωρουμένων. Ἐν τῷ σημείῳ τούτῳ εὑρίσκεται ἡ ῥίζα τῆς ῥωμαντικῆς θεωρήσεως τῆς τέχνης. Ἡ ῥωμαντικὴ τέχνη ἀντιλαμβάνεται τὸν κόσμον καὶ τὸ Ἐγὼ ὡς ἀντιμαχομένας πρὸς ἀλλήλας ἀντιθέσεις, καὶ ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἀντιλήψεως ταύτης στηρίζει ὁλόκληρον τὴν ῥωμαντικὴν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος μουσικὴν εἰς τὸν Μπετόβεν. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον πᾶς καλλιτέχνης ῥωμαντικὸς δέον νὰ κριθῇ ὡς ἐκπρόσωπος τῆς κριτικῆς συναισθηματικῆς κοσμοθεωρίας. Ἀλλ' ὁ Μπετόβεν δὲν ἐπορεύθη τόσον μακράν, ὅσον οἱ ῥωμαντικοὶ διάδοχοί του. Ὁ κόσμος καὶ τὸ Ἐγὼ δὲν ἦσαν δι' αὐτὸν ἀντιθέσεις, αἵτινες ἐμάχοντο ἡ μὲν κατὰ τῆς δὲ καὶ ὁ ἀγὼν τῶν ὁποίων καθώρισε τὸ περιεχόμενον τῆς τέχνης του. Ὁ Μπετόβεν ἐπεδίωξε μᾶλλον καὶ διεμόρφωσε τὴν ἑνότητα ἀμφοτέρων. Ἀποχωρίζων ἀπὸ τὸ ἴδιόν του Ἐγὼ πάντα ὑποκειμενικόν, προσωπικῶς ἀνεκδοτικὸν χαρακτῆρα, διηύρυνεν αὐτὸ εἰς εἰκόνα τοῦ κόσμου, ὡς ἄλλως τε καὶ ὁ κόσμος οὗτος ἀπέβαινεν ἀπεικόνισις ὑπερόχου τινὸς ἡρωϊκῆς ἀνθρωπότητος, ἥτις ὑπεράνω τῶν ἀποφάσεων τῆς εἱμαρμένης διακηρύσσει τὴν θείαν ἐλευθερίαν τῆς βουλήσεως. Εἰς τὴν βασικὴν ἀντίληψιν ταύτην ἑδράζεται τὸ ἰδεολογικὸν στοιχεῖον τῆς τέχνης τοῦ Μπετόβεν. Ἡ εἴς τινα ἔργα, τὴν «Ἡρ[illegible]» τὸν «Ἔγμοντ», τὸν «Κοριολανόν», «Πρέπει νὰ εἶναι;», «Πρέπει!», ἀπαντῶσα προγραμματικὴ διατύπωσις δέον κατά τινα τρόπον νὰ θεωρηθῇ μόνον ὡς ἔκρηξις τῆς ἰδεολογικῆς βασικῆς δυνάμεως ἐκείνης, ἥτις ἅπτεται τοῦ ἀφηρημένου, τοῦ ἰδεατοῦ, καὶ ὄχι ὡς ἔξωθεν δεδομένοι προγραμματικοὶ καθορισμοί. Ἐντεῦθεν γίνεται φανερὸς ὁ ἀποχρῶν λόγος τῆς προτιμήσεως τοῦ Μπετόβεν διὰ τὰ ὄργανα. Λόγῳ τῆς ἀπελευθερώσεως αὐτῶν ἀπὸ τῶν πρὸς τὰς λέξεις συνδεομένων ἐννοιῶν, ἦσαν τὰ μάλιστα ἱκανὰ νὰ ἐκφράζουν τὰ μὴ σταθμητὰ καὶ ν' ἀποδοθῶσι διά τινος ἰδεατῶς διηκριβωμένης παραστάσεως τὰ αἰσθήματα ἐκεῖνα, ἡ ἐξεικόνισις τῶν ὁποίων ἀπετέλει περιεχόμενον καὶ θέμα τῆς τέχνης τοῦ Μπετόβεν. Ἀκριβῶς δὲ ἡ ἔκφρασις τῶν αἰσθημάτων τούτων ἦτο ἐκείνη, ἥτις τότε καὶ καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος συνεκίνει τόσον βαθέως τοὺς ἀνθρώπους, ὥστε ταῦτα νὰ εὕρουν διὰ τοῦ τοιούτου, μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἀγνώστου, τρόπου καλλιτεχνικῆς διαμορφώσεως πνευματικῶν ἐνεργειῶν νέον κέντρον συνδέσεως. Πλεῖστοι τῶν μετέπειτα μουσικῶν προσεπάθησαν νὰ διαμορφώσωσι περαιτέρω τὸ ὑπὸ τοῦ Μπετόβεν ἐγκαινιασθὲν νέον πεδίον ἐνοργάνου καλλιτεχνικῆς ἐκφράσεως ὑπὸ τὰς παρ' αὐτοῦ καλλιεργηθείσας ὑπερόχους μορφάς.

Εἰς προγενεστέρας ἐποχὰς ἐξέλαβον πολλάκις τὸν Μπετόβεν ὡς ἐπαναστάτην ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς διαπλάσεως τῶν μουσικῶν μορφῶν· ὡς ἐπαναστάτην, ὅστις κραταιῶς ἐπεξέτεινε καὶ ἐν μέρει ἐξεμηδένισε τὴν ὑπὸ τοῦ Χάϋντν καὶ τοῦ Μόζαρτ καταλειφθεῖσαν κληρονομίαν τῶν νόμων τῆς μορφῆς. Ὅπως πᾶς ἡγέτης τῆς ἀνθρωπότητος, οὕτω καὶ ὁ Μπετόβεν ὑπῆρξεν ὁ στόχος παντοειδῶν κατηγοριῶν καὶ μομφῶν. Ἤδη ἀπὸ τῆς συνθέσεως τῆς 2ας συμφωνίας ἐχαρακτηρίσθη ὡς πτωχὸς τὴν αἴσθησιν πειραματιστής, ὅστις προσεπάθει νὰ καλύψῃ τὴν ἔλλειψιν πρωτοτύπου δημιουργικῆς δυνάμεως διὰ παρατόλμων νεωτερισμῶν καὶ αὐθαιρέτων ἰταμοτήτων, ἀλλ' ὅστις δὲν εἶχε πραγματικὸν συναίσθημα καὶ φωτεινὴν ἀντίληψιν τῆς τέχνης. Αἱ τοιαῦται δὲ κατηγορίαι σὺν τῷ χρόνῳ μεγάλως ηὐξήθησαν. Καίτοι δὲ αὗται οὐδαμῶς ἠδυνήθησαν ν' ἀμαυρώσουν τὴν ἀκρατήτως αὐξανομένην δόξαν τοῦ μουσουργοῦ, ἐν τούτοις ἠμπόδισαν τὴν κατανόησιν τῆς ἀληθοῦς φύσεώς του ἐπὶ χρόνον μακρόν. Ὅσον δὲ ἀφορᾷ τὰ τελευταῖα ἔργα του, τινὲς ἰσχυρίσθησαν ὅτι, λόγῳ τῆς παθήσεως τῆς ἀκοῆς του, οὐδένα πλέον ἠδύνατο νὰ ἀσκῇ ἐπὶ τῶν συνθέσεων αὐτοῦ ἔλεγχον. Ἐμέμφοντο τὰς ἁρμονικὰς συνηχήσεις του, ἃς ἐθεώρουν ὡς ἀσυναρτήτους, πρὸ πάντων δὲ κατηγόρουν τὴν εὐρύτητα τῶν μορφῶν. Καὶ αὐτὸς ἀκόμη ὁ Μέντελσον, εἷς τόσον μεγαλοφυὴς μουσουργὸς καὶ πραγματικὸς γνώστης τοῦ Μπετόβεν, διέκειτο πρὸς τὴν 9ην συμφωνίαν ψυχρῶς. Κατ' ἀρχὰς προέκρινον τὰ ἔργα τῆς πρώτης καὶ τῆς μέσης περιόδου, ἐθεώρουν δὲ τὰς μεταγενεστέρας συνθέσεις ὡς προωρισμένας ἀποκλειστικῶς δι' εἰδικούς. Εἰς τὴν ἀποτελεσματικὴν παρέμβασιν τοῦ Φραγκίσκου Λίστ καὶ τοῦ Χὰνς φὸν Μπύλοβ, ὡς πρὸς τὰ ἔργα διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ ὀρχήστραν, καὶ τοῦ Ἰωσὴφ Ἰωακείμ, ὡς πρὸς τὴν μουσικὴν δωματίου τοῦ Μπετόβεν, ὀφείλεται τὸ ὅτι διὰ πρώτην φορὰν καὶ τὰ μεταγενέστερα ἔργα του ἐγένοντο περισσότερον προσιτὰ εἰς τὴν συνείδησιν τῶν πολλῶν καὶ τὸ ὅτι μάλιστα ἐπί τινα χρόνον τὰ μεταγενέστερα ἔργα τοῦ Μπετόβεν παρημελήθησαν. Μέχρι τῶν τελευταίων χρόνων διήρκεσεν ἡ μεγάλη αὕτη κίνησις περὶ τὸν Μπετόβεν, ἥτις παρὰ τῷ κοινῷ παρατηρεῖται ἀκόμη καὶ σήμερον. Τοὐναντίον ἡ σύγχρονος γενεὰ τῶν μουσικῶν δεικνύει πάλιν ἐκ νέου ἀντίδρασίν τινα, ἥτις ἐλέγχεται ὡς ἀπομάκρυνσις ἀπὸ τοῦ ἔθους καὶ τοῦ πάθους τοῦ Μπετόβεν, ὡς ἐπάνοδος εἰς προγενεστέραν ἐποχήν, ἐν πρώτοις εἰς τὴν τοῦ Μπὰχ καὶ τοῦ Χαΐντελ, εἶτα δὲ εἰς τὴν πρὸ αὐτῶν ἐποχήν, ἄρα εἰς τὸν ΙΕ' καὶ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα. Αἱ ἐναλλασσόμεναι κινήσεις αὗται δὲν δύνανται φυσικὰ νὰ θίξουν τὴν ἀπόλυτον ἀξίαν καὶ τὴν σημασίαν τῆς ἐμφανίσεως τοῦ ἔργου τοῦ Μπετόβεν. Εἶναι ὅμως χαρακτηριστικαὶ διὰ τὴν μεταβαλλομένην ἀντίληψιν τῆς βασικῆς ἀρχῆς τῆς τέχνης τοῦ μουσουργοῦ, ἥτις καθώρισε τελικῶς καὶ τὴν διάπλασίν του τῆς μορφῆς: εἰς ἰδέαν τῆς ἐκφραστικῆς τέχνης.

Ὁ Μπετόβεν—τοῦτο δὲ πρέπει νὰ λεχθῇ ἀπεριφράστως—δὲν εἶναι διαστροφεύς, ἀλλὰ διατηρητὴς τῶν μορφῶν. Ὅστις, ὡς νέος ἐν τῇ συναισθήσει τῆς ἰδιοφυΐας του, ἐπιζητεῖ πάντοτε ἐκ νέου τὸν διδάσκαλον ἐκεῖνον, ὅστις θὰ ὑποβάλῃ αὐτὸν εἰς αὐστηροτάτην διδασκαλίαν, δεικνύει ἀριδήλως τοσοῦτον ἀπὸ χαρακτῆρος σεβασμὸν πρὸς τὴν παράδοσιν, ὥστε καὶ βραδύτερον νὰ μείνῃ μακράν του πᾶσα πρόθεσις ἀνατροπῆς. Πρὸς τούτοις γνωρίζομεν πόσον ὁ Μπετόβεν ἐθαύμαζε τὸ δαιμόνιον τοῦ Μόζαρτ καὶ πόσον ἐξετίμα τὴν προσωπικότητα τοῦ Χάϋντν, καίτοι δὲν ἔμεινεν εὐχαριστημένος ἐκ τῆς διδασκαλίας του. Ἐπίσης γνωρίζομεν τὸν θαυμασμόν του πρὸς τὸν Ἰωάννην Σεβαστιανὸν Μπάχ, καίτοι ὀλίγων μόνον ἔργων του εἶχε γνῶσιν. Ὁ Μπάχ, ἔλεγεν ὁ Μπετόβεν, δὲν ἔπρεπε νὰ καλῆται Bach (=ῥύαξ), ἀλλὰ Meer (=θάλασσα). Κατὰ τὰς τελευταίας στιγμὰς τῆς ζωῆς του ὑπῆρξε δι' αὐτὸν μεγίστη χαρὰ τὸ ὅτι Ἄγγλοι τινὲς θαυμασταί του τῷ ἐξαπέστειλαν ἔκδοσίν τινα τῶν ἔργων τοῦ Χαΐντελ. Ὁ τοσαύτην προσφέρων λατρείαν πρὸς τοὺς μεγάλους διδασκάλους προγενεστέρων ἐποχῶν δὲν δύναται νὰ εἶναι αὐτὸς ὁ ἴδιος περιφρονητὴς τῆς μορφῆς. Πράγματι πᾶσα ἐμβριθὴς μελέτη τῶν ἔργων του δεικνύει ὅτι τὸ ἰδιαίτερον χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τῆς δημιουργίας αὐτοῦ ὑπῆρξεν ἀκριβῶς ἡ πανταχοῦ διατρανουμένη τελεία ὀργάνωσις ἐν τῇ διαπλάσει τῆς μορφῆς. Τὸ ὅτι δὲ προφανῶς ἡ τοιαύτη μορφὴ δὲν ἠδύνατο νὰ εἶναι σχηματική τις ἀπομίμησις δεδομένων προτύπων, προκύπτει ἐκ τοῦ ἰδιοτύπου εἴδους τοῦ περιεχομένου τῶν ἰδεῶν, τὴν ἔκφρασιν τῶν ὁποίων καθώριζεν ἐπιτακτικῶς αὐτὴ αὕτη ἡ προσωπικότης τοῦ Μπετόβεν. Τὸ ἰδιότυπον τοῦτο εἶδος τοῦ περιεχομένου τῶν ἰδεῶν θὰ ἠδύνατό τις νὰ καλέσῃ συγκεφαλαιωτικῶς δυναμικὴν βούλησιν, δυναμικὴν ἐν τῇ προσπαθείᾳ της νὰ διευρύνῃ τὴν πλοκὴν τῆς μορφῆς καὶ τοῦ διαγράμματος, δυναμικὴν ἐπίσης ἐν τῇ εἰς τὴν ἐπιτακτικὴν ἀνάγκην τῆς ἐκφράσεως ὀφειλομένῃ διαμορφώσει τῶν ἀντιθέσεων καὶ τῶν ἀποχρώσεων τοῦ ἤχου, ἤτοι τῆς «ἐκφράσεως». Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται καὶ ὁ παραδόξως μικρὸς ἀριθμὸς τῶν ἔργων τοῦ Μπετόβεν ἔναντι τῶν συνθέσεων τῶν προγενεστέρων του, ἡ καταπληκτικὴ οἱονεὶ συμπύκνωσις τοῦ ἠχητικοῦ ὑλικοῦ ἐντατικοποιουμένου εἰς τὰ ἄκρα ἰδεατῶς καὶ ὑλικῶς. Ὁ Μπετόβεν ἔγραψεν 9 συμφωνίας, ὁ Μόζαρτ 40, ὁ δὲ Χάϋντν ὑπὲρ τὰς 100. Ὁμοία ἀναλογία ὑπάρχει καὶ ὅσον ἀφορᾷ τὰ ἔργα μουσικῆς δωματίου καὶ τὰ κοντσέρτα. Ἀλλ' ἀναμφιβόλως ἡ εἰκὼν μεταβάλλεται ἐν σχέσει πρὸς τὰ καθ' ἕκαστον ἔργα. Συμφωνίαι τῆς περιεκτικότητος τῆς «Ἡρωϊκῆς» ἦσαν μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἄγνωστοι, ἄγνωστος ἐπίσης ἦτο καὶ ἡ χρησιμοποίησις τοῦ χοροῦ ἐν τῇ συμφωνίᾳ—ἤτοι ἡ διαμόρφωσις τοῦ «φινάλε» εἰς καντάταν. Ἀλλ' ἐξαιρέσει τῆς ἐξωτερικῆς ταύτης διευρύνσεως καὶ ἐπεκτάσεως παραμένει ὡς βάσις ὁ κόσμος τῆς μορφῆς τῆς ἐνοργάνου μουσικῆς, ὡς εἶχεν αὕτη διαπλασθῆ μέχρι τῆς ἐμφανίσεως τοῦ Μπετόβεν, ὑπὸ τῆς σχολῆς τῆς Μαγγχάϊμ, τῆς Βιέννης καὶ τῆς βορειογερμανικῆς σχολῆς, τουτέστιν ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Ἐμμανουὴλ Μπάχ, καὶ τελειοποιηθῆ ὑπὸ τοῦ Ἰωσὴφ Χάϋντν. Ὁ βασικὸς τύπος τοῦ κόσμου τούτου τῶν μορφῶν εἶναι ἡ σονάτα, καὶ οὕτω δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν ὅτι ὁ Μπετόβεν, ἐξαιρέσει τῶν δύο λειτουργιῶν, μικρῶν τινων ἔργων φωνητικῆς μουσικῆς καὶ τοῦ μελοδράματος «Φιντέλιο», ἔγραψε μόνον σονάτας. Εἰς αὐτὰς δὲν συγκαταλέγονται ἀποκλειστικῶς τὰ ὡς σονάται χαρακτηριζόμενα ἔργα μόνον διὰ κλειδοκύμβαλον ἢ διὰ κλειδοκύμβαλον μετ' ἄλλων ὀργάνων. Τὰ τρίο καὶ τὰ κουαρτέττα, ὡς πρὸς τὴν μορφικὴν ἰδέαν των, εἶναι κατὰ τὴν αὐτὴν ἀκριβῶς ἔννοιαν σονάται διὰ τρία ἢ τέσσαρα ὄργανα. Τὰ κοντσέρτα εἶναι σονάται δι' ὄργανα διαλεγόμενα μετὰ τῆς ὀρχήστρας, αἱ δὲ συμφωνίαι σονάται μόνον δι' ὀρχήστραν. Ὅθεν μεταβάλλονται κατὰ τὸ εἶδος καὶ τὸ περιεχόμενον τοῦ ἰδεατοῦ πυρῆνος μόνον τὰ ἠχητικὰ μέσα ἐκφράσεως, ἐνῷ ἡ ἀρχιτεκτονικὴ μορφὴ μένει πάντοτε ἡ αὐτή. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν ἀρχιτεκτονικὴν ταύτην μορφήν, ἡ ἔννοια τῆς σονάτας ἔχει διπλῆν σημασίαν. Πρῶτον σημαίνει τὸ εἶδος τῆς συνθέσεως ἑνὸς καθ' ἕκαστον μουσικοῦ μέλους, ὡς πρὸς τὸ ὁποῖον χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ ὕπαρξις δύο πρὸς ἄλληλα ἀντικειμένων, ἀκόμη δὲ καὶ τονικῶς διαφόρων θεμάτων, ἡ ἀνάπτυξις τῶν δύο θεμάτων, ἡ συγκεφαλαιωτικὴ ἐπανάληψις αὐτῶν καὶ ἡ κατακλεὶς (Coda). Δεύτερον, ἡ λέξις σονάτα δηλοῖ μομφικὸν σύνολον, ἀπαρτιζόμενον ἐκ πολλῶν ἐπιμέρους μελῶν. Ἐξ αὐτῶν τὸ πρῶτον μέλος δεικνύει τὴν κανονικὴν μορφὴν τῆς σονάτας, τὸ δεύτερον, βραδὺ μέλος, τὴν μορφὴν τοῦ «λίντ», τὸ δὲ τρίτον, ζωηρὸν μέλος, τὸ «ρόντο» καὶ τὴν μορφὴν τῶν παραλλαγῶν. Ὁ Μπετόβεν παρέλαβεν ἀμφοτέρας τὰς μορφὰς τῆς σονάτας, τὸ καθ' ἕκαστον μέλος καὶ τὴν συνολικὴν μορφὴν ἐκ τῆς ὑπὸ τοῦ Χάϋντν εἰς πλήρη σαφήνειαν ἀχθείσης ἀνελίξεως τῆς ἐννοίας τῆς μορφῆς. Διετήρησε τοὺς θεμελιώδεις τούτους χαρακτῆρας μέχρι τῶν τελευταίων ἔργων του. Ἡ περαιτέρω ἐξοικοδόμησις αὐτοῦ ἐστράφη πρὸ παντὸς εἰς τὴν πλουσιωτέραν ἀνάπτυξιν τῶν καθ' ἕκαστον. Αἱ θεματικαὶ ἀντιθέσεις ἐγένοντο ἀκόμη ὀξύτεραι, αὐτὰ δὲ ταῦτα τὰ θέματα προσέλαβον ἰδιαζόντως ἀτομικὸν χαρακτῆρα. Δηλαδὴ ἡ ἀνάπτυξις τῶν θεμάτων ἔλαβε σημασίαν καὶ διεξοδικότητα, ἥτις πρότερον δὲν ἦτο συνήθης, οὕτω δὲ τὸ μέρος τῆς ἀναπτύξεως ἤτοι κατά τινα τρόπον ἡ διαλεκτικὴ διευκρίνησις, ἐπεξετάθη εἰς ὁλόκληρον τὸ μέλος. Ἐξ ἴσου οὐσιαστικὴ ὑπῆρξε καὶ ἡ διαμόρφωσις τῆς συνολικῆς μορφῆς τῆς σονάτας. Ὁ Μπετόβεν ηὔξησεν ἐν πρώτοις καὶ αὐτὴν τὴν σονάταν διὰ κλειδοκύμβαλον κατὰ ἓν μέλος, ὅπερ μέχρι τῆς ἐποχῆς του ἦτο σύνηθες μόνον εἰς τὸ κουαρτέττον καὶ τὴν συμφωνίαν. Τὸ μέλος τοῦτο παρενέβαλε μεταξὺ τοῦ βραδέος μέσου καὶ τοῦ ζωηροῦ τελικοῦ μέλους. Ὁ Μόζαρτ καὶ ὁ Χάϋντν μετεχειρίσθησαν ὡς

Digitized by Google

τοιαύτην παρεμβολὴν ὀρχηστικὴν μορφὴν τὸ μενουέττο. Ὁ Μπετόβεν διετήρησε μὲν τὸν ὀρχηστικὸν χαρακτῆρα, ἀλλὰ προσέδωκεν εἰς τὸν χρόνον σημαντικὴν ρυθμικὴν ἐπιτάχυνσιν, οὕτως ὥστε ἐγεννήθη ἐντεῦθεν νέος τύπος: τὸ «σκέρτσο». Κατὰ ταῦτα, ὁ κανονικὸς τύπος τῆς σονάτας εἶναι παρὰ τῷ Μπετόβεν ἡ ἑπομένη σειρά: «ἀλλέγκρο» (μορφὴ τῆς σονάτας), βραδὺ μέλος (ᾆσμα), σκέρτσο, κατακλεὶς (ρόντο). Ἀλλὰ καὶ ὁ κανονικὸς τύπος οὗτος δέον νὰ θεωρηθῇ μόνον ὡς σχῆμα γενικόν. Ἐνίοτε ὁ Μπετόβεν γράφει τὸ βραδὺ μέλος ὡς ρόντο, τὴν κατακλεῖδα ὡς παραλλαγὴν (βαριασιόν), εἰς τὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα δὲ «Φῶς τῆς σελήνης» περίφημον καταστᾶσαν σονάταν εἰς ντὸ ἔλασσον, opus 27, παραλείπει τὸ πρῶτον μέλος τῆς σονάτας καὶ ἀρχίζει τὸ ἔργον κατά τινα τρόπον μὲ τὸ δεύτερον μέλος. Κατὰ τὰ μετέπειτα ἔτη ὁ Μπετόβεν ποιεῖται περὶ πολλοῦ τὴν παρεμβολὴν μορφῶν ἀντιστίξεως. Οὕτως ἡ κατακλεὶς τῆς Χάμμερ-σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον, opus 106, χαρακτηρίζεται ὡς φούγκα, καθὼς ἐπίσης ἡ ἀρχικὴ κατακλεὶς τοῦ κουαρτέττου δι' ἔγχορδα ὄργανα εἰς σι ὕφεσ., opus 127. Ἐν προκειμένῳ δέον καὶ πάλιν νὰ παρατηρηθῇ ὅτι ἡ μορφὴ τῆς φούγκας λαμβάνει ἐλευθέραν πραγμάτευσιν, εἶναι δὲ κατάμεστος στοιχείων τοῦ τύπου τῆς σονάτας. Πράγματι, ὅσον ἀφορᾷ τὰς σονάτας τοῦ Μπετόβεν, ἰσχύει ὅ,τι καὶ ὡς πρὸς τὰς φούγκας τοῦ Μπάχ. Εἰς τὴν βάσιν αὐτῶν, ὡς μορφικοὶ τύποι, εἶναι πᾶσαι ἀπαραγνώριστοι καὶ ἀμίμητοι, καίτοι, παρὰ τὸν μέγαν ἀριθμὸν αὐτῶν, δὲν ὑπάρχουσι δύο, αἵτινες νὰ εἶναι τελείως ὅμοιαι πρὸς ἀλλήλας καὶ ὡς πρὸς τὴν ἐξωτερικὴν ἀκόμη πλοκὴν αὐτῶν. Ἑκάστη ἐξ αὐτῶν τυγχάνει, αὐτὴ καθ' ἑαυτήν, ἀτομικὸν φαινόμενον μὲ ἴδιον νόμον καὶ χαρακτῆρα ἴδιον. Καίτοι ὁ Μπετόβεν προσέδωκεν εἰς τὴν σονάταν νέαν ἑκάστοτε μορφήν, πρὸς τούτοις δὲ διεισέδυσε διὰ τῆς φαντασίας αὐτοῦ εἰς τὰς παλαιοτέρας μορφὰς τοῦ λίντ, τοῦ ρόντο καὶ τῆς φούγκας, ἐν τούτοις ἐκεῖνο, ὅπερ οὗτος ἐπεξειργάσθη μετ' ἀγάπης ἐξαιρετικῆς, εἶναι ἡ μορφὴ τῆς παραλλαγῆς ὡς ἴδιος τύπος. Ὡς μέσον ἐπεξεργασίας προσέλαβε διὰ τοῦ Μπετόβεν μεγίστην ἀνάπτυξιν. Πράγματι ἡ παραλλαγὴ ἦτο ἡ βασικὴ μορφὴ τοῦ αὐτοσχεδιασμοῦ, ὅστις κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Μπετόβεν ἐλογίζετο ὡς ἰδιαίτερον καλλιτεχνικὸν τοῦ κλειδοκυμβαλιστοῦ ἆθλον. Ὁ Μπετόβεν, μετενεγκὼν τὴν ἰδέαν ταύτην τοῦ αὐτοσχεδιασμοῦ εἰς τὴν γραπτὴν ἀποκρυσταλλουμένην μορφικὴν διάπλασίν της, ἐγένετο συμπληρωτὴς καὶ τελευταῖος μεγαλοφυὴς ἐκπρόσωπος τῆς παλαιᾶς μεγάλης ἐκείνης ἐπὶ τοῦ αὐτοσχεδιασμοῦ ἑδραζομένης δεξιοτεχνίας.

Οἱ διαδεχθέντες αὐτὸν ἐκτελεσταὶ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος δὲν εὗρον πλέον τὸ κύριον ἀντικείμενον τῆς τέχνης των ἐν τῷ αὐτοσχεδιασμῷ, διότι εἰς τὸ ἔργον τοῦ Μπετόβεν ὑπῆρχον τοσούτῳ τεράστια θέματα, ὥστε ὁ ἀσκούμενος καλλιτέχνης ὤφειλε ν' ἀναπτύξῃ ὁλόκληρον τὴν δύναμιν αὐτοῦ, ἵνα δυνηθῇ νὰ ἰδιοποιηθῇ καὶ ν' ἀποδώσῃ τὰ ἔργα τοῦ μουσουργοῦ. Οὕτως εἰς τὸν Μπετόβεν, ὡς τελευταῖον ἐκτελεστὴν παλαιοῦ ὕφους, ὁ αὐτοσχεδιασμὸς καὶ ἡ παραλλαγὴ παγιοῦνται τρόπον τινὰ εἰς ἑδραίαν μορφήν, ἡ ἀναπαραγωγὴ τῆς ὁποίας καθίσταται διὰ τὰς διαδεχθείσας αὐτὸν γενεὰς περιεχόμενον καὶ θέμα τῆς ἐξασκήσεως τῆς τέχνης των. Τὰ τελευταῖα ὑποδείγματα τοῦ εἴδους τούτου παραλλάσσοντος αὐτοσχεδιασμοῦ τὰ εὑρίσκομεν εἰς τὰς παραλλαγὰς τοῦ φινάλε τῆς σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον opus 109 καὶ opus 111, τὴν μεταγωγὴν δὲ τῆς αὐτῆς τέχνης παραλλαγῶν εἰς στὺλ ὀρχήστρας εἰς τὰ τελευταῖα μέρη τῆς 3ης συμφωνίας («Ἡρωϊκῆς») καὶ τῆς 9ης συμφωνίας. Εὑρίσκομεν, ὅτι τὸ μέσον τοῦτο τῆς κατευθύνσεως καὶ ἑρμηνείας τῶν ἰδεῶν διὰ κατατμήσεως τῆς μουσικῆς οὐσίας εἰς μικρότατα μέρη, ἅτινα γίνονται πάλιν πυρῆνες νέων διαμορφώσεων, εἶναι ἐν γένει τὸ κυριώτερον καὶ σπουδαιότερον ἐκφραστικὸν μέσον διὰ τὸν τὴν ἐνόργανον μουσικὴν καλλιεργοῦντα ἰδεαλιστὴν μουσικὸν καὶ ὁ ἄριστος τρόπος διαμορφώσεως κατὰ τὴν ἔννοιαν τῆς σονάτας.

Ἡ ἐπίδρασις τοῦ Μπετόβεν ἐπὶ ὁλοκλήρου τοῦ ΙΘ' αἰῶνος μέχρι σήμερον εἶναι κολοσσιαία, ἐξαιρέσει ἀντιδράσεών τινων, πρὸς οὐδενὸς δὲ ἄλλου μουσικοῦ τὴν ἐπίδρασιν δύναται νὰ παραβληθῇ. Ἐπειδὴ δὲ οὐ μόνον ὡς μουσικός, ἀλλὰ καὶ ὡς ἄνθρωπος ὑπῆρξεν ἡ ἐνσάρκωσις πρωταρχικῆς τινος ἰδέας ἡρωϊσμοῦ, ἐθεωρήθη, καὶ καθ' ὃν χρόνον ἀκόμη ἔζη, ὡς ἐκπολιτιστικὸν φαινόμενον, σχεδὸν μυθωδῶς δρῶν. Ἐξαιρέσει τῶν Ἰταλῶν, εἰς τοὺς ὁποίους ἡ τέχνη τῆς ἐνοργάνου μουσικῆς αὐτοῦ ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς ξένη, πάντες οἱ μουσικοὶ λαοὶ συνεδέθησαν πρὸς αὐτόν, ὁ Γάλλος Μπερλιόζ, οἱ Ἄγγλοι, οἱ Ρῶσοι, οἱ Σλάβοι, ὡς καὶ ὁ Γερμανὸς μουσικοδραματικὸς Βάγνερ καὶ οἱ ἀσπονδότεροι αὐτοῦ ἀντίπαλοι, οἱ ἀντιθεατρικοὶ ἱερεῖς τῆς ἐνοργάνου μουσικῆς: Μέντελσον, Σοῦμαν καὶ Μπράμς. Δι' ὅλους αὐτοὺς ὁ Μπετόβεν ἦτο ὁ κοινὸς ἅγιος, καίτοι δ' ἕκαστος ἐξ αὐτῶν τὸν ἐλάτρευε διὰ διάφορον λόγον, παραμένει ὅμως τὸ γεγονὸς τῆς λατρείας. Θὰ παραμείνῃ δὲ ἡ λατρεία καὶ ἂν ἀκόμη μεταβληθοῦν αἱ ἑκάστοτε δεσπόζουσαι κατευθύνσεις τῆς τέχνης, διότι ὁ Μπετόβεν εἶναι ἓν τῶν μεγαλυτέρων πνευμάτων, τὰ ὁποῖα ὁ κόσμος εἶδέ ποτε.

***Τὰ ἔργα τοῦ Μπετόβεν.*** Ἐννέα συμφωνίαι (ἀριθμὸς 1 ντὸ-μεῖζον, 1800, ἀριθμὸς 2 ρὲ-μεῖζον, 1802, ἀριθμὸς 3 μὶ-ὕφεσις-μεῖζον «Ἡρωϊκή» 1804, ἀριθμὸς 4 σὶ-ὕφεσις-μεῖζον, 1806, ἀριθμὸς 5 ντὸ-ἔλασσον, 1808, ἀριθμὸς 6 φὰ-μεῖζον «Ποιμενική», 1808, ἀριθμὸς 7 λὰ-μεῖζον, 1812, ἀριθμὸς 8 φὰ-μεῖζον, 1812, ἀριθμὸς 9 ρὲ-ἔλασσον, 1823, μετὰ χοροῦ «Ὕμνος εἰς τὴν χαρὰν» τοῦ Σίλλερ). «Ἡ μάχη τῆς Βικτωρίας (1813 φαντασία δι' ὀρχήστραν), μπαλλέττο «Προμηθεὺς» (1801), εἰσαγωγαὶ καὶ δραματικὴ μουσικὴ εἰς τὸν «Κοριολανὸν» (1807) καὶ τοῦ «Ἔγκμοντ» (1810), «Τὰ Ἐρείπια τῶν Ἀθηνῶν» καὶ «Βασιλεὺς Στέφανος» (1812), εἰσαγωγὴ «Τὰ Ἐγκαίνια» 1822. Κοντσέρτο διὰ βιολίον (1806), 5 κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον (1795—1809), τριπλοῦν κοντσέρτο διὰ βιολίον, κλειδοκύμβολον, ὀρχήστραν (1804), Φαντασία διὰ κλειδοκύνβαλον, ὀρχήστραν καὶ χορὸν (1800), 2 ρωμὰνς διὰ βιολίον καὶ ὀρχήστραν (1802), ἐμβατήρια καὶ χοροὶ δι' ὀρχήστραν. 38 σονάται διὰ κλειδοκύμβαλον, 10 σονάται διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον, 5 σονάται διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολοντσέλλον, παραλλαγαὶ (βαριασιὸν) διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ διάφορα ὄργανα, μικροπράγματα (Bagatellen), πρελούντια, χοροὶ διὰ κλειδοκύμβαλον, φαντασία καὶ πολωναὶζ διὰ κλειδοκύμβαλον, σονάτα διὰ κέρας καὶ κλειδοκύμβαλον, 8 τρίο διὰ κλειδοκύμβαλον, βιολίον καὶ βιολοντσέλλον, κουϊντέττο διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ πνευστὰ ὄργανα, διάφορα τεμάχια μουσικῆς δωματίου μόνον διὰ πνευστὰ ὄργανα, 1 σεπτέττο, 1 σεξτέττο διὰ 4 ἔγχορδα ὄργανα καὶ δύο κέρατα, 1 κουϊντέττο δι' ἔγχορδα ὄργανα, 16 κουαρτέττα δι' ἔγχορδα ὄργανα (1800—1826), 4 τρίο δι' ἔγχορδα ὄργανα, σερενάτα διὰ πλαγίαυλον, βιολίον καὶ βιόλαν, 2 λειτουργίαι (ντὸ-μεῖζον 1805, ρὲ-μεῖζον 1824), τὸ μελόδραμα «Φιντέλιο» (1807, ἐπεξεργασία 1814), 4 εἰσαγωγαὶ εἰς τὸ αὐτὸ μελόδραμα, ὀρατόριον «Ὁ Χριστὸς ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν Ἐλαιῶν» (1803), 2 «Αὐτοκρατορικαὶ ᾠδαὶ» (νεανικὸν ἔργον), καντάτα «Ἡ ἔνδοξος στιγμὴ» (διὰ τὸ συνέδριον τῆς Βιέννης 1814), «Γαλήνη καὶ εὐτυχισμένο ταξίδι» (διὰ χορὸν καὶ ὀρχήστραν), μικρότεραι φωνητικαὶ συνθέσεις «ah perfido» (διὰ ὑψίφωνον καὶ ὀρχήστραν), «tremate enipi» (διὰ ὑψίφωνον, ὀξύφωνον καὶ βαθύφωνον μετ' ὀρχήστρας), ᾆσμα θυσίας, συμμαχικὸν ᾆσμα, ἐλεγειακὴ ᾠδή, 66 ᾄσματα διὰ φωνὴν καὶ κλειδοκύμβαλον, 18 κανόνες διὰ φωνάς, ἐπεξεργασίαι ἀγγλικῶν, σκωτικῶν, ἰρλανδικῶν καὶ οὐαλλικῶν ᾀσμάτων διὰ φωνὴν μετὰ κλειδοκυμβάλου, βιολίου καὶ βιολοντσέλλου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. A. Schlosser*, «Leben von Beethoven» (1828). — *Wegeler* und *Ries*, «Bibliographische Notizen über L. v. B» (1838).— *Schindler*, «Biographie von L. v. B. (1840). — *Lenz*, «Beethoven et ses trois styles» (1854). — *Nohl*, «Beethovens Leben» (1864). — *Ulibischew*, «Beethoven, ses critiques et ses glossateurs (1854).— *Marx*, «Beethovens Leben und Schaffen (1859).— *Wasielewski*, L. v. B. (1888).— *Frimmel*, «Beethoven» 1901.— *A. W. Thayer*, «B. Leben», νέα ἐπεξεργασία ὑπὸ *Riemann*, *Bekker*, «Beethoven» (1911).— *Rolland*, «Beethoven». — *Herriot*, «Beethoven» (1930). Πολυάριθμοι ἐκδόσεις τῶν ἐπιστολῶν (Γενικὴ ἔκδοσις ὑπὸ *Kalischer* καὶ *Frimmel*) καὶ εἰδικαὶ μελέται περὶ τῶν καθ' ἕκαστον συνθέσεων. ΠΑΥΛΟΣ ΜΠΕΚΚΕΡ

*[Ἄρθρον γραφὲν εἰδικῶς διὰ τὴν «Μεγάλην Ἑλληνικὴν Ἐγκυκλοπαιδείαν» καὶ μεταφρασθὲν ἐκ τοῦ γερμανικοῦ πρωτοτύπου ὑπὸ Ἀνδρ. Δαλεζίου.]*

**μπετὸν** (τὸ) (béton). Τὸ σκυρόδεμα ἢ *σκυροκονίαμα* (βλ. λ.). Θ. Χ.

— **μπετὸν-*ἀρμὲ*** (béton-armé). Τὸ σιδηροπαγὲς ἢ ὡπλισμένον σκυρόδεμα ἢ *σκυροκονίαμα* (βλ. λ.). Θ. Χ.

**μπετονιέρα** (ἡ) ὄργανον μαλάσσον τὸ μπετόν, τὸ σκυρόδεμα, μαλακτὴρ σκυροδέματος.

**μπετόνικα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βετονικὴ ἡ ἀλωπέκουρος*.

**Μπετοῦκοι**, ἢ ***Μπεοτοῦκοι***, ἢ ***Μπεοτίκοι*** (Bethucks, ἢ Beothucks, ἢ Beothicks) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ ἰνδοαμερικανικὴ φυλὴ ἰθαγενὴς τῆς Νέας Γῆς, ἐξαφανισθεῖσα σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου. Κατὰ τοὺς ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνας ὑπέστησαν οὗτοι πολλὰς διώξεις ἐκ μέρους τῶν Ἄγγλων ναυτικῶν, ἁλιέων καὶ κυνηγῶν, οἱ ὁποῖοι ἐπεζήτουν τὴν ἁρπαγὴν τῶν πλουσίων γουναρικῶν, τῶν ὁποίων οὗτοι ἦσαν κάτοχοι. Ὅτε δὲ ἡ βρεττανικὴ κυβέρνησις καὶ διάφοροι ἀποικιστικαὶ ἑταιρεῖαι ἀπεφάσισαν περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, νὰ ὑποστηρίξωσι καὶ ἐκπολιτίσωσι τοὺς Μπετούκους, εὗρον ἐλαχίστους μόνον ἐξ αὐτῶν, διότι οἱ πλεῖστοι ἐκ τῶν ὀλίγων ἐπιζώντων εἶχον διαπεραιωθῇ εἰς τὰς ἀκτὰς τοῦ Λαμπραντόρ. Χ. Δ.

**μπετούγια** (ἡ), καὶ ***πετούγια*** δημοτ., ἁπλῆ σιδηρᾶ συσκευή, δι' ἧς κλείεται ἡ θύρα.

**Μπετοὺλ** (Betuel) *[Γεωγρ.]*. Περιφέρεια καὶ πόλις τῶν Κεντρικῶν Ἐπαρχιῶν τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν. Ἡ περιφέρεια ἔχει ἔκτασιν 3.825 τετρ. μιλλίων καὶ εἶναι ἐν ἀπέραντον, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον δασῶδες, ὀροπέδιον, διαβρεχόμενον ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ζάπτι καὶ διαφόρων χειμάρρων. Παράγει δημητριακά, βάμβακα, ξυλείαν, σακχαροκάλαμον. Τὸ κλῖμά της εἶναι εὐκραές. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα εἶναι ἐκτισμένη παρὰ τὰ ἐρείπια τῆς *Κίρλας*, ἥτις ὑπῆρξεν ἕδρα τοῦ βασιλείου τῶν Γκόντ. Ὁ πληθυσμὸς τῆς περιφερείας ἀνέρχεται εἰς 286.000 κατοίκων, ὁ δὲ τῆς πόλεως εἰς 4.750. Π. Γ. Λ.

**Μπετοὺν** (Bethune), *Κόνων ντὲ* —. Φράγκος ἱππότης (βλ. λ. *Βετούνης* Κόνων).

**μπετσάχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὑμενόκαρπος ὁ κοινὸς* (Hymenocarpus vulgaris).

**Μπέτσε** (οὐγγρ. Becse, κροατ. Becej) *[Γεωγρ.]*. Δύο ἐγγὺς ἀλλήλων κείμεναι πόλεις τῆς Νοτιοσλαυΐας ἐν *Βοϊβοδίνᾳ*, ἀνήκουσαι μέχρι τοῦ 1918 εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Ἡ μία ἐκ τούτων, ἡ *Παλαιὰ Μπέτσε* (Βέλικι ἢ Στάρι Μπέτσε) κεῖται ἐπὶ τῆς ἀπὸ Μαρία-Θηρεσιουπόλεως εἰς Νόβισαντ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἔχει ἀκμαίαν γεωργικὴν κίνησιν καὶ 20.000 κατ. (Οὔγγρους καὶ Σλαύους). Ἡ ἑτέρα, ἡ *Νέα Μπέτσε* (Νόβι Μπέτσε) κεῖται ἐπὶ τῆς ἀπὸ Στάρι-Μπέτσε εἰς Βελίκα-Κιλίντα σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, εἶναι δι' ἐπίσης γεωργικὸν κέντρον καὶ ἔχει κατ. 7.600 κατ., τὸ πλεῖστον Σλαύους. Χ. Δ.

**Μπετσὲρ** *[Βιβλ. Γεωγρ.]*. Ὄνομα τριῶν πόλεων τῆς Παλαιστίνης (βλ. λ. *Βοσόρ*).

**Μπέτσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος *Λουτρῶν Ἡραίας* (Καλυβίων) τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας. Κάτ. (1928) 216. Μετωνομάσθη εἰς *Ἁγιονέρι*. Χ. Δ.

**Μπετσιλέο** (Betsileo) *[Γεωγρ.]*. Περιφέρεια τῆς νήσου Μαδαγασκάρης, κατοικουμένη ὑπὸ ὁμωνύμου ἰθαγενοῦς λαοῦ. Κεῖται εἰς τὸ κέντρον τῆς νήσου, ἐπὶ ὀροπεδίου ὕψους 1200 μ., συνορεύει δὲ πρὸς Β. μὲ τὰς ἐπαρχίας Ἰμερίνα καὶ Μπετσομαράκι καὶ πρὸς Δ. μὲ τὴν χώραν τῶν Σακολάβι. Ἔχει ἔκτασιν 25.000 τετρ. χιλμ. καὶ διαιρεῖται εἰς δύο ἐπαρχίας, τὴν *Ἀμπούτρα* καὶ τὴν *Μαναγιάρ*. Τὸ σύνολον τοῦ ἰθαγενοῦς πληθυσμοῦ ἀνέρχεται εἰς 408.000 κατ. Σπουδαιοτέρα πόλις τῆς περιφερείας εἶναι ἡ *Φιαναραντσόα*.

Οἱ Μπετσιλέο κατάγονται ἐξ αὐστραλιανοῦ λαοῦ, ἀγνώστου πότε μετοικήσαντος εἰς τὴν Μαδαγασκάρην. Εἶναι ὑψηλόσωμοι καὶ δολιχοκέφαλοι, ἀσχολοῦνται δὲ εἰς τὴν γεωργίαν. Π. Γ. Λ.

**Μπετσιλὲρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Ἑλληνικὸν* (βλ. λ.).

**Μπετσιμπόκα** (Betsiboka) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς νήσου Μαδαγασκάρης. Ἔχει τὰς πηγάς του εἰς Ἀγκαράτρα καὶ διαρρέει τὰς ἐπαρχίας Ἰμερίνα, Νόρτα, Ματαβάντ καὶ Μαγιουγάκ, εἰς συνολικὴν διαδρομὴν 480 χιλιομέτρων. Ἔχει παραποτάμους τοὺς *Ἰκόσια*, *Ἰαμπαχάζο*, *Καμόβο*. Εἶναι πλώϊμος εἰς μῆκος 140 χιλιομέτρων, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν πλημμυρῶν, κατὰ δὲ τὴν ἐποχὴν τῆς ξηρασίας μόνον ἐπὶ 50 χιλιομέτρων. Π. Γ. Λ.

**Μπέτσολντ** (Bezold), ***Γουλιέλμος φὸν*** —. Γερμανὸς φυσικὸς καὶ μετεωρολόγος, γεννηθεὶς ἐν Μονάχῳ τῷ 1837 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βερολίνῳ τῷ 1907. Ἡ οἰκογένειά του ἀνῆκεν εἰς μίαν τῶν ἀριστοκρατικῶν οἰκογενειῶν τῆς Βαυαρίας καὶ διὰ τοῦτο ὁ Μπέτσολντ ἔλαβεν ὅλως ἰδιαιτέραν κλασσικὴν μόρφωσιν κατ' οἶκον, μετὰ τὸ πέρας τῆς ὁποίας ἐσπούδασε φυσικὴν καὶ μαθηματικὰ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Γοττίγγης καὶ εἶτα εἰς τὸ πολυτεχνεῖον τοῦ Μονάχου, οὗτινος ἐγένετο ὑφηγητὴς (1865) καὶ βραδύτερον καθηγητής. Διωρίσθη μετέπειτα διευθυντὴς τῆς μετεωρολογικῆς ὑπηρεσίας τῆς Βαυαρίας (1878), ἣν ὠργάνωσε τόσον καλῶς, ὥστε ἐκλήθη ὑπὸ τῆς πρωσσικῆς κυβερνήσεως ἐν Βερολίνῳ τῷ 1885 ὅπως διευθύνῃ καὶ ὀργανώσῃ τὴν μετεωρολογικὴν ὑπηρεσίαν τῆς Πρωσσίας, διορισθεὶς πρὸς τοῦτο διευθυντὴς τοῦ κεντρικοῦ μετεωρολογικοῦ ἰνστιτούτου. Ὁ Μπέτσολντ ἐδημοσίευσε πλείστας ὅσας σπουδαίας ἐπιστημονικὰς ἐργασίας ἐπὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ καὶ τῆς γενικῆς φυσικῆς, περὶ τῆς θερμοδυναμικῆς τῆς ἀτμοσφαίρας, περὶ τῆς θεωρίας τοῦ σχηματισμοῦ τῶν κυκλώνων, περὶ τοῦ γηΐνου μαγνητισμοῦ, περὶ τῆς διανομῆς τῆς θερμοκρασίας ἀέρος ἄνωθεν τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς, περὶ τῆς φυσιολογικῆς ὀπτικῆς κλπ. Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἐργασιῶν αὐτοῦ εἶναι: «Sur la signification physique de la notion de potentiel dans l'étude de l'électricité» (1861), «Établissement des stations méteorologiques dans le royaume de Bavière», «L'Institut méteorologique prussien à Berlin et son observatoire de Potsdam» (1890), «Farbenlehre im Hinblick auf Kunst un Kunstgewerbe», «Die Kalterukfälle im Mai» (Μόναχον 1883), «Über zündende Blitze im Kömgreich Bayer» (1833—1882), «Zur Theorie des Erdmagnetismus» (1897), «Beobachtungen der meteorologischen Stationen im Kömgreich Bayern» (Μόναχον 1879—1885), «Ergebnisse der meteorologischen Meobachtungs im preussischen beobachtungsnets sowie des Meteorologisch-magnetischen Observatoriums in Potsdam und des Aeronauti-

Digitized by Google

sches Observatoriums bei Zegel» (Βερολῖνον, 1885—1902). θ. θ. φ.

— **Μπέτσολντ** (Bezold), ***Φρειδερῖκος.*** Ἐπιφανὴς Αὐστριακὸς ὠτολόγος χειρουργὸς τῆς Βιέννης, γεννηθεὶς τῷ 1842. Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Βαυαρίας ὡς καὶ ἐν Βιέννῃ καὶ Βερολίνῳ καὶ ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῷ 1866. Τῷ 1817 ἐγένετο ὑφηγητὴς ἐν Μονάχῳ, ἀργότερον δὲ ἐκλήθη ἐν Βιέννῃ ὡς καθηγητὴς τῆς ὠτολογίας. Ἐδημοσίευσεν: «Ἀντισηπτικὴ θεραπεία τῶν μέσων πυωδῶν ὠτιτίδων», «Πειραματικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τοῦ ἠχητικοῦ συστήματος τοῦ ὠτός», «Νόσοι τῆς μαστοειδοῦς», «Ὠτομύκωσις», «Ἡ διάτρησις τῆς μαστοειδοῦς ὑπὸ ἀνατομικὴν ἔποψιν», «Ἡ ἀκουστικὴ ἱκανότης τῶν κωφαλάλων», «Μονομερὴς κώφωσις» κλπ. Τὸ ὄνομά του κατέστη γνωστὸν ἰδίως διὰ τῆς ὑπ' αὐτοῦ περιγραφῆς ἰδιαιτέρου τύπου μαστοειδίτιδος (μαστοειδῖτις Μπέτσολντ), ἀποτελοῦντος πυώδη φλεγμονὴν τῆς μαστοειδοῦς, καθ' ἣν τὸ πύον δὲν ἐκχέεται πρὸς τὰ ἔξω, ἀλλὰ διὰ τῆς ῥήξεως τοῦ ἔσω τοιχώματος ταύτης συναθροίζεται ἐπὶ τοῦ βοθρίου τῆς καταφύσεως τοῦ διγάστορος καὶ ὑπὸ τὸν στερνοκλειδομαστοειδῆ μῦν. Ο. Ρ.

**Μπετσουάναι** (Bechuanas) *[Ἐθνολ.]*. Μεγάλη φυλὴ τῆς Ν. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μπεχουάναι*).

**Μπετσουαναλάνδη** (Bechuanaland) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ν. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μπεχουαναλάνδη*).

**Μπετσουόλι** ἢ ***Μπετσόλι*** (Bezzuoli ἢ Bezzoli), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (1784—1855). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Piatolli, τῷ Petroni καὶ τῷ Desmarais καὶ διέπρεψεν ὡς ζωγράφος ἱστορικῶν σκηνῶν. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων του καταλέγονται: «Ἡ μετριοπάθεια», «Ἡ δικαιοσύνη». «Ἡ σύνεσις», «Ἡ ἰσχύς», «Τὰ κατορθώματα τοῦ Καίσαρος» καὶ «Ἡ εἴσοδος Καρόλου τοῦ Η' εἰς τὴν Φλωρεντίαν». Ι. Μ. Π.

**Μπεττελόνι** (Betteloni), ***Βίκτωρ.*** Ἰταλὸς ποιητὴς (1840—1910), υἱὸς τοῦ *Καίσαρος Μπεττελόνι* (βλ. κατωτ.). Θεωρεῖται εἷς τῶν καλυτέρων συγχρόνων του ποιητῶν τῆς Ἰταλίας καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἡ σκιὰ τοῦ νυμφίου» (1866), «Ἡ ἄνοιξις» (1867), «Νέοι στίχοι» μὲ πρόλογον τοῦ Καρντοῦτσι (1880), «Mundus muliebris» (1893), «Στεφανία καὶ ἄλλα ἔμμετρα διηγήματα» (1894), «Πρώτη πόλις» μυθιστόρημα (1896), «Χρυσάνθεμα» (1903). Μετέφρασεν ἐξ ἄλλου ἔργα τοῦ Βύρωνος, τοῦ Γκαῖτε, τοῦ Χάμερλιγκ κτλ. Μ. Δ. Β.

—**Μπεττελόνι** (Betteloni), ***Καῖσαρ.*** Ἰταλὸς ποιητὴς (1808—1858). Ἔγραψε ποιήματα ῥωμαντικὰ καὶ πλήρη ἀπαισιοδοξίας, διὰ τὰ ὁποῖα οἱ κριτικοὶ τὸν ἀπεκάλεσαν «νεώτερον Λεοπάρδι». Τὰ ποιήματά του ταῦτα, ἐμπνευσμένα κυρίως ἀπὸ τοὺς ἀτυχεῖς ἔρωτάς του καὶ τὰς στερήσεις τῆς ζωῆς του, ἕνεκα τῶν ὁποίων καὶ ηὐτοκτόνησεν, ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1844 εἰς τὴν «Ἐκλεκτὴν βιβλιοθήκην» τοῦ Σιλβέστρι, τὰ δὲ σονέττα του εἰς τόμους ὑπὸ τοὺς τίτλους «Τελευταῖοι στίχοι» καὶ «Ἀρρώστιες καὶ λύπες». Μ. Δ. Β.

**Μπέττια** (Bettia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ γενικῇ διοικήσει *Μπεχὰρ καὶ Ὀρίσσα*, κειμένη 168 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Πάτνα, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ἀνάκτορον τοῦ μαχαραγιᾶ, ἀγγλικὴν σχολὴν καὶ ῥωμαιοκαθολικὴν ἱεραποστολήν, ἐργαζομένην αὐτόθι ἀπὸ τοῦ 1746. Κάτ. 25.000. Χ. Δ.

**Μπεττίνα,** ***Ἐλισάβετ φὸν Ἄρνιμ,*** ἐπονομαζομένη—. Γερμανὶς συγγραφεὺς (1785—1859). Ἀδελφὴ τοῦ ποιητοῦ Κλημ. Μπρεντάνο καὶ σύζυγος τοῦ ἐπίσης ποιητοῦ Ἄχιμ φὸν Ἄρνιμ, διῆλθε μέρος τῆς παιδικῆς της ἡλικίας εἰς μοναστήριον καὶ συνεδέθη στενότατα μετὰ τῆς μητρὸς τοῦ Γκαῖτε, μετὰ τοῦ ὁποίου ἔσχεν ἀλληλογραφίαν πρὶν ἀκόμη γνωρίσῃ τοῦτον. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της ἐνεφανίσθη ὡς συγγραφεύς, ἀνεμείχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν κοινωνικοπολιτικὴν κίνησιν τῆς ἐποχῆς της καὶ ἀφωσιώθη μετὰ θέρμης εἰς τὴν περίθαλψιν τῶν πτωχῶν καὶ ἀσθενῶν. Τὰ ἔργα της, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν μεγαλοφυεῖς αὐτοσχεδιασμούς, χαρακτηρίζονται διὰ τὸ ζωηρὸν καὶ πολλάκις νοσηρὸν τῆς φαντασίας, τὴν βαθύτητα τοῦ αἰσθήματος, τὸν ἀληθῆ ἐνθουσιασμὸν διὰ τὸ ὡραῖον, τὸ γοητευτικὸν τῆς γλώσσης καὶ τὸ συχνάκις ἀσαφὲς καὶ πλῆρες σκότους, ὡς οἱ χρησμοὶ τῆς Πυθίας, ὕφος των. Τὸ γνωστότερον ἐκ τούτων εἶναι: «Ἀλληλογραφία τοῦ Γκαῖτε μεθ' ἑνὸς παιδίου» (1835, 3 τ.). Ἔγραψε πρὸς τούτοις: «Τὸ βιβλίον τοῦτο ἀνήκει εἰς τὸν βασιλέα» (1843, 2 τ.), εἰς τὸ ὁποῖον προσπαθεῖ νὰ παρουσιάσῃ τὴν λύσιν τοῦ προβλήματος τῆς κοινωνικῆς ἀπαθλιώσεως, καὶ «Συνδιαλέξεις μετὰ δαιμόνων, δεύτερον μέρος τοῦ βιβλίου τοῦ βασιλέως» (1852). Τὴν Μπεττίνα, ἀπησχόλησε μέχρι τῆς τελευταίας ἡμέρας τῆς ζωῆς της ἡ σκέψις τῆς ἀνεγέρσεως μνημείου διὰ τὸν Γκαῖτε, διὰ τὸν ὁποῖον διετήρησε πάντοτε εἰλικρινῆ λατρείαν καὶ ἀφοσίωσιν. Ἔκδοσις τῶν «Ἀπάντων» της ἐγένετο τῷ 1853 εἰς 11 τόμους,

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Carriere*, B. v. Arnim (1887). — *Geiger*, B. v. Arnim und Friedr. Wilhelm IV (1902). — *Oehlke*, B. v. Arnims Briefromane (1904).—*Escher*, Bettinens Weg zu Goethe (1922). Γ. Ε. Κ.

**Μπεττινέλλι** (Bettinelli), ***Ξαβέριος.*** Ἰταλὸς ἰησουΐτης συγγραφεὺς (1718—1808). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν Βρεσκίᾳ, Βενετίᾳ καὶ Μοδένῃ καὶ ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Γερμανίαν καὶ τὴν Γαλλίαν, ὅπου ἐσχετίσθη μετὰ τοῦ Βολταίρου καὶ τῶν ἄλλων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς. Ὁ Μπεττινέλλι ἐπηρεάσθη πολὺ ἀπὸ τὸ κριτικὸν καὶ ἀνήσυχον πνεῦμα τοῦ Βολταίρου καὶ ἔγραψεν ἔργα πλήρη δηκτικότητος, ὄχι μόνον διὰ τοὺς συγχρόνους του, ἀλλὰ καὶ διὰ πολλοὺς μεγάλους παλαιοτέρους συγγραφεῖς. Μεταξὺ τῶν ἔργων του τὰ κυριώτερα εἶναι: «Διάλογος περὶ ἔρωτος», «Ἐπιστολαὶ πρὸς Λεσβίαν», «Ἡ ἀναγέννησις τῆς Ἰταλίας» (1775), «Φιλοσοφικοὶ λόγοι», «Λόγοι περὶ ποιήσεως», «Βιργιλιαναὶ ἐπιστολαί», εἰς τὰς ὁποίας φαντάζεται τὸν Βιργίλιον γράφοντα ἀπὸ τὰ Ἠλύσια Πεδία καὶ ἐπιτιθέμενον δριμύτατα κατὰ πολλῶν παλαιῶν συγγραφέων καὶ τοῦ Δάντου, διὰ τὴν «Θείαν Κωμῳδίαν» του, ἣν ἀποκαλεῖ ἔργον βάρβαρον καὶ στερούμενον καλαισθησίας. Διὰ τὸ ἔργον του τοῦτο ὁ Μπεττινέλλι ὑπέστη σφοδροτάτας ἐπιθέσεις ὑπὸ πολλῶν συγχρόνων του καὶ μεταγενεστέρων. Ἔγραψεν ἐπίσης «Ἐγκώμιον τοῦ Πετράρχη», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐπιτίθεται κατὰ τῶν ξενιζόντων καὶ ὑπεραμύνεται τῆς ἐθνικῆς γλώσσης. Ἡ ἐπίδρασις αὐτοῦ ὑπῆρξε μεγάλη πρὸς διάπλασιν τῆς καλαισθησίας τῆς ἐποχῆς του καὶ διαμόρφωσιν τῆς γλώσσης, διὸ καὶ ἀπεκλήθη ὑπὸ πολλῶν «ὁ Νέστωρ τῆς ἰταλικῆς φιλολογίας» καὶ «ὁ Βολταῖρος τῆς Ἰταλίας». Μ. Δ. Β.

**Μπέττολι** (Bettoli), ***Παρμενίων.*** Ἰταλὸς δραματικὸς συγγραφεύς, διηγηματογράφος καὶ δημοσιογράφος (1835—1907), γνωστὸς περισσότερον ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *P. T. Barto*. Ἵδρυσεν ἐν Πάρμᾳ τὸν «Νέον Πατριώτην» καὶ διηύθυνε τὸν «Ἑσπερινὸν Ταχυδρόμον» καὶ τὴν «Ἐφημερίδα τῆς Πάρμας». Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων τὰ θεατρικὰ ἔργα: «Ὁ ζωγράφος» (1853), «Δύο ἀριστοκρατίαι» (1861), «Ἡ καλὴ πίστις» (1865), «Ὁ Βοκκάκιος εἰς Νεάπολιν» (1865), «Ἡ χειραφέτησις τῆς γυναικὸς» (1868), «Ματαιότης» (1876), τὰ διηγήματα: «Ἡ εὐνοουμένη τοῦ δουκὸς τῆς Πάρμας», «Σεισμός», «Ἕνα δέμα ἐπιστολῶν» κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπετὺν** (Béthune) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ *Πὰ-ντὲ-Καλαί*, κειμένη παρὰ τὴν ἕνωσιν τῶν διωρύγων Λὰβ καὶ Αἴρ-Λὰ Μπάς, 32 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Ἀρράς, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κεῖται ἐντὸς πλουσίας γαιανθρακοφόρου περιοχῆς. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἦτο ἀξιολογώτατον κέντρον ἀνεφοδιασμοῦ τῶν συμμαχικῶν στρατευμάτων, ὑπέστη ὅμως πολλὰς ζημίας ἐκ βομβαρδισμῶν, οἱ ὁποῖοι κατέστρεψαν τὰ κυριώτερα κτήρια τῆς πόλεως. Διὰ τὰς κατὰ τὸν πόλεμον προσφερθείσας ὑπηρεσίας ἡ Μπετὺν ἔχει παρασημοφορηθῆ διὰ τοῦ σταυροῦ τῆς Λεγεῶνος τῆς τιμῆς καὶ τοῦ πολεμικοῦ σταυροῦ. Κάτ. 20.140 ἔναντι 15.300, τοὺς ὁποίους εἶχε πρὸ τοῦ πολέμου. Χ. Δ.

**Μπεϋζᾶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον καὶ ὁμώνυμον ὀροπέδιον τῆς Γαλατίας ἐν Μ. Ἀσίᾳ, βορείως τοῦ Πολατλῆ. Τῇ 29 Αὐγούστου 1922 ἐπιτεθέντες οἱ Τοῦρκοι ἐξετόπισαν, μετὰ σφοδρὸν ἀγῶνα, τὸ ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τοῦ ὀροπεδίου τούτου ἐγκατεστημένον 23ον σύνταγμα πεζικοῦ τῆς VII μεραρχίας, καταλαβόντες καὶ ἑλληνικὴν πυροβολαρχίαν Σκόντα. Ἀλλ' ἀνεχαιτίσθη ἡ προέλασις αὐτῶν περαιτέρω διὰ τῶν ἐφεδρειῶν τῆς VII μεραρχίας καὶ διὰ τῆς ἐπεμβάσεως τοῦ Γ' σώματός στρατοῦ, διαθέσαντος ἀμέσως πρὸς ἀντεπίθεσιν 4 τάγματα τῆς III μεραρχίας, μικτὸν ἀπόσπασμα τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς XI μεραρχίας καὶ τὸ βαρὺ πυροβολικὸν τοῦ σώματος (βλ. καὶ λ. *Μπασρίκιοϊ*). Ν. ΣΣ

**Μπεϋζέκιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις, νοτίως τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας, ἐν Μ. Ἀσίᾳ, συνδεομένη δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ μετὰ τῆς Προύσης. Κεῖται ἐπὶ ὡραίου λεκανοπεδίου, εὐφορωτάτου. Κατελήφθη τῇ 28 Ἰουνίου 1921 ὑπὸ τῆς XIII μεραρχίας (συνταγματάρχ. Πλατῆς) τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, προελάσαντος ἐκ Προύσης κατὰ τῆς Κιουταχείας. Τὸ ἐπὶ τοῦ Ὀλύμπου τῆς Μυσίας τηροῦν τότε τὴν ἐπαφὴν καὶ ἀποσυρόμενον βαθμηδὸν μικρὸν τμῆμα τουρκικοῦ τακτικοῦ στρατοῦ μετ' ἀντίστασιν εἰς Ἀκτσέκιοϊ, τὸ δεύτερον ἤδη ἀντετάχθη εἰς τὴν προχώρησιν τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ἐμπλακὲν εἰς ἀγῶνα μετὰ τῆς ἐμπροσθοφυλακῆς τοῦ σώματος τούτου βορείως τοῦ Μπεϋζέκιοϊ παρὰ τὸν ποταμὸν Ἀδρανόν. Εὐχερῶς ὅμως ἀπωθήθη καὶ ἐκεῖθεν. Ἄλλην ἀντίστασιν συνήντησε τότε τὸ προελαῦνον Γ' σῶμα στρατοῦ νοτιώτερον ἐπὶ τῶν διαβάσεων παρὰ τὸ Ντεμιρτζίκιοϊ ὑπὸ τοῦ ἰδίου τουρκικοῦ τμήματος, ἐκδιωχθέντος ὑπὸ τῆς X μεραρχίας (συνταγματάρχ. Σουμίλας). Ν. ΣΣ

**Μπέ(ϋ)λ** (Beyle), ***Μαρία-Ἐρρῖκος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Σταντάλ* (βλ. λ.)

**Μπεϋλὶκ-*Καρλὶκ-Νταγκλὰρ*** *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη ὀρεινὴ καὶ χερσονησώδης προβολὴ σχηματίζουσα ἐν τῇ ἀνατολικῇ παραλίᾳ τῆς Προποντίδος τὸν κόλπον *Ἰντζὶρ λιμὰν* (Μουδανιῶν) νοτίως καὶ Ἰσμὶδ (Νικομηδείας) βορείως της. Μέγιστον ὑψόμετρόν της 2.890 ποδῶν (πλάτ. 40°34'30" Β, μῆκ. 29°01'40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara). Σ. Ε. Λ.

— **Μπεϋλὶκ *κιοπροῦ*** *[Γεωγρ.]*. Γέφυραι ἐπὶ τοῦ Σαγγαρίου, ὁδικὴ καὶ σιδηροδρομική, κείμεναι νοτίως τοῦ ἀρχαίου Γορδίου τῆς Γαλατίας. Διὰ τῆς ὁδικῆς γεφύρας αὐτῆς, ὡς καὶ διὰ τῆς νοτιώτερον πηχθείσης ὑπὸ τοῦ μηχανικοῦ τοῦ Γ' σώματος Στρατοῦ ἐπὶ τοῦ Σαγγαρίου, παρὰ τὸ Καρὰ Ἐλιὰς τοιαύτης, διῆλθον τὴν νύκτα τῆς 30 Αὐγούστου 1921 αἱ III καὶ VII μεραρχίαι τοῦ Γ' σώματος στρατοῦ, ἀποχωρήσαντος μετὰ τὰς μάχας τοῦ Σαγγαρίου πρὸς δυσμὰς αὐτοῦ. Δι' ἑτέρας γεφύρας δυτικῶς τοῦ Τεκέκιοϊ πηχθείσης, ὑπεχώρησαν πρὸς δυσμὰς τοῦ Σαγγαρίου κατὰ τὴν αὐτὴν νύκτα αἱ ἄλλαι δύο μεραρχίαι, IX καὶ X, τοῦ αὐτοῦ σώματος στρατοῦ. Ἡ ὅλη τότε ἑλληνικὴ Στρατιὰ Μικρᾶς Ἀσίας ἐχρησιμοποίησεν ἐν γένει 7 γεφύρας διὰ τὴν ὑποχώρησιν αὐτῆς πρὸς δυσμὰς τοῦ Σαγγαρίου, τὰς τοῦ Μπεϋλὶκ Κιοπροῦ καὶ τοῦ Καβουντζὶ Κιοπροῦ, καὶ ἑτέρας 5 πασσαλοπήκτους προτέρωθεν κατασκευασθείσας ὑπὸ τοῦ μηχανικοῦ τῆς Στρατιᾶς. Ν. ΣΣ

**Μπεϋροὺν-*ἀμπὰτ*** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας (βλ. *Μπουρνόβας*).

**Μπεϋροὺτ** (Beyrouth) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας (βλ. λ. *Βηρυτός*).

**Μπεφάνα** (Befana). Παραφθορὰ τῆς λέξεως Epifania (ἑλλην. *τὰ Ἐπιφάνια*), χρησιμοποιουμένη ἐν Ἰταλίᾳ πρὸς ὑποδήλωσιν τῆς ἑορτῆς τῶν Ἐπιφανίων, καθ' ἥν, κατὰ τὴν παράδοσιν, μυθικὸν πρόσωπον ὑπὸ τύπον τρομακτικῆς γραίας, καλούμενον ἐπίσης *Μπεφάνα*, κατέρχεται ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ τῆς 1ης μέχρι τῆς 6ης Ἰανουαρίου ἑκάστου ἔτους. Κατὰ τὴν λαϊκὴν παράδοσιν, τὴν τελευταίαν ἡμέραν τῆς παραμονῆς τῆς Μπεφάνας ἐν τῷ κόσμῳ, ἡ γῆ πληροῦται ἀπὸ θαυμάσια πράγματα: τὰ δένδρα καλύπτονται ὑπὸ ὀπωρῶν, τὰ ζῷα ὁμιλοῦν, τὰ ὕδατα τῶν ποταμῶν καὶ τῶν πηγῶν μεταβάλλονται εἰς χρυσόν. Τὰ μικρὰ παιδία ἀναμένουν δῶρα, αἱ νεάνιδες προσπαθοῦν νὰ μάθουν τὸ μυστικὸν τοῦ προσεχοῦς γάμου των θέτουσαι φύλλα ἐλαίας ἐπὶ θερμῆς στάκτης, οἱ δὲ νέοι καὶ τὰ παιδία περιέρχονται τὰς συνοικίας, ἰδίως εἰς τὰ χωρία, καὶ ψάλλουν τὴν «μπεφάνα», ᾆσμα ἀνάλογον πρὸς τὰ ἡμέτερα κάλαντα. Εἰς τινα μέρη συνηθίζουν νὰ κατασκευάζουν ὁμοίωμα τῆς μυθικῆς Μπεφάνας ἀπὸ διάφορα ῥάκη, τὸ ὁποῖον ἐκθέτουν εἰς τὰ παράθυρα, ἐνῷ ἀλλοῦ, ἰδίως ἐν Ῥομάνια, τὸ περιφέρουν ἐπὶ ἁμαξίου διὰ τῶν ὁδῶν ἐν μέσῳ φωνῶν καὶ συριγμῶν καὶ τὸ καίουν ἐν τῇ πλατείᾳ, ἐπὶ πυρᾶς ἐπὶ τούτῳ ἀναφθείσης. Ἐνίοτε οἱ χωρικοὶ περιφέρονται μὲ δαυλοὺς ἀνημμένους εἰς τοὺς ἀγροὺς πρὸς τὸν σκοπὸν νὰ καθάρουν αὐτοὺς ἀπὸ τὰ κακὰ δαιμόνια. Ἡ καῦσις τοῦ ὁμοιώματος τῆς Μπεφάνας θεωρεῖται ὡς ἐπιβίωσις παλαιῶν ἐθίμων ἀναφερομένων εἰς τὴν παροδικὴν ἐμφάνισιν κακοποιῶν στοιχείων, ὁ δὲ μῦθος ἀνάγεται εἰς προχριστιανικὰς μαγικὰς παραδόσεις. Κατὰ τὴν τελευταίαν ἡμέραν τῆς παραμονῆς τῆς Μπεφάνας ἐπὶ τῆς γῆς γίνεται καὶ διανομὴ δώρων (τῶν «δώρων τῆς Μπεφάνας»), ὅπως παρ' ἡμῖν τὴν πρώτην τοῦ ἔτους.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *G. Pitré*, Spettacoli e feste popolari siciliane (1881).—*P. Sebillot*, La fête des rois (1888).—*A. Meyrac*, Trad., coutumes, légendes et contes des Ardennes (1890).—*H. Usener*, Halische Mythen (1913).—*I. G. Frazer*, The Golden Bough (1924).—*A. Lancellotti*, Il Lazio (1927). Μ. Δ. Β.

**Μπεφὸρ** (Belfort) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Μπελφόρ*).

**Μπέφφαλο** (Buffalo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς πολιτείας Ν. Ὑόρκης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας *Ἔρη*, ἐκτισμένη εἰς τὸ ἄκρον ἀνατολικὸν σημεῖον τῆς λίμνης Ἔρη. Αἱ συγκοινωνίαι τοῦ Μπέφφαλο ἐξυπηρετοῦνται διὰ 15 σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, ὁ δὲ λιμὴν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς λίμνης Ἔρη εἶναι κυρίως λιμὴν διαμετακομίσεως. Ἡ πόλις εἶναι ἓν ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων βιομηχανικῶν καὶ ἐμπορικῶν κέντρων τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Εἶναι κυρίως κέντρον ἀποθηκεύσεως, καὶ διανομῆς σίτου, σιδήρου, ἄνθρακος, χάλυβος καὶ δερμάτων. Ἡ ἐν αὐτῇ ἱππαγορὰ εἶναι ἡ μεγαλυτέρα τῶν Ἡν. Πολιτειῶν, τὸ δὲ ἐξαγωγικόν της ἐμπόριον ἀνέρχεται ἐτησίως εἰς 11 ἑκατομμύρια λιρῶν. Ἔχει μεγάλα χυτήρια σιδήρου καὶ χάλυβος, σφαγεῖα, σαπωνοποιεῖα, διυλιστήρια σπορελαίων, ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, ὑφαντουργεῖα, ναυπηγεῖα κ. λ. π., ἐν αὐτῇ δὲ ὠργανώθη ἡ Παναμερικανικὴ Ἔκθεσις τοῦ 1901. Οἱ καταρράκται τοῦ Νιαγάρα παρέχουν τὴν ἀναγκαίαν κινητήριον δύναμιν διὰ τὸν ἠλεκτροφωτισμόν της καὶ ἄλλους βιομηχανικοὺς σκοπούς. Παρὰ τὴν πόλιν εὑρίσκεται ὡραιότατον πάρκον ἐκτάσεως 1.200 ἑκταρίων. Κάτ. 475.780.

Digitized by Google

Εἰς Μπέφφαλο ἐδολοφονήθη τὴν 6 Σεπτεμβρίου 1901 ὁ πρόεδρος τῶν Ἡνωμ. Πολιτειῶν Μὰκ-Κίνλεϋ. π. γ. λ.

**Μπεφφαρὰ** (Beffara), ***Λουδοβῖκος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ἀστυνομικὸς (1751—1838), ἀσχοληθεὶς ἐρασιτεχνικῶς μὲ τὴν μελέτην τῆς ἐν Γαλλίᾳ καὶ ἄλλαις χώραις θεατρικῆς τέχνης, ἰδίᾳ δὲ μὲ τὴν ζωὴν καὶ τὸ ἔργον τοῦ Μολιέρου, περὶ τοῦ ὁποίου ἔγραψε τρία ἐνδιαφέροντα ἔργα: «Τὸ πνεῦμα τοῦ Μολιέρου, ἢ συλλογὴ ἀποφθεγμάτων, σκέψεων, χαρακτηρισμῶν, εἰκόνων καὶ παρατηρήσεων εἰλημμένων ἐκ τῶν ἔργων του» (1777), «Πραγματεία περὶ Ἰωάννου Ποκελὶν ἢ Μολιέρου» (1821) καὶ «Ὁ γενέθλιος οἶκος τοῦ Μολιέρου» (1835). χ. δ.

**Μπεφφρουὰ** *ντὲ* ***Ρενὺ*** (Beffroy de Reigny), ***Λουδοβῖκος-Ἄβελ.*** Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ λογοτέχνης ἐκ Λὰν (1757—1811). Ἔγραψε κυρίως, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Cousin Jacques, πολυαρίθμους κωμῳδίας, ἐξ ὧν γνωστότεραι εἶναι: «Ὁ Νικόδημος εἰς τὴν Σελήνην ἢ Ἡ εἰρηνικὴ ἐπανάστασις» (1790), ἐπιτυχεστέρα πασῶν, «Ἡ λέσχη τῶν καλῶν ἀνθρώπων» (1791), «Ὁ Νικόδημος εἰς τὴν Κόλασιν» (1791), «Τουρλουτουτού, αὐτοκράτωρ τῆς Πρασίνης νήσου» (1797) κλπ. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε λεξικὸν «Περὶ τῶν προσώπων καὶ τῶν πραγμάτων τῆς ἐπαναστάσεως», ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχουσι πολλαὶ χρήσιμοι πληροφορίαι ἀλλὰ καὶ πλῆθος ὑπόπτου ἀκριβείας ἀνεκδότων. χ. δ.

**Μπεχαὲτ-ντίν.** Πέρσης μαθηματικὸς (1547—1662). Ἔγραψεν ἀραβιστὶ μαθηματικὴν ἐγκυκλοπαιδείαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Χιλάσετ-οὺλ-Χισὰπ» (ἐπιτομὴ ἀριθμητικῆς). Ν. Μ.

**Μπεχανζὲν** (Behanzin). Ὁ τελευταῖος βασιλεὺς τῆς Δαχομέης (1844—1906). Ἦτο υἱὸς τοῦ Γκλὲ-Γκλέ, ὃν διεδέχθη τῷ 1886. Διεκρίθη, ὅπως πάντες σχεδὸν οἱ προκάτοχοί του, ἐπὶ ὠμότητι. Ἀναφέρεται ὅτι ἐν μιᾷ μόνῃ ἡμέρᾳ διέταξε καὶ ἀπεκεφαλίσθησαν 800 αἰχμάλωτοι πολέμου. Ἅμα τῇ ἀνόδῳ του εἰς τὴν ἀρχὴν ἀπῄτησε παρὰ τῆς Γαλλίας, ὅπως τῷ ἀποδοθῶσι τὸ Κοτονὸν καὶ τὸ Πόρτο-Νόβο. Ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις εἰς ἀπάντησιν ἀπέστειλε κατ' αὐτοῦ στρατιωτικὰς δυνάμεις ὑπὸ τὸν Τεριγιόν. Ὁ Μπεχανζὲν ἡττήθη, ἠναγκάσθη νὰ ἀποδώσῃ τοὺς Εὐρωπαίους αἰχμαλώτους καὶ νὰ συνάψῃ συνθήκην, δι' ἧς ἀπεδέχθη νὰ σεβασθῇ τὸ καθεστὼς τοῦ Πόρτο-Νόβο. Τῷ 1892 ὁ Μπεχανζὲν παραβιάσας τὴν συνθήκην ἐπετέθη κατὰ τῆς γαλλικῆς κανονιοφόρου «Τοπάζ», πρᾶγμα ὅπερ ἐξηνάγκασε τοὺς Γάλλους νὰ προβῶσιν εἰς ῥιζικωτέρας κατ' αὐτοῦ ἐνεργείας διὰ καταλήψεως τῆς Δαχομέης. Ὁ Μπεχανζὲν καταδιωκόμενος συνελήφθη καὶ ἐξωρίσθη κατ' ἀρχὰς εἰς Μαρτινίκαν, κατόπιν δὲ εἰς Μπλιντὰ τοῦ Ἀλγερίου, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Γ. Ι. Β.

**Μπέχαρ** (Bejar) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς *Σαλαμάνκας*. Κάτ. 12.000. Εἶναι πόλις βιομηχανική, ἔχουσα ἐργοστάσια μαλλίνων καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων, εἰδῶν ἠλεκτρισμοῦ, σαπωνοποιεῖα κτλ. Ἔχει ἐπίσης μεταλλικὰς πηγὰς καὶ πολυσύχναστα λουτρά. Μ. Δ. Β.

**Μπὲχ-Ἀφρίν.** Μυθικὴ ἡγεμονὶς τῆς Περσίας, κόρη τοῦ Κιουστάσπ (Ὑστάσπους). Αἰχμαλωτισθεῖσα μετὰ τῆς ἀδελφῆς της Χαμαγιανοῦ ὑπὸ τοῦ βασιλέως τοῦ Τουρὰν Ἐρτζάσπ, ἀπηλευθερώθη ὑπὸ τοῦ Ἰσφεντιάρ. Ν. Μ.

**Μπέχερ** (Becher), ***Ἔριχ.*** Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1882. Τῷ 1909 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν Μύνστερ, τῷ δὲ 1916 ἐν Μονάχῳ. Εἶναι μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Βερολίνου καὶ διευθυντὴς τοῦ φιλοσοφικοῦ φροντιστηρίου τοῦ Μονάχου. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς: «Φιλοσοφικαὶ προϋποθέσεις τῶν θετικῶν ἐπιστημῶν» (1907), «Ἐγκέφαλος καὶ ψυχή» (1911), «Φυσικὴ φιλοσοφία» (1914), «Τὸ οἰκοδόμημα τοῦ κόσμου, οἱ νόμοι καὶ ἡ ἐξέλιξις αὐτοῦ» (1915), «Πνευματολογικαὶ καὶ φυσικαὶ ἐπιστῆμαι» (1921). Εἰς τὸν Μπέχερ ὀφείλεται καὶ ἡ λαμπρὰ ἔκδοσις τῆς «Λογικῆς» τοῦ διδασκάλου του Μπέννο Ἔρντμαν. Α. Δ.

**Μπεχέρα** *[Γεωγρ.]* βλ. *Βεχέρα*.

**Μπεχισνὶ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ σημερινοῦ νομοῦ Μαλάτια, ἐπὶ τοῦ ποταμίου Οὐρμπὰν-τσάϊ, παραποτάμου τοῦ Γκιὸκ-Σοῦ. Κάτ. 7.014, ἐξ ὧν πολλοὶ Κοῦρδοι. Ν. Μ.

**Μπεχίστ,** ἢ ***Μπεχὲστ*** (Behist ἢ Behesht). Ὄνομα τοῦ παραδείσου τῆς μαζδαϊκῆς θρησκείας (βλ. *μαζδαϊσμός*). Χ. Δ.

**Μπεχιστούν,** ἢ ***Μπεσιτούν,*** ἢ ***Μπισουτοὺν*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Περσίας εἰς τοὺς πρόποδας ἀποτόμου βράχου (ὕψ. 600 περίπου μ.) τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Ζαγρός, ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Σαμὰς-Ἄμπ, παραποτάμου τοῦ Κερχᾶ (Χοάσπους). Στέφανος ὁ Βυζάντιος καὶ Διόδωρος ὁ Σικελιώτης ὀνομάζουσι τὸ χωρίον *Βαγισταvá*, ἤτοι «τόπον τῶν θεῶν».

—*[Ἀρχ.]* Ἐπὶ τοῦ βράχου, ἐφ' οὗ τὸ χωρίον *Μπεχιστούν*, εἰς ὕψος 150 μέτρων ἀπὸ τῆς πεδιάδος, ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος ὁ Α' ἐχάραξε μεγάλην σφηνοειδῆ ἐπιγραφήν, εἰς τὴν ὁποίαν ἀφηγεῖται πῶς μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Καμβύσου ἐφόνευσε τὸν σφετεριστὴν τοῦ θρόνου Γαυμάταν (τὸν Ψευδοσμέρδιν τοῦ Ἡροδότου), ἐνίκησε τοὺς ἐπαναστατήσαντας λαοὺς καὶ ἀποκατέστησε τὴν ἑνότητα τοῦ μεγάλου κράτους τῶν Ἀχαιμενιδῶν. Ἄνωθεν τῆς ἐπιγραφῆς εἶναι κεχαραγμένη ἡ εἰκὼν τοῦ Δαρείου κρατοῦντος εἰς χεῖρας τόξον καὶ στηρίζοντος τὸν ἀριστερὸν πόδα ἐπὶ τοῦ σώματος τοῦ Γαυμάτα. Ὄπισθεν εἰκονίζονται ἐννέα ἀρχηγοὶ τῶν ἐπαναστατῶν μὲ τὰς χεῖρας δεδεμένας μὲ σχοινίον περὶ τὸν τράχηλον. Ὄπισθεν τοῦ Δαρείου ἵσταται ἀνὴρ κρατῶν τὸ βασιλικὸν τόξον καὶ τὸ ἀκόντιον. Ἐκ τοῦ οὐρανοῦ προβάλλει ὁ θεὸς Ὡρομάσδης (Ἀχουραμάζδα), εἰς τὴν προστασίαν τοῦ ὁποίου ὀφείλεται ἡ νίκη τοῦ Δαρείου.

Ἡ ἐπιγραφὴ εἶναι γεγραμμένη μὲ σφηνοειδῆ γράμματα εἰς τὰς τρεῖς γλώσσας, τὰς ὁποίας μετεχειρίζοντο εἰς τοὺς ἐπισήμους ἐπιγραφάς των οἱ Ἀχαιμενίδαι βασιλεῖς, τὴν περσικήν, κατέχουσαν τὴν πρώτην θέσιν εἰς τέσσαρας στήλας, τὴν ἐλαμιτικὴν εἰς τρεῖς στήλας καὶ τὴν βαβυλωνιακὴν πλαγίως ἄνωθεν τῶν δύο πρώτων. Τῆς τελευταίας ταύτης μέρος κατεστράφη ὑπὸ τοῦ ὕπερθεν καταρρέοντος χειμάρρου.

Πρῶτος ἀνερριχήθη ἐπὶ τοῦ βράχου καὶ ἀνέγνωσε τὰς ἐπιγραφὰς ὁ Ἄγγλος Sir Henry Rawlinson (1835 — 1845). Τὰς ἐπιγραφὰς Διόδωρος ὁ Σικελιώτης ἀποδίδει εἰς τὴν Σεμίραμιν. Εἰς τὴν βάσιν τοῦ βράχου σῴζονται καὶ ἀποσπάσματα ἑλληνικῆς ἐπιγραφῆς τοῦ Πάρθου ἡγεμόνος Γοταρτζῆ, ἀκμάσαντος περὶ τὸ 40 μ. Χ. Ν. Μ.

**Μπεχλιβὰν.** Ἀρχηγὸς Τούρκων ἐπαναστατῶν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, διαρκούσης τῆς ἑλληνικῆς στρατιωτικῆς κατοχῆς 1919—1922. Διεκρίνετο διὰ τὴν σκληρότητα καὶ τὴν ἐμμονήν του εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς πατρίδος του ἀγῶνα κατὰ τοῦ τακτικοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ. Κατήγετο ἐκ Μακεδονίας καὶ μετὰ τοῦ σώματος αὐτοῦ διῃτᾶτο ἐν ἀρχῇ μὲν περὶ τὸν Τμῶλον (Μπὸς δάγ), εἶτα δὲ ἐπὶ τοῦ ὑψιπέδου τοῦ Σιμὰβ (Συνάος), δρῶν μετὰ τοῦ ὑπὸ τὸν Κιρκάσιον Ἐτὲμ βέην πολυπληθοῦς σώματος τῆς ἐθνικῆς τῶν Τούρκων ὀργανώσεως. Αὐτομολήσαντος τοῦ Ἐτὲμ εἰς τὸν ἐν Ἀξαρίῳ ἑλληνικὸν στρατόν, ὁ Μπεχλιβὰν ἀπέμεινεν ὁ κυριώτερος ἀρχηγὸς τῶν τουρκικῶν ὁμάδων, αἵτινες ἐξώρμων ἀπὸ τοῦ περὶ τὸ Σιμὰβ ὀρεινοῦ περιβόλου. Κατ' Ἰούλιον 1920 ἐπιπεσὼν ἐξ ἐνέδρας κατὰ τῆς ἐμπροσθοφυλακῆς τῆς μεραρχίας Κυδωνιῶν εἰς τὴν στενωπὸν νοτίως τοῦ Ντεμιρτζῆ, σχεδὸν ἀποσυνέθεσεν αὐτήν. Κατ' Αὔγουστον 1922 μετὰ δραστηριότητος ἐνεργήσας καταδίωξιν τοῦ ὑποχωροῦντος ἑλληνικοῦ στρατοῦ, μετ' ἐφίππου ὁμάδος ἐξ 150 περίπου ἀτάκτων, ὁρμηθεὶς ἐκ Σιμάβ, εἰσῆλθε πρῶτος αὐτὸς εἰς τὴν Σμύρνην ἣν καὶ κατέλαβεν, ἐνσπείρας τὸν τρόμον εἰς τὸν πληθυσμὸν καὶ ἀφοπλίσας καὶ αἰχμαλωτίσας διεσπαρμένους ἀνὰ τὴν πόλιν ἕλληνας στρατιώτας. Τὸ ὑπὸ τὸν Φαχρεδὶν πασᾶν ἱππικὸν εἰσῆλθεν εἰς Σμύρνην μετὰ 24 ὥρας, μετὰ δὲ 3 ἡμέρας κατέφθασαν ἐκεῖ καὶ τμήματά τινα τουρκικοῦ πεζικοῦ. Ν. Κ. Σ.

**μπεχλιβάνης** (ὁ)· δημοτ., παλαιστής· ‖ εὐτελιστικὴ προσηγορία.

**Μπεχλιούδωφ,** ***Γιοβὰν Γιοβάνοβιτς.*** Σέρβος κιρσερδάρης (βλ. λ. *Ἰώβας*).

**Μπεχουάναι** (οἱ), ἢ ***Μπετσουάναι*** (Bechunas ἢ Betchuanas). Ἄθροισμα νιγριτικῶν λαῶν τῆς Ἀφρικῆς ὑποδιαιρούμενον εἰς πλείστας φυλάς, ἐξ ὧν σπουδαιότεραι εἶναι οἱ *Μακαλόλος*, οἱ *Μπασσοῦτος*, οἱ *Μπαμαγγκουάτος*, οἱ *Μπακόνις*, οἱ κυρίως *Μπεχουάναι* καὶ οἱ *Μπακαλαχάρι*. Ὅλαι αἱ φυλαὶ αὗται κατοικοῦσι τὴν φερώνυμον παρὰ τὴν ἔρημον Καλαχὰρ χώραν, ἥτις ἐκτείνεται μεταξὺ τῆς Ροδεσίας πρὸς Β., τῆς Νοτιοδυτικῆς Ἀφρικῆς πρὸς Δ., τῆς χώρας τοῦ Ἀκρωτηρίου πρὸς Ν., τοῦ Τράνσβααλ πρὸς Α. καὶ τῆς Ὀράγγης πρὸς ΝΑ. καὶ ὑπάγεται πολιτικῶς εἰς τὰς ἐν τῇ Νοτίῳ Ἀφρικῇ βρεττανικὰς ἀποικίας. Οἱ Μπεχουάναι ἀνήκουσιν εἰς τὴν μεγάλην ὁμάδα τῶν *Μπαντού*, ἔχουσι δὲ ὡς κύρια χαρακτηριστικὰ σιαγόνας προτεταμένας, ῥῖνα πεπλατυσμένην, κόμην οὔλην καὶ δέρμα ὄχι ἐντελῶς μέλαν. Εἶναι σχεδὸν γυμνοί, περιβεβλημένοι περὶ τὴν ὀσφὺν διὰ τεμαχίου δέρματος, ἀλείφουσι δὲ τὸ σῶμα διὰ μίγματος κατεσκευασμένου ἐκ λίπους καὶ ὤχρας καὶ κοσμοῦνται διὰ βαρυτάτων χαλκίνων κρίκων, τοὺς ὁποίους ἀναρτῶσι περὶ τὸν λαιμόν, τοὺς βραχίονας καὶ τοὺς πόδας. Ἀνέρχονται εἰς 200.000 περίπου καὶ εἶναι οἱ μᾶλλον πεπολιτισμένοι ἐκ τῶν ἰθαγενῶν τῆς Ν. Ἀφρικῆς, ἀσχολοῦνται δὲ ἰδίως μὲ τὴν κτηνοτροφίαν, διατρέφοντες μεγάλας ἀγέλας αἰγῶν καὶ προβάτων. Εἶναι τοτεμισταὶ τὸ θρήσκευμα καί, μολονότι πολύγαμοι, ἀγαπῶσι τὰ τέκνα των, ἀλλ' ὑποβάλλουσι τὰ ἄρρενα εἰς σκληρὰς δοκιμασίας πρὸ τῆς ἀναγνωρίσεως αὐτῶν εἰς ἄνδρας μὲ πλήρη δικαιώματα. Ἀπὸ τοῦ 1878 οἱ Μπεχουάναι διεξήγαγον μακροὺς πολέμους πρὸς τοὺς Μπόερς, οἱ ὁποῖοι ἐπεζήτησαν νὰ ὑποτάξωσιν αὐτούς. Χ. Δ.

**Μπεχουαναλάνδη** (Bechuanaland) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς ἀγγλικῆς νοτίου Ἀφρικῆς, εἰς τὸ κέντρον εὐρυτάτου ὀροπεδίου ὕψους 4.000 ποδῶν, ὁριζομένη πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ζαμβέζη, πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Ὀράγγη, ΒΑ. καὶ Α. ὑπὸ τῆς ἐπαρχίας Ματαμπελιλὰντ καὶ τοῦ Τράνσβααλ, καὶ πρὸς Δ. ὑπὸ τῆς τέως γερμανικῆς ἀποικίας τῆς Ἀνατολικῆς Ἀφρικῆς. Ἡ Μπεχουαναλάνδη διαιρεῖται διοικητικῶς: 1) Εἰς τὴν *Ἀγγλικὴν Μπεχουαναλάνδην*, ἔχουσαν ἔκτασιν 51.424 τετρ. μιλλ. καὶ κατ. 84.210, ἐξ ὧν 9.276 λευκοί, καὶ 2) Τὸ *Προτεκτορᾶτον τῆς Μπεχουαναλάνδης*, ἔχον ἔκτασιν 225.000 τετρ. μιλλ. καὶ πληθυσμὸν 120.776.

Ἡ χώρα διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Νγάμι*, *Μπότλετλ*, *Μακάρι-Κάρι*, *Μπλόπο*, *Κούρουμαν*. Εἰς τὰ δάση της ἀφθονοῦν ὕαιναι, λέοντες, λεοπαρδάλεις, ἐλέφαντες, ἱπποπόταμοι, ῥινόκερω, ἀντιλόπαι, στρουθοκάμηλοι, ὄφεις. Εἰς τοὺς ποταμούς της ὑπάρχουν κροκόδειλοι. Κυριώτερα προϊόντα τῆς χώρας εἶναι τὰ δημητριακὰ καὶ ὁ βάμβαξ. Σπουδαιότεραι πόλεις ἡ *Μέκφιγκ*, τὸ *Βρίμπουργκ*, ἡ *Οὔπιγκτον*, *Γκέμπερον*, *Φρανκοβάουν*, κυριωτέρα δὲ πόλις τῶν ἰθαγενῶν ἡ *Σερὸβ* μὲ 20.000 κατοίκους. Εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ Βρίμπουργκ ὑπάρχουν χρυσωρυχεῖα καὶ ἀδαμαντωρυχεῖα. Ἐν τῇ χώρᾳ διεξάγεται μέγα ἐμπόριον ἐλεφαντόδοντος καὶ πτερῶν στρουθοκαμήλου. Ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Ἀκρωτηρίου-καταρρακτῶν Βικτωρίας διέρχεται διὰ τοῦ ἀνατολικοῦ τμήματος τῆς Μπεχουαναλάνδης. Π. Γ. Λ.

—*[Φιλοτελ.]* Ὅτε ἡ Ἀγγλία κατέλαβε κατὰ τὸ 1886 τὸ νότιον τμῆμα τῆς *Μπεχουαναλάνδης*, ἔσπευσε νὰ ἐκδώσῃ σχετικὰ γραμματόσημα εἰς ἔνδειξιν τῆς ὁριστικῆς προσαρτήσεως τῆς περιοχῆς ταύτης εἰς τὴν Βρεττανικὴν αὐτοκρατορίαν. Πρὸς τοῦτο ἐπεσημάνθησαν γραμματόσημα τοῦ Ἀκρωτηρίου τῆς Καλῆς Ἐλπίδος μὲ τὴν φράσιν Britisch Bechuanaland ((Βρεττανικὴ Μπεχουαναλάνδη). Κατὰ τὸ 1887 ἐξεδόθησαν εἰδικὰ γραμματόσημα μὲ τὴν προτομὴν τῆς βασιλίσσης Βικτωρίας. Κατὰ τὸ 1888, μετὰ τὴν εἰς προτεκτορᾶτον ἀνακήρυξιν τῆς Μπεχουαναλάνδης, ἐπετέθη εἰς τὰ ἐν χρήσει γραμματόσημα νέον ἐπισήμασμα «Bechuanaland Protectorate», τὸ ὁποῖον ἐξακολουθεῖ νὰ ἐπιτίθηται μέχρι σήμερον ἐφ' ὅλων τῶν ἀγγλικῶν γραμματοσήμων, τὰ ὁποῖα ἀποστέλλονται ἀπὸ τὴν μητρόπολιν πρὸς χρῆσιν τῆς μακρινῆς ταύτης ἀποικίας. Τὰ γραμματόσημα τῆς Μπεχουαναλάνδης ζητοῦνται ἰδίᾳ παρὰ τῶν συλλεκτῶν γραμματοσήμων τῶν ἀγγλικῶν ἀποικιῶν, ἡ δὲ πρώτη σειρὰ ἡ ἐκδοθεῖσα κατὰ τὴν ἀνακήρυξιν τοῦ προτεκτοράτου ἔχει σημαντικὴν ἐμπορικὴν ἀξίαν λόγῳ τῆς μικρᾶς ποσότητος τῶν ἐκδοθέντων γραμματοσήμων. «Ε. Φ. Ε.»

**Μπεχράμ.** Ὄνομα Πέρσου βασιλέως τῆς δυναστείας τῶν Ἀσκανιδῶν καὶ πέντε ἡγεμόνων τῆς δυναστείας τῶν Σασανιδῶν.

— **Μπεχρὰμ-*Σάχ.*** Δέκατος τρίτος ἡγεμὼν τῆς ἐν Γαζνῇ τοῦ Ἀφγανιστὰν βασιλευσάσης δυναστείας τῶν Γαζνεσιδῶν. Ἀνῆλθε τὸν θρόνον τῷ 1118 φονεύσας τὸν ἀδελφόν του Ἀρσλὰν-Σάχ. Νικηθεὶς τῷ 1150 ὑπὸ τοῦ Χασὰν Γουρῆ, ἔφυγεν εἰς τὰς Ἰνδίας, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Ν. Μ.

**Μπεχραμὶ** ***Μερουανὶ Μαλαμπάρι.*** Ἰνδὸς μεταρρυθμιστὴς (βλ. λ. *Μαλαμπάρι*).

**Μπέχρον** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Λουκᾶ τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας. Κάτ. (1928) 118.

— 2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Φαναράκι* (βλ. λ.).

**Μπεχστάϊν** (Bechstein), ***Λουδοβῖκος.*** Γερμανὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1801—1860). Ἐσπούδασεν ἐν Λειψίᾳ καὶ Μονάχῳ φιλοσοφίαν, φιλολογίαν καὶ ἱστορίαν καὶ ἐξέδωκεν: «Ὁ χορὸς τῶν νεκρῶν» (1831), «Λούθηρος» (1834), «Ποιήματα» (1836), τὰ μυθιστορήματα καὶ διηγήματα: «Τὸ τρελλὸν ἔτος» (1833, 3 τ.), «Ταξίδια ἑνὸς μουσικοῦ» (2α ἔκδ. 1854, εἰς 4 τ.) κ. ἄ. Κυρίως ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῶν ἔργων του: «Θρῦλοι τῆς Θουριγγίας» (3η ἔκδ. 1898), «Γερμανικὰ παραμύθια» (1844), «Μῦθοι, θρῦλοι καὶ παραμύθια ἐν τῇ ζωῇ καὶ τῇ συνειδήσει τοῦ γερμανικοῦ λαοῦ» (1855, εἰς 3 τ.). Γ. Ε. Κ.

— **Μπεχστάϊν** (Bechstein), ***Φρειδερῖκος-Κάρολος.*** Γερμανὸς κατασκευαστὴς κλειδοκυμβάλων καὶ ἱδρυτὴς τοῦ ὁμωνύμου οἴκου (1826—1900). Ἀρχικῶς ἐργάτης ἐν Γερμανίᾳ, παρηκολούθησε τὰς ἐργασίας κατασκευῆς κλειδοκυμβάλων ἐν Λονδίνῳ καὶ Παρισίοις, κατόπιν δὲ (1856), ἐγκατασταθεὶς ἐν Βερολίνῳ, ἵδρυσεν ἴδιον ἐργοστάσιον, τοῦ ὁποίου τὰ μεγάλα κλειδοκύμβαλα συναυλιῶν ἐγένοντο ταχέως ὀνομαστά. Γ. Σ.

**Μπέχτελ** (Bechtel), ***Φρειδερῖκος.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς γλωσσολόγος (1855—1929). Μετὰ τὰς ἐν Ἀϊδελβέργῃ, Γοτίγγῃ καὶ Στρασβούργῳ πανεπιστημιακὰς σπουδάς του διωρίσθη τῷ 1884 ἔκτακτος καθηγητής, τῷ δὲ 1895 τακτικὸς καθηγητὴς

Digitized by Google

τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας ἐν Χάλλῃ. Ἐδημοσίευσε πολλὰς καὶ ποικίλας ἐπιστημονικὰς ἐργασίας, ἀναφερομένας πρὸ πάντων εἰς τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν καὶ τὰς διαλέκτους αὐτῆς, τῶν ὁποίων ἦτο ἄριστος γνώστης καὶ διαπρεπέστατος ἐρευνητής. Ἐκ τῶν πραγματειῶν καὶ τῶν αὐτοτελῶν ἐπιστημονικῶν ἔργων του σπουδαιότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Über Assimilation und Dissimilation der beiden Zitterlaute in den ältesten Phasen der indogerman. Sprachen» (1876)· «Thasische Inschriften ionischen dialekts» (1884)· «Die ionischen inschriften» (1887)· «Die Hauptprobleme der vergleichenden Lautlehre seit Schleicher»(1892)·«Die attischen Frauennamen» (1902)· «Die Vokalkontraktion bei Homer» (1908)· «Aeolica» (1909)· ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Α. Fick* ἐξέδωκεν εἰς δευτέραν ἔκδοσιν τὸ γνωστὸν ἔργον τοῦ Fick «Griechische Personennamen», μετὰ τοῦ *Collitz* ἐξέδωκε τὴν γνωστοτάτην συλλογὴν τῶν ἑλληνικῶν διαλεκτικῶν ἐπιγραφῶν (ὧν ἐπεξειργάσθη τὰς αἰολικάς, ἀρκαδικάς, φωκικάς, λοκρικὰς καὶ μέρος τῶν δωρικῶν καὶ ἰωνικῶν ἐπιγραφῶν)· «Die griechischen Dialekte» εἰς τρεῖς τόμους (Βερολῖνον 1921—1924), τὸ τελευταῖον, ἀλλ' ἅμα καὶ τὸ κάλλιστον καὶ σπουδαιότατον ἔργον του, ὅπερ ἐπὶ μακρὸν θ' ἀποτελῇ τὸ ἀπαραίτητον βοήθημα πρὸς ἐπιστημονικὴν μελέτην τῶν ἀρχαίων ἑλληνικῶν διαλέκτων. Γ. Π. Α.

**Μπέχτερεφ** (Bechterew), ***Βλαδίμιρος*** *φὸν* —. Ἐπιφανὴς Ρῶσος νευρολόγος καὶ ψυχίατρος, γεννηθεὶς τῷ 1857. Ἐσπούδασεν ἐν Πετρουπόλει, Λειψίᾳ καὶ τέλος ἐν Παρισίοις ὑπὸ τὸν Charcot. Τῷ 1881 διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῇ ἰατρικῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Πετρουπόλεως, τῷ 1885 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ψυχιατρικῆς ἐν Καζὰν καὶ ἀπὸ τοῦ 1893 ἐδίδαξε πάλιν ἐν Πετρουπόλει ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ψυχιατρικῆς καὶ νευρολογίας. Τῷ 1899 ἐξελέγη ἀκαδημαϊκός. Κατέστη γνωστὸς ἐκ τῶν ἐργασιῶν του ἐπὶ τοῦ ἐγκεφάλου, τοῦ προμήκους καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἀγωγοὶ ἐν τῷ ἐγκεφάλῳ καὶ τῷ νωτιαίῳ μυελῷ», «Νόσος τῶν νεύρων, συνείδησις καὶ ἐντόπισις ἐγκεφαλικὴ» καὶ πλεῖστα ἄρθρα δημοσιευθέντα εἰς ρωσικὰ καὶ γερμανικὰ περιοδικά. Περιέγραψεν ἐπὶ πλέον ἀγνώστους πυρῆνας καὶ δεμάτια ἐν τῷ ἐγκεφάλῳ καὶ νωτιαίῳ μυελῷ, γάγγλια καὶ ρίζας διαφόρων νεύρων (τοῦ ἀκουστικοῦ, τοῦ κινητικοῦ, τοῦ τριδύμου) καὶ νευρικὰς ἶνας τῆς παρεγκεφαλίδος καὶ τῶν ἐγκεφαλικῶν ἑλίκων, ἠρεύνησε καὶ διηυκρίνησε τὴν λειτουργίαν καὶ ἐντόπισιν πλείστων ἐγκεφαλικῶν νεύρων (ὀπτικὸς θάλαμος, παρεγκεφαλὶς κλπ.) καὶ τέλος ἐμελέτησε νευρικάς τινας νόσους, ὡς καὶ συμπτώματά τινα ψυχοπαθειῶν. Ὑπὸ τὸ ὄνομα: 1) *Νόσος τοῦ Μπέχτερεφ* φέρεται σπανία νόσος ὑπ' αὐτοῦ περιγραφεῖσα, ἥτις ἀποτελεῖ χρονίαν φλεγμονὴν τῶν ἄρθρων τῶν σπονδύλων, ἐπερχομένην μεταξὺ τοῦ 40οῦ καὶ 50οῦ ἔτους καὶ καταλήγουσαν σὺν τῷ χρόνῳ εἰς ραχιαίαν δυσκαμψίαν καὶ τελείαν τῶν σπονδύλων ἀγκύλωσιν. 2) *Πυρὴν τοῦ Μπέχτερεφ* καλεῖται πυρὴν τοῦ προμήκους, κείμενος εἰς τὴν ἐξωτερικὴν γωνίαν τοῦ ἐδάφους τῆς κοιλίας τοῦ ἐγκεφάλου. 3) *Ράβδωσις τοῦ Μπέχτερεφ*, καλεῖται ράβδωσις τοῦ ἐγκεφαλικοῦ φλοιοῦ, κατέχουσα τὸ ἄνω τμῆμα τῆς στιβάδος τῶν μικρῶν πυραμιδικῶν κυττάρων, ἀποτελουμένη ἐξ ἰνῶν παραλλήλων τῷ μεγάλῳ ἄξονι τῶν ἑλίκων καὶ καθισταμένη ὁρατὴ εἰς ἐγκαρσίαν τομήν. Ο. Ρ.

**Μπεχτσιλὲρ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Μοσκοχώρι* (βλ. λ.).

**Μπζεζάνυ** (Brzezany) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν Γαλικίᾳ, μέχρι τοῦ 1919 αὐστριακή, κειμένη παρὰ τὸν παραπόταμον τοῦ Δνειστέρου, Σλότα-Λίπα, ἐπὶ ἐπικαίρου στρατηγικῆς θέσεως, 80 χλμ. πρὸς ΝΑ. τῆς Λεμβέργης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βυρσοδεψικὰς βιομηχανίας καὶ κατ. (1919) 10.000. Εἶναι κυρίως γνωστὴ διὰ τὰς παρ' αὐτὴν συναφθείσας κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον φερωνύμους μεγάλας μάχας. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τήν, διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, μεγάλην ρωσικὴν ἐπίθεσιν τῆς στρατιᾶς τοῦ νότου τοῦ στρατηγοῦ Μπρουσίλωφ, τὸν Ἰούνιον—Σεπτέμβριον 1916, ἐν τῷ θεάτρῳ τῆς Γαλικίας (βλ. λ. *Γαλικία*, τ. ΣΤ', σ. 70) διεξήχθη σοβαρὸς ἀγὼν παρὰ τὴν Μπζεζάνυ, μεταξὺ τῆς καταδιωκούσης ρωσικῆς στρατιᾶς τοῦ Τσερμπατσέφ καὶ τῆς ὑποχωρούσης αὐστριακῆς στρατιᾶς τοῦ Μπότμερ, ἐπιζητησάσης τὴν 1ην Σεπτεμβρίου 1916 ν' ἀντεπιτεθῇ, ἵνα τοιουτοτρόπως παράσχῃ χρόνον εἰς τὸν κύριον ὄγκον νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς δυσμάς. Κατὰ τὸν ἀγῶνα τοῦτον οἱ Αὐστριακοὶ ὄχι μόνον οὐδὲν κατώρθωσαν, ἀλλ' ἀπώλεσαν καὶ περὶ τοὺς 2.500 ἄνδρας, συλληφθέντας αἰχμαλώτους ὑπὸ τῶν Ρώσων. Ἐπίσης, κατὰ τὴν ἐπίθεσιν ἐν τῷ θεάτρῳ τῆς Γαλικίας ὑπὸ τῶν Ρώσων τὰς 1—13 Ἰουλίου 1917 καὶ τὴν εὐθὺς ἀμέσως ἐπακολουθήσασαν αὐστριακὴν ἀντεπίθεσιν τῶν 19 Ἰουλίου—3 Αὐγούστου 1917 διεξήχθησαν καὶ πάλιν σφοδροὶ ἀγῶνες παρὰ τὴν Μπζεζάνυ, καθ' ὅσον ἡ γραμμὴ Ταρνοπὸλ—Μπζεζάνυ ἀπετέλει μίαν τῶν κυρίων γραμμῶν ἀμύνης, μεγάλως ὑποστηριχθεῖσαν τότε ὑπὸ τῶν Ρώσων. Ν. Θ. Κ.

**Μπῆαρ Λέϊκ** (Bear Lake) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη λίμνη τοῦ Καναδᾶ (βλ. λ. *Μπέαρ Λαίκ*).

**Μπῆαρ Ρίβερ** (Bear River) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν ποταμῶν τῆς Ἀμερικῆς (βλ. λ. *Μπέαρ* Ρίβερ).

**Μπήβερμπρουκ** (Beaverbrook), ***Γουλιέλμος-Μάξουελ-Αΐτκεν***, *βαρῶνος* —. Ἄγγλος ἐπιχειρηματίας, πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1879. Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ἐν Καναδᾷ, ὅπου ἐδημιούργησε τὸ τράστ τῶν τσιμέντων καὶ ἀπέκτησε κολοσσιαίαν περιουσίαν. Τῷ 1910 ἀπεσύρθη τῶν ἐργασιῶν του καὶ μεταβὰς εἰς τὴν Ἀγγλίαν ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν, ἐκλεγεὶς βουλευτὴς καὶ γενόμενος ἰδιαίτερος γραμματεὺς τοῦ Μπόναρ Λῶ. Τῷ 1917 ἐγένετο βαρῶνος τοῦ Μπήβερμπρουκ καὶ μέλος τῆς βουλῆς τῶν Λόρδων, κατὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διετέλεσεν ἀντιπρόσωπος τοῦ Καναδᾶ εἰς τὸ μέτωπον. Τῷ 1918 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Πληροφοριῶν καὶ τῆς Προπαγάνδας, ἐν τῷ νεωστὶ τότε ἱδρυθέντι ὑπουργείῳ τούτῳ, μετὰ δὲ τὴν ὑπογραφὴν τῆς ἀνακωχῆς παρῃτήθη τῆς πολιτικῆς, ἀφοσιωθεὶς τελείως εἰς τὴν ἐφημερίδα «Νταίηλυ Ἔξπρες», τῆς ὁποίας ἀπό τινων ἐτῶν εἶχεν ἀναλάβει δι' ἐξαγορᾶς τὸν οἰκονομικὸν ἔλεγχον. Τῷ 1921 ἵδρυσε τὴν ἐφημερίδα «The Sunday Express», τὴν ὁποίαν κατώρθωσε νὰ καταστήσῃ μίαν τῶν δημοφιλεστέρων λαϊκῶν κυριακάτικων ἐφημερίδων. Βραδύτερον κατώρθωσε νὰ γίνῃ κύριος καὶ τῆς «The Evenign Standard». Ἐδημοσίευσε πολλὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ὁ Καναδᾶς εἰς τὴν Φλάνδραν» (1916), «Ἡ ἐπιτυχία» (1921), μελέτη περὶ τῆς ἠθικῆς τῶν ἐπιχειρήσεων, «Οἱ πολιτικοὶ καὶ ὁ τύπος» (1925), «Οἱ πολιτικοὶ καὶ ὁ πόλεμος» (1928) κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπήγκλ** (Beagle) *[Γεωγρ.]*. Μακρότατος διέκπλους τοῦ νοτιοαμερικανικοῦ ἀρχιπελάγους τῆς Γῆς τοῦ Πυρός, ἀνοιγόμενος νοτιώτερον τοῦ Μαγελανείου πορθμοῦ μεταξὺ τῆς μεγάλης νήσου τῆς Γῆς τοῦ Πυρὸς πρὸς Β. καὶ τῶν μικροτέρων νήσων Ναυαρίνου καὶ Χόστ πρὸς Ν., ἔχων κατεύθυνσιν ἀπὸ Α. πρὸς Δ. καὶ συνδέων τοὺς δύο ὠκεανοὺς (Ν. Εἰρηνικὸν καὶ Ν. Ἀτλαντικόν). Χρησιμοποιεῖται σπανίως ὑπὸ τῶν ναυτιλλομένων. Χ. Δ.

**μπήγω,** *ἀόρ.* ἔμπηξα-ἐ)μπήχτηκα, *παθ. μετχ. μπηγμένος*· ἐμπηγνύω, καρφώνω: «μπήγω ἕνα καρφὶ 's τὸν τοῖχο», «μπῆξέ του μιὰ σφῆνα».

**Μπήζλεϋ** (Beazlev), ***Ἰωάννης-Ντάβιντσον***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1885. Γενόμενος, τὸ πρῶτον, ἑταῖρος τῆς ἐν Ρώμῃ ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ρωμαϊκῆς ἀρχαιολογίας· ἀργότερον ὅμως, ἐπισκεφθεὶς ἐπανειλημμένως τὴν Ἑλλάδα καὶ ἀσχοληθεὶς μετὰ ζήλου εἰς τὴν ἔρευναν τῆς ἑλληνικῆς ἀγγειογραφίας, ἀνεδείχθη εἷς τῶν εἰδικωτέρων περὶ τὴν ἑλληνικὴν ἀγγειογραφίαν ἀρχαιολόγων. Ὁ Μπήζλεϋ φημίζεται ἰδίως, διότι κατώρθωσε νὰ γνωσθῶσιν οἱ ἀγγειογράφοι πολλῶν ἔργων, τὰ ὁποῖα εἶναι ἀνυπόγραφα, καὶ νὰ ἀνεύρῃ καὶ ἄλλους ἀγνώστους, εἰς οὓς ἔδωκε συμβατικὰ ὀνόματα ὡς: «Ὁ ζωγράφος τοῦ Ἀχιλλέως», «Ὁ τεχνίτης τῆς ὑδρίας τοῦ Τρωΐλου» κτλ. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Attic red-figured vases in American Museums» (1918), «The Lewes House Collection of ancient Gems» (1920), «Attische Vasenmaler der rot-figurigen Stils» (1925), «Corpus Vasorum antiquorum», «Greek vases in Poland» (1928), «Attic black-figured A. Sketch» (1929). Εὕρηνται δὲ καταχωρισμένα εἰς ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ πλεῖστα δημοσιεύματά του περὶ ἀρχαίων Ἑλλήνων ἀγγειογράφων. Διὰ τὰς πολυτίμους ταύτας ἐργασίας του ἀνηγορεύθη καὶ διατελεῖ καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης. Β. Δ. Θ.

**Μπηθαμπαρὰ** *[Βιβλ.]*. Λέξις ἑβραϊκὴ σημαίνουσα διάβασιν. Ἀναφέρεται εἰς πόρον τοῦ Ἰορδάνου ποταμοῦ, διὰ τοῦ ὁποίου διῆλθον οἱ Ἑβραῖοι ὁδηγούμενοι ὑπὸ τοῦ Ἰησοῦ τοῦ Ναυῆ. Φέρεται καὶ ὑπὸ τὴν γραφὴν *Βηθανία* (βλ. λ.), ἐκ τοῦ ὀνόματος κώμης πέραν τοῦ Ἰορδάνου κειμένης, παρὰ τὴν ὁποίαν ἐβάπτιζεν ὁ Ἰωάννης.

**Μπήκ(η)** (Beke), ***Κάρολος - Τίλστον***. Ἄγγλος ἐξερευνητὴς καὶ γεωγράφος (1800—1874). Κατ' ἀρχὰς ἠκολούθησε τὸ ἐμπορικὸν στάδιον, εἶτα ἐσπούδασε νομικά, ἀλλ' ἐν τέλει ἀφιερώθη εἰς τὰς ἱστορικάς, γεωγραφικὰς καὶ ἐθνογραφικὰς μελέτας. Οἱ πρῶτοι καρποὶ τῶν ἐρευνῶν του ἐνεφανίσθησαν ἐν τῷ ἔργῳ του «Βιβλικαὶ πηγαὶ» (1834). Ἐν τούτῳ ὁ Μπὴκ ἐπεχείρησε νὰ συγγράψῃ ἱστορίαν τοῦ πρώτου ἀνθρώπου συμφώνως πρὸς τὰ γεωλογικὰ δεδομένα καὶ οὐχὶ πρὸς τὰ παραδεδομένα ὑπὸ τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης. Τὸ ἔργον τοῦ Μπὴκ προυκάλεσε θύελλαν διαμαρτυριῶν ἐκ μέρους τῶν ἑρμηνευτῶν τῆς Γραφῆς, ἰδίᾳ ἐν Γερμανίᾳ· παρὰ τοῦτο ὅμως τὸ πανεπιστήμιον τῆς Τυβίγγης ἀπένειμεν εἰς τὸν Μπὴκ τὸν τίτλον τοῦ διδάκτορος τῆς θεολογίας. Ἀπὸ τοῦ 1837—1838 ὁ Μπὴκ ἦτο πρόξενος τῆς Ἀγγλίας ἐν Σαξωνίᾳ. Ἐν τῷ μεταξὺ μετέβη εἰς Ἀβησσυνίαν, ἐξηρεύνησε τὸ Γκογιάμ καὶ τὰς νοτίως αὐτοῦ κειμένας χώρας. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἐξερευνητικῆς του περιηγήσεως, ἥτις διήρκεσεν ἀπὸ τοῦ 1840—1843, ἐδημοσιεύθησαν εἰς ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ καὶ δὴ εἰς τὸ δελτίον τῆς Βασιλικῆς γεωγραφικῆς ἑταιρείας. Τῷ 1849 κατήρτισε σχέδιον ἀποστολῆς πρὸς ἀνακάλυψιν τῶν πηγῶν τοῦ Νείλου. Τῷ 1856 ἐπειράθη νὰ ὀργανώσῃ ἐμπορικὰς συναλλαγὰς μετὰ τῆς Ἀβησσυνίας διὰ μέσου τῆς Μασσάβας, ἀλλ' ἀπέτυχε. Ἀπὸ τοῦ 1861—1862 ἐταξίδευσε μετὰ τῆς συζύγου του εἰς Συρίαν, Παλαιστίνην καὶ Αἴγυπτον καὶ τῷ 1865, ἐπιφορτισθεὶς ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως, μετέβη εἰς Ἀβησσυνίαν, ὅπως ἐπιτύχῃ ὑπὸ τοῦ βασιλέως Θεοδώρου τὴν ἀπελευθέρωσιν Ἄγγλων αἰχμαλώτων· ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως οὗτοι εἶχον ἀπελευθερωθῆ. Τῷ 1873 ὁ Μπὴκ μετέβη εἰς Αἴγυπτον καὶ Πετραίαν Ἀραβίαν, ἵνα ἐξακριβώσῃ τὴν ἀληθῆ θέσιν τοῦ ὄρους Σινᾶ. Ὁ Μπὴκ ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ὧν κυριώτερα, ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω, εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁ Νεῖλος καὶ οἱ παραπόταμοι αὐτοῦ» (1847), «Αἱ πηγαὶ τοῦ Νείλου» (1860). Γ. Ι. Β.

**Μπήκονσφηλντ** (Beaconsfield) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἀφρικανικῆς ἀποικίας τοῦ Ἀκρωτηρίου τῆς ἐπαρχίας Γκρίκουεϊλαντ-Γουέστ. Κάτ. 10.000 περίπου. Ἱδρύθη τῷ 1870 παρὰ τὸ περίφημον ἀδαμαντωρυχεῖον τοῦ Ντοτοϊσπάν. Ἀποτελεῖ καὶ σήμερον σπουδαῖον κέντρον τῆς ἀδαμαντοφόρου περιοχῆς. Π. Γ. Λ.

— **Μπήκονσφηλντ** (Beaconsfield) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τασμανίας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ταμάρ. Κάτ. 3.700. Εἶναι κέντρον τῆς ἐκεῖ χρυσοφόρου περιοχῆς. Π. Γ. Λ.

**Μπήκονσφιλντ** (Beaconsfield), ***Βενιαμίν***, *κόμης τοῦ* —. Ἄγγλος πολιτικὸς (βλ. λ. *Δισραέλι* Βενιαμίν).

**μπηλάδα** (ἡ)· ἰδιωματ., καλαμίνη κατοικία ἁλιέων παρὰ τὴν θάλασσαν.

**Μπήλινας,** ***Ἐλευθέριος***. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ Σπηλιᾶς τῆς Κρήτης. Διεκρίθη ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1821—1830. Ν. ΚΑΣ

**Μπήλιοβα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λακωνίας χωρίου *Κέντρον* (βλ. λ.).

**Μπὴντ** (Beed). Ἀγγλικὴ γραφὴ τοῦ ὀνόματος τοῦ θεολόγου *Βέδα τοῦ αἰδεσίμου* (Beda ἢ Baeda venerabilis)· βλ. *Βέδας*.

**μπήξιμο** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπήγω, ἔμπηξις, κάρφωμα: «τὸ μπήξιμο τοῦ καρφιοῦ».

**Μπὴρντ** (Beard), ***Γεώργιος - Μίλλερ***. Ἀμερικανὸς νευρολόγος, γεννηθεὶς ἐν Montville τῆς Κοννεκτικούτης (1839—1883). Τῷ 1866 εἰσῆλθεν ἐν τῷ ἰατροχειρουργικῷ κολλεγίῳ Νέας Ὑόρκης ὡς καθηγητής, δημοσιεύσας κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος πραγματείαν περὶ ἠλεκτρισμοῦ «Electricity as a tonic». Τὸ ὄνομά του κατέστη γνωστὸν ἐκ τοῦ ἔργου αὐτοῦ «The case of Guiteau: a psychological study», ἐκ διαφόρων ἄλλων ψυχολογικῶν του ἐργασιῶν, ὡς καὶ τοιούτων περὶ ζωϊκοῦ μαγνητισμοῦ, πνευματισμοῦ, ὑπνοβασίας κλ. Ἐκ τῶν ἰατρικῶν του ἐργασιῶν ἀναφέρομεν τὰς ἀκολούθους: «Hay-fever or summercatarrh» (1876), «Sea sickness: its symptoms, nature and treatment» (1881), «American nervousness, with its causes and consequences» (1880). Ὡς *νόσος τοῦ Μπὴρντ* θεωρεῖται ἡ *νευρασθένεια* (βλ. λ.). Ο. Ρ.

**Μπῆσλυ** (Beesley), ***Ἐδουάρδος - Σπένσερ***. Ἄγγλος ἱστορικὸς καὶ φιλόσοφος (1831—1915). Τῷ 1859 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λονδίνου καὶ μετὰ ἓν ἔτος τῶν λατινικῶν. Μετά τινα ἔτη παρῃτήθη τῶν θέσεων τούτων, ἐγένετο ὀπαδὸς τῆς θετικῆς φιλοσοφίας τοῦ Αὐγούστου Κόντ, καὶ τῷ 1893 ἤρχισε νὰ ἐκδίδῃ τὴν «Θετικὴν ἐπιθεώρησιν». Συνειργάσθη εἰς τὴν μετάφρασιν τοῦ «Συστήματος τῆς θετικῆς πολιτικῆς» τοῦ Κόντ, οὗ ἔγραψε καὶ βιογραφίαν. Συνέγραψε πολλὰς ἱστορικάς, κοινωνικὰς καὶ πολιτικὰς μελέτας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του καταλέγονται καὶ σειραὶ διαλέξεων καὶ παραδόσεων, ὡς περὶ Κατιλίνα, Κλωδίου, Τιβερίου καὶ μονογραφία του περὶ τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ. Γ. Ι. Β.

**Μπῆττι** (Beattie), ***Τζαίημς***. Μέγας Σκῶτος ποιητὴς καὶ κριτικός, γεννηθεὶς τῷ 1735 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1803. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἠκολούθησε τὸ ἐκπαιδευτικὸν στάδιον. Τῷ 1760 ἐδημοσίευσε συλλογὴν ᾠδῶν, ἐλεγειῶν καὶ στροφῶν μετὰ μεταφράσεως τῶν «Βουκολικῶν» τοῦ Βιργιλίου, τὸ αὐτὸ δ' ἔτος ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ κολλέγιον Marischall καὶ ἐπεχείρησε νὰ καταπολεμήσῃ διὰ τῆς διδασκαλίας καὶ τῶν συγγραφῶν του τὸν Λὸκ καὶ τὴν αἰσθησιαρχίαν του. Τὸ «Essay on the nature and immutability of truth» («Δοκίμιον ἐπὶ τῆς

Digitized by Google

φύσεως καὶ τῆς ἀμεταβλητότητος τῆς ἀληθείας»), δημοσιευθεῖσα τῷ 1764, εἶναι σημαντικὸν ἔργον, διότι ἀπετέλεσε τὸ φιλοσοφικόν, οὕτως εἰπεῖν, μανιφέστον τῆς σκωτικῆς σχολῆς, ἥτις διακρίνεται διὰ τὴν πολεμικήν της κατὰ τοῦ σκεπτικισμοῦ καὶ τοῦ ὑλισμοῦ καὶ ἀνυψώνει εἰς κριτήριον τῆς ἀληθείας τὴν κοινὴν ἀντίληψιν (sensus communis). Δύο ἔτη προηγουμένως εἶχεν ἐκδώσει τὴν «Essay on poetry and music» («Δοκίμιον περὶ τῆς ποιήσεως καὶ τῆς μουσικῆς»), ἥτις στηρίζεται ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῆς μιμήσεως ἀλλ' ὑπὸ εὐρυτάτην ἔννοιαν. Τὸ κύριον ποιητικὸν ἔργον του, τὸ ὁποῖον τὸν κατέστησεν ὀνομαστὸν ποιητήν, εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Μενεστρὲλ ἢ αἱ πρόοδοι τοῦ πνεύματος», ἐκδοθὲν τῷ 1771. Ὁ Μπήττι συνέγραψε πολλὰς φιλοσοφικάς, ἠθικὰς καὶ ψυχαγωγικὰς πραγματείας, σπουδαιότεραι τῶν ὁποίων εἶναι: ἡ «Θεωρία τῆς γλώσσης», τὰ «Στοιχεῖα τῆς ἠθικῆς ἐπιστήμης» (Dissertations moral and critical on memory and imagination; on dreaming; the theory of language etc.» (1783), «Elements of moral science» (1790, τόμ. 2), ἡ «Σαφήνεια τῆς χριστιανικῆς θρησκείας» («Evidence of christian religion» 1786) κτλ. —Ω.

**Μπῆτον** (Beaton), *Δαυΐδ*. Σκῶτος κληρικός. Ἐξεπαιδεύθη εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου καὶ τῆς Γλασκώβης. Ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἰακώβου τοῦ Ε' ἐπεφορτίσθη διὰ διαφόρων ἀποστολῶν εἰς Γαλλίαν, μεγάλως δ' ἐξετιμᾶτο ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας Φραγκίσκου τοῦ Α'. Τῷ 1537 ἐχειροτονήθη ἐπίσκοπος Μιρπουά, μετὰ ἓν ἔτος ἐγένετο καρδινάλιος καὶ εἶτα πρωθιεράρχης Σκωτίας. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἐμπιστοτάτων συμβούλων τοῦ βασιλέως Ἰακώβου. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ βασιλέως, ἰσχυριζόμενος ὅτι τοιαύτη ἦτο ἡ τελευταία θέλησις αὐτοῦ, ἐπειράθη ἀνεπιτυχῶς νὰ λάβῃ τὴν ἀντιβασιλείαν ὡς ἐπίτροπος τῆς ἀνηλίκου Μαρίας, διὸ ὁ ἀναλαβὼν τὴν ἀντιβασιλείαν κόμης Ἄρραν ἔθεσε τὸν Μπῆτον ὑπὸ ἐπιτήρησιν. Ὁ Μπῆτον μόλις ἀνέλαβε τὴν ἐλευθερίαν του ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς μερίδος, ἥτις ἀντετίθετο εἰς τὴν μετὰ τῆς Ἀγγλίας ἕνωσιν. Μετὰ τὴν στέψιν τῆς Μαρίας (1543) βασιλίσσης ἐγένετο καγκελλάριος τῆς Σκωτίας καὶ ἀποστολικὸς πρωτονοτάριος τοῦ πάπα. Ἡ ἀντίδρασις αὐτοῦ κατὰ τῶν σχεδίων τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐρρίκου τοῦ Η', ὅπως ὑπαγάγῃ τὴν Σκωτίαν ὑπὸ τὸ σκῆπτρόν του, μοιραίως ἀνέμειξεν αὐτὸν εἰς τὰς θρησκευτικὰς διαμάχας, συνεχίσαντα συστηματικώτερον τὰς καταβαλλομένας πρὸς κατάπνιξιν τῶν κηρυγμάτων τῆς ἐκκλησιαστικῆς μεταρρυθμίσεως προσπαθείας. Ἡ στάσις του ὅμως αὕτη προύκαλεσε συνωμοσίαν τῶν Σκώτων βαρώνων, ἧς πράκτωρ ὑπῆρξεν ὁ διαμαρτυρόμενος ἱεροκήρυξ Γεώργιος Οὐίσαρτ. Ὁ Μπῆτον ἐπέτυχε τὴν σύλληψιν καὶ τὴν εἰς θάνατον καταδίκην τούτου. Οἱ φίλοι ὅμως τοῦ Οὐίσαρτ ἐκδικούμενοι ἐφόνευσαν (1546) τὸν Μπῆτον. Γ. Ι. Β.

**Μπῆτσερ-Στόου** (Beecher-Stowe), *Ἐρριέττα*. Ἀμερικανὶς συγγραφεὺς βλ. λ. *Στόου*, Ἐρριέττα Μπῆτσερ).

**Μπῆτσεϋ**, ἢ *Μπῆτσυ* (Beechey), *Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος*. Ἄγγλος ναυτικός, ζωγράφος καὶ ἐξερευνητής (1796—1856). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ναυτικὸν καὶ τῷ 1818 συνώδευσε τὸν σὲρ Ἰωάννην-Φραγκῖσκον κατὰ τὴν ἐξερευνητικὴν του ἀποστολὴν εἰς τὰς Ἀρκτικὰς θαλάσσας. Βραδύτερον ἐδημοσίευσε καὶ περιγραφὴν τοῦ ταξιδίου τούτου. Τὸ ἑπόμενον ἔτος συνώδευσε τὸν Πῆρυ ἐπὶ τῆς «Ἕκλας» πρὸς ἐξερεύνησιν τῆς περιοχῆς τοῦ Β. Πόλου. Τῷ 1821 συνώδευσε τὴν ἀποστολὴν τοῦ ναυάρχου Σμὶθ πρὸς ἐξερεύνησιν τῶν ἀκτῶν τῆς Μεσογείου, μετὰ δὲ τοῦ ἀδελφοῦ του *Ἐρρίκου* ἐξηρεύνησε τὴν Τριπολίτιδα ἐπὶ διετίαν καὶ ἐξέδωκε περιγραφὴν τοῦ ταξιδίου του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ πορεία τῆς ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς εἰς τὴν Β. Ἀφρικὴν πρὸς Α. τῆς Τριπόλεως» (1828). Τῷ 1825 ἐπέβη ἐπὶ τοῦ πλοίου «Μπλόσσομ», διὰ τοῦ ὁποίου ἐξηρεύνησε τὸν Βερίγγειον πορθμὸν καὶ ἠκολούθησε τὸν Φραγκῖσκον καὶ τὸν Πῆρυ εἰς τὴν ἐξερεύνησιν τοῦ Β. Πόλου, φθάσας μέχρι 71°23' 31'' Β. πλάτους καὶ 156°21' 30'' Δ. μήκους. Τὸ ταξίδιον τοῦτο διήρκεσε τρία ἔτη, κατὰ τὰ ὁποῖα ὁ Μπήτσεϋ ἀνεκάλυψε πολλὰς νήσους ἐν τῷ Εἰρηνικῷ ὠκεανῷ καὶ ἐξαίρετον λιμένα παρὰ τὸ ἀκρωτήριον τοῦ Πρίγκιπος τῆς Οὐαλλίας. Τῷ 1831 ἐξέδωκε τὴν περιγραφὴν τοῦ ταξιδίου τούτου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀφήγησις ταξιδίου διὰ τοῦ Εἰρηνικοῦ ὠκεανοῦ καὶ τοῦ Βεριγγείου πορθμοῦ πρὸς παρακολούθησιν τῆς ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς εἰς Βόρειον Πόλον». Τῷ 1835 ἐξηρεύνησε τὰς ἀκτὰς τῆς Ν. Ἀμερικῆς καὶ ἀπὸ τοῦ 1837—1847 κατέγινεν εἰς μελέτας ἐπὶ τῶν ἀκτῶν τῆς Ἰρλανδίας. Τῷ 1850 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ ναυτικοῦ τμήματος τοῦ ὑπουργείου τοῦ Ἐμπορίου, τῷ 1854 ἐγένετο ναύαρχος καὶ τῷ 1855 πρόεδρος τῆς ἀγγλικῆς Γεωγραφικῆς ἑταιρείας. Μ.Δ.Β.

**Μπῆττυ** (Beatty) *Δαυΐδ*. Ἄγγλος ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1871 ἐν Χάουμπεκ. Δεκατριετὴς κατετάχθη εἰς τὸ ναυτικόν. Ὡς ὑποπλοίαρχος διεκρίθη κυβερνῶν κανονιοφόρον ἐν τῷ Νείλῳ κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς Αἰγύπτου καὶ τοῦ Σουδάν, προαχθεὶς εἰς ἀντιπλοίαρχον. Τῷ 1900 μετέσχε τῶν ἐν Κίνᾳ διεθνῶν ἐπιχειρήσεων κατὰ τῶν Μπόξερς, ἔνθα ἡγούμενος ναυτικοῦ ἀγήματος διεκρίθη διὰ τὴν γενναιότητά του. Τραυματισθεὶς βαρέως προήχθη εἰς πλοίαρχον. Τῷ 1911, ἀντιναύαρχος ὤν, προσελήφθη ὑπὸ τοῦ πρώτου πολιτικοῦ λόρδου τοῦ ναυαρχείου Οὐΐνστον Τσώρτσιλ ὡς γραμματεὺς τοῦ ναυαρχείου, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1913, ὁπότε τῷ ἀνετέθη ἡ ἀρχηγία τοῦ στόλου τῶν εὐδρόμων μάχης.

*Δαυΐδ Μπήττυ.*

Ἡγούμενος τούτων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον συνεπλάκη δὶς ἐναντίον γερμανικῶν μοιρῶν ἐπιτυχῶς ἐν Ἑλγολάνδῃ καὶ Ντόγκερ-Μπάνκ. Κατὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Ἰουτλάνδης ἡγούμενος τοῦ στόλου τῶν εὐδρόμων μάχης καὶ μιᾶς μοίρας ταχυπλόων δρέδνωτ τύπου «Queen Elisabeth», πρῶτος αὐτὸς ἦλθεν εἰς ἐπαφὴν πρὸς τὸν ὑπὸ τὸν ναύαρχον Χίππερ γερμανικὸν στόλον ἀνιχνεύσεως καὶ ἐρρωμένως συμπλακεὶς διηύθυνεν ἀνεξαρτήτως τὰς δύο πρώτας φάσεις τῆς μάχης μέχρι τῆς ἀφίξεως τοῦ ὑπὸ τὸν ναύαρχον Τζέλλικο «Μεγάλου Στόλου». Ἡ κατὰ τὴν ναυμαχίαν ταύτην δρᾶσις του ποικιλοτρόπως ἐσχολιάσθη, τῶν Ἄγγλων εἰδικῶν διαιρεθέντων εἰς δύο μερίδας, ὧν ἡ μία ὑπεστήριξεν ὅτι διὰ τῆς ὁρμητικότητός του ὁ Μπήττυ ἠμπόδισε τὴν ἐπίτευξιν θετικωτέρων ἀποτελεσμάτων ὑπὲρ τῶν Ἄγγλων, ἡ δ' ἑτέρα ὑπεστήριξε τὸ ἀντίθετον, κατηγοροῦσα τὸν Τζέλλικο ὡς ἀπολέσαντα τὴν μετὰ τῶν Γερμανῶν ἐπαφήν. Τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1916 τῷ ἀνετέθη ἡ ἀρχηγία τοῦ «Μεγάλου Στόλου» καὶ τῷ 1919 τῷ ἀνετέθησαν τὰ καθήκοντα τοῦ πρώτου ναυτικοῦ λόρδου τοῦ ναυαρχείου, ἀπονεμηθέντων αὐτῷ τῶν τίτλων βαρώνου καὶ κόμητος τῆς Β. θαλάσσης καὶ χρηματικῆς ἀμοιβῆς 100.000 λιρῶν διὰ τὰς κατὰ τὸν πόλεμον ὑπηρεσίας του. Τῷ 1927 ἀπεστρατεύθη. Γ. Ν. Ν.

**μπήχτης** (ὁ)· ὁ γυναικάς, ἰδίως ὁ ἔχων ἐπιτυχίας μεταξὺ τῶν γυναικῶν.

**μπηχτός**, *—ή, —ό*· ἐμπεπηγμένος, καρφωμένος· || *μπηχτὴ* (ἡ)· ὡς οὐσ. κατὰ παράλειψιν τοῦ *γροθιά*: «τοῦ ἔδωσε—ἔφαγε κάμποσες μπηχτές» || λόγος πειρακτικός, ὑπαινιγμὸς λυπηρός: «τὶς μπηχτὲς τὶς δίνει μὲ τρόπο».

**Μπὶ** (Bie), *Ὄσκάρ*. Γερμανὸς τεχνοκρίτης, γεννηθεὶς τῷ 1864 ἐν Μπρεσλάου. Διευθυντὴς τοῦ περιοδικοῦ «Νέα Ἐπιθεώρησις» (Neue Rundschau), συνέγραψε περὶ τέχνης καὶ πρὸ παντὸς περὶ μουσικῆς: «Αἱ μοῦσαι ἐν τῇ ἀρχαίᾳ τέχνῃ» (1886), «Ὁ χορός» (2α ἔκδ. 1919), «Τὸ μελόδραμα» (10η ἔκδοσις 1923), «Τὸ κλειδοκύμβαλον» (2α ἔκδ. 1921), «Τὸ γερμανικὸ τραγούδι» (1926) κλπ. —Ω.

**Μπιάλα** (Biala) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν Γαλικίᾳ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας, ὑπαγομένη πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Αὐστρίαν. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, 100 χλμ. πρὸς Δ. ΝΔ. τῆς Βαρσοβίας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς, καὶ ἔναντι τῆς ἐπὶ τῆς ἑτέρας ὄχθης τοῦ ποταμοῦ κειμένης σιλεσιακῆς πόλεως Μπιέλιτς, μεθ' ἧς συγκοινωνεῖ διὰ γεφύρας. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον χοίρων καὶ ἔχει σιδηροχυτήρια καὶ ἐργοστάσια ὑφαντουργίας. Κάτοικοι τῆς πόλεως 9.000, τῆς ἐπαρχίας 102.000, κατὰ τὸ πλεῖστον Γερμανοὶ καὶ ὀλίγοι Ἰουδαῖοι.

—2) Ποταμὸς τῆς Πολωνίας, παραπόταμος τοῦ Βιστούλα, σχηματίζων τὸ μεταξὺ Γαλικίας καὶ Σιλεσίας ὅριον. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον συνήφθησαν περὶ τὰς ὄχθας αὐτοῦ μεγάλαι μάχαι διαρκοῦντος τοῦ 1915 μεταξὺ Αὐστρογερμανῶν καὶ Ρώσων.

—3) Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν τῷ νομῷ Σέντλετς, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κρασνάγια ἐπὶ τῆς ἀπὸ Βαρσοβίας εἰς Μπρέστ-Λιτόφσκ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Ἔχει βιομηχανίας σάπωνος, βυρσοδεψεῖα, ζυθοποιεῖα κλπ. Κάτ. 12.000. Χ. Δ.

**— Μπιάλα** (Bialah) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Αἰγύπτου, ἐν τῇ μουδιρίᾳ τῆς Γαρμπίας. Κάτοικοι 18.500. Κεῖται πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς Μανσούρας, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἀπὸ Σερμπὶν εἰς Καλλίν, καὶ ἐξάγει βάμβακα καὶ καρποὺς φοινίκων. Ν.

**Μπιαλυστὸκ** (Bialystok, ἢ Bjelostok) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας (βλ. λ. *Μπιελοστόκ*).

**Μπιανκαβίλλα** (Biancavilla) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Σικελίᾳ. Κάτ. 21.246. Κεῖται ἐν τῷ νομῷ τῆς Κατάνης ἐπὶ τῶν Ν κλιτύων τῆς Αἴτνης, εἰς ὕψος 513 μ. καὶ εἰς ἀπόστασιν 33 χλμ. ΒΔ. τῆς Κατάνης. Παράγει βάμβακα, σιτηρὰ καὶ ὀπώρας. Ἱδρύθη τῷ 1480 ὑπὸ ἠπειρωτῶν ἀποίκων ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας πόλεως Inessa. Μ. Δ. Β.

**Μπιανκέρι** (Biancheri), *Ἰωσήφ*. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1823—1908). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἐξελέγη τῷ 1853 βουλευτὴς ἐν τῇ βουλῇ τῆς Σαρδηνίας, ὅπου διεκρίθη ὡς ῥήτωρ καὶ κατεπολέμησε σφοδρῶς τὸν Καβούρ, ἀντιταχθεὶς εἰς τὴν προσάρτησιν τῆς Νικαίας καὶ τῆς Σαβοΐας εἰς τὴν Γαλλίαν. Τῷ 1867 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν ἐπὶ πρωθυπουργίας Ρικάζολι καὶ ἐπανειλημμένως πρόεδρος τῆς βουλῆς, ἀποκτήσας τὴν γενικὴν ἐκτίμησιν διὰ τὴν ἀμεροληψίαν καὶ τὴν ἱκανότητα μὲ τὴν ὁποίαν διηύθυνε τὰς ἐργασίας της καὶ κατὰστὰς ἀδιαφιλονίκητος διαιτητὴς μεταξὺ τῶν κομμάτων κατὰ τὰς κοινοβουλευτικὰς διαφοράς. Μ. Δ. Β.

**Μπιάνκι** (Bianchi), *Βενδραμῖνος*. Ἰταλὸς διπλωμάτης, γεννηθεὶς ἐν Παδούῃ καὶ ἀποθανὼν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1738. Διετέλεσε πρεσβευτὴς εἰς τὸ Μιλᾶνον, τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὰ καντόνια τῆς Βέρνης καὶ τῆς Ζυρίχης, μὲ τὰ ὁποῖα, καθὼς καὶ μὲ τὸ καντόνιον τῶν Γκριζόν, κατώρθωσε νὰ συνάψῃ συμμαχίαν κατὰ τῆς Αὐστρίας καὶ τῆς Ἱσπανίας, αἵτινες ἐκυριάρχουν τότε τῶν κοιλάδων τοῦ Ἴνσμπρουκ καὶ τῆς πεδιάδος τοῦ Μιλάνου καὶ ἐμπόδιζον τὴν ἐπέκτασιν τοῦ βενετικοῦ ἐμπορίου. Βραδύτερον ἔλαβε μέρος εἰς τὰς διαπραγματεύσεις τῆς συνθήκης τοῦ Πασσάροβιτς. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἔκθεσις περὶ Ἑλβετίας καὶ τῶν συμμάχων της» (1708), «Ἱστορικὴ ἔκθεσις τῆς συνθήκης τοῦ Πασσάροβιτς» (1718—1719). Ἡ διπλωματικὴ αὐτοῦ ἀλληλογραφία, παρέχουσα ἐνδιαφερούσας πληροφορίας περὶ τῶν σχέσεων καὶ τῶν βλέψεων τῶν διαφόρων κρατῶν τῆς ἐποχῆς, φυλάσσεται εἰς τὰ ἀρχεῖα τῆς Βενετίας.

**— Μπιάνκι** (Bianchi), *Ἰωάννης-Βαπτιστής*. Ἰταλὸς ἀνατόμος καὶ χημικὸς (1681—1761). Ἔλαβε τὸ δίπλωμα τῆς ἰατρικῆς εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν καὶ μετ' ὀλίγα ἔτη διωρίσθη διευθυντὴς τῶν νοσοκομείων τοῦ Τουρίνου καὶ ἐδίδαξεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς ἰδίας πόλεως χημείαν καὶ ἐφηρμοσμένην ἰατρικήν. Συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς παθολογικῆς ἀνατομίας καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων εἰς λατινικὴν γλῶσσαν: «Περὶ ἥπατος» (1795), «Περὶ ἀναισθησίας» (1755), «Περὶ πλημμελοῦς καὶ ἀσθενικῆς γεννήσεως ἐν τῷ ἀνθρωπίνῳ σώματι» (1761) καὶ συλλογὴν 54 ἀνατομικῶν πινάκων.

**—Μπιάνκι** (Bianchi), *Μιχαήλ*. Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος (1883—1930). Ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς σοσιαλιστὴς καὶ συντάκτης τῆς «Ἀβάντι», κατόπιν ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ «Ἀγῶνος» τῆς Γενούης, γραμματεὺς τοῦ ἐργατικοῦ κέντρου Νεαπόλεως καὶ βραδύτερον τῆς Φερράρας κλπ. Τῷ 1912 μετέβη εἰς τὴν Τεργέστην ὡς συντάκτης τοῦ «Πίκκολο», ἀλλ' ἀπηλάθη ὑπὸ τῆς αὐστριακῆς κυβερνήσεως. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὠργάνωσε μετὰ τοῦ Μουσσολίνι τοὺς «συνδέσμους ὑπὲρ τῆς ἐπεμβάσεως εἰς τὸν πόλεμον» καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατὸν ὡς ἐθελοντής. Μετὰ τὴν λῆξιν τοῦ πολέμου ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πρώτων ὀργανωτῶν τῶν φασιστικῶν συνδέσμων καὶ εἷς τῶν κυριωτέρων συντακτῶν τοῦ «Λαοῦ τῆς Ἰταλίας» τοῦ Μουσσολίνι. Τῷ 1921, μετὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ φασιστικοῦ κόμματος, ἐγένετο ὁ πρῶτος γραμματεὺς αὐτοῦ καὶ συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐπὶ σταθερῶν θεμελίων ὀργάνωσίν του, εἰς τὴν ὁποίαν ὀφείλει ὁ φασισμὸς πᾶσαν τὴν κατόπιν ἐμφανισθεῖσαν δύναμίν του. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν ἐναντίον τῆς Ρώμης τῷ 1922 ὁ Μπιάνκι μετὰ τοῦ Ἴταλο Μπάλμπο, τοῦ ντὲ Βέκκι καὶ τοῦ Ντὲ Μπόνο ἀπετέλεσαν τὴν ὑπὸ τοῦ Μουσσολίνι ἐγκαθιδρυθεῖσαν τετρανδρίαν, ἥτις εἶχε τὴν ἀνωτάτην διεύθυνσιν τῆς φασιστικῆς ἐπαναστάσεως. Μετὰ τὴν ἄνοδον τοῦ φασισμοῦ εἰς τὴν ἀρχὴν ὁ Μπιάνκι διωρίσθη ὑφυπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν. Τῷ 1925 διωρίσθη ὑφυπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων, τῷ 1927 ἐκ νέου ὑφυπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τῷ 1929 ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων. Μ. Δ. Β.

**—Μπιάνκι** (Bianchi), *Νικόδημος*. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1818—1886). Ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐπαναστατικὰς κινήσεις τοῦ 1848 καὶ ἀπετέλεσε μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τῆς Μοδένης καὶ τοῦ Ρέτζιο. Ἀναγκασθεὶς τῷ 1849 νὰ καταφύγῃ εἰς τὸ Πεδεμόντιον, ἐπεδόθη εἰς τὸ διδασκαλικὸν ἐπάγγελμα. Τῷ 1864 διωρίσθη γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ὑπουργείου Παιδείας, τῷ 1871 ἐπιμελητὴς τῶν ἀρχείων τοῦ κράτους τοῦ Πεδεμοντίου καὶ τῷ 1881 γερουσιαστής. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα καὶ σημαντικὰ ἔργα περὶ τῆς ἱστορίας τῆς ἐποχῆς του, βασιζόμενα ἰδίως ἐπὶ ἐπισήμων ἐγγράφων. Μεταξὺ τούτων: «Ἱστορία τῆς αὐστριακῆς πολιτικῆς ἔναντι τῶν κυβερνήσεων καὶ ἡγεμόνων τῆς Ἰταλίας ἀπὸ τοῦ 1791—1854» (1857), «Ὁ κόμης Κάμιλλος Καβοὺρ» (1863), «Ἀπομνημονεύματα καὶ ἀνέκδοτοι ἐπιστολαὶ τοῦ Σαντόρε Σάντα Ρόζα» (1877), «Ἱστορία εὐρωπαϊκῆς διπλωματίας ἐν Ἰταλίᾳ ἀπὸ τοῦ 1814—1861», «Ἱστορία τῆς μοναρχίας τοῦ Πεδεμοντίου ἀπὸ τοῦ 1773—1861» (1877), διακρινόμενα διὰ τὴν ἀκρίβειαν τῶν πληροφοριῶν καὶ τὴν ἀμεροληψίαν.



Digitized by Google

— **Μπιάνκι** (Bianchi), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς συνθέτης, γεννηθεὶς ἐν Κρεμώνῃ τῷ 1752 καὶ αὐτοκτονήσας ἐν Λονδίνῳ τῷ 1810. Διετέλεσε κλαβικυμβαλιστὴς τοῦ ἰταλικοῦ θεάτρου τῶν Παρισίων, δεύτερος ὀργανοκρούστης τοῦ Ἁγ. Μάρκου τῆς Βενετίας καὶ τέλος διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν Λονδίνῳ. Γονιμώτατος, ἔδωκεν εἰς διάφορα θέατρα τῆς Ἰταλικῆς χερσονήσου, τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Ἀγγλίας 70 ἐν ὅλῳ μελοδράματα, ἐξ ὧν καλύτερα θεωροῦνται τὸ «Ταραρὰ» καὶ ἡ «Μερόπη». Γ. Σ.

—**Μπιάνκι** (Bianchi), ***Φρειδερῖκος***, *βαρῶνος τοῦ—, δοὺξ τῆς **Καζαλάντσας***. Αὐστριακὸς στρατηγός, ἰταλικῆς καταγωγῆς (1768—1855). Τῷ 1788 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν κατὰ τῆς Τουρκίας ἐκστρατείαν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ. Ἐπολέμησεν ἐν Πρεσβούργῳ, ἐν Δρέσδῃ, ἐν Κούλμ καὶ ἐν Λειψίᾳ καὶ ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ αὐστριακοῦ στρατοῦ ἐν Γαλλίᾳ κατὰ τὴν εἰς αὐτὴν εἰσβολὴν τῶν Συμμάχων μετὰ τὴν πρώτην πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, ὁπότε κατέλαβε τὴν Μακὸν καὶ τὴν Λυὼν καὶ ἐνίκησε τὸν Μυρὰ ἐν Τολεντίνῳ τῷ 1815. Ἐκεῖθεν κατῆλθεν εἰς τὴν Νεάπολιν καὶ ἐπανέφερε τὴν δυναστείαν τῶν Βουρβώνων, πρᾶγμα διὰ τὸ ὁποῖον ὁ βασιλεὺς Φερδινάνδος Α΄ παρεχώρησεν εἰς αὐτὸν τὸ δουκᾶτον τῆς Καζαλάντσας. Διακεκριμένος ἐπίσης Αὐστριακὸς στρατηγὸς ὑπῆρξε καὶ ὁ υἱός του *Φρειδερῖκος* (1812—1865).

— **Μπιάνκι-*Τζοβίνι*** (Bianchi-Giovini), ***Αὐρήλιος-Ἄγγελος***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς καὶ δημοσιογράφος (1799—1862). Καταδιωχθεὶς ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν διὰ τὰς ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἰταλίας ἰδέας του, κατέφυγεν εἰς τὴν Ἑλβετίαν, ὅπου διηύθυνε τὰς ἐφημερίδας «Αὐγὴ» καὶ «Δημοκράτης» τοῦ Λουγκάνο. Ἐπανελθὼν εἰς τὸ Μιλᾶνον εἰργάσθη εἰς τὴν ἐφημερίδα «Γνώμη» καὶ τῷ 1848 ἐξελέγη βουλευτὴς ἐν Τουρίνῳ. Ἀπελαθεὶς ὑπὸ τοῦ Μάσσιμο ντ' Ἀνζέλιο διότι εἶχεν ἐξυβρίσει τὸν κλῆρον, ἐπανελθὼν ἐπὶ Καβοὺρ καὶ τῷ 1883 ἐξέδωκε τὸ ἔργον «Ἡ Αὐστρία ἐν Ἰταλίᾳ», ὅπερ προεκάλεσε μέγαν θόρυβον καὶ τὸν κατέστησε γνωστότατον καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην διὰ τὰς ἐν αὐτῷ περιεχομένας ἀποκαλύψεις. Ἵδρυσε μετέπειτα τὰς ἐφημερίδας «Ἕνωσις» ἐν Τουρίνῳ καὶ «Πατρὶς» ἐν Νεαπόλει. Ἔγραψε πλεῖστα ἱστορικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἱστορία τῶν Ἑβραίων» (1844), «Ἱστορικὸν φιλοσοφικὸν λεξικὸν τῶν Γραφῶν» (1845), «Κριτικὴ ἔρευνα τῶν ἐγγράφων καὶ τῶν γεγονότων τῶν σχετιζομένων πρὸς τὸν μῦθον τῆς παπίσσης Ἰωάννας» (1845), «Ἱστορία τῶν Λομβαρδῶν» (1848), «Ἱστορία τῶν παπῶν» (1852), κ.τ.λ. Μ. Δ. Β.

**Μπιανκίνι** (Bianchini), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ἀστρονόμος, ἀρχαιολόγος καὶ φιλόλογος (1662—1729). Καταγόμενος ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας, ἐχρημάτισε μαθητὴς τοῦ Montanari, ὅστις ἀποθνήσκων ἀφῆκεν αὐτῷ ὅλα τὰ ἀστρονομικὰ καὶ λοιπὰ ὄργανα, τὰ ὁποῖα μετεχειρίζετο εἰς τὰς ἐρεύνας του. Λαβὼν τὸ μοναχικὸν σχῆμα, ἐγκατέστη ἐν Ρώμῃ, ὅπου ἔτυχε τῆς προστασίας διαφόρων παπῶν ἀπὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου Η΄ μέχρι Βενεδίκτου ΙΓ΄. Καταγινόμενος εἰς ἀστρονομικὰς μελέτας, ἔστησε γνώμονα παρὰ τὸν ναὸν τῆς Παναγίας τῶν Ἀγγέλων, ἐχρημάτισε γραμματεὺς ἐπιτροπῆς πρὸς μεταρρύθμισιν τοῦ ἡμερολογίου καὶ ἐξετέλεσεν ἐνδιαφερούσας παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς Ἀφροδίτης, ἐξ ὧν συνήγαγεν ὅτι ὁ πλανήτης οὗτος περιστρέφεται περὶ τὸν ἄξονά του ἐντὸς 24 $^1/_3$ ἡμερῶν. Ἐκ τῶν συγγραμμάτων του κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Istoria universale provata con monumenti» (Ρώμη 1697), «De calendario et cyclo Caesaris» (1703), «Hesperi et Phosphori nova Phenomena» (1729), «Francisci Bianchini Veronensis astronomicae ac geographicae observationes» (Βερώνα 1737). Ἐκ τῶν συγγραμμάτων του τούτων καὶ σημαντικοῦ ἀριθμοῦ πραγματειῶν ἐπὶ ποικίλων θεμάτων καταφαίνεται ὅτι ἦτο ἀνὴρ εὐρυτάτης μορφώσεως καὶ βαθὺς μελετητὴς τῆς ἀρχαιολογίας. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**Μπιάνκο** *[Γεωγρ.]*. —1) Ἀκρωτήριον τοῦ Ἰονίου πελάγους (πλάτ. 39° 21′ Β., μῆκ. 20° 08′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channels of Corfu), ἡ νοτία τῆς Κερκύρας ἐσχατιά. Εἶναι ἡ *Ἀμφίπαγος* ἄκρα τῶν ἀρχαίων.

—2) Ἀκρωτήριον μικρασιατικὸν τῆς χερσονήσου τῶν Ἐρυθρῶν (πλάτ. 38° 16′ Β., μῆκ. 26° 15′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3446: Paspargo to Samos). Ἔχει καταλεύκους ἀπορρῶγας καὶ ΝΔ. αὐτοῦ καλὸν ἀγκυροβόλιον. Τὸ *Ἄργεννον* ἄκρον τῶν ἀρχαίων. Σ.Ε.Λ.

— **Μπιάνκο** (capo Bianco) *[Γεωγρ.]*. Τὸ κατὰ τὸν λιμένα τοῦ Βρινδησίου (πλάτ. 40° 39′ Β., μῆκ. 17° 59′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2701: Brindisi to Ortona) ἀκρωτήριον.

— **Μπιάνκο** (Bianco) ***διῶρυξ*** *[Γεωγρ.]*. Διῶρυξ τοῦ Πάδου, ἑνοῦσα τὸν λιμένα Πόρτο Λεβάντε (πλάτ. 45° 03′ Β., μῆκ. 12° 23′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 201: Ortona to River Pô καὶ Gulfs of Venice and Trieste) πρὸς τὸ στόμιον Πῶ-ντὶ-Λεβάντε τοῦ δέλτα. Σ. Ε. Λ.

**Μπιάνκο** (Bianco), ***Ἀνδρέας***. Βενετὸς γεωγράφος τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος, ὀνομαστὸς διὰ τὸν ὑπ' αὐτοῦ καταρτισθέντα ὑδρογραφικὸν ἄτλαντα ἐκ 10 πινάκων μετὰ χάρτου τῆς ὑδρογείου, ἐκδοθέντα τῷ 1436. Εἰς τοὺς χάρτας τοῦ Μπιάνκο σημειοῦνται πρὸς Δ. τῶν Ἀζορῶν δύο νῆσοι ὑπὸ τὰ ὀνόματα *Ἀντιλλία* καὶ *Μὰν Σαντάζιο*, ἐξ οὗ γεωγράφοι τινὲς συνάγουν τὸ συμπέρασμα ὅτι καὶ πρὸ τοῦ ταξιδίου τοῦ Χριστοφόρου Κολόμβου ἦτο ἤδη γνωστὴ ἡ Ἀμερικὴ εἰς τοὺς Εὐρωπαίους. Τὸ πρωτότυπον τοῦ ἔργου τούτου φυλάσσεται εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Ἁγίου Μάρκου ἐν Βενετίᾳ. Μ.Δ.Β.

**Μπιανκολίνι** (Biancolini), ***Ἰωάννης - Βαπτιστὴς-Ἰωσήφ***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς (1697—1780). Ἦτο προικισμένος μὲ δραστηριότητα ἐξαιρετικήν, ἥτις τῷ ἐπέτρεπε νὰ καταγίνεται συγχρόνως εἰς ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις, εἰς τὴν μουσικὴν καὶ τὴν ἱστοριογραφίαν, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ τὴν γενέτειραν αὐτοῦ Βερώναν. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: «Χρονικὸν τῆς πόλεως τῆς Βερώνης» τοῦ Θαγκάτα (1745—1747), μετὰ σχολίων καὶ διορθώσεων, «Περὶ τῶν ἐπισκόπων καὶ τῶν κυβερνητῶν τῆς Βερώνης», «Οἱ ναοὶ τῆς Βερώνης» κλπ. Ἐπίσης διέθεσε τὰ μέσα πρὸς ἔκδοσιν τῆς «Συλλογῆς τῶν Ἑλλήνων ἱστορικῶν», ὅπου ἔγραψε τὸν βίον τοῦ Πολυβίου καὶ ἐνδιαφερούσας σημειώσεις ἐπὶ τῶν ἔργων τοῦ Θουκυδίδου, τοῦ Ξενοφῶντος καὶ τοῦ Πλάτωνος. Συνέθεσεν ἐπίσης καί τινας συμφωνίας καὶ «μοτέττα» ἀξιολόγου ἐμπνεύσεως. Μ. Δ. Β.

**μπιαντὲς** (ὁ) *[Ναυτ.]*. Τύπος τουρκικοῦ κωπηλάτου ἐφολκίου, ἐνδιάμεσος μεταξὺ καΐκ καὶ κουρρήτας. Στενόμακρον, ἐλαφρὸν καὶ ταχύ, προσομοιάζει πρὸς κέλητα ἢ φαλαινίδα, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι εἰς τοὺς μπιαντέδες αἱ κῶπαι εἶναι διατεταγμέναι ἀνὰ ζεῦγος κατὰ σέλμα, ἕκαστος δηλαδὴ ἐρέτης χειρίζεται δύο συγχρόνως κώπας, ἤτοι μίαν δι' ἑκατέρας τῶν χειρῶν αὐτοῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μπιάουαρ** (Beawar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν εἰς ἀπόστασιν 50 χιλιομέτρων δυτικῶς τοῦ Ἀτζμὶρ τῶν Βορειοδυτικῶν Ἐπαρχιῶν, πρωτεύουσα τῆς ἐπαρχίας *Μερβάρα*. Εἶναι ἐκτισμένη ἐντὸς ὡραίας κοιλάδος, δεσπόζει δ' αὐτῆς ὀχυρόν, ἐν τῷ ὁποίῳ διαμένει ἀγγλικὴ φρουρά. Κάτ. 12.000. Π. Γ. Λ.

**Μπιὰρ** (Biard), ***Πέτρος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων καὶ γλύπτης (1559—1609). Ἐμελέτησεν ἐν Ρώμῃ τὰ ἔργα τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, τοῦ ὁποίου προσεπάθησε νὰ μιμηθῇ τὴν τεχνοτροπίαν. Ἐξετέλεσεν ἐνδιαφέροντα γλυπτικὰ ἔργα εἰς τὸν ἐν Παρισίοις ναὸν τοῦ Saint-Étienne-du-Mont καὶ ἐν ἀνάγλυφον εἰκονίζον Ἑρρῖκον τὸν Δ΄ ἔφιππον, ὅπερ κατεστράφη κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν παλινορθώθη κατὰ τὸν ΙΘ΄ αἰῶνα ὑπὸ τοῦ H. Lemaire. Ι. Μ. Π.

—**Μπιὰρ** (Biard), ***Πέτρος*** (ὁ νεώτερος). Γάλλος γλύπτης καὶ χαράκτης (1592—1661), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐξετέλεσεν ἐνδιαφερούσας χαλκογραφίας ἐπὶ τῇ βάσει ἰδίᾳ ἔργων τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου («Ὁ Ἰωνᾶς», «Ἡ Σίβυλλα», «Ἕνας δοῦλος» κλπ.). Ι. Μ. Π.

—**Μπιὰρ** (Biard), ***Φραγκῖσκος-Αὔγουστος***. Γάλλος ζωγράφος (1798—1882). Ἀπεκλήθη «Περιπλανώμενος Ἰουδαῖος τῆς παλέττας», διότι καθ' ὅλον τὸν μακρόν του βίον ἐξεικόνισε κατὰ τρόπον οὐμοριστικόν, εὐχάριστον καὶ εὐφυᾶ τὰ ἤθη ποικίλων λαῶν καὶ τόπων. Οἱ πίνακές του ἀναφέρονται εἰς ὅλα τὰ γεωγραφικὰ πλάτη καὶ μήκη, ἀναπαριστάνοντες τὴν ζωὴν τῶν Ἀράβων, τῶν Νέγρων, τῶν Γροιλανδῶν, τῶν Βραζιλιανῶν. «Τὸ βάπτισμα εἰς τὸν Ἰσημερινὸν» εἶναι ἓν ἀπὸ τὰ χαρακτηριστικά του ἔργα. Ι. Μ. Π.

**Μπιάρκε** (Bjarke). Θρυλικὸς Σκανδιναυὸς ἥρως, ὁ κάλλιστος κατὰ τὴν παράδοσιν πολεμιστὴς τοῦ βασιλέως τῆς Δανίας Ράλφ Κράγκ (600 περίπου μ. Χ.), τοῦ ὁποίου ἐνυμφεύθη τὴν ἀδελφήν, ἀφοῦ ἔπνιξε τὸν σύζυγόν της, διαρκοῦντος τοῦ γαμηλίου συμποσίου. Ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας μάχας, διεκρίνετο δὲ διὰ τὴν δύναμιν καὶ τὴν ἀνδρείαν του. Ἐβοήθησε τὸν βασιλέα τῆς Οὐψάλας Ἀντὶλ νὰ νικήσῃ τὸν Ἀλέ, βασιλέα τῆς Νορβηγίας, ὅστις ἤθελε νὰ τοῦ ἀποσπάσῃ τὸ στέμμα. Ὁ Μπιάρκε συνέθεσε ποίημα, καλούμενον «Μπιαρκμάαλ», ἐν τῷ ὁποίῳ περιγράφει τὴν τρομερὰν νύκτα, καθ' ἣν ὁ Ράλφ Κράγκ πεσὼν θῦμα προδοσίας κατεστράφη μεθ' ὁλοκλήρου τοῦ στρατοῦ του. Τὸ ποίημα τοῦτο ἀποτελεῖ ἓν τῶν κυριωτέρων ποιημάτων τοῦ ἡρωϊκοῦ κύκλου τοῦ Βορρᾶ, μετεφράσθη δὲ λατινιστὶ ὑπὸ τοῦ Δανοῦ ἱστορικοῦ Σάξο Γκραμμάτικους. Χ. Δ.

**Μπιαρρίτς** (Biarritz) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομαστὴ λουτρόπολις τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τῶν Κάτω Πυρηναίων. Κάτ. 20.776. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Βισκαϊκοῦ κόλπου, εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. πρὸς τὰ ΝΔ. τῆς πόλεως Μπαγιὸν καὶ πρὸς Ν. τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Ἀντούρ, ἀπέχουσα περὶ τὰ 10 χλμ. ἀπὸ τῶν συνόρων τῆς Ἱσπανίας. Ἡ πόλις ἐκτείνεται ἐπὶ τῶν βραχώδους προεκτάσεως τῆς ξηρᾶς, εἰσχωρούσης εἰς τὴν θάλασσαν καὶ καταληγούσης εἰς τὸ ἀκρωτήριον Ἀταλαί. Πρὸς Α. τοῦ ἀκρωτηρίου τούτου ἐκτείνεται μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου Σὰν Μαρτὲν τὸ τμῆμα τῆς πόλεως τὸ γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα ἡ «Μεγάλη πλάζ», ἡ ὡραιοτέρα καὶ ἡ μᾶλλον πολυσύχναστος, μὲ καζῖνα, μεγαλοπρεπῆ ξενοδοχεῖα, κομψὰς ἐπαύλεις καὶ τελειοτάτας ἐγκαταστάσεις λουτρῶν. Πρὸς Δ. τοῦ Ἀταλαὶ ὑπάρχει ὁ «Παλαιὸς λιμήν», μικρὸς φυσικὸς λιμήν, χρησιμοποιούμενος ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων ἁλιέων, καὶ μετ' αὐτὸν ἡ «Παραλία τῶν Βάσκων», ἀποτελουμένη ἀπὸ ὑψηλοὺς βράχους. Ἐκεῖθεν ταύτης, εἰς ἀπόστασιν 1 χλμ., ὑπάρχει περίφημον σπήλαιον καλούμενον «Ἔρωτος θάλαμος», καὶ ὡραία ἀμμώδης παραλία φέρουσα τὸ αὐτὸ ὄνομα. Τὸ Μπιαρρίτς ἀποτελεῖ πρώτης τάξεως κλιματολογικὸν σταθμὸν καὶ μίαν τῶν σημαντικωτέρων καὶ ἀριστοκρατικωτέρων λουτροπόλεων τῆς Γαλλίας. Χάρις εἰς τὸ θαλάσσιον, ἤπιον καὶ σταθερὸν κλῖμα συχνάζεται τόσον κατὰ τὸ θέρος, ὅσον καὶ κατὰ τὸν χειμῶνα ἀπὸ πλείστους Γάλλους, Ἱσπανούς, Ἄγγλους καὶ Ρώσους, ὑπερβαίνοντας τὰς 500.000 ἐτησίως. Πλὴν τῶν θαλασσίων λουτρῶν ἔχει καὶ μεταλλικὰς πηγὰς ψυχρὰς μὲ ὕδατα σοδιο-χλωριοῦχα, κατάλληλα διὰ τὰς παθήσεις ἰδίως τῶν γυναικῶν (μητρίτιδας, σαλπιγγίτιδας, γυναικείαν στείρωσιν κλπ.), τὸν ραχιτισμόν, τὰς τοπικὰς φυματιάσεις, τὰς ἀναιμίας κττ. Τὸ Μπιαρρίτς εὑρισκόμενον ἐπὶ τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἥτις ἑνώνει τὴν Ἱσπανίαν καὶ τὴν Γαλλίαν, ἔχει συγκοινωνίαν πυκνοτάτην καὶ ταχυτάτην μὲ τὰ μεγάλα εὐρωπαϊκὰ κέντρα. Οἱ κάτοικοι καταγίνονται εἰς τὴν ἁλιείαν καὶ ζοῦν οἱ πλεῖστοι ἐκ τῆς ἐκμεταλλεύσεως τῶν ξένων.

Κατὰ τὸν ΙΒ΄ αἰῶνα τὸ Μπιαρρίτς ἦτο κέντρον ἁλιείας φαλαινῶν, μετὰ τὴν ἐξαφάνισιν τῶν ὁποίων ἐκ τῆς περὶ τὸν Βισκαϊκὸν κόλπον περιοχῆς παρήκμασε τελείως, εἶχε δὲ τῷ 1851 μόλις περὶ τὰς 2.000 κατοίκων. Ἡ νέα τῆς πόλεως ἀνάπτυξις καὶ ἁλματώδης πρόοδος χρονολογεῖται ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος καὶ ὀφείλεται εἰς τὸν Ναπολέοντα Γ΄, ὁ ὁποῖος ἐξέλεξεν αὐτὴν ὡς τόπον θερινῆς διαμονῆς, ὅπου διήρχετο τοὺς θερινοὺς μῆνας μετὰ τῆς οἰκογενείας του καὶ πολυαρίθμου ἀκολουθίας. Εἰς αὐτὴν δ' ἐγένετο καὶ ἡ περίφημος συνάντησις τοῦ Ναπολέοντος Γ΄ καὶ τοῦ Βίσμαρκ τῷ 1865. Σήμερον ἡ πόλις ἔχει πλεῖστα κτήρια, τὰ σημαντικώτερα τῶν ὁποίων εἶναι ὁ μητροπολιτικὸς ναὸς (ΙΑ΄ καὶ ΙΣΤ΄ αἰῶνος), ἡ ἔπαυλις τῆς αὐτοκρατείρας Εὐγενίας, ρυθμοῦ τῆς τελευταίας περιόδου τῆς Ἀναγεννήσεως, ἥτις χρησιμοποιεῖται σήμερον ὡς καζῖνον, τὸ θαυμάσιον Μέγα Καζῖνον, μετ' ἐξώστου δεσπόζοντος τοῦ ὠκεανοῦ, ὁ φάρος ὕψος 47 μ. κ.λ.π. Μ. Δ. Β.

**Μπιατζόλι** (Biagioli), ***Νικόλαος - Ἰωσαφὰτ-*** *Μπιασιόλι* (Biascioli), γνωστότερος ὡς—. Ἰταλὸς φιλόλογος καὶ γραμματικὸς (1768—1830). Ἐσπούδασεν ἐν Ρώμῃ καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς φιλολογίας ἐν Οὐρμπίνῳ. Μετὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν αὐστριακῶν στρατευμάτων εἰς τὴν Ἰταλίαν ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους, ὅπου ἀπέκτησε μεγάλην φήμην ὡς καθηγητὴς τῆς ἰταλικῆς γλώσσης καὶ φιλολογίας. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἰταλογαλλικὸν λεξικόν», «Σχόλια εἰς τὸν Βοκκάκιον», «Θησαυρὸς τοσκανικῆς γλώσσης», «Πραγματεία περὶ τῆς ἰταλικῆς φιλολογίας» καὶ ἐξέδωκε μετὰ σχολίων τὸν Δάντην, τὸν Πετράρχην κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπίατρις** (Beatrice) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς (βλ.λ. *Βεατρίκη*).

**Μπιάφρα** (Biafra) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα μικρᾶς ἰθαγενοῦς ἡγεμονίας τῆς δυτικῆς Ἀφρικῆς, κειμένης ἐν τῇ Ἄνω Γουϊνέᾳ, ἐπὶ τῶν ἀκτῶν ὁμωνύμου ὅρμου, μεταξὺ τοῦ βασιλείου τῶν Οὐάρι πρὸς βορρᾶν καὶ τῆς ἀκτῆς τοῦ Γκάμπον. Διαρρέεται ὑπὸ τοῦ Μαλίμπα καὶ ἔχει ὡς πρωτεύουσαν μικρὰν πόλιν καλουμένην ἐπίσης *Μπιάφρα*. Π. Γ. Λ.

**μπίβα** (ἡ) (biwa). Ἰαπωνικὸν ἔγχορδον ὄργανον τῆς οἰκογενείας τῶν λαούτων. Φέρει τέσσαρας χορδάς, κρουομένας διὰ πλήκτρου, ὅπως τὸ μανδολῖνον, ἡ δὲ γλῶσσά του χωρίζεται εἰς πέντε μέρη.

**μπίγα** (ἡ)· κοινὴ παρὰ τοῖς ναυτικοῖς ὀνομασία τοῦ ἀνυψωτικοῦ *γερανοῦ* (βλ.λ.).

**Μπίγα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μυσίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ—αἱ *Πηγαὶ* τῶν ἀρχαίων—, κειμένη εἰς τὴν θέσιν ὅπου ὁ ποταμὸς οὗτος ἐξέρχεται ἐκ τῆς ὀρεινῆς περιοχῆς εἰς τὴν πεδινὴν τοιαύτην. Ἡ πόλις ἀπέχει περὶ τὰ 20 χλμ. ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τῆς Προποντίδος ἐπινείου της, τῆς *Καραμπίγας*, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, ὡς ἐπίσης καὶ μετὰ τῆς Πανόρμου, τῶν Δαρδανελλίων, τοῦ Χὰν Μπαζάρκιοϊ καὶ τοῦ Γκιονέν. Ἡ βορείως αὐτῆς ἐκτεινομένη πεδιὰς πιθανώτατα ὑπῆρξε τὸ πεδίον τῆς παρὰ τὸν Γρανικὸν μάχης μεταξὺ τοῦ στρατοῦ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου καὶ τοῦ τῶν Περσῶν ἐν ἔτει 334 π. Χ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ Μπίγα κατελήφθη κατ' Ἰούνιον 1920 ὑπὸ μικροῦ τμήματος ἑλληνικοῦ στρα-

Digitized by Google

τοῦ. Κατὰ τὸ 1921, ὁπότε τουρκικαὶ συμμορίαι Τσέτηδων, ὁρμώμεναι ἐκ τῆς ἐγγὺς ἀγγλικῆς στρατιωτικῆς ζώνης τῶν Δαρδανελλίων, ἐξετέλουν ἐπιδρομὰς εἰς τὴν περιφέρειαν ταύτην, ἡ εἰς Μπίγαν ἑλληνικὴ δύναμις στρατοῦ αὐξηθεῖσα ἀνελάμβανε διαφόρους ἐπιδρομὰς πρὸς ἐκδίωξιν τῶν συμμοριῶν ἐκείνων. Ἓν τοιοῦτον ἀπόσπασμα (ἐξ 90 ἀνδρῶν), μεταβὰν εἰς Χὰν Μπαζάρκιοϊ, μὴ λαβὸν δὲ μέτρα ἀσφαλείας καὶ κυκλωθὲν ὑπὸ τουρκικῶν συμμοριῶν τῇ 29 Ἀπριλίου 1921, ὑπέστη σημαντικὰς ἀπωλείας. Τέλος τὸ 3ον σύνταγμα μετόπισθεν (μετονομασθὲν εἰς 48ον σύνταγμα πεζικοῦ) ἐφρούρει τὴν περιοχὴν διὰ λόχου ἑδρεύοντος εἰς Μπίγαν καὶ ἀποσυρθέντος εἰς Πάνορμον κατὰ τὴν ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἐκκένωσιν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Παρὰ τὴν Μπίγαν διήρχετο τὸ ἀνατολικὸν ὅριον τῆς περὶ τὰ Δαρδανέλλια ἀγγλικῆς στρατιωτικῆς ζώνης κατοχῆς (Ὀκτώβριος 1919—Ὀκτώβρίου 1923), ὅπερ ἀρχόμενον ἀπὸ τῆς, ἐπὶ τῆς Προποντίδος, Καραμπίγας καὶ διερχόμενον διὰ τῆς Μπίγας, κατὰ μῆκος τοῦ Γρανικοῦ, διὰ τοῦ Χὰν Μπαζάρκιοϊ, τοῦ Μπαϊραμίτς, τοῦ Ἐζενέ, κατέληγεν εἰς τὴν παραλίαν τῆς Τροίας ἐπὶ τοῦ Αἰγαίου, ἀντικρὺ τῆς Τενέδου. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπιγάδος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς ἐπὶ τῆς Προποντίδος κωμοπόλεως *Ἐπιβάται* (βλ. λ.).

**Μπιγαντὶς** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Μυσίας, τὸ *Ἀχύραιον* τῶν ἀρχαίων, κειμένη περὶ τὰ 42 χλμ. ΝΑ. τοῦ Μπαλούκεσερ, μεθ' οὗ συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Συνδέεται ἐπίσης διὰ καρροδρόμων μετὰ τοῦ Σιντιργί (Καρσεαί)—Σιμάβ (Συνάος), μετὰ τοῦ Ἀξαρίου (Ἂκ-Χισσὰρ) καὶ μετὰ τοῦ Γκέλεμπε —Κίρκαγατς. Κεῖται παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Μακέστου (ποταμοῦ τοῦ Σιμάβ), ἐν κοιλάδι ἐξόχως ὡραίᾳ καὶ εὐφορωτάτῃ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ Μπιγαντὶς κατελήφθη κατ' Ἰούνιον 1920 ὑπὸ τμήματος τοῦ σώματος στρατοῦ Σμύρνης, ὅπερ ἐσχημάτισε προφυλακὰς πρὸς ἀνατολὰς τῆς κωμοπόλεως. Διαδοχικῶς μετὰ ταῦτα ἡ περιοχὴ τοῦ Μπιγαντὶς ἐφρουρεῖτο διὰ τάγματος (ἀποτελέσασα κέντρον ἀντιστάσεως) ἐκ τῆς III ἑλληνικῆς μεραρχίας κατὰ πρῶτον, εἶτα δὲ ἐκ τῆς V τοιαύτης καὶ τέλος, ὅταν καὶ ἡ τελευταία μεραρχία αὕτη προωθήθη πρὸς ἀνατολάς, ὑπὸ τμήματος τοῦ 3ου συντάγματος μετόπισθεν (μετονομασθέντος εἰς 48ον σύνταγμα πεζικοῦ). Τῇ 10 Ἀπριλίου 1921 δύναμις ἐκ 400 Τούρκων ἱππέων Κιρκασίων προσέβαλε τὸ μικρὸν ἑλληνικὸν τμῆμα τοῦ 3ου συντάγματος μετόπισθεν, τὸ τηροῦν τὸ κέντρον ἀντιστάσεως Μπιγαντίς. Ἀλλ' ἡ ὀλιγάριθμος φρουρὰ ἠμύνθη πεισμόνως τῆς θέσεως καὶ ἠνάγκασε τοὺς Τούρκους ἱππεῖς εἰς ὑποχώρησιν, ἀφοῦ ἐγκατέλιπον ἐπὶ τόπου 10 νεκρούς. Ἀλλ' ὁμοίως τότε ἐτέθησαν ἐκτὸς μάχης 5 ἐκ τῶν Ἑλλήνων στρατιωτῶν, ἕτεροι δὲ 5 καὶ ἐκ τῶν Ἑλλήνων κατοίκων τῆς κωμοπόλεως. Ἔκτοτε μέχρι τῆς ἐκκενώσεως ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ τῆς Δυτικῆς Μικρᾶς Ἀσίας (Σ/βριος 1922) διαρκεῖς συμπλοκαὶ συνήπτοντο εἰς τὴν περιφέρειαν τοῦ Μπιγαντὶς μεταξὺ τοῦ κατέχοντος ἑκάστοτε αὐτὸ ἑλληνικοῦ τμήματος καὶ τουρκικῶν ἀτάκτων ὁμάδων, δι' ἃς ὁ περίβολος τῶν περὶ τὸ ὑψίπεδον Σιμὰβ ὀρέων (Ἂκ ντάγ, Ἀλατζὰκ ντάγ, Κοντζᾶ ντάγ, Ντεμιρτζῆ ντάγ, Σιμὰβ ντάγ) ἐχρησίμευεν ὡς κρησφύγετον καὶ ὡς ὁρμητήριον. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπιγιαποὺρ** (Bijapur) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς περιφερείας τῆς *Βομβάης*, 60 μίλλια νοτίως τῆς Σολαπούρ. Ὑπῆρξεν ἄλλοτε ἡ πρωτεύουσα ἰσχυροῦ μωαμεθανικοῦ βασιλείου, τὰ δὲ τείχη της περιέβαλλον ἀκμάζοντα πληθυσμόν. Ἔχει τεμένη καὶ ἀρχαίους τάφους λαμπρᾶς τέχνης, ἰδίως δὲ τὸν τοῦ Ἀδὶλ-Σάχ, ἕνα ἐκ τῶν λαμπροτέρων τάφων τοῦ κόσμου. Ἀπὸ τοῦ 1848 ἐγένετο ἀγγλικὴ κτῆσις. Κάτ. 27.615. Π. Γ. Λ.

**Μπιγιέλα-κρίβα** *[Γεωγρ.]*. Σλαβικὸν ὄνομα τῆς Νοτιοσλαβικῆς πόλεως *Βαϊσκίρχεν* (βλ. λ.).

**Μπιγιοὺκ** *[Γεωγρ.]* βλ. *Μπουγιούκ*.

**Μπιγιὼ** (Billault), ***Αὔγουστος***. Γάλλος πολιτικὸς (1805—1863). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἠσκησεν ἐν ἀρχῇ τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου. Ἀπὸ τοῦ 1837 εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικήν, ἐγένετο δὲ τῷ 1840 ὑφυπουργὸς ἐν τῇ κυβερνήσει τοῦ Θιέρσου καὶ ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν τῷ 1854 ἐπὶ τῆς Συνταχτικῆς Συνελεύσεως. Ἐξελέγη μετέπειτα γερουσιαστής, τῷ δὲ 1860 διωρίσθη ὑπουργὸς ἄνευ χαρτοφυλακίου, «ἐντεταλμένος τὴν ἐνώπιον τῶν βουλῶν ὑποστήριξιν τῶν κυβερνητικῶν νομοσχεδίων». Ἐν τῇ ἰδιότητί του ταύτῃ ὑπεστήριξεν, ἐπὶ μίαν τριετίαν, μετὰ πολλῆς δεξιότητος τὴν πολιτικὴν τοῦ Ναπολέοντος Γ', τοῦ ὁποίου ὑπῆρξε πολύτιμος καὶ ἀφωσιωμένος συνεργάτης. Μετὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1863, αἵτινες ἔδωκαν τὴν πλειοψηφίαν εἰς τοὺς φιλελευθέρους, ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς καὶ ἀπέθανε τὸ ἴδιον ἔτος. — Ω.

— **Μπιγιὼ-Βαρὲν** (Billiaud-Varenne), ***Ἰωάννης-Νικόλαος***. Γάλλος πολιτικὸς (1756—1819). Δικηγόρος ἐν Παρισίοις κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως, τῆς ὁποίας ἐκ τῶν πρώτων μετέσχεν, ὑπῆρξεν εἷς τῶν ὁρμητικωτέρων ῥητόρων τῆς λέσχης τῶν Ἰακωβίνων, ἐγένετο δὲ μετὰ τὴν 10ην Αὐγούστου μέλος τῆς Κομμούνας καὶ κατόπιν βουλευτὴς Παρισίων εἰς τὴν Συμβατικὴν ἐθνοσυνέλευσιν. Διεκρίθη ἐν αὐτῇ διὰ τὴν ἐμπάθειαν μεθ' ἧς ἐπέμενε νὰ ζητῇ τὴν θανάτωσιν ὅλων τῶν πολιτικῶν ἐχθρῶν τῆς ἐπαναστάσεως, ἐξελέγη δὲ τὸν Σεπτέμβριον 1793 μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῆς Κοινῆς σωτηρίας καὶ ἀντετάχθη σφοδρῶς εἰς τὴν πολιτικὴν τοῦ Ἑμπὲρ καὶ τοῦ Δαντών. Ἀλλὰ καὶ τὸν Ροβεσπιέρρον, τὸν ὁποῖον εἶχε κολακεύσει κατ' ἀρχάς, ἐπολέμησε μανιωδῶς κατόπιν, ὅταν κατὰ τὴν 9ην Θερμιδὼρ εἶδε τὴν ἰσχὺν αὐτοῦ καταρρέουσαν. Ἡ παλινῳδία του ὅμως αὐτὴ δὲν ἴσχυσε νὰ τὸν σώσῃ ἀπὸ τὸ ἐναντίον του μῖσος τῶν δαντωνικῶν καὶ τῶν γιρονδίνων. Συλληφθεὶς τότε, ἐξωρίσθη εἰς Γουϊάνην, ὅπου παρέμεινε μέχρι τῆς παλινορθώσεως τῶν Βουρβώνων, ἀρνηθεὶς ἐν τῷ μεταξὺ νὰ δεχθῇ χάριν ἀπὸ τὸν Βοναπάρτην. Τὰ ὑπὸ τὸ ὄνομά του δημοσιευθέντα «Ἀπομνημονεύματα» εἶναι ἐξ ὁλοκλήρου πλαστά. —Ω.

**Μπιγκελόου** (Bigelow), ***Φραγκῖσκος***. Βορειοαμερικανὸς μετεωρολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1851 ἐν Κονκορδίᾳ τῆς Μασσαχουσσέτης. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε θεολογίαν καὶ ἐγένετο πάστωρ διαμαρτυρόμενος, διδάξας εἰς διαφόρους σχολάς, εἶτα δὲ ἠσχολήθη καὶ εἰς τὴν μετεωρολογίαν καὶ τῷ 1891 μεταβὰς εἰς Βασιγκτῶνα ἐγένετο καθηγητὴς τῆς μετεωρολογίας καὶ τῆς ἡλιακῆς φυσικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον Columbia. Ἐδημοσίευσε πολυαρίθμους πραγματείας τῆς ἡλιακῆς φυσικῆς καὶ τῆς μετεωρολογίας, τὸ ὄνομα δ' αὐτοῦ εἶναι στενῶς συνδεδεμένον μὲ τὴν δυναμικὴν τῆς ἀτμοσφαίρας, μὲ τὴν ὁποίαν εὐρύτατα ἠσχολήθη. Ἐπίσης ἐμελέτησε τὴν διανομὴν τῆς θερμοκρασίας μετὰ τοῦ ὕψους, ἠσχολήθη δ' εὐρύτατα μὲ τὴν θερμοδυναμικὴν τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ εὗρε μαθηματικὰς ἐξισώσεις πρὸς παράστασιν τῆς γενικῆς καταστάσεως τοῦ τύπου τοῦ Poisson διὰ τὸν ἀδιαβατικὸν μετασχηματισμόν, αἵτινες, γνωσταὶ ὡς «ἐξισώσεις τοῦ Μπιγκελόου», ἐγένοντο δεκταὶ ὑπὸ τῶν ἐπιστημόνων καὶ ἰσχύουσι μέχρις σήμερον. Ἐμελέτησεν ἐπίσης τὸν σχηματισμὸν τῶν κυκλώνων καὶ ἀντικυκλώνων μέχρι ὕψους 16 χιλιομέτρων. Αἱ σπουδαιότεραι τῶν ἐργασιῶν του εἶναι: «Studies on the vortices in the atmosphere of the earth» (Monthly Weather Review 1919), «Note on three solar Periodes» («Science» 1905), «Studies on the general circulation of the earths atmosphere» (Anver. J. Sc. 1910), «A meteorological treatise on the circulation and radiation in the atmospheres of the earth and of the sun» (Νέα Ὑόρκη 1915), «Four fundamental formulas for discussing the observations made with the various types of pyrheliometers» (Νέα Ὑόρκη 1919), «The daily normal temperature and the daily normal precipitation of the United States» (Οὐάσιγκτων 1908), «The Average Monthly Vectors of the general Croulation of the United States (Monthly Weather Revew 1904) κλπ. Θ. Θ. Φ.

**Μπιγκὸ** (Bigot), ***Ἀλέξανδρος***. Γάλλος φυσικός, τοῦ ὁποίου αἱ ἐργασίαι ἐπὶ τῆς κεραμευτικῆς συνετέλεσαν μεγάλως εἰς τὴν προοδευτικὴν ἐξέλιξιν τῆς τέχνης ταύτης κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας. Γεννηθεὶς τῷ 1862, ἐσπούδασεν ἐν τῇ Σορβόννῃ καὶ ἠσχολήθη ἀρχικῶς εἰς τὴν βιομηχανικὴν χημείαν. Βραδύτερον τὸν εἵλκυσεν ἡ κεραμευτικὴ βιομηχανία, εἰς τὴν ὁποίαν ἐπέτυχε, κατόπιν ἐπιμόνων, μεθοδικοῦ καὶ ἐπιστημονικοῦ ὅλως τύπου, ἀναζητήσεων, νὰ δώσῃ ἀφθονίαν νέων ἐπιχρισμάτων ἰδιϊκῆς του συνθέσεως, ἀποδιδόντων ποικίλους καὶ καλλιτεχνικοὺς χρωματισμούς, τόσον διὰ τὰ ἐξ ὀπτῆς γῆς καὶ πορσελλάνης κομψοτεχνήματα, ὅσον καὶ τὰς ἐκ τσιμέντου καὶ ἄλλων γαιωδῶν πλάκας τὰς χρησιμοποιουμένας πρὸς ἐπένδυσιν δαπέδων, τοίχων, προσόψεων κλπ. Ἡ διὰ τοιούτων ὑλικῶν γενομένη παρ' αὐτοῦ ἐξωτερικὴ διακόσμησις μιᾶς οἰκίας ἔτυχε τοῦ βραβείου διακοσμητικῆς τῆς πόλεως τῶν Παρισίων (1899), ἑτέρα δὲ (τῷ 1905) τοῦ ἀνωτέρου μεταλλίου τῆς κεντρικῆς ἑνώσεως τῶν Γάλλων ἀρχιτεκτόνων.

— **Μπιγκὸ** (Bigot), ***Ἐμερίκ***. Γάλλος λόγιος (1626 —1689). Ὁ πατὴρ αὐτοῦ *Ἰωάννης Μπιγκό*, διαμένων εἰς Ρουέν, εἶχε καταρτίσει συλλογὴν ἐκ 500 καὶ πλέον χειρογράφων, τὰ ὁποῖα προθύμως ἔθετεν εἰς τὴν διάθεσιν τῶν βιβλιοφίλων. Ὁ Ἐμερὶκ ἐπηύξησε τὴν συλλογὴν ταύτην σημαντικῶς, ἀφωσιώσας δὲ περὶ αὐτὴν τὴν ζωήν του ὅλην, ἐδημιούργησεν ἐν τέλει σπουδαίαν βιβλιοθήκην, εἰς τὴν ὁποίαν πλεῖστοι ἐκ τῶν Εὐρωπαίων σοφῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης εὗρον πολύτιμον ὑλικὸν διὰ τὰ ἔργα των. Τὸ μόνον ἀναφερόμενον ἔργον αὐτοῦ εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Παλλαδίου βιογραφία τοῦ Χρυσοστόμου, τῆς ὁποίας τὰ χειρόγραφα εἶχεν ἀνεύρει ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Palladii de vita Chrysostomi» (Παρίσιοι 1680), μὲ προσθήκην καὶ ἄλλων τινῶν ἑλληνικῶν κειμένων. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μπιγκὸ ἡ βιβλιοθήκη, ἀπομείνασα εἰς τοὺς κληρονόμους του, ἐπωλήθη εἰς Παρισινοὺς βιβλιοπώλας, οἵτινες ἐδημοσίευσαν τῷ 1706 κατάλογον αὐτῆς, περιλαμβάνοντα 16.500 περίπου βιβλία καὶ χειρόγραφα. Ἐκ τούτων τὰ χειρόγραφα ἠγοράσθησαν ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου διὰ τὴν Ἐθνικὴν Βιβλιοθήκην τῆς Γαλλίας.

— **Μπιγκὸ** (Bigot), ***Κάρολος***. Γάλλος φιλόλογος καὶ συγγραφεὺς (1840—1893). Μετὰ τὰς σπουδάς του ἐν Παρισίοις, ἀπετέλεσε μέλος τῆς ἐν Ἀθήναις γαλλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς καὶ ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἐδίδαξε ῥητορικὴν εἰς διάφορα λύκεια. Ἀπὸ τοῦ 1871 ἤρχισε συνεργαζόμενος εἰς διάφορα περιοδικά, τὸν «Αἰῶνα», τὸν «ΙΘ' Αἰῶνα», τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτέρων συνεργατῶν, τὴν «Πολιτικὴν καὶ Φιλολογικὴν Ἐπιθεώρησιν», τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Καλῶν Τεχνῶν» κ. ἄ. Ἐν τῷ μεταξὺ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλολογίας εἰς τὴν Σχολὴν τοῦ Σαὶν-Σύρ. Εἰς τόμους ἐξέδωκεν: «Αἱ ἰθύνουσαι τάξεις» (1875), «Τὸ τέλος τῆς ἀναρχίας» (1878), «Ὁ μικρὸς Γάλλος» (1881), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, «Σύγχρονοι Γάλλοι ζωγράφοι» (1888) κλπ. —Ω.

—**Μπιγκὸ ντὲ Πρεαμενὲ** (Bigot de Préameneu), ***Φῆλιξ-Ἰουλιανὸς-Ἰωάννης***. Γάλλος νομομαθὴς (1747—1825). Ἐξελέγη βουλευτὴς τῆς νομοθετικῆς συνελεύσεως, φυλακισθεὶς δὲ κατὰ τὸ διάστημα τῆς τρομοκρατίας διωρίσθη μετὰ τὴν ἀποφυλάκισίν του δικαστὴς εἰς Παρισίους. Τῷ 1800 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Γενόμενος σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας, μετέσχεν ἐνεργῶς τῆς προπαρασκευαστικῆς ἐργασίας τοῦ Ναπολεοντείου ἀστικοῦ κώδικος. Ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμιτος καὶ διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Θρησκευμάτων (1808—1818), κατὰ δὲ τὸ Ἑκατονθήμερον ὠνομάσθη πατρίκιος τῆς Γαλλίας. Χ. Δ.

**μπιγκόνια** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βεγονία* (βλ. λ.).

**Μπιγκὸρ** (Bigorre, λατιν. Bigeritanus ἢ Bigerensis Pagus) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας, ἐν Γασκωνίᾳ, τῆς ὁποίας ἀπετέλει κατὰ τὸν μεσαίωνα ἓν τῶν μεγαλυτέρων τιμαρίων. Ἡ κομιτεία τοῦ Μπιγκὸρ ἐξετείνετο ἐπὶ τῶν ἄνωτέρων κοιλάδων τοῦ Γκάβ, τοῦ Πὼ καὶ τοῦ Ἀντούρ, εἶχε δὲ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Τάρμπ*. Ὑπαγομένη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν Ἀκουϊτανίαν, διεξεδικήθη κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα μεταξὺ πολυαρίθμων μνηστήρων, περιῆλθε δὲ τέλος εἰς τὴν χώραν τοῦ Μπεάρν, τῷ 1425, ἀκολουθήσασα ἔκτοτε τὰς τύχας αὐτῆς. Χ. Δ.

**Μπιγκουρντὰν** (Bigourdan), ***Γουλιέλμος***. Διακεκριμένος Γάλλος ἀστρονόμος, γεννηθεὶς τῷ 1851. Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ ἀστεροσκοπεῖον τῆς Τουλούζης, εἶτα δὲ εἰς τὸ ἐν Παρισίοις ἀπὸ τοῦ 1880 μέχρι τοῦ 1925, ὁπότε παρῃτήθη. Διετέλεσε μέλος τοῦ Γραφείου μηκῶν (1903) καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν (1904). Αἱ ἐπιστημονικαὶ ἐργασίαι του ἀφορῶσι κυρίως τὰς μεθόδους παρατηρήσεως καὶ τὸν καθορισμὸν τῶν θέσεων τῶν ἀστέρων. Ἠσχολήθη ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν εἰς τὸν καταρτισμὸν καταλόγου περιλαμβάνοντος τὰ ἀπὸ τῶν Παρισίων ὁρατὰ νεφελώματα καὶ ἀστρικὰ σμήνη, ἀνεκάλυψε δὲ κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐργασίας ταύτης νέα τινὰ μικρὰ νεφελώματα, ἄγνωστα μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Ὁ κατάλογος οὗτος, τοῦ ὁποίου ἡ ἔκδοσις ἤρξατο τῷ 1917 ὑπὸ τὸν τίτλον «Observation de nébuleuses et d'amas d'étoiles», ἀποτελεῖται ἐκ 5 τόμων καὶ περιλαμβάνει 7.000 σμήνη καὶ νεφελώματα, διὰ τὸ ἔργον δὲ τοῦτο ὁ Μπιγκουρντὰν ἐτιμήθη διὰ τοῦ χρυσοῦ βραβείου τῆς Βρεττανικῆς ἀστρονομικῆς Ἑταιρείας. Ὁ Μπιγκουρντὰν ἐπεξέτεινε τὴν χρῆσιν τοῦ κοχλίου διὰ τὴν μέτρησιν τῶν συντεταγμένων, ἔκαμε διαφόρους παρατηρήσεις ἐπὶ κομητῶν, ἠσχολήθη μὲ τὰ σφάλματα τῶν ἀστρονομικῶν παρατηρήσεων καὶ τὰς ἐπενεκτάσεις εἰς τὰ σχετικὰ ὄργανα τελειοποιήσεις, συνεκέντρωσε διάφορα στοιχεῖα ἀφορῶντα τὴν μετεωρολογίαν, συνέλεξεν ὑλικὸν χρήσιμον διὰ τὴν ἀστρονομικὴν ἱστορίαν καὶ βιβλιογραφίαν καὶ γενικῶς συνέβαλε μεγάλως εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς ἐπιστήμης. Ἐπίσης συνειργάσθη εἰς τὴν ὀργάνωσιν τῆς ὑπηρεσίας μεταβιβάσεως τῆς ὥρας διὰ τοῦ ἀσυρμάτου καὶ προήδρευσε σχετικῆς συσκέψεως συνελθούσης τῷ 1912. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων συγγραμμάτων καὶ πραγματειῶν του σπουδαιότεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Τὸ σύστημα μέτρων καὶ σταθμῶν» (1901), «Αἱ ἐκλείψεις τοῦ ἡλίου» (1905), «Τὸ κλῖμα τῆς Γαλλίας» (1916), «Γενικὴ ἐπιθεώρησις τῶν ἀστρονομικῶν ἐργασιῶν» (1920) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπὶγκ Χὸρν** (Big Horn=μικρὸν κέρας) *[Γεωγρ.]*. —1) Ποταμὸς τῆς Β. Ἀμερικῆς, σχηματιζόμενος ὑπὸ τὸ ἐκ τῶν ὀρέων Σόσον πηγάζοντος Οὐάϊντ καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν ποταμὸν Γιέλλωστον, μετὰ ῥοῦν 700 χλμ. Εἶναι πλωτὸς κατὰ τὸν ἀνάπλουν ἀπὸ τῆς συμβολῆς του μέχρι τῆς πόλεως Φὸρτ Κάστερ, παρὰ τὴν ὁποίαν συμβάλλει ὁ παραποτα-

Digitized by Google

μος αὐτοῦ *Μικρὸς Μπὶγκ Χόρν*. — 2) Ὀροσειρὰ τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν τῷ Β. τμήματι τῆς πολιτείας Οὐαϋόμινγκ. Ἔχει μῆκος 290 χλμ., σχηματίζει δὲ πλείστας κορυφάς, τῶν ὁποίων τὸ ὕψος κυμαίνεται μεταξὺ 2.700 καὶ 4.000 μ. Ἡ ὑψίστη κορυφὴ αὐτῆς *Κλόουντ Πὴκ* φθάνει μέχρις ὕψους 4.360 μ. Χ. Δ.

**Μπίγλιστα**, ἢ ***Βίγλιστα*** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ΝΑ. Ἀλβανίας, ὑπαγομένη εἰς τὸν νομὸν Κορυτσᾶς. Κεῖται παρὰ τὰ ἑλληνικὰ σύνορα, ἐν τῇ πρὸς Ν. τῶν λιμνῶν τῆς Πρέσπας χώρᾳ, πρὸς Α. τῆς πόλεως Κορυτσᾶς (Κόρτσα) καὶ ἐπὶ τῆς πρὸς τὴν Φλώριναν ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Κάτ. 1500. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς Κορυτσᾶς (Ἑλληνοτουρκικὸς πόλεμος), ἡ *Μπίγλιστα* κατελήφθη τὴν 5ην Δεκεμβρίου 1912 ὑπὸ τμήματος τῆς 6ης ἑλληνικῆς μεραρχίας. Κατὰ τὴν ἰδίαν ταύτην ἡμέραν τὸ ἀπόσπασμα τῆς 5ης ἑλληνικῆς μεραρχίας, ἔχον ἐντολὴν νὰ ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ μετώπου Καπέτσιστα — δυτικῶς Μπίγλιστα, συνήντησε τουρκικὰς δυνάμεις εἰς τὸν μεταξὺ Καπέτσιστα — Βισότιτσα χῶρον, καὶ τότε διεξήχθη ἀγών, φερόμενος ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἀγὼν Μπίγλιστα*, ἀποβὰς ὑπὲρ τῶν Ἑλλήνων, καταδιωξάντων τουρκικά τινα στρατεύματα πέραν τῆς γεφύρας 814 (ἐπὶ τῆς ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ). Ν. Θ. Κ.

**μπιγότα** (ἡ). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, ἀντίστοιχος τοῦ ἐπισήμου ὅρου *λοβός*. Προερχόμενος ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ ὅρου bigotta, προφέρεται ὑπὸ τῶν ναυτῶν καὶ *μπιώτ*. Σ. Ε. Λ.

**Μπιὲβρ** (Bièvre), ***Γεώργιος - Φραγκῖσκος Μαρεσὰλ*** (Maréchal), *μαρκήσιος ντὲ*—. Γάλλος λόγιος καὶ διάσημος κατὰ τὴν ἐποχήν του εὐθυμολόγος (1747—1789). Τῷ 1770 ἐδημοσίευσεν ἓν εὐθυμογραφικὸν σκαλάθυρμα γέμον λογοπαιγνίων, κατόπιν δύο ἀσεμνογραφήματα «Ὁ ἄγγελος Λὺρ» καὶ «Ἡ νεράϊδα Λύρ», καὶ μίαν ἐκκεντρικὴν τραγῳδίαν «Βερχιγκεντόριξ». Τῷ 1783 ἀνεβίβασεν ἀπὸ σκηνῆς τοῦ «Γαλλικοῦ Θεάτρου» ὡραίαν πεντάπρακτον κωμῳδίαν του «Ὁ Γόης». Τῷ 1800 ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τὸν τίτλον «Μπιεβριάνα» συλλογὴ ἀποδιδομένων εἰς τὸν Μπιὲβρ χαριτολογημάτων καὶ λογοπαιγνίων. —Ω.

**Μπιὲβρ** (Bièvre) *[Γεωγρ.]* Ποταμὸς τῆς Γαλλίας, πηγάζων ἐκ τῶν ἑλῶν Σαὶν Κεντέν, διαρρέων τὰς πόλεις τῆς περιοχῆς Ἲλ-ντὲ-Φράνς, Μπερνύ, Βιλλζουὶφ κλπ. καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Σηκουάνα, ἐντὸς τῶν Παρισίων, ὑπὸ τὸ ὄνομα ποταμὸς τῶν Γοβελινίων, μετὰ ροῦν 40 χλμ. Χ. Δ.

**μπιὲλ *(μπιγιέλ)*,** ἢ ***μπέλ***. Σλαβικὴ λέξις σημαίνουσα λευκὸς καὶ ἀποτελοῦσα τὸ πρῶτον συνθετικὸν πλείστων σλαβικῶν ὀνομάτων τόπων, πόλεων, λιμνῶν κλπ. Θ. Β.

**Μπιὲλ** (Biel) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπιέν*.

**Μπιέλα** (Biela), ***Γουλιέλμος,*** *βαρῶνος φὸν* —. Ἐγεννήθη ἐν Rossla, πλησίον τοῦ Stalberg τῷ 1782 καὶ ἀπέθανεν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1856. Ἦτο ἀρχικῶς ἀξιωματικός, ἀκολούθως δὲ ἠσχολήθη εἰς τὰς καλὰς τέχνας καὶ εἰς τὴν ἀστρονομίαν. Κατέστη γνωστὸς ἐκ τοῦ κομήτου ὃν ἀνεκάλυψε καὶ ὁ ὁποῖος φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομά του. Ὁ κομήτης οὗτος παρετηρήθη τῷ 1772 καὶ τῷ 1805, ἀνευρέθη δὲ τῷ 1826 ὑπὸ τοῦ Μπιέλα ἐν Johannisberg. Δέκα ἡμέρας βραδύτερον παρετήρησε τὸν αὐτὸν κομήτην ἐν Μασσαλίᾳ ὁ Gambart, ἐξ οὗ καὶ ὑπό τινων φέρεται ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ τελευταίου τούτου. Ὁ ἐν λόγῳ κομήτης συμπληροῖ τὴν περὶ τὸν ἥλιον περιφοράν του ἐντὸς $6^{8}/_{4}$ ἐτῶν. Ἡ ἐπάνοδός του τῷ 1832 ἀνεμένετο μετὰ τρόμου, ἐπὶ τῇ ἰδέᾳ ὅτι θὰ συνεκρούετο μετὰ τῆς γῆς. Κατὰ τὸ 1839, ἂν καὶ ἀνεμένετο, δὲν παρετηρήθη, ἀλλὰ τῷ 1846 ἐνεφανίσθη διπλοῦς, ὅπως καὶ τῷ 1852. Ἔκτοτε δὲν ἐπανῆλθε πλέον. Κατὰ τὰς γενομένας παρατηρήσεις, ἐκ τῶν δύο τεμαχίων του τὸ πρῶτον εἶχε περίοδον 6.587 ἐτῶν καὶ τὸ δεύτερον 6.629 ἐτῶν. Ὡς ἐξήγησαν ὁ Leverrier καὶ ὁ Schiaparelli, ἡ ἐξαφάνισις τοῦ κομήτου τούτου δέον νὰ ἀποδοθῇ εἰς τὴν διάλυσιν αὐτοῦ, ἐκ τῆς ὁποίας προεκλήθησαν σημαντικαὶ βροχαὶ διαττόντων ἀστέρων, ὡς αἱ σημειωθεῖσαι τὴν 27ην Νοεμβρίου 1872 καὶ τὴν 27ην Νοεμβρίου 1885. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**Μπιελάϊα** (Bielaia=λευκὸς) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ΝΑ., Ρωσίας, διασχίζων τὴν χώραν τῆς δημοκρατίας *Ταρτάρων-Μπασκίρων*. Πηγάζει ἐκ τῶν Οὐραλίων, ρέει κατ' ἀρχὰς πρὸς ΝΔ. καὶ εἶτα πρὸς ΒΔ. καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Κάμα, μετὰ ροῦν 720 χλμ. Εἶναι πλωτὸς ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ μέχρι τῆς πόλεως Οὔφα καὶ χρησιμεύει ὡς μεγάλη ἐμπορικὴ ὁδὸς διὰ τὴν ἐξαγωγὴν σιδήρου, σιτηρῶν καὶ ξυλείας. Τῷ 1919 ἔλαβον χώραν παρ' αὐτὸν μεγάλαι συγκρούσεις μεταξὺ τῶν μπολσεβίκων καὶ τοῦ στρατοῦ τοῦ ναυάρχου Κολτσάκ.

Ὑπὸ τὸ ἴδιον ὄνομα ὑπάρχουσιν ἐπίσης πλεῖστοι ἄλλοι δευτερεύοντες ποταμοὶ ἐν Ρωσίᾳ. Χ. Δ.

**Μπιελάϊα-Τσερκὼφ** (Bielaia - Tserkov=λευκὸς ναὸς) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Κιέβου τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ρὸς καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Φαστὼφ-Ζναμένκα, 80 χλμ. ΒΔ. τοῦ Κιέβου. Εἶναι σπουδαῖον σιδηροβιομηχανικὸν καὶ γεωργικὸν κέντρον, συγκεντροῦσα μεγάλας ποσότητας τῶν ἐν τῇ περιοχῇ καλλιεργουμένων σιτηρῶν. Παρ' αὐτὴν ἐνίκησαν τῷ 1626 οἱ Πολωνοὶ τοὺς Τατάρους τοῦ Περεκόπ. Κάτ. 61.000. Χ. Δ.

**Μπιέλγκοραϊ**, ἢ ***Μπίλγκοραϊ*** (Bjelgoraj, ἢ Bilgorai) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν τῷ βοϊβοδάτῳ τοῦ *Λουμπλίνου*. Ἔχει ἐργοστάσια κοσκίνων. Κάτ. 7.000. Χ. Δ.

**Μπιέλγκοροντ** (Bielgorod=λευκὴ πόλις) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Κοὺρσκ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ντόνετς καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τῆς ἑνούσης τὸ Κοὺρσκ μετὰ τοῦ Χαρκόβου, 72 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς τελευταίας ταύτης πόλεως. Ἔχει ἐργοστάσια λίπους καὶ σάπωνος, βυρσοδεψεῖα, κεραμοποιεῖα καὶ περιφήμους ἐγκαταστάσεις κηροπλαστικῆς, διεξάγει δ' ἐμπόριον ἐρίων, δερμάτων, μέλιτος, λίπους, κηροῦ κλπ. Κάτ. 22.000. Χ. Δ.

**Μπιελὲρ** (Bieler), ***Σαμουήλ***. Ἑλβετὸς γεωπόνος καὶ κτηνίατρος (1827—1911). Ἐσπούδασεν εἰς Ἑλβετίαν καὶ Γαλλίαν, ἤσκησε κατόπιν τὸ ἐπάγγελμα τοῦ κτηνιάτρου καὶ ἐδίδαξεν ἱππολογίαν εἰς στρατιωτικὰς σχολάς. Ὅταν ἱδρύθη τὸ ἀγροτικὸν ἰνστιτοῦτον τοῦ Βῶ (1866), ἐκλήθη εἰς αὐτὸ ὡς καθηγητὴς τῆς ζωολογίας, ἐπίσης δὲ βραδύτερον εἰς τὴν βιομηχανικὴν σχολὴν τῆς Λωζάννης. Ὀργανωτὴς καὶ διευθυντὴς τοῦ ἀγροτικοῦ ἰνστιτούτου τῆς Λωζάννης ἀπὸ τοῦ 1887 μέχρι τοῦ 1903, ἵδρυσεν ἐν αὐτῷ γεωργικὸν μουσεῖον, λίαν ἀξιόλογον διὰ τὸν πλοῦτον τῶν συλλογῶν του. Τῷ 1887 ἤρχισεν ἐκδίδων τὰ «Ἀγροτικὰ χρονικὰ» διὰ δὲ τῶν ἐν τῷ περιοδικῷ τούτῳ ἄρθρων του, καθὼς καὶ διὰ τῶν μαθημάτων καὶ τῶν διαλέξεών του ἤσκησε σημαντικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς ἀναπτύξεως τῆς γεωργίας καὶ κτηνοτροφίας ἐν Ἑλβετίᾳ καὶ τῆς ἐκλαϊκεύσεως ἐν γένει τῶν γεωργικῶν καὶ κτηνοτροφικῶν γνώσεων. Τῷ 1898 ὑπῆρξεν ὁ διοργανωτὴς καὶ γενικὸς γραμματεὺς τοῦ ἐν Λωζάννῃ συνελθόντος διεθνοῦς ἀγροτικοῦ συνεδρίου. —Ω.

**Μπιέλεφ,** ἢ ***Μπιέλωφ*** (Bielev, ἢ Bielov) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Τούλα τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ὄκα. Ἔχει ἀκμαῖον ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ καννάβεως. Εἶναι παλαιοτάτη πόλις, πρωτεύουσα, ἀπὸ τοῦ 1468, πριγκιπάτου ὑποτελοῦς εἰς τὴν Λιθουανίαν. Ὑπὸ τῶν Ρώσων κατελήφθη τῷ 1494. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπιελίνα,** ἢ ***Μγιελίνα*** (Bïelina ἢ Bjelina) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας ἐν Βοσνίᾳ, κειμένη ἐντὸς τῆς εὐφόρου πεδιάδος Ὄρλοβο-Πόλιε καὶ χρησιμεύουσα ὡς κέντρον ἐμπορίου τῶν προϊόντων αὐτῆς. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπιελίνσκι**· βλ. *Μπελίνσκι*.

**Μπιέλιτς,** ἢ ***Μπιέλσκο*** (Bielitz, ἢ Bielsko) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας, ἐν τῇ παλαιᾷ αὐστριακῇ Σιλεσίᾳ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπιάλα, 96 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς Κρακοβίας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ὑφίσταται ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ ἔχει παλαιότατον φρούριον. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον βιομηχανίας ἐρίου, ἔχει δ' ἐπίσης ἀξιόλογον μηχανουργίαν καὶ χαρτοποιίαν· Ἐπὶ τῆς ἀπέναντι ὄχθης τοῦ ποταμοῦ κεῖται ἡ πόλις Μπιάλε τῆς Γαλικίας, μεθ' ἧς συνδέεται διὰ γεφυρῶν. Κάτ. 18.568. Χ. Δ.

**Μπιέλλα** (Biella) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Νοβάρας τοῦ Πεδεμοντίου, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τσέρβο. Κάτ. 24.701. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 58 χλμ. ΒΑ. τοῦ Τουρίνου καὶ εἶναι ἐκτισμένη ἀμφιθεατρικῶς ἐπὶ λόφου 412 μ. ὕψους, διαιρουμένη εἰς Ἄνω καὶ Κάτω πόλιν, συνδεόμενας δι' ὀδοντωτοῦ σιδηροδρόμου. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὴν βιομηχανίαν μαλλίνων ὑφασμάτων, δι' ἣν ὑπάρχουν 53 ἐργοστάσια ἀπασχολοῦντα 11.254 ἐργάτας. Ἔχει ἐργοστάσια πίλων καὶ σιδηροβιομηχανίαν. Ἐκ τῶν ἐκκλησιῶν της ὀνομαστὴ εἶναι ἡ μητρόπολις τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Παρ' αὐτὴν εὑρίσκεται ἡ μονὴ τῆς Παναγίας ντ' Ὀρόπα, εἰς ὕψος 1.250 μ., κέντρον προσκυνητῶν. Εἶναι πατρὶς τοῦ Σέλλα καὶ τοῦ Λαμάρμορα ὧν ἔχουν στηθῆ ἀνδριάντες. Μ. Δ. Β.

**Μπιέλοβαρ,** ἢ ***Μπέλοβαρ*** (Bjelovar, ἢ Belovar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοσλαβίας ἐν Κροατίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κρίτσενκι—Μπιροβίτικα. Ἔχει σηροτροφίαν καὶ ἀμπελουργίαν. Κάτ. 6.300, τὸ πλεῖστον Κροάται. Χ. Δ.

**Μπιελοβεσκάγια,** ἢ ***Μπιαλοβίσκα Πούτζεζα*** *[Γεωγρ.]*. Δασώδης περιοχὴ τῆς Πολωνίας ἐν τῷ παλαιῷ ρωσικῷ κυβερνείῳ Γκρόντνο, ἐκτεινομένη πρὸς Β. τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἀπὸ Μπρὲστ-Λιτόφσκ καὶ Βόλκοβισκ. Ἔχει ἔκτασιν 1.300 τετρ. χλμ., τὸ δ' ἐν αὐτῇ περιλαμβανόμενον δάσος, ἐκτάσεως 150 περίπου τετρ. χλμ., παρουσιάζει πλοῦτον ἀγρίων ζῴων, ἀγριοχοίρων, ἐλάφων κλπ. Ἐπίσης τρέφει βονάσους, εἰς οὐδὲν ἄλλο μέρος τῆς Εὐρώπης ἀπαντῶντας. Χ. Δ.

**Μπιελοζέρκα - Μπολσάϊα** (Biélozerka - Bolchaïa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Αἰκατερινοσλὰβ τῆς Οὐκρανίας. Ἔχει ἀμπελῶνας. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπιελοζὲρσκ** (Bielozersk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Νοβγκορὸντ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τῶν ὄχθῶν τῆς λίμνης Μπιέλο - Ὄζερο, ἀφετηρία ὁμωνύμου διώρυγος διευθυνομένης πρὸς τὴν λίμνην Ὀνέγαν. Ἔχει ἀκμαίαν ἁλιείαν ἐν τῇ λίμνῃ καὶ ὀρυχεῖα γαιανθράκων καὶ πυρίτου λίθου. Κάτ. 4.500. Χ. Δ.

**Μπιέλοϊε *Μόρε*** (Biéloié Moré) *[Γεωγρ.]*. Θάλασσα τοῦ Βορείου Παγωμένου ὠκεανοῦ (βλ. λ. *Λευκὴ* Θάλασσα).

**Μπιέλο-Ὄζερο** (ρωσιστ. Bieloe - Ozero=Λευκὴ λίμνη) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς εὐρωπαϊκῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Νοβγκορόντ. Ἔχει μῆκος 40 χλμ., πλάτος 32 καὶ καλύπτει ἐπιφάνειαν 1.125 τετρ χλμ., εἶναι δὲ κατ' ἐξοχὴν ἰχθυοτρόφος. Συγκοινωνεῖ μετὰ τῆς λίμνης Ὀνέγας καὶ τοῦ ποταμοῦ Ντβίνα διὰ διωρύγων, ἐκρέει δὲ πρὸς τὴν λεκάνην τοῦ Βόλγα διὰ τοῦ παραποτάμου αὐτοῦ Σέκσνα. Χ. Δ.

**Μπιελοπόλιε** (Bielopolie=Λευκὴ πεδιὰς) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Χαρκόβου τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τῶν ποταμῶν Βίρα καὶ Κρίγκα, 160 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Χαρκόβου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν καὶ κτηνῶν καὶ ἔχει βιομηχανίας οἰνοπνευματοποιίας, βυρσοδεψίας καὶ στεατοποιίας. Κάτ. 17.000. Χ. Δ.

**Μπιελορωσιΐα** (Bielorossiia) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν ἑπτὰ σοσιαλιστικῶν σοβιετικῶν δημοκρατιῶν (βλ. λ. *Λευκὴ* Ρωσία καὶ *Ρωσία*).

**Μπιελοσαράϊ** *[Γεωγρ.]*. Ἐπίσημος χερσόνησος τῆς Β. ἀκτῆς τῆς Ἀζοφικῆς (πλάτ. 46°52' Β., μῆκ. 37°18' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2234: Sea of Azov) μεταξὺ Μπερδιάνσκ καὶ Μαριοπόλ. Ἔχει ἰσχυρότατον φάρον, ἐκπομπὴν ἠχητικῶν σημάτων ὁμίχλης καὶ ναυαγοσωστικὸν σταθμόν. Σ. Ε. Λ.

**Μπιελοστόκ,** ἢ ***Μπιαλυστὸκ*** (Bielostok ἢ Bialystok) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Γκρόντνο, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπιάλυ, 72 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς πόλεως Γκρόντνο, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ἀκμαίαν βιομηχανίαν ἐρίου, λίνου, ζαχάρεως, πίλων κλπ. καὶ εἶναι σπουδαιότατον κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν καὶ ξυλείας. Ἀνήκουσα ἄλλοτε εἰς τὴν Πολωνίαν, περιῆλθε κατόπιν τοῦ διαμελισμοῦ αὐτῆς εἰς τὴν Πρωσσίαν (1795), εἶτα δὲ διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Τιλσὶτ εἰς τὴν Ρωσίαν. Τῷ 1906 ἔλαβον χώραν ἐν αὐτῇ μεγάλαι ἀντισημιτικαὶ ταραχαί, καθ' ἃς ἐσφάγησαν πολλοὶ ἐκ τῶν Ἰουδαίων κατοίκων της. Κάτ. (1921) 76.793, τὸ πλεῖστον Ἰουδαῖοι. Χ. Δ.

**Μπιελούχα** (Bielukha=Λευκὸν ὄρος) *[Γεωγρ.]*. Δύο κορυφαὶ ὀρέων τῆς Ἀσιατικῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Τόμσκ, αἵτινες ἀποτελοῦσι τὰ ὑψηλότερα σημεῖα τοῦ ὀρεινοῦ συστήματος τῶν Ἀλταΐων ὀρέων (4.540 μ.). Χ. Δ.

**Μπιελόφσκι, *Αὔγουστος***. Πολωνὸς ποιητὴς καὶ ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1806 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1876. Ἐσπούδασεν ἐν Στανισλάβωφ καὶ Λεμβέργῃ, ὅπου καὶ ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς. Ὡς ποιητὴς ἐγένετο γνωστὸς διὰ μεταφράσεως δημωδῶν σλαβικῶν ποιημάτων, ποιημάτων τοῦ Σίλλερ καὶ διὰ τοῦ πρωτοτύπου ποιήματός του εἰς Ἑρρῖκον τὸν Εὐσεβῆ. Ἐπὶ μακρὸν διηύθυνε τὸ «Δελτίον τοῦ Ἰνστιτούτου Ὀσσολίνσκι». Κυρίως ὅμως προσέφερεν ὑπηρεσίας ὡς ἱστορικός. Τὸ πρῶτον σπουδαῖον ἔργον του ὑπῆρξεν ἡ «Κριτικὴ εἰσαγωγὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Πολωνίας» (1850), εἰς τὸ ὁποῖον θεωρεῖ τοὺς ἀρχαίους λαοὺς τοῦ Δουνάβεως Τριβαλλούς, Δάκας κλπ., ὡς προγόνους τῶν νεωτέρων Πολωνῶν. Ἀλλ' ἡ θεωρία αὕτη, καίτοι προσπαθεῖ νὰ τὴν στηρίξῃ ἐπὶ κειμένων, δὲν εἶναι ἢ ἁπλῆ ὑπόθεσις, ἀποκρουσθεῖσα ὑπ' ἄλλων Πολωνῶν. Τῷ 1853 ἐδημοσίευσεν ἕτερον ἔργον ἀναφερόμενον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Πολωνίας ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἓν βλέμμα εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Πολωνίας». Γενόμενος διευθυντὴς τοῦ Ἰνστιτούτου Ὀσσολίνσκι, ἐπεμελήθη τῆς δευτέρας ἐκδόσεως τοῦ μεγάλου «Πολωνικοῦ λεξικοῦ» τοῦ Λίντε, τοῦ ὁποίου συνέγραψε καὶ τὴν εἰσαγωγήν. Ἀλλὰ τὸ κεφαλαιῶδες ἔργον του εἶναι ἡ δημοσίευσις τῶν «Monumenta Poloniae historica». Ἡ συλλογὴ αὕτη θὰ περιελάμβανεν ὅλα τὰ ἀφορῶντα τὴν ἱστορίαν τῆς Πολωνίας χρονικὰ εἰς τὸ πρωτότυπον μετὰ μεταφράσεως, ὑπομνημάτων κλπ. Ὁ πρῶτος τόμος ἐξεδόθη τῷ 1864. Ὁ θάνατος διέκοψε τὸ ἔργον τοῦ Μπιελόφσκι, καθ' ἣν στιγμὴν ἐπρόκειτο νὰ δώσῃ

Digitized by Google

εἰς τὴν δημοσιότητα τὸν τρίτον τόμον. Ἡ συλλογὴ ἐσυνεχίσθη, μετὰ τὸν θάνατόν του, ὑπὸ τῆς πολωνικῆς Ἀκαδημίας τῆς Κρακιβίας. Τὰ ποιήματα τοῦ Μπιελόφσκι ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὸν «θησαυρὸν» τῆς πολωνικῆς ποιήσεως, ὅστις ἐξεδόθη ὑπὸ τοῦ Βόλφ ἐν Πετρουπόλει. —Ω.

**Μπιέλτσι** (Bieltsi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Βεσσαραβίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ παραποτάμου τοῦ Δνειστέρου Ρόϋτ, 136 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Κίσχινεφ. Διεξάγει ἐμπόριον ἵππων καὶ κτηνῶν καὶ ἔχει ἐργοστάσια σάπωνος, πλίνθων, στέατος, ἐλαίου κλπ. Ἡ Μπιέλτσι ἀνῆκεν ἄλλοτε εἰς τὴν ἡγεμονίαν τῆς Μολδαυΐας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1812 περιῆλθεν εἰς τὴν Ρωσίαν, ὑπὸ τὴν ὁποίαν παρέμεινε μέχρι τοῦ 1919, ὁπότε ἐγένετο ρουμανική. Κάτ. 20.000. Χ. Δ.

**Μπιὲν** (γαλλ. Bienne, ἰταλ. Biel, γερμ. Biel προφερ. *Μπίλ*) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης, ἐπὶ τῆς Β. ὄχθης τῆς ὁμωνύμου λίμνης παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Σούζ, εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Ἰούρα. Κάτ. 34.414. Ἔχει ἐνδιαφέροντα παλαιὰ κτήρια καὶ μουσεῖον καὶ εἶναι ὀνομαστὸν κέντρον βιομηχανίας ὡρολογίων, μηχανῶν, δερμάτων καὶ ὑφασμάτων. —2) Λίμνη τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης, κειμένη κατὰ μῆκος τῶν Ν. ὑπωρειῶν τοῦ Ἰούρα, πρὸς τὰ ΒΑ. τῆς λίμνης Νευσατέλ, μετὰ τῆς ὁποίας συγκοινωνεῖ διὰ τοῦ ποταμοῦ Τιέλ ἢ Ζίλ. Ἔχει μῆκος 16 χλμ., πλάτος 4 χλμ., περίμετρον 40 χλμ. καὶ ἐπιφάνειαν 40 τ. χλμ. Ἐν αὐτῇ ὑπάρχει ἡ νησὶς τοῦ Ἁγίου Πέτρου, ὀνομαστὴ διὰ τὴν ἐπ' αὐτῆς παραμονὴν τοῦ Ρουσσώ, μετὰ τὴν βιαίαν ἀναχώρησίν του ἐκ Μοτιὲ-Τραβέρ. Ἡ νησὶς αὕτη συνεδέθη νῦν μὲ τὴν ξηρὰν καὶ μετεβλήθη τῷ 1912 εἰς πρότυπον κονικλοτροφεῖον. Τὸ ὕδωρ τῆς λίμνης ὑφίσταται αἰσθητὰς αὐξομειώσεις, διὰ τεχνητῶν δὲ ἔργων ἀρδεύσεως τὸ ΝΑ. αὐτῆς τμῆμα ἀπεξηράνθη εἰς πλάτος 2 χλμ., ἀποκαλύψαν πολυαρίθμους ἀρχαίας λιμναίας κατοικίας ἐκτισμένας ἐπὶ πασσάλων. Μ. Δ. Β.

**Μπιεναὶζ** (Bienaise), *Ἰωάννης*. Γάλλος χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1601 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1681. Ἐφήρμοσε τὴν ραφὴν τῶν τενόντων καὶ ἐφεῦρε μαχαίριον μετὰ καλυπτομένης ἀκμῆς, ὅπερ ἐχρησίμευσεν ἀργότερον ὡς βάσις διὰ τὸν λιθοτόμον τοῦ Come. Ἵδρυσεν ἰδίαις δαπάναις εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ἁγίου Κοσμᾶ ἕδραν ἀνατομικῆς καὶ χειρουργικῆς. Ἔγραψε σύγγραμμα ἐγχειρητικῆς μεθόδου ὑπὸ τὸν τίτλον «Les opérations de la chirurgie par une méthode courte et facile» (1688—1693). Ο. Ρ.

**Μπιενβενὺ** (Bienvenu), ***Λέων-Κάρολος***. Γάλλος λόγιος καὶ δημοσιογράφος (1835—1911). Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Touchatout* ὡς συνεργάτης τῆς ἑβδομαδιαίας σατιρικῆς καὶ οἰκονομικῆς ἐφημερίδος «Tintamarre», τῆς ὁποίας ἐγένετο μετ' οὐ πολὺ διευθυντὴς καὶ βραδύτερον ἰδιοκτήτης (1873). Ἐδημοσίευσεν ἐξ ἄλλου πλῆθυν εὐθυμογραφημάτων του εἰς περιοδικὰ καὶ καθημερινὰς ἐφημερίδας. Ἐπὶ πολλὰ ἔτη συνέτασσε τὸ «Trombinoscope», συλλογὴν βιογραφιῶν σατιρικοῦ τύπου, ἐξέδωκε δὲ καί, ὑπὸ τὸ αὐτὸ πνεῦμα συντεταγμένας, ἱστορικὰς μονογραφίας, «Ἀναμνήσεις ἑνὸς ἀρχιαστυνόμου» (1885) Χ. Ἀ. —Ω.

**Μπιὲν-Χόα** (Bien-Hoa) *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τῆς γαλλικῆς Ἰνδοκίνας ἐν Κοχιγκίνᾳ, ἔχουσα πληθυσμὸν 131.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν, ἀπέχουσαν 30 χλμ. ἀπὸ τῆς Σαϊγκόν. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς καλύπτεται κατὰ τὸ Ν. τμῆμα ὑπὸ λοφοσειρῶν (200—800 μ. ὕψους), ἀποτελουσῶν προέκτασιν τῶν ὀρέων τοῦ Ἀννάμ, κατὰ δὲ τὸ Β. καὶ Δ. εἶναι πεδινόν. Ἔχει καλλιεργείας ὀρύζης, ζαχαροκαλάμου κλπ., καλύπτεται δὲ ὑπὸ πολλῶν δασῶν καὶ περικλείει κοιτάσματα ἀργιλλούχα καὶ σιδηρούχα. Διασχίζεται ὑπὸ τοῦ σιδηροδρόμου Σαϊγκὸν - Νὰ - Τράνγκ (Ἀννάμ). Ἡ πόλις ἔχει ἀεροδρόμιον καὶ ἐπαγγελματικὴν σχολήν. εἶναι δὲ σπουδαῖον ἐμπορικὸν κέντρον. Χ. Δ.

**Μπιερκάντερ** (Bierkander), ***Κλαύδιος***. Σουηδὸς βοτανικὸς καὶ ἐντομολόγος (1735—1795). Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Στοκχόλμης. Ἔγραψε: «Περὶ τῆς διαπνοῆς τῶν φυτῶν» (1773), «Περὶ τῶν ἐκ τῶν φυτῶν ἐγκαυμάτων» (1775), «Περὶ τῆς βλαστήσεως» (1782) κτλ.

**Μπιέρκε** (Björkö) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον παράλιον τῆς Ν. Φιλλανδίας, κείμενον 75 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Κρονστάνδης, γνωστὸν ἐκ τῆς ἐν αὐτῷ ὑπογραφείσης τῷ 1905 (23 — 24 Ἰουλίου) μυστικῆς συνθήκης μεταξὺ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Γουλιέλμου Β' καὶ τοῦ τσάρου τῆς Ρωσίας Νικολάου Β', συμφώνως πρὸς τὴν ὁποίαν ἡ Ρωσία ὑπεχρεοῦτο νὰ βοηθήσῃ τὴν Γερμανίαν ἐν περιπτώσει πολέμου πρὸς τὰς ἄλλας μεγάλας δυνάμεις. Ἡ συνθήκη αὕτη, συνομολογηθεῖσα μεταξὺ τῶν δύο ἡγεμόνων ἐν ἀγνοίᾳ τῶν ἁρμοδίων ὑπουργῶν καὶ διπλωματῶν τῶν δύο χωρῶν, οὐδέποτε ἐθεωρήθη ἰσχύουσα, ὡς ἀντικειμένη εἰς τὰς ὑπὸ τῆς Ρωσίας ἀνειλημμένας ἤδη δι' ἀμυντικῆς συνθήκης ὑποχρεώσεις ἔναντι τῆς Γαλλίας. Περὶ τῆς ἀκυρότητος τῆς συνθήκης ταύτης συνεφώνησεν ἐκτὸς τῆς ρωσικῆς καὶ ἡ γερμανικὴ διπλωματία. Χ. Δ.

**Μπιέρκνες** (Bjerknes), ***Γουλιέλμος-Φρίμαν***. Νορβηγὸς φυσικὸς καὶ μαθηματικός, υἱὸς τοῦ *Καρόλου Ἀντωνίου Μπιέρκνες*, γεννηθεὶς ἐν Ὄσλο τῷ 1862. Ἀπὸ τοῦ 1895 εἶναι καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Στοκχόλμης. Εἶναι γνωστὸς διὰ τὰς ἐφαρμογὰς τῆς ὑδροδυναμικῆς εἰς τὰς κινήσεις τῆς ἀτμοσφαίρας καὶ τῶν ὠκεανῶν καὶ γενικῶς διὰ τὰς θεωρητικὰς ἐρεύνας τῆς νεωτέρας μετεωρολογίας. Ἠσχολήθη μὲ τὴν πειραματικὴν ἐπαλήθευσιν τῶν θεωρητικῶν δεδομένων τοῦ πατρός του. Ἀπὸ τοῦ 1890 ἤρξατο τῆς μελέτης τῶν ἠλεκτρικῶν κυμάτων, διετύπωσε δὲ πλήρη θεωρίαν τοῦ φαινομένου τῆς ἠλεκτρικῆς συνηχήσεως, ἥτις συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς ἀσυρμάτου τηλεγραφίας. Τελευταῖον ἠσχολήθη μὲ τὰ ὑδροδυναμικὰ φαινόμενα καὶ ἰδιαιτέρως εἰς τὰ προβλήματα τῆς μετεωρολογίας, τυχὼν πρὸς τοῦτο τῆς ὑποστηρίξεως τοῦ «Carnegie Institute» τῆς Οὐασιγκῶνος, ὅπερ συνέβαλε καὶ εἰς τὴν ἔκδοσιν τοῦ γνωστοῦ μνημειώδους ἔργου του «Dynamic Meteorology and Hydrography» (δύο τόμ. 1910—1911), ὁ πρῶτος τόμος τοῦ ὁποίου στηρίζεται καὶ ἐπὶ τῆς συνεργασίας τοῦ W. Sandström καὶ ὁ δεύτερος ἐπὶ τῆς τῶν T. Hesselberg καὶ O. Dewik. Ἡ ἐργασία του «Ἐπὶ τῆς δυναμικῆς ἀρχῆς τῶν κινήσεων τῶν κυκλώνων ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ» (Μονακὸ 1899) καὶ ἡ ὑποστήριξις ὑπ' αὐτοῦ τῆς σημασίας τῶν ἰσοστερεῶν ἐπιφανειῶν τῆς αὐτῆς πυκνότητος, ἤνοιξε νέας λεωφόρους εἰς τὰς κατευθύνσεις τῶν μελετῶν ἐπὶ τῶν εναερίων καὶ ὠκεανίων ρευμάτων. Τῷ 1917 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φυσικῆς εἰς τὸ γεωφυσικὸν ἰνστιτοῦτον τοῦ Μπέργκεν. Μεταξὺ τῶν πολλῶν δημοσιευμάτων του ἀναφέρομεν τὰ ἑπόμενα: «L' étude de la haute atmosphère an point de vue théorique», «Die atmosphäre als zirkularer Wirbel-Wellentheorie der Zyklonen und Antizyklonen» (1922), «On quasistatic wave motion in barotropic fluid strata» (1923), «Du problème des cyclones» (1924). Θ. Θ. Φ.

— **Μπιέρκνες** (Bjerknes), *Ἰάκωβος*. Σύγχρονος Νορβηγὸς μετεωρολόγος, υἱὸς τοῦ *Γουλιέλμου Μπιέρκνες*, γεννηθεὶς ἐν Στοκχόλμῃ τῷ 1897. Εἶναι διευθυντὴς τῆς ὑπηρεσίας προγνώσεως εἰς τὸ Bergen τῆς Νορβηγίας. Κατ' ἀρχὰς συνειργάσθη μετὰ τοῦ πατρός του καὶ ἤδη ἐξακολουθεῖ τὰς θεωρητικὰς καὶ πρακτικὰς ἐρεύνας αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεωρίας ἥτις φέρει τὸ ὄνομά του ἐν τῇ μετεωρολογίᾳ τοῦ πολικοῦ μετώπου καὶ τῶν κυκλώνων. Ἔλαβε μέρος εἰς ἐξερευνητικὰς ἀποστολὰς τοῦ πόλου, ἔκαμε παρατηρήσεις εἰς τὸν κόλπον τοῦ Svalbard (1925) καὶ ἐξετέλεσε προγνώσεις καιροῦ διὰ τὸ ταξίδιον τοῦ Ἀμοῦνδσεν εἰς τὸν πόλον δι' ἀεροπλάνου. Ἔχει δημοσιεύσει πλείστας ὅσας ἐργασίας εἰς διάφορα περιοδικά, ἐκ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Sur le rôle des cyclones et des anticyclones dans la circulation générale de l'atmosphère» (1920), «Diagnostic and prognostic application of mountain observatories» (1924), «Meteorconditions for the formation of rain» τῇ συνεργασίᾳ τοῦ H. Solberg (1921), «Life history of cyclones and the polar front theory» κλπ. Θ. Θ. Φ.

— **Μπιέρκνες** (Bjerknes), ***Κάρολος-Ἀντώνιος***. Νορβηγὸς μαθηματικός, γεννηθεὶς ἐν Χριστιανίᾳ τῷ 1825 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1903. Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν ὡς μηχανικὸς τῶν μεταλλείων ἐν Kronsberg καὶ ἀπεστάλη τῷ 1855 εἰς Παρισίους ὡς μέλος εἰδικῆς ἀποστολῆς. Τῷ 1863 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Χριστιανίας καὶ εἶτα τῆς σχολῆς μηχανικῶν. Τῷ 1881 ἐτιμήθη ἐν Παρισίοις διὰ διπλώματος διὰ τὰς ἐργασίας του ἐπὶ τῆς ὑδροδυναμικῆς, ἔγραψε κάλλιστι τὴν περίφημον ἐργασίαν αὐτοῦ «Remarques historiques sur la théorie d'un ou de plusieurs corps de formes constantes ou variables dans un fluide incompressible» (1875), χάρις εἰς τὴν ὁποίαν ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Phénomènes hydrodynamiqes, inversement analogues de l'électricité et du magnétisme» (1882), «Niels Henrik Abel, sa vie et son action scientifique» (1885). Αἱ μελέται του αὗται, ἐξαιρετικῆς πρωτοτυπίας, τὸν ἀνέδειξαν καὶ τὸν κατέταξαν μεταξὺ τῶν μεγαλυτέρων ἐπιστημόνων τῆς ἐποχῆς του. Τὸ ὑπόμνημά του εἰς τὰ «Acta Mathematica» ὑπὸ τὸν τίτλον «Recherches hydrodynamiques» εἶναι ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων ἔργων αὐτοῦ. Θ. Θ. Φ.

**Μπιερνάτσκι** (Biernatzki), ***Ἰωάννης - Χριστόφορος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1795-1840). Ἐσπούδασεν ἐν Ἰένᾳ καὶ Κιέλῳ θεολογίαν καὶ ἀνατολικὰς γλώσσας καὶ ἐδημοσίευσε: «Ποιήματα» (2α ἐκδ. 1852) καὶ τὰ διηγήματα: «Ἡ Χάλλιγκ ἢ οἱ ναυαγοὶ ἐπὶ τῆς νήσου τῆς Βορείου θαλάσσης» (1836), «Τὸ μελαχροινὸν παιδίον» (1839). Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν εἰς 8 τόμους (2α ἐκδ. 1850). Γ. Ε. Κ.

**Μπιέρνεμποργκ**, ἡ ***Πόρι*** (Björneborg, φινλανδ. Pori) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Φινλανδίας, κειμένη ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Βοθνίας παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Κοῦμο, 136 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Τάμμερφορς. Ἱδρυθεῖσα τῷ 1558, ἀποτελεῖ σπουδαιότατον κέντρον ἐμπορίου ξυλείας, σολωμῶν, σιδήρου, θρόμης κλπ. Ὁ λιμὴν αὐτῆς εἶναι ἀκατάλληλος διὰ μεγάλα πλοῖα, τὰ ὁποῖα ἀγκυροβολοῦσιν εἰς τὸν λιμένα Ρέφσο. Κάτ. 17.570. Χ. Δ.

**Μπιέρνσον** (Bjoernson), ***Μπιέρνστιερνε-Μαρτίνιος***. Μέγας Νορβηγὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1832 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1910. Ἤρχισε νὰ γράφῃ ὅταν ἀκόμη ἦτο φοιτητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Χριστιανίας, κατόπιν δὲ ὑπῆρξε διαδοχικῶς πολιτικὸς ἢ φιλολογικὸς συνεργάτης ἢ συντάκτης ἢ διευθυντὴς πεντηκοντάδος νορβηγικῶν, δανικῶν καὶ ἀμερικανικῶν περιοδικῶν. Τὸ διήγημά του «Synnoeve Solbakken» (μεταφρασθὲν εἰς πλείστας γλώσσας καὶ εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἡ κόρη τοῦ Βουνοῦ»), τὸ ὁποῖον ἐδημοσιεύθη μετ' ἄλλων εἰς τὴν «Illustreret Folkeblad» τῆς Χριστιανίας καὶ ἐκδοθὲν εἰς ἴδιον τόμον τῷ 1856 ἐστερέωσε τὴν φήμην του ὡς ἱκανοῦ ζωγράφου τῆς ἀγρίας φύσεως καὶ τῶν σκληρῶν ἠθῶν τοῦ νορβηγικοῦ λαοῦ. Ὁμοίαν ἐπιτυχίαν ἔσχον καὶ τὰ ἄλλα του διηγήματα, τὰ ἐμπνευσμένα ἐκ τῆς ἀγροτικῆς ζωῆς τῆς Νορβηγίας: «Ἄρνη» (1858), «Ἕνας χαρούμενος σύντροφος» (1860), «Τὸ γαμήλιον ἐμβατήριον» (1873) κλπ., τὰ ὁποῖα ἐξεδόθησαν μετὰ τῆς «Synnoeve Solbakken» εἰς τὴν συλλογήν: «Fortoellinger» (1872, τόμ. 2). Ἄλλα του ἔργα εἶναι: «Magnhild» (1877), «Ὁ καπετάνιος Μανσάνα» (1879), τὸ μυθιστόρημα «Ἡ πόλις καὶ ὁ λιμὴν ἔχουν σημαιοστολισθῆ» (1884), ἡ ποιητικὴ συλλογὴ «Digte og Sange» (1870), τὸ ἔπος: «Arnljot Gelline» (1870), καὶ τὸ περίφημον ποίημα: «Ναί, ἀγαποῦμε αὐτὴν τὴν χώραν», τὸ ὁποῖον ἔγινεν ὁ ἐθνικὸς ὕμνος τῆς Νορβηγίας.

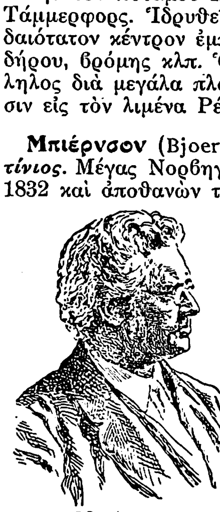

Μπιέρνσον.

Τῷ 1858 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὸ ἱστορικὸν δρᾶμα «Μεταξὺ τῶν μαχῶν» καὶ ἐπεφορτίσθη μὲ τὴν καλλιτεχνικὴν διεύθυνσιν τοῦ θεάτρου τοῦ Μπέργκεν (1858—1859), κατόπιν τοῦ τῆς Χριστιανίας (1865—1867) καὶ τέλος ἵδρυσε μετὰ τῶν ἠθοποιῶν τοῦ τελευταίου τούτου τὸ θέατρον τῆς Μαϊλλεργκαντε. Ἡ σκηνικὴ πεῖρα, τὴν ὁποίαν ἀπέκτησεν ἐν τῇ ἐπιτελέσει τῶν καθηκόντων του τούτων, ἀποκαλύπτεται εἰς τὰ πολυάριθμα δράματά του: «Χούλδα ἡ χωλή» (1858), «Ὁ βασιλεὺς Σβέρρε» (1861), ἡ μεγαλειώδης τριλογία του «Σιγκοὺρ Σλέμπε» (1862), «Ἡ Μαρία Στοὺαρτ ἐν Σκωτίᾳ» (1864), «Οἱ νιόπαντροι» (1865), «Σιγκοὺρ ὁ Ἱεροσολυμίτης» (1872), «Ὁ συντάκτης» (1874), «Μία χρεωκοπία» (1875), «Ὁ βασιλεὺς» (1877), «Λεονάρντα» (1879), «Τὸ νέον σύστημα» (1879), «Ἕνα γάντι» (1883) κλπ. Ἡ φιλολογικὴ δρᾶσις δὲν ἠμπόδισε τὸν Μπιέρνσον ν' ἀναμιχθῇ εἰς τοὺς πολιτικούς, θρησκευτικοὺς καὶ ἐθνικοὺς ἀγῶνας. Καίτοι ἐλάμβανεν ἐπιχορήγησιν παρὰ τοῦ κράτους, ἀπεδύθη εἰς ἔντονον ἀντιπολιτευτικὸν καὶ ἀντικρατικὸν ἀγῶνα διὰ τῶν ἔργων του: «Ὁ συνταγματικὸς ἀγὼν ἐν Νορβηγίᾳ» (1881), «Ὁ φόβος τῆς πλειοψηφίας» (1881), «Ἡ κυριαρχία τοῦ λαοῦ» (1882), δι' ἄρθρων εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ διὰ διαλέξεων ἐν Νορβηγίᾳ καὶ Ἡν. Πολιτείαις. Ἀλλ' αἱ πολιτικαί του ἐπιδιώξεις καὶ αἱ ἐθνικαί του ἀντιλήψεις δὲν ἔσχον καμμίαν συνέπειαν· ἦσαν ἐμπνεύσεις τῆς στιγμῆς καὶ διὰ τοῦτο πλήρεις ἀντιφάσεων. Περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου του ἐκηρύχθη ἀμείλικτος πολέμιος τοῦ Χριστιανισμοῦ. —Ω.

**Μπιερνστιέρνα** (Bjoeɼnstjerna) ***Φρειδερῖκος-Φερδινάνδος***, *κόμις* —. Σουηδὸς πολιτικός, στρατιωτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1779—1847). Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν πόλεμον τῆς Φιλλανδίας τῷ 1808 καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων ὑποκινητῶν τῆς επαναστάσεως, διὰ τῆς ὁποίας ἀνετράπη ἐκ τοῦ θρόνου ἡ δυναστεία τῶν Βάζα. Τῷ 1809 τῷ ἀνετέθη ἡ διεξαγωγὴ διαπραγματεύσεων μετὰ τοῦ Ναπολέοντος, κατὰ δὲ τὸν πόλεμον ἐναντίον αὐτοῦ ὑπηρέτησεν εἰς τὸν συμμαχικὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Μετὰ τὴν εἴσοδον τῶν συμμάχων εἰς Παρισίους ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Σουηδίαν καὶ συνεκάλεσε τὴν συνέλευσιν, ἥτις ἐψήφισε τὴν ἕνωσιν τῆς Σουηδίας καὶ Νορβηγίας ὑπὸ τὸ σκῆπτρον τοῦ πρίγκιπος Χριστιανοῦ Φρειδερίκου. Διετέλεσε κατόπιν πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ, καὶ ἀπέκτησε μεγάλην φήμην ὡς συγγραφεύς, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Φορολογικαὶ ἀρχαί» (1832), «Ἀρχαὶ περὶ τοῦ σχηματισμοῦ καὶ τῆς ἁπλοποιήσεως τῆς ἐθνικῆς ἀντιπροσωπείας», «Ἡ βρεττανικὴ αὐτοκρατορία τῶν Ἰνδιῶν» (1839), «Βιολογία, φιλοσοφία, καὶ κοσμολογία παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς» (1843), «Σημειώματα ἐπὶ τῶν ναπολεοντείων πολέμων» κτλ. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπιέσετσκ** (Bjeschezk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Τβὲρ τῆς κεντρικῆς Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μολόγκα, παραποτάμου τοῦ Βόλγα, καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ρύμπινσκ-Μπολογκόγιε. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν, καννάβεως, λίνου κλπ. καὶ ἔχει μεγάλας βιομηχανίας γεωργικῶν ἐργαλείων καὶ ἀξιόλογον ποτάμιον λιμένα. Κάτ. 12.000.

**Μπιεστὲρ** (Biester), ***Ἐρνέστος***. Πορτογάλος δραματικὸς συγγραφεὺς (1829—1880). Θεωρεῖται ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων δραματουργῶν τῆς Πορτογαλίας, γράψας ἔργα, ἅτινα ἐσημείωσαν μεγίστην ἐπιτυχίαν, ἰδίως χάρις εἰς τὰ συγκινητικὰ θέματα τὰ ὁποῖα ἐπραγματεύετο. Διεκρίθη καὶ ὡς δημοσιογράφος καὶ ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς «Συγχρόνου ἐπιθεωρήσεως τῆς Πορτογαλίας καὶ τῆς Βραζιλίας». Μετέφρασεν ἐπίσης πολλὰ γαλλικὰ ἔργα καὶ ὑπολογίζεται ὅτι ἔγραψεν ὑπὲρ τὰ 90 θεατρικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ὁ Ραφαήλ», «Ἡ εὐγένεια τῆς ψυχῆς», «Ὁ εὐπατρίδης τοῦ ΙΘ' αἰῶνος», «Τύχη καὶ ἐργασία», «Οἱ σοβαροὶ ἄνθρωποι», «Οἱ δυσφημισταί», «Δρᾶμα ἐπὶ τῆς θαλάσσης», «Ὁ εὐσυνείδητος ἄνθρωπος» κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπιζακκουΐνο** (Bisacquino) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Παλέρμου τῆς Σικελίας. Κάτ. 10.500. Εἶναι γεωργικὸν κέντρον καὶ ἔχει λατομεῖα ἰάσπιδος καὶ ἀχάτου. Πατρὶς τοῦ ὀνομαστοῦ θεολόγου Πέτρου Φοντανέλλα. Μ. Δ. Β.

**Μπιζαλναγκὰρ** (Bisalnagar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς ἐπαρχίας Γκουϊκοβὰρ τῶν δυτικῶν Ἰνδιῶν. Εἶναι σημαντικὸν ἐμπορικὸν κέντρον. Κάτ. 18.000. Π. Γ. Λ.

**Μπιζάνι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἠπείρου τῆς ἐπαρχίας Ἰωαννίνων τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, ἕδρα ἰδίας κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 137. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κολονιάτες*. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]*. Ὁ λόφος *Μπιζάνι*, ὑπερκείμενος τοῦ ὁμωνύμου χωρίου, κατέστη περιώνυμος ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου 1912—1913. Εὑρισκόμενος παρὰ τὴν ἁμαξιτὸν ὁδὸν πρὸς τὰ Ἰωάννινα καὶ ὢν ὠχυρωμένος σοβαρῶς ὑπὸ μὲν τοῦ Γερμανοῦ στρατηγοῦ Γκόλτς κατὰ τὴν ἐποχὴν 1910—1912, ὑπὸ δὲ τοῦ Τούρκου συνταγματάρχου Βεχὴπ διαρκοῦντος τοῦ πολέμου, προεκάλυπτε τὴν πόλιν ἀπὸ πάσης ἐκ νότου προχωρήσεως καὶ καθίστατο ἐπὶ μῆνας ἀνυπέρβλητον ἐμπόδιον εἰς πᾶσαν ἀπόπειραν προελάσεως τῶν Ἑλλήνων, καθ' ὅσον ἐπεζητεῖτο πάντοτε ἡ κατὰ μέτωπον ἐκβίασις τῆς ὀχυρᾶς ταύτης περιοχῆς. Μόνον δὲ ὅτε ἐφηρμόσθη, τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1913, τὸ σχέδιον τοῦ εὐρέος ὑπερκερωτικοῦ κατὰ τῶν Ἰωαννίνων ἑλιγμοῦ διὰ τοῦ ἀριστεροῦ (ἐκ δυσμῶν) ἐπετεύχθη ἡ ἅλωσις τῶν Ἰωαννίνων, καθ' ὅσον διὰ τοῦ ἑλιγμοῦ τούτου δὲν ἐπεζητήθη μετωπικὴ κατὰ τοῦ Μπιζανίου ἐκβίασις, ἀλλὰ παράκαμψις αὐτοῦ (βλ ἐν λ. *Ἰωάννινα* τὸ σχ. 1, ἐν ᾧ ἐμφαίνεται ἡ ὀχύρωσις τοῦ Μπιζανίου). Ν. Θ. Κ.

**Μπιζαποὺρ** (Bijapur) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μπιτζαπούρ*).

**Μπίζε** (Biese), ***Ἀλφρέδος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ ἱστορικὸς τῆς λογοτεχνίας, γεννηθεὶς τῷ 1856. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ ἐξέλιξις τῆς φυσιοκρατικῆς ἀντιλήψεως παρ' Ἕλλησι καὶ Ρωμαίοις» (1828—1884, εἰς 2 τόμ.), «Ἡ ἐξέλιξις τῆς φυσιοκρατικῆς ἀντιλήψεως κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ τοὺς νεωτέρους χρόνους» (1888), «Ἡ φιλοσοφία τῶν μεταφορῶν» (1893), «Παιδαγωγικὴ καὶ ποίησις» (1900—1913, εἰς 3 τ.) καὶ «Ἱστορία τῆς γερμανικῆς λογοτεχνίας» (1907—1910, εἰς 3 τ.). Α. Δ.

**μπιζάρω** (ἐκ τοῦ *μπίς*)· ἀνακαλῶ ἐπὶ σκηνῆς διὰ τῆς παρακελευστικῆς ἐπιφωνήσεως *μπίς!* (βλ. λ.) τοὺς ἠθοποιούς, ὅπως ἐπαναλάβουν τμῆμά τι ἐπιτυχὲς ἐκ τοῦ παιζομένου ἔργου. (Χρησιμοποιεῖται οὐ μόνον διὰ μίαν, ἀλλὰ καὶ διὰ περισσοτέρας ἐπαναλήψεις: «τὸν ἐμπίζαραν πέντε φορές».)

**Μπιζὲ** (Bizet), ***Ἀλέξανδρος-Καῖσαρ-Λεοπόλδος***, ἐπιλεγόμενος ***Γεώργιος***. Διάσημος Γάλλος συνθέτης (1838—1875). Ἐγγραφεὶς εἰς ἡλικίαν ἐννέα ἐτῶν εἰς τὸ Ὠδεῖον τῶν Παρισίων, διεκρίθη ταχέως καὶ ἐν τέλει ἐπέτυχε τὸ πρῶτον μέγα βραβεῖον τῆς Ρώμης εἰς τὴν σύνθεσιν (1857). Αἱ πρῶται συνθέσεις τοῦ Μπιζὲ ἦσαν τὸ μονόπρακτον κωμικὸν μελόδραμα «Δὸν Προκόπιο», δύο μέρη συμφωνίας, ἡ εἰσαγωγὴ «Τὸ κυνήγι τοῦ Ὀσσιανοῦ» καὶ τὸ κωμικὸν μελόδραμα «Ἡ γκούζλα τοῦ ἐμίρου». Εἰκοσιπενταετὴς ἀνεβίβασεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ «Λυρικοῦ Θεάτρου» τὸ τρίπρακτον μελόδραμα «Ἁλιεῖς τῶν μαργαριτῶν», οὗτινος ὡρισμέναι σελίδες, ὡς ἡ δυῳδία μεταξὺ Ζουργκὰ καὶ Ναδίρ, ἡ ἄρια τοῦ Ναδίρ, ἡ σερενάτα καὶ ἡ ἄρια τῆς Λεϊλὰ ἔχουν παραμείνει ὀνομασταί. Τὰ ἐπακολουθήσαντα μελοδράματα «Ἡ ὡραία κόρη τοῦ Πέρθ» (1867) καὶ «Ντζαμιλὲ» (1872) ἔσχον μετρίαν ἐπιτυχίαν. Παρὰ τὰς ἀποτυχίας ταύτας, ἔγραψε κατόπιν τὴν σκηνικὴν μουσικὴν τοῦ δράματος τοῦ Ντωντὲ «Ἀρλεζιάνα», ἥτις παραμένει τὸ τελειότερον γαλλικὸν ὑπόδειγμα τῶν τοιούτου εἴδους μουσικο-δραματικῶν θεατρικῶν ἔργων. Τὴν 3 Μαρτίου 1875 τὸ «Κωμικὸν Μελόδραμα» τῶν Παρισίων ἀνεβίβασε τὸ τελευταῖον μελόδραμα τοῦ Μπιζέ, τὴν «Κάρμεν» (βλ. λ.), ὅπερ, κατὰ τὸν Νίτσε, εἶναι ἔργον τέλειον, λεπτόν, ὠμόν, τραγικόν, εὔχαρι, φλογερόν, μεσογειακόν. Ἄλλα ἔργα τοῦ Μπιζὲ εἶναι ἡ ὀπερέττα «Ὁ ἰατρὸς Μιράκλ», ἡ δραματικὴ εἰσαγωγὴ «Πατρίς», ἣν ἐνεπνεύσθη ἐκ τῶν συμφορῶν τοῦ 1870, ἡ συμφωνικὴ ᾠδὴ «Βάσκο ντὲ Γκάμα», ἡ σουΐτα δι' ὀρχήστραν: «Παιδικὰ παιγνίδια», «Πένθιμον ἐμβατήριον», μελῳδίαι καὶ 300 διασκευαὶ ἔργων διὰ κλειδοκύμβαλον.

*Ἀλέξανδρος Μπιζέ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ch. Pigot*, Georges Bizet et son œuvre (1886).—*A. Weissmann*, Bizet (1907). Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**μπιζέλι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πίσον τὸ ἥμερον*.

**μπιζέλλω** (ἡ)· ἰδιωματ., χαρακτηριστικὸν γυναικὸς φιλοπαίγμονος, πολυμηχάνου κττ.

**Μπιζέρτα** (Bizerta, γαλλ. Bizerte) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμήν, πολεμικὸς καὶ ἐμπορικός, τῆς γαλλικῆς Τύνιδος, κειμένη εἰς ἐπίκαιρον ἀπὸ στρατηγικῆς ἀπόψεως θέσιν εἰς τὸ βορειότερον σημεῖον τῆς Ἀφρικῆς (37° 15' Β. πλάτ., 9° 51' Α. μῆκος Γκρήνουϊτς), 54 χλμ. πρὸς Β τῆς Τύνιδος. Εἶναι ἐκτισμένη παρὰ τὴν εἴσοδον διώρυγος μήκους 6 χλμ., συνδεούσης τὴν Μεσόγειον μετὰ τῆς ὄπισθεν τῆς πόλεως ὁμωνύμου λίμνης, καὶ προασπίζεται πρὸς Δ. ἀπὸ τῶν ἐκ τῆς πλευρᾶς ταύτης πνεόντων ἀνέμων ὑπὸ λοφοσειρᾶς. Εἶναι ὡραία ἀνατολικοῦ ρυθμοῦ πόλις, κοσμουμένη ὑπὸ μιναρέδων καὶ μουσουλμανικῶν τεμενῶν. Ἡ διῶρυξ διευρυνθεῖσα καὶ διαρρυθμισθεῖσα τεχνητῶς ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἰδίως ἀφ' ὅτου ἡ Ἰταλία συνέπηξε τὸν ναύσταθμον τῆς Μανταλένα, δύναται νὰ διευκολύνῃ τὴν ἀσφαλῆ ἀγκυροβόλησιν εἰς πλεῖστα πολεμικὰ καὶ ἐμπορικὰ πλοῖα. Κατάλληλος διὰ μονίμων πυροβολείων μετὰ βαρέων πυροβόλων ὀχύρωσις τῶν περὶ τὸν λιμένα θέσεων κατέστησε τὴν Μπιζέρταν ἕνα ἐκ τῶν ὀχυρωτέρων λιμένων τῆς Μεσογείου. Ἡ ἀπὸ στρατιωτικῆς ἀπόψεως σπουδαιότης αὐτῆς αὐξάνει ὡς ἐκ τῆς παρὰ τὸν διέκπλουν τῆς Σικελίας ἐπικαίρου θέσεώς της. Ἀπὸ ἐμπορικῆς ἀπόψεως ὁ λιμὴν τῆς Μπιζέρτας εἶναι σπουδαιότατον κέντρον. Ἐξάγει μεγάλην ποσότητα ἰχθύων ἁλιευομένων ἐν τῇ λίμνῃ καὶ πάντα τὰ ἐγχώρια προϊόντα τῆς πλουσίας περιοχῆς. Κάτ. 20.765. Ἡ Μπιζέρτα εἶναι ὁ *Ἱππὼν Διάρρυτος* ἢ *Ζάρυτος* τῶν ἀρχαίων, οἱ δ' ἐξωτερικοὶ λιμένες της οἱ *Ἱππονῖτις* καὶ *Σισσάρα* (*Πτολ.* Δ', γ', 2 καὶ 6). Καταληφθεῖσα τῷ 307 π. Χ. ὑπὸ τοῦ ἐναντίον τῶν Καρχηδονίων πολεμοῦντος Ἀγαθοκλέους, περιῆλθεν εἶτα εἰς τοὺς Ρωμαίους καὶ κατὰ τὸν μεσαίωνα εἰς τοὺς Ἄραβας (622 μ. Χ.), τέλος δὲ τῷ 1881 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἀπετέλεσεν ἀξιόλογον βάσιν ἀνεφοδιασμοῦ. Χ. Δ.

**μπίζι** (τό). Νεοελληνικὴ παιδιά, συνηθεστάτη εἰς τοὺς στρατῶνας κλπ., παιζομένη ὑπὸ τριῶν τοὐλάχιστον ἀτόμων. Διὰ κλήρου, εἷς τῶν παικτῶν ἵσταται φέρων τὸν δεξιὸν βραχίονα ἐπὶ τοῦ στήθους καὶ κατευθύνων τὴν παλάμην ἀνοικτὴν πρὸς τὴν ἀριστερὰν μασχάλην, ἐνῷ διὰ τῆς παλάμης τῆς ἀριστερᾶς χειρὸς καλύπτει τὸν ἀριστερὸν ὀφθαλμόν, οὕτως ὥστε νὰ μὴ βλέπῃ τὶ γίνεται ὄπισθέν του. Ἐν τοιαύτῃ θέσει εὑρισκόμενος δέχεται πλῆγμα εἰς τὴν παλάμην διὰ τῆς χειρὸς ἄλλου παίκτου, ἐνῷ δὲ στρέφεται ἀποτόμως, ἵνα μαντεύσῃ τὸν πλήξαντα, πάντες οἱ ἄλλοι παῖκται ὑψώνουν τὸν δείκτην τῆς δεξιᾶς καὶ μιμοῦνται τὴν βοὴν τῆς μελίσσης «μπίζ! μπίζ! μπίζ!». Ἂν ὁ πληγεὶς μαντεύσῃ τὸν πλήξαντα, ἐλευθεροῦται, λαμβάνει δὲ τὴν θέσιν του ὁ πλήξας. Ἄλλως συνεχίζεται ἡ παιδιά, μέσῳ πλατέων γελώτων μεθ' ἑκάστην ἀποτυχίαν τοῦ πληττομένου. Σ. Γ. Σ.

**Μπιζιὸν** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κουβέλας τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 44. Χ. Δ.

**Μπιζμπάρδι** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ μικροσυνοικισμοῦ *Βελανιδιὲς* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας.

**Μπιζνάουρ**, ἢ ***Μπιζνὸρ*** (Bijnaur ἢ Bijnor) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ διοικήσει *Μπαρεῖλλυ* τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν. Ἡ πόλις ἀπέχει 5 χλμ. ἀπὸ τῶν ὀχθῶν τοῦ Γάγγου καὶ 54 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Μεερούτ, μετὰ τοῦ ὁποίου συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. 17.000. Ἡ ἐπαρχία εἶναι κατ' ἐξοχὴν πεδινή, ἀρδεύεται καλῶς, διασχίζεται ὑπὸ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μοραντάμπὰντ - Σαχαρανποὺρ καὶ ἔχει μεγάλας φυτείας ζαχαροκαλάμου. Ἡ ἔκτασίς της ἀνέρχεται εἰς 4.482 τετρ. χλμ., ὁ δὲ πληθυσμὸς αὐτῆς εἰς 778.000 κατ. Χ. Δ.

**Μπίζοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Μεγαπλάτανον* (βλ. λ).

**Μπιθκούκι**, ἢ ***Βιθυκούκιον*** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις παρὰ τὴν Κοριτσὰν τῆς ἐν τῇ Ἀλβανίᾳ Βορείου Ἠπείρου κειμένη, ἀνθοῦσα ἄλλοτε. Κατὰ τὴν ἀκμήν της κατῳκεῖτο ἀπὸ 5.000 οἰκογενείας βλαχικάς, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἀραβαντινός, ἢ κατ' ἄλλους ἀλβανικάς. Ἤδη, ἀποτελουμένη ἀπὸ τρεῖς μικρὰς συνοικίας μὲ ἑκατὸν οἰκογενείας, εὑρίσκεται ἐν παρακμῇ. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα συνετήρει ἀξιόλογον ἑλληνικὸν σχολεῖον, ὑπῆρξε δὲ πατρὶς πολλῶν λογίων. Χ. Ι. Σ.

**Μπὶθ-Πρίεριζα** *[Γεωγρ.]*. Ἀλβανικὴ ὀνομασία (=«ὀπίσθια ἀνεστραμμένα») νησίου ἐκ τῶν μεταξὺ Ὕδρας καὶ Σπετσῶν διασπάρτων (*Μηλιαρ.* Ἄργος Κορινθ. σελ. 189). Ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ναυτικῶν καὶ διεθνῶς εἶναι γνωστὸν ὡς *Δισσάκι* (πλάτ. 37°15'50" Β., μῆκ. 23° 21' 45" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spezzia and Dhokos islands). Σ. Ε. Λ.

**Μπιϊσκ** (Biïsk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν Σιβηρίᾳ (κυβερνεῖον Τόμσκ), κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Βιγία καὶ Κατούγγκα, 416 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Τόμσκ. Συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Μπαρνάουλ καὶ εἶναι κέντρον τοῦ ἐμπορίου τῆς περιοχῆς τῶν Ἀλταΐων. Ἔχει βιομηχανίας σάπωνος, ὑφασμάτων, δερμάτων κλπ. Κάτ. 18.000. Χ. Δ.

**μπίκ**, ἢ ***μπίσχα*** (bich, ἢ bick καὶ bisha). Ὄνομα δηλητηρίου, παραγομένου ἐκ τοῦ *ἀκονίτου τοῦ θηριώδους* (Aconitum ferox). Δι' αὐτοῦ οἱ Ἰνδοὶ φαρμακεύουν τὰ βέλη τῶν τόξων των.

**Μπικανὲρ** (Bikaner) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Ρατζπουτάνᾳ. Τὸ ἔδαφός του, ἐκτάσεως 65.000 περίπου τετρ. χιλ., εἶναι ἔρημον καὶ ξηρόν, περικλεῖον καὶ ἀνθρακοφόρα στρώματα καὶ ἁλμυρὰς λίμνας, αἱ ὁποῖαι παράγουσι μεγάλας ποσότητας ἅλατος. Ἀκμάζει ἐν αὐτῷ ἡ κτηνοτροφία ἐκλεκτῆς γενεᾶς καμήλων, ἵππων καὶ προβάτων, ὑπάρχουσι δ' ἐξ ἄλλου ἀνεπτυγμέναι βιομηχανίαι μαλλίνων ὑφασμάτων καὶ κομψοτεχνημάτων ἐκ χρυσοῦ καὶ ἐλέφαντος. Οἱ κάτοικοι, ἀνερχόμενοι εἰς 700.983, εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον Ρατζποῦται, Τζὰτς καὶ Μπατού.

Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα κεῖται εἰς τὸ τέρμα τῆς πρὸς Ζοντποὺρ καὶ Ζαϊποὺρ σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, ἐν μέσῳ ἀγόνου περιφερείας. Περιβάλλεται ὑπὸ τείχους περιμέτρου 5 ½ περίπου χλμ. καὶ ἔχει βιομηχανίας ἀγγειοπλαστικὰς καὶ κατασκευῆς κλινοσκεπασμάτων, ἰδίως ἐκ τριχῶν καμήλου. Κάτ. 55.826.

Ὁ μαχαραγιᾶς τοῦ Μπικανὲρ συνώδευσε τῷ 1914 τὰς εἰς Γαλλίαν ἀποσταλείσας ἰνδικὰς ἐκστρατευτικὰς δυνάμεις, μετέσχε τῷ 1917 τοῦ συγκληθέντος ἐν Λονδίνῳ αὐτοκρατορικοῦ πολεμικοῦ συμβουλίου καὶ παρεκάθησε μεταξὺ τῶν ἀντιπροσώπων τῶν Ἰνδιῶν εἰς τὴν ἐν Παρισίοις συνελθοῦσαν τῷ 1919 συνδιάσκεψιν τῆς εἰρήνης. Οἱ ἐπὶ καμήλων ἐπιβαινόντες καὶ εἰς εἰδικὰ σώματα συγκεκροτημένοι στρατιῶται τοῦ Μπικανὲρ ἔπαιξαν σπουδαῖον ρόλον κατὰ τὰς ἐναντίον τῶν Τούρκων ἐκστρατείας τῆς Ἀνατολῆς (1916) διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Χ. Δ.

**Μπικόκκα** (Bicocca) *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Νοβάρας. Κάτ. 2.350. Εἶναι γνωστὸν διὰ τὴν ἐνταῦθα λαβοῦσαν χώραν μάχην τὴν 23 Μαρτίου 1849 μεταξὺ τῶν Αὐστριακῶν ὑπὸ τὸν Ραντέσκι καὶ τῶν Πεδεμοντίων ὑπὸ τὸν Κάρολον Ἀλβέρτον, καθ' ἣν ἐνίκησαν οἱ πρῶτοι καὶ συνέπεια τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ἡ παραίτησις τοῦ βασιλέως Καρόλου Ἀλβέρτου ἀπὸ τοῦ θρόνου τοῦ Πεδεμοντίου. Ἐν αὐτῷ τῷ 1879, ἀνηγέρθη μαυσωλεῖον πυραμοειδές, ὕψους 18 μ. —2) Τοποθεσία τῆς Ἰταλίας, ἐν Λομβαρδίᾳ, εἰς ἀπόστασιν 7 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Μιλάνου, μεταξὺ Μόντσας καὶ Μιλάνου. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὴν ἐν αὐτῇ γενομένην μάχην μεταξὺ τῶν αὐτοκρατορικῶν στρατευμάτων τῆς Γερμανίας ὑπὸ τὸν Πρόσπερον Κολόννα καὶ τῶν γαλλικῶν ὑπὸ τὸν στρατάρχην Λωτρέκ, τὴν 29 Ἀπριλίου 1522, καθ' ἣν ἐνίκησαν οἱ πρῶτοι. Μ. Δ. Β.

**Μπικσού**. Ἐκαλοῦντο οὕτως (= ἐπαίτης) οἱ βουδισταὶ μοναχοί, οἱ ὁποῖοι ἀπαρνούμενοι τὴν ζωὴν ἀφωσιώνοντο εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῆς θρησκείας καὶ ἔζων ἐκ τῆς ἐπαιτείας. Οἱ Μπικσοὺ ἦσαν ἐν

Digitized by Google

χρῷ κεκαρμένοι, ἔφερον κίτρινον ἢ βαθέως ἐρυθρὸν χιτῶνα καὶ ἐπενδύτην καὶ εἶχον ὡς μοναδικὴν κτῆσιν μίαν ῥάβδον ὁδοιπορικὴν καὶ ἓν ξύλινον πινάκιον διὰ τὴν τροφήν, ἥτις τοῖς παρείχετο ἐξ ἐλεημοσύνης. Ὁ μαθητὴς τοῦ Βούδα Ἀνάντα ἵδρυσε καὶ γυναικεῖον ἀνάλογον τάγμα τῶν *Μπικσούνι*. Μπικσοῦ σήμερον μόνον ἐν Θιβὲτ ὑπάρχουν. Οἱ Ἕλληνες ἐκάλουν τοὺς Μπικσοῦ τούτους γυμνοσοφιστάς. — Ω.

**μπικεριά** (ἡ). Ὄρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων ἑκάστην τῶν διαδοκίδων.

**Μπικσούνι**, ἢ *Ἄμα*. Ὀνομάζονται οὕτως ἐν Ἰαπωνίᾳ αἱ μοναχαὶ τοῦ βουδισμοῦ. Τὸ τάγμα τοῦτο ἱδρύθη ὑπ' αὐτοῦ τοῦ Βούδα Σακυα-μούνι, ἀλλὰ δὲν ἀπέλαυε μεγάλης εὐνοίας ἐν Ἰαπωνίᾳ. Ἐν τούτοις, κατὰ τοὺς ἐμφυλίους πολέμους τοῦ ἰαπωνικοῦ μεσαίωνος (Θ'—ΙΔ' αἰών), πολλαὶ ἔκπτωτοι αὐτοκράτειραι περιεβλήθησαν τὸ μοναχικὸν σχῆμα. Αἱ Ἄμα ζῶσι κοινοβιακῶς ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν ἡγουμένης, εἰς μοναστήρια κείμενα γενικῶς πλησίον ἀνδρικοῦ μοναστηρίου, ἐκ τοῦ ὁποίου λαμβάνουν καὶ τὸν πνευματικὸν των διευθυντήν. Ὑπόκεινται εἰς κανόνας αὐστηροτάτους, ξυρίζουν δὲ τὴν κεφαλὴν καὶ καλύπτουν τὸ πρόσωπον διὰ λεπτῆς ὀθόνης. Σ. Ν. Φ.

**Μπίκφορντ** (Bickford), ***Οὐίλλιαμ***. Ἄγγλος ἐφευρέτης τῆς ἐναυσματικῆς θρυαλλίδος ἀσφαλείας (1831), γνωστῆς ἔκτοτε ὑπὸ τὸ ὄνομα «θρυαλλὶς Μπίκφορντ» (βλ. λ. *θρυαλλίς*). Π.

**Μπὶλ** (Biel) *[Γεωγρ.]* βλ. *Μπιέν*.

**Μπὶλ** (Bhil) (σανσκριτ. Bhila, ἰνδοστ. Bhil). Ἰνδικὴ φυλή, ὑπόλειμμα τμήματος τοῦ προαριανοῦ πληθυσμοῦ τῶν Ἰνδιῶν. Οἱ Μπὶλ κατοικοῦν ἐπὶ τῶν ὀρέων Βίντυα,παρὰ τοὺς ποταμοὺς Τάπτι, Ναρμπάντα καὶ Μάχι, καὶ εἰς τοὺς νομοὺς τῆς Καλκούττας καὶ τῆς Βομβάης. Τὰ ἤθη καὶ ἔθιμα αὐτῶν ὑπέστησαν ἰνδικὴν ἐπίδρασιν, ἡ δὲ σημερινὴ γλῶσσά των εἶναι ἀκαλλιέργητος νεοϊνδικὴ διάλεκτος. Οἱ πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν λατρεύουσι τὸν Μαχαντέβα καὶ ἄλλας ἰνδικὰς θεότητας, πρὸς δὲ πολλοὺς θεοὺς τῶν ὀρέων. Τρέφονται μὲ βόειον καὶ χοιρινὸν κρέας, πίνουν δὲ ἀρὰκ καὶ οἶνον ἐκ φοινίκων. Περιφρονοῦν τοὺς βραχμᾶνας, μετὰ τῶν ὁποίων εἰς οὐδεμίαν ἔρχονται ἐπαφήν. Εἶναι ἀρκούντως ἱπποτικοὶ πρὸς τὰς γυναῖκάς των, εἰς τὰς ὁποίας ἐπιτρέπουσι δεύτερον καὶ τρίτον γάμον μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου των. Ὡς ἱερὸν καθῆκον αὐτῶν θεωροῦσι τὴν ταφὴν τῶν νεκρῶν. Κατὰ τὸν θάνατον ἑνὸς τῶν ἀρχηγῶν των κατασκευάζουν ἐκ χάλυβος τὴν προτομὴν αὐτοῦ ὑπὸ μορφὴν ταύρου ἢ ἵππου καὶ περιφέρουν αὐτὴν εἰς τὰ διάφορα χωρία, ὅπου οἱ ἱερεῖς των, *ῥάβελ* καλούμενοι, τελοῦσι μνημόσυνον. Παρ' αὐτοῖς ὑπάρχουσι καὶ μάγοι (*μπάρβα*), οἵτινες διαδραματίζουν καὶ πρόσωπον ἰατροῦ. Οἱ Μπὶλ εἶναι πολυάριθμοι καὶ διαιροῦνται εἰς πολλὰς φατρίας (*κλάν*). Εἶναι μικρόσωμοι, μαῦροι καὶ ἰσχνοί, ἀλλὰ ρωμαλέοι, εὐκίνητοι καὶ δραστήριοι. Ῥέπουν πρὸς τὴν κλοπὴν καὶ τὸ ψεῦδος, εἶναι δόλιοι καὶ προδοτικοί, ἀλλ' οὐχὶ καὶ αἱμοχαρεῖς. Α. Δ.

**Μπὶλ** (Bil) *[Σκανδ. Μυθολ.]*. Κατὰ τοὺς σκανδιναβικοὺς θρύλους (σάγκας), ὁ Μπὶλ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Γιοῦκε*, ἐπανερχόμενοι ἐκ τῆς πηγῆς Μπύργεγ, ἡρπάγησαν ὑπὸ τοῦ θεοῦ τῆς σελήνης Μάνε καὶ ὡδηγήθησαν εἰς τὸν οὐρανόν, ὅπου συνοδεύουσι διαρκῶς τὸν θεὸν τοῦτον ὡς θεράποντες. Α. Δ.

**Μπιλασπούρ** (Bilaspur) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ἐπαρχία τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν ταῖς κεντρικαῖς ἐπαρχίαις. Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἄρτα, 405 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Ναγκπούρ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. 19.850. Ἡ ἐπαρχία ἔχει ἔκτασιν 19.000 τετρ. χλμ., ἔδαφος λοφῶδες καὶ καλῶς ἀρδευόμενον, περιλαμβάνον καλλιεργείας ὀρύζης καὶ κατ. 1.146.223. Χ. Δ.

**Μπίλαλι** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Λεονταρίου τῆς ἐπαρχίας Μεγαλουπόλεως τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ὁπόθεν διακλαδίζεται ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Τριπόλεως—Καλαμῶν πρὸς τὴν Μεγαλόπολιν. Κάτ. (1928) 11. Χ. Δ.

**Μπιλεντουλγκερίντ**, ἢ ***Μπελὰντ-ἐλ-Ντζερίντ, Μπελοῦντ-ἐλ-Ντζερίντ*** (Bilédulgérid, ἢ Beland-el-Djérind, ἢ Belnd-el-Djérid) *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τῆς Β. Ἀφρικῆς, ἀντιστοιχοῦσα πρὸς τὴν *Γετουλίαν* τῶν ἀρχαίων καὶ κειμένη μεταξὺ τῶν ὀρέων τοῦ Ἄτλαντος πρὸς Β., τῆς Σαχάρας πρὸς Ν., τοῦ Μαρόκκου πρὸς Δ. καὶ τοῦ Φεζὰν καὶ τῆς Τριπολίτιδος πρὸς Α. Ἀνήκει εἰς τὴν Γαλλίαν. Χ. Δ.

**μπιλετζὶκ** (τό) (τουρκ.) βραχιόλι.

**Μπιλετζὶκ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, τὰ *Βελόκωμα* τῶν Βυζαντινῶν, ἐν τῇ Βιθυνίᾳ, ἕδρα τῆς ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως καὶ τῆς διοικήσεως Ἐρτογρούλ, ἐν τῷ βιλαετίῳ Προύσης, εἰς τὴν περιοχὴν ὅπου ἐγκατεστάθησαν κατὰ πρῶτον οἱ Ὀσμανίδαι Τοῦρκοι ὑπὸ τὸν Ἐρτογρούλ καὶ τὸν Ὀσμάν. Ἡ πόλις εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Καρασοῦ, παραποτάμου τοῦ Σαγγαρίου, παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ Ἀχοὺρ-δάγ, εἰς ἀπόστασιν 95 χιλιομέτρων ἀπὸ τῆς Προύσης, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Νικομηδείας—Ἀγκύρας, τῆς ὁποίας ὁ σταθμὸς ἀπέχει 5 χιλμτ. Κάτ. περίπου 11.000, ἐκ τῶν ὁποίων 3.000 ἦσαν Ἀρμένιοι καὶ περὶ τοὺς 150 Ἕλληνες. Ἡ πόλις διαιρεῖται εἰς 14 συνοικίας. Ἀρχαῖα μνημεῖα δὲν ὑπάρχουσιν ἐν Μπιλετζὶκ ἐκτὸς μιᾶς παλαιᾶς σαρκοφάγου, ἥτις χρησιμοποιεῖται ὡς κρήνη. Εἰς τὰς αὐλὰς ὅμως καὶ τοὺς τοίχους τῶν οἰκιῶν παρατηροῦνται ἀρχαῖα μάρμαρα ἑλληνικῶν χρόνων.

Τὸ Μπιλετζὶκ ἦτο σπουδαῖον κέντρον παραγωγῆς καὶ ἐμπορίου μετάξης. Σήμερον ὅμως ἡ σηροτροφία παρήκμασεν ἕνεκα τῆς ἐξοντώσεως τῶν Ἀρμενίων καὶ τῆς ἀναχωρήσεως τῶν Ἑλλήνων.

Ἡ ὑποδιοίκησις *Μπιλετζὶκ* περιλαμβάνει καὶ τοὺς δήμους Κιουπλίων (Κιουπλοῦ), Παζαρτζίκ, Γιὰρ-χισάρ, Λευκῶν (Λέφκε) καὶ Γκιοὺλ-παζάρ.

Ὁ ὁλικὸς πληθυσμὸς τῆς ὑποδιοικήσεως ὑπελογίζετο εἰς 90.000 κατ., ὧν 14.000 Ἕλληνες καὶ 9000 Ἀρμένιοι. Κυριώτερος ἑλληνικὸς συνοικισμὸς ἦτο ἡ κώμη τῶν *Κιουπλίων* (τὰ *Κιουπλιά*), ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Νικομηδείας—Ἀγκύρας, σπουδαῖον κέντρον σηροτροφίας, εἰς ἀπόστασιν 7 χιλιομέτρων ἀπὸ τοῦ Μπιλετζὶκ ἐπὶ τοῦ Καρασοῦ. Ὁ ὁμώνυμος δῆμος ἔχει 9 χωρία, κατῳκεῖτο δὲ ὑπὸ 6.000 Ἑλλήνων καὶ 3.000 Τούρκων. Ν. Μ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ *Μπιλετζὶκ* κατελήφθη καὶ ἐγκατελείφθη πολλάκις ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ κατὰ τὴν εἰς Μ. Ἀσίαν ἐκστρατείαν 1919—1922. Κατέλαβε τὸ πρῶτον τὴν πόλιν ἀπόσπασμα τῆς μεραρχίας Σμύρνης τῇ 27 Δεκεμβρίου 1920, ὅτε τοῦτο ἐβάδιζε μετὰ τῆς μεραρχίας Ἀρχιπελάγους, προελαυνούσης νοτιώτερον διὰ Παζαρτζίκ, πρὸς διάλυσιν τῶν περὶ τὸ Ἴν Ἐϋνοῦ τουρκικῶν δυνάμεων, καὶ ἐγκατέλιπεν αὐτὸ τὴν 30 ἰδίου μηνός, ἐπανελθὸν εἰς τὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτοῦ. Ἀνακατέλαβεν εἶτα αὐτὸ τῇ 12 Μαρτίου 1921 ἡ ἑλληνικὴ ταξιαρχία ἱππικοῦ, προπορευομένη τῆς ἀριστερᾶς πτέρυγος τοῦ Γ' σώματος Στρατοῦ, βαδίζοντος πάλιν πρὸς Ἴν Ἐϋνοῦ—Ἐσκὶ Σεχίρ, ὁπότε ἡ πόλις ἐπυρπολήθη ὑπὸ τῶν ἐγκαταλιπόντων αὐτὴν Τούρκων. Νοτιώτερον τοῦ Μπιλετζὶκ, παρὰ τὸ Κιοπλοῦ, διεσταυρώθη τότε ἡ ΙΙΙ μεραρχία τοῦ εἰρημένου σώματος Στρατοῦ, ἀγομένη πρὸς Σεϊγούντ-Ἀβκγὶν μετὰ τῆς Χ τοιαύτης, διευθυνθείσης πρὸς Κούρτκιοϊ-Τσεπνί. Κατὰ τὴν σύμπτυξιν τοῦ Γ' σώματος Στρατοῦ ἐκ τῆς ἐπιχειρήσεως ταύτης ἡ ΙΙΙ μεραρχία κατέλιπε τῇ 20 Μαρτίου 1921 τὸ Μπιλετζίκ. Τὸν Ἰούλιον 1921 ἀνακατελήφθη τὸ Μπιλετζὶκ ὑπὸ τῆς ΧΙ ἑλληνικῆς μεραρχίας, ἥτις ἔκτοτε κατεῖχεν αὐτὸ διὰ τοῦ μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ. Τῇ 11 Αὐγούστου 1922 οἱ Τοῦρκοι ἐπετέθησαν αἰφνιδιαστικῶς κατὰ τοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 16 συντάγματος πεζικοῦ εἰς Μπιλετζίκ, ἀποκρουσθέντες μετὰ πολλῶν ἀπωλειῶν καὶ καταδιωχθέντες. Ἐπεζήτουν νὰ ἐφελκύσωσι πρὸς τὰ ἐκεῖ τὴν προσοχὴν τῆς ἀνωτέρας ἑλληνικῆς διοικήσεως, ἐνῷ μετὰ 2 ἡμέρας, τῇ 13 Αὐγούστου 1922, ἡ πραγματικὴ τουρκικὴ ἐπίθεσις ἐξεδηλοῦτο κατὰ τοῦ νοτίου σκέλους τῆς προεχούσης τοῦ ἑλληνικοῦ μετώπου παρὰ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Τῇ 22 Αὐγούστου 1922, ὅτε, κατόπιν διαταγῆς τοῦ ἑλληνικῆς στρατιᾶς συνεπτύσσετο τὸ Γ' σώματος Στρατοῦ ἐξ Ἐσκὶ Σεχὶρ πρὸς Προῦσαν, τμήματα τῆς ΙΙ τουρκικῆς στρατιᾶς (Γκρουπ Σεβδὶ πασᾶς), ἐξ ὅλων τῶν ὅπλων, προσέβαλον περὶ τὰ ὑψώματα Ἀκτσὲ Μπουνὰρ-Κουρτκιοϊ τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα τῆς ΙΙΙ ἑλληνικῆς μεραρχίας καὶ τὸ μικτὸν ἀπόσπασμα τοῦ 16ου συντάγματος πεζικοῦ, ἀλλ' ἀπεκρούσθησαν καὶ ἡττηθέντα κατεδιώχθησαν πρὸς Σεϊγούντ' ἡ καταδίωξις ὅμως, κατόπιν διαταγῆς τοῦ Γ' σώματος Στρατοῦ, δὲν ἐξετελέσθη ἐπὶ μεγάλου βάθους πρὸς Α., δεδομένου ὅτι, ἅμα τῇ ἐπελεύσει τοῦ σκότους, τὸ Γ' σῶμα στρατοῦ ἔδει, ἀπαγκιστρούμενον ἀπὸ τοῦ ἐχθροῦ, ν' ἀχθῇ πρὸς ἄλλην γραμμὴν ὀπίσω, περὶ τὸ Νασὶφ Πασᾶ. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπίλεφελντ** (Bielefeld) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῷ νομῷ Μίντεν τῆς Βεστφαλίας (Πρωσσία), κειμένη ἐπὶ ἀμφοτέρων τῶν ὄχθων τοῦ ποταμοῦ Λούττερ, ὅστις διαιρεῖ αὐτὴν εἰς δύο τμήματα, τὴν Παλαιὰν καὶ τὴν Νέαν πόλιν. Ἀπέχει 12 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Ἀννοβέρου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ὡραῖον φρούριον τοῦ ΙΒ' αἰῶνος, καλούμενον *Σπάρενμπουργ*, τὸ ὁποῖον χρησιμεύει ὡς μουσεῖον, καὶ δύο παλαιοὺς ναούς. Ἀκμάζουσα βιομηχανία λεπτοτάτων λινῶν ὑφασμάτων, ραπτομηχανῶν, ποδηλάτων, μηχανουργεῖα κλπ. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἡ πόλις ἀνῆκεν εἰς τὸ ἀββαεῖον τοῦ Χερφορντ, εἶτα δὲ περιῆλθεν εἰς τὸν ἐκλέκτορα τοῦ Βρανδεμβούργου (1625) καὶ τέλος εἰς τὴν Πρωσσίαν. Κάτ. 78.380. Χ. Δ.

**μπίλια** (ἡ)· μικρὰ σφαῖρα, σφαιρίδιον.

— *[Ἐγκυκλοπ.]* Χρῆσις τῆς λέξεως *μπίλια* γίνεται ἐν τῇ κοινῇ γλώσσῃ, προκειμένου περὶ ὡρισμένων τινῶν εἰδῶν σφαιρῶν καὶ σφαιριδίων, ὅπως οἱ πέτρινοι βόλοι τῶν παιδιῶν, αἱ ἐξ ἐλεφαντόδοντος σφαῖραι τοῦ σφαιριστηρίου καὶ τῆς ρολίνας, τὰ ἐκ χάλυβος σφαιρίδια τὰ χρησιμοποιούμενα πρὸς ἐλάττωσιν τῆς τριβῆς εἰς τὰ κουσινέτα τῶν τροχῶν κλπ. [Βλ. λ. *βόλος, σφαιριστήριον, ρολίνα, τριβεῖς ἐνσφαιροι*.] — Ρ.

**μπιλιαρδιστὴς** (ὁ)· δεξιὸς παίκτης τοῦ μπιλιάρδου, καθόλου ὁ παίζων μπιλιάρδο.

**μπιλιάρδο** (τὸ) (ἰταλ. bigliardo)· τὸ *σφαιριστήριον* (βλ. λ.).

**Μπιλιάρσκ** (Biliarsk) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ αὐτονόμῳ δημοκρατίᾳ τῶν Βασκίρων, φυλῆς Κοζάκων οἰκούντων ἐγγὺς τοῦ Βόλγα. Κάτ. 3.000. Οἱ Βασκίραι διηγοῦνται ὅτι ἡ Μπιλιάρσκ κατέχει τὴν θέσιν ἀρχαίας ἰσχυρᾶς πόλεως τῶν Βουλγάρων, καλουμένης *Μπουλουμὲρ* ἢ *Μπουλιάρ*, ἡ ὁποία ἦτο ἕδρα πολεμικωτάτου καὶ ἰσχυροῦ βασιλέως, περιφήμου διὰ τὰς πολυαρίθμους κατακτήσεις του. Ὁ βασιλεὺς οὗτος, θεωρῶν ὅτι οἱ ἀπόγονοί του ἦσαν ἀνάξιοι αὐτοῦ κληρονόμοι, ἀπεφάσισε νὰ ἐξαφανίσῃ τοὺς θησαυρούς του, πρὸς τοῦτο δὲ κατεσκεύασεν ὑπόγειον μαγικὸν ἀνάκτορον, ὅπου ἔκρυψεν αὐτούς. Τὸ ἀνάκτορον αὐτό, κατὰ τὴν παράδοσιν, σῴζεται ἀκόμη, ἀλλὰ φυλάσσεται ὑπὸ τεραστίου μέλανος κυνὸς ἀπαγορεύοντος τὴν εἴσοδον. Ἐγγὺς τῆς Μπιλιάρσκ σῴζεται παλαιὸν μουσουλμανικὸν κοιμητήριον, τόπος προσκυνήματος τῶν ἐν τοῖς πέριξ νομαδικῶν μουσουλμανικῶν φυλῶν. Χ. Δ.

**μπιλιέτο** (τό)· δημοτ., μικρὸ γράμμα, σημείωμα πρόχειρον· || δελτίον εἰσόδου, εἰσιτήριον ἀτμοπλοίου σιδηροδρόμου κτλ.· || συνήθως ἐπισκεπτήριον: «τοῦ ἄφησα τὸ μπιλιέτο μου» (ἰταλ. biglietto).

**Μπιλὶν** ἢ ***Μπιλίνα*** (Bilin ἢ Bilina) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν Βοημίᾳ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπιέλα, παραποτάμου τοῦ Ἔλβα. Κάτ. 9.669. Ἔχει ἐργοστάσια ζαχάρεως, ζύθου, ὑαλουργεῖα, ἀτμομύλους, μεταλλεῖα λιγνίτου καὶ πύργον τῶν πριγκίπων Λόμπκοβιτς, εἰς οὓς ἀνῆκε τῷ 1464. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὰς ψυχρὰς μεταλλικὰς πηγάς της, ἡ κυριωτέρα τῶν ὁποίων εἶναι ἡ Jozefquelle, ἥτις εἶναι ἀλκαλικὴ ὀξυανθρακική. Τὰ ὕδατα τῆς πηγῆς ταύτης ἐνέχουσιν ἀνὰ λίτρον: 3,363 ἀνθρακικοῦ νατρίου, 0,381 χλωριούχου νατρίου, 0,719 θειικοῦ νατρίου, 0,171 ἀνθρακικοῦ μαγνησίου, 0,010 ἀνθρακικοῦ λιθίου, 0,410 ἀνθρακικοῦ ἀσβεστίου καὶ 1,409 ἐλευθέρου ἀνθρακικοῦ ὀξέος. Τὸ ὕδωρ τῆς πηγῆς Josef χρησιμεύει πρὸς ποσιθεραπείαν, φέρεται δὲ εἰς φιάλας καὶ ὑπὸ μορφὴν τροχίσκων (Biliner pastillen), ὧν ἕκαστος περιέχει 0,06 ἀνθρακικοῦ νατρίου καὶ ἐνδείκνυται διὰ τὰς παθήσεις τοῦ στομάχου,τῶν νεφρῶν καὶ τῆς κύστεως. Κ. Γ. Μ.—Μ. Δ. Β.

**μπιλῖναι**. Καλοῦνται οὕτως ἐν Ρωσίᾳ παλαιὰ ἔπη συντεθέντα ὑπὸ μοναχῶν ἢ λαϊκῶν ποιητῶν, τῶν ὁποίων τὰ ὀνόματα παρέμειναν ἄγνωστα. Τὰ ποιήματα ταῦτα ἐτάσσοντο ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας εἰς τὴν τάξιν τῆς διαβολικῆς εἰδωλολατρείας καὶ ἐκρίνοντο καταδικαστέα, διετηρήθησαν δὲ χάρις εἰς τὴν μνήμην τῶν ἀνθρώπων. Καταδιωκομένη ἡ ποίησις αὕτη ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας μέχρις αὐτοῦ τοῦ οἰκογενειακοῦ ἀσύλου, ἐξετοπίσθη μέχρι τῶν παγωμένων ζωνῶν, ὅπου καὶ ἀπεμονώθη. Τοιουτοτρόπως οὐδὲν ἴχνος διεσώθη εἰς τὰ μέρη ὅπου παρήχθη. Τὰ ἀρχαιότερα ποιητικὰ λείψανα ἀνάγονται μόλις εἰς τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα.

Ἡ λέξις *μπιλῖνα* σημαίνει παρελθόν, πρῶτος δὲ ὁ Σαχάρωφ ἐξέδωκε τοιαῦτα ποιήματα ἐκ χειρογράφου ἐξαφανισθέντος ἤδη. Αἱ μπιλῖναι αὗται ἀνάγονται εἰς δύο διακεκριμένους κύκλους, ὧν ὁ μὲν ἔχει ὡς κέντρον τὸν ἀρχαῖον ρωσικὸν βίον τοῦ Κιέβου, ὁ δὲ τὸν ἀστικὸν τοιοῦτον τοῦ Νοβογορόδ. Εἰς τὸν κύκλον τοῦ Κιέβου πάντα τὰ πρόσωπα τῆς παραδόσεως συγκεντροῦνται περὶ τὸν ἡγεμόνα *Βλαδίμηρον τὸν Μέγαν*. Μέρος τῶν μπιλινῶν τούτων ἀναφέρεται καὶ εἰς μυθικοὺς ἥρωας. Οὕτω ὁ Βόλγας Σβιατοσλάβιτς εἶναι υἱὸς ἡγεμονίδος τινὸς καὶ ὄφεως, ἐκπροσωπεῖ δὲ τὴν ρωσικὴν σοφίαν. Παρὰ τὸ Σφιατιγὸρ ὁ ἥρως οὗτος ἀντιπροσωπεύει τὴν φυσικὴν ρώμην, παρίσταται δὲ τοσοῦτον μέγας, ὥστε ἡ γῆ μετὰ κόπου φέρει αὐτόν. Ὅπως δὲ οἱ Τιτᾶνες τῆς ἑλληνικῆς μυθολογίας, οὕτω καὶ αἱ προσωπικότητες αὗται συμβολίζουν τὸν ἀγῶνα τοῦ ἀνθρώπου πρὸς τὰ στοιχεῖα τῆς φύσεως. Ἀλλ' ὁ σλαβικὸς μῦθος δὲν ἔχει τὴν εὐρύτητα τῶν ἑλληνικῶν, τῶν ἀραβικῶν καὶ τῶν γερμανικῶν. Μετὰ τοῦ Βλαδιμήρου ἐμφανίζεται εἶδός τι ἱπποτισμοῦ, εἰς ὃν οἱ ὀπαδοὶ τοῦ ἡγεμόνος εἶναι μὲν γίγαντες, ἀλλὰ καὶ φαιδροὶ σύντροφοι καὶ ἡρωικοὶ πόται. Διὰ τῆς ἐποποιίας ὁ Βλαδίμηρος ἐλαχίστην θέσιν καταλαμβάνει εἰς τὴν ἱστορίαν, ὡς ἐπικὸς δὲ ἥρως δὲν ὑπῆρξε κατ' οὐσίαν ἄλλο τι εἰμὴ μέγας ὀργανωτὴς συμποσίων. Αἱ μπιλῖναι οὐδὲν ἀναφέρουσι περὶ τῆς εἰσαγωγῆς παρ' αὐτοῦ τοῦ Χριστιανισμοῦ. Προσωπικῶς ἐπίσης οὐδὲν ἔχει τὸ ἡρωικὸν τὰ αἰσθήματά του εἶναι ταπεινὰ καὶ ἡ πολιτική πανουργία του λίαν τετριμμένη. Τοιοῦτον παρουσιάζει τὸ ρωσικὸν ἔπος τὸν εἰσηγητὴν τοῦ Χριστιανισμοῦ, τὸν

Digitized by Google

ὁποῖον ἡ μὲν ἱστορία ἐκάλεσε μέγαν, ἡ δὲ Ἐκκλησία ἔταξε μεταξὺ τῶν ἁγίων. Ἐκ τούτου ἐξηγοῦνται αἱ κατάραι καὶ τὰ ἀναθέματα τῆς Ἐκκλησίας κατὰ τῶν ἀνωνύμων τούτων ποιημάτων. Ὁ εὐνοούμενος ἥρως τῶν μπιλινῶν εἶναι ὁ Ἠλίας τοῦ Μουρώμ. Ἐν τῷ προσώπῳ του ἐνσαρκοῦται τὸ ἰδεῶδες τῆς σωματικῆς ῥώμης καὶ τῆς εὐρωστίας τοῦ ἐθνικοῦ πνεύματος. Εἰς τὰ ποιήματα ταῦτα ἡ γυνὴ θεωρεῖται ὡς κοῦφον πλάσμα, ἐστερημένον κρίσεως καὶ λίαν ἄπιστον.

Διάφορος εἶναι ὁ κόσμος, ὃν παρουσιάζει ὁ κύκλος τοῦ Νοβογορόδ. Οἱ ἥρωες αὐτοῦ προέρχονται ἐκ λαοῦ ἐμπόρων, προσκυνητῶν τῶν ἁγίων τόπων, ναυτικῶν καὶ ἱδρυτῶν πόλεων· Ἐρίζουσι καὶ μάχονται ἐντὸς τῶν τειχῶν τῆς πόλεως καὶ ἀναδεικνύονται ὡς ἀρχηγοὶ ἀποστολῶν εἰς μουσουλμανικὰς χώρας, ὅπου μεταβαίνουν χάριν ἐμπορίας. Οἱ κυριώτεροι ἥρωες τῶν ποιημάτων τούτων εἶναι ὁ *Σάδκ* καὶ ὁ *Βασίλειος*. Ὁ πρῶτος εἶναι φυσιογνωμία ἐμπόρου θρησκολήπτου, ὁ δὲ δεύτερος ἀκόλαστος καὶ φωνασκός, ὅστις ἐν ὥρᾳ μέθης ἀποφασίζει τὴν σφαγὴν τῶν συμπολιτῶν του· ἀλλὰ προλαμβάνει ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τὸν κλείει ἐντὸς ὑπογείου. Ὅπως ἐξιλεωθῇ, ἀπέρχεται εἰς Ἱερουσαλήμ, ὅπου καὶ ἀποθνήσκει προσκόψαντος τοῦ ἵππου του εἰς βράχον. Θ. Β.

**Μπιλιόττι** (Biliotti), *σὲρ Ἀλφρέδος*· βλ. *Βιλιόττι*.

—**Μπιλιόττι** (Biliotti), *Ὕβος*. Ἰταλὸς στρατηγὸς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, καταγόμενος ἐκ Φλωρεντίας, τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν εἷς τῶν τελευταίων ὑπερασπιστῶν κατὰ τὴν πολιορκίαν αὐτῆς ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος τῆς Ὀράγγης, στρατηγοῦ τοῦ Γερμανοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου Ε' κατὰ τὸ 1529—1530. Μετὰ τὴν παράδοσιν τῆς πόλεως συνεπείᾳ τῆς προδοσίας τοῦ ἀρχιστρατήγου Μπαλιόνι, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπου ἐτέθη εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Φραγκίσκου Α' καὶ ἀπέθανε κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Διέππης. Ὁ τελευταῖος ἀπόγονος αὐτοῦ Ἰωσὴφ Ἰωακείμ, μαρκήσιον ντὲ Μπιλιόττι (1724—1794), ἐκαρατομήθη ἐν Ὀράγγᾳ ὡς ἀντεπαναστάτης. Μ. Δ. Β.

**μπιλκόμελι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἐφέδρα ἡ καμπυλόπους*.

**Μπίλλε** (Bille) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γερμανίας ἐν Πρωσσίᾳ, χωρίζων τὸ Ν. Ὀλστάϊν ἀπὸ τοῦ Λάουενμπουργκ καὶ συμβάλλων εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ κάτω ῥοῦ τοῦ Ἔλβα, μετὰ ῥοῦν 63 χλμ. Παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν δύο ποταμῶν σχηματίζεται ἡ μικρὰ ποταμόνησος *Μπίλλμπαιρντερ*, ὑπαγομένη εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Ἀμβούργου. Χ. Δ.

**Μπίλλε** (Bille), *Κάρολος Στὲν Ἄνδερσεν*. Δανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1828—1898). Κατήγετο ἐκ παλαιᾶς ἀριστοκρατικῆς οἰκογενείας. Τῷ 1851 ἵδρυσε τὴν ἐφημερίδα «Καθημερινήν», ἥτις ἀπέβη τὸ κυριώτερον ὄργανον τῶν λεγομένων «Δανῶν τοῦ Ἄιντερ» (τουτέστι τοῦ κόμματος τῶν ἐθνικοφιλελευθέρων Δανῶν). Διετέλεσε βουλευτὴς (1851—1880), ἀπὸ δὲ τοῦ 1880—1884 ὑπηρέτησεν ὡς ἐπιτετραμμένος ἐν Οὐσιγκτῶνι καὶ ἀπὸ τοῦ 1886 γενικὸς διοικητὴς ἐν Χόλμπεκ τῆς Σχαιδλάνδης. Ἔγραψε πολιτικὰς πραγματείας, ἄρθρα καὶ ἀπομνημονεύματα. Ἀξιόλογος εἶναι ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Tyve Aars Journalistik» (3 τόμ., 1873—1877) δημοσιευθεῖσα συλλογὴ διαφόρων ἄρθρων του.

—**Μπίλλε** (Bille), *Στὲν Ἄνδερσεν*. Δανὸς ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ (1797—1883). Κατετάχθη (1819) εἰς τὸ γαλλικὸν ναυτικὸν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Ἱσπανικὸν πόλεμον τοῦ 1823. Ἐπιστρέψας εἰς Κοπεγχάγην ὠνομάσθη ὑποπλοίαρχος καὶ προσεκολλήθη εἰς τὴν ἀκολουθίαν τῆς πριγκιπίσσης Καρολίνας τῆς Δανίας. Τὸ ὄνομά του κυρίως κατέστη γνωστὸν διὰ τὸν γῦρον τοῦ κόσμου, ὃν επεφορτίσθη νὰ ἐκτελέσῃ διὰ τοῦ ἀτμοπλοίου «Γαλάτεια» πρὸς ἐπιστημονικοὺς καὶ ἐμπορικοὺς σκοπούς. Τὸ ταξίδιον τοῦτο διήρκεσε δύο ἔτη (1845—1847), αἱ δὲ περὶ αὐτοῦ ἐντυπώσεις του ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὸ βιβλίον «Ἀφήγησις ταξιδίου περὶ τὴν Γῆν μὲ τὴν «Γαλάτειαν». Μετὰ ταῦτα ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν καὶ περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου του ὠνομάσθη ἀντιναύαρχος. Γ. Ι. Β.

**Μπίλλερ**, *Νικόλαος*. Ἕλλην δημοσιογράφος καὶ ἠθοποιός, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1819. Τὸ πραγματικὸν αὐτοῦ ὄνομα ἦτο *Παυλόπουλος*, ἀλλ' υἱοθετηθεὶς ὑπὸ τοῦ Βαυαροῦ Μπίλλερ, μετήλλαξεν ἔκτοτε τὸ ὄνομά του, ὅπερ καὶ διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του (1860). Ἔχων σφοδρὰν κλίσιν πρὸς τὸ θέατρον, ἔλαβε μέρος ὡς τακτικὸς ἠθοποιὸς εἰς τὸν κατὰ τὸ 1843 συσταθέντα πρῶτον ἐπίσημον ἑλληνικὸν θίασον, μετὰ τὴν διάλυσιν τοῦ ὁποίου (1844) ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν, κατ' ἐπανάληψιν φυλακισθεὶς διὰ τὰ κατὰ τῆς κυβερνήσεως ἄρθρα του. Τυχὼν χάριτος τῷ 1848, ἤρχισε νὰ ἐκδίδῃ ἐν Ἀθήναις ἰδίαν σατιρικὴν ἐφημερίδα «Τρακατρούκαν», χωρὶς ὅμως νὰ λησμονήσῃ καὶ τὴν σκηνήν, ἐφ' ἧς ἐνεφανίζετο ὁσάκις ἐδίδοντο θεατρικαὶ παραστάσεις. Ὁ Μπίλλερ εἶχε φήμην φαρσέρ μᾶλλον ἢ ἠθοποιοῦ, εἰς αὐτὸν δ' ὀφείλεται ὁ περίφημος στίχος: «Ἐν μιᾷ νυκτὶ καὶ μόνῃ, ἀντιστάσεως μὴ οὔσης, ἔθραυσαν ἀρειμανίως τοὺς φανοὺς τῆς πρωτευούσης». Τῷ 1850 ὁ Μπίλλερ ἀπεχώρησε τοῦ θεάτρου ὁριστικῶς, διορισθεὶς βοηθὸς εἰς τὸ τελωνεῖον Πατρῶν. Ν. Ι. Λ.

**μπίλλια** (ἡ), καὶ *μπιλλιάρδο* (τό)· βλ. λ. *μπίλια* καὶ *μπιλιάρδο*.

**μπιλλιέτο** (τό)· ἀντὶ *μπιλιέτο* (βλ. λ.).

**Μπίλλινγκς** (Billings), *Ἰωσήφ*. Ἄγγλος ἐξερευνητής, ἀκμάσας περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἠκολούθησε τὸν Κοὺκ εἰς τὸ τελευταῖον ταξίδιόν του, εἶτα δὲ ἀνέλαβε κατ' ἐντολὴν τῆς Αἰκατερίνης Β' ἀποστολὴν πρὸς τὸν Βόρειον Παγωμένον ὠκεανόν. Ἀναχωρήσας κατὰ Ὀκτώβριον τοῦ 1785, ἐξηρεύνησε κατ' ἀρχὰς τὰς παρὰ τὴν Ἀλάσκαν νήσους, τὸν δὲ Ἰούλιον τοῦ 1790 εἰσεχώρησε πέραν τοῦ πορθμοῦ τοῦ Πρίγκιπος Γουλιέλμου. Τὰς διαρκούσης τῆς ἐξερευνήσεως ταύτης περισυλλεγείσας ἐπιστημονικὰς καὶ γεωγραφικὰς πληροφορίας ἐξέθεσεν ὁ Σάουερ εἰς ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀπολογισμὸς τῆς γεωγραφικῆς καὶ ἀστρονομικῆς ἀποστολῆς τῶν ἐτῶν 1785—1894, εἰς τὰ βόρεια τῆς Ρωσίας» κλπ. (Λονδῖνον 1802). Χ. Δ.

**Μπίλλιστον**, ἢ *Μπλίτονγκ*, ἢ *Μπίλετον* (Billiton ἢ Clitong ἢ Cileton) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν Ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν Σούνδα, κειμένη μεταξὺ τῶν νήσων Βορνέο καὶ Μπάντα. Εἶναι σχήματος κυκλικοῦ, ἔχουσα μῆκος 83.5 χλμ. καὶ πλάτος 80, καταλαμβάνει δὲ ἔκτασιν 4807 τετρ. χλμ., ἀριθμεῖ 59.000 κατ. καὶ ἔχει πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Πάνταγκ*. Μεγάλα λατομεῖα κασσιτέρου καὶ σιδήρου καὶ ἐκτεταμένα δάση ξυλείας. Χ. Δ.

**Μπίλλροτ** (Billroth), *Χριστιανὸς - Ἀλβέρτος - Θεόδωρος*. Διάσημος Γερμανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Rügen (1829—1894). Μετὰ ἐπιστημονικὰ ταξίδια εἰς Βιένννην καὶ Παρισίους διετέλεσε βοηθὸς τοῦ von Langenbeck ἐν Βερολίνῳ, τῷ 1856 ἐγένετο αὐτόθι ὑφηγητὴς καὶ τῷ 1860 τακτικὸς καθηγητὴς καὶ διευθυντὴς τῆς χειρουργικῆς κλινικῆς τῆς Ζυρίχης. Τῷ 1866 ἐκλήθη εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βιέννης, ἔνθα καὶ παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του, μὴ δεχθεὶς τὰς προσενεχθείσας αὐτῷ θέσεις εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Rostock, τῆς Ἀϊδελβέργης καὶ τοῦ Βερολίνου. Ἀπέθανε τῷ 1894 ἐν Abbazia, καὶ ὁ θάνατός του ἐθεωρήθη ὡς μεγάλη διεθνὴς ἀπώλεια, τῷ ἐγένετο δὲ ἐν Βιέννῃ κηδεία μετὰ πριγκηπικῶν τιμῶν. Τῷ 1897 ἐγένοντο εἰς τὰ προπύλαια τοῦ Βιενναίου πανεπιστημίου τὰ ἀποκαλυπτήρια τῆς προτομῆς του. Ἡ ἀξία τοῦ Μπίλλροτ ἔγκειται εἰς τὸ ὅτι εἰς πρώτην γραμμὴν ἔθεσεν ἐν τῇ χειρουργικῇ τὴν κατεύθυνσιν πρὸς ἱστολογικὰς καὶ ἀνατομοπαθολογικὰς ἐρεύνας, θεωρήσας ταύτας ὡς βάσιν πάσης χειρουργικῆς προόδου. Τὴν μεγάλην αὐτοῦ φήμην ὤφειλεν εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ εἰσαχθεῖσαν χειρουργικὴν τῶν σπλάγχνων, ἥτις, χάρις εἰς τὰς προόδους τῆς ἀντισηψίας καὶ ἀσηψίας, ἀπέβη τελεσφόρος, διηύρυνε τὰ ἐγχειρητικὰ ὅρια τῆς ἐπιστήμης καὶ ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν τῷ 1874 νὰ ἐκτελέσῃ τὴν πρώτην τελείαν λαρυγγεκτομήν, τῷ δὲ 1881 νὰ προβῇ εἰς τὴν πρώτην ἐπιτυχῆ πυλωρεκτομήν.

*Χριστιανὸς Μπίλλροτ.*

Τὸ κλασσικὸν αὐτοῦ, τὸ ἀναγνωρισθὲν ὡς διεθνοῦς ἀξίας, σύγγραμμα τῶν μαθημάτων «Γενικῆς χειρουργικῆς παθολογίας καὶ θεραπευτικῆς» μετεφράσθη εἰς ὅλας τὰς γλώσσας, διατηρεῖ δὲ καὶ νῦν τὴν μεγάλην ἀξίαν του. Ὁ Μπίλλροτ ἦτο εὐρείας ἐγκυκλοπαιδικῆς μορφώσεως, ἔτρεφε δὲ ἀπεριόριστον ἐνθουσιασμὸν πρὸς τὰς τέχνας, τὴν ποίησιν καὶ τὴν μουσικήν. Ἐκτὸς ἄλλων μεθόδων χρησιμοποιεῖται καὶ σήμερον ἡ κατὰ Μπίλλροτ μέθοδος πυλωρεκτομῆς, συνισταμένη εἰς τὴν ἐξαίρεσιν τοῦ ὄγκου καὶ εἰς τὴν ῥαφὴν πρὸς ἄλληλα τοῦ στομαχικοῦ καὶ πυλωρικοῦ ἄκρου. Ο. Ρ.

**Μπιλλὺ-Μοντινιὺ** (Billy-Montigny) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πὰ-ντὲ Καλαί, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 25 χλμ. ἀπὸ τῆς Μπετόν. Ἔχει ἀξιόλογα ἀνθρακωρυχεῖα. Κάτ. 9.940. Χ. Δ.

**Μπίλμα** (Bilma) *[Γεωγρ.]*. Ὄασις τῆς μεσημβρινῆς Σαχάρας μεταξὺ Ἀϊρ καὶ Τιμπέστι, κατεχομένη ὑπὸ τῆς Γαλλίας ἀπὸ τοῦ 1907. Διοικητικῶς ὑπάγεται εἰς τὴν διοίκησιν τοῦ Νίγηρος τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς. Ἡ ἐπὶ τῆς ὀάσεως κώμη *Γκαροὺ* ἀπέχει 1.300 χλμ. πρὸς Ν. τῆς Τριπολίτιδος καὶ 560 χλμ. πρὸς Β. τῆς λίμνης Τσάντ. Ἔχει σπουδαιοτάτας ἁλιπηγάς. Χ. Δ.

**Μπιλμπάο** (Bilbao) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη πόλις τῆς Ἱσπανίας, πρωτεύουσα τῆς Βισκαΐας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ναρβιόν, 14 χλμ. πρὸ τῆς εἰς τὸν Βισκαϊκὸν κόλπον ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ 614 χλμ. πρὸς Β. τῆς Μαδρίτης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς (43° 20' Β. πλάτ. καὶ 2° 55' Δ. μήκ. Γκρήνουιτς). Εἶναι ἡ μεγαλυτέρα καὶ κυριωτέρα πόλις τῆς Βισκαΐας καὶ ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων βιομηχανικῶν καὶ ἐμπορικῶν κέντρων καὶ λιμένων τῆς Ἱσπανίας ὁλοκλήρου, μὲ πληθυσμὸν (1930), 160.501 κατοίκων. Εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ γραφικωτάτης λοφώδους καὶ καταφύτου θέσεως, περιβαλλομένης ὑπὸ τῶν ὀρέων Ἀκάντα, Ἀμπρίλ, Ἀρνότεγκι καὶ Μιραβίλλια, ἐκτείνεται δὲ πρὸς ἀμφοτέρας τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ, τὸν ὁποῖον ζευγνύουσι πέντε γέφυραι. Ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης ἐκτείνεται ἡ παλαιὰ πόλις (Bilbao la Vieja), μὲ στενὰς καὶ σκολιὰς λιθοστρώτους ὁδοὺς καὶ παλαιὰς οἰκίας, τῶν ὁποίων πολλαὶ ἀνήκουσιν εἰς τοὺς ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνας, ἀποτελοῦσα πρότυπον παλαιᾶς ἱσπανικῆς πόλεως, μὲ ἀμιγῆ σχεδὸν τὸν μεσαιωνικὸν αὐτῆς χαρακτῆρα. Ἀπέναντι ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης ἁπλοῦνται αἱ νέαι συγχρόνου ῥυθμοῦ συνοικίαι, ἔχουσαι εὐρείας ὁδούς, νέα οἰκοδομήματα καὶ κατάφυτα πάρκα. Κάλλιστα ἐκ τῶν κτηρίων τῆς πόλεως εἶναι ἡ ἀνωτάτη σχολὴ ἐμπορίου, τὸ ἰνστιτοῦτον Ἀλφόνσου Γ', τὸ μέγαρον τῆς Ἐμπορικῆς Τραπέζης, τὸ δημαρχεῖον καὶ οἱ δύο παλαιοὶ ναοὶ τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου καὶ τοῦ Ἁγίου Ἰάγου, παρουσιάζοντες μέγιστον ἐνδιαφέρον ἀπὸ ἀρχιτεκτονικῆς ἀπόψεως. Ἐπίσης ἀξιομνημόνευτον ἐκ τῶν κοσμούντων αὐτὴν μνημείων εἶναι ὁ ἀνδριὰς τοῦ ἱδρυτοῦ αὐτῆς Διέγου Λόπεθ ντὲ Ἄρο, ἔργον τοῦ Μπενλλιοῦρε. Τὸ Μπιλμπάο ἔχει τρία μουσεῖα, τὸ Ἀρχαιολογικὸν καὶ ἐθνογραφικόν, τῶν Καλῶν Τεχνῶν, ἔνθα φυλάσσονται μεταξὺ πολλῶν ἄλλων καὶ ἔργα τῶν Θεοτοκοπούλου, Θουρμπαράν, Ριμπέρα, Ἀλόνσο Κάνο κλπ., καὶ τὸ μουσεῖον τῆς Νέας Τέχνης, πλούσιον ὁμοίως εἰς καλλιτεχνικὰ ἔργα. Ἐπίσης ἔχει τρεῖς βιβλιοθήκας μὲ συνολικὸν ἀριθμὸν 64.500 τόμων, ἀνωτάτην σχολὴν ἐμπορικῶν σπουδῶν, διδασκαλεῖον, ναυτικὴν σχολήν, σχολὴν μεταλλειολόγων καὶ ἄλλα ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα. Ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Βισκαϊκοῦ κεῖνται τὰ δύο ἐπίνεια τοῦ Μπιλμπάο *Πορτουγκαλέτε* καὶ *Λὰς Ἀρένας*, ἐκτισμένα ἀπέναντι ἀλλήλων, τὸ μὲν πρῶτον, τὸ καὶ παλαιότερον, ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ναρσιόν, τὸ δὲ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς, συγκοινωνοῦσι δ' ἀμφότερα μετὰ τῆς κυρίως πόλεως διὰ σιδηροδρόμων καὶ συνδέονται πρὸς ἄλληλα διὰ μεγάλης κρεμαστῆς γεφύρας, ἐκ τῶν καλλίστων μηχανικῶν ἔργων τῆς Ἱσπανίας. Εἰς τὸ σημεῖον τῆς ἐκβολῆς τοῦ ποταμοῦ κεῖται ὁ ἐξωτερικὸς τεχνητὸς λιμήν, προφυλασσόμενος ὑπὸ δύο μεγάλων βραχιόνων. Ὁ ποταμός, χάρις εἰς κατάλληλον διευθέτησιν τῆς κοίτης του, εἶναι πλωτός, ἐξυπηρετῶν εὐρύτατα τὸ ἐμπόριον καὶ τὴν βιομηχανίαν τῆς πόλεως.

Τὸ Μπιλμπάο ὀφείλει τὴν ἁλματώδη ἀνάπτυξίν του εἰς τὴν μεγάλην ἐμπορικὴν καὶ βιομηχανικήν του κίνησιν, κυρίως δὲ εἰς τὰ πλούσια παρ' αὐτὸ μεταλλεῖα σιδήρου. Ἔχει μεγάλας μεταλλουργικάς, χαλυβδουργικὰς καὶ σιδηρουργικὰς ἐγκαταστάσεις, ὑψικαμίνους, χυτήρια, μηχανουργεῖα κλπ. Εἰς δευτερεύουσαν, ἀλλ' οὐχ ἧττον ἀξιόλογον μοῖραν ἀκολουθοῦσιν αἱ χαρτοποιητικαί, ὑελουργικαί, χημικαί, ναυπηγικαί, οἰνοπνευματοποιητικαὶ κ. ἄ. βιομηχανίαι. Ὁ λιμήν, καλῶς διερρυθμισμένος καὶ ἐφωδιασμένος διὰ νεωτάτων ἐγκαταστάσεων δεξαμενίσεως καὶ φορτοεκφορτώσεως, ἐσημείωσε κατὰ τὸ ἔτος 1925, κατάπλους καὶ ἀπόπλους 1.304 πλοίων χωρητικότητος 1.905.766 τόννων, ἐξ ὧν 477 ἱσπανικὰ (625.755 τόννων) καὶ 278 βρεττανικὰ (919.535 τόννων). Χαρακτηριστικώτερον πειστήριον τῆς μεγάλης κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἀναπτύξεως τοῦ Μπιλμπάο δίδει ἡ ἁλματώδης αὔξησις τοῦ πληθυσμοῦ αὐτοῦ, ὁ ὁποῖος περὶ τὰ τέλη τοῦ παρελθόντος αἰῶνος ἀνήρχετο εἰς 35.000 μόνον κατοίκων.

— *[Ἱστορ.]* Τὸ Μπιλμπάο, καλούμενον παλαιότερον Belvao (λατιν. Bilbaum ἢ Bellum Vadum), ἐκτίσθη τῷ 1300 ὑπὸ τοῦ δὸν Διέγου Λόπεθ ντὲ Ἄρο ἐπὶ τῆς θέσεως τῆς ἀρχαίας πόλεως Flaviobriga, προήχθη δὲ ταχέως ὡς ἐμπορικὴ πόλις, ἰδίως ἀπὸ τοῦ 1511, ὁπότε ἤρχισε λειτουργοῦν ἐν αὐτῇ τοπικὸν συμβούλιον (consulado), συγκροτηθὲν κατὰ τὸ σύστημα τοῦ ἐν Μποῦργκος ὑπάρχοντος ἤδη τοιούτου. Ἐκ παραλλήλου εἶχεν ἤδη τεθῆ ἐν ἰσχύϊ ἀπὸ τοῦ 1459 σπουδαιότατος ἐμπορικὸς κῶδιξ, καταρτισθεὶς ὑπὸ τῆς συντεχνίας τῶν ἐμπόρων, ὅστις τροποποιηθεὶς καὶ βελτιωθεὶς βαθμηδὸν ὑπὸ τοῦ consulado ἀπετέλεσε τῷ 1737, ὑπὸ τὴν τελικὴν αὐτοῦ μορφὴν ὡς «ordenanzas de Bilbao» τὴν βάσιν τοῦ ἐμπορικοῦ νόμου τῆς Ἱσπανίας καὶ πολλῶν νοτιοαμερικανικῶν δημοκρατιῶν.

Ὁ ἐμπορικὸς οὗτος νόμος πλεονεκτεῖ ἀπέναντι τοῦ γνωστοτάτου ἐπίσης «Libro del Consulado de Mar» τῆς Βαρκελώνης, διότι ἀφορᾷ τό τε χερσαῖον καὶ τὸ θαλάσσιον ἐμπόριον. Τὸ Μπιλμπάο κατελήφθη δὶς ὑπὸ τῶν Γάλλων, τῷ 1795 καὶ 1808

Digitized by Google

καὶ ὑπέστη πολλὰς πολιορκίας· κατὰ τὰς ἐπαναστάσεις τῶν Καρλιστῶν, τῶν ὁποίων ὁ ἀρχηγὸς Θουμάλα-Καρρέγκυ ἐτραυματίσθη θανασίμως πρὸ τῶν τειχῶν τῆς πόλεως τῷ 1835. Τῷ 1874 ἐπίσης ὑπέστη αὐτὴ νέαν μεγάλην πολιορκίαν, καθ' ἣν κινδυνεύουσα ἐσώθη ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Κόνκα. Χ.Δ.

—**Μπιλμπάο σιδηρομεταλλεύματα** (Bilbaos-Eisenerze). Ὀνομαστὰ κοιτάσματα σιδηρομεταλλευμάτων, εὑρισκόμενα εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ *Μπιλμπάο* τῆς ἐπαρχίας Βισκαΐας. Κεῖνται εἰς ἀμφοτέρας τὰς πλευρὰς ἀντικλίνου, ἀποτελουμένου ἐκ κρητιδικῶν στρωμάτων καὶ διευθυνομένου πρὸς ΒΔ., ἐμφανίζονται δ' εἰς ζώνην 24 χιλιομέτρων μήκους καὶ 10 χιλιομέτρων πλάτους. Συνδέονται μὲ τὰ στρώματα τῆς κατωτέρας κρητιδικῆς ὑποπεριόδου τοῦ μεσοζωϊκοῦ αἰῶνος καὶ δὴ μετὰ τῶν ἀσβεστολίθων τῆς ἀπτίου ἡλικίας τῆς ὑποπεριόδου ταύτης. Ἔχουν χαρακτῆρα ὑδρομετασωματικόν. Κατ' ἀρχὰς ἐσχηματίσθη σιδηρίτης, ὁ ὁποῖος ἀργότερον δι' ὀξειδώσεως μετεβλήθη εἰς καστανόφαιον καὶ ἐρυθρὸν σιδηρομετάλλευμα. Τὸ πάχος των εἶναι, ὅπως εἰς ὅλα τὰ ἐκ μετασωματώσεως κοιτάσματα, πολὺ μεταβλητόν, καὶ ἡ μορφὴ των ἀκανόνιστος. Ἐξορύσσουν μαλακοὺς ψαθυροὺς ἐρυθροὺς σιδηρολίθους (Βένα) μὲ 49—60 % σίδηρον, στερεὸν κρυσταλλοφυᾶ ἐρυθρὸν σιδηρόλιθον (Campanil) μὲ 46—52 % σίδηρον, καστανόφαιον σιδηρομετάλλευμα μὲ πυριτικὰς προσμίξεις (Rubio) μὲ 50 % σίδηρον καὶ ἰδιαιτέρως σιδηρίτην (Carbonato) μὲ 40 % περίπου σίδηρον. Ὅλα τὰ μεταλλεύματα ἔχουν ὀλίγον μαγγάνιον καὶ πολὺ ὀλίγον φωσφόρον. Διὰ καταστροφῆς τοῦ καστανοφαίου σιδηρομεταλλεύματος ἐγεννήθη μῖγμα θραυσμάτων σιδηρομεταλλεύματος καὶ ἀργίλλου, τὸ ὁποῖον ὀνομάζουν *Χίρτα* (Chirta). Ἡ οἰκονομικὴ σημασία τῶν θραυσματοπαγῶν αὐτῶν κοιτασμάτων αὐξάνει ἀπὸ ἔτους εἰς ἔτος. Προπολεμικῶς ἡ παραγωγὴ τῆς περιοχῆς τοῦ Μπιλμπάο ἔφθανε περίπου 5 ἑκατομμύρια τόννων. Γ. Κ. Γ.

**Μπιλμπάσωφ, *Βασίλειος Ἀνδρέγιεβιτς*.** Ρῶσος ἱστορικὸς (1837—1904). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τοῖς πανεπιστημίοις Χάρκοβ καὶ Πετρουπόλεως καὶ συνέγραψεν: «Οἱ Ψευδοδημήτριοι», «Βόρις Γκοντουνώφ», «Ἱστορία Αἰκατερίνης Β'» καὶ ἄλλα. Θ. Β.

**Μπιλμπεΐς** (Bilbeis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς κάτω Αἰγύπτου, κειμένη ἐγγὺς τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ἀνατολικωτέρου βραχίονος τοῦ δέλτα τοῦ Νείλου ἐπὶ τῆς ἀπὸ Καΐρου εἰς Ζαγαζίκιον σιδηροδρομικῆς γραμμῆς. Σπουδαῖος σταθμὸς τῶν πρὸς τὴν Συρίαν καραβανίων. Κάτ. 11.500. Χ. Δ.

**Μπίλντερντεκ** (Bilderdijck), ***Βίλλιμ***. Ὀλλανδὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1756—1831). Ἐσπούδασε νομικά, ἀλλὰ ταχέως ἀφωσιώθη εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ ἔγραψε τὰς τραγῳδίας: «Elfriede» (1808), «Dargo» καὶ «Ramiro» καὶ τὰ ποιήματα: «Gedichten voor Kinderen» (1813). Μετέφρασε κατόπιν ἔργα τοῦ Σοφοκλέους, Ὁμήρου, Ὀβιδίου καὶ Ὁρατίου καὶ ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «De ziekde der geleerden» (1807), τὸ ὁποῖον θεωρεῖται ὡς τὸ ποιητικόν του ἀριστούργημα, τὸ ἡμιτελὲς ἔπος «De ondergang der eerste wereld» (1809), τὰ δράματα: «Floris V», «Willem van Holland» καὶ «Kornak», καὶ τὸ ποίημα «Hollands verlossing» (1813—1814, εἰς 2 τ.), εἰς τὸ ὁποῖον πανηγυρίζει τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς πατρίδος του. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθη τὸ ἱστορικόν του ἔργον «Geschiedenis des vaderlands» (1832—1851, εἰς 13 τ.). Τὰ ποιητικά του «Ἅπαντα» μετὰ βιογραφίας ἐξεδόθησαν ὑπὸ Da Costa (1856—1859). Γ. Ε. Κ.

**Μπιλοκομήτι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 208. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Καρβασαρᾶς*. Χ. Δ.

**Μπιλοντίντσα** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Λευκόγεια* (βλ. λ.) τῆς ἐπαρχίας Νευροκοπίου.

**Μπίλοξι** (Biloxi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς κομιτείας Χάρισσον τῆς πολιτείας Μισσισσιπῆ ἐν Ἀμερικῇ, εἰς τὸν ὁμώνυμον ὅρμον τοῦ κόλπου τοῦ Μεξικοῦ. Εἶναι ἐξοχικὴ διαμονὴ καὶ ἔχει ἀνθοῦσαν βιομηχανίαν κονσερβῶν καὶ εἰδῶν ἐκ πορσελλάνης. Κάτοικοι 7.988. Π. Γ. Λ.

**Μπιλς** (Bils καὶ λατιν. Bilsius), ***Λουδοβῖκος φὸν*** —. Ὀλλανδὸς ἀνατόμος (1624—1670). Χωρὶς νὰ εἶναι ἰατρός, κατεῖχε μέθοδον ταριχεύσεως, ἣν ἐκράτει μυστικήν. Τὸ πανεπιστήμιον τῆς Louvain τῷ ἐπρομήθευσε 5 πτώματα, ἅτινα ὅμως δὲν διετηρήθησαν πλέον τῶν 4 ἐτῶν. Τὸ μυστικὸν τοῦ Μπὶλς εὑρέθη ἐντὸς ἐνσφραγίστου φακέλου εἰς τὰ ἀρχεῖα τῆς Ἑταιρείας τῶν ἐπιστημῶν τῆς πόλεως Middelbourg. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «L. de Bils inventa anatomica antiquonova κτλ.» (1692). Ο. Ρ.

**Μπίλσα** (Bhilsa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν *Μποπάλ*, κειμένη 51 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Μποπάλ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῶν περιφήμων περὶ αὐτὴν βουδικῶν μνημείων, τῶν ὁποίων σπουδαιότερον εἶναι ὁ μέγας ναὸς τοῦ Σάντσι, πολυσύχναστος τόπος προσκυνήματος. Εἰς τὴν περιοχὴν τῆς πόλεως ὑπάρχουν μεγάλαι καπνοφυτεῖαι. Κάτ. 9.000. Χ. Δ.

**Μπιλσόβσκυ** (Bielschowsky), ***Ἀλβέρτος***. Γερμανὸς ἱστορικὸς τῆς λογοτεχνίας (1847—1902). Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς γερμανικῆς ἀγροτικῆς ποιήσεως κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα», «Schwiegerlingsche Puppenspiel vom Doktor Faust» καὶ βιβλίον περὶ τοῦ «Γκαῖτε», μεγάλως ἐπαινεθέν. Α. Δ.

**Μπίλστον** (Bilston) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ Στράτφορντ καὶ ἐπὶ τῆς διώρυγος Βίρμιγχαμ. Κάτ. 25.000. Εἰς τὴν περιφέρειαν αὐτῆς ὑπάρχουν μεγάλα ὀρυχεῖα ἀνθρακος καὶ σιδήρου. Π. Γ. Λ.

**Μπίλσχαιλε** (Bielshöhle) *[Γεωγρ.]*. Ὡραῖον σπήλαιον τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ *Μπλάνκενμπουργκ* τῆς Βρουνσβίκης, τὸ ὁποῖον ἔχει βάθος 210 μ. καὶ περιλαμβάνει 15 διαμερίσματα πλήρη θαυμασίων σταλακτιτῶν. Ἡ εἴσοδος αὐτοῦ ἀνεκαλύφθη τῷ 1672. Χ. Δ.

**Μπιλφίνγκερ**, ἢ **Μπιουλφφίνγκερ** (Bilfinger ἢ Bülffinger), ***Γεώργιος-Βερνάρδος***. Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1693 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1750. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων μαθητῶν τοῦ Βόλφ. Γενόμενος κατὰ σύστασιν αὐτοῦ καθηγητὴς τῆς λογικῆς καὶ μεταφυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πετρουπόλεως, διετήρησε τὴν ἕδραν ταύτην μέχρι τοῦ 1731. Προσκληθεὶς ὑπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Βυρτεμβέργης, ὠνομάσθη πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς πόλεως ταύτης καὶ ἔλαβε καὶ διαφόρους ἄλλας τιμητικὰς θέσεις, τὰς ὁποίας διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Disputatio de harmonia praestabilita» (1721), «Disputatio de triplici rerum cognitione, historica, philosophica et mathematica» (1722), «Commentatio hypothetica de harmonia animi et corporis humani maxime praestabilita ex mente Leibnitii» (1723—1735), «Commentationes philosophicae de origine et permissione mali, praecipue moralis» (1724), «Dilucidationes philosophicae de Deo, anima humana, mundo et generalibus rerum affectionibus (1725), «Praecepta logica» (1729) κλπ. —Ω.

**Μπίλχαρτζ** (Bilharz), ***Θεόδωρος***. Γερμανὸς ἰατρὸς (1825—1862). Ἀποφοιτήσας τοῦ πανεπιστημίου τῆς Τυβίγγης ἠκολούθησε τὸν καθηγητὴν τοῦ Griesinger κατὰ τὴν εἰς Αἴγυπτον ἀποστολήν του, τῷ δὲ 1855 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἐν Καΐρῳ ἰατρικῆς σχολῆς. Κατέστη κυρίως γνωστὸς ἐκ τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἐν Αἰγύπτῳ γενομένης ἀνακαλύψεως παρασίτου ἐν τῷ φλεβικῷ αἵματι καὶ τῇ οὐροδόχῳ κύστει, προκαλοῦντος εἰδικὴν νόσον, τὴν *βιλαρτίωσιν*, καὶ γνωστοῦ ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἐνδόζῳον δίστομον τοῦ Μπίλχαρτζ*. Ο. Ρ.

**Μπίμα** (Bima) *[Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς ΒΑ. παραλίας τῆς νήσου Συμπάβα τῶν Ὀλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἰθαγενοῦς σουλτανάτου, ἐκτεινομένου ἐπὶ τοῦ Α. τμήματος τῆς νήσου. Ὁ λιμὴν εἶναι ὠχυρωμένος, ὑπάρχει δ' ἐντὸς τοῦ φρουρίου καὶ λιθόκτιστον ἀνάκτορον. Διεξάγει ἐμπόριον ξυλείας καὶ ἵππων. Χ. Δ.

**Μπίμα** (Bhima) *[Ἰνδ. Μυθολ.]*. Εἷς τῶν ἡρώων τῆς Μαχαβαράτας, υἱὸς τοῦ Βαγιοῦ, θεοῦ τοῦ ἀνέμου. Ἐκπροσωπεῖ τὴν κτηνώδη δύναμιν κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν λεπτότητα τῶν αἰσθημάτων καὶ τὴν δεξιότητα, αἵτινες διακρίνουσι τοὺς ἀδελφούς του Γιουντιστίρα καὶ Ἀρτζούνα. Α. Δ.

**Μπιμλιπατάμ** (Bimlipatam) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ περιφερείᾳ Βιζαγκαπατὰμ τοῦ Μαντράς. Εἶναι ὁ σπουδαιότερος λιμὴν τῆς περιφερείας, διὰ τοῦ ὁποίου γίνεται σημαντικὴ ἐξαγωγὴ σπορελαίων καὶ γιούτας. Κάτοικοι 10.212. Π. Γ. Λ.

**Μπιμπὰν** (Bibanes) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς Μικρᾶς Καβυλίας ἐν Ἀλγερίᾳ, κειμένη πρὸς Δ. τοῦ ποταμοῦ Μπού-Σελλάμ. Ἐπὶ τῶν πλευρῶν αὐτῆς ἔχουσιν ἐκσκαφῆ ὑπὸ τῶν ὑδάτων τοῦ ποταμοῦ Σέμπα θαυμάσιαι φάραγγες φερώνυμοι τῶν ὀρέων, ἄλλως καὶ «σιδηραῖ πύλαι» καλούμεναι, διὰ τῶν ὁποίων διέρχεται ἡ ἀπὸ Μπενὶ-Μανσοὺρ εἰς Μπόρντζ-μπού-Ἀρρερὶντζ ὁδός. Ἡ διάβασις τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων τῷ 1839 ἐπῆλθε ἓν τῶν σημαντικωτέρων γεγονότων τῆς καταλήψεως τῆς Ἀλγερίας. Χ. Δ.

— **Μπιμπὰν Τζεμπὲλ** (Bibane Djebel) *[Γεωγρ.]*. Βουνὸν τοῦ Μαρόκου ὕψους 800 μ., κείμενον πρὸς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ουέργκα. Εἰς τὸν ἐπ' αὐτοῦ στρατιωτικὸν σταθμὸν ἐπολιορκήθησαν τῷ 1925 (25 Μαΐου—5 Ἰουνίου) οἱ 52 φύλακες στρατιῶται τοῦ γαλλικοῦ ἀποικιακοῦ στρατοῦ ὑπὸ πολυαρίθμων Ριφανῶν ἐπαναστατῶν, διαθετόντων καὶ πυροβολικόν, καὶ ἔπεσαν ἀμυνόμενοι μέχρις ἑνός. Χ. Δ.

— **Μπιμπὰν-ἐλ-Μολοὺκ** (Bibane-el-Moluk) *[Γεωγραφ.]*. Ὄνομα τοῦ πρὸς Δ. τῶν ἀρχαίων Θηβῶν τμήματος τῆς κοιλάδος τοῦ Νείλου, ἔνθα ἡ μεγάλη νεκρόπολις, ὅπου σῴζονται οἱ μεγαλοπρεπεῖς τάφοι τῶν φαραὼ τῶν ΙΗ', ΙΘ' καὶ Κ' δυναστειῶν, Ραμσῆ, Μενεφθᾶ, Τουταγχαμών, Θουθμώσεως Α' καὶ Γ', Ἀμενόφιος κ. ἄ. Οἱ τάφοι οὗτοι εἶναι λαξευμένοι ἐντὸς βράχων τῶν ὀρέων τῆς Λιβυκῆς ὀροσειρᾶς, ἀνευρέθησαν δ' ἐντὸς αὐτῶν τὰ πολυτιμότερα εὑρήματα τῆς αἰγυπτιακῆς ἀρχαιολογίας. Χ. Δ.

**Μπιμπάρς**, ἢ ***Μπαϊμπράς***, καὶ ***Μελὶκ-Δαχὲρ Ρουκν-ἐντ ντίν***. Ἔκτος σουλτᾶνος τῆς δυναστείας τῶν βαχριδῶν Μαμελούκων τῆς Αἰγύπτου. Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς ὡς ἁπλοῦς στρατιώτης, κατόπιν δὲ ὡς ἀρχηγὸς (ἐμίρης) τῆς σωματοφυλακῆς τῶν Ἐγιουπιδῶν σουλτάνων. Τῷ 1249 ἐδολοφόνησε τὸν σουλτᾶνον Τουρὰν-Σάχ, τῷ δὲ 1260 ἀνῆλθε τὸν σουλτανικὸν θρόνον, ἀφοῦ ἐφόνευσε τὸν σουλτᾶνον Κουτούζ. Πολεμήσας κατὰ τῶν Μογγόλων τοῦ Χολαγκιοῦ, ἐγγόνου τοῦ Δζεγκὶζ-Χάν, ἠνάγκασεν αὐτοὺς νὰ ἐκκενώσωσι τὴν Συρίαν. Ἀγωνισθεὶς ὡσαύτως κατὰ τῶν Φράγκων ἐκυρίευσε τὴν Καισάρειαν τῆς Παλαιστίνης, τὴν Λαοδίκειαν καὶ τὴν Ἀντιόχειαν, ἀλλ' ἀπέτυχε κατὰ τὴν ἐναντίον τῆς Πτολεμαΐδος (Ἄκρας) ἐπίθεσιν. Ἐκστρατεύσας δὲ καὶ κατὰ τῶν Σελτζουκιδῶν Τούρκων, τῶν λεγομένων Ρουμ (Ρωμαίων), κατέλυσε τὴν δυναστείαν ταύτην καὶ κατέλαβε τὴν Μικρὰν Ἀρμενίαν. Ἀπέθανεν ἐν Δαμασκῷ δηλητηριασθείς, ὡς λέγεται. Κατὰ τὴν βασιλείαν του ἀνηγέρθησαν ἐν Καΐρῳ πλεῖστα μνημεῖα, ἐν οἷς ἡ Πύλη τῶν λεόντων. Ν. Μ.

**μπιμπελὸ** (τό) λέξις γαλλικὴ (bibelot), τῆς ὁποίας γίνεται χρῆσις πρὸς ὀνομασίαν διαφόρων *μικροτεχνημάτων* (βλ. λ.) κατεσκευασμένων ἐκ μαρμάρου, πορσελλάνης ἢ ἄλλης πλαστικῆς ὕλης, ἐξ ἀργύρου ἢ καὶ κοινῶν μετάλλων, ἐξ ἐλεφαντόδοντος, ἠλέκτρου, ἐβένου ἢ ἄλλων πολυτίμων ξύλων, καὶ χρησιμοποιουμένων πρὸς συμπληρωματικὸν διάκοσμον αἰθουσῶν, κοιτώνων, καλλωπιστηρίων, γραφείων κτλ. Τὰ μπιμπελὸ τοποθετοῦνται ἰδίως ἐπὶ τοῦ μαρμάρου τῆς θερμάστρας ἢ τοῦ μπουφέ, ἐπὶ τοῦ πιάνου, τοῦ γραφείου ἢ τῆς βιβλιοθήκης, εἰς μικρὰς ἐταζέρας ἀνηρτημένας ἀπὸ τῶν τοίχων, ἢ καὶ εἰς ἐπὶ τούτῳ κατασκευαζόμενα εἰδικὰ διακοσμητικὰ ἔπιπλα ποικίλων τύπων, φέροντα συνήθως θυρίδας μετὰ κατόπτρων. —Ρ.

**Μπίμπερ** (Biber), ***Ἐρρῖκος-Ἰγνάτιος-Φραγκῖσκος φὸν*** —. Αὐστριακὸς μουσουργὸς (1644—1704). Διακεκριμένος δεξιοτέχνης τοῦ βιολίου, ὠνομάσθη μουσικὸς διευθυντὴς τῆς ἀρχιεπισκοπῆς τοῦ Σαλτσβούργου, δι' ἣν ἔγραψε σειρὰν θρησκευτικῶν ἔργων, κυρίως δι' ὄργανα. Εἰς τὸ θέατρον ὁ Μπίμπερ ἔδωκε τὰ μελοδράματα: «Chi la dura la vince» (Σαλτσβούργον 1681) καὶ «L'ossequio di Salisburgo» (1799). Γ. Σ.

**μπιμπερὸ** (τό) βλ. λ. *θήλαστρον*.

**Μπιμπερστάϊν** (Bieberstein), ***Μάρσαλ φὸν*** — (Marschall von Bieberstein). Γερμανὸς πολιτικὸς καὶ διπλωμάτης (βλ. λ. *Μάρσαλ φὸν Μπιμπερστάϊν*).

**Μπιμπέσκο** (Bibesco). Ρουμανικὴ ἡγεμονικὴ οἰκογένεια, καταγομένη ἐκ Μικρᾶς Βλαχίας. Κατὰ τὴν περίοδον τῶν Ἑλλήνων ἡγεμόνων πολλὰ τῶν μελῶν αὐτῆς κατέλαβον μεγάλας πολιτικὰς θέσεις. Ἀκολουθοῦσα τὴν ρωσικὴν πολιτικὴν ἀπέκτησε τὴν εὔνοιαν τῶν αὐτοκρατόρων τῆς Ρωσίας, ἐπὶ δὲ τσάρου Νικολάου Α', τῇ ἐπεμβάσει αὐτοῦ, ἀνυψώθη εἰς τὸ ἀξίωμα τῆς ἡγεμονίας (1845). Ἐκ τῆς οἰκογενείας ταύτης πλεῖστοι διέπρεψαν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ εἰς τὰ γράμματα. Θ. Β.

— **Μπιμπέσκο** (Bibesco), ***Γεώργιος, πρίγκιψ***. Ρουμάνος ἀξιωματικὸς τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, γεννηθεὶς ἐν Βουκουρεστίῳ τῷ 1834 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1902. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τοῦ Σαὶν-Σύρ. Τῷ 1861 ἀπεστάλη εἰς Μεξικόν, διεκρίθη δὲ κατὰ τὰς μάχας τοῦ Κομπιὲς καὶ τῆς Πουέμπλα. Τῷ 1867 ἀπεστάλη εἰς Ἀλγερίαν καὶ ἐπιστρέψας τὸ ἐπόμενον ἔτος ἀπεστρατεύθη, κατεγίνετο δὲ εἰς τὰ γράμματα καὶ τὰς τέχνας. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου (1870) ἐπανῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν καὶ τραυματισθεὶς εἰς Σεντὰν ᾐχμαλωτίσθη. Μετὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς εἰρήνης παρητήθη καὶ ἠσχολήθη εἰς τὴν φιλολογίαν, ἐδημοσίευσε δὲ πλεῖστα ἔργα, ἐξ ὧν: «L'histoire d'une frontière», »Le corps Lorencez devant Puebla», «Retraite des Cinq mille» «Campagne de 1870» κττ. Θ. Β.

— **Μπιμπέσκο** (Bibesco), ***Γεώργιος-Δημήτριος***. Ρουμάνος ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας, γεννηθεὶς τῷ 1804 εἰς τὸ βανάτον τῆς Κραϊόβας καὶ ἀποθανὼν τῷ 1873. Ἐσπούδασεν ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ Παρισίοις καὶ ἤρξατο τοῦ πολιτικοῦ του σταδίου ὡς ὑφυπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης, γενόμενος εἶτα ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Παραιτηθεὶς κατὰ τὸν διο-



Digitized by Google

ρισμὸν τοῦ πρίγκιπος Γκίκα ὡς ἡγεμόνος, διεβίου ἐπὶ δεκαετίαν ἐν τῇ ἀλλοδαπῇ, ἐπιστρέψας δὲ τῷ 1844 εἰς Ρουμανίαν ἐγένετο εἷς τῶν κυριωτέρων ἀρχηγῶν τῆς ἀντιπολιτεύσεως καὶ τῷ 1845 ἐξελέγη ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας, πρῶτος αὐτὸς ἡγεμὼν ἐκλεγεὶς διὰ τῆς λαϊκῆς ψήφου. Εἰσήγαγε πλείστας πολιτικὰς καὶ κοινωνικὰς μεταρρυθμίσεις, ἐπὶ τῶν ἡμερῶν του δὲ παρεχωρήθη εἰς τὴν χώραν νέον Σύνταγμα. Ἀναγκασθεὶς νὰ παραιτηθῇ, ἰδιώτευε μέχρι τοῦ 1857, ὅτε μετέσχε τῆς ἐπιτροπῆς πρὸς ἀναδιοργάνωσιν τῶν παραδουναβίων ἡγεμονιῶν. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους ἐγένετο θῦμα δυστυχήματος. θ. β.

— **Μπιμπέσκο** (Bibesco), ***Μπάρμπο - Στιρμπέϋ.*** Ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας, γεννηθεὶς ἐν τῷ θανάτῳ τῆς Κραϊόβας τῷ 1799 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1869. Ἀδελφὸς τοῦ ἡγεμόνος Γεωργίου Μπιμπέσκο, υἱοθετήθη ὑπὸ τοῦ Στιρμπέϋ ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ φέρῃ τὸ ὄνομά του. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καὶ ἐπιστρέψας τῷ 1827 εἰς Ρουμανίαν ἤρξατο τοῦ πολιτικοῦ του σταδίου, ἦτο δ' ἐκ τῶν πρώτων βουλευτῶν τῶν κηρυχθέντων ὑπὲρ τῶν ἀγροτῶν. Κατὰ τὴν ἡγεμονίαν τοῦ ἀδελφοῦ του Γεωργίου Μπιμπέσκο διετέλεσε πολλάκις ὑπουργὸς διαφόρων ὑπουργείων καὶ ἀντιβασιλεὺς κατὰ τὴν μετάβασιν τοῦ ἡγεμόνος εἰς Κωνσταντινούπολιν. Μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ ἀδελφοῦ του διωρίσθη ἡγεμὼν ὑπὸ τῆς Πύλης ἐπὶ ἑπταετίαν (1849—1856). Τὸ κυριώτερον ζήτημα τῆς ἡγεμονίας του ἦτο ἡ συντήρησις τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ τῆς κατοχῆς δαπάναις τῆς Ρουμανίας. Ὀλίγον πρὸ τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου οἱ Ρῶσοι κατέλαβον τῷ 1853 καὶ πάλιν τὰς παραδουναβίους ἡγεμονίας, διώρισε γενικὸν διοικητὴν αὐτῶν τὸν πρίγκιπα Μεντζικώφ, ὁ δὲ Μπιμπέσκο ἀπέδρα εἰς Βιέννην καὶ ἐπέστρεψε μετὰ τὴν ἧτταν τῶν ρωσικῶν στρατευμάτων, ὅτε ἀνέλαβεν ἐκ νέου τὴν ἡγεμονίαν. Ὁ Μπιμπέσκο ἐβελτίωσε τὰ οἰκονομικὰ τῆς χώρας καὶ παρεσκεύασε τὴν λύσιν τοῦ ἀγροτικοῦ ζητήματος, γενομένην βραδύτερον. θ. β.

— **Μπιμπέσκο** (Bibesco), ***Νικόλαος, πρίγκιψ.*** Ρουμᾶνος ἀξιωματικὸς τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, γεννηθεὶς ἐν Βουκουρεστίῳ τῷ 1831 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1902 ἐν Παρισίοις. Ἐσπούδασεν, ὅπως καὶ οἱ ἀδελφοί του, ἐν Γαλλίᾳ στρατιωτικὰ καὶ μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Ἀλγερίας. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἐθνογραφικὰ ἄρθρα εἰς τὴν «Revue des Deux Mondes». θ. β.

**Μπιμπιένα** (Bibbiena) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Ἀρέτσο τῆς Τοσκάνης, ἐπὶ λόφου ἄνωθεν τοῦ ποταμοῦ Ἄρνο. Κάτ. 7.596. Ἔχει σχολὴν ἠλεκτροτεχνιτῶν καὶ βιομηχανίαν ὑφασμάτων καὶ ἠλεκτρικῶν εἰδῶν καὶ εἶναι κέντρον οἰνοπαραγωγικόν. Παρ' αὐτήν, ἐπὶ τῶν Ἐτρουσκικῶν Ἀπεννίνων, εἰς ὕψος 1.116 μ., ὑπάρχει ἡ μονὴ Ἀλβερνία, ὁρισθεῖσα ὑπὸ τοῦ Φραγκίσκου τῆς Ἀσσίζης τῷ 1234 καὶ ἔχουσα σημαντικὰ ἔργα Ἰταλῶν καλλιτεχνῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι καὶ ἀνάγλυφα τοῦ Λουκᾶ ντέλλα Ρόμπια. μ. Δ. β.

**Μπιμπιένα** (Bibbiena), ***Βερνάρδος Ντοβίτσι ντὰ —.*** Ἰταλὸς κληρικὸς καὶ συγγραφεὺς (βλ. λ. *Ντοβίτσι Βερνάρδος*).

**μπίμπικας** (ὁ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *δάκου* (βλ. λ.) τῆς ἐλαίας.

**Μπιμπίκωφ,** ***Ἀλέξανδρος Ἀλεξάνδροβιτς.*** Ρῶσος διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1765 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1822. Διωρίσθη ἐκ περιτροπῆς πρεσβευτὴς εἰς πλείστας αὐλὰς τῆς Εὐρώπης, συνέγραψε δὲ «Ἀπομνημονεύματα». θ. β.

— **Μπιμπίκωφ,** ***Δημήτριος-Γαβριήλοβιτς.*** Ρῶσος στρατιωτικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1792 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1870. Ἤρξατο τοῦ σταδίου του ὡς στρατιωτικὸς καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν εἰσβολὴν τῶν Γάλλων εἰς Ρωσίαν (1812), ἀπολέσας τὸν ἕνα βραχίονά του εἰς τὴν μάχην τοῦ Μποροντίνο. Διορισθεὶς εἶτα διοικητὴς τῆς Μικρᾶς Ρωσίας, συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὸν ἐκρωσισμὸν αὐτῆς καὶ εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς χειραφετήσεως τῶν δουλοπαροίκων. Τὸ Κίεβον ἤγειρεν αὐτῷ ἀνδριάντα εἰς μίαν τῶν πλατειῶν του. θ. β.

**μπιμπίλα** (ἡ) καὶ *μπιρμπίλα*· γύρισμα, στρίφωμα· || εἶδος στενῆς δαντέλλας.

**μπιμπίλι** (τό), καὶ *μπιρμπίλι*· ἄλλως *μπιμπίλα* (βλ. λ.).

**μπίμπιλο** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *ἐπήβολον* ἱστοῦ (βλ. λ.).

**μπιμπίλωμα** (τό), καὶ *μπιρμπίλωμα*· ἐφοδιασμός, στόλισμα μὲ μπιμπίλα: «τὸ μπιμπίλωμα τοῦ τσιμπεριοῦ».

**μπιμπιλώνω,** καὶ *μπιρμπιλώνω*· περιρράπτω μπιμπίλα, στολίζω μὲ μπιμπίλα: «μπιμπιλώνω τὸ τσιμπέρι».

**Μπιμπόνα** (Bibbona) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Βολτέρα τῆς Τοσκάνης. Κάτ. 3.000. Ἐν αὐτῷ κατέφυγον τῷ 1671, φεύγοντες τὰς τουρκικὰς καταδιώξεις, πολυάριθμοι Ἕλληνες ἐκ Μάνης, οἵτινες εἶχον ζητήσει τὴν προστασίαν τοῦ Κοσμᾶ Γ' τῶν Μεδίκων, διατάξαντος νὰ παραχωρηθῇ εἰς αὐτοὺς τόπος πρὸς κατοικίαν εἰς τὴν Μπιμπόνα καὶ εἰς τὰ πέριξ χωρία Καφαλάπι καὶ Σοάνα. Ὁ πάπας εἶχε κατορθώσει κατ' ἀρχὰς νὰ προσελκύσῃ τοὺς Μανιάτας τούτους εἰς τὸν καθολικισμὸν καὶ νὰ τοὺς κάμῃ ἑλληνορρύθμους καθολικούς, ἀλλὰ τῷ 1693 Ἕλλην μοναχὸς ὀνόματι Γρηγόριος, μεταβὰς εἰς τὴν Μπιμπόναν ἐπανέφερεν αὐτοὺς εἰς τὴν Ὀρθόδοξον Ἐκκλησίαν. Μετά τινα ἔτη ὅμως οἱ Μανιᾶται οὗτοι ἀποδεκατιζόμενοι ὑπὸ τῶν πυρετῶν, συνεπείᾳ τοῦ ἑλώδους κλίματος, ἐγκατέλειψαν τὴν Μπιμπόνα καὶ τὰ ἄλλα χωρία καὶ μετέβησαν εἰς τὴν Γένουαν, ὅπου ἄγνωστον τί ἀπέγιναν. μ. Δ. β.

**Μπίμπριχ** (Biebrich) *[Γεωγρ.]*. Βιομηχανικὴ πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ *Βισβάδεν* τῆς Πρωσσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ Ρήνου, 5 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πόλεως Βισβάδεν, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἀξιόλογος ποτάμιος λιμὴν καὶ ἔχει μεγάλα ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, σιδήρου, τσιμέντων, σάπωνος κτλ. Ἕδρα τῶν δουκῶν τοῦ Νασσάου ἀπὸ τοῦ 1744 μέχρι τοῦ 1840, προσηρτήθη ὑπὸ τῆς Πρωσσίας τῷ 1866 Κάτ. (1919) 19.504. Χ. Δ.

**Μπίμπ-Ντόντα** ***Πρένκ.*** Ἀλβανὸς καθολικὸς πρόκριτος, ἀρχηγὸς τῆς φυλῆς τῶν Μιρδιτῶν, ἀνάγων τὴν καταγωγήν του εἰς γένος ἡγεμονικόν, ὡς δεικνύει καὶ ὁ τίτλος *πρένκ* (πρίγκιψ), τὸν ὁποῖον διατηρεῖ ἀκόμη ἡ οἰκογένεια εἰς τὸ ὄνομά της. Ἡ ἀλβανοκαθολικὴ αὐτὴ οἰκογένεια, τῆς ὁποίας ὁ πύργος εὑρίσκεται εἰς τὸ Ὀρόσι, ἕδραν τῆς Μιρδιτίας, ἐξήσκησε πάντοτε μεγάλην ἐπιρροὴν καθ' ὅλην τὴν Β. Ἀλβανίαν κυρίως μεταξὺ τῶν καθολικῶν. Ὡς γενάρχης αὐτῆς ἀναφέρεται ὁ *Τζὼν Μάρκου*, ὅστις περὶ τὸ 1700 ἦτο καπετᾶνος τῶν Μιρδιτῶν. Ὁ *Νικόλ Πρένκα*, πάππος τοῦ Μπὶμπ - Ντόντα, ὅστις διεκρίθη ὑπηρετῶν ἐν τῷ τουρκικῷ στρατῷ κατὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον τῷ 1879, ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ ἐξαδέλφου του Σκάνδερ ἕνεκα λόγων οἰκογενειακῆς ἐκδικήσεως. Τὸν φονέα καὶ τοὺς δύο υἱοὺς του ἐφόνευσεν ἀμέσως, κατὰ τὰ ἀλβανικὰ ἔθιμα, ἡ χήρα τοῦ Νικόλ, οὕτω δὲ ὁ υἱός της Μπὶμπ-Ντόντα ἔμεινεν ἀρχηγὸς τῶν Μιρδιτῶν τοῦ Ὀρόσι. Ἐπειδὴ δὲ οἱ συγγενεῖς τοῦ Σκάνδερ ἀνεζήτουν τὴν χήραν πρὸς ἐκδίκησιν, αὕτη ἠναγκάσθη νὰ ζῇ ἐπὶ ἔτη κρυμμένη εἰς ἓν σπήλαιον. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μπὶμπ ἐνυμφεύθη, ἀλλὰ δὲν ἀπέκτησε τέκνα. Ἐπειδὴ δὲ ὑπῆρχεν ἀνάγκη ἄρρενος γόνου, τὸ δὲ διαζύγιον ἦτο ἀδύνατον, ἡ χήρα ἐφόνευσεν ἡ ἰδία τὴν νύμφην της. Μετὰ τοῦτο ὁ Μπὶμπ - Ντόντα ἀπεσύρθη εἰς τὸν ὀχυρὸν πύργον του, ἐν Ὀρόσι, ἀρνούμενος νὰ πληρώνῃ φόρους καὶ προκαλῶν διηνεκῆ ἐπεισόδια μὲ τοὺς Μουσουλμάνους Ἀλβανούς. Ὅπως διαθέσῃ αὐτὸν εὐνοϊκῶς ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις, ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ πασᾶ, ὁ Μπὶμπ ὅμως ἐξηκολούθει παρέχων πράγματα εἰς τὴν τουρκικὴν διοίκησιν. Μεταξὺ ἄλλων ἀπήγαγεν ἐκ τοῦ γειτονικοῦ χωρίου Λούρια μίαν Μουσουλμανίδα κόρην, τὴν ὁποίαν ἐνυμφεύθη, βαπτίσας αὐτὴν μὲ τὸ ὄνομα *Μαρία-Ἀγγέλα*. Μετασχὼν κατόπιν μετὰ τῶν ἀνθρώπων του εἰς τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον, ἔναντι τῆς ὑποσχέσεως τῆς Πύλης ὅτι θὰ χορηγήσῃ τελείαν αὐτονομίαν εἰς τὴν Μιρδιτίαν, ἐδολοφονήθη ἐν Σκόδρᾳ, ὅπου ἐκλήθη προδοτικῶς ὑπὸ τοῦ Τούρκου βαλῆ.

Ἐκ τοῦ γάμου τοῦ Μπὶμπ μετὰ τῆς Μαραγγέλας ἐγεννήθησαν δύο τέκνα, μία κόρη ἥτις ἔζη ὡς καθολικὴ μοναχὴ ἐν Σκόδρᾳ καὶ ὁ Πρένκ Μπὶμπ - Ντόντα. Οὗτος ἤχθη μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ πατρός του εἰς Κωνσταντινούπολιν ὡς ὅμηρος καὶ ἐκρατεῖτο ἐκεῖ κατ' ἀρχὰς ὑπὸ αὐστηρὰν ἀπομόνωσιν. Ἡ περιουσία του εἶχε δημευθῇ ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν, ἐπληρώνετο δὲ εἰς τὸν Μπὶμπ μηνιαῖον ἐπίδομα πρὸς συντήρησίν του. Τῷ 1876 ἀνεμείχθη εἰς τὴν συνωμοσίαν, ἥτις ἀπέληξεν εἰς τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ-Ἀζίζ. Ἐπανελθὼν ἐπὶ Ἀβδοὺλ Χαμὶτ εἰς Ἀλβανίαν, ὑπέστη ἀπόπειραν δηλητηριάσεως ἐκ μέρους τοῦ βαλῆ Σκόδρας, ἀλλ' ἐσώθη ὑπὸ Ἰταλοῦ ἰατροῦ. Βραδύτερον συνελήφθη ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν καὶ ἀπεστάλη ἐξόριστος εἰς Κασταμονὴν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Μόλις μετὰ τὴν τουρκικὴν μεταπολίτευσιν τοῦ 1908 ἐπανῆλθεν ἐλεύθερος εἰς τὴν πατρίδα του. Ἔκτοτε δὲν ἀνεμείχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικήν. Ν. Μ.

**Μπίμπριχ** (Biebrich) ***χρώματα*** *[Χημ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ χρώματα, ἅτινα προέρχονται ἐκ τῆς γνωστῆς διὰ τὴν βιομηχανίαν της τῶν χρωμάτων γερμανικῆς πόλεως *Μπίμπριχ*. Τὸ σπουδαιότερον ἐκ τῶν συνθετικῶν τούτων χρωμάτων εἶναι τὸ *ὕψιγον τῆς Μπίμπριχ*, ὅπερ ἀποτελεῖ ἐρυθροκαστανὴν κόνιν, διαλυτὴν εἰς τὸ ὕδωρ, μετὰ κιτρινερύθρου χρώματος. Βάπτει τὸ ἔριον καὶ τὴν μέταξαν ἐν ὀξίνῳ λουτρῷ ἐρυθράν, ἀποτελεῖται δὲ χημικῶς ἐκ τοῦ μετὰ νατρίου ἅλατος τῆς ἀμιδο-αζω-βενζολο-δισουλφοξυ-αζω-β-ναφθόλης. Σ. Π.

**μπίν.** Τουρκικὴ προφορὰ τῆς ἀραβικῆς λέξεως *μπέν*, σημαινούσης υἱόν. Τίθεται μεταξὺ τοῦ κυρίου ὀνόματος καὶ τοῦ ὀνόματος τοῦ πατρός, ἐνίοτε δὲ συνεκφέρεται μετὰ τοῦ δευτέρου ὀνόματος, ὡς πρῶτον συνθετικὸν αὐτοῦ (βλ. καὶ λ. μπ... καὶ *ἴμπν*). Ἐν τῇ τουρκικῇ γλώσσῃ ἡ λέξις μπ... σημαίνει 1000 καὶ ἀπαντᾷ ὡς πρῶτον συνθετικὸν τοπωνυμίων καὶ ἄλλων λέξεων.

**Μπινὰν** (Binan) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς νήσου Λουζὸν τῶν Φιλιππίνων. Ἐξάγει ὄρυζαν, ξυλεία[ν] καὶ καρπούς. Κάτ. 20.000. Π. Γ.

**Μπινὰπ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας ἐν τῷ νομῷ Μεραγᾶ, εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. ἀπὸ τῆς ἀνατολικῆς ὄχθης τῆς λίμνης Οὐρμίας. Κάτ. 10.000 περίπου. Ν. Ν.

**Μπίνας,** ***Γεώργιος.*** Εἷς τῶν ἀγωνιστῶν τοῦ Μεσολογγίου. Φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ χιλιάρχου ἐφονεύθη γενναίως μαχόμενος ἐπὶ τοῦ κανονοστασίου «Μπότσαρη» τὴν 9ην Ἰουλίου 1825. Χ. Γ. Ε.

**Μπινγκερβὶλ** (Bingerville) *[Γεωγρ.]*. Σταθμὸς τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς, πρωτεύουσα τῆς ἀποικίας *Ἀκτὴ τοῦ Ἐλεφαντόδοντος*. Κεῖται ἐγγὺς τῆς παραλίας τοῦ κόλπου τῆς Γουϊνέας, μεταξὺ τοῦ λιμένος Γκρὰν - Μπασσὰν καὶ τῆς πόλεως Ἀμπιντζὰν καὶ εἶναι ἀφετηρία τῆς μεγάλης πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Ἀκτῆς τοῦ Ἐλεφαντόδοντος σιδηροδρομικῆς γραμμῆς (μήκους 488 χλμ.). Κάτοικοι 750. Χ. Δ.

**Μπίνγκαμ** (Bingham) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας εἰς ἀπόστασιν 198 χλμ. βορείως τοῦ Λονδίνου. Κάτ. 3.790. Ἔχει πολλὰ ἐργοστάσια ὑφασμάτων. Π. Γ. Δ.

**Μπίνγκαμ** (Bingham) ***Χιράμ.*** Ἀμερικανὸς ἐρευνητὴς καὶ ἀεροπλοϊκός, γεννηθεὶς τῷ 18.. Κατὰ τὰ ἔτη 1908—1909 ἐξηρεύνησε τὴν ἱσπανικὴν ἐμπορικὴν ὁδὸν ἀπὸ Μπουένος Ἄϊρες μέχρι Λίμα, τῷ 1915 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς γεωγραφίας καὶ τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Γιὰλ, τῷ 1917 ὠργάνωσε τὰς στρατιωτικὰς ἀεροναυτικὰς σχολὰς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς καὶ διηύθυνε τῷ 1918 τὴν ἐν Ἰσσουντὲν ἀεροπορικὴν διασυμμαχικὴν σχολήν. Τῷ 1925 ἐξελέγη γερουσιαστής. Ἐδημοσίευσεν: «Ἡμερολόγιον ἀποστολῆς διὰ Βενεζουέλας καὶ Κολομβίας» (1909), «Ἡ... Βίτκος, τῆς τελευταίας πρωτευούσης τῶν Ἴνκα» (1912), «Περὶ τῆς χώρας τῶν Ἴνκα» (1922). Γ. Ι. Β.

**Μπίνγκαμπτον** (Binghampton) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀμερικῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ Νέας Ὑόρκης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἔχει βιομηχανίαν αὐτοκινήτων, φωτογραφικῶν μηχανῶν, ὑελοποιίας, βυρσοδεψίας καὶ σιγαρέττων. Κάτ. 54.860. Π. Γ.

**Μπίνγκεν** (Bingen, λατ. Bingium) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Ἔσσῃ κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ρήνου παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ παραποτάμου Νάε, 27 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Μάϊντς. Ἔχει ὡραῖον ναὸν (ΙΕ' αἰῶνος), παλαιότατον δημαρχεῖον καὶ τεχνικὴν σχολήν. Κεῖται ἐν μέσῳ πλουσίας εἰς ἀμπελῶνας περιοχῆς καὶ ἔχει ἐργοστάσια ἀφρωδῶν οἴνων, καπνοῦ, βυρσοδεψίας κτλ. Τῷ 70 μ. Χ. συνήφθη παρ' αὐτὴν μεγάλη μάχη μεταξὺ Γαλατῶν καὶ Ρωμαίων, κατὰ δὲ τὸν μεσαίωνα ἦτο ἐλευθέρα αὐτοκρατορικὴ πόλις καὶ ἓν τῶν κυριωτέρων κέντρων τῆς Ρηνανικῆς ὁμοσπονδίας. Κάτ. 9.950. Χ. Δ.

**Μπὶν-Γκιὸλ** (=χίλιαι λίμναι) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Τουρκίας μεταξὺ τῶν νομῶν Ἐρζερούμ καὶ Μπιτλίς. Ἀπὸ τῶν βορείων κλιτύων του πηγάζει ὁ Ἀράξης, ἀπὸ δὲ τῶν νοτίων παραπόταμοι τινὲς τοῦ Εὐφράτου. Ν. Ν.

**Μπίνγκλεϋ** (Bingley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Αἲρ. Κάτ. 18.449. Ἔχει βιομηχανίαν βάμβακος. Π. Γ.

**Μπινὲ** (Binet), ***Ἀδόλφος-Γουσταῦος.*** Γάλλος ζωγράφος, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (185.-1897). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ζερὸμ ἐν τῇ σχολῇ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων καὶ ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1880. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τοῦ λαϊκοῦ βίου. Ι. Μ.

—**Μπινὲ** (Binet), ***Ἀλφρέδος.*** Μέγας Γάλλος ψυχολόγος, γεννηθεὶς ἐν Νικαίᾳ τῷ 1857 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1911. Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν καὶ ἰατρικήν, ἐνωρίτατα ὅμως ἐστράφη πρὸς τὰς ψυχολογικὰς μελέτας. Ἐν πρώτοις προσείλκυσαν αὐτὸν τὰ ζητήματα τῆς παθολογικῆς ψυχολογίας, ἥτις, ὡς εἶναι γνωστόν, θαυμασίως ἐκαλλιεργήθη εἰς τὴν Γαλλίαν (Charcot) καὶ δὴ τὰ προβλήματα ὑποβολῆς καὶ ὑπνωτισμοῦ (γνωστόταται εἶναι αἱ μέθοδοι, ἃς ἐπενόησε, περὶ ὑποβολῆς). Ὑπέστη ὅμως καὶ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Μίλλ, ὁ ὁποῖος δὲ

Digitized by Google

ναται τις εἰπεῖν, ἦτο ὁ μόνος αὐτοῦ εἰς τὴν ψυχολογίαν διδάσκαλος. Τῷ 1892 εἰσῆλθεν εἰς τὸ ψυχολογικὸν ἐργαστήριον τῆς Σορβόννης, τῷ δὲ 1894 διεδέχθη τὸν Μπωνὶ (Beaunis) εἰς τὴν διεύθυνσιν αὐτοῦ, ὁπότε, ἐγκαταλείψας ἐπί τινα χρόνον τὴν παθολογικήν, ἐστράφη πρὸς τὴν κανονικὴν ψυχολογίαν. Τῷ 1895 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «L'année psychologique», τὸ ὁποῖον ἐτροφοδότει κατὰ τὸ πλεῖστον διὰ τῆς ἐργατικότητος αὐτοῦ. Ἐπίσης ἦτο ἡ ψυχὴ τοῦ Παιδαγωγικοῦ ἐργαστηρίου τῶν Παρισίων καὶ τῆς «Société pour l'étude psychologique de l'enfant». Ἐκ τῶν ψυχολογικῶν του ἔργων σημειοῦμεν: «La psychologie du raisonnement» (1886), «Étude de psychologie experimentale» (1889), «Les altérations de la personnalité» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ μαθητοῦ του V. Henri) (1898), «La suggestibilité» (1900), «Les enfants anormaux» (1907), «Les idées modernes sur les enfants» (1909), τὸ ὁποῖον μετεφράσθη εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ Χ. Λέφα (Ἀθῆναι 1919), «L'étude expérimentale de l'intelligence» (1903), ἔργον τὸ ὁποῖον ἐσημείωσε σταθμὸν εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς νεωτέρας ψυχολογίας.

Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπελὼ (Belot) διεμόρφωσε τὴν *νοητικὴν ὀρθοπαιδικήν*, ἡ ὁποία συνίσταται εἰς ἀσκήσεις ἀνεξαρτήτους τῆς διδασκαλίας πρὸς ὕψωσιν τῆς νοητικῆς καταστάσεως παίδων ὑστερούντων νοητικῶς. Ἐκεῖνο ὅμως τὸ ὁποῖον τὸν κατέστησε παγκοσμίως γνωστὸν εἶναι ἡ μεγαλοφυὴς μέθοδος, τὴν ὁποίαν ἐπενόησε πρὸς διάγνωσιν τῆς νοημοσύνης. Ταύτην διεμόρφωσε μετὰ τοῦ μαθητοῦ του ἰατροῦ Σιμὸν (Th. Simon) καὶ διὰ τοῦτο φέρει τὴν ὀνομασίαν ἀμφοτέρων (κλῖμαξ Μπινὲ - Σιμὸν - Échelle métrique de l'intelligence). Διὰ ταύτης κατέστη δυνατὸν κατὰ τρόπον ἁπλοῦν νὰ καθορίζηται ὁ βαθμὸς τῆς νοημοσύνης τῶν παίδων καὶ νὰ ὑποβάλλωνται τὰ πορίσματα εἰς ἀκριβεῖς συγκρίσεις. Ἡ κλῖμαξ ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τρεῖς μορφάς· τὴν τοῦ 1905, τὴν τοῦ 1908 καὶ τὴν τοῦ 1911. Ἐκ τούτων ἡ τοῦ 1908 θεωρεῖται ἡ θεμελιώδης, ἀποτελέσασα τὴν βάσιν τῶν ἐπὶ τοῦ θέματος τούτου ἐργασιῶν. Ἡ κλῖμαξ ἀποτελεῖται ἐκ μεγάλου ἀριθμοῦ tests (βλ. λ. *τέστ*), διῃρημένων εἰς ὁμάδας κατ' ἀνιοῦσαν δυσχέρειαν. Ἑκάστη τῶν ὁμάδων τούτων ἀντιστοιχεῖ πρὸς ὡρισμένον ἔτος τῆς παιδικῆς ἡλικίας. Οὕτως, ἕκαστος παῖς ὑποβάλλεται εἰς ἐξέτασιν δι' αὐτῆς καὶ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἐκ τῆς μετρήσεως δεδομένων ἐξάγονται συμπεράσματα περὶ τῆς νοητικῆς αὐτοῦ καταστάσεως. Ὑπὸ μεταγενεστέρων ἐρευνητῶν ἐλέχθη ὅτι αἱ μετρήσεις διὰ τῆς κλίμακος ἐνέχουσι τὴν μονομέρειαν ὅτι ἐπιτρέπουσι μόνον τὴν διάγνωσιν τοῦ βαθμοῦ τῆς νοημοσύνης, ἀδυνατοῦσιν ὅμως νὰ παράσχωσι πλήρη εἰκόνα τῆς νοητικῆς καταστάσεως τοῦ μετρουμένου. Πρὸς τοῦτο ἀπαιτοῦνται μέθοδοι ἐπιτρέπουσαι λεπτοτέραν ἀνάλυσιν τῆς νοημοσύνης. Τὸ ἀληθὲς εἶναι ὅτι ὁ Μπινὲ διὰ τῆς μεθόδου του ταύτης διήνοιξε νέους ὁρίζοντας εἰς τὴν ψυχικὴν ἔρευναν τοῦ παιδὸς καὶ ἐγένετο ὁ εἰσηγητὴς τῆς ὅλης νεωτέρας κινήσεως πρὸς ἔρευναν τῶν ψυχικῶν ἰδιορρυθμιῶν τοῦ ἀνθρώπου. Τ. ΣΤΡ.

**—Μπινὲ** (Binet), ***Ἰάκωβος-Φίλιππος-Μαρία.*** Γάλλος μαθηματικὸς καὶ ἀστρονόμος (1786—1586). Εἰσελθὼν ἀπὸ τοῦ 1804 εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολὴν ὡς ἐπιμελητὴς τῆς περιγραφικῆς γεωμετρίας, ἐγένετο βραδύτερον καθηγητὴς τῆς μηχανικῆς καὶ γενικὸς ἐπόπτης τῶν σπουδῶν ἐν αὐτῇ. Τῷ 1823 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς ἀστρονομίας εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ τῷ 1843 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Κατὰ τὴν δευτέραν ἔκδοσιν τῆς «Ἀναλυτικῆς μηχανικῆς» τοῦ Λαγκρὰνζ ὁ Μπινὲ συνειργάσθη εἰς τὴν ἀνασύνταξιν τοῦ δευτέρου τόμου. Αἱ ἄλλαι αὐτοῦ σπουδαιόταται ἐργασίαι ἐπὶ τῆς μηχανικῆς, τῶν θεωρητικῶν καὶ ἐφηρμοσμένων μαθηματικῶν καὶ τῆς ἀστρονομίας ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ μορφὴν ὑπομνημάτων εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν» καὶ τὰ ἄλλα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς του. Ὀλίγαι μόνον ἐξ αὐτῶν ἐξεδόθησαν εἰς τόμους. — Ω.

**— Μπινὲ** (Binet), ***Βίκτωρ-Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Βαρθολομαῖος.*** Γάλλος ζωγράφος (1849—1924). Κατ' ἀρχὰς ἤσκησε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ διακοσμητοῦ, τῷ δὲ 1878 ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν ὡς αὐτοδίδακτος ζωγράφος. Ἡ τεχνοτροπία του εἶναι ἁπλῆ καὶ εἰλικρινής. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Κοιλάς», «Θερινὴ ἑσπέρα», «Βράδυ στὸ Κρουασσέ», «Φωτεινὴ νύκτα», «Χειμερινὴ ἑσπέρα» κλπ. Ι. Μ. Π.

**— Μπινὲ** (Binet), ***Κλαύδιος.*** Γάλλος ποιητής, ζήσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, στενὸς φίλος τοῦ Ρονσάρ, ὅστις εἰς αὐτὸν ἀνέθεσε τὴν πλήρη ἔκδοσιν τῶν ἔργων του, γενομένην τῷ 1587. Ὁ Μπινὲ ἔγραψεν ἰδίως βουκολικὰ ποιήματα, ᾠδάς, ἐγκώμια κλπ., μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Αἱ τέρψεις τοῦ ἀγροτικοῦ καὶ μονήρους βίου» (1583), «Ἐπιθαλάμιον ἐπὶ τοῖς γάμοις τοῦ Ἑρρίκου Γ'» (1575), κ. ἄ. Ἀλλὰ τὸ ἀξιολογώτερον ἔργον αὐτοῦ ὑπῆρξε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Λόγος περὶ τοῦ βίου τοῦ Π. ντὲ Ρονσάρ, πρίγκιπος τῶν Γάλλων ποιητῶν», ἐν τῷ ὁποίῳ περιλαμβάνονται ἐνδιαφέρουσαι πληροφορίαι περὶ τῆς ζωῆς τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς «Πλειάδος» καὶ οἱ τελευταῖοι πρὸ τοῦ θανάτου στίχοι του. — Ω.

**— Μπινὲ** (Binet), ***Ρενέ.*** Γάλλος ἀρχιτέκτων καὶ ἀκουαρελίστας ζωγράφος (1866—1911). Υἱὸς ἀπόρων γονέων, ὑπῆρξεν ἐξ ὁλοκλήρου σχεδὸν αὐτοδίδακτος. Εἰς τὴν διαμόρφωσιν τοῦ ταλάντου του συνετέλεσαν ἰδίως τὰ μακρὰ του ταξίδια ἀνὰ τὴν μεσημβρινὴν Ἰταλίαν, τὴν Ἱσπανίαν, τὴν Ἀνατολὴν καὶ τὰς ἐπὶ τῆς Μεσογείου ἀφρικανικὰς χώρας, ὅπου ἐμελέτησε τὰ βασικὰ στοιχεῖα τῆς βυζαντινῆς καὶ μουσουλμανικῆς ἀρχιτεκτονικῆς, τὰ ὁποῖα ἐχρησιμοποίησε λίαν ἐπιτυχῶς βραδύτερον εἰς τὰ ἀρχιτεκτονικὰ καὶ διακοσμητικὰ του ἔργα. Αἱ ἀκουαρέλλαι του ἀπὸ τὸ Ἀλγέριον καὶ τὴν Ἱσπανίαν, ἐκτεθεῖσαι κατὰ τὴν εἰς Παρισίους ἐπιστροφήν του, ἐθαυμάσθησαν διὰ τὴν ἀκρίβειάν των καὶ τὴν λαμπρότητα τοῦ φωτός. Ὁ Μπινὲ διεκρίθη ἰδίως ὡς διακοσμητὴς ἐξαιρετικοῦ ταλάντου, χωρὶς ἐξ ἄλλου νὰ ὑστερῇ καὶ εἰς τὴν καθαρῶς ἀρχιτεκτονικὴν ἄποψιν. Ὡς χαρακτηριστικαὶ ἐργασίαι του ἀναφέρονται ἰδίως ἡ ὑπ' αὐτοῦ ἐκτελεσθεῖσα ἀνακαίνισις τῶν μεγάλων ἐν Παρισίοις καταστημάτων «Printemps», καθὼς καὶ τὰ σχέδια τὰ ὁποῖα ἐξεπόνησε διὰ τὰ ἐργοστάσια ταπήτων τοῦ Γκομπλέν. —Ω.

**μπινελίκια** (τά)· αἱ πράξεις αἱ προσιδιάζουσαι εἰς τὸν *μπινὲν* (βλ. λ.)· κατ' ἐπέκτασιν πᾶσα ἀναίσχυντος, ἀνήθικος, ἄνανδρος πρᾶξις: «αὐτὸ ποὺ κάνεις εἶναι μπινελίκια» ‖ τὰ ἐδέσματα εἰς τὰ ὁποῖα ἀρέσκεται συνήθως ὁ μπινὲς (ζαχαρωτά, λουκούμια, γλυκίσματα).

**μπινὲς** (ὁ)· ὁ παθητικὸς ὁμοφυλόφιλος (παρῆλιξ μᾶλλον), κίναιδος, πρὸς ὃν ἀντιδιαστέλλεται ὁ *πούστης* (βλ. λ.) κατὰ τὸ ὅτι οὗτος μὲν ἀμείβεται συνήθως, ὁ δὲ ἀμείβει τὸν ἐνεργοῦντα.

**μπινεύω·** ἱππεύω, καβαλλάω (ἐκ τοῦ τουρκ. *μπινμέκ*).

**Μπινερέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Χατζουρίου τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 76. Χ. Δ.

**Μπὶν-ζοῦ-ροῦ** *[Ἰαπων. Μυθολ.]*· βλ. *Μπεντούρια*.

**μπινὶ** (τό)· δημοτ., στενὴ λωρὶς σανίδος, προσηρμοσμένη εἰς τὸ ἄκρον τοῦ θυροφύλλου κττ., ὅπως καλύπτῃ τὴν προσαρμογὴν τῶν δύο φύλλων κατὰ τὸ κλείσιμο, ἄλλως *πήχη*.

**Μπινιὰν** (Bignan), ***Ἀν.*** Γάλλος ποιητὴς καὶ λογοτέχνης (1795 — 1861). Τῷ 1819 μετέφρασεν εἰς γαλλικοὺς στίχους τρία ᾄσματα τῆς «Ἰλιάδος», πλήρη δ' ἔμμετρον μετάφρασιν αὐτῆς ἐδημοσίευσε τῷ 1830, καὶ τῷ 1848 τῆς «Ὀδυσσείας». Τὰ ποιήματά του, περιληφθέντα εἰς τρεῖς συλλογάς: «Ποιήσεις» (1828), «Γαλλικαὶ μελῳδίαι» (1833) καὶ «Ἀκαδημεικά» (1837), καταδεικνύουσιν αὐτὸν ἐμφορούμενον ἀπὸ ἀκλόνητον πίστιν ἐπὶ τὰς κλασσικὰς θρησκευτικὰς καὶ μοναρχικὰς παραδόσεις, τῆς ὁποίας τὴν σφραγῖδα συναντᾷ τις ἐπίσης εἰς τὸ ἱστορικὸν μακρὸν ποίημά του «Ὁ Ναπολέων ἐν Ρωσίᾳ» (1835). Ἔγραψεν ἀκόμη καὶ ἱστορικὰ μυθιστορήματα: «Ὁ Ἐρημίτης τῶν Ἄλπεων» (1827), «Τὸ ἴκρίωμα» (1832) κλπ., καθὼς καὶ μίαν ἔμμετρον κωμῳδίαν, «Ἡ πολιτικομανία», εἰς 5 πράξεις.—Ω.

**μπινιάρης** (ὁ), θηλ. *—άρα*, οὐδ. *—άρικο*· δίδυμος, ὁ μετ' ἄλλου κατὰ τὸν αὐτὸν τοκετὸν γεννηθείς.

**Μπινιὸν** (Bignon), ***Ἱερώνυμος.*** Γάλλος σοφὸς καὶ δικαστικὸς (1589—1656). Ἐπεδείξατο καταπληκτικῶς πρόωρον διανοητικὴν ἀνάπτυξιν, συγγράψας εἰς ἡλικίαν δέκα μόλις ἐτῶν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Χωρογραφία τῆς Ἁγίας Γῆς» (1600) καὶ βραδύτερον (1604) περὶ τῶν ἀρχαιοτήτων καὶ τῶν περιέργων τῆς Ρώμης καὶ πραγματείαν περὶ τῆς ἐκλογῆς τοῦ πάπα (1605). Ὁ Ἑρρῖκος Δ' διώρισεν αὐτὸν ἐπὶ τῶν τιμῶν τοῦ δελφίνου, τοῦ κατόπιν Λουδοβίκου ΙΓ', κατὰ τὸ διάστημα δὲ τῆς ἐν τῇ αὐλῇ διαμονῆς του ἔγραψε «Πραγματείαν περὶ τῶν ἐξοχωτάτων βασιλέων καὶ τοῦ βασιλείου τῆς Γαλλίας» (1610), ἔργον ἀφιερωθὲν εἰς τὸν βασιλέα. Βραδύτερον ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν, μετὰ δὲ τὴν ἐκεῖθεν ἐπάνοδον του ἐγένετο δικηγόρος καὶ διωρίσθη ἀπὸ τοῦ 1642 βιβλιοθηκάριος τοῦ βασιλέως καὶ ἀνέλαβε πλείστας πολιτικὰς ἀποστολὰς εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Πραγματείαν περὶ τοῦ μεγαλείου τῶν βασιλέων μας καὶ περὶ τῆς ἡγεμονικῆς δυνάμεως αὐτῶν» κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπινιὸν** (Bignon), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος συγγραφεὺς καὶ φιλόσοφος. Συνέγραψε περισπούδαστα ἔργα, ἐξ ὧν τὸ περὶ «Μυστικοσυμβουλίων καὶ λαῶν» μετέφρασεν εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὁ Νικ. Σπηλιάδης. Ὅταν ὁ ἰατρὸς Πέτρος Ἠπίτης ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ Ἀλεξ. Ὑψηλάντου ἵνα προπαγανδίσῃ ὑπὲρ τοῦ Ἑλληνικοῦ Ἀγῶνος ἐν Παρισίοις, τὸν ὑπεδέχθη μετ' ἐξαιρετικῆς στοργῆς ὁ Μπινιόν, ὅστις διεκρίθη μεταξὺ τῶν πάντας τοὺς Γάλλους φιλέλληνας, γράφων, κηρύττων καὶ προτρέπων τοὺς συμπατριώτας του ὑπὲρ τῆς Ἑλλάδος. Ἀποτέλεσμα τῶν ἐνεργειῶν ἐκείνων ἦτο ἡ ἐπίσκεψις τοῦ Ρισελιὲ πρὸς τὸν Ἠπίτην, ἥτις καὶ προὐκάλεσε τὴν μῆνιν τῆς αὐστριακῆς πρεσβείας καὶ τὴν κατασκοπείαν αὐτῆς (*Φιλήμονος* τόμ. Β' σελ. 95—96). Τ. Χ. Κ.

**μπινίσι** (τό)· ἐπενδύτης, ἐπανωφόριον.

**μπίμπασης·** χιλίαρχος, ταγματάρχης (λέξ. τουρκική).

**Μπινουὲ** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς της Ἀφρικῆς, ἄλλως *Μπενουὲ* (βλ. λ.).

**μπίντα** (ἡ). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων τὴν *σειρὰν* (βλ. λ.) τοῦ ἱστίου, ἄλλως *μοῦδα* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπιντὰ** (Bida), ***Ἀλέξανδρος.*** Γάλλος σχεδιαστὴς (1823—1895). Μολονότι ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ντελακρουᾶ, παρουσιάζει ἐμφανεστέρας ὁμοιότητας πρὸς τὸν Ντεκάν, τοῦ ὁποίου ἔχει τὴν ἀκρίβειαν εἰς τὸ σχέδιον, τὴν παρατηρητικότητα, τὴν γραφικὴν ποικιλίαν καὶ τὴν ἄκραν δεξιοτεχνίαν εἰς τὴν ἀπόδοσιν, τῶν ἠθῶν καὶ τῶν τύπων τῆς Ἀνατολῆς. Ἐξεπόνησεν ἐλαιογραφίας, ἀλλ' ἰδίως διέπρεψεν εἰς ἰχνογραφήματα ἀναφερόμενα εἰς τὸν βίον τῶν ἀνατολικῶν λαῶν καὶ εἰς τὴν εἰκονογράφησιν βιβλικῶν σκηνῶν. Μεταξὺ τῶν τελευταίων τούτων, αἵτινες ἀποτελοῦν τὸ σημαντικώτερον τμῆμα τοῦ ἔργου του, διακρίνονται: «Ἡρωδιάς», «Αἱ μωραὶ παρθένοι», «Ὁ ἄσωτος υἱός», «Ἡ ἱστορία τῆς Ρούθ», τοῦ Τωβίου, τοῦ Ἰωσήφ, τῆς Ἐσθήρ». Ι. Μ. Π.

**Μπιντάνγκ** (Bintang) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῶν δυτικῶν Ὀλλανδικῶν Ἰνδιῶν ἐπὶ τοῦ Ἰσημερινοῦ, 40 μίλλια ΒΑ. τῆς Σιγκαπούρης. Ἔχει ἔκτασιν 454 τετρ. μιλλίων καὶ κατ. 18.000. Παράγει ζάχαριν καὶ μπαχαρικά. Π. Γ. Λ.

**μπὶν-τάνγκ** *['Ιατρ.]*· βλ. λ. *μπέρι-μπέρι*.

**Μπιντασσόα,** ἡ ***Βιντασσόα*** (Bidasoa, ἢ Vidasoa καὶ Bidasso, ἢ Vidassoa) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς ἐπὶ τῶν συνόρων τῆς Ἱσπανίας καὶ τῆς Γαλλίας, χωρίζων τὸν ἱσπανικὸν νομὸν τοῦ Γκιπούθκοα ἀπὸ τὸν γαλλικὸν τῶν Κάτω Πυρηναίων. Πηγάζει ἐκ τῶν νοτίων κλιτύων τῶν δυτικῶν Πυρηναίων καὶ χύνεται εἰς τὸν Βισκαϊκὸν κόλπον, μετὰ ροῦν 60 χλμ. Πρὸ τῆς ἐκβολῆς του σχηματίζει τὴν *νῆσον τῶν Φασιανῶν* (Isla de los faisanes). Ἡ νῆσος αὐτὴ ἔχει κηρυχθῆ οὐδετέρα, ἕνεκα δὲ τούτου ἔχει χρησιμεύσει πολλάκις ὡς τόπος συναντήσεως διὰ διαφόρους διπλωματικὰς διαπραγματεύσεις μεταξὺ Γαλλίας καὶ Ἱσπανίας, ὡς εἶναι ἡ σύναψις τῆς συνθήκης τῶν Πυρηναίων, τῷ 1659, διὰ τῆς ὁποίας ἀπεφασίσθη ὁ γάμος τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' μετὰ τῆς Ἰνφάντης τῆς Ἱσπανίας. Ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ τῷ 1526 ἀπηλευθερώθη ὁ ἐν Παβίᾳ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Φραγκῖσκος Α', τῷ δὲ 1813 ἐπὶ τῆς ἱσπανικῆς ὄχθης 800 Ἱσπανοὶ ἐνίκησαν διπλασίους Γάλλους. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ Οὐέλλιγκτον ἐπεχείρησε τολμηρὰν διάβασιν τοῦ ποταμοῦ καὶ ἠνάγκασε τὸν Σούλτ, ὅστις εἶχεν ὀχυρωθῆ εἰς τὴν ἔναντι ὄχθην, νὰ ὑποχωρήσῃ. Μ. Δ. Β.

**Μπὶν-Τεπέδες** (=χίλιοι λόφοι) *[Γεωγρ.]*. Καλεῖται οὕτω σειρὰ λόφων ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, κειμένων νοτίως τοῦ Μαρμαρᾶ γκιὸλ καὶ ἔναντι τῶν Σάρδεων (βορείως τοῦ Ἕρμου). Ἐπὶ τῶν λόφων τούτων, οἵτινες ἀπετέλουν τὴν νεκρόπολιν τῶν Σάρδεων, πρωτευούσης τῶν Λυδῶν, ὑπάρχουσιν ἐρείπια ἀρχαίου ναοῦ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Εἰς *Μπὶν Τεπέδες* τῇ 9ῃ καὶ 10ῃ Ἰουνίου 1920 τὸ ἑλληνικὸν ἱππικὸν (μία ἐπιλαρχία καὶ τὸ 1ον σύνταγμα ἱππικοῦ) καὶ τμήματα μικτοῦ ἀποσπάσματος τοῦ 3ου συντάγματος πεζικοῦ τῆς 13ης ἑλληνικῆς μεραρχίας συνῆψαν μάχας πρὸς τοὺς Τούρκους, οἵτινες ἠναγκάσθησαν νὰ ὑποχωρήσωσι πρὸς Φιλαδέλφειαν, καταδιωκόμενοι ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ ἱππικοῦ. Τῇ 24 καὶ 25 Αὐγούστου 1922 κατὰ τὴν ὑποχώρησιν τοῦ νοτίου συγκροτήματος ἀπὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ πρὸς Ἐρυθραίαν, τοὺς Μπὶν Τεπέδες κατέλαβε μικτὸν ἀπόσπασμα ἐκ τῶν συνταγμάτων πεζικοῦ 23ου καὶ 34ου καὶ πυροβολικοῦ, ὅπου ἀντίταχθὲν ἐκεῖ πεισμόνως ἀπέκρουσεν ἰσχυρὰ τμήματα τουρκικοῦ ἱππικοῦ (Φαχρεδὶν πασᾶς), προελαύνοντα καὶ προσπαθοῦντα νὰ ἐξωθήσωσι πρὸς βορρᾶν τὸ μικτὸν τοῦτο ἀπόσπασμα, προηγούμενα δὲ εἶτα τοῦ νοτίου ἑλληνικοῦ συγκροτήματος, ἐν τῇ πρὸς δυσμὰς κινήσει του, ἵν' ἀποκόψωσι τὴν κατὰ τὴν διεύθυνσιν ταύτην ἐξακολούθησιν τῆς ὑποχωρήσεως αὐτοῦ. Οὕτω κατέστη ἐφικτὴ ἡ ἀνενόχλητος πρὸς Κασαμπᾶ—Νυμφαῖον τῆς ὁμάδος μεραρχιῶν τοῦ ὑποστρατήγου Φράγκου συνέχ. ια τῆς ὑποχωρήσεως. Ν. ΣΣ

**μπιντὲς** (ὁ)· ἡ λεκάνη διὰ τῆς ὁποίας πλύνεται τις κατὰ τὰ σκέλη (γαλλ. bidet.)

**Μπίντεφορντ** (Bidderford) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ἐξοχικὴ διαμονὴ τῆς ἐπαρχίας Μαίην τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς ἐπὶ τοῦ πο-

Digitized by Google

ταμοῦ Σάκο, 15 μίλ. ΝΔ. τοῦ Πόρτλαντ. Ἔχει ἀνθούσας βιομηχανίας βαμβακερῶν καὶ βυρσοδεψίας καὶ ἐξάγει γρανίτην. Κάτ. 17.760. π. γ. λ.

**Μπίντζελόου** (Bigelow), *Ἐρρῖκος-Ἰάκωβος*. Ἀμερικανὸς ὀρθοπεδικὸς (1816—1890). Ἔγραψε: «Manual of orthopedic surgery» (1845), «The mechanism of dislocation and fracture of the hip, with the reduction of the dislocations by the flexion method» (1869), μεταφρασθὲν καὶ εἰς τὴν γερμανικήν, «Litholapaxie or rapid lithotrity with evacuation» (1878) κλ. Ὁ ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φερόμενος σύνδεσμος εἶναι ὁ *λαγωνομηρικὸς ἢ βερτίνειος σύνδεσμος*. ο. ρ.

**μπίντι.** Θηλυκὸν τοῦ ἀραβικοῦ *μπὲν* (=υἱός). Ἀπαντᾷ εἰς τοπωνύμια καὶ ὀνόματα διασήμων γυναικῶν τῆς ἀραβικῆς ἱστορίας. Ν. Μ.

**Μπίντι-Ἀϊσέ.** Διάσημος διὰ τὴν σοφίαν της Ἀραβὶς γυνή, ἀκμάσασα ἐν Κορδούῃ, ὅπου καὶ ἵδρυσε μεγάλην βιβλιοθήκην. Ἀπέθανε τῷ 810 μ.Χ. Ν. Μ.

**Μπὶν-Ντὶν** (Binh-Dinh) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Ἀννὰμ ἐν τῇ Γαλλικῇ Ἰνδοκίνᾳ, κειμένη 440 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς Σαϊγκόν, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς, καὶ 17 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ ἐπὶ τῆς νοτίου Σινικῆς θαλάσσης ἐπινείου αὐτῆς Κινὸν ἢ Κβινόν. Διεξάγει ἀκμαιότατον ἐμπόριον σιτηρῶν, βάμβακος, τείου, κινναμώμου κλπ. Κάτ. 74.500. Χ. Δ.

**Μπίντλ** (Biddle, ἢ Biddles), *Ἰωάννης*. Ἄγγλος αἱρετικός, γεννηθεὶς τῷ 1615. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης, γενόμενος δὲ κατόπιν διδάσκαλος ἐν τῷ ἐλευθέρῳ σχολείῳ τοῦ Γλῶστερ ἔγραψε πολλὰ ἔργα κατὰ τῆς ἐκκλησιαστικῆς διδασκαλίας περὶ τῆς ἁγίας Τριάδος. Τούτου ἕνεκα, ἐπὶ Κρόμβελ, κατεδικάσθη ὑπὸ ἐκκλησιαστικοῦ δικαστηρίου εἰς φυλάκισιν. Μετὰ μακρὰν ἐν τῇ φυλακῇ διαμονήν, τῇ μεσιτείᾳ φίλων ἀπελευθερωθείς, ἦλθεν εἰς Λονδῖνον, ἔνθα συνέπηξεν ἰδίαν ἐκκλησιαστικὴν κοινότητα, τὴν τῶν *Μπιντλιανῶν*, τῶν καλουμένων συνήθως *Οὐνιταρίων* καὶ *Συκινιανῶν*, εἰ καὶ ἡ διδασκαλία τοῦ Μπίντλ διέφερε τῆς τῶν Συκινιανῶν, ἰδίᾳ κατὰ τοῦτο, ὅτι ἐδέχετο τὴν προσωπικότητα τοῦ ἁγίου Πνεύματος. Μετ' ὀλίγον καταδικασθεὶς πάλιν ὑπὸ ἐκκλησιαστικοῦ δικαστηρίου ὡς αἱρετικός, ἀπέφυγε τὴν φυλάκισιν τῇ μεσολαβήσει τοῦ Κρόμβελ, ὅστις ὅμως ἐξώρισεν αὐτὸν εἴς τινα νῆσον τοῦ Ἀτλαντικοῦ, ἐνῷ τὰ συγγράμματά του παρεδόθησαν εἰς τὴν πυράν. Μετὰ τριετῆ περίπου ἐξορίαν ἐπανῆλθεν εἰς τὸ Λονδῖνον, ἔνθα ἐξηκολούθησε τὴν δρᾶσίν του, μέχρις οὗ, ἐπὶ Καρόλου Β', κατεδικάσθη ὡς αἱρετικὸς καὶ ἐρρίφθη εἰς τὰς φυλακάς, ἐν αἷς καὶ ἐτελεύτησε τῷ 1662. Οἱ ὀπαδοὶ αὐτοῦ, μὴ ὄντες καλῶς διωργανωμένοι, διελύθησαν ὀλίγον μετὰ τὸν θάνατόν του, πλεῖστοι ἐξ αὐτῶν προσελθόντων εἰς τοὺς Συκινιανούς. Κ. Ι. Δ.

— **Μπίντλ** (Biddle), *Νικόλαος*. Ἀμερικανὸς χρηματιστὴς (1786—1844). Ἐπεσκέφθη τὴν Εὐρώπην μὲ διπλωματικὰς ἀποστολάς, ἐπὶ δὲ τῆς προεδρίας τοῦ Μονρὼ ἐγένετο γενικὸς διευθυντὴς τῆς Τραπέζης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Α. Α. Τ.

**Μπίντουελ** (Bidwell). Βορειοαμερικανὸς στρατηγὸς (1835—1864). Διεκρίθη εἰς πάσας σχεδὸν τὰς μάχας, αἵτινες διεξήχθησαν ἐν τῇ χερσονήσῳ τῆς Βιργινίας, καὶ ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σήνταρ-Κρήκ, διοικῶν τὸ 8ον σῶμα στρατοῦ. Γ. Ι. Β.

**Μπιντοὺζ** (Bidouse, ἢ Bidouze) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας καὶ Ἱσπανίας (βλ. λ. *Μπιντασσόα*).

**Μπιντζουροῦ** *['Ιαπ. Μυθολ.]*. Θεὸς τῆς ἰατρικῆς ἐν τῇ ἰαπωνικῇ θρησκείᾳ.

**Μπιντπάϋ,** ἢ ***Πιλπάϋ*** (Bidpay, Pilpay). Μυθικὸς βραχμᾶνος. Εἰς αὐτὸν ἀποδίδονται διάφοροι μῦθοι, οἵτινες προέρχονται ἐκ τῆς «Πάντσα-τάντρα» καὶ τῆς «Χιτοπαδάσσα». Κατ' ἐντολὴν τοῦ Πέρσου βασιλέως Χοσρόη Νουτσιρβάν, οἱ μῦθοι οὗτοι μετεφράσθησαν εἰς τὴν γλῶσσαν πεχλεβί, ἐκατὸν δὲ ἔτη βραδύτερον ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Μουσουλμάνου Ἀβδαλλὰχ-μπὲν-Ἀλμακόφα νέα μετάφρασις εἰς τὴν ἀραβικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «*Καλιλὰ* βὰ *Διμνά*» (βλ. λ.). Ἐπὶ τῇ βάσει τῆς μεταφράσεως ταύτης οἱ ἐν λόγῳ μῦθοι ἀπεδόθησαν εἰς τὴν συριακήν, τὴν ἑβραϊκήν, τὴν περσικήν, τὴν ἑλληνικὴν κτλ. Α. Δ.

**Μπίντωλφ** (Biddulph), *σὲρ Ροβέρτος*. Ἄγγλος στρατηγὸς (1835—1918). Ὑπηρέτησεν εὐδοκίμως εἰς τὸν ἀγγλικὸν στρατὸν κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον, τὴν ἀνταρσίαν τῶν Ἰνδιῶν (1857—1859) καὶ εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Κίνας (1860). Τῷ 1879 διωρίσθη ἁρμοστὴς τῆς Κύπρου. Ἐπ' αὐτοῦ οἱ Κύπριοι προέβησαν εἰς ἐπανειλημμένα διαβήματα ὑπὲρ τῆς ἑνώσεως τῆς νήσου των μετὰ τῆς Ἑλλάδος. Συνέγραψεν: «Ὁ λόρδος Κάρδουελ εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Στρατιωτικῶν». Α. Κ. Α.

**Μπινὼ** (Bineau), *Ἰωάννης-Μαρτιάλ*. Γάλλος μηχανικὸς καὶ πολιτικὸς (1805—1855). Ἐχρημάτισεν ἀρχιμηχανικὸς τῶν μεταλλείων καὶ εἶτα διευθυντὴς τῶν σιδηροδρόμων, βουλευτὴς εἰς τὴν συντακτικὴν καὶ εἰς τὴν νομοθετικὴν ἐθνοσυνέλευσιν καὶ ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων ἔργων (1849). Μετὰ τὸ πραξικόπημα τοῦ Ναπολέοντος Γ' ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ παρέμεινε τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἐδημοσίευσε πολλὰς ἐκθέσεις καὶ μελέτας, περὶ τῶν μεταλλείων ἰδίως, καὶ μίαν πραγματείαν του «Περὶ τῶν ἀγγλικῶν σιδηροδρόμων» (1840). —Ω.

**Μπίξιο** (Bixio), *Ἰάκωβος-Ἀλέξανδρος*. Γάλλος δημοσιολόγος καὶ πολιτικός, ἰταλικῆς καταγωγῆς (1808—1865). Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν ἐν Γαλλίᾳ, ἔλαβε δίπλωμα ἰατρικῆς τῷ 1830 καὶ μετέσχεν ἐνεργῶς τῆς Ἰουλιανῆς ἐπαναστάσεως, μεθ' ἣν ἵδρυσε μετὰ τοῦ Μπυλὸζ τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν δύο κόσμων». Ἀπὸ τοῦ 1837 ἤρχισεν ἐκδίδων σειρὰν δημοσιευμάτων πρακτικοῦ γεωργικοῦ περιεχομένου: «Τὸ ἀγροτικὸ σπίτι τοῦ ΙΘ' αἰῶνος», «Τὸ ἡμερολόγιον τοῦ καλοῦ κηπουροῦ», «Τὸ ἡμερολόγιον τοῦ καλλιεργητοῦ καὶ τοῦ ἀμπελουργοῦ» κτλ. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ γραφείου τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ ἀπεστάλη κατόπιν πρεσβευτὴς τῆς Γαλλίας εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Τουρίνου, ἐκλεγεὶς ὅμως μέλος τῆς συντακτικῆς συνελεύσεως ὑπὸ τοῦ διαμερίσματος τῆς Doubs ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους, ὅπου ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν καταστολὴν τῆς στάσεως τῆς 24ης Ἰουνίου καὶ ἐτραυματίσθη εἰς μίαν μάχην ὁδοφραγμάτων. Ἰαθεὶς ταχέως ἐνεφανίσθη εἰς τὴν συνέλευσιν, ἥτις εἰς ἔνδειξιν τοῦ ἐνθουσιασμοῦ της τὸν ἐξέλεξεν ἐξάκις κατ' ἐπανάληψιν ἀντιπρόεδρον. Ἐγένετο κατόπιν ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας καὶ τοῦ Ἐμπορίου, ἐκλεγεὶς δ' εἶτα μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως ἐτάχθη ἐν αὐτῇ μὲ τὸ κόμμα τῶν μετριοπαθῶν δημοκρατικῶν. Κατὰ τὸ πραξικόπημα τοῦ Δεκεμβρίου 1851 συνελήφθη μετὰ τῶν ἄλλων ἀρχηγῶν τοῦ κόμματός του, ἀφέθη ὅμως ἐλεύθερος μετὰ ἕνα μῆνα χωρὶς νὰ ἐξορισθῇ. Ἔκτοτε ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον καὶ ἐγένετο διευθυντὴς διαφόρων βιομηχανιῶν καὶ τραπεζικῶν ἱδρυμάτων. Τῷ 1850 ὁ Μπίξιο εἶχεν ἐπιχειρήσει μετὰ τοῦ Μπαρρὰλ μίαν ἀνάβασιν δι' ἀεροστάτου, ἐκ τῆς πτώσεως τοῦ ὁποίου ἐσώθη ὡς ἐκ θαύματος. Περίφημος δὲ εἶναι ἡ ἄνευ ἀποτελέσματος μονομαχία του μὲ τὸν Θιέρσον, προκληθεῖσα ἐκ τοῦ ὅτι ἀπέδωκεν εἰς αὐτὸν μίαν φράσιν, τὴν ὁποίαν ἐκεῖνος ἠρνήθη ὅτι ἐξεστόμισέ ποτε. —Ω.

— **Μπίξιο** (Bixio), *Ἱερώνυμος*, ὁ ἐπικαλούμενος *Νῖνο*. Ἰταλὸς πατριώτης, ναυτικὸς καὶ στρατηγὸς (1821—1873). Κατὰ τὴν παιδικήν του ἡλικίαν ἔτυχε στοιχειώδους μόνον μορφώσεως, δεκατριετὴς δὲ ἐπεβιβάσθη ἐμπορικοῦ πλοίου ὡς ναυτόπαις καὶ βραδύτερον κατετάχθη εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικὸν ὡς ἁπλοῦς ναύτης. Διὰ τῆς ἐπιμελείας του καὶ τῆς ἱκανότητός του κατώρθωσε νὰ φθάσῃ εἰς βαθμὸν ἀνθυποπλοιάρχου, ἐπιθυμῶν ὅμως ν' ἀποκτήσῃ πλήρη ἐλευθερίαν παρῃτήθη τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ καὶ ἐπέστρεψε τῷ 1845 εἰς τὰ ἐμπορικὰ πλοῖα ταξιδεύσας εἰς πολλὰς θαλάσσας. Ἐπανελθὼν τῷ 1847 εἰς τὴν Γένουαν ἀνεμείχθη εἰς τοὺς ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ἰταλίας ἀγῶνας καὶ τῷ 1848, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Μιλάνου, κατετάχθη ὡς ἐθελοντὴς καὶ ἐπολέμησεν ἐν τῷ μετώπῳ τῆς Βενετίας. Μετὰ τὴν ἧτταν ἠκολούθησε τὸν Γαριβάλδην καὶ ἔφθασεν εἰς τὴν Ῥώμην, ὅπου τῷ 1849 διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν αὐτῆς, τραυματισθεὶς ἐπικινδύνως. Ἀπὸ τοῦ 1851—1857 ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ἐμπορικὸν ναυτικὸν καὶ κατόπιν ἐξέδωσεν ἐν Γενούῃ τὴν ἐφημερίδα «Ἅγιος Γεώργιος», βραδύτερον μετονομασθεῖσαν εἰς «Ἔθνος», διὰ τῆς ὁποίας ὑπεστήριξε τὴν πολιτικὴν τοῦ Καβούρ. Ὅταν ὅμως τῷ 1859 ἐξερράγη ὁ πόλεμος μετὰ τῆς Αὐστρίας, προσῆλθεν ἐκ νέου εἰς τὸν στρατὸν καὶ ἐπολέμησεν ὑπὸ τὸν Γαριβάλδην, προαχθεὶς εἰς συνταγματάρχην. Μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τῆς Βιλλαφράνκας, παρῃτήθη τοῦ τακτικοῦ στρατοῦ μετὰ τοῦ Γαριβάλδη καὶ ἤρχισε νὰ προπαρασκευάζῃ τὴν ἐκστρατείαν τῶν χιλίων Γαριβαλδινῶν εἰς τὴν Σικελίαν, ἡ ὁποία ἀποτελεῖ τὸ κυριώτερον στρατιωτικόν του κατόρθωμα. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ κρυφία ἀπαγωγὴ τῶν δύο ἀτμοπλοίων ἐκ τοῦ λιμένος τῆς Γενούης, ἡ μεταφορὰ αὐτῶν εἰς τὸν λιμενίσκον τοῦ Κάρτο, ἡ ἐπιβίβασις τῶν Χιλίων καὶ ἡ μεταφορὰ των καὶ ἀποβίβασις εἰς τὴν Σικελίαν τῷ 1860. Εἶχεν ἀναγνωρισθῆ παρὰ πάντων ὡς ὑπαρχηγὸς τῶν Γαριβαλδινῶν καὶ ἐπολέμησεν ἡρωϊκῶς εἰς τὴν μάχην τοῦ Καλαταφίμι καὶ κατὰ τὴν ἐπίθεσιν τοῦ Παλέρμου, καθ' ἣν ἐπληγώθη. Προαχθεὶς εἰς στρατηγὸν ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν ἀνεξαρτήτου σώματος, κατέλαβε τὴν Κατάνην καὶ διαπεραιωθεὶς μετὰ τοῦ Γαριβάλδη εἰς τὴν ἠπειρωτικὴν Ἰταλίαν ἐκυρίευσε τὸ Ῥήγιον τῆς Καλαβρίας, ὅπου ἐπληγώθη ἐκ νέου καὶ διεσκόρπισε τὰ νεαπολιτανικὰ στρατεύματα, ἀναδειχθεὶς καὶ εἰς πλείστας ἄλλας συγκρούσεις. Μετὰ τὸ τέλος τῆς ἐκστρατείας ταύτης κατετάχθη εἰς τὸν τακτικὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου. Τῷ 1861 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ διεκρίθη ἐν τῇ βουλῇ διὰ τὴν σύνεσίν του καὶ τὴν προσπάθειάν του πρὸς συμφιλίωσιν τοῦ Γαριβάλδη μετὰ τοῦ Καβούρ, παραμείνας πάντοτε μακρὰν τῶν κομμάτων καὶ ἐνδιαφερόμενος μόνον διὰ τὰ ζητήματα τοῦ στρατοῦ καὶ τοῦ ναυτικοῦ. Κατὰ τὸν Ἰταλοαυστριακὸν πόλεμον τοῦ 1866, ὡς διοικητὴς ταξιαρχίας, ἐκάλυψε τὴν ὑποχώρησιν τοῦ ἰταλικοῦ στρατοῦ καὶ διέσωσε τοῦτον μετὰ τὴν μάχην τῆς Κουστότσας. Μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Ῥώμης ὑπὸ τῶν ἰταλικῶν στρατευμάτων τῷ 1870, καθ' ἣν ἔδρασεν ὡς διοικητὴς μεραρχίας, παρῃτήθη τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ καὶ ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ἐμπορικὸν ναυτικόν, ἀγοράσας μέγα ἀτμόπλοιον καὶ ταξιδεύσας εἰς τὴν Ἄπω Ἀνατολήν, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1873, προσβληθεὶς ὑπὸ χολέρας κατὰ τὴν μεταφορὰν ὀλλανδικῶν στρατευμάτων εἰς Ἰάβαν. Μ. Δ. Β.

Ἱερώνυμος Μπίξιο.

**Μπιὸ** (Biot), *Ἰωάννης-Βαπτιστής*. Γάλλος ἀστρονόμος (1774—1862). Ἀποφοιτήσας τῆς École Polytechnique, ἐδίδαξεν ἐν τῇ École centrale de Beauvais, κατὰ δὲ τὸ 1800 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας. Μετὰ τριετίαν ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῶν Παρισίων, ὀλίγον δὲ μετὰ τὴν προσληψίν του ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ ἐξελέγη μέλος τοῦ Γραφείου τῶν μηκῶν. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ Arago ἐπὶ διαφόρων ἀστρονομικῶν καὶ γεωδαιτικῶν ζητημάτων, ὡς καὶ μετὰ τοῦ Gay-Lussac, μεθ' οὗ ἐπεχείρησε τὴν πρώτην δι' ἀεροστάτου ἀνάβασιν πρὸς ἐπιστημονικὴν μελέτην τῆς γηΐνης ἀτμοσφαίρας.

Ἰωάννης Μπιό.

Τῷ 1806 μετέβη μετὰ τοῦ Arago εἰς Ἱσπανίαν πρὸς συνέχισιν τῶν τριγωνισμῶν, τοὺς ὁποίους εἶχεν ἀρχίσει ὁ Méchain διὰ τὴν μέτρησιν τοῦ τόξου τοῦ μεσημβρινοῦ τῆς Γαλλίας. Τῷ 1809 ἐξελέγη καθηγητὴς τῆς ἀστρονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων, καὶ τῷ 1817 ἐξηκολούθησε τὰς γεωδαιτικάς του μετρήσεις πρὸς ἐπαλήθευσιν καὶ διόρθωσιν τῶν προηγουμένων παρατηρήσεων. Ἐδημοσίευσε διάφορα συγγράμματα, ἐν οἷς κυριώτερα εἶναι: «Analyse du traité de la mécanique celeste de Laplace» (1801), «Traité élémentaire d'astronomie physique» (1805 καὶ 1850), «Recherches sur les refractions ordinaires près de l'horizon» (1808), «Recherches sur plusieurs points d'astronomie égyptienne» (1823), «Recueil d'observations géodésiques, astronomiques et physiques avec Arago» (1821), «Memoire sur la vraie constitution de l'atmosphère» καὶ πλῆθος πραγματειῶν εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικά. Σ. Π.

**Μπιὸ-Μπιὸ** (Bio-Bio) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἀμερικῆς ἐν τῇ Χιλῇ. Πηγάζει ἀπὸ τὰ ὄρη Τουκαπὲλ τῶν Ἄνδεων, διέρχεται διὰ τῶν πόλεων Σάντα-Φὲ καὶ Κονσεψιὸν καὶ κατόπιν διὰ δύο βραχιόνων στρέφεται πρὸς ἀνατολὰς καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Εἰρηνικόν, κατόπιν διαδρομῆς 350 χλμ. Οἱ κυριώτεροι παραπόταμοί του εἶναι ὁ *Λοῦξα* καὶ ὁ *Βεργκάρα*. Π. Γ. Λ.

**Μπιόντο** (Biondo), ***Φλάβιος***. Ἰταλὸς ἱστορικὸς καὶ διπλωμάτης (1388—1463). Διετέλεσε γραμματεὺς τῶν παπῶν Εὐγενίου Δ', Νικολάου Ε', Καλλίστου Γ' καὶ Πίου Β' καὶ πρεσβευτὴς αὐτῶν ἐν Φλωρεντίᾳ καὶ Βενετίᾳ. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων λατινιστί: «Romae instauratae libri tres» (1482), πολύτιμον μελέτην τῶν ἀρχαίων μνημείων τῆς Ῥώμης, «Romae triumphantis libri decem» (1482), μελέτην τῶν θεσμῶν τῆς ρωμαϊκῆς δημοκρατίας, «Historiarum ab inclinatione romani imperii ad annum 1440, decades III, libri XXXI» (1483). Μ. Δ. Β.

**Μπιόρνσον** (Björnson), ***Μπιέρνσιερνε***. Νορβηγὸς λογοτέχνης (βλ. λ. *Μπιέρσον*).

**Μπιοὺχ** (Buck), ***Ντούντλεϋ***. Ἀμερικανὸς συνθέτης (1839—1909). Ἐσπούδασεν ἐν Λειψίᾳ, Δρέσδῃ καὶ Παρισίοις. Αἱ συνθέσεις του, κυρίως θρησκευτικαί, εἶναι αἱ ἑξῆς: Σκηναὶ ἐκ τῆς «Golden Legend» τοῦ Λογκφέλω, αἱ καντάται «Don Munio» «Πρωϊνὸ τοῦ Πάσχα», «Ἰωβιλαῖον», «Τὸ φῶς τῆς Ἀσίας», «Κολόμβος», πολλαὶ εἰσαγωγαί, ἡ ὀπερέττα «Deseret» μία συμφωνία, μουσικὴ διαματίου κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπιουκάναν** (Buchanan), ***Γεώργιος***. Σκῶτος ποιητὴς (βλ. λ. *Μπακάναν Γεώργιος*).

Digitized by Google

**μπιούραν** (Buran) *[Μετεωρολ.]*. Ὄνομα ἰσχυροῦ τοπικοῦ βορειοανατολικοῦ ἀνέμου, παρατηρουμένου ἐν Ρωσίᾳ καὶ κεντρικῇ Ἀσίᾳ. Κατὰ τὸν χειμῶνα εἶναι ψυχρότατος καὶ προκαλεῖ ἀνύψωσιν καὶ αἰώρησιν χιόνος ἐν τῇ ἀτμοσφαίρᾳ· καλεῖται δὲ τότε καὶ *πούργκα* (purga, poorga). Πνέει ἐπίσης καὶ κατὰ τὸ θέρος, ἐγείρων πολλάκις εἰς μεγάλα ὕψη ἄμμον ἢ κονιορτὸν καὶ προκαλῶν ἐλάττωσιν τοῦ φωτὸς τῆς ἡμέρας, ὁπότε καλεῖται *μέλας μπιούραν* ἢ *μαύρη θύελλα* (Kara-buran black-Storm), εἴτε, ὅταν πνέῃ μετὰ μικροτέρας ἐντάσεως, *κίτρινος μπιούραν* ἢ *κιτρίνη θύελλα* (Sarik-buran, yellow-Storm). Θ. Θ. Φ.

**Μπιούρυ** (Bury), ***Ἰωάννης Μπαγκνάλ.*** Ἄγγλος φιλόλογος καὶ ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1861. Τῷ 1893 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς νεωτέρας ἱστορίας, τῷ δὲ 1898 τῆς ἑλληνικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Δουβλίνου. Συνεπλήρωσε τὸ ἔργον τοῦ Μπέτζενμπεργ «Συμβολαὶ εἰς τὴν γνῶσιν τῶν ἰνδοευρωπαϊκῶν γλωσσῶν», καὶ ἐξέδωκε τὰ «Ἴσθμια» τοῦ Πινδάρου, τὴν «Ἱστορίαν τῶν ἀμφικτιονικῶν συνεδρίων ἐν Ἑλλάδι καὶ Ἰταλίᾳ» (1893) τοῦ Φρῆμαν καὶ τὸ ἔργον τοῦ Γίβωνος «Παρακμὴ καὶ πτῶσις τῆς Ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας» (1896—1899). Ἐπὶ πλέον συνέγραψεν: «Ἱστορία τῆς μεταγενεστέρας ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας ἀπὸ τοῦ Ἀρκαδίου μέχρι τῆς Εἰρήνης» (1899), καὶ «Ἱστορία τῆς Ἑλλάδος μέχρι τοῦ θανάτου Ἀλεξάνδρου τοῦ Μεγάλου». Α. Δ.

**Μπιοὺτ** (Bute) *[Γεωγρ.]*. Ἡ σημαντικωτέρα τῶν παρὰ τὰς σκωτικὰς ἀκτὰς ἀγγλικῶν νήσων. Χωρίζεται ἀπὸ τῆς ξηρᾶς δι' ἀμμώδους στενοῦ, μήκους 16 μιλλίων. Ἔχει ἔκτασιν 47 τετρ. μιλλ. Τὸ ὑψηλότερον σημεῖον τῆς νήσου εἶναι ἡ κορυφὴ τοῦ ὄρους *Κέημς*, ὕψους 911 ποδῶν. Λόγῳ τοῦ γλυκέος κλίματος καλλιεργοῦνται ἐν αὐτῇ ἄνθη, τὰ ὁποῖα εἰς οὐδὲν ἄλλο μέρος τῆς Ἀγγλίας εὐδοκιμοῦν. Πρωτεύουσα εἶναι ἡ πόλις Ρόθσεϋ, ἔχουσα 11.835 κατοίκους. Π. Γ. Λ.

**Μπιοὺτ** (Bute), ***Ἰωάννης-Στούαρτ, κόμις***—. Ἄγγλος πολιτικὸς (1713—1792). Ἐχρημάτισεν ὑπουργὸς καὶ πρῶτος λόρδος τοῦ Δημοσίου θησαυροῦ. Ὡς ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν τόρεων ἐγένετο ἀντιδημοτικὸς καὶ τέλος ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν πολιτικήν. Α. Δ.

**Μπὶρ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀργαλαστῆς τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 166. Χ. Δ.

**Μπὶρ** (Bier), ***Αὔγουστος - Κάρολος - Γουσταῦος.*** Γερμανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1861. Τῷ 1895 ἐγένετο ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν Κιέλῳ καὶ τῷ 1899 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν Γκραϊφσβάλδῃ. Ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῆς ὑπ' αὐτοῦ εἰσαχθείσης ἐν τῇ χειρουργικῇ μεθόδου τεχνητῆς ὑπεραιμίας πρὸς θεραπευτικὸν σκοπὸν διαφόρων φλεγμονῶν. Ἄλλαι μέθοδοι αὐτοῦ εἶναι ἡ λεγομένη *ὀστεοπλαστικὴ νεκροτομία*, ἡ θεραπεία τῆς ὑπερτροφίας τοῦ προστάτου δι' ἀρτηριακῆς ἀπολινώσεως, ἡ περιφερικὴ ἐντερορραφὴ κτλ. Ἡ φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα *μέθοδος τοῦ Μπὶρ* (1899) ἀφορᾷ τὴν ὑπογάστριον ἀναισθησίαν δι' ὑπαραχνοειδῶν ἐνέσεων κοκαΐνης ἐν τῇ ὀσφυϊκῇ χώρᾳ. Ο. Ρ.

**Μπιρὰγκ** (γαλλ. Birague, ἰταλ. Biraghi), ***Ρενᾶτος.*** Κληρικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Μιλάνῳ τῷ 1506 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1583. Ὅταν ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Φραγκῖσκος Α΄ ἀπώλεσε τὴν μάχην τῆς Παυίας, ὁ Ρενᾶτος Μπιρὰγκ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, γνωστοὶ ὡς ἀφωσιωμένοι εἰς τὸν Φραγκῖσκον, ἠναγκάσθησαν νὰ ἐγκαταλίπουν τὸ Μιλᾶνον, ἀνακαταληφθὲν ὑπὸ τοῦ Σφόρτσα, καὶ νὰ καταφύγουν εἰς Γαλλίαν. Ὁ Φραγκῖσκος Α΄ καὶ ὁ διάδοχός του Ἑρρῖκος Β΄ ἀπέστειλαν κατ' ἐπανάληψιν τὸν Ρενᾶτον Μπιρὰγκ εἰς διαφόρους ἀποστολὰς ἐν Ἰταλίᾳ, ὡς σύμβουλον ἐν ἀρχῇ τοῦ στρατάρχου Μπρισσὰκ εἰς Πεδεμόντιον, κατόπιν ὡς πρόεδρον τῆς γερουσίας τοῦ Τουρίνου κλπ. Ἀπὸ τοῦ 1565, ἐπὶ Καρόλου Θ΄, ἔλαβε τὴν γαλλικὴν ἰθαγένειαν, διωρίσθη δ' ἐφεξῆς πρόεδρος τοῦ παρλαμέντου τῶν Παρισίων, κατόπιν διοικητὴς τῆς Λυών, τοῦ Φορὲζ καὶ τοῦ Μπωζολαὶ καὶ τέλος, ἐπὶ Ἑρρίκου Γ΄, σφραγιδοφύλαξ (1570) καὶ καγκελλάριος (1573). Τῷ 1578 ἐγένετο καρδινάλιος. Δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένον ἂν ὑπῆρξεν, ἔστω καὶ κατὰ μέρος, ἄξιος τόσων εὐνοιῶν, οὔτε ποία ὑπῆρξεν ἡ συμμετοχή του εἰς τὴν εἰσαγωγὴν τῶν μεγάλων θεσμῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὡς ὁ τοῦ 1581 περὶ σωματείων, ὁ ὁποῖος συνήθως τῷ ἀποδίδεται. Ὁ ρόλος του ἐπίσης κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους παραμένει ἀσαφὴς ὡς καὶ ὅλη ἡ ὑποστασίς του. Πάντως δὲν ὑπῆρξεν ἀμέτοχος τῆς εὐθύνης διὰ τὰς ἀγρίας αἱματοχυσίας τῆς ἐποχῆς του, πολλοὶ δὲ τὸν θεωροῦν ὡς ἕνα τῶν πρωτουργῶν τῆς νυκτὸς τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου καὶ ὡς ἀργυρώνητον ὄργανον τῆς Ἱσπανίας. Γνωστὸν εἶναι ὅτι τῷ 1578 οἱ Οὐγενότοι ἐζήτησαν ἐπιμόνως τὴν ἀπομάκρυνσίν του, ἀλλ' ἐπὶ ματαίῳ· ὁ Μπιρὰγκ ἐξηκολούθησε νὰ παίζῃ πρωτεύοντα ρόλον ἐν τῇ πολιτικῇ τῆς Γαλλίας καὶ ἐπὶ Ἑρρίκου Γ΄, μέχρι τοῦ θανάτου του.

Ἐκ τῶν μετ' αὐτοῦ μεταναστευσάντων εἰς Γαλλίαν ἀδελφῶν του ὁ ***Λουδοβῖκος*** (1550—1570) ἔλαβεν ἀνωτάτους στρατιωτικοὺς βαθμούς, ἐγένετο ἱππότης ἐπὶ Ἑρρίκου Β΄ καὶ διοικητὴς τοῦ Πεδεμοντίου, ὁ δὲ ***Κάρολος*** (ἀποθανὼν τῷ 1591) ὑπῆρξε καὶ οὗτος ἀνώτατος στρατιωτικός, αὐλικός, ἱππότης καὶ σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας. — Ω.

**Μπιράγκι** (Biraghi)· βλ. λ. *Μπιράγκ.*

**Μπιράκης,** ***Ἀναγνώστης.*** Ὁπλαρχηγὸς ἐκ Σφακίων Κρήτης. Ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1866—1869 καὶ ἐχρημάτισε πληρεξούσιος τῆς ἐπαρχίας του.

—**Μπιράκης,** ***Κυριάκος.*** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὰς ἐπαναστάσεις 1878 καὶ 1894—1897.

—**Μπιράκης,** ***Σταυριανός.*** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1878. Τῷ 1896, διατελῶν διοικητὴς τῆς τουρκικῆς χωροφυλακῆς Σφακίων, ἡνώθη μετὰ τῶν ἐπαναστατῶν καὶ ἀπετέλεσε μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῆς μεταπολιτεύσεως. Τῷ 1905 συμμετέσχεν εἰς τὸ κατὰ τοῦ πρίγκιπος Γεωργίου, ἁρμοστοῦ τῆς Κρήτης, ἐπαναστατικὸν κίνημα καὶ ἐφονεύθη κατὰ τὴν παρὰ τὸ χωρίον Ἀτσιπόπουλον μάχην πρὸς τὸν ρωσικὸν στρατὸν τῆς κατοχῆς. Ν. ΚΛΣ

**Μπιράν,** ***Μαὶν ντὲ*** — (Main de Biran). Γάλλος φιλόσοφος (1766—1824). Πρὸ τῆς ἐπαναστάσεως ὑπηρέτησεν εἰς τὴν βασιλικὴν φρουρὰν καὶ κατέλαβε πλείστας ἀνωτέρας θέσεις, ἐπὶ δὲ τῆς ἐποχῆς τῆς παλινορθώσεως τῶν Βουρβώνων ἐξελέγη καὶ βουλευτής. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του ἐξεδόθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τοῦ Κουζὲν καὶ ἄλλων, ἐγένοντο δὲ ἀποδεκτὰ μετ' ἐνθουσιασμοῦ ὑπὸ τῆς σχολῆς τῶν ἐκλεκτικῶν καὶ τῶν ἰδεολόγων. Ὁ Μπιρὰν ἐξήσκησε μεγίστην ἐπίδρασιν ἰδίως ἐπὶ τοῦ Ραβαισσὸνκαὶ καὶ τοῦ Ἀμπέρ, ὡς καὶ ἐπὶ τοῦ Ἰταλοῦ Λουΐτζι Φέρρι, ὅστις ὑπεστήριζεν ἰδίαν θεωρίαν ὑπὸ τὸ ὄνομα *δυναμικὸς μονισμός*. Ὁ Κουζὲν ἐχαρακτήρισε τὸν Μπιρὰν ὡς τὸν πρῶτον Γάλλον μεταφυσικὸν τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος, καὶ ἄλλοι, προχωροῦντες περισσότερον, τὸν ἀπεκάλεσαν Κὰντ τῆς Γαλλίας. Ἀφετηρία τῆς φιλοσοφικῆς του διανοήσεως εἶναι ἡ ψυχολογικὴ ἐμβάθυνσις τῆς συνειδήσεως, τῆς ὁποίας ἀναγνωρίζει τὸν ἑνιαῖον χαρακτῆρα καὶ θέτει τὴν βούλησιν ὡς πρωταρχικὸν στοιχεῖον, ἀπομακρυνόμενος οὕτω καὶ ἀπὸ τὴν αἰσθησιαρχίαν, ἥτις ἐπεκράτει ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του μεταξὺ τῶν ψυχολόγων, καὶ ἀπὸ τὴν ἰδεολογικὴν μεταφυσικὴν τοῦ Κοντιγιὰκ καὶ τοῦ Destutt de Trocy, ἥτις ἐπηρέασε τὴν πρώτην περίοδον τῆς σκέψεώς του. Ἡ ἑκουσία κίνησις εἶναι ἡ ἀρχὴ πάσης παραστάσεώς μας περὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου καὶ ἐπ' αὐτῆς βασίζεται ἡ διάκρισις μεταξὺ αἰσθήσεως καὶ ἀντιλήψεως, μνήμης καὶ φαντασίας, παθητικῆς καὶ ἐνεργοῦ ἕξεως. Τῆς ἑκουσίας ταύτης ἐνεργείας, ἥτις ἀποτελεῖ τὸ κύριον γνώρισμα τοῦ ψυχικοῦ βίου, λαμβάνομεν συνείδησιν διὰ τῆς ἀμέσου αὐτοπαρατηρήσεως, καθ' ἣν πρέπει ν' ἀπαλλαγῶμεν ὅλων τῶν προκαταλήψεων καὶ τῶν ἀφῃρημένων ἐννοιῶν, τὰς ὁποίας ἐσχηματίσαμεν, διὰ νὰ κατατάξωμεν τὴν ἐκ τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου ἐμπειρίαν μας. Αἱ δυνάμεις τῆς φύσεως, τὰς ὁποίας θεωροῦμεν ὡς αἰτίας τῶν φαινομένων, εἶναι ἁπλῶς εὔχρηστοι πρακτικῶς τύποι, ὑπὸ τοὺς ὁποίους συμπεριλαμβάνομεν εὐκολώτερον ὅσον τὸ δυνατὸν ἐκτεταμένα συστήματα φαινομένων· καὶ οἱ αἰσθησιοκράται, κρίνοντες τὰς δυνάμεις τῆς ψυχῆς κατ' ἀναλογίαν πρὸς τὰς φυσικάς, καταλήγουν νὰ τὰς θεωροῦν ὡς ἀφῃρημένας ὀντότητας, ἢ μᾶλλον ἐννοίας, ἁπλᾶς λέξεις.

Ὁ ἄνθρωπος δὲν ἐπιτρέπεται νὰ μεταχειρίζεται τὸν ἑαυτόν του ὡς ἐξωτερικὸν ἀντικείμενον. Ἡ αὐτοσυνείδησις καὶ ὁ στοχασμὸς ἐπὶ τῆς ἐσωτέρας ζωῆς μας εἶναι ἄμεσος καὶ ἀληθὴς πραγματικότης, ἐν τῇ ὁποίᾳ γνωρίζομεν καὶ τὴν βούλησιν ὡς τὴν πρωταρχικήν μας οὐσίαν καὶ τὴν ἐσωτερικὴν καὶ ἐξωτερικὴν ἀντίστασιν, ἥτις μᾶς φέρει εἰς τὴν παράστασιν τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου καὶ τὴν πλήρη αὐτοσυνείδησιν τοῦ ἐγώ. Οὕτω φθάνει ὁ Μπιρὰν εἰς τὴν ἰδέαν ὅτι διὰ τῆς ἀπ' εὐθείας διαισθήσεως ἢ ἐνοράσεως ἡ συνείδησις ἀντιλαμβάνεται ἑαυτὴν ὡς δρῶσαν, ὅτι μόνον κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον εἰσδύομεν βαθύτερον εἰς τὴν φύσιν τοῦ πνεύματος καὶ ὅτι ἡ ἐνόρασις αὕτη τῆς ἰδίας μας ἐνεργείας θέτει ἡμᾶς εἰς ἐπαφὴν ἄνευ διαμέσου μὲ τὴν ἀντικειμενικὴν πραγματικότητα. Οὐδ' ἐπὶ στιγμὴν ἀμφιβάλλει ὁ Μπιρὰν περὶ τοῦ δυνατοῦ τῆς ἀνθρωπίνης ἐλευθερίας, καὶ διὰ τοῦτο ὁ Dilthey τὸν κατατάσσει μεταξὺ τῶν ἰδεαλιστῶν τῆς ἐλευθερίας, ἄλλοι δὲ ἀποκαλοῦν τὴν θεωρίαν του *πνευματικὸν ρεαλισμὸν* ἢ *ψυχολογικὸν δυναμισμόν*. Αἱ θεωρίαι αὗται συνέτειναν, διὰ μέσου τοῦ Ραβαισσόν, εἰς τὴν διαμόρφωσιν τῆς μπερξονικῆς φιλοσοφίας, χαρακτηριστικὸν δὲ εἶναι ὅτι παραδέχεται καὶ ὁ Μπιρὰν τὸν μὲν ἐξωτερικὸν χῶρον ὡς μηχανικὸν κατασκεύασμα, ἀντιτάσσει δὲ τὴν ὕπαρξιν ἐσωτερικοῦ χώρου (μπερξονικοῦ χρόνου) σχηματιζομένου διὰ τῶν διαφόρων σημείων ἀντιστάσεως τῶν διαφόρων ὀργάνων πρὸς τὴν βούλησιν. Ὁ Γκιγιώ, παρεξηγήσας τὴν ὑπερβολικὴν ἴσως ἀξίαν ἣν ἀποδίδει ὁ Μπιρὰν εἰς τὴν βούλησιν καὶ τὴν συνείδησιν τῆς προσπαθείας, λέγει ὅτι μόνον ἐπὶ τοῦ πρωτογόνου ζῴου, τὸ ὁποῖον δὲν ἐσχημάτισεν ἀκόμη τὴν ἰδέαν τοῦ ὁμοιομεροῦς χρόνου καὶ χώρου, ἐφαρμόζεται ἡ ψυχολογία τοῦ Μπιράν. Ἔργα τοῦ Μπιρὰν εἶναι: «Mémoire sur l' habitude» (1803), «Essai sur les fondements de la psychologie», «Nouvelles considérations sur les rapports du physique et du moral» (1834), «Oeuvres posthumes» (3 τ. 1841), μέρος τῶν ὁποίων ἐξεδόθη ὑπὸ P. Tisserand ὑπο τὸν τίτλον «L' idée de l' existance» (1909), «Pensées», «Oeuvres inédites» (1859), «Science et psychologie» (1887) κ. ἄ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Élie de Biran*, Étude sur les Oeuvres philosophiques de M. de B. (1868).— *A. Bertrand*, La psychologie de l' effort (1889).— *Alfr. Kühtmann*, M, de B. ein Beitrag zur Geschichte der Metaphysik u. d. Psychologie d. Willens (1901). — *Alb. Lang*, M. de B. und die neuere Philosophie. -- *De La Valette-Monbrun*, M. de B. critique et disciple de Pascal (1914).— *Τοῦ αὐτοῦ*, M. de B. essai de biographie historique et psychologique (1914).
Ε. Λ.

**μπιραντέρης** (ὁ)· ἀδελφός, σύντροφος (ἐκ τοῦ τουρκικοῦ, κυρίως περσικοῦ, μπιραντέρ).

**Μπίργκερ** (Birger), ***Οὖγος.*** Σουηδὸς ζωγράφος (1854—1887). Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τῆς παρισινῆς καὶ τῆς ἀνατολικῆς ζωῆς καὶ κοσμικῶν «ἐσωτερικῶν». Ἡ τέχνη του εἶναι γεμάτη ἀπὸ φῶς, ἀπὸ ἀκτινοβολοῦντα χρώματα καὶ ἀπὸ ἐκφραστικωτάτην φαιδρότητα. Θεμελιῶδες ἔργον του εἶναι τὸ «Παρὰ τῷ Ledoyen» (1886, μουσεῖον Γκαίτεμποργκ). Ἐν τῷ πίνακι τούτῳ ἀναγνωρίζονται οἱ Σάλμσον, Βάλμπεργκ, Χάγκμποργκ, αὐτὸς οὗτος ὁ Μπίργκερ, ὁ Χάσσελμπεργκ, ὁ Λάρσσον, ὁ Πάουλι, οἱ Φινλανδοὶ Ἔντελφελτ καὶ Βάλλγκρεν κλπ. Ἕτερα ἀξιομνημόνευτα ἔργα τοῦ Μπίργκερ εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Παρισινὸς δρόμος», «Ἀτσιγγάνα στὸ παράθυρο», «Τοπίον», «Προσωπογραφία τῆς συζύγου καὶ τῆς γυναικαδέλφης τοῦ καλλιτέχνου» (Ἐθνικὸν μουσεῖον Στοκχόλμης), «Ὁδὸς Γαβριέλλας, Παρίσι», «Γεῦμα ἐν Γρενάδᾳ», «Ἐσωτερικὸν ἠλεκτροφώτιστον» (μουσεῖον Γκαίτεμποργκ). Ι. Μ. Π.

**Μπιρὲ** (Biré), ***Ἐδμόνδος.*** Γάλλος λόγιος καὶ ἱστορικὸς (1829—1907). Δικηγόρος ἐν ἀρχῇ καὶ γραμματεὺς τοῦ ἐμπορικοῦ ἐπιμελητηρίου τῆς Νάντης, ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ὡς συγγραφεὺς τῷ 1864, ὁπότε ἐδημοσίευσεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Γκριμὼ βιογραφικὴν μελέτην «Περὶ τῶν δαφνοστεφῶν ποιητῶν τῆς Γαλλίας». Ἔκτοτε ἡ συγγραφική του παραγωγὴ ὑπῆρξεν ἀστείρευτος. Ἐκ τῶν ἔργων του, διαπνεομένων ἀπὸ ἀκραιφνοῦς φιλοβασιλισμοῦ καὶ καθολικισμοῦ, διακρινομένων ὅμως ἀφ' ἑτέρου διὰ τὴν βαθεῖαν γνῶσιν τῶν ἱστορικῶν καὶ φιλολογικῶν στοιχείων, ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως τὰ ἑξῆς: Τέσσαρες βιογραφικαὶ μελέται περὶ τοῦ Βίκτωρος Οὐγκὼ (1869, 1883, 1887, 1890) καὶ ἑτέρα περὶ τοῦ Μπαλζὰκ (1897), εἰς τὸν ἴδιον δὲ κύκλον «Τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ Σατωβριάνδου» (1903), «Βίοι συγχρόνων ἀνδρῶν» (1905) κτλ. Μεταξὺ τῶν καθαρῶς ἱστορικῶν: «Οἱ ἐπαναστατικοὶ θρῦλοι» (1885), «Οἱ ὑπερασπισταὶ τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ΄» (1893), «Οἱ ἱστοριογράφοι τῆς Ἐπαναστάσεως καὶ τῆς Αὐτοκρατορίας» (1893) κ. ἄ. Ἐν τῷ κύκλῳ τῆς λογοτεχνίας: «Φιλολογικαὶ ὁμιλίαι» (1892—1894), «Ἱστορικαὶ καὶ φιλολογικαὶ μελέται» (1896), «Ἀναμνήσεις καὶ πορτραῖτα» (1891) κτλ. Πολλὰ τῶν βιβλίων του ἔτυχον διαφόρων τιμητικῶν διακρίσεων ἐκ μέρους τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, τῷ δὲ 1900 ὁ Μπιρὲ ἔλαβε τὸ βραβεῖον Νée διὰ τὸ συνολικόν του ἱστορικὸν καὶ λογοτεχνικὸν ἔργον. —Ω.

**Μπίρεν** (Biren ἢ Büren), ***Ἐρνέστος-Ἰωάννης.*** Δοὺξ τῆς Κουρλανδίας (βλ. λ. *Μπίρον*).

**Μπιρετζὶκ** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τῆς διοικήσεως Οὔρφα τοῦ νομοῦ Χαλεπίου. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Εὐφράτου καὶ εἰς ἀπόστασιν 150 χλμ. ἀπὸ τοῦ Χαλεπίου. Κάτοικοι 12 χιλ., ἐξ ὧν 2.000 περίπου Χριστιανοί. Εἶναι ἡ ἀρχαία ὑπὸ τῶν Ἀρσακιδῶν ἱδρυθεῖσα πόλις *Βίρθα*, καταστραφεῖσα ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου. Κατ' αὐτὴν ὑπάρχει εὐχερὴς ἡ διάβασις τοῦ Εὐφράτου, οὗτινος τὸ εὖρος δὲν ὑπερβαίνει κατὰ τὸ θέρος τὰ 150 μέτρα. Ἡ χώρα παράγει ἐν ἀφθονίᾳ δημητριακά, σησάμιον καὶ ἐξαίρετον ἔλαιον.

**Μπίρκα,** ἢ ***Μπιέρκε*** (Birka ἢ Björkö) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς Σουηδίας, ἐκτισμένη ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τῆς λίμνης Μαῖλαρ. Ἦτο σπουδαιότατον ἐμπορικὸν κέντρον, συγκεντροῦσα πολυαρίθμους ἐμπόρους ἐξ ὅλων τῶν χωρῶν τῆς Σκανδιναβίας καὶ τῆς Βαλτικῆς. Ἐν αὐτῇ ἀπεβιβάσθη τὸ πρῶτον καὶ ἐκήρυξε τὸ Εὐαγγέλιον ὁ ἀπόστολος τῶν σκανδιναβικῶν χωρῶν ἅγιος Ἀνσγάριος. Κατά τινα γνώμην ἦτο ἡ ἀρχαιοτάτη πόλις Σιγκτούνα, ἔνθα ὁ θεὸς τῆς σκανδιναβικῆς μυθολογίας Ὀντὶν εἶχεν ἐγκατασταθῆ, κτίσας ὀχυρὸν ἀνάκτορον. Χ. Δ.

**Μπίρκελαντ** (Birkeland), ***Χριστιανός.*** Νορβηγὸς φυσικός, γεννηθεὶς τῷ 1867 ἐν Ὄσλο καὶ ἀπο-

Digitized by Google

θανὼν τῷ 1917 εἰς τὸ Τόκιον τῆς Ἰαπωνίας. Ἀπὸ τοῦ 1898 ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ὄσλο. Ἐδημοσίευσε πλείστας ὅσας ἐργασίας, ὑπομνήματα καὶ ἄρθρα εἰς περιοδικὰ ἐπὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ καὶ μαγνητισμοῦ καὶ εἰδικώτερον ἐπὶ τοῦ γηΐνου μαγνητισμοῦ. Ἐν συνεργσίᾳ μετὰ τοῦ Sam Eyde ἐπενόησε τὸν γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα Birkeland-Eyde τρόπον ἀμέσου παραγωγῆς βιομηχανικῶς τοῦ νιτρικοῦ ὀξέος ἐκ τοῦ ἀζώτου τῆς ἀτμοσφαίρας. Διετύπωσε διαφόρους θεωρίας ἐπὶ τῆς ἐσωτερικῆς συστάσεως τοῦ ἡλίου, περὶ τῆς φύσεως τῶν ἡλιακῶν κηλίδων, περὶ τοῦ ἡλίου ὡς μαγνητικῆς καὶ ἠλεκτρικῆς πηγῆς, ἔγραψε δὲ περὶ τῶν πλανητῶν καὶ δορυφόρων αὐτῶν, περὶ τῆς φύσεως τῶν διαφόρων πλανητικῶν φαινομένων, περὶ τοῦ ζωδιακοῦ φωτός. Ἠσχολήθη ἐπίσης μὲ τὸ πρόβλημα τοῦ σχηματισμοῦ τοῦ βορείου σέλαος καὶ τῶν μαγνητικῶν θυελλῶν, περὶ τοῦ ἰονισμοῦ τῆς ἀτμοσφαίρας, περὶ τῶν ἠλεκτρικῶν ρευμάτων τῆς ἀνωτέρας ἀτμοσφαίρας, περὶ τῆς γεωλογικῆς ἱστορίας τῆς Γῆς. Ἐξετέλεσεν ἰδίας ἐπινοήσεως πειράματα μαγνητισμοῦ καὶ ἠλεκτρισμοῦ καὶ ἐπὶ τῶν ἠλεκτρικῶν ἐκκενώσεων ἐν τῷ κενῷ. Ἔλαβε μέρος εἰς πάσας τὰς ἐξερευνητικὰς νορβηγικὰς ἀποστολὰς τῶν ἀρκτικῶν χωρῶν ἀπὸ 1899—1900 καὶ 1902—1903. Εἰς τοὺς δύο ὀγκώδεις τόμους τοῦ ἔργου του «The Norvegian Aurora Polaris Expedition 1902—1903» ἐκθέτει ἐκτενῶς τὰς θεωρίας του ἐπὶ τῶν αἰτίων τῶν μαγνητικῶν θυελλῶν καὶ παρέχει ἐνδιαφερούσας πληροφορίας περὶ τῆς συγχρόνου μετακινήσεως τῶν μαγνητικῶν διαταράξεων ἐπὶ τῶν διαφόρων σημείων τῆς ἐπιφανείας τῆς Γῆς. Μεγάλης σημασίας εἶναι αἱ ὑπ' αὐτοῦ συλλεγεῖσαι παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ ζῳδιακοῦ φωτός. Θ. Θ. Φ.

**Μπίρκεν** (Birken), ***Σίγκμουντ φὸν*** —. Γερμανὸς ποιητὴς 1626—1681). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ θεολογίαν καὶ ἔγραψε πρὸς ἑορτασμὸν τῆς εἰρήνης τῆς Βεστφαλίας (1648) θεατρικὸν ἔργον (1650). Ἐδημοσίευσε πρὸς τούτοις: «Κάτοπτρον τῶν τιμῶν τοῦ οἴκου τῆς Αὐστρίας» (1668), τὸ ὁποῖον ἀποτελεῖ διασκευὴν ἀρχαιοτέρου ἔργου τοῦ F. J. Fugger, «Guelfis» (1679), μελέτας ἐπὶ τῆς ποιήσεως καὶ ρητορικῆς κλπ. —Ω.

**Μπίρκενφελντ** (Birkenfeld) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸν πριγκιπᾶτον τῆς Γερμανίας, περιλαμβανόμενον ἐν τῷ ὁμοσπόνδῳ κράτει τοῦ Ὀλδεμβούργου. Ἐκτείνεται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ρήνου πρὸς Ν. τοῦ Χάουσμπρυκ καὶ ἔχει ἐπιφάνειαν 503 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1925) 55.649 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πολίχνην (κάτ. 2.500), ἔχουσαν παλαιὸν ἀνάκτορον τῶν παλατίνων κομίτων τοῦ Μπίρκενφελντ, τῶν ὁποίων οἱ ἀπόγονοι ἐβασίλευον πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐν Βαυαρίᾳ. Ἔχει ἔδαφος πεδινόν, ἀρδευόμενον ὑπὸ τοῦ ρηνανικοῦ παραποτάμου Νάε καὶ περικλεῖον πλούσια κοιτάσματα ἰάσπιδος, ἀχάτου, ὄνυχος κλπ., τῶν ὁποίων ἡ χρησιμοποίησις πρὸς κατασκευὴν κοσμημάτων ἀποτελεῖ τὴν κυρίαν βιοτεχνίαν τῆς χώρας. Ἐπίσης ἀκμάζει αὐτόθι ἡ καλλιέργεια τῶν ὀπωροφόρων δένδρων καὶ ἡ κτηνοτροφία.

Τὸ πριγκιπᾶτον ὑφίσταται ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἀποτελεσθὲν διὰ τῆς συνενώσεως τῆς ἡγεμονίας τοῦ Ὀμπερστάϊν καὶ τῆς κομιτείας Σπονχάϊμ καὶ ἀνῆκεν εἰς τοὺς παλατίνους κόμιτας τοῦ Zweibrücken (Δύο Γεφυρῶν). Καταληφθὲν ὑπὸ τῶν Γάλλων κατὰ τοὺς Ναπολεοντείους πολέμους, ἐδόθη τῷ 1814 εἰς τοὺς μεγάλους δοῦκας τοῦ Ὀλδεμβούργου. Ἀπὸ τῆς ἀνακηρύξεως τῆς γερμανικῆς δημοκρατίας (1918) ἀποτελεῖ τμῆμα τοῦ κράτους τοῦ Ὀλδεμβούργου, ἔχει ὅμως καὶ ἴδιον εἰκοσιπενταμελὲς διοικητικὸν συμβούλιον «Landesausschüsse». Χ. Δ.

**Μπίρκενφελντ** (Birkenfeld). Γερμανικὴ πριγκιπικὴ οἰκογένεια, καταγομένη ἐκ τῶν κομίτων τῆς Ρενανίας. Τὰ γνωστότερα τῶν μελῶν αὐτῆς εἶναι: —1) ***Χριστιανὸς Β'*** (1637—1717). Ὑπηρέτησεν εἰς τὸν γαλλικὸν στρατόν, γενόμενος φίλος καὶ θεράπων πιστὸς τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ', ὅστις ὠνόμασεν αὐτὸν συνταγματάρχην, τὸν προήγαγεν εἰς ἀρχηγὸν τῶν στρατευμάτων τῆς Ἀλσατίας καὶ ἔδωσεν εἰς αὐτὸν ὡς σύζυγον μίαν τῶν πλουσιωτέρων κληρονόμων τῆς Ἀλσατίας, τὴν Αἰκατερίνην Ἀγάθην, μονογενῆ θυγατέρα τοῦ κόμιτος ντὲ Ριμποπιέρ. —2) ***Χριστιανὸς Γ'***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, ἀποθανὼν τῷ 1735. Διακριθεὶς κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Βαρκελώνης (1696), προήχθη εἰς συνταγματάρχην καὶ μετά τινα χρόνον εἰς στρατηγόν. Ὑπὸ τὴν ἰδιότητα ταύτην ἔλαβε μέρος ὑπὸ τὸν Βαντὸμ εἰς τὴν κατὰ τῆς Ὀλλανδίας ἐκστρατείαν. Τῷ 1733 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκός. —3) ***Μαξιμιλιανὸς-Ἰωσήφ***. Ὁ μετέπειτα βασιλεὺς *Μαξιμιλιανὸς Α'* τῆς Βαυαρίας (1756—1825). Α. Δ.

**Μπίρκενχεντ** (Birkenhead) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας (βλ. λ. *Μπέρκενχεντ*).

**Μπίρκενχεντ** (Birkenhead), ***Φρειδερῖκος-Ἔντουιν-Σμίθ***, *κόμις τοῦ* —. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ νομομαθὴς (βλ. λ. *Μπέρκενχεντ*).

**Μπίρκετ ἐς σουλτὰν** *[Γεωγρ.]*. Δεξαμενὴ εἰς τὴν κοιλάδα Ἑννώμ, δυτικῶς καὶ ἀμέσως ὑπὸ τὰ τείχη τῆς Ἱερουσαλήμ. Ἔχει μῆκος 169 μ. ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ πλάτος 67 μ. Ὁ βόρειος τοῖχος εἶναι ἠρειπωμένος, τὸ δὲ μέχρι τοῦ πυθμένος ὑπὸ τὰ ἐρείπια βάθος 10,30 μ. καὶ πρὸς Ν. 13 μ. Εἶναι ἔργον προφανῶς χρόνων ἑβραϊκῶν, ἀλλ' ἐπειδὴ ἐπεσκευάσθη ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Σουλεϋμὰν (ΙΕ' αἰῶνα) διατηρεῖ τὸ ὄνομά του. Πρὸς Ν. αὐτῆς διέρχεται ἡ ἁμαξιτὸς ὁδὸς ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ εἰς Βηθλεέμ. Γ. Λ. Α.

**Μπίρκετ ἐμ Μαμίλλα** *[Γεωγρ.]*. Δεξαμενὴ εἰς τὴν κοιλάδα Ἑννώμ, δυτικῶς τῶν τειχῶν τῆς Ἱερουσαλὴμ καὶ ἐντὸς τοῦ μουσουλμανικοῦ νεκροταφείου. Ἔχει μῆκος 100 μ., πλάτος 50 μ. καὶ βάθος 5 μ. Εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Ἰωσήπου ἀναφερομένη «δεξαμενὴ τῶν ὄφεων»». Βλέπει τις καὶ σήμερον τὸν πυθμένα της κεκαλυμμένον ἀπὸ μυριάδας μαύρων ὄφεων, ἐχόντων μακρὰν λευκὴν ταινίαν κατὰ τὸ στῆθος. Παρ' αὐτήν, διαταγῇ τοῦ Δαυΐδ, ὁ μέγας ἱερεὺς Σαδὼκ καὶ ὁ προφήτης Νάθαν ἔχρισαν τὸν Σολομῶνται εἰς βασιλέα (1015 π. Χ.). Βραδύτερον (740 π. Χ.) ὁ προφήτης Ἠσαΐας προηγγγειλεν ἐκεῖ τὴν ὑπὸ τῆς Παρθένου σύλληψιν τοῦ Ἐμμανουήλ. Σήμερον καλεῖται *στέρκα τῆς Μαμίλλης*, πιθανῶς ἐκ τῆς ἐκκλησίας, τῆς ὁποίας σῴζονται ἴχνη ΒΑ. αὐτῆς. Ἡ ἁγία Μαμίλλα ἔθαψεν ἐδῶ πολλοὺς Χριστιανοὺς κατὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Πέρσου Χοσρόου τρομερὰν καταστροφὴν τῆς πόλεως (614 μ. Χ.). Ὑπὸ τὰ ἐρείπια ταῦτα σπήλαιον γεγλυμμένον εἰς τὸν βράχον καλεῖται τοῦ Λέοντος, ὅστις κατά τινα παράδοσιν μετέφερεν ἐκεῖ πολλὰ πτώματα σταυροφόρων ὡς προμήθειαν. Εἰς τὸν πέριξ χῶρον ἐστρατοπέδευσεν ὁ Σεναχερίβ, ἀλλὰ καὶ πάντες οἱ πολιορκήσαντες τὴν Ἱερουσαλήμ. Γ. Λ. Α.

**Μπίρκετ Καροὺν** *[Γεωγρ.]*. Ἁλμυρὰ λίμνη εἰς τὸ ΒΑ. ἄκρον τῆς ὀάσεως τοῦ Φαγιοὺμ ἐν Αἰγύπτῳ, μήκους 40 χλμ., μεγίστου πλάτους περίπου 10 χλμ. καὶ μέσου βάθους 4 μ. Ἐπιμήκης, ἔχει τὸν ἄξονα ἀπὸ τῶν Δ.ΝΔ. πρὸς τὰ Α.ΒΑ., ἡ δὲ ἐπιπολή της εὑρίσκεται 44 μ. ὑπὸ τὴν τῆς Μεσογείου. Ἡ βορεία παραλία της εἶναι ἔρημος, ἡ δὲ νοτία καλλιεργημένη. Τὸ ὕδωρ της εἶναι πρασινωπόν. Πρὸς Ἀν. ὑπάρχει ναὸς καὶ παρ' αὐτὴν μεγάλη χερσόνησος μετὰ σωρῶν ἐρειπίων. Εἰς τὸ ἐσωτερικὸν ταύτης τὰ ἐρείπια πόλεως Πτολεμαϊκῆς μετὰ ναῶν καὶ οἰκιῶν. Γ. Λ. Α.

**Μπίρκετ Σολομών**· βλ. *Σολομῶντος δεξαμεναί*.

**Μπιρκμάϊερ** (Birkmeyer). ***Κάρολος*** *φὸν* —. Γερμανὸς νομομαθής, γεννηθεὶς τῷ 1847 ἐν Νυρεμβέργῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1920. Διαπρεπὴς διδάσκαλος τοῦ ποινικοῦ δικαίου, συναρχηγὸς τῆς κλασσικῆς σχολῆς (μετὰ τοῦ Bunding), διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1886 καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου. Κατέστη ὁ στόχος σφοδροτάτης πολεμικῆς ἐκ μέρους τῶν ὀπαδῶν τῆς κοινωνιολογικῆς σχολῆς ἐξ αἰτίας μονογραφίας του ὑπὸ τὸν τίτλον: «Was lässt Liszt vom Strafrecht übrig». Συνέγραψε: «Deutshes Strafprozessreht» (1898), «Gedanken zur bevorsteten den Reform der deutschen Strafgesetzgebung» κλπ. Ἐξέδωκεν ἐπίσης τὴν «Enzyklopädie der Rechtwissenschaft. Χ. Ν. Τ.

**Μπίρκνταιλ** (Birkdale) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπέρκνταιλ*.

**μπίρλογο** (τό)· ἰδιωματ. Ἠπείρ., τὸ ἀκάθαρτον (ρουμ. birlog).

**Μπίρμα** (Birmah) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Κάτω Αἰγύπτου, εἰς ἀπόστασιν 10 χλμ. ΒΑ. τοῦ Κὰφρ-Ζαγιάτ. Κάτ. 9.000. Κεῖται ἐπὶ τῆς διώρυγος Μπατανουνία καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Τάντας καὶ τοῦ Κὰφρ-Ζαγιάτ. Παράγει βάμβακα καὶ ὀπώρας. Μ. Δ. Β.

**Μπιρμανία** (Birmanie) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν Ἰνδοκίνᾳ (βλ. λ. *Βιρμανία*).

**Μπίρμανν** (Biermann). ***Κάρολος-Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς ζωγράφος (1803—1892). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σίνκελ καὶ διέπρεψεν ὡς τοπιογράφος, διατελέσας καθηγητὴς τῆς βερολινείου Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἀπόψεις τῆς Ἑλβετίας», «Ἑσπέρα εἰς τὰς Ἄνω Ἄλπεις», «Ἄποψις τῆς Φλωρεντίας», «Ἡ μητρόπολις τοῦ Μιλάνου», «Ἀπόψεις τῆς Δαλματίας». Ι. Μ. Π.

**Μπίρμερ** (Biermer), ***Ἀντώνιος***. Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Bamberg (1827—1892). Μετὰ ἑξαετῆ ὑφηγεσίαν εἰς Βυρτσβοῦργον ἐγένετο τὸ πρῶτον καθηγητὴς τῆς ἐσωτερικῆς παθολογίας ἐν Βέρνῃ (1861), τῷ 1867 κατέλαβε τὴν αὐτὴν ἕδραν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ζυρίχης, καὶ τέλος τῷ 1874, ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα, ἐδίδαξεν εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν Μπρεσλάου μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἀνῆκεν εἰς τοὺς κλινικοὺς τῶν νέων χρόνων, συνδέσας τὸ ὄνομά του μὲ σειρὰν ἀνακαλύψεων ἐπὶ τῆς κλινικῆς μικροσκοπικῆς. Ἀναφέρομεν τὰς περὶ ἀποχρέμψεως ἐρεύνας αὐτοῦ, τὸ πρῶτον αὐτοτελῶς περιγραφείσας: «Die Lehre von Auswurf» (1855), τὰς περὶ ἀκροαστικῶν φαινομένων τοῦ μετ' ἐξιδρώματος πνευμοθώρακος, εἰς ὃν ὁ ἀκουόμενος εἰς τὸ ὕψος τοῦ ὑγροῦ μεταλλικὸς ἦχος μεταβάλλεται μὲ τὴν ἑκάστοτε θέσιν τοῦ ἀσθενοῦς (σημεῖον Μπίρμερ), τὴν ὑπ' αὐτοῦ περιγραφεῖσαν προϊοῦσαν κακοήθη ἀναιμίαν (νόσος τοῦ Μπίρμερ), περὶ ἧς ἀνέφερον πρὸ αὐτοῦ οἱ Andral καὶ Pierry, τὰς περὶ ἄσθματος, πνευμοθώρακος, βρογχιτίδων, βρογχεκτασιῶν ἐργασίας αὐτοῦ κλπ. Ο. Ρ.

— **Μπίρμερ** (Biermer), ***Μάγνος***. Γερμανὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Βέρνῃ τῷ 1861. Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου ἐν Münster τῆς Βεστφαλίας ἀπὸ τοῦ 1893, ἐν Greifswald ἀπὸ τοῦ 1898 καὶ τέλος ἀπὸ τοῦ 1900 ἐν Giessen. Ἐγένετο γνωστὸς διὰ τῶν περὶ ἐμπορικῶν ἐπιμελητηρίων ἔργων του. Α. Α. Τ.

— **Μπίρμερ** ***νόσος***. Προϊοῦσα κρυψιγενὴς κακοήθης ἀναιμία. Καίτοι ἡ νόσος αὕτη περιεγράφη πολὺ πρὸ τοῦ *Μπίρμερ* ὑπὸ διαφόρων ἐρευνητῶν (Adisson, Carenav, Lebert), ἐν τούτοις φέρει τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ὡς πρώτου περιγράψαντος λεπτομερῶς τὴν ἰδιάζουσαν κλινικὴν εἰκόνα, ἣν ἡ ἀναιμία αὕτη παρουσιάζει μεταξὺ τῶν λοιπῶν ἀναιμιῶν, δι' ἧς κατέστη δυνατὴ ἡ διάγνωσις. Βραδύτερον ὁ Ehrlich περιέγραψε τὴν αἱματολογικὴν εἰκόνα τῆς νόσου ταύτης καὶ ἐτόνισε τὴν ἀντίθεσιν, ἣν αὕτη παρουσιάζει ἀναφορικῶς μὲ τὰς ὑποχρώμους ἀναιμίας. Τέλος οἱ μαθηταὶ τοῦ Ehrlich (Lazarus, Naegeli κλπ) ἁπάσας τὰς ἀναιμίας, αἵτινες παρουσιάζουσιν ὑπέρχρωμον αἱματολογικὴν εἰκόνα (βοθριοκεφαλικήν, κυήσεως, συφίλιδος κλπ.), περιγράφουσιν ὡς κακοήθη ἀναιμίαν, ἔστω καὶ ἂν αὗται δύνανται νὰ ἰαθῶσιν ἢ ἂν παρουσιάζωσι διάφορον παθογένειαν.

Οἱ πλεῖστοι σήμερον, τασσόμενοι μὲ τὴν γνώμην τοῦ Pappenheim, θεωροῦσιν ὡς νόσον τοῦ Μπίρμερ τὴν παρουσιάζουσαν ὄχι μόνον εἰδικὴν αἱματολογικὴν εἰκόνα (ὑπερχρωμίαν, μεγαλοβλάστωσιν κλπ.), ἀλλὰ καὶ κλινικὴν τοιαύτην καὶ ἰδίως ὀφειλομένην εἰς ἄγνωστον κρυψιγενὲς αἴτιον. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν αἰτιολογίαν καὶ παθογένειαν τῆς νόσου πολλαὶ δοξασίαι ἐξηνέχθησαν. Ὁ Naegeli θεωρεῖ τὴν νόσον ὡς ἰδιάζουσαν διαταραχὴν τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν, ὀφειλομένην εἰς διάφορα γνωστὰ αἴτια (βοθριοκέφαλος, ταινία, κύησις, σύφιλις) ἢ ἄγνωστα (κρυψιγενὴς Κ. Α.) Ὁ Pappenheim θεωρεῖ ὅτι πρόκειται περὶ διαταραχῆς τῶν ὀργάνων ἐκείνων τῶν ἐχόντων σχέσιν μὲ τὴν ἀνταλλαγὴν τῆς ὕλης, τοῦ λίπους, καὶ ὡς τοιαῦται νομίζει τοὺς ἐνδοκρινεῖς ἀδένας. Οἱ Eppinger καὶ Decastello θεωροῦσιν ὅτι τὸ αἴτιον τῆς νόσου εὑρίσκεται εἰς τὸν σπλῆνα. Τέλος ἐκ τῶν λίαν σπουδαίων ἐργασιῶν μνημονεύομεν τὴν τοῦ Richard Seyderhelm, δι' ἧς ἐπετεύχθη ὁ ἀποχωρισμὸς διαφόρων τοξινῶν, αἵτινες ἀπορροφοῦνται ὑπὸ τῶν πασχόντων ἐκ κακοήθους ἀναιμίας. Τὴν ἀπορρόφησιν ταύτην ἀποδίδει εἰς ἀλλοίωσιν, λόγῳ ἀνωμαλίας τῆς ἰδιοσυγκρασίας τοῦ ἐντερικοῦ τοιχώματος, φυσικοχημικῆς φύσεως.

Κατὰ τὴν νόσον τοῦ Μπίρμερ τὰ διάφορα ὄργανα εἶναι λίαν ἀναιμικὰ καὶ ὠχρά, παρουσιάζουσι δὲ θολερὰν ἐξοίδησιν καὶ λιπώδη ἐκφύλισιν. Ὁ σπλήν, τὸ ἧπαρ, ὁ μυελὸς τῶν ὀστῶν, οἱ νεφροὶ ἐμφανίζουσιν αἱμοσιδέρωσιν. Ὁ μυελὸς τῶν ὀστῶν καὶ δὴ τῶν αὐλοειδῶν τοιούτων παρουσιάζει χροιὰν σκοτεινῶς ἐρυθράν, ἀκόμη καὶ εἰς αὐτὰς τὰς διαφύσεις. Τὸ ἀντίθετον συμβαίνει εἰς τὰς ἀπλαστικὰς μορφάς, εἰς ἃς καὶ εἰς αὐτὰ τὰ βραχέα ὀστᾶ ἀνευρίσκομεν λιπώδη μυελόν. Ἱστολογικῶς ἐμφανίζει οὗτος αὔξησιν τῶν κυτταρικῶν στοιχείων (ὑπερτροφίαν), παντελῆ δὲ ἔλλειψιν τῶν μεγακαρυοκυττάρων. Τὰ λευκοκυτταρικὰ στοιχεῖα, τὰ πλεῖστα τῶν ὁποίων ἀποτελοῦνται ἐκ μυελοβλαστῶν, πλεονάζουν τῶν ἐρυθροβλαστῶν. Τὰ κοκκωτὰ λευκὰ εἶναι ἠλαττωμένα, προεξάρχουσι δὲ μεταξὺ αὐτῶν τὰ ἑωσινόφιλα. Οἱ ἐρυθροβλάσται ἀθροίζονται εἰς μικρὰς ἑστίας, ἐμφανίζουσι δὲ ἐκφύλισιν τοῦ πυρῆνος μετὰ ἰσχυρῶν πυρηνοκινησιῶν. Ὁ σπλὴν παρουσιάζει αὔξησιν καὶ πάχυνσιν τοῦ συνεκτικοῦ ἱστοῦ μετὰ ὑαλώδους ἐκφυλίσεως αὐτοῦ, ἣν ὁ Eppinger θεωρεῖ ὡς αἴτιον τῆς νόσου. Ὁ στόμαχος καὶ τὸ λεπτὸν ἔντερον ἀτροφίαν τῶν βλεννογόνων ἀδένων μετὰ λεμφοκυτταρικῆς διηθήσεως, τὰ οὖλα νεκρώσεις. Τὸ νευρικὸν σύστημα πάχυνσιν τῶν μηνίγγων μετὰ ἀλλοιώσεων μυελίτιδος. Τὸ δέρμα καὶ οἱ ὀρογόνοι μικρὰς αἱμορραγικὰς ἑστίας, οἱ δὲ πνεύμονες συνήθως οἴδημα.

Ἡ νόσος προσβάλλει ἰδίᾳ τοὺς ἐνηλίκους μεταξὺ 40οῦ καὶ 60οῦ ἔτους, κατὰ προτίμησιν δὲ τὸ θῆλυ φῦλον. Εἰς τὴν γεροντικὴν ἡλικίαν εἶναι λίαν σπανία, εἰς παιδία δὲν ἀπαντᾷ. Ἐνίοτε ἔχει οἰκογενειακὸν χαρακτῆρα. Εἶναι νόσος χρονία προϊοῦσα ἀνίατος, παρουσιάζουσα ἄλλοτ' ἄλλας ὑφέσεις καὶ ὑποτροπάς, ἐξαρτωμένας κυρίως ἐκ τῆς θεραπείας καὶ τῆς ἰδιοσυγκρασίας τοῦ ἀτόμου. Αἱ ὑφέσεις διαρκοῦσι μῆνας ἢ καὶ ἔτη, δὲν εἶναι δὲ συνήθως

Digitized by Google

πλείονες τῶν δύο. Ἡ διάρκεια τῆς νόσου κατὰ μέσον ὅρον εἶναι 2—3 ἔτη, ἐνίοτε μόνον ἕν, σπανίως δὲ καὶ πλείονα (13 ἔτη, περιστατικὸν Hirschfeld).

Ἡ νόσος εἰσβάλλει συνήθως ὑποξέως, δι' αἰσθήματος γενικῆς κοπώσεως, ἄλλοτε δὲ τὸ πρῶτον σύμπτωμα ἀποτελεῖ ἐπώδυνον αἴσθημα κατὰ τὴν ῥίζαν τῆς γλώσσης (γλωσσῖτις Schaumann-Hunter). Σπανιώτερον τὰ πρῶτα συμπτώματα ἀποτελοῦσιν ὠχρότης τοῦ προσώπου, αἱμορραγικὴ διάθεσις, διόγκωσις τοῦ σπληνός, γαστρεντερικαὶ διαταραχαὶ ἢ βλάβαι τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Κατὰ τὴν ἀκμὴν αὐτῆς ἐντύπωσιν προξενεῖ ἡ ἔντονος ὠχρότης τοῦ προσώπου, οὗτινος ἡ χροιὰ εἶναι κιτρίνη ὡς ὁ κηρὸς καὶ ὀφείλεται ἀφ' ἑνὸς μὲν εἰς τὴν συνυπάρχουσαν ὑδραιμίαν, ἐξ ἄλλου δὲ εἰς τὴν ἐναπόθεσιν ὑποδορίου λίπους καὶ τὴν αὔξησιν τῆς χολερυθρίνης τοῦ αἵματος. Ἡ ὠχρότης αὕτη εἶναι λίαν διάφορος τῆς κυανιζούσης χροιᾶς ἐπὶ τῆς νόσου τοῦ Adisson, τῆς ἀκαθάρτου φαιᾶς χροιᾶς ἐπὶ καρκινωματώσεως καὶ τῆς πρασινωπῆς τοιαύτης ἐπὶ χλωρώσεως (Pappenheim). Ὁ πυρετὸς εἶναι ἀσταθὲς σύμπτωμα, κυμαίνεται δέ, ὅταν ὑπάρχῃ, μεταξὺ 38° καὶ 40° ἡ ἐξασθένησις εἶναι μεγάλη. Ἡ θρέψις διατηρεῖται καλὴ (παστώδης παχυσαρκία). Τὸ δέρμα εἶναι ξηρόν, φέρον ἐνίοτε ἐναπόθεσιν χρωστικῆς, συνηθέστατα δὲ μικρὰς αἱμορραγικὰς κηλῖδας. Ἀνασάρκα οἰδήματα δὲν εἶναι σπάνια. Τὸ πεπτικὸν σύστημα παρουσιάζει ἐντόνους διαταραχάς· οἱ ἀσθενεῖς κατέχονται ὑπὸ ἀνορεξίας, ἀποστροφῆς πρὸς ὡρισμένα σιτία, ἰδίᾳ πρὸς τὸ κρέας, ἐμέτων ἅμα τῇ λήψει τροφῆς, συνοδευομένων μετὰ αἰσθήματος σπασμοῦ κατὰ τὸν πυλωρόν. Ἡ γλῶσσα εἶναι ἐρυθρά, τὰ οὖλα ἐνίοτε αἱμορραγοῦσι, σπανίως δὲ ἀναφαίνεται στοματῖτις καὶ νεκρωτικὴ κυνάγχη. Ἀσταθὲς μὲν ἀλλὰ παθογνωμονικὸν σύμπτωμα εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Hunter περιγραφεῖσα γλωσσῖτις. Ἐκ τῶν σταθερῶν συμπτωμάτων τῆς νόσου θεωρεῖται ἡ γαστρικὴ ἀχυλία. Ἐκ τῶν ἐντέρων ἀναφαίνονται διάρροιαι, ἐναλλασσόμεναι πρὸς δυσκοιλιότητα. Ὁ σπλὴν καθὼς καὶ τὸ ἧπαρ συνήθως εἶναι ἐλαφρῶς διωγκωμένα. Ἐκ τοῦ ἀναπνευστικοῦ συστήματος οἱ ἀσθενεῖς παρουσιάζουσιν ἔντονον δύσπνοιαν, ἰδίᾳ κατὰ τὰς κοπώσεις, καὶ πνευμονικὸν οἴδημα. Ἀπὸ τῆς ῥινὸς ἐπιστάξεις. Ἐκ τοῦ κυκλοφορικοῦ καρδιακοὺς παλμούς, φυσήματα εἰς τὰ διάφορα καρδιακὰ στόμια, συνήθως συστολικά, καρδιακὴν ὑπερτροφίαν, ἐξασθένησιν τοῦ καρδιακοῦ μυὸς καὶ πτῶσιν τῆς ἀρτηριακῆς πιέσεως. Ἐκ τῶν ἀγγείων ἦχους ἀνωμάλους (ἦχος διαβόλου) καὶ αἱμορραγικὴν διάθεσιν ὀφειλομένην ἀφ' ἑνὸς μὲν εἰς τοξικὴν βλάβην τοῦ ἐνδοθηλίου τῶν τριχοειδῶν, ἐξ ἄλλου δὲ καὶ ἐλάττωσιν τοῦ ἀσβεστίου τοῦ αἵματος (Pappenheim). Τὰ οὖρα παρουσιάζουσι στοιχεῖα νεφρίτιδος, αὔξησιν τοῦ οὐροχολινογόνου, ἀρνητικὴν διαζωτοαντίδρασιν, φυσιολογικὸν οὐρικὸν ὀξὺ καὶ μικρὰν αὔξησιν τοῦ σιδήρου (Queckenstedt). Χοληχρωστικαὶ ἐλλείπουσι. Χαρακτηριστικὴ ἡ κατὰ περιόδους εἰς τὸν ὀργανισμὸν τῶν ἀσθενῶν ἐπερχομένη καταστροφὴ λευκώματος, ἣν ὁ Rosenquist θεωρεῖ ὡς καθαρῶς τοξικὴν ἐπίδρασιν. Ἐκ τῶν αἰσθητηρίων ὀργάνων οἱ ἀσθενεῖς ἐμφανίζουσιν ὡς σταθερὸν σύμπτωμα αἱμορραγίας ἀπὸ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς χιτῶνος τοῦ ὀφθαλμοῦ, ἐκ δὲ τοῦ νευρικοῦ συστήματος ἰλίγγους, ἀναισθησίας, παραισθησίας, παραληρήματα, ἀπάθειαν ἢ ὑπερερεθιστότητα, ἐξασθένησιν ἢ ἐλάττωσιν τῶν ἀντανακλαστικῶν τῆς ἐπιγονατίδος, ἄλλοτε πάλιν σημεῖον Bibinsky θετικόν, ἀταξίαν καὶ σπαστικὰ φαινόμενα. Ἐνίοτε ἡμιπληγίαν λόγῳ αἱμορραγίας ἢ παχυμηνιγγίτιδος, μυελίτιδα καὶ κῶμα. Τὸ αἷμα κατὰ τὴν ἀκμὴν δεικνύει τοὺς χαρακτῆρας ὑπερχρώμου ἀναιμίας.

Ἡ διάγνωσις εἰς τὰ τυπικὰ περιστατικὰ καὶ δὴ κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς νόσου εἶναι λίαν εὔκολος, τόσον ἐκ τῶν κλινικῶν συμπτωμάτων, ὅσον καὶ ἐκ τῆς ὡσαύτως χαρακτηριστικῆς αἱματολογικῆς εἰκόνος, βασίζεται δὲ ἰδιαίτατα ἐπὶ τοῦ κρυψιγενοῦς αἰτίου τῆς νόσου. Εἰς τὰς ἀτύπους ὅμως μορφὰς ἡ διάγνωσις εἶναι λίαν δύσκολος, στηριζομένη ἐπὶ τῶν κλινικῶν συμπτωμάτων καθίσταται δὲ σχεδὸν ἀδύνατος ὅταν, πλὴν τῆς ἀτόπου αἱματολογικῆς εἰκόνος, ἐλλείπουσιν οὐσιώδη κλινικὰ συμπτώματα. Ἡ πρόγνωσις τῆς νόσου εἶναι ἀπολύτως κακή. Ἡ θεραπεία ἀποβλέπει εἰς τὴν ἐνίσχυσιν τοῦ ὀργανισμοῦ, ὅπως ἐπιτύχωμεν βράχυνσιν τῶν προσβολῶν καὶ παράτασιν τῶν ὑφέσεων. Ἐκ τοῦ ἀποτελέσματος δὲ τῆς θεραπείας ἐξαρτᾶται ἡ βαρύτης ἢ οὐ τῆς νόσου καὶ οὐχὶ ἐκ τῆς προσκαίρου βαρύτητος τῶν συμπτωμάτων.

Οἱ Eppinger καὶ Decastello συνιστῶσι τὴν ἀφαίρεσιν τοῦ σπληνός. Διὰ ταύτης ἐπέρχεται ὄντως παροδικὴ βελτίωσις, ἐνίοτε ὅμως καὶ ἐπιδείνωσις τῆς νόσου. Ὁ Pappenheim συνιστᾷ ταύτην ἐν περιπτώσει ἀποτυχίας τῆς δι' ἀρσενικοῦ θεραπείας, εἰς νέαν προσβολήν. Ἐκ τῶν λίαν ἐπαινουμένων μέσων ἀναφέρομεν τὰς ἐνέσεις ὀροῦ αἵματος ζῴων ὑποστάντων ἀφαιμάξεις (Carnot) ἢ ἀπινιδωμένου αἵματος (βλ. καὶ λ. *ἀναιμία*). Ι. Λ. ΑΝΑΓΝΩΣΤΟΥ

**μπιρμίλι** ***τῆς θάλασσας*** (τὸ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐνιαχοῦ παρ' ἡμῖν τοῦ πτηνοῦ *ἀλκυών*.

**Μπίρμιγχαμ** (Birmingham, *προφ. Μπέρμινγκεμ*) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη βιομηχανικὴ πόλις τῆς Ἀγγλίας, ἡ τρίτη κατὰ σειρὰν πληθυσμοῦ τοῦ Ἡνωμένου Βασιλείου. Κάτ. (1926) 934.500 μετὰ τῶν προαστείων. Ὑπαγομένη ἄλλοτε εἰς τὴν κομιτείαν Οὐώρουικ, ἀπεσπάσθη ἀπὸ τοῦ 1888, μετὰ τῆς περιοχῆς αὐτῆς, ἀποτελέσασα ἰδίαν αὐτοδιοίκητον περιοχήν. Κεῖται εἰς τὸ μέσον πλουσιωτάτης εἰς γαιάνθρακας καὶ μεταλλεῖα περιοχῆς, διαρρεομένης ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ρὴ καὶ ἄλλων παραποτάμων τοῦ Τέϊμ, τὸ δ' ἔδαφος αὐτῆς ὑψοῦται 60 μέχρι 200 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Ἀπέχει 180 χλμ. σιδηροδρομικῶς ἀπὸ τοῦ πρὸς ΝΑ. αὐτῆς κειμένου Λονδίνου καὶ ἐξυπηρετεῖται ὑπὸ πλήθους σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καὶ διωρύγων, κατευθυνομένων πρὸς ὅλα τὰ μεγάλα βιομηχανικὰ κέντρα καὶ τοὺς λιμένας τῆς μέσης Ἀγγλίας, τῆς ὁποίας εἶναι ἡ κυριωτέρα μητρόπολις. Τὸ σχέδιον τῆς πόλεως εἶναι ἀκανόνιστον καὶ ἀνομοιογενές, λόγῳ τῆς ραγδαίας πρὸς ὅλα τὰ σημεῖα αὐξήσεως αὐτῆς, διαρκοῦντος ἰδίᾳ τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Αἱ ὁδοί, τῶν ὁποίων αἱ πλεῖσται εἶναι μεγάλαι καὶ εὐρεῖαι, οὐδεμίαν παρουσιάζουσι συμμετρίαν μεταξύ των. Τὰ ὡραιότερα κτήρια εἶναι συγκεντρωμένα εἰς τὸ κέντρον τῆς πόλεως, περὶ τὰς τρεῖς κυριωτέρας ὁδοὺς αὐτῆς Νιοὺ Στρήτ, Κορπορέσιον Στρὴτ καὶ Κόλμορ, αἵτινες σχηματίζουσι μέγα τρίγωνον. Ἡ πόλις ὑστερεῖ γενικῶς ἀπὸ ἀπόψεως ὡραιότητος, διατηροῦσα τὸν βιομηχανικὸν αὐτῆς χαρακτῆρα. Πανταχοῦ κυριαρχεῖ ὁ καπνὸς τῶν καπνοδόχων τῶν ἐργοστασίων, ὁ ὁποῖος ἔχει καλύψει τὰς οἰκοδομὰς διὰ μελανοῦ χρώματος αἰθάλης.

Αἱ ἐσωτερικαὶ συγκοινωνίαι ἐξυπηρετοῦνται ὑπὸ πλήρους καὶ ἀρτιωτάτου δικτύου ἠλεκτροκινήτων τροχιοδρόμων, ὁ δὲ φωτισμὸς καὶ ἡ ὕδρευσις τῆς πόλεως ἁμιλλῶνται εἰς τελειότητα τὴν τῶν μεγαλυτέρων κέντρων τοῦ κόσμου. Γενικῶς ἡ Μπίρμιγχαμ φημίζεται ὡς ἡ μᾶλλον προηγμένη πόλις τῆς Ἀγγλίας ἀπὸ τῆς ἀπόψεως τῆς μερίμνης διὰ τὴν ὑγιεινὴν καὶ ἄνετον ἐγκατάστασιν τῶν ἐργατῶν, οἵτινες ἀνέρχονται εἰς 150.000 περίπου. Ἐκ τῶν κτηρίων διακρίνονται τὸ κατ' ἀπομίμησιν τοῦ ἐν Ρώμῃ ναοῦ τοῦ Διὸς (Jupiter Stator) ἀνεγερθὲν τῷ 1832 μαρμάρινον δημαρχιακὸν μέγαρον (town hall), τὸ ἑλληνικοῦ ρυθμοῦ μέγαρον τοῦ δικαστηρίου, τὸ γοτθικοῦ ρυθμοῦ κατάστημα τοῦ χρηματιστηρίου, τὸ νέον κτήριον τοῦ πανεπιστημίου, οἱ ναοὶ τῶν Ἁγίων Μαρτίνου (1874) καὶ Φιλίππου (καθεδρικὸς 1719), ἡ τεραστία δημοτικὴ ἀγορά, περιλαμβάνουσα ὑπερπεντακόσια καταστήματα, ὁ μέγας σιδηροδρομικὸς σταθμὸς κείμενος εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς κυρίως πόλεως καὶ πλεῖστα ἰδιωτικὰ καταστήματα τραπεζῶν, βιομηχανικῶν ἑταιρειῶν κτλ. Ἀξιομνημόνευτα ἐπίσης εἶναι τὰ τελειότατα ἐργοστάσια, ἐκ τῶν ἀρίστων ἐν τῷ κόσμῳ, εἰς τὰ ὁποῖα κατασκευάζονται ἀτμομηχαναί, ὑλικὸν σιδηροδρόμων, αὐτοκίνητα, μοτοσυκλέτται, ποδήλατα, ἐλαστικὰ αὐτοκινήτων καὶ πάντα τὰ εἴδη τῆς βιομηχανίας τοῦ ἐλαστικοῦ κόμμεως, ὅπλα, πυροβόλα, πυρομαχικὰ (εἰς τὰ τρία τελευταῖα εἴδη ἡ Μπίρμιγχαμ προσέφερε σημαντικὰς ὑπηρεσίας διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου), ἐργαλεῖα, εἴδη κιγκαλερίας καὶ γαλβανοπλαστικῆς καὶ πάντα τὰ εἴδη τῶν ἐπιτραπεζίων σκευῶν, ἀθύρματα, ἧλοι, καρφίδες, κομβία, γραφίδες, εἴδη στρατιωτικῆς ἀμφιέσεως, προϊόντα χημικῆς βιομηχανίας, κοσμήματα ἐκ χρυσοῦ, ἀργύρου καὶ λευκοχρύσου, κρύσταλλα καὶ κρυστάλλινα εἴδη, κτλ. Ἐπίσης λίαν προηγμένη εἶναι ἡ βιομηχανία τῶν ἐκ λευκοῦ μετάλλου, τοῦ γνωστοῦ ὡς «ἀγγλικοῦ μετάλλου», κομψοτεχνημάτων καὶ ἄλλων κοσμημάτων καὶ ἡ τῶν τροφίμων, ἰδίᾳ δὲ κακάου καὶ σοκολάτας.

Ἡ ἐκπαιδευτικὴ ἀνάπτυξις τῆς πόλεως οὐδόλως ὑστερεῖ τῆς βιομηχανικῆς τοιαύτης. Λειτουργοῦσι διακόσια καὶ πλέον σχολεῖα στοιχειώδους καὶ μέσης ἐκπαιδεύσεως, πλεῖσται ἀνώτεραι τεχνικαὶ καὶ εἰδικαὶ σχολαί, ἡ δι' ἀρτίων ἐγκαταστάσεων πλουτισμένη «Technical School», ἡ «Gun Trade School» ἡ «Κοινοτικὴ σχολὴ τῶν Τεχνῶν», ἡ ἀρχαιοτέρα τῶν ἐν Ἀγγλίᾳ, ἡ σχολὴ τοῦ βασιλέως Ἐδουάρδου, προικοδοτημένη δι' ἐτησίας ἐπιχορηγήσεως 40.000 λιρῶν, καὶ τέλος τὸ ἱδρυθὲν τῷ 1899 πανεπιστήμιον, τὸ ὁποῖον ἀπετελέσθη διὰ τῆς συγχωνεύσεως τῶν δύο παλαιῶν σχολῶν «Queen's college» (1828) καὶ «Mason college» (1870), περιλαμβάνον καὶ σχολὰς τεχνῶν καὶ ἐμπορίου. Ἀπὸ τοῦ 1904 ἡ Μπίρμιγχαμ εἶναι ἕδρα ἀγγλικανικῆς ἐπισκοπῆς καὶ ἀπὸ τοῦ 1850 καθολικοῦ ἐπισκόπου, προαχθέντος εἰς ἀρχιεπίσκοπον. Ἐπίσης ἔχει ἰουδαϊκὴν συναγωγήν. Ἐκ τῶν ἐν τῇ πόλει μουσείων καὶ βιβλιοθηκῶν ἀξιολογώτερα εἶναι αἱ ἑξῆς: «Corporation museum and art gallery» (1885), τὸ «Δημοτικὸν θησαυροφυλάκιον» περιλαμβάνον ἰταλικὰ γλυπτά, βενετικὰ ἔργα ὑελουργικῆς τέχνης, πολύτιμα ἰνδικὰ ὑφάσματα, τάπητας τοῦ Μπέρν-Τζόνς καὶ Μόρρις καὶ περίφημον συλλογὴν ὅπλων καὶ πανοπλιῶν, ἡ βιβλιοθήκη «Central Free Library» περιλαμβάνουσα 230.000 τόμους καὶ 14.000 τῆς ἀναμνηστικῆς Σαιξπηρείου βιβλιοθήκης κτλ. Τὴν πόλιν κοσμοῦσιν ὡσαύτως ἀνδριάντες, μνημεῖα καὶ ἀγάλματα τῶν Ἰωσ. Τσάμπερλαιν, Πρίστλεϋ, Ἰωσ. Μάζον, βασιλίσσης Βικτωρίας, Ἐδουάρδου Ζ', Ροβέρτου Πήλ, Ἰαχ. Βάτ, Θ. Ἄττβουντ, Νέλσωνος κ. ἄ. Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ πολυάριθμα καὶ ἐκτεταμένα πάρκα: *Ἄστον Πάρκ, λόφοι Ρένταλ* καὶ *Μπάϊλμπερρου*, καὶ τὰ ὡραῖα περίχωρα καὶ ἐξοχικαὶ τοποθεσίαι: *Μόσλεϋ, Γιάρντλεϋ, Οὐέντνεσμέρυ, Οὐέστ Μπρόμγουιτς* κλπ.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ *Μπίρμιγχαμ* ἀναφέρεται τὸ πρῶτον εἰς τὸ Domerday Book (1086) ὡς μικρὸν ἀγρόκτημα. Βραδύτερον ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Leland (ΙΣΤ' αἰὼν) ὡς προηγμένον ἤδη ἐμπορικὸν κέντρον. Κατὰ τοὺς πολέμους τοῦ Κρόμβελ ἠρίθμει 5.300 κατ., ὑπέστη δὲ τότε πολλὰς ζημίας ἐκ μέρους τῶν ἀντιπάλων στρατευμάτων. Ἡ ἁλματώδης ἀνάπτυξις τῆς πόλεως ἄρχεται ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῆς ἐμφανίσεως τῆς βιομηχανίας διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως τοῦ γαιάνθρακος καὶ τῶν μετάλλων τῆς πλουσίας εἰς αὐτὰ περιοχῆς της. Ἀπὸ τῆς πρώτης ταύτης ἀρχῆς ἡ Μπίρμιγχαμ κατέλαβεν ἐξέχουσαν θέσιν εἰς τὴν παγκόσμιον βιομηχανίαν, φιλοξενήσασα πολλὰς ἐξέχουσας προσωπικότητας τῶν ἐφευρέσεων. Τῷ 1780 ὁ Bar εἰσήγαγεν εἰς τὰ ἐργοστάσιά της τὴν ἀτμομηχανήν, ὁ Μάζον κατεσκεύασε μετ' ὀλίγον τὰς πρώτας χαλυβδίνας γραφίδας, ὁ Τσάμπερλαιν ἵδρυσε τὸ πρῶτον ἐργοστάσιον στροφίγγων κλπ. Ἐκ παραλλήλου πρὸς τὴν βιομηχανικὴν ἀνάπτυξίν της ἡ Μπίρμιγχαμ ἔπαιξεν ἐπίσης σπουδαιότατον ρόλον εἰς τὴν πολιτικὴν ζωὴν τῆς χώρας, καταστᾶσα ἀπὸ τοῦ 1830 τὸ κύριον στήριγμα καὶ κέντρον τῆς φιλελευθέρας ἐν Ἀγγλίᾳ πολιτικῆς κινήσεως, μεγάλως δὲ συνέβαλεν εἰς τὴν ἐπιτευχθεῖσαν τῷ 1832 ἐκλογικὴν μεταρρύθμισιν. Χ. Δ.

— **Μπίρμιγχαμ** (Birmingham) *[Γεωγρ.]*. Ἡ μεγαλυτέρα πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας τῆς Ἀλαμπάμας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Τζέφερσον. Κάτ. (1930) 224.000. Εἶναι σπουδαιότατον βιομηχανικὸν κέντρον καὶ κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν. Ἡ πόλις ἱδρύθη τῷ 1871, ἀνεπτύχθη δὲ ἁλματωδῶς χάρις εἰς τὰ πλούσια περὶ αὐτὴν ὀρυχεῖα γαιανθράκων καὶ σιδήρου. Ἔχει ἐργοστάσια κατεργασίας σιδήρου καὶ χάλυβος, βάμβακος, αὐτοκινήτων ὀχημάτων, ἀλεύρων, τροφίμων, βαμβακελαίου κλπ. Χ. Δ.

**μπιρμπαντεύω**· ἄλλως *μπερμπαντεύω* (βλ. λ.).

**μπιρμπάντης** (ὁ)· ἄλλως *μπερμπάντης* (βλ. λ.).

**μπιρμπαντιά** (ἡ)· ἄλλως *μπερμπαντιά* (βλ. λ.).

**Μπιρμπάουμ** (Bierbaum), ***Ὄθων-Ἰούλιος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1865—1910). Εἷς ἐκ τῶν προεξαρχόντων τῶν νεωτέρων περὶ τέχνης θεωριῶν, ἀνέλαβε, τῷ 1892, ἐν Βερολίνῳ τὴν σύνταξιν τοῦ περιοδικοῦ «Ἐλευθέρα σκηνή», εἰς τὸ ὁποῖον ἔδωκε τὸ ὄνομα: «Νέα Γερμανικὴ Ἐπιθεώρησις», ἵδρυσε μετὰ τοῦ Julius Meier-Graefe τὸ σπουδαιότερον περὶ τέχνης σύγχρονον περιοδικὸν «Πάν» καὶ ἔγραψεν, ἐκτὸς τῶν μονογραφιῶν του («Detlev von Liliencron» 1892, «Fritz von Uhde» 1893, «F. Stuck» 1893) τὰ ἑξῆς: «Ποιήματα ποὺ ἔζησα (1892), «Ἐξομολογήσεις φοιτητῶν» (4η ἔκδ. 1899), «Κάκτος καὶ ἄλλαι ἱστορίαι καλλιτεχνῶν» (3η ἔκδ. 1898), «Στίλπε» (27η ἔκδ. 1923), «Ἡ ὡραία κόρη τοῦ Ράο» (1899), «Λαβύρινθος τοῦ ἔρωτος» (1901, 86 χιλ. 1923). Ἐξέδωκε πρὸς τούτοις: «Νέον ἡμερολόγιον τῶν μουσῶν» (1891, 1893 καὶ 1894) καὶ «Γερμανικὰ τραγούδια» (1901). Εἰς τὸ τρίτομον μυθιστόρημά του: «Ὁ πρίγκιψ Κοῦκος» (1907—1908, 33η ἔκδ. 1922) προσπαθεῖ νὰ δώσῃ συνολικὴν εἰκόνα τῶν πνευματικῶν κατευθύνσεων τῆς συγχρόνου κοινωνίας. Ἔγραψεν ἐπίσης θεατρικὰ ἔργα καὶ ἵδρυσε τῷ 1905 τὸ «Ἡμερολόγιον-Γκαΐτε». Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1910—1917 εἰς 10 τόμους. —ω.

**Μπιρμπίλας.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Ψαρῶν (βλ.λ. *Γιάννος Σταῦρος*).

***μπιρμπίλι, μπιρμπιλεύω*** κτλ.· βλ. *μπιμπίλι, μπιμπιλεύω*.

**Μπιρμπίλι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀχεροῦσίας (Γιαννουζιᾶς) τῆς ἐπαρχίας Μαρμαριτίου τοῦ νομοῦ Πρεβέζης. Κάτ. (1928) 49. Χ. Δ.

**Μπιρμπουμ** (Birbhum) *[Γεωγρ.]*. Ἡ βορειοτέρα ἐπαρχία τῆς διοικήσεως Μπούρντβαν τῆς Βεγγάλης (Βρεττανικαὶ Ἰνδίαι), ἔχουσα ἔκτασιν 4.300 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 900.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Μπίρμπουμ* ἢ *Σούρι*. Παράγει ὄρυζαν, ἐρυθρὰν ρητίνην (lac) καὶ ἔχει μεταλλεῖα χρυσοῦ. Εἰς τὴν σανσκριτικὴν καλεῖται *Βιραμπούμι* (= χώρα ἡρώων). Χ. Δ.

**Μπιρντ** (Byrd), ***Ριχάρδος***. Ἀμερικανὸς ἐξερευνητὴς (βλ. λ. *Μπέρντ*).

**Μπιρον** (Biron). Δύο δοῦκες τῆς Κουρλανδίας (βλ. λ. *Μπύρεν*).

**Μπιρὸν** (Biron). Οἰκογένεια Γάλλων εὐγενῶν (Gontaut de Biron), τῆς ὁποίας πέντε μέλη ἐγένοντο στρατηγοὶ καὶ στρατάρχαι τῆς Γαλλίας. Οἱ

Digitized by Google

Μπιρόν, ἔχοντες τίτλον βαρώνου μέχρι τοῦ 1598, ὠνομάσθησαν ἔκτοτε δοῦκες, ὑπὸ τοῦ Ἑρρίκου Δ', ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ στρατάρχου Καρόλου ντὲ Γκοντὼ (βλ. κατωτ. ἀρ. 2). Μετὰ τὴν προδοσίαν καὶ τὴν καταδίκην τούτου, ἀφῃρέθη ἀπὸ τῆς οἰκογενείας ὁ τίτλος τῶν δουκῶν μέχρι τοῦ 1723, ὁπότε τῇ ἀπεδόθη καὶ πάλιν ὑπὸ Λουδοβίκου ΙΕ' ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ στρατάρχου Καρόλου-Ἀρμάνδου ντὲ Γκοντὼ (ἀρ. 3).

1) ***Ἀρμάνδος ντὲ Γκοντώ, βαρῶνος τοῦ Μπιρόν***, ὁ ἐπιλεγόμενος *Χωλός*. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας, γεννηθεὶς τῷ 1524 καὶ φονευθεὶς κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Ἐπερναί, τῷ 1592. Ὁ Μπραντὸμ τὸν χαρακτηρίζει ὡς «τὸν πρεσβύτερον καὶ μεγαλύτερον πολέμαρχον τῆς Γαλλίας». Ἀνεμείχθη εἰς τὰ σπουδαιότερα στρατιωτικὰ καὶ πολιτικὰ γεγονότα τῆς βασιλείας Ἑρρίκου Γ' καὶ Ἑρρίκου Δ', προήχθη δὲ εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατάρχου ἀπὸ τοῦ 1577.

2) ***Κάρολος ντὲ Γκοντώ, δοὺξ τοῦ Μπιρόν***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1562—1602). Ναύαρχος (1592) καὶ στρατάρχης τῆς Γαλλίας (1594), διοικητὴς τῆς Βουργουνδίας καὶ τῆς Βρέσσης (1598). Ἦτο, ὅπως ὁ πατήρ του, στρατιωτικὸς μεγάλου ταλάντου, διεκρίθη δὲ κατὰ τὰς μάχας τοῦ Ἄρκ καὶ τοῦ Ἰβρὺ καὶ διεξήγαγε θριαμβευτικῶς τὰς ἐκστρατείας τῆς Βουργουνδίας (1595), τῆς Φλάνδρας καὶ τοῦ Ἀρτουὰ (1596), ἐναντίον τῶν Ἱσπανῶν. Ἀλλ' ἦτο ἔκδοτος εἰς τὰς ἡδονὰς καὶ φιλοχρήματος μέχρις ἀπληστίας. Τῷ 1598, ἐπιχειρήσας νὰ συνομολογήσῃ μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας καὶ τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας συνθήκην, διὰ τῆς ὁποίας παρεχωροῦντο εἰς αὐτοὺς γαλλικὰ ἐδάφη, ἐχαρακτηρίσθη ὡς ἔνοχος προδοσίας καί, καταδικασθεὶς εἰς θάνατον, ἀπεκεφαλίσθη ἐν τῇ φυλακῇ τῆς Βαστίλλης, τὴν 31 Ἰουλίου 1602.

3) ***Κάρολος-Ἀρμάνδος, δοὺξ τοῦ Μπιρόν***. Μικρανεψιὸς τοῦ προηγουμένου (1663—1756). Ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν Λουδοβῖκον ΙΔ' καὶ ἐγένετο ὑποστράτηγος. Μετὰ τὴν μάχην τοῦ Landau ἐν Βαυαρίᾳ, καθ' ἣν τραυματισθεὶς ἀπώλεσε τὸν δεξιόν του βραχίονα, ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' τὸν προήγαγεν εἰς στρατάρχην (1734).

4) ***Λουδοβῖκος-Ἀντώνιος ντὲ Γκοντώ, δοὺξ τοῦ Μπιρόν***. Υἱὸς τοῦ προγουμένου (1700—1788). Συμμετασχὼν τῶν περισσοτέρων πολέμων τῆς ἐποχῆς του, ἐγένετο ὁμότιμος καὶ στρατάρχης τῆς Γαλλίας τῷ 1757, εἶτα δὲ γενικὸς διοικητὴς τοῦ Λαγκεντόκ. Ἀφῆκεν ἐν χειρογράφῳ στρατιωτικὸν ἔργον του, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐγχειρίδιον τοῦ πολέμου».

—***Ἀρμάνδος-Λουδοβῖκος ντὲ Γκοντώ, δοὺξ τοῦ Μπιρόν***, γνωστὸς καὶ ὡς *δοὺξ τοῦ Λωζὲν* (Lausun). Γάλλος στρατηγός, ἀνεψιὸς τοῦ Λουδοβίκου-Ἀντωνίου, γεννηθεὶς τῷ 1747 καὶ καρατομηθεὶς τῷ 1793. Μετὰ τρικυμιώδη νεανικὸν βίον μετέβη εἰς Ἀμερικήν, ὅπου μετέσχε τοῦ πολέμου τῆς Ἀνεξαρτησίας (1778). Ἐκλεγεὶς μετὰ τὴν ἐκεῖθεν ἐπάνοδόν του ἀντιπρόσωπος τῶν εὐγενῶν εἰς τὴν συνέλευσιν τῶν τάξεων (1789), ἐτάχθη ἐνθουσιωδῶς μὲ τὴν ἐπανάστασιν καὶ ἐχρημάτισε διαδοχικῶς ἀρχηγὸς τῆς στρατιᾶς τοῦ Ρήνου, τοῦ Βὰρ καὶ τῆς Λὰ-Ροσσέλ. Θελήσας ὅμως τῷ 1793 νὰ παραιτηθῇ, διότι ἔβλεπε τὰ ὑπ' αὐτὸν στρατεύματα ἀπειθαρχοῦντα καὶ ἀποσυντιθέμενα, διεβλήθη εἰς τὴν ἐπιτροπὴν τῆς Κοινῆς σωτηρίας, ἥτις τὸν παρέπεμψεν εἰς δίκην, καταδικασθεὶς δὲ ὑπὸ τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου εἰς θάνατον ἀπεκεφαλίσθη. Τῷ 1822 ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τὸ ὄνομά του ἐνδιαφέροντα «Ἀπομνημονεύματα», συνταχθέντα ἐπὶ τῇ βάσει χειρογράφων εὑρεθέντων μετὰ τὸν θάνατόν του. —Ω.

**Μπὶρρ** (Birr) *[Γεωγρ.]*. Παλαιοτέρα ὀνομασία τῆς ἰρλανδικῆς πόλεως *Πάρσονσταουν* (βλ. λ.).

**Μπίρρελλ** (Birrell), ***Αὐγουστῖνος***. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ νομομαθὴς (βλ. λ. *Μπέρρελλ* Αὐγουστῖνος).

**Μπὶρς** (Birs) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ΒΔ. Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης, πηγάζων ἐκ τῶν Ἰουρασίων ὀρέων καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Ρῆνον παρὰ τὴν Βασιλείαν, μετὰ ροῦν 71 χλμ. Εἰς τὸ ἐπὶ τῶν ὀχθῶν αὐτοῦ χωρίον Σαὶν Γιάκομπαϊ-Μπιρσφέλντεν 1.500 Ἑλβετοὶ ἐνίκησαν τῷ 1444 τὸν στρατὸν τοῦ Ἀρμανιὰκ ἐκ 30.000 ἀνδρῶν. Χ. Δ.

**μπιρσίμι** (τό) ἀντὶ *μπρισίμι* (βλ. λ.).

**Μπὶρσκ** (Birsk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Οὔφα, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος. Κάτ. 9.000. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπιελάγια, παραποτάμου τοῦ Βόλγα, καὶ ἐξάγει γεωργικὰ καὶ ἁλιευτικὰ προϊόντα. Τὸ διαμέρισμα ἔχει 21.615 τ. χλμ. ἐπιφάνειαν καὶ 430.000 κατοίκους. Μ. Δ. Β.

**Μπίρστατ** (Bierstadt), ***Ἀλβέρτος***. Γερμανὸς ζωγράφος (1830—1902). Ἔζησεν ἐν Ἀμερικῇ, ὅπου ἐγκατεστάθη ἡ οἰκογένειά του. Μετέσχε τῆς ἐξερευνητικῆς ἀποστολῆς Lander. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν ἀμερικανικῶν τοπίων («Κυνήγια», «Ἐξόριστοι», «Ἀπόψεις τῶν Βραχωδῶν ὀρέων», «Landers'Peau»). Ι. Μ. Π.

**Μπιρτζὰντ** (Birdjand) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Α. Περσίας ἐν Χορασάν, κειμένη ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως (1440 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης), 400 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Μεσέντ. Εἶναι σταθμὸς καραβανίων ἐπὶ τῆς ἀπὸ Μεσὲντ εἰς Σαϊστὰν ὁδοῦ, ἔχει βιοτεχνίαν ἀξιόλογον μαλλίνων ὑφασμάτων καὶ πολυτιμοτάτων ἐκ τριχῶν αἰγὸς ταπήτων, κατασκευαζομένων ὑπὸ Ἀφγανῶν, διεξάγει δὲ τὸ ἐμπόριον τῆς ὅλης περιοχῆς, πλουσίας εἰς σιτηρά, πεπόνια, ρόδια, κρόκον κλπ. Κάτ. 20.000 κατὰ τὸ θέρος καὶ 6.500 κατὰ τὸν χειμῶνα. Χ. Δ.

**Μπὶρτς** (Birch), ***Σαμουήλ***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος (βλ. λ. *Μπέρτς* Σαμουήλ.).

**Μπὶρχ-Πφάϊφερ** (Birch - Pfeiffer), ***Καρλόττα***. Γερμανὶς ἠθοποιὸς καὶ συγγραφεὺς θεατρικῶν ἔργων (1800-1868). Ἀπὸ τοῦ 1837-1843 διηύθυνε τὸ θέατρον τῆς Ζυρίχης, κατόπιν δὲ προσελήφθη εἰς τὸ δραματικὸν θέατρον τοῦ Βερολίνου, ὅπου πρωτηγωνίστησε. Τὰ θεατρικὰ ἔργα της, ἅτινα δεικνύουν σημαντικὸν σκηνικὸν τάλαντον, ἔσχον μεγίστην ἐπιτυχίαν ἐν Γερμανίᾳ. Ἐξ αὐτῶν κυριώτερα εἶναι: «Οἱ εὐνοούμενοι», «Ὁ κωδωνοκρούστης τῆς Νὸτρ-Ντάμ», «Ἡ μαρκησία ντὲ Βιλὲτ» καὶ «Ὁ θάνατος τοῦ Ζβιγγλίου». Α. Δ.

**μπὶς!** (ἐκ τοῦ γαλ. bis=δίς) παρακελευστικὴ ἐπιφώνησις ἐπιδοκιμασίας, συνήθως χρησιμοποιουμένη ἐν τοῖς θεάτροις ὑπὸ τῶν θεατῶν, ὅταν οὗτοι θέλουν νὰ ἐπαναληφθῇ μέρος τι τοῦ παριστανομένου ἐπὶ σκηνῆς. (Ἀπολέσασα τὴν σημασίαν τοῦ δίς, χρησιμοποιεῖται προκειμένου καὶ περὶ τρίτης καὶ τετάρτης κλπ. ἐπαναλήψεως.)

**Μπισὰ** (Bichat), ***Ἐρνέστος***. Γάλλος φυσικὸς (1845—1903). Καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Νανσὺ καὶ πρύτανις αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ 1888, ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τοῦ χημικοῦ καὶ ἠλεκτροτεχνικοῦ ἰνστιτούτου τῆς πόλεως ταύτης, τῶν ὁποίων σημαντικὴ ὑπῆρξε μέχρι τοῦδε ἡ δρᾶσις ἐν τῇ ἐφαρμογῇ τῶν νεωτέρων χημικῶν καὶ ἠλεκτρολογικῶν προόδων εἰς τὴν γεωργίαν καὶ τὴν βιομηχανίαν. Ἔγραψεν: «Ἡ περιστροφικὴ μαγνητικὴ δύναμις τῶν ὑγρῶν καὶ τῶν ἀτμῶν αὐτῶν» (1879), μελέτας «περὶ τῆς διαφορᾶς δυναμικοῦ μεταξὺ τῶν ὑγρῶν» καὶ «περὶ τῶν ἀκτινοηλεκτρικῶν φαινομένων» κλπ., ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπλοντλὸ ἐπίσης δ' ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Γκούντς «περὶ τῆς παραγωγῆς τοῦ ὄζοντος ὑπὸ τῶν ἠλεκτρικῶν ἐκκενώσεων». Τῷ 1904 ἐδημοσίευσεν εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν» πορίσματα τῶν ἐρευνῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῶν ὑπὸ τοῦ Μπλοντλὸ ἀνακαλυφθεισῶν ἀκτίνων Ν. —Ω.

—**Μπισὰ** (Bichat), ***Μαρία-Φραγκῖσκος-Ξαβιέρος***. Διάσημος Γάλλος ἀνατόμος, γεννηθεὶς τῷ 1771 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1802. Ἵδρυσε μετὰ τοῦ Corvisart τὴν «Ἰατρικὴν ἑταιρείαν» καὶ ἤρχισε τῷ 1797 τὴν διδασκαλίαν τῆς ἀνατομικῆς, τῆς φυσιολογίας καὶ χειρουργικῆς καὶ ἀργότερον τῆς ανατομοπαθολογίας. Τὸ σύγγραμμά του περὶ τῶν «Ὑμένων» κατέστη περιώνυμον. Μετὰ τὸν θάνατόν του ὁ πρῶτος ὕπατος διέταξε πρὸς τιμήν του τὴν ἵδρυσιν μνημείου ἐν τῷ νοσοκομείῳ Hôtel - Dieu. Τῷ 1859 ἱδρύθη ὁ ἀνδριὰς του ἐν τῷ περιβόλῳ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Παρισίων, τῷ δὲ 1888 ἱδρύθη ἐν Παρισίοις τὸ νοσοκομεῖον Μπισά. Οὗτος δύναται νὰ κληθῇ ἱδρυτὴς καὶ ἀναμορφωτὴς τῆς ἀνατομικῆς καὶ τῆς ἱστολογίας. Τὰ ἀποτελέσματα τῶν ἐρευνῶν του ἐπὶ τῶν ὑμένων καὶ τῶν λοιπῶν ἐργασιῶν διετυπώθησαν κατ' ἀρχὰς εἰς ὑπομνήματα, ἀργότερον δὲ ἀπετέλεσαν τὸ μέγιστον σχὸν ἐπιτυχίαν σύγγραμμά του «Traité des membranes» (Παρίσιοι 1800). Αἱ νέαι ἐπὶ τῆς ἀνατομικῆς καὶ φυσιολογίας ἰδέαι του ἐδημοσιεύθησαν εἰς συγγράμματα ὑπὸ τοὺς τίτλους «Recherches sur la vie et la mort» (Παρίσιοι 1800), «L'anatomie générale» (Παρίσιοι 1801). Συνετέλεσεν ἐπίσης εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς ἐμβρυολογίας καὶ ἰδίως τῆς διαμορφώσεως τῶν σπλάγχνων, παρασχὼν εἰς τοὺς διαδόχους του, C.-F. Wolff, Meckel, Pander, K.-E. Bier, τὰ μέσα πρὸς πιστοποίησιν τῆς θεωρίας τῆς ἐπιγενέσεως. Ὡς φυσιολόγος διετύπωσεν ὁλόκληρον τὸ δόγμα τῆς ζωτικῆς ἀρχῆς. Κατ' αὐτὸν ἡ ζωὴ ἀπετέλει τὸ σύνολον τῶν ζωτικῶν ἰδιοτήτων, αἵτινες ἀνθίσταντο εἰς τὰς φυσικὰς τοιαύτας· ὑπῆρχεν ἄρα ἀνταγωνισμὸς μεταξὺ τῶν δύο τούτων ἰδιοτήτων καὶ ἡ νόσος καὶ ἡ ὑγεία ἐξηρτῶντο ἐκ τῆς ἐπικρατήσεως τῆς μιᾶς ἢ τῆς ἄλλης. Μεταξὺ τῶν ἀνακοινώσεων καὶ ὑπομνημάτων του ἀναφέρομεν: «Description d'un nouveau trépan», «Les fractures de l'extrémité scapulaire de la clavicule», «Mémoire sur la membrane synoviale des articulations», «Mémoire sur les rapports qui existent entre les organes symétriques et ceux à forme irregulière». Ο. Ρ.

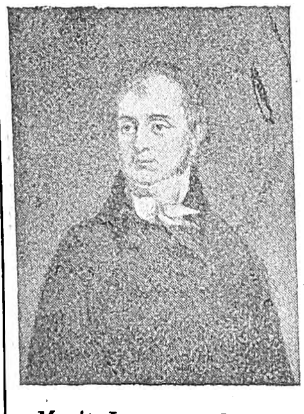

*Μαρία-Φραγκῖσκος Μπισά.*

**Μπισαρὶ** *[Ἐθνολ.]*. Νομαδικὴ χαμιτικὴ φυλὴ τῆς Ἀφρικῆς, κατασκηνοῦσα μεταξὺ Ἄνω Αἰγύπτου καὶ Αἰθιοπίας. Οἱ Μπισαρὶ εἶναι ἐντελῶς γυμνοὶ καὶ ζῶσιν ἐκ τῆς πωλήσεως τοῦ κιννά, πρὸς βαφὴν τῆς κόμης καὶ τῶν ὀνύχων. Εἶναι οἱ *Βλέμμυες* (βλ. λ.) τῶν ἀρχαίων.

**Μπισβιλλὲρ** (Bischwiller) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Ρήνου (Ἀλσατία). Ἦτο παλαιὰ ὀχυρὰ πόλις, ἔχουσα ἀκμαίαν βιομηχανίαν ὑφασμάτων, τῆς ὁποίας οἱ κάτοικοι μετῴκησαν ὁμαδικῶς κατὰ τὴν γερμανικὴν κατάληψιν (1870) εἰς Γαλλίαν, ἐγκατασταθέντες εἰς Ἐλμπέφ. Ἔχει ἐργοστάσια φυσιγγίων, ὑφασμάτων, εἰδῶν ἐκ καννάβεως κλπ. Κάτ. 8.140. Χ. Δ.

**Μπισδούνι, *Μέγα*—** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ΒΔ. τῶν Ἰωαννίνων, μεθ' ὧν συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ ἐντὸς τῆς βαλτώδους περιοχῆς τῆς λίμνης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτοικοι (1928) 727.

—**Μπισδούνι, *Μικρὸ*—** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τοῦ Μεγάλου Μπισδουνίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 109. Χ. Δ.

**Μπισέλιε** (Bisceglie) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Μπάρι τῆς Ἀπουλίας. Κάτοικοι 34.500. Ἔχει καλὸν λιμένα ἐπὶ τῆς Ἀδριατικῆς καὶ κεῖται πρὸς τὰ ΒΔ. τοῦ Μπάρι, ἐπὶ τῆς μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τῆς Ἀδριατικῆς παραλίας. Ἐξάγει οἴνους καὶ ἔλαιον. Ἔχει μητρόπολιν τοῦ ΙΒ' αἰῶνος καὶ λέγεται ὅτι ὑφίστατο τέσσαρας αἰῶνας πρὸ τῆς κτίσεως τῆς Ρώμης. Μ. Δ. Β.

**Μπισὲτρ** (Bicêtre) *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῶν Παρισίων ἐπὶ λόφου εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. ἀπὸ τῶν τειχῶν τῆς πόλεως. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ' ἐν Μπισὲτρ μέγα ἄσυλον διὰ τοὺς τραυματίας στρατιωτικοὺς (1632), τὸ ὁποῖον ὅμως ἔσχε ποικίλας χρησιμοποιήσεις. Σήμερον περιλαμβάνει γηροκομεῖον καὶ ἄσυλον ἀπόρων ἀναπήρων, φθισιατρεῖον, διάφορα ἰατρεῖα καὶ φρενοκομεῖον. Τὸ σύνολον τῶν ἀσθενῶν καὶ τοῦ νοσοκομειακοῦ προσωπικοῦ ἀνέρχεται εἰς 2.100, τῶν δὲ κατοίκων τοῦ προαστείου εἰς 2.700. Χ. Δ.

**Μπισκαΐνο** (Biscaino), ***Βαρθολομαῖος***. Ἰταλὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1632—1657). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Βαλερίῳ Καστέλλι, ἤρχισε δ' ἐνωρὶς νὰ φημίζεται διὰ πινάκων εἰργασμένων ἐπὶ μυθολογικῶν καὶ θρησκευτικῶν θεμάτων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Μαρσύας», «Ἡ μοιχαλίς», «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» καὶ τινες ἀξιολογώταται χαρακτικαὶ συνθέσεις. Ι. Μ. Π.

**Μπίσκαρα** ( isk(a)ra) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ὄασις τῆς Ἀλγερίας (βλ. λ. *Μπίσκρα*).

**Μπισκίνης, *Δημήτριος***. Σύγχρονος Ἕλλην ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1891. Ἀποφοιτήσας τῆς ἐν Ἀθήναις σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν, μετέβη πρὸς εὐρυτέρας σπουδὰς εἰς Παρισίους καὶ Ρώμην. Τῷ 1927 ἔλαβε βραβεῖον τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν διὰ τοὺς πίνακάς του «Ἅγιος Γεώργιος» καὶ «Εὐαγγελισμὸς τῆς Θεοτόκου», ἀπὸ δὲ τοῦ 1928 κατέχει τὴν ἕδραν τῆς διακοσμητικῆς καὶ προοπτικῆς ἐν τῇ σχολῇ τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν ἄλλων ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ὁ ποιμὴν ὁ καλός», «Πρὸς τὸν βωμόν», «Ἡ ἱέρεια τῆς ἀγάπης» κἄ. —Ω.

**μπίσκος** (ὁ) *[Βοτ.]* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἰβίσκος*.

**μπισκότο** (τὸ) *[Ζαχαρ.]* Εἶδος γλυκίσματος, ὅπερ προσφέρεται ὡς βούτηγμα μὲ τσάϊ, γάλα, καφὲν κτλ. Παρασκευάζονται ἁπλᾶ ἢ ἐκ σοκολάτας, ἀμυγδάλου, βανίλλιας, ὡς ἑξῆς: Θέτομεν εἰς μίαν λεκάνην 300 δράμια ἀλεύρι, ἀνοίγομεν κενὸν εἰς τὸ μέσον καὶ ρίπτομεν 3 κουταλιὲς βούτυρο, 5 αὐγὰ κτυπημένα, 75 δράμια γάλα, ἀφοῦ προηγουμένως τὸ βράσωμεν, διαλύσωμεν εἰς αὐτὸ ἕνα κουταλάκι ἀνθρακικῆς ἀμμωνίας καὶ τὸ ἀφήσωμεν νὰ μισοκρυώσῃ, καὶ 1 κουταλάκι βανίλλια σκόνη. Τὰ δουλεύομεν ὅλα μαζὶ ἐπὶ 5' τῆς ὥρας, τὰ πλάθομεν εἰς διάφορα σχήματα, τὰ τοποθετοῦμεν κατ' ἀποστάσεις εἰς βουτυρωμένον ταψὶ ἢ λαμαρίναν, τὰ ἀλείφομεν μὲ αὐγὸ κτυπημένο, τὰ ψήνομεν εἰς μέτριον φοῦρνον ἐπὶ 20' τῆς ὥρας καὶ τὰ πασπαλίζομεν ζεστὰ μὲ ἄχνην ζάχαρης.

Digitized by Google

Τὰ μπισκότα ἀμυγδάλου παρασκευάζομεν ὡς ἑξῆς: Λαμβάνομεν 200 δράμια ἀμύγδαλα ψίχα, τὰ θέτομεν ἐντὸς ζεστοῦ ὕδατος διὰ νὰ ξεφλουδισθοῦν εὐκόλως καὶ τὰ κοπανίζομεν καλῶς, προσθέτοντες ὀλίγο νερό, διὰ νὰ γίνουν ὡς πολτός, 150 δράμια ζάχαρη, 2 ἀσπράδια αὐγῶν, ὀλίγην βανίλιαν καὶ δουλεύομεν τὸ μῖγμα. Δι' ἑνὸς χωνίου ἀπὸ ἀδιάβροχον χάρτην, ἐντὸς τοῦ ὁποίου θέτομεν μικρὰν ποσότητα ἐκ τοῦ μείγματος, σχηματίζομεν ἐπάνω εἰς βουτυρωμένην λαμαρίναν διάφορα σχήματα, τὰ γαρνίρομεν, τοποθετοῦντες εἰς τὸ μέσον ἑκάστου τεμαχίου ἀπὸ φρούτον κόντιτο ἢ ἕνα βύσσινο καὶ τὰ θέτομεν εἰς ἀδύνατον φοῦρνον ὀλίγην ὥραν διὰ νὰ ξηρανθοῦν. Μ. ΔΡ.

**Μπίσκρα** ἢ ***Μπισκάρα*** (Biskra ἢ Biskara) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις, σταθμὸς καραβανίων καὶ ὄασις τῆς Ἀλγερίας ἐν τῷ νομῷ Κωνσταντίνης (35°27' Β. πλάτους καὶ 3°22' Α. μήκους Γκρήνουιτς). Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὐέντ-Μίσκρα, παραποτάμου τοῦ Οὐέντ-Ντζέτζι, ἐντὸς καταφύτου ἐκ φοινίκων, ροιῶν, ἐλαιῶν καὶ ἑσπεριδοειδῶν περιοχῆς, 224 χλμ. πρὸς ΝΝΔ. τῆς Κωνσταντίνης. Εἶναι σπουδαιότατος στρατιωτικὸς σταθμὸς δεσπόζων τῆς βορείας παρυφῆς τῆς ἐρήμου καὶ μεγίστης σημασίας ἐμπορικὸν κέντρον, ἐν τῷ ὁποίῳ συγκεντροῦνται οἱ ἔμποροι τῆς Σαχάρας πρὸς ἀνταλλαγὴν τῶν προϊόντων αὐτῶν διὰ τῶν ἀναγκαίων εἰδῶν τοῦ εὐρωπαϊκοῦ ἐμπορίου. Ἡ κυρίως πόλις περιβάλλεται ὑπὸ τείχους, καλουμένου ὀχυροῦ τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ (fort Saint Germain), ἐν τῷ ὁποίῳ παραμένει ἡ γαλλικὴ παροικία, αἱ διοικητικαὶ ἀρχαὶ καὶ ἡ φρουρά. Ἡ πόλις τῶν ἰθαγενῶν, ἐκτισμένη ἐντὸς δάσους 150.000 φοινικοδένδρων, παρουσιάζει γραφικώτατον θέαμα, μὲ τὰς μεμονωμένας ὑπὸ τὰ δένδρα οἰκίας της, αἵτινες περιβάλλονται πᾶσαι σχεδὸν ὑπὸ ὑψηλῶν περιβόλων. Κάτ. 10.606, ἐξ ὧν 1.500 Εὐρωπαῖοι.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ περιεργοτάτη ὄασις τοῦ *Μπίσκρα* εἶναι πιθανῶς ἡ ρωμαϊκὴ ad Piscinum ἢ ἡ ἐν τῷ Corpus incriptionum latinarum ἀναφερομένη Bescerae. Κατὰ τὸν μεσαίωνα τὴν ἐπεσκέφθησαν πολλοὶ περιηγηταί, οἵτινες περιέγραψαν αὐτήν. Ἰδιαιτέρως ἐνδιαφέρουσαι εἶναι αἱ περιγραφαὶ τῶν Ἐλ-Μπέκρι (1060 περίπου μ. Χ.) καὶ τοῦ Ἐλ-Ἀΐσι (1649). Ἐπὶ τῶν χρόνων τοῦ πρώτου ἦτο πρωτεύουσα τῆς φυλῆς τῶν Ζιμπὰν καὶ κατῳκεῖτο ὑπὸ πολυαρίθμου πληθυσμοῦ, ἐπὶ δὲ τοῦ δευτέρου ἐξηκολούθει νὰ εἶναι ἀκόμη ἀξιόλογον ἐμπορικὸν κέντρον ἀλλ' εἶχεν ἀρχίσει ἤδη νὰ παρακμάζῃ, λόγῳ τῆς κακοδιοικήσεως τῶν Τούρκων καὶ τῶν ἐπιδρομῶν τῶν Ἀράβων. Κατελήφθη τῷ 1844 ὑπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Ὠμάλης καὶ ὑπέστη πολλὰς καταστροφὰς κατὰ τὴν ἐξέγερσιν τοῦ 1863. Χ. Δ.

**Μπίσκρα** ***φῦμα*** ἢ ***ἐξάνθημα*** *['Ιατρ.]*· βλ. λ. *Χαλεπίου* φῦμα ἢ ἐξάνθημα.

**Μπίσκω** (Biscoe) *[Γεωγρ.]*. —1) Τμῆμα τοῦ παρὰ τὰς ἀκτὰς τῆς Ἀνταρκτικῆς ἠπείρου Νοτίου Ἀτλαντικοῦ, ἐκτεινόμενον ἐπὶ τῆς γραμμῆς τοῦ ἀνταρκτικοῦ κύκλου ἀπὸ τῆς θαλάσσης τοῦ Οὐέντελλ πρὸς Δ. μέχρι τῆς Γῆς τοῦ Ἔντερμπυ. Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ πρώτου ἐξερευνήσαντος αὐτὴν τῷ 1837 Ἄγγλου ἀξιωματικοῦ τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ Ἰωάνου Μπίσκω.

— 2) Νῆσος τῆς Δυτικῆς Ἀνταρκτίδος, κειμένη πρὸς Δ. τῆς Γῆς τοῦ Γκράχαμ, ἀνακαλυφθεῖσα ἐπίσης ὑπὸ τοῦ Ἰ. Μπίσκω τῷ 1832. Χ. Δ.

**Μπίσμα** *['Ινδ. Μυθολ.]*. Υἱὸς τοῦ βασιλέως Σαντανοῦ καὶ τῆς Γαγγᾶ, θεότητος τοῦ Γάγγου, θεῖος τοῦ Παντοῦ καὶ τοῦ Ντριταράστρα. Εἶναι προσωποποιήσις τῆς σοφίας, τῆς σωφροσύνης καὶ τῆς πίστεως. Εἰς τὴν Μαχαβαράταν διαδραματίζει πρόσωπον συμφιλιωτοῦ μεταξὺ τῶν Παντάβας καὶ τῶν Καουράβας. Ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Ἀρτζούνα. Α. Δ.

**Μπίσμαρκ** (Bismarck), ***Ὄθων-Ἐδουάρδος-Λεοπόλδος, πρίγκιψ φὸν —***. Πρώσσος πολιτικὸς (βλ. λ. *Βίσμαρκ*).

**Μπισμπάρδι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Ἀσπροπουλιά* (βλ. λ.).

**Μπισναγκάρ** (Bisnagar) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν βρεττανικῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μπιζαναγκάρ*).

**Μπίσοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Κυπαρίσσι* (βλ. λ.).

**Μπισολάτι** (Bissolati Bergamaschi), ***Λεωνίδας***. Ἰταλὸς πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπισσολάτι* Λεωνίδας).

**Μπίσοπ** (Bishop), ***Ἐρρῖκος, σὲρ —***. Ἄγγλος συνθέτης (1786—1855). Διδάκτωρ τῆς μουσικῆς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀξφόρδης καὶ εἶτα καθηγητὴς ἐν αὐτῷ, ὡς καὶ ἐν τῷ τοῦ Ἐδιμβούργου, διευθυντὴς ὀρχήστρας τοῦ «Κόβεν Γκάρντεν» τοῦ Λονδίνου κτλ., συνέθεσε κατὰ πρῶτον τὸ μελόδραμα «Ἡ Κιρκασία μνηστή» (1809), κατόπιν δὲ ἔγραψεν ἐν ὅλῳ 110 μελοδράματα, λυρικὰς κωμῳδίας, μπαλλέττα καὶ διασκευὰς γαλλικῶν, γερμανικῶν καὶ ἰταλικῶν σκηνικῶν ἔργων. Ἐπὶ πλέον συνέθεσε τὸ ὀρατόριον «Ὁ πεπτωκὼς ἄγγελος», τὴν καντάταν «Ἡ ἑβδόμη ἡμέρα», μελῳδίας κ. ἄ. Ἡ σύζυγός του *Ἄννα* (1812—1884) ὑπῆρξε διακεκριμένη ἀοιδὸς συναυλιῶν. Γ. Σ.

**Μπίσοπ, *κύκλος τοῦ* —** (Bishop's ring) *[Μετεωρολ.]*· βλ. λ. *κύκλος* τοῦ Μπίσσοπ.

**Μπίσοπς Στόρτφορντ** (Bishop's Stortford) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Χέρτφορντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Στόρτ, 22,5 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Χέρτφορντ. Διεξάγει ἀξιόλογον ἐμπόριον σιτηρῶν, βύνης, γύψου κλπ. Κάτ. 8.721. Χ. Δ.

**Μπίσοπ Ὤκλαντ** (Bishop Aucland) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ντώρχαμ, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Βὶρ καὶ Γκάουνλες, 17,5 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς πόλεως Ντώρχαμ. Σῴζεται αὐτόθι ὡραῖος ἐπισκοπικὸς πύργος τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Ἔχει ἐργοστάσια βιομηχανίας βάμβακος, μηχανουργεῖα, ἀνθρακωρυχεῖα κ. λ. π. Κάτοικοι 13.834. Χ. Δ.

**Μπισουτοὺν** *['Αρχ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπεχιστούν*.

**Μπίσοφ** (Bischoff). Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι γνωστοὶ πλεῖστοι μουσικοί, ὧν κυριώτεροι εἶναι:

—1) ***Γάσπαρος - Ἰακώβ***. Γερμανὸς μουσικοσυνθέτης (1823—1893), γενόμενος γνωστὸς διὰ πλείστων θρησκευτικῶν ἔργων καὶ συμφωνιῶν.

—2) ***Ἰουστῖνος***. Ἑλβετὸς συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1845. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς μίαν λειτουργίαν, τὰς καντάτας «Ὁ προγεγραμμένος» καὶ «Ὁ καθεδρικὸς ναὸς τῆς Λωζάννης», μουσικὴν δωματίου, μελῳδίας, κ. ἄ.

— 3) ***Χάνς***. Γερμανὸς μουσικολόγος καὶ κλειδοκυμβαλιστὴς (1852—1889). Προέβη εἰς ἀναθεώρησιν τῆς «Αἰσθητικῆς τῆς ἐκτελέσεως τοῦ κλειδοκυμβάλου» τοῦ Κούλλακ, εἰς κριτικὴν ἔκδοσιν τῶν ἔργων διὰ κλειδοκύμβαλον τοῦ Ἰω. Σεβ. Μπὰχ καὶ Σούμαν, καὶ ἔγραψε: «Περὶ τῆς παλαιᾶς γαλλικῆς σχολῆς κλειδοκυμβάλου», «Εἰς Ἀνάμνησιν τοῦ Θ. Κούλλακ» κ. ἄ. Γ. Σ.

**— Μπίσοφ** (Bischoff), ***Θεόδωρος - Λουδοβῖκος - Γουλιέλμος***. Γερμανὸς ἀνατόμος καὶ φυσιολόγος (1807—1892). Τῷ 1836 διωρίσθη ἔκτακτος καὶ τῷ 1843 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς καὶ φυσιολογίας ἐν Ἁϊδελβέργῃ καὶ κατόπιν ἐν Γκίσσεν καὶ Μονάχῳ. Ἐπλούτισε τὸν κλάδον τῆς ἐμβρυολογίας διὰ πολυπληθῶν ἀνακαλύψεων καὶ ἔγραψε πραγματείας περὶ τῆς ἐξελίξεως τῶν μαστοφόρων καὶ τοῦ ἀνθρώπου (1842), τῆς ἐμμήνου ροῆς, τῆς φογονίας καὶ γονιμοποιήσεως. Ἠσχολήθη ὡσαύτως εἰς ἐρεύνας ἐπὶ τοῦ αἵματος καὶ τῆς ἐναλλαγῆς τῆς ὕλης, καὶ πρῶτος ἀπέδειξε τὴν ὕπαρξιν τοῦ ἐλευθέρου ἀνθρακικοῦ ὀξέος καὶ ὀξυγόνου ἐν τῷ αἵματι. Ο. Ρ.

**— Μπίσοφ** (Bischoff), ***Ἰωσήφ***. Γερμανὸς μυθιστοριογράφος, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κονράδος φὸν Μπολάντεν* (1828—1920). Ἐσπούδασε θεολογίαν, διετέλεσε καθολικὸς ἱερεὺς καὶ κατόπιν ἀποσυρθεὶς εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον ἐδημοσίευσεν ἔργα, τὰ ὁποῖα προεκάλεσαν θόρυβον μεταξὺ τῶν καθολικῶν κύκλων ὅλης τῆς Εὐρώπης. Εἰς τὰ πρῶτα μυθιστορήματά του: «Eine Brautfahrt» (1857) καὶ «Franz von Sickingen» (1859), ἐπιτίθεται ἐναντίον τῆς μεταρρυθμίσεως, τὴν ὁποίαν θεωρεῖ ὡς ἀνταρσίαν, καὶ περιγράφει διὰ τῶν μελανωτέρων χρωμάτων τὸν Λούθηρον, Σίκκιγκεν, Χοῦττεν κλπ., χαρακτηρίζων τούτους ὡς ἀνηθίκους. Ἔγραψε πρὸς τούτοις: «Βασίλισσα Βέρθα» (1860), «Βαρβαρόσσας» (1862), «Οἱ φωτισμένοι» (1864), «Ἱστορικὰ διηγήματα ἐπὶ τοῦ Φρειδερίκου τοῦ Β' καὶ τῆς ἐποχῆς του» (1865—1866), ἐν τῷ ὁποίῳ Φρειδερῖκος ὁ Μέγας παρουσιάζεται ὡς εἶδος πολιτικοῦ λῃστάρχου, «Angela» (1866), ἐναντίον τῶν ἐρευνῶν τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, «Οἱ ἐλευθέρως σκεπτόμενοι» (1866) ἐναντίον τοῦ φιλελευθερισμοῦ, «Οἱ μαῦροι καὶ οἱ ἐρυθροί» (1866). Ἐκ τῶν μικροτέρων του διηγημάτων ἔσχον ἐπιτυχίαν: «Ὁ νέος Θεός» καὶ «Ὁ παλαιὸς Θεός». Γ. Ε. Κ.

**— Μπίσοφ** (Bischof), ***Κάρολος***. Γερμανὸς μηχανικός, γεννηθεὶς τῷ 1812. Τῷ 1829 κατεσκεύασε μικρὰν ἀτμάμαξαν, ἥτις ἐκινεῖτο ἐπὶ τοῦ ἐδάφους ἄνευ σιδηροτροχιῶν. Τῷ 1839 ἀνεκάλυψε νέον σύστημα θερμάνσεως, ὅπερ ἐφηρμόσθη ἰδίως εἰς τὰ μεταλλεῖα. Α. Δ.

**—Μπίσοφ** (Bischof), ***Κάρολος-Γουσταῦος-Χριστόφορος***. Γερμανὸς γεωλόγος (1792—1870). Κατ' ἀρχὰς *πλουτωνιστής*, κατέστη κατόπιν ἔνθερμος *ποσειδωνιστής*. Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βόννης καὶ ἐξέδωκε πολλὰ σπουδαῖα ἔργα, ἐν οἷς: «Lehrbuch der chemischen und physikalischen Geologie» (1848—1854) καὶ «Gestalt der Erde» (1867). Γ. Κ. Γ.

**—Μπίσοφ** (Bischoff), ***Νικόλαος***, ἐπονομαζόμενος *Ἐπίσκοπος*. Γνωστὸς Γερμανὸς τυπογράφος καὶ ἐκδότης (1501—1563). Μετὰ τοῦ Ἱερωνύμου Φρόμπεν καὶ τοῦ Χερβάγκεν ἐδημοσίευσεν Ἕλληνας καὶ Λατίνους κλασσικοὺς εἰς θαυμασίαν ἔκδοσιν. Α. Δ.

**Μπισοφσβέρντα** (Bischofswerda) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Σαξωνίᾳ, κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, ἔχουσα ἐργοστάσια πορων, ὑφασμάτων, ἀγγειοπλαστικῆς, μηχανῶν, σιδήρου κλπ. Κάτ. (1919) 8.344. Χ. Δ.

**Μπίσοφσμπουργ** (Bischofsburg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Πρωσσίᾳ, ἔχουσα σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν, ἐργοστάσια γεωργικῶν μηχανῶν, ἀτμοκίνητα πριονιστήρια, λατομεῖα γρανίτου κλπ. Κάτ. (1919) 5.129. Χ. Δ.

**Μπίσοφσχάϊμ** (Bischoffsheim), ***Λουδοβῖκος-Ραφαήλ***. Γερμανὸς τραπεζίτης (1800—1873). Ἀποκτήσας κολοσσιαίαν περιουσίαν, ἐγκατεστάθη τῷ 1850 ἐν Παρισίοις. Ἀναμειχθεὶς εἰς μεγάλας χρηματιστικὰς ἐπιχειρήσεις, ἐγένετο διευθυντὴς τῶν σιδηροδρόμων τῆς μεσημβρινῆς Γαλλίας, τῆς Γενικῆς τραπεζικῆς ἑταιρείας τῶν Κάτω Χωρῶν, τῆς Γαλλοαιγυπτιακῆς τραπέζης κτλ. Τῷ 1866 ᾠκοδόμησε τὴν αἴθουσαν τοῦ «*Ἀθηναίου*» (βλ.λ.). Διέθεσεν ἐπὶ πλέον 40.000 φράγκα ἐτησίως διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν ἀπόρων ἀρρένων καὶ θηλέων. Α. Δ.

**Μπίσοφσχόφεν** (Bischofshofen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Αὐστρίας ἐν Σαλτσβούργῳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Σάλτσαχ, παραποτάμου τοῦ Ἴν, ἔχουσα μεταλλεῖα σιδήρου καὶ χαλκοῦ εἰς τὰ περίχωρα. Κάτ. (1919) 5.056. Χ. Δ.

**Μπίσσαγκος**, ἢ ***Μπίζουγκα*** (Bissagos ἢ Bijuga) *[Γεωγρ.]*. Συστὰς 16 μεγάλων καὶ πολλῶν μικρῶν νήσων τῆς Πορτογαλλικῆς Γουινέας ἐν τῇ Δ. Ἀφρικῇ, ἔναντι τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Γκέμπα. Τὸ ἀρχιπέλαγος τοῦτο ἔχει συνολικὴν ἔκτασιν 4.000 τετρ. χλμ. ἀποτελεῖται δὲ ἐκ χθαμαλῶν καὶ ἀμμωδῶν νήσων, ὧν μεγαλύτεραι εἶναι αἱ *Ὀράνγκα, Μπολάμα, Γαλλίνας* κλπ. καὶ κατοικεῖται ὑπὸ ἡμιαγρίου λαοῦ νιγριτικῆς καταγωγῆς, τοῦ ὁποίου ὁ ἀκριβὴς πληθυσμὸς εἶναι ἀνεξακρίβωτος. Αἱ νῆσοι καλύπτονται ὑπὸ δασῶν κοκκοφοινίκων, ἐλαιοφοινίκων καὶ κομμιοδένδρων καὶ ἔχουσι καλλιεργείας ὀρύζης καὶ ὀπωροφόρων δένδρων, παρουσιάζουσι δὲ ἀσφαλεῖς ὅρμους καὶ ἀγκυροβόλια. Κυριώτερος συνοικισμὸς καὶ ἕδρα τῆς πορτογαλλικῆς διοικήσεως εἶναι ἡ *Μπολάμα* (κάτ. 3.800), κειμένη ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου νήσου. Τὸ κλίμα εἶναι λίαν ἀνθυγιεινὸν διὰ τοὺς Εὐρωπαίους. Χ. Δ.

**Μπίσσελ** (Bissel) ***ἄρθρωσις*** *[Σιδηροδρ.]*. Εἶδος ἀρθρώσεως τῶν τροχῶν μιᾶς ἀτμαμάξης, καλουμένης οὕτως ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἐπινοήσαντος αὐτὴν Ἀμερικανοῦ μηχανικοῦ.

Ὑποθέσωμεν μίαν ἀτμομηχανὴν τριῶν ἀξόνων μὲ ἕνα ἄξονα φορέα ἔμπροσθεν, καὶ χαράξωμεν τὴν κάτοψιν τῶν τροχῶν, ὁπόταν ἡ μηχανὴ διέρχεται ἐν καμπύλῃ. Ἐὰν ὁ ἐμπρόσθιος ἄξων δύναται νὰ στρέφεται περὶ ἄξονα κατακόρυφον, βλέπει τις ὅτι ἡ ἐγγραφὴ εἰς τὴν καμπύλην ἔσεται εὐκολωτέρα· οἱ τρεῖς συνεζευγμένοι ἄξονες δέον νὰ εἶναι ἀρκούντως πλησίον ὁ εἷς μετὰ τοῦ ἄλλου, ὅπως εἶναι δυνατὴ ἡ διαγραφὴ ἐν τῇ καμπύλῃ, λαμβανομένου ὑπ' ὄψιν ὅτι διατηροῦνται ἀναγκαστικῶς παράλληλοι.

Διὰ τοῦ συστήματος τούτου τοῦ Μπίσσελ προκαλοῦνται ἐπηυξημέναι πλευρικαὶ κινήσεις εἰς τὰς καμπύλας, αἵτινες, αὐξανόμεναι μετὰ τῆς ταχύτητος, ἐπιδρῶσιν ἐπιβλαβῶς ἐπὶ τῆς ἐπιδομῆς. Διὰ τοῦτο ἐλάχιστα συνιστᾶται διὰ ταχεῖς συρμούς. Σήμερον, τόσον διὰ τὴν εὔκολον ἐγγραφὴν εἰς τὰς καμπύλας, ὅσον καὶ διὰ τὴν ἐλάττωσιν, κατὰ τὸ δυνατόν, τῶν πλευρικῶν κρούσεων εἰς τὰς μεγάλας ταχύτητας, προτιμῶνται τὰ διαξονικὰ φορεῖα μὲ κεντρικὸν ὁμφαλὸν (στροφεῖα κατακόρυφον). Ι. ΑΥΓΟΥΣΤΙΝΟΣ

**Μπίσσεν** (Bissen), ***Ἑρμάννος-Γουλιέλμος***. Δανὸς γλύπτης (1798—1868). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ διασήμῳ Τορβάλδσεν. Τῷ 1835 ἐγένετο μέλος τῆς ἐν Κοπεγχάγῃ Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν καὶ ἀνέλαβε, συμφώνως πρὸς τὴν τελευταίαν θέλησιν τοῦ διδασκάλου του, τὴν συμπλήρωσιν τῶν καταλειφθέντων ὑπ' ἐκείνου ἡμιτελῶν ἔργων καὶ τὴν φροντίδα τοῦ μουσείου Τορβάλδσεν. Τὰ σημαντικώτερα ἔργα τοῦ Μπίσσεν εἶναι: «Ὁ Δανὸς στρατιώτης» τοῦ μνημείου τῆς Φρειδερικίας καὶ τὸ διάζωμα τῆς αἰθούσης τῶν ἱπποτῶν ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τῆς Christiansborg, ἐν ᾧ εἰκονίζεται «Ἡ ἐκπολιτιστικὴ πορεία τῆς Περσεφόνης καὶ τοῦ Βάκχου διὰ μέσου τοῦ κόσμου». Ι. Μ. Π.

**Μπισσολάτι** (Bissolati), ***Λεωνίδας Μπεργκαμάσκι***. Ἰταλὸς πολιτικὸς (1857—1920). Ἐγεννήθη ἐν Κρεμόνα ἐκ πατρὸς *Δημητρίου Μπεργκαμάσκι* καὶ ἐγένετο γνωστὸς μὲ τὸ ὄνομα τοῦ θετοῦ πατρὸς αὐτοῦ *Στεφ. Μπισσολάτι*, καθηγητοῦ τῆς φιλοσοφίας. Ἡ μήτηρ του *Παυλίνα Κατσιαλοῦπι* ἦτο εὐρυτάτης μορφώσεως καὶ εἶχε μεταξὺ ἄλλων μεταφράσει τὸ ἔργον τοῦ Μπακούνιν «Ὁ Θεὸς καὶ τὸ Κράτος». Ὁ Μπισσολάτι ἐσπούδασε νομικὰ καὶ κατέγινεν ἐπίσης εἰς κλασσικὰς μελέτας, γράψας



Digitized by Google

νεαρώτατος καὶ φιλολογικὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα ἔτυχον θερμῶν ἐπαίνων τοῦ Καρντούτσι. Κατὰ τὴν νεότητά του εἶχεν ἐκδηλώσει δημοκρατικὰ φρονήματα καὶ εἶχεν ἀποτελέσει δραστηριώτατον παράγοντα τῆς δημοκρατικῆς κινήσεως. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως κατέληξε νὰ ἐνδιαφερθῇ ἀμεσώτατα διὰ τὸν ἀγῶνα τῶν τάξεων. Τῷ 1895 ἐξελέγη βουλευτής, ἀλλ' ἠρνήθη νὰ δεχθῇ τὴν ἐκλογὴν ταύτην, ὡς στηριχθεῖσαν ἐπὶ πλειοψηφίας 20 ψήφων, ὑπολογισθεισῶν κατὰ λάθος. Τῷ 1896, μετὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ «Ἀβάντι», ἐπισήμου ὀργάνου τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν αὐτοῦ καὶ τὸ κατέστησε ταχέως μίαν τῶν πολεμικωτέρων, τῶν σοβαρωτέρων καὶ τῶν ἐγκυροτέρων ἐφημερίδων τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1897 ἐξελέγη καὶ πάλιν βουλευτής, μετὰ 14 ἄλλων σοσιαλιστῶν, καὶ ἔλαβε μέρος, τῷ 1898, εἰς τὰς ἐργατικὰς ταραχὰς τοῦ Μιλάνου, ὅπου συνελήφθη, ἀλλ' ἀφέθη ἐλεύθερος, συνεπείᾳ τῆς βουλευτικῆς ἀσυλίας. Κατὰ τὰ ἑπόμενα ἔτη ἐξηκολούθησε τοὺς ἀγῶνάς του ὑπὲρ τοῦ σοσιαλισμοῦ καὶ ἐγένετο εἷς τῶν ἱδρυτῶν τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος τῆς Ἰταλίας, εἰς τοῦ ὁποίου τὴν δρᾶσιν ἔπαιξε πάντοτε σπουδαιότατον πρόσωπον. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἐντὸς τοῦ σοσιαλιστικοῦ ἰταλικοῦ κόμματος ἐδημιουργήθησαν δύο ἀλληλομαχόμεναι μερίδες, ἡ μετριοπαθής, τῆς ὁποίας ἀρχηγὸς ἀνεγνωρίζετο ὁ Μπισσολάτι καὶ ἡ ὁποία ὠνομάσθη «τῶν μεταρρυθμιστῶν σοσιαλιστῶν»,—ὡς πρεσβευόντων τὴν ἀνάγκην τῆς μεταρρυθμίσεως τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος, εἰς τρόπον ὥστε νὰ εἶναι δυνατὸν τοῦτο, ἐν δεδομένῃ στιγμῇ, νὰ καταλάβῃ τὴν ἀρχὴν καὶ νὰ κυβερνήσῃ τὴν χώραν μὲ ὡρισμένον πρόγραμμα—, καὶ ἡ τῶν ἄκρων ἐπαναστατικῶν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν ἐσωτερικῶν τούτων διαιρέσεων μεταξὺ τῶν σοσιαλιστῶν, αἵτινες εἶχον ἀρχίσει ἀπὸ τοῦ 1902, ἔλαβον χώραν δύο μεγάλα ἱστορικὰ γεγονότα, ὁ πόλεμος τῆς Λιβύης (Ἰταλοτουρκικὸς) καὶ ὁ Παγκόσμιος πόλεμος. Κατὰ τὸν πρῶτον ὁ Μπισσολάτι εἶχε κηρυχθῆ ὑπὲρ τῶν στρατιωτικῶν μέτρων τῆς Ἰταλίας εἰς τὴν Ἀφρικήν, κατὰ δὲ τὸν δεύτερον ὑπὲρ της ἐξόδου παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ. Ἡ στάσις αὕτη τοῦ Μπισσολάτι κατηγγέλθη εἰς τὴν γενικὴν συνέλευσιν τῶν σοσιαλιστῶν, ἡ ὁποία, προεξάρχοντος τοῦ Μουσσολίνι, ἀδιαλλάκτου σοσιαλιστοῦ τότε, ἐψήφισε τὴν ἀποβολὴν τοῦ Μπισσολάτι ἐκ τοῦ κόμματος καὶ ἐκ τῆς ἐφημερίδος «Ἀβάντι». Ὁ Μπισσολάτι τότε ἵδρυσε τὸ κόμμα τῶν μεταρρυθμιστῶν σοσιαλιστῶν, τὸ ὁποῖον ἐκήρυτεν ὅτι «δὲν εἶναι ποτὲ δυνατὸν νὰ εἶναι κανεὶς τόσον διεθνιστής, ὥστε νὰ λησμονῇ τελείως τὸ ἐθνικὸν περιβάλλον ἐντὸς τοῦ ὁποίου ζῇ καὶ δρᾷ».

*Λεωνίδας Μπισσολάτι.*

Ὅταν ἐπραγματοποιήθη ἡ ὑποστηριχθεῖσα ὑπ' αὐτοῦ ἔξοδος τῆς Ἰταλίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Συμμάχων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, ὁ Μπισσολάτι ἔλαβε μέρος εἰς τὰς πρώτας μάχας ὡς βερσαλλιέρος, τραυματισθεὶς βαρέως τῷ 1915. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1916 προσελήφθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῆς Ἐθνικῆς κυβερνήσεως ὑπὸ τὸν Μποτέλι ὡς ὑπουργὸς ἄνευ χαρτοφυλακίου καὶ τῷ 1917 εἰς τὸ ὑπουργεῖον Ὀρλάνδο ὡς ὑπουργὸς τῶν κρατικῶν προμηθειῶν καὶ συντάξεων. Ὁ Μπισολλάτι δμως, ὅστις ὑπῆρξε πάντοτε ἔνθερμος ὑπερασπιστὴς τῶν δικαιωμάτων τῶν μειονοτήτων (ἐν τοῖς ἄλλοις εἶχε θερμῶς συνηγορήσει ὑπὲρ τῆς ἀπαλλαγῆς τῆς Κρήτης ἀπὸ τοῦ τουρκικοῦ ζυγοῦ), διεφώνησε πρὸς τὴν ὑπερεθνικόφρονα πολιτικὴν τοῦ Ὀρλάνδο, ἀντιταχθεὶς σφοδρῶς κατὰ τῆς προσαρτήσεως τῆς περιφερείας τοῦ Ἄνω Ἀδίγη εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐπειδὴ ἐπλειονοψήφουν ἐν αὐτῇ οἱ Γερμανοί, καθὼς καὶ τῆς περιοχῆς τῆς Β. Δαλματίας, ὅπου ἐπλειονοψήφουν οἱ Σλαῦοι, ἐνῷ ὑπεστήριζε τὰς ἰταλικὰς διεκδικήσεις τὸ Φιοῦμε, ὅπου ἐπλειονοψήφουν οἱ Ἰταλοί. Αἱ ἀντιλήψεις του αὗται, ἀντίθετοι πρὸς τὰς τοῦ Ὀρλάνδο, τὸν ἤγαγον εἰς παραίτησιν ἀπὸ τῆς θέσεως τοῦ ὑπουργοῦ τῷ 1918, τὸν ἀπεστέρησαν δ' ἐξ ἄλλου τῶν λαϊκῶν συμπαθειῶν. Κατὰ τὸν θάνατόν του ὅμως ἐξεδηλώθη γενικὸν πένθος ἐν Ἰταλίᾳ, διότι ἀνεγνωρίζετο παρὰ πάντων ὁ ἀκραιφνὴς πατριωτισμός του καὶ ἡ ἰδεολογική του εἰλικρίνεια. Ὁ Μπισσολάτι ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, μελέτας, ἄρθρα κ. τ. λ. εἰς ἐφημερίδας, περιοδικὰ καὶ εἰς ἰδιαιτέρους τόμους. Τὰ κυριώτερα τούτων ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Φ. Ρουμπιάνι, ὑπὸ τοὺς τίτλους «Ἡ πολιτικὴ ἰδεολογία τοῦ Λεωνίδα Μπισσολάτι» (1921), «Ἡ ἐξωτερικὴ πολιτικὴ τῆς Ἰταλίας ἀπὸ τοῦ 1897—1920» (1923) κ. τ. λ. Μ. Δ. Β.

**Μπίσσια** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας (βλ. λ. *Πήσια*).

**Μπισσὸν** (Bisson). Γάλλος ἀνθυποπλοίαρχος τῆς φρεγάτας «Μαζισιέν», ἀναλαβὼν τὴν κυβέρνησιν τοῦ αἰχμαλωτισθέντος πειρατικοῦ βρικίου «Παναγιώτης» ἐπὶ κεφαλῆς ἀγήματος 14 ναυτῶν, δι' οὗ ἐκεῖνο ἐπηνδρώθη. Ἀποπλεύσας ἐξ Ἀλεξανδρείας καὶ ἀναγκασθεὶς νὰ προσεγγίσῃ εἰς Μαλτεζάναν τῆς Ἀστυπαλαίας λόγῳ κακοκαιρίας, ὑπέστη (5 Νοεμβρίου 1827) νυκτερινὴν ἐπίθεσιν δύο μεγίστων ἑλληνικῶν μιστίκων, καταφόρτων ἀπὸ πειρατάς. Βλέπων ὁ Μπισσὸν ὅτι θὰ ὑπέκυπτεν, ἔθεσεν ἰδιοχείρως πῦρ εἰς τὴν πυριταποθήκην καὶ εὗρε τὸν θάνατον μετὰ πάντων τῶν ἀνδρῶν του πλὴν ἑνός. Θαυμασία εἰκὼν τοῦ γεγονότος ἀπόκειται ἐν τῷ Λούβρῳ, νεότευκτον δὲ γαλλικὸν ἀντιτορπιλλικὸν φέρει τὸ ὄνομα τοῦ ἥρωος. Σ. Ε. Λ.

— **Μπισσὸν** (Bisson), ***Ἀλέξανδρος-Κάρολος-Αὔγουστος***. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1848. Τῷ 1869 μετέβη εἰς Παρισίους καὶ προσελήφθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1880, ἀφοσιωθεὶς κατόπιν εἰς τὸ θέατρον. Μεταξὺ τῶν κωμειδυλλίων καὶ τῶν κωμῳδιῶν του αἱ σχοῦσαι μεγαλυτέραν ἐπιτυχίαν εἶναι: «Un lycée de jeunes filles» (1881), «Le député de Bombignac» (1884), «Une mission délicate» (1886), «Un conseil judiciaire» (1886), «Ma gouvernante» (1887), «Le roi Koko» (1887), «Les surprises du divorce» (1890), τὸ ἀριστούργημά του: «La famille Pont-Biquet» (1892), «L'héroïque Lecardunois» (1894), «M. le Directeur» (1895), «Les erreurs du mariage» (1896), «Jalouse» (1897), «Le contrôleur des wagons-lits» (1898), «Le bon juge» (1900), «Château historique» μετὰ τοῦ B. de Turique (1900), κλπ. Διακρίνεται διὰ τὸ λεπτὸν πνεῦμα καὶ τὴν διεισδυτικὴν παρατηρητικότητά του. Θ. Π.

**Μπιστάκης, *Νικόλαος***. Κρὴς ὁπλαρχηγός. Συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1841 καὶ ἐγένετο μέλος τῆς ἐπαναστατικῆς ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς. Ν. ΚΛΣ

**μπίστερ** (γαλλ. bistre, γερμαν. Bister) *[Χημ.]*. Καστανὸν χρῶμα, συνιστάμενον ἐκ καθαρισθέντων καὶ εἰδικῶς κατεργασθέντων προϊόντων ἀπανθρακώσεως ξύλου καὶ ἰδίως τοῦ ξύλου τῆς ὀξύας. Ὑπὸ τὸ ὄνομα *ἀνόργανον μπίστερ* νοεῖται τὸ ὑδροξείδιον τοῦ μαγγανίου MnO.OH, τὸ ὁποῖον καλεῖται ἐπίσης ὡς ἐκ τούτου καὶ *μπίστερ τοῦ μαγγανίου* ἢ *καστανὸν τοῦ μαγγανίου*. Παρασκευάζεται διὰ θερμάνσεως τοῦ ἀνθρακικοῦ μαγγανίου ἢ διὰ καταβυθίσεως διαλύματος χλωριούχου μαγγανίου διὰ νατρορρύματος. Κατ' ἀρχὰς ὡς λευκὸν καθιζάνον ἴζημα, προσλαμβάνει ὀξυγόνον ἐκ τοῦ ἀέρος καὶ ἀποκτᾷ καστανὸν χρῶμα. Χρησιμοποιεῖται ἐνίοτε εἰς τὴν βαφικὴν καὶ τυπογραφικήν. Σ. Γ.

**Μπίστης** (ἢ *Πίστης*), ***Διονύσιος Ἀλεξ.*** Κληρικός, ἔγγονος τοῦ κοτζάμπαση Ἄνδρου *Νικολάου Μπίστη*. Ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς ὑποδιδάσκαλος ἐν Ἄνδρῳ, εἶτα δὲ ἀρχιδιάκονος τοῦ πρώην Σμύρνης μητροπολίτου καὶ εἶτα ἐπίσκοπος Ἄνδρου Σεραφεὶμ Γρόσου. Μεταβὰς εἰς Κωνσταντινούπολιν ἐχειροτονήθη πρῶτον ἐπίσκοπος Πρεσπῶν, ὅθεν προήχθη εἰς τὴν μητρόπολιν Ξάνθης, ἣν ἐποίμανε μέχρι τοῦ 1870, ὅτε παραιτηθεὶς ἀπῆλθεν εἰς Ἅγιον Ὄρος. Τῷ 1875 ἐλθὼν εἰς τὴν Ἑλλάδα ἐγκατεστάθη εἰς Σύρον, ἔνθα κατέστησεν αὐτὸν τοποτηρητὴν τοῦ ὁ ἐν Ἀθήναις διαμένων καὶ βαρέως πάσχων ἀρχιεπίσκοπος Σύρου καὶ Τήνου Ἀλέξανδρος Λυκοῦργος. Θανόντος τοῦ Λυκούργου, διῴκησε τὴν χηρεύουσαν ἀρχιεπισκοπὴν μέχρι τοῦ 1883, ὅτε μετέβη εἰς Τῆνον, ἐκεῖ δὲ μετ' οὐ πολὺ ἀπέθανεν, ἄγων τὸ 97ον ἔτος τῆς ἡλικίας του. Κατέλιπε μετρίας ἀξίας πονήματά τινα, ἐν οἷς «Ἡμερολόγιον, ἤτοι Καλανδάριον, περιέχον τὸ αἰώνιον Πασχάλιον μὲ τὰ ἑπόμενα αὐτοῦ, τὸ ἑορτολόγιον καὶ σεληνοδρόμιον» (ἐν Ἀθήναις, 1835), «Περιγραφὴν τῆς νήσου Ἄνδρου» (ἐν Ἑρμουπόλει, 1881) καὶ «Περιγραφικὴν ἱστορίαν τοῦ Ἁγίου Ὄρους Ἄθω» (ἐν Θεσσαλονίκῃ, 1870), ἥτις εἶναι ἀντίγραφον ἐκ χειρογράφου τοῦ Σωφρονίου Καλλιγᾶ, ἡγουμένου τῆς ἐν Ἄθω μονῆς τοῦ Ἁγίου Παύλου. Δ. Π. Π.

— **Μπίστης**, ***Ἰωάννης***. Ἕλλην ὀφθαλμολόγος ἐξ Ἄνδρου, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ἐσπούδασεν ἐν Βιέννῃ (1890), εἰργάσθη κατόπιν εἰς ὀφθαλμολογικὰς κλινικὰς αὐτόθι καὶ ἐν Παρισίοις, Βερολίνῳ καὶ Μονάχῳ καὶ ἐν Κωνσταντινουπόλει ὡς ἰατρὸς διαφόρων νοσοκομείων. Κατελθὼν εἰς Ἀθήνας ἐγένετο τῷ 1906 καὶ αὖθις τῷ 1919 ὑφηγητὴς τῆς ὀφθαλμολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ. Ἔγραψεν ὑπὲρ τὰς 90 ἐπιστημονικὰς ἐργασίας, ἐξ ὧν μνημονεύομεν τάς: «Implatation de la conjonctive du lapin chez l' homme» (1892), «Phlegmon de l' orbite à la suite du retrécissement du canal lacrymal» (1893), «Hernie traumatique de la glande lacrymale» (1895), «Über zwei Fälle von Chorioretinitis leprosa» (1899), «Ἰριδοκυκλῖτις μετὰ τυφοειδῆ πυρετὸν» (1902), «Τὸ σπινθηροβόλον σκότωμα» (1904), «Un cas de tumeur primitive de sac lacrymal» (1909), «Beitrag zur Kenntnis des Frühjahrskatarrhs» (1923), «Περὶ τῆς λειτουργικῆς μεταμφυτεύσεως τοῦ ὀφθαλμοῦ» (1925), «Die Sympathicuslähmung als Actinologie der Heterochromie» (1924), «Nouvelles recherches expérimentales sur l' hétérochromie sympathique» (1927), κ. ἄ. Ἐπίσης συνέγραψε τὰ ἔργα: «Ἐγχειρίδιον ὀφθαλμολογίας» καὶ «Ὀφθαλμολογία». Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Ο. Ρ.

**μπίστι** (τό). Ὄρος ἀκτογραφικὸς τῶν ἀλβανομαθῶν ναυτικῶν, σημαίνων κατ' οὐσίαν μὲν «οὐράν», εἰδικῶς δὲ χερσονησώδη προβολὴν ἀκρωτηριάζουσαν· ἔχει δὲ μεταπέσει καὶ εἰς τοπωνυμικόν. Σ. Ε. Λ.

**Μπίστι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἀκρωτηριάζουσα ἀκτὴ τῆς Ἀργολίδος (Τροιζηνίας) κατὰ τὰ ΝΔ. τοῦ Σαρωνικοῦ ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Λεσσιᾶς (πλάτ. 73°34′ 55″ Β., μῆκ. 23°14′ 50″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1514: Aegina and Methana), ἔχουσα δὲ πρὸ αὐτῆς νησῖδα *Νήσιζα* ἢ *Μπίστι* ὡσαύτως λεγομένην. Ἀνώνυμος ἐν τῷ ἀγγλικῷ χάρτῃ, σημειοῦται ἐν τῷ τοῦ γαλλικοῦ ἐπιτελείου ὡς Provali (κακὴ ἀντιγραφὴ Prevoli), παρασυρθέντος τοῦ Κουρτίου (Pelop. Z 430) νὰ ὑποθέσῃ ὕπαρξίν ποτε ἐκεῖ πόλεως Προβαλίνθου (*Μηλιαρ.* Ἀργολ. Κορινθ. 224, 1).

—2) Ἀκρωτήριον τῆς Ἑρμιονίδος θαλάσσης (πλάτ. 37°22′ 50″ Β., μῆκ. 23°15′ 45″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spetzai and Dhokos), διαχωρίζον ἀμφιδύμως τὸν πρὸς Ν. του ὅρμον Κάπαρη ἢ Ἅγιοι Ἀνάργυροι ἀπὸ τὸν πρὸς Β. του λιμένα τῆς Ἑρμιόνης ἢ Καστρί. Μὲ τὴν τελευταίαν ταύτην ὀνομασίαν φέρεται εἰς τοὺς ἀγγλικοὺς χάρτας καὶ τὸ ἀκρωτήριον οὐχὶ ὀρθῶς (πρβλ. *Μηλιαράκη*, Ἀργολ. Κορινθ. 229)· ἀποτελεῖ προβολὴν τοῦ βουνοῦ Ἀσπροβούνι ἐπὶ 1.200 μέτρ. ἀπὸ τῆς κώμης προέχουσαν καὶ εἰς τὴν ἄκραν τῆς ὁποίας ἐγείρεται ναΐσκος τοῦ Ἁγίου Νικολάου. Εἰς τὸν πρὸς Ν. του ὅρμον ἐλιμενίζετο πρὸ τοῦ Ἀγῶνος ὁ τουρκικὸς στόλος κατὰ τοὺς ἀνὰ τὸ Αἰγαῖον πρὸς συλλογὴν φόρων περίπλους του.

—3) Ἀκρωτήριον τοῦ Μυρτῴου πελάγους, βορεία τῆς νήσου Πόρου χερσονησίζουσα προβολή, ἀπολήγουσα εἰς τὸ ἀκρωτήριον Ἀχέρδο (πλάτ. 37°33′ 35″ Β., μῆκ. 23°29′ 20″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1514: Aegina and Methana). Σχηματίζει δὲ ἐπὶ μὲν τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς της τοὺς ὅρμους *Μπίστι*, οὗ πρόκειται φερώνυμος νησίς, καὶ *Βαγιωνιά*, ἐν ᾧ κῆποι καὶ ῥέον ὕδωρ, ἐπὶ δὲ τῆς δυτικῆς καὶ κατὰ τὴν μασχάλην τὸν *Πρίκαλι*, ἀπὸ τῶν ἀναβλυζόντων πικραλμύρων ὑδάτων, καὶ ἐπὶ τῆς βορείας πλευρᾶς τοὺς *Μεγάλο-Χέρωμα* καὶ *Τσούτζουρα*.

—4) Ἀκρωτήριον τῆς Ὕδρας (πλάτ. 37°17′ 50″ Β., μῆκ. 23°22′ 10″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spetzai and Dhokos), δυτικὴ τῆς νήσου ἐσχατιά. Σ. Ε. Λ.

**Μπιστιὰ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μουκοβίνας τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτ. (1928) 108. Χ. Δ.

**μπιστικὸς** (ὁ)· ἔμπιστος, ἀφωσιωμένος: «ἦν εἶσαι φίλος μπιστικὸς καὶ ἀδερφοποιτός μου» ‖ ὁ ἐπὶ μισθῷ ὑπηρετῶν ποιμήν.

**Μπίστριτσα**, ἢ ***Βιστρίτσα*** *[Γεωγρ.]*.—1) Σλαβικὴ ὀνομασία τοῦ *Ἀλιάκμονος* (βλ. λ.). —2) Ἀριστερὸς παραπόταμος τοῦ Στρυμόνος, μήκους 45 χλμ., πηγάζων ἐκ τοῦ Ὀρβήλου. Τὸν κατώτερον αὐτοῦ ροῦν ἀκολουθοῦσι τὰ ἑλληνοβουλγαρικὰ σύνορα οὐ μακρὰν τοῦ χωρίου Ἀγκίστρου καὶ τοῦ ὀχυροῦ Ρούπελ. Ι. Σ. Σ.

— **Μπίστριτσα** (Bistritza ἢ Bystryca) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ρουμανίας καλούμενος καὶ Χρυσοῦς *Μπίστριτσα* λόγῳ τῶν ἀπαντώντων ἐν τῇ κοίτῃ αὐτοῦ ψηγμάτων χρυσοῦ. Πηγάζει ἐκ τῶν Καρπαθίων ὀρέων, διαρρέει τὴν Μπουκοβίναν καὶ τὴν Μολδαυίαν καὶ συμβάλλει μετὰ ροῦν 300 χλμ. εἰς τὸν Σερέτην, πλησίον τοῦ Μπακάου. Χ. Δ.

—**Μπίστριτσα**, ἢ ***Μπέστερτζε***, ἢ ***Μπίστριτς*** (ρουμαν. Bistritza, οὑγγρ. Besztercze, γερμ. Bistritz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Τρανσυλβανίᾳ ἀποτελοῦσα πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου βασιλικὴν ἐλευθέραν πόλιν τῆς Οὐγγαρίας. Κεῖται ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ, 80 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Κολοσβάρ. Ἔχει ὡραῖον ναὸν γοτθικοῦ ρυθμοῦ, γεωργικὴν σχολήν, ἀλευροβιομηχανίαν, βυρσοδεψεῖα καὶ ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ξυλείας. Κάτ. 11.966, Οὖγγροι, Ρουμᾶνοι καὶ Γερμανοί. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἦτο σπουδαῖον διαμετακομιστικὸν κέντρον μεταξὺ τῶν λιμένων τῆς Βαλτικῆς καὶ τῆς Ἀνατολῆς. Χ. Δ.

**μπίτ**, καὶ ***μπίτι***, καὶ ***ντίπ***· ἐπίρρ. δημοτ., διόλου, οὐδόλως: «μπίτι δὲν καταλαβαίνει», «δὲ μίλησε ντίπ» (τουρκ. bit=ἐντελῶς, ἀπολύτως).

**Μπιτέττο** (Bitetto) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Μπάρι. Ἔχει ὡραῖον καθεδρικὸν ναὸν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἦτο ἄλλοτε ἕδρα παλαιᾶς ἐπισκοπῆς καταργηθείσης τῷ 1818. Κάτ. 5.124. Χ. Δ.

**Μπιτζαριανῶ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον ἀνῆκον εἰς τὴν κοινότητα Καρουζανῶ τῆς ἐπαρχίας Πεδιάδος τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Κάτ. (1928) 108. Ε. Γ.

Digitized by Google

**Μπιτζελῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Κουβούκλια* (βλ. λ.).

**Μπιτζιμπάρδι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Τρυπητή* (βλ. λ.).

**Μπίτζιο** *Μαχαλᾶ [Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πέλλης χωρίου *Πιπεργιές* (βλ. λ.).

**Μπίτιγχάϊμ** (Bietigheim) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Βυρτεμβέργῃ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἔντς καὶ ἔχουσα ἐργοστάσιον ὑφασμάτων καὶ ξυλουργικῆς καὶ ἐμπόριον οἴνου. Κάτ. (1924) 6.500. Χ. Δ.

**μπιτίζω**· δημοτ. μεταβ., τελειώνω, φέρω εἰς πέρας, συμποσῶ, συμπληρώνω: «μπίτισα τὸ σκάψιμο», «τὰ μπίτισα ἑκατὸ φορτώματα» ‖ ἀμεταβ., περατοῦμαι, συμποσοῦμαι, συμπληροῦμαι: «μπίτισε ἡ δουλειά μου», «μπιτίσανε ἑκατὸ πρόβατα» (ἐκ τοῦ τουρκ. bit, βλ. *μπίτ*). Ν. Μ.

**Μπιτλὶς** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου νομοῦ (βλ. *Βιτλίς*).

— **Μπιτλὶς-τσάϊ** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Τουρκίας, παραπόταμος τοῦ Τίγρητος. Πηγάζει ἐκ τῶν Δ. τῆς λίμνης τοῦ Βὰν ὀρέων καὶ διερχόμενος διὰ τῆς πόλεως Μπιτλὶς χύνεται εἰς τὸν Τίγρητα εἰς τὰ σύνορα τοῦ τέως νομοῦ Βάν. Μῆκος 90 χλμ. Ν. Μ.

**Μπιτόντο** (Bitonto, λατιν. Butuntum) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Μπάρι, κειμένη ἐντὸς εὐφόρου πεδιάδος, 8 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας τῆς Ἀδριατικῆς. Ἔχει μεσαιωνικὰ τείχη καὶ ἀνάκτορα καὶ ὡραῖον μητροπολιτικὸν ναὸν ρωμανικοῦ ρυθμοῦ μετὰ σεμιναρίου. Ἐξάγει ἔλαιον καὶ ἐκλεκτὸν οἶνον, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «zagarese». Παρ' αὐτὴν τὴν 25 τοῦ Μαΐου 1734 ἡττήθησαν οἱ Αὐστριακοὶ ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν, διοικουμένων ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Μοντεμάρ. Κάτ. 33.000. Χ. Δ.

**Μπιτούνης, Δημήτριος Ἀνέστη.** Ἀγωνιστὴς τῆς Ζατούνης. Ἐπολέμησεν ὑπὸ τὸν Δ. Πλαπούταν εἰς Λάλα, Τρίπολιν, Πάτρας, Δερβενάκια, εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Ναυπλίου, τὴν Κόρινθον καὶ ἐπὶ Ἰμβραήμ.

**Μπίτουσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Παρόρι* (βλ. λ.).

**Μπιτσάκις.** Πατριωτικὴ οἰκογένεια ἐκ τοῦ χωρίου Ἀγριλὲ τῆς Κρήτης, τῆς ὁποίας οἱ κυριώτεροι ἀντιπρόσωποι εἶναι οἱ ἑξῆς: —1) ***Γεώργιος***, διδάσκαλος (*Μπιτσοδάσκαλος*). Ἐγεννήθη ἐν Ἀγριλὲ καὶ τῷ 1847 μετῴκησεν εἰς Κακοδίκι, ἀφήσας ἀπογόνους, ἀπὸ τῶν ὁποίων προῆλθον οἱ *Τωμαδάκιδες* καὶ οἱ *Σταματάκιδες*. Ἐκ τῶν ἓξ υἱῶν του: —2) Ὁ *Ἐμμανουήλ*, ὁπλαρχηγὸς Κακοδικίου τῷ 1866, ἐφονεύθη κατὰ τὴν πολιορκίαν Καστελλίου Κισάμου. —3) Ὁ *Παναγιώτης*, μοναχὸς μετονομασθεὶς *Παρθένιος*, προεχειρίσθη ἐπίσκοπος Κισάμου-Σελίνου, ὅθεν μετετέθη εἰς Μακεδονίαν, ὅπου εἰργάσθη ἐθνικῶς καὶ ἀπέθανε. —4) Ὁ *Μιχαὴλ* (γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἀναγνώστης*) διεκρίθη ὡς μέλος τῆς ἐπαναστατικῆς συνελεύσεως τοῦ 1866.— 5-6) *Μᾶρκος* καὶ *Ἀντώνιος* ἀγωνισταὶ τοῦ 1866 καὶ 1878. Ε. Γ.

**Μπίτσιους** (Bitzius), ***Ἀλβέρτος.*** Ἑλβετὸς κληρικὸς καὶ συγγραφεὺς (1797—1854), γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἱερεμίας Γκοττχέλφ*. Ἔγραψεν εἰς ἑλβετικὴν διάλεκτον, τὰ ἔργα δ' αὐτοῦ διακρίνονται διὰ τὴν ἁδρότητα τοῦ ὕφους καὶ τὴν λεπτὴν ψυχολογικὴν ἀνάλυσιν. Ἐκ τῶν λογοτεχνημάτων τοῦ Μπέτσιους τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι τά: «Ἡ δυστυχία καὶ ἡ ἀθλιότης τῶν πτωχῶν» (1836), «Ἡ λύπη καὶ ἡ χαρὰ ἑνὸς διδασκάλου» (1838), «Ὁ καθρέπτης τῶν ἀγροτῶν» (1836), «Εἰκόνες καὶ θρῦλοι τῆς Ἑλβετίας» (1842—1846), «Ὁ ἀλκοολικὸς Ντούρσλι» (1846), «Ὁ γαιοκτήμων Οὔλι» (1849), «Διηγήματα καὶ εἰκόνες ἐκ τῆς ζωῆς τοῦ ἑλβετικοῦ λαοῦ». Α. Δ.

**Μπίτσκε** (Bicske) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὑγγαρίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Φέχερ (Βαϊσσενμπουργκ), ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Βιέννης-Βουδαπέστης. Ἔχει ἐργοστάσια ὑφασμάτων, ἀμπελῶνας καὶ ἀστεροσκοπεῖον εἰς τὰ πέριχωρα. Κάτοικοι (1920) 7.145. Χ. Δ.

**Μπίτσοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας συνοικισμοῦ *Πετρότοπος* (βλ. λ.).

**Μπίττερφελντ** (Bitterfeld) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῷ νομῷ Σαξωνίας τῆς Πρωσσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λόμπερ, παραποτάμου τοῦ Μοῦλντε. Παρ' αὐτὴν μεγάλα κοιτάσματα λιγνίτου, χρησιμοποιούμενα διὰ τὴν παραγωγὴν ρεύματος πρὸς φωτισμὸν τοῦ Βερολίνου. Ἔχει ἐργοστάσια μηχανημάτων, ἐλαίου, πλίνθων, ἀγγειοπλαστικῆς κλπ. Κάτ. (1924) 19.500. Χ. Δ.

**μπιφτέκι** (τό) (ἐκ τοῦ ἀγγλ. beefsteack = φέτα βοείου κρέατος). Εἶδος φαγητοῦ, πρὸς παρασκευὴν τοῦ ὁποίου ἐκλέγομεν βόειον φιλέτο, ἀφαιροῦμεν τὸ κόκκαλο καὶ τὰ νεῦρα, τὸ κόπτομεν εἰς φέτας βάρους 50 δραμίων καὶ πάχους ἑνὸς δακτύλου, κτυπῶμεν αὐτὰς διὰ μπαλτᾶ ἐπὶ σανιδίου, τὰς θέτομεν εἰς πιατέλλαν, τὰς ἀλείφομεν καὶ ἀπὸ τὰς δύο πλευρὰς μὲ βούτυρον ἢ λάδι (καὶ τὴν σχάραν μὲ λάδι), τὰς θέτομεν κατ' ἀρχὰς ἐπὶ δυνατῆς καὶ βραδύτερον ἐπὶ ἀσθενεστέρας φωτιᾶς, τὰς ψήνομεν ἐκ τῶν δύο πλευρῶν καὶ τὰς σερβίρομεν μὲ φρέσκο βούτυρο, μαϊντανό, χυμὸν λεμονίου καὶ πατάτες τηγανιτὲς ἄλλοτε. Ἄλλα εἴδη μπιφτεκίων εἶναι: τὰ τηγανιτά, τὰ κοπανιστὰ κλπ. Μ. ΔΡ.

**Μπίχαρ** (Bichar) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς Ρουμανίας ἐν τῇ προσαρτηθείσῃ ἀπὸ τοῦ 1918 χώρᾳ τοῦ Ἀρντεάλ (Τρανσυλβανία), ἥτις ἀνῆκεν εἰς τὴν Οὑγγαρίαν. Ἀποτελεῖ τὸ Α. τμῆμα τοῦ μεγάλου Τρανσυλβανικοῦ ὑψιπέδου καὶ περιβάλλεται ἀπὸ Β. καὶ Ν. ὑπὸ τῶν δύο βραχιόνων τοῦ ποταμοῦ Κέρες. Ὑψίστην κορυφὴν ἔχει τὸ ὄρος *Κουρκουμπέτα* (1.851 μ.). Χ. Δ.

**Μπιχάρ,** ἢ *Μπαχὰρ* (Behar ἢ Bihar) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μπεχάρ*).

**Μπιχὰρ-Ργκυὰλ-Πὸ** (Bihar-Rgyal-Po) *[Θιβετ. Μυθολ.]*. Θεὸς τῆς Θιβετίας, ἀνήκων εἰς τὴν χορείαν τῶν Ντραγκτσέντ. Λατρεύεται ὡς πάτρων τῶν μονῶν καὶ τῶν ναῶν, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἀπομακρύνει τοὺς δαίμονας. Παρίσταται μὲ τὸ πρόσωπον μορφάζον ἀγρίως, μὲ ἀπειλητικὴν τὴν ὄψιν, μὲ πλοκάμους πυρίνους καὶ κρατῶν εἰς τὰς χεῖρας κεραυνὸν καὶ τόξον. Α. Δ.

**Μπίχατς** (Bihac) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ἐπαρχία τῆς Νοτιοσλαβίας ἐν Βοσνίᾳ. Ἡ πόλις κεῖται παρὰ τὰ σύνορα τῆς Κροατίας ἐπὶ νησῖδος τοῦ ποταμοῦ Οὔνα, παραποτάμου τοῦ Σαύου, καὶ εἶναι σπουδαῖον στρατιωτικὸν κέντρον. Ἔχει ὡραῖον τέμενος μουσουλμανικὸν καὶ ναὸν γοτθικοῦ ρυθμοῦ. Κάτ. 6.201, τὸ πλεῖστον Μωαμεθανοί. Ἡ ἐπαρχία ἀποτελεῖται κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος ἐκ τῆς κοιλάδος τοῦ ποταμοῦ Οὔνα καὶ ἔχει ἔκτασιν 550 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 27.907 κατ., ἐξ ὧν τὰ 47% Μωαμεθανοί, οἱ δὲ λοιποὶ ὀρθόδοξοι Σέρβοι καὶ καθολικοὶ Κροᾶται. Χ. Δ.

**Μπιχὲ** (Bihé) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς ἐν τῇ Δ. Ἀφρικῇ πορτογαλλικῆς ἀποικίας τῆς Ἀγγόλας, ἀποτελοῦσα τμῆμα τῆς Μπενγκουέλας, ἔχουσα δὲ ἔκτασιν 6.500 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 371.000 περίπου κατοίκων, ἀποτελουμένων ἐκ φυλῶν ἡμιαγρίων Ἀφρικανῶν, ὧν τινες καὶ ἀνθρωποφάγοι. Καλύπτεται ὑπὸ ἐκτεταμένου ὑψιπέδου, ὕψους 1.600 κατὰ μέσον ὅρον μέτρων, διαρρέεται δὲ ὑπὸ πολλῶν ποταμῶν, ὧν σπουδαιότεροι οἱ *Κουάντζα* καὶ *Κέβ*. Τὸ ἔδαφος εἶναι εὔφορον, κατάλληλον πρὸς καλλιέργειαν σιτηρῶν, τὸ δὲ κλῖμα μετρίως ὑγιεινὸν διὰ τοὺς Εὐρωπαίους. Ἡ χώρα ἐξηρευνήθη ὑπὸ τῶν Κάμερουν (1875), Πίντο (1877) κ. ἄ., ἡ ἀκριβὴς ὅμως μελέτη καὶ ἀναγνώρισις αὐτῆς δὲν ἔχει συντελεσθῆ. Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται οἱ μὲν ἄρρενες μὲ τὸ ἐμπόριον, οἱ δὲ θήλεις μὲ πάσας τὰς λοιπὰς ἐργασίας.

Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα τῆς χώρας κεῖται ἐπὶ τῆς ἀπὸ τῆς παραλίας πόλεως Μπενγκουέλας πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Ἀφρικῆς γραμμῆς. Χ. Δ.

**Μπιὼ** (Biot), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Γάλλος φυσικὸς (βλ. λ. *Μπιὸ* Ἰωάννης-Βαπτιστής).

**μπιὼτ** (τό)· βλ. λ. *μπιγότα*.

**Μπιῶφορτ** (Beaufort). Ἀγγλικὴ προφορὰ ὀνόματος τριῶν οἰκογενειῶν εὐγενῶν τῆς Εὐρώπης (βλ. λ. *Μποφόρ*).

**Μπλαβάτσκυ,** ***Ἑλένα-Πετρόβνα.*** Ρωσὶς συγγραφεὺς καὶ μεγάλη ἀποκρυφίστρια, ἀπόγονος τῶν μεγάλων οἰκογενειῶν φὸν Χάαν φὸν Ρόττενστερν καὶ Φαντέεφ, γεννηθεῖσα εἰς τὸ Αἰκατερινοσλὰβ τῷ 1831. Ἀπὸ τῆς παιδικῆς της ἀκόμη ἡλικίας διεκρίνετο διὰ τὴν ἐξαιρετικὴν εὐαισθησίαν της καὶ τὰς ἐξαιρετικὰς ψυχικὰς διαθέσεις της. Συχνὰ ὡμίλει πρὸς πρόσωπα καὶ ὄντα, ἀόρατα εἰς τοὺς ἄλλους, τὰ ὁποῖα διεβεβαίωνεν ὅτι ἦσαν πλησίον της. Ἐγένετο αἰτία ἐκδηλώσεων τῶν πλέον περιέργων ὑπερφυσικῶν φαινομένων, ἰσχυρῶν κρούσεων, κωδωνοκρουσιῶν, μετακινήσεως ἐπίπλων καὶ ἄλλων ἀντικειμένων κλπ. Τὰ φαινόμενα αὐτά, αὐτόματα ἀρχικῶς, ὑπετάχθησαν ἀργότερον εἰς τὴν θέλησίν της. Δεκαεπταέτις ἐνυμφεύθη, ἀπὸ ἰδιοτροπίαν, τὸν ἑβδομηκονταετῆ περίπου στρατηγὸν Μπλαβάτσκυ, τὸν ὁποῖον καὶ ἐγκατέλειψεν ἀμέσως μετὰ τὸν γάμον της, ἀναχωρήσασα εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Ἤρχισε τότε ἡ μακρὰ σειρὰ τῶν ταξιδίων της, τὰ ὁποῖα διήρκεσαν 20 περίπου ἔτη. Ἐπεσκέφθη τὴν Εὐρώπην, τὴν Ἀμερικήν, τὴν Ἀσίαν καὶ ἰδίως τὰς Ἰνδίας καὶ τὸ Θιβέτ, εἰς τὰς ὁποίας καὶ ἐμυήθη εἰς τὸν ἀποκρυφισμόν. Τῷ 1873 ἀνεχώρησε δι' Ἀμερικήν, ὅπου συνηντήθη μετὰ τοῦ συνταγματάρχου Ὄλκοττ, μετὰ τοῦ ὁποίου καὶ ἵδρυσε τὴν Θεοσοφικὴν Ἑταιρείαν ἐν Ν. Ὑόρκῃ, τῆς ὁποίας τὸ κέντρον μετέφερε κατόπιν εἰς τὰς Ἰνδίας καὶ ὑπὲρ τῆς ὁποίας εἰργάσθη μέχρι τοῦ θανάτου της (1891). Τὰ κυριώτερα ἔργα της, γραμμένα εἰς τὴν ἀγγλικήν, εἶναι: «The Secret Doctrine», «Isis unveiled», «The voice of silence», «The key to Theosophy» etc. [Πρβλ. *A. P. Sinett*: «The life of H. P. Clavatzky».] Π. Π. Χ.

*Ἑλένα Μπλαβάτσκυ.*

**Μπλαβὲ** (Blavet) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας ἐν τῇ Ν. Βρετάνῃ, σχηματιζόμενος ἐντὸς τοῦ ἐδάφους τοῦ νομοῦ Κὸτ-ντὺ-Νὸρ καὶ διαρρέων τὰς πόλεις Ποντιβὺ, Ἐννεμπὸν καὶ Λοριάν, παρὰ τὴν ὁποίαν δέχεται τὸν παραπόταμον αὐτοῦ *Σκὸρφ*. Ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν παρὰ τὸ Πὸρ-Λουΐ, μετὰ ροῦν 140 χλμ., καὶ εἶναι πλωτὸς ἐπὶ μῆκος 60 χλμ. μεταξὺ τῶν πόλεων Ποντιβὺ καὶ Ἐννεμπόν. Χ. Δ.

**μπλάβος,** —η, —ο· δημοτ., κυανοῦς βαθύς: «μπλάβα μάτια» (ἴσως παλαιὸν ἰταλ. blavo, ὅθεν τὸ ἰταλ. biavo, ἑνετ. blo, γαλλ. bleu).

**Μπλαγκοβεστσίνσκ,** ἢ *Μπλαγκοβιεστσίνσκ* (Blagovechtchensk ἢ Blagoviechtchensk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ ἀνατολικῇ Σιβηρίᾳ, κειμένη παρὰ τὰ Μαντζουριανὰ σύνορα ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ζέϊα ἐγγὺς τῆς μετὰ τοῦ Ἀμοὺρ συμβολῆς αὐτοῦ. Κάτ. (1926) 61.205. Ἱδρύθη τῷ 1860 ὑπὸ τοῦ Ρώσου στρατηγοῦ Μουράβιεφ. Ὀφείλει δὲ τὴν ταχεῖαν ἀνάπτυξίν της εἰς τὰς ἐγγὺς χρυσοπηγὰς Σέλιντζα καὶ Ἀμγκοὺν. Εἶναι κέντρον πλουσίας εἰς σιτηρὰ περιοχῆς καὶ ἔχει σιδηροχυτήρια καὶ ἀλευροβιομηχανίαν, διεξάγει δὲ ζωηρότατον ἐμπόριον μετὰ τῆς Κίνας μέσον τοῦ Τσιτσικούρ. Πρωτεύουσα ἄλλοτε τοῦ παλαιοῦ ρωσικοῦ κυβερνείου Ἀμούρ, ἦτο κατὰ τοὺς πολέμους πρὸς ἐπιβολὴν τῆς μπολσεβικικῆς ἐπαναστάσεως κέντρον τῶν λευκῶν στρατευμάτων ἐν τῇ Ἄπω Ἀνατολῇ. Χ. Δ.

**Μπλαγκοβεστσίνσκι, Νικόλαος.** Διάσημος Ρῶσος λατινιστής, γεννηθεὶς τῷ 1820 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1891. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ παιδαγωγικὸν ἰνστιτοῦτον τῆς Πετρουπόλεως καὶ εἰς τὰ πανεπιστήμια τῶν Παρισίων καὶ τῆς Λειψίας. Ἐπιστρέψας εἰς Ρωσίαν διωρίσθη κατ' ἀρχὰς καθηγητὴς τῆς λατινικῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Καζάν, εἶτα δὲ εἰς τὸ τῆς Πετρουπόλεως. Συνέγραψεν: «Αἱ ἀρχαὶ τῆς λατινικῆς κωμῳδίας», «Ὁ χαρακτὴρ καὶ ἡ σημασία τῆς λατινικῆς φιλολογίας», «Ὁ σατιρικὸς ποιητὴς Πέρσιος», ἀλλὰ τὸ κύριον ἔργον αὐτοῦ εἶναι «Ὁ Ὁράτιος καὶ ἡ ἐποχή του», μεταφρασθὲν εἰς πλείστας γλώσσας. Ε. Β.

**Μπλαγοσφέτωφ, Γρηγόριος.** Ρῶσος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Καυκάσῳ τῷ 1826 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1894. Ἐσπούδασε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα εἰς τὴν ἱερατικὴν σχολὴν τοῦ Σαρατὼφ καὶ φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πετρουπόλεως. Εἶτα ἐδίδαξε τὴν ρωσικὴν γλῶσσαν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολήν. Παραιτηθεὶς τῆς δημοσίας ὑπηρεσίας ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ ἐδημοσίευσε πολιτικὰ ἄρθρα εἰς τὴν ἐφημερίδα «Ὁ υἱὸς τῆς πατρίδος», διαπνεόμενος ὑπὸ ἄκρως φιλελευθέρων ἀρχῶν. Εἶτα ἐξέδωκεν ἰδίαν ἐφημερίδα, τὸν «Ρωσικὸν λόγον», τοῦ ὁποίου ἡ λογοκρισία ἀπηγόρευσε τὴν ἔκδοσιν. Ὁ Μπλαγοσφέτωφ προέβη εἰς τὴν ἔκδοσιν νέας ἐφημερίδος, δι' ἧς ὑπεστήριζε τὴν παροχὴν φιλελευθέρου πολιτεύματος. Ἐκτὸς τῶν πολιτικῶν ἄρθρων, ἐδημοσίευσε πλῆθος φιλολογικῶν κριτικῶν καὶ μακρὰς μελέτας περὶ τοῦ Σέλλεϋ καὶ τῆς τραγῳδίας του «Βεατρίκης», «Περὶ Μακώλεϋ», «Τοκεβὶλλ», «Στούαρτ Μὶλλ», «Δάρβιν», «Κοστομάρωφ» κλπ. Ε. Β.

**μπλαδούχι** (τό) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *δρῦς ἡ χνοώδης*.

**Μπλὰζ ντὲ Μπυρὺ** (Blaze de Bury), ***Ἄγγελος-Ἐρρῖκος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Ἀβινιὸν τῷ 1813 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1888. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἐν τῷ κολλεγίῳ Μπουρμπόν, ἐδημοσίευσε τῷ 1834 τὴν ἔμμετρον κωμῳδίαν «Le souper du commandeur» εἰς τὴν «Revue des Deux Mondes», τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ἐπὶ τεσσαρακονταετίαν εἷς ἐκ τῶν κυριωτέρων συνεργατῶν, ὑπογραφόμενος κατ' ἀρχὰς Hans Werner. Ἀπὸ τοῦ 1834 μέχρι τοῦ 1851 καὶ ἀπὸ τοῦ 1864 μέχρι τοῦ 1883 κατεῖχε τὴν στήλην τῆς μουσικῆς κριτικῆς κυρίως ἐν τῷ περιοδικῷ. Τῷ 1840 ἐδημοσίευσε πλήρη μετάφρασιν τοῦ «Faust» τοῦ Γκαῖτε, ἐπανειλημμένως ἀνατυπωθεῖσαν, τῷ δὲ 1843 τῶν «Ποιημάτων» τοῦ ἰδίου. Ἠσχολήθη μὲ ποικίλα θέματα, ὅπως ἐμφαίνεται ἐκ τῶν συγγραμμάτων του: «Écrivains et poètes de l'Allemagne» (1846, τόμ. 2) «Les écrivains modernes de l'Allemagne» (1868), «Tableaux romantiques de littérature et d'art» (1878), «Alex. Dumas, sa vie, son temps, son oeuvre» (1885), «Souvenirs et récits des campagnes d'Autriche» (1854), «Les Koenigsmark» (1858), «Le chevalier de

Digitized by Google

Chasot» (1862), «Les femmes et la société au temps d'Auguste» (1875), «Le comte de Chambord, un mois à Venise (1850), «Hommes du jour» (1859), «Les salons de Vienne et de Berlin» (1861), «Les Bonshommes de cire» (1864). «Les musiciens contemporains» (1856), «Meyerbeer et son temps» (1864), «Musiciens du passé, du présent et de l'avenir» (1880), «Poésies complètes» (1842), «Intermèdes et Poèmes» (1859), «La légende de Versailles» (1870) κλπ. Τῷ 1869 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τοῦ Odéon, τὸ «Décameron», μονόπρακτον ἔμμετρον «βιβλιογραφικὴν» κωμῳδίαν, εἰς τὴν ὁποίαν ὁ κάτοχος ἑνὸς σπανίου ἀντιτύπου τοῦ Βοκκακίου ἀνταλλάσσει τοῦτο μὲ τὴν χεῖρα ἀνεψιᾶς μανιώδους βιβλιοφίλου. Ἐπίσης συνέγραψε τὸ λιμπρέττον τοῦ μελοδράματος τοῦ Meyerbeer «Ἡ νεότης τοῦ Γκαῖτε». Ἀφῆκε σημαντικὰ ἀπομνημονεύματα, τὰ ὁποῖα ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὴν «Revue internationale» τῆς Φλωρεντίας (1888). —Ω.

**Μπλὰζ** (Blaze), ***Φραγκῖσκος-Ἑρρῖκος-Ἰωσήφ***, ὁ ἐπιλεγόμενος *Καστὶλ-Μπλὰζ* (Castil-Blaze). Γάλλος δικηγόρος, μουσικὸς καὶ κριτικὸς (1784—1857). Ἐγένετο γνωστὸς διὰ τοῦ ἔργου του «Τὸ μελόδραμα ἐν Γαλλίᾳ» (1820). Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Λεξικὸν συγχρόνου μουσικῆς» (1821), «Μουσικὴ τῶν Γάλλων βασιλέων» (1832), «Φυσιολογία τοῦ Μουσικοῦ» (1844), «Ὁ χορὸς καὶ τὰ μπαλέττα ἀπὸ τοῦ Βάκχου μέχρι τῆς δεσποινίδος Ταλιόνι» (1832), «Ὁ Μολιέρος μουσικὸς» (1852, 2 τόμοι), «Λυρικὰ θέατρα τῶν Παρισίων» (1847—1856, 3 τόμοι). Ὁ Μπλὰζ εἰργάσθη καὶ ὡς κριτικὸς εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Παρισίων», εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων» κτλ. Ὁ υἱός του *Ἑρρῖκος*, βαρῶνος τοῦ Μπουρὺ (1813—1888), ἠσχολήθη ἐπίσης εἰς τὴν μουσικοκριτικήν, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Μουσικοὶ τοῦ παρελθόντος, τοῦ παρόντος καὶ τοῦ μέλλοντος» (1880) καὶ βιογραφίαν τοῦ Ροσσίνι. Γ. Σ.

**Μπλαί**, ἢ ***Μπλαὶ-ἐ-Σαὶντ-Λὺς*** (Blaye ἢ Blaye-et-Sainte-Luce, λατιν. Blavia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γιρόνδης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γιρόνδη, εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπορντώ. Ἐξάγει οἶνον, οἰνοπνευματώδη, ἔλαιον, σῖτον, γεώμηλα, κάρυα, οἰκοδομικὴν καὶ ναυπηγικὴν ξυλείαν κλπ. Κάτ. 4.240. Χ. Δ.

**Μπλαὶζ** (Blaise) *[Γεωγρ.]*. Δύο ποταμοὶ τῆς Γαλλίας. Ἐκ τούτων ὁ εἷς, μήκους 80 χλμ., εἶναι παραπόταμος τοῦ Μάρνη, ἀρδεύει τοὺς νομοὺς τῆς Καμπανίας, Ἄνω Μάρνη καὶ Μάρνη καὶ διασχίζει τὴν πόλιν Βασσύ. Ὁ δ' ἕτερος, μήκους 50 χλμ., εἶναι παραπόταμος τοῦ Ἔρ, ἀρδεύει τὸν νομὸν Ἔρ-ἐ-Λουὰρ καὶ διασχίζει τὰς πόλεις Μαιλλμπουὰ καὶ Ντρέ. Χ. Δ.

**Μπλαὶζ** (Blaise), ***Ἀδόλφος***. Γάλλος μουσουργός, γεννηθεὶς περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1770. Ἐκ τῶν πρώτων συνθετῶν κωμικῶν μελοδραμάτων, ἔδωκεν εἰς τὸ εἶδος τοῦτο τὰ ἔργα: «Ἡ Νινέττα στὴν Αὐλή» (1755), «Ἀννέττα καὶ Λουμπὲν (1762), «Ἰσαβέλλα καὶ Γερτρούδη» (1759) καὶ «Ὁ ἀπατηθεὶς ἀπατεὼν» (1754). Ἔγραψεν ἐπὶ πλέον συμφωνίας τινάς, μπαλλέτα, παρῳδίας, μελῳδίας κτλ. Γ. Σ.

**Μπλαῖζερ** (Blaeser), ***Γουσταῦος***. Γερμανὸς γλύπτης (1813—1874). Ἐμαθήτευσεν ἐν Κολωνίᾳ, Μαγεντίᾳ καὶ Βερολίνῳ, ἔνθα εἰσῆλθε τῷ 1834 εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Ράουχ, μεθ' οὗ συνειργάσθη εἰς τὴν ἐκτέλεσιν διαφόρων ἔργων, μάλιστα δὲ τοῦ μνημείου Φρειδερίκου τοῦ Β'. Ἐξειργάσθη πολυπληθῆ πλαστικὰ συμπλέγματα, ἀγάλματα καὶ προτομάς. Ἡ τεχνοτροπία του εἶναι ἐπιβλητικὴ καὶ εὐγενής. Μεταξὺ τῶν ἐξοχωτέρων ἔργων του καταλέγονται: τὸ ἄγαλμα τῆς αὐτοκρατείρας Ἀλεξάνδρας-Θεοδωρόβνας, «Πολεμιστὴς μαχόμενος μὲ τὴν βοήθειαν τῆς Ἀθηνᾶς», «Ὁ ἀπόστολος Ματθαῖος», «Ὁ προφήτης Δανιήλ», «Ὁ Καρολομάγνος», τὸ μνημεῖον τοῦ Χοῦμπολτ, τὸ μνημεῖον τοῦ Ἑγέλου κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπλαίηκ** (Blake), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος ποιητής, ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς ἐν Λονδίνῳ τῷ 1757 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1827. Ἐμαθήτευσε παρὰ τοῖς Basire, Flaxmam, Fussli καὶ Stothard καὶ ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν διὰ συλλογῆς σονέττων συνοδευομένων ὑπὸ ἐμμέτρου κειμένου καὶ τιτλοφορουμένων: «Ποιήματα ἀθῳότητος καὶ πείρας». Βραδύτερον ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν πνευματιστικὴν κίνησιν, ἀπήχησις δὲ ἰσχυρὰ τῆς νέας ταύτης κατευθύνσεως τοῦ πνεύματός του ὑπάρχει σχεδὸν εἰς ὅλα τὰ μεταγενέστερα ἔργα του, ἐκ τῶν ὁποίων ἀναφέρομεν τὰ δέκα ἐξ συνθέσεις τῶν «Πυλῶν τοῦ Παραδείσου» (1793), εἰργασμένας, ὡς διετείνετο ὁ Μπλαίηκ, διὰ μεθόδου ἀποκαλυφθείσης εἰς αὐτὸν ὑπὸ τῆς ψυχῆς τοῦ πατρός του. Ἕτερα ἔργα τοῦ Μπλαίηκ, ὀφειλόμενα εἰς τὴν αὐτὴν ψυχικὴν διάθεσιν καὶ εἰργασμένα κατὰ τὴν αὐτὴν μέθοδον, εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Τὸ βιβλίον τοῦ Thel» (1787), «Ὁ γάμος τοῦ Οὐρανοῦ καὶ τοῦ Ἅδου» (1790), «Ὁράματα τῶν κορῶν τῆς Ἀλβιόνος» (1793), «Εὐρώπη, τὸ βιβλίον τοῦ Urizen» (1794), «Τὸ βιβλίον τοῦ Los», «Τὸ βιβλίον τῆς Ahania» (1795), «Μίλτων» (1809) «Ἱερουσαλὴμ» (1820). Ἐπὶ πλέον ὁ Μπλαίηκ εἰκονογράφησε τὰς «Νύκτας» τοῦ Γιοὺγκ καὶ τὸν «Τάφον» τοῦ Blair καὶ ἐξέδωκε τὰ «Ποιητικὰ σχεδιάσματα» τῷ 1783. Ἀπὸ ὅλην αὐτὴν τὴν παραγωγὴν ἀναδίδεται ἄρωμα ὑπερκοσμίου ἀγνότητος· διὰ τοῦτο ὁ Μπλαίηκ κατέχει ὅλως ἐξαιρετικὴν θέσιν μεταξὺ τῶν Ἄγγλων μυστικιστῶν. Ἐκδόσεις τῶν ἔργων του ἐγένοντο οἱ ἀκόλουθοι: «The Writings of William Blake» (3 τόμοι, 1925), «Poetry and Prose» (1 τόμος, 1927), «Prophetic Writings» (2 τόμοι 1926), «Lyrical poems» (1906), «Poetical Works» (1913), «Poems and Prophecies» (1927). Βιογραφίας καὶ κριτικὰς περὶ αὐτοῦ ἔγραψαν πάμπολλοι, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ Swinburne, ὁ Gilchrist, ὁ Symons, ὁ Damon, ὁ Wicksteed, ὁ Plowman καὶ ὁ Burdett. Ι. Μ. Π.

— **Μπλαίηκ** (Blake), ***Ροβέρτος***. Διάσημος Ἄγγλος ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1599 ἐν Bridgewater. Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸν κατὰ ξηρὰν στρατόν, διακριθεὶς εἰς πολλὰς μάχας. Τῷ 1649 προεχειρίσθη ὑπὸ τοῦ Κρόμβελ εἰς ναύαρχον, καίτοι παντελῶς ἠγνόει τὰ τοῦ ναυτικοῦ ἐπαγγέλματος. Οὐχ ἧττον ἐπεδείξατο μεγάλην στρατηγικὴν ἰδιοφυΐαν, κατορθῶν πάντοτε νὰ ἐξέρχηται νικητής. Τῷ 1652 ἐπολέμησεν ἐπιτυχῶς κατὰ τοῦ ὀλλανδικοῦ στόλου, διοικουμένου ὑπὸ τῶν διασήμων Ὀλλανδῶν ναυάρχων Ρόϋτερ καὶ Τρόμπ, καίτοι δὲ διέθετεν ὀλιγώτερα πλοῖα τῶν ἀντιπάλων του, κατώρθωσε νὰ διασπάσῃ τὴν γραμμὴν των καὶ τοὺς ἀποκρούσῃ. Εἰσπλεύσας τῷ 1654 εἰς Μεσόγειον, ἐτρομοκράτησε τοὺς Βαρβαρέσσους πειρατὰς τῶν ἀκτῶν τῆς Ἀλγερίας, Τύνιδος καὶ Τριπολίτιδος, κατορθώσας τὴν ἀπελευθέρωσιν χιλιάδων αἰχμαλώτων. Ἀποκλείσας μετὰ ταῦτα τὸ Κάδιξ, ᾐχμαλώτισε δύο ἰσπανικὰς μοίρας, φερούσας τοὺς ἐκ τῶν ἀποικιῶν θησαυρούς. Ἀπέθανε τῷ 1657, ταφεὶς εἰς τὸ Οὐεστμίνστερ. Γ. Ν. Ν.

Ροβέρτος Μπλαίηκ.

**Μπλαίην** (Blaine), ***Ἰάκωβος - Τζίλλεπου***. Βορειοαμερικανὸς πολιτικὸς (1830—1893). Ἀρχηγὸς τῶν ρεπουμπλικάνων, ἐγένετο δὶς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, ἐγκαινιάσας πολιτικὴν στρεφομένην κατὰ τῆς Ἀγγλίας (1880—1881 καὶ 1887). Ἀφῆκε λίαν ἐνδιαφέρουσαν αὐτοβιογραφίαν: «Twenty years of congress». Α. Δ.

**Μπλαίκνεϋ** (Blakeney), ***Γουλιέλμος, βαρῶνος***—. Ἄγγλος στρατιωτικὸς (1672—1761). Τῷ 1747 ὁ Γεώργιος Β' διώρισεν αὐτὸν στρατιωτικὸν διοικητὴν τῆς Μινόρκας. Κατὰ τὸν Ἑπταετῆ πόλεμον παρέτεινε τὴν ἄμυναν τοῦ φρουρίου Ἁγίου Φιλίππου κατὰ τῶν ἐπιδραμόντων εἰς τὴν νῆσον Γάλλων ἐπὶ ἕνα μῆνα, μέχρι τοῦ κατάπλου ἀγγλικῆς μοίρας ὑπὸ τὸν Τζὼν Μπίγκ. Τὴν 20 Μαΐου 1756 συνήφθη μάχη ἀμφίρροπος, μετὰ τὴν ὁποίαν ὁ γαλλικὸς στρατὸς ἐγκατέλιπε τὴν νῆσον. Κατὰ τὴν δευτέραν ἐπιδρομὴν τῶν Γάλλων κατὰ τῆς Μινόρκας, ὁ Μπλαίκνεϋ, μετὰ ἡρωϊκὴν ἄμυναν, ἠναγκάσθη ἐν τέλει νὰ παραδώσῃ τὸ φρούριον εἰς τοὺς Γάλλους. Ὁ Μπλαίκνεϋ μετὰ τῆς φρουρᾶς του ὡδηγήθη εἰς Γιβραλτάρ, ὅπου ἀφέθη ἐλεύθερος. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του ἐτιμήθη ὡς ἐθνικὸς ἥρως. Α. Δ.

**Μπλαὶμ** (Bloem), ***Βάλτερ***. Γερμανὸς δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1868. Διετέλεσε σκηνοθέτης ἐν Βερολίνῳ καὶ Στουττγάρδῃ, ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον (1914—1918) καὶ ἔγραψε θεατρικὰ ἔργα καὶ μυθιστορήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὸ εἰς τὸν πόλεμον τοῦ 1870—1871 ἀναφερόμενον: «Τὸ σιδηροῦν ἔτος». Ἐδημοσιεύθησαν ἐπίσης τὰ διηγήματα: «Χώρα τοῦ ἡλίου» (1908), «Λαὸς ἐναντίον λαοῦ» (1912), τὰ πολεμικὰ ἡμερολόγια: «Προέλασις» (1916), «Σῆμα θυέλλης» (1919), «Παγκόσμιος πυρκαϊὰ» (1922). «Τεύτονες» (1926). —Ω.

**Μπλαῖμεν** (Bloemen), ***Ἰωάννης*** ἢ ***Ἰούλιος-Φράντς βάν***, ὁ ἐπιλεγόμενος *Orizzonte*. Φλαμανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, ἀδελφὸς τοῦ *Πέτρου βὰν Μπλαῖμεν* (1656—1748). Εἰργάσθη ἐν Ρώμῃ, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Διεκόσμησε πολυάριθμα ἰταλικὰ παλάτια, ἐν οἷς καὶ τὸ παπικὸν casino τοῦ Monte-Cavallo καὶ ἐξεπόνησε πίνακας εἰκονίζοντας κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπόψεις τῆς ρωμαϊκῆς ἐξοχῆς. Ι.Μ.Π.

—**Μπλαῖμεν** (Bloemen) ***Πέτρος βὰν***—, ὁ ἐπονομαζόμενος *Standaert*. Φλαμανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀμβέρσῃ (1651—1720). Διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν ζῴων, μάλιστα δὲ τῶν ἵππων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσεται ἡ «Νορμανδικὴ οἰκογένεια». Πίνακές του ἀπόκεινται εἰς τὰ μουσεῖα τῆς Λυών, τῆς Νάντης, τῆς Ἀβινιόν, τῆς Βαλανσιὲν καὶ τῆς Δρέσδης. Ι. Μ. Π.

**Μπλαίμφοντάϊν** (Bloemfontein) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς Ὀράγγης ἐν Νοτίῳ Ἀφρικῇ (βλ. λ. *Μπλούμφοντάϊν*).

**Μπλαὶν** (Blain) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Κάτω Λίγηρος, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀπὸ Νάντης εἰς Βρέστην διώρυγος, εἰς ἀπόστασιν 43 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σατωμπριάν. Ἐρείπια ἀνακτόρου ΙΑ' αἰῶνος, κεραμοποιεῖα, πλινθοποιεῖα κλπ. Κάτοικοι 5.880. Χ. Δ.

**Μπλαινάβον**, ἢ ***Μπλαινάφον*** (Blaenavon ἢ Blaenafon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Μόνμαουθ, κειμένη 10 χλμ. πρὸς Β. ΒΔ. τοῦ Πόντυπουλ. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἔχει σπουδαιότατα γαιανθρακωρυχεῖα, βιομηχανίαν σιδήρου καὶ χάλυβος καὶ ὑψικαμίνους. Κάτ. 12.010. Χ. Δ.

**Μπλαινβὶλ** (Blainville), ***Ἑρρῖκος-Μαρία Ντυκορταὶ ντὲ*** —. Γάλλος φυσικὸς (1777—1850). Ἂν καὶ ἐπεδόθη ἀργά, εἰς ἡλικίαν 27 ἐτῶν, εἰς τὴν ἐπιστήμην, κατώρθωσεν ἐντὸς μικροῦ διαστήματος νὰ προαγάγῃ τὴν μόρφωσίν του, μετὰ διετίαν δὲ ἀνεκηρύχθη διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς. Μικρὸν μετὰ ταῦτα διωρίσθη ἐπιμελητὴς τοῦ περιφήμου φυσιοδίφου Κυβιέρου εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ τὸ Μουσεῖον τῆς Φυσικῆς, Ἱστορίας. Ὑπερηφάνου καὶ εὐεξάπτου χαρακτῆρος, ἦλθε ταχέως εἰς ῥῆξιν πρὸς τὸν διδάσκαλόν του, παραιτηθεὶς δέ, διωρίσθη μετ' ὀλίγον (1812) καθηγητὴς τῆς ἀνατομίας καὶ ζῳολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον, ἀπὸ τῆς ἕδρας τοῦ ὁποίου κατεπολέμει συχνὰ τὰς γνώμας τοῦ διδασκάλου του. Τῷ 1825 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Λασεπέντ. Μετὰ πενταετίαν διωρίσθη εἰς τὸ Μουσεῖον Φυσικῆς Ἱστορίας καθηγητὴς τῆς κογχυλιολογίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1832, ὁπότε ἀπέθανεν ὁ Κυβιέρος, τῆς συγκριτικῆς ἀνατομίας. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του εἶναι: «Ἐγχειρίδιον μαλακιολογίας καὶ κογχυλιολογίας» (1825), «Εἰσαγωγὴ εἰς μίαν νέαν διαίρεσιν τοῦ ζωϊκοῦ βασιλείου» (1816), «Περὶ τοῦ ὀργανισμοῦ τῶν ζῴων» (1822), «Ὀστεογραφία» (1839), σπουδαιότατον σύγγραμμα καταλειφθὲν ἡμιτελές, «Γενικὴ καὶ συγκριτικὴ φυσιολογία» κλπ. Χ. Δ.

**Μπλαὶρ** (Blair), ***Οὖγος***. Σκῶτος φιλόλογος καὶ ἱεροκήρυξ (1718—1800). Διορισθεὶς τῷ 1761 καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου, κατήρτισε παραδόσεις σχετικὰς πρὸς τὰς ἀρχὰς τῆς λογοτεχνικῆς συνθέσεως, ἡ ἐπιτυχία δ' αὐτοῦ ὑπῆρξε τοιαύτη, ὥστε ὁ βασιλεὺς ἵδρυσε δι' αὐτὸν ἕδραν φιλολογίας καὶ λογοτεχνίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἐδιμβούργου. Τῷ 1783 ὁ Μπλαὶρ ἐδημοσίευσε περίληψιν τῶν παραδόσεών του ὑπὸ τὸν τίτλον «Παραδόσεις σχετικαὶ πρὸς τὴν ρητορικὴν καὶ τὴν λογοτεχνίαν». Τὸ ἔργον τοῦτο ἐγένετο παγκοσμίως γνωστὸν καὶ μετεφράσθη εἰς πολλὰς γλώσσας. Ὁ Μπλαὶρ θεωρεῖται εἷς τῶν μεγαλυτέρων ἱεροκηρύκων τῆς Ἀγγλίας, παραβάλλεται δὲ πρὸς τοὺς Γάλλους Φενελόν, Μποσουὲ καὶ Μπουρνταλοῦ. Α. Δ.

— **Μπλαὶρ** (Blair), ***Ροβέρτος***. Σκῶτος ποιητὴς (1699—1746). Τὸ μόνον ἄξιον λόγου ἔργον του εἶναι ὁ «Τάφος», διακρινόμενον διὰ τὸν πλοῦτον καὶ τὴν ὡραιότητα τῶν εἰκόνων του. Τὸ ποίημα τοῦτο ἐνέπνευσε τὸν Γουλιέλμον Μπλαίηκ νὰ προβῇ εἰς τὴν ἐκτέλεσιν δώδεκα εἰκονογραφικῶν ἰχνογραφημάτων, τὰ ὁποῖα, χαραχθέντα ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου Σκιαβονέττι, ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1808. Α. Δ.

**Μπλὰκ** (Black), ***Ἀδάμ***. Ἄγγλος ἐκδότης καὶ πολιτικὸς (1784—1874). Ἐδημοσίευσε τὴν «Encyclopaedia Britannica», εἰς ἣν ἔγραψεν ἄρθρα τινὰ καὶ ὑπῆρξεν ἰδιοκτήτης τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τοῦ Ἐδιμβούργου». Ἐκλεγεὶς δήμαρχος τοῦ Ἐδιμβούργου, διεδέχθη τῷ 1856 εἰς τὴν βουλὴν τῶν Κοινοτήτων τὸν Μακώλεϋ. Α. Δ.

— **Μπλὰκ** (Black), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος μυθιστοριογράφος (1841—1898). Ἐδημοσίευσε σειρὰν μυθιστορημάτων, ἅτινα διακρίνονται διὰ τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους καὶ τὸ βάθος τῶν ἰδεῶν. Τὰ ἀξιολογώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι τά: «Μὲ μεταξωτὸ φόρεμα» (1808), «Κίλμενυ» (1870), «Μία κόρη τοῦ Χὲθ» (1871), «Περίεργοι περιπέτειαι ἑνὸς Φαέθοντος», ὅπερ θεωρεῖται ὡς τὸ ἀριστούργημά του (1872), «Τὰ ἄσπρα φτερὰ» (1880) καὶ «Σαμπίνα Τζέμπρα» (1887). Α. Δ.

— **Μπλὰκ** (Black), ***Ἰωσήφ***. Σκῶτος χημικὸς γεννηθεὶς τῷ 1728 εἰς τὸ Μπορντώ. Ἀπὸ τοῦ 1756 ὑπῆρξε καθηγητὴς εἰς Γλασκώβην καὶ ἀπὸ τοῦ 1766 εἰς Ἐδιμβοῦργον, ὅπου καὶ ἀπέθανε (1799). Ἀνεκάλυψε τὸ διοξείδιον τοῦ ἄνθρακος, ὅπερ εἶχεν ὀνομάσει «fixed air», δηλαδὴ δεσμευμένον ἀέρα. Σ. Γ.

—**Μπλὰκ** (Blacque), ***Ἰωάννης***. Γάλλος δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1794. Ἐγκατασταθεὶς ἐν Σμύρνῃ, ἵδρυσε τῷ 1820 τὴν ἐφημερίδα «Le Courrier d' Orient», ἥτις συνετάσσετο ὑπὸ πνεῦμα φιλότουρκον. Τῷ 1827, συνεπείᾳ ἀφ-

Digitized by Google

θρου, εἰς τὸ ὁποῖον ἐχαρακτήρισεν ὡς μέγα πολιτικὸν σφάλμα τὴν καταστροφὴν τοῦ τουρκικοῦ στόλου κατὰ τὴν ναυμαχίαν τοῦ Ναυαρίνου, συνελήφθη κατὰ διαταγὴν τοῦ ναυάρχου Δὲ Ρινὺ καὶ ἤχθη ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ πολεμικοῦ «Σειρήν», ἐνῷ συγχρόνως κατεστρέφοντο τὰ πιεστήρια τῆς ἐφημερίδος του. Μεταβὰς κατόπιν εἰς Παρισίους, ὑπέβαλεν ἀναφορὰν εἰς τὴν βουλὴν καὶ εἰς τὰ δικαστήρια, τὰ ὁποῖα τὸν ἐδικαίωσαν. Κληθεὶς ἐκεῖθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν ὑπὸ τοῦ σουλτάνου Μαχμοὺτ Β΄, ἔλαβε τὸ προνόμιον τῆς ἐκδόσεως τῆς πρώτης γαλλικῆς ἐφημερίδος ἐν τῇ πρωτευούσῃ τῆς Τουρκίας ὑπὸ τὸν τίτλον «Le Moniteur Ottoman». Τῷ 1837 ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ σουλτάνου ἐπὶ εἰδικῇ ἀποστολῇ πρὸς τὰς κυβερνήσεις Ἀγγλίας καὶ Γαλλίας, κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὁποίας ἀπεβίωσεν.
Ὁ υἱός τοῦ Μπλάκ, πολιτογραφηθεὶς Τοῦρκος, εἰσῆλθεν εἰς τὴν διπλωματικὴν ὑπηρεσίαν τῆς Τουρκίας καὶ διετέλεσε πρέσβυς παρὰ τῷ βασιλεῖ τῆς Σαρδηνίας. Ἐκ τῶν δύο υἱῶν τοῦ Μπλὰκ τούτου ὁ μὲν εἷς ἔγινεν ἀξιωματικὸς τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ συμμετασχὼν εἰς τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1897, ὁ δὲ ἄλλος εἰσῆλθεν εἰς τὴν διπλωματίαν, φθάσας μέχρι τῆς θέσεως συμβούλου πρεσβείας. Ἀπὸ τοῦ 1923 ἐτέθη ἐκτὸς ὑπηρεσίας. Ν. Μ.

— **Μπλὰκ** (Black), ***Θηρεσία***· βλ. *Μακρῆ* Θηρεσία.

**Μπλακὰς** (Blacas). Γάλλος τρουβαδοῦρος, πυργοδεσπότης τοῦ Ὦπς ἐν Προβηγγίᾳ, ἀποθανὼν τῷ 1237. Ἀνῆκεν εἰς εὐγενῆ καὶ ἰσχυρὰν οἰκογένειαν τοῦ τόπου του, εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ ὁποίου ἀναφέρεται, διαδραματίσας σημαίνοντα ρόλον ἀπὸ τοῦ 1176 καὶ ἐφεξῆς. Ὡς τρουβαδοῦρος εἶναι γνωστὸς ὄχι τόσον διὰ τὰς ἰδίας του ποιήσεις, ἐξ ὧν ἐλάχισται ἄλλως τε περιεσώθησαν, ὅσον διὰ τὴν γενναιόδωρον προστασίαν του πρὸς τοὺς συγχρόνους του Προβηγκιανοὺς ποιητάς, οἱ περισσότεροι τῶν ὁποίων ἀφιέρωσαν εἰς αὐτὸν ἐνθουσιώδη λυρικὰ ἐγκώμια.

— **Μπλακὰς ντ' Ὦπς** (Blacas d' Aulps), ***Λουδοβῖκος-Κάρολος,*** *δοὺξ* τοῦ—. Γάλλος ἀρχαιολόγος (1815—1866), υἱὸς τοῦ *Πέτρου-Λουδοβίκου* (βλ. κατωτ.). Ἐκπατρισθεὶς μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830, διῆλθε τὴν νεότητά του ἐν Αὐστρίᾳ, μόνον δὲ τῷ 1844 ἐπέστρεψε καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις. Κληρονομήσας ἀπὸ τοῦ πατρός του τὴν ἀγάπην πρὸς τὴν ἀρχαιολογίαν καὶ τὰς πολυτίμους ἐκείνου συλλογάς, ἐπηύξησε ταύτας διὰ νέων ἀποκτημάτων, ἰδίως ἐγχαράκτων λίθων, νομισμάτων, ἐγχρώμων ἀγγείων, κοσμημάτων κλπ. Διὰ τῶν συλλογῶν του τούτων, ἀλλὰ καὶ διὰ χρηματικῶν ἀφ' ἑτέρου ἐνισχύσεων, ἐβοήθησε πολλοὺς σοφοὺς καὶ καλλιτέχνας εἰς τὰς περὶ τὴν ἀρχαίαν τέχνην ἐρεύνας των. Ὁ ἴδιος ἔγραψε: «Ρωμαϊκὰ νομίσματα τῆς ἐποχῆς τῆς αὐτοκρατορίας, κοπέντα μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Νέρωνος», «Ἐπὶ τῆς ἀνακαλύψεως κτερισμάτων εἰς ἀρχαίους τάφους περὶ τὸ Ἄλμπανο» (Mémoires de la Société des Antiquaires de France, τ. 28ος), «Σημείωμα περὶ ἀγγείων εὑρεθέντων εἰς Γιβραλτὰρ» (Revue archéologique, 1865) κλπ. Ἀλλὰ τὸ κεφαλαιῶδες ἔργον τοῦ Μπλακὰς ὑπῆρξεν ἡ εἰς τὴν γαλλικὴν μετάφρασις τῆς «Ἱστορίας τοῦ Ρωμαϊκοῦ νομίσματος» τοῦ *Θ. Μόμμσεν*, ἐκδοθεῖσα ἐν Παρισίοις ἀπὸ τοῦ 1865 μέχρι τοῦ 1875 εἰς 4 τόμους, ἐξ ὧν ὁ τέταρτος, ἀποθανόντος τοῦ Μπλακάς, συνεπληρώθη ὑπὸ τοῦ βαρώνου J. de Witte. Τῷ 1866 αἱ ἀρχαιολογικαὶ συλλογαὶ αὐτοῦ ἠγοράσθησαν ὑπὸ τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου ἀντὶ 1.200.000 χρυσ. φράγκων.
[Πρβλ. *J. de Vitte*, «Σημείωμα περὶ τοῦ δουκὸς τοῦ Μπλακὰς» ἐν προλόγῳ τοῦ Δ΄ τόμου τῆς μεταφράσεως τῆς «Ἱστορίας τοῦ ρωμαϊκοῦ νομίσματος» τοῦ Θ. Μόμμσεν.]

—**Μπλακὰς ντ' Ὦπς** (Blacas d'Aulps), ***Πέτρος-Λουδοβῖκος***, *κόμις* καὶ εἶτα *δοὺξ* τοῦ—. Γάλλος διπλωμάτης καὶ πολιτικὸς (1771—1839), μεμακρυσμένος ἀπόγονος τοῦ τρουβαδούρου Μπλακάς. Συνδεόμενος στενῶς μὲ τὸν Λουδοβῖκον ΙΗ΄, τὸν συνώδευσε μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως εἰς Λονδῖνον, ἐπανελθὼν δὲ μετ' αὐτοῦ κατὰ τὴν πρώτην παλινόρθωσιν ἐγένετο ὑπουργός, ἀνώτατος βαθμοῦχος τῆς αὐλῆς καὶ γενικὸς ἐπιμελητὴς τῶν κτηρίων τοῦ στέμματος. Μετὰ τὴν ἀπόβασιν τοῦ Ναπολέοντος εἰς τὸν κόλπον Χουάν, συνώδευσε τὸν Λουδοβῖκον εἰς Γάνδην, μετὰ δὲ τὴν δευτέραν παλινόρθωσιν ἀπεστάλη πρεσβευτὴς εἰς Νεάπολιν, ὅπου διεπραγματεύθη τὸν γάμον τοῦ δουκὸς ντὲ Μπερρὺ μετὰ τῆς πριγκιπίσσης Καρολίνας καὶ κατόπιν εἰς Ρώμην, ὅπου διηύθυνε τὰς διαπραγματεύσεις τοῦ κονκορδάτου τοῦ 1817. Μετὰ τὸ 1824 ἀπεσύρθη τοῦ πολιτικοῦ σταδίου. Τῷ 1830 ἠκολούθησεν εἰς τὴν ἐξορίαν τὸν Κάρολον Ι΄, εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ὁποίου ἔθεσεν ὁλόκληρον τὴν περιουσίαν του, παρέμεινε δ' ἔκτοτε μετ' αὐτοῦ εἰς Γκόριτς τῆς Αὐστρίας, ὅπου καὶ ἀπέθανεν.
Ὁ Μπλακὰς ντ' Ὦπς διεκρίνετο διὰ τὴν εὐρεῖαν αὐτοῦ μόρφωσιν, ἦτο δὲ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Εἶχεν ἰδίᾳ ζωηρότατον ἐνδιαφέρον διὰ τὴν ἀρχαιολογίαν καὶ τὴν ἀρχαίαν τέχνην. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τοῦ «Αἰγυπτιακοῦ μουσείου», ἐδημοσίευσεν ἰδίαις δαπάναις τὰ «Ἐτρουσκικὰ δοχεῖα τῆς Πανόφκα» καὶ τὰ «Ἀραβικὰ παλαιογραφικὰ μνημεῖα» τοῦ ἀββᾶ Λανσὶ καὶ ἐνίσχυσε χρηματικῶς πολλοὺς σοφοὺς ἐρευνητάς, ἐν οἷς καὶ τὸν Σαμπολιόν. Εἶχε δὲ καὶ ὁ ἴδιος ὡραίαν ἀρχαιολογικὴν συλλογὴν ἐγχαράκτων λίθων καὶ σπουδαῖα κειμήλια μουσουλμανικῆς τέχνης, τῶν ὁποίων περιγραφὴν ἐδημοσίευσεν ὁ Ρεϊνὼ εἰς 2 τόμους (Παρίσιοι 1828). — Ω.

**Μπλάκγουντ** (Blackwood), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος ἐκδότης (1776—1834). Ἵδρυσε τῷ 1804 ἐν Ἐδιμβούργῳ ἐκδοτικὸν οἶκον, τοῦ ὁποίου κυριωτέρα ἐπιχείρησις ὑπῆρξεν ἡ ἔκδοσις τοῦ περιοδικοῦ «Blackwood's Edimburgh Magazine», εἰς ὃ ἐδημοσιεύοντο ἄρθρα λογοτεχνικά, πολιτικὰ καὶ φιλοσοφικά, συντασσόμενα ὑπὸ τῶν μεγαλυτέρων συγγραφέων τῆς Ἀγγλίας. Α. Δ.

— **Μπλάκγουντ** (Blackwood), *σὲρ* ***Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος ναύαρχος (1770—1832). Διεκρίθη εἰς πάντας τοὺς ἀπὸ τοῦ ἔτους 1792 μέχρι τοῦ 1815 ἐναντίον τῆς Γαλλίας πολέμους. Κατὰ τὴν ναυμαχίαν τοῦ Τραφαλγκάρ, κυβερνήτης ὢν τοῦ «Εὐρυάλου», εὑρέθη ἐπὶ τῆς ναυαρχίδος «Νίκη», καθ' ἣν στιγμὴν ἐπληγώθη θανασίμως ὁ ναύαρχος Νέλσων. Τῷ 1808 ἐκινδύνευσε σοβαρῶς κατὰ τὸν βίαιον εἴσπλουν εἰς τὰ στενὰ τῶν Δαρδανελλίων, ὅτε τὸ πλοῖόν του κατεστράφη ἐκ τυχαίου περιστατικοῦ. Γ. Ι. Β.

**Μπλακγουῶτερ** (Blackwater = *μέλαν ὕδωρ*) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν ποταμῶν τῶν δύο μεγάλων νήσων τοῦ Ἡνωμένου Βρεττανικοῦ βασιλείου, ὧν σπουδαιότεροι εἶναι οἱ ἑξῆς: —1) Ἐν Ἰρλανδίᾳ, πηγάζων ἐκ τῶν ὀρέων Κὸρκ καὶ Κέρρυ, διαρρέων τὸ Μῶνστερ καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 160 χλμ. εἰς τὸν κόλπον Γυώγκαλ —2) Ἐν Ἰρλανδίᾳ ἐπίσης, ἀρδεύων τὴν κομιτείαν Τάϋρον καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 80 χλμ. εἰς τὸν Λόουγκ Νήγκ.—3) Ἐν Ἀγγλίᾳ, πηγάζων ἐκ τοῦ Δρυμοῦ τοῦ Σάφφρον ἐν τῇ κομιτείᾳ Ἔσσεξ καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν Βόρειον Θάλασσαν ἔναντι τῆς νήσου Μέρσεη μετὰ ροῦν 65 χλμ. Χ. Δ.

**Μπλακιὲρ** (Blaquière), ***Ἐδουάρδος***. Ἄγγλος φιλέλλην (βλ. λ. *Βλακιὲρ* Ἐδουάρδος).

**Μπλάκκι** (Blackie), ***Ἰωάννης Στούαρτ***. Ἄγγλος ἑλληνιστὴς καὶ φιλόσοφος (1809—1895). Κατ' ἀρχὰς δικηγόρος, διωρίσθη βραδύτερον καθηγητὴς εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ἐδιμβούργου, εἶτα δὲ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς αὐτῆς πόλεως, εἰς ὃ εἰσήγαγε τὴν διδασκαλίαν τῆς νεοελληνικῆς. Ἔγραψε πλῆθος ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται: «Ἡ προφορὰ τῆς ἑλληνικῆς» (1852), «Ἄσματα καὶ θρῦλοι τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος» (1857), «Ἀγγλικὰ καὶ λατινικὰ ποιήματα» (1860), «Κριτικαὶ διατριβαὶ» (1866), «Φιλοσοφικὰ καὶ ἀρχαιολογικὰ σημειώματα» (1866), «Ὁ Ὅμηρος καὶ ἡ Ἰλιὰς» 1866), «Musa Burschicosa», ἀπάνθισμα λυρικῶν ραψῳδιῶν, «Αἱ τέσσαρες φάσεις τῆς ἠθικῆς» (1871), «Φυσικὴ θεωρία τοῦ ἀθεϊσμοῦ» (1877), «Οἱ σοφοὶ τῆς Ἑλλάδος» (1877), «Τὰ ᾄσματα τῆς θρησκείας καὶ τῆς ζωῆς» (1876), «Ἀλλαβόνα» (1882), «Τί διδάσκει ἡ ἱστορία», «Θέματα ἠθικῆς καὶ κοινωνικοῦ ἐνδιαφέροντος» (1890) κλπ. Πολλαὶ μελέται αὐτοῦ ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Horae hellenicae». Α. Δ.

**Μπλάκλοκ** (Blacklock), ***Θωμᾶς***. Σκῶτος ποιητὴς καὶ θεολόγος (1721—1791). Ἀπολέσας εἰς ἡλικίαν δώδεκα ἐτῶν τὴν ὅρασιν, ἀφιερώθη εἰς τὴν ποίησιν, ἐν ἔτει δὲ 1745 ἐδημοσίευσε ποιητικὸν ἀπάνθισμα, ὅπερ ἐνεποίησεν ἀρίστην ἐντύπωσιν ἐν Ἀγγλίᾳ. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Παράκλησις ἢ παρηγορία ἐκ τῆς θρησκείας τῆς φύσεως καὶ τῆς ἀποκαλύψεως» (1767), «Γκράχαμ» (1774), λυρικὴ ραψῳδία εἰς τέσσαρα ᾄσματα, «Σκέψεις περὶ τῆς φύσεως καὶ τῶν ὁρίων τῆς ἐλευθερίας» (1776) κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπλὰκ-Μάουνταινς** (Black Mountains = *Μέλανα ὄρη*) *[Γεωγρ.]*. —1) Λοφοσειρὰ τῆς Μεγάλης Βρεττανίας, ἐκτεινομένη ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τῆς κομιτείας Χέρεφορντ (Ἀγγλία) καὶ τμήματος τῆς κομιτείας Μπρέκνοκ (Οὐαλλία). Ὑψηλοτέραν κορυφὴν ἔχει τὸ βουνὸν *Πέν-ὐ-Κέντερ Φάπρ* (870 μ.).
—2) Ὀροσειρὰ τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐκτεινομένη ἐν τῷ βορείῳ τμήματι τῆς πολιτείας Καρολίνας τῆς Βορειοαμερικανικῆς Συμπολιτείας. Ἀνήκει εἰς τὸ ὀρεινὸν σύστημα τῶν *Ἀπαλαχίων* ὀρέων καὶ ἔχει πολυαρίθμους φυσικὰς καλλονὰς προσελκυούσας πλείστους περιηγητάς. Ὑψηλότεραι κορυφαί της εἶναι τὰ ὄρη *Μίτσελ* (2.238 μ.), *Χέϊρυ Μπὴρ* (2.227 μ.) καὶ *Μπάλσαμ Κὸν* (2.224 μ.). Χ. Δ.

**Μπλάκμορ** (Blackmore), ***Ριχάρδος***. Ἄγγλος ἰατρὸς καὶ λογοτέχνης (1650—1729). Ὑπῆρξε θεράπων ἰατρὸς τοῦ Γουλιέλμου Γ΄. Ἐδημοσίευσεν ἔργα τινὰ ἰατρικὰ καὶ ποιήματα, ἐν οἷς διακρίνεται τὸ «Creation» (=δημιουργία), ἐπαινεθὲν ὑπὸ τοῦ Ἄντισον καὶ τοῦ Τζῶνσον. Α. Δ.

— **Μπλάκμορ** (Blackmore), ***Ριχάρδος Ντόντριτζ***. Ἄγγλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1825. Ἔγραψεν: «Ἀλὶς Λορραίν», τὸ ἀριστούργημά του, «Ἔρεμα», «Μαρία Ἄνερλυ», «Ὁ Φραγκλῖνος», ποίημα, καὶ «Ἱστορία τῆς κομιτείας τῆς Ὑόρκης». Α. Δ.

**Μπλάκμπερν** (Blackburn) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη βιομηχανικὴ πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λάγκα, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος Λήντς-Λίβερπουλ, 38 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Μάντσεστερ καὶ 337 πρὸς ΒΔ. τοῦ Λονδίνου. Εἶναι σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἓν τῶν μεγαλυτέρων βρεττανικῶν κέντρων βιομηχανίας βαμβακερῶν ὑφασμάτων καὶ χάλυβος. Ἐν αὐτῇ τῷ 1767 ὁ τεχνίτης Ἰάκωβος Χαίργκρηβς ἐφεῦρε τὴν κλωστομηχανήν, τῆς ὁποίας ἡ χρῆσις, γενικευθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1830, ηὔξησε τεραστίως τὴν οἰκονομικὴν σημασίαν τῆς πόλεως. Ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς, τετραπλασιασθεὶς κατὰ τὴν τελευταίαν ἑκατονταετηρίδα, ἀνέρχεται εἰς 133.052 κατ. Ἔχει ὡραίαν ρυμοτομίαν καὶ πολλὰ καλὰ κτήρια, ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὸ δημαρχεῖον, κτισθὲν τῷ 1856, τὸ χρηματιστήριον, ἓν τῶν καλλίστων κτηρίων τῆς νεωτέρας γοτθικῆς ἀρχιτεκτονικῆς (1865), καὶ πολλὰ ἰδιωτικὰ μέγαρα τραπεζῶν καὶ βιομηχανικῶν οἴκων. Ἀξιομνημόνευτοι ἐπίσης εἶναι οἱ παλαιότατοι ναοὶ τῆς πόλεως, ὧν εἷς ἱδρύθη κατὰ τὸν ΣΤ΄ αἰῶνα, ἀνοικοδομηθεὶς εἶτα κατὰ τὸν ΙΣΤ΄. Ἔχει πολλὰς σχολάς, ὧν σπουδαιότεραι: ἡ ὑπὸ τῆς βασιλίσσης Ἐλισάβετ ἱδρυθεῖσα τῷ 1567, ἡ νέα τεχνικὴ σχολὴ κ. ἄ. Ἐπίσης ἔχει μουσεῖον καὶ πινακοθήκην τῶν καλῶν τεχνῶν, δημοσίας βιβλιοθήκας, ἀγοράς, μεγάλα νοσοκομεῖα κλπ., ἐξυπηρετεῖται δὲ ἄριστα συγκοινωνιακῶς δι' ἠλεκτρικῶν τροχιοδρόμων. Χ. Δ.

**μπλὰκ-μπόττομ.** Χορὸς προερχόμενος ἐκ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς. Χορεύεται μὲ μουσικὴν εἰς συγκεκομμένον χρόνον (𝄵), ἀνάλογον πρὸς τὸ *φὸξ-τρὸτ* (ταχύτης μετρονόμου 160). Εἶναι χορὸς κωμικός, ὅστις ἐν Ἀμερικῇ ἐκτελεῖται μόνον ἀπὸ σκηνῆς. Παρισινὸς χοροδιδάσκαλος μετέβαλεν αὐτὸν εἰς χορὸν τῶν αἰθουσῶν, εἰς τὸν ὁποῖον ἀνευρίσκομεν τὸν ρυθμὸν καὶ μερικοὺς βηματισμοὺς τοῦ *τσάρλεστον*. Τ. Δ.

**Μπλάκουελλ** (Blackwell), ***Ἐλισάβετ***. Ἀγγλοαμερικανὶς ἰατρός, ἡ πρώτη διδάκτωρ τῆς ἰατρικῆς ἐν ταῖς Ἡνωμένοις Πολιτείαις τῆς Ἀμερικῆς (1821—1910). Ἵδρυσε τὸ ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ ἰατρικὸν κολλέγιον τῶν γυναικῶν καὶ συνέγραψε πολλὰ ἰατρικὰ βιβλία.

— **Μπλάκουελλ** (Blackwell), ***Θωμᾶς***. Σκῶτος φιλόλογος (1701 — 1757). Διετέλεσε καθηγητὴς τῶν ἑλληνικῶν γραμμάτων ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἄμπερντην. Ἔγραψε: «Περὶ τοῦ βίου καὶ τῶν ἔργων τοῦ Ὁμήρου» (1735), δημοσιευθὲν ἀνωνύμως, «Ἐπιστολαὶ περὶ μυθολογίας», «Περὶ τῆς Αὐλῆς τοῦ Αὐγούστου» (1753—1764 εἰς 3 τόμ.). Τὰ ἔργα ταῦτα βρίθουσι μὲν πληροφοριῶν, ἀλλὰ στεροῦνται μεθοδικῆς κατατάξεως τῆς ὕλης. Γ. Ι. Β.

**Μπλάκπουλ** (Blackpool) *[Γεωγρ.]*. Πόλις, λιμὴν καὶ ἀξιολογωτάτη θαλασσία λουτρόπολις τῆς Ἀγγλίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ Λάγκα, κειμένη ἐν τῷ κόλπῳ Μόρεκαμπ, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ράϊμπλ, 367 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι νεωτάτου ρυθμοῦ πόλις, ἔχουσα πλεῖστα κέντρα διασκεδάσεων, περιπάτους, ὡραῖα κτήρια, καλὰς συγκοινωνίας κλπ. καὶ χρησιμεύει ὡς τόπος ἀναψυχῆς τῶν μεγάλων βιομηχανικῶν κέντρων τῶν κομιτειῶν Λάγκα καὶ Ὑόρκης, ἀποκαλουμένη συνήθως τὸ «Μπράϊτον τοῦ βορρᾶ». Κάτ. 55.371. Χ. Δ.

**Μπλὰκ-Ρίβερ** (Black-River = *Μέλας ποταμὸς*) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν ποταμῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐξ ὧν σημαντικώτεροι εἶναι οἱ ἑξῆς: —1) Ποταμὸς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἐκβάλλων εἰς τὴν λίμνην Ὀντάριο μετὰ ροῦν 180 χλμ. Συνδέεται διὰ διώρυγος μετὰ τῆς λίμνης Ἐριέ. —2) Ποταμὸς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἀρδεύων τὴν πολιτείαν Μισσουρὶ καὶ ἐκβάλλων εἰς τὸν Οὐάϊτ-Ρίβερ ἐγγὺς τῆς Μπάτεσβιλ, μετὰ ροῦν 480 χλμ. —3) Παραπόταμος τοῦ Μισσισσιπῆ ἐν τῇ πολιτείᾳ Οὐΐσκονσιν κλπ. Χ. Δ.

**Μπλάκστον** (Blackstone), *σὲρ* ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος νομοδιδάσκαλος (1723—1780). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ ἀγγλικοῦ ἀστικοῦ δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης, βουλευτὴς καὶ δικαστής. Ἡ φήμη του ὡς νομομαθοῦς ὀφείλεται εἰς τὸ κλασσικὸν ἔργον του: «Σχόλια εἰς τοὺς νόμους τῆς Ἀγγλίας», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκτίθενται μετὰ θαυμαστῆς σαφηνείας αἱ βασικαὶ ἀρχαί, αἵτινες διέπουσι τὸ ἀγγλικὸν δίκαιον, ἐν συγκρίσει πρὸς τὰς ἀρχὰς τῶν ἀρχαιοτέρων καὶ νεωτέρων νομοθεσιῶν. Ἔγραψεν ὡσαύτως: «Ἀνάλυσις τῶν νόμων τῆς Ἀγγλίας», εἶδος ἐγκυκλοπαιδείας καὶ μεθοδολογίας τοῦ ἀγγλικοῦ δικαίου. Γ. Ι. Β.

**μπλὰκ φραϊντεϋ** (black friday = *μαύρη Παρασκευή*). Κοινὸς χρηματιστηριακὸς ὅρος, δι' οὗ χαρακτηρίζονται, ἐν Λονδίνῳ ἰδίᾳ καὶ Νέᾳ Ὑόρκῃ, αἱ συμβαίνουσαι ἐνίοτε μεγάλαι καταστροφαί, πτωχεύσεις καὶ πανικοὶ κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἐκκαθαρίσεως τῶν χρηματιστηριακῶν πράξεων τῆς ἑβδομάδος (Παρασκευήν). Αἱ καταστρεπτικώτεραι μπλὰκ

Digitized by Google

-φράϊντεϋ εἶναι ἐν μὲν τῷ Λονδίνῳ ἡ 11 Μαΐου 1866, ἡ ὁποία προεκλήθη κατόπιν τῆς στάσεως τῶν πληρωμῶν τοῦ μεγάλου τραπεζικοῦ οἴκου Overend, Gurney & Co, πτωχεύσαντος μὲ παθητικὸν 11.000.000 λιρῶν ἐν δὲ τῇ Νέᾳ Ὑόρκῃ ἡ 25 Σεπτεμβρίου 1869 καὶ ἡ 19 Σεπτεμβρίου 1873, ἥτις ἐσημείωσε μεγάλας πτωχεύσεις.

**Μπλὰκ - Χὶλλς** (Black - Hills=Μέλανες Λόφοι) *[Γεωγρ.]*. Μεμονωμένη ὀροσειρὰ τῆς Β. Ἀμερικῆς, ὑψουμένη εἰς τὸ ΝΔ. τμῆμα τῆς πολιτείας Δακότας καὶ τὸ ΒΑ. τοῦ Οὐάϊομινγκ τῆς Βορειοαμερικανικῆς συμπολιτείας. Καλύπτει ἔκτασιν 15.000 τετρ. χλμ. καὶ ἔχει μέσον ὕψος 680—1160 μ., ὑψηλοτέραν δὲ κορυφὴν τὸ ὄρος *Χάρνεϋ Πὴκ* (2.404 μ.). Περικλείει πλούσια κοιτάσματα χρυσοῦ, χαλκοῦ, ἀργύρου, γαιανθράκων, πετρελαίου καὶ ἄλλων ὀρυκτῶν. Τὸ τρίτον σχεδὸν ἐκ τοῦ ἐδάφους τῶν ὀρέων τούτων καλύπτουσι πλούσια δάση πευκῶν, εἰς τῶν ὁποίων τὴν μελανόμορφον ὄψιν ὀφείλεται τὸ ὄνομα τῆς ὀροσειρᾶς. Χ. Δ.

**Μπλὰκ-Χὼκ** (Black-Hawk, ἀγγλ. μετάφρ. τοῦ ἰνδικοῦ ὀνόματος *Μακαταβιμεσέκα*=μαῦρος ἱέραξ). Φύλαρχος τῶν Ἐρυθροδέρμων Σὰκ καὶ Φὸξ (1767—1838). Δεκαπενταετὴς διεδέχθη τὸν ἐν μάχῃ πεσόντα πατέρα του. Κηρύξας ἄκυρον τὴν ἐν ἔτει 1804 συναφθεῖσαν μεταξὺ τῶν Σὰκ καὶ Φὸξ ἀφ' ἑνὸς καὶ τῶν Βορειαμερικανῶν ἀφ' ἑτέρου συμφωνίαν, δι' ἧς, ἀντὶ ἐτησίου χρηματικοῦ ποσοῦ, παρεχωροῦντο εἰς τοὺς τελευταίους μεγάλαι ἐκτάσεις γῆς, ἃς κατεῖχον αἱ φυλαὶ αὗται, ἐνεπλάκη εἰς πόλεμον πρὸς τοὺς Βορειοαμερικανούς, ἐπωφεληθεὶς τοῦ περισπασμοῦ αὐτῶν κατὰ τὸν πρὸς τοὺς Ἄγγλους πόλεμον τοῦ 1812. Ὁ Μπλὰκ-Χὼκ κατώρθωσε νὰ ἀντιστῇ μέχρι τοῦ 1815, ὅτε, εὑρεθεὶς πρὸ ὑπερτέρων δυνάμεων, ἠναγκάσθη νὰ ὑποκύψῃ καὶ νὰ ἀναγνωρίσῃ τὴν συμφωνίαν τοῦ 1804. Κατὰ τὸ 1831, λόγῳ νέων ἐδαφικῶν διαφορῶν πρὸς τοὺς Βορειοαμερικανούς, ἐπετέθη ἐκ νέου κατ' αὐτῶν, ἐλεηλάτησε πολλοὺς ἀγροτικοὺς συνοικισμοὺς καὶ κατέσφαξεν οἰκογενείας καλλιεργητῶν. Ἡ ἀμερικανικὴ κυβέρνησις ἠναγκάσθη νὰ κινητοποιήσῃ ἐναντίον του τρία σώματα στρατοῦ. Ἐπανειλημμένως συγκρουσθεὶς πρὸς τὰ στρατεύματα ταῦτα ὁ Μπλὰκ-Χὼκ ἡττήθη καὶ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ἐνεκλείσθη εἰς τὸ ἐν Βιργινίᾳ φρούριον. Γ. Ι. Β.

**Μπλαμὸν** (Blamont), ***Φραγκῖσκος-Κολῖνος ντὲ—***. Γάλλος συνθέτης (1690—1760). Ἔγραψε τὰ μελοδράματα: «Αἱ ἑλληνικαὶ καὶ ρωμαϊκαὶ ἑορταὶ» (1728), «Τὰ κορίτσια τῆς Ἐρατοῦς» (1730), «Ἐνδυμίων» (1731), «Οἱ χαρακτῆρες τοῦ Ἔρωτος» (1738) καὶ «Ἐαρινοὶ ἔρωτες» (1739), μπαλλέττα, καντάτας, μοτέττα, μελῳδίας κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπλάμοντ, *Κωνσταντῖνος Δημήτριεβιτς***. Ρῶσος ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον διὰ συλλογῆς ποιημάτων ἐπιγραφομένης «Ὑπὸ τὸν πολικὸν οὐρανὸν» (1894), εἰς τὰ ὁποῖα κυριαρχεῖ ἡ ἰδέα τοῦ θανάτου ὡς μόνου λυτρωτοῦ τοῦ ἀνθρώπου. Εἶτα ἐδημοσίευσε τὰς συλλογάς: «Εἰς τὸ ἄπειρον» καὶ «Σιγή», διακρινομένας διὰ τὴν μουσικότητα τοῦ στίχου, «Πύρινα ἱδρύματα», ἐν οἷς ψάλλει τὸν ἥλιον, τὸ πῦρ καὶ τὸν ἔρωτα, «Μόνον ὁ ἔρως» κ. ἄ. Θ. Β.

**Μπλὰν** (Blanc), ***Αὔγουστος - Ἀλέξανδρος - Φίλιππος - Κάρολος***. Γάλλος τεχνοκρίτης (1813—1882). Ἐσπούδασε χαρακτικὴν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Calamatta καὶ τοῦ Mercuri, ἀλλὰ ταχέως ἐγκατέλειψε τὴν τέχνην ταύτην διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τεχνοκριτικὰς μελέτας, ἐμφανισθεὶς κατὰ πρῶτον ὡς τεχνοκρίτης εἰς διαφόρους ἐφημερίδας καὶ περιοδικά. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 διετέλεσε διευθυντὴς τῆς κρατικῆς ὑπηρεσίας τῶν καλῶν τεχνῶν καὶ ἵδρυσε τὴν «Ἐφημερίδα τῶν καλῶν τεχνῶν», ἐν ᾗ ἐδημοσίευσε πολυάριθμα ἄρθρα. Τῷ 1869 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν, τῷ δὲ 1876 μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ βραδύτερον διωρίσθη καθηγητὴς τῆς αἰσθητικῆς εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Ἐξέδωκε πολυάριθμα καὶ ἀξιολογώτατα ἔργα, ἐν οἷς ἐπεδείξατο ὀξύνοιαν, βαθεῖαν αἰσθητικὴν κατάρτισιν, λεπτὴν καλαισθησίαν καὶ ἐντονωτάτην ἰδεαλιστικὴν ἀντίληψιν τῆς τέχνης. Κυριώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ἱστορία τῶν Γάλλων ζωγράφων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος» (1845), «Ἱστορία τῶν ζωγράφων πασῶν τῶν σχολῶν» (1870 εἰς 14 τόμ.), «Τὸ ἔργον τοῦ Ρέμπραντ» (1853), «Οἱ ἐν Μάντσεστερ καλλιτεχνικοὶ θησαυροὶ» (1857), «Ἀπὸ τὸ Παρίσι εἰς τὴν Βενετίαν, μολυβιές» (1857), «Γκρανβίλλ» (1855), «Ἔνγκρ, ἡ ζωή του καὶ τὸ ἔργον του» 1870), «Οἱ καλλιτέχναι τῆς ἐποχῆς μου» (1876), «Ταξίδιον εἰς τὴν Ἄνω Αἴγυπτον» (1876), «Γραμματικὴ τῶν διακοσμητικῶν τεχνῶν» (1881). Ι. Μ. Π.

— **Μπλὰν** (Blanc), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος συγγραφεύς, ἱστορικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Μαδρίτῃ (1811—1882). Ὁ πάππος του ἐκαρατομήθη κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1793, ἡ δὲ οἰκογένειά του κατεστράφη οἰκονομικῶς τῷ 1830. Τῷ 1848 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν προσωρινὴν κυβέρνησιν, ποθῶν τὴν ἀναμόρφωσιν τῆς κοινωνίας ἐπὶ ἐπιστημονικῆς βάσεως. Ὡς μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως ἐπρότεινεν ὅπως ἡ κυβέρνησις ἐγγυηθῇ τὴν συντήρησιν τῶν ἐργατῶν καὶ τὴν ἐργασίαν εἰς ὅλους καὶ ὀργανώσῃ συνεταιρισμὸν τῶν ἐργατῶν διὰ τὴν ἐξασφάλισιν τοῦ ἐκ τῆς ἐργασίας κέρδους, ἀλλ' ἡ κυβέρνησις ἀπέρριψε τὴν πρότασίν του. Κατὰ τὰς ἡμέρας τοῦ Ἰουνίου ἀναμιχθεὶς ζωηρῶς εἰς τὴν ριζοσπαστικὴν δρᾶσιν, αὐτοεξωρίσθη ἐκ Γαλλίας, ἐπανελθὼν τῷ 1870. Ἐκλεγεὶς τῷ 1871 ὡς δημοκρατικὸς εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν τῶν Βερσαλλιῶν, ἐξεδηλώθη ἐναντίον τῆς Κομμούνας τῶν Παρισίων καὶ παρέμεινεν εἰς τὰς Βερσαλλίας.

Τὸ σπουδαιότερον ἔργον του, «Ἡ ὀργάνωσις τῆς ἐργασίας» (1839), εἶναι ἔκθεσις τοῦ σοσιαλιστικοῦ του προγράμματος, τὸ ὁποῖον εἰς τὰς παραμονὰς τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848 ἐξήσκησε μεγάλην ἐπιρροήν. Κηρυχθεὶς ἐναντίον τῆς φιλανθρωπίας ὡς μέσου ἀνακουφίσεως τῶν πτωχῶν, ὡς μόνον μέσον θεραπείας ὑποδεικνύει τὴν ὀργάνωσιν τῆς ἐργασίας, δηλαδὴ τὴν ὑπὸ τοῦ σοσιαλιστικοῦ κράτους ὀργάνωσιν τῆς παραγωγῆς. Τὸ βιβλίον τοῦτο ἀποτελεῖ τὴν πρώτην ὑπόδειξιν τῆς ἀνάγκης ἐθνικοποιήσεως ὡρισμένων κλάδων τῆς ἐθνικῆς οἰκονομίας.

Ἱδρυτὴς τοῦ λεγομένου μεταρρυθμιστικοῦ σοσιαλισμοῦ, πρῶτος σοσιαλιστὴς ἀνελθὼν εἰς τὴν ἐξουσίαν διὰ τῆς ὁδοῦ τῆς συνεργασίας, ὁ Μπλὰν ὑπῆρξε καὶ σπουδαῖος ἱστοριογράφος. Εἰς τὸ ἔργον του «Ἱστορία δέκα ἐτῶν» (1841—1844) ἐξιστορεῖ μέρος τῆς βασιλείας τοῦ Λουδοβίκου Φιλίππου. Ἐπίσης ἔγραψε τὴν «Ἱστορίαν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως», ἡ ὁποία καὶ σήμερον θεωρεῖται ὡς θεμελιῶδες ἔργον. Ἔζησεν ἐπὶ πολὺ ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ συνέγραψε τὸ ἔργον: «Δέκα ἔτη ἱστορίας τῆς Ἀγγλίας». Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ἡ ὀργάνωσις τῆς ἐργασίας» (1839), «Ἡ ἐπανάστασις τοῦ Φεβρουαρίου εἰς τὸ Λουξεμβοῦργον» (1848), «Ὁ σοσιαλισμός, δικαίωμα εἰς τὴν ἐργασίαν» (1849), «Κατήχησις τῶν σοσιαλιστῶν» (1849), «Ἱστορία δέκα ἐτῶν» (1841—1844), «Ἱστορία τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως» (1847—1862), «Ἱστορία τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848» (2 τόμ. 1870), «Ἱστορία τοῦ Συντάγματος τῆς 25 Φεβρουαρίου 1875» (1882), «Δέκα ἐτῶν ἱστορία τῆς Ἀγγλίας» (1879—1881), «Τί ἦσαν ἄλλοτε αἱ ἐργατικαὶ ἀδελφότητες» (1873) κλπ. Α. Ε. Μ.

— **Μπλὰν** (Blanc), ***Μαρία-Θηρεσία*** βλ. *Μπεντζόν*, Θηρεσία ντὲ —.

— **Μπλὰν** (Blanc), ***Παῦλος - Ἰωσήφ***. Γάλλος ζωγράφος (1846—1904). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς μὲν παρὰ τῷ Μπίν, μετὰ ταῦτα δὲ παρὰ τῷ Καμπανέλ. Τῷ 1867 ἔτυχε τοῦ πρώτου βραβείου Ρώμης. Ἐξετέλεσεν εὐρυτάτας διακοσμητικὰς συνθέσεις εἰς τὸ παρισινὸν Πάνθεον, εἰκονιζούσας τὴν «Ἐπίκλησιν τοῦ Χλωδοβίκου ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Tolbiac», τὴν «Βάπτισιν τοῦ Χλωδοβίκου» καὶ τὸν «Θρίαμβον τοῦ Χλωδοβίκου», ἔτι δὲ τὰς μορφὰς τοῦ Γαμβέττα, τοῦ Μπέρτ, τοῦ Λοκρουὰ κ.ἄ. Ἕτερα ἀξιομνημόνευτα ἔργα αὐτοῦ εἶναι αἱ θρησκευτικαὶ συνθέσεις, τὰς ὁποίας ἐξετέλεσεν ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πέτρου τοῦ Ντουαὶ καὶ τῶν Ἁγίων Παύλου καὶ Λουδοβίκου τῶν Παρισίων. Τῷ 1889 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς παρισινῆς σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ι. Μ. Π.

**Μπλὰν *Λὲ*** — (Le Blanc, λατιν. Oblincum) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἔντρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κρέζ, εἰς ἀπόστασιν 52 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σατωρού. Ἔχει ἐριουργεῖα, βυρσοδεψεῖα, διυλιστήρια κλπ. καὶ εἶναι ἀξιόλογος ἀγορὰ ἵππων. Κάτ. 5.510. Χ. Δ.

**Μπλανζὺ** (Blanzy) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σὼν - ἐ - Λουάρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπουρμπίνς. Εἶναι κέντρον πλουσίας γαιανθρακοφόρου λεκάνης καλουμένης bassin de Blanzy. Κάτ. 4.690. Χ. Δ.

**Μπλανκὰρ** (Blancard), ***Πέτρος***. Γάλλος ναυτικὸς καὶ ἐμποριολόγος (1741—1826). Ἐκτελέσας πολλὰ ταξίδια εἰς Ἰνδίας καὶ Ἄπω Ἀνατολήν, ἐδημοσίευσε πολύτιμον διὰ τὴν ἐποχήν του βιβλίον, ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὁδηγὸς τοῦ ἐμπορίου τῶν ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Κίνας» (1805), περιλαμβάνων πληθὺν πληροφοριῶν περὶ τῶν ἐν ταῖς χώραις ταύταις εὐρωπαϊκῶν ἐμπορικῶν ὀργανώσεων καὶ περὶ τοῦ εἴδους καὶ τῆς ἐκτάσεως τῆς ἐμπορικῆς κινήσεως ἑκάστου λιμένος. Τὸ βιβλίον του συνωδεύετο ἐπὶ πλέον καὶ ὑπὸ ὑδρογραφικοῦ χάρτου τῶν παραλίων τῶν χωρῶν τούτων. —Ω.

**Μπλάνκαρντ** (Blancard), ***Στέφανος***. Ὁλλανδὸς ἀνατόμος καὶ φυσιολόγος (1625—1703). Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Collectanea medico - physica» (1680—1688), «Institutiones chirurgicae verioribus fundamentis superædificatae» (1701), «Lexicon medicum graeco-latinum» (1679), «Opera medica» (1701) κ.ἄ. Ο. Ρ.

**Μπλάνκενέζε** (Blankenese) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Σλέσβιχ - Ὁλστάϊν τῆς Πρωσσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἔλβα. Εἶναι κέντρον ἁλιείας καὶ ναυτιλίας ἐν τῇ Βορείῳ θαλάσσῃ καὶ τόπος θερινῆς διαμονῆς τῶν κατοίκων τοῦ Ἀμβούργου. Κάτ. (1924) 14.000. Χ. Δ.

**Μπλάνκενμπεργκ** (Blankenberghe) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Δυτικῆς Φλάνδρας, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Βορείου Θαλάσσης. Εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον συχναζομένων βελγικῶν λουτροπόλεων καὶ σπουδαῖος ἁλιευτικὸς λιμήν. Κάτ. 6.500. Χ. Δ.

**Μπλάνκενμπουργκ-*ἀμ-Χάρτς*** (Blankenburg-am-Harz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Βρουνσβίκῃ, κειμένη παρὰ τοὺς βορείους προπόδας τῶν ὀρέων Χάρτς, 19 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Ἄλμπερστατ. Ἔχει μεταλλεῖα σιδήρου, λατομεῖα μαρμάρου, ὀρυχεῖα ὤχρας, χυτήρια καὶ κεραμοποιεῖα. Ἔχει παλαιὸν δουκικὸν ἀνάκτορον, ἕδραν ἄλλοτε τῶν πριγκίπων τοῦ Μπλάνκενμπουργκ, ἐν τῷ ὁποίῳ κατῴκησεν ὁ Λουδοβῖκος ὁ ΙΗ' κατὰ τὰ ἔτη 1796—1798. Καταστραφεῖσα ἡ πόλις τῷ 1182 ὑπὸ τοῦ Φρειδερίκου Βαρβαρόσσα, ἀνῳκοδομήθη μετ' ὀλίγον καὶ ἀντέστη κρατερῶς εἰς πολιορκίαν ἐκ μέρους τοῦ Βαλλενστάϊν τῷ 1625. Κάτ. (1924) 12.010. Χ. Δ.

**Μπλανκὶ** (Blanqui), ***Ἱερώνυμος - Ἀδόλφος***. Γάλλος οἰκονομολόγος (1798—1854). Παρηκολούθησε μαθήματα βιομηχανικῆς οἰκονομίας ἐν τῷ Κονσερβατορίῳ τῶν τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων ὑπὸ τὸν J. B. Say, τοῦ ὁποίου ἐγένετο καὶ συνεργάτης. Κατόπιν ἤρχισε νὰ παραδίδῃ μαθήματα ἐν τῷ Ἀθηναίῳ, ἡ δ' ἐπιτυχία του ὑπῆρξε τοιαύτη, ὥστε ταχέως ἐγένετο καθηγητὴς τῆς βιομηχανικῆς ἱστορίας καὶ οἰκονομίας ἐν τῇ εἰδικῇ σχολῇ τοῦ ἐμπορίου τῷ 1825 καὶ μετὰ πενταετίαν διευθυντὴς τοῦ ἱδρύματος. Τὸ κύριόν του ἔργον ὑπῆρξεν ἡ «Histoire de l'économie politique en Europe, depuis les anciens jusqu' à nos jours» (1837—1838, τόμ. 2). Εἰς αὐτὸ ἐξητάσθησαν διὰ πρώτην φορὰν αἱ σταυροφορίαι, ἡ χειραφέτησις τῶν κοινοτήτων, ἡ ἀνακάλυψις τῆς Ἀμερικῆς καὶ τὰ ἐπακόλουθά της ἀπὸ ἀπόψεως παραγωγῆς καὶ διανομῆς τῶν ἀγαθῶν. Τῷ 1833 διεδέχθη τὸν J. B. Say ὡς καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας εἰς τὸ Κονσερβατόριον τῶν τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων. Περιηγήθη ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν Εὐρώπην διὰ νὰ μελετήσῃ τὴν οἰκονομικὴν κατάστασιν τῶν διαφόρων χωρῶν, μεταβὰς δεκάκις εἰς Ἀγγλίαν, πεντάκις εἰς Ἰταλίαν καὶ δὶς εἰς Ἱσπανίαν, ἐπίσης καὶ εἰς Γερμανίαν, Αὐστρίαν, Σερβίαν, Ἀλγέριον καὶ Ἀνατολήν. Τὰ περισσότερα ἐκ τῶν ταξιδίων τούτων παρέσχον εἰς αὐτὸν τὸ ὑλικὸν συγγραμμάτων ἢ ἀνακοινώσεων, αἱ ὁποῖαι ἠκούσθησαν μετὰ μεγίστου ἐνδιαφέροντος. Τῷ 1840 ἐμελέτησε τὴν κατάστασιν τῶν ἐργατικῶν τάξεων ἐν τῇ βορείῳ Γαλλίᾳ, καταλήξας εἰς σημαντικώτατα πορίσματα, δύο δ' ἔτη προηγουμένως εἶχεν ἐκλεγῇ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ὑποστηρίζων τὴν ἐλευθερίαν τοῦ ἐμπορίου, ἐξελέγη τῷ 1846 βουλευτὴς Βορδώ. Ἄλλα σπουδαῖα ἔργα τοῦ Μπλανκὶ εἶναι: «De la situation économique et morale de l'Espagne en 1846», «Précis élémentaire d'économie politique» (Paris 1826, γ' ἔκδ. 1857) κ. ἄ. Θ. Π.

— **Μπλανκὶ** (Blanqui), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος σοσιαλιστὴς (1805—1881). Μέλος πολυτέκνου οἰκογενείας, ὁ Μπλανκὶ κατώρθωσεν ἐν τούτοις νὰ σπουδάσῃ καὶ ἐκ μικρᾶς ἡλικίας διεκρίθη διὰ τὴν εὐφυΐαν του. Εἰς ἡλικίαν δέκα ἐννέα ἐτῶν ἀπεφοίτησε τοῦ γυμνασίου, ἐπιδοθεὶς ἔκτοτε εἰς τὴν μελέτην παντοίων βιβλίων. Κατ' ἀρχὰς εἰργάσθη ὡς καθηγητὴς εἰς τὴν ἐμπορικὴν σχολὴν καὶ συνειργάζετο εἰς τὴν ἐφημερίδα «Γαλλικὸς Ταχυδρόμος». Ἀκολούθως ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν τῶν νομικῶν καὶ τῆς ἰατρικῆς. Ὡς φοιτητὴς μετέσχε τῶν ζωηρῶν διαδηλώσεων τοῦ 1826 καὶ 1827 καὶ ἐπληγώθη δίς. Περὶ τὰ τέλη τοῦ 1827 μετέσχε τοῦ ἀγῶνος τῶν ὁδοφραγμάτων καὶ ἐτραυματίσθη ἐκ νέου. Μετὰ τὴν ἀποθεραπείαν του ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ἐπάγγελμα τοῦ καθηγητοῦ καὶ τῷ 1828 μετέβη εἰς Νίκαιαν, ὅπου προεκάλεσε τὴν ὑποψίαν τῶν ἀρχῶν, συνελήφθη καὶ ἐφυλακίσθη. Ἀπελευθερωθεὶς μετέβη εἰς Βορδὼ καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ἱσπανίαν.

Τῷ 1829 ἐπέστρεψεν εἰς Παρισίους καὶ προσελήφθη ὡς ρεπόρτερ εἰς τὴν ἀντιπολιτευτικὴν ἐφημερίδα «Globe». Ὅταν τῷ 1830 ὁ λαὸς ἐστασίασεν, ὁ Μπλανκὶ μετέσχε πάλιν τοῦ ἀγῶνος τῶν ὁδοφραγμάτων. Ἀποτέλεσμα τῶν συγκρούσεων ὑπῆρξε μία δυναστικὴ ἀλλαγή, ἡ ὁποία ὅμως δὲν ἱκανοποίει τὸν Μπλανκί. Γενόμενος θιασώτης τῆς ἐξεγέρσεως, συνελήφθη τῷ 1831. Ἀποφυλακισθεὶς ἀνεμείχθη εἰς τὰς παρανόμους ἐπαναστατικὰς ὀργανώσεις, ἵδρυσεν ὁ ἴδιος τοιαύτας καὶ ἐγένετο ἀρχηγὸς τῆς δημοκρατικῆς πρωτοπορείας. Τῷ 1832 κατεδικάσθη εἰς ἑνὸς ἔτους φυλάκισιν καὶ 200 φράγκων πρόστιμον διὰ τὴν στάσιν του ἐνώπιον τοῦ δικαστηρίου, ἠθωώθη ὅμως διὰ τὴν ἐπὶ παραβάσει τοῦ νόμου περὶ τύπου κατηγορίαν. Ἀποφυλακισθεὶς ἐπανέλαβε τὴν ἐπαναστατικὴν δρᾶσιν, συνελήφθη ἐκ νέου (1836) καὶ κατεδικάσθη εἰς δύο ἔτη φυλάκισιν καὶ 3.000 φράγκων πρόστιμον. Ὀκτὼ μῆνας βραδύτερον ἀμνηστευθείς, ἐτέθη ὑπὸ ἀστυνομικὴν ἐπίβλεψιν. Τὴν 12ην Μαΐου τοῦ 1839 συγ-

Digitized by Google

κεντρώσας 850 ἐπαναστάτας ἐξήγειρε στάσιν κατὰ τοῦ καθεστῶτος. Ἀποτυχούσης τῆς στάσεως, κατώρθωσεν ἐπὶ ἓξ μῆνας νὰ παραμείνῃ ἀσύλληπτος. Τέλος συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον, μετριασθείσης βραδύτερον τῆς ποινῆς του εἰς τὴν τῶν ἰσοβίων δεσμῶν. Τῷ 1844 τῷ ἐδόθη χάρις, ἀλλ' ὁ Μπλανκὶ δὲν ἤθελε νὰ τὴν δεχθῇ, διαμαρτυρηθεὶς δημοσίως, ἐπειδὴ ὅμως ἠσθένησεν, ἐσυνεχίσθη ἡ κράτησίς του εἰς νοσοκομεῖον. Τῷ 1845, λόγῳ τοῦ ἐπισφαλοῦς τῆς ὑγείας του, ἀφέθη σχεδὸν ἐλεύθερος, ἀλλὰ τῷ 1846, κατόπιν νέας στάσεως, συνελήφθη ὡς ἐπικίνδυνος καὶ ἐξωρίσθη. Ἡ ἐπανάστασις τοῦ 1848 τὸν ἀπηλευθέρωσεν ἐκ νέου. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἔδρασεν ἐντόνως. Φυλακισθεὶς διὰ πολλοστὴν φοράν, διηύθυνεν ἐκ τῆς φυλακῆς τὰς πολιτικὰς διαμάχας καὶ τοὺς ἐκλογικοὺς ἀγῶνας τῆς ἐποχῆς. Δικασθεὶς κατεδικάσθη εἰς 10 ἐτῶν εἱρκτήν. Ἀμνηστευθεὶς τῷ 1859, ἐπανέρχεται εἰς Παρισίους, ἐπαναλαμβάνει τὴν συνωμοτικὴν δρᾶσιν, ἐκδίδει παρανόμους ἐπαναστατικὰς προκηρύξεις καὶ ἐφημερίδας, κρύπτεται καὶ τέλος συλλαμβάνεται ἐκ νέου, δικάζεται (1861) καὶ καταδικάζεται πάλιν εἰς 4 ἐτῶν φυλάκισιν. Τῷ 1865 κατώρθωσε ν' ἀποδαάσῃ καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Βρυξέλλας, ἐκεῖθεν δὲ ἐσυνέχισε τὴν δρᾶσίν του. Οἱ ὀπαδοί του ἐν τῷ μεταξὺ ἤρχισαν νὰ πληθύνωνται. Ἦτο ἡ ἐποχὴ τοῦ Γαλλο-πρωσσικοῦ πολέμου (1870). Ὁ Μπλανκὶ ἐκηρύχθη ὑπὲρ τῆς ἀμύνης τῶν Παρισίων, τῆς ἐπαναστατικῆς πρωτευούσης, καὶ ἐξελέγη ἐπὶ κεφαλῆς ἑνὸς συντάγματος της ἐθνοφρουρᾶς. Κατὰ τὴν δίκην τῶν στασιαστῶν τῆς ἐθνοφρουρᾶς τῆς 18 Μαρτίου 1870 ὁ Μπλανκὶ ἀπεκαλύφθη ὡς ἐπικίνδυνος ἀρχηγὸς καὶ ἐξετοπίσθη ἀπὸ τὴν ἐθνοφρουράν. Συλληφθεὶς πάλιν ἐφυλακίσθη καὶ ἐν τῇ φυλακῇ ὢν ἐξελέγη μέλος τῆς Κομμούνας, ἡ ὁποία ἐπρότεινεν εἰς τὴν κυβέρνησιν τῶν Βερσαλλιῶν, ἵνα τὸν ἀνταλλάξῃ μὲ τὸν ἐπίσκοπον τῶν Παρισίων. Ἀλλ' ἡ κυβέρνησις ἀπέρριψε τὴν πρότασιν, ἔχουσα καταδικάσει αὐτὸν εἰς θάνατον ἐρήμην. Τῷ 1879 ἀπελευθερωθείς, ἐπανήρχισε τὴν δρᾶσιν ἀλλὰ μετὰ δύο ἔτη ἀπέθανε.

Ὁ Μπλανκί, ἐπαναστάτης σοσιαλιστής, ἐμίσει βαθέως τὴν ἀστικὴν κοινωνίαν καὶ ἐπίστευεν ὅτι μόνον μία καλὰ προπαρεσκευασμένη στάσις ἠδύνατο ν' ἀπελευθερώσῃ τὰς λαϊκὰς μάζας ἀπὸ τὴν τυρανίαν τῶν κυβερνώντων. Ἔδιδε τόσην σημασίαν εἰς τὰς συνωμοτικὰς ἐνεργείας, ὥστε παρημέλει τὴν σημασίαν τῆς λαϊκῆς δράσεως. Ἐφρόνει ὅτι διὰ μιᾶς ἐπαναστατικῆς κυβερνήσεως ἠδύνατο νὰ ὀργανωθῇ εὐκόλως ἡ σοσιαλιστικὴ κοινωνία. Ἔργα του: «Ἀπολογία τοῦ Μπλανκὶ ἐνώπιον τοῦ πλημμελειοδικείου» (1832), «Μία ἀπάντησις» (1848), «Κοινωνικὴ κριτική» (1885, 2 τόμοι: «Κεφάλαιον καὶ ἐργασία», «Σκέψεις καὶ σημειώσεις»), «Ἡ αἰωνιότης διὰ τῶν ἄστρων» (1872), «Ἡ δούλη καὶ καταπιεζομένη στρατιά» (1894) κ. λ. π. Ἐξέδωκε καὶ τὰς ἐφημερίδας «Pandide» (1865) «Ἡ πατρὶς ἐν κινδύνῳ» (1871), «Οὔτε θεὸς οὔτε ἀφέντης» (1880—1881),

Α. Ε. Μ.

**Μπλάνκο** (Blanco), ***Ἀντώνιος Γκούθμαν***· βλ. *Γκούθμαν.* Γ. Ι. Β.

**Μπλάνκο-ὑ-Ἐρένας** (Blanco y Erenas), ***Ραμόν, μαρκήσιος ντὲ Πένια-Πλάτα.*** Ἱσπανὸς στρατάρχης (1833—1906). Μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τοῦ Ἁγίου Δομίγγου, διετέλεσε διοικητὴς τοῦ Μινταναο ἐν Φιλιππίναις καὶ ἔπαιξε σπουδαιότατον ρόλον κατὰ τοὺς ἐμφυλίους ἐν Ἱσπανίᾳ πολέμους τοῦ 1871. Τῷ 1875 μεγάλως συνέβαλεν εἰς τὴν εἰρήνευσιν τῆς Καταλωνίας. Διορισθεὶς γενικὸς διοικητὴς τῆς Κούβας, ἀντέστη κατ' ἀρχὰς μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας εἰς τὴν ἐπιδρομὴν τῶν ἀμερικανικῶν στρατευμάτων (1897—1898). Χ. Δ.

**Μπλανσὰρ** (Blanchard), ***Αἰμίλιος.*** Γάλλος φυσιοδίφης (1820—1900). Ὑπηρέτησεν ἐν τῷ ἐν Παρισίοις μουσείῳ φυσικῆς ἱστορίας, οὗτινος κατέταξε πλῆθος ἐντόμων, ὧν ἐδημοσίευσε καὶ κατάλογον εἰς 2 τόμους (1850—1851). Τῷ 1862 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ζῳολογίας ἐν αὐτῷ καὶ συγχρόνως ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ἐκ τῶν πολλῶν του ἐργασιῶν κυριώτεραι εἶναι: «Μελέται ἐπὶ τοῦ ὀργανισμοῦ τῶν σκωλήκων» (1837), «Φυσικὴ ἱστορία τῶν ὀρθοπτέρων καὶ νευροπτέρων ἐντόμων» (1840) «Ἱστορία τῶν ἐντόμων» (1845), «Γεωργικὴ ζῳολογία» (1854), «Οἱ ἰχθύες τῶν γλυκέων ὑδάτων τῆς Γαλλίας» (1866), «Τὰ ἔντομα, μεταμορφώσεις, ἤθη καὶ ἔνστικτα αὐτῶν» (1867) «Ἡ ζωὴ τῶν ἐμψύχων ὄντων» (1888) κ. ἄ. Δ. Ν. Π.

— **Μπλανσὰρ** (Blanchard), ***Ἰάκωβος.*** Γάλλος ζωγράφος (1600—1638). Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καὶ Λυών, μετὰ ταῦτα δὲ μετέβη πρὸς συμπλήρωσιν τῆς καλλιτεχνικῆς του καταρτίσεως εἰς Ρώμην καὶ Βενετίαν, ὅπου ἐνεκολπώθη τὸ πνεῦμα καὶ τὴν τεχνοτροπίαν τῆς βενετικῆς σχολῆς μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἡ κάθοδος τοῦ ἁγίου Πνεύματος» (ἐν τῇ Παναγίᾳ τῶν Παρισίων), «Ὁ ἅγιος Ἀνδρέας γολυκλινὴς πρὸ τοῦ σταυροῦ τοῦ μαρτυρίου του», «Ὁ ἅγιος Παῦλος», «Ἡ εὐσπλαγχνία» (τὰ δύο τελευταῖα εἰς τὸ Λοῦβρον), «Ἡ Περσεφόνη» (ἐν Ρουὲν) κ.λ.π. Ι. Μ. Π.

— **Μλανσὰρ** (Blanchard), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής,*** *ἀββᾶς*—. Γάλλος παιδαγωγὸς (1731—1797). Ἐδίδαξε ρητορικὴν εἰς ἰησουϊτικὰς σχολὰς τοῦ Μὲτς καὶ τοῦ Βερντέν, ἐκεῖθεν δὲ μετέβη, μετὰ τὴν ἀπέλασιν τῶν ἰησουϊτῶν, εἰς τὰς Κάτω Χώρας (1762). Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ἐν οἷς τὸ «Σχολεῖον ἠθικῆς», πρακτικὸν ἐγχειρίδιον ἠθικῆς διδασκαλίας, μεγάλην διάδοσιν σημειώσαν κατὰ τὴν ἐποχήν του (Ναμὺρ 1772, Παρίσιοι 1818)· ἀποθανὼν δ' ἀφῆκεν ἕτερον παιδαγωγικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Παραγγέλματα διὰ τὴν ἀγωγὴν τῶν νέων ἀμφοτέρων τῶν φύλων, πρὸς χρῆσιν τῶν χριστιανικῶν οἰκογενειῶν» (ἐκδοθὲν ἐν Λυὼν τῷ 1803). Ὁ Μπλανσὰρ ἐξ ἄλλου, θέλων νὰ προσαρμόσῃ τὴν παιδαγωγικὴν διδασκαλίαν τοῦ Ἰ. Ἰακ. Ρουσὼ πρὸς τὴν χριστιανικὴν ἀγωγήν, ἐξεπόνησε περικεκομμένην περίληψιν τοῦ «Αἰμιλίου» του, θέλων, ὡς ἔλεγε, νὰ μὴ ἀποστερηθοῦν οἱ νέοι τῶν ἐκ τοῦ βιβλίου τούτου ὑψηλῶν διδαγμάτων, χωρὶς νὰ ἐκτίθενται εἰς τὸν κίνδυνον τῆς ἀναγνώσεως τοῦ συνόλου. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι τοιαύτη προσπάθεια ἦτο ἐκ τῶν προτέρων καταδικασμένη εἰς ἀποτυχίαν. Ὁ «Αἰμίλιος» ἐξακολουθεῖ ν' ἀναγινώσκεται καὶ σήμερον, ἐνῷ ἡ περίληψις τοῦ Μπλανσὰρ δὲν ἔζησεν οὐδ' ὅσον ὁ συγγραφεύς της.

— **Μπλανσὰρ** (Blanchard), ***Ἰωάννης-Πέτρος*** (ἢ κατ' ἄλλους ***Φραγκῖσκος***). Γάλλος ἀεροναύτης (1753 — 1809). Νεώτατος εἶχε κατασκευάσει πτητικὴν μηχανὴν ὑπὸ μορφὴν πλοίου, τὴν ὁποίαν ἐξέθεσε τῷ 1782, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ δυνηθῇ νὰ τὴν χρησιμοποιήσῃ ἐν τῇ πράξει. Μετὰ τὴν ἀνύψωσιν τῆς σφαίρας τῶν ἀδελφῶν Μογγολφιέρων καὶ τὰς πρώτας ἐπιτευχθείσας δι' αὐτῆς ἀναβάσεις, ὁ Μπλανσὰρ ἐφήρμοσε τὴν μηχανήν του εἰς ἓν τοιοῦτον ἀερόστατον, ἐπέτυχε δὲ τότε (τοῦ ἀεροστάτου ἀνυψουμένου ἀφ' ἑαυτοῦ) νὰ τὸ μετακινῇ ὁριζοντίως κατὰ διεύθυνσιν τῆς ἀρεσκείας του. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1784 ἠδυνήθη νὰ ἐκτελέσῃ πτῆσιν ἀπὸ Παρισίων εἰς Σέβρ, τὸν δὲ Ἰανουάριον τοῦ 1785 διέβη τὸν πορθμὸν τῆς Μάγχης, ἀπὸ τοῦ Ντόβερ εἰς τὸ Καλαί, συνοδευόμενος ὑπὸ τοῦ Ἀμερικανοῦ Τζέφφερι. Ἐπραγματοποίησεν ἔκτοτε 65 ἐν ὅλῳ ἐπιτυχεῖς ἀνυψώσεις διὰ τοῦ ἀεροστάτου του, ἐν Εὐρώπῃ καὶ Ἀμερικῇ, γινόμενος πανταχοῦ ἐνθουσιωδῶς δεκτὸς καὶ ἐπευφημούμενος. Κατὰ τὴν ἑξηκοστὴν ἕκτην ὅμως ἀνάβασιν αὐτοῦ, ἐνῷ κατήρχετο δι' ἀλεξιπτώτου, ἔπαθεν ἴλιγγον καὶ καταπεσὼν ἀπὸ ὕψους 20 μέτρων (Φεβρουάριος 1808) ὑπέστη σοβαρώτατα τραύματα, ἐξ ὧν καὶ ἀπέθανε βραδύτερον.

Ἡ σύζυγος αὐτοῦ *Μαρία-Μαγδαληνὴ-Σοφία*, τὸ γένος *Ἀρμὰν* (Armant), ἀπομείνασα μετὰ τὸν θάνατόν του ἄνευ πόρων, ἀπεφάσισε νὰ συνεχίσῃ τὸ παράδειγμα τοῦ Μπλανσάρ, ἐξετέλεσε δὲ καὶ αὐτὴ πολυαρίθμους ἐπιτυχεῖς ἀναβάσεις. Ἀλλὰ κατὰ τὴν διάρκειαν μιᾶς ἐν Παρισίοις ἑορτῆς, καθ' ἣν ἀνυψωθεῖσα διὰ τοῦ ἀεροστάτου της ὑπὲρ τὴν πόλιν ἔρριπτεν ἀπ' αὐτοῦ πυροτεχνήματα, τὸ ἀέριον ἀνεφλέγη καὶ ἡ τολμηρὰ ἀεροπόρος εὗρεν οἰκτρὸν θάνατον καταπεσοῦσα ἐπὶ μιᾶς στέγης. — Ω.

— **Μπλανσὰρ** (Blanchard), ***Ραφαὴλ-Ἀνατὸλ-Αἰμίλιος.*** Γάλλος φυσιοδίφης (1859—1919). Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ ἰατρικήν, τῷ δὲ 1883 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἱστορίας εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων. Ἐξελέγη μέλος πολλῶν ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν τῆς Εὐρώπης καὶ ἀπὸ τοῦ 1882 διετέλεσε γενικὸς γραμματεὺς τῆς «Ζῳολογικῆς ἑταιρείας» τῆς Γαλλίας. Ὁ Μπλανσὰρ συνέγραψε πλῆθος συγγραμμάτων, ὧν κυριώτερα εἶναι: «Στοιχεῖα ζῳολογίας» (1885) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Μπάρ*, «Ἡ κληρονομικότης εἰς τὸν ἄνθρωπον» (1885), «Ἰατρικὴ Ζῳολογία» (1855—1885) κ. ἄ. Δ. Ν. Π.

**Μπλανσὸν** (Blanchon), ***Πέτρος.*** Γάλλος ποιητής, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Μερὺ* Ἰάκωβος-Ἀνδρέας (βλ. λ.).

**Μπλαντὲ** (Bladé), ***Ἰωάννης-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ἱστορικὸς καὶ λαογράφος (1827 — 1900). Κατ' ἀρχὰς ἤσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, εἶτα δὲ ἀφιερώθη εἰς τὴν σπουδὴν τῆς λογοτεχνίας, τῆς λαϊκῆς ποιήσεως, τῆς ἱστορίας καὶ τῆς ἱστορικῆς γεωγραφίας τῆς νοτιοδυτικῆς Γαλλίας κατὰ τὴν ἀρχαιότητα καὶ τοὺς μέσους χρόνους. Καρπὸς τῶν κοπιωδῶν τούτων ἀναζητήσεων τοῦ Μπαλντὲ ὑπῆρξαν πολύτιμοι καὶ ἐξόχως διαφωτιστικαὶ συγγραφαί, ἐκ τῶν ὁποίων κυριώτεραι εἶναι: «Λαϊκαὶ παραδόσεις καὶ παροιμίαι συλλεγεῖσαι ἐν Ἀρμανιάκ» (1867), «Μελέτη περὶ τῆς καταγωγῆς τῶν Βάσκων» (1869), «Λαϊκαὶ ποιήσεις εἰς γαλλικὴν γλῶσσαν, συλλεγεῖσαι ἐν Ἀρμανιὰκ καὶ Ἀζεναὶ» (1879), «Γασκωνικὰ δημοτικὰ τραγούδια» (1881), «Γασκωνικαὶ δημοτικαὶ παραδόσεις» (1886), «Ἱστορία τοῦ δικαίου ἐν Γασκώνῃ κατὰ τοὺς πρώτους μεσαιωνικοὺς χρόνους» (1888), «Ἱστορικὴ γεωγραφία τῆς ἱσπανικῆς Βασκονίας» (1891), «Οἱ Ἴβηρες» (1892), «Γασκωνικοὶ μῦθοι» (1895) κ. ἄ. Τῷ 1882 ὁ Μπλαντὲ ὠνομάσθη ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς παρισινῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Ι.Μ.Π.

**Μπλάντενσμπουργκ** (Bladensburg) *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῶν Ἡν. Πολιτειῶν ἐν Μέρυλαντ, κείμενον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ποτομάκ, 10 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς Οὐάσινγκτων. Εἶναι γνωστὸν διὰ τὴν παρ' αὐτό, διαρκοῦντος τοῦ πολέμου τῆς ἀνεξαρτησίας, νίκην τῶν Ἄγγλων ἐναντίον τῶν Ἀμερικανῶν (24 Αὐγούστου 1814), κατόπιν τῆς ὁποίας κατελήφθη ὑπὸ τῶν πρώτων ἡ Οὐάσινγκτων. Κάτ. 460. Χ. Δ.

**Μπλαντζίνι** (Blangini), ***Ἰωσὴφ-Μαρία-Φῆλιξ.*** Ἰταλὸς συνθέτης (1781—1841). Ἔγραψε σειρὰν μελοδραμάτων, παιχθέντων ἐν Παρισίοις, Κάσσελ καὶ Μονάχῳ, 174 μελῳδίας, 170 νυκτερινὰ διὰ δύο φωνάς, 4 λειτουργίας κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπλάξτον** (Blackstone), ***Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος νομομαθὴς (βλ. λ. *Βλάκστων* Γουλιέλμος).

**Μπλάου** (Blaeu, ἢ Blaeuw, ἢ Blauw), ***Γουλιέλμος.*** Γάλλος ἀστρονόμος καὶ χαρτογράφος (1571—1638). Μαθητὴς τοῦ διασήμου ἀστρονόμου Τύχωνος (Tycho-Brahé), ἠσχολήθη εἰδικῶς μὲ τὴν χαρτογραφίαν, τῆς ὁποίας ἐτελειοποίησε τὰς μεθόδους, περίφημος δ' ἀπέμεινεν ὁ ἐκδοθεὶς ὑπ' αὐτοῦ χάρτης τοῦ οὐρανοῦ. Βραδύτερον ἵδρυσεν ἐκδοτικὴν ἐπιχείρησιν ἐν Ἀμστελλοδάμῳ, ἧς σημαντικώτερον ἔργον ὑπῆρξεν ὁ ἑξάτομος «Νέος Ἄτλας» του (1634—1662). Ὁ υἱὸς αὐτοῦ ***Ἰωάννης***, ἀποθανὼν τῷ 1673, ἐσυνέχισε τὸ ἔργον καὶ τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ πατρός του, ἐξέδωκε δ' ἐν τοῖς ἄλλοις: «Novum ac magnum theatrum urbinm Belgicae regiae et foederatae» (1649), «Atlas magnus» (11 τόμοι 1650—1662), «Theatrum civitatum et admirandorum Italiae» (1663) κτλ. Ὁ ἐκδοτικὸς οἶκος τῶν Μπλάου, γνωστῶν καὶ ὑπὸ τὸ λατινικόν των ὄνομα Caesius, διετηρήθη μέχρι τοῦ 1700. —Ω.

**Μπλάου** (Blau), ***Ἐρνέστος-Ὄθων-Φρειδερῖκος-Ἑρμάννος.*** Γερμανὸς ἀνατολιστὴς καὶ διπλωμάτης (1828—1879). Ὑπηρέτησεν ἐν Κωνσταντινουπόλει, Περσίᾳ, Τραπεζοῦντι, Ὀδησσῷ, Βοσνίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ, καὶ συνέγραψε: «De nummis Achaemenidarum arameo-persicis» (1855), «Ἡ ἐν Περσίᾳ κατάστασις τοῦ ἐμπορίου» (1858), «Περιηγήσεις ἀνὰ τὴν Βοσνίαν καὶ Ἑρζεγοβίνην» (1877). Σημαντικώταται εἶναι αἱ μελέται αὐτοῦ αἱ ἀναφερόμεναι εἰς τὰς ἀρχαιότητας τῶν ὀροπεδίων τῆς Συρίας καὶ εἰς τὰς φοινικικὰς ἐπιγραφάς. Α. Δ.

**Μπλάουεν** (Blauen) *[Γεωγρ.].* Δύο κορυφαὶ τοῦ Μέλανος Δρυμοῦ ἐν Γερμανίᾳ, ὧν ἡ μὲν μία κεῖται ἐν τῷ ΝΔ τμήματι τοῦ ὄρους, ὑπερκειμένη τῆς πόλεως Μπαντενβάϊλερ (1.167 μ.), ἡ δ' ἑτέρα ἐν τῷ νοτίῳ, ὑπερκειμένη τοῦ Βάζενταλ (1.079 μ.). Χ. Δ.

**Μπλάουντ** (Blount)· βλ. λ. *Μπλέντ.*

**Μπλάουρερ** (Blaurer ἢ Blaarer), ***Ἀμβρόσιος.*** Γερμανὸς κληρικὸς καὶ θεολόγος (1492—1561). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Τυβίγγης, ἔνθα συνεδέθη μετὰ τοῦ Μελάγχθονος. Γενόμενος τῷ 1515 μοναχὸς ἐν τῇ μονῇ τοῦ Ἀλπιρσβὰχ παρὰ τὴν Βιττεμβέργην, προσεπάθησε νὰ διαδώσῃ ἐν αὐτῇ τὴν διδασκαλίαν τοῦ Λουθήρου. Ἀποτυχὼν ὅμως ἐγκατέλιπε τὴν μονὴν ταύτην τῷ 1522 καὶ ἦλθεν εἰς τὴν Κωνσταντίαν, ἔνθα ἔδρα ὑπὲρ τῆς μεταρρυθμίσεως συνδεθεὶς μετὰ τοῦ Ζβιγγλίου. Ἡ διδασκαλία τοῦ Μπλάουρερ συνεφώνει πρὸς τὴν τῶν μεταρρυθμιστῶν, ἐκτὸς τῆς θείας εὐχαριστίας, περὶ ἧς εἶχεν ἀναπτύξει ἰδίαν θεωρίαν. Τῷ 1528 παρευρέθη εἰς τὰς συζητήσεις τῆς Βέρνης, τῷ δὲ 1530 συνειργάσθη πρὸς ἔκδοσιν τῆς «Confessio Tetrapolitana». Τῷ 1533 ἐνυμφεύθη μοναχήν τινα, τῷ δὲ 1537 παρευρέθη ἐν ταῖς συζητήσεσι τῆς Σμαλκάλδης, τὰ ἄρθρα τῆς ὁποίας δὲν ὑπέγραψεν, ὡς διαφωνῶν ἐν τῷ ζητήματι τῆς θείας εὐχαριστίας. Ὁ Μπλάουρερ διεκρίθη ὡς συγγραφεὺς καὶ ποιητὴς ἐκκλησιαστικῶν ὕμνων. Τὴν βιογραφίαν αὐτοῦ ἔγραψεν ὁ Keim (1860) καὶ ὁ Pressel (1861). Κ. Ι. Δ.

**Μπλαρὲζ** (Blarez) ***ἀντίδρασις*** *[Χημ. Τροφ.].* Καλεῖται ἡ διὰ τῆς ἐπιδράσεως ἀλκοολικοῦ διαλύματος καυστικοῦ καλίου ἀνίχνευσις τῆς παρουσίας ἀραχιδελαίου εἰς τὰ ἔλαια. Σ. Γ.

**Μπλὰς** (Blass), ***Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς φιλόλογος (1843—1907). Ἐσπούδασεν ἀπὸ τοῦ 1860 μέχρι τοῦ 1868 ἐν Γοτίγγῃ καὶ Βόννῃ. Ἐδίδαξεν ἐν Μπίλεφελντ, Ναουμπούργκ, Μαγδεμβούργῳ, Στέττιν καὶ Καινιξβέργῃ. Τῷ 1881 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας ἐν Κιέλῳ καὶ τῷ 1892 ἐν Χάλλῃ, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Die griechische Beredsamkeit in dem Zeitraum von Alexander bis auf Augustus» (1865), «Die Attische Beredsamkeit» (1868), «Die Aussprache des Griechischen» (1870), «Hermeneutik und Kritik», «Paläographie Buchwesen und Handschriftenkunde» (1891), «Ausführlicher Grammatik der griechischen Sprache» (1893), «Grammatik des neutestamentlichen Griechisch» (1896), «Rhytmen der attischen Kunstprosa» (1901). Ὁ Μπλὰς ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν **σπουδαιοτέρων φιλολόγων ἐκδοτῶν κλασσικῶν ἔρ-**

Digitized by Google

γων τῶν νεωτέρων χρόνων. Ἐξέδωκε τοὺς «Παραλλήλους βίους» τοῦ Πλουτάρχου (1872), τὸν Ἰσοκράτη (1878), τὸν Ἀνδοκίδην (1880), τὸν Ἀντιφῶντα (1881), τὸν Δημοσθένη (1885), τὸν Δείναρχον (1888), τὸν Ὑπερείδην (1894), τὸν Αἰσχίνην (1896), τὰ σῳζόμενα ἀποσπάσματα τοῦ Βακχυλίδου (1898), τὸ κατὰ Λουκᾶν εὐαγγέλιον (1897) κλπ. θ. π.

**Μπλάσκο *Ἰμπάνιεθ*** (Blasco Ibáñez), ***Βικέντιος***. Ἱσπανὸς πολιτικὸς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς εἰς Βαλένθιαν τῷ 1867 καὶ ἀποθανὼν εἰς Μαντὸν τῆς Γαλλίας τῷ 1928. Ἡ οἰκογένειά του τὸν προώριζε διὰ τὸ ναυτικόν, ἀλλ' ὁ Ἰμπάνιεθ, μὴ ἔχων διόλου κλίσιν πρὸς τὰ μαθηματικά, ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τῶν πρὸς τὸ στάδιον τοῦτο βλέψεων. Ἠκολούθησε τότε μαθήματα εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς γενετείρας του, τὰ ὁποῖα ὅμως ἐπίσης διέκοψε διὰ νὰ μεταβῇ εἰς Μαδρίτην, ὅπου ὁ λαϊκὸς μυθιστοριογράφος Μανουὲλ Φερνάνδο Γκονθάλες τὸν προσέλαβε γραμματέα του. Τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἡ φιλολογία δὲν εἷλκυε τόσον τὸν Ἰμπάνιεθ, ὅσον ἡ πολιτική. Συμπαθῶν πρὸς τὰς ἐπαναστατικὰς ἰδέας, ἐνεφανίζετο συχνὰ ὡς ῥήτωρ διαδηλώσεων, ἔγραψε δὲ τότε καὶ ἐπαναστατικοὺς στίχους, οἱ ὁποῖοι τοῦ ἐστοίχισαν ἓξ μηνῶν φυλάκισιν. Ἐκτίσας τὴν ποινήν του, ἐρρίφθη μετὰ πλείονος ἀκόμη θέρμης εἰς τὸν ἀγῶνα, ἀλλ' ἀπειλούμενος καὶ πάλιν μὲ νέαν ἐγκάθειρξιν, ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλίπῃ τὸ πάτριον ἔδαφος καὶ νὰ μεταβῇ εἰς Παρισίους (18‹9), ὅπου ἐδημοσίευσε μίαν «Ἱστορίαν τῆς Ἱσπανικῆς Ἐπαναστάσεως». Ἡ χορηγηθεῖσα τῷ 1891 ἀμνηστεία τοῦ ἐπέτρεψε νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Ἱσπανίαν, ἐγκατασταθεὶς δὲ εἰς Βαλένθιαν ἵδρυσεν ἐφημερίδα ἄκρως ἀριστερῶν κατευθύνσεων, τὸν «Λαόν» («El Pueblo»), τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ὁ κύριος καὶ μόνος σχεδὸν συντάκτης. Παρὰ τὴν ἐκ τούτου ὅμως ὁλοκληρωτικὴν ἀπασχόλησίν του, εὕρισκε τὸν καιρὸν νὰ ἐπιδοθῇ, γράφων τὴν νύκτα ἰδίως, εἰς τὴν συγγραφὴν τῶν πρώτων αὐτοῦ μυθιστορημάτων, τὰ ὁποῖα ἐκδοθέντα βραδύτερον ἐδημιούργησαν τὴν μεγάλην του φήμην: «La Barraca» (Κατηραμένοι τόποι, 1896), «Flor du Mayo» (Ἄνθος τοῦ Μαΐου, 1895) καὶ «Entre naranjos» (Ὑπὸ τὰς πορτοκαλέας, 1899) ἔργα ἀπεικονίζοντα τὴν ζωὴν τῶν χωρικῶν τῆς πατρίδος του, καὶ ἄλλα μυθιστορήματα περιπετειῶν, ὅπως τὸ «Arroz y tartana» (1894).

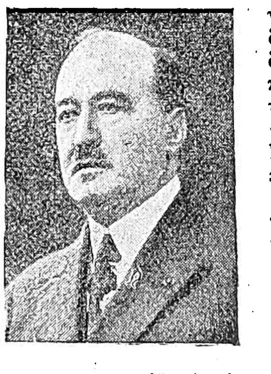

*Βικ. Μπλάσκο Ἰμπάνιεθ.*

Ἐν τῷ μεταξύ, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Κούβας, ὁ Ἰμπάνιεθ, πιστὸς εἰς τὰς ἀρχάς του, ἐτάχθη ὑπὲρ τῶν ἐπαναστατῶν καὶ ἠγωνίσθη κατὰ τοῦ ἐναντίον αὐτῶν πολέμου. Ἀπειληθεὶς τότε διὰ συλλήψεως ἔφυγεν εἰς Ἰταλίαν ὁπόθεν ἀπεκόμισε τὸ ὑλικὸν νέου βιβλίου του «En el pais del arte» (Εἰς τὴν χώραν τῆς τέχνης), ἐκδοθέντος τῷ 1897. Ἐπανελθὼν εἰς Ἱσπανίαν τῷ 1896 συνελήφθη καὶ κατεδικάσθη εἰς διετῆ φυλάκισιν. Ἐδημιουργήθη ὅμως τότε ζωηρὰ ὑπὲρ αὐτοῦ κίνησις καὶ ἡ κυβέρνησις ὑπὸ τὴν πίεσιν τῆς κοινῆς γνώμης ἠναγκάζετο νὰ τὸν ἀπαλλάξῃ διὰ χάριτος, ἐνῷ ὁ λαὸς τῆς Βαλένθιας τὸν ἐξέλεγεν ἀντιπρόσωπόν του εἰς τὰ Κόρτες. Ἔκτοτε ἡ δρᾶσίς του καὶ ἡ ζωή του παρουσιάζει περίεργον πολυμορφίαν καὶ ἀνήσυχον ἐνεργητικότητα. Ἐξακολουθεῖ δρῶν ἐνεργῶς ἐν τῇ πολιτικῇ μέχρι τοῦ 1909 ὡς εἷς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῆς δημοκρατικῆς Ἑνώσεως, ἐκτελεῖ κατὰ τὸν ἴδιον χρόνον μεγάλα ταξίδια ἀνὰ τὴν Γαλλίαν, τὴν Ἑλβετίαν, τὴν Αὐστρίαν καὶ τὰς ἄλλας παραδουναβίους χώρας, τὴν Τουρκίαν (ὅπου συλλαμβάνεται πρὸς στιγμὴν ἐν Ἀδριανουπόλει ὡς κατάσκοπος) καὶ τὴν Μικρὰν Ἀσίαν, γράφει δ' ἐν τῷ μεταξὺ καὶ δημοσιεύει ἀλλεπαλλήλως πολυάριθμα νέα ἔργα, μυθιστορήματα ἰδίως λαϊκοῦ γούστου, ὅπως τά: «Sonnica la cortesana» (Σόννικα ἡ ἑταίρα, 1901), «El intruso» (Ὁ παρείσακτος, 1903), «La maja desnuda» (Ἡ γυμνὴ γυναῖκα, 1903), «Sangue y arena» (Οἱ αἱματωμένοι στίβοι, 1908), κλπ. Εἰς τὴν ἰδίαν ταύτην ἐποχὴν ἀνάγονται καὶ τὰ ἔργα του «Los muertos mandan» (Οἱ νεκροὶ διατάσσουν) καὶ «Luna Benamor» (1909). Παρὰ τὴν μεγάλην ὅμως ἐπιτυχίαν τῶν μυθιστορημάτων του καὶ τὸν πλοῦτον ὃν ἀπεκόμισεν ἐκ τῆς εὐρυτάτης αὐτῶν κυκλοφορίας, ὁ Μπλάσκο Ἰμπάνιεθ, ἐν τῷ ὁποίῳ ἡ ὑπερεκχειρίζουσα ἐνεργητικότης καὶ ὁ πόθος τοῦ νέου ἀπετέλεσαν πάντοτε τὸ κύριον χαρακτηριστικὸν τῆς προσωπικότητός του, ἐγκατέλιπε τῷ 1900 τὴν Ἱσπανίαν καὶ ἀνεχώρησεν εἰς Ἀργεντινήν. Ἐκεῖ ἔδωκεν ἐν ἀρχῇ σειρὰν διαλέξεων, κατόπιν δέ, ἐπιζητῶν πάντοτε νέας ἐντυπωσιακὰς περιπετείας, ἠγόρασεν ἐν Ρίο Νέγκρο τῆς Παταγονίας ἀπέραντον χέρσον περιοχήν, ἔδωκεν εἰς αὐτὴν τὸ ὄνομα «Ἀποικία Θερβάντες», καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν καλλιέργειαν τοῦ ἐδάφους ἐπὶ κεφαλῆς 600 ἐργατῶν, οἱ ὁποῖοι ὅμως δὲν ἐβράδυναν νὰ στασιάσουν ἐναντίον του. Μετεφέρθη τότε ἐκ Παταγονίας εἰς τὸ ἄλλο ἄκρον τῆς Ἀργεντινῆς δημοκρατίας, διὰ νὰ ἱδρύσῃ εἰς τὴν ἐπαρχίαν τοῦ Κορριέντες τὴν ἀποικίαν τῆς «Νέας Βαλένθιας», καλλιεργῶν ἐκεῖ ὄρυζαν καὶ πορτοκαλλέας. Ἀλλ' ἀπογοητευθεὶς ἐν τέλει, ἐπανῆλθεν εἰς Εὐρώπην κατὰ τὰς παραμονὰς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Ἐγκατεστάθη εἰς Γαλλίαν καὶ ἔθεσεν εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ ἀγῶνος τῆς Ἀντὰντ ὅλον τὸ λογοτεχνικόν του τάλαντον καὶ τὴν πολύμορφον ἐνεργητικότητά του. Πλεῖστα ὅσα ἄρθρα του ἐδημοσιεύθησαν τότε, εἰς τὰς ἐφημερίδας τῆς Ἀμερικῆς ἰδίως, τείνοντα ν' ἀποδείξουν τὸν λατινικὸν πολιτισμὸν ἀνώτερον τοῦ γερμανικοῦ καὶ καταγγέλλοντα τοὺς Γερμανοὺς ὡς μετερχομένους βανδαλισμοὺς καὶ ἀγριότητας, ἤρχισε δ' ἐξ ἄλλου συγγράφων ὑπὸ τὸ ἴδιον πνεῦμα τὴν «Ἱστορίαν τοῦ πολέμου», τῆς ὁποίας ἐξεδόθησαν ἐννέα τόμοι ἀπὸ τοῦ 1914 καὶ ἐφεξῆς. Τοῦ αὐτοῦ σκοποῦ καὶ τύπου ὑπῆρξε τὸ δημοσιευθὲν τῷ 1916 βιβλίον του «Los quatros jinetes del Apocalipsis» (Οἱ τέσσαρες ἱππόται τῆς Ἀποκαλύψεως), τὸ ὁποῖον μεταφρασθὲν εἰς τὴν ἀγγλικὴν καὶ ἐκδοθὲν εἰς Νέαν Ὑόρκην ἐσημείωσε τεραστίαν κυκλοφοριακὴν ἐπιτυχίαν. Τῷ 1924 ἐπανεξεδόθη, ἐν Ἀμερικῇ ἐπίσης, εἰς 2.000.000 ἀντιτύπων, κινηματογραφηθὲν δὲ κατόπιν ἐγένετο πασίγνωστον ἀνὰ τὸν κόσμον ὁλόκληρον.

Τῷ 1919 ὁ Ἰμπάνιεθ ἐταξίδευσε καὶ πάλιν εἰς Ἀμερικήν, εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας πρῶτον καὶ κατόπιν εἰς Μεξικόν, ὅπου ἔδωκε διαλέξεις καὶ προπαρεσκεύασε τὸ ὑλικὸν τῶν μεξικανικῆς ὑποθέσεως μυθιστορημάτων του. Ἐπανελθὼν τῷ 1921 εἰς Ἱσπανίαν, δὲν παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ πολύ. Ὅταν ὁ στρατηγὸς Πρίμο ντὲ Ριβέρα ἐγκαθίδρυσε τὴν δικτατορίαν ἔσπευσε ν' αὐτοεξορισθῇ καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Μαντὸν τῆς Γαλλίας, ὁπόθεν ἐξέδωκεν ἕνα σφοδρὸν λίβελλον κατὰ τοῦ βασιλέως Ἀλφόνσου ΙΓ' ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Ἀλφόνσος χωρὶς μάσκαν», καταγγέλλων αὐτὸν ὡς ἀνέκαθεν γερμανόφιλον καὶ ἐχθρὸν τῆς Ἀντάντ. Ἀντίτυπα τοῦ βιβλίου του τούτου ἐρρίφθησαν δι' ἀεροπλάνου εἰς διαφόρους πόλεις τῆς Ἱσπανίας. Ἔκαμε κατόπιν μακρὸν περίπλουν ἀνὰ διαφόρους μεμακρυσμένας χώρας, ἰδίως εἰς Κίναν, Ἰνδίας, Σουδὰν καὶ Αἴγυπτον, καὶ ἐπανελθὼν καὶ πάλιν εἰς Μαντὸν ἐξέδωκε νέα ἔργα του, ἐν οἷς: «Los Argonautas» (Οἱ Ἀργοναῦται), «La reina Calafia» (Ἡ βασίλισσα Καλάφια), «A los pies de Venus» (Εἰς τοὺς πόδας τῆς Ἀφροδίτης) καὶ «El papa del mare» (Ὁ πάπας τῆς θαλάσσης), ἐν τῷ ὁποίῳ ἐπιχειρεῖ ν' ἀναστηλώσῃ τὴν τιμὴν τῶν Βοργιῶν.

Ἡ συγγραφικὴ παραγωγὴ τοῦ Μπλάσκο Ἰμπάνιεθ ὑπῆρξεν ἐκπληκτικῶς πολυποίκιλος κατὰ τὴν μορφὴν καὶ κυριολεκτικῶς τεραστία κατὰ τὸν ὄγκον. Ὅσον ἀφορᾷ ὅμως τὴν φιλολογικὴν τῶν ἔργων του ἀξίαν αἱ κρίσεις διΐστανται. Οἱ περισσότεροι δὲν τοῦ ἀποδίδουν μεγάλας τιμάς, τινὲς μάλιστα ἐκ τῶν κριτικῶν τὸν θεωροῦσι καὶ ἀνάξιον λόγου, χαρακτηρίζοντες τὰ βιβλία του ὡς ἐμπορεύματα ἐξαγωγῆς, ἀποβλέποντα ἀποκλειστικῶς καὶ μόνον εἰς τὴν μεγάλην μεταξὺ τῆς μάζης κυκλοφορίαν. Ἐξαίρεσις πάντως γίνεται διὰ τὰ πρῶτά του μυθιστορήματα, τὰ ὁποῖα, ἐπηρεασμένα ἀπὸ τὸν Θερβάντες καὶ τὸν Μπαλζὰκ καὶ μετ' αὐτοὺς ἀπὸ τὸν Φλωμπέρ, τὸν Ζολὰ καὶ τὸν Ἀνατὸλ Φράνς, ἵστανται εἰς ὑψηλοτέραν φιλολογικὴν βαθμῖδα ἀπὸ τὰ μεταγενέστερά του ἔργα. Ἀλλὰ καὶ ὁ ἴδιος ἐχαρακτήριζεν ἑαυτὸν μυθιστοριογράφον μᾶλλον παρὰ λογοτέχνην, ἀποδίδων, ὡς ἔλεγε, περισσοτέραν σημασίαν εἰς τὴν φαντασίαν τὴν δημιουργοῦσαν τὴν ζωὴν παρ' ὅσην εἰς τὸ χάρισμα τοῦ ὕφους.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *C. Pitollet*, «Blasco Ibanez, ses romans et le roman de sa vie» (Παρίσιοι, 1921).—*E. Zamacois*, «Mis contomporaneos» (τ. I, Μαδρίτη, 1910).—*Gasco Contell*, «Los grandes escritores: Vicente Blasco Ibánez» (Παρίσιοι, 1926).—*R. Martinez de la Riva*, «Blasco Ibánez, su vida, su obra su muerte, sus mejores páginas» (Μαδρίτη, 1929).
Γ. Ζ.

**μπλάστρι** (τό)· δημοτ., ἔμπλαστρον, ἄλλως *κατάπλασμα*: «ἔχω μπλάστρι στὴ μέση»· || μεταφ. «τοῦ ἦρθε μπλάστρι» ὅταν τις ἐπιτύχῃ κέρδος τι παρὰ προσδοκίαν.

**μπλάστρωμα** (τό)· ἐπίθεσις ἐμπλάστρου, καταπλάσματος: «θέλει ἕνα καλὸ μπλάστρωμα 'ς τὴ μέση».

**μπλαστρώνω**· ἐπιθέτω ἔμπλαστρον ἢ ἐπιθέτω τι δίκην ἐμπλάστρου: «τοῦ μπλάστρωσε μιὰ ρετσινιὰ 'ς τὸ σβέρκο».

**Μπλάτα** *[Γεωγρ.]*. Βόρειος παραπόταμος τοῦ Στρυμόνος ἐν τῇ Βουλγαρίᾳ, νοτίως τῆς Σόφιας. Διαρρέει τὸ ΒΔ. τοῦ Ρίλου ὀροπέδιον καὶ δεχόμενος πολλοὺς ῥύακας χύνεται εἰς τὸν Στρυμόνα πρὸ τῆς εἰσόδου τούτου εἰς τὴν ὀρεινὴν χώραν τῆς Ἄνω Τζουμαγιᾶς. Ι. Σ. Σ.

**Μπλάτσεν** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Ἀχλαδιὰ* (βλ. λ.).

**Μπλάτση** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Ὀξυὲς* (βλ. λ.).

**Μπλάτσης, *Δημήτριος*.** Ἕλλην κτηματίας καὶ ἔμπορος, καταγόμενος ἐκ τοῦ χωρίου Βλάστη τῆς Μακεδονίας (1806—1882). Τῇ πρωτοβουλίᾳ του ἠγοράσθη (1840) συνεταιρικῶς, μετὰ τοῦ βαρώνου Γεωργίου Σίνα καὶ τοῦ Βασιλείου Σπάρταλη, νεότευκτον φορτηγὸν ἀτμόπλοιον, ὅπερ ὀνομασθὲν «Δημήτριος-Χριστῖνα» ἀπετέλεσε τὴν πρώτην ἐκδήλωσιν τῆς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων τάσεως πρὸς ἐκμετάλλευσιν τῶν θαλασσίων συγκοινωνιῶν διὰ συνεταιρικῶν ἀτμοπλοίων, νηολογηθὲν τὸ πρῶτον ἐν Τεργέστῃ καὶ κατόπιν ἐν Ἑρμουπόλει. Σ. Ε. Λ.

**Μπλάϋθ** (Blyth) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Νορθούμπερλαντ, 17,5 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Νιούκαστλ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον ἐμπορίου γαιανθράκων καὶ ἔχει ἀκμαίαν ἁλιείαν σολωμῶν καὶ ρεγγῶν, ἐργοστάσια σχοινίων κλπ. Κάτ. 30.591. Χ. Δ.

**μπλέ,** καὶ ***μπλού***, ἄκλιτον· ὁ ἔχων τὸ χρῶμα τοῦ οὐρανοῦ, κυανοῦς: «φόρεμα μπλέ», «τό 'βαψα μπλού» (τὸ γαλλ. bleu).

**Μπλὲ** (Blé) ***Νικόλαος*** *ντὺ —, μαρκήσιος τοῦ* ***Ὑξὲλλ*** (Uxelles). Γάλλος στρατάρχης καὶ πολιτικὸς (1652—1730). Ἦτο ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ἐν Μαγεντίᾳ πολιορκηθέντος γαλλικοῦ στρατοῦ διαρκοῦντος τοῦ τριακονταετοῦς πολέμου, ὁπότε κατώρθωσε νὰ διατηρήσῃ ἐπὶ τέσσαρας μῆνας τὴν ἄμυναν τῆς πόλεως ἐναντίον ἑξαπλασίας δυνάμεως πολιορκητῶν. Τῷ 1703 προήχθη εἰς στρατάρχην. Ἀντεπροσώπευσεν εἶτα τὴν Γαλλίαν εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς Οὐτρέχτης, διωρίσθη γενικὸς διοικητὴς τῆς Ἀλσατίας καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ἐπὶ τῆς μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' ἀντιβασιλείας. Ἐν τῇ ἰδιότητί του ταύτῃ διεξήγαγε τὰς μετὰ της Πρωσσίας διαπραγματεύσεις διὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς μυστικῆς συνθήκης τοῦ 1716. —Ω.

**Μπλέγκεν** (Blegen), ***Κάρολος***. Ἀμερικανὸς ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Μιννεαπόλει τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῷ 1867. Σπουδάσας τὴν φιλολογίαν καὶ ἀρχαιολογίαν, ἐγένετο ἀλληλοδιαδόχως μέλος, γραμματεύς, ὑποδιευθυντὴς καὶ διευθυντὴς τῆς ἐν Ἀθήναις ἀμερικανικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς ἀπὸ τοῦ 1910—1927. Ἀπὸ τοῦ 1927 διατελεῖ καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κιγκιννάτης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Κατὰ τὴν μακρὰν ἐν Ἑλλάδι διαμονὴν αὐτοῦ, ὁ Μπλέγκεν διενήργησεν ἀρχαιολογικὰς ἀνασκαφὰς κατ' ἀρχὰς μὲν μετ' ἄλλων ἐν Κορίνθῳ καὶ Λοκρίδι, ἀργότερον δὲ μόνος ἐν Κορακοῦ τῆς Κορίνθου, ἔνθα ἔφερεν εἰς φῶς μνημεῖα τῆς χαλκίνης ἐποχῆς, ἐν Γωνιᾷ καὶ Ἁγίῳ Βασιλείῳ τῆς Κορίνθου, ἔνθα ἀπεκάλυψε συνοικισμὸν νεολιθικῆς περιόδου, ἐν Ἡρακλείῳ τῆς Νεμέας, ἔνθα ἐκαθάρισε τὸν ναὸν τοῦ Διὸς καὶ τὸ Γυμνάσιον, ἐν Ἡραίῳ τοῦ Ἄργους, ἔνθα εὗρε πλεῖστα ἀρχαῖα ἀντικείμενα, εἰς Ἁγιωργίτικα τῆς Ἀρκαδίας καὶ ἐν Ἀκροκορίνθῳ, ἔνθα ἀνεῦρε προϊστορικοὺς συνοικισμούς. Τὸ ἀποτέλεσμα τῶν ἀνασκαφῶν τούτων ὡς καὶ τὰς ἐξ αὐτῶν ἀρχαιολογικὰς παρατηρήσεις του ὁ Μπλέγκεν ἐδημοσίευσεν εἰς πολλὰ βιβλία καὶ πραγματείας εἰς τὰ ἀμερικανικὰ ἢ ἑλληνικὰ ἀρχαιολογικὰ περιοδικά. Ἐκ τῶν ἔργων του τὰ σπουδαιότερα εἶναι: «Korakou, a prehistoric settlement near Corinth», «Zygouries, a prehistoric settlement in the valley of Cleonae», «Acrocorinth, excavations in 1926», ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων Ἀμερικανῶν ἀρχαιολόγων. Ἐκ δὲ τῶν πραγματειῶν του ἀξιοσημείωτοι εἶναι αἱ ἑξῆς, δημοσιευθεῖσαι ἐν «Amer. Journal of Archaeology»: «Corinth in Prehistoric Times» (1920), «Corinth in Prehistoric Times» (1923), «Excavations at the Argive Heraeum» (1925), The site of Opous» (1926), «Excavations at Nemea» (1927), «The geographical Distribution of prehistoric remains in Greece» (1928).

Ὁ Μπλέγκεν ἐπεδόθη κυρίως εἰς τὴν ἔρευναν καὶ μελέτην τῶν προϊστορικῶν μνημείων τῆς Ἑλλάδος, οὗτος δὲ μετὰ τοῦ Ἄγγλου ἀρχαιολόγου Wace διῄρεσαν πρῶτοι τὴν προϊστορίαν τῆς Ἑλλάδος εἰς τὰς τρεῖς περιόδους αὐτῆς: πρωτοελλαδικήν, μεσοελλαδικὴν καὶ ὑστεροελλαδικήν. Β.Δ.Θ.

**Μπλεϊβεϊς, *Γιάν***. Σλοβένος συγγραφεὺς (1808—1890), θεσπίσας νέον σύστημα ὀρθογραφίας τῆς σλοβενικῆς γλώσσης.

**Μπλέκινγκε** (Blekinge) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς (län) τῆς Σουηδίας, ὁ μικρότερος κατ' ἔκτασιν ὁλοκλήρου τῆς χώρας, κείμενος εἰς τὸ Ν. τμῆμα αὐτῆς παρὰ τὴν Βαλτικήν, ὑφ' ἧς διαβρέχεται. Ἔχει ἔκτασιν 3.039 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1929) 146.851 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Καρλσκρόνα* (κάτ. 26.615). Ἡ περιοχὴ αὐτοῦ εἶναι ἐκ τῶν γραφικωτέρων χωρῶν τῆς Σουηδίας, καλυπτομένη ὑπὸ ἐκτεταμένων δασῶν καὶ διαρρεομένη ὑπὸ πολλῶν ποταμῶν πλουσίων εἰς ἰχθῦς τοῦ εἴδους τῶν σολωμῶν. Κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ μέχρι τοῦ 1658, ὁπότε προσηρτήθη εἰς τὴν Σουηδίαν (συνθήκη Ρόσκιλντ), ἀνῆκεν εἰς τὴν Δανίαν. Χ. Δ.

Digitized by Google

**μπλέκω**, ἀόρ. *ἔμπλεξα—ἐ)μπλέχτηκα*, παθ. μετχ. *μπλεγμένος*· ἐμπλέκω, περιπλέκω, μεταβ. καὶ ἀμετάβ.: «*ἐμπλέξαμε σὲ μιὰ παρέα*», «*πρόσεξε μὴ σὲ μπλέξουν*», «*τὸν ἔμπλεξανε καὶ τὸν πάντρεψαν*» || «*ἔμπλεξε μὲ κακὲς συναναστροφὲς*» παρεσύρθη, «*ἔμπλεξε 'ς τὴν πολιτικὴ καὶ ἔχασε τὴν περιουσία του*».

**Μπλεμενιᾶνοι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κυπαρισσίας τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 141. Χ. Δ.

**Μπλένκερ** (Blenker), *Λουδοβῖκος*. Γερμανὸς στρατηγός, ἀμερικανικῆς καταγωγῆς (1812—1863). Κατ' ἀρχὰς ἀσκήσας τὸ ἐπάγγελμα τοῦ χρυσοχόου, κατετάχθη βραδύτερον εἰς τὸν στρατόν, ἐγένετο ἀξιωματικὸς καὶ ὡς τοιοῦτος συνώδευσε τὸν βασιλέα Ὄθωνα εἰς τὴν Ἑλλάδα, καταταχθεὶς εἰς τὴν βαυαρικὴν λεγεῶνά του. Ἐγκατασταθεὶς βραδύτερον ἐν Βόρμς, ὅπου ἔζησεν ἐπί τινα καιρὸν ὡς ἔμπορος οἴνων, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος τῷ 1848 εἰς τὴν ἐναντίον τῶν Πρώσσων μάχην ἐν Παλατινάτῳ. Τῷ 1849 μετέβη εἰς Ἀμερικήν, ὅπου ἔδρασεν ὡς ἐπαναστάτης κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ χωρισμοῦ. Α. Δ.

**Μπλεννερχάσσετ** (Blennerhasset), ***Καρλόττα***, *λαίδη* —. Γερμανὶς συγγραφεύς, τὸ γένος κόμισσα ***Leyden***, γεννηθεῖσα ἐν Μονάχῳ (1843—1917). Συζευχθεῖσα (1870) μετὰ τοῦ Sir Rowland Blennerhasset, διέμεινεν ἐν Μονάχῳ, ὅπου ἀνεκηρύχθη ἐπίτιμος διδάκτωρ τῆς φιλοσοφικῆς σχολῆς τοῦ πανεπιστημίου τῆς πόλεως ταύτης (1898). Κυρίως ἐγένετο γνωστὴ διὰ τῶν δύο ἀξιολόγων βιογραφιῶν της: «*Κυρία ντὲ Στάελ*» (1887—1889, 3 τόμ.· μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν γαλλικὴν 1890) καὶ «*Ταλλεϋράνδος*» (1894· μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν ἀγγλικὴν 1894). Ἔγραψε πρὸς τούτοις πλεῖστα δοκίμια, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «*Ἡ ἠθικὴ τοῦ συγχρόνου μυθιστορήματος*» (ἐν τῷ περιοδικῷ «*Κοσμόπολις*» 1896) περὶ Γεωργίου Ἔλιοτ (1886), Ταὶν (18 6), περὶ βασιλίσσης Βικτωρίας (1887), περὶ τοῦ συγχρόνου ἰσπανικοῦ μυθιστορήματος (1896), περὶ Γαβριὴλ ντ'Ἀννούντσιο (1898), περὶ Ἀλφρέδου λόρδου Τέννυσον (1899) ἐν τῇ «*Γερμανικῇ ἐπιθεωρήσει*». —Ω.

**Μπλέντ**, ἢ ***Βέλντες*** (σλοβ. Bled, γερμ. Veldes) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ λίμνη τῆς Νοτιοσλαβίας καὶ λουτρόπολις παρ' αὐτήν, ἐν Καρνιόλῃ. Ἡ λίμνη ἔχει ἔκτασιν 1,45 τ. χλμ. καὶ βάθος 31 μ., ἡ δὲ στάθμη αὐτῆς κεῖται εἰς ὕψος 478 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Ἡ λουτρόπολις, κτισμένη ἐν τῷ μέσῳ γραφικωτάτης περιοχῆς ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ἄσσλινγκ-Τεργέστης, εἶναι ἐκ τῶν τὰ μάλιστα συχναζομένων κέντρων παραθερισμοῦ, ἔχει θερινὴν ἔπαυλιν τοῦ βασιλέως τῆς Νοτιοσλαβίας, τῷ δὲ 1926 (Ἰούνιος) συνῆλθεν ἐκεῖ ἡ συνδιάσκεψις τῆς Μικρᾶς Ἀντάντ. Κάτ. (1929) 2.235, Σλοβένοι τὴν ἐθνικότητα. Χ. Δ.

**Μπλὲντ** (Blunt), ***Οὐλφριντ-Σκάβενν***. Ἄγγλος διπλωμάτης, ποιητής, δημοσιογράφος καὶ περιηγητὴς (1840—1922). Τῷ 1858 εἰσῆλθεν εἰς τὸ διπλωματικὸν στάδιον, ὑπηρετήσας διαδοχικῶς ἐν ταῖς πρεσβείαις τῶν Ἀθηνῶν, τῆς Μαδρίτης, τῶν Παρισίων καὶ τῆς Λισσαβῶνος. Τῷ 1867 ἀπεστάλη εἰς τὴν νότιον Ἀμερικήν, μεθ' ὃ παρῃτήθη καὶ συνεζεύχθη τὴν λαίδην Νοέλ, ἐγγόνην τοῦ Βύρωνος, ἀφιερωθεὶς εἰς τὴν ἐπιστήμην καὶ τὴν λογοτεχνίαν. Ὁ Μπλὲντ ἐγένετο γνωστὸς ὡς φίλος τῶν Μωαμεθανῶν, οὓς ὑπεστήριξεν ἐνθουσιωδῶς ἐν τῷ ἔργῳ του «Future of Islam» (1888). Κατεπολέμησε τὴν ἀγγλικὴν πολιτικὴν τοῦ Σουδὰν καὶ ὑπῆρξε συνήγορος τοῦ ἐθνικοῦ κινήματος τῆς Αἰγύπτου. Ἄλλο ἔργον αὐτοῦ εἶναι: «Idees about India» (1885). Ἀπὸ τοῦ 1885 μέχρι τοῦ 1886 ὑπῆρξε μέλος τῆς βουλῆς. Τῷ 1887 συνελήφθη ἐν Ἰρλανδίᾳ κατά τινα διαδήλωσιν ἐναντίον τῆς Ἀγγλίας καὶ κατεδικάσθη εἰς δύο μηνῶν φυλάκισιν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν πρώτην θέσιν κατέχει τὸ «Love Sonnets of Proteus» (1880). Ὁ Μπλὲντ διεκρίθη καὶ ὡς μεταφραστὴς λογοτεχνικῶν ἔργων ἐκ τῆς ἀραβικῆς. Α. Δ.

**Μπλέντα** (Blenda). Θρυλικὴ Σουηδὶς ἡρωΐς, τὰ ἀνδραγαθήματα τῆς ὁποίας ὑπενθυμίζουσι τὰ τῆς Ἰουδείθ. Βοηθουμένη ὑπὸ τῶν γυναικῶν τοῦ καντονίου Βαΐρεντ, ἐμέθυσε καὶ κατέσφαξε σύνταγμα Δανῶν, οἱ ὁποῖοι, ἐπωφεληθέντες τῆς ἀπουσίας τοῦ βασιλέως τῆς Σμαλάνδης Ἄλλε, ἐπέδραμον κατὰ τῆς χώρας. Λόγῳ τοῦ ἀνδραγαθήματος τούτου ἀπενεμήθησαν εἰς τὰς γυναῖκας τοῦ Βαΐρεντ πολιτικὰ δικαιώματα ἴσα πρὸς τὰ τῶν ἀνδρῶν. Ἡ ἀφήγησις αὕτη φαίνεται θρυλική, ἂν καὶ βεβαιοῦται ἱστορικῶς, ὅτι οἱ βασιλεῖς τῆς Σουηδίας Κάρολος ὁ ΙΑ' καὶ ὁ Γουσταῦος Γ' ἐκύρωσαν τοιαῦτα προνόμια. Α. Δ.

**Μπλένχαϊμ**, ἢ ***Μπλίντχαϊμ*** (Blenheim ἢ Blindheim) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γερμανίας ἐν τῇ περιφερείᾳ Χαΐχσταιντ τῆς Σουηβίας (Βαυαρία), κείμενον ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Δουνάβεως καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ντονάουβαιρτ—Οὔλμ. Κάτ. (1919) 804. Εἶναι γνωστὸν ἐκ τῆς μεγάλης παρ' αὐτὸ καὶ τὸ Χαίχσταιτ μάχης τῆς 13 Αὐγούστου 1704, καθ' ἣν οἱ Ἄγγλοι (ὑπὸ τὸν Μάλμπορω) μετὰ τῶν Αὐστριακῶν (ὑπὸ τὸν πρίγκιπα Εὐγένιον) ἐνίκησαν τὰ γαλλοβαυαρικὰ στρατεύματα ὑπὸ τοὺς Ταλλὰρ καὶ Μαρσὲν διαρκοῦντος τοῦ πολέμου περὶ διαδοχῆς τοῦ ἰσπανικοῦ θρόνου. Ἡ μάχη αὕτη ὀνομάζεται ὑπὸ μὲν τῶν Ἄγγλων, «*μάχη τοῦ Μπλένχαϊμ*» ὑπὸ δὲ τῶν Γάλλων «*μάχη τοῦ Χαίχσταιντ*». Χ. Δ.

**Μπλενὼ** (Bléneau) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ὑόν. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῶν παρ' αὐτὴν συναφθεισῶν, τῷ 1652, δύο μαχῶν. Εἰς τὴν πρώτην ὁ Κονδὲ μετὰ στρατοῦ τῆς Σφενδόνης ἐνίκησε τὰ ὑπὸ τὸν Ὁκενκοὺρ βασιλικὰ στρατεύματα, εἰς δὲ τὴν δευτέραν ὁ Κονδὲ ἡττήθη ὑπὸ τοῦ Τυρέν. Χ. Δ.

**μπλέξιμο** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μπλέκω*, ἐμπλοκή, ἄλλως *μπέρδεμα*: «*κακὸ μπλέξιμο ἡ παντρειά*».

**Μπλεριὸ** (Bleriot), ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος ἀεροπόρος καὶ κατασκευαστὴς ἀεροπλάνων, γεννηθεὶς τῷ 1872. Σπουδάσας μηχανικός, ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὰ ζητήματα τῆς ἀεροπλοΐας, πρῶτος δ' αὐτὸς ἐμελέτησε τὴν ἄνευ κινητῆρος πτῆσιν («vol plané»). Ἐπεδίωξε κατόπιν νὰ τελειοποιήσῃ τὸ ἀεροπλάνον τὸ ἐπινοηθὲν ὑπὸ τῶν Ἀμερικανῶν ἀδελφῶν Ράϊτ καὶ κατέληξεν εἰς τὴν διαμόρφωσιν τοῦ «*μονοπλάνου*», τοῦ τύπου δηλαδὴ ἐκείνου τῶν πτητικῶν μηχανῶν, ἐν τῷ ὁποίῳ αἱ πτέρυγες συναποτελοῦσι μίαν μόνον «*φέρουσαν ἐπιφάνειαν*». Διὰ τοῦ ἀεροπλάνου του τούτου ἐκέρδισε κατὰ Ἰούλιον 1909, ὑπὸ ἀντιξόους καιρικὰς συνθήκας, τὸ βραβεῖον τῆς Ἀεροπορικῆς Λέσχης τῆς Γαλλίας. Τὴν 22αν ἰδίου μηνὸς ἐπετύγχανε νὰ διέλθῃ εἰς χρόνον 32 πρώτων λεπτῶν τῆς ὥρας τὸ στενὸν τῆς Μάγχης, ἐπιτελέσας οὕτω σημαντικώτατον διὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην κατόρθωμα, σημειώσαν σταθμὸν ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἀεροπλοΐας. Κατόπιν τῶν ἐπιτυχιῶν τούτων, ὁ Μπλεριὸ ἵδρυσεν, ἐν Ἀγγλίᾳ ἐν ἀρχῇ καὶ κατόπιν ἐν Γαλλίᾳ, ἐργοστάσια κατασκευῆς ἀεροπλάνων τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἐπινοηθέντος τύπου, τῶν ὁποίων μεγάλη ὑπῆρξε κατόπιν ἡ συμβολὴ εἰς τὴν ἐνίσχυσιν τῶν ἀεροπλοϊκῶν δυνάμεων τῶν Συμμάχων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Ὁ ἴδιος Μπλεριὸ ὑπηρέτησε κατ' αὐτὸν ὡς ἀξιωματικὸς-σύνδεσμος μεταξὺ γαλλικῆς καὶ ἀγγλικῆς ἀεροπορίας, τὰ δὲ ἐν Λεβαλλουὰ-Περρὲ ἐργοστάσιά του εἰργάζοντο νυχθημερὸν διὰ τὸν εἰς ἀεροπλάνα ἀνεφοδιασμὸν τόσον τῆς μιᾶς ὅσον καὶ τῆς ἄλλης. Τὴν 22αν Ἰουλίου 1929, ἐπὶ τῇ εἰκοσαετηρίδι τοῦ παλαιοῦ του κατορθώματος, ὁ Μπλεριὸ διῆλθεν ἐκ νέου ὑπὲρ τὴν Μάγχην ἐπιβαίνων τοῦ ἰδίου πρώτου μονοπλάνου του τοῦ 1909, ἐγένετο δ' ἀντικείμενον θερμῶν τιμητικῶν ἐκδηλώσεων τόσον ἐν Γαλλίᾳ ὅσον καὶ ἐν Ἀγγλίᾳ. Γ. Ζ.

**Μπλέσσινγκτον** (Blessington), ***Μαργαρίτα***, *κόμισσα* —. Ἰρλανδὶς λογία (1789—1849), ὀνομαστὴ διὰ τὴν ὡραιότητα καὶ τὸ πνεῦμά της. Ἔγραψε μυθιστορήματα, ἄρθρα καὶ πραγματείας, ἐξέδιδε δὲ τὸ ἡμερολόγιον «*Τὸ βιβλίον τῆς καλλονῆς*». Τῷ 1834 ἐδημοσίευσε τὰς «*Συνομιλίας μετὰ τοῦ λόρδου Βύρωνος*». Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων της ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «*Ἐξομολογήσεις γηραιᾶς κυρίας*», «*Περιδιαβάσεις ἐν Γαλλίᾳ*», «*Περιδιαβάσεις ἐν Ἰταλίᾳ*», «*Τὰ θύματα τῆς κοινωνίας*». Γ. Ι. Β.

**Μπλέτσι** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἀττικῆς, ἀποτελοῦν παραφυάδα τῆς Πάρνηθος καὶ καταλαμβάνον τὸ ΒΑ. τμῆμα τοῦ ὀρεινοῦ συστήματος αὐτῆς. Ὑπέρκειται τῶν Ἀφιδνῶν (Κιούρκων) πρὸς Β. καὶ τῆς Μαλακάσας πρὸς ΝΑ., ὑψοῦται δὲ μέχρις 839 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Εἶναι ὁ ἀρχαῖος *Φελλεύς*. Χ. Δ.

**μπλετσοπόδαρος**, —η, —ο· ἰδιωματ., γυμνόπους (βλ. *μπλέτσας*).

**Μπλὲχ** (Blech), ***Λέο***. Γερμανὸς συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1871. Ἐσπούδαζεν ἀκόμη ὑπὸ τὸν Χοὺμπερντινκ, ὅταν ἔγραψε τὰ πρῶτα του μελοδράματα: «Aglaja» (1893) καὶ «Cherubina» (1894). Ὁ Μπλέχ, ἐπιδοθεὶς κυρίως εἰς τὴν διεύθυνσιν ὀρχήστρας, τάχιστα διεκρίθη ἐν Πράγᾳ καὶ ἀπὸ τοῦ 1906 εἰς τὸ μελόδραμα τοῦ Βερολίνου, ἐνῷ ἐκ παραλλήλου ἔδιδε σειρὰν συναυλιῶν καὶ εἰς ἄλλας πόλεις τῆς Γερμανίας. Ἡ μεγαλυτέρα θεατρικὴ ἐπιτυχία του ὑπῆρξε τὸ μονόπρακτον κωμικὸν μελόδραμα «Das war ich» (1902), ὃ ἐπηκολούθησαν τά: «Alpenkönig und Menschenfeind» (1903), «Aschenbrödel» (1905), «Versiegelt» (1908). Εἰς τὰ ἄλλα εἴδη τῆς μουσικῆς ἔδωσε: 3 συμφωνικὰ ποιήματα, χορῳδίας μετ' ὀρχήστρας, μελῳδίας, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον κτλ. Γ. Σ.

**Μπληζιώτης**, ***Κωνσταντῖνος***. Ἕλλην θεολόγος, γεννηθεὶς ἐν τῷ χωρίῳ Ὑψηλοῦ τῆς Ἄνδρου καὶ ἀποθανὼν τῷ 1891. Ἐξεπαιδεύθη ἐν τῇ θεολογικῇ σχολῇ τῆς Χάλκης, τῷ δὲ 1853 ἐκάρη μοναχός. Συμπληρώσας τὰς σπουδὰς αὐτοῦ ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις πανεπιστημίῳ, διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ κανονικοῦ δικαίου εἰς τὴν θεολογικὴν σχολὴν τῆς Χάλκης καὶ τῷ 1868 ἐχειροτονήθη ἐπώνυμος ἐπίσκοπος Σταυροπόλεως. Μετά τινα ἔτη ἀπεσύρθη εἰς τὴν ἐν Ἄρνῃ τῆς Ἄνδρου μονὴν τῆς Ἁγίας, ὅπου συνέγραψέ τινα περὶ Ἄνδρου καὶ ἐφιλοπόνησε κατάλογον τῶν χειρογράφων τῆς μονῆς, δημοσιευθέντα ἐν τοῖς περὶ Ἄνδρου καὶ Κέας γεωγραφικοῖς ὑπομνήμασι τοῦ Α. Μηλιαράκη (σ. 161—183). Δ. Π. Π.

**Μπλὶνκ** (Blink), ***Ἐρρῖκος***. Ὀλλανδὸς γεωγράφος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1852. Διετέλεσε καθηγητὴς εἰς τὸ ἰνστιτοῦτον τοῦ Ρόττερνταμ καὶ ἀπὸ τοῦ 1884 ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν γεωγραφίαν καὶ γεωλογίαν, ἐπισκεφθεὶς τοὺς Παρισίους καὶ τὸ Στρασβοῦργον χάριν εἰδικῶν μελετῶν. Βραδύτερον ἐγκατεστάθη εἰς τὸ Ἄμστερνταμ, ὅπου ἐξέδωσε τὸ ἐπιστημονικὸν περιοδικὸν «Vragen van den dag». Μεταξὺ ἄλλων ἔγραψε: «Stanley en het donkere werelddeel» (1887), «Nederland en zigne bevoners» (1888), «Der Rhein in den Niederlander» (1889), «Transvaal en omliggende landem» (1889), «Het Kongoland en zigne beboners in betrekking tot de Europeesche staatkunde en den handel» (1891), «Tegenwoordige staat van Nederland» (1895) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπλίντα** (Blida) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀλγερίας ἐν τῷ νομῷ Ἀλγερίου, κέντρον περιοχῆς πλουσίας εἰς καλλιεργείας καπνοῦ, σίτου κλπ. Ἐξάγει κυρίως ἐκλεκτὰ πορτοκάλλια καὶ αἰθέριον ἔλαιον λεμονίων. Κάτοικοι 36.700. Χ. Δ.

**μπλιοὺζ** (blues)· εἶδος χοροῦ· βλ. *μπλούζ*.

**Μπλιούρης** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ θεσσαλικοῦ Πηνειοῦ, ὁ τῶν ἀρχαίων *Πάμισος* (βλ. λ.).

**Μπλὶς** (Bliss), ***Τάσκερ Χόβαρτ***. Ἀμερικανὸς στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1853 ἐν Λιουΐσμπουργκ τῆς Πενσυλβανίας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. Κατὰ τὸ 1898 ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Ἱσπανοαμερικανικὸν πόλεμον ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατηγοῦ Οὔϊλσον καὶ κατόπιν εἰς τὴν ἐκστρατείαν πρὸς κατάληψιν τῶν Φιλιππίνων νήσων. Τῷ 1909 διετέλεσεν ὑπαρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, τῷ δὲ 1911 ἦτο ἀρχηγὸς τῶν στρατευμάτων, τὰ ὁποῖα ἔδρασαν εἰς τὴν Νότιον Καλιφορνίαν κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς μεξικανικῆς εἰσβολῆς. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἔλαβε μέρος ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ ἀμερικανικοῦ στρατοῦ, ὅστις ἔδρασεν εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον, καὶ τῷ 1918 διετέλεσε στρατιωτικὸς ἀντιπρόσωπος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν εἰς τὸ ἀνώτατον πολεμικὸν συμβούλιον τῶν Βερσαλλιῶν. Κατὰ τὸ 1918—1919 μετέσχε τῆς διεθνοῦς διασκέψεως τῆς εἰρήνης. Μ. Δ. Β.

**Μπλίσδιανη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Λαγκάδα* (βλ. λ.).

**μπλίτσαρντ** (blizzard) *[Μετεωρολ.]*. Καλεῖται οὕτω λαιλαπώδης χιονοθύελλα ψυχρῶν βορειοδυτικῶν ἀνέμων, ἥτις παρατηρεῖται πολλάκις εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας κατὰ τὸν χειμῶνα κατὰ τὴν διέλευσιν μιᾶς ὑφέσεως. Οἱ μπλίτσαρντ καταρρίπτουσι τὴν θερμοκρασίαν κατὰ πολλοὺς βαθμούς, ὁ δὲ ἀὴρ πληροῦται ὑπὸ λεπτῆς χιόνος. Ἡ χιὼν αὕτη δύναται νὰ προέρχηται ἐκ τῶν νεφῶν ἢ νὰ ἀναρπάζεται ἀπὸ τοῦ χιονοσκεποῦς ἐδάφους. Συχνὰ ἐν τούτοις συμβαίνει, κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ μπλίτσαρντ, ν' ἀνυψοῦται ἡ θερμοκρασία καὶ τοῦτο, διότι ὁ ὁρμητικὸς οὗτος ἄνεμος προκαλεῖ μῖξιν τῶν κατωτέρων στρωμάτων τῆς ἀτμοσφαίρας, καθ' ἣν ἐπακολουθεῖ καθοδικὴ κίνησις ἀέρος θερμοτέρου πολλάκις ἀπὸ τὸν παρὰ τὸ χιονοσκεπὲς ἔδαφος εὑρισκόμενον. Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΛΗΣ

**Μπλίχερ** (Blicher), ***Στὲν Στένσεν***. Δανὸς κληρικός, ποιητὴς καὶ διηγηματογράφος (1782—1848). Ἐδημοσίευσεν ἐπιτυχῆ μετάφρασιν τοῦ Ὄσσιαν (1807—1809) καὶ συλλογὰς ποιημάτων (1814, 2 τ. καὶ 1817). Γνωστὸς ἐγένετο διὰ τῶν «Ρωμάντσων τῆς Γιοὺτλαντ» καὶ «Ἐθνικῶν διηγημάτων», δημοσιευθέντων εἰς διάλεκτον τῆς Γιοὺτλαντ, εἰς διάφορα περιοδικὰ (1827—1829). Ἔγραψε πρὸς τούτοις πατριωτικὰ ποιήματα καὶ κατέκτησε τὴν δόξαν ἐθνικοῦ ποιητοῦ διὰ τοῦ ἀριστουργήματός του: «E. Dindstouw», πλῆρες ἐμπνεύσεως καὶ χιούμορ. Ἀνδριάς του ἀνηγέρθη τῷ 1866 ἐν Wiborg. —Ω.

**Μπλόβιτς** (Blowitz), ***Ἐρρῖκος-Γεώργιος-Στέφανος-Ἀδόλφος Ὄππερ ντὲ***—. Ἀγγλογάλλος δημοσιογράφος αὐστροτσεχικῆς καταγωγῆς (1825—1903). Ἐγεννήθη ἐκ γονέων Ἰουδαίων ἐν τῷ πατρικῷ πύργῳ Μπλόβιτς τῆς Βοημίας καὶ ἀπὸ ἡλικίας δέκα ἓξ ἐτῶν μετέβη εἰς Γαλλίαν, ὅπου ἐκμαθὼν ξένας γλώσσας διετέλεσεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη καθηγητὴς τῆς γερμανικῆς καὶ ἄλλων γλωσσῶν. Τῷ 1869 παραιτηθεὶς τῆς διδασκαλίας τῶν ξένων γλωσσῶν ἀφωσιώθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ εἰς τὴν πολιτικήν, διὰ δὲ τῶν πρώτων του δημοσιογραφικῶν πληροφοριῶν καὶ ἄρθρων, δημοσιευθέντων εἰς δύο ἐφημερίδας τῆς Λυών, συνέβα-



Digitized by Google

λεν εἰς τὴν ἀποτυχίαν τῆς ὑποψηφιότητος τοῦ Λεσσὲψ εἰς τὰς βουλευτικὰς ἐκλογὰς τοῦ 1869, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσεν ἐνεργείας τῶν ἀντιπάλων του, ὅπως ἀπελαθῇ ἐκ τοῦ γαλλικοῦ ἐδάφους. Τῷ 1870 προεκλήθη νέα ἐνέργεια ἀπελάσεώς του, συνεπείᾳ δημοσιεύματος, ἐν τῷ ὁποίῳ προέλεγε τὴν προσεχῆ πτῶσιν τῆς Γαλλικῆς αὐτοκρατορίας. Ἀλλ' ἐνῷ ἡ πρότασις ἀπελάσεώς του εὑρίσκετο εἰσέτι ὑπὸ συζήτησιν, ἐπῆλθεν ἡ πτῶσις τοῦ Σεδὰν καὶ ἐπηκολούθησεν ἡ γνωστὴ μεταπολίτευσις, κατόπιν τῆς ὁποίας ὁ Μπλόβιτς ἐζήτησε καὶ ἐπέτυχε τὴν πολιτογράφησίν του ὡς Γάλλου ὑπηκόου. Κατόπιν ὁ Θιέρσος, εἰς ἀντάλλαγμα πολυτίμων πληροφοριῶν, τὰς ὁποίας εἶχε παράσχει εἰς αὐτόν, τοῦ προσέφερε τὴν θέσιν τοῦ προξένου τῆς Γαλλίας εἰς τὴν Ρίγαν. Ἀλλὰ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁ Λαυρέντιος Ὄλιφαντ, ὁ ὁποῖος ἦτο τότε ἀνταποκριτὴς τῶν «Τάϊμς» τοῦ Λονδίνου εἰς Παρισίους καὶ μετὰ τοῦ ὁποίου εἶχε σποραδικῶς συνεργασθῇ ὁ Μπλόβιτς, παρέχων εἰς αὐτὸν ἐκτάκτως διαφόρους πληροφορίας, προσέλαβεν αὐτὸν ὡς τακτικὸν βοηθόν του. Μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ὁ Μπλόβιτς δὲν ἦτο εἰς εὐρὺν κύκλον γνωστὸς οὔτε ὡς ρεπόρτερ οὔτε ὡς συντάκτης ἐφημερίδων. Ἐντὸς ὀλίγου ὅμως κατέλαβε μίαν τῶν πρώτων θέσεων μεταξὺ τῶν συναδέλφων του καὶ τῷ 1873, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ προϊσταμένου του, ἐγένετο ὁ ἀρχισυντάκτης τοῦ ἐν Παρισίοις γραφείου ἀνταποκρίσεως τῶν «Τάϊμς» καὶ ἀπέκτησε μέγιστον κῦρος ἐν τῇ δημοσιογραφίᾳ, τῇ πολιτικῇ καὶ τῇ διπλωματίᾳ. Αἱ μεγάλαι αὐτοῦ δημοσιογραφικαὶ ἐπιτυχίαι τὸν κατέστησαν παγκοσμίως γνωστὸν καὶ τὸν ἀνύψωσαν ὡς τὸν μεγαλύτερον ρεπόρτερ καὶ ἀνταποκριτὴν ἐφημερίδων τοῦ αἰῶνός του. Μεταξὺ τῶν παροιμιωδῶν ἐπιτυχιῶν του ὀνομαστότεραι εἶναι ἡ τοῦ 1875, ἥτις συνίστατο εἰς τὴν ἀποκάλυψιν τῶν σχεδίων τῆς ἐπιθέσεως τῆς Γερμανίας κατὰ τῆς Γαλλίας. Ἡ ἀποκάλυψις αὕτη ἐγένετο συνεπείᾳ τῶν σχέσεων, τὰς ὁποίας εἶχεν ὁ Μπλόβιτς μετὰ τοῦ τότε ὑπουργοῦ τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Γαλλίας, δουκὸς Ντεκάζ, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἐπιδείξει ἐμπιστευτικῶς εἰς αὐτὸν ἀπόρρητον τηλεγράφημα τοῦ ἐν Βερολίνῳ Γάλλου πρεσβευτοῦ, ἐν τῷ ὁποίῳ οὗτος ἐπληροφόρει τὴν κυβέρνησίν του περὶ τῶν γερμανικῶν σχεδίων. Ὁ Ντεκάζ παρεκάλεσε τὸν Μπλόβιτς νὰ ἀποστείλῃ τὴν πληροφορίαν εἰς τοὺς «Τάϊμς», πρᾶγμα τὸ ὁποῖον προεκάλεσε τότε μέγιστον θόρυβον καὶ ἀνέκοψε τὰς γερμανικὰς προετοιμασίας. Ἡ μεγαλυτέρα του ὅμως ἐπιτυχία του εἶναι ἡ δημοσίευσις εἰς τοὺς «Τάϊμς« ὁλοκλήρου τοῦ ὁριστικοῦ κειμένου τῆς συνθήκης τοῦ Βερολίνου τοῦ 1878, πρὶν αὕτη ὑπογραφῇ ἀπὸ τοὺς ἀντιπροσώπους τοῦ Βερολινίου συνεδρίου. Ὁ Μπλόβιτς εἶχεν εἰσαγάγει πρῶτος αὐτὸς τὰς συνεντεύξεις μετὰ μεγάλων προσωπικοτήτων καὶ ἡγεμόνων, εἰς τὰς ὁποίας εἶχεν εἰδικευθῆ καὶ εἶχε διαπρέψει μεγάλως. Μεταξὺ τῶν συνεντεύξεων τούτων εἶναι καὶ ἡ μετὰ τοῦ Ἀλφόνσου ΙΒ' τῆς Ἱσπανίας τῷ 1875, καθ' ἣν ἐποχὴν οὗτος μετέβαινεν εἰς τὴν Ἱσπανίαν πρὸς κατάληψιν τοῦ θρόνου, ἡ μετὰ τοῦ Βίσμαρκ τῷ 1878, ἡ μετὰ τοῦ πάπα Λέοντος ΙΓ' καὶ ἡ μετὰ τοῦ σουλτάνου Ἀβδοὺλ Χαμὶτ Β' Ἐν γένει ὁ Μπλόβιτς ἐπὶ διάστημα περίπου τριάκοντα ἐτῶν ἦτο ὁ πρῶτος ὅστις παρεῖχε τὰς σημαντικωτέρας πληροφορίας εἰς τὸ διεθνὲς κοινόν. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του εἶχε κατηγορηθῇ ὡς ἐξασκῶν κατασκοπίαν εἰς βάρος τῆς Γαλλίας ὑπὲρ τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς Γερμανίας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ὠφείλετο εἰς τὴν ἐξαιρετικὴν ἀνεξαρτησίαν τοῦ χαρακτῆρός του καὶ τὴν παροιμιώδη ἀμεροληψίαν του, ἥτις ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς παρεξηγήσεις ἐκ μέρους τῶν Γάλλων. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Feuilles volantes», «L' Allemagne et la Provence», «Une Course à Constantinople», λίαν ἐνδιαφέροντα «Ἀπομνημονεύματα» (1903) κ. ἄ.

Μ. Δ. Β.

**μπλὸκ** (τό, ἄκλιτ.)· δέσμη φύλλων χάρτου μικροῦ ἢ μεγάλου σχήματος, ἀπὸ τῆς ὁποίας εὐκόλως ἀποσπᾶται ἕκαστον, οἷον: «μπλὸκ συνταγῶν, —σημειώσεων, —εἰσιτηρίων κτλ.» (ἀγγλ. καὶ γερμ. block).

**Μπλὸκ** (Blok), ***Ἀλέξανδρος Ἀλεξάνδροβιτς.*** Ρῶσος νεοσυμβολιστὴς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1880 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1921. Εἰς τὴν ρωσικὴν λογοτεχνίαν ἐνεφανίσθη μὲ τὴν συλλογήν του «Τὰ τραγούδια τῆς ὡραίας κυρίας». Τὰ ποιήματα τῆς συλλογῆς ταύτης ἔχουν μυστικισμόν τινα καὶ φέρουν τὸν ἱπποτικὸν χαρακτῆρα παλαιοτέρων ἐποχῶν. Εἰς τὰ δημοσιευθέντα κατὰ τὸ 1907 δύο ποιήματα αὐτοῦ «Ἡ ἀνέλπιστος χαρὰ» καὶ «Ἡ ἐκ χιόνος προσωπίς», ὁ ποιητὴς ἐμφανίζεται διαυγέστερος καὶ μᾶλλον πραγματιστής, ἀλλὰ παραμένει καὶ εἰς αὐτὰ ὁ ἱπποτικὸς ρωμαντισμὸς τῆς «Ὡραίας Κυρίας». Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐδημοσιεύθησαν τὰ «Λυρικὰ δράματα» (1908), τὸ «Παράπηγμα τῆς ἐμποροπανηγύρεως» καὶ ἡ «Ἄγνωστος». Τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀπεδέχθη μετ' ἀγωνίας καὶ ἐλπίδος περὶ γενικῆς ἐν τῷ κόσμῳ μεταβολῆς. Ἤρξατο τότε γράφων τὸ ποίημά του «Ἐκδίκησις», ὅπερ οὐδέποτε ἐπεράτωσε. Τὸ ἄριστον ὅμως τῶν ποιημάτων του εἶναι «Οἱ δώδεκα», γραφὲν κατὰ τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1918, ὅτε εἶχε πλέον ἐπικρατήσει ὁ μπολσεβικισμός. Ἥρωές του εἶναι ὁ φονεὺς Βάνκα καὶ ἡ Κάτια, μία γυναῖκα διεφθαρμένη τῆς τελευταίας τάξεως. Εἰς τὸ ποίημα τοῦτο ἐνυπάρχουν φόνοι, διαρπαγαί, πολιτικὰ ἐγκλήματα, διάλογοι γυναικῶν τῶν δρόμων, ὕβρεις, προσευχαὶ καὶ βλασφημίαι. Ἡ δίψα τοῦ αἵματος ἀναμιγνύεται μετὰ τῆς ἀηδίας καὶ οἱ κρότοι τῶν ὅπλων μὲ τὰς ἐρωτικὰς ἐκφράσεις. Ἡ ἁπλῆ διάλεκτος τῶν στρατιωτῶν, μεταπλασμένη εἰς στίχους κλασικῆς ἐμπνεύσεως μὲ ρυθμοὺς καὶ ᾄσματα λαϊκά, καθιστᾷ τοὺς «Δώδεκα» ἔργον ἀκραιφνῶς ρωσικόν, ἀλλὰ ταυτοχρόνως μέγα καὶ παγκόσμιον. Ἡ μεγαλοφυὴς αὕτη σύνθεσις ἐμεγάλυνε τὴν δόξαν τοῦ ποιητοῦ καὶ τὸν κατέστησε δημοφιλέστατον. Ἐκτὸς τῶν ἀναφερθέντων ἔργων του, ὁ Μπλὸκ ἔγραψε: «Σκύθαι» (1918), «Ὁ Κατιλίνας» (1919), «Ποιήματα» (3 τόμ. 1921), «Ἀνταπόδοσις» (1921), «Θέατρον» (1922), «Τὰ ποιήματα τῆς παιδικῆς μου ἡλικίας», αὐτοβιογραφικὰ (1922), «Ἅπαντα» (δίτομος ἔκδοσις Ἀλκόνοστ, 1922), «Ποιήματα (1898—1921)», «Τὰ γράμματα τοῦ Α. Μπλὸκ πρὸς τοὺς γονεῖς του» (1927), μικρὰς καλολογικὰς μελέτας κ. ἄ. Τὰ πλεῖστα τούτων, ἰδίως οἱ «Δώδεκα», μετεφράσθησαν εἰς ὅλας τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Ὁ Μπλὸκ θεωρεῖται ὡς ὁ μέγιστος τῶν Ρώσων ποιητῶν τοῦ Κ' αἰῶνος.

Θ. Β.

—**Μπλὸκ** (Bloch), ***Γουσταῦος.*** Γάλλος ἀρχαιοδίφης καὶ ἱστορικὸς (1848—1923). Ἐσπούδασε φιλολογίαν, ἀπετέλεσε δὲ κατόπιν μέλος τῶν γαλλικῶν ἀρχαιολογικῶν σχολῶν τῶν Ἀθηνῶν καὶ τῆς Ρώμης. Διωρίσθη βραδύτερον καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λυὼν καὶ μετέπειτα (1904) ἐν τῇ φιλολογικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων. Ἔγραψεν: «Ἡ προέλευσις τῆς ρωμαϊκῆς συγκλήτου» (1883), «Ἡ δημοκρατικὴ μεταρρύθμισις ἐν Ρώμῃ τὸν Γ' π. Χ. αἰῶνα» (1886) καὶ ἄλλα ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὸν ἑλληνικὴν ἀρχαιότητα.

—Ω.

— **Μπλὸκ** (Block), ***Μαυρίκιος.*** Γάλλος οἰκονομολόγος ἑβραϊκῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Βερολίνῳ (1816—1901). Κατέλαβε διαφόρους δημοσίας θέσεις, τῷ δὲ 1880 ἔγινε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Μπλὸκ συνεχίζει τὴν παράδοσιν τῆς κλασσικῆς σχολῆς. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Des charges de l' agriculture dans divers pays» (1851), «Statistique de la France» (2α ἔκδ. 1874), «Les théoriciens du communisme en Allemagne» (1872), «Petit manuel d' économie politique» (1890). Γερμανιστὶ ἐξέδωκε: «Die Bevölkerung des französischen Kaiserreichs» (1861), «Die Machtstellung europäischer Staaten».

Α. Α. Τ.

— **Μπλὸκ** (Blok), ***Πέτρος-Ἰωάννης.*** Ὁλλανδὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1855. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν Γκραίνινγκεν καὶ ἀπὸ τοῦ 1894 μέχρι τοῦ 1925 ἐν Λεΰδεν. Τῷ 1904 ἵδρυσε τὸ ἱστορικὸν ἰνστιτοῦτον τῆς Ὁλλανδίας ἐν Ρώμῃ, ἔγραψε δὲ διαφόρους μελέτας, ἀξιολογώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι αἱ ἑπόμεναι: «Ἱστορία τοῦ ὁλλανδικοῦ λαοῦ», «Μία ὁλλανδικὴ πόλις κατὰ τὸν μεσαίωνα», «Γουλιέλμος Α' τῆς Ὀράγγης», «Φρειδερῖκος Ἐρρῖκος».

Γ. Ι. Β.

**Μπλόκμπεργκ,** ἢ ***Γέλλερτ Χάγυ*** (Blockberg ἢ Gellert Hagy) *[Γεωγρ.]*. Λόφος τῆς Οὐγγαρίας, παρὰ τὴν Βουδαπέστην. Ἐγείρεται εἰς ὕψος 235 μ. ἄνωθεν τῆς Βούδας καὶ στέφεται ὑπὸ παλαιοῦ φρουρίου. Εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ λόφου τούτου, ὁ ὁποῖος κατέρχεται ἀποτόμως πρὸς τὸ μέρος τοῦ Δουνάβεως, ἀναβλύζουν πολλαὶ σιδηροῦχοι καὶ θειοῦχοι πηγαί, θερμοκρασίας ποικιλλούσης μεταξὺ 37° καὶ 45°· Αἱ πηγαὶ αὗται ἦσαν ἤδη γνωσταὶ καὶ εἰς τοὺς Ρωμαίους, οἵτινες ἐξ αὐτοῦ ὠνόμαζον τὴν τοποθεσίαν Aquincum, εἰς τοὺς Τούρκους καὶ εἰς τοὺς Οὔγγρους, οἵτινες τὰς εἶχον μεταβάλει εἰς λουτρά. Σήμερον ἔχουν γίνει ἐν αὐταῖς τελευταῖαι ἐγκαταστάσεις λουτρῶν, ἅτινα εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον πολυσυχνάστων τῆς Οὐγγαρίας. Ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ πηγαὶ ἁλατούχου ὕδατος καὶ ἰδίως μεταλλικοῦ φυσικοῦ ἁλμυροῦ ὕδατος, γνωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Οὐννάδι Γιάνος* (Hunyadi Janos), ὅπερ εἶναι ψυχρᾶς θερμοκρασίας ποικιλλούσης ἀπὸ 7° μέχρι 12°. Αἱ πηγαὶ αὗται εὑρίσκονται εἰς ἀπόστασιν 6 χλμ. ἀπὸ τῆς Βουδαπέστης, ἡ δὲ διαρρύθμισις αὐτῶν εἰς τὰς σημερινὰς ἐγκαταστάσεις χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 1863.

Μ.Δ.Β.

**μπλοκάρω,** *ἀόρ. ἐ)μπλόκαρα καὶ ἐ)μπλοκάρισα, παθ. μετχ. μπλοκαρισμένος*· κάμνω μπλόκο, ἀποκλείω τὴν διέξοδον, περικυκλῶ (ἰταλ. bloccare).

**μπλόκος** (ὁ)· ἀποκλεισμὸς τῆς διεξόδου, περικύκλωσις: «τοῦ 'καμαν μπλόκο» τὸν ἀπέκλεισαν (ἰταλ. blocco).

**Μπλόμμαιρτ** (Blommaert), ***Φίλιππος.*** Φλαμανδὸς ζωγράφος (1808—1871). Ἔγραψε πολλὰ ποιήματα καὶ μετέφρασεν εἰς τὴν φλαμανδικὴν τὸν θρῦλον τῶν Νιμπελοῦγκεν εἰς στίχους. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων του εἶναι «Ἱστορία τῶν Βέλγων». Πρὸς τούτοις ἐδημοσίευσε παλαιὰ χρονικὰ καὶ ποιήματα μετὰ σημειώσεων καὶ σχολίων: τὸν «Θεόφιλον» (1836), «Παλαιὰ φλαμανδικὰ ποιήματα» (1832—1841).

Α. Δ.

**Μπλομμὲρ** (Blommér), ***Νὶλς-Γιόχανν-Ὄλσσον.*** Σουηδὸς ζωγράφος (1816—1853). Παρ' ὅλας τὰς ἔξωθεν ἐπιδράσεις, παρέμεινε πάντοτε κατὰ τὴν ψυχὴν καὶ τὸ πνεῦμα Σκανδιναυός, δημιουργῶν πίνακας ἐξαιρέτως ἰδιοτύπου θελγήτρου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Φρέγια» (ἐν τῷ Ἐθνικῷ Μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης), «Προσωπογραφία τοῦ πρίγκιπος Γουσταύου» (ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Drottnin-Gholm), «Ἰταλικὸν τοπίον» (ἀντίγραφον ἔργου τοῦ Κλὼντ Λορραίν, ἀποκείμενον ἐν τῷ «Ἀθηναίῳ» τοῦ Ἔλσινγκφορς).

Ι. Μ. Π.

**Μπλόμστραντ** (Blomstrand), ***Χριστιανὸς-Γουλιέλμος.*** Σουηδὸς χημικὸς (βλ. λ. *Μπλούμστραντ*).

**Μπλόμφιλντ** (Blomfield), ***Κάρολος-Ἰάκωβος.*** Ἄγγλος κληρικὸς καὶ ἑλληνιστὴς (1786—1857). Διωρίσθη ἐπίσκοπος ἐν Μπὰθ (1824), βραδύτερον δὲ ἐν Λονδίνῳ καὶ διεκρίθη ὡς ρήτωρ ἐν τῇ βουλῇ τῶν Λόρδων. Ἐξέδωκε τὰ ἔργα τοῦ Αἰσχύλου (1810—1825) καὶ τοῦ Καλλιμάχου (1812). Ἐπίσης ἐδημοσίευσε μετὰ τοῦ Τέννερ τὰς «Musae Cantabrigienses (1812) καὶ τὰ «Posthumous Tracts of Porson» μετὰ τοῦ Μόνκ.

Α. Δ.

**μπλόντα** (ἡ), καὶ ***πλόντρα***· εἶδος δαντέλλας: «ἕνα φόρεμα ἀπὸ πλόντρα» (γαλλ. blonde).

**Μπλοντὲλ** (Blondel), ***Ἱππόλυτος-Μαρία-Γεώργιος.*** Γάλλος ἱστορικὸς καὶ οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1856. Τῷ 1884 τῷ ἀνετέθησαν μαθήματα ἐπὶ τῆς ἱστορίας τοῦ δικαίου ἐν τῇ νομικῇ σχολῇ τῆς Λυὼν καὶ τῷ 1894 ἐν τῇ φιλολογικῇ σχολῇ τῆς Λίλλης. Ἐκτελέσας εἶτα διαφόρους ἀποστολὰς εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ἐμελέτησε κατὰ τὴν διάρκειαν αὐτῶν τὴν ἱστορίαν καὶ τὴν οἰκονομικὴν κατάστασιν τῶν διαφόρων χωρῶν τῆς Εὐρώπης καὶ ἐδημοσίευσεν ἐνδιαφερούσας συναφεῖς μελέτας. Μεταξὺ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Περὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Δικαίου ἐν τοῖς γερμανικοῖς πανεπιστημίοις» (1885), «Περὶ τῆς πολιτικῆς τοῦ Φρειδερίκου Β'» (1892), «Ἡ ἐμπορικὴ καὶ βιομηχανικὴ πρόοδος τοῦ γερμανικοῦ λαοῦ» (γ' ἔκδ., 1900), «Ἡ Γαλλία καὶ ἡ παγκόσμιος ἀγορὰ» (1901), «Ἡ προστατευτικὴ δασμολογικὴ πολιτικὴ ἐν Ἀγγλίᾳ» (1904) κ. ἄ.

—**Μπλοντὲλ** (Blondel), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος ἀξιωματικός, φιλέλλην, κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα, καὶ πολεμήσας κατὰ τὸν Ἀγῶνα τοῦ 1821 ἔν τε τῷ Χαϊδαρίῳ καὶ κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Ἀκροπόλεως. Βραδύτερον ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Τζώρτς καὶ ἐχρημάτισε λοχαγὸς τοῦ τακτικοῦ στρατοῦ.

—**Μπλοντὲλ** (Blondel), ***Μαυρίκιος.*** Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Ντιζὸν τῷ 1861. Τῷ 1881 εἰσήχθη εἰς τὴν École normale supérieure, ὅπου ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Ollé-Laprune καὶ τοῦ Boutroux, τῷ δὲ 1893 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς φιλολογίας διὰ τῆς ἐναισίμου αὐτοῦ διατριβῆς: L' Action; Essai d'une critique de la vie et d'une science de la pratique» (Paris 1893) Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν τοῖς λυκείοις τοῦ Chaumont, τοῦ Montauban, τοῦ Aix καὶ ἐν τῷ κολλεγίῳ τοῦ Στανισλάου ἐν Παρισίοις, ἀπὸ δὲ τοῦ 1897 κατέχει τὴν ἕδραν τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Aix.

Ὁ Μπλοντὲλ εἶναι εἷς ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων, βαθυτέρων καὶ πρωτοτυπωτέρων συγχρόνων Γάλλων διανοητῶν. Διὰ τῶν ἔργων αὐτοῦ ἀποσκοπεῖ τὴν ἵδρυσιν συγκεκριμένης φιλοσοφίας, ἡ ὁποία δὲν ἀποκλείει τὴν συστηματικὴν σπουδὴν τῆς σκέψεως καὶ τῆς ἰδέας, οὔτε περιορίζεται εἰς αὐτήν, ἀλλὰ τὴν περιλαμβάνει καὶ τὴν ὁλοκληρώνει εἰς μίαν ἐπιστήμην τῆς ζωῆς καὶ τῆς πράξεως. Ἡ σπουδαιοτέρα ἀνάγκη τῆς νεωτέρας διανοήσεως εἶναι, διὰ τὸν Μπλοντέλ, ἡ ὕπαρξις πραγματικῆς γνώσεως (ὅπως ὀνομάζει οὗτος μετὰ τοῦ Newmann τὴν γνῶσιν, ἥτις ἐγγίζει τὰς ἰδιότητας καὶ τὴν πραγματικὴν παρουσίαν τοῦ ὄντος, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν ἐννοιακὴν γνῶσιν), ἥτις ν' ἀποτελῇ ἀληθῆ μεταφυσικὴν πεῖραν τοῦ ὄντος καὶ τοῦ Θεοῦ, ὅστις εἶναι μόνος ἐξ ὅλων τῶν ὄντων ἡ ἀρχή, ὁ νόμος καὶ τὸ τέλος. Τοιαύτη μεταφυσικὴ πεῖρα εἶναι ἡ πρᾶξις ἐν τῇ πληρότητι τῆς ἐνεργητικῆς ἀντιλήψεώς της καὶ τῆς αὐστηρᾶς αἰτιοκρατίας της, τὴν ὁποίαν οὐδεὶς δύναται ν' ἀποφύγῃ. Ὁ Μλοντὲλ ἐξετάζει τὴν πρᾶξιν, ὄχι ἀπὸ ἠθικῆς ἀπόψεως, ἀλλὰ ὡς μέθοδον καὶ μάλιστα ὡς κατ' ἐξοχὴν μέθοδον τῆς πραγματιστικῆς γνώσεως. Ἡ πρᾶξις εἶναι δι' αὐτὸν ἡ συμβολὴ ἐν ἡμῖν τῆς νοήσεως καὶ τῆς ζωῆς, τῆς ἀτομικῆς πρωτοτυπίας καὶ τῆς συνολικῆς τάξεως, τῆς ἐπιστήμης καὶ τῆς πίστεως, τὸ γεωμετρικὸν οἱονεὶ σημεῖον συναντήσεως τοῦ φυσικοῦ, τοῦ ἀνθρωπίνου καὶ τοῦ θείου. Ἔργα τοῦ Μπλοντέλ: «L'Unité intellectnelle et morale de la France» ἐν («Annales de Philos. Chrét.» Février 1892 ἀνωνύμως), «L'Action» (α' ἔκδ. ἡ ἐναίσιμος μόνον διατριβὴ σ. XXV—495, Paris 1893, β'. ἔκδ. σ. 495 (ἀπὸ τῆς σ. 401 μεταβολαὶ σημαντικαί, νέοι πρόλογος καὶ νέον κεφάλαιον), Paris 1894), «De vinculo substantiali apud Leibnitzium» (1893). «L'illusion idéaliste» (ἐν «Re

Digitized by Google

vue de Métaphysique et Morale» Nov. 1898) «Lettre sur les exigences de la pensée contemporaine en matière apologétique» (ἐκτὸς ἐμπορίου, εἰς πολυγραφημένα ἀντίτυπα, 1896) «Principe élementaire d'une logique de la vie morale» (Ier Congrès International de Philosophie, 1906), «Histoire et Dogme» (ἐν La Quinzaine 15 Févr. 1904), «Le point de départ de la recherhe philosophique» (ἐν «Annales de Philosophie Chrétienne» Janvier καὶ Juin 1906) «L'Apologétiqus et la Philosophie» (ἐν «Revus du Clergé Français», 15 Mai 1907), «Lettres adressées à M. Thamiry et publiés par celui-ci sous le titre: «Les deux aspects de l'Immanence», (1908), «La semaiuc sociale de Bordeaux et le Monopholisme» (ἐν «Annales de Philosophie Chrétienne» καὶ εἰς ἴδιον τεῦχος, τόμ. 2, 1910), «Léon Ollé-Laprune, l'achévement et l'avenir de son oeuvre», (1923), «Le problème de la Mystique» («Cahier IIIe de la Nouvelle Journée»), «Le procès de l'Intelligence» ἐν «La Nouvelle Journée» (Juin-Sept. 1920), «Le Jansénisme et l'anti-jansénisme de Pascal» (ἐν «Revue de Métaphysiqus» Avril-Juin 1923), «Un grand débat catholique et français» (ἐν «Cahiers de la Nlle Journée» Xe). Μετὰ τοῦ Laberthonnière: «Subjectivisme et apologétique intégrale» (ἐν «Revue pratique d'apologétique», 15 Février 1912).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *F. Mallet*, Un entretien avec M. Blondel (ἐν «R. du Clergé Français» 1901). —*Τοῦ αὐτοῦ*, Un nouvel entretien avec M. Blondel (ἐν «Quinzatne» 1904). —*Τοῦ αὐτοῦ*, Une simple explication (αὐτόθι 1904). —*B. de Sailly*, Les ingrédients de la Philosophie de l'action (ἐν «Annales de Philosophie Chrétienne» 1905). —*F. Mallet*, La Philosophie de l'action (ἐν «R. de Philosophie» 1906). —*Wehrlé*, Une soutenance de thèse (ἐν «Ann. de Ph. Chr.» 1907). —*E. Thamiry*, Les deux aspects de l'Immanence et le problème religieux (1908). —*Wehrlé*, La méthode d'Immanence (1911). —*M. Cremer*, Le problème religieux dans la Philophie de l'action (μὲ πρόλογον τοῦ V. Delbos) (Paris, 1912). —*J. de Tonquédec*, Immanence. Essai critique sur la doctrine de M. Blondel (Paris 1913). —*E. Capita*, Educazione e Religione in M. Blondel (Florencia, 1920). —*O. Arcuno*, La Filosofia dell'azione e il Pragmatismo (μὲ πρόλογον τοῦ Μπλοντὲλ) Florencia, 1924). —*P. Archambault*, L'oeuvre philosophique de M. Blondel (ἐν «Cahiers de la Nlle Journée», 1928). —*E. Grassi*, La più recente attività della filosofia dell'azione (ἐν «R. di filosofia» 1928). —*F. Lefèvre*, L'Itinéraire philosophique de M. Blondel (Paris, 1928). Ἐπίσης βλέπε τὰ ἄρθρα Immanence (Méthode d'—) ἐν Diction. d'Apologétique, (I, 569—613) 1912 καὶ ἐν «Vocabulaire de Philosophie» τοῦ *A. Lalande* (ὅπου ὑποσημ. τῶν: *Blondel, Laberthonnière* καὶ—ἐν λ. immanentisme—τῶν *Mentré* καὶ *Boisse)*. Συμβουλευτέον καὶ τὸ περὶ Μπλοντὲλ ἄρθρον τοῦ *Vincenzo La Via* ἐν τῇ «Enciclopedia Italiana».

—Ω.

— **Μπλοντὲλ** (Blondel), ***Παῦλος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων (1847—1897). Τῷ 1876, τιμηθεὶς διὰ τοῦ βραβείου τῆς Ρώμης, ἀνεχώρησεν εἰς Ἰταλίαν, ἐπανελθὼν δ' ἐκεῖθεν ἐξετέλεσε διαφόρους ἀξιολόγους οἰκοδομάς, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὴν Ἐπαγγελματικὴν σχολὴν τῶν τυφλῶν ἐν Παρισίοις, τὴν βιβλιοθήκην τῆς Μυλούζης κ. ἄ. Ἠσχολεῖτο μὲ τὴν μεταρρύθμισιν τῆς αἰθούσης τῶν Κρατῶν ἐν τῷ Λούβρῳ, ὅταν ὁ θάνατος τὸν κατέλαβεν.

— **Μπλοντὲλ** (Blondel), ***Σπύρ.*** Γάλλος συγγραφεὺς (1836—1900) ἀσχοληθεὶς ἰδίως μὲ τὴν ἱστορίαν τῆς τέχνης καὶ τῶν ἐθίμων τῶν διαφόρων λαῶν καὶ ἐποχῶν. Ἐδημοσίευσεν ἐν τοῖς ἄλλοις: «*Ἱστορία τοῦ ῥιπιδίου παρ' ὅλοις τῆς λαοῖς*» (1875), «*Ἔρευναι ἐπὶ τῶν κοσμημάτων τῶν πρωτογόνων λαῶν*» (1876), «*Ἀνεκδοτικὴ ἱστορία τοῦ κλειδοκυμβάλου*» (1880), «*Ἡ τέχνη κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν*» κλπ. —Ω.

— **Μπλοντὲλ ντὲ Νὲλ** (Blondel de Néelle). Γάλλος ποιητής, ζήσας πιθανῶς κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΒ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ καταγόμενος ἴσως ἐκ τῆς περιοχῆς τῆς Μπετύν. Τὰ περισσότερα ἐκ τῶν ποιημάτων του ἀπευθύνονται εἰς τὸν γνωστὸν τρουβαδοῦρον Quenes ἢ Conon de Béthune, τὰ ἅπαντά του δὲ ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ P. Tarbé («Les oeuvres de Blondel de Néelle», Reims 1862) καὶ συμποσοῦνται εἰς τριάκοντα ᾄσματα ἐρωτικῆς ὑποθέσεως. Πρὸς τὸ ὄνομα τοῦ Μπλοντὲλ συνδέεται καὶ εἷς περίεργος θρῦλος, ἀναφερόμενος εἰς τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Comment li rois Richars fu mis hors de prison par Blondel le menestrel» κεφάλαιον τοῦ «Chronique de Rains», τὸ ὁποῖον, ἀναγόμενον εἰς τὰ τέλη τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ἐξεδόθη τῷ 1837 ὑπὸ τοῦ L. Paris. Κατὰ τὸ χρονικὸν τοῦτο ὁ Μπλοντὲλ ἦτο ὁ θαυματοποιός, ζήσας ἐπὶ μακρὸν εἰς τὴν αὐλὴν Ριχάρδου τοῦ Λεοντοκάρδου. Ὅταν ὁ Ριχάρδος, ἐπιστρέφων ἐκ τῆς σταυροφορίας, ἀναγκασθεὶς εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Ἀδριατικῆς, συνελήφθη ὑπὸ τοῦ δουκὸς τῆς Αὐστρίας καὶ ἐνεκλείσθη εἰς τὸ φρούριον Ντύρρενστάϊν ἐπὶ τῶν ὄχθων τοῦ Δουνάβεως, ἠγνοεῖτο δ' ἐπὶ μακρὸν ἐν Ἀγγλίᾳ ὁ τόπος τῆς αἰχμαλωσίας διαμονῆς του. Ὁ Μπλοντὲλ τότε ὡρκίσθη νὰ τὸν ἐπανεύρῃ καὶ ἐπεδόθη εἰς τὸ ἔργον του. Ἐπὶ μακρὸν περιεπλανήθη ματαίως, τέλος ὅμως τὰ βήματά του τὸν ὡδήγησαν ὑπὸ τὰ τείχη τοῦ φρουρίου. Ὁ ἔγκλειστος βασιλεὺς εἶδε τὸν θαυματοποιόν του καὶ ἤρχισε ν' ἀπαγγέλλῃ τοὺς πρώτους στίχους ἑνὸς ποιήματος, τὸ ὁποῖον ἄλλοτε εἶχε συνθέσει ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπλοντέλ. Πληροφορηθεὶς οὕτω ὁ ποιητὴς ὅτι ὁ βασιλεύς του ἦτο ἔγκλειστος εἰς Ντύρρενστάϊν ἔσπευσεν εἰς Ἀγγλίαν καὶ ἀνήγγειλε τὸ πρᾶγμα εἰς τοὺς βαρώνους, οἵτινες ἀπέστειλαν πλούσια λύτρα εἰς τὸν δοῦκα τῆς Αὐστρίας καὶ ἐξηγόρασαν οὕτω τὴν ἐλευθερίαν τοῦ Ριχάρδου. Ὁ θρῦλος οὗτος ἐχρησιμοποιήθη κατόπιν ἐπανειλημμένως ἐν τῇ λογοτεχνίᾳ. —Ω.

**Μπλοντὲν** (Blondin), ***Ἰωάννης***, ὁ ἐπονομαζόμενος *Γκραβελὲ* (Gravelet). Περίφημος Γάλλος ἀκροβάτης (1824—1897). Ἀπέκτησε τεραστίαν φήμην ὄχι μόνον διὰ τὴν θαυμαστὴν δεξιότητα καὶ τὴν χάριν μεθ' ἧς ἐξετέλει τὰ πλέον ἐπικίνδυνα γυμνάσματα, ἀλλὰ καὶ διὰ τὸν ἐπιτυχῆ τρόπον μὲ τὸν ὁποῖον κατώρθωσε νὰ τὰ παρουσιάζῃ εἰς τὸ κοινόν. Ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον ἰδίως τὸν ἔκαμε διάσημον ὑπῆρξεν ἡ ἀπόφασίς του νὰ διέλθῃ βαδίζων ἐπὶ τεταμένου σχοινίου ὑπεράνω τῶν καταρρακτῶν τοῦ Νιαγάρα, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐπέτυχε κατ' ἐπανάληψιν ὑπὸ τὰ ὄμματα ἀπειραρίθμων θεατῶν. Προσέθετε δ' ὁ Μπλοντὲν εἰς τὸ τολμηρόν του τοῦτο γύμνασμα νέας ἑκάστοτε ἐντυπωτικὰς ποικιλίας. Ἄλλοτε ἔφερε μεθ' ἑαυτοῦ ἐπὶ τῶν ὤμων του τὸν υἱόν του, ἄλλοτε καθήμενος ἐπὶ τοῦ σχοινίου παρεσκεύαζε καὶ ἔτρωγεν ὀμελέταν, ἄλλοτε ἐκρεμᾶτο ἀπὸ τῶν ποδῶν μὲ τὴν κεφαλὴν πρὸς τὰ κάτω, ὑπεράνω τῶν ἀγρίως ῥοχθούντων καὶ εἰς ἰλιγγιῶδες βάθος κρημνιζομένων ὑδάτων τοῦ καταρράκτου. Πολλοὶ ἐκ τῶν συγχρόνων του καὶ τῶν μετέπειτα ἀκροβατῶν ἐπεχείρησαν νὰ τὸν μιμηθοῦν, ἄλλοι δὲ ἠρκοῦντο νὰ τὸν πλαστοπροσωποῦν, ἐμφανιζόμενοι ὑπὸ τὸ ὄνομά του. —Ω.

**Μπλοντὼ** (Blondeau), ***Ἐρρῖκος - Μαρία - Γαβριήλ***. Γάλλος θεατρικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1841. Ἦτο ὑπάλληλος ἀργυραμοιβείου. ὅταν ἀνεβίβασε τὸ πρῶτόν του κωμειδύλλιον ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ φίλου του *Μονρεάλ*, μετὰ τοῦ ὁποίου ἐξηκολούθησεν ἔκτοτε νὰ συνεργάζεται ἐπὶ τεσσαρακονταπενταετίαν ὅλην εἰς τὴν συγγραφὴν ἔργων τοῦ ἐλαφροῦ θεάτρου. Ἐκ τῶν κωμειδυλλίων των ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως τά: «*Ἐπάνω σὲ μιὰ σκάλα*» (1866), «*Τὸ Παρίσι μέσα στὰ νερά*» (1872), «*Ἡ κυρία Μεφίστο*» (1900) κλπ. Ἔγραψαν ἐπίσης φαντασμαγορίας: «*Τὰ χρυσᾶ μῆλα*» (1873), «*Πὶφ-Πάφ*» (1875) κ. ἄ., καὶ ὀπερέττας: «*Ὁ Δαγοβέρτης καὶ τὸ ποδήλατό του*» (μὲ μουσικὴν τοῦ Demarquette, 1867), «*Ἡ χήρα Μάλμπορω*» (μουσικὴ τοῦ Marc-Chautague, 1873), «*Ἡ νύκτα τοῦ γάμου της*» (μουσικὴ Charles Lecoq, 1873), «*Τὰ χρυσᾶ μῆλα*» (μουσικὴ τοῦ Audran, 1884), «*Ὁ παράδεισος τοῦ Μωάμεθ*» (μουσικὴ τοῦ Rob, Planquette, 1906) κλπ. Ἔτι δὲ πολυαρίθμους ἐπιθεωρήσεις ἀναβιβασθείσας εἰς διάφορα παρισινὰ καὶ ἐπαρχιακὰ θέατρα τῆς Γαλλίας. —Ω.

**Μπλὸξ** (Blockx), ***Ἰωάννης***. Βέλγος συνθέτης καὶ διευθυντὴς ὀρχήστρας, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀμβέρσῃ (1851—1912). Ἀπὸ τοῦ 1901 ὠνομάσθη διευθυντὴς τοῦ Ὠδείου τῆς Ἀμβέρσης, εἰς τὸ φλαμανδικὸν θέατρον τῆς ὁποίας ἔδωκε τὰ μελοδράματα: «Jets vergeten» (1877), «Herbergprincess», (1896)), ἔργον σημειῶσαν καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν, ἣν συνηγωνίσθη μετ' ὀλίγον ἓν ἄλλο μελόδραμα του, «De Bruid der Zee» (1901). Ὁ Μπλὸξ ἀνεβίβασεν ἐπίσης ἐν Ἀμβέρσῃ τὴν «Blandie» (1908), ἐν δὲ ταῖς Βρυξέλλαις τὰ μελοδράματα: «Maître Martin» (1892) καὶ «Thiel Uylenspiegel», (1900) κ.τ.λ. Ἡ ὑπόλοιπος παραγωγή του περιλαμβάνει συμφωνίας, καντάτας, μαδριγάλια, ἓν συμφωνικὸν ποίημα, ἓν ὀρατόριον, τὸν «*Θρῦλον τοῦ Ἁγίου Νικολάου*» κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μπλόξμπεργκ** (Blocksberg) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν κορυφῶν ὀρέων ἐν Γερμανίᾳ. Γνωστοτέρα τούτων εἶναι ἡ ὑψηλοτέρα κορυφὴ τῶν ὀρέων Χάρτς, ἡ ἄλλως καλουμένη *Μπρόκεν* (βλ. λ.).

**Μπλὸτ** (Blot), ***Κλαύδιος-Φιλιβέρτος-Ἱππόλυτος***. Γάλλος καθηγητὴς μαιευτήρ, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις (1822—1888). Ἔγραψε τὰς διατριβὰς «De l'albuminurie chez les femmes enceintes etc.», «De l'anesthésie appliquée à l' art des accouchements» (1857), ὡς καὶ τὴν πραγματείαν «De la version pelvieune dans certains cas de rétrécissement du bassin» (1868). Εἰσήγαγεν ἐν τῇ μαιευτικῇ νέαν ψαλίδα (ψαλὶς ἢ κρανιοτόμος τοῦ Μπλὸτ) πρὸς ἐμβρυϊκὴν κρανιοτομίαν, ἀνάλογον μὲ τὴν τοῦ Smellie, ἀλλὰ τελειοτέραν ταύτης. Ο. Ρ.

**Μπλουὰ** (Blois, λατιν. Blesoe) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Λουὰρ-ἐ-Σέρ. Ἔχει περίφημον φερώνυμον ἀνάκτορον (βλ. κατωτ.), εἶναι κέντρον βιομηχανίας ὑποδημάτων καὶ φαγεντιανῶν εἰδῶν καὶ διεξάγει ἐμπόριον οἴνων, ξυλείας καὶ σιτηρῶν. Κάτ. 24.000. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ἡ πόλις ἦτο εὐνοούμενος τόπος διαμονῆς τῶν βασιλέων, ἐν αὐτῇ δὲ ὑπεγράφησαν αἱ συνθῆκαι τοῦ 1504—1505, συνῆλθον αἱ συνελεύσεις τῶν γενικῶν τάξεων τῷ 1576 καὶ 1588 καὶ ἐδολοφονήθη ὁ δοὺξ τῆς Γκίζης. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα εἶχεν ἐγκλεισθῆ εἰς τὸ ἐν τῇ πόλει ἀνάκτορον ἡ Μαρία τῶν Μεδίκων. Τῷ 1814 ἡ ἀντιβασίλισσα Μαρία-Λουΐζα μετέθεσεν ἀπὸ Παρισίων εἰς Μπλουὰ τὴν ἕδραν τῆς διοικήσεως. Χ. Δ.

— **Μπλουὰ** ***ἀνάκτορον*** *[Γεωγρ.]*. Περίφημον ἀρχιτεκτονικὸν μνημεῖον, κείμενον εἰς τὸ κέντρον τῆς παλαιᾶς πόλεως τοῦ Μπλουά. Τὰ παλαιότερα τμήματά του ᾠκοδομήθησαν ὑπὸ τῶν κομίτων τοῦ Σατιγιὸν (ΙΓ' αἰών) καὶ τῶν δουκῶν τῆς Ὀρλεάνης (ΙΕ' αἰών). Ὁ Λουδοβῖκος ΙΒ' ἀντικατέστησε μέγα μέρος αὐτοῦ, ὁ δὲ Φραγκῖσκος Α' προσέθεσε νέαν πτέρυγα. Βραδύτερον (ΙΖ' αἰών) ὁ Γάστων τῆς Ὀρλεάνης ἐπεχείρησε τὴν ἐξ ὁλοκλήρου ἀνοικοδόμησιν τοῦ ἀνακτόρου, ἥτις ὅμως δὲν ἐπετεύχθη. Ταχθὲν κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους μεταξὺ τῶν ἱστορικῶν μνημείων τῆς Γαλλίας, ἐπεσκευάσθη (1845—1870) ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Ντυμπάν. Χ. Δ.

**Μπλουὰ** (Bloy), ***Λέων***. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Perigueux τῷ 1846 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1917. Μεταβὰς εἰς Παρισίους συνεδέθη πρὸς τὸν Barbey d'Aurevilly, τοῦ ὁποίου συνεμερίσθη τὰς ἀντιλήψεις, συνειργάσθη εἰς τὸν «Figaro», εἶτα εἰς τὸν «Gil Blas» κλπ. καὶ ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον: «Les propos d' un entrepreneur de démolitions» (1884), ὅπου ἐπετίθετο βιαίως κατὰ τῶν διασημοτέρων ἀνθρώπων τῶν γραμμάτων. Ἄλλα ἔργα: «Le révélateur du globe, Cristophe Colomb,et sa béatification future» (1884), «Le désespéré» (1887), εἶδος αὐτοβιογραφίας, «Un brelan d' excommuniés» (1888), «Christophe Colomb devant les taureaux» (1890), «Le salut par les Juifs» (1892), «Histoires désobligeantes» (1894), «Sueur de sang» (1896), «La femme pauvre» (1897), «Le mendiant ingrat» (1898), «Mon Journal» (1904), «Quatre ans de captivité à Cochonssur-Marne» (1906), «L' invendable» (1909), «Le Vieux de la Montagne» (1911), «Le pélerin de l' Absolu» (1914), «Au seuil de l' Apocalypse» (1916) κλπ. Διακρίνεται διὰ τὴν ὀξύτητα καὶ ἐπιθετικότητα τοῦ χαρακτῆρός του καὶ τὴν δύναμιν τοῦ ὕφους του. —Ω.

**μπλοὺ-γκράουντ** (Blue Ground) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα τῆς νοτίου Ἀφρικῆς, τὸ ὁποῖον, ἰδίως εἰς τὰς περὶ τὸν ποταμὸν Ὀράγγην ἀποικίας καὶ εἰς τὸ Τράνσβααλ, παρουσιάζει μεγάλην οἰκονομικὴν σημασίαν, διότι ἐγκλείει κοιτάσματα ἀδαμάντων. Ὠνομάσθη οὕτω κατ' ἀρχὰς τὸ πέτρωμα τοῦ *σερπεντίνου*, τὸ ὁποῖον εὑρέθη ἀδαμαντοφόρον κατὰ τὸ 1870 εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Kimberley, ἀλλ' ἡ ὀνομασία αὐτὴ ἐδόθη βραδύτερον εἰς ὅλα ἐν γένει τὰ ἀδαμαντοφόρα πετρώματα τοῦ νοτίου τμήματος τῆς Ἀφρικῆς, ἀνεξαρτήτως τοῦ εἴδους καὶ τῆς ὀρυκτολογικῆς συστάσεως αὐτῶν. Γ. Β.

**Μπλουὲ** (Blouet), ***Γουλιέλμος-Ἄβελ***. Γάλλος ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1795—1853). Τῷ 1821 ἐτιμήθη διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου τῆς Ρώμης, κατὰ τὴν παραμονὴν του δ' εἰς τὴν πόλιν αὐτὴν ἐξετέλεσε τὴν ἀναστήλωσιν τῶν Θερμῶν τοῦ Καρακάλλα. Βραδύτερον διηύθυνε τὰς ἀρχαιολογικὰς ἐρεύνας τῆς ἀποστολῆς τοῦ Μορέως, τῷ δὲ 1846 ὠνομάσθη καθηγητὴς τῆς θεωρίας τῆς ἀρχιτεκτονικῆς ἐν τῇ Σχολῇ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1850 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ἐπεφορτίσθη νὰ συμπληρώσῃ τὴν θριαμβευτικὴν ἁψῖδα τῆς Ἐτουὰλ ἐν Παρισίοις, ἐξεπόνησε τοὺς τάφους τοῦ Μπελλίνι καὶ τοῦ Ντελαβίνι καὶ διηύθυνε τὰς ἐργασίας τῆς ἀνακαινίσεως τοῦ ἀνακτόρου καὶ τῶν κήπων τοῦ Φονταινεμπλώ. Ι. Μ. Π.

**μπλοὺζ** (Blues, προφ. *μπλιούζ*). Χορὸς ἐκ τῶν νεωτέρων, εἰσαχθεὶς εἰς Εὐρώπην ἐξ Ἀμερικῆς. Χορεύεται εἰς χρόνον πολὺ βραδύτερον τοῦ φὸξ-τρότ, μὲ βηματισμὸν περίπου τὸν αὐτόν, ἀλλὰ μὲ σχεδὸν ἄκαμπτα τὰ γόνατα καὶ μὲ κάποιαν οἱονεὶ ῥᾳθυμον ἀθυμίαν, ἡ ὁποία ἀποτελεῖ καὶ τὸ κύριον χαρακτηριστικόν του. Πολλαχοῦ ὁ χορὸς οὗτος, ἐκφυλισθείς, χορεύεται μὲ πολλὴν ζωηρότητα. Τ. Δ.

**μπλοῦζα** (ἡ)· φόρεμα τῶν γυναικῶν καλύπτον τὸν κορμὸν μέχρι τῆς ὀσφύος, ἐκ λεπτοῦ πάντοτε ὑφάσματος, κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν φοῦσταν· || καθόλου, ἐπενδύτης παιδίων ἢ καὶ ἀνδρῶν ἐν καιρῷ ἐργασίας (γαλλ. blouse).

**Μπλόϋλερ** (Bleuler), ***Παῦλος-Εὐγένιος***. Ἐλβετὸς ψυχίατρος, γεννηθεὶς τῷ 1857 εἰς Zollicon τῆς Ζυρίχης. Τῷ 1886 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ νοσοκομείου Rheinan, μέχρι τοῦ 1898. Μαθητὴς τοῦ Freud, ἀπήρτισε μετὰ τοῦ Jung τὴν περίφημον λεγομένην τῶν πιστῶν ὁπαδῶν τοῦ διδασκάλου. Τῷ 1898 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ψυχιατρικῆς ἐν Ζυρίχῃ καὶ διευθυντὴς τοῦ ἀσύλου τοῦ Burghölzli, ἔνθα ἐφαρμόζων τὰ διδάγματα τοῦ Freud καὶ συνδυάζων αὐτὰ πρὸς τὰ τοῦ Kraipelin, ἀπέληξεν εἰς τὴν διατύπωσιν τῶν ἀντιλήψεων αὐτοῦ περὶ τῆς σχιζοφρενίας, καταστὰς ἐκ τούτου κυρίως διάσημος. Τὰς περὶ σχιζοφρενίας ἀντιλήψεις του ἀνέπτυξεν εἰς τὸ ὑπὸ τοῦ Aschaffenburg ἐκδιδόμενον σύγγραμμα ψυχιατρικῆς καὶ εἰς τὸ ἐν Βέρνῃ διεθνὲς συνέδριον τοῦ 1926. ἔνθα ὑπῆρξεν εἰσηγητὴς ἐπὶ τοῦ θέματος τούτου. Μετὰ τοῦ Jung ἐξέδωκε «Die psychoanalyse der dementiae praecoci». Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης πλείστας ἄλλας πραγματείας,

Digitized by Google

ὧν σπουδαιότεραι αἱ ἀναφερόμεναι εἰς τὸν νεοβιταλισμόν. Θεωρεῖται ὁ ἀναμορφωτὴς τῆς ψυχιατρικῆς, κατορθώσας ν' ἀνοίξῃ νέας ὁδούς, περὶ τῆς σημασίας τῆς ἰδεοσυστασίας ἢ τοῦ ὑποσυνειδήτου ἐν τῇ ψυχιατρικῇ. Τ. Α. ΖΗΣ

**Μπλοὺμ** (Blum), *Ἐρνέστος*. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς (1836—1907). Συντάκτης ἐν ἀρχῇ τοῦ σατιρικοῦ «Charivari» καὶ χρονογράφος ἀπὸ τοῦ 1869 τῆς ἐφημερίδος «Rappel», ἐπεδόθη κατόπιν εἰς τὸ θέατρον καὶ συνέγραψεν, εἴτε μόνος εἴτε ἐν συνεργασίᾳ, πληθὺν ἔργων παντὸς εἴδους, κωμειδύλλια, ἐπιθεωρήσεις, δράματα, ὀπερέττας, φαντασμαγορίας, τῶν ὁποίων μεγάλη ὑπῆρξε κατὰ τὸ πλεῖστον ἡ ἐπιτυχία. Μεταξὺ τούτων ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Ροκαμβὸλ» (1864), «Τὰ προσκήνιον» (1876), «Ἡ ὡραία ἀρωματοπῶλις» (1875), «Ὁ κατάσκοπος τοῦ βασιλέως» (1876), «Ἡ μικρὴ κοκκινοσκοῦφα» (1885), «Ἀδὰμ καὶ Εὔα» (1886) κλπ. Ἔγραψεν ἐπίσης ἱστορικάς τινας μονογραφίας καὶ βιογραφίαν τοῦ Ἑρρίκου Ροσσεφόρ, μετὰ τοῦ ὁποίου συνεδέετο διὰ μακρᾶς φιλίας.

—**Μπλοὺμ** (Blum), *Ἰωάννης Ραΐνχαρτ*. Γερμανὸς μεταλλειολόγος (1802—1883). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ὀρυκτολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἀϊδελβέργης καὶ ἔγραψε: «Περὶ τῶν πολυτίμων λίθων» (3η ἔκδ. 1887), «Ἐγχειρίδιον ὀρυκτογνωσίας» (4η ἔκδ. 1874), «Αἱ ψευδομορφώσεις τοῦ ὀρυκτοῦ βασιλείου» (1843—1879) κ. ἄ. Γ. Ε. Κ.

—**Μπλοὺμ** (Blum), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς μουσικὸς καὶ ποιητὴς (1786—1845). Τῷ 1805 προσελήφθη ὡς ἀοιδὸς εἰς ἕνα περιοδεύοντα θίασον κωμῳδῶν, εἶτα δὲ μεταβὰς εἰς Καίνιξμπεργκ ἐδιδάχθη μαθήματα συνθέσεως. Τῷ 1810 ἡ πρώτη του ὄπερα «Claudine von Villabella» ἐπαίχθη μετ' ἐπιτυχίας εἰς τὸ Βερολῖνον. Τῷ 1817 συνέθεσε μίαν κωμικὴν ὄπεραν ὑπὸ τὸν τίτλον «Das Rosenhürchen» καὶ βραδύτερον τὸ μπαλέτο «Aline», τυχὸν ἀρίστης ἐκ μέρους τοῦ κοινοῦ ὑποδοχῆς. Τῷ 1820 ὁ βασιλεὺς τῆς Πρωσσίας τὸν ὠνόμασε μουσικοσυνθέτην τῆς αὐλῆς. Ἐταξίδευσε κατόπιν χάριν μελετῶν εἰς Παρισίους καὶ ἐπανελθὼν εἰς Βερολῖνον τῷ 1822 διηύθυνεν ἐκεῖ τὸ βασιλικὸν θέατρον μελοδράματος. Κατόπιν νέων ταξιδίων του εἰς Ἰταλίαν καὶ Γαλλίαν, ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς εἰς Βερολῖνον καὶ ἠσχολήθη μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας εἰς τὴν μετάφρασιν διαφόρων ξένων θεατρικῶν ἔργων εἰς τὴν γερμανικὴν γλῶσσαν, δημοσιεύων ἅμα εἰς διαφόρους ἐφημερίδας ἄρθρα μουσικῆς κριτικῆς. Ἐκτὸς τῶν προαναφερθέντων μελοδραμάτων του συνέθεσεν ἐπίσης: «Zoraïde, ἢ der Friede von Grenade», «Die Pagen des Herzogs von Vendome» κλπ., μερικὰ μπαλέτα, ἐν οἷς τὸ «Achille», σερενάτας, κουαρτέτα, μίαν μέθοδον διδασκαλίας κιθάρας καὶ τὴν μουσικὴν πόλλων κωμειδυλλίων. —Ω

—**Μπλοὺμ** (Blum), ***Λέων***. Γάλλος σοσιαλιστής, γεννηθεὶς τῷ 1872 ἐν Παρισίοις. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἵδρυσιν τῆς σοσιαλιστικῆς τότε καὶ νῦν κομμουνιστικῆς ἐφημερίδος «Humanité», τῆς ὁποίας ὑπῆρξε καὶ συνεργάτης. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν ἐνεργὸν πολιτικὴν ζωὴν κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1914, εἰργάσθη διὰ τὸν καταρτισμὸν τοῦ πολιτικοῦ προγράμματος τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος, τὸ ὁποῖον εἰσηγήθη εἰς τὸ συνέδριον τῶν Παρισίων κατὰ τὸ 1919. Τὸν Νοέμβριον τοῦ 1919 ἐξελέγη βουλευτὴς Παρισίων καὶ ἐγένετο γραμματεὺς τῆς σοσιαλιστικῆς ὁμάδος ἐν τῷ γαλλικῷ κοινοβουλίῳ. Εἶναι εὔγλωττος ῥήτωρ καὶ λεπτὸς καὶ εὔστροφος διαλεκτικός, οἱ δὲ λόγοι του ἐν τῇ βουλῇ ὑπῆρξαν πάντοτε ἐνδιαφέροντες καὶ ἐντυπωσιακοί. Μετὰ τὸ συνέδριον τῆς Tours, δι' οὗ καθωρίσθη ἐπίσημον ὄργανον τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος, ὁ «Populaire de Paris», ὁ Μπλοὺμ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσίν του. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Nouvelles conversations de Goethe avec Eckermann» (1901), «Au théâtre» (1905), «En lisant» (1906), «Du mariage» (1907), «Les congrès socialistes français» (1901), «Stendhal et le Beylisme», «Commentaires sur le programme d'action du Parti Socialiste», »Ponr être socialiste» κλπ. — Ω.

—**Μπλοὺμ** (Blum), ***Λέων***. Γερμανὸς ἰατρὸς (1878—1930) γαλλικῆς καταγωγῆς. Τῷ 1913 διωρίσθη καθηγητὴς τῆν ἰατρικῆς σχολῆς Στρασβούργου. Κατέστη γνωστὸς διὰ τὰς ἐπὶ τοῦ διαβήτου ἐργασίας του. Ἠσχολήθη μὲ τὸ ζήτημα τῆς παθογενείας τῆς ὀξεώσεως, ἐμελέτησε τὴν ἀπόσχισιν τῶν λιπαρῶν ὀξέων ἐν τῷ ὀργανισμῷ καὶ τὴν σχέσιν αὐτῶν μετὰ τῆς ἐναλλαγῆς τῶν ὑδατανθράκων. Ἐπίσης περιέγραψε νέον τύπον οὐραιμίας, ὀφειλομένης εἰς χλωριοπενίαν καὶ διαταραχὰς νεφριτικῆς ἐκκρίσεως ἐξ ἐλλείψεως χλωριούχου νατρίου. Ἐκ τῆς μελέτης του ταύτης ἤχθη εἰς τὴν διάσωσιν ἀσθενῶν οὐραιμικῶν, διὰ τῆς παροχῆς ποσότητός τινος χλωριούχου νατρίου, ἀναπληρούσης τὴν ἔλλειψιν τοῦ ἅλατος, ἐξ ἧς ἐπήγασεν ἡ ἀζωθαιμία αὐτῶν. Ο. Ρ.

—**Μπλοὺμ** (Blum), ***Ροβέρτος***. Γερμανὸς λογοτέχνης καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Κολωνίᾳ τῷ 1807 καὶ τυφεκισθεὶς ἐν Βιέννῃ τῷ 1848. Υἱὸς πτωχῶν γονέων, εἰσῆλθεν ἐκ παιδικῆς ἡλικίας μαθητευόμενος εἰς λευκοσιδηρουργεῖον καὶ κατόπιν ὡς ἐργάτης εἰς φανοποιεῖον. Δεκαοκταετὴς προσελήφθη ὡς ἡμερομίσθιος ὑπάλληλος εἰς τὸ θέατρον τῆς γενετείρας του, τοῦ ὁποίου τὴν διεύθυνσιν ἠκολούθησε κατόπιν εἰς Λειψίαν. Προαγόμενος κατὰ μικρὸν εἰς μόρφωσιν, χάρις εἰς τὴν εὐφυΐαν καὶ τὴν δραστηριότητά του, ἔγινεν ἐν ἀρχῇ γραμματεὺς καὶ κατόπιν ταμίας εἰς τὸ ἴδιον θέατρον, ἡ δὲ ἀναστροφή του μετὰ τῶν ἠθοποιῶν, τῶν συγγραφέων καὶ τῶν φίλων τοῦ θεάτρου ἐτόνωσε βαθμηδὸν τὴν φιλολογικήν του κλίσιν. Τῷ 1836 ἀνεβίβασεν, ὄχι χωρὶς ἐπιτυχίαν, τὸ πρῶτον δρᾶμά του «Ἡ ἀπελευθέρωσις τῆς Κρήτης». Ἀπὸ τοῦ 1839 ἤρχισεν ἐκδίδων μετὰ τῶν Herloszsohn καὶ τοῦ Maggraff τὸ «Λεξικὸν τοῦ θεάτρου» (Theaterlexikon) ἀποτελεσθὲν ἐξ ἑπτὰ τόμων (Λειψία 1839—1842), τῷ δὲ 1840 ἵδρυσε τὴν ἑταιρείαν τοῦ Schiller ἐν Λειψίᾳ καὶ μετέσχε τῆς ἱδρύσεως τῆς Φιλολογικῆς ἑταιρείας. Ἐν τῷ μεταξὺ τὸν εἵλκυσεν ἡ πολιτική, ἥτις καὶ τὸν ἀπερρόφησεν ἐν τέλει ἐξ ὁλοκλήρου. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν κυριωτέρων συντακτῶν τοῦ πολιτικοῦ ἡμερολογίου «Vorwärts (Λειψία 1843—1847) καὶ τοῦ «Sächsische Vaterlandsblätter», τὰ ὁποῖα ἐχρησιμοποίησε δι' ἐπαναστατικὴν προπαγάνδαν.

Ἱδρύσας ἀπὸ τοῦ 1847 ἐκδοτικὸν οἶκον, ἐξέδωκεν ἐν τοῖς ἄλλοις δύο εἰδικὰ συγγράμματα, τὸ «Weihnachts-baum», συλλογὴν βιογραφιῶν τῶν κατὰ καιροὺς φιλελευθέρων ἀνδρῶν τῆς Γερμανίας, καὶ τὸ «Staatslexicon für das deutsche Volk». Μετὰ τὰ γεγονότα τοῦ 1848 ὁ Μπλοὺμ ἀπετέλεσε τὸν πυρῆνα τῆς ἐπαναστατικῆς κινήσεως ἐν Σαξονίᾳ καὶ προὐκάλεσε τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως Könneritz. Ἐκλεγεὶς μέλος τῆς προκαταρκτικῆς βουλῆς τῆς Φρανκφούρτης καὶ τῆς Ἐθνοσυνελεύσεως, ἐκυριάρχησεν εἰς ἀμφότερα τὰ κοινοβούλια ταῦτα διὰ τῆς εὐφυΐας καὶ τῆς ἑτοιμότητος τοῦ πνεύματος καὶ τῆς εὐγλωττίας του. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1848 μετέβη εἰς Βιέννην ὅπως συναντηθῇ μετὰ τῶν ἐκεῖ ἐπαναστατικῶν κύκλων ἐξ ὀνόματος τῆς ἀριστερᾶς τῆς Ἐθνοσυνελεύσεως, ἐκεῖ δὲ τῷ προσεφέρθη τιμῆς ἕνεκεν ἡ ἀρχηγία ἑνὸς ἐπαναστατικοῦ λόχου. Ὁ Μπλοὺμ ἐδέχθη τὴν προσφοράν, ἀλλὰ ὑπὸ τὸν ὅρον ὅτι οὔτε αὐτὸς οὔτε οἱ ἄνδρες τοῦ λόχου του θὰ μετεῖχον τῶν μαχῶν, αἵτινες ἐπρόκειτο νὰ διεξαχθοῦν εἰς τὰς ὁδοὺς τῆς πόλεως. Ἀλλ' ὁ λόχος του παρεσύρθη εἰς τὴν πόλιν, ὁ δὲ Μπλούμ, συλληφθεὶς μετά τινας ἡμέρας, κατεδικάσθη ὑπὸ τοῦ στρατοδικείου εἰς θάνατον καὶ ἐτυφεκίσθη.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Frey*, «Robert Blum, als Politiker, Character und Mensch» (Manheim 1849).—*Hans Blum*, «Robert Blum» (Leipzig (1878). Γ. Ζ.

**Μπλουμάουερ** (Blumauer) ***Ἀλοΐσιος***. Γερμανὸς ποιητὴς (1755—1798). Ἔχων ὡς πρότυπον τὸν «Virgile travesti» τοῦ Scarron, ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον: «Περιπέτειαι τοῦ εὐσεβοῦς ἥρωος Αἰνείου» (1784—1788), τὸ ὁποῖον ἀπέλαυσε μεγάλης δημοτικότητος, καὶ πολλὰ σατιρικὰ ποιήματα. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν εἰς 4 τόμους τῷ 1801—1803 (ἐν Λειψίᾳ) καὶ τῷ 1885 (ἐν Βιέννῃ). Γ.Ε.Κ.

**Μπλούμαρτ** (Bloemaert, ἢ Blomart), ***Ἀβραάμ***. Ὀλλανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1564—1651). Εἰργάσθη ἐπὶ θρησκευτικῶν καὶ μυθολογικῶν θεμάτων καὶ προσωπογραφιῶν, μεταξὺ δὲ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ ἀγγελικὸς χαιρετισμός», «Ἡ Γέννησις τοῦ Χριστοῦ», «Προσωπογραφία ἀνδρός» (Λοῦβρον), «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων», «Ἡ ἐμφάνισις τοῦ ἀγγέλου εἰς τὸν Ἰωσήφ» (Βερολῖνον), «Τὸ συμπόσιον τῶν θεῶν» (Χάγη). Ι. Μ. Π.

**Μπλουμᾶς** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Βίβλος*.

**Μπλοῦμε** (Blume), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ βοτανικὸς (1796—1862). Διαμείνας ἐπὶ μακρὸν ἐν τῇ νήσῳ Ἰάβᾳ, περιέγραψε πλῆθος φυτῶν. Διετέλεσε κατόπιν καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς ἐν Leiden. Ἔγραψε: «Flora Iavae nec non insularum adjacentium» (1828 καὶ 1858), «Rumphia sive commetationes botanicae de plantis Indiae orientalis» (1835—1848, εἰς 4 τόμ.), «Museum botanicum» (1849—1856, εἰς 2 τόμ.) κ. ἄ. Ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ γένος φυτῶν ἐκλήθη Blumea. Ο. Ρ.

**Μπλουμενάου** (Blumenau) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ ἀποικία τῆς Βραζιλίας ἐν τῷ κράτει τῆς Σάντα Καταρίνα, κειμένη ἐγγὺς τῆς παραλίας, ἐντὸς τῆς κοιλάδος τοῦ Ἰταζάϋ. Ἱδρύθη τῷ 1850 ὑπὸ τοῦ δόκτορος Ἑρμάννου Μπλουμενάου, τοῦ ὁποίου τὸ ὄνομα προσέλαβεν. Οἱ κάτοικοι, ἀνερχόμενοι εἰς 30.000, ἀσχολοῦνται μὲ τὴν καλλιέργειαν τοῦ καπνοῦ, τῶν σιτηρῶν, τῆς σακχάρεως, τοῦ καφέ, τῆς ὀρύζης κλπ. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα ἔχει κατ. 5.000. Χ. Δ.

**Μπλούμενταλ** (Blumenthal) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ περιφερείᾳ Ἀννοβέρου τῆς Πρωσσίας, ἀξιόλογον βιομηχανικὸν κέντρον, ἀποτελοῦν οἱονεὶ μεμακρυσμένον προάστειον τῆς Βρέμης, πρὸς ΒΔ. τῆς ὁποίας κεῖται. Ἔχει βυρσοδεψίαν, κεραμοποιίαν, ναυπηγεῖα κλπ. Κάτ. (1919) 10.874. Χ. Δ.

**Μπλούμενταλ** (Blumenthal), ***Ὄσκαρ***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1852—1917). Ἐσπούδασε φιλολογίαν, ἵδρυσε κατόπιν (1888) τὸ θέατρον Λέσινγκ ἐν Βερολίνῳ, τὸ ὁποῖον διηύθυνε μέχρι τοῦ 1897, καὶ ἐδημοσίευσε: «Παντὸς εἴδους ἀδιακρισίαι» (1874, 5η ἔκδ. 1877), «Ἡ φιλοσοφία τοῦ ὑποσυνειδήτου» (1876) κωμῳδία, τὰ σκίτσα: «Ἀπὸ τὴν ἑκατοντάδα εἰς τὴν χιλιάδα» (1876) καὶ «Ὡς ἐπιδόρπιον» (2α ἔκδ. 1882), τὸ ἐπίγραμμα «Ἀπὸ αἴθριον οὐρανὸν» (2α ἔκδ. 1882), «Θεατρικαὶ ἐντυπώσεις» (1885), «Εἰλικρίνειαι» (1887), «Συλλογὴ ἐπιγραμμάτων» (1890) κ.ἄ. Αἱ κωμῳδίαι τοῦ Μπλούμενταλ, αἵτινες διακρίνονται κυρίως διὰ τὸν πλήρη σκώμματος διάλογον, ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν, ἂν καὶ στεροῦνται καλλιτεχνικῆς ἑνότητος καὶ περιπίπτουσι συχνάκις εἰς κοινοτοπίας. Κυριώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ἡ μεγάλη καμπάνα», «Μία σταγὼν δηλητηρίου», «Ὁ μαῦρος πέπλος» (1887), «Ἀτμοσφαῖρα μεγαλοπόλεως» (1891), «Ὅταν ἐπανῆλθον» (1899) κ. ἄ. Γ. Ε. Κ.

**Μπλούμενμπαχ** (Blumenbach), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ φυσιοδίφης (1752—1840), ἱδρυτὴς τῆς συγχρόνου ἀνθρωπολογίας. Ἐγκύψας ἰδίᾳ εἰς τὰ ζητήματα τῶν φυλῶν, συνέλεξε περίφημον συλλογὴν κρανίων ὅλων τῶν φυλῶν καὶ συγκρίνας τὰς διαφορὰς καὶ τὰς ὁμοιότητας αὐτῶν, διήρεσε φυλετικῶς τοὺς ἀνθρώπους εἰς 5 ὁμάδας: *καυκασίαν* ἢ λευκήν, *μογγολικὴν* ἢ κιτρίνην, *αἰθιοπικὴν* ἢ μέλαιναν, *ἀμερικανικὴν* ἢ ἐρυθρὰν καὶ *μαλαιικήν*. Ἡ διαίρεσις αὕτη δὲν ἀφίσταται πολὺ τῶν σημερινῶν ἀπόψεων τῆς ἀνθρωπολογίας. Τὰς κρανιολογικάς του παρατηρήσεις συνεκέντρωσεν ἐν τῷ ἔργῳ: «Decades collectionis suae craniorum diversarum gentium illustratae», ὅπερ ἀποτελεῖ τὴν πρώτην κρανιοσκοπικὴν συγκριτικὴν μελέτην. Ἕνεκα δὲ τῶν διαμέσων μορφῶν καὶ παρὰ τὰς βασικὰς διαφορὰς θεωρεῖ τὸν ἄνθρωπον ὡς ἓν εἶδος. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «De generis humani varietate nativa» (1774—1794), ἐν ᾧ παρέχει εἰκόνα τῶν ἀνθρωπολογικῶν γνώσεων τῆς ἐποχῆς, «Manuel d'histoire naturelle» (1808), «Manuel d'anatomie comparée» (1805) κ. ἄ. Ι. Γ. Κ.

*Ἰωάννης Μπλούμενμπαχ.*

**Μπλούμινγκτον** (Bloomington) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν τῇ πολιτείᾳ τοῦ Ἰλινόϊς. Κάτ. 24.000. Εἶναι πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Μακλὴν καὶ σπουδαῖον σιδηροδρομικὸν κέντρον. Ἔχει δύο πανεπιστήμια. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν μεταλλεῖα γαιανθράκων. Εἶναι πόλις βιομηχανικὴ καὶ ἐμπορικὴ καὶ ἔχει ἐργοστάσια μηχανημάτων καὶ χυτήρια. —2) Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ Ἰνδιάνας. Κάτ. 7.000. Εἶναι πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Μόνρω, ἔχει πανεπιστήμιον καὶ βιομηχανίαν ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπλούμστραντ** (Blomstrand), ***Χριστιανὸς-Γουλιέλμος***. Σουηδὸς χημικὸς καὶ ὀρυκτολόγος (1826—1897). Ἀπὸ τοῦ 1854 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς χημείας καὶ ὀρυκτολογίας εἰς Λέντ. Εἰργάσθη ἐπὶ τοῦ ζητήματος τοῦ σθένους τῶν στοιχείων καὶ καθώρισε πλεῖστα νέα ὀρυκτά. Τὸ σπουδαιότερον ἐκ τῶν συγγραμμάτων του εἶναι «Ἡ σύγχρονος χημεία», δημοσιευθὲν τῷ 1869 ἐν Ἀϊδελβέργῃ. Σ. Γ.

**Μπλούμφιλντ** (Bloomfield) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βορειομερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ἔσσεξ τῆς πολιτείας Νέας Ἰερσέης, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος Μόρρις πρὸς Β. τοῦ Νιούωρκ. Ἔχει περίφημον γερμανικὸν σεμινάριον, σπουδαιοτάτην βιβλιοθήκην καὶ ἐργοστάσια χάρτου, μεταξωτῶν ἐρίων κλπ. Κάτ. 15.070. Χ. Δ.

**Μπλούμφιλντ** (Bloomfield), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος ποιητὴς (1766—1823). Εἶναι γνωστὸς πρὸ πάντων ἐκ τῶν λαϊκῶν ᾀσμάτων του: «Ἡ γαλακτοπῶλις», «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ ναύτου» καὶ ἐκ τοῦ ποιήματος «Ὁ ὑπηρέτης τῆς ἀγροικίας», ὅπερ ἐνεποίησε μεγίστην ἐντύπωσιν. Ὡσαύτως ἔγραψε διηγήματα, λυρικὰς ῥαψῳδίας, ποιμενικὰ ᾄσματα κτλ. Λ. Δ.

**Μπλούμφοντάϊν** (Bloemfontein) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Νοτιοαφρικανικῆς ἑνώσεως, πρωτεύουσα τοῦ ἐλευθέρου κράτους τῆς Ὀράγγης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μόντερ (29°7' Ν. πλάτους καὶ 26°13' Α. μήκους Γκρήνουιτς), εἰς ὕψος 1500 περίπου μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Συγκοινωνεῖ σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Πόρτ Ἐλίζαμπετ (720 χλμ.), τοῦ Ντώρμπαν (825 χλμ.) καὶ τοῦ Κέηπ Τάουν (1.200 χλμ.). Ἔχει κλῖμα θερμὸν ἀλλ' ὑγιεινὸν μὲ μέσην ἐτησίαν θερμοκρασίαν +27° Κ. Κάτ. (1928) 45.146, ἐξ ὧν 22.695 Εὐρωπαῖοι οἱ δὲ λοιποὶ ἰθαγενεῖς, ἀνήκοντες κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέ-

Digitized by Google

ρος εἰς τὰς φυλὰς Μπαντού. Ἱδρύθη τῷ 1846 κατελήφθη δὲ ὑπὸ τῶν βρεττανικῶν στρατευμάτων τοῦ λόρδου Ρόμπερτς τὴν 13 Μαΐου 1900. Εἶναι ἕδρα τῶν ἀνωτέρων πολιτικῶν καὶ δικαστικῶν ἀρχῶν τοῦ κράτους καὶ ἐπισκόπου τῆς ἀγγλικανικῆς Ἐκκλησίας. Ἔχει πολλὰ ὡραῖα κτήρια καὶ εἶναι κέντρον τοῦ μεγαλυτέρου μέρους τοῦ εἰσαγωγικοῦ καὶ ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου τῆς χώρας, δεσπόζει δὲ πλουσίας κτηνοτροφικῆς περιοχῆς. Ἔχει πανεπιστήμιον (Grey University college), καὶ ἄλλας ἀνωτέρας καὶ εἰδικὰς σχολάς. Χ. Δ.

**Μπλοῦντ** (Blound), *σὲρ Ἐρρῖκος*. Ἄγγλος περιηγητὴς καὶ συγγραφεὺς (1602—1682). Ἐξεπαιδεύθη ἐν Ὀξφόρδῃ, κατόπιν δὲ περιηγήθη (1634) τὴν εὐρωπαϊκὴν Τουρκίαν, διάφορα μέρη τῆς Ἑλλάδος, τὴν Συρίαν καὶ τὴν Αἴγυπτον. Ἐπανακάμψας εἰς τὴν πατρίδα του τῷ 1836 ἐδημοσίευσεν ἀξιόλογον ἔργον, οὗτινος ἐγένοντο πολλαὶ ἐκδόσεις ὑπὸ τὸν τίτλον «A voyage to the Levant, with observations concerning the modern condition of the Turks», ἐν ᾧ περιέχονται πλεῖσται ἀξιοπερίεργοι πληροφορίαι περὶ Θεσσαλίας, Μακεδονίας, Θράκης, Ρόδου καὶ Αἰγύπτου, καθὼς καὶ περὶ Δαλματίας, Βοσνίας καὶ Οὑγγαρίας. Ἐξ πλήρεις φαντασίας καὶ σπινθηροβόλου πνεύματος κωμῳδίαι ὑπὸ τὸν τίτλον «Jon Silly» ἀποδίδονται εἰς αὐτόν. Ἕτερα ἔργα του εἶναι: «An epistle in praise of tobacco and coffee» καὶ μία σάτιρα ἐπιγραφομένη «Exchange walk». Δ. Π. Π.

—**Μπλοῦντ** (Blount), *σὲρ Θωμᾶς-Πώπ*. Ἄγγλος σοφός, υἱὸς τοῦ *Ἐρρίκου Μπλοῦντ* (1649—1697), Ἐσπούδασε φιλολογίαν, ἀστρονομίαν καὶ μαθηματικά, ἐξελέγη μέλος τοῦ κοινοβουλίου, ἔλαβε παρὰ τοῦ Καρόλου Β' τίτλον εὐγενείας καὶ διεκρίθη διὰ τὸ βαθὺ καὶ φιλελεύθερον πνεῦμά του. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὰ κυριώτερα εἶναι: «Censura celebrorum authorum» (1690), «A natural history containing many not common observations» (1693), «De re poetica» (1694) καὶ «Essays on Several Occasions» (1692). Α. Δ.

—**Μπλοῦντ** (Blount), *Κάρολος*. Ἄγγλος φιλόσοφος, ἀνήκων εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Χὸπς (1654—1693). Τὸ ἔργον του «Anima mundi» (1679), ἐν ᾧ ἐκθέτει τὰς γνώμας καὶ τὰς ἀντιλήψεις τῶν ἀρχαίων φιλοσόφων περὶ τῆς ἐκεῖθεν τοῦ τάφου τύχης τῆς ψυχῆς, ἡ συγγραφὴ αὐτοῦ «Ἡ ζωὴ Ἀπολλωνίου τοῦ Τυανέως», ἐν ᾗ πειρᾶται νὰ ἀναιρέσῃ τὰ θαύματα τοῦ Εὐαγγελίου, καὶ ἡ πραγματεία του «Ἡ γέννησις τῆς εἰδωλολατρείας» ἐξηγεῖρον ἐναντίον του τὴν κοινὴν γνώμην. Ὁ Μπλοῦντ ἔγραψεν ὡσαύτως διατριβὴν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τοῦ τύπου καὶ ἐδημοσίευσε: «Religio laici», ἐν ᾗ καταπολεμεῖ τὰς ἀνεγνωρισμένας ἐξ ἀποκαλύψεως θρησκείας καὶ «Janua scientiarum», ἤτοι εἰσαγωγὴν εἰς τὴν γεωγραφίαν, ἱστορίαν, φιλοσοφίαν κτλ. Α. Δ.

**Μπλοῦντ** (Blunt)· βλ. λ. *Μπλέντ*.

**Μπλούντσλι** (Bluntschli), *Ἰωάννης-Γάσπαρ*. Ἑλβετὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1800—1881). Τῷ 1836 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ ἀρτισυστάτῳ πανεπιστημίῳ τῆς Ζυρίχης. Ἂν καὶ κατ' ἀρχὰς διέκειτο συμπαθῶς πρὸς τὴν ἐν Ἑλβετίᾳ κατὰ τὸ 1830 ἀρξαμένην μεταρρυθμιστικὴν κίνησιν, ἐστράφη κατόπιν πρὸς τὴν συντηρητικὴν μερίδα καὶ ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸ πνεῦμα τοῦτο τὸ ἔργον: «Ὁ λαὸς καὶ ὁ κυρίαρχος» (1831). Ἀπὸ τοῦ 1837 μέλος τοῦ μεγάλου συμβουλίου καὶ ἡγέτης τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος, ἔλαβε μέρος εἰς τὰ ἐν Ζυρίχῃ γεγονότα τοῦ Σεπτεμβρίου 1839 καὶ ἔγραψεν: «Οἱ κομμουνισταὶ τῆς Ἑλβετίας» (1843). Βραδύτερον εἰργάσθη διὰ τὴν ἵδρυσιν φιλελευθέρου-συντηρητικοῦ κόμματος, δημοσιεύσας πρὸς τοῦτο τὰς «Ψυχολογικὰς μελέτας ἐπὶ τῆς πολιτείας καὶ τῆς Ἐκκλησίας» (1844). Ἐπεμελήθη κατόπιν τῆς συντάξεως τοῦ ἀστικοῦ κώδικος, ἥτις τῷ ἀνετέθη καὶ τῇ συγκαταινέσει τῶν πολιτικῶν του ἀντιπάλων. Τῷ 1848 ἐκλήθη ὡς καθηγητὴς τοῦ γερμανικοῦ ἰδιωτικοῦ δικαίου εἰς Μόναχον, ὅπου ἐδημοσίευσε: «Γενικὸν πολιτειακὸν δίκαιον» (1852), τὸ ὁποῖον εἰς τὴν 5ην ἔκδοσιν ἐνεφανίσθη ὑπὸ τὸν τίτλον: «Διδασκαλία περὶ τῆς νεωτέρας Πολιτείας» (1875—1876, εἰς 2 τ., προστεθέντος καὶ 3ου μέρους: «Ἡ πολιτικὴ ὡς ἐπιστήμη», 1876). «Γερμανικὸν ἰδιωτικὸν δίκαιον» (1853—1854 εἰς 2 τ.) καὶ μετὰ τοῦ Arndts καὶ Pözl: «Κριτικὴ ἐπισκόπησις τῆς γερμανικῆς νομοθεσίας καὶ νομικῆς ἐπιστήμης» (1851—1858 εἰς 6 τόμ.). Τῷ 1861 ἐκλήθη εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Αἰδελβέργης, ἐγένετο μέλος τῆς βουλῆς τῆς Βάδης, ὠνομάσθη μυστικοσύμβουλος, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ἀνάπτυξιν καὶ πρόοδον τῆς φιλελευθέρας κινήσεως καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πλέον διακεκριμένων μελῶν τῆς γερμανικῆς ἑνώσεως διαμαρτυρομένων. Ἔγραψε πρὸς τούτοις: «Αἱ νεώτεραι σχολαὶ δικαίου τῶν Γερμανῶν νομικῶν» (1841, 2α ἔκδ. 1862), «Ἱστορία τοῦ ἑλβετικοῦ ὁμοσπονδιακοῦ δικαίου» (1849—1852, εἰς 2 τ., 2α ἔκδ. 1875), «Ἱστορία τοῦ γενικοῦ πολιτειακοῦ δικαίου» (1864, 3η ἔκδ. 1882), «Τὸ σύγχρονον Διεθνὲς δίκαιον ἐν πολέμῳ τῶν πεπολιτισμένων κρατῶν» (1886, 2α ἔκδ. 1874), «Τὸ σύγχρονον Διεθνὲς δίκαιον, ὡς σύνολον κανόνων δικαίου» (1868, 3η ἔκδ. 1878), «Τὸ δίκαιον τῶν πολεμικῶν λειῶν» (1878). Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθη ἡ αὐτοβιογραφία του: «Ἀπομνημονεύματα ἐκ τῆς ζωῆς μου» (1884, εἰς 3 τ.). Εἰς τὴν ἑλληνικὴν μετεφράσθησαν: «Γενικαὶ ἀρχαὶ τοῦ κράτους» ὑπὸ Γ. Ι. Ἀγγελοπούλου καὶ «Διεθνὴς κῶδιξ» ὑπὸ Ν. Κωστάκη. Γ. Ε. Κ.

**Μπλούντωφ, *Δημήτριος Νικολάγιεβιτς, κόμις***—. Ρῶσος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Ρωμανόβῳ τῷ 1785 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1864. Ἐσπούδασεν ἐν Μόσχᾳ καὶ εἰσήχθη νεώτατος εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Ἠκολούθησε τὸν ρωσικὸν στρατὸν εἰς Μολδαβίαν, εἶτα δ' ἀνέλαβε διαφόρους διπλωματικὰς ἀποστολάς. Ἐγένετο ἀλληλοδιαδόχως ὑπουργὸς τῆς Παιδείας καὶ τῶν Θρησκευμάτων, τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τῆς Δικαιοσύνης, μέλος καὶ πρόεδρος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν (1855). Ἀπὸ τοῦ 1842 μέχρι τοῦ 1857 διηύθυνε τὴν ἔκδοσιν τοῦ ρωσικοῦ κώδικος καὶ εἰργάσθη εἰς τὰς δικαστικὰς μεταρρυθμίσεις καὶ τὴν χειραφέτησιν τῶν δουλοπαροίκων ἐπὶ Ἀλεξάνδρου Β', πρὸς δὲ διηύθυνε τὴν ἔκδοσιν τῶν ἐπισήμων ἐγγράφων τῶν ρωσικῶν ἀρχείων. Θ. Β.

**Μπλούφιλντ** (Bluefield) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Δυτικῆς Βιργινίας, κειμένη ἐν τῇ κομιτείᾳ Μέρσερ. Κεῖται εἰς τὸ κέντρον πλουσίας γαιανθρακοφόρου περιοχῆς καὶ εἶναι σημαντικὸν βιομηχανικὸν κέντρον. Κάτ. 11.118. Χ. Δ.

**Μπλούφιλντς**, ἢ ***Μπλιούφιλντς*** (Bluefields ἢ Blewfields) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ποταμὸς τῆς Νικαράγουας ἐν τῇ ἀκτῇ τῶν Μοσκίτος. Ὁ ποταμὸς ἐκβάλλει ἐν τῷ ὁμωνύμῳ κόλπῳ τῆς Καραϊβικῆς θαλάσσης καὶ εἶναι πλωτὸς ἐπὶ μήκους 100 χλμ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν μέχρι τῆς πόλεως Ράμα. Ἡ πόλις, κειμένη παρὰ τὴν ἐκβολὴν αὐτοῦ, ἔχει καλὸν λιμένα καὶ εἶναι κέντρον ἐμπορίου βανανῶν καὶ ἄλλων ὀπωρῶν τῶν Τροπικῶν. Κάτ. 4.800. Τὸ ὄνομα ἔλαβον ἔκ τινος περιφήμου πειρατοῦ Μπλιούφηλντς. Χ. Δ.

**μπλοῦχι** (τὸ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐνιαχοῦ τοῦ ζῴου *μῦς ὁ δασόβιος*.

**μπλόφα** (ἡ)· (ἐκ τῆς ἀγγλ. λέξ. bluff, σημαινούσης λόγον, πρᾶξιν, ἢ στάσιν κομπορρήμονα, μὲ σκοπὸν τὴν ἐξαπάτησιν ἢ τὸν ἐκφοβισμὸν ἀπλοϊκοῦ ἀντιπάλου). Τῆς λέξεως γίνεται ἰδίως χρῆσις εἰς τὸ *πόκερ* (βλ. λ.). Κατ' αὐτὴν εἷς ἐκ τῶν παικτῶν, μὴ ἔχων ἄξιον λόγου φύλλον, ὑποκρίνεται τὸν ἔχοντα καί, κάμνων μεγάλην «ρελάνς», ἀναγκάζει τοὺς ἀντιπάλους του ν' ἀποσυρθοῦν. Ἀλλὰ καὶ μεταφορικῶς χρησιμοποιεῖται συχνὰ ἐν τῷ κοινῷ λόγῳ: «δλ' αὐτὰ εἶτανε μπλόφα».—Ρῆμα: *μπλοφάρω*.

**Μπλὸχ** (Bloch), *Ἐρνέστος*. Ἑλβετὸς συνθέτης, γεννηθεὶς ἐν Γενεύῃ τῷ 1880. Εἶχεν ἤδη γίνει γνωστὸς διά τινων ἔργων του, ὡς ἡ «Συμφωνία εἰς ντο δίεσ. ἐλ.», «Ζὴν-Ἀγαπᾶν», «Χειμὼν-Ἔαρ» κ.τ.λ., ὅτε τῷ 1910 ἀνεβίβασεν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ Κωμικοῦ Μελοδράματος τῶν Παρισίων ἕνα «Μάκβεθ», ὅστις, παρ' ὅλην τὴν αὐστηρότητα τοῦ ὕφους καὶ τὴν λαμπρὰν του συμφωνικὴν ἐπεξεργασίαν, δὲν κατωρθώθη νὰ σταθῇ, διότι ἔλειπεν ἐξ αὐτοῦ ἡ πραγματικὴ δραματικὴ πνοή. Ἄλλη σειρὰ ἔργων τοῦ Μπλὸχ, περιλαμβάνουσα τὰ «Τρία ἑβραϊκὰ ποιήματα», τὴν «Δευτέραν συμφωνίαν», τὸν «Ἰσραήλ», τὴν «Ραψῳδίαν διὰ βιολοντσέλλο καὶ ὀρχήστραν», τὴν ραψῳδίαν «Σέλεμο» κτλ., εἶναι ἐμπνευσμένη ἐκ τῶν ἑβραϊκῶν παραδόσεων. Ὁ Μπλὸχ ἔγραψεν ἐπίσης σκηνικὴν μουσικὴν διὰ τὸ «Γαλάζιο πουλὶ» τοῦ Μαίτερλινκ, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, μελῳδίας, ἔργα μουσικῆς δωματίου κτλ. Ἀπὸ τοῦ 1915 ἔχει ἐγκατασταθῆ εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Γ. Σ.

— **Μπλὸχ** (Bloh), *Ἰβὰν Στανισλάβοβιτς*. Ρῶσος οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1836 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1922. Διετέλεσε διευθυντὴς τῶν ἑνωτικῶν σιδηροδρόμων τῆς Μαύρης καὶ τῆς Βαλτικῆς θαλάσσης. Ἐν τῷ ἔργῳ του περὶ τῶν οἰκονομικῶν συνεπειῶν τῶν πολέμων τοῦ μέλλοντος (Der Krieg, 1898, 3 τόμ.) ἔρριψεν ἰδέας περὶ τῆς φιλικῆς λύσεως τῶν διεθνῶν διαφορῶν, αἱ ὁποῖαι ὡδήγησαν εἰς τὴν σύγκλησιν τῶν διασκέψεων τῆς Χάγης. Ἔγραψε: «Les chemins de fers russes au point de vue commercial», ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τοῦ διεθνοῦς γεωγραφικοῦ συνεδρίου τοῦ Βερολίνου (1878). «Dis Finanzen Russlands im 19 Jahrhundert» (1882), «Die industrie im Zartum Polen 1871—1880» (1884), Das Land und die Verschuldung». Α. Α. Τ.

— **Μπλὸχ** (Bloch), *Κάρολος-Ἐρρῖκος*. Δανὸς ζωγράφος (1834—1890). Ἐξετέλεσεν εἰς τὸν πύργον τοῦ Frederiksborg 23 συνθέσεις ἐπὶ θεμάτων εἰλημμένων ἐκ τῆς Καινῆς Διαθήκης καὶ διὰ τὸ πανεπιστήμιον δύο μεγάλους πίνακας ἐπὶ ἱστορικῶν θεμάτων. Τῷ 1865 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν καὶ τῷ 1871 καθηγητὴς ἐν Κοπεγχάγῃ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Τὸ γεῦμα», «Ψαράδικο νοικοκυριό», «Ἡ ἀπελευθέρωσις τοῦ Προμηθέως» (ὁ πίναξ οὗτος ἐξετελέσθη κατὰ παραγγελίαν τοῦ βασιλέως τῆς Ἑλλάδος Γεωργίου τοῦ Α') καὶ «Ὁ βασιλεὺς Χριστιανὸς ὁ Β' δεσμώτης». Ι. Μ. Π.

— **Μπλὸχ** (Bloch), *Μᾶρκος-Ἐλεάζαρ*. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ ἐπιφανὴς ἰχθυολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ansbach (1723—1799). Διεκρίθη ἰδίως εἰς τὸν κλάδον τῆς φυσικῆς ἱστορίας καὶ δὴ τῆς ἰχθυολογίας, συγγράψας ἔργα, ἅτινα ἀνήγαγον αὐτὸν εἰς περιωπὴν μεταξὺ τῶν Γερμανῶν φυσιοδιφῶν. Ἐκ τῶν ἔργων τούτων ἀναφέρομεν: «Oekonomische Naturgeschichte der Fische Deutschlands» (τρίτομον μετὰ 108 χαλκογραφιῶν, Βερολῖνον 1782—1784), «Naturgeschichte ausländischer Fische» (9 τόμ. μετὰ 324 χαλκογραφιῶν, μεταφρασθὲν εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τοῦ Laveaux, Βερολῖνον 1785—1795). Ἐπίσης τὴν ὑπὸ τῆς ἑταιρείας ἐπιστημῶν Κοπεγχάγης βραβευθεῖσαν συγγραφὴν αὐτοῦ περὶ σκωλήκων τῶν σπλάγχνων, ὑπὸ τὸν τίτλον «Abhandlung von der Erzeugung der Eingeweidewürmer und den mitteln wider dieselben» (Βερολῖνον 1782) κ.τ.λ. Ο. Ρ.

**μπλυαρίζω**· ἰδιωματ., φλυαρῶ, μωρολογῶ.

**Μπλύμλισαλπ** (Blümlisalp) *[Γεωγρ.]*. Ὀρεινὸς ὄγκος τῶν Ἄλπεων ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης (Ἑλβετία), κεκαλυμμένος ὑπὸ μεγάλων αἰωνοβίων παγώνων. Ἀνήκει εἰς τὸ συγκρότημα τῶν *Βερναίων Ἄλπεων*, χωρίζεται ὅμως ἀπ' αὐτῶν πρὸς ΝΑ. ὑπὸ δύο ὑψηλῶν μεγάλων κοιλάδων, ὅπου οἱ παγῶνες *Τσίνγκελ* καὶ *Κάντερ*, ἀποτελοῦσα τοιουτοτρόπως χωριστὴν σχεδὸν ὀροσειράν. Ἔχει μῆκος 19 χλμ. καὶ κατεύθυνσιν ἀπὸ ΒΑ. πρὸς ΝΔ. καὶ σχηματίζει τέσσαρας κορυφάς, ὑπερκειμένας τῆς ὡραίας λίμνης *Αἰσινεν*, τῆς ὁποίας ἡ στάθμη τῶν ὑδάτων κεῖται 1.592 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Αἱ τέσσαρες αὗται κορυφαὶ εἶναι: ἡ *Μόργκενχορν* (3.625 μ.), ἡ *Βάϊσσε Φράου* (3.661 μ.), ἡ *Μπλύμλισαλπχορν* (3.670 μ.) καὶ ἡ *Κάντερχορν* ἢ *Αἰσινεν Χὸρν* (3.490 μ.). Χ. Δ.

**Μπλύτγκεν** (Blüthgen), *Βίκτωρ*. Γερμανὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1844—1920). Ἐσπούδασε θεολογίαν, διετέλεσε συντάκτης ἐφημερίδων καὶ περιοδικῶν καὶ ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς: «Ἀπὸ ἐποχὴν ζυμώσεων» (1884, 2 τ., τῷ 1901 ἐπίσης ἐν Reclams Universal-Bibliothek), πλήρη ζωῆς καὶ χάριτος παιδικὰ διηγήματα: «Καθρέπτης κατεργαρήδων» (1876), «Βατραχομυομαχία» (1878), παραμύθια: «Ἑσπερίδες» (3η ἔκδ. 1900). Ἔγραψεν ἐπίσης: «Ποικίλα διηγήματα» (2α ἔκδ. 1887), «Ὁ Πρῶσσος» (1884), «Ἡ ἑτεροθαλὴς ἀδελφὴ» (1887), «Κυρία Κόμισσα» (1892, 2 τ.), «Οἱ πνευματισταὶ» (1902), «Ποιήματα» (1880) κλπ. —Ω.

**Μπλύτνερ** (Blüthner), *Ἰούλιος-Φερδινάνδος*. Γερμανὸς ἐργοστασιάρχης, ἱδρυτὴς τοῦ διεθνοῦς φήμης ὁμωνύμου ἐργοστασίου κλειδοκυμβάλων τῆς Λειψίας (1824—1910). Ὁ Μπλύτνερ ἐξέδωκεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Χ. Γκρέτσελ ἐγχειρίδιον περὶ τῆς κατασκευῆς τῶν κλειδοκυμβάλων. Μετὰ τὸν θάνατόν του ὁ οἶκος περιῆλθεν εἰς τὰς χεῖρας τῶν τριῶν υἱῶν του. Γ. Σ.

**Μπλύχερ** (Blücher), *Γκενμπάρντ*, *πρίγκιψ φὸν Wahlstadt*. Ἀξιωματικὸς τοῦ πρωσσικοῦ στρατοῦ, γεννηθεὶς εἰς τὸ Ροστὸκ τοῦ Μεκλεμβούργου τῷ 1742. Παῖς ἔτι κατετάχθη εἰς τὸν σουηδικὸν στρατόν, τῷ δὲ 1760 συμμετέσχε τοῦ κατὰ τῆς Πρωσσίας πολέμου, ὁπότε συνελήφθη αἰχμάλωτος, καὶ ἔκτοτε κατετάχθη εἰς τὸν πρωσσικὸν στρατὸν τοῦ Μεγάλου Φρειδερίκου ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἱππικοῦ. Τῷ 1771, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἰλάρχου, παρητήθη καὶ ἠσχολήθη εἰς τὴν καλλιέργειαν τῶν ἐν Πομερανίᾳ κτημάτων του. Τῷ 1787 ἐπανῆλθε καὶ πάλιν εἰς τὴν ἐνεργὸν ὑπηρεσίαν, τῷ δὲ 1790 προήχθη εἰς συνταγματάρχην. Κατόπιν διεκρίθη εἰς τοὺς κατὰ τῆς Γαλλίας πολέμους, δι' ὃ τῷ μὲν 1794 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον, τῷ δὲ 1801 εἰς ἀντιστράτηγον. Ἡ εἰς τοὺς ἐπακολουθήσαντας πολέμους συμμετοχή του ὑπῆρξεν ἐξόχως ἐπιτυχὴς (μάχη Ἀουστερντάετ, καθ' ἣν ἡγήθη τῆς μεγάλης ἐπελάσεως τοῦ πρωσσικοῦ ἱππικοῦ, προκαλύψας διὰ τοῦ ἱππικοῦ τῆς ὑποχωρήσεως τῆς στρατιᾶς τοῦ πρίγκιπος Χοχενλόε, κτλ.). Αἰχμαλωτισθεὶς εἰς Lübeck τὸν Νοέμβριον τοῦ 1806 (μετὰ τὴν μάχην τῆς Ἰένας), ἀντηλλάγη μετ' ὀλίγον ἀντὶ τοῦ Γάλλου στρατηγοῦ Βικτώρ. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Σαξωνίας τοῦ 1813, διοικῶν τὴν στρατιὰν τῆς Σιλεσίας, ἀπώθησε τοὺς Γάλλους ἐκ Σιλεσίας καὶ κατενίκησεν αὐτοὺς εἰς τὴν μάχην τῆς Λειψίας, μετὰ τὴν ὁποίαν προήχθη εἰς στρατάρχην καὶ ἀπεκλήθη παρὰ τῶν στρατιωτῶν «στρατάρχης τοῦ ἐμπρός». Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Γαλλίας τοῦ 1814 ἐνίκησε τὸν Ναπολέοντα, καὶ ἤνοιξε τότε τὴν πρὸς Παρισίους ὁδόν, ἀκολουθήσας τὴν διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Μάρνη ὁδευσιν. Μετὰ τὴν λαμπρὰν ταύτην δρᾶσιν ὠνομάσθη πρίγκιψ τοῦ Οὐαχλστάτ, καὶ παρὰ μὲν τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας ἔλαβεν ὡς δῶρον μέγα κτῆμα εἰς Σιλεσίαν, παρὰ δὲ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀξφόρδης τὸ δίπλωμα τοῦ διδάκτορος. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Βελγίου τοῦ 1815, συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὴν ἐν Βατερλὼ ἧτταν τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος, τὴν δ' 7ην Ἰου-

Digitized by Google

λίου 1815 εἰσῆλθε διὰ δευτέραν φορὰν ἐντὸς τῶν Παρισίων. Πρὸς τιμήν του τότε, ἡ μὲν Πρωσσία ἵδρυσε τὸ παράσημον τοῦ σιδηροῦ Σταυροῦ, ἡ δ' ἰδιαιτέρα του πατρὶς τῷ ἀνήγειρεν ἀνδριάντα. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἀπεστρατεύθη καὶ ἔζησεν ἔκτοτε εἰς τὰ ἐν Σιλεσίᾳ κτήματά του μέχρι τοῦ θανάτου του (1819). Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπλὼντ** (Blunt)· βλ. λ. *Μπλέντ.*

**Μποα**— (Boi—). Τὰ ἀπὸ Boi— ἀρχόμενα γαλλικὰ ὀνόματα βλ. ἐν λ. *Μπουα*—.

**μποὰ** (τό), ἡ *μπουά*· δημοτ., γοῦνα ἐπιμήκης, φορουμένη ὑπὸ τῶν κυριῶν περὶ τὸν λαιμὸν (ἐκ τοῦ γαλλ. boa=βόας).

**Μποαβίστα,** ἡ *Μπουεναβίστα* (πορτογ. Boavista, ἱσπαν. Buenavista) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Δ. Ἀφρικῆς, ἡ ἀνατολικωτάτη τοῦ ἀθροίσματος τῶν νήσων τοῦ Πρασίνου Ἀκρωτηρίου καὶ ἡ δευτέρα αὐτῶν κατὰ τὸ μέγεθος, ἐρχομένη μετὰ τὴν Σὰν-Γυάγκο. Κάτ. 5.000. Ἀνεκαλύφθη πρώτη ἐξ ὅλου τοῦ συμπλέγματος ὑπὸ τῶν Πορτογάλλων τῷ 1450. Χ. Δ.

**Μποαὶν** (Bohain) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Αἰν, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 22 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σαὶν-Κεντέν. Ἔχει ὡρολογοποιίαν καὶ ἐργοστάσια σαλίων. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον τὰ ἀγγλοαμερικανικὰ στρατεύματα ἐνίκησαν παρ' αὐτὴν τοὺς Γερμανοὺς τὴν 17ην Ὀκτωβρίου 1918. Κάτ. 6.840. Χ. Δ.

**Μποαμπτίλ.** Ὁ τελευταῖος Ἄραψ βασιλεὺς τῆς Ἱσπανίας ἐκ τῆς δυναστείας τῶν *Μπενὶ-Ἀχμαρ.* Τὸ πραγματικὸν ὄνομά του εἶναι Ἀμπου-*Ἀμπταλλὰχ-Ἀλ-Σαγίρ.* Οἱ Ἱσπανοὶ ἐπωνόμασαν αὐτὸν El-Rey-Chico=ὁ Μικρὸς βασιλεύς. Ν. Μ.

**Μποαντὸς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὕφορμος τῆς ἐν τῇ Προποντίδι Ἀνατ. Θράκης (πλάτ. 41° 03' 10" Β., μηκ. 28° 22' 30" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2604: San Stephano to Brekli), 5 $^{1}/_{2}$ μιλλ. Ἀν. τῆς Συληβρίας, ἔχων λιμενίσκον σχηματιζόμενον ὑπὸ μικροῦ ρωμαϊκοῦ μώλου. Ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ὠνομάζετο *Ἐπιβάται* (βλ. λ.) πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν. Πρὸ αὐτοῦ ὕφαλος *Τρίκλινος.* Σ. Ε. Λ.

**Μποάριουμ** ***φόρουμ*** (Boarium forum) *[Ἀρχ.]*. Ἀγορὰ εἰς τὴν ἀρχαίαν Ῥώμην, ἔνθα ὑπάρχει ὡραῖον ἄγαλμα βοὸς ἐξ ὀρειχάλκου, ἁρπαγὲν ἀπὸ τὴν νῆσον Αἴγιναν. Θ. Β.

**Μπόας** (Boas), ***Ἴσμαρ.*** Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1858. Τῷ 1886 ἵδρυσεν ἐν Γερμανίᾳ πολυκλινικὴν τῶν νόσων στομάχου καὶ ἐντέρων, εἰδικῶς ἔκτοτε μὲ ταύτας ἀσχολούμενος καὶ διαμορφώσας ἐν αὐτῇ πλείστους μαθητὰς ἐκ πασῶν τῶν χωρῶν. Συνέγραψε: «Διαγνωστικὴν καὶ θεραπευτικὴν τῶν νόσων τοῦ στομάχου» (Λειψία 1890, 1893) καὶ ἑτέραν τοιαύτην «τῶν νόσων τῶν ἐντέρων» (Λειψία 1899). Ἀπὸ τοῦ 1895 ἐξέδιδεν ἐν Βερολίνῳ τὰ «Ἀρχεῖα τῶν νόσων τοῦ πεπτικοῦ συστήματος» καὶ ἐδημοσίευσε πλείστας μικρὰς καὶ μεγάλας πραγματείας εἰς διάφορα ἄλλα περιοδικά. Οὗτος εἰσήγαγε πλείστας νέας διαγνωστικὰς μεθόδους δοκιμῶν, μόνος ὡς καὶ μετὰ τοῦ Ewald, διὰ τὴν διάγνωσιν τῶν νόσων στομάχου καὶ ἐντέρων, ὡς καὶ τοῦ καρκίνου τοῦ στομάχου. Ὡς «σημεῖον τοῦ Μπόας» θεωρεῖται ἡ ἀνεύρεσις ἐν τῷ γαστρικῷ ὑγρῷ εἰδικοῦ βακίλλου παραγωγοῦ τοῦ γαλακτικοῦ ὀξέος. Ὁ Μπόας, ὡς καὶ οἱ Opplar, Kaufmann καὶ Schlessinger, Godard, Dantrieux, θεωροῦσι τὴν ὕπαρξιν τοῦ βακίλλου τούτου ὡς παθογνωμικὸν σημεῖον τοῦ καρκίνου τοῦ στομάχου. Ο. Ρ.

*Ἴσμαρ Μπόας.*

**Μπόβα** (Bova) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Ρηγίου (Ρέτζιο) τῆς Καλαυρίας. Κεῖται πρὸς τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς ἰταλικῆς χερσονήσου, νοτίως τοῦ ὄρους Ἀσπρομόντε, εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ἰονίου πελάγους, παρὰ τὸ ἀκρωτήριον Σπαρτιβέντο. Εὑρίσκεται εἰς τὸ κέντρον μιᾶς περιοχῆς, ὅπου τῷ 1477 εἶχον μεταναστεύσει πλεῖστοι Ἕλληνες ἐξ Ἠπείρου καὶ ὅπου ὁμιλεῖται εἰσέτι ἡ ἑλληνικὴ διάλεκτος. Ἡ περιοχὴ αὕτη καλεῖται Pereso Greco (ἑλληνικὴ χώρα) καὶ περιλαμβάνει τὰ χωρία Σὰν Λορέντσο, Κοντοφούρι, Γκαλλιτσιανό, Ροκκαφόρτα ντελ Γκρέκο καὶ Ρογκούντι. Ἡ Μπόβα ἀποτελεῖται ἐκ δύο τμημάτων, ἐκ τῆς Μπόβα Σουπεριόρε (Ἄνω Μπόβας), μὲ 2.476 κατ. καὶ ἐκ τῆς Μπόβα Μαρίνα (Παραθαλασσίας Μπόβα) μὲ 3.258 κατ., ἥτις ἐσχηματίσθη κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐπὶ τῆς παραλίας παρὰ τὸν σιδηροδρομικὸν σταθμὸν τῆς γραμμῆς Τάραντος—Ρέτζιο, ὡς ἐπίνειον τῆς πρώτης καὶ ἡ ὁποία εὑρίσκεται ἐν διαρκεῖ ἀναπτύξει εἰς βάρος τῆς Ἄνω Μπόβας, ἡ ὁποία ὁλονὲν παρακμάζει. Ἡ Ἄνω Μπόβα εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου καὶ ἔχει ἱερατικὴν σχολήν. Εἶναι πόλις παλαιοτάτη μὲ ἐνδιαφέροντα ἀρχαῖα κτήρια, ἅτινα ἀντέστησαν εἰς τοὺς ἐπανειλημμένους σεισμούς, οἵτινες πολλάκις κατέστρεψαν αὐτήν, ἰδίως δὲ τῷ 1783 καὶ τῷ 1908. Αἱ καταστροφαὶ αὗται καὶ ἡ κατασκευὴ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς προὐκάλεσαν τὴν δημιουργίαν τῆς Μπόβα Μαρίνα. Λέγεται ὅτι ἡ Μπόβα ἐκτίσθη ὑπὸ τῶν Ἐπιζεφυρίων Λοκρῶν, οἵτινες κατῴκουν τὸ ὁμώνυμον ἀκρωτήριον, ὅπερ σήμερον καλεῖται Κάπο Μπρουτσάνο, παρὰ τοὺς ἀρχαίους Λοκρούς. Ὁ μητροπολικὸς αὐτῆς ναὸς τῆς Παναγίας Θεοτόκου (S. Maria Theotoca) λέγεται ὅτι ἐκτίσθη κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα, ἡ δὲ ἐπισκοπή, ἥτις παρουσιάζει πράγματι ἀρχαιοτάτην ὄψιν, ἀνάγεται εἰς τὸν Ε' αἰῶνα. Μ. Δ. Β.

**Μπόβε,** ***βὰλ ντὲλ*** — (Val del Bove) *[Γεωγρ.]*. Κοιλὰς τῆς Σικελίας κάτωθεν τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τοῦ κρατῆρος τῆς Αἴτνης (βλ. λ. *Βοὸς κοιλὰς καὶ* λ. *Αἴτνα,* τ. Β' σ. 891 β').

**Μποβὲ** (Bovet), ***Φραγκῖσκος ντὲ***—. Γάλλος κληρικὸς καὶ αἰγυπτιολόγος (1745—1838). Ὑπῆρξεν ἐπίσκοπος τοῦ Σιστερὸν καὶ ἀρχιεπίσκοπος τῆς Τουλούζης. Ἀφιερωθεὶς εἰς τὴν μελέτην τῶν ἀρχαιοτήτων, ἐσυνέχισε τὸ ἔργον τοῦ Σαμπολλιὸν καὶ ἔγραψεν: «Ἱστορίαν τῶν αἰγυπτιακῶν δυναστειῶν», ἐν ᾗ ἐλέγχει τὸν Μανέθωνα ἐπὶ τῇ βάσει τῶν αἰγυπτιακῶν ἐπιγραφῶν, «Ἱστορίαν τῶν τελευταίων φαραὼ καὶ τῶν πρώτων βασιλέων τῆς Περσίας» κλπ. Α. Δ.

**Μποβίνο** (Bovino) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Φότζιας τῆς Ἀπουλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τσερβάρο καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Νεαπόλεως—Φότζιας. Κεῖται εἰς ὕψος 650 μ. καὶ ἔχει 7.500 κατ. Ἔχει μητρόπολιν τοῦ Γ' αἰῶνος καὶ παράγει ὀνομαστοὺς οἴνους, δημητριακὰ καὶ ἔλαιον. Ἐκτίσθη ἐπὶ τῆς ρωμαϊκῆς πόλεως Vibinum, τῆς ὁποίας σῴζονται ἐρείπια. Παρὰ τὴν πόλιν σῴζονται ἐρείπια μεγαλοπρεποῦς ὑδραγωγείου ρωμαϊκῆς ἐποχῆς. Τῷ 1734 παρὰ τὴν πόλιν ταύτην οἱ Γάλλοι ἡττήθησαν ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπόβιο** (Bovio), ***Ἰωάννης.*** Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1848—1903). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἀφιερώθη εἰς τὴν διδασκαλίαν τῆς φιλοσοφίας τοῦ δικαίου, διορισθεὶς τῷ 1892 καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Νεαπόλεως. Ἀπὸ τοῦ 1876 ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγετο βουλευτὴς μέχρι τοῦ θανάτου του, διακριθεὶς ὡς εἷς τῶν εὐγλωττοτέρων ρητόρων καὶ τῶν μᾶλλον φανατικῶν δημοκρατικῶν τῆς Ἰταλίας, καθὼς καὶ διὰ τὴν σφοδροτάτην πολεμικὴν του ἐναντίον τοῦ Βατικανοῦ. Ἔγραψε σειρὰν νομικῶν, πολιτικῶν καὶ λογοτεχνικῶν ἔργων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Κριτικὸν δοκίμιον τοῦ ποινικοῦ δικαίου καὶ τῆς ἠθικῆς αὐτοῦ βάσεως» (1877), «Σύστημα φιλολογίας», «Βολταῖρος» (1878), «Τζιορνάνο Μπροῦνο», «Ἄνθρωποι καὶ ἐποχαί» (1879), «Ἱστορία τοῦ δικαίου ἐν Ἰταλίᾳ» (1884), «Τὰ δόγματα τῶν πολιτικῶν κομμάτων ἐν Εὐρώπῃ» (1886), «Ἀττικαὶ σκηναί» (1902). Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ δραματικὰ ἔργα, τὸ κυριώτερον τῶν ὁποίων εἶναι ἡ τριλογία «Ὁ Χριστὸς ἐν τῇ ἑορτῇ τοῦ Πουρείμ», «Ὁ Παῦλος» καὶ «Ἡ χιλιετηρίς». Μ. Δ. Β.

**μπογαζάρω,** ἡ ***μπουγαζάρω.*** Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸ εἰσπλέειν εἰς δίαυλον (μπογάζι) καὶ δὴ μετὰ πάσης δυνατῆς ταχύτητος. Ἐπίσημος ἀντίστοιχος ὅρος: «ἐπιδίδωμι εἴς τινα διέκπλουν ἢ στενόν», γαλλ. donner (dans le détroit κ. τ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**μπογάζι** (τό), καὶ *μπουγάζι* (ἐκ τοῦ τουρκ. *μπογάζ*=λαιμός)· στενὴ θαλασσία δίοδος, «δίαυλος» ‖ στενὴ διάβασις μεταξὺ ὀρέων ἢ ὑψωμάτων, ἄλλως «δερβένι» ‖ τὸ ρεῦμα τοῦ ἀνέμου τὸ σχηματιζόμενον συνήθως ἐκ τῶν τοιούτων διαμορφώσεων τοῦ ἐδάφους: «κατεβάζει δυνατὸ μπογάζι».

**Μπογάζ(ι)** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἕκαστον τῶν στομίων τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ τοῦ Βοσπόρου (*Μπουγάζια*).

— 2) Τὸ ἔκρηγμα τοῦ στομίου Τσαριγρὰδ τοῦ ποταμοῦ Δνιέστρ (πλάτ. 46° 05' Β., μηκ. 30° 29" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2231: Cape Kaliakra to Odessa).

— 3) Τὸ ἔκρηγμα τῆς λιμνοθαλάσσης Κουμπὰν (πλάτ. 45° 07' Β., μηκ. 37° 03' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2205: Kertch strait) παρὰ τὸν Κιμμέριον Βόσπορον καὶ φερώνυμον ἐκεῖ ἀκρωτήριον. Σ. Ε. Λ.

**Μπογαζιανός, Θωμᾶς.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Δαρδανελλίων (βλ. λ. *Θεοδωρόπουλος Θωμᾶς*).

**Μπογὰζ-Κεσσὲν** *[Γεωγρ.]*. Οὕτως ὠνομάσθη ὑπὸ τῶν Τούρκων τὸ ἱστορικὸν φρούριον, τὸ ὁποῖον ἔκτισεν ὁ Μωάμεθ κατὰ τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1452 ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς πλευρᾶς τοῦ Βοσπόρου καὶ βορείως τῆς Κωνσταντινουπόλεως, εἰς ἣν ἀκριβῶς θέσιν εὑρίσκεται σήμερον τὸ *Ρούμελι-Χισάρ.* Αἱ παρασκευαὶ τοῦ Μωάμεθ διὰ τὴν ἀνέγερσιν τοῦ φρουρίου τούτου, ἀρχίσασαι ἀπὸ τοῦ 1451, ἐφανέρωναν εἰς τοὺς ἐν Κωνσταντινουπόλει τὰς προθέσεις αὐτοῦ διὰ τὰς ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος μελετωμένας ἐπιθέσεις του κατὰ τῆς πρωτευούσης· δι' ὃ καὶ εὐλόγως ἐνέβαλον αἱ προσπάθειαί του αὗται εἰς ταραχὴν καὶ ἀδημονίαν τοὺς ἐν Κωνσταντινουπόλει. Διὰ τὴν ἀνέγερσιν τοῦ φρουρίου εἰργάζοντο πέντε περίπου χιλιάδες ἐργατῶν, μετακληθέντες ἐκ πάσης χώρας ὑποκειμένης εἰς τὸν σουλτᾶνον, πλεῖστοι δὲ λίθοι ἀπὸ χριστιανικὰς ἐκκλησίας καὶ ἄλλα ἱστορικὰ μνημεῖα τῆς περιχώρου ἐχησιμοποιήθησαν διὰ τὴν ἀνέγερσίν του. Ἡ κτίσις του, γενομένη ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν τοῦ ἰδίου Μωάμεθ, τοῦ Χαλὶλ πασᾶ καὶ ἄλλων στρατηγῶν, ἐπερατώθη ἐντὸς τεσσάρων μηνῶν. Οἱ τοῖχοί του εἶχον πάχος εἰκοσιπέντε ποδῶν, τὸ σχῆμά του ἦτο τριγωνικὸν καὶ ἔφερεν ἐπὶ ἑκάστης γωνίας ὑψηλὸν πύργον, ὡπλισμένον διὰ χαλκοῦ τηλεβόλου ἐκτοξεύοντος λιθίνας σφαίρας· ἄλλοι δὲ πύργοι μικρότεροι ὑψοῦντο μεταξὺ τῶν τριῶν μεγάλων. Οἱ Βυζαντινοὶ μετέφραζον τὴν ὀνομασίαν *Μπογὰζ-Κεσσὲν* εἰς *Λαιμοκόπον* ἢ *Κεφαλοκόπτην* (ἐκ τῆς σημασίας τῶν συνθετικῶν αὐτῆς τουρκικῶν λέξεων). Μετὰ τὴν ἀνέγερσίν του ὁ Μωάμεθ, ἐγκαταστήσας ἐν αὐτῷ φρουρὰν ἐκ τετρακοσίων ἀνδρῶν ὑπὸ τὸν Φεροὺζ ἀγᾶν, ἤρχισε τὰς κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐχθροπραξίας του κατὰ Ἰούνιον τοῦ 1452. Κ. Μ. Κ.

**Μπογάζκιοϊ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Μυσίας ἐν Μ. Ἀσίᾳ ἐπὶ τοῦ Γάλλου ποταμοῦ, βορείως τοῦ Ἴνεγκιολ. Παρὰ τὸ χωρίον τοῦτο καὶ παρὰ τὸ Χεμζὲ-Μπεΰκιοϊ, τῇ 22 Μαρτίου 1921, κατὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ ἀπὸ τῆς Κοβαλίτσης-Τσεπνὶ-Ἀβγκὶν πρὸς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτοῦ Α. τῆς Προύσης, τουρκικὸν ἱππικὸν μετὰ πυροβολικοῦ, παρακολουθοῦν τὸ ἀποσυρόμενον ἑλληνικὸν σῶμα, προσέβαλεν αἰφνιδίως μικτὸν ἀπόσπασμα ἐκ τάγματος εὐζώνων, ὀρειβατικῆς πυροβολαρχίας, τάγματος τοῦ 5ου συντάγματος πεζικοῦ καὶ ἴλης ἱππικοῦ καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν ἀταξίᾳ, ἀποχωρῆσαν εἰς Τίμπος, ὑπὸ τὴν προστασίαν τοῦ ἀντιταχθέντος τάγματος τοῦ 5ου συντάγματος πεζικοῦ. Τῇ 23 Μαρτίου 1921, βορείως τοῦ Μπογάζκιοϊ, τὸ αὐτὸ τουρκικὸν ἱππικὸν ὁμοίως παρηνώχλησε ζωηρῶς τὴν ὑποχωροῦσαν πρὸς Τίμπος Χ μεραρχίαν, ἀντιταχθεῖσαν διὰ τοῦ 30οῦ συντάγματος πεζικοῦ αὐτῆς καὶ διὰ πυροβολικοῦ. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπογαζλαγιάν,** ἡ ***Μπογαζλιὰν*** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Γιοζγὰτ (Ὑοσκάτης), εἰς ἀπόστασιν 80 χλμ. ΝΑ. τῆς πόλεως Γιοζγάτ. Κάτ. 3.042 (1927). Ἡ ὑποδιοίκησις ἔχει ἐπιφάνειαν 1.450 τετρ. χλμ. καὶ 43.369 κατ. (1927). Τὸ ὄνομα, σημαῖνον περίπου «λαιμοκοπία», ἀφῆκεν ἀπαισίαν φήμην διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἐκεῖ ἀρμενικῶν σφαγῶν τοῦ 1915. Ν. Μ.

**Μπογαζλιὰν** *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μπογαζλαγιάν.*

**μπογαρίνι** (τό), ἡ ***μπουγαρίνι*** *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἴασμος ὁ ἀραβικός.*

**μπογασὶ** (τό)· δημοτ., ἀγανὸν ὕφασμα (τουρκ. *μπογκασί*), χρησιμεῦον ὡς ἐπίρραμμα (φόδρα). Τὴν αὐτὴν σημασίαν ἐτήρησεν ἡ λέξις καὶ εἰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας (γαλλ. bocassin).

— *[Λαογρ.]* Τὸ *μπογασὶ* ἐν Μάνῃ εἶναι τὸ διακριτικὸν σημεῖον, ὅπερ ἔχουσιν αἱ ὕπανδροι γυναῖκες καὶ αἱ παρθένοι (οἱ καλομοῖρες) εἰς τὴν ἐσθῆτά των (φουστάνι). Τὸ μπογασὶ δὲ τοῦτο εἶναι ταινία ἐρυθρὰ (πρὸς ἔνδειξιν χαρᾶς), πλάτους ἓξ περίπου ἑκατοστομέτρων. Περιρράπτεται περὶ τὴν ἐσθῆτα κατὰ τὸ μέσον ἀκριβῶς, κατὰ τὰ πλάγια δὲ εἰς τὸ ἄκρον περιρράπτονται κλωσταὶ λευκαὶ καὶ μέλαιναι συνεστραμμέναι (στριμμένες, εἶδος μάρτη). Αἱ κλωσταὶ αὗται λέγονται γάρτζιο (ἰταλ. gazzo). Τὸ γάρτζιο τοῦτο μετὰ τοῦ μπογασιοῦ ἀφαιρεῖται κατ' ἔθιμον ἀπὸ τῆς ἐσθῆτος τῶν χηρευουσῶν γυναικῶν. Ἡ συνήθεια αὕτη τοῦ ἐπιρράμματος παρατηρεῖται μόνον ἐν τῇ νοτίᾳ Μάνῃ. Γ. Δ. Μ.

**μπογάτσα** (ἡ)· βλ. *μπουγάτσα.*

**Μπογάτσκο(ν)** *[Γεωγρ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τῆς κωμοπόλεως *Βογατσικὸν* (βλ. λ.).

**Μπόγγοριτς, *Ἀδάμ.*** Σλοβένος διανοούμενος, συγγραφεὺς τῆς πρώτης γραμματικῆς τῆς σλοβενικῆς γλώσσης.

**Μπογγορώφ, *Ἰβάν.*** Βούλγαρος συγγραφεύς, δημοσιογράφος (1818—1892). Ἐφοίτησεν εἰς ἑλληνικὴν σχολὴν τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ κατόπιν ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν

Digitized by Google

Παρισίων. Εἰργάσθη κυρίως διὰ τὴν ἐκπαίδευσιν καὶ τὴν πολιτικὴν ἀνεξαρτησίαν τῆς χώρας του. Τῷ 1844 ἐξέδωκε τὴν «Μοναδικὴν βουλγαρικὴν γραμματικὴν» ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ τῷ 1846 τὴν «Βουλγαρικὴν ἐθνικὴν ἐφημερίδα». Ἵδρυσεν ἐν Κωνσταντινουπόλει βουλγαρικὸν τυπογραφεῖον καὶ ἐξέδιδε τὴν ἐφημερίδα «Τσαριγγράδσκι βέσνικ» (1847). Ἐν Βιέννῃ ἐξέδωκε γαλλοβουλγαρικὸν καὶ βουλγαρογαλλικὸν λεξικὸν (1869—1871). Τῷ 1879 διηύθυνε τὸ περιοδικὸν «Νακοβάλνια», μέχρι δὲ τοῦ θανάτου του ἠσχολεῖτο εἰς διαφόρους συγγραφικὰς ἐργασίας. Τ. Β.

**Μπογγουσλάφ, *Λιούπκοβιτς*.** Τσέχος συγγραφεὺς (1462—1510), σημαντικὸς ἀντιπρόσωπος τοῦ κλασσικισμοῦ καὶ περιηγητής.

**Μπογδάν.** Ὄνομα τεσσάρων ἡγεμόνων τῆς Μολδαυΐας, ἐξ οὗ οἱ Τοῦρκοι ὠνόμασαν καὶ τὴν χώραν ταύτην *Μπογδάν*.

*Μπογδὰν Α'* (1349—1359), ἱδρυτὴς τοῦ ἀνεξαρτήτου κατ' ἀρχὰς κράτους τῆς Μολδαυΐας. Διαδεχθεὶς τὸν ἡγεμόνα Δράγος, συνήνωσεν ὅλους τοὺς Μολδαυοὺς ὑπὸ τὸ σκῆπτρόν του, ἀποσείσας τὸν οὑγγρικὸν ζυγόν.

*Μπογδὰν Β'* (1449—1451), υἱὸς Ἀλεξάνδρου τοῦ Καλοῦ καὶ ἀδελφὸς Στεφάνου τοῦ Μεγάλου. Ἐφονεύθη μετὰ τριετῆ βασιλείαν ὑπὸ τοῦ Πέτρου Ἀρών, νόθου υἱοῦ Ἀλεξάνδρου τοῦ Καλοῦ.

*Μπογδὰν Γ', ὁ καὶ Μονόφθαλμος* (1504—1517), υἱὸς Στεφάνου τοῦ Μεγάλου. Ἀφοῦ ἠγωνίσθη κατὰ τῶν Πολωνῶν, ὑπετάγη οἰκειοθελῶς εἰς τοὺς Τούρκους.

*Μπογδὰν Δ'* (1568—1572), υἱὸς τοῦ Ἀλεξάνδρου Λαπουσεάνου. Ἀνετράπη ὑπὸ Ἰωάννου τοῦ Τρομεροῦ.

— **Μπογδάν, *Στέφανος*** (1591—1592). Ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας, διορισθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων εἰς τὴν θέσιν τοῦ Μίχνεα. Ἀντικατεστάθη μετὰ ἓν ἔτος ὑπὸ τοῦ *Μπογδὰν Ἀλεξάνδρου*, ὃν ὑπεστήριξεν ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Ἑρρῖκος ὁ Γ'. Ν. Μ.

— **Μπογδάν.** Καθολικὸς ἐπίσκοπος Ἀλβανίας κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα. Μετέφρασεν εἰς τὴν ἀλβανικὴν ἱερά τινα βιβλία, ἅτινα θεωροῦνται ὡς τὰ πρῶτα μνημεῖα τῆς ἀλβανικῆς γλώσσης. Ν. Μ.

— **Μπογδάν.** Βούλγαρος ἄρχων ἐπὶ Βασιλείου Β' τοῦ Βουλγαροκτόνου (βλ. λ. *Βόγδανος*).

**Μπογδανάτικα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Γαΐου τῆς ἐπαρχίας Παξῶν τοῦ νομοῦ Κερκύρας. Κάτ. (1928) 274. Χ. Δ.

**Μπογδανία** *[Γεωγρ.]*. Μεσαιωνικὴ ὀνομασία τῆς *Μολδαβίας*.

**Μπόγδανος, *Δανιήλ*.** Ἐπίσημος ἰατρὸς πολλῶν μεγιστάνων, ἐκ Μολδαβίας καταγόμενος. Ἐγκαταλείψας τὸν κοσμικὸν βίον, ἐγένετο μοναχὸς ἐν Ἁγίῳ Ὄρει. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἵδρυσις τῆς ὑπὸ τὴν μονὴν τοῦ Ἁγίου Παύλου Νέας Σκήτης, τῷ 1760. Ἐν αὐτῇ ἐμόνασεν ὁ Μπόγδανος πεντήκοντα σχεδὸν ἔτη. Μ. Ι. Γ.

— **Μπόγδανος, *Εὐστάθιος*.** Πρόκριτος ἐκ Ρούμελης, κατελθὼν μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Σπυρίδωνος* εἰς Πελοπόννησον περὶ τὸ ἔτος 1810. Ἐβοήθησε διὰ χρημάτων τὴν Ἐπανάστασιν, ἐν Αἰγίῳ δὲ ἀνήγειρε τῷ 1829 εἰς τὸ κέντρον τῆς πόλεως τὸν σῳζόμενον οἰκογενειακὸν ναὸν Ἁγία Τριάς.

— **Μπόγδανος, *Ἰωάννης*.** Υἱὸς τοῦ ἀνωτέρω, σημαίνων πολιτευτὴς καὶ πολιτικὸς φίλος τοῦ Δημητρίου Βούλγαρη. Εὐπορώτατος, ἀνήγειρεν ἐν Πάτραις καὶ παρὰ τὴ πλατεία βασιλίσσης Ὄλγας ὡραῖον μέγαρον, ἐν ᾧ ἐφιλοξένησε κατ' ἐπανάληψιν τὸν βασιλέα Γεώργιον Α', μεθ' οὗ συνεδέετο διὰ προσωπικῆς φιλίας. Ἀπεβίωσεν ἐν Πάτραις τῷ 1895 εἰς ἡλικίαν ὀγδοήκοντα περίπου ἐτῶν.

**Μπόγερ** (Bojer), ***Ἰωάννης*.** Νορβηγὸς μυθιστοριογράφος καὶ δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1872. Ἐκ πτωχῆς οἰκογενείας καταγόμενος, ἔτυχε μετρίας μορφώσεως καὶ κατόπιν ἐγένετο ἐμποροϋπάλληλος. Τῷ 1894 παρεστάθη τὸ πρῶτον μονόπρακτον δρᾶμά του «Μία μητέρα», ὅπερ ἐνεποίησε καλὴν ἐντύπωσιν. Τῷ 1896 ἐξέδωκε τὸ μυθιστόρημα «Ἡ παράταξις», διὰ τοῦ ὁποίου ἤθελησε ν' ἀποδείξῃ τὴν διαλυτικὴν ἐπίδρασιν τῆς πολιτικῆς ἐπὶ τῆς ἐθνικῆς ζωῆς. Ἡ αὐτὴ κεντρικὴ ἰδέα καθοδηγεῖ τὸ κατόπιν ἔργον του «Ὁ αἰώνιος πόλεμος», δημοσιευθὲν τῷ 1899 καὶ προκαλέσαν τὴν ἐπίθεσιν τοῦ τύπου ἐναντίον τοῦ συγγραφέως του. Βραδύτερον ἀνεβίβασεν ἐπὶ τῆς σκηνῆς γερμανικοῦ θεάτρου τὴν «Θεοδώραν», ἔργον φεμινιστικόν. Εἰς τὰ μετέπειτα ἔργα του ὁ Μπόγερ περιγράφει τὴν ζωήν. Τὰ καλύτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Ζωὴ παραστρατημένη» καὶ «Ἡ δύναμις τῆς πίστεως», τὸ ἀριστούργημά του, ὅπερ μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «La puissance du mensonge» (1907). Α. Δ.

— **Μπόγερ** (Boyer), ***Ἰωάννης-Πέτρος*.** Πρόεδρος τῆς δημοκρατίας τῆς Αϊτής (βλ. λ. *Βόγερ Ἰωάννης-Πέτρος*).

**μπογιὰ** (ἡ)· δημοτ., χρῶμα ἢ ὕλη διὰ τῆς ὁποίας χρωματίζομέν τι: «μπογιὰ κόκκινη, — πράσινη, — μαύρη κτλ.» || φρ. «δὲν περνᾷ ἡ μπογιά του» δὲν ὑπολογίζεται, δὲν τὸν λογαριάζει κανείς, ἐπὶ ἐκπεπτωκότος ἢ ἀποκαλυφθέντος ὡς πονηροῦ (τουρκ. boya).

**μπογιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ροῦς ὁ κότινος*.

**Μπογιακά** (Boyacà) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Κολομβίας, κείμενος εἰς τὰ πρὸς τὴν Βενεζουέλαν ἀνατολικὰ σύνορα τῆς χώρας. Χωρίζεται ἀπὸ τῆς Βενεζουέλας ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Μέτα καὶ τῶν παραποτάμων αὐτοῦ, εἶναι δὲ ὀρεινὴ κατὰ τὸ Δ. αὐτῆς τμῆμα καὶ πεδινὴ κατὰ τὸ ἀνατολικόν, καλυπτομένη ὑπὸ ἐκτεταμένων λειμώνων. Ἔχει ἔκτασιν 70.000 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1928), 950.264 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν Τούνχα (κάτ. (10.680). Ἔχει καλὴν κτηνοτροφικὴν κίνησιν, καλλιεργείας σιτηρῶν καὶ βάμβακος καὶ ὀρυχεῖα γαιανθράκων, σιδήρου, χαλκοῦ, μολύβδου καὶ ἅλατος. Ἐπίσης ἐξάγονται ἐκλεκτῆς ποιότητος σμάραγδοι παρὰ τὸ Μοῦζο. Εἰς ἀπόστασιν 45 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πρωτευούσης Τούνχα κεῖται ἡ πόλις Μπογιακά, ἐξ ἧς ὠνομάσθη καὶ ὁλόκληρος ὁ νομός, παρὰ τὴν ὁποίαν ὁ Μπολίβαρ ἐνίκησε τὴν 7 Αὐγούστου 1819 τοὺς Ἱσπανούς. Ἡ νίκη αὐτὴ ἐσήμανε τὸ τέλος τῆς ἱσπανικῆς ἐν Κολομβίᾳ κυριαρχίας. Χ. Δ.

**Μπογιαλὶκ** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς ὑποδιοικήσεως Μετζητιὲ τῆς διοικήσεως Κὴρ σεχὴρ (Μωκισσοῦ) τοῦ νομοῦ Ἀγκύρας. Κατοικεῖται ὑπὸ Κούρδων ἀσχολουμένων εἰς τὴν ταπητουργίαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. ἀπὸ τοῦ χωρίου εὑρίσκεται λίθος εὐλάξευτος, ἐξ οὗ κατασκευάζονται διάφορα καλλιτεχνικὰ ἀντικείμενα, ὡς πῖπαι, φιαλίδια, δοχεῖα κλπ. μεγάλης ἀξίας.

**Μπογιάνα** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἀλβανίας (βλ. λ. *Βογιάνα*).

**μπογιαντίζω**· δημοτ., χρωματίζω, ἐπαλείφω διὰ χρώματος, ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὸ βάφω: «μπογιαντίζω τὰ παράθυρα,—τὶς πόρτες,—τὴ σκάλα κττ.» || ἐπὶ τῶν ὑποδημάτων, ἐπαλείφω διὰ χρώματος, στιλβώνω.

**μπογιάντισμα** (τό)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπογιαντίζω, ἡ διὰ χρώματος ἐπάλειψις, χρωμάτισμα: «τὰ πορτοπαράθυρα θέλουν μπογιάντισμα» || ἡ στίλβωσις τῶν ὑποδημάτων.

**Μπογιαντὸρ** (Bojador) *[Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Δ. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μποχαντόρ*).

**Μπογιάρντο** (Bojardo ἢ Boyardo), ***Ματθαῖος Μαρίας, κόμης Σκαντιάνο*.** Ἰταλὸς ποιητὴς (1434 —1494). Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν σοφωτέρων ἀνδρῶν τῆς ἐποχῆς του καὶ συνδεθεὶς μετὰ τῆς οἰκογενείας τῶν δουκῶν τῆς Ἔστης ἐγένετο διοικητὴς τῆς Μοδένης καὶ τοῦ Ρηγίου τῆς Αἰμιλίας. Ἔγραψε πλεῖστα ποιήματα, σονέτα, ᾠδὰς κτλ., ἀλλὰ τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι τὸ ἔπος «Ὁ ἐρωτόληπτος Ὀρλάνδος» (Orlando innamorato), μὲ θέμα τοὺς περὶ τὸν Κάρολον τὸν Μέγαν θρύλους. Τὸ ἔργον τοῦτο ἔμεινεν ἡμιτελές, συμπληρωθὲν κατόπιν ὑπὸ πολλῶν ἄλλων ποιητῶν, οἵτινες προσεπάθησαν νὰ τὸν μιμηθοῦν, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ Ἀριόστος, γράψας τὸν «Μαινόμενον Ὀρλάνδον» (Orlando furioso).

Τὸ ἔπος τοῦ Μπογιάρντο ἀποτελεῖται ἀπὸ τρία βιβλία περιλαμβάνοντα 69 ῥαψῳδίας, πλήρεις χάριτος καὶ ζωῆς, μαρτυρούσας ἐξόχως γόνιμον ποιητικὴν φαντασίαν. Τὸ ἔπος τοῦτο ἐδημοσιεύθη ἐν ἔτει μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ποιητοῦ, τῷ 1495, καὶ μετεφράσθη κατόπιν εἰς τὰς περισσοτέρας εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Μεταξὺ τῶν ἄλλων ποιημάτων του εἶναι: «Ἐρώτων βιβλία τρία» (1499), «Σονέττα καὶ τραγούδια» (1499), «Ὁ Τίμων» κωμῳδία εἰς πέντε πράξεις, κατὰ μίμησιν τοῦ Λουκιανοῦ, «Βουκολικὸν ᾆσμα» (1500), «Χρονικὸν Ρωμαίων αὐτοκρατόρων». Τὰ ποιήματα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν ἐπανειλημμένως. Τῷ 1890 ὁ Βεντούρι ἐξέδωσεν ἐκλογὴν τῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ποιήματα». Μ.Δ.Β.

**μπόγιας** (ὁ)· δημοτ., δήμιος || συνήθ., ὁ περισυλλέγων ἀπὸ τὰς ὁδοὺς τοὺς ἀδεσπότους κύνας (ἰταλ. boja).

**Μπογιατζάκης**, ἢ ***Ζερβός, Παναγιώτης*.** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ τοῦ χωρίου Σφακοῦ τῆς Κρήτης. Λαβὼν ἐκ τῶν πρώτων τὰ ὅπλα κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1821 καὶ διακριθεὶς διὰ τὴν ἀνδρείαν, ἐξελέγη ὁπλαρχηγὸς τῶν ὁμοχωρίων του καὶ ὡς τοιοῦτος διεκρίθη εἰς πλείστας ἐν Κρήτῃ καὶ Πελοποννήσῳ μάχας μέχρι τέλους τοῦ Ἀγῶνος (1830), ὅτε κατέφυγεν εἰς Ἑλλάδα καὶ ἐκεῖ κατετάχθη ὡς λοχαγὸς εἰς τὴν βασιλικὴν φάλαγγα. Ἀπέθανεν ἐν Ναυπλίῳ περὶ τὸ 1840. Ν. ΚΛΣ

**Μπογιατζῆεφ, *Δημήτριος*.** Βούλγαρος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Παζαρτζὶκ τῷ 1880. Διετέλεσεν ἐπὶ ἔτη δημόσιος ὑπάλληλος καὶ τῷ 1911 ηὐτοκτόνησεν. Ἡ ποίησίς του εἶναι ἐσωτερικὴ καὶ βαθύτατα μελαγχολική. Τ. Β.

— **Μπογιατζῆεφ, *Κλήμης*.** Βούλγαρος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Ἀχρίδι τῷ 1865. Κατὰ τὸν πρῶτον Βαλκανικὸν πόλεμον διετέλεσε διοικητὴς τῆς 4ης βουλγαρικῆς μεραρχίας (τῆς Σούμλας) καὶ ἔδρασε κατὰ τὴν μάχην τῆς Τσατάλτζας. Τῷ 1913 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, τῷ 1914 ἐπιθεωρητὴς τοῦ στρατοῦ μὲ ἕδραν τὸ Ρουχτσούκιον καὶ βραδύτερον ἀρχηγὸς τοῦ Ἐπιτελείου. Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον καὶ κατὰ τὸ φθινόπωρον τοῦ 1915 ἦτο διοικητὴς τῆς πρώτης βουλγαρικῆς στρατιᾶς, ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁποίας προήλασε πρὸς τὴν κοιλάδα Τιμὸκ καὶ τοῦ Μοράβα καὶ ἐβοήθησε τὰ αὐστριακὰ στρατεύματα εἰς τὴν ἐκδίωξιν τῶν Σέρβων πρὸς τὴν Ἀλβανίαν. Τῷ 1916 ἐστράφη καὶ ἐναντίον τῶν Συμμάχων, φθάσας μέχρι τοῦ Ὀστρόβου. Ἐπειδὴ ὅμως κατὰ τὴν συμμαχικὴν ἀντεπίθεσιν τοῦ Σεπτεμβρίου—Νοεμβρίου 1916 ἀπωθήθη πρὸς βορρᾶν καὶ ἀπώλεσε τὸ Μοναστήριον, τῷ ἀφῃρέθη ἡ διοίκησις. Ν. Θ. Κ.

**Μπογιατζηλὰρ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Βαφέϊκα* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ροδόπης.

**μπογιατζῆς** (ὁ)· δημοτ., βαφεὺς ὑφασμάτων, νημάτων κττ. || χρωματιστής, ἐλαιοχρωματιστής.

**Μπογιατζῆς, *Γεώργιος*.** Κρήτης ναυτικὸς καὶ ἱερεύς. Υἱὸς τοῦ *Μιχαὴλ Μπογιατζῆ*, συμμετέσχεν εἰς τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις ἐκείνου καθ' ὅλον τὸν Ἀγῶνα τοῦ 1821—1830. Μετὰ τὸ πέρας τῆς ἐπαναστάσεως ἐκάρη ἱερεύς, ἀλλὰ συγχρόνως ἐξηκολούθησε τὸ ναυτικὸν αὐτοῦ στάδιον ὡς κυβερνήτης τοῦ ἰδιοκτήτου πλοίου του. Τῷ 1840 καταπλεύσας εἰς τὴν Σπιναλόγκαν μετὰ τοῦ πλοίου του ἐδολοφονήθη ὑπὸ τῶν Τούρκων. Ν. ΚΛΣ

— **Μπογιατζῆς *Μιχαήλ*.** Κρὴς ναυμάχος ἐκ Τουρλωτῆς. Ἐπιβαίνων τοῦ ἰδιοκτήτου αὐτοῦ πλοίου μετὰ τῶν πέντε υἱῶν του, πρὸ τοῦ 1821, ἐξετέλει συνεχεῖς ἐπιδρομὰς ἀνὰ τὸ Αἰγαῖον, καὶ ἰδίᾳ ἀνὰ τὰς κρητικὰς θαλάσσας, συλλαμβάνων καὶ βυθίζων πᾶν τουρκικὸν πλοῖον. Καθ' ἅπαντα τὸν Ἀγῶνα 1821—1830 συμμετέσχεν, εἴτε μετὰ μόνου τοῦ πλοίου του εἴτε μετὰ τοῦ στόλου τῶν Κασίων, εἰς τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν φρουρίων τῆς Κρήτης καὶ συγχρόνως ἐνήργει τὸν ἀποκλεισμὸν τῶν κρητικῶν παραλίων, διακόπτων τὰς τουρκικὰς κατὰ θάλασσαν συγκοινωνίας. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ Ἀγῶνος (1830), ἀφοπλίσας τὴν γολέταν του, ἐξετέλει ἐπὶ μακρὸν τὴν ταχυδρομικὴν συγκοινωνίαν μεταξὺ Ἡρακλείου καὶ Σύρου. Ἀπέθανεν ἐν βαθεῖ γήρατι. Ν. ΚΛΣ

**Μπογιατζόγλου, *Ἀριστοτέλης*.** Υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου Μπογιατζόγλου*, γεννηθεὶς ἐν Χανίοις τῷ 1842. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς, κατετάχθη τῷ 1864 εἰς τὸν στρατὸν ἵνα ἀκολουθήσῃ τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, ἅμα δὲ τῇ ἐκρήξει τῆς κρητικῆς ἐπαναστάσεως 1866—1869, λοχίας τοῦ πεζικοῦ ὤν, κατῆλθεν ἐκ τῶν πρώτων εἰς τὸν ἀγῶνα κατὰ τὰς ἀρχὰς Αὐγούστου 1866 καὶ συμμετέσχεν ὡς ἀρχηγὸς ἐθελοντικοῦ σώματος εἰς πλείστας μάχας ἀνὰ τὰς ἐπαρχίας Σελίνου, Κισάμου, Κυδωνίας, Σφακίων καὶ Ἁγ. Βασιλείου, καθ' ἃς διεκρίθη διὰ τὸν ὑπέροχον αὐτοῦ ἡρωϊσμόν, τραυματισθεὶς δίς, εἰς τὴν μάχην Βαφὲ (12 Ὀκτωβρίου 1866) καὶ εἰς τὴν ἐν Περιβολίοις Κυδωνίας (21 Μαρτίου 1867). Ὁ γενικὸς ἀρχηγὸς τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν Ἰωάν. Ζυμπρακάκης τὸν Μπογιατζόγλου ὥρισεν ἀναπληρωτήν του ὅταν, κατὰ Ἰούνιον 1868, ἀπῆλθεν εἰς Ἀθήνας. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ ἀγῶνος (Ἰανουάριος 1869), παραιτηθεὶς τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ, ἐγκατεστάθη ἐν Σύρῳ ὡς δικηγόρος. Ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1892. Ν. ΚΛΣ

— **Μπογιατζόγλου, *Δημήτριος*.** Κρὴς ναυτικὸς κατὰ τὸν ἀγῶνα 1821—1830 (βλ.λ. *Βογιατζόγλου Δημ.*).

— **Μπογιατζόγλου, *Ἰωάννης*.** Ἀγωνιστής, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1795 ἐν Ἡρακλείῳ Κρήτης, ἔνθα καὶ παρέμεινεν ἐμπορευόμενος μέχρι τοῦ 1821. Μυηθεὶς εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, εἰργάσθη ἀνενδότως εἰς τὴν προπαρασκευὴν τῆς ἐπαναστάσεως, εἰς ἣν καὶ ἐνόπλως ἠγωνίσθη. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ Ἀγῶνος (1830) ἐγκατεστάθη ἐν Χανίοις. Ἀπέθανε περὶ τὸ 1860. Ν. ΚΛΣ

— **Μπογιατζόγλου, *Μίνως*.** Υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου Μπογιατζόγλου*, γεννηθεὶς ἐν Χανίοις τῷ 1839. Σπουδάσας τὰ νομικά, ἐγκατεστάθη νεώτατος ἐν Σύρῳ ὡς δικηγόρος. Κατὰ τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν 1866—1869 διωρίσθη μέλος τῆς ἐν Σύρῳ «ἐπιτροπῆς ἐπὶ τῶν ἀποστολῶν», ἧς ὑπῆρξεν ὁ κυριώτερος παράγων, ἐργασθεὶς εἰς τὸ δυσχερὲς ἔργον τῆς ἐνισχύσεως τοῦ ἀγῶνος διὰ τροφῶν, πολεμεφοδίων καὶ ἐθελοντῶν. Ἐμβριθὴς νομικὸς καὶ δεινὸς ῥήτωρ, διεκρίθη ἐν τῇ βουλῇ, ἐν ᾗ ἀντεπροσώπευσεν εἰς τρεῖς περιόδους τὴν ἐπαρχίαν Σύρου, ὡς ὀπαδὸς τοῦ Χαριλάου Τρικούπη. Μετὰ τὴν εἰς Κρήτην κάθοδον τοῦ πρίγκιπος Γεωργίου (1898), ὡς ἁρμοστοῦ τῶν προστατίδων Δυνάμεων, προσεκλήθη νὰ δεχθῇ τὸ ἀξίωμα τοῦ προέδρου τῶν ἐφετῶν καὶ νὰ ὀργανώσῃ τὰ δικαστήρια τῆς νεαρᾶς πολιτείας, ἀλλὰ δὲν ἐπρόφθασε νὰ ἀναλάβῃ τὴν θέσιν, καταληφθεὶς ὑπὸ τοῦ θανάτου. Ν. ΚΛΣ

Digitized by Google

**Μπογιατζόπουλος,** ***Λεωνίδας.*** Κρὴς ὁπλαρχηγός, ἐκ Μυλοποτάμου. Διεκρίθη ὡς ὁπλαρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας του κατὰ τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν 1866. Ἔπεσε γενναίως μαχόμενος κατὰ τοῦ Ὀμὲρ πασᾶ εἰς τὴν ἐν Ἀβδελλᾷ τοῦ Μυλοποτάμου μάχην, τῇ 6ῃ Μαΐου 1867. Ν. ΚΛΣ

**Μπογιάτι** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀφιδνῶν (Κιούρκων), τῆς ἐπαρχίας Ἀττικῆς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, κείμενον παρὰ τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Ἀθηνῶν—Θεσσαλονίκης, ἐντὸς δασοφύτου τοποθεσίας, μεταξὺ Πεντέλης καὶ Πάρνηθος. Παρ᾽ αὐτὸ διέρχεται ἡ φερώνυμος σῆραγξ, δι᾽ ἧς διοχετεύονται τὰ πρὸς ὕδρευσιν τῶν Ἀθηνῶν ὕδατα τῆς τεχνητῆς λίμνης τοῦ Μαραθῶνος. Κάτ. (1928) 147. Χ. Δ.

**μπογιατίζω·** βλ. λ. μπογια(ν)τίζω.

**Μπόγιοβιτς** (Bojovic), ***Πέτρος.*** Σέρβος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Μιζεβίτσι τοῦ Νόβι Παζὰρ τῷ 1858. Κατὰ τὸν πρῶτον Βαλκανικὸν πόλεμον διετέλεσεν ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ πρώτου σώματος στρατοῦ καὶ ἔλαβε κατόπιν μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Κουμανόβου καὶ εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν Βουλγάρων εἰς τὸν δεύτερον Βαλκανικὸν πόλεμον. Τὸν Αὔγουστον τοῦ 1913 διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διετέλεσε διοικητὴς τῆς πρώτης στρατιᾶς τῷ 1914, τῷ δὲ 1915 διοικητὴς τῆς ὁμάδος τῶν στρατιῶν τῶν Σκοπίων, ὁδηγήσας τὰ σερβικὰ στρατεύματα διὰ μέσου τῆς Ἀλβανίας εἰς τὴν παραλίαν. Τῷ 1916 ἦτο ἀρχηγὸς τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ κατὰ τὴν εἰς Κέρκυραν ἀναδιοργάνωσίν του καὶ κατόπιν ἐχρημάτισε διοικητὴς τῆς πρώτης σερβικῆς στρατιᾶς, ἥτις ἔδρασε κατὰ τὴν κατάληψιν τοῦ Μοναστηρίου, κατὰ τὴν συμμαχικὴν ἐπίθεσιν τῆς Ντομπροπόλιε, κατέλαβε τὴν Νύσσαν καὶ τέλος εἰσῆλθε, τὴν 31 Ὀκτωβρίου 1918, εἰς τὸ Βελιγράδιον. Ν. Θ. Κ.

**Μπογιοὺκ-Μαχαλὲ** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Μεγαλοχώρι* (βλ. λ.).

**Μπογκαΐρνε, Βάντεν** — (Vaden-Bogaerde), ***Ἀνδρέας Βὰν Τερμπρούγκε.*** Ὀλλανδὸς πολιτικὸς (βλ. λ. *Βάντεν*-Μπογκαΐρντε Ἀνδρέας).

**Μπόγκιζιτς** (Bogisič), ***Βαλταζάρ.*** Δαλματὸς νομομαθής, γεννηθεὶς τῷ 1837. Τῷ 1869 ὠνομάσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀδησσοῦ, τῷ δὲ 1873 ἔλαβε παρὰ τῆς ρωσικῆς κυβερνήσεως ἐντολὴν νὰ ἐπεξεργασθῇ τὸν ἀστικὸν κώδικα τοῦ Μαυροβουνίου. Βραδύτερον διωρίσθη ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης ἐν Κετίγνῃ. Ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται τὰ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ὑποδείξεις διὰ τὴν περισυλλογὴν τῶν κανόνων τοῦ δικαίου τῶν ἐθίμων» (1867), «Συλλογὴ τῶν σημερινῶν κανόνων τοῦ δικαίου τῶν ἐθίμων τῶν Νοτιοσλάβων» (1874), «Περὶ τοῦ «ἐνόκοσνα» καλουμένου τύπου τῆς ἀγροτικῆς οἰκογενείας τῶν Σέρβων καὶ τῶν Κροατῶν» (1884), «Γενικὸς κῶδιξ ἐμπραγμάτου δικαίου διὰ τὸ πριγκιπᾶτον τοῦ Μαυροβουνίου» (1888). Ὁ κῶδιξ οὗτος ἀπολαύει μεγάλης ἐκτιμήσεως παρὰ τῷ νομικῷ κόσμῳ. —Ω.

**Μπόγκνορ** (Bognor) *[Γεωγρ.].* Λουτρόπολις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Σάσσεξ, κειμένη 16 χλμ. πρὸς ΝΑ. τοῦ Τσάϊτσεστερ. Ἔχει θέατρα, περιπάτους, καὶ ἄλλα κέντρα διασκεδάσεως χάριν τῶν ἐπισκεπτῶν. Κάτ. 8.150. Χ. Δ.

**Μπογκντάν.** Ὄνομα πολλῶν ἡγεμόνων τῆς Μολδαβίας καὶ τῆς Βλαχίας (βλ. λ. *Μπογδάν*).

**Μπογκντάνοβιτς,** ***Εὐγένιος.*** Ρῶσος στρατηγὸς (1840—1906). Ἐδημοσίευσεν ἡμερολόγιον τῆς ναυμαχίας τοῦ Ναυαρίνου ἐκ σημειώσεων τοῦ ναυάρχου Χέϋδεν. Θ. Β.

— **Μπογκντάνοβιτς,** ***Ἰβὰν Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1758 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1831. Ἐδημοσίευσεν ἐκπαιδευτικά τινα συγγράμματα, ἰδίως περὶ πολιτικῆς οἰκονομίας. Θ. Β.

— **Μπογκντάνοβιτς,** ***Ἱππόλυτος-Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος διπλωμάτης καὶ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1743 ἐν Περεβολότνα καὶ ἀποθανὼν τῷ 1803. Διατελῶν ὑπὸ τὴν προστασίαν τῆς πριγκιπίσσης Ντάσκοβα, ἐτοποθετήθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, εἶτα δὲ διωρίσθη γραμματεὺς τῆς ρωσικῆς πρεσβείας εἰς Δρέσδην. Μετέφρασε πλεῖστα ἔργα τῆς γαλλικῆς φιλολογίας, ταυτοχρόνως δὲ συνέθετε ποιήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὸ ἄριστον ἦτο «Ἡ ψυχούλα». Ἡ ἐπιτυχία τῶν ποιημάτων του ὑπῆρξε τεραστία, ἐπὶ μακρὰ δὲ ἔτη ἐθεωροῦντο ὡς ἀριστουργήματα τῆς ἐλαφρᾶς λεγομένης φιλολογίας, πλήρη χάριτος καὶ κομψότητος. Ἡ Αἰκατερίνη Β΄ διώρισεν αὐτὸν διευθυντὴν τοῦ ἀρχείου τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν. Τὰ ἔργα του ἐδημοσιεύθησαν πολλάκις ἐν Πετρουπόλει καὶ Μόσχᾳ. Θ. Β.

— **Μπογκντάνοβιτς,** ***Λουκᾶς Θεοδώροβιτς.*** Ρῶσος ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1794 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1865. Μετέσχεν εἰς τὴν ναυμαχίαν τοῦ Ναυαρίνου, περὶ ἧς ἔγραψε πραγματείαν. Ἐπίσης μετέσχεν εἰς τὴν ναυμαχίαν τῆς Σινώπης καὶ διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν σύμβουλος τοῦ ναυαρχείου. Θ. Β.

— **Μπογκντάνοβιτς,** ***Μοδέστος Ἰβάνοβιτς.*** Ρῶσος στρατιωτικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1805 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1882. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν εἶτα εἰς τὴν στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν, μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Πολωνίας καὶ γενόμενος λοχαγὸς τοῦ πυροβολικοῦ ἀπεσύρθη τῆς ὑπηρεσίας καὶ ἀφωσιώθη εἰς τὴν φιλολογίαν. Ἔγραψε πολυάριθμα συγγράμματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ πόλεμος τοῦ 1796 τοῦ Βοναπάρτου εἰς Ἰταλίαν», «Ἡ σύγχρονος Ἀλγερία», «Ἐκστρατεῖαι κατὰ τῆς Τουρκίας τῶν Ρουμιαντζώφ, Ποτέμκιν καὶ Σουβάρωφ», «Ἱστορία τοῦ πολέμου τοῦ 1813 πρὸς ἀπελευθέρωσιν τῆς Γερμανίας», «Ἱστορία τοῦ βασιλέως Ἀλεξάνδρου Α΄» καὶ «Ἱστορία τοῦ Ἀνατολικοῦ πολέμου». Θ. Β.

**Μπογκντάνωφ,** ***Ἀλέξανδρος.*** Ψευδώνυμον τοῦ Ρώσου σοφοῦ *Ἀλεξάνδρου Ἀλεξάντροβιτς Μανιλόβσκη*, γεννηθέντος τῷ 1873 καὶ ἀποθανόντος τῷ 1928. Κατόπιν λαμπρῶν σπουδῶν ἐν τῇ φυσικῇ καὶ τῇ ἰατρικῇ, ὁ Μπογκντάνωφ ἐνεφανίσθη εἰς τὸ ἐπιστημονικὸν κοινὸν ὡς οἰκονομολόγος διὰ μιᾶς ἐπιτομῆς τῆς μαρξιστικῆς πολιτικῆς οἰκονομίας (1897), ἡ ὁποία ἐχρησίμευσεν ὡς ἐγχειρίδιον εἰς πολλὰς γενεὰς ἐπαναστατῶν. Δύο ἔτη βραδύτερον ἐδημοσίευσε τὸ φιλοσοφικὸν ἔργον: «Ἀρχαὶ τῆς ἱστορικῆς ἀντιλήψεως τῆς φύσεως» (1899). Ἀπὸ τοῦ 1904 μέχρι τοῦ 1907 ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἡγετῶν τῆς μπολσεβικικῆς πτέρυγος τοῦ ἐργατικοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος ἐν Ρωσίᾳ. Ἐν τῷ μεταξὺ, περὶ τὸ 1905, ἤρχισε νὰ διαμορφοῦται ἐν Ρωσίᾳ μία τάσις ἀναθεωρήσεως τοῦ μαρξισμοῦ, εἰς τὴν ὁποίαν ἐπρωτοστάτουν οἱ ὀπαδοὶ τοῦ Αὐστριακοῦ φυσιοδίφου Mach, μεταξὺ τῶν ὁποίων συγκατελέγοντο καὶ ὁ Μπογκντάνωφ καὶ ὁ Λουνατσάρσκυ.

Κατὰ τὰ ἔτη 1907—1908 ὁ Μπογκντάνωφ παρεξέκλινε τῆς λενινιστικῆς τάσεως τοῦ μπολσεβικισμοῦ ἐν Ρωσίᾳ καὶ ἐσχημάτισε μετὰ τοῦ Λουνατσάρσκυ καί τινων ἄλλων ἰδιαιτέραν ὁμάδα, γνωστὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Βπέριοντ» (= Ἐμπρός!») ἢ «ὁμὰς τῶν ὀτζοβιστῶν» διότι εἶχε ταχθῆ ὑπὲρ τῆς ἀνακλήσεως τῆς σοσιαλδημοκρατικῆς κοινοβουλευτικῆς ὁμάδος ἐκ τῆς Δούμας. Τῷ 1909 ἐπῆλθεν ἡ ὁριστικὴ ρῆξις τῆς ὁμάδος Λένιν καὶ τοῦ Μπογκντάνωφ. Βραδύτερον ἡ πλειοψηφία τῶν ὀπαδῶν του ἐπανῆλθεν εἰς τὸ μπολσεβικικὸν κόμμα, ἐνῷ ὁ Μπογκντάνωφ, σὺν τῷ χρόνῳ ἀπεσύρθη ὁριστικῶς τοῦ ἐπαναστατικοῦ κινήματος τῆς πατρίδος του. Τῷ 1904 ἐδημοσίευσε τὸ «Ἐμπειριομονισμόν» του ὡς καὶ συλλογὴν «Δοκιμίων ρεαλιστικῆς φιλοσοφίας», ἐπηρεασμένων ἐκ τῶν θεωριῶν τοῦ Mach. Τὴν τάσιν ταύτην ἐπικρίνει ὁ Λένιν εἰς τὸ ἔργον του: «Ὑλισμὸς καὶ ἐμπειροκριτικισμός». Ἐπὶ κεφαλῆς τῆς μαχιστικῆς τάσεως εὑρίσκοντο τότε μετὰ τοῦ Μπογκντάνωφ καὶ οἱ Λουνατσάρσκυ, Γκόρκυ καὶ Μπαζάρωφ, κυριώτερος δὲ ποπολέμιος αὐτῆς ἦτο ὁ Πλεχάνωφ. Ὁ Μπογκντάνωφ, ἀφοῦ ἀφιέρωσε πλέον τῶν 10 ἐτῶν εἰς τὴν μελέτην τοῦ μαρξιστικοῦ μονισμοῦ, κατέληξεν εἰς τὸ συμπέρασμα (1912), ὅτι ἡ φιλοσοφία (ἡ ὁποία κατὰ τὴν φράσιν τοῦ Κ. Μὰρξ «προσεπάθησε νὰ ἑρμηνεύσῃ μόνον τὸν κόσμον, ἐνῷ καθῆκον τώρα τῆς ἀνθρωπότητος εἶναι νὰ τὸν μεταβάλῃ»), δὲν θὰ ἠδύνατο νὰ παράσχῃ μονισμὸν ἐπηλλαγμένον ὑπὸ τῆς πρακτικῆς, καὶ ὅτι τὸν μονισμὸν τοῦτον μόνον παρὰ τῆς ἐπιστήμης πρέπει νὰ ἀναμένωμεν. Κατ᾽ αὐτόν, τὸ γνωσιολογικὸν πρόβλημα συνίσταται εἰς τὴν ὀργάνωσιν εἰς ὁμοιογενὲς σύστημα ἑνὸς ἀριθμοῦ στοιχείων ἀντιπροσωπευομένων ἄλλοτε ὑπὸ τῶν πραγμάτων, ἄλλοτε ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων καὶ ἄλλοτε, τέλος, ὑπὸ τῶν ἰδεῶν, καὶ συνεπῶς ὅτι μόνον αἱ ὀργανωτικαὶ μέθοδοι δύνανται νὰ λύσουν τὸ πρόβλημα. Τοιουτοτρόπως ὁ Μπογκντάνωφ εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην ν᾽ ἀναζητήσῃ παγκοσμίους ὀργανωτικοὺς νόμους καὶ διέπλασε τὸ σχέδιον μιᾶς γενικῆς ὀργανωτικῆς ἐπιστήμης, τὴν ὁποίαν ὠνόμασε τεκτολογίαν. Αἱ ἰδεαλιστικαὶ ἀφετηρίαι τῶν ἀπόψεών του ἐπεκρίθησαν αὐστηρῶς ὑπὸ τῶν Ρώσων μαρξιστῶν, ἰδίᾳ δὲ ὑπὸ τοῦ Νέφσκι.

Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὁ Μπογκντάνωφ ὑπηρέτησεν ὡς στρατιωτικὸς ἰατρός. Δὲν μετέσχε τῆς ὀκτωβριανῆς ἐπαναστάσεως (1917) οὔτε τοῦ ἐμφυλίου πολέμου, ἀλλὰ μέχρι τοῦ θανάτου του παρέμεινε διευθυντὴς τοῦ Ἰνστιτούτου μεταγγίσεως τοῦ αἵματος, τὰς ἐργασίας τοῦ ὁποίου συνώψισεν εἰς τὸ ἔργον του: «Ἡ πάλη διὰ τὴν ζωϊκὴν ἄμυναν», (1927). Ἀπέθανεν ἐκ δηλητηριάσεως, θῦμα τῆς ἐπιστήμης του, μεταγγίσας εἰς τὸν ὀργανισμόν του 900 γραμμάρια αἵματος ἀσθενοῦς ἐκ μαλαρίας, διὰ νὰ ἐξακριβώσῃ τὴν δραστικότητα αὐτοῦ. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω ἔγραψε καὶ τὰ ἑξῆς: «Αἱ ἀρχαὶ τῆς γνώσεως ἐξ ἱστορικῆς ἀπόψεως», «Ἡ παγκόσμιος ἐπιστήμη τῆς ὀργανώσεως», «Ἡ ἐπιστήμη τῆς κοινωνικῆς συνειδήσεως», «Τὰ προβλήματα τοῦ σοσιαλισμοῦ», «Ἡ φιλοσοφία τῆς ζώσης πείρας» κ.λ.π. —Ω.

**Μπογκολγιούμποφ,** ***Ἀλέξιος Πέτροβιτς.*** Ρῶσος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1824 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1897. Κατ᾽ ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸ ρωσικὸν ναυτικὸν ὡς ἀξιωματικός, βραδύτερον ὅμως ἐπεδόθη εἰς τὴν ζωγραφικήν, τυχὼν τοῦ βραβείου Ρώμης τῷ 1852. Ἀπεικόνισεν ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ παραθαλάσσια τοπία, ἀπόψεις τῆς τραχείας ρωσικῆς φύσεως, πολεμικὰς σκηνὰς καί, ἐν ἐλάσσονι κλίμακι, θρησκευτικὰ θέματα. Ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ τσάρου Νικολάου ν᾽ ἀπεικονίσῃ τὴν ναυμαχίαν τῆς Σινώπης, ὠνομάσθη ἐπίσημος ζωγράφος τοῦ ρωσικοῦ ναυτικοῦ ἐπιτελείου, ἠκολούθησε τὸν αὐτοκράτορα Ἀλέξανδρον τὸν Γ΄ εἰς τὸ ἀνὰ τὴν Ρωσίαν, τὴν Δανίαν καὶ τὴν Γαλλίαν ταξίδιόν του καὶ ἀντεπροσώπευσε τὴν ρωσικὴν κυβέρνησιν εἰς τὴν παγκόσμιον παρισινὴν ἔκθεσιν τοῦ 1878, ἔνθα ἐξέθηκεν ἐνδιαφέροντας πίνακάς του. Τὰ σημαντικώτερα τῶν ἔργων του ἀπόκεινται εἰς τὸ χειμερινὸν ἀνάκτορον τοῦ Λένινγκραντ. Ι. Μ. Π.

**Μπογκοντούχωφ** (Bogodukhov) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Χαρκόβου τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μέρλα, 72 χλμ. πρὸς ΒΔ. τοῦ Χαρκόβου, μεθ᾽ οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι παλαιὰ πόλις μεγάλης ἄλλοτε ἐμπορικῆς σημασίας. Ἔχει βυρσοδεψεῖα, βιομηχανίαν γουναρικῶν, διεξάγει δὲ ἐμπόριον κτηνῶν, σιτηρῶν, ὀπωρῶν κλπ. Κάτ. 15.000. Χ. Δ.

**Μπογκορόντσκ** (Bogordsk) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Μόσχας τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κλυάζμα, (55°52′ Β. πλάτους καὶ 38°20′ Α. μήκους Γκρήνουιτς), 62 χλμ. πρὸς Α. τῆς Μόσχας μεθ᾽ ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βιομηχανίαν ἐρίου, βάμβακος, μεταξωτῶν καὶ χρυσοκεντήτων ὑφασμάτων, χημικῶν προϊόντων, διϋλιστήρια ποτῶν, μεγάλα ἐργοστάσια παραγωγῆς ἠλεκτρικῆς ἐνεργείας, διοχετευομένης ἐκεῖθεν διὰ καλωδίων πρὸς τὴν Μόσχαν, καὶ περίφημον γεωργικὴν σχολήν. Κάτ. (1926) 34.905. Χ. Δ.

**Μπόγκος** (Bogos) *[Ἐθνολ.].* Χαμιτικὴ φυλὴ τῆς Α. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Βόγκος*).

**Μπογκοτά,** ἢ ***Σάντα Φὲ ντὲ Μπογκοτὰ*** (Bogota ἢ Santa Fé de Bogotá) *[Γεωγρ.].* Πρωτεύουσα καὶ πολυανθρωποτέρα πόλις τῆς νοτιοαμερικανικῆς δημοκρατίας τῆς Κολομβίας καὶ ἕδρα τοῦ νομοῦ Κουντιναμάρκα, κειμένη εἰς ὕψος 2.600 μ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἐπὶ εὐρέος ὀροπεδίου (ἐκτάσεως 1.000 περίπου τετρ. χλμ.), εἰς 4°36′ Β. πλάτους καὶ 74°14′ Α. μήκους Γκρήνουιτς. Εἶναι κτισμένη ἐπὶ τῶν δύο παραποτάμων τοῦ Ρίο Μανταλένα, Σὰν Φραντσίσκο καὶ Σὰν Ἀγκουστίν, εἰς τὰς ὑπωρείας τῶν ἀνατολικῶν ὀροσειρῶν τῶν Ἄνδεων καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τῶν πόλεων Ζιραρντὸ (83 χλμ.) κειμένης πρὸς ΝΔ. καὶ Χόντα (104 χλμ.) πρὸς ΒΔ. Τὸ κλῖμά της εἶναι γλυκὺ καὶ ὑγιεινόν, ἡ δὲ μέση ἐτησία θερμοκρασία κυμαίνεται περὶ τοὺς 15 βαθμοὺς Κελσίου. Κάτ. (1928) 143.994.

Ἡ Μπογκοτὰ εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων πόλεων τῆς Ν. Ἀμερικῆς, ἔχουσα κανονικὴν καὶ ἀρτίαν ρυμοτομίαν, εὐρείας ὁδούς, πλατείας, πάρκα καὶ πολλὰ ὡραῖα κτήρια, ἰδιαιτέρως ὅμως φημίζεται διὰ τὴν γραφικωτάτην θέαν τοῦ περιβάλλοντος αὐτὴν καταφύτου καὶ ὑψηλοῦ τοπίου. Τὴν κεντρικὴν πλατεῖαν κοσμεῖ καλλιτεχνικὸς ἀνδριὰς τοῦ Μπολίβαρ, οὗτινος καὶ φέρει ἡ πλατεῖα τὸ ὄνομα, ἔργον τοῦ Πιέτρο Τενεράνι μαθητοῦ τοῦ Κανόβα, ἐγείρονται δ᾽ ἐν αὐτῇ τὸ προεδρικὸν μέγαρον, ὁ παλαιότατος μητροπολιτικὸς ναὸς (1563) καὶ τὰ πλεῖστα τῶν μεγάρων τῆς διοικήσεως. Τὴν πλατεῖαν Σαντάντερ κοσμεῖ τὸ ἄγαλμα τοῦ στρατηγοῦ τούτου, τὴν δὲ πλατεῖαν τοῦ Συντάγματος (Contitucion) τὸ ἐκτεταμένον καὶ κομψὸν μέγαρον τοῦ Καπιτωλίου (1875) ἐν τῷ ὁποίῳ στεγάζονται τὰ νομοθετικὰ σώματα τῆς χώρας. Τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν ἰδιωτικῶν κτηρίων εἶναι ᾠκοδομημένον ἐκ πλίνθων πρὸς προστασίαν ἀπὸ τῶν συχνοτάτων σεισμῶν, ἐξ ὧν προσβάλλεται ἡ πόλις. Ἡ Μπογκοτὰ εἶναι ἕδρα ἀρχιεπισκοπῆς, ἱδρυθείσης τῷ 1561, ὑπῆρξε δ᾽ ἀνέκαθεν τὸ κυριώτερον κέντρον τοῦ καθολικισμοῦ ἐν τῇ Ἀμερικῇ. Ἐκτὸς τῆς ὡραίας μητροπόλεώς της, ἔχει ὑπὲρ τοὺς 30 ἐπίσης ἄλλους ναούς, εἰς πολλοὺς τῶν ὁποίων ἀπόκεινται ἔργα τοῦ Μουρίλλο καὶ ἄλλων μεγάλων Ἱσπανῶν καλλιτεχνῶν. Ὡς ἐκπαιδευτικὸν κέντρον ἡ Μπογκοτὰ εἶναι ἐξόχως προηγμένη, προσονομάζεται δὲ συνήθως αἱ «Ἀθῆναι τῆς Ν. Ἀμερικῆς». Ἔχει πανεπιστήμιον, πολλὰς ἀνωτέρας σχολὰς καὶ κολλέγια, δημοσίαν βιβλιοθήκην (50.000 τόμοι), πλούσιον μουσεῖον φυσικῆς ἱστορίας, ἀστεροσκοπεῖον, στρατιωτικὴν ἀκαδημίαν κλπ. Ἡ ἐμπορικὴ κίνησις τῆς πόλεως περιορίζεται εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν ἀναγκῶν τῆς περιφερείας, ἡ δὲ βιομηχανία περιλαμβάνει ἐργοστάσια ὑφασμάτων, ψιαθίνων πίλων, τῶν κοινῶς γνωστῶν ὡς «παναμάδων», καὶ ἀλευρομύλους.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ Σάντα Φὲ ντὲ Μπογκοτὰ ἱδρύθη τῷ 1538 ὑπὸ τοῦ Γκονθάλο Χιμένεθ ντὲ Κεζάντα

Digitized by Google

Τὸ ὄνομα αὐτῆς προῆλθεν ἀφ' ἑνὸς ἐκ τῆς πόλεως Σάντα Φέ, ἐξ ἧς ὡρμήθησαν οἱ οἰκισταί, καὶ ἀφ' ἑτέρου ἐκ τῆς ἐγγὺς πρὸς Ν. κειμένης πόλεως Μπακατὰ (ἢ Φούθα), πρωτευούσης τοῦ ἰθαγενοῦς λαοῦ τῶν Κίπκας. Μικρὸν μετὰ τὴν ἵδρυσίν της ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς ὑπὸ ἀντιβασιλέα ἱσπανικῆς ἀποικίας τῆς Νέας Γρενάδης (1598) καὶ κατέστη τὸ κέντρον τῆς ἐν τῇ Ν. Ἀμερικῇ ἱσπανικῆς κυριαρχίας. Τῷ 1811 οἱ κάτοικοι τῆς διαρκῶς προαγομένης πόλεως ἐπανεστάτησαν ἐναντίον τῶν Ἱσπανῶν, ἀλλὰ καθυπετάγησαν ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Παύλου Μορίλλο. Τέλος τῷ 1819 κατόπιν τῆς νίκης τοῦ Μπολίβαρ ἐν Μπογιακά, ἡ Μπογκοτὰ ἐξεκενώθη ὁριστικῶς ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν, ἀμέσως δ' ἐγένετο ἕδρα τῆς σχηματισθείσης τότε μεγάλης δημοκρατίας τῆς Κολομβίας, παραμείνασα καὶ μετὰ τὸ διχασμὸν αὐτῆς πρωτεύουσα τῆς Νέας Γρενάδης (1831) ἥτις βραδύτερον ὠνομάσθη Δημοκρατία τῆς Κολομβίας. Τὴν 6 Ἀπριλίου 1914 ὑπεγράφη ἐν Μπογκοτὰ μετὰ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς ἡ συνθήκη τοῦ ἀπὸ τῆς Κολομβίας χωρισμοῦ τοῦ Παναμᾶ, ὅστις ἀπετέλεσεν ἴδιον κράτος. Χ. Δ.

**Μπογκουσέβσκι**, ***Νικόλαος Καζιμήροβιτς, βαρῶνος*** —. Ρῶσος ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1841 ἐν Ντολίτσᾳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1909. Ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ, Γαλλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ καὶ ἐγνώριζε πάσας σχεδὸν τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας. Συνέγραψε πολλὰ ἔργα ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Niels Unfried, δημοσιευθέντα εἰς διαφόρους γλώσσας, πρὸς δὲ μετὰ τοῦ Μπύκωφ «Λεξικὸν τῶν Ρώσων συγγραφέων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος». Θ. Β.

**Μπογκουσλὰβ** (Boguslav) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Κιέβου τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ρόσσα, 175 χλμ. πρὸς ΝΑ. τοῦ Κιέβου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Διεξάγει ἐμπόριον ἐρίου καὶ δερμάτων. Περιῆλθεν εἰς τὴν Ρωσίαν τῷ 1793. Κάτ. 8.500. Χ. Δ.

**Μπογκουσλάφσκι** (Boguslawski), ***Ἀδαλβέρτος***. Πολωνὸς καλλιτέχνης καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1759—1829). Τῷ 1770 ὠνομάσθη διευθυντὴς τοῦ βασιλικοῦ θεάτρου τῆς Βαρσοβίας, ὑπῆρξε δ' ὁ πραγματικὸς θεμελιωτὴς τῆς θεατρικῆς τέχνης ἐν Πολωνίᾳ διὰ τῆς διδασκαλίας ξένων ἀριστουργημάτων, τῆς εἰσαγωγῆς τῆς ἰταλικῆς μουσικῆς καὶ τῆς ἱδρύσεως (1809) δραματικῆς σχολῆς. Συνέθεσε περὶ τὰς ἑξήκοντα κωμῳδίας, αἵτινες κατὰ τὸ πλεῖστον εἶναι διασκευαὶ ἢ μεταφράσεις ξένων ἔργων καὶ τὰς ὁποίας συνήθροισεν ὑπὸ τὸν κοινὸν τίτλον: «Dziela Dramátycgul» (1820). Ἡ πρωτοτυπωτέρα μεταξὺ τούτων εἶναι τὸ «Ὑποθετικὸν θαῦμα». Ι. Μ. Π.

**Μπογκουτσὺς** (Bogutschüss) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας (ἀπὸ τοῦ 1922) ἐν Ἄνω Σιλεσίᾳ, κειμένη πρὸς ΒΑ. τοῦ Κάττοβιτς. Ἔχει ὀρυχεῖα γαιανθράκων, μεταλλεῖα ψευδαργύρου, ἐργοστάσια τσιμέντων καὶ μηχανῶν κλπ. Κάτ. (1919) 22.292, ἐξ ὧν τὰ 69 % Πολωνοί, οἱ δὲ λοιποὶ Γερμανοί. Χ. Δ.

**μπόγκχεντ** (Bogheadkohle), ἢ ***τορβανίτης***, ἢ ***μπιτουμινίτης*** (Torbanit, Bituminit) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀνομάζεται οὕτως ὀρυκτὴ μᾶζα χρώματος σκοτεινοφαίου, ἡ ὁποία ἐμφανίζεται εἴς τινα κοιτάσματα λιθανθράκων. Παρουσιάζει ἐνδιάμεσον κατάστασιν μεταξὺ λιθάνθρακος καὶ ἀσφάλτου, καθόσον ἀναφλέγεται εὐκολώτερον ἢ ὁ λιθάνθραξ, ἀποδίδει πολὺ ἀέριον, ἡ δὲ περιεκτικότης αὐτοῦ εἰς ὀξυγόνον εἶναι μικρά, ὅπως καὶ εἰς τὴν ἄσφαλτον. Εἶναι ἄμορφος, ἔχει θραυσμὸν ὁμαλὸν ἕως κογχώδη, εἰδικὸν βάρος 1,28, ἀπαντᾷ δὲ ἐντὸς λιθανθρακούχων κοιτασμάτων εἰς τὴν Σκωτίαν, τὴν Βοημίαν κ. ἄ. Γ. Β.

**Μπογολιούμπωφ**, ***Ἀλέξιος Πέτροβιτς***. Ρῶσος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1822 ἐν Κρονστάνδῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1894. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Πετρουπόλεως καὶ εἶτα εἰς τὴν σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων. Διατρίψας ἐπὶ μακρὸν εἰς Ὁλλανδίαν, εἰκόνισε πολλὰ τοπία ἐκ τῆς χώρας ταύτης, ὡς ἀριστούργημα δὲ θεωρεῖται εἷς μέγας πίναξ αὐτοῦ παριστάνων «Ἐμπορικὴν πανήγυριν εἰς Ἄμστερνταμ». Θ. Β.

**μπόγος** (ὁ)· σύνολον συνήθως ἐνδυμάτων ἢ καὶ ἄλλων πραγμάτων ὁμοῦ δεδεμένων καὶ περιτυλιμένων διὰ πλατέος τινὸς ὑφάσματος: «Ἡ ὑπηρέτριά μου πῆρε τὸν μπόγο της κι' ἔφυγε» (δηλαδὴ τὰ ἐνδύματά της κττ.), «ἐσαπούνισε ἕναν μπόγο ροῦχα», «ἐκρατοῦτε ἕνα μπόγο· δὲν ἠξεύρω τί εἶχε μέσα».

—**μπόγος** *[Ναυτ.]*. Εἶδος ἱστιοφόρου, τύπου καΐου, τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἀγῶνος, μικρὸν ἔχον τὸ βύθισμα. Σ. Ε. Λ.

**Μπόγρης**, ***Δημήτριος***. Ἕλλην δραματικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1890. Μετὰ τὸ πέρας τῶν ἐγκυκλίων αὐτοῦ μαθημάτων μεταβὰς εἰς Παρισίους ἤρχισε σπουδάζων τὴν μηχανικήν, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ διακόψῃ τὰς σπουδάς του συνεπείᾳ τῶν Βαλκανικῶν πολέμων (1912—1913), ὧν μετέσχε τραυματισθεὶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Δρίσκου. Ὁ ἐπελθὼν κατόπιν Εὐρωπαϊκὸς πόλεμος δὲν τοῦ ἐπέτρεψε νὰ συνεχίσῃ τὰς σπουδὰς αὐτοῦ ἐν Παρισίοις, ἃς ὅμως ἐξηκολούθησεν ἐν τῷ ἐν Ἀθήναις πανεπιστημίῳ, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν, μεθ' ὃ ἐχρημάτισε κατὰ καιροὺς δημοσιογράφος, καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐπὶ ἓν ἔτος καὶ τέλος ἐπιθεωρητὴς βιομηχανίας ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῆς Ἐθνικῆς Οἰκονομίας. Εἰς τὸ θέατρον, εἰς ὃ καὶ ἀφιερώθη πλέον, ἀνεμίχθη τὸ πρῶτον, τῇ προσκλήσει τοῦ Θωμᾶ Οἰκονόμου, ἀναλαβὼν ἐπί τινας μῆνας χρέη γραμματέως εἰς τὸν τότε θίασον τοῦ Ὠδείου, στεγαζόμενον ἐν τῷ Βασιλικῷ θεάτρῳ. Ἐκεῖ ἀνεβίβασε κατὰ τὸ 1921 τὸ πρῶτόν του θεατρικὸν ἔργον: «Ὁ ἰατρὸς Μαυρίδης», τρίπρακτον δρᾶμα. Ἀπὸ τοῦ 1925, ἀναμιχθεὶς ἐνεργότερον, ἀνεβίβασε πολλὰ ἔργα μονόπρακτα καὶ τρίπρακτα, ἐξ ὧν «Τ' ἀρραβωνιάσματα» καὶ ἡ «Δράκαινα» ἐβραβεύθησαν εἰς τὸν Κοτοπούλειον δραματικὸν διαγωνισμόν. Ἄλλα του ἔργα εἶναι: «Στὴ νύχτα», «Ἀγάπες», «Τὸ αἴτιον», «Μπροστὰ στὸ γκρεμνό», «Ὁ Παξιμάδας» κτλ. Ἀπὸ ἐτῶν διατελεῖ γενικὸς γραμματεὺς τῆς ἑταιρείας τῶν Ἑλλήνων θεατρικῶν συγγραφέων. Ν. Ι. Λ.

**Μποδονίτσα**, καὶ ***Μπουδουνίτσα*** *[Γεωγρ.—Ἱστορ.]*· βλ. λ. *Βοδονίτσα*.

**Μποε**— (Boe—). Τὰ ἀπὸ Boe— γερμανικὰ ὀνόματα βλέπε εἰς λ. *Μπαι*—.

**Μπόεβα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Καστανωτὸ* (βλ. λ.).

**Μπόελλμαν** (Boellmann). Γάλλος συνθέτης καὶ ὀργανοκρούστης ἐξ Ἀλσατίας (1862—1897). Μαθητὴς τῆς σχολῆς Νιντερμάγιερ τῶν Παρισίων, ὠνομάσθη δεκαοκταετὴς μόλις ὀργανοκρούστης τοῦ Ἁγίου Βικεντίου, ἔνθα διεκρίθη ὡς πρώτης τάξεως αὐτοσχεδιαστής. Ἀφῆκε σειρὰν ἔργων διακρινομένων διὰ τὴν κομψότητα καὶ τὴν διαύγειαν τοῦ ὕφους των. Μεταξὺ τούτων εἶναι: μία συμφωνία εἰς φά, «Συμφωνικαὶ παραλλαγαὶ διὰ βιολοντσέλλον καὶ ὀρχήστραν», «Διαλογικὴ φαντασία» (βραβευθεῖσα), «Γοτθικὴ σουίτα», ἓν κουαρτέττο καὶ ἓν τρίο, τυχόντα τοῦ βραβείου Σαρτιὲ διὰ τὴν μουσικὴν δωματίου τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν, «Ἀποκριάτικη ραψῳδία», μοτέττα, ὡραιόταται μελῳδίαι, μία σονάτα διὰ βιολοντσέλλον καὶ κλειδοκύμβαλον κτλ. Γ. Σ.

**μποὲμ** (ὁ καὶ ἡ). Γαλλικὴ λέξις (bohême), σημαίνουσα ἀρχικῶς τὸν Βοημὸν (Bohémien) καὶ ἐντεῦθεν τὸν Ἀτσίγγανον, χρησιμοποιηθεῖσα δὲ συνεκδοχικῶς πρὸς χαρακτηρισμὸν τῆς πλάνητος τάξεως τῶν καλλιτεχνῶν, ποιητῶν ἢ ζωγράφων, τῶν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον καφενοβίων, μὲ πλατυγύρους πίλους, ἀκούρευτον κόμην καὶ εὐρείας περισκελίδος, μὴ φροντιζόντων διὰ τὴν αὔριον καὶ κυρίως ἐπιδεικνυόντων περιφρόνησιν πρὸς ὅ,τι ἀποτελεῖ τὴν φρονιμάδα καὶ τὴν νοικοκυρωσύνην τοῦ ἀστοῦ. Ὁ ἄφροντις βίος των πολλάκις ὑπέκρυπτε ραθυμίαν καὶ καλλιτεχνικὴν ἀσημότητα, ἂν καὶ ἔχομεν καὶ παραδείγματα διασήμων καλλιτεχνῶν, οἵτινες ἦγον κατ' ἐξοχὴν βοημικὸν βίον, ὡς π. χ. τὸν ποιητὴν Βερλαὶν καὶ ἄλλους. Ὁ πόλεμος ἤλλαξεν ἐκτὸς ἄλλων καὶ τὰ βοημικὰ ἤθη, ἅτινα γραφικώτατα περιέγραψεν ὁ Ε. Μυρζὲ εἰς τὸ μυθιστόρημα «Σκηναὶ τοῦ βοημικοῦ βίου» (1851). Μ. Β.

—**«Μποὲμ»** (Bohême). Μελόδραμα εἰς τέσσαρας πράξεις, ποίησις Τζιακόζα καὶ Ἴλλικα, μουσικὴ Τζιάκομο Πουτσίνι, ἀναβιβασθὲν τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ βασιλικοῦ θεάτρου τοῦ Τουρίνου τὴν 1 Φεβρουαρίου 1896. Ἡ ὑπόθεσις ἔχει ληφθῆ ἐκ τοῦ ἔργου «Σκηναὶ τοῦ βοημικοῦ βίου» τοῦ Ἑρρ. Μυρζὲ καὶ παριστᾷ τὴν παρ' ὅλην τὴν πενίαν ἀμέριμνον ζωὴν τοῦ ποιητοῦ Ροδόλφου, τοῦ μουσικοῦ Σωνάρ, τοῦ φιλοσόφου καὶ βιβλιοφίλου Κολλίνου καὶ τοῦ ζωγράφου Μαρκέλλου, εἰς τὴν πτωχικὴν σοφίτταν τοῦ ὁποίου λαμβάνει χώραν ἡ πρώτη πρᾶξις. Εἰς τὰ φαιδρὰ ἐπεισόδια τῶν τεσσάρων τούτων «μποὲμ» προστίθεται ὁ συγκινητικὸς ἔρως τῆς Μιμῆς πρὸς τὸν Ροδόλφον καὶ ὁ πλήρης ἀπροόπτων καὶ κωμικῶν σκηνῶν δεσμὸς τῆς Μουζέττας πρὸς τὸν Μάρκελλον. Τὸ ἔργον περατοῦται μὲ τὸ θλιβερὸν τέλος τῆς Μιμῆς, ἥτις χωρισθεῖσα προσκαίρως τοῦ Ροδόλφου, ἐπανέρχεται ἐξηντλημένη ὑπὸ τὴν στέγην τοῦ Μαρκέλλου, ἵνα ἀποθάνῃ φθισικὴ πλησίον τοῦ λατρευτοῦ της καὶ τῶν ἄλλων «μποέμ». Ἡ «Μποὲμ» εἶναι τὸ δημοφιλέστερον ἔργον τοῦ Πουτσίνι καὶ περιλαμβάνει ἀξιολόγους σκηνάς, ὡς τὰς ἀρχικὰς τῆς πρώτης πράξεως, κωμικοῦ χαρακτῆρος, τὴν ὁλότητα σχεδὸν τῆς δευτέρας πράξεως, γραφικῆς καὶ φαιδρᾶς, τὴν γλυκεῖαν μελαγχολίαν ὁλοκλήρου σχεδὸν τοῦ ρόλου τῆς Μιμῆς, τὴν τραγικότητα τοῦ τέλους κτλ. Ἐξαιρετικὴν θέσιν ἐν τῷ ἔργῳ ἔχει ἐπίσης ἡ ἄρια τοῦ ὀξυφώνου ἐκ τῆς πρώτης πράξεως καὶ τὸ κουαρτέττο ἐκ τῆς τρίτης πράξεως. Γ. Σ.

—**«Μποέμ»**, ἡ — (la Bohême). Λυρικὴ κωμῳδία εἰς τέσσαρας πράξεις, ποίησις καὶ μουσικὴ Ρουτζέρο Λεονκαβάλλο, ἀναβιβασθεῖσα τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου «Φενίτσε» τῆς Βενετίας τὴν 6 Μαΐου 1897. Ἡ ὑπόθεσις βασίζεται εἰς τὸ μυθιστόρημα τοῦ Μυρζέ. Ἡ «Μποὲμ» τοῦ Λεονκαβάλλο, ἂν καὶ ἐπισκιασθεῖσα ὑπὸ τῆς τοῦ Πουτσίνι, περιλαμβάνει ἀξιολόγους σελίδας, ὡς τὰ τραγούδια τῆς Μιμῆς καὶ τῆς Μυζέττας ἐν τῇ πρώτῃ πράξει, τὴν ρομάντσαν τοῦ Μαρκέλλου ἐν τῇ τρίτῃ, τὸ κουαρτέττο ἐν τῇ τετάρτῃ κτλ. Γ. Σ.

**Μποέμιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τῆς ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης κώμης *Ἀξιούπολις* (βλ.λ.).

**Μποέο** (Boeo capo) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Σικελίας, δυτικὴ τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιά, σχηματίζον ΝΑ. μικρὰν κόλπωσιν, ἐν ᾗ διεσκευάσθη ὁ τεχνητὸς τῆς Μαρσάλλας λιμὴν (πλάτ. 37° 47' Β., μῆκ. 12° 26' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 189: Trapani to Marsalla). Ἡ ὀνομασία του αὕτη ἐξετοπίσθη ἐν τῇ ἐπισήμῳ γεωγραφικῇ ὀνοματολογίᾳ τοῦ ἰταλικοῦ κράτους, ὑποκατασταθεῖσα διὰ τῆς *Κάπο Λιλιμπέο* (Capo Lilibeo), διασῳζούσης τὴν ἀρχαίαν τοῦ ἀκρωτηρίου ὀνομασίαν (*Πτολ*. Α. ιβ, 11) *Λιλύβαιον*. Σ. Ε. Λ.

**μπόερ** (boer καὶ boier καὶ boyer) *[Ναυτ.]*. Φορτηγὸν πλοῖον μικροῦ μεγέθους (20—25 μ. μήκους, 6 πλάτους, 2—2,50 βάθους καὶ βυθίσματος ἐλαχίστου), ὅπερ ἦτο μεγάλης χρήσεως εἰς τὰς ἀκτὰς τῆς Φλάνδρας καὶ διὰ τὴν μεταφορὰν ἐμπορευμάτων ἐν τοῖς ποταμοῖς καὶ εἰς τὰς ὁλλανδικὰς διώρυγας. Ὂν ὑπόπλατυ καὶ ἑπομένως κακόπλουν, δὲν ἀπετόλμα πλοῦς πελαγίους. Εἶχε πρόβολον, ἕνα ἱστὸν ὄρθιον πρὸ τοῦ κέντρου του φέροντα ἡμιόλιον, κατὰ δὲ τὴν πρύμνην του λοιπάδιόν τι, ὡς παρ' ἡμῖν ὁ μαρτῆγος. Τὸ ἐνδιαίτημα τοῦ κυβερνήτου του ἦτο ἐπίστεγόν τι πρὸς πρύμναν. τὸ δὲ τοῦ πληρώματος ὑπὸ τὸ πρόστεγον. Τὰ τοιαῦτα σκάφη, πολυάριθμα κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, εἶναι τανῦν σπανιώτατα. Σ. Ε. Λ.

**Μπόερ** (Boer καὶ Boogers), ***Λουκᾶς-Ἰωάννης***. Διάσημος Γερμανὸς μαιευτὴρ (1751—1835). Ἐσπούδασεν ἐν Βιέννῃ, Γαλλίᾳ, Ἀγγλίᾳ καὶ Ἰταλίᾳ. Τῷ 1808 ἐγένετο τακτικὸς καθηγητὴς μαιευτικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης. Ἐκ τῶν πλέον ἰδιοφυῶν μαιευτήρων τῆς ἐποχῆς του, συνέγραψε τὸ ἑπτάτομον ἔργον «Sieben Bücher über natürliche Geburtshilfe» (1834), «Περὶ μηχανισμοῦ τῶν τοκετῶν» (1838) κ. ἄ. Ο. Ρ.

**Μποερέσκο** (Boeresco). —1) ***Βασίλειος***. Ρουμᾶνος νομικὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1830. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις νομικὰ καὶ κατόπιν ἐδημοσίευσε τὰς μελέτας: «Ἡ Ρουμανία μετὰ τὴν παρισινὴν συνθήκην τῆς 30 Μαρτίου 1856» καὶ «Συγκριτικὴ πραγματεία τῶν πλημμελημάτων καὶ ποινῶν ὑπὸ φιλοσοφικὴν καὶ δικαστικὴν ἔποψιν». Ἐπιστρέψας εἰς Ρουμανίαν ἐξέδωκε τὴν ἐφημερίδα «Ἐθνική», διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου Βουκουρεστίου καὶ ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας Γκίκα ἐπέτυχε τὴν ἀντικατάστασιν τῶν σλαβονικῶν χαρακτήρων διὰ τῶν λατινικῶν εἰς τὰ κυβερνητικὰ ἔγγραφα. Ἐδημοσίευσεν «Ἑρμηνείαν τοῦ ἐμπορικοῦ κώδικος τῆς Βλαχίας» καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Τῷ 1859 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ συνειργάσθη μὲ τὸν ἡγεμόνα Κούζαν διὰ τὴν ἕνωσιν τῶν δύο ἡγεμονιῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1860 πολλάκις ἀνέλαβε τὸ ὑπουργεῖον τῆς Δικαιοσύνης. Ἐκ τῶν ἄλλων ἔργων του ἀξιόλογα εἶναι: «Ἐξέτασις τῆς συμβάσεως τῆς 19 Αὐγούστου περὶ ὀργανισμοῦ τῶν παραδουναβίων ἡγεμονιῶν» (1848) καὶ «Ὑπόμνημα περὶ τῆς προξενικῆς δικαιοδοσίας ἐν Ρουμανίᾳ» (1865).

2)— ***Κωνσταντῖνος***. Ρουμᾶνος νομικός, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐδημοσίευσεν: «Αἱ ἡγεμονίαι ἐνώπιον τῆς β' παρισινῆς συνόδου» (1858) καὶ «Περὶ βελτιώσεως τῆς καταστάσεως τῶν χωρικῶν ἐν Ρουμανίᾳ» (1861). Γ. Λ. Α.

**Μπόερς** (οἱ). Ἐπικρατήσασα ἑλληνικὴ ἀπόδοσις τῆς ὁλλανδικῆς λέξεως Boers (προφ. *Μποῦρς*), ἡ ὁποία σημαίνει «χωρικοί» (ἀγγλ. boors, γερμ. Bauern). Τὸ ὄνομα τοῦτο εἶχε δοθῆ εἰς τοὺς Ὁλλανδοὺς τοὺς ἀποικισθέντας τῷ 1652 ἐν τῷ ἀκρωτηρίῳ τῆς Καλῆς Ἐλπίδος ὑπὸ τῆς «Ὁλλανδικῆς Ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν», μετὰ τῶν ὁποίων ἀνεμίχθησαν ἀκολούθως Γερμανοί, Φλαμανδοί, ὀλίγοι Πολωνοὶ καὶ Πορτογάλοι. Εἰς τοὺς πρώτους τούτους ἀποίκους προσετέθησαν κατὰ τὸ ἔτος 1686 διακόσιοι πρόσφυγες Γάλλοι οὐγενότοι, οἵτινες ἀνεχώρησαν ἐκ Γαλλίας μετὰ τὴν ἀνάκλησιν τοῦ ἐδίκτου τῆς Νάντης. Οἱ Γάλλοι ἄποικοι συνεχωνεύθησαν καὶ οὗτοι μετὰ τῶν ἄλλων, ἀπὸ δὲ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος,—κατόπιν τοῦ μέτρου τῆς διοικούσης τὴν μικρὰν ἀποικίαν ὁλλανδικῆς ἑταιρείας, ὅπως εἰς τὰ σχολεῖα διδάσκεται μόνον ἡ ὁλλανδική— ἔπαυσαν ὁμιλοῦντες τὴν ἀρχικὴν μητρικήν των γλῶσσαν. Οἱ Μπόερς ἤρχισαν ὀλίγον κατ' ὀλίγον νὰ ἐπεκτείνωσι τὰ ὅρια τῆν ἀποικίας, ἀφαιροῦντες τὸ μὲν διὰ συμφωνιῶν, τὸ δὲ διὰ τῆς βίας, ἐδάφη παρὰ τῶν ἰθαγενῶν. Περὶ τὸ ἔτος 1740 ἤρχισαν νὰ διαβαίνωσι τὸν ποταμὸν Γκοῦντι καὶ τότε ἦλθον εἰς σύρραξιν πρὸς τοὺς Καφίρους.



Digitized by Google

Τῷ 1780 τὰ ὅρια τῆς ἀποικίας ἐξετείνοντο μέχρι τοῦ Μεγάλου Ἰχθυοποτάμου.

Μέχρι τοῦ ἔτους 1770 οἱ Μπόερς διῳκοῦντο ὑπὸ τῶν διοικητῶν καὶ ὑπαλλήλων τοὺς ὁποίους ἀπέστελλεν ἡ ὁλλανδικὴ ἑταιρεία, καὶ ὑπὸ κοινοτικοῦ συμβουλίου, ἀλλὰ κατὰ τὸ ἔτος 1795 καλλιεργηταὶ τῶν ἀνατολικῶν διαμερισμάτων ἐξεδίωξαν τοὺς ὑπαλλήλους τῆς ἑταιρείας καὶ ἀνεκήρυξαν δημοκρατίαν. Τὸν Σεπτέμβριον τοῦ αὐτοῦ

*Μπόερς πολεμισταί.*

ἔτους ἡ Ἀγγλία κατέλαβε τὸ ἀκρωτήριον τῆς Καλῆς Ἐλπίδος καὶ οἱ Μπόερς διῳκήθησαν ἔκτοτε ἐπί τινα ἔτη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων στρατηγῶν καὶ ὑπαλλήλων τῆς κατοχῆς. Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ «Ὀλλανδικὴ Ἑταιρεία τῶν Ἰνδιῶν» ἔπαυσεν ὑφισταμένη, τὰ δὲ δικαιώματα καὶ αἱ ὑποχρεώσεις αὐτῆς μετεβιβάσθησαν εἰς τὴν ὁλλανδικὴν κυβέρνησιν. Τῷ 1803 ἀπεσύρθησαν τῆς ἀποικίας οἱ Ἄγγλοι, ἀλλὰ μετὰ τρία ἔτη (1806) ἀπέστειλαν νέα στρατεύματα διὰ ν' ἀφαιρέσωσιν αὐτὴν ἀπὸ τῶν Ὁλλανδῶν, συμμάχων τότε τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος. Ἐν τέλει δέ, διὰ τῆς εἰρήνης τοῦ 1814, οἱ Ἄγγλοι κατέλαβον ὁριστικῶς τὸ ἀκρωτήριον τῆς Καλῆς Ἐλπίδος καὶ τὰς ὁλλανδικὰς ἐπαρχίας τῆς Γουϊάνης.

Κατὰ τὸ 1824 πολλοὶ Μπόερς ποιμένες, ἀναζητοῦντες βοσκὰς διὰ τὰ κτήνη των, διέβησαν τὸν ποταμὸν Ὀράγγην. Τούτους ἐμιμήθησαν κατὰ τὰ ἔτη 1835—1836 καὶ ἄλλοι Μπόερς, οἵτινες ὑπὸ διαφόρους ἀρχηγοὺς (ὧν ὀνομαστότεροι οἱ Τρίτσαρτ, Πραιτώριος, Πότγκιτερ, Οὐΰς καὶ Πίετ Ρέτιεφ), φεύγοντες τὴν μισητὴν εἰς αὐτοὺς ἀγγλικὴν διοίκησιν, ἐτράπησαν πρὸς βορρᾶν καὶ διασπαρέντες κατὰ μικρὰ τμήματα ἐγκατεστάθησαν εἰς διαφόρους θέσεις. Τινὲς ἐξ αὐτῶν παρέμειναν εἰς τὰς πεδιάδας τῆς Ὀράγγης, οἱ δὲ λοιποί, διαβάντες τὸν ποταμὸν Βαάλ, ἐτράπησαν ἄλλοι πρὸς τὰς πεδινὰς δυτικὰς ἐπαρχίας, ἄλλοι πρὸς τὰ ὄρη Ζουπὰνς (εἰς τὰ Β. τοῦ Τράνσβααλ), τινὲς δὲ διαβάντες τὸ ὄρος τῶν Δράκων εἰσῆλθον εἰς τὴν Νατάλην. Οἱ Μπόερς οὗτοι ὑπῆρξαν οἱ πρῶτοι ἱδρυταὶ τῶν νεωτέρων κρατιδίων τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς, Ὀράγγης, Νατάλης καὶ Τράνσβααλ. Ὡς ἦτο φυσικόν, εἰς τὰς νέας ἐγκαταστάσεις των οἱ Μπόερς ἤρχοντο συχνὰ εἰς συγκρούσεις πρὸς τὰς ἰθαγενεῖς φυλάς, οἱ δὲ Ἄγγλοι ἐπενέβαινον ἑκάστοτε, ὑποστηρίζοντες ἄλλοτε τοὺς Μπόερς καὶ ἄλλοτε τοὺς ἰθαγενεῖς, ἀναλόγως τῶν περιστάσεων. Τῷ 1842 οἱ Ἄγγλοι, διὰ νὰ ἐξασφαλίσωσι τὴν κατοχὴν τοῦ λιμένος Ντώρμπαν (Durban), προσήρτησαν τὴν Νατάλην. Τῷ 1852 ἀνεγνώρισαν τὴν ἀνεξαρτησίαν τῆς δημοκρατίας τοῦ Τράνσβααλ (τῆς πέραν τοῦ ποταμοῦ Βαὰλ χώρας) καὶ τῷ 1854 τὸ ἐλεύθερον κράτος τῆς Ὀράγγης· κατόπιν ὅμως τῆς ἀνακαλύψεως τῶν ἀδαμαντωρυχείων τῆς Δ. Γλικαλλάνδης, ἡ Ἀγγλία διεξεδίκησε τὴν κυριαρχίαν ἐπὶ τοῦ κράτους τούτου καὶ τῷ 1876 κατέλαβεν αὐτὸ ἀντὶ ἀποζημιώσεως 2.250.000. φρ.

Ἀφ' ἑτέρου οἱ Μπόερς τοῦ Τράνσβααλ ἤρχισαν ἐπεκτείνοντες τὰ—ἀκαθόριστα ἄλλως τε—ὅρια τοῦ κράτους των πρὸς δυσμάς, ἤτοι πρὸς τὴν χώραν τῶν Βεσουανῶν. Ἐντεῦθεν προῆλθον οἱ μακροὶ μετὰ τῆς φυλῆς ταύτης ἀγῶνές των, οἵτινες διήρκεσαν ἐπὶ 30 ἔτη. Τῷ 1877 Ἄγγλος ἁρμοστὴς σταλεὶς εἰς Πραιτωρίαν (πρωτεύουσαν τοῦ Τράνσβααλ) ἐκήρυξε τὴν χώραν ἀγγλικὴν κτῆσιν. Ἐπηκολούθησαν διαπραγματεύσεις, μεταβάντος πρὸς τοῦτο τοῦ προέδρου τοῦ Τράνσβααλ Κροῦγερ εἰς Λονδῖνον. Αἱ συνεννοήσεις ἐκεῖναι ἀπέτυχον καὶ ἐπηκολούθησε πόλεμος (1880—1881), μεθ' ὃν ἀνεγνωρίσθη πάλιν τὸ Τράνσβααλ ὡς ἀνεξάρτητον κράτος, διετήρησε δὲ μόνον ἡ Ἀγγλία τὸ δικαίωμα νὰ διευθύνῃ τὴν ἐξωτερικὴν αὐτοῦ πολιτικήν. Τῷ 1882 οἱ Μπόερς ἵδρυσαν ἐντὸς τῆς ἀγγλικῆς Βεσουανικῆς χώρας τὴν δημοκρατίαν τῆς χώρας τοῦ Ἀστέρος (Stella Land) μὲ πρωτεύουσαν τὸ Φράϋμπουργκ καὶ τὴν βορειότερον ταύτης δημοκρατίαν τοῦ Γκόσεν. Διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Λονδίνου τοῦ 1884 παραχωρήθη εἰς αὐτοὺς μέρος τῆς ἀνατολικῆς Βεσουανικῆς χώρας, συνεφωνήθη ὅμως ὅτι πέραν τῶν παραχωρήσεων τούτων οὐδεμίαν ἀξίωσιν θὰ εἶχον ἐφεξῆς οἱ Μπόερς. Ἡ παραβίασις τῆς συνθήκης ταύτης θεωρεῖται ὡς ἡ προσχηματικὴ αἰτία, ἥτις προὐκάλεσε τὸν μεταξὺ Μπόερς καὶ Ἀγγλίας πόλεμον τοῦ 1899—1902 (βλ. κατωτ. *[Στρατ. Ἱστορ.]*). Κατ' οὐσίαν ὅμως ὁ πόλεμος προεκλήθη κατόπιν ἀποτυχόντος πραξικοπήματος (1895) τοῦ Ἄγγλου πρωθυπουργοῦ τοῦ Ἀκρωτηρίου ὅπως καταλάβῃ τὸ Τράνσβααλ, ὁπότε οἱ Μπόερς, βλέποντες ὅτι ἡ Ἀγγλία ἔτρεφε κατακτητικοὺς ἐναντίον αὐτῶν σκοποὺς καὶ ὅτι προσεπάθει νὰ τοὺς ἀπομονώσῃ καταλαμβάνουσα τὰς πέριξ χώρας, συνεμάχησαν μετὰ τῆς Ὀράγγης καὶ ἐκήρυξαν αὐτοὶ πρῶτοι τὸν πόλεμον ἐναντίον της. Γ. Ι. Β.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Ὅταν ἐξερράγη ὁ ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ 1902 διαρκέσας πόλεμος τῶν Μπόερς ἐναντίον τῶν Ἄγγλων (ὁ φερόμενος ὑπὸ τὰς ὀνομασίας «Πόλεμος τοῦ Τράνσβααλ», «Νοτιοαφρικανικὸς πόλεμος», καί, συνηθέστερον, «Πόλεμος τῶν Μπόερς»), οὔτε οἱ Μπόερς οὔτε οἱ Ἄγγλοι ἦσαν παρεσκευασμένοι καταλλήλως δι' αὐτόν. Οἱ μὲν πρῶτοι δὲν εἶχον εἰμὴ μόνον πολιτοφυλακήν τινα (Burghers), περὶ τὰ 40 ταχυβόλα πυροβόλα, 4 πυροβόλα μακρὰ καὶ 30 πολυβόλα, ἐστηρίζοντο δὲ κυρίως ἐπὶ τῆς ἀτομικῆς των ἐξασκήσεως καὶ σκληραγωγίας, καὶ ἰδίως ἐπὶ τοῦ ἰδικοῦ των τρόπου τοῦ μάχεσθαι, συνισταμένου εἰς βολὴν καὶ εἰς ἐνέδρας, οὐχὶ δ' εἰς τὸν ἐκ τοῦ συστάδην ἀγῶνα (τὸ τυφέκιόν των μάλιστα ἐστερεῖτο ξιφολόγχης). Οἱ Ἄγγλοι δ' ἀφ' ἑτέρου διέθετον ἐν Ἀκρωτηρίῳ ἐθελοντικὸν μόνον στρατόν, τοῦ ὁποίου τὰ διάφορα ὅπλα (πεζικόν, πυροβολικόν, ἱππικὸν κλπ.) δὲν εἶχον οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον μεταξύ των σύνδεσμον. Ὁπωσδήποτε, μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Μπόερς ἐπίδοσιν πρὸς τὴν Ἀγγλίαν τοῦ τελεσιγράφου τῆς 3ης Ὀκτωβρίου 1899, ἐπεστράτευσαν ἀμέσως οἱ μὲν Μπόερς (δημοκρατίαι Τράνσβααλ καὶ Ὀράγγης) περὶ τοὺς 30.000 ἄνδρας ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ζουμπέρ, οἱ δ' Ἄγγλοι περὶ τὰς 55.000 ἄνδρας καὶ 112 πυροβόλα, συγκροτήσαντες τὸ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μπύλλερ ἐκστρατευτικὸν σῶμα (ἓν σῶμα στρατοῦ καὶ μίαν μεραρχίαν ἱππικοῦ), ὅπερ μεταφερθὲν θαλασσίως εἰς τὴν Νότιον Ἀφρικὴν κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 10—30 Νοεμβρίου 1899, συναπετέλεσε μετὰ τῶν ἐπιτοπίων ἀγγλικῶν δυνάμεων δύναμιν 100.000 περίπου ἀνδρῶν.

Τὸ στρατηγικὸν σχέδιον τῶν Μπόερς ἀπέβλεπεν εἰς τὴν ἐν ἀρχῇ ἐσπευσμένην ἐξουδετέρωσιν τῶν ἐπιτοπίων ἀγγλικῶν δυνάμεων, πρὸ τῆς ἀποβάσεως τοῦ ἀγγλικοῦ ἐκστρατευτικοῦ σώματος. Οἱ δὲ Ἄγγλοι, ἀφ' ἑτέρου, ἀπέβλεπον ὅπως, μετὰ τὴν ἀπόβασίν των εἰς Κεϊπτάουν καὶ τὴν αὐτόθι ἐγκατάστασιν βάσεως, προχωρήσουν πρὸς βορρᾶν, χρησιμοποιοῦντες κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις των τὰς δύο σιδηροδρομικὰς γραμμὰς Κεϊπτάουν—Κιμπερλέϋ, καὶ Ἠστ Λόντον—Μπλεμφοντέϊν, καθ' ὃν χρόνον εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Νατάλης δὲν θὰ ἐξετελοῦντο εἰμὴ μόνον ἐπιδεικτικαί τινες ἐπιχειρήσεις πρὸς προσέλκυσιν μποερικῶν δυνάμεων πρὸς τὴν κατεύθυνσιν ταύτην, δηλαδὴ πρὸς ἀνατολάς. Μέχρις οὗ ὅμως φθάσῃ τὸ ἐκστρατευτικὸν σῶμα, ἐπεζήτησαν οἱ Ἄγγλοι νὰ σχηματίσωσι διὰ τῶν ἐπιτοπίων δυνάμεων προκαλυπτικὰ ἀποσπάσματα, δυνάμενα νὰ συγκρατήσωσι τοὺς Μπόερς. Κατὰ τὴν 10ην Ὀκτωβρίου 1899 (ἡμέραν ἐκπνοῆς τοῦ πρὸς τὴν Ἀγγλίαν τελεσιγράφου τῶν Μπόερς), ἡ ἑκατέρωθεν συγκέντρωσις εἶχεν ὡς ἐν τῷ κατωτέρω σχήματι ἐμφαίνεται.

***Ἐπιχειρήσεις.*** Ὁ πόλεμος τῶν Μπόερς χωρίζεται εἰς τέσσαρας περιόδους: α′) Ἐπίθεσις τῶν Μπόερς. β′) Ἀγγλικὴ ἐπίθεσις τοῦ στρατηγοῦ Μπύλλερ. γ′) Ἀγγλικὴ ἐπίθεσις τοῦ στρατηγοῦ Ρόμπερτς. δ′) Ἄτακτος πόλεμος.

***Α′)*** Τὴν 11ην Ὀκτωβρίου 1899 οἱ Μπόερς ἀνέλαβον γενικὴν ἐπίθεσιν καθ' ὅλων τῶν μετώπων. Πρὸς τὸ ἀνατολικὸν (τῆς Νατάλης) κατώρθωσαν, ὑπὸ τὸν Ζουμπέρ, νὰ κυκλώσωσι τὸ ἀγγλικὸν στράτευμα τοῦ στρατηγοῦ Οὐάϊτ, τὸ ὁποῖον εἶχε προχωρήσει πρὸς κατάληψιν τῆς Λαίδυσμιθ, οὔσης κόμβου συγκοινωνιῶν, καὶ νὰ τὸ ἐξαναγκάσωσι νὰ ἐγκλεισθῇ τὴν 1ην Νοεμβρίου 1899 ἐντὸς τῆς πόλεως ταύτης, ἣν ἀμέσως ἐπολιόρκησαν, χωρὶς ὅμως νὰ λάβωσι καὶ γενικώτερα μέτρα, ὡς π. χ. τῆς καταστροφῆς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, δι' ἧς ἠδύναντο νὰ μεταφέρωνται ἀγγλικαὶ ἐνισχύσεις, ἐνοχλοῦσαι τοὺς πολιορκοῦντας τὴν Λαίδυσμιθ Μπόερς. Πρὸς τὸ δυτικὸν (Μπεχουαναλάντ), οἱ ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Κρόνζε Μπόερς ἐκύκλωσαν τὴν Κιμπερλέϋ, ἀλλὰ χωρὶς νὰ λάβωσιν ἐπίσης γενικώτερα μέτρα. Πρὸς τὸ νότιον (Ἀκρωτήριον) οἱ Μπόερς δὲν ἀπεπειράθησαν τὴν προσπέρασιν ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ὀράγγη, εἰμὴ μόνον ἅμα ἐπληροφορήθησαν περὶ τῆς ἐπιτυχίας τῶν εἰς Λαίδυσμιθ ἐπιχειρήσεών των, ὁπότε προὐχώρησαν, ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ὀλιβιέ, ἀλλὰ τόσον χλιαρῶς, ὥστε οὐδὲν ἀξιοσημείωτον κατώρθωσαν, μολονότι ἦτο τότε εὐκαιρία ν' ἀπωθηθῇ τὸ ἀγγλικὸν στράτευμα τοῦ στρατηγοῦ Οὐῶλκερ πρὸς τὴν θάλασσαν.

***Β′)*** Τὴν 31ην Ὀκτωβρίου 1899 ἀπεβιβάσθη ὁ Ἄγγλος στρατηγὸς Μπύλλερ εἰς Κεϊπτάουν, ἀλλὰ δὲν ἐφήρμοσε τὸ βασικὸν σχέδιον, περὶ οὗ ἀνωτέρω ἐγένετο λόγος, καθ' ὅσον, ὑπείκων εἰς τὴν πίεσιν τῆς κοινῆς ἐν Ἀγγλίᾳ γνώμης, ἐπεζήτησε ν' ἀντιμετωπίσῃ συγχρόνως ἅπαντα τ' ἀπειληθέντα ὑπὸ τῶν Μπόερς μέτωπα καὶ ν' ἀπελευθερώσῃ τὰς πολιορκηθείσας πόλεις· δι' ὃ ἀπέστειλε τότε τὴν μεραρχίαν τοῦ στρατηγοῦ Κλέρυ (4 ταξιαρχίαι) πρὸς Λαίδυσμιθ, τὴν μεραρχίαν τοῦ Μέθουεν (3 ταξιαρχίαι) πρὸς Κιμπερλέϋ, τὴν ταξιαρχίαν τοῦ στρατηγοῦ Γκαιτάκρ πρὸς Μολτένο, τὴν δὲ μεραρχίαν ἱππικοῦ τοῦ στρατηγοῦ Φρὲντς μεταξὺ τῆς μεραρχίας Μέθουεν καὶ τῆς ταξιαρχίας Γκαιτάκρ, δηλαδὴ πρὸς Κολεσμπέργκ, ἁπάσας δὲ τὰς μονάδας ταύτας μὲ γραμμὰς ἐπιχειρήσεων πάντως παρὰ τὰς σιδηροδρομικὰς γραμμάς. Ὡς ἦτο φυσικόν, ἡ πρὸς ἁπάσας τὰς κατευθύνσεις ἐξακόντισις τῶν ἀγγλικῶν στρατευμάτων ἐπέφερε τελείαν διασπορὰν αὐτῶν ἐντὸς τοῦ ἀχανοῦς τούτου ἐδάφους (πλάτους 700 χιλιομέτρων ἀπὸ ἀνατολῶν πρὸς δυσμάς), ἐπενεγκοῦσαν πλήρη τὴν ἀποτυχίαν τῶν Ἄγγλων. Οὕτω, ἡ μὲν μεραρχία

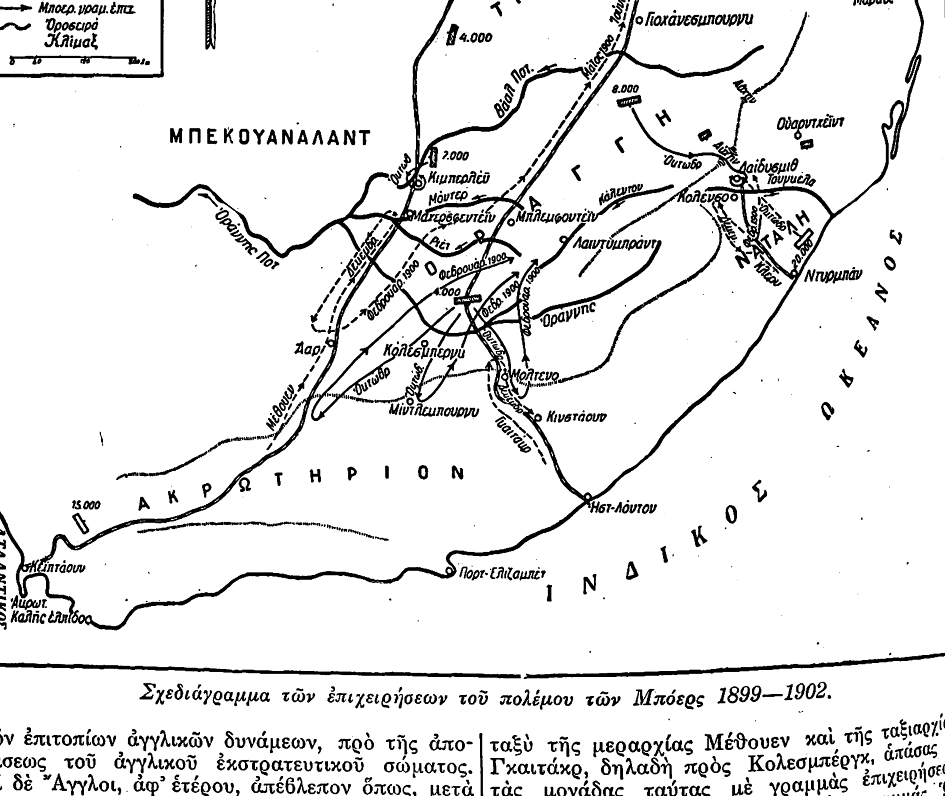


*Σχεδιάγραμμα τῶν ἐπιχειρήσεων τοῦ πολέμου τῶν Μπόερς 1899—1902.*

Digitized by Google

τοῦ Μέθουεν, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν της ἐν τῇ μάχῃ τῆς *Μαχερσφοντέϊν* (βλ. λ.) τῆς 9ης—12ης Δεκεμβρίου, ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς νότον, παραιτηθεῖσα τῶν περαιτέρω πρὸς Κιμπερλέϋ ἐπιχειρήσεων· ἡ ταξιαρχία τοῦ Γκαιτάκρ, συναντήσασα ἀντίστασιν τὴν 10ην Δεκεμβρίου ἐπὶ τῆς ὀροσειρᾶς βορείως τοῦ Μολτένο, διελύθη σχεδὸν εἰπεῖν ἐξ ὁλοκλήρου καὶ μόλις ἠδυνήθη νὰ συγκεντρωθῇ εἰς Κινστάουν· ἡ δὲ μεραρχία Κλέρυ, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν της εἰς *Κολένσο* (βλ. λ.), τὴν 15ην Δεκεμβρίου, παρῃτήθη τῶν περαιτέρω πρὸς Λαίδυσμιθ ἐπιχειρήσεων.

Μετὰ τὴν σειρὰν τῶν ἀγγλικῶν τούτων ἀποτυχιῶν ἀπεστάλη εἰς Ἀκρωτήριον ὁ στρατηγὸς Ρόμπερτς μὲ ἐπιτελάρχην τὸν στρατηγὸν Κίτσενερ, συγχρόνως δ' ἐνισχύθη ὁ ἀγγλικὸς στρατὸς διὰ μιᾶς ἔτι μεραρχίας. Ἀλλὰ καὶ ὁ Ρόμπερτς δὲν ἠδυνήθη ν' ἀποτινάξῃ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀγγλικῆς κοινῆς γνώμης, καὶ δι' αὐτὸ ἐπέμεινεν εἰς τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς Λαίδυσμιθ· τὸ τοιοῦτον ὅμως κατέστη ἀδύνατον, διότι, καθ' ὅλον τὸ χρονικὸν διάστημα 20 Ἰανουαρίου ἕως 7 Φεβρουαρίου 1900 οἱ Ἄγγλοι περιέπιπτον ἀπὸ ἀποτυχίας εἰς ἀποτυχίαν, καθ' ὅσον ἡ πρὸς στιγμὴν νίκη των εἰς Σπαϊονκὸπ (δυτικῶς τῆς Λαίδυσμιθ) ἦτο ἐντελῶς παροδική, ἅτε τοῦ στρατηγοῦ Μπόθα ἀπωθήσαντος ἀμέσως τοὺς Ἄγγλους δι' ἐπιτυχοῦς ἀντεπιθέσεως.

*Γ')* Ὁ Ρόμπερτς καὶ ὁ Κίτσενερ, ἀντιληφθέντες ὅτι αἱ κατὰ μέτωπον ἐπιθέσεις ἐναντίον ἐχθροῦ ἐγκατεστημένου ἐπὶ ἀμυντικῶν θέσεων θ' ἀπετύγχανον πάντοτε, διότι τὰ ἀγγλικὰ στρατεύματα δὲν ἦσαν οὔτε ἐπαρκῶς ἐκπεπαιδευμένα, οὔτε καταλλήλως ἐξωπλισμένα, ἀπεφάσισαν ἐν τέλει, ἐνισχυθέντες μάλιστα ἐν τῷ μεταξὺ τούτῳ καὶ δι' ἑτέρων μεραρχιῶν, ν' ἀναλάβωσιν ἐπιχειρήσεις εὐρυτέρου ἑλιγμοῦ, ἀπομακρυνόμενοι τῶν σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καὶ ἐπιζητοῦντες παράκαμψιν καὶ ὑπερκέρασιν τῶν θέσεων τῶν Μπόερς. Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν σκέψεων αὐτῶν ἀνέλαβον, τὰς ἀρχὰς Φεβρουαρίου 1900, νὰ ὑπερκεράσωσι τὴν Κιμπερλέϋ ἀπὸ τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ της, ἀποκόπτοντες τοιουτοτρόπως ταύτην ἀπὸ τῆς Μπλεμφοντέϊν (πρωτευούσης τῆς Ὀράγγης), καθ' ὃν χρόνον διὰ τοῦ ἱππικοῦ θὰ προσέβαλλον κατὰ νῶτα τοὺς πολιορκοῦντας τὴν Κιμπερλέϋ Μπόερς. Ἡ ἐπιχείρησις αὕτη ἐπέτυχε πλήρως καὶ τὴν 15 Φεβρουαρίου ἡ Κιμπερλέϋ ἀπηλευθερώθη. Οἱ ὑπὸ τὸν Κρόνζε Μπόερς, οἵτινες ἀνέμενον τὴν ἐπίθεσιν διὰ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς πάντοτε, ἐπεζήτησαν τότε νὰ ὑποχωρήσωσι πρὸς Μπλεμφοντέϊν, ἀλλ' εὗρον τὴν πρὸς ταύτην ὁδὸν ἀποκεκλεισμένην, μέχρις οὗ, κυκλωθέντες παρὰ τὴν ἐπὶ τοῦ Μόντερ γέφυραν τοῦ Παααρντμπέργκ (Paardeberg) καὶ ἀντιτάξαντες ἡρωϊκὴν ἄμυναν κατὰ τὰς 18—27 Φεβρουαρίου, ἠναγκάσθησαν ἐν τέλει νὰ παραδοθῶσι. Τὴν 13ην Μαρτίου οἱ Ἄγγλοι κατέλαβον τὴν Μπλεμφοντέϊν. Ἡ ἀπελευθέρωσις τῆς Κιμπερλέϋ ἐπέφερε γενικὴν ἠθικὴν κατάπτωσιν ἐπὶ τῶν Μπόερς, ἧς ἄμεσος συνέπεια ἦτο ἡ ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Μπόθα (διαδεχθέντος τὸν Ζουμπὲρ) ἄρσις τῆς πολιορκίας τῆς Λαίδυσμιθ τὴν 28ην Φεβρουαρίου 1900. Ὁμοίως οἱ πρὸς νότον τοῦ Ὀράγγη ὑπὸ τὸν Ὀλιβιὲ Μπόερς ὑπεχώρησαν κατὰ τὸ τέλος Φεβρουαρίου 1900 ἐπὶ τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ ὄχθης καὶ συνεκεντρώθησαν εἰς Λαίντυμπραντ.

*Δ')* Οἱ Μπόερς, μετὰ τὰς ἀποτυχίας ταύτας, ἀπεφάσισαν ν' ἀλλάξωσι σχέδιον καί, ἀντὶ παθητικῆς ἀμύνης, νὰ δράσωσι κατὰ τρόπον ἐνεργητικώτερον. Πρὸς τοῦτο συνεκέντρωσαν τμῆμα τοῦ στρατοῦ των ὑπὸ τὸν Μπόθα βορείως τῆς Μπλεμφοντέϊν, διὰ δὲ τοῦ μείζονος μέρους ἤρχισαν ἀναλαμβάνοντες σειρὰν ἐπιδρομῶν (coups de main) κατὰ τῶν γραμμῶν συγκοινωνιῶν τῶν Ἄγγλων, ἔσχον δὲ τότε ἀρκετὰς ἐπιτυχίας, συλλαβόντες πολλάκις ἀγγλικὰς ἐφοδιοπομπὰς καὶ αἰχμαλωτίσαντες ἀγγλικά τινα ἀποσπάσματα. Τὰ τέλη Ἀπριλίου 1900 ἀπεφάσισεν ὁ Ρόμπερτς νὰ προελάσῃ πρὸς κατάληψιν τῆς Πραιτωρίας (πρωτευούσης τοῦ Τράνσβααλ), τὴν δὲ 1ην Μαΐου ἤρξατο τῆς ἐπιχειρήσεως, ἐπέτυχε δὲ νὰ καταλάβῃ τὴν μὲν 31ην Μαΐου τὴν Γιοχάνεσμπουργκ, τὴν δὲ 5ην Ἰουνίου τὴν Πραιτωρίαν. Ἀλλ' ἡ κατάληψις τῆς πρωτευούσης τοῦ Τράνσβααλ δὲν ἐπέφερε τὰ προσδοκώμενα ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ἀποτελέσματα, καθ' ὅσον οἱ Μπόερς ἐξηκολούθησαν τὸν ἄτακτον πόλεμον ἐπ' ἀρκετὸν ἀκόμη χρόνον παρενοχλοῦντες τοὺς Ἄγγλους, ἀλλὰ καὶ οἱ ἴδιοι ἀποδεκατιζόμενοι καὶ ὑφιστάμενοι παντοειδεῖς στερήσεις, μέχρις οὗ, τὸν Μάϊον τοῦ 1902, ἀπεδέχθησαν τοὺς ὑπὸ τῶν Ἄγγλων προταθέντας ὅρους, καὶ τοιουτοτρόπως ἔληξεν ὁ πόλεμος ἐκεῖνος, καθ' ὃν ἐπὶ $2^1/_2$ καὶ πλέον ἔτη ἀντέστησαν σθεναρῶς οἱ Μπόερς κατὰ τῶν Ἄγγλων.

Ἐκ τοῦ πολέμου ἐκείνου εἶχε προκύψει ὡς συμπέρασμα τὸ ἀπαραβίαστον τοῦ μετώπου, τὸ θεσπισθὲν σχεδὸν ὡς δόγμα μέχρι τοῦ 1905, ὁπότε ὁ ἐπακολουθήσας Ρωσσοϊαπωνικὸς πόλεμος (1904—1905) κατέρριψε παταγωδῶς τοῦτο, καταδειχθέντος ὅτι τὸ συμπέρασμα τοῦ πολέμου τῶν Μπόερς ἦτο πεπλανημένον, ἅτε προκύψαν ἐκ κακῆς ἐφαρμογῆς τῶν στοιχειωδῶν κανόνων τῆς τακτικῆς, λόγῳ δηλαδὴ τῆς μὴ χρησιμοποιήσεως τῆς προπαρασκευῆς τοῦ πυροβολικοῦ καὶ τῆς πλήρους ἀνυπαρξίας συνδέσμου μεταξὺ πεζικοῦ καὶ πυροβολικοῦ.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μποέρχαβε** (Boerhave), ***Ἕρμαν.*** Ὁλλανδὸς ἰατρὸς καὶ χημικὸς (βλ. λ. *Μπούρχαβε* Ἕρμαν).

**Μποεσὶ** (La Boétie), ***Στέφανος ντὲ λὰ —.*** Γάλλος συγγραφεὺς (βλ. λ. *Λὰ-Μποεσὶ* Στέφανος).

**Μποέττι** (Boetti) ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς τυχοδιώκτης (1743—1798). Ἀφοῦ ἔζησε τὴν πρώτην νεότητά του ἐν μέσῳ διασκεδάσεων καὶ τερπνῶν ἐπεισοδίων, ἠσπάσθη τὸ μοναχικὸν σχῆμα καὶ προσελήφθη εἰς τὸ μοναστήριον τῶν δομινικανῶν τῆς Ραβέννης. Μετὰ μικρὸν ἐστάλη ὡς ἱεραπόστολος εἰς τὴν Ἀνατολήν, ἀλλ' ἐλθὼν εἰς σύγκρουσιν πρὸς τὸν ἐπίσκοπον, λόγῳ τοῦ ἀτιθάσου χαρακτῆρος του, ἀφωρίσθη ὑπ' αὐτοῦ. Ἀποβαλὼν τότε τὸ μοναχικὸν σχῆμα, διέτρεχε τὴν Μικρὰν Ἀσίαν προσπαθῶν νὰ ἐξεγείρῃ τοὺς ἰθαγενεῖς πληθυσμούς. Εἰς Κωνσταντινούπολιν κατώρθωσε νὰ προσηλυτίσῃ πλούσιον Πέρσην, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέσπασε χρήματα πρὸς ἀγορὰν ὅπλων καὶ πολεμεφοδίων. Ἀμέσως τότε ἐγκατέστησε τὸ στρατηγεῖόν του εἰς τὴν μικρὰν πόλιν τοῦ Κουρδιστάν, Ἀμαντιά, ἔλαβε τὸ ὄνομα Σεΐχ-Ὀγκὰν-Ὄολο καὶ παρουσιάζων ἑαυτὸν ὡς ἀπόστολον τοῦ Μωάμεθ κατώρθωσε νὰ διεγείρῃ τοὺς πληθυσμοὺς εἰς ἐπανάστασιν. Σχηματίσας τότε μικρὸν στράτευμα, ἐβάδισεν ἐναντίον τῆς Σμύρνης, προσαγορεύων ἑαυτὸν Ἀλ Μανσοὺρ (= Ὁ νικηφόρος). Ἡ Ὑψηλὴ Πύλη ἐπέτυχε τότε διὰ πρέσβεων νὰ παρασύρῃ αὐτὸν πρὸς τὸν Καύκασον ἐναντίον τῶν Ρώσων, πρὸς τοὺς ὁποίους εὑρίσκετο τότε εἰς ἐμπόλεμον κατάστασιν. Ἐκεῖ παρέμεινεν ἐπὶ τέσσαρα ἔτη πολεμῶν μετ' ἀρκετῆς ἐπιτυχίας, κατώρθωσε δὲ καὶ νὰ νικήσῃ τὸν Ρῶσον στρατηγὸν Ἀπράξιν. Τέλος ὅμως νικηθεὶς καὶ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ἤχθη δέσμιος εἰς Ρωσίαν. Ἡ Αἰκατερίνη Β' ὥρισεν εἰς αὐτὸν ὡς τόπον ἐξορίας τὴν ἐν τῇ Λευκῇ θαλάσσῃ νῆσον Σολοβέτσκυ καὶ ἐτησίαν ἐπιχορήγησιν 100.000 φράγκων. Χ. Δ.

**Μπὸζ** (Boze), ***Ἰωσήφ.*** Γάλλος ζωγράφος (1744—1826). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Λατοὺρ καὶ διέπρεψεν ὡς προσωπογράφος διὰ κρητίδων. Εἰς τὸ μουσεῖον τῶν Βερσαλλιῶν ἀπόκεινται δύο ἀξιολογώτατα ἔργα του: αἱ προσωπογραφίαι τοῦ δουκὸς de Berry καὶ τοῦ Bonnefoy du Plan. Ἄλλα ἀξιόλογα ἔργα του εἶναι: «Προσωπογραφία τοῦ μηχανικοῦ Vaucanson», «Προσωπογραφία Λουδοβίκου τοῦ ΙΣΤ'», «Προσωπογραφία τῆς Μαρίας Ἀντουανέττας», προσωπογραφίαι τοῦ Μιραμπώ, τοῦ Ροβεσπιέρρου, τοῦ Μπερτιέ, τοῦ Λουδοβίκου ΙΗ' κ.ἄ. Ι. Μ. Π.

**Μπόζα** (Bosa) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Σαρδηνίᾳ, κειμένη παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Τέρμο, 48 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Σάσσαρι. Ἔχει ὡραῖον καθεδρικὸν ναόν. Κάτ. 7.200. Χ. Δ.

**Μποζαγὰτς** *[Γεωγρ.].* Μέγα δάσος ἐν τῷ νομῷ Ἀδάνων, ἀποτελούμενον ἐξ ἐλαιῶν, μορεῶν, κέδρων καὶ πύξων. Κατέχει ἔκτασιν 30.000 στρεμμάτων καὶ κεῖται μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Πυράμου (Δζιχοὺν τσάϊ) καὶ τῆς λίμνης Μπεμπελῆ. Κ. ΛΣ

**Μποζαΐτης** *[Γεωγρ.].* Χείμαρρος τῆς Ἀχαΐας, ὀνομαζόμενος οὕτως ἀπὸ τοῦ χωρίου Μποζαΐτη. Λέγεται καὶ *Βελβιτσᾶνος* (βλ. λ.).

**Μποζαΐτικα** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ παρὰ τὰς Πάτρας χωρίου *Προάστειον* (βλ. λ.).

**Μποζάνικον** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Ὀρεινὸν* (βλ. λ.).

**Μπόζανκετ** (Bosanquet), ***Ροβέρτος Κάρ.*** Ἄγγλος ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1887. Τῷ 1899 διωρίσθη ὑποδιευθυντὴς καὶ τῷ 1900 προήχθη εἰς διευθυντὴν τῆς ἐν Ἀθήναις ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς. Κατὰ τὴν ἐν Ἑλλάδι διαμονήν του ὁ Μπόζανκετ διενήργησεν ἀνασκαφὰς ἐν Πραισῷ καὶ Παλαικάστρῳ τῆς Κρήτης (1901—1904) καὶ ἐν Σπάρτῃ (1905—1906). Κατόπιν διωρίσθη καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λίβερπουλ. Τὰ ἀποτελέσματα τῶν ἐν Κρήτῃ καὶ Σπάρτῃ ἀνασκαφῶν, ὡς καὶ πολλὰς ἄλλας ἐπιστημονικὰς διατριβάς, ἐδημοσίευσεν ἐν τοῖς «Annual of British School». Σπουδαιότερα τῶν δημοσιευμάτων τούτων εἶναι: «Excavations at Praisos» «Excavations at Palaikastro», «Church of the ruined Monastery at Daou-Mendeli», «The Palaikastro Hymn of the Kouretes», «Inscriptions from Praisos». Β. Δ. Θ.

**Μποζαντὸρ** (Bozador) *[Γεωγρ.].* Ἀκρωτήριον τῆς Δ. Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μποχαντόρ*).

**μποζαργάτης** (ὁ). Μηχάνημα ναυτικὸν ξύλινον, διὰ τοῦ ὁποίου ἕλκονται καὶ ἀνυψοῦνται βαρέα σώματα. Εἶναι εἶδος ἀτελοῦς βαρούλκου, ὅμοιον πιθανῶς πρὸς τὸ μηχάνημα ὁμοίας χρήσεως τῶν παλαιῶν, τὸ ὁποῖον ὁ Ἡρόδοτος ἀναφέρει (Ζ', 36) κατὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Ξέρξου τεῦξιν τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ ὀνομάζει *ὄνον*.

**μποζᾶς** (ὁ). Ποτὸν ἐκ κέγχρου συνηθιζόμενον παρὰ τοῖς Τούρκοις, ἰδίως μετὰ τὸ φαγητόν. Ἔχει γεῦσιν γλυκοϋπόξινον, ὁμοιάζουσαν τὴν τοῦ μούστου. Ὁ μποζᾶς παρασκευάζεται ὡς ἑξῆς: Εἰς 8 ὀκ. νερὸ ρίπτομεν 1 ὀκ. κεχρὶ ἀλεσμένον, εἰς τὸ ὁποῖον ἔχομεν ἀνακατεύσει 120 δραμ. πίτυρα. Τὸ κεχρὶ μὲ τὰ πίτυρα ρίπτονται εἰς τὸ νερό, ὅταν τοῦτο ζεσταθῇ στὴ φωτιά, μετὰ προσοχῆς ἵνα μὴ γίνουν σβῶλοι, ἀνακατεύομεν δὲ συνεχῶς διὰ νὰ μὴ τσικνίσῃ. Ὅταν βράσῃ καλὰ καὶ γίνῃ χυλός, ὀλιγοστεύομεν πολὺ τὴν φωτιὰ καὶ ἀφίνομεν περὶ τὰς 3 ὥρας. Ἔπειτα, ἀφοῦ τὸν κατεβάσωμεν ἀπὸ τὴν φωτιὰν καὶ τὸν ἀφίσωμεν νὰ κρυώσῃ, ὄχι ὅμως ἐντελῶς, ρίπτομεν τὸν χυλὸν εἰς σκάφην ξυλίνην καὶ τὸν ἀνακατεύομεν μὲ 40 δρ. ζύμην (μαγιάν), ἀναλελυμένην ὡς γαλάκτωμα εἰς ὀλίγον νερό. Ἀπὸ τὴν σκάφην τὸν ἀδειάζομεν συνήθως εἰς δοχεῖον ξύλινον (τάλαρον), διότι τὰ χάλκινα καταστρέφονται, καὶ ἐκεῖ γίνεται ἡ ζύμωσις, ἡ ὁποία διαρκεῖ περὶ τὰς 3 ὥρας. Ἔπειτα τὸ ζυμωθὲν φύραμα στραγγίζεται μὲ ψιλὸ κόσκινον, ὥστε νὰ χωρισθοῦν τὰ πίτυρα καὶ νὰ ἀπομείνῃ ἓν εἶδος ζωμοῦ. Ὁ ζωμὸς οὗτος τὴν πρώτην ἡμέραν εἶναι γλυκός, ἀργότερον ὅμως ἀρχίζει νὰ ξινίζῃ, καὶ τότε διὰ νὰ πίνεται ἀναμιγνύεται μὲ σιρόπι ἢ πετμέζι. Ὁ μποζᾶς δὲν δύναται νὰ διαρκέσῃ πλέον τῶν 4 ἡμερῶν τὸ πολύ, ἐκτὸς ἂν εὑρίσκεται εἰς ψυγεῖον, δι' αὐτὸ δὲ οἱ Τοῦρκοι τὸν παρασκευάζουν τὸν χειμῶνα. Τὸν μπουζᾶν παρεσκεύαζον ἄλλοτε καθ' ὅλην τὴν Βαλκανικὴν οἱ Τοῦρκοι καὶ οἱ Γκέκηδες τῆς Ἀλβανίας. Συνηθίζεται ἐπίσης καὶ εἰς τὴν Ρουμανίαν, brage καλούμενος.

**Μπόζε** (Bose), ***Ζαγκαντὶς Σοῦντερ.*** Ἰνδὸς φυσικός, γεννηθεὶς ἐν Βεγγάλῃ τῷ 1858. Λαβὼν δίπλωμα μηχανικοῦ ἐν Καλκούτᾳ, μετέβη εἰς Ἀγγλίαν πρὸς συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν αὐτοῦ, ἐπανελθὼν δὲ εἰς τὰς Ἰνδίας τῷ 1885 ὡς καθηγητὴς τοῦ κολλεγίου τῆς Καλκούτας, ἵδρυσεν αὐτόθι ἰνστιτοῦτον ἐπιστημονικῶν ἐρευνῶν φέρον τὸ ὄνομά του. Τῷ 1897 ἐπενόησε συσκευὴν ἐκπομπῆς ἐξαιρετικῶς βραχέων ἠλεκτρομαγνητικῶν κυμάτων, δι' ἧς καθίστατο εὐχερὴς ἡ ἐπανάληψις τῶν πειραμάτων τοῦ Ἕρτζ, δι' ὧν ἀποδεικνύεται ἡ ἀναλογία τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν πρὸς τὰ φωτεινὰ κύματα (διάθλασις αὐτῶν, πόλωσις καὶ ἀνάκλασις). Εἰς τὸ ἐν Παρισίοις συνελθὸν τῷ 1900 διεθνὲς συνέδριον τῆς Φυσικῆς ὁ Μπόζε ἐξέθηκε τὰ πορίσματα ἐρευνῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῶν μοριακῶν φαινομένων, δι' ὧν ἐπεζήτει ν' ἀποδείξῃ τὴν ὕπαρξιν γενικῆς τινος ἰδιότητος κοινῆς εἰς ὅλα τὰ εἴδη τῆς ὕλης, τόσον τῆς ἐνοργάνου ὅσον καὶ τῆς ἀνοργάνου. Βραδύτερον (1919) ἀνεκάλυψε μέθοδον ἀναισθητοποιήσεως τῶν φυτικῶν ὀργανισμῶν, χάρις εἰς τὴν ὁποίαν δύναται νὰ ἐπιτευχθῇ ἡ μεταφύτευσις ἑνὸς φυτοῦ ἄνευ βλάβης, συνεχιζομένης μετ' αὐτὴν κανονικῶς τῆς ἀναπτύξεώς του. Ἐπενόησεν ἐπίσης νέον τέλειον τύπον ὀργάνου διὰ τοῦ ὁποίου καταγράφεται αὐτομάτως ἡ αὔξησις τοῦ ἀναστήματος ἑνὸς φυτοῦ (βλ. λ. *αὐξησίμετρον*). Ἐκ τῶν πολλῶν μελετῶν καὶ συγγραμμάτων τοῦ Μπόζε θεωροῦνται ἀξιολογώτερα: «Ζωϊκαὶ κινήσεις τῶν φυτῶν», «Συγκριτικὴ ἠλεκτροφυσιολογία», «Συλλογὴ φυσικῶν μελετῶν» κ. ἄ. —Ω.

**Μπὸζ-Ἐγιοὺκ** *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως του σημερινοῦ νομοῦ Μπιλετζίκ, εἰς ἀπόστασιν 90 χλμ. ΝΔ. τῆς πόλεως Προύσης. Κάτ. 6.734. Ἡ ὁμώνυμος ὑποδιοίκησις ἔχει ἐπιφάνειαν 625 τετρ. χλμ. Τὸ κύριον γεωργικὸν προϊὸν τῆς περιφερείας εἶναι τὸ ὄπιον. Ν. Μ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Τὸ *Μπὸζ-Ἐγιοὺκ* κατέστη γνωστὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ στενωποῦ τοῦ Καρᾶ σού, παραποτάμου τοῦ Σαγγαρίου, καὶ τοῦ ὑψώματος τῆς Κοβαλίτσης, τοῦ φράσσοντος τὸ νότιον στόμιον τῆς στενωποῦ ταύτης, ἐφ' οὗ κατ' ἐπανάληψιν συνήφθησαν (βλ. λ. *Μικρασιατικὴ ἐκστρατεία*) αἱματηρόταται μάχαι μεταξὺ Ἑλλήνων καὶ Τούρκων (24—28 Δεκεμβρίου 1920, 13—20 Μαρτίου 1921, 3—4 Ἰουλίου 1921 καὶ 21—22 Αὐγούστου 1922). Ἡ στρατιωτικὴ σπουδαιότης τῶν στενῶν περὶ τὸ Μπὸζ-Ἐγιοὺκ ἦτο γνωστὴ καὶ κατὰ τοὺς χρόνους τῶν Βυζαντινῶν. Ἐνταῦθα οἱ Σελτζοῦκοι Τοῦρκοι ὑπὸ τὸν Καλισδζὲ Ἀρσλὰν ἀντετάχθησαν κατὰ τῶν σταυροφόρων ὑπὸ τὸν Βοημοῦνδον (1099), ἀλλ' ἡττήθησαν καὶ ἠναγκάσθησαν ν' ἀφήσωσιν ἐλευθέραν τὴν διὰ τῆς στενωποῦ διάβασιν. Ν. ΣΣ

**Μποζέλλι** (Boselli), ***Παῦλος.*** Ἰταλὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1838. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Τουρίνου καὶ κατ' ἀρχὰς διετέλεσεν ἀνώτερος διοικητικὸς ὑπάλληλος. Τῷ 1868 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας εἰς τὴν ἀνωτάτην ἐμπορικὴν σχολὴν τῆς Βενετίας, τῷ δὲ 1871 καθηγητὴς τῶν οἰκονομικῶν ἐπιστημῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ρώμης, ὅπου διὰ πρώτην φορὰν ἐν Ἰταλίᾳ ἱδρύετο παρομοία ἕδρα. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγη τὸ πρῶτον βουλευτὴς τῷ 1870 καὶ διεκρίθη ταχέως ἐν τῇ

Digitized by Google

βουλῇ διὰ τὴν εὐγλωττίαν του, τὴν βαθύτητα τῶν οἰκονομικῶγ μελετῶν του, ἰδίως ἐπὶ τοῦ ἐμπορικοῦ ναυτικοῦ καὶ τὸν ζωηρὸν πατριωτισμόν του. Καίτοι δὲν ἀνῆκεν εἰς ὡρισμένον κόμμα, προσελήφθη τῷ 1888 ὑπὸ τοῦ Κρίσπι ὡς ὑπουργὸς τῆς Παιδείας, συμβαλὼν τὰ μέγιστα εἰς τὴν βελτίωσιν τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως, ἱδρύσας τὰ μουσεῖα τῆς Βίλλα Τζούλια καὶ τὸ Ἐθνικὸν τῶν Θερμῶν ἐν Ῥώμῃ, ἀνακαινίσας τὸ μέγαρον τοῦ Ἁγίου Γεωργίου ἐν Γενούῃ κλπ, Κατόπιν ἐγένετο, τῷ 1893, ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας καὶ τῷ 1894—1896 ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν, ἀντιμετωπίσας μετὰ σθένους τὴν σοβαρὰν οἰκονομικὴν κρίσιν, ἣν διήρχετο τότε ἡ Ἰταλία.

Τῷ 1899—1900 διετέλεσεν ὑπουργὸς τοῦ Θησαυροφυλακίου ἐν τῷ ὑπουργείῳ τοῦ στρατηγοῦ Πελλοῦ, τῷ 1906 ὑπουργὸς τῆς Παιδείας ἐν τῷ ὑπουργείῳ Σοννίνο καὶ ἀπὸ τοῦ 1907 ἐκλεγεὶς πρόεδρος τῆς ἐκπαιδευτικῆς καὶ πατριωτικῆς ὀργανώσεως «Δάντης Ἀλιγκέρι» ἀφιερώθη εἰς διάφορα ἔργα πατριωτικῆς προπαγάνδας καὶ ἠθικῆς διαπλάσεως τῆς νεολαίας. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐκηρύχθη ὑπὲρ τῆς ἐξόδου τῆς Ἰταλίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ, μετὰ δὲ τὴν παραίτησιν τοῦ ὑπουργείου Σαλάνδρα ὑπεδείχθη παρὰ πάντων τῶν κομμάτων ὡς μᾶλλον ἐνδεδειγμένος νὰ προεδρεύσῃ τῆς κυβερνήσεως τοῦ ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ, ἥτις ἐσχηματίσθη τὴν 19 Ἰουνίου 1916. Τὸν Αὔγουστον τοῦ ἰδίου ἔτους ἐκήρυξε τὸν πόλεμον καὶ κατὰ τῆς Γερμανίας (ὁ κατὰ τῆς Αὐστρίας πόλεμος εἶχε κηρυχθῆ ἀπὸ τοῦ Μαΐου τοῦ 1915 ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου Σαλάνδρα) καὶ παρῃτήθη τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1917. Ἀπὸ τοῦ 1921 εἶναι γερουσιαστής, παρὰ τὸ προκεχωρημένον δὲ τῆς ἡλικίας του ἐξακολουθεῖ νὰ ἐνδιαφέρεται διὰ τὰ πολιτικὰ πράγματα τῆς χώρας του. Τῷ 1929 ὑπῆρξεν ὁ εἰσηγητὴς τοῦ νομοσχεδίου περὶ ἐπικυρώσεως τῶν συνθηκῶν τοῦ Λατερανοῦ, τῶν λυουσῶν τὸ ζήτημα τῶν σχέσεων Ἰταλικοῦ κράτους καὶ Βατικανοῦ, τὸ ὁποῖον εἶχε δημιουργηθῆ ἀπὸ τοῦ 1871. Ὁ Μποζέλλι εἶναι μέλος πολλῶν ἀκαδημιῶν καὶ ἄλλων ἐπιστημονικῶν ὀργανώσεων, ἔγραψε δὲ πολλὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ Κάρολος Ἀλβέρτος» (1892), «Βίκτωρ Ἐμμανουὴλ Β'», «Οὐμβέρτος Α'», «Λαυρέντιος Παρέτο», «Κουϊντίνο Σέλλα», «Διοικητικὸς ὁδηγός», «Πατριωτικὰ ἔργα καὶ λόγοι» (1917), «Πολεμικοὶ λόγοι» (1917), «Διὰ τὸν Δάντην καὶ διὰ τὴν νίκην» (1924) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπόζεμαν** (Bosemam), ***Νάθαν***. Ἀμερικανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1825. Ἠσχολήθη εἰδικῶς μὲ τὴν γυναικολογίαν καὶ τὰς ἐγχειρήσεις τῶν συριγγίων τῆς οὐροδόχου κύστεως, ἐκτελέσας πρώτην τοιαύτην ἐπιτυχῆ ἐγχείρησιν κυστικοῦ συριγγίου δι' ἰδίας μεθόδου τῷ 1854. Ταύτην ἐπηκολούθησαν ἄλλαι ἐπιτυχεῖς ἐγχειρήσεις. Ἐπεχείρησε κατόπιν ἐπιστημονικὰ ταξίδια εἰς Ἀγγλίαν, Γαλλίαν, Γερμανίαν καὶ Αὐστρίαν πρὸς ἐπίδειξιν τῶν ἐγχειρητικῶν του μεθόδων ἐπὶ τῶν οὐρηθρο-κολπικῶν καὶ ὀρθο-μητρο-κολπικῶν συριγγίων, ὡς καὶ πρὸς ἐξασφάλισιν προτεραιότητος ἐπὶ τῶν ἐγχειρήσεων τούτων. Εἰργάσθη εἰς διάφορα νοσοκομεῖα τῆς Νέας Ὑόρκης καὶ ἔγραψε: «Urethro-vaginal, vesico-vaginal, and recto-vaginal fistules etc.», «Operation of vesico-vaginal fistule without the aid of assistants» (1869), «On Urethrocele, catarrh, and ulceration of the bladder in females» (1872), «Remarks on ovariotomy etc.» (1879), «Retroversion in relation to lacerations of the cervix uteri» (1879) κ. ἄ. Ἐχρησιμοποίησεν ἴδιον ἐργαλεῖον πρὸς ἐγχείρησιν τῶν κολποκυστικῶν συριγγίων, κολπικὸν διαστολέα διὰ τὴν αὐτὴν ἐγχείρησιν κατὰ τὴν στένωσιν τοῦ κόλπου καὶ εἰσήγαγε μητροσκόπιον μὲ δύο βαλβῖδας, καὶ μητρεγχύτην μὲ διπλοῦν ῥεῦμα. Ο. Ρ.

**Μπόζετς** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Γιαννιτσῶν τοῦ νομοῦ Πέλλης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται 4 περίπου χλμ. πρὸς Δ. τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἀξιοῦ ἐπὶ τῆς ἀπὸ Θεσσαλονίκης πρὸς τὴν Ἀξιούπολιν καὶ τὰ νοτιοσλαβικὰ σύνορα ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.404. Ἤδη μετωνομάσθη εἰς *Ἀθύρας*. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Ἀγριοσυκιὰ (Γκοῦρμπες), Λειβαδίτσα, Ραχῶνα (Ράμελ), Στίβα (Κονίκοβον)* καὶ *Ὑδρόμυλος (Ταγαρμίς)*. Χ. Δ.

**Μποζικὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 516. Χ. Δ.

**Μπόζιο** (Bosio), ***Ἀστυάναξ-Σκαιόλας***. Γάλλος γλύπτης, ἀνεψιὸς τοῦ βαρώνου Μπόζιο. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ θείῳ του καὶ ἐξετέλεσε μεταξὺ ἄλλων ἓν τῶν ἀναγλύφων τῆς θριαμβευτικῆς ἁψῖδος τῶν Παρισίων, μίαν «Ἁγίαν Ἀδελαΐδα» (διὰ τὸν ναὸν τῆς Ἁγίας Μαγδαληνῆς), τέσσαρα συμπλέγματα Καρυατίδων διὰ τὸ Λοῦβρον καὶ μίαν προτομὴν τοῦ θείου του. Ι. Μ. Π.

—**Μπόζιο** (Bosio), ***Φερδινάνδος***. Ἰταλὸς λογοτέχνης ἐκ Πεδεμοντίου (1829—1881). Εἰς ἡλικίαν μικροτέραν τῶν 20 ἐτῶν ἐδημοσίευσε τοὺς πρώτους στίχους του ὑπὸ τὸν τίτλον «Sofio di vita», οἱ ὁποῖοι ἔτυχον εὐμενεστάτης ἐκ μέρους τῶν κριτικῶν ὑποδοχῆς. Ἔγραψε κατόπιν ἄλλα ποιήματα, βιογραφίας, μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, διακρινόμενα διὰ τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους καὶ τὴν σαφήνειαν τῆς ἐκφράσεως. Κάλλιστα τούτων εἶναι: «Ἡ δημοκρατία» (ποίημα), «Ἀνατολίτικες φαντασίες» (μπαλλάντες), «Τὸ τέλος ἑνὸς τιμίου ἀνθρώπου» (ἠθικοπολιτικὴ μελέτη), «Λαϊκὴ ἱστορία τῶν παπῶν» (ἔργον προπαγανδιστικόν), «Ποιήματα τῶν διαπρεπεστέρων συγχρόνων Ἰταλῶν μετὰ προλόγου καὶ συμπληρώματος», «Ἡ παπικὴ Ῥώμη», «Σκηναὶ καὶ διηγήσεις οἰκιακαί», «Σκηναὶ ἀπὸ τὴν Νεάπολιν» (δρᾶμα) κλπ. Ἀφοῦ διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν καθηγητής, διωρίσθη τῷ 1866 διευθυντὴς τοῦ γραφείου τοῦ ὑπουργοῦ τῆς Παιδείας, εἶτα δὲ γενικὸς διευθυντὴς τῆς στοιχειώδους ἐκπαιδεύσεως, πολλὰς προσενεγκὼν ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἀνάπτυξιν αὐτῆς. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης ὑπὸ τὸν τίτλον «Ricordi Personali», ἐνδιαφέροντα ἀπομνημονεύματα (1878). Χ. Δ.

—**Μπόζιο** (Bosio), ***Φραγκῖσκος-Ἰωσήφ, βαρῶνος —***. Γάλλος γλύπτης (1768—1845). Ἐμαθήτευσεν ἐν Παρισίοις ὑπὸ τὸν Παζοὺ καὶ ἐν Ἰταλίᾳ ὑπὸ τὸν Κανόβα, ἐπανελθὼν δ' εἰς Παρισίους ἐπληρώθη τιμῶν καὶ ἐπεφορτίσθη διὰ σημαντικωτάτων ἔργων. Ὠνομάσθη μέλος τοῦ γαλλικοῦ ἰνστιτούτου καὶ πρῶτος γλύπτης τοῦ βασιλέως, Κάρολος δ' ὁ Ι' τοῦ ἀπένειμε τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων του τάσσονται: εἴκοσιν ἀνάγλυφα τῆς στήλης Βαντώμ, «Ὁ ἔρως γοητεύων τὴν ἀθωότητα» (1810), «Ὁ βασιλεὺς τῆς Ῥώμης» (1812), «Ὁ Ἡρακλῆς καταβάλλων τὸν Ἀχελῷον» (1822), ὀρειχάλκινον σύμπλεγμα ἐν τῷ κήπῳ τοῦ Κεραμεικοῦ, ὁ ἱππικὸς ἀνδριὰς Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ', ὅστις ἐτοποθετήθη τῷ 1824 ἐν τῇ πλατείᾳ τῶν Νικῶν ἐν Παρισίοις, τὸ πρὸς τιμὴν τοῦ Μαλεσὲρμπ μνημεῖον ἐν τῷ δικαστικῷ μεγάρῳ τῶν Παρισίων (1826), «Ὁ δοὺξ τοῦ Ἀγκιέν» (1817), «Ἐρρῖκος ὁ Δ' κατὰ τὴν παιδικήν του ἡλικίαν», «Ἡ νύμφη Σαλμακίς», τὸ ὀρειχάλκινον τέθριππον ἅρμα τῆς θριαμβευτικῆς ἁψῖδος τοῦ Καρουζέλ, «Ὁ θάνατος Λουδοβίκου τοῦ ΙΣΤ'», πολυάριθμοι προτομαὶ κλπ. Διὰ τὴν χάριν καὶ τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους του ὁ Μπόζιο ἐπωνομάσθη «Γάλλος Κανόβα». Ι. Μ. Π.

**Μποζκὴρ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως ἐν τῷ νομῷ Ἰκονίου. Κάτ. 3.000. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχει ἀξιόλογος ὁμώνυμος λίμνη. Κ. ΛΣ

**Μποζλοῦ** *[Γεωγρ]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Χωρίον* Ἄνω (βλ. λ.).

**Μπὸζ-Μπαμᾶ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τῆς νήσου *Ἅγιο-Στράτι*, κειμένης Ν. τῆς Λήμνου.

**Μπὸζ-μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ἀνατολικῆς παραλίας τῆς Προποντίδος (πλάτ. 40°32' 00" Β., μῆκ. 28°46' 45" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ἀντικρύζον τὴν Καλόλιμνον καὶ τερματίζον τὴν χερσόνησον Μπεϋλὶκ-Καρλὶκ-Νταγκλάρ, τὴν διαχωρίζουσαν τοὺς κόλπους τῶν Μουδανιῶν καὶ τῆς Νικομηδείας. Εἶναι τὸ τῶν ἀρχαίων *Ποσείδιον ἄκρον (Πτολ.* Ε, α, 4, Nobbe) τῆς Βιθυνίας, ΒΔ. κέρας τοῦ πρώτου τῶν ὡς ἄνω κόλπων. Σ. Ε. Λ.

—**Μπὸζ-μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ἀσιατικῆς ἀκτῆς τῆς Προποντίδος κατὰ τὰ πρόσγεια τοῦ Ἑλλησπόντου (πλάτ. 40°24' 1/2 Β., μῆκ. 26°55' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), 9 μίλλ. ἀνατολικῶς τοῦ στομίου τῆς Καλλιπόλεως. Δυτικὸν κέρας τοῦ κόλπου *Γιουρτζῆ-Λιμάν*, εἶναι πιθανοφανῶς τὸ *Πάριον* τοῦ Πτολεμαίου. Σ. Ε. Λ.

**Μπὸζ ντὰγ** (=ὑψηλὸν ὄρος) *[Γεωγρ.]*. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο ἀπαντῶσι διάφορα ὄρη τῆς Μ. Ἀσίας, ὧν γνωστότερά εἰσι τὰ ἑξῆς:

—1) Τὸ ἐν Λυδίᾳ τῆς Μ. Ἀσίας μεταξὺ Ὀδεμησίου καὶ Σαλιχλῆ κείμενον, τὸ διαχωρίζον τὴν κοιλάδα τοῦ Ἕρμου πρὸς Β. ἀπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Καΰστρου πρὸς Ν., ὁ *Τμῶλος* τῶν ἀρχαίων, ἐπὶ τῶν βορείων προπόδων τοῦ ὁποίου ἔκειντο αἱ Σάρδεις. Ἐπὶ τοῦ ὄρους τούτου ὠργανώθησαν κατὰ τὸ 1920 διάφοροι ὁμάδες Τούρκων ἀτάκτων (τσέτηδες), παρενοχλοῦσαι τὴν ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Καΰστρου εὑρισκομένην τότε ΙΙ ἑλληνικὴν μεραρχίαν. Τῇ 17 Φεβρουαρίου 1920 τμήματα τῆς ΙΙ μεραρχίας ἀπὸ Ὀδεμησίου καὶ τῆς ΧΙΙΙ μεραρχίας ἀπὸ Ἀχμετλῆ ὁρμηθέντα, ἀνῆλθον εἰς τὸ ὀροπέδιον τοῦ Γκιόλτζικ τοῦ Τμώλου, διεσκόρπισαν τὰς συγκεντρώσεις τῶν Τούρκων καὶ κατέλαβον τὸ ὅλον ὄρος.

—2) Τὸ ἐν Φρυγίᾳ τῆς Μ. Ἀσίας βορείως τοῦ Δορυλαίου (ὑψ. 1.500 μ.) εὑρισκόμενον. Πρὸς τὸ ὄρος τοῦτο ἀπεσύρθησαν τρεῖς τουρκικαὶ μεραρχίαι κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τοῦ Ἰουλίου 1921, ὅταν νικηφόρος ἡ ἑλληνικὴ στρατιὰ Μ. Ἀσίας προήλαυνεν ἀπὸ Κιουταχείας πρὸς τὰ ΒΑ. Κατὰ δὲ τὴν μεγάλην ἐκ παρατάξεως μάχην τῆς 8 Ἰουλίου 1921, περὶ τὸ Δορύλαιον, αἱ τρεῖς ἐκεῖναι μεραρχίαι ἀποτελοῦσαι τὴν δεξιὰν πτέρυγα τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ, ὁμοῦ μὲ ἄλλας δύο μεραρχίας (1 πεζικοῦ καὶ 1 ἱππικοῦ) ἀπὸ τοῦ Σινεκλῆ Καγιᾶ (ἀπὸ τῶν νοτίων ὑπωρειῶν τοῦ Μπὸζ ντὰγ) ἐκινήθησαν κατὰ γραμμὰς συγκλινούσας πρὸς Δορύλαιον ἐναντίον τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, ὅπερ κατανικῆσαν κατεδίωξεν αὐτὰς διὰ τῆς VII αὐτοῦ μεραρχίας (βλ. λ. *Δορύλαιον*). Διὰ τοῦ Μπὸζ ντὰγ διήρχετο ἀπὸ τοῦ Σεπτεμβρίου 1921 μέχρι τῆς 17 Αὐγούστου 1922 ἡ μετωπικὴ γραμμὴ τοῦ Γ' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ, ἀπετέλεσε δὲ τὸ Μπὸζ ντὰγ κέντρον ἀντιστάσεως τῆς ΙΙΙ ἑλληνικῆς μεραρχίας μέχρι τῆς ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἐκκενώσεως τοῦ Ἐσκῆ Σεχίρ.

—3) Τὸ ἐν Πισιδίᾳ τῆς Μ. Ἀσίας, ἄλλως καλούμενον *Μπὸζ μπουροὺν* (2.600 μ. ὑψ.), ὅπερ ἐπὶ τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Λυκιανοῦ Ταύρου εὑρισκόμενον ἀποτελεῖ ὀρεογραφικὸν κόμβον σημαντικόν, διότι ἀπὸ τοῦ σημείου τούτου τοῦ Ταύρου ἀποσπῶνται μία ὀρεινὴ γραμμὴ πρὸς τὰ ΒΔ., φθάνουσα εἰς τὸ Μουρὰτ ντὰγ ἢ Δίδυμον ὄρος τῆς Φρυγίας, καὶ ἑτέρα τοιαύτη πρὸς Δ., σχηματίζουσα τὰ ὄρη τῆς Παμφυλίας καὶ Λυκίας. Ν. Σ.

—**Μπὸζ ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τοῦ ὄρους *Μενοικίου* (βλ. λ.).

**Μπόζντεχ** (Bozdech), ***Ἐμμανουήλ***. Τσέχος δραματικὸς συγγραφεὺς γεννηθεὶς ἐν Πράγᾳ τῷ 1841 καὶ ἐξαφανισθεὶς μυστηριωδῶς τῷ 1889. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα ἐπειρεασμένα μεγάλως ἀπὸ τὸν Ε. Σκρίμπ, γνωστότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Τὸν καιρὸ τῶν κοτιγιὸν» (κωμῳδία, 1867), «Ὁ βαρῶνος Γκαῖρτς» (τραγῳδία, 1871), σειρὰ ἐπιτυχῶν κωμῳδιῶν ἐπὶ ἱστορικῶν θεμάτων, «Ἡ δοκιμασία τοῦ διπλωμάτου» (1874), «Ὁ Ἄρχων τοῦ κόσμου μὲ τὰ νυκτικά του» (1876) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μποζντζᾶ-ἀδᾶ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τῆς Τενέδου.

**Μποζντογὰν** *[Γεωγρ.]*. Ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τῆς διοικήσεως Ἀϊδινίου τοῦ νομοῦ Σμύρνης. Κάτ. 10.000, ἐξ ὧν 1.000 περίπου Ἕλληνες ὑπαχθέντες εἰς τὴν ἀνταλλαγήν. Εἶναι ἐκτισμένον ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας *Ἀντιοχείας τῆς ἐπὶ Μαιάνδρῳ*, ἀπαντῶσι δὲ πλησίον τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας πόλεως Ἁρπάσου (νῦν Ἀρπὰ Καλεσί).

**Μπόζοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Πριόνια* (βλ. λ.).

**Μποζὸν** (Boson). Βασιλεὺς τῆς Προβηγκίας (βλ. λ. *Βόσων*).

**Μπὸζ-τεπὲ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἀκρωτηριάζων βουνός, σχηματίζων τὸ ἀγκυροβόλιον τῆς Τραπεζοῦντος (πλάτ. 41° 01' Β., μῆκ. 39° 46' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2236: Cape Yasùn to Fort Anakria). Ἐπιστέφεται ἀπὸ μοναστήριον δερβισῶν, περιβαλλόμενον ὑπὸ τείχους καὶ χρησιμεῦον ὡς γνώρισμα εἰς τοὺς καταπλέοντας. —2) Τὸ νότιον ἄκρον τῆς χερσονήσου τῆς Σινώπης (πλάτ. 42° 01' Β., μῆκ. 35° 14' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. ὁ αὐτὸς) ἔχον φάρον. Σ. Ε. Λ.

**Μπὸζ-τεπεσὶ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Χερσονησώδης ὀρεινὴ προβολὴ τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου, ἀμέσως ΒΔ. τῆς Ὀρδοῦ, ἀπολήγουσα εἰς τὴν τῶν ἀρχαίων *Γενηταίων ἄκραν* (βλ. καὶ λ. *Μπουζοὺκ Καλέ*). Σ. Ε. Λ.

**Μπόζω** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀβαθὴς ὑφαλόγλωσσα τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης (πλάτ. 40° 32' 1/4 Β., μῆκ. 26° 01' 3/4 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1087: Thasso to Dardanelles), 6 1/2 μίλλ. νοτ. τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἕβρου. Λέγεται καὶ *Μπουζίκ*. Σ. Ε. Λ.

**Μπὸθ** (Both), ***Ἀνδρέας*** καὶ ***Ἰωάννης***. Ἀδελφοί, Ὁλλανδοὶ χαράκται καὶ ζωγράφοι, γεννηθέντες περὶ τὸ 1610 ἐν Οὐτρέχτῃ. Κατὰ πᾶσαν πιθανότητα πρεσβύτερος τούτων ἦτο ὁ Ἀνδρέας. Οἱ ἀδελφοὶ Μπὸθ ὑπῆρξαν υἱοὶ ἱκανοῦ ὑελογράφου, ὅστις ἐδίδαξεν εἰς αὐτοὺς τὰ πρῶτα στοιχεῖα τῆς τέχνης, μετὰ ταῦτα δ' εἰσήγαγεν αὐτοὺς πρὸς πληρεστέραν κατάρτισιν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Ἀβραὰμ Μπλαῖμαρτ. Βραδύτερον οἱ δύο ἀδελφοὶ ἐπεσκέφθησαν τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἰταλίαν, διέμειναν δ' ἐπανειλημμένως καὶ ἐπ' ἀρκετὸν ἐν Ῥώμῃ, ὅπου ὁ μὲν Ἰωάννης, καταγοητευθεὶς ἐκ τοῦ ἔργου τοῦ Κλὼντ Λορραίν, ἀφιερώθη εἰς τὴν τοπιογραφίαν, ἣν μετ' ἄκρας ἐπιτυχίας ἐκαλλιέργησεν, ὁ δὲ Ἀνδρέας, ἀκολουθήσας τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Μπαμπότσιο, διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν μορφῶν, τὰς ὁποίας συνήθως ἐτοποθέτει ἐντὸς τοπίων ἐζωγραφημένων ὑπὸ τοῦ Ἰωάννου. Οἱ Μπὸθ ἀπέκτησαν μεγάλην φήμην ἐν Ἰταλίᾳ καὶ συνῆψαν σχέσεις φιλίας μετὰ τῶν ἐπιφανεστέρων καλλιτεχνῶν τῶν χρόνων ἐκείνων. Τῷ 1650 πιθανῶς εὑρίσκοντο εἰς τὴν Βενετίαν, ὅπου ἀπέθανεν ὁ Ἀνδρέας, ὁ δ' Ἰωάννης, ὅστις ὑπὸ τῶν Γάλλων συνήθως ἐπονομάζεται «Jean d'Italie», ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ὀλλανδίαν καὶ ἀπέθανε βραχὺ μετὰ ταῦτα (1652). Οἱ ἀδελφοὶ Μπὸθ κατέχουν σημαντικὴν θέσιν ἐν τῇ τέχνῃ τῶν Κάτω Χωρῶν ὡς ἐκπρόσωποι τῆς κατὰ

Digitized by Google

τὴν ἰταλικὴν τεχνοτροπίαν τοπιογραφίας. Οἱ πίνακές των διακρίνονται ἰδίᾳ διὰ τὸν ἐπιτυχῆ των φωτισμόν. Ι. Μ. Π.

**Μπόθα** (Botha), ***Λουδοβῖκος***. Ἐπιφανὴς στρατηγὸς καὶ πολιτικὸς τῆς Νοτιοαφρικανικῆς δημοκρατίας, γεννηθεὶς τῷ 1862 ἐν Γκρέϋτάουν τοῦ Νατὰλ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1919 ἐν Πραιτορίᾳ. Κατ' ἀρχὰς ἀντιπρόσωπος τῆς περιφερείας τοῦ Vrijheid εἰς τὴν βουλὴν τῆς Πραιτορίας (1897), ἐξεδηλώθη ὑπὲρ τῆς συνεργασίας τῶν φυλῶν καὶ ὑπὲρ συμφιλιωτικῆς πολιτικῆς, ταχθεὶς ἀντιμέτωπος τοῦ προέδρου Π. Κρούγερ. Ὅταν κατὰ τὰ 1899 ἐξερράγη ὁ ἀγγλομποερικὸς πόλεμος, ὁ Μπόθα ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τμήματος τοῦ στρατοῦ καὶ διεκρίθη διὰ τὴν ἱκανότητα εἰς στρατιωτικοὺς ἐλιγμοὺς καὶ διαφόρους νίκας ἰδίᾳ τοῦ Colenso καὶ τοῦ Spion-Kop. Μετὰ τὰς ἐπιτυχεῖς ἀντεπιθέσεις τοῦ ἀγγλικοῦ στρατοῦ ἀναδιωργάνωσε τὸν στρατὸν τῶν Μπόερς καὶ ἐπὶ διετίαν ὑπῆρξεν ὁ φοβερώτερος ἀντίπαλος τῶν Ἄγγλων. Ὅταν ὁ Κίτσενερ ἐνικήθη ὁριστικῶς ἐν Τράνσβαλ, ὁ Μπόθα, ὑπογράψας τὴν συνθήκην τῆς εἰρήνης, ἐπεδόθη εἰς τὴν πραγματοποίησιν ἐν Νοτίῳ Ἀφρικῇ φυλετικῆς ἑνώσεως καὶ συγχωνεύσεως τῆς Νοτιοαφρικανικῆς κτήσεως (dominion) μετὰ τῆς Ἀγγλίας. Πρωθυπουργὸς τῆς πρώτης κυβερνήσεως τοῦ Τράνσβαλ, ἀπεδείχθη ἐξ ἴσου ἱκανὸς πολιτικὸς καὶ στρατηγὸς καὶ δὲν ἔπαυσε νὰ ἐπιδιώκῃ τὴν ἀφομοίωσιν τῆς Νοτιοαφρικανικῆς δημοκρατίας πρὸς τὴν Μεγάλην Βρεττανίαν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐπολέμησεν ἐπιτυχῶς παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Συμμάχων, καταχτήσας κατ' ἀρχὰς τὴν Νοτιοδυτικὴν γερμανικὴν Ἀφρικὴν καὶ ἀποστείλας βραδύτερον ἐπικουρίας εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον. Εἰς τὴν Συνδιάσκεψιν τῆς Εἰρήνης ἀντεπροσώπευσε τὴν Νοτιοαφρικανικὴν Ἕνωσιν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς Νοτιοδυτικῆς γερμανικῆς Ἀφρικῆς. Ἐπιστρέψας εἰς Ἀκρωτήριον ἐγένετο δεκτὸς θριαμβευτικῶς ὡς δημιουργὸς καὶ ἀρχηγὸς νέου ἔθνους. —Ω.

*Λουδοβῖκος Μπόθα.*

**Μπόθ(γ)ουελ** (Bothwell) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διοικητικὴ περιφέρεια τῆς Σκωτίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λάναρκ, κειμένη ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Κλύδου (Κλάϋντ), 15 χλμ. πρὸς ΑΝΑ. τῆς Γλασκώβης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἡ περιφέρεια, ἀριθμοῦσα (1921) 60.256 κατ., περιλαμβάνει πλείστους ἐξοχικοὺς συνοικισμοὺς τῆς πόλεως Γλασκώβης. Ἡ Μπόθ(γ)ουελ ἔχει παλαιότατον ναὸν γοτθικοῦ ρυθμοῦ τοῦ 1398, ὅστις ἀνεστηλώθη κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, καὶ ἐρείπια πύργου κείμενα παρὰ τὴν ἱστορικὴν γέφυραν τοῦ Κλύδου ὅπου τὴν 22 Ἰουνίου 1679 συνήφθη αἱματηρὰ μάχη μεταξὺ τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων ὑπὸ τὸν Μόνμαουθ καὶ τῶν πρεσβυτεριανῶν ἐπαναστατῶν. Κατὰ τὴν σύρραξιν ἐκείνην, ἥτις εἶναι γνωστὴ ὡς «μάχη τῆς γεφύρας τοῦ Μπόθ(γ)ουελ», ἡττήθησαν κατὰ κράτος οἱ ἐπαναστάται, καταλιπόντες 600 νεκροὺς καὶ χιλίους περίπου αἰχμαλώτους, ἐτέθη δὲ τέρμα εἰς τὰς ἐπὶ τῆς βασιλείας τοῦ Καρόλου Β' μεγάλας ταραχὰς τῆς Σκωτίας. Χ. Δ.

**Μπόθ(γ)ουελ** (Bothwell), ***Ἰάκωβος-Χέπμπερν***. Σκῶτος εὐγενὴς (1536—1578). Διεδέχθη τῷ 1556 τὸν πατέρα του εἰς τοὺς τίτλους καὶ τὰ κληρονομικὰ ἀξιώματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων συγκατελέγετο καὶ τὸ τοῦ λόρδου ναυάρχου. Ἐγένετο μέλος τοῦ ἰδιωτικοῦ συμβουλίου τῆς Μαρίας Στούαρτ. Τῷ 1562, κατηγορηθεὶς ὡς μετασχὼν συνωμοσίας ἐξυφανθείσης ὑπὸ τοῦ κόμητος Ἀρρὰν κατὰ τῆς βασιλίσσης, κατέφυγεν εἰς Γαλλίαν, ἐπανελθὼν εἰς Σκωτίαν μετὰ τὸν γάμον τῆς Μαρίας Στούαρτ μετὰ τοῦ Ντάρλεϋ, κατώρθωσε δὲ νὰ ἀνακτήσῃ οὐ μόνον τὴν εὔνοιαν τῆς βασιλίσσης ἀλλὰ καὶ τὴν συμπάθειαν αὐτῆς. Ὁ Μπόθγουελλ κατηγορήθη ἐκ νέου, ὅτι ἀνεμίχθη εἰς τὴν δολοφονίαν τοῦ συζύγου τῆς Μαρίας Ντάρλεϋ, ἀλλ' ὑποστηριχθεὶς ὑπὸ τῆς βασιλίσσης καὶ τῶν αὐλικῶν αὐτῆς ἐκρίθη ἀπηλλαγμένος πάσης κατηγορίας, δύο δὲ ἡμέρας μετὰ ταῦτα (14 Ἀπριλίου 1567) ἐπεκυρώθη ὑπὸ τοῦ κοινοβουλίου πάντες οἱ τίτλοι καὶ τὰ φέουδα, τὰ ὁποῖα τῷ εἶχον δωρηθῆ, καὶ τὴν 15 Μαΐου ἐνυμφεύετο τὴν βασίλισσαν. Ὁ θρίαμβος τοῦ Μπόθγουελλ ὑπῆρξε βραχύς. Ἡ κοινὴ γνώμη ἐξηγέρθη, πολλοὶ εὐγενεῖς ἀντετάχθησαν εἰς τὸν γάμον τοῦτον καὶ μετὰ παρέλευσιν μηνὸς ἐπῆλθε σύγκρουσις αὐτῶν πρὸς τοὺς ὀπαδοὺς τοῦ Μπόθγουελλ, καταλήξασα εἰς μάχην παρὰ τὸ Ἐδιμβοῦργον (15 Ἰουνίου 1567). Ὁ Μπόθγουελλ ἡττηθεὶς κατώρθωσε νὰ διαφύγῃ, ἔπειτα ὅμως συλληφθεὶς ἐνεκλείσθη εἰς τὸ φρούριον Ἄντελερσμποργκ τῆς Ζηλανδίας, ἔνθα καὶ ἀπέθανε. Γ. Ι. Β.

**μπόϊ** (τό)· δημοτ., ἀνάστημα ἀνδρός: «*πόσα μπόγια εἶναι τὸ πηγάδι;*», «*ἔχει ἕνα μπόϊ νερό*» || αἱ μακρότεραι πλευραὶ τῆς παραλληλογράμμου κάσας, τῶν θυρῶν, παραθύρων κττ. (τουρκ. boy).

**Μποϊαμπάτ** *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τῆς διοικήσεως Σινώπης τοῦ νομοῦ Κασταμονῆς. Κάτ. 6.000. Ἡ χώρα παράγει ἐν ἀφθονίᾳ δημητριακά, ὄρυζαν, βάμβακα.

**Μποϊάρντο** (Bojardo), ***Ματθαῖος***. Ἰταλὸς ποιητής (βλ. λ. *Μπογιάρντο* Ματθαῖος).

**Μπόϊζ**, ἢ ***Μπόϊζ-Σίτυ*** (Boise ἢ Boise-City. *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, πρωτεύουσα καὶ πολυανθρωποτέρα πόλις τῆς πολιτείας Ἀϊντάχο καὶ ἕδρα τῆς κομιτείας Ἄντα, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου αὐτῆς παραποτάμου τοῦ Κολούμπια, εἰς ὑψηλὴν θέσιν (900 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης) καὶ περιβαλλομένη ὑπὸ γραφικῶν ὀρέων. Κάτ. 35.950. Εἶναι ἕδρα τῶν τοπικῶν ἀρχῶν τῆς πολιτείας, ἔχουσα πολλὰ ὡραῖα κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων προέχει τὸ Καπιτώλιον, ἀποτελεῖ δὲ τὸ κέντρον τοῦ ἐμπορίου πλουσίας γεωργικῆς καὶ κτηνοτροφικῆς περιοχῆς, ἐξάγουσα ἰδίως μεγάλας ποσότητας ἐρίου, καὶ ἔχει ἀρτιωτάτας σιδηροδρομικὰς συγκοινωνίας ἀποτελούσας διακλάδωσιν τῆς ἑνούσης τοὺς δύο ὠκεανοὺς μεγάλης γραμμῆς. Εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὰ ἄφθονα ὕδατά της καὶ ἔχει ἐκτεταμένον πάρκον.

Ἡ Μπόϊζ ἱδρύθη τῷ 1863, ἀπὸ δὲ τοῦ ἑπομένου ἔτους ἐγένετο πρωτεύουσα τοῦ Ἀϊντάχο, τὸ ὁποῖον δὲν εἶχεν εἰσέτι ἀνακηρυχθῆ εἰς πολιτείαν, ἀλλ' ἀπετέλει τότε ἁπλῶς ἐξηρτημένην ἐπαρχίαν (territory). Χ. Δ.

**Μποϊκά** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας συνοικισμοῦ *Πλατσιά* (βλ. λ.).

**Μποϊκάτικα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μαγαζιῶν τῆς ἐπαρχίας Παξῶν τοῦ νομοῦ Κερκύρας. Κάτ. (1928) 32.

**Μπόϊλε** (Boyle), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος φυσικός, γεννηθεὶς τῇ 25 Ἰανουαρίου 1627 ἐν Bismore Castle καὶ ἀποθανὼν τῷ 1691. Ὁ Μπόϊλε ἀνεκάλυψε τὸν γνωστὸν νόμον τῶν ἀερίων (βλ. *ἀέρια*). Κ. Π.

**Μποϊνεμπουργκ**, ἢ ***Μπούνεμπουργκ*** (Boineburg ἢ Boyneburg), ***Ἰωάννης-Χριστιανὸς κόμης ντὲ —***. Γερμανὸς διπλωμάτης ἐξ Ἄϊζεναχ (1622—1672). Κατέλαβε πλείστας πολιτικὰς θέσεις εἰς τὰς αὐλὰς διαφόρων Γερμανῶν ἡγεμόνων, ἰδιαιτέρως δὲ παρὰ τῷ ἐκλέκτορι τῆς Μαγεντίας. Περιελθὼν εἰς δυσμένειαν, ἐφυλακίσθη ἐπὶ μικρόν, τῷ 1664, μετὰ δὲ τὴν ἀπελευθέρωσίν του ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον καὶ ἠσχολήθη μὲ διαφόρους μελέτας, διατηρῶν τακτικὴν καὶ διεξοδικὴν ἀλληλογραφίαν μετὰ τῶν σπουδαιοτέρων σοφῶν καὶ συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του. Ὁ μέγας φιλόσοφος Λεϊβνίτιος διετέλεσε γραμματεὺς καὶ προστατευόμενός του. Χ. Δ.

**Μποϊνοῦ-Κιζλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Γέροντας* (βλ. λ.).

**Μπόϊτα**, ἢ ***Μπόϊτε*** (Boita ἢ Boite) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰταλίας, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Πιάβε. Πηγάζει ἐκ τοῦ ὄρους Τοφάνα τῶν Δολομιτικῶν Ἄλπεων καὶ χύνεται εἰς τὸν Πιάβε παρὰ τὸ χωρίον Παράρολο, τοῦ νομοῦ Μπελλοῦνο, ἀφοῦ διασχίσῃ τὴν κοιλάδα τοῦ Ἀμπάτσο. Μ. Δ. Β.

**Μπόϊτο** (Boito), ***Ἀρρίγκο***. Ἰταλὸς ποιητὴς καὶ συνθέτης, γεννηθεὶς ἐν Παδούῃ τῷ 1842 καὶ ἀποθανὼν ἐν Μιλάνῳ τῷ 1918. Υἱὸς Ἰταλοῦ ζωγράφου καὶ τῆς Πολωνίδος κομίσσης Ραντολίνσκα, ἔχων πρεσβύτερον ἀδελφὸν ποιητὴν καὶ διηγηματογράφον, ὁ Μπόϊτο ἀνεπτύχθη εἰς καλλιτεχνικὸν περιβάλλον, τὸ ὁποῖον ὑπεβοήθησεν τὴν ἐκκόλαψιν τοῦ ταλάντου του, κράματος μεσημβρινῶν αἰσθημάτων καὶ βορείου μυστικοπαθείας. Μαθητὴς τοῦ Ματσουκάτο ἐν τῇ τάξει συνθέσεως τοῦ ᾠδείου τοῦ Μιλάνου, παρουσίασεν ἀρχικῶς, τῷ 1860, τὴν καντάταν του «Ἡ τετάρτη Ἰουνίου», ἥτις δὲν ἐγένετο εὐμενῶς δεκτή· μετὰ διετίαν ὅμως ἔγραφεν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Φράγκο Φάτσιο, μίαν δευτέραν, τὰς «Ἀδελφὰς τῆς Ἰταλίας», χάρις εἰς τὴν ἐπιτυχίαν τῆς ὁποίας ἔτυχε διετοῦς ὑποτροφίας. Τὰ καλλιτεχνικά του ταξίδια, εἰς Παρισίους, Πολωνίαν καὶ ἰδίως εἰς Γερμανίαν, τῷ ἀπεκάλυψαν τὰς νέας τάσεις τῆς μουσικῆς καὶ τὰς ἐν τῷ λυρικῷ θεάτρῳ παρὰ τοῦ Βάγνερ εἰσαχθείσας μεταρρυθμίσεις. Ὑπὸ τὸ κράτος τῶν νέων τούτων ἀντιλήψεων ἔγραψεν, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν δύο Φάουστ τοῦ Γκαῖτε, τὸν *Μεφιστοφελῆ*, ὅστις παιχθεὶς τῷ 1868 εἰς τὴν Σκάλαν τοῦ Μιλάνου ἀπέτυχε. Τὸ αὐτὸ ἔργον, ἀναβιβασθὲν τῷ 1875 ἐν Βολωνίᾳ, ἐθριάμβευσε καὶ κατέστησε δημοφιλὲς τὸ ὄνομα τοῦ μουσουργοῦ. Ὁ Μπόϊτο ἔγραψεν ἐπίσης τὸ μελόδραμα «Ἡρὼ καὶ Λέανδρος», ὅπερ καὶ ἐγκατέλειψεν ἐν τέλει, παραδώσας τὸ λιμπρέττο πρὸς μελοποίησιν εἰς τὸν Μαντσινέλλι. Τὸ μελόδραμα «Ὀρεστιάς» οὐδέποτε εἶδε τὸ φῶς, ἐνῷ ἀντιθέτως ὁ «Νέρων», παιχθεὶς εἰς Μιλᾶνον, συμφώνως τῇ θελήσει τοῦ μουσουργοῦ, μετὰ τὸν θάνατόν του, ἔλαβε διαστάσεις ἐθνικοῦ καὶ καλλιτεχνικοῦ γεγονότος (1924). Εἰς τὸν κατάλογον τῶν ἔργων τοῦ Ἰταλοῦ συνθέτου πρέπει νὰ προστεθῇ καὶ ἡ «Ὠδὴ εἰς τὴν τέχνην» (1880).

*Ἀρρίγκο Μπόϊτο.*

Ὁ Μπόϊτο ὑπῆρξεν ἐπίσης διακεκριμένος ποιητής, συγκεντρώσας τὰ καλύτερα ἐκ τῶν ποιημάτων του εἰς «Τὸ βιβλίον τῶν στίχων» εἰς τοῦτο πρέπει νὰ προστεθῇ τὸ τολμηρὸν καὶ ρωμαντικὸν ἔργον «Βασιλεὺς Ὄρσο». Ἔτι μεγαλύτερος ὑπῆρξεν ὅμως ὡς λιμπρεττίστας, ὑπερβαλὼν εἰς τὸ εἶδος τοῦτο καὶ αὐτὸν τὸν Φελίτσε Ρομάνι. Ὑπὸ τὸ ὄνομά του ἀναγραμματισμένον: «Tobia Gorrio» ἔγραψε τὸ λιμπρέττο τῆς «Τζιοκόντας» τοῦ Πονκιέλλι, τέλειον ὑπόδειγμα μελοδραματικοῦ ποιήματος· ἐπίσης τὰ ἀριστουργηματικὰ λιμπρέττα τοῦ «Ὀθέλλου» καὶ τοῦ «Φάλσταφ» τοῦ Βέρντι, τὰ τοῦ «Ἀμλέτου» τοῦ Φάτσιο, τοῦ «Ἀλεξάνδρου Φαρνέζε» τοῦ Παλούμπο, τοῦ «Ἰραΐμ», τοῦ Ντομινιτσέτο, τὸ τῆς «Ἡροῦς καὶ Λεάνδρου» τοῦ Μαντσινέλλι, τέλος τὰ τῶν ἰδικῶν του μελοδραμάτων. Μετέφρασεν ἐπίσης εἰς τὴν ἰταλικὴν τὸν «Ριέντσι» καὶ τὸν «Τριστᾶνον καὶ Ἰζόλδην» τοῦ Βάγνερ. Ἡ τέχνη τοῦ Μπόϊτο δὲν δύναται νὰ θεωρηθῇ ἀπολύτως προσωπική· ἀφομοιώνουσα ὅ,τι καλὸν ὑπάρχει εἰς τὰ μεγαλύτερα ἀριστουργήματα, δανειζομένη ἐκ τῆς γερμανικῆς σχολῆς τὸν πλοῦτον τῆς ἁρμονίας καὶ τῆς ἐνορχηστρώσεως, διατηροῦσα ὅμως ἐκ τῆς ἰταλικῆς τὸ φῶς καὶ τὴν μελῳδικότητα, κατώρθωσε νὰ δημιουργήσῃ ἔργον, τοῦ ὁποίου ἡ ἐπὶ τοῦ κοινοῦ ἐντύπωσις εἶναι πάντοτε ὑποβλητική. Γ. Σ.

— **Μπόϊτο** (Boito), ***Κάμιλλος***. Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, ἀδελφὸς τοῦ συνθέτου *Ἀρρίγκο Μπόϊτο* (1836—1914). Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν χρησιμοποίησιν τῶν νεωτέρων οἰκοδομικῶν ὑλικῶν καὶ ἐξαιρέτως διακοσμητικὴν τεχνοτροπίαν. Κατεσκεύασε τῷ 1895 τὰς μεγάλας ὀρειχαλκίνας θύρας τοῦ ἐν Παδούῃ μεγαλοπρεποῦς ναοῦ τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου καὶ συνέγραψεν ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς τέχνης καὶ τῆς αἰσθητικῆς. Μεταξὺ τούτων μνημονεύομεν τὴν «Πραγματείαν περὶ τῆς ἰταλικῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῶν μέσων χρόνων καὶ τῆς νέας Ἰταλίας» (1880). Ι. Μ. Π.

**Μπόϊτσενμπουργκ** (Boitzenburg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Μίκλεμπουργκ-Σβέριν, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπόϊτσε, παραποτάμου τοῦ Ἔλβα. Ἔχει ἐργοστάσια κεραμευτικῆς καὶ ναυπηγικὰς ἐγκαταστάσεις, διεξάγει δὲ ἐμπόριον κτηνῶν καὶ ἰχθύων. Κατὰ τὰ ἔτη 1274—1349 ἦτο ἕδρα τῶν κομίτων τοῦ Σβέριν. Κάτ. 4.250. Χ. Δ.

**Μπόϊτσο** ***βοεβόδα***. Διάσημος Βούλγαρος χαϊδούτης, ὅστις τῷ 1829 μετὰ τῆς τσέτας του εἰσῆλθεν εἰς τὴν ρωσικὴν ὑπηρεσίαν. Μετὰ τὴν συνθήκην τῆς Ἀδριανουπόλεως ἐπεχείρησε νὰ ἐξακολουθήσῃ τὴν ζωὴν τοῦ χαϊδούτη καὶ πάλιν, ἀλλ' ἐξωρίσθη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του εἰς Σιβηρίαν. Δραπετεύσας διετέλεσεν ἐπὶ εἰκοσαετίαν χαϊδούτης εἰς τὸν Αἶμον, φονευθεὶς εἰς μάχην τινὰ μετὰ τῶν Τούρκων. Τ. Β.

**Μπὸκ** (Bok), ***Ἐδουάρδος-Γουλιέλμος***. Δημοσιογράφος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1863 εἰς Χέλντερ τῆς Ὁλλανδίας καὶ ἀναγραφεὶς ἐν Ἀμερικῇ. Τῷ 1884 ἐγένετο μέτοχος τῆς ἐκδοτικῆς ἑταιρείας Σκρίμπνερ καὶ υἱοί. Ἀπὸ τοῦ 1882—1884 διηύθυνε τὸ «Περιοδικὸν τοῦ Μπρούκλιν». Τῷ 1886 ἵδρυσε τὸ Συνδικᾶτον τοῦ τύπου τοῦ Μπὸκ καὶ τῷ 1889 ἀνέλαβε τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Κυριῶν». Ἀπεσύρθη τῶν ἐκδοτικῶν ἐπιχειρήσεων τῷ 1919. Ἓν ἔτος βραδύτερον ἐδημοσίευσεν αὐτοβιογραφίαν του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ ἀμερικανοποίησις τοῦ Ἐδουάρδου Μπόκ», ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν πολιτικῶν καὶ κοινωνικῶν ἐπιστημῶν. Τῷ 1923 ὁ Μπὸκ ἵδρυσε τὸ βραβεῖον τῆς ἀμερικανικῆς εἰρήνης, προικοδοτήσας τοῦτο δι' 100.000 δολλαρίων πρὸς ἀμοιβὴν τοῦ καλυτέρου σχεδίου, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁποίου αἱ Ἡνωμέναι Πολιτεῖαι τῆς Ἀμερικῆς θὰ ἠδύναντο, συνεργαζόμεναι μετὰ τῶν ἄλλων ἐθνῶν, νὰ ἐπιτύχουν τὴν ἀποκατάστασιν καὶ διατήρησιν τῆς παγκοσμίου εἰρήνης. Τὸ βραβεῖον ἀπενεμήθη εἰς τὸ ὑπὸ τοῦ δόκτορος C. A. Livermore τῆς ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ εἰρηνιστικῆς Ἑταιρείας συνταχθὲν σχέδιον. Γ. Ι. Β.

— **Μπὸκ** (Bock), ***Ἱερώνυμος***. Γερμανὸς βοτανολόγος καὶ ἰατρός, καλούμενος ὡσαύτως καὶ *Τράγος* (Tragos). Ἐγεννήθη εἰς τὸ Κάτω Παλατινᾶτον (1498—1554) καὶ θεωρεῖται ὡς ὁ πατὴρ τῆς βο-

Digitized by Google

τανικῆς. Διήρεσε τὰ φυτὰ εἰς οἰκογενείας καὶ ἔθεσε νέον ὀνοματολόγιον τῶν φυτῶν. Τὸ ἔργον του, εἰς ὃ ἔθεσε τὰς βάσεις τῆς φυσικῆς μεθόδου, ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τὸν τίτλον «Νέον βοτανολόγιον φυτῶν τῆς Γερμανίας» (1539). Ο. Ρ.

—**Μπὸκ** (Bock), ***Κάρολος-Ἀλφρέδος***. Νορβηγὸς περιηγητής, γεννηθεὶς τῷ 1849. Διετέλεσε γενικὸς πρόξενος τῆς Νορβηγίας ἐν Βρυξέλλαις, περιηγήθη δὲ χάριν ζῳολογικῶν καὶ ἐθνολογικῶν μελετῶν τὴν Σουμάτραν, τὴν νοτιοανατολικὴν Βόρνεο, τὸ Σιὰμ καὶ τὴν χώραν τῶν Λάος. Τὰς ἐκ τῶν περιηγήσεών του ἐντυπώσεις ἐδημοσίευσεν εἰς τὰ ἑξῆς ἔργα του: «Ταξίδιον εἰς τὴν Νοτιοανατολικὴν Βόρνεο» (1881—1887), «Ἐν μέσῳ τῶν Καννιβάλων ἐπὶ τῆς Βόρνεο» (1882), «Ναοὶ καὶ ἐλέφαντες ἀνὰ τὸ Ἄνω Σιὰμ καὶ τὴν χώραν τῶν Λάος» (1884, ἀγγλιστὶ καὶ γερμανιστὶ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐν τῷ βασιλείῳ τοῦ λευκοῦ Ἐλέφαντος» 1885) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

—**Μπὸκ** (Bock), ***Κάρολος-Ἐρνέστος***. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ ἀνατόμος, υἱὸς τοῦ ἀνατόμου Αὐγούστου-Καρόλου Μπόκ, γεννηθεὶς ἐν Λειψίᾳ (1809—1874). Διετέλεσεν ὑφηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Λειψίας, ἐκδοὺς μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του τὰς ἐργασίας τοῦ τελευταίου ὡς καὶ ἴδιον σύγγραμμα ἀνατομικῆς. Τῷ 1845 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀνατομοπαθολογίας. Ἔγραψε «Βιβλίον τοῦ ὑγιοῦς καὶ ἀσθενοῦς ἀνθρώπου» (1835) πρὸς ἐκλαΐκευσιν τῆς ἰατρικῆς, δημιουργήσας μεγάλης φήμην συγγραφέως. Ἐκ τῶν λοιπῶν ἔργων του ἀναφέρομεν τὴν δίτομον «Ἀνατομικήν» του (1838), τὸ «Ἀνατομικὸν ἐγκόλπιον» (1839), τοὺς «Ἀνατομικοὺς ἄτλαντας τοῦ ἀνθρώπου» (1840), τὸν «Ἄτλαντα τῆς ἀνατομοπαθολογίας ἐν σχέσει μὲ τὴν διαγνωστικήν» (1845). Ἐκ τοῦ ὀνόματός του ὡς *νεῦρον τοῦ Μπὸκ* ἀναφέρεται κλάδος φαρυγγικὸς ἢ πτερυγο-υπερῴϊος τοῦ γαγγλίου Meckel (τῆς ἄνω γνάθου). Ο. Ρ.

**μποκαδοῦρα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ἄνεμος ἐκδηλούμενος εἰς τὰ στόμια τῶν κόλπων καὶ πνέων πρὸς τὸν μυχὸν (βλ. λ. *ἐγκολπίας*).

**Μποκάλλι** *Καλεσσὶ [Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς εὐρωπαϊκῆς (δυτικῆς) ἀκτῆς τοῦ Ἑλλησπόντου, ἔχον φάρον (πλάτ. 40° 12'½ Β., μῆκ. 26° 24' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles). Ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου τούτου (ἀρχ. *Σηστός*), ἠγείρετό ποτε ὁ πύργος τῆς Ἡροῦς. Σ. Ε. Λ.

**Μποκανόφσκι** (Bokanowski), ***Μαυρίκιος***. Γάλλος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Χάβρῃ τῷ 1879 καὶ φονευθεὶς ἐξ ἀεροπορικοῦ δυστυχήματος παρὰ τὸ Τοὺλ κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1928. Ἐξῆλθε τῆς ἐμπορικῆς σχολῆς τῆς Μασσαλίας καὶ ἐσπούδασε κατόπιν τὴν νομικὴν εἰς τὴν Σορβόννην, διεκρίθη δ' εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς εἰς τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Ἀπὸ χαρακτῆρος εἰρηνόφιλος, ἐγένετο πρόεδρος τῆς «Ἑνώσεως ὑπὲρ τῆς εἰρήνης διὰ τοῦ δικαίου», συμμετέσχε δὲ τῷ 1908 εἰς τὸ ἐν Λονδίνῳ συνελθὸν «Συνέδριον τῆς εἰρήνης». Τῷ 1914 ἐξελέγη βουλευτὴς τῆς περιφερείας Ἀσνιὲρ καὶ Σαὶντ-Οὐέν. Στρατευθεὶς εἶτα κατὰ τὸν πόλεμον, ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ ὡς λοχίας τοῦ πυροβολικοῦ, προήχθη δὲ διαδοχικῶς ἐπ' ἀνδραγαθίᾳ μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ λοχαγοῦ, παρασημοφορηθεὶς ἅμα διὰ τοῦ σταυροῦ τῆς λεγεῶνος τῆς τιμῆς. Τῷ 1916 ἤρχετο εἰς Ἀθήνας ἐπὶ εἰδικῇ ἀποστολῇ ἐπιβαίνων τοῦ βοηθητικοῦ καταδρομικοῦ «Προβηγγία», τὸ ὁποῖον ἐτορπιλλίσθη ὑπὸ γερμανικοῦ ὑποβρυχίου παρὰ τὰς ἀκτὰς τῆς Σικελίας. Ὁ Μποκανόφσκι κατώρθωσε τότε νὰ διασωθῇ συγκρατούμενος ἐπὶ ὥρας ἀπὸ τεμαχίου ξύλου καὶ περισωλλεγεὶς ἐν τέλει ὑπὸ ναυαγοσωστικοῦ. Τῷ 1919 ἐκλεγεὶς ἐκ νέου βουλευτὴς ἐγένετο εἰσηγητὴς τοῦ προϋπολογισμοῦ καὶ πρόεδρος τῆς ἐπὶ τῶν οἰκονομικῶν κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς. Τῷ 1924 ἐδόθη εἰς αὐτὸν τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργείου τῶν Ναυτικῶν ἐν τῇ κυβερνήσει Πουανκαρέ, ὅταν δὲ τῷ 1926 ἐσχηματίσθη ὑπὸ τὸν ἴδιον πρωθυπουργὸν ἡ κυβέρνησις ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ, ἐγένετο ἐν αὐτῇ ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου καὶ Βιομηχανίας, τῶν Ταχυδρομείων καὶ Τηλεγράφων καὶ τῆς Ἀεροπλοΐας. Ἀξιόλογος ὑπῆρξεν ἰδιαιτέρως ἡ δρᾶσις του ἐν τῷ τελευταίῳ τούτῳ ὑπουργείῳ, ὅπου ἐπεδίωξε τὴν συγκέντρωσιν τῶν ὑπηρεσιῶν ἀεροπορικῆς ἐκμεταλλεύσεως εἰς χεῖρας ὀλιγαρίθμων πεπειραμένων προσώπων, τὴν καλυτέρευσιν τῶν τεχνιτῶν μέσων, τὴν γενναιόφρονα ἐνίσχυσιν ἐκ μέρους τοῦ κράτους καὶ τὴν ὑποστήριξιν τῶν δυναμένων νὰ εἰσφέρουν πρωτοτύπους διὰ τὴν πρόοδον τῆς ἀεροπλοΐας συμβουλάς.

Τὴν προτεραίαν ἀκόμη τοῦ θανάτου του ἐξέθετεν ἐνώπιον τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου σχέδιον ἀναδιοργανώσεως τῶν ἀεροπορικῶν γραμμῶν, καρπὸν μακρῶν καὶ λεπτολόγων συνεννοήσεων αὐτοῦ μετὰ τῶν ἐνδιαφερομένων ἐπιχειρήσεων καὶ ὀργανώσεων. Τὴν 2αν Σεπτεμβρίου 1928 ἐπέβη ἀεροπλάνου ἐκ τοῦ ἀεροδρομίου τοῦ Τοὺλ διὰ νὰ μεταβῇ εἰς Κλερμὸν-Φερράν, ὅπου θ' ἀντεπροσώπευε τὴν κυβέρνησιν εἰς διδομένην κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην μεγάλην ἀεροπορικὴν ἑορτήν. Ὀλίγα ὅμως λεπτὰ μετὰ τὴν ἀπογείωσίν του τὸ ἀεροπλάνον κατέπεσε φλεγόμενον, καὶ ὁ Μποκανόφσκι, ὁμοῦ μετὰ τῶν πέντε ἄλλων συνεπιβατῶν του, εὑρέθη ἀπηνθρακωμένος μεταξὺ τῶν συντριμμάτων του. Γ. Ζ.

**Μποκαράϊ**, καὶ ***Μποχαράϊ***. Πέρσης ποιητὴς (βλ. λ. *Ἀμάκ*).

**Μποκενράνφ**. Φαραὼ τῆς ΚΔ' δυναστείας, ὁ *Βόχορις* (βλ. λ.) τοῦ Μανέθωνος.

**Μπόκκα** (Bocca) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος ἰταλικός, σημαίνων *στόμιον (στόμα)* καὶ περιπεσὼν εἰς τοπωνυμίαν, ἰδίως εἰς τὸ Ἀδριατικὸν πέλαγος, ὡς *Μπόκκα Φάλσα, Μπόκκα Γκράντε κλπ.* Σ. Ε. Λ.

**μποκκάλε** (τὸ) (boccale) *[Μετρολ.]*. Παλαιὸν μέτρον χωρητικότητος χρησιμοποιούμενον ἄλλοτε ἐν τῇ βορείᾳ καὶ κεντρικῇ Ἰταλίᾳ διὰ τὰ ὑγρὰ καὶ ἰδίως τὸν οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον. Ἀπετελεῖτο ἐκ πηλίνου ἢ ὑαλίνου δοχείου μὲ εὐρεῖαν γαστέρα, ἡ χωρητικότης τοῦ ὁποίου ἐποίκιλλε κατὰ τόπους ἀπὸ 0,68 μέχρι 1,83 τῆς λίτρας. Ἐν Τεργέστῃ ἰσοῦται πρὸς 1,83 λίτρ., ἐν Μιλάνῳ πρὸς 0,787, ἐν Τουρίνῳ πρὸς 0,68, ἐν Φλωρεντίᾳ πρὸς 1,14, ἐν Βολωνίᾳ πρὸς 1,31 κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μποκκαλίνι** (Boccalini), ***Τραϊανός***. Ἰταλὸς σατιρικὸς συγγραφεὺς (1556—1613). Διετέλεσε κυβερνήτης πλείστων πόλεων ὑπαγομένων εἰς τὸ παπικὸν κράτος, εἶτα δ' ἀπεσύρθη εἰς Βενετίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Κυριώτερον ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὸ «Ragguagli di Parnasso» (=Νέα ἀπὸ τὸν Παρνασσόν), ἐν τῷ ὁποίῳ παρουσιάζων συνδιαλεγομένους ἐν τῷ Ἅδῃ ἀποθανούσας ἐπισήμους προσωπικότητας περὶ τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς βίου των, ἐλέγχει μετὰ μεγάλης ἐλευθεροστομίας τὰ πρόσωπα, τὰ πράγματα, τὰς προλήψεις καὶ τὰς ἀδικίας τῆς ἐποχῆς του. Ἐπίσης ἔγραψε: «Tr. Boccalini quinquaginta relationes ex Parnasio de variis Europae aventibus etc.» (1683), Pietra del paragone politico.» (1615), ἐν τῷ ὁποίῳ κατακρίνει σφοδρῶς τὴν πολιτικὴν τῆς Ἱσπανίας κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μποκκανέγκρα**, ἢ ***Μποκκανέρα*** (Boccanegra ἢ Boccanera). Ὄνομα μεγάλης οἰκογενείας τῆς Γενούης, ἀναφανείσης κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Ἐπιφανέστερα μέλη αὐτῆς ὑπῆρξαν:

—1) ***Ζίλ***. Ναυτικός, ἀποθανὼν τῷ 1372. Διατελέσας ἀρχηγὸς στολίσκου, ἐπολέμησε κατὰ τῶν Μαυριτανῶν, καθ' ὧν κατήγαγε πλείστας νίκας, δι' ἃς προήχθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ἀλφόνσου ΙΑ' εἰς ναύαρχον καὶ ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ κόμητος.

—2) ***Γουλιέλμος***. Πολιτικός, ἐξεγείρας τῷ 1257 τὸν λαὸν τῆς Γενούης κατὰ τῆς τυραννίας τῶν ἀριστοκρατῶν. Ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος καὶ ἀνεκηρύχθη δικτάτωρ διὰ δέκα ἔτη ὑπὸ τὸν τίτλον ἀρχηγὸς τοῦ λαοῦ. Ἡ δικτατωρία κατελύθη τῷ 1262, ὁ δὲ Μποκκανέρα διέφυγε τὴν ἐσχάτην τῶν ποινῶν κατόπιν μεσολαβήσεως τοῦ ἐπισκόπου Γενούης.

—3) ***Σίμων***. Πολιτικός, ἔγγονος τοῦ προηγουμένου. Τῷ 1339, κατόπιν λαϊκοῦ κινήματος κατὰ τῶν ἀριστοκρατῶν, ἐγένετο δόγης Γενούης, πρῶτος λαβὼν τὸν τίτλον τοῦτον. Εἰργάσθη συντόνως διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ναυτικοῦ τῆς Γενούης καὶ τὴν ἐπικράτησιν αὐτοῦ ἐν τῇ Μεσογείῳ. Τῷ 1347 πολιορκηθεὶς ὑπὸ τῶν ἀρχηγῶν τῶν Γουέλφων καὶ εὑρεθεὶς πρὸ ὑπερτέρων δυνάμεων ἠναγκάσθη νὰ ἀποσυρθῇ εἰς Πίζαν, ὁπόθεν ἐπανελθὼν τῷ 1356 ἀνακατέλαβε τὴν ἀρχήν. Ἐπ' αὐτοῦ οἱ Γενουήνσιοι κατέλαβον τὴν νῆσον Χίον καὶ κατήγαγον πολλὰς νίκας κατὰ τῶν Τούρκων καὶ Τατάρων. Ἀπέθανε τῷ 1363 δηλητηριασθείς. Γ. Ι. Β.

**Μποκκαντὸρ** (Boccador), ***Δομίνικος ντὲ Κορτόνε***, ὁ ἐπιλεγόμενος —. Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων καὶ στρατιωτικὸς μηχανικός. Ἐγεννήθη ἐν Κορτόνε κατὰ τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἔζησε δὲ τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ἐν Γαλλίᾳ, προσκολληθεὶς εἰς τὴν ὑπηρεσίαν Λουδοβίκου τοῦ ΙΒ' καὶ Φραγκίσκου τοῦ Α'. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν πρώτων ἀρχιτεκτόνων τοῦ περιφήμου πύργου τοῦ Σαμπὸρ (1530), ἐξεπόνησε τὰ διαγράμματα τοῦ δημαρχείου τῶν Παρισίων (1533), εἰργάσθη εἰς τὴν ὀχύρωσιν τῆς πόλεως (1536) καὶ ᾠκοδόμησε τὸ παλαιὸν νοσοκομεῖον τοῦ Ἁγίου Ἀναστασίου (1543). Ἀπέθανε πιθανῶς τῷ 1549 ἐν Παρισίοις. Ι. Μ. Π.

**Μποκκάρντο** (Boccardo), ***Ἱερώνυμος***. Ἰταλὸς οἰκονομολόγος (1829—1904). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γενούης, γερουσιαστὴς ἀπὸ τοῦ 1877 καὶ σύμβουλος τῆς Ἐπικρατείας ἀπὸ τοῦ 1888. Διηύθυνε τὴν «Νέαν Λαϊκὴν Ἐγκυκλοπαιδείαν» καὶ ἐξέδωσε τὴν τρίτην σειρὰν τῆς «Βιβλιοθήκης τοῦ Οἰκονομολόγου». Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἱστορία τοῦ Ἐμπορίου», «Ἐμπορικὸν δίκαιον», «Πραγματεία πολιτικῆς οἰκονομίας», ἡ ὁποία εἶχε πολλὰς ἐκδόσεις καὶ μετεφράσθη εἰς πολλὰς γλώσσας (1883), «Λεξικὸν τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας καὶ τοῦ Ἐμπορίου» (1887), κτλ.

Ὁ υἱὸς αὐτοῦ ***Ἐρνέστος*** εἶναι καθηγητὴς τῆς βιομηχανικῆς σχολῆς τῆς Βενετίας καὶ ἔγραψε: «Πραγματείαν πρακτικῆς γεωμετρίας». Μ. Δ. Β.

**Μποκκατσίνο** (Boccaccino), ***Βοκκάκιος***. Ἰταλὸς ζωγράφος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Εἶναι εἷς τῶν κυριωτέρων ἐκπροσώπων τῆς ἐν τῇ σχολῇ τῆς Κρεμώνας μεταβατικῆς περιόδου, μεταξὺ τῆς παλαιᾶς καὶ τῆς νεωτέρας τεχνοτροπίας. Ὑπέστη βαθέως τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Περουτζῖνο, ἀλλὰ κατώρθωσε νὰ δημιουργήσῃ ἔργον μὴ στερούμενον χαρακτηριστικῶν προσωπικῶν στοιχείων. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του συνθέσεων τάσσονται αἱ τοιχογραφίαι, ἃς ἐξειργάσθη ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Κρεμώνας («Ἡ γέννησις τῆς Θεοτόκου», «Ὁ γάμος τῆς Θεοτόκου», «Ὁ Χριστὸς εὐλογῶν»). Ι. Μ. Π.

— **Μποκκατσίνο** (Boccaccino), ***Κάμιλλος***. Ἰταλὸς ζωγράφος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1511—1546). Τὰ σημαντικώτερα ἔργα του εὑρίσκονται ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Σιγισμόνδου τῆς Κρεμώνας. Ι. Μ. Π.

**Μποκκερίνι** (Boccherini), ***Λουδοβῖκος***. Ἰταλὸς συνθέτης (1743—1805). Ὑπῆρξεν ἐξαίρετος δεξιοτέχνης τοῦ βιολοντσέλλου καὶ εἷς τῶν σημαντικωτέρων συνθετῶν τῆς ἰταλικῆς ἐνοργάνου μουσικῆς. Ἡ τέχνη του, ἐπηρεασμένη ἐκ τῶν νέων τύπων καὶ τῶν μορφικῶν καινοτομιῶν τῆς σχολῆς τῆς Μανγχάϊμ, εἶναι κρᾶμα λεπτότητος καὶ χάριτος. Ἔδειξε προτίμησιν πρὸς τὴν μουσικὴν δωματίου, ἣν ἐπροίκισε μὲ 91 κουαρτέττα, 125 κουϊντέττα, ἐξ ὧν 113 μετὰ δύο βιολοντσέλλων καὶ 12 μετὰ δύο βιολῶν, 54 τρίο ἐγχόρδων (42 διὰ δύο βιολία καὶ βιολοντσέλλον, 12 μετὰ βιόλας), 12 κουϊντέττα δι' ἔγχορδα καὶ κλειδοκύμβαλον κτλ. Ἔγραψεν ἐπίσης 20 συμφωνίας, 4 κοντσέρτα διὰ βιολοντσέλλον, ἓν μελόδραμα, δύο ὀρατόρια καὶ σειρὰν ἐκκλησιαστικῶν συνθέσεων. Τὰ πλεῖστα τῶν ἔργων του εὑρίσκονται ἐν χειρογράφῳ. Γ. Σ.

*Λουδ. Μποκκερίνι.*

**Μποκκέττα, Λὰ** — (La Bocchetta) *[Γεωγρ.]*. Κλεισώρεια τῶν Β. Ἀπεννίνων ἐν Ἰταλίᾳ, δι' ἧς διέρχεται ἡ ἀπὸ Γενούης εἰς Νόβι ὁδός. Κεῖται εἰς ὕψος 800 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Χ. Δ.

**Μπόκκλετ** (Bocklet) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ λουτρόπολις τῆς Γερμανίας ἐν τῷ βαυαρικῷ νομῷ Κάτω Φρανκονίας, κειμένη ἐγγὺς τοῦ Κίσσινγκεν. Ἔχει σιδηρούχους καὶ θειούχους ψυχρὰς μεταλλικὰς πηγάς, ἐκ τῶν τὰ μάλιστα συχναζομένων. Κάτ. 370. Χ. Δ.

**Μποκκόνε** (Boccone), ***Παῦλος***. Ἰταλὸς φυσιοδίφης ἐκ Σικελίας (1633—1703). Ἐταξίδευσεν ἐπ' ἀρκετὸν ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν, Γαλλίαν, Γερμανίαν καὶ Ἀγγλίαν, μελετῶν τὴν χλωρίδα τῶν χωρῶν τούτων, εἶτα δὲ διωρίσθη βοτανολόγος τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Τοσκάνης καὶ καθηγητὴς ἐν Παδούῃ. Ἀπὸ τοῦ 1682 περιεβλήθη τὸ μοναχικὸν σχῆμα καὶ ἔλαβε τὸ ὄνομα *Σίλβιος*. Ἔγραψε πλεῖστα βοτανικὰ ἔργα, ἐξ ὧν σπουδαιότερα εἶναι: «Εἰκόνες καὶ περιγραφαὶ σπανίων φυτῶν τῆς Σικελίας, Μελίτης, Γαλλίας καὶ Ἰταλίας» (Λυὼν 1674), «Μουσεῖον τῶν σπανίων φυτῶν τῆς Σικελίας, Μελίτης, Κορσικῆς, Πεδεμοντίου καὶ Γερμανίας» (Βενετία, 1697) κτλ. Χ. Δ.

**Μπόκλουντ** (Bocklund), ***Ἰωάννης***. Σουηδὸς ζωγράφος (1817—1880). Ἐσπούδασεν ἐν Μονάχῳ καὶ Παρισίοις καὶ διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοπίων καὶ ἱστορικῶν σκηνῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Τοπίον τοῦ Τυρόλου» (1863 ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης), «Ἡ βασιλικὴ οἰκογένεια ἐν Kelles Klimp» (Πύργος τοῦ Drottningholm), «Φάουστ» (1863) ἐν τῷ Μουσείῳ τοῦ Γκάστεμποργκ. Ι. Μ. Π.

**μπὸλ** (τὸ) (γαλ. bol)· εἶδος ἡμισφαιρικοῦ κυπέλλου πολλαπλῆς χρήσεως· ‖ εἶδος ποτοῦ παρασκευαζομένου δι' ἀναμίξεως καμπανίτου μετ' ἄλλων, λευκῶν ἰδίως, οἴνων, καὶ σερβιριζομένου ἐντὸς ἡμισφαιρικοῦ κυπέλλου, ἐξ οὗ καὶ ἡ ὀνομασία του.

**Μπὸλ** (Bol), ***Φερδινάνδος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1616—1680). Ἐγεννήθη ἐν Ντορτρέχτῃ, εἰς νεαρὰν δὲ ἡλικίαν κατέλιπε τὴν γενέτειράν του πόλιν καὶ μετέβη εἰς Ἄμστερνταμ, ὅπου ἐμορφώθη ἐν τῷ ἐργαστηρίῳ τοῦ Ρέμπραντ, τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἐξοχωτέρων μαθητῶν. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν θρησκευτικῶν σκηνῶν καὶ εἰς τὴν προσωπογραφίαν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: εἷς πίναξ ἐκτελεσθεὶς τῷ 1649 χάριν τοῦ λεπροκομείου τοῦ Ἄμστερνταμ καὶ εἰκονίζων τέσσαρας ἰατροὺς τοῦ ἱδρύματος, ἡ «Αὐτοπροσωπογραφία» του, ἡ «Προσωπογραφία τοῦ ναυάρχου Ruyter» (Μουσεῖον Ἄμστερνταμ), ἑτέρα «Αὐτοπροσωπογραφία» του, «Ἐρημίτης ἀναγινώσκων», «Ἡ κλῖμαξ τοῦ Ἰακώβ», «Ὁ Ἰωσὴφ παρουσιάζων τὸν πατέρα του πρὸς τὸν Φαραὼ» (Μουσεῖον Δρέσδης), τέσσαρες προσωπογραφίαι (Λοῦβρον) κλπ. Ὁ Μπὸλ κατέλιπε καὶ ἀξιολογωτάτας χαλκογραφίας. Ι. Μ. Π.

**μπόλα**, ἢ ***μπόλας*** (bola ἢ bolas, ἱσπαν. λ. σημαίνουσα *σφαῖρα*). Εἶδος *λάσσου* (βλ. λ.) χρησιμο-

Digitized by Google

ποιουμένου ὑπὸ τῶν Γκαοῦτσος (ἰθαγενῶν ἱππέων) τῆς Ν. Ἀμερικῆς. Διαφέρει ἀπὸ τὸ σύνηθες λάσσο, καθ' ὅσον ἀντὶ βρόχου φέρει εἰς τὸ ἄκρον αὐτοῦ ἀνηρτημένα βαρέα σφαιρίδια. Ρίπτεται ἐναντίον τοῦ πρὸς σύλληψιν ζῴου ἢ ἀνθρώπου, ἀφ' οὗ περιστραφῇ καλῶς, οὕτως ὥστε νὰ ἀποκτήσωσι τὰ σφαιρίδια φυκόκεντρον δύναμιν καὶ νὰ περιελιχθῶσι περὶ τὸν λαιμὸν ἢ τοὺς πόδας αὐτοῦ. Χ. Δ.

**Μπολάμα,** ἢ *Μπόουλαμ* (Bolama ἢ Boulam) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Δ. Ἀφρικῆς, πρωτεύουσα τῆς πορτογαλλικῆς Γουϊνέας, κειμένη ἐπὶ ὁμωνύμου νησῖδος τοῦ ἀρχιπελάγους τῶν Μπισσάγκος, ἔναντι τῶν ἐκβολῶν τῶν ποταμῶν Ζέμπα καὶ Γκράντε. Ἔχει ἀξιόλογον ἀερολιμένα, εἶναι ἕδρα τῶν διοικητικῶν ἀρχῶν τῆς ἀποικίας, αἵτινες διαμένουσιν ἐντὸς μικροῦ φρουρίου, καὶ ἀριθμεῖ μεθ' ὁλοκλήρου τῆς νήσου πληθυσμὸν 4.200 κατ. Χ. Δ.

**Μπολὰν** (Bolan) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη ὀρεινὴ δίοδος ἐπὶ τῶν συνόρων τοῦ βρεττανικοῦ Βελουχιστάν, ἄγουσα ἀπὸ Σίντι εἰς Κουέττα. Ἔχει μῆκος 95 χλμ. καὶ μέγιστον ὕψος 2.000 σχεδὸν μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, διέρχονται δὲ δι' αὐτῆς ὁ ὁμώνυμος, χειμαρρώδης καὶ ἐξαιρετικῶς ἐπικίνδυνος κατὰ τὰς πλημμύρας ποταμός, ἡ στρατιωτικὴ ὁδὸς καὶ ὁ σιδηρόδρομος ὁ συνδέων τὴν ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Ἰνδοῦ πόλιν Τζακομπαμπάντ μετὰ τοῦ Ἀφγανιστάν. Ἡ στενωπὸς αὕτη, ἥτις μεγάλως ἐχρησίμευσεν εἰς τοὺς Ἄγγλους κατὰ τὰς ἐναντίον τοῦ Ἀφγανιστὰν ἐπιχειρήσεις των, φυλάσσεται ὑπὸ φρουρᾶς καὶ ἀποτελεῖ ἰδίαν διοικητικὴν περιφέρειαν. Χ. Δ.

**Μπολάνα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς ΒΑ. ἀκτῆς τῆς Κερκύρας (πλάτ. 39°47' Β., μῆκ. 19°37' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channels of Corfu), διανοιγόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Μπάρμπαρα καὶ Κασσόπι. Ἀσφαλὴς ὑπὸ νοτίους, εἶναι ἀνοικτὸς εἰς τοὺς βορείους ἀνέμους. Σ. Ε. Λ.

**Μπολανέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καστορίου (Καστανιᾶς) τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 32. Χ. Δ.

**Μπολάτι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Βραχατίου τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 367. Χ. Δ.

**Μπολβαδὶν** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Προύσης. Κάτ. 9.000. Ἀπέχει τοῦ Ἀφιὸν-Καραχισάρ, 45 χλμ. πρὸς Α. Εἶναι τὸ *Πολύβοτον* τῶν Βυζαντινῶν. Κ. ΛΣ

**Μπόλγκραντ** (Bolgrad) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Βεσσαραβίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς εἰς τὸν Δούναβιν ἐκρεούσης λίμνης Γυάλπουχ, 47 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Ἰσμαηλίου. Ἔχει ἐργοστάσια σάπωνος, στεατοκηρίων καὶ εἰδῶν ἀγγειοπλαστικῆς. Συνῳκίσθη τῷ 1821 ὑπὸ ἀποίκων Βουλγάρων. Κάτ. 11.500. Χ. Δ.

**Μπόλεν** (Bohlen), *Πέτρος φὸν* —. Γερμανὸς ἀνατολιστὴς (1796—1840). Τῷ 1830 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Καινιξβέργης. Ἔγραψεν: «Αἱ Ἰνδίαι κατὰ τὴν ἀρχαιότητα» (1830), «Τὰ ἀποφθέγματα τοῦ Μπαρτριχάρι» (1833) κ.ἄ. Α.Δ.

**μπολερὸ** (τό). Λέξις ἱσπανική (boléro, προφ. *μπολέρο*), διὰ τῆς ὁποίας ὀνομάζονται: 1) Ἱσπανικὸς χορός, ἀγωγῆς μᾶλλον ζωηρᾶς, ἐπινοηθεὶς τῷ 1780 ὑπὸ τοῦ χορευτοῦ Θερέθο (Zerezo). Ὁ ρυθμός του, γενικῶς εἰς $^3/_4$, σημειοῦται ἀπὸ τὰς καστανιέτας· ὁσάκις ὅμως ὁ χορὸς οὗτος ᾄδεται συνοδείᾳ κιθάρας, λαμβάνει τὸ εἰδικὸν ὄνομα *Σεγκουϊντίλλια μπολέρο*. Ὁ χορὸς μπολερό, διαδεδομένος καθ' ὅλην τὴν Ἱσπανίαν, ἰδιαίτατα δὲ εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Ἀνδαλουσίας, χορεύεται ὑπὸ ἑνὸς ἑκάστοτε ζεύγους, εἶναι δὲ εὔθυμος καὶ διασκεδαστικός, παρὰ τὴν ρυθμικὴν ὁμοιομορφίαν τοῦ ἀκκομπανιαμέντου του, ἡ ὁποία χαρακτηρίζει ἄλλως τε ὅλους σχεδὸν τοὺς ἱσπανικοὺς σκοπούς. Τὸ μπολερὸ ἐχρησιμοποιήθη πολλάκις εἰς θεατρικὰ ἔργα, ὅπως, ἐπὶ παραδείγματι εἰς τὸ «Μαῦρο ντόμινο» τοῦ Ὠμπὲρ (τραγούδι τῆς Ἀγγέλας), εἰς τὴν εἰσαγωγὴν τῶν «Δύο τυφλῶν τοῦ Τολέδου» κ. λ. π. 2) βραχὺς γυναικεῖος ἐπενδύτης (βέστα), μετὰ ἢ ἄνευ χειρίδων, ἀνοικτὸς κατὰ τὸ στῆθος καὶ φθάνων μέχρι τῆς ζώνης μόνον· 3) εἶδος πολὺ μικροῦ στρογγύλου γυναικείου πίλου, ἔχοντος ἀνεστραμμένον πρὸς τὰ ἄνω τὸν γῦρον καὶ φέροντος ἕνα ἢ περισσοτέρους κροσσοὺς (πομπόν). — Ω.

**Μπολέτα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Μάκρη* (βλ. λ.).

**μπολεύω·** περιφέρομαι, τριγυρίζω: «νὰ ἤξερα ποῦ μπόλευες τόσες ὧρες» πρβ. *μπολοῦ*.

**μπόλι** (τό)· δημοτ., *ἐμβόλιον* (βλ. λ.).

**μπόλια** (ἡ)· μάκτρον, χειρόμακτρον, ἄλλως *πετσέτα, πεσκίρι* || τεμάχιον λεπτοῦ μεταξωτοῦ ὑφάσματος, δι' οὗ ἐκαλλώπιζον τὴν κεφαλὴν εἰς παλαιοτέραν ἐποχὴν (ἰταλ. invoglia ἢ ἑνετ. imbogio).

**μπολιάζω·** δημοτ.· ἐγκεντρίζω, ἐξευγενίζω διὰ τοῦ ἐγκεντρισμοῦ: «μπολιάζω τὸ κλῆμα,—τὴν νερατζιά,—τὴν ἀγριλιά»· || ἐπὶ ἀνθρώπου, ἐνεργῶ δαμαλισμόν, δαμαλίζω· || μεταφ., μεταδίδω νόσον μολυσματικήν: «κόλλησε μὲ φθισικὸ καὶ μπολιάστηκε» (βλ. καὶ *ἐμβολιάζω*).

**Μπολιάκ,** ἢ *Μπολλιὰκ* (Bol(l)iac), *Καῖσαρ*. Ρουμάνος ποιητὴς καὶ πολιτικὸς (1813—1880). Τῷ 1836 μετέσχε λαϊκοῦ κινήματος κατὰ τῆς Ρωσίας, κατόπιν δὲ κατεδιώχθη πολλάκις ὑπό τε τῶν Ρώσων καὶ τῶν Τούρκων διὰ τὴν ὑπὲρ τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ρουμανίας δρᾶσίν του. Κατὰ τὸ 1848 ἦτο ἐνεργὸν μέλος τῆς ἐπαναστατικῆς ἐπιτροπῆς καὶ εἶτα ἐξελέγη δήμαρχος Βουκουρεστίου καὶ εἷς τῶν προέδρων τῆς ἑταιρείας «Ὁ κυρίαρχος λαός». Ἐγένετο κατόπιν βουλευτής, διακριθεὶς ἐν τῷ κοινοβουλίῳ εἰς πλείστας περιστάσεις. Ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Curiosul» καὶ ἔγραψε: «Ποιήματα» (1847), «Ἐθνικὰ ᾄσματα» (1847), «Πολιτικαὶ σάτιραι» (1837), «Ματθίλδη» δρᾶμα, «Ἀρχαιολογικὸν ταξίδιον ἐν Ρουμανίᾳ» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μπολιάρι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κατσουλιᾶς τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας. Κάτ. (1928) 100. Χ. Δ.

**μπόλιασμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια τοῦ ἐμβολιάζειν, *δαμαλισμὸς* (βλ. λ.)· || ἐμβολίασμα τῶν δένδρων, ἐγκεντρισμός· || ἡ ἐγκεντρισθεῖσα ἀγριελαία.

**Μπολίβαρ** (Bolivar)· βλ. λ. *Βολίβαρ*.

**μπολικαίνω·** δημοτ. μεταβ., κάμνω τι μπόλικο, καὶ ἀμεταβ., γίνομαι μπόλικος, ἄφθονος.

**μπόλικος,** —*η*, —*ο*· δημοτ., ἄφθονος, πλούσιος, δαψιλής: «τὸ φαΐ μας εἶναι μπόλικο»· || ἐπὶ ἐνδυμάτων καὶ ὑποδημάτων, εὐρύς, εὐρύχωρος: «τὰ παπούτσια μοῦ 'ρχονται μπόλικα» (τουρκ. bolluk).

**Μπόλιν** (Bolin), *Ἀνδρέας-Γουλιέλμος*. Φινλανδὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1835. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἑλσινγκφορς. Ἠκολούθησε μᾶλλον τὰς δοξασίας τοῦ Φόϋερμπαχ καὶ ἔγραψεν: «Ἡ ἀνάπτυξις τοῦ αἰσθήματος τῆς οἰκογενείας μέχρι τῶν χρόνων τῆς Μεταρρυθμίσεως» (1860), «Ἡ οἰκογένεια» (1864), «Ὁ Λεϊβνίτιος ὡς πρόδρομος τοῦ Καντίου» (1864), «Περὶ τοῦ προβλήματος τῆς ἐλευθέρας βουλήσεως» κ.ἄ. Γ. Ι. Β.

**μπόλινγκ** (bowling). Εἶδος παιγνιδίου ἀμερικανικῆς προελεύσεως, λίαν διαδεδομένου καὶ ἐν Εὐρώπῃ. Εἶναι παρεμφερὲς πρὸς τὴν παρ' ἡμῖν γνωστὴν παιδιὰν «τσούνια», ἀλλὰ περισσότερον συστηματοποιημένον, παίζεται δὲ ἐπὶ καταλλήλως διηυθετημένου στίβου. Ὁ στίβος οὗτος ἀποτελεῖται ἐκ μακροῦ διαδρόμου, μήκους 20 περίπου μ. καὶ πλάτους 1,85 μ., ἐστρωμένου διὰ σκληροῦ ξύλου βερνικωμένου. Εἰς τὸ ἓν ἄκρον αὐτοῦ τοποθετοῦνται 10 ξύλιναι κορῦναι ὕψους 38 ἑκατοστομέτρων, ἀπὸ δὲ τοῦ ἑτέρου ἵστανται οἱ παῖκται ἔχοντες μεγάλας ξυλίνας σφαίρας (διαμ. 18—32 ἑκατ.) τὰς ὁποίας κυλίουσι κατὰ μῆκος τοῦ διαδρόμου, προσπαθοῦντες νὰ ρίψωσιν ἑκάστοτε ὅσον τὸ δυνατὸν περισσοτέρας κορύνας. Τὸ μπόλινγκ παίζεται μεταξὺ δύο ἢ περισσοτέρων παικτῶν, νικητὴς δὲ λογίζεται ἐκεῖνος ὅστις θὰ συγκεντρώσῃ τὸν μεγαλύτερον ἀριθμὸν βαθμῶν, ὑπολογιζομένων ἐπὶ τῇ βάσει εἰδικῶν κανόνων. Τὸ παιγνίδιον τοῦτο, λόγῳ τοῦ ὅτι συνδυάζει τὸ ἐνδιαφέρον τοῦ συναγωνισμοῦ καὶ τὴν μυϊκὴν ἄσκησιν, ἀριθμεῖ πολλοὺς θιασώτας, δὲν εἰσήχθη ὅμως μέχρι σήμερον παρ' ἡμῖν.

**Μπόλινγκμπρουκ** (Bolingbroke), *Ἐρρῖκος-Σαὶν-Ζών, κόμης*—. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1678—1751). Ἐκλεγεὶς τῷ 1700 βουλευτής, προσεχώρησεν εἰς τὸ κόμμα τῶν τόρεων καὶ κατόπιν ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν καὶ τῆς Δικαιοσύνης. Ἀνατραπεὶς τῷ 1708 ἔζησε μακρὰν τοῦ κόσμου, ἐν αὐστηρᾷ ἀπομονώσει, ἀφιερωμένος ἀποκλειστικῶς εἰς ἐπιστημονικὰς μελέτας. Ἐκ τῆς αὐτόχρημα ἀσκητικῆς ταύτης ζωῆς ἀπέσπασε τὸν Μπόλινγκμπρουκ ἡ βασίλισσα Ἄννα, ἥτις μεγάλως ἐξετίμα τὴν ἰδιοφυΐαν τοῦ πολιτικοῦ ἀνδρός, ἵνα τῷ ἀναθέσῃ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν. Ἡ εἰρήνη τῆς Οὐτρέχτης, ἣν παρεσκεύασεν ἐπὶ χρόνον μακρὸν καὶ ἐν τέλει κατώρθωσε νὰ συνομολογήσῃ, παρὰ τὴν πεισματώδη ἀντίδρασιν τῶν οὐΐγων, ὑπῆρξε τὸ μεγαλύτερον τῶν κατορθωμάτων του. Ἐν τούτοις οἱ ἀντίπαλοί του κατηγόρησαν τὴν συνθήκην ταύτην ὡς προδοτικήν. Ἀναλαβόντες δ' ἐν ἔτει 1714 τὴν ἐξουσίαν κατὰ τὴν εἰς τὸν θρόνον ἀνάβασιν τοῦ Γεωργίου Α', ἠξίωσαν παρ' αὐτοῦ τὴν ἄμεσον καθαίρεσιν τοῦ ὑπουργοῦ του καὶ παρὰ της βουλῆς τὴν προγραφὴν αὐτοῦ. Ὁ Μπόλινγκμπρουκ φοβηθείς, κατέφυγεν εἰς τὴν Γαλλίαν. Λαβὼν ἐκ μέρους τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α' τὴν ἄδειαν νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὴν Ἀγγλίαν, κατῆλθεν ἐκ νέου εἰς τὸν πολιτικὸν ἀγῶνα καὶ ἐκήρυξε λυσσαλέον πόλεμον κατὰ τῆς κυβερνήσεως Οὐάλπολ, τὴν διαφθορὰν τοῦ ὁποίου ἐστιγμάτισεν εἰς τὰς πολυθρυλήτους «Ἐπιστολάς» του καὶ τὴν «Περὶ τῶν κομμάτων» διατριβήν του. Τῷ 1735, κατακοπος ἐκ τῶν πολιτικῶν ἀγώνων, μετέβη καὶ πάλιν εἰς τὴν Γαλλίαν. Ἐπιστρέψας δὲ κατόπιν εἰς τὴν πατρίδα του ἔζησεν ἐν πλήρει ἀπομονώσει μέχρι τέλους τοῦ βίου του.

Ὁ Μπόλινγκμπρουκ διεκρίθη καὶ ὡς συγγραφεύς, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς σημερινῆς καταστάσεως τῆς Μεγάλης Βρεττανίας», «Ἀπόκρυφα ἀπομνημονεύματα περὶ τῶν ὑποθέσεων τῆς Ἀγγλίας ἀπὸ τοῦ 1710—1736», «Σκέψεις ἐπὶ τῆς ἐξορίας», «Ἐπιστολαὶ ἀναφερόμεναι εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας», «Σκέψεις περὶ τῆς φυσικῆς θρησκείας» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπολιντινεάνο,** *Δημήτριος*. Ρουμᾶνος πατριώτης καὶ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1819 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1872. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848 ὑπῆρξεν εἷς ἀπὸ τοὺς κυριωτέρους συντάκτας τοῦ ἐθνικιστικοῦ ὀργάνου «Poporul suveran», ἀλλ' ἠναγκάσθη συντόμως νὰ ζητήσῃ ἄσυλον εἰς τὴν Τρανσυλβανίαν καὶ μετὰ ταῦτα εἰς Παρισίους, ἔνθα ἐξέδωκε γαλλικὴν μετάφρασιν τῆς ποιητικῆς του συλλογῆς «Ἀνατολικαὶ αὖραι». Τῷ 1859 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ρουμανίαν, ἀναμειχθεὶς ζωηρῶς εἰς τὴν πολιτικὴν κίνησιν τοῦ τόπου, ἀπὸ δὲ τοῦ 1866 ἀφιερώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Ἡ δημοσιογραφικὴ καὶ λογοτεχνικὴ του παραγωγὴ ὑπῆρξε ποικιλωτάτη. Ἐδημοσίευσε πολιτικὰ ἄρθρα, φιλολογικὰς μελέτας, διηγηματικὰ καὶ λυρικὰ ποιήματα, ἅτινα συνεκέντρωσεν εἰς συλλογὰς ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Legende istorice», «Florile Bosforului», «Basmele», «Macedonele si Reveriile». Συνέγραψε καὶ ἔργα τινὰ θεατρικά. Ὡς δημοσιογράφος ὁ Μπολιντινεάνο ὑπῆρξεν ἐξόχως μαχητικός, ὡς θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ κριτικὸς ἱκανῶς ἀξιοσημείωτος καὶ ὡς ποιητὴς ἐπιρρεπὴς εἰς εὐκόλους ἐνθουσιασμοὺς καὶ αἰσθηματισμούς. Ι. Μ. Π.

**Μπολιοῦλλος** *Πὰρ ντὲ Κοντάδο* (Bollullos Par del Condado) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ Χουέλβα τῆς Ἀνδαλουσίας. Κάτ. 7.886. Ἀπετέλει κατὰ τὸν μεσαίωνα ἰδίαν κομιτείαν. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν ἐρείπια ρωμαϊκῶν καὶ ἀραβικῶν κτηρίων. Διεξάγει ἐμπόριον οἴνων, οἰνοπνευμάτων καὶ ἐλαίου καὶ ἔχει ἐργοστάσια ὑαλουργίας καὶ κεραμοποιίας. Μ. Δ. Β.

**Μπολιώτης,** *Μανοῦσος*. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ τοῦ χωρίου Ἀσφέντου, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1866—1869. Ἐτραυματίσθη κατὰ τὴν διάρκειαν ἐπιθέσεως ἐναντίον τῶν ἐν Μπροσγιαλῷ Τούρκων τὴν 5 Φεβρουαρίου 1868. Ν. ΚΛΣ

**Μπόλλαντ** (Bolland)· βλ. λ. *Βολλάνδος*.

**Μπολλαὺ** (Bolley), *Πομπήϊος*. Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1812 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1870. Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ πολυτεχνείου τῆς Ζυρίχης. Ἠσχολήθη μὲ τὴν χημείαν τῶν συνθετικῶν χρωμάτων, ἐπενεγκὼν μεγάλας προόδους εἰς αὐτήν. Ἐδημοσίευσεν «Ἐγχειρίδιον τεχνικῶν χημικῶν ἐρευνῶν», σχὼν πολλὰς ἐκδόσεις, καὶ ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων συναδέλφων του τὸ κλασσικὸν «Ἐγχειρίδιον χημικῆς τεχνολογίας» (1862 κ. ἑ.). Σ. Γ.

**Μπολλὲ** (Bollée), *Λέων-Αὔγουστος-Ἀντώνιος*. Γάλλος μηχανικὸς καὶ ἐφευρέτης (1870—1913). Ἐκ νεαρωτάτης ἡλικίας εἶχε καταδειχθῆ προικισμένος δι' ἐξαιρετικοῦ ἐφευρετικοῦ ταλάντου, δεκατετραετὴς δὲ μόλις κατεσκεύασεν εἶδος θαλασσίου ποδηλάτου καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἰδιότυπον συσκευὴν κολυμβήσεως. Τῷ 1889 παρουσίαζεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Ἐπιστημῶν μίαν λογιστικὴν μηχανήν, νέου ἐντελῶς καὶ εὐφυεστάτου μηχανισμοῦ. Διὰ τὴν ἐπινόησίν του ἐκείνην ἐδέχθη τὰ συγχαρητήρια τῆς Ἀκαδημίας, ἡ δὲ μηχανή του ἀγορασθεῖσα ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ κράτους εὑρίσκεται ἔκτοτε ἐκτεθειμένη εἰς τὸ ἐν Παρισίοις Μουσεῖον Τεχνῶν καὶ Ἐπαγγελμάτων. Τὸ ἴδιον ἔτος ἐλάμβανε προνόμιον εὑρεσιτεχνίας διὰ τὸ πρῶτον αὐτοῦ αὐτοκίνητον, τὸ ὁποῖον, τόσον διὰ τὴν διάταξιν τῶν μηχανημάτων ὅσον καὶ διὰ τὰς εἰς αὐτὰ ἐπενεχθείσας ὑπὸ τοῦ Μπολλὲ τελειοποιήσεις, ἀπετέλεσεν ἀξιόλογον σταθμὸν εἰς τὴν ἐπακολουθήσασαν ραγδαίαν ἐξέλιξιν τοῦ μεταφορικοῦ τούτου μέσου. Τὴν ἐξέλιξιν δὲ ταύτην τοῦ αὐτοκινήτου παρηκολούθησεν ἐνεργῶς ὁ Μπολλέ, ἱδρύσας σοβαρὸν ἐργοστάσιον ἐν Mans, ὅπου ἐδημιούργησε πολλοὺς νέους τύπους ὀχημάτων, ἐξαιρέτου τεχνικῆς κατασκευῆς καὶ πρωτοτύπου συλλήψεως. Ἠσχολήθη κατόπιν μὲ τὴν ἀεροπλοΐαν, προσέθεσεν δὲ ὅτι τὴν λύσιν τοῦ ζητήματος τῆς πηδαλιουχίας τῶν ἀεροσκαφῶν θὰ ἔδιδε τὸ «βαρύτερον τοῦ ἀέρος», ἐνεθουσιάσθη μὲ τὴν ἐπιτυχίαν τῶν ἀδελφῶν Ράϊτ καί, ὅταν αὐτοὶ ἀπεφάσισαν τέλος νὰ ἔλθουν εἰς τὴν Εὐρώπην, τοὺς προσείλκυσεν εἰς Μάνς, ὅπου ἔθεσε εἰς τὴν διάθεσίν των τὴν ὑποστήριξίν του, τὰς σκέψεις του καὶ τὰ τεχνικὰ μέσα τοῦ ἐργοστασίου του. Ὑπῆρξεν ἐφεξῆς εἷς τῶν κυριωτέρων συντελεστῶν τῆς ἀναπτύξεως τῆς ἀερο-

Digitized by Google

πλοίας ἐν Γαλλίᾳ, ἀλλὰ ὁ θάνατος διέκοψε προώρως τὸ ἔργον του. —Ω.

**Μπολλὲν** (Bollène) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Βωκλύζ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λέζ, εἰς ἀπόστασιν 46 χλμ. ἀπὸ τῆς Ἀβινιόν. Ἔχει σηροτροφίαν καὶ κλωστοϋφαντουργίαν καὶ εἶναι κέντρον καλλιεργείας σιτηρῶν. Κάτ. 5.470. Χ. Δ.

**Μπόλλιγκεν** (Bolligen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης, κειμένη ἐγγὺς τῆς πόλεως Βέρνης καὶ ἔχουσα μεταλλικὰς θερμοπηγὰς καὶ ὀρυχεῖα ἐρυθρᾶς ἀργίλλου, ἐργοστάσια πούδρας καὶ χάρτου. Κάτ. 7.000. Χ. Δ.

**Μπόλλινγκερ** (Bollinger), ***Ὄθων***. Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Altenkirchen τῷ 1843. Τῷ 1880 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς γενικῆς παθολογίας καὶ ἀνατομοπαθολογίας καὶ διευθυντὴς τοῦ παθολογικοῦ ἰνστιτούτου ἐν Μονάχῳ. Συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν πρόοδον τῆς κτηνιατρικῆς διὰ τῆς συγκριτικῆς μελέτης τῆς παθολογίας τῶν ζῴων πρὸς τὴν τῶν ἀνθρώπων, ἱδρύσας ἐπὶ τούτῳ μετ' ἄλλων ειδικὸν περιοδικόν, οὗτινος ὑπῆρξε καὶ συντάκτης ὑπὸ τὸν τίτλον «Deutsch. Ztschr. f. Tiermed. u. vergl. Pathol.». Πρὸς τούτοις ἔγραψε διαφόρους πραγματείας, ὡς περὶ κωλικῶν τῶν ἵππων καὶ ἀνευρυσμάτων ἐξ ἑλμίνθων τῶν σπλαγχνικῶν ἀρτηριῶν, περὶ παθολογίας τοῦ σπληνάνθρακος, περὶ μολύνσεων ἐκ δηλητηρίων τῶν ζῴων κ.λ.π., ὡς καὶ δίτομον σύγγραμμα «Ἀνατομοπαθολογίας μετ' ἀτλάντων». Ο. Ρ.

**Μπόλλινγκτον** (Bollington) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Τσέσαϊρ, 5 χλμ. πρὸς Β. τοῦ Μάκκλεσφηλντ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Περίφημος ναὸς τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου Βαπτιστοῦ, παλαιοῦ ἀγγλικοῦ ρυθμοῦ, βιομηχανίαι βάμβακος καὶ μετάξης, λατομεῖα κλπ. Κάτ. 5.224. Χ. Δ.

**Μπόλμ, *λίμνη*** (Bolmsee) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Σουηδίας, ἐν τῷ νομῷ Ἰόνκοπινγκ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 183 τ. χλμ., μῆκος 80 χλμ. Εἰς τὸ κέντρον αὐτῆς κεῖται ἡ νῆσις *Μπόλμσοε*, ἐπὶ τῆς ὁποίας ὑπάρχουν περίεργα ἐρείπια κτηρίων εἰδωλολατρικῆς ἐποχῆς. Τὰ ὕδατα τῆς λίμνης χύνονται εἰς ἑτέραν λίμνην, τὴν Ἄν, διὰ μέσου διώρυγος 20 χλμ. μήκους. Μ. Δ. Β.

**Μπολμπὲκ** (Bolbec) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Σηκουάνα, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 30 χλμ. ἀπὸ τῆς Χάβρης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου κτηνῶν καὶ σιτηρῶν καὶ ἔχει βιομηχανίας ὑφασμάτων. Κάτ. 11.590. Χ. Δ.

**μπολμπότσα** (ἡ). Κοινὴ ὀνομασία τῆς *βράκας* (βλ. λ.) ὑπὸ τῶν χωρικῶν τῆς Δ. Μακεδονίας.

**Μπολντὰν** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως τοῦ νομοῦ Δενιζλί. Κάτ. 6.283 (1927). Ἡ ὑποδιοίκησις, ἔχουσα ἐπιφάνειαν 1.350 τετρ. χλμ., ἔχει 24.672 κατοίκους (1927). Κύριον προϊὸν τὸ ὄπιον. Ν. Μ.

**Μπολντίνι** (Boldini), ***Ἰωάννης***. Ἰταλὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Φερράρᾳ (1845—1931). Ὑπῆρξεν υἱὸς μετρίου καλλιτέχνου καὶ ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν ἐν Φλωρεντίᾳ Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν τεχνῶν. Τῷ 1872 ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις, ὅπου τάχιστα διεφημίσθη ὡς εἷς τῶν ἱκανωτέρων προσωπογράφων τῆς ἐποχῆς. Ὁ Μπολντίνι διέπρεψεν ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος γυναικῶν, ἀποδίδων μετὰ θαυμαστῆς δεξιότητος τὴν γυναικείαν χάριν, τὴν κομψότητα, τὴν ἐρασμιότητα, τὸ θέλγητρον. Καὶ εἰς τὰς ἀνδρικάς του ὅμως προσωπογραφίας ἀνεδεικνύετο κάτοχος σημαντικωτάτων προσόντων, ἐν οἷς ἡ ἀπόδοσις τῆς ἐσωτερικότητος, ἡ ψυχαναλυτικὴ ἱκανότης καὶ ἡ δύναμις τῆς ἐκφράσεως. Πλὴν τῆς προσωπογραφίας, ὁ Μπολντίνι ἐκαλλιέργησε μετ' ἐπιτυχίας καὶ τὴν ρωπογραφίαν, ἀποδόσας χαρακτηριστικὰς σκηνὰς τοῦ καθημερινοῦ βίου. Ἐτιμήθη διὰ μεγάλου βραβείου εἰς τὰς παρισινὰς ἐκθέσεις τοῦ 1889 καὶ τοῦ 1900. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἄλογα ἐν ἀναπαύσει», «Προσωπογραφία», «Προσωπογραφία τοῦ Βέρντι» (τὰ δύο τελευταῖα ἐν τῇ πινακοθήκῃ νεωτέρας τέχνης τῆς Ρώμης), «Ὁ ζωγράφος Τζὼν Λιοὺῒς Μπράουν μετὰ τῆς οἰκογενείας του», «Ὁ κόμης Ροβέρτος ντὲ Μοντεσκιέ», «Οὐΐστλερ» κλπ. Ι. Μ. Π.

**Μπόλντρεγουντ, *Ρὸλφ*** (Rolf Boldrewood). Ψευδώνυμον τοῦ Ἄγγλου μυθιστοριογράφου *Θωμᾶ Ἀλεξάνδρου Μπράουν* (Thomas Alexander Browne), γεννηθέντος ἐν Λονδίνῳ (1826—1915), ἀνατραφέντος δὲ ἐν Αὐστραλίᾳ, ἔνθα μετηνάστευσεν ἡ οἰκογένειά του. Ἔγραψε μυθιστορήματα ἐμπνευσμένα ἐκ τῆς αὐστραλιανῆς ζωῆς, ὧν τὰ καλύτερα εἶναι: «Ἡ ἔνοπλος λῃστεία» (1888), «Τὸ ὄνειρον τοῦ ἀποίκου» (1890), «Τὸ δίκαιον τοῦ μεταλλευτοῦ» (1890). Γ. Ι. Β.

**Μπολὸ** (Bolo), *Παῦλος-Μαρία*. Γάλλος τυχοδιώκτης, καταδικασθεὶς εἰς θάνατον ἐπὶ προδοσίᾳ, διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, καὶ τυφεκισθεὶς ἐν τῷ πολυγώνῳ τῶν Βιγκενῶν, τῇ 17ῃ Ἀπριλίου 1918. Εἶχε γεννηθῆ τῷ 1867 ἐν Μασσαλίᾳ, ὅπου, ἀφοῦ ἤσκησεν ἐπί τινα χρόνον τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ὀδοντοϊατροῦ, ἀνεμίχθη κατόπιν εἰς ἐμπορικὰς ἐργασίας καὶ βραδύτερον ἀνέλαβε τὴν ἐκμετάλλευσιν ἑνὸς πάρκου μετ' ἑστιατορίου. Καταστρέψας οἰκονομικῶς τὸν συνεταῖρόν του, ἀπήγαγεν ἐν τέλει τὴν σύζυγον αὐτοῦ καὶ ἔφυγε μαζί της εἰς Ἰσπανίαν, ὅπου ἔζησεν ἐν ἀθλιότητι, ἄλλοτε ἐπαγγελόμενος τὸν ὑπάλληλον ζυθοπωλείου καὶ ἄλλοτε παραμένων ἄεργος. Τῷ 1892 εὑρίσκετο εἰς Παρισίους, διατηρῶν, κατ' ἐπιφάνειαν τουλάχιστον, ἐμπορικὸν γραφεῖον· συνελήφθη ὅμως τότε μὲ τὴν κατηγορίαν ὅτι ἔκλεψε τὸ φυλλάδιον ταμιευτηρίου τῆς ὑπηρέτριας του καὶ κατεδικάσθη εἰς φυλάκισιν. Μεταβὰς μετέπειτα εἰς Μπουένος-Ἄϋρες τῆς Ἀργεντινῆς, ἐνυμφεύθη ἐκεῖ μίαν χορεύτριαν καφωδείου, τὴν ὁποίαν δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐγκαταλείψῃ, καὶ τῷ 1902 ἐμφανίζεται εἰς Λυὼν ὡς ἀντιπρόσωπος οἰνεμπορικοῦ οἴκου. Μετὰ δύο ἔτη, εὑρισκόμενος εἰς Παρισίους, ἐπιτυγχάνει νὰ νυμφευθῇ πλουσίαν χήραν, ἐπιδίδεται ἔκτοτε εἰς μεγάλας ἐπιχειρήσεις καὶ ζῇ τὴν ζωὴν τῶν πολυεκατομμυριούχων. Ἔχει τρία αὐτοκίνητα, διατηρεῖ πολυτελέστατον μέγαρον εἰς τὴν πρωτεύουσαν καὶ θαυμασίαν ἔπαυλιν εἰς τὸ Μπιαρρίτς. Εἰς τὸν οἶκόν του συχνάζουν βουλευταί, ἄνθρωποι τοῦ κόσμου καὶ τῶν γραμμάτων, ὁ πρῶτος πρόεδρος τοῦ δικαστηρίου τῶν Παρισίων καὶ ὁ τέως πρωθυπουργὸς Καγιώ. Ὁ Μπολὸ κατορθώνει νὰ συνδεθῇ στενότατα μὲ ὅλας αὐτὰς τὰς προσωπικότητας. Διὰ τοῦ πολυτελοῦς ὅμως βίου καὶ τῆς ἀχαλινώτου σπατάλης τὸ ἐκ τῆς περιουσίας τῆς συζύγου του εἰσόδημα, ἀνερχόμενον ἀρχικῶς εἰς 300.000 χρ. φρ. ἐτησίως, εἶχε φθάσει κατὰ τὰς παραμονὰς τοῦ πολέμου εἰς 47.000 μόνον καὶ ἔβαινε διαρκῶς ἐλαττούμενον. Ὁ Μπολὸ εὑρίσκεται ἤδη εἰς τὰς παραμονὰς πλήρους οἰκονομικῆς καταρρεύσεως. Ἀλλὰ τῷ 1914 σχετίζεται στενῶς μὲ τὸν Γιουσοὺφ-Σαδδὶκ-πασᾶν, ὑπουργὸν τοῦ Χεδίβου της Αἰγύπτου Ἀμπὰς-Χιλμῆ, μέσῳ δ' αὐτοῦ καὶ μὲ τὸν ἴδιον χεδίβην βραδύτερον. Ἐπιτυγχάνει τότε νὰ γίνῃ οἰκονομικὸς πράκτωρ τοῦ ἡγεμόνος τούτου καὶ μόνος ἀντιπρόσωπός του ἐν Εὐρώπῃ, μὲ τὴν ἐντολὴν νὰ διεξαγάγῃ τὰς διαπραγματεύσεις διὰ τὴν ἀνανέωσιν τῆς παραχωρήσεως τῆς διώρυγος τοῦ Σουέζ. Ὁ Ἀμπὰς-Χιλμῆ ἐν τῷ μεταξὺ τοῦ ἀπονέμει τὸν τίτλον τοῦ πασᾶ. Κατὰ Δεκέμβριον τοῦ 1914, ὁπότε ἡ Ἀγγλία καθῄρεσε τὸν Ἀμπάς, λόγῳ τῶν γερμανοφίλων προθέσεών του, ὁ ἔκπτωτος χεδίβης ἀπεσύρθη εἰς Βιέννην καὶ ἀπὸ τοῦ Ἰουλίου 1915 εἰς Ἑλβετίαν, μισῶν τοὺς Ἄγγλους καὶ τοὺς Γάλλους καὶ διατηρῶν στενὰς σχέσεις μὲ τὸν ἐν Βέρνῃ Γερμανὸν πρεσβευτήν. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ὁ Μπολὸ ἐταξίδευσε δὶς εἰς Ἰταλίαν καὶ ἑξάκις εἰς Ἑλβετίαν, συνεννοήσεις δ' ἐξ ἄλλου δι' ἀλληλογραφίας καὶ δι' ἀπεσταλμένων διεξήγοντο μεταξὺ αὐτοῦ, τοῦ ἐκπτώτου χεδίβου καὶ τινος Ἰταλοῦ τυχοδιώκτου Καβαλλίνι, ἄλλοτε βουλευτοῦ, ἔχοντος πολλὰς δοσοληψίας μὲ τὴν δικαιοσύνην τῆς χώρας του. Ὁ Μπολὸ ἐπρότεινε τότε τὴν ἐξαγορὰν διαφόρων γαλλικῶν ἐφημερίδων, ἢ τὴν ἵδρυσιν νέων, μὲ τὸν σκοπὸν νὰ ἐπηρεασθῇ εὐνοϊκῶς ἀπέναντι τῶν Γερμανῶν ἡ κοινὴ ἐν Γαλλίᾳ γνώμη καὶ ν' ἀσκηθῇ ἡττοπαθὴς προπαγάνδα παρὰ τῷ λαῷ. Τὰς προτάσεις ταύτας διεβίβασεν ὁ Σαδδὶκ πασᾶς εἰς τὴν γερμανικὴν κυβέρνησιν, ἡ ὁποία φαίνεται ὅτι τὰς ἀπεδέχθη.

Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι κατὰ Μάρτιον 1915 ἀπεστέλλοντο εἰς τὸν Ἀμπὰς-Χιλμῆ ἐκ Γερμανίας δι' ἐπιταγῶν 2 ἑκατομμύρια μάρκων, ἕτερα δὲ 2 ἑκατομμύρια κατὰ τὸν ἑπόμενον μῆνα. Βέβαιον ἐπίσης εἶναι ὅτι ἐκ τοῦ πρώτου ἐμβάσματος ὁ Καβαλλίνι ἔφερεν εἰς τὸν Μπολὸ εἰς Παρισίους ἐν περίπου ἑκατομμύριον. Ἐπέτυχεν οὗτος τότε τὴν ἐπανέκδοσιν τῆς ἐφημερίδος «Rappel», ἥτις εἶχε σταματήσει ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τοῦ πολέμου, ἀγοράσας δι' ἑαυτὸν τὸ ἥμισυ τῶν 3.000 νέων μετοχῶν αὐτῆς. Ἐπεχείρησε δὲ κατόπιν, χωρὶς ὅμως νὰ τὸ ἐπιτύχῃ, ν' ἀγοράσῃ 500 μετοχὰς τοῦ «Φιγκαρώ». Ἀλλὰ τὰ ἀποτελέσματα ταῦτα ἦσαν ἀνάξια πολλοῦ λόγου, ὁ δὲ Μπολὸ ἐσκέφθη τότε νὰ ἐπιδιώξῃ κάτι σημαντικώτερον: νὰ δώσῃ εἰς χεῖρας τῶν κεντρικῶν δυνάμεων τὴν περισσότερον κυκλοφοροῦσαν γαλλικὴν ἐφημερίδα. Τὸ «Journal» διηυθύνετο τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὑπὸ τοῦ Καρόλου Ἐμπέρ, γερουσιαστοῦ καὶ ἀντιπροέδρου τῆς ἐπὶ τῶν στρατιωτικῶν ἐπιτροπῆς τῆς Γερουσίας, τὸν ὁποῖον ὁ Μπολὸ ἔπεισε νὰ συνεταιρισθῇ μαζί του, ὑπὸ τὸν ὅρον ὅτι θὰ τοῦ εἰσέφερεν οὗτος εἰς μετρητὰ 5.500.000 φράγκων, ὑπεγραφὴ δὲ τὸ μεταξὺ τῶν ἑταιρικῶν συμβόλαιον κατὰ Ἰανουάριον 1916.

Κατόπιν τῆς πρώτης αὐτῆς ἐπιτυχίας ὁ Μπολὸ ἀπῆλθεν εἰς Ἀμερικήν, φέρων μαζί του τὸ ὑπογραφὲν συμβόλαιον, καὶ ὑπέβαλε τὰς προτάσεις του εἰς τὸν ἐν Οὐασιγκτῶνι Γερμανὸν πρεσβευτὴν κόμητα Μπέρνστορφ. Μετ' ὀλίγας ἡμέρας κατετίθεντο ἐπ' ὀνόματί του, εἰς ἐξ δόσεις, 9 ἑκατομμύρια φράγκων εἰς τὴν Βασιλικὴν Τράπεζαν τοῦ Καναδᾶ, ὁπόθεν ὁ Μπολὸ τὰ μετεβίβασεν εἰς Γαλλίαν. Ἐξ αὐτῶν κατεβλήθησαν εἰς τὸν Ἐμπὲρ τὰ 5.500.000 φρ., τὸ δὲ ὑπόλοιπον ἀπέμεινεν εἰς χεῖρας τοῦ τυχοδιώκτου. Μετὰ τὴν εἴσοδον ὅμως τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν εἰς τὸν πόλεμον ἡ ἐν Ἀμερικῇ ἀνταντικὴ κατασκοπεία ἐπέτυχε ν' ἀποκαλύψῃ ἐξ ὁλοκλήρου τὰ κατὰ τὸ τελευταῖον τοῦτο κατόρθωμά του, ἡ δὲ ἐν Γαλλίᾳ ἀνάκρισις τὴν προγενεστέραν δρᾶσίν του. Ὁ Μπολὸ ἤχθη κατὰ Φεβρουάριον 1918 πρὸ τοῦ στρατοδικείου, τὸ ὁποῖον κατεδίκασε τὸν Μπολὸ εἰς θάνατον, ἐρήμην δὲ εἰς θάνατον ἐπίσης τὸν συνεργάτην του Καβαλλίνι. Διὰ ν' ἀναστείλῃ τὴν θανατικὴν ἐκτέλεσίν του ὁ Μπολὸ ἐδήλωσεν ὅτι θὰ προβῇ εἰς ἀποκαλύψεις, ἀλλ' ἀπεδείχθη ὅτι ἐπρόκειτο περὶ τεχνάσματος καὶ ἡ ἀπόφασις ἐξετελέσθη ἐν τῷ πολυγώνῳ τῶν Βιγκενῶν τὴν 18 Ἀπριλίου ἰδίου ἔτους. Γ. Ζ.

**Μπολόβεν** (Boloven), ***ὀροπέδιον τῶν***— *[Γεωγρ.]*. Εὐρὺ ὑψίπεδον τῆς χώρας τῶν Λάος ἐν τῇ γαλλικῇ Ἰνδοκίνᾳ, μεταξὺ τῆς Ἀνναμιτικῆς ὀροσειρᾶς, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ προέκτασιν, καὶ τοῦ ποταμοῦ Μέκονγκ. Ἔχει ἔκτασιν 100 περίπου τετρ. χλμ. καὶ ὕψος 1000—1200 μ., διακόπτεται δὲ ὑπὸ βαθυτάτων χαραδρῶν. Ὁ πληθυσμὸς αὐτοῦ ἀποτελεῖται ἀπὸ ἡμιαγρίους Χά, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνεται ἡ φυλὴ τῶν Μπολόβεν. Κατὰ τὰ ἔτη 1877—1901 ἐξηρευνήθη ὑπὸ τῶν Ἀρμάν, Μαϊγκρὲβ καὶ Μπερνάρ. Χ. Δ.

**Μπολόνια** (Bologna) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορείου Ἰταλίας (βλ. λ. *Βολωνία*).

**Μπολόνια** (Bologna), ***Δομίνικος ντὰ*** —. Ἰταλὸς ζωγράφος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἐζωγράφησε τῷ 1537 πίνακα, ἐν ᾧ παρίσταται ὁ Ἰωνᾶς ἐξερχόμενος τῆς κοιλίας τοῦ κήτους. Ὁ πίναξ οὗτος εὑρίσκεται ἐν Κρεμόνῃ. Γ. Ι. Β.

— **Μπολόνια** (Bologna), ***Ἰωάννης***, ἢ ***Τζιαμπολόνια***. Φλαμανδὸς γλύπτης, γεννηθεὶς ἐν Ντουαὶ τῷ 1524 (δι' ὃ καὶ ἐπονομάζεται, ὑπὸ τῶν Γάλλων ἰδίᾳ ἱστορικῶν τῆς τέχνης, *Ἰωάννης ὁ ἐκ Ντουαί*) καὶ ἀποθανὼν ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1608. Τὰ πρῶτα καλλιτεχνικὰ μαθήματα ἔλαβεν ἐν τῇ πατρίδι του παρὰ τῷ J. Dubroeucq, μηχανικῷ καὶ γλύπτῃ. Μεταβὰς εἰς λίαν νεαρὰν ἡλικίαν εἰς Ἰταλίαν, συγκατηριθμήθη ἐν Ρώμῃ εἰς τοὺς ὀπαδοὺς τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, ὅστις ἤσκησε βαθυτάτην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς καλλιτεχνικῆς ἐξελίξεως τοῦ Μπολόνια. Ἐκ Ρώμης ὁ καλλιτέχνης οὗτος μετέβη εἰς Φλωρεντίαν, ὅπου δὲν ἐβράδυνε νὰ ἑλκύσῃ τὴν προσοχὴν τῶν φιλοτέχνων Μεδίκων. Ὠνομάσθη αὐλικὸς γλύπτης τούτων καὶ μέχρι τοῦ θανάτου του διετήρησε τὰς τιμάς, διὰ τῶν ὁποίων περιεβλήθη, ἐνῷ συγχρόνως ἔβλεπε τὴν φήμην του διηνεκῶς αὐξανομένην καὶ ἁπλουμένην ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν καὶ πέραν ταύτης. Ἡ γαλλικὴ γλυπτικὴ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος προέρχεται κατὰ μέγα μέρος ἀπὸ τὸ ἔργον του· τόσον μεγάλη ὑπῆρξεν ἡ ἐπίδρασις, τὴν ὁποίαν ἤσκησε ζῶν καὶ μετὰ θάνατον. Καὶ ὁ Μπολόνια ὅμως ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν, ἐκτὸς τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, καὶ τοῦ Μπαντινέλλι. Τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ὁ Μπολόνια διήγαγεν ἐν Φλωρεντίᾳ, ὅπου ὑπάρχει καὶ τὸ μέγιστον μέρος τοῦ ἔργου του. Διέμεινεν ὅμως ἐπί τι χρονικὸν διάστημα καὶ ἐν Βολωνίᾳ, ὅπου ἐνυμφεύθη· ἐκ τῆς πόλεως ταύτης, κατὰ τὴν κρατοῦσαν ἀντίληψιν, προέρχεται τὸ ἐπώνυμον τοῦ καλλιτέχνου τούτου (ὑπάρχουν ὅμως καὶ οἱ ὑποστηρίζοντες, ὡς ὀρθοτέραν, τὴν γραφήν: Boulogne).

Ὁ Μπολόνια ὑπῆρξε καλλιτέχνης προικισμένος μὲ τάλαντον εὔστροφον καὶ κομψόν. Τὰ ἔργα του ἀποπνέουν εὐγένειαν, ἄνεσιν εἰς τὰς κινήσεις, τὰς χειρονομίας καὶ τὰς στάσεις, ἁπλότητα εἰς τὸν καθόλου σχηματισμόν· ἐπὶ πλέον διακρίνονται διὰ τὴν εὐρεῖαν διακοσμητικήν των ἀξίαν. Ἐκ τῆς ἀφθόνου του παραγωγῆς μνημονεύομεν: «Ὁ Σαμψὼν καταβάλλων τοὺς Φιλισταίους» (σύμπλεγμα δωρηθὲν ὑπὸ τοῦ Φερδινάνδου τῶν Μεδίκων εἰς τὸν Ἰσπανὸν δοῦκα τῆς Λεώνης)· ὀρειχάλκινον ἄγαλμα τοῦ Ἑρμοῦ, πλῆρες τολμηρᾶς κινήσεως καὶ θαυμαστῆς ἐναργείας (δωρηθὲν εἰς τὸν αὐτοκράτορα τῆς Γερμανίας)· γλυπτικαὶ διακοσμήσεις ἐκτελεσθεῖσαι τῷ 1579 ἐν τῇ μεγάλῃ αἰθούσῃ τῶν τελετῶν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Γενούης· ὁ Ποσειδῶν καὶ αἱ Σειρῆνες τῆς δημοσίας κρήνης τῆς Βολωνίας (Fontana del Nettuno), ἱδρυθείσης πρὸ τοῦ ἀνακτόρου τοῦ βασιλέως Enzo ἐπὶ σχεδίων τοῦ Θ. Λαουρέτι (τὸ πρόπλασμα τοῦ Ποσειδῶνος τοῦ Τζιαμπολόνια ἀπόκειται εἰς τὴν 16ην αἴθουσαν τοῦ μεσαιωνικοῦ καὶ νεωτέρου τμήματος τοῦ Museo civico τῆς Βολωνίας)· τὸ πρὸς τ' ἀριστερὰ τῆς Κρήνης τοῦ Ποσειδῶνος ἐν τῇ πλατείᾳ τῆς Σινιορίας (Palazzo Vecchio) ἐν Φλωρεντίᾳ ἱδρυμένον θαυμάσιον ἱππικὸν ὀρειχάλκινον ἄγαλμα τοῦ Κοζίμου Α' τῶν Μεδίκων (ὁ ἵππος τοῦ ἀγάλματος τούτου θεωρεῖται ὡς ὁ ὡραιότερος ἵππος ὁλοκλήρου τῆς ἰταλικῆς πλαστικῆς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος)· «Ἡ ἁρπαγὴ τῶν Σαβίνων», θαυμάσιον σύμπλεγμα πλῆρες ἐντόνου κινήσεως, εὑρισκόμενον εἰς τὴν περίφημον Loggia dei Lanzi τῆς Φλωρεντίας, ἔργον τοῦ ἔτους 1583· «Ὁ

Digitized by Google

Ὠκεανὸς» καὶ «Ἡ Ἀρετὴ κολάζουσα τὴν Κακίαν», ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ (Palazzo del Podestà ἢ del Bargello) τῆς Φλωρεντίας· «Ἡ ἀνατροφὴ τῆς Κυβέλης», «Ὁ Ἑρμῆς» καὶ «Ἡ Ἀφροδίτη» (αὐτόθι)· ὁ ἀνδριὰς τοῦ μεγάλου δουκὸς Φερδινάνδου τοῦ Α', ἱδρυμένος ἐν τῇ πλατείᾳ τῆς Ἀννουντσιάτας (della Santissima Annunziata), ἐν Φλωρεντίᾳ· «Ὁ Ἐσταυρωμένος», ἐν τῷ ναῷ τῆς Santa Maria Novella τῆς αὐτῆς πόλεως· ἕτερος «Ἐσταυρωμένος» ἐν τῷ παλατίῳ Πίττι τῆς Φλωρεντίας· ἡ ἐξαιρέτως διακοσμητικὴ «Κρήνη τοῦ ὠκεανοῦ» ἐν τῷ κήπῳ Boboli τῆς Φλωρεντίας ὁμοίως· ἓν ἄγαλμα τῆς «Ἀφθονίας», ἐν τῷ αὐτῷ κήπῳ εὑρισκόμενον, ὅπερ ὁ Τζιαμπολόνια ἐξειργάσθη ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ Τάκκα· «Ἡ Ἀφροδίτη» τοῦ κήπου τῆς περιφήμου Villa della Petraia (περίχωρα Φλωρεντίας)· «Ἡ κρήνη τοῦ Ἡρακλέους καὶ τοῦ Κάκου» καὶ ἄγαλμα τοῦ «Ἰανουαρίου» ἐν τῇ Villa di Castello· εἷς «Ἐσταυρωμένος» ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Πίζης· εἷς ἀνάγλυπτος βωμὸς ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Λούκκας· καὶ τέλος εἷς «Νεκρὸς Χριστός», οὐχὶ μετ' ἀπολύτου βεβαιότητος ἀποδιδόμενος εἰς τὸν Τζιαμπολόνια, ἐν τῇ μητροπόλει τοῦ Οὐρβίνου.

— **Μπολόνια** (Bologna), ***Φράνκο ντὰ —***. Ἰταλὸς καλλιτέχνης τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Θεωρεῖται ὡς ὁ ἱδρυτὴς καὶ ἀρχηγὸς τῆς καλλιτεχνικῆς σχολῆς τῆς Βολωνίας, ἀναφέρεται δ' ὑπὸ τοῦ Δάντου εἰς τὸ 11ον ᾆσμα τοῦ «Καθαρτηρίου». Εἷς πίναξ, χρονολογούμενος ἀπὸ τοῦ 1313 καὶ εἰκονίζων τὴν «Ἔνθρονον Θεοτόκον», ἀποτελεῖ τὸ αὐθεντικώτερον ἔργον του. Ι. Μ. Π.

**Μπολοντάρ, *Βλαδίμηρος-Ροστιλάβιτς.*** Ρῶσος ἡγεμὼν τοῦ Πρεμίσλ, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1059 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1124. Κατὰ τὴν περίοδον τῶν ἐμφυλίων πολέμων ἐν Ρωσίᾳ συνῆλθον τὴν 7 Μαρτίου 1097 εἰς ἐπίσημον σύνοδον οἱ ἡγεμόνες τῆς Ρωσίας εἰς τὴν πόλιν Λουβετ παρὰ τὸν Βορυσθένην πρὸς συνομολόγησιν εἰρήνης, κατ' αὐτὴν δὲ παρεχωρήθη εἰς τὸν Μπολοντὰρ ἡ ἡγεμονία τοῦ Πρεμίσλ καὶ τοῦ Τερεβόβλ. Μετ' ὀλίγον ὁ ἡγεμὼν τῆς Βολονίας Δαβὶδ Ἰγκόριτς, ἐπεχείρησε τὴν κατάκτησιν τοῦ Τερεβόβλ, ἀλλ' ἡττηθεὶς ὑπὸ τοῦ Μπολοντὰρ ἐτράπη εἰς φυγήν. Ὁ Μπολοντὰρ ἐπυρπόλησε τότε τὴν πόλιν Βσεβόλογκ καὶ κατέσφαξε μέγα μέρος τῶν στρατευμάτων τοῦ Δαβίδ. Τῷ 1099 οἱ Οὖγγροι εἰσέβαλον εἰς Πρεμίσλ καὶ ἐπολιόρκησαν τὸν Μπολοντάρ, ἀλλ' οὗτος ἐνεργήσας ἔξοδον κατεδίωξε τοὺς ἐχθρούς, φονεύσας ὑπὲρ τὰς 40.000 ἐξ αὐτῶν, συνέλαβε δὲ καὶ τοὺς ἐπισκόπους, οὓς ἔφερον μεθ' ἑαυτῶν οἱ Οὖγγροι, ὅπως ἀναγκάσωσι τοὺς Ρώσους νὰ δεχθῶσι τὸ καθολικὸν θρήσκευμα. Τῷ 1104 ἡ θυγάτηρ τοῦ Μπολοντὰρ ὑπανδρεύθη, ὡς ἀναφέρουν οἱ Ρῶσοι χρονογράφοι, τὸν υἱὸν τοῦ Ἕλληνος αὐτοκράτορος Ἰσαάκ. Κατὰ τὸ γῆρας αὐτοῦ ὁ Μπολοντὰρ ἐξαπατηθεὶς ὑπό τινος ἄρχοντος Πολωνοῦ εἰσῆλθεν εἴς τι δάσος πρὸς κυνηγεσίαν, ἐκεῖ δὲ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος παρ' αὐτοῦ ἀπήχθη εἰς Πολωνίαν, πρὸς λύτρωσίν του δὲ ὁ ἀδελφός του Βασίλειος καὶ ὁ υἱός του Βλαδίμιρος ἔπεμψαν πολὺν χρυσόν, ἄργυρον καὶ πολύτιμα δῶρα, πρὸς δὲ ἀμφότεροι οἱ ἀδελφοὶ ὑπεσχέθησαν νὰ ζήσωσιν ἐν ὁμονοίᾳ μετὰ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Πολωνίας. Θ. Β.

**Μπολὸρ-Τάγκ,** ἢ ***Μπελοὺρ-Τὰγκ*** (Bolor-Tagh ἢ Belur-Tagh) *[Γεωγρ.]*. Ὀροσειρὰ τῆς Κεντρικῆς Ἀσίας, γνωστὴ μᾶλλον σήμερον ὡς *Κιζὶλ-Γιάρτ*, ὑψουμένη μεταξὺ τῶν ρωσικῶν (σοβιετικῶν) ἐδαφῶν καὶ τοῦ σινικοῦ Τουρκεστάν. Ἀποτελεῖ τμῆμα τοῦ ὀρεινοῦ συγκροτήματος τοῦ Παμὶρ καὶ ἑνοῦται πρὸς Β. μετὰ τῶν ὀρέων Τιὰν-Σὰν καὶ πρὸς Ν. μετὰ τοῦ Κουὲν-Λούν. Αἱ κορυφαὶ αὐτῆς ὑψοῦνται μεταξὺ 5.500 καὶ 6.500 μ., ἡ δὲ κυριωτέρα ἐξ αὐτῶν, καλουμένη *Μουστὰγκ-ἀτά*, φθάνει μέχρις 7.860 μ. Χ. Δ.

**Μπόλου** *[Γεωγρ.]*. Τὸ *Βιθύνιον* (βλ. λ.) ἢ *Κλαυδιούπολις* τῶν ἀρχαίων, πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα τοῦ σημερινοῦ ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. (1927) 7.215. Ἄλλοτε ἡ πόλις εἶχε καὶ ἐμπορικὴν σπουδαιότητα, διότι ἦτο τὸ κέντρον τοῦ κατόπιν διὰ Τραπεζοῦντος διεξαγομένου διαμετακομιστικοῦ ἐμπορίου πρὸς τὴν Περσίαν. Εἶχε τότε ὑπὲρ τὰς 30.000 κατοίκους. Πρὸ τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς ὑπῆρχον καὶ περὶ τοὺς 1.000 Ἕλληνες καὶ 400 Ἀρμένιοι, οἱ μὲν δεύτεροι σφαγέντες, οἱ δὲ πρῶτοι μεταναστεύσαντες εἰς Ἑλλάδα. Εἰς ἀπόστασιν μιᾶς ὥρας ἀπὸ τῆς πόλεως ὑπάρχουσι δύο μεταλλικαὶ πηγαὶ ἀγνώστου συστάσεως, ἀλλὰ λίαν ἰαματικαί. Ἡ μία λέγεται θειοῦχος, ἡ δὲ ἄλλη σιδηροῦχος. Ἡ μία ἔχει τοιαύτην διαλυτικὴν ἰδιότητα, ὥστε διαλύει καὶ τοὺς λίθους, οὕτως ὥστε τὸ ὕδωρ μόνον εἰς ξύλινα δοχεῖα εἶναι δυνατὸν νὰ διατηρηθῇ.

Ἡ ὑποδιοίκησις *Μπόλου* ἔχει ἐπιφάνειαν 2.925 τ. χλμ. καὶ (1927) 56.133 κατ. Ὁλόκληρος δὲ ὁ νομὸς ἐπιφάνειαν 11.140 τ. χλμ. καὶ 217.597 κατ. Περιλαμβάνει τὰς ὑποδιοικήσεις Ντουζτσέ, Κέρεντε, Κιονὲκ καὶ Μπουντουρνί. Ὁ κυριώτερος τῶν ποταμῶν εἶναι ὁ *Μπαρτὶν-τσάϊ (Παρθένιος)*. Τὰ προϊόντα του εἶναι ὄπιον, τιφτίκι, λίνον κ. ἄ. Ν. Μ.

—**Μπόλου-τσάϊ** *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Τουρκίας, ὁ ἄλλως *Μπουγιοὺκ-σοῦ*. Πηγάζων ἐκ τοῦ σημείου τῆς συναντήσεως τοῦ Ἀλᾶ-ντὰγ καὶ Ἀμπᾶς-ντάγ, διαρρέων τὴν πεδιάδα καὶ τὴν πόλιν Μπόλου καὶ συνενούμενος μετὰ ροῦν 120 χλμ. μετὰ τοῦ ἐκ τοῦ νομοῦ Κασταμονῆς καταρρέοντος Σογανλῆ, μετὰ τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ τὸν *Φιλιὰς-τσάϊ* (*Βιλλαῖον* τῶν ἀρχαίων), ἐκβάλλει εἰς τὸν Εὔξεινον παρὰ τὸ Φιλιάς. Διὰ τοῦ ποταμοῦ μεταφέρεται ξυλεία. Ν. Μ.

**μπολοῦ** (ἡ) (ἰδιωμ.) ἐπὶ γυναικῶν μὴ ἀρεσκομένων νὰ διαμένωσιν ἐντὸς τῆς οἰκίας των: «αὐτὴ εἶναι μιὰ μπολοῦ ποῦ δὲν συμμαζεύεται».

**Μπόλσβαρντ** (Bolsward) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας ἐν τῷ νομῷ Φρισλανδίας, κειμένη 24 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Λέβαρντεν. Ἔχει ὡραίας ἐκκλησίας καὶ δημαρχεῖον, διεξάγει ἐμπόριον τυροῦ καὶ βουτύρου καὶ ἔχει ἐργοστάσια μαλλίνων ὑφασμάτων. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἤκμαζε τὸ ἐμπορικὸν κέντρον καὶ συνέβαλε τὰ μάλιστα εἰς τὴν ἀποτίναξιν τῆς ἱσπανικῆς κυριαρχίας. Κάτ. (1922) 7.222. Χ. Δ.

**μπολσεβικισμὸς** (ὁ). Καλεῖται οὕτω ἡ διδασκαλία τῆς ἄκρας ἀριστερᾶς πτέρυγος τοῦ ρωσικοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος, ἡ ὁποία κυβερνᾷ σήμερον ἐν Ρωσίᾳ. Ἡ λέξις εἶναι ρωσική· προέρχεται ἐκ τοῦ «μπολσίνστβο» (=πλειοψηφία) καὶ σημαίνει τὴν θεωρίαν τῶν πλειοψηφησάντων, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν *μενσεβικισμόν*, (ἐκ τοῦ ρωσικοῦ «μενσίνστβο»=μειοψηφία) ὅπερ σημαίνει τὴν θεωρίαν τῶν μειοψηφησάντων. Ὁ διχασμὸς τοῦ ρωσικοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος εἰς μπολσεβίκους καὶ μενσεβίκους ἐπῆλθεν εἰς τὸ ἐν Βρυξέλλαις καὶ Λονδίνῳ κατὰ τὸ 1902—1903 συγκληθὲν συνέδριον.

— *[Ἱστορ.]* Αἱ ἀρχαὶ τοῦ μπολσεβικισμοῦ ἀνάγονται εἰς τὸ 1883, ὁπότε ὁ Πλεχάνωφ καὶ ὁ Ἄξελροντ ἵδρυσαν τὴν «Ὁμάδα πρὸς χειραφέτησιν τῆς Ἐργασίας», ἥτις ἀκολουθοῦσα τὰς ἀρχὰς τοῦ μαρξισμοῦ, ὑπεστήριζεν ὅτι τὸ κυριώτερον ὄργανον διὰ τὴν ἐπιτυχίαν τῆς κοινωνικῆς ἐπαναστάσεως εἶναι ἡ ὠργανωμένη ἐργατικὴ τάξις. Ἡ ἀπὸ τοῦ 1883 μέχρι τοῦ 1903 ἱστορία τοῦ κινήματος τούτου δύναται νὰ διακριθῇ εἰς τρεῖς περιόδους: Ἡ πρώτη, μέχρι τοῦ 1894, εἶναι περίοδος ζυμώσεως τῶν ἰδεῶν μεταξὺ τῶν ἀρχηγῶν, ἄνευ οὐσιώδους τινὸς ἐπιρροῆς ἐπὶ τῆς ἐργατικῆς τάξεως. Κατὰ τὴν δευτέραν περίοδον (1894—1898), ἡ ἀνάπτυξις τῆς βιομηχανίας καὶ αἱ ἐξ αὐτῆς συνέπειαι ηὐνόησαν τὴν αὔξησιν τῆς ἐπιρροῆς τῶν μαρξιστῶν μεταξὺ τῶν ἐργατικῶν στρωμάτων καὶ τὴν ἵδρυσιν περιφερειακῶν ἐπιτροπῶν καὶ ὁμίλων σοσιαλδημοκρατῶν ἐργατῶν εἰς τὰς κυριωτέρας πόλεις τῆς Ρωσίας. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην προσῆλθον εἰς τὸ κόμμα ἄνδρες ὡς ὁ Λένιν, ὁ Κράσσιν, ὁ Μάρτωφ κ. ἄ. Τῷ 1898 συνῆλθεν ἐν Μὶνσκ τὸ πρῶτον συνέδριον τοῦ κόμματος καὶ συνέταξε τὸ πρῶτον καταστατικόν, ἐδημοσίευσε δὲ καὶ τὸ ὑπὸ τοῦ Στρούβε συνταχθὲν μανιφέστον. Ἡ τρίτη περίοδος (1898—1903) εἶναι ἡ περίοδος τῆς ἐσωτερικῆς ἀναπτύξεως τῶν ἀντιθέσεων, ἡ κρίσιμος ἐποχὴ τῆς ἐφηβικῆς ἡλικίας τοῦ κινήματος. Οἱ ὀπαδοὶ ἐπληθύνθησαν σημαντικῶς κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο, κυρίως ἐκ τῶν φοιτητικῶν κύκλων προερχόμενοι, ἱδρύθησαν ἡμιαυτόνομοι μαρξιστικαὶ ὀργανώσεις, χαλαρῶς πρὸς ἀλλήλας συνδεδεμέναι καὶ ἐνεφανίσθησαν διάφοροι τάσεις, σπουδαιοτέρα τῶν ὁποίων ἦτο ἡ τῶν «οἰκονομιστῶν», καθ' οὓς ὁ ἀγὼν τῶν ἐργατῶν ἔπρεπε νὰ περιορισθῇ εἰς τὰς οἰκονομικὰς μόνον διεκδικήσεις καὶ ν' ἀποφύγῃ κάθε πολιτικὸν χαρακτῆρα. Πρὸς καταπολέμησιν τῶν αἱρέσεων τούτων, οἱ ἐκπρόσωποι τοῦ ὀρθοδόξου μαρξισμοῦ (Λένιν, Πλεχάνωφ κλπ.), καθ' ὃν δὲν δύναται νὰ νοηθῇ οἰκονομικὸς ἄνευ πολιτικοῦ ἀγῶνος, ἵδρυσαν (1900) τὸ περιοδικὸν «Ἴσκρα» (= Σπινθήρ). Δύο ἔτη βραδύτερον ὁ Λένιν ἐξέδωκε τὸ ἔργον «Τί νὰ κάνωμεν;», ὅπου ἐκήρυσσε τὴν ἀνάγκην τῆς συνενώσεως ὅλης τῆς ἐπαναστατικῆς δραστηριότητος εἰς ἓν συγκεντρωτικὸν κόμμα σιδηρᾶς πειθαρχίας. Τῷ 1902 συνεκροτήθη ἐν Βρυξέλλαις τὸ δεύτερον συνέδριον τοῦ κόμματος, τὸ ὁποῖον, ἕνεκα ἐπεμβάσεως τῆς ἀστυνομίας, μετεφέρθη εἰς Λονδῖνον. Κατὰ τὸ συνέδριον τοῦ Λονδίνου ἀνεφύησαν ριζικαὶ διαφωνίαι μεταξὺ κυρίως τοῦ Λένιν καὶ τοῦ Μάρτωφ, στρεφόμεναι περὶ τὰ ἑξῆς σημεῖα. Ἀπὸ ὀργανωτικῆς ἀπόψεως ὁ Λένιν ὑπεστήριζεν ὅτι εἰς τὸ σοσιαλδημοκρατικὸν κόμμα πρέπει ν' ἀνήκουν οἱ ἀκολουθοῦντες αὐστηρῶς τὰς ἀρχάς του καὶ δρῶντες τυφλῶς κατὰ τὰς διαταγὰς τῶν διευθυντικῶν ὀργάνων, ἐνῷ ὁ Μάρτωφ ἐδέχετο συμμετοχὴν εἰς τὸ κόμμα καὶ τῶν ἁπλῶς συμπαθούντων. Ὁ Λένιν ἐζήτει αὐστηρῶς συγκεντρωτικὴν ὀργάνωσιν τοῦ κόμματος, ἐνῷ ὁ Μάρτωφ ἐδέχετο ὁμοσπονδιακὴν ὀργάνωσιν· ὁ Λένιν ἤθελεν αὐστηρὸν καὶ ὑπεύθυνον ἔλεγχον τοῦ ὀργάνου τοῦ κόμματος, τῆς «Ἴσκρα», ἐνῷ ὁ Μάρτωφ ἐδέχετο νὰ δημοσιεύωνται εἰς αὐτὸ αἱ ἀντιλήψεις ὅλων τῶν τάσεων. Ἀπὸ ἀπόψεως τακτικῆς καὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ κόμματος, οἱ περὶ τὸν Μάρτωφ ὑπεστήριζον τὴν σκοπιμότητα τῆς συνεργασίας πρὸς τοὺς ὑπὸ τὸν Μιλιούκωφ δημοκρατικοὺς φιλελευθέρους ἀστοὺς καὶ ἀπέδιδον μεγάλην σημασίαν εἰς τὸ ζήτημα τῆς καθολικῆς ψηφοφορίας καὶ τῆς συγκλήσεως συντακτικῆς ἐθνοσυνελεύσεως, ἐνῷ οἱ περὶ τὸν Λένιν καὶ τὸν Πλεχάνωφ ἀπέκρουον κατηγορηματικῶς κάθε συνεργασίαν μὲ τοὺς ἀστούς, ἔχοντες τὴν γνώμην ὅτι ἡ ἐργατικὴ τάξις ὤφειλε νὰ ἐργασθῇ δι' ἑαυτῆς καὶ δι' ἑαυτὴν πρὸς κατάκτησιν τῆς ἐξουσίας, καὶ ἐνδιεφέροντο πρὸ παντὸς διὰ τὴν ἐπιτυχίαν τῆς προλεταριακῆς ἐπαναστάσεως. Γενομένης ψηφοφορίας αἱ ἀπόψεις τοῦ Λένιν συνεκέντρωσαν 25 ψήφους ἔναντι 23 τοῦ Μάρτωφ, ἐξ οὗ καὶ οἱ περὶ τὸν Λένιν ὠνομάσθησαν μπολσεβῖκοι (=τῆς πλειοψηφίας) οἱ δὲ περὶ τὸν Μάρτωφ μενσεβῖκοι (=τῆς μειοψηφίας). Συνέπεια τῆς ψηφοφορίας ταύτης ὑπῆρξεν ἡ διάσπασις τοῦ ρωσικοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος εἰς δύο τμήματα, τὰ ὁποῖα βραδύτερον ἀπεδύθησαν εἰς σκληρὸν καὶ σφοδρὸν ἀνταγωνισμόν. Ἡ ἀποτυχία τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1905 ηὔρυνεν ἐπὶ μᾶλλον τὸ χάσμα, τὸ ὁποῖον ἐχώριζε τοὺς μπολσεβίκους ἀπὸ τῶν μενσεβίκων. Οἱ μενσεβῖκοι ἤρχισαν νὰ θεωροῦν ἱκανοποιητικὴν τὴν ἐγκαθίδρυσιν ἑνὸς ἁπλοῦ συνταγματικοῦ καθεστῶτος, ἐνῷ οἱ περὶ τὸν Λένιν ἐζήτουν νὰ κινητοποιήσουν τὰς μάζας κατὰ τῆς συγκλήσεως τῆς Δούμας. Διὰ τὸν Λένιν, τὰ σοβιέτ, δηλαδὴ τὰ ἐργατικὰ συμβούλια, τὰ ὁποῖα ἀνεφύησαν αὐτομάτως κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1905 ἐν Πετρουπόλει, ἔπρεπε νὰ εἶχον τύχῃ καταλλήλου κατευθύνσεως καὶ νὰ ἦσαν πλήρη, νὰ περιλαμβάνουν δηλαδὴ πλὴν τῶν ἐργατῶν καὶ ἀγρότας καὶ στρατιώτας. Διὰ τοὺς μενσεβίκους ἡ ἀποτυχία τοῦ 1905 ὠφείλετο εἰς τὰς ὑπερβολικὰς ἀξιώσεις τῶν μπολσεβίκων, ἐνῷ διὰ τὸν Λένιν ἡ αἰτία τῆς ἀποτυχίας ἦτο ἡ κακὴ καὶ ἀτελὴς χρησιμοποίησις τῶν δυνάμεων τοῦ κινήματος. Ὁ Λένιν ἀπὸ τοῦ 1905 ἔσχε σαφῆ τὴν ἀντίληψιν τῶν μελλοντικῶν ἐπιδιώξεων τοῦ κινήματος καὶ ἔθετε τὰς βάσεις τῆς ὀκτωβριανῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1917, ἐνῷ οἱ μενσεβῖκοι ὁλονὲν ἀπεμακρύνοντο τῆς μαρξιστικῆς ἐπαναστατικῆς ὀρθοδοξίας.

Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον οἱ μπολσεβῖκοι (ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς μενσεβίκους) ἐκηρύχθησαν διεθνισταὶ καὶ ἀντιπατριῶται κατὰ τῆς ἐθνικῆς ἀμύνης καὶ ὑπὲρ τῆς μετατροπῆς τοῦ ἰμπεριαλιστικοῦ πολέμου εἰς ἐμφύλιον πόλεμον. Περὶ τὰ τέλη τοῦ 1916, ὁ Λένιν καὶ ὁ Ζηνόβιεφ μετέσχον τῶν συνεδρίων τοῦ Τσίμμερβαλντ καὶ τῆς Βέρνης (1915) καὶ ἔρριψαν τὸ περίφημον σύνθημα τῆς μετατροπῆς τοῦ ἰμπεριαλιστικοῦ πολέμου εἰς ἐμφύλιον πόλεμον, ὅπερ ἐπραγματοποίησαν μετὰ διετίαν ἐν Ρωσίᾳ. Ἐν Τσίμμερβαλντ, ὅπου ἀντιπροσωπεύθησαν 11 σοσιαλιστικὰ κόμματα διαφόρων χωρῶν, ἐψηφίσθη ἀπόφασις, ἡ ὁποία συνίστα τὰ σαμποτάζ, τὴν γενικὴν πολιτικὴν ἀπεργίαν καὶ τὴν ἔνοπλον ἐξέγερσιν ὡς μέσα διαμαρτυρίας κατὰ τοῦ ἰμπεριαλιστικοῦ πολέμου. Ἡ ἀπόφασις αὕτη ἐνεκρίθη καὶ ὑπὸ τῶν συνδιασκέψεων τοῦ Κίνταλ (1916) καὶ τῆς Στοκχόλμης (1917).

Μετὰ τὴν φεβρουαρικὴν ἐπανάστασιν (1917) τοῦ Κερένσκυ, οἱ εἰς Εὐρώπην ἐξόριστοι μπολσεβῖκοι ἐπανῆλθον εἰς Ρωσίαν καὶ ἐπεδόθησαν δραστηρίως εἰς τὴν προετοιμασίαν τῆς κομμουνιστικῆς ἐπαναστάσεως ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Λένιν. Κατ' ἀρχὰς οἱ μπολσεβῖκοι ἀπετέλουν μίαν ἐλαχίστην μειοψηφίαν· ἐντὸς ὀλίγων ὅμως μηνῶν καὶ μὲ τὴν χρεοκοπίαν τῆς κυβερνήσεως Κερένσκυ ηὔξησε τεραστίως ἡ ἐπιρροή των μεταξὺ τῶν ἐργατῶν, ἀγροτῶν καὶ στρατιωτῶν.

Τὴν 25ην Ὀκτωβρίου τοῦ 1917 τὸ μπολσεβικικὸν κόμμα ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ἐργατῶν καὶ τῶν ἀγροτῶν ἀνέτρεψε τὸ παλαιὸν καθεστὼς καὶ ἐγκαθίδρυσε τὴν δικτατορίαν τοῦ προλεταριάτου. Κύριος ἥρως καὶ δημιουργὸς τῆς ἐπαναστάσεως ταύτης ὑπῆρξεν ὁ Λένιν, ὁ ὁποῖος ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ σχίσματος (1903) μολονότι πολλάκις ἐγκατελείφθη ὑπὸ τῶν συναγωνιστῶν του εἰς κρισίμους στιγμάς, παρέμεινεν ἀκλόνητος εἰς τὰς θεωρίας τοῦ ὀρθοδόξου ἐπαναστατικοῦ μαρξισμοῦ, τὸν ὁποῖον καὶ ἐφήρμοσεν εἰς τὸ ἰμπεριαλιστικὸν στάδιον τοῦ κεφαλαιοκρατικοῦ καθεστῶτος.

[Περὶ τῆς θεωρίας τοῦ μπολσεβικισμοῦ βλ. λ. *λενινισμός*.]

**μπολσεβῖκος,** —α· ὁ ὀπαδὸς τοῦ μπολσεβικισμοῦ, ὁ ὀπαδὸς τοῦ ἐπαναστατικοῦ μαρξισμοῦ ὅπως τὸν ἐφήρμοσεν ὁ Λένιν (κατὰ λέξιν: ὁ τῆς πλειοψηφίας, πλειοψηφικός)· (βλ. λ. *μπολσεβικισμὸς* καὶ *λενινισμός*).

**Μπολσένα** (Bolsena) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Βιτέρμπο τοῦ νομοῦ τῆς Ρώμης, πρὸς τὰ ΒΑ. τῆς ὁμωνύμου λίμνης. Κάτ. 3.635. Εἶναι τὸ κυριώτερον ἁλιευτικὸν κέντρον τῆς λίμνης καὶ ἔχει ἐνδιαφέροντα παλαιὰ κτήρια, μεταξὺ δ' αὐτῶν καὶ τὸν ναὸν τῆς Ἁγίας Χριστίνης, ὅπου ἔλαβε χώραν, κατὰ τὴν καθολικὴν παράδοσιν, τῷ 1263, τὸ «Θαῦμα τῆς ὄστιας», τὸ ὁποῖον ἀπηθανάτισεν ὁ Ραφαῆλος εἰς τὸν περίφημον πίνακά του τῶν αἰθουσῶν τοῦ Βατικανοῦ, τὸν γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «La misa di Bolsena». Τὸ πέριξ ἔδαφος εἶναι γραφικώτατον καὶ ἠφαιστειῶδες,



Digitized by Google

εἰς ἑνὸς δὲ χιλιομέτρου ἀπόστασιν εὑρίσκονται τὰ ἐρείπια τῆς ἐτρουσκικῆς πόλεως Volsinium, καταστραφείσης τῷ 265 π. Χ. ὑπὸ τοῦ Φουλβίου Φλάκου.

—2) Λίμνη τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Ρώμης. Εὑρίσκεται ἐν τῷ κέντρῳ περιοχῆς ὁμάδος ἐσβεσμένων ἡφαιστείων, τῶν καλουμένων *Βουλσινίων*, καὶ ἔχει σχῆμα σχεδὸν ᾠοειδές, μῆκος 13 χλμ. καὶ πλάτος 11,5, μέγιστον βάθος 146 μ. καὶ ἐπιφάνειαν 114,53 τ. χλμ., συμπεριλαμβανομένων καὶ τῶν δύο ἐν αὐτῇ μικρῶν νησίδων, τῆς *Μαρτάνα* (0,10 τ. χλμ.) καὶ τῆς *Μπιζεντίνα* (0,17 τ. χλμ.), αἵτινες φαίνεται ὅτι εἶναι ὑπολείμματα κορυφῶν παλαιῶν κρατήρων. Καὶ ἡ ὅλη δὲ λίμνη πιστεύεται ὅτι ἀποτελεῖται ἀπὸ παλαιὸν κρατῆρα ἡφαιστείου. Τὰ ὕδατα αὐτῆς διοχετεύονται εἰς τὴν Μεσόγειον διὰ μέσου τοῦ ποταμοῦ Σάντα Μάρτα. Αἱ ὄχθαι τῆς λίμνης εἶναι κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπότομοι καὶ ὑψηλαί, φθάνουσαι εἰς ὕψος 300 μέχρι 400 μ. Εἰς τὰ ὕδατά της διαιτᾶται ἀφθονία ἰχθύων, τῶν ὁποίων ἡ ἁλιεία ἀποτελεῖ τὴν κυριωτέραν, μετὰ τὴν γεωργίαν, ἐνασχόλησιν τῶν κατοίκων τῶν πέριξ χωρίων. Ἐπὶ τῆς νησῖδος Μπιζεντίνα ὑπάρχουν ἐρείπια ἀνακτόρου τοῦ οἴκου τῶν Φαρνέζε, ἐπὶ δὲ τῆς Μαρτάνα ἀναφέρεται ὅτι τῷ 534 ὁ Θεόδοτος ἐδολοφόνησε τὴν σύζυγόν του Ἀμαλασούνταν, θυγατέρα τοῦ Θεοδωρίχου. Μ. Δ. Β.

**Μπολσόϊ** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος προσκειμένη τῇ ἀνατολικῇ ἀκτῇ τοῦ Εὐξείνου (Μιγκρέλια) εἰς τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ρίον (πλάτ. 42°09′ Β., μῆκ. 41°38′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2.235: Fort Anakria to Kertch Strait) πρὸ τοῦ λιμένος Πότι (ἀρχ. Φᾶσις). Σ. Ε. Λ.

**Μπόλτιν, *Ἰβὰν Νικήτιτς***. Ρῶσος ἱστορικός, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1735 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1792. Κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν καὶ ἀνῆλθε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου. Ἀποσυρθεὶς τῆς ὑπηρεσίας, ἀφιερώθη εἰς ἱστορικὰς μελέτας, ἐκ τῶν ὁποίων αἱ σημαντικώτεραι εἶναι: «Παρατηρήσεις κριτικαὶ ἐπὶ τῆς ρωσικῆς ἱστορίας τοῦ πρίγκιπος Στσερμπάτωφ» «Ἱστορικαὶ ἔρευναι περὶ τῆς ἡγεμονίας τοῦ Τμουτορακάν». Συνειργάσθη ἐπὶ μικρὸν εἰς τὸ «Ρωσικὸν δίκαιον», δημοσιευόμενον ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Μούσσιν-Ποῦσκιν καὶ εἰς τὸ λεξικὸν τῆς Ἀκαδημίας. Μετὰ τὸν θάνατόν του τὰ χειρόγραφά του ἠγόρασεν ἡ αὐτοκράτειρα Αἰκατερίνη Β′. Θ.Β.

**Μπόλτον**, ἢ ***Μπόλτον-λὴ-Μοὺρς*** (Bolton ἢ Bolton-le-Moors) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λαγκάστερ. Κάτ. 182.700. Ἀπέχει 16 χλμ. ΒΔ. τοῦ Μάντσεστερ καὶ εἶναι σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ μία τῶν βιομηχανικωτέρων πόλεων τῆς Μεγάλης Βρεττανίας. Ὑπὸ τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Κρὼλ διαιρεῖται εἰς *Μέγα* καὶ *Μικρὸν Μπόλτον*. Κυριωτέρα βιομηχανία της εἶναι ἡ κατεργασία τοῦ βάμβακος, ἔχει δ᾽ ἐπίσης ἐργοστάσια κατασκευῆς μηχανημάτων, χημικῶν προϊόντων, χαρτοποιεῖα, σιδηρουργεῖα κλπ. Παρ᾽ αὐτῇ ὑπάρχουν πολλὰ καὶ πλούσια γαιανθρακωρυχεῖα, εἰς τὰ ὁποῖα ὀφείλει κυρίως ἡ πόλις τὴν μεγάλην βιομηχανικήν της ἀνάπτυξιν. Ἔχει πολλὰς καὶ ὡραίας παλαιὰς ἀγγλικὰς καὶ καθολικὰς ἐκκλησίας, μεγαλοπρεπὲς δημαρχεῖον, μεγάλην ἀγοράν, τεχνικὰς σχολάς, βιβλιοθήκην, πινακοθήκην μὲ ἔργα διασήμων καλλιτεχνῶν, μουσεῖον, χρηματιστήριον κτλ. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς κατάγονται ἐκ Φλαμανδῶν, Γάλλων καὶ Βαυαρῶν διαμαρτυρομένων, οἵτινες μετηνάστευσαν ἐκεῖ κατὰ τὸν ΙΣΤ′ αἰῶνα ἕνεκα τῶν θρησκευτικῶν καταδιώξεων. Ἡ μετανάστευσις αὕτη ἀπέβη λίαν ἐπωφελὴς εἰς τὴν Μπόλτον, διότι οἱ Φλαμανδοὶ εἰσήγαγον εἰς αὐτὴν κατ᾽ ἀρχὰς τὴν νηματουργίαν καὶ κατόπιν τὴν κατεργασίαν τοῦ βάμβακος, ἡ ὁποία ἀπετέλεσε τὴν βάσιν τῆς τεραστίας βιομηχανικῆς ἀναπτύξεως τῆς πόλεως. Ἤδη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς Ἑρρίκου Η′ τὰ βαμβακερά της ὑφάσματα ἦσαν ὀνομαστὰ εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς ἀγοράς. Μ. Δ. Β.

**Μπολτράφφιο** ἢ ***Μπελτράφφιο*** (Boltraffio ἢ Beltraffio), ***Ἰωάννης Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς ζωγράφος καταγόμενος ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας τοῦ Μιλάνου (1467—1516). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Λεονάρδῳ ντὰ Βίντσι, ἤσκησε δέ, κατὰ τὴν γενικῶς κρατοῦσαν ἀντίληψιν, τὴν τέχνην ἐρασιτεχνικῶς, ἐργαζόμενος μόνος κατὰ τὰς ὥρας τῆς σχολῆς του. Παρὰ τοῦτο κατέστη εἷς τῶν ἀξιολογωτέρων ἐκπροσώπων τῆς λομβαρδικῆς σχολῆς. Τὸ σημαντικώτατον τῶν ἔργων του, ἀληθὲς ἀριστούργημα, εἶναι ἡ «Παναγία τῆς οἰκογενείας Κόζιο», ἀποκειμένη εἰς τὸ Λοῦβρον· ἐπανάληψις ταύτης ἀπόκειται ἐν Λόντι. Ἐκ τῶν λοιπῶν πινάκων τοῦ Μπολτράφφιο μνημονεύομεν ἐνταῦθα τοὺς ἀκολούθους: «Ἡ Παρθένος» (μουσεῖον Poldi-Pezzoli, Μιλᾶνον), 26 μορφαὶ ἁγίων, ἐκτελεσθεῖσαι ἀπὸ τοῦ 1505 μέχρι τοῦ 1510 ἐν τῇ lozzia τοῦ Ἁγίου Μαυρικίου (Monastero maggiore) τοῦ Μιλάνου, «Ἡ ἁγία Βαρβάρα» (ἐν Βερολίνῳ), μία «Θεοτόκος» (ἐν Βουδαπέστῃ) καὶ ἐξαίρετοι προσωπογραφίαι ἐν ἰδιωτικαῖς ἰδίᾳ συλλογαῖς. Ι.Μ.Π.

*Μπολτράφφιο: Ἡ Παναγία.*
[Ἐν τῷ Λούβρῳ τῶν Παρισίων.]

**Μπόλτς** (Bolts). Ὁλλανδὸς περιηγητὴς (1740—1808). Ἐπιφορτισθεὶς παρὰ τῆς αὐτοκρατείρας Μαρίας-Θηρεσίας τὴν ἵδρυσιν ἐμπορικῶν πρακτορείων ἐν Ἰνδίαις, περιηγήθη τὰς χώρας τούτων, δημοσιεύσας τὰς ἐντυπώσεις αὐτοῦ εἰς τὰ βιβλία: «Παρατηρήσεις περὶ τῶν ἐν Ἰνδίαις ἐμπορικῶν ἐργασιῶν», «Ἱστορία τῶν κατακτήσεων τῆς Ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν» κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

—**Μπόλτς** (Boltz), ***Αὔγουστος-Κωνσταντῖνος***. Γερμανὸς γλωσσολόγος (1819—1898). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ρωσικῆς γλώσσης ἐν τῷ ἐν Βερολίνῳ Σχολείῳ πολέμου (τῇ μετὰ ταῦτα Ἀκαδημίᾳ πολέμου), εἶτα καθηγητὴς τῆς ἱσπανικῆς καὶ ἀγγλικῆς γλώσσης ἐν τῇ ναυτικῇ σχολῇ δοκίμων. Ἐγένετο ἰδίᾳ γνωστὸς διὰ τοῦ ἔργου του «Νέα διδασκαλία τῆς ρωσικῆς γλώσσης κατὰ τὴν μέθοδον τοῦ Ρόμπερτσον» (5η ἔκδ. 1880—1884). Βραδύτερον ἀφιερώθη εἰς τὴν σπουδὴν τῆς νεοελληνικῆς γλώσσης. Μετέφρασε τὰ «Ποιήματα» τοῦ Ἀθανασίου Χριστοπούλου καὶ νεοελληνικὰ διηγήματα καὶ ἔγραψε διάφορα ἔργα ἀναγόμενα εἰς τὴν ἑλληνικὴν φιλολογίαν καὶ ἱστορίαν, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰ ἑξῆς: «Οἱ Κύκλωπες, ἱστορικὸς λαὸς» (1885), «Χώρα καὶ ἄνθρωποι τῆς βορείου Εὐβοίας» (κατὰ τὸ ἔργον τοῦ Δροσίνη), «Ἡ νεοελληνικὴ γλῶσσα» (1881), «Ἑλληνικὰ διηγήματα» (μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ «Ἀμαρυλλὶς» τοῦ Δροσίνη), «Ἑλληνική, ἡ διεθνὴς τοῦ μέλλοντος γλῶσσα τῶν πεπαιδευμένων» (2α ἔκδ. 1890), «Ὁ μῦθος τοῦ Ἀπόλλωνος» (1894). Ἐδημοσίευσε δὲ καὶ πλεῖστα ἄρθρα εἰς τὸ περιοδικὸν «Ἑλλάς». Γ. Ι. Β.

**Μπολτσανέτο** (Bolzaneto) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Γενούης, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 9 χλμ. καὶ τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ βιομηχανικὸν προάστειον. Κάτ. 7.779. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Πολτσεβέρα καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Γενούης-Ἀλεξανδρείας καὶ ἔχει πολλὰ μηχανουργεῖα καὶ σιδηρουργεῖα. Μέχρι τῷ 1854 ἐκαλεῖτο *Μπραζίλε*. Μ. Δ. Β.

**Μπολτσάνι** (Bolzani), ***Ἰωσὴφ-Μαρία***. Ἰταλὸς φιλέλλην, κατελθὼν εἰς τὴν ἀγωνιζομένην Ἑλλάδα τῷ 1821 καὶ λαβὼν μέρος εἰς τὴν παρὰ τοὺς Τρεῖς Πύργους (Κωλιὰς Ἄκρα τῆς Ἀττικῆς) μάχην. Τ. Ε. Ε.

**Μπολτσάνι**, ἢ ***Μπολτσάνιο*** (Bolzani ἢ Bolzanio) ***Οὐρβανός***. Ἰταλὸς ἑλληνιστὴς (1443—1524). Τὸ οἰκογενειακόν του ὄνομα ἦτο *Φόσσε*, ἀλλά, κατὰ τὴν συνήθειαν τῆς ἐποχῆς, μετωνομάσθη ἐκ τῆς πόλεως Μπολτσάνο, ἐκ τῆς ὁποίας κατήγετο. Ἐγένετο μοναχὸς εἰς νεαρωτάτην ἡλικίαν καὶ συνώδευσε τὸν Ἀνδρέαν Γκρίττη σταλέντα ὡς πρεσβευτὴν εἰς Κωνσταντινούπολιν, εὗρε δὲ τότε τὴν εὐκαιρίαν νὰ ταξιδεύσῃ ἐπὶ πολὺ καθ᾽ ἅπασαν τὴν Ἑλλάδα, τὴν Θράκην καὶ τὴν Ἀνατολὴν καὶ νὰ ἐκμάθῃ τελείως τὴν ἑλληνικὴν γλῶσσαν. Ἐπιστρέψας εἰς Ἰταλίαν, παρέμεινεν εἰς τὴν Μεσσήνην, ὅπου ἐμαθήτευσε πλησίον τοῦ Κωνσταντίνου Λασκάρεως καὶ κατόπιν μετέβη εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ὅπου ἐδίδαξε τὴν ἑλληνικὴν εἰς τὸν μέλλοντα πάπαν Λέοντα Ι′. Μετὰ τὸ 1490 ἵδρυσεν ἰδίαν σχολὴν διδασκαλίας τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης ἐν Βενετίᾳ καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν δραστηριωτέρων συνεργατῶν τοῦ Ἄλδου Μανουτίου (βλ. λ. *Ἄλδοι*) εἰς τὴν προπαρασκευὴν τῶν γενομένων ὑπὸ τούτου ἑλληνικῶν ἐκδόσεων. Τὸ 1498 ἐξέδωσεν «Ἑλληνικὴν Γραμματικήν», ἡ ὁποία ὑπῆρξεν ἡ πρώτη ἐκτυπωθεῖσα ἐν τῷ τυπογραφείῳ τῶν Ἄλδων. Ὁ Μπολτσάνι περιέγραψε τὰ ταξίδιά του εἰς ἰδιαίτερον τόμον, ὅστις φαίνεται ἀπολεσθείς. Μ. Δ. Β.

**Μπολτσάνο** (Bolzano) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ ἐν τῇ Βενετίᾳ Τριδεντίνᾳ (Ν. Τυρόλον), ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Ἰζάρκο καὶ Ταλβέρα. Κάτ. 39.338. Κεῖται ἐντὸς ὡραίας κοιλάδος, ἐν τῇ διασταυρώσει τῶν ὁδῶν τῶν ἀγουσῶν πρὸς τὴν Αὐστρίαν, τὴν Γερμανίαν, τὴν Ἑλβετίαν, τὴν Νοτιοσλαβίαν, τὴν Ἀδριατικὴν καὶ τὴν Νότιον Ἰταλίαν. Λόγῳ τῆς θέσεως καὶ τοῦ εὐκραοῦς αὐτῆς κλίματος ἡ Μπολτσάνο ἀποτελεῖ κέντρον ἀναψυχῆς, συχναζόμενον καθ᾽ ὅλας τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους, ἰδίως ὑπὸ Αὐστριακῶν καὶ Γερμανῶν. Ἀποτελεῖται ἐκ τῆς παλαιᾶς πόλεως, μὲ στενὰς καὶ σκολιὰς ὁδοὺς καὶ παλαιὰ κτήρια γοτθικοῦ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ρυθμοῦ, καὶ ἐκ τῆς νέας πόλεως, ὅπου ὑπάρχουν τὰ μεγάλα ξενοδοχεῖα, αἱ ἐπαύλεις τὸ πάρκον καὶ ἐγκαταστάσεις θειούχων λουτρῶν. Περιβάλλεται ὑπὸ ἀμπελώνων καὶ κήπων καὶ παράγει ἰδίως ὀνομαστὰς ὀπώρας, ὧν γίνεται μεγάλη ἐξαγωγή. Ἔχει βιομηχανίαν ἐπίπλων, μαλλίνων ὑφασμάτων, χάρτου καὶ διατετηρημένων ὀπωρῶν. Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἐκπαιδευτικῶν ἐν αὐτῇ κέντρων εἶναι ἡ τεχνικὴ σχολή, τὸ ἐμπορικὸν ἰνστιτοῦτον, ἡ ἐπαγγελματικὴ σχολὴ ἐπιπλοποιίας κτλ. Ἐκ τῶν κτηρίων τῆς πόλεως τὰ ὀνομαστότερα εἶναι ἡ μητρόπολις τοῦ ΙΔ′ αἰῶνος, τὸ ἐμπορικὸν ἐπιμελητήριον, τὸ ἀνάκτορον τοῦ ἀρχιδουκὸς Ραϊνιέρου, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἐγκατασταθῆ αὐτόθι τῷ 1848, τὸ μνημεῖον τοῦ Γερμανοῦ ποιητοῦ Βάλτερ φὸν ντὲρ Φόγκελβάϊντε, τὸ μουσεῖον καὶ τὸ μνημεῖον τῆς Νίκης, ἔργον τοῦ ἀρχιτέκτονος Μαρκ. Πιατσεντίνι, ἀνεγερθὲν τῷ 1928. Τὸ μνημεῖον τοῦτο ὁμοιάζει πρὸς τὰς ἀρχαίας θριαμβευτικὰς ἀψῖδας, εἰς τοὺς διακόσμους δὲ καὶ τὰ γλυπτὰ αὐτοῦ συνειργάσθησαν οἱ καλλιτέχναι Ἀρθοῦρος Ντάτσι (πτερόεσσα Νίκη), Λίμπερο Ἀντρεόττι (ἡ ἀνάστασις τοῦ Χριστοῦ), Ἀδόλφος Βὶλντ (Ἑρμαῖ τῶν τριῶν πατριωτῶν μαρτύρων Μπαττίστι, Φίλτσι καὶ Κιέζα), Πέτρος Κανόνικα κ. ἄ.

Κατὰ τοὺς μεσαιωνικοὺς χρόνους ἡ Μπολτσάνο ἐκαλεῖτο Bauzanum, ἡ δὲ γερμανικὴ ὀνομασία εἶναι *Μπότσεν*. Ἀνῆκεν εἰς τὴν Αὐστρίαν ἀπὸ τοῦ 1814 καὶ περιῆλθεν εἰς τὴν Ἰταλίαν μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, τὴν 7ην Νοεμβρίου 1918. Ἐκ τῆς Μπολτσάνο καὶ διὰ τῆς καταλήψεως τῶν γερμανικῶν σχολῶν ὑπὸ τῶν ἐνόπλων τμημάτων τῶν φασιστικῶν λεγεώνων, τὴν 1ην Ὀκτωβρίου 1922, θεωρεῖται ὅτι ἐγένετο ἡ ἔναρξις τῆς «ἐκστρατείας κατὰ τῆς Ρώμης», ἥτις ἤγαγεν εἰς τὴν ἄνοδον τοῦ φασισμοῦ καὶ τοῦ Μουσσολίνι εἰς τὴν ἀρχήν.

—2) Νομὸς τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ διαμερίσματι τῆς Βενετίας Τριδεντίνας, περιλαμβάνον τὴν περιοχὴν τοῦ Ἄνω Ἀδίγη. Ἔχει ἐπιφάνειαν 7.334 τετρ. χλμ. καὶ 235.487 κατ., ὧν τὰ 11% ὁμιλοῦν τὴν ἰταλικήν, τὰ δὲ ὑπόλοιπα τὴν γερμανικήν. Εἶναι χώρα γεωργική, παράγουσα κυρίως δημητριακὰ καὶ ὀπώρας (σταφυλάς, μῆλα, ἄπια, ροδάκινα). Ἔχει ἐπίσης ἀκμαίαν κτηνοτροφίαν καὶ βιομηχανίαν μαλλίνων ὑφασμάτων, ζύθου, ἠλεκτρικῶν εἰδῶν καὶ χημικῶν προϊόντων. Τὸ ὑπέδαφος εἶναι πλούσιον εἰς κοιτάσματα μολύβδου καὶ ψευδαργύρου, τῶν ὁποίων γίνεται ἐντατικὴ ἐκμετάλλευσις. Ἡ μᾶλλον προσοδοφόρος ὅμως βιομηχανία εἶναι ἡ τῶν ξένων, οἵτινες ὑπερβαίνουν τὸ ἥμισυ ἑκατομμύριον κατ᾽ ἔτος, χάρις ἰδίως εἰς τὰς ὑπαρχούσας ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ νομοῦ 35 λουτροπόλεις, μὲ ἀλκαλικὰ ὕδατα, θειοῦχα, σιδηροῦχα καὶ ἁλατοῦχα. Μ. Δ. Β.

**Μπολτσάνο** (Bolzano), ***Βερνάρδος***. Γερμανὸς φιλόσσφος, μαθηματικὸς καὶ θεολόγος, γεννηθεὶς ἐν Πράγᾳ τῷ 1781 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1848. Τῷ 1805 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας τῆς θρησκείας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πράγας. Ἀκολουθῶν τὰς ἀρχὰς τῆς φιλοσοφίας τοῦ Σέλλινγκ ἀπέκτησε πολλοὺς ἐχθρούς, οἵτινες κατώρθωσαν

Digitized by Google

1820 νὰ ἀπομακρύνουν αὐτὸν τοῦ πανεπιστη-υ. Ἔκτοτε ἠσχολήθη περὶ τὴν ἔκδοσιν φιλο-οικῶν ἰδίᾳ ἔργων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων ιι: «Ἀθανασία ἢ ἀποδείξεις περὶ τῆς ἀθανασίας ψυχῆς» (1834 εἰς 4 τόμους), «Ἀπόπειρα νέας ἐκ-εως τῆς λογικῆς» (1837 εἰς 4 τόμους), «Ἐγχειρί-, αἰσθητικῆς» (1843) καὶ «Τί εἶναι φιλοσοφία» 49). Ὡς μαθηματικὸς εἰργάσθη ἐπὶ τῆς ἐννοίας ἀπείρου κατὰ τὴν διατύπωσιν τοῦ Λεϊβνιτίου, ἠθέλησε νὰ ἄρῃ τὰς ἐξ αὐτῆς ἀντινομίας, ἶγμα ὅπερ δὲν ἐπέτυχε πλήρως. Ἔδωκεν ὅμως ; ἑξῆς θαυμασίαν διάκρισιν μεταξὺ συνόλων πε-γόντων πεπερασμένον πλῆθος στοιχείων καὶ νόλων μὲ ἄπειρον τοιοῦτον: Ὅτι εἰς μὲν τὰ τερασμένα σύνολα δύναταί τις πάντοτε νὰ ὁρίσῃ ; ἐννοίας τῆς ἰσότητος καὶ τοῦ ἀθροίσματος τὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε οὐδέποτε τὸ μέρος εἶναι ἴσον πρὸς τὸ ὅλον· ἐνῷ εἰς τὰ σύνολα ἄπειρον πλῆθος στοιχείων δύναται νὰ εὑρεθῇ όπος ἀμοιβαίας ἀντιστοιχίας στοιχείων ἑνὸς ρους πρὸς τὸ ὅλον, ὅτε (σύμφωνα μὲ τὸν ὁρι-ὸν τῆς ἰσότητος) λέγομεν ὅτι τὸ μέρος εἶναι ης δυνάμεως πρὸς τὸ ὅλον. Παράδειγμα: Ἔ-ω τὸ σόνολον τῶν ἀκεραίων θετικῶν ἀριθμῶν 2, 3..... καὶ τὸ σύνολον τῶν ἀρτίων ἀριθμῶν 4, 6, 8..... Προφανῶς τὸ δεύτερον αὐτὸ σύ-λον εἶναι μέρος τοῦ πρώτου συνόλου· ἐν τού-ις τὰ δύο αὐτὰ σύνολα εἶναι ἰσοδύναμα (καίτοι πρῶτον φαίνεται πολυπληθέστερον τοῦ δευτέ-υ). Διότι δυνάμεθα νὰ ἀντιστοιχίσωμεν τὰ στοι-ιά των ἀμοιβαίως, ὡς ἑξῆς:

$\Sigma_1$ 1, 2, 3, 4, 5, 6.... ν.....

$\Sigma_2$ 2, 4, 6, 8, 10, 12... 2ν.....

ε παρατηροῦμεν ὅτι εἰς ἕκαστον στοιχεῖον τοῦ (εἰς ἕκαστον ἀριθμὸν) ἀντιστοιχεῖ ἓν στοιχεῖον ῦ $\Sigma_2$ καὶ ἀντιστρόφως· ἑπομένως τὰ δύο αὐτὰ νολα εἶναι ἰσοπληθῆ. Ὁ Μπολτσᾶνο ἠθέλησε θεμελιώσῃ ἕνα λογισμὸν ἐπὶ τῶν ἀπείρων, ιάγμα τὸ ὁποῖον δὲν ἐπέτυχεν· ὁμοίως ἔσφαλεν ; τὴν εὕρεσιν τῆς δυνάμεως συνόλων τινῶν, τὰ τοῖα ἐνόμιζεν ὡς διαφόρου δυνάμεως, ἐνῷ ὁ άντωρ τὰ ἀπέδειξεν ἴσης δυνάμεως. Κ. Ι. Δ.—Ν. Γ.

**Μπόλτσμαν** (Boltzman), ***Λουδοβῖκος***. Διάσημος οσικός, γεννηθεὶς τῷ 1844 ἐν Βιέννῃ καὶ ἀποθα-ον τῷ 1906. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Graz, Βιέννῃ, Μονάχῳ, Λειψίᾳ καὶ πάλιν ἐν Βιέννῃ, κατέστη δὲ ὀνομαστὸς ἰδίᾳ ἐκ τῶν ἐρευνῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς κινητικῆς θεωρίας τῶν ἀερίων καὶ τῆς θερμοδυναμικῆς. Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἔργων τοῦ Μπόλτσμαν καταλέγονται τ' ἀκόλουθα: «Παραδόσεις ἐπὶ τῆς θεωρίας τοῦ Maxwell διὰ τὸ φῶς καὶ τὸν ἠλεκτρισμόν» (1891—1893), «Παραδόσεις ἐπὶ τῆς κινητικῆς θεωρίας τῶν ἀερίων» (1895—1899) κλπ. Κ. ΠΑΛΑΙΟΛΟΓΟΣ

*Λουδοβῖκος Μπόλτσμαν.*

**Μπὸμ** (Boom) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν ῷ νομῷ Ἀμβέρσης, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν ῆς διώρυγος τῶν Βρυξελλῶν μετὰ τοῦ ποταμοῦ ούπελ, 17,5 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πόλεως τῆς Ἀμ-έρσης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ερίφημον κρεμαστὴν γέφυραν καὶ βιομηχανίας ἰνοπνευματωδῶν ποτῶν, ἱστίων, ψηκτρῶν, πλίν-ων, ναυπηγεῖα κλπ. Κάτ. (1922) 18.462. Χ. Δ.

**Μπόμα** (Boma). Ὄνομα τὸ ὁποῖον δίδεται εἰς ὰ ὠχυρωμένα χωρία τῶν ἰθαγενῶν καὶ εἰς τὰς ὀχυρωμένας κατασκηνώσεις τῶν ἐξερευνητῶν, ἐν ῇ Ἀφρικῇ τοῦ Ἰσημερινοῦ. Μ. Δ. Β.

— **Μπόμα** (Boma) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγικοῦ Κόγκο, ἄλλοτε πρωτεύουσα αὐτοῦ, πρὸς τῆς με-αφορᾶς τῶν ἀρχῶν εἰς τὴν Λεοπολντβίλ. Κάτ. .068. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ στομίου οῦ ποταμοῦ Κόνγκο, εἰς ἀπόστασιν 90 χλμ. ἀπὸ ῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ. Ἀποτελεῖται ἐκ δύο σαφῶς εχωρισμένων τμημάτων: ἐκ τῆς κυρίως πόλεως, ιτισμένης ἐπὶ ὑψώματος 100 μ., μὲ καλὰς ἀποικια-ιὰς οἰκίας ἐν μέσῳ κήπων καὶ φοινίκων, καὶ ἐκ οῦ λιμένος, ὅπου ὑπάρχουν αἱ ἀποθῆκαι, τὰ τα-ιδιωτικὰ γραφεῖα κτλ. Πρὸ τῆς δημιουργίας τοῦ λευθέρου κράτους τοῦ Κόνγκο, ἡ Μπόμα ἀπετέ-ιει τὸ ὅριον τῆς ἐμπορικῆς δραστηριότητος τῶν Εὐρωπαίων ἐν τῇ περιοχῇ ἐκείνῃ, σήμερον δὲ εἶ-ναι ὁ κυριώτερος, μετὰ τὴν Μπανάνα, ἐμπορικὸς λιμήν, ὅπου παραμένουν τὰ μεγάλα πλοῖα, ὅσα δὲν δύνανται νὰ ἀνέλθουν τὸν ποταμὸν μέχρι τοῦ Ματαστί, ὁπόθεν ἄρχεται ἡ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ πρὸς τὴν Λεοπολντβίλ. Ἐκ τῆς Μπόμα ἀναχωρεῖ σιδηροδρομικὴ γραμμὴ μήκους 100 περίπου χιλιομέτρων, φθάνουσα μέχρι τῆς Τσέλα παρὰ τὰ σύνορα τοῦ Πορτογαλικοῦ καὶ τοῦ Γαλλικοῦ Κόνγκο. Εἰς τὰς νησῖδας τοῦ ποταμοῦ, αἵτινες εὑρίσκονται παρὰ τὴν Μπόμα, ὑπάρχουν οἱ τάφοι τῶν παλαιῶν βασιλέων τοῦ Κόνγκο καὶ τῶν πεσόντων κατὰ τὴν ἐκστρατείαν Τόνκκεν τοῦ 1816. Μ. Δ. Β.

**Μπόμαρσουντ.** Ρωσικὸν φρούριον, ἐγερθὲν εἰς τὸ ἀρχιπέλαγος τῆς Βαλτικῆς θαλάσσης τῷ 1783 ἐπὶ τῆς νήσου Ἄλαντ. Τὸ φρούριον τοῦτο ἐβομβαρδίσθη καὶ κατεστράφη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων τὴν 16 Αὐγούστου 1854 διαρκοῦντος τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου. Θ. Β.

**μπόμπα** (ἡ)· δημοτ., βολὶς κανονιοῦ: «ἔπεσε μιὰ μπόμπα» || μεταβ. «σὰν μπόμπα ἔπεσε» ἀπροσδοκήτως ἐνεφανίσθη ἢ ἐλέχθη τι· || εἶδος βαρελίων, διὰ τῶν ὁποίων συνήθως ταξιδεύεται ὁ οἶνος (βλ. λ. *βόμβα*).

**Μπόμπα** (Bomba) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βόμβα*.

**Μπόμπα** (Bobba), ***Ρομενάρδος***. Ἰταλὸς φιλόσοφος (1825—1905). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας καὶ τῆς φιλοσοφίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Τουρίνου καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Πραγματεία περὶ μὴ ἐπαρκῶς γνωστῶν φιλοσόφων τινῶν» (1860), «Φιλοσοφικὴ κριτική» (1875), «Περὶ τῆς ἰδέας τοῦ ἀληθοῦς καὶ ἡ σχέσις αὐτῆς πρὸς τὴν ἰδέαν τοῦ ὄντος» (1888), «Τὸ παρελθὸν καὶ τὸ παρὸν τῆς φιλοσοφίας» (1893), «Ἱστορία τῆς φιλοσοφίας ἐν σχέσει πρὸς τὴν γνῶσιν» (1873, εἰς 4 τόμους), «Ἡ ἐπιστήμη τῆς γνώσεως παρὰ τῷ Ἀριστοτέλει» (1896) κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπομπαντίλια** (Bobadilla), ***Φραγκῖσκος ντὲ—***. Ἱσπανὸς εὐγενὴς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Τῷ 1500, ἀποσταλεὶς ὑπὸ τῆς ἱσπανικῆς κυβερνήσεως ὅπως ἐπιβάλῃ τὴν τάξιν εἰς τὴν Ἁϊτήν, συνέλαβε τὸν Κολόμβον καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ καὶ τοὺς ἀπέστειλε σιδηροδεσμίους εἰς Εὐρώπην. Ἡ πρᾶξις αὕτη δὲν ἐπεδοκιμάσθη ὑπὸ τοῦ Φερδινάνδου καὶ τῆς Ἰσαβέλλας, οἵτινες καὶ διέταξαν τὴν ἀπελευθέρωσιν τῶν συλληφθέντων καὶ τὴν ἀνάκλησιν τοῦ Μπομπαντίλια. Οὗτος ἐπιστρέφων εἰς Ἱσπανίαν, ἐπὶ κεφαλῆς στολίσκου ἐκ 15 πλοίων, κατελήφθη ὑπὸ σφοδρᾶς θυέλλης, καθ' ἣν κατεποντίσθη ὁ στολίσκος, ἐξαιρέσει τριῶν πλοίων, αὐτὸς δὲ ἐπνίγη (1502). Γ. Ι. Β.

**μπομπάρδα** (ἡ)· βλ. *βομβάρδα*.

**μπομπαρδάρω**· ἀντὶ *βομβαρδίζω* (βλ. λ.).

**μπομπάρδισμα** (τό)· ἀντὶ *βομβαρδισμὸς* (βλ. λ.).

**Μπομπέκωφ, *Παῦλος***. Βούλγαρος ἐπαναστάτης (1851—1877), εἷς τῶν σημαντικωτέρων ὀργανωτῶν τῆς ἀπριλιανῆς ἐπαναστάσεως. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν αὐτῆς κατέφυγεν εἰς Ρουμανίαν, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ἐν Βουκουρεστίῳ ἐξέδιδε τὴν ἐφημερίδα «Ἡμερήσια νέα». Τ. Β.

**Μπόμπες** (Bobes) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κούνεο τοῦ Πεδεμοντίου. Κάτ. 10.250. Κεῖται εἰς ὕψος 580 μ. ἐν ὡραίᾳ τοποθεσίᾳ καὶ χρησιμεύει ὡς θερινὴ διαμονή. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν λατομεῖα μαρμάρων. Παράγει οἴνους, γεώμηλα καὶ κάστανα, ἔχει δὲ βιομηχανίαν μεταξωτῶν καὶ μαλλίνων ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπομπιγιὸ** (Bobillot), ***Ἰούλιος***. Γάλλος λογοτέχνης, γνωστὸς ἰδίως ὑπὸ τὸ ὄνομα *λοχίας Μπομπιγιὸ* (1860—1885). Εἶχε γράψει μυθιστορήματά τινα καὶ θεατρικὰ ἔργα, ὅτε προσκληθεὶς διὰ τὴν ἐκπλήρωσιν τῶν στρατιωτικῶν αὐτοῦ ὑποχρεώσεων ἐστάλη μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχίου εἰς Τονκῖνον, ἐκεῖ δὲ ἐτραυματίσθη θανασίμως, μαχόμενος μετὰ καταπλήσσοντος ἡρωισμοῦ πρὸς ὑπεράσπισιν τοῦ Τυγιὲν-Κουάν, καὶ ἀπέθανε μετ' ὀλίγον εἰς Χανόϊ. Μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐδημοσιεύθησαν ἓν μυθιστόρημά του «Μία ἀπ' αὐτὲς τὶς κυρίες» (1885) καὶ ἓν δρᾶμα «Ἰάκωβος Φαγιάν», γραφὲν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μάξ. Τῷ 1888 ἀνηγέρθη ἀνδριὰς αὐτοῦ εἰς Παρισίους. Χ. Δ.

**μπόμπιρας** (ὁ)· δημοτ., εἶδος χρυσοκανθάρου, ἴσως ὁ βομβυλιὸς (λ. πεποιημένη ἐκ τοῦ ἤχου τὸν ὁποῖον κάμνει κατὰ τὸ πτερύγισμά του)· || μεταφ., ἐπὶ μικρῶν παιδίων, διὰ τὴν στρογγυλότητα: «δὲν κάθεται ἥσυχα ὁ μπόμπιρας».

**Μπομπολάκης, *Βασίλειος***. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1866—1869. Ν. ΚΛΣ

**μπομπόλια** (τά)· ἰδιωματ., γεώμηλα.

**Μπομπόρι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Κόλπωσις τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς (Κιρκασίας) τοῦ Εὐξείνου (πλάτ. 43° 08' Β., μῆκ. 40° 31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2235: Fort Anakria to Kertch Strait) ἀμέσως πρὸς Α. τοῦ ἀκρωτηρίου Πιτσοῦνδα. Εἶναι ὁ *Πιτυοῦς* τῶν ἀρχαίων. Σ. Ε. Λ.

**Μπομπορίκιν**, ἢ ***Μπαμπαρίκιν*** (Boborikin ἢ Babarikin), ***Πέτρος-Δημητρίεβιτς***. Ρῶσος λογογράφος ἐκ Νίζνι-Νοβγκορὸντ (1836—1621). Τῷ 1860 ἐγένετο διδάκτωρ τοῦ δικαίου τοῦ Πανεπιστημίου τῆς Πετρουπόλεως (Λένινγκραντ), ταχέως ὅμως κατέλιπε τὴν νομικήν, διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ ἀνεδείχθη πολυγραφώτατος συγγραφεύς, δημοσιεύσας περὶ τοὺς 100 τόμους. Ἔγραψε μυθιστορήματα, διηγήματα καὶ δραματικὰ ἔργα, εἰς τὰ ὁποῖα περιγράφεται μετὰ μεγάλου ρεαλισμοῦ ἡ ζωὴ τῶν διαφόρων τάξεων τῆς παλαιᾶς ρωσικῆς κοινωνίας. Ἐπίσης ἐπεδόθη μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας εἰς τὴν λογοτεχνικὴν κριτικήν. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Ὁ Γκολντόνι καὶ τὸ θέατρόν του» καὶ «Ἡ θεατρικὴ τέχνη ἐν Ρωσίᾳ» (κριτικὴ μελέτη), «Ἡ νυκτερινὴ θυσία», «Ψυχολογία ἑνὸς νεαροῦ Ρώσου χαμένου μέσα στὸ Παρίσι», «Τὸ ἥμισυ μιᾶς ζωῆς», «Καθ' ὁδόν», «Αἱ σταθεραὶ ἀρεταὶ» κ. ἄ. (μυθιστορήματα), «Ὁ εὐγενὴς» (κωμῳδία) καὶ «Ἡ μικροῦλα» (δρᾶμα). Χ. Δ.

**μπομπότα** (ἡ)· δημοτ., τὸ ἐξ ἀραβοσίτου ἄλευρον καὶ συνήθως ὁ ἐξ αὐτοῦ ἄρτος· ἀντιδιαστέλλεται ἐνιαχοῦ πρὸς τὸ *καθάρειο* (τὸ σίτινον ἄλευρον καὶ ὁ ἄρτος).

**μπομποτάλευρο** (τό)· δημοτ., ἄλευρον ἐξ ἀραβοσίτου.

**μπομπρέσσο** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, ἐκ τοῦ γαλλικοῦ beauprés, σημαίνων τὸ ὅλον τοῦ προβόλου ἱστοῦ. Σ. Ε. Λ.

**Μπομπρικώφ, *Νικόλαος Ἰβάνοβιτς***. Ρῶσος στρατηγὸς (1839—1901). Μετέσχε τοῦ Ρωσοτουρκικοῦ πολέμου, κατόπιν ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ στρατιωτικοῦ οἴκου τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Β' καὶ γενικὸς διοικητὴς τῆς Φινλανδίας, μὲ τὴν ἐντολὴν τοῦ ἐκρωσισμοῦ αὐτῆς. Ἐπιδιώξας νὰ καταπνίξῃ τὸ ἐθνικὸν αἴσθημα τῆς χώρας, κατεπίεσε τὸν φιλανδικὸν λαὸν καὶ κατέλυσε τὸ φινλανδικὸν Σύνταγμα. Προκαλέσας ἐξέγερσιν τοῦ λαοῦ, ἐδολοφονήθη καθ' ἣν στιγμὴν μετέβαινεν εἰς τὴν γερουσίαν. Θ. Β.

**Μπόμπρινετζ** (Bobrinez) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Χερσῶνος τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀπὸ Ἐλισαβετγκρὰντ εἰς Νικολάγιεφ ὁδοῦ. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ἔχει βιομηχανίας ἀλεύρων. Κάτ. 16.000 περίπου, ἐξ ὧν τὰ 30 % Ἰουδαῖοι. Χ. Δ.

**Μπομπρόβσκι, *Συμεὼν Σεργιέβιτς***. Ρῶσος ποιητὴς (1760—1810). Ἐνεφανίσθη εἰς τὴν ρωσικὴν λογοτεχνίαν διὰ τοῦ ἐπικοῦ ποιήματος «Ἡ Ταυρίς», εἰς τὴν δευτέραν ἔκδοσιν τοῦ ὁποίου ἔθεσε τὸν τίτλον «Χερσωνίς». Εἶτα ἐδημοσίευσε τὸ ποίημα «Ἡ νύξ» Μετὰ τὸν θάνατόν του συνελέγησαν τὰ ποιήματά του καὶ ἐδημοσιεύθησαν εἰς τρεῖς τόμους ἐν Πετρουπόλει τῷ 1812. Θ. Β.

**Μπομπρουΐσκ** (Bobruisk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Μίνσκ τῆς Λευκῆς Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Βερεζίνα καὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Λιμπάου—Ρόμνυ. Διεξάγει ζωηρότατον ἐμπόριον ξυλείας καὶ σιτηρῶν. Καταληφθεῖσα τῷ 1795 ὑπὸ τῶν Ρώσων, εἶχεν ὠχυρωθῆ ἐπὶ τοῦ Τσάρου Ἀλεξάνδρου Α' καὶ κατώρθωσε νὰ ἀντισταθῇ ἐπιτυχῶς ἐναντίον τῶν Γάλλων κατὰ τὴν εἰς Ρωσίαν ἐκστρατείαν τοῦ Ναπολέοντος (1812). Κάτ. 42300, ἐξ ὧν οἱ ἡμίσεις Ἰουδαῖοι. Χ. Δ.

**Μπόμπρσκα** (Bobrska) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν Γαλικίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Λεμβέργης-Τσέρνοβιτς καὶ ἔχουσα ὡραῖον ναὸν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος καὶ κατ. 5.700, Ἰουδαίους κατὰ τὸ πλεῖστον. Χ. Δ.

**Μπόμπτσεφ, *Στέφανος***. Βούλγαρος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1851. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Μόσχᾳ (1880) καὶ κατόπιν, ἀναμιχθεὶς εἰς τὴς πολιτικήν, ἐξελέγη βουλευτής. Συνειργάσθη εἰς διαφόρους ἐφημερίδας ἐν Βουλγαρίᾳ, Ρουμανίᾳ καὶ Τουρκίᾳ, καὶ συνέγραψε γλωσσολογικά, ἱστορικά, νομικά, γεωγραφικὰ καὶ ἐθνογραφικὰ συγγράμματα, κριτικὰς μελέτας καὶ διηγήματα, ἐξέδωκε δὲ καὶ μεταφράσεις ἐκ τῆς γαλλικῆς καὶ γερμανικῆς λογοτεχνίας. Τ. Β.

**Μπόν**, ἢ ***Μπόνα*** (Bône ἢ Bona, ἀραβιστὶ *Μπέλεντ-ἐλ-Ἄναμπ) [Γεωγρ.]*. Ὀχυρὰ πόλις καὶ λιμὴν τῆς γαλλικῆς Ἀλγερίας, κειμένη παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Σέμπους, ἐντὸς τοῦ ὁμωνύμου εὐρέος κόλπου, 350 χλμ. πρὸς Δ. τῆς Τύνιδος καὶ 156 πρὸς Β. τῆς Κωνσταντίνης, μεθ' ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει καλὸν λιμένα προσιτὸν εἰς πλοῖα ἔχοντα βύθισμα μικρότερον τῶν 22 ποδῶν καὶ εἶναι σπουδαῖος ἐμπορικὸς λιμὴν τῆς Ἀλγερίας, ἐπικοινωνῶν διὰ τακτικῶν ἀτμοπλοϊκῶν γραμμῶν μετὰ τῆς Μασσαλίας καὶ συνδεόμενος τηλεγραφικῶς μετ' αὐτῆς δι' ὑποβρυχίου καλωδίου. Ἐξάγει σιτηρά, ἔλαιον, οἶνον, ὀπώρας, ἔριον, δέρματα καὶ σιδηρομεταλλεύματα καὶ ἔχει βιομηχανίας ταπήτων καὶ δερμάτων. Κάτ. (1921) 41.777, ἐξ ὧν 28.096 Εὐρωπαῖοι.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ Μπόν, γνωστὴ ἐπίσης παρ' ἡμῖν

Digitized by Google

ὡς *Βόνη*, κατέχει πιθανῶς τὴν θέσιν τοῦ ἐπινείου τῆς ἀρχαίας πόλεως τῶν Καρχηδόνων *Ἱππῶνος* (Hippo Regius), τῆς ὁποίας ἐρείπια σῴζονται εἰς ἀπόστασιν 2 χλμ. πρὸς Ν. Κατὰ τὸν Δ΄ μ.Χ. αἰῶνα ἦτο ἡ δευτέρα ρωμαϊκὴ πόλις της Ἀφρικῆς καὶ ἕδρα τῆς ἐπισκοπῆς τοῦ ἁγίου Αὐγουστίνου. Κατὰ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Βανδήλων (431) καὶ βραδύτερον τῶν Ἀράβων (697) κατεστράφη· βραδύτερον ὅμως ἐπανεκτίσθη ὑπὸ τῶν Ἀράβων καὶ ἀπετέλει ἀξιόλογον κέντρον αὐτῶν κατὰ τὸν Ι΄ αἰῶνα. Ὑπὸ τῶν Γάλλων κατελήφθη τῷ 1832. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου (4 Αὐγούστου 1914) ἐβομβαρδίσθη ὑπὸ τοῦ καταδρομικοῦ «Γκαῖμπεν», γερμανικῆς ναυαρχίδος τῆς μοίρας τῆς Μεσογείου, διότι ἦτο κέντρον ἐπιβιβάσεως στρατευμάτων πρὸς τὴν Γαλλίαν. Χ. Δ.

**Μπὸν** (cape Bon) *[Γεωγρ.]*. Ἐπίσημον ἀκρωτήριον τῆς ἐπὶ τῆς Μεσογείου ἀφρικανικῆς ἀκτῆς (πλάτ. 37° 05΄ Β., μῆκ. 11° 03΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 250 : Fratelli rocks to Mahedia), ἀνατολικὸν κέρας τοῦ κόλπου τῆς Τύνιδος. Ἔχει σταθμὸν τοῦ ἀγγλικοῦ Λόϋδ καὶ σηματοφόρον ὑπὸ διεθνὲς γεωγραφικὸν ἀριθμόσημον AKWR. Εἶναι τὸ *Ἑρμαῖον* τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων καὶ τὸ Mercurium τῶν Λατίνων. Σ. Ε. Λ.

**Μπὸν** (Bohn), *Αἰμίλιος*. Γερμανὸς συνθέτης καὶ μουσικολόγος (1839—1909). Ὡς συνθέτης ἔδωκε μόνον ᾄσματα καὶ χορῳδίας, ὡς μουσικολόγος δὲ συνέγραψε : «Βιβλιογραφίας τῶν μέχρι τοῦ 1700 μουσικῶν ἔργων ἐν ταῖς βιβλιοθήκαις τῆς Βρεσλαβίας» (18-3), «Τὰ μουσικὰ χειρόγραφα τοῦ ΙΣΤ΄ καὶ ΙΖ΄ αἰῶνος ἐν τῇ Βιβλιοθήκῃ τῆς Βρεσλαβίας» (1890), «Πεντήκοντα ἱστορικαὶ συναυλίαι ἐν Βρεσλαβίᾳ 1881—1892», κ.ἄ. Ὁ Μπὸν ὠνομάσθη ἐπίτιμος διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βρεσλαβίας καὶ ἐπίτιμον μέλος τῆς φιλαρμονικῆς Ἀκαδημίας τῆς Φλωρεντίας, τῆς Ἀκαδημίας Ἁγίας Καικιλίας τῆς Ρώμης, κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μπόνα** (Bona), *Ἰωάννης*. Σοφὸς Ἰταλὸς κληρικὸς (1609—1674), χειροτονηθεὶς ὑπὸ τοῦ πάπα Κλήμεντος τοῦ Θ΄ καρδινάλιος. Ἐγένετο γνωστὸς χάρις εἰς τὰ λατινικὰ συγγράμματα, τὰ ὁποῖα κατέλιπε. Τὸ σημαντικώτερον ἐκ τούτων εἶναι τὸ «Περὶ τῶν ἀρχῶν τοῦ χριστιανικοῦ βίου», μεταφρασθὲν γαλλιστὶ τῷ 1693 ὑπὸ Consin καὶ τῷ 1728 ὑπὸ Goujet. Ι. Μ. Π.

**Μποναβεντούρα**, *ἅγιος*. Ἐγεννήθη τῷ 1221 ἐν Bagnarea τῆς Τοσκάνης ἐκ πτωχῶν καὶ εὐσεβῶν γονέων. Πρότερον ἐκαλεῖτο *Ἰωάννης Fidanza* ἢ ἁπλῶς *Fidanza*. Τῷ 1238 εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν φραγκισκανῶν, τῷ δὲ 1243 ἐστάλη εἰς Παρισίους πρὸς εὐρυτέρας σπουδάς. Ἐκεῖ ἐγένετο μαθητὴς τοῦ Ἀλεξάνδρου von Hales καὶ ἔπειτα τοῦ Ἰωάννου de la Rochelle. Τῷ 1253 ἀνηγορεύθη διδάσκαλος τῆς θεολογίας καὶ ἔλαβε τὴν ἄδειαν νὰ διδάσκῃ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ, ἔνθα ἐδίδασκε καὶ ὁ περίφημος δομινικανὸς Θωμᾶς Ἀκινάτος. Ἀμφότεροι, εἰ καὶ ἀνήκοντες εἰς διάφορα τάγματα καὶ εἶχον διάφορον μέθοδον διδασκαλίας, συνεδέθησαν στενῶς πρὸς ἀλλήλους καὶ συνηγωνίσθησαν ὑπὲρ τοῦ τάγματος αὐτῶν κατὰ τὸν προσβολῶν τοῦ Γουλιέλμου τοῦ St. Amour, ὅστις ἐν τῇ ἔριδι ταύτῃ εἶχε καλέσει αὐτοὺς προδρόμους τοῦ Ἀντιχρίστου. Τῷ 1256 ἐγένετο ὁ Μποναβεντούρα προϊστάμενος τοῦ τάγματος τῶν φραγκισκανῶν, ὡς τοιοῦτος δὲ ἐπέδρασε μεγάλως ἐπί τε τοῦ τάγματός του καὶ τῶν πραγμάτων τῆς Ἐκκλησίας. Τῷ 1265 ὁ πάπας Κλήμης ὁ Δ΄ προσέφερεν αὐτῷ τὴν ἀρχιεπισκοπὴν τοῦ York, ἣν ὅμως ὁ Μποναβεντούρα ἀπεποιήθη. Ὅτε ὅμως, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κλήμεντος, οἱ καρδινάλιοι μετὰ ἔριδας ἐξέλεξαν, τῇ προτροπῇ τοῦ Μποναβεντούρα, ὡς πάπαν τὸν Γρηγόριον Ι΄ (1271), οὗτος ἀνηγόρευσεν αὐτὸν καρδινάλιον καὶ ἐπίσκοπον τοῦ Albano καὶ ἐκάλεσεν εἰς τὴν περίφημον σύνοδον τῆς Λυὼν (1274), ἔνθα εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς ἑνώσεως τῆς ἀνατολικῆς καὶ δυτικῆς Ἐκκλησίας. Κατὰ τὴν πρώτην συνεδρίαν ἐξεφώνησε λόγον προξενήσαντα μεγάλην ἐντύπωσιν, εὐθὺς ὅμως κατόπιν ἠσθένησε καὶ κατὰ τὴν τετάρτην συνεδρίαν ἀπεβίωσε. Τὴν κηδείαν του παρηκολούθησεν ὁλόκληρος ἡ σύνοδος μετὰ τοῦ πάπα. Ὑπὸ τοῦ τάγματός του ἔκτοτε ἐτιμᾶτο ὡς ἅγιος καὶ ὁ τάφος του ἐθεωρεῖτο ὡς θαυματουργός, ἡ Ἐκκλησία ὅμως ἀνεκήρυξεν αὐτὸν ὡς ἅγιον τῷ 1482. Ἔκτοτε ἡ πόλις τῆς Λυὼν ἐθεώρει τὸν ἅγιον Μποναβεντούρα ὡς προστάτην αὐτῆς. Ὁ πάπας Σίξτος ὁ Ε΄, τῷ 1587, περιέλαβεν αὐτὸν ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν διδασκάλων τῆς Ἐκκλησίας καὶ δὴ ἕκτον κατὰ τὴν τάξιν, μετὰ τὸν Ἀμβρόσιον, Ἱερώνυμον, Αὐγουστῖνον, Γρηγόριον τὸν μέγαν καὶ Θωμᾶν Ἀκινᾶτον, οἱ δὲ μεταγενέστεροι ἐκάλεσαν αὐτὸν διδάκτορα σεραφικὸν (doctor seraphicus), ὅπως τὸν Θωμᾶν Ἀκινᾶτον εἶχον καλέσει διδάκτορα ἀγγελικὸν (doctor angelicus).

Ὁ Μποναβεντούρα διεκρίνετο διὰ τὴν πρᾳότητα, τὴν ταπεινοφροσύνην καὶ τὴν πρὸς τὸν πλησίον ἀγάπην. Ἡ αὐστηρότης τῶν ἠθῶν του ἦτο τοιαύτη, ὥστε ὁ περίφημος Halesius ἔλεγε περὶ αὐτοῦ : «ἐν τῷ ἀδελφῷ Μποναβεντούρᾳ φαίνεται μὴ ἁμαρτήσας ὁ Ἀδάμ». Εἰς τὰς δυσχερείας τοῦ βίου εὕρισκε πάντοτε παρηγορίαν ἐν τῇ προσευχῇ, καὶ ἐν τῇ προσπαθείᾳ τῆς λύσεως διαφόρων δυσχερῶν θεολογικῶν ζητημάτων ἔτεινε πάντοτε τὸ βλέμμα του πρὸς τὸν ἐσταυρωμένον, ἀναμένων παρ' αὐτοῦ τὸν διαφωτισμόν. Ὅτε ποτὲ ὁ Θωμᾶς ὁ Ἀκινάτος ἐπισκεφθεὶς αὐτὸν παρεκάλεσε νὰ τοῦ δείξῃ τὰ συγγράμματα, ἐξ ὧν ἤντλει τὰς γνώσεις του, ὁ Μποναβεντούρα τῷ ἔδειξε τὸν ἐν τῷ δωματίῳ του ἐσταυρωμένον.

Τὰ ἔργα τοῦ Μποναβεντούρα ἐξεδόθησαν τὸ πρῶτον τῷ 1495 εἰς τέσσαρας τόμους. Ἔπειτα ὅμως, κατ' ἐντολὴν τοῦ πάπα Σίξτου τοῦ Ε΄, ὑπὸ τὴν ἐπίβλεψιν καρδιναλίου συνελέγησαν τὰ ἔργα του καὶ ἐξεδόθησαν εἰς ὀκτὼ τόμους ἐν Ρώμῃ (1588—1596). Πολλὰ ὅμως ἐκ τῶν περιληφθέντων ἐν τῇ ἐκδόσει ταύτῃ δὲν ἔχουσι γραφῆ ὑπὸ τοῦ Μποναβεντούρα. Ἄξια δὲ ἰδίας μνείας εἶναι τὰ ἀκόλουθα : 1) «Commentarii in libros sententiarum». Κατὰ τὴν ἐπικρατοῦσαν τότε συνήθειαν ἔγραφε καὶ ὁ Μποναβεντούρα ὑπομνήματα εἰς τὰ

Ὁ ἅγιος Μποναβεντούρα.

τέσσαρα βιβλία τῶν γνωμῶν τοῦ Πέτρου Λομβάρδου. Μολονότι μαθητὴς τοῦ Ἀλεξάνδρου τοῦ Hales, ὅστις πρῶτος ἐν τῇ δογματικῇ ἐχρησιμοποίησε τὴν ἀριστοτελικὴν φιλοσοφίαν, μεταχειρίζεται τὴν πλατωνικὴν φιλοσοφίαν ἐν τῇ ἐκδοχῇ αὐτῆς τοῦ Αὐγουστίνου, εἶναι λοιπὸν ρεαλιστής, δεχόμενος τὰς πλατωνικὰς ἰδέας. Ὁ Θεὸς εἶναι ἡ προσηματικὴ βάσις τῶν πραγμάτων, ἡ ratio exemplaria, αἱ δὲ ἰδέαι ὑπάρχουσιν ἐν αὐτῷ καὶ διὰ τῆς ὕλης ἔλαβον μορφήν. Εἰς συνείδησιν τῆς ἑνότητος ταύτης πρὸς τὸν Θεὸν δύναται μόνον ἡ λογικὴ φύσις νὰ ἔλθῃ, ἥτις ἔχει δημιουργηθῆ ὅπως ἔρχεται εἰς ἄμεσον σχέσιν πρὸς τὸν Θεὸν καὶ ἥτις εἶναι ἱκανὴ τῆς πρὸς τὸν Θεὸν κοινωνίας (rationalis creatura capax Dei). Ἰδίαν ὁδὸν χαράσσει ὁ Μποναβεντούρα ἐν τῇ λύσει τοῦ ζητήματος τῆς σχέσεως τῆς λογικῆς φύσεως πρὸς τὸν Θεόν, συνενῶν τὴν μυστικὴν τάσιν μετὰ τῆς συνήθους σχολαστικῆς θεωρίας, ἐν ᾗ δὲν εἶναι ἀνεξάρτητος ἀπὸ τοῦ ὁπαδοῦς τοῦ μυστικισμοῦ καὶ δὴ τὸν Βερνάρδον τὸν ἐκ Clarvaux καὶ τοὺς Βικτωρίνους. 2) «De reductione artium ad theologiam». Ἐν αὐτῷ, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς σχολαστικούς, θεωρεῖ τὴν ἁγίαν Γραφὴν ὡς τὸ ὕψιστον φῶς, ἐξ οὗ ἔρχεται πᾶσα γνῶσις. Τὸ φῶς τοῦτο φωτίζει τὸ λογικὸν καὶ κινεῖ τὴν ἀγάπην, ἡ δὲ οὕτω κτηθεῖσα γνῶσις ὑπηρετεῖ πάσας τὰς πνευματικὰς δυνάμεις. Πᾶν ἄλλο φῶς, τὸ ἐξωτερικόν, ὅπερ προκύπτει ἐκ τῆς δημιουργίας, καὶ τὸ φῶς τῆς ἀνθρωπίνης γνώσεως καὶ ἀντιλήψεως, γεννᾷ μὲν δεξιότητας καὶ γνώσεις, ἀλλὰ δὲν φθάνει τὸν ὕψιστον σκοπόν, ὅστις ἐπιτυγχάνεται διὰ μόνης τῆς ἀποκαλύψεως. Κατὰ ταῦτα ἡ θεολογία ὡς ἐπιστήμη τῆς ἀποκαλύψεως στηρίζεται ἐπὶ πάσης ἄλλης ἐπιστήμης καὶ καταλαμβάνει τὴν ἀνωτάτην βαθμίδα, οὖσα ἡ μόνη, ἥτις φέρει ἐν ἑαυτῇ τὸν ἑαυτῆς σκοπόν. 3) «Itinerium mentis in Deum». Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ἐκθέτει τὴν ὁδὸν τῆς ἀνυψώσεως τῆς ψυχῆς πρὸς τὸν Θεόν. Κατὰ τὸν συγγραφέα τρεῖς ὁδοὶ χρησιμεύουσι πρὸς ἐπίτευξιν τοῦ ὑψίστου καλοῦ καὶ τῆς μακαριότητος. Ὁ ἄνθρωπος, ὁρμώμενος ἐκ τῆς θεωρίας τοῦ ὁρατοῦ κόσμου ὡς θείου κατόπτρου, εἰσδύει εἰς τὸ ἐσωτερικὸν αὐτοῦ, ὅπως ἀνυψωθῇ εἰς τὸ ἀπόλυτον. Κατὰ ταῦτα ὁ ἄνθρωπος ἀπὸ τοῦ ἐξωτερικοῦ αἰσθητοῦ κόσμου προχωρεῖ εἰς τὸν ὑποκειμενικὸν πνευματικὸν κόσμον, ὅπως ἔπειτα ἀναχθῇ εἰς τὸν ὕψιστον νοῦν, ὅστις ἐλευθεροῖ τὸν ἄνθρωπον ἐκ τῶν δεσμῶν τῆς ἀγνοίας. Ἑκάστην τῶν τριῶν τούτων ὁδῶν ὑποδιαιρεῖ εἰς δύο, οὕτως ὥστε ἀποτελεῖ κλίμακα ἓξ βαθμίδων : sensus, imaginatio ratio, intellectus, intelligentia καὶ synderesis. Αἱ βαθμίδες αὗται ἀποτελοῦσι τὰς ἓξ βαθμῖδας τοῦ ἀληθοῦς θρόνου τοῦ Σολομῶντος, τὸ κορύφωμα δὲ τούτων εἶναι ὁ excensus mentalis et mysticus, διὰ τοῦ ὁποίου ἔρχεταί τις εἰς ὑψίστην γνῶσιν τοῦ Θεοῦ καὶ εἰς μυστικὴν ἐπιστροφὴν πρὸς αὐτόν. 4) «Centiloquium». Τὸ ἔργον τοῦτο εἶναι δημώδης δογματική, περιλαμβάνον καὶ τὰς θεμελιώδεις ἀρχὰς τῆς ἠθικῆς. Ὁ Μποναβεντούρα διακρίνει τριῶν εἰδῶν ἠθικήν : 1) τὴν τοῦ κοινοῦ ἀνθρώπου, ὅστις ρυθμίζει τὰς ἑαυτοῦ πράξεις κατὰ τοὺς νόμους, 2) τοῦ ἀληθοῦς Χριστιανοῦ, ὅστις ἀκολουθεῖ τὸ εὐαγγελικὸν πρόσταγμα καὶ οὕτω ὑψοῦται εἰς vitam supererogationis καὶ 3) τὴν τῶν ἀσκητῶν. Τὰς ἠθικὰς ἰδέας ἀναπτύσσει καὶ ἐν τῷ ἔργῳ αὐτου «Soliloquium», ὅπερ περιέχει διάλογον τοῦ ἀνθρώπου πρὸς τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ δεικνύει πῶς ἡ ψυχὴ πρέπει κλιμακηδὸν νὰ ἀνέλθῃ εἰς τὴν ἀπόλαυσιν τῆς οὐρανίου χαρᾶς. 5) «De paupertate Christi». Ἐν αὐτῷ τονίζει τὴν ἀξίαν τῆς πτωχείας καὶ ὑποδεικνύει ὅτι ἡ μοναχικὴ ἀκτημοσύνη δὲν ἀναφέρεται μόνον εἰς τὸν καθ' ἕκαστον μοναχόν, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν μονὴν ὡς ὅλον, ἥτις ἐπομένως δὲν πρέπει νὰ ἔχῃ κτήματα. Ἄξια τέλος ἰδίας μνείας εἶναι τὰ κηρύγματα καὶ αἱ πολυάριθμοι βιβλικαὶ καὶ ἐξηγητικαὶ αὐτοῦ ἐργασίαι εἰς τὴν ἁγίαν Γραφήν, οἱ ὕμνοι, ἐν οἷς ἐπικρατεῖ μυστική τις ἀγάπη πρὸς τὴν Θεοτόκον, πρὸς τιμὴν τῆς ὁποίας ἐξέδωκε τὸν μέγαν καὶ μικρὸν ψαλτῆρα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *W. Hollerberg*, Studien zu Bonaventura (1862). *Berthaumer*, Gesch. des L. Bonaventura (1863).— *Vicenza*, Der L. Bonaventura.

Κ. Ι. ΔΥΟΒΟΥΝΙΩΤΗΣ

**Μποναβεντούρα** *ντὲ Σμὲτ* (Bonaventure de Smet). Βέλγος φιλόλογος (βλ. λ. *Βουλκάνιος*).

**Μποναῖρ**, ἢ *Μπουὲν Ἀϋρε* (Bonaire ἢ Buen Ayre) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν Ὀλλανδικῶν Δυτικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ Καραϊβικῇ θαλάσσῃ, ἀνήκουσα εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν μικρῶν ὑπηνέμων Ἀντιλλῶν. Κεῖται ἐγγὺς τῶν ΒΔ. ἀκτῶν τῆς Βενεζουέλας 48 χλμ. πρὸς Α. τοῦ Κουρασάο, ἔχει σχῆμα ἐπίμηκες, ἐμβαδοῦ 420 τετρ. χλμ., καὶ πληθυσμὸν 6.500 κατ. Ἐξάγει ἰδίως ξυλείαν καὶ ἅλας καὶ ἔχει ἀξιόλογον κτηνοτροφίαν. Χ. Δ.

**Μπονὰκ** (Bonac), *Ἰωάννης - Λουδοβῖκος ντ' Ὑσσόν, μαρκήσιος τοῦ—*. Γάλλος διπλωμάτης (167? —1738). Διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν πρεσβευτὴς ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ἐπέτυχε τότε τὴν ἄδειαν τῆς ἐπισκευῆς τοῦ ἡμικατεστραμένου Παναγίου τάφου. Ἐπίσης ἔπεισε τὸν σουλτᾶνον νὰ ἐγκαταστήσῃ εἰς Παρισίους τὴν πρώτην τουρκικὴν πρεσβείαν καὶ παρεσκεύασε τῷ 1724 τὴν συνθήκην τὴν καθορίζουσαν τὰ ὅρια μεταξὺ Ρωσίας καὶ Τουρκίας. Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν διετέλεσε διαδοχικῶς πρεσβευτὴς εἰς Ἑλβετίαν καὶ γενικὸς διοικητὴς τῆς χώρας τοῦ Φουά. Χ. Δ.

**Μπονὰλ** (Bonald), *Βίκτωρ ντὲ—*. Γάλλος συγγραφεὺς (1780—1871). Κατὰ τὴν παλινόρθωσιν ὠνομάσθη πρύτανις τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Μομπελλιέ, ἀπώλεσε τὴν θέσιν ταύτην κατὰ τὴν περίοδον τοῦ Ἑκατονθημέρου, τὴν ἀνέκτησε μετὰ τὴν δευτέραν παλινόρθωσιν καὶ παρῃτήθη ταύτης κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ἰουλίου. Συνέγραψε : «Des vrais principes opposés aux erreurs du XIX siècle ou notices positives sur les points fondamentaux de la philosophie, de la politique et de la religion» (1833), «Moise et les géologues modernes ou recit de la Génèse comparé aux théories nouvelles des savants sur l'origine de l'univers la formation de la terre etc.» (1835), «De la vie et des écrits de M. le vicomte de Bonald, défense de ses principes philosophiques etc.» (1844), «Encore un mot sur Pascal, les Jésuites et l'enseignement» (1845) κλπ. Θ. Π.

—**Μπονὰλ** (Bonald), *Λουδοβῖκος-Γαβριὴλ-Ἀμβρόσιος, ὑποκόμις ντὲ —*. Ἐγεννήθη τῷ 1754 καὶ ἀπέθανε τῷ 1840. Ὑπηρετήσας ἐπί τι διάστημα εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Κοντέ, ἀπεσύρθη εἰς Ἀϊδελβέργην καὶ κατόπιν εἰς Κωνσταντίαν, ὅπου συνέγραψε τὸ ἔργον : «La théorie du pouvoir politique et réligieux» (1796, τόμ. 3). Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν συνειργάσθη μετὰ τοῦ Σατωμπριὰν εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ «Mercure». Ἀπὸ τοῦ 1808 μέχρι τοῦ 1814 ἐχρημάτισεν ἐπίτιμος σύμβουλος τοῦ πανεπιστημίου, τῷ 1815 καὶ 1816 βουλευτής, τῷ 1816 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ τῷ 1823 ἐγένετο ὁμότιμος. Διεκρίθη περισσότερον ὡς συγγραφεὺς καὶ ὀλιγώτερον ὡς φιλόσοφος, ἡ δὲ φιλοσοφία του προδίδει μᾶλλον λογικὴν ὀξύτητα ἢ βαθύτητα σκέψεως. Ἐχθρὸς τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ἐξ ἰδιοσυγκρασίας καὶ ἐνστίκτου, ἐπέτησεν νὰ λογικοποιήσῃ τὸ ἔνστικτον τοῦτο. Καταπολεμῶν τὴν θεωρίαν τοῦ κοινωνικοῦ συμβολαίου καὶ τῆς κυριαρχίας τοῦ λαοῦ, ὑποστηρίζει ὅτι ἡ κοινωνία δὲν εἶναι αὐθαίρετον καὶ συμβατικὸν δημιούργημα, ἀλλ' ἀναγκαῖον καὶ πρωτογενὲς γεγονός. Κάθε σημερινὴ κοινωνικὴ μορφὴ ἐξαρτᾶται

Digitized by Google

ἐκ παλαιοτέρας τοιαύτης καὶ τὴν συνεχίζει. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον βάσεις τῆς κοινωνίας εἶναι ἡ αὐθεντία καὶ ἡ παράδοσις. Ἡ γλῶσσα, ἥτις ἀποτελεῖ τὸν φορέα τῆς παραδόσεως, προηγεῖται τῆς ἀτομικῆς σκέψεως καὶ ἀποτελεῖ θεῖον ὄργανον, δι' οὗ ὁ Θεὸς ἀπεκάλυψεν εἰς τοὺς ἀνθρώπους πάσας τὰς πρώτας ἀληθείας, βάσεις τῆς θρησκευτικῆς, ἠθικῆς καὶ κοινωνικῆς τάξεως. Πᾶσα ριζικὴ μεταβολὴ ἀντιτίθεται εἰς τὴν θείαν βούλησιν. Ἡ θεωρία αὕτη ὠνομάσθη *παραδοσιοκρατία* (traditionalisme), ἀποσκοπεῖ δὲ εἰς τὴν ὑποδούλωσιν τοῦ ἀνθρώπου εἰς τὸ ἐκ παραδόσεως κρατοῦν καὶ τὴν παρεμπόδισιν κάθε κοινωνικοῦ αὐθορμητισμοῦ. Κατεπολεμήθη καὶ ὑπ' αὐτῆς ἀκόμη τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας διὰ τοῦ πάπα Γρηγορίου τοῦ ΙΣΤ' καὶ διὰ συνόδου τοῦ Βατικανοῦ. Ἄλλα ἔργα τοῦ Μπονὰλ εἶναι: «Essai analytique sur les lois naturelles de l'ordre social», περιλαμβανόμενον ἐντὸς τοῦ μεγάλου συγγράμματός του: «La législation primitive» (1802, β' ἐκδ. 1821, εἰς 3 τόμ.), «Traité du diverse», «Théorie du pouvoir social» κλπ. Τὰ «Ἅπαντά» του ἐξεδόθησαν εἰς τρεῖς τόμους τῷ 1859 ὑπὸ τοῦ ἀββᾶ Migne. θ. π.

*Λουδοβῖκος Μπονάλ.*

**μποναμᾶς** (ὁ), καὶ ***μπουναμᾶς***· δημοτ., τὸ δῶρον τῆς πρωτοχρονιᾶς, φιλοδώρημα ἐπὶ τῷ νέῳ ἔτει: «οἱ μποναμᾶδες τῶν παιδιῶν», «ὁ ἅγιος Βασίλης μὲ τοὺς μποναμᾶδες του» (ἐκ τοῦ ἰταλ. buona mano).

**Μπονᾶνος, *Γεώργιος*.** Σύγχρονος Ἕλλην γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1863. Ἐσπούδασεν ἐν Ἀθήναις καὶ ἐν Ρώμῃ. Διετέλεσεν ἐπὶ βραχὺ χρονικὸν διάστημα (1911) καθηγητὴς ἐν τῇ ἐν Ἀθήναις σχολῇ τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ἐξεπόνησε πολυάριθμα συμπλέγματα, ἀγάλματα, προτομάς, ἡρῷα καὶ ἐπιτύμβια μνημεῖα. Ἡ τέχνη του εἶναι ἁπλῆ, πλήρης ἁρμονικῆς συμμετρίας καὶ ἐπιβλητική. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Ἕλλην ἐν δουλείᾳ», ὅπερ ἐβραβεύθη εἰς τὴν Παρισινὴν ἔκθεσιν τοῦ 1889, «Ἡ κυνηγέτις», ἥτις ἐπίσης ἐβραβεύθη τῷ 1900, ὁ ἐν τῇ μεγάλῃ πλατείᾳ τῆς Σύρου ἱδρυμένος ἀνδριὰς τοῦ ναυάρχου Μιαούλη, οἱ ἀνδριάντες τῶν Βαλλιάνων (Ἐθνικὴ Βιβλιοθήκη Ἀθηνῶν), ὁ ἀνδριὰς τοῦ Βασάνη (ἐν τῇ ἐν Πειραιεῖ Σχολῇ τῶν Ναυτικῶν Δοκίμων), ἡ προτομὴ τοῦ Θεοφίλου Καΐρη (ἐν Ἄνδρῳ) καὶ ἡ προτομὴ τοῦ Ὀδυσσέως Ἀνδρούτσου (ἐν Γραβιᾷ). Ι. Μ. Π.

**μπονάτσα** (ἡ), καὶ ***μπουνάτσα***· νηνεμία, γαλήνη, εὐδία, ἰδίᾳ ἐπὶ τῆς θαλάσσης: «σήμερα ἔχομε μπονάτσα, ἡ θάλασσα εἶναι λάδι» (ἰταλ. bonaccia).

**Μπονάτσι-*Βρουναμόντι*** (Bonacci-Brunamonti), ***Μαρία-Ἀλίντα*.** Ἰταλὶς ποιήτρια (1842—1903). Ἐδημοσίευσε τοὺς πρώτους στίχους της εἰς ἡλικίαν 15 ἐτῶν ὑπὸ τὸν τίτλον «Τραγούδια» (1857) καὶ κατόπιν ἐξηκολούθησε νὰ ἐκδίδῃ νέας συλλογὰς ποιημάτων, ἐπαινουμένας διὰ τὸν εἰλικρινῆ λυρισμόν των. Μεταξὺ τούτων εἶναι τὰ «Νέα τραγούδια» (1887), «Φλόρα» (1898). Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ εἰς τὸ πεζὸν καλλιτεχνικὰς μελέτας καὶ «Ἀπομνημονεύματα καὶ σκέψεις» (1907). Μ. Δ. Β.

**Μποναφοὺς** (Bonafous), ***Ματθαῖος ντὲ—*.** Γάλλος γεωπόνος ἐκ Λυὼν (1793—1852). Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὸν ἐγκλιματισμὸν ἐν Γαλλίᾳ τῶν ξένων φυτῶν καὶ ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ἐξ ὧν γνωστότερα: «Διδασκαλία περὶ μεταξοσκωλήκων» (1821), «Ἡ καλλιέργεια τῆς μορέας» (1825), «Φυσικὴ καὶ οἰκονομικὴ ἱστορία τοῦ ἀραβοσίτου» (1836) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπονβαλὸ** (Bonvalot), ***Πέτρος-Γαβριήλ*.** Γάλλος ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1853. Εἰς νεαρὰν ἤδη ἡλικίαν ἐπεδείξατο μεγάλην πρὸς τὰς περιηγήσεις κλίσιν, ἐπισκεφθεὶς πεζῇ διαφόρους χώρας τῆς Εὐρώπης. Τῷ 1882 ἐπεχείρησε μετὰ τοῦ Γ. Καπὺς τὸ πρῶτον εἰς κεντρικὴν Ἀσίαν ταξίδιόν του, κατὰ τὸ ὁποῖον ἐπεσκέφθη τὰς μεγάλας πόλεις τοῦ Τουρκεστὰν καὶ διέσχισε χώρας, δι' ὧν πρώτην φορὰν κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους διῆλθεν Εὐρωπαῖος, συλλέγων πάσης φύσεως ἀγνώστους πληροφορίας καὶ ἀνακαλύπτων ἐνδιαφέροντα ἀρχαῖα ἐρείπια. Ἀπὸ τοῦ 1885 μέχρι τοῦ 1887 ἀνέλαβε δεύτερον ταξίδιον μετὰ τῶν Καπὺς καὶ Πεπέν, κατὰ τὸ ὁποῖον ἐπεσκέφθη τὴν Περσίαν, τὴν χώραν τῶν Τουρκομάνων καὶ τὸ ὀροπέδιον τοῦ Παμίρ. Τέκος τῷ 1889—1890 διέσχισε μετὰ τοῦ πρίγκιπος Ἑρρίκου τῆς Ὀρλεάνης, ὁλόκληρον τὴν κεντρικὴν Ἀσίαν, ἀπὸ Σιβηρίας μέχρι Τονκίνου, διερχόμενος διὰ μέσου τῶν παγωμένων ὑψιπέδων τοῦ Θιβέτ. Ἔκτοτε παρέμεινεν εἰς Γαλλίαν, ταξιδεύσας ἐπὶ μικρὸν μόνον τῷ 1897 εἰς Αἰθιοπίαν, ἐπιφορτισμένος διοικητικὴν ἀποστολήν. Ἔγραψεν ἀφηγήσεις τῶν ταξιδίων του, ὧν σπουδαιότεραι εἶναι: «Ἀπὸ Μόσχας εἰς Βακτριανὴν» (1884), «Ἀπὸ Κοχιστὰν εἰς Κασπίαν» (1885), «Ἀπὸ Καυκάσου εἰς Ἰνδίας διὰ μέσου τοῦ Παμίρ» (1888), «Ἀπὸ Παρισίων εἰς Τονκῖνον» (1892), «Ἡ ἄγνωστος Ἀσία» (1896), «Εὑρισκόμεθα ἐν καταπτώσει;», «Τασκὲντ» (1890) κ.ἄ. Χ. Δ.

**Μπόνβιν** (Bonvin), ***Λουδοβῖκος*.** Ἑλβετὸς μουσουργός, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἐγκατασταθείς ἐν Ἀμερικῇ ἔγραψε μέγαν ἀριθμὸν ἔργων δι' ὀρχήστραν: «Christnachtstraum», «3 Tonbilder», «Ballade», «Festug», «Συμφωνία εἰς σολ ἔλ.», συμφωνικὰ ἀποσπάσματα, ἐκκλησιαστικά: 6 λειτουργίας, «Cantus sacri», «Dominus illuminatio», «Singet, jubelt euerm Gott», πολλὰς κοσμικὰς χορῳδίας, μελῳδίας, τεμάχια διὰ βιολίον κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μπονβουαζὲν** (Bonvoisin), ***Μαυρίκιος*.** Βέλγος σχεδιαστὴς (βλ. λ. *Μὰρς* Μαυρίκιος).

**Μπονγκὰρς** (Bongars), ***Ἰάκωβος, ἄρχων τοῦ Μπλωλντρὺ καὶ τοῦ Λὰ Σεσναί*.** Γάλλος διπλωμάτης καὶ σοφὸς ἐξ Ὀρλεάνης, καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας Καλβινιστῶν (1554—1612). Μετὰ λαμπρὰς σπουδὰς ἐν Μαρβούργῳ καὶ Ἰένῃ ἐπεδόθη εἰς μακρὰ ἀνὰ τὴν Εὐρώπην ταξίδια, κατὰ τὰ ὁποῖα ἔφερεν εἰς πέρας πλείστας ἀξίας λόγου διπλωματικὰς ἀποστολάς, ἰδιαιτέρως δὲ διεκρίθη κατὰ τὴν σύγκρουσιν μεταξὺ τοῦ Ἑρρίκου Δ' καὶ τοῦ οἴκου τῆς Αὐστρίας. Εἰς τὰ ἔργα του, τῶν ὁποίων σπουδαιότερον εἶναι μία συλλογὴ τῶν ἱστορικῶν τῶν σταυροφοριῶν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Gesta Dei per Francos» (1611), ἀποκαλύπτεται ἡ σπανία μόρφωσις, ἐνεργητικότης καὶ εὐρύνοια, δι' ὧν ἦτο οὗτος πεπροικισμένος. Χ. Δ.

**Μπόνγκι** (Bonghi), ***Ρουτζιέρο*.** Ἰταλὸς πολιτικός, λόγιος καὶ δημοσιογράφος (1826—1895). Ἐσπούδασε φιλοσοφίαν καὶ φιλολογίαν καὶ εἰς ἡλικίαν 20 ἐτῶν ἐδημοσίευσε μεταφράσεις τοῦ Πλάτωνος καὶ τοῦ Πλωτίνου. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1848, ἐκδόσας ἐν Νεαπόλει τὴν ἐφημερίδα «Ὁ Ἐθνικός», ἀλλὰ μετὰ τὴν κατάπνιξιν αὐτῆς κατέφυγε παρὰ τὸ Λάγκο Ματζόρε, ὅπου ἐσχετίσθη μετὰ τοῦ Μαντσόννι καὶ τοῦ Ροσμίνι. Τῷ 1859 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας τοῦ πανεπιστημίου τῆς Παβίας καὶ τῷ 1860 ἐξελέγη βουλευτής. Ἵδρυσε κατόπιν τὴν ἐφημερίδα «La Stampa» ἐν Τουρίνῳ καὶ τῷ 1864 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς ἰδίας πόλεως, τῷ δὲ 1865 καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν τῷ Ἰνστιτούτῳ τῶν Ἀνωτάτων σπουδῶν τῆς Φλωρεντίας. Τῷ 1866 ἀνέλαβεν ἐν Μιλάνῳ τὴν διεύθυνσιν τῆς ἐφημερίδος «La Perseveranza». Τῷ 1867 ἐδίδαξεν ἀρχαίαν ἱστορίαν ἐν Μιλάνῳ καὶ τῷ 1871 ἐν Ρώμῃ. Τῷ 1874 διωρίσθη ὑπουργὸς τῆς Παιδείας, διακριθεὶς διὰ τὴν δραστηριότητα ἣν ἀνέπτυξε πρὸς ἀναδιοργάνωσιν τῆς ἐκπαιδεύσεως. Ἦτο σφοδρὸς πολέμιος τῆς συμμαχίας μὲ τὴν Αὐστρίαν καὶ Γερμανίαν καὶ προσεπάθησεν ἐν τῇ βουλῇ καὶ διὰ τοῦ τύπου νὰ προσεγγίσῃ τὴν Ἰταλίαν εἰς τὴν Γαλλίαν. Ἦτο ἐκ τῶν πολυμαθεστέρων ἀνδρῶν τῆς ἐποχῆς του, ἐδημοσίευσε δὲ μεταξὺ ἄλλων ἔργων καὶ τὰ ἑξῆς: «Τὸ συνέδριον τοῦ Βερολίνου καὶ ἡ κρίσις ἐν τῇ Ἀνατολῇ» (1878), «Ἡ ἀρχαία ἱστορία ἐν Ἀνατολῇ καὶ Ἑλλάδι» (1879), «Ἱστορία τῆς Ρώμης» (1885), «Ἱστορία τοῦ Ἰησοῦ» (1889), «Αἱ ρωμαϊκαὶ ἑορταὶ» (1891). Μετέφρασεν ἐπίσης τὰ «Μετὰ τὰ φυσικὰ» τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ πολλοὺς διαλόγους τοῦ Πλάτωνος. Μ. Δ. Β.

**Μπονέλλι** (Bonelli), ***Γαετᾶνος*.** Ἰταλὸς φυσικός, γεννηθεὶς ἐν Μιλάνῳ τῷ 1815 καὶ ἀποθανὼν ἐν Τουρίνῳ τῷ 1867. Τῷ 1855 ἐπενόησε σύστημα σιδηροδρομικοῦ τηλεγράφου, διὰ τοῦ ὁποίου αἱ ἐν κινήσει ἁμαξοστοιχίαι δύνανται νὰ διατηρῶσι συνεχῆ ἐπικοινωνίαν πρὸς τοὺς σταθμούς. Ἰδική του σκέψις ἐπίσης ὑπῆρξεν ἡ χρησιμοποίησις τοῦ ἠλεκτρισμοῦ διὰ τὴν κίνησιν τῆς βελόνης εἰς τοὺς ὑφαντικοὺς ἱστοὺς συστήματος Jacquard. —Ω.

— **Μπονέλλι** (Bonelli), ***Φραγκῖσκος-Ἀνδρέας*.** Ἰταλὸς φυσιοδίφης (1784—1830). Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Τουρίνου, καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον καὶ εἶτα διευθυντὴς τοῦ μουσείου τῆς πόλεως ταύτης. Ἐταξίδευσεν ἀνὰ διαφόρους χώρας καὶ ἐδημοσίευσεν ἔργα φυσικῆς ἱστορίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰ ἐντομολογικά του θεωροῦνται καὶ σήμερον ἔτι πολύτιμα, ἰδιαιτέρως δὲ τὸ «Specimen faunae subalpinae» (1807). —Ω.

**Μπόνερ** (Boner), ***Οὔλριχος*.** Γερμανὸς μυθογράφος τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ἦτο δομινικανὸς μοναχὸς καὶ ἀναφέρεται ζήσας ἐν Βέρνῃ ἀπὸ τοῦ 1324 μέχρι τοῦ 1349. Ἀφῆκε συλλογὴν μύθων ὑπὸ τὸν τίτλον «Der Edelstein» (Πολύτιμοι λίθοι), ἐκδοθεῖσαν τὸ πρῶτον τῷ 1461 ἐν Βαμβέργῃ. Ἐκ τῆς ἐκδόσεως ταύτης ἓν μόνον ἀντίτυπον σῴζεται, ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τοῦ Wolfenbüttel, ἐγένετο ὅμως ἀνατύπωσις τοῦ ἔργου, μετὰ γλωσσαρίου, τῷ 1816 ἐν Βερολίνῳ. Οἱ μῦθοι τοῦ Μπόνερ δίδουσιν ἐν τοῖς ἄλλοις ἀνάγλυφον ἀπεικόνισιν τῶν ἠθῶν τῆς ἐποχῆς του. —Ω.

**Μπονὲρ** (Bonheur), ***Αὔγουστος*.** Γάλλος ζωγράφος ἐκ Μπορντὼ (1824—1884), υἱὸς τοῦ *Ραϋμόνδου Μπονέρ*, ἱκανοῦ ζωγράφου, θανόντος τῷ 1849. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τοπίων καὶ ζῴων. Ι. Μ. Π.

—**Μπονὲρ** (Bonheur), ***Ἰουλιέττα*.** Γαλλὶς ζωγράφος (1830—1891), ἀδελφὴ τοῦ προηγουμένου. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν ζῴων. Ἔτυχεν εὐφήμου μνείας εἰς τὴν ἐν Παρισίοις διεθνῆ ἔκθεσιν τοῦ 1855. Ι. Μ. Π.

—**Μπονὲρ** (Bonheur), ***Ἰούλιος-Ἰσίδωρος*.** Γάλλος γλύπτης (1827—1901), ἀδελφὸς τῶν προηγουμένων. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπόδοσιν τῶν ἀγρίων θηρίων καθ' ὁμάδας καὶ μεμονωμένως. Ἡ τεχνοτροπία του εἶναι πλήρης ρώμης, νεύρων καὶ τόλμης, προσομοιάζει δ' ἐνίοτε πρὸς τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Μπαρύ. Ι. Μ. Π.

—**Μπονὲρ** (Bonheur), ***Μαρία-Ροζαλία* ἢ *Ρόζα*.** Γαλλὶς ζωγράφος (1822—1899), ἀδελφὴ τῶν προηγουμένων. Ἡ ἐκδήλωσις τοῦ καλλιτεχνικοῦ της ταλάντου ὑπῆρξεν ἀπροσδοκήτως πρώϊμος, αἱ δὲ πρόοδοί της εἰς τὴν ζωγραφικήν, εὐθὺς ἀπὸ τῶν πρώτων βημάτων της, καταπληκτικαί. Εἰς ἡλικίαν 18 ἐτῶν ἀπέστειλε τὸν πρῶτόν της πίνακα, γενόμενον προθύμως δεκτόν, εἰς τὸ παρισινὸν Σαλόν, τῷ δὲ 1848 ἔτυχε τοῦ πρώτου βραβείου. Διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῆς φύσεως καὶ τῶν ζῴων καὶ ἀνεδείχθη μία τῶν μεγαλυτέρων ζωγράφων τῆς ἐποχῆς της. Μολονότι δὲ δὲν φαίνεται ἡ τέχνη της ἄμοιρος ἐπιδράσεων, ἐκ μέρους ἰδίᾳ τῶν ἀφθάστων διδασκάλων εἰς τὸ εἶδος τοῦτο τῆς ζωγραφικῆς, τῶν παλαιῶν Ὁλλανδῶν καλλιτεχνῶν, ἡ θεμελιώδης ἀρετὴ τῆς καλλιτεχνικῆς της παραγωγῆς εἶναι ἡ βαθεῖα σπουδὴ τῆς φύσεως, ἡ αὐθορμησία τῆς ἐκφράσεως, ἡ ἐξ ἀμέσου ἐποπτείας προερχομένη ἐντύπωσις. Ἀξιοσημείωτος εἶναι καὶ ἡ αἴσθησις τοῦ γραφικοῦ, τὴν ὁποίαν κατέχει ἡ ζωγράφος αὕτη· ἔτι δ' ἡ ἐπιτυχία της εἰς τὸ σχέδιον, τὴν ταξιθέτητιν τῶν συνόλων καὶ τὸν χρωματισμόν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων της τάσσονται: «Τὸ ἀλογοπάζαρο», «Labourage nivernais», «Χορτοκοπία εἰς τὴν Ὠβέρνην». Ἐπὶ μακρὸν χρόνον διηύθυνε σχολήν, ἔνθα αἱ νεάνιδες ἐδιδάσκοντο δωρεὰν τὸ σχέδιον. Ι. Μ. Π.

**Μπονζοὺρ** (Bonjour), ***Καζιμίρ*.** Γάλλος λόγιος καὶ δραματικὸς συγγραφεὺς (1795—1856). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν École Normale, ἐγένετο ἐν ἀρχῇ διδάσκαλος καὶ εἶτα ὑπάλληλος τοῦ ὑπουργείου τῶν Οἰκονομικῶν, μετὰ δὲ τὸ 1830 ἐπόπτης τῶν σπουδῶν εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τῆς Λαφλὲς καὶ τέλος ἐπιμελητὴς ἐν τῇ βιβλιοθήκῃ τῆς Ἁγίας Γενεβιέβης. Ἔγραψεν ἓν μυθιστόρημα ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ δυστυχία τοῦ πλουσίου καὶ ἡ εὐτυχία τοῦ πτωχοῦ» (1836) καὶ κωμῳδίας ἐμμέτρους, τὰς ὁποίας διακρίνει χάρις ὕφους, ἀλήθεια εἰς τοὺς χαρακτῆρας καὶ ἔντονος ἠθικὴ ροπή. Μεταξὺ ἐκείνων ἐξ αὐτῶν αἵτινες ἀνεβιβάσθησαν ἀπὸ σκηνῆς ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Αἱ δύο ἐξαδέλφαι» (1823), «Τὸ χρῆμα» (1831), «Ὁ προστάτης καὶ ὁ σύζυγος» (1829), «Ὁ ἱππότης τῆς Σεγκοβίας» (1844) κλπ. —Ω.

**Μπόνη** (Bône) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Ἀλγερίας (βλ. λ. *Μπόν*).

**Μπόνης *Εὐαγγελιστής*.** Λατινεπίσκοπος Κεφαλληνίας-Ζακύνθου, γεννηθεὶς ἐν Πιστόϊᾳ, τῷ 1829. Ἀποπερατώσας τὰς σπουδάς του ἐδίδασκε φιλοσοφίαν ἐν τῇ μονῇ Φωλίνου. Τῷ 1872 διωρίσθη ἐπίσκοπος Κεφαλληνίας-Ζακύνθου καὶ ἐπιμελητὴς τῶν ἐκκλησιῶν Λευκάδος καὶ Πελοποννήσου. Ἐθαυμάσθη ὡς εὔγλωττος ρήτωρ. Συνέγραψε πεζὰ καὶ θρησκευτικὰς ποιήσεις. Λ. Χ. Ζ.

**Μπόνι** (Boni) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῶν Ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν ἐπὶ τῆς νήσου Κελέβης, καταλαμβάνον τὸ ΝΔ. τμῆμα αὐτῆς καὶ ἔχον ἔκτασιν 2500 τετρ. χλμ. πληθυσμὸν 200.000 κατ. ὀνηκόντων εἰς τὴν φυλὴν Μπούγκις, καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν, κειμένην ἐπὶ τῆς παραλίας. Παράγει ὄρυζαν, ζάχαριν, καφέν, καπνὸν κλπ. καὶ ἐκτρέφει ἵππους καὶ βουβάλους. Τὸ ὄνομα *Μπόνι* φέρει καὶ ὁ κόλπος ὁ σχηματιζόμενος ὑπὸ τῆς Ν. χερσονήσου τῆς Κελέβης, παρέχων ἀσφαλὲς ἀγκυροβόλιον.

Τῷ 1858—1859 ἡ χώρα τῶν Μπόνι ἐπανεστάτησεν ἐναντίον τῶν Ὁλλανδῶν, ἀλλ' ἠναγκάσθη μετ' ὀλίγον νὰ ὑποκύψῃ, ἡ δὲ τότε ἡγεμονὶς αὐτῆς ἀντικατεστάθη δι' ἄλλου ἡγεμόνος, ὅστις ἀνεγνώρισε διὰ συνθήκης (1860) τὴν ὀλλανδικὴν κυριαρχίαν. Χ. Δ.

**Μπόνι** (Boni), ***Ἰάκωβος*.** Ἰταλὸς ἀρχαιολόγος καὶ ἀρχιτέκτων (1859—1925). Ἐσπούδασεν ἀρχιτεκτονικὴν ἐν Βενετίᾳ καὶ ἐξέμαθε μόνος τὴν ἑλληνικὴν καὶ τὴν λατινικὴν γλῶσσαν, ἀφιερώθη δὲ κατόπιν εἰς ἀρχαιολογικὰς μελέτας καὶ ἐρεύνας. Προσληφθεὶς εἰς τὴν ἀρχαιολογικὴν ὑπηρεσίαν τοῦ κράτους, προέβη τῷ 1885 εἰς τὰς πρώτας ἀνασκαφὰς παρὰ τὰ θεμέλια τοῦ κωδωνοστασίου τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας, ἐφαρμόσας ἰδίαν μέθοδον διαδοχικῆς ἐρεύνης τῶν ἐπαλλήλων στρωμάτων τῆς γῆς, ἡ ὁποία ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ μελετήσῃ τὴν κατάστασιν τῶν διαφόρων

Digitized by Google

πολιτισμῶν τῶν διαφόρων ἐποχῶν. Τὴν μέθοδόν του ταύτην βραδύτερον ἐφήρμοσε καὶ ὁ Δαῖρπφελδ. Τῷ 1888, διορισθεὶς γενικὸς διευθυντὴς τῶν Καλῶν τεχνῶν, προέβη εἰς σημαντικωτάτας καλλιτεχνικὰς ἐρεύνας καὶ ἀναστηλώσεις καὶ συνέταξε τοὺς νόμους περὶ προστασίας τῶν ἔργων τέχνης καὶ τῶν φυσικῶν καλλονῶν. Συγχρόνως κατεγίνετο καὶ εἰς μελέτας καὶ ἐρεύνας τῶν ἀρχαίων ἐρειπίων, προσπαθῶν ἰδίως νὰ ἀνεύρῃ ἐν τῇ Ἀγορᾷ τῆς Ῥώμης πειστικὰς μαρτυρίας περὶ τῶν ἀρχῶν τῆς αἰωνίας πόλεως.

*Ἰάκωβος Μπόνι.*

Οἱ μέχρι τοῦ τέλους τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἐνεργήσαντες ἀνασκαφὰς ἐν τῇ Ἀγορᾷ ταύτῃ δὲν εἶχον κατέλθει πέραν τῶν στρωμάτων τῆς ἐποχῆς τῶν αὐτοκρατόρων, κάτωθεν τῶν ὁποίων ὁ Μπόνι διῃσθάνετο τὴν ὕπαρξιν ἀρχαιοτέρων ἐρειπίων καὶ μαρτυριῶν περὶ τῆς ζωῆς τῶν πρώτων ἐτῶν τῆς Ῥώμης. Πράγματι δὲ κατορθώσας νὰ λάβῃ τῷ 1898 τὴν συγκατάθεσιν τοῦ ὑπουργοῦ τῆς Παιδείας Μπατσέλλι καὶ ὠθήσας τὰς ἀνασκαφὰς εἰς βαθύτερα στρώματα, ἀνεκάλυψε τὸν βωμὸν τοῦ Καίσαρος καὶ πλεῖστα ἄλλα σπουδαιότατα ἀρχαιολογικὰ εὑρήματα, διὰ τὰ ὁποῖα κατέστη παγκοσμίως γνωστός. Αἱ ἀνασκαφαὶ αὗται ἐξηκολούθησαν μέχρι τοῦ 1907, ὁπότε ὁ Μπόνι ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῶν ἀνασκαφῶν τοῦ Παλατίνου λόφου, εἰς τὰς ὁποίας ἀφιερώθη μέχρι τέλους τῆς ζωῆς του. Ἐκεῖ ἀπεκάλυψε καὶ ἀνεστήλωσε πλεῖστα ἀρχαῖα κτήρια καὶ ἀνεῦρε τῷ 1918 ἄγαλμα τῆς Νίκης, ἔργον ἑλληνικῆς τέχνης τοῦ Ε' αἰῶνος π. Χ. ἐξόχως ὡραῖον ἐκ πεντελησίου μαρμάρου. Ἐπίσης ὑπὸ τὰς ὁδηγίας τοῦ Μπόνι ἐκτίσθη ἐκ νέου, μετὰ τὴν κατάρρευσίν του, τῷ 1910, τὸ κωδωνοστάσιον τοῦ Ἁγίου Μάρκου τῆς Βενετίας. Ἀποθανὼν τῷ 1925 ἐτάφη ἐπὶ τοῦ Παλατίνου λόφου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἶχε διέλθει τὰ τελευταῖα τῆς ζωῆς του ἔτη.

Ὁ Μπόνι θεωρεῖται ἐκ τῶν σημαντικωτέρων ἀρχαιολόγων τῆς συγχρόνου Ἰταλίας, παραβαλλόμενος πρὸς τὸν Σλῆμαν καὶ τὸν Δαῖρπφελντ, διὰ τὰς σημαντικωτάτας ἐργασίας του ἐν τῇ ρωμαϊκῇ Ἀγορᾷ καὶ ἐν τῷ Παλατίνῳ λόφῳ. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα καὶ συνειργάσθη εἰς πλεῖστα ἰταλικὰ καὶ ξένα περιοδικά. Τῷ 1893 ἐξέδωσε τὸ σύγγραμά του «Ἡ μέθοδος τῶν ἀρχαιολογικῶν ἀνασκαφῶν», ἐν τῷ ὁποίῳ θεωρεῖ τὴν γεωλογίαν, τὴν ἐθνογραφίαν καὶ τὴν γλωσσολογίαν ἀπαραίτητα βοηθήματα παντὸς ἀρχαιολόγου ἐνεργοῦντος ἀνασκαφάς. Μεταξὺ τῶν ἄλλων του ἔργων εἶναι: «Hibernia», σημειώσεις περὶ τῶν ἐθίμων καὶ τῶν τάφων τῆς Ἰρλανδίας, «Ἡ στήλη τοῦ Τραϊανοῦ» (1912) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπονιβὰρ** (Bonivard), ***Φραγκῖσκος.*** Βουργούνδιος ἐκ καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Σεϋσσὲλ τῷ 1493, ἔζησε παιδιόθεν ἐν Γενεύῃ, ὑπῆρξε δὲ εἷς τῶν τῶν θερμοτέρων ὑπερασπιστῶν τῆς ἐλευθερίας τῆς πόλεως ταύτης ἐναντίον τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας. Συλληφθεὶς ἐν τέλει παρὰ τοῦ δουκὸς ὑπεβλήθη εἰς μακρὰν καὶ ἀπανθρώπως βασανιστικὴν ἐγκάθειρξιν ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Chillon, μόνον δὲ ὅταν ἡ πόλις αὕτη κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἑλβετῶν τῆς Βέρνης ὁ Μπονιβὰρ ἀπηλλάγη τοῦ μαρτυρίου του καί, μεταβὰς εἰς Γενεύην, ἔτυχε μεγάλων τιμῶν καὶ ἰσοβίου συντάξεως. Ὁ Βύρων ἀπηθανάτισε διὰ στίχων του τὴν μνήμην καὶ τὰ βασανιστήρια τοῦ Μπονιβάρ, πολλοὶ δὲ ζωγράφοι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης τὸν ἀπεικόνισαν ἁλυσσόδετον καὶ κατεσκληκότα ἐντὸς τῆς ὑπογείου τρώγλης τῆς φυλακῆς του. Διαμένων τοῦ λοιποῦ ἐν Γενεύῃ μέχρι τοῦ θανάτου του (1570), ἔγραψεν ἱστορικὰς χρονογραφίας, ἀναφερομένας εἰς τὴν θετήν του πατρίδα (δημοσιευθείσας τῷ 1831), καὶ ἄλλα τινὰ δευτερεύοντα φιλολογικὰ ἔργα. —Ω.

**Μπονίκεβος** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Πετρώνας* (βλ. λ.).

**Μπονίλια** (Bonilla), *δὸν* ***Ἐμμανουήλ.*** Ἀμερικανὸς στρατηγὸς καὶ πολιτικός, πρόεδρος τῆς δημοκρατίας τοῦ Ὁνδούρα, γεννηθεὶς τῷ 1849. Εἰσῆλθεν εἰς τὴν πολιτικὴν κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1872. Μετὰ ἓν ἔτος ἐγένετο ἀντισυνταγματάρχης ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τῆς φιλελευθέρας κυβερνήσεως τοῦ Σέλεό-Ἄριους, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἄμυναν τῆς Κομαγιάγκουα ἐναντίον τῶν συμπραττόντων στρατευμάτων τῆς Γουατεμάλας καὶ Κόστα-Ρίκας. Ἔλαβε μεγάλα ἀξιώματα παρὰ τοῦ προέδρου Σότο, ἀντεπολιτεύθη ὅμως τὸν διάδοχον τούτου Ποντσιάνο Λεΐβα, τὸν ὁποῖον καὶ ἀνέτρεψε (1891). Ἐγένετο τότε ἀντιπρόεδρος τῆς δημοκρατίας καὶ ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, διατηρήσας τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ 1898. Πέντε ἔτη μετὰ ταῦτα ἐξελέγη πρόεδρος τῆς δημοκρατίας, ἀναγκασθείς, λόγῳ τῆς βιαίας διαλύσεως τοῦ κογκρέσσου, νὰ διατηρήσῃ τὴν ἀρχὴν διὰ τῶν ὅπλων κατὰ τοῦ ἀντιπάλου του στρατηγοῦ Σιέρρα, ὃν καὶ κατέβαλε τελικῶς παρὰ τῷ Ἐλ-Ἀτσεϊτοῦπο. Γ. Ι. Β.

— **Μπονίλια** (Bonilla), ***Ἰωσὴφ-Μαρία.*** Ἱσπανὸς λόγιος καὶ δημοσιογράφος (1808—1880). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ αἰσθανόμενος μεγάλην κλίσιν εἰς τὴν καλλιτεχνίαν κατέγινεν ἐπίσης εἰς τὴν γλυπτικήν, τὴν ζωγραφικὴν καὶ τὴν μουσικήν. Ἐδημοσίευσε κατ' ἀρχὰς ποιήματα καὶ τῷ 1830 ἀφιερώθη εἰς τὸ θέατρον γράψας τὰς τραγῳδίας «Ὁ Δίων θριαμβεύων ἐν Συρακούσαις» καὶ «Οἱ βασιλεῖς τῆς Σπάρτης». Τῷ 1837 ἐξέδωσε τὸ περιοδικὸν «El Mole», τὸ ὁποῖον ἐπανεξέδωσε κατόπιν πεντάκις ὑπὸ διαφόρους μορφὰς καὶ τὸ ὁποῖον ἔσχε περιόδους μεγάλης δημοτικότητος καὶ πολλοῦ κύρους. Ἐξέδωσεν ἐπίσης καὶ ἄλλα περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας καὶ ἔγραψε διάφορα δράματα καὶ κωμῳδίας καὶ ποιήματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰ «Βραβεῖον καὶ τιμωρία», «Φῶς καὶ σκότος» κτλ. Μ. Δ. Β.

— **Μπονίλια ὓ** ***Σὰν Μαρτὶν*** (Bonilla y San Martin), ***Ἀδόλφος.*** Ἱσπανὸς συγγραφεὺς (1875—1926). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ φιλολογίαν καὶ ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βαλεντίας καὶ τῆς ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μαδρίτης. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν πολυγραφοτέρων καὶ βαθυτέρων συγχρόνως νομομαθῶν καὶ φιλοσόφων τῆς Ἱσπανίας, γράψας ἰδίως ἔργα ἐπὶ τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου καὶ γενικῆς φιλοσοφίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἀρχαὶ καὶ θεωρία τοῦ δικαίου» (1897), «Ἱστορία τῆς Ἱσπανικῆς φιλολογίας» (1901), «Περὶ τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου» (1903), «Λουδοβῖκος Βίβες καὶ ἡ φιλοσοφία τῆς Ἀναγεννήσεως» (1903), «Ἀρχεῖον τῆς Ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας» (1907), «Ἱστορία τῆς Ἱσπανικῆς φιλοσοφίας» (1908), «Ἱσπανικοὶ καὶ ξένοι ἐμπορικοὶ κώδικες» (1909), «Πρωτεὺς» (1914) κτλ. Ἔγραψεν ἐπίσης μελέτας περὶ Ἐράσμου, περὶ Πλάτωνος, περὶ Φερδινάνδου ντὲ Κόρδοβα κτλ. καὶ ἀνῆκεν εἰς τὴν Ἱσπανικὴν Ἀκαδημίαν, καθὼς καὶ εἰς ἄλλας ἀκαδημίας ἱσπανικὰς καὶ ξένας. Μ. Δ. Β.

**Μπόνιν,** ἢ ***Ὀγκασαβαραζίμα*** (Bonin, ἰαπων. Ogasawarajima) *[Γεωγρ.].* Σύμπλεγμα ἐξ 20 ἡφαιστειογενῶν νησίδων καὶ πολλῶν σκοπέλων τοῦ Β. Εἰρηνικοῦ, κείμενον ἐπὶ τοῦ τροπικοῦ τοῦ Καρκίνου, μεταξὺ τῆς Ἰαπωνίας καὶ τῆς νήσου Λαντρόν. Αἱ νῆσοι αὗται ὑποδιαιροῦνται εἰς τρεῖς ὁμάδας, *Παίρρυ, Μπήτσεϋ* καὶ *Κόφφιν* ἢ *Μπαίλεϋ*, ἔχουσι δὲ συνολικὴν ἔκτασιν 70 περίπου τετρ. χλμ. Ἀνεκαλύφθησαν τῷ 1593 ὑπὸ τοῦ Ἰάπωνος Ὀγκασάβα Σανταριόρι, ἀπὸ δὲ τοῦ 1827 μέχρι τοῦ 1876 περιῆλθον εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἀποδοθεῖσαι εἶτα ἐκ νέου εἰς τὴν Ἰαπωνίαν. Ὁ πληθυσμός των, ἀποτελούμενος ἐξ Ἰαπώνων καὶ μιγάδων Πολυνησίων ἀποίκων, ἀνέρχεται εἰς 3.600 κατ., πολλαὶ δὲ τῶν νήσων παραμένουσιν ἐντελῶς ἀκατοίκητοι, δι' ὃ καὶ ἐχρησιμοποιοῦντο ἐπὶ μακρὸν ὡς τόπος ἐξορίας. Ἔχουν καλλιεργείας ζαχάρεως καὶ ἰνδικοῦ καὶ ἁλιείαν χελωνῶν, κυριωτέρα δ' ἐν αὐταῖς πόλις εἶναι ἡ *Πὸρτ-Λόϋντ*, κειμένη ἐπὶ τῆς νήσου *Πὴλ* ἢ *Κικιζίμα*. Χ. Δ.

**Μπόνινγκτον** (Bonington), ***Ριχάρδος-Πάρκες.*** Ἄγγλος ζωγράφος (1801—1828). Τῷ 1816 ἡ οἰκογένειά του ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους, ἔνθα ὁ Μπόνινγκτον εὗρεν ὅρους προσφόρους πρὸς ἀνάπτυξιν τῆς ἰσχυρᾶς ζωγραφικῆς ἰδιοφυΐας του. Τῷ 1827 ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν καὶ ἐξέθηκε πίνακάς του ἄκρως ἐκτιμηθέντας εἰς τὴν Βασιλικὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Λονδίνου. Πίνακάς του εἶχεν ἐκθέσει καὶ προγενεστέρως ἐν Γαλλίᾳ, εἰς τὰ παρισινὰ Σαλὸν τοῦ 1822, τοῦ 1824 καὶ τοῦ 1827. Ἐξειργάσθη ἱστορικοὺς πίνακας, τοπιογραφίας καὶ θαλασσογραφίας. Διὰ τῶν πρώτων του καταλαμβάνει ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ ρωμαντικῇ σχολῇ. Διὰ τῶν ἄλλων ἀπεκάλυψε νέους κόσμους εἰς τὴν σύγχρονόν του γαλλικὴν τέχνην καὶ ἔδωκεν ἰσχυρὰν προώθησιν εἰς τὰς προσπαθείας τῶν τοπιογράφων τῆς ἐποχῆς του. Ἡ ἔξοχος δροσερότης, ἡ ἀριστοκρατικὴ χάρις, τὸ ἁρμονικὸν καὶ λεπτὸν χρῶμα, ἡ εὐγένεια καὶ ἡ ἐντέλεια τῆς τέχνης τοῦ Μπόνινγκτον ὑπῆρξαν πρότυπον διὰ τοὺς μεταγενεστέρους. Ἡ ὑδατογραφία ὑπὸ τὸν χρωστῆρα τοῦ εὐσυνειδήτου τούτου καλλιτέχνου ἐπετέλεσε σημαντικωτάτας προόδους. Μεταξὺ τῶν μᾶλλον ἀξιομνημονεύτων ἔργων του ἀναφέρομεν ἐνταῦθα τὰ ἀκόλουθα: «Θαλασσογραφία», «Ἑρρῖκος ὁ Γ', βασιλεὺς τῆς Γαλλίας», ἑτέρα «Θαλασσογραφία», «Τὸ μέγα κανάλι τῆς Βενετίας», «Φραγκῖσκος ὁ Α', ὁ Κάρολος-Κουΐντος καὶ ἡ δούκισσα ντ' Ἐτάμπ», «Ἑρρῖκος ὁ Δ' καὶ ὁ Ἱσπανὸς πρέσβυς». Πίνακές του ἀπόκεινται εἰς τὸ Λοῦβρον, εἰς τὴν ἐθνικὴν Πινακοθήκην τοῦ Λονδίνου, εἰς τὸ μουσεῖον Ἀλβέρτου καὶ Βικτωρίας, εἰς τὸ Βρεττανικὸν μουσεῖον καὶ ἀλλαχοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Bouvenne*, «Catalogue de l'oeuvre gravé et lithographie de R. P. Bonington» (1873).—*Hugh Stokes*, «Girtin and Bonington» (1922).—*A. Dubaisson*, «Richard Parkes Bonington, His Life and Work» (1924).

Ι. Μ. Π.

**Μπόνιτς** (Bonitz), ***Ἑρμάννος.*** Γερμανὸς ἑλληνιστὴς καὶ παιδαγωγὸς (1814—1888). Μετὰ τὸ πέρας τῶν ἐγκυκλίων σπουδῶν αὐτοῦ ἐν Λαγκεσάλτσα, ἀφιερώθη ἐν Λειψίᾳ ὑπὸ τὸν Γ. Χέρμαν καὶ ἐν Βερολίνῳ ὑπὸ τὸν Βοίκχιον καὶ τὸν Λάχμαν εἰς τὴν μελέτην τῆς τε κλασσικῆς φιλολογίας καὶ τῆς ἀρχαιολογίας. Τῷ 1849 ὠνομάσθη τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης, συγχρόνως δὲ διευθυντὴς τὸν φιλολογικὸν φροντιστηρίου, συντάξας μετὰ τοῦ Ἔξνερ τὸ σχέδιον διοργανώσεως τῶν αὐστριακῶν γυμνασίων, ὅπερ ἐνεκρίθη τῷ 1854. Τῷ 1850 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Zeitschrift für die österreichrischen Gymnasien», ὅπερ συνέτασσε κατ' ἀρχὰς μὲν μετὰ τοῦ Μότζαρτ καὶ τοῦ Σαΐντλ, βραδύτερον δὲ μέχρι τοῦ 1867 μετὰ τοῦ Σαΐντλ καὶ τοῦ Χοχέγκερ. Τῷ 1867 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν. Ἀπὸ τοῦ 1867 μέχρι τοῦ 1875 ὑπῆρξε συντάκτης τοῦ περιοδικοῦ «Zeitschrift für das Gymnasialwesen». Τῷ 1875 προσελήφθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῆς Παιδείας ὡς σύμβουλος. Ὁ Μπόνιτς θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν ἐμβριθεστέρων καὶ βαθυτέρων σχολιαστῶν τοῦ Πλάτωνος καὶ τοῦ Ἀριστοτέλους. Τὸ ἐπὶ τοῦ πεδίου τούτου κλασσικὸν ἔργον αὐτοῦ εἶναι ἡ ἔκδοσις τῶν «Μεταφυσικῶν» τοῦ Ἀριστοτέλους (2 τόμοι, Βόννη 1848—1849), ἧς προηγήθη βιβλιογραφία εἰς τὰ σχετικὰ σχόλια Ἀλεξάνδρου τοῦ Ἀφροδισιέως (Βερολῖνον 1847). Ἠκολούθησαν: «Αἱ κατηγορίαι τοῦ Ἀριστοτέλους» (Βιέννη 1853), «Πλατωνικαὶ μελέται» (Βερολῖνον 1858—1860), «Ἀριστοτελικαὶ μελέται» (Βιέννη 1862—1867) καὶ ὁ «Index Aristotelicus», εἰς τὴν ἔκδοσιν τοῦ Μπέκερ (Βερολῖνον 1860). Ἐκ τῶν λοιπῶν φιλολογικῶν ἐργασιῶν του διακρίνονται: «Συμβολαὶ εἰς τὴν ἑρμηνείαν τοῦ Θουκυδίδου» (Βιέννη 1854), «Συμβολαὶ εἰς τὴν ἑρμηνείαν τοῦ Σοφοκλέους» (αὐτόθι 1856—1857) καὶ «Ἡ προέλευσις τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν» (αὐτόθι 1860). Ἡ παρὰ τοῦ Μπόνιτς φιλοπονηθεῖσα μετάφρασις τῶν «Μεταφυσικῶν» τοῦ Ἀριστοτέλους ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τοῦ Βέλλμαν (Βερολῖνον 1891).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Th. Gomperz*, «H. Bonitz, ein Nachruf» (Βερολῖνον 1889). — *Graf Leo Thun Hohenstein*, «Franz Exner and Hermann Bonitz» (Βιέννη 1893).

**Μπονιφάτσιο** (Bonifacio) *[Γεωγρ.].* —1) Πορθμὸς χωρίζων τὴν Κορσικὴν καὶ τὴν Σαρδηνίαν μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Περτουζάτο καὶ τῶν ἀκρωτηρίων Τέστα καὶ Φαλκόνα. Ἔχει πλάτος 11,4 χλμ., αἱ παρεντιθέμεναι ὅμως νησῖδες ἐλαττώνουν τοῦτο, ἀφίνουσαι μόλις 5 χλμ. ἐλευθέραν δίοδον. Τόσον ἡ Ἰταλία ἐν τῇ νήσῳ Μανταλένα ὅσον καὶ ἡ Γαλλία ἐν τῷ λιμένι τῆς ὁμωνύμου πόλεως, ἑκατέρωθεν τῶν ἀκτῶν τοῦ πορθμοῦ, κατεσκεύασαν ὀχυρὰ φρούρια. Κατὰ τὸ 1855 ἐν τῷ πορθμῷ τούτῳ κατεποντίσθη τὸ γαλλικὸν πολεμικὸν «Σεμμιλάντ», κατευθυνόμενον εἰς τὴν Κριμαίαν μετὰ 750 ἀνδρῶν.

—2) Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν Κορσικῇ εἰς τὸ νοτιώτατον αὐτῆς ἄκρον, ἐπὶ τῆς δυτικῆς εἰσόδου τοῦ ὁμωνύμου πορθμοῦ. Κάτ. 3.660. Συνδέεται διὰ σιδηροδρόμου μετὰ τοῦ Αἰακείου καὶ ἔχει σημαντικὸν λιμένα, κατάλληλον διὰ μικρὰ πλοῖα, τὰ ὁποῖα ἐκτελοῦν τὴν συγκοινωνίαν μεταξὺ Κορσικῆς καὶ Σαρδηνίας. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν καὶ ἐλαίου καὶ ἁλιείαν κοραλλίων. Ἔχει φρούρια τοῦ ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνος, καθὼς καὶ σύγχρονα. Περιῆλθε ἀλληλοδιαδόχως ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Γενουησίων, τῶν Τούρκων καὶ τῶν Γάλλων. Μ. Δ. Β.

**Μπονιφάτσιο** (Bonifazio). Ἰταλὸς ζωγράφος (1491—1553), ἀνήκων εἰς τὴν βενετικὴν σχολήν. Σημαντικώτερα ἐκ τῶν ἔργων του θεωροῦνται: «Ἡ ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου» (Λοῦβρον) καὶ «Οἱ ἐκδιωχθέντες ἐκ τοῦ ναοῦ ἔμποροι» (Βενετία). Ι. Μ. Π.

—**Μπονιφάτσιο** (Bonifazio), ***Νατάλι.*** Δαλματὸς χαράκτης (1550—1620). Ἡ τεχνοτροπία του παρουσιάζει μεγίστην συγγένειαν πρὸς τὴν τοῦ Ν. *Beatrizet*, διὰ τοῦτο δὲ ἔργα τού τινα ἀπεδόθησαν εἰς τὸν τελευταῖον τοῦτον. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων τοῦ Ν. Μπονιφάτσιο τάσσονται «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων», κατὰ τὸν Zuccari, «Ὁ Ἰησοῦς προσευχόμενος ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν Ἐλαιῶν» καὶ «Ὁ ἅγιος Ἱερώνυμος», κατὰ τὸν Τισιανόν, μία σειρὰ ἀπεικονίσεων ζῴων χρονολογουμένη ἀπὸ τοῦ 1594, 19 πίνακες διὰ τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Della transportazione dell' obelisco» (Ρώμη 1590) ἔργον τοῦ *D. Fontana* καὶ γεωγραφικοὶ χάρται τῆς κάτω Ἰταλίας, κατὰ τὸν *Π. Παρίζι*. Ι. Μ. Π.

**Μπονκομπάνι,** ἢ ***Μπονκομπάνι - Λουντοβίζι*** (Boncompagni ἢ Boncompagni - Ludovisi). Μεγάλη ἰταλικὴ οἰκογένεια καταγομένη, κατὰ τὴν παράδοσιν, ἐξ Οὐμβρίας καὶ γνωστὴ ἀπὸ τοῦ πρώτου ἡμίσεος τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἀρχηγὸς αὐτῆς εἶναι ὁ *Χριστόφορος* (1470—1546), εὔπορος ἔμπορος, εἰσελθὼν εἰς τὰς τάξεις τῶν εὐγενῶν διὰ τοῦ γάμου του μετὰ τῆς *Ἀγγέλας Μαρεσκάλκι*. Τούτου ὁ υἱὸς *Οὖγος* (1502—1585) διετέλεσε καθηγητὴς τῆς νομικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βολωνίας, εἶτα δ' ἐξελέγη καρδινάλιος καὶ τέλος πάπας (1572—1585) ὑπὸ τὸ ὄνομα *Γρηγόριος ΙΓ'* (βλ. λ.). Παρὰ τὴν συνήθη γενναιοδωρίαν τῶν παπῶν πρὸς τοὺς συγγενεῖς αὐτῶν, ὁ Γρηγόριος μικρὰν σχετικῶς

Digitized by Google

στήριξιν παρέσχεν εἰς τοὺς Μποκομπάνι, εἷς δὲ μόνον ἀνεψιὸς αὐτοῦ, ὀνόματι ***Φίλιππος***, ἀνῆλθεν εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ καρδιναλίου. Ἀπ' ἐναντίας ὁ φυσικὸς υἱὸς τοῦ πάπα ***Ἰάκωβος*** κατέλαβε διαφόρους ἀνωτάτας θέσεις ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Βατικανοῦ, ἐνυμφεύθη τὴν πλουσίαν κόμισσαν ***Κωνσταντίαν Σφόρτσα ντὶ Σάντα Φιόρα*** καὶ ἔλαβεν ὡς προῖκα τὴν μαρκιωνίαν τῆς Βίνιολα, τὸ δουκᾶτον τῆς Σόρα καὶ τὴν κομιτείαν τοῦ Ἀρπίνο, γενόμενος πρῶτος δοὺξ τῆς Σόρα καὶ ἱδρυτὴς τοῦ μέχρι σήμερον ὑφισταμένου κλάδου τῆς οἰκογενείας Μπονκομπάνι. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα διεκρίθησαν ἰδιαιτέρως ἐκ τῶν μελῶν τῆς οἰκογενείας οἱ: ***Φραγκῖσκος*** (1596—1641), εὐφυὴς καὶ σοφὸς κληρικός, ἀνελθὼν εἰς ἡλικίαν 30 ἐτῶν εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ ἀρχιεπισκόπου τῆς Νεαπόλεως. Ἐγένετο ἐπίσης γνωστὸς διὰ τὴν φιλάνθρωπον μέριμνάν του, ἐκδηλωθεῖσαν ἰδίᾳ κατά τινα ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του καταστρεπτικὴν ἔκρηξιν τοῦ Βεζουβίου καὶ κατὰ τὴν ἐπισυμβᾶσαν τότε μεγάλην ἐπιδημίαν πανώλους. ***Ἱερώνυμος*** (1621—1684), χρηματίσας ἀρχιεπίσκοπος Βολωνίας. ***Γρηγόριος*** (1642—1707), πέμπτος δοὺξ τῆς Σόρα. Συνεζεύχθη εἰς δεύτερον γάμον τὴν Ἱππολύτην, τελευταίαν κληρονόμον τοῦ ἐπιφανοῦς οἴκου τῶν Λουντοβίζι, ἐντεῦθεν δὲ προσετέθη εἰς τοὺς τίτλους τῆς οἰκογενείας Μπονκομπάνι καὶ ὁ τοῦ πρίγκιπος τοῦ *Πιομπίνο*, ὅστις ἀνῆκεν εἰς τοὺς Λουντοβίζι ἀπὸ τοῦ 1634, ὡς καὶ ὁ τοῦ πρίγκιπος τῆς *Βενόζα*. Ἐπειδὴ ἐκ τοῦ γάμου τούτου δὲν ἐγεννήθησαν ἄρρενα τέκνα, ὁ Γρηγόριος συνέζευξε τὴν πρωτότοκον θυγατέρα αὐτοῦ Μαρίαν-Ἐλεονώραν μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Ἀντωνίου*, ἵνα μὴ τὰ ἐπὶ τοῦ πριγκιπάτου τοῦ Πιομπίνο δικαιώματα ἀπαλλοτριωθῶσιν ἀπὸ τοῦ κύκλου τῆς οἰκογενείας. Εἰς τοῦτο συνέβαλεν ἡ ἱσπανικὴ αὐλή, τῆς ὁποίας οἱ Μπονκομπάνι ἦσαν πιστοὶ θεράποντες, ἐνδιαφερομένη ὅπως ἡ κατοχὴ τοῦ σπουδαιοτάτου τούτου πριγκιπάτου μὴ περιέλθῃ εἰς ξένας χεῖρας. Τοιουτοτρόπως οἱ Μπονκομπάνι προσέθεσαν ἔκτοτε εἰς τὸ ὄνομα καὶ τὸν θυρεὸν αὐτῶν τὸ ὄνομα καὶ τὰ διάσημα τῶν Λουντοβίζι. Διαρκούντων τῶν περὶ διαδοχῆς τοῦ ἱσπανικοῦ θρόνου πολέμων, οἱ Μπονκομπάνι ἀπεσύρθησαν εἰς Ρώμην, ἐφ' ὅσον οἱ Αὐστριακοὶ κατεῖχον τὴν Νεάπολιν, οὕτω δὲ ἐστερήθησαν τῆς πραγματικῆς (de facto) κατοχῆς τοῦ πριγκιπάτου τοῦ Πιομπίνο, ἀνακτήσαντες αὐτὴν μόνον ὅτε οἱ Βουρβῶνοι τῆς Ἱσπανίας ἦλθον μετὰ τοῦ Καρόλου Γ' εἰς Νεάπολιν. Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα οἱ ***Γαϊτᾶνος*** (1706—1777) καὶ ***Ἀντώνιος*** (1735—1805) ὑπῆρξαν οἱ τελευταῖοι πραγματικοὶ πρίγκιπες τοῦ Πιομπίνο, διότι ἡ Γαλλικὴ Ἐπανάστασις καὶ αἱ κατόπιν αὐτῆς ἐπικρατήσασαι φιλελεύθεραι ἀρχαὶ εἶχον ὡς ἀποτέλεσμα τὴν κατάργησιν τοῦ ἀναχρονιστικοῦ τούτου θεσμοῦ. Ὅταν μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος ὁ υἱὸς τοῦ Ἀντωνίου ***Λουδοβῖκος*** (1767—1841) ἐζήτησεν ἀπὸ τὸ συνέδριον τῆς Βιέννης τὴν ἀνάκτησιν τοῦ πριγκηπάτου, ἀνεγνωρίσθησαν μὲν τυπικῶς τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, ἀλλ' ἐξηγοράσθησαν ἀντὶ ἀδροτάτης ἀποζημιώσεως ὑπὸ τοῦ μεγάλου δουκὸς τῆς Τοσκάνης, ὅστις ἠδυνήθη οὕτω νὰ συμπληρώσῃ τὸ κράτος του, τοῦ Μπονκομπάνι διατηρήσαντος τὸν ψιλὸν μόνον τίτλον τοῦ πρίγκιπος τοῦ Πιομπίνο.

Κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα, ἡ οἰκογένεια ἀνέδειξε δύο ἀκόμη καρδιναλίους, τὸν ***Ἰάκωβον*** (1653—1731), ἐπίσκοπον τῆς Βολωνίας, καὶ τὸν ***Ἰγνάτιον*** (1743—1790), ὅστις διετέλεσε ληγᾶτος τοῦ πάπα ἐν Βολωνίᾳ καὶ ἀρχιγραμματεὺς τοῦ Πίου ΣΤ' (1785—1789). Εἷς ἐκ τῶν νεωτέρων γόνων τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ μαθηματικὸς ἱστορικὸς *Βαλτάσαρ*. Σημερινὸς ἀρχηγὸς τῶν Μπονκομπάνι εἶναι ὁ πρίγκιψ ***Φραγκῖσκος***, γεννηθεὶς τῷ 1886, ὅστις διετέλεσε γερουσιαστής, ὑφυπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ διοικητὴς τῆς Ρώμης (1929). Α. Δ.

— **Μπονκομπάνι ντὶ Μομπέλλο** (Boncompagni di Mombello), ***Κάρολος, κόμις ντὲ Λαμπόρο.*** Ἰταλὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς ἐκ Τουρίνου (1804—1880). Ἐπεδόθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ δικαστικὸν ἐπάγγελμα καὶ ἔγραψε πλείστας νομικὰς πραγματείας ἐν αἷς καὶ «Εἰσαγωγὴν εἰς τὴν ἐπιστήμην τοῦ δικαίου» (1848). Ἀπὸ τοῦ 1848 ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν, μετὰ μικρὸν δὲ ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως ἐν τῇ κυβερνήσει Κ. Μπάλπο. Τῷ 1852 ἀνέλαβεν ἐπί τινας ἑβδομάδας τὸ ὑπουργεῖον τῆς Δικαιοσύνης ἐν τῇ κυβερνήσει Καβοὺρ καὶ ἐξελέγη πρόεδρος τῆς βουλῆς μέχρι τοῦ 1856. Ἡ κυρίως ἐθνικοπολιτικὴ δρᾶσίς του ἄρχεται ἀπὸ τοῦ 1859, ὁπότε εὑρισκόμενος ἐν Φλωρεντίᾳ ὡς πρεσβευτής, συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐπίτευξιν τῆς ἰταλικῆς ἑνότητος καὶ προπαρεσκεύασε τὰ πνεύματα διὰ τὴν ἕνωσιν Τοσκάνης καὶ Πεδεμοντίου, ἥτις ἐπραγματοποιήθη βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Μπεττίνο Ριενσόλι. Χ. Δ.

**Μπονκοὺρ** (Paul-Boncour), ***Ἰωσήφ.*** Γάλλος πολιτικὸς (βλ. λ. *Πὼλ-Μπονκοὺρ* Ἰωσήφ).

**Μποννὰ** (Bonnat), ***Λέων-Ἰωσὴφ-Φλωρεντῖνος.*** Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Μπαγιὸν τῷ 1833 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1922. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασεν ἐν Ἱσπανίᾳ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Φρειδερίκου Μαντράχο. Βραδύτερον, ἐγκατασταθεὶς ἐν Παρισίοις, συνεπλήρωσε τὰς καλλιτεχνικάς του σπουδὰς παρὰ τῷ Κονιέ. Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1857 μὲ τρεῖς προσωπογραφίας. Τῷ 1861 ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν καὶ τῷ 1870 ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἀνατολήν, ἐκ τῆς φύσεως καὶ τοῦ ἰδιοτύπου βίου τῆς ὁποίας ἐνεπνεύσθη πολλοὺς πίνακάς του. Τῷ 1881 ἐξελέγη μέλος τῆς Παρισινῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ Παύλου Ντυμπουὰ ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς σχολῆς τῶν Καλῶν τεχνῶν, ἐπιδείξας ἀκάματον φιλοπονίαν καὶ μεθοδικότητα. Διεκρίθη καὶ ὡς συλλέκτης. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται τὸ μουσεῖον τῆς γενετείρας του, ὅπερ φέρει καὶ τὸ ὄνομά του.

Ὁ Μποννὰ ἐξεπόνησε συνθέσεις ἐπὶ θρησκευτικῶν θεμάτων, πίνακας ἀπεικονίζοντας σκηνὰς τοῦ ἀνατολικοῦ ἰδίᾳ βίου καὶ προσωπογραφίας. Αἱ τελευταῖαι ἀποτελοῦν τὸ σημαντικώτερον τμῆμα τοῦ ἔργου του. Ὑπῆρξε καλλιτέχνης πεπροικισμένος διὰ σπουδαίων προσόντων, ἀλλὰ καὶ οὐχὶ ἄμοιρος σημαντικῶν ἐλαττωμάτων. Φύσις κατ' οὐσίαν ρωμαλέα, ἐτράφη εἰς τὴν σπουδὴν ἰδίᾳ τοῦ ἔργου τοῦ Ριμπέρα καὶ τοῦ Βελάσκουεθ. Διετέλεσεν ἐπὶ μακρὸν χρόνον ὁ ἐπίσημος, οὕτως εἰπεῖν, προσωπογράφος τῶν συγχρόνων του προσωπικοτήτων. Ἐπετύγχανεν εἰς μέγιστον βαθμὸν ν' ἀποδίδῃ τὴν ζωήν, τὴν ἐνάργειαν, τὴν κίνησιν, τὴν ὁμοιότητα. Ἀλλ' ἐχρησιμοποίει, κατὰ τὸ πλεῖστον, ἀπαρέσκουσαν εἰς τὸν ὀφθαλμὸν μονοχρωμίαν· ἀπὸ τὰ ἔργα του λείπει ἡ ἀτμοσφαῖρα, ὁ δὲ φωτισμός του εἶναι ἐλαττωματικὸς (*C. Mauclair:* Les états de la peinture française de 1850 à 1920, Paris 1921, σελ. 64). Ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μποννὰ μνημονεύομεν τὰ ἀκόλουθα: «Ὁ Ἀδὰμ καὶ ἡ Εὔα εὑρίσκοντες τὸν Ἄβελ νεκρόν», «Mariuccia», «Μαρία», «Τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Ἀνδρέου», «Προσκυνηταὶ παρὰ τοὺς πόδας τοῦ ἀγάλματος τοῦ ἁγίου Πέτρου, ἐν Ρώμῃ», «Ναπολιτᾶνοι χωρικοὶ πρὸ τοῦ παλατίου Φαρνέζε», «Ὁ ἅγιος Βικέντιος ντὲ Πὼλ λαμβάνων τὴν θέσιν ἑνὸς καταδίκου» (ἐν Saint-Nicolas-des-Champs, Παρίσιοι), «Ἡ κοίμησις τῆς Θεοτόκου» (ναὸς Ἁγίου Ἀνδρέου, Μπαγιόν), «Ὁ Χριστὸς» (Κακουργιοδικεῖον Παρισίων), «Φελλάχα», «Τοῦρκος κουρεὺς» καὶ αἱ προσωπογραφίαι τοῦ Βίκτωρος Οὐγκώ, τοῦ Θιέρσου, τοῦ Πυβὶ ντὲ Σαβάν, τοῦ κόμιτος Νελαμπόρντ, τοῦ Σαντὶ-Καρνό, τοῦ Φήλικος Φώρ, τοῦ Ἰουλίου Γκρεβύ, τοῦ Ἀλεξάνδρου Δουμᾶ υἱοῦ, τοῦ Ἐρνέστου Ρενάν, τοῦ Ἰωσὴφ Μπερτράν, τοῦ Ἱππολύτου Ταίν, τοῦ Λέοντος Κονιὲ καὶ τῆς «Κυρίας μὲ τὸ μισοφέγγαρο». Πολλὰ ἔργα του ἀπόκεινται εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λουξεμβούργου, τὸ μουσεῖον τῆς Μπαγιὸν καὶ εἰς ἰδιωτικὰς συλλογάς. Ι. Μ. Π.

***Λέοντος Μποννά: Προσωπογραφία τοῦ Ρενάν.***

**Μποννὰλ** (Bonnal), ***Ἐρρῖκος.*** Γάλλος ἀξιωματικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς εἰς Τουλούζην τῷ 1844 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1917. Συμμετέσχε τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου 1870, τραυματισθεὶς κατ' αὐτόν. Ἀπόφοιτος τῆς πολεμικῆς σχολῆς, διετέλεσε κατόπιν καθηγητὴς τῆς στρατηγικῆς ἐν τῇ σχολῇ ταύτῃ. Τῷ 1898 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον, τῷ δὲ 1901 εἰς ἀντιστράτηγον, διορισθεὶς διοικητὴς τῆς πολεμικῆς σχολῆς (école de guerre), ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1910, ὁπότε ἀπεστρατεύθη. Συνέγραψεν: «Éducation de l'infanterie française» (1887), «Froeschwiller» (1899), «Infanterie» (1900), «Sadowa» (1902), «De la méthode dans les hautes études militaires en Allemagne et en France» (1903), «La récente guerre sud-africaine et ses renseignements» (1903), «De Rossbach à Ulm» (1903) (μετεφράσθη εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ τοῦ ὑπολοχαγοῦ τοῦ πυροβολικοῦ Ἐρρίκου Μαρκουλάκη τῷ 1908), «Le haut commandement français au debut des campagnes de 1850 et de 1870» (1904), «L'art nouveau en tactique» (1904), «La manoeuvre d'Iéna» (1904), «Les pseudo-tendances nouvelles de l'armée allemande» (1904), «Thèmes et travaux tactiques sur la carte» (1904), «Questions militaires d'actualité» (1906), «La manoeuvre de Saint-Privat» (1904—1906), «La prochaine guerre. Le haut commandement» (1906), «Le testament militaire de Kouropatkine» (1906), «La psychologie militaire de Napoléon» (1909), «La vie militaire du marechal Ney» (1910—1911), «Questions de critique militaire et d'actualité» (1911). Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μποννασιὲ** (Bonnassieux), ***Ἰωάννης - Μαρία.*** Γάλλος γλύπτης (1810—1892). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ντυμὸν καὶ τῷ 1836 ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης. Ἐξειργάσθη πλαστικὰ συμπλέγματα, ἀγάλματα καὶ προτομάς. Ἡ τεχνοτροπία του κλασσικίζει. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Ἔρως κόπτων τὰς πτέρυγάς του» (Λουξεμβοῦργον), «Ὁ Δαβὶδ ποιμήν», τὸ κλασσικὸν ἄγαλμα τῆς «Παναγίας τῆς Γαλλίας» (1857, Πυὺ) καὶ αἱ προτομαὶ τῶν Las Cazes (Ἀγγέρη), Gérando καὶ Ballanche (Λυών). Ι. Μ. Π.

**Μποννὲ** (Bonnet), ***Ἀμεδαῖος.*** Γάλλος χειρουργὸς (1802—1858). Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καὶ ἐβραβεύθη ὡς ἐσωτερικὸς ἰατρὸς τῶν νοσοκομείων Παρισίων διὰ τοῦ μεγάλου χρυσοῦ μεταλλίου (1831), ἀπὸ δὲ τοῦ 1832 διετέλεσεν ἐπὶ ἑνδεκαετίαν χειρουργὸς καὶ ἀρχιχειρουργὸς τοῦ νοσοκομείου Hôtel-dieu τῆς Λυῶνος, διδάσκων ἐν αὐτῷ καὶ τοὺς φοιτητὰς τῆς ἰατρικῆς σχολῆς τῆς πόλεως. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐδημοσίευσε σειρὰν πραγματειῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀξιολογωτέρα ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Traité des sections tendoneuses et musculaires dans le strabisme etc.» (Παρίσιοι 1842). Ἐν τῇ ἐργασίᾳ του ταύτῃ ὁμιλεῖ περὶ τῆς ὑπ' αὐτοῦ εἰσηγηθείσης καὶ ἐφαρμοσθείσης εἶτα ἐν τῇ νέᾳ ὀφθαλμολογίᾳ μεθόδου τῆς ἐξορύξεως τοῦ ὀφθαλμοῦ. Ἀλλ' ἰδίᾳ κατέστη οὗτος γνωστὸς διὰ τὰ συγγράμματά του ἐπὶ τῶν παθήσεων τῶν ἄρθρων καὶ τῆς θεραπείας αὐτῶν, «Traité des maladies des articulations» (Λυὼν 1845 εἰς 2 τόμ.) «Traité de thérapeutique des maladies articulaires» (Παρίσιοι 1855). Ἀργότερον ἔγραψε περὶ «λιθοθρυψίας» (Λυὼν 1846), περὶ «προληπτικῶν μέσων κατὰ τῆς μετεγχειριτικῆς ὑποτροπῆς τοῦ καρκίνου τοῦ μαστοῦ» (Λυὼν 1857) κλπ. Ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ Μποννὲ φέρεται νάρθηξ (gouttière de Bonnet), ἀποτελούμενος ἐκ κλίνης δικτυωτῆς μετὰ στρωμνῆς, δι' οὗ ἐπιτυγχάνεται ἡ τελεία ἀκινησία ὁλοκλήρου τοῦ σώματος ἢ μόνον ἑνὸς μέλους αὐτοῦ. Ο. Ρ.

— **Μποννὲ** (Bonnet), ***Κάρολος.*** Ἑλβετὸς φιλόσοφος καὶ φυσιοδίφης, γεννηθεὶς ἐν Γενεύῃ τῷ 1720 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1793. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς νομικά, ἀναγορευθεὶς διδάκτωρ τῷ 1743, ἀλλὰ ταχέως ἐγκατέλιπε τὴν ἐπιστήμην ταύτην, διὰ ν' ἀφιερωθῇ εἰς τὴν σπουδὴν τῆς φύσεως. Ἀπὸ τοῦ 1752 μέχρι τοῦ 1768 διετέλεσε μέλος τοῦ μεγάλου συμβουλίου. Εἰς ἡλικίαν δέκα ὀκτὼ ἐτῶν ἀνεκάλυψε τὸ περίεργον φαινόμενον τῆς παρθενογενέσεως. Τῷ 1741 ἐξετέλεσε πειράματα ἐπὶ τῶν πολυπόδων τῶν γλυκέων ὑδάτων καὶ διεπίστωσεν ὅτι οὗτοι ἀναπτύσσουν ἐκ νέου ἀποκοπέντα τμήματά των. Τὰ ἔργα του: «Traité d'insectologie ou observations sur les pucerons» (Paris 1745, τόμοι 2) περιλαμβάνει πολλὰς καὶ ἀξιολόγους παρατηρήσεις τοῦ Μποννέ. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Recherches sur l'usage dss feuilles dans les plantes» (Göttingen 1745), σπουδαίαν μονογραφίαν ἐπὶ τῆς φυσιολογίας τῶν φυτῶν, «Considérations sur les corps organisés» (Amsterdam 1762, τόμ. 2), ὅπου ἐξετάζονται καὶ συγκρίνονται ὅλαι αἱ γνώσεις ἐπὶ τῆς ἀρχῆς καὶ τῆς ἀναπαραγωγῆς τῶν ὄντων. Ὑπῆρξε μέλος πολλῶν ἐπιστημονικῶν ὀργανώσεων καὶ περὶ τὰ τέλη τοῦ βίου του ἐξελέγη μέλος καὶ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας.

Ὁ Μποννὲ ἠσχολήθη καὶ μὲ τὴν φιλοσοφίαν. Τῷ 1754 ἐδημοσίευσεν ἐν «Essai de psychologie», τὸ ὁποῖον συνεπλήρωσε βραδύτερον διὰ τοῦ «Essai analytique sur les facultés de l'âme» (1760). Ἄλλα φιλοσοφικά του ἔργα εἶναι: «Contemplation de la nature» (1764—1765, τόμ. 2), ἔνθα ὑποστηρίζει ὅτι ἡ φύσις δὲν κάμνει ἅλματα, «Palingénésie philosophique» (1770, τόμ. 2) κ. ἄ. Ὁ Καμπανὶς ἐθεώρει τὸν Μποννὲ μέγαν φυσιοδίφην καὶ μέγαν μεταφυσικόν. Θ. Π.

— **Μποννὲ** (Bonnet), ***Πέτρος - Ὀσσιανός.*** Γάλλος μαθηματικὸς (1819—1892). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολήν, ἐγένετο δὲ βραδύτερον διευθυντὴς τῶν ἐν αὐτῇ σπουδῶν, ἀπὸ τοῦ 1873 μέχρι τοῦ 1878, ὁπότε διωρίσθη καθηγητὴς τῆς

Digitized by Google

ἀστρονομίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Λεβερριέ. Ἀπὸ τοῦ 1862 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν εἰς τὴν θέσιν τοῦ ἀποθανόντος μαθηματικοῦ Μπιό, τῷ δὲ 1873 διωρίσθη μέλος τοῦ Γραφείου μηκῶν. Ὁ Μποννὲ ἔγραψε πολλὰς μελέτας, δημοσιευθείσας ἰδίως εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Μαθηματικῶν» καὶ τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν» καὶ ἀναφερομένας εἰς ποικίλα θέματα τοῦ διαφορικοῦ καὶ ὁλοκληρωτικοῦ λογισμοῦ, τῆς μηχανικῆς καὶ τῆς γεωμετρίας. Μεταξὺ τούτων: «Περὶ τῶν συγκλινουσῶν σειρῶν» (1843), «Ἐπὶ τῆς θεωρίας τῶν ἐλαστικῶν σωμάτων» (1845), «Ἐπὶ τῆς γενικῆς θεωρίας τῶν ἐπιφανειῶν» (1849), «Περὶ ἰδιοτήτων τινῶν τῶν γεωδαιτικῶν γραμμῶν» (1855), «Περὶ τῆς χρήσεως νέου συστήματος συντεταγμένων ἐν τῇ μελέτῃ τῶν ἰδιοτήτων τῶν καμπύλων ἐπιφανειῶν» (1860) κ. λ. π. —Ω.

**Μπον(νε)βὰλ** (Bonneval), ***Κλαύδιος - Ἀλέξανδρος*** (βραδύτερον *Ἀχμὲτ πασᾶς*). Γάλλος τυχοδιώκτης, δράσας ἐν Γαλλίᾳ, Αὐστρίᾳ καὶ Τουρκίᾳ (1675—1747). Γόνος ἀρχαίας γαλλικῆς ἀριστοκρατικῆς οἰκογενείας, κατετάχθη εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικόν, μετὰ τριετίαν δὲ εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν τῆς ξηρᾶς, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀνῆλθε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου, ὡς τοιοῦτος δὲ μετέσχε τῆς εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατείας τοῦ στρατηγοῦ Catinat (1701—1704) καὶ κατόπιν τῆς εἰς Ὁλλανδίαν ὑπὸ τὸν στρατάρχην de Luxembourg, ἐπιδείξας ἀνδρείαν καὶ στρατιωτικὰς ἱκανότητας. Συμπεριφερθεὶς ὅμως κατὰ τρόπον ἀνοίκειον πρὸς τὴν τότε πανίσχυρον κυρίαν ντὲ Μαιντενὸν καὶ πρὸς τὸν ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν Σαμιγιάρ, παρεπέμφθη εἰς στρατοδικεῖον καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον (1704). Δραπετεύσας τότε εἰς Αὐστρίαν ἐπέτυχε, χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τοῦ ἐπίσης Γάλλου τὴν καταγωγὴν πρίγκιπος Εὐγενίου τῆς Σαβοΐας, ἀρχιστρατήγου τοῦ αὐστριακοῦ στρατοῦ, θέσιν στρατηγοῦ ἐν αὐτῷ καὶ ἐπολέμησε μετὰ πολλῆς ἀνδρείας ἐναντίον τῆς πατρίδος του, κατὰ τὴν μάχην τοῦ Malplaquet, καὶ κατόπιν ἐναντίον τῆς Τουρκίας, πληγωθεὶς σοβαρῶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Πετροβαραδίνου. Ἀνασταλείσης κατόπιν τῆς ἐναντίον του διώξεως ἐν Γαλλίᾳ, ἐπετράπη εἰς αὐτὸν νὰ μεταβῇ εἰς Παρισίους, ὅπου ἐνυμφεύθη τὴν θυγατέρα τοῦ στρατάρχου Biron. Μετ' ὀλίγον ὅμως ἐπέστρεψεν εἰς Αὐστρίαν καὶ διεκρίθη εἰς τὰς ἐναντίον τῶν Τούρκων μάχας τοῦ Βελιγραδίου. Θὰ ἀνήρχετο δὲ τότε ἴσως εἰς τὰ ἀνώτερα ἀξιώματα, ἂν μὴ περιέπιπτεν εἰς τὴν δυσμένειαν τοῦ πρίγκιπος Εὐγενίου, ὅστις τὸν ἀπέστειλεν ὡς διοικητὴν εἰς Ὁλλανδίαν. Ἀλλὰ καὶ ἐκεῖ ὁ Μποννεβὰλ περιῆλθεν εἰς ἔριδα πρὸς τὸν μαρκήσιον Πριέ, ἀναπληρωτὴν τοῦ πρίγκιπος Εὐγενίου, καὶ ἐπροκάλεσε τὸν τελευταῖον τοῦτον εἰς μονομαχίαν. Καταδικασθεὶς πάλιν ὑπὸ στρατοδικείου εἰς θάνατον, εἶδε τὴν ποινήν του μετριαζομένην ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος εἰς ἐξορίαν μετὰ φυλακίσεως ἑνὸς ἔτους. Μετὰ τὴν ἔκτισιν τῆς ποινῆς του ἔφυγεν εἰς Τουρκίαν, ἐπὶ σουλτάνου Ἀχμὲτ τοῦ Γ', καὶ ἐξομόσας ἔλαβε τὸν βαθμὸν στρατηγοῦ καὶ τὸν τίτλον πασᾶ, μὲ τὸ ὄνομα *Ἀχμέτ*. Διορισθεὶς διοικητὴς τοῦ πυροβολικοῦ, ἐπηγγέλθη ν' ἀναδιοργανώσῃ ὁλόκληρον τὸν τουρκικὸν στρατὸν κατὰ τὸ εὐρωπαϊκὸν σύστημα, ἀλλ' αἱ ἀντενέργειαι τῆς Ρωσίας ἐσαμάτησαν, ὡς λέγουσιν οἱ Γάλλοι, τὸ ἔργον του. Παρεκτὸς τῶν στρατιωτικῶν ὑπηρεσιῶν του, ἐχρησίμευσε καὶ ὡς διπλωματικὸς σύμβουλος τοῦ μεγάλου βεζύρου, ἀποκαλύπτων εἰς τοὺς Τούρκους τὰ μυστικὰ τῆς εὐρωπαϊκῆς πολιτικῆς διὰ διαφόρων ὑπομνημάτων. Γενόμενος δὲ ἀπὸ φίλου ἄσπονδος ἐχθρὸς τῶν Αὐστριακῶν, εἰργάσθη πρὸς σύσφιγξιν τῶν σχέσεων τῆς Τουρκίας μετὰ τῆς Γαλλίας, ἀποστείλας εἰς τὴν αὐλὴν τῶν Παρισίων σχέδιον γαλλοτουρκικῆς συμμαχίας ἀμυντικῆς καὶ ἐπιθετικῆς. Τὸ σχέδιον τοῦτο ἀπέρριψεν ὁ πρωθυπουργὸς καρδινάλιος Fleury, ζητήσας μόνον στρατιωτικὴν σύμπραξιν τῶν Τούρκων κατὰ τῶν Αὐστριακῶν ἐν Οὐγγαρίᾳ. Ἀλλ' ὁ αὐτοκράτωρ Κάρολος ὁ ΣΤ' ἔσπευσεν ἐν τῷ μεταξὺ νὰ συνομολογήσῃ εἰρήνην μετὰ τῶν Γάλλων. Βραδύτερον ὁ Μποννεβὰλ παρέσχε μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τοὺς Τούρκους κατὰ τοὺς ἐναντίον τῆς Ρωσίας καὶ τῆς Περσίας πολέμους. Εἰς ἀμοιβὴν διωρίσθη διοικητὴς Χίου, μετ' ὀλίγον ὅμως οἱ Τοῦρκοι συλλαβόντες ὑπονοίας ἐναντίον του ἐξώρισαν αὐτὸν εἰς Κασταμονήν. Ἀνακληθεὶς βραδύτερον ἀνῆλθε πάλιν εἰς ὑψηλὰ ἀξιώματα ἐν Τουρκίᾳ, διεπραγματεύετο δὲ νὰ ἐπανέλθῃ εἰς Εὐρώπην καὶ εἰς τὸν Χριστιανισμόν, ὅτε ἀπέθανεν ἐν Κωνσταντινουπόλει τῇ 23 Μαρτίου 1747.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Vaudal* «Le Pacha Bonneval» (Παρίσιοι 1885).—*Prince de Ligne* «Mémoires sus le comte de Bonneval» (Παρίσιοι 1817). «Merkwürdiges Leben des Grafen von Bonneval, chedessen Kaiserlicher General der Infanterie anitzo aber Kommandirender Bassa über eine türkische Armee» (1738). Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μποννιβὲ** (Bonnivet), ***Γουλιέλμος Γκουφφιὲ ἄρχων τοῦ—***. Ναύαρχος τῆς Γαλλίας (1488—1525). Διετέλεσε διπλωματικὸς ἀπεσταλμένος ἐν Γερμανίᾳ, ὅπου δὲν κατώρθωσε ν' ἀποτρέψῃ τὴν ἐκλογὴν ὡς αὐτοκράτορος τοῦ Καρόλου Ε', ἀνεμίχθη εἰς τὴν ἐσωτερικὴν πολιτικὴν τῆς Γαλλίας, προκαλέσας τὴν ἀτυχῆ σύγκρουσιν μεταξὺ τοῦ Φραγκίσκου Α' καὶ τοῦ κοντοστάβλου τῶν Βουρβώνων· διετέλεσεν εἶτα ἀρχηγὸς τῆς εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατείας (1523), ὅπου καὶ πάλιν ἠτύχησε καὶ ἐφονεύθη τέλος κατὰ τὴν μάχην τῆς Παβίας. Χ.Δ.

**Μποννιὲ** (Bonnier), ***Γάστων***. Γάλλος βοτανικὸς (1853—1922). Τῷ 1887 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς εἰς τὴν Σορβώνην καὶ πρῶτος ἵδρυσεν εἰς τὸ Φονταινεμπλὼ φυτοβιολογικὸν ἐργαστήριον. Ἠσχολήθη ἰδίως μὲ τὴν φυσιολογίαν καὶ τὴν ὑφὴν τῶν φυτῶν. Τῷ 1896 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ἐκ τῶν πολλῶν ἐργασιῶν του ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Στοιχεῖα βοτανικῆς» (1889), «Χλωρὶς τῆς βορείου Γαλλίας καὶ τοῦ Βελγίου» (1887), «Φυτικὸς κόσμος» (1907) κτλ. Δ. Ν. Π.

**Μποννὸ** ***ντὲ Μαμπλὺ*** (Bonnot de Mably), ***Γαβριήλ***. Γάλλος κοινωνιολόγος (βλ. λ. *Μαμπλύ*).

**Μποννʼσὸζ** (Bonnechose), ***Ἐρρῖκος-Μαρία-Γάστων Μπονανερμὰν ντὲ —***. Γάλλος καρδινάλιος καὶ γερουσιαστὴς (1800—1883). Ἤσκει ἐν ἀρχῇ τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου ἐν Μπεζανσόν, τὸ ὁποῖον ἐγκατέλιπε διὰ νὰ περιβληθῇ τὸ ἱερατικὸν σχῆμα. Τῷ 1847 ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Καρκασὸν καὶ εἶτα τοῦ Ἐβρὲ (1854), τέλος δὲ τῷ 1858 ἀνῆλθεν εἰς τὴν ἀρχιεπισκοπικὴν ἕδραν τῆς Ρουέν, καὶ προήχθη μετὰ πενταετίαν εἰς καρδινάλιον. Ἐκλεγεὶς γερουσιαστὴς ἐγένετο γνωστὸς ὡς λυσσώδης πολέμιος τῶν φιλελευθέρων ἀρχῶν. Μετὰ τὸν Γαλλοπρωσσικὸν πόλεμον (1870) ἐνεφανίσθη εἰς τὰς Βερσαλλίας ἐνώπιον τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας καὶ ἐζήτησε τὴν μείωσιν τοῦ ἐπιβληθέντος εἰς τὴν πόλιν του ποσοστοῦ διὰ τὴν πολεμικὴν ἀποζημίωσιν. Χ. Δ.

**Μπόννυ** (Bonny) *[Γεωγρ.]*. —1) Ποταμὸς τῆς Νιγηρίας ἐν τῇ Κεντρῴᾳ Ἀφρικῇ, ἀποτελῶν τὸν ἀνατολικώτερον βραχίονα τοῦ δέλτα τοῦ Νίγηρος.

—2) Πόλις τῆς Νιγηρίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ κόλπου τῆς Γουϊνέας, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ. Κάτ. 20.000. Ὑπῆρξεν ἄλλοτε σημαντικὴ ἀγορὰ δουλεμπορίας, σήμερον δὲ εἶναι ἐμπορικὸν κέντρον ἐξαγωγῆς φοινικελαίου. Εἶναι ἕδρα Ἄγγλου ὑποδιοικητοῦ, ἀπονέμοντος τὴν δικαιοσύνην καὶ διευθύνοντος τὴν τελωνειακὴν ὑπηρεσίαν. Ἡ περιφέρεια κατοικεῖται ὑπὸ τῆς φυλῆς τῶν Ὀχρίκας, οἵτινες ἔχουν κλίσιν πρὸς τὸ ἐμπόριον, παρεμποδίζουν ὅμως τὴν εἴσοδον τῶν Εὐρωπαίων εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς χώρας των. Π. Γ. Λ.

**Μπόνομ** (Bonhomme) *[Γεωγρ.]*. Αὐχὴν τῶν Ἄλπεων ἐν Σαβοΐᾳ, χωρίζων τὸ Λευκὸν ὄρος καὶ τὰς ὀροσειρὰς τῆς Σαβοΐας. Ἀποτελεῖ λίαν δύσβατον δίοδον, θέτουσαν εἰς ἐπικοινωνίαν τὰς κοιλάδας τοῦ Ἂρβ καὶ τοῦ Ἰζέρ, κειμένην εἰς ὕψος 2.483 μ. Πολλοὶ ὑπεστήριξαν ὅτι διῆλθε δι' αὐτῆς ὁ Ἀννίβας, ἐκστρατεύων εἰς Ἰταλίαν. Χ. Δ.

**Μπονόμι** (Bonomi), ***Ἰβανόε***. Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1873. Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ νομικὰ καὶ κατ' ἀρχὰς διετέλεσε διδάσκαλος ἐν Βολωνίᾳ. Τῷ 1898 ἐγκατέλειψε τὸ διδασκαλικὸν ἐπάγγελμα καὶ ἀφιερώθη τελείως εἰς τὴν σοσιαλιστικὴν δημοσιογραφίαν, συνεργασθεὶς εἰς τὸ «Ἀβάντι», καθ' ἣν ἐποχὴν διηύθυνε τοῦτο ὁ Λεωνίδας Μπισσολάτι, εἰς τὴν «Κοινωνικὴν Κριτικὴν» τοῦ Φιλίππου Τουράτι, εἰς τὴν «Νέαν Ἀνθολογίαν» κτλ. Λόγῳ τῆς εὐρείας μορφώσεώς του καὶ τῆς μετριοπαθείας του, ἀπέκτησε ταχέως πρωτεύουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν ὁμοϊδεατῶν του καὶ ἐγένετο εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς σοσιαλιστικῆς κινήσεως ἐν Ἰταλίᾳ. Διὰ τῶν ἄρθρων του, τῶν βιβλίων καὶ τῶν ἀγορεύσεών του εἰς τὰ διάφορα συνέδρια προσεπάθει πάντοτε νὰ συγκρατῇ τοὺς ἄκρους ἐπαναστατικοὺς καὶ ἐδημιούργησεν ἐντὸς τοῦ κόμματος τὴν ἄκραν δεξιὰν αὐτοῦ, ἧς ἐγένετο ὁ κυριώτερος ἐκπρόσωπος. Βουλευτὴς ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1909, ὁμοῦ δὲ μετὰ τοῦ Μπισσολάτι προσεπάθησε να ἐντείνῃ τὸ μεταρρυθμιστικὸν ρεῦμα ἐν τῷ κόμματι. Τῷ 1912 ὅμως, εἰς τὸ σοσιαλιστικὸν συνέδριον τοῦ Ρέτζιο Ἐμίλια, ὑποστηρίξαντες ἀμφότεροι τὴν κήρυξιν τοῦ Ἰταλοτουρκικοῦ πολέμου ὡς ἐθνικὴν ἀνάγκην, ὑπέστησαν ἀγρίαν ἐπίθεσιν τῶν ἀδιαλλάκτων ἐπαναστατικῶν σοσιαλιστῶν, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὁποίων εὑρίσκετο ὁ Μουσσολίνι, καὶ ἀπεβλήθησαν τοῦ κόμματος. Ἵδρυσαν τότε μετὰ τῶν ἀκολουθησάντων αὐτοὺς ὀλίγων ὀπαδῶν τὸ «Ἰταλικὸν μεταρρυθμιστικὸν σοσιαλιστικὸν κόμμα». Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὁ Μπονόμι εἶχε κηρυχθῆ ὑπὲρ τῆς ἐξόδου τῆς Ἰταλίας παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ. Τῷ 1916, ἐπὶ τῆς ὑπὸ τὸν Μποζέλι πρώτης «ἐθνικῆς κυβερνήσεως» καὶ εἶτα ἐπὶ κυβερνήσεως Ὀρλάνδο, ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων, βραδύτερον δ' ἐπ' ὀλίγον χρόνον καὶ ἐπὶ κυβερνήσεως Νίττι. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ ὑπουργείου Νίττι ἐκλήθη ὅπως σχηματίσῃ αὐτὸς κυβέρνησιν, ἀλλά, μὴ δυνηθεὶς νὰ ἐξασφαλίσῃ ἱκανὴν ὑποστήριξιν ἐκ μέρους τῶν κομμάτων τῆς πλειοψηφίας, κατέθεσε τὴν ἐντολήν. Εἰς τὸ σχηματισθὲν τότε ὑπουργεῖον Τζιολίττι τῷ ἀνετέθη τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Στρατιωτικῶν κατ' ἀρχὰς καὶ τῶν Οἰκονομικῶν βραδύτερον. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην διεπραγματεύθη, ὡς ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, τὴν συνθήκην τοῦ Ραπάλλο μετὰ τῆς Νοτιοσλαβίας, δι' ἧς καθωρίζοντο τὰ σύνορα μεταξὺ τῶν δύο κρατῶν καὶ ἐλύετο τὸ ἐπίμαχον ζήτημα τοῦ Φιοῦμε. Τῷ 1921 ἀνέλαβε τὸν σχηματισμὸν κυβερνήσεως, ἥτις διετηρήθη μέχρι τοῦ 1923. Ἡ δρᾶσις αὐτοῦ ὡς ὑπουργοῦ καὶ πρωθυπουργοῦ εἶναι λίαν ἀξιόλογος, ἀναφερομένη κυρίως εἰς τὴν σημαντικὴν ὤθησιν, ἣν ἔδωκεν εἰς τὴν ἐγκατάστασιν τῶν ἀγροτῶν, εἰς τὴν σύνταξιν, μετὰ τοῦ γενικοῦ ἐπιτελάρχου στρατηγοῦ Μπατόλιο, τοῦ νέου ὀργανισμοῦ τοῦ ἰταλικοῦ στρατοῦ κτλ. Παραλλήλως πρὸς τὴν ζωηρὰν πολιτικήν του δρᾶσιν, ὁ Μπονόμι ἠσχολεῖτο πάντοτε καὶ μὲ τὴν δημοσιογραφίαν καὶ ἐχρημάτισε πλειστάκις συνεργάτης καὶ ἀνταποκριτὴς πολλῶν σοσιαλιστικῶν ἐφημερίδων καὶ περιοδικῶν. Μεταξὺ τῶν πολλῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «Ἐπείγοντα ζητήματα» (1903), «Αἱ νέαι ἰδέαι τοῦ σοσιαλισμοῦ» (1907), «Δέκα ἔτη ἰταλικῆς πολιτικῆς» (1924), «Ἀπὸ τοῦ σοσιαλισμοῦ εἰς τὸν φασισμὸν» (1924), «Ὁ Λεωνίδας Μπισσολάτι καὶ ἡ σοσιαλιστικὴ κίνησις ἐν Ἰταλίᾳ» (1929) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπονοντσίνι** (Bononcini).—1) ***Ἰωάννης-Μαρία***. Ἰταλὸς συνθέτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Μοδένῃ (1640—1678). Εἶναι ἐκ τῶν πρώτων μουσουργῶν, οἵτινες εἰργάσθησαν διὰ τὴν δημιουργίαν τοῦ τύπου τῆς σουΐτας. Ἔγραψεν ἰδίως ἔργα ἐνοργάνου μουσικῆς: «Primi frutti del giardino musicale a 2 V. c. B. c.» (1666), «Sonate da camera e de ballo a 2. V. col B. c.» (1667), «Varii fiori a 2—4 col B. c.» (1669), «Arie, Correnti, Sarabande. Gighe e Allemande a V. c. Vine» (1671), «Sinfonie, Allemande, Correnti e Sarabande a 5—6 col B. c.» (1677), «Trattenimenti musicali a 3—4» (1675), «Κανtάται» κτλ.

—2) ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου, συνθέτης ἐπίσης (1660—1758). Μαθητής, ὡς καὶ ὁ πατήρ του, τοῦ Παύλου Κολόννα ὠνομάσθη μουσικὸς διευθυντὴς τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τῆς Βολωνίας καὶ εἶτα βιολοντσελλιστὴς τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Αὐστρίας Λεοπόλδου (1691). Νεώτατος ἐπεδόθη εἰς τὴν σύνθεσιν μελοδραμάτων, δώσας τῷ 1694 ἐν Ρώμῃ τὸν «Tullo Ostilio» καὶ τὸν «Ξέρξην». Κατόπιν νέων μελοδραματικῶν ἐπιτυχιῶν ἐν Βιέννῃ, ἔνθα μεταξὺ ἄλλων ἀνεβίβασε τῷ 1699 τὸ ἔργον: «La fede pubblica» καὶ τῷ 1703 «Proteo sul Reno», ὁ Μπονοντσίνι ἐγνώρισε τὴν δόξαν ἐν Βερολίνῳ διὰ τοῦ «Πολυφήμου» (1703). Αἱ θεατρικαί του ἐπιτυχίαι ἐσυνεχίσθησαν ἐκ νέου ἐν Βιέννῃ, ἔνθα ἔδωκε δεκάδα ἄλλων μελοδραμάτων. Τῷ 1716 ἐκλήθη ἵνα δώσῃ σειρὰν ἔργων του ἐν Λονδίνῳ, ὅπου ὑπεστηρίχθη ὑπὸ τῆς δουκίσσης Μάλμπορω καὶ ἐτέθη ὡς ἀντίπαλος τοῦ Χαΐντελ, εὐνοουμένου τῆς αὐλῆς. Ἡ καλλιτεχνικὴ αὕτη ἔρις μετὰ τοῦ μεγάλου Γερμανοῦ μουσουργοῦ παρέμεινεν ἱστορική. Υποδεέστερος κατὰ πολὺ τοῦ Χαΐνδελ ὁ Μπονοντσίνι, ἁπλοῦς μιμητὴς τῆς τέχνης τῶν ἄλλων καὶ ἰδίως τοῦ Σκαρλάττι, δὲν ἤργησε νὰ ἴδῃ τὴν φήμην του ὠχριῶσαν ἐν Λονδίνῳ, ὁπόθεν ἀπῆλθεν εἰς Παρισίους τῷ 1733. Ἐκτὸς τῶν ἐν Λονδίνῳ ἀναβιβασθέντων ἑπτὰ νέων μελοδραμάτων του ἔγραψεν ἐπίσης πλεῖστα ἔργα ἐνοργάνου μουσικῆς, συμφωνίας, σονάτας, ὀρατόρια («Δαυΐδ», «Ἰωσουά», «Ἡ Μαγδαληνὴ εἰς τοὺς πόδας τοῦ Χριστοῦ» κλπ.) καὶ πολλὰς μελῳδίας διὰ τὴν δούκισσαν Μάλμπορω.

—3) ***Μᾶρκος-Ἀντώνιος***. Νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, συνθέτης καὶ οὗτος (1675—1726). Διατελέσας μουσικὸς διευθυντὴς ἐν τῇ αὐλῇ τῆς Μοδένης, ἐγένετο γνωστὸς διὰ σειρᾶς μελοδραμάτων, ὀρατορίων καὶ πολλῶν ἄλλων συνθέσεων φωνητικῆς μουσικῆς. Γ. Σ.

**Μπονοὺζ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὕφορμος ἐν τῷ μείζονι ὅρμῳ τῆς Σκοπιᾶς ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Μακρης. Εἶναι ὁ ὅρμος *Κρύα* τοῦ «Σταδιασμοῦ τῆς Μεγάλης Θαλάσσης».

**Μπονπλὰν** (Bonpland), ***Αἰμέ***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ φυσιοδίφης (1773—1858). Ἐγκαταλείψας τὴν ἣν εἶχε θέσιν χειρουργοῦ ἐν τῷ ναυτικῷ, μετέβη εἰς Παρισίους, ἔνθα συνεδέθη στενῶς μετὰ τοῦ Alex. Humboldt. Ὁ φιλικὸς οὗτος δεσμὸς παρώρμησεν ἀμφοτέρους πρὸς ἐπιστημονικὴν ἐξερευνητικὴν ἐκδρομὴν εἰς Ἀμερικήν, ὅπου παραμείνας ἐπὶ πενταετίαν ὁ Μπονπλὰν συνέλεξε πλέον τῶν 6.000 φυτῶν, τῶν πλείστων ἀγνώστων, ἐμελέτησε τὴν ἐσωτερικήν των διαμόρφωσιν, τὴν χρῆσίν των διὰ τὰς τέχνας καὶ τὰς ἰατρικάς των ἰδιότητας· ἐπιστρέψας δὲ εἰς Παρισίους ἐδώρησε τὴν συλλογήν του ταύτην εἰς τὸ Μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας. Διωρίσθη τότε ἔφορος τῶν κτημάτων τῆς Μαλμαιζὸν καὶ Ναβάρρας, μετὰ τὸν θάνατον ὅμως τῆς προστάτιδός του αὐτοκρατείρας Ἰωσηφίνης καὶ τὴν ὁριστικὴν κατάλυσιν τῆς αὐτοκρατορίας

Digitized by Google

ἐταξίδευσε καὶ πάλιν εἰς Ν. Ἀμερικὴν καὶ παρέμεινεν ἐπί τινα καιρὸν εἰς Μπουένος-Ἄϋρες, προτιθέμενος νὰ διέλθῃ τὰς πάμπας τῆς Ἀργεντινῆς καὶ τῶν ἐπαρχιῶν τοῦ Τσὰ-κὸ καὶ νὰ ἐπισκεφθῇ τὴν Βολιβίαν. Κακῇ μοίρᾳ ὅμως διῆλθε διὰ τμήματος χώρας διαμφισβητουμένης ὑπὸ τῆς Παραγουάης καὶ τῆς Ἀργεντινῆς, ὁ δὲ δικτάτωρ τῆς Παραγουάης Francia, ἐκλαβὼν αὐτὸν ὡς κατάσκοπον καὶ τυχοδιώκτην, τὸν ἐξώρισε (Δεκέμβριος 1821) εἰς χώραν ἡμιαγρίων παρὰ τὴν Santa-Maria. Παρὰ τὰς διαμαρτυρίας πλείστων Εὐρωπαίων ἡγεμόνων, ὁ Μπονπλὰν ἐκρατήθη ἐκεῖ μέχρι Φεβρουαρίου 1836, ὁπότε ἀπολυθεὶς ἀπεσύρθη εἰς τὴν δημοκρατίαν τῆς Οὐρουγουάης, παρὰ τὴν πολίχνην San-Borja, καὶ ἀφιερώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰς ἐπιστημονικάς του μελέτας. Διετέλεσε μέλος ἀντεπιστέλλον τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ τοῦ Μουσείου τῆς φυσικῆς ἱστορίας. Τὴν μεγάλης ἀξίας φυτολογικὴν συλλογήν του, ἀποτελουμένην ἐκ χιλιάδων φυτῶν, διατηρουμένων ἐν ἀρίστῃ καταστάσει, ἐκληροδότησε κατὰ τὸν θάνατόν του εἰς τὴν Γαλλίαν. Ἐδημοσίευσε: «Φυτὰ τοῦ Ἰσημερινοῦ συλλεγέντα εἰς Μεξικόν, Κοῦβαν, εἰς τὰς ἐπαρχίας Καρακὰς καὶ Κούμανα, εἰς τὰς ἄνδεις τοῦ Κουΐτο εἰς τὰς ὄχθας τοῦ Ὀρενόκου καὶ τῶν Ἀμαζόνων» (1805, εἰς 2 τόμ.), «Περιγραφὴ τῶν σπανίων φυτῶν τῆς Μαλμαιζὸν καὶ Ναβάρρας μετὰ 64 πινάκων» (1812), «Ταξίδιον εἰς τὰς ἰσημερινὰς χώρας τῆς νέας ἠπείρου» (13 τόμοι 1815) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Humboldt, «Νέα τινὰ γένη καὶ εἴδη φυτῶν» (7 τ., ἔργον μετὰ 700 πινάκων, 1815) κλπ.

Ο. Ρ.

**Μπονσὰν** (Bonchamp), ***Κάρολος-Μελχιὸρ-Ἀρτύς***, *μαρκήσιος ντὲ* —. Γάλλος στρατιωτικὸς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τοῦ στρατοῦ τῆς Βανδέας (1760—1793). Πρὸ τῆς ἐκρήξεως τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως ἦτο ἤδη ἀξιωματικὸς τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ, ἐξελέγη δὲ τότε ὑπὸ τῶν βασιλοφρόνων Βανδεανῶν χωρικῶν διὰ νὰ ἀναλάβῃ τὴν ἀρχηγίαν αὐτῶν ἐναντίον τῆς δημοκρατίας. Ὡς τοιοῦτος μετέσχε τῆς μάχης τοῦ Μπρεσσυίρ, τῆς καταλήψεως τοῦ Τουὰρ καὶ τῆς ἐπιθέσεως ἐναντίον τοῦ Φοντεναί, καθ' ἣν ἐπληγώθη (Μάϊος 1793). Κατὰ Ἰούλιον τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἀνέλαβεν, ἀναρρώσας, τὰ καθήκοντά του ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Ἐλμπί, ὅστις ὠνομάσθη ἀρχιστράτηγος, πληγωθεὶς ὅμως ἐκ νέου θανασίμως κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σολέ, ἀπέθανε τὴν ἐπομένην, ἀφοῦ ἠμνήστευσε 4.000 αἰχμαλώτους τοῦ δημοκρατικοῦ στρατοῦ. Τὸν ἐν Σαὶν Φλορὰν τάφον του ἐκόσμησε διὰ γλυπτῶν ὁ Νταβὶντ ντ' Ἀνζέ. Χ. Δ.

**Μπονσὲλλ** (Boncelles). Περιοχὴ παρὰ τὴν Λιέγην τοῦ Βελγίου, γενομένη γνωστὴ ἀπὸ τῆς ἀνακαλύψεως ἐντὸς τοῦ ἐδάφους αὐτῆς σειρᾶς λίθων, ὑποτιθεμένων ὡς ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου διασκευασθέντων, τῶν γνωστῶν *ἠωλίθων* (βλ. λ.) Πλὴν τῶν ἀναντιρρήτων παλαιολιθικῶν ἔργων τοῦ ἀνθρώπου τῆς πλειστοκαίνου περιόδου, τοῦ τεταρτογενοῦς, ἀνευρίσκονται ἤδη καὶ λίθοι τινὲς εἰς στρώματα παλαιότερα, δηλαδὴ τοῦ τριτογενοῦς, ἐφ' ὧν κατά τινας ἀναγνωρίζεται ἡ ἐργασία χειρὸς τοῦ ἀνθρώπου, ἡ πλέον στοιχειώδης, ἢ τοὐλάχιστον τὰ ἴχνη τῆς χρησιμοποιήσεως τῶν λίθων τούτων ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου διὰ διαφόρους ἐργασίας. Εἶναι ἡ λεγομένη ἠωλιθικὴ περίοδος. Τοιούτους λίθους ἔχομεν ἐκ τῆς ἠωκαίνου βαθμῖδος, τῆς ὀλιγοκαίνου, τῆς μειοκαίνου καὶ τῆς πλειοκαίνου. Οἱ λίθοι τῆς Boncelles ὑπάγονται εἰς τὸ «ὀλιγόκαινον», εἶναι δηλαδὴ παλαιότατοι, διὸ καὶ μεταξὺ τῶν πλέον ἀμφιβόλων. Ἐμφανίζουν διάφορα σχήματα καὶ καταφανεῖς διορθώσεις (retouches) κατά τι τῶν χειλέων. Τὸ ζήτημα τῶν ἠωλίθων δὲν ἔχει λυθῆ εἰσέτι.

Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**Μπονσινιὸρ** (Bonsignor). Οἰκογένεια ἐκ Βρεσκίας ἐγκατασταθεῖσα ἐν Ζακύνθῳ περὶ τὸ 1620. Ἐκ ταύτης διεκρίθη ὁ *Ἀθανάσιος* (1827—1897), ὅστις σπουδάσας ἐν Κερκύρᾳ ἔτυχε τῶν διπλωμάτων θεολογίας, φιλοσοφίας καὶ φυσικῆς. Διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ γυμνασίου Ζακύνθου καὶ ἐδημοσίευσε διαφόρους λόγους καὶ ἄλλα τινά.

**Μπονστέττεν** (Bonstetten), ***Κάρολος-Βίκτωρ*** *φὸν* —. Ἑλβετὸς συγγραφεὺς (1745--1832). Διετέλεσε μέλος τοῦ μεγάλου συμβουλίου τῆς Βέρνης. Ταξιδεύσας εἰς Ἰταλίαν καὶ Δανίαν ἐγνωρίσθη καὶ συνεδέθη μὲ πολλὰ σημαίνοντα πρόσωπα τῆς ἐποχῆς του, ἐν οἷς καὶ μετὰ τῆς διασήμου Γερμανίδος λογίας Φρειδερίκης Μπρούν. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, τὰ ὁποῖα ἔγραψεν ἄλλα εἰς γαλλικὴν καὶ ἄλλα εἰς γερμανικὴν γλῶσσαν, σημαντικώτερα εἶναι αἱ ἐπιστολαὶ καὶ αἱ περιγραφαὶ ταξιδίων: «Περὶ τῆς ἐθνικῆς ἐκπαιδεύσεως» (1802, 2 τ.), «Ταξίδιον εἰς τοὺς τόπους τῶν ἓξ τελευταίων βιβλίων τῆς Αἰνειάδος» (1805, νεωτέρα ἔκδ. 1862), «Ὁ ἄνθρωπος τῆς Μεσημβρίας καὶ ὁ ἄνθρωπος τοῦ Βορρᾶ», ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἐπιδράσεως τοῦ κλίματος (1824), «Ἡ Σκανδιναβία καὶ αἱ Ἄλπεις» (1826), «Ἀναμνήσεις» (1831—1833), «Ἐπιστολαὶ πρὸς τὴν Φρειδερίκην Μπρούν» (1829) κλπ.

Γ. Ε. Κ.

**Μπὸντ** (Bond) *[Γεωγρ.]*. Ὑποτελὲς ἰθαγενὲς κράτος τῶν Ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Καλκούτας, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Ὄρισσας. Κάτ. 110.000. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα αὐτοῦ εἶναι ἐκτισμένη παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Μαχανάντι, ἐν τῷ μέσῳ ὀρεινῆς χώρας διακοπτομένης ὑπὸ μεγάλων καὶ ὡραίων κοιλάδων. Κάτοικοι 12.800. Π. Γ. Λ.

**Μπὸντ** (Bond), *σὲρ* ***Ροβέρτος***. Σκῶτος πολιτικὸς (1857—1927). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἐδιμβούργου, ἐγκατασταθεὶς δὲ ἐν τῇ βρεττανικῇ ἀποικίᾳ τῆς Νέας Γῆς ἀνεμείχθη ἐκεῖ εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς τῷ 1882. Τῷ 1884 ἐγένετο πρόεδρος τῆς βουλῆς καὶ μετὰ πέντε ἔτη ὑπουργὸς τῆς Ἀποικίας. Ἔλαβεν ἰθῦνον μέρος εἰς τὰς ἐπὶ μακρὰ ἔτη διεξαχθείσας διαπραγματεύσεις τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως διὰ τὸ ζήτημα τῶν ἁλιευτικῶν δικαιωμάτων εἰς τὰ παράλια τῆς Νέας Γῆς καὶ ὑπῆρξεν ὁ κύριος ἐργάτης τῆς μετὰ τῆς Ἀμερικῆς συμβάσεως, δι' ἧς ἐκανονίσθησαν αἱ ἀμερικανικαὶ περὶ τῆς ἐκεῖ ἁλιείας ἀξιώσεις. Τῷ 1900 ἐσχημάτισεν ὑπὸ τὴν προεδρίαν αὐτοῦ κυβέρνησιν, ἥτις διετηρήθη εἰς τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ ἔτους 1909, ὁπότε τὴν διεδέχθη τὸ νεοπαγὲς λαϊκὸν κόμμα. Ἔκτοτε ἔδρασεν ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἀντιπολιτεύσεως μέχρι τοῦ ἔτους 1914, ὅτε παρῃτήθη τῆς πολιτικῆς. Γ. Ι. Β.

**Μπόντε** (Bode) *[Γεωγρ.]*. Δύο ποταμοὶ τῆς Γερμανίας, ἐξ ὧν ὁ μὲν εἷς πηγάζει ἐκ τοῦ ὄρους Μπρόκκεν καὶ ἐκβάλλει μετὰ ροῦν 160 χλμ. εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Σάαλε παρὰ τὸ Νίνμπουργκ, ὁ δ' ἕτερος διαρρέει τὴν Σαξωνίαν καὶ ἐκβάλλει εἰς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Βίππερ παρὰ τὸ Μπλάϊχερόντε.

Χ. Δ

**Μπόντε** (Bode), ***Γιόχαν-Ἔλερτ***. Γερμανὸς ἀστρονόμος, γεννηθεὶς ἐν Ἀμβούργῳ καὶ ἀποθανὼν ἐν Βερολίνῳ (1747—1826). Ἀπὸ παιδικῆς ἡλικίας, αἰσθανόμενος μεγάλην κλίσιν πρὸς τὴν ἀστρονομίαν, ἐπεδόθη μετὰ ζήλου εἰς τὴν σπουδὴν αὐτῆς καὶ εἰς τὴν παρατήρησιν τῶν ἄστρων διὰ διόπτρας ἰδίας αὐτοῦ κατασκευῆς. Δεκαοκταετὴς ἤδη ἐγνώριζε νὰ ὑπολογίζῃ τὰ πλεῖστα τῶν ἀστρονομικῶν φαινομένων, εἰς ἡλικίαν δὲ 21 ἐτῶν ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον σύγγραμμά του «Anleitung zur Kentniss des gestirnten Himmels» (Ἀμβοῦργον 1768). Τὸ ἐπόμενον ἔτος ἐδημοσίευσεν ὑπόμνημα περὶ τῆς σπουδαιότητος τῆς παρατηρήσεως τῆς διαβάσεως τῆς Ἀφροδίτης, ὅπερ ἐν μέρει συνετέλεσεν εἰς τὸ νὰ ἀποφασίσῃ ὁ Cook ἐπὶ τούτῳ ταξίδιον εἰς τὸ νότιον ἡμισφαίριον. Τὴν 29 Αὐγούστου 1769 ἀνεκάλυψεν ἐν τῷ ἀστερισμῷ τοῦ Ταύρου τὸν πρῶτον κομήτην βραχείας περιόδου καὶ ὑπολογίσας τὰ στοιχεῖα τῆς τροχιᾶς του προεῖπε τὴν ἐπάνοδον τοῦ ἄστρου κατὰ τὸν Ὀκτώβριον τοῦ ἐπομένου ἔτους. Διὰ τὰς ἐργασίας του ταύτας ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ Φρειδερίκου Β' εἰς Βερολῖνον καὶ ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ἐν Βερολίνῳ ἤρχισεν ἀπὸ τοῦ 1774 τὴν ἔκδοσιν «Ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων» (Astronomisches Jahrbuch), ἣν ἐξηκολούθησε μέχρι τοῦ 1825, ὅτε καὶ ἀπεσύρθη τῆς διευθύνσεως τοῦ ἀστεροσκοπείου τῆς γερμανικῆς πρωτευούσης, ἥτις τῷ εἶχεν ἀνατεθῆ ἀπὸ τοῦ 1786. Πλὴν διαφόρων ὑπομνημάτων καὶ μελετῶν, δημοσιευθεισῶν εἰς τὰ πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Βερολίνου καὶ εἰς ἄλλα εἰδικὰ περιοδικά, ἀξία ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι ἡ «Οὐρανογραφία» αὐτοῦ (Βερολῖνον 1801), ἥτις ἀποτελεῖ μέγαν ἄτλαντα τοῦ οὐρανοῦ ἐξ 20 φύλλων, παρέχοντα τὰς θέσεις 17.240 ἀπλανῶν, διπλῶν ἀστέρων καὶ νεφελοειδῶν. Σ. Π.

*Γιόχαν Μπόντε.*

— **Μπόντε** (Bode), ***νόμος τοῦ*** — *[Ἀστρονομ.]*. Τὸ ὄνομα τοῦ Γερμανοῦ ἀστρονόμου Μπόντε ἔχει συνδεθῆ πρὸς τὸν ὁμώνυμον αὐτοῦ νόμον, ὅστις ὅμως, ἂν καὶ ὀνομάζεται συνήθως «Νόμος τοῦ Μπόντε», ὀφείλεται κυρίως εἰς τὸν ἐκ Βιττεμβέργης Johann Daniel Titius (1772), ὅστις πρῶτος διετύπωσεν αὐτόν. Ὁ νόμος οὗτος ἔχει ὡς ἑξῆς:

Ἐὰν γράψωμεν κατὰ σειρὰν τὰς μέσας ἀπὸ τοῦ ἡλίου ἀποστάσεις τῶν κατὰ τὴν ἀρχαιότητα γνωστῶν ἓξ πλανητῶν, ἐκπεφρασμένας ὡς πρὸς μονάδα τὴν μέσην ἀπόστασιν τῆς γῆς ἀπὸ τοῦ ἡλίου, θὰ ἔχωμεν:

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 0,4 | 0,7 | 1,0 | 1,5 | 5,2 | 9,5 |
| Ἑρμῆς | Ἀφροδίτη | Γῆ | Ἄρης | Ζεὺς | Κρόνος |

Οἱ ἀριθμοὶ οὗτοι προκύπτουν ἂν λάβωμεν τὴν γεωμετρικὴν πρόοδον: 3, 6, 12, 24, 48, 96, προτάξωμεν ὡς πρῶτον ὅρον τὸ 0 καὶ ἀφοῦ προσθέσωμεν εἰς ἕκαστον ἀριθμὸν τὸν 4, διαιρέσωμεν τὰ ἀθροίσματα διὰ 10, ὁπότε προκύπτει ἡ σειρά:

0,4 0,7 1,0 1,6 2,8 5,2 10,0

τῆς ὁποίας οἱ ὅροι εἶναι περίπου οἱ αὐτοὶ πρὸς τοὺς ἀριθμούς, οἵτινες παρέχουν τὰς ὡς ἄνω ἀποστάσεις τῶν πλανητῶν ἀπὸ τοῦ Ἡλίου, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι παρεμβάλλεται ἐνταῦθα εἷς ὅρος ἐπὶ πλέον, ὁ 2,8, ὅστις ἀντιστοιχεῖ εἰς τὸ μεταξὺ Ἄρεως καὶ Διὸς σμῆνος τῶν ἀστεροειδῶν. Οὗτοι κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην δὲν ἦσαν εἰσέτι γνωστοί, διό, ὅταν τῷ 1781 ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ Herschell ὁ πλανήτης Οὐρανὸς εἰς ἀπόστασιν 19,6, ἡ ἐπαλήθευσις τοῦ νόμου ἔπεισε τοὺς τότε ἀστρονόμους περὶ τῆς ἀνάγκης συστηματικῶν ἐρευνῶν πρὸς ἀνακάλυψιν ἀγνώστου τινὸς πλανήτου, ὅστις ἔδει νὰ εὑρίσκεται εἰς ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ Ἡλίου 2,8 ἀστρονομικῶν μονάδων. Ὄντως ἡ ὑπὸ τοῦ βαρώνου Zach ὀργανωθεῖσα ἔρευνα ἐστέφθη ὑπὸ ἐπιτυχίας, ὅταν τὴν 1ην Ἰανουαρίου 1801 ὁ ἐν Παλέρμῳ ἀστρονόμος Piazzi ἀνεκάλυψε τὸν πρῶτον ἀστεροειδῆ, τὴν Δήμητραν, εἰς τὴν κανονικὴν ἀπόστασιν. Ἡ μετὰ ταῦτα ἀνακάλυψις καὶ ἄλλων ἀστεροειδῶν, τῆς Παλλάδος, τῆς Ἥρας, τῆς Ἑστίας κτλ., δὲν ἐκλόνισε τὰς πεποιθήσεις ἐπὶ τὸν νόμον τοῦ Μπόντε, διότι οἱ ἀστεροειδεῖς ἐθεωρήθησαν ὡς τὰ συντρίμματα πλανήτου, ὅστις εὑρίσκετο εἰς ἀπόστασιν 2,8 ἀστρονομικῶν μονάδων ἀπὸ τοῦ Ἡλίου καὶ συνεκρούσθη μετ' ἄλλου σώματος ἢ ἐξερράγη. Τὸ κῦρος ἐν τούτοις τοῦ νόμου τούτου ἐκλονίσθη, ὅταν τῷ 1846 ἀνεκαλύφθη ὁ Ποσειδῶν εἰς ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ Ἡλίου 30,0 ἀστρονομικῶν μονάδων ἀντὶ 38,8, ἔτι δὲ μᾶλλον ἐσχάτως διὰ τῆς ἀνακαλύψεως τοῦ Πλούτωνος εἰς ἀπόστασιν 41 ἀστρονομικῶν μονάδων ἀντὶ 77,2. Ὁπωσδήποτε ὅμως ὁ νόμος τοῦ Μπόντε δὲν εἶναι καὶ τελείως ἀνάξιος προσοχῆς, διότι ἂν καὶ δὲν ἀληθεύῃ μέχρι τῶν ἐσχατιῶν τοῦ ἡλιακοῦ ἡμῶν συστήματος, οὐχ ἧττον ἀποτελεῖ ἁπλοῦν μνημονικὸν κανόνα, διευκολύνοντα τὴν ἀπομνημόνευσιν τῶν ἀπὸ τοῦ Ἡλίου μέσων ἀποστάσεων τῶν ἑπτὰ τουλάχιστον ἐκ τῶν μεγάλων πλανητῶν.

Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

— **Μπόντε** (Bode), ***Γουλιέλμος φὸν*** —. Γερμανὸς ἱστορικὸς τῆς τέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1845. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς νομικὰ καὶ κατόπιν ἀρχαιολογίαν καὶ ἱστορίαν τῆς τέχνης, διετέλεσε διευθυντὴς τῆς πινακοθήκης (1890) καὶ κατόπιν γενικὸς διευθυντὴς τῶν βασιλικῶν μουσείων ἐν Βερολίνῳ (1906—1920). Εἰργάσθη ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς ἰταλικῆς πλαστικῆς τοῦ μεσαίωνος καὶ τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ ἐπὶ τῆς ζωγραφικῆς τῶν Κάτω Χωρῶν καὶ ἐδημοσίευσεν ἐπὶ τούτων σπουδαιοτάτας ἐργασίας: «Μελέται ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς ὀλλανδικῆς ζωγραφικῆς» (1883), «Ὁ Ντονατέλλο ἐν Παδούῃ» (1883), «Ἰταλοὶ γλύπται τῆς Ἀναγεννήσεως» (1887), «Ἱστορία τῆς γερμανικῆς πλαστικῆς» (1887), «Ρέμπραντ» (1897—1900, τ. 1—6), «Φλωρεντινοὶ γλύπται τῆς Ἀναγεννήσεως» (1902), «Μποττιτσέλλι» (1922), «Πεντήκοντα ἔτη ἐργασίας ἐν μουσείῳ» (1922) κ. ἄ. Γ. Ε. Κ.

— **Μπόντε** (Bode), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς (1862—1922). Ἵδρυσε τῷ 1889 τὴν ἀντιαλκοολικὴν ἕνωσιν καὶ ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα ἐπὶ τοῦ Γκαῖτε καὶ τοῦ κύκλου εἰς τὸν ὁποῖον οὗτος ἔζησεν: «Ἡ τέχνη τοῦ ζῆν παρὰ τῷ Γκαῖτε» (8η ἔκδ. 1922), «Ἡ αἰσθητικὴ τοῦ Γκαῖτε» (1901), «Καρλόττα φὸν Στάϊν» (1910), «Ἡ ἐρωτικὴ ζωὴ τοῦ Γκαῖτε» (2α ἔκδ. 1919), «Ἡ γυνὴ καὶ ἡ ἠθικὴ ἐν τῇ ζωῇ καὶ τῇ σκέψει τοῦ Γκαῖτε» (1916). Ἐκ τῆς μεγάλης βιογραφίας τοῦ Γκαῖτε (Goethes Leben), τὴν ὁποίαν προὐτίθετο νὰ ἐκδώσῃ, ἐδημοσιεύθησαν μόνον δύο τόμοι (1920—1921). —Ω.

**Μποντέγκα** (Bodega) *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς Βορείου Ἀμερικῆς ἐπὶ τῶν δυτικῶν ἀκτῶν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν (πολιτεία τῆς Καλιφορνίας), περιλαμβανόμενος μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Τόμαλ καὶ Μποντέγκα εἰς ἀπόστασιν 60 χιλιομέτρων βορείως τοῦ κόλπου τοῦ Ἁγίου Φραγκίσκου. Ὁ κόλπος τῆς Μποντέγκα ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τῶν θαλασσοπόρων Λεσσέτα καὶ Μποντέγκα κατὰ τὸ 1775, ἐξηρευνήθη δὲ ὑπὸ τοῦ Πιζὲ ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ Βαγκοῦβερ κατὰ τὸ 1792. Τῷ 1812 κατελήφθη τῇ ἀδείᾳ τῆς ἰσπανικῆς κυβερνήσεως τῆς Καλιφορνίας ὑπὸ τῆς ρωσοαμερικανικῆς ἑταιρείας, ἥτις ἐγκατέλειψε τὴν περιοχὴν κατὰ τὸ 1842, ὁπότε περιῆλθεν αὕτη ὁριστικῶς εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας.

Π. Γ. Λ.

**Μποντεγκράβεν** (Bondegraven) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Νοτίου Ὁλλανδίας, ἐκτισμένον ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Ρήνου. Κάτοικοι 3.750. Κατεστράφη ὑπὸ τῶν Γάλλων κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ 1672.

Π. Γ. Λ.

**Μποντὲλ** (Bodel), ***Ἰωάννης***. Γάλλος τρουβαδοῦρος, ἀποθανὼν ἐν Ἀρρὰς τῷ 1210. Συνέθεσεν ἡρωϊκὸν ποίημα ἱστοροῦν τὴν κατάληψιν τῆς Σαξωνίας ὑπὸ τοῦ Καρλομάγνου, ὑπὸ τὸν τίτλον «Les Saisnes ou Saxons», ἓν θρησκευτικὸν δρᾶμα (μυστήριον), ὑπὸ τὸν τίτλον «Jeu de Saint Nicolas» διακρινόμενον διὰ τὸν ζωηρὸν ρεαλισμὸν πολλῶν σκηνῶν του καὶ τὴν περίφημον ὑπὸ τὸν τίτλον «Congé» συλλογὴν ἀποχαιρετιστηρίων ποιημάτων ἀπευθυνομένων πρὸς τοὺς φίλους καὶ τοὺς ἰσχυροὺς προστάτας του, γραφεῖσαν ὅτε ἐπρόκειτο νὰ ἐγκλεισθῇ εἰς λεπροκομεῖον, ὡς πάσχων ἐκ λέπρας. Ἡ τελευταία αὕτη συλλογὴ θαυμάζεται ἰδιαιτέρως διὰ τὴν συγκινοῦσαν τρυφερότητα τοῦ ὕφους. Ἐκ τῶν ἔργων του τὸ μὲν πρῶτον ἐξεδόθη τῷ



Digitized by Google

1839, τὸ δὲ τρίτον ἐν «Recueil de fabliaux» (τ. Γ' σ. 135). Χ. Δ.

**Μποντελὲ** (Bodelé) *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τῆς ὑπὸ τὴν γαλλικὴν κατοχὴν μεσημβρινῆς Σαχάρας, κειμένη μεταξὺ τῆς χώρας τοῦ Μπορκοὺ καὶ τῆς περιοχῆς τοῦ Ἐγκεΐ, ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῶν καραβανίων ἀπὸ Μπιρκοὺ εἰς Τσάντ. Τὸ Μποντελὲ ἀποτελεῖ ἐκτεταμένην ἐδαφικὴν κοιλότητα ἐμβαδοῦ 200 περίπου τ. χλμ., ἀρδευομένην πιθανῶς ἄλλοτε ὑπὸ τοῦ Μπὰχρ-ἐλ-Γκαζὰλ καὶ τῶν παραποτάμων αὐτοῦ, ἔχει δὲ ἔδαφος ἀργιλλῶδες, σχηματισθὲν ὑπὸ παλαιῶν προσχώσεων τοῦ ῥηθέντος ποταμοῦ. Ἡ περιοχὴ εἶναι ἐλάχιστα κατῳκημένη, ἔχει δὲ ὡς μόνην σχεδὸν πηγὴν πλούτου τὴν κτηνοτροφίαν. Χ. Δ.

**Μποντεμπέλλι** (Bontempelli), ***Μάξιμος***. Ἰταλὸς λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1878. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἐπί τι χρονικὸν διάστημα διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ δικαίου εἰς διαφόρους σχολὰς ἐν Τουρίνῳ. Κατόπιν ἀφιερώθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ τὴν λογοτεχνίαν, συνεργασθεὶς εἰς διαφόρους ἐφημερίδας. Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ὑποστῆ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Καρντούτσι, ἀλλὰ βραδύτερον προσεχώρησεν εἰς τὸν φουτουρισμόν, γράψας πλεῖστα φουτουριστικὰ ἔργα καὶ ἐξελιχθεὶς ἐν τέλει εἰς ἰδιότυπον εὐθυμογράφον. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, τὰ ὁποῖα περιλαμβάνουν ποιήματα, κριτικὰ δοκίμια, διηγήματα, μυθιστορήματα, δραματικὰ ἔργα καὶ κωμῳδίας, τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ἐκλογαί» (1904), «Ὠδαί» (1910), «Οἱ ἑπτὰ ἀδελφοί» (1912), «Τὸ παιδὶ τῶν δύο μητέρων» (1929), «Ὁ βίος καὶ ὁ θάνατος τοῦ Ἀδρία καὶ τῶν τέκνων του» (1930) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μποντέμπι** (Bontempi), ***Ἰωάννης-Ἀνδρέας***. Ἰταλὸς μουσουργὸς (1624—1705), διατελέσας ἐπ' ἀρκετὰ ἔτη μουσικὸς διευθυντὴς τοῦ πρίγκιπος-ἐκλέκτορος τῆς Δρέσδης. Ἔγραψε μελοδράματά τινα ἀναβιβασθέντα ἐν τῇ πόλει ταύτῃ καὶ τὰ θεωρητικὰ συγγράμματα: «Tractatus in quo demonstratus convenientiae sonorum systematis participati» (1690), «Istoria musica» (1695) κτλ. Γ. Σ.

**μπόντεν** (Bodden) *[Ἀκτογρ.]*. Ἰδιότυποι κολπώσεις τῆς Βαλτικῆς, ἀπαντῶσαι εἰς τὰς Β. ἀκτὰς τῆς Πομερανίας καὶ τὴν νῆσον Ρύγγεν (Rügen). Ἀποτελοῦν γενικῶς ἐσωτερικὰς ὑδατίνας ἐκτάσεις, μετὰ ὀχθῶν ἀμμωδῶν καὶ μικροῦ σχετικῶς βάθους, $1^1/_2$—2 ὀργ. περίπου. Μπόντεν δὲ ἀποτελεῖ καὶ τὸ διαχωρίζον τὴν ΒΑ. Πομερανίαν ἀπὸ τῆς Ρύγγεν ἀμφίγειον, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπάρχουσι πολλὰ τοιαῦτα μπόντεν χωριζόμενα ἀπὸ τῆς Βαλτικῆς διὰ τῶν χερσονησιζόντων προσχωματικῶν βελῶν Jasmund καὶ Witton καὶ τοῦ ἰσθμοῦ Shaube· κυριώτερα τούτων εἶναι τὰ Jasmund, Brügger καὶ Breetzer bodden. Ἐκ δὲ τῶν κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς Ρύγγεν ἀναφέρομεν τὸ Kubidzen bodden καὶ κατὰ τὴν νοτίαν της τὸ Rügener bodden, ὧν τὸ μέσον βάθος φθάνει τὰ 6 μέτρα (3 ὀργ.). Ἔτι ἰδιοτυπώτερα ἐμφανίζονται τὰ τῆς ἀντικρυζούσης (Ἀν.) τὴν Ρύγγεν πλευρᾶς τῆς Πομερανίας, γνωστὰ ὑπὸ τὰς συλλήβδην ὀνομασίας Guabower bodden, Barther bodden, Vropeelstrom, Saalar καὶ Ribnitzer bodden (βλ. χάρτ. ἀγγλ. 2365: Baltic, sheet 1: Coasts of Prussia between Rostock and Arcona light καὶ προχείρως *Schrader* Atl. géogr. moderne: 26, F, b). Σ. ΛΥΚΟΥΔΗΣ—Ι. ΝΕΛΕΒΙΣΚΗ

**Μποντὲν** (Bodin, λατιν. Bodinus). Ὀνομαστὸς Γάλλος πολιτειολόγος καὶ φιλόσοφος (1520—1596), τοῦ ὁποίου τὰ ἔργα καὶ αἱ θεωρίαι προὐκάλεσαν πολλὰς συζητήσεις, ὄχι μόνον ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του ἀλλὰ καὶ καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τοῦ ἐπομένου αἰῶνος. Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν ἐν Τουλούζῃ, ὅπου καὶ ἤσκησεν ἐπί τινα χρόνον τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου. Εἰς ἡλικίαν τεσσαράκοντα ἐτῶν ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους, ἔκτοτε δὲ κυρίως ἀρχίζει ἡ πολυσχιδὴς συγγραφική του δρᾶσις. Ἐθεωρήθη ἐν πρώτοις ὡς ὁ ἱδρυτὴς τῆς φιλοσοφίας τῆς ἱστορίας ἐν Γαλλίᾳ, διὰ τοῦ ἔργου του «Methodus ad facilem historiarum cognitionem» (1566), ἀποτελοῦντος ἀξιόλογον πράγματι ἐγχειρίδιον ἱστορικῆς κριτικῆς. Μετὰ δύο ἔτη ἐξέδωκε μελέτην περὶ τῆς σημασίας τῆς σταθερότητος ἢ ἀσταθείας τῶν νομισματικῶν ἀξιῶν ἐν τῷ ἐμπορίῳ. Ἐκ τῶν συγγραφῶν του τούτων ἀπέκτησε πολλὴν φήμην καὶ ἐκέρδισε τὴν εὔνοιαν τοῦ Ἐρρίκου Γ', ἀλλ' ἐπὶ βραχὺ μόνον χρονικὸν διάστημα. Ὢν ἐχθρὸς τῶν δογματικῶν διαμαχῶν καὶ ὀπαδὸς τῆς ἀνεξιθρησκείας, ἐγένετο ὕποπτος ἀπέναντι τοῦ βασιλέως, ὀλίγον δ' ἔλειψε νὰ φονευθῇ κατὰ τὴν νύκτα τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου καὶ ἠναγκάσθη ἐν τέλει νὰ φύγῃ ἐκ Παρισίων, ὅπου ἡ ζωή του δὲν εὑρίσκετο ἐν ἀσφαλείᾳ. Τῷ 1576 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τοῦ λαοῦ εἰς τὸ ἐν Βλουὰ συνελθὸν συνέδριον τῶν τάξεων, ἐν τῷ ὁποίῳ ἔπαιξε πρωτεύοντα ῥόλον. Ἐδημοσίευσε τότε εἶδος ἀπολογισμοῦ τῶν πεπραγμένων τοῦ συνεδρίου («Recueil de tout ce qui s'est négocié en la compagnie du tiers état de France»), οὕτινος ὅμως τὸ περιεχόμενον παρεξηγήθη εἰς ὅ,τι ἀφεώρα τὰς περὶ τοῦ προτεσταντισμοῦ γενομένας συζητήσεις, θεωρηθεὶς δὲ καὶ πάλιν τότε ὕποπτος ἠναγκάσθη ν' ἀποσυρθῇ ἀπὸ πάσης ἀναμίξεως εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ν' ἀφοσιωθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὰς φιλοσοφικὰς καὶ πολιτειολογικὰς αὐτοῦ μελέτας. Ἐταξίδευσε τότε εἰς Ἀγγλίαν ἀκολουθῶν τὸν δοῦκα τοῦ Ἀνζού, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Γαλλίαν μετὰ τὸν θάνατον τούτου (1584) διωρίσθη εἰσαγγελεὺς εἰς Λάν. Ἐκεῖ, παρὰ τὰς φιλελευθέρας ἀρχάς του, διέπραξε τὸ σφάλμα νὰ ταχθῇ μὲ τὸν ἐναντίον τοῦ Ἐρρίκου Δ' συνασπισμὸν τῶν φεουδαρχῶν, ἐξ οὗ καὶ προεκάλεσε τὴν ἀγανάκτησιν τοῦ λαοῦ τῆς πόλεως, ὅστις ἐλεηλάτησε τὴν κατοικίαν του καὶ ἔρριψε τὰ βιβλία του εἰς τὴν πυράν. Δὲν ἐβράδυνεν ἐν τούτοις νὰ κατανοήσῃ τὸ λάθος του καὶ νὰ ταχθῇ μὲ τὸ μέρος τοῦ βασιλέως.

Τὸ κύριον καὶ μέγα ἔργον τοῦ Μποντὲν ὑπῆρξεν ἡ «Δημοκρατία» του (εἰς 6 βιβλία), ἐκδοθεῖσα ἀρχικῶς εἰς γαλλικὴν γλῶσσαν (Παρίσιοι 1576) καὶ μεταφρασθεῖσα εἶτα ὑπὸ τοῦ ἰδίου εἰς τὴν λατινικὴν μετὰ προσθηκῶν (Παρίσιοι 1586). Σημαντικώτερα τοῦ ἔργου τούτου κεφάλαια εἶναι ἡ περὶ οἰκογενείας θεωρία, ἡ περὶ τῶν διαφόρου τύπου πολιτευμάτων, ἡ περὶ τῶν ἐπαναστάσεων καὶ ἡ περὶ ἐπιδράσεως τοῦ κλίματος καὶ τοῦ ἐδάφους ἐν τῇ ἱστορίᾳ καὶ τῇ διακυβερνήσει τῶν λαῶν. Ὁ Μποντὲν δανείζεται πολλὰ ἀπὸ τοὺς παλαιοτέρους αὐτοῦ συγγραφεῖς, τῶν ὁποίων συχνὰ μνημονεύει γνώμας καὶ ἀποσπάσματα. Ἀλλ' ἡ μεγάλη του πολυγνωσία οὐδαμῶς καταπνίγει τὴν πρωτοτυπίαν του, μολονότι παρεμποδίζει ἐνίοτε τὴν εὐχέρειαν καὶ τὴν γοργότητα τοῦ ὕφους. Ὁ σκοπὸς τοῦ ἔργου του εἶναι, ὅπως εἰς τὸν πρόλογόν του ἐξηγεῖ ὁ ἴδιος, διπλοῦς, θεωρητικὸς ἅμα καὶ πρακτικός: θέλει νὰ ὑπερασπίσῃ ἀφ' ἑνὸς τὴν βασικὴν ἀρχὴν τῆς ἐξουσίας, τῆς τόσον ἀναγκαίας εἰς τὰ κράτη καὶ τόσον σοβαρῶς κλονισθείσης ἐκ τῶν πολέμων τῆς ἐποχῆς του, νὰ καθορίσῃ δ' ἀφ' ἑτέρου τὸ ἰδεῶδες κράτος καὶ ν' ἀναλύσῃ ἐπακριβῶς τὰς κυριώδεις αὐτοῦ λειτουργίας. Αἱ προτιμήσεις τοῦ συγγραφέως στρέφονται πρὸς τὸ βασιλικὸν πολίτευμα, ἀλλ' ἀξιοῖ πολλὰς ἐγγυήσεις ἔναντι τοῦ μοναρχικοῦ δεσποτισμοῦ: συγκατάθεσιν τοῦ ἔθνους διὰ τὴν ἐπιβολὴν τῶν φόρων καὶ τὴν στρατολογίαν· συχνὴν σύγκλησιν ἀντιπροσωπειῶν τοῦ λαοῦ· δημιουργίαν μονίμου γερουσίας, ἐχούσης ἐν ταὐτῷ τὰ δικαιώματα συμβουλίου ἐπικρατείας καὶ ἀνωτάτου δικαστηρίου· δικαστὰς τέλος ἀνεξαρτήτους ἀπὸ τῆς ἐξουσίας καὶ ὑπακούοντας εἰς τοὺς νόμους καὶ μόνον. Εἰς τὸ περὶ τῆς ἐπιδράσεως τοῦ κλίματος κεφάλαιον ὁ Μποντὲν καταδεικνύει ὅτι δὲν ὑπάρχουσιν, ὑπὸ τὴν ἀπόλυτον τοῦ ὅρου ἔννοιαν, καλαὶ καὶ κακαὶ κυβερνήσεις, ἀλλ' ὅτι αὗται γεννῶνται, οὕτως εἰπεῖν, ἀπὸ τοῦ ἐδάφους καὶ τῶν ἠθῶν ἑκάστης χώρας. Τὸ καλαμβάνωνται δὲ ὑπ' ὄψιν αἱ διαφοραὶ τῶν ἠθῶν καὶ ἰδιαιτέρως τοῦ κλίματος ἐν τῷ καταρτισμῷ τῶν καταστατικῶν χαρτῶν τῶν διαφόρων τόπων εἶναι, λέγει, τὸ ἀσφαλέστερον μέσον διὰ τὴν πρόληψιν τῶν ἐπαναστάσεων. Δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ δοθῇ ἐνταῦθα λεπτομερεστέρα ἀνάλυσις τοῦ ἔργου τούτου τοῦ Μποντέν, τὸ ὁποῖον κατ' οὐσίαν ἀποτελεῖ πλήρη πολιτειακὴν καὶ φιλοσοφικὴν ἐγκυκλοπαιδείαν.

Ἐκ τῶν λοιπῶν βιβλίων του «Ἡ δαιμονομανία τῶν μάγων» (1580), θεωρεῖται ἀνάξιον αὐτοῦ ἔργον, τὸ δὲ «Ἀμφιθέατρον τῆς φύσεως», διὰ τὸν σημερινὸν τοὐλάχιστον ἀναγνώστην, φαίνεται παιδικὸν συνονθύλευμα φυσικῆς καὶ μεταφυσικῆς. Τέλος τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Colloquium heptaplomeres» (=Ἑπταπλοῦς διάλογος), ἀπομεῖναν ἐν χειρογράφῳ καὶ ἐκδοθὲν μόλις τῷ 1841 (νεωτέρα ἔκδοσις ἐν Σβέριγκ 1857), ἀποτελεῖ θεολογικοφιλοσοφικὴν μελέτην, ὑπὸ μορφὴν διαλόγου, περὶ θεϊσμοῦ καὶ ἀνεξιθρησκείας, τῆς ὁποίας τὸ περιεχόμενον ἀπησχόλησε βραδύτερον τὸν Γρότιον καὶ τὸν Λεϊβνίτιον καὶ ἧς ἀποσπάσματα μνημονεύονται συχνὰ εἰς διάφορα ἔργα τοῦ ΙΖ' αἰῶνος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Baudrillard* «J. Bodin et son temps» (Παρίσιοι 1853).—*Ad. Franck* «Réformateurs et publicistes d'Europe» (Παρίσιοι 1864).—*P. Janet* «Histoire de la science politique» (Παρίσιοι 1887).—*Barthélemy* «Études sur Jean Bodin» (Παρίσιοι 1876).—*Fournol* «Bodin, prédécesseur de Montesquieu» (1896).—*Brunetière* «Trois artisans de l'idéal classique» (ἐν τῇ «Ἐπιθεωρήσει τῶν Δύο Κόσμων» Μάρτιος 1907). Γ. Ζ.

**Μποντενζέε** (Bodensee) *[Γεωγρ.]*. Ἐπιτόπιος γερμανικὴ ὀνομασία τῆς λίμνης τῆς *Κωνσταντίας* (βλ. λ.).

**Μπόντενμπαχ** (Bodenbach) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας ἐν Βοημίᾳ, κειμένη παρὰ τὰ γερμανικὰ σύνορα, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἔλβα, ἔναντι τῆς πόλεως Τέσεν καὶ εἰς ἀπόστασιν 130 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς Πράγας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον μέσῳ τοῦ Ἔλβα καὶ ἔχει ἐργοστάσια μαλλίνων καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων καὶ χημικῶν προϊόντων. Κάτ. 13.110. Χ. Δ.

**Μποντένο** (Bondeno, λατ. Padinum) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Φερράρας τῆς Αἰμιλίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Πανάρο, 17,5 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Φερράρας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Δεσπόζει πλουσίας γεωργικῆς περιοχῆς. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπόντενστετ** (Bodenstedt), ***Φρειδερῖκος*** φόν. Γερμανὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1819—1892). Ἀφοῦ ἐσπούδασε φιλολογίαν, μετέβη (1841) ὡς παιδαγωγὸς τοῦ νεαροῦ πρίγκιπος Gallizin εἰς Μόσχαν, ὅπου ἐπεδόθη καὶ εἰς τὴν μελέτην τῶν σλαβικῶν γλωσσῶν καὶ ἐθίμων. Κατόπιν ἀφοῦ ἐταξίδευσεν εἰς Τιφλίδα, Ἀρμενίαν, Καύκασον, Κριμαίαν, Μικρὰν Ἀσίαν, Κωνσταντινούπολιν, ἐπέστρεψε (1847) εἰς Γερμανίαν, ὅπου εἶχε γίνει ἤδη γνωστὸς διὰ τῆς μεταφράσεως ποιημάτων τῶν Κάσλωφ, Πούσκιν καὶ Λερμοντὼφ (1843). Ἀφοῦ διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου καὶ διευθυντὴς τοῦ θεάτρου, ἐν Μάϊνιγεν, ἐταξίδευσεν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Χίλιαι καὶ μία ἡμέραι εἰς τὴν Ἀνατολὴν» (5η ἔκδ. 1891), «Τραγούδια τοῦ Μίρτσα Σάφφυ» (1851, 264η ἔκδ. 1917), τὸ ἀξιολογώτερον καὶ δημοτικώτερον ἐκ τῶν ἔργων του, τὸ ὁποῖον μετεφράσθη εἰς πλείστας γλώσσας, «Ποιήματα» (1852), «Ἀπὸ Ἀνατολὴν καὶ Δύσιν» (3η ἔκδ. 1887) κλπ. Ἐξέδωκεν ἐπίσης μετάφρασιν τραγουδιῶν τοῦ Χαφὶζ («Der Sänger von Schiras» 3η ἔκδ. 1884) καὶ ἔγραψε τραγῳδίας, κωμῳδίας, ἐπικὰ ποιήματα, διηγήματα καὶ μυθιστορήματα. Μετέφρασε πρὸς τούτοις τὰ «Σονέττα» (1862) καὶ μετ' ἄλλων τὰ δραματικὰ ἔργα τοῦ Σαίξπηρ (1866—1872, 1892). Γ. Ε. Κ.

**μπό(ν)τζι** (τό). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὰς ἀπὸ τοῦ σάλου τῆς θαλάσσης *διατοιχήσεις* κλυδωνιζομένου πλοίου || «βίρα-μπότζι» ἀναφώνημα παροτρυντικὸν πρὸς συγχρονισμὸν τῆς ἐξασκήσεως τῆς μυϊκῆς δυνάμεως, εἰς τὰς ἀνασπάσεις ἀγκύρας τοῦ παλαιοτέρου ναυτικοῦ. Τὸ ῥῆμα *μπο(ν)τζίρω*. Σ. Ε. Λ.

**Μποντζιοβάννι** (Bongiovanni, λατιν. Bonjohannes). Ἰταλὸς φιλόλογος (1712—1760). Μεταξὺ τῶν ἔργων του ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἑλληνικὰ σχόλια ἀνωνύμου συγγραφέως εἰς τὴν Ἰλιάδα τοῦ Ὁμήρου» (1740), «Ἑλληνικά, λατινικὰ καὶ ἰταλικὰ διπλώματα τῆς Μαρκιανῆς βιβλιοθήκης» (1740—1741), «Λεοντίου Μοναχοῦ ἐξ Ἱεροσολύμων παρατηρήσεις τινὲς ἐπὶ τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας». Γ. Ι. Ε.

**μπόντι** (Bodhi) *[Θρησκειολ.]*. Ὅρος ἐν τῇ βουδικῇ θρησκείᾳ, σημαίνων τὸν φωτισμόν, τὴν ἐσωτερικὴν ἀποκάλυψιν καὶ τὸ ἀποτέλεσμα αὐτοῦ, τὴν ὑψίστην γνῶσιν, τὴν κτῆσιν τῆς αἰωνίας ἀληθείας. Ἡ ὑψίστη αὐτὴ γνῶσις εἶναι ἀπὸ μακρῶν αἰώνων κτῆμα τῆς πνευματικῆς ἀριστοκρατίας τῶν Ἰνδιῶν καὶ ὡς περιεχόμενον ἔχει τὸ ἀξίωμα ὅτι ἡ ὕπαρξις εἶναι κακόν, πόνος, ὅστις ἐπαναλαμβάνεται αἰωνίως διὰ τῆς μετεμψυχώσεως (Σαμσάρα). Τὴν γνῶσιν τῆς αἰωνίας ταύτης ἀληθείας δέχεται ὁ Βούδας διὰ τῆς ἐκστάσεως, ἀπαλλασσόμενος τῶν ὁρίων τοῦ πεπερασμένου καὶ τῶν αἰσθήσεων καὶ εἰσδύων οὕτως εἰς τὴν κεκρυμμένην οὐσίαν τῶν ὄντων. Κατὰ τὴν στιγμὴν τοῦ φωτισμοῦ ἐπισκοπεῖ ὁλόκληρον τὴν πραγματικότητα καὶ διαβλέπει τὴν συνάρτησιν αἰτίων καὶ αἰτιατῶν, ἥτις ἀποτελεῖ τὴν οὐσίαν αὐτῆς· συγχρόνως ὅμως ἐνορᾷ καὶ τρόπον τῆς ἀπαλλαγῆς τοῦ ἀνθρώπου ἀπὸ τῆς ἀπεράντου διαδοχῆς αἰτίας καὶ ἀποτελέσματος. Ὁ πρότερον Μποντισάττβα (ἱκανὸς πρὸς φωτισμόν, ἐπιδεκτικὸς φωτισμοῦ) γίνεται νῦν Βούδας (φωτισθεὶς, ἀφυπνισθεὶς) διὰ τῆς προσλήψεως τῆς πλήρους γνώσεως (Σὰμ-μπόντι). Ἡ πλήρης αὐτὴ γνῶσις περιλαμβάνει οὐ μόνον τὴν γνῶσιν περὶ τῆς ὑπάρξεως ὡς κακοῦ, ἀλλὰ καὶ τὴν γνῶσιν τῆς ὀρθῆς ὁδοῦ πρὸς ἀπολύτρωσιν ἀπ' αὐτοῦ. Αἰτία τοῦ κακοῦ εἶναι ἡ ἐπανάληψις τῆς γεννήσεως, ἡ μετενσάρκωσις, ἡ δὲ θεραπεία καὶ ἡ ἀπαλλαγὴ ἀπ' αὐτοῦ συνίσταται εἰς τὴν πλήρη νέκρωσιν τῶν αἰσθήσεων, εἰς τὴν ἀποκοπὴν τῶν ῥιζῶν, αἵτινες συνέχουσιν ἡμᾶς πρὸς τὴν ζωήν. «Ἡ καρδία ἐλευθερωθεῖσα ἀπήλειψε πάντα πόθον καὶ πᾶσαν ὁρμήν» ψάλλει ἐν θριάμβῳ ἡ Νταμμαπάτα. Καὶ οἱ βουδισταὶ μοναχοὶ συνοψίζουσι τὸ μπόντι εἰς τὸ ἐπίγραμμα: «Τὰ πάντα πηγάζουν ἐκ μιᾶς αἰτίας· ταύτην ἀνεκάλυψεν ὁ διδάσκαλος· δι' αὐτοῦ ἤρθη τελειωτικῶς». Ν. Λ.

**Μποντιὰ** *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Παλιόπυργος* (βλ. λ.). —2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Μάλθη* (βλ. λ.).

**Μποντιάνσκι**, ***Ὀσὶπ-Μαξίμοβιτς***. Ρῶσος σλαβιστής, γεννηθεὶς τῷ 1808 ἐν Πολτάβᾳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1887. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας, οὗτινος ἐγένετο καθηγητής. Ἐδημοσίευσε πλείστας γλωσσολογικὰς καὶ ἐθνογραφικὰς μελέτας, ἐκ τῶν ὁποίων αἱ ἄρισται εἶναι: «Ἡ δημοτικὴ ποίησις τῶν σλαβικῶν λαῶν», «Πραγματεία περὶ τῆς προελεύσεως τῆς ρωσικῆς ἀλφαβήτου» κτλ. Θ. Ξ.

**Μποντινάϋα-Καυοὺρ** (Bondinaya) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἀγγλικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα μικροῦ ὁμωνύμου κράτους εἰς τὸ στενὸν τοῦ Πανὰφ. Κάτ. 22.750. Τὸ πριγκιπᾶτον τοῦ *Μποντινάϋα* ἔχει 295.000 κατ. Δι' αὐτοῦ διέρχονται αἱ ὁδοὶ συγκοινωνίας μεταξὺ τῶν βορείων καὶ τῶν νοτίων Ἰ-

Digitized by Google

διῶν. Διοικεῖται ὑπὸ ῥατζᾶ. Ἀπὸ τοῦ 1818 ὑπήχθη ὑπὸ τὴν ἀγγλικὴν προστασίαν. Π. Γ. Λ.

**Μπόντιο** (Bodio), ***Λουδοβῖκος***. Ἰταλὸς στατιστικὸς καὶ οἰκονομολόγος (1840—1920). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἐν τῷ «Instituso tecnico» τοῦ Λιβόρνου καὶ τοῦ Μιλάνου καὶ εἶτα ἐν τῇ σχολῇ ἀνωτέρων ἐμπορικῶν σπουδῶν τῆς Βενετίας. Ἀκολούθως διωρίσθη διευθυντὴς τῆς στατιστικῆς ὑπηρεσίας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1901 διευθυντὴς τοῦ τότε ἱδρυθέντος γραφείου μεταναστεύσεων. Ἐκλεγεὶς τῷ 1885 γενικὸς γραμματεὺς τοῦ διεθνοῦς ἰνστιτούτου στατιστικῆς, ἐγένετο πρόεδρος αὐτοῦ τῷ 1909, θεωρούμενος ὡς μία ἐκ τῶν μεγαλυτέρων αὐθεντιῶν τῆς ἐπιστήμης του. Ἔγραψε: «Τὸ ἐξωτερικόν, χερσαῖον καὶ θαλάσσιον ἐμπόριον τῆς Ἰταλίας κατὰ τὰ ἔτη 1862—1863» (Φλωρεντία 1865), «Αἱ σχέσεις τῆς στατιστικῆς πρὸς τὴν πολιτικὴν οἰκονομίαν καὶ τὰς λοιπὰς συγγενεῖς ἐπιστήμας» (Μιλᾶνον 1869), «Περὶ τῶν δημοσίων ἐσόδων καὶ χρεῶν» (Μιλᾶνον 1869), «Περὶ τῆς κινήσεως τοῦ πληθυσμοῦ τῆς Ἰταλίας καὶ ἄλλων εὐρωπαϊκῶν χωρῶν» (Ρώμη 1876), «Οἰκονομικαί τινες ἐνδείξεις τῆς ἐν Ἰταλίᾳ οἰκονομικῆς κινήσεως» (Ρώμη 1891), «Ἡ ἰταλικὴ μετανάστευσις καὶ τὰ χάριν τῶν μεταναστῶν προστατευτικὰ μέτρα» (Γένουα 1894) κ. ἄ. Α. Δ.

**Μποντιόλι** (Bondioli), ***Πέτρος-Ἀντώνιος***. Διαπρεπὴς Ἰταλὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ (1765 1808). Ἐσπούδασεν ἐν Παδούῃ καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φαρμακολογίας ἐν Βολωνίᾳ καὶ τῆς ἰατρικῆς κριτικῆς ἐν Παδούῃ. Ἐπολέμησε τὰς θεωρίας τοῦ Brοwn καὶ ὑπεστήριξε τὸ ἀνεξάρτητον τῶν μορφῶν τῶν νόσων ἐκ τῶν ὀργανικῶν διαθέσεων. Τὰ κυριώτερά του ἔργα πραγματεύονται περὶ τοῦ βορείου σέλαος, περὶ μιᾶς θεωρίας τοῦ ἤχου, βασιζομένης ἐπὶ τῆς ὑφῆς τοῦ ἐγκεφάλου, περὶ τῶν μέσων τῆς ἐξακριβώσεως τῶν ποιοτήτων τῶν φαρμάκων ὡς καὶ περὶ μαλάξεως καὶ ἠλεκτρισμοῦ ἐν τῇ ἰατρικῇ. Ο. Ρ.

**Μποντισάττβας** (Bodhisattvas) *[Ἰνδ. Μυθολ.]*. Ἡ λέξις σύγκειται ἐκ τοῦ bodhi=γνῶσις, σοφία, καὶ «sattva»=ἰδιότης· ὅθεν μποτισάττβα σημαίνει τὸν ἔχοντα τὴν ἰδιότητα τῆς σοφίας, τῆς γνώσεως. Οἱ Μποντισάττβας εἶναι τέλεια ὄντα, ἀνώτερα τῶν θεῶν, ἐπιδιώκοντα νὰ καταλάβωσι θέσιν ὁμοίαν πρὸς τὴν τοῦ Βούδα, ἣν πράγματι θ' ἀποκτήσωσιν ἐν τελευταίᾳ τινὶ ἐνσαρκώσει ὑπὸ ἀνθρωπίνην μορφήν. Κατοικοῦν εἰς τὸν οὐρανόν, εἶναι παντοδύναμοι καὶ πάντοτε πρόθυμοι νὰ παράσχωσιν ἠθικὴν καὶ ὑλικὴν βοήθειαν εἰς τοὺς ἀνθρώπους. Διαιροῦνται εἰς δύο κατηγορίας: εἰς τοὺς ἀνθρωπίνους Μποντισάττβας, παλαιοὺς μαθητὰς τοῦ Σάκυα-Μούνι (Βούδα), ἱερεῖς ἁγίους, ἱδρυτὰς αἱρέσεων, καὶ εἰς τοὺς οὐρανίους Μποντισάττβας, οἵτινες εἶναι ὄντα φανταστικά. Α.Δ.

**Μπόντλεϋ** (Bodley), *σὲρ* ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος διπλωμάτης καὶ λόγιος (1546—1613). Ἐσπούδασεν ἐν Γενεύῃ καὶ εἶτα εἰς Ὀξφόρδην, μετὰ δὲ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν περιηγήθη τὴν Εὐρώπην καὶ ἐπανελθὼν εἰσήχθη εἰς τὴν αὐλήν, ἐπιφορτισθεὶς ἔκτοτε διὰ διαφόρων εἰς Εὐρώπην ἀποστολῶν. Οὕτω τῷ 1585 ἐνετάλη ὅπως ἐνεργήσῃ διὰ τὴν σύμπηξιν συμμαχίας μεταξὺ Φρειδερίκου Β' τῆς Δανίας καὶ τινων Γερμανῶν ἡγεμόνων πρὸς ὑποστήριξιν τοῦ Ἐρρίκου τῆς Ναβάρρας. Τῷ 1588 ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Χάγην. Τὸ ὄνομά του ἔγινε ἰδίως γνωστὸν ἐκ τῆς φερούσης τὸ ὄνομά του βιβλιοθήκης (Boldeiar library) ἐν Ὀξφόρδῃ, εἰς ἣν καὶ κατέλιπε τὸ πλεῖστον τῆς περιουσίας του. Ἀνεκαίνισεν ἐπίσης δι' ἰδίων ἐξόδων τὸ παλαιὸν πανεπιστημιακὸν κτήριον. Ἔγραψεν αὐτοβιογραφίαν του, ἥτις ἐδημοσιεύθη τῷ 1703 ὑπὸ τοῦ Θωμᾶ Χήρν. Γ. Ι. Β.

**Μπόντμερ** (Bodmer), ***Γεώργιος***. Ἑλβετὸς μηχανικὸς ἐν Ζυρίχῃ (1786—1864). Ἔζησεν εἰς τὰ μεγάλα βιομηχανικὰ κέντρα τῆς Ἑλβετίας, Γερμανίας καὶ Ἀγγλίας, ὅπου διηύθυνε κατὰ καιροὺς διάφορα ἐργοστάσια κατασκευῆς ὅπλων, νηματουργίας κτλ. καὶ ἐπενόησε πολλοὺς (ἐξήκοντα περίπου) νέους τύπους μηχανῶν καὶ τελειοποιήσεις αὐτῶν. Εἰσήγαγεν ἐν Μάντσεστερ νέον σύστημα ὑφάνσεως τῶν βαμβακερῶν ὑφασμάτων τὸ ὁποῖον προὐκάλεσεν ἐπανάστασιν εἰς τὴν βιομηχανίαν (1824), ἐτελειοποίησε τὰς διατρητικὰς μηχανὰς καὶ τὰ ἔλαστρα τῶν χαλυβουργείων, κατεσκεύασε σιδηροδρόμους καὶ γενικῶς μεγάλως συνέβαλεν εἰς τὴν πρόοδον τῆς βιομηχανίας. Χ. Δ.

— **Μπόντμερ** (Bodmer), ***Ἰωάννης - Ἰάκωβος***. Ἑλβετὸς λογοτέχνης καὶ ποιητὴς ἐκ Γκράϊνφεζεε παρὰ τὴν Ζυρίχην (1698—1783). Ἐδίδαξεν ἀπὸ τοῦ 1725 μέχρι τοῦ 1775 ἱστορίαν ἐν Ζυρίχῃ, ὅπου ἐγένετο μέλος τοῦ μεγάλου τῆς πόλεως συμβουλίου, καὶ εἰργάσθη ὡς δημοσιογράφος καὶ κριτικὸς διὰ τὴν δημιουργίαν πρωτοτύπου γερμανικῆς λογοτεχνικῆς κινήσεως, ἀπηλλαγμένης τῶν ξενικῶν ἐπιδράσεων. Κυριώτερος ἀντίπαλός του εἰς τὸν τελευταῖον τοῦτον ἀγῶνα ἦτο ὁ Γκόττσεχτ. Κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Noachide» (1752) ποίημα μετρίας ἀξίας, ἀποτελούμενον ἐκ 12 ᾀσμάτων, «Κριτικαὶ ἐπιστολαὶ» (1746), πολλὰ ἐπικὰ ποιήματα μὲ θέματα εἰλημμένα κατὰ τὸ πλεῖστον ἐκ τῆς Γραφῆς, ἱστορικά τινα δράματα («Γάϊος Γράκχος», «Γουλιέλμος Τέλλος» κ. ἄ.), μεταφράσεις διάφοροι, ἐν αἷς καὶ τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν κτλ. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης σειρὰν τόμων ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἑλβετικὴ βιβλιοθήκη» καὶ συλλογὴν τῶν ἔργων τῶν Γερμανῶν τρουβαδούρων (μιννεζίνγκερ). Χ. Δ.

**Μπόντμιν** (Bodmin) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ Κορνουώλλης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κάμελ, 48 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Πλυμούθης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ὡραῖον γοτθικὸν ναὸν καὶ παλαιὰν σχολήν, εἶναι δὲ κέντρον βιομηχανίας ὑποδημάτων, ἐρίου κλπ. Κάτ. 5.734. Χ. Δ.

**Μποντόνι** (Bodoni), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Περίφημος Ἰταλὸς τυπογράφος καὶ χαράκτης τυπογραφικῶν χαρακτήρων (1740—1813). Καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας τυπογράφων, ἐμυήθη ἐνωρὶς καὶ προσελήφθη εἰς ἡλικίαν 18 ἐτῶν ὡς στοιχειοθέτης εἰς τὸ περίφημον ἐν Ρώμῃ τυπογραφεῖον τῆς «Προπαγάνδας». Ἐκεῖ ἠσχολήθη ἰδιαιτέρως μὲ τὴν μελέτην τῶν ἀνατολικῶν χαρακτήρων καὶ ἀφωσιώθη εἰς τὴν συμπλήρωσιν αὐτῶν. Τῷ 1768 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ τότε ἱδρυθέντος ἐν Πάρμῃ ὑπὸ τοῦ δουκὸς Φερδινάνδου Βασιλικοῦ τυπογραφείου καὶ κατέβαλε μεγάλας προσπαθείας, ὅπως καταστήσῃ αὐτὸ πρότυπον ἵδρυμα τοῦ εἴδους του. Ἰδιαιτέρως διεκρίθη διὰ τὴν σπανίαν ἐπιδεξιότητά του ὡς χαράκτου τυπογραφικῶν στοιχείων. Τῷ 1788 ἐδημοσίευσε συλλογὴν (Manuale tipografico) ἐξ 178 δειγμάτων τῶν ὑπ' αὐτοῦ σχεδιασθέντων τυπογραφικῶν χαρακτήρων, τύπου ρωμαϊκῶν, κυρτῶν καὶ ἑλληνικῶν. Μετὰ τριετίαν ἐπεδόθη εἰς τὴν ἐκτύπωσιν μακρᾶς σειρᾶς ἔργων, τῶν ὁποίων ἡ ἐμφάνισις ἀποτελεῖ πρότυπον δεῖγμα τυπογραφικῆς τέχνης. Ἐκ τούτων κάλλιστα εἶναι: ὁ Ὁράτιος (1791), ὁ Βιργίλιος (1793), ἀμφότερα εἰς φύλλον, «Ἡ ἀπελευθερωθεῖσα Ἱερουσαλὴμ» τοῦ Τάσσου (1794), ἡ Κυριακὴ προσευχὴ (1806) εἰς 155 γλώσσας, ὁ Ὅμηρος (1808) διὰ μεγάλων τυπογραφικῶν χαρακτήρων εἰς 3 τόμους σχήματος μεγάλου τετάρτου, ἀναμεμφθὲν δι' ἐπιχορηγήσεως ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος, «Ὁ Τηλέμαχος» τοῦ Φενελὸν (1812) κ. ἄ. Ἔλαβε παρὰ τοῦ δουκὸς τῆς Πάρμης τίτλον εὐγενείας καὶ ὠνομάσθη πρῶτος τυπογράφος τῆς ἱσπανικῆς αὐλῆς, ἐκόπη δὲ καὶ μετάλλιον πρὸς τιμὴν αὐτοῦ τῷ 1804. Ἐπίσης τῷ 1806 ἐβραβεύθη διὰ χρυσοῦ μεταλλίου ἐν τῇ ἐκθέσει τῶν Παρισίων. Προτομὴ αὐτοῦ ἐναπόκειται εἰς τὸ Πάνθεον. Α. Δ.

**Μποντοῦ** (Bondou) *[Γεωγρ.]*. Κράτος τῆς Σενεγάλης ὑπὸ ἰθαγενῆ βασιλέα. Συνορεύει πρὸς νότον μὲ τὸν ποταμὸν Σενεγάλην καὶ πρὸς βορρᾶν μὲ τὸν ποταμὸν Γκάμβια. Εἶναι κατ' ἐξοχὴν εὔφορος χώρα καὶ παράγει δημητριακά, καπνὸν καὶ βάμβακα. Ἔχει μεταλλεῖα χρυσοῦ καὶ σιδήρου. Οἱ Γάλλοι εἰσέδυσαν τὸ πρῶτον κατὰ τὸ 1845, περιῆλθε δὲ ὑπὸ τὴν προστασίαν των τῷ 1858. Πρωτεύουσα ἡ *Μπαλιμάλη*. Π. Γ. Λ.

**Μπόντσεφ**, ***Νέσιο***. Βούλγαρος κριτικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς εἰς Παναγιούριστε (1839—1878). Ἐσπούδασεν ἱστορίαν καὶ φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας (1867) καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης. Ἐδημοσίευσε πολλὰς μελέτας του εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ μετέφρασε τὸν «Ταρὰς Μπούλμπα» τοῦ Γκόγκολ καὶ τοὺς «Λῃστὰς» τοῦ Σίλλερ. Τ. Β.

**Μπόντφιλντ** (Bondfield), ***Μαργαρίτα***. Ἀγγλὶς πολιτικός, μέλος τοῦ σοσιαλσυνδικαλιστικοῦ κόμματος, γεννηθεῖσα τῷ 1873. Ὑπηρέτησεν ὡς ὑπάλληλος εἰς ὑφασματεμπορεῖον ἐν Μπράϊτον, εἶτα μετέβη εἰς Λονδῖνον καὶ τῷ 1898 ἐγένετο πάρεδρος γραμματεὺς τῆς Ἑνώσεως τῶν Ἐμποροϋπαλλήλων. Κατὰ τὸ συνέδριον τῶν ἐργατικῶν ἑνώσεων τοῦ 1899 ἦτο ἡ μόνη γυνὴ ἀντιπρόσωπος. Τῷ 1906 ἐξελέγη μόνιμος γραμματεὺς τοῦ γυναικείου συνδέσμου Ἐργασίας. Ἀπὸ τοῦ 1913—1921 διετέλεσε μέλος τοῦ διοικητικοῦ συμβουλίου τοῦ ἀνεξαρτήτου ἐργατικοῦ κόμματος. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου συνειργάσθη μετὰ τῆς γραμματέως τῆς ἐθνικῆς ὁμοσπονδίας τῶν ἐργατριῶν Μαρίας Μακάρθουρ, μετὰ τὸν θάνατον τῆς ὁποίας (1921) ἐγένετο γραμματεὺς τῆς ὁμοσπονδίας. Τῷ 1923 ἐξελέγη μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων καὶ ἐν τῇ ἐργατικῇ κυβερνήσει τοῦ 1923—1924 διωρίσθη ὑφυπουργὸς τῆς Ἐργασίας. Γ. Ι. Β.

**μπονώρα**, ἢ ***μπονόρα***· ἐπίρρ., ἐνωρίς, λίαν πρωΐ: «ἔφυγε μπονώρα», «νά 'ρθῃς μπονώρα - μπονώρα» (ἰταλ. buon' ora).

**μποξ** (τὸ) (boxing) *[Ἀθλητ.]*. Ὅρος ἀγγλικὸς χρησιμοποιούμενος διεθνῶς, δι' οὗ δηλοῦται τὸ ἀθλητικὸν ἀγώνισμα *πυγμαχία* (βλ. λ.).

**μποξᾶς** (ὁ)· δημοτ., τετράγωνον ὕφασμα πρὸς ἐπικάλυψιν ἢ περιτύλιξιν πράγματος ἢ πραγμάτων τινῶν: «τύλιξέ τα 'ς ἕνα μποξᾶ καὶ πάρ' ε τα» || τὸ σύνολον τῶν πραγμάτων καὶ ἰδίᾳ ἐνδυμάτων, τὰ ὁποῖα περιτυλίσσει τις ἢ μεταφέρει ἐντὸς τοῦ μποξᾶ, ἄλλως *μπόγος*: «ἔφερε ἕνα μποξᾶ ροῦχα» || τὸ δι' οὗ τυλίσσονται ἰδίᾳ αἱ γυναῖκες ἀπὸ τοῦ λαιμοῦ μέχρι τῆς ὀσφύος, ἄλλως *σάλι*· || καπνὸς κοπτόμενος ἐν Τουρκίᾳ κατὰ τὸ σύστημα τὸ λεγόμενον φέτα (τουρκ. bohça).

**Μπόξερς** (οἱ) (Boxers). Ὄνομα δοθὲν εἰς τὰ μέλη μιᾶς τῶν πολυαρίθμων ἐν Κίνᾳ μυστικῶν ὀργανώσεων, αἵτινες διωργανώθησαν κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΘ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ' αἰῶνος κατὰ τῶν ξένων. Ὠνομάσθησαν οὕτω κατὰ παράφρασιν τοῦ σινικοῦ ὀνόματος Ἄϊ-Χὸ-Τουὰν ἢ Ἄϊ-Χὸ-Τσουὰν (=Ἑταῖροι ἢ πυγμάχοι τῆς νομίμου ἁρμονίας). Ἐν τῶν κυριωτέρων ἐμβλημάτων τῶν Μπόξερς ἦτο: «Ἄμυνα τῆς χώρας, καταστροφὴ τῶν ξένων». Ἀπὸ τοῦ φθινοπώρου τοῦ 1899 οἱ Μπόξερς ἤρχισαν τὴν καταδίωξιν τῶν Χριστιανῶν. Τὸ αὐτὸ ἔτος ἐφόνευσαν Ἄγγλον ἱεραπόστολον καὶ τὸν Ἰούνιον τοῦ 1900, κατόπιν ἀνεπιτυχοῦς ἀποπείρας τῶν εὐρωπαϊκῶν Δυνάμεων νὰ ἐνισχύσωσι τὰ στρατεύματα των ἐν Πεκίνῳ καὶ ἰδίως ὅταν οἱ Εὐρωπαῖοι κατέλαβον ὀχυρώματά τινα, οἱ Μπόξερς ἐνήργησαν γενικωτέραν ἐπίθεσιν κατὰ τῶν ξένων. Τότε ἐφονεύθη ὁ Γερμανὸς πρεσβευτὴς Κέττελερ, 135 ἱεραπόστολοι καὶ περὶ τοὺς 16.000 Χριστιανοὶ Κινέζοι (βλ. λ. *Κίνα [Ἱστορ.]*). Γ. Ι. Β.

**Μπόξτελ** (Boxtel) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ὁλλανδίας ἐν τῷ νομῷ Β. Βραβάντης, κειμένη 11 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Χερτόγκενμπος. Ἔχει βιομηχανίας χάρτου καὶ λίνου. Παρ' αὐτὴν τὴν 17 Σεπτεμβρίου 1794 οἱ Γάλλοι ἐνίκησαν τὰ ἀγγλο-ὁλλανδικὰ στρατεύματα τοῦ δουκὸς τῆς Ὑόρκης. Κάτ. 8.256. Χ. Δ.

**Μπόουεν** (Bowen), *σὲρ* ***Γεώργιος-Φέργκυσον***. Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ ἀνώτερος διοικητικὸς ὑπάλληλος (1821—1899). Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ, κατόπιν διετέλεσε πρύτανις τῆς Ἰονίου Ἀκαδημίας ἐν Κερκύρᾳ, βραδύτερον δὲ γενικὸς γραμματεὺς τῆς κυβερνήσεως τῆς Ἰονίου πολιτείας (1851). Ἐχρημάτισε διοικητὴς τῆς Κουΐνσλαντ τῆς Αὐστραλίας (1859), τῆς Νέας Ζηλανδίας (1868), ὅπου ἐτερμάτισε τὸν πόλεμον ἐναντίον τῶν Μαόρι, τῆς Βικτωρίας, τῆς νήσου τοῦ Μαυρικίου καὶ τοῦ Χόγκ-Κόγκ. Τῷ 1888 διωρίσθη βασιλικὸς ἐπίτροπος, ἵνα ἐφαρμόσῃ εἰς τὴν νῆσον Μάλταν τὸ νέον Σύνταγμα. Ἔγραψεν: «Ἡ Ἰθάκη τῷ 1850». «Ἐγχειρίδιον περὶ τῆς Ἑλλάδος» (1854, 6η ἐκδ. 1896), «Ἄθως, Θεσσαλία καὶ Ἤπειρος» (1852), «Αὐτοκρατορικὴ ὁμοσπονδία» (1886) καὶ «Τριάκοντα ἔτη διοικήσεως ἐν ταῖς ἀποικίαις» (1889). Α. Δ.

— **Μπόουεν** (Cowen), ***νόσος τοῦ*** — *[Δερματ.]* βλ. λ. *δυσκερατίασις*.

**Μποπ** (Boppe), ***Λουκιανός***. Γάλλος δασολόγος (1834—1907). Διετέλεσε καθηγητὴς καὶ εἶτα διευθυντὴς τῆς δασοκομικῆς σχολῆς τοῦ Νανσύ, ἀνέλαβε πλείστας δασολογικὰς ἀποστολὰς εἰς τὸ ἐξωτερικὸν καὶ ἀνεδείχθη διὰ τῶν ἐργασιῶν καὶ τῶν συγγραμμάτων αὐτοῦ ἀληθὴς αὐθεντία ἐν τῷ κλάδῳ του. Ἔγραψε: «Δασοκομικαὶ ἀποστολαὶ εἰς τὸ ἐξωτερικὸν (Μεγάλην Βρεττανίαν, Αὐστρίαν καὶ Βαυαρίαν)» (Παρίσιοι 1886), «Μαθήματα δασικῆς τεχνολογίας» (1886), «Δοκίμιον δασοκομίας» (1889), «Θήρα καὶ ἁλιεία ἐν Γαλλίᾳ» (1900), καὶ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ζολυὲ «Τὰ δάση» (1900). Χ. Δ.

**Μποπάλ** (Bhopal) *[Γεωγρ.]*. —1) Τὸ κυριώτερον ἰθαγενὲς κράτος τῶν κεντρικῶν Ἰνδιῶν, ἔχον ἔκτασιν 17.500 περίπου τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1921) 692.448 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν. Ἱδρύθη τῷ 1723 ὑπὸ τοῦ Ντὸστ Μωχαμέτ, Ἀφγανοῦ τυχοδιώκτου, ἀνωτέρου ἀξιωματικοῦ τοῦ Αουράνγκζεμπ. Τούτου οἱ διάδοχοι ἠνώνησαν καὶ συνέτεξαν σημαντικῶς τὴν βρεττανικὴν ἐν Ἰνδίαις ἐγκατάστασιν, ἐπέτυχον δὲ εἰς ἀνταμοιβὴν συνθήκην μετὰ τῶν Βρεττανῶν (1817), δυνάμει τῆς ὁποίας ἀνεγνωρίζετο ἡ αὐτονομία τῆς χώρας των. Ὁ μαχαραγιὰς τοῦ Μποπὰλ φέρει τὴν προσωνυμίαν «μπεγκοὺν» καὶ ἀπολαύει τῆς τιμῆς τοῦ χαιρετισμοῦ διὰ 19 κανονιοβολισμῶν. Διοικητικῶς ἡ ἡγεμονία ἀποτελεῖ μετὰ 16 ἑτέρων μικρῶν κρατιδίων ὁμώνυμον αὐτῇ τοπαρχίαν, ὑπαγομένην ὑπὸ τὴν γενικὴν τοπαρχίαν τῶν Κεντρικῶν Ἰνδιῶν (Central India Agency), διοικεῖται δὲ ὑπὸ Βρεττανοῦ πράκτορος ὑπαγομένου ὑπὸ τὸν γενικὸν πράκτορα τῶν Κεντρικῶν Ἰνδιῶν, ὅστις ἐπίσης τελεῖ ἀπ' εὐθείας ὑπὸ τὰς διαταγὰς καὶ τὸν ἔλεγχον τοῦ ἀντιβασιλέως. Ἡ τοπαρχία ἔχει ἔκτασιν 29.000 περίπου τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 1.357.300 κατ. καὶ πρωτεύουσαν ἐπίσης τὴν πόλιν *Μποπάλ*. Τὸ ἔδαφος τῆς χώρας εἶναι ὀρεινόν, καλυπτόμενον κατὰ μέγα μέρος ὑπὸ τῶν ὀρέων Βιντυα, ἀλλὰ σχηματίζει πολλὰς εὐφόρους πεδιάδας καὶ κοιλάδας, καλῶς ἀρδευομένας ὑπὸ πλήθους ποταμῶν.

—2) Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου κράτους καὶ τῆς τοπαρχίας. Κεῖται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τοῦ Τζάνσι καὶ ἔχει ἀνάκτορον τοῦ ἡγεμόνος, δύο μουσουλμανικὰ τεμένη, στρατῶνας κλπ., ὑδρεύεται δὲ καλῶς ἀπὸ

Digitized by Google

δύο λιμνῶν κειμένων ἐγγύτατα καὶ νοτιοδυτικῶς αὐτῆς. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον ὀπίου. Κάτοικοι 56.200, ἐξ ὧν ὑπὲρ τὰ $^2/_3$ Μωαμεθανοί. Χ. Δ.

**Μπὸπп** (Bopp), ***Φραγκῖσκος***. Διάσημος Γερμανὸς γλωσσολόγος (1791—1867). Τῷ 1812 μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν φιλολογικῶν σπουδῶν του μετέβη εἰς Παρισίους δαπάναις τῆς βαυαρικῆς κυβερνήσεως. Εἰς τὴν πόλιν ταύτην, ἥτις ἦτο τότε τὸ κέντρον τῶν ἀνατολικῶν σπουδῶν, ἐξέμαθε τὴν Ἀραβικήν, τὴν Περσικὴν καὶ τὴν Σανσκριτικήν, τὴν τελευταίαν δι' ἰδίας μελέτης. Μετὰ τέσσαρα ἔτη (1816) ἐδημοσίευσε τὸ πολύκροτον ἔργον του «Περὶ τοῦ κλιτικοῦ συστήματος τοῦ ῥήματος τῆς Σανσκριτικῆς ἐν παραβολῇ πρὸς τὸ τῆς Ἑλληνικῆς, Λατινικῆς, Περσικῆς καὶ Γερμανικῆς», ἐπισυνῆψε δ' εἰς αὐτὸ καὶ ἐκλεκτὰ μέρη ἐκ τῶν μεγάλων ἰνδικῶν ποιημάτων: τῆς «Μαχαβαράτας» καὶ τῆς «Ραμαϊάνας» μετὰ μεταφράσεως, καθὼς καὶ ἀποσπάσματα ἐκ τῶν ἔτι παλαιοτέρων ἰνδικῶν ὕμνων τοῦ Rig-veda. Βραδύτερον περιέλαβεν εἰς τὸν κύκλον τῶν μελετῶν του καὶ τὴν Σλαβικήν, τὴν Λιθουανικήν, τὴν Ἀρμενικήν, τὴν Ἀλβανικὴν καὶ τὴν Κελτικήν. Διὰ τῶν ἐρευνῶν του τούτων ὁ Μπὸππ ἀπέδειξε πασιφανῶς τὴν συγγένειαν τῶν εἰρημένων γλωσσῶν καὶ κατέστη ὁ ἱδρυτὴς τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας καὶ ἐν γένει τῆς ἐπιστήμης τῆς γλώσσης. Τῷ 1825 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γενικῆς γλωσσολογίας καὶ τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου. Τὸ κύριον ἔργον του εἶναι ἡ «Συγκριτικὴ γραμματικὴ τῆς Σανσκριτικῆς, Ζενδικῆς, Ἑλληνικῆς, Λατινικῆς, Λιθουανικῆς, Παλαιοσλαβικῆς, Γοτθικῆς καὶ Γερμανικῆς» (I—VI, Βερολῖνον 1835—1852, γ' ἔκδ. I—III, 1868—1871), μεταφρασθὲν καὶ εἰς τὴν ἀγγλικὴν καὶ γαλλικήν. Τῷ 1834 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον του «Kritische Grammatik der Sanskrita-Sprache in kürzerer Fassung» (δ' ἔκδ. 1868). Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσεν εἰδικὰς πραγματείας περὶ τῶν κελτικῶν γλωσσῶν (1839), περὶ τῆς γλώσσης τῶν ἀρχαίων Πρώσσων (853), ἐκδόσεις διαφόρων σανσκριτικῶν κειμένων κλπ. Διὰ τῶν ἔργων τούτων ηὔρυνε τὰ μέγιστα τὸν ὁρίζοντα τῶν γλωσσικῶν μελετῶν καὶ ἐθεμελίωσε τὴν ὀρθὴν μέθοδον τῆς γλωσσικῆς ἐπιστήμης.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ *Lefmann*, Franz Bopp (1891—1895). — *Th. Benfey*, Geschichte der Sprachwissenschaft und orientalischen Philologie in Deutschland (München 1869). Γ. Π. Α.

**Μπόππαρντ** (Boppard) *[Γεωγρ.]*. Ἱστορικὴ πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Ρηνανίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ρήνου, 16 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Κόμπλεντς. Κάτ. 6.516. Διεξάγει ἐμπόριον ὀπωρῶν καὶ οἴνου, τῶν ὁποίων ἄφθονος εἶναι ἡ ἐν τοῖς πέριξ παραγωγή, ἔχει δὲ ἀρκετὴν κίνησιν τῶν ξένων λόγῳ τῶν πλησίον αὐτῆς κειμένων ὑδροθεραπευτικῶν ἐγκαταστάσεων τοῦ Μαρίενμπεργκ. Ἔχει δύο ὡραίους ναοὺς καὶ παλαιὸν φρούριον τῶν ἐκλεκτόρων τῆς Τρέβης, σῴζονται δ' ἐν αὐτῇ ἐπίσης ἀρκετὰ ἴχνη μεσαιωνικῶν ὀχυρώσεων. Ἡ Μπόππαρντ, ὑφισταμένη ἀπὸ τῶν πρὸ τῆς καταλήψεως τῆς Γερμανίας ὑπὸ τῶν Ρωμαίων χρόνων ὡς κελτικὴ πόλις, ἔπαιξε σπουδαιότατον ἐν τῇ ἱστορίᾳ ρόλον ἰδίως κατὰ τὸν μεσαίωνα, ὁπότε ἦτο ἐπὶ μακρὸν ἡ ἕδρα τῶν ἐκλεκτόρων τῆς Τρέβης. Ἀπὸ τοῦ 1815 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Πρώσσων. Χ. Δ.

**μπὸρ** (τό, ἄκλιτον)· δημοτ., ἡ ἐξέχουσα περιφέρεια τοῦ καπέλλου: «καπέλλο μὲ μπὸρ πλατύ, — στενό» (γαλλ. bord).

**Μπὸρ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ὑποδιοικήσεως ἐν τῷ νομῷ Ἰκονίου. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν κατῳκεῖτο ἀποκλειστικῶς ὑπὸ Ἑλλήνων, οἵτινες διετήρουν ἀρτίως λειτουργοῦντα ἐκπαιδευτήρια. Κ. Λ.

**—Μπὸρ** (Bhor) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ τοπαρχίᾳ Πούνα τῆς Βομβάης, ἐν τῇ περιοχῇ τῆς ὀροσειρᾶς τῶν Δυτικῶν Γκάτς. Ἔχει ἔκτασιν 2.400 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 138.000 καὶ πρωτεύουσαν ὁμώνυμον πόλιν (κάτ. 4.000). Τὸ ἔδαφος, καλῶς καλλιεργούμενον, παράγει ὄρυζαν καὶ σιτηρά. Τὸ Μπὸρ ἐξυπηρετεῖται συγκοινωνιακῶς διὰ τῆς διασχιζούσης αὐτὸ μεγάλης σιδηροδρομικῆς γραμμῆς τῆς Ἰνδικῆς χερσονήσου. Ἐν αὐτῷ κεῖται ἡ πολλῆς στρατηγικῆς σημασίας δίοδος *Μπὸρ Γκάτ*, δι' ἧς καὶ μόνης ἐπικοινωνεῖ τὸ Ντεκκὰν μετὰ τῆς παραλίας. Χ. Δ.

**Μπὸρ** (Bohr), ***Νὶλς***. Δανὸς φυσικός, γεννηθεὶς τῷ 1885. Τὸ 1913 διωρίσθη ὑφηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κοπεγχάγης καὶ τῷ 1916 τακτικὸς καθηγητής. Ὁ Μπὸρ κατέστη διεθνῶς γνωστὸς διὰ τῆς περιφήμου *ἀτομικῆς θεωρίας*, ἣν διετύπωσε τῷ 1913 καὶ ἥτις ἀποτελεῖ συνδυασμὸν τοῦ μέχρι τότε ὑπάρχοντος ὑποδείγματος ἀτόμου τοῦ Ρούδερφοντ καὶ τῆς θεωρίας τῶν κβάντα. Διὰ τοῦ ἐπιτυχοῦς τούτου συνδυασμοῦ κατώρθωσε θεωρητικῶς νὰ ἑρμηνεύσῃ τὴν γένεσιν τῶν φασμάτων, ἥτις δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ ἑρμηνευθῇ πρότερον διὰ τῆς ἀτομικῆς θεωρίας τοῦ Ρούδερφορντ. Οὗτος παρεδέχετο ὅτι τὸ ὑλικὸν ἄτομον ἀποτελεῖται ἐκ πυρῆνος, ὅστις φέρει τὸ θετικὸν φορτίον τοῦ ἀτόμου, τὸ μέγεθος δὲ τοῦ φορτίου τούτου εἰς ἠλεκτρικὰ κβάντα παρέχεται ὑπὸ τοῦ ἀτομικοῦ ἀριθμοῦ τῶν στοιχείων. Περὶ τὸν πυρῆνα περιφέρονται ἠλεκτρόνια, ὧν ὁ ἀριθμὸς ἰσοῦται πρὸς τὸν ἀτομικὸν ἀριθμὸν τῶν ἀτόμων, εἰς τρόπον ὥστε τὸ ὁλικὸν φορτίον αὐτῶν νὰ ἐξουδετερώνῃ τὸ θετικὸν φορτίον τοῦ πυρῆνος καὶ τὸ ἄτομον νὰ ἐμφανίζεται οὐδέτερον.

Ὁ Ρούδερφορντ εἰς οὐδένα περιορισμὸν ὑπέβαλε τὰς ἠλεκτρονικὰς τροχιάς, ἦτο δὲ ἀδύνατον ἁπλῶς ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ἀνωτέρω ὑποδείγματος ἀτόμου, ὅπερ εἶναι καθ' ὅλα ὅμοιον πρὸς πλανητικὸν σύστημα, νὰ ἐξηγηθῇ ἡ γένεσις τῶν φασματικῶν γραμμῶν, ὡς καὶ ἡ ἀνεύρεσις τοῦ περιφήμου ἐν τῇ φασματοσκοπίᾳ ἐμπειρικοῦ τύπου τοῦ Balmer, τοῦ παρέχοντος τὸν νόμον τῆς διανομῆς τῶν φασματικῶν γραμμῶν ἐν τῷ φάσματι. Ἀπὸ τῶν ὡς ἄνω δυσχερειῶν ἐξήγαγε τὴν φυσικὴν ἐν ἔτει 1913 ὁ Μπόρ, ὅστις συνέδασε τὸ ἀτομικὸν ὑπόδειγμα τοῦ Ρούδερφορντ πρὸς τὴν θεωρίαν τῶν κβάντα. Οὕτω ὁ Μπὸρ ἐπιβάλλει εἰς τὰς ἠλεκτρονικὰς τροχιὰς ὡρισμένας συνθήκας ἃς δέον νὰ πληρῶσι (αἵτινες ὅμως εἶναι ὅλως αὐθαίρετοι καὶ δὲν δικαιολογοῦνται ἢ μόνον ἐκ τῆς ἀληθείας τῶν συμπερασμάτων εἰς ἃ αὗται ἄγουσι) καὶ αἵτινες εἰδικώτερον καλοῦνται *κβαντικαὶ συνθῆκαι*. Ἡ μία τῶν συνθηκῶν τούτων, ἥτις καλεῖται *μηχανικὴ συνθήκη*, διατυποῦται ὡς ἑξῆς εἰς τὴν ἁπλουστέραν περίπτωσιν τοῦ ἀτόμου τοῦ ὑδρογόνου, ὅπερ ἀποτελεῖται ἐκ κεντρικοῦ πυρῆνος φορτίου μονάδος καὶ ἑνὸς περιφερομένου ἠλεκτρονίου. Ἐκ πασῶν τῶν δυνατῶν τροχιῶν τοῦ ἠλεκτρονίου εὐσταθεῖς θεωροῦνται ἐκεῖναι μόνον, ὧν ἡ ποσότης κινήσεως τοῦ ἠλεκτρονίου ὡς πρὸς τὸν πυρῆνα εἶναι ἀκέραιον πολλαπλάσιον τῆς ποσότητος $h/2\pi$, ὅπου h τὸ κβάντουμ Plauck. Μόνον ἐπὶ τῶν τροχιῶν τούτων δύναται νὰ εὐσταθῇ τὸ ἠλεκτρόνιον, ἤτοι νὰ παραμένῃ ἐν μονίμῳ καταστάσει, καὶ ἐφ' ὅσον τὸ ἠλεκτρόνιον παραμένει ἐπὶ εὐσταθοῦς τροχιᾶς δὲν ἀκτινοβολεῖ.

Ἡ ἑτέρα τῶν συνθηκῶν τοῦ Μπόρ, ἥτις καλεῖται *ὀπτικὴ συνθήκη*, διατυποῦται ὡς ἑξῆς: Ὅταν τὸ ἠλεκτρόνιον διέρχεται ἐκ μιᾶς εὐσταθοῦς τροχιᾶς εἰς ἑτέραν καὶ κατὰ τὴν μετάβασιν ταύτην ἡ ἐνέργεια τοῦ συστήματος ἐλαττοῦται ἀπὸ $E_1$ εἰς $E_2$, λαμβάνει χώραν ἐκπομπὴ ἀκτινοβολίας, ἧς ἡ συχνότης παρέχεται ὑπὸ τῆς σχέσεως

$$E_1 - E_2 = h\nu$$

ὅπου h τὸ κβάντουμ Plauck.

Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν δύο τούτων κβαντικῶν συνθηκῶν, ἐφ' ὧν βασίζεται ἡ ὅλη ἀτομικὴ θεωρία τοῦ Μπόρ, κατώρθωσεν οὗτος, διὰ συνδυασμοῦ αὐτῶν πρὸς τὸν νόμον τῆς κλασσικῆς μηχανικῆς καὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ, ν' ἀνεύρῃ διὰ θεωρητικῆς ὁδοῦ τὰς φασματικὰς σειρὰς τοῦ ὑδρογόνου καὶ τὸν περίφημον τύπον τοῦ Balmer, ἡ δὲ συμφωνία μεταξὺ πειράματος καὶ θεωρίας εἶναι καταπληκτική. Ἔκτοτε ἡ θεωρία τοῦ Μπὸρ ἐτελειοποιήθη ἐν πολλοῖς καὶ ἀνεπτύχθη σημαντικῶς εἰς τρόπον ὥστε σήμερον ἀποτελεῖ περίλαμπρον θεωρητικὸν οἰκοδόμημα, ἐν τῷ ὁποίῳ συνέχονται στενότατα ἡ ἐκπομπὴ τῶν φασματικῶν γραμμῶν καὶ ταινιῶν, τὰ φάσματα ἀκτίνων X, τὰ ἀποτελέσματα Zeeman, Stauk, ὁ ἀτομικὸς μαγνητισμός, ἡ περιοδικότης τῆς συγκροτήσεως τῶν στοιχείων καὶ τῶν χημικῶν ἰδιοτήτων αὐτῶν κλπ. Κ. Π.

**μπόρα** (ἡ)· δημοτ., ραγδαία βροχὴ βραχείας διαρκείας, συνήθως ἐξαφνική: «περίμενε νὰ περάσῃ ἡ μπόρα», «μὲ ἔπιασε 'ς τὸ δρόμο μιὰ μπόρα καὶ μ' ἔκαμε παπί» (ἰταλ. bora).

**—μπόρα** (bora). Ἄνεμος σφοδρότατος ἐκσπῶν ἀποτόμως εἰς τὸ *Ἀδριατικὸν* (βλ. λ., τ. Α', 656 β) καὶ δὴ τὴν ἀνατολικὴν του ἀκτήν, ἀπὸ διευθύνσεως ποικιλλουσῶν ἀπὸ ΜΒ (Β. ΒΔ.) ἕως ΜΑ (Α. ΒΑ.), ἀναλόγως τῆς θέσεως εἰς ἣν εὑρίσκεται ἐν τῷ πελάγει ἐκεῖνο τὸ ὑφιστάμενον ταύτην πλοῖον. Σ.Ε.Λ.

**Μπόρα** (Bora ἢ Bohra), ***Αἰκατερίνη φὸν***—. Σύζυγος τοῦ Λουθήρου (1499—1552). Ἦτο θυγάτηρ Γερμανοῦ εὐγενοῦς, ὅστις ἐνέκλεισεν αὐτὴν νεωτάτην ἐν τῇ μονῇ τοῦ Νίμπτς, παρὰ τὴν Γκρίμμα. Ὑποστᾶσα τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἰδεῶν τῆς μεταρρυθμίσεως, ἐγκατέλιπε τὴν μονὴν μὲ ὀκτὼ ἄλλας συντρόφους της. Ὁ Λούθηρος ἐνεπιστεύθη αὐτὰς εἰς ἐντίμους οἰκογενείας καὶ ἐμερίμνησε περὶ τῆς ἀποκαταστάσεώς των, αὐτὸς δ' ἐνυμφεύθη τὴν Αἰκατερίνην (1523), ἥτις ὑπῆρξε πιστὴ καὶ ἀφωσιωμένη σύζυγος. Α. Δ.

**—Μπόρα** (Borah), ***Γουλιέλμος-Ἔδγαρ***. Ἀμερικανὸς δικηγόρος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1865. Διετέλεσεν ἐπανειλημμένως (1906, 1912, 1918 καὶ 1924) ρεπουμπλικάνος γερουσιαστής. Ἀντετάχθη κατὰ πλείστων μέτρων τῆς πολιτικῆς τοῦ Οὐίλσωνος καὶ ἰδίως κατὰ τῆς συστάσεως τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, εἰς τὴν εἰσήγησιν δὲ καὶ τὰς ἐνεργείας αὐτοῦ ὀφείλεται ἡ σύγκλησις τῆς διασκέψεως τῆς Οὐασιγκτῶνος περὶ περιορισμοῦ τῶν ἐξοπλισμῶν (Νοέμβριος 1921). Ἔσχε μεγάλην ἐπιρροὴν ἐπὶ τῆς πολιτικῆς ζωῆς τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς. Γ. Ι. Β.

**μπορα[ζ]άνης** (ὁ)· ὁ σαλπιγκτὴς τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ (βλ. λ. *βοραζάνης*).

**Μποράκ.** Ὄνομα τοῦ λευκοῦ πτερωτοῦ ἱππομόρφου ὑποζυγίου, τοῦ ὁποίου ἐπέβαινεν ὁ προφήτης Μωάμεθ κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν Μουσουλμάνων πιστευομένην ἀνάληψίν του.

**—Μποράκ *Ρεΐς***. Διάσημος Τοῦρκος ναυτικὸς ἐπὶ σουλτάνου Βαγιαζὶτ τοῦ Β' (1481—1512). Ἀπεστάλη μετὰ τοῦ Κεμὰλ Ρεῒς ὑπὸ καπετὰν πασὰν τὸν Δαβοὺτ πασᾶν ἐναντίον τῆς Ναυπάκτου. Μετά τινα ἔτη ναυμαχῶν κατὰ βενετικοῦ στόλου ἔθεσε πῦρ εἰς τὸ ἰδικόν του πλοῖον καὶ εἰς δύο ἄλλα τουρκικά, συναπολεσθεὶς μετὰ δύο βενετικῶν (1499). Ν. Μ.

**—Μποράκ *Χατζὶπ-Κουτλοὺγ χάν***. Ἱδρυτὴς τῆς κατὰ τὸν ΙΓ' μ. Χ. αἰῶνα ἐν Κιρμὰν τῆς Περσίας ἡγεμονευσάσης δυναστείας τῶν Ἄλι-Μποράκ (Μποραкιδῶν). Κατὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ κράτους τῆς Χωρασμίας ὑπὸ τῶν Μογγόλων, ὁ Μποράκ κατέλαβε τὸ Κιρμὰν καὶ ἀνεκηρύχθη ἀνεξάρτητος (1225). Ἀπέθανε τῷ 1235. Ἡ δυναστεία του ἀριθμεῖ 8 ἄλλους ἡγεμόνας, οἵτινες ἐπολέμησαν ὡς ὑποτελεῖς τῶν Μογγόλων. Ν. Μ.

**Μποράν, *Χατιτζᾶ***. Σύζυγος τοῦ χαλίφου Μααμούν, ὑμνηθεῖσα ἐν τῇ συγχρόνῳ ἀραβικῇ ποιήσει διὰ τὴν μυθώδη πολυτέλειαν τῆς προικός της. Ἀπέθανε τῷ 885 εἰς ἡλικίαν 80 ἐτῶν. Ν. Μ.

**μποράντζα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βορράγινον τὸ φαρμακευτικόν*.

**Μπόρας** (Boras) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σουηδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Ἔλφσμποργκ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Βίσκα, 48 χλμ. πρὸς Α. τοῦ Γκαίτεσμποργκ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βιομηχανίας βάμβακος καὶ ζύθου. Ἱδρύθη τῷ 1632 ὑπὸ τοῦ Γουσταύου Ἀδόλφου. Κάτ. 24.000. Χ. Δ.

**Μπὸργκ** (Borg), ***Πέτρος-Ἄρον***. Σουηδὸς φιλάνθρωπος, ἱδρυτὴς σχολείου κωφαλάλων καὶ τυφλῶν (1776—1839). Ἀφοῦ διετέλεσε καθηγητὴς φαρμακοποιός, καθηγητὴς τῆς μουσικῆς κλπ. ἵδρυσε τῷ 1808 κατὰ τὸ σύστημα τοῦ ἀββᾶ Ἐπὲ ἰνστιτοῦτον κωφαλάλων καὶ τυφλῶν ἐν Στοκχόλμῃ. Βραδύτερον (1812) ἐμεγέθυνε τὸ ἵδρυμά του καὶ μετέφερεν αὐτὸ εἰς Μανίλλα. Κατὰ τὰ ἔτη 1823—1828 ἐταξίδευσεν εἰς Λισσαβῶνα τῆς Πορτογαλίας, ὅπου ὠργάνωσεν ἀνάλογα ἱδρύματα, μετὰ δὲ τὴν εἰς Στοκχόλμην ἐπάνοδόν του ἐφρόντισε καὶ διὰ τὴν περίθαλψιν τῶν παραφρόνων, χάριν τῶν ὁποίων ἵδρυσε νέα ἄσυλα εἰς Μανίλλα. Τὸ ἔργον αὐτοῦ μεγάλως ἐτιμήθη ὑπὸ τῶν Σουηδῶν, οἵτινες ἤγειραν τὴν προτομήν του τῷ 1874 ἐν Μανίλλα, ἔργον τοῦ γλύπτου Κιέλλμπεργκ. Εἰς τὴν διεύθυνσιν τῶν ἱδρυμάτων του διεδέχθησαν τὸν Μπὸργκ ἐν μὲν τῇ Πορτογαλίᾳ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ *Ἰωάννης* (1839—1875), ἐν δὲ τῇ Σουηδίᾳ ὁ υἱός του *Ὄσσιαν-Ἐδμόνδος*, ὅστις ἐτελειοποίησε τὰς ἐν χρήσει ἐκπαιδευτικὰς μεθόδους καὶ ἵδρυσεν ἐν Μανίλλα σχολὴν καθηγητῶν διὰ τοὺς κωφαλάλους καὶ τοὺς τυφλούς. Χ. Δ.

**Μπόργκα** ἢ ***Μπόργκο*** (Borga ἢ Borgo καὶ φιλανδιστὶ Porvoo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Φιλλανδίας ἐν τῷ νομῷ Νύλαντ, παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Μπόργκα. Κάτ. 5.500. Εἶναι ἕδρα λουθηρανικῆς ἐπισκοπῆς καὶ ἔχει ὡραῖον γοτθικὸν ναὸν ἱδρυθέντα τῷ 14 4 καὶ μουσεῖον. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον ξυλείας, καπνοῦ, ἐρίου, δερμάτων κλπ. Χ. Δ.

**Μποργκέζε** (Borghese). Ὀνομαστὴ ἰταλικὴ οἰκογένεια, καταγομένη ἐκ Σιένης καὶ διαπρέψασα ἐν Ρώμῃ, τῆς ὁποίας πλεῖστα μέλη διεκρίθησαν εἰς τὰ γράμματα καὶ κατέλαβον ἀνωτάτας θέσεις εἰς τὸν στρατὸν καὶ εἰς τὸν κλῆρον. Τὸ ὄνομα αὐτῆς ἀναφέρεται ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἐν Σιένῃ, ὅπου πολλὰ μέλη της κατέλαβον διάφορ ἀξιώματα εἰς τὸν δικαστικὸν κλάδον, ὡς πρεσβευταί, ὡς στρατιωτικοὶ καὶ κυρίως ὡς νομομαθεῖς. Εἷς ἐξ αὐτῶν, ὁ Αὐγουστῖνος, ἔλαβε μέρος εἰς διαφόρους ἀποστολάς, ὡς εἶναι καὶ ἡ πρὸς τὸν αὐτοκράτορα Σιγισμοῦνδον, ὁ ὁποῖος ὠνόμασεν αὐτὸν ἱππότην καὶ τοῦ ἔδωσε τὸ δικαίωμα νὰ φέρῃ ἕνα ἀετὸν ἐπὶ τοῦ οἰκοσήμου του. Ἔκτοτε τὸ οἰκόσημον τῶν Μποργκέζε φέρει μέλανα ἀετὸν μὲ ἀναπεπταμένας τὰς πτέρυγας πρὸς τὸ ἄνω ἥμισυ αὐτοῦ. Ἕτερος ὁ Γκαργκάνο, ἀντεπροσώπευσε τὴν γενέτειράν του εἰς τὴν Ρώμην περὶ τὸ τέλος τῆς παπικῆς ἐξουσίας τοῦ Νικολάου Ε' καὶ τῷ 1456 ἀπεστάλη εἰς τὴν Νεάπολιν ὡς πρεσβευτὴς τῆς Σιένης. Ἡ ἐμφάνισις τῆς οἰκογενείας εἰς τὴν Ρώμην χρονολογεῖται ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ὁπότε ὁ Πέτρος Μποργκέζε διωρίσθη γερουσιαστὴς ὑπὸ τοῦ Λέοντος Ι' (1516) καὶ ὁ Ἰωάννης Βαπτιστὴς εἶχε λάβει μέρος, ἐπὶ πάπα Κλήμεντος Ζ', εἰς τὴν ἀτυχῆ ἄμυναν τῆς πόλεως κατὰ τῶν στρατευμάτων τῶν Βουρβώνων τῷ 1527. Ἡ ὁριστική

Digitized by Google

ὅμως ἐγκατάστασις τῆς οἰκογενείας εἰς τὴν Ρώμην ἐγένετο ὑπὸ τοῦ γνωστοῦ νομομαθοῦς Μαρίου-Ἀντωνίου Μποργκέζε (1504—1574), ὁ ὁποῖος περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ὠθούμενος καὶ ὑπὸ τῶν ταραχῶν αἵτινες εἶχον ἐκραγῆ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην εἰς τὴν Σιέναν, μετεφέρθη εἰς τὴν Ρώμην, ὅπου διεκρίθη ὡς εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων δικηγόρων καὶ ὁ ὁποῖος νυμφευθεὶς τὴν Φλαμινίαν, γόνον τῆς παλαιᾶς ρωμαϊκῆς οἰκογενείας τῶν Ἀστάλλι, ἐκ τῆς ὁποίας ἀπέκτησεν ἑπτὰ τέκνα, ἀπέβη ὁ ἀρχηγὸς τοῦ ρωμαϊκοῦ κλάδου τῶν Μποργκέζε. Τούτου ὁ πρωτότοκος υἱὸς Κάμιλλος, γενόμενος καρδινάλιος καὶ κατόπιν πάπας ὑπὸ τὸ ὄνομα Παῦλος Ε' (1605—1621), κατέστησε τὴν οἰκογένειάν του μεταξὺ τῶν ὀνομαστοτέρων τῆς Ρώμης, ἐπιδαψιλεύσας εἰς τοὺς συγγενεῖς του μεγίστας παροχὰς παντὸς εἴδους, ἰδίως δὲ εἰς τοὺς ἀδελφούς του, Φραγκῖσκον, τὸν ὁποῖον ὠνόμασε στρατηγόν, καὶ Ἰωάννην-Βαπτιστήν, τὸν ὁποῖον διώρισε φρούραρχον τοῦ Καστὲλ Σάντ' Ἄντζελο. Οἱ δύο οὗτοι ἀδελφοὶ τοῦ πάπα, πλὴν τῶν ἀξιωμάτων, ἔλαβον καὶ ἄλλας παροχάς, γενόμενοι πλουσιώτατοι. Τὰς αὐτὰς καὶ πολὺ μεγαλυτέρας παροχὰς ἔλαβον οἱ δύο ἀνεψιοὶ τοῦ πάπα Μᾶρκος-Ἀντώνιος καὶ Σκηπίων. Ὁ Σκηπίων οὗτος (1576—1633) ἦτο υἱὸς μιᾶς ἀδελφῆς τοῦ πάπα Παύλου Ε', ἥτις εἶχε νυμφευθῆ τὸν Φραγκῖσκον Καφφαρέλλι, εἶχεν ὅμως γίνει γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα Μποργκέζε, υἱοθετηθεὶς ὑπὸ τοῦ πάπα, ὁ ὁποῖος τὸν ὠνόμασε καρδινάλιον. Οὗτος εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τοῦ περιφήμου ἄλσους Μποργκέζε, τοῦ ἐν αὐτῷ ἀνακτόρου καὶ τῆς ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τούτῳ θαυμασίας πλουσιωτάτης καλλιτεχνικῆς συλλογῆς. Εἶχε συγκεντρώσει κολοσσιαίαν περιουσίαν, τὴν ὁποίαν διέθεσεν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν, συγκεντρώσας περὶ ἑαυτὸν ἐπιτελεῖον καλλιτεχνῶν καὶ βοηθήσας μεγάλως τὸν Μπερνίνι εἰς τὰ πρῶτα βήματά του. Κατεσκεύασε πλείστας ἐκκλησίας καὶ ἀνάκτορα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ ἐν τῷ προαστείῳ τῆς Ρώμης Φρασκάτι, τὸ νῦν ἀνάκτορον τοῦ Ροσπιλιόζι, ὅπου ὁ Γκουΐντο Ρένι ἐζωγράφισε τὴν περίφημον του «Αὐγὴν» κτλ.

Ὁ Μᾶρκος Ἀντώνιος Μποργκέζε (1598—1658), υἱὸς τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ πάπα Παύλου Ε' Ἰωάννου Βαπτιστοῦ, ἐκληρονόμησεν, εἴτε ἀπὸ τὸν θεῖόν του πάπαν, εἴτε ἀπὸ τὸν ἀδελφόν του καρδινάλιον Σκηπίωνα, καθὼς καὶ ἀπὸ τὴν σύζυγόν του Καμίλλην, τὸ γένος Ὀρσίνι, πλεῖστα μέγαρα καὶ κτήματα ἐν Ρώμῃ καὶ εἰς ἄλλας πόλεις τῆς περιφερείας αὐτῆς καὶ διὰ τῶν ἀγορῶν τὰς ὁποίας ἔκαμεν ὁ ἴδιος κατέστη ὁ μεγαλύτερος κτηματίας καὶ γαιοκτήμων τοῦ Λατίου, καταλαβὼν τὴν θέσιν τὴν ὁποίαν εἶχον ἄλλοτε αἱ παλαιαὶ πριγκιπικαὶ οἰκογένειαι τῶν Ὀρσίνι καὶ τῶν Κολόννα. Κατὰ τὸν θάνατόν του ἀφῆκεν εἰς τοὺς κληρονόμους του, πλὴν τῆς κολοσσιαίας περιουσίας καὶ τῶν καλλιτεχνικῶν θησαυρῶν, τοὺς ὁποίους εἶχε συγκεντρώσει, αὐξήσας τὰς συλλογὰς τοῦ ἀδελφοῦ του Σκιπίωνος, τὸ μέγα ἀνάκτορον τῆς πλατείας Καμπομάρτσιο τῆς Ρώμης, τὸ ἀνάκτορον τῆς Βίλλα Μποργκέζε, τὸ πριγκιπᾶτον τῆς Σουλμόνα ἐν τῷ βασιλείῳ τῆς Νεαπόλεως, τὴν Βίλλα Τουσκολάνα καὶ πλεῖστα ἄλλα μέγαρα ἐν Ρώμῃ καὶ εἰς τὰ περίχωρα. Ἐκ τούτου κατάγεται καὶ ἡ σύγχρονος οἰκογένεια τῶν Μποργκέζε.

Ἄλλα ὀνομαστὰ μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης ὑπῆρξαν οἱ καρδινάλιοι Πιὲρ Μαρία (1509—1642), Φραγκῖσκος (1697—1759) καὶ Σκηπίων (1734—1782), ὁ Μᾶρκος Ἀντώνιος Γ' (1660—1729), ὁ ὁποῖος διετέλεσεν ἀντιβασιλεὺς τῆς Νεαπόλεως, ὁ Μᾶρκος Ἀντώνιος Δ' (1730—1800), ὁ ὁποῖος κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνακηρύξεως τῆς ρωμαϊκῆς δημοκρατίας διετέλεσε γερουσιαστὴς καὶ ἐγένετο περίφημος διὰ τὸν μεγαλοπρεπῆ βίον τὸν ὁποῖον διῆγεν. Οὗτος ὑπῆρξεν ἐπίσης θερμὸς προστάτης τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν, ἀνενέωσε τὸ ἐν τῷ ἄλσει Μποργκέζε ἀνάκτορον καὶ προσέθεσεν ἐν τῷ ἄλσει τὴν κρήνην τῶν θαλασσίων ἵππων (Cavalli marini), τὸν ὡραῖον κῆπον τῆς λίμνης, τὸν ἱππόδρομον τῆς «πιάτσα Σιένα», τὸ μουσεῖον Γκαμπῖνο κ. τ. λ.

Υἱὸς τούτου ὑπῆρξεν ὁ Κάμιλλος Μποργκέζε (1775—1832). Οὗτος ἐθεωρεῖτο ὡς ὁ πλουσιώτερος Ρωμαῖος πρίγκιψ τῆς ἐποχῆς του καὶ εἶχε λίαν ἐνωρὶς ἐμποτισθῆ μὲ τὰς νέας φιλελευθέρας ἰδέας, ὑπηρετήσας εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν μετὰ τὴν εἴσοδον αὐτοῦ εἰς τὴν Ρώμην. Τῷ 1803 μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐνυμφεύθη τὴν ἀδελφὴν τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος Παυλῖναν, χήραν τοῦ στρατηγοῦ Λεκλέρκ. Συνεπείᾳ τοῦ γάμου του τούτου ὠνομάσθη Γάλλος πρίγκιψ καὶ τῷ 1806 ἐγένετο δοὺξ τῆς Γκουασταλλας. Ὑπηρετήσας δὲ εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Ναπολέοντος, ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ὑποστρατηγοῦ καὶ διωρίσθη διοικητὴς τῶν γαλλικῶν ἐπαρχιῶν ἐν τῷ Πεδεμοντίῳ καὶ τῇ περιοχῇ τῆς Γενούης, μὲ ἕδραν τὸ Τουρῖνον. Τῷ 1807 ὑπὸ τὸ πρόσχημα ἀπειλῆς ἀποβάσεως τοῦ ἀγγλικοῦ στόλου εἰς τὰ παρὰ τὴν Ρώμην παράλια, ὑπεχρεώθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος νὰ πωλήσῃ εἰς τὸ γαλλικὸν Ἐθνικὸν μουσεῖον τοὺς καλλιτεχνικοὺς θησαυροὺς τοῦ ἄλσους καὶ τοῦ μουσείου Μποργκέζε, μετὰ τοῦ μουσείου Γκαμπῖνο, ἀντὶ 13 ἑκατομμυρίων φράγκων. Μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ Ναπολέοντος διεζεύχθη τὴν Παυλῖναν, ἐναντίον τῆς διαγωγῆς τῆς ὁποίας εἶχε πλεῖστα παράπονα, τῷ δὲ 1815 κατώρθωσε νὰ λάβῃ ὀπίσω τὰ πλεῖστα τῶν καλλιτεχνικῶν ἔργων, τὰ ὁποῖα τοῦ εἶχεν ἀποσπάσει διὰ τῆς ἀναγκαστικῆς πωλήσεως ὁ Ναπολέων.

Τὸν Κάμιλλον Μποργκέζε ἀποθανόντα ἄνευ τέκνων διεδέχθη καὶ ἐκληρονόμησεν ὁ ἀδελφός του Φραγκῖσκος (1776—1839). Μεταβὰς καὶ οὗτος εἰς Γαλλίαν, εἶχε ζήσει κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ναπολέοντος, ὁ ὁποῖος ὠνόμασεν αὐτὸν σταβλάρχην, καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν φθάσας μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ στρατηγοῦ. Οὗτος ἐνυμφεύθη τὴν Γαλλίδα κόμισσαν Ἀλεξάνδραν Λὰ Ροσφουκώ, ἐξ ἧς ἀπέκτησε τρία τέκνα· εἰς τὰ τέκνα του ταῦτα, κατὰ σειρὰν γεννήσεως, ἀφῆκε διὰ διαθήκης τοὺς τρεῖς τίτλους του, οἵτινες εἶχον προστεθῆ εἰς τὸ ὄνομα τῆς οἰκογενείας του ἐξ ἐπιγαμίας τῶν προγόνων του: εἰς τὸν πρωτότοκον Μᾶρκον Ἀντώνιον (1814—1886) ἀφῆκε τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος Μποργκέζε, εἰς τὸν δευτερότοκον Κάμιλλον (1816—1902) τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος Ἀλντομπραντίνι καὶ εἰς τὸν τριτότοκον Σκηπίωνα (1823—1892) τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς Σαλβιάτι. Ἐκ τῶν τριῶν τούτων κατάγονται αἱ σύγχρονοι οἰκογένειαι τῶν Μποργκέζε, τῶν Ἀλντομπραντίνι καὶ τῶν Σαλβιάτι.

Ἐκ τῶν νεωτέρων μελῶν τῆς οἰκογενείας ἐγένετο γνωστὸς ὁ πρίγκιψ Σκηπίων Μποργκέζε (1871—1927). Τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐγένετο παγκοσμίως γνωστὸν ἐκ τοῦ ταξιδίου τὸ ὁποῖον ἐξετέλεσεν ἀπὸ Πεκίνου εἰς Παρισίους διὰ μέσου τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Εὐρώπης ἐπ' αὐτοκινήτου τῷ 1907. Κατὰ τὸ ταξίδιόν του συνωδεύετο καὶ ὑπὸ τοῦ Ἰταλοῦ δημοσιογράφου Λουδοβίκου Μπαρτσίνι, ὁ ὁποῖος τὸ περιέγραψε κατόπιν εἰς τὰς ἀνταποκρίσεις του καὶ εἰς ἰδιαίτερον βιβλίον. Ὁ Μποργκέζε εἶχε προηγουμένως ἐκτελέσει παρόμοια ταξίδια εἰς Συρίαν καὶ Μεσοποταμίαν, ἀπὸ τῆς Περσίας εἰς τὸ Τουρκεστὰν καὶ ἀπὸ τὸ Τόμσκ, διὰ τοῦ ὑπερσιβηρικοῦ σιδηροδρόμου, εἰς τὸν Εἰρηνικὸν ὠκεανόν. Τὸ ταξίδιον τοῦ 1907 ἐγένετο διὰ τῆς ὁδοῦ Κάλγκαν, Οὔργκα, Κυιάχτα, Βερτσνεουντίνσκ, Ἰρκούτσκ, Νίζνι-Νοβγκορόντ, Μόσχας, Πετρουπόλεως, Κόβνο, Βερολίνου, Λιέγης. Οἱ ταξιδιῶται ἔφθασαν εἰς Παρισίους τὴν 10 Αὐγούστου, διανύσαντες εἰς 60 ἡμέρας 16.000 χλμ. περίπου.

Κατὰ τὴν τελευταίαν δεκαετίαν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος οἱ κληρονόμοι τῶν Μποργκέζε, πιεζόμενοι ὑπὸ οἰκονομικῶν στενοχωριῶν, ἠναγκάσθησαν νὰ πωλήσουν τὴν βιβλιοθήκην τῆς οἰκογενείας μετὰ τοῦ ἀρχείου της εἰς τὸ Βατικανόν, τὸ δὲ ἄλσος μετὰ τῶν καλλιτεχνικῶν θησαυρῶν καὶ τοῦ μουσείου εἰς τὸ Ἰταλικὸν κράτος, ὅπερ μετωνόμασεν αὐτὸ εἰς «Βίλλα Οὐμπέρτου Α'» καὶ τὸ κατέστησε δημόσιον κῆπον, μεταβαλὸν συγχρόνως τὸ ἐν αὐτῷ ἀνάκτορον εἰς δημόσιαν πινακοθήκην καὶ δημόσιον μουσεῖον. Μ. Δ. Β.

**—Μποργκέζε, ἄλσος** (Villa Borgese). Ἄλλοτε θερινὸν κέντρον τῆς οἰκογενείας τῶν Μποργκέζε ἐν Ρώμῃ, ἀποτελοῦν σήμερον δημόσιον ἄλσος ὑπὸ τὸ ἐπίσημον ὄνομα «Ἄλσος Οὐμβέρτου Α'» (Villa Umberto I), ἀλλὰ γνωστότερον ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα «Βίλλα Μποργκέζε». Ἐκτείνεται ἀπὸ τῆς πύλης τῆς «Πλατείας τοῦ Λαοῦ» καὶ τῶν ὑπωρειῶν τοῦ λόφου Πίντσιο, μέχρι τῆς πύλης Πιντσιάνα, πρὸς τὸ βόρειον τμῆμα τοῦ παλαιοῦ τείχους τοῦ Αὐρηλίου καὶ τοῦ Ὀνωρίου, ὅπερ καλεῖται ἐνταῦθα, λόγῳ τῆς ἀκανονίστου γραμμῆς του, «Muro Torto». Εἶναι περικεκλεισμένον ὑπὸ τείχους ἢ κιγκλιδωμάτων καὶ ἔχει πολλὰς εἰσόδους, ἡ κυριωτέρα τῶν ὁποίων εἶναι πρὸς τὴν πύλην τῆς «Πλατείας τοῦ Λαοῦ», μὲ μεγαλοπρεπῆ προπύλαια καὶ θαυμασίαν λεωφόρον εἰσόδου, περίκλειστον ὑπὸ ὑψηλῶν δένδρων, ὧν αἱ κορυφαὶ συγκλίνουν πρὸς τὰ ἄνω, καθιστῶσαι αὐτὴν σκιερὰν εἰς μῆκος ἑνὸς περίπου χιλιομέτρου. Εἶναι ἔργον τοῦ Σκηπίωνος Μποργκέζε, ὁ ὁποῖος κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἐδημιούργησεν αὐτὴν διὰ τοῦ Φλαμανδοῦ ἀρχιτέκτονος Ἰωάννου Βανσάντσιο, τοῦ Ντομένικο Σαβίνο, ὁ ὁποῖος ἐξετέλεσε τὰ σχέδια τῶν κήπων, καὶ τοῦ Ἰωάννου Φοντάνα, ὁ ὁποῖος διηύθυνε τὰς ὑδραυλικὰς ἐγκαταστάσεις.

Βραδύτερον οἱ διάφοροι πρίγκιπες Μποργκέζε ἐξετέλεσαν πλεῖστα ἐξωραϊστικὰ ἔργα ἐν αὐτῷ καὶ τὴν κατέστησαν ἓν τῶν περιφημοτέρων κέντρων ἀναψυχῆς τῆς ρωμαϊκῆς ἀριστοκρατίας, ἥτις συνεκεντροῦτο ἐν αὐτῷ κατὰ τὰς μεγαλοπρεπεῖς ἑορτάς, τὰς ὁποίας συχνότατα ἔδιδον οἱ πλουσιώτατοι ἰδιοκτῆται. Τὸ ὅλον ἄλσος ἔχει ἔκτασιν περὶ τὰ 7 τ. χλμ., περιλαμβάνει δὲ ἐν αὐτῷ τὸ μέγαρον τῶν Μποργκέζε, ὅπου σήμερον τὸ μουσεῖον Μποργκέζε (βλ. κατ.), τὸν ἱππόδρομον «Πιάτσα Σιένα», τεχνητὴν λίμνην μετὰ νησῖδος ἐπὶ τῆς ὁποίας ὑπάρχει ὁμοίωμα ἀρχαϊκοῦ ναοῦ τοῦ Ἀσκληπιοῦ, μὲ τὴν ἑλληνικὴν ἐπιγραφὴν «Ἀσκληπιῷ σωτῆρι», τὸν περὶ αὐτὴν ὡραῖον καὶ ἀνθόσπαρτον «κῆπον τῆς λίμνης», μέγα πεδίον ἱππασίας ἀμαζόνων καὶ ἱππευτικῶν ἀσκήσεων, τὸν ζῳολογικὸν κῆπον τῆς Ρώμης κτλ. Ὑπάρχουν ἐπίσης ἐν αὐτῷ διάφορα περίπτερα καὶ κέντρα ἀναψυχῆς, τεχνητὰ ἐρείπια, τεχνητοὶ καταρράκται, πίδακες, κρῆναι, διάφορα ἀγάλματα, ὡς τὸ τοῦ Βίκτωρος Οὐγκὼ ὑπὸ Παλλὲ (1905), τοῦ Γκαῖτε ὑπὸ Ἔμπερλάϊν, δῶρον τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Γουλιέλμου Β', τοῦ Οὐμβέρτου Α' ὑπὸ Καλάντρα, κτλ. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἡνώθη δι' εὐρείας γεφύρας καὶ ὡραίας λεωφόρου πρὸς τὸν λόφον τοῦ Πίντσιο. Τὸ ἄλσος τοῦτο ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ ἰταλικοῦ κράτους ἀπὸ τῆς οἰκογενείας τῶν Μποργκέζε τῷ 1902 ἀντὶ 3.000.000 λιρεττῶν καὶ μετεβλήθη ἔκτοτε εἰς δημόσιον περίπατον, κέντρον ἑορτῶν, ἀγώνων, ἐκθέσεων κτλ. Μ. Δ. Β.

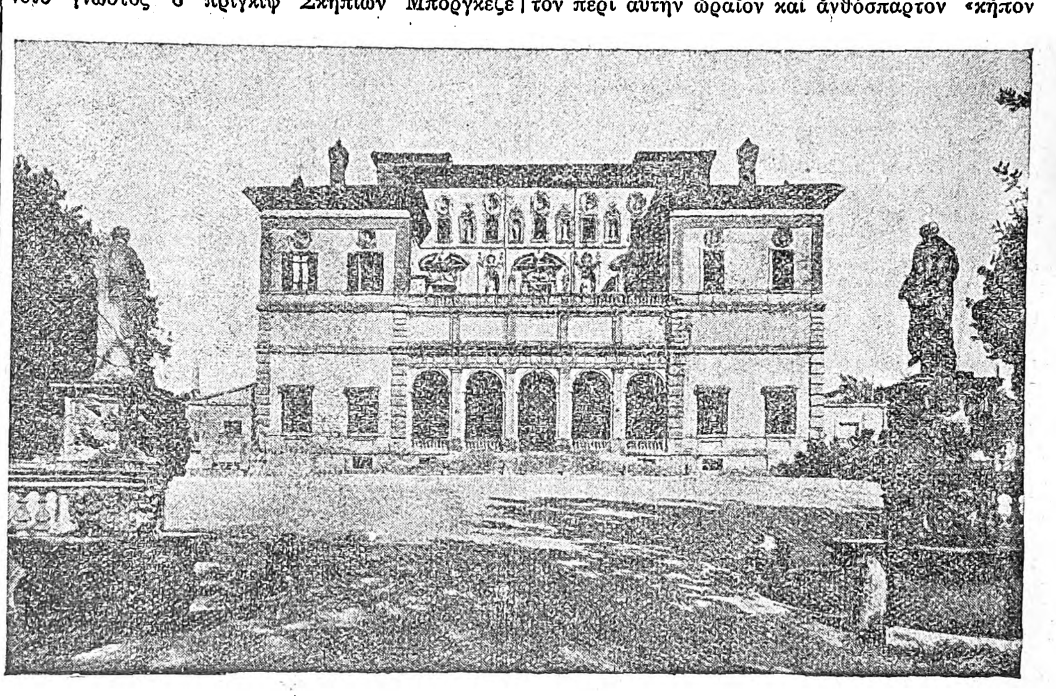

*Τὸ ἐντὸς τοῦ ὁμωνύμου ἄλσους μέγαρον τῶν Μποργκέζε.*

**—Μποργκέζε, μέγαρον** (Palazzo Borghese). Μέγαρον τῆς οἰκογενείας τῶν Μποργκέζε, κείμενον ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου πλατείας καὶ τῆς ὁδοῦ Φοντανέλλα ντὶ Μποργκέζε, παρὰ τὴν παράλληλον πρὸς τὸν Τίβεριν ὁδὸν Ριπέττα. Ἤρχισε κτιζόμενον τῷ 1590 ὑπὸ τοῦ καρδιναλίου Ντέτσα, ἐπὶ σχεδίων τοῦ Μαρτῖνο Λούνγκι τοῦ πρεσβυτέρου καὶ ἐπερατώθη τῷ 1607 ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Φλαμίντο Πόντσιο, ἀγορασθὲν ὑπὸ τοῦ πάπα Παύλου Ε' Μποργκέζε. Εἶναι ἓν τῶν μεγαλοπρεπεστέρων καὶ ὡραιοτέρων μεγάρων τῆς Ρώμης. Ἡ ἐσωτερικὴ αὐτοῦ αὐλὴ εἶναι μεγαλοπρεπεστάτη καὶ περιβάλλεται ὑπὸ διωρόφου προστώου, μετὰ 96 κιόνων ἐκ γρανίτου, δωρικοῦ ρυθμοῦ εἰς τὸ ἰσόγειον καὶ ἰωνικοῦ εἰς τὸν ἄνω ὄροφον. Ἐν τῇ αὐλῇ ταύτῃ ὑπάρχουν τὰ κολοσσιαῖα ἀγάλματα τῆς Ἰουλίας, τῆς Σαβίνης καὶ τῆς Δήμητρος. Εἰς τὸ ἰσόγειον τοῦ μεγάρου ὑπῆρχεν ἄλλοτε, ἐντὸς 12 αἰθουσῶν, ἡ περίφημος πινακοθήκη, ἥτις μετεφέρθη τῷ 1891 εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦ ἄλσους Μποργκέζε. Τὸ μέγαρον τοῦτο χρησιμοποιεῖται σήμερον ὡς γαλλικὴ πρεσβεία παρὰ τῷ Βατικανῷ,

Digitized by Google

τινὰ δὲ τῶν διαμερισμάτων του καὶ ὡς ἀποθήκη καὶ ἔκθεσις ἀρχαιοπωλείου (Σαντζιόρτζι). Μ. Δ. Β.

—**Μπορκέζε, μουσεῖον** (Galleria Borghese). Μουσεῖον ἐν Ρώμῃ, ἐντὸς τοῦ ἄλσους «Βίλλα Μποργκέζε» καὶ τοῦ ἐν αὐτῷ ἀνακτόρου τῶν Μποργκέζε. Τὸ ἀνάκτορον ἐκτίσθη περὶ τὸ 1600 ὑπὸ τοῦ Φλαμανδοῦ ἀρχιτέκτονος Ἰωάννου Βανσάντσιο κατὰ διαταγὴν τοῦ καρδιναλίου Σκηπίωνος Μποργκέζε καὶ ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς θερινὴ τούτου διαμονή. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως ὁ φιλότεχνος καρδινάλιος συνεκέντρωσεν ἐν αὐτῷ πλείστους καλλιτεχνικοὺς θησαυρούς, γενόμενος εἶτα ὁ ἱδρυτὴς τοῦ πλουσιωτέρου καὶ σημαντικωτέρου μουσείου τῆς Ρώμης. Κατ' ἀρχὰς ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τούτῳ εἶχον συγκεντρωθῆ μόνον ἔργα γλυπτικῆς. Βραδύτερον ὅμως (τῷ 1891), μετὰ τὴν πώλησιν τοῦ «μεγάρου Μποργκέζε» μετεφέρθη εἰς τὴν «Βίλλαν Μποργκέζε» καὶ ἡ ἐν τῷ μεγάρῳ ἐκείνῳ πλουσιωτάτη πινακοθήκη τῆς οἰκογενείας, τοποθετηθεῖσα εἰς τὸν ἄνω ὄροφον τοῦ ἀνακτόρου, ἐνῷ εἰς τὸ ἰσόγειον συνεκεντρώθησαν τὰ γλυπτικὰ ἔργα. Τῷ 1806 τὰ ἐν αὐτῷ τότε ὑπάρχοντα γλυπτικὰ ἔργα, περιλαμβάνοντα πλεῖστα ἀριστουργήματα καὶ ἀνερχόμενα εἰς διακόσια τεμάχια περίπου, ἠγοράσθησαν ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος παρὰ τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς οἰκογενείας Καμίλλου Μποργκέζε ἀντὶ 13.000.000 φράγκων καὶ μετεφέρθησαν εἰς τὸ Λοῦβρον. Βραδύτερον μετὰ τὸ 1815, ὁ Κάμιλλος Μποργκέζε κατώρθωσε νὰ τοῦ ἐπιστραφῇ μέρος μόνον τῶν θησαυρῶν ἐκείνων, οἵτινες τοῦ ἀπεσπάσθησαν προηγουμένως ἐκβιαστικῶς ὑπὸ τοῦ πανισχύρου γυναικαδέλφου του. Κατόπιν ὅμως τὰ ἔργα τῆς γλυπτικῆς ηὐξήθησαν ἐν τῷ μουσείῳ Μποργκέζε δι' ἄλλων, ἐπίσης πολυτίμων καὶ σημαντικῶν ἀρχαίων εὑρημάτων, καὶ δι' ἀγορᾶς νέων ἔργων, καταστὰν καὶ πάλιν ἓν τῶν ὀνομαστοτέρων τῆς Ρώμης. Μεταξὺ τῶν ἀρχαίων ἔργων του εἶναι: ὑπὸ τὰ προπύλαια, μήκους 20 μέτρων περίπου, ρυθμοῦ ἰωνικοῦ, δύο ἀνάγλυφα προερχόμενα ἐκ τῆς θριαμβευτικῆς ἁψῖδος τοῦ Κλαυδίου· ἐν ταῖς αἰθούσαις τοῦ ἰσογείου τὰ ἀγάλματα τῆς Ἥρας, τῆς Δήμητρος, τῆς Ἀφροδίτης, τῆς Λήδας, τοῦ Βάκχου, τοῦ Ἡρακλέους, τοῦ συμπλέγματος τῆς Ἀμαζόνος, τὸ ἀνάγλυφον τῆς Κασσάνδρας ἀποκρουούσης τὸν Αἴαντα, σαρκοφάγος ἐκ πορφυρίτου λίθου, τρία ἔργα τῆς νεότητος τοῦ Μπερνίνι, ὁ Δαυΐδ, ὁ Αἰνείας φέρων τὸν Ἀγχίσην, ὁ Ἀπόλλων καὶ ὁ Δάφνις, καὶ τὸ ἀριστούργημα τοῦ Κανόβα, ἡ περίφημος «Ἀφροδίτη», κρατοῦσα τὸ μῆλον τῆς ἔριδος, ἔργον ὅπερ ἀναπαριστᾷ τὴν ἀδελφὴν τοῦ Ναπολέοντος Παυλῖναν Μποργκέζε ἡμίγυμνον καὶ ἡμικεκλιμένην ἐπὶ ἀνακλίντρου. Τὰ ἀγάλματα ταῦτα εἶναι διατεταγμένα εἰς δέκα αἰθούσας. Εἰς τὸ δάπεδον τῆς μιᾶς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων τούτων αἰθουσῶν ὑπάρχει μωσαϊκὸν ρωμαϊκῆς ἐποχῆς, εὑρεθὲν κάτωθεν τοῦ Τουσκουλανίου λόφου, ἐν μέρει μόνον διατηρούμενον καὶ παριστάνον θεατρικὴν σκηνὴν ξιφομαχίας. Ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ θαυμάσια ἀγγεῖα ἀρχαίας καὶ νεωτέρας τέχνης. Γλυπτικά τινα ἔργα ὑπάρχουν καὶ εἰς τὸ ἄνω πάτωμα, μεταξὺ διαφόρων πινάκων, ὡς εἶναι ὁ Ἑρμαφρόδιτος, ἀντίγραφον τοῦ εἰς τὸ Λοῦβρον μεταφερθέντος, ἡ Ἀθηνᾶ, ὁ Ἔρως δεδεμένος δι' ἁλύσεων, αἱ ἕνδεκα προτομαὶ τῶν πρώτων αὐτοκρατόρων τῆς Ρώμης ἐκ πορφυρίτου λίθου κλπ.

Ἡ πινακοθήκη καταλαμβάνει τὰς δέκα ἀντιστοίχους πρὸς τὸ ἰσόγειον αἰθούσας τοῦ ἄνω πατώματος καὶ συνίσταται ἀπὸ 600 περίπου πίνακας, οἵτινες ἀποτελοῦν, σχεδὸν πάντες, ἀριστουργήματα τῶν κορυφαίων διδασκάλων τῆς τέχνης, ὡς εἶναι ἡ Παναγία τοῦ Μποτιτσέλλι, δύο εὐαγγελισταὶ τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου, μία θαυμασία κεφαλὴ Μαγδαληνῆς καὶ τρεῖς πίνακες παριστάνοντες τὴν ἁγίαν οἰκογένειαν τοῦ Ἀνδρέα ντὲλ Σάρτο, δύο ἐπεισόδια τῆς ἱστορίας τοῦ Ἰωσὴφ τοῦ Πιντουρίκκιο, τέσσαρα ἔργα τοῦ Ραφαὴλ (ὁ περίφημος ἐνταφιασμός, ἡ προσωπογραφία τοῦ Καίσαρος Βοργία, ἡ προσωπογραφία ἑνὸς καρδιναλίου καὶ οἱ γάμοι τοῦ Ἀλεξάνδρου καὶ τῆς Ρωξάνης), ἡ Ἀφροδίτη εἰς τὸ λουτρὸν καὶ τρία ἀντίγραφα ἔργων τοῦ Ραφαὴλ (ὁ ἅγιος Ἰωάννης, ὁ Ἰούλιος Β' καὶ ἡ Φορναρίνα), ἡ περίφημος Δανάη καὶ ἡ Μαγδαληνὴ τοῦ Κορρέτζιο, ἡ Λήδα, ἡ ἁγία Ἀγάθη καὶ ὁ Σωτὴρ τοῦ κόσμου, ἔργα ἀποδιδόμενα εἰς τὸν Λεονάρδον ντὰ Βίντσι, τὸ κυνήγιον τῆς Ἀρτέμιδος καὶ ἡ Σίβυλλα τῆς Κύμης, ἀριστουργήματα τοῦ Ντομινικίνο, ἀντίγραφον τῶν τριῶν ἐποχῶν τῆς ζωῆς τοῦ Τιτσιανοῦ, ἡ Παναγία τοῦ Σασσοφερράτο, ὁ περίφημος πίναξ τοῦ Τιτσιανοῦ «Ἔρως ἱερὸς καὶ Ἔρως βέβηλος», αἱ τρεῖς Χάριτες τοῦ ἰδίου κτλ. Ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ ἔργα τινὰ ξένων καλλιτεχνῶν, ὡς εἶναι τοῦ Κράναχ, τοῦ Βὰν Ντάϊκ, τοῦ Ριμπέρα κτλ. Τὸ μουσεῖον τοῦτο ἠγοράσθη ὑπὸ τοῦ ἰταλικοῦ κράτους τῷ 1901 ἀντὶ 3.600.000 φράγκων. Μ. Δ. Β.

**Μπορκέζι** (Borghesi), *κόμις Βαρθολομαῖος*. Ἰταλὸς ἐπιγραφολόγος (1781—1860). Ἠσχολήθη κατ' ἀρχὰς μὲ τὴν παλαιογραφίαν, ἀλλὰ λόγῳ παθήσεως τῶν ὀφθαλμῶν του, προκληθείσης ἐκ τῆς μελέτης τῶν δυσαναγνώστων μεσαιωνικῶν χειρογράφων, ἐτράπη πρὸς τὴν ρωμαϊκὴν ἐπιγραφολογίαν καὶ νομισματολογίαν. Τῷ 1819 ἤρχισεν ἐκδίδων τὸ διαφωτιστικώτατον διὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἱστορίαν ἔργον «Νέαι περικοπαὶ τῶν ὑπατικῶν πινάκων τοῦ Καπιτωλίου», ὅπερ προεκάλεσε τὴν προσοχὴν ὁλοκλήρου τοῦ ἐπιστημονικοῦ κόσμου. Ἀπὸ τοῦ 1821 ἀποσυρθεὶς εἰς Ἅγιον Μαρῖνον ἐπεδόθη, μακρὰν τῆς τύρβης τοῦ κόσμου, εἰς τὰς ἐπιστημονικὰς μελέτας του, ἐπικοινωνῶν δι' ἀλληλογραφίας μετὰ τῶν διασημοτέρων ἐν Εὐρώπῃ συναδέλφων του καὶ συνεργαζόμενος εἰς τὰ «Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τοῦ Τουρίνου», τὴν «Ἀρκαδικὴν ἐφημερίδα» τῆς Ρώμης καὶ τὰ «Ἀνάλεκτα» καὶ τὸ «Δελτίον» τοῦ ἀρχαιολογικοῦ ἰνστιτούτου τῆς Ρώμης, εἰς τὸ «Ἀρχαιολογικὸν Δελτίον» τῆς Νεαπόλεως κλπ. Παρεσκεύασε νέαν ἔκδοσιν τῶν ὑπατικῶν πινάκων καὶ ἐπελήφθη τοῦ καταρτισμοῦ μεγάλης συλλογῆς, περιλαμβανούσης ἁπάσας τὰς λατινικὰς ἐπιγραφὰς τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, δὲν ἠδυνήθη ὅμως νὰ πραγματοποιήσῃ αὐτὴν λόγῳ τοῦ ἐπελθόντος θανάτου του. Ὁ Ναπολέων Γ' συνέστησε μετὰ τὸν θάνατόν του ἐπιτροπήν, ἥτις προέβη εἰς τὴν ἔκδοσιν τῶν ἁπάντων αὐτοῦ δημοσίᾳ δαπάνῃ. Χ. Δ.

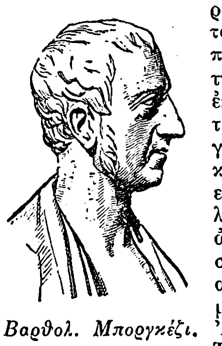

*Βαρθολ. Μπορκέζι.*

**Μπορκερούτ** (Borgerhout) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀμβέρσης κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σὺν παραποτάμου τοῦ Σκάλδιος. Ἀποτελεῖ προάστειον τῆς πόλεως Ἀμβέρσης καὶ ἔχει βιομηχανίας καπνοῦ, κηροπλαστικῆς κλπ. Κάτ. (1929) 54.267. Χ. Δ.

**Μπορκέττο** (Borghetto) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Βρεσκίας, κείμενον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μίντσιο εἰς ἀπόστασιν 34 χλμ. πρὸς ΝΑ. τῆς Βρεσκίας. Παρ' αὐτὸ ὁ Βοναπάρτης ἐνίκησε τῷ 1796 τὸν αὐστριακὸν στρατηγὸν Μπωλιέ. Χ. Δ.

**Μποργκοκολλεφέγκατο** (Borgocollefegato) *[Γεωγρ.]*. Γεωργικὴ πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ριέτι τῶν Κάτω Ἀβρουζίων, κειμένη ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως (720 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν). Κάτοικοι 6.656. Χ. Δ.

**Μποργκομανέρο** (Borgomanero) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Νοβάρας, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Ἀγκόνια, εἰς ὕψος 310 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, 31 χλμ. πρὸς Β. τῆς Νοβάρας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον βιομηχανίας μετάξης καὶ δεσπόζει τῶν πρὸς τὸ Σεμπλὸν ὁδῶν συγκοινωνίας. Κάτ. (1921) 12.311. Χ. Δ.

**Μποργκονιόνε**, ἢ *Μπεργκονιόνε* (Borgognone ἢ Bergognone), ***Ἀμβρόσιος***. Ἰταλὸς ζωγράφος, εἷς τῶν ἐξοχωτέρων ἐκπροσώπων τῆς λομβαρδικῆς σχολῆς, γεννηθεὶς ἐν Φοσσάνῳ κατὰ τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Λεπτομερεῖς πληροφορίαι περὶ τοῦ βίου του δὲν ὑπάρχουν. Γνωστὸν εἶναι μόνον ὅτι ἀπὸ τοῦ 1488 μέχρι τοῦ 1494 ἀναχωρήσας ἐκ Μιλάνου, ὅπου μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης διέμενεν, εἰργάσθη ἐν τῇ Certosa τῆς Παβίας, κατὰ δὲ τὸ 1495 ἐπανελθὼν εἰς Μιλᾶνον, ἐξετέλεσε τὰς διακοσμήσεις τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Σατύρου. Τρία ἔτη βραδύτερον εἰργάσθη ἐν Λόντι, ἔνθα παρέμεινε μέχρι τοῦ 1500, ἀπὸ δὲ τοῦ 1514 εἰργάσθη ἐκ νέου εἰς τὴν Certosa τῆς Παβίας καὶ βραδύτερον εὑρίσκετο ἐκ νέου εἰς τὸ Μιλᾶνον. Ἀπέθανε τῷ 1535. Ἡ τέχνη του παρουσιάζει ἔκδηλον τὸν χαρακτῆρα τῆς προσαρμογῆς πρὸς τὰς παλαιὰς παραδόσεις (γοτθικὴ ξηρότης καὶ σχολαστικὴ ἐξεργασία τῶν λεπτομερειῶν ἐνιαχοῦ), ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου δὲν φαίνεται σοβαρῶς ἐπηρεασμένος ἐκ τῶν νεωτεριστικῶν τάσεων, ἃς προὐκάλει διὰ τοῦ μεγαλειώδους ταλάντου του ὁ Λεονάρδος ντὰ Βίντσι. Κατὰ ταῦτα ὁ Μποργκογιόνε ἀποτελεῖ μεταβατικόν τινα σταθμὸν μεταξὺ τῆς παλαιᾶς, παραδεδομένης τέχνης καὶ τῆς τέχνης τῆς Ἀναγεννήσεως. Τὸ ἔργον του εἶναι πλῆρες ἀφελοῦς δροσερότητος, θαυμασία δ' εἶναι ἡ ἱκανότης του εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν προσώπων. Ἀγαπᾷ τὰς ἠρέμους στάσεις, τὰς εὐλαβεῖς ἱερατικὰς χειρονομίας, τὴν σοβαρὰν χάριν ἐν τῇ ἐκφράσει.

Ἐκ τῶν ἔργων του μνημονεύονται τὰ ἀκόλουθα: «Ὁ λόγος τοῦ ἁγίου Ἀμβροσίου καὶ ἡ καθοσίωσις τοῦ ἁγίου Αὐγουστίνου», «Ἡ Παρθένος» (ἀμφότερα ἐν τῇ πινακοθήκῃ τῆς ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν τῆς Γενούης), «Ἡ Παρθένος μετὰ τῶν ἀγγέλων», «Ἡ ἁγία Αἰκατερίνη» (ἀμφότερα ἐν τῷ μουσείῳ Poldi - Pezzoli τοῦ Μιλάνου), «Ἡ ἁγία συνομιλία» (Ἀμβροσιανὴ πινακοθήκη Μιλάνου), «Ὁ Χριστὸς ἐν τῷ μέσῳ τῶν διδασκάλων» (ναὸς Ἁγίου Ἀμβροσίου, Μιλάνον), «Ἡ κοίμησις τῆς Θεοτόκου» (πινακοθήκη Μπρέρα, Μιλᾶνον), «Ἡ στέψις τῆς Θεοτόκου» (τὸ ἀριστούργημα τοῦ Μποργκονιόνε ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Σιμπλικιανοῦ, ἐν Μιλάνῳ), ἡ διακόσμησις τοῦ ναοῦ τῆς Παναγίας τοῦ Πάθους (Μιλᾶνον), «Ἡ φάτνη» (ναὸς S. Maria presso S. Celso, Μιλᾶνον), ἓν ὡραῖον τρίπτυχον ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Εὐστοργίου (Μιλᾶνον), «Ὁ Ἰωάννης Γαλέας Βισκόντι παρουσιάζων πρὸς τὴν Παρθένον τὸ πρότυπον τοῦ ναοῦ», «Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ», «Ἅγιοι», «Ὁ Ἐσταυρωμένος» καὶ ἕτεραι ἀξιολογώταται συνθέσεις (Certosa di Pavia), θαυμάσιον πολύπτυχον ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος (Μπέργκαμο), «Ἡ Παρθένος» (ναὸς S. Vito ἐν Crémia παρὰ τὴν λίμνην τοῦ Κόμο), «Ὁ Χριστὸς φέρων τὸν σταυρὸν» (Museo Civico Παβίας), «Madonnina» (ἐθνικὴ πινακοθήκη Λονδίνου), «Ἅγιος Ἱερώνυμος» (συλλογὴ Ἀλμπερτίνι), «Ἡ ἐπίσκεψις τῆς Θεοτόκου πρὸς τὴν ἁγίαν Ἐλισάβετ» (Λόντι, ναὸς dell' Incoronata), «Ὁ Χριστὸς μετὰ μοναχῶν τῆς Certosa di Pavia» (ἐν σχολῇ καλῶν τεχνῶν Παβίας).

Ὁ μικρότερος ἀδελφὸς τοῦ Ἀμβροσίου Μποργκονιόνε *Βερναρδῖνος* ὑπῆρξεν ἀξιόλογος ζωγράφος. Συνειργάσθη μετὰ τοῦ Ἀμβροσίου ἐν Παβίᾳ καὶ Λόντι καὶ μνημονεύεται ἐν τοῖς χρονικοῖς τῆς μητροπόλεως τοῦ Μιλάνου κατὰ τὰ ἔτη 1517–1518. Τὸ μόνον αὐθεντικὸν ἔργον του εἶναι ὁ «Ἅγιος Ρόκος» τοῦ ἔτους 1523, ἀποκείμενος ἐν τῇ πινακοθήκῃ Μπρέρα τοῦ Μιλάνου. Ι. Μ. Π.

— **Μποργκονιόνε** (Borgognone), ***Τζάκομο Κορτέζι*** (Jacques Courtois), ὁ ἐπιλεγόμενος —. Ζωγράφος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐγεννήθη τῷ 1621 ἐν Ἁγίῳ Ἱππολύτῳ (Doubs) καὶ ἀπέθανεν ἐν Ρώμῃ (1675). Μεταβὰς νεώτατος εἰς Μιλᾶνον (1635), ἀνέλαβεν ὑπηρεσίαν εἰς τὸν ἱσπανικὸν στρατόν· κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὑπηρεσίας του ταύτης ἀκολουθῶν τὸ παράδειγμα τοῦ Callot, ἐξεικόνισε μετ' ἐπιτυχίας διαφόρους πολεμικὰς σκηνὰς καὶ χαρακτηριστικὰ στρατιωτικὰ ἐπεισόδια. Τῷ 1639 μετέβη εἰς Βολωνίαν, ἔνθα ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ζερόμ, τῷ Γκουΐντο Ρένι καὶ τῷ Ἀλμπάνι, μετὰ βραχεῖαν δὲ διαμονὴν ἐν Φλωρεντίᾳ, ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν Ρώμῃ, ἔνθα διὰ συνεχοῦς παραγωγῆς ἀπέκτησε τὴν φήμην τοῦ καλυτέρου πολεμικοῦ ζωγράφου τῶν χρόνων του. Βραδύτερον ἀποθανούσης τῆς συζύγου του Maria Vaiani, ἐπέστρεψεν εἰς τὴν γενέτειράν του πόλιν, εἶτα δ' ἐπεσκέφθη ἀλληλοδιαδόχως τὴν Βενετίαν, τὸ Μπέργκαμο, τὴν Φλωρεντίαν καὶ ἄλλας πόλεις τῆς Ἰταλίας, καταλήξας ἐκ νέου εἰς τὴν Ρώμην. Τῷ 1657 εἰσῆλθεν εἰς τὴν «compagnia di Gesù», χωρὶς νὰ παύσῃ ἀσχολούμενος εἰς τὴν πολεμικὴν ζωγραφικήν. Καὶ θρησκευτικὰς συνθέσεις ἐξεικόνισεν ὁ Μποργκονιόνε, ἀλλ' αἱ «Μάχαι» του ἀποτελοῦν τὸ χαρακτηριστικώτερον καὶ ἀξιολογώτερον τμῆμα τοῦ ἔργου του. Ἀξιομνημόνευτος μεταξὺ τούτων εἶναι ἡ ἀποκειμένη ἐν τῇ Πινακοθήκῃ Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας. Ι. Μ. Π.

**Μποργκονιόνι** (Borgognoni), ***Οὖγος***. Ἰταλὸς ἀνατόμος καὶ χειρουργός, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα καὶ ἀποθανὼν τῷ 1250. Θεωρεῖται ὡς ὁ ἱδρυτὴς τῆς χειρουργικῆς σχολῆς Βολωνίας, ἐν τῇ ὁποίᾳ διετέλεσεν ἰατροδικαστὴς καὶ στρατιωτικὸς ἰατρός. Σημαντικώτερος ὑπῆρξεν ὁ υἱός του *Θεοδώριχος* (1205—1298), συγγραφεὺς χειρουργικῆς («Chirurgia»), ἥτις ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του ἠξιώθη μεγάλης φήμης. Ο. Ρ.

**Μπόργκο-Σὰν-Ντοννίνο** (Borgo - San - Donnino, λατιν. Fidentia Julia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Πάρμας, 22,5 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς Πάρμας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν πρὸς τὸ Μιλᾶνον, Λιβόρνον, Βολωνίαν καὶ ἀξιόλογον γεωργικὸν κέντρον. Ἔχει ὡραῖον, ρωμαϊκοῦ ρυθμοῦ, ναὸν τοῦ Ἁγίου Δομνίνου, πολιούχου αὐτῆς (ΙΒ' αἰῶνος). Μετωνομάσθη εἰς *Φιντέντσα*. Κάτ. 7.423. Χ. Δ.

**μπορδάλα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία ἐν Κεφαλληνίᾳ ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἄμπελος ἡ οἰνοφόρος*.

**μπόρε** *[Ὠκεανογρ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ *μασκαρέ* (βλ. λ.), τὸ ὁποῖον σχηματίζεται εἰς τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Γάγγου.

**Μπορὲ** (Boré), ***Εὐγένιος***. Γάλλος ἱεραπόστολος καὶ συγγραφεὺς (1809—1877). Χρηματίσας μαθητὴς τοῦ Λαμενναί, συνεδέθη διὰ στενῆς πρὸς αὐτὸν φιλίας. Ἐλθὼν ὡς ἱεραπόστολος εἰς τὴν Ἀρμενίαν, εἰργάσθη μετὰ ζήλου ἐπὶ τριάκοντα περίπου ἔτη. Κατόπιν ἐπισκεφθεὶς τοὺς ἁγίους τόπους ἐδημοσίευσε πραγματείαν πρὸς ὑπεράσπισιν τῶν αὐτόθι καταπατουμένων δῆθεν δικαίων τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας ὑπὸ τῶν ὀρθοδόξων. Ἡ πραγματεία αὕτη ἀνῃρέθη ὑπὸ τοῦ πρώην οἰκουμενικοῦ πατριάρχου Κωνσταντίου τοῦ Α', τῆς ἀναιρέσεως δημοσιευθείσης ἐν Κωνσταντινουπόλει τῷ 1851 καὶ ἔπειτα ἀνατυπωθείσης εἰς τὰς ἐλάσσονας συγγραφὰς αὐτοῦ (σ. 235—329). Μικρὸν πρὸ τοῦ θανάτου του ὁ Μπορὲ ἐγένετο γενικὸς ἐπόπτης τῶν ἱεραποστολῶν τῆς ἱεραποστολῆς. Κ. Ι. Δ.

**Μπόρεβιτς** (Boroevic), ***Σβέτοβαρ***. Αὐστριακὸς στρατηγὸς (βλ. λ. *Μπορόεβιτς*).

Digitized by Google

**Μπορένιους** (Borenius), ***Ταγκρέδος***. Φινλανδὸς ἱστορικὸς τῆς τέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1885. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ἕλσιγκφορς καὶ ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν, μελετήσας μεθ' ὅλως ἰδιάζοντος ἐνδιαφέροντος τὴν τέχνην τὴν Ἀναγεννήσεως. Τῷ 1914 διωρίσθη «λέκτωρ» καὶ τῷ 1922 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης εἰς τὸ University College τοῦ Λονδίνου. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς φινλανδικῆς ἀνεξαρτησίας ἐχρησιμοποιήθη ὑπὸ τῆς πατρίδος του εἰς διαφόρους διπλωματικὰς ὑπηρεσίας καὶ ἀποστολὰς ἐν Ἀγγλίᾳ, Γαλλίᾳ, Βελγίῳ κλπ. Συνέγραψεν: «Οἱ ζωγράφοι τῆς Βικεντίας» (1909), «Ἱστορία τῆς ζωγραφικῆς ἐν τῇ βορείῳ Ἰταλίᾳ» (1912), «Κατάλογος τῶν συλλογῶν τοῦ σὲρ Φρειδερίκου Κοὺκ» (1913), «Κατάλογος τῆς συλλογῆς τοῦ ὑποκόμιτος Lee of Fareham» (1923), «Οἱ Ἄγγλοι πριμιτὶφ» (1924). Ι. Μ. Π.

**μπορεσάμενος,** *—η, —ο·* συνήθ. τὸ οὐδέτερον, δυνατόν, κατορθωτόν: ᾆσμ. «ἂν ἦταν μπορεσάμενο ν' ἀνοίξῃς τὴν καρδιά μου».

**Μπορέσνιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Παλαίστρα* (βλ. λ.).

**μπορετός,** *—ή, —ό·* συνήθ. τὸ οὐδέτερον, δυνατόν, κατορθωτόν, ἄλλως *μπορεσάμενος*.

**Μπορέτσκι, *Δημήτριος Ἰσαάκοβιτς*.** Ρῶσος κάθεδρος τῆς δημοκρατίας τοῦ Νοβογκόροντ (1447—1472). Μετασχὼν τῆς συνωμοσίας τῆς μητρός του κατὰ τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος τῆς Μόσχας, ἀνηγορεύθη κάθεδρος τῆς δημοκρατίας καὶ ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ, ἀλλ' ἡττηθεὶς ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Δανιὴλ Χάλμσκι ἀπήχθη εἰς Μόσχαν, ὅπου ἐθανατώθη. Θ. Β.

— **Μπορέτσκι, *Μάρθα Βασιλειέβνα*.** Ρωσὶς ἡρωῒς (1426—1491), χήρα τοῦ Δημητρίου Μπορέτσκι. Μὴ ἀνεχομένη τὴν ὑποταγὴν τῆς πατρίδος της εἰς τὸν μέγαν ἡγεμόνα τῆς Μόσχας Ἰβὰν Γ', ὑπερήφανος δὲ καὶ τολμηρά, ἐπεχείρησε, παρὰ τὰ ἀρχαῖα σλαβικὰ ἤθη, τὰ ἀποκλείοντα ἀπὸ πάσης πολιτικῆς ἀναμίξεως τὰς γυναῖκας, τὴν μεταβολὴν τῶν δημοσίων πραγμάτων. Ἡ φιλοπατρία, ἡ εὔκλεια τοῦ γένους καὶ ὁ ἄπειρος πλοῦτος τῆς παρεῖχον μεγίστην δύναμιν. Καταστήσασα τὸν οἶκόν της κέντρον συνωμοσίας καὶ τεθεῖσα ἐπὶ κεφαλῆς αὐτῆς, ἐξεδίωξε τοὺς ἀντιπροσώπους τοῦ ἡγεμόνος, κατέλαβε τὴν ἀρχὴν καὶ ἀνεκήρυξεν ἐκ νέου δημοκρατίαν τὸ Νοβογκόροντ. Ἡττηθεῖσα ὅμως κατὰ κράτος καὶ συλληφθεῖσα μετὰ τῶν τέκνων της, ἀπήχθη εἰς Μόσχαν, ὅπου διῆλθε τὸ ὑπόλοιπον τοῦ βίου της αἰχμάλωτος. Θ. Β.

**Μπόρζα** (Borja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας (βλ. λ. *Μπόρχα*).

**Μπορζὸμ** (Borjom) ***μεταλλικὰ ὕδατα***. Αἱ μεταλλικαὶ αὗται πηγαὶ εὑρίσκονται εἰς τὸν ἀνατολικὸν Καύκασον καὶ εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς πόλεως Τυφλίδος, εἰς ὕψος 797 μ. ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Εἶναι ἀλκαλικὰ ὕδατα θερμοκρασίας 27,8°, ἔχουν εἰδικὸν βάρος 1,0053 εἰς 15° καὶ περὶ τὰ 6. 5 γρ. στερεῶν συστατικῶν διαλελυμένων ἀνὰ λίτρον ὕδατος. Ἐπικρατοῦντα συστατικὰ τῶν ὑδάτων εἶναι: ὑδροανθρακικὸν νάτριον 5.21 γρ., ὑδροανθρακικὸν κάλιον 0.36 γρ., ὑδροανθρακικὸν μαγνήσιον 0.12 γρ. καὶ χλωριοῦχον νάτριον 0.66 γρ. Τὰ μεταλλικὰ ταῦτα ὕδατα ἐνδείκνυνται ἐπὶ γαστραλγιῶν, δυσπεψιῶν, ὑπερχλωρυδρίας, κατάρρου τοῦ στομάχου καὶ ἐντέρου, κατὰ τῶν ἐμέτων τῶν ἐγκύων, ἐπὶ ἀρθριτισμοῦ, ψαμμιάσεως, νεφρολιθιάσεως, παθήσεων τοῦ ἥπατος κλπ. Τὸ Μπορζὸμ ἀποτελεῖ σημαντικῶς προηγμένον ὑδρομεταλλικὸν σταθμόν, τῶν ὑδάτων του δὲ γίνεται καὶ μεγάλη ἐξαγωγή. Κ. Γ. Μ.

**Μπορζοῦ, *Σκάλα —*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ἐμπόριον* (τ. ΙΑ', σ. 88 γ').

**Μπόριανη** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, μετονομασθεῖσα εἰς *Ἅγιον Ἀθανάσιον*. Εἶναι ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος, περιλαμβανούσης καὶ τὸ χωρίον *Καλαμιώνας* (*Μποσινός*), κεῖται δὲ ἐγγὺς τοῦ Δοξάτου καὶ τῆς ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ Δράμας—Καβάλλας. Ἔχει τηλεφωνεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 2.088. Χ. Δ.

**Μποριμώφ,** ἢ ***Μπολιμὼφ*** (Borimov ἢ Bolimov) *[Γεωγρ.]*. Θέσις ἐν τῷ πολωνικῷ νομῷ τῆς Βαρσοβίας, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Ράβα. Παρ' αὐτὴν διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἡττήθησαν τὰ γερμανικὰ στρατεύματα τοῦ στρατάρχου Χίνδεμπουργ (Ἰανουάριος 1916). Χ. Δ.

**Μπορινὰζ** (Borinage) *[Γεωγρ.]*. Γαιανθρακοφόρος περιοχὴ τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀννωνίας, ἐκτεινομένη περὶ τὴν πόλιν Μόνς. Μεγάλα κέντρα ἔχει τὰς πόλεις *Ζεμμάπ*, *Καρενιόν*, *Φραγκερὶ* κλπ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατεῖχον καὶ ἐξεμεταλλεύοντο αὐτὴν οἱ Γερμανοί. Χ. Δ.

**Μπόρις** (Boris)· βλ. λ. *Βόρις*.

**Μπορισογκλιὲμπσκ** (Borisogliebsk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Ταμπὼφ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Βορύνα. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν, κτηνῶν, ἐρίου, δερμάτων, σάπωνος κλπ. Κατελήφθη ὑπὸ τῶν μπολσεβίκων τὸν Αὔγουστον τοῦ 1919. Κάτ. 29.000. Χ. Δ.

**Μπορίσοφκα** (Borisovka) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Κοὺρσκ τῆς κυρίως Ρωσίας. Ἔχει ἐργοστάσια βυρσοδεψίας. Κάτ. 17.000. Χ. Δ.

**Μπορίσωφ** (Borisov) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Μίνσκ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ Μπερεζίνα ποταμοῦ, 80 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Μίνσκ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βυρσοδεψεῖα, ζυθοποιεῖα, καπνοβιομηχανίας κλπ. Παρὰ τὴν πόλιν ταύτην ἐγένετο ἡ καταστρεπτικὴ διάβασις τοῦ ποταμοῦ Μπερεζίνα ὑπὸ τῆς μεγάλης στρατιᾶς τοῦ Ναπολέοντος κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1812. Ἡ Μπορίσωφ περιῆλθεν εἰς τὴν Ρωσίαν τῷ 1795. Κάτοικοι 19.400.

**μπορίτσα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πεύκη ἡ μελανή*.

**Μπορκόβσκι** (Borkowski), ***Ἰωσὴφ Ντούνιν***. Πολωνὸς ἑλληνιστὴς (1809—1843). Σπουδάζων ἐν Βαρσοβίᾳ, ἠναγκάσθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν πόλιν ταύτην λόγῳ τοῦ ὅτι ἦτο Αὐστριακὸς ὑπήκοος, καὶ νὰ μεταβῇ εἰς Τσέρνοβιτς, ὅπερ ἐχρησίμευε τότε ὡς ἄσυλον πολυαρίθμων ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες εἶχον ἐκπατρισθῆ λόγῳ τῆς τουρκικῆς δεσποτείας. Ὁ Μπορκόβσκι συνεδέθη μετὰ τῶν οἰκογενειῶν τούτων, ἐνεθουσιάσθη διὰ τὸν ἑλληνικὸν ἀγῶνα καὶ ἔγραψεν ᾠδὰς διὰ τὴν ἑλληνικὴν παλιγγενεσίαν. Ἐκμαθὼν κατὰ βάθος τὴν νέαν ἑλληνικήν, προέβη εἰς ἔκδοσιν ἀπανθίσματος ἑλληνικῶν λαϊκῶν ᾀσμάτων καὶ μετέφρασεν εἰς αὐτὴν τὰ ποιήματα τοῦ Ἀλεξάνδρου Χόντσκο. Βραδύτερον μετέβη εἰς Βιέννην, ὅπου ἐτελειοποιήθη εἰς τὴν ἀρχαίαν καὶ τὴν νέαν ἑλληνικὴν ὑπὸ τὸν Κωνστ. Κούμα. Τῷ 1832 ἐγκατεστάθη ἐν Λέμπεργ, ὅπου προέβη εἰς ἀρίστας ἐκδόσεις Ἑλλήνων κλασσικῶν. Τῷ 1838 ἐδημοσίευσε περίληψιν τῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Prace literackie» (λογοτεχνικὰ ἔργα), μικρὸν δὲ μετὰ ταῦτα μετέφρασεν εἰς τὴν ἑλληνικὴν τοὺς «Θεοὺς τῆς Ἑλλάδος» τοῦ Σίλλερ. Α. Δ.

— **Μπορκόβσκυ** (Borkowsky), ***Στανίσλαος***. Πολωνὸς λόγιος (1782—1850). Ἔγραψε: «Αἱ μελέται περὶ τοῦ ἐδάφους τῶν περιχώρων τῆς Ρώμης» (1817), «Περιηγήσεις ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν ἀπὸ τοῦ 1815—1816» (1820), «Περὶ τῶν καθηκόντων τῶν ἐφόρων βιβλιοθηκῶν» (1824). Α. Δ.

**Μπορκοὺ** (Borkou) *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τοῦ Γαλλικοῦ Σουδάν, κειμένη μεταξὺ τῆς χώρας τῆς λίμνης Τσὰντ πρὸς Ν. καὶ τοῦ Τιμπέστι πρὸς Β. Ἔχει ἔκτασιν 16.000 περίπου τετρ. χλμ., κατοικεῖται δὲ ὑπὸ 12.000 περίπου νομάδων κτηνοτρόφων. Κατελήφθη τῷ 1913 ὑπὸ τοῦ Γάλλου συνταγματάρχου Λαργκώ. Ὁ κυριώτερος συνοικισμὸς αὐτῆς *Ἀΐν Γκαλακκὰ* εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς διασταυρώσεως τῶν ἀνὰ τὴν ἀνατολικὴν Σαχάραν ὁδῶν καραβανίων. Χ. Δ.

**Μπόρκουμ** (Borkum) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ νῆσος τῆς Βορείου θαλάσσης, ἀνήκουσα εἰς τὸ Φρεισλανδικὸν ἀρχιπέλαγος. Κεῖται παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ἔμς, 15 χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας τῆς Ὀλλανδίας. Ἔχει μῆκος 8 χλμ. καὶ πλάτος 4, ἔκτασιν 30 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 3.500 κατ., οἵτινες κατοικοῦσι τὴν ὁμώνυμον κωμόπολιν καὶ ἀσχολοῦνται μὲ τὴν κτηνοτροφίαν καὶ τὴν ἁλιείαν. Εἶναι ἐπίσης πολυσύχναστος λουτρόπολις καὶ κέντρον θερινῆς διαμονῆς τῶν πόλεων Ἔμντεν καὶ Ἁμβούργου. Διοικητικῶς ὑπάγεται εἰς τὸν νομὸν Ἀννοβέρου. Χ. Δ.

**Μπορμίντα** (Bormida) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰταλίας, σχηματιζόμενος διὰ τῆς συνενώσεως τῶν δύο βραχιόνων Μπορμίντα ντὶ Μιλλέσιμο καὶ Μπορμίντα ντὶ Σπίνιο, διασχίζων τὴν μεταξὺ Ἀπεννίνων καὶ Ἄλπεων χώραν καὶ συμβάλων μετὰ ροῦν 150 χλμ. εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Τανάρο. Χ. Δ.

**Μπόρμιο** (Bormio) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Σόντριο, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἄντα παρὰ τοὺς πρόποδας τῆς διόδου τοῦ Στέλβιο. Εἶναι ἐκ τῶν ὑψηλοτέρων πόλεων τῆς Βαλτελίνης κοιλάδος, κειμένη 1262 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, καὶ ἔχει μεσαιωνικὸν πύργον καὶ παλαιοτάτους ναούς. Αἱ ἀπὸ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων γνωσταὶ μεταλλικαὶ πηγαὶ αὐτῆς, ἐνδεικνυόμεναι ἐναντίον τῶν ρευματισμῶν, παραλύσεων, ἀναλγησίας, νευραλγιῶν κλπ., συγκεντροῦσι κατ' ἔτος πλείστους ἀσθενεῖς. Ἐν Μπόρμιο τὴν 26 Μαρτίου 1799 ὁ Γάλλος στρατηγὸς Ντεσσὸλ ἐνίκησεν 7.000 Αὐστριακούς. Κάτ. (1921) 1.952. Χ. Δ.

**Μπορμπὰ** (Borba) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πορτογαλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀλεμτέγιο, κτισμένη ἐπὶ λόφου, εἰς ὕψος 400 μ., 15 χλμ. πρὸς Α. τῆς πόλεως Ἔλβας. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου οἴνου, ἐλαίου κλπ. καὶ ἔχει λατομεῖα μαρμάρου. Κάτ. 7.000. Χ. Δ.

**Μπόρμπεκ** (Borbeck) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς Γερμανίας ἐν Ρηνανίᾳ, ὑπαγομένη ἀπὸ τοῦ 1915 εἰς τὴν περιοχὴν τῆς πόλεως Ἔσσεν, ἀφ' ἧς ἀπέχει 5 χλμ. πρὸς ΒΔ. Ἔχει μεγάλα ἀνθρακωρυχεῖα, χυτήρια σιδήρου καὶ ψευδαργύρου καὶ ἄλλας μεγάλας μεταλλευτικὰς ἐγκαταστάσεις. Κάτ. 71.217. Χ. Δ.

**Μπὸρν** (Born), ***Βερτράνδος ντὲ —***. Περίφημος Γάλλος τρουβαδοῦρος καὶ πολεμιστὴς ἐκ Προβηγγίας, ζήσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΒ' αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν τῷ 1210. Ὁ Μπόρν, ὅστις εἶχεν ἐπονομασθῆ «Τυρταῖος τοῦ μεσαίωνος», ἦτο ὑποκόμις τοῦ Ὠτ' φὸρ καὶ αὐθέντης μεγάλης περιοχῆς, προερχομένης ἐκ πατρικῆς κληρονομίας, τὴν ὁποίαν ἐπέτυχε νὰ καρπωθῇ ὁλόκληρον, ἐκδιώξας δὶς διὰ τῶν ὅπλων τὸν συγκληρονόμον ἀδελφόν του. Συνδεόμενος διὰ στενῆς φιλίας μὲ τὸν πρίγκιπα Ἑρρῖκον, υἱὸν τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἑρρίκου Β', ἐξώθησεν αὐτὸν νὰ ἐπαναστατήσῃ κατὰ τοῦ πατρός του καὶ εἶτα νὰ λάβῃ τὰ ὅπλα κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ριχάρδου τοῦ Λεοντοκάρδου. Ὅταν δὲ ὁ Ἑρρῖκος συνεβιβάσθη μὲ τὸν Ριχάρδον, ἐγκαταλιπὼν ἐκτεθειμένους εἰς τὴν ὀργὴν αὐτοῦ τοὺς συνεργάτας του, ὁ Μπὸρν τὸν ἐξεδικήθη, γράψας δηκτικὴν ἐναντίον του σάτιραν, καὶ ἐνεκλείσθη κατόπιν εἰς τὸν πύργον του ἀποφασισμένος ν' ἀγωνισθῇ μέχρις ἐσχάτων. Πολιορκηθεὶς ὅμως ἐπὶ μακρὸν ὑπὸ τοῦ Ριχάρδου, ὑπέκυψεν ἐν τέλει καὶ ᾐχμαλωτίσθη. Ἐσυγχωρήθη ἐν τούτοις παρ' αὐτοῦ καὶ ἔκτοτε οἱ δύο πολεμισταὶ ἔγιναν εἰλικρινεῖς φίλοι. Μετά τινα ἔτη, ὅταν ὁ Ριχάρδος, γενόμενος ἐν τῷ μεταξὺ βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας, ἦλθεν εἰς τὴν ἠπειρωτικὴν Εὐρώπην διὰ νὰ ἐκδικηθῇ τὸν Φίλιππον-Αὔγουστον, ὁ Μπὸρν εὑρίσκετο παρὰ τὸ πλευρόν του, ὑποστηρίζων αὐτὸν διὰ τῶν ὅπλων καὶ συνθέτων ταυτοχρόνως πολεμικὰ θούρια, ἐξάπτοντα τὸ πολεμικὸν μένος τοῦ στρατοῦ του. Ὁ θάνατος τοῦ Ριχάρδου ἐτερμάτισε τὴν πολιτικὴν καὶ πολεμικὴν ζωὴν τοῦ Βερτράνδου ντὲ Μπόρν, ὅστις ἀποσυρθεὶς εἰς μοναστήριον παρέμεινεν ἐν αὐτῷ μέχρι τοῦ θανάτου του. Τὰ ποιήματά του, σατιρικά, πολεμικά, ἐρωτικὰ καὶ ἄλλα, συνελέγησαν καὶ περιελήφθησαν ὑπὸ τοῦ Ραινουὰρ εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθεῖσαν «Ἐκλογὴν ποιημάτων τῶν τρουβαδούρων».

Ὁ υἱὸς τοῦ Μπόρν, ὀνομαζόμενος ἐπίσης *Βερτράνδος*, ὁμοίως πολεμιστὴς καὶ ποιητὴς ὅπως καὶ ὁ πατήρ του, ἐφονεύθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μπουβὶν τῷ 1214. —Ω.

**Μπόρνα** (Borna) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Σαξωνίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Βήρα. Εἶναι σπουδαῖον κέντρον γαιανθρακοφόρου περιοχῆς. Κάτ. 7.500. Χ. Δ.

**Μπόρνεμ** (Bornem) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Μαλίνες τοῦ νομοῦ Ἀμβέρσης, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Σκάλδιν. Βιομηχανίαι ὑφασμάτων. Κάτ. 6.300. Χ. Δ.

**Μπόρνεο** (Borneo) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη νῆσος τῆς Ὠκεανίας (βλ. λ. *Βόρνεο*).

**Μπορνιὲ** (Bornier), ***Ἑρρῖκος, ὑποκόμις ντὲ —***. Γάλλος λογοτέχνης καὶ ποιητὴς (1825—1901). Συνειργάσθη εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικὰ καὶ ἐτιμήθη κατ' ἐπανάληψιν διὰ βραβείων τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Εἰς τόμους ἐδημοσίευσε μυθιστορήματα («Εἰς τὸ κρεββάτι της», «Λουΐζα ντὲ Βωβὲρ» κτλ.), ποιήματα («Ὁ γυιὸς τῆς Γῆς» κ. ἄ.), ἰδίως δὲ θεατρικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ὁ κλωβὸς τῶν λεόντων» (1862), «Ἀγαμέμνων» (τραγῳδία, 1868), «Οἱ γάμοι τοῦ Ἀττίλα» (ἔμμετρον δρᾶμα, 1880), «Μωάμεθ» (δρᾶμα, τοῦ ὁποίου ἀπηγορεύθη ἡ ἀπὸ σκηνῆς ἀναβίβασις) κ. ἄ. Ὡς ἀξιολογώτερον ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων αὐτοῦ θεωρεῖται «Ἡ κόρη τοῦ Ρολλάνδου», ἔμμετρον δρᾶμα, διὰ τὸ ὁποῖον ὁ Μπορνιὲ ἔλαβε μέγα βραβεῖον τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας (1875). Ἐπὶ μακρὸν διετέλεσε διευθυντὴς τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Ναυστάθμου, ἐγένετο δὲ ἀκαδημαϊκὸς ἀπὸ τοῦ 1893. —Ω.

— **Μπορνιὲ - Ντεμπὸρντ** (Borgnier - Desbordes), ***Γουσταῦος***. Γάλλος στρατηγὸς (1839—1900). Καταταχθεὶς ἀπὸ τοῦ 1861 ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ πυροβολικοῦ καὶ φέρων τῷ 1880 βαθμὸν συνταγματάρχου, ἐπεφορτίσθη τότε νὰ ἐξερευνήσῃ ἐν Ἄνω Σενεγάλῃ τὴν μεταξὺ τοῦ Μπαφουλαμπὲ καὶ τοῦ Νίγηρος περιοχήν, ἐπὶ τῷ σκοπῷ τῆς κατασκευῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς ἀρχομένης ἀπὸ τῆς Μεντίνα, ὅπου ὁ ποταμὸς Σενεγάλης παύει να εἶναι πλωτός, καὶ καταληγούσης εἰς Μπαμμακοῦ ἐπὶ τοῦ Νίγηρος. Ἡ ἐξερεύνησις αὕτη τὸν ἀπησχόλησεν ἐπὶ μίαν τριετίαν (1881—1883), κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ὁποίας παλαίων διαρκῶς πρὸς τοὺς ἀγρίους ἰθαγενεῖς, κατώρθωσε νὰ ἐκκαθαρίσῃ τελείως τὸ ἔδαφος καὶ νὰ χαράξῃ τὴν ὑπὸ κατασκευὴν γραμμήν. Βραδύτερον διῴκησε τὸ εἰς Τον-

Digitized by Google

κῖνον γαλλικὸν ἐκστρατευτικὸν σῶμα (1884) καὶ ὡς ὑποστράτηγος κατόπιν μίαν ταξιαρχίαν τοῦ σώματος καταλήψεως τῆς Ἰνδοκίνας. — Ω.

**Μπορνοῦ** (Bornu) *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένη ἀφρικανικὴ χώρα τοῦ κεντρικοῦ Σουδάν, ἐμβαδοῦ 140.000 περίπου τετρ. χλμ. Ἄλλοτε ἀπετέλει ἰσχυρότατον κράτος, σήμερον δὲ ὑποδιαιρεῖται εἰς τρία τμήματα, κατανεμημένα μεταξὺ τῆς Βρεττανικῆς Νιγηρίας, τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς καὶ τοῦ ὑπὸ τὴν βρεττανικὴν ἐντολὴν τελοῦντος Καμερούν. Ἐκτείνεται πρὸς Δ. καὶ πρὸς Β. τῆς λίμνης Τσάντ, μεταξὺ 11°—15° Β. πλάτους καὶ 9°50′—16°20′ Α′ μήκους Γκρήνουϊτς, τὰ πραγματικὰ ὅμως ὅρια αὐτοῦ δὲν εἶναι ἐντελῶς καθωρισμένα, λόγῳ τῶν διαρκῶν πολέμων μετὰ τῶν ὁμόρων αὐτοῦ κρατῶν. Τὸ ἔδαφος ἀποτελεῖ ἐκτεταμένην προσχωσιγενῆ πεδιάδα, ἀνήκουσαν κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος εἰς τὴν λεκάνην τῆς Τσάντ. Τὰς μόνας ἐξάρσεις τοῦ ἐδάφους ἀποτελοῦσιν : ἡ ὀροσειρὰ *Μαντάρα* ἢ *Βαντάλα*, τῆς ὁποίας τὸ μέσον ὕψος δὲν ὑπερβαίνει τὰ 800 μ., τὸ μεμονωμένον ὄρος *Φίκα* καὶ οἱ λόφοι τῆς περιοχῆς τοῦ *Μούνιο*. Ἐκ τῶν διαρρεόντων τὴν χώραν ποταμῶν ἐλάχιστοι μόνον ρύακες, παραπόταμοι τοῦ Μπενοέ, ἐκβάλλουσιν εἰς τὸν Ἀτλαντικόν, πάντες δ' οἱ λοιποί, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται οἱ *Κουμαντούγκου, Γυέου, Μπουλοὺ* κ. ἄ., χύνονται πρὸς τὴν λίμνην Τσάντ. Τὸ κλῖμα εἶναι θερμότατον κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ ἔτους, τὸ δὲ θερμόμετρον σπανίως κατέρχεται κατὰ τὸν ψυχρότερον μῆνα (Δεκέμβριον) κάτω τῶν +25°Κ., ἐνῷ συχνότατα ὑπερβαίνει τοὺς +43°Κ., φθάνον μέχρι τῶν +45° Κ. ὑπὸ σκιὰν κατὰ τὸν θερμότερον μῆνα (Ἀπρίλιον). Οἱ ἄνεμοι εἶναι κανονικοί, δεσπόζουσι δὲ κατὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ ἔτους οἱ ἀπὸ ΒΑ. πνέοντες. Κατὰ τοὺς μῆνας Ἀπρίλιον—Ἰούνιον πνέουσι συχνὰ ἀπὸ τῆς παραλίας τοῦ Ἀτλαντικοῦ (Δ. καὶ ΝΔ.) ἰσχυρότατοι μουσσῶνες. Αἱ κανονικαὶ βροχαὶ διαρκοῦσιν ἀπὸ τοῦ Ἰουνίου μέχρι τοῦ Σεπτεμβρίου, κατὰ τὴν ἐποχὴν δὲ ταύτην λαμβάνουσι χώραν ἡ σπορὰ καὶ ὁ θερισμός. Ἔχει πληθυσμὸν 1.000.000 περίπου κατοίκων, ἀποτελεῖ δὲ ἀπὸ ἐθνογραφικῆς ἀπόψεως ἀληθὲς μωσαϊκόν, περιλαμβάνον ὅλας σχεδὸν τὰς φυλὰς τῆς Ἀφρικῆς, ὑπερτεροῦσιν ὅμως γενικῶς οἱ *Κανόρι* ἢ *Κανούρι*.

— *[Ἱστορ.]*. Τὸ *Μπορνοῦ* κατῳκεῖτο κατὰ τὸν ΙΒ′ αἰῶνα ὑπὸ ποικίλων ἀγρίων φυλῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων διεκρίνοντο οἱ Σῶ, τοὺς ὁποίους ἡ παράδοσις ἀναφέρει ὡς ἀληθεῖς γίγαντας. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἡ χώρα προσεβλήθη ὑπὸ τοῦ Μουσουλμάνου σουλτάνου τοῦ Κανέμ, Ντουμάνα, ἐπηκολούθησε δὲ σκληρὰ πάλη μεταξὺ τῶν παλαιῶν κατοίκων καὶ τῶν κατακτητῶν, ἀποτέλεσμα τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ἡ ἐξαφάνισις τῶν πρώτων. Περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΔ′ αἰῶνος εἷς ἐκ τῶν σουλτάνων τοῦ Κανὲμ ἐξεδιώχθη τῆς χώρας του ὑπὸ τῆς φυλῆς τῶν Μπουλάλα, καταφυγὼν δὲ εἰς τὰς ὑποτελεῖς αὐτῷ χώρας τοῦ Μπορνοῦ ἵδρυσε τὸ ὁμώνυμον κράτος, τὸ ὁποῖον μεγάλως προήχθη κατὰ τοὺς ἐπακολουθήσαντας χρόνους, ἐκταθὲν μέχρι σχεδὸν τῶν συνόρων τῆς Αἰγύπτου.

Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος τὸ σουλτανᾶτον τοῦ Μπορνοῦ ἀπετέλεσε τὸ μῆλον τῆς ἔριδος μεταξὺ τῶν τριῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν Μεγάλης Βρεττανίας, Γαλλίας καὶ Γερμανίας, αἵτινες κατεῖχον ἤδη τὰς γειτονευούσας πρὸς αὐτὸ χώρας. Καὶ τὸ μὲν μεγαλύτερον πρὸς Δ. τμῆμα κατέλαβεν ἡ Μεγάλη Βρεττανία, σχηματίσασα δι' αὐτοῦ τὴν μεγάλην φερώνυμον ἐπαρχίαν τῆς ἀποικίας τῆς Νιγηρίας (βλ. κατωτ.), τὸ βόρειον τμῆμα μετὰ τοῦ ὑποτελοῦς κρατιδίου τοῦ *Ζίντερ* προσήρτησεν ἡ Γαλλία εἰς τὴν μεγάλην ἀποικίαν τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς καὶ τέλος τὸ πρὸς Α. παρὰ τὰ σύνορα τῶν γερμανικῶν κτήσεων, προσηρτήθη εἰς τὸ Καμερούν, τοῦ ὁποίου ἠκολούθησε τὴν τύχην μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Χ. Δ.

—**Μπορνοῦ** (Bornu) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη ἐπαρχία τῆς Βρεττανικῆς ἀποικίας τῆς Νιγηρίας, ἀποτελουμένη ἐκ τοῦ εἰς τὴν Ἀγγλίαν περιελθόντος τμήματος τοῦ παλαιοῦ κράτους τοῦ *Μπορνοῦ*. Ἔχει ἔκτασιν 80 περίπου τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 700.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Μαϊντουγκάρι*. Προσηρτήθη τῷ 1902. Χ. Δ.

**Μπὸρντ** (Bordes), ***Κάρολος***. Γάλλος συνθέτης (1863—1909). Μαθητὴς τοῦ Φράνκ, ἀνέπτυξε μεγίστην δρᾶσιν διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς γαλλικῆς μουσικῆς εἴτε ὡς ἱδρυτὴς τῆς περιφήμου καταστάσης «Χορῳδίας τοῦ Ἁγίου Γερβασίου» τῶν Παρισίων, εἴτε ὡς συνιδρυτὴς μετὰ τοῦ Βενσὰν ντ' Ἐντὺ καὶ τοῦ Γκιλμὰν τῆς «Schola cantorum» (1894), ἥτις, ἔχουσα ὡς ἀρχικὸν σκοπὸν τὴν ἀναγέννησιν τῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς, ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ 1900 διαστάσεις ἀληθοῦς ᾠδείου. Εἰς τὸν Μπὸρντ εἶχεν ἀνατεθῆ ἐπίσης (1889—1890) ἡ περισυλλογὴ τῶν λαϊκῶν παραδόσεων τῶν βασκικῶν χωρῶν, αἵτινες ἐξετέθησαν ἐν τῷ βιβλίῳ : «Ἀρχεῖα τῆς βασκικῆς παραδόσεως» καὶ ἔδωκαν ἀφορμὴν εἰς τὴν σύνθεσιν «Φαντασίας ἐπὶ βασκικοῦ θέματος». Ὁ Μπόρντ, ὅστις ἔδωκε σειρὰν βαθέως μουσικῶν, αἰσθηματικῶν καὶ μελαγχολικῶν τραγουδιῶν, ἔγραψεν ἐπίσης τὰς «Ρυθμικὰς φαντασίας» καὶ τὸ «Καπρίτσιο εἰς πενταμερὲς μέτρον», τὴν εἰσαγωγὴν διὰ τὸ βασκικὸν δρᾶμα «Errege Juan», μίαν «Φαντασίαν», πλεῖστα μοτέττα καὶ θρησκευτικὰς χορῳδίας κλπ. Τὸ κυριώτερον ἐκ τῶν ἔργων του, τὸ μελόδραμα «Τὰ τρία κύματα», παρέμεινεν ἡμιτελές. Ὁ Μπὸρντ ὑπῆρξεν ἐπίσης ἡ ψυχὴ τῆς διὰ τὴν πρακτικὴν χρῆσιν ἐκδοθείσης «Ἀνθολογίας τῶν παλαιῶν θρησκευτικῶν διδασκάλων» καὶ ὁ ἱδρυτὴς τοῦ ὀργάνου τῆς Schola : «Τὸ βῆμα τοῦ Ἁγίου Γερβασίου». Γ. Σ.

**Μπορντὰ** (Borda), ***Ἰωάννης-Κάρολος***. Πλοίαρχος τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ τῆς Γαλλίας, περιώνυμος ναυτικός, ἀστρονόμος καὶ μαθηματικός, γεννηθεὶς εἰς Ντὰξ τῷ 1733 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1799. Ἀπόφοιτος τῆς μαθηματικῆς σχολῆς τῶν ἰησουϊτῶν, κατετάχθη εἰς τὴν σχολὴν τοῦ μηχανικοῦ, ἐξ ἧς ἐξῆλθεν ἀξιωματικὸς τοῦ σώματος τούτου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ὅμως τὸν μετέταξαν εἰς τὸ ἐλαφρὸν ἱππικόν, εἰς ὃ διέπρεψε κατὰ τὴν μάχην τοῦ Hastembeck (1757). Ἡ ἔφεσίς του ὅμως πρὸς τὰς ἐφηρμοσμένας μαθηματικὰς ἐπιστήμας τὸν ἐπανέφερεν εἰς τὸ μηχανικόν. Ἤδη τὸ πρὸς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιστημῶν ὑπόμνημά του «Περὶ τῶν νόμων τῆς κινήσεως τῶν βλημάτων ἐν τῷ κενῷ» εἶχε καταστήσει αὐτὸν μέλος τῆς Ἀκαδημίας ταύτης (1756).

*Ἰωάννης Μπορντά.*

Τὰ διάφορα ὑπομνήματά του, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὰ περιώνυμα : «Ἐπὶ τῆς ἀντιστάσεως τῶν ρευστῶν», «Ἐπὶ τοῦ καταλληλοτέρου σχήματος τῶν πτερυγίων τῶν ὑδραυλικῶν τροχῶν καὶ τῶν τροχῶν αὐτῶν τούτων», «Θεωρία τῆς κινήσεως τῶν βλημάτων ὑπὸ τὴν ἀντίστασιν τοῦ ἀέρος» καὶ σπουδαιόταται ἐξ ἄλλου ἐργασίαι του, σχετικαὶ πρὸς τὴν εὐστάθειαν τῶν πλοίων κατέστησαν αὐτὸν περίδοξον. Δὲν ἐβράδυνεν ὅμως νὰ στραφῇ πρὸς τὴν ναυτικὴν ἀστρονομίαν. Θιασώτης τῆς ἀντικαταστάσεως τῆς πολυπλόκου μεθόδου τοῦ προσδιορισμοῦ τοῦ μήκους διὰ τῶν σεληνιακῶν ἀποστάσεων, διὰ τῆς διαφορᾶς τῶν συγχρόνων ὡρῶν μεταξὺ πρώτου μεσημβρινοῦ καὶ μεσημβρινοῦ τοῦ πλοίου, ἐπενόει τὸν διὰ τῶν λογαρίθμων λογιστὸν καὶ φερώνυμον αὐτῷ τύπον ἰσολογισμοῦ τῆς ὡρικῆς γωνίας (βλ. κατωτ.), ἀφ' ἑτέρου δὲ προέτρεπε τοὺς ὡρολογοποιοὺς εἰς ἐπινόησιν «ναυτικοῦ ὡρολογίου» (προπάτορος τοῦ «ναυτ. χρονομέτρου») παρέχοντος μικρὰν καὶ κανονικῶς μεταβαλλομένην ἡμερησίαν πορείαν. Ἀκριβῶς δὲ χάριν τῶν μελετῶν του τούτων ἀπεσπάσθη εἰς τὸ ναυτικὸν (1767), ἐπιβιβασθεὶς ὑπὸ τὴν ἰδιότητα τοῦ ἐπιτρόπου τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν ἐπὶ τῆς φρεγάτας «La Flore» πρὸς παρακολούθησιν τῶν ναυτικῶν ὡρολογίων Berthout, τὰ ὁποῖα προωρίζοντο πρὸς διατήρησιν ἐπὶ τῆς φρεγάτας τοῦ χρόνου τοῦ μεσημβρινοῦ Παρισίων. Τῷ 1774—1775 ἐπεσκέφθη τὰς Ἀζόρας νήσους καὶ τὴν Δυτ. Ἀφρικήν, μεθ' ὃ διωρίσθη μονίμως εἰς τὸ ναυτικὸν (1776) ὡς ὑποπλοίαρχος, ἀναλαβὼν τὴν κυβέρνησιν τῆς κορβέττας «Boussola» καὶ τὴν ἐντολὴν τοῦ προσδιορισμοῦ τοῦ μήκους τῶν Καναρίων ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ τῶν Παρισίων. Ἐκεῖ δὲ συνήντησε καὶ τὸν Κοὺκ ἐκτελοῦντα τὸν τρίτον διὰ τῆς «Resolution» ἐξερευνητικὸν πλοῦν, εἰς ὃν παρέσχεν ὁδηγίας ἀστρονομικὰς πρὸς ἐπανεύρεσιν τῆς πρό τινος ἀνακαλυφθείσης συστάδος τῶν νήσων Κεργκελέν. Τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, συνδυάζων τὰς ἐπινοήσεις τοῦ Tobia Meyer καὶ τοῦ Mendoza, ἐπέτυχε τὸ τελειότερον τῶν δικατόπτρων ὑψομετρικὸν ὄργανον, τὸν φέροντα τὸ ὄνομά του ἐπαναληπτικὸν κύκλον. Κυβερνήτης τῶν «Guerrier» καὶ «Solitaire» κατὰ τὸν Ἀμερικανικὸν πόλεμον, συνελήφθη αἰχμάλωτος ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, οἵτινες μεγάλως περιεποιήθησαν αὐτόν, τὸν ἀφῆσαν δὲ βραδύτερον ἐλεύθερον πρὸς συνέχισιν τῶν κοινωφελῶν ἐπιστημονικῶν του ἐργασιῶν. Εἰσηγητὴς καὶ θερμὸς ὑποστηρικτὴς τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ δεκαδικοῦ μετρικοῦ συστήματος, ἐπεφορτίσθη μετὰ τοῦ Ντελάμπρ καὶ τοῦ Μεσαὶν τὴν μέτρησιν τοῦ μεταξὺ Δουνκέρκης καὶ Βαρκελώνης τόξου μεσημβρινοῦ, κατὰ τὴν ἐργασίαν δὲ ταύτην ἐπενόησε καὶ ἔθεσεν εἰς χρῆσιν τοὺς ἐκ λευκοχρύσου κανόνας, τοὺς διπλομεταλλικοὺς βερνιέρους πρὸς μέτρησιν τῆς λόγῳ τῆς θερμοκρασίας διαστολῆς των καὶ τοὺς φέροντας τὸ ὄνομά του ἐμπειρικοὺς τύπους πρὸς προσδιορισμὸν τῆς διαθλάσεως. Ἀπὸ τοῦ 1840 ἐδίδετο, μέχρις ἐσχάτων, τὸ ὄνομά του εἰς τὸ πλοῖον, ἐφ' οὗ ἦτο ἐγκατεστημένη ἡ ἐν Βρέστῃ ναυτικὴ σχολή. Σ. Ε. Λ.

— **Μπορντὰ *τύπος***. Καλεῖται οὕτω ὁ λογιστὸς διὰ τῶν λογαρίθμων τύπος :

$$\eta\mu\,\frac{\pi}{2} = \sqrt{\frac{\sigma\upsilon\nu\,\Sigma\;\eta\mu\,(\Sigma - \Upsilon)}{\sigma\upsilon\nu\,\Lambda\;\eta\mu\,\Delta}}$$

(ἔνθα : $\Upsilon + \Lambda + \Delta = 2\Sigma$), δι' οὗ ὁ *Μπορντὰ* (βλ. κλ.), ἀντικατέστησε τὸν μὴ λογιστὸν τοιοῦτον :

$$\sigma\upsilon\nu\,\Pi = \frac{\eta\mu\,\Upsilon - \eta\mu\,\Lambda\;\sigma\upsilon\nu\,\Delta}{\eta\mu\,\Delta\;\sigma\upsilon\nu\,\Lambda}$$

(ἔνθα Λ τὸ πλάτος τοῦ πλοίου, Υ τὸ διὰ τοῦ ἐξάντος μετρούμενον ἀληθὲς ὕψος τοῦ ἀστέρος καὶ Δ ἡ ὑπὸ τῶν ἀστρονομικῶν ἐφημερίδων παρεχομένη πολικὴ αὐτοῦ ἀπόστασις). Ὁ τύπος τοῦ Μπορντὰ χρησιμοποιεῖται πρὸς ἐξαγωγὴν τῆς ὥρας τοῦ πλοίου. Ἡ διαφορὰ ταύτης ἀπὸ τῆς συγχρόνου ὥρας τοῦ πρώτου μεσημβρινοῦ προσδιορίζει τὸ ἀστρονομικὸν μῆκος. Σ. Ε. Λ.

—**Μπορντὰ** (Borda), ***ἐκκρεμὲς τοῦ***—*[Φυσ.]* βλ. *ἐκκρεμὲς* (τ. Θ′, σ. 807 α′).

**μπορντάδα** (ἡ). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων ἑκάστην τῶν ὑπὸ τοὺς αὐτοὺς πρόποδας διαδρομῶν πλαγιοδρομοῦντος ἱστιοφόρου, κατ' ἐπέκτασιν δὲ καὶ τὸ μῆκος (=«δίαρμα») τῆς τοιαύτης μεταξὺ δύο ἐπαλλήλων στροφῶν τοῦ πλοίου διαδρομῆς. Μεγίστης χρήσεως ἦτο ὁ ὅρος παρὰ τοῖς ναυμάχοις τοῦ Ἀγῶνος, κατὰ τὴν σύνταξιν τῶν ἡμερολογίων των. Σ. Ε. Λ.

**Μπορντὲ** (Bordeu), ***Θεόφιλος ντὲ***—. Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς εἰς Iseste τῷ 1722 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1776. Μαθητὴς τῆς σχολῆς Μομπελλιέ, ὑπῆρξε μετὰ τοῦ μαθητοῦ του Paul Joseph Barthez ὁ κύριος ἱδρυτὴς ἐν Γαλλίᾳ τῆς θεωρίας τῆς ζωτικῆς ἀρχῆς, εὐχερῶς συμβιβαζομένης μετὰ τῶν ἱπποκρατικῶν, ἤτοι τῆς ἱπποκρατικῆς «φύσεως», ἥτις ἑδράζει ἐν παντὶ μέρει καὶ ὀργάνῳ καὶ μεταδίδει τὴν αἰσθητικότητα καὶ ἐνεργητικότητα αὐτῆς. Ἡ δοξασία του δὲ αὐτὴ τῆς κατ' ἰδίαν ὀργανώσεως καὶ λειτουργίας τῶν τμημάτων τοῦ σώματος καὶ τῆς ἐξαρτήσεως αὐτῶν ἔκ τινος σπέρματος, συνετέλεσε νὰ ἀναγνωρίσῃ τὴν σπουδαιότητα τῆς γνώσεως τῆς συνθέσεως ἑνὸς ἑκάστου ὀργάνου. Εἰς τὸ ἔργον του περὶ τῶν «Ἀδένων» παραδέχεται τὴν δοξασίαν τῶν Stahl καὶ Van Helmont, ὅτι ἕκαστον μέρος τοῦ ὀργανισμοῦ ἔχει τὴν ἰδίαν αὐτοῦ ζωήν. Ὁ ἐγκέφαλος, ἡ καρδία καὶ ὁ στόμαχος ἀπετέλουν κατ' αὐτὸν τὸν οὐσιώδη ἄξονα τῆς ἀνθρωπίνης μηχανῆς. Ἡ ἐν γένει ζωὴ ἀπετέλει τὸ σύνολον τῆς κατ' ἰδίαν τῶν ὀργάνων ζωῆς, οὖσα ὑπὸ τὴν ἐξάρτησιν πνεύματος ἰθύντορος καὶ κυριάρχου πασῶν τῶν λειτουργιῶν τοῦ ὀργανισμοῦ. Εἰς τὴν παθολογίαν ἐπρέσβευεν ὅτι αἱ χρόνιαι νόσοι ἀναπαράγουσι βραδέως τὰς τρεῖς κριτικὰς φάσεις τῶν ὀξειῶν νόσων, ἃς ἐπεζήτει νὰ ἐπισπεύσῃ διὰ τῶν κενώσεων καὶ ἀπεκκρίσεων, ἵνα οὕτω ἀπὸ χρονίας καταστήσῃ ταύτας ὀξείας· ἐθεώρει δὲ τοῦτο κατορθωτὸν διὰ τῆς χρήσεως τῶν θερμοπηγῶν καὶ ἰδίᾳ τῶν θειούχων ὑδάτων, τοῦθ' ὅπερ ἀποτέλει καὶ τὴν βάσιν τῆς θεραπευτικῆς του μεθόδου. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Anselm Richerand (1779—1840). Ἐκ τούτων κυριώτερα εἶναι : «Ἔρευναι τοῦ σφυγμοῦ ἐν σχέσει μὲ τὰς κρίσεις» (τετράτομον, Παρίσιοι 1756), «Ὁ βλεννώδης ἱστὸς» (1767), «Αἱ χρόνιαι νόσοι» (1775), «Ἀνατομικὴ ἔρευνα ἐπὶ τῆς θέσεως τῶν ἀδένων καὶ τῆς λειτουργίας αὐτῶν» (Παρίσιοι 1752) κλπ. Ο. Ρ.

— **Μπορντὲ** (Bordet), ***Ἰούλιος-Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Βικέντιος***. Διαπρεπὴς Βέλγος μικροβιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Soignies τῷ 1870. Ἐγένετο καθηγητὴς τῆς βακτηριδιολογίας καὶ παρασιτολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Βρυξελλῶν. Τῷ 1919 ἐτιμήθη διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ διὰ τὴν ἰατρικὴν καὶ τὴν φυσιολογίαν. Τῷ 1923 ἐγένετο ξένος ἑταῖρος τοῦ γαλλικοῦ ἰνστιτούτου ὡς καὶ τῆς ἰατρικῆς Ἀκαδημίας Παρισίων. Αἱ μεγάλης ἀξίας ἐργασίαι αὐτοῦ ἀφορῶσι τὰ ζητήματα τῆς ἀνοσίας, ὀρο-διαγνωστικῆς καὶ ἀναφυλαξίας, γράψας σχετικὰς τὸ 1898 τὰς περὶ τούτων ἐργασίας. Ἀνεκάλυψε τῷ 1898 τὸν αἱμολυτικὸν ὀρόν, ὡς καὶ τὸ μικρόβιον τῆς διφθερίτιδος τῶν ὀρνίθων καὶ τοῦ κοκκύτου. Ἀλλ' ἡ μεγάλη αὐτοῦ ἀνακάλυψις ὑπῆρξεν ἡ μέθοδος τῆς διαγνώσεως τῶν μολυσματικῶν νόσων διὰ τῆς λεγομένης ἀντιδράσεως τῆς ἐκτροπῆς τοῦ συμπληρώματος (ἀντίδρασις Μπορντὲ-Gengou 1900), ἥτις τροποποιηθεῖσα ὑπὸ τοῦ Βάσερμαν διὰ τὴν σύφιλιν εὐρέως χρησιμοποιεῖται σήμερον διὰ τὴν νόσον ταύτην, καλουμένη ἀντίδρασις Μπορντὲ-Βάσσερμαν. Ἡ ἀντίδρασις τῆς ἐκτροπῆς τοῦ συμπληρώματος βασίζεται ἐπὶ τοῦ ἀκολούθου φαινομένου : Ὅταν ἀναμίξῃ τις ἐναιώρημα μικροβίου ὀρὸν θερμανθέντα εἰς 55° ζῴου ἀνοσοποιηθέντος κατὰ τοῦ μικροβίου τούτου καὶ συνεπῶς ἐμπεριέχοντα τὰ σχετικὰ ἀντισώματα, ὀρὸν πρόσφατον ἰνδικοῦ χοιριδίου περιέχοντα ἀλεξίνην (συμπλήρωμα) καὶ μετὰ μιᾶς ὥρας εἰς θερμοκρασίαν 37° παραμονὴν τοῦ μίγματος προστεθῇ εἰς τοῦτο μῖγμα ἐρυθρῶν αἱμοσφαιρίων καὶ θερμανθεὶς αἱμολυτικὸς ὀρὸς ζῴου ἀνοσοποιηθέντος κατὰ τῶν ἐρυθρῶν τούτων αἱμοσφαιρίων καὶ περιέχων συνεπῶς τὰ σχετικὰ ἀντισώματα διὰ τὰ ἐρυθρὰ ταῦτα αἱμοσφαίρια, δὲν ἐπέρχεται τότε αἱμολυσία, ἤτοι τὰ ἐρυθρὰ αἱμοσφαίρια μένουσιν ἀνέπαφα καὶ ἡ αἱμοσφαιρίνη δὲν χρωματίζει τὸ παρασκεύασμα. Τῷ 1920 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον του «Immunité dans les maladies infectieuses». Α. Λ.

Digitized by Google

**Μπορντέζε** (Bordese), ***Λουδοβῖκος***. Ἰταλὸς συνθέτης (1815—1886). Προσήγγισε τὸ θέατρον διὰ τοῦ μελοδράματος «Οἱ ἀρραβωνιασμένοι». Ἐπεδόθη εἰς τὴν σύνθεσιν μικρῶν ἔργων, ἐν οἷς ἓν «Ρέκβιεμ», πολλαὶ μελῳδίαι, μία ἀξιόλογος μέθοδος ᾀσματος, μελῳδικαὶ ἀσκήσεις κτλ. Γ. Σ.

**μπορντέλλο** (τό)· (δημ.) οἶκος ἀνοχῆς (ἰταλ. bordello, γαλλ. bordel). Ἡ λέξις προέρχεται ἐκ τῆς παλαιᾶς λέξεως bord, ἥτις ἐσήμαινε τὰς εἰς τὰς μεγάλας ἀγρεπαύλεις μικρὰς οἰκίας, ὅπου διέμενον αἱ οἰκογένειαι τῶν ὑπηρετῶν, μεταξὺ τῶν γυναικῶν τῶν ὁποίων οἱ εὔποροι εὕρισκον προθύμους ἐρωμένας πρὸς ἱκανοποίησιν τῶν ἐρωτικῶν των ὀρέξεων.

**Μπόρντεν** (Borden), *σὲρ* ***Ροβέρτος-Λαίρντ***. Καναδὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1874. Ἐκλεγεὶς τῷ 1896 βουλευτής, ἀνεκηρύχθη τῷ 1901 ἀρχηγὸς τοῦ συντηρητικοῦ κόμματος. Τῷ 1912 ἐσχημάτισε κυβέρνησιν, διατηρήσας τὴν ἀρχὴν διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, καθ' ὃν διετέλεσε μέλος τοῦ ἀνωτάτου πολεμικοῦ συμβουλίου τῆς Μ. Βρεττανίας, παρασχὼν μεγάλας ὑπηρεσίας εἰς τοὺς συμμάχους. Τῷ 1917 ἐσχημάτισε κυβέρνησιν συνασπισμοῦ, ἀποσυρθεὶς μετὰ δύο ἔτη. Τῷ 1922 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον του «Συνταγματικαὶ μελέται τοῦ Καναδᾶ». Γ. Ι. Β.

**Μπορντὶ** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Φρυγίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ΒΑ. τοῦ Καρὰ Χισάρ, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει περὶ τὰ 35 χλμ. Συνδέεται δι' ἁμαξιτῶν μετὰ τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, τοῦ Σεϊντῆ Γαζῆ, τοῦ Σιβρὶ Χισὰρ καὶ μετὰ τοῦ Ἰντζὲ Καρὰ Χισὰρ—Μπουγιοὺκ Τσοπανλάρ. Μετὰ τὴν πρὸς Σαγγάριον—Ἄγκυραν προέλασιν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ (Αὔγουστος 1921) καὶ τὴν ἐπάνοδον πρὸς τὰς ἀρχικὰς θέσεις ἐξορμήσεως αὐτοῦ περὶ τὸ Σεϊντῆ Γαζῆ—Ἐσκὶ Σεχίρ, οἱ Τοῦρκοι, ἀναπαυθέντες καὶ ἀνασυνταχθέντες, κατηύθυναν ἰσχυροτάτας δυνάμεις πρὸς Ἀφιὸν Καρὰ Χισσὰρ μὲ τὸν σκοπὸν ν' ἀποκόψωσι τὰς μετὰ τῆς Σμύρνης συγκοινωνίας τοῦ ἐν τῷ ὑψιπέδῳ Ἐσκὶ Σεχὶρ—Σεϊντῆ Γαζῆ ἑλληνικοῦ στρατοῦ. Προφανῶς διέτρεχον τότε σοβαρώτατον κίνδυνον αἱ μετὰ τῆς βάσεως Σμύρνης συγκοινωνίαι τῆς ἑλληνικῆς στρατιᾶς. Ἡ IV ἑλληνικὴ μεραρχία, καλύπτουσα τὸν σιδηροδρομικὸν κόμβον τοῦ Ἀφιόν, ἀντετάχθη πεισμόνως κατὰ τῆς τουρκικῆς ἐκείνης προσπαθείας. Πρὸς ἐνίσχυσίν της μετηνέχθη εἰς Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ τὸ Α΄ σῶμα στρατοῦ, τηρούμενον ἕως τότε ἐν ἐφεδρείᾳ περὶ τὸ Ἐσκὶ Σεχίρ. Λυσσώδεις διεξήχθησαν τότε ἐκεῖ ἀγῶνες ἐπὶ ἑξαήμερον πρὸς τοὺς Τούρκους, ὁλονὲν ἐνισχυομένους (18—23 Σεπτεμβρίου 1921) καὶ προσπαθοῦντας νὰ προελάσωσι περαιτέρω πρὸς Τουμλοῦ Μπουνάρ. Ἡ ἑλληνικὴ στρατιὰ ἠναγκάσθη νὰ διατάξῃ, ἵνα καὶ τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ κινηθῇ ταχέως ἀπὸ τῆς περιοχῆς Σεϊντῆ Γαζῆ, ὅπου εὑρίσκετο, διὰ τῶν δύο μόνον μεραρχιῶν αὐτοῦ (V καὶ XIII) δι' Ἂκ Ἰν—Μπορντὶ πρὸς Ἀφιὸν Καρᾶ Χισάρ, προσβάλῃ κατὰ πλευρὸν τοὺς περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ μαχομένους Τούρκους καὶ ἅμα διακόψῃ τὴν πρὸς Ἄγκυραν γραμμὴν ὑποχωρήσεως αὐτῶν. Τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ, ἐκκινῆσαν τῇ 23ῃ Σεπτεμβρίου ἐκ Σεϊντῆ Γαζῆ μὲ τὰς μεραρχίας αὐτοῦ βαδιζούσας πρὸς νότον, παραλλήλως μὲ τὴν V ἀνατολικῶς τοῦ Παρθενίου ἢ Σεϊντῆ τσάϊ καὶ τὴν XIII δυτικῶς αὐτοῦ, ἔφθασε τὴν 25ην ἰδίου πρὸ τῆς βορείως τοῦ Μπορντὶ στενωποῦ, οὔσης μήκους 20 χλμ. περίπου, ἐχούσης δὲ ἀποτόμους καὶ βραχώδεις τὰς πλευράς, καλυπτομένας διὰ πυκνοῦ δάσους. Ἡ V μεραρχία, ἀκολουθοῦσα τὸν ἄξονα τῆς στενωποῦ Μπορντὶ καὶ παρενοχλουμένη γύρωθεν ὑπὸ τουρκικοῦ ἱππικοῦ, ἐκαθάρισεν (ἐνισχυθεῖσα καὶ διὰ τοῦ 2ου συντάγματος πεζικοῦ) τὴν ὅλην ἐδαφικὴν ζώνην καὶ ἤχθη τῇ 26ῃ Σεπτεμβρίου 1922 εἰς τὴν νοτίαν αὐτῆς ἔξοδον, ἧς τὸ ἀνατολικὸν πλευρὸν (ὑψόμ. 1654) ἔτι κατεῖχον οἱ Τοῦρκοι, ἦτο δ' ἑτοίμη νὰ ἐπιτεθῇ πρὸς ἐκδίωξιν αὐτῶν καὶ ἐκεῖθεν. Ἀλλ' ἡ πρὸς τοιαύτην κατεύθυνσιν ἀπὸ βορρᾶ προέλασις τοῦ Β΄ σώματος στρατοῦ, ἤτοι πρὸς τὴν γραμμὴν συγκοινωνίας μετὰ τῆς Ἀγκύρας τοῦ περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ τουρκικοῦ στρατοῦ, ἠνάγκασεν αὐτὸν νὰ διακόψῃ ταχέως τὴν μάχην καὶ ν' ἀποσυρθῇ πρὸς ἀνατολάς, διολισθήσας νοτίως τῆς σταθερᾶς αὐτοῦ πλαγιοφυλακῆς τῆς ἐγκατεστημένης εἰς τὴν στενωπὸν Μπορντί. Τὸ Β΄ σῶμα στρατοῦ ἔκτοτε παρέμεινε κατέχον τὰς περὶ τὸ Μπορντὶ εἰρημένας θέσεις (ἡ V μεραρχία περὶ τὸ Σαλμανλὶ ντάγ, καὶ ἡ XIII μεραρχία βορειότερον περὶ τὰ φρυγικὰ ἐρείπια). Ἄξια πολλῆς προσοχῆς καὶ μελέτης καὶ ὑπὸ πᾶσαν ἔποψιν διδακτικὰ τυγχάνουσι τὰ ὑπὸ τῆς V ἑλληνικῆς μεραρχίας ληφθέντα τότε μέτρα ἀσφαλείας κατὰ τὴν διεξέλασιν αὐτῆς διὰ τῆς στενωποῦ βορείως τοῦ Μπορντὶ (24 καὶ 25 Σεπτεμβρίου 1921), ἐνῷ συνεχῶς παρηνωχλεῖτο ὑπὸ τῶν Τούρκων καὶ ἐκινδύνευεν ἀπὸ πάσας σχεδὸν τὰς πέριξ διευθύνσεις. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπόρντιγκ** (Bording), ***Ἀνδρέας***. Δανὸς ποιητὴς (1619—1677). Κατ' ἐντολὴν τοῦ βασιλέως Χριστιανοῦ Δ΄ ἵδρυσεν ἐν Κοπεγχάγῃ μηνιαίαν ἐφημερίδα, τὸν «Ἑρμῆν τῆς Δανίας», τὴν ὁποίαν συνέτασσεν εἰς στίχους. Ἔγραψε πλεῖστα ποιήματα, διακρινόμενα διὰ τὴν εὐστροφίαν τῆς γλώσσης, τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους καὶ τὸ βάθος τῶν ἰδεῶν. Ὁ Μπόρντιγκ θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν μεγαλυτέρων ποιητῶν τῆς Δανίας. Α. Δ.

**Μπορντιγκέρα** (Bordighera) *[Γεωγρ.]*. Παράλιον κλιματολογικὸν κέντρον τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Πόρτο Μαουρίτσιο, κείμενον ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Ριβιέρας, 11 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Σὰν Ρέμο καὶ 160 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς Γενούης. Λόγῳ τῆς θαυμασίας ἐν μέσῳ γραφικοῦ καταφύτου τοπίου θέσεώς της, τοῦ γλυκέος κλίματος καὶ τῆς καλῆς ὀργανώσεως τῶν ξενοδοχείων καὶ τῶν κέντρων αὐτῆς ἀποτελεῖ ἓν ἐκ τῶν μᾶλλον συχναζομένων κέντρων τῆς Ριβιέρας. Ἦτο εὐνοούμενος τόπος διαμονῆς τῆς βασιλίσσης τῆς Ἰταλίας Μαργαρίτας, ἥτις εἶχεν ἐκεῖ μεγαλοπρεπῆ ἔπαυλιν, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1926. Κάτ. 4.229. Χ. Δ.

**Μπορντιὲ** (Bordier). Ἑλβετὸς φιλέλλην (βλ. λ. *Βορδιέ*).

**μπορντινάου** *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων—κατὰ παραφθορὰν τοῦ boarding house—οἴκους εἰς παραλίους πόλεις τῆς Ἀγγλίας, ἐν οἷς παρέχεται κατάλυμα καὶ τροφὴ εἰς ναύτας ἀποβιβασθέντας μέχρι τῆς ἐπιβιβάσεώς των, τοῦ πιστοῦντος αὐτοὺς ἰδιοκτήτου τοῦ τοιούτου οἴκου ὄντος συνάμα καὶ ναυτομεσίτου. Δὲν πρέπει νὰ συγχέηται πρὸς τὸν «οἶκον ναύτου». Συνήθως οἱ εἰς τοιούτους οἴκους καταλύοντες ναῦται εἶναι ἀπὸ πάσης ἀπόψεως μέτριοι, ἐξ οὗ καὶ ἡ ἔκφρασις «ἀπὸ μπορντινάου τὸν πῆραν» πρὸς εἰρωνείαν. Σ.Ε.Λ.

**Μπορντόνε** (Bordone), ***Μπενεντέττο***. Ἰταλὸς γεωγράφος καὶ ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Παδούῃ κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος καὶ ἀποθανὼν πιθανῶς τῷ 1531. Ἔγραψε περιγραφὴν τῆς Ἰταλίας καὶ τὸ ἔργον τὸ κοινῶς γνωστὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Isolario», οὗτινος ὁ πλήρης τίτλος εἶναι: «Libro di Benedetto Bordone nel qual si ragionade tutte l'isole del mondo», ἐκδοθὲν τὸ πρῶτον ἐν Βενετίᾳ τῷ 1528 εἰς μέγα σχῆμα. Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ὁ Μπορντόνε περιγράφει ἐν ἐκτάσει πάσας τὰς ἐπὶ τῶν ἡμερῶν αὐτοῦ γνωστὰς νήσους καὶ δὴ τὰς ἑλληνικὰς τοιαύτας καὶ παρέχει ἱκανὰς εἰδήσεις περὶ τῶν ἐν αὐταῖς ἠθῶν καὶ τῆς καταστάσεως, εἰς ἣν εὑρίσκοντο κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος οἱ κατοικοῦντες εἰς αὐτάς, καθὼς καὶ ἄλλας ἀξίας λόγου πληροφορίας. Μετέφρασε δ' εἰς τὴν ἰταλικὴν καὶ διαφόρους διαλόγους τοῦ Πλάτωνος. Δ. Π. Π.

— **Μπορντόνε** (Bordone), ***Πάρις***. Ἰταλὸς ζωγράφος τῆς βενετικῆς σχολῆς (1500—1571). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Τισιανῷ, τοῦ ὁποίου ἐμιμήθη ἐν μέρει τὴν τεχνοτροπίαν. Εἰργάσθη ἐν Βενετίᾳ, Τρεβίζο, Ἄουξμπουργ καὶ Γαλλίᾳ, ἐξεπόνησε δὲ πολυαρίθμους πίνακας ἐπὶ μυθολογικῶν ἢ θρησκευτικῶν θεμάτων καὶ προσωπογραφίας. Ἀξία θαυμασμοῦ ὑπῆρξεν ἡ εὐχέρεια, μεθ' ἧς εἰργάζετο ὁ καλλιτέχνης οὗτος. Τὰ κυριώτερα γνωρίσματα τῶν ἔργων του εἶναι ἡ ἐρασμιότης, φθάνουσα ἐνίοτε μέχρι ξηρᾶς συμβατικότητος, καὶ ἡ χάρις. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του πινάκων τάσσονται: «Ὁ δακτύλιος τοῦ ἁγίου Μάρκου» τὸ ἀριστούργημά του (ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Βενετίας), προσωπογραφίαι ἀποκείμεναι ἐν τῷ παλατίῳ Rosso τῆς Γενούης, «Ἡ Παρθένος καὶ ὁ ἅγιος Δομίνικος», «Ἡ ἁγία οἰκογένεια», «Οἱ Βενετοὶ ἐρασταὶ» (ἅπαντα ἐν τῇ πινακοθήκῃ Μπρέρα τοῦ Μιλάνου), «Ἡ Παρθένος μεταξὺ ἁγίων» (ἐν τῷ παλατίῳ Ταντίνι τοῦ Lovere), «Ὁ Ἰησοῦς ἀποχαιρετῶν τὴν μητέρα του» καὶ προσωπογραφίαι (ἐν τῇ Museo Civico τῆς Παδούης), «Ἡ προσκύνησις τῶν ποιμένων» (ἐν τῇ μητροπόλει τοῦ Τρεβίζο), «Προσωπογραφία γεωμέτρου», «Προσωπογραφία ἀγνώστου» (ἀμφότερα ἐν τῇ Galleria degli Uffizi τῆς Φλωρεντίας), «Ὁ ἅγιος Γεώργιος» (ἐν τῇ πινακοθήκῃ Πίττι τῆς Φλωρεντίας), «Ἡ Ἀφροδίτη, ὁ Ἄρης καὶ ὁ Ἔρως» (ἐν τῇ πινακοθήκῃ Doria-Pamphili τῆς Ρώμης), «Ἡ Παρθένος ἐν τῷ μέσῳ ἁγίων» (δύο πίνακες ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ θέματος ἐν τῇ πινακοθήκῃ Colonna τῆς Ρώμης), ἕτερος «Ἅγιος Γεώργιος» (ἐν τῇ πινακοθήκῃ τοῦ Βατικανοῦ), «Vertumne et Pomone» καὶ «Προσωπογραφία Ἱερωνύμου Κρὸφφτ» (ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λούβρου). Ι. Μ. Π.

**Μπορντόνι** (Bordogni), ***Ἰούλιος-Μᾶρκος***. Ἰταλὸς ἀοιδὸς καὶ μουσικοδιδάσκαλος (1789—1856). Ἀρχικῶς ὀξύφωνος ἐν Μιλάνῳ καὶ εἶτα ἐν τῷ ἰταλικῷ θεάτρῳ τῶν Παρισίων, ἐπεδόθη ἐν τέλει ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν διδασκαλίαν τοῦ ᾄσματος καὶ ἐχρημάτισεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη καθηγητὴς ἐν τῷ Ὠδείῳ τῶν Παρισίων. Γ. Σ.

**μπορντούρα** (ἡ)· δημοτ., γαρνίρισμα τοῦ ὑφάσματος κατὰ μῆκος τῆς ἑτέρας παρυφῆς ἢ εἰς τὸ κράσπεδον τοῦ φορέματος· || καθόλου, τὸ δι' οὗ κοσμεῖται ἡ παρυφὴ (ἐκ τοῦ γαλλ. bordure).

**Μπὸρντ-ὀφ-Τραίηντ** (Board of trade). Ὀργανισμὸς ἐν Ἀγγλίᾳ, ὅστις ἐμφανισθεὶς τὸν ΙΔ΄ αἰῶνα ὡς σύλλογος συμβουλευτικὸς καὶ καθοδηγητικὸς τῆς ἀγγλικῆς βουλῆς ἐπὶ ἐμπορικῆς φύσεως νομοθετημάτων, ἐξειλίχθη σὺν τῷ χρόνῳ εἰς βαρύνοντα ἡμιεπίσημον ὀργανισμόν, περιλαμβάνοντα τὰ ἑξῆς τμήματα: 1) ἐμπορικόν, ἐργασίας καὶ στατιστικῆς, 2) σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, 3) ναυτικόν, 4) λιμενικόν, 5) οἰκονομικόν, 6) ἐπὶ τῶν πτωχεύσεων, 7) ἐπὶ τῆς ἁλιείας. Ὁ «ναυτικὸς κλάδος» του (The Marine departement) χρονολογεῖ τὴν ἐμφάνισίν του ἀπὸ τοῦ 1850, ὅτε ἀπεσχίσθη ἐκ τοῦ κυρίου ὀργανισμοῦ, λόγῳ τοῦ πλήθους τῶν ἁρμοδιοτήτων, αἵτινες ἀνεφύησαν, ὡς ἦτο ὁ ἔλεγχος καὶ ἡ ἐπιτήρησις σκαφῶν τῶν ἐπιβατηγῶν ἀτμοπλοίων, ἡ ἐκπαίδευσις πλοιάρχων καὶ ὑπάρχων τῶν ἐμπορικῶν πλοίων, ἡ ἵδρυσις γραφείων ναυτολογίας καὶ ἀπολύσεως ναυτῶν. Ἡ ἁρμοδιότης του ἐπεξετάθη, ἐν μέρει, καὶ ἐπὶ τῶν φαρικῶν καὶ ἐπὶ τῶν πλοηγικῶν ζητημάτων (1853). Ἀξιολογωτάτη ἀπὸ διεθνοῦς ἀπόψεως ἐργασία τοῦ ναυτικοῦ τμήματος ὑπῆρξεν ἡ πρώτη διατύπωσις τοῦ κανονισμοῦ πρὸς ἀποφυγὴν συγκρούσεων καὶ ὁ διεθνὴς κῶδιξ σημάτων· ἐπὶ πλέον προέβη εἰς κωδικοποίησιν τῶν νόμων καὶ τῶν ἐθίμων τῶν διεπόντων τὴν ἐμπορικὴν ναυτιλίαν τῆς Ἀγγλίας, εἰσηγήθη δ' ἑκάστοτε διαφόρους τροποποιήσεις πρὸς συμπλήρωσιν τῆς νομοθεσίας ταύτης. Σ.Ε.Λ.

**Μπορντὼ** (Bordeau). Πόλις τῆς νοτιοδυτικῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ τῆς Γιρόνδης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γαρούνα (Garonne) εἰς ἀπόστασιν 585 χλμ. ἀπὸ τῶν Παρισίων καὶ 50 περίπου χλμ. ἀπὸ τῆς ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ παραλίας. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Βορδίγαλ(λ)α* ἤ, κατὰ Στράβωνα καὶ Πτολεμαῖον, *Βουρδίγαλα* (λατιν. Burdigala). Κάτοικοι 267.410.

—*[Γεωγρ.]* Τὸ Μπορντὼ κεῖται ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Γαρούνα, εἰς θέσιν ὅπου ὁ ποταμὸς σχηματίζει ὀξεῖαν καμπὴν καὶ ἐπ' ἀμφοτέρων τῶν σκελῶν ταύτης. Εἰς τὴν ἀπέναντι ὄχθην τοῦ ποταμοῦ, ἔχοντος κατὰ τὴν θέσιν ἐκείνην πλάτος 420 περίπου μέτρων, εἶναι κτισμένον τὸ προάστειον *Μπαστὶντ* (La Bastide), συνδεόμενον μετὰ τῆς πόλεως διὰ μεγάλης λιθίνης γεφύρας καὶ δι' ἑτέρας σιδηρᾶς, δι' ἧς διέρχεται ἡ πρὸς Bayonne καὶ Biarrits σιδηροδρομικὴ γραμμή. Ὁ Γαρούνας προχωρῶν πρὸς τὰ Β.ΒΔ. διευρύνεται καὶ σχηματίζει τὸν ἐπιμήκη ποταμόκολπον τῆς Γιρόνδης, ἐπὶ τοῦ ὁποίου, εἰς ὄχι μεγάλην σχετικῶς ἀπὸ τῆς πόλεως ἀπόστασιν ἔχει διανοιχθῇ εὐρύτατος λιμήν, δυνάμενος νὰ περιλάβῃ 1.000—1.200 ἀβαθῆ ποταμόπλοια. Διὰ μεγάλων καὶ δαπανηρῶν ἔργων ἐπετεύχθη νὰ καταστῇ πλωτὸς ὁ Γαρούνας καὶ δι' ἀτμόπλοια μέχρι τῆς λιθίνης γεφύρας τοῦ Μπορντώ· ἐπειδὴ ὅμως αἱ γενόμεναι ἐκβαθύνσεις ἀπεδείχθησαν ἀνεπαρκεῖς, τὰ μεγάλα ὑπερωκεάνια ἐξακολουθοῦν νὰ σταθμεύουν εἰς τὸν ἐπὶ τοῦ ποταμοκόλπου τῆς Γιρόνδης προλιμένα Pauillac, μόνον δὲ τὰ ταχυδρομικὰ τῆς γραμμῆς ἀναπλέουν τὸν ποταμὸν μέχρι τῆς πόλεως. Παρὰ ταῦτα ἡ ναυτιλιακὴ κίνησις τοῦ Μπορντὼ εἶναι ζωηροτάτη, καθημερινὴ δὲ εἶναι ἡ ἐπικοινωνία αὐτοῦ πρὸς ὅλα τὰ μέρη τοῦ κόσμου καὶ ἰδιαίτατα πρὸς τὰς χώρας τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς.

Ὡς πόλις τὸ Μπορντὼ δὲν παρουσιάζει σημαντικὸν ἐνδιαφέρον. Παρεκτὸς τῶν προκυμαιῶν καὶ ὀλίγων εὐθυγράμμων λεωφόρων, ἡ ρυμοτομία του εἶναι παλαιοῦ τύπου, δημιουργοῦσα ἀκανόνιστα κατὰ τὸ πλεῖστον καὶ ἀνόμοια μεταξύ των οἰκοδομικὰ τετράγωνα. Ἔχει ὅμως ἀρκετὰ ἄξια λόγου κτήρια, ναοὺς ἰδίως, ἐξ ὧν κυριώτερα εἶναι: Ἡ μητρόπολις τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου, ὀγκῶδες καὶ ἐντυπωτικὸν ἀλλ' ὄχι καὶ καλαίσθητον οἰκοδόμημα, ἀποτελούμενον ἐκ δύο τμημάτων, κτισθέντων εἰς διαφόρους ἐποχὰς (ΙΓ΄ καὶ ΙΕ΄ αἰῶνα). Ἄλλοτε ὁ πύργος τοῦ ναοῦ κατέληγεν εἰς βέλος ὕψους 80 μ., τὸ ὁποῖον κατερρίφθη τμηματικῶς κατὰ τὴν διάρκειαν δύο καταιγίδων, τῷ 1617 καὶ τῷ 1753, ἤδη δ' ἔχει τοποθετηθῇ εἰς τὴν θέσιν του παμμέγιστον ἄγαλμα τῆς Παρθένου. Ἕτερος ἐνδιαφέρων ναὸς εἶναι ὁ τοῦ Ἁγίου Σεουρίνου (St. Seurin), ὑπὸ τὸν ὁποῖον ὑπάρχουσι κρύπται μὲ σαρκοφάγους τοῦ Δ΄ καὶ Ε΄ αἰῶνος· ἡ κτίσις τῶν διαφόρων αὐτοῦ τμημάτων ἀνάγεται εἰς ποικίλας ἐποχὰς (ἀπὸ τῆς ΙΑ΄ μέχρι τῆς ΙΕ΄ ἑκατονταετηρίδος). Περισσοτέρας αἰσθητικῆς ἀξίας οἰκοδόμημα εἶναι ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, ἀνεγερθεὶς ἀρχικῶς τὸν ΙΒ΄ αἰῶνα, ἰδίως δὲ ὁ ἀνεξάρτητος ἀπὸ τοῦ κυρίου οἰκοδομήματος πύργος του, ὅστις, κτισθεὶς περὶ τὰ τέλη τοῦ 1470, εἶχε μετὰ τοῦ βέλους καὶ τοῦ σταυροῦ αὐτοῦ ὕψος 100 περίπου μέτρων, καταστραφεὶς δὲ ἀνεκτίσθη ἐξ ὁλοκλήρου καὶ πανομοιοτύπως τῷ 1864. Ἄλλαι ἐνδιαφέρουσαι ἀρχιτεκτονικῶς ἐκκλησίαι εἶναι ἡ τοῦ Ἁγίου Σταυροῦ καὶ ἡ τοῦ Ἁγίου Αἰμιλιανοῦ, ἔχουσαι ἰδίως ὡραίους πυλῶνας, διακοσμήτους διὰ γλυπτῶν. Ἀπὸ τῶν ἀρχαίων χρόνων ἐλάχιστα εἶναι τὰ διασωζόμενα ἐν Μπορντὼ ἐρείπια, ἐν οἷς σημαντικώτερα τὰ λείψανα τοῦ λεγομένου Γαλλιηναίου ἀμφιθεάτρου.

Ἐκ τῶν νεωτέρων κτηρίων τῆς πόλεως προέ-



Digitized by Google

χουσι: τὸ Μέγα Θέατρον, ἓν τῶν ὡραιοτέρων τῆς Γαλλίας, τὸ μέγαρον τοῦ Πανεπιστημίου, ἐν τῷ ὁποίῳ εὑρίσκεται ὁ τάφος τοῦ Μονταίνι, τὸ μουσεῖον τῆς γλυπτικῆς καὶ ἀρχιτεκτονικῆς καὶ τὸ ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον.

Τὸ Μπορντῶ ἔχει ἐθνικὴν ἀκαδημίαν ἐπιστημῶν, γραμμάτων καὶ τεχνῶν, πανεπιστήμιον περιλαμβάνον σχολὰς νομικῆς, φυσικῶν ἐπιστημῶν, φιλολογίας, ἰατρικῆς καὶ φαρμακευτικῆς καὶ ἐλευθέραν σχολὴν καθολικῆς θεολογίας, ἀνωτάτην ἐμπορικὴν σχολὴν καὶ ἄλλα ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα, γεωργικὸν ἰνστιτοῦτον, σχολεῖον ὑδρογραφίας καὶ ναυσιπλοΐας, βιβλιοθήκην, μουσεῖα καὶ ἀστεροσκοπεῖον.

Παρεκτὸς τῆς μεγάλης ἐμπορικῆς κινήσεως τῆς πόλεως ἐν τῇ ἐξαγωγῇ τῶν οἴνων τῆς περιοχῆς, ἀποτελεῖ αὕτη ἐξ ἄλλου σημαντικὸν καπνεμπορικὸν καὶ καπνοβιομηχανικὸν κέντρον, ἔχουσα μεγάλας ἀποθήκας καπνοῦ εἰς φύλλα καὶ καπνεργοστάσια. Ἔχει ἐπίσης πολυάριθμα ναυπηγεῖα, τρεῖς μεγάλας ἐγκαταστάσεις σιδηροβιομηχανίας καὶ χυτηρίων διὰ τὸ ναυτικόν, ὑαλουργεῖα, βαρελοποιεῖα, οἰνοπνευματοποιεῖα, ἐργοστάσια διατηρημένων τροφίμων, κλωστικὰς καὶ ὑφαντουργικὰς βιομηχανίας κλπ.

Ἡ ὁμώνυμος ἐπαρχία περιλαμβάνει 20 καντόνια καὶ 158 κοινότητας, μὲ συνολικὸν πληθυσμὸν 514.510 κατοίκων. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς ἀποτελεῖ τὸ περισσότερον οἰνοπαραγωγὸν τμῆμα τοῦ νομοῦ τῆς Γιρόνδης.

— *[Ἱστορ.]* Τὸ Μπορντῶ *(Βουρδίγαλα)* ἦτο κατὰ τὸν Δ' ἢ Ε' π. Χ. αἰῶνα πρωτεύουσα τοῦ γαλατικοῦ λαοῦ τῶν Βιτουρίγων, ἔκτοτε δὲ ἀπετέλει ἄξιον λόγου ἐμπορικὸν κέντρον καὶ ὡς τοιοῦτον («ἐμπορεῖον») ἀναφέρεται βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Στράβωνος. Προσαρτηθεῖσα ἡ πόλις ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, ὁμοῦ μετὰ τῆς λοιπῆς μεσημβρινῆς Εὐρώπης, ἀπετέλεσεν ἐπὶ τῆς κυριαρχίας τούτων πρωτεύουσαν τῆς ἐπαρχίας τῆς Ἀκουϊτανίας, ἔτυχε δὲ πολλῶν προνομίων καὶ ἔβαινε διαρκῶς προοδεύουσα. Εἶχε κοσμηθῆ διὰ μεγαλοπρεπῶν κτηρίων, ὁ δὲ αὐτοκράτωρ Γαλλιηνὸς ᾠκοδόμησεν ἐν αὐτῇ τεράστιον ἱππόδρομον, τοῦ ὁποίου σῴζονται σήμερον μία θύρα μόνον καί τινα ἠρειπωμένα τόξα, δυνάμενον, ὡς ἱστορεῖται, νὰ περιλάβῃ 15—20 χιλιάδας θεατῶν. Ἡ ἐμπορικὴ τῆς πόλεως ἀκμὴ ἐνετάθη κατὰ τὰ τέλη ἰδίως τῆς Β' καὶ τὰς ἀρχὰς τῆς Γ' μ. Χ. ἑκατονταετηρίδος, ὁπότε συνέρρεον εἰς αὐτὴν ἔμποροι ἐξ ὅλων τῶν σημείων τῆς σημερινῆς Γαλλίας, τῆς Ἱσπανίας καὶ τοῦ Βελγίου, ἔζων δὲ τότε αὐτόθι καὶ πολυάριθμοι Ἕλληνες, ἀποτελοῦντες ὁλόκληρον παροικίαν. Τὸν Γ' ὅμως αἰῶνα (276) ὑπέστη τὴν πρώτην βαρβαρικὴν ἐπιδρομὴν τῶν Κίμβρων καὶ τῶν Τευτόνων, ἣν ἐπηκολούθησαν ἄλλαι τῶν Ἀλανῶν, τῶν Σουήβων, τῶν Βανδάλων καὶ τῶν Ἐρούλων, ἔπειτα τῶν Βησιγότθων, τῶν ὁποίων ὁ βασιλεὺς Εὐρῖκος ἐξέλεξε τὸ Μπορντῶ ὡς τόπον διαμονῆς, καὶ τέλος τῶν Νορμανδῶν. Τὸν Ι' αἰῶνα ἡ πόλις ἐπανευρίσκει πρὸς καιρὸν τὴν ἠρεμίαν της. Ἀλλὰ τῷ 1154 καταλαμβάνεται ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἠλευθερώθη τελειωτικῶς μετὰ τῶν λοιπῶν γαλλικῶν ἐπαρχιῶν, μόλις περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ ὀνομασία της ἐξειλίχθη διαδοχικῶς ἀπὸ τοῦ ἀρχικοῦ Bourdigala εἰς Bourdeux-Pourdeaux-Bordeaux.

Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν εἰς Μπορντῶ συνεπήχθη ἡ ἕνωσις τῶν Γιρονδίνων, συνεδριάζουσα εἰς τὸ κτήριον, ὅπου στεγάζεται σήμερον τὸ ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον καὶ ἡ δημοτικὴ βιβλιοθήκη, κατὰ ἑκατοντάδας δ' ἔπεσαν αἱ κεφαλαὶ τῶν βασιλοφρόνων εἰς τὴν πλατεῖαν Ντωφαίν. Ὁ Ναπολέων ἐπανερχόμενος ἐκ τῆς εἰς Ἱσπανίαν ἐκστρατείας διῆλθε διὰ τοῦ Μπορντῶ καὶ διέταξε τότε τὴν ἐκτέλεσιν διαφόρων ἔργων, ἐν οἷς καὶ τῆς μεγάλης λιθίνης γεφύρας, τῆς ὁποίας ἡ οἰκοδόμησις ἐπερατώθη μόλις τῷ 1821. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον, μετὰ τὴν ἅλωσιν τῶν Παρισίων, ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις κατέφυγεν εἰς Μπορντῶ, ἐνταῦθα δὲ ἡ ἐθνοσυνέλευσις, συνεδριάζουσα εἰς τὴν αἴθουσαν τοῦ Μεγάλου Θεάτρου τῆς πόλεως μέχρι τῆς ὑπογραφῆς τῆς εἰρήνης, ἐξέλεξε πρόεδρον τῆς ἀνακηρυχθείσης δημοκρατίας τὸν Ἀδόλφον Θιέρσον. Καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον δ' ἐπίσης πόλεμον, ὅτε κατ' Αὔγουστον 1914 ἡ πόλις τῶν Παρισίων ἐθεωρήθη εὑρισκομένη ἐν κινδύνῳ, ἡ πρωτεύουσα τῆς δημοκρατίας μετεφέρθη ἐπὶ δεκαπενθήμερον εἰς Μπορντῶ. Γ. Ζ.

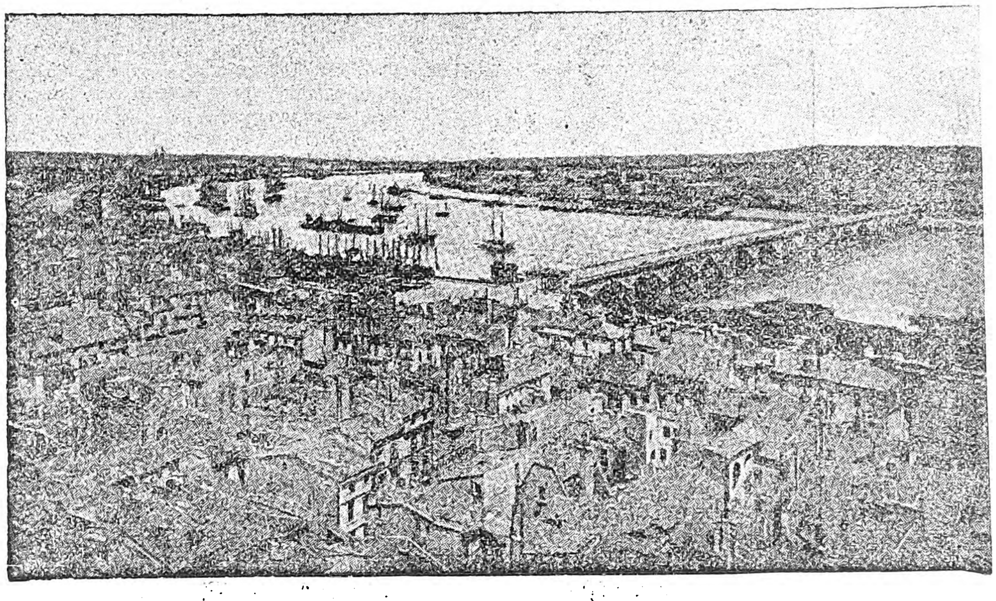

*Γενικὴ ἄποψις τοῦ Μπορντώ.*

— **Μπορντῶ *οἶνοι.*** Οἶνοι ἐκ τῆς Δυτικῆς Γαλλίας καὶ εἰδικώτερον ἐκ τῆς περιοχῆς τοῦ Μπορντῶ. Εἶναι γνωστότατοι καὶ προσφιλέστατοι ἐρυθροὶ συνήθως οἶνοι, ἐνῷ λευκοὶ παράγονται εἰς μικροτέραν σχετικῶς ποσότητα. Λόγῳ τῶν ἐκ τῆς φυλλοξήρας καταστροφῶν ἡ παραγωγὴ τῶν οἴνων τούτων ἔχει σημαντικῶς μειωθῆ, ὥστε σπανίως προμηθεύεταί τις γνησίους τοιούτους καὶ μάλιστα ἀφ' ὅτου ἤρχισεν ἐκεῖ ἡ εἰσαγωγὴ μεγάλων ποσοτήτων ἑλληνικῶν καὶ ἰταλικῶν οἴνων πρὸς ἀνάμειξιν. Τὰ περιφημότερα εἴδη ἐρυθρῶν οἴνων Μπορντῶ εἶναι τά: Latour, Lafitte, Larose, Château Margaux καὶ Château Leoville· εἶτα ἀκολουθοῦν Rauzan, Beychevelle, d'Yssau, Lascombe, St. Julien, Palmer Margaux, Château Ponjeaux, Cantenac, St. Emilion, St. Estéphe, Pouillac, Pontet-Canet, Medoc, Listrac. Οἱ κατωτέρας ποιότητος οἶνοι καλοῦνται Demimarque. Ἐκ τῶν λευκῶν οἴνων Μπορντῶ ἀναφέρομεν τοὺς Haut-Sauterne, Barsac, Preignac, Serons, Graves καὶ Hautes Gaillac. Σ. Γ.

— **Μπορντῶ *συμφωνία.*** Ἐν τῇ πολιτικῇ ἱστορίᾳ τῆς Γαλλίας ἡ συμφωνία τοῦ Μπορντῶ (Pacte de Bordeaux) θεωρεῖται ὡς τὸ πρῶτον βῆμα πρὸς ἀνόρθωσιν μετὰ τὴν ἀτυχῆ ἔκβασιν τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870. Ἡ ἐν Μπορντῶ συνελθοῦσα γαλλικὴ ἐθνοσυνέλευσις, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπερίσχυον μὲν οἱ μοναρχικοί, μέγας ὅμως ἦτο καὶ ὁ ἀριθμὸς τῶν δημοκρατικῶν πάσης ἀποχρώσεως, ἦτο ἀδύνατον νὰ συζητήσῃ ἐπὶ τῆς μορφῆς τοῦ πολιτεύματος, τοῦτο δὲ καθίστα μᾶλλον δυσχερὲς καὶ ἡ ἐν γένει ἀνώμαλος πολιτικὴ κατάστασις καθ' ὅλην τὴν χώραν. Διὰ νὰ ἐπιτύχῃ ἡ ἐθνοσυνέλευσις τοῦ σκοποῦ της, ἦτο ἀπαραίτητος ἡ ἐπὶ τὸ αὐτὸ σύμπτωσις τῶν ἀπόψεων τῶν ἐξεχόντων στοιχείων αὐτῆς, ἵνα, παραμεριζομένων τῶν προσωπικῶν ἀντιζηλιῶν, συνεργασθῶσι πρὸς ἀνόρθωσιν τῆς χώρας. Ὑπὸ τὸ πνεῦμα τοῦτο ὡμίλησε πρὸς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν ὁ ὑπ' αὐτῆς ἐκλεγεὶς ἀρχηγὸς τῆς ἐκτελεστικῆς ἐξουσίας Θιέρσος τὴν 19 Φεβρουαρίου 1871· ὁ λόγος του, πλήρης παραινέσεων πρὸς συνεργασίαν ἐπὶ θυσίᾳ τῶν ἀτομικῶν συμφερόντων, ἔφερε τὸ ἐπιδιωκόμενον ἀποτέλεσμα εἰς μεγάλην μερίδα τῶν μελῶν τῆς ἐθνοσυνελεύσεως, οὕτω δὲ ἐπετεύχθη σιωπηρῶς, χάρις εἰς τὸν Θιέρσον, μεταξὺ τῶν διαφόρων μερίδων, αἵτινες διῄρουν τὴν ἐθνοσυνέλευσιν, καὶ τῆς κυβερνήσεως, εἶδός τι ἐκεχειρίας πολιτικῆς, γνωστῆς ἔκτοτε ὡς «συμφωνίας τοῦ Μπορντῶ», ἥτις καὶ ἐπέτρεψεν εἰς τὴν πλειοψηφίαν τῆς συνελεύσεως νὰ χωρήσῃ σταθερῶς εἰς τὴν ἐκπλήρωσιν τῆς ἀποστολῆς της. Η. Γ. Κ.

— **Μπορντῶ *χρώματα.*** Διάφορα συνθετικὰ χρώματα χαρακτηριστικῆς χροιᾶς. Τὰ σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: 1) Τὸ *μπορντῶ* ὀξίνη ἀζωχρωστική, προερχομένη διὰ συζεύξεως α-ναφθυλαμίνης μετὰ β-ναφθολοδισουλφοξέος R. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1878 ὑπὸ τοῦ Baum. Φαιὰ κόνις διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὴν ἀλκοόλην. Βάπτει τὸ ἔριον καὶ τὴν μέταξαν ἐν ὀξίνῳ λουτρῷ. 2) Τὸ *μπορντῶ τοῦ ἰνδανθρενίου* καὶ 3) Τὸ *μπορντῶ τῆς ἀλγόλης*, ἀμφότερα παράγωγα τῆς ἀνθρακινόνης, εὔχρηστα χρώματα. 4) Τὸ *μπορντῶ τῆς ἀλιζαρίνης*, ταυτόσημον πρὸς τὴν ἀναλιζαρίνην. 5) Τὸ *μπορντῶ τῆς πριμουλίνης*, παράγωγον αὐτῆς. Σ. Γ.

**Μπορντῶ** (Bordeaux), *Ἐρρῖκος*. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ κριτικός, γεννηθεὶς τῷ 1870. Εἶναι ἐκ τῶν γονιμωτέρων καὶ μᾶλλον ἀναγινωσκομένων ἐν Γαλλίᾳ συγγραφέων, μέλος τῆς γαλλικῆς ἀκαδημίας ἀπὸ τοῦ 1919. Τὰ ἔργα του ἀποτελοῦν θαυμαστὴν καὶ ἐνσυνείδητον ὑπεράσπισιν τῆς παραδόσεως καθόλου καὶ τῆς οἰκογενείας ἰδίᾳ, τὴν ὁποίαν θεωρεῖ ὡς κοινωνικὸν κύτταρον ἄξιον πάσης τιμῆς. Ἀφιερώθη εἰς τὴν περιγραφὴν τῶν ἰδιοτήτων καὶ τῆς ἠθικῆς ἀξίας τῆς γαλλικῆς οἰκογενείας καὶ ἠγωνίσθη κατὰ τοῦ συγχρόνου ρεύματος τῆς ἐκλύσεως τῶν ἠθῶν. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν λογοτεχνικῶν ἔργων του εἶναι: «La neige sur le pas» (1911), «La peur de vivre» (1903), «Le lac noir» (1904), «Les Roquevillard» (1906), «Les yeux qui s'ouvrent» (1908), «Une honnête femme» (1906), «La maison», «La petite mademoiselle», «Le marchand de bonheur» κτλ. Ὁ Μπορντῶ διεκρίθη καὶ ὡς κριτικός, γράψας: «Portraits de femmes» (1909), «Les écrivains et les moeurs», «La vie au théâtre» κλπ. Ἐκ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐνεπνεύσθη διάφορα ἔργα μὲ ἐπίκαιρα πολεμικὰ θέματα: «Le chevalier da l'air», «Vie héroique de Guynemer», «Trois tombes», «La jeunesse nouvelle», «La chanson de Vaux-Doumont» κλπ. —α

— **Μπορντῶ** (Bordeaux), ***Παῦλος-Αἰμίλιος-Ἰωσήφ.*** Γάλλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ στρατιωτικῇ σχολῇ τοῦ Σαὶν-Σὺρ, κατέγινε δὲ καὶ εἰς νομικὰς μελέτας, λαβὼν δίπλωμα νομικῆς καὶ δίπλωμα σπουδῶν ἀλγερινῆς καὶ τυνησιακῆς νομοθεσίας καὶ μουσουλμανικοῦ δικαίου. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Μαδαγασκάρης (1895—1896) καὶ ἀπὸ τοῦ 1908—1909 διετέλεσεν ἀπεσπασμένος εἰς τὸ σῶμα τῆς διεθνοῦς κατοχῆς ἐν Κρήτῃ. Τῷ 1911 ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα ὡς μέλος τῆς ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Εὐντοῦ γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς, ὁπότε ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ 1ου συντάγματος πεζικοῦ, μεθ' ὃ, λαβὼν τὸν βαθμὸν τοῦ συνταγματάρχου, τὴν ἀνωτέραν διεύθυνσιν τοῦ ὅλου ἑλληνικοῦ πεζικοῦ (εἶδος ἐπιθεωρήσεως τοῦ πεζικοῦ).

Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν Βαλκανικῶν πολέμων 1912—1913 παρέμεινεν ἐν Ἑλλάδι, μὴ ἀναμιγνύμενος τὸ παράπαν εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ ἐμπολέμου στρατοῦ, ἀλλ' ἀσχολούμενος μὲ τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν ἐμπέδων μονάδων τοῦ πεζικοῦ. Τῷ 1914 ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς 2ας μεραρχίας Ἀθηνῶν, ἀποτελούσης μέρος τοῦ Α' σώματος στρατοῦ, τοῦ χαρακτηρισθέντος τότε ὡς προτύπου. Τῷ 1917, προαχθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, διωρίσθη ἀρχηγὸς τῆς ἐν Ἑλλάδι γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς, παρέμεινεν ὅμως ὡς τοιοῦτος ἐπί τινας μόνον μῆνας. Κατόπιν, ἀνακληθεὶς εἰς Γαλλίαν, ἐπανῆλθεν εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν ὁμάδος ταγμάτων κυνηγῶν κατ' ἀρχάς, μιᾶς ταξιαρχίας βραδύτερον καὶ τέλος μιᾶς μεραρχίας. Μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διωρίσθη ἀνώτερος διοικητὴς τοῦ φρουριακοῦ μηχανικοῦ τῶν Ἄνω Ἄλπεων. Ν. Θ. ΚΛΚ

**Μπορνὺ** (Borny) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μοζέλλα, κείμενον εἰς ἀπόστασιν 4 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μέτς. Κατ. 2.070. Χ. Ι.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις πρὸς Μοζέλλαν, διαρκοῦντος τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου 1870, ἡ ὑπὸ τὸν στρατάρχην Μπαζαὶν στρατιὰ τοῦ Μέτς, εὐθὺς ὡς συνεκροτήθη, ὑπεχώρησε ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Νιὲδ καὶ ἐτάχθη ἀπὸ τῆς 11ης Αὐγούστου 1870 ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ *Μπορνύ*. Περὶ τῆς ἐγκαταστάσεως ταύτης τὸ γερμανικὸν στρατηγεῖον ἔλαβε γνῶσιν μόλις τὸ ἀπόγευμα τῆς 13ης Αὐγούστου (πλημμελὴς ἐκτέλεσις ἐρεύνης), τὴν δὲ πρωΐαν τῆς ἐπομένης, ἐνῷ κατέστρωνε σχέδια περὶ κυκλώσεως τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ εἰς τὴν μεταξὺ Μοζέλλα καὶ Νιὲδ περιοχήν, ἐπληροφορεῖτο παρὰ τῶν προφυλακῶν τοῦ 7ου γερμανικοῦ σώματος στρατοῦ (1ης στρατιᾶς), τῶν διοικουμένων ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Γκόλτς, ὅτι ἀπὸ τῆς χαραυγῆς τῆς ἡμέρας ταύτης ἤρχισεν ἡ ὑποχώρησις τῶν Γάλλων πέραν τοῦ Μοζέλλα (πρὸς τὴν ἀριστερὰν αὐτοῦ ὄχθην). Τῇ ἀτομικῇ τότε πρωτοβουλίᾳ τοῦ Γκόλτς ἐπετέθησαν οἱ Γερμανοὶ περὶ τὰς πρώτας μεσημβρινὰς ὥρας τῆς ἡμέρας ταύτης, κατὰ τῶν ἐπὶ τοῦ ὀροπεδίου Μπορνὺ Γάλλων, δηλαδὴ κατὰ τοῦ 3ου γαλλικοῦ σώματος, ὁρισθέντος ὅπως προκαλύψῃ τὴν ὑποχώρησιν (στρατηγικὴ ὀπισθοφυλακή), ὅπερ μόλις εἶχεν ἀρχίσει τὴν σύμπτυξίν του. Ἀναστραφὲν τὸ σῶμα τοῦτο ἐτάχθη ἐπὶ καταλλήλων θέσεων ὄπισθεν τῆς χα-

Digitized by Google

ίδρας Κολομπὲ μὲ μέτωπον πρὸς ἀνατολάς, καὶ τε διεξήχθη ἡ μάχη τοῦ Μπορνύ.

Τῆς ἐπιθέσεως ἤρξατο μία ταξιαρχία (ἡ τέως ν προφυλακῶν) τοῦ 7ου γερμανικοῦ σώματος ρατοῦ κατὰ τοῦ μόλις ἐγκατασταθέντος 3ου γαλλικοῦ τοιούτου. Εὐθὺς ἀμέσως τὸ 4ον γαλλικὸν σῶμα ι ἡ φρουρά, εἰς τὸ ἄκουσμα τῶν κρότων τῶν ροβόλων, ἀνεστράφησαν, προσεπέρασαν πάλιν ἐπὶ ς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μοζέλλα καὶ ἐτάχθησαν τὸ ν 4ον ἐπὶ καταλλήλων θέσεων ἀριστερὰ (βορείως) τοῦ 3ου σώματος, ἡ δὲ φρουρὰ ὡς ἐφεδρεία. Ταυτοχρόνως τὸ 1ον γερμανικὸν σῶμα πευσεν εἰς ἐνίσχυσιν τοῦ 7ου ταχθὲν δεξιὰ (βορείως), εἰς τρόπον ὥστε, περὶ τὴν 16ην ὥραν τῆς ης Αὐγούστου, οἱ ἀντίπαλοι εὑρίσκοντο εἰς τὰς

*Μάχη Μπορνὺ 14 Αὐγούστου 1870.*

τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαινομένας θέσ. Περὶ τὴν ἑσπέραν τὸ 7ον γερμανικὸν σῶμα τώρθωσε νὰ ὑπερβῇ διὰ τοῦ ἀριστεροῦ του τὴν ράδραν τοῦ Κολομπέ, ἀλλὰ τὸ 1ον δὲν κατώρσε ν' ἀπωθήσῃ τὸ 4ον γαλλικὸν σῶμα. Μία ραρχία τοῦ 7ου γερμανικοῦ σώματος μετὰ μιᾶς ραρχίας ἱππικοῦ ἀπεπειράθησαν νὰ ὑπερκεράσι τὸ δεξιὸν τῶν Γάλλων, ἀλλ' ἀπεκρούσθησαν ιστα ὑπὸ τῆς γαλλικῆς φρουρᾶς. Ἐπελθούσης νυκτὸς ἡ κατάστασις παρέμεινεν ἐντελῶς ἀμφίλος, ἐπωφελήθησαν ὅμως αὐτῆς οἱ Γάλλοι καὶ χώρησαν ἐξ ὁλοκλήρου ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης Μοζέλλα.

Η μάχη αὕτη ἔχει ὡς χαρακτηριστικά: 1) ν ἐνέργειαν τοῦ διοικητοῦ τῶν γερμανικῶν, ἀναδόντος τὴν πρωτοβουλίαν νὰ συμπαρασύρῃ εἰς χην δύο ὁλόκληρα σώματα στρατοῦ· ἡ ἐνέργεια ως αὕτη, ὑπὸ πολλῶν συγγραφέων κατακρίνεδριμέως, ὡς ἀποτελοῦσα ὑπέρμετρον πρωτολίαν. 2) Τὴν ἄσκοπον αἱματοχυσίαν (3.500 λλοι, 5.000 Γερμανοὶ) ἄνευ οὐδενὸς στρατηγι σκοποῦ. Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπόρνχολμ** (Bornholm) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς νίας ἐν τῇ Βαλτικῇ θαλάσσῃ, κειμένη 144 χλμ. ς Α. τῆς Ζηλανδίας καὶ 45 χλμ. πρὸς Ν. τῶν ῶν τῆς Σουηδίας. Ἔχει ἔκτασιν 583 τετρ. χλμ., θυσμὸν 42.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν κών *Ραίννε*, ἀξιόλογον λιμένα τῆς Δ. παραλίας τῆς ου. Ἀποτελεῖ βραχώδη μεμονωμένην ἔξαρσιν υμένην μέχρις 154 μ. καὶ ἐγκλείει ὀρυχεῖα ανθράκων καὶ πλούσια λατομεῖα κυανοῦ μαρρου, ἀσβεστολίθου, γρανίτου κλπ. Οἱ κάτοικοι ολοῦνται κυρίως μὲ τὴν κτηνοτροφίαν, τὴν είαν καὶ τὴν γεωργίαν. Τὸ παλαιότερον ὄνομά ἦτο *Μποργκούνταρχολμ*, ὅπερ εἰς τὴν παλαιὰν νδιναυϊκὴν σημαίνει «Βουργουνδίων νῆσος». Πελθοῦσα παλαιότερον διαδοχικῶς εἰς τὴν Δαν, Λυβέκην καὶ Σουηδίαν, ἐγένετο ὁριστικῶς ική ἀπὸ τοῦ 1660. Παρὰ τὴν ΒΑ. παραλίαν τῆς ου ἀναδύεται τὸ μικρὸν νησιωτικὸν σύμπλε *Ἔρτχολμ* ἢ *Χρίστιανσαι*, ἀκατοίκητον μέν, ἔχον ἀσφαλὲς ἀγκυροβόλιον καταφυγῆς. Χ. Δ.

**Μποροβάρι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Κυρὰ Παναγιὰ* (βλ. λ).

**Μποροβιέφ, *Μάξιμος Νικηφόροβιτς*.** Ρῶσος γράφος, καθηγητὴς τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν νῶν τῆς Πετρουπόλεως, γεννηθεὶς ἐν τῇ πόλει τῃ τῷ 1787 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1855. Ἔγραψε φόρους ἀπόψεις τῆς Μόσχας, εἶτα μεταβὰς εἰς θλεὲμ ἀπεικόνισε τὰς ἐκκλησίας αὐτῆς, ὡς καὶ ίστας ἄλλας τῶν ἱερῶν τόπων. Θ. Β.

**Μποροβικόβσκι, *Βασίλειος Λούκιτς*.** Ρῶσος γράφος, γεννηθεὶς ἐν Μιργόροντ τοῦ κυβερνείου τῆς Πολτάβας τῷ 1758 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1826. Διεκρίθη ὡς προσωπογράφος. Ἡ ἀρίστη τῶν εἰκόνων του εἶναι ἡ εὑρισκομένη εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Ἐρμιτὰζ τῆς Πετρουπόλεως, ἥτις παριστᾷ τὸν Μίρζι Κούλε-Χάν. Θ. Β.

**Μποροβῖκος** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Καρποχώρι* (βλ.λ.).

**Μποροβόγια** (Borovoïa) *[Γεωγρ.]*. Ἓξ ἁλμυραὶ λίμναι ἐν Σιβηρίᾳ (βλ. λ. *Βοροβόγια*).

**Μπόροβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἕβρου χωρίου *Ποταμοὶ* (βλ. λ.).

**Μπορόεβιτς** (Boroevic), ***Σβέτοβαρ**, βαρῶνος Μπόϊνα*. Αὐστριακὸς στρατηγὸς (1856—1920). Κατήγετο ἐκ Κροατίας καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατ' ἀρχὰς ὡς διοικητὴς τοῦ Δ' σώματος στρατοῦ, διακριθεὶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Κομαρὼφ (29 καὶ 30 Αὐγούστου 1914), καθ' ἣν ἐνικήθη ἡ Ε' ρωσικὴ στρατιά. Τὴν 4 Σεπτεμβρίου διωρίσθη διοικητὴς τῆς Γ' στρατιᾶς καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν μάχην τῆς Λεμβέργης (Λεοπόλεως), ὅπου, παρὰ τὰς τοπικὰς ἐπιτυχίας του, ὁ αὐστροουγγρικὸς στρατὸς ἠναγκάσθη νὰ ἀποσυρθῇ, ἀφήσας εἰς τοὺς Ρώσους 100.000 αἰχμαλώτους καὶ ὁλόκληρον τὴν Γαλικίαν. Κατόπιν ἡ στρατιὰ τοῦ Μπορόεβιτς ἀνέλαβε τὴν ἄμυναν τῶν Καρπαθίων καὶ ἀπέκρουσε μετ' ἐπιμονῆς πάσας τὰς ἀποπείρας τῶν Ρώσων, ὅπως διανοίξουν δίοδον. Τὴν 2 Μαΐου 1915 ἐνίκησε τοὺς Ρώσους εἰς τὴν μάχην τοῦ Γκόρλιτσε καὶ τοὺς ἠνάγκασε νὰ ὑποχωρήσουν καθ' ἅπαν τὸ μέτωπον. Μετὰ τὴν εἴσοδον τῆς Ἰταλίας εἰς τὸν πόλεμον, ἀνετέθη εἰς τὸν Μπορόεβιτς ἡ διοίκησις τοῦ Ε' σώματος στρατοῦ, ὅπερ προεκρίθη διὰ τὴν ἄμυναν τοῦ αὐστριακοῦ μετώπου πρὸς τὴν Ἰταλίαν, ἀπὸ τοῦ Μόντε Νέρο μέχρι θαλάσσης. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὁ Μπορόεβιτς παρέμεινεν εἰς τὸ ἰταλικὸν μέτωπον μέχρι τέλους τοῦ πολέμου. Ἡ στρατιὰ τοῦ Μπορόεβιτς ὠνομάσθη στρατιὰ τοῦ Ἰζόντζο καὶ ἀντέστη ἐρρωμένως εἰς πάσας τὰς ἰταλικὰς ἐπιθέσεις καὶ ἀποπείρας προελάσεως τῶν ἐτῶν 1915—1916 καὶ 1917, συμβαλοῦσα κατόπιν μεγάλως εἰς τὴν νίκην τοῦ Καπορέττο. Μετὰ τὴν νίκην ταύτην ὠνομάσθη στρατάρχης καὶ διοικητὴς τοῦ πρὸ τὸν Πιάβε μετώπου, ἐνῷ οἱ ὀρεινοὶ τομεῖς διῳκοῦντο ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Κόνραντ. Κατὰ τὴν ἰταλικὴν ἐπίθεσιν τοῦ 1918, ἦτο ἐπὶ κεφαλῆς τῆς στρατιᾶς του, ἀλλὰ δὲν ἠδυνήθη νὰ συγκρατήσῃ τὸ μέτωπόν του, ὅπερ κατέρρευσεν, ἀκολουθῆσαν τὸ παράδειγμα τῆς ἄλλης χώρας, τῆς ὁποίας τὸ καθεστὼς εἶχεν ἤδη ἀνατραπῆ. Μ. Δ. Β.

**Μποροντίν, *Ἀλέξανδρος Πορφυρίεβιτς*.** Ρῶσος ἰατρὸς καὶ συνθέτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει (1834—1887). Κατήγετο ἐκ τῆς φυλῆς τῶν Ἰμερετίνσκι τοῦ Καυκάσου καὶ εἶχεν εἰς τὰς φλέβας του βασιλικὸν αἷμα, ἐκ τοῦ πατρός του, τοῦ πρίγκιπος Γκεντεάνωφ. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν καὶ τὴν χημείαν καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατρο-χειρουργικῆς Ἀκαδημίας, μέλος τῆς Ἀκαδημίας, αὐτοκρατορικὸς σύμβουλος κτλ. Τῷ 1862 ὁ Μποροντὶν ἐγνωρίσθη μετὰ τοῦ Μπαλακίρεφ, ὅστις ὑπῆρξεν ὁ κατ' ἐξοχὴν μουσικός του σύμβουλος καὶ ἀπετέλεσε μετὰ τούτου, τοῦ Μοσσόργσκυ, Κουΐ καὶ Ρίμσκυ-Κορσακὼφ μέλος τοῦ «Ὁμίλου τῶν πέντε». Ἐν Γερμανίᾳ, ὅπου συνεπλήρου τὰς σπουδάς του, ἐγνώρισεν ἐκ τοῦ πλησίον τὸ ἔργον τοῦ Βάγνερ, τῷ δὲ 1877 καὶ τὸν Λίστ, ὅστις ποικιλοτρόπως τὸν ἐνεθάρρυνε. Τὰ πρῶτα μουσικὰ ἔργα τοῦ Μποροντὶν («σκέρτσο», «σεξτέττο» κτλ.) φέρουσι τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Μένδελσων· αἱ ἐπακολουθήσασαι ὅμως μελῳδίαι, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ «Θάλασσα», «Ἡ πεντάμορφη στὸ δάσος» κ. ἄ., εἶναι ἤδη ἰσχυρῶς πρωτότυποι καὶ ἀπὸ ἀπόψεως ἰδεῶν καὶ ἀπὸ ἀπόψεως μορφῆς. Τὸ συμφωνικὸν τεμάχιον «Εἰς τὰς στέππας τῆς κεντρῴας Ἀσίας», εἶναι θαυμασία μουσικὴ εἰκών, ἡ ὁποία, ὡς καὶ αἱ συμφωνίαι του, προσείλκυσε τοὺς μεγαλυτέρους διευθυντὰς ὀρχήστρας. Διὰ τὸ θέατρον ὁ Μποροντὶν εἰργάσθη εἰς τὴν σύνθεσιν τοῦ μελοδράματος «Ὁ πρίγκιψ Ἰγκόρ», οὗτινος δὲν κατώρθωσε νὰ φέρῃ εἰς πέρας ἢ ὡρισμένας σκηνάς. Συμπληρωθὲν διὰ τῶν εὑρεθέντων σχεδίων παρὰ τῶν Ρίμσκυ-Κορσακὼφ καὶ τοῦ Γκλαζουνώφ, τὸ ἔργον τοῦτο ἀπετέλεσεν ἓν ἐκ τῶν χαρακτηριστικωτέρων τῆς ρωσικῆς σχολῆς. Ἐξ αὐτοῦ περίφημοι ἔχουσι καταστῆ οἱ Πολοβτσιανοὶ χοροὶ μετὰ χορῳδίας. «Ὁ πρίγκιψ Ἰγκόρ», ὅστις ἐπαίχθη ἐν Πετρουπόλει τρία ἔτη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συνθέτου, εἶναι καθαρῶς ἐθνικὸν ἔργον, πλούσιον εἰς ρυθμοὺς καὶ ἀνατολικὰ χρώματα, ἀπαράμιλλον εἰς ἔκφρασιν καὶ αὐθορμητισμόν. Εἰς τὸ δημιουργικὸν ἔργον τοῦ Μποροντὶν πρέπει νὰ προστεθῶσι δύο ὡραιότατα κουαρτέττα, ἀποσπάσματα ἐκ τοῦ μελοδράματος-μπαλέττου «Μλάντα» κτλ. Ὁ Μποροντὶν μετὰ τοῦ Μοσσόργσκυ, ὃν ἁμιλλᾶται εἰς πρωτοτυπίαν, ἀποτελεῖ ἕνα ἐκ τῶν κυριωτέρων προδρόμων τῆς ἐθνικῆς ρωσικῆς σχολῆς.

[Πρβλ. *Sttassow*, Al. Borodine (1889 καὶ γαλλιστὶ 1893).] Γ. Σ.

**— Μποροντίν, *Ἰβὰν Παρφένβιτς*.** Ρῶσος βοτανικὸς (1847—1930). Τῷ 1869 ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς ἐν Πετρουπόλει ἀνωτέρας γεωργικῆς σχολῆς, ἥτις τῷ 1878 μετετράπη εἰς δασονομικὸν ἰνστιτοῦτον, ὀνομασθεὶς ἐπίτιμος αὐτοῦ καθηγητής. Τῷ 1895 ἵδρυσε τὸν πρῶτον βιολογικὸν σταθμὸν τῶν γλυκέων ὑδάτων, διετέλεσε δὲ εἷς τῶν κυριωτέρων συντακτῶν τοῦ ὑπὸ τῆς ρωσικῆς βοτανικῆς ἑταιρείας ἐκδιδομένου δελτίου. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀναφέρομεν τὰ ἑξῆς: «Σύστημα βοτανικῆς», «Πραγματεῖαι περὶ ἀνατομίας τῶν φυτῶν» κ. ἄ. Τῷ 1902 ἐξελέγη ἑταῖρος τῆς Ἀκαδημίας Πετρουπόλεως καὶ ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ προσηρτημένου εἰς αὐτὴν βοτανικοῦ μουσείου. Γ. Ι. Β.

**Μποροσινέου, ἢ *Μπόρος-Γένε*** (Borosineu ἢ Boros-Jenõ) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν τῷ νομῷ Ἄραντ. Κάτ. 5.765. Εὑρίσκεται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λευκοῦ Κέρες καὶ εἶναι πόλις γεωργική, παράγουσα κυρίως οἶνους καὶ ἔχουσα μεγάλα ἐργοστάσια ἐπίπλων. Ἔχει ἰαματικὰς πηγάς. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν ἐρείπια ρωμαϊκοῦ φρουρίου τῶν χρόνων τοῦ Βαλερίου. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀνῆκεν εἰς τὴν Οὐγγαρίαν. Μ. Δ. Β.

**Μπορουλάβσκι** (Borulawski), ***Ἰωσήφ**, κόμις —*. Πολωνὸς νᾶνος (1739—1837), ἐκ γονέων ἀνηκόντων εἰς τὴν τάξιν τῶν εὐγενῶν, ἀλλ' ἄνευ περιουσίας. Ἔζησεν εἰς τὸν οἶκον τῆς πλουσίας Πολωνίδος Ταρνόβσκα, ἥτις καὶ ἐπεμελήθη τῆς ἐκπαιδεύσεως αὐτοῦ. Εὐφυέστατος, ἠσχολήθη μὲ τὴν φιλοσοφίαν, εἰς τὰ προβλήματα τῆς ὁποίας ἐνεβάθυνεν ὅσον ὀλίγοι. Βραδύτερον παρελήφθη ὑπὸ τῆς πλουσίας Πολωνίδος ἀριστοκράτιδος, Χουμιέτσκα, ἥτις ἔδωσεν εἰς τὸν Μπορουλάβσκι τὸ ὄνομα *Ζουζοῦ*, ὑπὸ τὸ ὁποῖον εἶναι γνωστός. Ἡ Χουμιέτσκα περιήγαγε τὸν προστατευόμενόν της εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς αὐλάς, φιλοξενηθέντα εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Μαρίας-Θηρεσίας, τοῦ βασιλέως τῆς Σαξωνίας, τῆς Γαλλίας κτλ. Νυμφευθεὶς ἀπέκτησε τρεῖς θυγατέρας, αἵτινες εἶχον φυσιολογικὸν ἀνάστημα (τὸ ἀνάστημα τοῦ Μπορουλάβσκι τὸ μόλις 60 ἑκατοστῶν). Ἔγραψε γαλλιστὶ ἀπομνημονεύματα ὑπὸ τὸν τίτλον: Les mémoires du célèbre nain polonais Borulawski» (1788), ἔργον ὅπερ μετεφράσθη εἰς πολλὰς γλώσσας καὶ ἐσχολιάσθη εὐρύτατα. Α. Δ.

**Μπορρέλλι** (Borrelli), ***Ἀλφόνσος***. Ἐπιφανὴς Ἰταλὸς ἰατρὸς καὶ μαθηματικός, γεννηθεὶς ἐν Νεαπόλει (1608—1679). Διατελέσας καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Πίζης, ἐξέδωκε τὰ ἔργα: «Euclides restitutus, Apollonii Pergei conicorum», «De vi percussionis», «De motionibus naturalibus a gravitate pendencibus». Καθηγητὴς ἐπίσης εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μεσσήνης, συνέλεξε καὶ ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον τοῦ μαθηματικοῦ Aurolico καὶ τὰ ποιήματα τοῦ Rann. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν στάσιν τῆς Σικελίας κατὰ τῆς ἱσπανικῆς κυριαρχίας. Ἐν Ρώμῃ διετέλεσε καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν, ἐξέδωκε δὲ τὸ διάσημον ἔργον του «De motu animalium». Ο. Ρ.

**Μπορρομαῖαι** *νῆσοι* (isole Borromee) *[Γεωγρ.]*. Ὁμὰς τεσσάρων νησίδων τῆς Ἰταλίας, κειμένων ἐν τῇ λίμνῃ Λάγκο Ματζιόρε, μεταξὺ Στρέζα καὶ Παλλάντσα καὶ ἀνηκουσῶν εἰς τὸν νομὸν τῆς Νοβάρας. Αἱ νησῖδες αὗται, ὀνομασθεῖσαι ἐκ τοῦ ὀνόματος τῆς οἰκογενείας τῶν Μπορρομαίων τοῦ Μιλάνου, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήκουν ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, μετεβλήθησαν τῷ 1670 ἀπὸ ξηρούς, ἀγόνους καὶ ἀκατοικήτους βράχους εἰς γονιμώτατα, κατάφυτα καὶ μαγευτικὰ κέντρα τουρισμοῦ. Ὀνομάζονται Ἴζολα Μπέλλα, Ἴζολα Μάντρε, Ἴζολα Σουπεριόρε ἢ ντεῖ Πεσκατόρι καὶ Ἰζολῖνο ἢ Ἴζολα ντὶ Σὰν Τζιοβάννι. Ἡ Ἴζολα Μπέλλα, χωρὶς νὰ εἶναι ἡ μεγαλυτέρα, εἶναι ἡ σημαντικωτέρα πασῶν. Ἐν αὐτῇ τῷ 1632 ὁ κόμης Κάρολος Μπορρομαῖος ἵδρυσε μικρὸν χωρίον, εἰς τὸ ὁποῖον ἔδωκε τὸ ὄνομα τῆς συζύγου του Ἰσαβέλλας, ἐξ ἧς ὠνομάσθη καὶ ἡ νῆσος Ἴζολα Μπέλλα. Ἔχει ὕψος 28 μ., αἱ δὲ πλευραὶ αὐτῆς ἔχουν μεταβληθῆ εἰς κλιμακωτοὺς κήπους μὲ δέκα βαθμίδας, καταφύτους ἀπὸ ἄφθονον βλάστησιν, ἀπὸ ἄνθη καὶ πορτοκαλέας, κιτρέας, μανόλιες κλπ. Τῷ 1670 ὁ κόμης Βιταλιάνο Μπορρομαῖος κατεσκεύασεν ἐν αὐτῇ καὶ ἀνάκτορον, ἐν τῷ ὁποίῳ συνεκέντρωσε καὶ ἀξιόλογα ἔργα ζωγραφικῆς. Οἱ κῆποι, μὲ τὴν θαυμασίαν θέαν των πρὸς τὴν λίμνην καὶ τὰς Ἄλπεις, καὶ ἡ πινακοθήκη της, καθιστοῦν τὴν νησῖδα ταύτην πρώτης τάξεως κέντρον τουρισμοῦ, τὸ ὁποῖον ἐπισκέπτονται πλεῖστοι περιηγηταί. Ἡ Ἴζολα Μάντρε, ἥτις ἐλέγετο ἄλλοτε Ἴζολα ντὶ Σὰν Βιττόρε, ἐξ ὁμωνύμου ναΐδιου, ὅπερ ὑπῆρχεν ἐν αὐτῇ, εἶναι ἡ μεγαλυτέρα εἰς ἔκτασιν καὶ ἔχει καὶ αὐτὴ ὡραίους κήπους καὶ κτήρια τῆς οἰκογενείας τῶν Μπορρομαίων. Ἡ Ἴζολα Σουπεριόρε ἢ ντεῖ Πεσκατόρι ἔχει ἐπ' αὐτῆς χωρίον μὲ 300 ἁλιεῖς. Ἡ Ἰζολῖνο ἢ Ἴζολα ντὶ Σὰν Τζιοβάννι, ἡ μικροτέρα πασῶν, εἶναι χθαμαλωτάτη καὶ ὁμοιάζει μᾶλλον πρὸς σκόπελον, ἀλλ' εἶναι καὶ αὐτὴ κατάφυτος. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπορρομὲ** (Borromee) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μπορρομαῖαι νῆσοι*.

**Μπορρομίνι** (Borromini), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς ἐν Μασσόνε τῷ 1599 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1667. Κατ' ἀρχὰς ἐσπούδασε γλυπτικὴν ἐν Μιλάνῳ, μετὰ ταῦτα δ' ἀρχιτεκτονικὴν ἐν Ρώμῃ ὑπὸ τὸν Μαντέρνο, οὗ ὑπῆρξε καὶ συνεργάτης πολύτιμος. Ὅταν ὁ Μπερνίνι ὠνομάσθη ἀρχιτέκτων τοῦ Ἁγίου Πέτρου, ὁ Μπορρομίνι ἀνέλαβε νὰ συνεργασθῇ μετ' αὐτοῦ· ἀλλ' ὑπῆρξε τόσον σφοδρὰ ἡ ζηλοτυπία, ὑφ' ἧς κατελήφθη κατὰ τοῦ συνεργάτου του, ὥστε τὸν ὤθησεν οὐ μόνον εἰς ἄκρως παρατόλμους, παραδόξους καὶ ἐξ ὁλοκλήρου κακοτρόπους ἀρχιτεκτονικὰς ἐπινοήσεις, ἀλλὰ καὶ εἰς αὐτὴν τὴν αὐτοχειρίαν. Ὁ Μπορρομίνι διὰ τῆς τέχνης του διηύρυνεν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον, ὤθησε μέχρις ὑπερβολῆς καὶ ἐξεπροσώπησε διὰ πολυπληθῶν ἔργων τὸν βαρόκκειον ρυθμόν, τοῦ ὁποίου τὸ πνεῦμα μετριοπαθέστερον ἢ οὗτος ἐκφράζει ὁ Μπερνίνι. Ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μπορρομίνι μνημονεύομεν ἐνταῦθα τὰ ἀκόλουθα: τὸ ἐν Ρώμῃ παλάτιον Φαλκονιέρι, τὸ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει palazzo dc la Sapienza, ἔνθα σήμερον τὸ ρωμαϊκὸν πανεπιστήμιον (τοῦτο ἤρξατο οἰκοδομῶν ὁ Giac. de la Porta καὶ συνεπλήρωσεν ὁ Μπορρομίνι), τὴν παρὰ τὸ παλάτιον τοῦτο κειμένην ἐκκλησίαν τοῦ Ἁγίου Ὕβ, κτισθεῖσαν ἐν σχήματι μελίσσης, τὴν ὡραίαν πρόσοψιν τοῦ ἐν Ρώμῃ ναοῦ τῆς Ἁγίας Ἁγνῆς in Agone, ἐκτελεσθεῖσαν ἀπὸ τοῦ 1645 μέχρι τοῦ 1650, τὸν ναὸν τοῦ S. Carlino (1640—1667), εἰς ὃν ὁ Μπορρομίνι θηρεύων τὸ ἀλλότροπον ἔδωκε τὰς διαστάσεις καὶ τὴν μορφὴν ἑνὸς ἀπὸ τοὺς στύλους τοῦ θόλου τοῦ Ἁγίου Πέτρου, καὶ τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου delle Fratte, ὃν συνεπλήρωσεν ὁ Μπορρομίνι, προσθέσας καὶ τὸ κωδωνοστάσιον. Ἐπὶ πλέον ὁ Μπορρομίνι διετέλεσεν ἐπί τι χρονικὸν διάστημα ἀρχιτέκτων τοῦ περιφήμου παλατίου Μπαρμπερίνι. Ι. Μ. Π.

**Μπορρὸς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πλωμαρίου ἐν Λέσβῳ (βλ. λ. *Βορρός*).

**Μπορροστάουννες**, ἢ ***Μπόρνες*** (Borrowstounness ἢ Bornes) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μεγάλης Βρεττανίας ἐν Σκωτίᾳ καὶ τῇ κομιτείᾳ Λίνλιθγκω. Κάτ. 11.894. Ἔχει καλὸν λιμένα μετὰ ζωηροῦ ἐμπορίου, ὑψικαμίνους, ἀλευρομύλους καὶ παρ' αὐτὴν μεταλλεῖα γαιανθράκων. Ἐν αὐτῇ ὁ Ἰάκωβος Οὐὰτ (Wat) ἔκαμε τὴν πρώτην δοκιμὴν τῆς ἀνεμοκινήτου μηχανῆς του. Μ. Δ. Β.

**Μπόρρους** (Burroughs), ***Ἰωάννης***. Ἀμερικανὸς συγγραφεὺς (βλ. λ. *Μπώρρους Ἰωάννης*).

**Μπόρροους** (Burrows), ***Ρονάλδος-Μόνταγκιου***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ συγγραφεὺς (βλ. λ. *Μπώρροους*).

**Μπόρρω** (Borrow), ***Γεώργιος-Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος συγγραφεὺς καὶ ἐθνογράφος, γεννηθεὶς ἐν Κάστ-Ντίριχαμ (1803—1881). Εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἐδιμβούργου ἐσπούδασε φιλολογίαν καὶ θεολογίαν. Γενόμενος πράκτωρ τῆς Βιβλικῆς ἑταιρείας, διέτρεξεν ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν Εὐρώπην καὶ ἐξέμαθε τὰς πλείστας τῶν εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν. Ἐν Ἱσπανίᾳ ἐφυλακίσθη ὡς διαμαρτυρόμενος προπαγανδιστής, ἀποφυλακισθεὶς δὲ κατεδιώχθη ὑπὸ τοῦ ἱσπανικοῦ ὄχλου καὶ μόλις κατώρθωσε νὰ σωθῇ καταφυγὼν εἴς τι δάσος. Ἐκεῖ συνήντησεν ὁμάδα Ἀτσιγγάνων, μεθ' ὧν συνέζησεν ἐπὶ μακρόν, ὅπως σπουδάσῃ τὴν γλῶσσάν των καὶ μελετήσῃ τὰ ἤθη καὶ τὰ ἔθιμά των. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του ἐξέδωκε τὸ πρῶτον ἔργον του «The Zingal, or an account of the Gipsies of Spain» (1841). Τὸ βιβλίον τοῦτο περιέχει καὶ γλωσσάριον τῆς γλώσσης τῶν Ἀτσιγγάνων μετ' ἐτυμολογίας τῶν λέξεων, δι' ἧς ὁ συγγραφεὺς προσπαθεῖ ν' ἀποδείξῃ τὴν συγγένειαν τῆς γλώσσης ταύτης μετὰ τῆς σανσκριτικῆς. Κατόπιν μετέφρασεν εἰς τὴν γλῶσσαν τῶν Ἀτσιγγάνων τῆς Ἱσπανίας τὸ κατὰ Λουκᾶν Εὐαγγέλιον καὶ ἐδημοσίευσε λεξικὸν τῆς γλώσσης ὑπὸ τὸν τίτλον «Romano-Lavo-Lil. Word-book of the Romany, or English gypsy language». Βραδύτερον μεταβὰς εἰς τὴν Ἀφρικήν, ἐξέμαθε καὶ ἀφρικανικά τινα ἰδιώματα καὶ ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Targum» μετάφρασιν χωρίων τοῦ Εὐαγγελίου εἰς τεσσαράκοντα γλώσσας. Ἠκολούθησεν ἡ συγγραφὴ «The Bible Spain», εἰς ἣν ὁ Μπόρρω ὀφείλει ἰδίως τὴν παγκόσμιον φήμην αὐτοῦ. Τὸ ἔργον τοῦτο συνίσταται ἐκ προσωπικῶν βιωμάτων, περιγραφῶν χαρακτήρων καὶ ἀφηγήσεων ρωμαντικῶν περιπετειῶν, διακρινομένων διὰ τὸ νευρῶδες ὕφος, τὴν ἁρμονίαν τῆς γλώσσης καὶ τὴν καταπληκτικὴν ζωηρότητα καὶ ἐνάργειαν τῶν εἰκόνων, αἵτινες ἀρεταὶ καλύπτουν τὴν ἐν πολλοῖς ἀσυστηματοποίητον πραγμάτευσιν τῶν καθ' ἕκαστον θεμάτων. Ἄξιον μνείας εἶναι ἐπίσης τὸ «Lavagro, the scholar, the gypsy» (3 τόμοι). Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Wild Wales, its people, language and scenery». Ὁ Μπόρρω μετέφρασεν εἰς τὴν ἀγγλικὴν τὸν «Φάουστ» τοῦ Κλίγγερ καὶ τὸ «Φυλακτὸ» τοῦ Πούσκιν.

[Πρβλ. *Knapp*, «Life, writings an dcorrespondence of George Borrow (Λονδῖνον, 2 τόμοι 1899).] Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

**μπὸρς** (τό). Ἐθνικὸν φαγητὸν τῶν Ρώσων, ἀποτελούμενον ἐκ βοείου κρέατος, βραζομένου μετὰ βουτύρου, κραμβῶν καὶ ἄλλων χορταρικῶν. Ἐκεῖνο ὅπερ τοῦ δίδει ἰδιαίτερον χαρακτηριστικὸν εἶναι ἡ ἀνάμιξις εἰς αὐτὸ ἀφθόνου ἐρυθροῦ πεπέρεως καὶ κρομμύων. Τὸ μπὸρς παρατίθεται εἴς τε τὰ μέγαρα τῶν πλουσίων καὶ εἰς τὰς καλύβας τῶν μουζίκων, ἔχει δὲ ἐξυμνηθῇ ὑπὸ τῆς δημοτικῆς ποιήσεως. Θ. Β.

**μπόρσα** (ἡ), καὶ ***μπούρσα***· (ἐκ τοῦ ἰταλ. borsa). χρηματιστήριον· || σάκκος πρὸς μεταφορὰν χρημάτων· || χρηματοφυλάκιον διὰ μεταλλικὰ νομίσματα.

**Μπόρσα** (Borsa) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν τῷ νομῷ Μαραμουρές. Κάτ. 14.451. Κεῖται παρὰ τὰ σύνορα τῆς Τσεχοσλοβακίας καὶ Πολωνίας, πλησίον τῶν πηγῶν τοῦ Βίσσο, παραποτάμου τοῦ Τρίτσα. Ἔχει σημαντικὰς μεταλλικὰς πηγάς. Παρὰ τὴν πόλιν ταύτην τῷ 1217 ἐσφάγησαν 15.000 Τάταροι ὑπὸ τῶν κατοίκων τῶν περιχώρων. Μ. Δ. Β.

**Μπόρσεκ** (Borszék) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ρουμανίας ἐν Τρανσυλβανίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῶν Καρπαθίων ὀρέων, 96 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Μάρος-Βασαρέλυ. Ἔχει δισανθρακικὰς ἀσβεστοσιδηρούχους πηγὰς θερμοκρασίας +9° Κ., τῶν ὁποίων τὰ ὕδατα χρησιμοποιοῦνται πρὸς πόσιν, λοῦσιν ἢ καταιονήσεις ἐναντίον τῶν χλωρώσεων, ἀναιμιῶν, δυσπεψιῶν κλπ. Κάτ. 2.000. Χ. Δ.

**Μπόρσι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Καστρακίου (Ζόγκρας) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας. Κάτ. (1928) 187. Χ. Δ.

**Μπόρσια** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Φύχτιας τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 127.

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Κορυφὴ* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπορσιππὰ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις ἀρχαιοτάτη τῆς ἡγεμονίας τοῦ Ἀκκάδ, νοτίως καὶ ἐγγύτατα τῆς Βαβυλῶνος, θεωρουμένη ἱερά. Ἡ χαλδαϊκὴ παράδοσις λέγει ὅτι μετὰ τὸν κατακλυσμὸν τοῦ γίγαντος *Σισούθρου* καὶ τὴν εἰς θεοὺς ἀνάληψίν του, οἱ ἀπόγονοί του, ἐν οἷς ὁ Ἐτάνα, Νὲρ καὶ ἄλλοι, ἤγειραν ὑπερφιάλως τεράστιον πύργον, ἵνα φθάσουν τὸν οὐρανὸν καὶ πολεμήσουν τοὺς θεούς. Ἀλλ' ἰσχυρότατοι ἄνεμοι ἀνέτρεψαν τὸ κτίσμα καὶ ἔθαψαν τοὺς ἐργάτας του ὑπὸ τὰ ἐρείπιά των. Τότε ἔγινε καὶ ἡ τῶν γλωσσῶν σύγχυσις. Τὸν μῦθον τοῦτον υἱοθέτησαν καὶ οἱ Ἑβραῖοι. Τὰ ἐρείπια ἐκεῖνα ἐκλήθησαν *Βαβὲλ* (βλ. καὶ λ.). Κατὰ τὴν μαρτυρίαν τοῦ Ναβουχοδονόσορος, ὁ πύργος ἔμενεν ἀτελείωτος ὑπὸ ἀμνημονεύτων χρόνων. Οἱ Χαλδαῖοι ἔθετον αὐτὸν εἰς Μπορσιππᾶ, ἐφ' ἧς θέσεως ὑψοῦτο ὁ περίφημος ταύτης ναὸς *ζιγκουράτ*. Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς πόλεως ὑπὸ τῶν Ἀσσυρίων ἡ πόλις ἐκοσμήθη καὶ ὠχυρώθη ὑπὸ τοῦ Ναβουχοδονόσορος. Γ. Λ. Α.

**μπορτάδα** (ἡ)· ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὴν ἀπὸ ἀναστροφῆς εἰς ἀναστροφῆς τῶν ἱστιοφόρων *διαδρομήν*. Δὲν πρέπει δὲ νὰ συγχέηται ἡ *μπορτάδα* (γαλλ. bordée, ἀγγλ. tack) πρὸς τὸ *δίαρμα* τῆς ἐπισήμου γλώσσης, καὶ τὸ ὁποῖον σημαίνει τὸ μῆκος ἑκάστης μπορτάδας. Σ. Ε. Λ.

**Μπορτάρι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1918) 139. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Κουτουρλάδες*. Χ. Δ.

**Μπὸρτζ-ἐλ-Ἀϊούνα** *[Γεωγρ.]*. Ἀραβικὴ ὀνομασία τῆς ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Τύνιδος πόλεως *Γολέττα* (βλ. λ.).

**Μπόρτζια** (Borgia)· βλ. λ. *Βοργίαι, Βοργίας*.

**Μπορτζονάσκα** (Borzonasca) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Γενούης. Κάτ. 3.970. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ὄρους Ραματσέτο τῶν Λιγυρικῶν Ἄλπεων, εἰς ὕψος 790 μ. καὶ εἶναι σημαντικὸς κλιματολογικὸς σταθμός. Ἐν αὐτῷ ὑπάρχει τὸ ἐνδιαφέρον ἀββαεῖον Μπορτσένε, ἱδρυθὲν τῷ 1184. Μ. Δ. Β.

**Μπόρτκιεβιτς**, ***Λαδίσλαος φὸν —***. Ρῶσος οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Πετρουπόλει τῷ 1868. Ἀποσταλεὶς εἰς τὸ ἐξωτερικὸν ὑπὸ τῆς ρωσικῆς κυβερνήσεως χάριν σπουδῶν, παρέμεινεν ἐν Γερμανίᾳ, διορισθεὶς βραδύτερον ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου. Ἐπανελθὼν εἰς Ρωσίαν ὑπηρέτησεν ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῆς Συγκοινωνίας. Ἀπὸ τοῦ 1901 διατελεῖ καθηγητὴς ἐν Βερολίνῳ. Αἱ ἐπιστημονικαὶ ἐργασίαι του ἀναφέρονται κυρίως εἰς τὴν ἐφαρμογὴν τῶν μαθηματικῶν ἐπὶ τῆς οἰκονομικῆς ἐπιστήμης καὶ τῆς στατιστικῆς. Ἔγραψεν: «Mittlere Lebensdauer» (1893), «Das Gesetz der kleinen Zahlen» (1899), «Bevölkerungswesen» (1919) (συλλογὴ Göschen), «Die Ursachen einer potentierten Wirkung des vermehrten Geldumlaufs auf das Preisnivean». Α.Α.Τ.

**Μπορτνιάνσκι** (Bortnianski), ***Δημήτριος Στεπάνοβιτς***. Ρῶσος συνθέτης (1751—1825). Νεώτατος προσελήφθη εἰς τὸν ἐκκλησιαστικὸν χορὸν τῶν ἀνακτόρων τῆς Πετρουπόλεως, ἔνθα ἐσπούδασεν ὑπὸ τὸν Γκαλούππι, ὃν καὶ ἠκολούθησεν ἀργότερον ἐν Βενετίᾳ πρὸς τελειοποίησιν. Κατὰ τὴν ἐν Ἰταλίᾳ διαμονήν του συνέθεσε πλεῖστα μελοδράματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἕνα «Κρέοντα» (Βενετία 1776) καὶ ἕνα «Quinto Fabio» (Μοδένα 1778). Ἐπανελθὼν εἰς Ρωσίαν ὠνομάσθη τῷ 1796 διευθυντὴς τοῦ ἀνακτορικοῦ ἐκκλησιαστικοῦ χοροῦ. Ὁ Μπορτνιάνσκι θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν κορυφαίων Ρώσων θρησκευτικῶν συνθετῶν, τὸ δὲ ἔργον του παραμένει μνημειῶδες. Βασίζεται δὲ τοῦτο ἐπὶ τῶν παλαιῶν ρωσσικῶν ἐκκλησιαστικῶν μελῳδιῶν, τὰς ὁποίας μεταχειρίζεται ἐλευθέρως, ἐπεξεργαζόμενος ὅμως αὐτὰς συμφώνως μὲ τὴν τεχνοτροπίαν τῆς μουσικῆς τῆς Ἑσπερίας. Ἡ πολυφωνική του ψαλμῳδία, πρωτότυπος καὶ ἐκφραστική, διατηρεῖ μέχρι σήμερον ἀμείωτον τὴν ἀξίαν της καὶ παραμένει ὡς βάσις τῆς ἁρμονικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς τῶν ὀρθοδόξων Ρώσων. Τὰ ἔργα τοῦ Μπορτνιάνσκι καὶ ἐν νέᾳ ἐκδόσει, ἀναθεωρηθείσῃ παρὰ τοῦ Τσαϊκόφσκυ, ἀποτελοῦνται ἐκ μιᾶς λειτουργίας, 29 θρησκευτικῶν ᾠδῶν διὰ 4 φωνάς, 16 ὕμνων διὰ διπλοῦν χορόν, τεσσαράκοντα πέντε ψαλμῶν καὶ πολλῶν ἄλλων ᾠδῶν διὰ 4, 8, 10 ἢ καὶ 12 φωνὰς ἐν διπλῷ χορῷ κτλ. Μεταξὺ τῶν ἔργων του περίφημα ἔχουσι παραμείνει εἷς «Χερουβικὸς ὕμνος», τὰ «Ἄσματα τῶν Σεραφεὶμ» καί τινα ἐκ τῶν κοντσέρτων του. Εἰς τὴν κοσμικὴν μουσικὴν τοῦ Μπορτνιάνσκι συγκαταλέγονται μία συμφωνία, σονάται, ἔργα μουσικῆς δωματίου καὶ 3 ἀκόμη μελοδράματα. Γ. Σ.

**Μπόρτολι** (Bortoli), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς τυπογράφος καὶ ἐκδότης ἐν Βενετίᾳ, ζήσας κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα. Εἰς τὸ τυπογραφεῖον αὐτοῦ ἐξετυπώθησαν, πλὴν ἄλλων ἔργων εἰς ἄλλας γλώσσας, καὶ περὶ τὰ 50 συγγράμματα ἐπιστημονικά, θρησκευτικά, φιλολογικὰ κτλ. διαφόρων Ἑλλήνων συγγραφέων. Τὸ παλαιότερον τούτων φέρει χρονολογίαν 1709, τὸ δὲ νεώτερον 1787. Μεταξὺ τῶν ἐκδοθέντων ἔργων εἶναι καὶ τὸ τετράγλωσσον λεξικὸν τοῦ Γεωργίου Κωνσταντίνου τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς, νέας ἑλληνικῆς, λατινικῆς καὶ ἰταλικῆς γλώσσης. Τὸ τελευταῖον ἐκ τῶν σῳζομένων ἔργων, τὰ ὁποῖα ἐτύπωσε, φέρον τὴν χρονολογίαν 1787, ἔχει ὡς τίτλον «Ὅροι καὶ διαταγαὶ τοῦ γένους καὶ τῆς ἀδελφότητος τῶν Γραικῶν εἰς τὴν πόλιν τοῦ Τριεστίου». Μ. Δ. Β.

**Μπορὺ** *ντὲ* ***Σαὶν-Βενσὰν*** (Bory de Saint-Vincent), ***Ἰωάννης***. Ὀνομαστὸς Γάλλος φυσιοδίφης καὶ στρατιωτικὸς (1780—1846). Τῷ 1800 μετέσχε τῆς ἐξερευνητικῆς ἀνὰ τὸν κόσμον ἀποστολῆς τοῦ πλοιάρχου Μπωντέν, ὁπότε παρέμεινεν ἐπὶ πολὺ εἰς τὴν Ἴλ-ντὲ-Φρὰνς καὶ ἐξηρεύνησεν ἰδίως τὰς νήσους Ρεουνιὸν καὶ Ἁγίαν Ἑλένην, τῶν ὁποίων συνέταξεν ἀρτιωτάτους χάρτας. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν μετέσχεν ὅλων τῶν ἐπὶ αὐτοκρατορίας ἐκστρατειῶν, βραδύτερον δ' ἐξελέγη βουλευτής· κατὰ τὴν παλινόρθωσιν ὅμως τῶν Βουρβώνων περιληφθεὶς εἰς τοὺς καταλόγους τῶν προγεγραμμένων, ἠναγκάσθη νὰ ἐκπατρισθῇ καὶ κατέφυγεν εἰς Ὁλλανδίαν, ὅπου ἐξηρεύνησεν ἀπὸ παλαιοντολογικοῦ ἐνδιαφέροντος τὰς ἐπὶ τοῦ ὄρους Maestricht εὐρείας κρύπτας. Βραδύτερον ἐγκατεστάθη εἰς Βρυξέλλας, ἐκεῖ δέ, ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων ἐπιστημόνων, ἐδημοσίευσε τὰ «Γενικὰ χρονικὰ τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν» (8 τόμ. μετὰ πινάκων). Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἐπεφορτίσθη τῷ 1829 τὴν διοίκησιν τῆς ἐπιστημονικῆς ἀποστολῆς, ἥτις συνώδευσε τὸν στρατὸν τοῦ στρατηγοῦ Τζοὺρτς εἰς Πελοπόννησον. Τῷ 1830 ἐπανῆλθεν εἰς τὰς τάξεις τοῦ στρατοῦ μὲ βαθμὸν συνταγματάρχου καὶ ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ἐπιστημονικῆς ἀποστολῆς τῆς ἐξερευνήσάσης τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Ἀλγερίας. Ἐκτὸς τῶν πολυπληθῶν μελετῶν καὶ ἄρθρων αὐτοῦ εἰς ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ τῆς ἐποχῆς του καὶ εἰς τὴν «Ἐγκυκλοπαιδείαν» τοῦ Didot, ἐξέδωκε καὶ ἀρκετὰ ἔργα του εἰς τόμους, ἐν οἷς: «Περὶ τῶν Φορτουνάτων νήσων τῆς ἀρχαίας Ἀτλαντίδος» (Παρίσιοι (1802), «Ταξίδια εἰς τὰς τέσσαρας κυρίας νήσους τῶν ἀφρικανικῶν θαλασσῶν» (1803), «Ὑπόγειον ταξίδι, ἢ περιγραφὴ τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Ἁγίου Πέτρου τοῦ Μαέστριχτ καὶ τῶν κρυπτῶν αὐτοῦ» (1821), «Ζωολογικὴ μελέτη περὶ τοῦ ἀνθρωπίνου εἴδους» (1827) κ. λ. π. — Ω.

**Μπορυσλὼφ** (Boryslaw) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν Γαλικίᾳ, κειμένη παρὰ τὸν ποταμὸν Τυσμιενίκα παρὰ τοὺς Β. πρόποδας τῶν Καρπαθίων, ἐν μέσῳ πλουσίας περιοχῆς εἰς κοιτάσματα ὀζοκηρίτου (ὀρυκτῆς κηρώδους ὕλης) καὶ πηγὰς νάφθης. Κάτ. (1921) 16.000 περίπου, ὧν τὰ ¾ Ἰουδαῖοι. Πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀνῆκεν εἰς τὴν Αὐστρίαν, κατελήφθη δὲ κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1914 ὑπὸ τῶν Ρώσων, ὑφ' οὓς παρέμεινε μέχρι τοῦ Μαΐου τοῦ 1915, ἀνακαταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν. Χ. Δ.

Digitized by Google

**Μπόρχα** (Borja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ Σαραγόσσης. Κάτ. 6.000. Κεῖται παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Οὐέστα, παραποτάμου τοῦ Ἔβρου, εἰς τοὺς πρόποδας μικροῦ λόφου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ὑπάρχει παλαιὸς πύργος. Παράγει σιτηρά, κάνναβι, ὀπώρας, ἔλαιον καὶ οἶνον καὶ ἔχει βιομηχανίαν μαλλίνων καὶ μεταξωτῶν ὑφασμάτων καὶ σάπωνος. Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἐκαλεῖτο Bursada καὶ Bursao. Κατὰ τοὺς χρόνους τῆς μουσουλμανικῆς κατοχῆς μετωνομάσθη εἰς Borjia καὶ Borja, ἐξ οὗ προῆλθε καὶ τὸ ὄνομα τῆς γνωστῆς ἰταλικῆς οἰκογενείας τῶν Βοργία, οἵτινες εἶχον κτίσει τὸν ὀχυρὸν πύργον ἐπὶ τοῦ λόφου. Παρ' αὐτὴν εὑρίσκεται τὸ περίφημον κιστερκιανὸν ἀββαεῖον Μπερουέλα, εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Μονκάγιο. Μ. Δ. Β.

**Μπόρχορστ** (Borghorst) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ Β. Βεστφαλίᾳ, κειμένη παρὰ τὰ ὀλλανδικὰ σύνορα ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Μύνστερ-Μπουργκστάϊνφουρτ καὶ ἔχουσα βιομηχανίαν βάμβακος, κλωστήρια, ὑφαντήρια κλπ. Κάτ. (1919) 8.296. Χ. Δ.

**μπορῶ·** συνηθέστερος τύπος τοῦ *ἠμπορῶ* (βλ. λ.).

**Μπὸς** (γαλλ. Boche, γερμαν. Bosch). Ἐπιβράχυνσις τοῦ *Ἀλμπὸς* ἢ *Ἀλλεμπὸς* (=Γερμανός). Οὕτως ἐκάλεσαν οἱ Γάλλοι τοὺς Γερμανοὺς κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑποτιμητικῶς. Ἡ λέξις σημαίνει τὸν ἀγροῖκον, σκληρόν, ἀπολίτευτον, βάρβαρον, λαμβάνεται δὲ καὶ ὡς οὐσιαστικὸν καὶ ὡς ἐπίθετον. Α. Δ.

**μπὸς** (boss). Ὄνομα χρησιμοποιούμενον ἐν Ἀμερικῇ, καὶ ἰδίως εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Β. Ἀμερικῆς, πρὸς ὑποδήλωσιν τοῦ ἀρχηγοῦ ἑνὸς κόμματος ἢ τοῦ διευθυντοῦ πολιτικῆς τινος ὀργανώσεως, π.χ. τοῦ «Τάμμανυ-Χώλ» ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ. Μ. Δ. Β.

**Μπὸς** (Bosse), ***Ἀβραάμ***. Γάλλος ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς ἐν Τοὺρ τῷ 1602 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1676. Ἐγένετο μέλος τῆς ἐν Παρισίοις Ἀκαδημίας τῆς ζωγραφικῆς, ἐν ᾗ ἐδίδαξεν ἐπὶ βραχὺ τὴν προοπτικήν. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν φιλοπονωτέρων, παραγωγικωτέρων καὶ δεξιωτέρων συνάμα χαρακτῶν τῶν χρόνων του καὶ κατέλιπε χαλκογραφίας θαυμαζομένας διὰ τὴν ἐντέλειαν τῆς ἐξεργασίας των. Ἀπεικόνιζεν ἰδίᾳ σκηνὰς τοῦ ἀστικοῦ βίου, ἀποδίδων μετ' ἰδιαιτέρας ὅλως ἐπιτυχίας τὰς ἐνδυμασίας. Ἐξειργάσθη περὶ τὰς 1400 ξυλογραφίας καὶ χαλκογραφίας. Συνέγραψε: «Traité des manières de graver en taille-douce» (1645). Ι. Μ. Π.

— **Μπὸς** (Bos), ***Λαμπέρτο***. Ὁλλανδὸς φιλόλογος (1670—1747). Νεαρώτατος διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Φράνεκερ ἐν Φριζίᾳ, ὅπου διεκρίθη τόσον διὰ τὴν ἐπιστημονικὴν δρᾶσιν, ὅσω καὶ τὴν εὐμέθοδον διδασκαλίαν του. Ἐκ τῶν ἔργων του κυριώτερα εἶναι: «De eruditione Graecorum per colonias eorum propagata» (1697), «Animadversiones ad Thomae Magistri eclogus» (1698), «Ellipses graecae» (1702), «Antiquitatum graecarum descriptio brevis» (1714), «Animadversiones ad scriptores, quosdam Graecos». Α. Δ.

— **Μπὸς** (Bosch ἢ Bos), ***Βὰν-ντὲρ—***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Βὰν-ντὲρ Μπός*, Ἱερώνυμος).

**Μποσάρ** (Bochart), ***Σαμουήλ***. Γάλλος θεολόγος καὶ φιλόλογος (1559—1667). Κατόπιν μακρᾶς προπαρασκευῆς, ἐξέδωκε τῷ 1646 μίαν «Ἱερὰν Γεωγραφίαν», ἐκ τῆς ὁποίας πολλὴν ἀπέκτησε φήμην καὶ ἐκτίμησιν. Ἡ βασίλισσα τῆς Σουηδίας Χριστίνα τὸν ἐκάλεσε τότε πλησίον της, μεταβὰς δὲ εἰς Στοκχόλμην παρέμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ ἓν ἔτος, μεθ' ὃ ἐκλήθη εἰς ἕδραν καθηγητοῦ ἐν τῇ συσταθείσῃ τότε Ἀκαδημίᾳ τοῦ Καὲν, ὅπου καὶ παρέμεινε διδάσκων μέχρι τοῦ θανάτου του. Ὁ Μποσάρ, ὁ ὁποῖος ἀπέλαυε πολλῆς φήμης μεταξὺ τῶν συγχρόνων του ὡς θεολόγος, γεωγράφος, φιλόλογος καὶ φυσιοδίφης, ἔγραψεν ἀκόμη: ἐπιστολὰς ἐπὶ θρησκευτικῶν καὶ δογματικῶν ζητημάτων, «Ἱεροζωϊκόν, ἢ περὶ τῶν ἱερῶν ζῴων τῶν Γραφῶν» (εἰς λατινικήν, 1663) καὶ ἄλλα. —Ω.

**Μποσδάρι** (Bosdari) ***Ἀλέξανδρος, κόμις—***. Ἰταλὸς διπλωμάτης καὶ λόγιος (1867—1929). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν τῇ γενετείρᾳ του Βολωνίᾳ καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν διπλωματικὸν κλάδον, ὑπηρετήσας ὡς ἀκόλουθος εἰς τὰς πρεσβείας Βέρνης, Ἀθηνῶν (τῷ 1893), Λονδίνου καὶ Βερολίνου. Προαχθεὶς ἐν τῷ μεταξὺ εἰς γραμματέα καὶ κατόπιν εἰς σύμβουλον πρεσβείας, ἀπεστάλη τῷ 1910 εἰς τὴν Σόφιαν ὡς πρεσβευτής, μετατεθεὶς τῷ 1912 εἰς τὰς Ἀθήνας ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα καὶ παραμείνας μέχρι τοῦ 1918. Τῷ 1921 ἀπεστάλη εἰς τὰ Δωδεκάνησα ὡς γενικὸς διοικητής, τῷ δὲ 1922, προαχθεὶς εἰς πρεσβευτὴν πρώτης τάξεως, ἐτοποθετήθη εἰς τὸ Βερολῖνον, ὅπόθεν ἀνεκλήθη μετὰ ἓν ἔτος ὑπὸ τοῦ Μουσσολίνι καὶ ἐτέθη εἰς διαθεσιμότητα. Ὁ Μποσδάρι κατέγινε καὶ εἰς φιλολογικὰς μελέτας καὶ ἐθεωρεῖτο ὡς εἷς τῶν βαθυτέρων Ἰταλῶν δαντολόγων. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Σκέψεις καὶ σχόλια ἐπὶ τῆς ἱστορίας τοῦ Θουκυδίδου», «Περὶ τῶν Βαλκανικῶν πολέμων, τοῦ Παγκοσμίου πολέμου καὶ τινων γεγονότων προηγηθέντων αὐτῶν» (1928), ἐν τῷ ὁποίῳ πραγματεύεται τὰ πρὸς τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν ἑλληνικὴν κρίσιν σχετικὰ γεγονότα. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας καὶ ἄρθρα εἰς περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας. Ἔγραψεν ἐν τῇ Μεγάλῃ Ἑλληνικῇ Ἐγκυκλοπαιδείᾳ τὸ ἄρθρον *Δάντης*. Μ. Δ. Β.

**Μποσὲ** (Bocher), ***Κάρολος***. Γάλλος ἀξιωματικὸς καὶ στρατιωτικὸς συγγραφεὺς (1816—1908). Μετέσχε τῶν εἰς Ἀλγερίαν ἐπιχειρήσεων κατὰ τὰ ἔτη 1840—1849 καὶ τῆς εἰς Κριμαίαν ἐκστρατείας, διετέλεσε δὲ μετὰ ταῦτα ἀκόλουθος τοῦ αὐτοκράτορος Ναπολέοντος Γ' καὶ ἀπεσύρθη τοῦ στρατοῦ μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ λοχαγοῦ. Τῷ 1857 ἐδημοσίευσεν εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν δύο κόσμων» ἀναμνήσεις ἐκ τοῦ Κριμαϊκοῦ πολέμου, τῷ δὲ 1897 ἐξέδωσεν εἰς αὐτοτελῆ τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Στρατιωτικαὶ ἀναμνήσεις καὶ ἐπιστολαί: Ἀφρικὴ καὶ στρατὸς τῆς Ἀνατολῆς» μέγα μέρος ἐκ τῆς ἐξόχως ἐνδιαφερούσης ἀλληλογραφίας του. Χ. Δ.

**μποσικάδα** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μπόσικος, ἔλλειψις σταθερότητος· || συνήθ. μεταφ., ἀπερίσκεπτος λόγος ἢ πρᾶξις, εὐπιστία, ἔλλειψις κριτικῆς βασάνου (βλ. *μπόσικος*).

**μποσικιὰ** (ἡ)· ἐλαφρότης, κουφότης, ἄλλως *μποσικάδα*.

**μπόσικος,—η,—ο·** ὁ μὴ στερεός, ἐπισφαλής: «ὁ τοῖχος εἶναι μπόσικος καὶ θὰ πέσῃ» || συνήθ. μεταφ., «μπόσικος ἄνθρωπος» εὐήθης, ἄκριτος || «μπόσικα λόγια» ἀνόητοι λόγοι || «μπόσικες δουλειές» ἐργασίαι ἀμελέτητοι, ἐπιζήμιοι || ***μπόσικα*** (τά) ὡς οὐσ., τὰ περὶ τὴν ὀσφὺν μαλακὰ μέρη τοῦ σώματος, ἄλλως *λαγαρὰ* (ἰταλ. bosco).

**Μποσινὸς** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Καλαμώνας* (βλ. λ.).

**Μπὸσκ** (Bosc), ***Λουδοβῖκος-Αὐγουστῖνος-Γουλιέλμος***. Γάλλος φυσιοδίφης (1750—1828). Ἐξέδωσε τὴν «Journal de Physique», διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ Βασιλικοῦ κήπου τῶν Παρισίων, ἱδρυτὴς τῆς «Ἑταιρείας τῶν Γάλλων φυσιοδιφῶν» καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Λεξικὸν Γεωργίας» (1801), «Νέον λεξικὸν φυσικῆς ἱστορίας» (1803), «Περὶ καλλιεργείας τῶν δένδρων καὶ συντηρήσεως τῶν δασῶν» (1821) κτλ. Ἐξέδωσεν ἐπίσης τὰ «Ἀπομνημονεύματα» τῆς περιφήμου Γιρονδίνης κυρίας Ρολάν, τῆς ὁποίας ὑπῆρξε στενὸς φίλος μέχρι τῶν τελευταίων στιγμῶν της.

**Μποσκάν**, ἢ ***Μποσκὰ Ἀλμογκάβερ*** (Boscà ἢ Almogaver), ***Ἰωάννης***. Ἱσπανὸς ποιητὴς (1493—1542). Εἶχεν ἀκολουθήσει τὸ στρατιωτικὸν στάδιον καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Καρόλου Ε' ἐν Ἰταλίᾳ, ὅπου ἐξέμαθε τὴν ἰταλικὴν γλῶσσαν καὶ κατέγινεν εἰς ἰδιαιτέρας μελέτας ἐπὶ τῆς ποιήσεως καὶ τῶν ἰταλικῶν μέτρων, τὰ ὁποῖα εἰσήγαγε βραδύτερον εἰς τὴν ἱσπανικὴν ποίησιν. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἡ σύζυγός του ἐξέδωκε πλήρη σειρὰν τῶν ἔργων του, ἀποτελουμένην ἀπὸ σοννέττα, ἀπὸ ᾄσματα καὶ εἰδύλλια, ἐν οἷς μιμεῖται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον μετ' ἐπιτυχίας τὸν Πετράρχην, τὸν Δάντην, τὸν Ἀριόστον καὶ τὸν Μπέμπο. Μετέφρασεν ἐπίσης ἐκ τῆς ἰταλικῆς τὸν «Αὐλικὸν» τοῦ Βαλτάσσαρ Καστιλιόνε, καθὼς καὶ ἄλλα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ «Ἡρὼ καὶ Λέανδρος» τοῦ Μουσαίου κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μποσκάουεν** (Boscawen), ***Ἐδουάρδος***. Διάσημος Ἄγγλος ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1711. Νεώτατος καταταχθεὶς εἰς τὸ ναυτικόν, προήχθη τῷ 1740 εἰς πλοίαρχον, διεκρίθη δὲ κατὰ τὰς πολιορκίας τῆς Καρθαγένης καὶ τοῦ Puerto-Bello. Τῷ 1744 κατέλαβε τὸ γαλλικὸν πλοῖον τῆς γραμμῆς «Μήδεια» καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν παρὰ τὸ Φινιστέρον ναυμαχίαν, ἔνθα καὶ διεκρίθη. Προαχθεὶς εἰς ἀντιναύαρχον ἡγήθη τῆς κατὰ τῶν Ἰνδιῶν ἐκστρατείας, καθ' ἣν κατέλαβε τὸ Μαδράς. Τῷ 1751 ἀπετέλεσε μέλος τοῦ συμβουλίου τῶν λόρδων τοῦ Ναυαρχείου. Τῷ 1755 ᾐχμαλώτισε δύο γαλλικὰ πλοῖα φέροντα βοηθείας εἰς Ἀμερικήν. Προαχθεὶς εἰς ναύαρχον ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τῆς κατὰ τῆς Β. Ἀμερικῆς στρατείας, καταλαβὼν τὴν Louisbourg καὶ τὰς νήσους τοῦ ἀκρωτηρίου Breton καὶ Ἁγίου Ἰωάννου. Τῷ 1759, ἡγούμενος τοῦ στόλου τῆς Μεσογείου, ἐδίωξε τὸν ἐκ Τουλῶνος ἐξελθόντα γαλλικὸν στόλον, μεθ' οὗ ἐναυμάχησε νικηφόρως ἐν τῷ κόλπῳ Λάγος. Γ. Ν. Ν.

**Μποσκὲ** (Bosquet), ***Πέτρος-Ἰωάννης-Φραγκῖσκος***. Γάλλος στρατάρχης (1810—1861). Μετασχὼν τῷ 1841 ὡς ὑπολοχαγὸς τῆς εἰς Ἀλγέριον ἐκστρατείας, ἐτραυματίσθη κατὰ τὴν μάχην τοῦ Οὐέντ-Μελάχ, παρέμεινε δὲ ὑπηρετῶν εἰς ἀνωτέρας διοικήσεις τοῦ ἐκεῖ γαλλικοῦ στρατοῦ μέχρι τοῦ 1853, ὁπότε ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν, φέρων βαθμὸν ἀντιστρατήγου. Τῷ 1854 διῴκει τὴν δευτέραν μεραρχίαν τοῦ στρατοῦ τῆς Κριμαίας, ὅπου ἐκέρδισε τὴν μάχην τῆς Ἄλμα, ἐδοξάσθη δ' ἔτι πλέον διὰ τῆς ἁλώσεως τοῦ ὀχυρωτάτου Πρασίνου λόφου. Κατὰ τὴν δευτέραν ἐπίθεσιν ἐναντίον τοῦ πύργου τοῦ Μαλακὼφ (Σεπτέμβριος 1855) ἐτραυματίσθη σοβαρῶς καὶ ἠναγκάσθη ἔκτοτε ν' ἀπόσχῃ τῆς ἐνεργοῦ ὑπηρεσίας. Τὸ ἑπόμενον ἔτος διωρίσθη γερουσιαστὴς καὶ προήχθη εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατάρχου. —Ω.

**Μποσκιγιὸν** (Bosquillon), ***Ἐδουάρδος-Φραγκῖσκος-Μαρία***. Γάλλος ἰατρὸς καὶ φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1744 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1816. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῶν Ἰησουϊτῶν τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1752 ἤρχισε νὰ παρακολουθῇ μαθήματα ἰατρικῆς. Ἀποκτήσας φήμην δεινοῦ ἑλληνιστοῦ, ἐκλήθη τῷ 1774 εἰς τὴν ἕδραν τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας. Ἐμελέτησε τοὺς ἀρχαίους συγγραφεῖς καὶ ἐχρημάτισεν ἰατρὸς τοῦ Hôtel-Dieu. Κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Hippocratis aphorismi et praenotionum liber» (Paris 1874, τόμ. 2), «Mémoire sur les causes de l' hydrophobie, vulgairement connue sous le nom de rage» (ἐν «Mem. soc. méd. d' émul» τόμ. V, ἔτος XI). —Ω.

**Μποσκίνι** (Boschini), ***Μᾶρκος***. Βενετὸς ζωγράφος, γλύπτης, φιλόλογος, τεχνοκρίτης καὶ ποιητής, ἀκμάσας κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἕνεκα τῶν καλλιτεχνικῶν του ἔργων ἐτιμήθη διὰ χρυσῆς ἁλύσεως παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος Λεοπόλδου, παρὰ τοῦ ἀρχιδουκὸς τῆς Αὐστρίας καὶ παρὰ τοῦ δουκὸς τῆς Μοδένης. Ἔγραψεν 61 χάρτας περιλαμβάνοντας ὁλόκληρον τὴν Κρήτην καὶ 48 ἄλλους διὰ τὸ Αἰγαῖον Πέλαγος. Ἄξιον λόγου εἶναι τὸ περὶ τῶν νήσων ἔργον του, ἐκδοθὲν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Archipelago con tutte le isole, scogli, secche e bassi fondi» (Venezia 1658). Ἀπέθανε τῷ 1678. Δ. Π. Π.

**Μπόσκλαβον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Ἰτάμου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 469. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Ἅγιοι Ἀπόστολοι, Κατοῦσι, Κριτσάρι, Λαγκάδι* καὶ *Σπηλιὰ (Κοῦκος)*. Χ. Δ.

**Μπόσκο** (Bosco), ***Ἰωάννης***. Ἰταλὸς κληρικὸς καὶ συγγραφεὺς (1815—1888). Εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τοῦ τάγματος τῶν σαλεσιανῶν ἢ ἱερέων τοῦ Ἁγίου Φραγκίσκου τῆς Σάλ. Ἀποθνήσκων ἀφῆκεν ἑκατὸν πεντήκοντα φιλανθρωπικὰ ἱδρύματα εἰς διαφόρους πόλεις, τὰ ὁποῖα περιέθαλπον ἄνω τῶν 300.000 παιδίων. Ἔγραψε καί τινα βιβλία σχετικὰ πρὸς τὸ ἔργον του, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ὁ Ἅγιος Πέτρος, ὁ κορυφαῖος τῶν ἀποστόλων» (1867) καὶ «Ὁ βίος τοῦ ἁγίου Ἰωσήφ» (1893). Μ. Δ. Β.

**Μπόσκοβιτς, *Πέτρος***. Μαυροβούνιος ἀξιωματικός. Κατὰ τὴν Κρητικὴν ἐπανάστασιν 1866—1869 σχηματίσας σῶμα ἐκ 40 περίπου συμπατριωτῶν του, κατῆλθεν εἰς τὴν ἀγωνιζομένην νῆσον καὶ συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐν τῷ νομῷ Χανίων πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις, διακριθεὶς πανταχοῦ διὰ τὴν ἀνδρείαν του. Ν. ΚΛΣ

—**Μπόσκοβιτς** (Boscovich), ***Ρογῆρος-Ἰωσήφ***. Ἰταλὸς μαθηματικός, ἀστρονόμος καὶ φιλόσοφος (1711—1787). Ἐγεννήθη ἐν Ραγούζῃ τῆς Δαλματίας καὶ ἐσπούδασεν ἐν τῇ ἱερατικῇ σχολῇ ἰησουϊτῶν τῆς Ρώμης μαθηματικά, γενόμενος βραδύτερον καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν καὶ τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Ρώμης καὶ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Παβίας. Ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας ἐπιστημονικὰς καὶ διπλωματικὰς ἀποστολάς. Τῷ 1742 ὁ πάπας ἀνέθεσεν εἰς αὐτόν, ὁμοῦ μετὰ δύο ἄλλων εἰδικῶν, τὴν μελέτην τῶν μέσων πρὸς στερέωσιν τοῦ θόλου τοῦ Ἁγίου Πέτρου. Ἐταξίδευσεν εἰς πλείστας πόλεις τῆς Εὐρώπης, ἐν δὲ τῷ Λονδίνῳ ἐμελέτησε τὴν φιλοσοφίαν τοῦ Νεύτωνος, τὴν ὁποίαν εἰσήγαγε πρῶτος εἰς τὴν Ἰταλίαν. Τῷ 1774 ὁ Λουδοβῖκος ΙΣΤ' τῆς Γαλλίας ἐκάλεσεν αὐτὸν εἰς Παρισίους καὶ τὸν διώρισε διευθυντὴν τῆς ὀπτικῆς ὑπηρεσίας τοῦ ναυτικοῦ. Διετέλει μέλος πλείστων ἀκαδημιῶν καὶ ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν καὶ ἔχαιρε πανευρωπαϊκῆς φήμης ἀνδρὸς σοφοῦ. Ἔγραψεν ὑπὲρ τὰ 70 ἔργα περὶ ἀστρονομίας, μαθηματικῶν, φυσικῆς, ὀπτικῆς, περιγραφὰς ταξιδίων, ποιήματα κτλ., ὧν τὰ κυριώτερα εἶναι: «Περὶ τῶν ἡλιακῶν κηλίδων» (1736), «Θεωρία τῆς φυσικῆς φιλοσοφίας» (1758), «Ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὴν ὀπτικὴν ἀστρονομίαν» (1785), «Πραγματεία περὶ τῶν διοπτρικῶν τηλεσκοπίων» (1755), «Περὶ τῶν ἐκλείψεων τοῦ ἡλίου καὶ τῆς σελήνης» (1760) εἰς ὡραίους λατινικοὺς στίχους, «Ἡμερολόγιον ταξιδίου ἀπὸ Κωνσταντινουπόλεως εἰς Πολωνίαν» (1772) κτλ. Μ. Δ. Β.

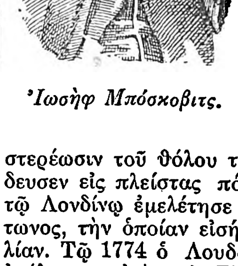

*Ἰωσὴφ Μπόσκοβιτς.*

Digitized by Google

**Μπόσκο Κιεζανουόβα** (Bosco Chiesanuova) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Βερώνας, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 33 χλμ. Κάτ. 5.000. Εὑρίσκεται ἐπὶ ὀροπεδίου εἰς ὕψος 1.104 μ., ἐν γραφικωτάτῃ τοποθεσίᾳ, καὶ ἀποτελεῖ πολυσύχναστον θερινὴν διαμονήν. Μ. Δ. Β.

**Μπόσκοπ** (Boskop) *κρανίον*. Ἓν ἐκ τῶν μᾶλλον σημαντικῶν εὑρημάτων παλαιοντολογικῶν ἰχνῶν τοῦ ἀνθρώπου. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1914 ἐν Boskop τοῦ Τράνσβααλ, κατὰ τὴν ἐκσκαφὴν ἀγροῦ τινος, εἰς βάθος 1 $^1/_2$ μ., ὁμοῦ μετὰ τεμαχίων σκελετοῦ κρανίου καὶ σιαγόνων καί τινων μακρῶν ὀστῶν. Ταῦτα, ἀρκετὰ ἀπολιθωμένα, δὲν εἶναι ἀκριβῶς στρωματογραφικῶς καθωρισμένα· ἄρα ἀμφιβόλου χρονολογίας. Τὸ κρανίον τοῦτο χαρακτηρίζει ἔκσημος χαμαικρανία, δολιχοκεφαλία, ὄγκος (μῆκος 205 ἢ 220 χλσμ. καὶ πλάτος 154 ἢ 160 χσμ.) μετὰ ὑπολογιζομένης χωρητικότητος 1.840 κ.εμ. ἢ καὶ πλέον, πενταγωνικὸν σχῆμα, ὀρθομετωπία, προβολὴ ἰνίου, στενομετωπία καὶ ἀπουσία ὑπερκογχίων ὄγκων, ἰσχυρὰ γνάθος, ἐλαφρὸν γένειον, παρουσία ὑπερμαστοειδοῦς ἀκρολοφίας. Πλὴν τοῦ τελευταίου, τὰ λοιπὰ χαρακτηριστικὰ δὲν συμφωνοῦν μὲ τὸν νεαντερτάλιον τύπον, ὅπως ἐφαντάσθησαν ἐν ἀρχῇ, ἀλλ' ἐν πολλοῖς μὲ τὸν *κρομανιόνιον* (βλ. λ.), ἢ μὲ τοὺς συγχρόνους Νέγρους γενικῶς. Ὁ *ἄνθρωπος τοῦ Ἀκρωτηρίου*, ὅπως ὠνομάσθη, δὲν ἔχει ἑπομένως ἀκριβῶς ταξινομηθῆ εἰσέτι· εἶναι ἀμφίβολον εὕρημα. Κατὰ τὸν Boule ἐὰν εἶναι πλειστοκαίνου ἐποχῆς πρόκειται περὶ μακροτάτης πρὸς τὰ ὀπίσω συνεχείας τοῦ νεγροειδοῦς κόσμου καθόλου, ὅστις ἀποκτᾷ οὕτω μεγάλην παλαιότητα. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

**Μπόσκο Ρεάλε** (Bosco Reale=Βασιλικὸν δάσος) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Καστελλαμάρε τοῦ νομοῦ Νεαπόλεως, κειμένη παρὰ τοὺς ΝΑ. πρόποδας τοῦ Βεζουβίου, 19 χλμ. πρὸς ΑΝΑ. τῆς Νεαπόλεως, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι κέντρον γεωργικῆς περιφερείας καὶ ἔχει βιομηχανίαν βαρελίων. Κάτ. 9.000. Ἡ Μπόσκο Ρεάλε ἐγένετο κυρίως γνωστὴ ἀπὸ τοῦ 1895, ὁπότε ἀνευρέθη παρ' αὐτὴν πλουσία συλλογὴ ἀργυρῶν ἀγγείων ἀλεξανδρινῆς τέχνης. Ἡ συλλογὴ αὕτη καλουμένη «Θησαυρὸς τοῦ Μπόσκο Ρεάλε», ἐπωλήθη ὑπὸ τοῦ Βικεντίου ντὲ Πρίσκο εἰς τὸν βαρῶνον Ἐδμόνδον Ρότσιλντ, ὅστις ἐδώρησεν αὐτὴν εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου, ὅπου φυλάσσεται σήμερον. Ὁ θησαυρὸς οὗτος ἀνευρέθη ἐντὸς ἀρχαίας ἐπαύλεως, ἐκ τῶν κάλλιον διατηρουμένων ἀγροτικῶν κατοικιῶν τῶν ῥωμαϊκῶν χρόνων. Ἐν τῷ κυρίῳ κτηρίῳ ἀνευρέθησαν ὡραιόταται τοιχογραφίαι (νωπογραφίαι), ἔργα μεγάλης τέχνης, παριστῶσαι ἕνα ναὸν τῆς Ἀρτέμιδος μετὰ βωμοῦ, ἕνα χωρικόν, μίαν Σίβυλλαν, ἕνα ἀθλητήν, μίαν κιθαρίστριαν συνοδευομένην ὑπὸ δούλης κλπ. Δύο ἐκ τῶν τοιχογραφιῶν τούτων, ἐξ ὧν ἡ μὲν μία εἰκονίζει ἀγροτικὸν τοπίον ἡ δὲ θαλασσογραφίαν μετὰ ἁλιέων καὶ κωπηλατῶν, μετεφέρθησαν εἰς τὸ Λοῦβρον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Héron de Willefosse*, «Le Trésor de Boscoreale (Παρίσιοι 1895). Χ. Δ.

**Μπόσκος** (Bosco), ***Βαρθολομαῖος***. Διάσημος θαυματοποιός, γεννηθεὶς ἐν Τουρίνῳ τῷ 1793 καὶ ἀποθανὼν ἐν Δρέσδῃ τῷ 1862. Ἀπὸ παιδικῆς ἡλικίας εἶχε δώσει δείγματα καταπληκτικῆς ἐπιδεξιότητος, ἀναφέρεται δὲ μεταξὺ τῶν ἄλλων ὅτι κατώρθωνε νὰ λαμβάνῃ μέρος εἰς διάφορα παιγνίδια, καὶ εἰς ξιφομαχίας ἀκόμη, καὶ νὰ νικᾷ τοὺς ἀντιπάλους του ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς δεδεμένους. Νεώτατος κατετάχθη εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν καὶ μετέσχε δεκαοκταετὴς μόλις τῶν ἐπὶ αὐτοκρατορίας πολέμων. Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ρωσίας ἐπληγώθη ἐλαφρῶς διὰ σπάθης εἰς μίαν μάχην ἐναντίον Κοζάκων, καὶ λέγεται ὅτι, ὑποκρινόμενος τότε τὸν νεκρὸν καθ' ἣν ὥραν εἷς Ρῶσος στρατιώτης τὸν ἐπλησίαζε διὰ νὰ τὸν σκυλεύσῃ, κατώρθωσε ν' ἀφαιρέσῃ καὶ αὐτὸς εἰς ἀνταπόδοσιν τὸ χρηματοφυλάκιον τοῦ Ρώσου. Περισυλλεγεὶς ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης, μετεφέρθη ὡς αἰχμάλωτος εἰς Σιβηρίαν, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ ὀκτὼ μῆνας, διασκεδάζων τοὺς ἐν αἰχμαλωσίᾳ συντρόφους του καὶ τοὺς φρουρούς των μὲ ταχυδακτυλουργικὰ παίγνια, ἐκ τῶν ὁποίων πολλὰ ἔδιδον τὴν ἐντύπωσιν θαυμάτων.

Μίαν ἡμέραν ὁ κυβερνήτης τοῦ Τομπόλσκ, ἀκούων νὰ γίνεται πολὺς περὶ αὐτοῦ λόγος, ἠθέλησε νὰ παρακολουθήσῃ καὶ ὁ ἴδιος τὰς ταχυδακτυλουργίας του, τὴν ἰδίαν δ' ἑσπέραν ὁ Μπόσκος, ἐφοδιασθεὶς ἐκ τῶν ἐνόντων μὲ τὰ κατάλληλα ὄργανα, ἔδιδεν ἐνώπιον αὐτοῦ εἰς τὸ κυβερνεῖον μεγάλην παράστασιν. Ὅταν ἐτελείωσε καὶ ἐδέχετο τὰ συγχαρητήρια τῶν παρευρεθέντων ἐζήτησε νὰ μάθῃ τί ὥρα εἶναι, τότε δὲ καὶ μόνον ὁ κυβερνήτης καὶ οἱ ἀξιωματικοί του ἀντελήφθησαν ὅτι διαρκούσης τῆς παραστάσεως ὁ Μπόσκος εἶχεν ἀφαιρέσει τὰ ὡρολόγια ὅλων. Συμπεριληφθεὶς τῷ 1814 εἰς μίαν ἀνταλλαγὴν αἰχμαλώτων, ἐπανῆλθεν εἰς Ἰταλίαν καὶ ἤρχισεν ἔκτοτε νὰ χρησιμοποιῇ τὴν θαυματοποιητικήν τέχνην του ὡς βιοποριστικὸν ἐπάγγελμα. Ἡ φήμη του ἐγένετο παγκόσμιος, περιήρχετο δὲ ἐπὶ μίαν σχεδὸν πεντηκονταετίαν τὰ θέατρα τῶν διαφόρων χωρῶν, ἀπὸ τοῦ ἑνὸς μέχρι τοῦ ἄλλου ἄκρου τῆς Εὐρώπης, ἐκπλήσσων τοὺς θεατὰς μὲ τὰ «θαύματά» του καὶ καλούμενος νὰ τὰ ἐπαναλάβῃ ἐνώπιον ἡγεμόνων καὶ πριγκίπων. Περὶ τοῦ βίου του καὶ τῶν κατορθωμάτων τοῦ Μπόσκου ἐγράφησαν πολλαὶ ἀφηγήσεις, ἐν αἷς ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ Σατανᾶς», ἐκδοθεῖσα ἐν Μασσαλίᾳ τῷ 1859, ἐχρησιμοποιήθη δὲ τὸ ὄνομά του συχνά, καὶ χρησιμοποιεῖται ἀκόμη καὶ σήμερον, εἰς τοὺς τίτλους τῶν βιβλίων τῶν περιεχόντων ἐξηγήσεις ταχυδακτυλουργικῶν παιγνίων («Τὰ μυστήρια τοῦ Μπόσκου» κλπ.). — Ω.

**Μπόσκο Τρεκάζε** (Bosco Trecase) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Νεαπόλεως, κειμένη παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ Βεζουβίου. Εἶναι κέντρον εὐφορωτάτης γεωργικῆς περιφερείας καὶ ἔχει βιομηχανίαν βαμβακερῶν καὶ μεταξωτῶν ὑφασμάτων. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Βεζουβίου τοῦ 1906 ὑπέστη πολλὰς ἐκ τῆς λάβας ζημίας, τριακόσιοι δὲ περίπου ἐκ τῶν κατοίκων ἐφονεύθησαν. Κάτ. 13.850. Χ. Δ.

**Μπόσνα** (Bosna) *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ Σαύου ἐν Βοσνίᾳ (βλ. λ. *Βόσνα*).

**Μποσνὰ-Σαράϊ** (Bosna Sarai) *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς πόλεως *Σεράγιεβον* (βλ. λ.).

**Μπόσουελ** (Boswell), ***Ἰάκωβος***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1740—1795). Εἶναι ἰδίᾳ γνωστὸς ἐκ τῆς περιφήμου βιογραφίας του τοῦ Τζόνσον, θεωρουμένης ὑποδειγματικῆς εἰς τὸ εἶδός της. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Ἱστορία τῆς Κορσικῆς», «Βιογραφία τοῦ στρατηγοῦ Πάολι» κ. τ. λ. Α. Δ.

**Μπόσουερθ**, ἢ *Μάρκετ Μπόσουερθ* (Bosworth ἢ Market Bosworth) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λέϊτσεστερ, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 19 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως Λέϊτσεστερ. Εἶναι σπουδαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν καὶ ἔχει μέγα σανατόριον ἱδρυθὲν τῷ 1920 καὶ ὡραῖον ναὸν τοῦ Ἁγίου Πέτρου. Κάτ. 7.300. Εἶναι κυρίως γνωστὴ ἐκ τῆς φερωνύμου μεγάλης μάχης τοῦ πολέμου τῶν «Δύο ρόδων», συναφθείσης 3 χλμ. πρὸς νότον τῆς πόλεως μεταξὺ Ριχάρδου Γ' καὶ Ἑρρίκου κόμιτος τοῦ Ρίτσμοντ, τὴν 22 Αὐγούστου 1485. Τὴν νίκην ἔδωσεν ὁ λόρδος Στάνλεϋ, ὅστις παραμένων οὐδέτερος, ἐπὶ κεφαλῆς 5.000 ἀνδρῶν, κατὰ τὴν ἔναρξιν τῆς μάχης, ἐτάχθη κατὰ τὴν κρίσιμον στιγμὴν παρὰ τὸ πλευρὸν τοῦ Ἑρρίκου. Φονευθέντος τοῦ Ριχάρδου Γ' ἀνεκηρύχθη ἀμέσως βασιλεὺς ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης ὁ κόμης τοῦ Ρίτσμοντ, ὑπὸ τὸ ὄνομα Ἑρρῖκος Ζ', οὕτω δὲ ἐτέθη τέρμα εἰς τὸν καταστρεπτικὸν καὶ μακρὸν πόλεμον τῶν «Δύο ρόδων». Ἡ μάχη τοῦ Μπόσουερθ παρέσχεν ἀφορμὴν εἰς δημιουργίαν πολλῶν θρύλων καὶ ἡρωϊκῶν ποιημάτων, εἰς δὲ τὸν «Ριχάρδον Γ'» τοῦ Σαίξπηρ ὑπάρχει μακροτάτη καὶ ζωηρὰ περιγραφὴ αὐτῆς. Χ. Δ.

**Μπόσουνα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Πέλαγος* (βλ. λ.).

**Μπόσρα** *[Βιβλ. Γεωγρ.]*. Πόλις ἐν Χαουρὰν (βλ. λ. *Βοσορά*).

**Μπὸςς** (Bossch), ***Βαλτάσαρ*** *βὰν ντὲν*—. Φλαμανδὸς ζωγράφος ἐξ Ἀμβέρσης (1681—1715). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Gerard Thomas καὶ εἰργάσθη ἐν Ἀμβέρσῃ, Νάντῃ, Παρισίοις καὶ Ντουαί. Διέπρεψεν ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος. Τὸ σημαντικώτερον τῶν ἔργων του εἶναι «Ἡ ἐπίσκεψις τοῦ χωροδεσπότου τῆς Ἀμβέρσης» (1711), περιλαμβάνουσα περὶ τὰς τεσσαράκοντα προσωπογραφίας καὶ ἀποκειμένη ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Ἀμβέρσης. Ι. Μ. Π.

**Μποσὰνζ** (Bossange), ***Ἀδόλφος***. Γάλλος λογοτέχνης (1793—1862), γνωστὸς ἰδίως ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Νέμο* (Nemo). Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 ὑπῆρξεν εἷς τῶν πλέον διακεκριμένων συντακτῶν τῆς «Ἐφημερίδος τῆς Γαλλίας», εἰς τὴν ὁποίαν ἐδημοσίευσεν, ὑπὸ τὴν ἐπικεφαλίδα «Ἐπιστολαὶ πρὸς τὴν γειτόνισσάν μου», πνευματώδη χρονογραφήματα. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Περὶ τῶν ἐγκλημάτων καὶ τῆς κεφαλικῆς ποινῆς» (1831) ἀξιόλογον νομικοφιλοσοφικὴν μελέτην καὶ πολλὰ θεατρικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Κλοτίλδη» (1832) καὶ «Ἡ οἰκογένεια Λουζινὺ» (1832), ἀναβιβασθέντα μετ' ἐπιτυχίας ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῆς Comédie Française. — Ω.

**Μπόσσι** (Bossi), ***Ἑρρῖκος-Μᾶρκος***. Ἰταλὸς συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ὑπέροχος ὀργανοκρούστης καὶ εἷς ἐκ τῶν πλέον σημαινόντων συγχρόνων συνθετῶν τῆς Ἰταλίας, ἔχει γράψει σειρὰν ἔργων διακρινομένων διὰ τὴν ποικίλην των πολυφωνίαν καὶ τὴν διαύγειαν τῆς μελῳδικῆς των γραμμῆς. Μεταξὺ τούτων ἰδιαιτέραν θέσιν κατέχουσι τὰ ὀρατόρια: «Ὁ ἀπολεσθεὶς παράδεισος» καὶ «Ἆσμα ᾀσμάτων», τὰ μελοδράματα «Il veggente», ὅπερ ἀνεβιβάσθη ἐν Μιλάνῳ τῷ 1890, καὶ «Ὁ ἄγγελος τῆς νυκτός», τὸ «Κοντσέρτον» δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, τὸ «Συμφωνικὸν κοντσέρτο», ἐν «Ρέκβιεμ», μία «Σουΐτα» δι' ὀρχήστραν, δύο τρίο, δύο σονάται διὰ βιολίον καὶ κλειδοκύμβαλον, μία σειρὰ τεμαχίων δι' ἔγχορδα ὄργανα ὑπὸ τὸν τίτλον «Intermezzi Goldoniani» κ. ἄ. Ὁ υἱός του *Ρέντσο*, γεννηθεὶς τῷ 1883, διεκρίθη ἐπίσης ὡς συνθέτης διὰ τῶν ἔργων: «Ἡρωϊκὸν ποίημα» καὶ «Ἀνθρώπινον ποίημα» δι' ὀρχήστραν κ. ἄ. Γ. Σ.

— **Μπόσσι** (Bossi), ***Ἰωσὴφ-Κάρολος-Αὐρήλιος***, *βαρῶνος ντὲ* —. Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ στιχουργός, θερμὸς ὑμνητὴς τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως (1758—1823). Ἦτο μετὰ τοῦ Μπόττα εἷς τῶν θερμοτέρων ἀρχηγῶν τοῦ γαλλοφίλου κόμματος ἐν Ἰταλίᾳ καὶ διετέλεσε μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τοῦ Πεδεμοντίου (1798—1802) καὶ εἶτα μέλος τῆς ὑπὸ τοῦ Βοναπάρτου ἐγκαθιδρυθείσης ἀναδιοργανωτικῆς ἐπιτροπῆς. Κατὰ τοὺς χρόνους τῆς αὐτοκρατορίας (1805—1815) διετέλεσε νομάρχης, ἀπεσύρθη δὲ μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον. Ἔγραψε πολυάριθμα ποιήματα, περιλαμβάνοντα ὁλόκληρον τὴν ἱστορίαν τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1789. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ὠδὴ εἰς Ἰωσὴφ Β'» (1781), «Ὠδὴ εἰς τὸν Πῖον ΣΤ'» (1782), «Ἡ Ἀμερικανικὴ ἀνεξαρτησία» (1785), «Ἡ εἰρηνευθεῖσα Ὁλλανδία» (1788), «Ὀρομάζια» ποίημα ἐπικὸν εἰς 12 ᾄσματα (1812) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μποσσουὲ** (Bossuet), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος ἐκκλησιαστικὸς ῥήτωρ (βλ. λ. *Βοσσουέτος* Ἰάκωβος).

**Μποσσù** (Le Bossu), ***Ἰάκωβος***. Γάλλος βενεδικτῖνος μοναχὸς (1540 — 1626). Ὅταν οἱ Γκῖζαι ἐσχημάτισαν τὴν «Καθολικὴν συνομοσπονδίαν» (Ligue), τῆς ὁποίας προσχηματικὸς σκοπὸς ἦτο ἡ καταπολέμησις τοῦ καλβινισμοῦ, πραγματικὸς δὲ ἡ ἀνατροπὴ τοῦ Ἑρρίκου Γ', ὁ Μποσσù ὑπεστήριξεν ἐκθύμως καὶ μετὰ πάθους τὴν προσπάθειάν των. Τῷ 1585 συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὴν ἔκρηξιν ἐπαναστάσεως ἐν Νάντῃ ἐναντίον τοῦ βασιλέως, εἰς βιβλίον του δὲ δημοσιευθὲν βραδύτερον («Devis entre un catholique et un politique») ἐβεβαίωνεν ὅτι ὁ Ἑρρῖκος ἦτο περισσότερον ἄθεος ἀπὸ τὸν Ἰούδαν, ὅτι θεόθεν ἐδόθη εἰς τὸν Ἰάκωβον Κλεμὰν ἡ ἔμπνευσις νὰ τὸν δολοφονήσῃ, καὶ ὅτι κανεὶς δὲν ἔπρεπε νὰ δέεται ὑπὲρ ἀναπαύσεως τῆς ψυχῆς του. Εἰς ἄλλο του βιβλίον («Traité contre l'adhésion aux hérétiques») ὑπεστήριζεν ὅτι ὅλοι οἱ καθολικοί, οἱ ἐρχόμενοι ὁπωσδήποτε εἰς σχέσεις μὲ τοὺς αἱρετικούς, εἶναι ipso facto ἀποσυνάγωγοι τῆς Ἐκκλησίας. Ὅταν ἀνεγνωρίσθη ὁ Ἑρρῖκος Δ' ὡς βασιλεύς, ὁ Μποσσù κατέφυγεν εἰς Ρώμην, ὅπου καὶ παρέμεινεν ἐφεξῆς, τυγχάνων πολλῆς εὐνοίας ἐκ μέρους τοῦ πάπα. — Ω.

**μποστάνι** (τό)· ἀγρὸς εἰς τὸν ὁποῖον καλλιεργοῦνται πέπονες καὶ ὑδροπέπονες: «ἐκεῖνο τὸ χωράφι τό 'βαλα μποστάνι» ἢ «— εἶναι καλὸ γιὰ μποστάνι» (τουρκ. bostan)· || ἐνίοτε κατ' ἐπέκτασιν καὶ ὁ λαχανόκηπος.

**Μποστάνια** (τὰ) *[Γεωγρ.]*. Οὕτως ἐκαλεῖτο ἄλλοτε ἡ μεταξὺ Παλαιοῦ Φαλήρου καὶ Τζιτζιφιῶν τοποθεσία, ὡς ἔχουσα ἔδαφος κατάλληλον διὰ τὴν καλλιέργειαν ὑδροπεπόνων, πεπόνων καὶ λαχανικῶν. Ἡ θέσις αὕτη κατὰ τὴν Ἐπανάστασιν κατέστη γνωστὴ ἐκ τῆς αὐτόθι συναφθείσης μάχης τῶν Ἀθηναίων ὑπὸ τὸν ὁπλαρχηγὸν Σπῦρον Δοντᾶν καὶ τῶν ἐπερχομένων Τούρκων (20 Φεβρουαρίου 1827), οἵτινες ἐτράπησαν εἰς φυγήν. Τ. Ε. Ε.

**Μποστὰν μπουρνοῦ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Θρᾴκης (πλάτ. 40°38' $^1/_2$ Β., μῆκ. 26°43' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. Western part of Sea of Marmara and Gulf Xeros) κατὰ τὴν βορείαν ἀκτὴν τοῦ κόλπου τοῦ Σάρου καὶ βορείως τοῦ νησίου Ξερὸς Ἀντασί. Σ. Ε. Λ.

**Μποσταντζαλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Κηπιὰ* (βλ. λ.).

**μποσταντζῆ - μπασῆς**. Ἐκαλεῖτο ἄλλοτε ἐν Τουρκίᾳ ὁ ἀρχηγὸς τοῦ σώματος τῶν *μποσταντζήδων* (βλ. λ.). Ὡς τοιοῦτος ἀπέκτησε βαθμιαίως μεγάλην ἰσχύν, ἐκταθεῖσαν εἰς ὅλην τὴν περιοχὴν τῆς κυρίως Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἐπὶ τῶν δύο ὀχθῶν τοῦ Βοσπόρου, ἐπὶ πλέον δὲ εἶχε καὶ τὴν ἐπιτήρησιν τῶν δασῶν καὶ τῶν ὑδάτων. Ἦτο συγχρόνως ὁ ἀνώτατος ἐπόπτης τοῦ σαραγίου, φροντίζων καὶ διὰ τὴν τροφοδοσίαν του, ὡς τοιοῦτος δὲ εἰσέπραττε τὸν φόρον τῆς δεκάτης ἀπὸ τῶν ἁλιέων τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ἐθεωρεῖτο δὲ ὡς πρῶτος κωπηλάτης (*χαμλατζῆ-μπασῆς*) τοῦ σουλτάνου, προερχόμενος συχνάκις ἐκ τῶν τάξεων τῶν σουλτανικῶν καϊκτσήδων καὶ ὡς τοιοῦτος ἐκράτει τὸ πηδάλιον τῆς μεγάλης σουλτανικῆς ἀκάτου, ὅταν ἐπέβαινε ταύτης ὁ σουλτᾶνος. Ἦτο ὁ ἄμεσος ἐκτελεστὴς τῶν διαταγῶν τοῦ σουλτάνου καὶ ἰδιαιτέρως τῶν ὑπὸ τούτου διατασσομένων θανατικῶν ποινῶν, τῶν ὑπεροριῶν καὶ τῆς δημεύσεως τῆς περιουσίας τῶν πολιτικῶν ἐνόχων. Εἶχε τὸ προνόμιον, μετὰ τοῦ *καπουτζῆ-μπασῆ* (ἀρχιθυρωροῦ) ἐξ ὅλου τοῦ προσωπικοῦ τῶν ἀνακτόρων, νὰ φέρῃ γένειον, ὡς οἱ πασᾶδες καὶ οἱ μεγιστᾶνες ἐν γένει. Μπο-

Digitized by Google

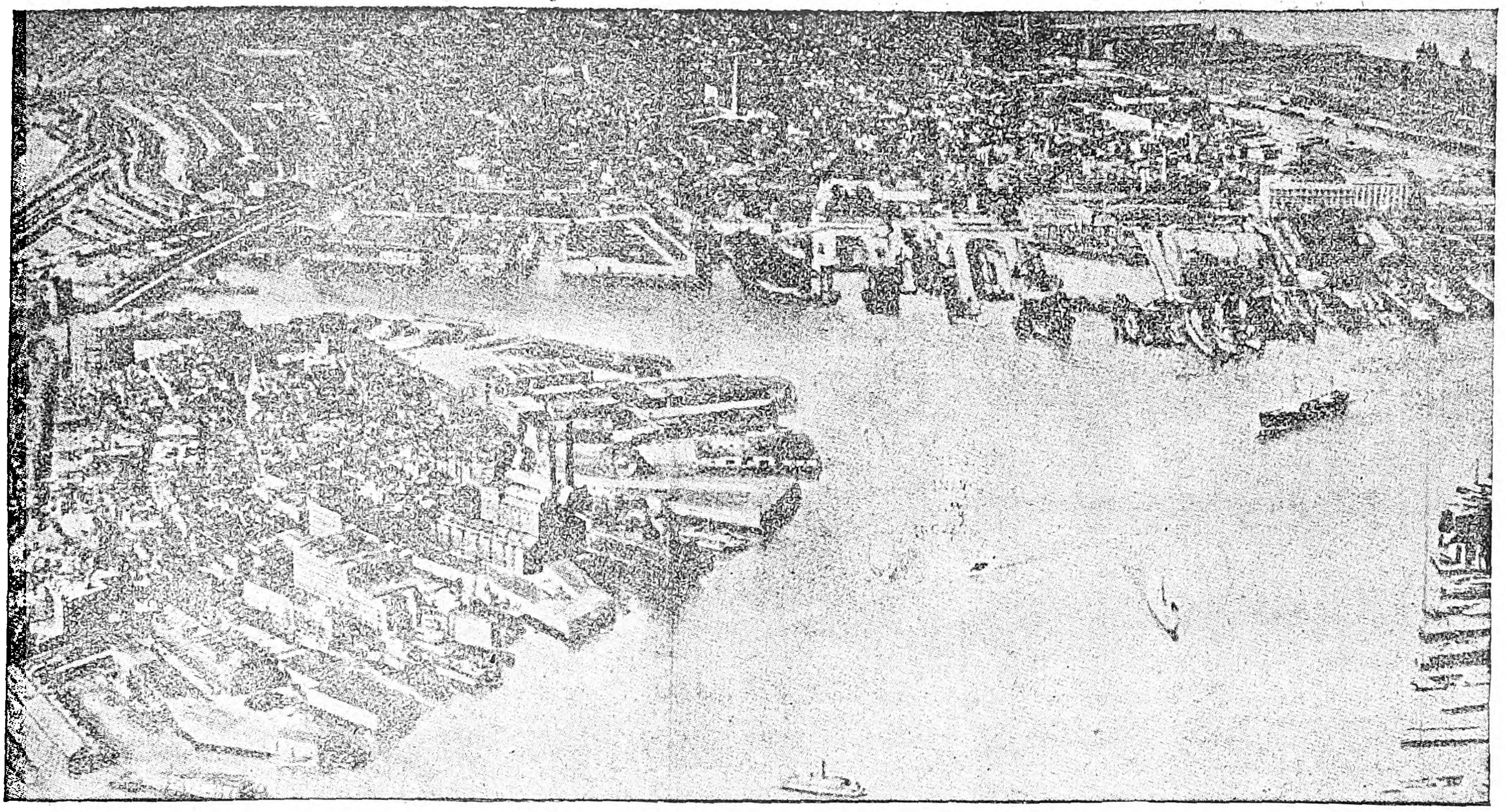

*Μερικὴ ἄποψις τοῦ λιμένος τῆς Μπόστον ἀφ' ὑψηλοῦ.*

σταντζῆ-μπασῆν εἶχε καὶ ἡ Ἀδριανούπολις, ὡς δευτέρα αὐτοκρατορικὴ καθέδρα. Ν. Μ.

**μποσταντζῆς** (ὁ)· ὁ καλλιεργῶν λαχανόκηπον. —*[Ἐγκυκλ.]* *Μποσταντζῆδες* ἐλέγοντο ἐν τῇ παλαιᾷ σουλτανικῇ Τουρκίᾳ (πρὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος) οἱ σωματοφύλακες τοῦ σουλτάνου, οἱ ἀποτελέσαντες ἰδιαίτερον σῶμα ἀνακτορικῆς φρουρᾶς, τὸ ὁποῖον συνεκροτήθη ἀρχικῶς ἐκ τῶν κηπουρῶν τῶν ἀνακτόρων, ἐξοπλισθέντων ὑπὸ τῶν σουλτάνων, ὅπως ἀνθίστανται κατὰ τῶν στασιαστικῶν κινημάτων τῶν γενιτσάρων. Ἡ δύναμις τοῦ σώματος τούτου ἀνῆλθε μέχρι 4.000 ἀνδρῶν. Οἱ ἀξιωματικοὶ αὐτοῦ ὠνομάζοντο *χασεκῆ* (=τῆς ἰδιαιτέρας ὑπηρεσίας) καὶ ἦσαν οἱ κυρίως σωματοφύλακες τοῦ σουλτάνου, προηγούμενοι τούτου πεζῇ κατὰ τὰς ἐξόδους του. Τὸ σῶμα τῶν μποσταντζήδων κατηργήθη βαθμιαίως καὶ κυρίως ἀφ' ὅτου ὁ σουλτᾶνος Ἀβδοὺλ-Μετζίτ, ἐγκαταλείψας τὸ παλαιὸν σαράγιον τοῦ Σαράϊ-Μπουρνοῦ, ἐγκατεστάθη εἰς τὰ ἀνάκτορα τοῦ Δολμᾶ-Μπαχτσέ. Ἐπὶ σουλτάνου Ἀβδοὺλ-Χαμὶτ τοῦ Β' (1876—1909) ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ σώματος τῶν Ἀλβανῶν τουφεκτζήδων. Ν. Μ.

**Μπόστιανη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ριζώματα* (βλ.λ.).

**Μπόστον** *(Βοστώνη)* (Boston) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, πρωτεύουσα τῆς πολιτείας τῆς Μασσαχουσέττης. Κεῖται μεταξὺ 42°21'27'' Β. πλάτους καὶ 71°3'30'' Δ. μήκους, ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ ὠκεανοῦ, ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Μαΐν, ἐπὶ τῶν ἐκβολῶν τῶν ποταμῶν Τσάρλς καὶ Μύστικ. Ἀπέχει 373 χλμ. πρὸς τὰ ΒΑ. τῆς Νέας Ὑόρκης καὶ εἶναι τὸ σημαντικώτατον πνευματικόν, ἐμπορικὸν καὶ βιομηχανικὸν κέντρον τοῦ ΒΑ. τμήματος τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, τοῦ καλουμένου ἄλλως Νέα Ἀγγλία. Κάτ. 799.200 (1930), μετὰ δὲ τῶν περιχώρων *Καΐμπριτζ, Λύνν, Σόμερβιλ, Ἔβερετ, Μπροῦκλιν* κτλ., τὰ ὁποῖα ἀπέβησαν προάστεια σχεδὸν συνεχόμενα μετὰ τῆς Μπόστον, 1.900.000, ἐξ ὧν ὑπὲρ τὰς 200.000 ξένοι ὑπήκοοι. Ἀπὸ ἀπόψεως φυλῶν οἱ κάτοικοι ὑπολογίζονται εἰς 97% λευκούς, 2% νέγρους καὶ 1% Κινέζους, Ἰνδοὺς καὶ ἄλλους.

Ὁ πρῶτος πυρὴν τῆς πόλεως ἐσχηματίσθη ἐπὶ τῆς χερσονήσου, ἥτις εὑρίσκεται μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ Τσάρλς καὶ τῆς θαλάσσης, μήκους 5 χλμ., πλάτους 1,6 χλμ. καὶ ἐπιφανείας 3 περίπου χλμ., ἥτις ἄλλοτε ἦτο πλήρης ἑλῶν καὶ συνεδέετο μετὰ τῆς ξηρᾶς διὰ χθαμαλῆς λωρίδος γῆς, συχνάκις καλυπτομένης ὑπὸ τῶν ὑδάτων. Τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ ἐδάφους τούτου ἦτο ἐλαφρῶς λοφῶδες καὶ κατάφυτον. Ἡ χερσόνησος ἐκαλεῖτο ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν ἰθαγενῶν *Μουσχαουγουόμουκ*, ἢ κατὰ συγκοπὴν *Σχαουμούτ*, ὅπερ σημαίνει «πηγὴ γλυκέος ὕδατος». Ἐπ' αὐτῆς ἐγκατεστάθησαν τὸ πρῶτον οἱ Ἄγγλοι ἄποικοι τῷ 1630, ὀνομάσαντες τὸν συνοικισμόν των «*Τριμάουνταιν*», ἐκ τοῦ ὀνόματος τὸ ὁποῖον εἶχον δώσει εἰς τὸν ὑψηλότερον τῶν λόφων τῆς χερσονήσου λόγῳ τῶν τριῶν αὐτοῦ κορυφῶν. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος εἰς τὸν πρῶτον τοῦτον συνοικισμὸν ἐδόθη τὸ ὄνομα *Μπόστον*, ἐκ τοῦ ὀνόματος τῆς ὁμωνύμου ἀγγλικῆς πόλεως, ἐκ τῆς ὁποίας προήρχοντο οἱ σημαντικώτεροι τῶν ἀποίκων. Μετ' ὀλίγον, αὐξηθέντος τοῦ πληθυσμοῦ, λόγῳ τῆς σημαντικῆς ἐμπορικῆς καὶ στρατηγικῆς θέσεώς της, ἡ πόλις ἐπεξετάθη καὶ ἐπὶ πολλῶν νησίδων καὶ ἐπὶ τῶν τεσσάρων ἄλλων παρακειμένων χερσονήσων, τὰς ὁποίας σχηματίζουν αἱ ἐκβολαὶ τῶν ποταμῶν, ἀπεκλήθη δὲ «Βενετία τῆς Ἀμερικῆς», ἕνεκα τῆς μεγάλης ὁμοιότητος αὐτῆς πρὸς τὴν ἰταλικὴν πόλιν. Ἔκτοτε ὑπέστη μεγίστας μεταβολὰς καὶ προσαυξήσεις· τὰ ἕλη ἀπεξηράνθησαν, οἱ λόφοι ἰσοπεδώθησαν, αἱ ἀμμώδεις ἀκταὶ προσεχώσθησαν, ἡ δὲ πολυσχιδὴς παραλία, περιβληθεῖσα δι' εὐρειῶν προκυμαιῶν, μετὰ πολλῶν προβλήτων καὶ λιμενοβραχιόνων, μετεβλήθη ἅπασα εἰς τεράστιον λιμένα, μετὰ πολλῶν ὑποδιαιρέσεων καὶ δεξαμενῶν. Σήμερον μόλις διακρίνει τις ἴχνη τινὰ χαρακτηριστικὰ τῆς παλαιᾶς πόλεως εἰς τὰς στενὰς καὶ σκολιὰς ὁδοὺς τῆς συνοικίας Νὸρθ Ἔντ, ἥτις εἶναι ἡ συνοικία τῶν ναυτῶν. Ὁ στενὸς λαιμός, ὁ ὁποῖος ἥνωνε τὴν ἀρχικὴν χερσόνησον μετὰ τῆς ξηρᾶς, ηὐρύνθη καὶ ἀπετέλεσε μίαν τῶν ὡραιοτέρων νέων συνοικιῶν, μὲ εὐρείας ὁδούς, μεγάλας οἰκίας καὶ πολυτελῆ καταστήματα. Σὺν τῷ χρόνῳ δὲ ἡ πόλις ἔλαβε τοιαύτην καὶ τοσαύτην βιομηχανικὴν καὶ ἐμπορικὴν ἀνάπτυξιν, ὥστε ὁ λιμὴν αὐτῆς ἀπέβη, ἀπὸ πάσης ἀπόψεως, ὁ μεγαλύτερος καὶ ὁ σημαντικώτερος τῶν Ἡν. Πολιτειῶν μετὰ τὸν τῆς Νέας Ὑόρκης, τῆς εἰσαγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς περιλαμβανούσης ἅπαντα τὰ εἴδη τοῦ ἐμπορίου, ἰδίως δὲ τὰ μάλλινα, εἰς τὰ ὁποῖα εἶναι ἡ δευτέρα ἀγορὰ τοῦ κόσμου, μετὰ τὸ Λονδῖνον, καὶ τὸν βάμβακα, εἰς τὸν ὁποῖον εἶναι ἡ δευτέρα ἀγορὰ τῆς Ἀμερικῆς, μετὰ τὴν Νέαν Ὑόρκην. Εὑρίσκεται εἰς πυκνοτάτην ἐμπορικὴν ἐπικοινωνίαν μετὰ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ἀποτελοῦσα σπουδαῖον σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ ἔχουσα πολλοὺς σιδηροδρομικοὺς σταθμούς, οἱ κυριώτεροι τῶν ὁποίων εἶναι δύο: ὁ Βόρειος, κείμενος σχεδὸν ἐπὶ τῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Τσάρλς, σημείου ἀφετηρίας τῶν γραμμῶν τοῦ Βορρᾶ (Βέρμοντ, Νιοὺ-Χαμπσάϊρ, Μαίιν), καὶ ὁ Νότιος σταθμός, κείμενος ἐπὶ τῆς διώρυγος Φὸρτ Πόϊντ, εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων τοῦ κόσμου (μήκους 270 μ. καὶ πλάτους 230 μ.), ἀπὸ τοῦ ὁποίου διακλαδίζονται αἱ πρὸς Δ. καὶ Ν. γραμμαί, ἰδίως δὲ αἱ πρὸς τὴν Νέαν Ὑόρκην. Τὰ διάφορα σημεῖα τῆς πόλεως συνδέονται πρὸς ἄλληλα διὰ πολυαρίθμων γεφυρῶν, ἐξ ὧν κυριώτεραι εἶναι ἡ Χάρβαρντ, μεταξὺ Μπὰκ-Μαίυ καὶ Καΐμπριτζ, καὶ αἱ γέφυραι Οὐάρρεν καὶ Τσάρλεστον (μήκους 456 καὶ 396 μ.), ἑνώνουσαι τὸ κέντρον τῆς Μπόστον μετὰ τῆς συνοικίας Τσάρλεστον. Ἐπίσης ὑπάρχει καὶ ὑπόγειος σιδηρόδρομος, διατρέχων σχεδὸν πάντα τὰ σημεῖα τῆς πόλεως. Τῷ 1922 κατεσκευάσθη ἐπὶ τῆς χερσονήσου Ἤστ-Μπόστον μέγα ἀεροδρόμιον διὰ τὴν ἐμπορικὴν ἀεροπορικὴν συγκοινωνίαν, ἥτις διεξάγεται πυκνοτάτη πρὸς ἁπάσας τὰς διευθύνσεις. Ὑπάρχει δὲ ἐν Μπόστον καὶ πολεμικὸς ναύσταθμος μετὰ ναυπηγείων πολεμικῶν πλοίων.

Μεγίστη ἐπίσης εἶναι καὶ ἡ βιομηχανικὴ τῆς πόλεως ἀνάπτυξις. Κατ' ἀρχάς, ἡ κυριωτέρα βιομηχανία αὐτῆς, ὅπως καὶ ὅλων τῶν λιμένων τῆς Νέας Ἀγγλίας, προήρχετο ἐκ τῆς ἁλιείας. Ἕνεκα τούτου ἱδρύθησαν λίαν ἐνωρὶς ἐν Μπόστον μεγάλα ναυπηγεῖα, ἡ δὲ πόλις ἀπέβη σχεδὸν ἀποκλειστικὴ πόλις ἁλιέων, ναυτῶν καὶ ἐφοπλιστῶν. Μετὰ τὸν πόλεμον τῆς ἀνεξαρτησίας ἡ βιομηχανία της ἐπεξετάθη καὶ εἰς ἄλλα εἴδη, συγκεντρώσασα, εἰς διάστημα ὀλίγων ἐτῶν, τεράστια κεφάλαια. Ἱδρύθησαν τότε πολυάριθμοι καὶ μεγάλοι τραπεζικοὶ ὀργανισμοί, ἐνισχύοντες παντὸς εἴδους ἐπιχειρήσεις, ἰδίως τὰς κατασκευὰς σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καθ' ἅπαν τὸ κράτος καὶ εἰς τὸ Μεξικόν. Οἱ τραπεζῖται τῆς Μπόστον διέθεσαν ἐπίσης μεγάλα ποσὰ καὶ εἰς ἄλλας πόλεις τῆς Μασσαχουσέττης, ἥτις οὕτω ἀπέβη τὸ βιομηχανικώτερον τμῆμα τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Τὰ ἐν Μπόστον ὑπάρχοντα νῦν ἐργοστάσια ὑπολογίζονται εἰς 3.500, ἐξ ὧν 311 τυπογραφικῶν εἰδῶν καὶ ἐκδόσεων καὶ γραφικῶν τεχνῶν, 348 ὑφαντουργεῖα, 74 μηχανικὰ ὑποδηματοποιεῖα, 110 χυτήρια, 39 ἐργοστάσια ἠλεκτρικῶν εἰδῶν, 36 χημικῶν καὶ φαρμακευτικῶν προϊόντων καὶ πολλὰ ἐπιπλοποιεῖα, ἐργοστάσια εἰδῶν ζαχαροπλαστικῆς, καουτσούκ, ζυμαρικῶν, μουσικῶν ὀργάνων, ταπήτων, οἰκιακῶν σκευῶν, κονσερβῶν, μηχανημάτων κ.τ.λ., καθὼς καὶ ναυπηγεῖα ἐμπορικῶν πλοίων.

Ἰδιαιτέραν ἀνάδειξιν ἔσχον, εὐθὺς ἀπὸ τῶν πρώτων ἐτῶν τῆς ἱδρύσεως τῆς Μπόστον, τὰ ἐκπαιδευτικά της ἱδρύματα, χάρις εἰς τὰ ὁποῖα ἔχει ἀποβῆ ἡ κοιτὶς τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν καὶ τοῦ πολιτισμοῦ ἐν Ἀμερικῇ, ἐξασκήσασα μεγίστην ἐπιρροὴν ἐφ' ὅλων τῶν μεγαλοπόλεων τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς καὶ πρωτοστατήσασα εἰς πλείστας ἐκδηλώσεις τῆς ἐθνικῆς ζωῆς καὶ τῆς ἱστορίας. Τὰ κυριώτερα τούτων, ἐγκατεστημένα ἐντὸς εἰδικῶς κτισθέντων μεγαλοπρεπῶν καὶ πολυτελῶν κτηρίων, εἶναι: τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Χάρβαρντ, εὑρισκόμενον ἐν τῷ προαστείῳ Καΐμπριτζ, τὸ τεχνολογικὸν ἰνστιτοῦτον, τὸ κολλέγιον τοῦ Μπόστον, διευθυνόμενον ἀπὸ ἰησουΐτας, τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μπόστον (τὸ περίφημον «Ἀθήναιον») μὲ τὰ πολυάριθμα αὐτοῦ κολλέγια καὶ σχολάς, ἔχον 11.000 φοιτητάς, ἡ ὀδοντιατρικὴ σχολή, ἡ σχολὴ τῶν διοικητικῶν ὑπαλλήλων, ὁ βοτανικὸς κῆπος μετὰ τοῦ βοτανικοῦ ἰνστιτούτου, τὸ γυναικεῖον κολλέγιον Σίμμον, ἡ σχολὴ μηχανικῶν, ἡ φιλολογικὴ καὶ ῥητορικὴ σχολὴ Ἔμερσον. Ἡ Λατινικὴ σχολὴ τῆς Μπόστον (Boston Latin School), ἱδρυθεῖσα τῷ 1635, εἶναι τὸ ἀρχαιότερον σχολεῖον τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς. Ἡ λατινικὴ σχολὴ Ρόζμπερυ εἶναι ἐπίσης ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων σχολῶν τῆς χώρας, ἱδρυθεῖσα τῷ 1645. Ὑπάρχουν ἀκόμη πλεῖστα ἄλλα δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ σχολεῖα πάσης φύσεως. Πλὴν τῶν ἐκπαιδευτικῶν δὲ τούτων ἱδρυμάτων ἔχει ἡ πόλις καὶ σημαντικωτάτας βιβλιοθήκας, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι ἡ δημοσία βιβλιοθήκη τῆς Μπόστον, μία τῶν ὀνομαστοτέρων τοῦ κόσμου, ἱδρυθεῖσα τῷ 1852 καὶ μεταφερθεῖσα

Digitized by Google

τῷ 1888—1895 ἐντὸς νέου κτηρίου ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως, πολυτελῶς διακεκοσμημένου μὲ τοιχογραφίας τοῦ Πυβὶ-ντὲ-Σαβάν, τοῦ Ἄμπεϋ καὶ τοῦ Σαρζὰν καὶ μὲ ἀνάγλυφα καὶ ἀγάλματα τοῦ Σαὶν-Γκάουντενς. Ἐκ τῆς βιβλιοθήκης ταύτης, περιλαμβανούσης 1.027.364 τόμους, ἐξαρτῶνται καὶ 32 ἄλλαι μικρότεραι βιβλιοθῆκαι, ἔχουσαι ἐν τῷ συνόλῳ των 391.125 τόμους. Ἄλλαι ὀνομασταὶ βιβλιοθῆκαι εἶναι: ἡ τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Μπόστον (Boston Athenaeum Library), περιέχουσα ὑπὲρ τὰς 300.000 τόμους καὶ μέγα μέρος τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Γεωργίου Οὐάσιγκτων· ἡ βιβλιοθήκη τῆς πολιτείας τῆς Μασσαχουσέττης μὲ 500.000 τόμους· ἡ βιβλιοθήκη Μπάκερ μὲ 100.000 τόμ. καὶ 1.000.000 φυλλάδια· ἡ βιβλιοθήκη τῆς ἱστορικῆς ἑταιρείας τῆς Μασσαχουσσέτης μὲ 125.000 τόμους καὶ ἰσάριθμα φυλλάδια καὶ πλεῖστα χειρόγραφα· ἡ «Ἱστορικὴ καὶ γενεαλογικὴ βιβλιοθήκη τῆς Νέας Ἀγγλίας» μὲ 60.000 τομους, 60.000 φυλλάδια καὶ «ἀναρίθμητα χειρόγραφα», κατὰ τὸν ἐπίσημον αὐτῆς κατάλογον· ἡ βιβλιοθήκη τῆς ἑταιρείας φυσικῶν ἐπιστημῶν τοῦ Μπόστον μὲ 51.000 τόμους καὶ 46.000 φυλλάδια· ἡ τῆς Ἀμερικανικῆς Ἀκαδημίας τεχνῶν καὶ ἐπιστημῶν μὲ 300.000 κ.λ.π.

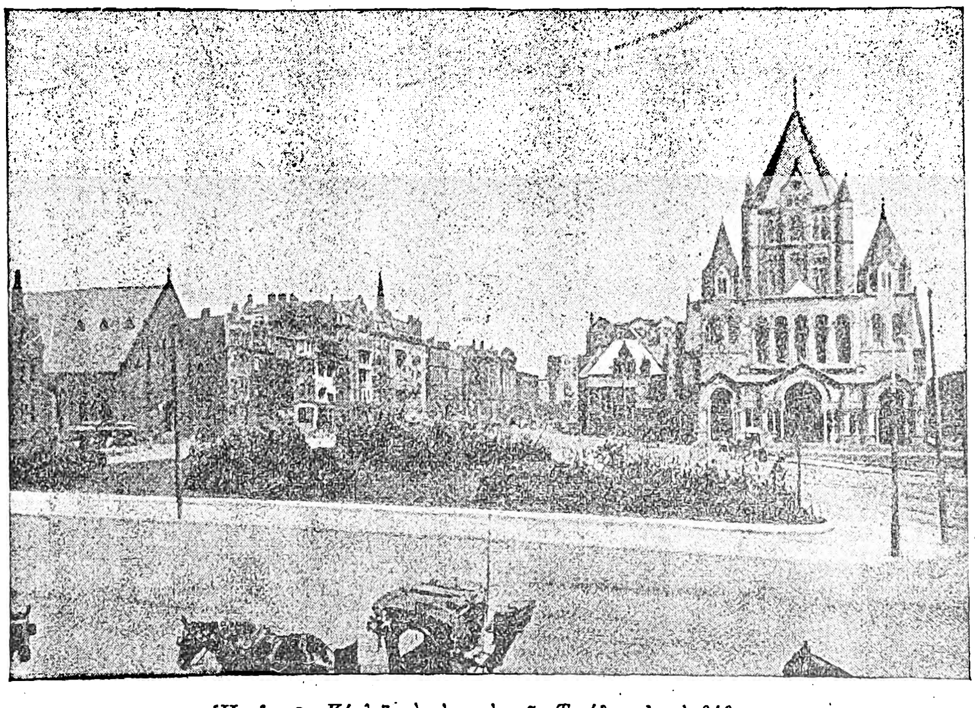

*Ἡ πλατεῖα Κόπλεϋ μὲ τὸν ναὸν τῆς Τριάδος εἰς τὸ βάθος.*

Ἔχει ἐπίσης σημαντικὰ μουσεῖα καὶ ἀκαδημίας καὶ ἐπιστημονικὰς ἑταιρείας, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: ἡ «Ἀκαδημία τῶν Τεχνῶν καὶ Ἐπιστημῶν», ἱδρυθεῖσα τῷ 1780, ἡ «Ἱστορικὴ καὶ γενεαλογικὴ ἑταιρεία τῆς Νέας Ἀγγλίας», ἡ «Ἑταιρεία τῶν Καλῶν Τεχνῶν», ἡ «Ἑταιρεία τῆς Βοτανικῆς». Τὸ ἀρχαιολογικὸν καὶ καλλιτεχνικὸν μουσεῖον περιέχει πολυτίμους συλλογὰς ὀρειχαλκίνων καὶ μαρμαρίνων ἑλληνικῶν καὶ ρωμαϊκῶν ἀγαλμάτων, μέγαν ἀριθμὸν ἀγγείων, ἐγγλύφων καὶ ἀναγλύφων πολυτίμων λίθων, ὀνομαστὴν συλλογὴν ἰαπωνικῆς, αἰγυπτιακῆς καὶ ἀσσυριακῆς τέχνης καὶ ὑπὲρ τοὺς 1000 πίνακας ζωγραφικῆς μὲ ἔργα τοῦ Γκρέκο καὶ τοῦ Βελάσκεθ, κτλ. Ἔχει ἐπίσης τὸ Μπόστον πολυάριθμα καὶ παμμέγιστα νοσοκομεῖα, ἄσυλα καὶ ἄλλα φιλανθρωπικὰ καθιδρύματα, σχολὴν τυφλῶν (Perkins Institution), σχολὴν κωφαλάλων κλπ. καὶ σωφρονιστήριον νεαρῶν ἐγκληματιῶν ἐπὶ τῆς νησῖδος Ντέερ. Μεταξὺ τῶν πολλῶν μεγάλων καὶ πλουσίων θεάτρων τῆς πόλεως ὑπερέχει τὸ Μπόστον Ρεπέρτορυ, ἐφωδιασμένον διὰ τελειοτάτων μηχανημάτων φωτισμοῦ καὶ διαρρυθμίσεως τῆς σκηνῆς, διευθυνόμενον ὑπὸ ἐπιτροπῆς καὶ θεωρούμενον ὡς καθαρῶς μορφωτικὸν κέντρον, δι᾿ ὃ καὶ εἶναι ἀπηλλαγμένον φορολογίας, ἀπολαῦον ἅμα καὶ ἄλλων τινῶν προνομίων. Ἔχει ἐπίσης μεγαλοπρεπὲς μελοδραματικὸν θέατρον, ᾠδεῖον καὶ «Συμφωνικὴν ὀρχήστραν», ἱδρυθεῖσαν τῷ 1881 καὶ θεωρουμένην ὡς τὴν τελειοτέραν ὀργάνωσιν τοῦ εἴδους της. Ἐν Μπόστον ἐκδίδονται 12 καθημεριναὶ ἐφημερίδες καὶ 150 περιοδικά, ἐν αὐτῷ δὲ ἐξεδόθη τῷ 1704 ἡ πρώτη ἐν Ἀμερικῇ ἐφημερίς, ὑπὸ τὸν τίτλον «Boston News Letter».

Ἡ πόλις εἶναι πλήρης ἱστορικῶν μνημείων, παλαιῶν καὶ νέων, καὶ ἐνδιαφερόντων κτηρίων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: Τὸ κυβερνητικὸν ἀνάκτορον (State house), ἀποπερατωθὲν τῷ 1798 καὶ ἀνακαινισθὲν τῷ 1882, μετ᾿ ἐπιχρύσου θόλου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ὑπάρχει τὸ ἄγαλμα τοῦ Οὐάσιγκτων· τὸ ἀνάκτορον τοῦτο εἶναι πλῆρες ἐθνικῶν ἱστορικῶν κειμηλίων. Τὸ δημαρχεῖον (City hall) ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως, ἀποπερατωθὲν τῷ 1865, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ὑπάρχουν ἀγάλματα τοῦ Φραγκλίνου, τοῦ Ἰωσία Ντὲ Κουΐνου κ. ἄ. Ἡ ἱστορικὴ οἰκία «Φανέϊγ-χὼλ» (Faneuil-hall), καλουμένη «κοιτὶς τῆς ἐλευθερίας» καὶ ἀνήκουσα εἰς τὸν Πέτερ Φανέϊγ, ὁ ὁποῖος ἐδώρησεν αὐτὴν εἰς τὴν πόλιν· ἐν αὐτῇ ἐπὶ ἕνα περίπου αἰῶνα ἐλάμβανον χώραν πᾶσαι αἱ πολιτικαὶ συγκεντρώσεις καὶ ἐκηρύχθη ἡ ἀνεξαρτησία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Ἐπίσης τὸ μνημεῖον τοῦ Ρόμπερτ Γκοὺντ Σῶ, ἔργον τοῦ Σαὶντ-Γκάουντενς, ἐκ τῶν ὡραιοτέρων ἔργων τῆς ἀμερικανικῆς γλυπτικῆς, κτλ. Ἐκ τῶν πολλῶν δημοσίων κήπων τῆς πόλεως σημαντικώτεροι εἶναι: τὸ πάρκον τοῦ Φραγκλίνου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ζῳολογικὸς κῆπος καὶ ἐνυδρεῖον, ὁ μέγας δημόσιος κῆπος, μετὰ δύο λιμνῶν, καὶ τὸ περίφημον πάρκον «Μπόστον Κόμμον», μετὰ μνημείου τῶν πεσόντων ὑπὲρ πατρίδος στρατιωτῶν καὶ ἑτέρου εἰς ἀνάμνησιν τῶν μεγάλων σφαγῶν τοῦ 1770, καθὼς καὶ πολλῶν ἀγαλμάτων. Ἐν Μπόστον ὑπάρχουν πολλαὶ ἐκκλησίαι, ἀνερχόμεναι εἰς 194 καὶ ἀνήκουσαι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς καθολικοὺς καὶ διαμαρτυρομένους· ἐκ τούτων ὁ καθεδρικὸς ναὸς τῶν καθολικῶν (τοῦ Σταυροῦ) ἔχει κωδωνοστάσιον 97 μ. ὕψους, ὁ δὲ τῶν διαμαρτυρομένων (τοῦ Ἁγίου Παύλου) ἐκτίσθη τῷ 1722. Ἡ ὡραιοτέρα ἐκ τῶν ἐκκλησιῶν τῆς Μπόστον εἶναι ἡ τῆς Ἁγίας Τριάδος, ὀνομαστὴ διὰ τοὺς ἐγχρώμους ὑαλοπίνακάς της.

— *[Ἱστορ.]* Ὡς ἐλέχθη ἐν ἀρχῇ, ἡ Μπόστον ἐκτίσθη τῷ 1630 ὑπὸ Ἄγγλων ἀποίκων, οἵτινες εἶχον ἐγκατασταθῆ ἐκεῖ ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Ἰωάννου Οὐΐντροπ. Οὗτος τῷ 1628 εἶχε συγκεντρώσει περὶ ἑαυτὸν μίαν ὁμάδα ἀνεξαρτήτων πουριτανῶν προτεσταντῶν, ἐπιζητούντων ν᾿ ἀνεύρουν ἐν τῷ Νέῳ Κόσμῳ τόπον, ὅπου νὰ δύνανται νὰ ζοῦν ἐλεύθεροι καὶ ἀκολουθοῦντες τὰς πεποιθήσεις των. Κατόπιν πολλῶν προσπαθειῶν κατώρθωσε νὰ τῷ παραχωρηθῇ ὑπὸ τοῦ βασιλέως ὁ περίφημος «Καταστατικὸς χάρτης τῆς ἑταιρείας τοῦ κόλπου τῆς Μασαχουσέττης», διὰ τοῦ ὁποίου ἐξησφάλιζεν ἀπόλυτον σχεδὸν ἐλευθερίαν, καὶ τῷ 1629 ἀνεχώρησεν ἐκ Πλυμούθης ἐπὶ 12 πλοίων μετὰ 800 ὀπαδῶν. Τὴν χώραν εἶχον ἤδη ἐπισκεφθῆ πρότερον Νορβηγοὶ θαλασσοπόροι καὶ Ἄγγλοι ἐξερευνηταί, οἵτινες εἶχον δημιουργήσει καὶ μικροὺς σταθμοὺς εἰς τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Τσάρλς. Ὁ Οὐΐντροπ ἐγκατεστάθη κατ᾿ ἀρχὰς ἐπὶ τῆς χερσονήσου Τσάρλεστον, ἀλλὰ βραδύτερον ἡ ἀποικία του ἡνώθη μετὰ τῆς μικρᾶς ἐγκαταστάσεως ἑνὸς Μπλάξτον, ἥτις ὑπῆρχεν ἐπὶ τῆς χερσονήσου Τριμάουνταιν, μετονομασθείσης εἰς Μπόστον. Ὁ νέος συνοικισμὸς προώδευσε ταχέως διὰ τῆς μεταναστεύσεως νέων πουριτανῶν καὶ ἀπερρόφησε πάσας τὰς περὶ αὐτὸν ἐγκαταστάσεις.

Ἐπειδὴ ἡ Μπόστον εὑρίσκεται εἰς ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης μικροτέραν παρ᾿ ὅσον ἡ Νέα Ὑόρκη, ἡ πρόοδος αὐτῆς ὑπῆρξεν ἁλματώδης καὶ ὁ πλουτισμὸς τῶν κατοίκων ταχύτατος. Ἡ πρόοδος δε αὕτη καὶ ὁ πλοῦτος ἐδημιούργησαν παρὰ τῷ λαῷ τὸ αἴσθημα τῆς πλήρους ἀνεξαρτησίας, ὅπερ προὐκάλεσε πλείστας ἐπαναστάσεις κατὰ τῶν Ἄγγλων. Τῷ 1686 ἡ Ἀγγλία ἠκύρωσε τὰς ἐλευθερίας τοῦ καταστατικοῦ χάρτου τῆς πόλεως καὶ κατέστησεν αὐτὴν πρωτεύουσαν ἀγγλικῆς ἐπαρχίας. Βαθμιαίως ὅμως ἡ Μπόστον κατώρθωσε νὰ ἐπανακτήσῃ πολλὰς ἐκ τῶν ἐλευθεριῶν της, νὰ ὀργανώσῃ θαυμάσιον κοινωνικὸν σύστημα καὶ ν᾿ ἀποβῇ, τῷ 1740, ἡ μεγαλυτέρα πόλις τῆς Β. Ἀμερικῆς. Κατὰ τὴν ἐπαναστατικὴν περίοδον κατὰ τῆς Ἀγγλίας, ἥτις ὡδήγησεν εἰς τὴν ἀπελευθέρωσιν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ἡ Μπόστον διεδραμάτισε πρωτεύοντα ρόλον. Ἤδη κατὰ τὸν πόλεμον ἐναντίον τῶν Γάλλων τοῦ Καναδᾶ εἶχε προσφέρει τὰ περισσότερα χρήματα καὶ τοὺς περισσοτέρους ἄνδρας ἀπὸ πᾶσαν ἄλλην ἀμερικανικὴν πόλιν, συμβαλοῦσα τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἧτταν τοῦ Μοντάλμ καὶ τὴν πτῶσιν τῆς Κουίμπεκ καὶ τῆς Μοντρεάλ. Ἡ Μπόστον ἐπίσης ἀντέστη ἐκ τῶν πρώτων εἰς τὰς προσπαθείας τῶν ἀγγλικῶν κυβερνήσεων, ὅπως ἐπιβάλουν φορολογίας εἰς τὰς ἀμερικανικὰς πόλεις. Τῷ 1773 ἔλαβε χώραν ἐν αὐτῇ ἡ περίφημος «ἐπανάστασις τοῦ τεΐου», κατὰ τὴν ὁποίαν οἱ κάτοικοι ἔρριψαν εἰς τὴν θάλασσαν τὸ ἐκ τεΐου φορτίον τριῶν ἀγγλικῶν πλοίων, πρᾶγμα ὅπερ προὐκάλεσε τὸ κλείσιμον τοῦ λιμένος αὐτῆς ἐκ μέρους τῆς Ἀγγλίας. Τὰ ἐπαναστατικὰ ὅμως στρατεύματα, μὲ ἐπὶ κεφαλῆς τὸν Οὐάσιγκτων, κατόπιν τῆς παρὰ τὴν Μπόστον μάχης τοῦ Λέξινγκτον, ὑπεχρέωσαν τὸν Ἄγγλον στρατηγὸν Γκαίητζ νὰ ἐκκενώσῃ τὴν πόλιν, εἰς τὴν ὁποίαν εἰσῆλθον θριαμβευτικῶς τὸν Μάρτιον τοῦ 1776. Ἔκτοτε ἡ ἱστορία τῆς Μπόστον ταυτίζεται πρὸς τὴν ἱστορίαν ὁλοκλήρου τῆς ὁμοσπονδίας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν. Μετὰ τὴν ψήφισιν τοῦ Συντάγματος ὑπὸ τῆς συνελεύσεως τῆς Φιλαδελφείας τῷ 1787 καὶ τὴν συγκατάθεσιν τῆς ὁμοσπονδιακῆς κυβερνήσεως, ἡ πρωτεύουσα τῆς Νέας Ἀγγλίας ἀπέβη ἡ ἀκρόπολις τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ κόμματος, τὸ ὁποῖον ὑπὸ τὴν αἰγίδα τοῦ Οὐάσιγκτων παρέμεινεν εἰς τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ 1800. Μετὰ τὴν ἐπικράτησιν ὅμως τῶν δημοκρατικῶν ὑπὸ τὸν Τζέφφερσον, ἡ Μπόστον ἤρχισε νὰ χάνῃ τὴν πρωτεύουσαν πολιτικήν της θέσιν καὶ ἐπιρροὴν ἐν ταῖς Ἡνωμέναις Πολιτείαις, διατηρήσασα μόνον τὴν οἰκονομικὴν καὶ πνευματικήν της ὑπεροχήν; ἥτις ἐξηκολούθει ὁλονὲν αὔξουσα, ἰδίως κατὰ τὸν ΙΘ΄ καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ΄ αἰῶνος. Καίτοι δὲ ἡ κολοσσιαία ἀνάπτυξις τῶν δυτικῶν πολιτειῶν ἀρχίζει νὰ μετατοπίζῃ τὸ οἰκονομικὸν καὶ κοινωνικὸν κέντρον ἀπὸ τῆς Νέας Ἀγγλίας πρὸς τὸν Μισσισιππῆν, ἐν τούτοις ἡ Μπόστον ἐξακολουθεῖ νὰ διατηρῇ τὴν ἀνθοῦσαν αὐτῆς θέσιν, χάρις ἰδίως εἰς τὸν ἐπίμονον χαρακτῆρα τῶν κατοίκων της, ἐπαληθεύοντα τὴν γνωστὴν ἐν Ἀμερικῇ ρῆσιν, καθ᾿ ἣν «ἡ Μπόστον περισσότερον ἀπὸ πόλις εἶνε μία ἐνθουσιώδης ψυχικὴ κατάστασις». Πράγματι ἡ Μπόστον εἶναι ἐκείνη, ἥτις ἐδημιούργησε τὸν πόλεμον τῆς ἀπελευθερώσεως καὶ ἀπὸ τὰ ἰδικά της ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα διεσκορπίσθησαν καθ᾿ ἅπασαν τὴν χώραν οἱ ἐπιστήμονες, οἱ πολιτικοὶ καὶ οἱ στρατιωτικοί, οἵτινες ἀνέπλασαν τὰς νέας πολιτείας καὶ ἐδημιούργησαν κατὰ μέγα μέρος τὴν διευθύνουσαν τάξιν, ἥτις ἀκόμη καὶ σήμερον ποδηγετεῖ τὰς τύχας τῆς χώρας εἰς πάντα αὐτῆς τὰ κέντρα. Ἀρκεῖ ν᾿ ἀναφέρῃ τις τὰ μεγάλα ὀνόματα τῶν ὀνομαστῶν ἀνδρῶν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, τοῦ Λόουελ, τοῦ Ντάνα, τοῦ Χίγκινσον, τοῦ Τίκκνορ, τοῦ Ἔμερσον, τοῦ Ἀγκασσίζ, τοῦ Πρέστκοτ, τοῦ Πάρκμαν, τοῦ Λονγκφέλλω, τοῦ Χόλμες, οἱ ὁποῖοι εἶναι ἰδικά της τέκνα, καὶ τὰ περίφημα περιοδικὰ «North American» καὶ «Atlantic», ἅτινα ἐσημείωσαν σταθμὸν εἰς τὴν πνευματικὴν ζωὴν τῆς Ἀμερικῆς. Ὅπως δὲ πρὸ ἑνὸς αἰῶνος ἡ πολιτικὴ ἱστορία τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν συνωψίζετο εἰς τὴν πολιτικὴν ἱστορίαν τῆς Μπόστον, οὕτω καὶ σήμερον ἡ ἱστορία τῆς πνευματικῆς ἀναπτύξεως τῆς Ἀμερικῆς εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ πνευματικὴ ἱστορία τῆς Μπόστον.

Ἡ πόλις πολλάκις κατεστράφη κατὰ μέγα μέρος ἐκ σεισμῶν, πυρκαϊῶν καὶ ἐπιδημιῶν, ἀνοικοδομηθεῖσα καὶ ἀνοργανωθεῖσα πάντοτε ἐντὸς βραχέος διαστήματος καὶ ἐπὶ καλυτέρων βάσεων. Αἱ μεγαλύτεραι ἐκ τῶν πυρκαϊῶν ἔλαβον χώραν κατὰ τὰ ἔτη 1676, 1679, 1711, 1760 καὶ 1872, ὁπότε ἐκάησαν ἄνω τῶν 3.000 οἰκιῶν, ἐν αἷς καὶ ὁλόκληρος ἡ ἐμπορικὴ συνοικία, τῶν ζημιῶν ἀνελθουσῶν εἰς 75 ἑκατομμύρια δολλαρίων. Τῷ 1755 ἡ πόλις ὑπέστη ἐπίσης μεγάλας ζημίας ἐκ σεισμοῦ, τῷ δὲ 1849 ἡ ἐπιδημία τῆς χολέρας ἐσημείωσεν ἐν αὐτῇ 5.000 θανάτους.

Μ. Δ. Β.

— **Μπόστον** (Poston) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λίνκολν, παρὰ τὸν ποταμὸν Οὐΐδαμ, εἰς ἀπόστασιν 6 χλμ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης. Κάτ. 16.102. Ἱδρύθη πέριξ ἑνὸς μοναστηρίου, κτισθέντος τῷ 654 ὑπὸ τοῦ ἁγίου Μπότολφ, ἐξ οὗ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα (κατὰ συγκοπὴν τοῦ Botolph's town). Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν Νορμανδῶν βασιλέων, κατὰ τὸν ΙΓ΄ αἰῶνα, εἶχε μέγαν καὶ σημαντικώτατον λιμένα, συναγωνιζόμενον τὸν τοῦ Λονδίνου, ἤδη ὅμως ἀπώλεσε τὴν ἐμπορικήν της σημασίαν καὶ διεξάγει μόνον περιωρισμένην συγκοινωνίαν μὲ τοὺς λιμένας τοῦ Βορρᾶ καὶ τὴν Ὁλλανδίαν. Τὸ σπουδαιότερον ἐν αὐτῇ μνημεῖον εἶναι ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Μπότολφ, κτισθεὶς τῷ 1309, θεωρούμενος ὡς εἷς τῶν μεγαλυτέρων καὶ ὡραιοτέρων τῆς Ἀγγλίας, κτισμένος εἰς γοτθικὸν ρυθμόν, μετὰ κωδωνοστασίου ὕψους 88.45 μ. Τὸ ὄνομα τῆς πόλεως Μπόστον ἐδόθη ὑπὸ τῶν ἐκ ταύτης μεταναστῶν καὶ εἰς τὴν ἀμερικανικὴν ὁμώνυμον πόλιν. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπόστραιμ** (Boström), ***Χριστόφορος-Ἰάκωβος.*** Σουηδὸς φιλόσοφος (1799—1866). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Οὐψάλης, οὗτινος ὑπῆρξεν ἀπὸ τοῦ 1824 καθηγητής. Εἶναι ὁ συστηματικώτερος καὶ πρωτοτυπώτερος τῶν Σουηδῶν φιλοσόφων, ἡ δὲ φιλοσοφία του δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς πανενθεϊσμός. Κατ' αὐτόν, πραγματικὴν ὑπόστασιν ἔχει τὸ πνεῦμα, ἤτοι ὁ Θεός, ὅπερ εἶναι ἀπόλυτον, περιλαμβάνον πᾶσαν ὕπαρξιν ἐν ἑαυτῷ. Τὰ πεπερασμένα ὄντα εἶναι αἰώνιαι θεότητες. Ὁ αἰσθησιακὸς κόσμος οὐδὲν ἄλλο εἶναι εἰμὴ ἡ ἀποκάλυψις τοῦ πνευματικοῦ. Ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς ἠθικῆς παραδέχεται τὴν ἐλευθερίαν τῆς βουλήσεως καὶ προσπαθεῖ νὰ στηρίξῃ τὸ ἠθικὸν οἰκοδόμημα ἰδίᾳ ἐπὶ τῆς λογικῆς. Ἡ περὶ τῆς ἀνθρωπίνης κοινωνίας θεωρία του δεικνύει καταφανῶς τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Γερμανοῦ πανενθεϊστοῦ φιλοσόφου Κράουζε. Τόσον ἡ κοινωνία ὅσον καὶ τὸ ἄτομον εἶναι ἰδέα τις ἐν τῷ Θεῷ. Τὰ ἔργα τοῦ Μπόστραιμ ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Ἔντφελντ ἐν Οὐψάλῃ (1883—1901). Α. Δ.

**Μποσὼ** (Boschot), ***Ἀδόλφος.*** Γάλλος μουσικολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1871. Ἔγραψε: «La Jeunesse d'un romantique», «Un romantique sous Louis-Philippe», «Le Crépuscnle d'un romantique» (1906—1913), «Chez les musiciens» (1922—1926), «Chez nos poètes» (1925), «Entretiens sur la beauté» (1927), «Le Faust de Berlioz» (1927), «La umière de Mozart» (1928) κ. ἄ. Γ. Σ.

**μπότα** (ἡ)· δημοτ., ὑπόδημα ὑψηλὸν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον: «γυναικεῖες μπότες», «μπότες στρατιωτικές» (γαλλ. botte).

**Μποτάλλο** (Botallo). Ἰταλὸς ἀνατόμος καὶ χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1530. Εἰς τὴν χειρουργικὴν ἐπραγματεύθη τελείως τὰ διὰ σφαιρῶν τραύματα τοῦ κρανίου, τοῦ θώρακος, τῆς κοιλίας καὶ τῶν ἄρθρων. Ἐπολέμησε τὴν τότε ἐπικρατοῦσαν ἰδέαν περὶ τοῦ δηλητηριώδους τῶν τραυμάτων διὰ πυροβόλου ὅπλου καὶ εἰσηγήθη ἁπλούστερα μέσα διὰ τὴν ἐξαγωγὴν τῶν σφαιρῶν καὶ τὴν θεραπείαν τῶν τραυμάτων. Εἰς δὲ τὴν ἀνατομικὴν ἀνεκάλυψε καὶ περιέγραψε τὸ στόμιον, δι' οὗ συγκοινωνοῦσιν οἱ δύο κόλποι τῆς καρδίας κατὰ τὴν ἐνδομήτριον ζωὴν τοῦ ἐμβρύου καὶ ὅπερ μετὰ τὸν τοκετὸν συγκλείεται, ἐμποδίζον οὕτω τὴν ἀνάμειξιν τοῦ ἀρτηριακοῦ καὶ φλεβικοῦ αἵματος. Τὸ στόμιον τοῦτο ἐκ τοῦ ὀνόματός του ἐκλήθη *βοτάλειον τρῆμα*. Ἐπίσης περιέγραψε τὸν ἐν τῇ ἐνδομητρίῳ ζωῇ ἀρτηριακὸν πόρον, τὸν συνδέοντα τὴν πνευμονικὴν ἀρτηρίαν μετὰ τῆς ἀορτῆς καὶ μετὰ τόκον μεταπλασσόμενον εἰς ἰνῶδες νῆμα. Ὁ πόρος οὗτος ἐκ τοῦ ὀνόματός του ἐκλήθη *βοτάλειος σύνδεσμος*. Ἔγραψε: «De curandis vulneribus sclopetorum» (1560 καὶ 1575) καὶ «De lue venerea» (1563 καὶ 1565). Ο. Ρ.

**Μπόταλου** ***Κατρώνης.*** Ἀγωνιστὴς ἐξ Αἴνου τῆς Θρᾴκης, πνιγεὶς τῷ 1822 κατὰ τὸν ὑπὸ τοῦ καπετὰν Ἀντώνη Βοβίζη ἀποκλεισμὸν τῆς Εὐβοίας ἐν τῇ ἐκτελέσει ἐθνικῆς ὑπηρεσίας «μὲ τὴ βάρκα τοῦ καραβιοῦ τοῦ Βισβίζη». Α. Θ. Σ.

**Μπότανυ** ***κόλπος*** (Botany Bay) *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς Αὐστραλίας, εἰς τὰ παράλια τῆς Νοτίου Νέας Οὐαλλίας, 8 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Σίδνεϋ, ἀνακαλυφθεὶς τῷ 1770 ὑπὸ τοῦ πλοιάρχου Κούκ. Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τοῦ ποικίλου εἰς βοτάνας πλούτου αὐτοῦ (botany bay = βοτάνων κόλπος). Τῷ 1787 ἀπεστάλη εἰς αὐτὸν ἀποικία καταδίκων, οἱ ὁποῖοι μετοικήσαντες βραδύτερον πρὸς Β. ἔκτισαν τὴν πόλιν Σίδνεϋ. Χ. Δ.

**Μπότασης.** Οἰκογένεια ἐκ Κρανιδίου, ἐγκατασταθεῖσα ἀπὸ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος εἰς Σπέτσας, ὅπου ἐπιδοθεῖσα εἰς τὸ ναυτικὸν ἐμπόριον καὶ πλουτίσασα διέπρεψε κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821, πολλὰς παρασχοῦσα ὑπηρεσίας. Ἀρχηγέτης θεωρεῖται ὁ *Νικόλαος*, ἀποθανὼν τῷ 1812. Κυριώτερα δὲ μέλη αὐτῆς εἶνα:

—1) ***Γκίκας*** (1761—1831), ὅστις, κηρυχθείσης τῆς ἐπαναστάσεως, διεπεραιώθη εἰς Κρανίδιον καὶ περιελθὼν τὴν ἐπαρχίαν Ἑρμιονίδος ἐγένετο κῆρυξ τῆς ἐπαναστάσεως, συνεργασθεὶς δὲ μετὰ τῆς ἡρωΐδος Λασκαρίνας Μπουμπουλίνας ἐν Ἄργει καὶ ἔτι μετ' ἄλλων Σπετσιωτῶν, διωργάνωσε τὴν κατὰ θάλασσαν πολιορκίαν τοῦ Ναυπλίου, ἐφ' ᾧ καὶ οἱ συμπολῖται του ἐξέλεξαν αὐτὸν μέλος τῆς πελοποννησιακῆς βουλῆς καὶ τῆς ἐθνοσυνελεύσεως τῆς Ἐπιδαύρου, ἥτις, ἀποθανόντος τοῦ ἀδελφοῦ του Παναγιώτη, προσεκάλεσεν αὐτὸν ἀντιπρόεδρον τοῦ ἐκτελεστικοῦ.

—2) ***Παναγιώτης*** (1784—1824). Οὗτος, ἐκλεγεὶς ὑπὸ τῶν Σπετσιωτῶν μετὰ τοῦ Γ. Πάνου καὶ Α. Ἀνδρούτσου, ἐστάλη εἰς Ὕδραν πρὸς συντόνισιν τῶν ἐνεργειῶν τῶν διὰ τὴν ἐπανάστασιν. Ὁ Δημήτριος Ὑψηλάντης, διαγνοὺς τὴν πολιτικήν του ὀξυδέρκειαν, διώρισεν αὐτὸν ἔφορον Σπετσῶν καὶ εἶτα ἀπέστειλεν εἰς Μεσολόγγιον, κατὰ τὸ φθινόπωρον τοῦ 1823, ἐπὶ κεφαλῆς στολίσκου, πρὸς ὑποστήριξιν τῆς πολλὰ πασχούσης πόλεως. Ὁ λόρδος Βύρων καὶ ὁ Μαυροκορδάτος ἔπεισαν αὐτὸν νὰ παραμείνῃ μέχρι τοῦ 1824. Ἐπαναχάμψας εἰς Ναύπλιον ἐξελέγη μέλος τοῦ νέου ἐκτελεστικοῦ καὶ εἶτα ἀντιπρόεδρος.

*Παναγιώτης Μπότασης.*

—3) ***Νικόλαος*** (1792—1842). Ἦτο υἱὸς τοῦ *Γκίκα* καὶ διέπρεψε κατὰ θάλασσαν ἔν τε τῷ Κορινθιακῷ κόλπῳ καὶ κατὰ τὰς πολιορκίας Νεοκάστρου καὶ Μονεμβασίας, συνεργαζόμενος μετὰ τοῦ Α. Ἀνδρούτσου, καὶ ἐπέτυχε νὰ καταλάβῃ τὰ ἰσχυρὰ ταῦτα φρούρια. Πολλὰ κατορθώσας, μετὰ τὴν τῶν πραγμάτων ἀποκατάστασιν διωρίσθη σύμβουλος τῆς Ἐπικρατείας ἐπὶ Ὄθωνος καὶ ἐπ' ὀλίγον ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν.

—4) ***Θεοδόσιος.*** Καὶ οὗτος συνειργάσθη μετὰ τοῦ Νικολάου καὶ ἰδίως ἐν Ναυπλίῳ, ἄγων 8 πλοῖα, καὶ κατόπιν πρὸ τῶν Δαρδανελλίων, ὅτε ἔμελλε νὰ ἐκπλεύσῃ ἡ τουρκικὴ ἀρμάδα. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν ἐπεδόθη πάλιν εἰς τὸ ναυτικὸν ἐμπόριον μέχρι τοῦ θανάτου του (1836).

—5) ***Νικόλαος Ἀναγνώστου.*** Ἠγωνίσθη μετὰ τῶν ἐξαδέλφων του καὶ λήξαντος τοῦ Ἀγῶνος ἐπεδόθη εἰς τὸ ἐμπόριον, ἀλλὰ καταστραφεὶς οἰκονομικῶς ἀπεσύρθη εἰς Σπέτσας καὶ ἰδιώτευεν. Ἐξελέγη βουλευτὴς τῷ 1853 καὶ ἀντιπρόεδρος τῆς βουλῆς. Ἀπέθανε τῷ 1867.

—6) ***Ἰωάννης.*** Οὗτος ἐγένετο λόγιος, καὶ ὑπηρετήσας ἐν Ἀμερικῇ ὡς ἐμπορικὸς ὑπάλληλος τῶν ἀδελφῶν Ῥάλλη, κατῆλθεν εἰς Σπέτσας καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς τῷ 1874, ὡς ὀπαδὸς τοῦ Δημητρίου Βούλγαρη, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου κατέλιπε τὴν πολιτικὴν καὶ ἐπεδόθη ὁλοψύχως εἰς ἔργα κοινωφελῆ, ἀναλαβὼν τὴν διεύθυνσιν τῆς Ἱστορικῆς καὶ ἐθνολογικῆς ἑταιρείας τῆς Ἑλλάδος, ὑπὲρ ἧς εἰργάσθη ἀνενδότως μέχρι τοῦ θανάτου του (1839—1924).

—7) ***Νικόλαος.*** Ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τῷ 1874, ἐσπούδασεν ἐν τῇ σχολῇ τῶν Δοκίμων, ἧς ἀποφοιτήσας ἐξεπέμφθη πρὸς περαιτέρας σπουδὰς εἰς Γαλλίαν. Ἐπανακάμψας εἰς Ἑλλάδα προήχθη εἰς πλοίαρχον καὶ διωρίσθη ναυτικὸς ἀκόλουθος τῆς ἐν Παρισίοις πρεσβείας καὶ κατὰ τὰς διαπραγματεύσεις τοῦ συνεδρίου τῆς εἰρήνης ναυτικὸς σύμβουλος. Ἐχρημάτισεν ἐπὶ Παγκάλου ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν καὶ προαχθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν ναυάρχου ἐπεδόθη εἰς τὴν συγγραφὴν ναυτικῶν ἔργων, μεταξὺ τῶν ὁποίων πρωτεύει ἡ «Πυροβολική».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ἀναργύρου Ἀνδρέου Χ. Ἀναργύρου*, Τὰ Σπετσιωτικά, τόμ. Α' Ἀθ. 1861, τόμος Β' Πειραιεὺς 1925. Τ. Ε. Ε.

**Μπότεφ,** ***Χρίστο.*** Βούλγαρος ἐπαναστάτης καὶ ποιητὴς τῶν Χαϊντούτηδων κατὰ τοὺς ἀπελευθερωτικοὺς ἀγῶνας τῆς πατρίδος του. Ἐγεννήθη ἐν Καλοφὲρ τῷ 1847 καὶ ἐδιδάχθη τὰ πρῶτα γράμματα παρὰ τοῦ πατρός του, διδασκάλου καὶ συγγραφέως, Μπότιο Πέτκωφ, μεθ' ὃ ἐφοίτησεν εἰς τὸ κλασσικὸν γυμνάσιον τῆς Ὀδησσοῦ. Κατὰ τὴν βραχεῖαν ἐν Ὀδησσῷ διαμονήν του ὑπέστη τὴν ἐπίδρασιν τῶν Μπελίνσκι, Τσερνισέφσκι, Πισάρεφ, Μπακούνιν κ.ἄ. Τῷ 1866 ἐπανέκαμψεν εἰς Βουλγαρίαν καὶ ἐγένετο διδάσκαλος, ζῶν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον μετὰ τῶν ἐπαναστατῶν Χαϊντούτηδων. Μετὰ βραχεῖαν ἐν Βουλγαρίᾳ διαμονὴν ἀναγκάζεται νὰ ἀναχωρήσῃ καὶ πάλιν διὰ Ῥωσίαν, ἀλλὰ διερχόμενος ἐκ Ῥουμανίας ἐγνωρίσθη μὲ τοὺς αὐτόθι ἐκπατρισμένους Βουλγάρους ἐπαναστάτας καὶ παρέμεινεν ἐν Ῥουμανίᾳ, διαμένων ὁτὲ μὲν ἐν Βραΐλᾳ, κέντρῳ τῶν ἐπαναστατῶν, ὁτὲ δὲ ἐν Βουκουρεστίῳ ὡς φοιτητὴς τῆς ἰατρικῆς καὶ διδάσκαλος τῶν βουλγαρικῶν σχολείων. Τῷ 1871 διηύθυνεν ἐν Βραΐλᾳ τὸ πολιτικὸν φύλλον «Λόγος τῶν ἐκπατρισμένων Βουλγάρων», διὰ τὴν ἐπαναστατικὴν ἀρθρογραφίαν τοῦ ὁποίου πολλάκις ἐφυλακίσθη. Τῷ 1873 ἦτο συντάκτης τῆς ἐν Βουκουρεστίῳ ἐκδιδομένης ἐφημερίδος τοῦ Καραβέλωφ «Ἀνεξαρτησία», μετὰ τὴν παῦσιν τῆς ὁποίας ὁ Μπότεφ ἐξέδιδε τὴν σατιρικὴν ἐφημερίδα «Ξυπνητήρι» καὶ βραδύτερον τὴν περίφημον «Ζνάμε», ἐπαναστατικὴν καὶ φιλολογικήν. Τὸν Μάϊον τοῦ 1876, ὅτε ἐξερράγη ἐν Παναγιουρίστε τῆς Βουλγαρίας ἐπανάστασις, ὁ Μπότεφ, ἐπὶ κεφαλῆς ὁμάδος ἐπαναστατῶν, διέβη τὸν Δούναβιν διὰ τοῦ αὐστριακοῦ πλοίου «Ραδέσκι» καὶ ἀπεβιβάσθη εἰς Ὀρέχοβον, εἴς τινα δὲ μάχην μετὰ τῶν Τούρκων ἐφονεύθη τὴν 2 Ἰουνίου εἰς τὸν λόφον Βόλα τῆς Βράτσας. Ὁ Μπότεφ ὑπῆρξε πολυσύνθετος προσωπικότης· ἦτο μέγας πατριώτης, ἀλλὰ καὶ σοσιαλιστὴς καὶ διεθνιστὴς καὶ κομμουνιστὴς ἀκόμη. Ἦτο ἐπίσης φύσις παθητικὴ καὶ συναισθηματική. Ὡς ποιητὴς διακρίνεται διὰ τὸ ἰσχυρὸν τάλαντον καὶ τὸ πηγαῖον αἴσθημά του. Ἀφῆκεν μόνον εἴκοσι ποιήματα, ὑπὸ τὸν τίτλον «Πέσνι ι στιχοτβορένια», ἀποδεικνύοντα ὅμως τὸν Μπότεφ ἀληθινὸν ποιητήν. Ἡ ᾠδὴ πρὸς τὸν φίλον του Χατζηδημήτρην θεωρεῖται σπανίας ποιητικῆς ὡραιότητος, καθὼς καὶ τὸ ποίημά του «Ἡ προσευχή μου». Ὁ Μπότεφ εἶναι ὁ πρῶτος ἄξιος τοῦ ὀνόματος ποιητὴς τῆς Βουλγαρίας καὶ πρῶτος σταθμὸς εἰς τὴν ἐξέλιξιν τῆς νεοβουλγαρικῆς λογοτεχνίας. Τ. Β.

*Χρίστο Μπότεφ.*

**Μποτζαρὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 285. Χ. Δ.

**Μπότζεν,** καὶ ***Μπότσεν*** (Bozen) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὸν ὄνομα τῆς ἰταλικῆς πόλεως *Μπολτσάνο* (βλ. λ.).

**μπότζι** (τό). Ὅρος τῆς κοινῆς τῶν ναυτικῶν διαλέκτου, ἀντιστοιχῶν πρὸς τὸν ἐπίσημον *διατοίχησις* (βλ.λ.).

**μποτζίρω.** Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης σημαίνων *διατοιχῶ* (ἐπὶ πλοίου) ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν κλύδωνος. Σ. Ε. Λ.

**μπότης** (ὁ), καὶ ***μπότι*** (τό)· ἰδιωματ., στάμνα, κανάτι: «γέμισε τὸ μπότι νερό», «ἔσπασε τὸ μπότι» (ἐκ τοῦ ἀρχ. *ἐμπότης*· εἶδος ἀγγείου).

**μπότι** (τό)· βλ. *μπότης*.

**μποτίλια** (ἡ)· δημοτ., ὑάλινον δοχεῖον μὲ στενὸν λαιμὸν πρὸς ὑποδοχὴν ὑγρῶν, φιάλη, ἄλλως *μπουκάλι*: «μποτίλια τοῦ λαδιοῦ,—τοῦ κρασιοῦ,—τοῦ νεροῦ» (λ. ἰταλ.).

**μποτιλιάρισμα** (τό)· δημοτ., ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ *μποτιλιάρω*, ἡ ἐντὸς φιαλῶν μετάγγισις: «μποτιλιάρισμα τοῦ κρασιοῦ,—τοῦ λαδιοῦ κττ.».

**μποτιλιάρω·** δημοτ. μεταγγίζω εἰς φιάλας, ἐναποθέτω εἰς φιάλας: «μποτιλιάρω κρασί,—λάδι»· || μεταφ., ἀποκλείω πλοῖον ἢ στόλον ἐντὸς ὅρμου ἢ λιμένος.

**μποτίνι** (τό)· εἶδος ὑποδήματος, χαμηλὴ μπότα καλύπτουσα τοὺς ἀστραγάλους (γαλλ. bottine).

**Μποτῖνον,** ***Ἄνω—[Γεωγρ.].*** Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μεσολογγίου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται παρὰ τὰς ὄχθας τῆς Τριχωνίδος λίμνης, μίαν ὥραν πρὸς Α. τῆς Γαβαλοῦς, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 443.

**—Μποτῖνον,** ***Κάτω — [Γεωγρ.].*** Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Δαφνιᾶς* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπότιο,** ***Πέτκωφ.*** Βούλγαρος διδάσκαλος καὶ συγγραφεύς, πατὴρ τοῦ ἐπαναστάτου *Χρίστο Μπό-*



Digitized by Google

*τεφ.* Ἐγεννήθη ἐν Καρλόβῳ καὶ ἐσπούδασεν ἐν Ὀδησσῷ. Μετέφρασεν ἐκ τῆς ἑλληνικῆς ἔργα τινά, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ μίαν Ψυχολογίαν (Σμύρνη 1844), ἐκ δὲ τῆς ρωσικῆς τὴν «Βουλγαρικὴν ἱστορίαν» τοῦ Βένελιν. τ. β.

**Μποτοσάνι** (Botoschani) *[Γεωγρ.]*. —1) Νομὸς τῆς Ρουμανίας, κείμενος μεταξὺ Βεσσαραβίας, Βουκοβίνας καὶ Μολδαβίας. Ἔχει ἐπιφάνειαν 31.48 τ. χλμ. καὶ 200.000 κατ. Εἶναι ἐκ τῶν πλουσιωτέρων γεωργικῶν καὶ κτηνοτροφικῶν κέντρων τῆς Ρουμανίας καὶ παράγει ἄφθονον σῖτον ἀρίστης ποιότητος. Διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Σερέτ, Ντρίσλεα, Κορόζα, Μπάτσεν καὶ Σίσκα.

—2) Πόλις τῆς Ρουμανίας, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Σίσκα. Κάτ. 33.000. Συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Ἰασίου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει 80 χλμ. πρὸς τὰ ΒΔ. καὶ διεξάγει ἀκμαῖον ἐμπόριον δημητριακῶν. Ἔχει ἐπίσης βιομηχανίαν ζυμαρικῶν, ἐργοστάσια σάπωνος καὶ ὑφασμάτων καὶ εἶναι σπουδαῖον κέντρον διαμετακομιστικοῦ ἐμπορίου μετὰ τῆς Οὐκρανίας, Πολωνίας καὶ Τσεχοσλοβακίας. Ἔχει 12 ὀρθοδόξους ρουμανικὰς ἐκκλησίας, μίαν ἑλληνικήν, μίαν καθολικὴν καὶ τινας συναγωγάς. Παρὰ τὴν πόλιν ταύτην συνήφθη μάχη τῷ 1499 μεταξὺ τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας Ἀλβέρτου καὶ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Μολδαβίας Στεφάνου τοῦ Μεγάλου. Τῷ 1439 ἐπυρπολήθη ὑπὸ Τατάρων, τῷ δὲ 1887 κατεστράφη κατὰ τὸ ἥμισυ ὑπὸ πυρκαϊᾶς, ἀνοικοδομηθεῖσα ὅμως ταχέως. Εἶναι πατρὶς τοῦ ποιητοῦ Μιχαὴλ Ἐμινέσκου. μ. δ. β.

**μπότσα** (ἡ), μέτρον ὑγρῶν, περιλαμβάνον δύο μετρικὰς ὀκάδας, χρησιμοποιούμενον ἐν Ἑλλάδι διὰ τὴν μέτρησιν ἰδίως τοῦ γλεύκους (ἑνετ. bozza).

**Μπότσα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ΒΔ. ἐσχατιὰ τῆς νήσου *Φανὸς* (πλάτ. 39°51′ Β., μήκ. 19°24′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 206: Channel of Corfu). Ἡ ἀπόστασίς του ἀπὸ τοῦ ἐγγυτέρου ἰταλικοῦ ἀκρωτηρίου Σάντα Μαρία ντὶ Λέουκα εἶναι μόνον 47 μίλλ. ἀνατολικῶς. Σ.Ε.Λ.

**Μπότσαρης**. Ὄνομα μιᾶς ἀπὸ τὰς πρώτας καὶ ἐνδοξοτάτας οἰκογενείας τοῦ Σουλίου, ἥτις ἀποτέλει ἰδίαν φάραν. Ἀναφέρεται πολὺ ἐνωρίτερον ἀπὸ τὴν τουρκοκρατίαν, καὶ δὴ ὡς συμπράττουσα μετὰ τοῦ Γεωργίου Καστριώτου (Σκεντέρμπεη). Ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι ἡ Λάκκα Μπότσαρη λέγεται καὶ Παλιοκατοῦντι (=Παλιοχώρι) εἰς τὸ Σοῦλι, δῆλον γίνεται ὅτι οἱ Μποτσαραῖοι ὑπῆρξαν καὶ ἐκ τῶν παλαιῶν οἰκιστῶν καὶ θεμελιωτῶν τῆς Σουλιωτικῆς ὁμοσπονδίας. Κατὰ τὸν ΙΖ′ καὶ ΙΗ′ αἰῶνα, μέχρι τῆς ἐμφανίσεως τοῦ Τεπελενλῆ Ἀλῆ πασᾶ, ὀνομαστὶ μὲν δὲν ἀναφέρονται οἱ Μποτσαραῖοι, ὅπως καὶ αἱ πλεῖσται τῶν κατόπιν διακριθεισῶν διὰ τὰς πρὸς τὴν πατρίδα ὑπηρεσίας των σουλιωτικῶν οἰκογενειῶν, ἀλλ' ἐπιτρέπεται να θεωρήσωμεν τὴν οἰκογένειαν ταύτην ὡς πρωταγωνιστοῦσαν εἰς τοὺς πολλοὺς καὶ σκληροὺς ἀγῶνας κατὰ τῶν γειτόνων βέηδων τῆς Τσαμουριᾶς, εἰς βάρος τῶν ὁποίων τὸ Σοῦλι ἐπεξέτεινε κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους τὴν ἀπελευθερωτικήν δρᾶσίν του. Τοιουτοτρόπως φαίνεται πρωταθλήσασα καὶ εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Δὸστ βέη τῆς Ἄρτης καὶ τῶν Χασὰν καὶ Σουλεϊμὰν Τζαπάρη, καὶ τοῦ τρομεροῦ Κόκια πασᾶ, καὶ μάλιστα τοῦ ἔκτοτε ἐπιφόβου Τεπελένα, ὡς ἐκαλεῖτο νέος εἰσέτι ὁ κατόπιν τύραννος τῆς Ἠπείρου. Γ. Δ. Κ.

— **Μπότσαρης, *Ἀθανάσιος*** βλ. *Μπότσαρης Τούσιας* (2).

— **Μπότσαρης, *Γιαννακός***. Υἱὸς τοῦ *Κώστα Μπότσαρη*. Διετέλεσεν ὑπασπιστὴς Γεωργίου τοῦ Α′.

—**Μπότσαρης, *Γιώργης***. Υἱὸς τοῦ ἀρχηγέτου τῆς οἰκογενείας *Κίτσου Μπότσαρη*, ὁ κυρίως δράσας ἐναντίον τοῦ Ἀλῆ πασᾶ κατὰ τὸν πρῶτον μεγάλον διωγμὸν τοῦ Σουλίου (1789—1799). Γεννηθεὶς τῷ 1719, ἀνέλαβε τὴν ἡγεσίαν τῆς φάρας περὶ τὰ μέσα τοῦ αἰῶνος ἐκείνου καὶ ἡμιλλᾶτο μὲ τοὺς Κουτσονικαίους, Τζαβελλαίους καὶ ἄλλους Σουλιώτας εἰς τὴν ἐπέκτασιν τῶν ὁρίων τῆς ὁμοσπονδίας, δι' ἧς ἐξησφαλίζετο ἡ σιτάρκεια τῶν 111 χωρίων καὶ συνοικισμῶν τοῦ σουλιωτικοῦ συγκροτήματος. Τῷ 1789, ὅταν ὁ Ἀλῆς, ὡς δερβέντ-ναζίρης, ἐπεδίωξε νὰ καθυποτάξῃ τὸ Σοῦλι καὶ παρέσυρεν εἰς τὴν παγίδα τοὺς ἑβδομήκοντα ἄνδρας τοῦ ἀρχηγοῦ Τζαβέλλα, ὁ Γιώργης Μπότσαρης, ἐγκαίρως εἰδοποιηθεὶς καὶ λαβὼν δραστήρια μέτρα, ἔσωσεν ἀπὸ ἀσφαλοῦς κινδύνου τὴν μικρὰν δημοκρατίαν, εὐφυῶς χρησιμοποιήσας τὸ δύσβατον αὐτῆς καὶ πολλὰ τεχνάσματα, μεθ' ὧν ἐκ τῶν ὁποίων καὶ τὴν ἐγκατάλειψιν τῆς ὀχυρᾶς Κιάφας. Διότι, παραπεισθεὶς ἐκ τούτου ὁ Ἀλῆ πασᾶς, ἐπίστευσεν εἰς τὴν εὔκολον νίκην τῶν προελασάντων ἀνενοχλήτως στρατευμάτων του, ἀλλ' ὅταν, ἀναπαυόμενος ἐπὶ τῶν δαφνῶν του, ἠμέλησε νὰ λάβῃ τὰ ἀνάλογα τῆς ἀσφαλείας μέτρα, ὁ Γιώργης Μπότσαρης ἐπετέθη καὶ κατετρόπωσεν αὐτὸν τόσον ἀποτελεσματικῶς, ὥστε τὸν ἠνάγκασε νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὰ Ἰωάννινα κατησχυμμένος καὶ νὰ ὑπογράψῃ συνθήκην, διὰ τῆς ὁποίας κατέβαλε καὶ λύτρα πρὸς ἀπελευθέρωσιν προσφιλῶν καὶ χρησίμων αὐτῷ ὀργάνων. Ἡ νίκη αὐτὴ τοῦ Γιώργη Μπότσαρη, ἥτις ἔφερεν ἐνόπλους τοὺς Σουλιώτας νὰ στήσουν τὸ στρατόπεδόν των δύο χιλιόμετρα μακρὰν τῶν Ἰωαννίνων εἰς τὸν Ἅγιον Ἰωάννην τῆς Μπουνίλας, κατέστησεν ἐπίζηλον καὶ προνομιοῦχον τὴν θέσιν τῶν Μποτσαραίων, εἰς ἐποχὴν καθ' ἣν οἱ τραχεῖς ἀγῶνες καὶ πολλοὶ ἄλλοι λόγοι, σχετιζόμενοι μὲ τὴν ἀντίληψιν περὶ ἐξυπηρετήσεως τοῦ κοινοῦ συμφέροντος, εἶχαν ἀρχίσει νὰ διασποῦν τὴν ἁρμονίαν τῆς σουλιωτικῆς ἑνότητος. Τότε, γέρων πλέον καὶ δύστροπος ὁ Γιώργης Μπότσαρης ἀπεσύρθη τῆς ἡγεσίας τῆς φάρας, τὴν θέσιν του δὲ κατέλαβεν ὁ πρωτότοκος υἱός του *Τούσιας* (βλ. κατωτ.).

—**Μπότσαρης, *Δημήτριος***. Υἱὸς τοῦ *Νότη Μπότσαρη*, γεννηθεὶς τῷ 1808. Παῖς ἔτι παρηκολούθει τὸν πατέρα του εἰς τοὺς ἀγῶνάς του καὶ εὑρέθη εἰς τὸ Μεσολόγγιον κατὰ τὴν πολιορκίαν του. Διεκρίθη εἰς τὴν μάχην τοῦ Φαλήρου. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν εἰσήχθη εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον καὶ ἀποφοιτήσας ὑπηρέτησε, προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ ἀντιστρατήγου. Τῷ 1854 ἐξῆλθεν εἰς Ἤπειρον ἐπὶ κεφαλῆς ἀνταρτῶν. Ἀπέθανε τῷ 1892. Πληρεξούσιος τῆς συνελεύσεως τοῦ 1843 καὶ εἶτα τῆς τοῦ 1862, ἐγένετο δὶς ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, συμβαλὼν μεγάλως εἰς τὴν ἀναδιοργάνωσιν τοῦ στρατοῦ μετὰ τὸ 1863.

—**Μπότσαρης, *Δημήτριος***. Υἱὸς τοῦ *Μάρκου Μπότσαρη*. Ἀξιωματικὸς τοῦ πυροβολικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1814 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1871. Ἐστάλη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ὄθωνος εἰς Βαυαρίαν καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὴν στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Μονάχου. Προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου, ἐχρημάτισε δὶς ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν (1859 καὶ 1866—1867) καὶ ὠργάνωσε τῷ 1867 τὸ Μετοχικὸν ταμεῖον καὶ τὸ Στρατιωτικὸν ἀρτοποιεῖον.

—**Μπότσαρης, *Δημήτριος***. Πολιτευτὴς Ἠπείρου. Υἱὸς τοῦ *Νότη-Τιμολέοντος Μπότσαρη*, ἐγεννήθη τῷ 1889. Μετὰ τὰς ἐγκυκλίους σπουδάς του, ἐνεγράφη εἰς τὴν φυσικομαθηματικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, ἧς ἀποφοιτήσας εἰσήχθη εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον τῶν Εὐελπίδων. Ἐξελθὼν ἀνθυπολοχαγὸς τοῦ μηχανικοῦ, συνεπλήρωσε τὴν μόρφωσίν του ἐν Γαλλίᾳ. Μετέσχε τῶν πολέμων 1912 καὶ 1913 (τοῦ πρώτου ὡς ἀρχηγὸς ἀνταρτικῶν σωμάτων ἀπὸ Ὀλύτσικας μέχρις ἠπειρωτικῆς θαλάσσης). Εἶτα μετέσχεν ἐκτάκτου ἀποστολῆς διὰ τὸ ἑλληνοαλβανικὸν ζήτημα, ἀλλὰ καὶ μετέπειτα ἐπανειλημμένως (1918) ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἑλλάδα εἰς διεθνῆ συνέδρια. Ὑπηρέτησεν ὡς στρατιωτικὸς ἀκόλουθος τῆς ἐν Βέρνῃ ἑλληνικῆς πρεσβείας, διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου τῶν Εὐελπίδων καί, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου, μετέσχε τῶν ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ἐπιχειρήσεων, ὡς ἀρχηγὸς τοῦ μηχανικοῦ τοῦ Β′ σώματος στρατοῦ. Ἀποστρατευθεὶς ἐπολιτεύθη (1923), ἐκλεγεὶς ἐπανειλημμένως βουλευτὴς καὶ διατελέσας ὑπουργὸς τῆς Συγκοινωνίας (1924), ἐν τῇ κυβερνήσει Σοφούλη, καὶ τῶν Ναυτικῶν (1929) ἐν τῇ κυβερνήσει Βενιζέλου. Ν.Θ.Κ.—Γ.Δ.Κ.

—**Μπότσαρης, *Κίτσος*** (*Χρῖστος*). Ὁ παλαιότερος τῶν Μποτσαραίων. Οὗτος ἡγεῖτο τοῦ οἴκου κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος καὶ εἰς αὐτὸν πρέπει νὰ ἀποδοθῶσι πολλὰ κατορθώματα τῆς φάρας.

— **Μπότσαρης, *Κίτσος***. Δευτερότοκος υἱὸς τοῦ *Γιώργη Μπότσαρη*, ἀναλαβὼν τὴν ἀρχηγίαν τῆς φάρας μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του *Τούσια* (βλ. κατωτ.) καὶ ζῶντος ἔτι τοῦ πατρός του. Εἶχεν ἀνατραφῇ ὡς ὅμηρος εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἀλῆ πασᾶ ἐν Ἰωαννίνοις, εἰς τὴν αὐτὴν δὲ θέσιν περιέστη, ὅταν, κατὰ τὰς δυσμὰς τοῦ ΙΗ′ αἰῶνος καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του, σκληρὰ περιπέτεια τοῦ Σουλίου τὸν ἐπανέφερεν ὅμηρον πάλιν μετὰ τοῦ υἱοῦ του Κωνσταντίνου εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ τυράννου. Ἔχαιρε τῶν συμπαθειῶν τοῦ Ἀλῆ, διότι ἦτο μετριοπαθὴς καὶ ἰδίως διότι συνεβούλευε τὴν ἀγαθὴν μετ' αὐτοῦ συμβίωσιν. Ἀλλ' ὅταν ἐπῆλθον τὰ γεγονότα τοῦ 1803, ὁ Κίτσος, καταλιπὼν τὸν υἱόν του εἰς χεῖρας τοῦ τυράννου, ἔσπευσεν εἰς τὴν κινδυνεύουσαν πατρίδα καὶ ἠγωνίσθη ὡς λέων ἀληθινὸς διὰ νὰ τὴν σώσῃ. Τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς μιᾶς φάλαγγος, καὶ ἐν γένει τῶν μὴ στερξάντων, μετὰ τὴν ἐγκατάλειψιν τοῦ Σουλίου, νὰ τραπῶσι πρὸς τὴν Πάργαν καὶ τὴν Ἑπτάνησον, ἐπεζήτησε νὰ ἐγκατασταθῇ εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Ἄρτης, ἐστάθη δὲ εἷς τῶν μεγάλων ἡρώων τοῦ Ζαλόγγου. Τοιοῦτος ἐστάθη καὶ βραδύτερον εἰς τὴν αἱματηρὰν μάχην τοῦ Σέλτσου. Κατόπιν κατέφυγεν εἰς Πάργαν, ἐκεῖθεν δὲ εἰς Κέρκυραν, ὅπου, καταταχθεὶς εἰς τὰ ἠπειρωτικὰ τάγματα, ἔφθασε μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ μαγγιόρου (ταγματάρχου), διεκρίθη διὰ τὴν πειθαρχίαν καὶ τὴν γενναιότητά του. Συμφιλιωτικὸς ὅμως ὡς ἦτο καὶ νοσταλγός, παρεσύρθη ἀπὸ τὰ δόλια ὄργανα τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, σταλεὶς δὲ εἰς Ἄρταν ἐδολοφονήθη κατ' ἐντολὴν τοῦ Ἀλῆ ὑπὸ τοῦ Γώγου Μπακόλα, πρὸς ὃν ἔκτοτε οἱ Σουλιῶται ἔτρεφον ἄσπονδον μῖσος. Οὗτος ὑπῆρξε πατὴρ τοῦ ἡρωϊκοῦ Μάρκου Μπότσαρη. Μετὰ τὸν θάνατόν του τὴν ἀρχηγίαν τῆς φάρας ἀνέλαβεν ὁ ὑστερότοκος υἱὸς τοῦ Γιώργη Μπότσαρη *Νότης* (βλ. κατωτ.). Γ.Δ.Κ.

— **Μπότσαρης, *Κῖτσος***. Υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ καὶ γερουσιαστοῦ *Κωνσταντίνου Μπότσαρη*, γεννηθεὶς Μεσολογγίῳ τῷ 1841. Ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον τῶν Εὐελπίδων, ἐξῆλθεν ὡς ἀνθυπασπιστὴς εἰς τὸ πεζικὸν τῷ 1862 καὶ συμμετέσχεν εἰς τὴν Ναυπλιακὴν ἐπανάστασιν, καθ' ἣν διεκρίθη εἰς τὰς περὶ τὸ Ναύπλιον μάχας. Τῷ 1866, ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐν Κρήτῃ ἐπαναστάσεως κατῆλθεν εἰς τὸν ἀγῶνα καὶ συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐν ταῖς ἐπαρχίαις Κυδωνίας, Σελίνου, Σφακίων καὶ Ἀποκορώνου πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις, διακριθεὶς διὰ τὸν ἡρωϊσμόν του, δι' ὃ καὶ ἰδιαζόντως ἠγωνίσθη καὶ ἐτιμήθη ὑπὸ τῶν Κρητῶν. Τραυματισθεὶς εἰς τὴν μάχην Καινῶν Πλευρῶν (3 Φεβρουαρίου 1867), ἐξηκολούθησε μαχόμενος μέχρι τέλους τοῦ ἀγῶνος (Δεκ. 1868). Τῷ 1885, ταγματάρχης ὤν, ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως εἰς Γαλλίαν, ἵνα παρακολουθήσῃ τὰς ἐκεῖ μεγάλας στρατιωτικὰς ἀσκήσεις. Διωρίσθη εἶτα καθηγητὴς τοῦ σχολείου ὑπαξιωματικῶν. Τῷ 1896 ἐξελέγη βουλευτὴς Ἄρτης, τῷ δὲ 1897, ἐπὶ τῇ κηρύξει τοῦ κατὰ τῆς Τουρκίας πολέμου, ἀνέλαβε, τῇ αἰτήσει του, τὴν διοίκησιν μιᾶς τῶν ἐν Ἠπείρῳ ταξιαρχιῶν καὶ ὡς τοιοῦτος συμμετέσχεν εἰς τὴν ἄμυναν Ἄρτης καὶ τὰς μετέπειτα ἐπιχειρήσεις ἐν Ἠπείρῳ μέχρι Πέντε Πηγαδίων. Ἔκτοτε διετέλεσε διοικητὴς τῆς 3ης μεραρχίας μέχρι τοῦ 1908, ὅτε ἀπεστρατεύθη τῇ αἰτήσει του. Ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῷ 1915.

— **Μπότσαρης, *Κωνσταντῖνος***. Υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ *Κίτσου Μπότσαρη*, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1882. Ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον τῶν Εὐελπίδων, κατετάχθη τῷ 1903 ὡς ἀνθυπολοχαγὸς εἰς τὸ πεζικόν. Συμμετέσχεν ὡς διοικητὴς τάγματος εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τῶν Βαλκανικῶν πολέμων (1912 καὶ 1913) καὶ εἶτα ὡς συνταγματάρχης εἰς τὴν ἐκστρατείαν Μ. Ἀσίας (1919—1920). Ἀπεστρατεύθη τῇ αἰτήσει του τῷ 1920. Ν. ΚΛΣ

— **Μπότσαρης, *Κώστας***. Ἀδελφὸς τοῦ *Μάρκου Μπότσαρη*, ὃν διεδέχθη εἰς τὴν ἀρχηγίαν τῶν ἐν Ἑλλάδι Σουλιωτῶν. Ἐπολέμησεν εἰς τὰς Πάτρας (1824), τὸ Κρομμύδι καὶ ἀλλαχοῦ. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Μεσολογγίου, τῆς ἀμύνης τοῦ ὁποίου δὲν μετέσχεν, ἐξεστράτευσεν ὡς ἀρχιστράτηγος τῆς Δυτικῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Ἀττικήν, μετέσχε τῆς ἐν Μουνιχίᾳ καὶ Φαλήρῳ ἀποβάσεως καὶ πολλῶν τῶν ἐν τῇ Δυτικῇ Ἑλλάδι μαχῶν ὑπὸ τὸν Τζούρτς. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν ἀνεγνωρίσθη συνταγματάρχης καὶ προήχθη εἰς ὑποστράτηγον τῆς Φάλαγγος. Διετέλεσε καὶ γερουσιαστὴς (1844), ἀπέθανε δὲ τῷ 1853.

— **Μπότσαρης, *Μᾶρκος***. Εἷς τῶν ἡρωϊκωτέρων ἀρχηγῶν τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως, υἱὸς τοῦ *Κίτσου Μπότσαρη* (βλ. ἀνωτ.), γεννηθεὶς ἐν Σουλίῳ τῷ 1790 καὶ φονευθεὶς εἰς τὸ παρὰ τὸ Καρπενήσιον Κεφαλόβρυσον τὴν νύκτα τῆς 9 Αὐγούστου 1823. Τὴν παιδικὴν καὶ ἐφηβικὴν ἡλικίαν διῆλθε πλησίον τοῦ πατρός του, ἀκολουθῶν αὐτὸν εἰς τὰς μὲ ὁρμητήριον τὴν Κέρκυραν ἐκστρατείας του ἐναντίον τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τῆς Ἠπείρου, διετέλεσε δὲ καὶ ὑπαξιωματικὸς τοῦ ἐν τῇ Ἑπτανήσῳ συσταθέντος ὑπὸ τῶν Γάλλων ἀλβανικοῦ συντάγματος, εἰς τὸ ὁποῖον ὑπηρέτει καὶ ὁ πατήρ του μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ταγματάρχου. Ὅτε ἐξερράγη ὁ πόλεμος μεταξὺ τοῦ σουλτάνου καὶ τοῦ σατράπου τῆς Ἠπείρου, οἱ Σουλιῶται, κατόπιν σουλτανικῶν προτάσεων, ἦλθον ἐξ Ἰονίων ὑπὸ τὸν Νότην Μπότσαρην εἰς βοήθειαν τῶν ἐναντίον τοῦ Ἀλῆ μαχομένων στρατευμάτων. Μεταξὺ αὐτῶν ἦτο τότε καὶ ὁ ἀνεψιὸς τοῦ Νότη Μᾶρκος, ὅστις, ἂν καὶ τριακονταετὴς μόλις, κατώρθωσεν ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς νὰ καταστῇ ὁ κυριώτερος καὶ περιζήτητος ἀρχηγὸς τῶν γενναίων μαχητῶν τοῦ Σουλίου. Ὁ πόλεμος ἐξηκολούθει χωρὶς οἱ Τοῦρκοι νὰ φαίνωνται διατεθειμένοι πρὸς ἀποκατάστασιν τῶν Σουλιωτῶν εἰς τὴν πατρίδα των συμφώνως πρὸς τὴν δοθεῖσαν ὑπόσχεσιν, μεγάλη δὲ εἶχεν ἐκ τούτου γεννηθῇ μεταξὺ αὐτῶν δυσαρέσκεια. Ὁ Μᾶρκος τότε, κατόπιν προσκλήσεως τοῦ Ἀλῆ, διεπεραιώθη ἐν καιρῷ νυκτὸς μέσῳ τῆς λίμνης ἀπὸ τῆς Ραψίστης, τὴν ὁποίαν κατεῖχον οἱ Σουλιῶται, καὶ ἦλθεν εἰς τὸ φρούριον τῆς Λιθαρίτσας, εἰς διαπραγματεύσεις μετὰ τοῦ παλαιοῦ ἐχθροῦ, εἰς τοῦ ὁποίου τὴν δολιότητα ὤφειλον αὐτὸς καὶ οἱ συμπατριῶταί του τὴν παλαιὰν καταστροφὴν καὶ τὸν πολυετῆ ἐκπατρισμόν. Χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ θερμὴ ὑποδοχή, τὴν ὁποίαν ἔκαμεν ὁ ἐν κινδύνῳ εὑρισκόμενος γηραιὸς σατράπης εἰς τὸν Μᾶρκον, ἀποκαλῶν αὐτὸν ἀγαπητόν του υἱόν, ὡς καὶ ὁ τρόπος μὲ τὸν ὁποῖον ἐδικαιολόγει τὰς παλαιὰς ἐναντίον τῶν Σουλιωτῶν διώξεις του, ἀποδίδων αὐτὰς εἰς διαταγὰς τῆς Πύλης. Κατὰ τὴν συνομολογηθεῖσαν συνθήκην, πρὸς ἐπίρρωσιν τῆς ὁποίας ἀντηλλάγησαν ἑκατέρωθεν ὅμηροι, οἱ Σουλιῶται ὑπεσχέθησαν τὴν συνδρομήν των εἰς τὸν Ἀλῆν, λαμβάνοντες εἰς ἀντάλλαγμα τὸ δικαίωμα

Digitized by Google

τῆς ἐλευθέρας ἐπὶ τοῦ βράχου των ἐγκαταστάσεως. Ἐπηκολούθησεν ἡ ὑπ' αὐτῶν κατάληψις τοῦ φρουρίου τῶν Βαρνάδων καὶ εἶτα τοῦ Σουλίου καὶ τῆς Κιάφας καὶ ἤρχισεν ἀμέσως ἡ πολιτικὴ καὶ στρατιωτικὴ ἀναδιοργάνωσις τῶν Σουλιωτῶν, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὁποίων ὁ Μᾶρκος διεξήγαγε σειρὰν ὅλην ἐπιτυχῶν ἐπιχειρήσεων. Προσέβαλε παρὰ τοὺς Κομιτζάδες, μετὰ διακοσίων ἱππέων, μεγάλην τουρκικὴν ἐφοδιοπομπὴν διευθυνομένην ἐξ Ἄρτης εἰς Ἰωάννινα καὶ κατέσφαξε πλείστους ἐκ τῶν συνοδευόντων αὐτὴν στρατιωτῶν, τὰ δὲ λάφυρα ἔπεμψεν εἰς Σούλι· κατέλαβε τὴν στενωπὸν τῶν Πέντε Πηγαδίων, ἀποκρούσας ἐπίθεσιν πεντακισχιλίων Ἀλβανῶν, ἐπολιόρκησε καὶ ἐξεπόρθησε τὸ φρούριον τῆς Ριγάσας καὶ ἦρε λαμπρὰς νίκας εἰς Δραμασούς, Κασμηράν, Ραψίσταν, Πλάκαν κλπ., αὐξάνων διαρκῶς τὴν περὶ τῆς πολεμικῆς ὁρμῆς του φήμην καὶ ἐνσπείρων τὸν πανικὸν εἰς τὰς τάξεις τῶν Τούρκων. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ηὔξανον αἱ πρὸ τῶν Ἰωαννίνων τουρκικαὶ δυνάμεις καὶ τὸ Σούλι περιεζώνετο πανταχόθεν ὑπὸ τῶν σουλτανικῶν στρατευμάτων, μεγάλη δὲ κατεῖχε τὸν χριστιανικὸν λαὸν τῆς Ἠπείρου ἀγωνία περὶ τῆς ἐκβάσεως τοῦ ἀνίσου ἀγῶνος, τὸν ὁποῖον ἀνέλαβεν ἡ ὑπὸ τὸν Μπότσαρην μικρὰ δρὰξ τῶν Σουλιωτῶν. Ἡ Ἑλληνικὴ Ἐπανάστασις εἶχεν ἐκραγῆ καὶ προώδευεν εἰς τὴν Πελοπόννησον, τὰς νήσους καὶ τὴν Στερεάν, ἐνῷ τὸ Σούλι ἐπιέζετο ὁλονὲν περισσότερον ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Χουρσίτ, ἄμεσος δὲ παρίστατο ἡ ἀνάγκη τῆς ἐνισχύσεως. Ὁ Μᾶρκος κατῆλθε τότε πρὸς νότον καὶ συναντηθεὶς μὲ τοὺς ἀποτελοῦντας τὴν προσωρινὴν ἑλληνικὴν κυβέρνησιν παρέστησεν εἰς αὐτοὺς τὴν μεγάλην σημασίαν, τὴν ὁποίαν θὰ εἶχε διὰ τὸν καθόλου ἑλληνικὸν ἀγῶνα ἡ ἐξακολούθησις τῆς ἀντιστάσεως τῶν Σουλιωτῶν, καὶ ἐζήτησεν ἐνισχύσεις. Μετὰ πολλοὺς δισταγμοὺς ἀπεφασίσθη ἡ ἀτυχὴς ὑπὸ τὸν Μαυροκορδᾶτον ἐκστρατεία διὰ μέσου τῆς δυτικῆς Στερεᾶς, τῆς ὁποίας μετέσχε καὶ ὁ Μπότσαρης ἡγούμενος εὐαρίθμων ἀνδρῶν. Παρὰ τὸ Κομπότι ὁ στρατὸς τοῦ Μαυροκορδάτου διεμοιράσθη καὶ ὁ Μᾶρκος ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ διὰ τῶν Πέντε Πηγαδίων προτιθεμένου νὰ πορευθῇ πρὸς τὸ Σούλι σώματος. Προδοθεὶς ὅμως εἰς τοὺς Τούρκους ὑπὸ τοῦ παλαιοῦ ἐχθροῦ του ὁπλαρχηγοῦ Γώγου, ὅστις δολίως εἶχεν ὑποκριθῆ συμφιλίωσιν πρὸς αὐτὸν καὶ σύμπραξιν μετὰ τῶν Ἑλλήνων, περιῆλθεν εἰς δεινὴν θέσιν, ἐνῷ προσεπάθει νὰ διαβῇ τὸ στενὸν τῶν Πέντε Πηγαδίων, ὅπερ κατεῖχεν ἤδη ἰσχυρὸν τουρκικὸν σῶμα. Προσβληθεὶς συγχρόνως ἐκ τῶν νώτων ὑπὸ δισχιλίων ἐχθρῶν, διέτρεξε τὸν κίνδυνον νὰ κυκλωθῇ καὶ συλληφθῇ, κατώρθωσεν ὅμως μετὰ σκληρὸν παρὰ τὴν Πλάκα ἀγῶνα (30 Ἰουνίου 1822) ν' ἀνοίξῃ δίοδον διὰ μέσου τῶν τουρκικῶν φαλάγγων καὶ νὰ ἐπιστρέψῃ μετὰ τῶν ἀνδρῶν του εἰς τὸ στρατόπεδον, ἀναγκασθεὶς μόνον ν' ἀφήσῃ εἰς χεῖρας τῶν Τούρκων τὰ διὰ τὸ Σούλι προοριζόμενα ἐφόδια. Κατὰ τὴν μετ' ὀλίγας ἡμέρας (4 Ἰουλίου 1822) συναφθεῖσαν ἀτυχῆ μάχην παρὰ τὸ *Πέτα* (βλ. λ.), εἶχε ταχθῆ ἀριστερὰ τοῦ Γώγου, ἡ παρουσία του ὅμως δὲν κατώρθωσε ν' ἀποτρέψῃ τὸν δόλιον τοῦτον ἁρματολὸν ἀπὸ τῆς προδοσίας, οὐδὲ ὁ ἡρωϊσμός του νὰ σταματήσῃ τοὺς φεύγοντας Ἕλληνας —ἐναντίον τῶν ὁποίων μάλιστα διέταξε τοὺς ὑπ' αὐτῶν ἄνδρας νὰ πυροβολήσουν — καὶ νὰ περισώσῃ τοὺς περικυκλωθέντας καὶ δεκατιζομένους φιλέλληνας. Δυστυχῶς κατὰ τὴν μάχην ταύτην δὲν ἐπεκράτησε τὸ σχέδιον τοῦ Μπότσαρη, καθ' ὃ οἱ ἄτακτοι θὰ ἐτάσσοντο πρῶτοι εἰς ἀκροβολισμὸν διὰ ν' ἀντιμετωπίσωσι τὴν πρώτην ἐπίθεσιν τῶν Τούρκων, ἀλλὰ τὸ σῶμα τῶν φιλελλήνων, οἵτινες ἐξ ὑπερμέτρου ἐνθουσιασμοῦ καὶ φιλοτιμίας ἐξέλεξαν δι' ἑαυτοὺς τὰς μᾶλλον ἐπικινδύνους θέσεις καὶ δὲν ἠθέλησαν νὰ δεχθῶσι τὸ ἐπανειλημμένως ἐπιτυχὸν πολεμικὸν σύστημα τῶν Ἑλλήνων, ὁπότε ἡ ἔκβασις τοῦ ἀγῶνος θὰ ἦτο ἴσως διάφορος. Κατόπιν τῆς ἐπακολουθησάσης τὴν ἀτυχῆ ταύτην μάχην πτώσεως τοῦ Σουλίου, ὁ Μπότσαρης ἠκολούθησε τὸν Μαυροκορδᾶτον εἰς Μεσολόγγιον, ὅπου διεκρίθη ὡς εἷς ἐκ τῶν ἀρίστων ἀρχηγῶν τῆς ἀμύνης κατὰ τὴν πρώτην πολιορκίαν. Μετὰ τὴν λύσιν τῆς πολιορκίας ταύτης ἡ δυτικὴ Στερεὰ εἶχε, κατὰ τὸ παράδειγμα τῆς λοιπῆς Ἑλλάδος, περιπέσει εἰς δεινὴν ἀναρχίαν, διαρκὴς δὲ ἔρις εἶχεν ἀναφυῆ μεταξὺ τῶν διαφόρων ὁπλαρχηγῶν, οἵτινες ἐξηντλοῦντο περὶ μικρὰς καὶ ἀναξίας δολοπλοκίας, διεκδικοῦντες ἑκάστοτε τὸ ἔπαθλον τῆς νίκης καὶ λαφυραγωγοῦντες τοὺς κατοίκους. Ἐν μέσῳ τῆς μεγάλης ταύτης ἀταξίας ἐπεφάνη ἡ ἡρωϊκὴ μορφὴ τοῦ Μάρκου, τοῦ ὁποίου τὴν φήμην εἶχον ἤδη αὐξήσει αἱ ἐναντίον τοῦ Χουρσὶτ ἐπιτυχεῖς μάχαι τοῦ παρελθόντος ἔτους καὶ ἡ ἡρωϊκὴ ὑπεράσπισις τοῦ Μεσολογγίου. Ἡ κυβέρνησις πρὸ τοῦ κινδύνου ἀπεφάσισε νὰ διορίσῃ αὐτὸν ἀρχηγὸν τοῦ στρατοῦ τῆς δυτικῆς Ἑλλάδος καὶ τῷ ἀπέστειλε τὸ δίπλωμα τῆς ἀρχιστρατηγίας. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ προτίμησις αὕτη προὐκάλεσε τὴν μῆνιν τῶν ἄλλων Στερεοελλαδιτῶν ὁπλαρχηγῶν, ὁ ἀνεξίκακος καὶ ἀνδρεῖος πολεμιστὴς ἔσχισεν ἐνώπιον αὐτῶν τὸν διορισμόν του, συνοδεύων τὸ κίνημα μὲ τοὺς ἑξῆς μετριόφρονας λόγους: «Ὅποιος, παιδιά, εἶναι ἄξιος, πέρνει αὔριο τὸ δίπλωμά του μπροστὰ 'ς τὸν ἐχθρό». Ἤδη ὁ ἐν Ἠπείρῳ συναθροισθεὶς στρατὸς τοῦ Μουσταῆ πασᾶ τῆς Σκόδρας, ἀποτελούμενος ἐξ 8.000 ἐπιλέκτων Ἀλβανῶν, κατήρχετο πρὸς Ν. διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Ἀχελῴου καὶ εὑρίσκετο στρατοπεδευμένος παρὰ τὸ Καρπενήσιον, ὁ δὲ Μᾶρκος ἐπεχείρει μετὰ χαρᾶς τὴν ἐναντίον αὐτοῦ ἐκστρατείαν. Συμφώνως πρὸς τὸ πολεμικὸν σχέδιόν του, αὐτὸς μετὰ 350 πιστῶν καὶ ἐμπειροπολέμων Σουλιωτῶν θὰ ἐπετίθετο τὴν νύκτα τῆς 9 Αὐγούστου 1823 ἐκ τῆς πεδιάδος κατὰ τοῦ ἀνυπόπτου ἐχθροῦ, ἐνῷ οἱ λοιποὶ ἀρχη-

*Μᾶρκος Μπότσαρης.*

γοὶ θὰ κατήρχοντο ταυτοχρόνως ἐναντίον του ἀπὸ τῶν ἑκατέρωθεν ὀρέων. Κατὰ τὴν συμφωνηθεῖσαν ὅμως ὥραν οὐδεὶς ἄλλος ἐκ τῶν λοιπῶν ὁπλαρχηγῶν ἐφάνη ἐκτὸς τοῦ Κίτσου Τζαβέλλα, ὁ δὲ Μπότσαρης, ἀνυπομονῶν καὶ μὴ δυνάμενος ν' ἀναμένῃ, ἐπετέθη μόνος μετὰ τῶν ὀλίγων Σουλιωτῶν του ἐναντίον τοῦ ἐχθρικοῦ στρατοπέδου. Οἱ Τοῦρκοι καταληφθέντες ἀπαράσκευοι ἐγκατέλειψαν τὰς θέσεις των καὶ ἐτράπησαν εἰς φυγήν, ὀλίγοι δὲ μόνον παλαιοὶ ἐμπειροπόλεμοι σωματοφύλακες τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς προφυλακῆς Τζελαλεντὶν κατέφυγον ἐντὸς τῆς εἰς τὸ κέντρον τοῦ στρατοπέδου μάνδρας, ὅπου ἦτο καὶ ἡ σκηνὴ τοῦ πασᾶ. Ὁ Μπότσαρης, ἀφοῦ ἐξεδίω-

*Ὁ θάνατος τοῦ Μάρκου Μπότσαρη.*

ξε, μετὰ τῶν εὐαρίθμων ἀνδρῶν του, τοὺς ἐκτὸς τῆς μάνδρας, ἔσπευσε πρὸς αὐτήν, καίτοι ἐλαφρῶς ἤδη τραυματισμένος εἰς τὸν δεξιὸν βουβῶνα, ἀναρριχηθεὶς δὲ εἰς τὸ περίφραγμα ὕψωσε τὴν κεφαλὴν διὰ νὰ ἴδῃ κατὰ ποῖον τρόπον θὰ ἠδύνατο νὰ τὸ ὑπερπηδήσῃ. Τὴν στιγμὴν ὅμως ἐκείνην σφαῖρα τῶν ἐνεδρευόντων Τούρκων ἔπληξεν αὐτὸν εἰς τὸ μέτωπον, ἄνωθεν τοῦ δεξιοῦ ὀφθαλμοῦ, καὶ τὸν ἀφῆκεν ἄπνουν. Οἱ Σουλιῶται τότε διέκοψαν τὸν ἀγῶνα καὶ ἀπεκόμισαν τὸν νεκρὸν τοῦ ἀρχηγοῦ των καὶ τὰ πλούσια λάφυρα, χωρὶς νὰ ἐνοχληθῶσιν ὑπὸ τῶν ἐπτοημένων Τούρκων. Κατὰ τὴν νύκτα ταύτην 800 περίπου ἐφονεύθησαν ἐκ τῶν ἀνδρῶν τοῦ ἐχθρικοῦ στρατοῦ, ἀντ' αὐτῶν ὅμως ἡ Ἑλλὰς ἀπώλεσεν ἕνα ἐκ τῶν γενναιοτέρων καὶ χρησιμωτέρων ἀρχηγῶν της.

Ὁ νεκρὸς τοῦ Μάρκου Μπότσαρη μεταφερθεὶς ἐν μέσῳ γενικοῦ πένθους τῆς κυβερνήσεως καὶ σύμπαντος τοῦ ἑλληνικοῦ λαοῦ εἰς Μεσολόγγιον, ἐτάφη μετὰ μεγάλων τιμῶν ἔναντι τοῦ ναοῦ τῆς Παναγίας καὶ παρὰ τὸν ὁμώνυμον προμαχῶνα. Ὁ περίφημος Γάλλος γλύπτης Νταβὶντ ντ' Ἀνζὲ ἐλάξευσε διὰ τὴν διακόσμησιν τοῦ μνημείου του καλλιτεχνικὴν παράστασιν παιδίσκης, ἡ ὁποία, κατακεκλιμένη ἐπὶ πλακός, ἀναγινώσκει τὸ ἐπ' αὐτῆς χαραγμένον ὄνομα τοῦ ἥρωος. Τὸ ἔργον τοῦτο μεταφερθὲν ἐκ Μεσολογγίου φυλάσσεται πρὸς προστασίαν ἀπὸ τῆς φθορᾶς εἰς τὸ ἐν Ἀθήναις ἱστορικὸν καὶ ἐθνολογικὸν μουσεῖον, εἰς τὴν θέσιν του δὲ ἐτοποθετήθη γύψινον αὐτοῦ ὁμοίωμα. Διάφοροι ἐπίσης Ἕλληνες καὶ ξένοι καλλιτέχναι καὶ ποιηταὶ ἀπεικόνισαν καὶ ἔψαλαν τὴν σκηνὴν τοῦ ἡρωϊκοῦ θανάτου του.

Ὁ Μᾶρκος Μπότσαρης ὑπῆρξεν ἀληθῶς μία ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων μορφῶν τῆς ἐπαναστάσεως, συνδυάζων τὴν εὐγένειαν καὶ τὸν ἡρωϊσμὸν τοῦ ἀληθοῦς μαχητοῦ μετὰ τῆς ἀφιλοκερδείας, τῆς μετριοφροσύνης, τῆς ἐπιβολῆς καὶ τοῦ θάρρους, προσόντων τὰ ὁποῖα σπανίως ἀπαντῶνται συγκεντρωμένα εἰς ἓν καὶ τὸ αὐτὸ πρόσωπον. Δὲν εἶχε βεβαίως τὸ πολυμήχανον τοῦ Κολοκοτρώνη πνεῦμα, οὔτε τὴν στρατιωτικὴν ἰδιοφυΐαν καὶ τὸν μεγαλεπήβολον χαρακτῆρα τοῦ Καραϊσκάκη, ἡ ἀφοσίωσίς του ὅμως εἰς τὸν ἀγῶνα, ἡ πειθαρχία καὶ ἡ προσωπικὴ ἀνδρεία του τάσσουσιν αὐτὸν εἰς ἴσην μοῖραν μετὰ τῶν μεγάλων τούτων ἐργατῶν τῆς ἑλληνικῆς ἐλευθερίας. Χ. Δ.

— **Μπότσαρης, *Μᾶρκος*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ (1834—1900). Προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου τῶν Εὐελπίδων, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου, διατελέσας ἐπὶ σειρὰν ἐτῶν ὑποδιοικητὴς τοῦ σχολείου Εὐελπίδων καὶ εἶτα ἐπιθεωρητὴς τοῦ μηχανικοῦ. Μετέσχε τοῦ Ἑλληνοτουρκικοῦ πολέμου 1897, ἀνήκων εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ στρατοῦ Ἠπείρου. Ν. Θ. Κ.

—**Μπότσαρης, *Μᾶρκος*.** Ἀξιωματικὸς τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ Κώστα Μπότσαρη, γεννηθεὶς τῷ 1836. Παιδίον ἔτι ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ὄθωνος εἰς Ἀγγλίαν καὶ ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὴν ἐκεῖ ναυτικὴν σχολὴν κατετάχθη ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὸ ἀγγλικὸν ναυτικόν, ὡς τοιοῦτος δ' ἐξετέλεσε δὶς τὸν γῦρον τοῦ κόσμου. Κατ' ἀρχὰς διετέλεσεν οἰκονομικὸς ἀξιωματικός, εἶτα δὲ μετετάχθη εἰς τὸ μάχιμον σῶμα (1858). Ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς ἐν Κρήτῃ ἐπαναστάσεως 1866, κατῆλθεν εἰς Ἑλλάδα καὶ μετέβη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του, στρατηγοῦ Κίτσου Μπότσαρη εἰς τὴν ἀγωνιζομένην νῆσον, ὅπου διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν του, τραυματισθεὶς εἰς τὴν περὶ τὸν Ὁμαλὸν μάχην. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ ἀγῶνος ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως Τρικούπη εἰς Σαὶν-Ναζαὶρ πρὸς παρακολούθησιν τῆς ναυπηγήσεως τοῦ θωρηκτοῦ «Ὕδρα», οὗτινος ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος κυβερνήτης. Προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ πλοιάρχου, ἀπέθανε τῷ 1894, ὅτε διετέλει ἀρχηγὸς τοῦ ἐν Πόρῳ κεντρικοῦ προγυμναστηρίου. Σ. Ε. Λ.—Ν. ΚΛΣ

— **Μπότσαρης, *Νάσος*.** Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Παιδίον ἔτι ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ὄθωνος εἰς Ρωσίαν, ἔνθα ἐξεπαιδεύθη εἰς τὴν ἐν Πετρουπόλει στρατιωτικὴν σχολὴν καὶ εἶτα κατετάχθη ὡς ἀνθυπολοχαγὸς εἰς τὸν ρωσικὸν στρατόν. Τῷ 1866, ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς κρητικῆς ἐπαναστάσεως, κατῆλθεν εἰς Ἑλλάδα καὶ μεταβὰς μετὰ τῶν ἀδελφῶν του εἰς Κρήτην παρέμεινεν ἐκεῖ μέχρι τοῦ τέρματος τοῦ ἀγῶνος, συμμετασχὼν εἰς πολλὰς μάχας καὶ διακριθεὶς διὰ τὴν ἀνδρείαν του. Μετὰ τὴν ἐκεῖθεν ἐπάνοδόν του κατετάχθη εἰς τὸν ἑλληνικὸν στρατὸν ὡς ἀνθυπολογαγός. Προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου καὶ ἀπέθανεν ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1902, διατελῶν διοικητὴς τοῦ 10ου συντάγματος. Ν. ΚΛΣ

— **Μπότσαρης, *Νίκηξας*** (*Νικόλαος*). Ἐξάδελφος, συμπολεμιστὴς καὶ ἀφωσιωμένος τοῦ *Νότη Μπότσαρη*, γεννηθεὶς εἰς τὸ Σούλι τῷ 1763. Διέπρεψε κατὰ τὰς περιόδους 1792 καὶ 1804, ἔπεσε δὲ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σέλτσου (1804).

— **Μπότσαρης, *Νικόλαος*** (τοῦ *Κίτσου*). Ἑτεροθαλὴς ἀδελφὸς τοῦ Μάρκου καὶ Κώστα Μπότσαρη, πολεμήσας μετ' αὐτῶν κατὰ τὸν Ἀγῶνα καὶ τῷ 1854 εἰς τὴν Ἤπειρον.

—**Μπότσαρης, *Νότης*** (*Παναγιώτης*). Ὑστερότοκος υἱὸς τοῦ *Γιώργη Μπότσαρη*, ἀναλαβὼν τὴν ἀρχηγίαν τῆς φάρας μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ ἀδελφοῦ του Κίτσου, εἷς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τοῦ Ἱεροῦ Ἀγῶνος, ἐπιζήσας καὶ μετ' αὐτόν. Ἐγεννήθη τῷ 1759 καὶ ἐπολέμησε μετὰ τοῦ πάππου του, τοῦ πατρός του καὶ τῶν πρεσβυτέρων ἀδελφῶν του, διεκρίθη δὲ διὰ τὸν μεγάλον ἡρωϊσμόν του εἰς τὴν τραγῳδίαν τοῦ Σέλτσου τῷ 1805, ὁπότε τόσοι Μποτσαραῖοι εὗρον ἔνδοξον τέλος. Ὁ Νότης,

Digitized by Google

ἀφοῦ εἶδε πίπτουσαν τὴν ἡρωϊκὴν σύζυγόν του Ἑλένην, ἐτραυματίσθη βαρέως, ζωγρηθεὶς δὲ ἐστάλη εἰς τὰ Ἰωάννινα, ἐκλείσθη εἰς τὸ φρούριον τῆς Κλεισούρας καὶ ἐκεῖ ἐσήπετο, ὅταν, χάρις εἰς καλοὺς καὶ πιστοὺς συντρόφους τοῦ παλαιοῦ καιροῦ, κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ τῷ 1806. Σπεύσας εἰς τὴν Θεσσαλίαν, καθ' ἣν ἐποχὴν οἱ ἁρματολοὶ τοῦ Ὀλύμπου ἠγωνίζοντο ἐναντίον τοῦ Βελῆ πασᾶ, ἐπολέμησεν ἡρωϊκώτατα ἐπὶ διετίαν, κατόπιν δὲ τῆς συνθήκης τοῦ Τιλσίτ, ὅταν ἐγκατελείφθη ὁ ἀγὼν καὶ συνετρίβησαν ὑπὸ τῶν ὀρδῶν τοῦ σατράπου τὰ λείψανα τῆς δρακὸς τῶν Ὀλυμπιτῶν ἀνδρείων, ὁ Νότης, μετὰ περιπετείας πολλάς, κατώρθωσε νὰ φθάσῃ εἰς Κέρκυραν, ὅπου καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὰ ἠπειρωτικὰ τάγματα. Πρεσβύτερος ὢν τῆς οἰκογενείας, διετέλει ἀρχηγὸς αὐτῆς ὅταν ἤρχισεν ὁ ἀγὼν τοῦ σουλτάνου Μαχμοὺτ ἐναντίον τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, τεθεὶς δὲ τότε ἐπὶ κεφαλῆς Σουλιωτῶν ἠγωνίσθη, ἀναλόγως τῶν ἀναγκῶν τῆς πατρίδος του, πότε ὑπὲρ τοῦ Ἀλῆ καὶ πότε ἐναντίον αὐτοῦ, τὸ συμφέρον τοῦ Σουλίου καὶ μόνον ἔχων ὑπ' ὄψιν. Τὰ γεγονότα τῆς περιόδου ταύτης διεξήχθησαν ὡς ἑξῆς: Ὁ Νότης, στρατολογήσας ὅσους ἠδυνήθη Σουλιώτας εἰς Κέρκυραν, διεπεραιώθη μετὰ τοῦ ἀνεψιοῦ του Μάρκου Μπότσαρη εἰς Πάργαν καὶ ἐκεῖθεν κατηυθύνθη εἰς Πρέβεζαν, ὅπου τὰ στρατεύματα τοῦ Ἀλῆ, ὑπὸ τὸν υἱόν του Βελῆν, ἐπολιορκοῦντο ὑπὸ τῶν σουλτανικῶν στρατευμάτων, τελούντων ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Πάσσο-Ἰσμαὴλ πασᾶ. Ἅμα τῇ προσεγγίσει τῶν Σουλιωτῶν, οἱ πολιορκούμενοι, οἱ ὁποῖοι μέχρι τῆς στιγμῆς ἐκείνης ἀνθίσταντο, παρεδόθησαν. Ἡ

*Νότης Μπότσαρης.*

Ὑψηλὴ Πύλη προέβη τότε εἰς διαπραγματεύσεις πρὸς τὸν Νότην, ζητήσασα τὴν ἐπικουρίαν τῶν Σουλιωτῶν διὰ τὴν συντριβὴν τοῦ Ἀλῆ. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Πρεβέζης, ὁ Νότης ἔσπευσε πρὸς τὰ Ἰωάννινα καὶ ἀπέκλεισε τὸν Ἀλῆν. Ἐπειδὴ ὅμως ἐν τῷ μεταξὺ οἱ σουλτανικοὶ δὲν ἐτήρησαν τὰ ὑπεσχημένα πρὸς τοὺς Σουλιώτας, ὁ Νότης κατώρθωσε νὰ ἔλθῃ εἰς ἐπαφὴν μὲ τὸν Ἀλῆν, μετὰ τοῦ ὁποίου συνεμάχησε κατὰ τῶν σουλτανικῶν. Οἱ Σουλιῶται κατώρθωσαν τότε ν' ἀφαιρέσουν ἀπὸ τοὺς Τούρκους τοὺς Βαρνάδες καὶ ἀκολούθως τὴν Κιάφαν καὶ τὸ Σούλι, ὅπου καὶ κατέφυγον μετὰ τὴν συντριβὴν τοῦ Ἀλῆ. Ἐκεῖ ἐπῆλθον ἐναντίον των, ὑπὸ τὸν μετέπειτα τόσον δράσαντα Κιουταχῆν, τὰ σουλτανικὰ στρατεύματα, ἐνισχυθέντα ἐν τῷ μεταξύ. Οἱ Σουλιῶται, ὑπὸ τὴν γενικὴν ἀρχηγίαν τοῦ Νότη, ἐκλείσθησαν εἰς τὰ φραύρια Κιάφας καὶ Κουγγίου, ὁπόθεν ἐπανειλημμένας ἐπιθέσεις τῶν Τούρκων ἀπέκρουσαν μετὰ πολλῶν δι' ἐκείνους ἀπωλειῶν, ἀπέστειλαν δὲ τὸν Μᾶρκον Μπότσαρην εἰς τὴν ἐπαναστατημένην ἤδη Ἑλλάδα, ὅπως ζητήσῃ συνδρομὴν παρὰ τῆς Ἑλληνικῆς Κυβερνήσεως. Ἡ πολιορκία ὅμως ἐξηκολούθει, μόνον δὲ μετὰ τὴν καταστροφήν, ἥτις ἐπῆλθεν εἰς τὰς μάχας τοῦ Πέτα καὶ τῆς Σπλάντζας, περὶ τὰ μέσα τοῦ 1822, οἱ Τοῦρκοι ἐπρότειναν εἰς τὸν Νότην νὰ παραδώσῃ τὸ Σούλι. Ὁ ἀρχηγὸς τῶν Σουλιωτῶν, μὴ ἀναμένων πλέον οὐδαμόθεν βοήθειαν καὶ ἐξαντλήσας τὰ πυρομαχικὰ καὶ τὰ τρόφιμα, ἠναγκάσθη νὰ δεχθῇ τὴν συνθήκην, ἀφοῦ ὅμως ἔλαβε πρόνοιαν, ὥστε νὰ μὴ πάθῃ τις ἐκ μέρους τῶν Τούρκων. Διαπεραιωθεὶς εἶτα εἰς τὴν Ἑπτάνησον μετὰ πολλῶν ἐκ τῶν Σουλιωτῶν, κατῆλθεν ὀλίγον κατόπιν εἰς Μεσολόγγιον, ὅπου διέπρεψε καθ' ὅλας τὰς πολιορκίας, ἀρχηγὸς δὲ ὢν κατὰ τὴν τελευταίαν, ἐπολέμησεν ὡς λέων καὶ ἐν τέλει ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς μιᾶς τῶν φαλάγγων κατὰ τὴν ἡρωϊκὴν Ἔξοδον. Βραδύτερον ἐπολέμησεν εἰς Δίστομον καὶ ἐκεῖ ἐπληγώθη βαρέως. Τέλος εἰς τὴν Ναύπακτον διεκρίθη διὰ τὴν στρατηγικότητά του καὶ διότι εἰς αὐτὸν κυρίως ὀφείλεται ἡ ἀπόφασις τῶν πολιορκουμένων Τούρκων ὅπως παραδώσουν τὸ ὀχυρώτατον ἐκεῖνο φρούριον. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν, ἐτάχθη εἰς τοὺς ἀνωτέρους φαλαγγίτας, ἐτιμήθη μὲ τὸ παράσημον τοῦ Σωτῆρος καὶ ἀπέθανεν ὀγδοηκοντούτης περίπου τῷ 1841 εἰς Ναύπακτον. Γ. Δ. Κ.

—**Μπότσαρης, *Νότης*** (*Τιμολέων*). Ἐγεννήθη τῷ 1815 ἐν Κερκύρᾳ. Σπουδάσας τὰ στρατιωτικὰ ἐν τῇ καποδιστριακῇ σχολῇ Αἰγίνης, ἐξῆλθεν ἀνθυπασπιστὴς τοῦ μηχανικοῦ καὶ προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου. Δὶς διετέλεσεν ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν (1874, 1851).

—**Μπότσαρης, *Σάββας***. Ἕλλην γλύπτης. Ἐγεννήθη τῷ 1894 ἐν Σερβίᾳ καὶ ἐσπούδασε τὴν τέχνην ἐν Νεαπόλει καὶ Παρισίοις. Τῷ 1929 ἐξέθεσε γλυπτά του ἐν Λονδίνῳ.

—**Μπότσαρης, *Τιμολέων***. Ἐγεννήθη τῷ 1848 καὶ ἀπεβίωσε τῷ 1929. Ἔγγονος τοῦ *Νότη Μπότσαρη* καὶ υἱὸς τοῦ Δημητρίου, διετέλεσεν ἀνώτερος ἀξιωματικός, πολιτευτὴς Ἠπείρου, κατ' ἐπανάληψιν ἐκλεγεὶς βουλευτὴς Ἰωαννίνων.

—**Μπότσαρης, *Τούσιας*** (*Ἀθανάσιος*). Πρωτότοκος υἱὸς τοῦ *Γιώργη Μπότσαρη*, γεννηθεὶς τῷ 1750. Οὗτος νεώτατος εἶχε μεταβῆ μετ' ἄλλων ὁπλαρχηγῶν εἰς Πετρούπολιν πρὸς τὴν αὐτοκράτειραν Αἰκατερίνην τὴν Β', παρ' ἧς ἔλαβε πολλὰ δῶρα καὶ τὴν περίφημον σημαίαν, ἥτις ἐχρησιμοποιήθη ὡς «μπαϊράκι» τῶν Μποτσαραίων μέχρι πέρατος τοῦ Ἱεροῦ Ἀγῶνος. Ἠτύχησεν ὅμως εἰς τὰ πρῶτα βήματα τῆς ἀρχηγίας του, καὶ ἀπὸ φιλοτιμίαν παρέσυρε τὴν φάραν του εἰς θηριώδη κατὰ τῶν Τζαπαραίων πάλην, εἰς ἣν καὶ ἔπεσε μαχόμενος τῷ 1792, μεθ' ὃ τὴν ἀρχὴν τῆς οἰκογενείας ἔλαβε, ζῶντος εἰσέτι τοῦ πατρός του Γιώργη Μπότσαρη, ὁ δευτερότοκος *Κῖτσος* (βλ. ἀνωτ.).

—**Μπότσαρης, *Τούσιας*** (*Ἀθανάσιος*). Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς δύο μῆνας μετὰ τὸν θάνατόν του, δι' ὃ καὶ ἐκλήθη, ὡς ὁ πατήρ, Τούσιας. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἀνδρειοτάτων Σουλιωτῶν καὶ διεκρίθη εἰς ὅλας τὰς περιστάσεις. Ὑπαρχηγὸς τοῦ σώματος, ὅπερ διῴκει ὁ ἐξάδελφός του Μᾶρκος Κίτσου Μπότσαρης, ἐπολέμησε μετ' αὐτοῦ εἰς τὸ Σούλι, εἰς τὴν Δυτικὴν Ἑλλάδα καὶ μάλιστα κατὰ τὴν τραγικὴν περιπέτειαν τοῦ Καρπενησίου. Λαβὼν μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου, διέπρεψεν εἰς τὰς ἀπὸ τῶν ἐπάλξεων μάχας, ἀκολουθήσας δὲ τὸν Καραϊσκάκην εἰς Ναύπλιον καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἀττικῆς, ἔπεσε μαχόμενος εἰς τὸ Φάληρον. Ὑπῆρξε τόσος ὁ θαυμασμὸς τοῦ στρατηγοῦ Τσοὺρτς καὶ τοῦ ναυάρχου Κόχραν πρὸς τὸν νέον Τούσιαν, ὥστε διέταξαν καὶ ἐτάφη εἰς Σαλαμῖνα παρὰ τὴν σορὸν τοῦ Καραϊσκάκη. Γ. Δ. Κ.

—**Μπότσαρης, *Χρῖστος*·** βλ. *Μπότσαρης, Κῖτσος*.

**Μπότσαρι *Ἀλποχώρι*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων (βλ. λ. *Ἀλποχώρι* Βότσαρι).

**μποτσάρισμα** (τὸ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἔχμασις*.

**μποτσάρω** *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἐχμάζω*.

**Μποτσέλλι** (Bozzelli), ***Φραγκῖσκος-Παῦλος***. Ἰταλὸς πολιτικός, δημοσιογράφος καὶ συγγραφεὺς (1786—1864). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Νεαπόλει, ὅπου ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικήν, κηρυχθεὶς ὑπὲρ τῶν φιλελευθέρων ἰδεῶν. Ἐκλεγεὶς βουλευτὴς τῷ 1820, ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐπαναστατικὰς κινήσεις τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ὁπότε συλληφθεὶς ἐφυλακίσθη, ἐξορισθεὶς δὲ κατόπιν τῷ 1822 ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1837. Ἐπιστρέψας εἰς Νεάπολιν συνελήφθη καὶ πάλιν καὶ ἐρρίφθη εἰς τὰς φυλακὰς διὰ τὰς ἐπαναστατικάς του ἰδέας, τῷ 1844. Ἀποφυλακισθείς, ἀνέλαβε τὴν προεδρίαν μυστικῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις παρεσκεύαζε γενικὴν ἐπανάστασιν καθ' ἅπασαν τὴν Ἰταλίαν. Ὅταν ὅμως τῷ 1848 ὁ Φερδινάνδος Β', μεταβαλὼν πολιτικήν, ἠναγκάσθη νὰ χορηγήσῃ εἰς τὸν λαὸν συνταγματικὰς ἐλευθερίας, ὁ Μποτσέλλι ἐγένετο μέλος τῆς νέας κυβερνήσεως, λαβὼν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν, καὶ συνέταξε τὸν πρῶτον ἰταλικὸν καταστατικὸν χάρτην, ὁ ὁποῖος ἐδημοσιεύθη τῇ 10 Φεβρουαρίου 1848. Βραδύτερον ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Παιδείας, ἀλλ' ἀντιταχθεὶς εἰς τοὺς φιλελευθέρους τῶν ἄκρων ἠναγκάσθη νὰ ἀποσυρθῇ τῆς πολιτικῆς. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα ἐπὶ τοῦ διεθνοῦς δικαίου, ἐπὶ τῆς αἰσθητικῆς, ἐπὶ τῆς φιλοσοφίας καὶ ἐπὶ τῆς φιλολογίας, σχεδὸν πάντα εἰς γαλλικὴν γλῶσσαν, καθὼς καί τινα ποιήματα. Μεταξὺ τούτων εἶναι: «Δοκίμιον ἐπὶ τῶν βασικῶν ἀρχῶν τῶν συνδεουσῶν τὴν φιλοσοφίαν καὶ τὴν ἠθικήν» (1825), «Περὶ τῆς ἐπιδράσεως τῶν κοινωνικῶν δυνάμεων ἐπὶ τῶν διαφόρων εἰδῶν πολιτευμάτων» (1825), «Περὶ τοῦ πνεύματος τῆς κωμῳδίας καὶ τῆς ἀνεπαρκείας τοῦ γελοίου πρὸς διόρθωσιν τῶν κακῶς κειμένων καὶ τῶν χαρακτήρων» (1832), «Ἡ μίμησις τῆς τραγῳδίας παρὰ τοῖς ἀρχαίοις καὶ τοῖς νεωτέροις» (1838), κτλ. Μ. Δ. Β.

**μποτσέλο** (τὸ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἐχμάτιον*.

**Μπότσεν,** καὶ ***Μπότζεν*** (Bozen) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ ὀνομασία τῆς ἰταλικῆς πόλεως *Μπολτσάνο* (βλ. λ.).

**Μπότσι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Μεγαλόχαρις* (βλ. λ.).

**Μπότσικα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Μετωνομάσθη εἰς *Ἀηδόνια*. Κάτ. (1926) 275. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Γαλατᾶ*. Χ. Δ.

**Μπότσικας, *Δῆμος***. Ἀγωνιστὴς γεννηθεὶς ἐν Λαγκαδίοις τῆς Γορτυνίας κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Οὗτος, ὅτε οἱ Τοῦρκοι ἀφήρεσαν τὴν Πελοπόννησον ἀπὸ τῶν Βενετῶν (1715), ἐπὶ κεφαλῆς 300 παλληκαρίων ἀντέστη ἐν Λιμποβίτσαν, Ἀρκουδόρρεμα, Ἁλωνίσταιναν καὶ Δάρα, ὅπου ἔπεσαν οἱ ἄνδρες πλὴν αὐτοῦ, καταστάντος προπάππου τοῦ Θεοδώρου Κολοκοτρώνη. Τ. Ε. Ε.

**Μποτσίφαρι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Μοναστήρι* (βλ. λ.).

**Μπότσκαϋ** (Bocskay), ***Στέφανος***. Οὖγγρος στρατιωτικὸς (1556—1606). Ἀνατραφεὶς εἰς τὴν αὐλὴν τῶν Μπατόρυ, διεκρίθη εἰς τὰς ἐναντίον τῶν Αὐστριακῶν ἐκστρατείας καὶ συνωμολόγησε τὴν εἰρήνην μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος Ρουδόλφου. Τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τῆς οὐγγρικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1604 ἐνίκησεν ἐπανειλημμένως τοὺς Αὐστριακοὺς καὶ ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος ἐν τῇ διαίτῃ τῆς Σερέγκς. Ὁ σουλτᾶνος Ἀχμὲτ ὁ Α' ὑπεστήριξε τὸν Μπότσκαϋ ἐναντίον τοῦ Αὐστριακοῦ αὐτοκράτορος, ὅστις τέλος ἠναγκάσθη νὰ συνθηκολογήσῃ μετ' αὐτοῦ. Ἀποτέλεσμα τῆς συνθηκολογήσεως ταύτης ὑπῆρξεν ἡ εἰρήνη τῆς Βιέννης (1606). Α. Δ.

**Μπότσολο** (Bozzolo), ***σημεῖον τοῦ—***. Οὕτω καθορίζεται σημεῖόν τι ἐξωτερικόν, ἀπαντῶν εἴς τινας περιπτώσεις ἀνευρύσματος τῆς θωρακικῆς ἀορτῆς καὶ συνιστάμενον εἰς σφύξεις ὁρατὰς εἰς τὰ πτερύγια τῶν ρωθώνων τῆς ρινός. Μ. Ν. Κ.

**μπότσος** (ὁ)· *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *ἔχμα*.

**μπόττα** (ἡ)· βλ. λ. *μπότα*.

**Μπόττα** (Botta), ***Κάρολος***. Ἰταλὸς ἱστορικός, πολιτικὸς καὶ ἰατρὸς (1766—1837). Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ ἰατρικὴν ἐν Τουρίνῳ καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἐνθουσιωδεστέρων ὀπαδῶν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, γενόμενος ἀρχηγὸς τοῦ φιλογαλλικοῦ κόμματος ἐν Πεδεμοντίῳ. Συλληφθεὶς καὶ βασανισθεὶς κατὰ διαταγὴν τοῦ βασιλέως τοῦ Πεδεμεντίου, παρέμεινεν εἰς τὰς φυλακὰς ἀπὸ τοῦ 1792 μέχρι τοῦ 1794, ὁπότε ἀπελευθερωθεὶς μετέβη εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του ὡς στρατιωτικὸς ἰατρός, προσκεκολλημένος εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν τῶν Ἄλπεων. Τῷ 1797 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν, τὴν ὁποίαν διωργάνωσεν ὁ Βοναπάρτης εἰς τὰς Ἰονίους νήσους, καὶ τῷ 1799 διωρίσθη μέλος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως τοῦ Πεδεμοντίου. Μετὰ τὴν προσάρτησιν τῆς χώρας ταύτης εἰς τὴν Γαλλίαν, ἀντεπροσώπευσεν αὐτὴν εἰς τὴν γαλλικὴν βουλὴν ἐν Παρισίοις. Βραδύτερον, ἐπὶ τῆς πρώτης παλινορθώσεως τῶν Βουρβώνων, διωρίσθη πρύτανις τῆς Ἀκαδημίας τῆς Νανσὺ καὶ κατόπιν τῆς Ρουένης. Ἔγραψε διάφορα ἔργα γαλλιστὶ καὶ ἰταλιστί, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Αἱ φυσικαὶ καλλοναὶ καὶ τὸ θαυμάσιον κλῖμα τῆς Κερκύρας» (1797), «Περιγραφὴ τῆς νήσου Κερκύρας» (1799), «Ἀναμνήσεις ταξιδίου εἰς τὴν Δαλματίαν» (1802), «Ἱστορικὸν δοκίμιον τοῦ οἴκου τῆς Σαβοΐας» (1803) κτλ. Τὸ κυριώτερον ὅμως αὐτοῦ ἔργον, ὅπερ θεωρεῖται μεταξὺ τῶν ὀνομαστοτέρων εἰς τὸ εἶδός του, εἶναι ἡ περίφημος «Ἱστορία τοῦ πολέμου τῆς ἀνεξαρτησίας τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς» (1809), μεταφρασθεῖσα εἰς πολλὰς γλώσσας. Ἄλλο ἐπίσης ἀξιόλογον ἔργον του, βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῆς Κρούσκας, εἶναι ἡ «Ἱστορία τῆς Ἰταλίας ἀπὸ τοῦ 1789 μέχρι τοῦ 1814» (1824), εἰς 10 τόμους. Ὡσαύτως ἔγραψεν «Ἱστορίαν τῆς Ἰταλίας ἐν συνεχείᾳ τῆς τοῦ Γκουϊτσιαρντίνι μέχρι τοῦ 1789» (1832, εἰς 10 τόμους). Μεταξὺ τῶν φιλολογικῶν του ἔργων εἶναι τὸ ἐπικὸν ποίημα «Ὁ Κάμιλλος ἢ ἅλωσις τῶν Βηΐων» (1816).

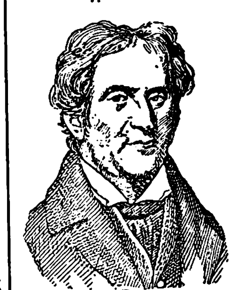

*Κάρολος Μπόττα.*

— **Μπόττα** (Botta), ***Παῦλος-Αἰμίλιος***. Ἰταλὸς ἰατρός, περιηγητὴς καὶ ἀρχαιολόγος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1862—1870). Κατὰ τὴν νεότητά του ἐξετέλεσε περιήγησιν ἀνὰ τὸν κόσμον, παραμείνας ἐπὶ πολὺ εἰς τὰς δυτικὰς ἀκτὰς τῆς Ἀμερικῆς, ὁπόθεν ἀπεκόμισε πολυτίμους συλλογὰς φυσικῆς ἱστορίας. Τῷ 1830 μετέβη εἰς τὴν Αἴγυπτον καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη ὡς ἰατρός, λαβὼν μέρος ἐν τῇ ἐκστρα-

Digitized by Google

τείᾳ ἐξ Αἰγύπτου εἰς Σεναὰρ καὶ ἐπανελθὼν εἰς Κάϊρον τῷ 1833 μετὰ πολυτίμου ζῳολογικῆς συλλογῆς. Ἀποκτήσας τὴν γαλλικὴν ἰθαγένειαν, λόγῳ τῶν ὑπηρεσιῶν τοῦ πατρός του πρὸς τὴν Γαλλίαν, διωρίσθη κατόπιν πρόξενος τῆς Γαλλίας εἰς Ἀλεξάνδρειαν, ὁπότε ἐταξίδευσεν εἰς Ἀραβίαν, ἐκδώσας τὰ πορίσματα τοῦ ταξιδίου του τούτου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀφήγησις περιηγήσεως εἰς τὴν Ὑεμένην, γενομένης τῷ 1837 πρὸς πλουτισμὸν τοῦ μουσείου φυσικῆς ἱστορίας τῶν Παρισίων» (1841). Κατόπιν ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις, τῇ ὑποδείξει τοῦ ἀνατολιστοῦ Ἰουλίου Μόλ, ἀπέστειλεν αὐτὸν τῷ 1842 ὡς πρόξενον εἰς Μοσούλην, μὲ τὴν μυστικὴν ἐντολὴν ἐνεργείας ἀνασκαφῶν εἰς τὰ ἐρείπια τῆς Νινευΐ, ὅπου ἀνεκάλυψε σπουδαιότατα εὑρήματα, ἀφήσαντα ἐποχὴν εἰς τὰ ἀρχαιολογικὰ χρονικά. Τῷ 1843 ἐνήργησεν ἀνασκαφὰς καὶ εἰς τὰ ἀσσυριακὰ ἐρείπια τῆς Κοχρσαμπάντ, παρὰ τὸν Τίγρητα ποταμόν, καὶ ἀπὸ τοῦ 1847—1850 ἐδημοσίευσε τὰ ἀποτελέσματα τῶν ἀνασκαφῶν του εἰς βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Μνημεῖα τῆς Νινευΐ, ἀνακαλυφθέντα καὶ περιγραφέντα ὑπὸ τοῦ Μπόττα, καταμετρηθέντα καὶ σχεδιασθέντα ὑπὸ τοῦ Φλαντρέν». Ἐπίσης ἐδημοσίευσε τῷ 1848 τὸ βιβλίον «Ἐπιγραφαὶ ἀνακαλυφθεῖσαι ἐν Κοχρσαμπάντ» καὶ «Ὑπομνήματα ἀσσυριακῆς γραφῆς». Τῷ 1846 διωρίσθη πρόξενος εἰς τὴν Ἱερουσαλήμ, τῷ 1857 εἰς τὴν Τρίπολιν καὶ τῷ 1868 ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Γαλλίαν. Αἱ ἀνακαλύψεις τοῦ Μπόττα συνέβαλον μεγάλως εἰς τὴν μελέτην τῆς ἀρχαιολογίας, ἕνεκα τῶν λίαν ἐνδιαφερόντων στοιχείων, τὰ ὁποῖα προσέθεσαν εἰς τὰς ὑπαρχούσας γνώσεις περὶ τῶν ἀρχαίων ἀνατολικῶν πολιτισμῶν. Χάρις δὲ εἰς αὐτὸν κατωρθώθη νὰ ἀναγνωσθοῦν ἐπιστημονικῶς αἱ σφηνοειδεῖς γραφαί, αἵτινες ἐπέτρεψαν νὰ γίνουν καταληπτὰ διάφορα πολύτιμα ἱστορικὰ καὶ φιλολογικὰ μνημεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μπόττεγκο** (Bottego), ***Βίκτωρ.*** Ἰταλὸς στρατιωτικὸς καὶ ἐξερευνητὴς (1861—1897). Ὑπηρέτησεν ὡς ἀξιωματικὸς εἰς τὸν ἰταλικὸν στρατὸν τῆς Ἐρυθραίας, ὅπου ἐξετέλεσε τῷ 1891 πολλὰ ἐξερευνητικὰ ταξίδια εἰς Ντανακὶλ καὶ διέδραμε τὸν ἄνω ροῦν τοῦ ποταμοῦ Τζιούμπα. Τῷ 1895 ἐξετέλεσε νέον ἐξερευνητικὸν ταξίδιον μέχρι Μπαράβα, φθάσας εἰς τὴν λίμνην Παγκαντί, ἣν μετωνόμασεν εἰς λίμνην τῆς «Βασιλίσσης Μαργαρίτας», ἀνακαλύψας τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ὂμ ἐντὸς τῆς λίμνης τοῦ Ροδόλφου καὶ ἐξερευνήσας τὰς πηγὰς τοῦ Σόμπατ. Παρὰ τὸν διαχωρισμὸν ὅμως τῶν ποταμῶν Σόμπατ καὶ Κυανοῦ Νείλου, πλησίον τοῦ Γκόμπο, προσεβλήθη ὑπὸ τῶν Σομαλὶ καὶ ἐφονεύθη μετὰ πολλῶν ἐκ τῶν συντρόφων του. Δύο ἀξιωματικοὶ τῆς ἀποστολῆς, ἐπιζήσαντες καὶ διασώσαντες τὸ χειρόγραφον ἡμερολόγιον τοῦ Μπόττεγκο, ἐδημοσίευσαν αὐτὸ τῷ 1895 ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ταξίδια ἀνακαλύψεων εἰς τὴν καρδίαν τῆς Ἀφρικῆς: ἡ ἐξερεύνησις τοῦ Τζιούμπα». Μ. Δ. Β.

**Μποττεζίνι** (Bottesini), ***Ἰωάννης.*** Διάσημος Ἰταλὸς δεξιοτέχνης καὶ συνθέτης (1821—1889). Ἀπόφοιτος τοῦ Ὠδείου τοῦ Μιλάνου, τάχιστα ἀπέκτησε παγκόσμιον φήμην ὡς δεξιοτέχνης τοῦ βαθυχόρδου, εἶτα δὲ καὶ ὡς διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν Χαβάνᾳ, Παρισίοις, Παλέρμῳ, Βαρκελώνῃ, Φλωρεντίᾳ (ἔνθα ἵδρυσε τὴν «Ἑταιρείαν τοῦ κουαρτέττου»), Λονδίνῳ κλπ. Ἀπέθανεν ἐν Πάρμᾳ ὡς διευθυντὴς τοῦ αὐτόθι ᾠδείου. Ὁ Μποττεζίνι διεκρίθη καὶ ὡς δραματικὸς συνθέτης διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Ἡρὼ καὶ Λέανδρος» (Τουρῖνον 1879), «Ἡ βασίλισσα τοῦ Νεπὰλ» (1880), «Χριστόφορος Κολόμβος», «Ἡ πολιορκία τῆς Φλωρεντίας», «Μαριὸν Ντελὸρμ» κτλ. Εἰς αὐτὸν εἶχεν ἐπίσης ἐμπιστευθῆ ὁ Βέρντι τὴν κατὰ τὸ 1871 ἀναβίβασιν ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ χεδιβικοῦ θεάτρου τοῦ Καΐρου τοῦ μελοδράματος «Ἀϊδᾶ». Ὁ Μποττεζίνι ἔγραψε καὶ μίαν «Μέθοδον» καὶ τεμάχια διὰ βαθύχορδον, κουαρτέττα, τὸ ὀρατόριον «Γεθσημανῆ» κτλ. Γ. Σ.

**Μποττὲν** (Bottin), ***Σεβαστιανός.*** Γάλλος συγγραφεὺς καὶ ἐκδότης (1764—1853). Κατ᾽ ἀρχὰς εἶχε περιβληθῆ τὸ ἐκκλησιαστικὸν σχῆμα, γενόμενος ἱερεύς. Ἐγκατέλιπεν ὅμως κατόπιν τὸ στάδιον τοῦτο καὶ ἐγένετο γενικὸς γραμματεὺς τοῦ νομοῦ τοῦ Βορρᾶ καὶ κατόπιν βουλευτὴς κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Ἑκατονθημέρου. Ἐγένετο κυρίως γνωστὸς ἐκ τοῦ παγκοσμίου φήμης ἐμπορικοῦ ὁδηγοῦ, τοῦ γνωστοῦ ὑπὸ τὸν συνοπτικὸν τίτλον «Ντιντὸ-Μποττὲν» (Didot-Bottin). Ὁ ὁδηγὸς οὗτος ἱδρύθη τῷ 1797 ὑπὸ τοῦ Ἰ. ντὲ Λατυμὰ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Almanach du commerce de Paris, des départements et de l'étranger» καὶ ἐσυνεχίσθη ὑπὸ τοῦ Μποττὲν ὑπὸ τὸν τίτλον «Almanach Bottin» ἀπὸ τοῦ 1819 μέχρι τοῦ 1838, ὁπότε παρεχωρήθη εἰς τὸν ἐκδοτικὸν οἶκον Φιρμὲν-Ντιντό, ὁ ὁποῖος ἐξέδιδε τὸ «Annuaire général de Commerce». Οἱ νέοι ἰδιοκτῆται συνεχώνευσαν τῷ 1857 τὰς δύο ἐκδόσεις εἰς μίαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Annuaire—Almanach du commerce et de l'industrie (Didot-Bottin)». Τῷ 1882 ἡ ἔκδοσις αὕτη ἠγοράσθη ἀντὶ 7.5000.000 φράγκων ὑπὸ ἐπὶ τούτῳ συσταθείσης ἑταιρείας, ἥτις συνεχίζει ἔκτοτε ὑπὸ τὸν τίτλον «Annuaire du Commerce Didot-Bottin».

Αἱ νεώτεραι ἐκδόσεις τοῦ ὁδηγοῦ τούτου ἀποτελοῦνται ἐκ τριῶν τόμων, ὧν ὁ πρῶτος φέρει τὸν τίτλον «Paris», ὁ δεύτερος «Départements» καὶ ὁ τρίτος «Colonies et pays étrangers». Ὁ ὁδηγὸς οὗτος περιέχει τὰς διευθύνσεις τῶν σπουδαιοτέρων ἐμπόρων, βιομηχανικῶν ἱδρυμάτων, τραπεζῶν κτλ. εἰς ἁπάσας τὰς χώρας τοῦ κόσμου, μετὰ πολλῶν γεωγραφικῶν καὶ στατιστικῶν πληροφοριῶν. Πλὴν τοῦ ὁδηγοῦ, ὁ Μποττὲν ἐξέδωκε καὶ διάφορα ἄλλα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Annuaire du département du Bas Rhin», «Le livre d'or de l' industrie française» (1820), «Tableau statistiques de toutes les foires de France» (1825—1844), «Mélanges d'archéologie» (1831). Τῷ 1811 ἵδρυσε καὶ τὴν ἐφημερίδα «Journal du département du Nord». Μ. Δ. Β.

**Μπόττι** (Botti), ***Ἰωσήφ.*** Ἰταλὸς μηχανολόγος (1853—1903). Ἐσπούδασεν ἐν Βολωνίᾳ καὶ ἀριστεύθη εἰς τὴν αἰγυπτιακὴν ἀρχαιολογίαν ἐργασθεὶς παρὰ τῷ Μασπερῷ. Βραδύτερον προέτεινε τὴν ἵδρυσιν ἄλλων ρωμαϊκῶν μουσείων ἐν Ἀλεξανδρείᾳ τῆς Αἰγύπτου, ὅπερ κατώρθωσε νὰ ἱδρύσῃ τῷ 1892 τῇ βοηθείᾳ τῆς δημαρχίας τῆς Ἀλεξανδρείας καὶ τῆς ἑταιρείας Ἀθήναιον. Ἐδημοσίευσε διάφορα ἔργα ἐπὶ τῶν ὑπ᾽ αὐτῷ γενομένων ἀνασκαφῶν, ἐπὶ τῆς ἀρχαίας γεωγραφίας καὶ περιγραφὴν τῶν μνημείων τοῦ ὑπ᾽ αὐτοῦ ἱδρυθέντος μουσείου ἐν τῷ ἔργῳ: «Κατάλογος τῶν μνημείων τῶν ἑλληνορρωμαϊκῶν μουσείων Ἀλεξανδρείας» )1901). Μ. Δ. Β.

**Μποττιτσέλλι** (Botticelli), ***Ἀλέξανδρος ντὶ Μαριάνο Φιλιπέπι,*** ὁ ἐπιλεγόμενος ***Σάντρο***—. Διάσημος ζωγράφος τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως (1444—1510). Ὁ πατήρ του, Μαριάνο Φιλιπέπι, ἦτο ἁπλοῦς ἐπισκευαστὴς ὑποδημάτων ἢ δερματοπώλης ἐν Φλωρεντίᾳ, εἶχεν ὅμως ὀξεῖαν ἀντίληψιν καὶ ἀληθῆ ἔρωτα πρὸς τὴν τέχνην· τοιουτοτρόπως κατώρθωσε νὰ παράσχῃ εἰς τὸν πρωΐμως ἐκδηλώσαντα τὴν καλλιτεχνικήν του φύσιν υἱόν του ὅλα τὰ μέσα, διὰ ν᾽ ἀποβῇ οὗτος ἄξιος τῆς λαμπρᾶς πόλεως, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐγεννήθη, καὶ τῆς ἱστορικῆς ἐποχῆς, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήκει. Ἀφοῦ τὸν ἐδίδαξεν ὅσα μαθήματα ἦσαν κατ᾽ ἐκείνους τοὺς χρόνους ἀπαραίτητα διὰ τὸν υἱὸν ἑνὸς ἀστοῦ μετρίας οἰκονομικῆς καταστάσεως, τὸν εἰσήγαγε πρὸς μαθητείαν εἰς τὸ καλλιτεχνικὸν ἐργαστήριον ἑνὸς χρυσοχόου, τοῦ Μποττιτσέλλι· ἐξ αὐτοῦ προέρχεται, κατά τινας, τὸ καλλιτεχνικὸν παρωνύμιον τοῦ Φιλιπέπι· διότι ὑπάρχουν καὶ οἱ δεχόμενοι ὅτι ὁ πατὴρ Φιλιπέπι ἔδωκεν εἰς τὸν υἱόν του τὸ παρωνύμιον *Μποττιτσέλλο* (=βαρελάκι). Βραδύτερον ὁ Μποττιτσέλλι ἐγένετο μαθητὴς τοῦ διασήμου Φλωρεντινοῦ καλλιτέχνου Φιλίππου Λίππι, ὅστις ᾐσθάνθη ἀπεριόριστον καὶ εὐμενέστατον ἐνδιαφέρον διὰ τὸν πλουσιώτατα προικισθέντα ὑπὸ τῆς φύσεως μαθητευόμενόν του. Πόσον ἐπέδρασεν ὁ Λίππι ἐπὶ τῆς καλλιτεχνικῆς ἐξελίξεως τοῦ Μποττιτσέλλι ἀποτελεῖ ζήτημα περιμάχητον. Δυνάμεθα κατ᾽ ἀρχὴν νὰ δεχθῶμεν ὅτι ἡ μαθητεία αὕτη δὲν ὑπῆρξε κενὴ καὶ ἄκαρπος καὶ ὅτι ὁ Μποττιτσέλλι πολλὰ ὠφελήθη ἐν τῷ ἐργαστηρίῳ τοῦ Λίππι. Παρὰ τοῦτο ὑποστηρίζεται ἡ ἄποψις ὅτι ὁ Φλωρεντινὸς καλλιτέχνης ὑπέστη βαθείας ἐπιδράσεις ἐκ μέρους τῆς τέχνης τοῦ Μπενότσο Γκοτσόλι· ἔτι δ᾽ ἡ ἄποψις, καθ᾽ ἣν μᾶλλον ἐπέδρασεν ἐπ᾽ αὐτοῦ ὁ παλαιὸς διδάσκαλος τοῦ ρεαλισμοῦ Ἀντώνιος Πολλαγιουόλο (*S. Reinach:* Apollo, σελ. 150) καὶ τέλος ἐκείνη, καθ᾽ ἣν ἡ φλαμανδικὴ τεχνικὴ γενικώτερον ἐβοήθησεν εἰς τὴν πλήρη ἄνθησιν τῆς καλλιτεχνικῆς του ἰδιοφυΐας. Πάντα ταῦτα οὐδὲν ἄλλο ἀποδεικνύουν εἰμὴ ὅτι ὁ Μποττιτσέλλι, ὡς παρατηρεῖ εἷς τῶν νεωτάτων βιογράφων του, ὁ Arsène Alexandre («Botticelli», σελ. 16), «διαφεύγει πᾶσαν ἐπίδρασιν». Συναντῶμεν διαμορφωμένην τὴν προσωπικότητά του εὐθὺς ἀπὸ τοῦ πρώτου του ἔργου. Εἶναι δ᾽ ἡ προσωπικότης αὕτη παράδοξος, ἀνήσυχος, μὴ δυναμένη νὰ περιορισθῇ εἰς ἕνα ἁπλοῦν χαρακτηρισμόν· διὰ τοῦτο ὁ S. Reinach, ἐν ἀναλογίᾳ πρὸς τὸν νιτσεϊκὸν «ὑπεράνθρωπον», ὠνόμασε τὸν Μποττιτσέλλι «ὑπερζωγράφον». Καὶ πράγματι, ἡ ἀκριβὴς ἐκτίμησις τῆς ἀξίας τοῦ ἔργου τοῦ καλλιτέχνου αὐτοῦ εἶναι ἄκρως δυσχερής, ἐξαρτωμένη ἑκάστοτε ἀπὸ τὴν ἄποψιν, καθ᾽ ἣν τοῦτο ἐξετάζεται. Ὑφίσταταί τις ἀκαταμαχήτως τὴν ἄπειρον γοητείαν του, ἀλλὰ δὲν δύναται οὔτε ἀκριβῶς νὰ τὴν προσδιορίσῃ, οὔτε μετ᾽ ἀπολύτου βεβαιότητος νὰ τὴν ἑρμηνεύσῃ. Ἡ γοητεία αὐτὴ προέρχεται ἀπὸ τὸ ἀκριβές, ἀλλὰ καὶ ἀτμῶδες, φευγαλέον, κυμαινόμενον σχέδιόν του; Ἀπὸ τὴν ὠχρὰν ἁβρότητα τοῦ χρωματισμοῦ του; Ἀπὸ τὸν εἰδωλολατρικόν του αἰσθησιασμόν; Ἀπὸ τὴν παράδοξον καὶ ὑπερτέραν ἐκείνην ἀντίληψίν του περὶ τοῦ ἀνθρωπίνου κάλλους; Ἀπὸ τὴν φύσιν τῆς διακοσμητικῆς του δεξιοτεχνίας; Ἢ ἀπὸ τὸν συγκεκαλυμμένον ἐκεῖνον, μόλις διαφαινόμενον, ἀλλὰ καὶ πλήρη γλυκύτητος τόνον ἀριστοκρατικῆς μελαγχολίας, ὁ ὁποῖος δίδει τοιοῦτο θέλγητρον εἰς τὰς πλείστας συνθέσεις του; Ἢ τέλος ἀπὸ τὸ πνεῦμα ἐκεῖνο τῆς φλωρεντινῆς ἐρασμιότητος, κομψότητος καὶ χάριτος, ὅπερ ἐπιτυχέστερον ἢ πᾶς ἄλλος καλλιτέχνης ἐκπροσωπεῖ; Ὑπάρχουν ὅλα αὐτὰ εἰς τὸ ἔργον του· ἀλλὰ καὶ ὅσαι ἄλλαι ἀφορμαὶ τοῦ ἰδιοτύπου θελγήτρου τῆς τέχνης του ἂν ἀναζητηθοῦν, πάλιν ὁ Μποττιτσέλλι θὰ παραμένῃ ἀνεξιχνίαστος, ἐνῷ δὲν εἶναι μυστηριώδης· ἀντιθέτως, παρουσιάζει ἐνίοτε παιδικὴν ἀφέλειαν, ἐνῷ συγχρόνως ἐκνευρίζει μὲ τὴν ἀσύλληπτον οὐσίαν τῶν ἔργων του. Κατὰ κεφαλαιώδη ἐκτίμησιν, ἀντιπροσωπεύει ὅσον οὐδεὶς ἄλλος καλλιτέχνης, μὲ πρωτοτυπίαν καὶ δύναμιν, τὸ ἀνθρωπιστικὸν ἰδεῶδες τῆς ἐποχῆς του.

Ἀπὸ τὴν ζωὴν τοῦ Μποττιτσέλλι εἶναι ἀσφαλῶς γνωστὰ μερικὰ θεμελιώδη σημεῖα. Γνωρίζομεν ὅτι εἰργάσθη ἐπὶ μακρὰ ἔτη ἐν τῇ αὐλῇ τῶν Μεδίκων καὶ ὅτι ἐτιμήθη ἐξαιρέτως ὑπ᾽ αὐτῶν. Ἐξετέλεσε τὴν προσωπογραφίαν τοῦ Ἰουλίου τῶν Μεδίκων καὶ τῆς «ὡραίας Σιμονέττας» καὶ ἀνεγνωρίσθη κατὰ τὴν ὥριμον ἡλικίαν του ὡς ὁ πρῶτος ζωγράφος τῆς Φλωρεντίας. Ἐν τῇ αὐλῇ τῶν Μεδίκων συνεδέθη φιλικῶς μετὰ τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι καὶ τοῦ Γκιρλαντάγιο. Τῷ 1480 προσεκλήθη εἰς Ρώμην ὑπὸ τοῦ πάπα Σίξτου τοῦ Δ', μετέβη δ᾽ ἐκεῖσε μετὰ τοῦ Περουτζῖνο, τοῦ Πιντουρίκκιο, τοῦ Σινιορέλλι, τοῦ Γκιρλαντάγιο καὶ τοῦ Κοζίμου Ροσσέλλι καὶ ἐξεπόνησε προσωπογραφίας παπῶν καὶ εὐρείας τοιχογραφίας ἐν τῷ Σιξτείῳ παρεκκλησίῳ. Ἐπανελθὼν εἰς τὴν Φλωρεντίαν ἐξετέλεσε τὴν «Γέννησιν τῆς Ἀφροδίτης». Βραδύτερον ὅμως, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λαυρεντίου τῶν Μεδίκων καὶ τὴν ἐπικράτησιν τοῦ Σαβοναρόλα, ὁ Μποττιτσέλλι διῆλθεν ἡμέρας στυγνῆς θλίψεως· εἶδε τὰ ἰδεώδη του σπαρασσόμενα, ἀποκηρυττόμενα· τὰ βιβλία τῶν κλασσικῶν συγγραφέων παραδιδόμενα εἰς τὸ πῦρ τοῦ ἁγνισμοῦ· τὰ ἀγάλματα τῶν θεῶν ἀκρωτηριαζόμενα καὶ συντριβόμενα· τὴν ζοφερὰν ἀπειλὴν τῆς χριστιανικῆς κολάσεως καταθλίβουσαν τὰς συνειδήσεις καὶ πληροῦσαν ἐφιαλτικῶν παραισθήσεων τὰς διανοίας. Ἡ μεταστροφὴ αὕτη ἔδωκε νέαν τροπὴν εἰς τὴν τέχνην του· ἐκλείσθη εἰς τὸ ἐργαστήριόν του καὶ ἤρξατο εἰκονογραφῶν τὴν «Θείαν κωμῳδίαν» τοῦ Ντάντε.

Ἀπέθανεν εἰς ἡλικίαν ἑξήκοντα ἓξ ἐτῶν, βασανισθεὶς ψυχικῶς καὶ σωματικῶς, ἔπειτα ἀπὸ μίαν ζωὴν ἀφθάστου αἴγλης. Τελευταία ἀκτὶς ἀπὸ τὸν λαμπρὸν ἥλιον τῆς ὡραιότητος εἰς τὴν ζοφερὰν ἀποκαρδίωσίν του ὑπῆρξεν ἡ φιλία του μὲ τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον, νεώτατον τότε καὶ μόλις δημιουργοῦντα τὰ πρῶτα μνημειώδη ἔργα του. Ὁ Μποτιτσέλλι ἀπετέλεσε μέλος τῆς ἐπιτροπῆς, ἥτις, περιλαμβάνουσα τὸν ἀρχιτέκτονα Ἰουλιανὸν Σὰν Γκάλλο, τὸν Λεονάρδον ντὰ Βίντσι, τὸν Κόζιμο Ροσσέλλι, τὸν Περουτζῖνο καὶ τὸν Φιλιππῖνο Λίππι, ἔλαβεν ἐντολὴν νὰ ἐξεύρῃ τὴν κατάλληλον θέσιν διὰ τὴν τοποθέτησιν τοῦ «Δαβὶδ» τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Ἡ αὐτοπροσωπογραφία τοῦ Μποτιτσέλλι, εὑρισκομένη εἰς τὴν «Προσκύνησιν τῶν μάγων», τὴν περιλαμβάνουσαν καὶ τὰς προσωπογραφίας τῶν Μεδίκων, μᾶς παρουσιάζει ἕνα ἄνθρωπον πλήρη ἐκφραστικῆς νεότητος. Ὁ Βαζάρι μᾶς ὁμιλεῖ, περιγράφων τὰ τελευταῖα ἔτη τοῦ βίου του, περὶ ἀθλίου, λιποσάρκου γέροντος, στηριζομένου εἰς δεκανίκια. Αἱ δύο αὐταὶ εἰκόνες χαρακτηρίζουν καλύτερον παντὸς ἄλλου τοὺς δύο πόλους, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐκυμάνθη ἡ ζωὴ τοῦ Μποττιτσέλλι. Ἴσως ἐκφράζουν πιστότερον παντὸς ἄλλου καὶ τὸν ἐσωτερικόν του βίον Διότι ὁ καλλιτέχνης αὐτὸς δὲν ἔσυρε μίαν γραμμὴν χωρὶς νὰ ἔχῃ νὰ ἐκφράσῃ δι᾽ αὐτῆς μίαν ἐσωτερικήν του σκέψιν. Ἀπὸ τῶν πρώτων θρησκευτικῶν του πινάκων μέχρι τῶν μεγάλων πανθεϊστικῶν του δημιουργιῶν καὶ ἀπὸ τούτων μέχρι τῶν τελευταίων του σχεδιασμάτων τῆς «Θείας κωμῳδίας», μέχρι τῆς ξηρᾶς ἐκείνης καὶ ἐρεβώδους «Ἀποκαθηλώσεως» τοῦ μουσείου Poldi-Pezzoli τοῦ Μιλάνου, δύναταί τις εὐχερῶς νὰ παρακολουθήσῃ καὶ ν᾽ ἀνασυνθέσῃ ὁλόκληρον τὸ ἐσωτερικὸν δρᾶμα τῆς ἄκρως εὐαισθήτου ψυχῆς, τῆς αἰσθησιακῆς ἰδιοσυγκρασίας καὶ τοῦ αἰσθητικοῦ πνεύματος τοῦ Μποττιτσέλλι. Ἐκκινεῖ ἀπὸ τὴν ἁβρὰν μετὰ προφανοῦς κοσμικότητος ἀναμεμιγμένην φλωρεντινὴν κατάνυξιν τῆς πρώτης του νεότητος, διὰ νὰ φθάσῃ, ἐμπνεόμενος ἀπὸ τὸ περίλαμπρον, πολύχρυσον καὶ ἡδυπαθὲς περιβάλλον τῆς αὐλῆς τῶν Μεδίκων, ἔνθα ἡ κλασσικὴ μυθολογία καὶ ἡ πλατωνικὴ φιλοσοφία ἔτερπον θαυμασίους καὶ λεπταισθήτους διαλεκτικούς, εἰς τὰς μεγαλειώδεις δημιουργίας τῆς «Ἀνοίξεως» (Primavera) καὶ τῆς «Γεννήσεως τῆς Ἀφροδίτης» (Nascita di Venere)· καὶ ἐκεῖθεν καταλήγει εἰς τὴν προμνημονευθεῖσαν «Ἀποκαθήλωσιν», ὅπου ὅλη ἡ φαιδρὰ καὶ ἐπαφρόδιτος λάμψις τῆς προγενεστέρας δημιουργίας του μετουσιώνεται εἰς ἄλγος καὶ βαρυθυμίαν. Καὶ ἡ κατάληξις αὕτη φαίνεται ἄκρως φυσικὴ εἰς τὸν προσεκτικὸν παρατηρητήν· διότι τὸ ἄλγος καὶ ἡ βαρυθυμία ὑπάρχει εἰς ὅλον τὸ ἔργον τοῦ Μποττιτσέλλι, ὁμοία μὲ κῦμα, τὸ ὁποῖον ἐλαφρῶς κυλινδούμενον κατ᾽ ἀρχὰς ὑπὸ τὴν πνοὴν ἁπαλῆς αὔρας, μαστιγοῦται βραδύτερον ὑπὸ λυσσαλέου βορρᾶ καὶ καταθραύεται ἀπεγνωσμένον εἰς ἀτορρῶγας βράχους. Αὐτὴ ἡ Παρθένος τῆς «Θεοτόκου μὲ τὰ κρίνα» ἀποπνέει γλυκυτάτην καὶ ἐρασμιωτάτην μελαγχολίαν· ἐμβριθὴς καὶ τεθλιμμένη εἶναι ἡ Παρθένος ἑτέρου πίνακος, συνολικῶς ἀποπνέοντος δυσεξήγητον θλῖψιν καὶ εἰκονίζοντος τὴν «Θεοτόκον μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ ἐν τῷ μέσῳ διαφόρων ἁγίων»· ἐλαφρὰ πτύχωσις ὀδύνης χαρακτηρίζει

Digitized by Google

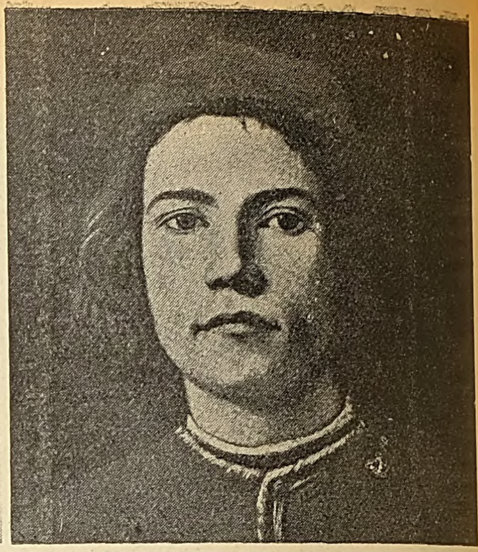

1) Προσωπογραφία τοῦ Ἰουλιανοῦ τῶν Μεδίκων. [Ἐν τῇ συλλογῇ τοῦ Ὄττο Κάν, Νέα Ὑόρκη]. 2) Αὐτοπροσωπογραφία ἐν τῷ πίνακι τῆς Προσκυνήσεως τῶν Μάγων. [Φλωρεντία, πινακοθήκη Οὐφφίτσι]. 3) Προσωπογραφία νεανίου. [Ἐθνικὴ πινακοθήκη Λονδίνου].

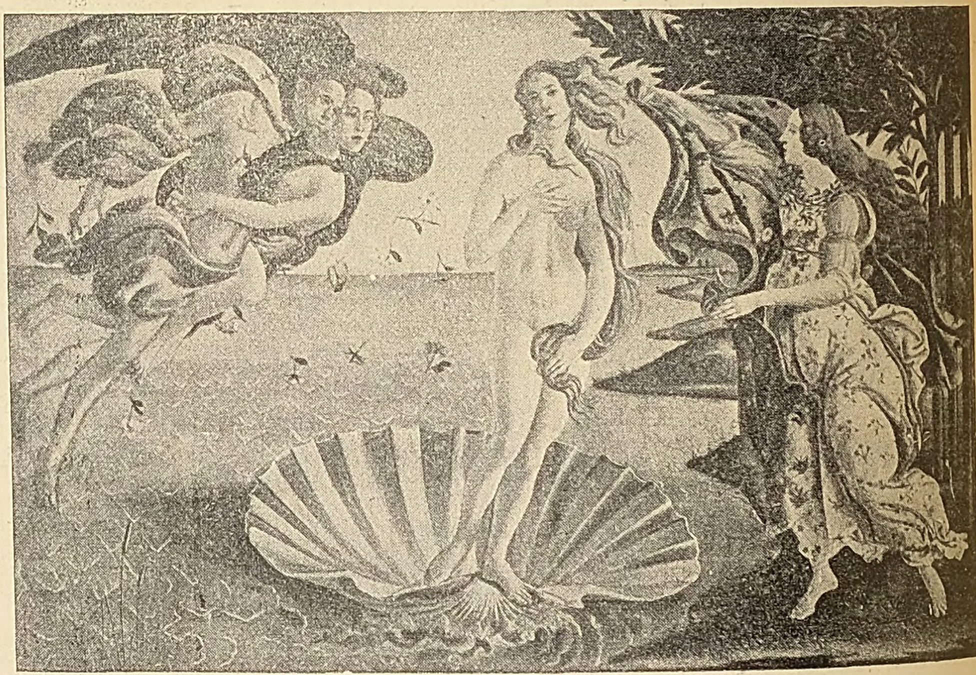

1) Ἡ ἐπιστροφὴ τῆς Ἰουδείθ. [Φλωρεντία, πινακοθήκη Οὐφφίτσι]. 2) Ἡ γέννησις τῆς Ἀφροδίτης. [Φλωρεντία, πινακοθήκη Οὐφφίτσι.]

Ἀλληγορία τῆς ἀνοίξεως. [Ἀρχαία πινακοθήκη τῆς Ἀκαδημίας, Φλωρεντία.]

Digitized by Google

τὸ ἤρεμον πρόσωπον ἑτέρας Παρθένου («Ἡ ἐστεμμένη Θεοτόκος», Magnificat)· ὡς παρακολουθοῦσα μακρινὴν ἐπώδυνον σκέψιν ἵσταται ἡ ἄλλη ἐκείνη Παρθένος τοῦ πίνακος, ὅστις εἶναι γνωστὸς ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Θεοτόκος μὲ τὸ ρόδι»· ἡ δὲ μορφὴ τοῦ Ἄρεως, ἐν τῷ πίνακι «Ὁ Ἄρης, ἡ Ἀφροδίτη καὶ οἱ Σάτυροι», ὑπενθυμίζει λίαν ἐντόνως τὴν κατεσπαραγμένην ὑπὸ τῶν θανασίμων βελῶν νεότητα τοῦ ἁγίου Σεβαστιανοῦ. Πνοὴ ὀδύνης, μὲ μίαν λέξιν, διήκει ἀπὸ τοῦ ἑνὸς μέχρι τοῦ ἑτέρου ἄκρου δι' ὁλοκλήρου τοῦ ἔργου τοῦ Μποττιτσέλλι.

Σταματῶμεν ὅλως ἰδιαιτέρως εἰς τὰ δύο θεμελιώδη ἔργα τοῦ Μποττιτσέλλι, τὴν ἀλληγορίαν τῆς «Ἀνοίξεως» καὶ τὴν «Γέννησιν τῆς Ἀφροδίτης». Ὁ πρῶτος πίναξ ὑποστηρίζεται ὅτι ὀφείλεται εἰς τὴν ἐπιθυμίαν τοῦ Ἰουλιανοῦ τῶν Μεδίκων ὅπως ἀποθεώσῃ τὴν «ὡραίαν Σιμονέτταν», πρὸς τὴν ὁποίαν τόσον ἀπεριόριστον λατρείαν ᾐσθάνετο· ἄλλοι νομίζουν ὅτι ἐξετελέσθη χάριν τῆς Ἰωάννας Τορναμπουόνι. Ὁ,τιδήποτε καὶ ἂν συμβαίνῃ, ἐλάχιστα δύναται νὰ ἐνδιαφέρῃ ἀπὸ αὐστηρῶς αἰσθητικῆς ἀπόψεως. Ἡ ἀξία τοῦ πίνακος τούτου δὲν εἶναι ἱστορική· εἶναι καλλιτεχνική. Εἶναι ἐξαιρέτως ἐνδιαφέρων ὁ τρόπος, καθ' ὃν ὁ Μποττιτσέλλι, χωρὶς ν' ἀποστῇ τοῦ ἀκριβολόγου σχεδίου, ὅπερ ὤθησε μάλιστα μέχρι σχολαστικότητος ἐνταῦθα, κατώρθωσε νὰ ἐκφράσῃ τὸ κυμαινόμενον ἰδεῶδές του· τὸ σύνολον εἶναι διατεταγμένον ἀμέμπτως· τὰ σώματα εἶναι ἐκπεφρασμένα συμπαγῶς, ὡς ὀντότητες ἀνεξάρτητοι καὶ αὐτενεργοί· καὶ ὅμως τὸ μεγαλύτερον πλεονέκτημα τῆς συνθέσεως ταύτης εἶναι ἡ ρευστότης, ἡ ἀτμώδης γυναικεία χάρις, ἡ ἤρεμος καὶ γαληνιαία κίνησις, ἡ ὁποία φαίνεται ὡς νὰ ἐκχύνεται πολὺ πέραν τοῦ πλαισίου, εἰς τὸ ἄπειρον. Αὐτὸ εἶναι τὸ θαυμαστὸν ἀποτέλεσμα τοῦ ρυθμοῦ, ὁ ὁποῖος κυριαρχεῖ ἀπαραμείωτος εἰς τὸ σύνολον καὶ εἰς πᾶσαν λεπτομέρειαν τοῦ πίνακος του. Ὅπως εἰς τὴν προμνημονευθεῖσαν «Προσκύνησιν τῶν μάγων», ὅπως εἰς τὰ «Τρία ἐπεισόδια ἐκ τοῦ βίου τοῦ Μωϋσέως», ὅπως εἰς κάθε ἔργον τοῦ Μποττιτσέλλι, δὲν ὑπάρχουν καὶ ἐνταῦθα πρόσωπα μείζονος καὶ πρόσωπα ἐλάσσονος σημασίας· ἑκάστη μορφὴ εἶναι κυρίαρχος καὶ αὐτοδύναμος· καὶ ὅλαι συγχρόνως συναπτονται εἰς σύνολον ἐξόχου συμμετρίας καὶ ἐντελείας. «Ἡ γέννησις τῆς Ἀφροδίτης» ἀποδεικνύει κατὰ τὸν μᾶλλον ἀποστομωτικὸν τρόπον πόσον ἡ ἐπίδρασις τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος, ὅταν ἀσκῆται ἐπὶ καλλιτέχνου πεπροικισμένου διὰ ρωμαλέου ταλάντου, ἀποκλείει πᾶσαν ξηρότητα καὶ πᾶσαν συμβατικότητα· δὲν ὑπάρχει πίναξ ὀλιγώτερον ἀκαδημαϊκὸς ἀπὸ τὸν πίνακα τοῦτον τοῦ Μποττιτσέλλι· καὶ ὅμως εὑρίσκεται ἐξ ὁλοκλήρου μέσα εἰς τὴν περιοχὴν τῶν ἀκαδημαϊκῶν θεμάτων. Ὁ καλλιτέχνης φαίνεται ἐμπνεόμενος ἀπὸ ἑλληνορρωμαϊκὰς ἀναμνήσεις· ἀλλ' εἶναι τόσον πηγαία ἡ χάρις τῆς συνθέσεως ταύτης, τόσον ἐξαισία ἡ ἔκφρασις τοῦ γυναικείου κάλλους, τόσον κυμαινομένη, ὡσὰν νὰ ὠθῆται ἀπὸ τὰς πνοὰς τῶν ζεφύρων, ἡ ὅλη παράστασις, τόσον τελεία ἡ ἐξεργασία πάσης λεπτομερείας, ὥστε παρὰ πᾶσαν ἑρμηνείαν καὶ ἐπισκόπησιν νὰ παραμένῃ ἀνεξήγητον τὸ ἀβρὸν καὶ εὐγενὲς θέλγητρον τοῦ καθαρῶς «μποττιτσελλείου» τούτου ἀριστουργήματος. Σελίδες τοιαύτης ἁγνῆς ποιήσεως καὶ τοιαύτης δροσερότητος δὲν εἶναι συχναὶ εἰς τὴν παγκόσμιον τέχνην. Θὰ ἐχρειάζετο ἴσως νὰ ὁμιλήσῃ τις ἰδιαιτέρως καὶ δι' ἑτέρα τινα ἔργα τοῦ Μποττιτσέλλι· δὲν ὑπάρχει, ἄλλως τε, πίναξ τοῦ καλλιτέχνου τούτου, ὁ ὁποῖος νὰ μὴ πρέπῃ νὰ τύχῃ ἰδιαζούσης μνείας. Ἀλλὰ τοῦτο δὲν θὰ διεφώτιζε πολὺ περισσότερον τὴν ἀπεριόριστον σημασίαν τῆς τέχνης του. Ἡ ψυχικὴ ἀγωνία, ἡ ἄφωνος θλῖψις, ἡ εὐγενὴς μελαγχολία, ἡ χάρις, ἡ ἁρμονία, ἡ φαιδρὰ ποίησις, ἡ ἡδυπάθεια, ἡ δροσερότης τῶν πινάκων του ἀναπηδοῦν εἰς τὸ πρῶτον βλέμμα· ἀλλὰ καὶ ἡ οὐσία τῆς θαυμαστῆς ἕλξεως, τὴν ὁποίαν ἀκαταμαχήτως ἀσκεῖ ἐπὶ τοῦ θεατοῦ, διαφεύγει πᾶν σχῆμα λόγου. Ὁ ἀκόλουθος κατάλογος δίδει τοὺς τίτλους τῶν κυριωτέρων του ἔργων μετὰ τῆς ἐνδείξεως τῶν τόπων, ἐν οἷς νῦν εὑρίσκονται: «La Fortezza» (πινακοθήκη Οὐφφίτσι, Φλωρεντία)· «Ὁ ἅγιος Αὐγουστῖνος προσευχόμενος» (Φλωρεντία, Organissanti)· «Ἡ σκηνὴ τοῦ Ὀλοφέρνους», «Ἡ ἐπιστροφὴ τῆς Ἰουδὴθ εἰς Βεθούλην», «Ἡ ἐσταφανωμένη Παρθένος», «Ἡ Θεοτόκος μὲ τὸ ρόδι», «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων», «Ἡ Παλλὰς καὶ ὁ Κένταυρος», «Ἡ συκοφαντία τοῦ Ἀπελλοῦ» (ἔργον ἐξαιρέτου λεπτότητος, ἐμπνευσμένον ἐκ συνθέσεως τοῦ Ἀπελλοῦ, περιγραφείσης ὑπὸ τοῦ Λουκιανοῦ), «Ἡ Ἄνοιξις ἢ ἀλληγορία τῆς ἀνοίξεως», «Ἡ γέννησις τῆς Ἀφροδίτης», «Ἐπιφάνεια», «Ὁ Εὐαγγελισμός» (πάντα ταῦτα ἐν τῇ πινακοθήκῃ Οὐφφίτσι τῆς Φλωρεντίας)· «Ἡ Παρθένος» (ἔργον ἀμφιβόλου αὐθεντικότητος ἀποκείμενον ἐν τῷ παλατίῳ Κορσίνι τῆς Φλωρεντίας)· «Ἀλληγορίαι τῶν θριάμβων τοῦ Ἔρωτος» (Ἅγιος Ἀνσάνος, Φιέζολε)· αἱ ἐν τῷ Σιξτείῳ παρεκκλησίῳ τοῦ Βατικανοῦ τοιχογραφίαι ἐν αἷς: «Ἡ φλεγομένη βάτος μετὰ τοῦ Μωϋσέως φονεύοντος τὸν Αἰγύπτιον καὶ ἐκδιώκοντος τοὺς Μαδιανίτας», «Ἡ θεραπεία τῶν λεπρῶν», «Ὁ πειρασμὸς τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ»)· «Ἡ ἀποκαθήλωσις» καὶ μία «Θεοτόκος» ἀμφισβητουμένης αὐθεντικότητος (μουσεῖον Poldi-Pezzoli, Μιλᾶνον)· «Τὸ ταξίδιον τοῦ υἱοῦ τοῦ Τωβίου» (Ἀκαδημία ἐπιστημῶν Τουρίνου)· «Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ καὶ τριῶν ἀγγέλων» (Ἀμβροσιανὴ πινακοθήκη Μιλάνου)· «Ἡ ἁγία Βαρβάρα» (πινακοθήκη Λούκκας)· «Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ, τοῦ παιδὸς Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ καὶ ἀγγέλων» (πινακοθήκη Μποργκέζε, Ρώμη)· «Προσωπογραφία τοῦ Ἰουλιανοῦ τῶν Μεδίκων» καὶ «Ἡ ἱστορία τῆς Βιργινίας» (Μπέργκαμο)· «Ὁ Ἄρης καὶ ἡ Ἀφροδίτη», «Ἡ προσκύνησις τῶν Μάγων», «Ἡ γέννησις τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ» (Λονδῖνον)· «Ἡ Παρθένος μετὰ τοῦ παιδὸς Ἰησοῦ» (Λοῦβρον, Παρίσιοι)· αἱ τοιχογραφίαι τῆς villa Lemmi («Ἡ Ἰωάννα ντὲ Τουρναμπουόνι δεχομένη τὴν ἐπίσκεψιν τῶν θεμελιωδῶν ἀρετῶν», «Ὁ Λαυρέντιος Τουρναμπουόνι εἰσαγόμενος παρὰ ταῖς ἐλευθερίαις τέχναις»)· «Ἡ Παρθένος μεταξὺ δύο ἁγίων», «Ὁ ἅγιος Σεβαστιανός», «Ἡ Ἀφροδίτη», «Ἡ Παρθένος μὲ τὰ κρίνα» (Βερολῖνον).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *L. Rosenthal*, «Conférence sur Botticelli», Dijon 1897.— *Ch. Diehl*, «Botticelli», Paris 1906.— *E. Steinmann*, «Botticelli», Bielefeld 1897. — *H. Horne* «Botticelli», London 1908. — *Bode*, «Botticelli», Berlin, 1923.— *E. Jacobsen*, «Allegoria della Primavera di Botticelli» (Archivio dell' arte, 1897, σελ. 321).—*Supino*, «Botticelli», Firenze 1900.— *Rusconi*, «Botticelli», Bergamo 1907.— *Yukio Yashiro*, «Botticelli» (3 τόμοι), Λονδῖνον καὶ Βοστώνη 1924.—*Arsène Alexandre*, «Botticelli», Paris 1929.

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**μποττνιος διάπλασις**, ἢ *περίοδος [Γεωλογ.]*· βλ. λ. *βόττνιος διάπλασις.*

**Μπόττροπ** (Bottrop) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς Γερμανίας ἐν τῷ νομῷ Βεστφαλίας, κειμένη 13 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Ντούϊσμπουργκ, ἐν μέσῳ πλουσίας γαιανθρακοφόρου περιοχῆς. Κάτ. 47.100. Χ.Δ.

**Μπούα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καρυουπόλεως τῆς ἐπαρχίας Γυθείου τοῦ νομοῦ Λακωνίας Κάτ. (1928) 28. Χ. Δ.

— **Μπούα** (Bua) *[Γεωγρ.]*. Δαλματικὴ νῆσος (πλάτ. 43° 31' Β., μήκ. 16° 15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2712: Zironna channel to Curzola), σχηματίζουσα μετὰ τῆς ἠπείρου τὸν λιμένα τοῦ *Τράου* (ἀρχ. *Τραγούριον*). Σ. Ε. Λ.

**Μπουὰ** (Bois), ***Ἰούλιος*** Γάλλος λογοτέχνης, γεννηθεὶς ἐν Μασσαλίᾳ τῷ 1870. Συνειργάσθη εἰς τὸ «Gil Blas», γράφων θεατρικὰς καὶ φιλολογικὰς κριτικάς, καὶ εἰς τὸν «Χρόνον» κατόπιν, ὅπου ἐδημοσίευσε περίεργον σειρὰν χρονικῶν ὑπὸ τοὺς τίτλους «Μικραὶ φιλοσοφικαὶ ἐκκλησίαι» καὶ «Μικραὶ παρισιναὶ θρησκεῖαι» (1894). Τὸ ἔργον τοῦ Ἰουλίου Μπουά, ὑπὸ τὰς διαφόρους αὐτοῦ μορφάς, εἶναι ἰδίως μεταφυσικοῦ χαρακτῆρος. Ὑπὸ τοιοῦτον πνεῦμα ἔχουσι γραφῆ τὰ ποιήματά του «Il ne faut pas mourir» (1894) καὶ «Prière» (1895), καθὼς καὶ μία σειρὰ πεζογραφημμάτων: «Αἰωνία κοῦκλα»(1894), ὅπου ἐκθέτει τὰ ψεύδη τῆς κοινωνικῆς ζωῆς, «Ἐρωτικὸς πόνος» (1895), ἐκμυστηρεύσεις ἑνὸς νέου, «Σατανισμὸς καὶ μαγεία» (1895), ἔργον τὸ ὁποῖον ἐχαρακτηρίσθη ὑπὸ τῆς Ἐκκλησίας ὡς ἀπηγορευμένον, ἀλλ' ἐπετράπη βραδύτερον ὑπὸ τοῦ πάπα Λέοντος ΙΓ'. Ἀκολουθοῦσι τὰ φεμινιστικὰ ἔργα του: «Νέα Εὔα» (1896), πρώτη καὶ ἠχηρὰ φιλολογικὴ ἔκκλησις περὶ ἠθικῆς καὶ κοινωνικῆς ἐξισώσεως τῆς γυναικὸς πρὸς τὸν ἄνδρα, «Ἡ ἀνήσυχος γυναῖκα» (1897), ὅπου ἡ νέα Εὔα ἐμφανίζεται τροπαιομένη διὰ τὰς ἰδίας της κατακτήσεις, «Ἕνας καινούργιος πόνος» (1899), ὁ τοῦ ἀνδρὸς τοῦ εὑρίσκοντος εἰς τὴν γυναῖκα ποὺ ἀγαπᾷ ἕνα ὂν εὐφυὲς καὶ ἠθικόν, ἴσον πρὸς αὐτὸν καὶ ἐπαναστατοῦν κατὰ τῆς ζωῆς του, καὶ «Μία μόνη ἠθικὴ διὰ τὰ δύο φῦλα», ὅπου συνοψίζει τὸ εἶδος καὶ τὰ ὅρια τοῦ φεμινισμοῦ του. Ὁ Ἰούλιος Μπουὰ ἐδημοσίευσεν ἐπίσης δύο τόμους ἐμπνευσμένους ἐκ τῶν ἐντυπώσεών του εἰς Αἴγυπτον, Ἰνδίας καὶ Συρίαν, ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Μυστήριον καὶ ἡδυπάθεια» (1901) καὶ «Ἰνδικὰ ὁράματα» (1903). Ἐπίσης ἔμμετρα δραματικὰ ἔργα: «Οἱ γάμοι τοῦ Σάθαν», «Ἡ ἡρωϊκὴ θύρα τῶν οὐρανῶν», «δρᾶμα ἐσωτερικὸν» ἀναβιβασθὲν ὑπὸ τοῦ θεάτρου Antoine, ἡ «Στέψις τοῦ Ἱππολύτου», τραγῳδία εἰς 4 πράξεις, παιχθεῖσα εἰς τὸ «Odéon» (1905) κλπ. —Ω.

**Μπουαβὲν** (Boivin), ***Ἰωάννης***, ἐπιλεγόμενος ***Καντὲ*** ἢ ***Μπουαβὲν ντὲ Βιλλνέβ***. Γάλλος σοφός, γεννηθεὶς τῷ 1665 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1726. Ἀπομείνας ἐνωρὶς ὀρφανὸς ὑπεστηρίχθη ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Λουδοβίκου καὶ ἔκαμε λαμπρὰς σπουδάς. Προσληφθεὶς εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ βασιλέως, ἐτακτοποίησε τὰ ἑλληνικὰ καὶ λατινικὰ χειρόγραφα αὐτῆς, ἀνεῦρεν ὑπὸ παλίμψηστον τὸ ἄγνωστον κείμενον τῶν «Ὁμιλιῶν» τοῦ ἁγίου Ἐφραὶμ καὶ ἐφιλοτέχνησε κατάλογον τῶν χειρογράφων τοῦ Γάλλου μεσαιωνικοῦ ποιητοῦ Bethune. Ἐδίδαξεν ἐπίσης τὴν ἑλληνικὴν εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ συνέγραψεν ἱκανὰ ἔργα, χάρις εἰς τὰ ὁποῖα ἐγένετο δεκτὸς εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιγραφῶν (1705) καὶ εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν (1721). Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Apologie d' Homère et bouclier d' Achille» (1715), «Vies de Pierre Pithon et de Cl. Pelletier» (1716, τόμ. 2), μετάφρασις ἐκ τῆς γαλλικῆς τῆς «Βατραχομυομαχίας» κλπ. Ἀπετελείωσε τὴν ἔκδοσιν τῶν «Mathematici veteres» (1693) τοῦ Thévenot καὶ ἐξέδωκε τὸν Βυζαντινὸν ἱστορικὸν Νικηφόρον Γρηγορᾶν εἰς δύο τόμους (1712). —Ω.

**Μπουαγιὲ** (Boyer), ***Ἀλέξιος***, *βαρῶνος* —. Διάσημος Γάλλος χειρουργὸς (1757—1833). Ἐξ ἐνδεοῦς οἰκογενείας καταγόμενος, ἐξέμαθε γραφὴν μόνον καὶ ἀνάγνωσιν καὶ προσελήφθη εἶτα ὡς ὑπάλληλος συμβολαιογραφείου. Εἰς ἡλικίαν 17 ἐτῶν μετέβη ὡς βοηθὸς πλησίον κουρέως τινὸς τῶν Παρισίων, ὅπου εἶχε τὴν εὐκαιρίαν ν' ἀκούῃ καὶ μαθήματα ἀνατομικῆς. Τῷ 1781 ἐβραβεύθη διὰ χρυσοῦ μεταλλίου ὑπὸ τοῦ κολλεγίου τῆς χειρουργικῆς, ἐσπούδασε τὴν λατινικὴν καὶ τῷ 1782 εἰσῆλθε μαθητὴς ἐν τῷ νοσοκομείῳ τῆς «Charité», γενόμενος ἀργότερον χειρουργὸς καὶ διευθυντὴς τοῦ χειρουργικοῦ τμήματος αὐτοῦ. Τῷ 1791 ὑπέβαλεν ὑπόμνημα εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς χειρουργικῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Sur la meilleure forme des aiguilles propres à la réunion des plaies et à la ligature des vaisseaux etc.», ἐγένετο δὲ κατόπιν καθηγητὴς τῆς ἐγχειρητικῆς εἰς τὴν νεοϊδρυθεῖσαν σχολὴν τῆς ὑγιεινῆς, ἀνταλλάξας ἀργότερον τὴν θέσιν του ταύτην μὲ τὴν καθηγεσίαν τῆς χειρουργικῆς κλινικῆς, ἣν διετήρησε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἔγραψε κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο πλήρη τετράτομον «Ἀνατομικήν», (4η ἔκδ. 1815), δίτομον σύγγραμμα ἐπὶ τῶν «Νόσων τῶν ὀστῶν», μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικήν, ἀγγλικὴν καὶ ἰταλικήν, ἤδη δὲ ἀπὸ τοῦ 1800 ἐξέδιδε μετὰ τοῦ Corvisart καὶ Leroux τὸ περιοδικὸν «Journal de médecine, de chirurgie et de pharmacie». Τῷ 1804 ὁ Ναπολέων Α' διώρισεν αὐτὸν πρῶτον χειρουργόν του καὶ τὸν παρέλαβεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ 1806 — 1807. Μετὰ τὸ τέρμα ταύτης προήχθη εἰς βαρῶνον καὶ ἔλαβεν ἀμοιβὴν 25 χιλ. φράγκων. Τὸ ἔργον ὅπερ ἰδίως ἐστερέωσε τὴν φήμην τοῦ Μπουαγιὲ ὑπῆρξε τὸ μέγα αὐτοῦ 11τομον σύγγραμμα τῆς χειρουργικῆς «Traité des maladies chirurgicales et des opérations qui leur conviennent» (1814, 1826, 1831, 1844, 1853), ὅπερ ἤδη κατὰ τὴν συμπλήρωσιν τοῦ 9ου τόμου ὡς καὶ κατὰ τὸ πέρας τῆς ἐκτυπώσεώς του ἔσχε δύο νέας ἐκδόσεις, μετεφράσθη εἰς πλείστας εὐρωπαϊκὰς γλώσσας καὶ ἀπετέλεσε τὸ μεγαλύτερον γαλλικὸν σύγγραμμα ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Paré. Ἐκ τοῦ ὀνόματός του φέρονται: 1ον) συσκευὴ διὰ τὰ κατάγματα τῆς ἐπιγονατίδος (συσκευὴ τοῦ Μπουαγιέ), 2ον) ὀρώδης θύλακος κείμενος πρὸ τοῦ θυρεο-υοειδοῦς ὑμένος καὶ ἀνερχόμενος μέχρι τοῦ ὀπισθίου τοιχώματος τοῦ ὑοειδοῦς ὀστοῦ (ὀρώδης θύλακος τοῦ Μπουαγιέ) καὶ 3ον) κύστις ὑπὸ τὸ ὑοειδὲς ὀστοῦν (κύστις τοῦ Μπουαγιέ). Ο. Ρ.

—**Μπουαγιὲ** (Boyer), ***Ἰωάννης-Πέτρος***. Πρόεδρος τῆς δημοκρατίας τῆς Αϊτῆς (βλ. λ. *Βόγερ Ἰωάννης-Πέτρος*).

— **Μπουαγιὲ** (Boyer), ***Κλαύδιος***, *ἀββᾶς* —. Γάλλος ἱεροκήρυξ καὶ ποιητὴς (1618—1698). Εἶχε γράψει δωδεκάδα ὅλην τραγῳδιῶν, ἐν αἷς «Ὁ Ἀριστόδημος» (1647), «Τιγράνης» (1660), «Ὀρέστης» (1681) κτλ., ἐκτὸς αὐτῶν δὲ πολλὰς «ἱλαροτραγῳδίας», κωμῳδίας καὶ βουκολικὰ ἔργα. Οἱ σύγχρονοί του Μπουαλὼ καὶ Ρακίνας εἰρωνεύοντο τὸ φιλολογικὸν του τάλαντον, ἰδίως δὲ ὅταν ἀνεβίβασε τὴν τραγῳδίαν του «Ἰουδείθ». Ὁ Ρακίνας τότε ἐδημοσίευσε δεκάστιχον ἐπίγραμμα, κατὰ τὸ ὁποῖον ἕνας προκοιλιῶν τραπεζίτης, καθήμενος παραπλεύρως τοῦ Μπουαγιὲ κατὰ τὴν παράστασιν τοῦ ἔργου του, καταλαμβάνεται ὑπὸ λυγμῶν, ὅταν δὲ ὁ συγγραφεὺς σπεύδῃ νὰ ἐκφράσῃ εἰς αὐτὸν τὴν εὐγνωμοσύνην του, διότι τὸν συνεκίνησε τόσον τὸ κάλλος τοῦ ἔργου, ἐκεῖνος ἀπαντᾷ: «Ξέρετε, κλαίω γι' αὐτὸν τὸν δύσμοιρον τὸν Ὀλοφέρνην, ποὺ τόσο σκληρὰ τὸν σκότωσε ἡ Ἰουδείθ». Ἔκτοτε ὁ Μπουαγιὲ ἔπαυσε πλέον νὰ γράφῃ τραγῳδίας. —Ω.

— **Μπουαγιὲ** (Boyer), ***Πέτρος-Αὐγουστῖνος***. Γάλλος ἐκδότης (1821—1896). Εἰργάσθη ὡς διδάσκαλος μέχρι τοῦ 1851, ὁπότε ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους καὶ ἵδρυσε μετὰ τοῦ Πέτρου *Λαρούς* (βλ. λ.) τὸ βιβλιοπωλεῖον Larousse et Boyer (1852). Ἰδικά του ἔργα ἐξέδωκε: «Μαθήματα γραμμικῆς ἰχνογραφίας» καὶ «Ποιητικὸς θησαυρός». Ὅταν ὁ Λαροὺς ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν σύνταξιν καὶ ἔκδοσιν τοῦ «Μεγάλου λεξικοῦ» αὐτοῦ, ἀπέμεινε μόνος ἰδιοκτήτης τοῦ βιβλιοπωλείου, τὸ ὁποῖον διηύθυνε μέχρι τοῦ 1885, ὁπότε τοῦτο συνεχωνεύθη μὲ τὴν ὅλην ἐπιχείρησιν Λαρούς. —Ω.

**Μπουαγκιλμπὲρ** (Boisguilbert), ***Πέτρος Λὲ Πεζὰν*** (Le Pesant) ***ντὲ*** —. Γάλλος οἰκονομολόγος καὶ πολιτικὸς συγγραφεὺς (1636—1714). Ἐγεννήθη ἐν Ρουέν, ὅπου καὶ διῆλθε τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του. Ἐκ τῶν πρώτων ἀντιπάλων τοῦ ἐμποροκρατικοῦ συστήματος, ἐδημοσίευσε κριτικὴν τῆς οἰκονομικῆς πολιτικῆς τοῦ Κολμπὲρ (1699) καὶ δύναται νὰ θεωρηθῇ μετὰ τοῦ Vauban ὡς πρόδρομος τῶν φυσιοκρατῶν. Μεταξὺ τῶν μέτρων, τὰ ὁποῖα χάριν βελτιώσεως τῶν δημοσίων οἰκονομικῶν προέτεινεν, ἀξιοσημείωτον διὰ τὴν ἐποχήν του εἶναι ἡ ἐλάττωσις τῶν ἐμμέσων καὶ ἡ αὔξησις τῶν ἀμέσων φόρων. Ὀρθῶς ἐπίσης ἀπέκρουσε τὴν συνταύ-

Digitized by Google

τισιν τῶν πολυτίμων μετάλλων πρὸς τὸν πλοῦτον, διαισθανθεὶς τὴν ἀληθῆ φύσιν τῆς λειτουργίας των ὡς ἁπλῶν συμβόλων, χρησιμευόντων διὰ τὴν ἔκφρασιν οἰκονομικῶν ἀξιῶν.

['Εκ τῶν ἔργων του βλ. «La France sous le règne de Louis XIV» (1699) μετὰ συμπληρώματος (1707). «Traité de grains», «Dissertation sur les richesses», «Argent et tributs».] Α. Α. ΤΣΙΜΙΚΑΛΗΣ

**Μπουαγὺ** (Boilly), ***Λουδοβῖκος - Λεοπόλδος.*** Γάλλος ζωγράφος (1761—1845). Ὑπῆρξεν υἱὸς μετρίου ξυλογλύπτου καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν ζωγραφικήν, χωρὶς νὰ διδαχθῇ συστηματικῶς παρά τινος. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν ἐκ τοῦ καθ' ἡμέραν βίου, μάλιστα δὲ λαϊκῶν συναθροίσεων, πανηγύρεων καὶ θεαμάτων. Εἰς ἡλικίαν ἑξήκοντα ἐτῶν ἀφιερώθη εἰς τὴν λιθογραφίαν, ἔνθα ἔσχε σημαντικωτάτας ἐπιτυχίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἡ ἄφιξις τοῦ λεωφορείου» (Λοῦβρον), «Ὁ θρίαμβος τοῦ Μαρὰ» (μουσεῖον Λίλλης) καὶ «Ἐρωτικαὶ θλίψεις» (πινακοθήκη Wallace). Ι. Μ. Π.

**Μπούα-ὲ** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Παλαιὰ ὀνομασία τοῦ ΒΑ. τμήματος τῆς ἀρτισυστάτου τότε πόλεως τῆς Ὕδρας, οὗτινος ὑπέρκειται ὑψηλὸς βραχώδης λόφος. Σημαίνει δὲ ἀλβανιστὶ μέρος ἀνεμοσκεπές, «χειμαδιὸ» (*Μηλιαρ.* Ἀργολ. Κορινθ. 183). Σ. Ε. Λ.

**Μπουαζὰρ** (Boisard), ***Φραγκῖσκος.*** Γάλλος μυθογράφος (1744—1833). Ὑπηρετῶν ὡς γραμματεὺς ἐν τῇ αὐλῇ, ἀπώλεσε τὴν θέσιν του κατὰ τὴν ἐπανάστασιν καὶ ἔζησεν ἐφεξῆς ἐν πενίᾳ. Ἔγραψε διαφόρους συλλογὰς μύθων μετριωτάτης ἀξίας: «Μῦθοι» (1733), «Μῦθοι» (1803), «Μῦθοι καὶ διάφορα ποιήματα» (1804), «Νέα συλλογὴ μύθων» (1805). Ὁ ὁμώνυμος ἀνεψιός αὐτοῦ ἐδημοσίευσεν ἐπίσης τῷ 1817 καὶ 1822 δύο συλλογὰς μύθων ἀνωτέρου ὁπωσδήποτε λογοτεχνικοῦ ἐπιπέδου. — Ω.

**Μπουαζὸ** (Boizot), ***Λουδοβῖκος-Σίμων.*** Γάλλος γλύπτης (1743—1809). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Slodtz, τῷ 1712 ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης καὶ τῷ 1778 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν καλῶν τεχνῶν. Ἐξετέλεσεν ἀνάγλυφα, προτομὰς καὶ ἐνδιαφέροντα σχέδια διὰ τὰ ἐργοστάσια τῶν Σεβρῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων καταλέγονται αἱ πέντε ἀλληγορικαὶ μορφαὶ τῆς κρήνης τῆς πλατείας τοῦ Σατελὲ (Παρίσιοι) καὶ τὰ προπλάσματα 25 ἀναγλύφων τῆς στήλης Βαντὼμ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει.

— **Μπουαζὸ** (Boizot), ***Μαρία - Λουΐζα - Ἀδελαΐς.*** Ἀδελφὴ τοῦ προηγουμένου (1744—1800). Διεκρίθη εἰς τὴν χαρακτικήν. Ι. Μ. Π.

**Μπουαλὲβ** (Boylesve), ***Ρενὲ Ταρντιβὼ*** (Tardivaux), γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα —. Γάλλος μυθιστοριογράφος (1867—1926). Ἠκολούθησε μαθήματα πολιτικῶν ἐπιστημῶν καὶ νομικῆς, ἐπεδόθη δὲ κατόπιν ὁλοκληρωτικῶς εἰς τὴν φιλολογίαν. Ἐν ἀρχῇ ἐδημοσίευσε σειρὰν ἠθογραφικῶν ἔργων, ἐν οἷς: «Ἡ δεσποινὶς Κλὸκ» (1899), ὅπου ὁ συγγραφεὺς ἐμφανίζει τὸ ἀδιάλλακτον καθολικὸν ἰδεῶδες ἀντιπαλαῖον πρὸς τὰ σύγχρονα ἤθη, «Τὸ παιδὶ μὲ τὸ κάγκελο» (1903), ἀνάγλυφος καὶ γραφικὴ ἀπεικόνισις τῶν ἠθῶν καὶ τῶν προσώπων μικρᾶς ἐπαρχιακῆς πόλεως κλπ. Ταυτοχρόνως ὁ Μπουαλὲβ ἐδημοσίευε μυθιστορήματα παθητικωτέρου τύπου, χρησιμοποιῶν συνήθως τὴν Ἰταλίαν ὡς περιβάλλον τῆς δράσεως τῶν ἡρώων του: «Ἡ Παναγία τῶν ἀνθέων» (1897), «Τὸ ἄρωμα τῶν Βορρομαίων νήσων» (1898) κλπ. Τὸ μυθιστόρημά του «Ἐρωτικὰ μαθήματα μέσα σ' ἕνα πάρκο» (1902) εἶναι ἐλευθεριωτέρας ἔτι συλλήψεως, εἰς δὲ τὸ «Ὡραῖον μέλλον» (1905) ἀποδεικνύεται ἀνήκων εἰς τὴν τάξιν τῶν συγγραφέων ἐκείνων, οἵτινες, ἀντλοῦντες τὰ θέματά των ἐν τῇ παρατηρήσει τῆς συγχρόνου ζωῆς, διατηροῦν ἐν τούτοις τὴν ἐπιμέλειαν τοῦ ὕφους, τὴν καλαισθητον φόρμαν καὶ τὴν κλασσικὴν παράδοσιν. Τῷ 1918 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Μεταξὺ τῶν τελευταίων ἔργων του ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Ἡ εὐτυχία τῶν πέντε σολδίων» (1917) καὶ «Ὁ χορὸς τῶν Νυμφῶν μὲ τοὺς Σατύρους» (1920). —Ω.

**Μπουὰ-λὲ-Ντὺκ** (Bois-le-Duc) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ὁλλανδίας (βλ. λ. *Χερτόγκενμπος*).

**Μπουαλντιὲ** (Boieldieu), ***Φραγκῖσκος-Ἀδριανός.*** Διαπρεπὴς Γάλλος μουσικοσυνθέτης (1775—1834). Μετὰ τὰ στοιχειώδη μαθήματα, ἅτινα ἔλαβεν ἐν τῇ γενεθλίῳ του πόλει παρὰ τοῦ ὀργανοκρούστου Μπροσάρ, μετέβη εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν πεζῇ εἰς Παρισίους, μὲ τὸν σκοπὸν νὰ συμπληρώσῃ τὰς μουσικάς του σπουδάς. Λόγῳ ὅμως τῆς ἐκραγείσης τότε ἐπαναστάσεως, ἠναγκάσθη νὰ ἐπανέλθῃ ἐκ νέου εἰς Ρουάν, ἔνθα ἀνεβίβασε τὰ πρῶτά του μελοδράματα: «Ἡ ἔνοχος κόρη» (1793) καὶ «Ροζαλία καὶ Μυρζά» ἐπὶ λιμπρέττων τοῦ πατρός του. Δεκαοκταετὴς ὁ Μπουαλντιὲ ἀπεφάσισεν ἐκ νέου νὰ δοκιμάσῃ τὴν τύχην του ἐν Παρισίοις. Ἐκεῖ, χάρις εἰς τὸν Σεβ. Ἐράρ, διὰ μέσου τοῦ ὁποίου ἐγνωρίσθη μετὰ τῶν Γκαρά, Μεΰλ καὶ Κερουμπίνι, κατώρθωσε νὰ ἑπισύρῃ ἐφ' ἑαυτοῦ τὴν προσοχὴν τοῦ κοινοῦ, ἀρχικῶς μὲν διά τινων μελῳδιῶν, εἶτα δὲ διὰ τοῦ μονοπράκτου μελοδράματος «Ἐλβετικὴ οἰκογένεια» (1797) καὶ τῶν ἐπακολουθησάντων λυρικῶν αὐτοῦ ἔργων: «Εὐχάριστος εἴδησις» (1797), «Τὸ στοίχημα» (1798), «Ἡ προῖκα τῆς Σουζέττας» (1799), «Ἡ αἰχμάλωτος» (1799), ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Κερουμπίνι, κλπ. Μετὰ τὴν ἀληθῆ ἐπιτυχίαν τοῦ τριπράκτου μελοδράματός του «Beniowski» (1800), ὁ Μπουαλντιὲ ἐγνώρισε τὸν θρίαμβον διὰ τοῦ «Καλίφου τῆς Βαγδάτης» (1800). Ἐπηκολούθησε τριετὴς ἀνάπαυλα, καθ' ἣν ὁ εἰκοσιπενταετὴς ἤδη μουσουργὸς συνεπλήρωσε τὰς ἐλλείψεις τῆς μουσικῆς του μορφώσεως ὑπὸ τὸν Κερουμπίνι, μεθ' ὃ παρουσίασε τὸ νέον του μελόδραμα «Ma tante l' Aurore» (1803), τὸ ὁποῖον, ἀποτυχὸν ἀρχικῶς, ἐν τέλει ἐπεβλήθη. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μπουαλντιέ, μεταβὰς εἰς Πετρούπολιν, διωρίσθη ὑπὸ τοῦ τσάρου μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς, ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ γράφῃ τρία μελοδράματα κατ' ἔτος. Κατὰ τὴν ὀκταετῆ ἐν Ρωσίᾳ διαμονήν του ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὰ ἔργα: «Aline, reine de Golconde», «Abder-Khan», «Un tour de soubrette», «Amour et mystère», «La jeune femme colère», «Τηλέμαχος», «Les Voitures versées», «La dame invisible» καὶ «Rien de trop» ἢ «Les Deux Paravents». Διὰ τοῦ τελευταίου τούτου ἔργου ὁ Μπουαλντιὲ ἐνεφανίζετο ἐκ νέου πρὸ τοῦ παρισινοῦ κοινοῦ, ὅταν νοσταλγήσας ἐπανέκαμπτεν εἰς Γαλλίαν τῷ 1810. Δύο δὲ ἔτη ἀργότερον (Ἀπρίλιος 1812) ἦρεν ἀληθῆ θρίαμβον διὰ τοῦ νέου του κωμικοῦ μελοδράματος «Jean de Paris», δι' οὗ ἐδείκνυε καταπληκτικὴν πρόοδον εἰς τὸ ὕφος του καὶ τὴν ἐνορχήστρωσιν. Ἐπηκολούθησαν τὰ ἔργα: «Le nouveau seigneur du village» (1813), «La fête du village voisin» (1817) καὶ «Charles de France» (1816, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ἐρόλ). Τῷ 1817 ὁ Μπουαλντιὲ ὠνομάσθη μέλος τοῦ ἰνστιτούτου τῶν Καλῶν τεχνῶν, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Μεΰλ καὶ οἱονεὶ ὡς ἀπάντησιν εἰς τὴν τιμὴν ταύτην ἔδωκε τῷ 1818 τὸ κωμικὸν μελόδραμα «Le Chaperon rouge», ὅπερ ἐσημείωσε μοναδικὴν ἐπιτυχίαν. Τέλος ἡ δόξα ἔστεψε τὸ μέτωπον τοῦ συνθέτου διὰ τῆς περιφήμου «Λευκῆς Κυρίας» (Le Dame blanche), ἥτις ἀναβιβασθεῖσα τῷ 1825 ἔλαβε διαστάσεις ἀληθοῦς καλλιτεχνικοῦ γεγονότος. Τὸ τελευταῖον ἔργον τοῦ Μπουαλντιὲ «Les deux nuits» (1829) ὑπῆρξεν ἀποτυχία, ἥτις βαθέως τὸν ἐπίκρανε. Τῷ 1829 ἀπεσύρθη ἐκ τοῦ ᾠδείου τῶν Παρισίων, τοῦ ὁποίου ἦτο καθηγητής, λόγῳ δὲ τῆς μικρᾶς του συντάξεως αἱ τελευταῖαι του ἡμέραι διῆλθον ἐν μεγίστῃ στενοχωρίᾳ.

Ὁ Μπουαλντιὲ ὑπῆρξεν εἷς τῶν εὐγενεστέρων λυρικῶν συνθετῶν τῆς Γαλλίας. Δι' αὐτοῦ τὸ κωμικὸν μελόδραμα ἔφθασεν εἰς τελειότητα ἄγνωστον μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Χάρις, λυρισμός, αὐθόρμητος μεθοδικότης, αἴσθημα καὶ λεπτότης εἶναι τὰ κύρια χαρακτηριστικὰ τῆς τέχνης του. Τῷ 1839 ἡ ἰδιαιτέρα του πατρὶς Ρουὰν ἐτίμησε τὴν μνήμην του δι' ἀνδριάντος.

Ὁ υἱὸς αὐτοῦ ***Ἀδριανὸς - Λουδοβῖκος*** (1815—1883) ἔγραψεν ἐπίσης σειρὰν μελοδραμάτων, κατὰ πολὺ ὑποδεεστέρων τῶν τοῦ πατρός του, ὡς καὶ μίαν τρίφωνον λειτουργίαν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Pougin,* Boieldieu, sa vie, ses oeuvres, son caractère, sa correspondance (1875). — *H. M. Berton,* Lettre à un célèbre compositeur français (1829).— *L. Augé de Lassus,* Boieldieu.—*Em. Duval,* Boieldieu, notes et fragments. Γ. Σ.

**Μπουαλὼ** (Boileau), ***Νικόλαος,*** ἐπιλεγόμενος ***Ντεπρεὼ*** (Despréaux). Γάλλος ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1636 ἐν Παρισίοις καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1711. Ἐφοίτησεν εἰς τὰ κολλέγια τοῦ Harcourt καὶ τοῦ Peauvais καὶ ἐνωρὶς ἐπέδειξε τὴν ἀγάπην του πρὸς τοὺς στίχους, ἀλλ' ἠναγκάσθη νὰ σπουδάσῃ τὴν νομικὴν μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ πατρός του (1657), ὁπότε ἐπεδόθη εἰς τὴν ποίησιν. Ὁ χρονολογικὸς πίναξ τῶν κυριωτέρων ἔργων του ἔχει οὕτω: Τῷ 1660 συνέθεσε τὴν «Satire I» καὶ τὴν «Satire VI», ἡ ὁποία κατ' ἀρχὰς ἀπετέλει ἐν ἐπεισόδιον τῆς προηγουμένης, τῷ 1663 τὴν Satire VII» τῷ 1664 τὴν «Satire II» καὶ «Satire IV», τῷ 1665 τὴν «Satire III» καὶ τὴν «Satire V», τῷ 1667 τὴν «Satire VIII» καὶ τὴν Satire IX», τῷ 1669 τὴν «Épître I» καὶ τὴν «Épître II», ἡ ὁποία ἐξήχθη βραδύτερον ἐκ τῆς πρώτης, τῷ 1672 τὴν «Épître IV», τῷ 1673 τὴν «Épître III», τὴν «Épître V», τὴν «Art poétique» καὶ τὰ τέσσαρα πρῶτα ᾄσματα τοῦ «Lutrin», τῷ 1675 τὴν «Épître VIII» καὶ τὴν «Épître IX», τῷ 1677 τὴν «Épître VI» καὶ τὴν «Épître VII», τῷ 1683 τὰ δύο τελευταῖα ᾄσματα τοῦ «Lutrin», τῷ 1693 τὴν «Satire X», τῷ 1695 τὴν «Épître X», τὴν «Épître XI», καὶ τὴν «Épître XII», τῷ 1698 τὴν «Satire XI» καὶ τῷ 1705 τὴν «Satire XII». Ἡ ποιητικὴ σταδιοδρομία τοῦ Μπουαλὼ δύναται νὰ διαιρεθῇ εἰς τρία στάδια: τὸ πρῶτον ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ 1660 μέχρι τοῦ 1667, τὸ δεύτερον ἀπὸ τοῦ 1668 μέχρι τοῦ 1677 καὶ τὸ τρίτον ἀπὸ τοῦ 1678 μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ ποιητοῦ.

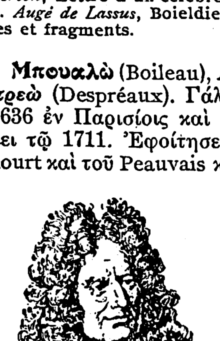

*Νικόλαος Μπουαλώ.*

Ἡ πρώτη περίοδος, πλήρης μαχητικότητος, περιλαμβάνει μόνον «Σατίρας». Ἐκτὸς ἐκείνων, αἱ ποῖαι ἔχουν φιλολογικὸν περιεχόμενον, αἱ «Σάτιραι» τοῦ Μπουαλὼ ἔχουν ἐλαχίστην ποιητικὴν ἀξίαν. Τινὲς (III, VI) ἀποτελοῦν ἁπλᾶς ἀσκήσεις στιχοποιίας καὶ ὕφους· ἄλλαι (I, IV, V, VIII) ἀναλύουν ἠθικολογικὰς κοινοτοπίας, αἱ ὁποῖαι δὲν διακρίνονται οὔτε ἐπὶ παρατηρητικότητι, οὔτε ἐπὶ πρωτοτυπίᾳ. Ὅσον ἀφορᾷ τὴν μορφήν, ἂν καὶ ἔχῃ τι τὸ σκληρὸν καὶ τεταμένον, δὲν στερεῖται σταθερότητος τόνου, ἡ ὁποία τὴν καθιστᾷ ἀράμιλλον. Αἱ πλέον ἐνδιαφέρουσαι εἶναι αἱ φιλολογικαὶ «Σάτιραι». Εἰς αὐτὰς ὁ Μπουαλὼ μαστιγώνει τὴν ἀκαλαισθησίαν τῶν συγχρόνων του καὶ ἐπιτίθεται βιαίως κατὰ τῶν συγγραφέων, οἱ ὁποῖοι ἐθεωροῦντο ὡς οἱ διδάσκαλοι τῆς γαλλικῆς ποιήσεως. Εἰς αὐτὰς εἶναι ἀληθῶς πρωτότυπος καὶ δεικνύει ἀσφαλῆ καὶ ἀκριβῆ κρίσιν.

Ἡ δευτέρα περίοδος ἀρχίζει μὲ τὰς «Ἐπιστολάς» του. Αἱ «Ἐπιστολαὶ» τοῦ Μπουαλὼ εἶναι γενικῶς ἀνώτεραι τῶν «Σατιρῶν». Ἡ στιχοποιία των εἶναι εὐστροφωτέρα, τὸ ὕφος εὐχερέστερον, αἱ ὑποθέσεις ἀπηλλαγμέναι τῆς σχολικῆς σχολαστικότητος καὶ χυδαιότητος καὶ ὁ τρόπος τῆς διεξαγωγῆς τοῦ θέματος προσωπικώτερος καὶ ἀνθρωπινώτερος. Ἀλλὰ καὶ ἐδῶ ἐπίσης εὐτυχεστέρας ἐμπνεύσεως ἀποδεικνύονται πάλιν τὰ τεμάχια, τὰ ὁποῖα ἐπιλαμβάνονται φιλολογικῆς κριτικῆς. Ἡ καλυτέρα του «Ἐπιστολὴ» εἶναι ἡ ἀπευθυνομένη πρὸς τὸν Ρακίναν, διὰ νὰ τὸν παρηγορήσῃ ἐπὶ τῇ ἀποτυχίᾳ τῆς «Φαίδρας» του. Τὸ «Ἀναλόγιον» (Lutrin) εἶναι μακρὸν ποίημα, ἀσημάντου ὑποθέσεως, ἀλλὰ τελείας μορφῆς.

Εἰς τὴν «Ποιητικὴν τέχνην» ὁ Μπουαλὼ ἐκθέτει μεθοδικῶς ἢ γενικὰ ἀξιώματα ἰσχύοντα δι' ὅλην τὴν ποίησιν ἢ εἰδικοὺς κανόνας ἀφορῶντας ἕκαστον ποιητικὸν εἶδος. Μέχρι τοῦδε ὁ Μπουαλὼ εἶχεν ἀσκήσει καθαρῶς ἀρνητικὴν κριτικήν. Ἀφοῦ κατεπολέμησε τὰς διαστροφὰς τῆς καλαισθησίας, ἐπιθυμεῖ τώρα νὰ ἐγκαθιδρύσῃ τοὺς ἀληθεῖς νόμους τῆς κλασσικῆς πειθαρχίας. Κατανικήσας τοὺς ἀντιπάλους του τῇ βοηθείᾳ καὶ τῶν ἐνδόξων φίλων του Μολιέρου, Ρακίνα, Λαφονταίν, κάτοχος ἰδιοφυΐας, τὴν ὁποίαν εἶχεν εὐρύνει ἡ πρόοδος τῆς ἡλικίας, γαληνεύει καὶ δογματίζει μὲ ἐνσυνείδητον αὐθεντικότητα.

Ἡ τρίτη περίοδος εἶναι μᾶλλον περίοδος καταπτώσεως καὶ πνευματικῆς ἀνεργίας. Ἀπὸ τοῦ 1677 μέχρι τοῦ 1693 σχεδὸν τίποτε δὲν παρήγαγε· τῷ 1683 συνέθεσε τὰ δύο τελευταῖα ᾄσματα τοῦ «Ἀναλογίου», δέκα ἔτη βραδύτερον τὴν σάτιραν κατὰ τῶν γυναικῶν, μοναδικῆς βιαιότητος, καὶ τὴν ᾠδὴν ἐπὶ τῇ ἁλώσει τοῦ Namur, ἓν ἐκ τῶν ἀσθενεστέρων ἔργων του· τῷ 1695 τὰς τρεῖς τελευταίας ἐπιστολάς, ἐν αἷς ἡ δωδεκάτη, περὶ τῆς ἀγάπης τοῦ Θεοῦ, εἶναι θαυμαστὴ διὰ τὴν δύναμιν τοῦ αἰσθήματος καὶ τὴν ἀκρίβειαν τοῦ ὕφους· τῷ 1698 καὶ τῷ 1701 τὰς δύο τελευταίας σατίρας, αἱ ὁποῖαι μαρτυροῦν τὴν κατάπτωσιν τοῦ ποιητοῦ.

Ὁ Μπουαλὼ ἔζησεν ἱκανὸν μέρος τῆς ζωῆς του εἰς τὸν περίφημον ἐκεῖνον οἶκον τοῦ Auteuil, τὸν ὁποῖον ὠφειλεν εἰς τὴν γενναιοδωρίαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ ὁ ὁποῖος ἦτο τὸ ἐντευκτήριον ὅλων τῶν διασημοτήτων τῆς ἐποχῆς. Ἐνταῦθα ἤρχοντο συχνὰ ὁ Σαπέλ, ὁ Ρακίνας, ὁ Μολιέρος κ. ἄ. Ἡ ἀγαθότης τῆς ψυχῆς του ἰσοφάριζε τὴν κακεντρέχειαν τοῦ πνεύματός του, «Δὲν εἶτο σκληρὸς εἰμὴ μόνον εἰς τοὺς στίχους του», εἶπε περὶ αὐτοῦ ἡ ντὲ Σεβινιέ. Ἠγάπησεν εἰλικρινῶς τοὺς φίλους του καὶ ἠγαπήθη ὑπ' αὐτῶν. Παρεκάλεσεν εὐγενῶς τὸν Λουδοβῖκον ΙΔ', νὰ τὴν αὐθεντίαν τῆς ὁποίαν εἶχεν, ὡς ὁ σπουδαιότερος συγγραφεὺς τῆς ἐποχῆς του, νὰ βοηθήσῃ τὸν ἀναξιοπαθοῦντα Κορνέϊγ καὶ ἀνήγειρε τὸν Ρακίναν ἀπὸ τῆς πτώσεως, εἰς τὴν ὁποίαν τὸν εἶχε ῥίψει ἡ ἀποτυχία τῆς «Athalie» του. Τῷ 1684 ἐγένετο μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας.

Τὸ γῆράς του ὑπῆρξε θλιβερὸν καὶ δύστροπον. Πληγεὶς ἀπὸ τὴν ἀπώλειαν τῶν ἀγαπητοτέρων φίλων του καὶ ἰδίᾳ τοῦ Ρακίνα, ἀπεσύρθη παρὰ τῷ ἐξομολογητῇ του, εἰς τὴν μονὴν τῆς Παναγίας τῶν Παρισίων, ὅπου καὶ ἀπέθανε. Τὸ ἔργον του, ἀπὸ ἀπόψεως ἐξωτερικῆς μορφῆς, δὲν εἶναι ἄξιον τοῦ ἀνεπιφυλάκτου θαυμασμοῦ, τοῦ ὁποίου ἔτυχεν ἄλλοτε. Στιχοποιεῖ μετὰ μονοτόνου καὶ πληκτικῆς ἀκριβείας. Τὸ ὕφος του εἶναι ὕφος αὐστηροῦ καὶ σταθεροῦ συγγραφέως, ὁ ὁποῖος ἐπιδιώκει τὴν τελειότητα. Ὅταν ἡ τελειότης αὕτη, καὶ ὅταν τὴν ἐπιτυγχάνῃ, εἶναι ξηρὰ καὶ ψυχρά· ἀναλίσκεται εἰς τὰς λεπτομερείας. Ὁ Μπουαλὼ ἔχει ἀξίαν κυρίως ὡς κριτικός. Δὲν περιωρίσθη μόνον εἰς τὸ νὰ καταπολεμήσῃ τοὺς κακοὺς ποιητάς, ἀλλ' ὑπεστήριξε καὶ τοὺς καλούς. Τὸ ἔργον του δὲν περιορίζεται μόνον εἰς τὰ συγγράμματά του, ἀλλὰ ἐπεκτείνεται καὶ εἰς τὴν ἐπίδρασιν, τὴν ὁποίαν ἤσκησεν ἐπὶ τῶν περισσοτέρων μεγάλων συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του.

Digitized by Google

Ἐκεῖνο, τὸ ὁποῖον κυρίως ἐδίδαξεν ὁ Μπουαλὼ εἰς τοὺς συγχρόνους του, εἶναι ἡ ἀνάγκη τῆς ἐργασίας. Ὅταν ἤρχισε νὰ γράφῃ, ὅλοι οἱ ποιηταὶ ἐπαφίεντο εἰς τὴν ἔμπνευσίν των, οἱ δὲ καλοὶ στίχοι ἦσαν παρ' αὐτοῖς τυχαῖα ἐπιτεύγματα. Ἡ κεφαλαιώδης ἀλήθεια, τὴν ὁποίαν διαρκῶς ὑπεμίμνησκεν εἰς τοὺς συγχρόνους του, ἦτο ὅτι καὶ τὰ πλουσιώτερα δῶρα δὲν ἔχουν, ἀξίαν, ἂν δὲν μονιμοποιοῦνται διὰ τῆς ἐργασίας. Ἀπῃτεῖτο, κατ' αὐτόν, διὰ νὰ παραχθοῦν βιώσιμα ἔργα, ὀλιγωτέρα ἐμπιστοσύνη εἰς τὴν ἰδιοφυΐαν καὶ περισσότερος μόχθος. Ὁ ὀρθὸς λόγος ἔχει μεγαλυτέραν σημασίαν διὰ τὴν ποίησιν, κατὰ τὸν Μπουαλώ, ἀπὸ τὴν φαντασίαν καὶ τὸ συναίσθημα. Ἐν ὀνόματι τοῦ ὀρθοῦ λόγου κατεπολέμησε τοὺς ὀπαδοὺς τοῦ πομπώδους ἐμφόρτου ὕφους. Τὸν ὀρθὸν λόγον ἐκθειάζει ἀπ' ἀρχῆς μέχρι τέλους τῆς «Ποιητικῆς τέχνης». Εἶναι ἐκπρόσωπος τῆς κλασσικῆς τέχνης, ἡ ὁποία ἔχει ὡς σύνθημα τὴν ἀλήθειαν, δηλαδὴ τὴν φύσιν, διωρθωμένην, ἐν ἀνάγκῃ, ὑπὸ τοῦ ὀρθοῦ λόγου. Ὁ τυφλὸς σεβασμὸς τοῦ Μπουαλὼ πρὸς τὴν ἑλληνολατινικὴν ἀρχαιότητα, ἡ δεισιδαιμονία του πρὸς τοὺς κανόνας, ἡ ἄγνοια τῆς ἱστορίας καὶ τέλος ἡ κοινωνικὴ ἀτμοσφαῖρα, εἰς τὴν ὁποίαν ἔζη, ἀρκοῦν διὰ νὰ ἐξηγήσουν διατὶ τὰ παραγγέλματα τῆς «Ποιητικῆς τέχνης» δὲν δύνανται νὰ ἔχουν ἀπόλυτον ἀξίαν διὰ τὴν ἐποχήν μας. θ. π.

**Μπουαμαρτὲν** (Vieillard de Boismartin), ***Ἀντώνιος***. Γάλλος νομικὸς καὶ συγγραφεὺς (βλ. λ. *Βιεγιὰρ*-ντὲ-Μπουαμαρτέν).

**Μπουαμπωντρὰν,** ***Λεκὸκ ντὲ—*** (Lecoq de Boisbaudran), ***Παῦλος - Αἰμίλιος***. Γάλλος φυσιοδίφης (βλ. λ. *Λεκὸκ* ντὲ Μπουαμπωντράν).

**Μπουανάτσια** (Buanazia), ***Λοῦπο***. Ἰταλὸς ἀνατολιστὴς (1844—1907). Ἐσπούδασεν ἀνατολικὰς γλώσσας, τῷ δὲ 1868 ἐδημοσίευσε «Κατάλογον τῶν ἀραβικῶν μοναστηρίων»· εἶτα ἀπεστάλη ὡς διευθυντὴς τῆς ἰταλικῆς σχολῆς τῆς Βηρυτοῦ καὶ ἔγραψε μελέτην «Περὶ τῆς μετρικῆς τῶν Ἀράβων». θ. β

**Μπουάνι** (Boigne), ***Βενέδικτος Λεμπόρνι*** (Le Borgne), *κόμις ντὲ—*. Γάλλος στρατιωτικός, γενόμενος στρατηγὸς ἐν Ἰνδίαις (1741—1830). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ εἰς ἓν ἰρλανδικὸν σύνταγμα ἐν τῇ Ἴλ-ντὲ-Φράνς, κατόπιν δέ, μὲ βαθμὸν λοχαγοῦ, εἰς τὸν ρωσικὸν στρατόν, ὁπότε συνελήφθη αἰχμάλωτος εἴς τινα πρὸς τοὺς Τούρκους μάχην. Ἐλευθερωθεὶς μετὰ ἑπτάμηνον, κατετάχθη εἰς ἓν σύνταγμα ἰθαγενῶν τῆς ἀγγλικῆς ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν. Ἀφοῦ ὑπηρέτησε διαδοχικῶς διαφόρους Ἰνδοὺς ἡγεμόνας, ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τοῦ πρίγκιπος Σιντιάχ, τὸν ὁποῖον ἀνωργάνωσε κατὰ τὸ εὐρωπαϊκὸν σύστημα καὶ διῴκησε μετὰ πολλῆς σωφροσύνης. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Σιντιὰχ (1794) ὁ Μπουάνι ἀπεσύρθη εἰς Ἀγγλίαν, ἐκεῖθεν δὲ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν γενέθλιόν του πόλιν Σαμπερὺ τῆς Γαλλίας, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του.

— **Μπουάνι** (Boigne), ***Καρλόττα-Λουΐζα-Ἐλεονώρα-Ἀδελαΐς ντ' Ὀσμὸντ*** (d' Osmond), *κόμισσα ντὲ—*. Ἐγεννήθη τῷ 1781 ἐν Βερσαλλίαις ἐκ γονέων ἀνηκόντων εἰς τὸ προσωπικὸν τῆς αὐλῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν ἠκολούθησε, μετὰ τῶν γονέων της, ἐν τῇ ἐξορίᾳ τὸν δοῦκα τοῦ Ἀρτουᾶ, ἐν Ἰταλίᾳ κατ' ἀρχὰς καὶ εἶτα ἐν Ἀγγλίᾳ, ὅπου ἡ οἰκογένειά της ἐγκατεστάθη, διάγουσα βίον πλήρη στερήσεων, ἀλλὰ μετ' ἀψόγου ἀξιοπρεπείας. Ἐκεῖ, χάρις εἰς τὴν ἐξαιρετικὴν καλλονήν της, τὴν ἐζήτησεν εἰς γάμον εἷς ἐκ τῶν ἐξορίστων εὐγενῶν, ὁ κόμις ντὲ Μπουάνι, μετὰ τοῦ ὁποίου ἐταξίδευσεν εἰς Σκωτίαν καὶ Γερμανίαν καὶ ἐπανῆλθε τῷ 1800 εἰς Γαλλίαν, ὅπου ὁ σύζυγός της ἀνέλαβεν ὑπηρεσίαν ἐν τῷ στρατῷ τοῦ Ναπολέοντος, ἀποσταλεὶς βραδύτερον ὑπ' αὐτοῦ ὡς διοικητὴς τῶν ἐν Ἰνδίαις γαλλικῶν ἀποικιακῶν κτήσεων. Ἡ κόμισσα Μπουάνι ἠρνήθη ἐν ἀρχῇ νὰ λάβῃ μέρος εἰς τὴν αὐλὴν τῆς συζύγου τοῦ Βοναπάρτου Ἰωσηφίνας, ὅταν οὗτος ἔφερε τὸ τίτλον τοῦ πρώτου ὑπάτου· βραδύτερον ὅμως, ἐπὶ αὐτοκρατορίας, διεκρίθη ἐν τῇ αὐλῇ διὰ τῆς καλλονῆς καὶ τῶν πνευματικῶν της προσόντων. Παρὰ ταῦτα, ἐδέχθη μετ' ἐνθουσιασμοῦ, κατὰ τὴν πρώτην παλινόρθωσιν, τὴν ἐπάνοδον τῶν ἐξορίστων, τῶν ὁποίων τὴν τύχην εἶχε καὶ ἡ ἰδία συμμερισθῆ, συνεδέθη δὲ τότε διὰ φιλίας μετὰ τῆς κυρίας Ρεκαμιὲ καὶ τῆς πριγκιπίσσης Γκαλιτζὶν καὶ ἐσχετίσθη στενῶς μετὰ τῆς κυρίας Στάελ, τοῦ Βενιαμὶν Κωνστάν, τοῦ Σατωμπριάν, τοῦ Ταϋλεράνδου καὶ ἄλλων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν δὲ τοῦ 1830, ἥτις τὴν εὗρε χήραν, καὶ αἱ ἰδικαί της αἴθουσαι ἐσυχνάζοντο ἀπὸ τὰ πλέον διακεκριμένα πρόσωπα τῆς Ἰουλιανῆς μοναρχίας. Ἀποθανοῦσα τῷ 1866, ἀφῆκεν ἀπομνημονεύματα, τὰ ὁποῖα συνεβουλεύθησαν ἐν χειρογράφῳ πολλοὶ ἱστοριοδίφαι, ἐξεδόθησαν δὲ τῷ 1907 εἰς ὀγκώδη τόμον («Récis d'une tante : Memoires de la comtesse de Boigne, née d'Osmond, 1781—1866»). Μολονότι ἡ ἱστορικὴ ἀλήθεια δὲν τὴν ἐνδιαφέρει τόσον, ὅσον ἡ κατὰ τὰς προσωπικὰς αὐτῆς διαθέσεις ἐντύπωσις, τὰ ἀπομνημονεύματα ἐν τούτοις τῆς κομίσσης ντὲ Μπουάνι, γραμμένα μὲ ὕφος θελκτικόν, ζωηρὸν καὶ πνευματώδες, ἀφθονοῦντα δὲ ἀπὸ πληθὺν περιέργων ἀνεκδότων, ἀποτελοῦσιν ἐξαιρετικῶς ἐνδιαφέρον ἀνάγνωσμα γύρω ἀπὸ τὰ πρόσωπα καὶ τὰ πράγματα τῆς ἐποχῆς της. Μερικὰ ἰδίως πορτραῖτα—τῆς κυρίας Ρεκαμιέ, τῆς κυρίας Γκαλιτσίν, τοῦ Σατωβριάνδου κ. ἄ.—εἶναι γεμᾶτα ἀπὸ σπαργῶσαν ζωντανότητα.

**Μπουαντὲν** (Boindin), ***Νικόλαος***. Γάλλος λόγιος καὶ θεατρικὸς συγγραφεὺς (1676—1751). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ ὡς οἰκονομικὸς ὑπάλληλος καὶ εἶτα ὡς ὑπαξιωματικὸς εἰς ἓν σύνταγμα σωματοφυλάκων. Ἐν τῷ μεταξὺ καὶ βραδύτερον ἠσχολεῖτο μετὰ πάθους εἰς φιλοσοφικὰς καὶ φιλολογικὰς μελέτας. Συνέγραψεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Λαμότ, δύο κωμῳδίας μονοπράκτους : «Οἱ τρεῖς Γασκῶνοι» (1701) καὶ «Τὸ λιμάνι» (1704), γενόμενος δὲ ἀπὸ τοῦ 1706 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων, ἐδημοσίευσεν ἔκτοτε εἰς τὰ «Πρακτικὰ» αὐτῆς διαφόρους μελέτας, ἐκτιμηθείσας διὰ τὴν πολυμάθειαν καὶ τὴν εὐσυνείδητον μελετηρότητα τοῦ συγγραφέως. —ω.

**Μπουαντὲφρ** (Boisdeffre), ***Κάρολος-Ἐρρῖκος-Ρενέ***. Γάλλος συνθέτης (1838—1906). Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν μουσικὴν δωματίου, ἣν ἐπροίκισε μὲ τρίο, κουαρτέττα, ἓν σεξτέττο, ἓν σεπτέττο κτλ. Δι' ὀρχήστραν ἔγραψε τὰς «Ἀγροτικὰς σκηνάς», διὰ χορῳδίαν δὲ τά : «Ἆσμα Ἀσμάτων», «Ὁ Μωϋσῆς σῳζόμενος ἐκ τῶν ὑδάτων», «Εἰς τὸ δάσος» κτλ. γ. σ.

**Μπουὰ-Ρομπὲρ** (Bois-Robert), *ἀββᾶς* ***Φραγκῖσκος Λὲ Μετὲλ ντὲ—***. Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1592 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1662. Υἱὸς προμηθευτοῦ τῆς αὐλῆς, μετέβη τῷ 1622 εἰς Παρισίους καὶ συνεστήθη εἰς τὸν καρδινάλιον ντὺ Περρόν, τοῦ ὁποίου ἀπέκτησε τὴν εὔνοιαν. Τοὺς πρώτους στίχους του συνέθεσε διὰ τὸ μπαλλέτον τῶν Βακχαναλίων, τὰ ὁποία ἑωρτάσθησαν τῷ 1623. Τῷ 1630 μετέβη εἰς Ἰταλίαν καὶ διωρίσθη ἱερεὺς εἰς Βρετάνην ὑπὸ τοῦ πάπα Οὐρβανοῦ Η'. Τῷ 1623 ἐσχετίσθη μὲ τὸν καρδινάλιον Ρισελιέ, ἀποκτήσας τὴν ἐμπιστοσύνην του καὶ χρησιμοποιήσας ταύτην πρὸς ὄφελος πτωχῶν συγγραφέων. Περὶ τὸ 1634 ἀνεκοίνωσεν εἰς αὐτὸν τὴν γνώμην του περὶ ἱδρύσεως Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ὁ δὲ Ρισελιὲ τὸν ἐπεφόρτισε νὰ προτείνῃ εἰς τοὺς φίλους του, ὅπως συμπήξουν σῶμα ὑπὸ τὴν προστασίαν τοῦ κράτους. Τῷ 1635 ἱδρύθη ἡ Γαλλικὴ Ἀκαδημία, ὁ δὲ Μπουὰ-Ρομπὲρ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πρώτων ἀκαδημαϊκῶν. Εἰς μίαν ἀπὸ τὰς πρώτας συνεδριάσεις τῆς νεαρᾶς Ἀκαδημίας ἐξεφώνησε λόγον «ὑπὲρ τῆς ὑπερασπίσεως τοῦ θεάτρου», εἰς τὸν ὁποῖον ἐπετίθετο δριμέως κατὰ τοῦ Ὁμήρου, δίδων οὕτω τὸ σύνθημα τῆς περιφήμου ἔριδος μεταξὺ τῶν ἀρχαίων καὶ τῶν νεωτέρων ἐν Γαλλίᾳ. Βραδύτερον ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ συμβούλου τῆς Ἐπικρατείας καὶ τοῦ ἐξομολογητοῦ τοῦ βασιλέως. Ὑποπεσὼν ὅμως μετ' ὀλίγον εἰς τὴν δυσμένειαν τοῦ βασιλέως, ἕνεκα ἐρωτικῶν λόγων καὶ συκοφαντιῶν, ἐξωρίσθη εἰς ἐπαρχίαν, καὶ μόνον τῇ μεσολαβήσει τοῦ Μαζαρίνου ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους.

Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μπουὰ-Ρομπὲρ εἶναι τὰ ἑξῆς : «Pyrandre et Lysimène», ἱλαροτραγῳδία (1633), «Les rivaux amis» (1639), «Les deux Alcandres» (1640), «Le couronnement de Darie» (1642), «La belles Palène» (1640), La jalouse d'elle-même», κωμῳδία (1650), «La folle gageure ou les divertissemens de la comtesse de Pembroc» (1653) «Les trois Orontes» (1653), «Cassandre, comtesse de Barcelone», ἱλαροτραγῳδία (1654), «La belle plaideuse», κωμῳδία (1655), «Les généreux ennemis» (1655), «La belle invisible ou la constance éprouvée» (1656), «Les coupes d'amour et de fortune ou l'heureux infortuné» ἱλαροτραγῳδία (1656), «Les apparences trompeuses», κωμῳδία (1656), «Théodore reyne de Hongrie, ἱλαροτραγῳδία (1658), «Histoire indienne d'Anaxandre et d'Orazie où sont entremêlées les aventures d'Alcidaris et de Cambaye», μυθιστόρημα (1659), «Les nouvelles héroiques et amoureuses» (1657), «Paraphrases sur les sept psaumes de la pénitence» (1627), «Le Parnasse royal» (1634), «La sacrifice des muses au grand cardinal de Richelieu» (1635) κ. ἄ. —ω.

**Μπούας**. Ὄνομα ἑλληνοαλβανικῆς οἰκογενείας πολεμιστῶν, ἧς μνεία γίνεται ἤδη τῷ 1367 ἐν τοῖς χρονικοῖς. Κυριώτερα μέλη αὐτῆς ὑπῆρξαν :

—1) ***Γκῖνος Σπάτας***. Ἤκμασε τελευτῶντος τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Διηνεκῶς πολεμῶν τὸν δεσπότην τῆς Ἠπείρου Θωμᾶν Πρελούμποβιτς, ἐμελέτα τὴν κατάληψιν τῶν Ἰωαννίνων, ἀλλ' ἀποτυχὼν περιωρίσθη εἰς τὴν κατάληψιν μόνον τμημάτων τῆς Ἠπείρου, Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἔχων ὡς ἕδραν του τὴν Ἄρταν (Κοσμόπολιν), τῷ δὲ 1378 ἐκυρίευσε καὶ τὴν ὀχυρὰν Ναύπακτον. Συμμαχήσας δὲ πρὸς τὸν δεσπότην τῆς Ἠπείρου Ἰσαοῦ, ἔδωκεν αὐτῷ σύζυγον τὴν θυγατέρα του.

—2) ***Θεόδωρος***. Ἤκμασε κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα. Κατέλαβε διὰ τῶν λεγομένων «στρατιωτῶν» μέρη τινὰ τῆς Πελοποννήσου, ὅτε δ' ἐξερράγη ἐν Μάνῃ ἐπανάστασις ὑπὸ τὸν Κροκόδειλον Κλαδᾶν ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος, ἀλλ' εἶτα διαφωνήσας πρὸς αὐτὸν ἀπεχώρησε.

—3) ***Μαυρίκιος Σγουρός***. Ἀδελφὸς τοῦ Γκίνου, ὃν καὶ διεδέξατο ἐν Ἄρτῃ. Κατέλαβεν ἐπὶ μικρὸν τὰ Ἰωάννινα καὶ ἐπολέμησε κατὰ τῶν δεσποτῶν Κεφαλληνίας Τόκων καὶ ἰδίως Καρόλου τοῦ Α'.

—4) ***Μερκούριος***. Ἐκ Ναυπλίου, ὅπου ἐγκατεστάθη ὁ Γκῖνος, καταγόμενος, εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῶν Βενετῶν καὶ εἶτα ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν αὐτοκράτορα Μαξιμιλιανὸν Α' (1597—1651). Ἀπέθανεν ἐν τῷ ἰταλικῷ Τρεβίζῳ, ἐν δὲ τῷ ναῷ τῆς πόλεως δείκνυται ὁ τάφος του. Τὰ κατορθώματά του ἐμμέτρως ἐξυμνήθησαν ὑπὸ τοῦ Τζάνε Κορωναίου (*Σάθα*, Ἑλληνικὰ ἀνέκδοτα Α', σ. 4—153).

—5) ***Παῦλος Σπάτας***. Οὗτος δυναστεύων ἐν Ναυπάκτῳ ἐπώλησε τὰ δικαιώματά του τοῖς Βενετοῖς τῷ 1407.

[*Σ. Λάμπρου*, «Νέος Ἑλληνομνήμων» τόμ. ΣΤ' 479, Ζ' 331, Θ' 466, 473, ΚΑ' 298.] τ. ε. ε.

— **Μπούας,** ***Πέτρος***. Ναυτικός, γεννηθεὶς ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1531 καὶ πεσὼν ἐν τῇ ναυμαχίᾳ τῆς Ναυπάκτου τὴν 6 Ὀκτωβρίου 1560. Ἀνῆκεν εἰς εὐγενῆ τῆς νήσου οἰκογένειαν, ὅτε δὲ συνήφθη ἡ συμμαχία τοῦ παπικοῦ κράτους τῆς Ἱσπανίας καὶ τῆς Βενετίας, οἱ Κερκυραῖοι ὥπλισαν 4 μεγάλα σκάφη, εἰς ἓν τῶν ὁποίων ἔταξαν ὡς πλοίαρχον τὸν Μπούαν. Κατὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Ναυπάκτου τὸ πλοῖόν του περιεκυκλώθη ὑπὸ τουρκικῶν· ὁ Μπούας, ἀνδρείως ἀμυνόμενος, ἔπεσεν ἐπὶ τοῦ σκάφους του. Ὁ Τοῦρκος μοίραρχος ἐξέδειρε τὸν νεκρὸν καὶ τὸν ἐκρέμασεν εἰς τὸν ἱστὸν τῆς ναυαρχίδος του, τὸ δὲ δέρμα του ἔστειλεν ὡς τρόπαιον εἰς τὸν σουλτᾶνον Σελήμ. θ. β.

**Μπουασσὰρ** (Boissard), ***Ἰωάννης - Ἰάκωβος***. Γάλλος ἀρχαιολόγος, σχεδιαστὴς καὶ λόγιος (1528 1602). Περιελθὼν τὴν Ἰταλίαν καὶ τὰς νήσους τοῦ Αἰγαίου, ἀπεκόμισεν ἐνδιαφέροντα ἀντίγραφα ἀρχαίων μνημείων καὶ ἐπιγραφῶν, συνέγραψε δὲ ἀξιόλογα διὰ τὴν ἐποχήν του ἔργα, εἰς λατινικὴν γλῶσσαν, ἐν οἷς : «Γαλατικὰ καὶ λατινικὰ ἐμβλήματα» (1584), «Βίοι καὶ εἰκόνες τῶν Τούρκων σουλτάνων» (1596), «Τὸ θέατρον τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς» (1596). «Τοπογραφία καὶ ἀρχαιολογία ρωμαϊκῶν πόλεων» (1597), «Εἰκόνες καὶ βιογραφίαι ἐνδόξων ἀνδρῶν» (1592) κλπ. Ἔγραψεν ἐπίσης ποιήματα εἰς λατινικὴν γλῶσσαν, ἐκ τῶν ὁποίων πολλὰ περιελήφθησαν εἰς τὴν ἔκδοσιν «Deliciae poetarum Gallorum». —ω.

**Μπουασσιὲ** (Boissier), ***Γάστων***. Γάλλος φιλόλογος, ἱστορικὸς καὶ ἀρχαιολόγος (1823—1908). Ἐδίδαξεν ἐν ἀρχῇ εἰς λύκεια τῶν ἐπαρχιῶν καὶ τῶν Παρισίων, βραδύτερον δὲ διωρίσθη καθηγητὴς τῆς λατινικῆς ρητορικῆς ἐν τῷ κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας, τοῦ ὁποίου ἐγένετο διευθυντὴς ἀπὸ τοῦ 1892. Ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῷ 1876 καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν τῷ 1886, ἰσόβιος δὲ γραμματεὺς τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας ἀπὸ τοῦ 1895. Τὸ λογοτεχνικόν του τάλαντον, ἡ πολυμάθεια καὶ τὸ ὀξὺ κριτικόν του πνεῦμα τὸν ἀνέδειξαν συγγραφέα πρώτης γραμμῆς, τοῦ ὁποίου τὰ ἔργα, πολλάκις ἐπανεκδοθέντα, ἐσημείωσαν εὐρυτάτην διάδοσιν. Μεταξὺ αὐτῶν ἀναφέρονται ἰδίᾳ : «Ὁ ποιητὴς Ἄττιος· μελέτη περὶ τῆς λατινικῆς τραγῳδίας ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῆς δημοκρατίας» (1857), «Μελέτη περὶ τῆς ζωῆς καὶ τῶν ἔργων τοῦ Τερεντίου Οὐάρρωνος» (1861), «Ὁ Κικέρων καὶ οἱ φίλοι του· μελέτη ἐπὶ τῆς ρωμαϊκῆς κοινωνίας τῶν χρόνων τοῦ Καίσαρος» (1865, ιβ' ἔκδοσις τῷ 1902), «Ἡ ρωμαϊκὴ θρησκεία ἀπὸ τοῦ Αὐγούστου μέχρι τῶν Ἀντωνίνων» (1874, ε' ἔκδ. 1901), «Ἀρχαιολογικοὶ περίπατοι : Ρώμη καὶ Πομπηΐα» (1880, δ' ἔκδ. 1892)', «Ὁράτιος καὶ Βιργίλιος» (1886), «Ἡ Κυρία ντὲ Σεβινιὲ» (1887, ε' ἔκδ. 1901), «Ἡ ρωμαϊκὴ Ἀφρικὴ» (1895, β' ἔκδ. 1901), «Ὁ Σαὶν-Σιμὸν» (1892, β' ἔκδ. 1902) κ. λ. π. —ω.

— **Μπουασσιὲ** (Boissier), ***Ἐδμόνδος***. Διακεκριμένος Ἑλβετὸς βοτανικὸς (1810—1885). Ταξιδεύσας ἐπὶ μακρὸν εἰς διαφόρους χώρας τῆς Ἀσίας καὶ τῆς Μεσογείου, ἐμελέτησεν εἰδικώτερον τὴν χλωρίδα τῶν ἀνατολικῶν χωρῶν, ἐκ τῶν ὁποίων ἀπεκόμισε πλουσίαν συλλογὴν φυτῶν, κατατεθεῖσαν παρ' αὐτοῦ εἰς τὸ μουσεῖον τῆς Γενεύης, ἔγραψε δὲ συναφῶς πεντάτομον ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Flora Orientalis». Διὰ τὴν ἑλληνικὴν χλωρίδα συνειργάσθη μετὰ τῶν Ἑλλήνων βοτανικῶν Ὀρφανίδου καὶ Χελδράϊχ, εἰς δὲ τὴν Κρήτην ἀπέστειλε βοηθούς του πρὸς συλλογὴν ἰθαγενῶν φυτῶν τῆς νήσου. —ω.

**Μπουασσονὰ** (Boissonas), ***Φραγκῖσκος-Φρειδερῖκος***. Διάσημος φωτογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1858 ἐξ οἰκογενειας γαλλικῆς καταγωγῆς διαμαρτυρομένης, καταφυγούσης εἰς Ἑλβετίαν κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς διωγμοὺς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἀποφοιτήσας τοῦ πανεπιστημίου τῆς Γενεύης, ἀνέλαβεν ἀπὸ τοῦ 1887 τὴν διεύθυνσιν τοῦ φωτογραφικοῦ ἐργαστη-



Digitized by Google

ρίου τοῦ πατρός του. Ἀπὸ τοῦ 1890 ἤρχισε πολυτελεῖς ἐκδόσεις λευκωμάτων μετὰ κειμένου, ταυτοχρόνως δὲ ἤνοιξεν ὑποκαταστήματα εἰς Παρισίους, Λυών, Μασσαλίαν, Ρέϊμς καὶ Πετρούπολιν. Ἀπὸ τοῦ 1903 μέχρι τοῦ 1930 περιῆλθεν ἐπανειλημμένως ὁλόκληρον τὴν Ἑλλάδα καὶ τινας ἑλληνικὰς χώρας, δημοσιεύσας θαυμάσια εἰς καλλιτεχνίαν ὁδοιπορικά, ἐν οἷς: «En Grèce par monts en par vaux», «Des Cyclades en Grèce», «Le Parthénon», «Les Monuments de l'Acropole», «La Grèce immortelle», «La restauration hellénique», «Histoire de la guerre de l'indépendance. En 24 tableaux par le général Macryjanni», «Athènes anciennes», «Smyrne», «Salonique», «Épire berceau du Grec», «Macédoine occidentale», «La campagne de Serbie et de Macédoine». Ἀπὸ τοῦ 1929 ἀνέλαβε τὴν εἰκονογράφησιν μεγάλου συγγράμματος περὶ Αἰγύπτου κατ' ἐντολὴν τοῦ βασιλέως Φουὰτ Α'. Τὸ κείμενον γράφουν οἱ αἰγυπτιολόγοι Segniet, Munier καὶ Wiette. Ἀπὸ δὲ τοῦ 1930 καταγίνεται μετὰ τοῦ Ch. Diehl εἰς τὴν εἰκονογράφησιν μεγάλων ἐπίσης συγγραμμάτων περὶ Ἁγίου Ὄρους, περὶ Σινᾶ καὶ περὶ τῶν ἀρχαιοτάτων μονῶν τῆς Θηβαϊκῆς ἐρήμου Ἁγίου Ἀντωνίου καὶ Παύλου. Γ. Λ. Α.

*Φραγκίσκος Μπουασσονά.*

**Μπουασσονὰντ** (Boissonade), ***Ἰωάννης-Φραγκίσκος.*** Γάλλος ἑλληνιστής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1774 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πασσῦ τῷ 1857. Ἀνῆκεν εἰς παλαιὰν οἰκογένειαν τῆς Γασκώνης καὶ ἔμεινεν ὀρφανὸς πατρὸς εἰς πολὺ μικρὰν ἡλικίαν. Ἀποπερατώσας τὰς σπουδάς του εἰς τὸ κολλέγιον Harcourt, προσελήφθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, ἀλλ' ἔχασε μετ' ὀλίγον τὴν θέσιν του, γενόμενος ὕποπτος συμμετοχῆς εἰς τὴν ὑπόθεσιν τῆς 12—13 Βαντεμιαὶρ τοῦ Δ' ἔτους (3-4 Ὀκτωβρίου 1795). Προστατευόμενος ὑπὸ τοῦ Λουκιανοῦ Βοναπάρτου, ὅστις ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν, προσελήφθη τῷ 1801 ὡς γενικὸς γραμματεὺς τοῦ νομοῦ Haute-Marne, ἀλλ' ἐντὸς ἑξαμήνου ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του, διὰ ν' ἀφιερωθῇ εἰς φιλολογικὰς μελέτας. Τῷ 1795 εἶχε δημοσιεύσει εἰς τὰς «Soirées littéraires» τοῦ Coupé ἔμμετρον μετάφρασιν ἐκλεκτῶν ἐπιγραμμάτων τοῦ Μαρτιαλίου, τῷ δὲ 1800 ἐπῃνέθη ὑπὸ τοῦ Ἰνστιτούτου διὰ μίαν ἐργασίαν του περὶ τοῦ τρόπου τῆς ἀναζωογονήσεως τῶν ἑλληνικῶν καὶ τῶν λατινικῶν σπουδῶν. Κατόπιν ἐδημοσίευσε σειρὰν ἄρθρων εἰς τὸ «Magasin encyclopédique» τοῦ Millin, τὸν «Mercure de France», τὴν «Journal des Débats», τὴν «Journal de l'Empire» κλπ., τὰ ὁποῖα τὸν ἀνέδειξαν λεπτὸν καὶ ὀξύνουν κριτικόν. Ἡ φήμη του ὡς ἑλληνιστοῦ ἡδραιώθη διὰ μιᾶς ἐκδόσεως τοῦ «Ἡρωϊκοῦ» τοῦ Φιλοστράτου (1806). Τῷ 1809, ἀναδιοργανωθείσης τῆς ἀνωτέρας ἐκπαιδεύσεως, ἐκλήθη εἰς τὴν ἕδραν τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας τῆς φιλολογικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων, τῷ δὲ 1813 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς διδασκαλίας του συνειργάζετο εἰς τὴν «Biographie universelle» τοῦ Michaud καὶ εἰς τὴν ἐπανέκδοσιν τοῦ «Θησαυροῦ» τοῦ Ἑρ. Στεφάνου. Τῷ 1828 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Τὰ σπουδαιότερα δημοσιεύματα τοῦ Μπουασσονὰντ πλὴν τῶν ἀναφερθέντων κριτικῶν ἄρθρων, εἶναι τ' ἀκόλουθα: «Ἡρωϊκὴ» τοῦ Φιλοστράτου (1806), «Βίος τοῦ Πρόκλου» τοῦ Μαρίνου (1814), «Δροσίλλα καὶ Χαρικλῆς» τοῦ Νικήτα τοῦ Εὐγενιανοῦ, μετ' ἀποσπασμάτων Κωνσταντίνου τοῦ Μανασσῆ (1819), «Βίοι σοφιστῶν» τοῦ Εὐναπίου (1822), «Σχόλια εἰς τὸν «Κρατύλον» τοῦ Πλάτωνος» τοῦ Πρόκλου (1820), «Ἐπιστολαὶ» τοῦ Ἀρισταινέτου (1822), «Μεταμορφώσεων τοῦ Ὀβιδίου» ἡ ἑλληνικὴ μετάφρασις τοῦ Πλανούδη (1822), διάφορα ἔργα: τοῦ Θεοφυλάκτου Σιμοκάττου (1835), Αἰνείου τοῦ Γαζαίου (1836), Ψελλοῦ (1838), Συνεσίου (1842), αἱ «Ἐπιστολαὶ» τοῦ Φιλοστράτου (1842), οἱ «Μῦθοι» τοῦ Βαβρίου, αἱ «Ἀλληγορίαι τῆς Ἰλιάδος» τοῦ Τζέτζη (1851), ὡς καὶ ἡ «Συλλογὴ τῶν Ἑλλήνων ποιητῶν» («Collection des poètes grecs» εἰς 24 τόμους, 1823—1836) καὶ τὰ «Anecdota graeca» (εἰς 5 τόμ. 1829—1833) μεθ' ἑνὸς τόμου «Anecdota nova» (1844). Ὁ Μπουασσονὰντ ἐξέδωκεν ἐπίσης καὶ Γάλλους συγγραφεῖς: τοῦ Βολταίρου: «Lettres inédites à Fréderic le Grand» (1802), τοῦ Φενελῶν «Télémaque» (1824), τοῦ Μπερτὲν «Oeuvres complètes» (1824), τοῦ Παρνὺ «Oeuvres choisies» (1827) κλπ. — ω.

*Ἰωάν. Μπουασσονὰντ*

**Μπουασσὺ** (Boissy) ***Γαβριήλ.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1879. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων φιλολογίαν καὶ εἰδικεύθη κατόπιν εἰς τὴν δραματικὴν κριτικὴν καὶ εἰς τὴν τεχνικὴν τοῦ θεάτρου, γενόμενος τῷ 1902 γενικὸς γραμματεὺς τῆς ἐπιτροπῆς τῶν κλασσικῶν παραστάσεων τοῦ θεάτρου τῆς Ὀράγγης. Διωργάνωσε κατόπιν τὰς θεατρικὰς παραστάσεις εἰς τὰ ἀρχαῖα ἀμφιθέατρα τῆς Νὶμ καὶ τῆς Μπεζιὲρ καὶ ἵδρυσε τὰ ὑπαίθρια θέατρα τῆς Τουλούζης, τῆς Παμιὲ καὶ τῆς Σαμπινὺ-λὰ-Μπατάγ! παρὰ τοὺς Παρισίους. Ἵδρυσεν ἐπίσης καὶ διηύθυνε κατὰ τὰ ἔτη 1907—1909 τὸ θεατρικὸν περιοδικὸν «L'album comique». Ἀπὸ τοῦ 1910—1913 διετέλεσε θεατρικὸς κριτικὸς τῆς παρισινῆς ἐφημερίδος «Excelsior» καὶ κατόπιν τῆς «Comoedia». Ὑπηρέτησε κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τοῦ «Συνδέσμου τῶν ἐφέδρων συγγραφέων», συμβαλὼν τὰ μέγιστα εἰς τὴν καθιέρωσιν τοῦ θεσμοῦ καὶ τοῦ μνημείου τοῦ Ἀγνώστου Στρατιώτου ὑπὸ τὴν Θριαμβευτικὴν Ἀψίδα τῶν Παρισίων. Τῷ 1921 ἔρριψε πρῶτος αὐτὸς τὴν ἰδέαν τοῦ ἀσβέστου πυρός, ὅπερ κατόπιν δραστηριωτάτης προπαγάνδας, τὴν ὁποίαν ἔκαμεν, ἀπεφασίσθη νὰ καθιερωθῇ ἐπὶ τοῦ τάφου τοῦ Ἀγνώστου Στρατιώτου, καὶ ἠνήφθη διὰ πρώτην φορὰν τὴν 11 Νοεμβρίου 1921 ἐνώπιον 300.000 προσώπων ἐν συγκινητικῇ γονυκλισίᾳ. Ἀπὸ τοῦ 1926 διατελεῖ ἀρχισυντάκτης τῆς ἐφημερίδος «Comoedia», τὴν ὁποίαν μετέβαλεν εἰς ὄργανον τῆς διεθνοῦς σκέψεως. Ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἡ δραματουργία τῆς Ὀράγγης» (1907), ἔργον ἀποτελοῦν δοκίμιον δραματικῆς αἰσθητικῆς, «Ἡ ζωντανὴ ὡραιότης», «Ὁ ἔρως ἐν τῇ γαλλικῇ σκέψει» (1912), «Αἱ σκέψεις τῶν βασιλέων τῆς Γαλλίας» (1912), ἀνθολογία τῶν κυριωτέρων γνωστῶν φράσεων τῶν ἀποδιδομένων εἰς τοὺς Γάλλους βασιλεῖς, «Ὁ ἔπαινος τῆς κυπαρίσσου» (1929), συμβολικὸν ποίημα, «Ὁ Σατανᾶς τοῦ θανασίμου μειδιάματος» (1930). Συνειργάσθη ἐπίσης εἰς τὸν «Χρόνον τῶν Παρισίων», τὴν «Ἑβδομαδιαίαν ἐπιθεώρησιν», τὸν «Ἑρμῆν τῆς Γαλλίας» κτλ. Ἐπεσκέφθη πολλάκις τὴν Ἑλλάδα, ἰδίως κατὰ τὰς δοθείσας κλασσικὰς παραστάσεις ἐν Ἀθήναις καὶ εἰς τοὺς Δελφούς. Μ. Δ. Β.

— **Μπουασσὺ** (Bissy), ***Λουδοβῖκος ντὲ —.*** Γάλλος λογοτέχνης (1694—1758). Κατ' ἀρχὰς εἶχε προορισθῆ διὰ τὸ ἐκκλησιαστικὸν στάδιον, ἀλλὰ βραδύτερον ἀφιερώθη εἰς τὴν φιλολογίαν καὶ κατόπιν πολλῶν περιπετειῶν κατώρθωσε νὰ ἀναδειχθῇ μεταξὺ τῶν συγχρόνων του, γράψας περὶ τὰ 40 θεατρικὰ ἔργα, τινὰ τῶν ὁποίων ἔσχον σημαντικὴν ἐπιτυχίαν. Μεταξὺ αὐτῶν καταλέγονται: «Ὁ ἀνώνυμος», παιχθὲν εἰς τὴν «Γαλλικὴν κωμῳδίαν», «Ὁ Γάλλος ἐν Λονδίνῳ» (1727), «Δὲν ξέρω τί» (1731), «Ὁ ἄνθρωπος τῆς ἡμέρας ἢ τὰ ἀπατηλὰ ἐξωτερικὰ» (1740), κτλ. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν τῷ 1766 καὶ 1791, οὐδεμία ὅμως τῶν ἐκδόσεων τούτων εἶναι πλήρης. Μ. Δ. Β.

**Μπουάστ** (Boiste), ***Πέτρος - Κλαύδιος - Βίκτωρ.*** Γάλλος λεξικογράφος (1765—1864). Δικηγόρος ἐν ἀρχῇ, ἠσχολήθη βραδύτερον μὲ τὴν φιλολογίαν, ἐγένετο δὲ γνωστὸς δι' ἑνὸς «Λεξικοῦ τῆς γαλλικῆς γλώσσης», τὸ ὁποῖον ἐξέδωκε τῷ 1800 καὶ τὸ ὁποῖον ἔσχεν εὐρυτάτην ἐπὶ μακρὸν διάδοσιν. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης «Λεξικὸν τῆς γεωγραφίας» (1820), «Φιλολογικὸν λεξικὸν» (1821—1824) καθὼς καὶ μέτριά τινα λογοτεχνικὰ ἔργα. —ω.

**Μπουαστὲλ** (Boistel), ***Ἀλφόνσος - Βαρθολομαῖος-Μαρτῖνος.*** Γάλλος νομομαθὴς καὶ βοτανικὸς (1836—1908). Σπουδάσας φιλολογίαν ἐν ἀρχῇ καὶ νομικὰ κατόπιν, ἐδίδαξεν ἐπὶ πενταετίαν εἰς τὴν νομικὴν σχολὴν τῆς Γρενόβλης, εἶτα δέ, ἀπὸ τοῦ 1880, εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων, ὡς ἔκτακτος καθηγητὴς τοῦ ἐμπορικοῦ δικαίου, καὶ ἐδημοσίευσεν ἀξιόλογα νομικὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Τὸ δίκαιον ἐν τῇ οἰκογενείᾳ» (1864), «Στοιχεῖα φυσικοῦ δικαίου» (1870), «Περίληψις ἐμπορικοῦ δικαίου» κ.τ.λ. Ἐξ ἴσου ὅμως ἔντονος ὑπῆρξεν ἡ δραστηριότης του ἐν τῷ κύκλῳ τῆς φυτολογίας, εἰς τὴν ὁποίαν ἐρασιτεχνικῶς ἐπεδόθη. Μανιώδης ἀλπειβάτης, κατέστη βαθμηδὸν σπανίας εἰδικότητος γεωλόγος καὶ βοτανικός, ἐγένετο δὲ ἀπὸ τοῦ 1894 μέλος τῆς Γεωλογικῆς ἑταιρείας τῆς Γαλλίας καὶ πρόεδρος αὐτῆς ἀπὸ τοῦ 1906. Συνέβαλε σπουδαίως εἰς τὴν διοργάνωσιν τοῦ γεωλογικοῦ καὶ παλαιοντολογικοῦ ἐργαστηρίου τῆς σχολῆς τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν τοῦ ἐν Παρισίοις πανεπιστημίου, ἰδίως εἰς ὅ,τι ἀφορᾷ τὴν παλαιοφυτολογίαν. Τὸ ἔργον του «Nouvelle flore des lichens» ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῷ 1902. —ω.

**Μπουασσὺ ντ' Ἀνγκλὰς** (Boissy d' Anglas), ***βαρῶνος—.*** Γάλλος πολιτικὸς (1756—1826). Ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν συνέλευσιν τῶν τριῶν τάξεων (1789), εἶτα δὲ πληρεξούσιος τῶν ἐθνικῶν συνελεύσεων τοῦ 1792 καὶ 1795. Ἀνῆκεν εἰς τὴν τάξιν τῶν μετριοπαθῶν, μετὰ τὴν πτῶσιν δὲ τῆς τρομοκρατίας ἐγένετο εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς ἀντιδράσεως καὶ μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῆς Κοινῆς σωτηρίας. Κατὰ τὴν εἰσβολὴν τοῦ ὄχλου τῶν προαστείων εἰς τὴν αἴθουσαν τῶν συνεδριάσεων τῆς συνελεύσεως, ὁ Μπουασσὺ καταλαβὼν τὴν προεδρικὴν ἕδραν ἐπέδειξε θαυμαστὴν ψυχραιμίαν. Αἱ κατὰ τοῦ στήθους του διευθυνόμεναι λόγχαι οὐδόλως ἐπτόησαν αὐτόν, μάτην δὲ οἱ κατασφάξαντες τὸν πληρεξούσιον Φερὰ τῷ ἐπέδειξαν ἐπὶ ἀκοντίου τὴν κεφαλὴν τοῦ θύματος. Ὁ ἀπτόητος πρόεδρος ἐχαιρέτησε μετὰ σεβασμοῦ τὴν κεφαλὴν τοῦ συναδέλφου του, οὐδεμία δὲ βία ἴσχυσε ν' ἀποσπάσῃ αὐτὸν τῆς θέσεώς του, ἕως ὅτου ἐπελθὼν ὁ στρατὸς ἐξεδίωξε τὸν ὄχλον. Ἡ ἀταραξία τοῦ Μπουασσὺ ἔσωσε τὴν ἐθνοσυνέλευσιν. Γενόμενος εἶτα μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τοῦ Συντάγματος, συνέταξε περίφημον ὑπόμνημα, ὅπερ ὑπῆρξεν ἡ βάσις τοῦ νέου πολιτεύματος. Εἶτα διωρίσθη μέλος τοῦ συμβουλίου τῶν Πενταχοσίων. Τῷ 1816 ἐξελέγη ἀκαδημαϊκὸς καὶ κατόπιν γερουσιαστής. Ἐκτὸς τῶν περὶ ἐπαναστάσεως μελετῶν του συνέγραψεν: «Essai sur la vie, les écrits et les opinions de Malesherbes» καὶ «Études littéraires et politiques d' un vieillard». Θ. Β.

**Μπουβαΐς** *[Γεωγρ.].* Νησίον τῆς ΝΔ. ἀκτῆς τῆς Σκύρου (πλάτ. 38° 50′ 25″ Β., μήκ. 23° 28′ 35″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2048: Skyros island), χωρίζον ἀμφιδύμως τοὺς ὅρμους Ἀγκάλη καὶ Ἅγιος Φωκᾶς. Σ. Ε. Λ.

— **Μπουβαΐς** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Συστὰς βραχονησίδος, σκοπέλων καὶ μυρμήκων, ἀναδύουσα ἀπὸ ὑφαλονήσου τοῦ νοτίου Αἰγαίου (πλάτ. 37° 05′ 10″ Β., μήκ. 25° 06′ 40″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1837: Paros and Naxos), εὑρισκομένη πρὸ τοῦ λιμένος τῆς Παροικίας. Σ. Ε. Λ.

**Μπουβαΰχί.** Περσικὴ δυναστεία τοῦ Ι' μ. Χ. αἰῶνος (βλ. λ. *Δαϊλαμῖται*).

**Μπουβὲ** (Bouvet) *[Γεωγρ.].* Μικρὰ νῆσος τοῦ Ν. Ἀτλαντικοῦ, κειμένη εἰς 54°16′ Ν. πλάτους καὶ 8°36′ Α. μήκους Γκρήνουϊτς. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1739 ὑπὸ τοῦ Γάλλου θαλασσοπόρου Μπουβέ, ἐκ τοῦ ὁποίου τὸ ὄνομα ἔλαβεν, ἐξηρευνήθη δὲ οὐχὶ πλήρως τῷ 1898—1899 ὑπὸ τῆς ἀποστολῆς τοῦ γερμανικοῦ πλοίου «Βαλντίβια». Λόγῳ τῆς θέσεώς της σπανιώτατα προσεγγίζουν εἰς αὐτὴν οἱ ναυτιλλόμενοι. Χ. Δ.

**Μπουβὲ** (Bouvet), ***Πέτρος-Ἐρρῖκος-Φραγκῖσκος-Στέφανος.*** Διάσημος Γάλλος πλοίαρχος (1775—1860). Δωδεκαετὴς μετέσχε τῆς ἐκστρατείας εἰς τὰς Ἀνατολικὰς Ἰνδίας. Τῷ 1792 ἔλαβε μέρος ὡς δόκιμος εἰς τὰς ἐναντίον τῶν ἀκτῶν τῆς Σαρδηνίας καὶ Ἰταλίας ἐκστρατείας καὶ βραδύτερον ἐπεδόθη εἰς τὸν καταδρομικὸν κατὰ τῶν Ἄγγλων πόλεμον (1796—1801), ἄλλοτε ὡς ὕπαρχος καὶ ἄλλοτε ὡς κυβερνήτης καταδρομικῶν. Τῷ 1809 προήχθη εἰς ἀντιπλοίαρχον, διακριθεὶς ὡς κυβερνήτης φρεγάτας εἰς τὰς διαφόρους πρὸς τοὺς Ἄγγλους συγκρούσεις εἰς τὰς ἰνδικὰς θαλάσσας. Προαχθεὶς εἰς πλοίαρχον ἡγήθη κατ' ἐπανάληψιν ισχυρῶν μοιρῶν, θεωρούμενος ὡς εἷς τῶν ὁρμητικωτέρων καὶ ἱκανωτέρων ἀρχηγῶν κατὰ θάλασσαν. Τῷ 1822 ἀπεστρατεύθη τῇ αἰτήσει του, προαχθεὶς εἰς ἐπίτιμον ὑποναύαρχον. Ἔλαβε μέρος εἰς 25 ἐκστρατείας καὶ 12 ναυμαχίας, ἐν 7 διεξήχθησαν ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν του. Τῷ 1830 ἐξελέγη βουλευτής. Γ. Ν. Κ.

— **Μπουβὲ** (Bouvet), ***Πέτρος-Ρενέ.*** Γάλλος πλοίαρχος (1750—1795). Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας καταταχθεὶς εἰς τὸ ναυτικόν, διεκρίθη εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῶν Ἰνδιῶν ὑπὸ τὸν Σουφρέν. Κατηγορηθεὶς ὡς προδότης, μετὰ τὴν παράδοσιν τῆς Τουλῶνος εἰς τοὺς Ἄγγλους, ἐφυλακίσθη ἐπὶ μακρόν. Γ. Ν. Κ.

— **Μπουβὲ** (Bouvet), ***Φραγκῖσκος-Ἰωσήφ, βαρῶνος ντὲ—.*** Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς ἐν Lorient (1753—1832). Δωδεκαετὴς κατετάχθη εἰς τὰς διαφόρους τακτικὸν καὶ ταχέως διεκρίθη εἰς τὰς ἐκστρατείας (Ἰνδιῶν, Ἀντιλλῶν, Ἁγίου Δομίνικου κτλ.). Τῷ 1793 προήχθη εἰς πλοίαρχον καὶ μετ' ὀλίγους μῆνας εἰς ὑποναύαρχον, ἀναλαβὼν τὴν διοίκησιν τῆς ἐμπροσθοφυλακῆς τοῦ ὑπὸ τὸν ναύαρχον Villaret-Joyeuse στόλου καὶ διακριθεὶς εἰς τὰς πρὸς τοὺς Ἄγγλους συγκρούσεις. Ἀποτυχὼν κατὰ Ἰανουάριον τοῦ 1797 νὰ ἀποβιβάσῃ τὴν στρατιὰν τοῦ στρατηγοῦ Hoche εἰς Ἰρλανδίαν, κατηγορήθη ὑπὸ τοῦ Διευθυντηρίου ἐπὶ ἀνεπαρκείᾳ καὶ ἐλλείψει ἀποφασιστικότητος ἐπὶ πολλαγεῖς τῶν καθηκόντων του ἐφυλακίσθη ἐπὶ πολλοὺς μῆνας. Ἀποφυλακισθεὶς ἐτέθη εἰς διαθεσιμότητα μέχρι τοῦ 1802, ὁπότε ἀνεκλήθη εἰς ἐνέργειαν ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος, τοποθετηθεὶς ὡς ἀρχηγὸς μοίρας. Ἀπὸ τοῦ 1803 ἕως 1813 διετέλεσε ναυτικὸς διοικητὴς τῆς Βρέστης. Γ. Ν. Κ.

— **Μπουβὲ ντὲ Λοζιὲ** (Bouvet de Lozier), ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Κάρολος.*** Διάσημος Γάλλος θα-

Digitized by Google

λασσοπόρος (1705—1786). Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας κατετάχθη εἰς τὸ ναυτικὸν καὶ τῷ 1731 εἰσῆλθεν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ἑταιρείας τῶν Ἰνδιῶν. Τῷ 1738 ἐξετέλεσεν ἐξερευνητικὸν πλοῦν πρὸς ἀναζήτησιν τοῦ μέρους ἔνθα τῷ 1504 προσήγγισεν ὁ Gonneville. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀνεκάλυψε τὸ ἀκρωτήριον Circoncision. Τῷ 1747 ὡς ἀντιπλοίαρχος, ἀποσταλεὶς εἰς τὰς Ἰνδίας, ἐξετέλεσεν ἐπιτυχῆ πλοῦν, κομίσας τῷ Dubleix χρήματα καὶ ἐνισχύσεις. Ἀπὸ τοῦ 1750 ἕως τοῦ 1763 διῴκησε τὰς νήσους Bourbon καὶ τῆς Γαλλίας. Γ. Ν. Ν.

**Μπουβερὲ** (Bouveret), *νόσος τοῦ—* [*Ἰατρ.*]· βλ. λ. *καρδίας ἀρρυθμίαι* (τ. ΙΓ' σ. 826 α').

**Μπουβιὲ** (Bouvier), ***Ἀλέξιος.*** Γάλλος συγγραφεὺς λαϊκῶν μυθιστορημάτων καὶ θεατρικῶν ἔργων (1836—1892). Ἦτο μέχρι τοῦ 1863 χαράκτης ὀρειχαλκουργός, συνεπλήρωσεν ὅμως βαθμηδὸν τὴν μόρφωσίν του καί, προικισμένος δι' ἀξιολόγου λογοτεχνικοῦ ταλάντου, δὲν ἐβράδυνε νὰ λάβῃ θέσιν μεταξὺ τῶν δημοφιλεστέρων συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του. Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον μὲ μερικὰ λαϊκὰ τραγούδια, ἐκ τῶν ὁποίων «Ὁ *κανάγιας*», τὰ «*Τρία γράμματα τοῦ ναύτη*» καὶ ἄλλα ἐσημείωσαν μεγάλην ἐπιτυχίαν. Συνέθεσεν ἐφεξῆς λιμπρέττα ὀπερεττῶν καὶ κωμειδύλλια καὶ ἐπεδόθη κατόπιν εἰς τὴν συγγραφὴν ἰδίᾳ μυθιστορημάτων ἐκδιδομένων κατὰ φυλλάδια, τῶν ὁποίων ἡ κυκλοφορία ὑπῆρξε καταπληκτική. Ἐξ αὐτῶν, ἀριθμουμένων κατὰ δεκάδας, ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «*Οἱ φτωχοί*» (1870), «*Οἱ στρατιῶται τῆς ἀπελπισίας*» (1871), «*Ὁ γάμος ἑνὸς καταδίκου*» (1873), «*Ἡ λέσχη τῶν μπαγαμπόντηδων*» (1881), «*Ἡ κοκκινομαλλοῦσα*» (1882), «*Ἡ δεσποινὶς Γλυκοφιλοῦσα*» (1888) κλπ. Ὁ Μπουβιὲ ἐξ ἄλλου μετέτρεψέ τινα τῶν μυθιστορημάτων του εἰς θεατρικὰ ἔργα, ὡς ὁ «*Γάμος ἑνὸς καταδίκου*» κ. ἄ. —Ω.

**Μπουβὶν** (Bouvines) [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Βορρᾶ, εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τῆς Λίλλης. Εἶναι γνωστὸν ἐκ τῆς μεγάλης παρ' αὐτὸ μάχης τῆς 27 Ἰουλίου 1214, καθ' ἣν ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Φίλιππος-Αὔγουστος ἐνίκησε τοὺς συμμάχους στρατοὺς τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Ὄθωνος Δ', τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἰωάννου τοῦ Ἀκτήμονος καὶ τοῦ κόμιτος τῆς Φλάνδρας Φερράνδου. Μεταξὺ τῶν αἰχμαλώτων κατελέγοντο οἱ δύο ἀρχηγοὶ τῶν Ἄγγλων καὶ ὁ κόμης τῆς Φλάνδρας. Εἰς ἀνάμνησιν τῆς νίκης ταύτης, ἥτις ἐθεμελίωσεν ἐν Γαλλίᾳ τὸν θρίαμβον τοῦ οἴκου τῶν Καπετιδῶν, ἀνηγέρθη τῷ 1863 ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης ἀναμνηστικὸς ὀβελίσκος. Χ. Δ.

**Μπουβὼ** (Bouveault), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος χημικὸς (1864—1909). Ἐσπούδασε φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ ἰατρικήν, ἐχρημάτισε δ' ὑφηγητὴς τῆς χημείας εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Λυὼν καὶ τῆς Λίλλης καὶ ἔκτακτος καθηγητὴς εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Νανσὺ καὶ τῶν Παρισίων. Σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ ἐργασίαι του ἐπὶ θεμάτων τῆς ὀργανικῆς χημείας, ἐν τῇ συνθέσει ἰδίως τῶν ἀλδεϋδῶν καὶ τῶν ἀρωματικῶν ὀξέων. Τῷ 1903 ἡ Γαλλικὴ Ἀκαδημία τῶν Ἐπιστημῶν τῷ ἀπένειμε τὸ μέγα βραβεῖον Jecker, τῷ δὲ 1907 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Χημικῆς ἑταιρείας τῆς Γαλλίας. —Ω.

**Μπούγα** [*Γεωγρ.*]—1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας χωρίου *Κρυονέρι* (βλ. λ.).

— 2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Κοκκινόρραχη* (βλ. λ.).

— 3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Ἀνεμορράχη* (βλ. λ.).

— 4) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας χωρίου *Ἀσπροχώρι* (βλ. λ.).

— 5) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καλανίστρων τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 61.

— 6) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Καλλιρρόη* (βλ. λ.). Χ. Δ.

— **Μπούγα Λαζὰρ** [*Γεωγρ.*] Χωρίον τοῦ νομοῦ Λαρίσης (βλ. λ. *Λαζὰρ* Μπούγα).

**μπουγάδα** (ἡ), δημοτ., πλύσις τῶν ἀσπρορρούχων διὰ στακτῆς κονίας, μὲ ἀλισίβαν: «*ἔχω μπουγάδα*», «*θὰ βάλω μπουγάδα*» (ἐνετ. bugada).

**Μπουγάδα Μετόχια** [*Γεωγρ.*] Συνοικισμὸς τοῦ δήμου Ἡρακλείου τῆς ἐπαρχίας Τεμένους τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 21. Χ. Δ.

**Μπουγαδιάζω**, ἀόρ. *ἐμπουγάδιασα*, παρακ. παθ. μετχ. *μπουγαδιασμένος*· ἐπὶ τῆς πλύσεως τῶν ἀσπρορρούχων, τοποθετῶ τὰ ἐνδύματα εἰς τὸν ἐπὶ τούτῳ κόφινον ἢ κάσαν, ἵνα περιχυθοῦν διὰ στακτῆς κονίας (μὲ ἀλισίβαν): «*τὰ σαπουνίζουν πρῶτα τὰ ροῦχα κι ἔπειτα τὰ μπουγαδιάζουν*».

**μπουγάδιασμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μπουγαδιάζω, ἡ στρῶσις τῶν ἐνδυμάτων εἰς τὸν κόφινον ἢ τὴν κάσαν καὶ ἡ περίχυσις αὐτῶν διὰ στακτῆς κονίας.

**μπουγαζάρω**, *μπουγάζι*· βλ. λ. *μπογαζάρω*, *μπογάζι*.

**μπουγαρίνι** (τό)· κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἴασμος*.

**Μπουγαρίοβον** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Καραβία* (βλ. λ.).

**μπουγάτσα** (ἡ). Εἶδος ἀνατολικοῦ γλυκίσματος. Παρασκευάζεται ἀπὸ μυζήθραν, αὐγά, ζάχαριν καὶ φύλλα μπακλαβᾶ. Ἀναμιγνύομεν ½ ὀκᾶν μυζήθρας μὲ 4 αὐγὰ καὶ 50 δράμια ζάχαριν. Βουτυρώνομεν τὸ ταψὶ καὶ ἁπλώνομεν εἰς αὐτὸ 5—6 φύλλα μπακλαβᾶ ἀλειμμένα μὲ λειωμένο βούτυρο· ἐπάνω εἰς αὐτὰ στρώνομεν τὴν μυζήθραν εἰς ὕψος δύο ἑκατοστομέτρων καὶ τὴν καλύπτομεν μὲ ἰσάριθμα φύλλα ἐπίσης βουτυρωμένα. Χαράσσομεν τὴν ἐπιφάνειαν εἰς σχήματα τετράγωνα καὶ κατόπιν ἀφίνομεν τὸ ταψὶ εἰς μέτριον φοῦρνον ἐπὶ ἕνα τέταρτον τῆς ὥρας. Τέλος τὴν πασπαλίζομεν μὲ ζάχαριν καὶ κανέλλαν. Τὸ γλύκισμα αὐτὸ προσφέρεται ζεστόν. Ἡ μπουγάτσα παρασκευάζεται καὶ κατὰ πολλοὺς ἄλλους τρόπους. Γίνεται ἁπλῆ, χωρὶς γέμισιν, μὲ φύλλα μπακλαβᾶ βουτυρωμένα, κομμένα εἰς σχῆμα καὶ μέγεθος πιάτου. Ἐπίσης παρασκευάζεται μπουγάτσα μὲ γέμισιν ἀπὸ τυρὶ ἢ κιμᾶν. Ἡ περισσότερον ἐν χρήσει εἰς τὰ ζαχαροπλαστεῖα σήμερον εἶναι μὲ γέμισιν ἀπὸ κρέμα, ἡ ὁποία παρασκευάζεται ὅπως καὶ εἰς τὸ μπουρέκι, μὲ ἀναλογίαν 1 ὀκᾶν γάλα, 60 δράμια σιμιγδάλι, 50 δράμια ζάχαριν, 6 αὐγά, 2 κουταλιὲς βούτυρο καὶ ἄρωμα· εἰς τὴν ποσότητα αὐτὴν τῆς κρέμας θὰ χρειασθῶμεν 60 δράμια φύλλα μπακλαβᾶ. Ἡ πλέον ὀνομαστὴ μπουγάτσα παρασκευάζεται εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν. Μ. ΔΡ.

**Μπουγὲ** (Bouillet), ***Μαρία-Νικόλαος.*** Γάλλος φιλόσοφος καὶ λεξικογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1798 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1864. Κατ' ἀρχὰς ἐφοίτησεν εἰς τὸ κολλέγιον Sainte-Barbe, κατόπιν δέ, τῷ 1816, εἰσήχθη εἰς τὴν École normale, ὅπου παρηκολούθησε τὰ μαθήματα τοῦ Cousin καὶ τοῦ Jouffroy. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἐδίδαξεν ἐπὶ μακρὰν σειρὰν ἐτῶν εἰς τὸ κολλέγιον Rollin. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830 ἐγένετο καθηγητὴς διαφόρων κολλεγίων τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1840 καθηγητὴς τοῦ κολλεγίου Bourbon. Ὅταν τῷ 1845 ὁ Σαλβαντὺ ἀναδιωργάνωσε τὸ βασιλικὸν συμβούλιον τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως, προσέλαβε καὶ τὸν Μπουγέ. Ἐξέδωκε μετὰ σημειώσεων καὶ σχολίων τὰ φιλοσοφικὰ ἔργα τοῦ Κικέρωνος καὶ τοῦ Σενέκα, ἐπίσης τὰ φιλοσοφικὰ ἔργα τοῦ Βάκωνος, μετάφρασιν μετὰ σχολίων τῶν «Ἐννεάδων» τοῦ Πλωτίνου (1857—1860 τόμ. 3), βραβευθεῖσαν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Συνειργάζετο ἐπίσης εἰς τὴν «Encyclopédie moderne», εἰς τὸ «Dictionnaire de la conversation» εἰς τὸ «Supplément de la Biographie universelle» καὶ εἰς τὸ «Dictionnaire des sciences philosophiques». Ἀπὸ τοῦ 1827 ἤρχισε τὴν ἔκδοσιν ἑνὸς «Dictionnaire classique de l'antiquité sacrée et profane» (τόμ. 2), τὸ ὁποῖον μὲ τὸν τρόπον μὲ τὸν ὁποῖον ἔχει συνταχθῆ καὶ μὲ τὴν συχνὴν ἀναδρομὴν εἰς τὰς πηγὰς ἀποτελεῖ ἐντελῶς πρωτότυπον εἶδος λεξικοῦ. Δεκαπέντε ἔτη βραδύτερον ἐξέδωκε τὸ κεφαλαιῶδες ἔργον του: «Dictionnaire universel d'histoire et de géographie» (1842), τὸ ὁποῖον ἔσχε σημαντικὴν ἐπιτυχίαν καὶ ἠρίθμησε τὴν εἰκοστὴν του ἔκδοσιν μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ συγγραφέως. —Ω.

**Μπούγι** [*Γεωγρ.*]. Βραχονησὶς τοῦ μέσου Αἰγαίου, οἱ *Μελάντιοι σκόπελοι* τῶν ἀρχαίων.

**Μπουγιακλῆ** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν συνοικισμοῦ *Ραχωνάκι* (βλ. λ.).

**Μπούγιας, Ζῆκος.** Ἀπόγονος τοῦ *Σκέντου Μπούϊα*, ἀδελφοποιητοῦ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ, ἁρματολὸς καὶ κατόπιν κλέφτης τῆς Ἠπείρου ἐν τῇ περιφερείᾳ Λάκκα τοῦ Μπότσαρη. Συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων ἀπηγχονίσθη ἐν Ἰωαννίνοις. Σ. Μ.

**Μπουγίδαι.** Περσικὴ δυναστεία τοῦ Ι' μ. Χ. αἰῶνος (βλ. λ. *Δαϊλαμῖται*).

**Μπουγιὲ** (Bouilhet). Γάλλος ποιητὴς καὶ θεατρικὸς συγγραφεὺς (1822—1869). Ἦτο συμμαθητὴς καὶ φίλος τοῦ Φλωμπέρ, εἰς τὸν ὁποῖον ἀφιέρωσε τὸ πρῶτον του ποίημα «Melaenis» (1852), ἐμπνευσμένον ἀπὸ τὰς μελέτας του περὶ τῆς ἀρχαίας Ρώμης. Ἐδημοσίευσε κατόπιν δύο ἀκόμη ποιήματα «Les Fossiles» (1854) καὶ «Amours noirs», ἐπεδόθη δ' ἐφεξῆς εἰς τὴν συγγραφὴν θεατρικῶν ἔργων. Ἀνεβίβασεν ἐν πρώτοις τὸ πεντάπρακτον ἔμμετρον δρᾶμα «Madame de Montarcy» (1856), ρωμαντικοῦ ὅλως τύπου, εἶτα δὲ τὰ ἔμμετρα ἐπίσης δράματα «Hélène Peyron» (1858), «Dolorès» (1862) καὶ «La conjuration d'Amboise (1866) καὶ τὴν ἔμμετρον κωμῳδίαν «L'oncle Million» (1860). Ὁ Μπουγιὲ καὶ εἰς τὰς ποιήσεις καὶ εἰς τὰ θεατρικά του ἔργα εἶναι πρὸ παντὸς ἐπικὸς λυρικὸς ποιητής, μὲ περιτέχνως ἐπεξειργασμένους στίχους. —Ω.

— **Μπουγιὲ** (Bouillé), ***Φραγκῖσκος-Κλαύδιος,*** *μαρκήσιος ντὲ —*. Γάλλος στρατηγὸς (1739—1800). Ὢν διοικητὴς τῶν Ἀντιλλῶν, διεξήγαγε μετ' ἐπιτυχίας τὴν ἄμυναν τῶν νήσων τούτων ἐναντίον τῶν Ἄγγλων διαρκοῦντος τοῦ πολέμου τῆς Ἀμερικῆς. Τῷ 1790, μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, κατέπνιξε μετὰ πολλῆς δραστηριότητος τὴν ἐπανάστασιν τοῦ ἑλβετικοῦ συντάγματος τοῦ Νανσὺ καὶ παρεσκεύασε τὴν φυγάδευσιν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Ταύτης ἀποτυχούσης, ὁ Μπουγιὲ ἔφυγεν εἰς τὸ ἐξωτερικὸν καὶ μετέβη πρὸς συνάντησιν τοῦ Κοντέ, ἐν τέλει δὲ ἀπεσύρθη εἰς Λονδῖνον, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Ἐδημοσίευσεν «Ἀπομνημονεύματα ἐπὶ τῆς Ἐπαναστάσεως» (1797). —Ω.

— **Μπουγιὲ** (Bouillier), ***Φραγκῖσκος.*** Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1813. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς ἐν Παρισίοις εἰς τὸ κολλέγιον Στανισλάου καὶ κατόπιν εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Λυών. Εἰσαχθεὶς τῷ 1834 εἰς τὴν École normale ἀπεφοίτησεν ἐξ αὐτῆς ἀριστοῦχος. Ἐδίδαξε τὴν φιλοσοφίαν εἰς τὸ βασιλικὸν κολλέγιον τῆς Ὀρλεάνης καὶ κατόπιν (1839) εἰς τὴν φιλολογικὴν σχολὴν τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀρλεάνης. Συνέγραψε: «Théorie de la raison impersonelle» (1844), «Histoire de la philosophie cartésienne» (1854) βραβευθεῖσαν, «De l'âme pensante et du principe vital» (1858) «Le principe vital et l'âme pensante» (1862), «Le plaisir et la douleur» (1865). Τῷ 1864 ἐγένετο πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Κλερμόν, κατόπιν δὲ γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως. Τῷ 1867 ἐγένετο διευθυντὴς τῆς École normale supérieure. Ἀπολυθεὶς ὑπὸ τοῦ J. Ferry τῷ 1876 ἐδημοσίευσε τὸ βιβλίδιον: «L'université sous M. Ferry» (1881), τὸ ὁποῖον τοῦ ἐδημιούργησε πολλοὺς φίλους ἀλλὰ καὶ πολλοὺς ἐχθρούς. Τῷ 1875 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ἐξέδωκεν ἐπίσης: «Morale et progrès» (1871), «L'institut et les académies de province» (1875), «La vraie consience» (1882), «Études familières de psychologie et de morale» (1884, τόμ. 2). —Ω.

**Μπούγιμκαμ** [*Γεωγρ.*]. Ποταμὸς τῆς Ρωσίας (βλ. λ. *Κάμα*).

**Μπουγιόν,** ἡ ***Βουϊλλὼν*** (Bouillon) [*Γεωγρ.*]. Μικρὰ πόλις καὶ ὁμώνυμον παλαιὸν δουκᾶτον τῆς Κάτω Λωρραίνης, περιλαμβανόμενον σήμερον εἰς τὸν νομὸν Λουξεμβούργου τοῦ Βελγίου. Ἡ πόλις, πρωτεύουσα κατὰ τὸν μεσαίωνα τοῦ δουκάτου, ἀριθμεῖ σήμερον πληθυσμὸν 2.800 κατ., κεῖται δὲ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σεμονά, παρὰ τὰ γαλλικὰ σύνορα, εἰς ἀπόστασιν 34 χλμ. ἀπὸ τοῦ Νεφσατώ. Ἔχει βυρσοδεψεῖα, ἀσβεστοκαμίνους, ἐργοστάσια κατασκευῆς ἐλασμάτων (λαμαρινῶν) κλπ., διεξάγει δ' ἐμπόριον κτηνῶν καὶ τῶν βιομηχανικῶν προϊόντων αὐτῆς. Τῆς πόλεως ὑπέρκειται ἐκτεταμένος καὶ παλαιότατος ὀχυρὸς πύργος, κτισμένος ἐπὶ ὑψώματος σχιστολιθικῆς συστάσεως, ὁ ὁποῖος ἐπανειλημμένως ἀντέσχεν ἐπιτυχῶς εἰς μακρὰς πολιορκίας, ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος μέχρι τοῦ τέλους τῶν Ναπολεοντείων πολέμων.

Τὸ δουκᾶτον τοῦ Μπουγιόν, γνωστὸν ἰδίως ἐκ τοῦ δεσπότου αὐτοῦ Γοδεφρείδου τῆς Βουϊλλῶνος (βλ. λ. *Γοδεφρεῖδος* ντὲ Μπουγιόν), ἑνὸς ἐκ τῶν κυριωτέρων ἀρχηγῶν τῆς πρώτης σταυροφορίας καὶ βασιλέως τῶν Ἱεροσολύμων, περιελάμβανε τὴν πόλιν, τὸν πύργον καὶ τὴν περιοχὴν αὐτῶν, ἐξετείνετο δὲ μεταξὺ Λουξεμβούργου καὶ τῆς Καμπανίας. Ὁ μνημονευθεὶς Γοδεφρεῖδος, ὅστις εἶχε κληρονομήσει τὸ μικρὸν δουκᾶτον ἐκ τοῦ πρὸς μητρὸς θείου του Γοδεφρείδου τοῦ Πωγωνάτου τῷ 1077, ἐπώλησεν αὐτὸ κατὰ τὴν εἰς τοὺς ἁγίους Τόπους ἀναχώρησίν του, εἰς τοὺς ἐπισκόπους τῆς Λιέγης (1095), οἱ ὁποῖοι παρέμειναν κύριοι αὐτοῦ, σχεδὸν ἀδιαλείπτως, μέχρι τοῦ 1483. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Γουλιέλμος ντὲ λὰ Μάρκ, βαρῶνος τοῦ Λυμαίν, κατέλαβε τὴν Λιέγην, ἔσφαξε τὸν ἐπίσκοπον αὐτῆς καὶ ὑπεχρέωσε τὸν κλῆρον νὰ δεχθῇ ὡς ἄρχοντα τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Ροβέρτον ντὲ λὰ Μάρκ, ἄρχοντα τοῦ Σεδάν. Ἔκτοτε τὸ δουκᾶτον παρέμεινεν εἰς τὴν κατοχὴν τοῦ οἴκου τῶν Λὰ Μάρκ μέχρι τοῦ 1559, ὁπότε ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Ἐρρῖκος Β' ἀπέδωκεν αὐτὸ εἰς τοὺς παλαιοὺς κυρίους του, ἐπισκόπους τῆς Λιέγης. Βραδύτερον περιῆλθε γαμικῷ δικαιώματι εἰς τὸν οἶκον τῶν Λὰ Τοὺρ ντ' Ὠβέρνῃ καὶ παρέμεινεν εἰς αὐτὸν μέχρι τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, ὁπότε προσηρτήθη ὑπὸ τῶν Γάλλων (1795). Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος (1815) ἡνώθη μετὰ τοῦ Λουξεμβούργου καὶ τέλος παρεχωρήθη τῷ 1839 εἰς τὸ Βέλγιον, εἰς ὃ καὶ παραμένει ἔκτοτε. Χ. Δ.

**Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Ἐμμανουὴλ-Θεοδόσιος ντὲ Λατοὺρ ντ' Ὠβέρνῃ*** (de La Tour d'Auvergne), *καρδινάλιος τοῦ—*. Υἱὸς τοῦ *Φρειδερίκου* (βλ. κατωτ.)

καὶ ἀνεψιὸς τοῦ στρατάρχου Τυρὲν (1613—1715). Ὑπῆρξε περίφημος διὰ τοὺς ἀγῶνάς του ἐναντίον τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ΄, καθὼς καὶ διὰ τὴν στάσιν τὴν ὁποίαν ἐτήρησεν ἐν τῇ ὑποθέσει τοῦ *Φενελὸν* (βλ. λ.), τὸν ὁποῖον, παρὰ τὰς ὁδηγίας τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως, προσεπάθησε ν' ἀθῳώσῃ κατὰ τὴν ἐν Ρώμῃ δίκην του. Ἐπὶ στοιχείων παρασχεθέντων παρ' αὐτοῦ ἔγραψεν ὁ Μπαλὺζ τὴν «Ἱστορίαν τοῦ οἴκου τῆς Ὠβέρνης» (1708).

—**Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Γοδεφρεῖδος ντὲ*** —. Ἀρχηγὸς τῆς Α΄ σταυροφορίας καὶ βασιλεὺς τῆς Ἱερουσαλὴμ (βλ. λ. *Γοδεφρεῖδος* ντὲ Μπουγιόν).

—**Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Ἐρρῖκος ντὲ Λατοὺρ ντ' Ὠβέρν***, (de La Tour d'Auvergne), *δοὺξ τοῦ*—. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας (1555—1623). Προσεχώρησεν εἰς τὸν καλβινισμὸν καὶ ἐτάχθη μὲ τὴν μερίδα τοῦ Ἐρρίκου τῆς Ναβάρρας τῷ 1576. Ἐξ ἴσου ἱκανὸς πολεμιστής, ὅσον καὶ διπλωμάτης, δραστήριος καὶ ἐπιβλητικός, διεδραμάτισε σημαντικὸν ρόλον εἰς ὅλα τὰ πολιτικὰ καὶ στρατιωτικὰ συμβάντα τῆς ἐποχῆς του. Τῷ 1591 ἐνυμφεύθη τὴν Καρλόταν ντὲ Λαμάρκ, ἐκ τῆς ὁποίας ἔλαβε τὸν τίτλον καὶ τὸ δουκᾶτον τοῦ Μπουγιόν. Τῷ 1592 ὠνομάσθη στρατάρχης τῆς Γαλλίας. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ΄ ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στρατοῦ τῶν στασιασάντων πριγκίπων καὶ ἐκηρύχθη ἀποστάτης καὶ προδότης, ἀλλ' ἐπιτευχθέντος συμβιβασμοῦ ἐπανῆλθεν εἰς τὴν αὐλήν. Ἐκ δευτέρου γάμου του μετὰ τῆς Ἰσαβέλλας τοῦ Νασσάου, θυγατρὸς τοῦ Γουλιέλμου τῆς Ὀράγγης, ἐγέννησε δύο υἱούς, ὧν ὁ εἷς ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τοῦ Μπουγιὸν (βλ. κατωτ. *Φρειδερῖκος-Μαυρίκιος*), ὁ δὲ ἄλλος ὑπῆρξεν ὁ μέγας στρατάρχης *Τυρὲν* (βλ. λ.). Ὁ Ἐρρῖκος Μπουγιὸν ἀφῆκεν ἀπομνημονεύματα, τῶν ὁποίων ἐδημοσιεύθη τὸ πρῶτον μόνον μέρος (Παρίσιοι 1866).

— **Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Ροβέρτος Δ΄ ντὲ Λαμάρκ*** (de La Marck), *δοὺξ τοῦ*—. Στρατάρχης τῆς Γαλλίας (1520—1556). Καταγόμενος ἀπὸ τοῦ περιφήμου *Γουλιέλμου Λαμάρκ*, τοῦ ἀποκληθέντος «Ἀγριοχοίρου τῶν Ἀρδεννῶν» (βλ. λ. *Λαμάρκ*), ἐφημίζετο κατὰ τὴν νεανικήν του ἡλικίαν διὰ τὴν ριψοκίνδυνον καὶ περιπετειώδη ζωήν του, δι' ὃ καὶ προσωνομάζετο «Jeune aventureux». Τῷ 1538 ἐνυμφεύθη τὴν Φραγκίσκην ντὲ Μπρεζέ, θυγατέρα τῆς Ἀρτέμιδος τοῦ Πουατιέ. Ὁ Ἐρρῖκος Β΄, μετὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἅλωσιν τοῦ Μέτς, ἔδωκεν εἰς τὸν Ροβέρτον Λαμὰρκ στρατιωτικὰς δυνάμεις πρὸς ἀνακατάληψιν τοῦ δουκάτου τοῦ Μπουϊγιόν, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἁρπάσει ὁ Κάρολος Κουΐντος. Ἡ προσπάθειά του ἀπέβη ἐπιτυχὴς καὶ ὁ Ροβέρτος ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος ἀνεγνωρισμένος ἐν Γαλλίᾳ δοὺξ τοῦ Μπουγιόν. Ἀλλ' ἀπὸ τοῦ 1853 ἡ τύχη τὸν ἐγκατέλιπε. Συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ὑπὸ τοῦ Καρόλου κατὰ τὴν ὑπὸ τούτου ἅλωσιν τοῦ Hesdin, ἐφυλακίσθη εἰς ὑπόγειον τρώγλην, ὑφιστάμενος μυρίους κακομεταχειρισμούς, μόνον δὲ τῷ 1556 ἠπλευθερώθη ἐπὶ καταβολῇ 100.000 σκούδων. Ἀλλ' ἦτο τόση ἡ ἐκ τῶν δεινῶν τὰ ὁποῖα ὑπέστη ἐξάντλησίς του, ὥστε μόλις ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν ἀπέθανεν.

— **Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Φραγκλῖνος***. Γάλλος σύγχρονος πολιτικός, γενόμενος ἰδίᾳ γνωστὸς διὰ τὰ φιλοτουρκικά του αἰσθήματα καὶ τὰς ἀναλόγους ἐνεργείας του κατὰ τὴν μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον συνέχισιν τῶν ἑλληνοτουρκικῶν ἐχθροπραξιῶν καὶ τῶν μετὰ ταύτας διαπραγματεύσεων τῆς εἰρήνης, μεταβὰς ἐπὶ τούτῳ ἐπανειλημμένως εἰς τὴν Ἄγκυραν καὶ συνδεθεὶς διὰ προσωπικῆς φιλίας μετὰ τοῦ Μουσταφᾶ Κεμὰλ πασᾶ. Διετέλεσε βουλευτής, πρόεδρος τῆς ἐπὶ τῶν ἐξωτερικῶν ζητημάτων κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς καὶ ἀρχηγὸς ὁμάδος βουλευτῶν, ἧς τὸ βάρος ἐγένετο πολλάκις αἰσθητὸν κατὰ τὰς τελευταίας κυβερνητικὰς κρίσεις ἐν Γαλλίᾳ. Διεπραγματεύθη ἐπίσης τὴν μετὰ τῆς Γαλλίας χωριστὴν συνθήκην τοῦ 1921, ἥτις φέρει καὶ τὸ ὄνομά του (βλ. κατ. *Μπουγιὸν συνθήκη*).

— **Μπουγιὸν** (Bouillon), ***Φρειδερῖκος-Μαυρίκιος ντὲ Λατοὺρ ντ' Ὠβέρν*** (de la Tour d'Auvergne), *δοὺξ τοῦ* —. Υἱὸς τοῦ *Ἐρρίκου* (βλ. ἀνωτ.). Ὑπηρέτησεν ἐν ἀρχῇ εἰς τὸν στρατὸν τῆς Ὁλλανδίας ὑπὸ τὸν θεῖόν του πρίγκιπα τῆς Ὀράγγης, κατετάχθη δὲ εἰς τὸν γαλλικὸν στρατὸν ἀπὸ τοῦ 1635 μὲ βαθμὸν στρατοπεδάρχου (maréchal de camp). Τῷ 1641, ἀπὸ συμφώνου μετὰ τοῦ δουκὸς τοῦ Σουασσόν, ἐπεδίωξε νὰ ρίψῃ τὸν Ρισελιὲ ἀπὸ τῆς ἐξουσίας, ἑνωθεὶς δὲ μετὰ τῶν Ἱσπανῶν ἐπολέμησεν ἐναντίον τῶν Γάλλων, τοὺς ὁποίους καὶ ἐνίκησεν εἰς τὴν μάχην τῆς Μαρφέ· ἀλλ' ἐγκαταλειφθεὶς μετὰ τοῦτο ἀπὸ τοὺς Ἱσπανοὺς ἀπεσύρθη εἰς Σουδὰν καὶ ἐσυνθηκολόγησε μετὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΓ΄. Τῷ 1642 τῷ ἀνετέθη, μὲ τίτλον πληρεξουσίου διοικητοῦ (lieutenant général), ἡ ἀρχηγία τῶν ἐν Ἰταλίᾳ γαλλικῶν στρατευμάτων. Κατηγορηθεὶς ὅμως ὡς μετέχων τῆς συνωμοσίας τοῦ Σαὶν-Μὰρ (Cinq-Mars) καὶ συλληφθείς, διαταγῇ τοῦ Ρισελιέ, ἐφυλακίσθη εἰς Λυών, θὰ ὑφίστατο δ' ἀσφαλῶς θανατικὴν καταδίκην, ἂν ἡ σύζυγός του δὲν προελάμβανε νὰ καταφύγῃ εἰς Σεδὰν καὶ ν' ἀπειλήσῃ ὅτι θὰ παρέδιδε τὴν πόλιν εἰς τοὺς Ἱσπανούς. Πρὸ τοῦ κινδύνου τούτου ὁ Ρισελιὲ ἠναγκάσθη ν' ἀποφυλακίσῃ τὸν ἄσπονδον ἐχθρόν του. Μετὰ τοῦτο ὁ Μπουγιὸν ἐδέχθη νὰ παραχωρήσῃ εἰς τὸ γαλλικὸν κράτος τὸ πριγκιπᾶτον τοῦ Σεδάν, λαμβάνων εἰς ἀντάλλαγμα τὰ δουκᾶτα τοῦ Ἀλμπρὲ καὶ τοῦ Σατὼ-Τιερρύ. Τῷ 1644 ἐγκατέλιπε τὴν Γαλλίαν, μεταβὰς δὲ εἰς Ἰταλίαν ἀπηρνήθη τὸν προτεσταντισμὸν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῶν στρατευμάτων τοῦ πάπα. Ἐπανελθὼν βραδύτερον εἰς Γαλλίαν ἔδρασεν ἐνεργῶς μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Τυρὲν κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον τῆς «Σφενδόνης». Τὰ «Ἀπομνημονεύματά» του ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1731. —Ω.

— **Μπουγιὸν *συνθήκη***. Ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ταύτην τυγχάνει γνωστὴ ἡ συνομολογηθεῖσα συνθήκη μεταξὺ τῆς κυβερνήσεως τῆς Ἀγκύρας καὶ τῆς Γαλλίας, διὰ τοῦ ἐκτάκτου ἀπεσταλμένου της Φραγκλίνου *Μπουγιὸν* (βλ. λ.), τὴν 20 Ὀκτωβρίου 1921 ἐν Ἀγκύρᾳ καὶ διὰ τοῦτο ἀποκαλουμένη ἐνίοτε καὶ συνθήκη τῆς Ἀγκύρας. Ἡ συνθήκη αὕτη ὑπῆρξεν ἀποτέλεσμα μακρῶν καὶ ἐπιμόνων διαπραγματεύσεων μεταξὺ τῶν δύο κυβερνήσεων, τῆς Γαλλίας ἐπιθυμούσης ν' ἀσφαλίσῃ τὴν ἐν Ἀνατολῇ θέσιν της δι' ἰδιαιτέρας μονομεροῦς συμφωνίας μετὰ τῆς Ἀγκύρας κατόπιν τῆς μὴ ἐπιτευχθείσης ἐφαρμογῆς τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν, τῆς ἀποτυχίας τῆς συνδιασκέψεως τοῦ Λονδίνου τῆς 13 Μαρτίου 1921 λόγῳ ἰδίως τῆς ἀρνήσεως τῆς Ἑλλάδος ὅπως ἀποδεχθῇ τὰς τουρκικὰς ἀξιώσεις, καὶ τῆς μὴ ἐπικυρώσεως ὑπὸ τῆς ἐθνοσυνελεύσεως τῆς Ἀγκύρας τῆς γαλλοτουρκικῆς συνθήκης τοῦ Λονδίνου, ἥτις εἶχε συναφθῇ κατὰ τὴν ἰδίαν ἐποχήν. Δι' αὐτῆς ἡ Γαλλία ἀνελάμβανε τὴν ὑποχρέωσιν νὰ ἐκκενώσῃ τὴν Κιλικίαν, τοῦτο ὅμως ἡ Ἐθνοσυνέλευσις τῆς Ἀγκύρας δὲν ἐθεώρησεν ὡς ἐπαρκῆ ἐγγύησιν, ἐξηνάγκασε δὲ καὶ εἰς παραίτησιν τὸν ὑπογράψαντα τὴν ἐν λόγῳ συνθήκην ὑπουργὸν τῶν Ἐξωτερικῶν Μπεκὶρ Σαμῆ. Διὰ τῆς συνθήκης Μπουγιὸν ἐδηλοῦτο ὑπ' ἀμφοτέρων τῶν συμβαλλομένων κρατῶν ὅτι θεωροῦσι λήξασαν τὴν μεταξύ των ὑφισταμένην ἐμπόλεμον κατάστασιν, ἡ δὲ Γαλλία ἀνελάμβανε τὴν ὑποχρέωσιν νὰ προβῇ πάραυτα εἰς τὴν στρατιωτικὴν ἐκκένωσιν τῆς Κιλικίας εὐθὺς μετὰ τὴν ἐπικύρωσιν τῆς συνθήκης, ὅπερ καὶ ἔπραξε πράγματι. Ἐπὶ πλέον, διὰ τῆς αὐτῆς συνθήκης διεκανονίζετο τὸ καθεστὼς τῆς Ἀλεξανδρέττας καὶ ἐρρυθμίζοντο αἱ γαλλοτουρκικαὶ διαφοραὶ ὡς πρὸς τὰ σύνορα τῆς Συρίας, τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως ὑποχρεωθείσης νὰ παραχωρήσῃ εἰς τὴν κυβέρνησιν τῆς Ἀγκύρας ὡρισμένην ἔκτασιν σπουδαιοτάτης στρατηγικῆς σημασίας, εἰς τρόπον ὥστε εἰς τὸ μέλλον ὁ σιδηρόδρομος τῆς Βαγδάτης νὰ διέρχεται διὰ τουρκικῶν ἐδαφῶν. Ἡ συνθήκη Μπουγιὸν ὥριζεν ἀκόμη ὅτι ἡ διοίκησις τοῦ σιδηροδρόμου τῆς Βαγδάτης θ' ἀνήκῃ εἰς τὴν γαλλικὴν κυβέρνησιν, ἀλλ' ἀμφότερα τὰ κράτη ἔχουσι τὸ δικαίωμα τῆς δι' αὐτοῦ μεταφορᾶς στρατευμάτων καὶ πολεμικοῦ ὑλικοῦ, κατὰ τὰς ἀνάγκας ἑκάστης χώρας. Ἡ συνθήκη αὕτη ἐπεκυρώθη ὑπὸ τῆς Ἐθνοσυνελεύσεως τῆς Ἀγκύρας καὶ τῶν γαλλικῶν Βουλῶν, ἀλλ' ἡ ἐπικύρωσις ὑπῆρξεν ἀφορμὴ δυσαρεσκειῶν ἐκ μέρους τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως ἥτις τὰς περὶ τῆς Συρίας καὶ τοῦ σιδηροδρόμου τῆς Βαγδάτης διατάξεις αὐτῆς ἐθεώρει ὡς παράβασιν τῆς μεταξὺ τῶν Δυνάμεων τῆς Ἀντὰντ συνομολογηθείσης συνθήκης τοῦ Λονδίνου τῆς 4 Σεπτεμβρίου 1914, τῆς ἐπίσης ἐν Λονδίνῳ συνομολογηθείσης συνθήκης κατὰ Νοέμβριον τοῦ 1915 καὶ τοῦ ἄρθρου 294 τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν. Η.Γ.Κ.

**Μπουγιοὺκ** *[Γεωγρ.]*. Λέξις τουρκική, σημαίνουσα μέγας καὶ χρησιμοποιουμένη ὡς πρῶτον συνθετικὸν πλείστων τοπωνυμίων: *Μπουγιοὺκ Ντερέ*, *Μπουγιοὺκ Ντερβένι* κλπ. Ἀντιτίθεται πρὸς τὸ *Κιουτσοὺκ* (=μικρός).

**Μπουγιουκαλάκης**, ***Ἀναγνώστης***. Κρὴς ὁπλαρχηγός, γεννηθεὶς τῷ 1818. Συμμετέσχεν εἰς τὰς κρητικὰς ἐπαναστάσεις τοῦ 1858 καὶ 1866. Τραυματισθεὶς σοβαρῶς εἰς τὴν μάχην τῆς Ζούρβας, διεκομίσθη εἰς Ἀθήνας, ὅπου ἀπέθανεν ἐκ τῶν τραυμάτων του. Ν. ΚΛΣ

— **Μπουγιουκαλάκης**, ***Ἐμμανουήλ***. Κρὴς ὁπλαρχηγός. Συμμετέσχεν εἰς τὴν ἐν Κρήτῃ ἐπανάστασιν 1821—1830 καὶ τὴν τοῦ 1841, περὶ τὸ τέλος τῆς ὁποίας συλληφθείς, ὡδηγήθη δέσμιος εἰς Χανιά, ἔνθα ἀπηγχονίσθη. Ν. ΚΛΣ

**Μπουγιοὺκ-ἀντᾶ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα ἐν τῇ Προποντίδι, παρὰ τὴν Κωνσταντινούπολιν, νήσου *Πριγκήπου* (βλ. λ.). Ν. Μ.

**Μπουγιοὺκ Ἐρεγλὶ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς ἐν Θρᾴκῃ *Ἡρακλείας* (βλ. λ.).

**Μπουγιουκλῆ *Μπουρνοῦ*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Προποντίδος (πλάτ. 40° 40΄ Β., μῆκ. 27° 40΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), ἀνατολικὸν κέρας τοῦ ὅρμου Μυρμηξὶκ τῆς βορείας ἀκτῆς τῆς Προκονήσου. Σ. Ε. Λ.

**Μπουγιουκλῆς, *Γεώργιος Μαμάρτσωφ***. Βούλγαρος ἐθνικὸς ἀγωνιστής (βλ. λ. *Μαμάρτσωφ*).

**Μπουγιοὺκ Λιμὰν** *[Παραλ. Γεωγρ.]* βλ. λ. *Ἐφεσίων λιμήν*.

**Μπουγιοὺκ Μαχαλὲ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Μεγαλοχώρι* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Σερρῶν.

**Μπουγιοὺκ Μεντερὲς** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τοῦ ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ ποταμοῦ *Μαιάνδρου* (βλ. λ.).

**Μπουγιοὺκ-Ντερὲ** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς ὄχθης τοῦ Ἄνω Βοσπόρου, εἰς τὸ βάθος τοῦ ὁμωνύμου ὅρμου. Ἑλληνιστὶ λέγεται *Βαθυρρύαξ* καὶ *Βαθύκολπος*, ὑπό τινων δὲ καὶ *Μέγα Ρεῦμα*, μεταφραζομένου κατὰ λέξιν τοῦ *Μπουγιοὺκ Ντερέ*.

Ὁ *ὅρμος* διανοίγεται μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Κιρὶς μπουρνοῦ (ΝΔ. κέρας) καὶ Μεζὰρ μπουρνοῦ (ΒΑ.: πλάτ. 41° 10΄ Β., μῆκ. 29° 03΄ ½ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus). Τὸ κύριον ρεῦμα τοῦ Βοσπόρου, φερόμενον ἀπὸ τοῦ Εὐξείνου, κτυπᾷ ἀπὸ τοῦ Μεζὰρ πρὸς τὸ Κιρὶς μπουρνοῦ, χωρὶς νὰ εἰσδύῃ εἰς τὸν ὅρμον.

Ὁ ὅρμος ὠνομάσθη βαθὺς οὐχὶ ὡς εἰσδύων βαθέως εἰς τὴν ξηράν, ἀλλὰ διὰ τὸ βάθος τῆς θαλάσσης, εἰς ἣν καταλήγουσιν αἱ ἐν μέρει ἀπόκρημνοι ἀκταί του. Ἐκαλεῖτο δὲ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων καὶ *Σαρωνικός*, ἀπὸ τοῦ ἐκεῖ, περὶ τὸ Σαρωνικὸν ἀκρωτήριον, πάλαι ποτὲ ὑπάρξαντος ἡρῴου πρὸς τιμὴν τοῦ Μεγαρέως ἥρωος ἢ θαλασσοπόρου Σάρωνος. Εἰς τὸ παρὰ τὴν Ν. παραλίαν τοῦ κόλπου ὁμαλὸν πεδίον, ὀνομαζόμενον τουρκιστὶ Κὶρκ-ἰγτὶς (=40 δένδρα), σῴζεται ἀκόμη σύμφυμα μεγάλων αἰωνοβίων πλατάνων, ὀνομαζομένων τουρκιστὶ καὶ Γεντὶ-καρντὰς (='Επτὰ Ἀδέλφια), οἵτινες ἐφυτεύθησαν, ὡς λέγεται, ὑπὸ τοῦ Godefroy de Bouillon τῷ 1096, στρατοπεδεύσαντος ἐνταῦθα κατὰ τὴν Α΄ Σταυροφορίαν. Ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ προαστείου ὑπάρχουν λαμπρὰ προκυμαία καὶ ὡραῖα θερινὰ ἐνδιαιτήματα. Ἡ ἑλληνικὴ κοινότης *Βαθυρρύακος*, ὑπαγομένη ἐκκλησιαστικῶς εἰς τὴν μητρόπολιν Δέρκων (ἑδρεύουσαν ἐν Θεραπείοις), ἦτο μέχρι πρό τινος ἱκανῶς σπουδαία. Ν. Μ.—Σ. Ε. Λ.

**Μπουγιοὺκ-Ὀσμανλῆ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ χωρίου *Μάγγανα* (βλ. λ.) τοῦ νομοῦ Ξάνθης.

**Μπουγιοὺκ Σαχὶμπ** *[Γεωγρ.]*. Νησίον προκείμενον τῇ ΒΑ. ἄκρᾳ τῆς χερσονήσου τῶν *Ἐρυθρῶν* (νῦν *Καράμπουρνα*) καὶ ἀποτελοῦν τὸ δεξιὸν τῷ εἰσπλέοντι κέρας (πλάτ. 38°39΄ 30΄΄ Β., μῆκ. 26°32΄ 00΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1645: Island of Khios and Gulf of Smyrna) τοῦ στομίου τοῦ κόλπου τῆς Σμύρνης. Σ. Ε. Λ.

**Μπουγιοὺκ Τσαναρλῆς** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τοῦ *Σοφαδίτικου*, παραποτάμου τοῦ Πηνειοῦ (βλ. λ. *Κουάριος*).

**Μπουγιοὺκ-Τσεκμετζὲ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς περιοχῆς Κωνσταντινουπόλεως (βλ. *Τσεκμετζέ*).

**Μπουγιοὺκ Χὰν** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης καὶ σιδηροδρομικὸς σταθμὸς ἐπὶ αὐχένος (ὑψ. 242 μ.) τῆς βουνοσειρᾶς, ἥτις ἀπὸ τοῦ Καρὰ Τεπὲ ἀποσπωμένη πρὸς νότον, ἐκτείνεται μέχρι τῆς Σηλυβρίας, παρὰ τὴν Προποντίδα. Διαχωρίζονται διὰ τῆς βουνοσειρᾶς ταύτης τὰ ὕδατα τῆς κοιλάδος τοῦ Ἐργίνη (παραποτάμου τοῦ Ἕβρου) πρὸς δυσμάς, ἀπὸ τῶν ὑδάτων τοῦ Στράντζα ντερὲ καὶ ἐν γένει ἀπὸ τῶν ὑδάτων τῆς χερσονήσου Κωνσταντινουπόλεως (πρὸς ἀνατολάς). Ἡ βουνοσειρὰ αὕτη ἀπετέλει τὸ πρὸς τὴν χερσόνησον τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὅριον τῆς ἑλληνικῆς ζώνης κατοχῆς ἀπὸ τοῦ 1920 μέχρι τοῦ Ὀκτωβρίου 1922, ὁπότε ἐξεκενώθη ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ ἡ Ἀνατολικὴ Θρᾴκη, ἀνακαταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Τούρκων. Τὴν βουνοσειρὰν ταύτην, ἑκατέρωθεν τοῦ Μπιγιὰκ Χὰν (πρὸς Β. καὶ πρὸς Ν.), τὸ ἑλληνικὸν Γ΄ σῶμα στρατοῦ ἤρξατο ὀργανοῦν ἀμυντικῶς διὰ τῆς ΙΙΙ αὐτοῦ μεραρχίας κατὰ Σεπτέμβριον 1922, ἅμα τῇ διαπεραιώσει αὐτοῦ ἐξ Ἀρτάκης εἰς Ραιδεστόν, ἐπὶ τῇ προόψει πιθανῆς ἐπαναλήψεως τῶν ἐχθροπραξιῶν τότε πρὸς τοὺς Τούρκους. Ἀποτελεῖ ἐν γένει ἡ βουνοσειρὰ αὕτη, κειμένη δυτικῶς καὶ παραλλήλως πρὸς τὸ ἀρχαῖον Ἀναστασιανὸν τεῖχος τῶν Βυζαντινῶν, τὴν πρώτην γραμμὴν ἀμύνης ἐπὶ τῆς χερσονήσου τῆς Κωνσταντινουπόλεως, καὶ ἐπ' αὐτῆς ἀπεσύρθη στηριχθεὶς ὁ βουλγαρικὸς στρατὸς κατὰ τὴν 6 Νοεμβρίου 1912, μετὰ τὴν ἀποτυχοῦσαν ἐπιθετικὴν διήμερον προσπάθειαν αὐτοῦ πρὸς διάρρηξιν τοῦ μετώπου τῆς ὠχυρωμένης ἀμυντικῆς γραμμῆς τῆς Τσατάλτζης (μεταξὺ λίμνης Δέρκων καὶ Μπουγιοὺκ Τσεκμετζέ). Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπουγιουνλοῦ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης, μετονομασθὲν ἐπὶ ἑλληνικῆς κατοχῆς εἰς *Βίστιρος* (βλ. λ.).

**μπουγιουρουλντὶ** (τουρκ. *μπουγιουρουλντοῦ* = διετάχθη). Διάταγμα τῆς ποτὲ μεγάλης βεζυρείας τῆς Τουρκίας, γεγραμμένον διὰ τῆς παλαιᾶς τουρκικῆς γραφῆς, τῆς λεγομένης ντιβανί, καὶ φέρον ἄνωθεν τὴν μεγάλην σφραγῖδα τῆς βεζυρείας· διαταγὴ νομαρχίας ἢ ἄλλης ἀνωτέρας ἀρχῆς.

Digitized by Google

**Μπουγιὼ** (Bouillaud), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Ἐπιφανὴς Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Ἀγκουλέμῃ (1796—1881). Κατέστη γνωστὸς διὰ τοῦ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ R. J. H. Bertin ἐκδοθέντος συγγράμματός του τῆς «*Κλινικῆς τῶν νόσων τῆς καρδίας καὶ τῶν μεγάλων ἀγγείων*» (Παρίσιοι 1824), ὡς καὶ τῶν μετέπειτα ἐκδοθέντων ὑπ' αὐτοῦ ἔργων: τῆς διτόμου «Κλινικῆς τῶν νόσων τῆς καρδίας» (1835), μεταφρασθείσης εἰς τὴν γερμανικήν, τῆς «*Κλινικῆς καὶ φυσιολογίας τοῦ ἐγκεφάλου κλπ.*» (1825), τῆς «*Κλινικῆς καὶ πειραματικῆς τῶν διαλειπόντων ἢ ἰδιοπαθῶν λεγομένων πυρετῶν*» (1826) καὶ τῶν «*Πειραματικῶν ἐρευνῶν ἐπὶ τῆς λειτουργίας γενικῶς τοῦ ἐγκεφάλου κλπ.*» (1830). Τῷ 1831 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς κλινικῆς ἐν τῷ νοσοκομείῳ «Charité» μὲ τὴν διατριβὴν «Essai sur la philosophie médicale et sur les généralités de la clinique médicale etc.» (1831). Ἐθεωρήθη ὡς ἄριστος κλινικός, ἀλλὰ διατελῶν ἔνθερμος ὀπαδὸς τῶν θεωριῶν τοῦ Broussais, ἐπολεμήθη δεινῶς διὰ τὴν θεραπευτικήν του μέθοδον τῶν φλεβοτομιῶν. Ἔγραψε κατὰ τὸ διάστημα τῆς καθηγεσίας του πλείστας ἑτέρας πραγματείας περὶ χολέρας, ἑρμαφροδιτισμοῦ, περὶ ὀξέων ρευματισμῶν, περὶ τῆς ἕδρας τοῦ κέντρου τοῦ λόγου, δημοσιευθείσας εἰς μονογραφίας εἰς τὸ δελτίον τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς, ὡς καὶ εἰς ἕτερα περιοδικά, καὶ ἐξέδωκε μεταξὺ ἄλλων τὸ μέγα αὐτοῦ πεντάτομον σύγγραμμα τῆς «*Κλινικῆς νοσογραφίας*» (1846). Ἀπὸ τοῦ 1842—1846 διετέλεσεν ἐν τῇ βουλῇ ἀντιπρόσωπος τῆς Ἀγκουλέμης. Τῷ 1848, διατελῶν συγκλητικός, ἐγένετο κοσμήτωρ τῆς ἰατρικῆς σχολῆς. Τῷ 1868 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Οὗτος περιέγραψεν ἐσχάτην ἀνωμαλίαν τῶν ἀρτηριακῶν σφύξεων καὶ τῶν καρδιακῶν παλμῶν ἐπὶ ἀσυστολίας, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα *καρδιακὸν παραλήρημα τοῦ Μπουγιώ*. Ἐπίσης περιέγραψεν οὗτος τὰς καρδιακὰς ἐπιπλοκὰς τῶν ρευματισμῶν, αἵτινες ἀπετέλεσαν νόμον (*νόμος τοῦ Μπουγιώ*), καθ' ὃν 1) ἐπὶ ὀξέος ἐντόνου γενικοῦ ρευματισμοῦ τῶν ἄρθρων ἡ μὲν σύμπτωσις τῆς περικαρδίτιδος ἢ ἐνδοκαρδίτιδος ἀποτελεῖ τὸν κανόνα, ἡ μὴ σύμπτωσις δὲ τὴν ἐξαίρεσιν καὶ 2) ἐπὶ ἐλαφροῦ τοπικοῦ ἀπυρέτου ρευματισμοῦ τῶν ἄρθρων, ἡ μὴ σύμπτωσις τῶν καρδιακῶν ἐπιπλοκῶν ἀποτελεῖ τὸν κανόνα, ἡ σύμπτωσις δὲ τὴν ἐξαίρεσιν. Ὁ νόμος οὗτος τοῦ Μπουγιὼ δὲν δύναται νὰ θεωρηθῇ ἀπολύτως. Ο. Ρ.

**Μποὺγκ** (Bug) *[Γεωγρ.]*. —1) Ποταμὸς τοῦ ΝΔ. τμήματος τῆς ἐκτεταμένης Ρωσικῆς πεδιάδος, πηγάζων ἐκ τῶν ἑλῶν τῆς Βολυνίας, παρὰ τὰ σύνορα τῆς Ποδολίας, διαρρέων τὴν Οὐκρανίαν καὶ ἐκβάλλων, μετὰ ροῦν 820 χλμ., εἰς τὰ πρὸς Ν. τῆς πόλεως Νικολάϊεφ τενάγη παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Δνειστέρου, ἐν τῷ Εὐξείνῳ Πόντῳ. Ὁ Μποὺγκ ἀπετέλει μέχρι τῶν χρόνων τῆς Αἰκατερίνης Β' τὰ πρὸς ΝΔ. ὅρια τῆς Ρωσίας, τὰ ὁποῖα προεξετάθησαν ἔκτοτε πρὸς Ν. διὰ τῶν συνθηκῶν Κουτσοὺκ-Καϊναρτζῆ (1774) καὶ Ἰασίου (1792).

—2) Ποταμὸς τῆς Πολωνίας, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Βιστούλα, καλούμενος ἐπίσης *Δυτικὸς* ἢ *Πολωνικὸς Μποὺγκ*. Πηγάζει ἐκ τοῦ ὑψιπέδου τῆς Ποδολίας πρὸς ΝΑ τῆς Λεμβέργης, διασχίζει τὸ πολωνικὸν ἔδαφος καὶ ἐκβάλλει εἰς τὸν Βιστούλαν μετὰ ροῦν 776 χλμ., 35 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς Βαρσοβίας. Ἔχει ρεῦμα βραδύ, διασχίζον ἠρέμα τὴν πεδιάδα, καὶ ἀποτελεῖ ἀξίαν λόγου ὁδὸν συγκοινωνιῶν ἀπὸ τοῦ Βιστούλα εἰς τὸν Δνείπερον, μεθ' οὗ συνδέεται διὰ διωρύγων. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον συνήφθησαν περὶ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ τούτου σφοδρόταται μάχαι, ἰδίᾳ δὲ διαρκοῦντος τοῦ Ἰουλίου καὶ Αὐγούστου 1915, ὁπότε ἀπωθήθησαν οἱ Ρῶσοι ὑπὸ τῶν Αὐστρογερμανῶν, καὶ βραδύτερον, κατὰ τὸ ἔτος 1917. Χ. Δ.

**Μπουγκάγιεφ**, ***Βόρις-Νικολάγιεβιτς***. Ρῶσος συγγραφεύς, γνωστὸς ὑπὸ τὸ φιλολογικὸν ψευδώνυμον *Μπέλυ* Ἀνδρέας (βλ. λ.).

**Μπουγκαινβὶλλ** (Bougainville) *[Γεωγρ.]*. Νῆσοι τῆς Μαλαισίας, ἡ μεγαλυτέρα καὶ δυτικωτέρα τοῦ συμπλέγματος τῶν νήσων Σολομῶντος. Ἔχει ἔκτασιν 10.000 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 60.000 κατοίκων. Ἀπὸ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀνῆκεν εἰς τὴν Γερμανίαν, ἐξαρτωμένη ἐκ τῆς διοικήσεως τῆς Γῆς τοῦ Καΐζερ Γουλιέλμου, τῆς ὁποίας τὴν τύχην ἠκολούθησε, ταχθεῖσα δι' ἐντολῆς τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν ὑπὸ τὴν Αὐστραλίαν. Εἶναι ἡφαιστειογενοῦς συστάσεως, ἡ δὲ ὑψηλοτέρα κορυφή της *Μπάλμπι* (1.250 μ.) ἀποτελεῖ ἡφαίστειον ἐν ἐνεργείᾳ. Ἐξάγει κυρίως κοκκοφοινικέλαιον. Ἀνεκαλύφθη τῷ 1768 ὑπὸ τοῦ Γάλλου θαλασσοπόρου Λουδοβίκου-Ἀντωνίου κόμιτος Μπουγκαινβίλλ, τοῦ ὁποίου φέρει τὸ ὄνομα. Χ. Δ.

— **Μπουγκενβὶλλ** (Bougainville), ***Λουδοβῖκος-Ἀντώνιος ντὲ—***. Διάσημος Γάλλος θαλασσοπόρος, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1729—1811). Κατ' ἀρχὰς δικηγόρος καὶ κατόπιν γραμματεὺς τῆς ἐν Λονδίνῳ γαλλικῆς πρεσβείας (1754), ἀπεστάλη τῷ 1756 εἰς Καναδᾶν ὡς λοχαγὸς τῶν δραγόνων καὶ ὑπασπιστὴς τοῦ Montcalm, ἔνθα καὶ διεκρίθη. Τῷ 1761 διεκρίθη εἰς τὰς παρὰ τὸν Ρῆνον μάχας. Τῷ 1763, μεταταχθεὶς εἰς τὸ ναυτικόν, ὠνομάσθη ἀντιπλοίαρχος καὶ ἡγήθη τῆς εἰς τὰς νήσους Φάλκλανδ ἀποστολῆς πρὸς ἐγκατάστασιν ἀποικίας. Τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1766, συνοδευόμενος ἀπὸ ἐκλεκτὸν ἐπιτελεῖον ἐπιστημόνων, ἀνεχώρησεν ἐκ Saint-Malo ἐπιβαίνων τῆς φρεγάτας «La Boudeuse» καὶ ἀκολουθούμενος ὑπὸ τοῦ βρικίου «Étoile», ὅπως ἐπιχειρήσῃ τὸν περίπλουν τῆς Γῆς, ὃν καὶ κατώρθωσεν, ἀνακαλύψας πλείστας νέας νήσους καὶ ἐξερευνήσας πλῆθος ἀκτῶν. Τὸν Μάρτιον 1768 ἐπιστρέψας εἰς Saint-Malo ἐδημοσίευσεν εἰς 2 τόμους τὴν περιγραφὴν τοῦ περίπλου του. Κατὰ τὸν ὑπὲρ τῆς ἀμερικανικῆς ἀνεξαρτησίας πόλεμον ἐπολέμησε γενναίως ἐν Μαρτινίκᾳ κατὰ τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Hood, προαχθεὶς εἰς ἀρχηγὸν μοίρας. Ἐπανελθὼν εἰς τὸν κατὰ γῆν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, ἐσχεδίασε ταξίδιον ἐξερευνητικὸν εἰς Βόρειον πόλον, ὅπερ ὅμως δὲν ἠδυνήθη νὰ πραγματοποιήσῃ. Ἐπανελθὼν εἰς τὸ ναυτικὸν προήχθη τῷ 1791 εἰς ἀντιναύαρχον. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς αὐτοκρατορίας ἐγένετο γερουσιαστής. Γ. Ν. Ν.

**Μπουγκαρόνι** (Cape Bugaroni) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπίσημον ἀκρωτήριον τῆς Ἀλγερίας (πλάτ. 37°05' Β', μῆκ. 6°28' Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 252: Cape Bugaroni to Fratelli), δυτ. κέρας τοῦ κόλπου Στόρα (Stora, ἀρχ. Ὀλκαχίτης κόλπος, *Πτολεμ.* Δ, γ, 3, Nobbe). Ἔχει φάρον μέγιστον καὶ σηματοφόρον (διεθν. γεωγρ. ἀριθ. ΑΚΧV). Εἶναι τὸ *Τρητὸν ἄκρον* τοῦ Πτολεμαίου (αὐτόθ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπουγκάττι** (Bugatti), ***Ρέμπραντ***. Ἰταλὸς γλύπτης, γεννηθεὶς ἐν Μιλάνῳ τῷ 1885 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1915. Μεταβὰς εἰς νεαρὰν ἡλικίαν εἰς Παρισίους, προὐκάλεσε λίαν ταχέως τὴν εὐμενῆ προσοχὴν τῶν φιλοτέχνων, τυχὼν καὶ τῆς ἐνθέρμου προστασίας τοῦ Γεωργίου Κλεμανσώ. Διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν ζῴων. Κατεῖχε τὴν τέχνην ν' ἀποδίδῃ μετ' ἀπολύτου ἀσφαλείας τὴν ὁρμήν, τὴν κίνησιν, τὴν ζωήν, ἐπὶ πλέον δὲ ν' ἀποτυπώνῃ ἐπὶ τοῦ μαρμάρου ἢ τοῦ χαλκοῦ μετ' ἐξόχου ἐναργείας τὰ προσωπικώτερα χαρακτηριστικὰ ἑκάστου ζῴου, χωρὶς συγχρόνως νὰ παραμελῇ τὰς λεπτομερείας. Ἀπέθανεν αὐτοχειριασθείς. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «*Ὁ ἀρκουδιάρης*», «*Μικρὸς ἐλέφας*» (1907, Μουσεῖον Λουξεμβούργου), «*Δύο ἐλάφια*» (1908), «*Ἐλέφας παίζων*» (1912). Ι. Μ. Π.

**Μπουγκὲ** (Bouguer), ***Πέτρος***. Γάλλος μαθηματικός, ἀστρονόμος καὶ ὑδρογράφος (1698—1758). Ὑπῆρξεν ἐν τοῖς ἄλλοις ὁ ἱδρυτὴς τῆς φωτομετρίας καὶ ἐφευρέτης τοῦ «ἡλιομέτρου», μεγάλη δὲ ὑπῆρξεν ἰδιαιτέρως ἡ συμβολή του εἰς τὴν πρόοδον τῆς ὑδρογραφίας καὶ εἰς τὴν ἐπὶ ἐπιστημονικῶν βάσεων μελέτην τῆς ναυτιλίας. Ἐκ τῶν ἔργων του ἐν τῷ κύκλῳ τούτῳ σημαντικώτερα εἶναι: «*Τὸ πλοῖον, ἡ κατασκευὴ καὶ αἱ κινήσεις του*» (1746), «*Ἐγχειρίδιον ναυσιπλοΐας*» ἐκδοθὲν τὸ πρῶτον τῷ 1753 καὶ κατ' ἐπανάληψιν ἀνατυπωθέν. Τῷ 1731 εἶχεν ἀποσταλῇ εἰς Περοὺ μετὰ τῶν συναδέλφων του Γκοντὲν καὶ Λακονταμὶν πρὸς μέτρησιν μιᾶς μοίρας μεσημβρινοῦ διὰ τὸν πειραματικὸν προσδιορισμὸν τοῦ σχήματος τῆς Γῆς, ἐδημοσίευσε δὲ καὶ συναφὲς ἔργον: «*Θεωρία περὶ τοῦ σχήματος τῆς Γῆς*» (1749). Ἔγραψεν ἐπίσης: «*Μέθοδος διὰ τὴν ἀπὸ τῆς θαλάσσης παρατήρησιν τοῦ ὕψους τῶν ἄστρων*» (1729), «*Ἐγχειρίδιον ὀπτικῆς*» (1729, ἐπανεκδοθὲν μετὰ τὸν θάνατόν του τῷ 1760) κλπ. —Ω.

— **Μπουγκέ**, *ἅλως τοῦ— [Ὀπτ. Μετεωρ.]*. Κατὰ τὸν σχηματισμὸν *ἀνθηλίων* (βλ. λ.), ἤτοι ψευδῶν ἡλίων εὑρισκομένων ἀκριβῶς ἔναντι τοῦ πραγματικοῦ ἡλίου, εἶναι δυνατὸν νὰ παρατηρηθῇ ἅλως εἰς ἀπόστασιν 33° μέχρι 38° ἀπὸ τοῦ ἀντιθέτου σημείου τοῦ ἡλίου, ἥτις ἅλως ἔλαβε τὸ ὄνομα *ἅλως τοῦ Μπουγκὲ* (Halo von Bouguer, Bouguer's Halo), ἢ *δακτύλιος τοῦ Ulloa* (Ulloa's Ring) ἐκ τῶν ὀνομάτων τῶν πρώτων παρατηρησάντων τὸ φαινόμενον τοῦτο, ὅπερ κατόπιν τῶν πεπλανημένων ἐξηγήσεων τοῦ Kanitz, ὅτι ἀνήκει εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν οὐρανίων τόξων, καλεῖται συχνὰ καὶ «*λευκὴ ἶρις*» (weisser Regenbogen). Τὸ φαινόμενον τοῦτο, παρατηρηθὲν τὸ πρῶτον ὑπὸ τῶν προαναφερθέντων τῷ 1740 παρὰ τὰς Ἄνδεις, ἐπίσης δὲ τῷ 1821 ὑπὸ τοῦ Scoresby, εἶναι ἓν τῶν σπανίων ὀπτικῶν φαινομένων. Κατὰ τὸν Μπουγκέ, ἡ ἅλως παρατηρεῖται ἐπὶ τῶν νεφῶν καὶ μάλιστα ἐκείνων, ἅτινα ἀποτελοῦνται ἐκ παγοκρυστάλλου καὶ οὐχὶ ἐπὶ τῶν σταγόνων τῆς βροχῆς, ὅπως εἰς τὴν ἶριδα. Κατὰ τὰς περιγραφὰς τοῦ φαινομένου ὑπὸ τοῦ Μπουγκὲ καὶ Ulloa, παρετήρησαν οὗτοι μίαν σκιὰν (παρομοίαν πρὸς τὸ *φάσμα τοῦ Μπρόκεν*) ἐγχρώμων δακτυλίων ἴριδος πέριξ τοῦ κυρίου τμήματος τῆς αἴγλης καὶ ἔξω ἐγχρώμους δακτυλίους, ὀλίγον δὲ πέραν αὐτῶν τέταρτον δακτύλιον καθαρῶς λευκόν.

Ἡ θεωρία τοῦ Bidhn Bhusan Ray ἐξηγεῖ πῶς ἡ ἀνάκλασις τοῦ φωτὸς ὑπὸ μικρῶν σταγόνων εἶναι δυνατὸν νὰ σχηματίσῃ αἴγλην καὶ λευκὴν ἶριδα· ἐπειδὴ δὲ κατὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ Μπουγκὲ παρετηρήθη τὸ φαινόμενον ἐπὶ νεφῶν ἐκ παγοκρυστάλλων, συνάγεται τὸ συμπέρασμα ὅτι ὀφείλεται εἰς τὴν ἐπὶ τούτων ἀνάκλασιν. Ἐξηνέχθη μάλιστα ἡ γνώμη ὅτι τὰ νέφη, ἐπὶ τῶν ὁποίων παρετήρησε τὸ φαινόμενον ὁ Μπουγκέ, ἀπετελοῦντο κατὰ τὸ πλεῖστον ἐξ ὑπερψύχρων ὑδροσταγόνων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. M. Pernter—F. M. Exner*, Meteorologische Optik. Θ. Θ. ΦΙΝΤΙΚΑΚΗΣ

**Μπουγκερὼ** (Bouguereau), ***Ἀδόλφος-Οὐΐλλιαμ***. Γάλλος ζωγράφος (1825—1905). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Πικό, ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης τῷ 1850 καὶ ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν διὰ τοῦ πίνακός του «*Ὁ θρίαμβος τῆς μάρτυρος*». Ὁ πίναξ οὗτος, ἀποκείμενος νῦν εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λουξεμβούργου, διακρίνεται διὰ τὴν καλήν του διάταξιν καὶ τὸ εὐγενὲς αἴσθημα, ὅπερ ἀποπνέει. Ὁ Μπουγκερὼ εἰργάσθη ἐπὶ μυθολογικῶν, ἀλληγορικῶν ἢ θρησκευτικῶν συνθέσεων. Παρέμεινε ξένος πρὸς τὰς ἐντόνους καλλιτεχνικὰς ζυμώσεις τῆς ἐποχῆς του, κατέχει ὅμως ἀρετάς τινας λίαν ἀξιομνημονεύτους: ἀσφάλειαν εἰς τὸ σχέδιον, διαφανὲς καὶ εὐχάριστον χρῶμα, ἐντέλειαν ἐξεργασίας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων καταλέγονται αἱ διακοσμήσεις τοῦ ξενοδοχείου Bartholony («*Ὁ ἔρως*», «*Ἡ φιλία*», «*Ἡ τύχη*», «*Τὸ ἔαρ*», «*Τὸ θέρος*», «*Ὁ χορός*», «*Αἱ τέσσαρες ὧραι τῆς ἡμέρας*», «*Βακχὶς ἐπὶ πάνθηρος*» κλπ.), «*Ἡ Παρθένος, ὁ παῖς Ἰησοῦς καὶ Ἰωάννης ὁ Βαπτιστής*», «*Ἡ Παναγία ἡ παρηγορήτρια*», «*Γέννησις τῆς Ἀφροδίτης*» «*Ὠκεανίς*», «*Αἱ μυροφόροι παρὰ τὸν τάφον τοῦ Ἰησοῦ*». Τῷ 1876 ὁ Μπουγκερὼ ἐγένετο μέλος τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου, τῷ δὲ 1885 ἐτιμήθη εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν διὰ χρυσοῦ μεταλλίου. Ι. Μ. Π.

**Μπουγκούλμα** (Bugulma) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Σαμάρα τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τῆς διασταυρώσεως δύο σπουδαιοτάτων ὁδῶν, μεταξὺ Οὔφα καὶ Ὀρενμπουργκ, 210 χλμ. πρὸς Δ.ΝΔ. τῆς Οὔφα. Εἶναι κυρίως γνωστὴ ὡς κέντρον μεγάλων ἐτησίων ἐμποροπανηγύρεων. Κάτ. 13.740. Χ. Δ.

**Μπουγομῆλον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φθιώτιδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 332. Μετωνομάσθη εἰς *Ἀργυροχώριον*. Χ. Δ.

**Μπουδουνίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ φραγκικὴ μαρκιωνία τῆς Ἑλλάδος (βλ. λ. *Βοδονίτσα*).

**Μπουὲ-Βιλλωμὲζ** (Bouet-Willaumez), ***Λουδοβῖκος-Ἐδουάρδος, κόμις ντὲ—***. Διάσημος Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς ἐν Βρέστῃ (1808—1891). Δεκαπενταετὴς εἰσελθὼν εἰς τὴν ναυτικὴν σχολήν, ἐξῆλθεν ἀξιωματικὸς τῷ 1829, ἔλαβε δὲ μέρος εἰς τὰς ἐν Μεσογείῳ καὶ Ἰνδίαις ἐκστρατείας διακριθείς. Ἠσχολήθη ἰδιαιτέρως μὲ τὴν τακτικὴν τῆς ἐφαρμογῆς τοῦ ἀτμοῦ ὡς κινητηρίου δυνάμεως. Ἔλαβε μέρος εἰς ἐξερευνήσεις τῶν δυτικῶν ἀκτῶν τῆς Ἀφρικῆς καὶ ἀπὸ τοῦ 1842 ἕως 1844 διετέλεσε διοικητὴς τῆς Σενεγάλης. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ 1854 προαχθεὶς εἰς ὑποναύαρχον. Τῷ 1860 προήχθη εἰς ἀντιναύαρχον καὶ ἀπὸ τοῦ 1864 ἕως 1866 διετέλεσεν ἀρχηγὸς τοῦ γαλλικοῦ στόλου τῆς Μεσογείου, εἰσαγαγὼν διαφόρους ἀξιοσημειώτους καινοτομίας ἐν τῇ τακτικῇ τῶν ἐμβολοφόρων θωρηκτῶν σκαφῶν. Τῷ 1865 ἐγένετο γερουσιαστὴς καὶ τῷ 1870 ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στόλου τῆς Βαλτικῆς, ἀποκλείσας τὸν γερμανικὸν στόλον. Γ. Ν. Ν.

**Μπουὲν** (Bouin) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Γαλλίας εἰς τὰ παράλια τοῦ Ἀτλαντικοῦ, κειμένη εἰς τὸ βάθος τοῦ κόλπου Μπουρνιέφ. Ὑπάγεται διοικητικῶς εἰς τὸν νομὸν Βανδέας καὶ ἔχει 2.500 κατ., ἀσχολουμένους μὲ τὴν ἁλιείαν καὶ τὴν καλλιέργειαν ἁλυκῶν. Χ. Δ.

**Μπουὲν Ἀῦρε** (Buen Ayre) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν ὁλλανδικῶν δυτικῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μποναῖρ*).

**Μπουεναβεντούρα** (Buenaventura) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Κολομβίας ἐν τῷ νομῷ Βάλλε, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ Εἰρηνικοῦ. Διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον χρυσοῦ, πλατίνης καὶ μαργαριτῶν. Κάτ. 5.000. Χ. Δ.

**Μπουένος Ἄϊρες** (Buenos Aires). Μεγάλη πόλις τῆς Ν. Ἀμερικῆς, διοικητικὴ πρωτεύουσα καὶ κυριώτερος λιμὴν τῆς Ἀργεντινῆς δημοκρατίας.

—[ΓΕΩΓΡ.] Τὸ Μπουένος Ἄϊρες—τοῦ ὁποίου τὸ πλῆρες ὄνομα εἶναι Nuestra Señora de Buenos Aires— ἀποτελεῖ ἴδιον αὐτοδιοίκητον διαμέρισμα, ὅπερ περιλαμβάνει τὴν περιοχὴν τῆς κυρίως πόλεως καὶ τὰ παρ' αὐτὴν προάστεια καὶ συνοικισμοὺς (ἔκτ. 186 τετρ. χλμ.). Εἶναι ἓν τῶν μεγαλυτέρων ἀστικῶν κέντρων τοῦ κόσμου, ἀριθμοῦν πληθυσμὸν ὑπολογισθέντα τῷ 1929 εἰς 2.215.000 κατ. (πλέον δηλαδὴ τοῦ ἑνὸς πέμπτου τοῦ ὅλου πληθυσμοῦ τῆς Ἀργεντινῆς), κατέχει δὲ ὡς πόλις καὶ λιμὴν τὰς ἑξῆς θέσεις μεταξὺ τῶν μεγάλων τοῦ κόσμου κέντρων: μεγαλυτέρα εἰς πληθυσμὸν ἐκ τῶν πόλεων τῆς γῆς τῶν κειμένων πρὸς Ν. τοῦ

Digitized by Google

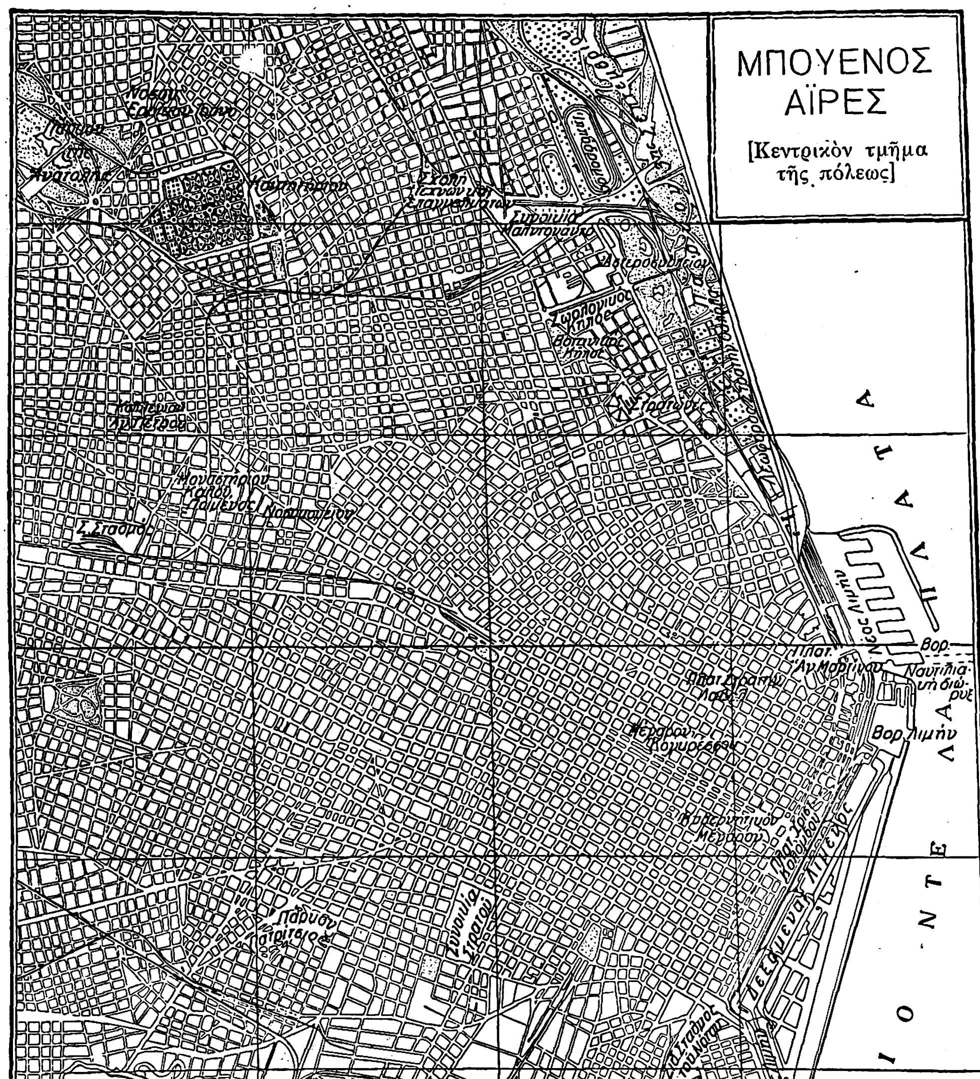


ἰσημερινοῦ· μεγαλύτερον κέντρον καὶ λιμὴν τῆς Ν. Ἀμερικῆς· δεύτερος ἐμπορικὸς λιμὴν ὁλοκλήρου τοῦ νέου κόσμου, ἐρχόμενος μετὰ τὴν Νέαν Ὑόρκην· δευτέρα λατινικὴ πόλις τοῦ κόσμου μὲ πρώτην τοὺς Παρισίους, κλπ.

*Θέσις καὶ κλίμα.* Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ πεδινῆς περιοχῆς, ὕψους 20 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης, παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ εὐρέος ποταμοκόλπου, τὸν ὁποῖον σχηματίζει ὁ Ρίο ντὲ Λὰ Πλάτα, ἐκβάλλων εἰς τὸν Ἀτλαντικόν, εἰς γεωγραφικὴν θέσιν καθοριζομένην ὑπὸ τῶν συντεταγμένων 34°36′ Ν. πλάτους καὶ 58°22′ Δ. μήκους Γκρήνουϊτς. Τὸ ἔδαφος ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἶναι κτισμένη εἶναι ἐντελῶς ἐπίπεδον, σχηματίζον ἐλαφρὰς μόνον πτυχώσεις κατὰ τὸ Β. αὐτοῦ τμῆμα καὶ κλῖνον ἀνεπαισθήτως πρὸς τὴν πλευρὰν τοῦ ποταμοῦ Λὰ Πλάτα. Ἡ ἀνεξάρτητος διοικητικῶς περιοχή, ἐφ' ἧς ἐκτείνεται ἡ πόλις (ἐμβαδοῦ 184 τετρ. χλμ.), περιβάλλεται, πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ ποταμίου Μαλντονάντο, πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Ριακουέλο ντὲ Μπαρράκας καὶ πρὸς Α. ὑπὸ τοῦ Λὰ Πλάτα, εἰς τὸν ὁποῖον ἐκβάλλουν οἱ δύο πρῶτοι. Ὁ τελευταῖος οὗτος ποταμός, απλυμενος τεραστίως πρὸ τῶν ἐκβολῶν, ἔχει πλάτος ἔμπροσθεν τοῦ Μπουένος Ἄϊρες φθάνον τὰ 45 περίπου χλμ. καὶ βάθος περὶ τὰ 6 μέτρα. Τὸ κλῖμα εἶναι ἐξόχως γλυκύ, ἡ δὲ μέση ἐτησία θερμοκρασία κυμαίνεται περὶ τοὺς +17Κ. (ἀνωτάτη +39°,5 καὶ κατωτάτη −5°). Ἡ μέση ἐτησία πτῶσις τῶν βροχῶν ἀνέρχεται εἰς 933 χιλιοστόμ., συχναὶ δὲ καὶ βίαιαι καταιγίδες προσβάλλουσι τὴν πόλιν.

***Σχέδιον καὶ κτήρια.*** Τὸ σχέδιον τοῦ Μπουένος Ἄϊρες ἀποτελεῖ σπάνιον πρότυπον τοῦ ἀμερικανικοῦ πολεοδομικοῦ συστήματος, ἐκ διασταυρουμένων καθέτων καὶ παραλλήλων ὁδῶν, αἵτινες διευθυνόμεναι ἀπὸ Β. πρὸς Ν. καὶ ἐκ Δ. πρὸς Α. τέμνονται κατ' ἀπολύτως ὀρθὰς γωνίας καὶ εἰς ἰσομεγέθη σχεδὸν τμήματα. Εἰς 70 περίπου ἀνέρχονται αἱ εὐρεῖαι ἀνὰ τὰ διάφορα σημεῖα τῆς πόλεως πλατεῖαι, πολυάριθμοι δὲ εἶναι αἱ δενδρόφυτοι καὶ καλῶς ἐστρωμέναι λεωφόροι, τῶν ὁποίων τὸ πλάτος φθάνει πολλάκις μέχρι 35 μ. Σπουδαιότεραι ἐκ τῶν λεωφόρων εἶναι ἡ κεντρικωτέρα ἀρτηρία Ἀβενίντα ντὲ Μάγιο, ἡ ἀτέρμων κατὰ μῆκος τῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ λεωφόρος τοῦ στρατηγοῦ Θαπιόλα, ἡ Κάλλιε Ριβαντάβια, αἱ ὁδοὶ Σὰν Μαρτίν, Φλορίντα, Μπαρτολομὲ Μίτρε κλπ. Κεντρικωτέρα πλατεῖα εἶναι ἡ Πλάθα ντὲ Μάγιο, ὁπόθεν ἄρχεται ἡ ὁμώνυμος λεωφόρος, συγκεντροῦται δ' ἐν αὐτῇ δι' ὀκτὼ μεγάλων ἀρτηριῶν τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς κινήσεως τῆς πόλεως. Ἐν αὐτῇ ἐπίσης εἶναι συγκεντρωμένα τὰ κάλλιστα τῶν κτηρίων, ἐν οἷς τὸ μέγαρον τῆς διοικήσεως (Casa Rosada), τὸ ἀρχιεπισκοπικὸν μέγαρον, τὸ χρηματιστήριον, ὁ μητροπολιτικὸς ναὸς καὶ πλεῖστα καταστήματα διοικητικῶν ὑπηρεσιῶν. Εἰς τὸ κέντρον τῆς πλατείας ὑψοῦται μεγαλοπρεπὲς μνημεῖον τῆς Ἐλευθερίας. Ἐκτὸς τῶν πλατειῶν, αἱ πλεῖσται τῶν ὁποίων εἶναι δενδρόφυτοι, πολυάριθμα καὶ ἐκτεταμένα πάρκα θάλλουσιν ἀνὰ πᾶσαν κατεύθυνσιν, καλύπτοντα συνολικῶς ἔκτασιν 1000 περίπου στρεμμάτων. Σπουδαιότερον ἐξ αὐτῶν εἶναι τὸ «Χάϋντ Πὰρκ τοῦ Μπουένος Ἄϊρες», καλούμενον ἐπισήμως «Πάρκον τῆς 3ης Φεβρουαρίου», μέγιστον πάντων, ἐκτεινόμενον κατὰ μῆκος τῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ πρὸς Β. τοῦ λιμένος, εἰς ἔκτασιν 340 στρεμμάτων. Ἐν αὐτῷ περιλαμβάνονται ζῳολογικὸς καὶ βοτανικὸς κῆπος, μεγάλαι δεξαμεναί, ἐνυδρεῖα, τεχνηταὶ λίμναι, ἱππόδρομος κλπ. Ἄξιον ἐπίσης ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι τὸ ἐκτεταμένον καὶ ἄριστα διερρυθμισμένον κοιμητήριον τῆς Ρεκολέτα, κοσμούμενον ὑπὸ πολλῶν καλλιτεχνικῶν μαυσωλείων. Ἐκτὸς τῆς μητροπόλεως, κτισθείσης τῷ 1752, κατὰ τὸ σχέδιον τοῦ ἐν Παρισίοις ναοῦ τῆς Μαγδαληνῆς, ὑπάρχουσιν ἐπίσης περὶ τὰς 20 ἄλλαι ἐκκλησίαι τῶν καθολικῶν καὶ 4 τῶν προτεσταντῶν. Ἄλλα, τέλος, ἄξια λόγου κτήρια, παραλειπομένων τῶν πολυαρίθμων ἰδιωτικῶν μεγάρων, ξενοδοχείων, καταστημάτων τραπεζῶν καὶ ἄλλων ἐμπορικῶν οἴκων, εἶναι τὰ ἑξῆς: τὸ μέγαρον τοῦ κογκρέσσου, ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου πλατείας, τὸ μέγαρον τῆς δικαιοσύνης, τὸ θέατρον τοῦ Κολόμβου, τὸ ἀργεντινὸν θέατρον, τὸ θέατρον τῆς Ὄπερας, τὸ μέγαρον τοῦ διδασκαλείου, τὰ κολλέγια Ἀβελλανέντα, Σαρμιέντο καὶ Σαγκράντο Κοραθόν, ἡ ἀστυνομία, ἡ ναυτικὴ σχολή, ὁ πολεμικὸς ναύσταθμος, οἱ σιδηροδρομικοὶ σταθμοὶ κλπ. Ἐκτὸς τοῦ μνημονευθέντος μνημείου τῆς Ἐλευθερίας, καλλιτεχνικώτατον ἐπίσης εἶναι τὸ ἄγαλμα τοῦ Κολόμβου ἐν τῇ ὁμωνύμῳ πλατείᾳ.

Ὡς σύνολον ἡ πόλις τοῦ Μπουένος Ἄϊρες, χωρὶς νὰ παρουσιάζῃ τι τὸ ἐξαιρετικόν, οὔτε εἰς ὀγκώδη οἰκοδομήματα οὔτε εἰς πολυάριθμα καὶ καλλιτεχνικὰ μνημεῖα, παρέχει ἐν τούτοις εὐάρεστον ὄψιν, ὀφειλομένην εἰς τὴν καλὴν καὶ ἔρρυθμον διαρρύθμισιν καὶ τὴν ἄνετον διάταξιν τῶν οἰκοδομῶν αὐτῆς. Εἰς τοῦτο συντελοῦσιν ἐπίσης ἡ ἄφθονος ὕδρευσις τῆς πόλεως δι' ὕδατος τοῦ ποταμοῦ, διυλιζομένου διὰ τελειοτάτου συστήματος ἐγκαταστάσεων, ὁ ἄπλετος κατὰ τὴν νύκτα ἠλεκτρικὸς φωτισμὸς τῶν ὁδῶν καὶ ἡ ἀρτιωτάτη συγκοινωνιακὴ ἐξυπηρέτησις τῶν ἐσωτερικῶν τῆς πόλεως ἀναγκῶν διὰ πλήρους δικτύου γραμμῶν ἠλεκτρικῶν τροχιοδρόμων, τῶν ὁποίων τὸ μῆκος φθάνει τὰ 844 χλμ. (ἐν οἷς 13 χλμ. ὑπογείως). Ἐκτὸς τῶν τροχιοδρομικῶν τούτων συγκοινωνιῶν ὑπάρχουσι καὶ πολλαὶ ὑπόγειοι σήραγγες, βαίνουσαι κάτωθεν τῶν κεντρικῶν ἐμπορικῶν ὁδῶν, μέσῳ τῶν ὁποίων γίνονται διὰ μικρῶν συρμῶν αἱ μεταφοραὶ τῶν ἐμπορευμάτων, παρεχομένης οὕτω σπουδαίας εἰς τὴν συγκοινωνίαν διευκολύνσεως. Ἐπίσης λειτουργοῦσιν 135.000 τηλέφωνα ἀνὰ τὴν πόλιν. Τέλος, πολυάριθμοι μεγάλαι ἀγοραὶ ἀνὰ τὰς διαφόρους συνοικίας ἐξυπηρετοῦσιν ἄριστα τὰς ἀνάγκας αὐτῆς, ἡ δὲ κεντρικὴ ἀγορὰ εἶναι ὡς κτήριον ἡ μεγαλυτέρα τοῦ κόσμου. Ἐκ τῶν προαστείων τῆς πόλεως σπουδαιότερα εἶναι: *Λὰ Μπόκα*, *Μπαρράνκας ἀλ Νόρτε*, *Φλόρες*, *Βίλλια*, *Μαθθίνι*, *Μπελγκράνο*, *Νούνιεθ*, *Βίλλια Καταλίνα*, *Βίλλια Νιβότο*, *Σααβέντρα* κλπ. Ἐκ τούτων, ἄλλα μὲν ἀποτελοῦσιν ἁπλοῦς διαμονητηρίους οἰκισμούς, ἄλλα ἐξοχικὰ κέντρα ἢ λουτροπόλεις παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Λὰ Πλάτα καὶ ἄλλα τέλος βιομηχανικὰ κέντρα.

***Λιμὴν. Οἰκονομικὴ ζωή.*** Τὸ σπουδαιότερον ἀσφαλῶς καὶ χρησιμώτερον ἔργον τοῦ Μπουένος Ἄϊρες εἶναι τὸ σύστημα τῶν τεχνητῶν ἐπὶ τοῦ Λὰ Πλάτα λιμένων του μετὰ τῶν βοηθητικῶν αὐτῶν ἐγκαταστάσεων. Πρὸ τῆς κατασκευῆς τοῦ λιμένος, ὅστις ἀπέχει 155 ναυτικὰ μίλλια ἀπὸ τοῦ ὠκεανοῦ, τὰ μεγάλα ἐμπορικὰ καὶ ἐπιβατηγὰ ἀτμόπλοια, τῶν ὁποίων τὸ βύθισμα ὑπερέβαινε τὰ τρία μέτρα, ἠναγκάζοντο νὰ ἀγκυροβολῶσιν εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως, ἐντὸς τοῦ ποταμοῦ, ἡ δὲ φορτοεκφόρτωσις διεξήγετο μέσῳ μικροτέρων ἀτμοπλοίων καὶ φορτηγίδων. Τὰ πρῶτα λιμενικὰ ἔργα, ἀποπερατωθέντα περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος (1887), περιλαμβάνουν μακρὰν σειρὰν τεσσάρων κατὰ μῆκος τῆς ὄχθης δεξαμενῶν μετὰ δύο λιμένων, πρὸς Β. καὶ πρὸς Ν., τὸ ὅλον δὲ σύστημα περιφράσσεται ἀπὸ τῆς πλευρᾶς τοῦ ποταμοῦ διὰ παμμεγίστου τεχνητοῦ λιμενοβραχίονος. Δύο μικραὶ διώρυγες (βορεία καὶ νοτία), κατασκευασθεῖσαι δι' ἐκβαθύνσεως τῆς κοίτης τοῦ ποταμοῦ, διευκολύνουσι τὴν ἀπρόσκοπτον κυκλοφορίαν καὶ τῶν μεγαλυτέρων ἀτμοπλοίων ἐντὸς τοῦ δεόντως ἐπίσης ἐκβαθυνθέντος λιμένος. Νεώτερος λιμήν, ἀποπερατωθεὶς ἐντὸς τῆς τελευταίας πενταετίας, κατεσκευάσθη πρὸς Β. τοῦ παλαιοῦ. Περιλαμβάνει οὗτος μέγαν ἡμικυκλικὸν βραχίονα, ὅστις περικλείει ἀπὸ Β. τὰς φορτοεκφορτωτικὰς ἐγκαταστάσεις καὶ τοὺς προβλῆτας πλευρίσεως τῶν πλοίων. Ἄρτιον τέλος εἶναι τὸ σύστημα φορτοεκφορτώσεως, περιλαμβάνον ἀναρροφητῆρας σιτηρῶν (elevators), μεγάλους ἠλεκτροκινήτους γερανούς, μονίμους ἐπὶ τῆς ξηρᾶς καὶ πλωτούς, σιδηροδρομικὰς βοηθητικὰς γραμμάς, ἀποθήκας γαιανθράκων κλπ.

Ἡ ναυτιλιακὴ κίνησις τοῦ Μπουένος Ἄϊρες εἶναι τεραστία, δεδομένου ὅτι μέσῳ τοῦ λιμένος αὐτοῦ ἐξάγονται τὰ 40 % τῶν προϊόντων τῆς Ἀργεντινῆς καὶ εἰσάγονται πλέον τῶν 80 %. Τῷ 1924 κατέπλευσαν αὐτόθι 5.229 ἀτμόπλοια, ὁλικῆς χωρητικότητος 11.000.000 τόν. καὶ 7.813 ἱστιοφόρα 1.345.000 τόν. Τὰ κυριώτερα εἴδη τοῦ μὲν ἐξαγωγικοῦ ἐμπορίου εἶναι σιτηρά, κρέατα κονσερβοποιημένα ἢ κατεψυγμένα, κτήνη, ἔριον, δέρματα, λίπη κλπ. κτηνοτροφικὰ προϊόντα, τοῦ δὲ εἰσαγωγικοῦ ὑφάσματα καὶ γενικῶς εἴδη ρουχισμοῦ, μηχαναί, τρόφιμα, χημικὰ προϊόντα, ὑάλινα εἴδη κλπ. Ἡ βιομηχανία, εὑρισκομένη ἀκόμη εἰς τὴν πρώτην αὐτῆς ἀνάπτυξιν, ἀπασχολεῖται μὲ τὴν βυρσοδεψίαν καὶ ἄλλους τινὰς κλάδους ἀφορῶντας τὰ κτηνοτροφικὰ ἰδίᾳ προϊόντα, τὰ εἴδη ρουχισμοῦ καὶ ὑποδήσεως, τὴν ξυλουργικὴν κλπ.

Τὸ Μπουένος Ἄϊρες εἶναι τὸ κέντρον ὅλων τῶν σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν τῆς Ἀργεντινῆς καὶ σπουδαιοτέρα κλεὶς τῶν γραμμῶν τῆς Ν. Ἀμερικῆς ἐν γένει. Αἱ ἐντεῦθεν ἐκκινοῦσαι σιδηροδρομικαὶ ὁδοί, ἐκτὸς τῆς μεγάλης πρὸς τὸν Εἰρηνικὸν (Βαλπαραΐζο, Χιλῆς), διευθύνονται πρὸς τὸ Ροζάριο, τὸ Περγκαμῖνο, τὸ Μερσεντές, τὸ Λούχαν, τὴν Λὰς Φιόρες, τὴν Λὰ Πλάτα, τὴν Ντολορὲς καὶ ὅλα σχεδὸν τὰ κέντρα τῆς Ἀργεντινῆς καὶ τῶν λοιπῶν γειτόνων κρατῶν.

***Πνευματικὴ καὶ κοινωνικὴ κίνησις.*** Πολυάριθμα εἶναι τὰ ἐν Μπουένος Ἄϊρες ἐκπαιδευτικὰ ἱδρύματα ὅλων τῶν εἰδικοτήτων καὶ διαβαθμίσεων. Τὸ πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1822, περιλαμβάνει σχολὰς νομικῆς καὶ κοινωνικῶν ἐπιστημῶν, ἰατρι-

Digitized by Google

κῆς, φυσικῶν, μαθηματικῶν, οἰκονομικῶν ἐπιστημῶν, γεωπονίας, φιλοσοφίας καὶ γραμμάτων, μὲ διδακτικὸν προσωπικὸν ἀποτελούμενον ἐκ 335 τακτικῶν καθηγητῶν καὶ 385 ἐκτάκτων, ἀριθμεῖ δὲ 10.715 φοιτητὰς (1929). Ἡ μέση καὶ στοιχειώδης ἐκπαίδευσις παρέχεται δωρεὰν ὑπὸ τοῦ κράτους εἰς 579 σχολὰς μὲ 10.806 διδασκάλους καὶ καθηγητὰς καὶ 250.000 μαθητάς. Ἐπίσης λίαν προηγμέναι εἶναι αἱ εἰδικαὶ σχολαὶ τεχνικῆς ἐκπαιδεύ-

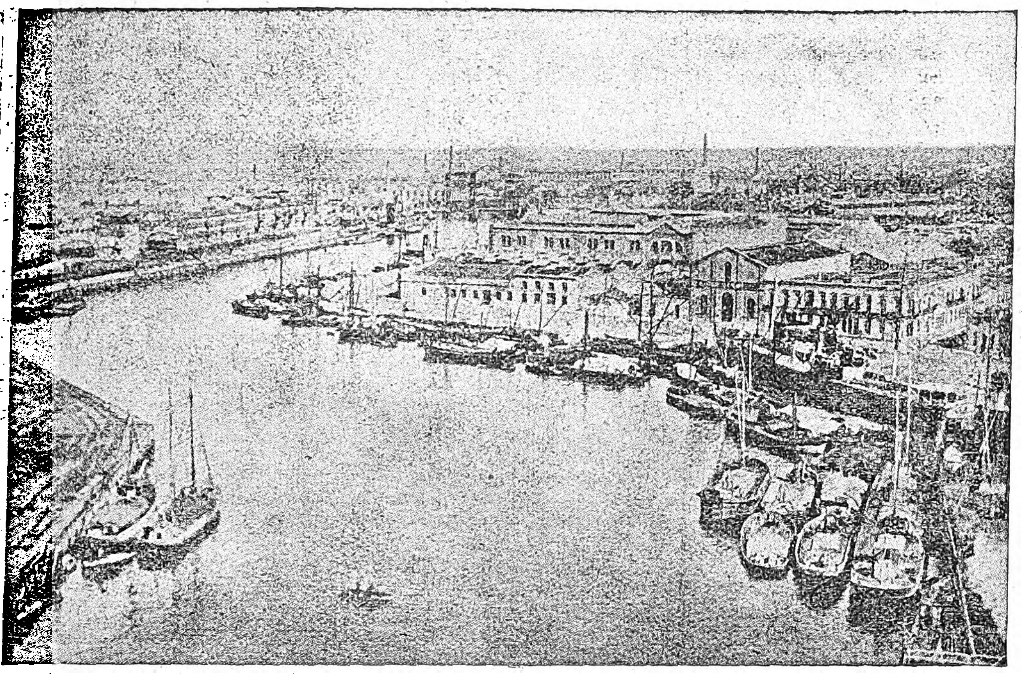

*Ἄποψις τοῦ λιμένος τοῦ Μπουένος Ἄϊρες.*

σεως καὶ αἱ δύο ἐθνικαὶ πολεμικαὶ σχολαί, ἡ ναυτικὴ καὶ τῶν ἀξιωματικῶν τῆς ξηρᾶς. Ἐκ τῶν βιβλιοθηκῶν μεγαλυτέρα εἶναι ἡ ἐθνική, περιλαμβάνουσα 400.000 τόμους καὶ 10.000 χειρόγραφα, ἐκ δὲ τῶν 14 ποικίλων μουσείων τά: Ἐθνικὸν μουσεῖον φυσικῆς ἱστορίας (1823), Ἱστορικὸν (1889), Καλῶν τεχνῶν (1895) κλπ. Ἐκ τῶν 20 περίπου θεάτρων, πολλὰ τῶν ὁποίων εἶναι πεφημισμένα ἀνὰ τὸν κόσμον, γνωστότερα εἶναι: τὸ τοῦ Κολόμβου, τὸ Πολυθέαμα, τὸ Ἀργεντινόν, τὸ Μελόδραμα κλπ. Ἰδιαιτέρως ὅμως ἄξια μνείας εἶναι καὶ τὰ πολυάριθμα καφωδεῖα τῶν ναυτικῶν συνοικιῶν, τὰ ὁποῖα συγκεντροῦσι τοὺς ἐξ ὅλων τῶν μερῶν τῆς γῆς καταπλέοντας εἰς τὸν λιμένα ναύτας, ἔχουσι δὲ ἀποκτήσει ἐντελῶς ἰδιότυπον χαρακτῆρα, οὐδαμοῦ ἀλλοῦ ἀπαντῶντα.

Ἐν Μπουένος Ἄϊρες ἐκδίδονται ἐν συνόλῳ 77 ἐφημερίδες καὶ πολλὰ πάσης φύσεως περιοδικά, ὑπάρχουσι δὲ καὶ πολυάριθμα ἱδρύματα φιλανθρωπίας, ἀλληλοβοηθείας, νοσοκομεῖα κ. ἄ.

***Διοίκησις. Κάτοικοι.*** Τὸ Μπουένος Ἄϊρες εἶναι ἕδρα τοῦ προέδρου, τοῦ κογκρέσσου καὶ τῆς ἀργεντινῆς κυβερνήσεως, τοῦ καθολικοῦ ἀρχιεπισκόπου, τῶν ξένων πρεσβειῶν καὶ ἀποστολῶν καὶ γενικῶς πάντων τῶν μεγάλων ὀργανισμῶν, ἐμπορικῶν, βιομηχανικῶν κ. ἄ. ἐπιχειρήσεων τῆς χώρας. Ἡ πόλις μετὰ τῶν προαστείων αὐτῆς ἀποτελεῖ ἰδίαν αὐτοτελῆ διοικητικὴν περιφέρειαν, ἀσκεῖ δὲ τὴν ἀνωτάτην διοίκησιν αἱρετὸν δημοτικὸν συμβούλιον μὲ ἐπὶ κεφαλῆς δημοτικὸν ἄρχοντα, τελοῦντα

*Ἀριστερά: Πλατεῖα Ἀλσίνα· δεξιά: Ἡ λεωφόρος Χριστοφόρου Κολόμβου μὲ τὸ κυβερνητικὸν μέγαρον δεξιά.*

ὑπὸ τὴν ἄμεσον ἐξάρτησιν τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐσωτερικῶν.

— [ΙΣΤΟΡ.] Τὸ Μπουένος Ἄϊρες ἐκτίσθη τὸ πρῶτον τῷ 1535 ὑπὸ τοῦ δὸν Πέτρου ντὲ Μεντόθα, ὅστις ἡγεῖτο μεγάλης ἀποστολῆς σταλείσης εἰς Ν. Ἀμερικὴν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας καὶ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας Καρόλου Κουΐντου. Τὸ ἐπικρατῆσαν δεύτερον τμῆμα τοῦ πλήρους ὀνόματος τῆς πόλεως, ὅπερ σημαίνει ἱσπανιστὶ «καλὸς ἀέρας», προῆλθε κατὰ μίαν γνώμην ἐκ τῆς κραυγῆς θαυμασμοῦ τὴν ὁποίαν ἐπρόφερεν ὁ Μεντόθα ἀποβιβαζόμενος ἐπὶ τῆς παραλίας «Qué buenos aires hay aqui!» (=τὶ καλὸς ἀέρας εἶναι ἐδῶ). Κατ' ἄλλην ὅμως ἐκδοχήν, ἥτις φαίνεται καὶ μᾶλλον πιθανή, οἱ ναῦται τοῦ Μεντόθα ἀνῆκον εἰς μίαν θρησκευτικὴν ἀδελφότητα ἐπονομαζομένην «Nuestra Señora de los Buenos Aires» (=Παναγία τῶν καλῶν ἀνέμων), εἰς ἔνδειξιν δ' εὐγνωμοσύνης, διὰ τὸν αἴσιον πλοῦν, πρὸς τὴν προστάτιδά των Παρθένον, ἔδωσαν τὸ ὄνομα αὐτῆς εἰς τὴν πρώτην ἀποικίαν τὴν ὁποίαν ἵδρυσαν. Τῷ 1537 οἱ ἰθαγενεῖς Ἰνδοὶ τῆς φυλῆς τῶν Κερανδίων, οἱ ὁποῖοι ὑπεδέχθησαν κατ' ἀρχὴν καλῶς τοὺς Ἱσπανούς, ἐπετέθησαν ἐναντίον τῆς μικρᾶς πόλεως, ἔκαυσαν τὰ κτήρια αὐτῆς καὶ ἔσφαξαν τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν κατοίκων. Ἐπανακτισθεῖσα μετ' ὀλίγον ἐγκατελείφθη καὶ πάλιν ὑπὸ τῶν κατοίκων αὐτῆς, οἵτινες ἐτράπησαν πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν ἱδρύοντες νέας ἀποικίας, κατὰ μῆκος τῶν ποταμῶν Παρανὰ καὶ Παραγουάη, τοὺς ὁποίους ἀνέπλευσαν. Τέλος ἡ πόλις ἐπανιδρύθη ὁριστικῶς τῷ 1580 ὑπὸ τοῦ Χουὰν ντὲ Γκαράϋ, ὅστις ἐπανέκαμπτεν ἐκ τῆς Ἀσσούνθιον μετὰ 60 στρατιωτῶν. Ὁ νέος οἰκιστὴς πρὸς προφύλαξιν τῶν ἀποίκων προέβη προληπτικῶς εἰς τὴν σφαγὴν τῶν Κερανδίων, ἔκτοτε δὲ ὁ διαρρέων ἀπὸ νότου τὴν πόλιν ποταμὸς Ριακουέλο ἔλαβε τὸ ὄνομα *Ρίο ντέλα Ματάνθα* (=ποταμὸς τῆς σφαγῆς).

Διοργανωθεῖσα καλῶς ἡ πόλις ὑπὸ τοῦ Χουὰν ντὲ Γκαράϋ, παραμείναντος ἐν αὐτῇ μέχρι τοῦ 1584, ὁπότε ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν Μενουάνων, προήχθη ταχέως εἰς πλοῦτον καὶ πληθυσμόν, χάρις ἰδίᾳ εἰς τὴν τεραστίαν ἀνάπτυξιν τῶν ἡμιαγρίων ζῴων, τὰ ὁποῖα εἶχον προκύψει ἐκ τῶν ἐξ Εὐρώπης μεταφερθέντων ὑπὸ τοῦ Νοῦφλο ντὲ Κάβες ἡμέρων κατοικιδίων. Τὴν διοίκησιν κατ' ἀρχὰς ἦσκουν οἱ Ἀντελαντάντος (Adelantados), εἶδος τοποτηρητῶν τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας, βραδύτερον ὅμως (1618) ἡ πόλις προήχθη εἰς ἕδραν γενικῆς διοικήσεως, ἐξαρτωμένης ἀπὸ τοῦ ἀντιβασιλέως τοῦ Περοῦ, ἔσχε δὲ πρῶτον γενικὸν διοικητὴν τὸν δὸν Διέγον ντὲ Γκόνγκορα. Ὁ πλοῦτος τῆς ἐνδοχώρας καὶ ἡ βραχυτέρα πρὸς τὴν Ἱσπανίαν ἀπόστασις ἐν συγκρίσει πρὸς τὰ λοιπὰ μεγάλα νοτιοαμερικανικὰ κέντρα καὶ ἰδίως τὴν ἐπὶ τοῦ Εἰρηνικοῦ πόλιν Λίμαν, κατέστησαν βαθμηδὸν τὸ Μπουένος Ἄϊρες σπουδαιότατον ἐμπορικὸν κέντρον, συναγωνιζόμενον ἐπιτυχῶς τὰς λοιπὰς ἱσπανικὰς ἀποικίας. Ἡ ἀνάπτυξις αὕτη ἐπεταχύνθη ἔτι μᾶλλον ἀπὸ τοῦ 1776, ὁπότε, ἀποσπασθὲν ἀπὸ τῆς ἀντιβασιλείας τοῦ Περοῦ, ἐγένετο ἕδρα ἰδίου ἀντιβασιλέως. Κατὰ τὴν ἀπογραφὴν τοῦ 1778 ὁ πληθυσμός του εἶχεν ἤδη φθάσει τὰς 24.205 κατ., διαρκὴς δὲ αὔξησις αὐτοῦ ἔδωσε περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος 40.000 κατ., πληθυσμὸν σοβαρώτατον δι' ἀποικιακὴν πόλιν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Ὅτε μετ' ὀλίγον ἐξερράγη ὁ πόλεμος μεταξὺ Ἀγγλίας καὶ τῆς συμμάχου τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος Ἱσπανίας, τὸ Μπουένος Ἄϊρες κατελήφθη (1806) ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου στρατηγοῦ Μπέρεσφορντ, ὅστις ὅμως προσβληθεὶς μετά τινας ἡμέρας ὑπὸ τοῦ εἰς τὸν ἱσπανικὸν στρατὸν ὑπηρετοῦντος Γάλλου πλοιάρχου Λινιὲ ντὲ Μπρεμόν, ὅστις εἶχεν ὀργανώσει στρατιωτικὸν σῶμα ἐν Μοντεβίδεο καὶ Κολόνια, ἠναγκάσθη νὰ παραδοθῇ (12 Αὐγούστου 1806). Τὸ ἑπόμενον ἔτος ὁ στρατηγὸς Οὐάϊτλοκ, καταλαβὼν τὸ Μοντεβίδεο, τὸ Μαλντονάντο καὶ τὴν Κολόνια, ἀπέστειλεν ἐναντίον τοῦ Μπουένος Ἄϊρες νέαν ἀποστολὴν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Κράουφορντ. Αἱματηρὰ μάχη συνήφθη τότε ἀνὰ τὰς ὁδοὺς τῆς πόλεως (5 Ἰουλίου 1807), καθ' ἣν οἱ Ἄγγλοι ἡττηθέντες ἠναγκάσθησαν νὰ παραδοθῶσι. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν συνεννόησιν, ὁ Λινιὲ ἐδέχθη νὰ ἀπελευθερώσῃ τοὺς αἰχμαλώτους, ἐὰν οἱ Ἄγγλοι ἐξεκένουν τὴν ἀπέναντι ὄχθην τοῦ Λὰ Πλάτα, ὅπερ καὶ ἐγένετο. Ἀπὸ τῆς στιγμῆς ταύτης τὸ Μπουένος Ἄϊρες καθίσταται ἀξιόλογον κέντρον τῆς χωριστικῆς ἀπὸ τῆς Ἱσπανίας κινήσεως, μετ' ὀλίγον δέ, τὴν 25 Μαΐου 1810, ὁ λαὸς ἐξεγερθεὶς κατήργησε τὰς ἀρχὰς καὶ ἀνέθεσε τὴν διακυβέρνησιν τῆς πόλεως εἰς διοικητικὴν ἐπιτροπὴν (junta de gobierno) ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ Σααβέντρα. Ἡ κυβέρνησις ἠσχολήθη ἀμέσως μὲ τὴν ἐξέγερσιν τῶν ἐπαρχιῶν καὶ ἤρξαντο αἱ ἐχθροπραξίαι μετὰ τοῦ διοικητοῦ τοῦ Μοντεβίδεο πρῶτον καὶ ἀκολούθως μετὰ τῆς Παραγουάης. Ἀλλὰ τὸ μὲν ἀποσταλὲν εἰς Παραγουάην ἐκστρατευτικὸν σῶμα, ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μπελγκράνο, ἡττηθὲν δὶς εἰς Παραγκάρυ καὶ Τακουάρυ, ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ ἄπρακτον, ἡ δὲ ἀρξαμένη πολιορκία τοῦ Μοντεβίδεο διεκόπη μετ' ὀλίγον, ἀφ' ἑνὸς μὲν διότι στόλος ἱσπανικὸς ἐβομβάρδισε τὸ Μπουένος Ἄϊρες καὶ ἀφ' ἑτέρου διότι ὁ Βραζιλιανὸς στρατηγὸς Δὸν Διέγος ντὲ Σούζα εἶχεν εἰσβάλει εἰς τὴν περιοχὴν αὐτοῦ καὶ ἐβάδιζεν ἐναντίον τῆς πόλεως. Ἡ δευτέρα αὕτη ἀπειλή, ἡ καὶ σοβαρωτέρα, ἀπεσοβήθη μετ' ὀλίγον, κατόπιν ἐπεμβάσεως τοῦ ἐν Ρίο Ἰανεΐρῳ Ἄγγλου πρεσβευτοῦ, πλησίον τοῦ πρίγκιπος ἀντιβασιλέως Ἰωάννου, ἀμέσως δὲ ὁ στρατὸς τοῦ Μπουένος Ἄϊρες ἐπανέλαβε τὴν πολιορκίαν τοῦ Μοντιβίδεο καὶ κατέλαβεν αὐτὸ τῷ 1814. Ἀπὸ τοῦ προηγουμένου ἤδη ἔτους ἡ συνελθοῦσα εἰς Μπουένος Ἄϊρες συντακτικὴ συνέλευσις ἐψήφισε τὴν κατάργησιν τῆς δουλεμπορίας καὶ τὴν ἀπελευθέρωσιν τῶν νεογεννήτων τέκνων τῶν σκλάβων, συμφώνως πρὸς τὰς ἀποφάσεις τὰς ὁποίας εἶχον ἤδη πρὸ πολλοῦ (1810) λάβει οἱ ἐπαναστατήσαντες ἐπίσης Χιλιανοί. Ἐπακολουθοῦσιν ἀμέσως κατόπιν οἱ μακροὶ καὶ σκληροὶ ἐμφύλιοι ἀγῶνες μεταξὺ τῶν δύο μεγάλων κομμάτων τῆς συνελεύσεως, τῶν συγκεντρωτικῶν, οἵτινες ἦσαν κεκηρυγμένοι ὑπὲρ τῆς ἱδρύσεως ἑνιαίου κράτους μὲ ἕδραν τὸ Μπουένος Ἄϊρες, καὶ τῶν ὁμοσπονδιακῶν, οἵτινες προετίμων τὸν σχηματισμὸν πολλῶν ὁμοσπόνδων κρατῶν, συνεργαζομένων. Οἱ κάτοικοι τῆς πόλεως, πλησιάζοντες ἤδη τὰς 50.000, ἐτάχθησαν μὲ τὸ συγκεντρωτικὸν κόμμα. Αἱ ἐμφύλιοι ἔριδες, συνοδευόμεναι συχνὰ ἀπὸ αἱματηρὰς συγκρούσεις, διήρκεσαν ἀδιαπτώτως σχεδὸν ἀπὸ τοῦ 1820 μέχρι τοῦ 1859, ὁπότε διὰ τῆς ἀκολουθησάσης τὴν μάχην τῆς Σαπέντσα συνθήκης τοῦ Σὰν Χοσὲ ντὲ Φλόρες τὸ Μπουένος Ἄϊρες ὑπεχρεώθη νὰ ὑποταχθῇ εἰς τὴν ὁμοσπονδίαν, ἧς πρόεδρος ἐγένετο ὁ στρατηγὸς Μίτρε. Καθ' ὅλον τὸ μακρὸν τοῦτο διάστημα ἡ πόλις ὑπέστη πολλὰς πολιορκίας καὶ μεγάλως ὑπέφερεν ἐκ τῶν δηώσεων. Δὲν παρῆλθεν ὅμως εἰκοσαετία καὶ τὸ Μπουένες Ἄϊρες ἐξηγέρθη καὶ πάλιν ἐναντίον τῆς ὁμοσπονδίας, λόγῳ τῆς ὑπὸ τοῦ προέδρου Ἀβελλανέντα φυλακίσεως τοῦ ἐθνικόφρονος στρατηγοῦ Μίτρε, ὅστις διαρκῶς διήγειρεν ἐπαναστάσεις ἐναντίον τῆς κυβερνήσεως.

Τέλος τὴν 21 Ἰουλίου 1880 ὁ κυβερνητικὸς στρατηγὸς Ρόκα κατέλαβε τὴν πόλιν καὶ ἐξηνάγκασε τοὺς κατοίκους εἰς ὑποταγήν, ὅτε δὲ μετ' ὀλίγον (Ὀκτώβριος 1880) ὁ ἴδιος οὗτος στρατηγὸς ἐξελέγη πρόεδρος τῆς ὁμοσπονδίας, ἔσπευσε νὰ χωρίσῃ τὴν πόλιν μετὰ τῆς περιοχῆς αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὁμωνύμου διοικήσεως καὶ νὰ καταστήσῃ αὐτὴν ἁπλῆν ὁμοσπονδιακὴν πρωτεύουσαν ἄνευ ἐξηρτημένης ἀμέσως ἀπ' αὐτῆς ἐνδοχώρας. Ἔκτοτε τὸ Μπουένος Ἄϊρες ἔλαβε τὸν μέχρι σήμερον ἰσχύοντα καταστατικὸν χάρτην αὐτοῦ (βλ. καὶ λ. *Ἀργεντινὴ* [Ἱστορ.]). Καθ' ὅλον τὸ μακρὸν διάστημα τῶν μνημονευθέντων ἀγώνων ἡ πόλις δὲν ἔπαυσε προαγομένη, τῷ δὲ 1880 ὁ πληθυσμὸς αὐτῆς εἶχεν ἀνέλθει εἰς 270.000 κατ. Ἁλματικὰς ὅμως προόδους ἐπετέλεσεν ἰδίως τὸ Μπουένος Ἄϊρες κατὰ τὰ τριάκοντα πρῶτα ἔτη τοῦ τελευταίου αἰῶνος. Ἐκ τῶν σημερινῶν κατοίκων τῆς πόλεως, 850.000 περίπου εἶναι ξένοι μετανάσται ἐξ ὅλων τῶν χω-

Digitized by Google

ρῶν τῆς Εὐρώπης, κυρίως ὅμως Ἰταλοὶ ἀνερχόμενοι εἰς 400.000 περίπου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. «Year Book of the city of Buenos Aires, issued by the Municipality». Χ. Δ.

— [ΦΙΛΟΤΕΛ.] Ἀπὸ τοῦ 1853—1860 ἡ περιοχὴ τοῦ Μπουένος Ἄϊρες, κεχωρισμένη τῆς λοιπῆς Ἀργεντινῆς ὁμοσπονδίας, εἶχεν ἐκδώσει εἰδικὰ γραμματόσημα παριστῶντα ἀτμόπλοιον. Ἡ πρώτη ἔκδοσις ἐγένετο τῷ 1858 καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ 4 εἴδη, ἀξίας 2, 3, 4 καὶ 5 πέζος. Τὰ γραμματόσημα τῆς σειρᾶς ταύτης εἶναι σπανιώτατα λόγῳ τῆς λίαν περιωρισμένης κυκλοφορίας των, ἀκριβώτερον δ' ἐξ αὐτῶν εἶναι τὸ τῶν 5 πέζος, διατιμώμενον 35.000 γαλλ. φρ. ἀσφράγιστον καὶ 25.000 φρ. ἐσφραγισμένον. Ἀπὸ τοῦ 1860 μέχρι τοῦ 1862 ἐξεδόθη ἑτέρα σειρὰ γραμματοσήμων, γνωστὴ ὡς «παρισινὴ ἔκδοσις», παριστῶσα τὴν κεφαλὴν τῆς Δημοκρατίας. Καὶ ἡ ἔκδοσις αὕτη εἶναι σπανία, ὑπάρχουσι δὲ καὶ ἀνατυπώσεις ταύτης. (Ε. Φ. Ε).

— **Μπουένος Ἄϊρες** *διοίκησις [Γεωγρ.]*. Ἡ μεγαλυτέρα καὶ σημαντικωτέρα ἐκ τῶν δεκατεσσάρων ὁμοσπόνδων ἐπαρχιῶν τῆς Ἀργεντινῆς δημοκρατίας, ἔχουσα ἔκτασιν 305.121 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1928) 2 898.640 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Λὰ Πλάτα* (κάτ. 153.243). Κεῖται εἰς τὸ ΒΑ. τμῆμα τῆς χώρας καὶ βρέχεται πρὸς Α. καὶ πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Ἀτλαντικοῦ. Πρὸς Β. ὁρίζεται ὑπὸ τοῦ Ρίο Παρανὰ καὶ τοῦ ποταμοκόλπου τῆς ἐκβολῆς τοῦ ντὲ Λὰ Πλάτα, ἐνῷ πρὸς Δ. συνορεύει μὲ τὰ ἐκτεταμένας πάμπας τῆς κεντρῴας Νοτίου Ἀμερικῆς. Ἐξαιρέσει τοῦ Ν. αὐτῆς τμήματος, ὅπου διέρχονται δύο ὁπωσοῦν ἀξιόλογοι ὀροσειραί, πᾶσα ἡ λοιπὴ χώρα εἶναι ἐντελῶς πεδινή, ἀρδευομένη ὑπὸ τῶν ποταμῶν *Σαλάντο, Νέγκρο* καὶ *Κολοράντο* καὶ σχηματίζουσα μικρὰς τινας λίμνας. Ἡ ἀκτογραμμὴ αὐτῆς ἔχει μῆκος 900 μιλλίων, ἐξ ὧν τὰ 750 ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ, σχηματίζει δὲ πολλοὺς καὶ καλοὺς φυσικοὺς λιμένας καὶ ἀγκυροβόλια. Ἐντὸς τῆς περιοχῆς τῆς ἐπαρχίας, ἀλλὰ κεχωρισμένη ἀπ' αὐτῆς διοικητικῶς, κεῖται ἡ ὁμώνυμος πόλις, πρωτεύουσα τῆς Ἀργεντινῆς (βλ. ἀνωτ.). Οἱ κάτοικοι ἀσχολοῦνται κυρίως μὲ τὴν ὁμαδικὴν κτηνοτροφίαν κατὰ μεγάλας ἀγέλας, τὴν καλλιέργειαν τῶν σιτηρῶν, τῆς ἀμπέλου, τοῦ ζαχαροκαλάμου, τοῦ καπνοῦ κλπ. Τὸ ὑπέδαφος περικλείει μάρμαρον, ἐκλεκτὸν ὀρυκτὸν ἅλας, σχιστολίθους, γύψον κλπ. Κύριον κέντρον τοῦ ἐμπορίου καὶ τῶν συγκοινωνιῶν τῆς χώρας εἶναι ἡ πόλις Μπουένος Ἄϊρες καὶ ἡ πρωτεύουσα Λὰ Πλάτα, ἐγγὺς τῆς πρώτης, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ. Χ. Δ.

**Μπουὲν Ρετίρο** (Buen Retiro). Βασιλικὸν ἱσπανικὸν ἀνάκτορον, ὅπερ ἔκειτο πρὸς τὸ ἀνατολικὸν ἄκρον τῆς Μαδρίτης, ἐντὸς τοῦ πάρκου τῆς πόλεως. Κατεσκευάσθη τῷ 1630 καὶ εἶχεν ἐντὸς αὐτοῦ θέατρον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐπαίχθησαν πολλὰ ἔργα τοῦ Λόπε ντὲ Βέγκα. Ἦτο πολυτελέστατα διακεκοσμημένον διὰ πινάκων ἐν τοῖς ἄλλοις τοῦ Τισιανοῦ καὶ τοῦ Βελασκέθ. Τὸ ἀνάκτορον τοῦτο ἐκάη τῷ 1734, ἀλλ' ἀνῳκοδομήθη βραδύτερον ἐπὶ Φιλίππου ΣΤ', ὑποστὰν καὶ πάλιν μεγάλας καταστροφὰς ὑπὸ τῶν Γάλλων τῷ 1808. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1868 κατηδαφίσθη κατὰ μέγα μέρος. Τῷ 1890 ἐκτίσθη ἐπὶ τῆς θέσεως αὐτοῦ καὶ διὰ τῆς προσαρμογῆς τῶν ὑπολειμμάτων τοῦ παλαιοῦ ἀνακτόρου νέον κτήριον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐστεγάσθη τὸ στρατιωτικὸν μουσεῖον τοῦ πυροβολικοῦ. Περὶ τὸ παλαιὸν ἀνάκτορον ὑπῆρχεν ὡραῖον ἄλσος, ὅπερ προσηρτήθη εἰς τὸ πάρκον τῆς Μαδρίτης, ὡς δημόσιος περίπατος, διατηρῆσαν τὸ ὄνομα τοῦ «Μπουὲν Ρετίρο». Μ. Δ. Β.

**Μπουὲ ντὲ Λαπεϋρὲρ** (Boué de Lapeyrère). Γάλλος ἀντιναύαρχος (1852—1924). Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἦτο ἀρχηγὸς τῶν κατὰ θάλασσαν γαλλικῶν δυνάμεων, ἀναγνωρισθεὶς καὶ ὡς ἀρχηγὸς τῶν κατὰ θάλασσαν συμμαχικῶν δυνάμεων τῆς Μεσογείου πλὴν τῶν δρωσῶν ἐνώπιον τῶν Δαρδανελλίων. Τῷ 1915 παρητήθη τοῦ ἀξιώματός του ἀποστρατευθεὶς μετ' οὐ πολύ. Γ. Ν. Ν.

**Μπούεργκερ** (Buerger), *νόσος τοῦ* —. Χαρακτηρίζεται οὕτω νόσος προσβάλλουσα νεαρὰ ἄτομα (μεταξὺ τοῦ 25ου καὶ 40οῦ ἔτους) τοῦ ἄρρενος φύλου, σημειουμένη κυρίως μεταξὺ τῶν ἰθαγενῶν Ἰσραηλιτῶν τῆς Ρωσίας καὶ τῆς Πολωνίας. Πρὸ τῶν ἀντικειμενικῶν ἀλλοιώσεων, ἡ προσοχὴ τοῦ ἀσθενοῦς ἕλκεται ἐπὶ μῆνας καὶ ἔτη πρὸ αὐθορμήτους πόνους τοῦ ἑνὸς ἢ τῶν δύο κάτω ἄκρων καὶ αἵτινες ἐπιδεινοῦνται συνεπείᾳ τοῦ βαδισματος· οἱ πόνοι οὗτοι ἐντοπίζονται ἐπὶ τοῦ πελματικοῦ θόλου, τοῦ μεγάλου δακτύλου καὶ τῶν μυῶν τῆς γαστροκνημίας. Συνοδεύονται πολλάκις ὑπὸ μυρμηκιάσεως, αἱμωδίας καὶ πρὸ πάντων ὑπὸ διαλειπούσης χωλότητος. Οἱ πόνοι οὗτοι ἔχουσιν, ἐν γένει, χαρακτῆρα προοδευτικὸν καὶ μετ' οὐ πολὺ συνοδεύονται ὑπὸ ἀντικειμενικῶν χαρακτήρων, ἤτοι διαχύτου ἐρυθρότητος τῶν ἄκρων, ἐκσεσημασμένης πρὸ πάντων ἐπὶ τῶν μεγάλων δακτύλων, ἐπὶ τῆς ράχεως καὶ τοῦ πέλματος τοῦ ποδός, ἐξαλείψεως ἢ ἐλαττώσεως τῶν σφύξεων ἐπὶ τῶν χωρῶν τῶν ἐχουσῶν καταφανεῖς τὰς σφύξεις (ποδικῶν ἀρτηριῶν, ὀπισθίας κνημιαίας), τροφικῶν διαταραχῶν τοῦ δέρματος, τῶν ὀνύχων τῶν μεγάλων δακτύλων, ἐλαφρῶν μυϊκῶν ἀτροφιῶν, ἐνίοτε δὲ καὶ προσκαίρου παρουσίας μικρῶν ὑποδορίων καὶ ἐπωδύνων ὄζων. Τὰ συμπτώματα ταῦτα ἀπολήγουν σχεδὸν πάντοτε εἰς γαγγραινώδεις ἀλλοιώσεις ἑνὸς ἢ πλειόνων δακτύλων τοῦ ποδὸς ἢ ἑνὸς ἢ πλειόνων δακτύλων τῆς χειρός.

Ἀνατομικῶς συναντᾶται πάντοτε σκληρία τις περιαγγειακή, ἥτις περιβάλλει τὸ ἀγγειονευρικὸν δέμα τῶν κάτω ἄκρων, καὶ ἐνίοτε τῶν ἄνω, ἐντὸς ἰνώδους οὐσίας συμπαγοῦς. Δὲν πρόκειται περὶ ἀρτηριίτιδος, καθαρῶς εἰπεῖν, ἀλλὰ περὶ ἀποφρακτικῆς θρομβώσεως ἀρτηριακῆς καὶ ἔστιν ὅτε φλεβικῆς.

Ἡ νοσηρὰ αὕτη ἐπεξεργασία ἔχει χαρακτῆρα κατ' ἐξοχὴν χρόνιον καὶ ὕπουλον, διαρκοῦσα ἐπὶ ἔτη, κατὰ τὰ ὁποῖα διαδοχικῶς καὶ κλιμακηδὸν ἐπενεργοῦνται ἀκρωτηριασμοὶ τῶν κάτω ἄκρων. Ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον χαρακτηρίζει τὴν νόσον τοῦ Μπούεργκερ εἶναι ἡ ἀλληλουχία νευρικῶν καὶ γενικῶν διαταραχῶν, ὧν αἱ τροφικαὶ συνέπειαι φέρουσι τὰς ἀγγειακὰς ἀλλοιώσεις. Ι. Σ. ΚΑΜΙΝΗΣ

**Μπούζα** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ΒΔ. ἐσχατιὰ τῆς Κρήτης (πλάτ. 35°37' Β., μήκ. 23°35' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536 a: Candia western portion), ἀπορρὼξ καὶ ὑψηλὴ χερσονησώδης προβολή, χωροῦσα πρὸς βορρᾶν καὶ τὰ Ἀντικύθηρα. Ἔχει μῆκος 7 μιλλ., πλάτος κατὰ μέσον ὅρον 1 μιλλ. καὶ παρουσιάζει μέγιστον ὑψόμετρον 2.560 ποδ., πρόκειται δὲ τῆς ἄκρας ἢ ἐρημόνησος *Ἄγρια Γραμποῦσα*. Εἶναι ἡ χερσόνησος *Κώρυκος* ἢ *Κόμαρος* τῶν ἀρχαίων, ἡ σχηματίζουσα πρὸς τὴν ρίζαν της, πελαγίως μὲν τὰ *Φαλάσαρνα* (νῦν *Κουτρί*), ἐνδοκολπίως δὲ τὴν *Κίσσαμον* (ἐγγὺς τῶν Καλλεργιανῶν). Σ. Ε. Λ.

**Μπουζὰν** (Bougeant), ***Γουλιέλμος-Ὑάκινθος***. Γάλλος ἰησουΐτης, ἱστορικὸς καὶ λόγιος (1690—1743). Ἐδίδασκεν εἰς διάφορα κεντρικὰ λύκεια τοῦ τάγματος μέχρι τοῦ 1739, ὁπότε, δημοσιεύσας ὑπὸ τὸν τίτλον «Διασκεδαστικὴ φιλοσοφία ἐπὶ τῆς γλώσσης τῶν ζῴων» μίαν παιγνιώδη μετασκευὴν ἰνδικοῦ τινος μύθου, περιέπεσεν ὑπὸ τὴν δυσμένειαν τῶν ἀνωτέρων του καὶ ἀπεστάλη εἰς μεμακρυσμένην ἐπαρχίαν. Γνωστὸς ἰδίως εἶναι διὰ τὴν συγγραφεῖσαν παρ' αὐτοῦ «Ἱστορίαν τῶν πολέμων καὶ τῶν διαπραγματεύσεων, αἵτινες προηγήθησαν τῆς συνθήκης τῆς Βεστφαλίας» (1727) καὶ τὴν «Ἱστορίαν τῆς συνθήκης τῆς Βεστφαλίας» (1744), ἔργα δι' ὧν ἐτάχθη μεταξὺ τῶν καλῶν ἱστορικῶν τῆς ἐποχῆς του. — Ω.

**μπουζᾶς**· βλ. *μποζᾶς*.

**Μπουζενμπάουμ** (Busenbaum), *Χέρμαν*. Ἰησουΐτης γεννηθεὶς τῷ 1609 (κατ' ἄλλους τῷ 1600) ἐν Nottelen καὶ ἀποθανὼν τῷ 1668. Εἰσελθὼν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν διωρίσθη μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του διδάσκαλος τῆς φιλοσοφίας καὶ συστηματικῆς θεολογίας ἐν Κολωνίᾳ καὶ ἔπειτα διευθυντὴς τῶν κολλεγίων τοῦ Χιλδεσχάϊμ καὶ Μύνστερ. Τῷ 1650 (κατ' ἄλλους τῷ 1645) ἐξέδωκεν ἐν Μύνστερ τὸ κύριον αὐτοῦ ἔργον: «Medulla theologiae moralis», λαβὼν ὑπ' ὄψιν καὶ τὰ χειρόγραφα τοῦ Nunning καὶ Spee. Τὸ ἔργον τοῦτο τῆς περιπτωτικῆς ἠθικῆς κατέστη ἀγαπητότατον παρὰ τοῖς δυτικοῖς, οὕτως ὥστε μέχρι τοῦ 1776 ἐξεδόθη ἑβδομηκονταπεντάκις. Τῷ 1748 ἔγραψεν εἰς αὐτὸ ὑπόμνημα ὁ περίφημος Liquori, ἐκδοθὲν ἐν Νεαπόλει. Τῷ 1757 τὸ κοινοβούλιον τῆς Τουλούζης, παρεξηγῆσαν περικοπὴν τοῦ ἔργου τούτου καὶ νομίσαν ὅτι ἐν αὐτῇ συνιστᾶται ὁ φόνος τῶν ἡγεμόνων, διέταξε τὴν καῦσιν αὐτοῦ. Ἐπὶ παρεξηγήσεως ἐπίσης στηρίζεται ἡ γνώμη ὅτι ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ὑποστηρίζεται ἡ ἀρχὴ «ὁ σκοπὸς ἁγιάζει τὰ μέσα». Ἡ καλυτέρα ἔκδοσις τοῦ ἔργου τούτου εἶναι ἡ γενομένη ἐν Ρώμῃ (ἄνευ ἀναγραφῆς τοῦ χρόνου τῆς ἐκδόσεως). Ἔγραψε καὶ ἄλλα τινά, ἀσκητικοῦ ὡς τὰ πολλὰ περιεχομένου. Κ. Ι. Δ.

**Μπουζέντο** (Busento) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κοζέντσας τῆς Καλαβρίας, πηγάζων ἐκ τοῦ ὄρους Κούρτζο. Εἶναι ὁ ἀρχαῖος Buxentius, εἰς τὴν κοίτην τοῦ ὁποίου λέγεται ὅτι ἐτάφη ὁ Ἀλάριχος τῷ 410 ὑπὸ τῶν Βησιγότθων, οἵτινες εἶχον προσωρινῶς ἀλλάξει τὸν ροῦν αὐτοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μπουζέου** (Buzeu, ἢ Buzau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ *Μπουζέου* (οὐγγρ. *Μπόντζα*), δεξιοῦ παραποτάμου τοῦ Σερέτη, 100 χλμ. κατ' εὐθεῖαν καὶ 160 σιδηροδρομικῶς πρὸς ΒΑ. τοῦ Βουκουρεστίου. Εἶναι σπουδαῖος σιδηροδρομικὸς κόμβος καὶ κέντρον ἐμπορίου σιτηρῶν, ξυλείας, πετρελαίου καὶ βοείων δερμάτων. Διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου κατελήφθη τὴν 14 Δεκεμβρίου 1914 ὑπὸ τῶν Αὐστρογερμανῶν, βραδύτερον δ' ὑπέστη ζημίας κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις πρὸς διάβασιν τοῦ ποταμοῦ Μπουζέου (15—17 Δεκεμβρίου 1916). Κάτ. (1927) 30.000. Ὁ ὁμώνυμος νομός, κείμενος ἐν τῇ Μεγάλῃ Βλαχίᾳ, κάτωθεν τῶν ΝΑ. προπόδων τῶν Τρανσυλβανικῶν Ἄλπεων, ἔχει ἔκτασιν 4.700 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 278.000 κατοίκων. Χ. Δ.

**Μπουζήδων** ***Μετόχι*** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Βρυσῶν τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου τοῦ νομοῦ Χανίων. Κάτ. (1928) 18. Χ. Δ.

**μπούζι** (τὸ) ἄκλιτον· δημοτ., ἐπὶ τοῦ ὕδατος ἢ ἄλλου ὑγροῦ λίαν ψυχροῦ, πάγος: «τὸ νερὸ εἶναι μπούζι»· || ἐπὶ τὸ ὑπερβολικώτερον: «ἡ σούπα ἔγινε μπούζι, δὲν τρώγεται» (τουρκ. *μπούζ*).

**μπούζι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μεσημβριάνθεμον τὸ κρυστάλλινον*.

**Μπούζι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κορινθίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 450.

—2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀγαλιανῆς τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτοικοι (1928) 84.

—3) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος συνοικισμοῦ *Τρίκορφον* (βλ. λ.). Χ. Δ.

**Μπουζί**, ἢ ***Μπετζάϊα*** (γαλλ. Bougie, ἀραβ. Bedjaia, λατιν. Saldae) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Ἀλγερίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας τοῦ νομοῦ Κωνσταντίνης. Εἶναι κτισμένη κατὰ τὸν ΔΝΔ. μυχὸν τοῦ ὁμωνύμου κόλπου (βλ. κατ.) μεταξὺ τῆς ἐκβολῆς τοῦ ποταμοῦ Σαχὲλ (ἢ τῆς Νασσαύας) καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Καρμπόν, παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ βουνοῦ Γκουράγια καὶ εἶναι σπουδαῖος κόμβος τοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου τῆς Ἀλγερίας. Κάτ. 19.440. Ἡ πόλις ἀπέχει 236 χλμ. ἀπὸ τῆς Κωνσταντίνης καὶ 192 ἀπὸ τοῦ Ἀλγερίου καὶ ἔχει ἐνδιαφέροντα ἐμπορικὸν λιμένα τοῦ ὁποίου ἡ ἐτησία ναυτιλιακὴ κίνησις κυμαίνεται περὶ τὰς 840.000 τόννων. Ἐξάγει κυρίως ξυλοκέρατα, σῦκα καὶ ἄλλα ὀπωρικὰ εἰς μεγάλας ποσότητας, φελλούς, οἶνον, σιτηρά, φωσφορικὰ ἅλατα, μεταλλεύματα σιδήρου κλπ. καὶ ἔχει βιομηχανίας κονσερβοποιήσεως ὀπωρικῶν, ζαχαροπήκτων καρπῶν, κεράμων, καπνοῦ, ἀσβέστου, τσιμέντων, πριονιστήρια κλπ. Τινὲς ὑποστηρίζουσιν ὅτι ἐν αὐτῇ ἐπενοήθησαν τὰ κηρία, γαλλιστὶ καλούμενα bougies.

Ἡ ἐπαρχία *Μπουζὶ* περιλαμβάνει 14 δήμους, ἀριθμεῖ δὲ πληθυσμὸν 410.320 κατ,

— *[Ἱστορ.]* Ἡ προσφορωτάτη θέσις τοῦ λιμένος τῆς Μπουζὶ συνέβαλεν ἐνωρὶς εἰς τὴν ταχεῖαν ἀνάπτυξιν τῆς πόλεως. Κατὰ τοὺς ἀρχαιοτάτους χρόνους ἦτο πιθανῶς ὁ ὑπὸ τοῦ Σκύλακος ἀναφερόμενος ὑπὸ τὸ ὄνομα *Σίδα* ἐμπορικὸς σταθμὸς τῶν Φοινίκων. Βραδύτερον, ἀπὸ τοῦ Α' π. Χ. αἰῶνος καὶ ἐντεῦθεν, ἀναφέρεται ὑπὸ πολλῶν γεωγράφων, ἐν οἷς καὶ ὁ Στράβων, μὲ τὸ ὄνομα *Σάλδαι*, ὡς πλουσία καὶ ἀκμάζουσα πόλις· τοῦτο δὲ μαρτυρεῖται καὶ ἐκ τῶν πολυαρίθμων εὑρεθέντων κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ἐν αὐτῇ ἐρειπίων, ἐπιγραφῶν κλπ. Τῷ 708 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Ἀράβων καὶ ἐγένετο ἕδρα τοῦ βασιλείου τοῦ Μπενὶ-Ἀμμιάντ. Περιελθοῦσα εἰς τοὺς Ἀλμωάδας (1152) κατ' ἀρχὰς καὶ εἶτα εἰς τοὺς ἡγεμόνας τῆς Τύνιδος (1240) κατελήφθη τῷ 1509 ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν, οἵτινες ἐκράτησαν αὐτῆς ἐπὶ μικρὸν χρονικὸν διάστημα. Μετὰ ταῦτα ἐγένετο κτῆσις τοῦ Βέη τῆς Ἀλγερίας μέχρι τοῦ 1833, ὁπότε κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γάλλων, οἵτινες ταχέως προήγαγον αὐτήν. Χ. Δ.

— **Μπουζί**, ***κόλπος*** (golfe de Bougie) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπίσημος τῆς Ἀλγερίας κόλπωσις, διανοιγομένη εἰς εὖρος 24 μιλ. μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Καρμπὸν (ἀρχ. *Αὖδον*, πλάτ. 36°47' Β., μήκ. 5°06' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1910: Algiers to cape Bugaronni) καὶ ἀκρωτηρίου Καβαλλὸ καὶ εἰς εἴσδυσιν 8 μιλ. Εἰς τὸν ΔΝΔ. μυχόν του ἡ φερώνυμος πόλις. Εἶναι ὁ *Νουμιδικὸς κόλπος* τῶν ἀρχαίων (*Πτολεμ.* Δ, β, 11, Nobbe). Σ. Ε. Λ.

**μπουζὶ** (τὸ) (γαλλ. bougie)· ἠλεκτρικὸν ὄργανον διὰ τοῦ ὁποίου γίνεται εἰς τοὺς κινητῆρας ἐσωτερικῆς καύσεως (αὐτοκινήτων κλπ) ἡ ἀνάφλεξις τοῦ μίγματος ἐξαεριωμένης βενζίνης καὶ ἀτμοσφαιρικοῦ ἀέρος καθ' ἕκαστον ἐμβολισμόν· ἄλλως σπινθηριστὴς ἢ *ἠλεκτρικὸς* ***ἀναφλεκτὴρ*** (βλ. λ. *αὐτοκίνητον* τ. ΣΤ', σ. 252 α'). —Ρ.

**Μπουζιάνης**, ***Γεώργιος***. Σύγχρονος Ἕλλην ζωγράφος. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς μὲν εἰς τὴν ἐν Ἀθήναις σχολὴν τῶν Καλῶν Τεχνῶν, μετὰ ταῦτα δὲ ἐν Μονάχῳ, ἔνθα ἐγκατεστάθη μονίμως παρὰ τῷ Στούκ, οὗ τὴν τεχνοτροπίαν ἠκολούθησε. Διέπρεψεν ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος. Ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας ἐν Εὐρώπῃ ἐκθέσεις. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὀλυμπιονίκης», «Ἀνδρας καὶ γυναῖκα», «Προσωπογραφία τοῦ δρος Σέϊνερ», «Ὁ κ. Κρόερ, δήμαρχος τοῦ Ἴνγκελστατ», «Προσωπογραφία παιδίσκης», «Σαλώμη», «Ἀλεξάνδρα Λίζερλ». Ἡ τέχνη τοῦ Γ. Μπουζιάνη εἶναι ρωμαλέα, νευρώδης, ἐκφραστική. Ι. Μ. Π.

Digitized by Google

**Μπούζιας** (Buzias) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ρουμανίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Τίμις-Τόρονταλ, κειμένη πρὸς ΝΑ. τοῦ Τέμεσβαρ καὶ ἔχουσα σιδηρούχους ἰαματικὰς πηγάς. Κάτ. (1922) 2.816. χ. Δ.

**Μπουζίκ,** ἢ ***Μπότω*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀβαθὴς ὑφαλόγλωσσα τῆς Ἀν. Θράκης (πλάτ. 40°32'1/4 Β., μῆκ. 26°01'3/4 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1087: Thasso to Dardanelles) νοτίως τῆς Αἴνου καὶ εἰς 6 1/2 μίλ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἕβρου. Σ. Ε. Λ.

**Μπουζὶκ** (Bouziques) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Γαλλικὸς λιμὴν ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Λυὼν (πλάτ. 43°27' Β., μῆκ. 3°38' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1804: Cape Saint Sebastian to Cette) εἰς τὰ πρόσγεια τῶν *Αἴγκ-Μὸρτ* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπουζίνσκυ, *Γαβριήλ*.** Μικρορρῶσος κληρικός, σπουδάσας ἐν τῇ θεολογικῇ Ἀκαδημίᾳ Κιέβου. Τῷ 1706 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῇ Σλαβο-ελληνο-λατινικῇ Ἀκαδημίᾳ, προσωπικῶς γνωστὸς εἰς Πέτρον τὸν Μέγαν, ὅστις διώρισεν αὐτὸν ἱερέα τῶν κατὰ θάλασσαν ρωσικῶν δυνάμεων. Κατέστη γνωστὸς ὡς μεταφραστὴς ξένων ἔργων εἰς τὴν ρωσικήν, τινὰ τῶν ὁποίων μετέφρασεν ὑπὸ τὴν ἄμεσον ἐπίβλεψιν τοῦ Τσάρου. Π. Λ.

**Μπουζίνωφ, *Α*.** Ἀξιόλογος σύγχρονος Βούλγαρος ζωγράφος, γελοιογράφος. Εἰς μακρὰν σειρὰν πινάκων του περιέλαβεν ὁλόκληρον τὴν πολιτικὴν καὶ φιλολογικὴν ζωὴν τῆς τελευταίας τριακονταετίας τῆς χώρας του. Διακρίνεται διὰ τὸ ὀξυδερκὲς πνεῦμά του καὶ τὴν δηκτικωτάτην εἰρωνείαν του. Εἶναι συγχρόνως καὶ κοινωνικὸς φιλόσοφος καὶ πολιτικὸς κριτικὸς σπανίας διορατικότητος. Τ. Β.

**Μποὺζ-λοὺκ *τσάι,*** ἢ ***Σελέφκε-σοῦ*** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς Τουρκίας ἐν Κιλικίᾳ, μήκους 125 χλμ. περίπου. Πηγάζει ἐκ τοῦ Ταύρου καὶ χύνεται εἰς τὸν Γκιὸκ-σοῦ (Καλύκαδνον). Ν. Μ.

**Μποῦζο** (Buso) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ κόλπου (πλάτ. 45° 43' Β., μῆκ. 13° 15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 201: Gulfs of Venice and Trieste). Σ. Ε. Λ.

**Μποῦζολτ** (Busolt), ***Γεώργιος***. Γερμανὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1850 ἐν Κεππούρεν καὶ ἀποθανὼν τῷ 1920. Ἐσπούδασεν εἰς Καινιξβέργην ἱστορίαν, φιλοσοφίαν καὶ φιλολογίαν καὶ τῷ 1875 ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ Ἰταλίαν δαπάναις τοῦ γερμανικοῦ κράτους. Τῷ 1879 διωρίσθη ἔκτακτος καὶ τῷ 1881 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Κιέλου, τῷ δὲ 1897 ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γοττίγγης. Ὁ Μποῦζολτ ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς ἔργα: «Ἡ δευτέρα ἀθηναϊκὴ ὁμοσπονδία» (1874), «Οἱ Λακεδαιμόνιοι καὶ οἱ σύμμαχοί των» (1878), «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς ἱστορίας» (1880), «Ἑλληνικὴ ἱστορία (3 τόμ. 1885—1904), ὅπερ ὑπῆρξε καὶ τὸ σπουδαιότερον ἔργον του. Π. Χ. Χ.

**Μπουζομᾶρκος.** Οὕτως ἐκαλεῖτο κοινῶς ὑπὸ τῶν Κρητῶν ὁ ἀγωνιστὴς κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821 Μᾶρκος *Βουζυύκης* (βλ. λ.).

**Μπουζόνι** (Busoni), ***Φερρούτσιο-Μπενβενοῦτο.*** Ἰταλὸς κλειδοκυμβαλιστὴς καὶ συνθέτης (1866—1924). Ἐκ τῶν τελευταίων μαθητῶν τοῦ Λίστ, τάχιστα ἀπέκτησε παγκόσμιον φήμην διὰ τῆς καταπληκτικῆς του δεξιοτεχνίας εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον καὶ τὴν ἐξαιρετικὴν εὐκολίαν εἰς τὸν αὐτοσχεδιασμόν. Ἡ σταδιοδρομία του ἤρχισεν ἀπὸ τὸ Χέλσινγκφορς, ἔνθα ἐχρημάτισε καθηγητὴς τοῦ Ὠδείου. Μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν του εἰς τὸ βραβεῖον Ρούμπινστάϊν, ὠνομάσθη καθηγητὴς ἐν τῷ ᾠδείῳ τῆς Μόσχας. Ἀπὸ τοῦ 1894 ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν Βερολίνῳ, ἔνθα ὠργάνωσε συναυλίας ἐξ ἔργων τῆς πρωτοπορίας ἢ ἐκ παλαιῶν λησμονηθεισῶν συνθέσεων. Ἡ ἐκ Γερμανίδος μητρὸς καταγωγὴ τοῦ Μπουζόνι καὶ ἡ ἐν γένει γερμανικὴ νοοτροπία του διαφαίνεται κυρίως ἐν τῷ δημιουργικῷ του ἔργῳ, ἐν ᾧ ἀναγνωρίζονται καί τινα ἰταλικὰ διακριτικά, ἐκδηλούμενα διὰ τῆς νευρώδους ρυθμικῆς του καὶ τῆς μεσημβρινῆς του φαιδρότητος. Ἡ τέχνη του, βαθέως ἀτομική, προκαλεῖ πάντοτε τὴν προσοχὴν καὶ παρὰ τὰ γενικῶς παράτολμα τεχνικά της μέσα παραμένει πάντοτε κατ' ἐξοχὴν ρωμαντική, μὲ ἰδιάζουσαν προτίμησιν πρὸς τὸ φανταστικὸν στοιχεῖον. Τὰ ἔργα τοῦ Μπουζόνι εἶναι τὰ ἑξῆς: 2 κουαρτέττα ἐγχόρδων, 2 σονάται διὰ βιολίον, 1 διὰ κλειδοκύμβαλον, 2 σουῖται δι' ὀρχήστραν, 1 κοντσέρτο καὶ 1 κοντσερστὺκ διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ ὀρχήστραν, τὸ συμφωνικὸν ποίημα «Pojohlas Tochter», 1 κοντσέρτο διὰ βιολίον, πλεῖστα τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, μουσικὴ σκηνῆς διὰ τὴν «Τουραντὸτ» τοῦ Σίλλερ, τὰ μελοδράματα: «Ἡ ἐκλογὴ τῆς μνηστῆς», «Ὁ Δόκτωρ Φάουστ» κτλ. Ἐπίσης δύο θεωρητικὰ συγγράμματα: «Νέα αἰσθητικὴ τῆς μουσικῆς τέχνης» (1906) καὶ «Ἡ ἑνότης τῆς μουσικῆς» (1923). Γ. Σ.

**μπουζούκι** (τὸ) (τουρκ. *βοζούκ*). Ἔγχορδον λαϊκὸν μουσικὸν ὄργανον τῆς οἰκογενείας τῶν λαούτων. Ἀποτελεῖται ἐξ ἠχείου προσομοιάζοντος τῷ τοῦ μανδολίνου, μετὰ λαβῆς ὅμως μακροτέρας κατὰ 60 περίπου ἑκατοστά. Φέρει τρία ζεύγη χορδῶν, ἑκάστου χορδιζομένου ἐν ταυτοφωνίᾳ· καὶ τὸ μὲν πρῶτον δίδει τὸν φθόγγον λα, τὸ δεύτερον τὸν ρὲ καὶ τὸ τρίτον τὸν βαρύτερον λα. Ἐπὶ τοῦ πρώτου ζεύγους, τοῦ ὀξυτέρου λα, ἐκτελεῖται ἡ μελῳδία, ἐπὶ δὲ τῶν δύο ἑπομένων ἡ στοιχειώδης συνοδεία. Τέλος ἡ κροῦσις ἐπιτυγχάνεται διὰ πλήκτρου ἐκ ταρταρούγας ἢ πτεροῦ. Γ. Σ.

**Μπουζοὺκ-Καλὲ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀπορρὼξ ἀκτὴ τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου, παρὰ τὴν Βόνα (ἀρχ. *Βοὼν ὅρμος*: πλάτ. 41° 07' Β., μῆκ. 37° 48' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2236: Cape Yasùn to Fort Anakria). Ἀπόληξις τοῦ ἀκρωτηρίου *Μπόζ-Τεπεσί*, διαχωρίζει τοὺς ὅρμους τῆς Ὀρδοῦ (ἀρχ. Κοτύωρα) καὶ Μελὲτ Περσιεμπῆ (ἀρχ. Μελάνθιος). Εἶναι ἡ τῶν ἀρχαίων *Γενηταία ἄκρα* ἢ *Βοῶνος ἄκρα*. Σ. Ε. Λ.

**Μπουζουλοὺκ** (Buzuluk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Σαμάρα τῆς κυρίως Ρωσίας, 172 χλμ. πρὸς Α. τῆς Σαμάρα, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βυρσοδεψεῖα, βιομηχανίας λίπους, χυτήρια χαλκοῦ καὶ διεξάγει ἐμπόριον κτηνῶν καὶ σιτηρῶν. Κάτοικοι 15.500. Χ. Δ.

**μπούζουνας** (ὁ)· ἰδιωμ. Κρήτ., ὁ ποδεὼν τοῦ ἀσκοῦ, ὁ κλειστὸς ἄνω ποὺς τοῦ ἀσκοῦ καὶ αὐτὸς ὁ λαιμὸς τοῦ δέρματος. Ι. Δ. Μ.

**Μποὺθ** (Booth), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος θρησκευτικὸς ἀρχηγός, ἱδρυτὴς καὶ «στρατηγὸς» τοῦ περιφήμου χριστιανικοῦ καὶ φιλανθρωπικοῦ σωματείου «Στρατὸς τῆς Σωτηρίας» (1829—1912). Ἐχρημάτισε μαθητευόμενος καὶ εἶτα ὑπάλληλος ἐνεχυροδανειστικοῦ γραφείου. Τῷ 1852 ἐγένετο ἱεροκήρυξ τῆς μεθοδιστικῆς Ἐκκλησίας, ἀλλὰ μετὰ ἐννέα ἔτη ἀπεχώρησε ταύτης καὶ ἐξηκολούθησε τὸ στάδιόν του ὡς ἀνεξάρτητος ὀπαδὸς τοῦ δόγματος τῆς ἀναγεννήσεως. Τῷ 1864 μετέβη εἰς Λονδῖνον καὶ ἐξηκολούθησε τὸ κήρυγμά του ὑπὸ σκηνὰς καὶ ἐν ὑπαίθρῳ, ἱδρύσας ἐν τῇ συνοικίᾳ Οὐάιτσάπελ τοῦ Λονδίνου τὴν «Χριστιανικὴν Ἀποστολήν», ἥτις τῷ 1878 ἐξειλίχθη εἰς τὸν «Στρατὸν τῆς Σωτηρίας». Εἰργάζετο διὰ τὴν διάσωσιν τῶν πτωχοτέρων τάξεων τῆς ἀγγλικῆς πρωτευούσης ἀπὸ τῆς ἠθικῆς καταστροφῆς. Ἡ ὀργάνωσις τοῦ στρατοῦ τούτου ἐγένετο κατὰ τὸ πρότυπον τοῦ βρεττανικοῦ στρατοῦ, ἡ πρώτη δὲ δρᾶσις αὐτοῦ παρήγαγε μεγίστην ἀντίδρασιν. Πολλαὶ συγκεντρώσεις τῶν ὀπαδῶν τοῦ Μποὺθ διελύθησαν ὑπὸ τῶν ὀργάνων τῆς ἐξουσίας διὰ τὸν φόβον διαταράξεως τῆς τάξεως καὶ μάλιστα τινὲς τῶν ὀπαδῶν αὐτοῦ κατεδιώχθησαν καὶ ἐφυλακίσθησαν. Ἡ δρᾶσις καὶ αἱ ἐργασίαι τοῦ «Στρατοῦ τῆς Σωτηρίας» ἐπεξετάθησαν τῷ 18-0 εἰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς, τῷ 1881 εἰς Αὐστραλίαν καὶ βραδύτερον εἰς τὴν ἠπειρωτικὴν Εὐρώπην, τὰς Ἰνδίας, Κεϋλάνην καὶ ἀλλαχοῦ.

Ὁ Μποὺθ ὡς βοηθὸν αὐτοῦ εἶχε τὴν σύζυγον του Αἰκατερίνην, τὸ γένος Μάμφορντ. Τῷ 1890 ἐδημοσίευσε τὸ μεγίστην ἐπὶ τῆς κοινῆς γνώμης σχὸν ἐπίδρασιν ἔργον του: «Ἡ ζοφερωτάτη Ἀγγλία καὶ ἡ ἐξ ἑαυτῆς ἔξοδος». Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ ὁ Μποὺθ προτείνει, πρὸς ἀνακούφισιν τῶν πτωχῶν, τὴν ἵδρυσιν: 1) ἀστικοῦ συνοικισμοῦ (city colony), 2) ἀγροτικοῦ συνοικισμοῦ (farm colony), 3) ὑπερποντίου συνοικισμοῦ (over-sea colony), 4) τάγματος πρὸς σωτηρίαν τῆς οἰκιακῆς οἰκονομίας, 5) ἀσύλων διὰ τὰς ἐλευθερίων ἠθῶν γυναῖκας, 6) ἀσύλων διὰ τοὺς οἰνόφλυγας, 7) ἀσύλων διὰ τοὺς πτωχοὺς κ. ἄ. Τὸ ἔργον του Μποὺθ ἤρχισεν ἐκτιμώμενον ἰδίᾳ μετὰ τὴν ἐνεργὸν ἐνθάρρυνσιν ἣν παρέσχεν εἰς αὐτὸ ὁ βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας Ἐδουάρδος ὁ Ζ'. Οἱ διάδοχοι καὶ ὀπαδοὶ τοῦ Μποὺθ ἐξακολουθοῦσι μετὰ τοῦ αὐτοῦ ἐνθουσιασμοῦ ἐργαζόμενοι διὰ τὴν ἐπέκτασιν τοῦ ἔργου τοῦ «Στρατοῦ τῆς Σωτηρίας». Γ. Ι. Β.

— **Μποὺθ** (Booth), ***Κάρολος***. Ἄγγλος ἐφοπλιστὴς καὶ κοινωνιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Λίβερπουλ (1830—1916). Διευθυντὴς τῆς Booth Steamship Co, ἀφιερώθη ἐκ παραλλήλου εἰς οἰκονομικὰς καὶ κοινωνικὰς μελέτας. Μέγα ἐνδιαφέρον ἐκίνησεν ἰδίως ἡ ἔρευνά του περὶ τῆς ὑλικῆς καταστάσεως τῶν ἐργαζομένων τάξεων τοῦ Λονδίνου ἐπὶ τῇ βάσει στατιστικῆς ἐξακριβώσεως τῶν ἀπολαυῶν των («Life and Labour of the People of London» 1893). Ὁ Μποὺθ ἐπεδίωξε τὴν μεταρρύθμισιν τῶν νόμων περὶ κοινωνικῆς προνοίας («Poor-Law Reform» 1916) καὶ ἀπῄτησε τὴν μερικὴν πραγματοποίησιν τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων ὡς πρὸς τὸν θεσμὸν τῶν ἐργατικῶν συντάξεων. Ἀπὸ τοῦ 1904 διετέλεσε μέλος τοῦ συμβουλίου τοῦ στέμματος. Α. Α. Τ.

— **Μποὺθ** ***Μπράμγουελλ*** (Foot Brahmwell). ***Γουλιέλμος***, Πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ *Γουλιέλμου Μπούθ*, γεννηθεὶς τῷ 1856. Ἀξιωματικὸς τοῦ «Στρατοῦ τῆς Σωτηρίας», διωργάνωσε τὰ πρῶτα τοῦ στρατοῦ τούτου ἔργα κοινωνικῆς ἀνακουφίσεως καὶ ἠγωνίσθη εἰς τὴν πρώτην γραμμὴν ἐν τῇ κατὰ τοῦ ἐμπορίου τῆς λευκῆς σαρκὸς δημοσιογραφικῇ καὶ πολιτικῇ ἐκστρατείᾳ. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του ἀνεκηρύχθη στρατηγὸς τοῦ «Στρατοῦ τῆς Σωτηρίας». Γ. Ι. Β.

— **Μποὺθ** ***Οὐΐλκες*** (Booth Wilkes), ***Ἰωάννης***. Ἀμερικανὸς ἠθοποιός, ὁ δολοφόνος τοῦ Ἀβραὰμ Λίνκολν (1839—1865). Ἦτο ἀδελφὸς τοῦ περιφήμου Ἀμερικανοῦ ἠθοποιοῦ Ἔδουϊν Μπούθ, κατ' ἀρχὰς ἐργασθεὶς καὶ οὗτος ὡς ἠθοποιὸς μέχρι τοῦ 1863, ὅτε ἐγκαταλείψας τὴν σκηνὴν ἀνεμίχθη εἰς τὸν ἐμφύλιον πόλεμον. Μετὰ τὴν κατὰ τὸν πόλεμον τοῦτον καθυπόταξιν τῶν Νοτίων, ὁ Μποὺθ μετέσχεν εἰς συνωμοσίαν κατὰ τοῦ προέδρου Ἀβραὰμ Λίνκολν, ἐκτελέσας αὐτὸς τὴν ἀποφασισθεῖσαν δολοφονίαν, τὴν 14ην Ἀπριλίου 1865, ἐντὸς τοῦ θεάτρου Φὸρδ τῆς Οὐασιγκτῶνος. Διαφυγὼν εἰς Βιργινίαν, ἐκρύβη εἰς σιτοβολῶνα ἀγροικίας τινὸς καὶ ἀρνηθεὶς νὰ παραδοθῇ ἐφονεύθη ὑπὸ τῶν περικυκλωσάντων τὸν σιτοβολῶνα στρατιωτῶν. Πολλοὶ τῶν λοιπῶν συνωμοτῶν συνελήφθησαν βραδύτερον καί τινες ἐξ αὐτῶν ἀπηγχονίσθησαν. Γ. Ι. Β.

**Μπούθια** (Boothia) *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐπὶ τοῦ Ἀρκτικοῦ ὠκεανοῦ. Ἔχει μῆκος 500 περίπου χλμ. καὶ πλάτος 100—160, χωρίζει δὲ τὴν χερσόνησον Μπούθια Φέλιξ πρὸς Δ. ἀπὸ τῆς χώρας Κόκιπουρν (Γῆ τοῦ Μπάφφιν) καὶ τῆς χερσονήσου Μέλβιλλ πρὸς Α. Ὁ κόλπος συγκοινωνεῖ πρὸς Β. μετὰ τοῦ διέκπλου τοῦ Ἀντιβασιλέως (Regent Inlet), ὅστις ἄγει εἰς τὸν πορθμὸν τοῦ Λάγκαστερ. Χ. Δ.

—**Μπούθια *Φέλιξ*** (Boothia Felix) *[Γεωγρ.]*. Χερσόνησος ἐν τῷ Βορείῳ Παγωμένῳ ὠκεανῷ, ἀποτελοῦσα τὸ βορειότατον ἄκρον τῆς ἀμερικανικῆς ἠπείρου (ἀκρωτήριον Μάρτσισον 71°54' Β. πλάτους). Κεῖται μεταξὺ τοῦ κόλπου Μπούθια πρὸς Α. καὶ τῶν στενῶν Φρανκλίνου καὶ ἀρχιπελάγους τοῦ Ρὸς πρὸς Δ., ἀνεκαλύφθη δὲ τῷ 1829 ὑπὸ τοῦ ἐξερευνητοῦ σὲρ Ἰωάννου Ρός, ὅστις ὠνόμασεν αὐτὴν ἐκ τοῦ πλουσίου Ἄγγλου βιομηχάνου Φήλικος Μπούθ, ὅστις ἐχορήγει κατὰ τὸ δεύτερον ταξίδιον τοῦ Ρὸς πρὸς τὸν Πόλον. Τῷ 1831 ὁ σὲρ Ἰάκωβος Κλὰρκ Ρός, ἀνεψιὸς τοῦ σὲρ Ἰωάννου, ἐτοποθέτησεν ἐπὶ τῆς χερσονήσου εἰς θέσιν 70°5' Β. πλάτους καὶ 96°47' Δ. μήκους Γκρήνουϊτς, τὸν βόρειον μαγνητικὸν πόλον τῆς γῆς. Χ. Δ.

**Μπουΐ** (Bouis), ***Ἰούλιος***. Γάλλος χημικὸς (1822—1886). Σπουδάσας φαρμακευτικὴν πρῶτον καὶ εἶτα φυσικὰς ἐπιστήμας, ἐχρημάτισεν ἐπὶ μακρὸν βοηθὸς τῶν καθηγητῶν τῆς χημείας Ντυμὰς καὶ Πελιγκό, ἐγένετο δὲ ἰδίως γνωστὸς ἀφ' ἧς, τῷ 1855, ὁπότε δὲν ἦσαν ἀκόμη γνωσταὶ γενικαὶ μέθοδοι διὰ τὴν παρασκευὴν τοῦ ἀλκοόλ, ἀνεκάλυψε τὴν καπρυλικὴν ἀλκοόλην, δι' ἀποστάξεως τοῦ ρητινελαίου παρουσίᾳ καυστικῆς ποτάσσης. Τῷ 1859 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ χημικοῦ ἐργαστηρίου τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Τότε ἤρχισε δημοσιεύων σειρὰν μελετῶν αὐτοῦ ἐπὶ τῶν μεταλλικῶν ὑδάτων, καθὼς καὶ ἄλλας πραγματείας ἀφορώσας ἐργασίας του ἐπὶ τῆς ὀργανικῆς χημείας, τῆς τοξικολογίας καὶ τῆς χημικῆς ἀναλύσεως. Κλασσικὴ ἀπέμεινεν ἡ μελέτη του περὶ δηλητηριάσεων ἐκ τῶν ἀερίων. Ἀπὸ τοῦ 1865 τῷ ἀνετέθησαν μαθήματα χημικῆς ἀναλύσεως εἰς τὴν École Centrale, ἀπὸ δὲ τοῦ 1868 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς τοξικολογίας ἐν τῇ φαρμακευτικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων καὶ κατὰ τὸ ἴδιον ἔτος ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. —Ω.

**Μπούϊα** (Buia, ἢ Buja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Οὔντινε τῆς Ἰουλιανῆς Βενετίας. Κάτ. 9.607, ἀσχολούμενοι εἰς τὴν καλλιέργειαν δημητριακῶν, τὴν ἀμπελουργίαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Ἔχει ἐνδιαφέροντα ναὸν μετὰ πινάκων τοῦ Γκράσσι. Μ. Δ. Β.

**Μπούϊε *ντ' Ἴστρια*** (Buie d'Istria) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Πόλας, ἐπὶ τῆς χερσονήσου τῆς Ἰστρίας. Κάτ. 5.624. Κεῖται ἐπὶ στρατηγικῆς θέσεως ἐν ὑψηλῷ λόφῳ, εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ ὁποίου ὑπάρχει ναός, οὗ τὸ κωδωνοστάσιον χρησιμεύει τὴν ἡμέραν ὡς σημεῖον προσανατολισμοῦ εἰς τὰ ἐκτελοῦντα τὴν ἀκτοπλοΐαν πλοῖα, καλούμενον ὑπὸ τῶν θαλασσινῶν «Spia dell'Istria». Ἔχει σηροτροφίαν καὶ ἐξάγει ὀπώρας καὶ οἶνον. Ἐπὶ τῆς ρωμαϊκῆς ἐποχῆς ἐκαλεῖτο Bullea. Μ. Δ. Β.

**Μπουϊὲ** (Bouhier), ***Ἰωάννης***. Γάλλος νομομαθὴς καὶ ἀνώτατος δικαστικὸς (1673—1746), ἐκ τῶν πλέον φημισμένων καὶ περισσότερον ἐκτιμωμένων προσωπικοτήτων τοῦ πρώτου ἡμίσεος τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἦτο δεκαεννεαετὴς μόλις ὅταν διωρίσθη μέλος τοῦ δικαστηρίου τοῦ Ντιζὸν (1692) καὶ τριακοντούτης ὅταν ἔφθασεν εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ προέδρου (1803). Ἡ Γαλλικὴ Ἀκαδημία, διὰ νὰ τὸν ἐκλέξῃ μεταξὺ τῶν ἑταίρων αὐτῆς, παρέβη τὸν



Digitized by Google

κανόνα καθ' ὃν τὰ τακτικά της μέλη δέον νὰ διαμένουν μονίμως ἐν Παρισίοις, παρεκτὸς τῶν ἐπισκόπων καὶ μόνον. Εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς γαλλικῆς φιλολογίας γίνεται συχνὰ λόγος περὶ τῆς «μικρᾶς ἀκαδημίας», τὴν ὁποίαν ὁ Μπουϊὲ εἶχεν ἱδρύσει ὅταν ἐκ λόγων ὑγείας ἠδυνάτει τοῦ λοιποῦ ν' ἀσκῇ τὰ καθήκοντα τοῦ πρώτου προέδρου τοῦ δικαστηρίου τῶν Παρισίων. Ἡ ἰδιωτικὴ αὐτὴ ἀκαδημία συνεδρίαζεν εἰς τὴν οἰκίαν του καὶ περιελάμβανε μεταξὺ ἄλλων μελῶν τούς: La Bastie, Bazin, Cocquard, Des Forêts, Léauté, Michaud, P. Hénnin καὶ P. Oudin. Περίφημος ἐξ ἄλλου ὑπῆρξε κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἡ βιβλιοθήκη τοῦ προέδρου Μπουϊέ. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' εἶχε διατάξει ν' ἀποστέλλεται εἰς αὐτὴν ἀνὰ ἓν ἀντίτυπον πάντων τῶν ἐκδιδομένων ἐν Γαλλίᾳ ἔργων, ἦτο δ' ἐλευθέρα εἰς χρῆσιν τῶν σοφῶν ὅλου τοῦ κόσμου. Τμῆμα τῆς βιβλιοθήκης ταύτης περιῆλθε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μπουϊὲ εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ Μομπελλιέ, μέγα δὲ μέρος τῆς φιλολογικῆς καὶ ἐπιστημονικῆς ἀλληλογραφίας αὐτοῦ ἀπόκειται εἰς τὴν Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην τῆς Γαλλίας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Ch. de Guerrois*, «Le président Bouhier, sa vie, ses oeuvres et sa bibliothèque» (Παρίσιοι, 1855).

—Ω.

**Μπουΐλαλή** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Δρυμιά* (βλ. λέξιν).

**Μπουΐοι** (ἡ). Φυλὴ ἀλβανική, κατελθοῦσα εἰς τὴν Ἑλλάδα κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα, συγγενὴς πρὸς τὰς κατὰ τὸν αὐτὸν αἰῶνα κατελθούσας εἰς τὴν Ἑλλάδα ἀλβανικὰς φυλὰς τῶν Μαζαρακαίων, Μαλακασίων καὶ Μεσαριτῶν. Ὁ Pouqueville (τ. Β', σ. 388) ταυτίζει τούτους πρὸς τοὺς ὑπὸ τοῦ Κανταχουζηνοῦ ἀναφερομένους νομάδας *Βουήους*, ὡς καὶ πρὸς τοὺς κατὰ τὴν ἐποχήν του ζῶντας ἐν Ζητουνίῳ (Λαμίᾳ), Νέαις Πάτραις (Ὑπάτῃ) ἢ Πατρατζίκ νομάδας ἢ *Βλάχους*, ὅπως οὗτος τοὺς ἀποκαλεῖ. Τινὲς φρονοῦν ὅτι τὸ φυλετικὸν ὄνομα τῶν Μπουΐων προῆλθεν ἐκ τῆς χώρας Μπουγιάνας παρὰ τὸ Μαυροβούνιον, ἐξ ἧς ἀφωρμήθησαν. Οἱ Μπουΐοι ἄφησαν ἴχνη τῆς καθόδου των εἰς τὴν Ἑλλάδα τὰς τοπωνυμίας *Μπούγα καὶ Μπουγιάτι*, αἱ ὁποῖαι ἀπαντοῦν εἰς πολλὰ χωρία τῆς Ἑλλάδος. Μᾶς εἶναι γνωστοὶ ἀρχηγοὶ τῆς φυλῆς ταύτης ὁ Μπούας Γκίνος Σπάτας καὶ ἄλλοι, οἵτινες πολλαχοῦ ἀναφαίνονται ἐν τῇ μετὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα ἱστορίᾳ τῆς Ἑλλάδος. Χ. Ι. ΣΟΥΛΗΣ

**Μπούιτενζοργκ** (Buitenzorg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν ἐν Ἰάβᾳ, κειμένη 56 χλμ. πρὸς Ν. τῆς πρωτευούσης Βαταβίας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς, ἀποτελοῦσα μεμακρυσμένον προάστειον καὶ κέντρον διαμονῆς τῶν πλουσίων εὐρωπαίων ἐμπόρων καὶ ἀνώτερων ὑπαλλήλων αὐτῆς. Εἶναι κτισμένη ἐπὶ ὑψηλῆς καὶ γραφικῆς θέσεως εἰς ὕψος 300 περίπου μέτρων ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης καὶ εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὸ ἐν αὐτῇ λαμπρὸν ἀνάκτορον τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ καὶ τὸν περίφημον ζῳολογικὸν κῆπον, ἕνα ἐκ τῶν πλουσιωτέρων τοῦ κόσμου. Κάτ. 26.000 Χ. Δ.

**μπούκα** (ἡ)· δημοτ., σῆραγξ, ὑπόνομος: «ἄνοιξανε μπούκα 'στὸ πηγάδι», «δουλεύει 'ς τὶς μπούκες τοῦ Λαυρείου» || ἡ ὀπὴ τοῦ πυροβόλου ὅπλου, τὸ πρὸς τὴν ἔξοδον τοῦ βλήματος ἄνοιγμα: «στάθηκε 'ς τὴν μπούκα τοῦ τουφεκιοῦ, — τοῦ κανονιοῦ» (ἰταλ. buca).

**Μπούκα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμφιλοχίας (Καρβασαρᾶ) τῆς ἐπαρχίας Βάλτου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 322. Χ. Δ.

**—Μπούκα μυστικιὰ** *[Γεωγρ.]*: Αὔλαξ διὰ τῆς ὁποίας συγκοινωνεῖ ἡ ἀνοικτὴ θάλασσα παρὰ τὰς Σκρόφας μὲ τὴν λιμνοθάλασσαν ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ ἰχθυοτροφείου Παλιοπόταμος τοῦ Μεσολογγίου. Ἡ αὔλαξ αὐτὴ κατεσκευάσθη ὑπὸ τῶν ἰχθυοτρόφων τῷ 1840. Χ. Γ. Ε.

**Μπούκα** (Buka) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῆς Μελανησίας, ἀνήκουσα εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν νήσων Σολομῶντος. Κεῖται ἐγγὺς καὶ πρὸς Β. τῆς κυριωτέρας νήσου τοῦ συμπλέγματος Μπουγκαινβίλ, εἰς 5° 16' Β. πλάτους καὶ 154° 39' Ἀν. μήκους Γκρήνουΐτς καὶ ἔχει κυρίως παραγωγὴν κοκκοφοινικελαίου. Καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Γερμανῶν τῷ 1899, παρέμεινεν ὑπ' αὐτοὺς μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, ὑπαγομένη διοικητικῶς εἰς τὴν Γῆν τοῦ αὐτοκράτορος Γουλιέλμου. Ἀπὸ τοῦ 1919 διατελεῖ ὑπὸ τὴν ἐντολὴν τῆς Αὐστραλίας. Κάτ. 15.000. Χ. Δ.

**μπουκάλι** (τό)· δημοτ., ὑάλινον δοχεῖον πρὸς ὑποδοχὴν ποτῶν, φιάλη, ἄλλως *μποτίλια*: «ἕνα μπουκάλι κρασί,—ρακί,—λάδι κττ.», «μπουκάλι πενταχοσάρικο,—χιλιάρικο» τὸ περιλαμβάνον πεντακόσια,—χίλια δράμια ὡς ἔγγιστα (ἰταλ. boccale).

**μπουκαλιάρισμα** (τό)· βλ. λ. *ἐμφιάλωσις*.

**Μπουκάνιερ ἀρχιπέλαγος** (Buccaneer) *[Γεωγρ.]*. Μικρὸν νησιωτικὸν σύμπλεγμα, κείμενον ἐγγύτατα καὶ σχεδὸν ἐν συνεχείᾳ τῆς ΒΑ. παραλίας τῆς Αὐστραλίας, μεταξὺ τῶν κόλπων Κόλλιερ καὶ Κίνγκ. Ὑπάγεται διοικητικῶς εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Κίμπερλεϋ τῆς πολιτείας Δυτικῆς Αὐστραλίας. Χ. Δ.

**Μπουκάνιερς**, ἡ *Βουκανιέροι* (γαλλ. Boucaniers, ἀγγλ. Buccaneers). Ὄνομα δοθὲν εἰς ὁμάδα Εὐρωπαίων τυχοδιωκτῶν, κατὰ τὸ πλεῖστον Γάλλων καὶ Ἄγγλων, οἵτινες ἐγκατασταθέντες εἰς τὰς νήσους τῶν Ἀντιλλῶν, ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἠσχολοῦντο κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν θήραν τοῦ ἀγρίου βουβάλου, τοῦ ὁποίου τὸ μὲν κρέας ἔτρωγον, τὰ δὲ δέρματα ἐπώλουν. Τὸ ὄνομα ἔλαβον ἐξ ἰδιοτύπου τινὸς ἐσχάρας, καλουμένης ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν *μπουκάνς*, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἔψηνον (ἐβουκάνιζαν) τὸ κρέας. Κυριώτερον κέντρον αὐτῶν ἀπετέλεσεν ἡ μικρὰ νῆσος Χελώνη (Tortoga), ἥτις ἀφ' ἑνὸς μὲν ἔκειτο πλησίον (εἰς ἀπόστασιν 8 χλμ.) τῆς Αἰτης, ὅπου διεξῆγον κυρίως τὸ κυνήγιον αὐτῶν, ἀφ' ἑτέρου δέ, λόγῳ τῆς ὀχυρότητός της, παρουσίαζε μεγάλην ἀσφάλειαν. Οἱ Ἱσπανοὶ ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς εἶδον δυσαρέστως τὴν ἐγκατάστασιν ἐγγὺς τῶν ἀποικιῶν των τῶν νέων τούτων γειτόνων, ἐκστρατεύσαντες δὲ εἰς Χελώνην καθ' ὃν χρόνον οἱ ἄνδρες ἀπουσίαζον εἰς τὸ κυνήγιον, κατέσφαξαν τὰ γυναικόπαιδα καὶ ἐδήωσαν τοὺς συνοικισμούς. Ἔκτοτε χρονολογεῖται ἡ ἄσπονδος ἐχθρότης τῶν Βουκανιέρων πρὸς τοὺς Ἱσπανοὺς καὶ ἡ μεταβολὴ αὐτῶν ἀπὸ εἰρηνικῶν μᾶλλον τυχοδιωκτῶν εἰς ἐπικινδύνους πειρατάς, τρομοκρατήσαντας τὴν ἱσπανικὴν ναυτιλίαν ἐπὶ ἕνα περίπου αἰῶνα (τὸν ΙΖ'), ὄχι μόνον ἐντὸς τῆς θαλάσσης τῶν Ἀντιλλῶν, ἀλλὰ καὶ εἰς αὐτὸν τὸν Ἀτλαντικὸν καὶ δηώσαντας ἐπανειλημμένως πολλὰς ἀνθούσας ἐν Ἀμερικῇ ἱσπανικὰς ἀποικίας. Καὶ οἱ μὲν Γάλλοι Μπουκανιέροι, διαπεραιωθέντες εἰς τὴν Αἰτην, ἐγκατεστάθησαν ἐπὶ μεγάλου μέρους τῶν ἀκτῶν τοῦ Ἁγίου Δομίγγου, οἱ δὲ Ἄγγλοι κατέστησαν κέντρον αὐτῶν τὴν Ἰαμαϊκήν.

Βαθμηδὸν οἱ Μπουκανιέροι, αὐξηθέντες καὶ ἀναμειχθέντες μετὰ τῶν λοιπῶν πειρατῶν τῆς Ἀμερικῆς, ἔχασαν τὸν ἰδιαίτερον των χαρακτῆρα, συγχωνευθέντες πλήρως μετ' αὐτῶν, κατὰ δὲ τὸν ΙΗ' αἰῶνα τὸ ὄνομά των κατέστη ταυτόσημον πρὸς τὸ τοῦ πειρατοῦ. Χ. Δ.

**μπουκαπόρτα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τῆς *θυρίδος* καὶ τῆς *κανονιοθυρίδος* (βλ. λ.).

**Μπουκαραμάνγκα** (Bucaramanga) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς νοτιοαμερικανικῆς δημοκρατίας τῆς Κολομβίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Σαντάντερ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λέμπριχα, εἰς ὕψος 1090 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης, ἐπὶ τῆς ἀπὸ Μπογκοτὰ εἰς Μαρακαΐμπο μεγάλης ὁδοῦ. Καλῶς ρυμοτομημένη, μὲ εὐρείας ὁδοὺς καὶ ὡραῖα κτήρια, ἀποτελεῖ σπουδαιοτάτην ἀγορὰν καφὲ καὶ ἐμπορικὸν ἐν γένει κέντρον τοῦ πλουσίου εἰς χρυσόν, ἄργυρον, χαλκὸν καὶ σίδηρον νομοῦ. Κάτ. (1928) 24.919. Χ. Δ.

**μπουκάρω**. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης. Λέγεται: 1) ἐπὶ ἱστίων, τὸ δέχεσθαι τὸν ἄνεμον: «μπουκάρουν τὰ πανιά». 2) Ἐπὶ πλοίου, εἰσπλέω ἀμφίγειον πρὸς διάπλουν αὐτοῦ: «αὔριο τὸ πρωὶ θὰ μπουκάρωμε στὸ Μπονιφάτσιο».

**Μπουκὲ** (Bouquet), *δὸν Μαρτῖνος*. Γάλλος βενεδικτῖνος μοναχὸς (1685—1754), διακριθεὶς ὡς ἱστοριογράφος. Ἐχρημάτισε βοηθὸς τοῦ Μονφωκὸν εἰς ὅλας αὐτοῦ τὰς ἱστορικὰς ἐρεύνας, ὑπεδείχθη δὲ βραδύτερον ὡς ὁ κατάλληλος ν' ἀναλάβῃ τὴν ἔκδοσιν νέας συλλογῆς τῶν ὑπαρχόντων στοιχείων ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῶν ἀρχαίων Γαλατῶν καὶ τῆς Γαλλίας. Ἐπιληφθεὶς τοῦ δυσχεροῦς τούτου ἔργου ἤρχισε δημοσιεύων τὴν συλλογὴν «Rerum gallicarum et franciarum scriptores», τῆς ὁποίας ἐξέδωκεν ὀκτὼ τόμους. Ὁ θάνατος τὸν κατέλαβε πρὸ τῆς ἀποπερατώσεως τοῦ ἐνάτου, περιλαμβάνοντος τὰ ἱστορικὰ στοιχεῖα τῆς καρολιγγείου ἐποχῆς. Τὸ πολύτιμον τοῦτο ἔργον, ἀποτελοῦν τὴν βάσιν τῆς ἐθνικῆς ἱστορίας τῆς Γαλλίας, ἐσυνεχίσθη ὑπὸ ἄλλων ἱστορικῶν, προερχομένων ἐπίσης ἐκ τοῦ τάγματος τῶν Βενεδικτίνων, ἀνετέθη δ' ἐν τέλει ἡ ἀποπεράτωσίς του εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων.

**Μποῦκες, Τρεῖς —** *[Γεωγρ.]*. Μέγας λιμὴν σχηματιζόμενος εἰς τὴν Ν. παραλίαν τῆς νήσου Σκύρου. Ὀνομάζεται οὕτω ἐκ τῶν τριῶν στομίων αὐτοῦ, τὰ ὁποῖα σχηματίζονται διὰ τῆς παρὰ τὴν εἴσοδον τοῦ παρεμβολῆς τῶν δύο νησίδων *Πλατὺ* καὶ *Πιᾶτο* (βλ. λ. *Αἰγαῖον* τ. Β', σ. 420 α'). Χ. Δ.

**μπουκέτο** (τό)· δημοτ., ἀνθοδέσμη: «ἕνα μπουκέτο τριαντάφυλλα,—γαρύφαλα κττ.» (γαλλ. bouquet).

**Μπούκια** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Παρανέστιον* (βλ. λ.).

**μπουκιά** (ἡ)· δημοτ., τεμάχιον ἄρτου ἢ ἄλλης τροφῆς, ὅσον δύναταί τις νὰ μασήσῃ ἐφ' ἅπαξ, βλωμός, ἄλλως *χαψιά*: «δῶσ' μου μιὰ μπουκιὰ νὰ τὸ δοκιμάσω», «σήμερο ὅλη μέρα δὲν ἔφαγα μπουκιὰ ψωμί».

**Μπούκκερι** (Buccheri) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τῶν Συρακουσῶν τῆς Σικελίας. Κάτ. 5.150. Ἔχει μεταλλικὰς πηγὰς καὶ κοιτάσματα γαιανθράκων, παράγει δὲ σιτηρὰ καὶ ἐλαίας. Μ. Δ. Β.

**μπούκκερο** (bucchero). Συμβατικὸς ὅρος πρὸς δήλωσιν τῶν ἐκ μέλανος πηλοῦ ἀρχαίων ἀγγείων τῆς Ἐτρουρίας, τὰ ὁποῖα ἐν πλησμονῇ εὑρέθησαν ἰδίως ἐν τάφοις τοῦ Chiusi, καὶ τὰ ὁποῖα οἱ πρῶτοι Ἰταλοὶ ἀνασκαφεῖς ὠνόμασαν bucchero nero, ἤτοι μαῦρος κύαθος ἢ δοχεῖον. Τῷ ὄντι, τὸ χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τοῦ εἴδους τούτου τῶν ἀρχαίων ἀγγείων εἶναι τὸ τελείως μελανὸν χρῶμα τοῦ πηλοῦ. Τὸ χρῶμα ὅμως τοῦτο δὲν εἶναι φυσικόν, ἀλλὰ προέρχεται ἐκ τῆς ἀναμείξεως τοῦ πηλοῦ μετὰ κόνεως ἄνθρακος. Κατά τινας ἀρχαιολόγους, ἡ ἀνάμειξις αὕτη ἐπετυγχάνετο διὰ παρατεταμένου καπνίσματος, τὸ ὁποῖον παρεισῆγεν εἰς τοὺς πόρους τοῦ νωποῦ πηλοῦ τὰ μόρια τοῦ ἄνθρακος. Τὸ κάπνισμα τοῦτο ἐγίνετο ἢ ἐν ὑπαίθρῳ, ὁπότε ἡ μελανοποίησις τοῦ πηλοῦ ἀπέβαινε πλημμελής, ἢ ἐν κεκλεισμένῳ χώρῳ καὶ δι' ἐπιστημονικῶν μεθόδων, ὁπότε ὁ μέλας χρωματισμὸς καθίστατο ἐντελής. Κατ' ἄλλους ἀρχαιολόγους ἡ μελανοποίησις τοῦ πηλοῦ ἐπετυγχάνετο ἐντελέστερον καὶ δι' ἐπαλείψεως λεπτοῦ στρώματος κόνεως ἄνθρακος ἔξωθεν καὶ ἔσωθεν τοῦ νωποῦ ἀγγείου. Μετὰ τὴν ὄπτησιν τοῦ ἐκ τοιούτου πηλοῦ κατασκευασθέντος ἀγγείου, ἐγίνετο ἐπάλειψις αὐτοῦ καὶ δι' ἐλαφροῦ στρώματος κηροῦ ἢ ρητίνης, διὰ νὰ ἀποκτήσῃ τὸ στιλπνὸν χρῶμα τῶν μεταλλικῶν ἀγγείων. Τὰ πρῶτα δείγματα τοῦ εἴδους τούτου χρονολογοῦνται ἀπὸ τοῦ Ζ' π.Χ. αἰῶνος, τὰ δὲ τελευταῖα διατηροῦνται μέχρι καὶ τοῦ Ε', διακρίνονται δὲ ἀπ' ἀλλήλων τόσον ἐκ τῆς ἀτελεστέρας ἢ βαθυτέρας μελανοποιήσεως τοῦ πηλοῦ, ὅσον καὶ ἐκ τῆς ἐγχαράκτου ἢ ἐκτύπου αὐτῶν ἐξωτερικῆς διακοσμήσεως. Τὰ ἀγγεῖα τῆς πρώτης κατηγορίας εἶναι, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, μικρῶν διαστάσεων (ποτήρια, κάνθαροι, ὄλπαι, οἰνοχόαι) καὶ κοσμοῦνται δι' ἐγχαράκτων ὁριζοντίων ἢ καθέτων ραβδώσεων ἢ γραμμικῶν τριγώνων. Τὰ ἀγγεῖα τῆς δευτέρας κατηγορίας, ἀρχόμενα ἀπὸ τῶν μέσων σχεδὸν τοῦ ΣΤ' π. Χ. αἰῶνος, εἶναι στιλπνῶς μελανὰ καὶ γενικῶς μεγάλων διαστάσεων, κοσμοῦνται δὲ δι' ἐκτύπων κοσμημάτων καὶ ἐπιθημάτων, τῶν ὁποίων ὁ κόσμος ὑπενθυμίζει τὰ ἐπιθήματα τῶν μεταλλικῶν ἀγγείων. Τὰ ἔκτυπα κοσμήματα ἔχουσιν ὡς θέματα λέοντας, ἐλάφους, χιμαίρας, κενταύρους, πτερωτοὺς ἵππους, γρύπας, σφίγγας καὶ καθημένας θεότητας, πρὸς τὰς ὁποίας προσέρχεται πομπὴ ἱκετῶν. Τὰ κοσμητικὰ ἐπιθήματα εἶναι, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον, κεφαλαὶ χιμαιρῶν, μορφαὶ λεόντων κ. τ. λ.

Ἀγγεῖον μπούκκερο μὲ ἐγχάρακτον διακόσμησιν.

Ἀγγεῖον μπούκκερο μὲ ἔκτυπα ἐπιθήματα.

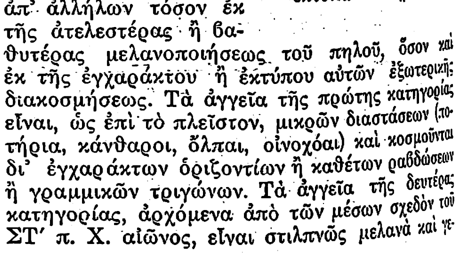

Ἀγγεῖον μπούκκερο μετ' ἐκτύπων ἀναγλύφων.

Digitized by Google

Τὰ ἀγγεῖα μπούκκερο διατηροῦνται μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ Δ' π. Χ. αἰῶνος, ὁπότε ἐπέρχεται ἡ τελεία αὐτῶν ἐξαφάνισις καὶ ἡ ἀντικατάστασις δι' ἑλληνικῶν ἀγγείων. Ἀλλὰ καὶ τῶν ἀγγείων τοῦ μπούκκερο ἡ ἐπινόησις δὲν εἶναι ἐτρουστική, ἀλλ' ἑλληνική. Διότι τοιαῦτα ἀγγεῖα εὑρέθησαν καὶ ἐν ἑλληνικαῖς χώραις, ὡς ἐν Ἀθήναις, Βοιωτίᾳ, Κύπρῳ, Ῥόδῳ, Λέσβῳ, Σάμῳ, Περγάμῳ καὶ ἀλλαχοῦ τοῦ ἑλληνικοῦ κόσμου, χρονολογούμενα ἐνωρίτερον τῶν πρώτων ἐτρουσκικῶν. Κατὰ τὰ τελευταῖα πορίσματα τῆς ἐπιστήμης, ἡ τεχνοτροπία τῶν μπούκκερο, οὖσα ἑλληνικῆς ἐπινοήσεως, εἰσήχθη εἰς Ἐτρουρίαν, ὅπου ἐτελειοποιήθη καὶ σὺν τῷ χρόνῳ ἀπεμιμήθη τὰ μεταλλικὰ ἀγγεῖα διὰ τοῦ μέλανος στιλπνοῦ χρώματος καὶ τῶν ἐπιθηματικῶν ἢ ἐκτύπων κοσμημάτων. Ἡ ἐπίδρασις τῶν μεταλλικῶν ἀγγείων εἶναι ἔκδηλος καὶ ἀποτελεῖ τὸ χαρακτηριστικώτερον γνώρισμα τῆς ἐτρουσκικῆς ἀγγειοπλαστικῆς τοῦ εἴδους τούτου, φαίνεται δὲ ὅτι τὰ τῆς τοιαύτης τεχνοτροπίας ἀγγεῖα μπούκκερο κατεσκευάζοντο διὰ τὰς πτωχὰς τάξεις τῆς Ἐτρουρίας εἰς ἀντικατάστασιν τῶν χαλκίνων ἀγγείων τῶν πλουσίων. Β. Δ. Θ.

**μπουκκιά** (ἡ)· βλ. *μπουκιά*.

**Μπούκκιγχαμ** (Buckingham)· βλ. λ. *Μπάκιγχαμ*.

**μπούκλα** (ἡ)· δημοτ., μέρος τῆς κόμης συνεστραμμένον ἑλικοειδῶς, βόστρυχος: «*ἔχω τὰ μαλλιά μου μποῦκλες*».

**Μπουκλάκος, *Γεώργιος***. Ἕλλην διοικητικὸς ὑπάλληλος, γεννηθεὶς τῷ 1830 ἐν Μάνῃ καὶ διατελέσας νομάρχης ἐπὶ τριακονταετίαν. Τῷ 1897, ὡς νομάρχης Λαρίσης, προήσπισεν ἀποτελεσματικῶς τὸν ἐγχώριον πληθυσμὸν κατὰ τὴν ὑποχώρησιν, διωρίσθη δὲ εἶτα ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως Ζαΐμη ἐπίτροπος τῆς Ἑλλάδος ἐν Θεσσαλίᾳ, διαπραγματευθεὶς μετὰ τοῦ Ἐτὲμ τὴν ἐκκένωσιν τῆς Θεσσαλίας καὶ τὴν παλινόστησιν τοῦ πληθυσμοῦ της.

**Μπούκοβιχ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου Ὀξυὰ (βλ. λ.).

**Μπουκοβίνα** (Bukovina) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς βορείου Ρουμανίας, ἐκτάσεως 10.442 τετρ. χλμ. Κάτ. 811.700, ἐξ ὧν 38 % Ρουθῆνοι, 34 % Ρουμᾶνοι καὶ 20 % Γερμανοί. Θρησκευτικῶς τὰ δύο τρίτα καὶ πλέον τοῦ πληθυσμοῦ ἀνήκουν εἰς τὸ ὀρθόδοξον δόγμα, οἱ δὲ ὑπόλοιποι εἶναι καθολικοί, ἐκτὸς ὀλίγων Ἑβραίων. Περίπου 65 % τῶν κατοίκων εἶναι ἀναλφάβητοι. Ἡ χώρα παράγει δημητριακά, γεώμηλα, καπνὸν καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα, ἔχει ὀρυχεῖα θείου καὶ μαγγανίου καὶ ἐργοστάσια ξυλείας, οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν καὶ ὀρυκτῶν ἐλαίων. Ἡ Μπουκοβίνα διαιρεῖται εἰς 5 ἐπαρχίας, μὲ πρωτεύουσαν τὸ *Τσέρνοβιτς*.

— *[Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ρωμαϊκὴν ἐποχὴν ἡ *Μπουκοβίνα* ἀπετέλει μέρος τῆς Δακίας. Κατεκτήθη τὸ πρῶτον ὑπὸ Ρουθήνων, κατόπιν δὲ ὑπὸ Ρουμάνων, κατὰ τὸν ΙΒ' καὶ ΙΓ' αἰῶνα. Τῷ 1769 ἐκυριεύθη ὑπὸ τῶν Ρώσων, τῷ 1774 ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, εἰς τοὺς ὁποίους καὶ παρεχωρήθη διὰ τῆς συμφωνίας τῆς 7 Μαΐου 1775, τῷ δὲ 1786 ἡνώθη μετὰ τῆς Γαλικίας. Ἀπὸ τοῦ 1849—1918 ἀπετέλεσε τμῆμα τῆς Αὐστριακῆς μοναρχίας. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ἐπανειλημμένως ὑπὸ τῶν Ρώσων, διὰ δὲ τῆς συνθήκης τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ (1919) περιῆλθεν εἰς τὴν Ρουμανίαν, τῆς ὁποίας τὰ στρατεύματα τὴν κατεῖχον ἀπὸ τοῦ πέρατος τοῦ πολέμου. Γ. Θ. Κ.

— **Μπουκοβίνα** *[Γεωγρ.]*.—1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας συνοικισμοῦ *Πελέκι* (βλ. λ.). —2) Χωρίον τῆς κοινότητος Μαζαρακίου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 266. Χ. Δ.

**Μπουκοβίτσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρδίτσης τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 303. Χ. Δ.

**Μπούκοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου Ὀξυὰ (βλ. λ.).

**Μπόϋκοτ** (Boycott), ***Κάρολος - Κούννινγκαμ***. Ἄγγλος στρατιωτικὸς (1832—1897). Ἐγένετο παγκοσμίως γνωστὸς ἐκ τῆς λέξεως *μποϋκοτάζ*, ἥτις προῆλθεν ἐκ τοῦ ὀνόματός του. Ἦτο ἐπιμελητὴς τῶν κτημάτων τοῦ κόμητος Ἔρν ἐν τῇ κομητείᾳ Μάϋο τῆς Ἰρλανδίας, ἕνεκα δὲ τῆς παροιμιώδους σκληρότητός του πρὸς τοὺς καλλιεργητὰς εἶχε καταστῇ μισητὸς παρὰ πάντων. Διὰ τοῦτο τῷ 1880 συνεφώνησαν πάντες ὅπως διακόψουν πᾶσαν σχέσιν μετ' αὐτοῦ, ἀρνούμενοι νὰ ἐργασθοῦν εἰς τὰ κτήματά του καὶ ἀποφεύγοντες πᾶσαν ἀγοραπωλησίαν, μὲ τὴν ἀπειλὴν ὅτι οἱοσδήποτε παρέβαινε τὴν συμφωνίαν θὰ ὑφίστατο τὸν αὐτὸν ἀποκλεισμόν. Ἡ κυβέρνησις ἠναγκάσθη νὰ ἀποστείλῃ πολυάριθμον φρουρὰν ἐξ 900 ἀνδρῶν πρὸς προστασίαν του καὶ πρὸς προστασίαν τῶν ἐργατῶν τοὺς ὁποίους εἶχε μεταχαλέσει ἐκ τοῦ Ὤλστερ πρὸς θερισμὸν τῶν κτημάτων του. Παρὰ τὴν προστασίαν ὅμως ταύτην ὁ Μπόϋκοτ, μὴ δυνάμενος νὰ ζήσῃ πλέον εἰς τὴν περιφέρειαν ἐκείνην, ἥτις τοῦ εἶχε κηρύξει γενικὸν ἀποκλεισμόν, ἠναγκάσθη νὰ ἀναχωρήσῃ εἰς τὴν Ἀμερικήν. Ἔκτοτε ἡ ἐκ τοῦ ὀνόματός του προελθοῦσα λέξις *μποϋκοτάζ* (βλ. λ.) περιῆλθεν εἰς τὸ διεθνὲς λεξιλόγιον. Μ. Δ. Β.

**μποϋκοτάζ** (τό), ἡ *μποϋκοτάρισμα* (ἀγγλ. boycotting, γαλλ. boycottage). Νεολογισμός, χρησιμοποιούμενος διεθνῶς πρὸς ὑποδήλωσιν εἴδους ἀποκλεισμοῦ συνισταμένου εἰς τὴν συμφωνίαν πολλῶν ἀτόμων ὅπως ἀρνηθοῦν νὰ ἔλθουν εἰς ὡρισμένας σχέσεις ἢ καὶ εἰς οἱανδήποτε σχέσιν μεθ' ἑνὸς ἢ περισσοτέρων τρίτων, πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦ ἐξαναγκασμοῦ αὐτῶν εἰς ἐκτέλεσιν πράξεώς τινος ἢ εἰς μεταβολὴν στάσεως καὶ εἰς παραίτησιν ἀπό τινος δικαιώματος ἢ ἐνεργείας.

Ἡ λέξις προῆλθεν ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τοῦ Ἄγγλου λοχαγοῦ Καρόλου *Μπόϋκοτ* (βλ. λ.), ἐχρησιμοποιήθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν ἐν Ἰρλανδίᾳ τῷ 1880 εἴς τινα ἐφημερίδα τοῦ Δουβλίνου καὶ διεδόθη κατόπιν εἰς ὅλην τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν Εὐρώπην. Τὸ κατὰ πρῶτον ὅμως ἐν Ἰρλανδίᾳ ἐφαρμοσθὲν σύστημα δὲν ἦτο τι νέον. Τοῦτο εἶχεν ἤδη χρησιμοποιηθῆ καὶ εἰς παλαιοτέρους χρόνους εἴτε ὡς ἐπίφοβος καὶ ἀποτελεσματικὴ ποινὴ καθιερωμένη ὑπὸ τῶν ἀρχῶν, εἴτε ὡς ἀντίποινον ἐναντίον ἀντιπάλων, οἱ ὁποῖοι δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ καταβληθοῦν ἄλλως, εἴτε καὶ ὡς ἄμυνα κοινότητός τινος ἢ σωματείου ἐναντίον πράξεων, αἵτινες δὲν ἦτο μὲν δυνατὸν νὰ καθορισθοῦν μεταξὺ τῶν ἀδικημάτων τοῦ ποινικοῦ ἢ ἀστικοῦ νόμου, ἀλλ' ἕνεκα τῆς ἐπαναλήψεώς των ἢ τῆς φύσεώς των ἀπετέλουν αἰτίαν ἢ κίνδυνον ζημίας. Τοιοῦτον παράδειγμα, ἐκ τῶν προσφάτων, εἶναι τὸ λεγόμενον abatellement, ἤτοι τὸ μποϋκοτάζ τὸ ὁποῖον διέτασσον ἐν Ἀνατολῇ οἱ Γάλλοι πρόξενοι, κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα, ἐναντίον τῶν ἐμπόρων οἵτινες δὲν ἐφαίνοντο συνεπεῖς εἰς τὰς ὑποχρεώσεις των. Τὸ μποϋκοτὰζ τοῦτο εἶχεν ὡς συνέπειαν τὴν διακοπὴν πάσης ἐμπορικῆς σχέσεως μὲ τοὺς μποϋκοταριζομένους, οἱ ὁποῖοι δὲν εἶχον τὸ δικαίωμα νὰ ἀναφερθοῦν εἰς τὰ δικαστήρια.

Τὸ μποϋκοτὰζ χρησιμοποιεῖται ἀπὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ὡς ὅπλον εἰς τοὺς ἀγῶνας τῶν τάξεων, εἰς τοὺς καθαρῶς πολιτικοὺς ἀγῶνας, καθὼς καὶ εἰς τοὺς ἐμπορικοὺς τοιούτους. Ἡ σοβαρότης, τὴν ὁποίαν προσέλαβον πολλάκις οἱ ἀγῶνες οὗτοι, καὶ ἡ ἀκαμψία τῶν διευθυνόντων αὐτοὺς εἰς τὰ ἀντίπαλα στρατόπεδα ὡδήγησαν εἰς τοιαύτην τελειοποίησιν τῶν μέσων καὶ τοῦ τρόπου τῆς χρησιμοποιήσεως τοῦ ὅπλου τούτου, ὥστε κατέστησαν αὐτὸ ἓν τῶν τρομερωτέρων καὶ ἀποτελεσματικωτέρων τῆς ἐποχῆς. Ἡ μεγαλυτέρα αὐτοῦ ἀνάπτυξις καὶ αἱ πλέον σοβαραὶ ἐφαρμογαί του ἔλαβον χώραν κυρίως εἰς τὰ κράτη, ὅπου ἡ βιομηχανία εἶναι λίαν προωδευμένη καὶ διαδεδομένη καὶ αἱ ἐργατικαὶ μᾶζαι καὶ οἱ ἐργοδόται καλύτερον ὠργανωμένοι, ὡς εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Β. Ἀμερικῆς, τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν Γερμανίαν. Τὸ μποϋκοτάζ, ὅπως ἡ ἀπεργία καὶ ἡ ἀνταπεργία, δὲν πλήττει μόνον τὸν καθ' οὗ στρέφεται, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐφαρμόζοντας αὐτὸ καὶ διαφόρους τρίτους, ξένους πρὸς τὸν ἀγῶνα, λόγῳ τῶν συνεπειῶν του, αἵτινες εἶναι ἀνάλογοι πρὸς τὸ μέγεθος τοῦ ἀριθμοῦ τῶν συμμετεχόντων καὶ ἀπὸ τὰ δύο μέρη. Αἱ αἰτήσεις πρὸς ἀποζημίωσιν, τὰς ὁποίας ὑπέβαλον οἱ μποϋκοταρισθέντες κατὰ τῶν προκηρυξάντων τὸ μποϋκοτὰζ δὲν ἔσχον τὴν αὐτὴν τύχην εἰς τὰ διάφορα κράτη, ὅπου παρετηρήθησαν σημαντικαὶ διαφοραὶ γνωμῶν μεταξὺ τῶν νομομαθῶν (βλ. καὶ λ. *ἐμπορικὸς ἀποκλεισμὸς [Διεθν. Δίκ.]*). Μ. Δ. Β.

**μποϋκοτάρω**· δημοτ., κάμνω μποϋκοτὰζ κατά τινος, ἀποκλείω τινὰ ἐμπορικῆς ἐπικοινωνίας.

**Μπουκουβάλας**. Ἐπώνυμον οἰκογενείας Ἀγωνιστῶν ἐκ Βάλτου τῆς Ἀκαρνανίας, οἵτινες ἀναφέρονται ἤδη ἀπὸ τοῦ 1728. Τούτων ἐπιφανέστερος ὑπῆρξεν ὁ *Ἰωάννης*, γεννηθεὶς ἐν τῷ χωρίῳ Σακαρέτσι. Διακριθεὶς ὡς κλέφτης, προσελήφθη ὡς πρωτοπαλλήκαρον τοῦ γαμβροῦ του Ἰ. Σταθᾶ καὶ εἶτα ἔλαβε τὸ ἀρματολίκι τῶν Ἀγράφων. Τῷ 1767 μετὰ 300 ἀνδρῶν ἐν Κερασόβῳ κατενίκησεν ἀλβανικὸν σῶμα, βραδύτερον δέ, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ὀρλώφ, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος, διαπρέψας. Γέρων ἤδη ἀπελθὼν πρὸς προσκύνησιν εἰς Ἱεροσόλυμα, ἀπέθανεν αὐτόθι τῷ 1811. Ὁ υἱός του *Δημήτριος* διεκρίθη ἐπίσης ἐν Βάλτῳ. Τ. Ε. Ε.

—**Μπουκουβάλας**. Ὄνομα σπετσιωτικῆς οἰκογενείας, διακριθείσης κατὰ τὸν Ἀγῶνα. Δύο μέλη αὐτῆς, ὁ *Ἰωάννης* καὶ ὁ *Χρῖστος*, ἔχοντες ἑκάτερος ἴδια σκάφη, παρέσχον μεγάλας ὑπηρεσίας, λαβόντες μέρος καὶ εἰς τὴν ναυμαχίαν τοῦ Κάβο Πάπα διὰ τῆς «Μελπομένης», μετατραπείσης εἰς πυρπολικόν. Τ. Ε. Ε.

—**Μπουκουβάλας, *Κωνσταντῖνος***. Στρατιωτικός, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1877. Ἐξεπαιδεύθη εἰς τὸ στρατιωτικὸν σχολεῖον Εὐελπίδων, δαπάναις τοῦ βασιλέως Γεωργίου Α', τιμῆς ἕνεκεν πρὸς τὴν οἰκογένειαν ἐξ ἧς κατήγετο. Τῷ 1906—1907, ὑπολοχαγὸς ὤν, συμμετέσχεν ὡς ἀρχηγὸς σώματος εἰς τὸν μακεδονικὸν ἀγῶνα, δράσας εἰς τὴν περιφέρειαν Ρουμλουκίου - Γιαννιτσῶν. Ἔλαβε κατόπιν μέρος εἰς τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους, τῷ δὲ 1919—1921, ὢν συνταγματάρχης, εἰς τὴν ἐκστρατείαν Μικρᾶς Ἀσίας ὡς ἀρχηγὸς πεζικοῦ τῆς 10ης μεραρχίας, εἰς τὴν προέλασιν τῆς Θράκης καὶ τέλος ὡς διοικητὴς τῆς μεραρχίας Σμύρνης εἰς τὴν μάχην Ἀβγκὶν-Κοβαλίτσας ἐν Μ. Ἀσίᾳ. Ν. ΚΛΣ

**μπουκούνι** (τό)· ἰδιωματ., ἄλλως *μπουκουνιά*.

**μπουκουνιά** (ἡ)· *μπουκιά* (βλ. λ.).

**Μπούκουρα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 413. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Σπανέϊκα* καὶ *Φράγκα*. Χ. Δ.

**Μπουκουραίικα** (τά). Καλεῖται οὕτως ἡ συνθηματικὴ καὶ ἐπαγγελματικὴ γλῶσσα τῶν *μπουκουραίων*, ἤτοι τῶν ραφτάδων τῶν καταγομένων ἰδίως ἀπὸ τὰ Σχωρέτσανα, κώμην τῶν Τζουμέρκων, ἔτι δὲ ἀπὸ τὰ Ἄγραφα, τὸν Βάλτον, τὸ Ξηρόμερον κλπ. Τὰ μπουκουραίικα καλοῦνται καὶ *ραφτάτ(ι)κα*, ὑπὸ τῶν ἰδίων δὲ μπουκουραίων καὶ *ξτονιάτικα*. Τὸ λεξιλόγιόν των ἀποτελεῖται κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπὸ ξένας (ἰδίως κουτσοβλαχικὰς κλπ.) λέξεις. [Πρβλ. τὴν ἐν τοῖς «Ἠπειρωτ. χρον.» τόμ. Γ' σελ. 310 ἑ. μελέτην τοῦ *Χ. Σούλη*.] Γ. Π. Α.

**Μπούκουρας, *Ἰωάννης***. Πλοίαρχος τοῦ ἐμπορικοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς ἐν Σπέτσαις τῷ 1801. Ἐκ τῶν τολμηροτέρων ναυτικῶν, ἐπροκάλεσε πολλάκις τὸν θαυμασμὸν ὁλοκλήρου τοῦ ναυτικοῦ κόσμου διὰ τὰ κατορθώματα αὐτοῦ. Τῷ 1835, πωλήσας ἐν Κάδιξ τῆς Ἱσπανίας τὸ πλοῖόν του, ἐπέστρεψεν ἐκεῖθεν εἰς Σπέτσας μετὰ δύο μόνον ναυτῶν ἐπὶ μικρᾶς ἱσπανικῆς λέμβου, διανύσας τὸ διάστημα τοῦτο ἐντὸς 32 ἡμερῶν. Διὰ τὸ ἐν λόγῳ κατόρθωμα ὁ βασιλεὺς Ὄθων ἐξέφρασε τὴν «εὐχαρίστησίν του» διὰ τοῦ ἀπὸ 19 Δεκεμβρίου 1835 βασιλικοῦ διατάγματος. Ἀλλ' ὁ Μπούκουρας ἰδίως ἀπηθανατίσθη διὰ τῆς κατὰ τὸ 1844 ἀγορᾶς τοῦ πρώτου ἐν Ἀθήναις λιθίνου θεάτρου, ὅπερ ἔκτοτε ἔφερε τὸ ὄνομά του (βλ. κατ.). Ν. Ι. Λ.

— **Μπούκουρα *θέατρον***. Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι γνωστὸν τὸ πρῶτον ἐν Ἀθήναις ἀνεγερθὲν λιθόκτιστον θέατρον (βλ. λ. *Ἀθῆναι* τ. Β', σ. 258 ἑπ.).

**Μπούκουρον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Ἀχελῴου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 368. Μετωνομάσθη εἰς *Ἀρματολικόν*. Χ. Δ.

**μπουκτίζω**, ἢ *μπουχτίζω* (ἐκ τοῦ τουρκ. ρήματ. *μπικμάκ=ἀηδιάζω*)· ἀηδιάζω, καταλαμβάνομαι ὑπὸ κόρου. Ν. Μ.

**Μπουκὼ** (Boucau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Πυρηναίων, κειμένη παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Ἀντούρ, εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπαγιόν. Ἔχει μικρὸν λιμένα, ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, σιδηρουργεῖα, θαλάσσια λουτρὰ κλπ. Κάτ. 5.470. Χ. Δ.

**μπούκωμα** (τό)· ἡ ὑπερβολικὴ πλήρωσις τοῦ στόματος διὰ τροφῆς || μεταφ., δεκασμός, δωροδοκία.

**μπουκώνω**· δημοτ., πληρῶ τροφῆς τὸ στόμα τινός, θέτω εἰς τὸ στόμα ὑπερβολικὸν ποσὸν τροφῆς πρὸς μάσησιν: «*μὴ μπουκώνῃς τὸ παιδὶ γιατὶ θὰ πνιγῇ*», «*εἶναι μπουκωμένος καὶ δὲ μπορεῖ νὰ μιλήσῃ*» || μεταφ., παρέχω δῶρα ἢ χρήματα ἵνα ἐπιτύχω τὴν σιωπήν τινος, ἵνα μὴ μαρτυρήσῃ κατ' ἐμοῦ: «*τὸν ἐμπούκωσαν καὶ γι' αὐτὸ δὲν ἦρθε μάρτυρας*».

**Μπουλ** (Boule ἢ Boulle), ***Ἀνδρέας - Κάρολος***. Διάσημος Γάλλος ἐβενουργὸς (1642—1732). Κατήγετο ἐξ οἰκογενείας λεπτουργῶν, προελθούσης ἐκ τῶν Κάτω Χωρῶν, καὶ ἐδιδάχθη τὴν λεπτουργικὴν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ πατρός του, τελειοποιήθεὶς κατόπιν εἰς διαφόρους σχολὰς εἰς τὴν διακοσμητικήν, τὴν γλυπτικήν, τὴν χαρακτικὴν καὶ τὴν κατασκευὴν μωσαϊκῶν καὶ φοιτήσας εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ, τῷ 1672. Ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας Λουδοβῖκος ΙΔ', ἕνεκα τῆς φήμης την ὁποίαν εἶχεν ἀποκτήσει, παρεχώρησεν εἰς αὐτὸν ἰδιαιτέραν κατοικίαν εἰς τὸ Λοῦβρον καὶ τοῦ ἀπένειμε τὸν τίτλον τοῦ χαράκτου τῶν βασιλικῶν σφραγίδων καὶ τοῦ πρώτου ἐβενουργοῦ τοῦ βασιλέως. Ὁ Μπουλ εἰργάσθη κυρίως ἐπὶ ἰδικῶν του σχεδίων, καθὼς καὶ ἐπὶ σχεδίων τοῦ Μπεραὶν καὶ τοῦ Καρόλου Λεμπρέν, ἡ δὲ τέχνη του συνίστατο εἰς τὴν διαποίκιλσιν τῶν ἐπίπλων μετὰ πολλῆς καλαισθησίας διὰ πολυτίμων μετάλλων καὶ ἐλε-

Digitized by Google

φαντόδοντος, μετὰ μεγάλης δεξιότητος ἐναφηνουμένων ἐντὸς τῶν πολυτίμων ξύλων τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς, τὰ ὁποῖα μετεχειρίζετο καὶ ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐσχημάτιζεν οὕτω διαφόρους κυνηγετικάς, ἱστορικὰς καὶ παντοίας ἄλλας ἐκ τοῦ καθ' ἡμέραν βίου σκηνάς. Τὰ ἔπιπλα ταῦτα καὶ ὁ τρόπος τῆς κατασκευῆς των κατέστησαν τόσον διάσημα, ὥστε ἐπεκράτησε νὰ καλοῦνται μὲ τὴν γενικὴν ὀνομασίαν «ἔπιπλα Μπούλ», ὄχι μόνον ἀπὸ τοὺς συγχρόνους μιμητάς, ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τοὺς μεταγενεστέρους ἀντιγραφεῖς. Ὁ Μπούλ εἶχε καταστῇ γνωστότατος καὶ διάσημος ὄχι μόνον εἰς τὴν Γαλλίαν, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ὁπόθεν ἐλάμβανε πλείστας παραγγελίας πλουσίων καὶ βασιλέων, διεκόσμησε δὲ πλεῖστα ἰδιωτικὰ καὶ βασιλικὰ ἀνάκτορα, καθὼς καὶ τὸ τῶν Βερσαλλιῶν. Διεκρίθη ἐπίσης καὶ εἰς τὰς ἄλλας τέχνας, εἰς τὰς ὁποίας ἐπεδόθη καὶ εἰς τὰς ὁποίας διέπρεψε σχεδὸν ἐξ ἴσου. Τὰ ἔργα του, λεπτοφυῆ καὶ εὔθραυστα, δὲν ἐπέζησαν ἐπὶ πολύ. Σῴζονται ὅμως τινὰ ἐξ αὐτῶν εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου, εἰς τὸ ἐν Λονδίνῳ μουσεῖον τοῦ Οὐΐνδσωρ, εἰς τὴν ἐν Παρισίοις συλλογὴν τοῦ μαρκησίου Βογκὲ καὶ ἰδίως εἰς τὴν συλλογὴν τοῦ Ριχάρδου Οὐάλλας τοῦ Λονδίνου. Μ. Δ. Β.

**Μπούλ** (Bull), ***Ὀλε-Μπόρνεμαν***. Νορβηγὸς βιολιστής, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Μπέργκεν (1800—1880). Ἐσπούδασε βιολίον, ἀρχικῶς ὑπὸ τὸν Σπόρ, εἶτα δὲ ἐν Παρισίοις ὑπὸ τὸν Παγκανίνι, ὃν ἐν πολλοῖς ἐμιμήθη. Ἐγένετο διάσημος τόσον ἐν Εὐρώπῃ ὅσον καὶ ἐν Ἀμερικῇ, ἔγραψε δὲ ἔργα τινὰ διὰ βιολίον ἐξόχως πρωτότυπα. Τὰς «Ἀναμνήσεις» του ἐξέδωκεν ὁ υἱός του. Γ. Σ.

**Μπούλ** (Boule), ***Πέτρος-Μαρκελῖνος***. Ἐπιφανὴς Γάλλος παλαιοντολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1861. Καθηγητὴς ἐν τῷ μουσείῳ φυσικῆς ἱστορίας καὶ διευθυντὴς τοῦ ἰνστιτούτου παλαιοντολογίας τοῦ ἀνθρώπου, τοῦ ἱδρυθέντος ὑπὸ τοῦ Ἀλβέρτου Α' τοῦ Μονακὸ ἐν Παρισίοις, διακρίνεται διὰ τὸ βαθὺ ἐρευνητικὸν πνεῦμα καὶ τὴν διαύγειαν τῆς περιγραφῆς. Ὡς παλαιοζῳολόγος συνειργάσθη μετὰ τοῦ Alb. Gandry εἰς τὰ «Matériaux pour l'histoire des temps quaternaires», ἐδημοσίευσε πολλὰς ἐργασίας σχετικὰς μὲ τὰς ἐρεύνας του ἐν Γαλλίᾳ καὶ τοῖς σπηλαίοις αὐτῆς, ἐν τῇ νήσῳ Μαδαγασκάρῃ, ἐν Ἀλγερίῳ, περὶ τῶν εἰδῶν τοῦ μαχαιρόδοντος, περὶ τῶν ἡφαιστείων τῆς Γαλλίας, γεωλογικὰ καὶ παλαιοντολογικὰ μαθήματα κτλ. Ἀπὸ τοῦ 1906 διευθύνει τὰ «Annales de Paléontologie». Ὡς παλαιοντολόγος ὁ Μπούλ θεωρεῖται αὐθεντία. Ἀπὸ τοῦ 1888, ὅτε ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτον «Δοκίμιον στρωματογραφικῆς παλαιοντολογίας τοῦ ἀνθρώπου», δὲν ἔπαυσεν ἐρευνῶν τὸ θέμα τῆς ἐξελίξεως τοῦ ἀνθρώπου. Ἐμελέτησε τὸ σπήλαιον Reilhac μετὰ τοῦ Cartaïlhac, τὸν παλαιολιθικὸν σταθμὸν τῆς λίμνης Kârar (Ἀλγερίου), τὸ ζήτημα τῶν ἠωλίθων, τὰ σπήλαια Grimaldi, τὸν σκελετὸν τῆς Λὰ-Σαπὲλλ-ὠ-Σαὶν κτλ. Ἐκδίδει μετὰ τοῦ R. Verneau ἀπὸ τοῦ 1890 τὴν «L' Anthropologie», σοβαρὸν περιοδικὸν σύγγραμμα, παγκοσμίου φήμης. Ἡ κυριωτέρα τῶν συγγραφῶν του εἶναι ἡ ἔκδοσις τῶν «Hommes fossiles», διὰ τὴν ἐμβρίθειαν τῶν σκέψεων καὶ τὴν γλαφυρότητα τῆς περιγραφῆς. Ι. Γ. Κ.

— **Μπούλ** (Bull), ***Τζών***. Ἄγγλος ὀργανοκρούστης καὶ συνθέτης (1563—1628). Διετέλεσεν ἀλληλοδιαδόχως ὀργανοκρούστης εἰς Χέρεφορντ καὶ εἶτα τῆς ἀγγλικῆς αὐλῆς, ἀπὸ τοῦ 1596 πρῶτος καθηγητὴς τῆς μουσικῆς τοῦ κολλεγίου τοῦ Γκρέσαμ, ἀπὸ τοῦ 1613 ὀργανοκρούστης τοῦ ἀρχιδουκὸς Ἀλβρέχτου ἐν Βρυξέλλαις καὶ τέλος ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα εἰς τὸν καθεδρικὸν ναὸν τῆς Ἀμβέρσης. Ἐκ τῶν ἔργων του ἔχουσι σωθῆ τεμάχια διὰ κλαβικύμβαλον, πρελούντια, φυγαί, φαντασίαι, παραλλαγαὶ κτλ., ἐγκατεσπαρμένα εἰς διαφόρους ἀνθολογίας τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, ἢ ἐν χειρογράφοις. Εἰς τὸν Μπούλ ἐσφαλμένως ἀπεδίδετο ἡ μελῳδία τοῦ βασιλικοῦ ἀγγλικοῦ ὕμνου: «Ὁ Θεὸς σῴζοι τὸν βασιλέα». Γ. Σ.

— **Μπούλ** (John Bull), ***Τζὼν*** —. Παιγνιώδης παρωνυμία τοῦ ἀγγλικοῦ λαοῦ (βλ. λ. *Τζὼν Μπούλ*).

**Μπόϋλ** (Boyle). Καθολικὸς ἐπίσκοπος Μεγάρων ἐπὶ τῆς δυναστείας τῶν Ἀτζαγιώλη. Εἶναι γνωστὸς ὡς συντελέσας εἰς τὴν διατύπωσιν ἐπιθυμίας τῶν Ἀθηναίων πρὸς διηνεκῆ προσάρτησιν τοῦ δουκάτου τῶν Ἀθηνῶν εἰς τὸν Πέτρον Δ' βασιλέα τῆς Ἀραγονίας. Ἔσχε δὲ συμπράκτορα πρὸς τοῦτο τὸν συνεπίτροπόν του Γεράρδον Ροδανέλλαν. Διὰ τὴν ἐνέργειάν του ταύτην παρεχωρήθησαν αὐτῷ κτήματα ἐν Θήβαις καὶ ἐτησία χορηγία καὶ σύστασις πρὸς τὸν πάπαν πρὸς προαγωγὴν εἰς ἀρχιεπίσκοπον Θηβῶν τῷ 1380. Τ. Ε. Ε.

— **Μπόϋλ** (Boyle), ***Ροβέρτος***. Ἄγγλος χημικὸς καὶ φυσικὸς (1627—1691). Ἡ σπουδαιοτέρα του ἀνακάλυψις εἶναι ὁ ὑπὸ τὸ ὄνομά του φερόμενος νόμος τῶν ἀερίων. Κατεπολέμησε τὴν παλαιὰν θεωρίαν τῆς χημείας ὅτι τὰ πάντα σύγκεινται ἐκ τεσσάρων βασικῶν στοιχείων, ὑποστηρίξας ἀντ' αὐτῆς τὴν θεωρίαν τῶν χημικῶν στοιχείων.

— **Μπόϋλ νόμος**, καλούμενος καὶ *νόμος τῶν Μπόϋλ καὶ Μαριὸττ* ἢ καὶ *νόμος τοῦ Μαριὸττ* (βλ. λ. *ἀέρια*). Γ. Θ. Κ.

**Μπουλαβάγιο** (Bulawayo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν. Ροδεσίας ἐν Ἀφρικῇ (βλ. λ. *Μπουλουβάγιο*).

**Μπουλαβαντὶ** *[Γεωγρ.]*. Τὸ *Πολύβοτον* τῶν ἀρχαίων. Πόλις τῆς Φρυγίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, κειμένη περὶ τὰ 40 χλμ. ἀνατολικῶς τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ. Κεῖται ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Ἀκὰρ τσάϊ καὶ συνδέεται δι' ἁμαξιτῶν: μετὰ τοῦ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ· μετὰ τοῦ Τσάϊ καὶ ἐκεῖθεν μετὰ τοῦ Ἂκ Σεχὶρ-Ἰκονίου ἀφ' ἑνὸς καὶ μετὰ τοῦ Πορσαμᾶ Τσιβρὶλ ἀφ' ἑτέρου· μετὰ τοῦ Σιβρὶ Χισὰρ-Ἀγκύρας καὶ μετὰ τοῦ Μπαγιὰτ-Σεϊντῆ Γαζῆ. Ἔχει περὶ τὰς 15 000 κατ. καὶ ἀποτελεῖ σπουδαῖον γεωργικὸν κέντρον, ἰδίως δημητριακῶν καρπῶν καὶ ὀπίου.

Κατ' Αὔγουστον 1921 τὸ ἑλληνικὸν νότιον συγκρότημα μεραρχιῶν προελάσαν διὰ τῆς IV μεραρχίας (εἰς δύο φάλαγγας) ἐξ Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, ἑκατέρωθεν τοῦ Ἀκὰρ τσάϊ, κατέλαβε τὴν γραμμὴν ἐν τῇ εἰρημένῃ κοιλάδι: ὑψώματα Α. Μπουλαβαντὶ-ὑψώματα Α. Τσάϊ. Κατὰ Σεπτέμβριον 1921 ἀποσυρθεῖσα ἐκεῖθεν εἰς Ἀφιὸν ἡ IV μεραρχία κατέστρεψε τὸ τμῆμα τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς μεταξὺ Τσάϊ-Ἀφιὸν Καρὰ Χισάρ, καταλαβοῦσα δὲ θέσεις περὶ τὸ Ἀφιόν, ὁμοῦ μετὰ τοῦ μεικτοῦ ἀποσπάσματος Ἀνδριτζοπούλου, ἀπέκρουσε πεισμόνως ἰσχυρὰς δυνάμεις τῶν Τούρκων, αἵτινες, μετὰ τὰς μάχας τοῦ Σαγγαρίου, ἤγοντο ἐκεῖθεν διὰ Μπορντὶ μὲ κατεύθυνσιν πρὸς Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ—Τουμλοῦ Μπουνάρ. Ὁ ἀγὼν ἐκεῖνος τοῦ νοτίου συγκροτήματος μεραρχιῶν ἐνισχύθη ταχέως διὰ τοῦ Α' σώματος στρατοῦ, μετενεχθέντος ἐξ Ἐσκὶ Σεχὶρ σιδηροδρομικῶς καὶ ὅπερ ἀναλαβὸν ἀντεπίθεσιν περὶ τὸ Ἀφιὸν Καρὰ Χισὰρ μετὰ ἑξαήμερον (18—23 Σεπτεμβρίου 1921) σκληρότατον ἀγῶνα, ἀπώθησε τοὺς Τούρκους πρὸς ἀνατολάς. Εἰς τὸν ἀγῶνα ἐκεῖνον ἔδωκε πέρας ἡ ἐπέμβασις τοῦ Β' ἑλληνικοῦ σώματος στρατοῦ (V καὶ VIII μεραρχιῶν) κινηθέντος διὰ συντόνων πορειῶν ἀπὸ Σεϊντῆ Γαζῆ διὰ τῆς στενωποῦ Γιαμπουλντὰκ εἰς *Μπορντὶ* (βλ. λ.) καὶ ἀπειλήσαντος τὴν γραμμὴν συγκοινωνίας πρὸς Ἄγκυραν τῶν Τούρκων, οἵτινες ἡττηθέντες ὑπεχώρησαν ἐξ Ἀφιὸν ἐσπευσμένως πρὸς ἀνατολάς. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπουλαὶ** *ντὲ λὰ* ***Μὲρτ*** (Boulay de la Meurthe), ***Ἀντώνιος-Ἰάκωβος***, *κόμις* —. Γάλλος νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1761—1840). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ἐχρημάτισε δημόσιος κατήγορος ἐν Νανσύ. Βραδύτερον, ἐκλεγεὶς ἀντιπρόσωπος ἐν τῇ βουλῇ τῶν πεντακοσίων, ἀντεπολιτεύθη σφοδρῶς τὸ Διευθυντήριον. Διετέλεσε πρόεδρος τοῦ νομικοῦ τμήματος τοῦ συμβουλίου ἐπικρατείας καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν σπουδαιοτέρων συντακτῶν τοῦ νέου ἀστικοῦ κώδικος. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Πραγματεία ἐπὶ τῶν αἰτίων τῆς ἐγκαταστάσεως τῆς δημοκρατίας ἐν Ἀγγλίᾳ τῷ 1649», «Πολιτικὴ εἰκὼν τῆς βασιλείας Καρόλου Β' καὶ Ἰακώβου Β' τῆς Ἀγγλίας» (1818). Μ. Δ. Β.

— **Μπουλαὶ** *ντὲ λὰ* ***Μὲρτ*** (Boulay de la Meurthe), ***Ἐρρῖκος-Γεώργιος***, *κόμις* —. Γάλλος πολιτικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1797—1858). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ εἰσελθὼν εἰς τὸν στρατὸν ἐγένετο συνταγματάρχης ἐπὶ Λουδοβίκου-Φιλίππου. Ἐκλεγεὶς κατόπιν βουλευτὴς διεκρίθη διὰ τὸν ὑπέρμετρον φιλοβοναπαρτισμόν του. Τῷ 1848 ἐξελέγη μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως καὶ τῷ 1849 ἐγένετο ἀντιπρόεδρος τῆς Γαλλικῆς δημοκρατίας. Μετὰ τὸ πραξικόπημα τοῦ Ναπολέοντος Γ' τῆς 2ας Δεκεμβρίου 1851, ὅπερ ὑπεστήριξε, διωρίσθη γερουσιαστής. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἐπέδειξε μεγάλην δραστηριότητα ὑπὲρ τῆς ἀναπτύξεως τῆς στοιχειώδους παιδείας ἐν Γαλλίᾳ. Μ. Δ. Β.

**Μπουλαινβιλλιὲ** (Boulainvilliers), ***Ἐρρῖκος*** *κόμις ντὲ* ***Σαὶν-Σαὶρ*** (Saint-Saire). Γάλλος ἱστορικὸς (1658—1722). Κατ' ἀρχὰς ἠκολούθησε τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, τὸ ὁποῖον βραδύτερον ἐγκατέλιπεν, ἀφοσιωθεὶς εἰς τὴν μελέτην τῶν τίτλων καὶ τῆς ἱστορίας τῶν προγόνων του, ὁπόθεν ὡρμήθη καὶ εἰς ἐρεύνας περὶ τῆς νομοθεσίας τοῦ μεσαίωνος καὶ περὶ τῆς γενεαλογίας τῶν μεγάλων καὶ ἀρχαίων φεουδαρχικῶν οἰκογενειῶν, γράψας ἔργα λίαν ἐνδιαφέροντα καὶ πλήρη ἱστορικῶν δοκουμέντων, χρησίμων ἀκόμη καὶ σήμερον. Ὁ Μπουλαινβιλλιὲ οὐδὲν τῶν ἔργων του τούτων ἐδημοσίευσε· μετὰ τὸν θάνατόν του ὅμως τὰ χειρόγραφά του ἐταξινομήθησαν καὶ ἐξεδόθησαν εἰς διαφόρους τόμους, ὧν οἱ κυριώτεροι εἶναι: «Ἱστορία τῶν παλαιῶν κυβερνήσεων τῆς Γαλλίας, μετὰ 14 ἱστορικῶν ἐπιστολῶν περὶ τῶν κοινοβουλίων καὶ τῶν συνελεύσεων τῶν τάξεων» (1727), «Πραγματεία περὶ τῆς ἀριστοκρατίας τῆς Γαλλίας», «Βιογραφία τοῦ Μωάμεθ», «Ὑπομνήματα πρὸς τὸν δοῦκα τοῦ Ὀρλεὰν» κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπουλαΐρ** (ἑλλην. *Πλαγιάρι*) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς τουρκικῆς Θρᾴκης, κείμενον ἐπὶ τοῦ λαιμοῦ τῆς χερσονήσου τῆς Καλλιπόλεως. Ἐν αὐτῷ συνωμολογήθη τὴν 20 Νοεμβρίου 1912 ἡ πρώτη ἀνακωχὴ τοῦ Α' Βαλκανικοῦ πολέμου μεταξὺ Τουρκίας καὶ τῶν συμμάχων βαλκανικῶν κρατῶν, ἐκτὸς τῆς Ἑλλάδος, ἥτις πρὸς τὸ συμφέρον τοῦ ὅλου ἀγῶνος ὤφειλε νὰ ἐξακολουθήσῃ οὖσα εἰς ἐμπόλεμον κατάστασιν, διὰ νὰ δύναται νὰ διατηρῇ διὰ τοῦ στόλου της τὸν ἀποκλεισμὸν τῶν Στενῶν. Ὅτε μετ' ὀλίγον ἐπανελήφθησαν αἱ ἐπιχειρήσεις, συνήφθησαν, κατὰ Ἰανουάριον 1913, μάχαι τινὲς μεταξὺ Βουλγάρων καὶ Τούρκων παρὰ τὸ Μπουλαΐρ (βλ. καὶ λ. *Βαλκανικοὶ πόλεμοι*). Ἐπίσης κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐβομβαρδίσθησαν αἱ τουρκικαὶ γραμμαὶ Μπουλαΐρ ὑπὸ τῶν γαλλικῶν πολεμικῶν, διαρκουσῶν τῶν ἐπιχειρήσεων τῶν Δαρδανελλίων (1915). Χ. Δ.

— **Μπουλαΐρ ἰσθμὸς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὁ ἀπὸ τῶν φερωνύμων λόφου (πλάτ. 40° 30' 35" Β., μῆκ. 26°45' 40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2429: The Dardanelles) καὶ χωρίου λαμβάνων τὸ ὄνομα λαιμός, ὁ συνδέων τὴν χερσόνησον τῆς Καλλιπόλεως πρὸς τὴν ἠπειρωτικὴν τῆς Ἀν. Θρᾴκης ἀκτήν, διήκων εἰς πλάτος 5 περίπου χιλιομέτρων ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τοῦ κόλπου τοῦ Ξηροῦ ὅρμου *Γιανικλῆ λιμὰν* (ἢ *Νταοὺτ Ἰσκαλεσσί*, ἀρχ. *Καρδία*, βλ. λ.) εἰς τὸν ἐπὶ τῆς Προποντίδος ὅρμον *Ἅϊ Γεώργης* (ἀρχ. *Πακτύη*) ΒΑ. τοῦ λόφου Ναμὰς Τεπέ. Τὸ χωρίον δὲ τὸ ὀνομάζον τὸν ἰσθμόν, ἡ ποτὲ *Λυσιμάχεια*, καὶ ὁ λόφος, εὑρίσκετο $3\frac{1}{2}$ περίπου χιλιόμ. Β. τοῦ μέσου τοῦ ἰσθμοῦ, οὗτινος τὸ πλάτος ἐξετίμα ὁ Στράβων καθ' ὑπέρβασιν 3 χιλιομέτρων τοῦ πραγματικοῦ (Ζ, 331 ἀποσπ. 52 καὶ 54, Teubner). Δὲν ὠφείλετο ὅμως εἰς λάθος ἡ ἐκτίμησις αὕτη, ἀλλ' εἰς τὸ ὅτι ἐλόγιζε τὸ πλάτος μετὰ τῶν ἀνωμαλιῶν τοῦ ἐδάφους. Σαφῶς φαίνεται κατὰ χώραν τὸ τεῖχος (μέγ. ὑψόμ. προμαχ. 550 ποδ.), δι' οὗ οἱ Ἀγγλογάλλοι (1853) ἀπέκλεισαν τὴν Θρᾳκικὴν χερσόνησον τῆς ἠπείρου κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον, μιμούμενοι τοὺς ἀρχαίους. Ὁ ἰσθμὸς ὠνομάζετο ἐπὶ Πτολεμαίου ἀκόμη (Γ, ια, 6, Nobbe) «μακρὸν τεῖχος» καὶ Macron tichos (*Πομπ. Μέλ.* Ζ, 2 *Πλίν.* 4,43) ὀνομασία, ἥτις παρεφθάρη εἰς τὸν Πευτιγκεριανὸν χάρτην εἰς Macronteros, μετεβλήθη δὲ εἰς *Ἑξαμίλιον* (βλ. λ.) ἀπὸ τῆς ἐπανορθώσεως τοῦ τείχους ὑπὸ τοῦ Ἰουστινιανοῦ (*Προκοπ.* κτισμ. 4, 10). Ἐκ περικοπῆς τοῦ Ψευδοδημοσθένους (*Ἀλοννησ.* 39, 86) προκύπτει ὅτι εἶχε μελετηθῆ ποτε ἡ «διορυχὴ» τοῦ ἰσθμοῦ μεταξὺ Πτελεοῦ καὶ Λευκῆς ἀκτῆς (βλ. χάρτην ἀγγλ. ναυτιλ. 2429: The Dardanelles). Σ. Ε. ΛΥΚΟΥΔΗΣ

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν εἰς χερσόνησον Καλλιπόλεως ἐπιχείρησιν τοῦ Ἰανουαρίου 1913 (Βουλγαροτουρκικὸς πόλεμος), διεξήχθη τὰς 26ην καὶ 27ην Ἰανουαρίου π. ἡ. μάχη, φερομένη ὑπὸ τὸ ὄνομα *μάχη τοῦ Μπουλαΐρ*. Συμφώνως τῷ τουρκικῷ σχεδίῳ, ἡ σύγχρονος ἐπίθεσις κατὰ τοῦ βουλγαρικοῦ στρατοῦ θ' ἀνελαμβάνετο τὴν 26ην Ἰανουαρίου. Πρὸς τοῦτο, τὴν νύκτα 25—26 ἐπρόκειτο νὰ ἐπιβιβασθῇ τὸ 10ον τουρκικὸν σῶμα στρατοῦ ἐπὶ τῶν μεταγωγικῶν πλοίων, ἵνα μεταφερθῇ ἐκ τοῦ ἀσιατικοῦ αἰγιαλοῦ τῆς Προποντίδος εἰς Σάρκιοϊ (Περιστέρι), ἀλλ' ὁ τουρκικὸς στολίσκος τῶν μεταγωγικῶν δὲν κατώρθωσε νὰ συγκεντρωθῇ κατὰ τὴν νύκτα ταύτην εἰς τὸν ὡρισμένον χῶρον, δι' ὃ ἡ ἐπιβίβασις ἤρχισε τὴν μεσημβρίαν τῆς 26ης Ἰανουαρίου, λόγῳ δὲ τῆς κακοκαιρίας ἡ περὶ τὸ Σάρκιοϊ ἀποβίβασις δὲν ἐξετελέσθη εἰμὴ τὴν ἑπομένην. Τὸ ἐν Μπουλαΐρ ὅμως τουρκικὸν στράτευμα τοῦ στρατηγοῦ Φαχρῆ πασᾶ ἤρχισε, συμφώνως πρὸς τὰς διαταγάς, τὴν κατὰ τοῦ βουλγαρικοῦ στρατεύματος ἐπίθεσιν τὴν πρωΐαν τῆς 26ης Ἰανουαρίου, ἐλπίζον πάντοτε ὅτι κατὰ τὴν ἰδίαν περίπου ὥραν θὰ ἐνεφανίζετο καὶ ἡ ἐκ Σάρκιοϊ ἐπίθεσις. Εὑρεθεῖσα ἡ τουρκικὴ στρατιὰ τοῦ Φαχρῆ πρὸ ἀνωτέρων βουλγαρικῶν δυνάμεων (4ης στρατιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Κοβάτσεφ), ἠγωνίσθη μόνη καθ' ἅπασαν τὴν ἡμέραν· πρὸς τὸ ἀπόγευμα ὅμως βλέπουσα ἀφ' ἑνὸς μὲν τὸ ἀδύνατον τῆς κατισχύσεως ἀπέναντι τῶν Βουλγάρων, ἀφ' ἑτέρου δὲ τὴν μὴ παρέμβασιν τοῦ 10ου σώματος, ἀπεφάσισε νὰ διακόψῃ τὸν ἀγῶνα καὶ νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς Μπουλαΐρ, τοῦθ' ὅπερ καὶ ἐπέτυχε, μετὰ μεγίστων ὅμως ἀπωλειῶν, διότι οἱ Βούλγαροι, ποιήσαντες εὐρυτάτην χρῆσιν τοῦ πυροβολικοῦ των, κατέβαλον πᾶσαν προσπάθειαν πρὸς ἀποκοπὴν τῆς πρὸς Μπουλαΐρ ὑποχωρήσεως τῶν Τούρκων. Τὰ κατὰ τὴν ἑσπέραν τῆς 26ης Ἰανουαρίου ἀρξάμενα τῆς ἀποβιβάσεώς των εἰς Σάρκιοϊ ὀλίγιστα τουρκικὰ τμήματα προσεβλήθησαν ζωηρότατα ὑπὸ τῶν Βουλγάρων, εἰς τρόπον ὥστε πᾶσα προχώρησις πέραν τοῦ αἰγιαλοῦ κατέστη ἀδύνατος. Συγχρόνως, διὰ τοῦ πυρὸς τοῦ βουλγαρικοῦ πυροβολικοῦ, ἀπηγορεύθη ἡ περαιτέρω προσπέλασις τῶν φορτηγίδων πρὸς τὸν αἰγιαλόν, εἰς τρόπον ὥστε περὶ τὰς 15.000 Τοῦρκοι παρέμειναν ἐπὶ τῶν μεταγωγικῶν χωρὶς νὰ κατορθωθῇ ἡ ἀποβίβασίς των (βλ. σχ. εἰς λ. *Καλλίπολις [Στρατ. Ἱστορ.]*). Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπουλὰκ** *[Γεωγρ.]*. Ἄλλοτε ἰδιαιτέρα πόλις καὶ νῦν μεγάλη συνοικία τοῦ Καΐρου (βλ. λ. *Βουλάκον καὶ Κάϊρον*).

Digitized by Google

**Μπουλάμα** *[Γεωγρ.]* βλ. *Μπολάμα.*

**Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Γεώργιος-Ἐρνέστος-Ἰωάννης-Μαρία.*** Γάλλος στρατηγὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Rennes (1837—1891). Ἀπόφοιτος τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς τοῦ Σαὶν-Σύρ, μετέσχε τῷ 1857 τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Καβυλίας καὶ τῆς Ἰταλίας, διακριθεὶς κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ρομπεκκέττο, ὅπου ἐτραυματίσθη ἐπικινδύνως. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον ὡς διοικητὴς τάγματος ἐπολέμησε κατὰ τὴν ἄμυναν τῶν Παρισίων καὶ ἐτραυματίσθη ἐν Σαμπινύ. Γενόμενος στρατηγὸς τῷ 1880, ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ πεζικοῦ. Τῷ 1884 ἀπεστάλη εἰς Τύνιδα καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν, διατηρήσας τὸ χαρτοφυλάκιον καὶ ἐπὶ τῆς κυβερνήσεως τοῦ Γκομπλέ. Ὁ Μπουλανζὲ ἀνέπτυξε τότε μεγάλην δραστηριότητα εἰς τὴν στρατιωτικὴν παρασκευὴν τῆς Γαλλίας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον τὸν κατέστησε λίαν δημοφιλῆ, προεκάλεσεν ὅμως τὰς ἀνησυχίας τῶν ἄλλων εὐρωπαϊκῶν κρατῶν, καὶ δὴ τῆς Γερμανίας, ὥστε ν' ἀπειλῆται εὐρωπαϊκὴ σύρραξις. Ὡς ἐκ τούτου ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ἐσκέφθη ν' ἀπαλλαγῇ τοῦ Μπουλανζέ, ἀλλὰ εὑρεθεῖσα πρὸ τῆς ἀντιδράσεως τοῦ τότε δημιουργηθέντος μπουλανζικοῦ κόμματος ἔπεσεν, ἀλλὰ καὶ διαδεχθεῖσα αὐτὴν κυβέρνησις τοῦ Ρουβιὲ δὲν προσέλαβε τὸν μπουλανζὲ ὡς ὑπουργόν. Ἐν τῷ μεταξὺ γενομένης ἀναπληρωματικῆς ἐκλογῆς ἐξελέγη οὗτος εἰς τὸ διαμέρισμα τοῦ Σηκουάνα καὶ τῷ 1888 ἐξελέγη βουλευτὴς εἰς ἑπτὰ διαμερίσματα. Πανταχοῦ τῆς Γαλλίας διενέμοντο εἰκόνες του καὶ ἐψάλλοντο ᾄσματα ἐνθουσιώδη ὑπὲρ αὐτοῦ. Κηρυχθεὶς εἰς τὴν βουλὴν ὑπὲρ τῆς ἀναθεωρήσεως τοῦ Συντάγματος καὶ συναντήσας μεγάλην ἀντίδρασιν ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ. Ὁ Κλεμανσὼ εἰς τὰς τοιαύτας ἀντιδημοκρατικὰς τάσεις τοῦ πρῴην φίλου του ἀντέταξε τὴν «Ἑταιρείαν τῶν δικαιωμάτων τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ πολίτου», ἤρξατο δὲ κατ' αὐτοῦ σφοδρὸν ἀγῶνα. Παρ' ὅλα ταῦτα ὁ Μπουλανζὲ ἐξελέγη ἐκ νέου βουλευτής. Κατά τινα συζήτησιν ἐν τῇ βουλῇ προεκλήθη μονομαχία μεταξὺ αὐτοῦ καὶ τοῦ Φλοκέ, καθ' ἣν ἐτραυματίσθη. Τῷ 1889 ἀπηγγέλθη κατ' αὐτοῦ κατηγορία ὡς ἐνεργοῦντος κατὰ τῆς ἀσφαλείας τοῦ κράτους καὶ κατεδικάσθη ὑπὸ τῆς γερουσίας εἰς ἰσόβια δεσμά. Ὁ Μπουλανζέ, ὅστις εἶχε καταλίπει τὴν Γαλλίαν πρὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς συνεδριάσεως, ἐγκαταλειφθεὶς παρ' ὅλων, εὗρε καταφύγιον εἰς τὸ Βέλγιον, εἶτα δὲ περιεπλανᾶτο ἐξόριστος εἰς Λονδῖνον καὶ Ζέρσεϋ. Τῷ 1891 ἐπέστρεψεν εἰς Βρυξέλλας, ὅπου ηὐτοκτόνησεν ἐπὶ τοῦ τάφου τῆς πρό τινων ἑβδομάδων ἀποθανούσης ἐρωμένης του. Θ. Β.

**—Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Γουσταῦος-Ροδόλφος-Κλαρέντιος.*** Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1824—1888). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Παύλῳ Ντελαρὸς καὶ τῷ Ζολλιβέ, ἔτυχε δὲ τοῦ μεγάλου βραβείου Ῥώμης τῷ 1849. Τῷ 1857 ἐξέθηκεν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν τὴν: «Πρόβαν ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ τραγικοῦ ποιητοῦ ἐν Πομπηΐᾳ», ἔργον ὅπερ προὐκάλεσε τὸ ἐνδιαφέρον τῶν φιλοτέχνων διὰ τὴν βαθεῖαν αἴσθησιν τῆς ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος, τὴν ὁποίαν ὑπενέφαινε. Βραδύτερον ὁ Μπουλανζὲ ἐτράπη πρὸς ἄλλον κύκλον θεμάτων ἐταξίδευσεν εἰς τὴν Ἀνατολὴν καὶ ἀπέδωκε χαρακτηριστικὰς σκηνὰς τοῦ ἀνατολικοῦ βίου, ἂν ὄχι μετ' ἄκρας ψυχολογικῆς ἐπιτυχίας, πάντως μετ' ἐξαιρέτου αἰσθήσεως τοῦ γραφικοῦ. Τῷ 1882 ὠνομάσθη μέλος τῆς γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Ἕτερα ἀξιομνημόνευτα ἔργα του εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «Ἄραβες βοσκοί», «Κατατρόπωσις Καβύλων», «Οἱ ἱππεῖς τῆς Σαχάρας» κ.λ.π. Ι. Μ. Π.

**— Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Ἱππόλυτος.*** Βέλγος ζωγράφος (1837—1874). Διέπρεψεν ὡς τοπιογράφος καὶ ὑπῆρξεν ὁ ἀρχηγὸς τῆς σχολῆς τοῦ Tervueren, ἥτις παρουσιάζει ἀναλογίας πρὸς τὴν σχολὴν τῶν Γάλλων τοπιογράφων τῆς Μπαρμπιζόν. Ἡ φροντὶς πρὸς ἀπόδοσιν τῆς ἀληθοῦς καὶ αὐθορμήτου φύσεως κυριαρχεῖ εἰς ἀμφοτέρας. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων ἔργων τοῦ Μπουλανζὲ τάσσονται: «Τὸ ἄκρον τοῦ δάσους», «Ἄποψις τοῦ Ντινάν», «Ἡ δενδροστοιχία τῶν ζυγιῶν» (ἅπαντα ἐν τῷ Μουσείῳ τῶν Βρυξελλῶν), «Βράχοι ἐν Φαλμάν», «Ἄποψις τοῦ Ἄντεργκεμ», «Ἄποψις τοῦ Boitsfort», «Ἡ πλημμύρα», «Ἡ λειτουργία τοῦ Ἁγίου Οὐμβέρτου», «Τὸ πρωΐ». Ι. Μ. Π.

**— Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Λιλή.*** Γαλλὶς συνθέτις (1893—1918). Πρώτον βραβεῖον τῆς Ῥώμης τοῦ ᾠδείου τῶν Παρισίων, ἀφῆκεν ἔργα διακρινόμενα διὰ τὸ βάθος τῆς ἐκφράσεως των. Μεταξὺ τούτων, ἡ βραβευθεῖσα καντάτα «Φάουστ καὶ Ἑλένη», «Στρατιωτικὴ κηδεία», ἑξάχος ἐμπνευσμένον ἔργον, «Παλαιὰ βουδικὴ προσευχή», τὸ πεντάπρακτον μελόδραμα: «Πριγκίπισσα Μαγδαληνή», 3 ψαλμοὶ διὰ χορῳδίαν, ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον καὶ ὀρχήστραν κ. τ. λ. Ἡ ἀδελφή της *Νάντια*, (1887), δεύτερον βραβεῖον τῆς Ῥώμης, ἐν τῷ ᾠδείῳ τῶν Παρισίων, διεκρίθη ἐπίσης ὡς συνθέτις δι' ἑνὸς «Ρωσικοῦ κοντσέρτου» διὰ κλειδοκύμβαλον, ἑνὸς μελοδράματος ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ραοὺλ Πυνιὼ κ. τ. λ. Γ. Σ.

**— Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος ζωγράφος (1806—1867). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Λετιὲρ καὶ τῷ Α. Ντεβεριά, ἐνεφανίσθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ παρισινὸν Σαλὸν τῷ 1827 διὰ τοῦ ρωμαντικοῦ πί ακος «Ὁ Μαζέππας», ἔργου πλήρους ὁρμητικῆς κινήσεως. Ἐξειργάσθη συνθέσεις ἀλληγορικὰς καὶ θρησκευτικὰς, ἔτι δ' ἀξιολογωτάτας προσωπογραφίας. Τῷ 1860 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς ἐν Ντιζὸν σχολῆς τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ θρίαμβος τοῦ Πετράρχου», «Οἱ τρεῖς ποιητικοὶ ἔρωτες» (Βεατρίκη τοῦ Δάντου, Λάουρα τοῦ Πετράρχου καὶ Ὀρσολίνα τοῦ Ἀριόστου), «Ὁ Οὐγολῖνος καὶ τὰ παιδιά του», «Ὁ ἅγιος Μᾶρκος», «Ἡ Παναγία τοῦ Ἐλέους», «Mater dolorosa», «Βίκτωρ Οὐγκώ», «Μπαλζάκ», «Ἀλέξανδρος Δουμᾶς πατήρ». Ι. Μ. Π.

**—Μπουλανζὲ** (Boulanger), ***Νικόλαος-Ἀντώνιος.*** Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1722 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1759. Μετὰ τὴν ἀποφοίτησίν του ἐκ τοῦ κολλεγίου τοῦ Μπωβαί, ἠκολούθησε μαθήματα ἀρχιτεκτονικῆς καὶ μαθηματικῶν καὶ ἐγένετο μηχανικός. Προσβληθείσης ὅμως τῆς ὑγείας του ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ τοῦ ἐπαγγέλματος τούτου καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν τῶν γεωλογικῶν φαινομένων. Τῷ 1761 ἐξέδωκεν ἐν Παρισίοις τὸ ἔργον: «Recherches sur l'origine du despotisme oriental» μετ' ὀλίγα δ' ἔτη τὸ σύγγραμμα: «L' antiquité dévoilée par ses usages ou examen des principales opinions, cérémonies et institutions religieuses et politiques des différents peuples de la terre» (1766, τόμ. 3). Ἡ θεμελιώδης γνώμη τοῦ συγγραφέως εἶναι ὅτι ὅλαι αἱ θρησκευτικαὶ ἔννοιαι τῶν διαφόρων λαῶν προέρχονται ἐν τελευταίᾳ ἀναλύσει ἐκ τῶν φυσικῶν καταστροφῶν καὶ κακουχιῶν, τῶν ὁποίων ἡ φρίκη καὶ ἡ παράδοσις διετηρήθη ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεάν. Ἀπαντήσεις εἰς τὴν «Antiquité dévoilée» ἐδημοσιεύθησαν δύο: ὑπὸ τοῦ F. d'Autrey: «L'antiquité justifiée» (1776) καὶ ὑπὸ τοῦ J. M. Le Gros: «Analyse et examen de «L'antiquité dévoilée», du «Despotisme oriental» et du «Christianisme dévoilé», ouvrages posthumes de Boulanger» (1788). Εἰς τὸν Μπουλανζὲ ἀποδίδονται πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἔργων καὶ τὰ ἑξῆς: «Le christianisme dévoilé», «Cruauté religieuse» «Ésope fabuliste ou dissertation sur les incertitudes qui concernent les premiers écrivains de l'antiquité», «Traité mathématique du bonheur», «Essai philosophique sur le gouvernement», «Histoire d'Alexandre», «Dissertations sur saint Roch et sainte Geneviève», «Dictionnaire analogique», «Histoire naturelle du cours de la Marne et du cours de la Loire», «Anecdotes de la nature». Ἀλλὰ τὸ ζήτημα τῆς αὐθεντικότητος τῶν ἔργων τούτων, τὰ ὁποῖα καὶ συμπεριελήφθησαν εἰς τὰ «Ἅπαντά» του παραμένει ἄλυτον. —Π.

**Μπουλανὶκ** *[Γεωγρ.].* Ὑποδιοίκησις τῆς Τουρκίας, μετονομασθεῖσα σήμερον εἰς *Μπαγτσέ*, ὑπαγομένη δὲ εἰς τὸν νομὸν Δζεμπὲλ-Μπερεκὲτ (τῆς Κιλικίας). Κάτ. 15.540 (1927). Ν. Μ.

**Μπουλαντὰν** *[Γεωγρ.].* Κωμόπολις τῆς Λυδίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, κειμένη ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ Μαιάνδρου καὶ συνδεομένη δι' ἁμαξιτῶν, πρὸς τὰ ΒΔ. μὲν μετὰ τῆς Φιλαδελφείας, πρὸς Ν. δὲ μετὰ τοῦ Σεραΐ, ἐκεῖθεν δὲ περαιτέρω μετὰ τῆς Ὀρτάντζης-Ναζλὶ-Ἀϊδινίου ἀφ' ἑνὸς καὶ μετὰ τοῦ Ντενισλὶ ἀφ' ἑτέρου. Τὸ Μπουλαντὰν κατελήφθη τῇ 22 Ἰουνίου 1920 ὑπὸ τμήματος τῆς ΙΙ ἑλληνικῆς μεραρχίας, ἀπωθήσαντος τὸ κατέχον αὐτὸ τουρκικὸν τμῆμα μετὰ συμπλοκήν. Βραδύτερον, τῆς ΙΙ μεραρχίας προελασάσης πρὸς Οὐσάκ, τμῆμα τῆς Ι μεραρχίας κατέλαβε τὸ Μπουλαντάν. Ἔκτοτε εἰς αὐτὸ παρέμενον σημαντικαὶ ἑλληνικαὶ δυνάμεις πρὸς κάλυψιν ἀπὸ νότου τοῦ τμήματος τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Φιλαδελφείας—Ἐνδανλάρ, ὅπου καὶ τὰ σπουδαιότερα τεχνικὰ ἔργα αὐτῆς. Κατὰ τὸ 1922 ὁ τομεὺς τοῦ Μπουλαντὰν ὑπήχθη αὖθις ὑπὸ τὴν ΙΙ μεραρχίαν, ἑδρεύουσαν εἰς Οὐσάκ. Τῇ 6 Αὐγούστου 1922 οἱ Τοῦρκοι ἐπετέθησαν αἰφνιδίως κατὰ τοῦ τομέως Μπουλαντὰν καὶ δὴ κατὰ τοῦ προγεφυρώματος τῆς Ὀρτάντζης ἐπὶ σκοπῷ νὰ προσελκύσωσι πρὸς τὰ ἐκεῖ τὴν προσοχὴν τῆς ἀνωτέρας ἑλληνικῆς διοικήσεως. Κατὰ τὴν γενικὴν ὑποχώρησιν τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ (Αὔγουστος 1922) τὰ στρατεύματα τοῦ τομέως Μπουλαντὰν ἀπεσύρθησαν πρὸς Φιλαδέλφειαν, μόνον δὲ τὸ τάγμα Ὀρτάντζης ἀπεχώρησε πρὸς Ἀϊδίνιον. Ν. Κ. ΣΠΥΡΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπουλαργοί,** *Ἄνω — [Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Οἰτύλου τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 218. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία καὶ συνοικισμοὺς *Κάτω Μπουλαργοί, Δίπορτον, Λεοντάκι* καὶ *Πέπων.* Χ. Δ.

**—Μπουλαργοί, Κάτω—** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Ἄνω Μπουλαργῶν τῆς ἐπαρχίας Οἰτύλου τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 104. Χ. Δ.

**Μπουλασὶκ-ἀντὰ** *[Γεωγρ.].* Νῆσος τοῦ κόλπου τῆς Σμύρνης, μία τῶν *Μαραθουσῶν* (πλάτ. 38°25'10" Β.) μῆκ. 26°28'40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1645: The island of Khios and Gulf of Smyrna), ἡ ἄλλως *Γιελενί.* Σ. Ε. Λ.

**Μπουλὰτ-κιοΐ** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ροδόπης χωρίου *Ἀσώματος* (βλ. λ.).

**Μποῦλβερ** (Bolwer), *σὲρ* ***Ἐρρῖκος-Ἐρνέστος.*** Ἄγγλος διοικητικὸς (1836—1914). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὰς Ἰονίους νήσους (1860—1864), εἶτα δὲ εἰς διαφόρους ἀποικίας. Διετέλεσε γενικὸς ταμίας εἰς Τρίνινταντ, προσωρινὸς διοικητὴς τῆς Ντομίνικα, κυβερνήτης τοῦ Λαμπουάν, γενικὸς πρόξενος τῆς Μ. Βρεττανίας εἰς Βόρνεο, ὑποδιοικητὴς καὶ εἶτα διοικητὴς τῆς Νατάλης καὶ μέγας ἁρμοστὴς Κύπρου (1886—1892). ΑΧ. Κ. Α.

**— Μποῦλβερ-Λύττον** (Bulwer-Lytton), Ἀγγλικὴ οἰκογένεια κομίτων (βλ. λ. *Λύττον*).

**Μπουλγκάκωφ,** ***Σέργιος Νικολάγιεβιτς.*** Ρῶσος οἰκονομολόγος καὶ φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1872. Κατ' ἀρχὰς μαρξιστὴς μετ' ἐπιφυλάξεων, διετέλεσε βραδύτερον μετὰ τοῦ Π. Στροῦβε καὶ τοῦ Τουγκὰν Μπαρανόβιτς εἷς τῶν κυριωτέρων ἐκπροσώπων τοῦ λεγομένου «νομίμου μαρξισμοῦ». Τῇ βοηθείᾳ τῆς μαρξιστικῆς οἰκονομικῆς θεωρίας προσεπάθησε ν' ἀποδείξῃ, εἰδικῶς διὰ τὴν Ρωσίαν, ὄχι μόνον τὴν ἀναγκαιότητα τῆς κεφαλαιοκρατικῆς ἐξελίξεως, ἀλλὰ καὶ τὴν δυνατότητα τῆς ἐπ' ἄπειρον διατηρήσεως τοῦ καπιταλισμοῦ. Οὕτως ἐξῆρε τὴν «ἐκπολιτιστικὴν ἀποστολὴν» τῆς κεφαλαιοκρατίας καὶ ἠξίωσε τὴν ὑποστήριξιν τῆς φιλελευθέρας ἀστικῆς τάξεως. Εἰς τὴν πρώτην οἰκονομολογικὴν αὐτοῦ μελέτην «Περὶ τῶν ἀγορῶν τοποθετήσεως τῶν καπιταλιστικῶν προϊόντων» (1897) παραμένει εἰσέτι ὀπαδὸς τῶν δοξασιῶν τοῦ Καρόλου Μάρξ. Μετ' οὐ πολὺ ὅμως, ἰδίως εἰς τὸ δίτομον ἔργον του «Καπιταλισμὸς καὶ γεωργία» (1900), ἐκηρύχθη ἐναντίον τῶν δοξασιῶν τοῦ Μὰρξ καὶ ἀπεπειράθη νὰ ἀποδείξῃ τὸ ἀδύνατον τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μαρξικῶν ἀρχῶν εἰς τὸ ἀγροτικὸν ζήτημα.

Ἡ μετάστασις τοῦ Μπουλγκάκωφ ἐκ τοῦ μαρξισμοῦ εἰς τὸν ἰδεαλισμὸν δὲν ἀπετέλεσε τὸ τελευταῖον στάδιον τῆς διανοητικῆς αὐτοῦ ἐξελίξεως, διότι ὀλίγον βραδύτερον ἀπεδέχθη τὸν μυστικισμόν, μετὰ δὲ τὴν ἀτυχῆ ἔκβασιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1905, ἀπεσύρθη εἰς μοναστήριον. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ὀκτωβρίου ὁ Μπουλγκάκωφ ἐγκατέλειψε τὴν πατρίδα του ὡς ἀντεπαναστάτης. Ι. Ι. Ι.

**Μπουλγκάριν,** ***Θαδαῖος Βενεδίκτοβιτς.*** Ρῶσος συγγραφεύς, πολωνικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Μίνσκ τῷ 1789 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1859. Γενόμενος ἀξιωματικός, μετέσχεν εἰς τὰς ἐκστρατείας κατὰ τοῦ Ναπολέοντος (1805—1807). Κατὰ τὸ 1810 παραιτηθεὶς τοῦ στρατοῦ ἐγκατεστάθη εἰς Βαρσοβίαν καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὰς πολωνικὰς λεγεῶνας, πολεμήσας εἰς Ἰταλίαν, Ἱσπανίαν καὶ Γερμανίαν. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν τῆς εἰρήνης ἐπέστρεψεν εἰς Ρωσίαν καὶ συνέγραψε πολυάριθμα μυθιστορήματα ἱστορικῶν ὑποθέσεων, δημοσιευθέντα τὰ πλεῖστα εἰς τὰ περιοδικὰ «Ἀρχεῖα τοῦ Βορρᾶ» καὶ «Μέλισσα τοῦ Βορρᾶ». Τὸ τελευταῖον τοῦτο περιοδικὸν εἶχεν ἱδρύσει μετὰ τοῦ Γκρὲτς, διηύθυνε δὲ αὐτὸς τὸ κριτικὸν τμῆμα. Ὁ Μπουλγκάριν ἐκέκτητο γόνιμον καὶ εὔστροφον τάλαντον, ἀλλ' ἡ κουφότης καὶ ἡ ἐξαγοραζομένη κριτική του, τὸ δουλοπρεπὲς τοῦ χαρακτῆρός του καὶ αἱ σχέσεις του μετὰ τῆς μυστικῆς ἀστυνομίας ἐδημιούργησαν εἰς αὐτὸν πολυαρίθμους ἐχθρούς, ὁ δὲ Πούσκιν τὸν ἐστιγμάτισε δι' ἀθανάτου ἐπιγράμματος. Βραδύτερον διηύθυνε τὴν «Ρωσικὴν Θάλειαν». Ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του τὰ κάλλιστα εἶναι: «Οἱ ψευδοδημήτριοι». «Ὁ Μαζέππας», «Ὁ Ἰβὰν Βυζέγκιν ἢ ὁ Ρῶσος Ζὶλ-Μπλὰς» κτλ. Πρὸς τούτοις ἐδημοσίευσε καὶ «Ἀπομνημονεύματα» εἰς ἓξ τόμους. Θ. Β.

**Μπουλγκὰρ-ντὰγ** (Bulgar-dagh) *[Γεωγρ.].* Ὀροσειρὰ τῆς μεσημβρινῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἀνήκουσα εἰς τὸν Ταῦρον τῆς Κιλικίας. Ὑπέρκειται τοῦ κόλπου τῆς Μερσίνας καὶ ἔχει ὑψηλοτέραν κορυφὴν τὸ *Μεντελὶς* ἢ *Μεντιλὶς-ντὰγ* (3.500 μ.). Χ. Δ.

**Μποῦλε** (Buhle), ***Γιόχαν-Γκόττλιμπ.*** Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς ἐν Μπρούνσβικ (1763—1821). Ἐδίδαξε τὴν φιλοσοφίαν κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν Γοττίγγην καὶ κατόπιν εἰς Μπρούνσβικ. Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν διδασκαλίαν τοῦ Κάντ, ἐν γένει ὅμως προσέφερε πολλὰς ὑπηρεσίας εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς φιλοσοφίας. Ἔγραψεν ἑξάτομον «Ἱστορίαν τῆς νεωτέρας φιλοσοφίας» (1800—1805, κατ' ἀνάθεσιν τῆς Ἀκαδημίας τῆς Γοττίγγης), «Ἱστορίαν τοῦ φιλοσοφικοῦ λόγου» καὶ «Ἐγχειρίδιον τῆς Ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας» (8 τόμ.). Ἐπίσης ἄφησεν ἡμιτελῆ μεγάλην ἔκδοσιν τοῦ Ἀριστοτέλους ἧς ἐδημοσιεύθησαν μόνον πέντε τόμοι.

**μπουλέτο** (τό) δημοτ., ἄλλως *μπιλιέτο* (ἐκ τοῦ ἰταλ. bulletta).

Digitized by Google

**Μπουλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Ἀστρίτσα* (βλ. λ.).

**Μποῦλλε** (Bulle), ***Ἔρρῖκος***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἐπεδόθη ἰδίως εἰς τὴν μελέτην τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς γλυπτικῆς, συγγράψας ἀξιόλογα περὶ αὐτῆς βιβλία. Παραμείνας ἐπὶ πολὺ ἐν Ἑλλάδι, διενήργησε τὰς ἀνασκαφὰς τοῦ Ὀρχομενοῦ καὶ ἐμελέτησε διάφορα μνημεῖα τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ κόσμου. Καθηγητὴς ἤδη ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βυρτσβούργου, ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Die Silene in der archaischen Kunst der Griechen» (1893), «Klingers-Beethoven und die farbige Plastik der Griechen» (1903), «Orchomenos» (1907), «Archaische griechische Rund-Plastik» (1918), «Ein neuen Weg zu Phidias» (1922), «Untersuchungen an griechischen Theatern» (1926), «Das Bildnis des Socrates». Τὸ σπουδαιότερον ὅμως καὶ πολυτιμότερον ἔργον τοῦ Μποῦλλε εἶναι τὸ «Der Schöne Mensch im Altertum», σειρὰ πινάκων τῶν σπουδαιοτέρων ἀρχαίων ἀγαλμάτων. Β. Δ. Θ.

**Μποῦλλεν** (Bullen), ***Φράγκ-Θωμᾶς***. Ἄγγλος συγγραφεὺς (1857—1915). Κατ' ἀρχὰς ναυτικὸς τὸ ἐπάγγελμα, εἰργάσθη ἰδίως εἰς φαλαινοθηρικὰ πλοῖα. Ὡς συγγραφεὺς ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον τῷ 1898 διὰ τοῦ ἔργου «Τὸ ταξίδι τοῦ Κατσελότ», κατόπιν δ' ἔγραψε τὰ «Εἰδύλλια τῆς θαλάσσης», «Ὁ ἀρχιμάγειρος τοῦ πλοίου» (1912) κ. ἄ. Γ. Ι. Β.

**Μποῦλλερ** (Buller), *σὲρ* ***Ρήντβερς-Ἔρρῖκος***. Ἄγγλος στρατηγὸς (1839—1908). Ἔλαβε μέρος εἰς διαφόρους πολέμους ἐν Ἀφρικῇ, καθ' οὓς διεκρίθη, τῷ δὲ 1899, ἐκραγέντος τοῦ κατὰ τῶν Μπόερς πολέμου, ἀνέλαβε τὴν ἀνωτάτην ἀρχηγίαν τῶν ἀγγλικῶν στρατευμάτων. Ἀποτυχὼν ὅμως εἰς τὴν πρώτην του ἀπόπειραν, ὅπως διαβῇ τὸν ποταμὸν Τουγκέλα, ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ λόρδου Ρόμπερτς καὶ περιωρίσθη εἰς τὴν διεύθυνσιν τῶν ἐν Νατάλῃ στρατιωτικῶν δυνάμεων. Ἐπιχειρήσας κατόπιν ν' ἀπελευθερώσῃ τὴν πόλιν Λαίντυσμιθ ἀπὸ τοὺς Μπόερς (10—27 Ἰανουαρίου 1900), ὑπέστη δευτέραν ἀποτυχίαν. Μολονότι δὲ ἡ κατόπιν δρᾶσίς του κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις ὑπῆρξεν ἀξιέπαινος, ἡ μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς Ἀγγλίαν τοποθέτησίς του ὡς διοικητοῦ τοῦ στρατοπέδου Ὥλντερσοτ ἐσχολιάσθη δυσμενῶς ὑπὸ τῆς κοινῆς γνώμης. Μετά τινα χρόνον ἀπεστρατεύθη. Γ. Ι. Β.

**μπουλλίνι** (τὸ) *[Ἐγκυκλ.]*. Δισκία ζύμης πρὸς προσκόλλησιν τῶν ἐπιστολῶν (βλ. λ. *βουλλίνι* καὶ *ἀζυμοσφραγίς*).

**Μπουλλόνι**, ἢ ***Μπουλόνι*** (Boullongne ἢ Boulongne ἢ Boulogne). Οἰκογένεια Γάλλων καλλιτεχνῶν τοῦ ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνος, ἧς σημαντικώτατοι ἐκπρόσωποι ὑπῆρξαν οἱ ἀκόλουθοι:

—1) ***Λουδοβῖκος Μπουλλόνι***, ὁ ἐπικαλούμενος πρεσβύτερος ἢ πατὴρ Μπουλλόνι, ζωγράφος καὶ χαράκτης (1609—1674). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἰακώβῳ Μπλανσάρ, συνεπλήρωσε δὲ τὴν καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν ἐν Ἰταλίᾳ, ἔνθα ἐξεπόνησε πολυπληθῆ ἀντίγραφα τῶν λειψάνων τῆς ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος καὶ τῶν πινάκων τῶν μεγάλων διδασκάλων τῆς Ἀναγεννήσεως. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους ἀνέλαβεν, ἐντολῇ τοῦ Κολμπέρ, τὴν ἀνακαίνισιν τοῦ τμήματος ἐκείνου τῆς μεγάλης στοᾶς τοῦ Λούβρου, ὅπερ, ἐκτελεσθὲν ὑπὸ τοῦ Πουσσέν, κατεστράφη ὀλίγῳ βραδύτερον ἐκ πυρκαϊᾶς. Ἐπὶ πλέον εἰργάσθη ἐν Βερσαλλίαις καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν δέκα νεωτέρων ἀκαδημαϊκῶν, οἵτινες ἑνωθέντες μετὰ τῶν δέκα παλαιοτέρων ἵδρυσαν τὴν περίφημον παρισινὴν Ἀκαδημίαν τῆς ζωγραφικῆς. Τὰ ἔργα του διακρίνονται διὰ τὴν ἁρμονικὸν χρωματισμόν, τὸ καθαρὸν σχέδιόν των καὶ τὴν ἐπίπονον ἀναζήτησιν ὕφους. Ὁ Λουδοβῖκος Μπουλλόνι, πλὴν τῶν υἱῶν του, ἔσχε καὶ δύο θυγατέρας, τὴν *Γενεβιέβην* (1645—1708) καὶ τὴν *Μαγδαληνὴν* (1646—1710), αἵτινες πολλάκις τὸν ἐβοήθησαν εἰς τὴν ἐκτέλεσιν εὐρειῶν συνθέσεων.

—2) ***Μπὸν Μπουλλιόνι***, ζωγράφος καὶ χαράκτης, πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1649—1717). Ἐμαθήτευσε πλησίον τοῦ πατρός του, συνεπλήρωσε δὲ τὰς καλλιτεχνικάς του σπουδὰς ἐν Ἰταλίᾳ δαπάναις τοῦ γαλλικοῦ κράτους. Παραμείνας ἐπὶ πενταετίαν ἐν Ρώμῃ, μετέβη μετὰ ταῦτα εἰς Βολωνίαν, ἔνθα ἐμελέτησε τὴν ἄκρως τότε ἐκτιμωμένην τεχνοτροπίαν τῶν ἐκπροσωπούντων τὴν σχολὴν τῆς πόλεως ταύτης καλλιτεχνῶν. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους ἐγένετο δεκτὸς (1677) εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς ζωγραφικῆς εἰς ἡλικίαν 28 μόλις ἐτῶν διὰ πίνακος εἰκονίζοντος τὴν «Μάχην Ἡρακλέους καὶ τῶν Κενταύρων» καὶ ἀποκειμένου νῦν εἰς τὸ Μουσεῖον τοῦ Λούβρου. Ὀλίγον βραδύτερον κατέλαβε τὰ ἀνώτερα ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ ταύτῃ ἀξιώματα, τιμηθεὶς τῷ 1692 διὰ τοῦ τίτλου τοῦ καθηγητοῦ. Ὑπῆρξε καλλιτέχνης παραγωγικώτατος, ἀλλὰ δὲν ἠδυνήθη νὰ παρουσιάσῃ ἔργον ἀπηλλαγμένον ξηρᾶς τινος συμβατικότητος. Παρὰ τοῦτο ἐγνώρισε τὸν πλοῦτον καὶ τὴν φήμην, ὅσον ὀλίγοι καλλιτέχναι τῶν χρόνων του. Εἰργάσθη ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Λεμπρὲν ἐν Βερσαλλίαις, ἐξετέλεσε μυθολογικὰς παραστάσεις εἰς τὸ Τριανὸν καὶ διεκόσμησε, πλὴν παμπόλλων ἄλλων, τὰ παρεκκλήσια τῶν ἁγίων Ἱερωνύμου καὶ Ἀμβροσίου εἰς τὸ ἐν Παρισίοις Μέγαρον τῶν Ἀπομάχων.

—3) ***Λουδοβῖκος ντὲ Μπουλλόνι***, νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. (1654—1733). Τῷ 1672, εἰς ἡλικίαν μόλις δέκα ὀκτὼ ἐτῶν, ἔτυχε τοῦ πρώτου μεγάλου βραβείου τῆς ζωγραφικῆς ἐξ ἀφορμῆς πίνακος εἰκονίζοντος τὴν «Διάβασιν τοῦ Ρήνου», τριετίαν δὲ μετὰ ταῦτα μετέβη εἰς Ρώμην, ἐξ ἧς ἀπέστειλεν εἰς τὰ ταπητουργεῖα τῶν Γκομπελὲν σχεδιάσματα τῶν μεγάλων συνθέσεων τοῦ Ραφαήλ. Μετὰ πενταετῆ παραμονὴν ἐν Ρώμῃ ἐπεσκέφθη τὴν Βενετίαν καὶ τὴν Λομβαρδίαν, ἐπανελθὼν δ' εἰς Παρισίους ἐξεπόνησε διαφόρους συνθέσεις διὰ τὰ ἀνάκτορα τῶν Βερσαλλιῶν, κατ' ἐντολὴν τοῦ Κολμπέρ. Εἰσελθὼν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς ζωγραφικῆς, ἐγένετο τῷ 1693 καθηγητὴς καὶ τῷ 1722 διευθυντὴς ταύτης. Τόσον ὑπὸ Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ' ὅσον καὶ ὑπὸ Λουδοβίκου τοῦ ΙΕ' ἐπληρώθη τιμῶν καὶ δωρεῶν. Ὁ πρῶτος τῶν βασιλέων τούτων ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τίτλον εὐγενείας, ὁ δὲ δεύτερος τὸν ὠνόμασε πρῶτον ζωγράφον τῆς βασιλικῆς αὐλῆς. Ὁ Λουδοβῖκος ντὲ Μπουλλόνι ὑπῆρξε καλλιτέχνης παραγωγικώτατος, ἀλλ' ἐστερημένος πρωτοτυπίας. Ἐκ τῶν ἔργων του μνημονεύομεν τὸν «Ἑκατόνταρχον παρακαλοῦντα τὸν Ἰησοῦν νὰ σώσῃ τὸν δοῦλόν του» καὶ τὸν «Αὔγουστον κλείοντα τὸν ναὸν τοῦ Ἰανοῦ». Ι. Μ. Π.

**Μπούλμερινκ** (Bulmerincq), ***Αὔγουστος φὸν***—. Γερμανὸς νομομαθής, γεννηθεὶς ἐν Ρίγᾳ (1822—1890). Τῷ 1858 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τοῦ δημοσίου καὶ διεθνοῦς δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ντόρπατ τῆς Ἐσθονίας καὶ τῷ 1882 ἐν Ἀϊδελβέργῃ τῆς Γερμανίας. Ἔγραψε: «Τὸ δίκαιον τῆς ἀσυλίας ἐν τῇ ἱστορικῇ του ἐξελίξει» (1853), «Τὸ διεθνὲς δίκαιον» (1884) κ.ἄ. Π. Χ. Χ.

**μπουλμὲς** (ὁ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *διαφράγματος* (βλ. λ.).

**Μπουλμὲς** *[Γεωγρ.]*. Μικρασιατικὸν ἀκρωτήριον τῆς βορείας ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Ἐφέσου (πλάτ. 38° 02' Β., μῆκ. 26° 53' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 3446: Paspargo islet to Samos) χωρίζον τοὺς κόλπους τῆς Λεβέδου καὶ τοῦ Ζιγαζίκ. Εἶναι ἡ τῶν ἀρχαίων *Μάκρις*. Σ. Ε. Λ.

**Μπουλμέτι Ζερβὸ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Πρεβέζης χωρίου *Γαλατᾶς* (βλ. λ.).

**μπούλμπερη** (ἡ)· δημοτ. (λησμονηθὲν ἤδη), πυρῖτις || τέφρα, στάχτη· φρ. «στάχτη καὶ μπούλμπερη νὰ γίνῃ» παντελῶς νὰ ἀφανισθῇ (ἰταλ. polvere).

**Μπουλόνι** (Boulogne) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βουλώνη*.

— **Μπουλόνι-Μπιλλανκοὺρ** (Boulogne-Billancourt) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δοθὲν ἀπὸ τοῦ 1925 εἰς τὴν ἐν Γαλλίᾳ πόλιν *Μπουλόνι-σὺρ-Μὲρ* (βλ. λ. *Βουλώνη* ἢ ἐπὶ τοῦ Σηκουάνα).

**μπουλονάρω**. Στερεῶ διὰ βλήτρων τριβέα μηχανῆς, πυργίον φάρου, ἐπὶ τῆς ἐκ σκυροκονιάματος βάσεώς του. Σ. Ε. Λ.

**μπουλόνι** (τὸ) (γαλλ. boulon)· σιδηροῦν, ἢ καὶ ἐξ ἄλλου μετάλλου κυλινδρικὸν στέλεχος, χρησιμεῦον διὰ τὴν πρὸς ἄλληλα σύνδεσιν τῶν μερῶν μεταλλίνης τινὸς ἢ ξυλίνης κατασκευῆς, ἢ διὰ τὴν θεμελίωσιν αὐτῆς ἐπὶ βάθρου. Τὸ ἐν ἄκρον τοῦ στελέχους ἀπολήγει εἰς κεφαλὴν μεγαλυτέρας διαμέτρου, τὸ δὲ ἕτερον ἄκρον αὐτοῦ εἶναι ἑλικοτομημένον καὶ φέρει περικόχλιον, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπιτυγχάνεται ἡ ἀπαιτουμένη σύσφιγξις. Διὰ τὴν θεμελίωσιν τῶν μηχανῶν ἀφήνονται κατὰ τὴν κατασκευὴν

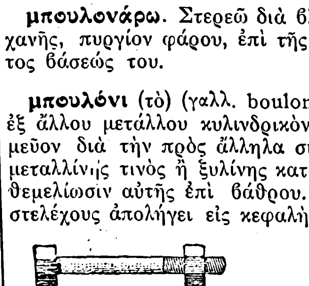

*Μπουλόνια.*

τοῦ δομικοῦ βάθρου ἐπιμήκεις κατακόρυφοι ὀπαὶ (φρεάτια), ἐντὸς τῶν ὁποίων εἰσάγονται τὰ μπουλόνια μὲ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν πρὸς τὰ κάτω, ἀποπληροῦνται δὲ κατόπιν αἱ ὀπαὶ διὰ τσιμέντου. Ἡ μηχανὴ τοποθετεῖται κατόπιν ἐπὶ τοῦ βάθρου, οὕτως ὥστε τὰ ἄνω ἑλικοτομημένα ἄκρα τῶν μπουλονιῶν νὰ διέρχωνται διὰ τῶν ἐπὶ τούτῳ ὀπῶν τῆς βάσεως τῆς μηχανῆς, μεθ' ὃ ἡ στερέωσις συμπληροῦται διὰ τῆς τοποθετήσεως καὶ περισφίγξεως τῶν περικοχλίων. —Ρ.

**Μπουλονναί**, ἡ ***Μπουλενουὰ*** (Boulonnais ἢ Boulenois) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Γαλλίας, ἐκτεινομένη ἐντὸς τοῦ ἐδάφους τοῦ νομοῦ Πα-ντὲ-Καλαὶ καὶ περὶ τὴν παραλίαν πόλιν Βουλώνην. Ἐπὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων ἀνῆκεν εἰς τὴν Βελγικήν, εἶτα περιῆλθεν εἰς τὸ φραγκικὸν κράτος τῆς Νευστρίας, κατὰ δὲ τοὺς καρολιγγείους χρόνους ἀπετέλει τὴν περιοχὴν Pagus Bononiensis, μὲ πρωτεύουσαν τὴν πόλιν *Βονωνίαν* (Bononia), τὴν σημερινὴν *Βουλώνην*. Μικρὸν μετὰ ταῦτα ἀπετέλεσε φεουδαρχικὴν κομιτείαν μὲ ἰδίους ἄρχοντας, τῶν ὁποίων ὁ τελευταῖος καθῃρέθη ἐπὶ Φιλίππου-Αὐγούστου. Ἀκολούθως τὸ Μπουλονναὶ περιῆλθεν εἰς τοὺς δοῦκας τῆς Βουργουνδίας (1430—1477) καὶ τέλος ἡνώθη μετὰ τῆς Γαλλίας. Χ. Δ.

**Μπουλουβάγιο**, ἢ ***Μπουλαβάγιο*** (Buluwayo ἢ Bulawayo) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ν. Ἀφρικῆς, ἐμπορικὴ πρωτεύουσα τῆς βρεττανικῆς ἀποικίας τῆς Ν. Ροδεσίας, κειμένη ἐν Ματαμπελελάνδῃ, εἰς ἀπόστασιν 480 χλμ. ἀπὸ τῆς διοικητικῆς πρωτευούσης Σώλσμπαρυ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι κτισμένη ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως, 1.362 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης εἰς 20° 11' Ν. πλάτους καὶ 28° 41' Α. μήκους Γκρήνουϊτς, δεσπόζει δὲ πασῶν τῶν σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν πρὸς τὸ Βελγικὸν Κόνγκον (Κατάνγκα), τὴν Μοζαμβίκην, τὴν χώραν τοῦ Ἀκρωτηρίου (ἀπέχει 2.170 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως τοῦ Ἀκρωτηρίου καὶ 1.910 ἀπὸ τοῦ Πὸρτ-Ἐλίζαμπετ), τὸ Σουδὰν κλπ. Τὴν οἰκονομικὴν σπουδαιότητά της αὐξάνει ἐπίσης ἡ πλουσία εἰς χρυσωρυχεῖα καὶ βοσκὰς περιοχὴ αὐτῆς. Ἦτο παλαιὰ πρωτεύουσα τῆς φυλῆς Ματαμπελέ, τὸ δὲ ὄνομά της σημαίνει «Τόπος τοῦ φόνου». Καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Ἄγγλων τῷ 1893, ἀνῳκοδομήθη ἐπὶ τῇ βάσει τετραγωνισμένου σχεδίου 5 χλμ. πρὸς Ν. τῆς ἰθαγενοῦς πόλεως. Ἔχει ὡραῖα πάρκα, λαμπρὰ δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνεται τὸ διοικητήριον καὶ ἡ ἀγορά, μεγαλοπρεπὲς οἰκοδόμημα μετὰ πύργου 28 μ. ὕψους, δημοσίαν βιβλιοθήκην, μουσεῖον (1910), περιλαμβάνον λαμπρὰν συλλογὴν τῶν μεταλλευμάτων τῆς Ροδεσίας, δημοσίας σχολάς, ναοὺς τῶν προτεσταντῶν καὶ καθολικῶν, βοτανικὸν καὶ ζῳολογικὸν κῆπον, ἀθλητικὰ γήπεδα κλπ. Εἰς ἀπόστασιν 45 χλμ. πρὸς Ν.ΝΑ. τῆς πόλεως κεῖται ὁ τάφος τοῦ Σέσιλ Ρόντ, τοῦ ὁποίου χάλκινος ἀνδριὰς κοσμεῖ τὴν πόλιν. Κάτ. 20.000 περίπου, ἐξ ὧν 7.650 λευκοί, 1000 περίπου Ἰνδοί, οἱ δὲ λοιποὶ Νέγροι ἰθαγενεῖς. Χ. Δ.

**μπουλοῦκος** (ὁ)· παχουλός, χονδρός || «μπουλοῦκό μου» εἰρωνικῶς ἢ θωπευτικῶς.

**Μπουλούμπασης**, ***Βασίλειος***. Ἀγωνιστὴς ἐν Ρούμελης (βλ. λ. *Βασίλειος* Μπουλούμπασης, τ. ΣΤ', σ. 777 β').

**Μπούλτση** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Ἐλάτη* (βλ. λ.).

**μπούμα** (ἡ). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸν ἐπίδρομον (τὸ ἱστίον)· || ἐν τῷ πληθ. *μποῦμες* τά τε ἡμιόλια (γκλίζες) καὶ ὁ ἐπίδρομος συλλήβδην. Σ. Ε. Λ.

**Μπούμης** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Ζιντζιρέλλος, κάβο*—.

**Μπούμιστον** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἀκαρνανίας (ὕψ. 1.581 μ.). Ὑψούμενον εἰς τὴν σημερινὴν περιφέρειαν τοῦ Ξηρομέρου, καταπίπτει πρὸς Δ. πρὸς τὸ Ἰόνιον πέλαγος. Ι. Σ. Σ.

**Μπούμπα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κούμανης τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας ἔχον δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 263. Χ. Δ.

**Μπουμπᾶ ντὰγ** *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ἐκφυόμενον ἀπὸ τῆς ὀροσειρᾶς τοῦ Κάδμου (Χώνας ντὰγ) καὶ κατευθυνόμενον ἀπὸ ΒΔ. πρὸς ΝΑ. Ἔχει ὕψος 2.300 μ. Εἶναι ὁ ἀρχαῖος *Σάλβακος*. Κ. Λ.

**Μπουμπαρὲκ-Σάχ**. Ὄνομα δύο ἡγεμόνων τοῦ Δελχὶ (Ἰνδοστάν). Ὁ πρῶτος ἡγεμόνευσεν ἀπὸ τοῦ 1318 μέχρι τοῦ 1322, ὁ δεύτερος ἀπὸ τοῦ 1421 μέχρι τοῦ 1425. Ν. Μ.

**μπουμπάρι** (τό)· δημοτ., ἔδεσμα παρασκευαζόμενον ἐκ τοῦ παχέος ἐντέρου πληρωμένου σπλάγχνων, ἰδίᾳ πνεύμονος· || κυλινδρικὸν κατασκεύασμα εἰς σχῆμα ἡμισελήνου, χρησιμοποιούμενον ἄλλοτε κατὰ τὴν κόμμωσιν τῶν γυναικῶν.

**Μπούμπουκα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μαθιᾶς (Δράγκας) τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 121.

— **Μπούμπουκα**, ἢ ***Μπάμπακα*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μανεσίου τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 207. Χ. Δ.

**μπουμπούκι** (τό)· δημοτ., ἄνθος τοῦ ὁποίου ἡ στεφάνη εἶναι ἀκόμη συνεπτυγμένη, τὸ ἄνθος πρὸ τοῦ ἀνοίξῃ, κάλυξ: «τὰ τριαντάφυλλα εἶναι ἀκόμη μπουμπούκια, δὲν ἄνοιξαν», «ἐθειάφισα τ' ἀμπέλια 'ς τὸ μπουμπούκι» προτοῦ ἀνοίξῃ τὸ ἄνθος του.

**μπουμπουκιάζω**· δημοτ. ἀποκτῶ μπουμπούκια, ἐκφύω κάλυκας: «τ' ἀμπέλια μπουμπουκίασαν»,

Digitized by Google

**Μπούμπουλας,** ἢ ***Κούνας Γεώργιος***· βλ. *Κούνας* Γεώργιος.

**Μπούμπουλης,** ***Ἀντώνιος.*** Κρὴς λόγιος καὶ κληρικὸς τοῦ ΙΖ΄ αἰῶνος. Ἐχρημάτισεν ἐφημέριος τοῦ ἐν Βενετίᾳ ὀρθοδόξου ναοῦ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου καὶ συνέθεσε: «Θρῆνον εἰς τὸν θάνατον τοῦ Ἀθηναίου εὐπατρίδου Μιχαὴλ Λίμπονα», ὅστις ἐξεδόθη ἐν Βενετίᾳ τῷ 1681. ΕΡ. Μ.

**Μπουμπουλίνα,** ***Λασκαρίνα.*** Ὑπέροχος γυναικεία προσωπικότης τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως. Θυγάτηρ τοῦ Ὑδραίου πλοιάρχου Σταυριανοῦ Πινότση καὶ τῆς Σκεύως, θυγατρὸς τοῦ ἐκ τῶν προκριτῶν τῆς Ὕδρας Κοκκίνη. Ὁ Πινότσης εἶχε φυλακισθῆ ὑπὸ τῶν Τούρκων μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1769 (τῶν Ὀρλωφικῶν), ὅταν δὲ ἡ σύζυγός του ἔμαθεν ὅτι ἦτο ἑτοιμοθάνατος, ἀπεφάσισε νὰ μεταβῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου, κατόπιν μυρίων δυσκολιῶν, ἔλαβε τέλος τὴν ἄδειαν νὰ τὸν ἐπισκεφθῇ. Ἐκεῖ, ἐντὸς τῆς φυλακῆς, ἀπὸ τὴν συγκίνησιν καὶ τοὺς κόπους, ἡ Σκεύω κατελήφθη ὑπὸ τῶν ὠδίνων τοῦ τοκετοῦ καὶ ἐγέννησε τὴν Μπουμπουλίναν (11 Μαΐου 1771), ἥτις ἐβαπτίσθη ἐν Κωνσταντινουπόλει ἀπὸ τὸν ἄρχοντα τῆς Μάνης Μούρτζινον, ὀνομασθεῖσα Λασκαρίνα. Ἡ μήτηρ αὐτῆς, χηρεύσασα, ὑπανδρεύθη βραδύτερον (1776) τὸν Δημήτριον Λαζάρου Ὀρλώφ, μεθ' οὗ ἀπέκτησε πολλὰ τέκνα, ἑτεροθαλεῖς ἀδελφοὺς καὶ ἀδελφάς.

Ἡ Λασκαρίνα συνεζεύχθη τῷ 1788 τὸν Σπετσιώτην πλοίαρχον Δημήτριον Ἰωάν. Γιάννουζαν, τούτου δὲ φονευθέντος ἔν τινι ναυμαχίᾳ πρὸς Ἀλγερινοὺς πειρατὰς τῷ 1797, ὑπανδρεύθη μετὰ τέσσαρα ἔτη, τῷ 1801, τὸν ἐπίσης ἐκ Σπετσῶν πλουσιώτατον πλοίαρχον Δημήτρ. Μπούμπουλην, ἐξ οὗ ἔκτοτε ἐκαλεῖτο Μπουμπουλίνα. Ἐξ ἀμφοτέρων τῶν γάμων ἀπέκτησε τέκνα τὸν Ἰωάννην καὶ Γεώργιον Γιάννουζαν, τὴν Μάρων, τὴν μετέπειτα σύζυγον τοῦ γερουσιαστοῦ Νικολάου Μέξη, τὴν Σκεύων, σύζυγον τοῦ Νικολ. Γ. Κούτση, τὴν Ἑλένην, ὑπανδρευθεῖσαν μετὰ τοῦ Πάνου Θ. Κολοκοτρώνη καὶ τούτου φονευθέντος μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Θ. Γρίβα· καὶ τὸν Νικόλαον, λαβόντα ὡς σύζυγον τὴν Σοφίαν Μαρίνου Κομνηνοῦ. Καὶ ὁ Δημήτριος Μπούμπουλης ἐφονεύθη κατά τινα ναυμαχίαν πρὸς Ἀλγερινοὺς ἐπίσης πειρατὰς μεταξὺ Μελίτης καὶ Ἰσπανίας τῷ 1811, ἔκτοτε δὲ ἡ Μπουμπουλίνα, πλουσιωτάτη, κάτοχος 300 περίπου χιλιάδων ταλλήρων, ἀφιερώθη μὲ ἄκρατον ἐνθουσιασμὸν εἰς τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς πατρίδος. Ἐπειδὴ ἡ τουρκικὴ κυβέρνησις ἐπεζήτει νὰ κατάσχῃ τὴν περιουσίαν τοῦ Δ. Μπούμπουλη ἐπὶ τῷ ὅτι οὗτος εἶχε βοηθήσει τοὺς Ρώσους ἐν τῷ κατὰ τῶν Τούρκων πολέμῳ, ἡ Μπουμπουλίνα ἠναγκάσθη νὰ μεταβῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖ, τῇ βοηθείᾳ τοῦ Ρώσου προκρίτου Στρογιάνωφ, κατώρθωσε νὰ διασώσῃ τὴν περιουσίαν της. Τότε ἐμυήθη εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας καὶ ἐπανακάμψασα εἰς Σπέτσας διέταξε τὴν ἰδίαις δαπάναις ναυπήγησιν τοῦ περιφήμου πλοίου της «Ἀγαμέμνων», ἑνὸς τῶν μεγίστων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης σκαφῶν, στοιχίσαντος 25.000 δίστηλα. Μὲ τὸ πλοῖον τοῦτο, ὅπερ ἦτο ἕτοιμον τῷ 1820, καὶ τρία ἄλλα μικρότερα ἀφιερώθη ψυχῇ καὶ σώματι εἰς τὴν ἰδέαν τῆς ἀπελευθερώσεως.

Ἡ Ἐπανάστασις εὗρε τὴν Λασκαρίναν Μπουμπουλίναν 50 ἐτῶν. Ἦτο ἀρειμανία ὡς ἀμαζών, ὡραία καὶ ἐπιβλητική. Κατὰ τὸν Φιλήμονα «ἐνώπιον αὐτῆς ὁ ἄνανδρος ᾐσχύνετο καὶ ὁ ἀνδρεῖος ὑπεχώρει»· ἦτο ἡ Καπετάνισσα. Προσήνεγκε πολυτίμους ὑπηρεσίας εἰς τὸν Ἱερὸν Ἀγῶνα, ἐθυσίασε δὲ ὑπὲρ τῆς πατρίδος ὁλόκληρον τὴν περιουσίαν αὐτῆς, διατηροῦσα ἰδίαις δαπάναις ὄχι μόνον τὰ πλοῖά της, ἀλλὰ καὶ στρατεύματα κατὰ ξηράν.

Ἐκραγείσης τῆς Ἐπαναστάσεως, ἐπέβη αὐτὴ μὲν τοῦ «Ἀγαμέμνονος», τῶν δὲ δύο ἄλλων πλοίων οἱ υἱοί της, καὶ εἰσέπλευσεν εἰς τὸν Ἀργολικὸν κόλπον, ὁπόθεν κατήρξατο τοῦ θαλασσίου ἀποκλεισμοῦ τοῦ Ναυπλίου. Ἀποβᾶσα εἰς Μύλους, ἐνίσχυσε διὰ τροφῶν καὶ πολεμεφοδίων, ἅτινα δι' ἰδίων χρημάτων ἐπρομηθεύθη, τοὺς ἐν Ἄργει, ὅπου ἔτυχε θριαμβευτικῆς ὑποδοχῆς, ἀπώλεσεν ὅμως τὸν ἐκ τῶν υἱῶν της Ἰωάννην Γ. Δ. Γιάννουζαν, φονευθέντα κατὰ τὴν ἐπιδρομὴν τοῦ Κεχαγιάμπεη. Μετέσχε τοῦ ἀποκλεισμοῦ τῆς Μονεμβασίας, τῆς πολιορκίας καὶ ἁλώσεως τῆς Τριπόλεως καὶ τοῦ Ναυπλίου, τῆς ἐναντίον τοῦ Δράμαλη ἐκστρατείας. Εἰς τὴν Τρίπολιν εἰσῆλθεν ἐκ τῶν πρώτων ἱππεύουσα λευκὸν ἵππον καὶ ἔσωσε τὰ χαρέμια ἀπὸ τὴν μῆνιν τῶν πολιορκητῶν. Μετὰ τοῦ Κολοκοτρώνη, Πλαπούτα καὶ λοιπῶν ἀρχηγῶν διέτρεξε τὴν Πελοπόννησον, ἐμψυχοῦσα διὰ τοῦ ἀτομικοῦ αὐτῆς παραδείγματος τοὺς μαχητάς. Κατὰ τὴν ἐν Σπέτσαις παραμονήν της, οὖσα τὸ πρωτοπαλλήκαρον τοῦ Χατζηγιάννη Μέξη, συνετέλεσεν, ἐν συνεργασίᾳ μὲ τὴν οἰκογένειαν τῶν ἑτεροθαλῶν ἀδελφῶν της Ὀρλώφ, νὰ ἐξορισθῶσιν οἱ Μποτασαῖοι εἰς Πόρον, ἀλλὰ καὶ νὰ ἐπιστρέψωσι κατόπιν, μετὰ τὴν συμφιλίωσίν των, εἰς Σπέτσας. Ἁλωθέντος τοῦ Ναυπλίου ἔζησεν ἐν αὐτῷ μέχρι τοῦ 1825, ὁπότε μετῴκησεν εἰς Σπέτσας, ἐγκαταβιοῦσα ἐν γαλήνῃ καὶ διατρεφομένη ἐκ τῶν μικρῶν ὑπολειμμάτων τῆς περιουσίας της. Κατὰ Μάϊον τοῦ 1825 ὁ υἱὸς τῆς Μπουμπουλίνας Γεώργιος Γιάννουζας ἀπήγαγε τὴν Εὐγενίαν Χριστοδούλου Ι. Κούτση. Ὁ ἑτεροθαλὴς ἀδελφὸς τῆς Μπουμπουλίνας Λάζαρος Ὀρλώφ, ὅστις εἶχε νυμφευθῆ τὴν ἀδελφὴν τῆς ἀπαχθείσης, ἀνέλαβε νὰ ζητήσῃ ἱκανοποίησιν διὰ τὴν γενομένην προσβολὴν καὶ ἔδραμε μετ' ἄλλων μελῶν τῆς οἰκογενείας Κούτση εἰς τὴν παρὰ τὴν Κουνουπίτσαν οἰκίαν τῆς Μπουμπουλίνας, ἡ ὁποία, ἐξελθοῦσα εἰς τὸ παράθυρον, ἤρχισε πείσμονα μετ' αὐτοῦ συζήτη-

*Ἡ Μπουμπουλίνα Λασκαρίνα.*

[Ἐλαιογραφία ἀποκειμένη ἐν τῷ Μουσείῳ τῆς Ἱστορικῆς καὶ Ἐθν. Ἑταιρείας.]

σις, ἐκτραχυνθεῖσα ἐν τέλει εἰς βιαιοτάτην ἀμφοτέρωθεν λογομαχίαν. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἔριδος ταύτης σφαῖρα ριφθεῖσα ἐκ τῶν ἔξω εὗρε τὴν Μπουμπουλίναν εἰς τὸ μέτωπον, ἀφήσασα αὐτὴν ἄπνουν (22 Μαΐου 1825). Τὰ ὀστᾶ της ἐναπετέθησαν εἰς τὸν ἐν Σπέτσαις ἰδιόκτητον αὐτῆς ναὸν τοῦ «Ἁγίου Ἰωάννου».

Τὸ περίφημον πλοῖον τῆς Μπουμπουλίνας «Ἀγαμέμνων», μετονομασθὲν ἐπὶ Καποδιστρίου «Σπέτσαι», ἀνετινάχθη εἰς τὸν ἀέρα ὑπὸ τοῦ Ἀνδρέου Μιαούλη κατὰ τὰς πολιτικὰς τῶν ἐτῶν ἐκείνων διαμάχας (29 Ἰουλίου 1831).

Ἡ Μπουμπουλίνα ἀπετέλεσεν ἀντικείμενον θρύλων καὶ παραδόσεων καὶ θέμα τῆς λαϊκῆς καὶ τῆς λογίας ποιήσεως. Ἀπὸ τὰς συνθέσεις καὶ τὰς προσωπογραφίας, εἰς τὰς ὁποίας ἔδωσεν ἀφορμήν, μνημονευτέος ὁ πίναξ τοῦ Σ. Προσαλέντη.

Γ. Θ. ΔΡΑΒΙΛΛΑΣ

**μπούμπουλο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *πολυπώγων ὁ κοινός*.

**μπουμπουναριὰ** (ἡ)· ἰδιωμ., βροντή.

**μπουμπουνητὸ** (τό)· δημοτ. ἡ ἐκ τῶν ἀστραπῶν ἢ τοῦ κεραυνοῦ προερχομένη βροντή, ἄλλως *μπουμπούνισμα*: «μπουμπουνητὸ ἀκούεται, κάπου βρέχει»· || πολλαί, συνεχεῖς βρονταί: «τί μπουμπουνητό, τί κακὸ εἶν' αὐτὸ ποῦ γίνεται».

**μπουμπουνίζω**· δημοτ. κάμνω μπουμπουνητό, βροντῶ (λ. πεποιημένη).

**μπουμπούνισμα** (τό)· δημοτ., ἄλλως *μπουμπουνητὸ* (βλ. λ.).

**Μπουμπουνοσπηλιὰ** *[Γεωγρ.]*. Σπήλαιον ἐν Ζατούνῃ τῆς Ἀκαρνανίας, καλούμενον οὕτω ἐκ τοῦ ἤχου ὃν ἀποδίδει ὅταν περιπατῇ τις ἐν αὐτῷ.

**μπούμπουρα**· ἐπίρρ. ἰδιωμ. Κρήτ., πρηνηδόν, μπρούμυτα. Ι. Δ. Μ.

**μπούμπουρας** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἐντόμου *βόμβος ὁ μελανός*.

**μπουμπουρίζω**· ἰδιωμ. Κρήτ., πίπτω πρηνής.

**Μπουμπούστι(ον)** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης *Πλατανιὰ* (βλ. λ).

**Μπούν** (Boon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, ἕδρα ὁμωνύμου κομιτείας, ἐν τῇ πολιτείᾳ Ἀϊόβα. Κεῖται 69 χλμ. πρὸς Β.ΒΔ. τῆς Ντὲς-Μόϊνες ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ ὁμωνύμου πρὸς τὴν πόλιν ταύτην ποταμοῦ. Ἔχει κολλέγιον (Biblical college) καὶ δημοσίαν βιβλιοθήκην, διεξάγει ἐμπόριον κτηνῶν, γαιανθράκων, σιτηρῶν καὶ ἔχει ἐργοστάσια μηχανῶν, σιδηροδρομικοῦ ὑλικοῦ, καπνοῦ, πλίνθων, τσιμέντων, ἀλεύρων κλπ. Κάτ. 10.347. Χ. Δ.

**μπουνάρ.** Λέξις τουρκική, σημαίνουσα πηγή. Ἀπαντᾷ εἰς πλεῖστα τοπωνύμια ὡς πρῶτον ἢ δεύτερον σύνθετον· π. χ. *Μπουνάρ-μπαση, Χαλκᾶ-Μπουνὰρ* κ. τ. τ.

**Μπουνάρ,** ***Καγιὰ*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Καβάλλας χωρίου *Δουκάλιον* (βλ. λ.).

—**Μπουνάρ,** ***Καρὰ*** — *[Γεωγρ.]*. —1) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Μαυρονέρι* (βλ. λ.).

—2) Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Μαυροπηγὴ* (βλ. λ.).

**Μπουνάρμπασι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Σμύρνης εἰς ἀπόστασιν 11 χλμ. Α. αὐτῆς παρὰ τὴν ἁμαξιτὸν Σμύρνης—Νυμφαίου (Μεγάλος δρόμος). Ἔχει πολλὰς πηγὰς (μπουνάρια) σχηματιζούσας πολυάριθμα ρυάκια, δι' ὧν ἀρδεύονται οἱ πλουσιώτατοι κῆποι τοῦ χωρίου. Ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ἐκαλεῖτο *Περίκλυστα*. Πρὸ τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς ἠρίθμει περὶ τοὺς 3.000 κατοίκους, ἐξ ὧν 2.000 ἦσαν Ἕλληνες ὑπαχθέντες εἰς τὴν ἀνταλλαγὴν (1922). Ἡ ἑλληνικὴ κοινότης τοῦ χωρίου συνετήρει δύο ναούς, ὧν ὁ εἷς ἐτιμᾶτο ἐπ' ὀνόματι τοῦ Ἁγίου Θεράποντος καὶ ὁ ἕτερος ἐπ' ὀνόματι τοῦ Ἁγίου Κωνσταντίνου, καὶ πλῆρες δημοτικὸν σχολεῖον. Δυτικῶς καὶ εἰς μικρὰν ἀπὸ τοῦ χωρίου ἀπόστασιν εὑρίσκεται ὁ τάφος τοῦ Ἁγίου Θεράποντος, κατὰ δὲ τὴν 27 Μαΐου, ἑορτὴν τοῦ ἁγίου, ἐτελεῖτο μεγαλοπρεπὴς πανήγυρις. Εἰς τὰ παρὰ τὸ χωρίον τουρκικὰ νεκροταφεῖα (μεζάρια), ὑπάρχουν πολλαὶ ἀρχαιότητες ἑλληνορρωμαϊκῆς ἐποχῆς, ΝΔ. δὲ τοῦ χωρίου καὶ ἐπὶ τοῦ ὄρους Ὄλυμπος ἡ μεγάλη μονὴ τῆς Παναγίας τῶν Λέμβων. Ν. Φ.

— **Μπουνάρμπασι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Τουρκίας ἐν τῇ ὑποδιοικήσει Ἐζίνε τοῦ νομοῦ Τσανὰκ-καλὲ (Δαρδανελλίων) παρὰ τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας Τροίας.

— **Μπουνάρμπασι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Κεφαλάρι* (βλ. λ.).

**Μπουνὰρ-χισὰρ** *[Γεωγρ.]*. Πολίχνη τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου δήμου τῆς ὑποδιοικήσεως Κιρκλὰρ-ἐλὶ (τέως Κὶρκ-Κλισὲ ἢ Σαράντα Ἐκκλησιῶν), ἐν τῷ ὁμωνύμῳ νομῷ, εἰς ἀπόστασιν 28 χλμ. ΝΑ. τῆς πόλεως τῶν Σαράντα Ἐκκλησιῶν καὶ 25 χλμ. ΒΑ. τοῦ Λουλὲ-Μπουργάζ. Ἔγινε γνωστὴ τῷ 1912 κατὰ τὸν Α΄ Βαλκανικὸν πόλεμον, ἐκ τῶν μαχῶν, αἵτινες ἔγιναν περὶ αὐτὸ μεταξὺ Τούρκων καὶ Βουλγάρων. Τῇ 16/29 Ὀκτωβρίου ἡ πόλις κατελήφθη τὸ δεύτερον ὑπὸ τῶν Βουλγάρων, ἀλλ' ἐγκατελείφθη ὑπ' αὐτῶν τὸν Ἰούλιον τοῦ 1913, ὅτε ἤρχισαν τὸν ἐναντίον τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν Σέρβων ἀγῶνα καὶ ἀνεγνωρίσθη ὡς τουρκικὸν διὰ τῆς συνθήκης εἰρήνης Κωνσταντινουπόλεως τῆς 16/29 Σεπτεμβρίου 1913. Ν. Μ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Βλ. λ. *Λουλὲ*-Μπουργκάς.

**Μπουνᾶτος,** ***Ἰωάννης.*** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐξ Ἀραδαίνης, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ ἐπανάστασιν τοῦ 1770. Ν. ΚΛΣ

—**Μπουνᾶτος,** ***Μανοῦσος.*** Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐξ Ἀραδαίνης, διακριθεὶς κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ ἐπανάστασιν τοῦ 1770. Ν. ΚΛΣ

**Μπούνης,** ***Γρηγόριος.*** Πρωτοψάλτης τῆς Ἁγ. Σοφίας κατὰ τὴν ἅλωσιν (βλ. λ. *Γρηγόριος* ὁ Μπούνης, τ. Η΄, σ. 730 α΄).

**μπούνια** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τοὺς *ποδεῶνας* τῶν μειζόνων ἱστίων: «Ἴσα μπούνιες», κέλευμα κατὰ τὰς ἀναστροφάς, τὸ «ποδεῶνας ἔπαρον!» τῆς ἐπισήμου γλώσσης. Σ. Ε. Λ.

**μπούνια** (τὰ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τοὺς *εὐδιαίους*. Ἡ ἔκφρασις «γεμᾶτος ὣς τὰ μπούνια», σημαίνουσα «πλήρης ἕως χειλέων», ἔχει τὴν ἀφορμὴν εἰς τὸ ὅτι τὰ μπούνια εὑρίσκονται εἰς τὸ χεῖλος τοῦ καταστρώματος, δι' ὃ καὶ «καράβι φορτωμένο ὣς τὰ μπούνια» τὸ ἐπικινδύνως φορτωμένον. Σ. Ε. Λ.

**μπουνιὰ** (ἡ)· δημοτ., πυγμή, γρόνθος· || κτύπημα διὰ τοῦ γρόνθου: «θὰ φᾶς καμμιὰ μπουνιά», «τὸν ἄρχισε 'ς τὶς μπουνιές».

**Μπουνιακόφσκι** (Bouniakovsky), ***Βίκτωρ-Ἰάκωβος.*** Ρῶσος μαθηματικός, ἐξ Οὐκρανίας (1804—1889). Διωρίσθη καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πετρουπόλεως καὶ μέλος τῆς Ἀκαδημίας (1828). Αἱ ἐπιστημονικαὶ αὐτοῦ ἐργασίαι εἶναι πολ-

Digitized by Google

*Ἐμμανουὴλ Τζάνε Μπουνιαλῆ: 1) «Ἡ Προσκύνησις τῶν Μάγων». 2) «Παναγία ἡ Λαμπωβίτισσα».*

[Μουσεῖον Λοβέρδου.]

λαί, ἐγράφησαν δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν γαλλικήν. Μεταξὺ αὐτῶν ἀξιομνημόνευτοι εἶναι: «Λεξικὸν τῶν καθαρῶν μαθηματικῶν» (1839), ὑπομνήματα ἐπὶ τῶν παραλλήλων, θεμελιώδεις ἀρχαὶ τῆς θεωρίας τῶν πιθανοτήτων καὶ ἓν δοκίμιον περὶ τῆς θνησιμότητος ἐν Ρωσίᾳ (1865). Πλὴν τῶν ἐργασιῶν τούτων ἐπενόησε καὶ διάφορα ὄργανα, δι' ὧν ἐκτελοῦνται μηχανικῶς ἐξαγόμενα ὑπολογισμῶν: τὸν *παντογράφον*, τὸ *ἐπιπεδόμετρον* καὶ ἄλλα. Ν. Γ.

**Μπουνιαλέτος.** Παρωνύμιον τοῦ Κρητὸς εἰκονογράφου καὶ κληρικοῦ *Γενναδίου Βλαστοῦ*, τοῦ ἀκμάσαντος περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἐν σωζομένῃ πρὸς αὐτὸν ἐπιστολῇ (1597) τοῦ πατριάρχου Ἀλεξανδρείας Μελετίου τοῦ Πηγᾶ, ὁμιλεῖ οὗτος μετὰ πολλοῦ ἐπαίνου περὶ τῆς τέχνης τοῦ ζωγράφου τούτου. ΕΡ. Μ.

**Μπουνιαλῆς.** Ἐπώνυμον οἰκογενείας ἐκ Ρεθύμνης τῆς Κρήτης, τρία μέλη τῆς ὁποίας διεκρίθησαν κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, εἷς ὡς ποιητὴς καὶ δύο ὡς ἁγιογράφοι. Τὸ ἐπώνυμον τοῦτο ἔφερε καὶ κλάδος τις τῆς ἐν Ρεθύμνῃ οἰκογενείας *Βλαστοῦ*.

—1) ***Ἐμμανουὴλ Τζάνες ὁ —.*** Λόγιος κληρικός, ψάλτης, ποιητὴς καὶ πεφημισμένος ἁγιογράφος. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1615 ἐν Ρεθύμνῃ, ἔνθα καὶ ἐξεπαιδεύθη τὰ ἐγκύκλια μαθήματα καὶ τὴν ἁγιογραφικήν, εἶτα δέ, νεώτατος, μετέβη εἰς Κεφαλληνίαν, Κέρκυραν καὶ τέλος εἰς Βενετίαν, ὅπου καὶ ἐγκατεστάθη. Τῷ 1659 διωρίσθη ἐφημέριος τοῦ ἐν Βενετίᾳ ἑλληνικοῦ ὀρθοδόξου ναοῦ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου, διετέλεσε δὲ τοιοῦτος μέχρι τοῦ θανάτου αὐτοῦ (περὶ τὸ 1691). Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν μεγαλυτέρων πνευμάτων τῆς ἐποχῆς του καὶ γενικῶς κρινόμενος θεωρεῖται ὡς μία ἀπὸ τὰς σπουδαιοτέρας ἐν Βενετίᾳ φυσιογνωμίας τοῦ ΙΖ' αἰῶνος.

Ἡ τέχνη αὐτοῦ κατ' ἀρχὰς μὲν ὑπῆρξεν ἐπιμελημένη καὶ δυνατή, ἀλλ' αὐστηρῶς τυπική, ἀκολουθοῦσα κατὰ γράμμα τὴν βυζαντινὴν παράδοσιν. Κατόπιν ὅμως, τῇ ἐπιδράσει τῆς Δύσεως, καὶ ἰδίᾳ τῆς Ἰταλίας, συνδέσας τὴν βυζαντινὴν τέχνην πρὸς τὴν φυσικὴν σπουδήν, διέπλασεν ἰδιαιτέραν τέχνην, πάντοτε μὲν αὐστηρὰν ἀλλ' ἐξαιρετικῶς καλλιτεχνικήν, σεμνὴν καὶ ἐπιβάλλουσαν. Γενόμενος πολὺ ἰσχυρὸς εἰς αὐτήν, κατώρθωσε νὰ ἀνυψωθῇ εἰς ἀληθῆ διδάσκαλον, θαυμαζόμενος ὑπὸ πάντων τῶν συγχρόνων αὐτοῦ ἐν Βενετίᾳ, ἡ δὲ φήμη του ὡς εἰκονογράφου εἶχε διαπλωθῆ εἰς ἁπάσας τὰς ἑλληνικὰς χώρας. Ἐν σῳζομένῃ πρὸς αὐτὸν ἐπιστολῇ τοῦ συμπατριώτου καὶ συγχρόνου αὐτοῦ Φραγκίσκου Σκούφου (ἐν ᾗ περιέχεται γλαφυρωτάτη περιγραφὴ ἀριστουργήματος ζωγραφικῆς τοῦ Μπουνιαλῆ, παριστῶντος τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου), ἐκφράζεται οὗτος μετ' ἀπείρου θαυμασμοῦ διὰ τὴν τέχνην αὐτοῦ. Ἄγνωστον ἐὰν ἡ εἰκὼν αὕτη, ἥτις ἐστάλη ὡς δῶρον τοῦ ζωγράφου πρὸς τὸν φίλον του Σκοῦφον, διεσώθη.

Παλαιότερον γνωστὸν ἔργον τοῦ Μπουνιαλῆ εἶναι εἰκὼν τῆς Ἀμολύντου, ἥτις εὑρίσκεται ἐν τῷ γυναικωνίτῃ τοῦ ναοῦ τῆς Φανερωμένης ἐν Ζακύνθῳ, φέρουσα χρονολογίαν 1641. Τῷ 1648 ζωγραφίζει τὴν μεγάλην εἰκόνα τοῦ Παντοκράτορος ἐν Κερκύρᾳ. Ἐπίσης ἐν Κερκύρᾳ ἐζωγράφησε τὰς ὡραίας εἰκόνας τοῦ βυζαντινοῦ ναοῦ τῶν Ἰάσωνος καὶ Σωσιπάτρου καὶ τῆς Λαμπωβιτίσσης. Αἱ μοναὶ τοῦ Σινᾶ, τῶν Μετεώρων, τῆς Φιλοθέης εἰς Ἀθήνας, εἶχον εἰκόνας αὐτοῦ. Ἀπὸ τοῦ 1659 μέχρι τοῦ 1691, εὑρισκόμενος ἐν Βενετίᾳ, ἐζωγράφησε πλῆθος θαυμαστῶν εἰκόνων, ὡς τὴν εἰκόνα τοῦ ἁγίου Ἰωάννου τὴν εὑρισκομένην ἐν τῷ ἑλληνικῷ ὀρθοδόξῳ ναῷ τῆς Βενετίας Ἁγίῳ Γεωργίῳ (1663), ἑτέραν εὑρισκομένην νῦν ἐν τῷ Museo Civico (Βενετία), παριστῶσαν τὸν ἅγιον Νικόλαον καὶ ὀκτὼ σκηνὰς ἀπὸ τὰ θαύματα αὐτοῦ. Ἐπίσης ὡς ἀριστουργήματα αὐτοῦ θεωροῦνται αἱ εἰκόνες: Κωνσταντῖνος καὶ Ἑλένη, ἡ Παναγία, ὁ Κύριλλος Ἀλεξανδρείας, ὁ Γοβδελαᾶς (περὶ τοῦ μεγαλομάρτυρος τούτου ὁ Μπουνιαλῆς συνέθεσε καὶ ᾀσματικὸν ποίημα, περὶ οὗ βλ. κατωτ.), ὁ Μεθόδιος Πατάρων. Ἐπὶ τῆς τελευταίας ταύτης εἰκόνος ἐπεστήθη ἡ προσοχὴ πάντων εἰς τὸ μικρογραφικὸν ἀριστούργημα τοῦ ἐπιγονατίου τοῦ Μεθοδίου, ἐφ' οὗ ζωγραφεῖται θαυμασία παράστασις τῆς Ἀποκαθηλώσεως τοῦ Χριστοῦ. Νῦν ἐν Ἀθήναις ὑπάρχουσιν 6 εἰκόνες τοῦ Μπουνιαλῆ ἐν τῷ Βυζαντινῷ Μουσείῳ, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἰκὼν τῆς Θεοτόκου (1680) (βλ. εἰκ. εἰς λ. *κρητικὴ* σχολή, τ. ΙΕ', σ. 213), μία ἐν τῇ συλλογῇ Λοβέρδου παριστῶσα τὴν Προσκύνησιν τῶν Μάγων καὶ μία ἐν τῇ συλλογῇ Καλλιγᾶ, ὁ ἅγιος Γεώργιος. Ὁ Μπουνιαλῆς ἐζωγράφει δι' ᾠοῦ καὶ διὰ τῶν γνωστῶν μεθόδων τοῦ προπλάσματος, τοῦ ἀνοίγματος καὶ τοῦ λαματίσματος.

Ὡς ποιητὴς ὁ Μπουνιαλῆς ὑπῆρξεν ὀλιγώτερον ἀξιόλογος. Συνέγραψε: 1) Ἀκολουθίαν τοῦ ἁγίου Μεγαλομάρτυρος Γοβδελᾶ Πέρσου τοῦ πολυάθλου, ἐκδοθεῖσαν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1661 παρὰ Ἀνδρ. Ἰουλιανῷ. Ταύτην συνέθεσε συνεργασθεὶς μετὰ τοῦ Καλλιοπίου Καλλέργου τοῦ Κρητός. Ἐν τοῖς προλεγομένοις τοῦ βιβλίου τούτου διηγεῖται ὁ ἴδιος τὴν ἀγάπην του πρὸς τὸν ἅγιον τοῦτον, ὅστις ἔσωσεν ἀπὸ προφανοῦς θανάτου ἕνα τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ. 2) Ἀκολουθίαν τῆς ἁγίας Μεγαλομάρτυρος Φωτεινῆς τῆς Σαμαρείτιδος, ἐκδοθεῖσαν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1671 παρὰ Ἰουλιανῷ. 3) Ἀκολουθίαν τοῦ ὁσίου πατρὸς ἡμῶν Ἀλυπίου τοῦ Κιωνίτου καὶ θαυματουργοῦ, ἐκδοθεῖσαν ἐν Βενετίᾳ τῷ 1679 παρὰ Ν. Γλυκεῖ καὶ 4) Εἰς τὸν Εὐαγγελισμὸν τῆς ὑπεραγίας Θεοτόκου στίχους διὰ μέτρων ἁπλῶν ὁμοιοκαταλήκτους, ἐκδοθέντας ἐν Βενετίᾳ τῷ 1684 παρὰ Ν. Γλυκεῖ. Οἱ στίχοι οὗτοι εἶναι ἀνεπιτυχὴς μίμησις τοῦ Ἀκαθίστου ὕμνου τοῦ Ρωμανοῦ. Πλὴν τούτων συνέθεσε καὶ ἐπιγράμματα εἰς πρόσωπα σύγχρονα, ὡς εἰς τὸν μητροπολίτην Φιλαδελφείας Μελέτιον τὸν Χορτάκιον, τὸν Φιλαδελφείας Γεράσιμον τὸν Βλάχον κλπ.

—2) ***Κωνσταντῖνος Τζάνες ὁ —.*** Δεξιὸς ἁγιογράφος, ἐγκατεστημένος ἐν Βενετίᾳ κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, πιθανῶς ἀδελφὸς τοῦ Ἐμμανουήλ. Τὰ κατὰ τὸν βίον αὐτοῦ εἶναι ὅλως ἄγνωστα.

—3) ***Μαρῖνος Τζάνες ὁ —.*** Κρὴς ποιητής, γεννηθεὶς κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἐν Ρεθύμνῃ, ἔνθα καὶ ἐξεπαιδεύθη τὰ ἐγκύκλια μαθήματα. Συνέθεσεν οὗτος μακρὸν ποίημα εἰς δημώδη γλῶσσαν, μετρίας μὲν ποιητικῆς ἀξίας, ἀλλ' ἀποτελοῦν πάντως μνημεῖον διὰ τὴν νεοελληνικὴν ἱστορίαν καὶ τὴν κρητικὴν διάλεκτον τῆς ἐποχῆς, ἐν τῷ ὁποίῳ περιγράφει τὰ διατρέξαντα κατὰ τὸν κρητικὸν πόλεμον (1645—1669), τὸν καταλήξαντα εἰς τὴν κατάληψιν τῆς νήσου ὑπὸ τῶν Τούρκων. Τὸ ποίημα τοῦτο ἐξεδόθη τὸ πρῶτον ἐν Βενετίᾳ τῷ 1681 (παρὰ Ἀνδρ. τῷ Ἰουλιανῷ) ὑπὸ τὸν τίτλον «Διήγησις διὰ στίχων τοῦ δεινοῦ πολέμου τοῦ ἐν τῇ νήσῳ Κρήτης γενομένου, ἡ ὁποία περιέχει τὴν σκληρότητα καὶ αἰχμαλωσίαν καὶ φόνον, ὅταν ἐκυρίευσαν οἱ Ἀγαρηνοὶ τὴν δυστυχισμένην χώραν τῶν Χανίων καὶ Ρεθύμνου, καὶ ὅτι συνέβη εἰς τὸ Μεγάλον Κάστρον καὶ εἰς ταῖς ἄρδαις καὶ εἰς τὰ νησία, ἀπὸ τοὺς ,αχμε' ἕως ,αχξθ', ὅπου τοῦ ἐδώκανε τὸ Μεγάλο Κάστρο, καὶ ἔγεινε ἡ ἀγάπη, συνθεμένη ἐν συντομίᾳ παρὰ Μαρίνου Τζάνε τοῦ λεγομένου Μπουνιαλῆ τοῦ Ρεθυμναίου ἐκ Κρήτης». Τῷ 1710 ἐγένετο ἀνατύπωσις παρὰ Νικολάῳ τῷ Σάρῳ, τέλος δὲ ἐπανεξεδόθη ἐν Τεργέστῃ τῷ 1908 τῇ ἐπιμελείᾳ τοῦ ἀρχιμανδρίτου Ἀγαθαγγέλου Ξηρουχάκη. Ἐπίσης ἀνάλυσιν τοῦ ποιήματος τούτου ἐδημοσίευσεν ὁ Σάθα;

Digitized by Google

εἰς τὸ «Τουρκοκρατουμένη Ἑλλὰς» (σελ. 223—230). Πλὴν τοῦ ποιήματος τούτου συνέγραψε καὶ «Κατάνυξιν ὠφέλιμον διὰ κάθε Χριστιανόν, εἰς τὴν ὁποίαν περιέχονται διάλογος ψυχῆς καὶ νεκροῦ, καὶ διηγήσεις τινὲς περὶ συντελείας τοῦ αἰῶνος, περὶ κρίσεως καὶ παραδείσου καὶ περὶ κολάσεως καὶ ἕτεροι στίχοι περὶ θανάτου», ἐκδοθεῖσαν μετὰ τὸν θάνατόν του τὸ πρῶτον ἐν Βενετίᾳ (1816) παρὰ Νικολ. Γλυκεῖ. Ὁ Μαρῖνος Μπουνιαλῆς μέχρι σήμερον πολλάκις ταυτίζεται πρὸς τὸν *Ἐμμανουὴλ Μπουνιαλῆν*, ἐνῷ ὁ Gerola πρὸ πολλοῦ ἤδη ἀπέδειξεν ὅτι πρόκειται περὶ δύο διαφόρων προσώπων. Ἡ σύγχυσις αὕτη προῆλθεν ἐκ τοῦ ὅτι ἐπιστεύθη ὅτι ὁ Μαρῖνος χειροτονηθεὶς ἱερεὺς μετωνομάσθη εἰς Ἐμμανουήλ. Τοῦτο ὅμως ἀπεδείχθη ἐσφαλμένον, διότι ὁ Μαρῖνος περατῶν μετὰ τὸ ἔτος 1669 τὸ περὶ κρητικοῦ πολέμου ποίημα αὐτοῦ καὶ ἐπισυνάπτων τινὰ περὶ ἑαυτοῦ (σελ. 436 τῆς πρώτης ἐκδόσεως Βενετίας 1681) ὀνομάζει ἑαυτὸν Μαρῖνον, δὲν θὰ ἦτο δὲ δυνατόν, ἱερεὺς ὤν, νὰ ἐχρησιμοποίει ἀκόμη τὸ κοσμικὸν αὐτοῦ ὄνομα, οὔτε εἶναι δυνατὸν νὰ ἐχειροτονήθη μετὰ ταῦτα, διότι ἱερεὺς Ἐμμανουὴλ Μπουνιαλῆς ὑπῆρχεν ἤδη ἀπὸ τοῦ 1659, ὢν μάλιστα ἐφημέριος τοῦ ὀρθοδόξου ναοῦ τοῦ Ἁγίου Γεωργίου ἐν Βενετίᾳ. Ἐξ ἄλλου αὐτὸς οὗτος ὁ Μαρῖνος, ἀπαριθμῶν ἐν τέλει τοῦ ἄνω ποιήματός του πολλοὺς λογίους καὶ διασήμους Κρῆτας, ἀναφέρει ὡς διάφορον πρὸς αὐτὸν πρόσωπον «καὶ τὸν παπᾶ κυρ Μανουὴλ τὸν ἁγιογράφο βάνε, τὸ Ρεθυμνιώτη Μπουνιαλῆ......».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *G. Gerola*, «Emmanuele Zane da Retimo, un pittore bizantino a Venezia» (ἐν Alti del reale Instituto Veneto. Tom. XVI, parte seconda, 1902—1903).—*G. Cervellini*, «Marino, Emmanuele e Constantino Zane» (ἐν Nuovo Archivio Veneto. Nuova Serie, vol. XII σελ. 307—312, 1906).—*Millet*, «Iconographie de l'Évangile» (σελ. 662). —*Ι. Βελούδου*, «Ἑλλήνων ὀρθοδόξων ἀποικία ἐν Βενετίᾳ» (1872, σελ. 33, 38, 48, 51, 171). —*Σάθα*, «Νεοελληνικὴ φιλολογία» (σελ. 346).—*Τοῦ αὐτοῦ*, «Τουρκοκρατουμένη Ἑλλὰς» (σελ. 223—230). —*Ἀγαθαγγέλου Ξηρουχάκη*, «Ὁ κρητικὸς πόλεμος» (Τεργέστη 1908, σελ. 48, 61, 62). —*Δὲ Βιάζη* (ἐν Πινακοθήκῃ, τόμ. Γ΄, σελ. 132 τόμ. ΣΤ΄, σελ. 118, τόμ. Ι΄, σελ. 120). —*Ν. Καλογεροπούλου*, «Ἐμμανουὴλ Τζάνες» (ἐν «Εἰκονογραφημένῃ» 1918 καὶ ἐν «Ν. Αἰῶνι»). —*Τοῦ αὐτοῦ*, «Βυζαντινὴ καὶ Μεταβυζαντινὴ τέχνη» (Ἀθῆναι 1926, σελ. 79—81).—*Τοῦ αὐτοῦ* (ἐν περιοδικῷ «Ἀνθρωπότης» Φεβρουαρ. 1920). —Ἡμερολόγιον Μεγάλης Ἑλλάδος 1922 (σελ. 158—168, ἀνέκδοτος ἐπιστολὴ Φραγκ. Σκούφου πρὸς Μπουνιαλῆν).— «Κρητικὴ Στοὰ» (ἔτος Β΄, σελ. 180). ΕΡ. ΜΟΑΤΣΟΣ

**Μπούνιν** (Bunin), ***Ἰβὰν Ἀλεξέγιεβιτς***. Ρῶσος λογοτέχνης, γεννηθεὶς τῷ 1870. Καταγόμενος ἐξ ἀγροτικῆς εὐγενοῦς οἰκογενείας, ἠσχολήθη ἐνωρίτατα μὲ τὴν λογοτεχνίαν, γράψας καὶ πεζὰ καὶ ἔμμετρα ἔργα. Ἀνεξαρτήτου χαρακτῆρος, δὲν ἠκολούθησε καμμίαν ἐκ τῶν ὑπαρχουσῶν λογοτεχνικῶν σχολῶν, ἔζησε δὲ βίον μονήρη, μακρὰν τῶν μεγαλοπόλεων, ἐπισκεπτόμενος συχνὰ τὰς διαφόρους χώρας τῆς Εὐρώπης, Ἀσίας καὶ Ἀφρικῆς. Τῷ 1909 ἐξελέγη ἐπίτιμον μέλος τῆς ρωσικῆς Ἀκαδημίας. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς μπολσεβικικῆς ἐπαναστάσεως καταλιπὼν τὴν Ρωσίαν (1920) ἐγκατεστάθη εἰς Γαλλίαν. Εἰς τὰ ἔργα του εἰκονίζει μετὰ περισσῆς περιγραφικῆς δυνάμεως τὴν ρωσικὴν ζωήν, ἀναλύων τὴν ψυχὴν καὶ τὸν χαρακτῆρα τῶν Ρώσων. Ὡς ποιητὴς εἶναι γνωστὸς ἐκ τεσσάρων συλλογῶν, πλειοτέραν ὅμως ἐπιτυχίαν ἐσημείωσαν τὰ μυθιστορήματά του, ἐξ ὧν ἀναφέρονται ἰδίως τὰ ἑξῆς: «Ἀδελφοί», «Ὁ κάλυξ τῆς ζωῆς», «Ὁ κύριος ἀπὸ τὸν Ἅγιο Φραγκῖσκο», «Ὁ ἔρως» μεταφρασθὲν ἑλληνιστὶ (1926) κλπ. Ἐπαινεῖται πρὸ πάντων διὰ τὸ συγκεκρατημένον ὕφος, τὴν μεγάλην περιγραφικὴν δύναμιν καὶ τὸν καθαρόν του ρεαλισμόν. Χ. Δ.

**Μποῦνσεν** (Bunsen), ***Ροβέρτος-Γουλιέλμος***. Περίφημος Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1811 ἐν Γοττίγγῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1899. Τῷ 1839 ἐγένετο καθηγητὴς ἐν Μαρβούργῳ, εἶτα ἐδίδαξεν ἐν Μπρεσλάου καὶ τῷ 1852 διεδέχθη τὸν περίφημον Gmelin ἐν Αϊδελβέργῃ, διδάξας μέχρι τοῦ 1889. Ὁ Μποῦνσεν ἐπλούτισε τὴν ἐπιστήμην διὰ πολυαρίθμων νέων ἐρευνῶν καὶ βαρυσημάντων ἀνακαλύψεων, ἀσχοληθεὶς εἰς ὅλους σχεδὸν τοὺς κλάδους τῆς χημείας, ὡς ἀνοργάνου, ὀργανικῆς, ἀναλυτικῆς, φυσικοχημείας, γεωλογικῆς καὶ ὀρυκτολογικῆς χημείας. Διὰ τῶν πολυαρίθμων σπουδαιοτάτων ἐργασιῶν του ὄχι μόνον θεωρητικῶς προήχθησαν ὅλαι σχεδὸν αἱ φυσικαὶ ἐπιστῆμαι, ἀλλὰ τὰ μέγιστα διηυρύνθησαν καὶ αἱ πρακτικαὶ αὐτῶν ἐφαρμογαί. Ὡς βαθὺς ἐπιστήμων ἐρευνητὴς ἀνεδείχθη τὸ πρῶτον διὰ τῆς περιφήμου ἀνακαλύψεως ὑπ' αὐτοῦ τῆς ρίζης τοῦ κακωδυλίου (ἀρσενικούχου ὀργανικῆς ρίζης) καὶ τῆς μελέτης τῶν παραγώγων αὐτῆς (1837—1843). Διὰ τῆς ἀνακαλύψεως αὐτῆς ἐνισχύθη σημαντικώτατα ἡ ἐξενεχθεῖσα ὑπὸ τῶν Liebig καὶ Wöhler θεωρία τῶν ριζῶν. Ἐπενόησε τὸν μεγίστην ἐφαρμογὴν σχόντα εἰς τὰ ἐργαστήρια καὶ γενικῶς τὴν πρᾶξιν λύχνον, κληθέντα ἐκ τοῦ ὀνόματός του. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις τῆς γνωστῆς διὰ ψευδαργύρου καὶ ἄνθρακος ἠλεκτρικῆς στήλης (στοιχεῖον τοῦ Μποῦνσεν), ἥτις ἐπὶ μακρὸν ὑπῆρξεν ἡ μόνη σταθερὰ πηγὴ ἰσχυροῦ ἠλεκτρικοῦ ρεύματος. Ὁμοίως ἀνεκάλυψε τὸ *θερμιδόμετρον*, τὸ διὰ κηλῖδος *φωτόμετρον* καὶ διάφορα ἄλλα ὄργανα φυσικῶν καὶ χημικῶν μετρήσεων. Ὑπέδειξε τὸ ὑδροξείδιον τοῦ σιδήρου ὡς ἀσφαλέστατον ἀντίδοτον κατὰ τῶν δι' ἀρσενικοῦ δηλητηριάσεων. Ἠσχολήθη ἐπίσης ἐπιτυχέστατα ἐπὶ τῆς ἠλεκτρολυτικῆς παραλαβῆς τῶν ἀλκαλίων καὶ ἀλκαλικῶν γαιῶν, ἐπὶ τῆς ἀναλύσεως τῶν ἀερίων, καταστήσας αὐτὴν ἴδιον καὶ προσιτὸν κλάδον τῆς χημικῆς ἀναλύσεως. Ὁμοίως ἠσχολήθη μὲ τὴν μέτρησιν τῆς χημικῆς ἐνεργείας τοῦ φωτὸς κλπ. Ἐκεῖνο ὅμως ὅπερ ὑπῆρξεν ὁ μεγαλύτερος τίτλος δόξης τοῦ Μποῦνσεν εἶναι ἡ διὰ τῆς συνεργασίας μετὰ τοῦ περιφήμου ἐπίσης φυσικοῦ Kirchhoff ἐπινοηθεῖσα φασματοσκοπικὴ ἀνάλυσις (1860), δι' ἧς ἀνεκαλύφθησαν ἀμέσως (1860) δύο νέα στοιχεῖα, τὸ καίσιον καὶ τὸ ρουβίδιον, καὶ ἐπετεύχθησαν κατόπιν πολυάριθμοι ἄλλαι ἀνακαλύψεις. Ὁ Μποῦνσεν δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ἱδρυτὴς σχολῆς ἐν τῇ ἐπιστήμῃ. Αἱ ἔρευναι καὶ μελέται τοῦ Μποῦνσεν ἐδημοσιεύθησαν εἰς τρεῖς τόμους ὑπὸ τὸν τίτλον «Gesammelte Abhandlungen» ἐν Λειψίᾳ τῷ 1904. Σ. Γ.

*Ροβέρτος Μποῦνσεν.*

— **Μποῦνσεν** (Bunsen), ***Χριστιανὸς-Κάρολος-Ἰωσίας***, *βαρῶνος φὸν—*. Πρῶσσος πολιτικὸς καὶ σοφός, γεννηθεὶς τῷ 1791 ἐν Κόρμπαχ (Βάλντεκ) καὶ ἀποθανὼν τῷ 1860. Ἐσπούδασε θεολογίαν καὶ φιλολογίαν, ὡς καὶ τὴν ἀραβικὴν καὶ περσικήν. Τῷ 1818 διωρίσθη γραμματεὺς τῆς πρωσσικῆς πρεσβείας ἐν Ρώμῃ, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ 1838, προαχθεὶς τῷ 1822 εἰς σύμβουλον τῆς πρεσβείας καὶ τῷ 1824 εἰς πρεσβευτήν. Ἀπὸ τοῦ 1839 μέχρι τοῦ 1841 διετέλεσε πρεσβευτὴς ἐν Βέρνῃ καὶ ἀπὸ τοῦ 1841 μέχρι τοῦ 1854 ἐν Λονδίνῳ. Τῷ 1857 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου καὶ ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἄνω Βουλῆς τῆς Πρωσσίας. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς εἰκοσαετοῦς ἐν Ρώμῃ παραμονῆς του ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῆς φιλοσοφίας τῆς γλώσσης καὶ τῆς θρησκείας ἀπὸ ἱστορικῆς ἀπόψεως, ἰδίως δὲ εἰς τὴν μελέτην τῆς πλατωνικῆς φιλοσοφίας καὶ εἰς βιβλικάς, ἐκκλησιαστικὰς καὶ λειτουργικὰς μελέτας. Τὰ σπουδαιότερα τῶν συγγραμμάτων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Περιγραφὴ τῆς Ρώμης» (3 τόμοι, Στουτγάρδη 1830—1843), «Αἱ βασιλικαὶ τῆς χριστιανικῆς Ρώμης» (Μόναχον 1843), «Ὁ Ἰγνάτιος τῆς Ἀντιοχείας καὶ ἡ ἐποχή του» (Ἀμβοῦργον 1847), «Τὰ σημεῖα τῶν καιρῶν» (2 τόμοι, Λειψία 1855), «Ὁ θεὸς ἐν τῇ ἱστορίᾳ» (3 τόμοι, Λειψία 1857—1858), «Πλήρης βίβλος διὰ τὴν κοινότητα» (9 τόμοι, Λειψία 1858—1870). Ἡ ἔκδοσις τῶν πλείστων τόμων τοῦ τελευταίου ἔργου του ἐγένετο μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μποῦνσεν καὶ ἐπὶ τῇ βάσει τῶν σημειώσεών του ὑπὸ τῶν Χόλτσμανν καὶ Καμπχάουζεν. Βιογραφίαν του ἐξέδωκεν ἡ σύζυγός του *Φράνς*, τὸ γένος *Γουάντιγκτον* (2 τόμοι, Λονδῖνον 1867). Π. Χ. Χ.

— **Μποῦνσεν** (Bunsen), ***λύχνος*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *λύχνος* Μποῦνσεν.

— **Μποῦνσεν** (Bunsen), ***στοιχεῖα*** *[Φυσ.]*· βλ. λ. *ἠλεκτρικὰ* στοιχεῖα.

**Μπούντα**, ἢ ***Βούδα*** (Buda) *[Γεωγρ.]*. Τὸ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Δουνάβεως τμῆμα τῆς Βουδαπέστης (βλ. λ.).

**Μπούντα *Γκαγιὰ*** (Buddha Gaya) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Βούδα* Γκαγυά). Χ. Δ.

— **Μπούντα *Λᾶ*** (Buddha La) *[Γεωγρ.]*. Σύμπλεγμα λόφων τοῦ Θιβὲτ (βλ. λ. *Βούδα Λᾶ*).

**Μπούντα *Καπάλα*** (Buddha Kapâla). Δαιμονιώδης μορφὴ ἀποδιδομένη εἰς τὸν Βούδαν (βλ. λ. *Βούδα* Καπάλα).

**Μπούνταερς** (Budaörs) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐγγαρίας ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Βουδαπέστης-Μπρούκ. Κάτ. 8.000. Εἶναι κέντρον θερινῆς διαμονῆς. Γ. Θ. Κ.

**Μπουντάϊ-*Ντελεάνου*** (Budai-Deleanu), ***Ἰωάννης***. Ρουμᾶνος ποιητὴς καὶ λεξικογράφος (1770—1830). Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων «Λεξικὸν ρουμανογερμανικὸν» καὶ τὰ ἡρωϊκὰ κωμικὰ ποιήματα: «Ἡ Ἀτσιγγάνα» (δευτέρα ἔκδοσις 1923), ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐμιμήθη τὸν «Μαινόμενον Ὀρλάνδον» καὶ τὴν «Ἀπελευθερωθεῖσαν Ἱερουσαλήμ», καὶ τὰς «Τρεῖς γυναῖκας» (νεωτέρα ἔκδοσις 1928). Μετέφρασεν ἐπίσης τὸν «Θεμιστοκλῆ» τοῦ Μεταστασίου. Μ. Δ. Β.

**Μπουντὰκ-Ὀζοῦ** *[Γεωγρ.]*. Περιοχὴ τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, περιλαμβάνουσα τὰ ἀνατολικὰ τῆς ὑποδιοικήσεως Σουγγουρλοῦ τοῦ νομοῦ Γιοζγὰτ (Ὑοσκάτης) καὶ μέρος τῆς ὑποδιοικήσεως Ζήλα τοῦ νομοῦ Τοκάτ. Ν. Μ.

**Μπουντάκ.** Πατὴρ τοῦ Σεϊμπ-Χάν, γενάρχου τῆς δυναστείας τῶν Οὐζμπέκων (Οὐζμπεκιάν), ἥτις ἐκυβέρνησε κατὰ τὸν ΙΖ΄ αἰῶνα μέρος τῆς Ὑπερωξονείου χώρας (Μαβερὰν-νάχρ). Ν. Μ.

**μπουνταλαλίκι** (τό)· τὸ γνώρισμα τοῦ μπουνταλᾶ, διανοητικὴ νωθρότης, εὐήθεια.

**μπουνταλᾶς** (ἀραβ. *μπουνταλᾶ*)· βλάξ, εὐήθης, μωρός. Ὁ Σουΐδας ἀναφέρει κάποιον Βουταλίωνα περίφημον διὰ τὴν βλακείαν του. Ἡ ὁμοιότης τῆς λέξεως δύναται νὰ παρασύρῃ εἰς ἐτυμολογικὴν πλάνην. Ν. Μ.

**Μπουντάουν**, ἢ ***Μπουντάον*** (Budaun ἢ Budaon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, ἐν τῇ διοικήσει Ροχιλκάνδης τῶν Ἡνωμένων Ἐπαρχιῶν, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας (division), κειμένη 62 χλμ. ΝΔ. τοῦ Μπάρελλυ. Ἱδρύθη κατὰ τὴν παράδοσιν τῷ 905 μ. Χ., ἐγένετο δὲ ἐπανειλημμένως θέατρον ταραχῶν καὶ στάσεων. Κάτ. 38.230. Ἡ ὁμώνυμος ἐπαρχία ἐκτάσεως 4.960 τετρ. χλμ., ἔχει ἔδαφος εὐφορώτατον, ἀρδευόμενον καλῶς ὑπὸ τοῦ Γάγγου καὶ τῶν παραποτάμων αὐτοῦ. Κάτ. 1.024.000. Χ. Δ.

**Μπούντβαϊς** (Budweis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας (βλ. λ. *Μπουντέγιοβίτσε*).

**Μποῦντγε** (Budge), ***Ἀλβρέχτος***. Γερμανὸς ἀνατόμος (1846—1885). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Γκραϊσβάλδῃ καὶ ἔγραψε: «Περὶ ἀναπτύξεως τῆς σπονδυλικῆς στήλης», «Περὶ τῶν λυμφατικῶν ἀγγείων τοῦ ἥπατος, νεφρῶν, χόνδρων καὶ ὀστῶν», «Περὶ κυκλοφορίας τῆς λύμφης εἰς τὰ ἔμβρυα τῶν ὀρνίθων καὶ θηλαστικῶν», «Περὶ καταλήξεως τῶν νευρικῶν ἰνῶν εἰς τὰ διάφορα μέρη τοῦ σώματος» κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μποῦντγε** (Budge), ***Ἰούλιος-Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς φυσιολόγος (1811—1888). Τῷ 1847 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν Βόννῃ καὶ τῷ 1856 τακτικὸς ἐν Γκραϊσβάλδῃ. Ἀσχοληθεὶς ἰδιαιτέρως μὲ τὸ νευρικὸν σύστημα, κατέδειξε τὴν ἐξάρτησιν τῶν οὐρητικῶν καὶ γεννητικῶν ὀργάνων ἐκ τμημάτων τινῶν τοῦ ἐγκεφάλου. Πειραματιζόμενος ἐπὶ κονίκλων ἀνεκάλυψεν ὅτι ἐρεθισμός τις προξενούμενος ἐπὶ τοῦ δ΄ ὀσφυϊκοῦ σπονδύλου προκαλεῖ συσταλτικὰς κινήσεις ἐπὶ τῆς κατωτέρας μοίρας τῆς μήτρας. Ἐπίσης ἀνεκάλυψεν ὅτι τὸ συμπαθητικὸν ἐκφύεται ἐκ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Ἄλλαι ἐργασίαι αὐτοῦ ἀφορῶσι τὰς κινήσεις τῆς ἴριδος. Διὰ τὰς ἐργασίας του ταύτας ἐβραβεύθη ὑπὸ τῶν Ἀκαδημιῶν τῶν Παρισίων καὶ Βρυξελλῶν. Ἔγραψε: «Περὶ τῆς ἐπηρείας τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος ἐπὶ τῶν κινήσεων τῆς κύστεως» «Ἔρευναι ἐπὶ τοῦ νευρικοῦ συστήματος» (1841—1842), «Γενικὴ παθολογία» (1843), «Φυσιολογία» (1862).

**Μποῦντε**, ἢ ***Μπουντέους*** (Budde ἢ Buddeus), ***Ἰωάννης-Φράντζ***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1667-1729). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Βυρτεμβέργης καὶ ἀφοῦ ἐδίδαξε φιλοσοφίαν ἐν Ἰένῃ καὶ ἑλληνικὴν καὶ λατινικὴν γλῶσσαν ἐν Κοβούργῳ, διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἠθικῆς ἐν Χάλλῃ. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἐδημοσίευσεν ἀρκετὰ ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἀκόλουθα: «De erroribus stoicorum in philosophia morali» (1695), «Elementa philosophiae instumentalis seu institutionum philosophiae eclecticae, theoricae, practicae» (1703), σχὸν μεγάλην ἐπιτυχίαν καὶ ἀριθμῆσαν τὴν δεκάτην του ἔκδοσιν, «Introductio ad historiam philosophiae Hebraeorum» (1702). Τῷ 1705 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν Ἰένῃ, ἐκδοὺς τὰς «Theses de atheismo et superstitione» (1717), αἱ ὁποῖαι μετεφράσθησαν εἰς τὴν γερμανικὴν (1723) καὶ τὴν γαλλικὴν (1756). Ἐν ὀνόματι ἑνὸς μυστικίζοντος ἐκλεκτισμοῦ ἤρχισε σφοδρὸν ἀγῶνα κατὰ τῶν θεωριῶν τοῦ Wolf διὰ τῶν «Σκέψεων ἐπὶ τῆς φιλοσοφίας τοῦ Βόλφ» (1724) κ. ἄ. Ὁ Μποῦντε ἦτο διακεκριμένος σοφὸς καὶ καθηγητής. Θ. Π.

**Μποῦντε** (Bunte) ***ἅλας*** *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. λ. *αἰθυλοθειοθειικὸν* νάτριον.

**Μπουντέγιοβίτσε**, ἢ ***Μπουντβάϊς*** (τσεχ. Budějiovice, γερμ. Budweis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλαβακίας ἐν τῇ Ν. Βοημίᾳ, κειμένη παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Μολδαύα μετὰ τοῦ Μάλτς, 128 χλμ. πρὸς Ν. τῆς Πράγας, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι ἕδρα ἐπισκοπῆς καὶ ἔχει ὡραῖον καθεδρικὸν ναὸν (ΙΣΤ΄ αἰῶνος) καὶ δημαρχιακὸν μέγαρον (1730) ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως. Διεξάγει ἐμπόριον σιτηρῶν, ξυλείας καὶ ἅλατος καὶ ἔχει βιομηχανίας χάρτου, χημικῶν εἰδῶν, πλίνθων, μηχανουργεῖα κλπ. Κάτ. (1921) 43.961, ἐξ ὧν τὰ 18% Γερμανοί. Ἱδρυθεῖσα κατὰ τὸν ΙΓ΄ αἰῶνα ὑπὸ τοῦ Μποντιβόϊ Βίτκοβετς προώδευσε ταχέως, ἔπαιξε δὲ σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Βοημίας κατὰ τοὺς ΙΣΤ΄—ΙΗ΄ αἰῶνας. Χ. Δ.

**Μπουντέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Σαγεΐκων τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νόμου Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 100. Χ. Δ.

**Μπόϋντελ** (Boydell), ***Ἰωάννης***. Ὀνομαστὸς Ἄγγλος ἐκδότης καὶ χαράκτης (1719—1804). Ἔδειξε



Digitized by Google

τάσεις πρὸς τὴν χαρακτικὴν μόνον εἰς ἡλικίαν 21 ἔτους καὶ εἰσῆλθε τότε εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Τὸμς ἐν Λονδίνῳ, ὅπου ἐξησκήθη ἐπὶ 6 ἔτη, δημοσιεύσας κατ' ἀρχὰς «Ἓξ ἀπόψεις τοῦ Λονδίνου», γνωστὰς ὑπὸ τὸ ὄνομα «Μπρὶτζ-Μπούκ». Τῷ 1751 ἐδημοσίευσε συλλογὴν «52 ἀπόψεων τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς Οὐαλλίας», αἵτινες ἔσχον μεγίστην ἐπιτυχίαν καὶ ἐγένοντο ἡ βάσις τῆς κολοσσιαίας περιουσίας του. Ἵδρυσε τότε ἐκδοτικὸν οἶκον χαλκογραφιῶν πρὸς τὸν σκοπὸν τῆς ἐξαπλώσεως τῆς χαρακτικῆς τέχνης καὶ εἰς τὴν πατρίδα του καὶ ἀπαλλαγὴν αὐτῆς ἀπὸ τῶν ξενικῶν ἐπιδράσεων καὶ ἐξαρτήσεων. Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ἀπευθυνθῆ εἰς Γάλλους καὶ Ἰταλοὺς ὀνομαστοὺς καλλιτέχνας, βραδύτερον δὲ ἐδημιούργησε καὶ Ἄγγλους τοιούτους, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ Κάνοτ, ὁ Ἥρλαμ, ὁ Γκρήν, ὁ Γοῦλλετ κτλ., οἱ ὁποῖοι ἐξετέλεσαν τοὺς ὀνομαστοτέρους πίνακας τῆς Ἀγγλίας, πολλοὺς τῶν ἀριστουργημάτων τῶν ξένων χωρῶν καὶ προσωπογραφίας ἀγγλικῶν προσωπικοτήτων. Αἱ χαλκογραφίαι αὗται συνεκεντρώθησαν εἰς 9 τόμους ἐκ 571 πινάκων. Ἐκ τῶν κυριωτέρων ἐκδόσεων αὐτοῦ εἶναι καὶ ἡ εἰκονογραφημένη ἔκδοσις τῶν ἔργων τοῦ Σαιξπήρου, περιλαμβάνουσα 96 ὡραίους πίνακας, ἀναπαριστῶντας σκηνὰς ἐκ τῶν ἔργων τοῦ μεγάλου δραματικοῦ καὶ ἐκδοθέντας τῷ 1791—1802 εἰς 11 τόμους. Πρὸς δημιουργίαν τοῦ ἔργου τούτου εἶχεν ἀναθέσει εἰς τοὺς καλυτέρους Ἄγγλους ζωγράφους τὴν ἐκτέλεσιν τῶν πινάκων ζωγραφικῆς, ἐκ τῶν ὁποίων κατόπιν ἔκαμε τὰς χαλκογραφίας. Τὸ ἔργον ὅμως τοῦτο ἀπῄτησε κολοσσιαῖα κεφάλαια, τὰ ὁποῖα ἀπερρόφησαν ἅπασαν τὴν περιουσίαν του. Μὴ δυνηθεὶς δὲ νὰ ἐπανακτήσῃ ταύτην, καθότι, ἕνεκα τῆς ἐκρήξεως τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, περιωρίσθη μεγάλως ἡ κατανάλωσις τοῦ ἔργου, ἐπὶ τῆς ὁποίας εἶχε προϋπολογίσει, ἠναγκάσθη νὰ κάμῃ στάσιν πληρωμῶν καὶ νὰ πωλήσῃ τοὺς πίνακάς του διὰ λαχείου. Τῷ 1790 εἶχεν ἐκλεγῆ λόρδος δήμαρχος τοῦ Λονδίνου.

Μ. Δ. Β.

**Μπουντὲν** (Boudin), ***Ἰωάννης-Χριστιανὸς-Μᾶρκος-Φραγκῖσκος-Ἰωσήφ.*** Ἐπιφανὴς Γάλλος ἰατρὸς (1806—1867). Καταταχθεὶς ἐν τῷ στρατῷ μετέσχε διαφόρων ἀποστολῶν καὶ ἔγραψε: «Traité des fièvres intermittentes, remittentes et continues des pays chauds», καὶ «Essai de géographie médicale» (1842). Κατόπιν διετέλεσεν ἀρχίατρος τῆς στρατιᾶς τῶν Ἄλπεων (1848—1849) καὶ τῆς στρατιᾶς τῆς Ἰταλίας (1859). Ἐδημοσίευσε περὶ τὰς 146 πραγματείας εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, σχετικὰς μὲ τὰς ἐνδημικὰς νόσους καὶ τὴν ἐπήρειαν τούτων, τὰς ἀναλογίας τῆς ὑγείας καὶ θνησιμότητος εἰς τὸν στρατὸν τῆς ξηρᾶς καὶ τῆς θαλάσσης, μὲ τὸ ὕψος τοῦ ἀναστήματος καὶ τὸ βάρος τῶν ἀνθρώπων παρὰ τοῖς διαφόροις λαοῖς, κτλ. Διὰ τῶν ἐργασιῶν του τούτων ἐγένετο εἰσηγητὴς τῆς ἰατρικῆς στατιστικῆς ἐν τῷ στρατῷ. Συνέγραψεν ὡσαύτως: «Traité de géographie et de statistique médicales et des maladies endémiques» (1858), βραβευθὲν ὑπὸ τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου. Ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρεται μέθοδος πρὸς λῆψιν μεγάλων ποσοτήτων ἀρσενικοῦ εἰς διάστημα ἑνὸς εἰκοσιτετραώρου.

Β. Ρ.

**Μποὺ-Ντενὶμπ** (Bou-Denib) *[Γεωγρ.]*. Στρατιωτικὸς σταθμὸς τοῦ ἀνατολικοῦ γαλλικοῦ Μαρόκκου, κείμενος ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Γκουΐρ. Κάτοικοι 1.000.

Χ. Δ.

**Μπούντεσρατ** (Bundesrat=συμβούλιον τῆς δμοσπονδίας). Οὕτω καλεῖται ἐν μὲν τῇ Γερμανίᾳ μία τῶν νομοθετικῶν βουλῶν, ἐν δὲ τῇ Ἑλβετίᾳ ἡ σύνοδος τῶν μελῶν τῆς ἐκτελεστικῆς ἐξουσίας.

Α. Δ.

**Μπουντίλοβιτς**, ***Ἀντώνιος-Σεργέγιεβιτς.*** Ρῶσος συγγραφεὺς (1846—1907). Διορισθεὶς καθηγητὴς τῆς σλαβικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πετρουπόλεως, ἐπεσκέφθη κατ' ἐντολὴν τῆς ρωσικῆς κυβερνήσεως τὰς σλαβικὰς ἐπαρχίας τῆς Γερμανίας, Αὐστρίας καὶ Τουρκίας. Ἐδημοσίευσε πλῆθος ἔργων, ἐν οἷς: «Ἡ Βοημία ὡς χώρα καὶ λαός», «Μελέτη περὶ τῆς ἱστορίας τῶν Σέρβων», «Φιλολογικὴ ἕνωσις τῶν σλαβικῶν λαῶν», «Οἱ πρωτογενεῖς Σλάβοι ἀπὸ γλωσσικῆς ἀπόψεως».

Θ. Β.

**Μπουντὸ** (Boudot). Οἰκογένεια Γάλλων βιβλιοπωλῶν καὶ τυπογράφων τοῦ ΙΗ' καὶ ΙΘ' αἰῶνος, τὰ κυριώτερα μέλη τῆς ὁποίας εἶναι: —1) ***Ἰωάννης***, ἀποθανὼν τῷ 1706. Διετέλεσε τυπογράφος τοῦ βασιλέως καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ συνέγραψε καὶ ἐξέδωκε «Λατινογαλλικὸν λεξικόν» (1704), τὸ ὁποῖον ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος ἠρίθμησε 23 ἐκδόσεις. —2) ***Ἰωάννης***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1685—1754). Διετέλεσε καὶ οὗτος τυπογράφος τοῦ βασιλέως καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ διεκρίθη διὰ τὴν ἱκανότητα ἣν ἀπέκτησεν εἰς τὴν σύνταξιν καταλόγων βιβλιοθηκῶν. —3) ***Πέτρος-Ἰωάννης***, ἀββᾶς (1689—1711). Ὑπῆρξε διακεκριμένος βιβλιογράφος καὶ διετέλεσε βιβλιοθηκάριος τοῦ βασιλέως καὶ λογοκριτής. Ἐξέδωσε πολλὰ βιβλιογραφικὰ ἔργα καὶ «Βιβλιοθήκην τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου» εἰς τρεῖς τόμους (1768).

Μ. Δ. Β.

**μπουντούρης** (ὁ)· βλ. *βουδούρης*.

**Μπουντούρης.** Ὄνομα ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν (βλ. λ. *Βουδούρης*).

**Μπουντρίο** (Budrio), ***Τζιάκομο ντὶ—.*** Ἰταλὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Λίππι* Τζιάκομο).

**Μπουντροὺμ** (Boudroum) *[Γεωγρ.]*. Παράλιος πόλις τῆς Τουρκίας ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ καὶ τῷ νομῷ Μούγλων, ἐπὶ τῆς θέσεως τῆς ἀρχαίας *Ἁλικαρνασσοῦ* (βλ. λ. τ. Γ', σ. 824 γ' ἑ.). Κάτοικοι (1927) 4 290.

Ν. Μ.

—*[Στρατ.]* Ἡ πόλις *Μπουντρούμ*, λόγῳ τῆς γεωγραφικῆς αὐτῆς θέσεως ἐν τῷ Κεραμεικῷ κόλπῳ καὶ τοῦ λίαν κολπώδους (ἐξαιρέτων ὅρμων καὶ λιμένων) κατὰ τὸ τμῆμα ἐν γένει τοῦτο τῆς παραλίας τῆς Μ. Ἀσίας καὶ νοτιοανατολικώτερον, κέκτηται σημαντικὴν στρατιωτικὴν σπουδαιότητα, ἣν ἐπαυξάνει ἡ δι' ἁμαξιτοῦ σύνδεσις αὐτῆς μετὰ τοῦ Κουγιουτζὰκ καὶ τοῦ Μιλὰς (Μυλάσων). Οἱ Τοῦρκοι, ἐκτιμῶντες καλῶς τὴν στρατιωτικὴν τοῦ Μπουντροὺμ ἀξίαν, ἔχουσιν ἤδη ἱδρύσει καθ' ὅλην τὴν παραλιακὴν ἀκτήν: α') τοῦ Γκουλοὺκ ἢ Κουλοὺκ τοῦ Ἰασικοῦ κόλπου (ἀντικρὺ τῆς νήσου Λέρου καὶ οὐχὶ μακρὰν αὐτῆς), β') τοῦ Μπουντροὺμ καὶ τοῦ Κέρμε, τοῦ Χατὰρ καὶ τοῦ Κάβο Μπουντροὺμ ἐν τῷ Κεραμεικῷ κόλπῳ (ἔναντι τῆς νήσου Κῶ καὶ ἐγγὺς αὐτῇ) καὶ γ') τοῦ Μέρμερις ἢ Μαρμαρᾶ ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Μάκρης, ἰσχυρὰ ἐπάκτια πυροβολεῖα, ὅπως ἀποτρέψωσιν ἀποτελεσματικῶς πᾶσαν τυχὸν ἐχθρικὴν ἀπόβασιν εἰς Μικρὰν Ἀσίαν, ἐνῷ ὀπίσω (πρὸς Α.), ἐν κεντρικῇ θέσει παρὰ τὸ Μιλάς, ἔχουσιν ἱδρύσει ἀεροδρόμιον πρὸς ἐπιτήρησιν τῶν κόλπων Μενδελίας, Κεραμεικοῦ καὶ Μάκρης. Παρομοίαν ἐπάκτιον ὀχύρωσιν ἔχουσιν ἐσχάτως ἐκτελέσει οἱ Τοῦρκοι καὶ βορειότερον εἰς τοὺς κόλπους τοῦ Ἀδραμυττίου καὶ τῆς Σμύρνης καὶ καθ' ὅλην τὴν παραλιακὴν ἀκτὴν τῆς περιφερείας Νέας Ἐφέσου—Ἀγιασουλούκ, ὅπου ἀκόμη ὠχύρωσαν καὶ δευτέραν τοποθεσίαν ἀντιστάσεως πρὸς τὸ ἐσωτερικὸν καὶ εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας, ἐνῷ ἐξ ἄλλου εἰς τὸ Σεβδίκιοϊ, εἰς τὸ Ἀδραμύττιον καὶ τὸ Μπαΐραμιτς ἵδρυσαν ἀεροδρόμια. Οὕτως οἱ Τοῦρκοι ἠσφάλισαν μετὰ πάσης ἐπιμελείας τὰ κυριώτερα σημεῖα τῆς μικρασιατικῆς πρὸς τὸ Αἰγαῖον παραλίας, ὅπου θὰ ἦτο πιθανὴ ἐχθρική τις δι' αὐτοὺς ἀπόβασις στρατοῦ.

Ν. ΣΣ

**μπουντρούμι** (τὸ) (τουρκ. *μπουντρούμ*)· ὑπόγειον. Κατὰ τὸν Τοῦρκον λεξικογράφον Σεμσεδδὶν Σαμῆ Φράσαρη παράγεται ἐκ τοῦ ἑλληνικοῦ *ὑπόδρομος*.

Ν. Μ.

**Μπουξμπάουμ** (Buxbaum), ***Ἰωάννης-Χριστιανός.*** Γερμανὸς βοτανολόγος (1693—1730). Τῷ 1724 ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ Μεγάλου Πέτρου εἰς Πετρούπολιν, ὅπου συνέβαλεν εἰς τὴν ἵδρυσιν τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ ἐκεῖ πανεπιστημίου. Διέτρεξε χάριν βοτανικῶν μελετῶν μέγα μέρος τῆς Ρωσίας, ἔφθασε μέχρι Σιβηρίας καὶ τῷ 1726 ἐπεσκέφθη τὴν Τουρκίαν. Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι: «Plantarum minus cognitarum centuriae» (Πετρούπολις 1728—1740), σπουδαιότατον σύγγραμμα διὰ τὴν βλάστησιν τῆς Ἀνατολῆς καὶ ἰδιαιτέρως τῆς Τουρκίας.

Π. Χ. Χ.

**Μπουξμπάρδι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας συνοικισμοῦ *Βελανιδιὲς* (βλ. λ.).

**Μπουξτεχοῦντε** (Buxtehude), ***Ντίτριχ.*** Διάσημος Δανὸς μουσικὸς (1637—1707). Διορισθεὶς ὀργανοκρούστης ἐν τῷ ναῷ τῆς Παναγίας τῆς Λυβέκης, ἀπέκτησε τοσαύτην φήμην, ὥστε ὁ δεκαεννεαετὴς τότε Ἰ. Σεβ. Μπὰχ μετέβη ἐκεῖ πεζῇ ἐξ Ἀρνστάτης, ἵνα ἀκούσῃ τὴν ὑπέροχον τέχνην του. Αἱ συνθέσεις του χρησιμοποιοῦν συχνάκις τὰ τεχνικὰ μέσα τῶν Ἰταλῶν καὶ παρουσιάζουν ἰδιότητας περισσότερον κοσμικῆς ἢ θρησκευτικῆς μουσικῆς. Ἐκτὸς τῶν ἔργων του δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, ἅτινα ἐξέδωκεν εἰς 10 τόμους ὁ Σπίττα, σῴζονται 11 σονάται, 5 γαμήλιοι ᾠδαὶ καί τινες καντάται.

Γ. Σ.

**Μποῦξτον** (Buxton)· βλ. λ. *Μπάξτον*.

**Μποῦξτορφ** (Buxtorf). Οἰκογένεια Γερμανῶν ἑβραϊστῶν τοῦ ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνος. Ταύτης κυριώτερα μέλη ὑπῆρξαν:

—1) ***Ἰωάννης*** ὁ πρεσβύτερος. Ἐγεννήθη τῷ 1564 ἐν Κάμεν τῆς Βεστφαλίας καὶ ἀπέθανε τῷ 1629 ἐν Βασιλείᾳ. Ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῶν ἑβραϊκῶν καὶ χαλδαϊκῶν σπουδῶν ἐν Γερμανίᾳ. Τῷ 1591 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἑβραϊκῆς γλώσσης ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βασιλείας. Αἱ ἐργασίαι του βασίζονται κυρίως ἐπὶ τῶν συγγραμμάτων τῶν ραββίνων, τὰ ὁποῖα ἐγνώριζε κατὰ βάθος. Τὸ σπουδαιότερον ἔργον του εἶναι: «Λεξικὸν τῆς ἑβραϊκῆς καὶ χαλδαϊκῆς γλώσσης» (1607).

—2) ***Ἰωάννης*** ὁ νεώτερος. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1599—1664), τὸν ὁποῖον διεδέχθη τῷ 1630 εἰς τὴν ἕδραν τῆς ἑβραϊκῆς ἐν Βασιλείᾳ. Ἐκ τῶν ἔργων του ἄξιον λόγου εἶναι τὸ «Λεξικὸν τῆς χαλδαϊκῆς καὶ συριακῆς γλώσσης» (1622).

—3) ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος.*** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1645—1704). Διεδέχθη τὸν πατέρα του ὡς καθηγητὴς τῆς ἑβραϊκῆς ἐν Βασιλείᾳ καὶ ἠσχολήθη εἰς τὴν ἐπανέκδοσιν τῶν ἔργων τοῦ πάππου του.

—4) ***Ἰωάννης.*** Ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου (1663—1732), τὸν ὁποῖον διεδέχθη εἰς τὴν ἕδραν τῆς ἑβραϊκῆς ἐν Βασιλείᾳ.

Π. Χ. Χ.

**Μπουξχαῖβντεν** (Buxhoewden), ***Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος, κόμις φὸν—.*** Ρῶσος στρατηγὸς (1750—1811). Διεκρίθη εἰς πολλὰς μάχας, διετέλεσεν ὑπασπιστὴς τοῦ πρίγκιπος Ὀρλώφ, διοικητὴς τῆς Βαρσοβίας, γενικὸς διοικητὴς τῆς Πετρουπόλεως (1796) καὶ γενικὸς διοικητὴς τῶν ρωσικῶν ἐπαρχιῶν τῆς Βαλτικῆς. Τῷ 1805 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Ἄουστερλιτς, κατὰ τὴν ὁποίαν διηύθυνε τὴν ἀριστερὰν πτέρυγα τῆς ρωσικῆς στρατιᾶς.

Π. Χ. Χ.

**Μπουονακκόρσι** (Buonaccorsi), ***Πιέρο***· βλ. λ. *Βάγκα*.

— **Μπουονακκόρσι** (Buonaccorsi), ***Φίλιππος.*** Ἰταλὸς συγγραφεὺς καὶ διπλωμάτης (1437—1496), γνωστὸς καὶ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Καλλίμαχος*, ὅπερ ἔλαβεν ἐν τῇ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθείσῃ «Ρωμαϊκῇ Ἀκαδημίᾳ». Κατηγορηθεὶς ἐπὶ συνωμοσίᾳ κατὰ τοῦ πάπα Παύλου Β' κατέφυγεν εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πολωνίαν, ὅπου προσελήφθη ὡς παιδαγωγὸς τοῦ βασιλέως Καζιμίρου, ὅστις ἐνεπιστεύθη βραδύτερον εἰς αὐτὸν διπλωματικάς τινας ἀποστολὰς εἰς Ἰταλίαν καὶ Τουρῖνον. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἀττίλας» (1479), «Ἱστορία τοῦ βασιλέως Βλαδισλάου» (1519) καὶ λατινιστὶ «Libellus de his quae a Venetis tentata sunt» καὶ «Persis ac Tartaris contra Turcis movendis» (1533), καθὼς καί τινα ποιήματα.

Μ. Δ. Β.

**Μπουονακκόρσο ντὰ *Μοντεμάνιο*** (Buonaccorso da Montemagno). Ἰταλὸς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Πιστόγια μεταξὺ τοῦ 1391 καὶ 1393 καὶ ἀποθανὼν ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1429. Ἔχαιρε φήμης σοφοῦ νομομαθοῦς καὶ εἶχε καταλάβει μεγάλα ἀξιώματα ἐν Φλωρεντίᾳ, γενόμενος τῷ 1421 γομφαλονιέρος καὶ ἀποσταλεὶς ὡς πρεσβευτὴς εἰς τὴν Λούκκαν, τὴν Λιγυρίαν καὶ τὸ Μιλᾶνον. Ἔγραψεν ἐρωτικὰ σονέττα κατὰ μίμησιν τοῦ Πετράρχου καὶ εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην φήμην ὡς ποιητής, θεωρούμενος ὡς ὁ καλύτερος μιμητὴς τοῦ μεγάλου διδασκάλου. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν τῷ 1559 καὶ τῷ 1718 ὑπὸ τὸν τίτλον «Πεζὰ καὶ Στίχοι».

Μ. Δ. Β.

**Μπουοναμίτσι** (Buonamici), ***Καστρούτσιο.*** Ἰταλὸς ἱστορικὸς (1710—1761). Κατὰ τὴν νεότητά του εἶχεν ἀφιερωθῆ εἰς τὸ ἱερατικὸν ἐπάγγελμα, τὸ ὁποῖον κατόπιν ἐγκατέλιπεν, εἰσελθὼν εἰς τὴν ἰδιαιτέραν φρουρὰν τοῦ Καρόλου, βασιλέως τῆς Νεαπόλεως καὶ εἶτα τῆς Ἱσπανίας, ὁ ὁποῖος ὠνόμασεν αὐτὸν ἱστοριογράφον τῆς αὐλῆς. Τὰ ἔργα του εἶχον ἀποκτήσει μέγα κῦρος καὶ προσεπόρισαν εἰς αὐτὸν μεγάλην φήμην καὶ πλούτη καὶ τιμάς. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: «Ἡμερολόγιον τοῦ Ἰταλικοῦ πολέμου» (1751), «Περὶ τοῦ πολέμου τοῦ 1744 μεταξὺ Αὐστρίας καὶ Νεαπόλεως» κ. τ. λ.

Μ. Δ. Β.

**Μπουοναπάρτε** (Buonaparte)· βλ. λ. *Βοναπάρται*.

**Μπουοναρρότι** (Buonarroti), ***Μιχαὴλ-Ἄγγελος***· βλ. λ. *Μιχαὴλ-Ἄγγελος* Μπουοναρρότι.

— **Μπουοναρρότι** (Buonarroti), ***Φίλιππος-Μιχαήλ.*** Ἰταλὸς πολιτικὸς (1761—1837). Κατήγετο ἐκ τῆς οἰκογενείας τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Πίζης νομικά, ἀσπασθεὶς λίαν ἐνωρὶς τὰς φιλελευθέρας ἰδέας καὶ ἀναγκασθεὶς νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Κορσικὴν τῷ 1789, μετὰ τὴν κήρυξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, τὴν ὁποίαν ἐχαιρέτησε μετ' ἐνθουσιασμοῦ. Ἐκεῖ ἵδρυσε διαφόρους πατριωτικοὺς συλλόγους καὶ ἐξέδωσε τὴν ἐφημερίδα «Ὁ φίλος τῆς Ἰταλικῆς ἐλευθερίας», ἥτις ὑπῆρξεν ἡ πρώτη ἰταλικὴ ἐφημερίς, ἡ ὁποία ἐξῆρε τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν. Οἱ Γάλλοι ἀντήμειψαν αὐτὸν διὰ τὰς δημοκρατικάς του ἰδέας καὶ τοῦ ἀνέθεσαν διάφορα ἀξιώματα ἐν Κορσικῇ, ὅπου κατεπολέμησε τὸ κίνημα τοῦ Πάολι. Βραδύτερον παρηκολούθησε τὴν ἐκστρατείαν τοῦ στρατηγοῦ Μασσενὰ εἰς τὴν Ἰταλίαν ὡς ἐπαναστατικὸς πράκτωρ, ἀλλὰ μετὰ τὴν ἧτταν τοῦ Ροβεσπιέρρου, τοῦ ὁποίου ἠκολούθει τὰς ἰδέας, ἀπεστάλη εἰς Παρισίους, ὅπου ἐφυλακίσθη. Γνωρισθεὶς εἰς τὰς φυλακὰς μετὰ τοῦ Μπαμπὲφ καὶ προσχωρήσας εἰς τὰς κομμουνιστικὰς ἰδέας του, ἔλαβε κατόπιν μέρος εἰς τὴν παρ' ἐκείνου ὀργανωθεῖσαν συνωμοσίαν, συντάξας τὴν περίφημον «προκήρυξιν τῶν ἴσων» καὶ πολυαρίθμους λιβέλλους. Συλληφθεὶς καὶ καταδικασθεὶς εἰς ἐξορίαν, παρέμεινεν ἐπὶ τρία ἔτη εἰς τὸ Χερβοῦργον, μεταφερθεὶς κατόπιν εἰς τὴν Γενεύην, ὅπου ὅμως ἐξηκολούθει νὰ συνωμοτῇ κατὰ τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Ναπολέοντος καὶ ἀνεδείχθη ἀρχηγὸς τῶν «καρμπονάρων». Καταδιωχθεὶς ὅμως καὶ ἐκεῖ, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὰς Βρυξέλλας, ὅπου ἔζησεν ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Ἰάκωβος

Digitized by Google

*Ραϊμὸν* καὶ ἐξέδωσε τῷ 1828 τὴν «Ἱστορίαν τῆς συνωμοσίας διὰ τὴν ἰσότητα, τὴν ἐπονομασθεῖσαν συνωμοσίαν τοῦ Μπαμπέφ». Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Ἰουλίου τοῦ 1830 ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους καὶ προσεπάθησε νὰ ὀργανώσῃ ἐπαναστατικὴν ἐκστρατείαν εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐμποδισθεῖσαν ὑπὸ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως. Ὁ Μπουοναρρότι κατ᾽ ἀρχὰς εἶχε συνεργασθῆ καὶ μετὰ τοῦ Ματσίνι, ἀλλὰ βραδύτερον ἀπεχωρίσθη ἀπ᾽ αὐτοῦ καὶ ἐγένετο ἀντίπαλός του, διαφωνῶν εἰς τὰς μεθόδους πρὸς ἐπίτευξιν τῆς ἰταλικῆς ἀπελευθερώσεως καὶ ἐπιμένων εἰς τὸν καρβοναρισμόν, ὅπως τὸν εἶχε μεταρρυθμίσει ὁ ἴδιος. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του εἶχεν ἐγκαταλειφθῆ ἀπὸ τοὺς περισσοτέρους τῶν ὀπαδῶν του, δὲν ἔπαυσεν ὅμως ν᾽ ἀπολαμβάνῃ μεγάλης ἐκτιμήσεως καὶ θαυμασμοῦ μεταξὺ τῶν δημοκρατικῶν, οἱ ὁποῖοι ἐθεώρουν αὐτὸν ὡς τὸν πατριάρχην τῆς δημοκρατίας.

Μ. Δ. Β.

**Μπουονταλέντι** (Buontalenti), ***Βερνάρδος***, ὁ ἐπιλεγόμενος delle Girandole. Ἰταλὸς ποιητής, ἀρχιτέκτων, γλύπτης, λιθογλύφος, μικρογράφος καὶ ζωγράφος ἐκ Φλωρεντίας (1536—1608). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σαλβιάτι, τῷ Μπροντζῖνο, τῷ Βαζάρι καὶ τῷ Μιχαὴλ Ἀγγέλῳ. Εἰργάσθη εἰς τὴν συμπλήρωσιν τοῦ Palazzo Vecchio τῆς Φλωρεντίας, ἔτι δ᾽ εἰς τὸ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει παλάτιον Uffizi καὶ εἰς τοὺς περιφήμους κήπους Boboli. Ἕτερα ἔργα, ὀφειλόμενα ἐν μέρει ἢ ἐν ὅλῳ εἰς τὸν Μπουονταλέντι, εἶναι τὸ ἐν Φλωρεντίᾳ ἐπίσης παλάτιον Nonfinito, εἰς ὃ εἰργάσθησαν καὶ οἱ Caccini καὶ Vignola, τὸ ἐν τῇ αὐτῇ πόλει νοσοκομεῖον τῆς Santa Maria Nuova, ὅπερ ἵδρυσε τῷ 1287 ὁ ὑποτιθέμενος πατὴρ τῆς Βεατρίκης τοῦ Δάντου Φόλκο Πορτινάρι, ἡ ἐν Φλωρεντίᾳ ὡσαύτως ἐκκλησία τῆς Ἁγίας Τριάδος, ἧς ὁ Μπουονταλέντι κατεσκεύασε τὴν «βαρόκκειον» πρόσοψιν, ἡ παρὰ τὴν Φλωρεντίαν ἔπαυλις Petráia, ἧς διηύθυνε τὴν ἀνακαίνισιν, καὶ τὸ βασιλικὸν ἀνάκτορον τῆς Σιέννης. Ι. Μ. Π.

**Μπουοντελμόντι** (Buondelmouti), ***Χριστόφορος***. Ἰταλὸς περιηγητής, γεννηθεὶς ἐν Φλωρεντίᾳ. Ἀπὸ τοῦ 1413 περιηγήθη τὰς ἀκτὰς καὶ τὰς νήσους τῆς Ἑλλάδος πρὸς ἄγραν χειρογράφων, δι᾽ ὧν ἀκολούθως ἐπλουτίσθη ἡ βιβλιοθήκη τῶν Μεδίκων. Ἱκανὰ τῶν χειρογράφων τούτων σῴζονται σήμερον εἰς τὴν Λαυρεντιανὴν βιβλιοθήκην τῆς Φλωρεντίας. Περιοδεύσας ἐπὶ τετραετίαν τὰς Κυκλάδας «ἐν φόβῳ καὶ μεγάλῃ ἀνησυχίᾳ», λόγῳ τῶν ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἐπὶ Μωάμεθ Α΄ (1416), καταστρεπτικῶν εἰς τὸ Αἰγαῖον ἐπιδρομῶν, κατέλιπε μίαν τῶν ἀρχαιοτάτων περιγραφῶν τῶν συγγραφεισῶν ἐπὶ φραγκοκρατίας. Ἀπὸ τοῦ 1417 μέχρι τοῦ 1421 συνέταξε τὴν περιγραφὴν τῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου, διαμένων ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἐν Ρόδῳ. Τὸ ὑπ᾽ αὐτοῦ γραφὲν «Liber insularum Archipelagi» (=βιβλίον τῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου) ἀπέστειλε τῷ 1422 ἐκ Ρόδου εἰς Ρώμην πρὸς τὸν καρδινάλιον Ὀρσίνην, πρὸς ὃν καὶ ἀφιερώνει αὐτό. Ἐν τῷ ἔργῳ τούτῳ περιγράφει τὸν βίον ἐν τῷ Αἰγαίῳ διὰ σκοτεινῶν χρωμάτων, παρέχων πολυτίμους πληροφορίας περὶ τῆς ζωῆς καὶ τῆς καταστάσεως τῶν κατοίκων τῶν νήσων κατὰ τὸ πρῶτον τέταρτον τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος. Γνωστοτέρα ἔκδοσις τοῦ ἔργου τούτου εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Gabr. Rad. Ludovicus de Sinner γενομένη ἐν Λειψίᾳ καὶ Βερολίνῳ τῷ 1824, νεωτέρα δὲ καὶ μᾶλλον ἐπιμεμελημένη ἡ ὑπὸ Émile Legrand ἐν Παρισίοις τῷ 1898. Εἰς τὴν ἐν Κωνσταντινουπόλει βιβλιοθήκην τοῦ Σεραΐου ἀπόκειται χειρόγραφος ἑλληνικὴ μετάφρασις τῆς συγγραφῆς ταύτης. Ἔγραψεν ὡσαύτως περιγραφὴν τῆς Κρήτης «Cretae Descriptio», ἥτις κατεχωρίσθη εἰς τὸ περὶ Κρήτης σύγγραμμα τοῦ Ἐνετοῦ Φλαμινίου Κορνάρου, ἐξέδωκε δὲ ταύτην καὶ ὁ Κορνήλιος εἰς τὴν «Creta Sacra» (I, 1—109). Δ. Π. Π.

**Μπουοὺρ** (Bouhours), ***Δομένικος***. Γάλλος κληρικὸς καὶ λογοτέχνης (1628—1702). Ἐχρημάτισε παιδαγωγὸς τῶν πριγκίπων τοῦ Λονγκεβὶλ καὶ τοῦ μαρκησίου Σενιελαί, υἱοῦ τοῦ Κολμπέρ. Ὡς κληρικὸς εἶχε νεωτεριστικὰς ἀντιλήψεις, ἐξ οὗ καὶ ὑφίστατο τὰς λοιδορίας τῶν πουριτανῶν, ὡς συγγραφεὺς δὲ ἦτο φίλος τῆς ὑπερκαθαρευούσης δι᾽ ὃ καὶ περιεπλάκη κατ᾽ ἐπανάληψιν εἰς φιλολογικὰς διαμάχας, ἰδίως πρὸς τὸν Μενὰζ καὶ τὸν Μαιμπούργκ. Κυριώτερα ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Entretiens d' Ariste et d' Eugène» (1671), πνευματώδης καὶ παιγνιώδης φιλολογικὴ κριτική, «Doutes sur la langue française proposés à M.M. de l' Académie» (1674), «Manière de bien penser dans les ouvrages d' esprit» (1687), «Histoire de Pierre d' Aubusson, grand maitre de Rhodes» (1676) κλπ. —Ω.

**Μπουὺρ** (Buer) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας εἰς τὰ βόρεια τῆς βεστφαλικῆς ἀνθρακοφόρου περιοχῆς. Κάτ. (1919) περὶ τὰς 90.000, κυρίως καθολικοί. Ἔχει δύο σιδηροδρομικοὺς σταθμούς, 5 καθολικὰς καὶ 3 εὐαγγελικὰς ἐκκλησίας, συναγωγήν, γυμνάσιον, πρακτικὸν λύκειον, νοσοκομεῖα κλπ. Τὴν κυριωτέραν βιομηχανίαν τῆς πόλεως ἀποτελοῦν τὰ λιθανθρακωρυχεῖα. Ἐδημιουργήθη τῷ 1912 διὰ συγχωνεύσεως πολλῶν γειτονικῶν βιομηχανικῶν κέντρων (Beckhausen, Erle κ. ἄ.).

**Μποὺρ** (Burr), ***Ἀαρών***. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπέρ*).

**Μποῦρα** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Δοξαρᾶς* (Γρεβενῶν).

**Μπουράγια** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης συνοικισμοῦ *Μελιάδι* (βλ. λ.).

**Μπουραζανλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Μυροβλήτης* (βλ. λ.).

**Μπουραζέρης**, ἢ ***μπραζέρης***· συνήθης ἐν Πελοποννήσῳ ὀνομασία τοῦ ἀδελφοποιητοῦ. (βλ. λ. *ἀδελφοποιία*).

**Μπουράνο** (Burano) *[Γεωγρ.]*. Νησὶς τῆς Ἰταλίας, κειμένη κατὰ τὸ ΒΑ. μέρος τῆς λιμνοθαλάσσης τῆς Ἑνετίας. Ἡ ἐπ᾽ αὐτῆς ὁμώνυμος πόλις, πληθυσμοῦ 8.100 κατ., ἔχει ἐνδιαφέροντα μητροπολιτικὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Μαρτίνου, ὅπου εἶναι ἐναποτεθειμένα τὰ λείψανα τοῦ ἁγίου Ἀλβανοῦ, καί τινα παλαιὰ μέγαρα. Ἔχει ἀκμάζουσαν βιομηχανίαν τριχάπτων καὶ εἰδικὴν δι᾽ αὐτὴν σχολὴν μὲ 400 μαθητὰς ἀμφοτέρων τῶν φύλων, ναυπηγεῖα καὶ νηματουργεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μπουράτσα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Βαρλαὰμ τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, μετονομασθὲν *Ἁγία Τριάς*. Κάτ. (1928) 235.

**μπουραττίνι** (burattini). Ἰταλικὰ νευρόσπαστα, τῶν ὁποίων ἡ μὲν κεφαλὴ καὶ τὰ ἄκρα τῶν χειρῶν εἶναι ξύλινα, τὸ δὲ λοιπὸν σῶμα ἐκ πανίνου θυλάκου, ἐν τῷ ὁποίῳ ὁ νευροσπάστης εἰσάγει τὴν χεῖρά του δι᾽ ἧς κινεῖ τὸ νευρόσπαστον, Κατὰ τὸν Louis Moland («Molière et la comédie italienne») ἡ ὀνομασία τῶν νευροσπάστων αὐτῶν ὀφείλεται εἰς τὸν διάσημον κωμικὸν Μπουραττίνο.

Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

**Μπουραττίνο** (Burattino). Διάσημος Ἰταλὸς κωμικὸς ἠθοποιὸς τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος. Κατήγετο ἐκ Ρώμης ἢ ἐκ Φλωρεντίας καὶ κατέστη ὀνομαστὸς διὰ τὰς ἐπιτυχίας του καὶ τὴν μεγάλην ἐπιδεξιότητα καὶ τέχνην ἐν τῇ commedia dell'arte. Ἀπετέλει μέρος τοῦ περιφήμου θιάσου «Gelosi». Ὁ Μπουραττίνο ἔπαιζε τὸν ρόλον τοῦ ἀδεξίου καὶ κουτοπονήρου ὑπηρέτου καὶ εἶχε καταστῆ τόσον δημοφιλὴς ἐν Ἰταλίᾳ, ὥστε νὰ ὀνομασθοῦν ἐξ αὐτοῦ τὰ νευρόσπαστα (βλ. καὶ λ. *μπουραττίνι*).

Μ. Δ. Β.

**Μποὺργκ** (Burg) *[Γεωγρ.]*. Ὀνομασία διαφόρων πόλεων τῆς Γερμανίας, ἐξ ὧν αἱ κυριώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: —1) *Μποὺργκ παρὰ τὸν ποταμὸν Ihle*. Κάτ. 25.000. Ἔχει ἀκμαίαν βιομηχανίαν ὑποδημάτων, ὑφασμάτων, μηχανῶν, ἐπίπλων, ζύθου κτλ. καὶ διεξάγει ἐμπόριον ξυλείας, δημητριακῶν, σιδήρου καὶ ὑφασμάτων.

— 2) *Μποὺργκ παρὰ τὸν ποταμὸν Wupper*. Κάτ. 1.250. Ἔχει βιομηχανίαν χάρτου καὶ σιδήρου.

**Μπούργκ**, ἢ ***Μποὺργκ-ἀν-Μπρὲς*** (Bourg, ἢ Bourg-en-Bresse) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Αἴν, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 457 χλμ. ἀπὸ τῶν Παρισίων, μεθ᾽ ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι σπουδαιοτάτη ἀγορὰ σιτηρῶν, πουλερικῶν καὶ ἵππων καὶ ἔχει βιομηχανίας κοσμημάτων ἐκ σμάλτου. Κάτ. 20.370. Περίφημος εἶναι ὁ ἐν αὐτῇ καλλιτεχνικὸς ναὸς τοῦ Μπρού, ἱδρυθεὶς μεταξὺ 1504 καὶ 1536 ὑπὸ τῆς Μαργαρίτας δουκίσσης τῆς Σαβοΐας. Ὁ ναὸς οὗτος, μήκους 70 μ. καὶ ὕψους 20, παρουσιάζει ἁρμονικώτατον σύνολον, κοσμεῖται ὑπὸ γλυπτῶν καὶ ζωγραφιῶν πολλῶν μεγάλων καλλιτεχνῶν (Ἰωάν. Περεάλ, Ἰωάν. Λεμαίρ, Μιχαὴλ Κολόμπ, Κονράδου Μέϋτ κλπ.) καὶ περικλείει τοὺς τάφους τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας, τῆς μητρὸς αὐτοῦ Μαργαρίτας τῶν Βουρβώνων κλπ. Ἡ Μποὺργκ ἦτο κατὰ τὸν μεσαίωμα μικρὸν χωρίον καὶ πύργος, ἀνήκων εἰς τοὺς δοῦκας τῆς Σαβοΐας, προήχθη δὲ κατὰ τὸν ΙΕ΄ αἰῶνα εἰς πρωτεύουσαν τοῦ Μπρὲς καὶ προσηρτήθη εἰς τὴν Γαλλίαν τῷ 1601. Εἶναι πατρὶς τοῦ ἀστρονόμου Λαλάνδου καὶ τοῦ Ἐδγὰρ Κινέ. Χ. Δ.

**Μπουργκάς**, ἢ ***Μπουργκάζ*** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν τοπωνύμιον, ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ ἡμέτερον *Πύργος*.

**Μπουργκινιὸν** (οἱ) (Bourguignons). Μέγα πολιτικὸν κόμμα ἐν Γαλλίᾳ κατὰ τὸ τέλος τοῦ ΙΔ΄ καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος.

Διαρκοῦντος τοῦ Ἑκατονταετοῦς πολέμου καὶ εἰδικώτερον ἐπὶ τῆς βασιλείας Καρόλου ΣΤ΄ καὶ Καρόλου Ζ΄ ἡ Γαλλία ὁλόκληρος εἶχε χωρισθῆ εἰς δύο μεγάλας πολιτικὰς μερίδας, τὴν τῶν *Μπουργκινιὸν* καὶ τὴν τῶν *Ἀρμανιάκ*. Οἱ πρῶτοι ἀπετέλουν τὸ λαϊκόν, οὕτως εἰπεῖν, κόμμα, οἱ δὲ δεύτεροι τὸ ἀριστοκρατικόν, περιλαμβάνον τὴν φεουδαρχικὴν ἀριστοκρατίαν καὶ τοὺς πατρικίους τῶν πόλεων. Ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν Μπουργκινιὸν ἦτο ὁ περίφημος Ἰωάννης ὁ Ἄφοβος, δοὺξ τῆς Βουργουνδίας, ἀρχηγὸς τῆς ἰσχυροτέρας κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην φεουδαρχικῆς οἰκογενείας ἐν Γαλλίᾳ. Τῶν ἀντιπάλων του προΐστατο ὁ μέτριος φεουδαρχικὸς οἶκος τῶν Ἀρμανιὰκ τῆς μεσημβρινῆς Γαλλίας, περὶ τὸν ὁποῖον εἶχον συσπειρωθῆ οἱ πλεῖστοι τῶν ἄλλων εὐγενῶν. Ὁ μεταξὺ τῶν δύο μερίδων ἀγὼν ἔλαβε τὴν μεγαλυτέραν του ὀξύτητα, ὅταν τῷ 1407 ὀπαδοὶ τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας ἐδολοφόνησαν τὸν δοῦκα τῆς Ὀρλεάνης. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον, ὅστις ἐπηκολούθησε, καὶ ἡ μία καὶ ἡ ἄλλη ἐκ τῶν δύο μερίδων προσεταιρίζοντο ἐναλλὰξ τοὺς Ἄγγλους, οἵτινες κατεῖχον τότε μέγα μέρος τοῦ γαλλικοῦ ἐδάφους, βαθμηδὸν ὅμως, λόγῳ ἀφ᾽ ἑνὸς τῆς συνομολογηθείσης συμμαχίας τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς ἑνώσεως ἀφ᾽ ἑτέρου τῶν οἴκων τοῦ Ἀρμανιὰκ καὶ τῆς Ὀρλεάνης, τὸ κόμα τῶν Μπουργκινιὸν ἔγινε τὸ «ἀγγλικὸν κόμμα» καὶ τὸ τῶν Ἀρμανιὰκ τὸ «κόμμα τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας». Τῷ 1415 ἐπετεύχθη συμφιλίωσις τῶν δύο μερίδων, αἵτινες ἔστρεψαν ἠνωμένας τὰς προσπαθείας των ἐναντίον τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐρρίκου Ε΄ κηρύξαντος τὸν πόλεμον κατὰ τοῦ Καρόλου Ζ΄. Βραδύτερον ὅμως (1419), ὅταν ὁ δελφῖνος ἐδολοφόνησε τὸν Ἰωάννην τὸν Ἄφοβον, ὁ ἐμφύλιος σπαραγμὸς ἐπανελήφθη καὶ πάλιν. Ὁ υἱὸς τοῦ κόμιτος, Φίλιππος ὁ Καλός, ὡρκίσθη νὰ ἐκδικήσῃ τὸν πατέρα του καὶ στραφεὶς ἐκ νέου πρὸς τοὺς Ἄγγλους ἀφῆκεν εἰς αὐτοὺς ἐλευθέραν τὴν ἐπέκτασιν τῆς ἐν Γαλλίᾳ κατοχῆς των διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Troyes (1420). Ἀπὸ τοῦ 1425 ἐν τούτοις ἐπῆλθε ψυχρότης μεταξὺ τούτου καὶ τῶν Ἄγγλων, τῆς ὁποίας ἐπωφελούμενοι οἱ πάπαι Μαρτῖνος Ε΄ καὶ Εὐγένιος Δ΄ ἐπέτυχον διὰ τῆς μεσολαβήσεώς των νὰ γίνῃ τῷ 1432 ἔναρξις συμφιλιωτικῶν διαπραγματεύσεων, αἵτινες καὶ ἀπέληξαν εἰς τὴν συνθήκην τὴν συνομολογηθεῖσαν τῷ 1435 ἐν Ἀρρὰς μεταξὺ τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας καὶ τοῦ βασιλέως Καρόλου Ζ΄. Ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης, καταπαύσαντος τοῦ ἐν Γαλλίᾳ ἐμφυλίου πολέμου, οἱ Ἄγγλοι εὑρέθησαν ἐφεξῆς εἰς δύσκολον θέσιν καὶ δὲν ἐβράδυναν νὰ ἐξαναγκασθῶσιν εἰς πλήρη ἐκκένωσιν τῶν γαλλικῶν ἐδαφῶν. Γ. Ζ.

**Μπουργκινιόν**. Δύο Γάλλοι ἀδελφοὶ ζωγράφοι καὶ χαράκται (βλ. λ. *Κουρτονὰ* Γουλιέλμος καὶ — *Ἰάκωβος*).

**Μπουργκμάϊερ**, ἢ ***Μπουργκμάϊρ*** (Burgkmaier ἢ Burgkmair), ***Ἰωάννης***. Γερμανὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, υἱὸς τοῦ *Θωμᾶ Μπουργκμάϊερ*, μετρίου καλλιτέχνου, οὗ δύο πίνακες ἀπόκεινται ἐν τῷ μητροπολιτικῷ ναῷ τῆς Ἄουξμπουργ. Ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἐγεννήθη καὶ ἀπέθανεν ὁ Ἰωάννης Μπουργκμάϊερ (1473 — 1531) καὶ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἀπόκειται τὸ σύνολον σχεδὸν τῆς καλλιτεχνικῆς του παραγωγῆς. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σονκάουερ καὶ ἐπεσκέφθη τῷ 1508 τὴν Βενετίαν. Ἡ τέχνη του φέρει ἐμφανῆ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Ἀλβέρτου Ντύρερ καὶ τῶν Ἰταλῶν διδασκάλων τῆς Ἀναγεννήσεως. Ὁ Μπουργκμάϊερ ἐξεπόνησεν ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ θρησκευτικοὺς πίνακας καὶ προσωπογραφίας, ἔτι δ᾽ ἱππικὰς σκηνάς, ἐν αἷς ἔσχεν ὅλως ἰδιαιτέραν ἐπιτυχίαν. Αἱ σημαντικώταται ἀρεταὶ τῶν συνθέσεών του τὸν ἀνήγαγον εἰς τὴν περιωπὴν ἀληθοῦς ἀρχηγέτου τῆς καλλιτεχνικῆς σχολῆς τῆς Ἄουξμπουργ, συναγωνισθείσης κατὰ τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα τὰς σχολὰς τοῦ Κόλμαρ καὶ τῆς Οὔλμ. Μεταξὺ τῶν σπουδαιοτέρων ἔργων αὐτοῦ μνημονεύομεν ἐνταῦθα: μίαν σύνθεσιν ἀνήκουσαν εἰς τὸ ἔτος 1501 καὶ περιλαμβάνουσαν τὸν Χριστὸν ἐν τῷ κήπῳ τῶν Ἐλαιῶν, τὸν ἅγιον Πέτρον, τὴν Θεοτόκον καὶ δεκατέσσαρας ἁγίους· τὸν «Χριστὸν μετὰ τῆς Θεοτόκου δεχομένους τὴν λατρείαν πολυπληθῶν ἁγίων»· ἓν τρίπτυχον τοῦ ἔτους 1504, ἐν ᾧ εἰκονίζονται «Ὁ ἐσταυρωμένος» καὶ «Τὸ μαρτύριον τῆς Ἁγίας Οὐρσούλης» (ἅπαντα ταῦτα ἐν τῇ πινακοθήκῃ τῆς Ἄουξμπουργ)· τὴν «Παρθένον καθημένην ὑπὸ δένδρον καὶ δίδουσαν βότρυν εἰς τὸν παῖδα Ἰησοῦν» (1510) καὶ τὴν «Προσκύνησιν τῶν Μάγων», ἀληθὲς ἀριστούργημα (ἀμφότερα τὰ ἔργα ταῦτα ἀπόκεινται ἐν τῷ παρεκκλησίῳ τοῦ Ἁγίου Μαυρικίου ἐν Νυρεμβέργῃ)· τὸν «Ἅγιον Ἱερώνυμον» (Μουσεῖον Βερολίνου)· τὸν «Ἅγιον Ἰωάννην ἐν Πάτμῳ», τὴν «Ἐσθὴρ πρὸ τοῦ Ἀχασβήρου», τὰς προσωπογραφίας τοῦ δουκὸς τῆς Βαυαρίας Γουλιέλμου τοῦ Δ΄ καὶ τῆς συζύγου του (μουσεῖον Μονάχου), τὰς προσωπογραφίας τοῦ ζωγράφου καὶ τῆς συζύγου του (μουσεῖον Βιέννης) καὶ «Τὸ μαρτύριον τῆς Ἁγίας Οὐρσούλης» (μουσεῖον Δρέσδης).

Ι. Μ. Π.

**Μπουργκμύλλερ** (Burgmüller), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος-Φραγκῖσκος***. Γερμανὸς μουσικός, ζήσας τὸ πλεῖστον ἐν Γαλλίᾳ (1804—1874). Ἔδωκεν εἰς τὸ θέατρον τὰ μπαλέττα: «Ἡ Περὶ» καὶ «Λαίδη Ἐρριέττη» καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων τὸ περίφημον καταστὰν «Βὰλς τῆς Γκιζέλλας». Γ. Σ.

**Μποῦργκντορφ** (Burgdorf) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἑλβετίας εἰς τὸ καντόνιον τῆς Βέρνης. Κάτ. (1920) 9.400. Ἔχει ὡραίαν γοτθικὴν ἐκκλησίαν τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος, ὡς καὶ παλαιὸν ἀνάκτορον, στεγάσαν, μεταξὺ ἄλλων, καὶ τὸ ἐκπαιδευτήριον τοῦ Pestalozzi.

Digitized by Google

**Μπουργκοὲν** (Burgoin). Γάλλος φιλέλλην, συμμετασχὼν εἰς τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν 1866—1869.
Ν. ΚΛΣ

**Μπουργκὸνι** (Burgogne) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βουργουνδία.*

**Μποῦργκος** (Burgos) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῇ παλαιᾷ Καστίλλῃ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ, ἐπὶ τοῦ ποτάμου Ἀρλανθόν. Κάτ. 33.430. Εἶναι κτισμένη ἀμφιθεατρικῶς εἰς ὑψηλὴν θέσιν (850 μ. ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης) καὶ εἶναι λίαν ἐκτεθειμένη εἰς τοὺς ψυχροὺς ἀνέμους τοῦ βορρᾶ καὶ τοὺς καυστικοὺς τοῦ νότου, δι' ὃ καὶ τὸ κλῖμά της εἶναι ἐκ τῶν ψυχροτέρων ἐν Ἱσπανίᾳ κατὰ τὸν χειμῶνα, μὲ οὐχὶ σπανίας χιόνας μέχρι καὶ τοῦ τέλους τοῦ Ἰουνίου, θερμότατον δὲ κατὰ τὸ θέρος. Εἶναι σπουδαῖον στρατιωτικὸν κέντρον, λόγῳ τῆς ἐξαιρετικῆς στρατηγικῆς αὐτῆς θέσεως ἐπὶ τῶν ὁδῶν, αἵτινες ἄγουν ἀπὸ τὸ κέντρον τῆς Ἱσπανίας πρὸς τὸν Βισκαϊκὸν κόλπον καὶ τὰ γαλλικὰ σύνορα. Εἰς παλαιοτέρους χρόνους ὑπῆρξε μία ἐκ τῶν σημαντικῶν καὶ ἀκμαίων πόλεων τῆς Ἱσπανίας. Περιεβάλλετο τότε ὑπὸ τειχῶν, ὧν τμῆμα διεσώθη καὶ

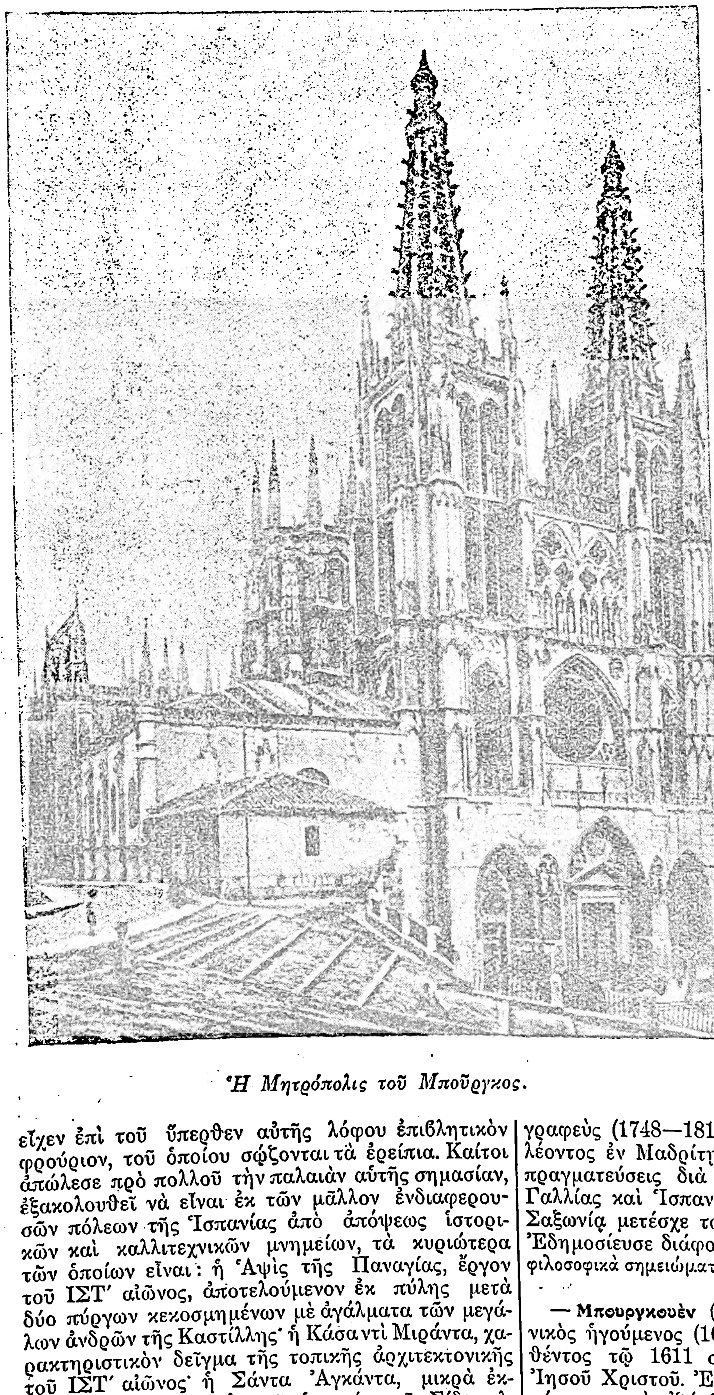

*Ἡ Μητρόπολις τοῦ Μποῦργκος.*

εἶχεν ἐπὶ τοῦ ὕπερθεν αὐτῆς λόφου ἐπιβλητικὸν φρούριον, τοῦ ὁποίου σῴζονται τὰ ἐρείπια. Καίτοι ἀπώλεσε πρὸ πολλοῦ τὴν παλαιὰν αὐτῆς σημασίαν, ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον ἐνδιαφερουσῶν πόλεων τῆς Ἱσπανίας ἀπὸ ἀπόψεως ἱστορικῶν καὶ καλλιτεχνικῶν μνημείων, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: ἡ Ἀψὶς τῆς Παναγίας, ἔργον τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ἀποτελούμενον ἐκ πύλης μετὰ δύο πύργων κεκοσμημένων μὲ ἀγάλματα τῶν μεγάλων ἀνδρῶν τῆς Καστίλλης· ἡ Κάσα ντὶ Μιράντα, χαρακτηριστικὸν δεῖγμα τῆς τοπικῆς ἀρχιτεκτονικῆς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος· ἡ Σάντα Ἀγκάντα, μικρὰ ἐκκλησία, περίφημος ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ Σίδ, κτλ. Ἰδιαιτέρας μνείας ἀξία εἶναι ἡ μητρόπολις, ἓν τῶν θαυμασιωτέρων ἔργων τῆς ἱσπανικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Διὰ τὴν κατασκευὴν αὐτῆς, ἀρχίσασαν ἀπὸ τοῦ 1221, εἰργάσθησαν ἐπὶ 300 ἔτη οἱ σημαντικώτεροι τῶν Ἱσπανῶν καλλιτεχνῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων οἱ Ἰωάννης καὶ Σίμων ντὲ Κολόνια, Διέζος ντὲ Σιλοὲ καὶ Φίλιππος ντὲ Μπόργκόνια, ὁ ὁποῖος κατεσκεύασε τὸν θαυμάσιον ὀκτάγωνον θόλον. Ὁ ναὸς κοσμεῖται μὲ δύο ὡραῖα κωδωνοστάσια, τὸ δὲ ἐσωτερικὸν αὐτοῦ, ἀληθὲς μουσεῖον ἀριστουργημάτων, ἔχει μεταξὺ ἄλλων περίφημον ἄγαλμα τοῦ Χριστοῦ, γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Cristo de Burgos». Παρὰ τὴν πόλιν εὑρίσκονται τὰ μοναστήρια τῆς Χουέλγας (ΙΒ' αἰῶνος) καὶ τῶν Καρτουσίων τῆς Μιραφλόρας (ΙΕ' αἰῶνος), μετὰ μνημείων τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Β' καὶ τῆς συζύγου του Ἰσαβέλλας.

Ἡ Μποῦργκος διεδραμάτισε σημαντικώτατον ρόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς Ἱσπανίας. Κτισθεῖσα τῷ 884 ὑπὸ τοῦ Ἀλφόνσου τοῦ Γ', βασιλέως τῶν Ἀστουριῶν, ἀπετέλεσε κομιτείαν μὲ πρῶτον κόμιτα τὸν Διέγον Ροντριγκὰθ Πορθέλος. Κατὰ τὸ 920 ἐγένετο δημοκρατία, τῷ δὲ 930 ἀνεκηρύχθη εἰς ἀνεξάρτητον κομιτείαν ὑπὸ τὸν Φερδινάνδον Γκονθάλεθ, ὀνομαστὸν διὰ τοὺς ἀγῶνας αὐτοῦ κατὰ τῶν Ἀράβων. Οἱ διάδοχοι τούτου μετέβαλον τὴν κομιτείαν εἰς βασίλειον τῆς Καστίλλης, ἀπὸ δὲ τῆς ἑνώσεως τῆς Καστίλλης καὶ τῆς Λεώνης, τῷ 1037, ἡ Μποῦργκος ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς παλαιᾶς Καστίλλης.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἡ Μποῦργκος ἔφθασεν εἰς τὴν μεγαλυτέραν αὐτῆς ἀκμὴν καὶ ἀπέβη μία τῶν σημαντικωτέρων πόλεων τῆς Ἱσπανίας. Μετὰ τὴν κατάκτησιν ὅμως τοῦ Τολέδου ὑπὸ τοῦ Ἀλφόνσου ΣΤ' καὶ τὴν μεταφορὰν τῆς πρωτευούσης εἰς τὴν πόλιν ταύτην, τῷ 1085, ἡ Μποῦργκος ἀπώλεσεν ἀνεπιστρεπτὶ τὴν σημασίαν της καὶ ἤρχισε νὰ φθίνῃ. Τῷ 1808 εἰσῆλθον εἰς αὐτὴν τὰ γαλλικὰ στρατεύματα, μετὰ τὴν νίκην τῶν στρατηγῶν Σοὺλτ καὶ Μπεσσιέρ, τῷ δὲ 1812 ἐπολιορκήθη ὑπὸ τοῦ Ἄγγλου στρατηγοῦ Οὐέλλιγκτων ἄνευ ἀποτελέσματος. Ἐν αὐτῇ ἐγεννήθη καὶ ὁ περίφημος ἐθνικὸς ἥρως τῆς Ἱσπανίας Σίδ.

Ἡ ὁμιλουμένη ἐν Μποῦργκος γλῶσσα θεωρεῖται ὡς ἡ καθαρωτέρα ἱσπανική.

— **Μποῦργκος** (Burgos), ***νομὸς*** *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Ἱσπανίας, ἀποτελούμενος ἐκ τμήματος τῆς παλαιᾶς Καστίλλης. Ἔχει ἐπιφάνειαν 14.196 τ. χλμ. καὶ 336.472 κατ. Τὸ ἔδαφος αὐτοῦ ἀποτελεῖται ἐξ ὀροπεδίου διασχιζομένου ὑπὸ ὑψηλῶν ὀρέων μὲ κλῖμα ψυχρότατον καὶ διαρρέεται ὑπὸ τῶν ποταμῶν Ἔβρου καὶ Ντοῦρο. Εἶναι ἐκ τῶν γεωργικωτέρων τμημάτων τῆς Ἱσπανίας, παράγουσα σιτηρὰ καὶ οἴνους καὶ ἔχουσα ἀνεπτυγμένην κτηνοτροφίαν, ἰδίως τῶν προβάτων. Ἔχει ἐπίσης ἀνεπτυγμένην τὴν σιδηροβιομηχανίαν καὶ 47 θερμοπηγάς.
Μ. Δ. Β.

**Μπουργκουὲν** (Bourgoin, λατιν. Bergusium) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἰζέρ, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 15 χλμ. ἀπὸ τοῦ Τοὺρ-ντὺ Πέν. Ἔχει κλωστήρια μετάξης καὶ βάμβακος, χαρτοποιεῖα, ἐργοστάσια ὑφασμάτων κλπ. Κάτ. 6.160.
Χ. Δ.

**Μπουργκουὲν** (Bourgoing), ***Ἰωάννης-Φραγκῖσκος**, βαρῶνος ντὲ* —. Γάλλος διπλωμάτης καὶ συγγραφεὺς (1748—1811). Ὡς πρεσβευτὴς ἐπὶ Ναπολέοντος ἐν Μαδρίτῃ, διεξήγαγε τὰς πρώτας διαπραγματεύσεις διὰ τὴν σύναψιν εἰρήνης μεταξὺ Γαλλίας καὶ Ἱσπανίας, εἶτα δὲ ὡς πρεσβευτὴς ἐν Σαξωνίᾳ μετέσχε τοῦ συνεδρίου τῆς Ἐρφούρτης. Ἐδημοσίευσε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἱστορικὰ καὶ φιλοσοφικὰ σημειώματα περὶ τοῦ Πίου ΣΤ'» (1798) κλπ.
—Ω.

— **Μπουργκουὲν** (Bourgoing), ***πάτερ***. Τρίτος γενικὸς ἡγούμενος (1641) τοῦ ὑπὸ τοῦ Berulle ἱδρυθέντος τῷ 1611 συνδέσμου τῶν ὀρατορίων τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ. Ἐνήργησε δραστηρίως πρὸς διοργάνωσιν καὶ ἐξάπλωσιν τοῦ συνδέσμου τούτου, ὁ δὲ ὑπ' αὐτοῦ γενόμενος τύπος (1657) ὡς πρὸς τὴν παραδοχὴν τῶν παπικῶν βουλλῶν τοῦ 1653 καὶ 1656 ὑπεγράφη ὑπὸ 425 ἱερέων. Ἐπ' αὐτοῦ ὅμως ἐνεφανίσθησαν αἱ πρῶται ἀρχαὶ τοῦ ἰανσενισμοῦ, ὅστις τοσοῦτον ἐτάραξεν ἔπειτα τὸν σύνδεσμον. Ἀπέθανε τῷ 1662.
Κ. Ι. Δ.

**Μπουργκὼ - *Ντυκουντραὶ*** (Bourgault-Ducoudray), ***Λουδοβῖκος-Ἀλβέρτος***. Γάλλος συνθέτης καὶ μουσικολόγος (1840—1910), πρῶτον βραβεῖον τῆς Ρώμης τοῦ ᾠδείου τῶν Παρισίων (τάξις Τομὰ 1862). Διετέλεσεν ἐν αὐτῷ ἀπὸ τοῦ 1878 μέχρι τοῦ 1908 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς μουσικῆς. Τραυματισθεὶς ἐν Βερσαλλίαις κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1871, ἐταξίδευσεν εἰς Ἑλλάδα πρὸς ἀνάρρωσιν. Ἐνταῦθα ἐγνώρισε διὰ πρώτην φορὰν τὸ ἑλληνικὸν δημῶδες ᾆσμα, κατώρθωσε δὲ νὰ ἐπιτύχῃ ἓν ἔτος ἀργότερον τὴν ἐπίσημον ἐκ μέρους τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως ἀποστολήν του πρὸς περισυλλογὴν τοῦ ἑλληνικοῦ δημοτικοῦ τραγουδιοῦ. Περιῆλθε τὴν Ἀνατολήν, ἐπισκεφθεὶς τὴν Σμύρνην καὶ τὴν Κωνσταντινούπολιν, ἐκ δὲ τῆς ἐλευθέρας Ἑλλάδος τὰς Ἀθήνας καὶ τὰ Μέγαρα καὶ κατέγραψεν εἰς εὐρωπαϊκὴν σημειογραφίαν μεγάλον ἀριθμὸν δημωδῶν καὶ λαϊκῶν ᾀσμάτων, μέρος τῶν ὁποίων περιέλαβεν εἰς τὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «30 λαϊκαὶ μελῳδίαι τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Ἀνατολῆς» ἐκδοθέντα τόμον. Ἐν τῇ συλλογῇ ταύτῃ ὁ Μπουργκώ, ἀπὸ ἀπόψεως ἐναρμονίσεως, ἀλλοιοῖ συχνάκις τὸν χαρακτῆρα τῆς δημώδους ἑλληνικῆς ποιήσεως, τὸ δὲ ἁρμονικὸν ἔνδυμα μὲ τὸ ὁποῖον τὴν περιβάλλει εἶναι γενικῶς ξένον πρὸς αὐτὸ τὸ πνεῦμα τῆς λαϊκῆς μούσης τῆς Ἑλλάδος. Τὰς ἀναμνήσεις του ἐκ τῆς ἀποστολῆς του ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Souvenirs d' une mission musicale en Grèce et en Orient», τὰς δὲ μελέτας του ἐπὶ τῆς ἑλληνικῆς ἐκκλησιαστικῆς μουσικῆς ὑπὸ τὸν τίτλον: «Études sur la musique ecclesiastique grecque, ἐνῷ ἐκ παραλλήλου συνέθετε πολυφωνικῶς μίαν «Ὀρθόδοξον ἑλληνικὴν λειτουργίαν», βυζαντινοῦ χαρακτῆρος. Ἡ ὑπόλοιπος δημιουργικὴ ἐργασία τοῦ Μπουργκὼ περιλαμβάνει τὰ ἑξῆς ἔργα: «Thamara» (ὄπερα Παρισίων 1890), «Michel Colomb», «Myrahin», «Bretagne», «Carnaval d'Athènes», «Rhapsodie cambodgienne», «L' enterrement d'Ophélie», «La Conjuration des fleurs», «Jean de Paris», «Hymne à la Patrie», «Symphonie réligieuse». Εἰς τὴν ἐπὶ τῆς λαϊκῆς μούσης ἐργασίαν του πρέπει νὰ προστεθῶσιν αἱ συλλογαί: «Trente mélodies populaires de Basse - Bretagne» καὶ «Quatorze mélodies celtiques». Τέλος ὁ Μπουργκὼ συνέθεσε τὰ ρετσιτατίβα τοῦ «Ἰωσὴφ» τοῦ Μεΰλ, καντάτας, ἓν κουϊντέττο, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον κ.ἄ.
Γ. Σ.

*Λουδοβῖκος Μπουργκὼ-Ντυκουντραί.*

**μποῦρδα** (ἡ)· φλυαρία, ἀνοησία, ἀσημαντολογία, μεγαλορρημοσύνη ἄνευ ἐννοίας: «ἄφησε τὶς μποῦρδες καὶ μίλα θετικά».

**Μπούρδανον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Μηλιὲς* (βλ. λ.).

**Μπούρδι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τοῦ δήμου Ἀργείων τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 52.

**μποῦρδος** (ὁ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸν *τοῖχον* τῆς πλευρᾶς τοῦ πλοίου. Εἰς τὰ παλαιὰ ἱστιοφόρα πλοῖα ἐξωγράφουν αὐτὸν ἐξωτερικῶς διὰ λευκῶν, ἐπὶ ὁριζοντίας ζώνης τεταγμένων, τετραγώνων, πρὸς ἀπομίμησιν τῆς ἐξωτερικῆς βαφῆς τῶν φρεγατῶν καὶ τῶν κορβεττῶν.
Σ. Ε. Λ.

**Μποῦρε,** ἢ ***Μπουρέους*** (Bure, Bureus), ***Ἰωάννης***. Σουηδὸς σοφὸς (1568—1653). Ὑπῆρξεν οἰκοδιδάσκαλος τοῦ Γουσταύου-Ἀδόλφου, ἔφορος τῆς βιβλιοθήκης τῶν ἀνακτόρων καὶ διευθυντὴς τῶν ἀρχείων τοῦ κράτους. Ἐξετέλεσε σπουδαίας διπλωματικὰς ἀποστολὰς καὶ ὑπῆρξε γραμματεὺς τῆς συνόδου τῶν λουθηρανῶν ἐν Οὐψάλῃ (1593). Διαπρεπὴς ἀνατολιστής, βαθὺς θεολόγος, ἦτο ἐπίσης γνωστὸς διὰ τὰς μεγάλας γνώσεις αὐτοῦ ἐν τῇ γεωμετρίᾳ, ἀστρονομίᾳ, χημείᾳ, μηχανικῇ, ἀρχιτεκτονικῇ καὶ ἀρχαιολογίᾳ. Ἔγραψε: «Monumenta helsingica (1624), «Monumenta sueo-gothica», «Lapides runici», «Tabula runica» κ.τ.λ. Ἐπίσης συνέθηκε πονήματα διακρινόμενα διὰ τὸν μυστικισμόν των.
Α. Δ.

**Μπουρὲ** (Bouré) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Ἀφρικῆς ἐν τῇ ἀποικίᾳ τῆς Γουινέας τῆς Γαλλικῆς Δυτικῆς Ἀφρικῆς. Ἔχει πλούσια κοιτάσματα χρυσοῦ, κυριώτερον δὲ συνοικισμὸν τὴν *Σετίγκια.*
Χ. Δ.

—**Μπουρὲ** (Bourée), ***Νικόλαος-Εὐτύχιος***. Γάλλος διπλωμάτης (1811—1886). Πρόξενος ἀκόμη ἐν Βηρυττῷ καὶ ἐπιτετραμμένος βραδύτερον ἐν Μαρόκκῳ, διεκρίθη διὰ τὴν ἱκανότητά του ἐν τῇ προασπίσει τῶν γαλλικῶν συμφερόντων, ἰδίως ἐπὶ ζητημάτων εὐρυτέρας πολιτικῆς ἀπόψεως. Ὡς πρόξενος ἐν Βηρυττῷ μετέσχε καὶ ἔδρασεν ἐνεργῶς κατὰ τὸν διακανονισμὸν τοῦ ζητήματος τοῦ Λιβάνου, ἐν Μαρόκκῳ δὲ ἐπέτυχε ν' ἀναγκάσῃ τὸν ἀνεξάρτητον τότε σουλτᾶνον τῆς χώρας ν' ἀναγνωρίσῃ σημαντικὰ δικαιώματα εἰς τοὺς ἐκεῖ Γάλλους ἐμπόρους. Προαχθεὶς εἰς πρεσβευτήν, ὑπηρέτησε διαδοχικῶς ἐν Πεκίνῳ (1852), ἐν Τεχεράνῃ (1855), ἐν Ἀθήναις (1860), ἐν Λισσαβῶνι (1864) καὶ Κωνσταντινουπόλει (1866). Κατὰ Ἰούνιον τοῦ 1870 ἐξε-

Digitized by Google

λέγη γερουσιαστής, ἀπὸ δὲ τῆς ἀνακηρύξεως τῆς δημοκρατίας (Σεπτέμβριος ἰδίου ἔτους) ἀπεσύρθη εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον.

**—Μπουρὲ** (Bourée), ***Φρειδερῖκος-Ἀλβέρτος.*** Γάλλος διπλωμάτης, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1836—1914). Διατελῶν ἀπὸ τοῦ 1880 πρεσβευτὴς ἐν Πεκίνῳ, ὑπέγραψεν ἐξ ὀνόματος τῆς Γαλλίας τὴν συνθήκην τῆς 28ης Μαΐου 1882 μετὰ τοῦ ἀντιβασιλέως τοῦ Πετσιλί, διὰ τῆς ὁποίας πρὸς πρόληψιν γαλλοκινεζικῆς συρράξεως διεμοιράζετο τὸ Τογκῖνον μεταξὺ τῶν δύο τούτων χωρῶν. Ὑπηρέτησε κατόπιν ὡς πρεσβευτὴς ἐν Κοπεγχάγῃ, ἐν Βρυξέλλαις καὶ ἐν Ἀθήναις (1894). —Ω.

**μπουρέκι** (τό). Εἶδος τουρκικοῦ γλυκίσματος ἢ φαγητοῦ, παρασκευαζομένου ἀπὸ φύλλα μπακλαβᾶ καὶ κρέμας ἢ κιμᾶ ἢ χόρτων.

Τὰ *μπουρέκια μὲ κρέμα* ἢ *χανοὺμ μπουρὲκ* εἶναι εἶδος τουρκικοῦ γλυκίσματος παρασκευαζομένου ὡς ἑξῆς: Ἀναμιγνύομεν εἰς 1 ὀκᾶν γάλα θερμὸν 100 δράμια ζάχαρη καὶ 50 δράμια ἀλεύρι ἢ ριζάλευρον καὶ 6 αὐγὰ κτυπημένα· ἀναταράσσοντες τὸ μῖγμα συνεχῶς μὲ σύρμα διὰ νὰ μὴ σβωλιάσῃ, τὸ θέτομεν εἰς τὴν φωτιὰν καὶ τὸ ἀφήνομεν νὰ πάρῃ μερικὰς βράσεις ἕως ὅτου πυκνώσῃ καὶ γίνῃ λεία μᾶζα, ὅτε καὶ τὸ ἀποσύρομεν τῆς φωτιᾶς, ἐξακολουθοῦντες δὲ τὸ δούλευμα ἐπ' ὀλίγον τὸ ἀφήνομεν ἔπειτα νὰ μισοκρυώσῃ. Μετὰ τὴν ἐργασίαν αὐτὴν κόπτομεν φύλλα τοῦ μπακλαβᾶ εἰς λωρίδας πλάτους ἕως 15 ἑκατοστομέτρων καὶ μήκους ὅσον εἶναι τῶν φύλλων. Ἑκάστην λωρίδα ἀλείφομεν μὲ λειωμένο βούτυρο εἰς τὸ ἔσω μέρος καὶ θέτομεν εἰς τὸ μέσον ἀνάλογον ποσότητα κρέμας, καὶ ἀφοῦ γυρίσωμεν τὰ δύο στενότερα ἄκρα ἐντὸς διὰ νὰ κλείσῃ τὸ μπουρέκι, ἀναδιπλώνομεν εἰς ὅλον τὸ μῆκος τὴν λωρίδα γύρω αὐτοῦ, οὕτως ὥστε νὰ λάβῃ σχῆμα τριγώνου, κυλινδρικὸν ἢ τετράγωνον. Τὰ μπουρέκια τοποθετοῦμεν κατὰ σειρὰν καὶ εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπ' ἀλλήλων ἐντὸς ταψίου ἢ λαμαρίνας, τὰ ἀλείφομεν μὲ βούτυρον καὶ τὰ ψήνομεν εἰς μέτριον φοῦρνον ἐπὶ ἕνα τέταρτον τῆς ὥρας καὶ κατόπιν ζεστὰ τὰ περιχύνομεν μὲ σιρόπι ἀπὸ ζάχαρη ἢ τὰ πασπαλίζομεν μὲ ζάχαρη.

*Τὰ μπουρέκια μὲ κιμᾶ* κατασκευάζονται ὡς ἑξῆς: Λαμβάνομεν τὸν κιμᾶν ἀπὸ κρέας ἀρνίου ἢ μοσχαρίου (ὁ βόειος κιμᾶς εἶναι ἀκατάλληλος), τὸν καβουρδίζομεν, μὲ ὀλίγα ψιλοκομμένα κρεμμύδια εἰς τὸ βούτυρον, τὸν σβήνομεν μὲ ἄσπρο κρασὶ καὶ προσθέτομεν ἀνάλογο νερό, ντομάτα, ἁλάτι, πιπέρι καὶ κανέλλα καὶ ἀφήνομεν νὰ βράσῃ μέχρις ὅτου ψηθῇ. Ἀφοῦ μισοκρυώσῃ προσθέτομεν καὶ δύο αὐγὰ εἰς ποσότητα $^1/_2$ ὀκᾶς κιμᾶ καὶ δύο κουταλιὲς τυρὶ τριμμένο. Κόπτομεν ἔπειτα φύλλα τοῦ μπακλαβᾶ εἰς λωρίδας καὶ παρασκευάζομεν μπουρέκια μὲ τὸν κιμᾶν, μὲ τὸν ἴδιον τρόπον ὅπως εἰς τὰ μπουρέκια μὲ τὴν κρέμα. Τὰ ἀλείφομεν μὲ βούτυρον, θέτομεν εἰς ταψὶ καὶ τὰ ψήνομεν εἰς μέτριον φοῦρνον 15—20 λεπτὰ τῆς ὥρας, μέχρις ὅτου λάβουν χρυσόξανθο χρῶμα. Μ. ΔΡ.

**Μπουρέλισα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Κουμαριὰ* (βλ. λ.).

**Μπούρεν, *Βὰν*—** (Van-Buren) *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βὰν-Μπούρεν.*

**Μποὺρζ** (Bourges) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Σέρ, ἐν τῷ κέντρῳ σχεδὸν τῆς Γαλλίας. Κάτ. 44.245. Κεῖται ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Ὑέβρ καὶ Ὀρὸν, παραποτάμων τοῦ Σέρ, ἐπὶ λόφου ὕψους 156 μ., περιβαλλομένου ὑπὸ ἐκτεταμένων λειμώνων. Τὸ παλαιὸν τμῆμα τῆς πόλεως, μὲ ὁδοὺς στενὰς καὶ παλαιὰς οἰκίας, ἀποτελεῖ καὶ σήμερον τὸ κεντρικὸν ταύτης τμῆμα καὶ περιβάλλεται ὑπὸ ὡραίων λεωφόρων, κατεχουσῶν τὴν θέσιν τῶν παλαιῶν κατεδαφισθέντων τειχῶν. Πρὸς τὰ ΝΑ. ἐκτείνεται ἡ νέα συνοικία, ἥτις εἶναι καὶ ἡ σημαντικωτέρα, διότι ἐν αὐτῇ ὑπάρχουν πάντα τὰ στρατιωτικὰ καὶ βιομηχανικὰ ἱδρύματα. Ἕνεκα τῆς μεγάλης στρατηγικῆς σημασίας τῆς τοποθεσίας της, εὐνοούσης τὰ μέγιστα τὴν συγκέντρωσιν τῶν στρατευμάτων καὶ τὸν ἀνεφοδιασμόν, ἡ Μποὺρζ κατέστη ἕδρα τοῦ Η' σώματος στρατοῦ καὶ πολλῶν βιομηχανιῶν σχέσιν ἐχουσῶν μὲ τὸν πόλεμον, μεταξὺ τῶν ὁποίων σημαντικὰ χυτήρια τηλεβόλων, πυριτιδοποιεῖα, ἐργοστάσια κιλλιβάντων καὶ ὅπλων κλπ. Ἐν αὐτῇ ἐπίσης λειτουργεῖ ἡ στρατιωτικὴ πυροτεχνικὴ σχολή. Ἔχει ἐξ ἄλλου ἡ πόλις ἀκμαῖον ἐμπόριον κτηνοτροφικῶν προϊόντων, ἐξυπηρετεῖται δὲ διὰ τὰς συγκοινωνίας καὶ τὰς μεταφορᾶς, παρεκτὸς εὐρυτάτου σιδηροδρομικοῦ δικτύου, καὶ διὰ τῆς διώρυγος τοῦ Μπερρύ. Εἶναι ἕδρα ἀρχιεπισκόπου, ἐμπορικοῦ ἐπιμελητηρίου καὶ πολλῶν ἐκπαιδευτικῶν ἱδρυμάτων, ἐν οἷς ἡ πολυτεχνικὴ σχολὴ τῆς ἐφημοσμένης βιομηχανίας, διδασκαλεῖα ἀρρένων καὶ θηλέων, ἱερατικὴ σχολὴ κτλ. Ἔχει ἐπίσης δημοτικὴν βιβλιοθήκην μετὰ 40.000 τόμων. Ὁ ἐν Μποὺρζ μητροπολιτικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Στεφάνου θεωρεῖται ἐκ τῶν ἀριστουργημάτων τῆς γοτθικῆς τέχνης τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ περιέχει πλῆθος ἀγαλμάτων καὶ ἐγχρώμους ὑαλοπίνακας, ἐπὶ τῶν ὁποίων ὑπάρχουν ἐζωγραφημέναι 1610 εἰκόνες. Ἔχει ἐπίσης ἡ πόλις δημαρχεῖον τοῦ 1443, ἓν τῶν καλλιτεχνικωτέρων ἔργων τῆς γαλλικῆς Ἀναγεννήσεως, καθὼς καὶ ἄλλα τινὰ παλαιὰ μέγαρα τοῦ ἰδίου τούτου ρυθμοῦ.

Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα ἡ Μποὺρζ ὠνομάζετο Avaricum καὶ ἀνῆκεν εἰς τὴν Κελτικὴν Γαλατίαν ὡς πρωτεύουσα τοῦ λαοῦ τῶν Βιτουρίγων. Ἦτο ἐκ τῶν ὡραιοτέρων γαλατικῶν πόλεων, κατεστράφη ὅμως τῷ 52 π.Χ. ὑπὸ τοῦ καταλαβόντος αὐτὴν Ἰουλίου Καίσαρος. Καὶ ἀνῳκοδομήθη μὲν κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ρωμαϊκῆς αὐτοκρατορίας, ἀλλ' οὐδέποτε πλέον ἀνέλαβε τὴν προτέραν αὐτῆς ἀκμήν. Ἀπὸ τοῦ Δ' αἰῶνος ἐκαλεῖτο Viturigae. Τῷ 478 κατελήφθη ὑπὸ τῶν Βησιγότθων καὶ μετὰ 30 ἔτη ὑπὸ τῶν Φράγκων, γενομένη πρωτεύουσα κομιτείας, ἡ ὁποία τῷ 1102 περιῆλθεν εἰς τὸν Φίλιππον Α'. Κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα, ὑπὸ τὸ σημερινόν της ὄνομα, προώδευσε μεγάλως, γενομένη πρωτεύουσα τοῦ δουκάτου τοῦ Μπερρύ. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς βασιλείας τοῦ Καρόλου Ζ' ἡ Μποὺρζ ὑπῆρξεν ἡ πραγματικὴ πρωτεύουσα τῆς Γαλλίας, διὰ τῆς μεταφορᾶς ἐν αὐτῇ τῆς αὐλῆς καὶ τῆς βουλῆς, συνεπείᾳ τῆς ἀγγλικῆς εἰσβολῆς. Τῷ 1469 ὁ Λουδοβῖκος ΙΑ' ἵδρυσεν ἐν αὐτῇ πανεπιστήμιον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐφοίτησε, μεταξὺ ἄλλων, καὶ ὁ Κ α λ β ῖ ν ο ς. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ὑπῆρξε τὸ στρατηγεῖον τῶν ἐπαναστατῶν τῆς «Σφενδόνης», ἕνεκα δὲ τούτου βραδύτερον ὁ Λουδοβῖκος ΙΔ' διέταξε τὴν κατεδάφισιν τῶν τειχῶν της καὶ τῶν φρουρίων της. Ἐν αὐτῇ συνῆλθον πολλαὶ σύνοδοι τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι αἱ τοῦ 1031, τοῦ 1225, τοῦ 1276, τοῦ 1286, τοῦ 1528 κλπ.

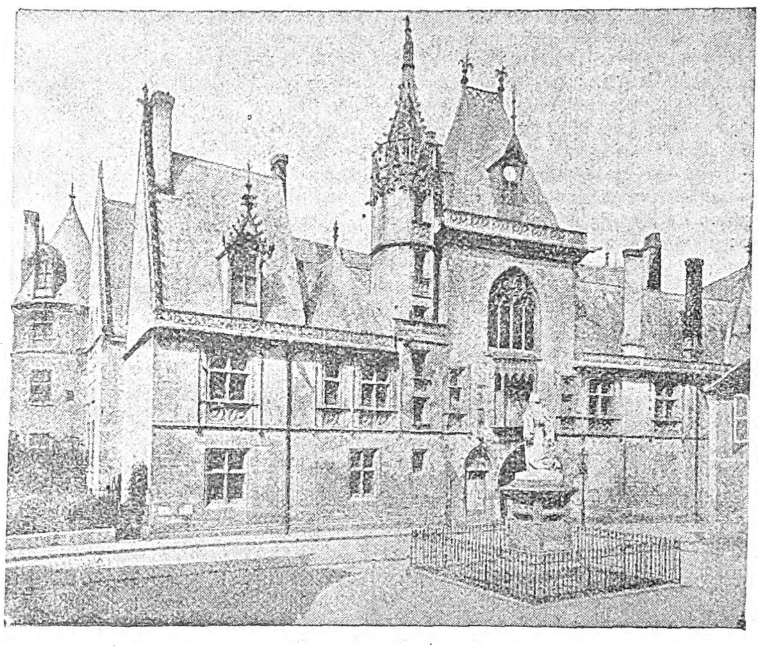
*Τὸ Δημαρχεῖον τῆς Μποὺρζ.*

Ἡ Μποὺρζ κατεστράφη δὶς ἐκ μεγάλων πυρκαϊῶν, τῷ 1487, ὁπότε ἐκάησαν 3.000 οἰκίαι, μετὰ πολλῶν ἐκκλησιῶν καὶ μνημείων, καὶ τῷ 1693. Μ. Δ. Β.

**Μποὺρζ** (Bourges), ***Ἐλεμίρ.*** Γάλλος μυθιστοριογράφος καὶ ποιητὴς (1852—1925). Συνεδέθη διὰ φιλίας ἀπὸ τῆς νεανικῆς του ἡλικίας μετὰ τῶν ἀδελφῶν Γκονκοὺρ καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τῆς ἀκαδημίας Γκονκούρ, ἧς διετέλεσε πρόεδρος ἀπὸ τοῦ 1900 μέχρι τοῦ 1907. Συνειργάσθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων» καὶ τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν Δύο Κόσμων» καὶ ἐδημοσίευσε τὸ πρῶτόν του λογοτεχνικὸν ἔργον τῷ 1884 ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὸ λυκόφως τῶν Θεῶν», μυθιστόρημα ἐν τῷ ὁποίῳ ἀφηγεῖται τὴν ἀποσύνθεσιν καὶ τὸ τέλος τῆς ἀρχαιοτέρας τῶν γερμανικῶν δυναστειῶν μὲ τὰς περιπετείας τοῦ Λουδοβίκου τῆς Βαυαρίας, τοῦ δουκὸς τῆς Βρουνσβίκης καὶ τοῦ τελευταίου βασιλέως τοῦ Ἀννοβέρου. Τῷ 1885 ἐδημοσίευσε τὸ μυθιστόρημα «Ὑπὸ τὸν πέλεκυν», βραδύτερον δὲ τὸ ἔργον «Τὰ πτηνὰ φεύγουν καὶ τὰ ἄνθη πίπτουν» (1893), ἐν τῷ ὁποίῳ ἱστορεῖ τὸν βίον τοῦ Ρώσου μεγάλου δουκὸς Φλόρις. Τῷ 1904 ἐξέδωκε τὸ πρῶτον μέρος τοῦ ἔργου του «Ἡ ναῦς» εἰς 16 σκηνάς, ὅπερ ἐπανεξεδόθη τῷ 1922 μετὰ τοῦ δευτέρου μέρους εἰς 33 ἐν ὅλῳ σκηνάς. Τὸ ἔργον τοῦτο ἐχαρακτηρίσθη ὑπὸ τῆς κριτικῆς ὡς ἓν τῶν ἀριστουργημάτων τῆς γαλλικῆς φιλολογίας, ἀληθὲς πεζὸν ποίημα αἰσχυλείου ἐμπνεύσεως, ἐν τῷ ὁποίῳ ὁ Μποὺρζ διὰ τοῦ στόματος τοῦ Προμηθέως ψάλλει τὰ ὑψηλότερα καὶ τὰ θλιβερώτερα πάθη τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Τῷ 1905 ἐδημοσίευσε τὸ μυθιστόρημα «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ ἀσώτου», ὅπερ τῷ 1922 ἐβραβεύθη διὰ τοῦ βραβείου Λασσέρ. Ὁ Μποὺρζ, ὅστις ἔζησεν ἐντελῶς μονήρη βίον, μακρὰν τοῦ φιλολογικοῦ θορύβου τῶν Παρισίων, θεωρεῖται εἷς τῶν ἐκλεκτοτέρων Γάλλων συγγραφέων, ἀντιταχθεὶς εἰς τὸν νατουραλισμὸν τοῦ Ζολᾶ. Μ. Δ. Β.

**Μπουρζέ, *Λὲ*—** (Bourget, Le —) *[Γεωγρ.]*. — 1) Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Σαβοΐας καὶ τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Σαμπερύ, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 10 χλμ. Κάτ. 1.340. Κεῖται ἐπὶ τῆς ὄχθης τῆς λίμνης Μπουρζέ, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ζές, καὶ ἔχει ὀνομαστὴν ἐκκλησίαν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, θεωρουμένην ἐθνικὸν μνημεῖον, καθὼς καὶ ἴχνη προϊστορικῶν λιμναίων οἰκήσεων.

— 2) Δῆμος τῆς Γαλλίας καὶ ὁμώνυμος τούτου πρωτεύουσα, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Σηκουάνα καὶ τῇ ἐπαρχίᾳ τοῦ Σαὶν-Ντενί. Κάτ. 3.000. Κεῖται ἐπὶ τῆς συμβολῆς τοῦ ποταμοῦ Κρουλ πρὸς τὸν παραπόταμον αὐτοῦ Μολέτ. Ἔχει ἐργοστάσια χρωστῶν ὑφασμάτων καὶ ὑαλουργεῖα. Εἶναι ὀνομαστὴ ἐκ τῶν παρ' αὐτὴν συναφθεισῶν μαχῶν κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870—1871 (βλ. λ. *Παρίσιοι* [Στρατ. Ἱστορ.]). Μ. Δ. Β.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* βλ. λ. *Παρίσιοι.*

**— Μπουρζὲ ἀεροδρόμιον** (Bourget, ἢ Le Bourget). Γαλλικὸν ἀεροδρόμιον, κείμενον εἰς ἀπόστασιν 11 χλμ. πρὸς Β. τῶν Παρισίων. Διαιρεῖται εἰς δύο τμήματα: τὸ ἐμπορικὸν καὶ τὸ στρατιωτικόν. Ἐν τῷ ἐμπορικῷ ἔχει κατασκευασθῆ κτήριον, εἰς τὸ ὁποῖον ὑπάρχει αἴθουσα ἀναμονῆς τῶν ἐπιβατῶν, γραφεῖα εἰσιτηρίων, ἑστιατόριον κλπ. Ἕτερον κτήριον ὑπάρχει διὰ τὰ ἐμπορεύματα, τὰς ἀποσκευὰς καὶ τὸ τελωνεῖον. Λειτουργεῖ ἐπίσης πλήρης ὑπηρεσία πρώτων βοηθειῶν καὶ σημαντικὸς μετεωρολογικὸς σταθμός. Καταλαμβάνει 325 ἐκτάρια καὶ ἔχει 12 μεταλλικὰ καὶ 5 ἐκ μπετὸν-ἀρμὲ ὑπόστεγα μετὰ τελειοτάτης πυροσβεστικῆς ὑπηρεσίας. Ἔχει ἐπίσης καὶ πεδίον διὰ τὴν προσγείωσιν καὶ ἀπογείωσιν ἀεροπλάνων ἐπὶ ἐνοικίῳ (ταξί). Φωτίζεται ὑπὸ εἰδικῶν ἐγκαταστάσεων καὶ εἰδικοῦ τεραστίου φάρου μεγίστης ἐντάσεως. Ἀποτελεῖ τὸ σημαντικώτερον κέντρον ἀεροπορικῆς ἐπικοινωνίας τῆς Γαλλίας μετὰ τῆς Εὐρώπης καὶ τῶν ἄλλων ἠπείρων. Μ. Δ. Β.

**—Μπουρζὲ λίμνη** (Lac du Bourget) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Σαβοΐας εἰς ὕψος 231 μ. Ἔχει ἐπιφάνειαν 44 τ. χλμ., 145 μ. βάθος, 18 χλμ. μῆκος καὶ 1,5—3 χλμ πλάτος, συγκοινωνοῦσα μετὰ τοῦ Ροδανοῦ ποταμοῦ διὰ τῆς διώρυγος Σαβιέρ. Σχηματίζεται ὑπὸ τῶν ὑδάτων τῶν ποταμῶν Λαίς, Τιλλὲ καὶ Σιερὸ καὶ κατέχει τὸν χῶρον βαθείας κοιλάδος, διὰ τῆς ὁποίας διήρχετο ἄλλοτε ὁ ποταμὸς Ροδανός. Παρὰ τὰς ὄχθας αὐτῆς ἀνεκαλύφθησαν πολυάριθμοι προϊστορικαὶ λιμναῖαι οἰκήσεις, ἰδίως ἐν Γκρεζίν, ἐν Τρεζὲρβ καὶ Σαντιγιόν. Ἔχει καθαρώτατα ὕδατα καὶ περιβάλλεται ἀπὸ μαγευτικὰς τοποθεσίας, ὅπου πολυάριθμοι πύργοι, ἐπαύλεις καὶ τὸ περίφημον ἀββαεῖον Ὡτκόμπ. Ἡ γραφικότης αὐτῆς ἐνέπνευσεν εἰς τὸν Λαμαρτῖνον τὸ περίφημον ποίημά του «Ἡ Λίμνη» καὶ πολλὰς σελίδας τοῦ «Ραφαήλου». Μ. Δ. Β.

**Μπουρζὲ** (Bourget), ***Παῦλος-Κάρολος-Ἰωσήφ.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Ἀμιένῃ τῷ 1852. Τὰ πρῶτά του ἔργα ὑπῆρξαν αἱ ποιητικαὶ συλλογαὶ «La vie inquiète» (1874), «Les aveux» (1882) καὶ τὸ ποίημα «Edel» (1878), ὅπου ἐκφράζει μετὰ λεπτότητος τὰς τρικυμίας ἐκλεπτυσμένης καὶ πολυσυνθέτου ψυχῆς. Τῷ 1883 καὶ 1885 ἐδημοσίευσε τὰ «Essais» καὶ τὰ «Nouveaux essais de psychologie contemporaine», ὅπου ἐξήταζεν ἐκείνους ἐκ τῶν συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του, οἱ ὁποῖοι ἤσκουν τὴν μεγαλυτέραν ἐπίδρασιν ἐπὶ τὴν διαμόρφωσιν τῶν συγχρόνων του. Τὰ ἔργα ταῦτα εἶναι ἔργα ἠθικολόγου καὶ ψυχολόγου, μαρτυροῦντα μεγάλην δύναμιν πνεύματος. Ἀνάλογον δύναμιν ἀναλύσεως συναντᾷ τις καὶ εἰς τὰ μυθιστορήματά του: «Cruelle énigme» (1885), «Crime d'amour» (1886), «André Cornélis» (1857), «Mensonges» (1887), «Le disciple» (1889), «Un coeur de femme» (1890), «Terre promise» (1892), «Cosmopolis» (1893), «Une idylle

*Παῦλος Μπουρζέ.*

Digitized by Google

tragique» (1896), «La duchesse bleue» (1898), «Le fantôme» (1901). «L'étape» (1902), «Un divorce» (1904), «L'émigré» (1907), «Le démon de midi» (1914), «Le sens de la mort» (1915), «Lazarine» (1917), «Némésis» (1918), «Un drame dans le monde» (1921), «Coeur pensif ne sait où il va» (1924), «Le danseur mondain» (1925), «Nos actes nous suivent» (1927).

Ἐπίσης διεκρίθη καὶ εἰς τὸ διήγημα διὰ τῶν συλλογῶν του: «L'irréparable» (1884), «Un scrupule» (1893), «Complications sentimentales» (1898), «Monique, l'eau profonde» (1902), «Les deux soeurs» (1905), «L'envers du décors» (1911), «Anomalies» (1920) κ. ἄ. Τὸ κριτικόν του ἔργον περιλαμβάνει πλὴν τῶν «Essais» τρεῖς τόμους «Études et portraits» (1906), «Psychologie de l'amour moderne» (1890), «Sensations d'Italie» (1891), «Pages de critique et de doctrine» (1912), «Nouvelles pages de critique et de doctrine» (1922) κλπ. Ὁ Μπουρζὲ ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς καὶ τινα ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του: «Un divorce» (μετὰ τοῦ Cury 1908), «La barricade» (1910), «Le tribun» (1911). Τῷ 1894 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ψυχολόγος βαθείας διεισδυτικότητος, ἔδωσε τὸ σύνθημα τῆς ἀντιδράσεως κατὰ τοῦ νατουραλισμοῦ, περιωρίσθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν ἀνάλυσιν τῶν ἐλαττωμάτων τῆς γενεᾶς του, κατόπιν δ' ἐπεδόθη εἰς τὴν ἀνακάλυψιν τῶν αἰτίων καὶ τῆς θεραπείας των. Ἐχρησιμοποίησε τὸ σπάνιον τάλαντόν του ὡς μυθιστοριογράφου διὰ τὴν ἔρευναν κοινωνικῶν, πολιτικῶν καὶ θρησκευτικῶν προβλημάτων καὶ διὰ τὴν ὑπεράσπισιν τῆς μοναρχίας καὶ τῆς καθολικῆς πίστεως. Ἐκ τῶν ἔργων του ἔχουν μεταφρασθῆ εἰς τὴν ἑλληνικὴν τὰ μυθιστορήματα: «Ἔγκλημα ἔρωτος», «Φλωρεντινοὶ ἔρωτες» κ. ἄ, καὶ ἡ κριτική: «Ψυχολογία τοῦ συγχρόνου ἔρωτος». —Ω.

**Μπουρζελὰ** (Bourgelat), ***Κλαύδιος***. Ὁ ἱδρυτὴς τῆς κτηνιατρικῆς ἐπιστήμης ἐν Εὐρώπῃ (1712—1779). Ἐγεννήθη ἐν Λυών, ὅπου ἐσπούδασε νομικά, ἀλλ' ἐμίσησε καὶ ἐγκατέλιπε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου, διότι, ἐπιτυχὼν ν' ἀθωώσῃ ἕνα πελάτην του κατηγορούμενον διὰ βδελυρὰν πρᾶξιν, ἐβεβαιώθη κατόπιν ὅτι ὁ ἀθωωθεὶς ἦτο ἔνοχος, ἄνευ οὐδενὸς μάλιστα ἐλαφρυντικοῦ. Κατετάχθη τότε εἰς τοὺς σωματοφύλακας τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ' καὶ ἤρχισε βραδύτερον νὰ μελετᾷ τὴν ἱππολογίαν, βοηθούμενος ἀπὸ τὸν κτηνίατρον τῶν βασιλικῶν σταύλων Λαφός. Μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἡ κτηνιατρικὴ ἠσκεῖτο ὅλως διόλου ἐμπειρικῶς, πρῶτος δὲ ὁ Μπουρζελὰ ἐσκέφθη νὰ δώσῃ εἰς αὐτὴν ἐπιστημονικὸν χαρακτῆρα. Τὰ πρῶτα ἀποτελέσματα τῶν μελετῶν του ἐξέθηκεν εἰς δύο βιβλία, ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Ἐγχειρίδιον ἱππικοῦ» (1747) καὶ «Στοιχεῖα ἱππιατρικῆς» (1750), τὰ ὁποῖα ἐκίνησαν τὸ ἐνδιαφέρον μεταξὺ τῶν στρατιωτικῶν ἰδίᾳ κύκλων. Ὑποστηριχθεὶς ὑπὸ τῆς κυβερνήσεως, ἤρχισε διδάσκων μαθήματα ἱππολογίας ἐν τῷ στρατῷ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1761 ἱδρύθη ὑπὸ τὴν διεύθυνσίν του ἐν Λυὼν ἡ πρώτη καθ' ὅλην τὴν Εὐρώπην κτηνιατρικὴ σχολή. Μετὰ τέσσαρα ἔτη ἵδρυε δευτέραν ὁμοίαν σχολὴν ἐν Ἀλφὸρ καὶ τὸ ἴδιον ἔτος ἐξελέγετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Μπουρζελὰ ὑπῆρξεν ἀνὴρ πολυμαθέστατος, μὲ συγγραφικὸν τάλαντον ἀξιόλογον καὶ εὐρὺν κύκλον γνωριμιῶν καὶ σχέσεων. Εἶχεν ἀλληλογραφίαν μετὰ τοῦ Βολταίρου, τοῦ Μπυφφόν, τοῦ ντ' Ἀλαμπέρ, ἀκόμη δὲ καὶ μετὰ τοῦ Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν σημαντικωτέρων συνεργατῶν τῆς «Ἐγκυκλοπαιδείας». Ἐκτὸς τῶν προαναφερθέντων, ἐδημοσίευσεν ἀκόμη τὰ ἔργα: «Σύγκριτικὴ ἀνατομία τοῦ ἵππου, τοῦ βοὸς καὶ τοῦ προβάτου» (1766) καὶ «Περὶ τῆς ἐξωτερικῆς διαμορφώσεως τοῦ ἵππου» (1769), ἀπομείναντα ἀμφότερα κλασσικὰ διὰ τὸ ἐπαγωγὸν τοῦ ὕφους, τὴν ἐπιστημονικότητα καὶ τὴν μεγάλην πρακτικὴν σημασίαν τῆς καινοφανοῦς διδασκαλίας του. —Ω.

**Μπουρζὶν** (Bourgine). Γάλλος ἀξιωματικὸς τῆς φρουρᾶς τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος. Κατὰ τὴν Ἑλληνικὴν Ἐπανάστασιν τοῦ 1821 ὑπῆρξε μεταξὺ τῶν μετασχόντων ταύτης φιλελλήνων καὶ ἀναφέρεται ὡς διακριθεὶς εἰς διαφόρους μάχας. — Ω.

**Μπουρζουὰ** (Bourgeois), ***Αἰμίλιος***. Γάλλος ἱστορικός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1857. Ἐχρημάτισε καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων, τὴν ἐλευθέραν σχολὴν πολιτικῶν ἐπιστημῶν καὶ τὰ πανεπιστήμια τοῦ Κὰν καὶ τῆς Λυῶνος. Ἀσχοληθεὶς ἐν ἀρχῇ μὲ τὴν ἀρχαίαν καὶ μεσαιωνικὴν ἱστορίαν, ἐδημοσίευσε: «Τὸ πολιτικὸν καθεστὼς τῆς Καρχηδόνος», «Μελέτη περὶ τῶν ρωμαϊκῶν ἐπαρχιῶν» (1885), «Ὁ ἀβάβας Οὖγος, μαργράβος τῆς Νευστρίας» (1886) κ. λ. π. Ἀπὸ τοῦ 1887 ἀφωσιώθη εἰς μελέτας ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῶν νεωτέρων χρόνων καὶ ἐδημοσίευσε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς: «Τὸ Νευσατὲλ καὶ ἡ πολιτικὴ τῆς Πρωσσίας ἐν Βουργουνδίᾳ κατὰ τὸ 1707» (1887), «Ἀλληλογραφία τοῦ Ἀλμπερόνι μετὰ τῆς αὐλῆς τῆς Πάρμας» (1892), «Ὁ αἰὼν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'» (1893), «Ὁ μέγας αἰών», μελέτη ἐπὶ τῶν γραμμάτων, τῶν ἠθῶν καὶ τῶν τεχνῶν τῆς ΙΖ' ἑκατονταετηρίδος, μετὰ πλουσίας εἰκονογραφήσεως (1896).

Τῷ 1891 ἡ Γαλλικὴ Ἀκαδημία ἐβράβευσε τετράτομον ἔργον του ἐπὶ τῆς πολιτικῆς τοῦ κατὰ τὴν ἀνηλικιότητα τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ' ἀντιβασιλέως Φιλίππου τῆς Ὀρλεάνης καὶ τοῦ καγκελλαρίου αὐτοῦ καρδιναλίου Ντυμπουά. Τῷ 1905 ἐξέδωκεν εἰς τρεῖς τόμους τὸ κύριον αὐτοῦ ἔργον, «Ἐγχειρίδιον ἱστορίας τῆς ἐξωτερικῆς πολιτικῆς», οὗτινος τὴν συγγραφὴν εἶχεν ἀρχίσει ἀπὸ τοῦ 1892 καὶ ἐν τῷ ὁποίῳ ἱστοροῦνται, ἐπὶ τῇ βάσει ἠκριβωμένων στοιχείων, αἱ σχέσεις τῶν διαφόρων κρατῶν καὶ ἐθνῶν ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος μέχρι τοῦ 1878. Ὁ τέταρτος αὐτοῦ τόμος, ἐκδοθεὶς τῷ 1921, περιλαμβάνει τοὺς μετέπειτα προσφάτους χρόνους μέχρι τοῦ 1919. Ἔγραψεν ἐπίσης: «Αἱ πηγαὶ τῆς γαλλικῆς ἱστορίας κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα», ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ L. André (1913), «Τὰ αἴτια καὶ αἱ εὐθῦναι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου», ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ M. Pagès (1923) κ.λ.π. Ὁ Αἰμ. Μπουρζουὰ ἠσχολήθη τέλος μὲ τὴν ἱστορίαν καὶ τὰ προβλήματα τῆς ἐκπαιδεύσεως ἐν Γαλλίᾳ, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐδημοσίευσε τὰς ἀκολούθους μελέτας: «Ἡ ἀνωτέρα ἐκπαίδευσις κατὰ τὸ 1882», «Ἡ ἐπιθυμητὴ ἐν Γαλλίᾳ μέση ἐκπαίδευσις» (1900) καὶ «Ἡ ἐλευθερία τῆς ἐκπαιδεύσεως» (1902).

**Μπουρζουὰ** (Bourgeois), ***Ἰωσὴφ-Αἰμίλιος-Ροβέρτος***. Γάλλος στρατηγός, μέλος τοῦ γαλλικοῦ ἰνστιτούτου, γεννηθεὶς ἐν Sainte-Marie aux-Mines τῷ 1857. Ἐγένετο καθηγητὴς τῆς πολυτεχνικῆς σχολῆς Παρισίων καὶ ἐξελέγη γερουσιαστὴς τοῦ Ἄνω Ρήνου. Μετέσχεν εἰς τὴν ἀποστολὴν τῆς Τύνιδος, εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Μαδαγασκάρης καὶ εἰς τὴν ἐπιστημονικὴν ἀποστολὴν τῶν Ντιέγκο-Σουαρέζ. Διατελεῖ μέλος τοῦ συμβουλίου τῆς γαλλικῆς ἑταιρείας τῆς φυσικῆς. Θ. Β.

— **Μπουρζουὰ** (Bourgeois), ***Λέων - Βίκτωρ - Αὔγουστος***. Διακεκριμένος Γάλλος πολιτικὸς τῶν τελευταίων χρόνων, γεννηθεὶς τῷ 1851 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1925. Ἐσπούδασε νομικά, ἐγένετο δ' ἐν ἀρχῇ διοικητικὸς ὑπάλληλος, νομάρχης κατ' ἐπανάληψιν, διευθυντὴς τῶν δήμων καὶ κοινοτήτων ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐσωτερικῶν (1886) καὶ διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας (1887). Τῷ 1888 ἐκθέσας τὸ πρῶτον ὑποψηφιότητα βουλευτοῦ ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μάρνη, ἐξελέγη διὰ 48.000 ψήφων, ἔναντι 16.000 τὰς ὁποίας ἔλαβεν ὁ ἀντίπαλός του στρατηγὸς Μπουλανζέ.

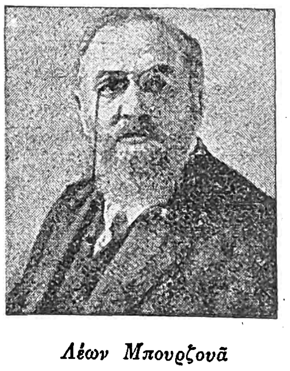

*Λέων Μπουρζουᾶ*

Ταχθεὶς μὲ τὸ κόμμα τῶν ῥιζοσπαστῶν τῆς ἀριστερᾶς, ἐγένετο τρεῖς μῆνας μόλις μετὰ τὴν εἴσοδόν του εἰς τὴν βουλήν, ὑφυπουργὸς (1888), βραδύτερον δὲ ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν (1890) καὶ μετέπειτα τῆς Παιδείας (1889 καὶ 1892). Ὢν πρόεδρος τοῦ γαλλικοῦ ἐκπαιδευτικοῦ συνδέσμου, εἶχεν ἀνέκαθεν ἀσχοληθῆ ἐπὶ τῶν ζητημάτων τῆς ἐκπαιδεύσεως, πρεσβεύων ὅτι, διὰ νὰ δυνηθῇ νὰ ζήσῃ μία χώρα ἐν ἀσφαλείᾳ καὶ εἰρήνῃ, τὰ ἄτομα δέον νὰ εἶναι ἡνωμένα καὶ ἐθελουσίως πειθαρχοῦντα «εἰς τὴν ἰδίαν ἀντίληψιν τῆς ζωῆς περὶ τῶν σκοπῶν καὶ τῶν καθηκόντων αὐτῆς» καὶ ὅτι «ἡ ἐθνικὴ ἐκπαίδευσις δέον νὰ ἔχῃ ὡς ἀνώτερον σκοπούμενον τὴν δημιουργίαν τῆς ἑνότητος ταύτης τῶν πνευμάτων καὶ τῶν συνειδήσεων». Ἀπὸ τῶν ἀρχῶν αὐτῶν ὡρμήθησαν αἱ σημαντικαὶ μεταρρυθμίσεις, τὰς ὁποίας ὡς ὑπουργὸς εἰσήγαγεν εἰς τὴν σύγχρονον ἐν Γαλλίᾳ ἐκπαίδευσιν. Ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης μετέπειτα καὶ ἀντιπρόεδρος τῆς κυβερνήσεως ἐν τῷ ὑπουργείῳ Ριμπὸ (1893), ἀνεγνωρίσθη ἐν τῷ μεταξὺ ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ῥιζοσπαστικοῦ κόμματος καὶ ἐγένετο πρωθυπουργὸς τῷ 1895, ἔχων ἐν ἀρχῇ τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Ἐσωτερικῶν, ἀπὸ δὲ τοῦ ἐπομένου ἔτους τῶν Ἐξωτερικῶν. Τὸ ἐξαγγελθὲν πρόγραμμά του, τὸ ὁποῖον δὲν ἐπρόλαβε νὰ ἐφαρμόσῃ ἐξ ὁλοκλήρου, προέβλεπε γενικὴν ἐπιβολὴν φόρου ἐπὶ τοῦ εἰσοδήματος, ὀργάνωσιν ἐργατικῶν συντάξεων καὶ ἕνα νόμον παρασκευάζοντα τὸν τελικὸν διακανονισμὸν τῶν σχέσεων ἐκκλησίας καὶ κράτους. Ἀλλ' ἡ Γερουσία, ἐκδηλώνουσα κατ' ἐπανάληψιν ἐχθρικὰς διαθέσεις ἐναντίον τῆς ὑπ' αὐτὸν κυβερνήσεως, ἀρνηθεῖσα δ' ἐν τέλει τὴν ἔγκρισιν πιστώσεως ψηφισθείσης ὑπὸ τῆς βουλῆς διὰ τὴν εἰς Μαδαγασκάρην ἐκστρατείαν, ἠνάγκασεν αὐτὸν εἰς παραίτησιν κατ' Ἀπρίλιον 1896.

Τῷ 1898 ἐγένετο ἐκ νέου ὑπουργὸς τῆς Παιδείας ἐν τῇ κυβερνήσει Μπρισσόν, τὸ δ' ἐπόμενον ἔτος ἀπεστάλη εἰς Χάγην ὡς πρῶτος ἀντιπρόσωπος τῆς Γαλλίας εἰς τὴν διάσκεψιν τὴν συγκληθεῖσαν αὐτόθι, πρωτοβουλίᾳ τοῦ τσάρου Νικολάου Β', πρὸς ἐξεύρεσιν μέσων διὰ τὴν εἰρηνικὴν ἐπίλυσιν τῶν μεταξὺ τῶν διαφόρων χωρῶν ἀναφυομένων ἐρίδων. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἀποστολῆς του ταύτης, ἀνατραπέντος τοῦ ὑπουργείου Ντυπυΐ, παρεκλήθη ν' ἀναλάβῃ τὴν πρωθυπουργίαν, δὲν ἐδέχθη ὅμως καὶ ἐπανελθὼν εἰς Χάγην διωρίσθη μέλος τοῦ Διεθνοῦς διαιτητικοῦ δικαστηρίου, εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ ὁποίου ὁ ἴδιος σημαντικῶς συνετέλεσε. Τῷ 1902 καὶ 1903 ἐγένετο πρόεδρος τῆς βουλῆς, ἐκλεγεὶς δὲ γερουσιαστὴς τῷ 1905, ἔλαβε τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Ἐξωτερικῶν ἐν τῷ ὑπουργείῳ Σαρριέν. Τῷ 1907 ὑπεδείχθη ὡς πρῶτος Γάλλος πληρεξούσιος ἐν τῇ διασκέψει τῆς εἰρήνης, καθ' ἣν ἀντεπροσωπεύθησαν 44 κράτη. Ἐπέτυχε τότε νὰ γίνῃ ἀποδεκτὴ ἡ πρότασίς του περὶ ὑποχρεωτικῆς διαιτησίας ἥτις εἶχεν ἀπορριφθῆ τῷ 1899, προκειμένου ἰδίᾳ περὶ τῆς ἑρμηνείας καὶ ἐφαρμογῆς τῶν μεταξὺ τῶν κρατῶν συνομολογηθεισῶν συνθηκῶν. Ἦτο ὀπτιμιστής, πιστεύων ἀκραδάντως ὅτι ἡ καλλιέργεια τῶν συνειδήσεων θὰ ἦγε βαθμηδὸν εἰς τὸν θρίαμβον τοῦ δικαίου· ἀλλ' ὁ φιλειρηνισμός του δὲν ἦτο ἀπερίσκεπτος, ἰδικὴ του δὲ ἦτο κατὰ τὸ 1919, ὅτε ἱδρύθη ἡ Κοινωνία τῶν Ἐθνῶν, ἡ πρότασις περὶ ἐλέγχου τῶν ἐξοπλισμῶν καὶ δημιουργίας διεθνοῦς στρατοῦ. Τὴν ἀλληλεγγύην τῆς ζωῆς μεταξὺ τῶν λαῶν, ὑπὲρ τῆς ὁποίας ἠγωνίζετο, δὲν τὴν ἤθελε συνεπαγομένην ἐξασθένησιν τῆς ἰδέας τῆς πατρίδος, ἀλλὰ τοὐναντίον καθιστῶσαν ταύτην πλειότερον διαυγῆ καὶ ἔντονον διὰ τοὺς πολίτας τῶν συνησπισμένων ἐθνῶν, καὶ ἐνποιοῦσαν αὐτὴν μὲ «ὅ,τι ὑπάρχει εὐγενέστερον ἐν τῇ συνειδήσει τοῦ ἀνθρώπου». Ἡ μεταξὺ τῶν πολιτισμένων κρατῶν ἀποκατάστασις τῶν ἀναγκαίων σχέσεων δικαιοσύνης θὰ ἦτο κατ' αὐτὸν ὅ,τι περίτου ἐπηγγέλθη τὸ κήρυγμα τῆς Γαλλικῆς ἐπαναστάσεως ὑπὲρ τῶν ἀτόμων: «ἀδελφότης, δικαιοσύνη, ἐλευθερία».

Ζωηρότατον ἐξ ἄλλου ὑπῆρξε τὸ ἐνδιαφέρον καὶ ἀξιόλογος ἡ δρᾶσις τοῦ Λέοντος Μπουρζουὰ ἐπὶ τῶν καθόλου κοινωνικῶν ζητημάτων. Ὡς ὑπουργὸς τῆς Ἐργασίας ἐν τῇ κυβερνήσει Πουανκαρὲ (1913), εἰσηγήθη τότε τὸ νομοσχέδιον περὶ ἱδρύσεως σταθμῶν κοινωνικῆς ὑγιεινῆς καὶ ἀντιφυματικῆς προνοίας, ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ ὁποίου συνετάχθη ὁ βραδύτερον ψηφισθεὶς νόμος (τοῦ 1916). Ὑπῆρξεν ἱδρυτὴς καὶ πρόεδρος της ἐθνικῆς ἐπιτροπῆς πρὸς ἄμυναν κατὰ τῆς φυματιάσεως, μερίμνῃ τῆς ὁποίας ἱδρύθησαν ἐν ἑκάστῃ περιοχῇ τῆς χώρας τοπικαὶ ἐπιτροπαὶ ἀκολουθοῦσαι ἑνιαῖον σύστημα ἀγῶνος, διὰ συνδυασμοῦ τῆς ἰδιωτικῆς πρωτοβουλίας πρὸς τὴν δρᾶσιν τῶν δημοσίων ὑπηρεσιῶν ὑγιεινῆς καὶ περιθάλψεως. Εἰς τὸ βραχύβιον ὑπουργεῖον Ριμπὸ (Ἰούνιος 1914) τοῦ ἐδόθη τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Ἐξωτερικῶν, κατὰ τὴν διάρκειαν δὲ τοῦ πολέμου μετέσχε τῶν κυβερνήσεων Μπριὰν (1915—1916) ὡς ὑπουργὸς ἄνευ χαρτοφυλακίου, Ριμπὸ (1917) ὡς ὑπουργὸς τῆς Ἐργασίας καὶ τῆς Κοινωνικῆς Προνοίας, καὶ Παινλεβαὶ (1917) ὡς ὑπουργὸς καὶ μέλος τῆς ἐπὶ τῶν στρατιωτικῶν ἐπιτροπῆς. Μετέσχε τῶν προκαταρκτικῶν ἐργασιῶν τῆς διασκέψεως τῆς εἰρήνης καὶ ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τῆς γερουσίας τὴν σύνταξιν τῆς γενικῆς ἐκθέσεως ἐπὶ τῆς συνθήκης τῶν Βερσαλλιῶν. Τῷ ἐδόθη τότε πάλιν ἡ εὐκαιρία νὰ ἐκδηλώσῃ μίαν φορὰν ἀκόμη τὴν πίστιν του ἐπὶ μιᾶς νέας τάξεως πραγμάτων, καθ' ἣν τὸ δίκαιον θ' ἀπέλαυε σεβασμοῦ καὶ οἱ λαοὶ θὰ συνειργάζοντο πρὸς ἀλλήλους ἐν τῷ πνεύματι τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, τὴν ὁποίαν ἤθελεν ἀπολύτως ἀνεξάρτητον καὶ ἐπαρκῶς ἰσχυράν, ὥστε νὰ δύναται νὰ ἐπιβάλῃ τὸν σεβασμὸν πρὸς τὰς ἀποφάσεις της. Τῷ 1919 ἡ Κοινωνία ἀμείβουσα τὰς ὑπὲρ τοῦ ἔργου της προσπαθείας του τὸν ἐξέλεξε πρόεδρον τοῦ συμβουλίου αὐτῆς, τὸ δ' ἐπόμενον ἔτος ἐλάμβανε τὸ βραβεῖον Νόμπελ τῆς εἰρήνης. Ἀπὸ τοῦ 1920 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Γερουσίας, ὡς τοιοῦτος δὲ διηύθυνε τὰς ἐργασίας τοῦ εἰδικοῦ δικαστηρίου τοῦ συσταθέντος διὰ τὴν ἐκδίκασιν τῆς ὑποθέσεως Καγιώ. Ἀλλὰ τῷ 1923 λόγοι ὑγείας ἠνάγκασαν αὐτὸν ν' ἀπόσχῃ ἐφεξῆς ἀπὸ πάσης πολιτικῆς δράσεως.

Ὁ Λέων Μπουρζουὰ ὑπῆρξε προσωπικότης εὐρυτάτης γενικῆς μορφώσεως καὶ συγγραφεὺς πολλῆς ἀξίας. Περίφημον ἰδίως ἀπέμεινε τὸ ἔργον του «Ἀλληλεγγύη», εἰς τὸ ὁποῖον, δημοσιευθὲν τῷ 1896, ἀνέπτυσσε τὰς φιλοσοφικὰς καὶ κοινωνιολογικάς του ἀντιλήψεις, τὸν «σολινταρισμόν», ὅπως τὸν ὠνόμασεν, ὅλως διάφορον ἀπὸ τὸν «κολλεκτιβισμὸν» καὶ τὸν «ἀτομισμόν». Ἔγραψεν ἐπίσης: «Ἡ μεταρρύθμισις τῶν διδακτικῶν μεθόδων εἰς τὴν στοιχειώδη ἐκπαίδευσιν» (1894), «Ἡ ἰδέα τῆς ἀλληλεγγύης καὶ αἱ κοινωνικαὶ της συνέπειαι» (1902), «Ἡ πολιτικὴ τῆς κοινωνικῆς προνοίας» (1916—1919), «Ἡ συνθήκη εἰρήνης τῶν Βερσαλλιῶν» (1919), «Τὸ ἔργον τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν» (1923) κλπ. Γ. Ζ.

**μπουρζουαζία** (ἡ). Λέξις γαλλικὴ (bourgeoisie) σημαίνουσα τὴν τρίτην τάξιν, τὴν εὑρισκομένην μεταξὺ τῶν εὐγενῶν καὶ τῶν ἐργατῶν, τὴν ἀστικὴν τάξιν (βλ. λ.) ἐφ' ἧς ἐννοίας εὑρίσκεται καὶ παρ' ἡμῖν ἐν εὐρυτάτῃ χρήσει.

**μπουρζουᾶς** (ὁ). Λέξις γαλλικὴ (bourgeois) σημαίνουσα τὸν *ἀστὸν* (βλ. λ.).

**Μπούριαν** (Burian), ***Στέφανος***, *κόμις φὸν Ρέτζεκ*. Οὔγγρος πολιτικὸς (1851—1922). Ἀπὸ τ

Digitized by Google

1882 μέχρι τοῦ 1886 διετέλεσε πρόξενος ἐν Μόσχᾳ, εἶτα δὲ διπλωματικὸς πράκτωρ ἐν Σόφια καὶ πρεσβευτὴς ἐν Ἀθήναις. Τῷ 1903 διεδέχθη τὸν Βενιαμὶν Καλλάϋ ὡς ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ ἐσυνέχισε τὸ ἀναδιοργανωτικὸν ἔργον ἐν Βοσνίᾳ καὶ Ἑρζεγοβίνῃ. Τῷ 1913 ὠνομάσθη πρόσεδρος ὑπουργὸς τῆς Οὐγγαρίας παρὰ τῷ Φραγκίσκῳ Ἰωσήφ, τὸν δὲ Ἰανουάριον τοῦ 1915 διεδέχθη τὸν κόμιτα Μπέρτχολντ ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν. Κεκηρυγμένος κατὰ τοῦ ὑποβρυχιακοῦ πολέμου, ἐπέσυρε τὴν μῆνιν τῆς Γερμανίας ἐναντίον του, τὸν δὲ Δεκέμβριον τοῦ 1916 ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του. Τῷ 1917 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν, μετὰ τὴν πρότασιν δὲ χωριστῆς εἰρήνης ὁ αὐτοκράτωρ Κάρολος ἀνέθεσεν εἰς τὸν Μπούριαν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν (16 Ἀπριλίου 1918), ἀπένειμε δὲ συγχρόνως εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος. Ὁ Μπούριαν διετήρησε τὸ ἀξίωμα τοῦτο μέχρι τοῦ διαμελισμοῦ τῆς Αὐστρίας. Α. Δ.

**Μπουριᾶται** (οἱ) *[Ἀνθρωπολογ.]*. Μία ἐκ τῶν ὁμάδων τῶν Βορείων Μογγόλων, ἢ σιβηρικῶν λαῶν, ὑπαγομένων εἰς τὰς γενικῶς χαρακτηριζομένας μογγολοειδεῖς φυλὰς (βλ. λ. *Μογγολικὴ* φυλή). Ι. Γ. Κ.

**μπουρίνα** (ἡ). Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸν *πλαγιαστῆρα*. Ἐπειδὴ δὲ ἵνα προσδέχωνται τὰ τετράγωνα ἱστία τὸν ἄνεμον ὑπὸ ὅσον τὸ δυνατὸν ὀξυτέραν ὡς πρὸς τὸ διάμηκες ἐπίπεδον γωνίαν, ἕλκονται οἱ πλαγιαστῆρες πρὸς πρῷραν, ὁ κοινὸς ὅρος «ἀρμενίζω τόκα μπουρίνα» (ἢ «— 'στὴν μπουρίνα») σημαίνει «πλέω τὴν ἐγγυτάτην» ἱστιοδρομίαν. Σ. Ε. Λ.

**μπουρινάρω**. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων: ἕλκω τοὺς πλαγιαστῆρας ὅσον περισσότερον εἶναι δυνατόν, ἵνα πλεύσω ὅσον τὸ δυνατὸν ἐγγύτατα· || ἀπροσ. καὶ ἐπὶ καιροῦ, μεταβάλλομαι εἰς κακοκαιρίαν προμηνύουσαν λαίλαπα. Σ. Ε. Λ.

**μπουρίνι** (τό). Ἀπότομος καὶ βραχείας διαρκείας αὔξησις τῆς ἐντάσεως τοῦ ἀνέμου, συνοδευομένη ἐνίοτε μετὰ καταιγίζοντος ὄμβρου, ἀστραπῶν καὶ κεραυνῶν. Ἀνταποκρίνεται πρὸς τὸν ἐπίσημον ὅρον *λαῖλαψ*, παρὰ δὲ τῷ Ἀριστοτέλει ἀναφέρεται ὡς *ἐκνεφίας*. Εἶναι συνήθως πρόδρομον σημεῖον μεταπτώσεως νοτίου ἀνέμου εἰς σφοδρὸν βόρειον (βλ. λ. *προβέτζα*). Ἐνίοτε ἐκσπᾷ ἄνευ νεφέλης ἢ ὑετοῦ (βλ. λ. *σμώνη*)· || μεταφ., θυμός, νεῦρα: «τὸν πιάσαν τὰ μπουρίνια του» ἐθύμωσεν. Σ. Ε. Λ.

**Μπουριντὰν** (Buridan), ***Ἰωάννης***. Μεσαιωνικὸς σχολαστικὸς φιλόσοφος, τοῦ ὁποίου ἀγνοεῖται ἡ χρονολογία τῆς γεννήσεως καὶ τοῦ θανάτου. Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ ντ' Ὄκκαμ, τῷ 1317 ἐγένετο πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων καὶ ἔζη ἀκόμη τῷ 1358, ἄγων ἡλικίαν ἄνω τῶν ἑξήκοντα ἐτῶν. Ἡ παράδοσις τὸν θέλει ἐραστὴν τῆς βασιλίσσης Ἰωάννας τῆς Ναβάρρας, ἀλλ' αἱ ἀνωτέρω χρονολογίαι ἔρχονται εἰς ἀντίθεσιν πρὸς αὐτήν. Ὡς φιλόσοφος ὁ Μπουριντὰν ἐδίδαξε τὴν καθαρωτέραν *ὀνοματοκρατίαν* (nominalisme), εἰδικῶς ἐπιδοθεὶς εἰς τὴν λογικὴν καὶ τὸν ὑπομνηματισμὸν τοῦ Ἀριστοτέλους, ὅπως μαρτυροῦν οἱ τίτλοι τῶν ἔργων των: «Summula de dialectica» (Παρίσιοι 1487), «Compendium logicae» (Βενετία 1487), «Sophismata», «Questiones in X libros Ethicorum Aristotelis» (Παρίσιοι 1489 καὶ Ὀξφόρδη 1637), «Questiones in VIII libros Physicorum Aristotelis, in libros de Physica et in Parva naturalia» (Παρίσιοι 1516), «In Aristotelis Metaphysica «(1518). Ὡς ὀνοματοκρατικὸς ὁ Μπουριντὰν δὲν ἠδύνατο νὰ παραδεχθῇ τὴν ὕπαρξιν ἀνθρωπίνης ἐλευθερίας καὶ διὰ μακρῶν συζητεῖ τὸ πρόβλημα τῆς ἐλευθερίας τῆς βουλήσεως εἰς τὰ ὑπομνήματά του ἐπὶ τῶν «Ἠθικῶν» τοῦ Ἀριστοτέλους. Εἰς αὐτὸν ἀποδίδεται ἡ ἐφεύρεσις ἑνὸς συλλογισμοῦ, ὁ ὁποῖος ἔγινε περίφημος. Ἰσχυρίσθησαν δηλαδὴ ὅτι ὁ Μπουριντάν, θέλων ν' ἀποδείξῃ ὅτι ἡ ἐλευθερία τῆς ἀδιαφορίας (liberum arbitrium indifferentiae) ἦτο ἀπαραίτητος εἰς τὸν ἄνθρωπον διὰ νὰ εἶναι οὗτος πραγματικῶς ἐλεύθερος, εἶπεν ὅτι ὄνος τοποθετημένος μεταξὺ δύο ἰσομεγέθων καὶ ἰσοδυνάμων δεματίων χόρτου ἔπρεπε ν' ἀποθάνῃ ἐκ πείνης ἂν δὲν κατεῖχε τὴν ἐλευθερίαν ταύτην καὶ ὅτι ἐπομένως κατέχει τὴν ἐλευθερίαν τῆς ἀδιαφορίας, ἀφοῦ εἰς τὴν πραγματικότητα οὐδέποτε θὰ ἄφηνεν ὁ ὄνος τὸν ἑαυτόν του ν' ἀποθάνῃ ἐκ πείνης. Εἰς τὰ περισωθέντα ἔργα τοῦ Μπουριντὰν δὲν σῴζεται οὐδ' ἴχνος τοῦ συλλογισμοῦ τούτου, εἶναι δὲ πολὺ ἀμφίβολον κατὰ πόσον προέρχεται ἐκ τῶν προφορικῶν του παραδόσεων, ἀφοῦ ὁ Μπουριντὰν εἶναι μᾶλλον πολέμιος ἢ ὀπαδὸς τῆς ἐλευθερίας τῆς βουλήσεως. — Ω.

**μποῦρκα** (ἡ). Βαρὺς μαλλωτὸς μανδύας τῶν Καυκασίων καὶ ἰδίως τῶν στρατιωτικῶν, μετὰ καλύμματος τῆς κεφαλῆς (κουκούλας) ἐκ χονδροῦ μαλλίνου ὑφάσματος πρὸς προστασίαν ἀπὸ τοῦ ψύχους καὶ τῶν σπαθισμῶν.

**Μπουρκελὸ** (Bourqelot), ***Ἠλίας-Αἰμίλιος***. Γάλλος χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1851. Ἠσχολήθη ἰδίᾳ μὲ τὴν βιολογικὴν χημείαν, αἱ ἐπὶ τῆς ὁποίας μελέται καὶ ἔρευναί του ἀπέδωκαν ἐνδιαφέροντα ἀποτελέσματα. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις πολλῶν διαλυτῶν ζυμῶν, καὶ ἡ διερεύνησις τῆς βιολογικῆς αὐτῶν σημασίας ἐν ταῖς ζωϊκαῖς λειτουργίαις τῶν ὄντων. Εἰς τὴν φαρμακευτικὴν ἐπενόησε μεθόδους ἀντιδράσεων, ἐπιτρεπούσας ἄμεσον καὶ εὐχερῆ ἔλεγχον περὶ τοῦ ἂν οἱονδήποτε φάρμακον εἶναι πράγματι τὸ ἀναφερόμενον εἰς τὴν ἐπιγραφὴν τοῦ δοχείου του. Ἀπὸ τοῦ 1897 ἐγένετο καθηγητὴς ἐν τῇ φαρμακευτικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων καὶ ἀπὸ τοῦ ἰδίου ἔτους μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς, ἐξελέγη δὲ τῷ 1919 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν, ἥτις δὶς εἶχεν ἀπονείμει εἰς αὐτὸν μεγάλα βραβεῖα διὰ τὰς ἐπιστημονικὰς ἐργασίας του. —Ω.

**Μπουρκιέλλο** (Burchiello), ***Δομίνικος ντὶ Τζιοβάννι***, ἐπιλεγόμενος—. Ἰταλὸς ποιητὴς (1404—1449). Ἦτο κατ' ἀρχὰς κουρεὺς ἐν Φλωρεντίᾳ, ἀνήκων δὲ εἰς τὸ ἀντίπαλον κόμμα τῶν Μεδίκων καὶ γράψας ποιήματά τινα σατιρικὰ ἐναντίον αὐτῶν, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Σιέναν καὶ κατόπιν εἰς Ρώμην. Ἔγραψε πολυάριθμα σατιρικὰ σονέττα ἐναντίον διαφόρων συγχρόνων του προσωπικοτήτων, πλήρη ὑπαινιγμῶν, ἀκαταλήπτων ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον σήμερον. Λόγῳ τῆς καυστικῆς καὶ πνευματώδους σατίρας καὶ τῆς ἀφελείας τῆς ἐκφράσεως, ἡ ὁποία πολλάκις ὑπερέβαινε τὰ ὅρια τῆς εὐσχημοσύνης, τὰ σονέττα του εἶχον καταστῆ δημοφιλέστατα, ἀποτελέσαντα ἴδιον εἶδος ποιήσεως ἀποκληθὲν ἐξ αὐτοῦ «burchiellesco». Κατ' ἄλλους τὸ ὄνομα τοῦτο, πιθανῶς δὲ καὶ τὸ προσωνύμιον τοῦ ποιητοῦ, προέρχεται ἐκ τῆς ἐν τῇ φλωρεντινῇ διαλέκτῳ φράσεως «rimare alla burchia», ἥτις σημαίνει στιχουργεῖν ἐκ τοῦ προχείρου. Τὰ ἔργα του, τὰ ὁποῖα πολλοὶ κατόπιν ἐμιμήθησαν, ἔσχον πολυαρίθμους ἐκδόσεις, κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι αἱ τῆς Βενετίας τοῦ 1472, τῆς Φλωρεντίας τοῦ 1548 καὶ τῆς Λούκκας τοῦ 1757. Μ. Δ. Β.

**Μπούρκχαρτ** (Burckhardt), ***Ἰωάννης - Λιούις***. Ἄγγλος ἐξερευνητής, ὅστις πρῶτος μετὰ τοῦ Γερμανοῦ Seetzen περιῆλθε κατὰ τὰ ἔτη 1810 καὶ 1812 τὴν Ὑπεριορδανίαν καὶ τὴν Πετραίαν Ἀραβίαν. Τὸ ὁδοιπορικόν του, σπουδαιότατον ἀκόμη καὶ σήμερον, ἐδημοσιεύθη μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τὸν τίτλον «Travels in Syria and the Holy Land, by the late John Lewis Burckhardt» (London 1822). Ἀποτελεῖ ἕνα ὀγκώδη τόμον μετὰ πολλῶν χαρτῶν καὶ σχεδιαγραμμάτων. Μετάφρασιν τούτου γερμανικὴν ἐξέδωκεν ὁ Gesenius μετὰ προσθηκῶν καὶ σημειώσεων τῷ 1823 καὶ 1824 εἰς 2 τόμους. Γ. Λ. Α.

— **Μπούρκχαρντ** (Burkhardt), ***Ἰάκωβος***. Ἑλβετὸς ἱστορικὸς (1818—1897). Τῷ 1884 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γενικῆς ἱστορίας καὶ τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βασιλείας, βραδύτερον δὲ καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης ἐν τῷ πολυτεχνείῳ τῆς Ζυρίχης. Τὰ ἔργα του, διακρινόμενα διὰ τὴν ἐμβρίθειαν, τὴν ἀκρίβειαν καὶ τὸν πλοῦτον τῶν πληροφοριῶν, ἐξησφάλισαν εἰς αὐτὸν παγκόσμιον φήμην. Κυριώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι: «Τὰ ἀριστουργήματα τῆς τέχνης ἐν Βελγίῳ» (1842), «Ὁ Κωνσταντῖνος καὶ ἡ ἐποχὴ αὐτοῦ» (1853), «Τσιτσερόνε» (1855), θαυμάσιος ὁδηγὸς τῶν ἀριστουργημάτων ζωγραφικῆς, γλυπτικῆς καὶ ἀρχιτεκτονικῆς ἐν Ἰταλίᾳ, «Ὁ πολιτισμὸς τῆς Ἰταλίας κατὰ τὴν Ἀναγέννησιν» (1860), «Ἱστορία τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως» (1867) κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπουρλαμάκα** (Burlamacca), ***Κανάλε ντέλα*** — *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Αὐλὼν τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τοῦ κόλπου τῆς Γενούης (βλ. λ. *Βιαρέτζιο*).

**Μπουρλαμάκι** (Burlamachi ἢ Burlamaqui), ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος***. Ἑλβετὸς νομομαθὴς καὶ φιλόσοφος (1694—1748). Ἔγραψε: «Principes de droit naturel» καὶ «Principes de droit politique». Ἀπὸ τοῦ 1766 μέχρι τοῦ 1769 ἐξεδόθη πλήρης συλλογὴ τῶν ἔργων του ὑπὸ τὸν τίτλον «Principes du droit de la nature et des gens», εἰς ἣν περιελήφθη καὶ τὸ μέχρι τότε ἀνέκδοτον «Droit de la nature». Τὸ τελευταῖόν του ἔργον «Éléments du droit naturel» ἐδημοσιεύθη λατινιστὶ ἐν Γενεύῃ καὶ Λωζάννῃ τῷ 1774.

**Μπουρλὲ** (Bourlet), ***Κάρολος***. Γάλλος μαθηματικὸς (1866—1913). Διδάξας ἐν ἀρχῇ εἰς διάφορα λύκεια, ἐγένετο ἀπὸ τοῦ 1900 ἔκτακτος καθηγητὴς τῶν στοιχείων ἀναλύσεως καὶ μηχανικῆς ἐν τῇ Σορβόννῃ καὶ καθηγητὴς τῆς στατικῆς, δυναμικῆς καὶ κινητικῆς εἰς τὰς σχολὰς τῶν Καλῶν τεχνῶν καὶ τῶν τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων. Ἔγραψεν ἰδίως ἔργα ἐφηρμοσμένης μηχανικῆς καὶ συνειργάσθη εἰς διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, μετεῖχε δὲ ἀπὸ τοῦ 1903 τῆς διευθύνσεως τῶν «Νέων Μαθηματικῶν Χρονικῶν». Ὁ Μπουρλὲ ἔλαβεν ἐξ ἄλλου ἐνεργὸν μέρος ἐν τῇ προπαγάνδᾳ πρὸς ἐκλαΐκευσιν τῆς διεθνοῦς γλώσσης «ἐσπεράντο». —Ω.

**Μπουρλέσια** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Μεσολογγίου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται παρὰ τὴν νοτίαν παραλίαν τῆς λίμνης Τριχωνίδος καὶ ἐπὶ τῆς ἀπὸ Ἀγρινίου εἰς Ναύπακτον ὁδοῦ. Πρὸς Ν. τοῦ χωρίου καὶ εἰς ἀπόστασιν 20′ λ. κεῖται ὁ συνοικισμὸς *Ἄνω Μπουρλέσια*. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.001. Χ. Δ.

«**Μπουρλότα** ***σαϊμάζι***» (=ἡ ἀψηφοῦσα τὰ πυρπολικὰ) *[Ναυτ. Ἱστορ.]*. Ὀνομασία τῆς τουρκικῆς ναυαρχίδος τοῦ Καραλῆ, τῆς πυρποληθείσης ὑπὸ τοῦ Κανάρη ἐν Χίῳ. Σ. Ε. Λ.

**μπουρλοτιέρης** (ὁ)· ὁ πυρπολητής· || χαρτοπ. ὁ παίζων ζωηρῶς, ὁ παίζων «ὅλα γιὰ ὅλα».

**μπουρλότο** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *πυρπολικοῦ* (βλ. λ.).

**μπουρμάδα** (ἡ)· ἰδιωμ., ὁ πλόκαμος τῆς κομμώσεως, ἡ κοτσίδα.

**Μπούρμαν** (Burmann), ***Ἰωάννης***. Ὁλλανδὸς βοτανικὸς (1706—1779). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἀμστελλοδάμου καὶ ἔγραψε: «Thesaurus Zeylanicus» (1737), «Rariorum Africanarum plantarum ad vivum delineatarum decades X» καὶ «Hortus Malabaricus» (1779).

— **Μπούρμαν** (Burmann), ***Πέτρος***, ὁ πρεσβύτερος. Ὁλλανδὸς φιλόλογος καὶ ἱστορικὸς (1668—1741). Τῷ 1696 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἱστορίας καὶ ῥητορικῆς, βραδύτερον δὲ τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Οὐτρέχτης καὶ κατόπιν τοῦ Λάϋντεν. Ἐξέδωκε τοὺς Λατίνους συγγραφεῖς Πετρώνιον, Κουϊντιλιανόν, Ὀβίδιον κ. ἄ. καὶ ἔγραψε: «De vectigalibus populi Romani» (1694) καὶ «Sylloge Epistolarum» (5 τόμοι, (1727 εἰς 5 τόμους). Α. Δ.

— **Μπούρμαν** (Burmann), ***Πέτρος***, ὁ νεώτερος. Ὁλλανδὸς φιλόλογος (1714 — 1778), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Τῷ 1744 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς λογοτεχνίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἀμστελλοδάμου. Ἔξοχος λατινιστής, διεκρίθη ἰδίᾳ διὰ τὴν βαθεῖαν γνῶσιν τῆς ρωμαϊκῆς ποιήσεως. Ἐξέδωκε τὸν Βιργίλιον (1746), τὴν «Anthologia Veterum Latinorum epigrammatum», ἔργα τινὰ τοῦ Κικέρωνος καὶ τοῦ Προπερτίου, καὶ ἐκ τῶν Ἑλλήνων ποιητῶν τὸν Ἀριστοφάνη. Α. Δ.

**μπουρμᾶς** (ὁ)· ἰδιωμ., *μπουρμᾶδες* ἐλέγοντο ἐν Κρήτῃ οἱ Τοῦρκοι, ὀνομασθέντες οὕτω ἀπὸ τοὺς πρώτους Χριστιανοὺς ἐξωμότας, οἵτινες παρουσιάσθησαν εἰς τὸν στρατὸν μὲ τοὺς μύστακας ἐστριμμένους, παρὰ τὴν τουρκικὴν συνήθειαν· ἡ λέξις μπουρμᾶς ἔγινεν ἀπὸ τὸ *μπουρμαλὰρ* (=στριμμένος). Ι. Δ. Μ.

**Μπουρμπὸν** (Bourmont), ***Λουδοβῖκος-Αὔγουστος-Βίκτωρ***, *κόμις ντὲ—*. Γάλλος στρατάρχης (1773—1846). Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ρωσίας (1812) συνελήφθη αἰχμάλωτος, ἀλλὰ κατορθώσας ν' ἀποδράσῃ μετέσχε καὶ τῶν λοιπῶν ἐκστρατειῶν. Ἐπολέμησεν εἰς Ἱσπανίαν, διωρίσθη πατρίκιος καὶ ἐγένετο τῷ 1829 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν. Τῷ 1830, ὢν ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ ἐν Ἀλγερίᾳ, ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ στρατάρχου. Ἀρνηθεὶς νὰ ὀμόσῃ πίστιν εἰς τὸν Λουδοβῖκον-Φίλιππον, ἐξωρίσθη καὶ κατέφυγεν εἰς Πορτογαλίαν, ὅπου ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τοῦ ἀπολυταρχικοῦ στρατοῦ. Ἀμνηστευθεὶς ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν τῷ 1840, ἀλλὰ κατὰ τὴν ἀποβίβασίν του εἰς Μασσαλίαν ὁ λαὸς ἐπετέθη ἐναντίον του δι' ὕβρεων καὶ χλευασμῶν, ἐτραυμάτισε δὲ καὶ ἕνα τῶν υἱῶν του. Μόλις κατορθώσας νὰ σωθῇ κατέφυγεν εἰς τὸν προγονικὸν πύργον του, ὅπου διῆλθε τὸ ὑπόλοιπον τῆς ζωῆς του. Θ. Β.

**Μπουρμπάχης**, ***Στρατῆς***. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ τοῦ χωρίου Ἀσφένδου τῆς ἐπαρχίας Σφακίων. Ἔλαβε μέρος κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ ἐπανάστασιν τοῦ Δασκαλογιάννη (1770), φονευθεὶς κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Ἀνωπόλεως. ΕΡ. Μ.

**Μπουρμπὸν-λ' *Ἀρσαμπὼ*** (Bourbon l'Archambault) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἀλλιέ, ἀπέχουσα 26 χλμ. ἀπὸ τῆς Μουλέν. Ἔχει θερμοπηγὰς (+51° Κ.), σοδοχλωριούχους καὶ ἰωδοβρωμιούχους, ἐνδεικνυομένας ἐναντίον τῆς παραλυσίας, ἀρτηριοσκληρύνσεως, ρευματισμῶν, ἑλονοσίας κλπ. καὶ ψυχρὰς πηγὰς (+12° Κ.) σιδηρούχους καὶ δισανθρακούχους ἐνδεικνυομένας ἐναντίον τῆς χοιραδώσεως καὶ τοῦ διαβήτου. Κάτοικοι 2.860.

—**Μπουρμπὸν-λὲ - *Μπαὶν*** (Bourbonne-les-Bains) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Μάρνῃ, ἀπέχουσα 39 χλμ. ἀπὸ τῆς Λάνγκρ. Αἱ ἰαματικαὶ αὐτῆς πηγαί, γνωσταὶ ἀπὸ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων, περιλαμβάνουσι θερμὰ ὕδατα (+50° ἕως 58° Κ.) σοδοχλωριοῦχα καὶ βρωμιοϊωδιοῦχα, ἐνδεικνυόμενα ἐναντίον τῆς χλωρώσεως, τοῦ λεμφατισμοῦ, τῆς χοιραδώσεως, τῆς ἑλονοσίας, τῶν ρευματισμῶν, τῶν ἐξ ἡμιπληγίας παραλύσεων κλπ. Κάτ. 2.900. Χ. Δ.

Digitized by Google

—**Μπουρμπὸν** *νῆσος* (Ile Bourbon) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ (βλ. λ. *Ἑνώσεως* νῆσος).

**Μπουρμπὸν** ἢ ***Βουρβώνων*** (Bourbon) ***οἶκος***. Παλαιὰ γαλλικὴ φεουδαλικὴ οἰκογένεια, λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἐκ τῆς τοποθεσίας, ὅπου τὰ πρῶτα μέλη της ἵδρυσαν τὸν πύργον των. Εἰς τὴν γαλλικὴν ἱστορίαν ἀναφέρονται πλεῖστοι κλάδοι *Μπουρμπόν*, ὁ ἀρχαιότερος τῶν ὁποίων εἶναι ὁ καλούμενος Bourbon l'Ancien, ὅστις ἀνάγει τὴν καταγωγὴν του μέχρι τοῦ Χιλδεβράνδου Α', ἀδελφοῦ τοῦ Καρόλου Μαρτέλου καὶ τοῦ Νιμπελόνγκ Α'. Ὁ τελευταῖος ἔσχε δύο υἱούς, ὧν ὁ Τεοτμὼρ ὑπῆρξε πατὴρ Ροβέρτου τοῦ Ἰσχυροῦ, πρόπαππος δὲ τοῦ Οὔγου Καπέτου καὶ τοῦ Χιλδεβράνδου Β', γενάρχου τῶν Μπουρμπόν, τῶν ὁποίων ἡ καταγωγὴ συγχέεται μετὰ τῶν Καρλοβιγγίων καὶ τῶν Καπέτων.

Ὁ πρῶτος αὐθεντικὸς Μπουρμπὸν εἶναι ὁ *Αἰμὰρ* (Aymar I), εἰς ὃν Κάρολος ὁ Ἁπλοῦς παρεχώρησε πλείστας κτήσεις ἐν Μπερὺ καὶ Ὠβέρνῃ. Εἰς αὐτὰς ὁ πρεσβύτερος υἱός του *Αἰμὸν Α'* (Aymon I) τῷ 923 καὶ εἷς τῶν κληρονόμων του, ὁ Ἀρσαμπῶλ, ἵδρυσαν τῷ 959 τὸ φρούριον Μπουρμπόν, ἐξ οὗ ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα ὁ οἶκος οὗτος. *Μπουρμπὸν* φέροντες τὸ ὄνομα *Ἀρσαμπῶλ* εἶναι πλεῖστοι. Ἐκ τούτων ὁ ἕβδομος ἐνυμφεύθη τὴν Ἁγνὴν τῆς Σαβοΐας, ἀδελφὴν τῆς Ἀδελαΐδος, συζύγου τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου τοῦ Παχέος. Οὗτος δέκα ἔτη μετὰ τὸν γάμον του συνώδευσε τὸν βασιλέα Λουδοβῖκον τὸν Νέον εἰς τοὺς ἁγίους Τόπους, ἀπέθανε δὲ τῷ 1171. Ὁ υἱὸς καὶ διάδοχος αὐτοῦ, φέρων τὸ αὐτὸ ὄνομα, διωρίσθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Φιλίππου-Αὐγούστου διοικητὴς ὅλων τῶν φρουρίων τοῦ βασιλείου καὶ ἀπέθανε τῷ 1200, ἀφήσας μίαν θυγατέρα, τὴν Ματθίλδην, ὑπανδρευθεῖσαν εἰς δεύτερον γάμον (1197) τὸν Γκὺ ντὲ Νταμπιέρ. Ἐκ τούτων προῆλθεν ὁ δεύτερος οἶκος τῶν Μπουρμπόν. Ὁ Γκὺ ντὲ Νταμπιὲρ διωρίσθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως Φιλίππου-Αὐγούστου ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τοῦ ὁδεύσαντος κατὰ τοῦ κόμιτος τῆς Ὠβέρνης, ἀνεδείχθη δὲ κατὰ τὸν τριετῆ τοῦτον πόλεμον στρατηγὸς μεγάλης ἀξίας καὶ ἠμείφθη ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος, χορηγήσαντος εἰς αὐτὸν πολλὰς κτήσεις καὶ ἀναθέσαντος αὐτῷ τὴν φύλαξιν τῶν κατακτηθεισῶν χωρῶν. Ἀποθανὼν τῷ 1215 ἀφῆκε πολλοὺς υἱούς, ἐν οἷς καὶ τὸν *Ἀρσαμπῶλ Θ'*, τὸν ὀνομασθέντα *Μέγαν*, ὅστις κατέλιπε τὸ ὄνομα καὶ τὰ ἐμβλήματα τοῦ οἴκου του, ὅπως λάβῃ τὰ τοῦ Μπουρμπόν. Ἡ κόμισσα τῆς Καμπανίας Λευκὴ (Blanche), ὅπως ἐξασφαλίσῃ εἰς τὸν νεώτερον υἱόν της θετικὴν ὑπόστασιν, ὠνόμασεν αὐτὸν βαρῶνον ντὲ Μπουρμπὸν καὶ τὸν κατέστησε στρατάρχην τοῦ κράτους της (1217). Ἐξ ἄλλου ὁ βασιλεὺς Φίλιππος-Αὔγουστος τοῦ ἀνέθηκε τὴν γενικὴν διοίκησιν τῶν φρουρίων, ἅτινα εἶχε κυριεύσει ὁ πατήρ του εἰς τὴν Ὠβέρνην. Ὁ βαρῶνος Μπουρμπὸν ἠκολούθησε τὸν κόμιτα ντὲ Πουατιὲ εἰς ἐκστρατείαν κατὰ τῆς Γκυέν, ἀπηλευθέρωσε τὴν πόλιν Γκαννὰ καὶ ἐφονεύθη εἰς τὴν μάχην τοῦ Ταγιεμπούργκ. Ἐκ τοῦ γάμου τούτου μετὰ τῆς ντὲ Μονλυσὸν ἐγεννήθη ὁ *Ἀρσαμπωλ Ι'*, ὅστις, νυμφευθεὶς τὴν Ὑολάνδην ντὲ Σαστιγιόν, ἀπέκτησεν ἐκ προικὸς πλείστας κομιτείας καὶ βαρωνείας. Συνοδεύων τὸν ἅγιον Λουδοβῖκον εἰς τὴν πρώτην αὐτοῦ ἀποδημίαν, ἀπέθανεν ἐν Κύπρῳ τῷ 1249. Οὗτος κατέλιπε δύο θυγατέρας, τὴν Μαώ, δέσποιναν ντὲ Μπουρμπόν, ἀποθανοῦσαν τῷ 1262, ἀποκτήσασαν δ' ἐκ τοῦ γάμου της μετὰ τοῦ κόμιτος τῆς Βουργουνδίας μόνον θυγατέρας, καὶ τὴν Ἁγνήν, σύζυγον τοῦ Ἰωάννου τῆς Βουργουνδίας, ἀδελφοῦ τοῦ γαμβροῦ της, ἥτις ἀπέκτησε καὶ αὐτὴ μίαν θυγατέρα, τὴν Βεατρίκην, ἐκ τῆς ὁποίας προῆλθεν ὁ τρίτος οἶκος τῶν Μπουρμπόν.

Ἡ Βεατρίκη τῆς Βουργουνδίας εἶχεν ὑπανδρευθῇ τῷ 1272 μετὰ τοῦ Ροβέρτου τῆς Γαλλίας κόμιτος ντὲ Κλερμόν, ἐκληρονόμησε δὲ μετὰ τὸν θάνατον τῆς μητρός της τὴν Μπουρμπονναί. Ταύτης υἱὸς εἶναι ὁ *Λουδοβῖκος Α'*, δοὺξ ντὲ Μπουρμπόν. Τοῦ Ροβέρτου τῆς Γαλλίας κόμιτος ντὲ Κλερμὸν τὸ ὄνομα οὐδεμίαν ἄλλην ἀνάμνησιν ἀφῆκεν, εἰμὴ ὅτι ὑπῆρξεν ἡ ῥίζα μιᾶς τῶν μεγαλυτέρων καὶ ἐνδοξοτέρων οἰκογενειῶν, ἃς ἐγνώρισεν ὁ κόσμος. Οὗτος ἀπέθανε τῷ 1317. Ὁ Λουδοβῖκος Α' ντὲ Μπουρμπὸν ἀφῆκε δύο υἱούς, τὸν *Πέτρον Α'*, δοῦκα ντὲ Μπουρμπὸν κόμιτα ντὲ Κλερμόν, καὶ τὸν *Ἰάκωβον*. Οὗτοι ἐγένοντο τὰ στελέχη δύο ἑτέρων μπουρμπονικῶν κλάδων, τοῦ πρωτοτόκου καὶ τοῦ ὑστεροτόκου. Τοῦ πρώτου ἀρχηγὸς ἐγένετο ὁ *Πέτρος Α'* (1301—1356). Οὗτος ἠκολούθησε τὸν δοῦκα τῆς Νορμανδίας, διάδοχον τοῦ στέμματος, κατὰ τοῦ κόμιτος Μονφόρ, ἀντιζήλου τοῦ Καρόλου ντὲ Μπλουὰ ἐπὶ τοῦ δουκάτου τῆς Βρετάνης. Αἱ μεγάλαι ἐπιτυχίαι τοῦ νεαροῦ πρίγκιπος ὀφείλονται κατὰ μέγα μέρος εἰς τὴν στρατηγικὴν δεξιότητα τοῦ δουκὸς Πέτρου ντὲ Μπουρμπόν. Μετὰ τὴν ἐκστρατείαν ταύτην διορισθεὶς ὁ Πέτρος Α' ἀρχιστράτηγος τῆς Γκυέν, ἀπῆλθεν ἐκεῖ ἄνευ στρατοῦ καὶ χρημάτων· ἠδυνήθη ἐν τούτοις ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος νὰ ὀργανώσῃ στρατόν, δι' οὗ κατέλαβε πάντα τὰ φρούρια, ἅτινα εἶχον ἐκπορθήσει οἱ Ἄγγλοι. Ὑπῆρξε μάρτυς, τὴν 26 Αὐγούστου 1346, τῆς τρομερᾶς καταστροφῆς τῆς μεγάλης στρατιᾶς τοῦ βασιλέως Φιλίππου ντὲ Βαλουὰ ἐν τῇ πεδιάδι Κρεσύ, καὶ προσπαθήσας νὰ σώσῃ τὴν τιμὴν τοῦ βασιλέως ἔπεσε μαχόμενος ἡρωϊκῶς εἰς τὴν πεδιάδα τοῦ Πουατιέ. Ἡ σύζυγός του, δούκισσα Ἰσαβέλλα ἀπέκτησεν ἐξ αὐτοῦ τὸν *Λουδοβῖκον* ντὲ Μπουρμπὸν καὶ πέντε θυγατέρας, ἐκ τῶν ὁποίων αἱ ὀνομαστότεραι ὑπῆρξαν ἡ Ἰωάννα σύζυγος τοῦ βασιλέως Καρόλου Ε' καὶ ἡ Λευκή, ὑπανδρευθεῖσα Ἰωάννην τὸν Σκληρόν. Ἕτερα μέλη τοῦ κλάδου τούτου εἶναι ὁ *Ἰωάννης Α'*, ὅστις παρέμεινεν αἰχμάλωτος ἐπὶ δέκα ὀκτὼ ἔτη ἐν Λονδίνῳ. Υἱοὶ αὐτοῦ ἦσαν ὁ *Λουδοβῖκος*, ὁ γενόμενος γενάρχης τοῦ οἴκου Μονπανσιέ, καὶ ὁ *Κάρολος Α'*, ἀποθανὼν τῷ 1456, διαπρέψας δὲ εἰς τὸν κατὰ τῶν Ἄγγλων πόλεμον. Οὗτος διεπραγματεύθη τὴν συνθήκην τοῦ Ἀρράς, ἀλλ' ὑπῆρξε καὶ εἷς τῶν συνενόχων τῆς τραγικῆς συνωμοσίας τῆς Πρεγγερὺ (1439). Υἱοὶ αὐτοῦ ἦσαν ὁ *Ἰωάννης Β'*, εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς «Ἑνώσεως τοῦ κοινοῦ ἀγαθοῦ», καὶ ὁ *Κάρολος Η'*. Ὁ υἱὸς τοῦ τελευταίου τούτου *Λουδοβῖκος*, γενόμενος ἐπίσκοπος τῆς Λιέγης, ἐσφάγη ὑπὸ τοῦ Λὰ-Μάρκ.

Τοῦ ὑστεροτόκου κλάδου τῶν Μπουρμπὸν ἡγέτης εἶναι ὁ *Ἰάκωβος Α'*, φονευθεὶς τῷ 1361 ἐν πολέμῳ κατὰ τῶν μεγάλων συμμοριῶν (grandes compagnies), αἵτινες ἐλυμαίνοντο τὴν Γαλλίαν. Ὁ υἱός του *Ἰωάννης* ἐγένετο κόμις ντὲ Βαντὼμ καὶ γενάρχης τοῦ οἴκου Μπουρμπὸν-Πρεώ, εἷς δὲ τῶν υἱῶν τοῦ Ἰωάννου ἀρχηγὸς τοῦ οἴκου Μπουρμπὸν-Καρενσί. Ἐκ τοῦ οἴκου τούτου προέρχεται ὁ *Κάρολος* ντὲ Μπουρμπόν, τὸν ὁποῖον ὁ Φραγκῖσκος Α' ἀνηγόρευσε δοῦκα τῆς Βανδώμης. Τούτου υἱὸς ἦτο ὁ *Ἀντώνιος* ντὲ Μπουρμπόν, γενόμενος βασιλεὺς τῆς Ναβάρας. Ἐκ τοῦ γάμου αὐτοῦ μετὰ τῆς Ἰωάννας ντ' Ἀλμπὲρ ἐγεννήθη ὁ *Ἐρρῖκος Δ'*, βασιλεὺς τῆς Γαλλίας, ὁ γενόμενος ἀρχηγὸς τοῦ βασιλικοῦ μπουρμπονικοῦ οἴκου. θ. β.

***Ὁ βασιλικὸς οἶκος τῆς Γαλλίας***. Ἀρχηγὸς τοῦ οἴκου τούτου ἐγένετο ὁ *Ἐρρῖκος Δ'*. Οὗτος ἐκ τοῦ πρώτου γάμου του μετὰ τῆς Μαργαρίτας ντὲ Μπελουᾶ δὲν ἀπέκτησε τέκνα. Ἐκ τοῦ δευτέρου γάμου του μετὰ τῆς Αἰκατερίνης τῶν Μεδίκων ἔσχε τὸν *Λουδοβῖκον ΙΓ'*, τὸν *Γάστωνα*, δοῦκα τῆς Ὀρλεάνης, ἀποθανόντα τῷ 1660, τὴν *Χριστίναν*, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν Βίκτωρα Ἀμεδαῖον τῆς Σαβοΐας, τὴν *Ἐλισάβετ*, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν βασιλέα τῆς Ἱσπανίας Φίλιππον Γ', καὶ τὴν *Ἐρριέταν Μαρίαν*, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν βασιλέα τῆς Ἀγγλίας Κάρολον Δ'. Ὁ Ἐρρῖκος Δ' ἀπέκτησεν ἐκ τῶν τεσσάρων αὐτοῦ εὐνοουμένων, τῆς Γαβριέλλας ντ' Ἐστρέ, τῆς μαρκησίας ντὲ Βερνέλ, τῆς κομίσσης ντὲ Μυρὲ καὶ τῆς Καρλόττας ντ' Ἐσσάρ, ἑπτὰ τέκνα, πάντα νομιμοποιηθέντα καὶ ἀναγνωρισθέντα παρ' αὐτοῦ.

Ἐκ τοῦ *Λουδοδίκου ΙΓ'* καὶ τῆς Ἄννης ἐγεννήθησαν δύο υἱοί, ὁ *Λουδοβῖκος ΙΔ'* καὶ ὁ δοὺξ τῆς Ὀρλεάνης *Φίλιππος*, γενόμενος ἀρχηγὸς τῶν Ὀρλεανιδῶν.

Ὁ *Λουδοβῖκος ΙΔ'* ἀπέκτησεν ἐκ τῆς Μαρίας-Θηρεσίας τὸν *Λουδοβῖκον*, τὸν λεγόμενον μέγαν δελφῖνον, ἐκ δὲ τῶν εὐνοουμένων του, δουκίσσης ντὲ λὰ Βαλλιὲρ καὶ τῆς κυρίας ντὲ Μοντεσπάν, ἐννέα φυσικὰ τέκνα, πάντα ἀναγνωρισθέντα. Ὁ υἱός του μέγας δελφῖνος ἐκ τοῦ γάμου του μετὰ τῆς Μαρίας τῆς Βαυαρίας ἔσχε τρία τέκνα, τὸν *Λουδοβῖκον* δοῦκα τῆς Βουργουνδίας, ὅστις ἀπέθανε παιδίον, τὸν δοῦκα ντ' Ἀνζού, γενόμενον βασιλέα τῆς Ἱσπανίας τῷ 1700, καὶ τὸν *Κάρολον*, δοῦκα ντὲ Μπερύ. Κατὰ τὸν θάνατον τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' κατ' εὐθεῖαν ἀπόγονος αὐτοῦ δὲν ἐπέζη εἰμὴ ὁ βασιλεὺς τῆς Ἱσπανίας, ὅστις εἶχεν ἐκχωρήσει τὰ ἐπὶ τοῦ θρόνου τῆς Γαλλίας δικαιώματά του εἰς τὸν τριτότοκον υἱόν του, τὸν γενόμενον βασιλέα τῆς Γαλλίας ὑπὸ τὸ ὄνομα *Λουδοβῖκος ΙΕ'*. Ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' ἀπέκτησεν ἐκ τῆς Μαρίας Λεσζίνσκας δέκα τέκνα, τὸν δελφῖνον *Λουδοβῖκον*, ἀποθανόντα πρὸ τοῦ πατρός του, ἕτερον υἱὸν ἀποθανόντα παιδίον καὶ ὀκτὼ θυγατέρας. Ὁ δελφῖνος ἐκ τῆς Μαρίας-Ἰωσηφίνης τῆς Σαξωνίας ἀπέκτησε τὸν *Λουδοβῖκον-Αὔγουστον*, διαδεχθέντα τὸν πάππον του ὑπὸ τὸ ὄνομα Λουδοβῖκος ΙΣΤ', καρατομηθέντα δὲ τὴν 21 Ἰανουαρίου 1793, τὸν *Λουδοβῖκον-Στανίσλαον*, κόμιτα τῆς Προβηγκίας, γενόμενον βασιλέα τῆς Γαλλίας τῷ 1814 καὶ ἀποθανόντα ἄτεκνον τῷ 1824, τὸν *Κάρολον-Φίλιππον* κόμιτα ντ' Ἀρτουά, διαδεχθέντα τὸν ἀδελφόν του ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κάρολος Ι'*, ἐκδιωχθέντα δὲ ὑπὸ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1830 καὶ ἀποθανόντα τῷ 1836, τὴν *Μαρίαν-Ἀδελαΐδα*, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν βασιλέα τῆς Σαρδηνίας Κάρολον-Ἐμμανουὴλ Δ', καὶ τὴν *Ἐλισάβετ*, καρατομηθεῖσαν τὴν 10 Μαΐου 1794.

Ὁ Λουδοβῖκος ΙΣΤ' ἐκ τοῦ γάμου του μετὰ τῆς Μαρίας-Ἀντωαννέτας ἀπέκτησε τέσσαρα τέκνα: τὴν *Μαρίαν-Θηρεσίαν-Καρλότταν* τῆς Γαλλίας, ὑπανδρευθεῖσαν τὸν δοῦκα τῆς Ἀγγουλέμης, τὸν *Λουδοβῖκον-Ξαβέριον*, ἀποθανόντα κατὰ τὴν παιδικὴν ἡλικίαν του, τὸν *Λουδοβῖκον-Κάρολον* δοῦκα τῆς Νορμανδίας (Λουδοβῖκον ΙΖ'), ἀποθανόντα εἰς τὴν εἱρκτὴν τοῦ Τάμπλ ἐννεαετῆ, καὶ τὴν *Σοφίαν-Βεατρίκην*, ἀποθανοῦσαν τῷ 1787 εἰς ἡλικίαν ἑνὸς ἔτους.

Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς μοναρχίας οἱ ἐπιζήσαντες Λουδοβῖκος ΙΗ' ἀπέθανεν ἄτεκνος, ὁ δὲ *Κάρολος Ι'*, νυμφευθεὶς τὴν Μαρίαν-Θηρεσίαν τῆς Σαβοΐας, ἀπέκτησε τὸν *Λουδοβῖκον-Ἀντώνιον* δοῦκα τῆς Ἀγγουλέμης, ἀποθανόντα τῷ 1844, τὸν *Κάρολον-Φερδινάνδον* δοῦκα ντὲ Μπερύ, δολοφονηθέντα ἐν Παρισίοις τῷ 1820, τοῦ ὁποίου ὁ υἱὸς κόμις ντὲ Σαμπὸρ ἐγεννήθη μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ καὶ τὸν ὁποῖον οἱ ὀπαδοί του μετὰ τὴν ἐκθρόνισιν τοῦ πάππου του ὠνόμασαν *Ἐρρῖκον Ε'*. Οὗτος ἀπέθανεν ἄτεκνος τῷ 1883 καὶ μετ' αὐτοῦ ἐξέλιπεν ὁ βασιλικὸς κλάδος τῶν Μπουρμπόν. θ. β.

[Περὶ τῶν ἄλλων οἴκων βλ. ἐν λ. *Ἱσπανία, Νεάπολις, Πάρμα* κ.ο.κ.]

— **Μπουρμπόν, *Κάρολος*** *δοὺξ ντὲ* —. Γάλλος στρατάρχης, γνωστὸς ὡς connétable de Bourbon, γεννηθεὶς τῷ 1490 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ρώμῃ τῷ 1527. Νυμφευθεὶς τὴν θυγατέρα τῆς δουκίσσης Ἄννης τῆς Γαλλίας Σουσάναν, ἐγένετο ὁ πλουσιώτερος μεγιστὰν τῆς Εὐρώπης. Ἀφωσιώθη εἰς τὴν στρατιωτικὴν τέχνην, νεανίας δὲ διέπρεψεν εἰς τὴν κατὰ τῆς Νεαπόλεως ἐκστρατείαν (1507), κατὰ δὲ τὸν πόλεμον τῆς συμμαχίας τοῦ Καμπρὲ (1509) συνετέλεσεν εἰς τὴν νίκην τοῦ Ἀνιατέλ. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ντὲ Φουᾶ ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στρατοῦ τῆς Ἰταλίας, ὑπὸ δὲ τοῦ Φραγκίσκου Α' ἀνηγορεύθη στρατάρχης. Διὰ τῆς νίκης τοῦ Μαρτινιὰν κατέστησε τὸν Φραγκῖσκον κύριον τῆς Λομβαρδίας, τῆς ὁποίας μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ βασιλέως εἰς Γαλλίαν διωρίσθη ἀντιβασιλεύς. Κατὰ τὴν ἀπουσίαν του ἡ βασιλομήτωρ Λουΐζα τῆς Σαβοΐας, ἥτις ἔτρεφεν ἄσπονδον κατ' αὐτοῦ μῖσος, διότι εἶχεν ἀποκρούσει τὸν ἔρωτά της, ἐξέθρεψε τὴν δυσμένειαν τοῦ βασιλέως κατ' αὐτοῦ καὶ προκειμένου νὰ ἐκστρατεύσῃ οὗτος κατὰ τοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου-Κουΐντου εἰς τὰς Κάτω Χώρας, ἀφῄρεσεν ἀπ' αὐτοῦ τὴν ἀρχηγίαν. Ἡ πρᾶξις αὕτη ὡς καὶ τὸ ὅτι κληρονόμος τῆς ἀποθανούσης συζύγου του ἀνεγνωρίσθη ἡ Λουΐζα τῆς Σαβοΐας, προσήγγισαν τὸν Μπουρμπὸν εἰς τὸν Κάρολον Κουΐντον. Ὁ Φραγκῖσκος Α' ἐπεδίωξε νὰ προσελκύσῃ τὸν Μπουρμπόν, ἀλλ' ἀποτυχὼν διέταξε τὸν στρατάρχην Σαμπαννὲς νὰ προσαγάγῃ αὐτὸν διὰ παντὸς τρόπου ἐνώπιόν του. Τότε ὁ Μπουρμπὸν ἐτράπη εἰς τὰ ὄρη ἀκολουθούμενος παρ' ἑνὸς μόνου ἱππότου, ἐνεφανίσθη δὲ μετά τινα χρόνον εἰς Ἰταλίαν ἀρχηγὸς τῶν στρατευμάτων τοῦ αὐτοκράτορος Καρόλου Κουΐντου καὶ κατέλαβε τὴν Λομβαρδίαν. Παράφορος ἐξ ὀργῆς, λόγῳ τῆς ἀπαγγελθείσης κατ' αὐτοῦ κατηγορίας ἐπὶ προδοσίᾳ τῆς πατρίδος του, ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς ἐχθρικοῦ στρατοῦ, ὅπως εἰσβάλῃ εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ προκαλέσῃ ἐπανάστασιν. Ἀλλ' ὁ Φραγκῖσκος Α', ἄγων στρατὸν 40.000 ἀνδρῶν, ἐματαίωσε τοὺς σκοποὺς τοῦ Μπουρμπόν, ὅστις καταλιπὼν τὸ ἀρχικὸν σχέδιόν του ἐπέστρεψεν εἰς Ἰταλίαν καὶ ἑνωθεὶς μετὰ Ἰταλῶν καὶ Ἱσπανῶν ἐβάδισε κατ' εὐθεῖαν εἰς Παβίαν, ἣν ἐπολιόρκει ὁ βασιλεὺς τῆς Γαλλίας, τὸν ὁποῖον ἐνίκησε καὶ ᾐχμαλώτισε τὴν 14 Ἰανουαρίου 1526. Ἀλλ' ὁ Κάρολος Κουΐντος δὲν ἱκανοποίησε τὸν νικητὴν τῆς Παβίας, ἡ δὲ συνθήκη τῆς Μαδρίτης δὲν τοῦ ἐξησφάλισε τὰ καταπατηθέντα δικαιώματά του. Ἐρρίφθη τότε εἰς νέαν περιπετειώδη πολεμικὴν ζωήν, ἐπιδιώκων τὸ στέμμα τῆς Ἰταλίας. Εἰς τὴν πρόσκλησίν του τὸν ἠκολούθησαν οἱ ἀνδρειότεροι τῶν Γερμανῶν τυχοδιωκτῶν, μεθ' ὧν εἰσέβαλε καὶ ἀνεστάτωσε τὴν Ἰταλίαν. Τὴν 5 Μαΐου 1527 εὑρίσκετο πρὸ τῶν τειχῶν τῆς Ρώμης. Ἅμα τῇ αὐγῇ διέταξεν ἔφοδον κατὰ τῆς πόλεως, πρῶτος δὲ ὁρμήσας ἔθεσε κλίμακα. Τὴν στιγμὴν ὅμως καθ' ἣν ἀνήρχετο τὸ τεῖχος, βολὴ ὅπλου ῥιφθεῖσα ὑπὸ τοῦ Μπενβενούτο Τσελλίνι ἔρριψεν αὐτὸν νεκρόν. Ὁ Φραγκῖσκος Α' ἠθέλησε καὶ μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ νὰ ἐξακολουθήσῃ τὴν ἐπὶ προδοσίᾳ κατ' αὐτοῦ δίκην καὶ τὴν ἔκδοσιν ἀτιμωτικῆς ἀποφάσεως. Ἀλλ' ὁ Κάρολος Κουΐντος διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Καμπραὶ ἐπέβαλε τὴν κατάργησιν τῆς δίκης καὶ τὴν ἀπόδοσιν τῆς δημευθείσης περιουσίας του εἰς τοὺς νομίμους κληρονόμους αὐτοῦ. θ. β.

— **Μπουρμπὸν *ντὲ Κοντὲ*** (Bourbon de Condé). Κλάδος τοῦ Μπουρμπονικοῦ οἴκου (βλ. λ. *Κοντέ*).

— **Μπουρμπὸν *ντὲ Κοντὶ*** (Bourbon de Conti). Κλάδος τοῦ Μπουρμπονικοῦ οἴκου, προερχόμενος ἐκ τοῦ δευτεροτόκου υἱοῦ τοῦ Ἐρρίκου Β' πρίγκιπος ντὲ Κοντὲ καὶ ἐκλείψαντος μετὰ τοῦ ἀποθανόντος ἐν Ἱσπανίᾳ τῷ 1814 Λουδοβίκου Φραγκίσκου (βλ. λ. *Κοντί*). θ. β.

— **Μπουρμπὸν *ντὲ Σουασσὸν*** (Bourbon de Soissons). Κλάδος τοῦ Μπουρμπονικοῦ οἴκου, δημιουργηθεὶς ἐν τῇ οἰκογενείᾳ ταύτῃ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ὑπὸ τῆς Μαρίας ντὲ Λουξεμπούργκ, νυμφευθείσης τὸν κόμιτα τῆς Βανδώμης. Ὁ κλάδος οὗτος ἐξέλιπε τῷ 1734 μετὰ τοῦ κόμιτος Εὐγενίου-Ἰωάννου Φραγκίσκου. θ. β.

— **Μπουρμπόν, *Λουδοβῖκος-Αὔγουστος*,** δοὺξ *ντὲ* ***Μαίν*** βλ. λ. *Μαίν*.

**Μπουρμπόν, *ἀνάκτορον*** — (Palais-Bourbon). Μέγαρον ἐν Παρισίοις, ἐν τῷ ὁποίῳ συνεδριάζει ἡ γαλλικὴ βουλή, κείμενον ἐπὶ τοῦ Καὶ ντ' Ὀρσαί. Τὸ γήπεδον ἐφ' οὗ κεῖται τὸ μέγαρον προωρίζετο

Digitized by Google

ὑπὸ τοῦ ἀντιβασιλέως δουκὸς τῆς Ὀρλεάνης πρὸς ἵδρυσιν στρατῶνος τῶν σωματοφυλάκων. Ἡ δούκισσα ντὲ Μπουρμπὸν ἤγειρε τῷ 1722, ἐπὶ σχεδίου τοῦ Ἰταλοῦ ἀρχιτέκτονος Ζιραλντίνι, μέγαρον, ὅπερ ἐκ ταύτης ἔλαβε καὶ τὸ ὄνομα. Ἡ κυρία εἴσοδός του ἦτο ἐπὶ τῆς ὁδοῦ Πανεπιστημίου, σῴζεται δὲ ἀκόμη ἔχουσα πρὸ αὐτῆς τὸ ἄγαλμα τοῦ Νόμου καὶ μνημειώδη πύλην ἐν μέσῳ κιονοστοιχίας κορινθιακοῦ ρυθμοῦ, ἐπὶ τῶν βάθρων δὲ τῆς κλίμακος ὑψοῦνται τὰ ἀγάλματα τῆς Γαλλίας ψηφιζούσης καὶ τῆς ἰσχύος τοῦ Νόμου, ἔργα τοῦ Γκαγιαράρ. Ὁ ἔγγονος τῆς δουκίσσης πρίγκιψ ντὲ Κοντὲ ηὔρυνε μεγάλως τὴν οἰκοδομήν, περατωθεῖσαν τῷ 1789. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ἐπαναστάσεως τὸ μέγαρον ἐδημεύθη καὶ ὠνομάσθη «Οἶκος τῆς Ἐπαναστάσεως», ἐγκατεστάθη δὲ εἰς αὐτὸ ἡ πολυτεχνικὴ σχολή. Τῷ 1795 διασκευασθὲν ὑπὸ τῶν ἀρχιτεκτόνων Ζιζὸρ καὶ Λεκὸντ ἐστέγασε τὸ συμβούλιον τῶν Πενταχοσίων. Ὅταν ὁ Ναπολέων ἐγένετο αὐτοκράτωρ, ἵδρυσε τὸ πρὸ τῆς γεφύρας τῆς Ὁμονοίας περιστύλιον ἑλληνικοῦ ρυθμοῦ, ὅπως ἀνταποκρίνεται πρὸς τὴν ἐκκλησίαν τῆς Μαγδαληνῆς, κειμένην ἀπέναντι τοῦ μεγάρου, εἰς τὸ ἕτερον ἄκρον τῆς πλατείας τῆς Ὁμονοίας. Ἓν ἀνάβαθρον πλάτους 33 μέτρων καὶ ὕψους 8 ὁδηγεῖ εἰς πρόδομον, ἀπαρτιζόμενον ἐκ δώδεκα κιόνων κορινθιακοῦ ρυθμοῦ, ὑποβασταζόντων τὸ ἀέτωμα αὐτοῦ. Ἐπὶ τοῦ ἀναβάθρου ἐγείρονται τὰ κολοσσιαῖα ἀγάλματα τῆς Ἀθηνᾶς, ἔργον τοῦ Ρολλέν, καὶ τῆς Θέμιδος τοῦ Οὐντών, πρὸς δὲ οἱ ἀνδριάντες τῶν Σιλλύ, Κολμπέρ, Λ' Ὁσπιτὰλ καὶ Ἀγγεσώ. Τὰ ἀνάγλυφα τοῦ ἀετώματος εἶναι ἔργον τοῦ Κορτό. Τῷ 1806 εἰς τὸ ἀνάκτορον τοῦτο ἐγένετο ἡ βιομηχανικὴ ἔκθεσις τῆς Γαλλίας, εἶτα δὲ ὁ Ναπολέων Α' ἐγκατέστησε τὸ νομοθετικὸν σῶμα καὶ ὁ Λουδοβῖκος ΙΗ' τὴν γαλλικὴν βουλήν. Τῷ 1814 διὰ νόμου ὁ πρίγκιψ Κοντὲ ἀνέκτησε τὸ μέγαρον, αὐτὸς δὲ καὶ ὁ κληρονόμος του δοὺξ ντ' Ὡμὰλ τὸ ἐπώλησαν εἰς τὸ κράτος ἀντὶ 10.547.475 φράγκων. Ἀπὸ τοῦ 1815 μέχρι σήμερον συνεδριάζει εἰς αὐτὸ ἡ γαλλικὴ βουλή.

Τὸ ἵδρυμα περιλαμβάνει πλείστας αἰθούσας, ἐκ τῶν ὁποίων αἱ σπουδαιότεραι εἶναι: ἡ τῶν Συνεδριάσεων, σχηματίζουσα ἡμικύκλιον καὶ κοσμουμένη ὑπὸ εἴκοσι μαρμαρίνων κιόνων ἰωνικοῦ ρυθμοῦ, στηριζόντων θόλον φωτιζόμενον ἄνωθεν. Ἄλλη αἴθουσα εἶναι ἡ τοῦ Καζιμὶρ Περιέ, εἰς ἣν εὑρίσκονται οἱ ἀνδριάντες τοῦ Μιραμπώ, τοῦ Μπαλλύ, τοῦ Φουᾶ καὶ τοῦ Περιέ. Ἄλλη ὡραιοτάτη αἴθουσα εἶναι ἡ καλουμένη τοῦ Θρόνου, διακοσμηθεῖσα ὑπὸ τοῦ Ντελακρουᾶ, διὰ πινάκων παριστανόντων τὴν Δικαιοσύνην, τὸν Πόλεμον, τὴν Βιομηχανίαν καὶ τὴν Γεωργίαν καὶ διὰ σκιαγραφιῶν, εἰκονιζουσῶν ἀλληγορικῶς τὰς θαλάσσας καὶ τοὺς ποταμοὺς τῆς Γαλλίας. Τὴν αἴθουσαν τῶν Διανομῶν, ὀνομασθεῖσαν οὕτω, καθ' ὅσον εἰς αὐτὴν διανέμονται αἱ ἐκθέσεις τῶν ἐπιτροπῶν, διεκόσμησεν ὁ Πυζὸλ διὰ πινάκων παριστανόντων τὸν Σαλικὸν νόμον, τὰ διατάγματα τοῦ Καρολομάγνου, τοὺς θεσμοὺς τῆς Νάντης καὶ τὸ Σύνταγμα τοῦ 1830. Ἐν τέλει ἡ βιβλιοθήκη ἀποτελεῖ στοὰν μήκ. 40 μέτρων καὶ περιλαμβάνει 230.000 τόμους. Εἰς τὴν εἴσοδόν της ἐγείρονται οἱ ἀνδριάντες τοῦ Δημοσθένους καὶ τοῦ Κικέρωνος, τὰ δὲ φατνώματά της κοσμοῦνται δι' εἴκοσιν ἀλληγορικῶν συνθέσεων τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς ἱστορίας καὶ μυθολογίας, ἔργων τοῦ Ντελακρουᾶ. Οὕτω τὸ μέγαρον τῆς γαλλικῆς βουλῆς, ἐκτὸς τῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ ἱστορικῆς του σημασίας, ἀποτελεῖ μουσεῖον ἐξ ἔργων τῆς νεωτέρας γαλλικῆς τέχνης.

Μετὰ τῆς βουλῆς συνδέεται τὸ μέγαρον τῆς κατοικίας τοῦ προέδρου της, ρυθμοῦ Ἀναγεννήσεως, εἰς τὸ ὁποῖον στεγάζεται πλουσία πινακοθήκη. θ. β.

— **Μπουρμπόν,** ἢ ***Μπουρμπόνικο*** (Bourbon ἢ Bourbonico), ***μουσεῖον***—. Οὕτως ἐκαλεῖτο, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς κυριαρχίας τῶν Βουρβώνων ἐν Νεαπόλει, τὸ ἐθνικὸν τῆς πόλεως μουσεῖον (βλ. λ. *Νεάπολις*).

**Μπουρμποννὲ** (Bourbonnais) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Γαλλίας κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν, ἀποτελῶν σήμερον, πλὴν μικροῦ βορειοδυτικοῦ τμήματος, τὸν νομὸν τοῦ Ἀλλιέ. Ὡρίζετο πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ τότε νομοῦ τοῦ Νιβερναὶ καὶ τμήματος τοῦ νομοῦ τοῦ Μπερρύ, πρὸς Α. ὑπὸ τοῦ νομοῦ τῆς Βουργουνδίας καὶ τμήματος τοῦ νομοῦ Λυωνναί, πρὸς Ν. ὑπὸ τῶν νομῶν τῆς Ὠβὲρν καὶ τῆς Μὰρς καὶ πρὸς Δ. ὑπὸ τοῦ νομοῦ τοῦ Μπερρύ. Πρωτεύουσα αὐτοῦ ἦτο ἡ Μουλέν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν Γαλατῶν ἡ χώρα αὕτη κατῳκεῖτο ὑπὸ τῶν Βοΐων. Κατὰ τὸν Ι' αἰῶνα ἀπετέλεσεν ἰδιαίτερον διαμέρισμα ὑπὸ τὸν Ἀδεμάρ, μὲ πρωτεύουσαν κατ' ἀρχὰς τὸ Σουβινὺ καὶ κατόπιν τὸ Βουρβὼν-λ' Ἀρσαμπώ. Ἐξ αὐτοῦ προῆλθον οἱ τρεῖς οἶκοι τῶν Βουρβώνων, ὁ τελευταῖος τῶν ὁποίων ἔδωσε τοὺς ἀπὸ Ἑρρίκου τοῦ Δ' βασιλεῖς τῆς Γαλλίας (βλ. καὶ λ. *Ἀλλιέ*). —μ.

**Μπουρμποννεζ, *Ἡ ὡραία*** — (La belle Bourbonnaise). Γαλλικὸν λαϊκὸν ᾆσμα τῆς ἐποχῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ'. Εἶχε καταστῆ δημοφιλές, ἀφ' ἧς ἐποχῆς ἀπεδόθη εἰς τὴν εὐνοουμένην τοῦ βασιλέως κυρίαν ντὺ Μπαρρύ, ἀποκληθεῖσαν *Μπουρμποννεζ*, ὡς ἐκ τῶν σχέσεών της μετὰ τοῦ Βουρβώνου βασιλέως, καίτοι δὲν εἶχε συντεθῆ δι' αὐτήν, καθότι ἦτο γνωστὸν πολὺ πρὶν ἐμφανισθῇ αὕτη εἰς τὴν αὐλήν. Βραδύτερον συνετέθη νέον ᾆσμα ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ νέα Μπουρμποννεζ», ἐπίτηδες διὰ τὴν κυρίαν ντὺ Μπαρρύ, τῆς ὁποίας ἐσατιρίζετο ἡ ταπεινὴ καταγωγὴ καὶ αἱ σχέσεις μετὰ τοῦ βασιλέως. Καὶ τὰ δύο ταῦτα ᾄσματα εἶχον ἀπαγορευθῆ αὐστηρῶς ὑπὸ τῆς αὐλῆς, ἀλλ' ἡ ἀστυνομία, διοικουμένη ὑπὸ τοῦ δουκὸς τοῦ Σουαζέλ, ἐχθροῦ τῆς κυρίας ντὺ Μπαρρύ, ἀπέφευγε πάντοτε νὰ τὰ καταδιώκῃ, εἰς τρόπον ὥστε εἰς βραχὺ χρονικὸν διάστημα ἔλαβον ταῦτα τεραστίαν διάδοσιν μεταξὺ τοῦ λαοῦ, ὅστις διέκειτο ἐχθρικῶς πρὸς τὴν βασιλικὴν ἐρωμένην. μ. δ. β.

**Μπουρμπὸτ** (Bourbotte), ***Πέτρος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1763—1795). Ἐξελέγη πληρεξούσιος τῆς συνελεύσεως τοῦ 1792, μετὰ τὴν πτῶσιν ὅμως τοῦ Ροβεσπιέρρου συνελήφθη μετὰ τῶν τελευταίων ὀρεινῶν καὶ καθείρχθη εἰς τὸ φρούριον Τωρὼ τοῦ Φινιστέρου. Μετενεχθεὶς εἰς Παρισίους κατεδικάσθη εἰς θάνατον μετὰ τῶν Ρώμ, Γκουζών, Σουμπρανὺ κλπ. Μετὰ τὴν ἀγγελίαν τῆς καταδίκης του διεπέρασε τὸ στῆθός του διὰ μαχαίρας, ἀναπνέων δὲ εἰσέτι ἤχθη ἐπὶ τοῦ ἰκριώματος καὶ ἐκαρατομήθη. θ. β.

**Μπουρμποὺλ, *Λὰ*** — (La Bourboule) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Πυὺ-ντὲ-Ντώμ, ἀπέχουσα 34 χλμ. ἀπὸ τῆς Κλερμὸν-Φερράν. Ἔχει ὀνομαστὰς θερμοπηγάς, τῶν ὁποίων τὰ ὕδατα εἶναι τὰ μᾶλλον ἀρσενικοῦχα τῆς Εὐρώπης, κατάλληλα πρὸς θεραπείαν τοῦ ραχιτισμοῦ, τῆς χοιραδώσεως, τῆς ἀναιμίας καὶ τῶν δερματικῶν παθήσεων. Κάτ. 2.700. χ. δ.

**μπούρμπουλας** (ὁ) *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ἐντόμου *κάνθαρος ὁ ἱερός*.

**μπουρμπουλήθρα** (ἡ)· δημοτ., φυσαλὶς σχηματιζομένη εἰς τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ ὕδατος, ὅταν ἀνέρχεται ἀέριον, πομφόλυξ· || λόγοι κενοί, φλυαρία, ἀλαζόνευμα.

**Μπούρμπουλο** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βούρβουλος*.

**Μπούρμωφ, *Θεόδωρος*.** Βούλγαρος δημοσιογράφος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1834. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν ἐκκλησιαστικὴν Ἀκαδημίαν Κιέβου (1857) καὶ τῷ 1860 μετέβη εἰς Κωνσταντινούπολιν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ περιοδικοῦ «Balgarski Knizitsi», ἐθνικοῦ ὀργάνου τῆς βουλγαρικῆς κοινότητος. Βραδύτερον ἵδρυσε δύο ἐφημερίδας, συνεργαζόμενος συγχρόνως εἰς διάφορα ρωσικὰ περιοδικά. Μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσιν ἐγένετο πρωθυπουργὸς καὶ βραδύτερον ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Τῷ 1886 προσελήφθη εἰς τὴν ἰδιαιτέραν ὑπηρεσίαν τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Ρωσίας Ἀλεξάνδρου Γ', ἀλλὰ διὰ τοῦτο ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του ἐδολοφονήθη. τ. β.

**Μποὺρν** (Bourne), ***Φραγκῖσκος***. Ἄγγλος καρδινάλιος, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἐν Λουβαὶν τοῦ Βελγίου καὶ ἐγένετο ἱερεὺς τῷ 1884, τῷ 1896 ἐπίσκοπος, τῷ 1903 ἀρχιεπίσκοπος τοῦ Οὐεστμίνστερ καὶ τῷ 1911 καρδινάλιος. Ἐν τῇ πολιτείᾳ του ἐπέδειξε πάντοτε μετριοπάθειαν καὶ ὑπῆρξεν ἄκρως συντηρητικός, καταπολεμήσας τοὺς νεωτερισμοὺς ἐν τῇ Ἐκκλησίᾳ, καθὼς καὶ τὴν ἰδέαν τῆς ἱδρύσεως χωριστῶν καθολικῶν πανεπιστημίων ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἰδιαιτέρου καθολικοῦ πολιτικοῦ κόμματος. μ. δ. β.

**Μπουρναμπὰτ** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Σμύρνης (βλ. λ. *Βουρνόβας*).

**Μπουρνασλῆ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Πουρναροχώρι* (βλ. λ.).

**μπουρνέλλα** (ἡ). Καλεῖται οὕτως ὁ καρπὸς τῆς *μπουρνελλιᾶς* (βλ. λ.).

**μπουρνελλιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *προύμνη ἡ κοινή*.

**Μπουρνόβας** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Βουρνόβας*.

**μπουρνού,** καὶ ***μπουρούν***. Λέξις τουρκικὴ σημαίνουσα τὴν ρῖνα καὶ κατ' ἐπέκτασιν τὸ ἀκρωτήριον, ἑπομένη κατὰ κανόνα τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ (*Κοὺμ μπουρνοῦ, Μαντὰ-τὰς μπουροὺν κλπ.*). Πλείστων ἀκρωτηρίων τῶν ἑλληνικῶν θαλασσῶν ἡ ὀνομασία παρέμεινε τουρκική, δι' ὃ καὶ ἡ λέξις εἶναι ἐν συχνοτάτῃ παρ' ἡμῖν χρήσει.

**μπουρνούζι** (τὸ) (ἀραβ. *μπουρνούς*). Χλαμὺς τῶν Ἀράβων τῆς Ἀραβίας καὶ τῆς Β. Ἀφρικῆς, ἀποτελουμένη ἐκ τετραγώνου ὑφάσματος φέροντος τρεῖς ὀπάς, δύο διὰ τὰς χεῖρας καὶ μίαν διὰ τὴν κεφαλήν· || λουτρικὸν ποδῆρες ἔνδυμα μὲ πλατείας χειρίδας. ν. μ.

**Μποὺρντ** (Bourde) ***Παῦλος.*** Γάλλος δημοσιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1851. Ἀπὸ τοῦ 1878 προσελήφθη εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ παρισινοῦ «Χρόνου», ἀποσταλεὶς δ' ἐκ μέρους τῆς ἐφημερίδος ταύτης εἰς Κορσικὴν καὶ Ἰνδοκίναν ἔγραψεν ἐκεῖθεν λίαν ἐνδιαφερούσας ἀνταποκρίσεις. Ἡ ἐπιδειχθεῖσα ἐν αὐταῖς παρατηρητικότης καὶ εὐθυκρισία του ἐπὶ τῶν ἀποικιακῶν ζητημάτων ἤγαγον τὴν κυβέρνησιν νὰ τὸν χρησιμοποιήσῃ ὡς ὑπάλληλον ἐν Τύνιδι (1890), ὅπου διηύθυνε τὰς ὑπηρεσίας ἐκπαιδεύσεως καὶ ἐλέγχου καὶ κατόπιν τῆς γεωργίας, βραδύτερον δὲ ὡς γενικὸν γραμματέα τῆς διοικήσεως τῆς Μαδαγασκάρης. μέχρι τῆς ἐποχῆς, καθ' ἣν ἡ ἀποικία μετετράπη εἰς προτεκτορᾶτον. Ὁ Μποὺρντ ἐδημοσίευσεν ἐπὶ τῶν ταξιδίων καὶ τῶν ἀποστολῶν αὐτοῦ σειρὰν ἔργων, ἐν αἷς: «Διὰ μέσου τῆς Ἀλγερίας» (1882), «Τὸ τέλος τῶν παλιῶν καιρῶν» (1884), ἐκ τοῦ ὁποίου ἤντλησε καὶ τρίπρακτον θεατρικὸν ἔργον ἀναβιβασθὲν τῷ 1892, «Εἰς τὴν Κορσικὴν» (1885), «Ἀπὸ Παρισίων εἰς Τονκῖνον» (1885) κλπ. Τῷ 1902 ἀνεβίβασεν, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Παῦλος Ἀντέλμ*, τὸ πεντάπρακτον δρᾶμά του «Ἡ διπλῆ μας συνείδησις», τὸ ὁποῖον μεγάλην ἐσημείωσεν ἐπιτυχίαν. —ο.

**Μπουρνταλοῦ** (Bourdaloue), ***Λουδοβῖκος***. Διάσημος Γάλλος ἱεροκήρυξ (1632—1704). Εἰσελθὼν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν, ἐδίδασκεν ἀπὸ τοῦ 1648 ἐν Bourges φιλοσοφίαν καὶ ἠθικήν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1665 ἐγένετο ἱεροκήρυξ. Τῷ 1669 προσκληθεὶς ὡς ἱεροκήρυξ τῆς αὐλῆς εἰς Παρισίους, ἔμεινεν ἐκεῖ ἐπὶ 34 ἔτη κηρύττων μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Ὁ Μπουρνταλοῦ φροντίζει διὰ τῶν λόγων του νὰ ἐπιδράσῃ ἐπὶ τοῦ νοῦ καὶ οὐχὶ ἐπὶ τοῦ αἰσθήματος. Διὰ τοῦτο δὲν ἐπιδιώκει ἐν αὐτοῖς τὸ κάλλος τοῦ λόγου, ἀλλὰ τὴν σταθερότητα τῶν ἐπιχειρημάτων καὶ ἀποδείξεων. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν τῷ 1822—1826 εἰς 17 τόμους, τῷ δὲ 1 70—1872 μετεφράσθησαν εἰς τὴν γερμανικὴν εἰς 14 τόμους. Κριτικὴ ἔκδοσις αὐτῶν ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Griselli (ἐν Παρισίοις 1901 εἰς 2 τόμ.). Ἀξιολόγους βιογραφίας αὐτοῦ ἔγραψαν ὁ Lauras (1881 εἰς 2 τόμ.) καὶ ὁ Pauthe (1900). κ. ι. δ.

**Μπούρνταχ** (Burdach), ***Κάρολος-Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς φυσιολόγος (1776—1847). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς ἐν Dorpat (1811), Καινιξβέργῃ (1814) καὶ Μπρεσλάου. Ἔγραψε κατὰ πρῶτον τὰ κάτωθι ἔργα ἱστορικοῦ περιεχομένου: «Scriptorum de Asclepiade index», «Asclepias und John Crown, eine Parallele», «Propädeutik zum studium der gesammten heil-Kunst» (1800). Κατόπιν ἠσχολήθη μὲ τὴν ἐμβρυολογίαν τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ γράψας: «Περὶ τῆς ὑφῆς, τῆς διαμορφώσεως καὶ τῆς ζωῆς τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ» (1819—1825), «Ἡ φυσιολογία θεωρουμένη ὡς πειραματικὴ ἐπιστήμη» (1826—1840 εἰς 6 τόμ.), «Περὶ τῆς ψυχολογίας ὡς φυσικῆς ἐπιστήμης» (1828), «Μία ἄποψις τῆς ζωῆς» (1842—1848 εἰς 4 τόμ.), «Ὁ ἄνθρωπος κρινόμενος κατὰ τὰς διαφόρους καταστάσεις τῆς φύσεως» (1836), «Δοκίμια φυσιολογίας τοῦ νευρικοῦ συστήματος» (1844) κ. ἄ. Ὡς *δεμάτιον τοῦ Μπούρνταχ* θεωρεῖται τὸ ἐξωτερικὸν τμῆμα τοῦ ὀπισθίου δεματίου τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. *Πυρὴν τοῦ Μπούρνταχ* καλεῖται προμηκικὸς ἐκ φαιᾶς οὐσίας πυρήν, προεξοχὴ τῆς βάσεως τοῦ ὀπισθίου κέρατος· εὕρηται ἐκδήλως ἀνεπτυγμένος κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ σφηνοειδοῦς φύματος εἰς μικρὸν ἔπαρμα πρὸς τὸ μέσον τοῦ σχοινοειδοῦς σώματος. ο. ρ.

**Μπουρντὲλλ** (Bourdelle), ***Αἰμίλιος-Ἀντώνιος***. Διάσημος Γάλλος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1861 ἐν Μοντωμπὰν ἐκ πατρὸς ἐπιπλοποιοῦ καὶ διακοσμητοῦ, ὅστις ἐδίδαξεν εἰς τὸν υἱόν του τὴν τέχνην τοῦ ἐβενουργοῦ. Τῷ 1885 ἐστάλη ὡς ὑπότροφος εἰς τὴν ἐν Παρισίοις σχολὴν τῶν Καλῶν τεχνῶν, ἔνθα εἰσήχθη εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Φαλγκιέρ. Ἐνέκυψεν εἰς τὴν μελέτην τῶν γλυπτικῶν ἔργων τοῦ γοτθικοῦ καὶ τοῦ ρωμανικοῦ ρυθμοῦ καὶ τῆς τέχνης τῆς Ἀναγεννήσεως, ἐσπούδασε τὸν Ρὺντ καὶ τὸν Καρπώ, καὶ προσῳκειώθη τὸν Ροντέν. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην τῆς διαμορφώσεως τοῦ ταλάντου του ἐδοκίμαζε τὰς δυνάμεις του εἰς τὸ σχέδιον, εἰς τὴν κρητιδογραφίαν, εἰς τὴν νωπογραφίαν, εἰς τὴν ἐλαιογραφίαν· μετεχειρίζετο τὸν λίθον, τὸ μάρμαρον, τὸν πηλόν, τὸν ὀρείχαλκον. Παρὰ πάντα ταῦτα ὅμως οὐδεμία ἐξωτερικὴ ἐπιρροή, οὐδεμία ἐπίδρασις ἠδύνατο νὰ ἐπισκιάσῃ τὴν ἀτομικότητά του. Ὁ Μπουρντὲλλ ὑπῆρξε καλλιτέχνης ἐξαιρετικῶς αὐτόνομος· κατεῖχε δὲ τὴν ἀρχιτεκτονικὴν ἐκείνην καὶ πλαστικὴν συνάμα μεγαλοφυΐαν, ἡ ὁποία δημιουργεῖ τοὺς Μιχαὴλ Ἀγγέλους.

Ὁ Μπουρντὲλλ κατέκτησεν ἀπὸ τῆς πρώτης του ἐμφανίσεως τὴν κοινὴν ἐκτίμησιν καὶ τὴν κοινὴν προσοχὴν δι' ἔργων μαρτυρούντων ἔμπνευσιν καὶ ἐκτέλεσιν διδασκάλου. Τὸ πρῶτον μνημειῶδες δημιούργημά του ἀνήκει εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ' αἰῶνος (περὶ τὸ 1902)· εἶναι τὸ μνημεῖον εἰς τοὺς νεκρούς, τοὺς μαχητὰς καὶ τοὺς οἱασδήποτε προσενεγκόντας ὑπηρεσίας τοῦ Τὰρν-ἐ-Γκαρὸνν κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870—1871. Ἀπὸ τὸ ἔργον αὐτὸ λείπει ἡ διανοητικὴ καὶ καλλιτεχνικὴ ἐκείνη ἰσορροπία, τὴν ὁποίαν ἐπέτυχεν



Digitized by Google

ὁ Μπουρντὲλλ βραδύτερον· ὑπάρχει ὅμως τόση ὁρμή, τόση ἔμφρων ἀταξία, τόση συγκίνησις καὶ τόση ἀκαταμάχητος θέλησις, ὥστε θεωρεῖται ὡς δημιουργία ἱστορικῆς σημασίας. Ταύτην ἀκολουθεῖ μακρὰ περίοδος ἐπιφανειακῆς στειρότητος· ὁ Μπουρντὲλλ ἀναγκάζεται λόγῳ ἀσθενείας ν' ἀναπαυθῇ ἐπὶ μακρόν, κατὰ τὸ διάστημα δὲ τοῦτο ἀσυγκράτητος εἰς τὰς καλλιτεχνικάς του ὁρμάς, ζωγραφίζει, σχεδιάζει, περισυλλέγεται εἰς ἑαυτόν, πλατύνει καὶ βαθύνει τοὺς ὁρίζοντας τῆς σκέψεως καὶ τῆς εὐαισθησίας του καὶ ἀποκτᾷ τὴν αἴσθησιν ἐκείνην τῆς ἁρμονίας, τὴν ὁποίαν διατηρεῖ ἀλώβητον καὶ κατ' αὐτὰς ἔτι τὰς μᾶλλον θυελλώδεις ἐκδηλώσεις τῆς πυρεσσούσης φαντασίας του. Ὅταν ρίπτεται ἐκ νέου εἰς τὴν πλαστικὴν δημιουργίαν, ἔχει ἀποκρυσταλλώσει τὸ κυμαινόμενον καὶ ἀνήσυχον ἰδεῶδές του. Ἀποφαίνεται ἀξιωματικῶς ὅτι ὁ δημιουργὸς κρατεῖ δεσμίας τὴν σύνθεσιν καὶ τὴν ἀνάλυσιν, ταυτοχρόνως δρῶσας καὶ παγιούσας τὴν ὑπερτάτην ἑνότητα· ὅτι ἡ τέχνη οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ τὸ πνεῦμα, ὅπερ μεταβιβάζει τὴν αἴσθησιν ὁλοκλήρου τοῦ κόσμου εἰς τὴν ἄψυχον ὕλην· ὅτι εἶναι αὐτὸς οὗτος ὁ ἄνθρωπος ὁ συνδέων τὴν ὕλην πρὸς τὸ πνεῦμα· ὅτι εἶναι τὸ σύμπαν ἀναδημιουργημένον ἐν ἑνὶ ἀν-

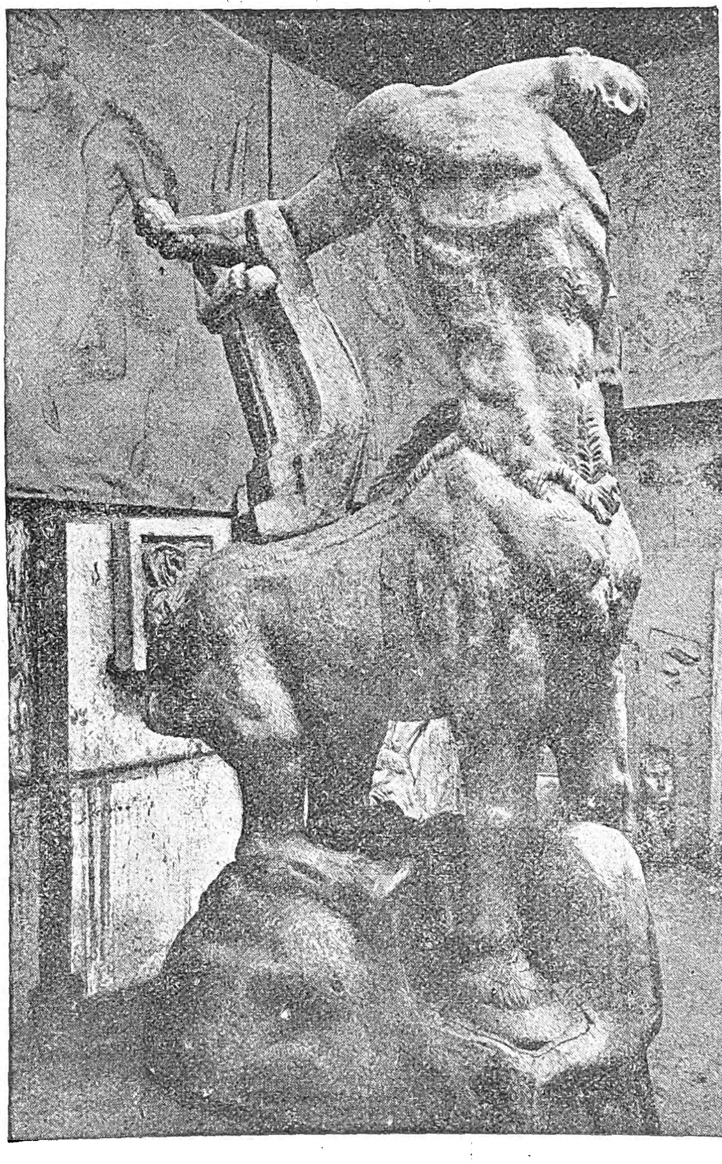

Ἀντ. Μπουρντέλλ: *Κένταυρος θνήσκων.*

θρώπῳ· ὅτι ὁ καλλιτέχνης δέον νὰ κατέχῃ τὴν αἴσθησιν τοῦ παντός, νὰ μὴ ἀρνῆται τίποτε ἐξ ὅσων εἶναι ξένα πρὸς αὐτόν· ὅτι πᾶσα δημιουργία εἶναι αὐτὴ αὕτη ἡ μορφή, αὐτὴ αὕτη ἡ ὕπαρξις τοῦ καλλιτέχνου διαπεφωτισμένη· ὅτι ἡ ἀληθὴς τέχνη δέον ν' ἀποκαλύπτῃ διὰ μαγικοῦ βλέμματος τὰς κεκαλυμμένας μορφάς, ἂν δὲν θέλῃ νὰ δημιουργῇ πτώματα· ὅτι τὸ πνεῦμα καὶ ἡ προσωπικότης ἑκάστου ἀνθρώπου συγκεντροῦται μεταμεμορφωμένη καὶ ἐκφράζεται καὶ ἀπελευθεροῦται διὰ τοῦ ἔργου, ὅπερ οὗτος δημιουργεῖ. Διὰ τοῦτο ἀπὸ τὰ ταραχώδη, φαινομενικῶς ἀπειθάρχητα, πάντοτε ἀπροσδόκητα ἔργα του διαχύνεται ἀείποτε μία αἴσθησις τοῦ ὑγιοῦς μέτρου, μία βασικὴ ἁρμονία, μία αὐστηρὰ πειθαρχία. Χαρακτηριστικώτατα εἰς τὸ ἔργον του ὁλόκληρον εἶναι ἡ ἀντίληψις τῶν συμπαγῶν ὄγκων καὶ τῶν συνόλων, ἡ ἁπλότης καὶ ἡ λιτότης, τὸ βάθος, τὸ μεγαλεῖον καὶ ἡ αἴσθησις τῆς δραματικῆς ἀληθείας. Πνοὴ ἐνθουσιασμοῦ, ὁρμητικὴ ψυχικὴ ἀνάτασις γιγαντώνουν τὰς δημιουργίας του· ἀρκεῖ νὰ παρατηρήσῃ τις τὴν σκοτεινὴν μεγαληγορίαν τῆς κεφαλῆς τοῦ Μπετόβεν, τὴν λιτὴν ἐκείνην, ρωμαλέαν καὶ θηλυπρεπῆ ἐν ταὐτῷ ἁρμονίαν τῆς «Σαπφοῦς μὲ τὴν λύραν της» ἢ τὴν αὐστηρὰν ἐγκαρτέρησιν τῆς «Πηνελόπης», διὰ νὰ αἰσθανθῇ πόσον ὁ Μπουρντὲλλ ὑπῆρξεν ὁ ἑρμηνευτὴς τοῦ πνεύματος τοῦ σύμπαντος διὰ μέσου τῆς ὕλης. Ὁ Μπουρντὲλλ ὑπῆρξε ἔτι μέγας σχεδιαστής, μέγας ἐραστὴς τῆς γραμμῆς. Εἰς κάθε δημιούργημά του ὑπάρχει ἡ γραμμή, περιορίζουσα καὶ ἀπολυτρώνουσα συνάμα, ἐλέγχουσα καὶ ὑποβάλλουσα εἰς πειθαρχίαν τὸ σύνολον, χαρακτηρίζουσα καὶ ἐκφράζουσα ὄχι ἁπλῶς τὴν κατεύθυνσιν ἢ τὴν συναρμογὴν μιᾶς σειρᾶς κινήσεων, ἀλλ' αὐτὴν ταύτην τὴν ἐσωτερικὴν ἁρμονίαν τῶν εὐφυῶς καὶ σοφῶς ταξιθετημένων ὄγκων. Ἐξ ἄλλου, τὸ ἔργον τοῦ Μπουρντὲλλ τὸ χαρακτηρίζει ἐσωτερικὴ καὶ ἐξωτερικὴ ἑνότης· ὅλη του ἡ δημιουργία ὁμοιάζει πρὸς ἐκτύλιξιν ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ στοχασμοῦ, ὁ ὁποῖος μεταβάλλεται, μετασχηματίζεται, προχωρεῖ, παλινδρομεῖ, λοξοδρομεῖ, ἐπιστρέφει εἰς ἑαυτὸν καὶ ἐν τέλει περαίνει εὐτυχῶς τὴν πορείαν του πρὸς τὸ δυσανάβατον ὕψος τῆς πλαστικῆς ἁρμονίας. Εἰς τὸν Μπουρντὲλλ δὲν ὑπάρχει μόνον ὑψηλὴ φαντασία, ρωμαλέα ἔμπνευσις καὶ βαθεῖα σκέψις· ὑπάρχει ἐπὶ πλέον εἷς μεγαλήγορος λυρισμός, ἐξερχόμενος ἀπὸ ἀνδρικὰ στέρνα δυνάμενα ν' ἀντιμετωπίσουν ἀνενδοιάστως τὸ πεπρωμένον, μία ἀπεριόριστος ζωϊκὴ αἴσθησις ἐκφραζομένη διὰ τόνων ἐξαισίων, εἷς ρυθμὸς κυριαρχῶν ἀπ' ἄκρου εἰς ἄκρον εἰς ὁλόκληρον τὸ ἔργον τοῦ καλλιτέχνου. Ἡ ζωὴ τοῦ Μπουρντὲλλ διῆλθε μέσῳ διηνεκοῦς προσπαθείας καὶ ἀτελευτήτου ἐργασίας· δὲν ἐγνώρισε τὴν ἀνάπαυσιν· τὸ πνεῦμά του ἵστατο πάντοτε αὐστηρὸν καὶ περισυνειλεγμένον ἐνώπιον τοῦ σιωπηλοῦ δράματος, τῆς ἐσωτερικῆς τραγῳδίας τοῦ κόσμου· ἡ καρδία του ἦτο γεμάτη ἀπὸ καλωσύνην· κατεῖχε τὴν μεγίστην ἀρετὴν νὰ δύναται νὰ συμμερίζεται καὶ νὰ ἐννοῇ τὰς ξένας θλίψεις ὡς ἰδικάς του· ἀπέθανε κατάφορτος ἀπὸ δόξαν τῷ 1929.

Τὸ σύνολον τῶν ἔργων του περιλαμβάνει σχεδιάσματα, ζωγραφικὰ ἔργα, πλαστικὰ συμπλέγματα, ἀγάλματα, προτομάς, ἀνάγλυφα καὶ ἀναμνηστικὰ μνημεῖα. Μνημονευτέα μεταξὺ πάντων τούτων τὰ ἀκόλουθα: «Ἡ μήτηρ τοῦ καλλιτέχνου» (σχεδίασμα διὰ σινικῆς μελάνης), «Χωρική» (ζωγραφία), «Ὁ δύστροπος κριός», «Ἡ χωρικὴ μὲ τὸ πρόβατον», ἡ σαρδόνειος καὶ θλιβερὰ προτομὴ τοῦ Mécislas Colberg, ἡ πλήρης χάριτος, εὐστροφίας καὶ ὁρμῆς «Βακχὶς θλίβουσα σταφυλάς», «Ἡ μικρὰ Βακχίς», «Ἡ λουομένη», «Ὁ καρπός», τοῦ ὁποίου τὸ πρῶτον πρόπλασμα ἀνάγεται εἰς τὸ 1908, «Ὁ Σειληνός», ἡ ὑπερήφανος προτομὴ τοῦ Ζὰν Μορέας, ἡ προτομὴ τοῦ Ἔνγκρ, ἡ προτομὴ τοῦ Μπετόβεν, «Ὁ τοξότης Ἀπόλλων», «Ὁ τοξότης Ἡρακλῆς», ἐκτεθεὶς εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν τοῦ 1909, σύνθεσις προκαλέσασα ὀξείας διαμάχας καὶ λυσσώδεις ἐπιθέσεις κατὰ τοῦ καλλιτέχνου· «Ὁ τοξότης Ἡρακλῆς» ὑπῆρξεν ἓν τῶν πρώτων ἔργων, ἅτινα ἐντονώτερον εἵλκυσαν τὸ κοινὸν ἐνδιαφέρον ἐπὶ τῆς προσωπικότητος τοῦ Μπουρντέλλ· τὰ διακοσμητικὰ ἀνάγλυφα τοῦ θεάτρου τῶν Ἠλυσίων Πεδίων ἐν Παρισίοις, δι' ὧν ἄρχεται ἡ περίοδος τῶν ἐνδόξων δημιουργιῶν τοῦ Μπουρντέλλ· ταῦτα ἀπεικονίζουν τὸν «Ἀπόλλωνα συναγείροντα τὰς Μούσας», τὸν «Χορόν», τὴν «Κωμῳδίαν», τὴν «Τραγῳδίαν», τὴν «Μουσικήν» καὶ τὰς «Πλαστικὰς τέχνας». Ἡ διακόσμησις αὕτη, δι' ἣν ὁ Μπουρντὲλλ συνειργάσθη στενῶς μετὰ τῶν ἀρχιτεκτόνων τοῦ μνημονευθέντος θεάτρου, ἀποδεικνύει τὴν δύναμιν τῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ γλυπτικῆς μεγαλοφυΐας τοῦ καλλιτέχνου καὶ ἀποτελεῖ τὴν σημαντικωτέραν δημιουργίαν του μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Ἕπεται τὸ πολύχρωμον διάζωμα τῆς σκηνῆς τοῦ Μελοδραματικοῦ θεάτρου τῆς Μασσαλίας, περιλαμβάνον τὴν «Ὡραιότητα», τὴν «Ἀφροδίτην», τὸν «Σκηνικὸν στοχασμόν», τοὺς «Χορευτάς», τὸ «Λυρικὸν ᾆσμα», τὸ «Ἀγροτικὸν ᾆσμα», τὴν «Τραγικὴν φωνήν», τὴν «Μνημοσύνην», τὴν «Ἐποποιΐαν» κλπ. Ἡ μεγαλειώδης αὕτη ἀλληγορία ἀποκαλύπτει ὄχι μόνον τὴν πλαστικὴν μεγαλοφυΐαν, ἀλλὰ καὶ τὴν μεγάλην διάνοιαν τοῦ Μπουρντέλλ. Ὁ ρυθμός, ὁ ὁποῖος τὴν ἐμψυχώνει, ἡ θαυμαστή της ἑνότης, ὁ κυμαινόμενος στοχασμός, ὅστις βαίνει βραδέως ἐξελισσόμενος διὰ μέσου αὐτῆς καὶ ὅστις ὡσεὶ ἑλισσόμενος πανταχόθεν συγκεντροῦται καὶ ἀποκορυφοῦται ἐν τῇ παραστάσει τῆς «Ὡραιότητος», τοῦ ἀπολύτου κάλλους, ἀναδεικνύουν τὸ ἔργον τοῦτο ἓν τῶν καλλίστων δημιουργημάτων τῆς νεωτέρας τέχνης. Ἀκολουθεῖ τὸ πρὸς τιμὴν τῶν «Πεσόντων κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου Γάλλων βουλευτῶν» μνημεῖον, περιλαμβάνον τὰς ἀπεικονίσεις τῆς «Νίκης μὲ τὴν ἀναθηματικὴν ἀσπίδα», τῆς «Παρθένου μὲ τὴν προσφοράν» καὶ τῆς «Μεγάλης Παρθένου τῆς Ἀλσατίας», ὀρθίας, αὐστηρᾶς καὶ ἀπείρως τεθλιμμένης, προσφερούσης ὡς ὕστατον ὁλοκαύτωμα, εἰς τὴν πολεμικὴν πυρὰν τῆς παραφρονησάσης ἀνθρωπότητος τὸ θεῖόν της τέκνον. Ἡ ἰδία τραγικὴ πνοὴ ἀναδίδεται καὶ ἀπὸ τὸ «Μνημεῖον τῶν μεταλλωρύχων τοῦ Monceau-les-Mines». Ὁ ἱππικὸς ἀνδριὰς τοῦ στρατηγοῦ Ἀλβεὰρ (ἐν Μπουένος-Ἄϊρες) εἶναι ἰσάξιον, κατὰ τὴν γνώμην τῶν κριτικῶν, πρὸς τὸν περίφημον «Κολλεόνε» τοῦ Βερόκκιο ἐν Βενετίᾳ. Ἐξ ἀφορμῆς τοῦ μνημείου τούτου, φθάνοντος τὸ ὕψος τῶν εἴκοσι πέντε περίπου μέτρων, ὁ Μπουρντὲλλ ἐπεβεβαίωσε τὴν περὶ αὐτοῦ κρατοῦσαν ἀντίληψιν, καθ' ἣν πᾶσαι αἱ μνημειακαί του δημιουργίαι ἀποτελοῦν πλαστικὰς καὶ ἀρχιτεκτονικὰς ἐν ταὐτῷ ἐκδηλώσεις. Τὸ μνημεῖον τοῦ στρατηγοῦ Ἀλβεὰρ περιβάλλεται ἀπὸ τέσσαρας συμβολικὰς μορφάς, τὴν «Εἰρήνην», τὴν «Νίκην», τὴν «Ἰσχὺν» καὶ τὴν «Ἐλευθερίαν», ἀποτελεῖ δ' ἀληθὲς καλλιτεχνικὸν μεγαλούργημα, πλῆρες ρωμαλέας καὶ ἁρμονικῆς μεγαλοπρεπείας. Τὸ αὐτὸ πνεῦμα τοῦ μεγαλείου, ἐκπεφρασμένον συνθετώτερον ἔτι, ἀπαντᾷ εἰς τὸ ἐν Παρισίοις μνημεῖον πρὸς τιμὴν τῆς πολωνικῆς ἀνεξαρτησίας, ἐν ᾧ ὁ Μπουρντὲλλ ἐξέφρασε, κατὰ τὸν ὑπεροχώτερον τρόπον, τὸν θερμὸν ἔρωτα τῆς ἐλευθερίας, ὅστις διακατεῖχεν ὁλόκληρον τὴν ὕπαρξίν του, ἀποτυπώσας ἰδίᾳ τοῦτον ἐν τῇ κυριαρχούσῃ τοῦ ὅλου ἔργου μορφῇ τοῦ Ἀδὰμ Μίσκιεβιτς, τοῦ μεγάλου ψάλτου τῆς πολωνικῆς ἀπολυτρώσεως. Τὸ ἔργον τοῦτο, ὅπερ ἐμψυχώνει θυελλώδης πνοὴ ἡρωϊσμοῦ καὶ λυρικὴ ἔξαρσις μοναδική, συμπληροῦται διὰ τῶν ἀριστουργηματικῶν ἀναγλύφων τῶν «Σκλάβων», τῶν «Δύο Πολωνιῶν», τοῦ «Βάλλενροδ, ἀρχηγοῦ τῶν Τευτόνων Ἱπποτῶν», «Ἄλβαν, τοῦ γηραιοῦ βάρδου» κλπ. Ἡ πλήρης κινήσεως παράστασις τῆς «Ἐποποιΐας», ὁρμώσης ξιφήρους, κλείει τὸ μεγαλοπρεπὲς τοῦτο σύνολον κατὰ τὸν προσφυέστερον τρόπον.

Ἄλλα ἔργα τοῦ Μπουρντέλλ εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁ Καρπὼ ἐργαζόμενος» (ἄγαλμα), «Τὸ ἀπελπισμένο χέρι», ἔνθα ἡ δύναμις τῆς ἐκφράσεως φθάνει εἰς ἀληθῶς δυσθεώρητα ὕψη, «Ἡ ἁγία Βαρβάρα», «Ὁ πτερωτὸς Κένταυρος», «Ὁ Κένταυρος μὲ τὴν λύραν», «Ὁ θνήσκων Κένταυρος», τὸ τύμπανον τοῦ ναοῦ τοῦ Ραιν[...], ἡ προτομὴ τοῦ ἀρχιτέκτονος Αὐγούστου Περρέ, ἡ προτομὴ τοῦ Ἀνατὸλ Φράνς, «Ἡ Γαλλία χαιρ[...]τῶσα τὴν Ἀμερικήν», «Ὁ Ξέρξης ἐν φυγῇ», ἡ προτομὴ τοῦ Κρισναμοῦρτι. «Ἡ Ἀφροδίτη καὶ ὁ Ἔρως», «Ἡ Εὐρώπη», «Τὸ ἰατρικὸν πνεῦμα» (ἀπόσπασμα τοῦ μνημείου τῆς Οὐρουγουάης» κλπ. (Βλ. ἰδίᾳ: André *Fontainas*, «Bourdelle», Paris 1930.)

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπουρντὲν** (Bourdin), *Εὐγένιος-Λουδοβῖκος*. Γάλλος ζωγράφος (1825—1898). Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν προδρόμων τῆς ἰμπρεσσιονιστικῆς σχολῆς καὶ διεκρίθη ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν τῶν παραθαλασσίων τοπίων τῆς Βρετάνης, τῆς Νορμανδίας καὶ τῆς Ὁλλανδίας. Τῷ 1889 ἐν τῇ διεθνεῖ ἐκθέσει τῶν Παρισίων ἐτιμήθη διὰ χρυσοῦ βραβείου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἡ συγγνώμη τῆς Sainte-Anne-Palud» (1859), «Ὁ Μ[...]», «Ἡ ἐξοδ[...]ζας παρὰ τὸ Ρόττερνταμ», «Ἡ εἴσοδος», «Αἱ ἱπποδρομίαι τῆς [...]», «Αἱ λεμβοδρομίαι τῆς Τρουβὶλλ», «Ντωβὶλλ» κλπ.

Ι. Μ. Π.

— **Μπουρντὲν** (Bourdin), *Πέτρος*. Γάλλος ἰησουΐτης (1595—1653), διδάξας ρητορικὴν καὶ μαθηματικὰ εἰς τὸ κολλέγιον La Flèche, ὅπου ἐφοίτησε ὁ Καρτέσιος, καὶ κατόπιν ἐν Παρισίοις. Θὰ ἔμενεν ἄγνωστος, ἂν δὲν ἐπετίθετο ἐπανειλημμένως ἐναντίον τοῦ Καρτεσίου. Ἀπὸ τοῦ 1640 ἤρχισε νὰ συγγράφῃ διατριβὰς ἐναντίον τῆς φυσικῆς καὶ ἰδίως τῆς ὀπτικῆς τοῦ Καρτεσίου. Εἰς τοὺς «Στοχασμοὺς» ἀντέταξεν ἑπτάκις «Ἀντιρρήσεις», παρεξηγῶν τὰ νοήματα τοῦ Καρτεσίου χονδροειδῶς καὶ κακοπίστως.

Ε. Λ.

**Μπουρντὸν** (Bourdon), *Γεώργιος*. Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ἐσπούδασεν ἐν Σορβόννῃ καὶ διετέλεσε συντάκτης τοῦ «Φιγκαρώ», γενικὸς γραμματεὺς τοῦ συνδικάτου τῶν δημοσιογράφων, μέλος τῆς ἑταιρείας τῶν λογίων, ἱδρυτὴς καὶ ἐπίτιμος πρόεδρος τῶν «Escholiers», γενικὸς γραμματεὺς τῆς Ἑταιρείας τῆς ἱστορίας τοῦ πολέ[...]

Digitized by Google

μου κλπ. Ἔκαμε πλείστας διαλέξεις ἐν Γαλλίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Τὸ νεώτερον ἑλληνικὸν θέατρον» (1892), «Τὰ ἀγγλικὰ θέατρα» (1903), «Ἀκούοντας τὸν Τολστόϊ» (1904), «Ἡ ἐλευθέρα Ρωσία» (1905), «Ὅταν ἀνεφώνησεν ὁ ἀλέκτωρ» (1907), μυθιστόρημα, «Ἡ ἀθλητικὴ ἀναγέννησις» (1906), «Αἱ ἡμέραι τῆς Καζαμπλάνκας» (1908), «Τὸ γερμανικὸν αἴνιγμα», (1913), «Αἱ ἀλυσίδες» (1920), δρᾶμα παιχθὲν εἰς τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν κ.τ.λ. Δ. Μ. Β

— **Μπουρντὸν ντὲ λὰ Κροσνιὲρ** (Bourdon de la Crosnière), ***Λεονάρδος-Ἰωσήφ***. Γάλλος ἐπαναστάτης (1758—1816). Ἐγένετο μέλος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως καὶ πιστὸς ὀπαδὸς τοῦ Ροβεσπιέρρου. Στραφεὶς ὅμως κατ' αὐτοῦ, ἡγήθη τῆς ἐθνοφυλακῆς τὴν 9 Θερμιδώρ. Ἐγένετο ἐπὶ Διευθυντηρίου πράκτωρ ἐν Ἀμβούργῳ καὶ ἐνήργησε τὴν ἐκδίωξιν ἐκεῖθεν τῶν μεταναστῶν. Τῷ 1793 ἵδρυσε τὴν «Σχολὴν τῶν μαθητῶν τῆς πατρίδος». Θ. Β.

— **Μπουρντὸν** (Bourdon), ***Σεβαστιανός***. Γάλλος ζωγράφος ἐκ Μομπελλιὲ (1616—1671). Διῆλθε νεότητα ταραχώδη, ἡ δὲ καλλιτεχνικὴ του παίδευσις, συνεπείᾳ ταύτης, ὑπῆρξεν ἄκρως ἀνώμαλος. Εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν μετέβη εἰς Παρισίους· μετ' ὀλίγον ὅμως κατέλιπε τὴν πόλιν ταύτην, διὰ νὰ μεταβῇ εἰς Βορδὼ καὶ Τουλούζην πρὸς ἀναζήτησιν τύχης· μετὰ μακρὰς περιπλανήσεις κατέληξεν εἰς τὸ στράτευμα, ἔνθα ἀνέλαβεν ἐπί τινα χρόνον ὑπηρεσίαν. Μετ' οὐ πολὺ ὅμως ἐγκατέλειψε καὶ τοῦτο, διὰ νὰ μεταβῇ εἰς Ἰταλίαν, ὅπου, διὰ νὰ κερδίσῃ τὰ πρὸς τὸ ζῆν, ἠναγκάσθη νὰ ἐκτελῇ λαϊκὰ σχέδια καὶ παραποιήσεις ἔτι τῆς τεχνοτροπίας τῶν μεγάλων καλλιτεχνῶν τῶν χρόνων ἐκείνων. Εὑρισκόμενος ἐν Ρώμῃ, κατηγορήθη ἐπὶ συμμετοχῇ εἰς τὴν καλβινικὴν μεταρρύθμισιν καὶ ἠναγκάσθη νὰ ζητήσῃ προστασίαν παρὰ τῷ ἐπιφανεῖ συμπατριώτῃ του Harselin, ὅστις τὸν παρέλαβε μεθ' ἑαυτοῦ εἰς Παρισίους καὶ τὸν εἰσήγαγεν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Σίμωνος Βουέ, παρ' ᾧ ὁ Μπουρντὸν συνεπλήρωσε τὴν καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν. Ἡ φήμη του ἤρξατο βραδέως ἀλλ' ἀσφαλῶς εὐρυνομένη. Τῷ 1649 ἐξεπόνησε, χάριν τοῦ σωματείου τῶν Παρισινῶν κοσμηματοποιῶν, τὴν «Σταύρωσιν τοῦ ἁγίου Πέτρου», ἀποκειμένην ἤδη εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν θρησκευτικῶν πολέμων μετέβη εἰς Σουηδίαν, ἔνθα διετέλεσεν ἐπίσημος ζωγράφος τῆς βασιλίσσης Χριστίνης, τῆς ὁποίας πολλάκις ἐξετέλεσε τὴν προσωπογραφίαν. Βραδύτερον, ἐπανελθὼν εἰς τοὺς κόλπους τοῦ καθολικισμοῦ, ἠδυνήθη νὰ ἐργασθῇ ἐν Γαλλίᾳ ἀνέτως· πολυπληθεῖς παραγγελίαι συνεσωρεύθησαν εἰς τὸ ἐργαστήριόν του, αἵτινες τῷ προσεπόρισαν μεγάλην φήμην καὶ ἱκανὸν πλοῦτον. Παρὰ ταῦτα τὸ ἔργον του δὲν κέκτηται ἐξαιρετικὴν σημασίαν. Ἐξετέλεσεν ἐπιτυχεῖς τινας προσωπογραφίας, ἐν αἷς ἡ ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λούβρου ἀποκειμένη «Αὐτοπροσωπογραφία» (δὶς ἐπαναληφθεῖσα), καὶ ὡραίας συνθέσεις ἀναφερομένας εἰς τὰς «θεολογικὰς ἀρετάς». Ι. Μ. Π.

**Μπουρντοὺρ** (Bourdour) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τουρκίας, ἕδρα ὁμωνύμου νομοῦ, 100 χλμ. ΒΑ. τῆς Ἀτταλείας, παρὰ τὴν νοτίαν ὄχθην τῆς λίμνης Μπουρντούρ. Ἡ πόλις εἶναι κτισμένη ἐπὶ λόφου εἰς ὕψος 1000 μέτρων ὑπὲρ τὴν ἐπιφάνειαν τῆς θαλάσσης. Εἰς τὰ πέριξ ὑπάρχουσι σπήλαια λαξευμένα ἐντὸς βράχων, πρὸς δὲ πολλαὶ πηγαὶ μεταλλικῶν ὑδάτων. Κάτοικοι 12.848. Ὁ ὁμώνυμος νομός, περιλαμβάνων καὶ τὰς ὑποδιοικήσεις *Μπουτζὰκ* καὶ *Τεφεννί*, ἔχει ἐπιφάνειαν 6.615 τετρ. χλμ. καὶ 83.876 κατοίκους (1927). Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν ὑπῆρχον καὶ 4.000 Ἕλληνες. Παρὰ τὸ χωρίον Δζερτζὶρ ὑπάρχουσι μεταλλεῖα χρωμίου καὶ μαγγανησίου. Ν. Μ.

— **Μπουρντοὺρ-Γκιολοῦ** *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Τουρκίας, ἐν τῷ ὁμωνύμῳ νομῷ, ἔχουσα μῆκος 30 χλμ. καὶ πλάτος 8, σχήματος μηνοειδοῦς, μὲ διεύθυνσιν ἐκ τῶν ΒΑ. πρὸς τὰ ΝΔ. Τὰ ὕδατά της εἶναι ἁλμυρὰ καὶ δὲν τρέφουν ἰχθῦς. Δέχεται τὰ ὕδατα τοῦ Γκιορὲν-τσάϊ καὶ ἄλλων τινῶν μικρῶν ποταμῶν. Ν. Μ.

**Μπουρντὼ** (Bourdeau), ***Ἰωάννης***. Ἀνεψιὸς τοῦ *Λουδοβίκου Μπουρντώ*, γεννηθεὶς τῷ 1848. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις, Βερολίνῳ, Μονάχῳ καὶ Βόννῃ. Τῷ 1880 ἐδημοσίευσε μετάφρασιν τῶν «Σκέψεων καὶ ἀποσπασμάτων» ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Schopenhauer, μετὰ προλόγου περὶ τῆς ζωῆς καὶ τῶν θεωριῶν τοῦ φιλοσόφου τούτου. Τῷ 1884 μετέφρασε τὰ «Ἀπομνημονεύματα» τοῦ Ἑρρ. Χάϊνε. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης σειρὰν κριτικῶν ἄρθρων εἰς τὴν «Revue des Deux Mondes» καὶ τὴν «Journal des Débats» περὶ τῆς γερμανικῆς λογοτεχνίας. Θ. Π.

— **Μπουρντὼ** (Bourdeau) ***Λουδοβῖκος***. Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1824. Εἰς τὸ ἔργον: «Théorie des sciences», δημοσιευθὲν τῷ 1882 εἰς δύο τόμους, ἐπεχείρησε νὰ ταξινομήσῃ τὰς ἀνθρωπίνας γνώσεις ἀπὸ τὴν στενὴν ἄποψιν τῶν θετικῶν ἐπιστημῶν, δι' ἀποκλεισμοῦ τῆς μεταφυσικῆς. Εἰς τὰ ἔργα του: «Forces d'industrie» (1884) καὶ «La conquète du monde animal» (1885) ἐξετάζει, τῇ βοηθείᾳ τῶν παλαιῶν κειμένων καὶ τῆς γλωσσολογίας, τὸν τρόπον μὲ τὸν ὁποῖον ὁ ἄνθρωπος ἐξησφάλισε τὴν κυριαρχίαν του ἐπὶ τῆς φύσεως. Τῷ 1888 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «L' histoire et les historiens», κριτικὸν δοκίμιον ἐπὶ τῆς ἱστορίας ἐξεταζομένης ὡς θετικῆς ἐπιστήμης. Δι' αὐτὸν οἱ ἱστορικοὶ εἶναι πρὸ πάντων συγγραφεῖς. Συγκρίνων τὰς μαρτυρίας των ἐπὶ τῶν μεγάλων μορφῶν καὶ τῶν μεγάλων γεγονότων τῶν λεγομένων ἱστορικῶν, καταδεικνύει τὴν ἀσυμφωνίαν των, τὴν ἀνεπάρκειαν τῶν ἀποδείξεών των καὶ καταλήγει εἰς τὸν ἱστορικὸν σκεπτικισμὸν ὅσον ἀφορᾷ τὰ ἄτομα καὶ τὰ μεμονωμένα γεγονότα καὶ ἀναζητεῖ τὰ στοιχεῖα μιᾶς νέας θεωρίας τῆς ἱστορίας. Αὕτη τότε μόνον θ' ἀποβῇ θετικὴ ἐπιστήμη, ὅταν θὰ παραμελήσῃ τὰ ἄτομα καὶ θὰ προσκολληθῇ εἰς τὰς ὁμάδας, ἐξ ὧν συνίσταται ἡ ἀνθρωπότης, καὶ ὅταν θὰ φροντίσῃ νὰ συλλέξῃ καὶ νὰ ἑρμηνεύσῃ τὰ στατιστικὰ δεδομένα τῶν γεγονότων τῆς κοινωνικῆς συμβιώσεως. Θ. Π.

**Μπουρὸν** (Foyron)· βλ. λ. *Μπαρόν*.

**Μπουρόπουλος, *Ἄγγελος***. Δικαστικός, γεννηθεὶς ἐν Ναυπλίῳ τῷ 1880. Τῷ 1902 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς νομικῆς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν καὶ κατόπιν ἐδικηγόρησεν ἐν Ναυπλίῳ μέχρι τοῦ 1911, ὅτε διωρίσθη ἀντεισαγγελεὺς πρωτοδικῶν. Ὢν ἀντεισαγγελεὺς ἐφετῶν, διωρίσθη προσωρινῶς εἰσαγγελεὺς ἐφετῶν Σμύρνης, ἔνθα ὑπηρέτησεν ἀπὸ τοῦ 1920 μέχρις ἐκκενώσεως τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Τῷ 1929 προήχθη εἰς εἰσαγγελέα ἐφετῶν. Ἐδημοσίευσεν: «Ἐγχειρίδιον δικαστικῆς ψυχολογίας κατὰ μετάφρασιν μετὰ προσθηκῶν ἐκ τοῦ ἰταλικοῦ τοῦ καθηγητοῦ Umberto Fiore» (1918), «Κῶδιξ ποινικῆς δικονομίας μετὰ νομολογίας καὶ ἑρμηνευτικῶν σημειώσεων» (1925), «Μικροὶ κώδικες» («Ποινικός» 1930, «Πολιτικὴ δικονομία» 1931, «Ποινικὴ δικονομία» 1931), «Ὁ νέος περὶ τύπου νόμος μετὰ ἑρμηνείας κατ' ἄρθρον» (1931). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης μετὰ συμπληρώσεων τὴν «Ἑρμηνείαν τοῦ ποινικοῦ νόμου» τοῦ *Κ. Κωστῆ* (3 τόμ. 1926—1929) καθὼς καὶ πλείστας διατριβὰς εἰς τὰ περιοδικὰ «Θέμις» καὶ «Δικαιοσύνη». Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». Μ. Γ. Δ.

**μπουροῦ** (τὸ) (λ. τουρκ.), ἡ σάλπιγξ || ναυτ., κοινὴ ὀνομασία τοῦ *βουκίνου* (βλ. λ.).

**Μπουροῦ, ἢ *Μποερόε*** (Buru ἢ Boeroe) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῶν ὁλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, ἀνήκουσα εἰς τὸ σύμπλεγμα τῶν Μολουκκῶν. Κεῖται μεταξὺ Κελέβης καὶ Τσεράμ καὶ ὑπάγεται εἰς τὴν Ἀμπόϋνα. Εἶναι ὀρεινὴ ἀλλ' εὔφορος, ἀρδευομένη καλῶς, παράγει δὲ ἄμυλον ἐκ φοινικοδένδρων, ξύλον τέκ, βαφικὰ ξύλα, καφὲν καὶ ἄλλα προϊόντα τῶν τροπικῶν. Ἔχει ἔκτασιν 8.600 περίπου τετρ. χλμ. καὶ κατ. 20.000. Χ. Δ.

**Μπουροῦ-Γκιὸλ** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς ἐν τῇ Δ. Θράκῃ λιμνοθαλάσσης *Βιστονίδος* (βλ. λ.).

**Μπουρούγκ.** Φυλὴ ἐρυθροδέρμων τῆς Ἀνατολικῆς Βραζιλίας (βλ. λ. *Βοτοκοῦδοι*).

**Μπουρουγκιὸλ** *[Παλαι. Γεωγρ.]*. Τουρκικὴ ὀνομασία τῆς *Βισθωνίδος* λίμνης τοῦ Πόρτο Λάγο. Σ. Ε. Λ.

**μπουρουζάνης** (ὁ) (τουρκ. *μπουρουζάν*)· σαλπιγκτὴς τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ. Ν. Μ.

**μπουρούν**· βλ. *μπουρνού*.

**Μπουροὺν *Τάμπια*** *[Παλαι. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ΝΑ. ἀκτῆς τοῦ Εὐξείνου (πλάτ. 41° 39' Β, μῆκ. 41° 38' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2236: Cape Yasun to Fort-Anakria), δυτικὸν κέρας τοῦ κόλπου τοῦ Βατούμ. Σ. Ε. Λ.

**μπουρρὲ** (γαλ. bourrée, ἰταλ. borea). Παλαιὸς γαλλικὸς χορός, γραφόμενος εἰς τετραμερὲς μέτρον καὶ σπανίως εἰς τριμερές, μετὰ ἄρσεως. Ἔχει εὔθυμον χαρακτῆρα καὶ ἀποτελεῖται γενικῶς ἐκ περιόδων ἐξ ὀκτὼ μέτρων. Ἡ μπουρρὲ ἕλκει τὴν καταγωγὴν ἐκ τῆς Ὠβέρνης· εἰσαχθεῖσα εἰς τὴν «σουΐταν» μετὰ τὸν Λούλλυ, ἐχρησιμοποιήθη ἔκτοτε συχνότατα παρὰ τῶν μουσικῶν τῆς Ἀναγεννήσεως καὶ παρ' αὐτοῦ τοῦ Μπάχ. Γ. Σ.

**Μπουρριάνα** (Burriana) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Βαλένθια, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀπέχει 50 χλμ. πρὸς Β. Κάτ. 14.500. Κεῖται παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μπέκι, ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Βαλένθια, καὶ ἔχει καλὸν λιμένα, δι' οὗ ἐξάγονται ἄφθονοι ὀπῶραι καὶ ἰδίως πορτοκάλια καὶ πέπονες. Ἔχει ἐπίσης ἐργοστάσια ζαχάρεως. Μ.Δ.Β.

**Μπουρριὲν** (Bourrienne), ***Λουδοβῖκος-Ἀντώνιος-Φωβελὲ ντὲ —***. Γάλλος διπλωμάτης (1769—1834). Κατ' ἀρχὰς εἰσῆλθεν ὡς μαθητὴς εἰς τὴν στρατιωτικὴν σχολὴν τῆς Βριέννης, ὅπου συνεδέθη μετὰ τοῦ Ναπολέοντος. Μὴ θελήσας ὅμως ν' ἀκολουθήσῃ τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, μετέβη εἰς Βιέννην καὶ Λειψίαν, ἔνθα ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ξένας γλώσσας. Ὅτε ὁ Βοναπάρτης ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τῆς Ἰταλίας, τὸν προσέλαβεν ἰδιαίτερον γραμματέα του, παρέλαβε δὲ αὐτὸν καὶ κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Αἰγύπτου. Μετά τινα χρόνον, καίτοι περιέπεσεν εἰς τὴν δυσμένειαν αὐτοῦ, διωρίσθη πρεσβευτὴς εἰς Ἀμβοῦργον. Τῷ 1814 ὁ Μπουρριὲν ἐτάχθη μετὰ τῶν Βουρβώνων, κατόπιν δὲ διωρίσθη διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας καὶ ὑπουργός. Τὰ ἀπομνημονεύματά του ἐδημοσιεύθησαν εἰς 12 τόμους. Θ. Β.

**μπούρσα** (ἡ)· τὸ χρηματοφυλάκιον· || τὸ χρηματιστήριον, ἄλλως *μπόρσα* (βλ. λ.).

**Μπουρσὲλ** (Bourseul), ***Κάρολος***. Γάλλος φυσικὸς (1829—1912), εἰς ὃν ἀποδίδεται ἡ πρώτη ἔμπνευσις περὶ κατασκευῆς ἠλεκτρικοῦ τηλεφώνου. Εἰς ἡλικίαν 25 ἐτῶν εἶχε προσληφθῇ μεταξὺ τοῦ προσωπικοῦ, εἰς τὸ ὁποῖον ἀνετέθη ἡ μελέτη τῆς πρώτης χρησιμοποιήσεως τῶν ἠλεκτρικῶν τηλεγράφων ἐν Γαλλίᾳ, συνέλαβε δὲ τότε τὴν σκέψιν ὅτι θὰ ἦτο κατορθωτὸν ἐπίσης νὰ μεταδοθῶσιν εἰς ἀπόστασιν δι' ἠλεκτρομαγνητικῶν μέσων καὶ οἱ κραδασμοὶ οὓς ὑφίσταται μεταλλική τις πλὰξ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἠχητικῶν κυμάτων τῆς ἀνθρωπίνης φωνῆς. Εἰς ὑπόμνημά του, ὑποβληθὲν ἐπὶ τοῦ θέματος τούτου εἰς τοὺς προϊσταμένους του, ἔγραφε: «Φαντασθῆτε ὅτι ὁμιλεῖ τις πρὸ μεταλλικῆς πλακός, ἀρκούντως ἐλαστικῆς ὥστε νὰ ἐπαναλαμβάνῃ αὐτὴ ὅλους τοὺς κραδασμοὺς τοὺς παραγομένους ὑπὸ τῆς φωνῆς καὶ ὅτι ἡ πλὰξ αὕτη ἀποκαθιστᾷ καὶ διακόπτει ἀλλεπαλλήλως τὸ κύκλωμα μιᾶς ἠλεκτρικῆς στήλης. Δύνασθε προφανῶς νὰ ἔχετε εἰς ἀπόστασιν μίαν ἄλλην πλάκα, ἥτις θὰ ἐκτελῇ ταυτοχρόνως τοὺς ἰδίους μὲ τὴν πρώτην κραδασμούς». Ἡ πρότασίς του ἐν ἄλλοις λόγοις περιλαμβάνει αὐτουσίαν καὶ πλήρη τὴν βάσιν τοῦ ἠλεκτρικοῦ τηλεφώνου, ὁποῖον τὸ ἐπραγματοποίησε βραδύτερον ἐν Ἀμερικῇ ὁ Γκράχαμ Μπέλλ καὶ ὁ Ἐλιζὰ Γκραΰ. Ἀνέλυε δ' ἐφεξῆς εἰς τὸ ὑπόμνημά του ὁ Μπουρσὲλ λεπτομερέστερον τὴν σκέψιν του καὶ ἐπληροφόρει τοὺς προϊσταμένους του ὅτι ἔχει ἤδη ἐπιδοθῇ εἰς συναφεῖς πειραματισμούς, διὰ τοὺς ὁποίους ὅμως θὰ ἐχρειάζετο ἀρκετὸν χρόνον καὶ χρηματικά τινα μέσα. Ἀλλ' ἀντὶ ἄλλης ἐνισχύσεως ἔλαβε παρ' αὐτῶν τὴν ἐπιτιμητικὴν ἀπάντησιν ὅτι θὰ ἔπρεπε νὰ μὴν ἀσχολῆται εἰς «οὐτοπίας» καὶ ὅτι καλὸν θὰ ἦτο νὰ δαπανᾷ τὸν χρόνον του εἰς σοβαρώτερα ἔργα. Ὁ Μπουρσὲλ ἀποκαρδιωθείς, ἐγκατέλιπεν ἔκτοτε τὴν προσπάθειάν του, τῆς ὁποίας ἡ σημασία ἀνεγνωρίσθη πολὺ βραδύτερον, καὶ δὴ ἐκ μέρους αὐ τοῦ τούτου τοῦ Ἔδισον καὶ τοῦ Γκράχαμ Μπέλλ, οἵτινες διαρκούσης τῆς ἐν Παρισίοις παγκοσμίου ἐκθέσεως τοῦ 1889 ἀπέτισαν φόρον τιμῆς εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ὡς προδρόμου τῆς ἐπινοήσεως τοῦ τηλεφώνου. Γ. Ζ.

**Μπούρσιαν** (Bursian), ***Κονράδος***. Περιώνυμος Γερμανὸς φιλόλογος καὶ ἱστοριοδίφης (1830—1883). Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν Λειψίᾳ καὶ Βερολίνῳ, μετὰ μακρὰν δ' ἐν Ἑλλάδι διαμονὴν ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του, ὠνομάσθη κατ' ἀρχὰς ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας, βραδύτερον δὲ ἔκτακτος καθηγητής. Τῷ 1861 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας καὶ τῆς ἀρχαιολογίας ἐν Τυβίγγῃ, τῷ 1864 ἐν Ζυρίχῃ καὶ τῷ 1874 ἐν Μονάχῳ. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσιν αἱ κριτικαὶ ἐκδόσεις τοῦ «De errore profanarum religionum» τοῦ Ἰουλίου Φιρμίνου Ματέρνου καὶ τοῦ ῥήτορος Σενέκα, ὡς καὶ ἡ κλασσικὴ «Γεωγραφία τῆς Ἑλλάδος» (2 τόμ. 1862—1872). Ἐν τῷ περιοδικῷ «Mitteilungen der Antiquarischen Gesellschaft zu Zürich» ἐδημοσίευσε περισπούδαστον μελέτην: «Aventicum Helvetiorum», ἐν δὲ τῇ «Allgemeine Enzyklopädie» τοῦ Ἔρς καὶ Γκρούμπερ σημαντικωτάτην πραγματείαν περὶ τῆς «τέχνης κατὰ τὴν ἑλληνικὴν ἀρχαιότητα» (Sekt. 1, τόμ. 82, Λειψία, 1864). Ἀπὸ τοῦ 1873 ἤρξατο ἐκδιδόμενον ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Μπούρσιαν τὸ «Jahresbericht über die Fortschritte der Klassischen Altertumswissenschaft» (Βερολῖνον), εἰς ὃ προσετέθη τῷ 1879 τὸ «Biographisches Jahrbuch». Ὡς ἔργον περιωπῆς θεωρεῖται καὶ ἡ τελευταία τοῦ Μπούρσιαν συγγραφὴ «Ἱστορία τῆς κλασσικῆς φιλολογίας ἐν Γερμανίᾳ» (Μόναχον, 1883). Α. Δ.

**Μπούρσιανη, *Ἄνω*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Χειμαδιόν* (βλ. λ.).

**Μπουρσιὲ** (Bourcier), ***Ἰωάννης-Λεονάρδος, βαρῶνος ντὲ Μοντυρέ***. Γάλλος νομομαθὴς ἐκ Λωραίνης, ὅπου καὶ κατέλαβεν ἀνωτάτας δικαστικὰς θέσεις (1649—1726). Εἶναι κυρίως γνωστὸς ὡς συντάξας διὰ τὸν δοῦκα τῆς Λωρραίνης τὸν «Λεοπολδιανὸν» καλούμενον κώδικα (1701), ὅστις περιλαμβάνει διατάξεις πολιτικῆς δικονομίας, ἐγκληματολογίας καὶ ἀστυνομίας δασῶν. Ἀνέλαβεν ἐπίσης διαφόρους διπλωματικὰς ἀποστολάς. Χ. Δ.

Digitized by Google

— **Μπουρσιὲ** (Boursier), ***Λαυρέντιος-Φραγκῖσκος.*** Γάλλος θεολόγος ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῶν Ιανσενιστῶν (1679—1749). Διδάκτωρ τῆς Σορβόννης, ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς θρησκευτικὰς ἔριδας ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΕ΄. Εἰς τὴν φιλοσοφίαν ἠκολούθει τὸν Μαλεμπρὰνς καὶ ἰδίως μέχρις ὑπερβολῆς τὴν θεωρίαν του περὶ τῶν «κατὰ σύμπτωσιν αἰτιῶν». Διὰ πᾶσαν πρᾶξίν μας χρειαζόμεθα πνευματικὴν καὶ προκαθοριζουσαν βοήθειαν. Ἐναντίον του ἔγραψεν ὁ Μαλεμπρὰνς τοὺς «Λογισμοὺς ἐπὶ τῆς φυσικῆς κινήσεως». Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ὧν γνωστότερα: «Περὶ τῆς ἐνεργείας τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τῶν πλασμάτων του», μελέτη ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀποδεικνύεται διὰ τοῦ συλλογισμοῦ ἡ φυσικὴ πρώτη κίνησις καὶ ὅπου ἐξετάζονται πλεῖστα ζητήματα σχετικὰ πρὸς τὴν φύσιν τῶν πνευμάτων καὶ πρὸς τὴν θείαν χάριν (δύο τόμοι 1715), «Πρόλογος πάντων τῶν Ἁγίων». Ε. Λ.

**Μπούρσοβα** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Καλλιθέας (Ἐγρὶ-Δερὲ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας. Κάτ. (1928) 187.

**Μπουρσούκι** *[Γεωγρ.].* Προτέρα ὀνομασία τοῦ ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σιντικῆς χωρίου *Λιμνοχώρι(ον)* (βλ. λ.).

**Μπουρσῶ** (Boursault), ***Ἔδμος.*** Γάλλος λογοτέχνης, ἐξαιρετικῶς πολυγράφος, ἀλλὰ μετρίας ὅλως φιλολογικῆς ἀξίας (1638—1701). Ἦτο πνευματώδης καὶ εὐφυολόγος, διὰ τὰ προσόντα του δὲ ταῦτα εἶχε κερδίσει τὴν συμπάθειαν τῶν μεγαλυτέρων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς του, ἐν οἷς τῶν δύο Κορνηλίων, τοῦ Φουκίου, τοῦ Μοντωζιέ, τοῦ πρίγκιπος Κονδὲ καὶ ἄλλων, οἵτινες διετήρησαν ἀλληλογραφίαν μαζί του καὶ ἐπροθυμοποιοῦντο νὰ τὸν καλοῦν εἰς τὰς αἰθούσας καὶ τὰ γεύματά των. Ὀνομαστὸς ἰδίως ἀπέμεινε διὰ τὰς φιλολογικάς του ἔριδας πρὸς τὸν Μολιέρον, τὸν Μπουαλὼ καὶ τὸν Ρακίναν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ, ἀριθμουμένων εἰς πολλὰς δεκάδας, ἀναφέρονται ὡς ἄξια περισσοτέρου λόγου αἱ κωμῳδίαι του, ἰδίᾳ δὲ μεταξὺ τούτων: «Κωμῳδία χωρὶς τίτλον» (1683), «Ὁ Αἴσωπος εἰς τὴν πόλιν» (1690), «Ὁ Αἴσωπος εἰς τὴν αὐλὴν» (1701), τῆς ὁποίας ἀπηγορεύθη ἡ ἀναβίβασις κλπ. —Ω

**μπούρτζι** (τό). Λέξις τῆς κοινῆς γλώσσης, παραληφθεῖσα ἐκ τῆς ἀραβοτουρκικῆς *μπούρτζ*, σημαινούσης ἐπάκτιον πυροβολεῖον ἢ φρούριον καὶ δὴ ἐπιστέφον νησῖδα. Ὁ διοικῶν *μπουρτζῆς*. Ἡ πρώτη ἐγένετο τοπωνυμία, ἡ δὲ δευτέρα ἐπίθετον.

**Μπούρτζι** ***(Αἰγίνης)*** *[Γεωγρ.].* Τετραγώνου βάσεως ἐπιθαλάσσιον φρούριον, ὅπερ ἠγείρετο ἐπὶ ὁμωνύμου νησῖδος (τῆς ἀρχαίας Σαρωνίδος), ἥτις εὑρίσκετο εἰς τὸ στόμιον τοῦ συγχρόνου λιμένος τῆς Αἰγίνης, κατέναντι τοῦ ἐκκλησιδίου τοῦ Ἁγίου Νικολάου τοῦ Θαλασσινοῦ καὶ δεξιᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸν λιμένα. Ὁ πύργος οὗτος, ἀρχαίας ἑλληνικῆς κατασκευῆς, ἐπισκευασθεὶς ὑπὸ τοῦ Φραγκ. Μοροζίνη καὶ τοῦ Ἀλοϊσίου Μοτσενίγου, κατηδαφίσθη τῷ 1897, ὁπότε καὶ ἡνώθη ἡ μικρὰ νησὶς πρὸς τὸν νότιον κυματοθραύστην τοῦ λιμένος τῆς Αἰγίνης, ἰσοπεδωθεῖσα εἰς ὡραίαν πλακόστρωτον πλατεῖαν περιπάτου ὀνομαζομένην νῦν *Καί* (βλ. εἰκόνας εἰς τ. Β΄ σελ. 477 καὶ 478). Εἰς τὸ ἄκρον τῆς ποτὲ νησῖδος *Μπούρτζι* ἀνάπτεται (πλάτ. 37°44΄30΄΄ Β., μήκ. 23° 25΄ 52΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1816: Town and ports of Aegina) ἀπὸ τοῦ 1608 φανὸς ναυτικὸς πρασίνου σταθεροῦ φωτὸς 5 μιλλ. Σ. Ε. Λ.

— **Μπούρτζι** ***(Ἁλικαρνασσοῦ)*** *[Γεωγρ.].* Τὸ ἐπὶ τῆς νησῖδος Ἅγιος Πέτρος φρούριον τὸ ἀνεγερθὲν ὑπὸ τῶν Ροδίων ἱπποτῶν (πλάτ. 37° 02΄ Β., μήκ. 27° 28΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1899: Kalimnos, Kappari and Kos channels) εἰς τὸ στόμιον τοῦ λιμένος τῆς Ἁλικαρνασσοῦ (βλ. λ. *Μπουντρούμ*). Σ. Ε. Λ.

— **Μπούρτζι** ***(Αὐλίδος)*** *[Γεωγρ.].* Χθαμαλὴ γλῶσσα καὶ ἐπ' αὐτῆς ἐρειπωμένον ἐνετικὸν φρούριον τῆς εὐβοϊκῆς ἀκτῆς τῶν νοτίων τοῦ Εὐρίπου προσγείων κατέναντι τῆς γλώσσης τῆς Αὐλίδος (πλάτ. 38°24΄ 1/4 Β., μήκ. 23°38΄ 1/2 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2802: Town and strait of Euripo). Ἡ εὐθυγραμμία τῆς βορείας πλευρᾶς τοῦ ἐρειπίου καὶ τῆς πρώτης, δεξιὰ τῆς κορυφῆς τῆς Δίρφυος, μασχάλης, δεικνύει τὰ ἐπικίνδυνα τοῦ *Μπουρτζιοῦ ἀβαθῆ*, τὰ ὁποῖα ἐπεσημάνθησαν (1913) διὰ τοῦ πρώτου ἐν Ἑλλάδι τεθέντος εἰς λειτουργίαν αὐτομάτου φωτοβόλου σημαντῆρος Ἄγκα. *Στενὸν Μπουρτζιοῦ* (Burj channel) ὀνομάζεται τὸ μεταξὺ τοῦ σημαντῆρος τούτου (λευκαὶ ἐκλάμψεις) καὶ τοῦ φάρου Αὐλίδος (λευκὸν σκαρδαμῦσσον) πλώϊμον στενόν. Ἐν αὐτῷ τὸ ρεῦμα τοῦ Εὐρίπου φθάνει ἐξησθενημένον καὶ οὐδέποτε ὑπερβαίνει τὰ 2 μίλλια ὡριαίως. Σ. Ε. Λ.

—**Μπούρτζι** ***(Ναυπλίου)*** *[Γεωγρ.].* Νησίς, ὀνομαζομένη καὶ *Καστέλλι* κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ ἀγῶνος καὶ *Θαλασσόπυργος*, τοῦ Ἀργολικοῦ, κειμένη ἐγγύτατα τοῦ Ναυπλίου (πλάτ. 37°34΄05΄΄ Β, μήκ. 22°47΄40΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1518: Gulf of Nauplia) κατέναντι τοῦ πυροβολείου τῶν Πενταδελφιῶν. Σμικροτάτη, καλύπτεται πᾶσα ὑπὸ ἐνετικοῦ φρουρίου γραφικωτάτου, εἰς ὃ ὀφείλει τὸ ὄνομά της. Τὸν πύργον τοῦτον ἀνήγειραν οἱ Ἐνετοὶ μετὰ τὴν ἀποχώρησιν τοῦ Μαχμοὺτ πασᾶ (1473) καὶ τὸν ὥπλισαν διὰ νέων τηλεβόλων. Βραδύτερον (1502) οἱ Ἐνετοί, μεταβαλόντες δι' ὀχυρώσεων τὸ ΒΔ. τῆς κλιτύος τῆς Ἀκροναυπλίας ὀροπέδιον εἰς αὐτοτελῆ προμαχῶνα μετ' ἐπάλξεως («Πέντε ἀδέλφια»), ἐφ' ἧς ἐτοποθέτησαν 5 ἰσομεγέθη τηλεβόλα, συνέδεσαν ταύτην μετὰ βραχίονος τεχνητοῦ ἐξ ὀγκολίθων, ἐξ οὗ ἀνηρτᾶτο ἅλυσις διήκουσα μέχρι τοῦ Μπουρτζιοῦ, ὥστε νὰ προφυλάσσηται ὁ ἔσω λιμὴν τῆς πόλεως, ἐξ οὗ porto Cadena ἐκλήθη. Μετὰ δὲ τὴν συνθήκην τοῦ Κάρλοβιτς τῷ 1698, ἀνηγέρθη ἐπὶ τῆς νησῖδος ὑπὸ τῶν Ἐνετῶν ἰσχυρότερος πύργος καὶ προμαχῶνες μετὰ πυροβόλων, ὥστε ν' ἀποτελεσθῇ ἐπὶ τῆς νησῖδος ταύτης φρούριον δεσπόζον τῆς εἰσόδου τοῦ λιμένος, ἐξ οὗ καὶ Passage ἐκαλεῖτο. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν ὁ Δ. Ὑψηλάντης ἀνέθεσεν εἰς τὸν Βουτιὲ τὴν κατάληψιν τοῦ φρουρίου, ἥτις ὅμως ἀπέτυχε. Κατὰ τὴν μεταξὺ Ἑλλήνων καὶ Τούρκων συνθήκην πρὸς παράδοσιν τοῦ Ναυπλίου (ἥτις δὲν ἐπραγματοποιήθη) κατελήφθη τὸ Μπούρτζι τῇ 18ῃ Ἰουνίου 1822 ὑπὸ 50 ὁπλοφόρων ἐνισχυθέντων δι' 150 πυροβολητῶν, ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὁποίων ἦσαν οἱ Φρ. Ἄστιγξ, Ἀντ. Ἄνεμαν, Ἰ. Χάνεκ καὶ Δ. Καλλέργης ὑπὸ τὸν Γάλλον ἀντισυνταγματάρχην τοῦ μηχανικοῦ Φιλ. Γιουρτέν, ὅστις ἐκανονιοβόλει τὸ Ναύπλιον ἀπὸ τὸ Μπούρτζι καὶ ἐματαίωσε τὸν διὰ τοῦ ἀγγλικοῦ ἀτμοπλοίου «The flora of London» λάθρᾳ ἐπισιτισμὸν τῶν πολιορκουμένων Τούρκων. Κατὰ τὰς αἱματηρὰς ἐμφυλίους ἐχθροπραξίας ἀπὸ τοῦ 1823—1833 δὶς ἡ κυβέρνησις κατέφυγε πρὸς ἀσφάλειαν εἰς τὸ Μπούρτζι (τῇ 24 Μαΐου 1824 καὶ τῇ 2 Ἰουλίου 1827). Μετὰ τὸν ἀφοπλισμόν του (1865) ἐχρησίμευσεν ὡς διαμονὴ τῶν δημίων. Ἐπ' ἐσχάτων δέ, χωρὶς νὰ θιχθῇ τι ἐκ τῶν ἱστορικῶν αὐτοῦ ὀχυρώσεων καὶ διακοσμήσεων, μετεβλήθη τὸ Μπούρτζι εἰς θαυμάσιον κέντρον ἀναψυχῆς. Σ. Ε. Λ.—Γ. Θ. Δ.

—**Μπούρτζι** ***(Τροιζηνίας)*** *[Γεωγρ.].* Νησὶς μετὰ φρουρίου ἐν τῷ κολπίζοντι ὅρμῳ Μοναστήρι τοῦ Πόρου, ἐγγύτατα τῇ ἀκτῇ τοῦ Λεμονοδάσους (πλάτ. 37°28΄25΄΄ Β., μήκ. 23°28΄45΄΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1517: Poros island). Ἐκτίσθη δὲ τὸ φρούριον τοῦτο ὑπὸ τοῦ Βαυαροῦ στρατηγοῦ Ἄϊντεκ, δι' ὃ καὶ *Κάστρο τοῦ Ἄϊντεκ* ὠνομάζετο παρά τινων, ὅστις καὶ ἠγόρασε τὴν νῆσον, περιελθοῦσαν κατόπιν εἰς τὴν οἰκογένειαν Ράϊνεκ. Σ. Ε. Λ.

—**Μπούρτζι** ***(Χαλκίδος)*** *[Γεωγρ.].* Παλαιὰ ὀνομασία τῆς εὐβοϊκῆς πλευρᾶς τοῦ Εὐρίπου, καθ' ἣν κατέληγεν ὁ ἀκρόπους τῆς ξυλίνης τότε, ἀνοιγομένης διὰ τὸν διάπλουν τῶν πλοίων, γεφύρας καὶ ἐφ' ἧς πλευρᾶς ἠγείρετο ἐνετικὸν ἐπάκτιον φρούριον, ἀπὸ τοῦ ὁποίου διὰ τῶν Τούρκων κατακτητῶν καὶ ἡ τοπωνυμία τῆς θέσεως (πλάτ. 38° 27΄ Β., μήκ. 23°36΄ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1802: The Town and Strait of Euripos καὶ Ἑλλην. Ὑδρογρ. ὑπηρ. «Εὔριπος», βλ. εἰκ. εἰς τ. Β΄, σελ. 384). Τὸ Μπούρτζι κατηδαφίσθη τῷ 1892. Σ. Ε. Λ.

**μπουρτζόβλαχος** (ὁ)˙ ὁ κατ' ἐπάγγελμα ποιμὴν (βλ. λ. *Βλάχος*)˙ ‖ ὁ ἀγροῖκος τοὺς τρόπους.

**Μπουρτσακέβιτς,** ***Νικόλαος-Ἰβάνοβιτς.*** Ρῶσος ἱστορικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ὀδησσῷ (1826—1891). Γραμματεὺς τῆς «Ἱστορικῆς ἑταιρείας Ὀδησσοῦ», συνέγραψε πλείστας μελέτας, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἀποικίαι ἐν Ταυρίδι τῶν Ἑλλήνων», «Ἱστορία τῶν ἀποικιῶν τῆς Γενούης ἐν Κριμαίᾳ». Θ. Β.

**Μπουρὺ** (De Bury), ***Ριχάρδος.*** Ψευδώνυμον τοῦ Γάλλου συγγραφέως Ρεμὺ ντὲ *Γκουρμὸν* (βλ. λ.).

**Μπούρχα(α)βε** (Boerhaave ἢ Boerhaaver), ***Ἕρμαν.*** Διάσημος Ὁλλανδὸς ἰατρός, χημικὸς καὶ βοτανικός, γεννηθεὶς εἰς Woorhort παρὰ τὴν Leyden (1668—1738). Ἐσπούδασε τὴν ἑβραϊκήν, τὴν χαλδαϊκήν, τὴν ἱστορίαν, τὴν φιλοσοφίαν καὶ τὰ μαθηματικά, τὰ τελευταῖα δὲ ταῦτα δὲ ἤρξατο καὶ διδάσκων. Εἰς ἡλικίαν 21 ἔτους ὑπεστήριξε θέμα ἐπὶ τοῦ δόγματος τοῦ Ἐπικτήτου περὶ τοῦ «Ὑπερτάτου καλοῦ», τυχὼν χρυσοῦ μεταλλίου. Τῷ 1690 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς φιλοσοφίας, μεθ' ὃ ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν τῆς ἰατρικῆς καὶ τῷ 1693 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ ταύτης μὲ τὴν διατριβὴν «De utilitate explorandorum in aegris excrementorum ut signorum». Τῷ 1701 ἐξελέγη λέκτωρ τῆς θεωρητικῆς ἰατρικῆς, ἣν ἐδίδαξε καὶ ὁ Κρόνιγκεν. Τῷ 1709 ἐγένετο ἐν Leyden καθηγητὴς τῆς θεωρητικῆς ἰατρικῆς. Συνέλεξε περὶ τὰς 3 χιλ. εἴδη φυτῶν, δημοσιεύσας καὶ σχετικὸν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Index plantarum, quae in horto academico Lugduno-Batavo reperiuntur» (1710) καὶ τῷ 1720 ἄλλο δίτομον ἔργον μετὰ χαλκογραφιῶν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Index alter plantarum quae in horto academico Lugduno-Batavo coluntur». Ἐν τῷ μεταξὺ ἐδημοσιεύοντο τὰ δύο μεγάλα ἔργα του, ἅτινα διέδωκαν τὴν φήμην αὐτοῦ καθ' ἅπαντα τὸν πεπολιτισμένον κόσμον: «Institutiones rei medicae in usus annuae exercitationis domesticos digestae» (1708), «Aphorismi de cognoscendis et curandis morbis in usum doctrinae medicae» (1709). Ἀμφότερα ἔσχον πλείστας ἐκδόσεις καὶ μετεφράσθησαν εἰς τὴν ἀγγλικὴν καὶ γαλλικήν. Τῷ 1714 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς πρακτικῆς ἰατρικῆς, τῷ δὲ 1718 τῆς χημείας. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ἐδημοσίευσε τὰ «Στοιχεῖα Χημείας», ἔργον δίτομον, μεταφρασθὲν εἰς τὴν γερμανικήν, ἀγγλικὴν καὶ γαλλικὴν (1724—1731), ὡς καὶ πλῆρες σύγγραμμα «Χημείας». Διὰ τῶν ἔργων του τούτων ἔθετε τὰς βάσεις μιᾶς θετικῆς χημείας ἀπηλλαγμένης τοῦ ἀλχημικοῦ μυστικισμοῦ. Τῷ 1714 καὶ 1730 ἐξελέγη πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς Leyden, τῷ δὲ 1731 τὸ Ἰνστιτοῦτον τῆς Γαλλίας τῷ ἀπένειμε τὸν τίτλον τοῦ ξένου ἑταίρου, βραδύτερον δὲ ἐγένετο μέλος καὶ τῆς βασιλικῆς ἑταιρείας Λονδίνου. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἡ πόλις Leyden τῷ ἀνήγειρεν εἰς τὴν ἐκκλησίαν τοῦ Ἁγίου Πέτρου μνημεῖον. Ἀποτελῶν οὗτος τὴν τριάδα τῶν συστηματικῶν λεγομένων ἰατρῶν τοῦ πρώτου ἡμίσεος τοῦ ΙΗ΄ αἰῶνος (Hoffmann, Stahl, Boerhaave), ἐπενόησε νέας μεθόδους, αἵτινες εἰσήχθησαν καὶ εἰς ἄλλα πανεπιστήμια, μὲ τὴν τακτικὴν δὲ κλινικὴν διδασκαλίαν, ἣν ἐφήρμοσε καὶ τὴν ἐν αὐτῷ, πλὴν τῆς ἰατρικῆς, συγκέντρωσιν καὶ τῶν μαθημάτων βοτανικῆς καὶ χημείας, ἀπετέλεσεν αὐτὸς μόνος ὁλόκληρον τὴν ἰατρικὴν σχολήν, κληθεὶς διδάσκαλος τῆς Εὐρώπης. Τὸ σύστημά του ἐπεκράτησεν ἐπὶ πολὺ μακρότερον χρόνον τοῦ τῶν ἀντιπάλων του Hoffmann καὶ Stahl. Θεωρητικὸν ἅμα καὶ ἰατροφυσικο-μηχανικόν, ὁρμώμενον ἐκ καθαρῶς ἱπποκρατικῶν σκέψεων καὶ θεωριῶν περὶ «φύσεως», συνυφασμένον δὲ ἀδιαχωρίστως μετὰ τῶν ἰατρομηχανικῶν καὶ χημιατρικῶν γνώσεων, ἀπετέλεσε τὴν ἰατρικήν του φιλοσοφίαν πρὸς ἐξήγησιν τῶ φυσιολογικῶν καὶ παθολογικῶν φαινομένων τῆς ζωῆς. Ὁ Μπούρχαβε πρὸς ἐξήγησιν τῶν φυσικομηχανικῶν φαινομένων τῆς ζωῆς ἐστηρίχθη εἰς τὰς μηχανικὰς θεωρίας τοῦ Καρτεσίου, παρήχθη δ' οὕτω ἡ ἔνδοξος σχολὴ τοῦ Μπούρχαβε, ἥτις, ἵνα καταστήσῃ θετικὴν τὴν σπουδὴν τῆς ζωῆς, ἐξήρτα ταύτην ἐκ τοῦ συστήματος τῆς ἀνοργάνου φύσεως. Αἱ πρόοδοι τῆς φυσικῆς καὶ τῆς χημείας ἐδικαίωσαν αὐτὴν ἔν τινι μέτρῳ. Ἄλλαι ἐργασίαι του εἶναι: «Epistola de fabrica glandularum in corpore humano» (1722), «Atrocis nec descripti prius morbi historia» (1724), «Praelectiones publicae de morbis oculorum» (1746), «De viribus medicamentorum» (1727), «Praelectiones de lue venerea» (1751) κλπ. Πρῶτος ἐχρησιμοποίησε θερμόμετρον πρὸς καταμέτρησιν τῆς θερμοκρασίας τοῦ σώματος. Ἡ θεραπευτική του μέθοδος ἐστρέφετο πρὸς τὸν τρόπον τῆς διαίτης καὶ εἰς τὴν ἐν ἀναμονῇ παρακολούθησιν τῆς ἀσθενείας. Ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ἐκλήθησαν καὶ φυτά τινα ποώδη μακρόβια, αὐξάνοντα εἰς τὰς τροπικὰς χώρας. Ο. Ρ.

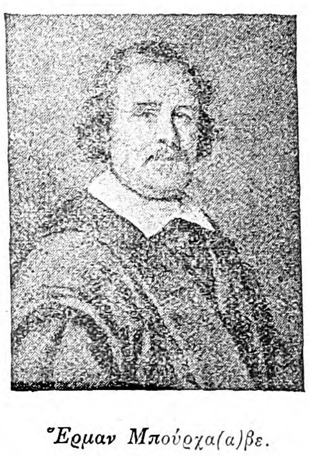

*Ἕρμαν Μπούρχα(α)βε.*

**Μπουρχὰν** ***Νιζὰμ Σὰχ Α΄*** (1508—1553). Μογγόλος ἡγεμὼν τοῦ Δεκκὰν ἐκ τῆς οἰκογενείας Νιζαμιέ.

— **Μπουρχὰν Νιζὰμ Σὰχ Β΄** (1591—1594). Μογγόλος ἡγεμὼν τοῦ Δεκκάν. Ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας του οἱ Πορτογάλοι κατέλαβον τὸ μεγαλύτεραν μέρος τῶν παραλίων τῆς χώρας του. Ν. Μ.

**Μπουρχανεντίν.** Μογγόλος μεγιστὰν ὑπὸ τὸν Δζεγκὶζ-Χάν. Διορισθεὶς δικαστὴς τοῦ Ἐρζιντζάν, κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὴν Καισάρειαν καὶ τὴν Σεβάστειαν καὶ νὰ διοικῇ αὐτὰς ὡς ἀνεξάρτητος δυνάστης. Ἐφονεύθη τῷ 1399 ὑπό τινος Τουρκομάνου. Ν. Μ.

**Μπουρ(χ)ανποὺρ** (Burhanpur) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Νιμὰρ τῶν Κεντρικῶν ἐπαρχιῶν, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Τάπτι. Ἦτο σπουδαιοτάτη πόλις ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῆς μογγολικῆς κατακτήσεως, κατελήφθη δὲ ὑπὸ τοῦ Οὐέλλσλυ τῷ 1803 καὶ ἐγένετο βρεττανικὴ τῷ 1860. Ἔχει ὡραῖον ἀνάκτορον, κτισθὲν ὑπὸ τοῦ Ἀκμπάρ, καὶ βιομηχανίας μεταξωτῶν καὶ βαμβακερῶν ὑφασμάτων, μουσελινῶν καὶ πολυτελῶν ἰνδικῶν κεντημάτων. Κάτ. 22.777. Χ. Δ.

**Μπούρχαρτ** (Burchardt), ***Ἕρμαν.*** Γερμανὸς ἐξερευνητὴς (1857—1909). Ἐπεσκέφθη τὸ Μαρόκον, τὴν Τύνιδα, τὴν Αἴγυπτον, τὴν Ἑλλάδα, τὴν Λαπωνίαν, τὴν Ἰσλανδίαν, τὰς Ἰνδίας, τὴν Ἀνατολικὴν Ἀσίαν καὶ τὴν Αὐστραλίαν. Ἐκμαθὼν τὴν ἀραβικήν, διέμεινεν ἐπὶ μακρὸν χρόνον ἐν Δα-

Digitized by Google

μασκῷ, καὶ κατόπιν ἐταξίδευσεν εἰς Συρίαν, Περσίαν, Βουχάραν, Ἀνατολικὴν Ἀφρικὴν καὶ Ἀραβίαν. Γ. Θ. Κ.

**Μπούρχοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Κόκκινο* (βλ. λ.).

**μπουρῶ**, καὶ **μπουρνάω**· δημοτ., ἐπὶ τῶν βοσκημάτων ἰδίᾳ ἐπὶ τῶν βοῶν, κτυπῶ μὲ τὰ κέρατα, κερατίζω, *κυρίσσω*: «πρόσεξε μὴ σὲ μπουρώσῃ τὸ βόϊδι».

**Μπούρωφ, *Ἀθανάσιος***. Βούλγαρος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1875. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις νομικὴν καὶ οἰκονομικὰς ἐπιστήμας. Ἐξελέγη τὸ πρῶτον βουλευτὴς τῷ 1911, ἀναδειχθεὶς ταχέως. Τῷ 1913 ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου, τῷ 1913, τῷ 1919 καὶ τῷ 1926, μετὰ δὲ τὴν παραίτησιν τῆς κυβερνήσεως Τσαγκώφ ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς κυβερνήσεως Λιάπτσεφ, διατελέσας ὡς τοιοῦτος μέχρι τῆς πτώσεως αὐτῆς (Ἰούνιος 1931). Ὁ Μπούρωφ ἀνήκει εἰς τὸ κόμμα τῆς «Δημοκρατικῆς συνεννοήσεως» καὶ θεωρεῖται εἷς τῶν καλυτέρων ῥητόρων τῆς βουλγαρικῆς βουλῆς. Τ. Β.

*Ἀθανάσιος Μπούρωφ.*

— **Μπούρωφ** (Burow), ***Κάρολος-Αὔγουστος***. Γερμανὸς χειρουργὸς (1809—1874). Τῷ 1839 διωρίσθη ὑφηγητὴς καὶ τῷ 1844 ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Καινιξβέργης. Ἐδημοσίευσε περὶ τὰς 39 ἐργασίας, ἀφορώσας τὴν φυσιολογίαν τοῦ ὀφθαλμοῦ, τὴν θεραπείαν τῶν τραυμάτων, τὰς πλαστικὰς ἐγχειρήσεις, καὶ εἰσήγαγε νέα ἐργαλεῖα, ἐν οἷς τὸ *ὀπτόμετρον*, τὸν *κηλοτόμον* καὶ ἄλλα. Ο. Ρ.

**Μπόϋς** (Boyce), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος μουσικὸς (1710—1779). Ἐχρημάτισε διευθυντὴς ὀρχήστρας, συνθέτης καὶ ὀργανοχορδούστης τῆς αὐλῆς καὶ συνειργάσθη μετὰ τοῦ Χώκινς εἰς τὴν σύνταξιν τῆς «Ἱστορίας τῆς μουσικῆς» τοῦ τελευταίου. Ἔγραψεν ὡσαύτως σειρὰν συνθέσεων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ μασκαράτα «Πηλεὺς καὶ Θέτις», ἡ σερενάτα «Σολομών», τὸ «Ἆσμα τῶν ᾀσμάτων», τὸ ὀρατόριον «Ὁ Θρῆνος τοῦ Δαυὶδ ἐπὶ τοῦ Σαούλ», ἡ μουσικὴ τῆς «Τρικυμίας» τοῦ Σαίξπηρ καὶ ἄλλων δραμάτων, 8 συμφωνίαι, 12 σονάται, συλλογὴ ᾀσμάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Lyra britannica» κ. ἄ. Γ. Σ.

**Μποὺς** (Busch), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς καλλιτέχνης καὶ ποιητὴς (1832—1908). Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πολυτεχνείῳ τοῦ Ἀννοβέρου καὶ ταῖς Ἀκαδημίαις τῆς Ντύσελντορφ, τῆς Ἀμβέρσης καὶ τοῦ Μονάχου, κατόπιν δ' ἐδημοσίευσεν εἰς τὰ «Fliegende Blätter» τὰς πρώτας του εἰκόνας, μετ' ἀναλόγων στίχων, ἐν αἷς: «Ἡ φωλιὰ τῶν κοράκων», «Αἱ δύο πάπιες», «Τὰ κακὰ παιδιὰ τῆς Κορίνθου», «Μὰξ καὶ Μόριτς» καὶ «Χὰνς Χουκκεμπάϊν, ὁ γρουσουζοκόρακας». Ἐγένετο κυρίως γνωστὸς διὰ τῶν ἐναντίον τῆς καθολικῆς Ἐκκλησίας εἰκονογραφημένων βιβλίων του, εἰς τὰ ὁποῖα, συνδυάζων σπινθηροβόλον σκῶμμα μετὰ δηκτικῆς σατίρας, κατορθώνει νὰ γελοιογραφῇ δι' ἁπλῶν γραμμῶν καταστάσεις καὶ πρόσωπα, ὡς: «Ὁ ἅγιος Ἀντώνιος τῆς Παδούης» (1870), «Ἡ εὐσεβὴς Ἑλένη», «Πάτερ Φιλούτσιους» (1873). Κατόπιν ἐξέδωκε καὶ ἄλλα εἰκονογραφημένα βιβλία («Ἡ ἡμέρα τῶν γενεθλίων», «Κύριος καὶ κυρία Κνόππ») καὶ ποιήματα ὑπὸ τὸν τίτλον «Κριτικὴ τῆς καρδίας». Γ. Ε. Κ.

— **Μποὺς** (Busch), ***Μαυρίκιος***. Γερμανὸς δημοσιολόγος καὶ συγγραφεὺς (1821—1899). Ἐσπούδασε θεολογίαν καὶ φιλοσοφίαν, κατόπιν ἐταξίδευσεν εἰς Ἡνωμένας Πολιτείας καὶ Ἀνατολὴν καὶ ἔγραψε: «Περιπλανήσεις μεταξὺ Οὔντσον καὶ Μισσισιπῆ» (1853), «Εἰκόνες ἐκ τῆς Ἀνατολῆς (1862) κλπ. Συνεδέθη στενῶς μετὰ τοῦ Βίσμαρκ, τὸν ὁποῖον συνώδευσε καὶ εἰς τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον (1870), τῷ δὲ 1873 ἀνέλαβε τὴν σύνταξιν τοῦ «Ταχυδρόμου τοῦ Ἀννοβέρου». Λόγῳ τῆς μετὰ τοῦ Βίσμαρκ στενῆς συνεργασίας του, ἐθεωρεῖτο ὡς ὁ πραγματικὸς διερμηνεὺς τῶν σκέψεων αὐτοῦ. Ἐκ τῶν ἔργων του διακρίνονται: «Ὁ κόμης Βίσμαρκ καὶ οἱ περὶ αὐτὸν κατὰ τὸν μετὰ τῆς Γαλλίας πόλεμον» (7η ἔκδ. 1889—1890), «Νέα φύλλα ἡμερολογίου» (1879), «Ὁ ἀρχικαγκελλάριός μας» (1884, εἰς 2 τ.), «Ὁ Βίσμαρκ καὶ τὸ ἔργον του» (1898) καὶ ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του «Φύλλα ἡμερολογίου», εἰς τὰ ὁποῖα ἐκθέτει τὰ τῶν σχέσεών του μετὰ τοῦ Βίσμαρκ καὶ τὴν ἐσωτερικὴν καὶ ἐξωτερικὴν πολιτικὴν τούτου. Γ.Ε.Κ.

**Μποὺ-Σαΐτ**. Τελευταῖος ἡγεμὼν τῆς δυναστείας τῶν Ἰλχανὰν (Ἰλχανιδῶν), ἥτις ἐβασίλευσεν ἐν Περσίᾳ. Ἀνελθὼν τὸν θρόνον τῷ 1316 εἰς ἡλικίαν 13 ἐτῶν, ἐνυμφεύθη τὴν Μπαγντὰτ-Χατοὺν, θυγατέρα τοῦ βεζύρου του, εἰς ἣν καὶ κατέλιπεν ὅλην τὴν ἐξουσίαν. Ἀπέθανε τῷ 1334. Ἐπειδὴ δὲ δὲν εἶχε κληρονόμους, ἡ Περσία διῆλθε περίοδον πεντηκονταετοῦς ἀναρχίας, μεθ' ἣν κατεκτήθη ὑπὸ τοῦ Ταμερλάνου. Ν. Μ.

**Μπουσάκο** (Busaco) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Πορτογαλίας, κείμενον 32 χλμ. πρὸς Β.ΒΑ. τῆς Κοΐμπρα. Εἶναι γνωστὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ συναφθείσης τὴν 27 Σεπτεμβρίου 1810 μάχης (βλ. κατ.).

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Πορτογαλίας τοῦ 1810 (βλ. λ. *Ναπολεόντειοι πόλεμοι*) διεξήχθη τὴν 27ην Σεπτεμβρίου 1810 μάχη παρὰ τὸ χωρίον *Μπουσάκο* ὑπὸ τῆς γαλλικῆς στρατιᾶς τοῦ Μασσενὰ (45.000 ἄνδρες) ἐναντίον τῆς ἀγγλοπορτογαλικῆς στρατιᾶς τοῦ Οὐέλλιγκτων (50.000 ἄνδρες) τῆς τεταγμένης ἐπὶ τῆς ἀποκρήμνου ὀροσειρᾶς τοῦ Μπουσάκο (ἐκτάσεως 3 χιλιομ. περίπου). Ἡ μάχη αὕτη ἔχει τοῦτο τὸ χαρακτηριστικόν, ὅτι, ἐνῷ ὁ Μασσενά, μετὰ τὴν πλήρη ἀποτυχίαν τῶν Γάλλων κατὰ τὴν μετωπικὴν ἐναντίον τῆς τοποθεσίας ταύτης ἐπίθεσιν, ἀνέμενε τὴν νύκτα διὰ νὰ ὑποχωρήσῃ, αἴφνης, πληροφορηθεὶς παρὰ τοῦ ἱππικοῦ του ὅτι ὑπάρχει ἀτραπὸς τις ἄγουσα εὐθέως πρὸς τὰ νῶτα τῆς ἀγγλοπορτογαλικῆς τοποθεσίας, ἔσπευσεν ἀμέσως ὅπως καταλάβῃ ταύτην. Ὁ Οὐέλλιγκτων ἀντιληφθεὶς ὅτι ὑπερεκεράσθη, διέταξεν αὐθωρεὶ ὑποχώρησιν πρὸς ΝΑ., ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς δηλαδὴ ὄχθης τοῦ Μοντέγκο. Ν. Θ. Κ.

**Μπουσὰρ** (Bouchard), ***Ἐρρῖκος-Ἀβέλ***. Γάλλος ἀνατόμος, γεννηθεὶς τῷ 1833. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Βορδὼ (1878) καὶ ἐδημοσίευσε: «Περιγραφικὴν ἀνατομικὴν καὶ ἐμβρυολογίαν» (3η ἔκδ. 1879) κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μπουσὰρ** (Bouchard), ***Κάρολος-Ἰάκωβος***. Διαπρεπὴς Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1837. Τῷ 1870 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γενικῆς παθολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων, τῷ δὲ 1880 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ τῷ 1887 τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Πρῶτος ἐσημείωσε τὸ φαινόμενον τῆς μειώσεως τῆς θρέψεως εἰς ὁλόκληρον ὁμάδα χρονίων νόσων. Συνέγραψε: «Θεραπευτικὴ τῶν μολυσματικῶν νόσων» (1892), «Γενικὴ παθολογία» (1895—1897) καὶ τὰς πραγματείας: «Les dégénérescences secondaires de la moelle épinière» (1866), «Sur quelques points de la pathogénie des hémorragies cérébrales» (1867), «Sur les maladies par ralentissement de la nutrition» (1882), «Les microbes pathogènes» (1892), κ. ἄ. Ὡς *ὄζοι τοῦ Μπουσὰρ* θεωροῦνται αἱ ἐκ παχύνσεως παραμορφώσεις τῶν φαλαγγικῶν ἀρθρώσεων τῶν δακτύλων, αἱ παρατηρούμεναι ἐπὶ ἀτόμων πασχόντων διαστολὴν τοῦ στομάχου. Ο. Ρ.

**Μπουσαρντὰ** (Bouchardat) ***Ἀπολλινάριος***. Γάλλος χημικὸς καὶ φαρμακοποιὸς (1806—1886). Διετέλεσεν (ἀπὸ τοῦ 1852) καθηγητὴς τῆς ὀργανικῆς χημείας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Παρισίων καὶ εἶχεν ἐκλεγῆ (ἀπὸ τοῦ 1850) μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Κατέστη διάσημος διὰ τὰς πολλὰς πρωτοτύπους ἐργασίας αὐτοῦ ἐπὶ ποικίλων θεμάτων τῆς χημείας καὶ τῆς φαρμακολογίας, ἔγραψε δὲ σημαντικὰ συγγράμματα, κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς φυτικῆς βλαστήσεως» (1846), «Ἐγχειρίδιον ἐπὶ τῶν νόσων τῆς ἀμπέλου» (1853), «Τὸ οἰνόπνευμα καὶ οἱ ἐξ αὐτοῦ κίνδυνοι» (1863), «Περὶ σακχαροδιαβήτου» (1875), «Ἐγχειρίδιον δημοσίας καὶ ἰδιωτικῆς ὑγιεινῆς» (1881) κλπ., καθὼς καὶ δύο φαρμακευτικὰ συνταγολόγια ὑπὸ τοὺς τίτλους «Nouveau formulaire magistral» (1840) καὶ «Formulaire vétérinaire» (1849), ἐξ ὧν τὸ πρῶτον ἰδίως ἐπανεξεδόθη πλειστάκις.

— **Μπουσαρντὰ** (Bouchardat), ***Γουσταῦος***. Γάλλος χημικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1842—1918). Ἐδίδαξεν εἰς τὴν ἰατρικὴν καὶ τὴν φαρμακευτικὴν σχολὴν τῶν Παρισίων, ὑπῆρξε δὲ ἀπὸ τοῦ 1882 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς, τῆς ὁποίας ἐγένετο πρόεδρος τῷ 1917. Σημαντικαὶ ὑπῆρξαν αἱ ἐργασίαι του ἐπὶ τῶν σακχάρεων, πρῶτος δ' αὐτὸς ἐπέτυχε τὴν παραγωγὴν κοινῆς ἀλκοόλης ἐκ σακχαρωδῶν οὐσιῶν. Καθώρισεν ἐξ ἄλλου τὴν σύνθεσιν καὶ τὴν προέλευσιν τῆς λακτόζης καὶ ἀπέδειξε τὴν παρουσίαν τῆς οὐσίας ταύτης καὶ εἰς τὰ φυτά, ἐνῷ πρότερον ἐθεωρεῖτο ὡς ἔχουσα καθαρῶς ζωϊκὴν τὴν προέλευσιν. Ἐνδιαφέρουσαι ἐπίσης ὑπῆρξαν αἱ ἐργασίαι του ἐπὶ τῆς χημικῆς συστάσεως τοῦ καουτσοὺκ καὶ τῆς δυνατότητος τῆς κατασκευῆς αὐτοῦ συνθετικῶς, καθὼς καὶ οἱ πειραματισμοί του ἐπὶ τῆς καμφορᾶς, τῶν ὁποίων τ' ἀποτελέσματα ἔτυχον εὐρείας βιομηχανικῆς ἐκμεταλλεύσεως ἐν τῇ ἀρωματοποιίᾳ. Ἀξιοσημείωτον εἶναι ὅτι αἱ μελέται τοῦ Μπουσαρντὰ περιεστράφησαν πάντοτε ἐπὶ πρώτων ὑλῶν μικρᾶς ἐμπορικῆς ἀξίας καὶ ὅτι ἀπέληξαν πάντοτε εἰς ἀποτελέσματα πολλῆς σημασίας ἀπὸ βιομηχανικῆς ἰδίως ἀπόψεως. Ἐδημοσίευσεν ἐν τοῖς ἄλλοις «Γενικὴν ἱστορίαν τῶν λευκωματωδῶν» (1873) καί, εἰς ἐπηυξημένην ἔκδοσιν, τὸ «Nouveau formulaire magistral» τοῦ πατρὸς αὐτοῦ (1889). — Ω.

**Μπουσαρντὸν** (Bouchardon), ***Ἔδμος***. Γάλλος γλύπτης (1698—1762). Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς μὲν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ πατρός του, ἀρχιτέκτονος καὶ γλύπτου, μετὰ ταῦτα δὲ παρὰ Coustou τῷ νεωτέρῳ. Τῷ 1722 ἔτυχε τοῦ μεγάλου βραβείου τῆς Ῥώμης, παρέμεινε δ' ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἐπὶ δεκαετίαν, μελετῶν καὶ ἐκπονῶν ποικίλα ἔργα, ἐν οἷς αἱ ἀξιομνημόνευτοι προτομαὶ τοῦ πάπα Κλήμεντος τοῦ ΙΒ' καὶ τῶν καρδιναλίων ντὲ Πολινιὰκ καὶ Ροάν. Μετακληθεὶς διὰ βασιλικῆς διαταγῆς εἰς Παρισίους, ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου ἐπισήμου βασιλικοῦ γλύπτου. Ἐξεπόνησε διάφορα ἔργα ἐν Βερσαλλίαις, τῷ δὲ 1745 ὠνομάσθη σχεδιαστὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῶν Καλῶν τεχνῶν καὶ μετὰ διετίαν καθηγητὴς ταύτης. Ὑπῆρξεν εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων ἀγαλματοποιῶν τοῦ αἰῶνος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἅγιος Κάρολος ὁ Βορρομαῖος», «Τρίτων», «Δύο Ἐρωτιδεῖς», «Ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ δελφῖνος» (ἐν Βερσαλλίαις), «Ὁ Ἰησοῦς Χριστός», «Ἡ Παρθένος», «Ἐξ ἀπόστολοι», ἓν ἐπιτύμβιον μνημεῖον (ναὸς Ἁγίου Σουλπικίου), ἡ κρήνη τῆς ὁδοῦ Γκρενέλλ, ὁ ἱππικὸς ἀνδριὰς Λουδοβίκου τοῦ ΙΕ', συμπληρωθεὶς ὑπὸ τοῦ Πιγκάλλ καὶ καταστραφεὶς κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν (ἐν τῇ πλατείᾳ Πιγκάλλ) καὶ «Ὁ Ἔρως ξέων τὸ τόξον του εἰς τὸ ρόπαλον τοῦ Ἡρακλέους» (Λοῦβρον). Ἐπὶ πλέον ὁ Μπουσαρντὸν ἐξεπόνησε πολυπληθῆ σχεδιάσματα, ἐν οἷς καὶ τὰ περιλαμβανόμενα εἰς τὴν «Πραγματείαν περὶ ἀναγλύπτων λίθων» τοῦ Mariette καὶ τὴν «Συλλογὴν ἀρχαιοτήτων» τοῦ comte de Caylus. Ι. Μ. Π.

**Μπουσατλῆ, *Μαχμοὺτ πασᾶς***. Ἀλβανὸς φύλαρχος, ἀκμάσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Κατήγετο ἐκ καθολικῶν Ἀλβανῶν (Μιρδιτῶν), κατορθώσας δὲ νὰ φθάσῃ διὰ ῥαδιουργιῶν καὶ πιέσεων μέχρι τοῦ τίτλου τοῦ πασᾶ τῆς Σκόδρας, συνέλαβε τὸ σχέδιον νὰ κηρυχθῇ αὐτόνομος ἄρχων τῆς βορείου Ἀλβανίας, ἀπὸ Μαυροβουνίου μέχρι Πριστίνας. Κληθεὶς ὑπὸ τῆς Τουρκίας νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τῶν Ρώσων τῷ 1769 καὶ ἀρνηθεὶς προὐκάλεσε τὴν μῆνιν αὐτῆς, ἥτις ἀπέστειλεν ἐναντίον του στρατόν. Πολεμῶν ἐν Μαυροβουνίῳ ἐφονεύθη τῷ 1769. Τ. Ε. Ε.

**Μπουσὲ** (Boucher), ***Ἀλφρέδος***. Γάλλος γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἐμαθήτευσε κατ' ἀρχὰς μὲν εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ Ramus, μετὰ ταῦτα δὲ ἐν τῇ παρισινῇ σχολῇ τῶν Καλῶν Τεχνῶν. Δὶς τῷ ἀπενεμήθη (1876 καὶ 1878) ὑπὸ τοῦ τμήματος τῆς γλυπτικῆς τὸ μέγα βραβεῖον Ῥώμης, ἀλλὰ εἰς ἀμφοτέρας τὰς περιπτώσεις ἠκυρώθη ἡ ἀπονομὴ τούτου εἰς αὐτὸν ὑπὸ τῆς ὁλομελείας τῆς ἐν λόγῳ Ἀκαδημίας. Τῷ 1874 ἅμα τῇ πρώτῃ του ἐμφανίσει εἰς τὸ Παρισινὸν Σαλὸν ἐτιμήθη διὰ βραβείου. Ἐξειργάσθη πλαστικὰ συμπλέγματα, ἀγάλματα καὶ προτομάς. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται «Ἡ Εὔα μετὰ τὸ ἁμάρτημα», «Ἡ Ἀφροδίτη-Ἀστάρτη» (ἀγορασθὲν ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ κράτους), «Εἰς τὸν σκοπὸν» (ἀγορασθὲν καὶ τοῦτο ὑπὸ τοῦ γαλλικοῦ κράτους καὶ τοποθετηθὲν εἰς τὸν κῆπον τοῦ Λουξεμβούργου, ἐν Παρισίοις), «Ἡ κοιμωμένη γυναῖκα» (Μουσεῖον Λουξεμβούργου), «Ἡ Γῆ», «Προτομὴ τοῦ Καζιμὶρ Περιέ», «Εἰς τοὺς ἀγροὺς» κ.λ.π. Ι. Μ. Π.

— **Μπουσὲ** (Bouchet), ***Ἰούλιος-Φρειδερῖκος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων, σχεδιαστὴς καὶ χαράκτης (1799—1860). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Περσιέ, τῷ δὲ 1822 ἔτυχε τοῦ δευτέρου βραβείου Ῥώμης. Μεταβὰς εἰς Ἰταλίαν παρέμεινεν ἐκεῖσε ἐπὶ πενταετίαν, σπουδάζων καὶ ἀντιγράφων εἰς σχεδιάσματα τὰ λείψανα τῆς ἑλληνορρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους ὠνομάσθη τῷ 1829 ἐπιθεωρητὴς τῶν οἰκοδομικῶν ἔργων τῆς Βασιλικῆς βιβλιοθήκης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1842 ἐπεστάτησεν εἰς τὴν κατασκευὴν τοῦ τάφου τοῦ Ναπολέοντος. Ἀξιολογώτατα εἶναι τὰ σχέδια καὶ αἱ συγγραφαί, τὰς ὁποίας ἐξέδωκεν. Μεταξὺ τούτων μνημονεύομεν: «Ἀρχαῖαι συνθέσεις» (1831), «Ἀπόψεις καὶ σχεδιαγράμματα τῆς Villa Pia: «Θέρμαι τῆς Πομπηΐας» (1850), «Ἡ ἀγορὰ καὶ ἡ βασιλικὴ τοῦ Φάνο» (1853), «Ἀσκήσεις σχεδίου διὰ τοὺς ὑποψηφίους τῆς École centrale» (1854). Ἀναφερομεν καὶ σειρὰν ὑδατογραφιῶν τοῦ Μπουσέ, εἰκονιζουσῶν τὸ «Ἐσωτερικὸν τοῦ ἁγίου Μάρκου», «Τὸ Palazzo Vecchio τῆς Φλωρεντίας» κλπ. Ι.Μ.Π.

— **Μπουσὲ** (Bouchet), ***Ἰωάννης***. Γάλλος ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1476—1550). Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του γνωστότερα εἶναι: «L'Amoureux transy sans espoir» (1507), «Annales d'Aquitaine, faits et gestes en semaine des rois de France et d'Angleterre, pays de Naples et de Milan» (1535), «Le livre du Traverseur en son adolescence» (1537), «Les Épistres morales et familières du Traverseur» (1545), τὸ σπουδαιότερον πάντων κ. ἄ. Χ. Δ.

— **Μπουσὲ** (Boucher), ***Κλαύδιος***. Γάλλος ὑελουργὸς (1842—1913). Ἐκμαθὼν ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας τὴν ὑελουργικὴν τέχνην, κατώρθωσε ταχέως ν' ἀναδειχθῇ. Διορισθεὶς διευθυντὴς ὑελουργείου εἰς Βανδέαν, ἐπέτυχε κατόπιν μακροχρονίων μελετῶν τὴν τελειοποίησιν τῆς κατασκευῆς τῶν ὑαλίνων φιαλῶν, δεδομένου ὅτι ὁ τρόπος μὲ τὸν ὁποῖον ἐξετελεῖτο αὕτη μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, παρου-

Digitized by Google

σίαζε πολλοὺς κινδύνους διὰ τὴν ὑγείαν τῶν ἐργατῶν (ἀσθένειαι ἀναπνευστικοῦ συστήματος, ὀφθαλμῶν κλπ.). Διορισθεὶς ἀκολούθως διευθυντὴς τῶν ἐργοστασίων φιαλῶν τοῦ κονιάκ, κατώρθωσε διὰ τῆς κατασκευῆς μεγάλων καμίνων, περιλαμβανουσῶν 400.000 χιλιογρ. τετηκυίας ὑέλου, ν' αὐξήσῃ τὴν παραγωγὴν εἰς 50.000 φιάλας ἡμερησίως. Ἡ ἐπινόησίς του ἐπέφερεν ἀληθῆ ἐπανάστασιν εἰς τὴν βιομηχανίαν ταύτην, ὅλα δὲ τὰ μεγάλα ἐργοστάσια τῆς Γαλλίας καὶ τῆς ἀλλοδαπῆς ἔσπευσαν νὰ εἰσαγάγωσιν αὐτήν. Χ. Δ.

— **Μπουσὲ** (Boucher), ***Φραγκῖσκος.*** Γάλλος ζωγράφος καὶ χαράκτης ἐκ τῶν σημαντικωτέρων καλλιτεχνῶν τῶν χρόνων του, γεννηθεὶς τῷ 1703 ἐν Παρισίοις καὶ ἀποθανὼν τῷ 1770. Ἐξετέλει σχέδια καὶ χαρακτικὰ ἔργα ἔχων ὡς πρότυπον τὸν Βαττώ, τοῦ ὁποίου ἡ τέχνη ἐπέδρασε βαθέως ἐπὶ τῆς ἐξελίξεως τοῦ καλλιτεχνικοῦ ταλάντου τοῦ Μπουσέ. Τῷ 1723 ἐτιμήθη διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης. Διῆλθεν ἐν βραχεῖ χρόνῳ ἅπαντας τοὺς ἀκαδημαϊκοὺς βαθμούς, διεδέχθη τὸν Κάρολον βὰν Λόο ἐν τῇ ἰδιότητί του ὡς πρώτου ζωγράφου τοῦ βασιλέως καὶ ὠνομάσθη διευθυντὴς τῆς ταπητουργίας τοῦ Μπωβαί.

Ὁ Μπουσέ, παραλλήλως πρὸς τὸν Βαττώ, ἀντιπροσωπεύει ἐν τῇ τέχνῃ τὸ φαιδρόν, ἐπίπλαστον καὶ ἀμέριμνον πνεῦμα τῆς γαλλικῆς ἀριστοκρατίας τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ὀνομασθεὶς «ζωγράφος τῶν Χαρίτων». Ἡ τέχνη τοῦ Μπουσὲ εἶναι ἐπιφανειακή, προδίδει ὅμως θαυμασίαν διακοσμητικὴν ἱκανότητα, ἀπαράμιλλον δεξιότητα εἰς τὸ εὔστροφον σχέδιον, ἐξαιρετικῶς ἐκφραστικὴν δύναμιν εἰς τὴν ἀπόδοσιν της ἡδυπαθείας καὶ τῆς φαιδρότητος, ἡ ὁποία ἐνεψύχωνε τὴν γαλλικὴν κοινωνίαν τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ὁ Μπουσὲ διέπρεψε τόσον ὡς ζωγράφος, ὅσον καὶ ὡς διακοσμητὴς καὶ ὡς χαράκτης.

Μεταξὺ τῶν πρώτων ἄκρως ἐκτιμηθέντων ἔργων του καταλέγονται τὰ σχεδιάσματα, ἅτινα ἐξεπόνησε διὰ τὴν «Ἱστορίαν τῆς Γαλλίας» τοῦ Νταniέλ. Ὡς ζωγράφος καὶ διακοσμητὴς ἐξειργάσθη θέματα θρησκευτικά, μυθολογικά, εἰδυλλιακά. Εἰς τὰ τελευταῖα ταῦτα ἰδιαιτέρως ἐπετύγχανεν· αἱ ποιμενίδες του, αἱ ἀγροτικαί του σκηνογραφίαι, αἱ φαντασμαγορικαὶ τοπιογραφίαι του, οἱ Ἐρωτιδεῖς του, αἱ ρωπογραφίαι του, πλήρεις ὀνειρώδους χάριτος, ψευδεῖς κατὰ βάσιν, ἀλλὰ θεαματικώτατα ἐκπεφρασμέναι διὰ τέχνης καθ' ὑπερβολὴν ἁβρᾶς, μαρτυροῦν ὅτι ὁ καλλιτέχνης οὗτος, μακρὰν τοῦ νὰ στερῆται ἀληθοῦς καλλιτεχνικοῦ αἰσθητηρίου, κατεῖχεν ἐν ἄκρᾳ ἐντελείᾳ τὴν αἴσθησιν τοῦ πνεύματος τῆς ἐποχῆς του. Διὰ τοῦτο ἡ παραγωγή του ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς τέχνης εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον ἀντιπροσωπευτικῶν τῆς ἱστορικῆς περιόδου, εἰς τὴν ὁποίαν ἀναφέρεται. Οἱ τάπητες, οἵτινες ἐξετελέσθησαν ἐπὶ τῇ βάσει σχεδίων του, παραμένουσι μέχρι σήμερον περιζήτητοι. Ὁ Μπουσέ, τόσον ἕνεκα τῆς ἐπισήμου θέσεώς του, ὅσον καὶ ἕνεκα τῆς μεγίστης φήμης τοῦ ἔργου του, ἤσκησε μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς μετὰ ταῦτα ἐξελίξεως τῆς γαλλικῆς τέχνης. Διὰ τοῦτο συνετέλεσεν, ὅσον ἐλάχιστοι, εἰς τὴν κατάπτωσιν τῆς γαλλικῆς ζωγραφικῆς, τραπείσης εἰς ἀνουσίους καὶ συμβατικὰς μιμήσεις τῶν πρώτων ἐκείνων μελοδραματικῶν καὶ εἰδυλλιακῶν σκηνογραφιῶν, εἰς τὰς ὁποίας ὁ Μπουσὲ κατέχει περίβλεπτον θέσιν διδασκάλου. Ἡ κατάπτωσις αὕτη ὡδήγησε βραδύτερον εἰς τὴν μεγάλην ἐκείνην καλλιτεχνικὴν ἐπανάστασιν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπρωτοστάτησεν ὁ Δαυΐδ. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων τοῦ Μπουσὲ σημειοῦμεν ἐνταῦθα τὰ ἀκόλουθα: «Ἡ κοιμωμένη ποιμενὶς» (συλλογὴ Οὐῶλλας, Λονδῖνον), «Ἡ Μοῦσα τῆς Ζωγραφικῆς» (πινακοθήκη Γλασκώβης), «Ἡ ἄσκαυλος» (Μουσεῖον Λούβρου), «Ἡ Συλβία ἐλευθερουμένη ὑπὸ τοῦ Ἀμύντου» (Τράπεζα τῆς Γαλλίας, ἐν Παρισίοις), «Ἡ κυρία ντὲ Πομπαδοὺρ» (συλλογὴ Οὐῶλλας, Λονδῖνον), «Τὸ κλουβὶ» (μουσεῖον Λούβρου), «Ὁ βιολιστὴς» (Μουσεῖον Φραγκφούρτης), «Αἱ λουόμεναι» (μουσεῖον Λούβρου), «Ὁ Ρενὼ παρὰ τοὺς πόδας τῆς Ἀρμίδας» (μουσεῖον Λούβρου), «Ἡ Ἀφροδίτη καὶ ὁ Ἥφαιστος», «Τὸ πρόγευμα» κ.λ.π.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Michel,* «Boucher» (Paris 1886).— *Gustave Kahon,* «Boucher» (Paris). Ι. Μ. Π.

— **Μπουσὲ** ***ντὲ Κρεβκὲρ ντὲ Πὲρτ*** (Boucher de Crèvecœur de Perthes), ***Ἰάκωβος.*** Γάλλος φιλόλογος καὶ ἀρχαιολόγος (1788—1868). Κατ' ἀρχὰς εἶχεν ἐπιδοθῆ εἰς τὴν φιλολογίαν καὶ τὸ θέατρον, γράψας τραγῳδίας τινάς, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Φρεδεγόνδη» καὶ «Περσεὺς ὁ Μακεδών», καὶ τὴν κωμῳδίαν «Ὁ μέγας ἀνὴρ στὸ σπίτι του» (1828). Βραδύτερον ὅμως ἐπεδόθη εἰς παλαιοντολογικὰς καὶ ἀρχαιολογικὰς μελέτας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ του Πικαρδίᾳ καὶ κατήρτισε σημαντικὰς συλλογὰς ἰδίως κελτικῶν καὶ ρωμαϊκῶν ἀρχαιοτήτων, τὰς ὁποίας ἐδώρησεν εἰς τὸ γαλλικὸν κράτος καὶ αἵτινες ἀπετέλεσαν τὸν πυρῆνα τοῦ μεγάλου μουσείου τοῦ Ἁγίου Γερμανοῦ παρὰ τοὺς Παρισίους. Ὡς ἀρχαιολόγος ὁ Μπουσσὲ ἀπέκτησε μεγίστην φήμην καὶ προέβη εἰς σημαντικωτάτας ἀνακαλύψεις καὶ μελέτας, τὰ ἀποτελέσματα τῶν ὁποίων προεκάλεσαν ζωηρὰς συζητήσεις. Τὰς πρώτας ἐκ τῶν ἀνακαλύψεών του τούτων ἔκαμεν εἰς τὸ περίφημον λατομεῖον τοῦ Μουλὲν-Κινιόν, ὅπου ἀνεῦρε τῷ 1838 τοὺς πρώτους προϊστορικοὺς πελέκεις, οἵτινες, κατὰ τὰ συμπεράσματα τὰ ὁποῖα ἐξήγαγεν ἐκ τῆς μελέτης τοῦ ἐδάφους, ἀνήκουν εἰς ἐποχὴν προγενεστέραν τοῦ ἱστορικοῦ ἀνθρώπου. Τῷ 1863 ἀνεκάλυψεν ἐπίσης ἐν τῷ αὐτῷ λατομείῳ ἀνθρωπίνην σιαγόνα μετ' ὀδόντων, ἥτις φαίνεται ὅτι ἀνῆκεν εἰς φυλὴν διάφορον τῆς σημερινῆς ἀνθρωπίνης. Αἱ ἀνακαλύψεις του αὗται ἦλθον νὰ ἐπιβεβαιώσουν τὰς ἤδη ὑπ' αὐτοῦ ἐξενεχθείσας ἰδέας περὶ τῆς ὑπάρξεως τῆς λιθίνης ἐποχῆς καὶ τοῦ *προδιλουβίου ἀνθρώπου,* ἃς εἶχε διατυπώσει εἰς τὰ ἔργα του: «Περὶ τῆς δημιουργίας, δοκίμιον περὶ τῆς ἀρχῆς καὶ τῆς ἐξελίξεως τῶν ὄντων» (1839—1841), καὶ «Κελτικαὶ καὶ προδιλούβιαι ἀρχαιότητες» (1847). Ἀλλ' αἱ ἀνακαλύψεις του καὶ τὰ συμπεράσματά του προεκάλεσαν τὴν δυσπιστίαν πολλῶν ἐπιστημόνων, οἵτινες ἠναγκάσθησαν νὰ μεταβοῦν εἰς τὸν τόπον τῶν ἀνασκαφῶν καὶ νὰ προβοῦν εἰς ἐρεύνας, κατόπιν τῶν ὁποίων πολλοὶ ἤρχισαν νὰ παραδέχωνται τὰς ἰδέας τοῦ Μπουσσέ, ὁ ὁποῖος οὕτω δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ὁ ἱδρυτὴς τῆς προϊστορικῆς ἀρχαιολογίας. Ὁ Μπουσσὲ κατόπιν ἐταξίδευσεν εἰς πάσας τὰς χώρας τῆς Εὐρώπης, προβαίνων εἰς διαφόρους ἀρχαιολογικὰς ἀνασκαφὰς καὶ καταρτίζων πολυτίμους παλαιοντολογικὰς συλλογάς. Τὰς ἰδέας τοῦ Μπουσσὲ ἐπεβεβαίωσαν βραδύτερον ὅμοιαι ἀνακαλύψεις καὶ ἄλλων Γάλλων καὶ Ἄγγλων σοφῶν, καθὼς καὶ αἱ θεωρίαι τοῦ Δαρβίνου. Πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων ἔργων ἔγραψεν ἐπίσης: «Περὶ τοῦ προδιλουβίου ἀνθρώπου καὶ τῶν ἔργων του» (1860), «Νέγροι καὶ λευκοί.—Τίνων εἴμεθα τέκνα» (1861), «Τίποτε δὲν γεννᾶται, τίποτε δὲν ἀπόλλυται, τὸ σχῆμα μόνον εἶναι μεταβλητὸν» (1865), «Περὶ τῆς ἀνθρωπίνης σιαγόνος τοῦ Μουλὲν-Κινιὸν» (1865), «Περὶ τῶν λιθίνων ἐργαλείων» (1865), «Νέαι ἀνακαλύψεις» (1866). Ἔγραψεν ἐπίσης περιγραφὰς τῶν ταξιδίων του εἰς Ἰταλίαν, Ἑλλάδα, Ἱσπανίαν, Κωνσταντινούπολιν, Γερμανίαν, Ρωσίαν, κτλ. Ι. Γ. Κ.

— **Μπουσὲ**-***Λεκλὲρκ*** (Bouché-Leclercq), ***Λουδοβῖκος - Θεόδωρος - Αὔγουστος.*** Γάλλος φιλόλογος καὶ ἱστορικὸς (1842—1923). Διωρίσθη κατ' ἀρχὰς καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μομπελλιέ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1887 ἐν Παρισίοις. Τῷ 1898 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα, ἐν οἷς: «Οἱ ποντίφικες τῆς ἀρχαίας Ρώμης» (1871), «Περὶ τῆς ἀξίας τῶν ἀρχαίων γραμμάτων» (1874), «Ἰάκωβος Λεοπάρντι» (1874), «Ἱστορία τῆς μαντικῆς κατὰ τὴν ἀρχαιότητα» (1879—1881), «Ἐγχειρίδιον τῶν ρωμαϊκῶν θεσμῶν» (1886), «Οἱ πρόδρομοι τῆς ἑλληνικῆς ἀστρολογίας» (1897), «Ἡ ἑλληνικὴ ἀστρολογία» (1899), «Μαθήματα ἑλληνικῆς ἱστορίας» (1900), «Ἱστορία τῶν Λαγιδῶν» (1904), «Ἡ θρησκευτικὴ μισαλλοδοξία καὶ ἡ πολιτικὴ» (1911), «Ἱστορία τῶν Σελευκιδῶν (1913) κ. ἄ. Ἐπεστάτησεν εἰς τὴν γαλλικὴν μετάφρασιν τῆς «Ἑλληνικῆς ἱστορίας» τοῦ Κουρτίου (1880—1883), τῆς «Ἱστορίας τοῦ Ἑλληνισμοῦ» τοῦ Δρόϋζεν (1883—1885), τῆς «Ἱστορίας τῆς Ἑλλάδος ἐπὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων» τοῦ Χέρτσμπεργκ (1886—1890) κλπ. Χ. Δ.

**Μπουσικὼ** (Boucicaud), ***Ἰωάννης ντὲ Μαίγκρ.*** Γάλλος στρατάρχης (1364—1421). Ὁ πατήρ του, διοικητὴς τοῦ Τούρ, ἐπεμελήθη τῆς ἀνατροφῆς του, ὁ δὲ βασιλεὺς Κάρολος Ε' ἐτοποθέτησεν αὐτὸν πλησίον τοῦ διαδόχου τοῦ θρόνου, οὗτινος ἐγένετο συμμαθητής. Τῷ 1396 ὁ βασιλεὺς τῆς Οὐγγαρίας Σιγισμόνδος, πιεζόμενος ὑπὸ τῶν στρατῶν τοῦ Βαγιαζήτ, ἐπεκαλέσθη τὴν συνδρομὴν τῆς Γαλλίας. Ὁ βασιλικὸς πρίγκιψ Ἰωάννης ντὲ Νεβὲρ ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς σταυροφορίας, ἧς μετέσχεν ὁ Μπουσικὼ ὡς ἀρχηγὸς ἱπποτικῶν ταγμάτων. Μετὰ τὴν καταστρεπτικὴν μάχην τῆς Νικοπόλεως, ἐπηκολούθησε τὴν ἐπομένην ἡ σφαγὴ τῶν αἰχμαλώτων. Ὁ Βαγιαζὴτ ἐφείσθη μόνον τῶν ἐκ βασιλικῆς καταγωγῆς, ὅπως τοὺς ἀνταλλάξῃ δι' ἁδρῶν λύτρων. Ὁ πρίγκιψ ντὲ Νεβὲρ ἔπεισε τὸν σουλτᾶνον ὅτι ὁ Μπουσικὼ ἦτο ἀδελφός του, οὕτω δ' ἐσώθη, καθ' ἣν στιγμὴν ἐπρόκειτο ν' ἀποκεφαλισθῇ, ἐλευθερωθεὶς βραδύτερον μετὰ τῶν λοιπῶν, διὰ τῆς καταβολῆς 1.150.000 φράγκων. Ὁ Βαγιαζὴτ ἐκτελῶν τὸ σχέδιόν του ἐβάδισε κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἐπολιόρκησεν αὐτήν. Ὁ αὐτοκράτωρ Μανουὴλ Παλαιολόγος ἐπεκαλέσθη τὴν ἀρωγὴν τοῦ βασιλέως τῆς Γαλλίας Καρόλου ΣΤ', ὅστις ἀπέστειλε πρὸς βοήθειαν τὸν Μπουσικὼ μετά τινων σκαφῶν. Οὗτος ἔφθασεν εἰς Βυζάντιον καθ' ἣν στιγμὴν οἱ Τοῦρκοι κατελάμβανον τὸν Γαλατᾶν. Ἐπιτεθεὶς κατ' αὐτῶν τοὺς ἐξεδίωξεν ἐκεῖθεν, οὕτω δ' ἐσώθη ἐκ τοῦ ἀμέσου κινδύνου τὸ Βυζάντιον. Οἱ Τοῦρκοι, οἵτινες εἶχον ἀπομακρυνθῆ τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἐπέστρεψαν πολυαριθμότεροι καὶ ἐπολιόρκησαν αὐτὴν (1400). Ὁ Μπουσικὼ βλέπων ὅτι δὲν ἠδύνατο νὰ σώσῃ τὴν πόλιν διὰ τῶν ἀσθενῶν του δυνάμεων, τὰς ὁποίας δὲν ἠδύνατο καὶ νὰ διαθρέψῃ, ἔπεισε τὸν Μανουὴλ Παλαιολόγον ν' ἀκολουθήσῃ αὐτὸν εἰς Παρισίους, ὅπως προσωπικῶς ζητήσῃ ἄνδρας καὶ χρήματα παρὰ τῶν ἡγεμόνων τῆς Δύσεως καὶ παρασκευάσῃ σταυροφορίαν. Ὅτε ὁ βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας Ἐρρῖκος Δ' ἀπεβιβάσθη εἰς τὴν Γαλλίαν, ὁ Μπουσικὼ ἠγωνίσθη γενναίως ὑπὲρ τῆς πατρίδος του, αἰχμαλωτισθεὶς ὅμως κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ἀζινκοὺρ (1415), μετηνέχθη εἰς Λονδῖνον, ὅπου καὶ ἀπέθανεν. Θ. Ξ.

***Φραγκ. Μπουσέ:*** *Ὁ Ἀπόλλων στεφανώνων τὰς Μούσας.* [Μουσεῖον τῆς Tours.]

**Μπούσιλιν,** ***Γεώργιος.*** Βούλγαρος λόγιος τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἐσπούδασε, μετὰ πολλῶν ἄλλων Βουλγάρων, εἰς τὰ ἑλληνικὰ σχολεῖα τῆς Ἄνδρου καὶ τῶν Ἀθηνῶν καὶ ἐπεράτωσε τὰς σπουδάς του εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας. Συνέγραψε βουλγαρικὸν ἀλφαβητάριον (1844), ὅπερ ἐκδοθὲν κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἐθνικῆς ἀφυπνίσεως τῶν Βουλγάρων προσήνεγκε σημαντικὴν ὑπηρεσίαν εἰς τὴν διαμόρφωσιν τῆς νεοβουλγαρικῆς γραφομένης γλώσσης. Τ. Ε.

**Μπουσινὲσκ** (Boussinesq), ***Βαλεντῖνος-Ἰωσήφ.*** Γάλλος μαθηματικὸς (βλ. λ. *Μπουσσινέσκ*).

**Μπούσιος,** ***Γεώργιος.*** Ἕλλην πολιτικός, καταγόμενος ἐξ ἀρχοντικῆς οἰκογενείας τῶν Γρεβενῶν, ἔνθα ἐγεννήθη τῷ 1875. Ἀφοῦ διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα εἰς τὰ σχολεῖα τῆς πατρίδος

Digitized by Google

του, ἐνεγράφη εἰς τὴν ἐμπορικὴν σχολὴν τῆς Χάλκης. Ἀποφοιτήσας ταύτης, ἐπανῆλθεν εἰς τὴν γενέτειραν καὶ ἐπεδόθη εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ πατρός του. Ἐντὸς βραχέος χρονικοῦ διαστήματος οἱ συμπατριῶταί του εὗρον ἐν τῷ προσώπῳ αὐτοῦ τὸν πρόθυμον ἐνώπιον τῶν τουρκικῶν δικαστικῶν καὶ διοικητικῶν ἀρχῶν προστάτην. Γενόμενος πρωτοπόρος τῆς ἰδέας τοῦ Μακεδονικοῦ ἀγῶνος ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ του μετὰ τοῦ Γρεβενῶν Αἰμιλιανοῦ καὶ τοῦ Νικολ. Κουσσίδου, ἐρρίφθη μετ' οὐ πολὺ εἰς τὰς φυλακὰς τοῦ Μοναστηρίου, σωθεὶς ἐκ βεβαίου θανάτου διὰ τῆς μεσολαβήσεως ἰσχυρῶν προστατῶν. Κατὰ τὰς πρώτας μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τοῦ τουρκικοῦ Συντάγματος (1908) ἐκλογὰς ὁ Μπούσιος ἐξελέγη μετὰ τοῦ Κ. Δρίζη ἀντιπρόσωπος τοῦ σαντζακίου Σερβίων, ἀναδειχθεὶς δὲ ἐν τῇ βουλῇ ἀνέλαβε τὴν ἡγεσίαν τῆς ἑλληνικῆς ὁμάδος. Μέλος τῆς «Ὀργανώσεως Κωνσταντινουπόλεως», ἦτο ὑπέρμαχος ἑνὸς γενικωτέρου συνασπισμοῦ τῶν ὑπὸ τὴν Τουρκίαν ἀθλίως διούντων ἐθνῶν. Ἀλλ' ὅταν αἱ ἐπαγγελίαι τῶν Νεοτούρκων ἀπεδείχθησαν ψευδεῖς, ἤρξατο σφοδρᾶς ἐναντίον των ἀντιπολιτεύσεως, ἣν ἤσκησεν ἐπὶ τῇ βάσει συγκεκριμένου προγράμματος, οὗ αἱ θεμελιώδεις ἀρχαὶ δύνανται νὰ συνοψισθῶσιν εἰς τὰ ἑξῆς: Κατάργησις τῆς ἐννοίας κυριάρχου καὶ κυριαρχουμένων· συμμετοχὴ ὅλων τῶν ἐθνοτήτων εἰς τὰς δημοσίας ὑπηρεσίας· πλήρης σεβασμὸς τῆς γλώσσης καὶ τῆς ἐθνικῆς αὐτονομίας πάντων, ἐξαιρέσει τῆς τοπικῆς καὶ γεωγραφικῆς. Τὸ πρόγραμμα τοῦτο ἠσπάζοντο πᾶσαι αἱ φυλαὶ καὶ ἐθνικότητες τῆς Ὀθωμανικῆς αὐτοκρατορίας, ἐν πολλοῖς δὲ καὶ οἱ Τοῦρκοι (οἱ περὶ τὸ κόμμα τῆς «*Ἐλευθερίας καὶ Συνεννοήσεως*» ὑπὸ τοὺς Σαδδὶκ βέην καὶ Ριζᾶ Τεφφήκ).

Ἡ εὐρύτης τοῦ ἐκτεθέντος προγράμματος καὶ ἡ γενικὴ ἐπιδοκιμασία, μεθ' ἧς ἐγένετο τοῦτο δεκτόν, ὤξυνον μὲν τὴν γλῶσσαν τοῦ Μπουσίου ἐν τῇ βουλῇ κατὰ τῶν Νεοτούρκων, ὑπηγόρευον δὲ καὶ τὴν τηρητέαν ἐκ μέρους του στάσιν ἔναντι τῶν ἑκάστοτε προκυπτόντων ἐθνικῶν ζητημάτων, ὥστε καὶ ἡ θέσις τῆς κοινοβουλευτικῆς ὁμάδος καὶ ἡ θέσις τῶν Ἑλλήνων ἐν γένει νὰ μὴ δυσχεραίνηται εἰς τὰς σχέσεις των μετὰ τῶν Τούρκων. Ἀλλὰ κατὰ τὴν συζήτησιν ἐπὶ τοῦ Κρητικοῦ ζητήματος ὁ Μπούσιος εὑρέθη πρὸ σοβαρᾶς ἐξάψεως. Τὴν ἀντεμετώπισεν ἐν τούτοις θαρραλέως, κηρύξας, πρὸς κατάπληξιν πάντων, ὅτι Κρητικὸν ζήτημα δὲν θὰ ὑφίστατο, ἐὰν οἱ Νεότουρκοι ἐφήρμοζον ἰσοπολιτείαν καὶ ὅτι ἂν προέβαινον εἰς εὐρείας μεταρρυθμίσεις, ἐγγυωμένας τὴν ἐλευθέραν διαβίωσιν τῶν ἐν τῷ τουρκικῷ κράτει λαῶν, «*ἀκόμη καὶ αὐτὴ ἡ ἐλευθέρα Ἑλλάς, εἶπεν, οἱ ὀλίγοι, θὰ ἐζήτει νὰ ἑνωθῇ μεθ' ἡμῶν, τῶν πολλῶν*».

*Γεώργιος Μπούσιος.*

Μετὰ τοὺς Βαλκανικοὺς πολέμους, ὁ Μπούσιος, ἐν ἀναμονῇ τῆς στιγμῆς, καθ' ἣν θὰ ἐκαλοῦντο καὶ αἱ Νέαι χῶραι νὰ μετάσχουν τοῦ ἐνεργοῦ πολιτικοῦ βίου τοῦ ἑλληνικοῦ κράτους, ἔσπευσεν ὅπως συνδράμῃ τὸν ἀγῶνα τῶν Ἠπειρωτῶν. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τῆς 31 Μαΐου 1915 κατηρτίσθησαν ὑπὸ τοῦ Ἴωνος Δραγούμη καὶ αὐτοῦ ἐν Μακεδονίᾳ ἀνεξάρτητοι συνδυασμοί, ἐν τῇ πεποιθήσει ὅτι αἱ Νέαι χῶραι εἶχον ἰδιαίτερα ἄλυτα ἀκόμη ζητήματα. Ἡ ὁμὰς θὰ ἐτήρει ἐν τῇ βουλῇ ἀνεξάρτητον στάσιν, ἔχουσα ὡς ὄργανον τὴν ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν Δραγούμη-Μπουσίου-Καραπάνου «Πολιτικὴν Ἐπιθεώρησιν». Ἐκ τῶν ὑποψηφίων τῆς ὁμάδος ἐπέτυχον κατὰ τὰς ἐκλογὰς ὀκτὼ βουλευταί, ἐν οἷς ὁ Μπούσιος καὶ ὁ Δραγούμης, ὅστις καὶ ἀνέλαβε τὴν ἡγεσίαν αὐτῆς. Μετὰ τὸν φόνον τοῦ Δραγούμη (1920) ἡγήθη ταύτης ὁ Μπούσιος. Τῷ 1922 ὁ Μπούσιος ἔλαβε τὴν ἐντολὴν νὰ σχηματίσῃ κυβέρνησιν, ἀλλ' εὑρεθεὶς πρὸ δυσχερειῶν κατέθηκε ταύτην. Τὸν Αὔγουστον τοῦ 1922 (μέχρι Σεπτεμβρίου ἰδ. ἔ.) ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν ἐπὶ τῆς κυβερνήσεως Τριανταφυλλάκου. Ἀπέθανε τῷ 1929, τῆς κηδείας του γενομένης δημοσίᾳ δαπάνῃ. Ι. Γ. ΑΝΤΩΝΙΑΔΗΣ

**Μπουσίρ** (ἀγγλ. Bushir) ἢ ***Μπεντὲρ-Μπουσίρ*** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Περσίας ἐπὶ τοῦ Περσικοῦ κόλπου, εἰς ἀπόστασιν 330 χλμ. ΝΑ. τῆς Βασόρας ἐπὶ μικρᾶς ἀμμώδους χερσονήσου. Ἡ γραφὴ *Μπού-σεχίρ* ἢ *Ἄμπου σεχίρ* εἶναι ἐπινόημα τῶν νεωτέρων Περσῶν καὶ σημαίνει «*ὁ πατὴρ τῶν πόλεων*» ἢ σύμπτυξις τοῦ *Μπόχτ-Ἀρντασίρ*, ἤτοι τοῦ ὀνόματος ὅπερ ἐδόθη εἰς τὴν πόλιν ὑπὸ τοῦ πρώτου βασιλέως τῆς δυναστείας τῶν Σασανιδῶν.

Κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος μ. Χ. τὸ Μπουσὶρ ἦτο ἀσήμαντον χωρίον ἁλιέων. Ἔκτοτε ὅμως ἀπέκτησε σπουδαιότητα, διότι ὁ σάχης Ναδὶρ ἐξέλεξεν αὐτὸ ὡς τὸν νότιον λιμένα τῆς Περσίας. Τῷ 1759 μετεφέρθη ἐκεῖ τὸ τέως ἐν Μπεντὲρ-Ἀμπὰς ἐμπορεῖον τῆς ἀγγλικῆς ἑταιρείας τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν. Σήμερον ἔχει 25.000, ἐξ ὧν ἱκανοὶ Ἀρμένιοι, κατοίκους, διεξάγει δὲ σημαντικὸν ἐμπόριον μὲ τὰς Ἰνδίας, τὴν Ἰάβαν καὶ τὴν Ἀραβίαν. Εἶναι σπουδαῖος ἀτμοπλοϊκός, τηλεγραφικὸς καὶ ναυτικὸς σταθμὸς τῆς Ἀγγλίας ἐπὶ τῆς πρὸς τὰς Ἰνδίας ὁδοῦ. Τὸ κλίμα εἶναι θερμότατον καὶ ἀνθυγιεινόν. Ν. Μ.

**Μπουσιττὲ** (Bouchitté), ***Λουδοβῖκος-Φιρμῖνος-Ἑρβέ***. Γάλλος καθηγητὴς καὶ φιλόλογος (1795—1866). Ἔγραψε πλεῖστα συγγράμματα φιλοσοφίας, ἀνήκει δὲ γενικῶς εἰς τὴν σχολὴν ἥτις πρεσβεύει τὴν ἐπικράτησιν τοῦ πνεύματος ἐπὶ τῆς ὕλης. Ὑπερασπίζει τὰς θρησκευτικὰς ἀληθείας, ἐργασθεὶς κατὰ προτίμησιν ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῶν διατριβῶν περὶ τῆς ὑπάρξεως τοῦ Θεοῦ. Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι «*Ὁ χριστιανικὸς ὀρθολογισμὸς εἰς τὸ τέλος τοῦ ΙΑ' αἰῶνος*» (1842), ὅπου μεταφράζει καὶ σχολιάζει τὰς «*Θέσεις*» τοῦ ἁγίου Ἀνσέλμου ἐν συγκρίσει πρὸς ἄλλους φιλοσόφους. Ἔγραψεν ἐπίσης πολλὰ ὑπομνήματα, δημοσιευθέντα εἰς τὴν συλλογὴν τῶν ξένων σοφῶν τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἠθικῶν ἐπιστημῶν, ὡς: «*Ὑπόμνημα ἐπὶ τῆς ἐννοίας τοῦ Θεοῦ ἐν σχέσει πρὸς τὴν φαντασίαν καὶ τὴν αἰσθητικότητα*», «*Περὶ τῆς διατηρήσεως τῆς προσωπικότητος μετὰ θάνατον*» κ.ἄ. Δεικνύει πολλάκις ἀνεξαρτησίαν γνώμης, ἀλλ' ἔλλειψιν μεθόδου καὶ ἀκριβείας. Ε. Λ.

**Μπουσκ** (Busk) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλικίας, ἀνήκουσα ἀπὸ τοῦ 1919 εἰς τὴν Πολωνίαν. Κάτ. (1910) 7.500. Κεῖται εἰς τὸ σημεῖον ὅπου ἑνοῦνται οἱ ποταμοὶ Bug καὶ Peltew, καλεῖται δὲ καὶ «*Βενετία τῆς Γαλικίας*», λόγῳ τῶν πολλῶν γεφυρῶν της.

**Μπούσκα** (Busca) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κούνεο τοῦ Πεδεμοντίου. Κάτ. 10.000. Ἔχει ὡραίους κήπους καὶ ἐρείπια ρωμαϊκῶν μνημείων, καθὼς καὶ βιομηχανίαν δερμάτων καὶ ὀνομαστῶν οἴνων. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν πλούσια λατομεῖα ἀλαβάστρου καὶ μαρμάρου. Μ. Δ. Β.

**Μπουσκά, Λὲ**—(Le Bouscat) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τῆς Γιρόνδης, ἀπέχουσα 2 μόλις χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπορντώ. Διεξάγει ἐμπόριον οἴνων καὶ κονσερβῶν καὶ ἔχει ὑδροθεραπευτήρια καὶ παράκτιον σταθμὸν ραδιοτηλεγραφίας. Κάτ. 14.570. Χ. Δ.

**Μπουσκὲ** (Bousquet). Ἀξιωματικὸς τοῦ γαλλικοῦ πεζικοῦ, ἐλθὼν εἰς Ἑλλάδα τῷ 1911 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου ὡς ἐπιτελάρχης τῆς ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ἐϋντοῦ γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς. Τὰς ἀρχὰς τοῦ 1912 ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἑλληνικοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν Βαλκανικῶν πολέμων 1912—1913 παρέμεινεν ἐν Ἑλλάδι, ἀλλὰ μὴ ἀναμιγνυόμενος τὸ παράπαν εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ ἐμπολέμου στρατοῦ, οὐδὲ κἂν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ ἐν Ἀθήναις ἐμπέδου γενικοῦ ἐπιτελείου. Τῷ 1914 διετέλεσεν ἐπιτελάρχης τοῦ 1ου σώματος στρατοῦ, τοῦ χαρακτηρισθέντος τότε ὡς προτύπου. Τῷ 1917, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, διετέλεσεν ἐπ' ἐλάχιστον χρόνον ἀρχηγὸς τῆς ἐν Ἑλλάδι γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς. Ν. Θ. Κ.

**Μπουσκέτο**, ἢ ***Μπουσκέττο*** (Buscheto, Buschetto). Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, ἀκμάσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΑ' αἰῶνος. Περὶ τῆς καταγωγῆς καὶ τοῦ βίου του δὲν ὑπάρχουν ἀκριβεῖς πληροφορίαι. Αἱ περὶ αὐτοῦ πληροφορίαι προέρχονται κυρίως ἐξ ἐπιγραφῆς, ἡ ὁποία ἦτο τοποθετημένη ἄλλοτε ἐπὶ τοῦ τάφου τὸν ὁποῖον τῷ εἶχεν ἀνεγείρει ἡ πόλις τῆς Πίζης καὶ τὴν ὁποίαν μετέφερον κατόπιν οἱ κάτοικοι καὶ ἐτοποθέτησαν ἐπὶ τῆς προσόψεως τῆς μητροπόλεως τῆς πόλεως ταύτης. Κατὰ τὴν ἐν λόγῳ ἐπιγραφὴν ὠνομάζετο Busketus καὶ ἦτο εἷς τῶν ἀρχιτεκτόνων τοῦ ναοῦ, ἐργασθεὶς ἐν αὐτῷ ἀπὸ τοῦ 1063 μέχρι τοῦ 1080. Ἡ αὐτὴ ἐπιγραφὴ κάμνει ὑπαινιγμὸν καὶ διὰ τὰς πολλὰς γνώσεις αὐτοῦ εἰς τὴν μηχανικὴν καὶ διὰ τὴν μεταφορὰν ἐκ τοῦ λιμένος τῆς Παλέρμου πολυαρίθμων κιονοκράνων ἐκ μαρμάρου, πορφυρίτου ἢ γρανίτου, καθὼς καὶ γεισωμάτων καὶ ἄλλου ὑλικοῦ, τὸ ὁποῖον ἐχρησιμοποιήσεν εἰς τὴν κατασκευὴν τῆς μητροπόλεως καὶ εἰς τὴν καλλιτεχνικὴν συναρμολόγησιν τοῦ ὁποίου διεκρίθη ἰδιαιτέρως. Κατὰ τοὺς Βαζάρι καὶ Ντ' Ἀζενκοὺρ ἡ ἐπὶ τοῦ τάφου ἐπιγραφὴ ἀνέφερεν ὅτι ὁ Μπουσκέτο ἦτο «*Ἕλλην ἐκ Δουλιχίου*» πρᾶγμα ὅπερ ἀποδεικνύεται, κατὰ τοὺς ἰδίους, καὶ ἀπὸ ἔγγραφον τοῦ 1064, εὑρισκόμενον ἄλλοτε εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Βατικανοῦ καὶ ἀπολεσθέν, συμφώνως πρὸς τὸ ὁποῖον ἡ δημοκρατία τῆς Πίζης ἐζήτει διὰ πρεσβείας ἀπὸ τὸν αὐτοκράτορα τῆς Κωνσταντινουπόλεως τὴν ἐκεῖ ἀποστολήν του. Ἐξ ἑτέρας ἐπιγραφῆς, τοποθετημένης ἐπὶ τοῦ ὀβελίσκου τοῦ Βατικανοῦ, πληροφορούμεθα ὅτι οὗτος ἀνυψώθη ὑπὸ τοῦ Μπουσκέτο, πρᾶγμα ὅπερ ἀποδεικνύει ὅτι ἔζησε καὶ ἐν Ρώμῃ, ἔνθα ἐπηρεάσθη μεγάλως ἐκ τῶν κλασσικῶν ἔργων ἐν τῇ συλλήψει καὶ τῇ ἐκτελέσει τοῦ σχεδίου τῆς μητροπόλεως τῆς Πίζης, ἥτις θεωρεῖται ἐκ τῶν ὡραιοτέρων μνημείων τῆς ἰταλικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Μ. Δ. Β.

**Μπουσλάγεφ, *Θεόδωρος***. Ρῶσος φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1818 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1896. Ἐσπούδασε φιλολογίαν καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Μόσχας. Τὰ κυριώτερα τῶν συγγραμμάτων του εἶναι: «*Ἐπίδρασις τοῦ χριστιανισμοῦ ἐπὶ τῆς ρωσικῆς γλώσσης*», «*Ἱστορικὴ γραμματικὴ τῆς ρωσικῆς γλώσσης*», «*Ἱστορικαὶ σκιαγραφίαι τῆς φιλολογίας καὶ τῶν τεχνῶν*», «*Ἡ ρωσικὴ ποίησις κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα*», «*Ἰδανικοὶ χαρακτῆρες τῶν γυναικῶν τῆς ἀρχαίας Ρωσίας*» κτλ. Θ. Β.

**Μπούσμαν** (Bushman). Λαὸς τῆς Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Βοσχιμᾶνοι*).

**Μπόϋς-Μπάλλοτ** (Buys-Ballot), ***Χριστόφορος***. Ὁλλανδὸς μετεωρολόγος, γεννηθεὶς ἐν Kloetingen τῷ 1817 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1890. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἀπὸ τοῦ 1847 εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Οὐτρέχτης καὶ ἀπὸ τοῦ 1854—1887 διευθυντὴς τοῦ μετεωρολογικοῦ ἰνστιτούτου τῆς ἰδίας πόλεως. Ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος ἐφαρμόσας τὸ σύστημα τῶν προειδοποιήσεων ἐπὶ τῶν θυελλῶν, ἐπινοήσας τὸ *ἀεροκλινοσκόπιον*. Διὰ τῶν ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν αὐτοῦ συνετέλεσε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἀνάπτυξιν καὶ ἐξέλιξιν τῆς μετεωρολογίας. Εἰς αὐτὸν δὲ ὀφείλεται ἡ διατύπωσις τοῦ ἀπ' αὐτοῦ κληθέντος «νόμου τοῦ Μπόϋς-Μπάλλοτ» (βλ.λ.). Μεταξὺ τῶν πολλῶν ἐργασιῶν, ἃς ἐδημοσίευσε γαλλιστὶ καὶ ἀγγλιστί, καταλέγονται καὶ αἱ: «Changements périodiques de la température» (1847), «Eenige regelen van weerveranderung in Nederland» (1860), «Suggestions on a uniform systeme of meteorological observations» (1872—1879). Θ. Θ. Φ.

**—Μπόϋς-Μπάλλοτ, *νόμος τοῦ*—.** Διετυπώθη ὑπὸ τοῦ Ὁλλανδοῦ μετεωρολόγου *Μπόϋς-Μπάλλοτ* τῷ 1857 καὶ ἐκφράζει τὴν σχέσιν, ἥτις ὑφίσταται μεταξὺ τῆς διευθύνσεως τοῦ ἀνέμου καὶ τῶν ἰσοβαρῶν καμπύλων. Κατὰ τὸν νόμον τοῦτον: «Ἐὰν ἐν τῷ βορείῳ ἡμισφαιρίῳ παρατηρητής τις τοποθετηθῇ κατὰ τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἀνέμου, ὥστε νὰ δέχηται αὐτὸν κατὰ πρόσωπον, τότε θὰ ἔχῃ τὰς χαμηλὰς ἀτμοσφαιρικὰς πιέσεις δεξιὰ αὐτοῦ καὶ ὀλίγον ὀπίσθεν, καὶ τὰς ὑψηλὰς ἀριστερὰ καὶ ὀλίγον ἔμπροσθεν. Ἐν τῷ νοτίῳ ἡμισφαιρίῳ παρατηρεῖται τὸ ἀντίθετον».

Διὰ τοῦ νόμου τούτου καὶ τῆς παρατηρήσεως τῶν κατωτέρων νεφῶν εἶναι δυνατὸν νὰ προσδιορισθῇ κατὰ ποίαν διεύθυνσιν εὑρίσκεται τὸ κέντρον μιᾶς ὑφέσεως· ἀρκεῖ πρὸς τοῦτο, ἐὰν εὑρισκώμεθα εἰς τὸ βόρειον ἡμισφαίριον, νὰ στραφῶμεν πρὸς τὸ μέρος ὅπόθεν κινοῦνται τὰ νέφη ταῦτα καὶ νὰ τείνωμεν τὴν δεξιὰν χεῖρα· ἡ διεύθυνσις ταύτης εἶναι καὶ ἡ διεύθυνσις τοῦ κέντρου τῆς ὑφέσεως. Ὁ νόμος οὗτος δὲν ἐφαρμόζεται εἰς τοὺς θυσάνους. Ἐὰν τῇ βοηθείᾳ τούτων θελήσωμεν νὰ ἀνεύρωμεν τὴν διεύθυνσιν τοῦ κέντρου μιᾶς ὑφέσεως, στρεφόμεθα πρὸς τὸ σημεῖον τοῦ οὐρανοῦ ἐξ οὗ διευθύνονται οὗτοι, ὅτε τὸ ζητούμενον κέντρον εὑρίσκεται ὀλίγον δεξιώτερον τῆς διευθύνσεως, πρὸς ἣν παρατηροῦμεν. Ὁ νόμος τοῦ Μπόϋς-Μπάλλοτ διατυποῦται ὑπό τινων ὡς ἑξῆς: «Ἐν τῷ βορείῳ ἡμισφαιρίῳ οἱ ἄνεμοι βαίνουσιν ἀντιθέτως τῶν δεικτῶν τοῦ ὡρολογίου πέριξ κέντρου χαμηλῶν πιέσεων καὶ κατὰ τὴν φορὰν τῶν δεικτῶν τοῦ ὡρολογίου πέριξ ὑψηλῶν πιέσεων. Τὸ ἀντίθετον δὲ παρατηρεῖται ἐν τῷ νοτίῳ ἡμισφαιρίῳ». Θ. Θ. Φ.

**Μπούσμπεκ** (Busbecq), ***Ἀγκέριους*** Ghislain. Φλαμανδὸς διπλωμάτης καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1522 ἐν Comines τῆς Φλάνδρας. Ἐσπούδασεν εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς πατρίδος του ὡς καὶ τῆς Γαλλίας καὶ Ἰταλίας καὶ κατόπιν συνώδευσε τῷ 1554 μίαν πρεσβείαν τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Γερμανίας Φερδινάνδου εἰς Ἀγγλίαν. Μετὰ ἓν ἔτος ἀπεστάλη εἰς Τουρκίαν, ὅπως διαπραγματευθῇ περὶ εἰρήνης μετὰ τοῦ σουλτάνου Σουλεϊμάν, εὑρισκομένου ἐν Ἀμασείᾳ. Τὸ αὐτὸ ἔτος διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Κωνσταντινουπόλει. Τὸ μέχρις Ἀμασείας ταξίδιον καὶ τὴν ἐν Τουρκίᾳ διαμονήν του ἐν γένει ἐχρησιμοποιήσε διʼ ἀρχαιολογικὰς μελέτας, συλλέξας ἑλληνικὰς ἐπιγραφὰς καὶ μελετήσας πρῶτος τὸ ἐν Ἀγκύρᾳ «Monumentum Ancyranum», ἐφ' οὗ εἶναι γεγραμμένη ἑλληνιστὶ καὶ λατινιστὶ ἡ λεγομένη διαθήκη τοῦ Αὐγούστου. Ἐπίσης ἠγόρασε διάφορα ἑλληνικὰ χειρόγραφα, τὰ ὁποῖα ἐδώρησεν εἰς τὴν βιβλιοθήκην τῆς Βιέννης. Ἀνακληθεὶς τῷ 1562 διωρίσθη ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Φερδινάνδου παιδαγωγὸς τῶν ἐγγόνων του. Βραδύτερον ἀπεστάλη εἰς Γαλλίαν ὡς διαχειριστὴς οἰκογενειακῶν τινων κτημάτων τῆς αὐτοκρατορικῆς οἰκογενείας. Τῷ 1592, προσβληθεὶς καθ' ὁδὸν ἐν Φλάνδρᾳ ὑπὸ καθολικῶν ἀντιπολιτευομένων, ἀπέθανεν ἐκ φόβου.

Τὸ σπουδαιότερον τῶν λατινικῶν συγγραμμάτων του εἶναι τὸ ὁδοιπορικὸν αὐτοῦ: «Itinera Constantinopolitanum et Amasianum, et de re militari contra Turcos instituenda consilium» (Ἀμβέρσα 1582) καὶ τὸ «Legationis Turcicae epistolae qua-

Digitized by Google

tuor» (Παρίσιοι 1589), τέσσαρες ἐπιστολαὶ εἰς τὰς ὁποίας πρῶτος ἀπεκάλυψε τὰ ἀσθενῆ σημεῖα τῆς τότε Τουρκίας. Τὰ ἅπαντα αὐτοῦ ἐξεδόθησαν ἐν Λουγδούνῳ (Leyden) τῷ 1633 καὶ ἐν Βασιλείᾳ τῷ 1740. Ν. Μ

**Μπούς-ντὺ-Ρὸν** (Bouches-du-Rhône=ἐκβολαὶ τοῦ Ροδανοῦ) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Γαλλίας περιλαμβάνων τὴν κάτω Προβηγκίαν, περὶ τὸ δέλτα τῆς ἐκβολῆς τοῦ Ροδανοῦ. Ἔχει ἔκτασιν 5.248 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 929.550 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Μασσαλίαν*, ὑποδιαιρεῖται δὲ εἰς τρεῖς ἐπαρχίας (Μασσαλίας, Αἶξ καὶ Ἄρλ). Τὸ Β. καὶ Α. τμῆμά του καλύπτεται ὑπὸ λόφων καὶ βουνῶν, τὸ δὲ Δ. καὶ τὸ Ν. ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Μεσογείου εἶναι πεδινὸν καὶ βαλτῶδες, καλυπτόμενον ὑπὸ λιμνοθαλασσῶν καὶ προσχώσεων τοῦ Ροδανοῦ. Τὸ κλῖμα εἶναι θερμὸν καὶ ξηρόν, εὐνοοῦν τὴν ἀνάπτυξιν τῶν ἑσπεριδοειδῶν, τῆς ἐλαίας καὶ τῶν ὀπωροφόρων δένδρων τῆς Μεσογειακῆς λεκάνης, ὡς καὶ τῶν πρωΐμων καλλιεργειῶν. Ἡ κτηνοτροφία περιλαμβάνει αἰγοπρόβατα καὶ ἐκλεκτοὺς ταύρους, ἡ δὲ βιομηχανία καὶ τὸ ἐμπόριον εὑρίσκονται εἰς μεγάλην ἀκμὴν μὲ κέντρον τὴν Μασσαλίαν. Χ. Δ.

**Μπουσὸρ** (Bouchor), ***Μαυρίκιος***. Γάλλος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1855. Τὴν πρώτην συλλογήν του ἐδημοσίευσε περὶ τὸ 1874 ὑπὸ τὸν τίτλον: «Les chansons joyeuses». Ἐταξίδευσεν εἰς Ἰταλίαν καὶ κατόπιν ἐδημοσίευσεν ἀλληλοδιαδόχως: «Les poèmes de l'amour et de la mer» (1876), «Le Faust moderne» (1878), «Les contes parisiens» (1880), ὅπου ὑμνεῖ τὸν ἔρωτα καὶ τὴν ἡδονήν. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης, ἐγκαταλιπὼν τὴν ἐξύμνησιν τοῦ αἰσθησιακοῦ ἔρωτος, ἐτράπη πρὸς τὸν ἰδεαλισμόν, τὰς θρησκευτικὰς ἰδέας καὶ πρὸς εἶδός τι μυστικισμοῦ. Ἡ ποιητική του συλλογή: «L'aurore» (1883) σημειώνει τὸ πρῶτόν του βῆμα πρὸς τὴν νέαν ταύτην στροφήν. Μεταξὺ τῶν ἔργων, τὰ ὁποῖα ἐπηκολούθησαν, σπουδαιότερα εἶναι: «Dieu le veut» δρᾶμα (1888), «Les symboles» (1888), μυστήρια ἀναβιβασθέντα ἐπὶ σκηνῆς τοῦ θεάτρου τῶν ἀνδρεικέλων (marionnettes), «Tobie» (1889), «Noël» (1891), «La dévotion à saint André» (1892), «La légende de saint Cécile» (1892), «Le songe de Rhèyam» (1892), «Michel Lando» δρᾶμα (1892), «Les mystères d'Eleusis» (1894), «Symboles» (1894), «Contes de Noël» (1895), «Les chansons de Shakespeare» (1896), «Le mariage de Papillonne» (1897) κλπ. —Ω.

**Μπουσὸτ** (Bouchotte) ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Νοέλ***. Γάλλος πολιτικὸς ἐκ Μὲτς (1754—1840). Ὑπηρέτησεν ὡς στρατιώτης εἰς τὸν βασιλικὸν στρατὸν καὶ προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ συνταγματάρχου (1792), ὑπερασπίσας γενναίως τὸ Καμπραί. Μετὰ τὴν ἐπανάστασιν ὠνομάσθη ὑπὸ τῆς συμβατικῆς ἐθνοσυνελεύσεως ὑπουργὸς τοῦ Πολέμου καὶ ἠσχολήθη ἐνεργῶς μὲ τὴν διοργάνωσιν τῆς ἐθνικῆς ἀμύνης. Συλληφθεὶς μετὰ τὴν 9 Θερμιδώρ, ἀφέθη ἐλεύθερος ἐλλείψει ἐπιβαρυντικῶν στοιχείων. Χ. Δ.

**μπούσουλα**· ἐπιρρ. δημοτ. ἐπὶ τῶν βρεφῶν, μὲ χεῖρας καὶ μὲ πόδας, τετραποδητί: «πηγαίνει μπούσουλα», «ἔλα μπούσουλα-μπούσουλα».

**μπούσουλας** (ὁ)· ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὴν ναυτικὴν πυξίδα· || φρ. «πάω μὲ τὸν μπούσουλα» ἀκολουθῶ ὡρισμένην πλεῦσιν, μὴ πλέων τὴν ἐγγυτάτην· || προβαίνω λελογισμένως: «χάνω τὸν μπούσουλα» περιπίπτω εἰς σύγχυσιν, «ρότα μὲ τὸν μπούσουλα» πλεῦσις ἐνέχουσα τὴν παραλλαγήν. Σ. Ε. Λ.

**μπουσουλίζω,** καὶ ***μπουσουλάω***· δημοτ. ἐπὶ τῶν βρεφῶν, περιπατῶ, μετακινοῦμαι μπούσουλα, τετραποδητί: «τὸ μικρὸ ἄρχισε καὶ μπουσουλάει».

**Μπουσσὰρ** (Boussard). Ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ τῆς ὑπὸ τὸν Βοναπάρτην γαλλικῆς κατοχῆς τῆς Αἰγύπτου. Ἐργαζόμενος εἰς ὀχυρωματικὰ ἔργα τῷ 1799, ἀνεκάλυψεν ἐντὸς τοῦ ἀρχαίου φρουρίου τῆς Ροζέττης τὴν περίφημον τρίγλωσσον ἐπιγραφὴν «πέτραν τῆς Ροζέττης», χάρις εἰς τὴν ὁποίαν ὁ Champollion εὗρε τὴν κλεῖδα τῆς ἱερογλυφικῆς. Γ. Λ. Α.

**Μπουσσὰρ** (Boussard), ***Ἀνδρέας-Ἰωσήφ***, *βαρῶνος* —. Γάλλος στρατηγὸς (1758—1813). Συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὴν κατάληψιν τῆς Λυβέκης. Ἀποσταλεὶς εἰς Ἱσπανίαν κατώρθωσε νὰ νικήσῃ δὶς τὸν Ο'Ντόννελ ἐν Λερίντᾳ καὶ κατὰ τὴν μάχην τοῦ Σαγούντου (1811). Τὸ ἑπόμενον ἔτος κατώρθωσεν ἐπὶ κεφαλῆς 60 οὐσσάρων ν' ἀντιστῇ ἐπιτυχῶς παρὰ τὸ Τορρέντε ἐναντίον 20 ἰλῶν Ἱσπανῶν. Προαχθεὶς εἰς ἀντιστράτηγον (1812) ἀπέθανε μετ' ὀλίγον ἐκ τῶν τραυμάτων. Χ. Δ.

**Μποῦσσε** (Busse), ***Λουδοβῖκος***. Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1862, συγγενὴς κατὰ τὰς ροπὰς καὶ τὴν διανόησιν πρὸς τὸν Λότσε, ἐπὶ τῆς φιλοσοφίας τοῦ ὁποίου στηρίζεται, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ εἶναι τυφλὸς ὀπαδὸς αὐτῆς. Μᾶλλον θὰ ἠδύνατό τις νὰ εἴπῃ ὅτι ἡ φιλοσοφία τοῦ Λότσε ἐκίνησεν αὐτὸν εἰς τὴν συγκρότησιν τοῦ ἰδίου αὐτοῦ συστήματος, τοῦτο δὲ τοσούτῳ μᾶλλον, ὅσῳ καὶ αὐτός, ὡς ὁ διδάσκαλος, ἐτύγχανε θρησκευτικὴ φύσις καὶ ἔρρεπε πρὸς τὰ ἠθικὰ καὶ θρησκευτικὰ προβλήματα, εἰς τὰ ὁποῖα ἐπεθύμει νὰ δημιουργήσῃ τὴν πρέπουσαν αὐτοῖς θέσιν ἐν τῷ συνόλῳ τῆς φιλοσοφικῆς διανοήσεως. Κατὰ τὸν Μποῦσσε τὰ συστατικὰ τῆς πραγματικότητος στοιχεῖα εἶναι τρία: ἀρχαί, γεγονότα καὶ ἀξίαι. Καὶ ἀρχὰς μὲν καλεῖ τοὺς κατ' ἀνάγκην ἐκ τῆς νοήσεως ἀπορρέοντας καὶ διὰ τοῦτο ἐκ τῶν προτέρων γνωριστοὺς καὶ διὰ πάντα νοητόν, λοιπὸν καὶ διὰ τὸν δεδομένον κόσμον ἀπολύτως ἰσχύοντας γενικοὺς κανόνας· ὑπὸ δὲ τὸν ὅρον γεγονότα νοεῖ τὴν μορφὴν καὶ τὴν τάξιν τοῦ δεδομένου κόσμου, ἥτις δὲν εἶναι μὲν ἀναγκαία, ἀλλ' ὅμως πραγματικὴ καὶ διὰ τῆς ἐμπειρίας γνωριστή· διὰ δὲ τῆς λέξεως ἀξίαι τέλος σημαίνει ἰσχὺν κεκτημένους, καίπερ μὴ ἀναγκαίους λογικῶς κανόνας, εἰς οὓς δέον νὰ ἀνταποκρίνεται ὁ κόσμος, κανόνας λοιπὸν τοῦ δέοντος ρυθμιστικούς. Αἱ ἀρχαὶ ἢ ἀλήθειαι ἀποτελοῦσι τὸ ὑποκείμενον τῆς μεταφυσικῆς, ἧς ἔσχατος σκοπὸς ἡ ἀπόδειξις, ὅτι πᾶν τὸ εἶναι ἰσοῦται πρὸς τὸ συνειδέναι καὶ ὅτι πάντα τὰ καθ' ἕκαστον πνεύματα εἶναι τρόποι μιᾶς τὰ πάντα ἐν ἑαυτῇ περιλαμβανούσης πνευματικῆς οὐσίας. Τὰ γεγονότα ἐξ ἄλλου συγκροτοῦσι τὸ ὑποκείμενον τῆς ἐπιστήμης, τῆς τε ἱστορικῆς ἐπιστήμης καὶ τῆς ἐπιστήμης τῆς φύσεως. Περὶ τῆς ἀξίας τέλος ἀσχολοῦνται δύο δεοντολογικαὶ ἐπιστῆμαι, ἡ αἰσθητικὴ καὶ ἡ ἠθική. Τὰ τρία ταῦτα στοιχεῖα, ἐξ ὧν ἀποτελεῖται ἡ πραγματικότης, δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ παραχθῶσιν ἐξ ἀλλήλων, ἀλλὰ ἐκπηγάζουσιν ἐξ ἴσου ἐξ ἑνιαίας τινὸς καὶ ἀπολύτου αἰτίας, ἐκ τοῦ λόγου τοῦ παντός, ἥτις ὡς πηγὴ μὲν τῶν λογικῶν ἀρχῶν εἶναι πάνσοφος, ὡς δημιουργὸς τῶν ὄντων παντοδύναμος καὶ ὡς ἑστία τῶν ἀξιῶν πανάγιος. Τὴν ἑνιαίαν ταύτην πηγὴν τῆς πραγματικότητος, ἥτις δέον ἅμα νὰ εἶναι προσωπικότης, ὀνομάζομεν θεόν. Περὶ αὐτὸν ἀσχολεῖται ἡ φιλοσοφία τῆς θρησκείας, ἡ ὁποία συμπληροῖ τὴν μεταφυσικὴν καὶ τὴν φιλοσοφίαν καθόλου διὰ τῆς ἀναγωγῆς τῶν τριῶν ἐκείνων κυρίων συστατικῶν τῆς πραγματικότητος εἰς τὸν ἀπόλυτον λόγον αὐτῆς, εἰς ὃν καταντᾷ διὰ τῆς εὐρύνσεως τῆς οὐσίας, εἰς ἣν καταντᾷ ἡ μεταφυσική. Ἐντεῦθεν συνάγεται ὅτι διάκρισις μεταξὺ πίστεως καὶ γνώσεως καὶ διπλῆ ἀλήθεια ἐπ' αὐτῆς στηριζομένη δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ νοηθῇ. Ἀπὸ τῶν πορισμάτων τῆς φιλοσοφίας τῆς θρησκείας ὁρμᾶται ἡ φιλοσοφία τῆς ἱστορίας, ἥτις πειρᾶται τὴν ἑρμηνείαν τῆς ἱστορικῆς κινήσεως κατὰ σκοπούς. Τὰς μεταφυσικὰς ταύτας δόξας στηρίζει ὁ Μποῦσσε ἐπὶ τῆς γνωσιολογίας, ἰσχυριζόμενος, κατὰ τὰς ἀπόψεις τοῦ δογματισμοῦ, ὅτι πᾶν τὸ λογικῶς ἀναγκαῖον ἰσχύει καὶ ἀντικειμενικῶς, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ δέχεται τὸ δυνατὸν τῆς διὰ τῆς λογικῆς ἐνεργείας συγκροτήσεως τῆς συνόλου πραγματικότητος. Συμφώνως δὲ πρὸς τὴν τεθεῖσαν ἀρχήν, καθ' ἣν τὰ συστατικὰ τῆς πραγματικότητος στοιχεῖα δὲν παράγονται ἀπ' ἀλλήλων, ἀπορρίπτει ὁ Μποῦσσε τὴν ἐκ τῆς ὕλης γέννησιν ἢ ἐξάρτησιν τοῦ ψυχικοῦ βίου, ἀλλὰ καὶ αὐτὸν τὸν ψυχοφυσικὸν παραλληλισμόν, ὑπερμαχῶν τῆς θεωρίας τῆς μεταξὺ ψυχῆς καὶ σώματος ἀλληλεπιδράσεως, ὡς τῆς μόνης δυνατῆς. Ἔργα τοῦ Μποῦσσε εἶναι: «Philosophie und Erkenntnistheorie» (1894), «Die Wechselwirkung zwischen Leib und Seele und den Gesetz der Erhaltung der Energie» (1900), «Geist und Körper», «Seele und Leib» (1903). Ν. Λ.

**Μπουσσενὰρ** (Boussenard), ***Λουδοβῖκος-Ἐρρῖκος***. Γάλλος συγγραφεὺς (1847—1910). Ἔγραψε πολυάριθμα μυθιστορήματα, ἐξ ὧν σπουδαιότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Διὰ μέσου τῆς Αὐστραλίας» (1879), «Ὁ γῦρος τοῦ κόσμου ἀπὸ ἕνα χαμίνι τῶν Παρισίων» (1880), «Οἱ Ροβινσῶνες τῆς Γουυάνης» (1882), «Περιπέτειαι ἑνὸς Παρισινοῦ μορτάκου εἰς τὴν χώραν τῶν βισώνων, τῶν λεόντων καὶ τῶν τίγρεων» (1886), «Περιπέτειαι, κίνδυνοι καὶ ἀνακαλύψεις τῶν ταξιδιωτῶν διὰ μέσου τοῦ κόσμου» (1890), «Ἀπένταρος» (1895) «Ἡ καιομένη νῆσος» (1896) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπουσσενγκὼ** (Boussingault), ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Ἰωσὴφ Ντιεντονέ***. Γάλλος χημικὸς καὶ γεωπόνος (1802—1887). Ἀποφοιτήσας ἐκ τῆς σχολῆς μεταλλειολόγων τοῦ Ἁγίου Στεφάνου, ἐστάλη ὡς διευθυντὴς μεταλλείου εἰς Νέαν Γρενάδην. Προσληφθεὶς εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ Βολιβὰρ κατὰ τὴν ἐξέγερσιν τῶν ἱσπανικῶν ἀποικιῶν, προέβη διαρκοῦντος τοῦ πολέμου εἰς πολυτίμους γεωλογικὰς καὶ μετεωρολογικὰς παρατηρήσεις. Ὅτε ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν, κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς χημείας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Λυών, ἀπὸ δὲ τοῦ 1829 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς γεωργίας εἰς τὴν ἀνωτάτην σχολὴν τῶν τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων. Συγχρόνως ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Διετέλεσεν ἀντιπρόσωπος τοῦ Κάτω Ρήνου εἰς τὴν συντακτικὴν ἐθνοσυνέλευσιν τοῦ 1848, κατόπιν ὅμως τοῦ πραξικοπήματος τοῦ Ναπολέοντος παρῃτήθη, ἀφιερωθεὶς ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν ἐπιστήμην του. Εἶναι εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τοῦ «Ἐθνικοῦ γεωπονικοῦ ἰνστιτούτου» τῶν Παρισίων. Αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ ἀφορῶσι κυρίως τὴν μεταλλουργικὴν χημείαν, τὴν γεωργικὴν χημείαν καὶ τὴν φυσιολογίαν τῶν φυτῶν, περιστρέφονται δὲ περὶ τὴν ἐκτίμησιν τῶν λιπασμάτων, ἀναλόγως τῆς εἰς ἄζωτον καὶ φωσφορικὸν ὀξὺ περιεκτικότητος αὐτῶν, τὴν σύστασιν τῶν ἱστῶν καὶ τῶν ἐκκρίσεων τῶν χορτοφάγων, τὴν θρεπτικὴν ἀξίαν τοῦ ἀχύρου, τὸν προσδιορισμὸν τοῦ ἀζώτου τῆς ἀτμοσφαίρας κλπ. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων ἐπιστημονικῶν συγγραφῶν του διακρίνεται καὶ ἡ «Πραγματεία περὶ τῆς ἀγροτικῆς οἰκονομίας», ἥτις ἐπανεξεδόθη τῷ 1884 ὑπὸ τὸν τίτλον «Γεωπονία, γεωργικὴ χημεία καὶ φυσιολογία». Ὡραῖον μνημεῖόν του, ἔργον τοῦ Νταλού, ἐγκαινιασθὲν τῷ 18.., κοσμεῖ τὴν κεντρικὴν αὐλὴν τῆς Σχολῆς τεχνῶν καὶ ἐπαγγελμάτων. Χ. Δ.

**Μπουσσὲτ** (Bousset), ***Γουλιέλμος***. Γάλλος θεολόγος (1865—1920). Ἀπὸ τοῦ 1896 ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἑρμηνείας τῆς Καινῆς Διαθήκης ἐν Γοττίγγῃ, ἀπὸ δὲ τοῦ 1916 τακτικὸς ἐν Γκίσεν, κατέστη περίφημος διὰ τῶν συγκριτικῶν αὐτοῦ θρησκειολογικῶν ἐρευνῶν ἐν σχέσει πρὸς τὸν Ἰουδαϊσμόν, τὴν γνῶσιν καὶ τὸν πρωταρχικὸν Χριστιανισμόν. Ἐκ τῶν πρώτων ἱδρυτῶν τῆς θρησκειολογικῆς σχολῆς μετὰ τοῦ Γκοῦγκελ καὶ Ἰ. Βάϊς, ἐξῆρε μεγάλως τὴν ἐπίδρασιν, τὴν ὁποίαν ἤσκησαν κατ' αὐτὸν ἡ θρησκεία καὶ αἱ ἰδέαι καθόλου τῶν χρόνων τοῦ ἀλεξανδρεωτικοῦ Ἑλληνισμοῦ, καὶ ἰδίως αἱ μυστηριακαὶ θρησκεῖαι, ἐπὶ τῶν ἀρχῶν τῆς χριστιανικῆς θρησκείας. Εἰς τὰς περὶ τὴν φύσιν τῆς θρησκείας ἐρεύνας αὐτοῦ ὁρμᾶται ἀπὸ τῶν φιλοσοφικῶν περὶ αὐτῆς προϋποθέσεων τοῦ Φρὶς, ὅστις τὸ θρησκευτικὸν βίωμα ἐσχέτιζε πρὸς τὸ καλλιτεχνικόν, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰς ἠθικοκρατικὰς ἀπόψεις τοῦ Καντίου. Ἐκ τῶν πολυπληθῶν ἐργασιῶν τοῦ Μπουσσὲτ σημειοῦμεν ἐνταῦθα τὰς ἑξῆς: «Ἡ θρησκεία τοῦ Ἰουδαϊσμοῦ κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Καινῆς Διαθήκης» (γ' ἔκδ. 1926), «Τὰ κύρια προβλήματα τῆς Γνώσεως» (1907), «Κύριος Χριστὸς» (β' ἔκδ. 1921). Ν. Λ.

**Μπουσσινὲσκ** (Boussinesq), ***Βαλεντῖνος-Ἰωσήφ***. Γάλλος μαθηματικὸς (1842—1929). Τῷ 187. ὠνομάσθη καθηγητὴς εἰς τὴν σχολὴν τῶν ἐπιστημῶν τῆς Λίλλης, τῷ δὲ 1886 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς μηχανικῆς καὶ πειραματικῆς φυσικῆς ἐν Παρισίοις. Ὑπέβαλεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν ὑπόμνημα νέων ἀπόψεων ἐπὶ τῆς θεωρίας τοῦ φωτός, πληθὺν δ' ἄλλων ἐργασιῶν του περιέχουσι τὰ διάφορα ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ («Comptes rendus de l'Académie des sciences», «Le Journal de mathématiques de Lionville» κ.λ.π.), ἐπὶ διαφόρων προβλημάτων τῆς ἀναλύσεως, θερμοδυναμικῆς, θεωρίας ἐλαστικότητος κλπ. Διὰ τὰς ἐργασίας ταύτας ἡ Ἀκαδημία τῶν ἐπιστημῶν ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸ βραβεῖον Πονσελὲ καὶ τῷ 1886 τὸν ἐξέλεξε μέλος αὐτῆς. Ν. Σ.

**Μποῦσσορ** (Buschor), ***Ἐρνέστος***. Γερμανὸς ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1886. Γενόμενος ἑταῖρος τῆς ἐν Ἀθήναις Γερμανικῆς Ἀρχαιολογικῆς Σχολῆς, μετέσχε τῶν ἀνασκαφῶν τοῦ Κεραμεικοῦ, νεώτατος δ' ἔτι ὢν ἐδημοσίευσεν ἐμβριθεῖς ἀρχαιολογικὰς διατριβὰς καὶ μελέτας καὶ ἰδίως τὸ περὶ τῆς ἑλληνικῆς ἀγγειογραφίας ἐγχειρίδιον «Griechische Vasenmalerei». Διωρίσθη (1915–1921) καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Ἐρλάγγης καὶ τῆς Φραϊβούργης. Τῷ 1921 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς ἐν Ἀθήναις Γερμανικῆς ἀρχαιολογικῆς σχολῆς καὶ τῷ 1922 καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου. Κατὰ τὴν ἐν Ἀθήναις διαμονήν αὐτοῦ διενήργησε τὰς ἐν Ἡραίῳ τῆς Σάμου ἀνασκαφάς. Μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἔργων καὶ διατριβῶν του αἱ κυριώτεραι εἶναι αἱ ἑξῆς: «Griechische Vasenmalerei» (1913), «Eine griechische Bronze in Oxford» (1920), «Grössenverhältnisse attischer Poros-giebel» (1924), «Mitteilungen aus dem Kerameikos. Eine Poros-Stele vom Heiligen Tor.» (1926), «Von Amyclaion» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ von Massow, καὶ μόνος «Dipylon, die Affen-Inseln» (1927), «Zum Weihrelief von Mondragone, Ein choregisches Denkmal» (1928), «Das Tondächer der Akropolis καὶ Kykladisches» (1929), «Heraion von Samos: frühe Bauten» (1930). Πλὴν τῶν ὡς ἄνω ἔργων ὁ Μποῦσσορ ἐξέδωκεν ἐν συμπράξει μετὰ τοῦ Hamann, τὴν πολύτιμον σειρὰν τῶν γλυπτῶν τοῦ ἐν Ὀλυμπίᾳ ναοῦ τοῦ Ὀλυμπίου Διός: «Die skulpturen des Zeustempels zu Olympia» (Text und Tafelband). Β. Δ. Ε.

**Μπουσσὺ-Λὲ-Μὸνς** (Boussy-Lez-Mons) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀννονίας. Εἶναι κέντρον βιομηχανίας ζύθου, ὑλικοῦ σιδηροδρόμων κλπ. καὶ ἔχει ὀρυχεῖα γαιανθράκων καὶ ἀμμίτου. Κάτ. 12.000. Χ. Δ.

**Μπόϋστ** (Beust), ***Φρειδερῖκος-Φερδινάνδος***, *κόμις φὸν*—. Σάξων καὶ Αὐστριακὸς πολιτικὸς (18..—1886). Ἐγεννήθη ἐν Δρέσδῃ καὶ ἐσπούδασε πολιτικὰς ἐπιστήμας ἐν Γοττίγγῃ καὶ Λειψίᾳ. Τῷ

Digitized by Google

849 τῷ ἀνετέθη τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ κατόπιν τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως. Εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς ἑνώσεως τῶν μικρῶν γερμανικῶν ρατῶν ἐπὶ τῷ σκοπῷ διατηρήσεως τῆς μεταξὺ Ιρωσσίας καὶ Αὐστρίας ἰσορροπίας. Κατὰ τὸν ὐστροπρωσσικὸν πόλεμον τοῦ 1866 ἡ Σαξωνία, ὖσα σύμμαχος τῆς Αὐστρίας, ἡττήθη μετ' αὐτῆς πὸ τῆς Πρωσσίας. Μετὰ τὴν μάχην τοῦ Καίνιγκκραῖτς ὁ Μπόϋστ, μεταβὰς εἰς Βιέννην, ἐνήργησεν πως ἡ Σαξωνία προσληφθῇ εἴς τινα νοτιογερμαικὴν συνομοσπονδίαν, συγχρόνως δ' ἐπεδίωξε νὰ άβῃ ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς μεταξὺ Αὐστρίας καὶ Πρωσσίας διαπραγματεύσεις τῆς εἰρήνης, καὶ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ἦτο ἕτοιμος ν' ἀναχωρήσῃ διὰ Βερολῖνον· τοῦ Βίσμαρκ ὅμως ἀρνηθέντος ἐπιμόνως νὰ τὸν δεχθῇ, ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν του ὡς μέλους τῆς σαξωνικῆς κυβερνήσεως. Κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1866 ὠνομάσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῆς Αὐστρίας καὶ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἀρχικαγκελλαρίου. Ἐντὸς ὀλίγων μηνῶν ἐπέτυχε τὴν παλινόρθωσιν τοῦ Συντάγματος τοῦ 1861, τὴν σύγκλησιν τῆς συνταγματικῆς ιουλῆς, τὴν συγκρότησιν κοινοβουλευτικοῦ ὑπουργείου καὶ τέλος τὴν στέψιν τοῦ Φραγκίσκου Ἰωσὴφ ἐν Ὄφεν. Ἡ καθιέρωσις τῆς δυαδικῆς μορφῆς τοῦ κράτους καὶ ἡ συνδιαλλαγὴ μετὰ τῆς Οὐγγαρίας εἶναι ἔργον του. Ἐν τῇ ἐξωτερικῇ πολιτικῇ ἐπεδίωξε τὴν συγκρότησιν νοτιογερμανικῆς συνομοσπονδίας, ἀλλ' ὑπὸ τὸν ρητὸν ὅρον ὅπως πᾶς δεσμὸς τῆς συμμαχίας ταύτης μετὰ τῆς Αὐστρίας ἀποκλεισθῇ. Πρὸ τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870 εἰργάσθη πρὸς σύναψιν συμμαχίας αὐστρογαλλοϊταλικῆς. Ἅμα δὲ τῇ κηρύξει αὐτοῦ προέβη εἰς ἐξοπλισμούς, ἀλλ' ἡ ἐπέμβασις τῆς Ρωσίας καὶ ἡ ταχυτάτη προέλασις τῶν γερμανικῶν στρατευμάτων εἰς τὸ γαλλικὸν ἔδαφος ἐμπόδισαν τὸν Μπόϋστ νὰ λάβῃ μέρος ἐνεργὸν ἐναντίον τῆς Γερμανίας. Μετὰ τὴν συγκρότησιν τῆς Γερμανικῆς αὐτοκρατορίας ὁ Μπόϋστ ὑπεβοήθησε τὰς προσπαθείας τοῦ Βίσμαρκ πρὸς καλλιέργειαν φιλικῶν σχέσεων μεταξὺ Γερμανίας καὶ Αὐστρίας. Ἀναγκασθεὶς μετά τινα χρόνον νὰ ὑποβάλῃ παραίτησιν, διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ καὶ κατόπιν ἐν Παρισίοις. Τὰ ἀπομνημονεύματά του «Aus drei Viertel=Jahrhunderten. Erinnerungen und Aufzeichnungen» ἐξεδόθησαν μετὰ θάνατον (1887). Α. Δ.

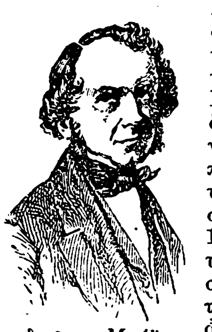
*Φρειδερῖκος Μπόϋστ.*

**Μπούστα *Γαλατικὴ*** (Busta Galilca ἢ Gallorum) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις καὶ τοποθεσία ἐπὶ τῶν κλιτύων τῶν Οὐμβρικῶν Ἀπεννίνων, ὀνομαζομένη ἐπίσης καὶ *Μπόστα*, σήμερον δὲ *Μπαστία* ἢ *Μπαστιόλα*, εἰς ἴσην σχεδὸν ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ Σιτζίλλο καὶ Φαμπριάνο. Ἡ ὀνομασία τῆς τοποθεσίας προέρχεται ἐκ τῆς ἐπισυμβάσης αὐτόθι ἥττης τῶν συμμάχων Γαλατῶν καὶ Σαμνιτῶν, τῷ 296 π. Χ., κατὰ τὸν πρὸς τοὺς Ρωμαίους πόλεμον. Παρ' αὐτὴν τῷ 552 μ. Χ. ἦτο ἐστρατοπεδευμένος ὁ Βυζαντινὸς στρατηγὸς Ναρσῆς, εἰς δὲ τὴν Τατζίνα οἱ Γότθοι τοῦ Τοτίλα, οἱ ὁποῖοι ἐπιτεθέντες πρῶτον διὰ τοῦ ἱππικοῦ ἀπεκρούσθησαν καὶ διεσκορπίσθησαν, ἀφήσαντες ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης 6000 νεκρούς, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ αὐτὸν τὸν Τοτίλαν. Μ. Δ. Β.

**Μπουσταμάντε** (Bustamante), ***Ἀντώνιος-Σαντὲθ*** *ντὲ—*. Σοφὸς νομικὸς καὶ ἐπιφανὴς διεθνολόγος τῆς δημοκρατίας τῆς Κούβας, γεννηθεὶς ἐν Ἀβάνᾳ τῷ 1865. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Μαδρίτῃ, ὅπου ὁ πατὴρ αὐτοῦ διέμενεν ὡς γερουσιαστὴς τῆς Κούβας, καὶ τῷ 1891 ἐξελέγη καθηγητὴς τοῦ διεθνοῦς δικαίου ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἀβάνας. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς δημοκρατίας τῆς Κούβας, ἐξελέγη γερουσιαστής. Τῷ 1907 ἀντεπροσώπευσε τὴν χώραν του εἰς τὴν Β' διάσκεψιν τῆς εἰρήνης ἐν Χάγῃ καὶ τῷ 1919 ἐν Παρισίοις. Ἐπίσης ἔλαβε μέρος εἰς τὴν διάσκεψιν τῶν Ἀμερικανῶν νομομαθῶν ἐν Ρίῳ Ἰανεῖρῳ τῷ 1927 καὶ εἰς τὴν ΣΤ' παναμερικανικὴν διάσκεψιν τοῦ 1928, τῆς ὁποίας ἐξελέγη πρόεδρος. Εἶναι μέλος ἐπίτιμον πολλῶν ἀμερικανικῶν πανεπιστημίων καὶ ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν, μέλος τοῦ δικαστηρίου τῆς Διεθνοῦς δικαιοσύνης καὶ συγγραφεὺς πλείστων ἔργων μεταφρασθέντων εἰς πολλὰς γλώσσας. Τὸ κυριώτερον ἐξ αὐτῶν εἶναι ὁ περίφημος «Κῶδιξ ἰδιωτικοῦ διεθνοῦς δικαίου» (1926), ἐκδοθεὶς ὑπὸ τῆς «Παναμερικανικῆς Ἑνώσεως» τῆς Βάσιγκτων καὶ γενόμενος ἀποδεκτὸς ὑπὸ τῆς ΣΤ' παναμερικανικῆς διασκέψεως τοῦ 1928, μὲ μόνην τὴν ἐπιφύλαξιν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐπικληθεὶς δὲ καὶ ἐκ τοῦ ὀνόματός του «Κῶδιξ Μπουσταμάντε». Ὁ κῶδιξ οὗτος ἐδημοσιεύθη εἰς τὴν ἐπίσημον ἐφημερίδα τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν εἰς γλῶσσαν ἱσπανικήν, γαλλικήν, ἀγγλικήν, γερμανικὴν καὶ ἰταλικήν. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Τὸ ἐν Ρίῳ Ἰανείρῳ συνέδριον τῶν νομομαθῶν καὶ τὸ διεθνὲς δίκαιον» (1925), «Περὶ τοῦ διαρκοῦς δικαστηρίου Διεθνοῦς δικαιοσύνης» (1925), «Περὶ τῆς ἐν Χάγῃ τῷ 1907 συνελθούσης δευτέρας διασκέψεως εἰρήνης» κλπ. Σ. Α. Μ.

**Μπούστι** (Busti), ***Αὐγουστῖνος***, ἐπονομαζόμενος ***Μπαμπάγια***. Ὀνομαστὸς Ἰταλὸς γλύπτης (1470—1548). Τὸ σημαντικώτερον ἔργον του εἶναι ὁ τάφος τοῦ Γάστωνος ντὲ Φουά, ἀνεψιοῦ τοῦ Λουδοβίκου ΙΒ' καὶ κυβερνήτου τοῦ Μιλάνου, ἀποθανόντος κατὰ τὴν μάχην τῆς Ραβένης τῷ 1511. Τὸ ἔργον τοῦτο, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ Μπούστι ἀφιέρωσεν 8 ἐτῶν ἐργασίαν, παρέμεινεν ἡμιτελές, τὰ δὲ τμήματα αὐτοῦ διεσκορπίσθησαν εἰς διάφορα μουσεῖα καὶ συλλογάς. Τὸ κατακεκλιμένον ἄγαλμα τοῦ Φουὰ εὑρίσκεται ἤδη εἰς τὸ Δημοτικὸν μουσεῖον τοῦ Μιλάνου. Κατεσκεύασεν ἐπίσης τὸν τάφον τοῦ Λαντσίνους Κουρτίνους, ὁ ὁποῖος εὑρίσκεται σήμερον εἰς τὸ μέγαρον Μπρέρα τοῦ Μιλάνου καὶ διάφορα ἀγάλματα καὶ διακοσμητικὰ ἔργα ἐν τῇ μητροπόλει τοῦ Μιλάνου, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ τάφος τοῦ καρδιναλίου Μαρίνου Καράτσιολο καὶ ὁ τάφος τοῦ ἐφημερίου Ἰωάννου Ἀντωνίου Βιμαρκάτι. Εἰργάσθη ἐπίσης καὶ πρὸς διακόσμησιν τοῦ ἀββαείου τῆς Πάρμας, ὅπου ὅμως δὲν σῴζονται τὰ ὑπ' αὐτοῦ ἐκτελεσθέντα ἔργα. Μ. Δ. Β.

**Μπουστίντουϊ**, (Bustinduy), ***Ἰωσὴφ*** *ντὲ —*. Ἱσπανὸς βιολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1884. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ ᾠδείῳ Βρυξελλῶν, τυχὼν κατὰ τὴν ἀποφοίτησίν του πρώτου βραβείου μετὰ διακρίσεως. Τῷ 1905 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ βιολίου ἐν τῷ ᾠδείῳ Ἀθηνῶν, ἔνθα ἀνέπτυξεν ἐξαιρετικὸν παιδαγωγικὸν τάλαντον καὶ ἐμόρφωσε γενεὰν ὁλόκληρον βιολιστῶν. Κατόπιν ἐδίδαξεν ἐν τῷ ᾠδείῳ Πειραιῶς. Ἐξετέλεσεν ἐπίσης χρέη διευθυντοῦ ὀρχήστρας ἐν Ἀθήναις καὶ ἐν Ἱσπανίᾳ. Γ. Σ.

**Μποῦστο *Ἀρσίτζιο*** (Busto Arsizio) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Μιλάνου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει 33 χλμ. πρὸς ΒΔ. Κάτ. 24.507. Εἶναι πόλις βιομηχανικωτάτη, ἔχουσα ὑφαντουργεῖα, νηματουργεῖα καὶ μεταλλουργεῖα. Ἔχει ὡραιοτάτην μητρόπολιν τῆς Παναγίας, κατασκευασθεῖσαν ἀπὸ τοῦ 1515 μέχρι τοῦ 1523 ὑπὸ τοῦ ἀρχιτέκτονος Λονάτι ἐπὶ σχεδίου πιθανῶς τοῦ Μπραμάντε, μὲ ἔργα τοῦ Φερράρι καὶ τοῦ Λουΐνι. Μ. Δ. Β.

**μποῦστος** (ὁ)· δημοτ., ὁ κορμός· || εἶδος ἐσωρούχου καλύπτοντος τὸν κορμὸν σφικτά· || ἐν γένει, τὸ μέρος τοῦ φορέματος τὸ καλύπτον τὸν κορμὸν (ἰταλ. busto).

**Μπούστρι**, ἢ ***Βούστρι*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βονίτσης καὶ Ξηρομέρου τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κάτ. (1928) 360. Χ. Δ.

**Μπουστροῦς, *Γεώργιος***. Κύπριος λόγιος τοῦ ΙΕ' αἰῶνος (βλ. λ. *Βουστρύνιος* Γεώργιος).

**Μποὺτ** (Butt), ***Ἰσαάκ***. Ἰρλανδὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1813—1879). Ἀρχηγὸς τοῦ αὐτονομιστικοῦ κόμματος (Home-rule), κατώρθωσε νὰ τὸ συγκρατήσῃ εἰς τὴν ὁδὸν τῆς μετριοπαθείας. Ὁ Μποὺτ ὑπῆρξεν εἷς τῶν σπουδαιοτέρων συνεργατῶν τοῦ «Dublin University Magazine» καὶ ἔγραψε πολλὰς πραγματείας σχετικὰς πρὸς τὴν ἰρλανδικὴν ὑπόθεσιν. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «History of the Kingdom of Italy» (1860), «Chapters of college romance» (1862) καὶ «Treatise of the new law of compensation to tenants in Ireland» (1871). Α. Δ.

**Μπούταν** (Bhutan) *[Γεωγρ.]*. Ἀνεξάρτητον ἰθαγενὲς κράτος τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν, κείμενον ἐπὶ τῶν Ν. κλιτύων τῶν ἀνατολικῶν Ἱμαλαΐων καὶ ὁριζόμενον πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ Ἀσσὰμ καὶ τῆς Βεγγάλης. Ἔχει ἔκτασιν 46.000 τετρ. χλμ. καὶ πληθυσμὸν 250.000 κατ., εἶναι δὲ ὀρεινόν, καλυπτόμενον ὑπὸ χιονοσκεπῶν κορυφῶν ὕψους μέχρις 6.700 μ. Ἀρδεύεται ὑπὸ πολυαρίθμων ποταμῶν, παραποτάμων τοῦ Βραχμαπούτρα, αἱ ὡραῖαι δὲ αὐτοῦ κοιλάδες εἶναι προσφορώταται διὰ τὴν καλλιέργειαν ὀρύζης, ἀραβοσίτου, σίτου κλπ. Ἡ πανίσκη περιλαμβάνει κυρίως ἐλέφαντας, ἀγριοχοίρους, ἄρκτους κ. ἄ. ἄγρια ζῷα, διαιτώμενα ἐντὸς ἀπεράντων δασῶν, καταφύτων ἐκ πεύκων, δρυῶν καὶ ἄλλων μεγάλων δένδρων. Οἱ κάτοικοι ὁμιλοῦσι τὴν θιβετανὴν διάλεκτον καὶ πρεσβεύουσι τὴν θρησκείαν τοῦ Βούδα. Θερινὴ πρωτεύουσα τῆς χώρας εἶναι ἡ *Τασιτσότζονγκ* καὶ χειμερινὴ ἡ *Πουναχά*. Ἡ περιοχὴ τοῦ Μπούταν συνῳκίσθη ὑπὸ τῆς φυλῆς τοῦ Θιβέτ, *Τὲκ-πά*, κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, ἀπὸ δὲ τοῦ 1865 περιῆλθεν ὑπὸ τὴν ἀγγλικὴν κυριαρχίαν κατόπιν συνθήκης, δι' ἧς καθωρίσθησαν αἱ μετὰ τῆς γενικῆς διοικήσεως τῶν Ἰνδιῶν σχέσεις αὐτῆς. Οἱ ἀνώτεροι διοικητικοὶ ἄρχοντες τοῦ Μπούταν εἶναι δύο, εἷς θρησκευτικὸς ντὰρμ-ρατζά, ὅστις θεωρεῖται ὡς ἡ ὀγδόη μετενσάρκωσις τοῦ Βούδα, καὶ ἕτερος πολιτικός, καλούμενος *ντὲμπ-ρατζά*. Χ. Δ.

**Μπουταρὶκ** (Boutaric), ***Ἐδγάρ***. Γάλλος λόγιος (1830—1870). Διετέλεσε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἡ Γαλλία ἐπὶ τοῦ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου» (1862), «Ἡ στρατιωτικὴ προπαίδευσις τῆς Γαλλίας» (1863) κ. ἄ. Χ. Δ.

**μπουταφόρα** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων ἑκάτερον τῶν ὁλκῶν τοῦ λεμβούχου. Σ. Ε. Λ.

**Μπουτβὶλλ-*Μονμωρανσὺ*** (Bouteville-Montmorency), ***Φραγκῖσκος***, *κόμις ντὲ —*. Γάλλος ναύαρχος (1600—1627). Εἶναι κυρίως γνωστὸς διὰ τὰς πολλὰς μονομαχίας του, καθ' ἃς ἐφόνευσε πλείστους κόμιτας καὶ βαρώνους. Ὁ καρδινάλιος Ρισελιέ, θέλων νὰ καταργήσῃ ὡς ἔθος τὴν μονομαχίαν, ὅπερ εἶχε λάβει τρομερὰς διαστάσεις, ἀπηγόρευσεν αὐτὴν ἐπὶ ποινῇ θανάτου. Καταδικασθεὶς εἰς θάνατον ὁ Μπουτβίλλ, ἕνεκα θανατηφόρου μονομαχίας, ἔφυγεν εἰς Βρυξέλλας· περιφρονῶν ὅμως τὸ ἀπαγορευτικὸν διάταγμα, ἐνεφανίσθη εἰς Παρισίους καὶ ἐμονομάχησεν εἰς τὴν βασιλικὴν πλατεῖαν, ἤτοι εἰς τὸ κεντρικώτερον τότε μέρος τῆς πόλεως. Ἡ μονομαχία αὕτη, τριῶν κατὰ τριῶν, ἔσχεν ὡς ἀποτέλεσμα τὸν θάνατον τοῦ μαρκησίου ντ' Ἀμπουάζ, φονευθέντος ὑπὸ τοῦ ἐξαδέλφου τοῦ Μπουτβίλλ κόμιτος ντὲ Σαπέλλ. Μετὰ τὴν μονομαχίαν οἱ δύο ἐξάδελφοι ἐδραπέτευσαν, ἀλλὰ συλληφθέντες εἰς Βιτρὺ ἤχθησαν εἰς Παρισίους καὶ καταδικασθέντες ἀπεκεφαλίσθησαν εἰς τὴν πλατεῖαν τῆς Γρέβης. Θ. Β.

**Μπουτέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Καρεΐκων τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν του νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1918) 102. Χ. Δ.

**Μπόϋτεν** (Beuthen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ Ἄνω Σιλεσίᾳ. Κάτ. 65.000. Εἶναι βιομηχανικὴ πόλις καὶ ἔχει εἰς τὴν περιφέρειάν της ὀρυχεῖα μολύβδου, ψευδαργύρου καὶ λιθανθράκων. Γ. Θ. Κ.

**Μπουτέρα** (Butera) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Καλτανιζέττας τῆς Σικελίας. Κάτ. 6.709. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν πολυάριθμα μεταλλεῖα θείου. Ἔχει ἐμπόριον σιτηρῶν, οἴνου καὶ ὀπωρῶν. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἀπετέλει φέουδον δυσπόρθητον, ὅπερ κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα περιῆλθεν εἰς τὸν οἶκον Μπραντσιφόρτε, εἰς τὰ μέλη τοῦ ὁποίου τῷ 1563 Φίλιππος ὁ Β' παρεχώρησε τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος. Μ. Δ. Β.

**Μπούτερβεκ** (Bouterwek), ***Φραγκῖσκος***. Γερμανὸς αἰσθητικὸς καὶ φιλόσοφος (1765—1828). Τῷ 1797 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν Γοττίγγῃ, ἔγραψε δέ: «Σκέψεις γενικῆς ἀποδεικτικῆς» (1799, εἰς 2 τόμ.), «Αἰσθητικὴ» (1824) καὶ «Ἱστορία τῆς νεωτέρας ποιήσεως καὶ ρητορικῆς» (1801—1809, εἰς 12 τόμ.). Γ. Θ. Κ.

**Μποὺτζ** (Bhuj) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Βρεττανικῶν Ἰνδιῶν ἐν τῇ διοικήσει Γκουτζαρὰτ τῆς Βομβάης, πρωτεύουσα τοῦ ἰθαγενοῦς κράτους τοῦ Κούτς. Ἔχει γραφικώτατα κτήρια τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ ὀχυρὸν ἀνάκτορον. Διεξάγει ἐμπόριον χρυσοῦ καὶ ἀργύρου. Κάτ. 21.579. Χ. Δ.

**Μπουτζὰκ** *[Γεωγρ.]*. 1) Κώμη τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Ἀτταλείας, εἰς ἀπόστασιν 60 χλμ. βορείως τῆς πόλεως Ἀτταλείας. —2) Κώμη τῆς Τουρκίας ἐν τῷ νομῷ Διαρβεκήρ. —3) Τμῆμα τοῦ Πόντου, ἐν τῷ νομῷ Τραπεζοῦντος, περιλαμβάνον τὰ νότια τῶν ὑποδιοικήσεων Ὀρντοῦ (Κοτυώρων), Κερασοῦντος καὶ Τυρέμπολι. Ν. Μ.

—**Μπουτζὰκ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Δράμας χωρίου *Βαθύσπηλον* (βλ. λ.).

—**Μπουτζάκ, *Ἐγρὶ***— *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς (βλ. λ. *Ἐγρὶ*-Μπουτσάκ).

—**Μπουτζάκ, *Σαχινλὰρ***— *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Κοζάνης χωρίου *Ἀμυγδαλιὰ* (βλ. λ.).

**Μπουτζᾶς** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Σμύρνης, νοτιοανατολικῶς αὐτῆς, ἐπὶ εἰδικῆς διακλαδώσεως τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Σμύρνης—Ἀϊδινίου συνολικοῦ μήκους 11 χιλιομέτρων. Ὁ πληθυσμός του, καθαρῶς ἑλληνικός, ἀνήρχετο πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν εἰς 12.000 κατοίκων, ὠργανωμένων εἰς κοινότητα συντηροῦσαν σχολεῖα καὶ ἐκκλησίας. Ἦτο ἓν τῶν προτιμωμένων ὑπὸ τῶν Σμυρναίων προαστείων καὶ εἶχε πλουσίας ἐπαύλεις πρὸς παραθερισμόν, εἰς αὐτὸ δὲ παρεθέριζε καὶ ὁ πατριάρχης Γρηγόριος ὁ Ε' ὅτε ἦτο μητροπολίτης Σμύρνης, ἔχων ἰδίαν ἐξοχικὴν οἰκίαν, ἥτις ἐσῴζετο μέχρι τῶν τελευταίων ἐτῶν. Εἰς τὸν Μπουτζᾶν διέμενε καὶ μέγα μέρος τῆς ἐν Σμύρνῃ ἀγγλικῆς παροικίας. Πέριξ τοῦ χωρίου ὑπῆρχον πλεῖσται ἐξοχικαὶ τοποθεσίαι, ὡς τὸ *Κοζαγάκι (Κὸζ-Ἀγάτς)*, ὁ *Τεπὲς* (=Λόφος), *Κὰν-γκιὸλ* (Λίμνη αἵματος), ἐπίσης τὸ ἀρχαῖον ὑδραγωγεῖον, ὅπου εἶχε χαράξει τὸ ὄνομά του ὁ λόρδος Βύρων κ. ἄ. Εἰς τὸν Μπουτζᾶν ὑπήγετο καὶ τὸ χωρίον *Παράδεισος* (βλ. λ.), ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἤρχιζε καὶ ἡ διακλάδωσις τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς.



Digitized by Google

Οἱ κάτοικοι τοῦ Μπουτζᾶ *(Μπουτζαλῆδες)* ἐφημίζοντο διὰ τὰ ἁγνὰ πατριωτικὰ των αἰσθήματα, ἦσαν δὲ ἄποικοι Πελοποννήσιοι ἐγκατασταθέντες εἰς τὸ χωρίον τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Κατὰ τὴν κατάληψιν τῆς Σμύρνης ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ στρατοῦ πλεῖστοι προσῆλθον εἰς αὐτὸν ὡς ἐθελονταὶ καὶ συνεπολέμησαν μέχρι τῆς λήξεως τῆς ἐκστρατείας. Κατεγίνοντο κυρίως εἰς τὴν γεωργίαν καὶ ἀμπελουργίαν. Ἡ σταφὶς ἦτο τὸ κυριώτερον προϊὸν τῆς περιφερείας. Ν. Φ.

**μπούτι** (τό)· δημοτ., ὁ μηρός, τὰ κρέατα τοῦ μηροῦ.

**Μπούτια, *Ἄνω* — καὶ *Κάτω* —** *[Γεωγρ.]*. Δύο χωρία τῆς κοινότητος Πασσιᾶς τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ὧν τὸ μὲν πρῶτον ἔχει κατ. (1928) 187, τὸ δὲ δεύτερον 185. Χ. Δ.

**Μπουτιγιὲ** (Bouthiller ἢ Boutillier), ***Ἰωάννης***. Γάλλος νομομαθὴς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1395. Διετέλεσε δικαστικὸς τοποτηρητὴς ἐν Τουρναὶ καὶ ἔφερε τὸν τιμητικὸν τίτλον τοῦ συμβούλου τοῦ βασιλέως. Συνέγραψε πολύτιμον πραγματείαν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Somme rurale», παρέχουσαν γενικὴν εἰκόνα τοῦ γαλλικοῦ δικαίου περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἐν τῇ ὁποίᾳ περιλαμβάνονται ἀδιακρίτως κανόνες τοῦ ρωμαϊκοῦ, τοῦ κανονικοῦ καὶ τοῦ δικαίου τῶν ἐθίμων. Χ. Δ.

**Μπουτιέρος.** Ἐπιφανὴς ἐκ Μεθώνης οἰκογένεια διακριθεῖσα κατὰ τὸν Ἀγῶνα (βλ. λ. *Βουτιέρος*).

**Μπουτινέλης, *Ἀνδρέας***. Ἀγωνιστὴς ἐξ Αἴνου τῆς Θράκης, ὅστις ὑπηρετῶν ὑπὸ τὸν Δημήτριον Ὑψηλάντην, ἐφονεύθη κατὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Δράμαλη κατάληψιν τοῦ Ἄργους, τὸν Ἰούλιον 1822. Α. Θ. Σ.

**Μπούτκοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Σερρῶν χωρίου *Κερκίνη* (βλ. λ.).

**Μπούτλ - κὸμ - Λίνακρ** (Bootle - cum - Linacre) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας, ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Λανκάστρ, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μέρσεϋ. Κάτ. 76.580. Ἀποτελεῖ βόρειον προάστειον τῆς Λίβερπουλ, μὲ μεγάλας ἀποθήκας καὶ ἀποβάθρας, ὅπου προσεγγίζουν τὰ ἀμερικανικὰ ἰδίως ἀτμόπλοια. Ἔχει χυτήρια, ναυπηγεῖα ξυλίνων πλοίων καὶ ἀλευρομύλους. Μ. Δ. Β.

**Μπούτλερ** (Butler), ***Ἰωσήφ***. Ἄγγλος φιλόσοφος (βλ. λ. *Μπάτλερ* Ἰωσήφ).

**Μπούτλεροφ** (Butlerow ἢ Boutlerow), ***Ἀλέξανδρος***. Ρῶσος χημικὸς (1828—1886). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς χημείας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Μόσχας καὶ τῆς Πετρουπόλεως καὶ τῷ 1870 ἐγένετο μέλος τῆς Ρωσικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Διεκρίθη κυρίως εἰς τὰς ἐρεύνας του ἐν τῇ ὀργανικῇ χημείᾳ. Ἀσχοληθεὶς ἐπίσης καὶ μὲ τὴν μελισσοκομίαν, ἔγραψεν ἐνδιαφερούσας μελέτας. Τῷ 1879 συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ γυναικείου πανεπιστημίου τῆς Πετρουπόλεως. Μ. Δ. Β.

**Μπουτμὺ** (Boutmy), ***Αἰμίλιος***. Γάλλος δημοσιογράφος (1835—1906). Διετέλεσε κατ' ἀρχὰς συνεργάτης τῶν ἐφημερίδων «Presse» καὶ «Liberté», εἶτα δ' ἐδίδαξε κατὰ τὰ ἔτη 1865—1869 ἱστορίαν τῶν πολιτισμῶν καὶ συγκριτικὴν ἱστορίαν τῆς ἀρχιτεκτονικῆς ἐν τῇ εἰδικῇ σχολῇ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Τῷ 1872 προέβη εἰς τὴν ἵδρυσιν ἐλευθέρας σχολῆς πολιτικῶν σπουδῶν, ὅπως ἀποτελέσῃ αὕτη τὸν πυρῆνα ἀρτίας μορφώσεως τῶν διοικητικῶν ὑπαλλήλων ἐν Γαλλίᾳ. Εἰς τὴν σχολὴν ταύτην ἐδίδαξε συγκριτικὴν συνταγματικὴν ἱστορίαν, τὴν ὁποίαν ἐξέθηκεν εἰς πλεῖστα ἔργα, ὧν σπουδαιότερα: «Μαθήματα συνταγματικοῦ δικαίου», «Πραγματεία περὶ τῆς πολιτικῆς ψυχολογίας τοῦ ἀγγλικοῦ λαοῦ κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα», «Πραγματεία τῆς πολιτικῆς ψυχολογίας τοῦ ἀμερικανικοῦ λαοῦ», «Ἡ ἀνάπτυξις τοῦ πολιτεύματος καὶ τῆς κοινωνίας ἐν Ἀγγλίᾳ» κλπ. Τῷ 1888 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν. Χ. Δ.

**Μπόϋτον** (Boyton), ***Παῦλος***. Ἰρλανδὸς ναυτικός, ὀνομαστὸς διὰ τὴν κολυμβητικήν του δεινότητα, γεννηθεὶς τῷ 1848 ἐν Δουβλίνῳ. Τῷ 1864 εἰσῆλθεν εἰς τὸ ναυτικὸν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ὅπου προσεκολλήθη εἰς τὴν ναυαγοσωστικὴν ὑπηρεσίαν τῶν ἀκτῶν τοῦ Ἀτλαντικοῦ, διασώσας ἄνω τῶν 70 προσώπων. Κατέστη κυρίως γνωστότατος ἐξ εἰδικοῦ ἐνδύματος τὸ ὁποῖον κατεσκεύασε καὶ διὰ τοῦ ὁποίου κατώρθωσε νὰ ἐπιπλέῃ διασχίζων μεγάλας ἀποστάσεις. Οὕτω διῆλθε δὶς τὸν πορθμὸν τῆς Μάγχης (1875), τὸν πορθμὸν τῆς Μεσσήνης καὶ τὸν Ρῆνον ἀπὸ Βασιλείας μέχρι Κολωνίας. Τῷ 1885 ἵδρυσεν ἐν Νέᾳ Ὑόρκῃ πρότυπον σχολὴν κολυμβητικῆς, τῷ δὲ 1893 ἐδοκίμασεν ἐπὶ τοῦ Ταμέσεως νέαν ἐφεύρεσίν του συνιστάμενην εἰς δύο μικροσκοπικὰς λέμβους ἐπενδεδυμένας μὲ δέρμα ἀντιλόπης, τὰς ὁποίας προσέδενεν εἰς τοὺς πόδας του καὶ διὰ τῶν ὁποίων κατώρθωνε νὰ περιπατῇ ἐπὶ τοῦ ὕδατος. Μ. Δ. Β.

**Μποῦτον, ἢ *Μπαῖτον*** (Buton ἢ Boeton) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος, πόλις, στενὸν καὶ διέκπλους τῶν Ὀλλανδικῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, πρὸς ΝΑ. τῆς Κελέβης. Ἡ νῆσος, ἐκτάσεως 4.226 τετρ. χλμ., εἶναι εὐφορωτάτη, παράγουσα ἀραβόσιτον, ὄρυζαν καὶ ὀπώρας, ἀριθμεῖ δὲ 100.000 περίπου κατ. κατὰ τὸ πλεῖστον Μαλαίους. Ἡ πόλις κεῖται εἰς τὴν ΝΔ. ἀκτὴν τῆς νήσου ἐντὸς ἀσφαλοῦς λιμένος· τὸ στενὸν χωρίζει πρὸς Δ. τὴν νῆσον ἀπὸ τῆς Κελέβης καὶ τῆς Μούνα καὶ ἔχει πλάτος 15—20 μιλλίων, ὁ δὲ διέκπλους ἀνοίγεται πρὸς Α. μεταξὺ τῆς ὁμωνύμου νήσου καὶ τῆς κατέναντι Βάνγκι-Βάνγκι. Χ. Δ.

**Μπουτὸν** (Boutonne) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας, πηγάζων παρὰ τὸ Σὲφ-Μπουτόν, διασχίζων τὰς χώρας Ποατοῦ, Σαιντὸνζ καὶ Ὠνί, διερχόμενος διὰ τῶν πόλεων Νταμπιέρ, Σαὶν-Ζὰν-ντ' Ἀνζελὺ καὶ Τονναὶ-Μπουτὸν καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 94 χλμ. εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Σαράντ, παρὰ τὸ Καριγιὸν-ντὲ-Καντέ. Χ. Δ.

**Μπουτούρλιν.** Ἀρχαία ἀριστοκρατικὴ οἰκογένεια τῆς Ρωσίας, γνωστὴ ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Πλεῖστα μέλη ταύτης κατέλαβον ὕπατα ἀξιώματα ἐν τῇ αὐτοκρατορίᾳ. Ἐξ αὐτῶν παλαιότερον ἀναφέρεται ὁ *Ἰβὰν Μιχαήλοβιτς*, κατακτήσας τὸ Δαγεστὰν καὶ φονευθεὶς ἐν Τάρκι τῷ 1605. Θ. Β.

**—Μπουτούρλιν, *Ἀλέξανδρος Μπορίσοβιτς***. Ρῶσος στρατηγὸς (1694—1767). Εὐνοούμενος κατ' ἀρχὰς τῆς αὐτοκρατείρας Ἐλισάβετ, ἔλαβε παρ' αὐτῆς τὸν τίτλον τοῦ κόμητος καὶ διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ κατὰ τὸν ἐναντίον τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας Φριδερίκου Β' πόλεμον. Ἀλλ' ἐπέδειξε τοιαύτην ἀβουλίαν καὶ νωθρότητα, ὥστε ἀντικατεστάθη ταχέως. Θ. Β.

**—Μπουτούρλιν, *Δημήτριος Πέτροβιτς, κόμης* —**. Ρῶσος πολιτικὸς (1790—1850). Ἐγένετο γερουσιαστής, διευθυντὴς τῆς αὐτοκρατορικῆς βιβλιοθήκης τῆς Πετρουπόλεως καὶ τῆς λογοκριτικῆς ἐπιτροπῆς τοῦ 1848 (βλ. κατ.). Ὑπῆρξε διάσημος βιβλιόφιλος καὶ κατήρτισε μίαν τῶν σπουδαιοτέρων βιβλιοθηκῶν τῆς Εὐρώπης. Συνέγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς: «Σύνοψις τῶν στρατιωτικῶν γεγονότων τοῦ ἱσπανικοῦ πολέμου», «Ἱστορία τῆς περιόδου τῶν ρωσικῶν ταραχῶν», «Ἱστορία τῆς ἐκστρατείας τοῦ 1814», «Στρατιωτικὴ ἱστορία τῶν ρωσικῶν πολέμων τοῦ ΙΗ' αἰῶνος» κ. ἄ. Θ. Β.

**—Μπουτούρλιν, *ἐπιτροπή* —**. Λογοκριτικὴ τριμελὴς ἐπιτροπή, συσταθεῖσα ὑπὸ τοῦ τσάρου Νικολάου Α' τὴν 2 Ἀπριλίου 1848, πρὸς κατάπνιξιν τῆς ἀρξαμένης ἐν Ρωσίᾳ ἀπὸ τοῦ 1825 φιλελευθέρας κινήσεως, τῆς ἀποβλεπούσης εἰς τὴν χειραφέτησιν τῶν δουλοπαροίκων καὶ τὴν παροχὴν φιλελευθέρων θεσμῶν. Ἡ ἐπιτροπὴ αὕτη, περιβληθεῖσα διὰ δικτατορικῆς ἐξουσίας καὶ ἐξαρτωμένη ἀπ' εὐθείας ἀπὸ τοῦ τρίτου τμήματος τοῦ γραφείου τοῦ τσάρου, παρεκώλυε τὴν διάδοσιν παντὸς ἐντύπου καλλιεργοῦντος φιλελευθέρας ἰδέας. Κύριος μοχλὸς αὐτῆς ἐγένετο ὁ γερουσιαστὴς *Δημήτριος Μπουτούρλιν*, ἀνὴρ ἀνελευθέρων ἰδεῶν, τοιαύτη δὲ ὑπῆρξεν ἡ πίεσις καὶ ἡ καταδίωξις τῶν συγγραφέων καὶ τῶν δημοσιογράφων, ὥστε ἡ πνευματικὴ ζωὴ τῆς Ρωσίας περιῆλθεν εἰς πλήρη μαρασμόν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Α' ὁ διάδοχος αὐτοῦ Ἀλέξανδρος Β κατήργησεν αὐτήν. Θ. Β.

**Μπούτριντο** (Butrinto) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία ὑφ' ἣν οἱ ξένοι γνωρίζουν τὸν ὅρμον τοῦ *Βουθρωτοῦ*. Σ. Ε. Λ.

**Μπουτροὺ** (Boutroux), ***Στέφανος-Αἰμίλιος-Μαρία***. Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1845 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1921. Μορφωθεὶς εἰς τὸ λύκειον τοῦ Ἑρρίκου τοῦ Δ', ἔλαβε τὸ δίπλωμα τῆς ἀνωτέρας École Normale τῷ 1868. Τὸ ἑπόμενον ἔτος μετέβη εἰς Ἀϊδελβέργην, ὅπως μελετήσῃ, κατ' ἐντολὴν τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας, τὸν ὀργανισμὸν τῶν γερμανικῶν πανεπιστημίων. Ἀπὸ τοῦ 1871 μέχρι τοῦ 1874, χρηματίσας καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας εἰς τὸ λύκειον τοῦ Καέν, διωρίσθη μετὰ τὰς διδακτορικάς του διατριβὰς ὑφηγητὴς τῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τοῦ Μομπελλιέ, ὅπου ἀνέλαβε τὴν τακτικὴν ἕδραν ἀπὸ τοῦ 1876. Διδάξας ἐν Νανσύ, ἀπὸ τοῦ 1877 μέχρι τοῦ 1879, ἀντικατέστησε τὸν Fouillée εἰς τὰ μαθήματα τῆς φιλοσοφίας τῆς ἀνωτέρας École Normale, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἔσχε λαμπρὰς ἐπιτυχίας ὡς τακτικὸς καθηγητὴς (1879—1885). Τῷ 1885 τοῦ ἀνετέθησαν συμπληρωματικὰ μαθήματα γερμανικῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν Σορβώνην καὶ ὡς τακτικὸς καθηγητὴς ἀπὸ τοῦ 1888 μέχρι τοῦ 1907 ἐνέπνευσεν ὁλόκληρον γενεὰν σπουδαστῶν τῆς φιλοσοφίας καὶ ὑπεκίνησε πολλὰς φιλοσοφικὰς ἰδιοφυΐας. Ἐκτὸς τούτου διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1902 διευθυντὴς τοῦ ἱδρύματος Thiers. Ὁ Μπουτροὺ ὑπῆρξε μεγάλη φυσιογνωμία εἰς τὸν ἐπιστημονικὸν κόσμον τῆς Γαλλίας καὶ εἰς τὴν διεθνῆ φιλοσοφικὴν κίνησιν, ἐτιμήθη δὲ μὲ ἐξαιρετικὰς διακρίσεις. Μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν (1888) καὶ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας (1912), ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Μιλάνου (1898), τῆς Ἰταλικῆς Ἀκαδημίας Dei Lincei (1905), τῆς Βρεττανικῆς Ἀκαδημίας (1907), τῆς Ἀκαδημίας τῆς Κοπεγχάγης (1913) καὶ τῆς Νεαπόλεως (1913), τῆς Πετρουπόλεως (1916), ἐκλήθη νὰ δώσῃ μαθήματα ἐν Ὀξφόρδῃ εἰς τὴν ἕδραν H. Spencer εἰς τὴν Γενεύην καὶ ἀλλαχοῦ.

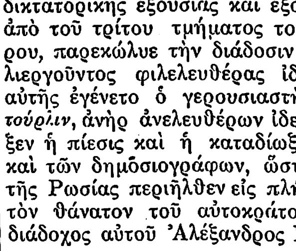

Αἰμίλιος Μπουτρού.

Καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας μὲ ἰδεαλιστικὰς παραδόσεις ὁ Μπουτρού, προσπαθεῖ καθ' ὅλον τὸν βίον του νὰ ἀπαλλαγῇ τῶν συνεπειῶν τοῦ αὐστηροῦ ἐπιστημονισμοῦ, ὅστις συνεπέφερεν ἀπαισιόδοξον καὶ σκληρὰν ἀντίληψιν τῆς ζωῆς. Καταδεικνύει ἐν αὐτῇ τῇ ἐπιστήμῃ διὰ λεπτολόγου ἀναλύσεως τὴν προέλευσιν καὶ τὴν περιωρισμένην ἔκτασιν τῆς ἐννοίας τῆς αἰτιότητος. Ἡ αἰτιατὴ ἐξίσωσις δὲν εἶναι ἀπόλυτος καὶ οἱ φυσικοὶ νόμοι ἀντιπροσωπεύουν μόνον ἀφ' ἑνὸς μὲν ἰδεατὸν καὶ ἀνέφικτον τελείως αἴτημα, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἀνάγκην τῆς ἀνθρωπίνης διανοίας πρὸς καθυπόταξιν τῶν φυσικῶν φαινομένων· ἐφαρμόζονται ἑπομένως μόνον ἐν τῇ περιοχῇ αὐτῶν καὶ δὲν εἶναι αὐτονόητοι εἰς τὸ πνεῦμα ἐν τῇ φυσικῇ του καταστάσει, ἀλλὰ τεχνητὸν δημιούργημα αὐτοῦ τοῦ πνεύματος προϋποθέτον τὴν λειτουργίαν καὶ τοὺς νόμους του. Ἐκτὸς τούτου ἡ ἐφαρμογὴ τῶν φυσικῶν νόμων εἰς τὰ φαινόμενα τῆς βιολογίας, τῆς ψυχολογίας, τῆς κοινωνιολογίας κ.λ.π. δὲν ἐπιβάλλεται ἀφ' ἑαυτῆς καὶ παρουσιάζει πλείστας δυσκολίας, διότι εἰς ἑκάστην ἀνωτέραν κατὰ σειρὰν τάξιν φαινομένων προκύπτουν στοιχεῖα, τὰ ὁποῖα δὲν ἀνάγονται πλήρως εἰς τὰ φαινόμενα τῆς κατωτέρας τάξεως. Ἡ ἐμφάνισις τῶν νέων αὐτῶν χαρακτήρων δὲν εἶναι ἀναγκαία, ἀλλὰ συμπτωματική, ἠδύνατο δηλαδὴ νὰ μὴ συμβῇ, καὶ δὲν ἐξηγεῖται ἐκ τῶν νόμων οἵτινες ἰσχύουν διὰ τὰ φαινόμενα τῆς κατωτέρας τάξεως. Ἡ ζωὴ δηλαδὴ δὲν ἐξηγεῖται ἐκ τῶν νόμων τῆς ὕλης καὶ ἠδύνατο νὰ μὴ προστεθῇ εἰς αὐτήν· ἡ δὲ συνείδησις εἶναι πραγματικὴ δημιουργικὴ προσθήκη εἰς τὴν ζωὴν καὶ δὲν δύναται νὰ ἀναχθῇ εἰς τοὺς βιολογικοὺς νόμους, οὔτε νὰ συναχθῇ ἀφ' ἑαυτῆς ἐκ τοῦ ἁπλῶς δυνατοῦ. Διὰ πᾶσαν ὑπερτιθεμένην μορφὴν τῆς πραγματικότητος χρειάζεται ἡ ἐπέμβασις μιᾶς ἐλευθέρας δημιουργικῆς ἀρχῆς. Μερικοὶ ἐξήγησαν τοῦτο ὡς συγκεκαλυμμένον μυστικισμόν, ἀλλ' ὁ Μπουτροὺ συνάγει τὴν ἀνάγκην τῆς μεταφυσικῆς ἀπὸ τὰς συνθήκας καὶ τῆς σκέψεως καὶ τῆς πράξεως. Μεταξὺ τῆς ἀφῃρημένης ἐννοίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς κοινῆς ἀντιλήψεως περὶ τῆς δημιουργικῆς πράξεως εὑρίσκεται ἡ «ἰδέα», μὲ τὴν πλατωνικὴν ἔννοιαν, ἡ συνθετικὴ δηλαδὴ ἀντίληψις τοῦ δυνατοῦ καὶ τοῦ δέοντος γενέσθαι, ἥτις δὲν ἀναλύεται ἁπλῶς εἰς δεδομένα τῆς πραγματικότητος, ἀλλ' εἶναι δημιούργημα τοῦ νοῦ, ὅστις ἀντιτίθεται πρὸς τὴν ἀφῃρημένην δι' ἐννοιῶν διανόησιν τῆς ἐπιστήμης. Ὁ νοῦς ἢ λόγος εἶναι τὸ καθ' αὑτὸ ἀντικείμενον τῆς φιλοσοφίας, ἥτις ὀφείλει νὰ λάβῃ ὑπ' ὄψιν της καὶ τὴν ποιότητα ἑκάστης τάξεως φαινομένων καὶ ὄχι ἁπλῶς τὴν ποσότητα, ὡς ἡ ἐπιστήμη.

Ἔργον τῆς φιλοσοφίας εἶναι νὰ καταδείξῃ καὶ νὰ νοήσῃ τὴν συμπτωματικότητα ταύτην τῶν διαφόρων τάξεων φαινομένων, ἥτις ἀντιτίθεται μὲν πρὸς τὴν ἀναγκαιότητα, δὲν εἶναι ὅμως τυχαία ἀλλὰ μόνον ἡ ἀρνητικὴ ἄποψις τῆς καθολικῆς αὐθορμησίας, τῆς πρώτης θείας καὶ δημιουργικῆς ἀρχῆς. Ὁ νοῦς συνδυάζει τὰς ἀντιθέτους ἀπόψεις τῆς ἀναγκαιότητος καὶ τῆς ἐλευθερίας, τῆς μηχανικῆς αἰτιότητος καὶ τῆς σκοπίμου ἐνεργείας. Ἡ πρόοδος εὑρίσκεται πέραν τῆς αὐστηρᾶς συνοχῆς αἰτίας καὶ ἀποτελέσματος.

Ἔργα: «Περὶ τῆς συμπτωματικότητος τῶν νόμων τῆς φύσεως» (1874), «De veritatibus aeternis apud Cartesium», «Ἡ φιλοσοφία τῶν Ἑλλήνων ἐν τῇ ἱστορικῇ της ἐξελίξει» (1877—1884), μετάφρασις τοῦ Zeller μὲ σημαντικὴν προεισαγωγήν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἡ φιλοσοφία θεωρεῖται ἔργον ὄχι μόνον τοῦ νοῦ ἀλλὰ καὶ τῆς βουλήσεως καὶ τοῦ συναισθήματος συμμετέχουσα οὕτω τῆς φύσεως, τῆς ἐπιστήμης, τῆς τέχνης καὶ τῆς θρησκείας, «Ὁ Σωκράτης ἱδρυτὴς τῆς ἠθικῆς ἐπιστήμης» (1883), «Ἀριστοτέλης», ἄρθρον ἐν τῇ «Μεγάλῃ Γαλλικῇ Ἐγκυκλοπαιδείᾳ» (1886), «Κάντ» (1895 ἐπίσης), «Ὁ Γερμανὸς φιλόσοφος Jacob Boehme, ὑποδηματοποιὸς - θεόσοφος τῆς Ἀναγεννήσεως» (1888 Πρακτ. Ἀκαδ. Ἠθ. Ἐπιστημῶν), «Περὶ τῆς ἰδέας τοῦ φυσικοῦ νόμου ἐν τῇ συγχρόνῳ ἐπιστήμῃ καὶ φιλοσοφίᾳ» (1895), «Ἡ ἡττημένη Ἑλλὰς καὶ οἱ πρῶτοι στωϊκοί» (1875), «Ζητήματα ἀγωγῆς καὶ ἠθικῆς» (1896), «Μελέται ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας» (1897), «Pascal» (1900), «Ἡ ψυχολογία τοῦ μυστικισμοῦ» (1902), «Ἡ φιλοσοφία ἐν Γαλλίᾳ ἀπὸ τοῦ 1867» («Ἐπιθ. Μεταφ. καὶ Ἠθικ.» 1908), «Τζέιμς» (1911),

Digitized by Google

«Φιλοσοφία καὶ πόλεμος» (1916), «The beyond that s within and other addresses» (1912) κλπ. Ε. Λ.

**Μπούτσατς** (Buczacz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ποδωνίας ἐν Γαλικίᾳ. Κάτ. 12.000, ἐξ ὧν οἱ πλεῖστοι Ἑβραῖοι. Ἔχει μεγαλοπρεπεῖς ἐκκλησίας τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἐργοστάσια παραγωγῆς οἰνοπνεύματος, ξους κτλ. Εἶναι ἐκ τῶν ἀρχαιοτάτων πόλεων τῆς Γαλικίας, καταληφθεῖσα ἐπανειλημμένως ὑπὸ τῶν Τούρκων κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα. Κατὰ τὸ 1915 ἐπῆρξε θέατρον αἱματηρῶν μαχῶν μεταξὺ Αὐστριακῶν καὶ Ρώσων. Γ. Θ. Κ.

**Μποῦτσερ** (Butzer), ***Μαρτῖνος***. Γερμανὸς θεολόγος (1491—1552). Τῷ 1506 εἰσῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν δομινικανῶν. Τῷ 1517, ἐλθὼν εἰς Ἁϊδελβέργην, ἐσπούδασε τὴν ἑλληνικὴν κηρυχθεὶς ὀπαδὸς τοῦ Ἐράσμου, ἔπειτα δὲ καὶ τοῦ Λουθήρου, ἀποδεχθεὶς τὰς 95 θέσεις αὐτοῦ. Ἀπαλλαγεὶς τῇ μεσιτείᾳ φίλων τῆς μοναχικῆς ὑποσχέσεως, ἐγένετο διαμαρτυρόμενος ἱερεὺς εἰς διαφόρους τόπους καὶ τέλος εἰς τὸ Στρασβοῦργον, ἔνθα ἔμεινε περὶ τὰ 25 ἔτη. Τῷ 1524 ἔγραψε τὸ ἔργον αὐτοῦ «Grund und Ursach» ἐναντίον τῶν ἀναβαπτιστῶν, ὑποδεικνύων τοὺς ἐξ αὐτῶν κινδύνους. Τῷ 1525 ἐξέδωκεν εἰς λατινικὴν μετάφρασιν τὰς ἐκκλησιαστικὰς διδαχάς (Kirchpostille) τοῦ Λουθήρου, ἐν ᾗ, ἀποκλίνων τῆς περὶ εὐχαριστίας διδασκαλίας τοῦ Λουθήρου, ἐξέθετεν ἰδίαν θεωρίαν περὶ αὐτῆς. Ὁ Λούθηρος ἀπήντησεν, ἐπικρίνων δριμέως τὴν θεωρίαν τοῦ Μποῦτσερ, οὗτος δὲ τότε ἐστράφη πρὸς τοὺς Ἑλβετοὺς μεταρρυθμιστάς. Συνειργάσθη εἰς τὴν σύνταξιν τῆς «Confessio Tetrapolitana», ὑπὲρ ἧς ἔγραψε καὶ ἀπολογίαν. Κηρυχθεὶς κατὰ τοῦ Interim, προσεπάθει πάσῃ δυνάμει νὰ πείσῃ τοὺς κατοίκους τοῦ Στρασβούργου νὰ μὴ δεχθῶσιν αὐτό. Τοῦτο ἐξώργισε τὸν αὐτοκράτορα, κεκηρυγμένον ὑπὲρ αὐτοῦ, ὅστις τῷ 1549 διέταξε τὴν ἀπέλασιν αὐτοῦ. Τῇ προσκλήσει τοῦ ἀρχιεπισκόπου Crammer ἐλθὼν εἰς Ἀγγλίαν, διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κανταβρυγίας. Ἐκεῖ συνέγραψε τὸ κύριον αὐτοῦ δογματικὸν ἔργον «Περὶ τῆς βασιλείας τοῦ Χριστοῦ» (De regno Chisti), μετ' ὀλίγον δὲ ἐτελεύτησε, ταφεὶς ἐν τῷ καθεδρικῷ ναῷ τῆς πόλεως. Ὁ Μποῦτσερ δὲν ἦτο βαθὺς θεολόγος, εἶχε δὲ καὶ ἀστάθειαν, ἥτις ἐξεδηλώθη ἰδίᾳ ἐν τῇ περὶ τῆς θείας εὐχαριστίας διδασκαλίᾳ αὐτοῦ. Παρὰ ταῦτα, δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς εἷς τῶν μεγάλων Γερμανῶν μεταρρυθμιστῶν. Τὰ συγγράμματά του, ἅτινα εἶχον παροδικὴν σημασίαν, συνήθροισε πρὸς ἔκδοσιν ὁ ἐν Στρασβούργῳ φίλος του Κονράδος Hubert, ὅστις ὅμως δὲν ἠδυνήθη νὰ ἐκδώσῃ εἰ μὴ ἕνα μόνον τόμον τῷ 1577 ἐν Βασιλείᾳ. Κ. Ι. Δ.

**Μπουτσικὸν** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Πωγωνίσκος* (βλ.λ.).

**Μπούτσινο** (Buccino) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Σαλέρνου τῆς Καμπανίας. Κάτ. 6.100. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν λατομεῖα μαρμάρου. Περιβάλλεται ὑπὸ παλαιῶν τειχῶν καὶ ἔχει ἀρχαῖον φρούριον, εἰς τὸ ὁποῖον εἶχε καταφύγει, καταδιωκόμενος ὑπὸ τοῦ Καρόλου, ὁ πάπας Οὐρβανὸς ΣΤ'. Μ. Δ. Β.

**μπουτσουνάρα** (ἡ)· ἰδιωματ. Κρήτ., πηγὴ (ἐκ τοῦ ἰταλ. bucinare=ψιθυρίζω). ΕΡ. Μ.

**Μπουτσουνάρια** *[Γεωγρ.]*. Θέσις ἐν Κρήτῃ παρὰ τὸ χωρίον Περιβόλια, ἐν ᾗ ἀναβλύζουσιν ἄφθονα ὕδατα, χρησιμοποιούμενα διὰ τὴν ὕδρευσιν τῆς πόλεως τῶν Χανίων. Ἡ θέσις αὕτη κατέστη κυρίως ἱστορικὴ ἕνεκα τῶν ἐπανειλημμένων αὐτόθι ἐπαναστατικῶν συγκεντρώσεων, συναθροίσεων καὶ συνελεύσεων τῶν Κρητῶν, ὧν αἱ κυριώτεραι εἶναι ἡ τῆς 14ης Μαΐου 1858 κατὰ τὴν ἔνοπλον διαμαρτυρίαν τὴν ἐπικληθεῖσαν τοῦ Μαυρογένη, ἡ πρὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1866 συνάθροισις, κατὰ τὴν ὁποίαν ἀπηύθυναν οἱ Κρῆτες παρακλητικὴν ἀναφορὰν πρὸς τὸν σουλτᾶνον, καὶ ἡ τοῦ 1884, ἡ προκληθεῖσα διὰ τὸ ζήτημα τῶν βακουφικῶν. ΕΡ. Μ.

**Μποῦττι** (Butti), ***Ἐρρῖκος - Ἀννίβας***. Ἰταλὸς δραματικὸς συγγραφεύς, ποιητὴς καὶ μυθιστοριογράφος (1868—1912). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς ἰατρικήν, μαθηματικὰ καὶ νομικά, τὰ ὁποῖα ἐγκατέλειψε διὰ νὰ ἀφοσιωθῇ εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Τὸ φιλολογικόν του στάδιον ἤρχισε διὰ σειρᾶς ἄρθρων κριτικῆς καὶ στίχων, τοὺς ὁποίους ἐδημοσίευσεν εἰς τόμον ὑπὸ τὸν τίτλον «Οὔτε μίση, οὔτε ἀγάπες» (1889). Εἰς τὰ κατόπιν ἔργα του ἐμφανίζεται ὡς φιλόσοφος, πιστεύων ὅτι ὁ συγγραφεὺς ἔχει ὡς ἀποστολὴν τὴν διαμόρφωσιν τῆς κοινωνίας. Τὰς συντηρητικάς του ἰδέας, ἐν τῇ ἠθικῇ, τῇ θρησκείᾳ καὶ εἰς τὰ κοινωνικὰ ζητήματα, προσεπάθησε νὰ ἀναπτύξῃ εἰς τὰ μυθιστορήματα: «Ἡ ψυχή» (1894), «Τὸ ἀνήθικον» (1895), «Ἡ Σειρήν» (1897) κτλ. Τῷ 1893 ἀνεβιβάσθη ἐπὶ σκηνῆς τὸ πρῶτόν του δραματικὸν ἔργον «Τὸ πικρὸ φροῦτο», μετὰ τὸ ὁποῖον ἐπηκολούθησαν τὰ δράματα: «Ἡ οὐτοπία» (1896), σάτιρα τῆς χρεοκοπίας τῆς ἐπιστήμης, «Τὸ τέλος ἑνὸς ἰδανικοῦ» (1898), ἡ τετραλογία «Οἱ ἄθεοι» ἀποτελεσθεῖσα ἐκ τῶν δραμάτων: «Ὁ δρόμος πρὸς τὴν ἡδονήν» (1900), «Ἑωσφόρος» (1900), παρασταθὲν εἰς ὅλα σχεδὸν τὰ μεγάλα θέατρα τῆς Εὐρώπης, «Ἡ τρικυμία» (1901) καὶ «Στὸ σπίτι τῶν νεκρῶν». Ἔγραψε κατόπιν: «Ὁ γίγας καὶ οἱ πυγμαῖοι» (1903), σάτιρα τοῦ Καρντοῦτσι καὶ τῆς ἐποχῆς του, «Φλόγες στὴ σκιά» (1904), «Στὴ χώρα τῆς τύχης» (1909) ὅπερ ἐσημείωσε μεγάλην ἐπιτυχίαν, τὸ δραματικὸν ἔμμετρον ποίημα «Ὁ πύργος τῶν ὀνείρων» (1910) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπούττμαν** (Buttman), ***Φίλιππος - Κάρολος***. Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1764 ἐν Φραγκφούρτῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1829. Διετέλεσε καθηγητὴς τῶν ἀρχαίων γλωσσῶν, ἡ δὲ φήμη του βασίζεται κυρίως ἐπὶ τῶν ἐργασιῶν του περὶ τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης. Τὰ σπουδαιότερα τῶν ἔργων εἶναι: «Ἑλληνικὴ γραμματική» (Βερολ. 1792), «Διεξοδικὴ διδασκαλία τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης». Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Λεξιλόγιον, ἤτοι συμβολὰς εἰς τὴν ἐξήγησιν τῶν ἑλληνικῶν λέξεων, κυρίως δὲ τοῦ Ὁμήρου καὶ Ἡσιόδου» (2 τόμοι, Βερολ. 1818—1837), «Διαλόγους» τοῦ Πλάτωνος, τὸν «Φιλοκτήτην» τοῦ Σοφοκλέους (1822) καὶ «Φαινόμενα καὶ διοσημία» τοῦ Ἀράτου (1826). Τὸ τελευταῖόν του ἔργον, ἐκδοθὲν ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του, εἶναι ὁ «Μυθολόγος ἢ συλλογὴ μελετῶν περὶ τῶν θρύλων τῆς ἀρχαιότητος» (2 τόμοι, Βερολ. 1828—1829). Ὁ υἱός του Ἀλέξανδρος ἠσχολήθη ἐπίσης μὲ κλασσικὰς μελέτας, ἐκδώσας «Γραμματικὴν τῆς γλώσσης τῆς Καινῆς Διαθήκης» (Βερολ. 1859). Διετέλεσε βιβλιοθηκάριος τῆς Βασιλικῆς βιβλιοθήκης Βερολίνου. Π. Χ. Χ.

**Μπουττούρα** (Buttura), ***Ἀντώνιος***. Ἰταλὸς λόγιος (1771—1832). Ἐδημοσίευσε κατ' ἀρχὰς ὡραῖα σονέττα, τὰ ὁποῖα προεκάλεσαν τὴν προσοχὴν τῶν λογίων, ἀκολουθήσας ὅμως τὰς φιλελευθέρας ἰδέας τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους, ὅπου ἐδίδασκε τὴν ἰταλικὴν γλῶσσαν εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Σαὶν-Σύρ. Ἐξέδωκεν αὐτόθι τὰ ἔργα τοῦ Τάσου, τοῦ Δάντη, τοῦ Πετράρχη, τοῦ Ἀλφιέρι καὶ τοῦ Μακκιαβέλλι, καὶ συνέγραψε: «Δοκίμιον ἱστορίας τῆς Βενετίας» (1816), «Λεξικὸν ἰταλογαλλικόν» (1832), «Ἑλληνικὸν ποίημα» κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπουὺς** (Buysse), ***Κυριέλ***. Βέλγος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἤρχισε τὸ λογοτεχνικόν του στάδιον διὰ τοῦ μυθιστορήματος «Τὸ δίκαιον τοῦ ἰσχυροτέρου» (1893) καὶ ἔγραψε περὶ τοὺς 20 τόμους διηγημάτων καὶ ἰσαρίθμους μυθιστορημάτων. Ὁ Μαίτερλινγκ περιέλαβεν αὐτὸν «μεταξὺ τῶν τριῶν ἢ τεσσάρων μεγάλων διηγηματογράφων τῆς ζωῆς τῶν χωρικῶν κατὰ τὰ τελευταῖα 50 ἔτη». Τὰ κυριώτερα μυθιστορήματά του εἶναι: «Εἷς λέων τῆς Φλάνδρας» (1900), «Ἡ ζωὴ τοῦ Ρότσεκεν» (1905), «Ἡ νυκτερινὴ ἐπίθεσις» (1912), τὰ θεατρικὰ ἔργα: «Ἡ οἰκογένεια τοῦ βὰν Πάκμελ», «Ὁ μετανάστης» κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μποὺφ** (Buff), ***Καρλόττα***. Τὸ πραγματικὸν ὄνομα τῆς *Λόττε*, τῆς ἡρωΐδος τοῦ «*Βερθέρου*» (βλ. λ.) τοῦ Γκαῖτε. Ἐγεννήθη τῷ 1743 καὶ ἀπέθανε τῷ 1828, εἶχε δὲ ἐμπνεύσει σφοδρὸν ἔρωτα εἰς τὸν ποιητήν. Α. Δ.

**Μπούφα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λαρίσης χωρίου *Κορώπη* (βλ. λ.).

**Μπούφι** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον Κάτ. (1928) 1.760. Χ. Δ.

**Μπουφίδης**, ***Νικόλαος***. Ἕλλην πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Λεβαδείᾳ τῷ 1841 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1912. Σπουδάσας νομικὰ εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Ἀθηνῶν, ἤρξατο πολιτευόμενος. Τῷ 1873 ἐξελέγη βουλευτὴς καὶ ἐτάχθη εἰς τὸ κόμμα τοῦ Δημητρίου Βούλγαρη, εἶτα δὲ ἠκολούθησε τὸν Χαρίλαον Τρικούπην. Διέπρεψε μεταξὺ τῶν ῥητόρων τῆς βουλῆς καὶ ἐν τῷ νομικῷ κόσμῳ. Μετέσχε τῆς κυβερνήσεως Τρικούπη, ἀναλαβὼν τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐσωτερικῶν (1893—1895). Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Χαριλάου Τρικούπη ἠκολούθησε τὸν Γεώργιον Θεοτόκην καὶ διετέλεσεν ἑξάκις πρόεδρος τῆς βουλῆς. Θ. Β.

— **Μπουφίδης-*Χάγερ Ν.*** Σύγχρονος Ἕλλην λυρικὸς ποιητὴς καὶ διηγηματογράφος, ἔγγονος τοῦ Νικ. Μπουφίδου, γεννηθεὶς τῷ 1899 ἐν Ἀθήναις. Ἡ μήτηρ αὐτοῦ ἦτο γερμανικῆς καταγωγῆς. Ἀνετράφη καὶ ἐξεπαιδεύθη εἰς Κάϊρον, μετέβη δὲ ἐπί τι διάστημα καὶ εἰς Γαλλίαν καὶ Ἑλβετίαν. Ἐγκατασταθεὶς κατόπιν ὁριστικῶς ἐν Ἀθήναις, διατελεῖ ὑπάλληλος τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης τῆς Ἑλλάδος. Ἐνεφανίσθη ἀπὸ τοῦ 1916 εἰς τὰ «Γράμματα» καὶ ἐδημοσίευσεν εἰς τὰ περιοδικὰ «Βωμός», «Ἀλεξανδρινὴ Τέχνη», «Κριτικὴ καὶ Τέχνη» κλπ. ποιήματα, ἄρθρα κλπ., ἐνίοτε καὶ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἴσαντρος Ἄρις*. Εἰς αὐτοτελῆ δὲ τεύχη ἐξέδωκε τὰ ἑξῆς: «Τραγούδια σὲ μοντέρνους σκοπούς» (1918), «Μοντέρνα» (1919), «Ἰωνικά» (1922), «Δέκα ποιήματα» (1930), συλλογὰς ποιημάτων καὶ «Τρεῖς νύχτες ἡδονῆς» διήγημα (1927). Ἔγραψε καὶ θεατρικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὸ μονόπρακτον «Παραμονὴ Πρωτοχρονιᾶς» (1928), τυχὸν τοῦ Α' βραβείου τῆς Ἑταιρείας Ἑλλήνων Θεατρικῶν Συγγραφέων, «Τὸ δρᾶμα τῆς κοκκαίνης» (τρίπρακτον, 1928) κ. ἄ. Θηρευτὴς τῆς ἄκρας ἁπλότητος καὶ ὀνειροπόλος, ὑπέστη εἰς τὸ ποιητικόν του ἔργον τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἰδεῶν τοῦ Francis Zammes, ἀπὸ ἀπόψεως δὲ λεκτικοῦ καὶ τεχνοτροπίας ἔσχεν ἀφετηρίαν τινὰ ἐκ τοῦ ἔργου τοῦ Κ. Π. Καβάφη. Τ. Α.

**Μποὺφ-κιόϊ** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἕβρου χωρίου *Βύας* (βλ. λ.).

**Μπουφλὲρ** (Boufflers), ***Λουδοβῖκος - Φραγκῖσκος**, δοὺξ ντὲ —*. Γάλλος στρατάρχης, γεννηθεὶς τῷ 1644 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1711. Μετέσχε πολυαρίθμων μαχῶν, ἐπιδείξας μεγάλην στρατιωτικὴν ἱκανότητα, τῷ δὲ 1681, φέρων τὸν βαθμὸν στρατηγοῦ, διέπρεψε κατὰ τὴν ἐναντίον τῆς ὁμοσπονδίας τοῦ Ἄουγκσμπουργ μάχην. Τῷ 1690 κατήγαγε τὴν νίκην τοῦ Φλερύ, ὑπερήσπισε τὸ Νεμοὺρ καὶ ἐθριάμβευσε κατὰ τὴν ἄμυναν τῆς Λίλλης, ἕνεκα τῆς ὁποίας ἀνηγορεύθη δούξ. Μετὰ τὴν καταστροφὴν τοῦ Μαλπλακέ, δι' ἐντέχνου ὑποχωρήσεως ἔσωσε τὸ στράτευμα. Θ. Β.

— **Μπουφλὲρ** (Boufflers), ***Στανίσλαος**, ἱππότης ντὲ —*. Γάλλος φιλόλογος. γεννηθεὶς ἐν Νανσὺ τῷ 1738 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1815. Ὑπηρετήσας εἰς τὸν στρατόν, ἐγένετο συνταγματάρχης τῶν οὐσάρων καὶ διοικητὴς τῆς Σενεγάλης, τῷ δὲ 1788 μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐξελέγη πληρεξούσιος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως. Εἶναι γνωστὸς κυρίως ἐκ τῶν ἐρωτικῶν ποιημάτων καί τινων διηγημάτων του. Θ. Β.

**μποῦφος** (ὁ)· τὸ πτηνὸν βύας, εἶδος γλαυκός: παροιμ.: «σὰν τοῦ μπούφου τὸ πουλί», ἐπὶ ἀνθρώπου ὁ ὁποῖος προσπορίζεται κέρδη ἀκόπως, διότι λέγεται περὶ τοῦ μπούφου ὅτι τὰ μικρὰ πτηνὰ ἔρχονται πρὸ τοῦ ῥάμφους του καὶ οὕτω συλλαμβάνει αὐτὰ εὐκόλως· || μεταφ., ὁ εὐήθης, ὁ μικρόνους.

— **μποῦφος ὁ *μικρὸς*** (ὁ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ πτηνοῦ *σκὼψ ὁ κοινός*.

**Μπουφόσκα**, ἢ ***Μποφονάκια*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Πτέρης τῆς ἐπαρχίας Αἰγιαλείας τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας. Κάτ. (1928) 103. Χ. Δ.

**Μπουφφαλμάκκο** (Buffalmacco), ***Μπουοναμίκο ντὶ Κριστόφανο***, ὁ ἐπιλεγόμενος—. Ἰταλὸς ζωγράφος ἐκ Φλωρεντίας ἀκμάσας κατὰ τὸ α' ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Κατ' ἀρχὰς ἠκολούθησε τὴν βυζαντινὴν τεχνοτροπίαν, μετὰ ταῦτα δ' ἐνεκολπώθη τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Τζιόττο. Ἐκ τῶν ἔργων του μνημονεύομεν τὰ ἐκτελεσθέντα ἐν τῷ ἀββαείῳ καὶ τῷ ναῷ τῶν Ἁγίων Πάντων τῆς Φλωρεντίας, ἅτινα κατεστράφησαν ἤδη, τὰ ἐν τῷ Campo-Santo τῆς Πίζης («Ἡ δημιουργία τοῦ κόσμου», «Ἀδὰμ καὶ Εὔα», «Ὁ θάνατος τοῦ Ἄβελ», «Ἡ κατασκευὴ τῆς κιβωτοῦ», «Ἡ σταύρωσις», «Ἡ ἀνάστασις», «Ἡ ἀνάληψις» καὶ τὰ ἐν Ἀρρέτζῳ. Ι. Μ. Π.

**Μπούφφαλο** (Buffalo) *[Γεωγρ.]*· βλ. *Μπέφφαλο*.

**Μπουφφὰρ** (Bouffar), ***Ζυλμὰ - Μαγδαληνή***. Γαλλὶς ἠθοποιὸς καὶ λυρικὴ ἀοιδὸς (1841—1909). Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἀπὸ σκηνῆς ἐν Βελγίῳ, ἐκεῖ δ' ἐγνώρισεν αὐτὴν ὁ Ὄφφενμπαχ, ὅστις μεγάλως ἐξετίμησε τὸ τάλαντόν της. Προσελήφθη τότε εἰς τοὺς Bouffes-Parisiens, ταχέως δ' ἐπεβλήθη εἰς τὸ παρισινὸν κοινὸν χάρις εἰς τὴν συμπαθῆ καὶ ἑλκυστικὴν ἐμφάνισίν της. Ἐνεφανίσθη ἐπίσης ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῶν θεάτρων Palais Royal, Menus-Plaisirs, Gaité κλπ. Τὰς μεγαλυτέρας ἐπιτυχίας της ἐσημείωσεν εἰς τὰ ἔργα: «Παρισινὴ ζωή», «Ἡ Γενεβιέβη τῆς Βραβάντης», «Ὁ βασιλεὺς Καρότ» κλπ. Χ. Δ.

**Μπουφφαρὶκ** (Bouffarik) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀλγερίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ἀλγερίου, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Ὀρὰν—Ἀλγερίου. Εἶναι κέντρον περιοχῆς, ἥτις παράγει μεγάλας ποσότητας οἴνων, σίτου, καπνοῦ, πορτοκαλλίων κλ. καὶ ἔχει διυλιστήρια αἰθερίων ἐλαίων. Κάτ. 13.200. Χ. Δ.

**Μπουχαλάνθε** (Bujalance) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἱσπανίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Κορδούης. Κάτ. 12.639. Παράγει ἐλαίας, οἶνον, ζῦθον καὶ ἔχει ἐργοστάσια ὑφασμάτων, μαλλίνων εἰδῶν καὶ κεραμουργίας. Εἶναι πόλις ἀρχαιοτάτη μὲ πλεῖστα ἐρείπια ῥωμαϊκῆς ἐποχῆς. Ἐπὶ Ρωμαίων ἐκαλεῖτο Calpurniana Castrum. Ἔχει μαυριτανικὸν ἀνάκτορον τοῦ 935, κτισθὲν ὑπὸ τοῦ χαλίφου τῆς Κορδούης Ἀβδουρραχμὰν τοῦ Γ'. Μ. Δ. Β.

**μπουχαλιώτικα** (τά). Καλεῖται οὕτως ἡ συνθηματικὴ γλῶσσα τῶν Ἀλβανῶν ἐμπειρικῶν ἰατρῶν τῶν καταγομένων ἐκ Μπούχαλης τῆς Β. Ἠπείρου (πρβλ. καὶ *ἐπαγγελματικαὶ γλῶσσαι*).

Digitized by Google

**Μπούχαναν** (Buchanan)· βλ. *Μπακάναν.*

**Μπουχάρα** (Bukhara, Buchara) *[Γεωγρ.].* Χώρα τῆς 'Ασίας (βλ. λ. *Βουχάρα*).

**μπουχαρὶ** (τό)· ἰδιωματ., ἡ καπνοδόχος (τουρκ. buhar=καπνός).

**Μπουχάριν, *Νικόλαος 'Ιβάνοβιτς.*** Ρῶσος πολιτικὸς καὶ φιλόσοφος, ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων θεωρητικῶν τοῦ κομμουνισμοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1888. Υἱὸς δικαστικοῦ, ἐσπούδασε τὰ νομικὰ ἐν Μόσχᾳ καὶ Βιέννῃ. 'Αναμειχθεὶς εἰς τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τῆς πατρίδος του, συνελήφθη κατὰ πρῶτον τῷ 1902. Τῷ 1911 ἐξωρίσθη εἰς 'Αρχάγγελον, ὁπόθεν κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ εἰς τὸ ἐξωτερικόν. 'Επιστρέψας εἰς Ρωσίαν κατὰ τὸ 1917, ἔδρασε κατὰ τὴν κομμουνιστικὴν ἐπανάστασιν καὶ ἔγινε γραμματεὺς τοῦ πολιτικοῦ γραφείου τοῦ κομμουνιστικοῦ κόμματος, διευθυντὴς τοῦ ρωσικοῦ οἰκονομικοῦ ἰνστιτούτου, διευθυντὴς τῆς «Πράβδας», ἐπισήμου ὀργάνου τοῦ κομμουνιστικοῦ κόμματος, πρόεδρος τῆς Γ' Διεθνοῦς κλπ. 'Εδημοσίευσε πλεῖστα θεωρητικὰ ἔργα, ἐξ ὧν ἀρκετὰ μετεφράσθησαν καὶ εἰς τὴν ἑλληνικήν, ὡς: «Τὸ πρόγραμμα τῶν κομμουνιστῶν» (1922), «Τὸ ἀλφάβητον τοῦ κομμουνισμοῦ» (γ' ἔκδ. 1927), «'Η θεωρία τοῦ ἱστορικοῦ ὑλισμοῦ» (μετάφ. *Κ. 'Ορφανοῦ* 1927, τόμ. 2) κ. ἄ. —Ω.

**μπουχασὶ** (τό)· εἶδος ὑφάσματος χρωματιστοῦ: «κόκκινο —, γαλάζιο μπουχασὶ» (ἑνετ. bocassin).

**Μπουχίνιον** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Σπήλιου (Ζηκοβίστης) τῆς ἐπαρχίας Βοΐου ('Ανασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, μετονομασθὲν εἰς *'Ανθηρόν.* Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 225. Χ. Δ.

**Μπουχιώτη** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ 'Ηλείας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 615. Χ. Δ.

**Μπουχλὰρ** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Κυπαρίσσου (Σουλετσίου) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, μετονομασθὲν εἰς *Ἅγιος Γεώργιος.* Κάτ. (1928) 384. Χ. Δ.

**Μποῦχνερ** (Buchner), ***'Εδουάρδος.*** Γερμανὸς χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1860 ἐν Μονάχῳ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1917, μετὰ τραῦμα ληφθὲν κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1896 καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου ἐν Τυβίγγῃ, ἀπὸ τοῦ 1898 ἐν Βερολίνῳ, ἀπὸ τοῦ 1909 ἐν Μπρεσλάου καὶ ἀπὸ τοῦ 1911 ἀνέλαβε τὴν διδασκαλίαν εἰς Βυρτσβοῦργον. 'Απησχολήθη κυρίως μὲ τὴν ὀργανικὴν σύνθεσιν καὶ τὴν ζυμοχημείαν. Οὕτω τῷ 1897 ἐπέτυχε νὰ ἀπομονώσῃ δι' ἐκθλίψεως τῶν ζυμοκυττάρων τὴν ζυμάσην, διὰ τὴν ἀνακάλυψιν τῆς ὁποίας ἐτιμήθη τῷ 1907 διὰ τοῦ βραβείου τῆς χημείας τοῦ Νόμπελ. 'Απέδειξεν ὅτι τὰ ζυμοκύτταρα καὶ μετὰ τὴν θανάτωσιν αὐτῶν δι' ἀλκοόλης, αἰθέρος ἢ ἀκετόνης διατηροῦσιν ἐν ἑαυτοῖς δραστικὸν τὸ ἔνζυμον. Σ. Γ.

—**Μποῦχνερ** (Buchner), ***'Ιωάννης.*** 'Ονομαστὸς Γερμανὸς ὑγιεινολόγος (1850—1902). Διετέλεσε καθηγητὴς καὶ βραδύτερον διευθυντὴς τοῦ ἰνστιτούτου τῆς ὑγιεινῆς τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Μονάχου. Ἔκαμε λίαν ἐνδιαφερούσας μελέτας ἐπὶ τῶν μικροβίων, τῶν μολύνσεων, τῶν διαφόρων θεραπευτικῶν μεθόδων τῆς φθίσεως καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Die Nägelische theorie der Infectionskrankheiten» (1877), «Eine neue Theorie über Erziehung der Infektionskrankheiten» (1883), «Aetiologische Therapie und Prophylaxis de Tuberkulose» (1883), κ. ἄ. 'Απὸ τοῦ 1895 συνεξέδιδε μετ' ἄλλων τὸ «'Αρχεῖον 'Υγιεινῆς». Μ. Δ. Β.

**Μπουχουνίτσα** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Μεγάλο Χωριό* (βλ. λ.).

**Μπούχουσλαιν** (Bohuslän) *[Γεωγρ.].* Παλαιὰ διοικητικὴ περιφέρεια τῆς Σουηδίας, ὑπαγομένη σήμερον εἰς τὸν νομὸν Γκαίτεμποργκ καὶ Μπούχους. Μέχρι τοῦ 1658 ἀνῆκεν εἰς τὴν Νορβηγίαν. 'Εκτείνεται ἐπὶ τοῦ πορθμοῦ Σκαγεράκη εἰς μῆκος 157 χλμ. καὶ εἶναι ἡ βορειοτέρα τῶν δυτικῶν παραλίων χωρῶν τῆς Σουηδίας. Ἔχει ἔδαφος δασῶδες καὶ εὐφορώτατον, παράγον ἰδίως σιτηρά. 'Η παραλία αὐτῆς εἶναι ἐσπαρμένη ὑπὸ νήσων. Τῷ 1308 ἀνηγέρθη ἐπὶ τῆς παρ' αὐτὴν νήσου Χίζιγγεν τὸ φρούριον *Μπούχους,* ἐξ οὗ ὠνομάσθη ὁλόκληρος ἡ περιοχή. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' καὶ ΙΖ' αἰῶνα τὸ φρούριον τοῦτο ὑπέστη 5 πολιορκίας καὶ ἐγένετο τὸ θέατρον σφοδρῶν μαχῶν μεταξὺ Σουηδῶν καὶ Δανῶν. Μ. Δ. Β.

**μπουχτίζω·** δημοτ., ἀπολαύω τι ἀφθόνως, ὥστε κορέννυμαι καὶ ἀηδιάζω αὐτό: «ἐφάγαμε τόσα πολλὰ φροῦτα ὥστε τὰ μπουχτίσαμε».

**μπούχτισμα** (τό)· ἡ ἐκ τοῦ ὑπερβολικοῦ κόρου ἐπερχομένη ἀποστροφή.

**Μποφονάκια** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ νομοῦ 'Αχαΐας (βλ. λ. *Μπουφόσκα*).

**Μποχᾶ-ἐντίν, *ἐλ-'Ασσάδυ.*** Μαῦρος τῆς Νουβίας, ἀφωσιωμένος εἰς τὸν Σαλὰχ-ἐδδὶν (Σαλαδδῖνον), ὅστις τὸν ἀνέδειξεν ἐμίρην καὶ τῷ ἀνέθηκε τὴν διοίκησιν τῆς Αἰγύπτου κατὰ τοὺς ἐν 'Ασίᾳ πολέμους του. Οἱ ἰθαγενεῖς τὸν ὠνόμαζον *Καρὰ-κοὺς* (μαυροπούλι), ἀνεγνώριζον ὅμως ὅτι ἡ διοίκησίς του ἦτο πάντοτε ἰδεώδης. 'Εξετέλεσε πλεῖστα ἔργα δημοσίας ὠφελείας, εἰς δὲ τὴν διαχείρισιν τῶν οἰκονομικῶν καὶ τὴν ἀπονομὴν τῆς δικαιοσύνης ὑπῆρξεν ἄμεμπτος. Γ. Λ. Α.

**Μποχαντὸρ** (Bojador) *[Γεωγρ.].* 'Ακρωτήριον τῆς Δ. 'Αφρικῆς ἐπὶ τοῦ 'Ατλαντικοῦ, κείμενον ἐν τῇ ἱσπανικῇ ἀποικίᾳ Ρίο ντὲ Ὅρο, εἰς 26°7' Β. πλάτους καὶ 14°29' Δ. μήκους Γκρήνουϊτς. Κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ μέχρι τοῦ 1433, ὁπότε παρεκάμφθη ὑπὸ τοῦ Πορτογάλου ναυτικοῦ Ζιλ. 'Εάννες, ἦτο τὸ ἀκραῖον πρὸς Ν. σημεῖον τῆς ἐπὶ τοῦ 'Ατλαντικοῦ ναυσιπλοΐας. 'Ισχυρότατα ρεύματα καθιστῶσι τὸν παράπλουν αὐτοῦ κινδυνώδη. Χ. Δ.

**Μποχαράϊ.** Πέρσης ποιητὴς (βλ. λ. *'Αμάκ*).

**Μπόχνια** (Bochnia) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν τῇ δυτικῇ Γαλικίᾳ. Κάτ. 10.000 περίπου. Γ. Θ. Κ.

**Μποχὸλ** (Bohol ἢ Bojol) *[Γεωγρ.].* Μία ἐκ τῶν Φιλιππίνων νήσων, κειμένη μεταξὺ Μιντανάο, Τσεμποὺ καὶ Λέϋτε. Εἶναι ὀρεινὴ καὶ ἔχει ἔδαφος γόνιμον, παράγον καπνόν, κακάον, ζάχαριν, βάμβακα καὶ ξυλείαν καὶ ὑπέδαφος πλούσιον εἰς χρυσόν, χαλκόν, γαιάνθρακας κλπ. Ἔχει μῆκος 75 χλμ. καὶ πλάτος 54, ἔκτασιν 4.000 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 245.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν *Ταγκπιλάραν.* Χ. Δ.

**Μπόχολτ** (Bocholt) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ βορειοδυτικῇ Βεστφαλίᾳ, πλησίον τῶν ὀλλανδικῶν συνόρων. Κάτ. 25.000. Γ. Θ. Κ.

**Μπόχουμ** (Bochum) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Βεστφαλίᾳ, κειμένη εἰς τὸ δυτικὸν μέρος τῆς βεστφαλικῆς βιομηχανικῆς περιοχῆς. Κάτ. (1924) 156.300. Κατὰ τὸ 1800 τὸ Μπόχουμ ἦτο ἀγροτικὴ πολίχνη 200 κατοίκων. Ἔκτοτε ὅμως ἐξειλίχθη ραγδαίως διὰ τῶν λιθανθρακωρυχείων καὶ τῆς βιομηχανίας τοῦ χάλυβος. Ἔχει νοσοκομεῖα, ὀρφανοτροφεῖον, γυμνάσιον, δύο πρακτικὰ λύκεια, ἐμπορικὴν σχολὴν κτλ. Εἶναι σπουδαῖος σιδηροδρομικὸς κόμβος καὶ συνδέεται δι' ἠλεκτρικῶν τροχιοδρόμων μετὰ τῶν περιχώρων. Ἔχει πλεῖστα ἐργοστάσια (πούρων, αὐτοκινήτων, ὑφασμάτων κτλ.), κυρίως ὅμως ἀκμάζει ἐν αὐτῇ ἡ βιομηχανία τοῦ χάλυβος καὶ τοῦ λιθάνθρακος. 'Ο «Σύνδεσμος ὀρυχείων καὶ παραγωγῆς χυτοχάλυβος τοῦ Μπόχουμ», ἱδρυθεὶς τῷ 1854, κατέχει πλεῖστα ὅσα ἐργοστάσια (ὑψικαμίνους, ὀρυχεῖα κτλ.), ἅτινα ἀπησχόλουν κατὰ τὸ 1925 17.000 ἐργατῶν καὶ 1.300 ὑπαλλήλους. Τὸ μετοχικόν του κεφάλαιον ἀνέρχεται εἰς 56.000.000 χρυσᾶ μάρκα. Γ. Θ. Κ.

**Μποχώρης** (ὁ). Κύριον ὄνομα ἑβραϊκόν, ἀντὶ *Μποχώρ*· || ᾀσμάτιον τοῦ ὄχλου: «τοῦ καημένου τοῦ Μποχώρη | τοῦ τὴ σκάσαν 'ς τὸ βαπόρι...» ἀναφερόμενον εἰς 'Εβραῖόν τινα τῆς πόλεως Καβάλλας, διαβόητον μαστρωπόν.

**Μποχῶρι** *[Γεωγρ.].* Οὕτω λέγεται κοινῶς τὸ ἐν τῇ Αἰτωλοακαρνανίᾳ χωρίον *Εὐηνοχώριον.* Χ. Γ. Ε.

**Μποχωρίνη** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Βοΐου ('Ανασελίτσης) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 345. Χ. Δ.

**Μπρᾶ** (Bra) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς 'Ιταλίας ἐν τῷ νομῷ Κούνεο τοῦ Πεδεμοντίου, εἰς ἀπόστασιν 50 χλμ. ΝΑ. τοῦ Τουρίνου. Εἶναι σημαντικὸς σιδηροδρομικὸς κόμβος καὶ πόλις γεωργική, παράγουσα σιτηρά, οἶνον καὶ μέταξαν. Πρὸς Δ. τῆς πόλεως διέρχεται ἡ διῶρυξ Μπρᾶ, ἥτις ἑνώνει τοὺς ποταμοὺς Φράνα καὶ Στούρα. Μ. Δ. Β.

**Μπράβα** (Brava) *[Γεωγρ.].* 'Η νοτιωτέρα ἐκ τῶν ἀνηκουσῶν εἰς τὴν Πορτογαλίαν ἀφρικανικῶν νήσων τοῦ Πρασίνου ἀκρωτηρίου. Ἔχει ἔκτασιν 56 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν 10.000 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Σὰν Ζοὰν Μπατίστα* (6.000 κάτ.). Εἶναι λοφώδης καὶ εὔφορος, ἔχει δὲ κυριωτέραν βιομηχανίαν τὴν κατασκευὴν πίλων ἐκ φύλλων φοίνικος. Χ. Δ.

—**Μπράβα,** ἢ ***Μπαράβα*** (Brava ἢ Barawa) *[Γεωγρ.].* Λιμὴν τῆς 'Ανατολικῆς 'Αφρικῆς ἐν τῇ 'Ιταλικῇ Σομαλίᾳ, κείμενος 175 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Μογκαντίσκο. Ἔχει ἀρτίας λιμενικὰς ἐγκαταστάσεις ἀποπερατωθείσας τῷ 1912, καὶ φάρον ἀκτινοβολίας 15 μιλλίων. Εἶναι ἐκ τῶν κυριωτέρων λιμένων τῆς χώρας καὶ ἔχει ἀξιόλογον βυρσοδεψίαν. 'Ιδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ πολυάριθμα μουσουλμανικὰ μετὰ ὑψηλῶν μιναρέδων τεμένη της. Κάτ. 4.700, ἰθαγενεῖς καὶ ἐλάχιστοι Εὐρωπαῖοι. Χ. Δ.

**Μπραβάρι** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Τσέργιαννης τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ 'Ιωαννίνων. Κάτ. (1928) 131. Χ. Δ.

**μπράβο·** δημοτ., ἐπιφώνημα ἐπιδοκιμασίας καὶ θαυμασμοῦ· λέγεται πολλάκις μετὰ τῆς προσωπ. ἀντωνυμίας, μου, σου κλπ., εὖγε, καλῶς: «μπράβο! καλὰ τὰ κατάφερες» ἢ «μπράβο σου !—», «μπράβο σας, παιδιά!» || εἰρωνικῶς, κατ' ἀντίφασιν: «μπράβο σου, παιδί μου, θὰ προκόψῃς ὅπως πᾷς» (ἰταλ. bravo).

**Μπράβο** (Bravo), ***Γκονθαλές.*** 'Ισπανὸς πολιτικὸς (1811—1871). Κατὰ τὰ ἔτη 1864, 1866 καὶ 1867, διατελέσας ὑπουργὸς τῶν 'Εσωτερικῶν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Ναρβάεθ, ἐγένετο περιβόητος διὰ τὴν αὐστηρότητα τῶν νόμων, τοὺς ὁποίους ἐξέδωκε πρὸς περιορισμὸν πασῶν τῶν ἐλευθεριῶν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ στρατηγοῦ ἐγένετο τῷ 1868 πρωθυπουργὸς καὶ ἐξηκολούθησε τὴν ἐσφαλμένην τυραννικὴν πολιτικὴν τοῦ προκατόχου του, συντελέσας διὰ τῶν αὐστηρῶν μέτρων του εἰς τὴν πτῶσιν τῆς δυναστείας, μεθ' ἣν ἠκολούθησε τὴν βασίλισσαν 'Ισαβέλλαν κατὰ τὴν ἐξορίαν της εἰς τὴν Γαλλίαν. Μ. Δ. Β.

**μπράβος** (ὁ) (ἐκ τοῦ γαλλ. brave)· ὁ ἐξ ἐπαγγέλματος παλληκαρᾶς· || ὁ σωματοφύλαξ, ὁ μισθωτὸς θορυβοποιὸς ὑπὲρ πολιτικοῦ τινος κόμματος ἢ ἀτόμου· || ὁ μισθωτὸς δολοφόνος.

— *['Εγκυκλ.] Μπράβοι* ἐκαλοῦντο μίσθιοι κακοῦργοι ἐπὶ βενετοκρατίας ἐν 'Επτανήσῳ, συντηρούμενοι ὑπὸ τῶν πλουσίων καὶ ἰσχυρῶν, ὅπως ἐκτελῶσι τὰ καταχθόνια αὐτῶν σχέδια. Οὗτοι ἐπροστατεύοντο ὑπὸ τῶν εὐγενῶν καὶ ἐτύγχανον συχνάκις ἀμνηστείας. Λ. Χ. Ζ.

**μπραγὰ** (τά), καὶ ***συμπραγὰ*** ἢ ***ζυμπραγά·*** ἰδιωμ. Κρητ., τὰ δίδυμα (ἐκ τῆς λ. ταύτης παρήχθη τὸ οἰκογενειακὸν ὄνομα *Ζυμπρακάκης*). ΕΡ. Μ.

**Μπράγια** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Περιβλέπτου τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ 'Ιωαννίνων. Κάτ. (1928) 138. Χ. Δ.

**Μπραγιὸν** (Brallion), ***Μάριος-'Αρμάνδος.*** 'Αξιωματικὸς τοῦ γαλλικοῦ πεζικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1872. Προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατιωτικοῦ σχολείου τοῦ Σαὶν-Σύρ, ἀπόφοιτος τοῦ σχολείου πολέμου, προήχθη μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ ἀντιστρατήγου. 'Ως κατώτερος ἀξιωματικὸς ὑπηρέτησεν ἐν 'Αλγερίῳ (1897—1905). Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπηρέτησεν εἰς διαφόρους ἐπιτελικὰς θέσεις καὶ ὡς διοικητὴς τάγματος καὶ συντάγματος πεζικοῦ. Τῷ 1926 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον καὶ τῷ 1931 εἰς ἀντιστράτηγον. 'Απὸ τοῦ 1928—1931 διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῆς ἐν 'Ελλάδι γαλλικῆς στρατιωτικῆς ἀποστολῆς, παρασημοφορηθεὶς διὰ τοῦ παρασήμου τοῦ ταξιάρχου ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως ἐπὶ τῇ ἐξ 'Ελλάδος ἀναχωρήσει του. Συνέγραψεν «Essai sur l'instruction militaire» (1931). Ν. Θ. Κ.

**μπράγκα** (τό). Σιδηροῦν ἁλιευτικὸν ὄργανον ἀγκωνωτόν, οὗτινος ὁ εἷς τῶν βραχιόνων εἶναι στερεωμένος ἐπὶ κοντοῦ, ὁ δ' ἕτερος, κάθετος πρὸς τὸν πρῶτον, εἶναι ἢ κοῖλος ὡς κοχλιάριον, ἢ δικαλωτός. Τὸ πρῶτον εἶδος χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν ἁλιείαν τῶν ἀχινῶν, τὸ δὲ δεύτερον διὰ τὴν τῶν πιννῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μπράγκα** (Branga) *[Γεωγρ.].* —1) Πόλις τῆς Πορτογαλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας τοῦ νομοῦ Ἔντρα-Ντοῦρο-ἐ-Μίνιο, παρὰ τὸν ποταμὸν Ἔστε. Κάτ. 24.300. Εἶναι ἡ τρίτη πόλις τῆς χώρας ἀπὸ ἀπόψεως ἐμπορίου καὶ βιομηχανίας, μὲ ὀνομαστὰ χρυσοχοεῖα, ἐργοστάσια πίλων, ὑφασμάτων, μαλλίνων εἰδῶν καὶ ὅπλων. Περιβάλλεται ὑπὸ εὐφορωτάτης πεδιάδος, ἥτις παράγει τὰ καλύτερα ἐν Πορτογαλίᾳ ἑσπεριδοειδῆ καὶ ὀπώρας καὶ ὀνομαστοὺς οἴνους. Εἶναι σημαντικὸν στρατηγικὸν κέντρον μετὰ ὀχυροῦ φρουρίου καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τῆς Λισσαβῶνος καὶ τῆς Λα Κορόνια ἐν 'Ισπανίᾳ. Εἰς ἀπόστασιν 3 χλμ. ἀπὸ τῆς πόλεως, ἐπὶ ὑψώματος 400 μ., ὑπάρχει περίφημος ναὸς τοῦ «Σενιὸρ-Ζεζοὺ-ντὸ-Μόντε», ἀποτελῶν πολυσύχναστον κέντρον προσκυνητῶν. Ἔχει ἐρείπια ρωμαϊκοῦ ναοῦ, ἀμφιθέατρον καὶ ὑδραγωγεῖον καὶ μητρόπολιν τοῦ ΙΒ' αἰῶνος. Λόγῳ τῶν πολλῶν αὐτῆς παλαιῶν κτηρίων καὶ μνημείων καλεῖται καὶ «Πορτογαλικὴ Ρώμη». Λέγεται ὅτι ἐκτίσθη ὑπὸ τῶν Καρχηδονίων, ἐπὶ τῶν ὁποίων ὠνομάζετο Bracara Augusta καὶ διετέλεσε πρωτεύουσα τοῦ βασιλείου τῶν Σουηβῶν κατὰ τὸν Ε' μ. Χ. αἰῶνα, ὁπότε εἶχε φθάσει εἰς μεγάλην ἀκμήν. Ἤρχισε δὲ νὰ παρακμάζῃ μετὰ τὴν ἀραβικὴν κατοχὴν καὶ τὴν μετάθεσιν τοῦ κέντρου τῆς πολιτικῆς ζωῆς τῆς χώρας πρὸς τὴν Κοΐμπρα καὶ τὴν Λισσαβῶνα.

—2) 'Επαρχία τῆς Πορτογαλίας ἐν τῷ νομῷ Ἔντρα-Ντούριο-ἐ-Μίνιο. Ἔχει ἐπιφάνειαν 2.738 τ. χλμ. καὶ 382.500 κατ. Εἶναι ἐκ τῶν εὐφορωτέρων ἐπαρχιῶν τῆς χώρας καὶ ἔχει ἀκμαίαν βιομηχανίαν χάρτου, μηχανημάτων, ὑφασμάτων καὶ κτηνοτροφικῶν προϊόντων. Τὸ ἔδαφος ἔχει κοιτάσματα σιδήρου, γαιανθράκων καὶ θείου. Μ. Δ. Β.

Digitized by Google

**Μπράγκα** (Braga), ***Θεόφιλος-'Ιωακείμ-Φερνάντές.*** Πορτογάλος συγγραφεὺς καὶ πολιτικὸς (1843—1924). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν μεγαλυτέρων συγγρόνων συγγραφέων τῆς Πορτογαλίας. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἀπὸ τοῦ 1872 μέχρι σχεδὸν τοῦ θανάτου του διετέλεσε καθηγητὴς τῆς νεωτέρας φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Λισσαβῶνος. Πρεσβεύων εἰλικρινῶς δημοκρατικὰς ἀρχὰς καὶ λαβὼν ζωηρότατον μέρος εἰς τὴν πολιτικὴν κίνησιν, ἥτις ὡδήγησεν εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῆς 5 Ὀκτωβρίου 1910, ἐξελέγη μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς μοναρχίας, ἕνεκα τοῦ ἐξαιρετικοῦ κύρους τὸ ὁποῖον εἶχεν ἐν τῷ δημοκρατικῷ κόμματι καὶ ἐν τῇ πνευματικῇ ζωῇ τοῦ τόπου, πρόεδρος τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως καὶ βραδύτερον (1915) προσωρινὸς πρόεδρος τῆς δημοκρατίας. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἔζησε μακρὰν τῆς πολιτικῆς. Ὑπῆρξε γονιμώτατος συγγραφεὺς φιλοσοφικῶν, νομικῶν, κοινωνιολογικῶν, ποιητικῶν, φιλολογικῶν καὶ αἰσθητικῶν ἔργων, γράψας ὑπὲρ τοὺς 100 τόμους καὶ πολυάριθμα ἄρθρα καὶ μελέτας εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά. Ἤρχισε τὸ φιλολογικόν του στάδιον διὰ τῆς δημοσιεύσεως ποιητικῶν συλλογῶν εἰς νεαρωτάτην ἡλικίαν καὶ κατόπιν ἐγένετο ἐν Κοΐμπρᾳ ὁ ἱδρυτὴς ἰδίας φιλολογικῆς σχολῆς. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Πράσινα φύλλα (1859), «Ὁραματισμοὶ τῶν καιρῶν» (1864), «Θορυβώδεις τρικυμίαι» (1864), «Ἡ Νηρηὶς τῆς λίμνης» (1866), «Χείμαρροι» (1869), ποιητικαὶ συλλογαὶ τὰς ὁποίας ἥνωσε κατόπιν εἰς τέσσαρας τόμους ὑπὸ τὸν γενικὸν τίτλον: «Ὁραματισμοὶ τῶν καιρῶν» (1894—1895) καὶ αἵτινες ἀπετέλεσαν εἶδος φιλοσοφικῆς ἐποποιίας, κατ' ἀπομίμησιν τῶν «Θρύλων τῶν αἰώνων» τοῦ Β. Οὑγκώ, «Δημώδη πορτογαλικὰ ᾄσματα καὶ μῦθοι» (1867), «Ἱστορία τῆς πορτογαλικῆς φιλολογίας» (1870—1881) εἰς 23 τόμους, ἧς ἐξέδωσε καὶ ἐπιτομὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐγχειρίδιον τῆς πορτογαλικῆς φιλολογίας», «Τὸ πνεῦμα τοῦ νεωτέρου ἀστικοῦ δικαίου» (1871), «Γενικαὶ ἀρχαὶ θετικῆς φιλοσοφίας» (1873), «Παγκόσμιος ἱστορία 1878—1882», «Ἱστορία τοῦ ρωμαντισμοῦ ἐν Πορτογαλίᾳ» (1879), «Θεωρία τῆς ἱστορίας τῆς πορτογαλικῆς φιλολογίας» (1881), «Σύστημα κοινωνιολογίας» (1884), «Δημώδεις μῦθοι τῆς Βραζιλίας» (1885), «Ἱστορία τῆς παιδαγωγικῆς ἐν Πορτογαλίᾳ» (1888) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

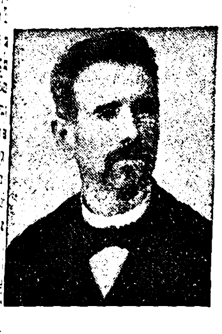

*Θεόφιλος Μπράγκα.*

**Μπραγκάλια** (Bragaglia), ***Ἀντώνιος-'Ιούλιος.*** Ἰταλὸς διευθυντὴς θεατρικῶν καὶ καλλιτεχνικῶν ἐπιχειρήσεων, δημοσιογράφος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1890. Ἔγραψε κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἰωάννης Μιράκολο* καὶ ἐξέδωκε τὰ περιοδικὰ «La Ruota», «Le cronache d' attualità», «Attualità cinematografiche» καὶ τὸ σατιρικὸν «Judex». Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας ἀνεμίχθη εἰς τὰς πρώτας φουτουριστικὰς κινήσεις καὶ ὑπῆρξεν ἐκ τῶν δημιουργῶν τοῦ «φωτοδυναμισμοῦ». Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ πολέμου διετέλεσε καλλιτεχνικὸς διευθυντὴς κινηματογραφικῆς ἑταιρείας, ἥτις παρήγαγε πολλὰς νεωτεριστικωτάτας ταινίας. Τῷ 1918 ἵδρυσεν ἐν Ῥώμῃ τὸν «καλλιτεχνικὸν οἶκον Μπραγκάλια (Casa d'Arte Bragaglia), ζωγραφικῆς, χοροῦ, διαλέξεων, σκηνογραφιῶν καὶ διακοσμητικῆς», ὅπου ἔλαβον χώραν εἰς διάστημα δεκαετίας 150 ἐκθέσεις ἔργων τέχνης, κυρίως πρωτοπόρων, καὶ ὅπου ἐλειτούργησαν καλλιτεχνική, φωτογραφικὴ καὶ σκηνογραφικὴ σχολή, ἐλευθέρα ἀκαδημία ζωγραφικῆς κ.τ.λ. Τῷ 1921 μετέφερε τὸν καλλιτεχνικὸν οἶκον αὐτοῦ ἐν τῷ ὑπογείῳ τοῦ μεγάρου Τιττόνι, ἐν τῇ ὁδῷ Ἀβινιονέζι, διαρρυθμίσας καταλλήλως τὰ ἐν αὐτῷ ἐρείπια τῶν ἀρχαίων ρωμαϊκῶν θερμῶν τοῦ Σεπτιμίου Σεβήρου, ὅπου ἐδημιούργησε καὶ τὸ «Πειραματικὸν Θέατρον τῶν Ἀνεξαρτήτων» («Teatro sperimentale degli Indipendenti») κατὰ τὸν τύπον τῶν «Studios» καὶ τῶν μικρῶν «Théatres d'exception», λίαν διαδεδομένων κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην εἰς πολλὰς εὐρωπαϊκὰς πόλεις.

Ἐν τῷ θεάτρῳ τούτῳ, ἐπιχορηγουμένῳ ὑπὸ τοῦ κράτους, ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς, μὲ ἠθοποιοὺς σχεδὸν πάντοτε ἐρασιτέχνας καὶ μὲ σκηνογραφίας πρωτοποριακὰς, θεατρικὰ ἔργα ὅλων τῶν ἐποχῶν καὶ πάσης φύσεως, συχνάκις συνοδευόμενα ἀπὸ μουσικῆς καὶ ὑπὸ χορῶν, ἡ ἀποτελοῦντα ἁπλῆν μιμικὴν δρᾶσιν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὅμως παρέστησεν ἔργα συγχρόνων δραματικῶν συγγραφέων, ἐκ τῶν τεχνικῶς καὶ ἠθικῶς τολμηροτέρων ξένων καὶ ἐκ τῶν νεωτέρων καὶ νεωτάτων Ἰταλῶν. Ὁ Μπραγκάλια προέβη εἰς πολλοὺς τεχνικοὺς καὶ σκηνογραφικοὺς νεωτερισμούς. Μεταξὺ τῶν πολλῶν ἔργων του, διὰ τῶν ὁποίων προσεπάθησε νὰ διαδώσῃ καὶ νὰ ὑπερασπισθῇ μετὰ ζωηρᾶς ὁρμητικότητος τὰς περὶ θεάτρου ἰδέας του, εἶναι: «Ὁ φωτοδυναμισμός» (1911), «Ἡ κινητὴ μάσκα» (1926), Περὶ τοῦ θεατρικοῦ θεάτρου, ἤτοι περὶ θεάτρου» (1927), «Ζωντανὴ γλυπτική» (1928), «Τὸ θέατρον τῆς ἐπαναστάσεως» (1929), «Τζάτζ-Μπάντ» (1930), «Ἠχητικὴ ταινία» (1930) κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μπραγκάντσα** (Bragança ἢ Braganza) *[Γεωγραφ.]*. —1) Πόλις τῆς Πορτογαλίας ἐν τῷ νομῷ Τράς-ὀς-Μόντες, παρὰ τὸν ποταμὸν Φερβάντσα. Κάτ. 6.000. Κεῖται ἐπὶ σημαντικῆς στρατηγικῆς θέσεως πλησίον τῶν συνόρων πρὸς τὴν Ἱσπανίαν καὶ ἔχει ὀχυρὸν φρούριον. Ἄλλοτε εἶχε σημαντικὴν βιομηχανίαν βελούδων καὶ δαμασκηνῶν, ἥτις παρήκμασεν ἤδη. Ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Ἱσπανίας Μπρίγκο καὶ ὠνομάσθη κατ' ἀρχὰς *Κοιμπρίγκο* καὶ κατόπιν *Μπριγκάνσα*. Τῷ 1442 προήχθη ὑπὸ τοῦ Ἀλφόνσου Ε' εἰς δουκᾶτον καὶ ὑπῆρξεν ἡ κοιτὶς τοῦ *οἴκου τῆς Μπραγκάντσας*. —2) Πόλις τῆς Βραζιλίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Σὰν-Πάουλο. Κάτ. 18.000. Παράγει καφέν, βάμβακα, σιτηρὰ καὶ ἔχει παρ' αὐτὴν λατομεῖα μαρμάρου καὶ μεταλλεῖα ὑδραργύρου. —3) Πόλις τῆς Βραζιλίας ἐν τῇ πολιτείᾳ Παρά, παρὰ τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ Καετέ. Κάτ. 10.000. Παράγει καπνόν, σιτηρά, ὄρυζαν καὶ ἔχει βιομηχανίαν κονσερβῶν ἁλιευτικῶν προϊόντων. Μ. Δ. Β.

**Μπραγκάντσας, *οἶκος.*** Οἶκος, ὁ ὁποῖος ἐβασίλευσεν ἐν Πορτογαλίᾳ ἀπὸ τοῦ 1640 μέχρι τοῦ 1910 καὶ ἐν Βραζιλίᾳ ἀπὸ τοῦ 1822 μέχρι τοῦ 1889, ἐπονομασθεὶς οὕτω ἐκ τῆς ὁμωνύμου πορτογαλικῆς πόλεως, ἐκ τῆς ὁποίας προήρχετο. Ὁ τίτλος τῆς Μπραγκάντσας ἀναφαίνεται διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1449, δοθεὶς εἰς τὸν *Ἀλφόνσον*, νόθον υἱὸν τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Α' τῆς Πορτογαλίας (1433—1451). Τὸν τίτλον τοῦτον ἐκληρονόμησεν ὁ υἱὸς τοῦ Ἀλφόνσου *Φερδινάνδος Α'* (1403—1470), ὅστις ἐπολέμησεν ἡρωϊκῶς εἰς τὰς ἀφρικανικὰς ἐπαρχίας, τῶν ὁποίων εἶχεν ἀναλάβει τὴν διοίκησιν. Ὁ υἱὸς τούτου *Φερδινάνδος Β'* (1430—1483) διεκρίθη κατὰ τοὺς πολέμους τῆς Ἀφρικῆς, ἀλλ' ἐπανεστάτησεν ἐπὶ κεφαλῆς τῶν εὐγενῶν κατὰ τοῦ βασιλέως Ἰωάννου Β', ὁ ὁποῖος κατηγόρησεν αὐτὸν ἐπὶ προδοσίᾳ καὶ τὸν ἀπεκεφάλισε. Ὁ υἱὸς τούτου *Ἰάκωβος Α'* (1480—1514) παρέμεινεν ἐγκάθειρκτος ἐν Καστίλλῃ μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ Ἰωάννου Β', ὁπότε ἠδυνήθη νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὴν Πορτογαλίαν, ὅπου ἐνυμφεύθη τὴν Ἐλεονώραν, θυγατέρα τοῦ δουκὸς τῆς Μεντινασινντονία. Ὁ Ἰάκωβος Α' εἶχε κατορθώσει νὰ ἀποκτήσῃ τὴν εὔνοιαν τοῦ βασιλέως Μανουήλ, ὁ ὁποῖος εἶχεν ὑποδείξει αὐτὸν ὡς διάδοχον τοῦ θρόνου του. Ὁ διάδοχος τοῦ Ἰακώβου *Θεοδόσιος Α'* (ἀποθανὼν τῷ 1568) ὑπῆρξε προστάτης τῶν γραμμάτων καὶ τεχνῶν. Οἱ ἀπόγονοι τούτου *Ἰωάννης Α'* (1543—1614) καὶ *Θεοδόσιος Β'* (1568—1630) ὑπῆρξαν τελείως ἄσημοι. Ὁ υἱὸς τοῦ Θεοδοσίου Β' καὶ ὄγδοος δοὺξ τῆς Μπραγκάντσας *Ἰωάννης Β'* (1640—1656) ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς δυναστείας τῶν βασιλέων τῆς Πορτογαλίας, ἥτις ἐξηκολούθησε νὰ βασιλεύῃ μέχρι τῆς ἀνακηρύξεως τῆς δημοκρατίας τοῦ 1910. Ὁ θρόνος εἶχε περιέλθει εἰς αὐτὸν μετὰ τὸν θάνατον τοῦ βασιλέως τῆς Πορτογαλίας Ἐρρίκου, ἐπισυμβάντος τοῦ 1580, ὁπότε, μὴ ὑπάρχοντος ἄρρενος διαδόχου αὐτοῦ, ὁ οἶκος τῆς Μπραγκαΐτσας εἶχεν ἐγείρει ἀξιώσεις ἐπὶ τῆς διαδοχῆς ὡς ὁ πλησιέστερον συγγενεύων πρὸς τὴν ἐκλιποῦσαν δυναστείαν ἐκ τοῦ θήλεος κλάδου. Μετά τινας ἀγῶνας πρὸς τὸν βασιλέα τῆς Ἱσπανίας Φίλιππον Β', ὁ Ἰωάννης Β' τῆς Μπραγκάντσας κατώρθωσε νὰ ἀνακηρυχθῇ βασιλεὺς τῆς Πορτογαλίας τῷ 1640 ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἰωάννης Δ'*. Τούτου διάδοχοι ὑπῆρξαν ὁ *Ἀλφόνσος Δ'* (1656—1683), ὁ *Πέτρος Β'* (1683—1766), ὁ *Ἰωάννης Ε'* (1706—1750), ὁ *Ἰωσὴφ Α'* (1750—1777), ἡ *Μαρία Α'* καὶ ὁ *Πέτρος Γ'* (1777—1792), ὁ *Ἰωάννης ΣΤ'* (1772—1826), ὁ *Πέτρος Δ'* (1826—1834) καὶ ἡ *Μαρία Β'* (1834—1853). Ἐκ τῆς Μαρίας Β', ἥτις ἐνυμφεύθη τὸν πρίγκιπα Φερνινάνδον τῆς Σαξωνίας Κοβούργου Γκότα, προῆλθον: ὁ *Πέτρος Ε'* (1853—1861), ὁ *Λουδοβῖκος Α'* (1861—1889), ὁ *Κάρολος Α'* (1889—1908) καὶ ὁ *Μανουὴλ Β'* (1908—1910), ὁ ὁποῖος ἐξεθρονίσθη τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1910 καὶ ζῇ ἔκτοτε εἰς τὸ ἐξωτερικόν. Τῷ 1808 ὁ βασιλεὺς Ἰωάννης ΣΤ' εἶχε μεταφερθῆ εἰς τὴν Βραζιλίαν, πορτογαλικὴν τότε κτῆσιν, συνεπείᾳ τοῦ κατ' αὐτοῦ πολέμου τοῦ Ναπολέοντος, ὅστις εἶχε κηρύξει ἔκπτωτον τοῦ θρόνου τῆς Πορτογαλίας τὸν οἶκον τῆς Μπραγκάντσας. Μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς τὴν Πορτογαλίαν, ὁ Ἰωάννης ΣΤ' ἀφῆκε τὴν διακυβέρνησιν τῆς Βραζιλίας εἰς τὸν υἱὸν του δὸν Πέτρον, ὁ ὁποῖος ἀνεκηρύχθη αὐτοκράτωρ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Πέτρος Α'*. Ἐν Πορτογαλίᾳ εὑρισκόμενος ὁ Ἰωάννης ΣΤ' παρῃτήθη τοῦ θρόνου ὑπὲρ τῆς θυγατρός του Μαρίας Β' ντὰ Γλόρια. Ὁ ἀδελφὸς ὅμως τοῦ Ἰωάννου ΣΤ' *δὸν Μιγκὲλ* δὲν ἀνεγνώρισεν ὡς βασίλισσαν τὴν Μαρίαν Β' καὶ ἤγειρεν ἀξιώσεις ἐπὶ τοῦ θρόνου, χωρὶς ἐν τούτοις νὰ κατορθώσῃ νὰ ἐπιβληθῇ, παρὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον τὸν ὁποῖον προεκάλεσεν. Οἱ ἀπόγονοι τοῦ δὸν Μιγκέλ, ὄντες ὁ μόνος ἐξ ἀρρενογονίας ὑφιστάμενος κλάδος τοῦ οἴκου τῆς Μπραγκάντσας, διατηροῦν εἰσέτι τὰς ἀξιώσεις των ἐπὶ τοῦ θρόνου τῆς Πορτογαλίας, ὁ δὲ υἱὸς τοῦ πρῴην ἀπαιτητοῦ καὶ ὁμώνυμος πρὸς τὸν πατέρα του δὸν Μιγκέλ, γεννηθεὶς τῷ 1853, ἐπεχείρησε νὰ καταλάβῃ τὸν θρόνον τῆς Πορτογαλίας μετὰ τὴν δολοφονίαν τοῦ βασιλέως Καρόλου Δ' τῷ 1908, ἀλλ' ἀπέτυχεν. Οὗτος παραμένων ἤδη εἰς τὸ ἐξωτερικόν, εἶναι ὁ ἀρχηγὸς τοῦ κλάδου, τοῦ ὁποίου οἱ ἐν Πορτογαλίᾳ ὀπαδοί, διαθέτοντες τὴν μεγάλην ἐφημερίδα «Μοναρχία», εἶναι οἱ ἄκροι μοναρχικοὶ καὶ καλοῦνται «μιγκελισταί».

Ὁ κλάδος τῆς Βραζιλίας ἐξηκολούθησε βασιλεύων διὰ τοῦ βασιλέως *Πέτρου Β'*, ὑπὲρ τοῦ ὁποίου εἶχε παραιτηθῆ τῷ 1831 ὁ βασιλεὺς Πέτρος Α', μέχρι τοῦ 1889, ὁπότε ἐκηρύχθη καὶ οὗτος ἔκπτωτος συνεπείᾳ τῆς ἀνακηρύξεως τῆς δημοκρατίας. Ὁ Πέτρος Β' τῆς Βραζιλίας δὲν ἀπέκτησεν ἄρρενα τέκνα, ἡ δὲ θυγάτηρ του *Ἰσαβέλλα* (1846—1921) εἶχε νυμφευθῆ τὸν κόμητα Ἒ (Eu) ἐκ τοῦ βασιλικοῦ οἴκου τῶν Ὀρλεανίδων τῆς Γαλλίας, τὰ τέκνα τοῦ ὁποίου φέρουν ἤδη τὸν διπλοῦν τίτλον Ὀρλεὰν καὶ Μπραγκάντσα. Μ. Δ. Β.

**Μπραγκαντῖνο** (Bragadino). Βενετικὴ οἰκογένεια (βλ. λ. *Βραγαδῖνος*).

**μπραγκόζο** (τὸ) (bragozo) *[Ναυτ.]*. Πλοιάριον ἁλιευτικὸν τῆς Ἀδριατικῆς, δίστηλον μὲ ψάθας ἢ ᾠοειδῆ ἱστία ἔχοντα κεραίας ἄνωθεν καὶ κάτωθεν. Τοιούτου τύπου καὶ τὰ ἁλιευτικὰ τῆς Κερκυραϊκῆς θαλάσσης. Σ. Ε. Λ.

**μπραζέρης** (ὁ) βλ. *μπουραζέρης*.

**Μπραζζαβίλλ**, ἢ ***Μπρατζαβίλλ*** (Brazzaville) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλικῆς Ἰσημερινῆς Ἀφρικῆς, ἕδρα τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ καὶ πρωτεύουσα τῆς ἀποικίας τοῦ Μέσου Κόνγκο. Εἶναι ἡ ἀρχαία *Ντάμο*, φέρει δὲ σήμερον τὸ ὄνομα τοῦ Γάλλου ἐξερευνητοῦ *Μπραζζά*, ὅστις κατέλαβε τῷ 1880, ἐν ὀνόματι τῆς Γαλλίας, τὴν Β. ὄχθην τοῦ Κόνγκο. Κάτ. 40.000. Χ. Δ.

**Μπράζντα** (Brazda), ***Ὀσκάρ.*** Τσέχος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Βοημίᾳ τῷ 1887. Ἀπὸ τοῦ 1903 μέχρι τοῦ 1911 ἐσπούδασεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Βιέννης, ὅπου ἐβραβεύθη διὰ χρυσοῦ μεταλλίου. Βραδύτερον ἐταξίδευσε χάριν μελετῶν εἰς τὸ ἐξωτερικόν, παραμείνας ἐπὶ πολὺ κυρίως ἐν Ἰταλίᾳ. Τὰ ἔργα του εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον προσωπογραφίαι καὶ τοπία, διακρινόμενα διὰ τὴν λεπτότητα τῆς ψυχολογικῆς ἀναλύσεως, διὰ τὴν ποικιλίαν τῶν φωτοπαιγνίων καὶ τὴν ἁρμονικότητα τοῦ χρωματισμοῦ. Μεταξὺ αὐτῶν εἶναι: ὁ «Ρυθμός» (1917), «Μετὰ τὸ μπάνιο» (1920), «Στὸ ὕπαιθρον», αἱ προσωπογραφίαι τῶν Ε. Μπορντέρο, Ρενάτας Μπορνκάττι, Ἰωάννας Τραμκοὺρ κλπ. Ἐξέθεσεν ἐπίσης ἔργα εἰς τὰς ἐκθέσεις τῆς Ῥώμης καὶ τῆς Βενετίας (1924 καὶ 1925). Μ. Δ. Β.

**Μπράθος** (Brazos, λέξ. ἱσπαν.=βραχίονες) *[Γεωγραφ.]*. Ποταμὸς τῆς Β. Ἀμερικῆς ἐν Τεξάς, σχηματιζόμενος διὰ τῆς συνενώσεως τῶν Κλὴαρ καὶ Σὼλτ Φόρκς, διαρρέων τὴν πεδιάδα Στάκεντ καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 1400 χλμ. εἰς τὸν Μεξικανικὸν κόλπον, 65 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Γκάλβεστον. Εἶναι πλωτὸς ἐπὶ 65 χλμ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν του, κατὰ δὲ τὴν ἐποχὴν τῶν πλημμυρῶν ἐπὶ 460 χλμ. Χ. Δ.

**Μπραὶ** (Bray, λατ. Braium) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ χώρα τῆς Γαλλίας ἐν Πικαρδίᾳ καὶ Ἄνω Νορμανδίᾳ, ἐκτεινομένη περὶ τὸ σημεῖον τῶν συνόρων τῶν σημερινῶν νομῶν Κάτω Σηκουάνα, Οὐὰζ καὶ Σόμ. Εἶναι κτηνοτροφικὴ περιοχή, παράγουσα ἐκλεκτὸν βούτυρον, ἔχει δὲ κυριώτερα κέντρα τὸ *Νεφσατὲλ-ἂν-Μπραὶ* καὶ τὴν *Ὡμάλην*. Χ. Δ.

**Μπράϊγ** (Braille), ***Λουδοβῖκος.*** Περίφημος Γάλλος διδάσκαλος τυφλῶν (1809—1852). Ἐστερημένος ὁ ἴδιος τῆς ὁράσεως ἀπὸ ἡλικίας τριῶν ἐτῶν συνεπείᾳ τραύματος, εἰσῆλθεν εἰς τὸν ἐν Παρισίοις Οἶκον Τυφλῶν τῷ 1819, ἐκμαθὼν δ' ἐν αὐτῷ μουσικήν, εἰργάσθη ἔπειτα ὡς ὀργανοπαίκτης εἰς διαφόρους συνοικιακοὺς ναοὺς τῆς γαλλικῆς πρωτευούσης. Γενόμενος βραδύτερον καθηγητὴς εἰς τὸν Οἶκον Τυφλῶν, ἐπενόησεν ἴδιον σύστημα γραφῆς διὰ τοὺς τυφλούς, τὸ λεγόμενον «ἀλφάβητον τοῦ Brailles». Εἰς αὐτὸ τὰ διάφορα γράμματα ἀποτελοῦνται ἀπὸ προεξεχούσας ἐπὶ τοῦ χάρτου, στιγμάς, κατὰ διαφόρους συνδυασμοὺς διατεταγμένας, ἡ δὲ ἀνάγνωσίς των εἶναι εὐχερὴς διὰ τῆς ἁφῆς καὶ μόνον (βλ. λ. *τυφλῶν γραφή*). Ἀνάλογον σύστημα ἐφήρμοσεν ἐπίσης καὶ διὰ τὴν γραφὴν τῆς μουσικῆς. Διὰ τυπογραφικῶν στοιχείων κατεσκευασμένων κατὰ τὸ ἀλφάβητον τοῦ Μπράϊγ ἐγένετο ἔκτοτε κατορθωτὴ ἡ ἐκτύπωσις βιβλίων διὰ τοὺς τυφλοὺς καὶ γραφομηχαναὶ τοῦ ἰδίου τύπου ἐπενοήθησαν βραδύτερον. Τῷ 1887 ἀνηγέρθη διὰ πανεθνικῶν ἐν Γαλλίᾳ ἐράνων μνημεῖον εἰς τὸν Μπράϊγ ἐν τῇ γενετείρᾳ του πόλει Κουπβραί. —Ω

**Μπραιὶ** (Braye) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Γαλλίας, παραπόταμος τοῦ Λίγηρος, διαρρέων τοὺς νομοὺς Ἒρ-ἐ-Λουάρ, Σὰρτ καὶ Λουὰρ-ἐ-Σὲρ καὶ ἐκβάλλων εἰς αὐτὸν μετὰ ροῦν 70 χλμ. παρὰ τὸ Ποντὲ-Μπραιί. Χ. Δ.

Digitized by Google

**Μπράϊερλεϋ Χίλ** (Brierley Hill) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Στάφφορντ, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Στούρ. Κάτ. 12.479. Ἔχει ἐργοστάσια ὑέλου, χυτήρια, σιδηρουργεῖα, εἰς δὲ τὰ περίχωρα ἀνθρακωρυχεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μπράϊζαχ** (Breisach) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, κειμένη ἐν Βάδῃ πλησίον τοῦ Freiburg. Κάτ. (1919) περὶ τὰς 3.000. Ἔχει μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Στεφάνου τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, παράγει τάπητας, ἀνταλλακτικὰ ποδηλάτων κ. ἄ., ἐμπορεύεται δὲ δημητριακά, ξυλείαν, δέρματα καὶ οἰνοπνευματώδη ποτά.

— **Μπράϊζαχ Νέον** (Neu-Breisach) *[Γεωγρ.]*. Φρούριον εἰς τὴν Ἄνω Ἀλσατίαν ἀμυντικοῦ χαρακτῆρος, συμπληροῦν μέχρι τοῦ 1918 τὴν ἄμυναν τῆς Γερμανίας. Ἀπὸ τοῦ 1920 περιῆλθεν εἰς τὴν Γαλλίαν, ἀποτελοῦν μέρος τοῦ νομοῦ τοῦ Ἄνω Ρήνου. Τὸ φρούριον τοῦτο εὑρίσκεται ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κολμὰρ Φράϊμπουργκ, φράσσει δὲ πλείστας ἁμαξιτοὺς ὁδοὺς τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ρήνου. Ἱδρύθη ἀπὸ τοῦ 1699 ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ ὠχυρώθη παρὰ τοῦ Βωμπάν. Τὴν 10 Νοεμβρίου 1870 παρεδόθη εἰς τοὺς Γερμανούς. Ν. Ι. Κ.

**Μπράϊλα** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας (βλ. λ. *Βραΐλα*).

**Μπραίμσεμπρο** (Brömsebro) *[Γεωγρ.]*. Γέφυρα ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Brömsebäck, γνωστὴ ἐκ τῶν συνθηκῶν τοῦ 1541 καὶ 1645 μεταξὺ Δανίας καὶ Σουηδίας.

**Μπραὶν-λ' Ἀλλέ**, ἢ *Μπραὶν-λὰ-Λέντ* (Braine-l'Alleud ἢ Braine-la-Leude) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Βραβάντης. Ἔχει ὑφαντουργεῖα καὶ κλωστήρια βάμβακος καὶ ἐρίου. Κάτοικοι 10.000. Χ. Δ.

**Μπραὶν-λὲ-Κὸντ** (Braine-le-Conte, λατιν. Brania comitis) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀνωνίας. Ἔχει βιομηχανίαν νημάτων διὰ δαντέλλας, ζυθοποιεῖα, βυρσοδεψεῖα, χαρτοποιεῖα, τυπογραφεῖα, ἐργοστάσια ὑλικοῦ σιδηροδρόμων καὶ τροχιοδρόμων κλπ. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπράϊσγκάου** (Breisgau) *[Γεωγρ.]*. Νομὸς τῆς Γερμανίας, κατὰ τὴν μεσαιωνικὴν αὐτῆς διαίρεσιν, ὁριζόμενος ὑπὸ τοῦ Ρήνου, τοῦ Μέλανος Δρυμοῦ καὶ διαφόρων ἄλλων νομῶν. Περιῆλθεν ἀλληλοδιαδόχως εἰς διαφόρους δυνάστας, μέχρις ὅτου κατενεμήθη διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Πρεσβούργου (1805) μεταξὺ Βυρτεμβέργης καὶ Βάδης. Τῷ 1810 τὸ Μπράϊσγκάου κατελήφθη ὁλόκληρον ὑπὸ τῆς Βάδης. Κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος εἶχεν ἐπιφάνειαν 1.650 τετρ. χιλιομ. καὶ 137.000 κατοίκων. Τὸ Μπράϊσγκάου περιλαμβάνει σήμερον μόνον τὴν κοιλάδα τοῦ Freiburg καὶ τὸ νότιον τμῆμα τοῦ Μέλανος Δρυμοῦ.

**Μπράϊτ** (Bright), **Ἰωάννης**. Ἄγγλος βιομήχανος καὶ πολιτικὸς (1811—1899), γεννηθεὶς ἐν Greenback τῷ 1811. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τῆς μαγχεστριανῆς σχολῆς. Ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ φιλελευθέρου κόμματος καὶ διετέλεσε τρὶς ὑπουργὸς (1868, 1874 καὶ 1886). Ἡ πολιτικὴ κατεύθυνσίς του ἀπέβλεπεν εἰς τὴν ἠθικὴν καὶ ὑλικὴν ἀνύψωσιν τῶν κατωτέρων τάξεων καὶ τὴν πληρεστέραν ἐφαρμογὴν τῶν δημοκρατικῶν θεσμῶν ἐν τῇ διοικήσει, ἐφόσον διὰ τούτου δὲν παρεβλάπτοντο τὰ συμφέροντα τῆς ἀναπτύξεως τῆς Βρεττανικῆς αὐτοκρατορίας. Αἱ ὁμιλίαι του ἐξεδόθησαν εἰς τρεῖς συλλογάς: Speeches on parliamentary Reform» (1867), «Speeches on Questions of public Policy» (2 τόμ. 1869), «Public Addresses» (1879). Ἐπίσης ἐξεδόθη καὶ τόμος ἐπιστολῶν του «Public Letters» (1885). Α. Α. Τ.

— **Μπράϊτ** (Bright), **Κάρολος Τίλστον**. Ἄγγλος μηχανικὸς καὶ ἠλεκτρολόγος (1839—1888). Προσληφθεὶς ὡς μηχανικὸς εἰς τὴν Ἀγγλοϊρλανδικὴν ἑταιρίαν τῶν τηλεγράφων, ἐτοποθέτησε, τρία μόλις ἔτη μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τῶν ὑποβρυχίων καλωδίων, τὸ πρῶτον καλώδιον μεταξὺ Ἀγγλίας καὶ Ἰρλανδίας, μήκους 41 χλμ. Τῷ 1856 ἵδρυσε νέαν ἑταιρείαν πρὸς τοποθέτησιν τοῦ πρώτου ὑπερωκεανίου καλωδίου μεταξὺ Ἰρλανδίας καὶ Ἀμερικῆς, τοῦ ὁποίου τὰ ἐγκαίνια ἐγένοντο τῷ 1858. Βραδύτερον ἐτοποθέτησε καὶ ἄλλα καλώδια διὰ λογαριασμὸν τῆς Βρεττανικῆς τηλεγραφικῆς ἑταιρείας, ἰδίως δὲ εἰς τὴν Μεσογείον. Κατόπιν ἠσχολήθη εἰς διαφόρους ἐργασίας πρὸς τοποθέτησιν καλωδίων εἰς τὸν Εἰρηνικὸν ὠκεανόν, εἰς τὸν Περσικὸν κόλπον καὶ τὰς Ἰνδίας καὶ ἐφεῦρε πολλὰ νέα τηλεγραφικὰ μηχανήματα. Τῷ 1866 ἐξελέγη πρόεδρος τοῦ ἰνστιτούτου τῶν μηχανικῶν ἠλεκτρολόγων. Ἀντεπροσώπευσεν εἰς πλεῖστα ἐπιστημονικὰ συνέδρια τὴν χώραν του καὶ διετέλεσε μέλος πολλῶν ἀκαδημιῶν. Ἀπὸ τοῦ 1865—1868 ἐχρημάτισε βουλευτής. Μ. Δ. Β.

— **Μπράϊτ** (Bright), **Ριχάρδος**. Διάσημος Ἄγγλος ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Μπριστὸλ (1789—1858). Τῷ 1810 μετὰ τοῦ Γεωργίου Μακένζι καὶ τοῦ σὲρ Ἐρρίκου Χόλαντ ἐπεχείρησε ταξίδιον εἰς Ἰσλανδίαν, ἐκδώσας τὸ «Travels in Iceland», ἐν ᾧ ἐπεξειργάσθη τὸ φυσιοδιφικὸν μέρος. Τῷ 1814 ἐπεχείρησε μακρότερον ἐπιστημονικὸν ταξίδιον εἰς Γερμανίαν καὶ Αὐστρίαν καὶ ἐξέδωκε σχετικῶς τὸ «Travels from Vienna through Lower Hungary etc.» (1818). Ἀπὸ τοῦ 1824 ἤρξατο ἐκτενοῦς καθηγητικῆς δράσεως, στρεφομένης ἰδίως περὶ τὴν ἀνατομοπαθολογίαν. Ἐκ τῶν πρώτων ὑπ' αὐτοῦ κατὰ τὸ 1827 ἐκδοθέντων ἔργων ἐσημείωσεν ἐποχὴν εἰς τὴν ἰατρικὴν τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Reports of medical cases selected with a view to illustrate the symptoms κλπ.» (1827—1831), δίτομον ἔργον του, περιέχον τὴν κυριωτέραν ἀνακάλυψίν του τῆς παθολογίας τῶν νεφρῶν. Πρῶτος ὁ Μπράϊτ κατέδειξε τὴν ὕπαρξιν τοῦ λευκώματος ὡς ἐκδήλωσιν νεφρικῆς παθήσεως χρονίας, ἥτις ἔκτοτε συνεδέθη μὲ τὸ ὄνομά του, κληθεῖσα *νόσος τοῦ Μπράϊτ* (Βριχθεία νόσος· βλ. καὶ *κίρρωσις τοῦ νεφροῦ*). Πρῶτος ἐπίσης περιέγραψε καὶ τὴν κιτρίνην ἀτροφίαν τοῦ ἥπατος, ὡς καὶ τὴν ἐν τῷ ἐγκεφάλῳ χρωστικὴν οὐσίαν ἐπὶ τῆς μιασματικῆς μελαναιμίας. Ὁ δεύτερος ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθεὶς τόμος «Reports κλπ.» περιεῖχε τὰς νόσους τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νευρικοῦ συστήματος. Ἐπίσης εἰς διαφόρους ἄλλας πραγματείας του ἀφορώσας ἰατροχειρουργικὰ ζητήματα (1828—1833—1835—1839), ὡς καὶ εἰς τὰ πεπραγμένα τοῦ νοσοκομείου «Guy» (1836—1840), οὗ διετέλεσε διευθυντής, ἐπραγματεύθη τὰς νόσους τῶν κοιλιακῶν ὀργάνων. Αἱ ἐργασίαι αὗται μετὰ τὸν θάνατόν του συνηνώθησαν εἰς τόμον ὑπὸ τοῦ G. H. Barlow, ἐκδοθέντα ὑπὸ τὸν τίτλον «Clinical memoirs on abdominal tumours and intumescence» (Λονδῖνον 1861). Ὑπὸ τὸ ὄνομα *κοκκιάσεις τοῦ Μπράϊτ* εἶναι γνωσταὶ αἱ ὑπ' αὐτοῦ περιγραφεῖσαι ἐν τῷ νεφρῷ ἰνώδεις νησῖδες, αἱ ἀπαντῶσαι κατὰ τὰς τομὰς ἐπὶ τῆς σκληρωτικῆς παθήσεως αὐτοῦ. Ο. Ρ.

— **Μπράϊτ** (Bright), ***νόσος τοῦ*** —· βλ. *κίρρωσις τοῦ νεφροῦ*.

**Μπράϊτενφελντ** (Breitenfeld) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γερμανίας, εἰς ἀπόστασιν ἓξ χιλιομ. βορείως τῆς Λειψίας, γνωστὸν ἐκ τῆς μεγάλης παρ' αὐτῷ ἥττης (1631) τοῦ στρατηγοῦ Tilly, ὅστις, ὁδηγῶν 40.000 ἄνδρας ἐναντίον τῶν σουηδικῶν καὶ σαξωνικῶν στρατευμάτων, ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Halle μὲ τὸ ὑπόλοιπον τοῦ στρατοῦ του, ἀνερχόμενον μόλις εἰς 600 ἄνδρας. Τῷ 1642 οἱ Σουηδοὶ ἐνίκησαν παρὰ τὸ Μπράϊτενφελντ ἐκ νέου τοὺς αὐτοκρατορικοὺς ὑπὸ τὸν ἀρχιδοῦκα Λεοπόλδον καὶ κατέλαβον τὴν Λειψίαν.

**Μπράϊτκοπφ** (Breitkopf), ***Ἰωάννης-Γκόττλομπ-Ἐμμανουήλ***. Γερμανὸς τυπογράφος καὶ ἐκδότης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Λειψίᾳ (1719—1794). Μετὰ τὴν ἐκμάθησιν τῆς τυπογραφικῆς τέχνης, ἐπεδόθη εἰς κλασσικὰς σπουδάς, ἰδιαιτέρως δὲ εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὰ μαθηματικά. Τὸ σπουδαιότερον ἔργον του ὑπῆρξεν ἡ ἐφεύρεσις μεθόδου πρὸς ἐκτύπωσιν μουσικῶν τεμαχίων διὰ κινητῶν τυπογραφικῶν στοιχείων. Ἠσχολήθη ἐπίσης εἰς τὴν ἐκτύπωσιν γεωγραφικῶν χαρτῶν, προσωπογραφιῶν κλπ. διὰ τυπογραφικῶν στοιχείων (στιγμάτων, γραμμῶν κλπ.), χωρὶς ὅμως μεγάλην ἐπιτυχίαν, ὡς καὶ εἰς τὴν κατασκευὴν παιγνιοχάρτων. Ὁ Μπράϊτκοπφ ἀντὶ μεγάλης ἱστορίας τῆς τυπογραφίας, ἣν ἐσκόπει νὰ συγγράψῃ, ἐξέδωκε μικρὸν μόνον ἀπόσπασμα ὑπὸ τὸν τίτλον «Προσπάθεια πρὸς ἔρευναν τῆς ἀρχῆς τῶν παιγνιοχάρτων» (1784) καὶ τὸ σχέδιον τοῦ ἔργου «Περὶ τῆς ἱστορίας τῆς ἐφευρέσεως τῆς τυπογραφικῆς τέχνης» (1779). Ἔγραψεν ἐπίσης: «Περὶ τῆς ἐκτυπώσεως γεωγραφικῶν χαρτῶν» (3 τόμοι 1777—1779), «Περὶ βιβλιογραφίας καὶ βιβλιοφιλίας» (1793) κλπ. Ὁ οἶκος Μπράϊτκοπφ ἐξακολουθεῖ καὶ σήμερον ὑφιστάμενος ὑπὸ τὴν ἐπωνυμίαν «Μπράϊτκοπφ καὶ Χαίρτελ» (βλ. κατωτ.), θεωρεῖται δὲ εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων ἐκδοτικῶν οἴκων τοῦ κόσμου. Π. Χ. Χ.

—**«Μπράϊτκοπφ καὶ Χαίρτελ»** (Breitkopf und Härtel). Μέγας μουσικὸς ἐκδοτικὸς οἶκος, ἱδρυθεὶς ἐν Λειψίᾳ τῷ 1719, παρὰ τοῦ *Βερνάρδου-Χριστοφόρου-Μπράϊτκοπφ* (1695—1777). Υἱὸς αὐτοῦ ἦτο ὁ *Ἰωάννης-Γκόττλομπ-Ἐμμανουὴλ Μπράϊτκοπφ* (βλ. ἀνωτ.), ὅστις, συνεταιρισθεὶς μετὰ τοῦ πατρός του, συνέβαλε πολὺ εἰς τὴν τελειοποίησιν τῆς μουσικῆς τυπογραφίας. Ὁ υἱὸς τοῦ Ἰωάννου *Χριστόφορος-Γκόττλομπ Μπράϊτκοπφ* (1750—1800) συνηταιρίσθη μετὰ τοῦ *Γοδεφρείδου-Χριστοφόρου Χαίρτελ* (1763—1827), ὅστις ηὔξησεν ἔτι μᾶλλον τὴν φήμην τοῦ οἴκου καὶ ἀνέλαβε τὴν ἔκδοσιν τῆς πλήρους σειρᾶς τῶν ἔργων τοῦ Μόζαρτ, Χάϋδν, Ντοῦσσεκ καὶ Κλιμέντι. Εἰσήγαγεν ἐπίσης τὴν ἐκτύπωσιν διὰ πλακῶν ἐκ κασσιτέρου καὶ μετεχειρίσθη τὴν λιθογραφίαν. Οἱ ἀπόγονοι καὶ οἱ συγγενεῖς τοῦ Χαίρτελ εὑρίσκονται σήμερον ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ οἴκου, ὅστις ἐξειλίχθη εἰς τὸν σημαντικώτατον τῆς Γερμανίας καὶ ἐκ τῶν πρώτων τοῦ κόσμου. Ὁ οἶκος «Μπράϊτκοπφ καὶ Χαίρτελ» ἔφερεν εἰς πέρας τὴν μνημειώδη κριτικὴν ἔκδοσιν τῆς πλήρους σειρᾶς τῶν ἔργων τῶν συνθετῶν: Παλεστρίνα, Λάσσους, Μπάχ, Χαίντελ, Γκλούκ, Χάϋντν, Μόζαρτ, Μπετόβεν, Μένδελσων, Μπερλιόζ, Σοπέν, Βέμπερ, Λίστ, Σοῦμπερτ, Σοῦμαν, Μπρὰμς κ. ἄ. Γ. Ι.

**Μπράϊτον** (Briaghton) *[Γεωγρ.]*. —1) Λουτρόπολις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Σοῦσσεξ, ἡ μᾶλλον πολυσύχναστος τῆς Ἀγγλίας. Κάτοικοι 142.420. Κεῖται ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῆς Μάγχης, ἔναντι τῆς γαλλικῆς Διέππης, εἰς ἀπόστασιν 80 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Λονδίνου, καὶ ἐπεκτείνεται εἰς τοὺς πρόποδας τοῦ λόφου Σάουθ Ντάουν, ὁ ὁποῖος προστατεύει αὐτὴν ἀπὸ τοὺς ἀνέμους τοῦ Βορρᾶ· ἕνεκα δὲ τούτου τὸ κλῖμα αὐτῆς εἶναι εὔκρατον καὶ λίαν ὑγιεινόν. Διεξάγει ἁλιείαν εἰς εὐρυτάτην κλίμακα, τροφοδοτοῦσαν κυρίως τὴν ἀγορὰν τοῦ Λονδίνου, καὶ ἔχει ἐργοστάσια κατασκευῆς κηρίων καὶ ἀκμαίαν βιομηχανίαν κατεργασίας ἀδαμάντων. Λόγῳ τῶν ρευμάτων, τὰ ὁποῖα σχηματίζει εἰς τὸ μέρος τοῦτο ἡ θάλασσα τῆς Μάγχης, ἡ πόλις ὑφίσταται συχνὰς καὶ σοβαρὰς πλημμύρας, ἀπὸ τὰς ὁποίας ἐπροστατεύθη διὰ τῆς κατασκευῆς εἰδικῆς προκυμαίας, ἥτις ἀπεπερατώθη τῷ 1830. Ἔχει θαυμάσια κτήρια καὶ ἐπαύλεις, μετὰ μεγαλοπρεπῶν ξενοδοχείων, θεάτρων, κέντρων διασκεδάσεως καὶ πολυαρίθμων μνημείων, ὧν τὰ κυριώτερα εἶναι: τὸ βασιλικὸν περίπτερον, κτισθὲν τῷ 1787 εἰς ρυθμὸν ἀνατολικὸν ὑπὸ τοῦ Τζὼν Νάς, μὲ πλείστας ἰαπωνικὰς διακοσμήσεις· τὸ ἐνυδρεῖον, ἐγκαινιασθὲν τῷ 1872 καὶ θεωρούμενον τὸ ὡραιότερον τοῦ κόσμου· ἡ ὀρνιθολογικὴ συλλογή, ἐγκαινιασθεῖσα τῷ 1893 καὶ θεωρουμένη ὡς ἡ πληρεστέρα τῆς Μεγάλης Βρεττανίας· τὸ πάρκον τῆς Βασιλίσσης, τὸ πάρκον Μπρῆστον, τὸ πάρκον Μπλαῖκερ, ὁ ἱππόδρομος, τὸ μουσεῖον, ἡ πινακοθήκη μετὰ πινάκων ἰδίως Φλαμανδῶν ζωγράφων. Ἡ πόλις ἐκτείνεται ἐπὶ 6 χλμ. κατὰ μῆκος τῆς παραλίας, ὅπου ἔχει θαυμασίους περιπάτους, μετὰ ὡραιοτάτου ἄλσους καὶ πολυαρίθμων ἐγκαταστάσεων λουτρῶν. Τὸ ἀρχικὸν ὄνομα τῆς πόλεως ἦτο *Μπράϊτελμστον*, προελθὸν ἐκ τοῦ Μπράϊτελμ Ἀγγλοσάξωνος ἐπισκόπου ὁ ὁποῖος ἔκτισεν αὐτὴν κατὰ τὸν Ι' αἰῶνα ἐπὶ ἐρειπίων ρωμαϊκῆς πόλεως σῳζομένων εἰσέτι εἰς πολλὰ σημεῖα τῆς πόλεως. Κατεστράφη ἐπανειλημμένως ὑπὸ Γάλλων, Φλαμανδῶν καὶ Ἱσπανῶν, ἀλλ' ἀνοικοδομήθη, καταστᾶσα σημαντικὸς λιμήν. Λόγῳ ὅμως τῶν πλημμυρῶν τὰς ὁποίας ὑπέστη κατὰ καιροὺς καὶ τῆς προσχώσεως τοῦ λιμένος συνεπείᾳ τῶν ρευμάτων τῆς Μάγχης, εἶχε περιέλθει εἰς παρακμὴν καὶ εἶχε μόλις 7.000 κατ. κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος.

Ἡ μεγάλη ἀνάπτυξις αὐτῆς ὀφείλεται εἰς τὸν ὀνομαστὸν Ἄγγλον φυσιοδίφην Ριχάρδον Ρόσσελ Λιοῦϊς, ὁ ὁποῖος τῷ 1754 συνέστησεν αὐτὴν εἰς ὑγιεινὴν τοποθεσίαν θαλασσίων λουτρῶν. Ἡ φήμη τῆς πόλεως ηὔξησε μεγάλως ἀπὸ τοῦ 1782 ὁπότε ὁ τότε πρίγκιψ τῆς Οὐαλλίας καὶ κατόπιν βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας Γεώργιος Δ' ἐγκατέστησεν ἐν αὐτῇ τὴν θερινὴν διαμονήν του ἐν τῷ βασιλικῷ περιπτέρῳ.

—2) Λουτρόπολις τῆς Αὐστραλίας, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Βικτωρίας. Κάτ. 12.083. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ΝΑ. τῆς Μελβούρνης καὶ ἔχει ὡραίους περιπάτους μετὰ πλουσίων ἐπαύλεων ἀνηκουσῶν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον εἰς κατοίκους τῆς Μελβούρνης, οἵτινες χρησιμοποιοῦν αὐτὴν ὡς θερινὴν διαμονήν. Μ. Δ. Β.

**Μπράϊτχορν** (Breithorn) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πλείστων κορυφῶν τῶν Ἑλβετικῶν Ἄλπεων, ἐξ ὧν σπουδαιότεραι εἶναι ἡ ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βέρνης, ὕψ. 3.784 μ. Αἱ ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Βαλαισίας δύο κορυφαὶ χωρίζονται ἀπ' ἀλλήλων διὰ τῆς κοιλάδος τοῦ Ροδανοῦ. Ἐκ τούτων ἡ βορεία, κειμένη τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ (3.820 μ.), μεταξὺ Νέρσχορν καὶ τῆς κοιλάδος Λόντσα, ἡ δὲ νοτία ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης, ὑψηλοτέρα τῆς πρώτης (4.171 μ.) καὶ εἶναι ἐκ τῶν μεγαλυτέρων ὀρέων τῶν Ἄλπεων, καλουμένη καὶ *Μικρὸν Τσέρβιν*. Συνορεύει μετὰ τοῦ Μόντε Ρόζα πρὸς Δ. καὶ τοῦ Μεγάλου Τσέρβιν πρὸς Α. Χ. Δ.

**Μπραϊϋ** (Braiy) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ἰρλανδίας. Κάτοικοι 8.000. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 20 χλμ. ΝΑ. τοῦ Δουβλίνου, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μπραίϋ, ὁ ὁποῖος χωρίζει αὐτὴν εἰς δύο τμήματα καὶ λίαν πολυσύχναστος κλιματολογικὸς σταθμὸς κατὰ τὸ θέρος διὰ τὰ λουτρὰ καὶ κατὰ τὸν χειμῶνα διὰ τὸ ὑγιεινὸν κλῖμά του. Μ. Δ. Β.

**Μπρακβέντε** (Brackwede) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ κοινότης εἰς τὴν περιοχὴν Bielefeld τῆς Βεστφαλίας, ἀριθμοῦσα (1919) περὶ τοὺς 10.000 κατ. Ἔχει ζωηρὰν βιομηχανίαν σιδήρου, ὑάλου, τσιμέντων κλπ.

**Μπράκε** (Brake). *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, ἐπίνειον τῆς πόλεως Ὀλντενμπουργκ. Κάτ. (1919) περὶ τὰς 6.500. Ἔχει ναυπηγεῖα καὶ διαφόρους βιομηχανίας. Ὁ *λιμὴν τοῦ Μπράκε* εἶναι προσιτὸς εἰς πλοῖα βυθίσματος μέχρις 7,5 μέτρ. Μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου τὸ Μπράκε ἦτο μέγα διαμετακομιστικὸν ἐμπόριον δημητριακῶν, ξυλείας κ. ἄ.

Digitized by Google

**Μπρακὲ** (Braquet) Γάλλος στρατηγός, ὑπηρετήσας κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου, ὡς στρατιωτικὸς ἀκόλουθος τῆς ἐν Ἀθήναις Γαλλικῆς πρεσβείας. Τῷ 1917, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου, διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῆς ἐν Ἑλλάδι στρατιωτικῆς ἀποστολῆς ἐκ 200 περίπου Γάλλων ἀξιωματικῶν, τῆς χρησιμευσάσης διὰ τὴν διδασκαλίαν τῶν Ἑλλήνων ἀξιωματικῶν εἰς τὰς θεσπισθείσας κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον νεωτέρας πολεμικὰς ἀρχὰς καὶ μεθόδους. Ν. Θ. Κ.

**Μπρακκένμπερυ** (Brackenbury), σὲρ *Ἐρρῖκος*. Ἄγγλος στρατηγὸς (1837—1914). Ἐπολέμησεν ἐν Ἰνδίαις, ἐν Ἀφρικῇ κατὰ τῶν Ἀνσχαντὶ καὶ τῶν Ζουλοῦ, καὶ τῷ 1884 ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατηγοῦ Ἧρλ ἐν Αἰγύπτῳ, ἀναλαβὼν κατόπιν τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στρατοῦ, ὅστις ἕδρα εἰς τὸν Ἄνω Νεῖλον, μετὰ τὸν φόνον τοῦ στρατηγοῦ του. Βραδύτερον διωρίσθη στρατιωτικὸν μέλος τοῦ συμβουλίου τοῦ ἀντιβασιλέως τῶν Ἰνδιῶν καὶ γενικὸς διευθυντὴς τοῦ πυροβολικοῦ. Ἔγραψε πλεῖστα στρατιωτικῆς φύσεως ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων: «Ἡ τακτικὴ τῶν τριῶν ὅπλων» (1873), «Ἱστορία τῆς ἐκστρατείας τῶν Ἀνσχαντὶ» (1874), «Ἡ στρατιὰ τοῦ ποταμοῦ» (1885), «Ἀπομνημονεύματα» (1909).

— **Μπρακκένμπερυ** (Brackenbury), *Κάρολος Μπούθ*. Ἄγγλος στρατηγὸς (1831—1890). Διεκρίθη κατὰ τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον καὶ τὴν πολιορκίαν τῆς Σεβαστουπόλεως τοῦ 1855 καὶ κατόπιν παρηκολούθησε διαφόρους ἐκστρατείας, εἰς τὴν Βοημίαν (1866), ὡς ἀπεσπασμένος εἰς τὸν γερμανικὸν στρατόν, εἰς τὴν Βουλγαρίαν εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ στρατηγοῦ Γκοῦρκο κατὰ τὸν ρωσοτουρκικὸν πόλμον τοῦ 1877 καὶ 1878 κτλ. Ἔγραψεν: «Οἱ εὐρωπαϊκοὶ ἐξοπλισμοὶ τοῦ 1867» (1867), «Ἡ χειμερινὴ ἐκστρατεία τοῦ πρίγκιπος Φρειδερίκου Καρόλου τῷ 1870—1871» (1873), «Αἱ μεταρρυθμίσεις ἐν τῷ γαλλικῷ στρατῷ» (1874), «Ὁ βίος τοῦ Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου» (1888) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπράκκενριτζ** (Brackenridge) *Ἐρρῖκος-Μαρία*. Ἀμερικανὸς νομομαθὴς (1786—1871). Εἰσελθὼν εἰς τὸν δικαστικὸν κλάδον ἀνῆλθεν εἰς ἀνώτατα ἀξιώματα καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐπιτροπὴν τῶν διαπραγματεύσεων εἰρήνης πρὸς τὸ Μεξικόν. Ἔγραψε: «Ταξίδιον εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικὴν» (1818), «Δοκίμιον περὶ τῶν τράστ» (1842), «Ἱστορία τῆς ἐπαναστάσεως τῶν δυτικῶν ἐπαρχιῶν» (1859), «Ἐπιστολαὶ περὶ τῶν πολέμων τοῦ Μεξικοῦ» (1847).

— **Μπράκκενριτζ** (Brackenridge), *Οὖγος-Ἐρρῖκος*. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1748—1816). Ἐσπούδασε θεολογίαν καὶ νομικά, κατόπιν δ' ἐπεδόθη εἰς τὴν δημοσιογραφίαν καὶ τὴν πολιτικήν, ἐκλεγεὶς διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τῷ 1786. Ἔγραψεν: «Ἐπεισόδια τῆς ἐπαναστάσεως τῆς Δυτικῆς Πενσυλβανίας» (1795), «Ὁ νεώτερος ἱπποτισμός, ἤτοι αἱ περιπέτειαι τοῦ Καπετὰν Φαρράγου» (1796), σάτιρα γελοιοποιοῦσα τὰς ὑπερβολικὰς ἀξιώσεις τῆς νεαρᾶς τότε ἀμερικανικῆς δημοκρατίας, κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μπράκκο** (Bracco), *Ροβέρτος*. Ἰταλὸς δραματικὸς συγγραφεύς, ποιητὴς καὶ κριτικός, ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων τῆς συγχρόνου Ἰταλίας, γεννηθεὶς ἐν Νεαπόλει τῷ 1862. Ἀνησύχου χαρακτῆρος, ἐγκατέλειψε λίαν ἐνωρὶς τὰς σχολικάς του σπουδὰς καὶ ἀπὸ ἡλικίας 16 ἐτῶν ἤρχισεν ἐργαζόμενος ὡς ὑπάλληλος, ἐνῷ συγχρόνος κατεγίνετο εἰς ἰδιαιτέρας ἐγκυκλοπαιδικὰς μελέτας. Κατόπιν προσελήφθη εἰς τὴν ἐφημερίδα «Κορριέρε ντὲλ Ματτῖνο», ὅπου κατ' ἀρχὰς εἰργάσθη ὡς ἁπλοῦς ρεπόρτερ, ἀλλὰ σὺν τῷ χρόνῳ ἤρχισε νὰ γράφῃ διάφορα ἄρθρα, περίεργα, διηγήματα καὶ στίχους εἰς τὸ ἰδιαίτερον ἰδίωμα τῆς Νεαπόλεως. Τῷ 1884 διωρίσθη ἀνταποκριτὴς τοῦ «Καπετὰν Φρακάσσα» καὶ συγχρόνως σχεδὸν προσελήφθη ὡς συντάκτης τῶν ἐφημερίδων «Νάπολι» καὶ «Πίκκολο» καὶ μετὰ δύο ἔτη τῆς «Κορριέρε ντὶ Νάπολι» ὅπου ἀνέλαβε τὴν θεατρικὴν καὶ μουσικὴν κριτικήν, συμβαλὼν τὰ μέγιστα εἰς τὴν διάδοσιν καὶ τὴν κατανόησιν τοῦ ψενικοῦ θεάτρου καὶ εἰς τὴν κατανίκησιν τῆς ἐχθρότητος, μὲ τὴν ὁποίαν εἶχον ὑποδεχθῆ τὸ βανέριον λυρικὸν δρᾶμα τὰ θέατρα τῆς Νεαπόλεως. Τὸ πρῶτόν του θεατρικὸν ἔργον, παιχθὲν τῷ 1887, ἦτο τριλογία ἐκ μονοπράκτων ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Νὰ μὴ κάμῃς εἰς τοὺς ἄλλους»...», «Ἐκεῖνος, ἐκείνη, ἐκεῖνο» καὶ «Μία ταξιδιωτικὴ περιπέτεια». Ἔγραψε κατόπιν τὸ λιμπρέττο «Αἱ ἀπογοητευμέναι», ὅπερ ἐμελοποίησεν ὁ Μάριο Κόστα καὶ τῷ 1892 ἐδημοσίευσε τὸ ρεαλιστικὸν δρᾶμα «Μιὰ γυναῖκα». Ἠκολούθησαν τῷ 1893 τὸ ἰμπρεσσιονιστικὸν δρᾶμα «Προσωπίδες», τῷ 1894 ἡ κωμῳδία «Ὁ ἄπιστος» καὶ τῷ 1895 τὸ συγκινητικώτατον δρᾶμα «Θρίαμβος». Τὰ πρῶτά του ἔργα ἦσαν ἐπηρεασμένα ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Ἴψεν, τοῦ Χάουπτμαν καὶ αὐτοῦ τοῦ Δουμᾶ υἱοῦ. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως ἡ προσωπικότης αὐτοῦ ὡς δραματικοῦ συγγραφέως ἤρχισε ν' ἀποκτᾷ αὐτοτέλειαν καὶ νὰ ἐπιβάλλεται διὰ τῆς δραματοποιήσεως κοινωνιολογικῶν, ἰδεολογικῶν καὶ αἰσθηματικῶν θεμάτων, τὰ ὁποῖα τοῦ ἔδιδον ἀφορμὴν νὰ ἐπιδείξῃ ἰσχυρὸν δραματικὸν τάλαντον καὶ νὰ δημιουργήσῃ ἔργα πλήρη ἀντιθέσεων καὶ δραματικῶν συγκρούσεων, μὲ πρόσωπα ζωντανὰ καὶ χαρακτῆρας σαφῶς διαγεγραμμένους. Κατὰ τὰ ἐπακολουθήσαντα ἔτη ἔγραψε πλεῖστα δράματα, ὧν κυριώτερα εἶναι: «Δὸν Πέτρος Καροῦζο» (1895), «Τὸ τέλος τῆς ἀγάπης» (1896), «Τραγῳδία τῆς ψυχῆς» (1899), «Τὸ δικαίωμα τῆς ζωῆς», «Ἕνας ἀπὸ τοὺς τιμίους» (1900), «Χαμένοι στὸ σκοτάδι» (1901), «Μητρότης» (1903), «Τὰ ξινὰ φροῦτα» (1904), «Ἡ βρυσοῦλα» (1905), «Τὰ φαντάσματα» (1906), «Νελλίνα» (190 ), «Ὁ τέλειος ἔρως» (1910), «Ὁ μικρὸς ἅγιος» (1911), ὅπερ θεωρεῖται τὸ ἀριστούργημά του, «Οὔτε ἕνα φιλὶ» (1912), «Οἱ τρελλοὶ» (1918), «Ὁ μακρυνὸς ἐραστὴς» κτλ. Τὰ ἔργα ταῦτα κατέστησαν αὐτὸν γνωστὸν καὶ ἐκτὸς τῆς Ἰταλίας, ὅπου τὰ πλεῖστα μετεφράσθησαν καὶ ἐπαίχθησαν μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας. Πολλὰ τῶν ἔργων του ἐπαίχθησαν μετ' ἐπιτυχίας καὶ ἐν Ἑλλάδι. Ὁ Μπράκκο ἔγραψεν ἐπίσης καὶ ὑπὲρ τὰ 200 διηγήματα, ἅτινα ἐξεδόθησαν εἰς 5 τόμους εἰς πολλὰς ἐκδόσεις, ἡ τελευταία τῶν ὁποίων εἶναι ἡ τοῦ 1927. Τὰ ποιήματά του. γεγραμμένα εἰς τὸ γλωσσικὸν ἰδίωμα τῆς Νεαπόλεως, ἐξεδόθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Vecchi versetti», τὰ δὲ δημοσιογραφικά του καὶ κριτικὰ ἄρθρα ὑπὸ τοὺς τίτλους «Μεταξὺ τῶν ἀνθρώπων καὶ τῶν πραγμάτων» καὶ «Μεταξὺ τῶν τεχνῶν καὶ τῶν καλλιτεχνῶν» (1921). Ὁ Μπράκκο κατὰ τὴν μεταπολεμικὴν περίοδον ἀναμειχθεὶς καὶ εἰς τὴν πολιτικὴν διηύθυνε τῷ 1923 τὸν ἀντιφασιστικὸν ἀγῶνα ἐν Νεαπόλει κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ ἔτους ἐκείνου καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς τῆς ὁμάδος τοῦ Ἀμέντολα. Τῷ 1926 ὅμως ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς. Μ. Δ. Β.

**Μπρακουμάδι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 710. Χ. Δ.

**Μπράκτον**, ἢ *Μπράττον* (Bracton ἢ Bratton), *Ἐρρῖκος ντὲ—*. Ἄγγλος κληρικὸς καὶ νομομαθὴς (1216—1268). Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ θεολογίαν καὶ νομικὰ καὶ ἐπί τι χρονικὸν διάστημα ἐδίδαξεν ἐν τῷ αὐτόθι πανεπιστημίῳ κανονικὸν δίκαιον. Ἀπὸ τοῦ 1245 μέχρι τοῦ θανάτου του ὑπηρέτησεν εἰς τὸν δικαστικὸν κλάδον, ὅπου ἔφθασεν εἰς τὰ ἀνώτατα ἀξιώματα, γενόμενος ἀρχιδικαστὴς ἐπὶ Ἐρρίκου Γ'. Κατέλαβεν ἐπίσης καὶ διάφορα ἐκκλησιαστικὰ ἀξιώματα, τῷ δὲ 1264 ἀναφέρεται ὡς ἀρχιδιάκονος τῆς Μπάρνσταπλ καὶ βραδύτερον πρωθιερεὺς καὶ οἰκονόμος τῆς μητροπόλεως τοῦ Ἔξετερ. Ὁ Μπράκτον ἀπέκτησεν ἐξαιρετικὴν φήμην, ἰδίως διὰ τὸ ἔργον του «Περὶ τῶν νόμων καὶ τῶν ἐθίμων τῆς Ἀγγλίας», ὅπερ, κατὰ χρονολογικὴν σειράν, εἶναι ἡ πρώτη συγγραφὴ ἀγγλικοῦ δικαίου. Γεγραμμένον εἰς λατινικὴν γλῶσσαν μὲ σαφήνειαν ὕφους ἐκπληκτικὴν διὰ τὸ εἶδος τοῦ θέματος, θεωρεῖται τὸ σημαντικώτερον μνημεῖον τῆς ἀγγλικῆς μεσαιωνικῆς νομολογίας καὶ ἀποδεικνύει ὅτι ὁ συγγραφεὺς αὐτοῦ εἶχε βαθεῖαν γνῶσιν τῶν ἔργων τῶν γλωσσογράφων καὶ τοῦ ἰουστινιανείου δικαίου. Τὸ ἔργον τοῦτο ἔδωκε μεγίστην ὤθησιν εἰς τὰς νομικὰς μελέτας ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἀπετέλεσε πολύτιμον πηγὴν πληροφοριῶν. Ἐξεδόθη τῷ 1569 κατὰ πρῶτον καὶ κατόπιν τῷ 1640 καὶ 1878—1883. Μ. Δ. Β.

**Μπράλλος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παρνασσίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται 2 ὥρας περίπου ΒΔ. τῆς Ἀμφικλείας, παρὰ τὴν σιδηροδρομικὴν γραμμὴν Ἀθηνῶν-Λαρίσης, ἐφ' ἧς ἔχει ὁμώνυμον σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 769, ἐξ ὧν 28 ἐν τῷ συνοικισμῷ τοῦ σταθμοῦ. Χ. Δ.

**Μπράμα** (Bramah), *Ἰωσήφ*. Ἄγγλος μηχανικός, γεννηθεὶς τῷ 1749 εἰς Stainborough καὶ ἀποθανὼν τῷ 1‑14. Ἐφεῦρε τὸ ὑδραυλικὸν πιεστήριον, μηχανὴν πρὸς παρασκευὴν ἀτέρμονος χάρτου, κ. ἄ.

**Μπράμαγα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας χωρίου *Θούριον* (βλ. λ.).

**Μπραμαμπιὼ** (Bramabiau) *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένον σπήλαιον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γκάρντ, κείμενον παρὰ τὸ χωρίον Καμπριέ. Εἶναι περίφημον διὰ τὰς ἐν αὐτῷ πολυαρίθμους ὑπογείους πηγάς, λίμνας καὶ ρυάκια. Χ. Δ.

**Μπραμάντε** (Bramante), *Δονᾶτος-Λατζάρι* (Lazzari), ὁ ἐπιλεγόμενος—. Διάσημος Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς εἰς τὸ Οὐρβῖνον τῷ 1444. Ὡς οἱ πλεῖστοι ἀρχιτέκτονες τῆς Ἀναγεννήσεως, ἐσπούδασεν ἀρχικῶς τὴν ζωγραφικήν. Ὁ Λουκιανὸς ντὰ Λαουράνα, ἐνεφύτευσε πρῶτος εἰς τὸν νεαρὸν Μπραμάντε τὸν ἔρωτα τῶν λεπτῶν καὶ κομψῶν μορφῶν. Βραδύτερον ὁ Μπραμάντε ἔσχε τὴν εὐκαιρίαν νὰ συμπληρώσῃ τὴν καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν ἐν εὐρυτέρῳ κύκλῳ, διὰ τῆς θεωρήσεως τῶν ἀριστοτεχνημάτων τῶν μεγάλων διδασκάλων τῶν χρόνων του καὶ τῶν λειψάνων τῆς ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος, εἰς τὰ ὁποῖα ὀφείλει τὰς πρώτας ἀφορμὰς μερικῶν ἐκ τῶν μεγαλοφυεστέρων εὑρέσεων τοῦ πνεύματός του. Μετὰ τὸν Λουκιανὸν ντὰ Λαουράνα, ὁ καλλιτέχνης ὅστις σοβαρώτερον ἐπέδρασεν ἐπ' αὐτοῦ ὑπῆρξεν ὁ Ἀλμπέρτι. Τρίτη, ἡ σοβαρωτέρα ἴσως πασῶν, ἐπίδρασις προέρχεται ἐκ τοῦ ἔργου τοῦ Λεονάρδου ντὰ Βίντσι. Βραδύτερον, εἰς τὴν Ρώμην, ἔλαβε χώραν ἡ τετάρτη, οὕτως εἰπεῖν, μύησις τοῦ Μπραμάντε. Τὰ ἐρείπια τοῦ Φλαβίου ἀμφιθεάτρου (τοῦ Κολοσσαίου), οἱ κίονες τῶν ἀρχαίων ναῶν, αἱ θαυμάσιαι θριαμβευτικαὶ ἀψῖδες ἔθρεψαν τὸ πνεῦμά του μὲ ἄφθονα γόνιμα στοιχεῖα καὶ ἀντὶ νὰ τὸ ὑποδουλώσουν, τὸ κατέστησαν, ἀντιθέτως, ἱκανὸν ν' ἀναζητήσῃ καὶ νὰ ἐπιτύχῃ τὴν ἀνεξαρτησίαν του καὶ τὴν διαμόρφωσίν του εἰς σαφῶς ἐκπεφρασμένην προσωπικότητα. Τοιουτοτρόπως ὁ Μπραμάντε κατέστη ὁ μέγιστος τῶν ἀρχιτεκτόνων τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως. Εἰς τὸν Μπραμάντε ἀνήκει ἡ δόξα ὅτι ἀπέδωκε τὸ πνεῦμα τῆς Ἀναγεννήσεως δι' ἀρχιτεκτονικῶν σχημάτων καὶ μελῶν. Ἀντικατέστησε τὴν μακρόκλιτον βασιλικὴν διὰ τοῦ περικέντρου ναοῦ καὶ ἔθηκεν ἐπὶ κτίσματος ἱδρυμένου κατὰ τὸ σχῆμα τοῦ ἰσοσκελοῦς ἑλληνικοῦ σταυροῦ μεγαλοπρεπῆ θόλον, στηριζόμενον οὐχὶ ἐπὶ λεπτῶν κιόνων, ὡς μέχρι τῆς ἐποχῆς του ἐσυνηθίζετο, ἀλλ' ἐπὶ βαρέων, συμπαγῶν στύλων. Τὸ οὕτω δημιουργούμενον ἀρχιτεκτόνημα κερδίζει εἰς μεγαλεῖον, εἰς εὐρύτητα, εἰς ἁρμονίαν καὶ συμμετρίαν. Ὡς πρότυπον εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ ἀρχιτεκτονικοῦ τούτου συνόλου ἔλαβεν ὁ Μπραμάντε τὸν τύπον τοῦ ρωμαϊκοῦ ἀμφιθεάτρου, ἐν ᾧ τόσον ἰσχυρὰ ἐμφανίζεται ἡ ἀντίθεσις μεταξὺ τοῦ τοίχου, ὅστις τείνει πρὸς τὰ ἄνω, καὶ τῆς στέγης, ἥτις βαρύνει ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω. Εἰς συμπλήρωσιν τῆς νέας ταύτης δημιουργίας ὁ Μπραμάντε ἐχρησιμοποίησε τὰς παραστάδας ἢ τοὺς ἡμικίονας, διατεταγμένους εἰς ἐπαλλήλους ὀρόφους, καὶ τὰ ποικιλόσχημα παράθυρα, ἀνοιγόμενα κατὰ τὰς ἑκάστοτε παρουσιαζομένας αἰσθητικὰς ἀνάγκας.

Τὸ πρῶτον ἔργον, ἐν ᾧ ἤρχισε νὰ καταδεικνύεται ἡ ἀρχιτεκτονικὴ μεγαλοφυΐα τοῦ Μπραμάντε ἐν Μιλάνῳ, ὑπῆρξεν ἡ ἀνακαίνισις τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Σατύρου, ἀνήκοντος εἰς τὸν Θ' αἰῶνα. Ἡ ἐξωτερικὴ διακόσμησις τοῦ ναοῦ τούτου μὲ τὰ θαυμάσια ἐζωγραφημένα ἀρχιτεκτονικά του κοσμήματα, ἀποτελεῖ ἓν ἔξοχον σύνολον χάριτος καὶ ἁρμονίας. Τοιουτοτρόπως ἐν τῷ ἀρχιτεκτονήματι τούτῳ ὁ Μπραμάντε ἀποδεικνύει τὰς ἐξαιρέτους ἱκανότητάς του ὡς ζωγράφου· τὰς ἰδίας ἱκανότητας ἀποδεικνύει καὶ εἰς τὸ δεύτερον ἐν Μιλάνῳ ἔργον του, τὸν παρὰ τὸν Ἅγιον Σάτυρον ναὸν τῆς Παναγίας, ἐν τῇ «σακριστίᾳ» τοῦ ὁποίου ἀποκαλύπτεται ἐν ὅλῃ τῇ θαυμαστῇ ἐντελείᾳ του τὸ διακοσμητικὸν τάλαντόν του. Εἰς τὰς διακοσμήσεις ταύτας εἶναι προφανὴς ἡ ἀνάμνησις τῶν ἐξαιρέτων διακοσμήσεων τοῦ Λαουράνα ἐν τῷ δουκικῷ παλατίῳ τοῦ Οὐρβίνου· ἀλλ' ἡ ἐργασία τοῦ Μπραμάντε ἔχει περισσοτέραν κομψότητα, χάριν καὶ ποικιλίαν. Ἀκολουθεῖ ἡ Santa-Maria delle Grazie, ἡ Παναγία τῶν Χαρίτων. Τὸ τελευταῖον ἀξιολογώτατον ἔργον τοῦ Μπραμάντε ἐν Λομβαρδίᾳ εἶναι ἡ ἐκκλησία τοῦ Abbiate Grasso. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ Μπραμάντε εἰς τὴν καθόλου περαιτέρω διαμόρφωσιν τῆς λομβαρδικῆς τέχνης ὑπῆρξεν ἀπὸ πάσης ἀπόψεως βαθεῖα καὶ ἀξιομνημόνευτος· πολυάριθμοι καλλιτέχναι, ἐν οἷς ὁ Ντολτσεμπουόνε, ὁ Μπαττάλιο καὶ ὁ Λονάτι, ἠκολούθησαν τὸ παράδειγμά του καὶ πολυάριθμοι ναοὶ ἐξεπροσώπησαν κατ' αὐτοὺς τοὺς χρόνους τὴν ἀνακαίνισιν ἐν τῇ ἀρχιτεκτονικῇ, ἡ ὁποία συνετελεῖτο βραδέως, ἀλλ' ἀσφαλῶς ὑπὸ τοῦ Μπραμάντε.

Τῷ 1499 ὁ Μπραμάντε ἐγκαταλείπει τὸ Μιλᾶνον καὶ ἐγκαθίσταται εἰς τὴν Ρώμην. Τὸ γεγονὸς τοῦτο εἶναι σημαντικώτατον ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῆς Ἀναγεννήσεως, διότι ἐπέπρωτο νὰ ἔχῃ ἀποφασιστικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς διαμορφώσεως τοῦ καλλιτεχνικοῦ ἰδεώδους του. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης τελειώνει ἡ τέχνη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος καὶ ἀρχίζει ἡ τέχνη τοῦ ΙΣΤ' καὶ ἡ τέχνη τῆς Φλωρεντίας παραχωρεῖ τὴν θέσιν της εἰς τὴν τέχνην τῆς Ρώμης. Ἀπὸ τὰ πρῶτα ἔργα τοῦ Μπραμάντε ἐν Ρώμῃ καταδεικνύεται ἡ βαθυτάτη ἐπίδρασις, τὴν ὁποίαν, ἤσκησεν ἐπ' αὐτοῦ ἡ κλασσικὴ ἀρχαιότης. Τὸ «Tempietto» (1504), τουτέστιν ὁ ναΐσκος τοῦ San Pietro in Montorio, εἶναι ἡ πρώτη ἐκδήλωσις τῆς περὶ περικέντρου ναοῦ νέας καλλιτεχνικῆς ἀντιλήψεως τοῦ Μπραμάντε. Κατ' οὐσίαν εἶναι ἕνα ἔργον ἔξω ἀπὸ τὴν ἐποχήν του καὶ ἀπὸ τὸν προορισμόν του, μία πλήρης ἀνασύστασις ἀρχαίου ναοῦ, τὴν ὁποίαν οὐδεὶς μεταγενέστερος καλλιτέχνης ἐμιμήθη. Ἀλλ' ἔχει ἀπεριόριστον ἱστορικὴν σημασίαν, διότι μαρτυρεῖ πῶς ἐπέδρασαν τὰ κατάλοιπα τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος ἐπὶ τοῦ πνεύματος τοῦ Μπραμάντε καὶ πῶς ἡ ἀρχαιότης αὐτὴ συνετέλεσεν εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ καθαρῶς ἀναγεννητικοῦ τύπου τῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Τῷ 1504 ὁ Μπραμάντε ᾠκοδόμησε τὴν Μονὴν της Παναγίας τῆς Εἰρήνης καὶ τῷ 1509 τὸν χορὸν τῆς Παναγίας τοῦ Λαοῦ Τὰ ἔργα ταῦτα ἔχουν δευτερεύουσαν σημασίαν, εἶναι δὲ μᾶλλον ἀξιομνημόνευτα διὰ τὴν διακόσμησίν των ἢ διὰ τὴν ἀρχιτεκτονικήν των ἀξίαν. Τὰ κύρια ἔργα τοῦ Μπραμάντε ἐν

Digitized by Google

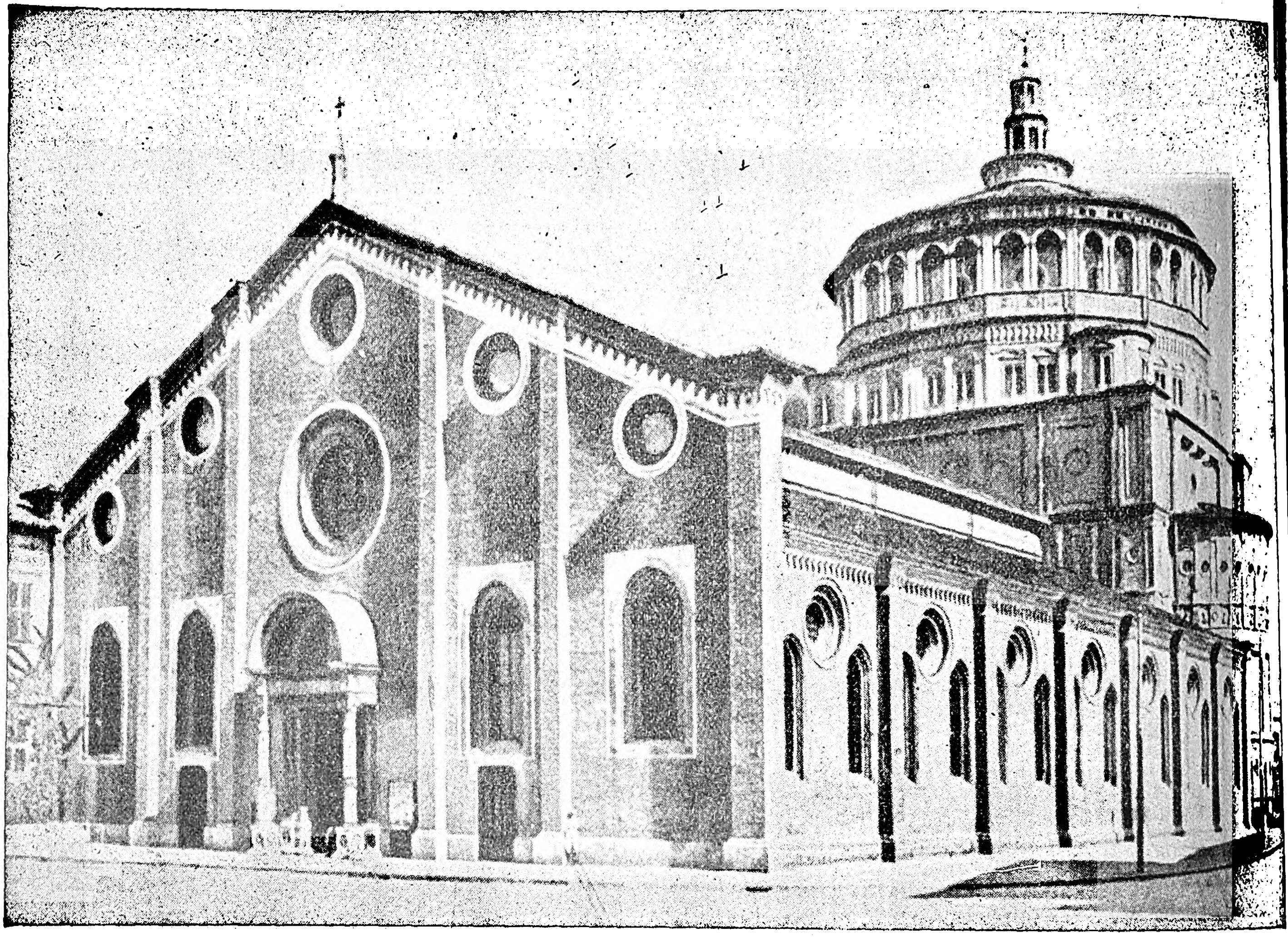

Ἐξωτερικὴ ἄποψις τοῦ ναοῦ τῆς Παναγίας τῶν Χαρίτων ἐν Μιλάνῳ.

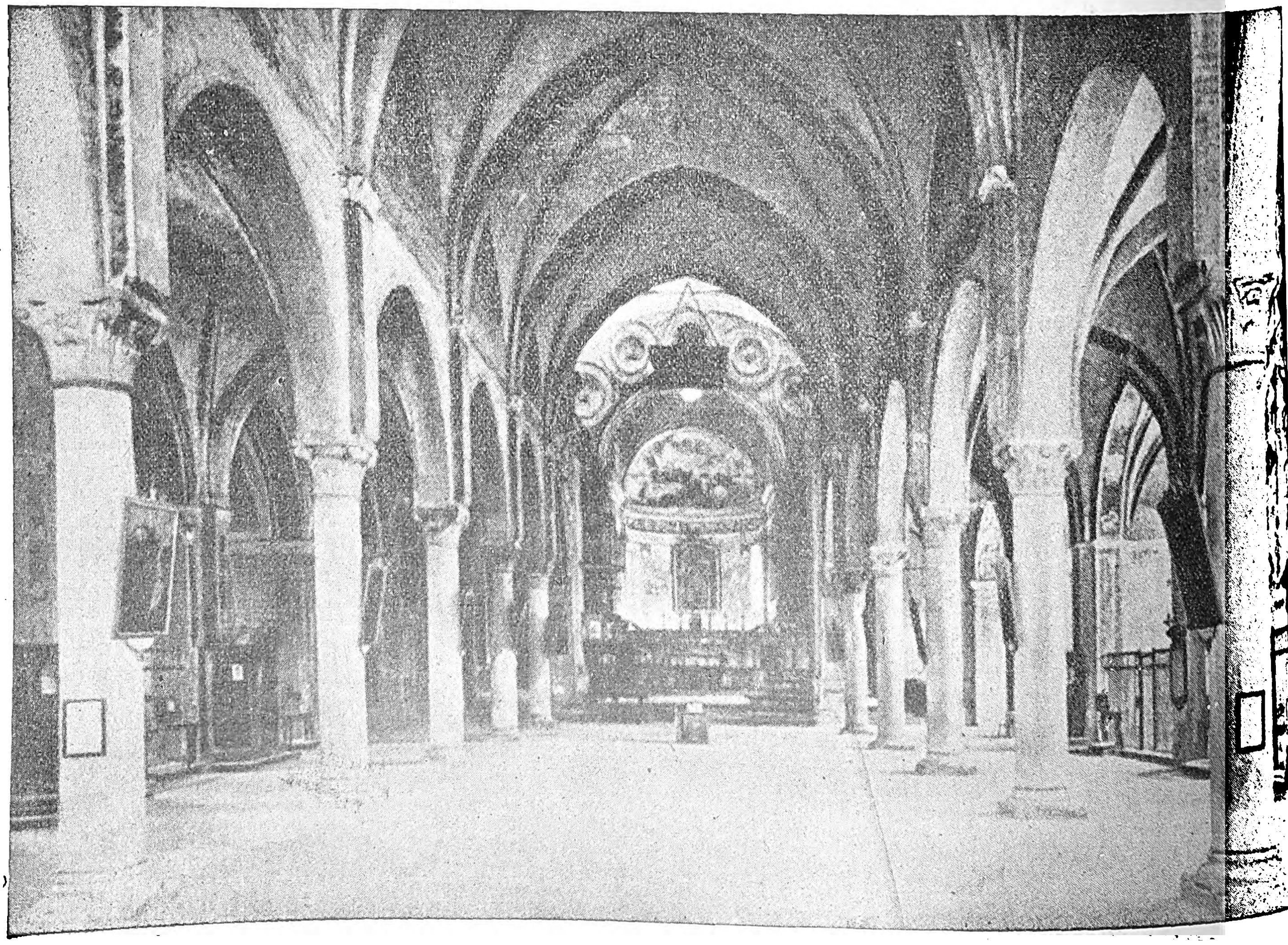

Ἐσωτερικὸν τοῦ ναοῦ τῆς Παναγίας τῶν Χαρίτων ἐν Μιλάνῳ.

Digitized by Google

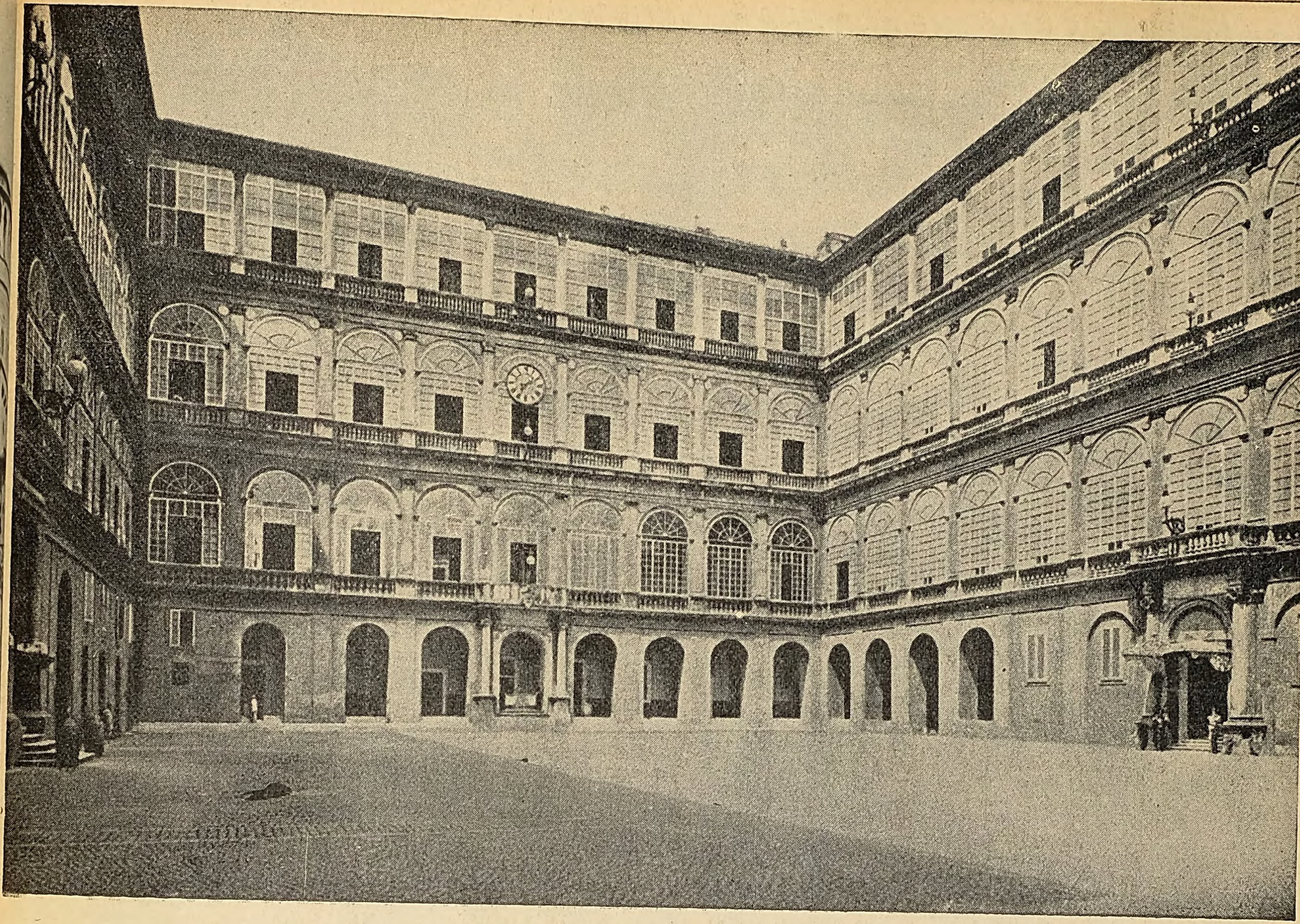

Ἡ πύλη τοῦ Σὰν Νταμάσο ἐν τῷ Βατικανῷ.

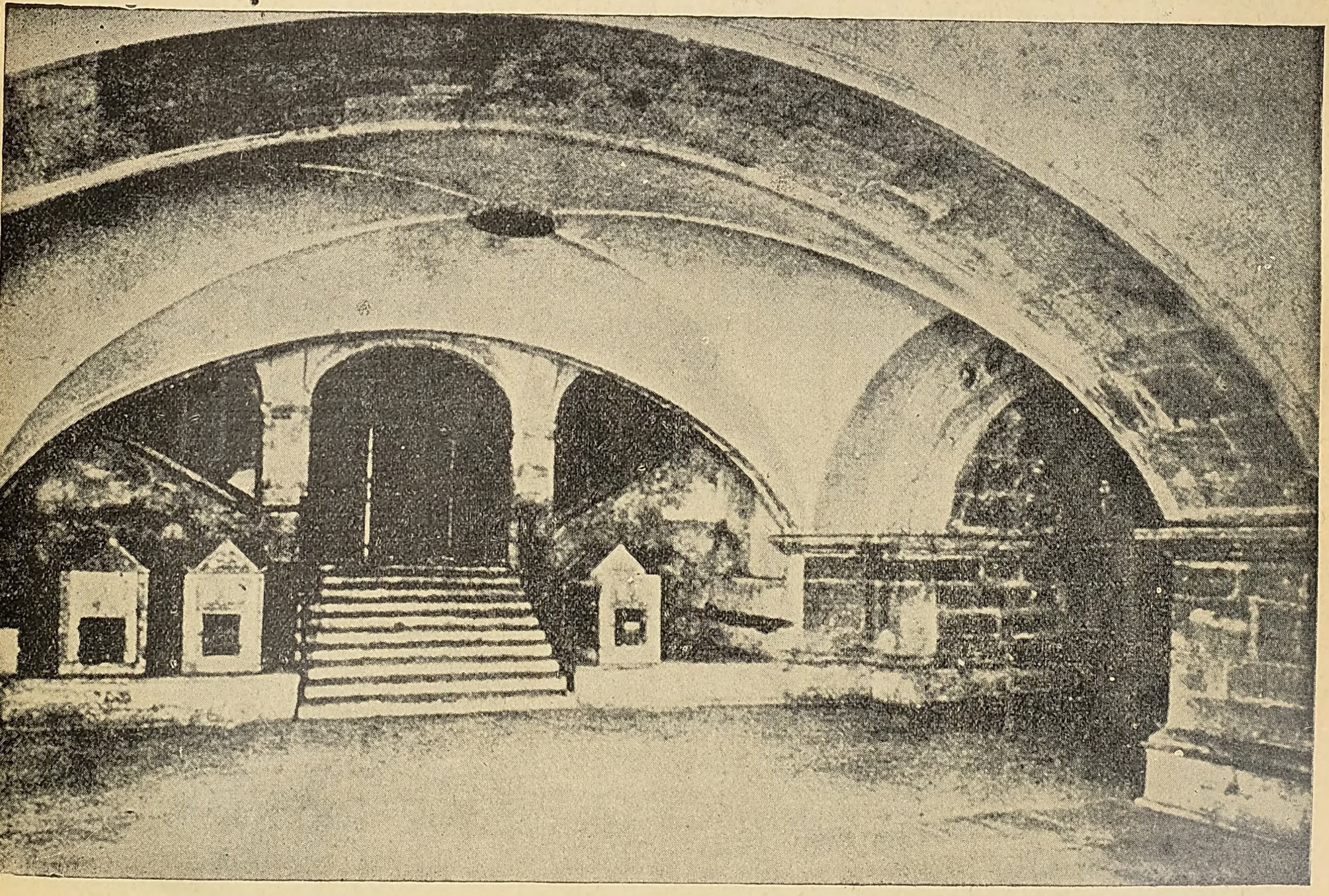

Κρύπτη τῆς μητροπόλεως τῆς Παβίας.

Digitized by Google

Ρώμη, τὰ ἔργα ἐκεῖνα εἰς ἃ ἐξεδηλώθη ἐν ὅλῃ της τῇ ἐκτάσει ἡ μεγαλοφυΐα του, εἶναι τὸ παλάτιον τοῦ Βατικανοῦ καὶ ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου. Εἰς τὸ Βατικανὸν κατ' ἀρχὰς κατεσκεύασε τὰ οἰκοδομήματα, ἅτινα περιβάλλουν τὴν αὐλὴν τοῦ Ἁγίου Δαμασίου, μετὰ ταῦτα δ' ἥνωσε διὰ μεγαλοπρεπῶν οἰκοδομημάτων τὸ παλαιὸν παλάτιον τοῦ Βατικανοῦ μὲ τὴν villa Belvedere, ἀπέχουσαν τούτου περὶ τὰ τριακόσια μέτρα. Αἱ κατασκευαὶ αὗται, εἰς τὰς ὁποίας ὁ Μπραμάντε κατέδειξεν ὅλην τὴν βαθεῖαν ἀντίληψιν τοῦ μεγαλείου, τὴν ὁποίαν ἐκέκτητο, διὰ τῆς προσθήκης μνημειωδῶν κλιμάκων, τῆς διαιρέσεως τῶν ἐσωτερικῶν αὐλῶν εἰς ἐπάλληλα ἐπίπεδα καὶ τῆς ἐπινοήσεως τῆς θαυμασίας κόγχης τοῦ Μπελβεντέρε, ἀπεδείκνυον ὅτι ὁ Μπραμάντε ἦτο ἀρχιτέκτων ὁ καταλληλότερος παντὸς ἄλλου διὰ τὴν ἀνάληψιν ἑνὸς τόσον κολοσσικοῦ ἐγχειρήματος, ὡς ὁ Ἅγιος Πέτρος τῆς Ρώμης. Δὲν ἐπρόφθασε νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὸ ἔργον τοῦτο, εἰς τὴν κατασκευὴν τοῦ ὁποίου εἰργάσθησαν τόσοι ἔνδοξοι καλλιτέχναι. Ἀφῆκεν ὅμως ὡς μνημειώδη ἀπόδειξιν τῆς μεγαλοφυΐας του τὸ διάγραμμά του, ἐμπνευσμένον ἀπὸ τὰ διδάγματα τῆς κλασσικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Αὐτὸς οὗτος ὁ Μπραμάντε ὡμολόγησεν ὅτι ὠνειρεύετο νὰ στηρίξῃ τὸν θόλον τοῦ Πανθέου τοῦ Ἀγρίππα ἐπὶ τῶν ἁψίδων τῆς βασιλικῆς τοῦ Κωνσταντίνου. Υἱοθέτησε τὸ σχῆμα τοῦ ἰσοσκελοῦς ἑλληνικοῦ σταυροῦ καὶ ἐσχεδίασεν ὡς ἀντίρροπον καὶ συμπλήρωμα τοῦ κεντρικοῦ θόλου νὰ ἐγείρῃ τέσσαρας ἄλλους μικροτέρους θόλους εἰς τὰ μεταξὺ τῶν τεσσάρων σκελῶν τοῦ σταυροῦ τούτου διαστήματα. Τὸ σχέδιον ἦτο κατὰ βάσιν ἁπλοῦν, μεγαλοπρεπές, εὐρύ, ἄνετον, πλῆρες ἀπὸ τὸ πνεῦμα τῆς νέας τέχνης, ἀλλ' ἴσως ἀπροσάρμοστον πρὸς τὰς τελετουργικὰς ἀνάγκας καὶ πρὸς τὴν ἐσωτέραν οὐσίαν τοῦ Χριστιανισμοῦ. Πάντως ὑπερέβαινε πᾶν ὅ,τι μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης εἶχεν ἐπιτύχει ἡ Ἀναγέννησις καὶ ἤνοιγε τὸν δρόμον πρὸς τὰς μεταγενεστέρας ἀναζητήσεις καὶ συμπληρώσεις. Ὁ πάπας Ἰούλιος Β', ὅστις εἶχε μεταξὺ τόσων ἀρχιτεκτόνων τῆς ἐποχῆς του προτιμήσει τὸν Μπραμάντε, τὸ υἱοθέτησε μετ' ἐνθουσιασμοῦ καὶ τὴν 18ην Ἀπριλίου τοῦ 1506 ἐγένετο ἡ ἔναρξις τῆς ἐκτελέσεώς του. Ὁ Μπραμάντε εἶχεν ἐξαντλήσει εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ σχεδίου τούτου ὅλην τὴν δύναμιν τῆς ψυχῆς του καὶ τοῦ πνεύματός του, ὅλην τὴν μεγαλοφυΐαν του. Τῷ 1514 ὅμως ἀπέθανεν, ἀφήσας μόνον τοὺς τέσσαρας στύλους, οἱ ὁποῖοι ἐπρόκειτο νὰ ὑποβαστάσουν τὸν θόλον καὶ τὰς ἁψῖδας τὰς ἑνούσας τούτους πρὸς ἀλλήλους ἐπὶ ἓν τέταρτον τοῦ αἰῶνος καὶ πλέον τὸ μικρὸν τοῦτο συντετελεσμένον τμῆμα τοῦ μεγάλου ἔργου ἀνέμεινε τὴν ἐξακολούθησιν τῶν ἐργασιῶν ἐπὶ νέου πλέον σχεδίου. Ἄλλοι καλλιτέχναι, ὁ Ραφαήλ, ὁ Φρὰ Τζιοκόντο, ὁ Ι. ντὰ Σαγκάλλο, ὁ Μπ. Περοῦτζι, ὁ Ἀντ. ντὰ Σαγκάλλο, ἐκινήθησαν ἀλληλοδιαδόχως μεταξὺ τοῦ ἑλληνικοῦ καὶ τοῦ λατινικοῦ σταυροῦ. Καὶ ἐχρειάσθη νὰ ἀνατεθῇ ἡ συμπλήρωσις τοῦ μεγαλειώδους ἔργου εἰς τὸν Μιχαὴλ Ἄγγελον, διὰ νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν ἐνέργειαν τὸ σχεδιάγραμμα τοῦ Μπραμάντε, τροποποιημένον ὅμως κατὰ τοῦτο: ὅτι, ἀντὶ τοῦ Πανθέου, ὁ Μιχαὴλ Ἄγγελος προέκρινεν, ὡς συμφωνότερον πρὸς τὴν ὅλην καλλιτεχνικὴν σύλληψιν τοῦ ναοῦ, τὸν φλωρεντινὸν θόλον τοῦ Μπρουνελλέσκι.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. Haupt*, Baukunst der Renaissance (Βερολῖνον 1923).— *G. Carotti*, Le opere di Leonardo, Bramante e Raffaelo (Μιλᾶνον 1905).— *Marcel Reymond*, Bramante et l'architecture italienne au XVIe siècle (Παρίσιοι, ἄνευ χρονολογίας). Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπράμμελ** (Brummell), ***Γεώργιος, Μπράϋαν***. Διάσημος Ἄγγλος δανδῆς, ἀποκληθεὶς βασιλεὺς τοῦ συρμοῦ. Ἐγεννήθη ἐν Οὐεστμίνστερ τῷ 1788 ἐξ ἀσήμων γονέων, ἐφοίτησεν εἰς Ὀξφόρδην καὶ κατόπιν ὑπηρέτησεν ὡς σημαιοφόρος ὑπὸ τὸν πρίγκιπα τῆς Οὐαλλίας, τοῦ ὁποίου ἐγένετο ὁ εὐνοούμενος. Ἀποστρατευθεὶς ἀπέκτησε καταπληκτικὴν ἐπιβολὴν ἐπὶ τῆς ἀνωτέρας κοινωνίας διὰ τῆς καλαισθησίας τοῦ ἐνδύματος καὶ τῆς ψυχρᾶς ἀβρότητος τῶν τρόπων, ἥτις κατέστη νόμος διὰ τὴν ἀγγλικὴν ἀριστοκρατίαν. Ὁ ἀντιθαλαμός του ἐγέμεν ἀριστοκρατῶν ἐκλιπαρούντων ὡς ὑπερτάτην χάριν νὰ παρακολουθήσουν τὸ δέσιμον τοῦ λαιμοδέτου του. Κάποτε ἐθεώρησεν ὅτι ἐξώφλησε τὸ πρός τινα δανειστὴν χρέος του, διότι κατεδέχθη νὰ τὸν προσαγορεύσῃ οἰκειότατα ἐνώπιον ἀριστοκρατῶν. Ἔφθασεν ὅμως ἐν τέλει εἰς τοιοῦτον βαθμὸν προπετείας, ὥστε ἐν πληθούσῃ λέσχῃ νὰ προστάξῃ τὸν διάδοχον τοῦ θρόνου ν' ἀνάψῃ τὰ φῶτα. Τὴν ἐπαύριον ἀπεβάλλετο τῆς λέσχης, καὶ ἤρχισε δι' αὐτὸν ἡ δυσμένεια καὶ ἡ παρακμή. Ἀπέθανεν ἄσημος τῷ 1840 εἰς Caen τῆς Γαλλίας. Τ. Δ.

**Μπραμπὰν** (Brabant) *[Γεωγρ.]*. Ἀρχαῖος νομὸς καὶ δουκᾶτον τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Βραβάντη*).

**Μπραμπὰν** (Brabant), ***Πέτρος ντὲ —***. Γάλλος ναύαρχος τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, θανὼν τῷ 1430. Διετέλεσεν αὐλάρχης τοῦ Καρόλου ΣΤ'. Τῷ 1405 κατέστη ναύαρχος τῆς Γαλλίας. Διεκρίθη ἐν τούτοις εἰς τοὺς κατὰ ξηρὰν πολέμους πολὺ πλέον ἢ κατὰ θάλασσαν.

**«Μπραμπανσὸν»** (ἡ) (la Brabançonne). Ἐθνικὸς ὕμνος τοῦ Βελγίου, ποίησις τοῦ Γάλλου ἠθοποιοῦ Ντεσέ, τοῦ ἐπιλεγομένου Ζεννεβάλ, μουσικὴ τοῦ Φραγκίσκου Βὰν Κάμπενχουτ. Ἐγράφη κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830. Τῷ 1860 ἡ ἀρχικὴ ποίησις ἀντικατεστάθη ὑπὸ ἑτέρας τοῦ Καρ. Ροζιέ, προσαρμοσθείσης ἐπὶ τῆς αὐτῆς μουσικῆς. Γ. Σ.

**μπραμπάχτης** (ὁ)· ἀσυνήθης κοινὸς ναυτικὸς ὅρος· ἐπικρατέστερος *νταμπάχτης* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπρὰμς** (Brahms), ***Ἰωάννης***. Διάσημος Γερμανὸς συνθέτης, γεννηθεὶς ἐν Ἀμβούργῳ τῷ 1833 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βιέννῃ τῷ 1897. Αἱ πρῶται ἐμφανίσεις του ὡς κλειδοκυμβαλιστοῦ ἐπέσυρον ἐπ' αὐτοῦ τὴν γενικὴν προσοχήν, κατὰ δὲ τὴν καλλιτεχνικὴν περιοδείαν του ἀνὰ τὴν Βόρειον Γερμανίαν μετὰ τοῦ Οὔγγρου βιολιστοῦ Ρεμένυϊ ἐγνώρισε τὸν Λὶστ καὶ τὸν Σοῦμαν, ἡ ἐνθουσιώδης σύστασις τοῦ ὁποίου, διὰ τῆς «Νέας Μουσικῆς Ἐφημερίδος», ἐπέσυρεν ἐπ' αὐτοῦ τὴν προσοχὴν τοῦ κοινοῦ καὶ τῶν ἐκδοτῶν. Τῷ 1856 προσελήφθη διευθυντὴς ὀρχήστρας παρὰ τῷ πρίγκιπι τοῦ Λίππε, ἐν Ντέτμολντ, παρῃτήθη ὅμως μετὰ διετίαν καὶ ἐπανῆλθεν εἰς Ἀμβοῦργον, ἔνθα ἐφρόντισε νὰ συμπληρώσῃ τὰς ἐλλείψεις τῆς μορφώσεως διὸ τῆς μελέτης τῶν ἔργων τῶν παλαιῶν διδασκάλων καὶ ἰδίως τοῦ Μπὰχ καὶ τοῦ Παλεστρίνα. Εἰς Βιέννην, ἥτις κατέστη δευτέρα πατρίς του, διετέλεσε διευθυντὴς τῆς «Ὠδικῆς Ἀκαδημίας». Μεταξὺ 1871—1874 ὁ Μπρὰμς διηύθυνε τὰς συναυλίας τῆς «Ἑταιρείας τῶν Φιλομούσων», τῷ 1877 ὠνομάσθη ἐπίτιμος διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Καντα-βριγίας, τῷ δὲ 1881 τοῦ τῆς Βρεσλαυΐας. Τῷ 1866 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν τοῦ Βερολίνου. Ἀπέθανε τῷ 1897 καὶ ἐτάφη πλησίον τοῦ Μπετόβεν καὶ τοῦ Σοῦμπερτ. Μνημεῖα αὐτοῦ καὶ ἀνδριάντες ἐστήθησαν ἐν Βιέννῃ καὶ Μάϊνιγκεν, ἐνῷ ἐξ ἄλλου ἱδρύθη «Ἑταιρεία Μ π ρ ά μ ς» πρὸς διάδοσιν τοῦ ἔργου τοῦ μ ε γ ά λ ο υ μουσουργοῦ. Ὁ Μπρὰμς εἰργάσθη εἰς ὅλα τὰ εἴδη τῆς μουσικῆς, ἐκτὸς τοῦ θεάτρου. Ἐπὶ κεφαλῆς τῆς δημιουργικῆς ἐργασίας τοῦ μουσουργοῦ ἵσταται τὸ «Γερμανικὸν Ρέκβιεμ», τὸ ὁποῖον, ἐκτελεσθὲν διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1868, συνέβαλεν ὅσον οὐδεμία ἄλλη σύνθεσις εἰς τὴν φήμην του. Τὸ ἔργον τοῦτο ὁ Χάνσλικ ἐθεώρει ὡς τὸ ἀνώτερον, ὅπερ ἐγράφη ἀπὸ τῆς «Λειτουργίας εἰς σι ἐ.» τοῦ Μπὰχ καὶ τῆς «Μεγάλης Λειτουργίας» τοῦ Μπετόβεν. Εἶναι σύνθεσις γοητευτικὴ καὶ μεγαλοπρεπὴς ταυτοχρόνως, ἐνίοτε νοσηρά, ἐν τῇ ὁποίᾳ ὅμως ἡ ἔμπνευσις οὐδὲ πρὸς στιγμὴν μειοῦται. Παρ' αὐτὸ αἱ τέσσαρες συμφωνίαι του εἶναι μουσικὰ μνημεῖα, ἄξια ἰδιαιτέρας μελέτης, κυρίως λόγῳ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς των. Ἐν αὐταῖς ὁ Μπρὰμς ἐπιζητεῖ ν' ἀκολουθήσῃ τὴν κλασσικὴν μορφὴν καὶ νὰ μὴ ἀποστῇ τῶν παρὰ τοῦ Μπετόβεν δημιουργηθέντων τύπων. Δὲν δύναται ὅμως νὰ θεωρηθῇ ὡς συνεχιστὴς τῆς τέχνης τοῦ μεγίστου τῶν συμφωνιστῶν. Παρὰ ταῦτα αἱ συμφωνίαι του εἶναι γεμᾶτα ἰδεῶν, εὑρέως ἀνεπτυγμένα, παρουσιάζοντα ἀνωτέρας μουσικὰς ἀπολαύσεις· ἡ ἐνορχήστρωσίς των, ἀρκουμένη εἰς τὴν παρὰ τοῦ Μπετόβεν καθιερωθεῖσαν δύναμιν τῆς ὀρχήστρας, δὲν ἔχει οὔτε τὸ φῶς, οὔτε τὴν διαύγειαν τῆς τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ· ἠχεῖ μὲν καλῶς, παρουσιάζει ὅμως συχνάκις ἀποτόμους σκιάσεις· ἐπιζητεῖ τὰ βαθέα χρώματα, ἐνῷ ὁ ἀκροατής, ἡθισμένος ἤδη ἀπὸ τὴν πλουσίαν ἠχητικότητα τῶν συμφωνικῶν εἰκόνων τοῦ Μπερλιὸζ καὶ τοῦ Βάγνερ, δυσκόλως ἀποδέχεται νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν ἐνορχήστρωσιν τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Ἐκ τῶν συμφωνιῶν τοῦ Μπράμς, ἡ «Πρώτη» εἰς ντο ἐλ. (ἔργον 68) συνέβαλεν εἰς τὴν προσέγγισιν τοῦ μουσουργοῦ μετὰ τοῦ Μπύλωφ· ἡ «Δευτέρα», εἰς ρε μειζ. (ἔργ. 73), χωρὶς νὰ ἔχῃ τὸ βάθος τῆς πρώτης, εἶναι ἡ δημοφιλεστέρα, λόγῳ τῆς ἁπλότητος τοῦ ἐνίοτε ποιμενικοῦ χαρακτῆρος της, τοῦ πλήρους χάριτος ἀλλεγκρέττο καὶ ἐν γένει τῆς ὑγιοῦς ζωῆς ἣν ἀποπνέει. Ἡ «Τρίτη», εἰς φα μειζ. (ἔργ. 90), ἡ ἐπικληθεῖσα παρὰ τοῦ Χάνσλικ «Ἡ Ἡρωϊκὴ τοῦ Μπράμς», δὲν δύναται νὰ ἐπισύρῃ ὑπερβολικὸν ἔπαινον· τέλος ἡ «Τετάρτη», εἰς μι ἐλ. (ἔργ. 98), μὲ τὸν δραματικόν, παθητικὸν καὶ αὐστηρὸν της χαρακτῆρα προεκάλεσε φρενίτιδα κατὰ τὴν πρώτην ἐν Μάϊνιγκεν ἐκτέλεσίν της.

*Ἰωάννης Μπράμς.*

Ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῷ δημιουργικῷ ἔργῳ τοῦ Μπρὰμς ἐπέχουσιν αἱ μελῳδίαι του, ἃς πολλοὶ θεωροῦσιν ὅτι πλειότερον παντὸς ἄλλου εἴδους συνθέσεως ἀντιπροσωπεύουσι τὴν μεγαλοφυΐαν του. Γονιμώτατος εἰς τὸ κεφάλαιον τοῦτο (ἔγραψεν 196 τραγούδια), ἐπροίκισε τὴν τέχνην τῆς πατρίδος του διὰ θαυμασίων βραχέων ᾀσμάτων, διακρινομένων διὰ τὸ βαθὺ αὐτῶν αἴσθημα, τὴν αὐθόρμητον ἔμπνευσίν των καὶ τὴν ἁπλότητα τῆς μελῳδικῆς των γραμμῆς. Ἐκ τῶν μελῳδιῶν τούτων αἱ ὡραιότεραι εἶναι: «Ὁ πιστὸς ἔρως», «Ἡ αἰολικὴ ἅρπα», «Οἱ αἰώνιοι ἔρωτες», «Ὁ κύκλος τῆς Μαγκελόνης», «Ἐπὶ τῆς θαλάσσης», «Πιστὴ καρδιά», «Ἡ ἀνωφελὴς σερενάτα», «Ἀγγελία», «Νανούρισμα», «Κυριακή», «Στὸ δρόμο», «Παλιὸς ἔρως», «Θερινὴ βραδιά», «Σεληνόφως», «Στὰ σαράντα χρόνια» κτλ. Εἰς πολλὰς ἐκ τῶν μελῳδιῶν του ἐπικρατεῖ ὁ λαϊκὸς χαρακτήρ, ὃν ὁ Μπρὰμς εἶχε τὴν εὐκαιρίαν νὰ μελετήσῃ, ἐναρμονίζων ἀπειρίαν λαϊκῶν ᾀσμάτων τῆς πατρίδος του. Εἰς τὴν σειρὰν τῶν ἔργων του φωνητικῆς μουσικῆς πρέπει νὰ προστεθῶσι τὰ θαυμάσια βάλς διὰ 4 φωνὰς καὶ κλειδοκύμβαλον.

Πλειότερον ὅμως καὶ ἀπὸ τὰς μελῳδίας ἡ μουσικὴ δωματίου ἐδόξασε τὸν Μπράμς. Μεταξὺ τούτων αἱ δύο πρῶται σονάται διὰ βιολίον καὶ κλειδοκύμβαλον (ἔργον 78 καὶ ἔργον 100) εἶναι ἀριστουργήματα ἁπλότητος καὶ τρυφερότητος, τὸ «τρίο» (ἔργον 101), σύνθεσις κατ' ἐξοχὴν δραματική, τὸ «κουαρτέττο» εἰς φα ἔλ. (ἔργον 34) διακρίνεται διὰ τὴν εἰλικρινῆ του ἔμπνευσιν, ἥτις συνέβαλεν εἰς τὴν δημοτικότητά του, τὰ δύο «κουαρτέττα ἐγχόρδων» (ἔργον 51) ἀνήκουσιν εἰς τὴν ὑψηλοτέραν σφαῖραν τῆς δημιουργικότητος τοῦ Μπράμς, καὶ τέλος τὰ δύο «κουϊντέττα» (ἔργ. 88 καὶ 111) εἶναι συνθέσεις οὐδέποτε ἐλλείπουσαι ἐκ τῶν προγραμμάτων τῆς μουσικῆς δωματίου. Ἐκ τῶν ἔργων διὰ μόνον κλειδοκύμβαλον περίφημοι ἔχουσι καταστῆ αἱ «Παραλλαγαὶ ἐπὶ θέματος τοῦ Χαίνδελ» (ἔργον 24), ἐπίσης αἱ μπαλλάνται, αἱ ραψῳδίαι, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἡ θαυμασία εἰς σι ἔλασ., τὰ ἰντερμέτζι κλπ. Ὅσον ἀφορᾷ τοὺς «Οὐγγρικοὺς χορούς», τοὺς γραφέντας ἀρχικῶς διὰ κλειδοκύμβαλον διὰ 4 χεῖρας, καὶ μόνοι αὐτοὶ εἶναι ἱκανοὶ νὰ καταστήσουν ὀνομαστὸν τὸν Μπράμς. Ὁ κατάλογος τῶν συνθέσεων τοῦ Μπρὰμς περιλαμβάνει καὶ τὰ ἑξῆς: Ἔργα διὰ κλειδοκύμβαλον: 3 σονάται. 16 ἐπὶ θέματος τοῦ Σοῦμαν, παραλλαγαὶ ἐπὶ ἰδίου θέματος, παραλλαγαὶ ἐπὶ οὐγγρικοῦ θέματος, παραλλαγαὶ ἐπὶ θέματος τοῦ Παγκανίνι, μπαλλάνται ἔργ. 10, καπρίτσια, ραψῳδία εἰς σολ ἔλασ., φαντασίαι, σπουδὴ κατὰ Σοπέν, ροντὸ κατὰ Βέμπερ, γκαβόττα κατὰ Γκλούκ, σακόνια κατὰ Μπὰχ κτλ. Διὰ κλειδοκύμβαλον διὰ 4 χεῖρας: 10 παραλλαγαὶ ἐπὶ θέματος τοῦ Σοῦμαν, βάλς, ἐρωτικὰ τραγούδια. Διὰ δύο κλειδοκύμβαλα: σονάτα ἔργ. 34, παραλλαγαὶ ἐπὶ θέματος τοῦ Χάϋδν. Δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον: φυγή, πρελούντια, 11 πρελούντια καὶ χορικά. Διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολίον: μία σονάτα καὶ μέρος σονάττας. Διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ βιολοντσέλλον: 2 σονάτται. Διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ εὐθύαυλον: 2 σονάτται, 5 τρίο διὰ διάφορα ὄργανα, 3 κουαρτέττα καὶ 2 κουϊντέττα 2 σεξτέττα. Διὰ γυναικείας χορῳδίας: ἔργα 37, 44 καὶ 113. Δι' ἀνδρικὰς χορῳδίας: ἔργ. 41. Διὰ μικτὰς χορῳδίας: ἔργα 22, 29, 42, 62, 63α, 74, 104, 109 καὶ 110. Δίφωνα ᾄσματα: ἔργα 20, 28, 61, 66, 75, 84. Τετράφωνα ᾄσματα: ἔργα 35, 52, 64, 65, 92, 103, 112. Διὰ χορῳδίας μετὰ κλειδοκυμβάλου ἢ ἐκκλησιαστικοῦ ὀργάνου: ψαλμός, ἔργ. 27, θρησκευτικὸ τραγούδι, ἔργ. 30, δημώδη γερμανικὰ ᾄσματα. Ἄσμα μετὰ διαφόρων ὀργάνων: ἔργα 13, 17, 91. Δι' ὀρχήστραν: 2 σερενάται, ἔργ. 11 καὶ 16. Παραλλαγαὶ ἐπὶ θέματος τοῦ Χάϋδν· «Ἀκαδημαϊκὴ εἰσαγωγή», «Τραγικὴ εἰσαγωγή», «Οὐγγρικοὶ χοροί». Κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον: ἔργα 15 καὶ 83. Διὰ βιολίον: ἔργ. 77. Διὰ βιολίον καὶ βιολοντσέλλον: ἔργ. 102. Δι' ᾆσμα καὶ ὀρχήστραν: «Ave Maria» ἔργ. 12 διὰ γυναικείας χορῳδίας, «Rinaldo», καντάτα, ἔργ. 50. «Ραψῳδία» ἔργ. 53, «Τὸ τραγοῦδι τοῦ πεπρωμένου» ἔργ. 54, «Θριαμβευτικὸ τραγοῦδι», δι' ὀκτάφωνον χορόν, ἔργ. 55, «Nenie», ἔργ. 82, «Τραγοῦδι τοῦ Πάσχα», δι' ἑξάφωνον χορόν, ἔργον 89.

Ὁ Μπρὰμς ἀνήκει εἰς τοὺς μεγάλους ἐκείνους ἀρχιτέκτονας τῶν ἤχων, τοὺς οἰκοδομοῦντας ἔργα ἀπαράμιλλα εἰς ἁρμονίαν καὶ ἀναλογίας. Αἱ ἀπεριόριστοι μουσικαί του γνώσεις, τιθέμεναι εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς τέχνης καὶ συνοδευόμεναι ἀπὸ βαθὺ καὶ εἰλικρινὲς αἴσθημα, ἦσαν προωρισμέναι νὰ δημιουργήσωσιν αἰώνια μνημεῖα. Ἂν καὶ τάσεις τις μελαγχολίας καὶ ἀγάπη πρὸς τὸ ἡμίφως τὸν τοποθετοῦσι μεταξὺ τῶν ὀνειροπόλων ρωμαντικῶν, ἡ ἐπιζήτησις τοῦ κλασσικισμοῦ ἐν τῇ μορφῇ δὲν κατορθώνει νὰ τὸν παρουσιάσῃ ὡς συνεχιστὴν τοῦ Χάϋδν, τοῦ Μόζαρτ καὶ τοῦ Μπετόβεν. Βαθύτερος τοῦ Μένδελσων, ὀλιγώτερον ὅμως νευρώδης τοῦ Σοῦμαν, γνωρίζει νὰ δημιουργῇ διὰ λεπτῶν καὶ νέων ἁρμονιῶν μουσικὴν ἀτμοσφαῖραν καθαρῶς ἀτομικήν. Ὁ Μπύλωφ κατέταξεν αὐτὸν μεταξὺ τῶν τριῶν γερμανικῶν *B (Bach, Beethoven, Brahms)*. Ἀνεξαρτήτως ὅμως τῆς ὑπερβολικότητος τοῦ ἐπαίνου ὁ Μπρὰμς δὲν παύει νὰ εἶναι ἐκ τῶν μεγίστων συνθετῶν τῆς Γερμανίας καὶ τοῦ κόσμου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Max Kalbeck*, «J. Brahms» (τὸ κυριώτερον περὶ Μπρὰμς σύγγραμμα).— *H. Deiters*, «J. Brahms» (1800).— *B. Vogel*, «J. Brahms».— *Dietrich*, «Erinnerungen ... J. Brahms» (1898).— *Bülow*, «Gesammelte Schriften».— ... *bert*, «Johannes Brahms» (1906).— *Florence May*, «The ... of J. Brahms» (1905).— *W. Pauli*, «J. Brahms» (1907).— ... *mann*, «J. Brahms».— P. *Landormy*, «Brahms» (1921) κτλ. Γ. ΣΚΛΑΒΟΣ

**Μπράνια** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων συνοικισμοῦ *Μαρίνα* (βλ. λ.)

Digitized by Google

**Μπράνιας, *Στάμος*.** Σύγχρονος χρονογράφος καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς ἐν Μεσολογγίῳ τῷ 1878. Μετὰ τὸ πέρας τῶν ἐγκυκλίων σπουδῶν του ἐνεγράφη ἐν τῇ νομικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν, διορισθεὶς συγχρόνως καὶ διοικητικὸς ὑπάλληλος· ἀλλ' ἐνωρὶς ἐγκατέλιπεν ἀμφότερα, ἵνα ἀφιερωθῇ εἰς τὴν δημοσιογραφίαν (1904). Ἔκτοτε εἰργάσθη εἰς πλείστας ἐφημερίδας («Ἀκρόπολις», «Σκρίπ», «Νέον Ἄστυ», «Ἀθῆναι», «Νέα Ἑλλάς», «Νέα Ἡμέρα», «Μεταρρύθμισις», «Ἐμπρός», «Ἐλεύθερος Τύπος», «Καθημερινὴ» κλπ.), διατελέσας καὶ χρονογράφος ἐπὶ εἰκοσαετίαν. Εἰς αὐτοτελῆ βιβλία ἐξέδωκε τον «Πολύφημον» τοῦ Σαμαὶν (παιχθέντα καὶ ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ «Βασιλικοῦ Θεάτρου» τῷ 1916) κατ' ἔμμετρον μετάφρασιν, ὡς καὶ τά: «Στὰ χείλη τῆς στιγμῆς» καὶ «Παράξενος Ἄνθρωπος», εἶδος ἐντυπώσεων καὶ διηγημάτων, μεταφρασθέντων καὶ εἰς τὴν ἰσπανικήν. Τ. Α.

**Μπρανιάτες** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μικρογουζίου τῆς ἐπαρχίας Ἠμαθίας (Βεροίας) τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 278. Χ. Δ.

**Μπρανκὰς** (Brancas). Ἀρχαῖος οἶκος Γάλλων εὐγενῶν, ἀποτελῶν συνέχειαν τῆς μεγάλης ἰταλικῆς οἰκογενείας τῶν *Μπρανκάτσι* τῆς Νεαπόλεως (βλ. λ.). Ὁ γαλλικὸς οἶκος χρονολογούμενος ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ὑποδιῃρέθη βαθμηδὸν εἰς διαφόρους κλάδους: τοὺς *Μπρανκὰς ντὲ Φορκαλκιὲ* (Forcalquier), τοὺς *Μπρανκὰς μαρκησίους τοῦ Κουρμπὸν* (Courbons), *κόμιτας τοῦ Ροσφὸρ* (Rochefort), τοὺς *Μπρανκάς, βαρώνους τῆς Βιλλ' νὲβ* (Villeneuve) καὶ τοὺς *Μπρανκὰς αὐθέντας τῆς Οὐὰζ* (Oyse) *δοῦκας τοῦ Βιλλὰρ* (Villars). Ὀνομαστότεροι ἐκ τῶν Μπρανκὰς ὑπῆρξαν οἱ κατωτέρω: —1) ***Βασίλειος*** ἢ ***Μπουφὶλ ντὲ Μπρανκάς***, ὁ γενάρχης τοῦ ἐν Γαλλίᾳ κλάδου, σταβλάρχης τοῦ Κλήμεντος Β'. —2) ***Γκωτιὲ ντὲ Μπρανκὰς - Φορκαλκιέ***, ἀρχιθαλαμηπόλος τοῦ Λουδοβίκου ΙΒ'. —3) ***Ἀνδρέας ντὲ Μπρανκάς***, γνωστὸς ἰδίᾳ ὡς *ναύαρχος ντὲ Βιλλάρ*. Ἀνεμίχθη εἰς τὰς πολιτικὰς διαμάχας ἐπὶ Ἑρρίκου Γ', ταχθεὶς μὲ τὸ κόμμα τοῦ καθολικοῦ συνασπισμοῦ καὶ τοὺς Ἱσπανούς, καὶ ἀποπειραθεὶς νὰ καταστήσῃ τὴν Νορμανδίαν ἀνεξάρτητον φέουδον· ὑπετάγη ὅμως εἰς τὸν Ἑρρῖκον Δ' τῷ 1594 καὶ ἐφονεύθη τῷ 1595 κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Doullens. —4) ***Κάρολος ντὲ Βιλλὰρ ντὲ Μπρανκάς***, ἐπόπτης ἐπὶ τῶν τιμῶν τῆς Ἄννας τῆς Αὐστριακῆς καὶ γενικὸς ὑποδιοικητὴς τῶν βασιλικῶν στρατευμάτων (1618—1681). —5) ***Λουδοβῖκος ντὲ Μπραγκὰς ντὲ Φορκαλκιὲ μαρκήσιος τοῦ Σερὲστ*** (Céreste), γνωστὸς ἰδίως ὡς *μαρκήσιος ντὲ Μπρανκὰς* (1672—1750). Στρατοπεδάρχης (1704), πρεσβευτὴς ἐν Ἱσπανίᾳ (1707, 1714 καὶ 1727), πληρεξούσιος διοικητὴς ἐν Προβηγκίᾳ (1720). Διεκρίθη καὶ ἐν τοῖς ὅπλοις καὶ ἐν τῇ διπλωματίᾳ, προήχθη δὲ εἰς στρατάρχην τῷ 1741. —6) ***Μπουφὶλ-Ὑάκινθος ντὲ Μπρανκάς***, ἐπονομαζόμενος *κόμις ντὲ Σερὲστ* (Céreste), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1697—1754). Διπλωμάτης ἐπίσης καὶ στρατιωτικός, διακριθεὶς ἰδίᾳ ὡς πρεσβευτὴς τῆς Γαλλίας ἐν Σουηδίᾳ (1725—1727). —7) ***Λουδοβῖκος-Λέων ντὲ Μπρανκάς***, γνωστότερος ὡς *κόμις ντὲ Λωραγκαὶ* (Lauranguais), υἱὸς τοῦ κόμιτος Βιλλὰρ-Μπρανκὰς (1733—1824). Στρατιωτικὸς ἐν ἀρχῇ, ἐπεδόθη κατόπιν εἰς τὴν λογοτεχνίαν καὶ τὴν φιλοσοφίαν. Αὐτὸς ὑπῆρξεν ὁ ἀπαλλάξας τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν ἀπὸ τοὺς εὐγενεῖς, οἵτινες ἐπλημμύριζον τὸ θέατρον ἄνευ πληρωμῆς εἰσόδου, δι' ὃ καὶ Βολταῖρος, εἰς ἐκδήλωσιν εὐγνωμοσύνης, τῷ ἀφιέρωσεν ἓν ἐκ τῶν ἔργων του. Ὁ Λωραγκαὶ ἔγραψε καὶ ὁ ἴδιος δύο τραγῳδίας, «Κλυταιμνήστραν» καὶ «Ἰοκάστην». Τὰ ἐπιγράμματά του ἐναντίον διαφόρων ἰσχυρῶν προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς ἐστοίχισαν εἰς αὐτὸν πολλὰς δοσοληψίας μὲ τὰ δικαστήρια, μίαν ἱστορίαν εἰς Ἀγγλίαν καὶ τὴν δυσμένειαν τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ'. Παρὰ τὰς ἐχθρικὰς ὅμως πρὸς αὐτὸν διαθέσεις τοῦ βασιλέως ἡ Ἀκαδημία τῶν Ἐπιστημῶν τὸν ἐξέλεξε μέλος της, διὰ τὴν ὑποστήριξιν τὴν ὁποίαν ἐπροθυμοποιεῖτο νὰ παρέχῃ εἰς τοὺς ὑπὲρ τῆς ἐπιστήμης ἐργαζομένους. —Ω.

— **Μπρανκὰς *Βιλλὰρ*** (Brancas-Villars), ***Ἀνδρέας-Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1565. Διετέλεσε διοικητὴς τῆς Ρουέν, ἣν ἐπιτυχῶς ὑπερήσπισε πολιορκουμένην. Τῷ 1594 ὠνομάσθη ἀρχιναύαρχος τῆς Γαλλίας. Μετά τινα χρόνον ἡττήθη ὑπὸ τῶν Ἱσπανῶν κατὰ τὴν μάχην τῆς Doullens καὶ τραυματισθεὶς ᾐχμαλωτίσθη. Ἀπέθανεν ἐκ τῶν πληγῶν του μετά τινα χρόνον. Γ. Ν. Ν.

**Μπρανκάτσι** ἢ ***Μπρανκάτσιο*** (Brancacci ἢ Brancaccio). Ὀνομαστὴ ἰταλικὴ οἰκογένεια ἐκ Νεαπόλεως, ἀναφερομένη ἀπὸ τοῦ 961. Ἐκ τοῦ Marinus Brancatius προῆλθον οἱ δύο κυριώτεροι κλάδοι τῆς οἰκογενείας: οἱ *Μπρανκάτσιο Γκρίβολι* καὶ οἱ *Μπρανκάτσιο Ἰμπριάκι*. Σήμερον, ὑφίσταται μόνον ὁ δεύτερος κλάδος, τοῦ πρώτου ἐκλιπόντος κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, ἀφοῦ προηγουμένως ἐδημιούργησεν ἑτέρους δύο κλάδους. Ὁ εἷς τούτων μετεφέρθη εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπου ἐκλήθη De Brancas καὶ συγχωνευθεὶς μετὰ τῶν De Forcalquier ὑποδιῃρέθη κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα εἰς ἄλλους δύο κλάδους, τῶν μαρκησίων Céreste καὶ τῶν δουκῶν Villars. Πλεῖστα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτην ἐγένοντο καρδινάλιοι καὶ ἀρχιερεῖς ἀπὸ τοῦ ΙΒ' μέχρι τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Μεταξὺ τούτων εἶναι ὁ *Ρινάλντο*, ἀποθανὼν τῷ 1427, ὁ ὁποῖος γενόμενος καρδινάλιος ὑπὸ τοῦ πάπα Οὐρβανοῦ ΣΤ' ἔλαβε σημαντικὸν μέρος εἰς τὸ σχίσμα τῆς Δύσεως. Οὗτος ἵδρυσεν ἐν Νεαπόλει τὸ νοσοκομεῖον τοῦ Σὰντ Ἄντζελο, ὅπου κατόπιν ὁ ἐκτελεστὴς τῆς διαθήκης του Κοσμᾶς τῶν Μεδίκων ἀνήγειρε μνημεῖον εἰς αὐτὸν διὰ τοῦ ἀρχιτέκτονος καὶ γλύπτου Ντονατέλλο· ὁ *Φραγκῖσκος Μαρία* (1592—1675) ἐγένετο καρδινάλιος καὶ θὰ ἐξελέγετο πάπας, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κλήμεντος Θ', ἐὰν δὲν ἀντετίθετο εἰς τὴν ἐκλογὴν ταύτην ἡ Ἱσπανία. Εἶχε πλουσίαν βιβλιοθήκην, τὴν ὁποίαν ἐδώρησεν εἰς τὴν πόλιν τῆς Νεαπόλεως καὶ ἡ ὁποία ἀπετέλεσε τὸν πυρῆνα τῆς πρώτης δημοσίας βιβλιοθήκης τῆς πόλεως, συγχωνευθεῖσα βραδύτερον μετὰ τῆς Ἐθνικῆς. Μεταξὺ τῶν στρατιωτικῶν διεκρίθησαν ὁ *Λαίλιος*, πρῶτος μαρκήσιος τοῦ Μοντεσιλβάνο, καὶ ὁ *Τιβέριος*. Ὁ πρῶτος (1560—1637) διετέλεσεν ἀρχηγὸς τῶν γενουηνσιακῶν στρατευμάτων κατὰ τοὺς πολέμους ἐναντίον τῆς Σαβοΐας καὶ ἐναντίον τῆς Γαλλίας (1626) καὶ γενικὸς στρατοπεδάρχης τῶν ἱσπανικῶν στρατευμάτων κατὰ τοὺς πολέμους τῆς Φλάνδρας παρὰ τὸν Σπίνολα. Οὗτος ἔγραψε καὶ βιβλίον ὑπὸ τὸν τίτλον «Στρατιωτικὰ ἀξιώματα» (1610). Ὁ δεύτερος (1599—1647) ἔλαβε σημαντικὸν μέρος κατὰ τὸν τριακονταετῆ πόλεμον καὶ ἐγένετο στρατηγὸς τοῦ ἱππικοῦ ἐν τῷ στρατῷ τῆς Καταλωνίας. Μ. Δ. Β.

**Μπράνκο** (Branco) *[Γεωγρ.]*. Νησὶς τοῦ συμπλέγματος τῶν πορτογαλικῶν νήσων τοῦ Πρασίνου Ἀκρωτηρίου, κειμένη μεταξὺ Σάντα Λουτσία καὶ Σὰν Νικόλα. Εἶναι γνωστὴ λόγῳ τῆς πρωτοτύπου πανίσκης της. Χ. Δ.

—**Μπράνκο, *Ρίο*** — (Rio Branco, λ. πορτογ.=Λευκὸς ποταμὸς) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Ν. Ἀμερικῆς, πηγάζων ἐκ τῶν ὀρέων Παρίμα τῆς Βενεζουέλας, ῥέων πρὸς Ν. διὰ μέσου τῆς Β. Βραζιλίας καὶ συμβάλλων μετὰ ῥοῦν 600 χλμ. εἰς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Ρίο Νέγκρο. Εἶναι πλωτὸς εἰς πλοῖα μικροῦ βυθίσματος ἐπὶ τὸ ἥμισυ περίπου τοῦ ῥοῦ του. Χ. Δ.

**Μπρανκοβὰν** (Brancovan), ἢ ***Μπρανκοβεάν***, ἢ ***Βρανκοβάνος***. Ὄνομα οἰκογενείας, ἥτις ἔπαιξε σπουδαῖον πρόσωπον ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς Ρουμανίας. Ἦτο σερβικῆς καταγωγῆς, συγγενὴς πρὸς τοὺς *Μπράνκοβιτς* (βλ. λ.). Ἐπιφανέστερον μέλος τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι ὁ *Κωνσταντῖνος Μπρανκοβὰν* (ὁ ἐπιλεγόμενος καὶ *Βεσσαράβας*, ὡς λαβὼν μόνος τὸ ὄνομα τῆς παλαιᾶς ταύτης βλαχικῆς οἰκογενείας), γεννηθεὶς τῷ 1654 καὶ γενόμενος ἡγεμὼν τῆς Βλαχίας τῷ 1689, χάρις εἰς τὸν γάμον του μετὰ τῆς Ἑλένης Καντακουζηνοῦ. Συνεμάχησε κατ' ἀρχὰς μὲν μετὰ τῆς Αὐστρίας, παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς ὁποίας ἐδέχθη τὸν τίτλον πρίγκιπος τῆς ἁγίας αὐτοκρατορίας, κατόπιν δὲ μετὰ τῆς Ρωσίας, εἰς ἣν ἐπρομήθευσε κατὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον (1710) τροφάς, δεχθεὶς διὰ τοῦτο τὸ παράσημον τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου· κατατρεχθεὶς ὅμως διὰ τοῦτο καὶ ὑπὸ τῶν συγγενῶν του Καντακουζηνῶν, καθῃρέθη καὶ ἐφυλακίσθη εἰς τὰ ἐν Κωνσταντινουπόλει δεσμωτήρια τοῦ Ἑπταπυργίου. Εἰς τὴν τουρκικὴν πρωτεύουσαν ἔσπευσαν ἀμέσως οἱ ἐν τῷ τουρκικῷ στρατοπέδῳ ὑπηρετοῦντες δύο υἱοί του, ὅπως σώσωσι τὸν πατέρα των, κατόπιν δὲ καὶ ἡ σύζυγός του μὲ τὰ ἄλλα μέλη τῆς οἰκογενείας του. Ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ ἐβασανίσθη, ὅπως φανερώσῃ τοὺς θησαυρούς του, οὓς οἱ Τοῦρκοι ὑπέθετον κεκρυμμένους ἐν Βενετίᾳ καὶ ὑπελόγιζον εἰς τρία ἑκατομμύρια λιρῶν καὶ πλέον. Οὐδὲν ὅμως ἀποκαλύψας, ἤχθη μετὰ τῶν υἱῶν του Κωνσταντίνου, Στεφάνου, Ράδουλ καὶ Ματθαίου εἰς τὸ Γιαλῆ-κιὸσκ τῶν σουλτανικῶν ἀνακτόρων ἐνώπιον τοῦ σουλτάνου, ὅστις ἦτο ἀθέατος. Ὁ σεϊχουλισλάμης κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ χάριν ὑπὲρ αὐτῶν ἂν ἠσπάζοντο τὸν Ἰσλαμισμόν. Ὅλοι ἀπέκρουσαν τὴν πρότασιν καὶ ἀπεκεφαλίσθησαν (15/26 Αὐγούστου 1714). Τὰ σώματά των ἐρρίφθησαν εἰς τὴν θάλασσαν. Τὰ λοιπὰ μέλη τῆς οἰκογενείας ἐξωρίσθησαν εἰς Κιουτάχιαν τῆς Μικρᾶς Ἀσίας.

Λόγῳ τοῦ τραγικοῦ τέλους του, ὁ Μπραγκοβὰν ἔγινεν ὁ ἥρως βλαχικῶν δημωδῶν ᾀσμάτων. Ἡ οἰκογένειά του ἵδρυσε κατόπιν καὶ ἐπροίκισε τὸ Μπραγκοβάνειον (Brancovanescu) νοσοκομεῖον, τὸ μεγαλύτερον τῆς Ρουμανίας. Ν. Μ.

—**Μπρανκοβάν, *Γρηγόριος*.** Ρουμᾶνος εὐπατρίδης (1785—1854). Τυχὼν ἑλληνικῆς παιδεύσεως, ἀπέβη διάθερμος φιλέλλην καὶ μετέσχε τῆς ἑταιρείας τοῦ Λέοντος, ἥτις ἐπεδίωκε τὴν βελτίωσιν τῆς θέσεως τῶν ὑπὸ τὴν Τουρκίαν Χριστιανῶν. Ἐμυήθη εἶτα τὰ τῆς Φιλικῆς ἑταιρείας, ἀλλ' ὅτε ὁ Βλαδιμιρέσκος τῷ 1821 προήλαυνε πρὸς κατάληψιν τοῦ Βουκουρεστίου, ἀπῆλθε μετὰ τῶν λοιπῶν προυχόντων εἰς Τρανσυλβανίαν καὶ ἐπέστρεψε μετὰ τὴν διάλυσιν τοῦ στρατοῦ τοῦ Ἀλεξάνδρου Ὑψηλάντου. Συνειργάσθη πάντοτε μετὰ τῶν ἐν Ρουμανίᾳ Ἑλλήνων. Θ. Β.

**Μπράνκοβιτς**, ἢ ***Βράνκοβιτς***. Μεσαιωνικὴ σερβικὴ δυναστεία, καταγομένη ἐκ τοῦ σεβαστοκράτορος *Μπράνκο*, ὅστις ἐπὶ τοῦ βασιλέως Δουσὰν ἦτο διοικητὴς Ἀχρίδος. Κυριώτερα μέλη τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι:

—1) ***Βούκ***. Υἱὸς τοῦ Μπράνκο, ἡγεμονεύσας κατὰ τὴν περίοδον τῆς παρακμῆς τοῦ σερβικοῦ κράτους ἐν Πριστίνῃ καὶ ἀποθανὼν τῷ 1398.

— 2) ***Γεώργιος***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, ἀνακηρυχθεὶς τῷ 1427, ὡς διάδοχος τοῦ θείου του Στεφάνου Λαζάροβιτς, δεσπότης τῆς τότε Σερβίας, ἐκτεινομένης ἀπὸ τοῦ Δουνάβεως μέχρι τοῦ Σκάρδου καὶ τῆς Ἀδριατικῆς. Τῷ 1427, εἰσβαλόντων εἰς τὴν Σερβίαν τῶν Τούρκων στρατηγῶν Ἰσὰκ βέη καὶ Χασὰν βέη, ὁ Γεώργιος ἀπέστειλεν ὅσα περισσότερα ἠδυνήθη νὰ συλλέξῃ χρήματα καὶ τιμαλφῆ εἰς τοὺς βεζύρας τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Β', ὅπως ἐξαγοράσῃ τὴν εἰρήνην. Συγχρόνως ἀπέστειλε πρεσβείαν εἰς τὸν σουλτᾶνον, ὅπως ὑπενθυμίσῃ τὴν παλαιὰν φιλίαν Τούρκων καὶ Σέρβων, ἀφ' ἧς ἐποχῆς ὁ πάππος του Βαγιαζὶτ ὁ Α' ἔλαβεν ὡς σύζυγον Σερβίδα πριγκίπισσαν, καὶ ὑποσχεθῇ ὅτι θὰ διακόψῃ πᾶσαν σχέσιν μὲ τοὺς Οὔγγρους καὶ πολεμήσῃ μάλιστα κατ' αὐτῶν ἐν συνεννοήσει μετὰ τῶν Τούρκων. Ὁ σουλτᾶνος ἐδέχθη τὰς προτάσεις τοῦ Μπράνκοβιτς καὶ συγχρόνως μίαν Σερβίδα πριγκίπισσαν, ἀνενεώθη δὲ ἡ εἰρήνη ὑπὸ τὸν ὅρον ὅτι οἱ Τοῦρκοι θὰ ἐξηκολούθουν νὰ κατέχουν ὅσα μέρη τῆς Σερβίας εἶχον εἰς χεῖρας, ὁ δὲ κράλης τῆς Σερβίας θὰ ἐπλήρωνεν εἰς αὐτὸν ἐτήσιον φόρον 50.000 δουκάτων, πρὸς εἴσπραξιν τοῦ ὁποίου ὁ σουλτᾶνος ἀπέστελλεν ἅπαξ τοῦ ἔτους ἕνα τῶν ἀξιωματικῶν του εἰς Σερβίαν

Τῷ 1433 ὁ Μπράνκοβιτς, παραβιάσας τὴν μετὰ τῶν Τούρκων συνθήκην, συνεμάχησε μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας Σιγισμόνδου, κυρίως ὅπως ἀνακτήσῃ τὴν ὑπὸ τῶν Τούρκων καταληφθεῖσαν παραδουνάβιον ὀχυρὰν πόλιν Γκαλαμπότς. Ὁ σουλτᾶνος Μουρὰτ ἀπέστειλε στρατὸν ὑπὸ τὸν βεηλέρβεην τῆς Ρούμελης Σινὰν βέην, ὅπως σώσῃ τὴν Γκαλαμπότς. πολιορκουμένην ὑπὸ τοῦ Μπράνκοβιτς. Ὁ Σινὰν ἐδίσταζε κατ' ἀρχὰς νὰ ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ Μπράνκοβιτς· παρακινούμενος ὅμως ὑπὸ τῶν ἀξιωματικῶν του ἐξετέλεσεν αἰφνιδιασμόν, συνεπείᾳ τοῦ ὁποίου οἱ Σέρβοι ἐτράπησαν εἰς φυγὴν καὶ πολλοὶ ἐπνίγησαν εἰς τὸν ποταμόν. Οἱ Τοῦρκοι κατέλαβον τὴν πόλιν, κυριεύσαντες καὶ τὸ βαρὺ πυροβολικὸν τῶν Σέρβων. Ὁ σουλτᾶνος ἀπέστειλε τότε καὶ ἄλλον στρατὸν εἰς Σερβίαν καὶ καταλαβὼν τὸ Κρούσοβατς ἠπείλει νὰ ὑποδουλώσῃ ὁλόκληρον τὴν χώραν. Ὁ Μπράνκοβιτς ἐπρόλαβε καὶ πάλιν τὴν τελείαν ὑποδούλωσιν, προτείνας ἐγγράφως εἰς τὸν σουλτᾶνον ὑποταγὴν καὶ προσενεγκὼν εἰς αὐτὸν ὡς σύζυγον καὶ τὴν δευτέραν θυγατέρα του, μὲ προῖκα τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς Σερβίας. Ὁ σουλτᾶνος ἠρνεῖτο κατ' ἀρχάς, ἀλλ' οἱ βεζύραι του, τοὺς ὁποίους φαίνεται ὅτι ἐδωροδόκησεν ὁ Μπράνκοβιτς, συνηγόρησαν πάλιν ὑπὲρ τῆς εἰρήνης. Οὕτως ἐκάμφθη ὁ Μουρὰτ καὶ ἀπέστειλε πρεσβείαν ἐκ δύο ἀνωτέρων εὐνούχων καὶ τῆς συζύγου τοῦ Ἰσὰκ βέη πρὸς παραλαβὴν τῆς θυγατρὸς τοῦ Μπράνκοβιτς, ἐνῷ ἄλλη πρεσβεία ὑπὸ τὸν Σαριτζᾶ πασᾶν ὑπέγραφε τὴν πρᾶξιν τοῦ γάμου καὶ τῆς εἰρήνης. Ὁ Μπράνκοβιτς ἐπέτυχεν ὅρους εἰρήνης καλυτέρους παρ' ὅσον ἐφαντάζετο. Διετήρησε τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς χώρας του καὶ ἔλαβε τὴν ἄδειαν ν' ἀνεγείρῃ νέον φρούριον ἐπὶ τοῦ Δουνάβεως παρὰ τὴν Σεμένδριαν. Ἡ θυγάτηρ του ὅμως δὲν ἔτυχε καλῆς ὑποδοχῆς εἰς τὸ στρατόπεδον τοῦ σουλτάνου. Οὗτος, ἀρνηθεὶς νὰ τὴν δεχθῇ εἰς τὰ ἰδιαίτερα διαμερίσματά του, τὴν παρέπεμψεν εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ σαραγίου μετὰ τῶν ἄλλων γυναικῶν. Τῷ 1437 ὁ Μπράνκοβιτς, κληθεὶς ὑπὸ τοῦ σουλτάνου, ὡς καὶ οἱ ἄλλοι ὑποτελεῖς ἡγεμόνες, προσῆλθεν εἰς Ἀδριανούπολιν καὶ ἔλαβε μέρος μετὰ τοῦ βοεβόδα τῆς Βλαχίας Δράκουλ ὡς ἀρχηγὸς τῆς πρωτοπορίας εἰς τὴν ἐναντίον τῆς Τρανσυλβανίας τουρκικὴν ἐκστρατείαν, ἥτις προχωρήσασα μέχρι Χερμανστάτης (Σιμπίου) ἀνεχαιτίσθη ὑπὸ τοῦ χειμῶνος. Παρὰ τὴν συμμετοχὴν ταύτην τοῦ Μπράνκοβιτς, ὁ σουλτᾶνος τὸν ὑπωπτεύετο ὡς προδότην. Παρακινούμενος δὲ καὶ ὑπὸ τοῦ Ἰσὰκ βέη νὰ καταλάβῃ τὴν εἰς χεῖρας τῶν Σέρβων εὑρισκομένην Σεμένδριαν, ὅπως ἀνοίξῃ τὴν πρὸς Ἰταλίαν ὁδόν, ἀπῄτησε τὴν παράδοσιν τῆς ὀχυρᾶς ταύτης πόλεως. Ὁ Μπράνκοβιτς ἀπέκρουσε τὴν πρότασιν, ἐπικαλούμενος τὰς ὑπογραφείσας συνθήκας καὶ τοὺς δεσμοὺς τῆς ἀγχιστείας. Κληθεὶς τότε νὰ ἐμφανισθῇ αὐτοπροσώπως πρὸ τοῦ σουλτάνου, ἀπέστειλε τοὺς δύο υἱούς του, αὐτὸς δὲ παρεσκευάσθη εἰς ἀντίστασιν ἐν Σεμενδρίᾳ, ὡς ἀναφέρει ὁ ἡμέτερος ἱστορικὸς Δούκας. Ὁ σουλτᾶνος ὀργισθεὶς ἐφυλάκισε τοὺς δύο υἱοὺς τοῦ Μπράνκοβιτς καὶ τεθεὶς ὁ ἴδιος ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ στρατοῦ ἐβάδισε κατὰ τῆς Σεμενδρίας, ὅπου ἐν τῷ μεταξὺ ἔφθασε καὶ ὁ ἕτερος τῶν υἱῶν τοῦ Μπράνκοβιτς, ὁ *Γρηγόριος*, δραπετεύσας ἐξ Ἀδριανουπόλεως. Ὅταν ὅμως ὁ τουρκικὸς στρατὸς

Digitized by Google

προσήγγισεν εἰς Σεμένδριαν, ὁ Μπράνκοβιτς, παραλαβὼν τοὺς θησαυρούς του ἔφυγεν εἰς Οὐγγαρίαν, ὅπως ζητήσῃ βοήθειαν παρὰ τοῦ βασιλέως τῆς Οὐγγαρίας Ἀλβέρτου, διαδεχθέντος τὸν Σιγισμόνδον, ἐνῷ τὴν ἄμυναν τῆς πόλεως ἀνελάμβανεν ὁ Γρηγόριος μετὰ τοῦ γαμβροῦ του Θωμᾶ Κανταχουζηνοῦ. Ἡ φρουρὰ ἀντέστη ἐπὶ τρεῖς μῆνας, ἂν καὶ «ἡ σιτοθήκη τοῦ κάστρου ἦν κενή» κατὰ τὸν Δούκαν. Τέλος, ἀφοῦ τὸ τουρκικὸν πυροβολικὸν κατέστρεψεν ἱκανὸν μέρος τοῦ τείχους, ὁ Γρηγόριος ἐδέχθη ἔντιμον συνθηκολόγησιν, ὑπὸ τὸν ὅρον ὅπως ἡ φρουρὰ ἀποχωρήσῃ ἀνενοχλήτως. Μόνον αὐτὸς ἐδέησε νὰ τεθῇ εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ σουλτάνου, ὅστις τὸν ἔστειλε πρὸς ἐγκάθειρξιν, μετὰ τοῦ ἄλλου ἀδελφοῦ του *Στεφάνου*, εἰς Τοκὰτ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ὅπου ὑπέστησαν τὴν ποινὴν τῆς τυφλώσεως. Ἀπόπειρα τῶν Οὔγγρων νὰ ἐλευθερώσωσι τὴν Σεμένδριαν ἀπέτυχε καὶ οὕτως οἱ Τοῦρκοι ὑπέταξαν ὁλόκληρον τὴν Σερβίαν. Ὁ Γεώργιος Μπράνκοβιτς ἔμεινε φυγὰς ἐν Οὐγγαρίᾳ, ἀναμένων τὴν ἔκβασιν τῶν συχνῶν πολέμων τῶν Οὔγγρων κατὰ τῶν Τούρκων. Κυρίως ἤλπισεν εἰς τὴν τῷ 1444 ἐπιχειρηθεῖσαν εἰσβολὴν τῶν Οὔγγρων, Πολωνῶν καὶ τῶν συμμάχων αὐτῶν εἰς Βουλγαρίαν, ἀλλὰ δὲν ἐτόλμησε νὰ λάβῃ μέρος εἰς τὸν πόλεμον. Ἡττηθέντος τότε τοῦ χριστιανικοῦ στρατοῦ παρὰ τὴν Βάρναν, ὁ Μπράνκοβιτς ἔχασε πᾶσαν ἐλπίδα ἀνακτήσεως τῆς χώρας του, τὴν ὁποίαν κατέλαβεν ὁ Μωάμεθ ὁ Β′ τῷ 1454—1455.

—3) ***Λάζαρος.*** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, ἡγεμονεύσας ἐν Σερβίᾳ ἀπὸ τοῦ 1456—1458. Ἐπηκολούθησαν πόλεμοι μετὰ τῶν Τούρκων, ἀπολήξαντες εἰς ὁριστικὴν ὑποταγὴν τῆς Σερβίας.

—4) ***Βούκ.*** Νόθος υἱὸς τοῦ ἐν Τοκὰτ τυφλωθέντος *Γρηγορίου*, ἐμφανισθεὶς μὲ τὸν κενὸν τίτλον δεσπότου τῆς Σερβίας καὶ ἀρχηγοῦ τοῦ ἐν Συρμίᾳ σερβικοῦ στρατοῦ. Ἀπέθανε τῷ 1485.

—5) ***Γεώργιος.*** Υἱὸς τοῦ ἐν Τοκὰτ τυφλωθέντος *Στεφάνου*, περιεβλήθη τὸ μοναχικὸν σχῆμα καὶ ἔγινε μητροπολίτης Βλαχίας, ἀποθανὼν τῷ 1516.
Ν. Μ.

— **Μπράνκοβιτς, *Γεώργιος.*** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο ἀνεφάνη ἐν Αὐστρίᾳ, ἑκατὸν πεντήκοντα καὶ πλέον ἔτη ἀφότου ἔπαυσε νὰ γίνεται λόγος περὶ τῆς ἡγεμονικῆς οἰκογενείας τῶν *Μπράνκοβιτς*, Σέρβος τις πολεμιστής, ὅστις πάντως δὲν φαίνεται ν' ἀνήκῃ πραγματικῶς εἰς αὐτήν. Οὗτος εἰσελθὼν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ οὐγγρικοῦ, κατόπιν τοῦ βλαχικοῦ καὶ τέλος τοῦ αὐστριακοῦ στρατοῦ, ἐπολέμησε κατὰ τῶν Τούρκων. Τῷ 1683 ἔλαβε παρὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Αὐστρίας Λεοπόλδου τοῦ Α′ τὸν τίτλον Οὔγγρου κόμιτος. Ἐπειδὴ ὅμως ἤγειρεν ἀξιώσεις ἐπὶ τοῦ σερβικοῦ θρόνου, ὅτε οἱ Αὐστριακοὶ εἰσέβαλον εἰς Σερβίαν, συνελήφθη τῷ 1689 ὑπὸ τοῦ μαργκράβου Λουδοβίκου τῆς Βάδης ἐν Κλαδόβῳ καὶ ἐφυλακίσθη εἰς Ἔγκερ τῆς Βοημίας, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1711.
Ν. Μ.

**Μπρανλὺ** (Branly), ***Ἐδουάρδος.*** Γάλλος φυσικός, τοῦ ὁποίου αἱ ἐπιστημονικαὶ ἐργασίαι ἀπετέλεσαν τὴν ἀφετηρίαν τῆς ἀνακαλύψεως τῆς ἀσυρμάτου τηλεγραφίας. Ἐγεννήθη ἐν Ἀμιένῃ τῷ 1844, σπουδάσας δὲ τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας ἐν Παρισίοις, διετέλεσεν ὑποδιευθυντὴς τοῦ ἐργαστηρίου φυσικῆς τοῦ αὐτόθι πανεπιστημίου μέχρι τοῦ 1875, ὁπότε ἐπεφορτίσθη τὴν διδασκαλίαν τοῦ ἰδίου μαθήματος ἐν τῷ καθολικῷ Ἰνστιτούτῳ. Τῷ 1882 ἔλαβε καὶ δίπλωμα ἰατρικῆς, ἐξήσκησε δὲ τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ βραδύτερον, ἀπὸ τοῦ 1897 μέχρι τοῦ 1916. Ὁ Μπρανλὺ ἐγένετο ἐν ἀρχῇ γνωστὸς μεταξὺ τοῦ ἐπιστημονικοῦ κόσμου διὰ τὰς ἐπὶ τοῦ ἠλεκτρισμοῦ ἐργασίας του, ἰδίως ἐπὶ τῶν ἠλεκτροστατικῶν φαινομένων ἐν ταῖς στήλαις καὶ ἐπὶ τῶν ἠλεκτρικῶν ἐκκενώσεων διὰ τῶν ἰωδῶν ἀκτίνων, διὰ τῶν ἀερίων καὶ τῶν διαπύρων ὑλῶν. Οἱ πειραματισμοί του βραδύτερον ἐπὶ τῆς ἀγωγιμότητος τῶν κονιοποιηθέντων μετάλλων ἤγαγον αὐτὸν εἰς τὴν ἀνακάλυψιν, ἥτις τὸν κατέστησε διάσημον. Ἐπέτυχε τότε νὰ κατασκευάσῃ τὸν «φωρατὴν» (coheteur), ὄργανον ἱκανὸν νὰ αἰσθανθῇ καὶ νὰ δείξῃ τὴν ἐπ' αὐτοῦ ἐπίδρασιν τῶν ἠλεκτρομαγνητικῶν (ἐρτζιανῶν) κυμάτων, ὅπως κατ' ἀναλογίαν ὁ ἠλεκτρομαγνήτης τὸ δι' ἀγωγοῦ διαβιβαζόμενον ῥεῦμα. Τὴν συσκευὴν ταύτην τοῦ Μπρανλὺ χρησιμοποιῶν ὁ Μαρκόνι, ἐπέτυχε ν' ἀποκαταστήσῃ, δι' ἠλεκτρομαγνητικῶν ἐκπομπῶν, τηλεγραφικὴν συνεννόησιν εἰς μεγάλας ἀποστάσεις, πραγματοποιήσας οὕτω τὸ θαῦμα τῆς ἀσυρμάτου τηλεγραφίας, ἐξελιχθέν, διὰ νέων ἐφεξῆς ὀργάνων, εἰς τὴν ῥαδιοφωνίαν καὶ τὴν τηλεόρασιν. Τῷ 1905 ὁ Μπρανλὺ ἐτιμήθη, ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τῆς κυρίας Κιουρί, διὰ τοῦ βραβείου Ossiris, ἐξελέγη δὲ μέλος τῆς γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν ἀπὸ τοῦ 1911. Ἀπὸ τοῦ 1928 περιλαμβάνεται μεταξὺ τῶν ἑπτὰ προσώπων, εἰς τὰ ὁποῖα ἡ Ἀκαδημία ἀπένειμεν ἰσόβιον σύνταξιν 10.000 φρ. μηνιαίως «εἰς ἀναγνώρισιν τῶν ἐπιμόχθων αὐτῶν προσπαθειῶν πρὸς καλυτέρευσιν καὶ προαγωγὴν τοῦ ἀνθρωπίνου βίου». Ἐκτὸς τῶν ἐκδοθέντων παρ' αὐτοῦ διδακτικῶν ἐγχειριδίων φυσικῆς καὶ ἠλεκτρισμοῦ, ὁ Μπρανλὺ ἔγραψεν: «Ἠλεκτρικὰ φαινόμενα ἐν ταῖς στήλαις» (1873), «Ἔρευναι ἐπὶ τῆς θερινῆς ἀκτινοβολίας» (1869—1887), «Ἠλεκτρικὴ ἀγωγιμότης τῶν μονωτικῶν οὐσιῶν» (1892), «Περὶ τῆς ἀγωγιμότητος τῶν εὐηλεκραγωγῶν ἀσυνεχῶν οὐσιῶν» (1894—1897), «Ραδιαγωγοὶ μετὰ μεταλλικῶν σφαιρῶν» (1899), «Ἀσύρματος τηλεγραφία καὶ τηλεμηχανική» (1905) κλπ., καθὼς καὶ διαφόρους ἄλλας μονογραφίας ἐπὶ τῆς ἀσυρμάτου τηλεγραφίας καὶ τηλεφωνίας (1906—1908).

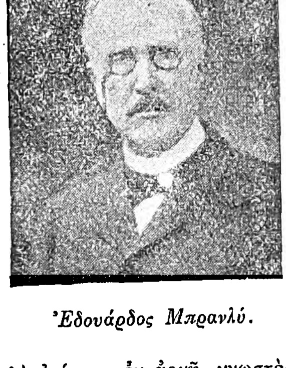

Ἐδουάρδος Μπρανλύ.

[Περὶ τοῦ «φωρατοῦ» τοῦ Μπρανλὺ βλ. λ. *ἀσύρματος τηλεγραφία*.]
—Ω.

**Μπράννερ** (Branner), *σὲρ* ***Ἰωάννης - Τόμλινσον.*** Ἄγγλος χημικός, γεννηθεὶς τῷ 1842 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1919. Τῷ 1873 ἵδρυσε μετὰ τοῦ περιφήμου χημικοῦ Λουδοβίκου Μὸντ εἰς τὸ Νόρθουϊτς ἐργοστάσιον χημικῶν προϊόντων, ὅπερ βαθμηδὸν ἐξελίχθη εἰς ἓν ἐκ τῶν μεγαλυτέρων τοῦ κόσμου εἰς τὸ εἶδός του. Ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὴν πολιτικὴν ζωὴν τοῦ τόπου του, διατελέσας μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων (1885—1909).
Σ. Γ.

**Μπρὰντ** (Brad) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Τσανσυλβανίᾳ, κειμένη παρὰ τὸν Μικρὸν Κέρες. Εἶναι γνωστὴ ἐκ τῶν πλουσίων χρυσωρυχείων της, ἐκ τῶν ὁποίων ἐξάγονται ἐτησίως δύο περίπου τόννοι ἀκατεργάστου χρυσοῦ. Κάτ. (1922) 3.539.
Χ. Δ.

**Μπρὰντ** (Brand), ***Ἐρνέστος.*** Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Feuchtwangen (1827—1897). Ἠσχολήθη μὲ τὴν διὰ ψυχροῦ ὕδατος θεραπείαν τῶν πυρετικῶν μολυσματικῶν νόσων, αἱ σχετικαὶ δὲ ἐπὶ τοῦ ἀντικειμένου τούτου ἐργασίαι του εἶναι αἱ ἀκόλουθοι: «Ἡ ὑδροθεραπεία τοῦ κοιλιακοῦ τύφου», (1861), «Ὑδροθεραπεία τοῦ κοιλιακοῦ τύφου. Ἔκθεσις τῶν ἐν Πετρουπόλει, Στεττίνῳ καὶ Λουξεμβούργῳ θεραπευθεισῶν παθήσεων διὰ ψυχροῦ ὕδατος» (1863), «Ὁδηγίαι εἰς τὰς νοσοκόμους διὰ τὴν θεραπείαν τοῦ κοιλιακοῦ τύφου διὰ λουτρῶν. Ἡ ἔννοια τῆς θεραπείας ταύτης» (1872), «Ἡ δι' ὕδατος θεραπεία τῶν τυφικῶν πυρετῶν» (1877). Ἠσχολήθη καὶ μὲ ἐπιδημιολογικὰς νόσους: «Ἡ ἐγκεφαλονωτιαία μηνιγγῖτις ἐπιπλεκομένη μετὰ ὑποστρόφου πυρετοῦ» (1886) κ.λ. Ἡ ἄνω μέθοδος τῆς ὑδροθεραπείας, γνωστὴ ἔκτοτε ὑπὸ τὸ ὄνομά του ὡς μέθοδος τοῦ Μπράντ, συνίσταται εἰς τὴν συστηματικὴν νυχθήμερον χορήγησιν, εἰς τοὺς ἐκ μολυσματικῶν νόσων πυρέσσοντας ἀσθενεῖς, ψυχρῶν λουτρῶν θερμοκρασίας 12°—18° βαθμῶν καὶ διαρκείας 15′ ἑκάστην τρίτην ὥραν ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς πυρετικῆς νόσου.
Ο. Ρ.

— **Μπρὰντ** (Brandt), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος.*** Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ φυσιοδίφης, γεννηθεὶς ἐν Jüterbock (1802—1879). Ἠσχολήθη μὲ τὴν σπουδὴν τῆς φυσικῆς ἱστορίας καὶ ἰδιαιτέρως τῆς βοτανικῆς ὑπὸ τὸν Hayne καὶ τῆς ζῳολογίας ὑπὸ τὸν Lichtenstein. Τῷ 1828 ἐγένετο ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Βερολίνου, τῷ δὲ 1831 ἐκλήθη ὡς τακτικὸς καθηγητὴς εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν ἐπιστημῶν τῆς Πετρουπόλεως. Ἀπὸ τοῦ 1851—1869 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ζῳολογίας καὶ συγκριτικῆς ἀνατομικῆς εἰς τὴν ἰατροχειρουργικὴν Ἀκαδημίαν Πετρουπόλεως. Ἀνέλαβε δύο ἐπιστημονικὰ ταξίδια εἰς Βεσσαραβίαν καὶ Κριμαίαν, τὸ ἓν πρὸς μελέτην καὶ διαφύλαξιν τοῦ ἀνευρεθέντος ἐν Νικολάϊεφ μαστόδοντος, τὸ δὲ δεύτερον εἰς Καύκασον, Τιφλίδα καὶ Μπορνχόλμην πρὸς ἰχθυολογικὰς σπουδάς. Συνέγραψε περὶ τὰς 318 πραγματείας, πλὴν τῶν δημοσιευθεισῶν εἰς τὰ δελτία καὶ ὑπομνήματα τῆς Ἀκαδημίας Πετρουπόλεως. Ἀναφέρομεν ἐκ τούτων τὸ δίτομον ἔργον του τῆς «Ἰατρικῆς ζῳολογίας» (1829—1833) καὶ «Συμβολὴν εἰς τὴν πληρεστέραν γνῶσιν τῶν θηλαστικῶν τῆς Ρωσίας, σαθερίου, κάστορος κλπ.». Ἵδρυσε ζῳοτομικὴν συλλογὴν καὶ βιβλιοθήκην ζῳολογικὴν καὶ συγκριτικῆς ἀνατομικῆς. Μέγας ἀριθμὸς ζῴων καὶ φυτῶν φέρουσι τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Ἐπὶ τῇ 50ετηρίδι του ἱδρύθη χρηματικὸν ἔπαθλον, διανεμόμενον ἑκάστην πενταετίαν δι' ἐρεύνας ἐπὶ θεμάτων ζῳολογικῶν, ζῳογεωγραφικῶν, συγκριτικῆς ἀνατομικῆς καὶ παλαιοντολογίας τῶν ζῴων.
Ο. Ρ.

**Μπρὰντ** (Brand), ***Ἰωάννης-Ἐρρῖκος.*** Νοτιοαφρικανὸς πολιτικὸς (1823—1888), γεννηθεὶς ἐν Μπλαιμφοντάϊν τῆς δημοκρατίας τῆς Ὀράγγης. Ἐσπούδασεν ἐν Ἀγγλίᾳ νομικὰ καὶ κατόπιν ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα εἰς τὴν πατρίδα του, γενόμενος καθηγητὴς τῆς νομικῆς ἐν τῷ κολλεγίῳ τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς καὶ ἀποκτήσας τοσοῦτον κῦρος καὶ ἐκτίμησιν, ὥστε ἐξελέγη τῷ 1864 διὰ πρώτην φορὰν πρόεδρος τῆς δημοκρατίας τῆς Ὀράγγης, ἐπανεκλεγεὶς κατόπιν πεντάκις. Τῷ 1876, τῇ προσκλήσει τοῦ λόρδου Κάρναβον, μετέβη εἰς Ἀγγλίαν, ὅπως λάβῃ μέρος εἰς τὴν διάσκεψιν, ἥτις εἶχε συνέλθει διὰ τὴν σύμπηξιν τῆς ὁμοσπονδίας ὅλων τῶν κρατῶν τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς καὶ ὅπου ἀντέδρασε κατὰ τοῦ σχεδίου τούτου, ὅπερ ἀπέτυχε. Τῷ 1880 κατώρθωσε διὰ τῆς μεσολαβήσεώς του νὰ φέρῃ εἰς αἴσιον πέρας τὰς διαπραγματεύσεις μεταξὺ Ἄγγλων καὶ τῶν Νοτιαφρικανῶν προέδρων Κρούγερ καὶ Ζουμπέρ, αἵτινες εἶχον ἀρχίσει πρὸς κατάπαυσιν τῶν συγκρούσεων μεταξὺ Τράνσβααλ καὶ Ἀγγλίας.
Μ. Δ. Β.

— **Μπρὰντ** (Brandt), ***Μαριάννα.*** Καλλιτεχνικὸν ψευδώνυμον τῆς Αὐστριακῆς ἀοιδοῦ *Μαρίας Μπίσωφ*, γεννηθείσης τῷ 1842. Ἀπὸ τοῦ 1868—1886 διετέλεσε μεσόφωνος τοῦ μελοδράματος τοῦ Βερολίνου καὶ ἐδημιούργησεν ἐκ περιτροπῆς μετὰ τῆς Ἀμ. Ματέρνα τὸν ῥόλον τῆς Κούντρυ, κατὰ τὴν πρώτην ἀναβίβασιν τοῦ «Πάρσιφαλ» τοῦ Βάγνερ, ἐν Μπαϋρόϋτ (1882). Κατὰ τὴν τελευταίαν περίοδον τῆς ζωῆς της ἐδίδαξεν ᾆσμα ἐν Βιέννῃ.
Γ. Σ.

— **Μπρὰντ** (Brant ἢ Brandt), ***Σεβαστιανός.*** Γερμανὸς ἐξ Ἀλσατίας, ποιητὴς καὶ νομοδιδάσκαλος (1457—1521). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ ἀστικοῦ καὶ κανονικοῦ δικαίου ἐν Βασιλείᾳ μέχρι τοῦ 1501, ὁπότε ἐπανελθὼν εἰς Στρασβοῦργον, ὑπηρέτησεν ἐκεῖ μέχρι τοῦ θανάτου του εἰς τὰς ἀνωτέρας δικαστικὰς καὶ διοικητικὰς θέσεις. Ὁ αὐτοκράτωρ Μαξιμιλιανὸς τῷ ἀπένειμε τοὺς τίτλους τοῦ συμβούλου καὶ τοῦ παλατίνου κόμιτος, καὶ διπλωματικαὶ δὲ ἀποστολαὶ ἀνετέθησαν εἰς αὐτὸν κατ' ἐπανάληψιν, ἐξ ὧν μία, τῷ 1520, πρὸς τὸν Κάρολον Κουΐντον εἰς Γάνδην. Ἐκ τῶν ποιητικῶν ἔργων του διάσημον ἀπέμεινε τὸ «Narrenschiff» (=Τὸ τρελλοκάραβο), ἐκδοθὲν τῷ 1494 ἐν Βασιλείᾳ, ἓν ἀπὸ τὰ πλέον δημοφιλῆ ἀναγνώσματα τοῦ ΙΣΤ′ αἰῶνος. Ὅλα αἱ ἀνθρώπιναι παραφροσύναι εὑρίσκουν θέσιν εἰς τὸ φανταστικὸν αὐτὸ σκάφος, τὸ ὁποῖον πλέει πρὸς τὴν Narragonien (τὴν Νῆσον τῶν τρελλῶν). Ἀκόμη καὶ ὁ ἴδιος ὁ ποιητὴς συγκαταλέγεται μεταξὺ τοῦ πλήθους τῶν ἐπιβατῶν του· ἀλλ' ἡ ἰδική του τρέλλα εἶναι ἀβλαβής: «χάνει—λέγει— τὸν νοῦν του διὰ τὰ βιβλία καὶ τὴν ἄχρηστον ἐπιστήμην ποὺ περιέχουν». Ὁ Μπρὰντ καταδεικνύεται εἰς τὸ ἔργον του αὐτὸ ἄνθρωπος πολυμαθέστατος καὶ προικισμένος μ' ἐξαίρετον παρατηρητικὴν ἰδιοφυΐαν, παρὰ δὲ τὰ μειονεκτήματα τοῦ ὕφους κατορθώνει νὰ δώσῃ ἐνδιαφέροντα καὶ ζωντανὸν πίνακα τῶν ἠθῶν καὶ τῶν ἰδεῶν τῆς ἐποχῆς του. Τὸ «Narrenschiff» ἐξεδόθη κατ' ἐπανάληψιν, ἐγένοντο δὲ μεταφράσεις καὶ παραποιήσεις ἀκόμη αὐτοῦ, εἰς διαφόρους γλώσσας. Καλύτεραι ἐκδόσεις του εἶναι αἱ τῆς Λειψίας τοῦ 1854 καὶ 1873, ἐκ δὲ τῶν μεταφράσεών του ἡ εἰς σύγχρονον γερμανικὴν γλῶσσαν, γενομένη ὑπὸ τοῦ Σίμροκ (Βερολῖνον 1872).
—Ε.

**μπράντα** (ἐκ τοῦ ἰταλ. branda). Ἡ ἐξ ὀθόνης κρεμαστὴ κλίνη τοῦ ναύτου καὶ ἡ δικτυωτὴ τῶν ἐξοχῶν καὶ ἐξ αὐτῶν ἡ κλίνη ἐκστρατείας (βλ. λ. *αἰώρα [Ναυτ.]*).

**Μπραντὰ** (Brada), ***Μὶς Ἐρριέττα Σανσόμ.*** Γαλλὶς συγγραφεύς, σύζυγος τοῦ Ἰταλοῦ κόμιτος ντὲ *Πουλίγκα*, γνωστὴ ὑπὸ φιλολογικὰ ψευδώνυμα *Μπράντα*, *Ἰνικὶ*, *Τὶκ - τὰκ* καὶ *Μπενεντὶκτ* (βλ. λ. *Σανσόμ*, Ἐρριέττα).

**Μπρανταμὰντ** (Bradamante). Μία τῶν ἡρωίδων τοῦ γαλλικοῦ μεσαιωνικοῦ ἔπους «Μαινόμενος Ρολάνδος». Ἦτο ἀδελφὴ τοῦ Ρενὼ ντὲ Μοντωμπὰν καὶ ἐγένετο περίφημος διὰ τὸ θάρρος καὶ τὴν ὡραιότητά της· νυμφευθεῖσα κατόπιν πολλῶν περιπετειῶν τὸν Ρογῆρον, ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῆς στρατιᾶς ντ. Ἀγκραμάν. Τὸ ὄνομά της χρησιμεύει πολλάκις εἰς τοὺς Γάλλους συγγραφεῖς ὡς ἐπίθετον τῶν ὡραίων καὶ γενναίων ἡρωΐδων των.
Μ. Δ. Β.

**Μπραντὰν** (Brandan, ἢ Brendan, Brendanus) ***ἅγιος.*** Ἐγεννήθη τῷ 484 καὶ ἐτελεύτησε τῷ 577 ἢ κατ' ἄλλους τῷ 587. Ἵδρυσε διαφόρους μονὰς κατ' ἀρχὰς ἐν Cloufert, ἔπειτα δὲ καὶ ἐν Ἰρλανδίᾳ καὶ Οὐαλλίᾳ, διεπομένας ὑπὸ ἰδίων κανόνων συνταχθέντων ὑπ' αὐτοῦ καὶ περιλαμβανούσας περὶ τοὺς 3.000 μοναχούς. Φήμην ἰδίᾳ ἀπέκτησε διὰ τῆς navigatio ἢ pelegrinatio Brandani, τῆς συνταχθείσης λατινιστὶ κατὰ τὸν Ι′ ἢ ΙΑ′ αἰῶνα. Κατ' αὐτὴν ὁ Μπραντάν, μετὰ ἑπταετεῖς ἐπικινδύνους πλόας καὶ περιπλανήσεις, κατώρθωσε νὰ εὕρῃ τὰς νήσους τῶν Μακάρων, τὴν γῆν τῆς Ἐπαγγελίας, τῇ βοηθείᾳ θαλασσίου τινὸς τέρατος, Jasconius καλουμένου. Ἡ διήγησις αὕτη, ἥτις συνδέεται μᾶλλον πρὸς τὰς παραδόσεις καὶ τὴν μυθολογίαν τῶν Κελτῶν ἢ τὰς περιπλανήσεις τοῦ Ὀδυσσέως, διεδόθη ταχέως παρὰ τῷ λαῷ καὶ ἀφοῦ ἐγένοντο αὐτῆς διάφοροι ἐπεξεργασίαι ἐν πεζῇ καὶ ποιητικῇ γλώσσῃ, κατέστη προσφιλὲς ἀνάγνωσμα τοῦ

Digitized by Google

λαοῦ. Τοσοῦτον δὲ εἶχε διαδοθῆ καὶ πιστευθῆ ἡ παράδοσις αὕτη, ὥστε κατὰ τὸν ΙΗ΄ αἰῶνα ἐγένετο ἀπόπειρα πρὸς εὕρεσιν τῶν νήσων τούτων τοῦ Μπραντάν. Ἡ καλυτέρα ἔκδοσις τοῦ λατινικοῦ κειμένου τῆς pelegrinatio ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Schröder τῷ 1871. Ὁ Μπραντάν, θεωρούμενος ἅγιος καὶ προστάτης τῶν ναυτιλλομένων, ἑορτάζεται τῇ 16ῃ Μαΐου. κ. ι. δ.

**Μπραντγουώρντιν** (Bradwardin, Bradwardina, Bradwardinus καὶ Bredwardina), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος θεολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1290. Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ θεολογίαν, φιλοσοφίαν, μαθηματικὰ καὶ ἀστρονομίαν. Ἀπὸ τοῦ 1325 ἐδίδασκεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης, κληθεὶς ἕνεκα τῆς βαθύτητος τοῦ πνεύματός του Doctor profundus. Ἀπὸ τοῦ 1338 διετέλεσεν ἱεροκήρυξ ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Παύλου τοῦ Λονδίνου καὶ ἀπὸ τοῦ 1339 ἐξομολογητὴς τοῦ Ἐδουάρδου Γ΄ καὶ στρατιωτικὸς ἱερεύς. Ἐξελέγη τῷ 1348 ἀρχιεπίσκοπος Καντερβουργίας, χειροτονηθεὶς τῷ 1349. Ἐκτὸς τῶν μαθηματικῶν αὐτοῦ ἔργων, ἅτινα ἐξεδόθησαν πολλάκις, σπουδαιότατα εἶναι τὰ θεολογικὰ αὐτοῦ ἔργα καὶ μάλιστα τὸ κύριον αὐτοῦ «De causa Dei contra Pelagium», τὸ ἐκδοθὲν τῷ 1618 μετὰ βιογραφικῆς εἰσαγωγῆς ὑπὸ τοῦ Lavile. Ἐν αὐτῷ καταπολεμεῖ τὴν περὶ δικαιώσεως γνώμην τοῦ Πελαγίου καὶ τὴν ἀξιομισθίαν τῶν ἀγαθῶν ἔργων, ὑποστηρίζων δι' ἰσχυρῶν ἐπιχειρημάτων τὴν περὶ θείας χάριτος γνώμην τοῦ Αὐγουστίνου. Ἡ ἐπίδρασις τοῦ ἔργου τούτου ἐπὶ τοὺς μετὰ ταῦτα μεταρρυθμιστὰς καὶ δὴ τὸν Οὐΐκλεφον καὶ Καλβῖνον δὲν δύναται νὰ ἀμφισβητηθῇ.

[Πρβλ. *S. Hahn*, Thomas Bradwardin und seine Lehre von der menschlichen Willensfreiheit (1905).] κ. ι. δ.

**Μπράντενμπουργκ** (Brandenburg) *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν δεκατεσσάρων περιφερειῶν τῆς Πρωσσίας (βλ. λ. *Βρανδεμβοῦργον*).

**Μπράντες** (Brandes), ***Γεώργιος***. Τὸ πραγματικὸν αὐτοῦ ὄνομα ἦτο *Μαυρίκιος Κοέν*. Δανὸς κριτικὸς καὶ ἱστορικὸς (1842—1927). Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ὀνομαστοτέρων ἀνακινητῶν λογοτεχνικῶν, αἰσθητικῶν καὶ κοινωνικῶν προβλημάτων ἐν Εὐρώπῃ,

*Γεώργιος Μπράντες.*

κατὰ τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας τοῦ ΙΘ΄αἰῶνος καὶ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ Κ΄, εἰς δὲ τὰς Σκανδιναυϊκὰς χώρας ἐγένετο, κατόπιν μακροῦ ἀγῶνος, ἀφορμὴ ριζικῆς πνευματικῆς μεταρρυθμίσεως, διανοίξας τὸ πνεῦμα τῶν Σκανδιναυῶν εἰς τοὺς εὐρεῖς ὁρίζοντας τῆς συγχρόνου σκέψεως. Τὴν πρώτην μόρφωσιν ἔλαβε παρὰ τῆς μητρός του, ἰουδαϊκῆς καταγωγῆς, κατόπιν δ' ἐσπούδασε φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κοπεγχάγης, ὅπου τῷ 1863 ἐβραβεύθη μὲ χρυσοῦν μετάλλιον διὰ τὴν μονογραφίαν του «Ἡ ἰδέα τῆς Νεμέσεως ἐν τῇ ἀρχαίᾳ τραγῳδίᾳ». Εὐθὺς ἀπὸ τῆς νεότητός του εἶχεν ἀρχίσει νὰ μελετᾷ τὰ θρησκευτικὰ καὶ φιλοσοφικὰ προβλήματα ἐπὶ τῇ βάσει τῶν λίαν διαδεδομένων τότε ἐγελιανῶν θεωριῶν, ἀπὸ τὰς ὁποίας ὅμως κατόπιν ἀπεμακρύνθη, ἀποκρυσταλλώσας σαφῶς τὰς ἀντιλήψεις του ἐν τῇ ἐναισίμῳ διατριβῇ του περὶ τοῦ Ταὶν «Den franske Aestetik i vore Dage». Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἀρχίσει νὰ γράφῃ φιλολογικὰς κριτικὰς εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ἀγωνιζόμενος ἐν ὀνόματι τῆς «συνειδήσεως αὐτοῦ διὰ τὴν πραγματικότητα» καὶ ἀντιδρῶν πρὸς τὴν πνευματιστικὴν προσπάθειαν τῆς συνδιαλλαγῆς μεταξὺ ἐπιστήμης καὶ πίστεως, τὴν ὁποίαν εἶχεν ἤδη ἐπιχειρήσει ὁ Ράσμους Νίλσεν (ἐν τῷ ἔργῳ του «Περὶ τῆς ἐν τῇ συγχρόνῳ φιλοσοφίᾳ μας δυαρχίας» 1866), ἐνῷ συγχρόνως ἐξήγειρε τὴν ὀργὴν τῆς ἀστικῆς τάξεως διὰ τῆς μεταφράσεως τῆς «Subjection of woman» τοῦ Στούαρτ Μὶλ (1869). Μετέβη εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ τὴν Ἰταλίαν πρὸς συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν του καὶ τῶν ἰδιαιτέρων του μελετῶν, ἐκεῖ δὲ ἐγνώρισε καὶ τοὺς κορυφαίους τότε τῆς εὐρωπαϊκῆς διανοήσεως Ταίν, Στούαρτ Μίλ, Ἴψεν καὶ Ρενὰν καὶ συνεδέθη ἰδιαιτέρως μὲ τοὺς δύο πρώτους, εἰς τοὺς ὁποίους ὀφείλει τὰς πρώτας νεωτεριστικὰς αὐτοῦ ἀρχὰς ἐπὶ τῆς πολιτικῆς, τῆς κοινωνίας καὶ τῆς αἰσθητικῆς. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς τὴν Κοπεγχάγην ἤρχισε τὰς περιφήμους διαλέξεις του «Περὶ τῶν μεγάλων ρευμάτων τῆς λογοτεχνίας ἐν Εὐρώπῃ κατὰ τὸν ΙΘ΄ αἰῶνα», τὰς ὁποίας ἐξέδωκε κατόπιν εἰς ἰδιαιτέρους τόμους καὶ αἵτινες ἀπετέλεσαν ἓν τῶν σημαντικωτέρων ἔργων του (1872—1890). Τὰς διαλέξεις ταύτας ἠκολούθησαν διαδοχικῶς αἱ διαλέξεις «Περὶ τοῦ γερμανικοῦ ρωμαντισμοῦ», «Περὶ τῆς ἀντιδράσεως ἐν Γαλλίᾳ», «Περὶ τῆς φυσιοκρατίας ἐν Ἀγγλίᾳ», αἵτινες ἐξεδόθησαν ἐπίσης εἰς ἰδιαιτέρους τόμους καὶ εἰς τὰς ὁποίας προσετέθησαν βραδύτερον αἱ μελέται «Περὶ τοῦ γαλλικοῦ ρωμαντισμοῦ» καὶ «Περὶ τῆς νέας Γερμανίας». Εἰς πάντα τὰ ἔργα του ταῦτα ὁ Μπράντες ἐπιτίθεται σφοδρῶς καὶ μετὰ σαρκασμοῦ ἐναντίον τῶν παλαιῶν δογμάτων, μὴ φειδόμενος οὐδ' αὐτῶν τῶν παραδόσεων τοῦ σκανδιναυϊκοῦ λαοῦ καὶ αὐτῆς ἔτι τῆς χριστιανικῆς ἠθικῆς, καὶ γίνεται ὁ ἀπόστολος μιᾶς «νέας εὐρωπαϊκῆς λογοτεχνίας, βασιζομένης ἐπὶ τῆς πραγματικότητος καὶ ἐπὶ τῆς ἐλευθερίας τῆς σκέψεως». Ἡ διδασκαλία του αὕτη προκαλεῖ σφοδρὰν πολεμικὴν ἐν Δανίᾳ. Ἀλλὰ τὰ διδάγματά του, αἱ διαλέξεις του, τὰ ἐκδιδόμενα ἀλληλοδιαδόχως ἔργα του καὶ τὰ ἄρθρα του εἰς τὰς ἐφημερίδας καὶ τὰ περιοδικὰ ἠλεκτρίζουν τοὺς νέους καὶ δημιουργοῦν πέριξ αὐτοῦ πυκνὸν κύκλον νεαρῶν συγγραφέων. Ὁ Γιάκομπσεν, ὁ Ντράχμαν, ὁ Σχάντορφ τάσσονται παρὰ τὸ πλευρόν του καὶ μετ' αὐτοὺς ὁ Ἴψεν, ὁ Μπγιέρνσον, ὁ Χόλκερ, βραδύτερον δὲ καὶ ὁ Στρίντμπεργκ. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μπράντες ἵδρυσε μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἐδουάρδου τὸ περιοδικὸν «Det nyttende Aarhundrede», ὅπερ ἐπὶ τέσσαρα ἔτη (1874—1878) ὑπῆρξεν ἡ παλαίστρα τῆς ἐπαναστατικῆς λογοτεχνίας. Αἱ κριτικαί του περὶ Βύρωνος, περὶ Σέλλεϋ, περὶ Χάϊνε, περὶ Οὐγκώ, γεγραμμέναι μετ' αὐστηρότητος, ἀλλὰ κυρίως μετὰ σαφηνείας καὶ μετὰ τέχνης, κατέστησαν περίφημοι καὶ ἤρχισαν νὰ περιλαμβάνωνται ὡς πρόλογοι εἰς τὰς μεγάλας ἐκδόσεις τῶν ἀνωτέρω συγγραφέων. Ἡ ἐπαναστατικότης ὅμως αὐτοῦ ἐπροκάλεσε σφοδροτάτην ἀντίδρασιν, τὴν ὁποίαν ματαίωςπροσεπάθησε νὰ ἀντιμετωπίσῃ διὰ τοῦ ἔργου του «Ἑρμηνεία καὶ ἄμυνα». Ἕνεκα τῆς ἀντιδράσεως ταύτης,προερχομένης ἰδίως ἐκ τῶν πανεπιστημιακῶν κύκλων τῶν ἀκολουθούντων τὰς παλαιὰς παραδόσεις καὶ στερρῶς ἐχομένων τῶν συντηρητικῶν διδασκαλιῶν, ὁ Μπράντες δὲν κατώρθωσε νὰ καταλάβῃ τὴν κατὰ τὸ 1877 κενωθεῖσαν ἕδραν τῆς αἰσθητικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κοπεγχάγης καὶ ἠναγκάσθη νὰ ἀναχωρήσῃ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἐκ Δανίας, περιελθὼν πλείστας χώρας τῆς Εὐρώπης καὶ παραμείνας ἐπὶ πενταετίαν ἐν Βερολίνῳ, ὅπου ἐξέδωσε πλεῖστα ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἡ πραγματεία περὶ τοῦ Δανοῦ φιλοσόφου Κίρκεγκαρντ» (1877), «Πραγματεία περὶ τοῦ Σουηδοῦ ποιητοῦ Τεγκνὲρ» (1878) κτλ.

Κατὰ τὴν ἐν Βερολίνῳ ὅμως παραμονήν του τὸ ἐνδιαφέρον του εἶχε στραφῆ μᾶλλον πρὸς τὰ κοινωνικὰ καὶ τὰ πολιτικὰ προβλήματα καὶ ἔγραψε τὰ ἔργα: «Ντισραέλι» (1878), «Λασσάλ» (1881) κτλ. Τῷ 1882 ἐξέδωκε τὸν Ε΄ τόμον τῶν «Μεγάλων ρευμάτων τῆς λογοτεχνίας ἐν Εὐρώπῃ κατὰ τὸν ΙΘ΄ αἰῶνα», ἀφιερωμένον εἰς τὴν ρωμαντικὴν σχολὴν τῆς Γαλλίας, τὸ δὲ ἑπόμενον ἔτος ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Δανίαν, ὅπου, ἀποκτήσας ἐν τῷ μεταξὺ πανευρωπαϊκὴν φήμην, ἐγένετο δεκτὸς μετ' ἐνθουσιασμοῦ. Αἱ ἰδέαι του καὶ αἱ διδασκαλίαι του εἶχον ἤδη καρποφορήσει, ἡ δὲ νέα δανικὴ καὶ νορβηγικὴ λογοτεχνία, ἀνδρωθεῖσα πλέον καὶ ἐπιβληθεῖσα, ἤρχισε νὰ τὸν ἀναγνωρίζῃ ὡς τὸν κυριώτερον δημιουργόν της. Τὰ ἔργα του μετεφράζοντο εἰς πλείστας γλώσσας, οἱ δὲ καταπιεζόμενοι λαοὶ ἤρχισαν νὰ ἀπευθύνωνται πρὸς αὐτὸν καὶ νὰ ζητοῦν τὴν βοήθειαν τῆς γραφίδος του καὶ τοῦ παγκοσμίου κύρους του.

Μετ' ὀλίγον ὅμως ἐπῆλθε σοβαρὰ μεταβολὴ εἰς τὴν ἰδεολογίαν τοῦ Μπράντες, ὁ ὁποῖος ἤρχισε νὰ ἀμφιβάλλῃ περὶ τῶν ἰδεῶν, τὰς ὁποίας τόσον θερμῶς ὑπεστήριζεν, ὑπὲρ τῶν ὁποίων ἐπὶ τόσα ἔτη μετὰ τοσαύτης ἐπιμονῆς καὶ ὑπομονῆς εἶχεν ἀγωνισθῆ καὶ τὰς ὁποίας εἶχε κατορθώσει νὰ ἐπιβάλῃ μετὰ τόσου κόπου. Κυρίως ἤρχισε νὰ ἀμφιβάλλῃ περὶ τῶν δημοκρατικῶν ἰδεωδῶν, νὰ μὴ πιστεύῃ πλέον εἰς τὴν ἀλάθητον καὶ ἀσφαλῆ πρόοδον καὶ νὰ κατηγορῇ τὰς μάζας ὅτι παραλύουν τὴν ἐξέλιξιν τῆς ἀνθρωπότητος. Καὶ ἀπὸ ἀλτρουϊστὴς ἤρχισε νὰ στρέφεται πρὸς τὴν ἀτομιστικὴν ἀντίληψιν τοῦ ἀνθρώπου. Ὁ δημοκράτης γίνεται ἀριστοκράτης. Ἡ μεταβολὴ αὕτη ὀφείλεται κατὰ μέγα μέρος εἰς τὸν Νίτσε. Πνεῦμα διαρκῶς ἀνήσυχον καὶ ρέπον πάντοτε πρὸς πᾶν τὸ νέον, ὁ Μπράντες εὑρίσκεται ἐκ νέου εἰς τὴν ἐμπροσθοφυλακὴν καὶ γίνεται ὁ πρῶτος ἑρμηνευτὴς καὶ σχολιαστὴς τοῦ Νίτσε. Τὰ «Μεγάλα ρεύματα» φέρουν τὴν σφραγῖδα τῆς ἐξελίξεώς του. Εἰς τοὺς πρώτους τόμους ἐξαίρεται ἡ συνολικὴ δρᾶσις, ἡ σημασία τῶν ἐποχῶν καὶ τῶν πνευματικῶν ρευμάτων, τὰ ὁποῖα ἐπικρατοῦν κατὰ ταύτας, ἐνῷ εἰς τοὺς τελευταίους τόμους κυριαρχοῦν αἱ προσωπικότητες καὶ τὸ ἔργον του ἀποβαίνει συλλογὴ μονογραφιῶν. Δὲν τὸν ἐνδιαφέρουν πλέον ἡ ἀνθρωπότης καὶ αἱ μᾶζαι, ἀλλ' οἱ «ἥρωες τοῦ πνεύματος», εἰς τοὺς ὁποίους ἀφιερώνει σειρὰν μελετῶν, ὡς εἶναι αἱ περὶ Σαίξπηρ, Γκαῖτε, Βολταίρου καὶ Μιχαὴλ Ἀγγέλου. Συνεπὴς πρὸς τὴν νέαν του ταύτην ἰδεολογίαν, γίνεται καὶ θερμὸς πατριώτης καὶ ἐθνικιστὴς καὶ ὑπεραμύνεται, διὰ τοῦ τύπου καὶ ἰδίως διὰ τῆς «Politiken», τοῦ Σλέσβιχ κατὰ τῆς πρωσσικῆς καταπιέσεως. Τῷ 1895—1896 ἐξέδωσε τὸ τρίτομον ἔργον περὶ Σαίξπηρ, ὅπερ θεωρεῖται ὡς τὸ ἀριστούργημά του. Μεταφρασθὲν εἰς τὴν ἀγγλικήν, τὴν γερμανικὴν καὶ εἰς ἄλλας γλώσσας, ἐχαρακτηρίσθη ἐν Ἀγγλίᾳ ὡς «ἡ ὑπεροχωτέρα μονογραφία περὶ Σαίξπηρ, ἥτις ἐγράφη ὑπὸ μὴ Ἄγγλου συγγραφέως». Τὸ ἔργον τοῦτο ἐστερέωσε τὴν φήμην του καὶ κατεσίγησε πᾶσαν ἐναντίον του ἀντίδρασιν. Ὅταν δὲ ἀνῆλθεν εἰς τὴν ἀρχὴν ἐν Δανίᾳ ἡ φιλελευθέρα κυβέρνησις, ἐλύθη ὑπὲρ αὐτοῦ τῷ 1901 καὶ τὸ ἐπὶ τριάκοντα ἔτη ἐκκρεμοῦν ζήτημα τοῦ διορισμοῦ του εἰς τὴν χηρεύουσαν θέσιν τοῦ καθηγητοῦ τῆς αἰσθητικῆς καὶ τῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Κοπεγχάγης. Βραδύτερον μετέβη εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὅπου τῷ 1913 προέβη εἰς σειρὰν διαλέξεων, τὰς ὁποίας ἐπανέλαβε τῷ 1914 καὶ ἐν Ἀμερικῇ. Ὁ Μπράντες ἐπεσκέφθη καὶ τὴν Ἑλλάδα, κατὰ δὲ τὸ ταξίδιόν του εἰς τὰς Ἀθήνας τῷ 1925 ἀνεκηρύχθη ἐπίτιμος διδάκτωρ τοῦ Ἐθνικοῦ πανεπιστημίου. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐδημοσίευσε, πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἀναφερθέντων ἔργων, καὶ τὰ ἑξῆς: «Ἴψεν» μεταφρασθὲν καὶ ἑλληνιστὶ «Ἀρμὰν Καρρὲλ» (1911), «Ἀνατὸλ Φρὰνς» (1914), «Γκαῖτε» (1915, 2 τόμοι), «Ὁ Παγκόσμιος πόλεμος» (1916), «Ναπολέων καὶ Γαριβάλδης» (1917), «Βολταῖρος» (1917, εἰς 2 τόμους), «Καῖσαρ» (1918, εἰς 2 τόμους), «Μιχαὴλ Ἄγγελος» (1921) κτλ. Τὰ τελευταῖά του δημοσιευθέντα ἔργα εἶναι: «Ἡ Ἑλλάς», ὅπερ ἀποτελεῖ ἐπισκόπησιν τῆς ἀρχαίας καὶ συγχρόνου ἑλληνικῆς ζωῆς. «Ὁ θρῦλος περὶ Ἰησοῦ» (1925) καὶ «Ὁ ἅγιος Πέτρος, καλούμενος ἁπλῶς Πέτρος» (1926).

Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὁ Μπράντες προσεπάθησε νὰ τηρήσῃ οὐδετερότητα καὶ νὰ σταθῇ «ὑπεράνω τῆς συρράξεως», ἀλλ' ἐν τῷ ἔργῳ του «Ὁ Παγκόσμιος πόλεμος» ἐπετέθη σφοδρῶς κατὰ τοῦ Κλεμανσὼ καὶ ἐν τῷ «Τὸ δεύτερον μέρος τῆς Τραγῳδίας» (1919) δὲν ἠδυνήθη νὰ ἀποκρύψῃ τὴν συμπάθειαν αὐτοῦ πρὸς τὴν τελευταίαν ρωσικὴν ἐπανάστασιν. Τὸ ὅλον ἔργον του περιλαμβάνει ὑπὲρ τοὺς 33 τόμους. Καίτοι ἐν πολλοῖς ἄνισον καὶ ἀνακόλουθον, ἐκτιμᾶται γενικῶς διὰ τὸ γοητευτικὸν ὕφος του καὶ τὴν λογικότητα τῶνἐπιχειρημάτων του. Τὸ ὄνομά του, ἐπὶ πολλὰ ἔτη, εὑρίσκετο εἰς τὴν πρώτην γραμμὴν τῆς φιλολογικῆς κινήσεως ἀνὰ τὴν Εὐρώπην. Προικισμένος μὲ πνεῦμα ζωηρὸν καὶ χαρακτῆρα ὁρμητικὸν καὶ εὐερέθιστον, μὲ εὐρυτάτην ἐγκυκλοπαιδικὴν μόρφωσιν, φιλόσοφος ἀβαθὴς μέν, ἀλλὰ λογικὸς καὶ ἐνθουσιώδης, συγγραφεὺς μὲ τάλαντον καὶ τέχνην, ὑπὸ τὴν ὁποίαν πολλάκις καλύπτει πικρόχολον κακίαν καὶ πρωτόγονον κυνισμόν, μὲ φρασιολογίαν ἡ ὁποία ἐμφανίζει τὴν ζωηρότητα καὶ τὴν ἀτημελησίαν τῆς προχειρότητος, ἀκόμη καὶ εἰς τὰ θέματα ἐπὶ τῶν ὁποίων ἔχει ἐγκύψει ἐπὶ μακρόν, ἐδημιούργησε περὶ ἑαυτὸν μεγάλους ἐνθουσιασμοὺς καὶ μεγάλα μίση καὶ παρὰ τὴν πολεμικὴν καὶ τὰς ἀντιρρήσεις τῶν ἀντιπάλων του, ἰδίως ὡς πρὸς σημεῖά τινα καὶ λεπτομερείας τοῦ ἔργου του καὶ τῆς δράσεώς του, κατέλαβεν ἀδιαφιλονικήτως τὴν θέσιν τοῦ μεγαλυτέρου κριτικοῦ τῆς ἐποχῆς του. μ. δ. β.

— **Μπράντες** (Brandes), ***Γουσταῦος***. Γερμανὸς ζῳολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ἐδίδαξε ζῳολογίαν καὶ κτηνιατρικὴν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς πόλεως ταύτης, κατόπιν δὲ διωρίσθη γενικὸς διευθυντὴς τοῦ ζῳολογικοῦ κήπου τῆς Δρέσδης καὶ τέλος καθηγητὴς τῆς γενικῆς ζῳολογίας καὶ συγκριτικῆς ἀνατομίας ἐν Λειψίᾳ. Ἔγραψε πραγματείας περὶ τῶν ἑλμίνθων καὶ ἄλλων σκωλήκων, περὶ τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων τῶν πτηνῶν κ. τ. λ. α. δ.

— **Μπράντες** (Brandes), ***Ἰωάννης - Χριστιανός***. Γερμανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ ἠθοποιὸς (1735—1799). Ἐκ τῶν κωμῳδιῶν του τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσιν αἱ: «Εἰς ποῖον νὰ ἐμπιστευθῇ κανείς;», «Ὁ ἔμπορος μὲ τίτλον εὐγενείας», «Ἡ ἀπαγωγὴ» καὶ «Ὁ κόμης Ὄσμπαχ». Τὸ λυρικὸν δρᾶμά του: «Ἡ Ἀριάδνη ἐν Νάξῳ», ἐνεποίησε μεγάλην ἐντύπωσιν καὶ ἐμελοποιήθη τῷ 1778 ὑπὸ τοῦ Μπένφα. α. δ.

—**Μπράντες** (Brandes), ***Κάρολος-Ἐδουάρδος***. Δανὸς λόγιος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1847 ἐν Κοπεγχάγῃ. Ἐδημοσίευσε σειρὰν ἄρθρων σχετικῶν πρὸς τὴν φιλοσοφίαν καὶ τὴν κριτικὴν τῆς λογοτεχνίας. Τῷ 1880 ἐξελέγη βουλευτής. Ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Τὸ φάρμακον», «Μία ἐπίσκεψις», «Ὑπὸ τὸ κράτος τοῦ νόμου», τὸ ἀριστούργημά του, καὶ «Οἱ ἀρραβῶνες». α. δ.

—**Μπράντες** (Brandes), ***Μάρθα-Ἰωσηφίνα***. Γαλλὶς ἠθοποιός, γεννηθεῖσα τῷ 1862. Ἀπὸ τοῦ 1893—1898 κατήγαγεν ἀληθεῖς θριάμβους ὡς πρωταγωνίστρια εἰς τὴν «Revoltée», τὴν «Ἔντα Γκάμπλερ», τὴν «Βασίλισσαν Ἰωάνναν», τὴν «Αἰκατερίνην» καὶ εἰς ἄλλα θεατρικὰ ἔργα.

— **Μπράντες** (Brandes), ***Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς μουσικός, γεννηθεὶς τῷ 1874. Τῷ 1909 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ «Τμήματος ᾠδικῆς» τῆς Δρέσδης· Ἀπὸ τοῦ 1911 μέχρι τοῦ 1919 διηύθυνε τὸ μουσικὸν περιοδικὸν «New Zeitschrift für musik». Τῷ 1921 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς θεωρίας τῆς μουσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας. Εἶναι συνεργάτης τῆς ὑπὸ τῆς βαυαρικῆς κυβερνήσεως ἐκδιδομένης γενικῆς βιογραφίας τῶν μεγάλων ἀνδρῶν τῆς Γερμανίας κτλ. Ἐδημοσίευσεν ἐν τῷ ἐγκυκλοπαιδικῷ λεξικῷ τοῦ Μπροκχάους καὶ τῷ «Ἀγγελιαφόρῳ τῆς Δρέσδης» σχετικὰς πρὸς τὴν μουσικὴν πραγματείας. α. δ.

Digitized by Google

**Μπράντινγκ** (Branting), ***Κάρολος - Γιάλμαρ.*** Σουηδὸς πολιτικὸς καὶ περίφημος σοσιαλιστὴς ἡγέτης, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Στοκχόλμῃ (1860—1925). Ἦτο υἱὸς ἰατροῦ, ἐν Στοκχόλμῃ δὲ ὅπου διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα διετέλεσε συμμαθητὴς τοῦ διαδόχου, τοῦ μετέπειτα ἀνελθόντος εἰς τὸν σουηδικὸν θρόνον Γουσταύου Ε'. Ἐσπούδασε μαθηματικὰ καὶ ἀστρονομίαν ἐν Στοκχόλμῃ καὶ Οὐψάλᾳ, ταχέως ὅμως κατέλιπε τὴν ἐπιστήμην ταύτην διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν πολιτικήν, ὀπαδὸς δὲ τῶν σοσιαλιστικῶν ἀρχῶν, μεγάλως συνέβαλεν εἰς τὴν προαγωγὴν καὶ διάδοσιν αὐτῶν ἐν Σουηδίᾳ. Διηύθυνεν ἐπὶ μακρὸν ἀπὸ τοῦ 1886 τὴν ἱδρυθεῖσαν τῷ 1885 ἐφημερίδα «Σοσιαλδημοκράτης», φυλακισθεὶς μάλιστα τῷ 1888 διὰ τὴν ἐπαναστατικήν ἀρθρογραφίαν του. Τῷ 1896 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος ἐν τῇ σουηδικῇ βουλῇ, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀντεπροσώπευσε μόνος ἐπὶ ὁλόκληρον ἑξαετίαν τὰς σοσιαλιστικὰς ἀρχάς. Ἡ δρᾶσις καὶ ἡ φήμη του ὁλοὲν ηὔξανον, ἀπὸ δὲ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου διῆλθον τὰ ὅρια τῆς χώρας του. Διαρκοῦντος τοῦ πολέμου τούτου ὑπεστήριξε μετὰ πείσματος τὴν οὐδετερότητα τῆς Σουηδίας, ἦτο δὲ ἐκ τῶν μᾶλλον σημαινόντων μελῶν τῆς Β' Διεθνοῦς καὶ φανατικὸς εἰρηνόφιλος, τιμηθεὶς εἰς ἀνταμοιβὴν τῶν προσπαθειῶν του διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς εἰρήνης τῷ 1921. Τῷ 1917 μετέσχε τοῦ ὑπουργείου Ἔντεν, λαβὼν τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Οἰκονομικῶν, καὶ ἐσχημάτισε κατὰ τὰ ἔτη 1920, 1921 καὶ 1924 σοσιαλιστικὰς κυβερνήσεις, τῶν ὁποίων προήδρευσε μέχρι τοῦ θανάτου του. Θερμὸς θιασώτης τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, συνέβαλεν ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς εἰς τὴν ἑδραίωσιν αὐτῆς, διετέλεσε δὲ πρόεδρος τῆς ΣΤ' ἐπιτροπῆς τοῦ ἀφοπλισμοῦ καὶ ἀπήλαυε μεγάλης ὑπολήψεως καὶ κύρους. Ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Σουηδίας παρὰ τῇ Κοινωνίᾳ, ἐδέχθη καὶ ὑπεστήριξε μάλιστα τὸν διὰ δημοψηφίσματος καθορισμὸν τῆς τύχης τῶν νήσων Ἄλανδ.

Ὡς ἡγέτης τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος τῆς Σουηδίας ὁ Μπράντινγκ ἔδωσεν εἰς τὴν πολιτικὴν αὐτοῦ ἐσκεμμένην καὶ σώφρονα κατεύθυνσιν, ἡ εὐρυμάθεια δέ, ἡ μετριοπάθεια καὶ ἡ ἀκεραιότης τοῦ χαρακτῆρός του κατέστησαν αὐτὸν μίαν ἐκ τῶν ἐπιφανεστέρων πολιτικῶν μορφῶν τῆς Εὐρώπης κατὰ τοὺς πρώτους μεταπολεμικοὺς χρόνους. Τὴν μπολσεβικικὴν ἐπανάστασιν τῆς Ρωσίας ἀπεδοκίμασεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς, ὑποστηρίζων ὅτι ἡ χώρα αὕτη δὲν ἦτο ἡ κατάλληλος πρὸς ἐφαρμογὴν τόσον σοβαροῦ πειράματος. Ἐδημοσίευσε πολυάριθμα φυλλάδια πολιτικοῦ καὶ κοινωνικοῦ περιεχομένου, ἐν οἷς τά: «Militärriksday folkrisdag» (1892), «Socialdemokratiens arhundrade» (1903—1905), «Den politiska Krisen» (1914), «Vägen stiger» (1917) κτλ. —ο.

**Μπράντις** (Brandis), ***Χριστιανὸς-Αὔγουστος.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς φιλόλογος καὶ φιλόσοφος (1790—1867). Ἐσπούδασεν ἐν Γοττίγγῃ καὶ Κιέλῳ καὶ κατόπιν ἐδίδαξεν ἐν Κοπεγχάγῃ (1813) καὶ Βερολίνῳ (1815). Τῷ 1822 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας ἐν Βόννῃ. Τῇ συστάσει τοῦ Σχέλλιγκ, μεθ' οὗ συνεδέετο, διωρίσθη σύμβουλος τοῦ νεοεκλεγέντος τότε Ἕλληνος βασιλέως Ὄθωνος καὶ διέμεινε μέχρι τοῦ 1839 ἐν Ἑλλάδι. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του ἐδημοσίευσε τὰς ἐξ Ἑλλάδος ἐντυπώσεις του ὑπὸ τὸν τίτλον «Πληροφορίαι περὶ τῆς Ἑλλάδος» («Mitteilungen über Griechenland» 1842). Συνέγραψεν ἀξιολογώτατα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἱστορία τῆς ἑλληνορρωμαϊκῆς φιλοσοφίας» (3 τόμ. 1835—1866), «Ἱστορία τῆς ἐξελίξεως τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας», «Xenophanis, Parmenidis et Melissi doctrina» (1813), «Περὶ τῆς ἐννοίας τῆς ἱστορίας τῆς φιλοσοφίας» (1815). «De perditis Aristotelis libris» (1823), προσέφερε πολυτίμους συμβουλὰς εἰς τὴν βερολίνειον κριτικὴν ἔκδοσιν τῶν ἔργων τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ ἐδημοσίευσε σπουδαίας παρατηρήσεις, ἀναφερομένας εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Χεγκστεμπέργκερ γενομένην μετάφρασιν τῶν «Μεταφυσικῶν» τοῦ Ἀριστοτέλους, ἅτινα τῷ 1823 ἐξέδωκε καὶ ὁ ἴδιος ἐν Βερολίνῳ μετὰ τῶν ἑλληνικῶν σχολίων. Α. Δ.

**Μπράντλεϋ** (Bradley), ***Ἰάκωβος.*** Διάσημος Ἄγγλος ἀστρονόμος (1692—1762). Ἐμυήθη εἰς τὴν ἀστρονομίαν ὑπὸ τοῦ θείου του James Pound, φίλου τοῦ Νεύτωνος καὶ ἐρασιτέχνου ἀστρονόμου, ὅστις κατέλιπεν ἀξιολόγους παρατηρήσεις τῶν ἀποστάσεων τῶν δορυφόρων ἀπὸ τῶν οἰκείων πλανητῶν, τῶν διαστάσεων τῶν δακτυλίων τοῦ Κρόνου καὶ τοῦ κατὰ τὸ 1680 ἐμφανισθέντος κομήτου. Κατὰ τὸ 1716 ὁ Μπράντλεϋ, τῇ συστάσει τοῦ θείου του γνωρισθεὶς μετὰ τοῦ ἀστρονόμου Χάλλεϋ, ἐξετέλεσεν ἀξιολόγους παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ Κάστορος καὶ τοῦ γ Παρθένου, τὰς ὁποίας βραδύτερον ἐχρησιμοποίησεν ὁ John Herschel πρὸς προσδιορισμὸν τῶν τροχιῶν τῶν ἐν λόγῳ διπλῶν ἀστέρων. Τῷ 1721 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀστρονομίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης ὡς διάδοχος τοῦ Keill. Κατὰ τὸ 1725 ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Molyneux ἐπεδόθη εἰς τὸν προσδιορισμὸν τῆς ἀκριβοῦς θέσεως τοῦ γ Δράκοντος, ὅστις κατὰ τὰς παρατηρήσεις τοῦ Picard παρουσίαζεν ἐτησίαν μετάθεσιν περίπου 39''. Τὴν 19ην Αὐγούστου 1727 ὁ Μπράντλεϋ ἐγκατέστησεν ἐν Wansted τεταρτοκύκλιον ἀκτῖνος 12 ποδῶν, κατασκευασθὲν ὑπὸ τοῦ Graham. Διὰ τοῦ ἰσχυροῦ τούτου ὀργάνου, τὸ ὁποῖον φυλάσσεται ἤδη ἐν τῷ ἀστεροσκοπείῳ τοῦ Γκρήνουϊτς, κατώρθωσεν οὐ μόνον νὰ ἐπιβεβαιώσῃ τὸ φαινόμενον, ἀλλὰ καὶ νὰ προσδιορίσῃ τὴν ἐτησίαν κίνησιν τοῦ περὶ οὗ ὁ λόγος ἀστέρος μετὰ μεγαλυτέρας ἀκριβείας. Εἰς τὸν Μπράντλεϋ ἐπεφυλάσσετο ἐπίσης ἡ ἐξήγησις τοῦ φαινομένου τούτου, ὁπερ ἔκτοτε εἶναι γνωστὸν ὡς «ἀποπλάνησις τοῦ φωτός».

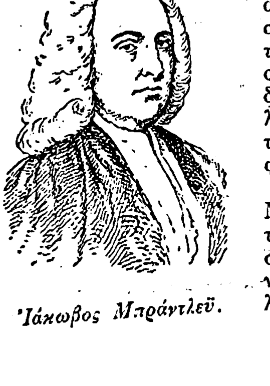
*Ἰάκωβος Μπράντλεϋ.*

Ἡ σπουδαία αὕτη ἀνακάλυψις, ἥτις ἀποτελεῖ ἀκαταμάχητον ἐπιβεβαίωσιν τοῦ ἡλιοκεντρικοῦ συστήματος τοῦ Ἀριστάρχου καὶ τῆς θεωρίας τοῦ Roemer περὶ τῆς ταχύτητος τοῦ φωτός, ἐξετέθη λεπτομερῶς ἐν ὑπομνήματι τοῦ Μπράντλεϋ ὑπὸ τὸν τίτλον «Account of a new discovered motion of the fixed stars» (Phil. Trans. 1727—1728). Ἀποθανόντος τοῦ Χάλλεϋ, ὁ Μπράντλεϋ διωρίσθη τῷ 1741 διευθυντὴς τοῦ ἀστεροσκοπείου τοῦ Γκρήνουϊτς. Μετὰ ἓξ περίπου ἔτη ἀνεκοίνωσε δευτέραν σπουδαίαν ἀνακάλυψίν του, ἀφορῶσαν τὴν κλόνησιν τοῦ γηΐνου ἄξονος. Ἐκ τῶν ἄλλων ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν τοῦ Μπράντλεϋ ἄξιαι ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι: οἱ πίνακες τῶν δορυφόρων τοῦ Διός, οἱ κατὰ τὸ 1749 δημοσιευθέντες πίνακες τῶν πλανητῶν, αἱ κατὰ τὸ 1751—1752 γενόμεναι ὑπ' αὐτοῦ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ La Caille ἐκ τοῦ ἀκρωτηρίου τῆς Καλῆς Ἐλπίδος παρατηρήσεις τῆς Σελήνης πρὸς προσδιορισμὸν τῆς παραλλάξεως αὐτῆς κτλ. Προσδιώρισεν ὡσαύτως τὸ γεωγραφικὸν πλάτος τοῦ ἀστεροσκοπείου τοῦ Γκρήνουϊτς εἰς 51° 28' 38'', 5, μετὰ δὲ τοῦ μαθητοῦ του Maskelyne εὗρεν ἐμπειρικὸν τύπον προσδιορισμοῦ τῆς διαθλάσεως ἀρκετὰ ἀκριβῆ μέχρι ζενιθίας ἀποστάσεως 45°.

Αἱ παρατηρήσεις τοῦ Μπράντλεϋ, ἀνερχόμεναι εἰς 60 χιλιάδας περίπου, ἐδημοσιεύθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του εἰς δύο τόμους (1798 καὶ 1805). Ἐξ αὐτῶν αἱ μὲν παρατηρήσεις τῆς Σελήνης ἐχρησιμοποιήθησαν ὑπὸ τοῦ Tobias Mayer εἰς τὴν σύνταξιν τῶν σεληνιακῶν του πινάκων, αἱ δ' ἀφορῶσαι τοὺς ἀπλανεῖς ὑπῆρξαν χρησιμώταται εἰς τὸν Bessel.

Ὁ Μπράντλεϋ ἐξετιμᾶτο μεγάλως ὑπὸ τῶν συγχρόνων του. Ὁ Νεύτων ἐθεώρει αὐτὸν ὡς τὸν «ἄριστον ἀστρονόμον ἐν Εὐρώπῃ», πᾶσαι δὲ αἱ ἐπιστημονικαὶ ἑταιρεῖαι καὶ ἀκαδημίαι τὸν κατέλεξαν μεταξὺ τῶν μελῶν των. Σ. Π.

**Μπραντλὶ** (Brandli). Ἑλβετὸς φιλέλλην ἐκ τῶν ταχθέντων ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ Μαυροκορδάτου εἰς τὴν Δυτικὴν Ἑλλάδα. Κατὰ τὴν καταστρεπτικὴν μάχην τοῦ Πέτα εἶχε δύο κανόνια καὶ δέκα κανονοβολιστάς, οἵτινες ἔπεσαν πάντες τὸν Ἰούλιον τοῦ 1822. Τ. Χ. Κ.

**Μπράντλυ** (Bradley), ***Ἰάκωβος*** βλ.λ. *Μπράντλεϋ.*

**Μπράντλω** (Bradlaugh), ***Κάρολος.*** Βρεττανὸς πολιτικὸς (1833—1891). Εἰς νεαρωτάτην ἡλικίαν ἀνεμείχθη εἰς τὴν κίνησιν πρὸς διάδοσιν τῆς θρησκείας καὶ ἐδίδασκε τὴν Βίβλον εἰς τὰ κυριακὰ σχολεῖα, βραδύτερον ὅμως ἐτάχθη ὑπὲρ τῆς ἐλευθέρας σκέψεως. Τῷ 1859 ἵδρυσε τὴν ἐπιθεώρησιν «National Reformer», ἐν τῷ ὁποίῳ ἐδημοσίευσεν ἐνδιαφέρουσαν πραγματείαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Καρπὸς τῆς φιλοσοφίας». Ἀσπασθεὶς τὴν θεωρίαν τοῦ Μάλθου, ὑπεδείκνυε τὰ μέτρα πρὸς περιστολὴν τῶν γεννήσεων, εἰς τὰς ὁποίας ἀπέδιδε τὴν ἀθλιότητα τοῦ λαοῦ. Τῷ 1880 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῆς περιφερείας Νόρθαμπτον παρὰ τῷ ἀγγλικῷ κοινοβουλίῳ, ἀρνηθεὶς ὅμως νὰ ὁμόσῃ τὸν κεκανονισμένον ὅρκον ἐξέπεσε τοῦ ἀξιώματός του τρὶς κατὰ συνέχειαν φοράς, μόνον δὲ τῷ 1885 κατώρθωσε νὰ γίνῃ δεκτός. Ὡς βουλευτὴς ὑπέβαλε πολλὰ νομοσχέδια, ἐμπνεόμενα ὑπὸ φιλελευθέρου πνεύματος. Συνέγραψε πολυάριθμα ἔργα, προπαγανδιστικά, κατὰ τὸ πλεῖστον, τὰ ὁποῖα περιέπλεξαν αὐτὸν εἰς δυσχερεῖς δικαστικοὺς ἀγῶνας. Χ. Δ.

**Μπραντὸμ** (Brantôme), ***Πέτρος ντὲ Μπουρντέϊγ,*** *ἀββᾶς τοῦ* —. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ χρονογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1540 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1614. Κατ' ἀρχὰς ἔζησεν εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Μαργαρίτας τοῦ Βαλουά, βασιλίσσης τῆς Ναβάρρας, τῆς ὁποίας ἡ μήτηρ του ἦτο κυρία ἐπὶ τῶν τιμῶν. Μετὰ τὸν θάνατον τῆς βασιλίσσης μετέβη εἰς Παρισίους διὰ νὰ σπουδάσῃ καὶ μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἐγένετο ἀββᾶς τοῦ Μπραντόμ. Τῷ 1557 μετέβη εἰς Ἰταλίαν, ὅπου ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατάρχου ντὲ Μπρισσάκ. Κατόπιν ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν καὶ τῷ 1564 μετέβη εἰς Ἱσπανίαν, μετασχὼν διαφόρων πολέμων. Ἐπανειλημμένως ἐπεχείρησε νὰ πολεμήσῃ ἐναντίον τῶν Τούρκων, ἀλλὰ πάντοτε ἔφθανε κατόπιν ἑορτῆς ἢ ἠμποδίζετο ὑπὸ ἄλλων. Κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς ζωῆς του ἔζησεν ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Καρόλου τοῦ Θ' καὶ Ἐρρίκου τοῦ Γ'. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων τὰ ὁποῖα κατέλιπεν, εἶναι: «Les vies des grands capitaines estrangers», «Les vies des grands capitains françois», «Discours sur les couronnels de l'infanterie de France», «Discours sur les duels», «Discours d'aucunes rodomontades et gentilles rencontres et paroles espaignolles», «Semens et juremens espagnols», «M. de la Noue a sçavoir à qui l'on est plus tenu, ou à sa patrie, à son roy ou à son bienfacteur», «Discours d'aucunes retraictes de guerre qu'ont faictes aucuns grands capitaines et comment elles valent bien autant quelquefois que les combats», «Recueil des dames» κλπ. Τὰ ἔργα ταῦτα ἐξεδόθησαν κατὰ πρῶτον ἐν Λουγδούνῳ τῷ 1665 καὶ 1666 εἰς 9 τόμους. Ἄλλαι ἐκδόσεις αὐτῶν ἐγένοντο: τῷ 17[illegible] ἐν Χάγῃ εἰς 14 τόμους, τῷ 1822 ἐν Παρισίοις εἰς 8 τόμους, τῷ 1864—1882 ἐν Παρισίοις εἰς 11 τόμους ὑπὸ τοῦ L. Lallane. Θ. Π.

*Πέτρος Μπραντόμ.*

**Μπράντον** (Brandon) *[Γεωγρ.].* Πόλις καὶ ποτάμιος λιμὴν τῆς Καναδικῆς ἐπαρχίας Μανιτόμπα. Εἶναι κόμβος 3 μεγάλων σιδηροδρομικῶν γραμμῶν καὶ κέντρον ἐμπορίου καὶ βιομηχανίας σιτηρῶν. Κάτ. 15.230. Χ. Λ.

**Μπράντον** (Brunton), *σὲρ Θωμᾶς Λόουντερ.* Σκῶτος ἰατρὸς (1844—1916). Ἠσχολήθη εἰδικῶς μὲ τὰ προβλήματα τῆς κυκλοφορίας τοῦ αἵματος, τὴν χρῆσιν τῆς δακτυλίτιδος καὶ τῶν λοιπῶν φαρμάκων τοῦ κυκλοφορικοῦ συστήματος. Ἔγραψεν: «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν νέαν θεραπευτικὴν» (1889), «Collected Papers on Circulation and Respiration» (1906), «Lectures on the Action of Medicines» (1897), «Collected Papers on Physical and Military Training (1898—1915) κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μπράντον** (Braddon), ***Μαρία-Ἐλισάβετ.*** Ἀγγλὶς μυθιστοριογράφος, γεννηθεῖσα τῷ 1837. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων της εἶναι: «Τὸ μυστικὸν τῆς λαίδης Ἄντλυ», «Aurore Floyd», «Ὁ θρίαμβος τῆς Ἐλεονώρας», «Ὁ ἐνοικιαστὴς τοῦ σὲρ Τζάππερ», «[illegible]νοι καὶ προσκυνηταί», «Μία ζωή, ἕνας ἔρως». Ἡ Μπράντον διεκρίθη καὶ ὡς συγγραφεὺς θεατρικῶν ἔργων. Α. Λ.

**Μπρὰ ντ' Ὂρ** (Bras d' Or=χρυσοῦς βραχίων) *[Γεωγρ.].* Βαθὺς καὶ ἀκανόνιστος κόλπος τῆς Καναδικῆς νήσου Κέηπ Μπρέτον. Ἔχει μῆκος 80 χλμ. καὶ πλάτος 32, συγκοινωνεῖ δὲ μετὰ τῆς θαλάσσης (κόλπος τοῦ Ἁγίου Πέτρου) διὰ μικρᾶς μόνον διώρυγος. Διαιρεῖται εἰς δύο τμήματα, καλούμενα *Μικρὸν* καὶ *Μέγα Μπρὰ ντ' Ὂρ,* καὶ εἶναι σπουδαῖον ἁλιευτικὸν πεδίον. Εἶναι ἐπίσης ἀξιόλογον τουριστικὸν κέντρον λόγῳ τῶν γραφικῶν τοπίων του. Χ. Λ.

**Μπρὰντς - *Μπούυς*** (Brandts - Buys). Οἰκογένεια Ὁλλανδῶν μουσικῶν, ὧν ὁ *Κορνήλιος - Ἀλέξανδρος* (1812—1890), ὑπῆρξε συνθέτης καὶ ὀργανοκρούστης εἰς Ντέβεντερ. Ἐκ τῶν υἱῶν του ὁ *Μάριος - Ἀδριανὸς* (γενν. 1840) διετέλεσεν ἐπίσης ὀργανοκρούστης, ὁ *Λουδοβῖκος - Φῆλιξ* (γενν. 18[illegible]) ὀργανοκρούστης καὶ συνθέτης, καὶ ὁ *Ἐρρῖκος* (18[illegible]—1905) ἔγραψε τὸ μελόδραμα «Albrecht Beiling» (1891) καὶ πλείστας ἀνδρικὰς χορῳδίας διὰ τὴν «Amstels Mannenkoor», ἣν διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1878. Γ. Ε.

**Μπρὰντφορντ** (Bradford) *[Γεωγρ.].* Βιομηχανικὴ πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Δ. Ρίντινγκ τῆς κομιτείας Ὑόρκης, κειμένη ἐντὸς γραφικῆς λοφώδους περιοχῆς 15 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Λῆντς καὶ 305 χλμ. πρὸς Β.ΒΔ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. (19[illegible]) 288.700. Ὡς βιομηχανικὸν κέντρον τὸ Μπράντφορντ φημίζεται διὰ τὰ μάλλινα νήματα καὶ ὑφάσματα, γνωστὰ ἐν τῇ παγκοσμίῳ ἀγορᾷ ὡς «[illegible]sted», τὰ ὁποῖα κατασκευάζονται ἐκ μαλλίου ἐρίου. Εἰς δευτερεύουσαν μοῖραν ἔρχονται τὰ ἄλλα ἐριοῦχα εἴδη, τὰ μεταξωτά, τὰ βαμβακερά, οἱ ἀπακᾶδες, τὰ βελοῦδα κτλ. ὑφάσματα. Ἡ Μπράντφορντ μνημονεύεται τὸ πρῶτον ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ 1066 ὡς κτῆμα διαφόρων ἀρχοντικῶν οἴκων, ἐν οἷς καὶ ὁ τῶν κομίτων τοῦ Λάγκαστερ. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον, ὑποστηρίζουσα τὸ κοινοβούλιον ὑπέστη δύο μεγάλας πολιορκίας (16[illegible] καὶ 1643). Τῷ 1897 ἐγένετο πόλις (city), ἀφοῦ ἀπὸ τοῦ μεταξὺ εἶχε σημαντικῶς ἀναπτυχθῆ ἀπὸ βιομηχανικῆς ἀπόψεως. Ἀποστέλλει 4 ἀντιπροσώπους εἰς τὸ κοινοβούλιον, ὁ δὲ δημοτικὸς ἄρχων αὐτῆς ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ 1907 τὸν τίτλον τοῦ λόρδου δημάρχου. Εἶναι ἤδη, ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ'

Digitized by Google

...ος, ὁπότε εἰσήχθη εἰς τὰς βιομηχανίας αὐτῆς ὁ ...ιτμός, ἓν ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων βιομηχανικῶν κέν...ρων τῆς Ἀγγλίας. Ἡ γενομένη τῷ 1826 ἀντικατά...στασις τῶν χειροκινήτων ἱστῶν (ἀργαλειῶν) δι' ἀλ...ων μηχανοκινήτων προεκάλεσε μεγάλην ἐξέγερσιν ...ῶν ἐργατῶν, ἡ ὁποία κατεπνίγη βιαίως. Σήμερον, ...ετὰ πάροδον ἑνὸς αἰῶνος, τὰ ἐργοστάσια τῶν «worsted» μόνον ἀνέρχονται εἰς 300, ἀπασχολοῦντα 10.000 ἐργατῶν. Ἡ βιομηχανία τῶν λοιπῶν ἐριού...ων ἀπασχολεῖ 8.000—9.000 ἐργάτας, γενικῶς δὲ τὸ ...έταρτον περίπου τοῦ πληθυσμοῦ τῆς πόλεως ἀπο...ελεῖται ἐξ ἐργατῶν. Εἰς τὰ περίχωρα ἐπίσης ...πάρχουν μεγάλα ὀρυχεῖα ἄνθρακος καὶ σιδηρο...μεταλλευμάτων, πολλὰ δὲ χυτήρια λειτουργοῦσιν ...ντὸς τῆς πόλεως.

Ἡ Μπράντφορντ παρουσιάζει τὴν στερεότυπον ...ψιν τῶν μεγάλων βιομηχανικῶν πόλεων τῆς Ἀγ...λίας μὲ τὸ πλῆθος τῶν καπνοδόχων αὐτῆς καὶ ...ὰ ὑπὸ τοῦ καπνοῦ μαυρισμένα κτήρια καὶ μνη...μεῖά της, πολλὰ τῶν ὁποίων εἶναι μεγάλης καλλι...τεχνικῆς ἀξίας. Σπουδαιότερα τούτων εἶναι τὸ δη...μαρχεῖον, κτισθὲν τῷ 1873, κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Παλάτσο Βέκκιο τῆς Φλωρεντίας καὶ φέρον ὑψη...λὸν τετράγωνον πύργον, ὅμοιον πρὸς τὸν τοῦ ἀγ...γλικοῦ κοινοβουλίου ἐν Λονδίνῳ, τὸ χρηματιστή...ριον (1867), τὸ μηχανικὸν ἰνστιτοῦτον, τὸ «Cartwright Memorial Hall» (1904), ἱδρυθὲν εἰς μνήμην τοῦ δόκτορος Καρτράϊτ, ἐφευρέτου τοῦ μηχανι...κοῦ ἱστοῦ. Ἐπίσης τὴν πόλιν κοσμοῦσι πολυάρι...θμοι ναοί, ἀνερχόμενοι εἰς ὑπερπεντήκοντα, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνεται ὁ καθεδρικὸς τοῦ Ἁγίου Πέτρου, χρονολογούμενος ἀπὸ τοῦ 1458. Τὸ Μπράντφορντ ἀπὸ τοῦ 1919 εἶναι ἕδρα ἐπισκόπου. Μεταξὺ τῶν ἐκπαιδευτικῶν καὶ πνευματικῶν ἱδρυ...μάτων διακρίνονται: ἡ ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος λει...τουργοῦσα σχολὴ κλασσικῶν σπουδῶν, ἡ ὁποία στεγάζεται ἐντὸς ὡραίου κτηρίου, κτισθέντος τῷ 1873, τὸ τεχνικὸν κολλέγιον (1882), τὸ ἀνεξάρτη...τον κολλέγιον τοῦ Ὑορκσάϊρ (1882), τὸ μηχανικὸν ἰνστιτοῦτον (1832), τὸ μουσεῖον καὶ ἡ πινακοθήκη. Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτα εἶναι τὰ πολυάρι...θμα θαλερὰ πάρκα τῆς πόλεως (Πὴλ Πάρκ, Λί...στερ πάρκ, Μπόλινγκ πάρκ κτλ.), καλύπτοντα ἔκ...τασιν 750 ἐκταρίων. Ἐπίσης τὸ συγκοινωνιακὸν δίκτυον, ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τῆς πόλεως, εἶναι ἀρτιώ...τατον, πολλὰ δὲ νοσοκομεῖα, ἄσυλα, ἱδρύματα ἀλ...ληλοβοηθείας κλπ. ἐξυπηρετοῦσι πληρέστατα τὰς ἀνάγ...κας τῆς πόλεως. Χ. Δ.

— **Μπράντφορντ** (Brantford) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ ποτάμιος λιμὴν τοῦ Καναδᾶ ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ὀν...τάριο. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Γκρὰν ρίβερ (Μεγάλου πο...ταμοῦ), παρὰ τὴν συνδέουσαν αὐτὸν μετὰ τῆς λί...μνης Ἐριὲ διώρυγα, 40 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Χά...μιλτον. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινω...νιῶν καὶ ἔχει μηχανουργεῖα, ἐργοστάσια ποδηλά...των, γεωργικῶν ἐργαλείων, πλίνθων, θερμαστρῶν κλπ. Εἰς τὸ ἐγγὺς κείμενον Τούτελα Χέϊτς ὁ Μπέλλ ἀνεκάλυψε τὸ τηλέφωνον. Κάτ. 23.132. Χ. Δ.

— **Μπράντφορντ** (Bradford) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῆς Βορειοαμερικανικῆς συμπολιτείας, ἐν τῇ κομητείᾳ Μὰκ Κένη τῆς πολιτείας Πενσυλβανίας. Εἶναι σπου...δαῖος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, 125 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Μπέφφαλο. Ἔχει διυλιστήρια, ...δελουργεῖα, ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων, λεβή...των, μοτοσυκλεττῶν, αὐτοκινήτων, πηγὰς πετρε...λαίων κλπ. Κάτ. 14.544. Χ. Δ.

**μπράντυ** (τὸ) (brandy). Ἀγγλικὸς ὅρος διὰ τὰ ἀποστάγματα ἐξ *ἀλκοολούχων* ποτῶν (βλ. λ.), ὡς τὸ κονιὰκ κλπ.

**Μπράουερ** (Brouwer), *Ἀδριανός*. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1606—1638). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Φράντς Χὰλς ἐν Χάαρλεμ καὶ ἀπὸ τοῦ 1631 ἐγκα...τεστάθη ἐν Ἀμβέρσῃ. Μολονότι πλουσιώτατα προι...κισθεὶς ὑπὸ τῆς φύσεως, δὲν ἠδυνήθη νὰ δημιουρ...γήσῃ εὐρὺ ἔργον, ἕνεκα τοῦ προώρου θανάτου του, προελθόντος ἐκ τοῦ ἐκφύλου καὶ ἀτάκτου αὐτοῦ βίου. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον εὐάριθμοι εἶναι οἱ κα...ταλειφθέντες ὑπὸ τοῦ Μπράουερ πίνακες. Ἡ τε...χνοτροπία τοῦ ζωγράφου τούτου φέρει βαθέα τὰ ἴχνη τῆς ἐπιδράσεως τοῦ Φράντς Χὰλς καὶ τῶν παλαιοτέρων Ὁλλανδῶν καὶ Φλαμανδῶν διδασκά...λων, μάλιστα δὲ τοῦ Μπρέχελ τοῦ πρεσβυτέρου. Τὰ κυ...ριώτερα γνωρίσματα τῆς τέχνης του, καταναλω...θείσης εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τοῦ λαϊκοῦ βίου, εἶναι ἡ εὐφυΐα τῆς συλλήψεως, ἡ δροσερό...της τῆς φαντασίας, ἡ ζωηρὰ ἀπόδοσις τῆς πρα...γματικότητος, ἡ μεγίστη δεξιοτεχνία εἰς τὸν σκιο...φωτισμόν, ἥτις ἠνάγκασε πολλοὺς κριτικοὺς νὰ τὸν παραβάλουν ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης πρὸς τὸν Ρέμπραντ. Ὁ Μπράουερ ἀπέδωκε κατὰ μνη...μειώδη τρόπον τὴν φυσικὴν καὶ ἠθικὴν ἀσχημίαν. Πίνακές του ἀπόκεινται εἰς τὰ Μουσεῖα τῆς Δρέσ...δης, τῆς Φραγκφούρτης, τοῦ Χάαρλεμ, τοῦ Ἄμ...στερνταμ, τῆς Ἀμβέρσης, εἰς τὸ Λοῦβρον καὶ τὴν Πινακοθήκην τοῦ Μονάχου. Μεταξὺ τούτων μνη...μονεύομεν τὸν «Πότην» (Μουσεῖον Φραγκφούρτης), τὸν «Καπνιστὴν» (Λοῦβρον), τοὺς «Χαρτοπαῖκτας» Μουσεῖον Ἀμβέρσης) καὶ τὴν «Ὁμάδα καπνιστῶν» Μουσεῖον Χάαρλεμ). Ι. Μ. Π.

**Μπράουν** (Braun), *Ἀλέξανδρος*. Γερμανὸς βο...τανικὸς (1805—1877). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς καὶ τῆς ζῳολογίας ἐν τῇ πολυτεχνικῇ σχολῇ τῆς Καρλσρούης ἀπὸ τοῦ 1835, βραδύτερον δὲ τῆς βοτανικῆς εἰς τὰ πανεπιστήμια τοῦ Φράϊ...μπουργκ (1846), τοῦ Γκιέσσεν (1850) καὶ τοῦ Βε...ρολίνου (1851), ὅπου τῷ ἀνετέθη καὶ ἡ διεύθυν...σις τοῦ βοτανικοῦ κήπου. Ἠσχολήθη ἰδίως εἰς τὴν κατάταξιν τῶν φυτῶν ἀπὸ μορφολογικῆς ἀπό...ψεως ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν ἱστορικὴν αὐτῶν ἐξέλιξιν καὶ ἔγραψε πλῆθυν ἔργων, ἐν οἷς: «Πα...ρατηρήσεις περὶ τῆς ἀνανεώσεως ἐν τῇ φύσει» (1851), «Νέα καὶ ὀλιγώτερον γνωστὰ γένη μονοκυττάρων ἀλ...γῶν» (1855), «Περὶ παρθενογονίας τῶν φυτῶν» (1857) κ.ἄ., ὡς καὶ παλαιὰς μονογραφίας ἐπὶ διαφόρων φυτικῶν καὶ γενῶν. —Ω.

— **Μπράουν** (Braun), *Γουλιέλμος*. Σουηδὸς ποιη...τὴς (1813—1860). Ὑπηρετῶν ὡς ἀξιωματικὸς πα...ρητήθη τοῦ στρατιωτικοῦ σταδίου, ἵνα ἀφιερωθῇ ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν λογοτεχνίαν, καὶ δὲν ἐβρά...δυνε ν' ἀναδειχθῇ μεταξὺ τῶν λαοφιλεστέρων ποιη...τῶν τῆς πατρίδος του. Τὰ ποιήματά του ἀποτε...λοῦν ἀντίδρασιν πρὸς τὸν ρωμαντισμὸν καὶ ὑπε...ραισθηματισμὸν τῆς ἐποχῆς του καὶ φέρουν λίαν ἐκδεδηλωμένην σατιρικὴν ἀπόχρωσιν. Τὰ «Ἅπαντα» αὐτοῦ (Samlade Skrifter) ἐξεδόθησαν εἰς ἓξ τό...μους τῷ 1876 καὶ τῷ 1888. Α. Δ.

— **Μπράουν** (Braun), *Γουσταῦος*. Αὐστριακὸς μαιευτήρ, ἀδελφὸς τοῦ *Καρόλου Μπράουν*, γεννη...θεὶς τῷ 1829. Τῷ 1862 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς μαιευτικῆς εἰς τὴν Ἰωσήφειον Ἀκαδημίαν τῆς Βιέννης. Εἶτα ἀνέλαβε τὴν καθηγεσίαν τῆς μαιευ...τικῆς εἰς τὴν σχολὴν μαιῶν τοῦ αὐτόθι πανεπι...στημίου. Ἔγραψεν ἐγχειρητικὴν γυναικολογίαν καὶ μαιευτικὴν (Βιέννη 1860), ὡς καὶ πλείστας ἄλλας συγγραφὰς καὶ πραγματείας τοῦ κλάδου του. Ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ φέρεται ἐν τῇ μαιευτικῇ ἄγ...κιστρον (ἄγκιστρον τοῦ Μπράουν) πρὸς ἀποκόλλη...σιν τοῦ ἐμβρύου. Ο. Ρ.

— **Μπράουν** (Braun), *Ἐρρῖκος*. Διαπρεπὴς Γερ...μανὸς χειρουργός, γεννηθεὶς τῷ 1847. Διετέλεσεν ἔκτακτος καθηγητὴς ἐν Ἀϊδελβέργῃ (1875), καθη...γητὴς τῆς χειρουργικῆς καὶ διευθυντὴς τῆς χει...ρουργικῆς κλινικῆς τῆς Ἰένας (1884—1888), κα...θηγητὴς ἐν Μαρβούργῃ (1888—1890), ἐν Καινιξ...βέργῃ (1890—1894), καὶ τέλος ἐν Γοτίγγῃ, παρα...μείνας μέχρι τοῦ τέλους του ἐν τῇ θέσει ταύτῃ. Ἔγραψε πλείστας ἐνδιαφερούσας χειρουργικὰς πραγματείας, ἰδιαιτέρως ἐνδιατρίψας εἰς τὴν τε...χνικὴν τῶν ραφῶν ἐπὶ τῶν διαφόρων ἐγχειρήσεων στομάχου καὶ ἐντέρων, ἐπὶ τῆς γαστρο-εντεροανα...στομώσεως, ὡς καὶ ἐπὶ τῆς ἐγχειρήσεως τῶν κα...λοήθων ἢ κακοήθων βρογχοκηλῶν. Ο. Ρ.

—**Μπράουν** (Braun), *Ἐρρῖκος*. Γερμανὸς κοινω...νιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1854. Τῷ 1883 ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς «Neue Zeit» (ἐπιστημονικοῦ περιοδικοῦ τοῦ σοσιαλδημοκρατικοῦ κόμματος). Τῷ 1888 ἵδρυσε τὸ «ἀρχεῖον κοινωνικῆς νομοθεσίας καὶ στατιστικῆς», διηύθυνεν ἐπί τινα χρόνον τὸ «Sozialpolitische Zentralblatt» καὶ ἐξέδωκε τὸ περιοδικὸν «Νέα Κοινωνία» (1905—1917) Τῷ 1911 ἵδρυσε νέον κοινωνιολογικὸν περιοδικὸν ὑπὸ τὸν τίτλον «Annalen für Sozialpolitik und Gesetzgebung». Τῷ 1913 ἐξελέγη μέλος τοῦ Ράϊχσταγ καὶ τῷ 1919 ἐγένετο ὑπουργὸς εἰς τὴν ὑπὸ τὸν Χὶρς σχηματι...σθεῖσαν τότε σοσιαλιστικὴν κυβέρνησιν. Α. Δ.

—**Μπράουν** (Braun), *Ἰούλιος*. Γερμανὸς ἀρχαιο...λόγος (1825—1869). Μετὰ τὸ πέρας τῶν πανεπι...στημιακῶν σπουδῶν αὐτοῦ ἐπεσκέφθη τὴν Ἰτα...λίαν, τὴν Αἴγυπτον, τὴν Νουβίαν, βραδύτερον δὲ τὴν Παλαιστίνην, τὴν Συρίαν, τὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα καὶ συνέλεξε κατὰ τὰς περιηγή...σεις του ταύτας ὑλικὸν πρὸς ἀπόδειξιν τῆς πεποι...θήσεώς του ὅτι μεταξὺ τῶν ἐν τῇ Δύσει καὶ τῇ Ἀνατολῇ λαῶν τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος ὑπάρ...χουν ἀναμφισβήτητοι συνδετικοὶ κρίκοι πολιτισμοῦ. Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας καὶ τῆς ἀρχαίας φιλολογίας εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Ἀϊ...δελβέργης (1853) καὶ τῆς Τυβίγγης (1860) καὶ εἰς τὴν σχολὴν Καλῶν τεχνῶν τοῦ Μονάχου (1865). Τὸ κυριώτερον ἔργον του εἶναι «Ἡ ἱστορία τῆς τέ...χνης κατὰ τὴν ἐξελικτικὴν πορείαν της διὰ μέσου πάν...των τῶν λαῶν τοῦ ἀρχαίου κόσμου» (2 τόμοι, 1856—1858, Βισμπάντεν). Ἐπίσης ἄξια μνείας εἶναι τά: «Μελέται καὶ σκιαγραφίαι ἐκ τῶν πεπολιτισμένων λαῶν τῆς ἀρχαιότητος» (Μαννχάϊμ 1854), «Φυσικὴ ἱστορία τοῦ θρύλου» (Μόναχον 1864), «Ἱστορικὰ τοπία» (Στουττγάρδη 1867). Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξε...δόθη ἡ βαρυσήμαντος συγγραφὴ αὐτοῦ «Μνημεῖα τοῦ μωαμεθανικοῦ κόσμου». Α. Δ.

— **Μπράουν** (Braun), *Κάρολος*. Γερμανὸς πολιτι...κὸς καὶ συγγραφεὺς (1822—1893). Ἀπὸ τοῦ 1848 μέχρι τοῦ 1866 ὑπῆρξε βουλευτὴς τοῦ Νασσάου, ὡς τοιοῦτος δὲ ὑπεστήριξε μὲ ὅλας τὰς δυνάμεις του τὴν ὑπὸ κοινὸν ἡγεμόνα ἕνωσιν τῶν γερμανι...κῶν κρατῶν. Μετὰ τὴν πραγματοποίησιν τῆς γερ...μανικῆς ἑνώσεως, ἐκλεγεὶς μέλος τοῦ Ράϊχσταγ ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἀρχηγῶν τοῦ φιλελευθέρου ἐθνι...κοῦ κόμματος. Τῷ 1884, προσχωρήσας εἰς τὸ κόμμα τῶν ἐλευθεροφρόνων, κατεπολέμησε τὰ περὶ με...ταρρυθμίσεων σχέδια τοῦ Βίσμαρκ, κηρυχθεὶς ὑπὲρ τοῦ ἐλευθέρου ἐμπορίου. Ὁ Μπράουν ἔγραψε σειρὰν ἔργων: «Κραυγὴ πόνου τῆς Φραγκφούρτης» (186‑), «Κοινοβουλευτικαὶ ἐπιστολαὶ» (1869), «Εἰκόνες ἐκ τῶν μικρῶν γερμανικῶν ἐπικρατειῶν» (5 τόμοι, Ἀννόβερον 1881), «Ἐναντίον τοῦ Γερβίνου» (Λειψία 1871). Α. Δ.

— **Μπράουν** (Braun), *Κάρολος, ἱππότης φὸν* —. Βιενναῖος μαιευτὴρ - γυναικολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1822. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς μαιευτικῆς κατ' ἀρ...χὰς ἐν Τρεντίνῳ καὶ εἶτα ἐν Βιέννῃ. Τῷ 1872 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἱππότου καὶ τῷ 1877 τὸν τοῦ αὐλικοῦ συμβούλου. Ἵδρυσεν ἐν Βιέννῃ τὴν πρώτην μαιευτικὴν καὶ γυναικολογικὴν κλινικὴν καὶ ἐδημοσίευσε σχετικὰς πρὸς τὸν κλάδον του ἐρ...γασίας, ὡς καὶ συγγράμματα μαιευτικῆς καὶ γυ...ναικολογίας. Ο. Ρ.

— **Μπράουν** (Braun), *Κάρολος-Φερδινάνδος*. Γερ...μανὸς φυσικὸς (1850—1918). Ἀπὸ τοῦ 1877 διε...τέλεσε καθηγητὴς εἰς Μαρβοῦργον, Στρασβοῦρ...γον, Καρλσρούην, Τυβίγγην καὶ ἐκ νέου εἰς Στρασ...βοῦργον. Ἔλαβε τῷ 1909, ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ *Μαρκόνι*, τὸ βραβεῖον Νόμπελ, διὰ τὰς σχετικὰς πρὸς τὴν ἀσύρματον τηλεγραφίαν ἐργασίας του. Ἐφεῦρε τὸν φέροντα τὸ ὄνομά του σωλῆνα κα...θοδικῶν ἀκτίνων διὰ τὴν ἐξερεύνησιν τῶν ἠλε...κτρικῶν κυμάνσεων. Τῷ 1898 εἰσήγαγεν εἰς τὴν ἀσύρματον τηλεγραφίαν τὰ κλειστὰ κυκλώματα κυμάνσεων, ἐπὶ τῶν ὁποίων στηρίζεται ὅλη ἡ τελευταία κολοσσιαία ἀνάπτυξις τῆς ἐν γένει ρα...διοφωνίας. Ἔγραψε βιβλίον περὶ ἀσυρμάτου τη...λεγραφίας (1901).

— **Μπράουν** (Braun), *Λίλυ*. Γερμανὶς συγγρα...φεὺς (1865—1916). Θυγάτηρ τοῦ στρατηγοῦ Χὰνς φὸν Κρέτσμαν, συνεζεύχθη εἰς πρῶτον γάμον τὸν καθηγητὴν τῆς φιλοσοφίας Γκιτζύσκι καὶ εἰς δεύ...τερον τὸν *Ἐρρῖκον Μπράουν* (βλ. ἀνωτ.). Ἔγραψε τὰ ἑξῆς ἔργα: «Εἰς τὴν σκιὰν τῶν Τιτάνων», ἀφή...γησιν τῆς ζωῆς τῆς μάμμης της Γέννυ φὸν Γκοῦ...στενστ, φυσικῆς θυγατρὸς τοῦ βασιλέως Ἱερωνύ...μου Βοναπάρτου, αὐτοβιογραφίαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀναμνήσεις μιᾶς σοσιαλιστρίας», «Αἱ ἐρωτικαὶ ἐπι...στολαὶ τῆς μαρκησίας» κλπ. Α. Δ.

**Μπράουν** (Brown), *Ἄννη*. Πρώτη σύζυγος τοῦ δουκὸς τοῦ Μπερρὺ (1783—1876). Τῷ 1805 συνε...ζεύχθη τὸν ἐν Λονδίνῳ διαμένοντα τότε Γάλλον πρίγκιπα, ὅστις ὅμως, διαζευχθεὶς αὐτὴν τῷ 1816 μετὰ τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων, ἦλθεν εἰς δεύτερον γάμον, κατ' ἀπαίτησιν τῆς οἰκογε...νείας του, μετὰ τῆς Μαρίας-Καρολίνας-Φερδινάν...δης-Λουΐζας τῆς Νεαπόλεως. Ἐκ τοῦ δουκὸς ἡ Ἄννυ Μπράουν ἀπέκτησεν ἕνα υἱόν, τὸν *Γεώργιον-Γκρανβὶλλ Μπράουν*, ὅστις ἐκπαιδευθεὶς ἐν Ἑλβε...τίᾳ ἐγκατεστάθη ἀπὸ τοῦ 1830 εἰς Γαλλίαν καὶ ἐγένετο Γάλλος ὑπήκοος, καὶ δύο θυγατέρας, τὰς *Καρολότταν-Μαρίαν-Αὐγουστίνην* καὶ *Λουΐζαν-Μαρίαν-Καρλότταν*, αἱ ὁποῖαι, ἀναγνωρισθεῖσαι νόμιμα τέκνα τοῦ δουκὸς ὑπὸ τοῦ πάπα Πίου Ζ', ὅστις ἠκύρωσε τὸν γάμον κατ' αἴτησιν τοῦ Λουδοβίκου ΙΗ' τῆς Γαλλίας ἐνυμφεύθησαν ἡ μὲν πρώτη τὸν κόμητα Φωσινὺ-Λουσέν, ἡ δὲ δευτέρα τὸν βαρῶ...νον Ἀθανάσιον ντὲ Σαρέτ. Χ. Δ.

— **Μπράουν** (Browne), *Γουλιέλμος*. Ἄγγλος ποιη...τὴς (1590—1645). Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ Λονδίνῳ τὴν νομικήν, ἀλλὰ βραδύτερον ἐπεδόθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Ἤρχισε τὴν ποιητικὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὸ «Britannia's Pastorals» καὶ τὸ «The shepherd's pipe». Ἐγέ...νετο οἰκοδιδάσκαλος τοῦ Καρόλου Τσαίρναβον καὶ ἔτυχεν ἐνθέρμου ὑποστηρίξεως παρὰ τοῦ κόμη...τος Πέμπροκ. Ἐκ τῶν μετέπειτα ποιητικῶν συν...θέσεών του ἀξιομνημόνευτος εἶναι ἡ «The inner-temple mask». Ὁ Μπράουν εἶναι ὁ μεγαλύτερος τῶν παλαιοτέρων Ἄγγλων βουκολικῶν. Τὰ «Ἅ...παντά» του (Works) ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Θῶμψον εἰς τρεῖς τόμους ἐν Λονδίνῳ τῷ 1773. Α. Δ.

— **Μπράουν** (Browne), *Ἐδουάρδος - Γκράνβιλ*. Ἄγγλος ἀνατολιστὴς (1862—1926). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ ἀνατολικὰς γλώσσας. Ἀπὸ τοῦ 1887 μέχρι τοῦ 1888 διέμεινεν εἰς τὴν Περσίαν χάριν σπουδῶν. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του διω...ρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς περσικῆς, βραδύ...τερον δὲ τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀραβικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Κανταβριγίας. Ὁ Μπράουν ἔγραψε σειρὰν ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται: «Τὰ διηγήματα ἑνὸς ταξιδιώτου» (1891), ἔργον ἐπανεκδο...θὲν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἓν ἔτος ἐν μέσῳ τῶν Περ...σῶν», «Ἱστορία τῆς περσικῆς λογοτεχνίας μέχρι τῆς ἐποχῆς τοῦ Φιρντούσῃ» (1902), «Ἡ περσικὴ ἐπανά...στασις τοῦ 1905—1909» (1910), «Ἡ ἰατρικὴ τῶν Ἀράβων» (1921). Α. Δ.

— **Μπράουν** (Brown), *Θωμᾶς*. Σκῶτος ψυχολό...γος καὶ φιλόσοφος (1778—1820). Ἀπὸ νεαρωτάτης ἡλικίας ἐφοίτησεν εἰς διάφορα σχολεῖα τοῦ Λονδί...νου καὶ ἀπέκτησε βαθεῖαν κλασσικὴν μόρφωσιν, ἐπέδειξε δὲ ἐνωρὶς φιλολογικὰς ἱκανότητας καὶ ποιητικὴν ἰδιοφυΐαν. Χαρακτῆρος εὐγενοῦς καὶ

Digitized by Google

πολυμαθέστατος, προσείλκυσε τὴν ἀγάπην ὅσων
τὸν ἐπλησίασαν. Εἰς ἡλικίαν 14 ἐτῶν ἠκολούθει
μαθήματα λογικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἐδιμ-
βούργου καὶ κατέπληξε τὸν Finlayson καὶ τὸν
Dugald Stuart μὲ τὰς βαθείας παρατηρήσεις καὶ
ἀντιρρήσεις του. Κατόπιν ἐσπούδασε νομικὰ καὶ
ἰατρικήν, ἡ δὲ διατριβή του «Περὶ τοῦ ὕπνου» εἶναι
ὀξυτάτη ἰατροψυχολογικὴ ἀνάλυσις. Ἐξήσκησεν
ἐπιτυχῶς τὴν ἰατρικήν, ἀλλ' ἐπεθύμει πάντοτε νὰ
ἐπιδοθῇ εἰς τὴν φιλοσοφίαν καί, μετὰ δύο ἀποτυ-
χίας διὰ τὴν καθηγεσίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ
Ἐδιμβούργου, ἐκλήθη τῷ 1808 νὰ ἀναπληρώσῃ
εἰς τὸ μάθημα τῆς ἠθικῆς φιλοσοφίας τὸν ἀσθε-
νοῦντα Stewart, τὸν ὁποῖον καὶ ἀντικατέστησεν
ὁριστικῶς ἀπὸ τοῦ 1811.

Ὁ Μπράουν ἔγινε γνωστότατος ὡς ἀντίπαλος
τῆς ἐπικρατούσης ἐν Σκωτίᾳ ψυχολογικῆς σχολῆς
τοῦ Reid, τὰ δὲ συγγράμματά του ἀνεγνώσθησαν
εὐρύτερον παντὸς ἄλλου μεταφυσικοῦ ἔργου. Σή-
μερον ὅμως ἡ θεωρία του θεωρεῖται μᾶλλον νε-
κρά, ἀκριβῶς διότι δὲν ἐτόλμησε νὰ προχωρήσῃ
μέχρι τοῦ τέρματος τῶν ἀρχῶν του καὶ διατηρεῖ
ὡρισμένας ἀντιλήψεις περὶ ἐμφύτων ἠθικῶν αἰσθη-
μάτων, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου προετοιμάζει τὴν αἰσθη-
σιοκρατικὴν ψυχολογίαν τῶν Mill καὶ Spenser. Αἱ
κυριώτεραι καινοτομίαι του εἶναι: Ἡ ἀντίληψις
ὅτι τὰ πνευματικὰ φαινόμενα πρέπει νὰ ἐρευνῶν-
ται μὲ τὰς ἀνεγνωρισμένας μεθόδους τῆς φυσικῆς
ἐπιστήμης, τὰ σύνθετα νὰ ἀναλύωνται καὶ αἱ ἀκο-
λουθίαι νὰ ἐξετάζωνται κατὰ τὸν νόμον τῆς αἰτιό-
τητος. Ὁ ἰσχυρισμὸς ὅτι τὰ πνευματικὰ φαινό-
μενα εἶναι καταστάσεις ἢ τρόποι τῆς ψυχῆς καὶ
ὄχι οὐσίαι. Ἡ ἀνάλυσις τοῦ αἰσθήματος τῆς ἀφῆς
εἰς τὴν καθαυτὸ ἀφὴν καὶ τὸ μυϊκὸν αἴσθημα. Ἡ
ἀνάλυσις τῆς ἐννοίας τοῦ χώρου εἰς τὰ διάφορα
ὀπτικὰ καὶ μυϊκὰ αἰσθήματα. Ἡ ἰδέα ὅτι ἡ ἀντί-
ληψις συνίσταται ἀφ' ἑνὸς εἰς τὸ αἴσθημα τῆς
ἀντιστάσεως τοῦ ἐξωτερικοῦ κόσμου καὶ ἀφ' ἑτέ-
ρου εἰς τὸ συμπέρασμα περὶ ὑπάρξεως πραγμάτων
τὰ ὁποῖα τὴν προκαλοῦν. Προετοιμάζει ἐπίσης
τὴν συνειρμικὴν θεωρίαν τῆς ψυχολογίας, ὀνομά-
ζων τὸν συνειρμὸν ὑποβολήν, καὶ διαιρεῖ τὰ ψυχικὰ
φαινόμενα ἀναλόγως τῆς ἀφορμῆς των εἰς ἐξωτε-
ρικὰ καὶ ἐσωτερικά, ταῦτα δὲ πάλιν εἰς νοητικὰ καὶ
συναισθηματικά. Τὴν βούλησιν ταυτίζει πρὸς τὴν
παθητικὴν ἐπιθυμίαν καὶ διὰ τοῦτο ἐν μέρει ἡ
ἠθική του θεωρία εἶναι τὸ μᾶλλον ἀδύνατον ση-
μεῖον τοῦ συστήματός του. Κρίνοντες ἐν τούτοις
τὸ ἔργον του, ὀφείλομεν νὰ ἔχωμεν ὑπ' ὄψει ἀφ' ἑνὸς
μὲν ὅτι τὸ ἀφῆκεν ἀτελείωτον, ἀφ' ἑτέρου δὲ τὰς
διαφόρους ἐπιδράσεις τὰς ὁποίας ὑπέστη εὑρισκό-
μενος εἰς τὸ μεταβατικὸν σημεῖον μεταξὺ τῆς πα-
λαιοτέρας σκωτικῆς ψυχολογίας καὶ τῆς νεωτέρας
πειραματικῆς τοιαύτης. Δὲν δυνάμεθα σήμερον νὰ
ἐκτιμήσωμεν τὴν πλήρη πρωτοτυπίας ὀξύνοιαν καὶ
πνευματικὴν παραγωγικότητα τοῦ Μπράουν, αἵτι-
νες ἐκφράζονται εἰς ὕφος ῥητορικὸν καὶ πλούσιον.
Ἐκ τῶν ἔργων του ἀξιολογώτερα εἶναι: «Παρα-
τηρήσεις ἐπὶ τῆς ζῳονομίας τοῦ Δαρβίνου» (τοῦ πα-
λαιοτέρου), μία ἐκ τῶν καλυτέρων καὶ συνοπτικω-
τέρων κριτικῶν τῆς θεωρίας ταύτης (1798). Ἄρ-
θρον του περὶ τοῦ Κὰντ εἰς τὸ δεύτερον φύλ-
λον τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τοῦ Ἐδιμβούργου», τῆς
ὁποίας ἦτο συνιδρυτής. Μολονότι δὲν γνωρίζει ἀρ-
κετὰ καὶ δὲν ἐκτιμᾷ δεόντως τὸ σύστημα τοῦ Κάντ,
ἔχει τὴν ἀξίαν ὅτι πρῶτος τὸ εἰσήγαγεν εἰς τὸ ἀγ-
γλικὸν κοινόν. «Ἔρευνα ἐπὶ τῆς αἰτιατῆς σχέσεως»,
ὅπου ὑπερασπίζει τὸν Hume ἐναντίον τῆς κατη-
γορίας ὅτι ἀποτέλεσμα τῆς θεωρίας του θὰ εἶναι ἡ
ἀθεΐα καὶ ἡ ἀνηθικότης. Ὁ Μπράουν συνέγραψε
τὸ ἔργον τοῦτο ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ τῶν ἀντιρρήσεων
τῆς συγκλήτου εἰς τὸν διορισμὸν τοῦ Leslie ὡς
καθηγητοῦ τῶν μαθηματικῶν, ὅστις ἐνέκρινε τὴν
θεωρίαν τοῦ Hume. «Φυσιολογία τοῦ ἀνθρωπίνου
πνεύματος», ἧς τὸ πρῶτον μόνον μέρος ἐξεδόθη
μετὰ τὸν θάνατόν του. Ἀποτελεῖ αὕτη μέρος τῶν
μαθημάτων του «Ἐπὶ τῆς φιλοσοφίας τοῦ ἀνθρωπί-
νου πνεύματος» (4 τόμ., 100 μαθήματα), ἅτινα εἶναι
τὸ μᾶλλον συστηματοποιημένον καὶ πληρέστερον
ἔργον του. Ἐν αὐτῷ διαιρεῖ τὴν φιλοσοφίαν εἰς:
φυσιολογίαν τοῦ πνεύματος (ψυχολογία), ἠθικήν,
πολιτικὴν καὶ φυσικὴν θεολογίαν. Τὴν λογικὴν
τὴν ἀντικαθιστᾷ διὰ μακροῦ προλόγου «Περὶ με-
θοδολογίας». Ἐδημσίευσεν ἐπίσης «Ποιητικὰ ἔργα»
(εἰς 2 τόμ.) καὶ μακρὸν ποίημα ὑπὸ τὸν τίτλον
«The paradise of coquettes» κ. ἄ. Ε. Λ.

—**Μπράουν** (Brown), ***Ἰωάννης.*** Σκῶτος ἰατρός,
ἱδρυτὴς φερωνύμου ἰατρικοῦ συστήματος (1735—
1788). Ἐξ ἀφανοῦς καὶ ἐνδεοῦς ὁρμώμενος οἰκο-
γενείας, εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς εἴς τι ὑφαντουρ-
γεῖον, ἤρχισε δὲ βραδύτερον σπουδάζων τὴν λατινι-
κὴν ἐν ἀρχῇ καὶ τὴν θεολογίαν βραδύτερον. Ἀσχο-
λούμενος κατόπιν εἰς μεταφράσεις ...τριβῶν τῶν
ὑποψηφίων διδακτόρων τῆς ἰατρικῆς ᾐσθάνθη ἐκ
τούτων ζωηρὰν ἀγάπην πρὸς τὴν ἐπιστήμην ταύ-
την, ἣν καὶ ἤρξατο σπουδάζων, ἀνηγορεύθη δὲ
εἰς ἡλικίαν 44 ἐτῶν διδάκτωρ ἐν Ἐδιμβούργῳ.
Μετὰ ἓν ἔτος εἶχε καταρτίσει ἴδιον σύστημα ἰα-
τρικῆς, ὅπερ ἀφ' ἑνὸς μὲν ἀνέπτυσσεν εἰς τὰ δη-
μόσια αὐτοῦ μαθήματα, ἀφ' ἑτέρου δὲ διετύπωσεν
εἰς εἰδικὸν σύγγραμμα, ἐκδοθὲν λατινιστὶ ὑπὸ τὸν
τίτλον «Elementa medicinae» (1870 Ἐδιμβοῦργον)
καὶ ἀργότερον ἀγγλιστὶ «The Elements of medi-
cine» (Λονδῖνον 1788). Ταυτοχρόνως ἤρχισε διε-
ξάγων πόλεμον ἐναντίον ὅλων τῶν καθηγητῶν
τῆς ἰατρικῆς, ἀντιστρατευόμενος κατὰ τῆς σχολῆς
των καὶ ἀντιτάσσων εἰς αὐτὴν τὸ σύστημά του. Ἡ
διηνεκὴς αὕτη διαμάχη ὡς καὶ αἱ παρεκτροπαὶ
τῆς ζωῆς του τὸν ὡδήγησαν εἰς μεγάλην ἀθλιό-
τητα, πρὸς βελτίωσιν δὲ τῆς δυσπραγίας του ἀπε-
φάσισε νὰ ἐγκαταλίπῃ τὸ Ἐδιμβοῦργον καὶ τῷ
1787 μετέβη εἰς Λονδῖνον. Εἰς τὴν πόλιν ταύτην
ἐδημοσίευσεν ἀνωνύμως λαϊκὴν ἐπιτομὴν τῶν θεω-
ριῶν του ὑπὸ τὸν τίτλον «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν
ἀρχαίων συστημάτων τῆς ἰατρικῆς». Μετὰ ἓν ἔτος
ἀπέθνησκεν ἐκ προσβολῆς ἀποπληξίας.

Ὁ Μπράουν, ἀνήκων εἰς τὴν σχολὴν τοῦ Brous-
sais, ἀλλὰ καὶ τοῦ Haller, οὗτινος αἱ θεωρίαι περὶ
ἐρεθισιμότητος καὶ αἰσθητικότητος ἐκυριάρχησαν κατὰ
τὸ β' ἥμισυ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ὑπὸ τρεῖς διαφόρους
παραλλαγάς, εἰσήγαγε τὴν περὶ «διεγέρσεως» θεω-
ρίαν αὐτοῦ, ἀποτελέσασαν ἴδιον σύστημα, τὸν
«μπραουνισμόν», διατυπωθὲν εἰς τὸ ἄνω μνημονευ-
θὲν σύγγραμμά του. Τὸ σύστημά του, διακρινόμε-
νον ἀφ' ἑνὸς μὲν τῶν θεωριῶν τῆς σχολῆς τῶν
«ψυχοδόξων» καὶ «ζωτικοδόξων», ἀφ' ἑτέρου δὲ τῶν
θεωριῶν τῶν «ἰατροχημικῶν» καὶ «ἰατρομηχανικῶν»
καὶ ἐμπερικλεῖον μεταξὺ πολλῶν σφαλερῶν δοξα-
σιῶν καὶ δόσιν τινὰ ἀληθείας, ἥτις τὸ προσήγγιζε
πρὸς τὰς μετέπειτα φυσιολογικὰς θεωρίας, ἤρχετο
τρόπον τινὰ νὰ ἐπιφέρῃ τὴν λύσιν τοῦ προβλήμα-
τος τῆς οὐσίας καὶ ὑποστάσεως τῆς ζωῆς, καὶ νὰ
δώσῃ πέρας εἰς τὰς ἀναβιωσάσας περὶ τούτου δια-
μάχας μεταξὺ τῶν ὀπαδῶν τῶν ἄνω μνημονευομέ-
νων διαφόρων θεωριῶν. Κατ' αὐτὸν οἱ ζῶντες
ὀργανισμοὶ δὲν διέφερον τῶν λοιπῶν ὀργανικῶν
σωμάτων ἢ ἐκ τῆς ἰδιότητος ἣν ἐκέκτηντο τοῦ νὰ
διεγείρωνται καὶ ἐρεθίζωνται. Οἱ πρὸς διέγερσιν δὲ
παράγοντες ἦσαν δύο κατηγοριῶν: α') ἐξωτερικοί,
περιεχόμενοι ἐντὸς κοιλοτήτων καὶ ἀγγείων (τρο-
φαί, ἀήρ, αἷμα, ἐκκρίσεις), καὶ β') λειτουργίαι τινὲς
αὐτοῦ τούτου τοῦ σώματος (μυϊκαὶ συστολαί, ἐγκε-
φαλικὴ ἐνέργεια προκαλοῦσα συγκινήσεις καὶ ἐντυ-
πώσεις, ἡ πρᾶξις τῆς σκέψεως, τὰ πάθη). Ἡ ζωὴ
καὶ ἡ ὕπαρξίς της ἦσαν τὸ προϊὸν τῶν δύο τού-
των παραγόντων, τοῦ ἐξωτερικοῦ ἢ ἐνεργητικοῦ
καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ ἢ παθητικοῦ. Οὕτω τὸ σύ-
στημά του διέκρινε μίαν γενικὴν ἰδιότητα ἑκάστου
ζῶντος ὀργανισμοῦ, τὴν «ἐρεθεσιμότητα», ἤτοι τὴν
ἱκανότητα τοῦ νὰ προκαλῆται ἐν αὐτῷ ἐνέργεια
δι' ἐξωτερικῶν ἐρεθισμῶν. Ἄλλαις λέξεσιν, ἡ ζωὴ
ὑφίστατο καὶ ἐξηρτᾶτο μόνον ἐξ ἐρεθισμῶν καὶ
διεγέρσεων, καὶ συνεπῶς βασικὸν σοιχεῖον τῆς πρὸς
τὸ ζῆν ἱκανότητος τῶν ὀργανικῶν πλασμάτων
ἐθεώρει οὗτος τὸν «ἐρεθισμόν», ὡς τὸν μόνον δυ-
νάμενον νὰ διεγείρῃ πρὸς τὴν ἐνέργειαν. Εἷς μέ-
σος βαθμὸς διεγέρσεως ἀπετέλει τὴν ὑγείαν. Ἡ
νόσος ἦν μείωσις ἢ αὔξησις τῆς διεγέρσεως. Ὁ
θάνατος ἀποτέλεσμα τελείας ἐλλείψεως ἢ ὑπερ-
μέτρου αὐξήσεως ταύτης. Τὰς ἐξ ὑπερβολικῆς ἢ
ἰσχυρᾶς διεγέρσεως προερχομένας νόσους ἀπεκάλει
«σθενικάς», τὰς δὲ ἐξ ἀσθενοῦς διεγέρσεως ἢ ἐλλεί-
ψεως ταύτης προερχομένας ἀπεκάλει «ἀσθενικάς».
Τὰς σθενικὰς νόσους προεκάλουν ὑψηλὴ θερμο-
κρασία, ἰσχυρὰ τροφή, τὰ οἰνοπνευματώδη, ὁ αἰθήρ,
τὸ ὄπιον, ὁ μόσχος, τὰ δηλητήρια, ἡ πληθώρα
αἵματος κλπ. Τὰς δὲ ἀσθενικάς, ἡ φυτικὴ τροφή,
ἡ ἔλλειψις σωματικῶν κινήσεων, ἡ αἱμορραγία,
διάρροια κλπ. Τὰς πλείστας τῶν νόσων ἐθεώρει
ὡς ἀσθενικάς, ἐν γένει δὲ ἡ διάγνωσις τῶν δύο
τούτων καταστάσεων ἐγίνετο διὰ τοῦ σφυγμοῦ,
τῆς θερμοκρασίας κλ. Κατὰ ταῦτα καὶ τὸ πρό-
βλημα τὸ θεραπευτικὸν διὰ τὰς νόσους συνωψί-
ζετο εἰς τὴν ἀκριβῆ ἐπίγνωσιν τῆς καταλλήλου
δι' ἑκάστην περίπτωσιν αὐξήσεως ἢ μειώσεως τῆς
διεγέρσεως. Τὸ σύστημά του ἐν Ἀγγλίᾳ δὲν ἔτυ-
χεν εὐμενοῦς ὑποδοχῆς· ἐν Ἰταλίᾳ ἔσχε τροπο-
ποιήσεις, προκαλέσαν ἀντίθετον ἀγῶνα (contresti-
mulo—contrestimulisme) διὰ τῶν Giovani, Rasori,
Glacomo καὶ Tomasini· τοὐναντίον δὲ ἐν Γερμα-
νίᾳ ὁ μπραουνισμὸς εὗρεν ἐνθουσιώδεις ὀπαδούς,
μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀναφέρομεν τὸν I. A. Rö-
schlaub, ὅστις καὶ διὰ νέων δεδομένων ὑπεστήριξε
τοῦτον. Ο. Ρ.

— **Μπράουν** (Brown), ***Ἰωάννης.*** Ἀμερικανὸς ἐπα-
ναστάτης (1800—1859). Κατήγετο ἐξ οἰκογενείας
πουριτανῶν, ἔζησε δὲ κατὰ τὴν νεότητά του βίον
ἔκλυτον. Ἀνδρωθεὶς ἐγένετο εἷς τῶν θερμοτέρων
ὀπαδῶν τῆς πρὸς ἐλευθέρωσιν τῶν δούλων κινή-
σεως. Τῷ 1854 ἐτέθη μετὰ τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἐπὶ
κεφαλὰς πολλῶν ὀπαδῶν τοῦ ἀπελευθερωτικοῦ
τῶν δούλων ἀγῶνος ἐν Καναδᾷ καὶ προσεπάθησε
διὰ τῶν ὅπλων νὰ πραγματοποιήσῃ τὰς ἐπιδιώξεις
του. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1859 κατέλαβεν, ἐπὶ κε-
φαλῆς ὁμάδος εὐαρίθμων ὀπαδῶν του, τὸν ναύστα-
θμον τοῦ Χάρπερς Φέρρυ ἐν Βιργινίᾳ, ἐλπίζων
ὅτι διὰ τοῦ τρόπου τούτου θὰ προεκάλει γενικὴν
ἐξέγερσιν τῶν δούλων. Οἱ δοῦλοι ὅμως δὲν ἐξη-
γέρθησαν, καὶ ὁ Μπράουν, εὑρεθεὶς μόνος, μετ' ἀ-
πεγνωσμένην ἀντίστασιν ἠναγκάσθη νὰ παραδοθῇ
εἰς τὸν πολιορκήσαντα τὸν ναύσταθμον Ροβέρτον
Λή. Κατὰ τὴν συμπλοκὴν δύο ἐκ τῶν υἱῶν αὐτοῦ
ἐφονεύθησαν, αὐτὸς δ' ὁ ἴδιος ἐτραυματίσθη σο-
βαρῶς. Κατηγορηθεὶς ἐπὶ προδοσίᾳ, κατεδικάσθη
εἰς τὸν δι' ἀγχόνης θάνατον καὶ ἐξετελέσθη τὴν
2 Δεκεμβρίου ἐν Τσάρλστάουν τῆς Βιργινίας. Ἡ
ἐξέγερσις τοῦ Μπράουν ἀποτελεῖ ἓν τῶν πρώτων
κρουσμάτων τοῦ ἐμφυλίου πολέμου τῆς Β. Ἀμε-
ρικῆς, ὁ δὲ μαρτυρικὸς θάνατός του ἐνεποίησε
βαθυτάτην ἐντύπωσιν εἰς τοὺς κατοίκους τῶν βο-
ρείων πολιτειῶν καὶ τοὺς Εὐρωπαίους. Α. Ι.

— **Μπράουν** (Brown), ***Κάρολος Μπρόκντεν*** (Bro-
ckden). Ἀμερικανὸς μυθιστοριογράφος (1771-
1810). Ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας ἐπεδόθη εἰς τὰ γράμ-
ματα. Τὸ πρῶτόν του ἔργον ἦτο τὸ μυθιστόρημα
«Κάρσολ». Κατόπιν ἔγραψε τὸν «Διάλογον τοῦ Ἀλ-
κουΐνου», πραγματείαν περὶ τῶν γυναικείων δικαιω-
μάτων καὶ τῆς ἐλευθερίας τῆς γυναικός. Ἄλλα
ἔργα του εἶναι: «Βῆλαντ» (1798), «Ἀρθοῦρος Μέ-
βυν» (1798—1800), ἔργον ἀξιόλογον, ἰδίως διὰ τὴν
περιγραφὴν τοῦ ἐπιδημικοῦ κιτρίνου πυρετοῦ ἐν
Φιλαδελφείᾳ, «Ἔγδαρ Χώντλεϋ» (1801), «Ὅρμον»
κ. ἄ. Ὁ Μπράουν τελεῖ κυρίως ὑπὸ τὴν ἐπίδρα-
σιν τῶν συγγραφέων Μαρίας Οὐόλλστονκραφτ καὶ
Γκόντουϊν καὶ ἰδίως τοῦ τελευταίου, παρ' οὗ ἐδα-
νείσθη τὸ λεπτὸν ὕφος καὶ τὴν τέχνην τῆς ἀνα-
πτύξεως τῆς πλοκῆς τοῦ ἔργου ἐξ ἁπλοῦ τινος
ψυχολογικοῦ δεδομένου. Γ. Ι. Β.

— **Μπράουν** (Browne), ***Κάρολος Φάρραρ*** (Far-
rar). Ἀμερικανὸς εὐθυμογράφος (1834—1867), γνω-
στὸς ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἀρτέμιος Οὐώρδ* (Arte-
mus Ward). Κατ' ἀρχὰς ὑπῆρξε τυπογράφος καὶ
δημοσιογράφος. Ὡς λογογράφος ἐνεφανίσθη τὸ
πρῶτον εἰς τὸ «Κλέβελαντ Πλαίιν Ντῶλαρ», ἐν ᾧ
ἐδημοσίευσε σειρὰν εὐθυμογραφικῶν ἐπιστολῶν,
ἀναφερομένων εἰς ὑποθετικὸν περιοδεῦον θηριο-
τροφεῖον. Αἱ ἐπιστολαὶ αὗται κατέστησαν τὸν
Μπράουν δημοτικώτατον παρὰ τῷ ἀναγνωστικῷ
κοινῷ, εἰς τρόπον ὥστε τῷ 1860 ἐκλήθη νὰ διευ-
θύνῃ τὸ σατιρικὸν φύλλον «Βένιτυ Φαῖαρ». Ἤρ-
χισεν εἶτα νὰ δίδῃ εὐθυμογραφικὰς διαλέξεις, εἰς
ἃς συνέρρεε πλῆθος ἀκροατῶν. Τῷ 1866 ἐπεσκέ-
φθη τὴν Ἀγγλίαν, ἔνθα ἐγένετο λαοφιλὴς διὰ τὰς
διαλέξεις του καὶ διὰ τὰς εἰς τὸ «Πὸντς» συνεργα-
σίας του. Εἰς ἰδιαίτερα τεύχη ἐδημοσιεύθησαν τὰ
ἑξῆς ἔργα του: «Τὸ βιβλίον τοῦ Ἀρτεμίου» (1862),
«Τὰ ταξίδια τοῦ Ἀρτεμίου» (1865), «Ὁ Ἀρτέμιος ἐν
Λονδίνῳ» (1867) κ. ἄ. Τὰ ἅπαντά του ἐδημοσιεύ-
θησαν τῷ 1870 ὑπὸ τοῦ E. P. Hingston ἐν Λονδίνῳ.
Γ. Ι. Β.

—**Μπράουν** (Brown), ***Ὁράτιος-Ροβέρτος.*** Ἄγγλος
ἱστορικὸς καὶ συγγραφεὺς (1854—1926). Ἐσπού-
δασεν ἐν Ἐδιμβούργῳ, ἀλλ' ἔζησε τὸ πλεῖστον τοῦ
βίου του ἐν Ἑνετίᾳ, τὴν ὁποίαν ζωηρῶς ἠγάπησε
καὶ τῆς ὁποίας τὴν ἱστορίαν καὶ τὴν τέχνην ἐμε-
λέτησε κατὰ βάθος. Ἔγραψε πολλοῦ ἐνδιαφέρον-
τος ἔργα, ἐν οἷς: «Ἡ ζωὴ εἰς τὴν βενετικὴν λιμν-
θάλασσαν» (1884), «Βενετικαὶ μελέται» (1887), «Ἡ
τυπογραφία ἐν Βενετίᾳ» (1891) κλπ. Ἐδημοσίευσεν
ἐπίσης συλλογὴν ποιημάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Drift»
καὶ ἐξέδωκεν ἕνα τόμον «Ἐπιστολῶν» (1923). Τὰ
ἔργα τοῦ Μπράουν ἐβραβεύθησαν διὰ χρυσοῦ με-
ταλλίου ὑπὸ τῆς Βρεττανικῆς Ἀκαδημίας. Α. Δ.

—**Μπράουν** (Brown), ***Ροβέρτος.*** Ἄγγλος κληρικός,
γεννηθεὶς τῷ 1550 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1630. Σπου-
δάσας θεολογίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Καντα-
βριγίας, ἤρξατο ἀπὸ τοῦ 1579 νὰ κηρύττῃ αὐτοῦ
εἰς κύκλον πιστῶν ἄνευ τῆς ἀδείας τοῦ ἐπισκόπου
ἀρνηθεὶς νὰ δεχθῇ τὴν προσφερθεῖσαν αὐτῷ ἐφη-
μερίαν. Φρονῶν ὅτι ὁ κλῆρος, ὡς ἐν τῇ ἀρχαίᾳ
Ἐκκλησίᾳ, πρέπει νὰ ἐκλέγηται ὑπὸ τῆς ἐκκλησια-
στικῆς κοινότητος, ἐκηρύχθη ἐναντίον τῶν ἐπισκό-
πων, ὡς διοριζομένων ὑπὸ τῆς πολιτικῆς ἀρχῆς,
ἀπὸ τῆς δικαιοδοσίας τῶν ὁποίων ἤθελεν ἀνεξάρ-
τητον τὸν κατώτερον κλῆρον. Κατ' αὐτὸν συμπί-
πτουσιν ἡ Ἐκκλησία καὶ ἡ ἐκκλησιαστικὴ κοινότης
ἥτις, ὑποκειμένη τῷ Χριστῷ καὶ τῷ θείῳ αὐτοῦ
λόγῳ, διατάσσει τὰ ἑαυτῆς αὐτοτελῶς, ἀποφασί-
ζουσα διὰ τῆς πλειονοψηφίας τῶν μελῶν της. Οὕ-
τως ἐσχηματίσθη περὶ αὐτὸν ἐκκλησιαστικὴ
κοινότης, ἀποτελουμένη ἐξ Ἄγγλων καὶ Ὀλλαν-
δῶν, ἀνεξάρτητος τῆς Ἐκκλησίας. Αἱ πολλαὶ δια-
ξεις αὐτοῦ καὶ τῶν ὀπαδῶν του (ἤδη ἐπὶ τῆς ἐπι-
θανατίου κλίνης του μεθ' ὑπερηφανίας ἀνέφερεν
ὅτι τριάκοντα τέσσαρας φορὰς ἐφυλακίσθη) ηὔ-
ξησαν τὴν φήμην αὐτοῦ καὶ τὸν ἀριθμὸν τῶν
ὀπαδῶν του. Διωχθεὶς τῷ 1581 ἐξ Ἀγγλίας ἦλθεν
εἰς Ὁλλανδίαν, ἔνθα ἵδρυσε νέαν κοινότητα. Ἐπειτα
ἐπανῆλθεν εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ἔνθα ἐξηκολούθει τὸν
προσηλυτισμόν. Ἀφορισθεὶς ἕνεκα τούτου ὑπὸ
τῆς Ἐκκλησίας, διετάχθη νὰ ἐγκαταλείψῃ τὴν Ἀγ-
γλίαν τῷ 1590. Τότε ὅμως ἔδειξε διαλλακτικὴν τά-
σιν πρὸς τὴν Ἐκκλησίαν, μέχρι μάλιστα τοιούτου
σημείου, ὥστε ἐδέχθη νὰ διορισθῇ ἐφημέριος.
Οὕτω ἐγκατέλειψε τοὺς ὀπαδούς του, οἵτινες ἐξέ-
λεξαν ὡς ἀρχηγὸν τὸν Ἑρρῖκον Barrow, ἐνῷ οἱ
ἐν Ὁλλανδίᾳ ἤρχισαν νὰ μεταναστεύωσιν εἰς τὴν
Ἀμερικήν. Κ. Ι. Δ.

—**Μπράουν** (Brown), ***Ροβέρτος.*** Περιφανὴς Ἄγ-
γλος ἰατρὸς καὶ βοτανικὸς (1773—1858). Τῷ 1801
ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς βρεττανικῆς κυβερνήσεως εἰς
τὴν Αὐστραλίαν, ὅπου ἐμελέτησε τὴν χλωρίδα τῆς

Digitized by Google

Κυανῶν Ὀρέων, τῆς Νέας Οὐαλλίας, τῆς Τασμανίας καὶ τῶν ἐν τῷ πορθμῷ τοῦ Μπὰς νήσων, ἐπιστρέψας δὲ εἰς τὴν πατρίδα του τῷ 1805 ἐκόμισε μεθ' ἑαυτοῦ συλλογήν, ἐκ 4.000 εἰδῶν ἀπαρτιζομένην. Διωρίσθη βιβλιοθηκάριος τῆς «Ἑταιρείας τοῦ Λινναίου» καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου καὶ ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ἔγραψε: «Podromus florae Novae Hollandiae» (1810), «Γενικαὶ παρατηρήσεις περὶ τῆς γεωγραφίας καὶ τοῦ βοτανικοῦ συστήματος τῶν νοτίων χωρῶν» (1814), «Supplementum primum florae Novae Hollandiae» κλπ. Τέλος περιέγραψε τὰ φυτὰ τὰ συλλεγέντα ἐν Ἰάβα ὑπὸ τοῦ Horsefied καὶ ἐν Ἀβησσυνίᾳ ὑπὸ τοῦ Salt, ὡς ἐπίσης καὶ τὰς συλλογὰς τῶν Oudney, Clapperton, τοῦ λοχαγοῦ Tuckey καὶ τὰς τῶν Ross Parry καὶ Richardson, ἐξερευνητῶν τῶν ἀρκτικῶν χωρῶν. Ὁ Humboldt τὸν ἀπεκάλει ἡγεμόνα τῶν βοτανικῶν. Τῷ 1832 περιέγραψε τὰς κινήσεις τῶν ὀργανικῶν καὶ ἀνοργάνων μορίων τῶν αἰωρουμένων ἐν τῷ ὕδατι (βλ. λ. *βραούνειος κίνησις*). —α.

*Ροβέρτος Μπράουν.*

— **Μπράουν** (Brown), ***Φὸρντ Μάντοξ.*** Ἄγγλος ζωγράφος (1821—1893). Ὑπό τινων ἱστορικῶν τῆς τέχνης τάσσεται εἰς τὴν προρραφαηλιτικὴν σχολήν, μολονότι οὐδόλως μετέσχεν ἐνεργῶς τῆς ὑπὸ ταύτης δημιουργηθείσης κινήσεως, τοῦτο δὲ διότι τὸ ἔργον του ἤσκησε σημαντικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῆς διαμορφώσεως τοῦ ταλάντου τοῦ Δάντου-Γαβριὴλ Ροσσέτι, ὅστις καὶ ὡς διδάσκαλόν του ἠθέλησε νὰ λάβῃ τὸν Μπράουν. Ὑπῆρξε καλλιτέχνης διανοητικοῦ τύπου, ἰδίᾳ εἰς ὅτι ἀφεώρα εἰς τὸν ἀνθρώπινον χαρακτῆρα. Ἡ θεμελιώδης ἰδιότης τῶν ἔργων του ἔγκειται ἐν τῇ αὐστηρᾷ ἀντιλήψει τοῦ θέματος, τοῦ δραματικοῦ αὐτοῦ χαρακτῆρος καὶ τῆς ἐντυπώσεως, ἣν τοῦτο δύναται νὰ παράσχῃ. Ὁ Μπράουν ἐγεννήθη εἰς τὸ Καλαὶ ἐκ γονέων Ἄγγλων, ἐμαθήτευσε δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ἐν Γάνδῃ ὑπὸ τὸν Van Hanselaer, εἶτα δὲ εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ βαρώνου Βάππερς ἐν τῇ καλλιτεχνικῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Ἀμβέρσης. Διήγαγε τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ, ὑπῆρξε δὲ ἀκαταπόνητος καὶ παραγωγικώτατος καλλιτέχνης. Καθὼς παρατηρεῖ ὁ Gabriel Mourey (D.-G. Rosseti et les Préraphaélites Anglais σελ. 79), «ὁ Μπράουν εἶχε ρωμαντικὴν ψυχήν, ἐλάτρευε τὸν ἡρωϊσμὸν καὶ ᾐσθάνετο τὴν ἀνάγκην τῆς ἀπολύτου ἀληθείας. Κατεῖχεν ἐπὶ πλέον τὴν αἴσθησιν τῆς ἀληθοῦς συγκινήσεως, τῆς χαρακτηριστικῆς κινήσεως καὶ χειρονομίας, ἡ ὁποία ζωντανεύει μίαν μορφήν, τῆς ἐκφράσεως, διὰ τῆς ὁποίας εἰσδύει τις ἕως τὴν ψυχήν της». Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Τσῶτσερ ἐν τῇ αὐλῇ Ἐδουάρδου τοῦ Γ'» (ἐμφανισθὲν ἐν τῇ διεθνεῖ ἐκθέσει τῶν Παρισίων τοῦ 1855 καὶ εὑρισκόμενον νῦν ἐν Αὐστραλίᾳ), «Τὸ μερίδιον τῆς Κορδηλίας» (Ἐθνικὴ πινακοθήκη τῆς βρεττανικῆς τέχνης, Λονδῖνον), «Ὁ Χριστὸς πλύνων τοὺς πόδας τοῦ Πέτρου» (αὐτόθι), «Ὁ Ρωμαῖος καὶ ἡ Ἰουλιέττα», «Ἡ σελήνη τοῦ μέλιτος τοῦ βασιλέως Ρενέ», «Ὁ Κρόμγουελλ ἐν Σαὶντ-Ἴβ», «Ὁ υἱὸς τῆς χήρας», «Ὁ θάνατος τοῦ σὲρ Tristram», «Τὸ ὄνειρον τοῦ Σαρδαναπάλου», αἱ τοιχογραφίαι τοῦ δημαρχείου τοῦ Μάντσεστερ, ἐν αἷς ὁ Μπράουν ἐξεικόνισε τὸν βίον τῆς πόλεως ταύτης ἀπὸ τῆς ἱδρύσεώς της ὑπὸ τῶν Ρωμαίων μέχρι τῶν νεωτάτων χρόνων, «Τὸ τέλος τῆς Ἀγγλίας» (μουσεῖον Βιρμιγχάμης), ἔργον τοῦ ἔτους 1855, καὶ «Ἡ ἐργασία», ἐκτελεσθεῖσα τῷ 1857 καὶ ἀποκειμένη νῦν εἰς τὸ Μουσεῖον τοῦ Μάντσεστερ. Τὰ δύο ταῦτα τελευταῖα ἔργα θεωροῦνται ὡς αἱ ἀριστουργηματικώτεραι δημιουργίαι τοῦ Μπράουν καὶ τάσσονται μεταξὺ τῶν καλλίστων προϊόντων τῆς ἀγγλικῆς ζωγραφικῆς. Πλὴν πάντων τούτων ὁ Μπράουν ἐξετέλεσεν ἀπειροπληθῆ σχεδιάσματα διὰ διακοσμητικὰς τοιχογραφίας, δι' ὑαλογραφίας, διὰ διακοσμήσεις ἐπίπλων καὶ δι' εἰκονογράφησιν βιβλίων. Ι. Μ. Π.

**Μπράουνιγκ** (Browning), ***Ἐλισάβετ.*** Περιφανὴς Ἀγγλὶς ποιήτρια καὶ φιλόλογος (1805—1861). Ἦτο θυγάτηρ τοῦ πλουσίου γαιοκτήμονος Μπάρρετ, ἐγκατεστημένου εἰς τὰς Δυτικὰς Ἰνδίας, ὅπου καὶ ἐγεννήθη, ἔτυχε δὲ ἀρτιωτάτης κλασσικῆς μορφώσεως. Τὸ πρῶτον ἔργον αὐτῆς εἶναι ἡ ἐκ τοῦ ἑλληνικοῦ πρωτοτύπου μετάφρασις τοῦ «Προμηθέως δεσμώτου» τοῦ Αἰσχύλου, ἥτις ἀπεκάλυψεν εὐθὺς ἀμέσως τὴν σοβαρὰν φιλολογικὴν κατάρτισίν της καὶ τὴν ποιητικὴν ἰδιοφυΐαν της. Ἠκολούθησαν τά: «Μυθιστόρημα τῆς Μαργαρίτας» (1836), «Σεραφεὶμ καὶ ἄλλα ποιήματα» (1838), διακρινόμενα διὰ τὴν μεγάλην των πρωτοτυπίαν. Τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1845 ἐλάμβανε τὴν πρώτην ἐρωτικὴν ἐπιστολὴν παρὰ τοῦ ποιητοῦ Ροβέρτου Μπράουνιγκ, τὸν ὁποῖον μετὰ ἓν ἔτος συνεζεύχθη παρὰ τὴν θέλησιν τοῦ πατρός της, ὅστις οὐδέποτε συνεχώρησε τὸν γάμον τοῦτον εἰς τὴν θυγατέρα του. Ἡ Ἐλισάβετ μετέβη μετὰ τοῦ συζύγου της εἰς Παρισίους, Ἀβινιὸν καὶ Πίζαν. Ὅταν εὑρίσκοντο εἰς τὴν τελευταίαν ταύτην πόλιν, ἔδειξεν εἰς τὸν σύζυγον αὐτῆς τὰ σονέττα, ἅτινα εἶχε συντάξει κατὰ τὸν χρόνον τῆς μνηστείας της. Οὗτος εὗρεν αὐτὰ ἐφάμιλλα πρὸς τὰ τοῦ Σαίξπηρ καὶ τὰ ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Πορτογαλικὰ σονέττα». Τῷ 1848 τὸ ζεῦγος Μπράουνιγκ ἐγκατεστάθη εἰς τὴν Φλωρεντίαν, ὅπου ἡ Ἐλισάβετ ἔλαβε μέρος ἐνεργὸν εἰς τὴν ἰταλικὴν ὑπόθεσιν, δημοσιεύσασα τὸ «Casa Guidi wiudows», θερμοτάτην ἐπίκλησιν διὰ τὴν ἐθνικὴν ἀποκατάστασιν τῶν φίλων της Ἰταλῶν. Τὸ ποίημα τοῦτο διακρίνεται διὰ τὴν ἐνθουσιώδη ρητορείαν του περισσότερον παρὰ διὰ τὸ βάθος τῶν ἰδεῶν. Βραδύτερον ἐξέδωκε τὸ «Cry of Children» (=Ἡ κραυγὴ τῶν παιδιῶν), συγκινητικὸν ποίημα, ἐν ᾧ περιγράφεται ἡ δυστυχία καὶ ἡ ἐγκατάλειψις τῶν τέκνων τῶν ἐργατῶν διὰ τῶν μελανωτέρων χρωμάτων. Ἐν Ρώμῃ ἐδημοσιεύθη τὸ ἀριστούργημά της «Aurora Leigh», φιλοσοφικὸν ποίημα, περιγράφον τὴν ὀδύνην καὶ τὴν πικρίαν εὐγενοῦς διανοουμένης γυναικός, ἥτις διεξάγει ἀπεγνωσμένον ἀγῶνα ἐναντίον τῶν κατὰ συνθήκην ψευδῶν καὶ τῶν διαφόρων συμβατικῶν κοινωνικῶν θεσμῶν. Ἡ Μπράουνιγκ ἀπέθανεν ἐν Φλωρεντίᾳ ἐκ φυματιάσεως. Ἐκ τῶν καταλοίπων αὐτῆς ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1862 «Τὰ τελευταῖα ποιήματα» (Last poesms), τῷ δὲ 1862 τὸ ἔργον αὐτῆς «Greek Christian poets and the English Poets» (=οἱ Ἕλληνες Χριστιανοὶ ποιηταὶ καὶ οἱ Ἄγγλοι ποιηταί). Τὰς πρὸς τὸν Ρ. Χ. Χὸρν ἐπιστολάς της ἐξέδωκεν ὁ Μάγερ τῷ 1876, ἡ δὲ μετὰ τοῦ Ροβέρτου Μπράουνιγκ αἰσθηματικὴ ἀλληλογραφία της τῶν ἐτῶν 1845—1846 ἐδημοσιεύθη τῷ 1899 ἐν Λονδίνῳ.

*Ἐλισάβετ Μπράουνιγκ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Bayne*, «Two great English women» (Λονδῖνον 1881). — *Ingram*, Elizabeth Barrett Browning (αὐτόθι 1888). Α. Δ.

— **Μπράουνιγκ** (Bowning), ***Ροβέρτος.*** Ἄγγλος ποιητὴς (1812—1889). Ἐγεννήθη ἐν Κάμπερουελ παρὰ τὸ Λονδῖνον, ὅπου διῆλθε τὰς ἐγκυκλίους σπουδὰς αὐτοῦ. Εἰς ἡλικίαν εἴκοσι ἐτῶν μετέβη εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἀφιερωθεὶς ἐκεῖ εἰς τὴν μελέτην τῆς ἱστορίας, τῶν ἠθῶν καὶ τῶν ἐθίμων τῆς χώρας ταύτης. Ὡς ποιητὴς ἤρχισε τὴν σταδιοδρομίαν του μὲ τὸ ποίημα «Παυλίνα». Τῷ 1836 ἐξέδωκε τὸ δρᾶμα «Παράκελσος», διὰ τοῦ ὁποίου ἠθέλησε ν' ἀποκαταστήσῃ τὴν φήμην τοῦ ὡς ἀπατεῶνος καὶ ἀγύρτου θεωρουμένου φιλοσόφου τούτου. Ἐν αὐτῷ ὁ Μπράουνιγκ δεικνύεται μεγαλοφυὴς συγγραφεύς· τὸ ἔργον ἐν τούτοις, παρὰ τὴν ἀναμφισβήτητον ποιητικήν του, ἐθεωρήθη βαρὺ καὶ δὲν ἤρεσε. Περισσοτέραν ἐπιτυχίαν ἔσχε τὸ φαντασιῶδες, ἀλλὰ πλῆρες εὐστροφίας καὶ χάριτος δραματικόν του ποίημα «Pippa passes». Τῷ 1837 ἔγραψε τὴν ἱστορικὴν τραγῳδίαν «Στράφορντ», ἥτις ἀνεβιβάσθη ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ θεάτρου τοῦ Λονδίνου, ἀλλὰ μετ' ἐπιτυχίας παροδικῆς, μετέπειτα δὲ τὰ δράματα «A blot in the scutcheon» (1843), καὶ «Σορντέλλο». Μετὰ μακρὰν διακοπὴν ἐδημοσίευσε τῷ 1846 συλλογὴν ποιητικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Bells and pomegranates», ἐν ᾗ δεικνύεται σημαντικὴ ἐπὶ τὰ βελτίω μεταβολὴ τοῦ προγενεστέρου ὕφους του καὶ μεγάλη πρὸς τὸν πραγματισμὸν ροπή. Ἴσως εἰς τὴν μεταβολὴν ταύτην συνέτεινεν ἡ ἐπίδρασις τῆς ποιητρίας συζύγου του Ἐλισάβετ καὶ ἡ ἀμέσως μετὰ τὸν γάμον του ἐγκατάστασις αὐτοῦ ἐν Φλωρεντίᾳ. Τῷ 1850 ἔγραψε τὸ «Christmas-eve and Easter-day», θρησκευτικο-φιλοσοφικὸν ποίημα, πλῆρες καινοτρόπων ἰδεῶν καὶ ποιητικῶν εἰκόνων, αἵτινες καταπροδίδουν τὴν τάσιν τοῦ ποιητοῦ πρὸς τὸ φαντασιῶδες καὶ τὸ ἀλλόκοτον. Τῷ 1855 ἐξέδωκε τὸ «Meu and Women», ποιητικὸν ἀπάνθισμα, συνταχθὲν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐν Ἰταλίᾳ.

*Ροβέρτος Μπράουνινγκ.*

Μετὰ τὸν θάνατον τῆς συζύγου του, ἐπιστρέψας εἰς τὸ Λονδῖνον, ἐσυνέχισε τὴν λογοτεχνικήν του σταδιοδρομίαν, δημοσιεύσας τὸ «Dramatis personae» καὶ τὸ «The soul's errand», βραδύτερον δὲ τὸ «The ring and the book», ὅπερ θεωρεῖται τὸ κυριώτερον τῶν ποιητικῶν ἔργων του καὶ μία τῶν ὑπεροχωτέρων ποιητικῶν συνθέσεων τῆς ἀγγλικῆς λογοτεχνίας. Τὰ μεταγενέστερα ἔργα του εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ σχοινοτενῆ ἀφηγηματικὰ ποιήματα: «Ralaustion's adventure» (1871), «Prince Hohenstiel-Schwangau, saviour of society», ψυχολογικὸν ποίημα ἀπευθυνόμενον ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος Γ', τοῦ πάπα καὶ τοῦ κλήρου, «Fifine and the fair», «The red cotton nightteap-country, or Turf and towers», «Aristophanes' apology and the last adventure of Balaustion» καὶ «Panchiarotto». Εἰς τὰ ἔργα ταῦτα ἡ ἄλλως βαθεῖα φιλοσοφία τοῦ Μπράουνιγκ ἐκφυλίζεται εἰς μαύρην ἀπαισιοδοξίαν ἐν σχέσει πρὸς τὴν ἠθικὴν ὑπόστασιν τῆς ἀνθρωπότητος. Πρὸς τούτοις ἔγραψε: «The Inn-album», «Dramatic idyls», «Ferishtahls' faucies» κλπ. Τῷ 1877 ἐδημοσίευσε τὴν μετάφρασιν αὐτοῦ τοῦ «Ἀγαμέμνονος» τοῦ Αἰσχύλου. Τῷ 1881 ἱδρύθη ἡ «Browning Society» (σύλλογος Μπράουνιγκ) ὑπὸ τοῦ Φούρνιβαλλ, ἥτις ἐσκόπει τὴν ἑρμηνείαν καὶ διάδοσιν τῶν ἔργων τοῦ ποιητοῦ. Α. Δ.

— **Μπράουνιγκ** (Browning), ***πιστόλιον.*** Πιστόλιον, αὐτομάτου λειτουργίας, κατασκευαζόμενον ἐν τῷ Ἐθνικῷ Ὁπλουργείῳ πολεμικῶν ὅπλων (Fabrique Nationale d'armes de guerre) ἐν Βελγίῳ, εἰς δύο ὑποδείγματα, τῶν 7,65 καὶ 9.00 χιλ. Χαρακτηριστικὸν τῶν πιστολίων τούτων εἶναι τὸ λίαν πεπλατυσμένον σχῆμα (πάχος τοῦ συνόλου 22 χιλ., μέγιστον εἰς τὴν λαβὴν 31 χιλ.), ἄνευ οὐδεμιᾶς προεξοχῆς κατ' ἀμφοτέρας τὰς παρειάς. Ἡ λειτουργία τοῦ αὐτομάτου μηχανισμοῦ ἀναγεμίσεως ἐνεργεῖται διὰ τῆς κατὰ τὴν βολὴν ὀπισθοδρομήσεως τοῦ συνόλου (ἀποτελοῦντος ἓν τεμάχιον), τῆς θήκης τοῦ τε κλείστρου καὶ τοῦ ἀναπαραγωγοῦ ἐλατηρίου, μετὰ τοῦ περιβλήματος τῆς κάννης· ἕνεκα τῆς μεγάλης μάζης τοῦ ὀπισθοδρομοῦντος τούτου μέρους, τὸ ἄνοιγμα τοῦ κλείστρου ἐπιβραδύνεται, ἐπιτυγχανομένης οὕτω καλῆς χρησιμοποιήσεως τῶν ἀερίων τοῦ γεμίσματος. Ἡ ἀποθήκη τῶν φυσιγγίων, δι' ἑπτὰ τοιαῦτα, εἶναι διατεταγμένη ἐντὸς τῆς λαβῆς· ἡ σφῦρα εἶναι ἀφανής, εὑρισκομένη ἐντὸς τῆς θήκης τοῦ κλείστρου· ἐναντίον ἀπροόπτου λειτουργίας τῆς σφύρας, ἐκτὸς τῆς συνήθους ἀσφαλείας ὑπάρχει ἡ ἐπὶ τῆς ὀπισθίας ἐπιφανείας τῆς λαβῆς αὐτόματος ἀσφάλεια. Κ. ΔΙΓΕΝΗΣ

*Αὐτογεμὲς πιστόλιον Μπράουνιγκ τῶν 9 χιλ.*
[Α=μοχλὸς συνήθους ἀσφαλείας· Β=μοχλὸς αὐτομάτου ἀσφαλείας.]

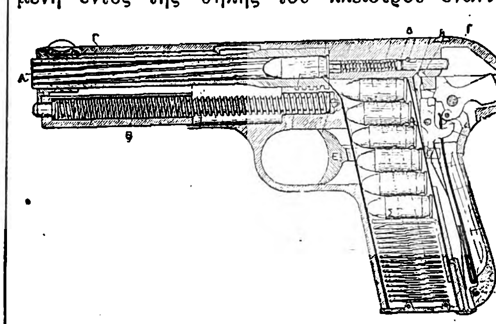

*Τομὴ πιστολίου Μπράουνιγκ τῶν 9 χιλ.*
[Α=κάννη Β=ἀναπαραγωγὸν ἐλατήριον· Γ.Γ=περίβλημα κάννης καὶ θήκη κλείστρου· Δ=ἐπικρουστήρ· Ε=σκανδάλη· ΣΤ=θήκη φυσιγγίων· Ζ=ἄξων προσαρμογῆς αὐτομάτου ἀσφαλείας.]

**Μπράουνσβιλλ** (Brownsville) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Κάμερον, ἐν τῇ πολιτείᾳ Τεξάς, κειμένη ἐπὶ τοῦ Ρίο Γκράντε, κατέναντι τῆς μεξικανικῆς πόλεως Ματαμόρος. Εἶναι κόμβος 3 σιδηροδρομικῶν γραμμῶν, ἔχει σταθμὸν ἀσυρμάτου καὶ εἶναι ἐμπορικὸν κέντρον πλουσίας γεωργικῆς περιφερείας, ἐξάγουσα κυρίως ὄρυζαν, ζάχαριν κλπ. Κάτ. 10.517, ἐξ ὧν πολλοὶ Μεξικανοί. Χ. Δ.

**Μπράουνσμπεργκ** (Braunsberg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Πρωσσίᾳ.



Digitized by Google

Κάτ. 13.000. Ἔχει κρατικὴν καθολικὴν Ἀκαδημίαν, ἱδρυθεῖσαν τῷ 1568, μετὰ θεολογικῆς καὶ φιλοσοφικῆς σχολῆς καὶ βιβλιοθήκης ἐξ 60.000 τόμων, βοτανικὸν κῆπον κλπ. Γ. Θ. Κ.

**Μπράουνχιλλς** (Brownhills) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Στάφφορντ, κειμένη ἐπὶ τῆς διώρυγος τοῦ Ἔσσινγκτον, 10 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Λάϊτσφηλντ. Εἶναι κέντρον πλουσίας γαιανθρακοφόρου περιοχῆς. Κάτ. (1921) 18.248. Χ. Δ.

**Μπρὰρ** (Brard), ***Κυπριανὸς-Πρόσπερος***. Γάλλος ὀρυκτολόγος (1786—1838). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν σχολὴν μεταλλειολόγων καὶ διετέλεσε κατ' ἀρχὰς διευθυντὴς τῶν ὀρυχείων τοῦ Σερβὰζ ἐν Σαβοΐᾳ, εἶτα δὲ διευθυντὴς καὶ ἐργολάβος τῶν ἀνθρακωρυχείων τοῦ Λαρντέν. Κατὰ τὰ μακρὰ ταξίδια, τὰ ὁποῖα ἐπεχείρησε, κατήρτισε πλουσίαν συλλογὴν πολυτίμων μεταλλευμάτων, ἅτινα φυλάσσονται εἰς τὸ ἐν Παρισίοις μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἐγχειρίδιον τοῦ περιηγητοῦ μεταλλειολόγου καὶ γεωλόγου» (1083), «Πραγματεία περὶ πολυτίμων λίθων, πορφυριτῶν καὶ γρανιτῶν» (1808), «Ἱστορία τῶν χερσαίων καὶ ποταμίων ὀστράκων, τὰ ὁποῖα ζῶσιν ἐν τῇ περιοχῇ τῶν Παρισίων» (1815), «Ἡ ὀρυκτολογία ἐφαρμοζομένη εἰς τὰς τέχνας» (1821), «Λαϊκὴ ὀρυκτολογία» (1826) καὶ «Ὑπόμνημα περὶ νέου τινὸς τρόπου, καθιστῶντος δυνατὴν τὴν ἀναγνώρισιν τῶν ὑπὸ τοῦ παγετοῦ προσβαλλομένων δομικῶν λίθων» (1821). Εἰς τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔργον, τὸ ὁποῖον μεγάλως ἐκτιμᾶται, ὑποδεικνύει τρόπον ἀσφαλοῦς προστασίας ἀπὸ τῆς ἐκ τοῦ παγετοῦ καταστροφῆς τῶν δομικῶν λίθων δι' ἐμβαπτίσεως αὐτῶν ἐντὸς πυκνῆς διαλύσεως θειικῆς ποτάσσης. Χ. Δ.

**Μπρασὲ** (Brachet), ***Ἀλβέρτος***. Βέλγος ἀνατόμος καὶ ἐμβρυολόγος (1869—1930) Τῷ 1904 ἐγένετο τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Βρυξελλῶν. Συνέβαλε σημαντικῶς διὰ τῶν ἐρευνῶν του εἰς τὴν λύσιν μεγάλης σημασίας προβλημάτων τῆς συγκριτικῆς ἐμβρυολογίας τῶν σπονδυλωτῶν καὶ ἔγραψε μελέτας ἀξιολογωτάτας ἐπὶ τοῦ μηχανισμοῦ τῆς ἐξελίξεως τοῦ ᾠαρίου τῶν ἀμφιβίων. Συνέγραψεν: «Ἐμβρυολόγια τῶν σπονδυλωτῶν» (Παρίσιοι 1921), ἔργον θεωρούμενον κλασσικὸν εἰς τὸ εἶδός του. Τῷ 1919 ὠνομάσθη ἐπίτιμος διδάκτωρ της ἰατρικῆς σχολῆς τῶν Παρισίων. Ο. Ρ.

—**Μπρασὲ** (Brachet), ***Αὔγουστος***. Γάλλος συγγραφεὺς ἐκ Τοὺρ (1844—1898). Ἐμαθήτευσεν εἰς τὴν παλαιογραφικὴν σχολήν, τῷ δὲ 1870 ὠνομάσθη καθηγητὴς τῆς φιλολογίας ἐν τῇ σχολῇ ἀνωτέρων σπουδῶν καὶ καθηγητὴς τῆς γερμανικῆς (1872) ἐν τῷ πολυτεχνείῳ. Ἔγραψε: «Μελέτην περὶ τῶν τρουβαδούρων τῆς Τουρώνης κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα» (1865), «Περὶ τῆς σημασίας τῶν ἀτόνων λατινικῶν φωνηέντων ἐν ταῖς ρωμανικαῖς γλώσσαις» (1866), «Λεξικὸν τῶν ἐκ τῆς αὐτῆς ρίζης παραγομένων, ἀλλ' ἐχουσῶν διάφορον γραφὴν καὶ σημασίαν λέξεων» (1867), «Ἱστορικὴ γραμματικὴ τῆς γαλλικῆς γλώσσης» (1870), «Νέα γαλλικὴ γραμματική, βασιζομένη ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς γλώσσης» (1874). Ἐπίσης ἐδημοσίευσε περὶ τῶν Ἰταλῶν καὶ τῆς Ἰταλίας, ἐν τῇ ὁποίᾳ παρέμεινεν ἐπὶ μακρόν, διαφόρους μελέτας, αἵτινες προεκάλεσαν πολὺν θόρυβον. Γνωστότεραι τούτων εἶναι: «Μελέτη περὶ τῆς ἱστορίας τοῦ ἰταλικοῦ χαρακτῆρος» ( 877), «Συγκριτικὸς πίναξ τοῦ γαλλικοῦ καὶ τοῦ ἰταλικοῦ χαρακτῆρος» (1879), «Ἡ Ἰταλία τὴν ὁποίαν βλέπομεν καὶ ἡ Ἰταλία τὴν ὁποίαν δὲν βλέπομεν» (1881) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπρασέϊγ** (Bracheuil), ***Πέτρος*** *ντὲ*—. Γάλλος εὐγενὴς καὶ πολεμιστής, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα. Συμμετέσχεν εἰς τὴν τετάρτην σταυροφορίαν, καθ' ἣν ἀνεδείχθη διὰ τὴν μεγάλην ἀνδρείαν τον. Κατέλαβεν ἐξ ἐφόδου τὸ φρούριον τοῦ Γαλατᾶ (1203) καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν πρώτων εἰσελθόντων εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν (1204). Συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ὑπὸ τοῦ Θεοδώρου Α' Λασκάρεως ἐθανατώθη. Α. Δ.

**Μπράσκας**, ***Ἰωάννης***. Ἀγωνιστὴς ἐκ Σοβολάκου, ὅστις τεθεὶς ἐπὶ κεφαλῆς τῶν συγχωρίων του ὥρμησε, τελευτῶντος τοῦ Μαΐου 1821, μετὰ τῶν Γιολδασαίων καὶ ἔκλεισαν τοὺς Τούρκους τοῦ Καρπενησίου, ἀποτελουμένους ἀπὸ 70 οἰκογενείας, εἰς τὰς οἰκίας των. Εἰδοποιηθεὶς ὁ Χουρσὶτ ἔστειλε βοήθειαν ἐξ Ἰωαννίνων καὶ διέλυσε τὴν πολιορκίαν, ἀλλὰ κατόπιν προσβληθέντες οἱ Τοῦρκοι πολλαχόθεν ἔφυγον εἰς τὴν Ἤπειρον. Τῷ 1824 ὁ Μπράσκας προήχθη εἰς ἀντιστράτηγον, ὡς τοιοῦτος δὲ ἔπεσε τῷ 1826 εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου, ἀναγραφεὶς τιμητικῶς μεταξὺ τῶν 143 ὀνομάτων. Διὰ τὸν Ἀγῶνα διέθεσε καὶ ἐξ ἰδίων, ἀναγνωρισθείσης αὐτῷ ἀπαιτήσεως 6.273 γροσίων. Τ. Χ. Κ.

**Μπρασκασσὰ** (Brascassat), ***Ἰάκωβος-Ραϋμόνδος***, Γάλλος ζωγράφος (1804—1867). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Ἐρσὰν καὶ τῷ 1825 ἐτιμήθη διὰ τοῦ δευτέρου μεγάλου βραβείου τῆς ἱστορικῆς τοπιογραφίας. Ἐξεπόνησε τοπιογραφίας καὶ ἀπεικονίσεις ζῴων, εἰς ἃς ἰδίᾳ διέπρεψε. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται «Ὁ ταῦρος» (Λούβρον), «Ὁ θάνατος τοῦ Καλυδωνίου κάπρου» (ἐν Μπορντώ), «Ἀγελάδες βόσκουσαι» (ἐν Μονπελλιὲ) καὶ «Ταυρομαχία» (ἐν Νάντῃ). Ι. Μ. Π.

**Μπράσσα** *[Γεωγρ.]* Συνοικισμὸς τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας (βλ. λ. *Μερέντα*).

**Μπρασσέμπουϊ** Brassempouy). Μικρὰ περιοχὴ τοῦ διαμερίσματος Landes τῆς Γαλλίας (Πυρηναῖα), ἥτις ἐγένετο γνωστὴ ἐκ τῆς ἀποκαλύψεως ἐν τῷ σπηλαίῳ Μπρασέμπουϊ προϊστορικῶν ἀντικειμένων καὶ δὴ καλλιτεχνικῶν ὑπολειμμάτων τῆς Μαγδαληναίας ἐποχῆς. Τὰ πλέον σημαντικὰ ἐξ αὐτῶν εἶναι τὰ ὑπὸ τοῦ Piette 1895 ἀνακαλυφθέντα τεμάχια εἰδωλίων ἀνθρωπίνων (γυναικείου καὶ ἀνδρικοῦ) ἐξ ἐλεφαντοστοῦ, θαυμασίως ἐπεξειργασμένων καὶ δὴ ἡ κεφαλὴ Μπρασσέμπουϊ περιέργου τεχνοτροπίας. Τὰ εὑρήματα ταῦτα εἶναι σπάνια διὰ τὴν τελευταίαν ταύτην παλαιολιθικὴν περίοδον, διότι τὰ ἐν λόγῳ ρεαλιστικὰ εἰδώλια ὠριγνακίου τύπου δὲν ἐμφανίζονται πλέον κατὰ τοὺς μετέπειτα χρόνους. Εἰς τὸν τελειότερον ἐξειργασμένον κορμὸν γυναικείου σώματος στεατοπηγοῦς (μικρὸν εἰδώλιον ἐξ ἐλεφαντοστοῦ) ἐδόθη τὸ ὄνομα *Ἀφροδίτη Μπρασσέμπουϊ*, ἔχομεν ὅμως καὶ ἑτέρας δύο Ἀφροδίτας, κατ' ἀναλογίαν πρὸς τὰς λοιπὰς προϊστορικάς. Τὸ ἀνδρικὸν εἰδώλιον ἐμφανίζει λεπτοφυᾶ σχηματισμὸν τοῦ σώματος. Ι. Γ. Κ.

**Μπρασσὲρ** (Brasseur), ***Ἀλβέρτος***. Γάλλος ἠθοποιός, υἱὸς τοῦ Ἰουλίου Μπρασσέρ, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1862. Ἀσπασθεὶς τὸ ἐπάγγελμα τοῦ πατρός του καὶ ὑπὸ τὰς ὁδηγίας αὐτοῦ, ἀνῆλθε τὸ πρῶτον τὴν σκηνὴν τοῦ θεάτρου «Nouveautés», κατόπιν δέ, προσληφθεὶς εἰς τὸ θέατρον «Variétés», κατέστη δημοφιλέστατος. Ν. Ι. Λ.

— **Μπρασσὲρ** (Brasseur), ***Ἰούλιος Ντυμόν***. Γάλλος ἠθοποιὸς ἐκ τῶν ἐπιλέκτων (1829—1890). Νεαρώτατος ἀνελθὼν τὴν σκηνὴν (1847), ἔπαιξεν ἐπιτυχῶς εἰς διάφορα θέατρα τῆς γαλλικῆς πρωτευούσης, ἐν οἷς εἰς τὸ «Palais Royal», διακριθεὶς ἰδίως εἰς τοὺς ρόλους τῶν ἁπλοϊκῶν καὶ ἠλιθίων. Ἀπὸ τοῦ 1878 μέχρι τοῦ θανάτου του διηύθυνε τὸ ἐν Παρισίοις θέατρον «Nouveantés». Διέπλασσε μετὰ πολλῆς ἐπιτυχίας πλείστους ρόλους τῶν κωμῳδιῶν τοῦ Λαμπίς, τοῦ Μεγιὰκ καὶ Ἀλεβύ. Ν. Ι. Λ.

**Μπράσσεϋ** (Brassey), ***Ἄννα***, *βαρώνη* —. Ἀγγλὶς συγγραφεὺς καὶ περιηγήτρια (1839—1887). Συνώδευσε τὸν σύζυγόν της εἰς τὰς διαφόρους περιηγήσεις του καὶ ἐξέθηκε τὰς ἐντυπώσεις τῶν ταξιδίων της εἰς πολλὰ ἔργα, ἅτινα ἐξησφάλισαν τὴν φήμην της ὡς μεγάλης λογοτέχνιδος. Ἐκ τῶν συγγραφῶν αὐτῆς αἱ ἀξιολογώτεραι εἶναι: «Ὁ γῦρος τοῦ κόσμου» (1885), «Τὸ ταξίδι μιᾶς οἰκογενείας μὲ τὴν θαλαμηγόν της» (1878), «Ὁ ἥλιος καὶ αἱ καταιγίδες εἰς τὴν Ἀνατολὴν» (1879) καὶ «Εἰς τὰς τροπικὰς χώρας» (1885). Α. Δ.

—**Μπράσσεϋ** (Brassey), *σὲρ* ***Θωμᾶς***, *λόρδος* —. Ἄγγλος μεγαλοβιομήχανος, πολιτικὸς καὶ οἰκονομολόγος (1836—1918). Μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων τῷ 1866, ἀνεδείχθη κατὰ τὰς συζητήσεις συναφῶν πρὸς τὴν βιομηχανίαν ζητημάτων ὡς τέλειος γνώστης τῆς παγκοσμίου βιομηχανικῆς κινήσεως. Κατὰ τὸν σχηματισμὸν τοῦ δευτέρου ὑπουργείου τοῦ Γλάδστωνος (1ᐩ80), ὠνομάσθη λόρδος, τῷ δὲ 1884 διευθυντὴς τοῦ ναυστάθμου. Τῷ 1886 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ὁμοτίμου τῆς Ἀγγλίας, τῷ δὲ 1895 διωρίσθη διοικητὴς τῆς Βικτωρίας. Εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τοῦ περιοδικοῦ «The Naval Annual» καὶ συγγραφεὺς τῶν «Work and Wages (1872), «Foreign Works and English Wages» (1879) καὶ «Sixty Years of Progress» (1906). Α. Δ.

**Μπρασσῆς**. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ Σφακίων, συμμετασχὼν εἰς τὴν ἐν Κρήτῃ ὑπὸ τὸν Δασκαλογιάννην ἐπανάστασιν τοῦ 1770, καθ' ἣν ἐπεδείξατο ἐξαιρετικὴν γενναιότητα. Ἔπεσε μαχόμενος εἰς τὴν παρὰ τὸν Ἅγιον Ἰωάννην μάχην. Ν. ΚΛΣ

**Μπράσσο** (Brasso) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας (βλ. λ. *Μπράσωφ*).

**Μπράσσχατ** (Brasschadt) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τοῦ Βελγίου ἐν τῷ νομῷ Ἀμβέρσης. Ἔχει πεδίον στρατιωτικῶν ἀσκήσεων, σκοπευτικὴν σχολὴν καὶ πεδίον βολῆς τοῦ βελγικοῦ πυροβολικοῦ. Κάτ. 7.000. Χ. Δ.

**Μπράσωφ**, ἢ ***Μπράσσο***, ἢ ***Κρόνσταντ*** (ρουμαν. Brasov, οὑγγρ. Brasso, γερμαν. Kronstandt) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρουμανίας ἐν Τρανσυλβανίᾳ, κειμένη ἐντὸς τῆς γραφικῆς κοιλάδος Μπούρζενλαντ, τῶν Τρανσυλβανικῶν Ἄλπεων, 600 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Εἶναι ὡραία πόλις παλαιοῦ ρυθμοῦ, ἔχουσα πολλὰ καλλιτεχνικὰ κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται ἡ εὐαγγελικὴ ἐκκλησία (1385—1425), ρυθμοῦ γοτθικοῦ, τῆς ὁποίας τὸ ἁρμόνιον, ἔργον τοῦ Βερολιναίου ὀργανοποιοῦ Μπάκχολτς (1839), εἶναι ἐκ τῶν μεγαλυτέρων καὶ τελειοτέρων τοῦ κόσμου, τὸ δημαρχεῖον (1520), ὁ ναὸς τῶν ὀρθοδόξων Ἅγιος Νικόλαος (1392), ἀνακαινισθεὶς τῷ 1751, ὁ καθολικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου (ΙΓ' αἰὼν) κλπ. Ἡ Μπράσωφ εἶναι πόλις ὀχυρά, κατέχουσα σπουδαιοτάτην θέσιν ἐν τῷ ΝΑ. τμήματι τῆς Τρανσυλβανίας, ἀποτελεῖ δὲ τὴν κλεῖδα τῶν σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν τῆς περιοχῆς. Εἶναι παλαιοτάτη πόλις, ἱδρυθεῖσα κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα, ἔπαιξε δὲ σπουδαῖον ρόλον εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν πολέμων μεταξὺ Τατάρων, Τούρκων, Ρώσων, Αὐστριακῶν καὶ Πολωνῶν, ὡς ἐκ τῆς θέσεώς της εἰς τὸ σημεῖον τῶν μεταξὺ τῶν λαῶν τούτων μακραιώνων καὶ αἱματηρῶν συγκρούσεων. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐξεκενώθη τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1916 ὑπὸ τῶν Αὐστριακῶν, ἀλλ' ἀνακατελήφθη κατὰ τὸν ἑπόμενον μῆνα. Μετὰ τὴν λῆξιν αὐτοῦ ἐξεχωρήθη, δυνάμει τῶν συνθηκῶν, εἰς τὴν Ρουμανίαν. Ἔχει μουσεῖον, βιβλιοθήκην, 8 σχολάς, τεχνικὸν ἰνστιτοῦτον κλπ., εἶναι σπουδαιότατον ἐμπορικὸν καὶ βιομηχανικὸν κέντρον, ἔχουσα ἐργοστάσια τσιμέντων, δερμάτων, ὑφασμάτων κλπ. Κάτ. (1922) 40.325, Ρουμᾶνοι, Οὖγγροι καὶ Γερμανοί. Χ. Δ.

**Μπράτζα** (Brazza, λατιν. Brattia καὶ σλαβ. Brac) *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Νοτιοσλαβίας ἐν τῷ Ἀδριατικῷ, ἡ μεγαλυτέρα τοῦ Δαλματικοῦ ἀρχιπελάγους, ἀνήκουσα πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Αὐστρίαν. Κεῖται πρὸς Ν. τῆς ἐπὶ τῆς ἠπειρωτικῆς παραλίας πόλεως Σπαλάτο, ἀπὸ τῆς ὁποίας χωρίζεται διὰ τοῦ διέκπλου τῆς Μπράτζα καὶ ἔχει πρὸς Ν. αὐτῆς τὴν νῆσον Λεξίνα καὶ πρὸς Δ. τὴν Σόλτα. Εἶναι ἐπιμήκης, διευθυνομένη ἐκ Δ. πρὸς Α., ὀρεινὴ (ὑψηλοτέρα κορυφὴ Μόντε Σὰν Μπίτο, 778 μ.) καὶ δασώδης, παράγει δὲ ἔλαιον, σῦκα, ἀμύγδαλα, οἶνον, κρόκκον, μέταξαν κλπ. καὶ ἐγκλείει λατομεῖα ἐκλεκτοῦ μαρμάρου. Ἔχει ἔκτασιν 394 τ. χλμ., πληθυσμὸν 22.969 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὸ *Σὰν Πιέτρο*. Χ. Δ.

**Μπρατζαβὶλλ** (Brazzaville) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλικῆς Ἰσημερινῆς Ἀφρικῆς (βλ. λ. *Μπραζαβίλ*).

**μπρατζέρα** (ἡ) *[Ναυτ.]* βλ. λ. *βρατσέρα*.

**Μπράτι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Σταφιδόκαρπος* (βλ. λ.).

**Μπρατιάνου** (Bratianu), ***Βιντίλα***. Ρουμᾶνος πολιτικός, ἀδελφὸς τοῦ *Ἰωνὲλ Μπρατιάνου*, γεννηθεὶς τῷ 1867. Ἐσπούδασεν οἰκονομικὰς ἐπιστήμας καὶ ἐγένετο εἷς τῶν σημαντικωτέρων τραπεζιτῶν τῆς Ρουμανίας. Τῷ 1916 ἐγένετο ὑπουργὸς τοῦ νεοσυσταθέντος ὑπουργείου τῶν Πολεμεφοδίων, ἐν τῇ κυβερνήσει τοῦ ἀδελφοῦ του, κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς κηρύξεως ὑπ' αὐτοῦ τοῦ πολέμου κατὰ τῶν Κεντρικῶν Αὐτοκρατοριῶν. Τῷ 1922 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν καὶ τῷ 1927, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του διεδέχθη τοῦτον εἰς τὴν ἀρχηγίαν τοῦ κόμματός του καὶ εἰς τὴν προεδρίαν τῆς κυβερνήσεως, παραιτηθεὶς τὸ ἑπόμενον ἔτος μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν τοῦ κόμματος τῶν ἀγροτικῶν εἰς τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1928. Ἀπέθανε τῷ 1929, ὀλίγον μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ ἐξορίστου πρίγκιπος Καρόλου εἰς Βουκουρέστιον καὶ τὴν ἀνάκτησιν τοῦ θρόνου του ὑπὸ τὸ ὄνομα Κάρολος Β'. Μ. Δ. Β.

— **Μπρατιάνου** (Bratianu), ***Δημήτριος***. Ρουμᾶνος δημοσιογράφος καὶ πολιτικὸς (1818—1892). Ἐσπούδασεν ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ ἐν Παρισίοις νομικὰ καὶ ἀνεμίχθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ φιλολογικὴν κίνησιν τῆς Γαλλίας τῶν ἐτῶν 1836—1848, δημοσιογραφῶν συγχρόνως ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Regnault καὶ δημοσιεύων ἄρθρα εἰς τὴν «National» καὶ τὴν «Revue Indépendante». Ἔλαβεν ἐπίσης μέρος εἰς τὸ κίνημα τοῦ 1848 καὶ ἐπολέμησεν ἐπὶ τῶν ὁδοφραγμάτων ἐν Παρισίοις μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἰωάννου Μπρατιάνου. Μετὰ δύο μῆνας ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ὅπου διωρίσθη μέλος τοῦ ἐπαναστατικοῦ κομιτάτου καὶ ἀπεστάλη εἰς τὴν Τρανσυλβανίαν καὶ τὴν Οὐγγαρίαν, ὅπως ἐπιτύχῃ τὴν συνεργασίαν μεταξὺ τῶν Ρουμάνων καὶ τῶν ἐκεῖ ἐπαναστατῶν. Ἀποτυχὼν ἐπέστρεψεν εἰς Βουκουρέστιον, ὁπόθεν, μετὰ τὴν ψήφισιν τοῦ νέου Συντάγματος, ἀπεστάλη εἰς Κωνσταντινούπολιν. ὡς μέλος τῆς ἐπιτροπῆς, εἰς ἣν εἶχεν ἀνατεθῆ ἡ ὑποβολὴ αὐτοῦ εἰς τὸν σουλτᾶνον πρὸς ἔγκρισιν. Μετὰ τὴν εἴσοδον τῶν ρωσικῶν στρατευμάτων εἰς τὴν Ρουμανίαν τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1848, ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ εἰς τὴν Τρανσυλβανίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ τῷ 1852 εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Κατὰ τὴν παραμονήν του εἰς τὸ Λονδῖνον ἔγραψε πλεῖστα ἄρθρα καὶ ὑπομνήματα εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, σχετικὰ μὲ τὰ ζητήματα τὰ ἀναφερόμενα εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τὰ δίκαια τῆς Ρουμανίας. Κατώρθωσε μάλιστα νὰ φέρῃ τὸ ρουμανικὸν ζήτημα μέχρι τοῦ ἀγγλικοῦ κοινοβουλίου κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1853, χάρις εἰς τὰς πολυαρίθμους σχέσεις, τὰς ὁποίας εἶχε συνάψει μετὰ τῶν πλείστων ἐξεχουσῶν πολιτικῶν ἀγγλικῶν προσωπικοτήτων, οἷοι ὁ λόρδος Πάλμερστον, ὁ λόρδος Ντούντλεϊ-Στιούαρτ, ὁ Λάγιαρντ κτλ. Ἐν Λονδίνῳ εἶχε συνδεθῆ καὶ μετὰ τοῦ Ματσίνι καὶ εἶχεν ἀποτελέσει μέλος τοῦ ὑπ' αὐτοῦ συσταθέντος ἐπαναστατικοῦ κομιτάτου, Κατορθώσας ἐπὶ τέλους νὰ ἐπιτύχῃ τὴν ἄδειαν τὸν Ἰούλιον τοῦ 1857, ὅπως ἐπιστρέψῃ εἰς

Digitized by Google

τὴν Βλαχίαν, ὁμοῦ μετὰ τῶν ἄλλων ἐπαναστατῶν τοῦ 1848, ἐξελέγη μέλος τοῦ διβανίου, ὅπερ εἶχε συσταθῆ, ὅπως ἐκφέρῃ τὴν γνώμην του ἐπὶ τῆς ἀναδιοργανώσεως τῶν Παραδουναβίων ἡγεμονιῶν, καὶ ἀπεστάλη κατόπιν εἰς Παρισίους, ὅπως ὑποβάλῃ καὶ ὑποστηρίξῃ εἰς τὸ ἐκεῖ συνελθὸν συνέδριον τὰς ὑπὸ τοῦ διβανίου τούτου ληφθείσας ἀποφάσεις, συντάξας καὶ πρὸς τοῦτο μακρὸν ὑπόμνημα. Τῷ 1867—1868 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων καὶ κατόπιν τῆς Παιδείας ἐπὶ κυβερνήσεως τοῦ ἀδελφοῦ του Ἰωάννου Μπρατιάνου. Βραδύτερον διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Κωνσταντινουπόλει, ὁπόθεν, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ ἀδελφοῦ του, ἐκλήθη καὶ ἀνέλαβε τὴν πρωθυπουργίαν τῷ 1881, τὴν ὁποίαν ὅμως διετήρησεν ἐπ' ὀλίγας μόνον ἑβδομάδας, συνεπείᾳ τῶν ῥαδιουργιῶν τοῦ ἀδελφοῦ του. Ἕνεκα τούτου ἔκτοτε ἐπηκολούθησε σφοδρὸς ἀνταγωνισμὸς μεταξὺ τῶν δύο ἀδελφῶν, ὁ δὲ Δημήτριος ἐξέδωσε καὶ ἐφημερίδα, τὴν «Natiunea», πρὸς καταπολέμησιν ἐκείνου, τὸν ὁποῖον ἐθεώρει ὡς τὸν μεγαλύτερόν του ἐχθρόν. Ὁ Δημήτριος Μπρατιάνου ἀπέσπασεν ἐπίσης μερίδα σημαντικὴν ἐκ τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων, ἱδρύσας ἴδιον κόμμα καὶ κατορθώσας νὰ ἐπιφέρῃ τὴν πτῶσιν τοῦ ἀδελφοῦ του, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἐν τῷ μεταξὺ καταλάβει καὶ πάλιν τὴν ἀρχήν. Μ. Δ. Β.

— **Μπρατιάνου** (Bratianu), ***Ἰωάννης***. Εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων πολιτικῶν τῆς Ρουμανίας (1821—1891). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ τῷ 1838 κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν τῆς Βλαχίας, ὅπως ἀκολουθήσῃ τὸ στρατιωτικὸν στάδιον. Τῷ 1841 ἐγκαταλείψας τὸ στράτευμα, μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπως σπουδάσῃ νομικά. Αὐτόθι ἔλαβεν ἐνεργότατον μέρος εἰς τὰς στρατιωτικὰς ἐκδηλώσεις καὶ εἰς τὰς ταραχάς, αἵτινες προηγήθησαν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1848, ὁμοῦ μετὰ τοῦ νεωτέρου ἀδελφοῦ του *Δημητρίου*. Ἐπιστρέψας κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος εἰς Βουκουρέστιον μετὰ πολλῶν ἄλλων νεαρῶν Ρουμάνων πατριωτῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἦσαν οἱ ἀδελφοὶ Γκολέσκο καὶ Ραντουλέσκο, ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐπανάστασιν, ἥτις ἀνέτρεψε τὸν ἡγεμόνα Γεώργιον Μπιμπέσκο καὶ ἐγκατέστησε προσωρινὴν κυβέρνησιν, τῆς ὁποίας ὁ Ἰωάννης Μπρατιάνου ἀπέβη ἓν τῶν δραστηριωτέρων μελῶν.

*Ἰωάν. Μπρατιάνου.*

Πρεσβεύων ὅμως λίαν προοδευτικὰς ἰδέας, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων ἠρνεῖτο νὰ δεχθῇ τόσον τὸ ρωσικὸν προτεκτοράτον ὅσον καὶ τὴν ἐπικυριαρχίαν τῆς Πύλης, καὶ λαβὼν μέρος εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῆς 21 Σεπτεμβρίου τοῦ 1848, συνελήφθη, μετὰ τὴν εἴσοδον τῶν ρωσικῶν καὶ τῶν τουρκικῶν στρατευμάτων εἰς τὰς Παραδουναβίους ἡγεμονίας, καὶ ἐκρατήθη αἰχμάλωτος ἐπὶ δεκαπενθήμερον ἐντὸς μιᾶς λέμβου ἐπὶ τοῦ Δουνάβεως, μέχρις ὅτου κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ καὶ νὰ καταφύγῃ εἰς Παρισίους, ὅπου προσεπάθησε νὰ προπαγανδίσῃ διὰ τοῦ τύπου καὶ διὰ διαφόρων ἄλλων μέσων ὑπὲρ τῶν δικαίων τῆς χώρας του. Κατηγορηθεὶς ὅμως ὡς ἀρχηγὸς μυστικῆς ἑταιρείας καὶ κάτοχος κεκρυμμένου πιεστηρίου, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐτυπώνοντο ἐπαναστατικαὶ προκηρύξεις, κατεδικάσθη ὑπὸ τῶν γαλλικῶν δικαστηρίων εἰς τρίμηνον φυλάκισιν καὶ εἰς πενταετῆ στέρησιν τῶν πολιτικῶν του δικαιωμάτων. Κρατηθεὶς δὲ ἔν τινι κλινικῇ ἐπὶ διετίαν, ἀφέθη ἐλεύθερος τῷ 1856 καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα του, ὅπου μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του διωρίσθη μέλος τοῦ διβανίου. Ἐκλεγεὶς κατόπιν βουλευτὴς ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων καὶ συνετέλεσεν εἰς τὴν ὑπὸ τὸν ἡγεμόνα Κούζαν ἕνωσιν τῆς Βλαχίας καὶ Μολδαυΐας. Βραδύτερον ὅμως ἀντεπολιτεύθη τὸν Κούζαν καὶ τῷ 1866 ὑπῆρξεν ὁ κυριώτερος συντελεστὴς τῆς ἐκλογῆς τοῦ πρίγκιπος Καρόλου Χοενtσόλλερν ὡς ἡγεμόνος τῆς Ρουμανίας, τὸν ὁποῖον συνώδευσε κατὰ τὸ ταξίδιόν του διὰ μέσου τῆς Αὐστρίας εἰς τὴν Ρουμανίαν. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν ἐπὶ κυβερνήσεως Καταρτζῆ. Κατὰ τὰς ἐκλογάς, αἵτινες ἐπηκολούθησαν τῷ 1867, οἱ φιλελεύθεροι ἐπέτυχον μεγάλην πλειοψηφίαν, ὁ δὲ ἀρχηγὸς αὐτῶν Μπρατιάνου ἐσχημάτισε τὴν νέαν κυβέρνησιν, γενόμενος διὰ πρώτην φορὰν πρωθυπουργός. Κατὰ τὴν πρωθυπουργίαν του ταύτην προέβη εἰς μεγάλας μεταρρυθμίσεις, αἵτινες ἀπετέλεσαν τὴν βάσιν τῆς οἰκονομικῆς ἀναδιοργανώσεως τῆς χώρας. Μεταξὺ τούτων εἶναι ἡ εἰσαγωγὴ τοῦ δεκαδικοῦ συστήματος καὶ ἡ μεταρρύθμισις τοῦ νομισματικοῦ συστήματος τῆς χώρας. Κατέβαλεν ἐπίσης μεγάλας προσπαθείας πρὸς αὔξησιν τοῦ ρουμανικοῦ στρατοῦ καὶ εἶχε συλλάβει τὸ σχέδιον τῆς ἐπεκτάσεως τῆς Ρουμανίας εἰς βάρος τῆς Τρανσυλβανίας καὶ τῆς Τουρκίας, ἀλλ' ἡ πρόθεσίς του αὕτη ἐξήγειρε τὰς μεγάλας δυνάμεις καὶ τὸν Νοέμβριον τοῦ 1868 ὁ Κάρολος ἠναγκάσθη νὰ τὸν ἀπομακρύνῃ ἐκ τῆς ἀρχῆς. Τότε ὅμως ἐστράφη κατὰ τοῦ Καρόλου καὶ ἤρχισε μετὰ τῶν φιλελευθέρων νὰ συνωμοτῇ κατ' αὐτοῦ, ὑποκινήσας σοβαρὰς ταραχὰς εἰς διαφόρους πόλεις μὲ ἀντιδυναστικὸν χαρακτῆρα κατὰ τὰ ἔτη 1870 καὶ 1871. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1876 τὸ συντηρητικὸν κόμμα ἡττήθη ὁλοσχερῶς, ὁ δὲ Κάρολος ἠναγκάσθη νὰ καλέσῃ καὶ πάλιν τὸν Ἰωάννην Μπρατιάνου, ὅπως σχηματίσῃ κυβέρνησιν. Οὗτος μόλις ἀνῆλθεν εἰς τὴν ἀρχὴν ἐπανέλαβε τὰς συνεννοήσεις του πρὸς ἐπίθεσιν κατὰ τῆς Τουρκίας καὶ μετέβη εἰς Λεβάδειαν τῆς Κριμαίας πρὸς συνεννόησιν μετὰ τοῦ τσάρου. Κατὰ τὴν συνάντησιν ταύτην ἀπεφασίσθη ἡ κήρυξις τοῦ πολέμου ἐκ μέρους τῆς Ρωσίας κατὰ τῆς Τουρκίας, ὁ δὲ Μπρατιάνου ἀνελάμβανε τὴν ὑποχρέωσιν νὰ ἐπιτρέψῃ εἰς τὰ ρωσικὰ στρατεύματα νὰ διέλθουν διὰ τοῦ ρουμανικοῦ ἐδάφους, εἰς ἀντάλλαγμα δὲ θὰ ἀνεκήρυττεν ἐπισήμως τὴν ρουμανικὴν ἀνεξαρτησίαν. Ἐπίσης ἡ Ρωσία ἠγγυᾶτο διὰ τὴν ἀκεραιότητα τοῦ ρουμανικοῦ ἐδάφους. Ἡ ἀπαίτησις τῆς Πύλης ὅπως μὴ θεωρῇ τὴν Ρουμανίαν ὡς ἀνεξάρτητον κράτος, ἀλλ' ἁπλῆν ἐπαρχίαν τῆς Ὀθωμανικῆς αὐτοκρατορίας, ἀπετέλεσε τὸ πρόσχημα, ὅπερ ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς τὸν Μπρατιάνου νὰ ἐξεγείρῃ τὸν ρουμανικὸν λαὸν καὶ νὰ ἐπιτύχῃ τὴν ψήφισιν τῶν ἀναγκαίων πιστώσεων πρὸς προπαρασκευὴν τοῦ ρουμανικοῦ στρατοῦ καὶ ἀγορὰν ἱκανοῦ ὑλικοῦ, ὅπερ ἐπέτρεψεν εἰς τοὺς Ρουμάνους νὰ διαδραματίσουν σπουδαῖον ρόλον κατὰ τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον. Πράγματι ὁ πόλεμος οὗτος ἐκηρύχθη κατὰ τῆς Τουρκίας τὴν 20 Μαΐου τοῦ 1877, συγχρόνως δὲ ἐκηρύχθη καὶ ἡ ἀνεξαρτησία τῆς Ρουμανίας. Ὁ Κάρολος, λαβὼν τὸν τίτλον τοῦ βασιλέως, ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς τοῦ ρουμανικοῦ στρατοῦ καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν καὶ τὴν ἅλωσιν τῆς Πλέβνας. Παρὰ ταῦτα ὅμως ἡ συνθήκη τοῦ Ἁγίου Στεφάνου εἰς οὐδεμίαν προέβη παραχώρησιν πρὸς τὴν Ρουμανίαν, ἐξ ἐκείνων τὰς ὁποίας συνεφώνησε καὶ ἤλπισεν ὁ Μπρατιάνου. Τοὐναντίον μάλιστα, ἡ Ρουμανία παρὰ τὴν σύμβασιν τοῦ 1877 μετὰ τῆς Ρωσίας, ἠναγκάσθη νὰ παραχωρήσῃ εἰς αὐτὴν τὴν Βεσσαραβίαν εἰς ἀντάλλαγμα τῆς Δοβρουτσᾶς. Πᾶσαι αἱ προσπάθειαι τοῦ Μπρατιάνου πρὸς παρεμπόδισιν τῆς παραχωρήσεως ταύτης ἀπέτυχον. Ἕνεκα τούτου ἠναγκάσθη νὰ μεταβῇ εἰς τὴν Βιέννην καὶ τὸ Βερολῖνον καὶ νὰ διαμαρτυρηθῇ πρὸς τὰς Μεγάλας Δυνάμεις διὰ τὴν παρασπονδίαν καὶ τὴν ἀδικίαν, γενόμενος δεκτὸς εἰς τὸ συνέδριον τοῦ Βερολίνου τοῦ 1878 πρὸς ὑποστήριξιν τῶν δικαίων τῆς χώρας του ἀλλ' ἄνευ ψήφου καὶ ἄνευ ἀποτελέσματος. Τὸ μόνον ὅπερ ἐπέτυχεν ἐν τῷ συνεδρίῳ τούτῳ ὑπῆρξεν ἡ ἀναγνώρισις τῆς ἀνεξαρτησίας τῆς Ρουμανίας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐπέτρεψεν εἰς αὐτόν, ἐπανελθόντα εἰς τὸ Βουκουρέστιον, νὰ δικαιολογηθῇ ἔναντι τοῦ λαοῦ καὶ τῶν βουλῶν καὶ νὰ κατορθώσῃ νὰ παραμείνῃ εἰς τὴν ἀρχήν. Τῷ 1881 ἐκήρυξεν ἐπισήμως τὴν Ρουμανίαν εἰς βασίλειον, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Δημητρίου. Μετὰ τρίμηνον ὅμως, κατόπιν δραστηρίων πολιτικῶν ραδιουργιῶν, κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ τὴν πτῶσιν τοῦ ἀδελφοῦ του καὶ ν' ἀναλάβῃ καὶ πάλιν αὐτὸς τὴν κυβέρνησιν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην προέβη εἰς νέας καὶ ριζικὰς μεταρρυθμίσεις· συνεκάλεσε τῷ 1884 ἐν Βουκουρεστίῳ ἐθνοσυνέλευσιν, ἥτις μετερρύθμισε τὸ Σύνταγμα, καθιέρωσε τὴν μυστικὴν καθολικὴν ψηφοφορίαν καὶ ἔλαβε μέτρα ὑπὲρ τῆς προστασίας τῶν Ἑβραίων. Κατὰ τὴν ἰδίαν ἐποχὴν συνηντήθη μετὰ τοῦ Βίσμαρκ εἰς τὸ Γκαστάϊν καὶ προσεχώρησεν εἰς τὴν τριπλῆν συμμαχίαν. Εἰς τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1884 ἦλθε καὶ πάλιν πλειοψηφῶν. Κατὰ τὴν περίοδον ὅμως ταύτην διήγειρε μεγάλα μίση, οἱ δὲ ἀντίπαλοί του κατηγόρησαν αὐτὸν ὡς χρησιμοποιοῦντα δικτατορικὰ μέσα καὶ ἐπέκριναν σφοδρῶς τόσον τὰς ἐσωτερικὰς μεταρρυθμίσεις του, ὅσον καὶ τὴν ἐξωτερικὴν πολιτικήν του. Ἕνεκα τούτου ἠναγκάσθη τῷ 1888, καίτοι ἦλθε καὶ πάλιν πλειοψηφῶν κατὰ τὰς τότε ἐκλογάς, νὰ παραιτηθῇ, συνεπείᾳ ταραχῶν, αἵτινες ἔλαβον χώραν ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ εἰς τὴν ὕπαιθρον μεταξὺ τῶν χωρικῶν ἐναντίον του. Ἐπειδὴ ὅμως καθίστατο ἀδύνατος ὁ σχηματισμὸς βιωσίμου κυβερνήσεως, ἀνέλαβε καὶ πάλιν αὐτὸς μετ' ὀλίγον τὸν σχηματισμὸν τοῦ ὑπουργείου. Νέαι ὅμως ταραχαὶ τὸν ἠνάγκασαν νὰ παραιτηθῇ ὁριστικῶς καὶ ν' ἀποσυρθῇ τῆς πολιτικῆς τῷ 1890, ἀντικατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ Ρωσέττη. Ἐναντίον αὐτοῦ, κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς πρωθυπουργίας του, ἔλαβον χώραν δύο ἀπόπειραι δολοφονίας, τῷ 1880 καὶ τῷ 1886. Ὁ Ἰωάννης Μπρατιάνου διεκρίθη καὶ ὡς συγγραφεύς, γράψας μεταξὺ ἄλλων: «Ἡ Αὐστριακὴ αὐτοκρατορία ἐν τῷ Ἀνατολικῷ ζητήματι» (1855), «Ἡ κατάστασις τῆς Μολδοβλαχίας ἀπὸ τῆς συνθήκης τῶν Παρισίων (1857), «Τὸ θρησκευτικὸν ζήτημα ἐν Ρουμανίᾳ» (1866), «Ὁ πανσλαυϊσμός, ὁ πρίγκιψ Κούζα καὶ ἡ Ρωσία» (1866) κ.ἄλ. Μ. Δ. Β.

— **Μπρατιάνου** (Bratianu), ***Ἰωάννης*** ὁ νεώτερος. Ρουμᾶνος πολιτικὸς (1864—1927), ἐπιλεγόμενος κοινῶς *Ἰωνὲλ Μπρατιάνου*, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τοῦ ὁμωνύμου πατρός του. Ἐσπούδασε τὴν μηχανικὴν ἐν Παρισίοις καὶ ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του διωρίσθη μηχανικὸς τῶν σιδηροδρόμων τοῦ κράτους, παραμείνας εἰς τὴν θέσιν ταύτην ἀπὸ τοῦ 1889 μέχρι τοῦ 1895. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του (1891) ἀνεμείχθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτὴς τῷ 1895, γενόμενος μετὰ δύο ἔτη ὑπουργὸς τῶν Δημοσίων Ἔργων ἐν τῇ κυβερνήσει Στούρτζα. Κατόπιν διετέλεσεν ὑπουργὸς τοῦ Θησαυροφυλακίου. τῶν Ἐξωτερικῶν (1902), τῶν Ἐσωτερικῶν (1907, ὅτε ἔλαβε χώραν ἡ μεγάλη ἐπανάστασις τῶν χωρικῶν) καὶ τῶν στρατιωτικῶν. Τῷ 1909 μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ Δημητρίου Στούρτζα ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων καὶ ἐγένετο πρωθυπουργός, παραμείνας εἰς τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ 1911. Κατὰ τὸν δεύτερον Βαλκανικὸν πόλεμον ἐναντίον τῆς Βουλγαρίας, ἐπολέμησεν ὡς ἔφεδρος λοχαγὸς εἰς τὸ μέτωπον τῆς Δοβρουτσᾶς καὶ ἐβοήθησε κατόπιν τὸν τότε πρωθυπουργὸν Τάκε Ἰωνέσκου κατὰ τὴν συνδιάσκεψιν τῆς εἰρήνης τοῦ Βουκουρεστίου (6—10 Αὐγούστου 1913) νὰ ἐπιτύχῃ τὸ λεγόμενον «Τρίγωνον τῆς Σιλιστρίας». Σχηματίσας κυβέρνησιν ἐκ νέου εὐθὺς μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τοῦ Βουκουρεστίου τῷ 1913, συνώδευσε κατόπιν, τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1914, τὸν βασιλέα Κάρολον εἰς τὴν Κωνστάντζαν, ὅπου ἔλαβε χώραν σημαντικωτάτη συνδιάσκεψις μετὰ τοῦ τσάρου Νικολάου τῆς Ρωσίας, συνοδευομένου ὑπὸ τοῦ Σαζόνωφ. Κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὁ Μπρατιάνου ἔπεισε τὸν βασιλέα Κάρολον, ὁ ὁποῖος ἐφρόνει ὅτι ἡ Ρουμανία ὤφειλε νὰ ταχθῇ παρὰ τὸ πλευρὸν τῶν Κεντρικῶν Δυνάμεων, νὰ παραμείνῃ οὐδέτερος. Μετὰ τὸν θάνατον ὅμως τοῦ βασιλέως Καρόλου Α΄ ὁ Μπρατιάνου συνῆψε μυστικὴν συνθήκην μετὰ τῆς Ἀντὰντ τὴν 5 Αὐγούστου 1916 καὶ τὴν 28 Αὐγούστου ἐκήρυξε, τῇ συγκαταθέσει τοῦ νέου βασιλέως Φερδινάνδου Α΄, τὸν πόλεμον κατὰ τῶν Κεντρικῶν Αὐτοκρατοριῶν, τεθεὶς παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ. Ὁ Μπρατιάνου παρέμεινεν εἰς τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ τέλους τοῦ 1917. Λόγῳ τῶν πολεμικῶν ἀτυχημάτων τῆς Ρουμανίας ἐμειώθη σημαντικῶς ἡ πολιτική του δύναμις, ἣν ὅμως ἐπανέκτησε μετ' ὀλίγον, συνεπείᾳ τοῦ τελικοῦ θριάμβου τῆς Ἀντάντ, ὁ ὁποῖος ἐπέτρεψεν εἰς αὐτὸν νὰ σχηματίσῃ τὸν Νοέμβριον τοῦ 1918 τὴν πρώτην κυβέρνησιν τῆς «Μεγάλης Ρουμανίας». Τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1919 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς εἰρήνης τῶν Παρισίων ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Ρουμανίας καὶ ἐζήτησε τὴν προσάρτησιν εἰς τὴν χώραν του ὁλοκλήρου τοῦ Βανάτου, συμφώνως πρὸς τὴν συνθήκην συμμαχίας, τὴν ὁποίαν εἶχεν ὑπογράψει μετὰ τῆς Ἀντάντ. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ ἀξίωσίς του αὕτη δὲν ἐγένετο δεκτή, συνεπείᾳ τῶν διεκδικήσεων τῆς Σερβίας, ἠρνήθη νὰ ὑπογράψῃ τὴν συνθήκην τῶν Βερσαλλιῶν καὶ νὰ ἐκκενώσῃ τὴν Βουδαπέστην, τὴν ὁποίαν εἶχον καταλάβει τὴν 3 Αὐγούστου 1919 τὰ ρουμανικὰ στρατεύματα, παρὰ τὴν συγκατάθεσιν τῶν συμμάχων. Παραιτηθεὶς ἕνεκα τούτου τὴν 23 Σεπτεμβρίου 1919, ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἀρχὴν μετά τινα χρόνον καὶ διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Τριανὸν ἐπέτυχε τὴν εἰς τὴν Ρουμανίαν προσάρτησιν τῆς Τρανσυλβανίας, Βουκοβίνας, Βεσσαραβίας καὶ μέρους τοῦ Βανάτου. Παραιτηθεὶς τὸν Μάρτιον τοῦ 1926, ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἀρχὴν μετὰ τὰς ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ Ἀβερέσκο ἐνεργηθείσας ἐκλογὰς τὸν Ἰούλιον τοῦ 1927, ἀλλ' ἀπέθανε τὸν Νοέμβριον τοῦ αὐτοῦ ἔτους. Ἓν τῶν κυριωτέρων ἔργων τοῦ Μπρατιάνου ἐν τῇ ἐσωτερικῇ πολιτικῇ ὑπῆρξεν ἡ ἀγροτικὴ μεταρρύθμισις. Πεπροικισμένος μὲ πνεῦμα κυρίως πρακτικόν, ὅπερ ἀπετέλεσε τὸν κυριώτερον λόγον τῶν ἐπιτυχιῶν του, κατενόησεν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ὅτι αἱ ἀγροτικαὶ μᾶζαι, αἵτινες ἀντιπροσώπευον τὰ 90% τοῦ ὅλου πληθυσμοῦ τῆς Ρουμανίας, δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ ἐξακολουθήσουν νὰ ἐργάζωνται καὶ νὰ ζῶσιν ὑφ' ἃς συνθήκας ἔζων μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης, μακρὰν τοῦ πολιτισμοῦ καὶ ἐν ζῳώδει δουλείᾳ· πρὸς τοῦτο προέβη κατ' ἀρχὰς μέν, ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐσωτερικῶν τοῦ 1907, εἰς σοβαρὰς παραχωρήσεις πρὸς τοὺς ἀγρότας, τῷ δὲ 1913 ἔπεισε τὸν βασιλέα Κάρολον Α΄ περὶ τῆς ἀνάγκης τῆς ἀγροτικῆς μεταρρυθμίσεως, τὴν ὁποίαν κατόπιν κατώρθωσε νὰ πραγματοποιήσῃ κατὰ τὸ 1919. Ἕτερον σημαντικὸν ἔργον τῆς ἐσωτερικῆς του πολιτικῆς ὑπῆρξεν ἡ καθιέρωσις τῆς καθολικῆς ψηφοφορίας καὶ ἡ ὑποταγὴ τῆς δυναστείας εἰς τὰς πολιτικὰς αὐτοῦ βλέψεις, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἐδημιούργησε σφοδρὰν κοινοβουλευτικὴν ἀντίδρασιν, τὴν ὁποίαν ὅμως κατώρθωσε νὰ ὑπερνικήσῃ διὰ μεθόδων σχεδὸν δικτατορικῶν. Εἰς αὐτὸν δὲ ὀφείλεται κατὰ μέγα μέρος καὶ ἡ ἀπομάκρυνσις τοῦ τότε διαδόχου Καρόλου ἐκ τῆς Ρουμανίας καὶ ὁ ἐξαναγκασμὸς αὐτοῦ εἰς παραίτησιν ἀπὸ τῶν δικαιωμάτων τοῦ θρόνου. Ἐν τῇ ἐξωτερικῇ πολιτικῇ ἐτήρησε πάντοτε γαλλόφιλον πολιτικήν, ὑποτάξας οἰκονομικῶς τὴν Ρουμανίαν εἰς τὴν Γαλλίαν. Ἀκολουθῶν δὲ τὰς γαλλικὰς ὑποδείξεις, συνῆψε μετὰ τῆς Τσεχοσλοβακίας καὶ τῆς Νοτιοσλαβίας τὴν «Μικρὰν Ἀντάντ», καθὼς καὶ τὴν συμμαχίαν μετὰ τῆς Πολωνίας καὶ μετ' αὐτῆς τῆς Γαλλίας, καὶ κατεπολέμησε τὰς ἰταλοφίλους προσπαθείας τοῦ στρατηγοῦ Ἀβερέσκο. Ὁ Ἰωνὲλ Μπρα-

Digitized by Google

τιάνου διεκρίθη ἐπίσης καὶ ὡς ὀργανωτὴς τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων, κατορθώσας νὰ καταστήσῃ τοῦτο τὸν κυριώτερον μοχλὸν τῆς οἰκονομικῆς ἰδίως ζωῆς τῆς χώρας κατὰ τὴν τελευταίαν τριακονταετίαν, βοηθούμενος μεγάλως πρὸς τοῦτο καὶ ὑπὸ τοῦ τραπεζίτου ἀδελφοῦ του *Βιντίλα Μπρατιάνου*, ὁ ὁποῖος τὸν διεδέχθη εἰς τὴν ἀρχηγίαν τοῦ κόμματος. Μ. Δ. Β.

**Μπράτιμος.** Ἀγωνιστὴς τοῦ 1821 (βλ. λ. *Ἴσκος Χρόνης*).

**Μπρατίνιστα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Χάραδρος* (βλ. λ.).

—**Μπρατινίστης** ***Καλύβια*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης (βλ. λ. *Καλύβια*).

**Μπρατισλάβα,** ἢ ***Πρεσβοῦργον*** ἢ ***Πότσονυ*** (σλοβεν. Bratislava, γερμαν. Pressburg, οὑγγρ. Pözsóny) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἔχουσα ποτάμιον λιμένα. Εἶναι πρωτεύουσα τῆς Σλοβακίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Δουνάβεως, παρὰ τὸ σημεῖον τῆς συναντήσεως τῶν συνόρων Τσεχοσλοβακίας - Οὑγγαρίας καὶ Αὐστρίας, 65 χλμ. πρὸς Α. τῆς Βιέννης, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτοικοι (1921) 93.189, ἐξ ὧν 40 % Τσεχοσλοβάκοι, 28 % Γερμανοὶ καὶ 22 % Μαγυάροι. Κτισμένη ἐπὶ γραφικωτάτης τοποθεσίας, ἔχει πολλὰ ὡραῖα κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται τὸ βασιλικὸν ἀνάκτορον Σλόσσμπεργκ, κείμενον ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως (90 μ. ὑπὲρ τὴν ἐλευθέραν ὑπιφάνειαν τοῦ Δουνάβεως), ἡ γοτθικὴ μητρόπολις, τὸ δημαρχεῖον, τὸ μουσεῖον, ὁ ναὸς τῶν φραγκισκανῶν (ΙΓ' αἰῶνος) κτλ. Χάρις εἰς τὸν θαυμάσιον ποτάμιον λιμένα της, τὸ σύστημα τῶν περὶ αὐτὴν διωρύγων καὶ σιδηροδρομικῶν ἀρτηριῶν ἐγένετο κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη, ἀπὸ τῆς ἱδρύσεως τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἓν τῶν ζωηροτέρων ἐμπορικῶν κέντρων τοῦ Δουνάβεως, εἰς στενὰς διατελοῦσα σχέσεις μετὰ τῶν Β. Βαλκανίων, καὶ ἀξιολογωτάτη βιομηχανικὴ μητρόπολις, ἔχουσα ἐργοστάσια ὑφασμάτων, ἀλεύρων, ξυλείας, χημικῶν προϊόντων, ἐκρηκτικῶν ὑλῶν, χάρτου, ναυπηγεῖα, καπνεργοστάσια κτλ. Κατ' ἔτος τελεῖται ἐν αὐτῇ ἡ μεγάλη ἐμποροπανήγυρις τῆς Ἀνατολῆς. Ἐπίσης εἶναι ἕδρα τῆς διεθνοῦς ἐπιτροπῆς τῆς ναυσιπλοΐας τοῦ Δουνάβεως.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ Μπρατισλάβα ἱδρύθη, κατὰ τὴν *παράδοσιν, ὑπό τινος Ρωμαίου στρατηγοῦ καλουμένου* Πίσωνος, ἐξ οὗ καὶ τὸ λατινικὸν αὐτῆς ὄνομα Pisonium· ὡς συνάγεται ὅμως ἐκ τοῦ ἀρχαίου σλαβικοῦ ὀνόματός της Brecislawa, ἐξ οὗ προῆλθε τὸ σημερινὸν *Μπρατισλάβα* καὶ τὸ γερμανικὸν *Πρεσβοῦργον*, πρόκειται περὶ ἀποικίας Σλάβων. Ἡ πόλις ἔπαιξε σπουδαῖον ρόλον κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα, διαρκούντων τῶν πολέμων μεταξὺ Ἑρρίκου Γ' καὶ τῶν Μαγυάρων βασιλέων. Ἀπὸ τοῦ 1291 ἀπέκτησε πολλὰ προνόμια, διατηρηθέντα καὶ ἐπὶ τῶν χρόνων τῆς Αὐστροουγγρικῆς αὐτοκρατορίας. Ἐκ τῶν τὰ μάλιστα συμβαλόντων διὰ τὴν ἀνάπτυξιν αὐτῆς ἡγεμόνων ὑπῆρξαν οἱ Λουδοβῖκος ὁ Μέγας, καταγόμενος ἐκ τοῦ Ἀνδηγανικοῦ οἴκου (1342—1382) καὶ ὁ Σιγισμόνδος (1387—1437)· ὁ τελευταῖος συνεκάλεσεν ἐν αὐτῇ τὴν δίαιταν τῆς ἁγίας αὐτοκρατορίας (1429). Μετὰ τὴν μάχην τοῦ Μοχὰτς (1526) καὶ τὴν κατάληψιν τῆς Βούδας ὑπὸ τῶν Τούρκων, ἐγένετο πρωτεύουσα τῆς Οὑγγαρίας ἐπὶ μακρὸν χρόνον, ἐν αὐτῇ δὲ ἐστέφοντο οἱ βασιλεῖς ἀπὸ τοῦ 1526 μέχρι τοῦ 1867. Ἐνταῦθα συνωμολογήθη τῷ 1805, μετὰ τὴν μάχην τοῦ Ἀούστερλιτς, συνθήκη εἰρήνης μεταξὺ Γαλλίας (Ναπολέοντος) καὶ Αὐστρίας. Χ. Δ.

**Μπρατίτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἀρκαδίας χωρίου *Παρνασσός* (βλ. λ.).

**μπρατσάρισμα** (τὸ) *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *κερούλκησις*.

**μπρατσάρω** *[Ναυτ.]*· βλ. λ. *κερουλκῶ*.

**Μπρατσέλλι** (Bracelli), ***Ἰάκωβος***. Γενουήνσιος ἱστορικὸς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἀποθανὼν τῷ 1460. Ἠρνήθη τὴν προταθεῖσαν εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ συμπατριώτου του πάπα Νικολάου Ε' ἀνωτάτην ὑπηρεσίαν ἐν τῷ Βατικανῷ, προτιμήσας τὴν θέσιν τοῦ ἀρχιγραμματέως τῆς δημοκρατίας τῆς Γενούης, τὴν ὁποίαν κατεῖχε μέχρι τοῦ θανάτου του. Ἔγραψε διάφορα ἔργα ἀφορῶντα τὴν ἱστορίαν τῆς Γενούης τὰ ἑξῆς: «De billo hispano libri V» ἐν τῷ ὁποίῳ περιγράφει τὸν πόλεμον τῶν Γενουαίων ἐναντίον τοῦ βασιλέως Ἀλφόνσου Ε' τῆς Ἀραγῶνος (Μιλᾶνον, 1477), «De prœcipuis Genuensis urbis familiis», δημοσιευθὲν ἐν τῷ «Iter italicum» τοῦ Μαμπιγιόν, καὶ τὰ «De claris Genuensibus libellus», «Descriptio Liguria», «Epistolarum liber», δημοσιευθέντα ἐν τῷ «Thesaurus antiquitatum» τοῦ Γκραίβιους. Τὸ πρῶτον ἐκ τῶν ἔργων του ἀπήλαυε μεγάλης ἐκτιμήσεως, παρεβάλλετο δὲ ὑπὸ τοῦ Μπεροάλντο πρὸς τὰ συγγράμματα πολεμικῆς ἱστορίας τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος. Χ. Δ.

**μπρατσέρα.** Εἶδος ἱστιοφόρου (βλ. *βρατσέρα*).

**Μπρατσιάνο** (Bracciano) *[Γεωγρ.]*. —1) Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Ρώμης, κειμένη παρὰ τὰς ΝΔ. ὄχθας τῆς ὁμωνύμου λίμνης. Ἔχει θερμοπηγὰς καὶ μεταλλουργικὰς ἐγκαταστάσεις, εἶναι δὲ ἀξιόλογον τουριστικὸν κέντρον. Ἐπὶ βράχου ὑπερκειμένου τῆς πόλεως ὑψοῦται λαμπρὸν πεντάπλευρον ὀχυρὸν ἀνάκτορον μετὰ πέντε πύργων εἰς τὰς πλευρὰς αὐτοῦ, τὸ ὁποῖον ἐκτίσθη περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος Ὀρσίνι, περιῆλθε δὲ τῷ 1696 εἰς τοὺς Ὀντεσκάλκι. Κάτ. 5.600.

—2) Λίμνη τῆς Ἰταλίας, ἡ ἀρχαία Lacus Sabatinus τῶν Ρωμαίων, κειμένη ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Ρώμης, ἧς ἀπέχει περὶ τὰ 40 χλμ. πρὸς ΒΔ. Εἶναι ἐξόχως ἰχθυόεσσα, σχήματος σχεδὸν κυκλικοῦ, καὶ ἔχει ἔκτασιν 50 τ. χλμ. καὶ βάθος 300 μ., ὑπέρκειται δὲ 140 μ. τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Τὰ ἐκχυλίσματα αὐτῆς ἐκβάλλουσι διὰ τοῦ Ἀρρόνε εἰς τὴν 18 μόλις χλμ. ἀπέχουσαν Τυρρηνικὴν θάλασσαν, τροφοδοτοῦσι δὲ καὶ τὸ ὑδραγωγεῖον Ἄκουα Πάολα τῆς Ρώμης. Χ. Δ.

**Μπρατσιάνο** (Bracciano), ***Ἰσαβέλλα, δούκισσα τοῦ —***· βλ. λ. Ἰσαβέλλα (τῶν Μεδίκων ἢ τῆς Τοσκάνης) δούκισσα τοῦ —.

**Μπράτσιο** (Braccio), ***Ἀλέξανδρος***. Ἰταλὸς λογοτέχνης τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ἀποθανὼν ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1503. Ἀνέλαβε πλείστας πολιτικὰς ἀποστολάς, διετέλεσε δὲ ἀντιπρόσωπος (πρεσβευτὴς) τῆς Φλωρεντινῆς δημοκρατίας παρὰ τῷ πάπᾳ Ἀλεξάνδρῳ ΣΤ'. Κατέλειπε μίαν μετάφρασιν τῶν ἔργων τοῦ Ἀππιανοῦ, ἐκτυπωθεῖσαν τὸ πρῶτον ἐν Βενετίᾳ (1538), σημειώσασαν δ' ἀκολούθως πολλὰς ἐπανεκδόσεις, καὶ λατινιστὶ, διάφορα ἄλλα μὴ ἐκδοθέντα ἔργα, τῶν ὁποίων τὰ χειρόγραφα σῴζονται ἐν τῇ Λαυρεντιανῇ βιβλιοθήκῃ. Χ. Δ.

— **Μπράτσιο** *ντὶ* ***Μοντόνε*** (Braccio di Montone), ***Ἀνδρέας***. Περίφημος Ἰταλὸς κοντοττιέρος (ἀρχηγὸς μισθοφορικῶν σωμάτων) (1368—1424), καταγόμενος ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας τῆς Περουζίας, ἥτις ἐξεδιώχθη ἐκ τῆς πατρίδος αὐτῆς μετὰ τῆς λοιπῆς ἀριστοκρατίας, κατά τινα δημοκρατικὴν ἐπανάστασιν. Κατ' ἀρχὰς ἐπολέμησεν ἐπὶ μακρὸν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν διαφόρων Ἰταλῶν ἡγεμόνων, κατώρθωσε δὲ νὰ καταλάβῃ ἐπὶ κεφαλῆς τῶν ὀπαδῶν του τὴν γενέτειραν αὐτοῦ πόλιν, τὴν ὁποίαν διῴκησε καλῶς ἐπὶ ἱκανὸν χρονικὸν διάστημα. Τῷ 1417, ὑποστηρίζων τὸν πάπαν Ἀλέξανδρον Ε', κατέλαβε τὴν Ρώμην, ἀλλ' ἐξεδιώχθη ἐκεῖθεν μετ' ὀλίγον ὑπὸ τοῦ δι' ὅλης τῆς ζωῆς ἀντιπάλου του Σφόρτσα, ὀπαδοῦ τοῦ πάπα Γρηγορίου ΙΒ', κατώρθωσε δὲ μόνον νὰ διατηρήσῃ τὴν κατοχὴν πολλῶν ἄλλων πόλεων, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἤσκει ἐπικυριαρχικὰ δικαιώματα ἡ Ἁγία Ἕδρα. Εἰσελθὼν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς Νεαπόλεως ἡττήθη ὑπὸ τοῦ Σφόρτσα καὶ ἐτραυματίσθη τῷ 1424 παρὰ τὴν Ἀκουΐλα, τοσαύτην δὲ ᾐσθάνθη ἐντροπὴν ἐκ τῆς ἀποτυχίας ταύτης, ὥστε ἠρνήθη νὰ δεχθῇ τροφὴν καὶ ἀπέθανεν ἐκ πείνης. Οἱ ὀπαδοὶ τοῦ Μπράτσιο ἐξηκολούθησαν καὶ μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ τοὺς ἀγῶνας πρὸς τοὺς περὶ τὸν Σφόρτσα, προῆλθον δ' ἐντεῦθεν δύο μεγάλαι ἀντίπαλοι μερίδες, κληθεῖσαι ἐκ τῶν ἀρχηγῶν αὐτῶν Bracceschi καὶ Sfortceschi, αἵτινες ἐξηκολούθησαν τὴν ἀντιζηλίαν τῶν δύο περιφήμων κοντοττιέρι καὶ μετὰ τὸν θάνατον αὐτῶν. Χ. Δ.

**Μπρατσιολίνι** (Bracciolini), ***Φραγκῖσκος***. Ἰταλὸς ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Πιστόϊᾳ (1566—1646). Ἠσπάσθη τὸ ἐκκλησιαστικὸν στάδιον καὶ διετέλεσε γραμματεὺς τοῦ καρδιναλίου Ἀντωνίου Μπαρμπερίνι. Συνέθεσε πολυάριθμα ποιήματα, ἅτινα ἀπέλαυον μεγάλης ἐπὶ τῆς ἐποχῆς αὐτοῦ φήμης. Γνωστότερα τούτων εἶναι τὸ «Croce racquistata» (1605), ἡρωϊκὸν ποίημα μὲ θέμα τοὺς πολέμους τοῦ Βυζαντινοῦ βασιλέως Ἡρακλείου ἐναντίον τῶν Περσῶν, τὸ ὁποῖον μερικοὶ Ἰταλοὶ κριτικοὶ τάσσουσιν, ἀπὸ ἀπόψεως ἀξίας, ἀμέσως μετὰ τὴν «Ἀπελευθερωθεῖσαν Ἱερουσαλὴμ» τοῦ Τάσσου, καὶ τὸ «Scherno degli Dei» (1618), κωμικο-ηρωϊκὸν ποίημα, ἐν τῷ ὁποίῳ γελοιοποιοῦνται οἱ θεοὶ τῶν εἰδωλολατρῶν. Χ. Δ.

**Μπρατσιώτης,** ***Παναγιώτης Ἰωάν.*** Καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ Ἀθηνῶν, γεννηθεὶς ἐν Θήβαις τῷ 1889. Ἐσπούδασεν ἐν τῇ Ριζαρείῳ σχολῇ καὶ τῇ θεολογικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν καὶ συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ἐν τοῖς πανεπιστημίοις τῆς Λειψίας καὶ Ἰένης. Τῷ 1915 διωρίσθη καθηγητὴς τῶν ἱερῶν ἐν τῷ διδασκαλείῳ Πειραιῶς καὶ ἔκτοτε ὑπηρέτησεν ὡς τοιοῦτος ἐν διαφόροις σχολείοις μέχρι τοῦ 1923. Κατὰ τὸ 1921—1922 διετέλεσε καὶ διευθυντὴς τοῦ περιοδικοῦ «Ἱερὸς Σύνδεσμος», ἐπισήμου τότε ὀργάνου τῆς Ἱερᾶς συνόδου. Τῷ 1924 διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῇ θεολογικῇ σχολῇ τοῦ πανεπιστημίου, τῷ δὲ 1925 ἐξελέγη ὑπ' αὐτοῦ καὶ διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς βιβλικῆς ἱστορίας καὶ τῷ 1929 προήχθη, τῇ προτάσει τῆς αὐτῆς σχολῆς, εἰς τακτικὸν καθηγητὴν τῆς εἰσαγωγῆς εἰς τὴν Παλαιὰν Διαθήκην καὶ τῆς ἑρμηνείας τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης κατὰ τοὺς Ο'. Ἔργα αὐτοῦ δημοσιευθέντα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ὁ Παλαιστινὸς Ἰουδαϊσμὸς ἐπὶ τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ» (1918), «Ἑβραίων παίδων ἀγωγὴ» (1920), «Ἡ λεγομένη θρησκειολογικὴ σχολὴ» (1920), «Ὁ δεσμώτης Βαπτιστὴς καὶ ὁ Κύριος» (1920), «Ἰωάννης ὁ Βαπτιστὴς ὡς προφήτης» (1921), «Ὑπόμνημα εἰς τὴν πρὸς Φιλήμονα ἐπιστολὴν τοῦ Παύλου» (1923), «Ὁ ἰουδαϊκὸς ὄχλος ἐν τοῖς Εὐαγγελίοις» (1923), «Ἡ γυνὴ ἐν τῇ Βίβλῳ» (1924), «Αἱ παραβολαὶ τοῦ Κυρίου καὶ ἡ νεωτέρα κριτικὴ» (1924), «Ὁ ἀπόστολος Παῦλος καὶ ἡ μετάφρασις τῶν Ο'» (1925), «Ἦτο ὁ Ἰησοῦς Χριστὸς σοσιαλιστής;» (1925), «Οἱ Φιλισταῖοι καὶ ὁ αἰγαιοκρητικὸς πολιτισμὸς ἐν Παλαιστίνῃ» (1926), «Αἱ περὶ τοὺς Ο' σπουδαὶ διὰ μέσου τῶν αἰώνων» (1927), «Ἡ γλῶσσα τῶν Ο'» (1927), «Ὑπόμνημα εἰς τὰς ᾠδὰς τῶν ἀναβαθμῶν» (1928), «Ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου» (1929), «Οἱ τρεῖς ἱεράρχαι καὶ τὸ κοινωνικὸν πρόβλημα» (1930), «Ἡ διαλεκτικὴ θεολογία» (1931), «Αὐθεντία καὶ ἐλευθερία ἐν τῇ ὀρθοδόξῳ θεολογίᾳ» (1931), «Ἀγγλικανοὶ καὶ Ὀρθόδοξοι 1918—1931» (1931). Ἐπίσης ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἄρθρα ἐν ἐπιστημονικοῖς καὶ ἐκκλησιαστικοῖς περιοδικοῖς. Συνεργάτης τῆς «Μεγάλης Ἑλληνικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας». —Ο.

**Μπράτσλαφ** (Bratslav ἢ Braclav) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας, ἐν τῷ κυβερνείῳ Ποδολίας τῆς Οὐκρανίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπούγκ. Εἶναι πόλις ὀχυρά, παίξασα σημαντικὸν ρόλον κατὰ τοὺς πολέμους τῶν Κοζάκων, Πολωνῶν, Τούρκων καὶ Ρώσων κατὰ τὸν ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰῶνα. Κάτ. 7.300. Χ. Δ.

**μπράτσο** (τό)· ὁ βραχίων: «ὁλοστρόγγυλα —, λευκὰ μπράτσα», ᾆσμ. «τὰ μπράτσα σου τὰ παχουλά». || μονὰς μήκους, πῆχυς, ἐκ τοῦ μήκους τοῦ βραχίονος.

**μπρατσόλι** (τό)· λ. ναυτ., ὁ ἀγκὼν τῆς ἐπωτίδος.

**Μπράττλμποροo** (Brattleboro) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῇ κομητείᾳ Οὐΐντχαμ τῆς πολιτείας Βέρμοντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κοννέκτικατ ἐντὸς λοφώδους γραφικῆς περιοχῆς καλυπτομένης ὑπὸ πολλῶν δασῶν. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, ἱδρύθη τῷ 1753 καὶ ἔχει κατ. (1920) 7.324. Χ. Δ.

**Μπρατχίμον** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης (βλ. λ. *Βραχίμον*).

**Μπράϋαν** (Bryan), ***Γουλιέλμος***. Ἀμερικανὸς πολιτικὸς (1860—1925). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἀπὸ τοῦ ἔτους 1883 μέχρι τοῦ 1887 ἤσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα ἐν Τζάκσονβιλ, ἐγκατασταθεὶς μετὰ ταῦτα εἰς Λίνκολν. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν διεκρίθη τὸ πρῶτον ὡς πολιτικὸς ρήτωρ κατὰ τὴν προεδρικὴν προεκλογικὴν κίνησιν τοῦ 1888. Ἐκλεγεὶς βουλευτὴς ὑπῆρξε δεινὸς ἀγορητὴς καὶ μαχητικώτατος συζητητής. Τρὶς ἐκτεθεὶς ὑποψήφιος τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος διὰ τὸ ἀξίωμα τοῦ προέδρου (1896, 1900, 1908), ἀπέτυχε. Μετέσχε τοῦ ἀγῶνος ὑπὲρ τοῦ διμεταλλισμοῦ, δημοσιεύσας σειρὰν ἄρθρων ἰδίως εἰς τὴν ὑπ' αὐτοῦ ἐκδιδομένην (ἀπὸ τοῦ ἔτους 1894 — 1896) ἐφημερίδα «Παγκόσμιον Κήρυκα», κηρύττων ὡς πανάκειαν τῶν βιομηχανικῶν καὶ ἰδίως τῶν γεωργικῶν κακῶν τὸν «ἐλεύθερον - ἄργυρον». Κατὰ τὸν προεκλογικὸν ἀγῶνα τοῦ 1896 λέγεται ὅτι ἐξεφώνησεν 600 λόγους εἰς 27 διαφόρους πολιτείας. Κατὰ τὸν Ἱσπανο-αμερικανικὸν πόλεμον εἰργάσθη διὰ τὸν σχηματισμὸν ἐθελοντικῶν σωμάτων. Ἐπίσης εἰργάσθη διὰ τὴν σύναψιν τῆς εἰρήνης, ἀλλ' ἀντετάχθη κατὰ τῆς διαρκοῦς κατοχῆς τῶν Φιλιππίνων νήσων. Μετὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1900 ὁ Μπράϋαν ἵδρυσε τὴν ἑβδομαδιαίαν πολιτικὴν ἐφημερίδα «The Commoner». Μετὰ τὴν ἐν ἔτει 1908 ἀποτυχίαν του κατὰ τὰς προεδρικὰς ἐκλογὰς (ὅτε ἐπέτυχεν ὁ Τάφτ), ὁ Μπράϋαν ἤρχισε νὰ ἀπομακρύνεται τοῦ ἀγῶνος καὶ τῷ 1912 ἠρνήθη νὰ ἐκθέσῃ ὑποψηφιότητα. Ἐν τούτοις, χάρις εἰς τὴν ἐπιρροήν αὐτοῦ, ἐπετεύχθη ἡ ἀνακήρυξις τοῦ Οὐΐλσωνος (ἀντὶ τοῦ Κλὰρκ) ὡς ὑποψηφίου τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος. Ὁ Οὐΐλσων μετὰ τὴν ἐπιτυχίαν του, ἀμείβων τὸν Μπράϋαν διὰ τὴν ὑποστήριξιν, προσέλαβεν αὐτὸν ὡς ὑπουργὸν τῶν Ἐξωτερικῶν (1913). Ὁ Μπράϋαν κατέβαλε πολλὰς προσπαθείας ὑπὲρ τῆς εἰρήνης. Τὰς προσπαθείας του ὅμως ταύτας διέκοψεν ἡ ἔκρηξις τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Ἀλλὰ καὶ μετὰ τὴν ἔκρηξιν τούτου ἐπέδειξε μέγα ἐνδιαφέρον πρὸς ἀποκατάστασιν τῆς εἰρήνης. Ἀντετάχθη εἰς τὴν παροχὴν δανείων πρὸς τοὺς ἐμπολέμους. Μετὰ τὴν καταβύθισιν τῆς «Λουζιτανίας» ὑπέγραψε τὴν πρώτην πρὸς τὴν Γερμανίαν ἀπευθυνθεῖσαν διακοίνωσιν, παρῃτήθη ὅμως (Ἰούνιος 1915) ἅμα ὡς ὁ πρόεδρος Οὐΐλσων ἡτοίμασε δευτέραν διακοίνωσιν. Μετὰ τὴν παραίτησίν του, συνε-

*Γουλ. Μπράϋαν.*

Digitized by Google

πὴς πάντοτε πρὸς τὰς ἀντιλήψεις του, ἐκηρύχθη κατὰ τῆς χορηγήσεως ἀγγλο-γαλλικοῦ δανείου καὶ ἠγωνίσθη παντὶ σθένει ἐναντίον τῆς ἐξόδου τῆς Ἀμερικῆς εἰς τὸν πόλεμον. Ἐν τούτοις, κληθεὶς μετὰ τὴν κήρυξιν τούτου νὰ προσφέρῃ τὰς ὑπηρεσίας του, κατετάχθη, μολονότι ἦγεν ἡλικίαν 57 ἐτῶν, εἰς τὸν στρατόν, καὶ ὑπεστήριξε τὰ ὑπὸ τοῦ Οὐΐλσωνος ληφθέντα κατὰ τὸν πόλεμον μέτρα καὶ τὴν καθίδρυσιν τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, τονίζων ὅμως πάντοτε τὴν πιστὴν ἐφαρμογὴν τοῦ δόγματος τοῦ Μονρώ. Ὁ Μπράϋαν εἰργάσθη ὑπὲρ πάντων τῶν σπουδαιοτέρων προοδευτικῶν μέτρων, τὰ ὁποῖα ἐλήφθησαν κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς, εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ λαοῦ ἐκλογὴν τῶν γερουσιαστῶν, τὸν φόρον ἐπὶ τοῦ εἰσοδήματος, τὴν ψῆφον τῶν γυναικῶν κτλ.

Γ. Ι. Β.

**Μπράϋαντ** (Bryant), ***Γουλιέλμος Κοῦλλεν***. Ἀμερικανὸς ποιητὴς καὶ φιλόλογος (1794—1878). Κατ' ἀρχὰς δικηγόρος, ἐγκατέλιπεν εἰς νεαρὰν ἡλικίαν τὴν νομικὴν σταδιοδρομίαν του, ἵνα ἀφιερωθῇ εἰς τὴν λογοτεχνίαν. Συνειργάσθη εἰς πολλὰ περιοδικὰ καὶ περιῆλθε χάριν εὐρυτέρων σπουδῶν πολλάκις τὴν Εὐρώπην. Ἐκ τῶν ποιητικῶν ἔργων του τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσι τά: «Thanatopsis» (1816), «Οἱ αἰῶνες» (1821), «Οἱ λειμῶνες», «Ὁ ὕμνος τῆς πόλεως», «Τὸ πεδίον τῆς μάχης», «Ἑσπεριναὶ αὖραι». Ὁ Μπράϋαντ διεκρίθη καὶ ὡς διηγηματογράφος καὶ συγγραφεὺς πολιτικῶν πραγματειῶν. Ἐνδιαφέρουσαι εἶναι ἐπίσης αἱ «Ἐπιστολαὶ ταξιδιώτου εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ τὴν Ἀμερικὴν» (1854). Τὰ ποιήματα τοῦ Μπράϋαντ διακρίνονται διὰ τὴν εὐστροφίαν τῆς γλώσσης καὶ τὴν κομψότητα τοῦ ὕφους, συγχρόνως δὲ διὰ τὴν ἔξαρσιν τοῦ συναισθήματος καὶ τὸ βάθος τῶν ἰδεῶν.

Α. Δ.

— **Μπράϋαντ** (Bryant), ***Σοφία***. Ἀγγλὶς παιδαγωγὸς (1850—1922). Ἐσπούδασεν ἐν Λονδίνῳ, διετέλεσε δὲ ἀπὸ τοῦ ἔτους 1875 μέχρι τοῦ 1895 καθηγήτρια ἐν τῷ κολλεγίῳ τῶν θηλέων τοῦ βορείου Λονδίνου. Τῷ 1881 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῶν μαθηματικῶν καὶ τῶν ἠθικῶν ἐπιστημῶν, ὑπῆρξε δὲ ἡ πρώτη ἐκ τῶν γυναικῶν, ἡ ὁποία ἐτιμήθη ἐν Ἀγγλίᾳ διὰ διδακτορικοῦ διπλώματος. Ἀπὸ τοῦ ἔτους 1895 μέχρι τοῦ 1918 διετέλεσε διευθύντρια τοῦ ἀνωτέρω κολλεγίου. Ἡ Μπράϋαντ ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας καὶ ἄρθρα καὶ βιβλία ἐπὶ ἐπιστημονικῶν καὶ ἐκπαιδευτικῶν ζητημάτων, μεταξὺ τῶν ὁποίων κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Σκοποὶ τῆς ἐκπαιδεύσεως» (1887), «Ἡ διδασκαλία τῆς ἠθικῆς ἐν τῇ οἰκογενείᾳ καὶ τῷ σχολείῳ» (1897), «Πῶς νὰ ἀναγινώσκεται ἡ Βίβλος κατὰ τὸν Κ' αἰῶνα» (1918), «Ἡ Κελτικὴ Ἰρλανδία» (1889), «Τὸ πνεῦμα τῆς Κελτικῆς» (1913).

Γ. Ι. Β.

**Μπράϋς** (Bryce), ***Ἰάκωβος***. Ἄγγλος πολιτικός, νομικός, ἱστορικὸς καὶ συγγραφεύς. Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ, τῷ δὲ 1867 διωρίσθη δικηγόρος καὶ μετὰ τρία ἔτη καθηγητὴς τοῦ ἀστικοῦ δικαίου ἐν Ὀξφόρδῃ. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος μετέβη εἰς Ἀμερικήν, τῷ 1876 εἰς Καύκασον, Ἀρμενίαν καὶ Κωνσταντινούπολιν, ἔνθα τῷ ἐδόθη ἀφορμὴ νὰ ἐνδιαφερθῇ διὰ τοὺς Ἀρμενίους καὶ νὰ ἱδρύσῃ μετὰ ταῦτα ἐν Λονδίνῳ τὴν «Ἀγγλοαρμενικὴν ἑταιρείαν». Ἐκλεγεὶς βουλευτής, ὑπῆρξεν εἷς τῶν σημαινόντων συμβούλων τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων, ἐλάχιστα ἐν τούτοις διακριθεὶς ἐντὸς τοῦ κοινοβουλίου, καθὸ ἀπὸ φύσεως καὶ χαρακτῆρος μὴ κοινοβουλευτικὸς ἀνήρ. Τῷ 1886 ἐγένετο ὑφυπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ὑπὸ τὸν Γλάδστωνα καὶ μετὰ ταῦτα καγκελλάριος τοῦ δουκάτου τῆς Λαγκαστρίας καὶ ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου. Μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως τῶν φιλελευθέρων (1895) μετέβη εἰς Νότιον Ἀφρικὴν καὶ μετὰ δύο ἔτη ἐδημοσίευσε τὸ βιβλίον του «Ἐντυπώσεις ἐκ τῆς Νοτίου Ἀφρικῆς», ἐν ᾧ διεμαρτυρήθη κατὰ τῶν διαπραγματεύσεων, αἵτινες ἐγένοντο τότε μετὰ τῶν Μπόερς. Μετὰ τὴν διάσπασιν τοῦ κόμματος τῶν φιλελευθέρων (1899) ὁ Μπράϋς προσεχώρησεν εἰς τὴν ὁμάδα Κάμπελ-Μπάννερμαν, γενόμενος τῷ 1905 ὑπουργὸς ἐν τῇ ὑπὸ τὸν τελευταῖον σχηματισθείσῃ κυβερνήσει. Τῷ 1907 ἀπεστάλη ὡς πρεσβευτὴς εἰς Οὐασιγκτῶνα, παραμείνας ἐν τῇ θέσει ταύτῃ μέχρι τοῦ ἔτους 1913. Διεκρίθη ἰδίως διὰ τὴν διπλωματικὴν διαχείρισιν τοῦ μεταξὺ Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ Νέας Γῆς ζητήματος τοῦ δικαιώματος τῆς ἁλιείας (τὸ ὁποῖον τελικῶς παρεπέμφθη εἰς τὸ δικαστήριον τῆς Χάγης) καὶ διαφόρων ζητημάτων, ἅτινα ὑφίσταντο μεταξὺ Β. Ἀμερικῆς καὶ Καναδᾶ. Κατὰ τὰς παραμονὰς τῆς κηρύξεως τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὁ Μπράϋς δὲν ἐπίστευε ποτὲ εἰς τὸ ἐνδεχόμενον τῆς κηρύξεως παρὰ τῆς Ἀγγλίας πολέμου κατὰ τῆς Γερμανίας. Ἡ παραβίασις ὅμως τῆς οὐδετερότητος τοῦ Βελγίου τὸν ἠνάγκασε νὰ ἀποδεχθῇ τὸ μοιραῖον τῆς ὑπὸ τῆς Ἀγγλίας ληφθείσης ἀποφάσεως περὶ συμμετοχῆς της εἰς τὸν πόλεμον. Διετέλεσε πρόεδρος διαφόρων κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου συσταθεισῶν ἐν Ἀγγλίᾳ ἐπιτροπῶν.

Ὁ Μπράϋς ἔγραψε διάφορα ἱστορικὰ καὶ νομικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἡ Ἁγία Ρωμαϊκὴ Αὐτοκρατορία» (1864), «Ὑπερκαυκασία καὶ Ἀραράτ» (1877), «Ἡ Ἀμερικανικὴ δημοκρατία» (1888), «Μελέται ἐν τῇ ἱστορίᾳ καὶ τῇ νομολογίᾳ» (1901), «Αἱ νεώτεραι δημοκρατίαι» (1921), «Διεθνεῖς σχέσεις» (1922) κλπ.

Γ. Ι. Β.

**Μπραχάμι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Ἀττικῆς, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος, μετονομασθὲν εἰς *Ἅγιον Δημήτριον*. Κεῖται 5 χλμ. πρὸς Ν. τῶν Ἀθηνῶν, μεθ' ὧν συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ, διακλαδώσεως τῆς ὁδοῦ Βουλιαγμένης. Κάτ. (1928) 1.816. Ἔχει γραφεῖον ΤΤΤ, ἀστυνομικὸν σταθμὸν καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται καὶ οἱ συνοικισμοὶ *Κατσιπόδι*, *Σπιθάρι* (ἢ *Καλόγηροι*), ἡ οἰκοδομουμένη νῦν *Ἡλιούπολις* μετὰ τοῦ παλαιοτέρου χωρίου *Καρᾶ* καὶ ὁ *Σωρός*.

Ι. Σ. Σ.

**Μπραχὲ** (Brahé). Σκανδιναυϊκὴ οἰκογένεια, διαιρουμένη εἰς δύο κλάδους, τὸν δανικὸν καὶ τὸν σουηδικόν. Κυριώτερα μέλη τοῦ πρώτου κλάδου εἶναι ὁ *Ἄξελ*, ὁ *Ὄθων* (1517—1571) καὶ ὁ *Στέεν* (1547—1620), σύμβουλοι τοῦ κράτους, καὶ ὁ *Γεώργιος* (1585—1661), ἱππότης καὶ μέλος τοῦ Ρισγκρώντ. Εἰς τὸν κλάδον τοῦτον ἀνήκουσιν ἡ *Σοφία*, γνωστὴ διὰ τὴν ἐνασχόλησιν αὐτῆς μὲ τὰς ἀποκρύφους ἐπιστήμας, καὶ ἡ *Κάρεν* ἢ *Αἰκατερίνη*, ἥτις ἵδρυσε τὸ ἰνστιτοῦτον θηλέων τῆς Ὀντενσέε, ὅπερ λειτουργεῖ καὶ σήμερον καὶ εἰς ὃ ἐκληροδότησε τὴν θαυμασίαν βιβλιοθήκην της ἐκ διακοσίων χιλιάδων τόμων. Ὁ κλάδος οὗτος ἐξέλιπε τῷ 1789.

Ἐκ τῶν μελῶν τοῦ σουηδικοῦ κλάδου γνωστότερα εἶναι ὁ *Γουσταῦος*, ἀρχιστράτηγος, ἡ κόμισσα *Ἔμπα* (1596—1654), ἥτις ὑπῆρξε φίλη τοῦ βασιλέως Ἀδόλφου καὶ συνεζεύχθη τὸν ἀρχιστράτηγον Ἰάκωβον ντὲ Λὰ Γκαρντιέ, ὁ *Πέτρος* (1602—1680), εἷς τῶν προσφιλεστέρων συντρόφων τοῦ Γουσταύου Ἀδόλφου καὶ ἐκ τῶν ἐνδοξοτέρων πολιτικῶν τῆς Σουηδίας, καὶ τέλος ὁ *Μάγνος* (1790—1844), ὅστις ὑπῆρξε πρεσβευτὴς τῆς Σουηδίας ἐν Πετρουπόλει (1826), ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου κτλ. Σοφώτατος καὶ βαθύτατος ἐπιστήμων, ἐξελέγη μέλος σχεδὸν ὅλων τῶν εὐρωπαϊκῶν ἀκαδημιῶν. Α. Δ.

— **Μπραχὲ** (Brahé), ***Τύχων***· βλ. λ. *Τύχων* Βράχιος.

**Μπράχμα** (Brâhma)· βλ. λ. *Βράχμα*.

**Μπραχμαποῦτρα** (Brahmaputra) *[Γεωγρ.]*. Μέγας ποταμὸς τοῦ Θιβὲτ καὶ τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Βραχμαποῦτρα*).

**Μπράχφογκελ** (Brachvogel), ***Ἀλβέρτος-Αἰμίλιος***. Γερμανὸς συγγραφεὺς καὶ δραματικὸς ποιητὴς (1824—1878). Ἔγραψε τὴν τραγῳδίαν «Νάρκισσος» (1857), ἥτις ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν, διάφορα μυθιστορήματα, κυριώτερον ἐκ τῶν ὁποίων εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Friedemann Bach» (1858), σειρὰν βιογραφιῶν ἡγεμόνων, στρατηγῶν καὶ πολιτικῶν ἀνδρῶν τῆς Γερμανίας, «Ἱστορίαν τοῦ ἐν Βερολίνῳ βασιλικοῦ θεάτρου» εἰς δύο τόμους κ. ἄ.

Γ. Ε. Κ.

**μπρέ**· ἀντὶ *βρὲ* (βλ. λ.).

**Μπρεὰ** (Bréhat), ***Ἀλφρέδος-Γκεζεννὲκ*** (Guézennec) *ντὲ* —. Γάλλος μυθιστοριογράφος (1826—1866). Ἐταξίδευσεν ἐπὶ μακρὸν εἰς Ἰνδίας, Ἀμερικὴν καὶ ἀλλαχοῦ, ἐγκατασταθεὶς δὲ κατόπιν εἰς Παρισίους ἤρχισε γράφων διηγήματα καὶ μυθιστορήματα, ἐκ τῶν ὁποίων κατεδείχθη προικισμένος διὰ πραγματικοῦ λογοτεχνικοῦ ταλάντου. Μεταξὺ τούτων ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Σκηναὶ ἀπὸ τὴν σύγχρονον ἐποχὴν» (1858), «Ἀτσαλένιο μπράτσο» (1859), «Ἕνα δρᾶμα 'ς τὴν Καλκούτα» (1862), «Οἱ λαθρέμποροι τῆς Σάντα Κροὺζ» (1864), «Ἡ μαύρη μάγισσα» (1866), «Περιπέτειαι ἑνὸς μικροῦ Παρισινοῦ» (1867) κλπ. καὶ τὸ τελευταῖον ἔργον αὐτοῦ «Ἡ ὡραία δούκισσα» (1873).

**Μπρεὰ** (Bréa), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής***. Γάλλος στρατηγὸς (1790—1848). Μετέσχε τῶν ἐκστρατειῶν τοῦ Ναπολέοντος καὶ διεκρίθη εἰς τὸ Βατερλώ. Κατὰ τὰ ἐπαναστατικὰ κινήματα ἐναντίον τοῦ Λουδοβίκου-Φιλίππου, ὁδηγῶν φάλαγγα ἐκ δισχιλίων ἀνδρῶν, διετάχθη νὰ καταλάβῃ τὰ ὁδοφράγματα τῆς ἐν Παρισίοις πλατείας τῆς Ἰταλίας. Ἐπιχειρήσας πρὸ τῆς ἐπιθέσεως νὰ ἐπιφέρῃ συμβιβασμόν, ἐρρίφθη μεταξὺ τῶν στασιαστῶν, ἀλλὰ προκληθείσης παρεξηγήσεως ἐφονεύθη ὑπ' αὐτῶν.

Θ. Β.

**Μπρεὰλ** (Bréal), ***Μιχαήλ***. Ἔγκριτος Γάλλος γλωσσολόγος (1832—1915). Μετὰ τὰς ἐν Παρισίοις καὶ Βερολίνῳ γλωσσολογικὰς σπουδάς του διωρίσθη καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας καὶ τὴν σχολὴν τῶν ἀνωτάτων σπουδῶν τῶν Παρισίων, κατόπιν δ' ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων (1875). Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «De persicis nominibus apud scriptores graecos» (1863), «Les tables eugubines» (1875), «Sur le déchiffrement des inscriptions cypriotes» (1877), «De l'enseignement des langues anciennes» (1891), «De l'enseignement des langues vivantes» (1893), «Essai de sémantique» (1897), τὸ γνωστότερον ἐκ τῶν συγγραμμάτων του, ἀπαραίτητον εἰς πάντας, ὅσοι ἀσχολοῦνται μὲ σημασιολογικὰς ἐρεύνας, «Pour mieux connaître Homère» (1906) καὶ «Dictionnaire étymologique latin» (1885) ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ A. Bailly. Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσε καί τινας ἐργασίας ἀναφερομένας εἰς τὴν ἀρχαίαν μυθολογίαν καὶ διαφόρους πραγματείας καὶ ἄρθρα εἰς ἐπιστημονικὰ περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας.

Γ. Π. Λ.

**Μπρεβὶλ** (Bréville), ***Πέτρος ντὲ*** —. Γάλλος συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1861. Μαθητὴς ἀρχικῶς τοῦ Ντυμπουά, ἐν τῷ ᾠδείῳ τῶν Παρισίων, συνεπλήρωσε τὰς σπουδάς του ὑπὸ τὸν Καίσαρα Φράνκ, οὗτινος ὑπῆρξεν ἐκ τῶν ἐνθερμοτέρων ὀπαδῶν. Διετέλεσε μουσικοκριτικὸς τοῦ «Ἑρμοῦ τῆς Γαλλίας». Ὡς συνθέτης δ' ἔγραψε σειρὰν λεπτῶν καὶ γοητευτικῶν μελῳδιῶν, μίαν συμφωνίαν, ἓν κοντσέρτο διὰ κλειδοκύμβαλον καὶ ὀρχήστραν, τὸ συμφωνικὸν ἔργον «Σταμπούλ», λειτουργίας, μοτέττα, τὸ μελόδραμα «Ἔρως νικητὴς» (1910), τὴν σκηνικὴν μουσικὴν διὰ τὰς «Ἑπτὰ πριγκιπίσσας» τοῦ Μαίτερλινκ καὶ τὴν «Σακουντάλα» τοῦ Καλιντάσα, τὴν εἰσαγωγὴν διὰ τὴν «Πριγκίπισσαν Μαλαίναν» τοῦ Μαίτερλινκ, τὸ ὀρατόριον «Sainte Rose de Lima» κ.ἄ.

Γ. Σ.

**Μπρεβιλάκουα** (Brevilacqua) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Στενὸν τῆς Ἀδριατικῆς (πλάτ. 44°18' Β., μῆκ. 15°02' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2774: Grossa to Zironna) μεταξὺ τῆς νήσου Ποντάδουρα καὶ τῆς Δαλματικῆς ἀκτῆς.

Σ. Ε. Λ.

**Μπρεγκάλνιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παραπόταμος τοῦ Ἀξιοῦ κατὰ τὴν σερβικὴν Μακεδονίαν, πηγάζων ἐκ τοῦ ὄρους Μάλες. Εἶναι ὁ τῶν ἀρχαίων *Ἄστιβος* τῆς ἀνατολικῆς Παιονίας. Κατ' ἀρχὰς ῥέει ΒΔ. μέχρι τῆς 42ας παραλλήλου, ὁπόθεν στρέφεται ΝΔ., διαρρέει τὸ λεκανοπέδιον τῶν Κοτσάνων καὶ Ἰστὶπ καὶ συμβάλλει εἰς τὸν Ἀξιόν, νοτίως τῶν Βελεσσῶν, μετὰ ῥοῦν 150 χλμ. περίπου.

Ι. Σ. Σ.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Αἱ κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ δευτέρου Βαλκανικοῦ πολέμου διεξαχθεῖσαι ἐπιχειρήσεις μεταξὺ τῶν σερβικῶν στρατιῶν 1ης καὶ 3ης καὶ τῆς 4ης βουλγαρικῆς εἰς τὰς κοιλάδας τῶν ποταμῶν *Μπρεγκαλνίτσα*, *Ζλέτοσκα*, *Λακαβίτσα* (τῶν δύο τελευταίων παραποτάμων τοῦ πρώτου), κατὰ τὸ χρονικὸν διάστημα 17—25 Ἰουνίου 1913, φέρονται ὑπὸ τὸ ὄνομα μάχη τοῦ Μπρεγκαλνίτσα.

*17 Ἰουνίου*. Κατὰ τὴν αἰφνιδιαστικὴν ἐπίθεσιν τῶν Βουλγάρων τὴν νύκτα 16—17 Ἰουνίου 1913 ἀπωθήθησαν οἱ Σέρβοι πρὸς δυσμάς, εἰς τρόπον ὥστε μέχρι τῆς μεσημβρίας τῆς 17ης Ἰουνίου εἶχον φθάσει ἐκ τῆς οὐδετέρας ζώνης (ὄρος Ὀσογόβσκα—ῥοῦς τοῦ Ζλέτοσκα, τοῦ Μπρεγκαλνίτσα καὶ τοῦ Λακαβίτσα) ἀποτελούσης τὴν σερβοβουλγαρικὴν γραμμὴν διαχωρίσεως τῆς 21ης Μαΐου 1913, εἰς τὸ ὕψος τῆς ἐν τῷ κατωτέρω σχήματι ἐμφαινομένης γραμμῆς. Οἱ Βούλγαροι ἔφθασαν κατάκοποι καὶ πνευστιῶντες ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων, λόγῳ τοῦ ἀφορήτου καύσωνος τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ τῆς παντελοῦς ἐλλείψεως ὕδατος, δι' ὃ ἠναγκάσθησαν ν' ἀνακόψωσι τὴς περαιτέρω προχώρησιν καὶ νὰ ἐγκατασταθῶσιν ἀμυντικῶς ἐπὶ τῶν καταληφθεισῶν θέσεων, ἵνα τοιουτοτρόπως ἐξασφαλίσωσι τὴν κατοχὴν αὐτῶν μέχρι τῆς ἀφίξεως τοῦ πυροβολικοῦ, μὴ δυνηθέντος νὰ παρακολουθήσῃ τὴν ταχεῖαν προχώρησιν τοῦ φιλίου πεζικοῦ. Ἐξαίφνης ὅμως ἀπὸ τῶν κορυφογραμμῶν τοῦ ὀροπεδίου Ὄβιτς ἤρχισαν ἐξορμῶσαι σερβικαὶ φάλαγγες καθ' ὅλου τοῦ μετώπου τῶν ποταμῶν Ζλέτοσκα καὶ Μπρεγκαλνίτσα, καθ' ὅσον τὸ σερβικὸν στρατηγεῖον δὲν ἠρκέσθη εἰς ἁπλῆν τοπικὴν ἀπόκρουσιν τῶν βουλγαρικῶν ἐπιθέσεων, ἀλλὰ διέταξε γενικὴν ἐπίθεσιν πρὸς ταχίστην ἀνάκτησιν τῶν ἀπολεσθέντων ἐδαφῶν, τῆς μὲν 1ης στρατιᾶς πρὸς Κότσανα, τῆς δὲ 3ης πρὸς Ἰστὶπ (κατὰ τὸν αἰφνιδιασμὸν τῆς νυκτὸς 16—17 Ἰουνίου ἡ 3η στρατιὰ περιῆλθεν εἰς δύσκολον θέσιν, ἰδίᾳ ἡ μεραρχία Τιμόκ, ἥτις εὑρίσκετο ἐν πλήρει ὑποχωρήσει πρὸς Κριβολάκ), τῆς μεραρχίας ἱππικοῦ ἐξασφαλιζούσης τὸν σύνδεσμον μεταξὺ τῶν δύο τούτων στρατιῶν. Σημειωτέον ὅτι ἡ τοιαύτη σερβικὴ ἐνέργεια ἐπήνεγκεν εὐθὺς ἀμέσως κατάπτωσιν τοῦ ἠθικοῦ τῶν Βουλγάρων στρατιωτῶν, διότι τοῖς εἶχεν ἐμπνευσθῇ ἡ ἰδέα ὅτι ἤρκει νὰ προχωρήσῃ δρὰξ αὐτῶν, ἵνα οἱ Ἕλληνες καὶ οἱ Σέρβοι καταλίπωσι τὸν περαιτέρω ἀγῶνα. Κατὰ τὸ ἀπόγευμα τῆς ἡμέρας ταύτης ἡ 1η σερβικὴ στρατιὰ ἐν ἀρχῇ προὐχώρησεν ἀρκετὰ εὐκόλως, καθ' ὅσον τὸ βουλγαρικὸν πυροβολικὸν δὲν εἶχε φθάσει ἀκόμη ἐπὶ τῶν ἐσπευσμένως καταληφθεισῶν ὑπὸ τοῦ πεζικοῦ θέσεων· ἅμα ὅμως εἰσῆλθεν ἐντὸς τῆς ζώνης τῶν πυρῶν τοῦ βουλγαρικοῦ πεζικοῦ, ἡ περαιτέρω προχώρησις κατέστη βραδυτάτη, καίτοι ὑπεστηρίζετο ὑπὸ βαρέος σερβικοῦ πυροβολικοῦ τεταγμένου ἀπὸ ἡμερῶν ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Τσέρνι Οὐΐρ. Ὡς ἦτο φυσικόν, ἡ 3η σερβικὴ στρατιὰ ἦτο ἀδύνατον νὰ ἐπιχειρήσῃ τι ἄξιον λόγου κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην, καθ' ὅσον ἔπρεπε προηγουμένως ν' ἀνακόψῃ τὴν βουλγαρικὴν ἐπίθεσιν καὶ εἶτα ν' ἀνασυγκροτηθῇ, καθ' ὅσον οἱ Βούλγαροι εἶχον ἀπωθήσει πλήρως τοὺς Σέρβους

Digitized by Google

μέχρι σχεδὸν τοῦ Κριβολάκ, διὰ δὲ τῶν ἀκραίων ἀριστερῶν (νοτίων) τμημάτων αὐτῶν (ταξιαρχίας τῆς 2ας μεραρχίας) εἶχον καταλάβει τὴν γέφυραν Χούδοβο.

*18 Ἰουνίου*. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην αἱ μεραρχίαι Μοράβα καὶ Σουμαδιὰ ἀπώθησαν τὸ πλεῖστον μέρος τῆς 7ης βουλγαρικῆς μεραρχίας πρὸς τὸν ποταμὸν Ζλέτοσκα καὶ κατέλαβον τὸ Δρένεκ. Περὶ τὸ ὕψωμα 550 διεξήχθη σοβαρὸς ἀγὼν ὑπὸ τῆς μεραρχίας Σουμαδιὰ καὶ τῶν πεζομαχησάντων ἱππέων τῆς μεραρχίας ἱππικοῦ, τέλος δὲ κατωρθώθη ἡ κατάληψις τοῦ σπουδαίου τούτου σημείου. Κατὰ τὸν μεταξὺ Πεστρίσινο καὶ Γαϊράντσι χῶρον ἡ σερβικὴ μεραρχία ἱππικοῦ κατώρθωσε ν' ἁλώσῃ μίαν βουλγαρικὴν πυρβολαρχίαν μετὰ τῶν ζευγῶν της καὶ τῶν ἀνδρῶν της. Μετὰ τὴν κατάληψιν τοῦ Δρένεκ καὶ τοῦ ὑψώματος 550 ἔπεσεν εἰς χεῖρας τῶν Σέρβων τὸ ὕψωμα 650. Τοιουτοτρόπως, μέχρι τῆς ἑσπέρας τῆς 18ης Ἰουνίου, ἅπασα ἡ δεξιὰ ὄχθη τοῦ Ζλέτοσκα κατείχετο ὑπὸ τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς. Ὀλίγον νοτιώτερον ἀπωθήθη καὶ ἡ εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Ἰστὶπ δρῶσα 8η βουλγαρικὴ μεραρχία, ἥτις κατὰ τὴν νύκτα, προσπεράσασα ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Μπρεγκαλνίτσα, ἐγκατεστάθη ἐπὶ τῶν ΒΑ. τοῦ Ἰστὶπ ὑψωμάτων, χωρὶς ὅμως νὰ ἐγκαταλείψῃ τοῦτο. Ἀλλ' ἐνῷ αἱ ἐπιχειρήσεις ἐξειλίσσοντο κατὰ τὴν 18ην Ἰουνίου

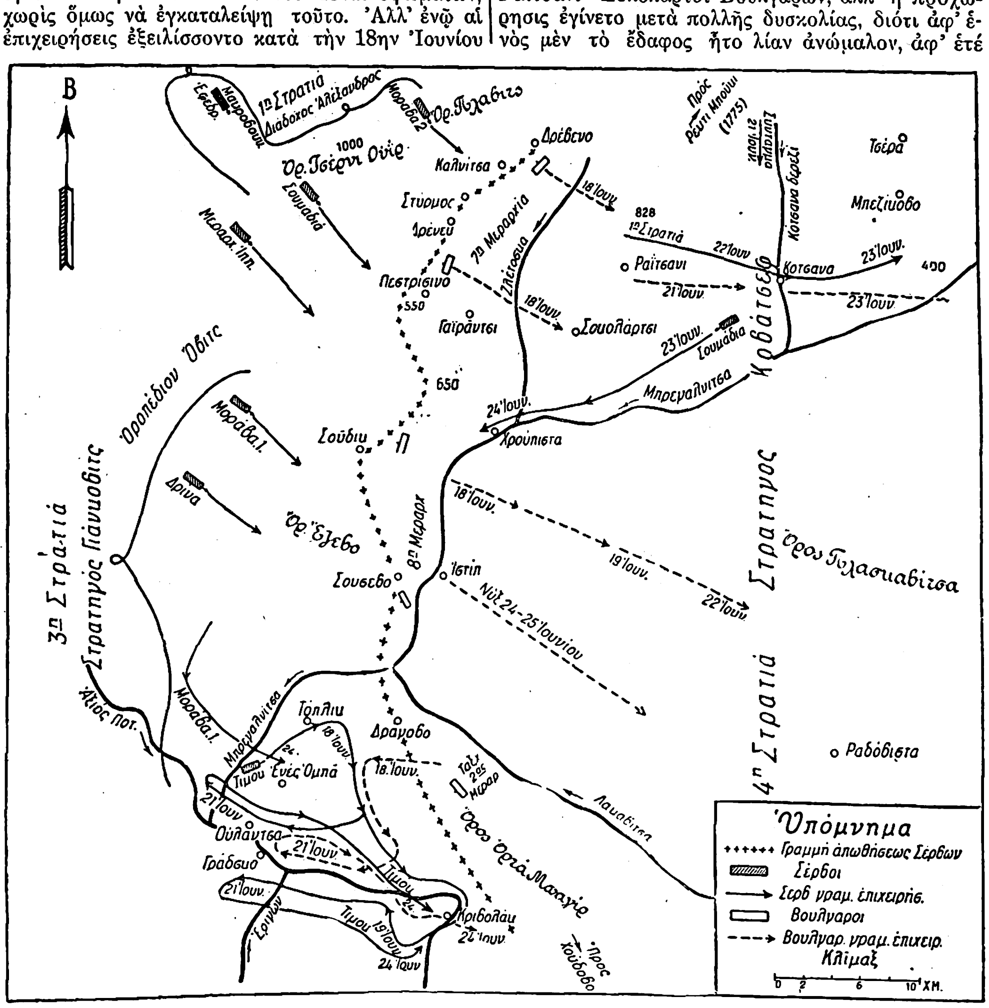


*Μαχη Μπρεγκαλνίτσα 17—25 Ἰουνίου 1913.*

εὐνοϊκῶς ὑπὲρ τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς, εἰς τὸ μέτωπον τῆς 3ης τοιαύτης ἡ ταξιαρχία τῆς 2ας βουλγαρικῆς μεραρχίας (τῆς ἐναντίον τοῦ Κριβολὰκ) ἐξηκολούθησε τὴν πρὸς δυσμὰς ἐπίθεσίν της, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τῆς ἑτέρας ταξιαρχίας τῆς αὐτῆς μεραρχίας, ἥτις εἶχε προχωρήσει ἐκ Χούδοβο διὰ Δεμὶρ Καποῦ κατὰ μῆκος τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Ἀξιοῦ, καὶ κατώρθωσεν ἐντὸς τῆς αὐτῆς ἡμέρας ν' ἀπωθήσῃ τὸ ἀριστερὸν τῆς σερβικῆς μεραρχίας Τιμὸκ ἐκ Δράγοβο, ἔνθα τοῦτο ἐστηρίζετο. Σημειωτέον ὅτι ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης ἡ σερβικὴ μεραρχία Τιμὸκ ἀπετέλει τὸν κύριον ἀντικειμενικὸν σκοπὸν τῶν Βουλγάρων, καθ' ὅσον ἐκρίθη ὅτι ἠδύνατο αὕτη ν' ἀπωθηθῇ, ὁπότε ἤθελεν ὑπερκερασθῆ τὸ δεξιὸν τῶν Σέρβων, δεδομένου ὅτι διὰ τῆς καταλήψεως τοῦ Χούδοβο καὶ τῆς ἐπικειμένης τοιαύτης τοῦ Κριβολὰκ θὰ διεκόπτετο ἡ ἐπαφὴ τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ μετὰ τοῦ νοτιοανατολικῶς αὐτοῦ δρῶντος ἑλληνικοῦ. Τοιουτοτρόπως ἡ ἑσπέρα τῆς 18ης Ἰουνίου εὗρε τοὺς Βουλγάρους ἀπωθηθέντας καὶ ἐγκατασταθέντας ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων 828—Ραΐτσανι—Σοκολάρτσι, καὶ ἔχοντας ὡς στήριγμα τοῦ δεξιοῦ πλευροῦ των τὸ Ρέκτι Μποῦκι. Ἀλλὰ καὶ οἱ Σέρβοι δὲν εὑρίσκοντο ἐν εὐχαρίστῳ καταστάσει, διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν πρὸ πάσης προχωρήσεως πρὸς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Ζλέτοσκα, ἀπῃτεῖτο ἡ προκαταβολικὴ κατάληψις τοῦ Ρέκτι Μποῦκι, ἀφ' ἑτέρου δ' ἐπεβάλλετο ἡ ἀποκατάστασις τῆς 3ης σερβικῆς στρατιᾶς.

*19 Ἰουνίου*. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἐπεζητήθη ὑπὸ τῶν Σέρβων ἡ κατάληψις τοῦ Ρέκτι Μποῦκι, ἥτις κατωρθώθη διὰ τῆς κατὰ τὴν νύκτα 18—19 ἐνισχύσεως τοῦ ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ ἀριστεροῦ τῶν Σέρβων. Ἡ ἐπὶ τοῦ μετώπου Ραΐτσανι-Σοκολάρτσι κατάστασις παρέμενε στάσιμος, καθ' ὅσον ἀνεμένετο τὸ ἀποτέλεσμα τῶν ἑκατέρωθεν ἀγώνων (βορείως πρὸς Ρέκτι Μποῦκι, νοτίως πρὸς Κριβολάκ). Ἡ πρὸ τῆς 3ης σερβικῆς στρατιᾶς κατάστασις ἐξηκολούθει νὰ εἶναι κρίσιμος, καθ' ὅσον, μεθ' ὅλας τὰς ἀποπείρας, δὲν κατωρθοῦτο ἡ ἀναχαίτισις τῶν Βουλγάρων, ἐπέκειτο δὲ ἡ διὰ τῆς γεφύρας τοῦ Κριβολὰκ προσπέρασις ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἀξιοῦ· ἀλλὰ κατὰ τὸν νυκτερινὸν ἀγῶνα 19—20 Ἰουνίου ἐπετεύχθη ἡ προσωρινὴ ἀναχαίτισις τῶν Βουλγάρων. Χαρακτηριστικὸν γεγονὸς τῆς ἡμέρας ταύτης εἶναι ἡ ἐνίσχυσις τῆς σερβικῆς μεραρχίας Τιμὸκ διὰ μιᾶς ταξιαρχίας, μεταφερθείσης σιδηροδρομικῶς μέχρις αὐτοῦ τούτου τοῦ πεδίου μάχης, ὁπότε δὲν ἔλαβε χώραν ἀποβίβασις συνήθης, ἀλλ' οἱ Σέρβοι στρατιῶται ἐπήδων ἐκ τῶν βαγονίων καὶ ἐνετάσσοντο ἀμέσως φύρδην μείγδην ἐν μαχητικῇ γραμμῇ.

*20 Ἰουνίου*. Ἡ 1η σερβικὴ στρατιὰ ἀνέλαβεν ἐπίθεσιν κατὰ τῶν κατεχόντων τὰς θέσεις 828—Ραΐτσανι—Σοκολάρτσι Βουλγάρων, ἀλλ' ἡ προχώρησις ἐγίνετο μετὰ πολλῆς δυσκολίας, διότι ἀφ' ἑνὸς μὲν τὸ ἔδαφος ἦτο λίαν ἀνώμαλον, ἀφ' ἑτέρου δὲ λόγῳ τῆς δυσχερείας ταύτης τὸ πυροβολικὸν δὲν κατώρθωσε νὰ φθάσῃ ἐγκαίρως. Ἐν τούτοις, τὸ σερβικὸν πεζικὸν κατώρθωσε νὰ προχωρήσῃ κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην μέχρις ἀποστάσεως 700 μέτρων ἀπὸ τῶν βουλγαρικῶν τοποθεσιῶν. Πρὸς ἀποσόβησιν δὲ πιθανῆς νυκτερινῆς βουλγαρικῆς ἀντεπιθέσεως ἐτάχθη ἐπὶ τοῦ μετώπου τῶν Σέρβων καὶ ἡ μαυροβουνιωτικὴ μεραρχία. Ὁπωσδήποτε, διαρκούσης τῆς 20ῆς Ἰουνίου ἐκλονίσθησαν μὲν οἱ Βούλγαροι, ἀλλὰ πάντως δὲν ἀπωθήθησαν ἐκ τῶν ἐν λόγῳ τοποθεσιῶν. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἡ 3η σερβικὴ στρατιὰ ἀπεπειράθη νὰ προχωρήσῃ, ἀλλὰ τοῦτο κατέστη ἀδύνατον, τὸ μόνον δὲ ὅπερ κατώρθωσεν ἦτο ἡ παρεμπόδισις τῆς ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Ἀξιοῦ προσπεράσεως τῶν Βουλγάρων. Καὶ τοιουτοτρόπως κατὰ τὴν 20ὴν Ἰουνίου οὐδέτερος τῶν ἀντιπάλων ἠδυνήθη νὰ προχωρήσῃ ἐν τῇ περιοχῇ ταύτῃ.

*21 Ἰουνίου*. Τὴν χαραυγὴν τῆς ἡμέρας ταύτης ἐπανελήφθη ἡ ἐπίθεσις τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς, ἥτις κατὰ φυσικὸν λόγον θὰ ἐξειλίσσετο βραδέως, λαμβανομένου ὑπ' ὄψει ὅτι ἐπρόκειτο περὶ ἀγῶνος ἐντὸς μικρῶν ἀποστάσεων· σερβικὸν ὅμως σύνταγμα τῆς μεραρχίας Μοράβα 2, εὑρισκόμενον ἀπὸ τῆς 19ης Ἰουνίου εἰς Ρέκτι Μποῦκι, προὐχώρησε πρὸς τὴν κοιλάδα Κότσανα δερεζὶ καὶ ἐνέβαλεν εἰς πανικὸν τοὺς Βουλγάρους, ἀρχίσαντας νὰ κάμπτωνται ἀρχικῶς πρὸ τῆς τοποθεσίας τοῦ Ραΐτσανι καὶ κατόπιν νὰ ὑποχωρῶσι πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τῶν Κοτσάνων. Μετὰ τὴν ὑποχώρησιν τῆς 7ης βουλγαρικῆς μεραρχίας ἐπηκολούθησεν εὐθὺς ἀμέσως καὶ ἡ πρὸς ἀνατολὰς ὑποχώρησις τῆς 8ης τοιαύτης. Ἅμα τῇ ἐνάρξει τῆς βουλγαρικῆς ὑποχωρήσεως πρὸς Κότσανα, ἐπεζήτησε νὰ παρέμβῃ ἡ σερβικὴ μεραρχία ἱππικοῦ, ἵνα ἀποκόψῃ τὴν ὑποχώρησιν· πρὸς τοῦτο ἐπεζήτησε νὰ προσπεράσῃ τὸν Ζλέτοσκα πρὸς τὴν Χρούπιστα, ἀλλὰ δὲν τὸ κατώρθωσεν, ἅτε βληθεῖσα ὑπὸ ἐντόνου πυρὸς τῶν Βουλγάρων. Κατὰ τὴν νύκτα 20—21 Ἰουνίου ἐνισχύθη ὁ ἔναντι τοῦ Κριβολὰκ βουλγαρικὸς στρατός, καὶ τότε ἀνελήφθη ἐρρωμένη ἐπίθεσις κατὰ τῆς ἀμυνομένης ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων Κριβολὰκ σερβικῆς μεραρχίας Τιμόκ, ἐξαναγκασθείσης εἰς ὑποχώρησιν, μεταβληθεῖσαν τάχιστα εἰς πανικόβλητον φυγὴν πρὸς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Ἐριγόνος, ὅστις ἐχρησιμοποιήθη ὡς κώλυμα. Ἡ μεραρχία αὕτη ἐγκατέλειψεν ἅπαν τὸ πυροβολικόν της καὶ τὸ ἄλλο ὑλικόν, διαλυθεῖσα δὲ τελείως ἀνασυνεκροτήθη κατόπιν εἰς τὸν μεταξὺ Ἐριγόνος καὶ Ἀξιοῦ χῶρον. Οἱ Βούλγαροι, μὴ ἐπωφεληθέντες τῆς σερβικῆς ταύτης φυγῆς, κατεδίωξαν τοὺς Σέρβους μόνον μέχρι τοῦ Γράδσκο.

*22 Ἰουνίου*. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἀπωθήθησαν οἱ Βούλγαροι ἀνατολικῶς τοῦ Κότσανα δερεζί, ὁπότε κατελήφθησαν ὑπὸ τῶν Σέρβων τὰ Κότσανα. Ὁ Σέρβος ἀρχιστράτηγος, ἀποβλέψας ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὸ δεξιὸν σερβικὸν πλευρόν, ἐπεζήτησε τὴν ἐνεργὸν δρᾶσιν τῆς 3ης στρατιᾶς· ἐπειδὴ ὅμως τὸ τοιοῦτο καθίστατο ἀδύνατον, διέταξε τὴν ἐνίσχυσιν ταύτης διὰ μιᾶς μεραρχίας ἐκ τῆς 1ης στρατιᾶς (τῆς μεραρχίας Σουμαδιά). Περὶ τῆς καταστάσεως, εἰς ἣν εἶχε περιέλθει μέχρι τῆς 22ας Ἰουνίου ὁ σερβικὸς στρατός, ὁ τότε Ἕλλην ἐπιτελάρχης Δούσμανης ἐν τῷ συγγράμματί του «Ὁ συμμαχικὸς πόλεμος κατὰ τῶν Βουλγάρων» (1928, σελ. 89) γ άφει τὰ ἑξῆς: «Ἐκ τηλεγραφήματος μανθάνομεν τὴν ἧτταν τῆς σερβικῆς μεραρχίας Τιμόκ, καθὼς καὶ τὴν ὑποχώρησιν τοῦ στρατοῦ τοῦ ἀποτελοῦντος τὴν 3ην σερβικὴν στρατιάν. Ἐκ τῆς τελευταίας παραγράφου τοῦ τηλεγραφήματος καὶ ἐκ τοῦ ὅτι παρουσιάσθη ἀνάγκη ἐνισχύσεως τῆς 3ης σερβικῆς στρατιᾶς διὰ μιᾶς μεραρχίας τῆς 1ης στρατιᾶς ἠννοήσαμεν ὅτι ὁλόκληρος ἡ δρᾶσις τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ ἐπηρεάσθη ἐκ τῆς ἥττης τῆς μεραρχίας Τιμόκ, διότι πᾶσα ἐπιθετικὴ κίνησις τῆς Σέρβων ἀνεστάλη, ἐν ἀναμονῇ καλυτερεύσεως τῆς στρατιωτικῆς καταστάσεως τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τῆς 3ης στρατιᾶς. Ἐκ τῆς περιγραφῆς ταύτης φαίνεται φανερὰ ὅτι ἡ ἧττα τοῦ σερβικοῦ στρατοῦ ἦτο σπουδαία, ὅπως ἄλλως τε ἦτο καὶ ἡ ἐντύπωσις τοῦ Σέρβου ἀρχιστρατήγου». Διὰ τῆς καταλήψεως τοῦ Κριβολὰκ ὑπὸ τῶν Βουλγάρων ἐπηκολούθησε τὸ σοβαρὸν διὰ τοὺς Σέρβους πλῆγμα, τῆς διακοπῆς τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς κατὰ μῆκος Χούδοβο - Κριβολάκ, συνεπῶς τῆς διακοπῆς τοῦ ἐκ Θεσσαλονίκης ἀνεφοδιασμοῦ των.

*23 Ἰουνίου*. Ἡ μεραρχία Σουμαδιά, ἀναστραφεῖσα ἐκ Κοτσάνων καὶ ἀκολουθήσασα τὴν ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαινομένην ὅδευσιν, ἔφθασεν εἰς τὸ δεξιὸν τῶν Σέρβων. Ἡ 1η σερβικὴ στρατιὰ κατέλαβε, μὲ τοὺς Μαυροβουνίους ἐπὶ κεφαλῆς, τὰ ὑψώματα τῆς κορυφογραμμῆς Τσέρα-Μπεζίκοβο καὶ ἀπώθησε τοὺς Βουλγάρους πρὸς τὴν ἀριστερὰν ὄχθην τοῦ Μπρεγκαλνίτσα. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἡ 3η σερβικὴ στρατιὰ οὐδεμίαν δρᾶσιν ἀνέλαβεν, ἅτε ἀναμένουσα τὴν ἄφιξιν τῆς μεραρχίας Σουμαδιά. Τοιουτοτρόπως εἶχεν ἐπέλθει σχεδὸν διάρρηξις τοῦ βουλγαρικοῦ μετώπου, καθ' ὅσον ἡ 4η βουλγαρικὴ στρατιὰ εἶχε διχοτομηθῆ εἰς δύο ὁμάδας, χωριζομένας ἀπ' ἀλλήλων διὰ τῆς ὀροσειρᾶς Πλασκαβίτσα. Ἦτο τότε ἡ ἐνδεδειγμένη στιγμὴ ἀναλήψεως ἐρρωμένης σερβικῆς καταδιώξεως ἐναντίον τῆς βορείου βουλγαρικῆς ὁμάδος τῆς 4ης στρατιᾶς, ὁπότε θὰ ἐπήρχετο ἡ ὑπὸ τῶν Σέρβων ταχίστη κατάληψις τοῦ Τσάρεβο Σέλο καὶ ἡ ἐκεῖθεν σερβικὴ προχώρησις διὰ Πέτσοβο πρὸς στενωπὸν Κρέσνας, καὶ δι' εὐρυτέρου ἐλιγμοῦ εὐθέως πρὸς Τζουμαγιάν, ὁπότε, κατ' ἀμφοτέρας τὰς περιπτώσεις θ' ἀπεκόπτοντο αὐθωρεὶ αἱ γραμμαὶ συγκοινωνιῶν τῆς τε κατὰ τῶν Σέρβων 4ης στρατιᾶς καὶ τῆς κατὰ τῶν Ἑλλήνων 2ας. Σημειωτέον ὅτι τοιοῦτόν τι εἶχε προταθῆ πρὸς τὸ σερβικὸν στρατηγεῖον ὑπὸ τοῦ ἑλληνικοῦ.

*24 Ἰουνίου*. Κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην ἤρχισεν ἡ ἐπίθεσις τῆς 3ης σερβικῆς στρατιᾶς, οἱ Βούλγαροι ἀπωθήθησαν αὐθημερόν, ἀνακατελήφθησαν τὸ Κριβολάκ, τὸ Τόπλικ καὶ τὸ Ἐνὲς Ὀμπᾶ, καὶ τοιουτοτρόπως ἐγένοντο οἱ Σέρβοι κύριοι τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Μπρεγκαλνίτσα, φθάσαντες μέχρι τοῦ Λακαβίτσα, χωρὶς ὅμως νὰ δυνηθῶσι νὰ προσπεράσωσιν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ ὄχθης.

*25 Ἰουνίου*. Ἤδη ἡ προσπάθεια τῆς 3ης σερβικῆς στρατιᾶς ἐνετάθη κατὰ τοῦ Ἰστίπ, δι' ὃ, τὴν νύκτα τῆς 24—25, διετάχθη ὅπως τὴν χαραυγὴν τῆς 25 Ἰουνίου ἀναληφθῇ συγκεντρωτικὴ ἐπίθεσις κατὰ τοῦ Ἰστίπ, διὰ τῶν μεραρχιῶν Σουμαδιά, προχωρούσης διὰ Χρούπιστα, Δρίνα, προχωρούσης κατὰ μέτωπον, καὶ Μοράβα 1 διὰ τοῦ Λακαβίτσα. Ἅμα ὅμως, τὴν πρωΐαν τῆς 25, ἀνελήφθη ἡ ἐν λόγῳ σερβικὴ ἐπίθεσις κατὰ τοῦ Ἰστίπ, δὲν εὑρέθη ἀντιμέτωπος βουλγαρικὸς στρατός, καὶ οὕτως ἡ πόλις ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῶν Σέρβων

Digitized by Google

ἀμαχητί. Ἐνῷ ὁ σερβικὸς στρατὸς ἐτήρει χλιαρὰν στάσιν καὶ εὑρίσκετο ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Ἰστὶπ μέχρι τῆς 24 ὄπισθεν τοῦ Μπρεγκαλνίτσα (ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης), χωρὶς νὰ δεικνύῃ τάσιν ἀντεπιθέσεως, ὅλως αἰφνιδίως ἡ 4η βουλγαρικὴ στρατιὰ ἤρχισεν ὑποχωροῦσα πρὸς ἀνατολάς. Τὴν τοιαύτην βουλγαρικὴν ἐνέργειαν οἱ Σέρβοι ἀποδίδουν εἰς τὸν φόβον τῆς 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς μήπως πέσῃ πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τῶν Ἑλλήνων, ἐὰν ἀπεκόπτετο ὑπὸ τῶν Σέρβων ἐκ τοῦ Τσάρεβο Σέλο· ἀλλὰ τὸ τοιοῦτον ἀποδεικνύεται ἀνυπόστατον, διότι παραπλεύρως τῆς 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς εὑρίσκετο ἡ 3η, ἥτις θὰ ἠπείλει πᾶσαν ἐνέργειαν τῆς 1ης σερβικῆς στρατιᾶς κατὰ τοῦ δεξιοῦ τῆς 4ης βουλγαρικῆς. Τὸ μόνον λοιπὸν αἴτιον, τὸ ἐξαναγκάσαν τὴν 4ην βουλγαρικὴν στρατιὰν εἰς τὴν τοιαύτην ἐσπευσμένην ὑποχώρησιν πρὸς ἀνατολάς, ἦτο ἡ ραγδαία πρὸς βορρᾶν ἑλληνικὴ προέλασις, ἡ ἀπειλήσασα τὰς γραμμὰς συγκοινωνιῶν καὶ τὰ κέντρα ἐφοδιασμοῦ τῆς ἐναντίον τῶν Σέρβων δρώσης 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς (βλ. *Β. Δούσμανη* «Ὁ συμμαχικὸς πόλεμος κατὰ τῶν Βουλγάρων» σελ. 96—99). Μετὰ τὸ πέρας τῆς μάχης τοῦ Μπρεγκαλνίτσα ἀντικατεστάθη ὁ διοικητὴς τῆς 4ης βουλγαρικῆς στρατιᾶς στρατηγὸς Κοβάτσεφ διὰ τοῦ στρατηγοῦ Ντικώφ. Αἱ ἑκατέρωθεν ἀπώλειαι κατὰ τὴν μάχην ταύτην ἦσαν τεράστιαι, ἀνελθοῦσαι εἰς 15.000 Σέρβους καὶ 20.000 Βουλγάρους.

Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Μπρεγκαλνίτσα διεξήχθησαν ἐπιχειρήσεις καὶ κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τῶν σερβοβουλγαρικῶν ἐπιχειρήσεων τῷ 1915, διὰ τῆς κοιλάδος ταύτης προὐχώρησεν ἡ 1η βουλγαρικὴ στρατιὰ καὶ κατέλαβε τὸ Ἰστίπ, τὴν 6 Ὀκτωβρίου 1915, καὶ εἶτα τὰ Βελεσσά. Μετὰ τὴν διάρρηξιν τοῦ βαλκανικοῦ μετώπου, τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1918, διὰ μὲν τῆς κοιλάδος τοῦ κάτω Μπρεγκαλνίτσα προὐχώρησεν ἡ σερβικὴ μεραρχία ἱππικοῦ καὶ κατέλαβε τὸ Ἰστὶπ τὴν 25 Σεπτεμβρίου 1918 καὶ τὰ Κότσανα τὴν 26, διὰ δὲ τῆς κοιλάδος τοῦ ἄνω Μπρεγκαλνίτσα προὐχώρησεν ἡ ἑλληνικὴ ταξιαρχία ἱππικοῦ καὶ κατέλαβε τὸ Πέτσοβον τὴν 29 Σεπτεμβρίου 1918.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

**Μπρεγκὲ** (Bréguet), ***Ἀβραάμ.*** Γάλλος μηχανικὸς καὶ ἐφευρέτης, γεννηθεὶς τῷ 1747 εἰς Neuchâtel τῆς Ἑλβετίας, ἐξ οἰκογενείας Γάλλων προτεσταντῶν προσφύγων καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1823. Ἀπὸ ἡλικίας 15 ἐτῶν εἰργάζετο ὡς μαθητευόμενος ὡρολογοποιός, ἐπέδειξε δ' εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ἐξαιρετικὴν ἐπιδεξιότητα καὶ ἰδιοφυΐαν περὶ τὴν κατασκευὴν μικρομηχανισμῶν ἀκριβείας. Μολονότι ὀρφανὸς καὶ ἀπροστάτευτος, κατώρθωσε νὰ μορφωθῇ ἐπαρκῶς εἰς τὰ μαθηματικά, φοιτῶν τὰς ἑσπερινὰς ὥρας εἰς τὸ κολλέγιον Μαζαρίνου, ἐνῷ συγχρόνως εἰργάζετο τὴν ἡμέραν διὰ νὰ πορίζεται τὰ πρὸς τὸ ζῆν. Τῷ 1870 κατώρθωσε νὰ ἱδρύσῃ ἰδικόν του ἐργαστήριον κατασκευῆς ὡρολογίων καὶ ἐπιστημονικῶν ὀργάνων, τὸ ὁποῖον ὅμως ἐγκατέλιπεν ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῆς τρομοκρατίας, καταφυγὼν εἰς Λονδῖνον. Ἐκεῖ αἱ ἱκανότητές του ἔτυχον πολλῆς ἐκτιμήσεως, τῷ ἀνετέθη δὲ ἡ κατασκευὴ πολλῶν χρονομέτρων διὰ λογαριασμὸν τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου. Ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ροβεσπιέρρου, ἐγκατεστάθη ἐφεξῆς μονίμως αὐτόθι, ἀνασυστήσας δὲ καὶ προαγαγὼν τὸ ἐργαστήριόν του, ἀνήγαγε βαθμηδόν, διὰ τῶν τελειοποιήσεων καὶ τῶν ἐπινοήσεών του, τὴν γαλλικὴν ὡρολογοποιίαν εἰς πρωτεύουσαν θέσιν, κατασκευάζων ἰδίᾳ ἀστρονομικὰ καὶ ναυτικὰ χρονόμετρα καὶ ἄλλα ὄργανα ἀκριβείας. Ὀνομασθεὶς ὡρολογοποιὸς τοῦ ναυτικοῦ ἀπὸ τοῦ 1807, ἐγένετο βραδύτερον μέλος τοῦ Γραφείου Μηκῶν καὶ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν ἀπὸ τοῦ 1816. Ἐδημοσίευσεν ἐνδιαφέροντα διὰ τὴν ἐποχήν του κατάλογον, μετ' εἰκόνων καὶ περιγραφῶν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὡρολόγια κοινῆς χρήσεως, φορητὰ χρονόμετρα, ὡρολόγια ἀστρονομικὰ καὶ ναυτικὰ καὶ ἄλλα ὄργανα παρατηρήσεως», εἶχε δὲ συγκεντρώσει τὸ ὑλικὸν μιᾶς «Ἱστορίας τῆς ὡρολογοποιίας», τὴν ὁποίαν ὁ θάνατος δὲν τὸν ἀφῆκε νὰ συμπληρώσῃ.

—**Μπρεγκὲ** (Bréguet), ***Ἀντώνιος.*** Γάλλος φυσικομαθηματικὸς καὶ μηχανικὸς (1851—1882), υἱὸς τοῦ *Λουδοβίκου Μπρεγκὲ* (βλ. κατωτ.). Ὑπηρέτησε κατὰ τὴν πολιορκίαν τῶν Παρισίων τοῦ 1871 ὡς βοηθητικὸς ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ, ἠκολούθησε δὲ κατόπιν μαθήματα εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολὴν καὶ ἠσκήθη πρακτικῶς εἰς τὰ τεχνικὰ ἐργαστήρια τῶν Μπρεγκέ, τῶν ὁποίων βραδύτερον ἐγένετο ὑποδιευθυντής. Ἡ θεωρία αὐτοῦ ἐπὶ τῆς πρώτης ἠλεκτροπαραγωγοῦ μηχανῆς τοῦ Γκράμμ (Παρίσιοι 1879 καὶ 1880) ἐκρίθη ὡς ἔργον ἐξαιρετικῆς ἐπιστημονικῆς ἀξίας διὰ τὴν ἐποχήν του, εἶχε δὲ προηγουμένως ὁ ἴδιος ἐπινοήσει ἓν ἠλεκτρικὸν ἀνεμόμετρον, καταγράφον ἐν συνεχείᾳ τὴν ταχύτητα τοῦ ἀνέμου ἐξ ἀποστάσεως (1875) καὶ ἕνα τύπον τηλεφώνου δι' ὑδραργύρου (1878). Ἀπὸ τοῦ 1881 ἀνέλαβεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Richet, τὴν διεύθυνσιν τῆς «Ἐπιστημονικῆς Ἐπιθεωρήσεως». Πρόωρος θάνατος ἀνέκοψεν, εἰς ἡλικίαν 31 ἐτῶν, τὴν φερέλπιδα ἐπιστημονικὴν δρᾶσίν του.

—**Μπρεγκὲ** (Bréguet), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος φυσικὸς καὶ ὡρολογοποιός, ἔγγονος τοῦ Ἀβραὰμ Μπρεγκὲ (1804—1883). Ἐφοίτησεν ὡς ἐξωτερικὸς μαθητὴς εἰς τὴν Πολυτεχνικὴν Σχολήν, ἐπιδοθεὶς ἰδίᾳ εἰς τὴν φυσικήν, τὰ μαθηματικὰ καὶ τὴν μηχανικήν, ἀνέλαβε δὲ ἀπὸ τοῦ 1833 τὴν διεύθυνσιν τοῦ ὑπὸ τοῦ πάππου του ἱδρυθέντος τεχνικοῦ οἴκου, εἰς τὸν ὁποῖον προσέθηκεν εἰδικὸν τμῆμα κατασκευῆς ὀργάνων τῆς φυσικῆς, πραγματοποιῶν ἐν αὐτῷ τὰς ἐπινοήσεις διαφόρων μεγάλων ἐπιστημόνων τῆς ἐποχῆς του. Ἐν αὐτῷ κατεσκευάσθησαν ποικίλα ὄργανα ἐπινοηθέντα ὑπὸ τοῦ Arago, ὁ σεισμογράφος τοῦ Bouquet de la Grue, τὸ πηνίον τοῦ Ruhmkorff, τὸ ἀκτινόφωνον τοῦ Γκράχαμ Μπέλλ, τοῦ κατόπιν ἐφευρέτου τοῦ τηλεφώνου, ὁ σφυγμογράφος τοῦ Marey κ. ἄ., καθὼς καὶ αἱ διάφοροι τοῦ ἰδίου Μπρεγκὲ ἐπινοήσεις, ἐν αἷς συσκευὴ μετρήσεως τῆς ταχύτητος ἑνὸς βλήματος εἰς διαφόρους θέσεις τῆς τροχιᾶς αὐτοῦ, συσκευὴ πρὸς ἀνάφλεξιν ἐκρηκτικῶν ὑλῶν ἐξ ἀποστάσεως, δι' ἠλεκτρικοῦ ρεύματος ἐξ ἐπαγωγῆς, κλπ. Ἀλλ' ἡ μεγάλη φήμη τοῦ Λουδοβίκου Μπρεγκὲ ὀφείλεται ἰδίως εἰς τὸ ἐπινοηθὲν ὑπ' αὐτοῦ σύστημα ἠλεκτρικοῦ τηλεγράφου, τὸ ὁποῖον ἐχρησιμοποιήθη ἐπὶ μακρὸν ἐν Γαλλίᾳ καὶ ἀλλαχοῦ μέχρι τῆς ἐπικρατήσεως τοῦ βραδύτερον ἐφευρεθέντος τηλεγράφου τοῦ *Μὸρς* (βλ. λ.). Εἰς τὸ σύστημα τοῦ Μπρεγκὲ τὰ γράμματα τοῦ ἀλφαβήτου καὶ οἱ ἀριθμοὶ ἦσαν χαραγμένα, τόσον εἰς τὸν πομπὸν ὅσον καὶ εἰς τὸν δέκτην, ἐπὶ τῆς περιφερείας κυκλικοῦ πλαισίου, εἰς τὸ κέντρον τοῦ ὁποίου ὑπῆρχε κινητὸς δείκτης. Ἡ διὰ τῆς χειρὸς μετακίνησις τοῦ δείκτου τοῦ πομποῦ προεκάλει ὡρισμένον δι' ἕκαστον γράμμα ἀριθμὸν ἠλεκτρικῶν ἐκπομπῶν, αἵτινες, φθάνουσαι εἰς τὸν ἠλεκτρομαγνήτην τοῦ δέκτου, ἐπέφερον ἀντίστοιχον μετακίνησιν τοῦ δείκτου αὐτοῦ. Οὕτω ἡ τηλεγραφικὴ συνεννόησις ἐπραγματοποιεῖτο εὐχερῶς, μειονεκτοῦσα μόνον ἀπέναντι τοῦ μετέπειτα συστήματος Μὸρς κατὰ τὴν ταχύτητα τῆς διαβιβάσεως καὶ κατὰ τὸ ὅτι τὰ διαβιβαζόμενα τηλεγραφήματα δὲν «ἐγράφοντο» ὅπως εἰς τὸ δεύτερον, ἀλλ' ἀνεγινώσκοντο μόνον. Ἐπενόησεν ἐξ ἄλλου ὁ Λουδοβῖκος Μπρεγκὲ τὸ πρῶτον ἀλεξικέραυνον διὰ τηλεγραφικὰς γραμμάς, καθὼς καὶ σύστημα διὰ τοῦ ὁποίου αἱ ἐνδείξεις ἑνὸς κεντρικοῦ ὡρολογιακοῦ μηχανισμοῦ μετεβιβάζοντο εἰς ὁσαδήποτε ὡρολόγια τοποθετημένα εἰς μεγάλας ἀπὸ τοῦ πρώτου ἀποστάσεις. Ἔγραψεν: «Ἐγχειρίδιον ἠλεκτρικῆς τηλεγραφίας» (1851), «Πραγματεία περὶ ἐπαγωγῆς» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Masson, 1863), «Μελέτη περὶ τῶν μαγνητοηλεκτρικῶν συσκευῶν καὶ περὶ τῶν ἐφαρμογῶν αὐτῶν πρὸς ἀνάφλεξιν τορπιλλῶν καὶ ὑπονόμων» (1869) κλπ.

Γ. Ζ.

—**Μπρεγκὲ** (Bréguet), ***Λουδοβῖκος-Κάρολος.*** Γάλλος μηχανικός, υἱὸς τοῦ *Ἀντωνίου Μπρεγκὲ* (βλ. ἀνωτ.), γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1880. Ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν ἀεροπλοΐαν καὶ ἐγένετο διευθυντὴς τῆς «Ἀνωνύμου ἑταιρείας κατασκευῆς ἀεροπλάνων Λ. Μπρεγκέ», πρόεδρος τοῦ συνδικάτου τῶν γαλλικῶν ἀεροναυτικῶν βιομηχανιῶν καὶ διευθυντὴς τῆς «Ἑταιρείας ἐναερίων διαπορθμεύσεων» (Messageries aériennes). Εἶναι ὁ πρῶτος σχεδιάσας καὶ κατασκευάσας ἑλικόπτερον, δυνηθὲν ν' ἀνυψωθῇ κατακορύφως εἰς τὸν ἀέρα μετ' ἐπιβάτου (1909), εἰς αὐτὸν δὲ ὀφείλεται ὁ νεωτερισμὸς τῆς κατασκευῆς ἀεροπλάνων ἐκ χαλυβδίνου σκελετοῦ μετ' ἐπενδύσεως ἐξ ἀλουμινίου (φερόντων τὸ ὄνομά του), τῶν ὁποίων εὐρυτάτη χρῆσις ἐγένετο κατὰ τὸν Μέγαν πόλεμον. Δι' ἀεροπλάνων τοῦ τύπου τούτου εἶναι ἐν μέρει ἐφωδιασμένη καὶ ἡ ἑλληνικὴ πολεμικὴ ἀεροπλοΐα. Ὁ Λουδοβῖκος-Κάρολος Μπρεγκὲ ἐδημοσίευσε περισπουδάστους πραγματείας «Περὶ ἀεροδυναμικῆς», «Περὶ τῶν ἑλίκων προωθήσεως καὶ τῆς ἀποδόσεως αὐτῶν» καὶ ἄλλας μελέτας, ἀναφερομένας εἰς τὴν ἐξέλιξιν τοῦ ἀεροπλάνου ὡς πολεμικοῦ ὅπλου καὶ ὡς μεταφορικοῦ συγκοινωνιακοῦ μέσου.

—Ω.

**Μπρέγκεντς** (Bregens) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς αὐστριακῆς ἐπαρχίας Φόραρλμπεργκ. Κάτ. (1923) περὶ τοὺς 13.000. Ἔχει μουσεῖον, μικρὰν βιομηχανίαν ὑφασμάτων καὶ διεξάγει ζωηρότατον ἐμπόριον.

**Μπρέγκλας** (Brennglas), ***Ἀδόλφος.*** Ψευδώνυμον τοῦ Γερμανοῦ συγγραφέως Ἀδόλφου *Γκλάσσμπρέννερ* (βλ. λ.).

Γ. Ι. Β.

**Μπρέγκοβο** (Bregovo) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ πόλις τῆς Βουλγαρίας ἐν τῷ νομῷ Βιδινίου, κειμένη παρὰ τὰ νοτιοσλαβικὰ σύνορα, ἐγγὺς τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Τιμόκ. Κάτ. 3.500.

Χ. Δ.

**Μπρεζὲ** (Brezé), Γαλλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν ἐξ Ἀνζοῦ. Ἀρχηγὸς αὐτῆς ἀναφέρεται ὁ *Ἰωάννης ντὲ Μπρεζέ*, ἀποθανὼν τῷ 1351, πλεῖστα δὲ μέλη αὐτῆς ἀνεδείχθησαν, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ *Πέτρος Β'* (1410—1465), πολιτικὸς καὶ στρατάρχης. Ἔλαβε μέρος εἰς πλείστας μάχας καὶ γενόμενος πρωθυπουργὸς ἀνῆλθεν εἰς μεγάλην ἰσχὺν καὶ ἔπεσε μαχόμενος εἰς Μοντερὺ τὴν 16 Ἰουλίου 1465. Ὁ πρεσβύτερος αὐτοῦ υἱὸς *Ἰάκωβος* (1440—1490), πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, ἐνυμφεύθη τὴν φυσικὴν θυγατέρα τοῦ βασιλέως Καρόλου Ζ' Καρλότταν. Συνέθεσε μίαν «Μπαλλάνταν» πρὸς τιμὴν τῆς Ἄννης ντὲ Μπωζὲ καὶ ἄλλα συγγράμματα δημοσιευθέντα τῷ 1858 ἐν Παρισίοις. Τελευταῖος γόνος τῆς οἰκογενείας ἦτο ὁ υἱὸς τούτου *Λουδοβῖκος*.

Θ. Β.

—**Μπρεζὲ** (Brezé), ***Λουδοβῖκος, κόμις ντὲ Μωλεβριέ.*** Τελευταῖος γόνος τῆς οἰκογενείας *Μπρεζέ*, υἱὸς τοῦ Ἰακώβου Μπρεζέ, ἀποθανὼν τῷ 1531. Ἐνυμφεύθη εἰς δεύτερον γάμον τὴν διάσημον Ντιὰν ντὲ Πουατιέ, ἥτις μετὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της ἐγένετο ἐρωμένη τοῦ Φραγκίσκου Α' καὶ τοῦ Ἑρρίκου Β'. Τὸ ἐγερθὲν εἰς αὐτὸν μνημεῖον εἰς τὴν μητρόπολιν τῆς Ρουέν, ἔργον τῶν Ἰωάννου Γκουζὸν καὶ Ἰωάννου Κουζέν, εἶναι ἐκ τῶν ὡραιοτέρων ἔργων τῆς Ἀναγεννήσεως.

Θ. Β.

**Μπρεζίνα** (Brezina), ***Ὀτοκάρ.*** Τσεχοσλοβάκος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Πράγᾳ τῷ 1868. Τὴν πρώτην συλλογὴν ποιημάτων του ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Οἱ μακρινοὶ μυστηριώδεις» (1892). Βραδύτερον ἐδημοσίευσε τὰς συλλογάς: «Ἡ αὐγὴ εἰς τὴν Δύσιν» καὶ «Οἱ πολικοὶ ἄνεμοι». Εἰς τὴν ποίησιν τοῦ Μπρεζίνα ἡ τσεχικὴ ψυχὴ εὗρε τὴν εὐγενεστέραν της ἔκφρασιν. Ὁ Γερμανὸς κριτικὸς Ζβάϊγκ τάσσει αὐτὸν μεταξὺ τοῦ Βεράρεν καὶ τοῦ Βίτμαν.

Θ. Β.

**Μπρέϊγ** (Breuil) ***ἀββᾶς.*** Σύγχρονος Γάλλος ἀνθρωπολόγος, καθηγητὴς ἐν τῷ Collège de France καὶ τῷ ἰνστιτούτῳ της παλαιοντολογίας τοῦ ἀνθρώπου, τῷ ἱδρυθέντι ὑπὸ τοῦ πρίγκιπος Ἀλβέρτου Α' τοῦ Μονακό. Αἱ εἰς τὴν προϊστορίαν καὶ παλαιοντολογίαν τοῦ ἀνθρώπου συμβολαί του εἶναι σπουδαιόταται, περίφημοι δὲ αἱ ἀνακαλύψεις καὶ μελέται του τῶν προϊστορικῶν σπηλαίων τῶν Πυρηναίων, ἰδίᾳ τῆς Ἱσπανίας. Εἰς τὸν Μπρέϊγ ὀφείλομεν τὴν ἀντιγραφὴν τῶν θαυμασίων τοιχογραφιῶν τῶν σπηλαίων Altamira κλπ.

Ι. Γ. Κ.

**Μπρεκέλενκαμ** (Brekelenkam), ***Κουΐρῖνος Γκέρριτς βὰν —.*** Ὀλλανδὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1620 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1668. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπεικόνισιν σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου.

Ι. Μ. Π.

**Μπρέκνοκ,** ἢ ***Μπρέκον*** (Brecknock ἢ Brecon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ κομιτεία τῆς Ἀγγλίας, ἐν τῇ Οὐαλλίᾳ.

Ἡ πόλις κεῖται ἐπὶ τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Χόντου (Honddu) καὶ Οὔσκ. Τέσσαρα χιλιόμετρα δυτικῶς τῆς πόλεως ὑπῆρχε ρωμαϊκὸς σταθμὸς καὶ φρούριον, ἀπὸ τῶν ἐρειπίων τοῦ ὁποίου λέγεται ὅτι ἱδρύθη τῷ 1092 ὁ πρῶτος νορμανδικὸς πύργος ὑπὸ τοῦ Βερνάρδου ντὲ Νιούμαρτς. Παρὰ τοῦτο βραδύτερον ὁ Βερνάρδος ἵδρυσε τὴν μονὴν τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου, πέριξ δὲ τούτων ἀνεπτύχθη εἶτα ἡ πόλις. Σήμερον αὕτη ἀριθμεῖ 5.646 κατοίκους.

Ἡ κομιτεία (Brecknockshire ἢ Breconshire) κεῖται εἰς τὰ Ν. τῆς Οὐαλλίας, ἔχει ἔκτασιν 1 899 τ. χλμ. καὶ 61.222 κατ., ἀσχολουμένους κυρίως εἰς τὴν γεωργίαν καὶ τὴν κτηνοτροφίαν. Μέχρι τοῦ 1918 ἀπετέλει ἴδιον ἐκλογικὸν τμῆμα μὲ μίαν βουλευτικὴν ἕδραν, μετὰ ταῦτα ὅμως ὑπήχθη εἰς τὴν κομιτείαν Ράντνορ.

Γ. Ι. Β.

**Μπρὲμ** (Brehm), ***Ἀλφρέδος-Ἐδμόνδος.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς φυσιοδίφης, υἱὸς τοῦ *Χριστιανοῦ-Λουδοβίκου Μπρέμ*, γεννηθεὶς εἰς Renthendorf (1829—1884). Ἐπεχείρησε πολλὰ ἐπιστημονικὰ ταξίδια καθ' ὅλον σχεδὸν τὸν κόσμον καὶ τῷ 1863 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ ζῳολογικοῦ κήπου Ἀμβούργου, τῷ δὲ 1867 ἐδημιούργησε τὸ ἐνυδρεῖον Βερολίνου, ὅπερ καὶ διηύθυνε μέχρι τοῦ 1875. Ἐκτὸς τῶν ἔργων του: «Reiseskizzen aus Nord-ostafrica» (Ἰένη 1855), «Ergebnisse einer Reise nach Habesch» (Ἀμβοῦργον 1863), κλπ., τὸ ἔργον μεθ' οὗ συνεδέθη τὸ ὄνομά του καὶ ὅπερ κατέκτησεν εὐρεῖαν ἀνὰ τὴν Γερμανίαν καὶ τὴν Εὐρώπην φήμην, ὑπῆρξε τὸ κοινῶς γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Ὁ βίος τῶν ζῴων τοῦ Μπρέμς» («Illustrirtes Thierleben», Hilburghausen 1863—1869, ἑξάτομον), μεταφρασθὲν εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Les merveilles de la nature» (1869—1885, ἐννεάτομον). Ἐπίσης ἀριστουργηματικὸν ἔργον ὑπῆρξε καὶ ἡ δίτομος συγγραφή του τῶν «Ζῴων τοῦ δάσους» («Die Thiere des Waldes», Λειψία 1866—1867). Τέλος σημειοῦμεν τὸ δίτομον ἔργον του «Gefangeue Vögel» (Λειψία 1872—1876), ὡς καὶ τὸ σύγγραμμά του περὶ Νείλου μετὰ ὑδατογραφιῶν τοῦ Ch. Werner (Παρίσιοι 1882).

Ο. Ρ.

—**Μπρὲμ** (Brehm), ***Χριστιανὸς-Λουδοβῖκος.*** Γερμανὸς κληρικὸς καὶ ὀρνιθολόγος, πατὴρ τοῦ *Ἀλφρέδου-Ἐδμόνδου Μπρέμ*, γεννηθεὶς τῷ 1787 εἰς Σαινάου καὶ ἀποθανὼν τῷ 1864. Ἐσπούδασε θεολογίαν εἰς Ἰέναν. Κατώρθωσε νὰ καταρτίσῃ σπουδαιοτάτην συλλογήν, περιλαμβάνουσαν πλέον τῶν 9.000 εὐρωπαϊκῶν πτηνῶν. Τὰς μελέτας καὶ παρατηρήσεις του ἐδημοσίευσεν εἰς διάφορα περιοδικά, ὡς καὶ εἰς ἰδιαίτερα συγγράμματα, τῶν ὁποίων τὰ σπουδαιότερα εἶναι: «Συμβολαὶ εἰς τὴν πτηνολογίαν»

Digitized by Google

(3 τόμοι, Νόϊστατ 1823—1824) καὶ «Φυσικὴ ἱστορία ὅλων τῶν εὐρωπαϊκῶν πτηνῶν» (2 τόμοι, Ἰένα 1823—1824). Π. Χ. Χ.

**Μπρέμεν** (Bremen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ πολιτεία τῆς Γερμανικῆς ὁμοσπονδίας (βλ. λ. *Βρέμη*).

**Μπρέμερ** (Brehmer), ***Ἑρμάννος***. Γερμανὸς ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Kartsch (1826—1889). Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ εἶτα τὴν ἰατρικήν, ἀφιερωθεὶς ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν θεραπείαν τῆς φυματιάσεως. Τῷ 1859—1862 ἵδρυσεν ἐν Görbersdorf τῆς Σιλεσίας σανατόριον διὰ φυματικούς, ὅπερ διὰ τῆς ἐν αὐτῷ ἐφαρμοσθείσης φυσικῆς θεραπείας, τῆς ἀναπνευστικῆς γυμναστικῆς, τοῦ ὑπερσιτισμοῦ κλπ., ἀπέβη πρότυπον θεραπευτηρίου.

— **Μπρέμερ** (Bremer), ***Φρειδερίκη***. Σουηδὶς μυθιστοριογράφος, γεννηθεῖσα ἐν Φιννλανδίᾳ καὶ θανοῦσα παρὰ τὴν Στοκχόλμην (1801—1865). Ἤρχισε γράφουσα ἀπὸ νεαρωτάτης ἡλικίας, ἐξέμαθε πολλὰς ξένας γλώσσας καὶ δεκατριετὴς ἠθέλησε, μεταμφιεζομένη εἰς ἄνδρα, νὰ πολεμήσῃ ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος. Συνέγραψε τὰ πλήρη δροσερότητος καὶ ἁπλότητος εἰδύλλια: «Εἰκόνες ἀπὸ τὴν καθημερινὴν ζωὴν» (1827). Ἠκολούθησαν: Τὸ ἀριστούργημά της «Ἡ οἰκογένεια Χ» (1830), «Αἱ θυγατέρες τοῦ προέδρου» (1834), «Οἱ γείτονες» (1837). «Ὁ οἶκος» (1839), «Πόλεμος καὶ εἰρήνη» (1840), «Χέρτα» (1856) καὶ «Πατὴρ καὶ θυγάτηρ» κλπ. Διαπνεομένη ὑπὸ φιλελευθέρων πολιτικῶν καὶ θρησκευτικῶν ἀρχῶν, ἠγωνίσθη ὑπὲρ τῆς πλήρους χειραφετήσεως τῆς γυναικός. Συλλογὴ τῶν μυθιστορημάτων της ἐξεδόθη εἰς 7 τόμους (1835—1843) καὶ ἐκλογὴ τῶν ἔργων της εἰς 6 τόμους (1869—1872). Αἱ αὐτοβιογραφικαί της σημειώσεις μέχρι τοῦ 1831, ἡ ἀλληλογραφία της καὶ τὰ κατάλοιπά της ἐξεδόθησαν ὑπὸ τῆς ἀδελφῆς της Καρλόττας τῷ 1868. Γ. Ε. Κ.

**Μπρεμερχάφεν** (Bremerhaven) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Βρέμης. Κάτ. (1923) 22.620. Σχηματίζει μετὰ τῆς ἐπὶ τοῦ πρωσσικοῦ ἐδάφους κειμένης πόλεως Wesermünde συνεχῆ πόλιν 90.000 κατοίκων, δι' ἧς διέρχονται τὰ σύνορα τοῦ ἐλευθέρου κράτους τῆς Βρέμης. Ἔχει εὐαγγελικήν, λουθηρανικήν, καθολικὴν καὶ μεθοδιστικὴν Ἐκκλησίαν, σχολὴν ναυπηγῶν καὶ ναυτικῶν μηχανικῶν, θέατρον, βιβλιοθήκην, ναυπηγεῖα καὶ λοιπὰ ἐργοστάσια κατασκευῆς ναυτικῶν εἰδῶν κλπ. Ὁ λιμήν του ἔχει μεγάλας ἐγκαταστάσεις δεξαμενῶν τοῦ Βορειογερμανικοῦ Λόϋδ, χρησιμεύει δὲ ὡς προλιμὴν τοῦ λιμένος τῆς Βρέμης.

**Μπρεμοντιὲ** (Brémontier), ***Νικόλαος-Θωμᾶς***. Γάλλος μηχανικὸς (1738—1809). Διορισθεὶς τῷ 1784 ἀρχιμηχανικὸς τῶν ὁδῶν καὶ γεφυρῶν ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ Μπορντώ, ἀνέλαβε νὰ σταθεροποιήσῃ τὰς ἀμμοθίνας τοῦ Γασκωνικοῦ κόλπου, αἵτινες διὰ τῆς μετατοπίσεώς αὐτῶν ἠπείλουν νὰ καλύψωσι τὰ χωρία τῆς Λανδικῆς παραλίας. Τοῦτο κατωρθώθη διὰ τῆς ἀναδασώσεως τῆς περιοχῆς διὰ τῆς σπορᾶς δένδρων πίτυος, σπάρτων καὶ ἄλλων πυκνοφύλλων καὶ ἀειθαλῶν φυτῶν. Ἡ ἐργασία αὕτη ἀπῄτησε πολὺν χρόνον λόγῳ τῆς φθορᾶς, τὴν ὁποίαν προὐξένει ἡ ὑπὸ τοῦ ἀνέμου παρασυρομένη ἄμμος εἰς τὰ τρυφερὰ δενδρύλλια, ὅτε δὲ ἀπέθανεν ὁ Μπρεμοντιὲ μικρὸν μόνον μέρος αὐτῆς εἶχεν ἀποπερατωθῆ. Χ. Δ.

**Μπρεμπὲφ** (Brébeuf), ***Γεώργιος ντὲ —***. Γάλλος ποιητής, ἀνεψιὸς τοῦ *Ἰωάννου* (1617—1661). Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι μία γελοιογραφικὴ παρῳδία τοῦ Ζ' βιβλίου τῆς «Αἰνειάδος», ἡ ἔμμετρος μετάφρασις τῆς «Φαρσαλίδος», τοῦ Λουκιανοῦ, ἔργον μεγάλως ἐπαινεθὲν ὑπὸ τῶν συγχρόνων του ἀλλὰ περιπεσὸν ἀκολούθως εἰς ἀφάνειαν, «Διάφορα ποιήματα» (1658), «Ποιητικοὶ ἔπαινοι» κλπ. Χ. Δ.

— **Μπρεμπὲφ** (Brébeuf), ***Ἰωάννης ντὲ —***. Γάλλος ἱεραπόστολος καὶ ἰησουίτης (1593—1649). Ἦτο ἐκ τῶν πρώτων ἱεραποστόλων τοῦ Καναδᾶ (1625), ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ μακρόν, παρὰ τῷ λαῷ τῶν Οὐρόνων, ἐκμαθὼν δὲ τὴν γλῶσσάν των μετέφρασεν εἰς αὐτὴν πολλὰ κατηχητικὰ κείμενα. Συλληφθεὶς ὑπὸ τοῦ λαοῦ τῶν Ἰροκούων ἐκάη ὑπ' αὐτῶν ζῶν. Χ. Δ.

**Μπρεμπὶρ** (Brebir). Εὐγενὴς οὐγγρικὴ οἰκογένεια (βλ. λ. *Ζρίνυ*).

**Μπρὲν** (Brun), ***Ἰωάννης-Ἰούλιος***. Γάλλος στρατηγὸς (1849—1911). Ἀπὸ τοῦ 1886 μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ταγματάρχου ἐδίδαξεν ὡς ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς ἐφηρμοσμένης τακτικῆς ἐν τῇ ἀνωτάτῃ σχολῇ πολέμου, Προαχθεὶς τῷ 1904 εἰς ἀντιστράτηγον, ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ Γενικοῦ ἐπιτελείου, ὡς τοιοῦτος δὲ παρέμεινε μέχρι τοῦ 1909, ὁπότε ἀνέλαβεν τὸ ὑπουργεῖο Μπριὰν τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Στρατιωτικῶν. Ὡς ὑπουργὸς ἐπέφερε πολλὰς μεταρρυθμίσεις εἰς τὰ στρατιωτικὰ τῆς Γαλλίας, αὐξήσας τὸ πυροβολικόν, ἀναδιοργανώσας τὴν ἀνωτάτην διοίκησιν, ἱδρύσας φροντιστήριον ἀνωτάτων στρατιωτικῶν σπουδῶν κλπ. Χ. Δ.

**Μπρενβιγιὲ** (Brinvilliers), ***Μαρία-Μαγδαληνὴ ντ' Ὠμπραί***, *μαρκησία ντὲ —*. Διάσημος Γαλλὶς φαρμακεύτρια (1630—1676). Ἦτο θυγάτηρ τοῦ Ντρὲ ντ' Ὠμπραί, ὑποδιοικητοῦ τοῦ Σατελὲ τῶν Παρισίων, ἐνυμφεύθη δὲ τῷ 1651 τὸν Ἀντώνιον Γκομπλέν, μαρκήσιον ντὲ Μπρενβιγιέ. Συνδεθεῖσα ἐρωτικῶς μετά τινος ἀξιωματικοῦ καλουμένου Σαὶν-Κρουά, ἐδιδάχθη ὑπ' αὐτοῦ τὴν χρῆσιν τῶν δηλητηρίων. Τῷ 1666 ἐδηλητηρίασε πρῶτον τὸν πατέρα της, ὅστις εἶχε φυλακίσει τὸν ἐρωμένον της, εἶτα δὲ καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς, χωρὶς νὰ προκαλέσῃ οὐδεμίαν ὑποψίαν. Ὅτε ὅμως μετ' ὀλίγον (1670) ἀπέθανεν ὁ Σαὶν-Κρουά, εἶχε κληροδοτήσει εἰς αὐτὴν ἓν κιβώτιον πλῆρες φιαλιδίων καὶ ἄλλων ὑπόπτων σκευασιῶν, τὸ ὁποῖον ὡς ἀπεδείχθη, περιεῖχε ποικίλα θανατηφόρα δηλητήρια. Ἡ Μπρενβιγιὲ τότε, πρὸ τοῦ κινδύνου τῆς συλλήψεως, ἔφυγεν εἰς Ἀγγλίαν, ἐκεῖθεν δὲ διεπεραιώθη εἰς τὰς Κάτω Χώρας, ὅπου τέλος συνελήφθη ἐν Λιέγῃ. Σημείωμα αὐτοβιογραφικόν, τὸ ὁποῖον εὑρέθη ἐπ' αὐτῆς, παρέχει τὴν τρομακτικωτέραν ἀφήγησιν δηλητηριάσεων καὶ ὀργίων, τὰ ὁποῖα θὰ ἠδύνατο νὰ φαντασθῇ ἀνθρώπινος νοῦς. Εἰς Παρισίους, ὅπου μετεφέρθη, προεκλήθη ἀληθὴς λαϊκὴ ἐξέγερσις, τὸ δὲ δικαστήριον, πρὸ τοῦ ὁποίου προσήχθη, κατεδίκασεν αὐτὴν εἰς τὸν δι' ἀποκεφαλισμοῦ θάνατον, προστάξαν ἐπιπροσθέτως τὴν καῦσιν τοῦ σώματος καὶ τὴν διασκόρπισιν τῆς κόνεως αὐτοῦ εἰς τοὺς ἀνέμους. Ἀναλυτικὴν περιγραφὴν τῆς θανατικῆς αὐτῆς ἐκτελέσεως ἔδωσεν ὁ Π. Πιρότ. Χ. Δ.

**Μπρενὲ** (Brenet), ***Μιχαήλ***. Φιλολογικὸν ψευδώνυμον τῆς Γαλλίδος μουσικολόγου *Μαρίας Μπομπιλλιὲ* (Bobillier, 1858—1918). Ἔγραψε μέγαν ἀριθμὸν μουσικοϊστορικῶν καὶ κριτικῶν ἔργων καὶ ἠσχολήθη μὲ τὴν παλαιὰν μουσικὴν τῆς Γαλλίας. Τὰ κυριώτερα συγγράμματά της εἶναι: «Histoire de la symphonie à orchestre jusqu'à Beethoven» (1882), «Grétry, sa vie et ses œuvres» (1884, βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βελγίου), «Deux pages de la vie de Berlioz» (1889), «Jean de Okeghem» (1893), «Sebastien de Brossard» (1896), «La musique dans les couvents de femmes» (1898), «Claude Goudimel» (1898), «Notes sur l'histoire du luth en France» (1899), «Les concerts en France sous l'ancien régime» (1900), «La jeunesse de Rameau» (1903), «Palestrina» (1905), «J. Haydn» (1909), «Notes sur l'introduction des instruments dans les églises de France» (1909), «Musique et musiciens de la vieille France» (1911) κτλ. Γ. Σ.

**Μπρένιστας** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἄρτης χωρίου *Κορφοβούνιον* (βλ. λ.).

**Μπρένιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Βατοχώρι* (βλ. λ.).

**Μπρένμαουρ** (Brynmawr) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Οὐαλλίας, κειμένη εἰς τὸ ἄκρον δυτικὸν τμῆμα τῆς πολιτείας Μπρέκον, παρὰ τὰ σύνορα τοῦ Μόνμαουθσάϊρ, καὶ ἔχουσα βιομηχανίας σιδήρου, χυτήρια κλπ. Κάτ. (1921) 8.067. Χ. Δ.

**Μπρέννερ** (Brenner, ἰταλ. Brennero) *[Γεωγρ.]*. Δίοδος τῶν Ἄλπεων ἐν Τυρόλῳ, κειμένη εἰς ὕψος 1.370 μέτρ. ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἀνήκουσα ἀπὸ τοῦ 1920 εἰς τοὺς Ἰταλούς. Ἤδη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Ρωμαίων διήρχετο διὰ τοῦ Μπρέννερ ὁδὸς ἄγουσα ἀπὸ Ἰταλίας εἰς Γερμανίαν, κατασκευασθεῖσα ἐκ νέου τῷ 1772. Ἡ διὰ τοῦ Μπρέννερ διερχομένη σιδηροδρομικὴ γραμμή, κατασκευασθεῖσα τῷ 1867, ἔχει μεγάλην ἐμπορικὴν σημασίαν, οὖσα ἡ συντομωτάτη ὁδὸς ἀπὸ Γερμανίας εἰς Ἰταλίαν.

**Μπρέννερ** (Brenner), ***Ἐρνέστος***. Ἑλβετὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1856. Ἐσπούδασεν ἐν Βασιλείᾳ, Μονάχῳ καὶ Λειψίᾳ τὴν νομικήν. Τῷ 1897 ἐξελέγη μέλος τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ συμβουλίου. Κατέβαλε προσπάθειαν διὰ τὴν ἑνοποίησιν τοῦ δικαίου τῶν καντονίων, ἣν εἶδε πραγματοποιηθεῖσαν τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1907, διὰ τοῦ ὑπὸ τῶν βουλῶν προταθέντος σχεδίου συντάξεως ἀστικοῦ κώδικος. Τῷ 1901 προήδρευσε τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ συμβουλίου. Τῷ 1906 ὠνομάσθη ἀντιπρόεδρος καὶ τῷ 1907 πρόεδρος τῆς ὁμοσπονδίας διὰ τὸ ἔτος 1908. Α. Δ.

**Μπρένο** (Breno) *[Παραλ Γεωγρ.]*. Δαλματικὸς κόλπος (πλάτ. 42° 36' Β., μῆκ. 18° 13' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2713: Curzola to Cattaro) μεταξὺ *Πελεγκρίνο* καὶ *Ραγούζας*. Σ. Ε. Λ.

**Μπρὲν-Ρολλὲ** (Brun-Rollet), ***Ἀντώνιος***. Γάλλος ἐξερευνητὴς (1810—1858). Τῷ 1831 μετέβη εἰς Αἴγυπτον, ἐκεῖθεν δ' ἐπεσκέφθη τὸ Αἰγυπτιακὸν Σουδάν, ὅπου ἦλθεν εἰς στενὰς ἐμπορικὰς σχέσεις μετὰ τῶν ἰθαγενῶν. Ἐπεχείρησεν ἀνεπιτυχῆ ἐξερεύνησιν πρὸς ἀνακάλυψιν τῶν πηγῶν τοῦ Νείλου, εἶτα δ' εἰσεχώρησεν εἰς τὴν πρὸς Δ. τοῦ Λευκοῦ Νείλου περιοχὴν τοῦ Χαρτοὺμ καὶ ἐξηρεύνησε τὰς ὄχθας τοῦ Μπὰχρ-ἐλ-Γκαζὰλ ἐπὶ μήκους 120 χλμ. Χ. Δ.

**Μπρένσγουϊκ** (Brunswick) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ λιμὴν τῆς Βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Γκλὺν ἐν τῇ πολιτείᾳ Γεωργίας. Κεῖται ἐν τῷ κόλπῳ Σαὶν Σίμονς, 112 χλμ. πρὸς Ν.ΝΔ. τῆς Σαβάννα. Ἔχει τακτικὰς δι' ἀτμοπλοίων συγκοινωνίας μετὰ τῆς Νέας Ὑόρκης, τῆς Βοστώνης καὶ ἄλλων λιμένων, διυλιστήρια ἐλαίου καὶ ρητίνης, χυτήρια καὶ ὀστρεοτροφεῖα. διεξάγει δ' ἐμπόριον βάμβακος. Κάτ. 10.182. Χ. Δ.

**Μπρέντα** (Brenta) *[Γεωγρ.]*. Ἐπίσημος ποταμὸς τῆς Β. Ἰταλίας, ὁ Meodacus major τῶν Ρωμαίων, πηγάζων ἐκ τοῦ Μόντε ντὶ Λαγκόρεϊ, ἐν Τρεντίνῳ, 30 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Τρέντο, καὶ ἐκβάλλων εἰς τὴν Ἀδριατικὴν ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Βενετίας. Ρέει κατ' ἀρχὰς πρὸς ΝΔ. μέχρι τῆς λίμνης Καλντονάτσο, τὴν ὁποίαν διασχίζει, λαμβάνει εἶτα κατεύθυνσιν πρὸς ΒΑ. καὶ ΝΑ., σχηματίζων τὴν ἡμικυκλικὴν κοιλάδα τῆς Σουγκάνα, στρεφόμενος δὲ τέλος πρὸς Ν. εἰσέρχεται ἀπὸ τοῦ Μπασσάνο (ὑψόμ. 110 μ.) εἰς τὴν πεδιάδα, λαμβάνων μικρὸν πρὸ τῆς Παδούης τὴν πρὸς Α. κατεύθυνσιν. Ἔχει συνολικὸν ροῦν 180 χλμ., ὧν τὰ 90 εἶναι πλωτά, διευθετηθείσης τῆς κοίτης αὐτοῦ διὰ διωρύγων. Ἀρδεύει ἔκτασιν 4.000 τετρ. χλμ., ἐκχύνει δὲ εἰς τὴν θάλασσαν 56 κατὰ μέσον ὅρον κυβ. μέτρα ὕδατος κατὰ δευτερόλεπτον, φθάνοντα πολλάκις κατὰ τὰς ἐποχὰς τῶν βροχῶν μέχρις 900 κυβ. μ. Αἱ ἐκβολαὶ αὐτοῦ ἀποτελοῦνται ἐκ τριῶν στομίων, ὧν τὸ μὲν ἓν ἐκρέει εἰς μικρὰν πρὸς Ν. ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς Βενετίας, τὰ δὲ δύο ἕτερα 80 χλμ. νοτιώτερον καὶ ἐγγὺς τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἀδίγη, παρὰ τὴν πόλιν Chiozzia. Τὸ τμῆμα τοῦ ἄνω ροῦ τοῦ ποταμοῦ (κοιλὰς Σουγκάνα) ἀνῆκε πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Αὐστρίαν. Χ. Δ.

**Μπρέντα** (Breda), ***Βικέντιος-Στέφανος***. Ἰταλὸς μηχανικὸς καὶ βιομήχανος (1825—1903). Ἀσχοληθεὶς εἰς τὴν κατασκευὴν σιδηροδρομικῶν ἔργων, ἵδρυσε τῷ 1854 ἑταιρείαν ἐξ Ἰταλῶν κεφαλαιούχων, ἥτις ἀνέλαβε τὴν κατασκευὴν τοῦ σιδηροδρομικοῦ δικτύου τῆς κεντρικῆς Ἰταλίας. Τῷ 1872 ἵδρυσε τὴν «Ἑταιρείαν τῆς Βενετίας» (Società Veneta), ἥτις προέβη εἰς τὴν κατασκευὴν σημαντικωτάτων δημοσίων ἔργων. Ἀλλὰ τὴν φήμην αὐτοῦ ὀφείλει κυρίως εἰς τὴν ὀργάνωσιν τῶν χυτηρίων τοῦ Τέρνι. Τῷ 1866 ἐξελέγη βουλευτής, τῷ δὲ 1890 γερουσιαστής. Α. Δ.

— **Μπρέντα** (Breda), ***Κάρολος-Φρειδερῖκος φὸν —***. Σουηδὸς ζωγράφος (1759—1818). Συνεπλήρωσε τὴν καλλιτεχνικήν του κατάρτισιν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ διέπρεψεν ἰδίᾳ ὡς προσωπογράφος. Εἶναι προφανὴς ἐπ' αὐτοῦ ἡ βαθεῖα ἐπίδρασις τῆς τέχνης τοῦ Ρέϋνολτς καὶ τοῦ Γκαίνσμπορω. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται τὰ ἀκόλουθα: «Προσωπογραφία τῆς μητρὸς τοῦ καλλιτέχνου» (1797), «Προσωπογραφία τῆς Θηρεσίας Βαντόνι» (1797), «Προσωπογραφία τοῦ J. F. de Ron» (1798), «Προσωπογραφία τοῦ Ἄγγλου βοτανικοῦ William Wishering» (1797), «Προσωπογραφία τῆς Eva Sofia Ulrika Lävenskjöld» (1810), ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ τῆς Στοκχόλμης, «Προσωπογραφία Αὐγούστου τοῦ Γ', ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Drottningholm, «Προσωπογραφία τοῦ Ὄλοφ Φλέμμιγκ», «Προσωπογραφία τοῦ Ι. Λίνχολμ», «Προσωπογραφία τοῦ Ὄλσσον», ἐν τῷ πύργῳ τοῦ Gripsholm, «Προσωπογραφία ἀνδρὸς» καὶ «Προσωπογραφία τοῦ Ἰακώβου ντὲ Ρόν», ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Γκαίτεμποργκ. Ι. Μ. Π.

**Μπρεντὰ** (Breda) *[Γεωγρ.]* Πόλις τῆς Ὁλλανδίας. Κάτ. (1924) περὶ τοὺς 30.000. Ἔχει στρατιωτικὴν Ἀκαδημίαν καὶ μεγάλην βιομηχανίαν σιδήρου, μηχανῶν, τσιμέντων, σακχάρεως, δερμάτων, πυρείων, μεταξωτῶν ὑφασμάτων κτλ.

**Μπρεντάνο** *[Γεωγρ.]*. Ἑλώδης περιοχὴ τῆς Κερκύρας (βλ. λ. *Βρεντάνο*).

**Μπρεντάνο** (Brentano), ***Κλήμης***. Γερμανὸς ρομαντικὸς ποιητὴς (1778—1842). Ἐσπούδασεν ἐν Χάλλῃ καὶ Ἰένᾳ, ὅπου ἐγνωρίσθη μετὰ τῶν ρομαντικῶν ποιητῶν ἀδελφῶν Σλέγγελ, Χάρντενμπεργκ καὶ Τίκ. Ἔγραψε τὸ μυθιστόρημα «Γκόντβι», ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον Μαρία (1880—1802, 2 μέρη), τὸ μελόδραμα «Οἱ εὔθυμοι μουσικοὶ» (1803) τὴν πλήρη πνεύματος καὶ σατίρας κωμῳδίαν «Ponce de Leon» (1804), καὶ τὰ «Χρονικὰ ταξιδεύοντος μαθητοῦ» (1803, δημοσιευθέντα τὸ πρῶτον 1818) κλπ. Μετὰ τοῦ Ἄχιμ φὸν Ἄρνιμ, τοῦ μετέπειτα συζύγου τῆς ἀδελφῆς του Μπεττίνας, ἐξέδωκε τὴν ἀξιόλογον συλλογὴν δημοτικῶν τραγουδιῶν «Ὁ

*Κλήμης Μπρεντάνο.*

Digitized by Google

μαγικὸν κέρας τοῦ παιδιοῦ» (1806—1808, 3 μέρη), ἀφιερώσας ταύτην εἰς τὸν Γκαῖτε. Ἄλλα ἔργα αὐτοῦ εἶναι «Romanzen von Rosenkranz», «Ἡ ἵδρυσις τῆς Πράγας» (1815), «Ἱστορία τοῦ καλοῦ Κάσπερλ καὶ τῆς ὡραίας Ἄννερλ». Τῷ 1818 μετέβη εἰς Dülmen (Münster), ὅπου διέμεινε πλησίον τῆς μυστικοπαθοῦς καλογραίας Ἄννας Αἰκατερίνης Ἔμμεριχ μέχρι τοῦ θανάτου ταύτης καὶ κατέγραψεν ὁλοκλήρους τόμους τῶν ὁραματισμῶν της. Τῷ 1838 ἐδημοσίευσεν ὡς τελευταῖόν του ἔργον τὸ πλῆρες ποιήσεως καὶ γοητείας παραμύθι «Gockel, Hinkel und Gackeleia» (1838). Ὁ Μπρεντάνο, τοῦ ὁποίου τὰ τραγούδια καὶ παραμύθια ὑπῆρξαν δημοφιλέστατα, ἕνεκα τοῦ ρωμαντισμοῦ των καὶ τῆς ἁπλότητος τῆς ἐκφράσεως, ἂν καὶ διεκρίθη διὰ τὴν πλουσίαν ποιητικὴν φαντασίαν του καὶ τὸ βαθὺ αἴσθημα, ὑστερεῖ ἀπὸ ἀπόψεως καλλιτεχνικότητος ὕφους. Ἐκτὸς τῶν αἰσθητικῶν σκοπῶν, ἐπεδίωξε διὰ τῆς βαθυτέρας ἀντιλήψεως τῆς θρησκείας καὶ τῆς πρὸς τὴν πατρίδα ἀγάπης τὴν ἀναγέννησιν τοῦ γερμανικοῦ πνεύματος. Ἡ ἐσωτερική του ἀνησυχία καὶ πικρία, ἥτις πολλάκις ἐκφράζεται εἰς τὴν πλήρη καυστικότητος εἰρωνείαν του, ὡδήγησε τοῦτον εἰς τὸν αὐστηρότατον θρησκευτικὸν ἀσκητισμόν. Τὰ ἅπαντά του ἐξεδόθησαν τῷ 1852—1855 εἰς 9 τόμους. Ἀπὸ τοῦ 1909 ἤρχισεν ἐπιστημονικὴ ἔκδοσις τῶν ἔργων του, δημοσιευθέντων μέχρι σήμερον 10 τόμων. Ἐκλογὴ τῶν ἔργων του ἐδημοσιεύθη ὑπὸ Morris (1904, 4 τ.), Preitz (1915, 3 τ.) καὶ Amelung (1923, 4 τ.).

[Πρβλ. *Hümpfner*, «Clemens Brentanos Glaubwürdigkeit in seinen Emmerich-Aufzeichnungen» (1923).] Γ. Ε. Κ.

— **Μπρεντάνο** (Brentano), ***Λουδοβῖκος-Ἰωσήφ***, συνήθως καλούμενος ***Λούγιο***. Γερμανὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Aschaffenburg τῷ 1844. Ἠκολούθησε σπουδὰς πολιτικῶν ἐπιστημῶν, ἀσχοληθεὶς δὲ μετὰ ταῦτα ἐν Ἀγγλίᾳ εἰς τὴν μελέτην τῆς ὀργανώσεως τῶν ἐργατικῶν σωματείων, ἔδωσε διὰ τοῦ ἔργου του: «Die Arbeitergilden der Gegenwart» (1871—1872) τὴν πρώτην ὤθησιν πρὸς βαθυτέραν ἔρευναν τῶν ἀπαρχῶν καὶ τῆς ἱστορικῆς ἐξελίξεώς των. Ἐξέχουσα φυσιογνωμία ἐν τῇ νεωτέρᾳ ἱστορικῇ σχολῇ, συνέπραξεν ἐνεργῶς μετ' ἄλλων ἀπὸ καθέδρας σοσιαλιστῶν εἰς τὴν ἵδρυσιν τοῦ Verein für Sozialpolitik. Ἐν τῷ πλαισίῳ τῆς ἑνώσεως ταύτης ὑπεστήριξε τὴν ἀνάγκην τῆς διευκολύνσεως τοῦ συνασπισμοῦ τῶν ἐργαζομένων τάξεων εἰς συνεργατικὰς ὀργανώσεις, τῆς εἰρηνικῆς διὰ διαιτησίας ἐπιλύσεως τῶν μεταξὺ ἐργοδοτῶν καὶ ἐργατῶν διαφορῶν καὶ τῆς ἐπεκτάσεως τῶν κοινωνικῶν ἀσφαλίσεων. Ἐπίσης κατεπολέμησε τὴν θεωρίαν τοῦ μισθοδοτικοῦ ἀποθέματος, ἀντιθέτως δὲ πρὸς ἄλλους ἐκπροσώπους τοῦ ἀπὸ καθέδρας σοσιαλισμοῦ ἐπεδίωξε μετὰ θέρμης τὴν κατάργησιν τῶν προστατευτικῶν δασμῶν καὶ τὴν πλήρη ἐλευθερίαν τοῦ ἐμπορίου. Ἔγραψε: «Das Arbeitsverhältnis gemäss dem heutigen Recht» (1877), «Christlich-Soziale Bewegung in England» (1883), «Agrarpolitik» (1897), «Wirtschaftsgeschichte Englands» (3 τόμοι, συνεπληρώθη 1928). Α. Α. Τ.

**Μπρέντγουντ** (Brentwood) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ἔσσεξ, κειμένη 17,5 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Τσέλμσφορντ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει σχολὴν κλασσικῆς ἐκπαιδεύσεως (1557), ἄσυλον φρενοβλαβῶν καὶ βιομηχανίας ζύθου καὶ πλίνθων. Κάτ. 6.923. Χ. Δ.

**Μπρέντεν** (Breden), ***Χριστιανὴ φὸν —***. Γερμανὶς ποιήτρια, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Ἄντα Κρίστεν* (Ada Christen), γεννηθεῖσα καὶ θανοῦσα ἐν Βιέννῃ (1844—1901). Τὸ ἐνδιαφέρον ἐκίνησε διὰ τῆς συλλογῆς ποιημάτων «Τραγούδια παραστρατημένης» (1868), τὰ ὁποῖα συνδυάζουσι φλογερὸν πάθος καὶ ἄκρατον ρεαλισμόν. Ἐκ τῶν ὑπολοίπων ποιημάτων της ἀναφέρομεν τὰ ἑξῆς: «Ἐκ τῆς τέφρας» (1870), «Σκιαί» (1873), «Ἐκ βαθέων» (1878). Εἰς πεζὸν ἔγραψε: «Οἱ γείτονές μας» (1884), ἠθογραφικὰς εἰκόνας τῆς Βιέννης, κλπ. —Ω.

**Μπρεντερὸ** (Bredero), ***Γερβράνδος-Ἀντριάενσον***. Ὁλλανδὸς συγγραφεὺς καὶ ποιητὴς (1585—1618). Θεωρεῖται εἷς τῶν μεγαλυτέρων κωμῳδιογράφων τῆς Ὁλλανδίας. Ἐκ τῶν κωμῳδιῶν του τὴν πρώτην θέσιν κατέχουσιν αἱ «Het Moortje» (1615), «De Spaansche Brabander» (1618) καὶ «De Stomme Ridder». Μεγάλην ἐντύπωσιν ἐνεποίησεν ἡ συλλογὴ τῶν ᾀσμάτων του «Amoreus, en aendachtigh groot Liedeboeck», ἐκδοθεῖσα ἐν Ἀμστελλοδάμῳ τῷ 1622. Α. Δ.

**Μπρεντζέρι** (Brengeri). Ἰταλὸς φιλέλλην, ὅστις κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα ἐκλείσθη μετὰ τεσσάρων ἄλλων φιλελλήνων καὶ τοῦ Ἀλεξάνδρου Μαυροκορδάτου ἐν Μεσολογγίῳ κατὰ τὴν πρώτην πολιορκίαν (Ὀκτώβριος 1822) καὶ συνεισήνεγκεν εἰς τὴν διάλυσιν τῆς πολιορκίας τῶν Τούρκων. Τ. Ε. Ε.

**Μπρέντλη.** Ἑλβετὸς ἐκ Ζυρίχης, ὅστις σπουδάσας πυροβολικὴν ἐν τῇ πατρίδι του κατῆλθεν εἰς τὴν ἀγωνιζομένην Ἑλλάδα. Ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Πέτα, ἔνθα διοικῶν μέρος τοῦ πυροβολικοῦ καὶ πυρέσσων κατὰ τὴν ἔναρξιν τῆς μάχης κατεσφάγη ὑπὸ τῶν Ἀλβανῶν ἐπὶ τοῦ πυροβόλου ἐφ' οὗ εἶχεν ἐξηντλημένος ἐπακουμβήσει (4 Ἰουλίου 1822). Τ. Ε. Ε.

**Μπρέντμπορυ** (Bredbury) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Τσέσαϊρ, κειμένη 3 χλμ. πρὸς ΒΑ. τοῦ Στόκπορτ καὶ ἀποτελοῦσα μετὰ τῆς γείτονος αὐτῆς πόλεως Ρόμιλυ ἑνιαίαν διοικητικὴν περιφέρειαν (district). Κάτ. (1921) 9.168 μετὰ τῆς Ρόμιλυ. Χ. Δ.

**Μπρέντς** (Brenz), ***Ἰωάννης***. Γερμανὸς θεολόγος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1499. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἀϊδελβέργης ἀρχαίας γλώσσας, φιλοσοφίαν καὶ θεολογίαν. Γνωρίσας ἐκεῖ καὶ τὸν Μελάγχθονα, Οἰκολαμπάδιον καὶ τὸν Λούθηρον, διετέθη εὐμενῶς πρὸς τὴν διαμαρτύρησιν. Ἀφοῦ ἐπί τινα ἔτη ἐδίδαξεν ἐν Ἀϊδελβέργῃ, ἐγένετο κανονικὸς ἐν τῷ ἐκεῖ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος (1520) καὶ ἔπειτα ἐχειροτονήθη ἱερεύς. Μεθ' ὀλίγον ὅμως κατεδιώχθη ὡς ὀπαδὸς τοῦ Λουθήρου. Τῷ 1522, προσκληθεὶς ἦλθεν ὡς ἱεροκήρυξ ἐν Χὰλλ τῆς Σουηβίας. Ἐκεῖ ἔμεινεν ἐπὶ μακρὰ ἔτη διαδίδων τὴν μεταρρύθμισιν, μέχρις οὗ ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ ἕνεκα τῆς κατὰ τῆς παραδοχῆς τοῦ Interim (1541) ἀντιδράσεώς του. Ὑποστὰς ἐπὶ ἑπτὰ περίπου ἔτη καταδιώξεις, ἦλθε τῷ 1553 εἰς Στουττγάρδην καὶ ἔπειτα εἰς Τυβίγγην, ἔνθα ἔμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του (1570). Ὁ Μπρέντς ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τῶν ὁποίων ἄξια ἰδίας μνείας εἶναι: «Κατήχησις» (1528), τὸ «Σουηβικὸν σύγγραμμα», ἐν ᾧ συνεργασθεὶς μετ' ἄλλων θεολόγων ἀνέτρεψε τὸ ἔργον τοῦ Οἰκολαμπαδίου, τοῦ ὑποστηρίξαντος τὴν περὶ θείας εὐχαριστίας διδασκαλίαν τοῦ Ζβιγγλίου (1525), «Ἡ ὁμολογία τῆς Βυρτεμβέργης» ἡ συνταχθεῖσα τῷ 1551 τῇ συνεργασίᾳ καὶ ἄλλων θεολόγων, καὶ ἑρμηνευτικὰ ὑπομνήματα εἰς τὰ πλεῖστα βιβλία τῆς ἁγίας Γραφῆς. Κ. Ι. Δ.

**Μπρέρα** (Brera). Περίφημον ἀνάκτορον ἐν Μιλάνῳ. Κατ' ἀρχὰς ὑπῆρξε μοναστήριον ἐν τῇ ἀγροικίᾳ τοῦ Ἰταλοῦ εὐπατρίδου Γκουέρτσιο ντὰ Μπάτζο, ὅστις παρεχώρησεν αὐτὸ εἴς τινα Βιτσιμόντε, ὅστις τῷ 1178 τὸ ἐπώλησεν εἰς τὸ τάγμα τῶν «Ταπεινῶν ἀδελφῶν». Μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ πάπα Πίου Ε' (1571) κατάργησιν τοῦ τάγματος τούτου, ἡ μονὴ περιῆλθεν εἰς τὸ τάγμα τῶν ἰησουϊτῶν, οἵτινες ἵδρυσαν ἐν αὐτῇ ἀνωτέραν σχολήν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐδιδάσκοντο ἑλληνικὴ καὶ λατινικὴ φιλολογία, ρητορική, μαθηματικά, ἀστρονομία καὶ θεολογία· ἡ σχολὴ ἐδικαιοῦτο ν' ἀπονέμῃ καὶ πανεπιστημιακὰ διπλώματα. Τὸ πλῆθος τῶν ἐν τῇ σχολῇ ταύτῃ σπουδαστῶν ὑπῆρξεν ἀφορμή, ὥστε οἱ ἰησουῖται νὰ οἰκοδομήσουν τὸ σημερινὸν ἀνάκτορον Μπρέρα, συμφώνως πρὸς τὸ σχέδιον τοῦ μεγάλου ἀρχιτέκτονος Δ. Ρικίνι. Καταργηθέντος κατ' Ἰούλιον τοῦ 1773 καὶ τοῦ τάγματος τῶν ἰησουϊτῶν, τὸ ἀνάκτορον περιῆλθεν εἰς τὸ ἰταλικὸν κράτος, ὅπερ ἐγκατέστησεν ἐν αὐτῷ: ἀστεροσκοπεῖον, τὴν βασιλικὴν βιβλιοθήκην, νομισματικὸν μουσεῖον, τὸ «παλαιὸν φαρμακεῖον τῆς Μπρέρας» (Antica farmacia di Brera), καὶ βραδύτερον τὴν βασιλικὴν Ἀκαδημίαν τῶν καλῶν τεχνῶν, τὸ ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον, τὴν πλουσίαν πινακοθήκην τῆς πόλεως καὶ τὸ βασιλικὸν λομβαρδικὸν ἰνστιτοῦτον τῶν ἐπιστημῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Α. Δ.

**Μπρὲς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Μουριῶν (Ἀκίντζαλι) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, μετονομασθὲν *Ἀκρολίμνιον*. Κάτ. (1928) 117. Χ. Δ.

— **Μπρὲς** (Bresse) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας, ἐκτεινομένη μεταξὺ τοῦ Ντοὺμπς πρὸς Β., τοῦ ὀροπεδίου τοῦ Ντὸμπ πρὸς Ν., τοῦ Ρεβερμὸν πρὸς Α. καὶ τοῦ Σὼν πρὸς Δ., ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τῶν σημερινῶν νομῶν Αἲν, Σὼν-έ-Λουὰρ καὶ Ἰούρα. Τὸ ἔδαφος αὐτῆς περιλαμβάνει τὸν πυθμένα ἀποξηρανθείσης λίμνης τῆς τριασίου ἐποχῆς, εἶναι εὐφορώτατον, καλυπτόμενον ἀπὸ καλλιεργείας σιτηρῶν καὶ ἀραβοσίτου καὶ ἀπὸ πυκνὰ δάση, ἀρδεύεται δὲ ὑπὸ τῶν Βεϋλ, Ρεϋσσοὺζ καὶ Σέγι. Ἔχει πτηνοτροφίαν, ἀγελαδοκομίαν καὶ χοιροκομίαν. Ὑποδιαιρεῖται εἰς τρεῖς περιοχάς: *Μπρὲς Μπρεσσάν, Μπρὲς Λουαννάιζ* καὶ *Μπρὲς Σαλοννάιζ* καὶ ἔχει κυριωτέρας πόλεις τὰς Μποὺργ καὶ Λουάν. Ἡ Μπρὲς γεωγραφικῶς δὲν ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὸ ὁμώνυμον δουκᾶτον, ὅπερ ἐκτεινόμενον ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ Ἰούρα περιελάμβανεν ἐκ τῆς Μπρὲς τὴν Μπρὲς Μπρεσσάν, μὲ πρωτεύουσαν τὴν Μπαζὲ-λὲ-Σατέλ. Τῷ 1272 διὰ τοῦ γάμου τῆς Συβίλλης ντὲ Μπαζὲ μετὰ τοῦ Ἀμεδαίου Ε' τῆς Σαβοΐας, ἡ κομιτεία περιῆλθεν εἰς τὸν Σαβαυδικὸν οἶκον, τῷ δὲ 1601, διὰ τῆς συνθήκης τῆς Λυὼν, παρεχωρήθη ὑπὸ τοῦ δουκὸς Καρόλου Ἐμμανουὴλ τῆς Σαβοΐας εἰς τὸν Ἑρρῖκον Δ' τῆς Γαλλίας. Χ. Δ.

**Μπρέσακον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας χωρίου *Κλεισόρευμα* (βλ. λ.).

**Μπρεσατλῆ** *[Γεωγρ.]*. Προτέρα ὀνομασία τοῦ τοῦ συνοικισμοῦ *Καβαλλάρης* (βλ. λ.) τῆς κοινότητος Πτελέας.

**Μπρεσὲ** (Breschet), ***Γιλβέρτος***. Γάλλος ἀνατόμος καὶ φυσιολόγος (1784—1845). Τῷ 1819 ἐγένετο ἐπιμελητὴς τῆς ἀνατομικῆς, τῷ 1835 ἐξελέγη μέλος τοῦ ἰνστιτούτου καὶ τῷ 1836 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ Παρισίων. Διετέλεσεν ἐπίσης μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς. Ἐκτὸς τοῦ συγγράμματός του «Ἀνατομικὴ καὶ φυσιολογία» (1826—1827), συγγράμματα καὶ μονογραφίαι αὐτοῦ εἶναι: «Ἔρευναι ἀνατομικαί, φυσιολογικαὶ καὶ παθολογικαὶ ἐπὶ τοῦ φλεβικοῦ συστήματος» (1826—1829), «Ἔρευναι ἀνατομικαὶ καὶ φυσιολογικαὶ ἐπὶ τοῦ ἀκουστικοῦ ὀργάνου τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν σπονδυλωτῶν» (1836), «Ἔρευναι ἀνατομικαὶ καὶ φυσιολογικαὶ ἐπὶ τοῦ ἀκουστικοῦ ὀργάνου τῶν ἰχθύων» (1838), «Τὸ λυμφατικὸν σύστημα ὑπὸ ἀνατομικήν, φυσιολογικὴν καὶ παθολογικὴν ἔποψιν» (1836), «Μελέτη ἀνατομική, φυσιολογικὴ καὶ παθολογικὴ ἐπὶ τοῦ ᾠαρίου τοῦ ἀνθρώπου» (1833) κλπ. Μετέφρασε τὸ σύγγραμμα τοῦ Hadgson ἐπὶ τῶν νόσων τῶν ἀρτηριῶν καὶ φλεβῶν, συμπληρώσας τοῦτο διὰ πολυτίμων σημειώσεων καὶ δι' ὅλως νέας ἐργασίας ἐπὶ τῶν φλεβιτίδων. Ὡς κόλπος τοῦ Μπρεσὲ θεωρεῖται ὁ βρεγματοσφηνοειδὴς κόλπος, ἐκτεινόμενος ἐκ τοῦ ἄνω ἐπιμήκους μέχρι τοῦ σηραγγώδους κόλπου. Κατὰ τὰς ἡμισείας περιπτώσεις ἀποτελεῖται οὗτος ἐκ τῆς μέσης μηνιγγικῆς φλεβὸς ὑπερμέτρως διωγκωμένης. Ἐκβάλλει εἰς τὸν σηραγγώδη κόλπον εἴτε ἀπ' εὐθείας εἴτε δι' ἀναστομώσεως μετὰ τῆς ὀφθαλμικῆς φλεβός, σχηματιζομένης οὕτω ἀναστομωτικῆς ὁδοῦ μεταξὺ τῶν κόλπων τοῦ θόλου καὶ τῆς βάσεως τοῦ κρανίου. Ὡς φλέβες τοῦ Μπρεσὲ ἢ διπλοϊκαὶ φλέβες θεωροῦνται αἱ φλέβες τῆς διπλόης. Ο. Ρ.

**Μπρέσια** (Brescia) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας (βλ. λ. *Μπρέσσια*).

**Μπρέσκο-Μπρεσκόφσκαγια, *Αἰκατερίνη Κωνσταντίνοβνα***. Ρωσὶς ἐπαναστάτις, γεννηθεῖσα τῷ 1844 καὶ ἐπικληθεῖσα «προμάμμη τῆς ἐπαναστάσεως». Εἰς ἡλικίαν 33 ἐτῶν κατεδικάσθη εἰς ἰσόβια δεσμά, παρέμεινε δὲ φυλακισμένη ἐπὶ 18 ἔτη. Ἀποφυλακισθεῖσα κατόπιν ἐπανέλαβε τὴν σοσιαλιστικὴν προπαγάνδαν, διὸ καὶ ἐξωρίσθη εἰς Σιβηρίαν, ὅπου παρέμεινεν ἐπὶ 25 ἔτη. Μετὰ τὴν ἐπικράτησιν τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Κερένσκυ (Μάρτιος 1917), ἐπανῆλθεν εἰς Ρωσίαν, ἀλλ' ἀντιπολιτευθεῖσα ὕστερον τοὺς Μπολσεβίκους, ἠναγκάσθη, μετὰ τὴν ἀνατροπὴν τοῦ Κερένσκυ νὰ κρυβῇ ἐπὶ ἔτος περίπου, τῷ δὲ 1919 ἐδραπέτευσεν εἰς Ἀμερικὴν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Παρισίους, ὅπου διαμένει. —Ω.

**Μπρεσκοὺ** (Brescou) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῆς Γαλλίας, ἡ ἀρχαία *Βλασκὼν* (βλ. λ.).

**Μπρέσλαου, ἢ *Μπρεσλάου*** (Breslau) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πρωσσίας, πρωτεύουσα τῆς ὁμωνύμου διοικητικῆς περιοχῆς καὶ ὁλοκλήρου τῆς ἐπαρχίας Κάτω Σιλεσίας. Κάτ. (1925) 573.670. Κεῖται ἐπὶ τῶν δύο ὀχθῶν τοῦ ποταμοῦ Oder, ὅστις διακλαδίζεται εἰς τὸ σημεῖον αὐτὸ περιβάλλων τὰς νησῖδας Sandinsel, Bürgerwerder κτλ., παρὰ τὴν συμβολὴν τοῦ ποταμοῦ Ohle εἰς τὸν Oder. Τὸ παλαιὸν τμῆμα τῆς πόλεως περιβάλλεται ὑπὸ βαθείας τάφρου. Τὰ σπουδαιότερα ἐκ τῶν παλαιῶν οἰκοδομημάτων εἶναι τὸ δημαρχεῖον (ΙΕ' αἰών), ἡ καθολικὴ μητρόπολις (ΙΓ' αἰών), ἡ Mathiaskirche, ἡ ἐκκλησία τῆς Μαρίας Μαγδαληνῆς (ΙΓ' καὶ ΙΔ' αἰών) μὲ δύο πύργους συνδεομένους διὰ γεφύρας, καὶ ἡ Elisabethkirche (ΙΓ' αἰών), τῆς ὁποίας ὁ πύργος ἔχει ὕψος 91 μέτρων, τὸ ἐπιβλητικὸν κτήριον τοῦ πανεπιστημίου, ρυθμοῦ μπαρόκ, ὅπερ ἐκτίσθη κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ὑπὸ τῶν ἰησουϊτῶν κλπ. Τὸ Μπρέσλαου ἔχει 25 καθολικὰς καὶ 10 εὐαγγελικὰς ἐκκλησίας, 10 συναγωγὰς καὶ 11 μοναστήρια. Τὸ Μπρέσλαου ἔχει ἐπίσης πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1911, πολυτεχνεῖον, ἀνωτάτην γεωργικὴν σχολήν, ᾠδεῖον, ἀκαδημίαν καλῶν τεχνῶν, πολλὰς εἰδικὰς σχολὰς μέσης ἐκπαιδεύσεως καὶ πλεῖστα ὅσα ἀνώτερα ἐπιστημονικὰ ἱδρύματα: τὸ ἰνστιτοῦτον ἀνατολικῆς Εὐρώπης, ἰνστιτοῦτον ἐρευνῶν ἐπὶ τοῦ ἄνθρακος, δύο ἀστεροσκοπεῖα, σεισμοσκοπεῖον, βοτανικὸν καὶ ζῳολογικὸν κῆπον, ἀγροτικὸν πειραματικὸν σταθμόν, σταθμὸν φυτοπαθολογικῶν ἐρευνῶν, κρατικὴν καὶ πανεπιστημιακὴν βιβλιοθήκην (493.00 τόμοι), δημοτικὴν βιβλιοθήκην (225.000 τόμοι καὶ 4.300 χειρόγραφα), βιβλιοθήκην τῆς μητροπόλεως (75.000 τόμοι), ἐννέα μουσεῖα καὶ πέντε θέατρα.

Τὸ Μπρέσλαου ἐχρησίμευσεν ἀνέκαθεν ὡς σταθμὸς ἀνταλλαγῆς ἐμπορευμάτων μεταξὺ Γερμανίας καὶ Πολωνίας. Σήμερον διεξάγεται ἐν αὐτῷ ζωηρότατον ἐμπόριον ἄνθρακος, σακχάρεως, ξυλείας, δερμάτων, ἀποικιακῶν, δημητριακῶν, μετάξης, ὑαλικῶν, πορσελλάνης κτλ. Ἀπὸ τοῦ 1918 γίνονται κατ' ἔτος δύο βιομηχανικαὶ ἐκθέσεις ἐν Μπρέσλαου, κατὰ τὴν ἄνοιξιν καὶ τὸ φθινόπωρον, κατὰ δὲ τὸν Μάϊον μεγάλη ἀγορὰ γεωργικῶν μηχανημάτων. Ἐπίσης διοργανοῦνται καὶ τεχνικὴ καὶ ἀρχιτεκτο-



Digitized by Google

κτονικὴ ἔκθεσις. Ἔχει βιομηχανίαν ἐπίπλων, κλειδοκυμβάλων, μηχανῶν, ἁτμαμαξῶν, σιδηροδρομικῶν ὀχημάτων κ. ἄ. Ἔχει τέσσαρας σιδηροδρομικοὺς σταθμούς, σημεῖα διασταυρώσεως ἐννέα σιδηροδρομικῶν γραμμῶν. Διὰ τὴν μεταφορὰν ἐμπορευμάτων χρησιμοποιεῖται καὶ ὁ ποταμὸς Oder, ὡς καὶ δύο διώρυγες.

**«Μπρεσλάου».** Γερμανικὸν ἀθωράκιστον εὔδρομον, ναυπηγηθὲν τῷ 1911 καὶ ἔχον ἐκτόπισμα 4.550 τόννων, ταχύτητα 27 μιλλ., 12 ταχυβόλα τῶν 0.105 καὶ 2 τορπιλλοβλητικοὺς σωλῆνας τῶν 0.45. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον μετὰ τοῦ εὐδρόμου μάχης «Γκαῖμπεν» (βλ. λ.) ἀπετέλει τὴν ὑπὸ τὸν ἀντιναύαρχον Souchon μοῖραν τῆς Μεσογείου. Μετὰ τὴν ἐπιτυχῆ διαφυγὴν καὶ εἴσοδον εἰς τὰ Στενὰ τῶν Δαρδανελλίων τῶν δύο ὡς ἄνω εὐδρόμων καὶ τὴν πώλησιν αὐτῶν εἰς τοὺς Τούρκους, τὸ «Μπρεσλάου» μετέσχεν, ὑπὸ τουρκικὴν σημαίαν, καὶ τὸ γερμανικὸν πλήρωμά του τῶν εἰς τὸν Εὔξεινον καὶ τὰ Στενὰ ἐπιχειρήσεων (βλ. *Δαρδανελλίων ἐκστρατεία*). Τὴν 20 Ἰανουαρίου 1918 περὶ ὥραν 5 καὶ 30' μετὰ τοῦ «Γκαῖμπεν» προσέβαλε τοὺς εἰς τὴν ΒΑ. ἄκραν τῆς Ἴμβρου ἠγκυροβολημένους ἀγγλικοὺς μονίτορας «Raglan» καὶ «Μ—28», ὧν ὁ μὲν πρῶτος ἐβυθίσθη περὶ τὴν 6ω. ὁ δὲ δεύτερος ἀνετινάχθη περὶ τὴν 6ω 10λ. Μετὰ ταῦτα τὰ δύο εὔδρομα ἔπλευσαν πρὸς Ν. εἰς ἀναζήτησιν περιπολούντων συμμαχικῶν πλοίων, ἀλλ' εἰς ἀπόστασιν 12.000 μέτρων ἀπὸ τῆς ἄκρας Κέφαλος (Ἴμβρου) τὸ «Μπρεσλάου», περὶ τὴν 9ω 10λ., προσέκρουσεν ἐπὶ νάρκης καὶ ἀμέσως μετ' ὀλίγον ἐπὶ δευτέρας καὶ τρίτης καὶ ἐντὸς ὀλίγων λεπτῶν ἐβυθίσθη, τοῦ «Γκαῖμπεν» ἐπαναπλεύσαντος εἰς τὰ Στενὰ καὶ ἐξοκείλαντος εἰς τὰ ἀβαθῆ τοῦ Ναγαρᾶ, καθόσον καὶ τοῦτο προσέκρουσεν ἐπὶ νάρκης κατὰ τὸν εἰς τὰ Στενὰ εἴσπλουν του. Γ. Ν. Ν.

**Μπρεσλάου** (Bresslau), ***Ἐρρῖκος.*** Γερμανὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1848. Τῷ 1890 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ἡ ἀρχιγραμματεία τοῦ αὐτοκράτορος Κονράδου τοῦ Β'» (1869), «Diplomata centum» (1872), «Τὰ χρονικὰ τοῦ γερμανικοῦ κράτους ὑπὸ τὸν αὐτοκράτορα Ἐρρῖκον Β'» (3 τόμοι 1874), «Ἔγγραφα διὰ τὴν ἱστορίαν τοῦ Αὐγούστου ντὺ Κρὸ» (1876), «Τὰ χρονικὰ τοῦ γερμανικοῦ κράτους ὑπὸ τὸν Κονράδον Β'» (2 τόμοι 1879—1884), «Τὸ ζήτημα τῶν Ἑβραίων, ἐπιστολὴ πρὸς τὸν Ἐρρῖκον φὸν Τράϊτσκε» (1880), «Αἱ ἐπιστολαὶ τῆς Μαρίας Στουάρτ» (ἐν τῷ «Historisches Taschenbuch» 1882), «Ἡ πτῶσις δύο Πρώσσων ὑπουργῶν, τοῦ Ντάνκελμαν καὶ τοῦ Φὺρστ» (1879). Ὁ Μπρεσλάου μετέφρασε καὶ ἐσχολίασε τὴν συγγραφὴν τοῦ Πούφεντορφ «Τὸ Σύνταγμα τοῦ γερμανικοῦ κράτους», ἀπὸ δὲ τοῦ 1888 ἀνέλαβε τὴν ἔκδοσιν τοῦ «Neues Archiv der Gesellschaft für ältere Geschichtskunde». Α. Δ.

— **Μπρεσλάου** (Breslau), ***Λουΐζα - Αἰκατερίνη.*** Ἑλβετὶς ζωγράφος (1854—1927). Ἐνεφανίσθη διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1881 διὰ τῆς «Προσωπογραφίας φίλων». Ἐξειργάσθη σκηνὰς τοῦ καθημερινοῦ βίου ὡς καὶ προσωπογραφίας, ἀνθογραφίας καὶ «νεκρὰς φύσεις». Μεταξὺ τῶν καλυτέρων της ἔργων τάσσονται: «Στὸ σπίτι μου», «Ἡ στοχαστικὴ ζωή», «Δύο κορίτσια», «Τὸ ὀνειροπόλον παιδί», «Τὸ τσάϊ τῆς πέμπτης ἀπογευματινῆς», «Κάτω ἀπὸ τὶς μηλιές» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

**Μπρὲς-ντὲ-Ρολὰν** (Brèche de Roland) [*Γεωγρ.*]. Δίοδος τῶν Πυρηναίων ἐν τῷ γαλλικῷ νομῷ Ἄνω Πυρηναίων, ἡ ὁποία ἠνοίχθη, κατὰ τὴν παράδοσιν, ὑπὸ τοῦ θρυλικοῦ Ρολάνδου, ἀνεψιοῦ τοῦ Καρλομάγνου, δι' ἑνὸς μόνου κτυπήματος τοῦ ξίφους του «Ντυραντάλ». Χ. Δ.

**Μπρέσσια,** ἢ ***Βρεσκία*** (Brescia, λατιν. Brixia) [*Γεωγρ.*]. Σπουδαιοτάτη πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν Λομβαρδίᾳ, πρωτεύουσα τοῦ ὁμωνύμου νομοῦ, κειμένη ἐντὸς γραφικῆς τοποθεσίας, παρὰ τοὺς πρόποδας τῶν Ἄλπεων, 83 χλμ. πρὸς Α. τοῦ Μιλάνου καὶ 64 πρὸς Δ. τῆς Βερώνης, μεθ' ὧν συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κάτ. (1921) 66.667 καὶ μετὰ τῶν περιχώρων 100.168. Εἶναι ὡραία πόλις, ἐκτεινομένη ἐπὶ τοῦ Μέλλα, παραποτάμου τοῦ Ὄλιο, μὲ κανονικὴν ρυμοτομίαν καὶ πολυάριθμα καλλιτεχνικὰ μνημεῖα, ἐν οἷς διακρίνονται: ἡ παλαιὰ μητρόπολις Rotonda, τὸ ἐπιβλητικὸν ἀνάκτορον Broletto, κτισθὲν κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα καὶ χρησιμεῦον ἤδη ὡς δικαστικὸν μέγαρον καὶ φυλακή, ἡ λέσχη Loggia τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, ὅπου ἤδη τὸ δημαρχεῖον, ὁ πύργος τοῦ ὡρολογίου, ἡ νέα μαρμαρίνη μητρόπολις κ. ἄ. Πολυάριθμα ἐπίσης καλλιτεχνήματα φυλάσσονται εἰς τοὺς ναοὺς αὐτῆς, ἰδίᾳ δὲ νωπογραφίαι καὶ πίνακες τοῦ διασήμου ἐκ Βρεσκίας ζωγράφου Ἀλ. Μπονβιτσίνο ἢ Μορέττο (1498—1555), τοῦ Τισιανοῦ, Τιντορέττο, Βερονέζε κλπ. Ἐπίσης ἐν τῷ μουσείῳ τῆς πόλεως, τὸ ὁποῖον στεγάζεται ἐντὸς καταλλήλως διαρρυθμισθέντος παλαιοῦ ναοῦ, φυλάσσεται τὸ περίφημον ἐκ βρούντζου πτερωτὸν ἄγαλμα τῆς «Νίκης» ὕψους 2 μ. Ἔχει ὡσαύτως πλουσίαν βιβλιοθήκην καλουμένην «Κουιρίνειον» ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ καρδιναλίου Κουΐρινι, τοῦ ὁποίου ἡ ἰδιωτικὴ βιβλιοθήκη ἐκ 40.000 τόμων ἀπετέλεσε τῷ 1750 τὸν πυρῆνα τῆς σημερινῆς. Ἡ Βρεσκία εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὴν παλαιοτάτην αὐτῆς βιομηχανίαν ὅπλων. Ἔχει ἐπίσης ἐργοστάσια σιδηρουργίας, ὑφαντουργίας, τυροκομίας κλπ. Ἡ μεγάλη οἰκονομικὴ σημασία της αὐξάνει ἐκ τοῦ φυσικοῦ πλούτου τῆς πέριξ χώρας, τῆς ὁποίας εἶναι τὸ κυριώτερον ἐμπορικὸν κέντρον.

— [*Ἱστορ.*] Ἡ *Βρεσκία* ἱδρύθη κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ὑπὸ τῶν Ἐτρούσκων, προήχθη δὲ σημαντικῶς ὑπὸ τοῦ γαλατικοῦ λαοῦ τῶν Κενομάνων (ΣΤ' π. Χ. αἰών). Τῷ 197 π. Χ ἐγένετο ρωμαϊκὴ ἀποικία. Κατὰ τοὺς πρώτους χρόνους τοῦ μεσαίωνος ὑπέστη πολλὰς δῃώσεις, καταληφθεῖσα διαδοχικῶς ὑπὸ τοῦ Ἀττίλα, τοῦ Βυζαντινοῦ στρατηγοῦ Ναρσῆ, τῶν Λομβαρδῶν καὶ τοῦ Καρλομάγνου. Γενομένη βαθμηδὸν τὸ κυριώτερον μετὰ τὸ Μιλᾶνον κέντρον τῶν Λομβαρδῶν, ὑπῆρξε πεδίον σφοδρῶν, ἀγώνων μεταξὺ Γιβελίνων καὶ Γουέλφων. Τῷ 1226 ἡ πόλις παρεδόθη εἰς τοὺς Βενετούς, κατόπιν δὲ κατέστη ὀνομαστὴ διὰ τὴν γενναίαν ἀντίστασίν της ἐναντίον τοῦ Φρειδερίκου Β' (1238). Καταληφθεῖσα τῷ 1258 ὑπὸ τοῦ Ἐτσελῖνο ντὰ Ρομάνο, ἀπέκτησε μετ' ὀλίγον τὴν ἐλευθερίαν της, ἀλλ' ὑπεδουλώθη ἐκ νέου τῷ 1311 εἰς τὸν αὐτοκράτορα Ἐρρῖκον Ζ' μετὰ μακρὰν καὶ γενναίαν ἀντίστασιν. Τῷ 1339 οἱ Βισκόντι ὑπέταξαν τὴν Βρεσκίαν καὶ προσήρτησαν αὐτὴν εἰς τὸ δουκᾶτον τοῦ Μιλάνου μέχρι τοῦ 1428. Ἔκτοτε περιῆλθεν ὑπὸ τὴν κυριαρχίαν τῶν Βενετῶν. Ἀπὸ τοῦ 1797 περιελήφθη εἰς τὴν ἐντεῦθεν τῶν Ἄλπεων δημοκρατίαν, ἐπὶ δὲ τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Ναπολέοντος ἐγένετο πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Μέλλα. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Γάλλου αὐτοκράτορος (1814) παρεχωρήθη εἰς τὴν Αὐστρίαν, ἐπαναστατήσασα ὅμως δὶς (1848 καὶ 1849) κατώρθωσε τέλος νὰ περιληφθῇ εἰς τὸ βασίλειον τῆς Ἰταλίας τῷ 1859, ἀφοῦ προηγουμένως εἶχεν ὑποστῆ μεγάλας δῃώσεις ὑπὸ τοῦ Αὐστριακοῦ στρατηγοῦ Χάϋναου, ἡγουμένου 3.800 ἀνδρῶν. Χ. Δ.

— **Μπρέσσια, νομὸς** — [*Γεωγρ.*]. Ἰταλικὸς νομὸς ἐν Λομβαρδίᾳ, ἐκτεινόμενος πρὸς Ν. τοῦ Τυρόλου. Ἔχει ἔκτασιν 4.722 τετρ. χλμ., πληθυσμὸν (1929) 652.225 κατ. καὶ πρωτεύουσαν τὴν ὁμώνυμον πόλιν. Εἰς τὸ βόρειον αὐτοῦ τμῆμα ὑψοῦνται αἱ Ἀλπικαὶ ὀροσειραί, τὰς ὁποίας διασχίζουσιν αἱ κοιλάδες *Καμόνικα, Τρόμπια* καὶ *Σάμπια*. Τὸ νότιον τμῆμα εἶναι ἐντελῶς πεδινὸν καὶ εὔφορον, ἀρδευόμενον ὑπὸ τῶν ἐκ τῶν κοιλάδων ἐξερχομένων ποταμῶν *Ὄλιο, Μέλλα* καὶ *Κιέζε*. Εἶναι κυρίως πλουσία γεωργικὴ περιοχή, περιλαμβάνει δὲ καὶ ἀξιόλογα μεταλλεῖα σιδήρου. Πρὸς τὰ ἀνατολικὰ καὶ δυτικὰ σύνορά του κεῖνται αἱ λίμναι *Ἰζέο* καὶ *Γκάρντα*. Χ. Δ.

**Μπρέστ** (Brest) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Βρέστη*).

**Μπρέστενη** [*Γεωγρ.*]. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης χωρίου *Κρύα Νερὰ* (βλ. λ.).

**Μπρέστ-Λιτόφσκ** (Brest-Litovsk, πολων. Brzésc-Litewski ἢ Brzésc nad Bugiem) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Πολωνίας πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Πολέζιε, ἀνήκουσα πρὸ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου εἰς τὴν Ρωσίαν. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπούγκ, μικρὸν πρὸ τῆς μετὰ τοῦ Μουχάβετς συμβολῆς του, 208 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Γκρόντνο εἰς 52°5' Β. πλάτους καὶ 23°39' Α. μήκους Γκρήνουϊτς. Κάτ. (1921) 29.533, ἐξ ὧν τὸ ἥμισυ περίπου Ἰουδαῖοι. Εἶναι σπουδαῖον ὀχυρὸν καὶ ἀξιόλογος κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν πρὸς τὴν Βαρσοβίαν, τὸ Κίεβον, τὴν Μόσχαν καὶ τὴν Α. Πρωσσίαν, ἡ παρ' αὐτὴν δὲ διῶρυξ, μήκους 80 χλμ., ἀποτελεῖ τὸν συνδετικὸν κρίκον τῆς μεγάλης ὑδατίνης ἀρτηρίας τῆς ἑνώσεως τῆς Βιστούλας (Βαλτικὴ) μετὰ τοῦ Δνειπέρου (Εὔξεινος). Ἔχει βιομηχανίας ὑφαντουργικῆς, βυρσοδεψικῆς, σαπωνοποιητικῆς κλπ. Εἶναι ἕδρα Ἀρμενίου καὶ ὀρθοδόξου ἐπισκόπου.

— [*Ἱστορ.*] Ὡς ἐκ τῆς θέσεως αὐτῆς ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῶν μεγάλων βαρβαρικῶν μεταναστεύσεων, ἡ Μπρέστ-Λιτόφσκ ὑπέστη πολλὰς κατὰ καιροὺς δῃώσεις, καταληφθεῖσα ὑπὸ τῶν Μογγόλων (1241), τῶν Τευτόνων (ΙΔ' αἰών), τῶν Ταττάρων τῆς Κριμαίας (ΙΕ' αἰών) κλπ. Περὶ τὰ τέλη τοῦ μεσαίωνος, ἀφοῦ διεξεδικήθη ἐπὶ μακρὸν μεταξὺ τῶν ἡγεμόνων Βολυνίας, Λιθουανίας καὶ Πολωνίας, ἐγένετο τέλος λιθουανική. Τῷ 1596 συνῆλθον ἐν αὐτῇ αἱ σύνοδοι διὰ τὴν ἕνωσιν τῆς ὀρθοδόξου Ἐκκλησίας μετὰ τῆς παπικῆς. Καταληφθεῖσα τῷ 1793 ὑπὸ τῶν Ρώσων, παρέμεινεν ὑπὸ τούτους μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Κατὰ τὴν διάρκειαν αὐτοῦ τὰ ὀχυρὰ τῆς πόλεως προσεβλήθησαν τὸν Αὔγουστον τοῦ 1915 ὑπὸ τοῦ στρατοῦ τοῦ Μάκενσεν, κατελήφθησαν δ' ὑπ' αὐτοῦ μετὰ πολυήμερον καὶ κρατερὰν μάχην. Ἐν αὐτῇ συνωμολογήθησαν βραδύτερον αἱ φέρουσαι τὸ ὄνομά της συνθῆκαι αἱ μεταξὺ τῶν Κεντρικῶν δυνάμεων καὶ τῆς Ρωσίας καὶ Οὐκρανίας (βλ. κατωτ.).

— **Μπρέστ-Λιτόφσκ συνθῆκαι.** Ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦτο εἶναι γνωσταὶ δύο συνθῆκαι εἰρήνης τὰς ὁποίας συνῆψαν αἱ κεντρικαὶ δυνάμεις καὶ οἱ σύμμαχοι αὐτῶν ἀφ' ἑνὸς μὲν μετὰ τῆς Οὐκρανίας (9 Φεβρουαρίου 1918) ἀφ' ἑτέρου μετὰ τῆς διοικούσης τὴν κυρίως Ρωσίαν σοβιετικῆς κυβερνήσεως (3 Μαρτίου 1918).

Ἀμέσως μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς ἀρχῆς ἐν Ρωσίᾳ ὑπὸ τῶν Μπολσεβίκων, οἵτινες διὰ τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ Ὀκτωβρίου 1917 ἀνέτρεψαν τὴν προσωρινὴν κυβέρνησιν τοῦ Κερένσκυ (7 Νοεμβρίου 1917), οἱ ἀρχηγοὶ αὐτῶν Λένιν καὶ Τρότσκυ, συμφώνως πρὸς τὰς προγραμματικὰς ὑποσχέσεις των πρὸς τὸν λαὸν περὶ ἀμέσου καταπαύσεως τῶν ἐχθροπραξιῶν, ἔσπευσαν νὰ προτείνωσι τὴν 20ὴν Νοεμβρίου, πρὸς ἅπαντα τὰ ἐμπόλεμα κράτη τὴν συνομολόγησιν γενικῆς εἰρήνης «ἄνευ οὐδεμιᾶς προσαρτήσεως καὶ ἄνευ ἀποζημιώσεων». Αἱ κεντρικαὶ δυνάμεις ἐδέχθησαν ἀμέσως τὴν πρότασιν ταύτην, τὴν δὲ 1ην Δεκεμβρίου κατέπαυσαν αἱ ἐχθροπραξίαι καθ' ὅλον τὸ ἀνατολικὸν μέτωπον. Μετὰ πενθήμερον ἡ συνελθοῦσα ἐν Μπρέστ-Λιτόφσκ, ἔνθα ἤδρευε τὸ στρατηγεῖον τῶν Γερμανῶν, συνδιάσκεψις τῆς ἀνακωχῆς ἀπεφάσισε πρὸς ἔναρξιν τῶν διαπραγματεύσεων τῆς εἰρήνης δεκαήμερον ἐκεχειρίαν, ἥτις, λήξασα τὴν 15ην Δεκεμβρίου, παρετάθη ἐπὶ 30 ἀκόμη ἡμέρας. Αἱ διαπραγματεύσεις ἤρχισαν τὴν 22 Δεκεμβρίου 1917· παρ' ὅλην ὅμως τὴν σπουδὴν τῶν κεντρικῶν δυνάμεων καὶ μάλιστα τῆς Γερμανίας, ἡ ὁποία ἐπεδίωκε τὴν ταχεῖαν ἐπίτευξιν ἀποτελέσματος, ἵνα ἐλευθερουμένη τῶν φροντίδων τοῦ ἀνατολικοῦ μετώπου δυνηθῇ νὰ διαθέσῃ τὸν στρατὸν αὐτῆς εἰς τὸ δυτικόν, αἱ συνεννοήσεις προσέκοψαν ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς ἀφ' ἑνὸς μὲν λόγῳ τῶν ὑπερφιάλων ἀπαιτήσεων τῶν κεντρικῶν δυνάμεων καὶ ἀφ' ἑτέρου λόγῳ τῶν ἀτελευτήτων θεωρητικῶν συζητήσεων, ἅστινας προεκάλουν οἱ ἀντιπρόσωποι τῶν Μπολσεβίκων καὶ αἱ ὁποῖαι εἰς οὐδὲν κατέληγον ἀποτέλεσμα λόγῳ τῆς ριζικῆς διαφορᾶς ἰδεολογικῶν ἀντιλήψεων μεταξὺ τῶν ἀντιπροσώπων τῶν ἀντιπάλων. Οἱ μπολσεβῖκοι ἄλλωστε, ἐπιζητοῦντες τὴν ποθητὴν εἰς τὸν λαὸν κατάπαυσιν τῶν ἐχθροπραξιῶν, ἐπιτυχόντες αὐτὴν διὰ τῆς ἀνακωχῆς, οὐδόλως ἠπείγοντο εἰς τὴν ἐπίτευξιν ὁριστικοῦ ἀποτελέσματος, ἀλλ' ἐπεθύμουν ἀπεναντίας τὴν παράτασιν τῶν συζητήσεων, ὅπως εὕρωσι τὸν καιρὸν νὰ διαδώσωσι τὴν ἐπαναστατικὴν ἰδεολογίαν των μεταξὺ τῶν Αὐστρογερμανῶν στρατιωτῶν. Οἱ Γερμανοὶ τότε καὶ οἱ σύμμαχοι αὐτῶν προέβησαν εἰς σύναψιν χωριστῆς συνθήκης εἰρήνης (πρώτη συνθήκη Μπρέστ-Λιτόφσκ) μετὰ τῶν προθύμων εἰς τοῦτο ἀντιπροσώπων τῆς Οὐκρανίας, τὴν 9 Φεβρουαρίου 1918. Διὰ ταύτης αἱ κεντρικαὶ δυνάμεις ἀνεγνώριζον τὴν Οὐκρανίαν ὡς ἀνεξάρτητον κράτος, χωρὶς ὅμως νὰ καθορίζωσι σαφῶς τὰ σύνορα αὐτῆς· ἐλάμβανον δὲ εἰς ἀντάλλαγμα τῆς τοιαύτης ἀναγνωρίσεως τὴν παραχώρησιν τροφίμων, τῶν ὁποίων εἶχον ἀπόλυτον ἀνάγκην. Ἐκ τοῦ τελευταίου τούτου ὅρου ἡ ἐν λόγῳ συνθηκολόγησις ἀπεκλήθη «εἰρήνη τοῦ ἄρτου».

Ἐν τῷ μεταξὺ ἡ συνέχισις τῶν διαπραγματεύσεων μετὰ τῶν ἀντιπροσώπων τῶν μπολσεβίκων κατέστη ἀνέφικτος καὶ τὴν 19ην Φεβρουαρίου οἱ Αὐστρογερμανοὶ κατήγγειλαν τὴν ἀνακωχὴν καὶ διέταξαν τὴν προέλασιν τοῦ στρατοῦ αὐτῶν ἐντὸς τοῦ ρωσικοῦ ἐδάφους, ἐπιτευχθεῖσαν ἄνευ οὐδεμιᾶς ἀντιστάσεως ἐκ μέρους τῶν Ρώσων, τῶν ὁποίων ὁ στρατὸς εἶχε περιέλθει ἐν τῷ μεταξὺ εἰς ἀποσύνθεσιν. Πρὸ τῆς ἀπειλῆς ταύτης οἱ μπολσεβῖκοι ἔσπευσαν νὰ δηλώσουν ὅτι ἀποδέχονται τοὺς ὅρους τῆς εἰρήνης, οἱ δὲ ἀντιπρόσωποι συνῆλθον ἐκ νέου εἰς Μπρέστ-Λιτόφσκ τὴν 26ην Φεβρουαρίου, καὶ τὴν 3ην Μαρτίου 1918 ὑπεγράφη ἡ ὁριστικὴ συνθήκη (δευτέρα συνθήκη Μπρέστ-Λιτόφσκ), περιλαμβάνουσα καὶ πολλὰ παραρτήματα, τὰ ὁποῖα μετὰ συζήτησιν συνεπληρώθησαν διὰ τριῶν συμβάσεων καὶ ἑνὸς μυστικοῦ παραρτήματος τὴν 27ην Αὐγούστου 1918. Κατὰ τὴν συνδιάσκεψιν τῶν συνθηκῶν τοῦ Μπρέστ-Λιτόφσκ παρέστησαν ὡς ἀρχηγοὶ τῶν ἀποστολῶν τῶν κεντρικῶν δυνάμεων οἱ Ἐρρῖκος φὸν Κούλμαν (Γερμανίας) καὶ κόμις Τσέρνιν (Αὐστροουγγαρίας), πληρεξούσιοι δὲ ἀντιπρόσωποι τῆς Βουλγαρίας καὶ τῆς Τουρκίας. Τὴν σοβιετικὴν κυβέρνησιν ἀντεπροσώπευσε κατὰ μὲν τὸ πρῶτον στάδιον τῶν διαπραγματεύσεων ὁ Ζόφφε καὶ ἀπὸ τῆς 7 Ἰανουαρίου ὁ Τρότσκυ, κατὰ δὲ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης ὁ Σοκολνίκωφ. Τέλος ὡς ἀντιπρόσωποι τῆς Οὐκρανίας παρέστησαν οἱ Σέβρυουκ καὶ Χολούμπτοβιτς.

Διὰ τῶν διατάξεων τῆς δευτέρας συνθήκης τοῦ Μπρέστ-Λιτόφσκ ἡ Ρωσία ὑπεδουλοῦτο σχεδὸν οἰκονομικῶς εἰς τὴν Γερμανίαν. Ἐκ τῶν κυριωτέρων οἰκονομικῶν διατάξεων αὐτῆς ἦσαν ἡ καταβολὴ βαρείας πολεμικῆς ἀποζημιώσεως 6 δισεκατομμυρίων μάρκων ἐκ μέρους τῆς Ρωσίας εἰς τὴν Γερμανίαν, ἡ ἀποζημίωσις τῶν ἐν Ρωσίᾳ Γερμανῶν ὑπηκόων δι' ἃς ζημίας ὑπέστησαν διαρκοῦντος τοῦ πολέμου καὶ ἡ ἀναγνώρισις εἰς αὐτοὺς προνομ[illegible]λων ἀπέναντι τῶν ἄλλων ἀλλοδαπῶν, ἡ ρύθμισις τοῦ ρωσικοῦ ἐμπορίου, τοῦ τε εἰσαγωγικοῦ καὶ τοῦ ἐσωτερικοῦ, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν γερμανικῶν ἀπόψεων, ἡ χορήγησις ἐκ μέρους τῆς Ρωσίας εἰς τὴν Γερμανίαν, ἐπὶ μίαν ἑπταετίαν

Digitized by Google

**τῆς τελωνειακῆς ῥήτρας τοῦ μᾶλλον εὐνοουμένου κράτους, ἡ παραδοχὴ τῶν χρεῶν τῆς πρώτης πρὸς τὴν δευτέραν κ. ἄ. Αἱ ἐδαφικαὶ διατάξεις, οὐχὶ ὀλιγώτερον ἐπαχθεῖς τῶν οἰκονομικῶν, ἐστέρουν τὴν Ρωσίαν παντὸς ἐπὶ τῆς Ἐσθονίας, Λεττονίας, Λιθουανίας, Κουρλανδίας, Πολωνίας, Φιλλανδίας, Κάρς, Ἀρδαχὰν καὶ Βατοὺμ δικαιώματος. Καὶ αἱ μὲν τρεῖς τελευταῖαι χῶραι προσηρτῶντο εἰς τὴν Τουρκίαν, ἐνῷ τῶν ὑπολοίπων ἡ τύχη θὰ ἐρρυθμίζετο ὑπὸ τῶν κεντρικῶν δυνάμεων ἐκ συμφώνου μετὰ τῶν κατοίκων μιᾶς ἑκάστης ἐξ αὐτῶν. Ἐπίσης ἡ Ρωσία ὑπεχρεοῦτο νὰ ἀναγνωρίσῃ τὴν ἐδαφικὴν ἀκεραιότητα τῶν ἀσιατικῶν κρατῶν Περσίας καὶ Ἀφγανιστάν. Στρατιωτικῶς τέλος ἡ Ρωσία ἀνελάμβανε τὴν ἐκδίωξιν ἐκ τῶν ἐδαφῶν της, μόνη ἢ τῇ βοηθείᾳ τῆς Γερμανίας, τῶν ὑπαρχόντων εἰς αὐτὰ στρατευμάτων τῶν παλαιῶν αὐτῆς συμμάχων τῆς Ἀντάντ, τὴν κατὰ ξηρὰν ἀποστράτευσιν καὶ τὸν ἀφοπλισμὸν τῶν ναυτικῶν αὐτῆς δυνάμεων. Διὰ τῆς συνθήκης ταύτης αἱ σύμμαχοι κεντρικαὶ δυνάμεις κατώρθωσαν νὰ ἀπαλλαγῶσιν ἑνὸς ἐκ τῶν κυριωτέρων αὐτῶν ἀντιπάλων καὶ νὰ ἐλευθερωθῶσιν ἐντελῶς πρὸς ἀνατολάς, ὁπόθεν οὐδένα πλέον διέτρεχον κίνδυνον, κατόπιν μάλιστα τῆς μετ' ὀλίγον συναφθείσης συνθήκης τοῦ Βουκουρεστίου (7 Μαΐου 1918), δι' ἧς ἐσυνθηκολόγησε καὶ ἡ Ρουμανία ὑπὸ παρεμφερεῖς πρὸς τὴν Ρωσίαν ὅρους. Δὲν ἐπρόκειτο ὅμως οὐδεμία ἐκ τῶν συνθηκῶν τούτων νὰ ἰσχύσῃ ἐπὶ μακρόν, διότι κατὰ τὰς συνθήκας τῆς εἰρήνης, αἵτινες ἠκολούθησαν τὴν τελικὴν εἰς βάρος τῶν Αὐστρογερμανῶν ἔκβασιν τοῦ πολέμου (συνθῆκαι Βερσαλλιῶν, Ἁγίου Γερμανοῦ, Νεϊγύ, Τριανὸν καὶ Σεβρῶν), αἱ κεντρικαὶ δυνάμεις καὶ οἱ σύμμαχοι αὐτῶν ὑπεχρεώθησαν ὑπὸ τῶν συμμάχων τῆς Ἀντὰντ εἰς παραίτησιν ἀπὸ παντὸς ἐξ αὐτῶν πηγάζοντος δικαιώματος.** Χ. Δ.

**Μπρετάνι** (Bretagne) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Γαλλίας (βλ. λ. *Βρετάνη*).

**Μπρετέϊγ** (Breteuil), ***Λουδοβίκος-Κάρολος-Αὔγουστος, βαρῶνος ντὲ —***. Γάλλος διπλωμάτης, γεννηθεὶς τῷ 1730 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1807. Ὑπηρέτησεν εἰς πολλὰς πρωτευούσας ὡς πρεσβευτής, τῷ δὲ 1783 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ κατόπιν τοῦ βασιλικοῦ οἴκου. Κατέλιπεν «Ἀπομνημονεύματα» δημοσιευθέντα τῷ 1859. Θ. Β.

**Μπρετινὺ** (Bretigny) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας, ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Σάρτρ τοῦ νομοῦ Ἒρ-ἐ Λουάρ, ἐν τῷ ὁποίῳ ὑπεγράφη, τὴν 8ην Μαΐου 1360, ἡ φερώνυμος μεταξὺ Γαλλίας καὶ Ἀγγλίας συνθήκη, ἥτις ἔθεσε τέρμα εἰς τὸ πρῶτον μέρος τοῦ Ἑκατονταετοῦς πολέμου. Διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Μπρετινὺ ὁ βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας εἰς ἀντάλλαγμα τῆς παραιτήσεως τῶν ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ θρόνου δικαιωμάτων του, ἐλάμβανεν ἐκτεταμένην ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ ἐδάφους ἡγεμονίαν, περιλαμβάνουσαν τὰς χώρας Καλαί, Γκίν, Ποντιέ, Ἀζεναί, Κερσύ, Ρουέργκς, Γασκωνίαν καὶ Μπιγκόρ· τὸ τέταρτον δὲ σχεδὸν τοῦ ἐδάφους τοῦ κράτους τοῦ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου, περιήρχετο εἰς ξένας χώρας. Ἡ Γαλλία διετήρει τὴν Ἀνδηγαυΐαν, τὴν Τουραίνην καὶ τὴν Νορμανδίαν, ὡς καὶ τὴν ἐπικυριαρχίαν ἐπὶ τῆς Βρετάνης. Χ. Δ.

**Μπρετὸν** *δίοδος* (Pertuis Breton) *[Γεωγρ.]*. Διέκπλους τῶν ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ ἀκτῶν τῆς Γαλλίας, σχηματιζόμενος μεταξὺ τῆς νήσου Ρὲ καὶ τῆς ἠπειρωτικῆς παραλίας (νομοὶ Βανδέας καὶ Κάτω Σαράντ). Τὸ πλάτος αὐτοῦ ποικίλλει ἀπὸ 3 χλμ. παρὰ τὸν λιμένα τῆς Λὰ Παλλίς, μέχρι 12 χλμ. μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Αἰγκιγιὸν καὶ τῆς κωμοπόλεως Λὰ Τρὰνς ἐν Βανδέᾳ. Χ. Δ.

**Μπρετὸν** (Breton), ***Ἰούλιος-Ἀδόλφος***. Γάλλος ζωγράφος καὶ λογοτέχνης (1827—1906). Ἐμαθήτευσε παρὰ τοῖς F. de Vigne καὶ Drolling, μετέσχε τῆς διεθνοῦς παρισινῆς ἐκθέσεως τοῦ 1855 καὶ ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν τῷ 1886. Διέπρεψεν ἰδίᾳ εἰς τὴν ἀπόδοσιν ἀγροτικῶν σκηνῶν («*Αἱ θερίστριαι*», «*Ἡ ἐπαύριον τῆς ἑορτῆς τοῦ Ἁγίου Σεβαστιανοῦ*», «*Ἡ εὐλογία τοῦ σίτου*»). Ὡς ποιητὴς ἐδημοσίευσε: «Les champs et la mer» (1875) καὶ «Jeanne» (1880)· ὡς πεζογράφος: «La vie d'un artiste» (1890), «Un peintre paysan» (1896), «Delphine Bernard, la femme et l'artiste» (1902). Ι. Μ. Π.

— **Μπρετὸν** (Breton), ***Ἰωάννης***. Γάλλος καλλιγράφος καὶ τυπογράφος (1416—1493). Εἰς αὐτὸν ἀποδίδεται ἡ ἐφεύρεσις τῆς τυπογραφίας. Τὸ μοναδικὸν ἀντίτυπον τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἐκτυπωθέντος πιθανῶς βιβλίου («Doctrinal de Paris» τοῦ Ἰωάννου Ζερσὸν) εὑρίσκεται εἰς τὴν Ἐθνικὴν βιβλιοθήκην τῶν Παρισίων καὶ θεωρεῖται προγενέστερον τῶν ἐφευρέσεων τοῦ Γουτεμβεργίου καὶ τοῦ Κόστερ. Τινὲς ὅμως ἀρνοῦνται τοῦτο καὶ ἄλλοι οὐδὲ κἂν ὡς τυπογράφον θεωροῦν τὸν Μπρετόν. Π. Ν. Π.

**Μπρετὸν ντὲ λὸς Ἐρρέρος** (Breton de los Herreros), ***δὸν Μανουήλ***. Ἱσπανὸς θεατρικὸς συγγραφεὺς (1796—1873). Τῷ 1824 ἀνεβίβασεν ἐπὶ τῆς σκηνῆς τὸ πρῶτον θεατρικόν του ἔργον «A la vejez viruelas». Ἠκολούθησε μεγάλη σειρὰ τραγῳδιῶν («*Μερόπη*», «*Ἀνδρομάχη*», «*Μαρία Στουάρτ*», «*Τὰ τέκνα τοῦ Ἐδουάρδου*») καὶ κωμῳδιῶν, αἵτινες εἶναι ὡς τὰ πολλὰ ἀπομιμήσεις γαλλικῶν τοιούτων ἢ διασκευαὶ ἰσπανικῶν. Πρωτότυπος εἶναι ὁ Μπρετὸν εἰς τὰς κωμῳδίας «*Οἱ δύο ἐξάδελφοι*», «*Πηγαίνω στὴ Μαδρίτη*», «*Ὁ κόσμος εἶναι φάρσα*», «*Ἡ σύνταξις μιᾶς ἐφημερίδος*», «*Τὸ σχολεῖον τοῦ γάμου*» καὶ «*Ἡ οἰκογένεια τοῦ φαρμακοποιοῦ*». Α. Δ.

**Μπρετοννὼ** (Bretonneau), ***Πέτρος***. Γάλλος ἀνατομοπαθολόγος, γεννηθεὶς ἐν Sain-Georges-sur-Cher (1778—1862). Ἠσχολήθη εἰς τὴν μελέτην τῆς παθολογοανατομίας τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ, νόσου ἣν ἀπεκάλεσε *δοθιηνεντερίτιδα*, καὶ τῆς ἐπιδημικῆς νόσου ἣν ἀπεκάλεσε *διφθερίτιδα*, δημοσιεύσας καὶ τὴν σχετικὴν περὶ ταύτης πραγματείαν «Des inflammations spéciales du tissu muqueux» κλπ. (Paris 1826). Ὑπῆρξε καὶ ὁ ἐφευρέτης τοῦ διπλοῦ σωλῆνος τῆς *τραχειοτομίας*. Ἔγραψεν ἐπίσης καὶ περὶ τῆς μεταδοτικότητος τῶν διαλειπόντων πυρετῶν, τῆς ὀστρακιᾶς κλπ., ἠσχολήθη δὲ περὶ ἐκτρωτικῆς θεραπευτικῆς μεθόδου τῆς εὐλογίας κλπ. Ο. Ρ.

**Μπρετὸν ὐ Χερνάντεζ** (Breton y Hernandez), ***Θωμᾶς***. Ἱσπανὸς συνθέτης (1846—1923). Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν ζαρζουέλαν, χάρις εἰς τὴν ὁποίαν ἀπέκτησεν ἐξαιρετικὴν φήμην ἐν τῇ πατρίδι του. Μεταξὺ τῶν ἐλαφρῶν τούτων σκηνικῶν ἔργων μεγάλην ἐπιτυχίαν ἔσχον κυρίως: «La Verbena de la paloma» καὶ «La Dolores». Εἰς τὸ μελόδραμα ἔδωκε τὰ λυρικὰ ἔργα: «Los Amantes de Jeruel» (Μαδρίτη 1889), «Garin» (Βαρκελώνη 1896), «Raguel» καὶ «Farinelli». Ἔγραψεν ἐπίσης τὸ ὀρατόριον «Apocalypsia», τὰ συμφωνικὰ ἔργα: «Εἰκόνες τῆς Ἀνδαλουσίας», «Los Galeotes», ἓν κοντσέρτο διὰ βιολίον, μουσικὴν δωματίου κτλ. Ἡ μουσικὴ τοῦ Μπρετόν, ἔξω τῆς ἐθνικιστικῆς τάσεως τῶν συγχρόνων Ἱσπανῶν συνθετῶν, φέρει τὴν ἰταλογερμανικὴν ἐπίδρασιν· ἀμέμπτου ἀρχιτεκτονικῆς, δὲν στερεῖται ποιᾶς τινος ψυχρότητος. Γ. Σ.

**Μπρέτσιν** (Brechin) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σκωτίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Φόρφαρ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Σάουθ Ἔσκ, 15 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Μόντροζ, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Εἶναι παλαιοτάτη πόλις, ἕδρα ἐπισκοπῆς ἀπὸ τοῦ 1150 καὶ ἔχει βιομηχανίας χάρτου, λίνου, ἱστίων, σχοινίων, μηχανουργεῖα, διυλιστήρια, ζυθοποιεῖα κλπ. Κάτ. 8.439. Χ. Δ.

**Μπρέχελ** (Brueghel), ***Πέτρος*** *ὁ πρεσβύτερος*. Ἀρχηγὸς οἰκογενείας Φλαμανδῶν ζωγράφων καὶ εἷς τῶν σημαντικωτέρων ἐκπροσώπων τῆς φλαμανδικῆς τέχνης. Ἐγεννήθη περὶ τὸ 1525 εἰς τὸ χωρίον Μπρέχελ (ἐξ οὗ προέρχεται καὶ τὸ ἐπώνυμόν του), παρὰ τὴν Μπρένταν. Εἰς νεαρὰν ἡλικίαν εἰσῆλθεν ὡς μαθητευόμενος εἰς τὸ ἐργαστήριον τοῦ ζαράκτου Πέτρου Κόκ, ὅστις τὸν περιέβαλε διὰ πατρικῆς προστασίας, παραλαβὼν τοῦτον εἰς τὴν οἰκίαν του καὶ μεταδοὺς εἰς αὐτὸν μετ' ἐνδιαφέροντος καὶ μεθοδικότητος πάσας τὰς περὶ τέχνης γνώσεις του. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1551 ὁ Μπρέχελ εἶχε συμπληρώσει ἓξ ἔτη σοβαρᾶς μαθητείας παρὰ τῷ Κόκ, πρὸ τοῦ τέλους δὲ τοῦ ἰδίου ἔτους κατηριθμήθη μεταξὺ τῶν μελῶν τῆς ἐν Ἀμβέρσῃ συντεχνίας τοῦ Ἁγίου Λουκᾶ. Κατὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐπεχείρησε τὸ εἰς Ἰταλίαν ταξίδιον, ὅπερ κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους ἐθεωρεῖτο ἀπαραίτητον διὰ πάντα καλλιτέχνην. Φαίνεται ὅμως ὅτι ἡ Ἰταλία ἀπεγοήτευσε τὸν Μπρέχελ. Ἡ μεγαλόστομος ἐξαρσις τῶν διακοσμήσεων τοῦ Βατικανοῦ, αἱ κλασσικαὶ δημιουργίαι τοῦ τάφου τοῦ Ἰουλιανοῦ τῶν Μεδίκων δὲν ἠδύναντο νὰ ὁμιλήσουν εὐθέως εἰς τὴν ψυχὴν τοῦ νοσταλγικοῦ αὐτοῦ Φλαμανδοῦ Ἀπὸ τὴν Ρώμην ὁ Μπρέχελ μεταβαίνει εἰς τὴν Νεάπολιν καὶ ἐκτάκτως ἀναχωρεῖ εἰς Μεσσήνην. Κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του, διασχίζων τὴν Ἰταλίαν, φθάνει μέχρι τῶν Ἄλπεων. Τὰ χιονοσκεπῆ καὶ δασώδη ὄρη ἀσκοῦν ἐπ' αὐτοῦ ἀκαταμάχητον γοητείαν. Ἡ φύσις τοῦ Τυρόλου τὸν συγκινεῖ βαθέως, διεγείρει εἰς τὰ βάθη τῆς ὑπάρξεώς του τὰς νοσταλγίας ὀνειροπολήθέντων τοπίων, μεταβάλλει τοὺς στοχασμοὺς τῆς ῥέμβης του εἰς πραγματικότητας. Φθάνει εἰς τὴν Ἀμβέρσαν, ὅπου ἐγκαθίσταται. Αἰσθάνεται ὅτι ἠμπορεῖ πλέον ν' ἀναπνεύσῃ ἐλευθέρως. Τὸ γνώριμον ἔδαφος, ἡ ἰδιοτυπία τοῦ βίου τῆς μεγάλης αὐτῆς ἐμπορικῆς πόλεως τοῦ μεσαίωνος, ἡ γνησίως φλαμανδικὴ της ψυχὴ ἐξυπνοῦν τὴν καλλιτεχνικὴν διάθεσιν καὶ κεντρίζουν τὴν φαντασίαν τοῦ καλλιτέχνου. Ἐν Ἀμβέρσῃ ὁ Μπρέχελ πόλις ἐγκατασταθεὶς συνεργάζεται μετὰ τοῦ Ἱερωνύμου Κόκ, ὅστις διατηρεῖ τὸ κατάστημα τὸ «*Τέσσαρον Ἀνέμων*», ὅπου πωλεῖ εἰς τοὺς φιλότεχνας ζωγραφίας καὶ χαλκογραφίας παλαιῶν καὶ νέων ἔργων. Ὁ Μπρέχελ σχεδιάζει, ὁ Κὸκ χαράσσει. Εἰς τὸ τέλος ὁ Κὸκ ἐκδίδει τὴν σειρὰν τῶν «*Μεγάλων τοπιογραφιῶν*», εἰς τὰς ὁποίας ἀποδίδεται μὲ θαυμασίαν εὐρύτητα ἀντιλήψεως, σπανίαν αἴσθησιν τῆς γραφικότητος καὶ μοναδικὴν δεξιοτεχνίαν ἡ τὴν παράστασιν τῆς φύσεως καὶ τῆς πραγματικότητος ὁλόκληρος ἡ Φλάνδρα. Ὁ Κὸκ θέτει τὸ ἰδικόν του ὄνομα ἐπὶ κεφαλῆς τῆς σειρᾶς αὐτῆς καὶ ἀποσιωπᾷ τὸ ὄνομα τοῦ Μπρέχελ. Ἐν τούτοις, διὰ τῶν ἔργων του τούτων ὁ Μπρέχελ κηρύσσει ἓν εἶδος ἐπαναστάσεως: δημιουργεῖ τὴν ἀντίδρασιν κατὰ τοῦ εἰσβάλλοντος ῥεύματος τῆς ἰταλικῆς τεχνοτροπίας ἐν ὀνόματι τῆς ἀρχεγόνου φλαμανδικῆς τέχνης, ἐν ὀνόματι τῶν δικαιωμάτων τῆς φλαμανδικῆς φύσεως, τῆς φλαμανδικῆς ζωῆς καὶ τοῦ φλαμανδικοῦ λαοῦ ἐπὶ τῆς ἐθνικῆς του τέχνης. Μετὰ ταῦτα ἐγκαταλείπει τὰς τοπιογραφίας. Προσπαθεῖ νὰ ἐκφράσῃ τὸ ἀλλόκοτον, εὔθυμον, σαρκαστικὸν καὶ διαβολικὸν συγχρόνως πνεῦμα τοῦ μεσαίωνος. Τοιουτοτρόπως ἀπὸ τοῦ 1556 μέχρι τοῦ 1559 ἐκπονεῖ ὁλόκληρον σειρὰν ἀλληγοριῶν, εἰς τὰς ὁποίας διὰ θέλγοντος σχεδίου ἐκδηλώνει τὴν εὐφυΐαν, τὴν λεπτότητα καὶ τὴν εὐστροφίαν τοῦ πνεύματός του.

Ὡς παρατηρεῖ ὁ François Crucy, ὁ Μπρέχελ ἵσταται μεταξὺ τῆς δεισιδαίμονος πίστεως τοῦ Ἱερωνύμου Μπὸς καὶ τῆς κυνικῆς ἀπιστίας τοῦ Μόσταιρτ. Ἀποτινάσσων τὸν βαρὺν ἀρχαϊσμὸν τῆς παραδόσεως, προσπαθεῖ νὰ ἐκφράσῃ πᾶν ὅ,τι εἰς τὸν βίον τῶν ἀνθρώπων ὑπάρχει φυσικὸν καὶ οἰκεῖον. Εἶναι ἀξιοσημείωτον τὸ γεγονὸς ὅτι εἰς τὰς λαϊκὰς φλαμανδικὰς πανηγύρεις τῶν χρόνων τούτων ἡ προσωπικότης τοῦ παράφρονος, ἀπαραίτητου ἐν ταύταις, δίδει ἀφορμὴν εἰς ἐκρήξεις διαβολικῆς εὐθυμίας. Οἱ ἄνθρωποι φαίνονται συνδηλαγμένοι μὲ τὴν νόσον καὶ μὲ τὸν θάνατον, κινούμενοι μετ' ἴσης ἀνέσεως μεταξὺ τῶν νεκρῶν καὶ μεταξὺ τῶν ζώντων, ἀντλοῦντες φαιδρότητα ἐκ φαντασιοπληξιῶν καὶ ἐπεισοδίων, τὰ ὁποῖα προκαλοῦν ἢ οἶκτον ἢ ἀποστροφὴν εἰς τοὺς συγχρόνους. Ὁ Φλαμανδὸς παράφρων παίζει ῥόλον ἠθικολόγου, ἀντιστοιχῶν, ὡς οἱ παράφρονες ἢ οἱ ἐξαμβλωματικοὶ ἢ γελοῖοι τύποι τοῦ Σαίξπηρ, πρὸς τὸν χορὸν τῆς κλασσικῆς τραγῳδίας· συγχρόνως ὅμως, διὰ τῆς ἐμφανίσεώς του, παρέχει εἰς τὴν ὅλην παράστασιν τὴν ἐπίφασιν ἀρχεγόνου δέους, τὸ ὁποῖον φαίνεται ὅτι πηγάζει κατ' εὐθεῖαν ἀπὸ τὰ βάθη τῆς μεσαιωνικῆς ψυχῆς, ὅπου ἐμφωλεύουν αἱ δαιμονοπληξίαι, αἱ ἀνίατοι δεισιδαιμονίαι. αἱ φρενοπληξίαι καὶ αἱ φαντασιώσεις. Ἡ ἀντίληψις τοῦ γεγονότος τούτου εἶναι ἀναγκαία προϋπόθεσις διὰ τὴν κατανόησιν τῆς ἐσωτερικῆς συστάσεως καὶ τῆς ἱστορικῆς ἔτι σημασίας ἑνὸς μεγάλου τμήματος τοῦ ἔργου τοῦ Μπρέχελ.

Ἀπὸ τὰς ἀλληγορίας ὁ Μπρέχελ ἐπανέρχεται εἰς τὴν τοπιογραφίαν. Τῷ 1559 ὁ Ἱερώνυμος Κὸκ ἐκδίδει μίαν σειρὰν μικρῶν τοπίων, τὴν ὁποίαν παρουσιάζει καὶ πάλιν ὑπὸ τὸ ὄνομά του. Ἡ σειρὰ αὐτὴ τιτλοφορεῖται «Multifariarum casularum ruriumque lineamenta curiose ad vivum expressa», περιλαμβάνει δ' ἀπεικονίσεις μικρῶν διαστάσεων καὶ μεγάλης ποικιλίας, ἀπὸ τὰς ὁποίας ἐνίοτε ἀπουσιάζουν τελείως τὰ πρόσωπα, τὰ ὁποῖα, ὅπως καὶ εἰς τὰς «Μεγάλας τοπιογραφίας», προσέθετε συνήθως αὐτὸς οὗτος ὁ Ἱερώνυμος Κόκ, τοῦ Μπρέχελ περιοριζομένου εἰς τὴν ἐξεικόνισιν τοῦ φυσικοῦ περιβάλλοντος. Δύο ἔτη βραδύτερον ἐκδίδεται καὶ νέα σειρὰ μικρῶν τοπίων ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ Κὸκ καὶ πάλιν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Proediorum villarum et rusticarum casularum icones». Διὰ τούτων ὁ Μπρέχελ συμπληρώνει τὸ ἔργον του ὡς σχεδιαστοῦ, τὸ τόσον πλούσιον εἰς ἀρετάς. Τοῦ ἔργου τούτου χαρακτηριστικώτατα γνωρίσματα εἶναι ἡ σταθερότης τῆς γραμμῆς, ἡ ἐκφραστικότης τῆς κινήσεως, ἡ ζωηρότης, ἡ θαυμαστὴ ὀξύνοια ἐν τῇ παρατηρήσει καὶ τῇ σπουδῇ τῆς φύσεως καὶ τῶν ἀνθρώπων, ἡ ἀκριβολόγος ἐξεργασία πάσης λεπτομερείας,ἡ δι' ἁπλουστάτων μέσων ἐπιτυγχανομένη ἄφθαστος ψυχικότης ἑκάστης συνθέσεως. Τὸ πρῶτον χρονολογημένον ἐκ τῶν σχεδιασμάτων τοῦ Μπρέχελ ἀνήκει εἰς τὸ ἔτος 1552. Ἀπὸ τὸ ἔτος 1558 προέρχεται ὁ πρῶτος χρονολογημένος του πίναξ, διὰ τοῦ ὁποίου ἀνοίγεται τὸ λαμπρότατον στάδιον τοῦ καλλιτέχνου τούτου ὡς ζωγράφου, μολονότι καὶ προγενεστέρως εἶχεν ἐπιδοθῇ εἰς τὴν ζωγραφικήν. Ἂν ληφθῇ ὑπ' ὄψιν ὅτι ὁ Μπρέχελ ἀπέθανεν εἰς ἡλικίαν τεσσαράκοντα καὶ τεσσάρων ἐτῶν, ἤτοι κατὰ τὸ 1569, καταντᾷ ἀπίστευτον πῶς ἐντὸς τόσον βραχέος χρονικοῦ διαστήματος ὁ ἄνθρωπος αὐτὸς κατώρθωσε νὰ δημιουργήσῃ τοιοῦτο πληθωρικὸν καὶ τοιοῦτο ἔνδοξον ἔργον. Ἡ ἐξήγησις τοῦ φαινομένου τούτου εὑρίσκεται μόνον εἰς τὴν ἀκατάβλητον ζωτικότητα, εἰς τὸν ἀπεριόριστον πρὸς τὴν τέχνην ἔρωτα, ἐν συνόψει εἰς τὴν ἔξοχον καλλιτεχνικὴν ἰδιοφυΐαν τοῦ καλλιτέχνου τούτου. Εἰς τοὺς πίνακάς του ὁ Μπρέχελ ἐμπνέεται ἀπὸ τὰς λαϊκὰς φλαμανδικὰς παροιμίας καὶ εὑρίσκει ἀφορμὰς νὰ φιλοσοφῇ ἐπὶ τῶν ἀνθρωπίνων, ἄλλοτε ἀπαισιοδόξων καὶ ἄλλοτε αἰσιοδόξων. Ἀναδεικνύεται ταυτοχρόνως, κατὰ τὴν ἔκφρασιν τοῦ Crucy, «*λαογράφος, ἐγκυκλοπαιδικός, ἠθογράφος, προσωπογράφος, τοπιογράφος. Χαρούμενος ἢ σοβαρός, πάντοτε ὅμως προσεκτικός, περίεργος, ἀληθινός. Καὶ πρὸ παντὸς ζωγράφος*». Ἐκ τῆς συνθέσεως ταύτης τῆς ἰδιοσυγκρασίας του πηγάζει τὸ ἀκαταμάχητον καὶ ὅλως ἰδιότυπον θέλγητρον τῆς τέχνης του. Οἱ πίνακές του μὲ τὸ εὔστροφον σχέδιον καὶ τὸν ἐπιτυχῆ χρωματισμόν, μὲ τὴν ἀέναον κίνησιν,

Digitized by Google

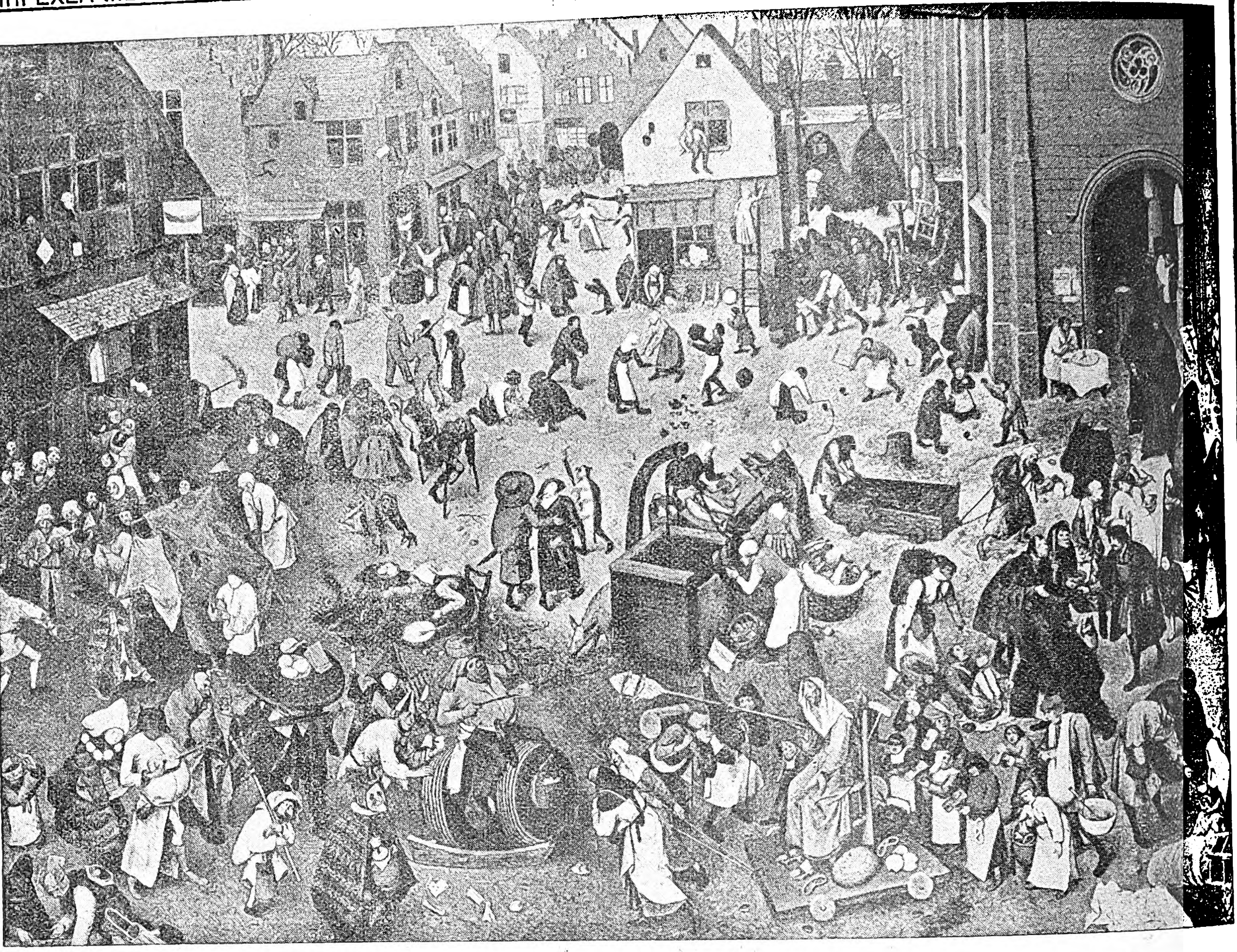

*Πέτρου Μπρέχελ: Μάχη μεταξὺ τῆς Ἀποκριᾶς καὶ τῆς Σαρακοστῆς.*

τὴν θαυμασίαν προοπτικήν, τὴν λαμπρὰν αἴσθησιν τῆς γραφικότητος, τὴν γοητεύουσαν ἀπόδοσιν τοῦ τοπικοῦ χρώματος ἀποτελοῦν ἓν μνημειῶδες σύνολον. Πίνακες τοῦ Μπρέχελ ἀπόκειται εἰς τὴν Μαδρίτην, τοὺς Παρισίους (Λοῦβρον), τὴν Νεάπολιν, τὴν Δαρμστάτην καὶ ἀλλαχοῦ. Ἀλλὰ μόνον εἰς τὸ ἐν Βιέννῃ Kunsthistorisches Museum, ὅπου, κατὰ τύχην, ὑπάρχει πλουσιωτάτη καὶ ποικίλη συλλογὴ ἔργων του, εἶναι δυνατὸν νὰ μελετήσῃ τις μετ' ἀνέσεως καὶ πληρότητος τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Μπρέχελ. Οἱ πίνακες οὗτοι εἶναι: «Μάχη μεταξὺ τῆς Ἀποκριᾶς καὶ τῆς Σαρακοστῆς», «Παιδικὰ παιγνίδια», «Μάχη μεταξὺ Ἰσραηλιτῶν καὶ Φιλισταίων», «Ὁ πύργος τῆς Βαβέλ», «Ὁ Χριστὸς φέρων τὸν σταυρόν», «Ἡ ἐπιστροφὴ τοῦ ἁγίου Παύλου εἰς τὸν Χριστιανισμόν», «Ὁ καταστροφεὺς τῶν φωλεῶν», «Ἡ σφαγὴ τῶν ἀθῴων», «Ἡ σκοτεινὴ ἡμέρα (Ἰανουάριος)», «Οἱ κυνηγοὶ μέσα στὸ χιόνι (Φεβρουάριος)», «Ἡ ἐπάνοδος τῶν ποιμνίων (Νοέμβριος)», «Τὸ γαμήλιον γεῦμα», «Ὁ χωριάτικος χορός». Ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Νεαπόλεως ἀπόκειται «Ἡ παραβολὴ τῶν τυφλῶν», ἐν δὲ τῷ μουσείῳ τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης τῶν Βρυξελλῶν «Ἡ πτῶσις τῶν ἀποστατῶν ἀγγέλων».

Ὁ Μπρέχελ ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν ἐν Ἀμβέρσῃ. Συχνάκις ὅμως ἐταξίδευε μέχρι τῶν Βρυξελλῶν, ὅπου δὲν παρέλειπε νὰ ὑποβάλλῃ τὰ σέβη του πρὸς τὴν χήραν τοῦ διδασκάλου του Πέτρου Κόκ. Κατά τινα τῶν ἐπισκέψεών του τούτων κατεθέλχθη ἀπὸ τὴν ἀφελῆ καὶ δροσερὰν ὡραιότητα τῆς μικροτέρας κόρης τοῦ Κὸκ Μαρίας, τὴν ὁποίαν καὶ ἐνυμφεύθη τὸ Πάσχα τοῦ 1563, ἀφοῦ προηγουμένως ἐγκατεστάθη μονίμως ἐν τῇ πόλει ταύτῃ.

Ἐντυπώσεις ἀπὸ τὴν ζωήν του εἰς τὰς Βρυξέλλας ἀναφαίνονται εἰς μέγα μέρος τῆς καλλιτεχνικῆς παραγωγῆς τοῦ Μπρέχελ: «Ὁ μισάνθρωπος», «Ἡ παραβολὴ τῶν τυφλῶν», «Τὸ προσκύνημα τῶν ἐπιληπτικῶν», «Οἱ χονδροὶ καὶ οἱ ἀδύνατοι», «Ὁ θρίαμβος τοῦ θανάτου», «Ὁ Χριστὸς φέρων τὸν σταυρόν», «Ἡ ἀπογραφὴ τῶν κατοίκων τῆς Βηθλεέμ», «Ἡ σφαγὴ τῶν ἀθῴων», «Οἱ τέσσαρες μῆνες», «Τὸ γαμήλιον γεῦμα», «Ὁ χωριάτικος χορός» καὶ πλεῖστα ἄλλα μαρτυροῦν ἐμφανῶς διὰ ποίων ψυχικῶν καταστάσεων διῆλθεν ὁ καλλιτέχνης καὶ ποίας ἐπιδράσεις ἐκ μέρους τοῦ νέου περιβάλλοντος ὑπέστη κατὰ τὸ ἑξαετὲς διάστημα τοῦ ἐν Βρυξέλλαις ἐγγάμου του βίου. Ὑπάρχει πάντοτε ἀρκετὴ δόσις εὐθυμίας, ἡ ἀγάπη ἐκείνη τῆς σπουδῆς τῶν λαϊκῶν ἐθίμων καὶ ἡ ἀνακούφισις ἀπὸ τὴν ἐπαφὴν μετὰ τῆς φύσεως εἰς αὐτόν. ἀλλ' ὑπάρχει συγχρόνως καὶ μία λανθάνουσα κατ' ἀρχάς, ἐκδηλοτέρα ὁσημέραι γινομένη μελαγχολία, ἡ ὁποία ἀποδεικνύει ὅτι ὁ Μπρέχελ δὲν εὗρεν ἐν τῇ νέᾳ διευθετήσει τῆς οἰκογενειακῆς του καταστάσεως ἱκανὰ ἀντίρροπα τῶν ἀπολεσθεισῶν εὐαρέστων συνηθειῶν. Ἀπέθανε κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 1569 καὶ ἐνεταφιάσθη ἐν τῷ ναῷ τῆς Notre-Dame de la Chapelle τῶν Βρυξελλῶν. Ἐπὶ τοῦ μέλανος μαρμάρου τοῦ τάφου του μεγαλοπρεπὴς λατινικὴ ἐπιγραφὴ ὑπομνηματίζει τὴν σημασίαν τοῦ ἔργου του. Κατέλιπε μίαν θυγατέρα καὶ δύο υἱούς, τὸν *Πέτρον* καὶ τὸν *Ἰωάννην*. Ὁ πρῶτος τούτων ἔσχε δύο υἱοὺς καὶ ὁ δεύτερος τρεῖς. Ἅπαντες οὗτοι ὑπῆρξαν ζωγράφοι. Ὁ Pol de Mont ὑπολογίζει δέκα ἓξ ἐν ὅλῳ ζωγράφους ἀνήκοντας εἰς τὴν οἰκογένειαν, τῆς ὁποίας ἀρχηγέτης ὑπῆρξε Πέτρος Μπρέχελ ὁ πρεσβύτερος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Crowe et Cavalcaselle*, Les anciens peintres flamands, (Βρυξέλλαι, (1862—1863).—*M. Friedlaen*, Von Eyck bis Breughel (Βερολῖνον 1921).—*Bastelaer et de Loo*, P. Bruegel (Βρυξέλλαι 1906).—*A. Wauters*, La famille Brueghel (1888).—*R. Van Bastelaer*, Les estampes de Peter Bruegel l'Ancien, (1908).—*Kurt Pfister*, Bruegel (Λειψία 1921).—*Max Dvorak*, Bruegel (Μόναχον 1924).—*François Crucy*, Les Bruegel (Παρίσιοι 1928). Ι. Μ. Π.

**Μπρζεζάνυ** (Brzezany) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας (βλ. λ. *Μπζεζάνυ*).

**Μπρῆστεντ** (Breasted), ***Ἰάκωβος-Ἐρρῖκος***. Ἀμερικανὸς αἰγυπτιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ρόκφορντ τοῦ Ἰλλινόϊς τῷ 1865. Ἐσπούδασεν εἰς Σικάγον, Γυάλε καὶ Βερολῖνον, εἶτα δ' ἀπεστάλη διὰ λογαριασμὸν τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Σικάγου εἰς τὴν Αἴγυπτον (1894—1895) καὶ τὰ εὐρωπαϊκὰ μουσεῖα (1900—1901), ὅπου ἠσχολήθη μὲ ἐνδιαφερούσας ἐπιστημονικὰς παρατηρήσεις. Τῷ 1905 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀνατολικῆς ἱστορίας καὶ αἰγυπτιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Σικάγου καὶ διηύθυνε τῷ 1905—1907 ἐπιστημονικὴν ἀποστολὴν εἰς Νουβίαν. Ἔγραψεν: «Ἡ μάχη τοῦ Καντές» (1903), «Ἱστορία τῆς Αἰγύπτου μέχρι τῆς περσικῆς κατακτήσεως», «Οἱ ναοὶ τῆς κάτω Νουβίας» (1906), «Τὰ μνημεῖα τῆς σουδανικῆς Νουβίας» (1903) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπρὶ** (Brie) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας, κειμένη πρὸς Α. τῶν Παρισίων καὶ ἔχουσα πρωτεύουσαν τὴν πόλιν Μῶ. Ὑποδιῃρεῖτο εἰς τρία τμήματα: τὴν *Μπρὶ Σαμπενουάζ* (τῆς Καμπανίας), τὴν *Μπρὶ Φρανσαίζ* (γαλλικὴν) καὶ τὴν *Μπρὶ Πουγιέζ*. Εἶναι ἡ Briegius saltus τῶν Ρωμαίων, οὐδέποτε ὅμως ἔσχεν ἰδίαν αὐτοτελῆ ἱστορίαν, ὑπαγομένη ἄλλοτε μὲν εἰς τὴν Νευστρίαν καὶ ἄλλοτε εἰς τὴν Καμπανίαν. Ἡ περιοχὴ αὐτῆς ἐγένετο θέατρον πολλῶν μαχῶν κατὰ τὰ τέλη τῆς πρώτης αὐτοκρατορίας καὶ διαρκοῦντος τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Χ. Δ.

**Μπριαλμὸν** (Brialmont), ***Ἐρρῖκος***. Βέλγος στρατιωτικὸς (1821—1903), υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ *Λαυρεντίου Μπριαλμὸν* (βλ. κατωτ.). Σπουδάσας ἐν τῇ στρατιωτικῇ σχολῇ τοῦ Βελγίου, κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀνθυπολοχαγοῦ τοῦ μηχανικοῦ τῷ 1841. Κατέγινεν ἐξ ἀρχῆς εἰς τὴν ὀχυρωτικήν, τῷ δὲ 1847, φέρων βαθμὸν ὑπολοχαγοῦ, ἀνέλαβε τὴν ὀχύρωσιν τῆς Ντὶστ (Diest). Τῷ 1855, ὡς λοχαγός, μετετέθη εἰς τὸ σῶμα τῶν γενικῶν ἐπιτελῶν, τῷ δὲ 1859 παρεσκεύασε τὸ συνολικὸν σχέδιον τοῦ περικεχαρακωμένου στρατοπέδου τῆς Ἀμβέρσης. Ὡς ἀντισυνταγματάρχης τῷ 1864, διηύθυνε τὸ παρὰ τῷ ὑπουργείῳ τῶν Στρατιωτικῶν γραφεῖον τῶν στρατιωτικῶν ἐπιχειρήσεων, ὡς ὑποστράτηγος δὲ τῷ 1874 διωρίσθη ἐπιθεωρητὴς τοῦ μηχανικοῦ καὶ τῶν ἐν γένει ὀχυρώσεων τοῦ Βελγίου, προαχθεὶς εἰς ἀντιστράτηγον τῷ 1877. Δυσηρεστημένος τότε διὰ τὴν ἐναντίον του ἀσκηθεῖσαν ἐπιστημονικὴν πολεμικήν, προκειμένου περὶ τῆς ὀχυρώσεως τῆς κοιλάδος τοῦ Μόζα, ἀπεδέχθη τὴν πρότασιν τοῦ βασιλέως τῆς Ρουμανίας, ὅπως ἀναλάβῃ τὴν μελέτην τῆς ὀχυρώσεως τοῦ Βουκουρεστίου καὶ ζητήσας νὰ τεθῇ εἰς διαθεσιμότητα ἀνεχώρησεν εἰς τὴν ρουμανικὴν πρωτεύουσαν. Καθ' ὃν χρόνον εὑρίσκετο ἐκεῖ, ἐδέχθη τῷ 1883 παράκλησιν τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως Τρικούπη, ὅπως γνωματεύσῃ περὶ τῆς καταλλήλου ὀχυρώσεως τῆς Θεσσαλίας καὶ Ἠπείρου, ἄρτι τότε προσαρτηθεισῶν εἰς τὴν Ἑλλάδα. Τῷ 1884 ἀνεκλήθη εἰς τὴν ἐνεργὸν ὑπηρεσίαν τοῦ Βελγίου, μολονότι δὲ τῷ 1885 κατελαμβάνετο ὑπὸ τοῦ ὁρίου ἡλικίας, ἐτηρήθη ἐν τούτοις, ὅλως ἐξαιρετικῶς, ἐν ἐνεργείᾳ μέχρι τοῦ 1887.

Ὁ Μπριαλμὸν ἐν ἀρχῇ τοῦ σταδίου του ἦτο ὀπαδὸς τῆς «προμαχωνικῆς χαράξεως» τοῦ Βωμπάν, ἣν ὑπεστήριξε διὰ τοῦ συγγράμματός του «Συνοπτικὴ μελέτη ἐπὶ τῶν γενικῶν ἀρχῶν τῆς ὀχυρώσεως τῶν μεγάλων στρατηγικῶν ἐρεισμάτων» (1846)· ἀπὸ τοῦ 1859 ὅμως ἀπηρνήθη τὰς ἰδέας ταύτας καὶ ἠσπάσθη ἔκτοτε τὰς ἀρχὰς τῆς «πολυγωνικῆς χαράξεως», ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων καὶ παρεσκεύασε τὸ σχέδιον τῆς ὀχυρώσεως τῆς Ἀμβέρσης. Ἀπὸ τοῦ 1860, ὁπότε ἤρχισεν ὁ ἀγὼν μεταξὺ πυροβόλου καὶ θώρα-

Digitized by Google

κος, ὁ Μπριαλμὸν ἔλαβεν ἐνεργὸν μέρος εἰς τὰς διεξαχθείσας συζητήσεις, ὑποστηρίξας τὸ σύστημα τῆς ἐντὸς γοργυρῶν ἢ περιστρεφομένων πύργων ἐγκαταστάσεως τῶν βαρέων πυροβόλων. Ὁ Μπριαλμὸν ὑπῆρξε μέλος τῆς βασιλικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Βελγίου καὶ τῆς ρωσικῆς στρατιωτικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Ἁγίου Νικολάου καὶ πλείστων ἄλλων σωματείων, συνέγραψε δὲ 23 συγγράμματα, ἀποτελοῦντα 34 τόμους, ὧν τὰ κυριώτερα εἶναι: «Σύνοψις τῆς πολεμικῆς τέχνης» (1851), «Πολιτικαὶ καὶ στρατιωτικαὶ σκέψεις ἐπὶ τοῦ Βελγίου» (1851), «Μελέτη ἐπὶ τῆς ἀμύνης τῶν κρατῶν καὶ τῆς ὀχυρώσεως αὐτῶν» (1863), «Μελέτη ἐπὶ τῆς ὀργανώσεως τῶν στρατῶν» (1869), «Ἐγχειρίδιον τῆς πολυγωνικῆς ὀχυρώσεως» (1869), «Μελέται ἐπὶ τῆς ὀχυρώσεως τῶν πρωτευουσῶν καὶ τῆς περισχέσεως τῶν περικεχαρακωμένων στρατοπέδων» (1873), «Ἡ ἄμυνα τῶν κρατῶν καὶ τὰ περικεχαρακωμένα στρατόπεδα» (1876), «Ὀχύρωσις πεδίου μάχης» (1879), «Ἐγχειρίδιον ὀχυρωτικῆς ἐκστρατείας» (1879), «Τακτικὴ μάχης τῶν τριῶν ὅπλων» (1881), «Ὁ στρατηγὸς Τοτλέμπεν» (1884), «Ἡ σύγχρονος ὀχυρωτικὴ» (1885) κλπ. Ἔγραψε προσέτι 49 μελέτας ἐπὶ διαφόρων ζητημάτων πολιτικῶν καὶ τεχνικῶν.

Ν. Θ. ΚΛΑΔΑΣ

—**Μπριαλμὸν** (Brialmont), ***Λαυρέντιος - Ματθαῖος***. Βέλγος στρατηγὸς (1789—1885). Μετέσχεν εἰς ὅλας τὰς ἐκστρατείας τοῦ Ναπολέοντος, ἀπὸ τῆς μάχης τοῦ Ἀούστερλιτς καὶ ἐντεῦθεν, κατὰ δὲ τὴν μάχην τοῦ Μόσκοβα ἐπαρασημοφορήθη. Ἀποσυρθεὶς μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς αὐτοκρατορίας εἰς τὴν ἰδιαιτέραν αὐτοῦ πατρίδα, παρέμεινεν ἰδιωτεύων μέχρι τῆς Βελγικῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1830, δι᾽ ἧς ἀπεχωρίσθη ἡ χώρα ἀπὸ τῆς Ὁλλανδίας. Διωρίσθη τότε ὑπασπιστὴς τοῦ βασιλέως Λεοπόλδου, προήχθη εἰς ὑποστράτηγον καὶ ἐγένετο τῷ 1850 ὑπουργὸς τῶν Στρατιωτικῶν ἐν τῇ κυβερνήσει Ροζιέ.

Χ. Δ.

**Μπριὰν** (Briand), ***Ἀριστείδης***. Ἐπιφανὴς Γάλλος πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Νάντῃ τῷ 1862. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἐξήσκησεν ἐπί τινα χρόνον τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Ἀναμιχθεὶς κατόπιν εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἀκολουθήσας τὰς μᾶλλον προοδευτικὰς ἰδέας τῆς ἐποχῆς, συνειργάσθη κατ᾽ ἀρχὰς εἰς τὴν ἀναρχικὴν ἐφημερίδα «Le peuple» («Ὁ λαός») καὶ διηύθυνεν ἐπί τινα καιρὸν τὴν «Lanterne» («Φανόν»). Βραδύτερον εἰσῆλθεν εἰς τὴν σύνταξιν τῆς «Μικρᾶς Δημοκρατίας» καὶ κατόπιν ἵδρυσε μετὰ τοῦ Ζωρὲς τὴν «Humanité», ἀναδειχθεὶς μεταξὺ τῶν δραστηριωτέρων μελῶν τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος τῆς Γαλλίας.

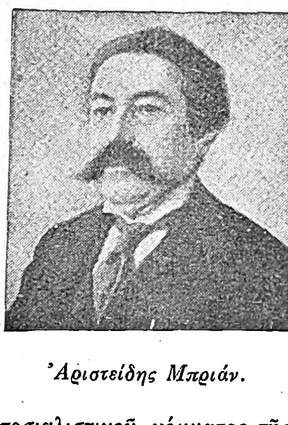

*Ἀριστείδης Μπριάν.*

Ἡ πρώτη αὐτοῦ ἐμφάνισις εἰς τὴν πολιτικὴν κονίστραν χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 1892, ὁπότε, εἰς τὸ σοσιαλιστικὸν συνέδριον, τὸ συγκροτηθὲν ἐν Μασσαλίᾳ κατὰ τὸ ἔτος ἐκεῖνο, ἀντέκρουσε τὴν γνώμην τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς ἐργατικῆς ὁμάδος Γκέσντ, ὅστις εἶχεν ὁμιλήσει κατὰ τῆς κηρύξεως γενικῆς ἀπεργίας. Κατὰ τὴν διεξαχθεῖσαν συζήτησιν ὁ Μπριὰν ἀπεκαλύφθη εὐγλωττότατος ρήτωρ καὶ γοητευτικὸς ὁμιλητής, κηρυχθεὶς δὲ μετὰ σφοδρότητος ὑπὲρ τῆς γενικῆς ἀπεργίας, κατώρθωσε νὰ προσεταιρισθῇ τὰ ἄκρα στοιχεῖα, τῇ βοηθείᾳ τῶν ὁποίων, μετὰ δύο ἔτη, εἰς τὸ σοσιαλιστικὸν συνέδριον τῆς Νάντης κατώρθωσε νὰ ἐπιβληθῇ καὶ νὰ ἀναδειχθῇ εἷς τῶν ἡγετῶν τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος. Ὅτε ὅμως, τῷ 1898, ὁ Βαλντὲκ Ρουσσὼ ἐκάλεσε τὸν Μιλλεράν, ὁ ὁποῖος τότε εὑρίσκετο μεταξὺ τῶν ἄκρων σοσιαλιστῶν, νὰ λάβῃ μέρος εἰς τὴν ὑπ᾽ αὐτοῦ σχηματισθεῖσαν κυβέρνησιν, ὁ δὲ Γκέσντ, μετὰ πολλῶν ἄλλων σοσιαλιστῶν, κατηγόρησεν αὐτὸν ἐπὶ προδοσίᾳ τῶν ἀρχῶν τοῦ κόμματος, ὁ Μπριάν, πρὸς ἔκπληξιν πάντων, ἡνώθη μετὰ τοῦ Βιβιανί, ὅπως ὑπερασπισθῇ τὸν ὑπουργοποιηθέντα σοσιαλιστήν. Τὸ γεγονὸς τοῦτο εἶναι ἓν τῶν σημαντικωτέρων ἐπεισοδίων τῆς πολιτικῆς του ζωῆς καὶ ἀποτελεῖ τὴν ἀπαρχὴν σειρᾶς ὅλης ἀντιθέσεων, αἵτινες χαρακτηρίζουν τὴν κατόπιν ἐξέλιξιν τῆς σταδιοδρομίας του. Πράγματι, κατὰ τὸ ἐπακολουθῆσαν σοσιαλιστικὸν συνέδριον, ἐνῷ ὑπερήσπισε μετὰ θέρμης τὴν συμμετοχὴν τοῦ Μιλλερὰν εἰς τὴν κυβέρνησιν, ἐκηρύχθη συγχρόνως καὶ ὑπὲρ τῆς κηρύξεως τῆς γενικῆς ἀπεργίας καὶ ἐνεθάρρυνε τοὺς στρατιώτας νὰ πυροβολοῦν κατὰ τῶν ἀξιωματικῶν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον βραδύτερον ἀπετέλεσεν ἓν τῶν ἰσχυροτέρων ὅπλων εἰς χεῖρας τῶν ἀντιπάλων του, εἰς τὰς ἐναντίον του ἐπιθέσεις. Ἕνεκα τούτου, ὅταν διὰ πρώτην φορὰν ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ νομοῦ Λίγηρος, μετὰ πολλὰς ἀποτυχούσας ὑποψηφιότητάς του εἰς προηγουμένας ἐκλογάς, εἰσῆλθεν εἰς τὴν βουλὴν μὲ τὴν διπλῆν φήμην τοῦ ἐπαναστατικοῦ ρήτορος καὶ τοῦ καιροσκόπου (opportuniste) πολιτικοῦ. Ἐν τῇ βουλῇ ὁ Μπριὰν ἐπὶ ἓξ μῆνας παρέμεινε σιωπηλός, διερευνῶν καὶ μελετῶν τὸ κοινοβουλευτικὸν περιβάλλον, ἔλαβε δὲ τὸν λόγον διὰ πρώτην φορὰν πρὸς ὑποστήριξιν τῶν ἀπεργῶν τῆς περιφερείας τοῦ Λίγηρος. Ὁ λόγος του ὅμως οὗτος, ὁ ὁποῖος ἐνεποίησε μεγίστην αἴσθησιν, ὑπῆρξε καὶ ἡ τελευταία του ἐπαναστατικὴ ἀναλαμπή. Διότι ἔκτοτε, προσελκύσας τὴν προσοχὴν τῶν ἰθυνόντων πολιτικῶν κύκλων, συνειργάσθη ἐπανειλημμένως μετ᾽ αὐτῶν. Τῷ 1903, ἐκλεγεὶς εἰσηγητὴς τῆς κοινοβουλευτικῆς ἐπιτροπῆς, εἰς ἣν παρεπέμφθη τὸ νομοσχέδιον τοῦ Κὸμπ περὶ χωρισμοῦ τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ κράτους, κατώρθωσε νὰ ἐπιδείξῃ, εἰς τὰς ἐπακολουθησάσας συζητήσεις, αἵτινες διήρκεσαν ἐπὶ 50 συνεδριάσεις, μεγάλα ρητορικὰ χαρίσματα, ἐξαιρετικὴν καιροσκοπικὴν εὐστροφίαν καὶ βαθυτάτας γνώσεις νομομαθοῦς, ἐνῷ συγχρόνως ἐπετύγχανε νὰ ἐμφανισθῇ μετριοπαθέστερος τοῦ ἀντικληρικοῦ Κόμπ, ὁ ὁποῖος εἶχεν ὑποβάλει τὸ νομοσχέδιον. Διὰ τῆς ἀριστοτεχνικῆς αὐτόχρημα ἐκθέσεώς του ἐπὶ τοῦ νομοσχεδίου κατώρθωσε νὰ ψηφισθῇ ὑπὸ τῆς βουλῆς, ἄνευ σχεδὸν οὐσιώδους τινὸς τροποποιήσεως. Ἡ εἰσηγητικὴ αὕτη ἔκθεσις ἀπετέλεσε τὸ ὑπόβαθρον τῆς ἀνόδου του εἰς τὴν ἀρχήν, ἥτις προεκάλεσε τὴν ρῆξιν αὐτοῦ πρὸς τὸ σοσιαλιστικὸν κόμμα, ἐκ τῆς ὁποίας, ἐπελθούσης σχεδὸν ταυτοχρόνως μὲ τὴν ἔξοδον τῶν δύο ἄλλων σημαινουσῶν προσωπικοτήτων, τοῦ Μιλλερὰν καὶ τοῦ Βιβιανί, ὁ γαλλικὸς σοσιαλισμὸς ὑπέστη καίριον πλῆγμα. Τῷ 1906 ὁ Μπριὰν προσελήφθη ἐν τῇ κυβερνήσει Σαρριὲν ὡς ὑπουργὸς τῆς Παιδείας, διατηρήσας τὸ χαρτοφυλάκιόν του καὶ ἐπὶ τῆς ἐπακολουθησάσης πρώτης πρωθυπουργίας τοῦ Κλεμανσὼ (Ὀκτώβριος 1906). Ἐπὶ τῆς ὑπουργίας του ταύτης εἰργάσθη δραστηρίως διὰ τὴν ἀμερόληπτον καὶ ἄνευ φανατισμοῦ ἐφαρμογὴν τοῦ νόμου περὶ χωρισμοῦ τῆς Ἐκκλησίας ἀπὸ τοῦ κράτους. Τῷ 1908 ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης, τὸν δὲ Ἰούλιον 1909 διὰ πρώτην φορὰν πρωθυπουργός, διαδεχθεὶς τὸν Κλεμανσὼ καὶ ἀναλαβὼν ὁ ἴδιος τὰ ὑπουργεῖα τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τῶν Θρησκευμάτων. Κατὰ τὴν πρώτην του ταύτην πρωθυπουργίαν, ὁ Μπριὰν ἔδειξε χαρίσματα ἰσχυροῦ κυβερνήτου καὶ κατώρθωσε νὰ ἐπιβάλῃ τὴν τάξιν καὶ νὰ καταστείλῃ τὴν σοβαρὰν καὶ μεγάλην σιδηροδρομικὴν ἀπεργίαν τοῦ 1910, διὰ μέσων αὐστηροτάτων, τὰ ὁποῖα ἐνέκρινε κατόπιν ἡ γαλλικὴ βουλή. Ἡ στάσις του αὕτη ἀπέναντι τῶν ἀπεργῶν προὐκάλεσε σφοδρὰν ἐπίθεσιν ἐν τῇ βουλῇ ἐκ μέρους τοῦ Ζωρές, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς τὸν Μπριὰν νὰ ἐκφωνήσῃ, ὑπεραμυνόμενος τῆς πολιτικῆς του, ἱστορικὴν ἀπομείνασαν ἀγόρευσιν, ἥτις θεωρεῖται ὡς ἓν τῶν ὡραιοτέρων μνημείων τῆς γαλλικῆς κοινοβουλευτικῆς ρητορικῆς. Καίτοι ὅμως, μετὰ τὴν συζήτησιν ἐκείνην, ἐπέτυχε ψῆφον ἐμπιστοσύνης, ἡ παραίτησις τοῦ ὑπουργοῦ τῆς Ἐργασίας Βιβιανί, συνεπείᾳ διαφωνίας πρὸς τὴν ἐργατικὴν πολιτικὴν τοῦ Μπριάν, παρέσυρεν ὁλόκληρον τὴν κυβέρνησιν, ἥτις ἀνεσχηματίσθη καὶ πάλιν ὑπὸ τὸν Μπριάν, ὑποχρεωθέντα ἐκ νέου εἰς παραίτησιν τὸν Φεβρουάριον τοῦ 1911, συνεπείᾳ μειώσεως τοῦ κυβερνητικοῦ αὐτοῦ κύρους ἐκ τῶν γαλλογερμανικῶν διενέξεων ἐπὶ τῆς διαρρυθμίσεως τῶν συνόρων τοῦ Κόνγκο καὶ τῆς κρίσεως τοῦ Ἀγαδίρ. Μετὰ ἓν περίπου ἔτος μετέσχε τῆς πρώτης ὑπὸ τὸν Πουανκαρὲ κυβερνήσεως ὡς ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης (Ἰανουάριος 1912), ὅταν δέ, τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1913, ὁ Πουανκαρὲ ἐξελέγη πρόεδρος τῆς δημοκρατίας, ὁ Μπριὰν τὸν διεδέχθη εἰς τὴν πρωθυπουργίαν, τὴν ὁποίαν ὅμως διετήρησεν ἐπὶ βραχὺ μόνον διάστημα, μέχρι τοῦ Μαρτίου 1913, ὁπότε συνεπείᾳ καταψηφίσεως ὑπὸ τῆς γερουσίας τοῦ ὑπὸ τῆς βουλῆς ψηφισθέντος ἐκλογικοῦ νόμου περὶ ἀναλογικῆς ψηφοφορίας, ἡ κυβέρνησις ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ. Κατὰ τὴν πρωθυπουργίαν του ταύτην ὁ Μπριὰν εἶχε κατορθώσει νὰ ψηφισθῇ ὑπὸ τῆς βουλῆς καὶ τῆς γερουσίας ἡ αὔξησις τῆς στρατιωτικῆς θητείας ἀπὸ 2 εἰς 3 ἔτη, ὡς ἀπάντησις εἰς τὴν καταπληκτικὴν αὔξησιν τῶν γερμανικῶν ἐξοπλισμῶν.

Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὁ τότε πρωθυπουργὸς Βιβιανὶ προσέφερεν εἰς τὸν Μπριὰν τὸ ὑπουργεῖον τῆς Δικαιοσύνης (26 Αὐγούστου 1914). Ἓν περίπου ἔτος βραδύτερον, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ Βιβιανὶ (29 Ὀκτωβρίου 1915), ὁ Μπριὰν ἐσχημάτισε τὴν πρώτην κυβέρνησιν ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ, κρατήσας ὁ ἴδιος, πλὴν τῆς προεδρίας τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου, καὶ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, καὶ προσλαβὼν ὡς ὑπουργοὺς τὸν σοσιαλιστὴν Γκέσντ, τὸν συντηρητικὸν καθολικὸν Κοσὲν καὶ τοὺς πρώην πρωθυπουργοὺς Φρεσινέ, Κὸμπ καὶ Μπουρζουά. Κατὰ τὰς ἀρχὰς ὅμως τοῦ θέρους τοῦ 1916 κατηγορήθη ὑπὸ τῶν πολιτικῶν κύκλων τῆς χώρας του δι᾽ ἔλλειψιν σθένους ἐν τῇ διεξαγωγῇ τοῦ πολέμου καὶ ἐζητήθησαν παρ᾽ αὐτοῦ εὐθῦναι διὰ τὴν ρουμανικὴν ἧτταν καὶ τὴν ἐν Ἑλλάδι κατάστασιν, ἥτις προεκάλεσε σφοδρὰς ἐπιθέσεις ἐναντίον του. Ὁ Μπριάν, θέλων ν᾽ ἀντιδράσῃ κατὰ τῶν ἐπιθέσεων ἐκείνων, ἐπεχείρησε νὰ ἀναδιοργανώσῃ τὸν στρατὸν καὶ ἐπέτυχε τὴν ἐπιβολὴν τοῦ ἑνιαίου μετώπου καὶ τῆς ἑνιαίας διοικήσεως μεταξὺ τῶν συμμαχικῶν στρατιῶν, ἀντικαταστήσας ἅμα τὸν προαχθέντα εἰς στρατάρχην Ζὸφρ εἰς τὴν ἀρχηγίαν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ διὰ τοῦ στρατηγοῦ Νιβὲλ καὶ προσλαβὼν ὡς ὑπουργὸν τῶν Στρατιωτικῶν τὸν στρατηγὸν Λυωταί. Ἐπίσης κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Μπριὰν ἀντέστη ἐπιμόνως εἰς τὴν ἐγκατάλειψιν τοῦ μετώπου τῆς Θεσσαλονίκης, τὴν ὁποίαν εἶχε προτείνει ὁ λόρδος Κίτσενερ. Κατὰ τὸν Μάρτιον ὅμως τοῦ 1917 ἡ συνεπείᾳ διαφωνίας πρὸς τὴν βουλὴν παραίτησις τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν στρατηγοῦ Λυωταὶ παρέσυρεν εἰς παραίτησιν καὶ ὁλόκληρον τὴν κυβέρνησιν. Κατὰ τὰ ἐπακολουθήσαντα τρία ἔτη, ὁ Μπριὰν παρέμεινε μακρὰν τῆς ἐξουσίας. Τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1917 ὁ τότε ἁρμοστὴς τῆς Γερμανίας ἐν Βρυξέλλαις φὸν ντὲρ Λάνκεν διεμήνυσεν εἰς αὐτὸν τὴν πρότασιν νὰ συναντηθῶσιν ἐν Ἑλβετίᾳ πρὸς συζήτησιν τῆς πιθανότητος περὶ τῆς συνάψεως εἰρήνης. Ὁ Μπριὰν εἶχεν ἐκδηλώσει τὴν πρόθεσίν του νὰ μεταβῇ εἰς Ἑλβετίαν, ἀλλ᾽ ὁ τότε ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν Ριμπὼ ὑπέδειξεν εἰς αὐτὸν ὅτι ἐπρόκειτο περὶ τεχνάσματος.

Μετὰ τὸν πόλεμον ὁ Μπριὰν ἐγένετο τετράκις πρωθυπουργὸς καὶ ὑπῆρξεν ὁ πρῶτος Γάλλος πολιτικός, ὁ ὁποῖος ἀνεγνώρισε καὶ ἔθεσεν ὡς πρόγραμμά του τὴν ἀνάγκην συνδιαλλακτικωτέρας πολιτικῆς πρὸς τὴν Γερμανίαν. Κατὰ τὰ πρῶτα μεταπολεμικὰ ἔτη, καθ᾽ ἃ ἐκυριάρχει ἐπὶ τῆς πολιτικῆς σκηνῆς ὁ Κλεμανσώ, ὁ Μπριὰν εἶχε παραμείνει σχεδὸν ἐν ἀφανείᾳ, σπανίως λαμβάνων τὸν λόγον εἰς τὴν βουλὴν καὶ δεικνύων τάσεις νέας ἐπαφῆς μετὰ τῆς ἀριστερᾶς. Τὸν Ἰανουάριον ὅμως τοῦ 1921, μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς κυβερνήσεως Λέγκ, ἐγένετο καὶ πάλιν πρωθυπουργός, κρατήσας δι᾽ ἑαυτὸν καὶ τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ στρέψας τὴν προσοχὴν αὐτοῦ εἰς τὴν ἐφαρμογὴν τῆς συνθήκης τοῦ Βερσαλλιῶν καὶ ἰδίως εἰς τὸ ζήτημα τῶν ἐπανορθώσεων. Τὸ φθινόπωρον τοῦ ἰδίου ἔτους μετέβη εἰς τὴν Βασιγκτῶνα ὡς ἀντιπρόσωπος τῆς Γαλλίας εἰς τὴν διάσκεψιν τοῦ ναυτικοῦ ἀφοπλισμοῦ, κατὰ δὲ τὴν ἐπιστροφήν του ἐγένετο ἀντικείμενον σφοδροτάτων ἐπιθέσεων ἐκ μέρους τῶν ἀντιπάλων του Γάλλων ἐθνικοφρόνων καὶ μιλιταριστῶν, οἵτινες κατηγόρουν αὐτὸν ὅτι δὲν περιεφρούρησεν ὅσον ἔπρεπε τὰ ζωτικὰ συμφέροντα τῆς Γαλλίας. Αἱ ἐπιθέσεις αὗται ἔφθασαν εἰς τὸ κατακόρυφον κατὰ τὴν συνδιάσκεψιν, ἥτις ἔλαβε χώραν τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1922 εἰς τὰς Κάννας, ὅπου ὁ Μπριὰν ἐπεχείρησε νὰ συνεννοηθῇ μετὰ τοῦ Λόϋδ Τζώρτζ πρὸς σύναψιν ἀμυντικῆς καὶ ἐγγυητικῆς συνθήκης, ἥτις θὰ ἐπέτρεπεν εἰς τὴν Γαλλίαν νὰ φανῇ περισσότερον ἐνδοτικὴ πρὸς τὴν Γερμανίαν. Κατόπιν ὅμως τῆς δημιουργηθείσης ἀντιδράσεως καὶ δὴ ἐκ μέρους τοῦ Πουανκαρέ, ὁ πρόεδρος τῆς δημοκρατίας Μιλλερὰν ἐτηλεγράφησεν εἰς τὸν Μπριὰν νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Παρισίους πρὸς ἀντιμετώπισιν τῶν ἐπικριτῶν του. Ὁ Μπριάν, ἐπιστρέψας εἰς Παρισίους, εὑρέθη πρὸ ὠργανωμένης πολιτικῆς κινήσεως, ἥτις τὸν ὑπεχρέωσε μετ᾽ ὀλίγον νὰ παραιτηθῇ. Παρέμεινεν ἔκτοτε ἐπὶ τριετίαν καὶ πάλιν ἐκτὸς τῆς ἀρχῆς, ἀλλὰ τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1925 προσελήφθη εἰς τὸ ὑπουργεῖον Παινλεβὲ ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, διατηρήσας τὸ χαρτοφυλάκιόν του καὶ κατὰ τὸν ἀνασχηματισμὸν τῆς κυβερνήσεως ὑπὸ τοῦ ἰδίου Παινλεβὲ κατ᾽ Ὀκτώβριον τοῦ αὐτοῦ ἔτους. Κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ὁ Μπριὰν ἔδειξε μεγίστην δραστηριότητα πρὸς ἐκκαθάρισιν τῆς διεθνοῦς, καὶ ἰδίως τῆς εὐρωπαϊκῆς, ἀτμοσφαίρας ἀπὸ πολλὰς ἐκκρεμότητας, φρονῶν δὲ ὅτι τὰ συμφέροντα τῆς Γαλλίας καὶ τῆς Γερμανίας θὰ ἐξυπηρετοῦντο καλύτερον διὰ φιλικῆς συνεννοήσεως, συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ «συμφώνου τοῦ Λοκάρνο», τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1925. Τὸ σύμφωνον τοῦτο ηὔξησε τεραστίως τὴν φήμην καὶ τὴν ἐπιρροὴν τοῦ Μπριάν, ὅστις, ὅταν ὁ Παινλεβὲ παρῃτήθη τῆς ἀρχῆς, τὸν Νοέμβριον τοῦ 1925, ἐγένετο καὶ πάλιν πρωθυπουργός. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1926 ἡ κυβέρνησίς του παρῃτήθη, λόγῳ ἀπορρίψεως ὑπὸ τῆς βουλῆς τῶν οἰκονομικῶν νομοσχεδίων, ἀνέλαβεν ὅμως καὶ πάλιν ὁ Μπριὰν τὸν ἀνασχηματισμὸν αὐτῆς πρὸς ἀντιμετώπισιν τῆς οἰκονομικῆς κρίσεως καὶ τῆς πτώσεως τοῦ φράγκου. Ἡ ἐξακολούθησις τῆς πτώσεως τοῦ γαλλικοῦ νομίσματος ἤγαγε, μετά τινας μῆνας, τὸν ὑπουργὸν τῶν οἰκονομικῶν Ραοὺλ Περὲ εἰς παραίτησιν, συμπαρασύρασαν ὁλόκληρον τὴν κυβέρνησιν (Ἰούνιος 1926). Ἀλλὰ καὶ πάλιν ὁ Μπριὰν ἠναγκάσθη νὰ δεχθῇ τὸν ἀνασχηματισμὸν τοῦ ὑπουργείου, προσλαβὼν ὡς ὑπουργὸν τῶν Οἰκονομικῶν τὸν Ἰωσὴφ Καγιώ. Μετὰ ἕνα μῆνα τὸ ὑπουργεῖον τοῦτο κατεψηφίσθη εἰς τὴν βουλήν, ἥτις ἠρνήθη νὰ παραχωρήσῃ τὴν σχεδὸν δικτατορικὴν εἰδικὴν δικαιοδοσίαν, τὴν ὁποίαν ἐζήτησεν ὁ Καγιὼ πρὸς ἀντιμετώπισιν τοῦ οἰκονομικοῦ προβλήματος. Ἐπηκολούθησεν ὀλιγοήμερος κυβέρνησις ὑπὸ τὸν Ἑρριὸ καὶ κατόπιν ὁ Πουανκαρὲ ἐσχημάτισε κυβέρνησιν ἐθνικοῦ συνασπισμοῦ, τῆς ὁποίας ὁ Μπριὰν μετέσχεν ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξω-

Digitized by Google

τερικῶν. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ἀπενεμήθη εἰς αὐτὸν τὸ βραβεῖον Νόμπελ τῆς εἰρήνης, ὁμοῦ μετὰ τοῦ Στρέζεμαν καὶ τοῦ Τσάμπερλαιν, ὡς τῶν κυριωτέρων πρωτεργατῶν τοῦ συμφώνου τοῦ Λοκάρνο, ὅπερ ἐχαιρετίσθη τότε ὡς τὸ πρῶτον καὶ μέγα βῆμα πρὸς τὴν τελείαν ἐξασφάλισιν τῆς εὐρωπαϊκῆς εἰρήνης. Μετὰ τὴν ἀσθένειαν τοῦ Πουανκαρέ, ὁ Μπριὰν ἀνέλαβεν ἐκ νέου τὴν πρωθυπουργίαν, κατὰ δὲ τὰς ἐπακολουθησάσας ὑπουργικὰς κρίσεις ἀπὸ τοῦ 1929 καὶ ἐντεῦθεν ἐξηκολούθησε νὰ δέχεται τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν καὶ νὰ συνεργάζεται μὲ κόμματα καὶ ἄνδρας διαφόρων πολιτικῶν ἀποχρώσεων, φρονῶν ὅτι ἐπιβάλλεται εἰς αὐτὸν να συνεργασθῇ «μὲ οἱονδήποτε», χάριν τῆς πραγματοποιήσεως τῶν ἰδανικῶν τοῦ Λοκάρνο. Εἰς ἐπέκτασιν δὲ τῶν ἰδανικῶν τούτων, χάριν τῆς παγκοσμίου εἰρήνης, ἦλθεν εἰς διαπραγματεύσεις μετὰ τῶν Ἡν. Πολιτειῶν καὶ ὑπέγραψε μετὰ τοῦ Κέλλογκ, ἐπίτηδες μεταβάντος εἰς Παρισίους τῷ 1928, τὸ σύμφωνον, διὰ τοῦ ὁποίου ἐκηρύσσετο ὁ πόλεμος «ἐκτὸς νόμου», τὸ γνωστὸν ἔκτοτε ὑπὸ τὸ ὄνομα «σύμφωνον Μπριὰν-Κέλλογκ» ἤ «σύμφωνον τῶν Παρισίων», ὅπερ ὑπέγραψαν κατόπιν καὶ πλεῖστα ἄλλα κράτη. Πρὸς τὸν αὐτὸν ἐπίσης σκοπόν, τῆς ἐξασφαλίσεως τῆς παγκοσμίου εἰρήνης, ὑπέβαλε, διὰ τῆς διακοινώσεώς του τῆς 17 Μαΐου 1930, πρὸς τὰς εὐρωπαϊκὰς κυβερνήσεις πρότασιν περὶ στενοτέρας συνεργασίας τῶν εὐρωπαϊκῶν κρατῶν, ἰδίως ἐπὶ τοῦ οἰκονομικοῦ ἐπιπέδου. Ἡ πρότασις αὕτη τοῦ Μπριάν, γνωστὴ ἔκτοτε ὑπὸ τὸ ὄνομα «Πανευρώπη», ὑποβληθεῖσα καὶ εἰς τὴν Κοινωνίαν τῶν Ἐθνῶν καὶ ἀναπτυχθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἰδίου ἐν τῇ γενικῇ συνελεύσει αὐτῆς τοῦ 1930, παρεπέμφθη εἰς εἰδικὰς ἐπιτροπὰς πρὸς μελέτην τῶν μέσων καὶ τοῦ τρόπου τῆς πραγματοποιήσεώς της. Κατὰ τὰς προεδρικὰς ἐκλογὰς τοῦ 1931 ὁ Μπριάν, ὢν ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν, ὑπεδείχθη ὡς κοινὸς ὑποψήφιος τῶν κομμάτων τῆς ἀριστερᾶς, ἀλλ' ἀπέτυχεν, ἐκλεγέντος τοῦ ὑποψηφίου τῆς δεξιᾶς γερουσιαστοῦ Ντυμέρ. Μετὰ τὴν ἀποτυχίαν του ταύτην ἠθέλησε ν' ἀποσυρθῇ τῆς πολιτικῆς, ἀλλὰ παρακληθεὶς ὑπὸ τῶν κυριωτέρων πολιτικῶν παραγόντων, οἵτινες ἐξήγησαν εἰς αὐτὸν ὅτι ἡ καταψήφισις αὐτοῦ ὡς προέδρου τῆς δημοκρατίας δὲν ἐνεῖχε τὴν ἔννοιαν ἀποδοκιμασίας τῆς ἐξωτερικῆς του πολιτικῆς, ἐπείσθη νὰ παραμείνῃ εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν (ἐν τῇ κυβερνήσει Λαβάλ).

Ὁ Μπριὰν θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν ἐξοχωτέρων συγχρόνων πολιτικῶν. Καίτοι ἀπεσχίσθη ἀπὸ τοῦ 1906 ἀπὸ τῆς ἄκρας ἀριστερᾶς, ἐξακολουθεῖ ἐν τούτοις νὰ διατηρῇ ἀκραιφνεῖς δημοκρατικὰς ἰδέας καὶ νὰ ἔχῃ μέγιστον κῦρος μεταξὺ τοῦ δημοκρατικοῦ κόσμου. Ἰδίως θαυμάζεται παρ' αὐτῷ ἡ μεγάλη ῥητορικὴ δύναμις καὶ ἡ εὐχέρεια νὰ αὐτοσχεδιάζῃ πάντοτε τοὺς λόγους του, οὐδέποτε ὁμιλῶν ἀπὸ χειρογράφου καὶ οὐδέποτε γράφων αὐτούς. Ἐπίσης εἶναι ὀνομαστὸς καὶ ἐμπειρότατος περὶ τοὺς κοινοβουλευτικοὺς ἑλιγμούς. Ἀναμιχθείς, ἰδίᾳ μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, σχεδὸν ἀποκλειστικῶς εἰς τὰ ἐξωτερικὰ ζητήματα, ἀπέκτησεν εἰς ταῦτα μεγίστην εἰδικότητα καὶ πολύτιμον πεῖραν καὶ ἀπέβη ὡς ἐκ τούτου ὁ κυριώτερος ἐκπρόσωπος τῆς γαλλικῆς ἐξωτερικῆς πολιτικῆς, ἣν καὶ διευθύνει, ἀπολαμβάνων τῆς ἐμπιστοσύνης τῶν περισσοτέρων κομμάτων ἐν τῇ χώρᾳ. Πλὴν πολυαρίθμων ἄρθρων καὶ μελετῶν, τὰς ὁποίας ἔγραψεν εἰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ἐδημοσίευσε τὰ ἔργα: «Ἡ δρᾶσις τοῦ σοσιαλιστικοῦ κόμματος ἐν τῷ κοινοβουλίῳ καὶ ἐν τῇ χώρᾳ» (1902), «Ὁ χωρισμὸς Κράτους καὶ Ἐκκλησιῶν» (1906), «Ὁ χωρισμὸς» (1904—1907), «Λόγοι εἰρήνης» (1927) κτλ. Μ. Δ. Β.

— **Μπριὰν** (Briand), ***Ἰωσήφ.*** Γάλλος γλύπτης (1801—1861). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σερρὶ καὶ τῷ Μπόζιο. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται εἰς ἀνδριὰς τοῦ Μολιέρου διὰ τὸ θέατρον τῆς Ἀβινιὸν καὶ μία προτομὴ τοῦ Ἰωσὴφ Βερνὲ διὰ τὸ μουσεῖον τῆς αὐτῆς πόλεως. Ι. Μ. Π.

— **Μπριὰν** (Briand), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος γλύπτης (1805—1864), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Σερρὶ καὶ τῷ Δαβὶδ ντ' Ἀνζὲ καὶ ἐτιμήθη διὰ τοῦ μεγάλου βραβείου Ρώμης τῷ 1832. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ νεκρὸς Φαῦνος» (μαρμάρινον ἄγαλμα ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Ἀβινιόν), τὸ ἄγαλμα τοῦ Πουσσέν, «Ὁ ἅγιος Ἱερώνυμος», «Ὁ ἅγιος Μᾶρκος», «Ὁ Σηκουάνας καὶ ὁ Ρῆνος». Ι. Μ. Π.

**μπριάνι** (τό)· εἶδος νηστησίμου φαγητοῦ.

— *[Μαγειρ.]* Τὸ μπριάνι παρασκευάζεται ἀπὸ πατάτες, κολοκυθάκια καὶ ντομάτες, καθαρισμένα καὶ τεμαχισμένα ὅλα εἰς φέτας. Τοποθετοῦμεν τ' ἀνωτέρω ἐντὸς ταψίου εἰς στρώσεις, ῥίπτοντες ἐπάνω ἀπὸ ἑκάστην στρῶσιν ἁλάτι, πιπέρι ὡς καὶ ἄνηθο καὶ μαϊντανὸ ψιλοκομμένα. Ξανθίζομεν ὀλίγο κρεμμύδι εἰς τὸ λάδι, προσθέτομεν νερὸ (100 δράμια λάδι καὶ μισὸ ποτήρι νερὸ ἀρκοῦν διὰ 1 ½ ὀκᾶν χορταρικῶν) καὶ δι' αὐτοῦ περιχύνομεν τὸ φαγητόν. Τὸ καλύπτομεν μὲ φέτες ντομάτας, τὸ πασπαλίζομεν μὲ γαλέτταν καὶ τὸ ψήνομεν εἰς μέτριον φοῦρνον ἐπὶ 3/4 τῆς ὥρας. Μ. ΔΡ.

**Μπριάνσκ** (Friansk) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Σοβιετικῆς ὁμοσπονδίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Ὄρελ τῆς κυρίως Ρωσίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ντέσνα, 122 χλμ. πρὸς ΒΔ. τῆς πόλεως Ὄρελ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει μεγάλα χυτήρια σιδήρου καὶ τηλεβόλων, ὑελουργεῖα, μηχανουργεῖα, ἐργοστάσια σιδηροδρομικοῦ ὑλικοῦ, ναυπηγεῖα, διεξάγει δ' ἐμπόριον σιτηρῶν, ἅλατος, οἰνοπνευματωδῶν καὶ δερμάτων. Κάτ. 30.500. Χ. Δ.

**Μπριανσὸν** (Briançon), ἀρχ. *Βριγάντιον [Γεωγραφ.]* Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Ἄλπεων, κειμένη ἐπὶ ὑψιπέδου δεσπόζοντος τῆς συμβολῆς τῶν ποταμῶν Ντυρὰνς καὶ Γκιζάν, εἰς ἀπόστασιν 90 χλμ. ἀπὸ τῆς Γκάπ. Περιβάλλεται ὑπὸ πλουσίας γαιανθρακοφόρου περιοχῆς καὶ ἔχει βιομηχανίας ἀσβέστου, γύψου, μετάξης, βάμβακος, κηρίων, πίλων κλπ., ὡς καὶ ὀρυχεῖα τάλκ ἐκλεκτῆς ποιότητος. Κάτ. 5.640. Χ. Δ.

**Μπριανσὸν** (Brianchon), ***Κάρολος-Ἰούλιος.*** Γάλλος μαθηματικός (1785—1864). Ἐσπούδασεν εἰς τὴν πολυτεχνικὴν σχολήν, ὢν δὲ λοχαγὸς τοῦ πυροβολικοῦ κατὰ τὸ 1817 ἐδημοσίευσεν ὑπόμνημα ἐπὶ τῶν καμπύλων τοῦ 6' βαθμοῦ, ἐπὶ τῶν ὁποίων εὗρε, πλὴν ἄλλων, καὶ τὸ θεώρημα τὸ φέρον τὸ ὄνομά του (θεώρημα Μπριανσόν), δημοσιευθὲν τὸ πρῶτον εἰς τὴν «Journal de l'École Polytechnique». Κατ' αὐτό, εἰς πᾶν ἑξάγωνον περιγεγραμμένον περὶ κωνικὴν τομὴν αἱ 3 διαγώνιοι αἱ συνδέουσαι ἀπέναντι κορυφὰς συναντῶνται εἰς τὸ αὐτὸ σημεῖον. Εἶναι δὲ τὸ θεώρημα τοῦτο σχετικὸν πρὸς τὸ τοῦ Πασκὰλ περὶ τῶν ἐγγεγραμμένων εἰς κωνικὰς ἑξαγώνων.

Ὡσαύτως ὁ Μπριανσὸν ἔδωκε τὸ μέσον τῆς κατασκευῆς μιᾶς κωνικῆς ὁριζομένης διὰ πέντε συνθηκῶν: εἴτε αὕτη νὰ διέρχεται διὰ πέντε δοθέντων σημείων, εἴτε νὰ ἐφάπτηται πέντε δοθεισῶν εὐθειῶν. Ν. Γ.

**Μπριὰρ** (Briare) *[Γεωγρ.].* Διῶρυξ τῆς Γαλλίας ἑνοῦσα τὴν διώρυγα τοῦ Λουάν, ἥτις ἄγει εἰς τὸν Σηκουάναν, μετὰ τοῦ ποταμοῦ Λίγηρος. Τὴν κατασκευὴν αὐτῆς ἤρχισεν ὁ Σουλλὺ τῷ 1604. Ἔχει μῆκος 56 χλμ., διεξάγεται δ' ἐπ' αὐτῆς ζωηροτάτη κίνησις πλοιαρίων. Χ. Δ.

**Μπρίβ**, ἢ ***Μπρὶβ-λὰ-Γκαγιάρντ*** (Brive ἢ Brive la-Gaillarde, λατιν. Briva Curetia) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου ἐπαρχίας ἐν τῷ νομῷ Κορρέζ. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Κορρὲζ εἰς ἀπόστασιν 29 χλμ. ἀπὸ τῆς Τοὺλ καὶ ἔχει βιομηχανίας διατηρημένων τροφίμων, διεξάγει δ' ἐμπόριον οἴνου, καστάνων, καρύων καὶ ἄλλων ὀπωρῶν. Κάτ. 24.050. Ἐν αὐτῇ ἐστέφθη τῷ 585 βασιλεὺς ὁ φερόμενος ὡς υἱὸς τοῦ Κλωθαρίου Α', Μπριβ ἢ Γονδοβάλδος. Χ. Δ.

**Μπριγιάνιστα** *[Γεωγρ.].* Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἰωαννίνων χωρίου *Βασιλόπουλον* (βλ. λ.).

**μπριγιάντι** (τό)· βλ. λ. *μπριλλάντι.*

**μπριγιαντίνη** (ἡ) (brillantine)· εἶδος κοσμητικοῦ τῆς κόμης, τοῦ γενείου καὶ τοῦ μύστακος.

— *[Χημ. Βιομ.]* Ἡ μπριγιαντίνη εἶναι χρωματῶδες ἔλαιον, ἔχον συγκολλητικὴν δύναμιν καὶ καθιστῶν τὰς τρίχας στιλπνάς, παρασκευάζεται δὲ κατὰ πολυειδεῖς συνταγάς. Οὕτω, καλὴ μπριγιαντίνη δύναται νὰ παρασκευασθῇ ἐκ γλυκερίνης, κικκινελαίου καὶ ἀρωματισθείσης ἀλκοόλης, δύναται ὅμως ἀντὶ τῆς γλυκερίνης καὶ τοῦ κικκινελαίου νὰ χρησιμοποιηθῇ βαζελίνη ἢ διάφορα φυτικὰ ἔλαια ἀντὶ δὲ τῆς ἀρωματισμένης ἀλκοόλης δύναται νὰ χρησιμοποιηθῇ ὕδωρ κολωνίας ἢ ῥοδόνερον. Ἐπίσης κυκλοφοροῦσιν ἐν τῷ ἐμπορίῳ στερεαὶ μπριγιαντῖναι, συνιστάμεναι ἐκ λευκῆς κηρεζίνης καὶ ἀχρόου βαζελίνης, ἀρωματισμένων διὰ διαφόρων αἰθερίων ἐλαίων. Ἐνίοτε πρὸς παροχὴν συγκολλητικῆς δυνάμεως προσθέτουσιν εἰς τὸ μῖγμα μαστίχην ἢ βενζόην ἢ τραγακάνθινον κόμμι ἢ καὶ κολοφώνιον.

Μπριγιαντῖναι καλοῦνται ἐπίσης καὶ διάφοροι στιλβωτικαὶ τῶν μετάλλων ὗλαι, οὐδεμίαν σχέσιν ἔχουσαι ὡς πρὸς τὴν σύστασιν μὲ τὰς ἀνωτέρω κοσμητικὰς μπριγιαντίνας. Σ. Γ.

**Μπριγιὰ-Σαβαρὲν** (Brillat-Savarin), ***Ἀνθέλμος.*** Γάλλος δικαστικός (1755—1826), γνωστὸς ἰδίως ὡς διάσημος γαστρίμαργος. Κατὰ τὴν Γαλλικὴν Ἐπανάστασιν ἐξελέγη μέλος τῆς συντακτικῆς συνελεύσεως, εἰς τῆς ὁποίας ὅμως τὰ ἔργα ἐλάχιστα συνέλαβε, φαίνεται, ἀνεμίχθη. Εἰς τὰ πρακτικὰ τῆς τοὐλάχιστον δὲν ἀναφέρεται, παρὰ μόνον ὡς ἀγορεύσας κάποτε καταπολεμῶν τὴν προταθεῖσαν τότε κατάργησιν τῆς θανατικῆς ποινῆς. Διωρίσθη κατόπιν πρόεδρος τοῦ δικαστηρίου τοῦ Αἲν καὶ εἶτα μέλος τοῦ νεοϊδρυθέντος τότε ἀνωτάτου δικαστηρίου (Ἀρείου Πάγου). Τῷ 1793 ἦτο δήμαρχος τοῦ Belley, ὅπου ἀντέδρασε κατὰ τῶν τρομοκρατικῶν μεθόδων τῆς ἐπιτροπῆς τῆς Κοινῆς σωτηρίας. Καταδιωχθεὶς ἕνεκα τούτου ἠναγκάσθη νὰ φύγῃ εἰς Ἑλβετίαν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Νέαν Ὑόρκην, ὅπου ἔζη ἐπαγγελλόμενος τὸν διδάσκαλον τῆς γαλλικῆς. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ροβεσπιέρρου ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν διωρίσθη ἐπίτροπος τοῦ Διευθυντηρίου παρὰ τῷ ποινικῷ δικαστηρίῳ τῶν Βερσαλλιῶν καὶ τῷ 1797 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν ἕδραν τοῦ ἀρεοπαγίτου. Ἔκτοτε ἔζησεν ἐν ἠρεμίᾳ, ἀδιαφορῶν διὰ τὰς ἐπαλλήλους μεταβολὰς τῶν πολιτικῶν καθεστώτων, αἱ ὁποῖαι —ὅπως γράφει ὁ ἴδιος— «δὲν τοῦ ἐτάραξαν ποτὲ πλέον τὴν χώνευσιν». Ἦτο πρὸ παντὸς ἄνθρωπος εὐδιάθετος, φίλος τῆς εὐζωΐας καὶ χαρωπὸς ἐπικούρειος, ὅστις δὲν ἐθεώρησεν ἀντιβαῖνον εἰς τὴν ἀξιοπρέπειαν τοῦ ὑψηλοῦ του ἀξιώματος ν' ἀσχοληθῇ εἰς τὴν συγγραφὴν ἑνὸς γαστρονομικοῦ κώδικος. Τὰ ἐπιστημονικά του συγγράμματα, — «Ἀπόψεις καὶ σχέδια οἰκονομικῆς πολιτικῆς» (1802), «Αἱ δικαστικαὶ ἐξουσίαι» (1819), «Ἀρχαιολογία τῆς περιοχῆς τοῦ Αἴν», «Ἱστορικὴ καὶ κριτικὴ ἐπισκόπησις τῆς μονομαχίας» (1819) κλπ., — ἐλησμονήθησαν πολὺ ταχέως· δὲν συνέβη ὅμως τὸ ἴδιον καὶ διὰ τὸ περίφημον ἀπομεῖναν βιβλίον του «Φυσιολογία τῆς γεύσεως» (1825), τὸ φέρον ὡς προμετωπίδα τὴν φράσιν: «Πές μου τί τρώς, νὰ σοῦ πῶ τί εἶσαι», τὸ ὁποῖον ἠρίθμησε πληθὺν ὅλην ἐκδόσεων. Ὁ Μπριγιὰ-Σαβαρὲν δὲν τὸ ὑπέγραψε μὲ τὸ ὄνομά του, ἐμφανίσας αὐτὸ ὡς «ἔργον ἑνὸς καθηγητοῦ, μέλους πολλῶν ἐπιστημονικῶν ὀργανώσεων». Ἀλλ' ἡ ἀνωνυμία δὲν ἴσχυσε νὰ κρύψῃ τὸν συγγραφέα. Παρὰ τὴν ἐντύπωσιν ἄλλως τε, τὴν ὁποίαν ἀφήνει ὁ τίτλος, τὸ βιβλίον δὲν εἶναι κυρίως εἰπεῖν γαστρονομικὸς ὁδηγός. Ἀπαρτίζεται ἀπὸ σειρὰν συνομιλιῶν καὶ ἀφηγήσεων, γραμμένων μὲ φυσικὸν καὶ ῥέον ὕφος καὶ κατεσπαρμένων μὲ διασκεδαστικὰ ἀνέκδοτα καὶ παντοειδεῖς παρατηρήσεις (καὶ στίχους ἀκόμη), ἐνιαχοῦ δὲ μόνον μὲ γαστρονομικὰς συνταγάς. Ἐν τῷ συνόλῳ του ἀποτελεῖ ἀναμφισβητήτως ἐνδιαφέρον καὶ ἐξαιρετικῶς ἐπαγωγὸν ἀνάγνωσμα. —Ο.

**Μπρὶγκ** (Brieg) *[Γεωγρ.].* Γερμανικὴ πόλις, εἰς τὴν πρωσσικὴν ἐπαρχίαν τῆς Κάτω Σιλεσίας, ἔχουσα (1925) 28.000 κατοίκους. Κεῖται εἰς ὕψος 148 μέτρων ἀπὸ τῆς θαλάσσης, παρὰ τὸν ποταμὸν Oder, ἔχει δὲ ὡραιότατον ἀνάκτορον, κτισθὲν ἀπὸ Ἰταλοὺς ἀρχιτέκτονας τῷ 1544, γυμνάσιον, ἐμπορικὰς καὶ ἐπαγγελματικὰς σχολάς, θέατρον κτλ. Εἶναι κέντρον ζωηροῦ διαμετακομιστικοῦ ἐμπορίου καὶ ἔχει βιομηχανίας σιδήρου, μηχανῶν, δερμάτων, χημικῶν προϊόντων κτλ.

— **Μπρὶγκ** (Brig, γαλλ. Brigue) *[Γεωγρ.].* Ἑλβετικὴ πόλις εἰς τὸ καντόνιον Wallis, ἔχουσα (1920) περὶ τοὺς 3.200 κατοίκους, Γερμανοὺς καὶ Ἰταλούς. Κεῖται εἰς ὕψος 684 μέτρων ἀπὸ τῆς θαλάσσης, εἰς τὴν βορείαν εἴσοδον τῆς σήραγγος τοῦ Σεμπλόν. —Ο.

**Μπρίγκαμ** ***Γιὸγκ*** (Brigham Young). Ἀρχηγὸς καὶ προφήτης τῶν Μορμόνων (1801—1877). Μολονότι ἀμόρφωτος ἐργάτης, κατώρθωσε τῷ 1840 νὰ γίνῃ πρόεδρος τοῦ συμβουλίου τῶν Μορμόνων, μετὰ δὲ τὴν δολοφονίαν τοῦ πρώτου ἀρχηγοῦ καὶ προφήτου αὐτῶν ***Ἰωσὴφ Σμὶθ*** ἐκλήθη νὰ τὸν διαδεχθῇ. Κατὰ τῶν Μορμόνων, καίτοι δὲν ἠθέλησαν νὰ ἐκδικήσωσι τὸν θάνατον τοῦ προφήτου των, ἐσυνεχίσθησαν σφοδρῶς αἱ καταδιώξεις ὑπὸ τοῦ λαοῦ τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν, ὥστε ἠναγκάσθησαν νὰ ἐγκαταλίπωσι τὰς ἑστίας των. Ὁ Μπρίγκαμ, πανταχόθεν πιεζόμενος, ἠγαγκάσθη νὰ ὁδηγήσῃ τοὺς ὀπαδούς του διὰ τῶν Βραχωδῶν Ὀρέων καὶ νὰ ἐγκαταστήσῃ αὐτοὺς εἰς εὔφορον πεδιάδα παρὰ τὴν Μεγάλην Ἁλμυρὰν Λίμνην, ὅπου ἵδρυσε τὴν «Νέαν Σιών». Ἐντὸς τριετίας ἡ νέα ἀποικία προώδευσε τόσον πολύ, ὥστε ἡ ἀμερικανικὴ κυβέρνησις ἀνῆγαγεν αὐτὴν εἰς περιωπὴν ἀνεγνωρισμένης χώρας ἐπιτροπείας, εἰς ἣν ἔδωσε τὸ ὄνομα Οὔτα, τικῆς περιφερείας, εἰς ἣν ἔδωσε τὸ ὄνομα Οὔτα, ὑπὸ τὸν ὅρον ὅπως ἐφαρμόζωνται ἐν αὐτῇ αὐστηρῶς οἱ νόμοι τοῦ κράτους. Τοῦ Μπρίγκαμ Γιὸγκ ἀρνηθέντος νὰ συμμορφωθῇ πρὸς τὸν ὅρον τοῦτον, ἀπεστάλη εἰς Οὔταν στρατιωτικὸν ἀπόσπασμα, εἰς τὸ ὁποῖον οἱ Μορμόνοι παρεδόθησαν αἰχμάλωτοι. Ὁ Μπρίγκαμ Γιὸγκ, διαπρύσιος κῆρυξ τῶν θεοκρατικῶν θεωριῶν καὶ τῆς πολυγαμίας, κατηγορήθη ἐπὶ παραβάσει τοῦ περὶ μονογαμίας νόμου, ἀλλ' ἡ δίκη του ἀνεβλήθη ἐπ' ἀόριστον. Οὕτως ἀπέθανεν ἐν μέσῳ τῶν δέκα ἑπτὰ συζύγων του καὶ τῶν πεντήκοντα ἓξ τέκνων του. Α. Δ.

**Μπριγκέλα** (Brighella). Ἐν τῶν σταθερῶν προσώπων τῆς ἐκ τοῦ προχείρου, ἢ ἐντέχνου, commedia dell'arte, ἢ commedia all'improviso, κατ' ἀντίθεσιν τῆς τῶν λογίων γραπτῆς κωμῳδίας, τῆς καλουμένης commedia erudita ἢ sostenuta. Ὁ Μπριγκέλα, ἐκ Φεράρας ἕλκων τὴν καταγωγήν του, ἔφερε λευκὴν ἐνδυμασίαν ὡς ὁ Πιερρότος, πρὸς ὃν εἶχε κατ' ἀρχὰς ὁμοιότητά τινα. Κατόπιν, εἰσαχθεὶς εἰς Γαλλίαν κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα ὑπὸ τὸ ὄνομα Brighuelle, μετεβλήθη εἰς ψεύστην καὶ πανοῦργον ὑπηρέτην. Ν. Ι. Λ.

**Μπριγκέντι** (Brigeuti), ***Ἐλισσαῖος.*** Ἰταλὸς νεοελληνιστής (1869—1929). Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν

Digitized by Google

Μοδένη καὶ εἶτα φιλολογίαν καὶ φιλοσοφίαν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πάδοβας, κατέλαβε δ' ἀκολούθως θέσιν ἐν τῇ ἐκπαιδεύσει τοῦ ἰταλικοῦ κράτους (1895), κατ' ἀρχὰς μὲν ἐν Μοδένῃ, μετέπειτα δ' ἐν Ποτέντσᾳ καὶ Καζένᾳ, ἔνθα καὶ παρέμεινεν ἐπὶ 33 ἔτη ἔκτοτε. Ἐπανειλημμένως ταξιδεύσας εἰς τὴν Ἑλλάδα, συνέλεξε πλουσιώτατον ὑλικὸν διὰ τὰς μελέτας αὐτοῦ, περιστρεφομένας ἰδίως περὶ τὴν νεοελληνικὴν γλῶσσαν καὶ λογοτεχνίαν, τὰς ὁποίας ἐγνώρισεν εἰς τὸ ἰταλικὸν κοινὸν διὰ σειρᾶς ἐλευθέρων μαθημάτων. Ὁ Μπριγκέντι ὑπῆρξεν ἔνθερμος φιλέλλην καὶ ὑποστηρικτὴς τῶν ἑλληνικῶν δικαίων ἐν τῷ Κρητικῷ ζητήματι καὶ τοῖς Βαλκανικοῖς πολέμοις. Ὑπῆρξεν ἀντιπρόεδρος τῆς ἐθνικῆς ἑλληνικῆς ἑταιρείας «Κωνσταντῖνος ὁ Παλαιολόγος» καὶ ἐπίτιμον μέλος τῆς ἑταιρείας τῶν βυζαντινῶν σπουδῶν.

Εἰς τὰ ἰταλικὰ γράμματα ὁ Μπριγκέντι διέπρεψε διὰ διαλέξεων, ποιημάτων, ἄρθρων κλπ. Ἔργα του δὲ ἐκδοθέντα εἰς τόμους εἶναι τὰ ἑξῆς: «Nugae», νεανικοὶ στίχοι (Μοδένα 1887), «Ὁ ἔρως παρὰ τοῖς ποιηταῖς» (Μοδένα 1891), «Ἐπὶ τοῦ περὶ ὕψους» (διατριβὴ ἐπὶ δικτατορίᾳ· Πάδοβα 1894), ἔκδοσις τοῦ 6' κατὰ Κατιλίνα λόγου τοῦ Κικέρωνος μεθ' ὑπομνηματισμῶν (Τουρῖνον, 1902), «Γερασίμου Μαρκορᾶ: Ὁ ὅρκος—Λυρικά» (ἔμμετρος μετάφρασις μετὰ σχολίων καὶ εἰσαγωγῆς περὶ τῆς νεοελληνικῆς ποιήσεως· Μιλᾶνον 1903), «Ὁρατίου Φλάκκου: Αἱ ἐπιστολαὶ καὶ ἡ ποιητικὴ τέχνη» (ἔμμετρος μετάφρασις μετὰ κριτικῆς εἰσαγωγῆς· Νεάπολις 1903) «Λυρικά» (Πατάβιον 1904), «Νεοελληνικὴ χρηστομάθεια» (τὸ σπουδαιότερον ἔργον τοῦ Μπριγκέντι, περιλαμβάνον μακρὰν εἰσαγωγὴν καὶ παράρτημα βιογραφικὸν καὶ βιβλιογραφικὸν τῶν Νεοελλήνων συγγραφέων, ὧν ἀποσπάσματα ἢ ἔργα περιέχει), «Ἐγχειρίδιον νεοελληνικῆς συνδιαλέξεως (μετὰ μεταφράσεως τοῦ «Διαλόγου ποιητοῦ, φίλου καὶ σοφολογιωτάτου» τοῦ Διον. Σολωμοῦ, Μιλᾶνον 1909), «Νεοελληνοϊταλικὸν καὶ ἰταλοελληνικὸν λεξικὸν τῆς γραπτῆς καὶ καθομιλουμένης γλώσσης» (ἕτερον σπουδαῖον ἔργον τοῦ Μπριγκέντι· α' ἔκδοσις ἐν Μιλάνῳ, 1912, 6' ἔκδοσις ὁμοίως εἰς δύο τόμους 1927—1929).

Ἡ ἀγάπη καὶ ὁ ζῆλος τοῦ Μπριγκέντι πρὸς τὴν νεοελληνικὴν γλῶσσαν ἤγαγον αὐτὸν ὅπως προτείνῃ δι' ἐπιχειρημάτων ἐπιστημονικῶν τὴν διεθνοποίησιν αὐτῆς, ὡς ἡ Volapük ἢ ἡ Ἐσπεράντο. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν διαπρεπεστέρων ἀντιπροσώπων τῆς νεοελληνικῆς ἐν Ἰταλίᾳ κινήσεως ἐν τῇ σφαίρᾳ τῶν γραμμάτων, ἔνθα ἀνήκουν ὁ Τομμαζέο, ὁ Παβολίνι κλπ. Τ. Α.

—**Μπριγκέντι, *Κάρολος*.** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Καζένᾳ τῆς Ἰταλίας τῷ 1901. Ἐξῆλθε πτυχιοῦχος τῆς φιλολογίας ἐκ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βολωνίας (1921), μεθ' ὃ διωρίσθη καθηγητὴς ἐν τοῖς κρατικοῖς γυμνασίοις τῆς Ἰταλίας. Ἐξέδωκε μέχρι τοῦδε «Σημειώματα ἐπὶ τῆς παρὰ Λουκιανῷ μυθολογίας» (Καζένα 1922), ὡς καὶ τεύχη περὶ Μαβίλη καὶ Σολωμοῦ. Τ. Α.

**Μπρίγκιντα** (Brigida), καὶ ***Μπρίγκιττα*** (Brigitta). Ἁγία, πάτρων τῆς Ἰρλανδίας, γεννηθεῖσα ἐν Ρότσαρντ-Μιοῦρχεμ τῷ 525. Ἐγκαταλιποῦσα τὴν κοσμικὴν ζωήν, ἔζη ἐντὸς σκηνῆς, Kil-dara (=σκηνῆς δρυός) καλουμένης. Περὶ αὐτὴν συνεκεντρώθη ἱκανὸς ἀριθμὸς γυναικῶν, αἵτινες συνεκρότησαν θρησκευτικὴν κοινότητα, ὁ τρόπος τῆς ζωῆς τῆς ὁποίας καθιερώθη καὶ εἰς πολλὰς ἀγγλικὰς μονάς. Πρὸς ἀνάμνησιν τῆς ἁγίας διετηρεῖτο καὶ τὸ καλούμενον πῦρ τῆς Μπρίγκιντας, ἀλλὰ κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα ἡ συνήθεια αὕτη κατηργήθη δι' ἐπισκοπικῆς ἐγκυκλίου. Ἡ μνήμη τῆς ἁγίας πανηγυρίζεται τὴν 1ην Φεβρουαρίου. (Ἄλλη εἶναι ἡ Σουηδὶς ἁγία Birgitta, περὶ ἧς βλ. λ. *Βιργίτα*.) Λ. Δ.

**Μπρίγκου** (Bhrigu) [*Ἰνδ. Μυθολ.*]. Λέξις σανσκριτικὴ (Bhrgu), δηλοῦσα τὸν λάμποντα, τὸν ἐξαστράπτοντα. *Μπρίγκου* εἶναι: 1) τάξις ἡμιθέων, οἵτινες ἀνεκάλυψαν τὸ πῦρ καὶ ἐδώρησαν αὐτὸ εἰς τοὺς ἀνθρώπους. 2) Ὄνομα ἐνδόξου γένους βραχμάνων, ἀναφερομένων ἐν τῇ Ρίγκ-Βέντᾳ. Διετήρουν τὸ ἱερὸν πῦρ καὶ ἐδίδασκον τέχνας ὠφελίμους εἰς τοὺς ἀνθρώπους. Α. Δ.

**Μπρίγκς** (Briggs), ***Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος μαθηματικὸς (1556—1631 μ. Χ.), σύγχρονος καὶ φίλος τοῦ Ἰωάννου Νέπερ, τοῦ ἐφευρόντος τοὺς λογαρίθμους. Ἐγεννήθη εἰς Warley Wood, ἐσπούδασεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Καντάβριγος, ὅπου διεκρίθη, καὶ ἀπέθανεν εἰς τὴν Ὀξφόρδην. Εἶχεν ἀφοσιωθῆ ἰδίᾳ εἰς σύνταξιν πινάκων ὑπολογισμῶν διὰ τὴν ἀστρονομίαν καὶ τὴν ναυτιλίαν, ἐδημοσίευσε δὲ διαφόρους τοιούτους κατὰ τὰ ἔτη 1602, 1606 καὶ 1616. Τὸ ὑπὸ τοῦ Νέπερ ἀρχικῶς ἐπινοηθὲν σύστημα τῶν λογαρίθμων ἦτο δύσχρηστον διὰ τοὺς ὑπολογισμοὺς τῶν συνήθων ἀριθμητικῶν πράξεων (ἐν τῷ δεκαδικῷ συστήματι) καὶ διὰ τοῦτο προσεπάθησεν ὁ Νέπερ νὰ μετατρέψῃ τοὺς λογαρίθμους του εἰς ἄλλο σύστημα, μὲ βάσιν τὸν ἀριθμὸν 10. Ἀποθανὼν ὅμως (1617) δὲν ἐπρόλαβε νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὸ ἔργον του, τὴν δὲ συνέχισιν αὐτοῦ ἀνέλαβε τότε ὁ Μπρίγκς. Τῷ 1618 ἐδημοσίευσεν οὗτος τὸ ἔργον «Logarithmorum chilias prima», εἰς ὃ ἀνέγραψε τοὺς λογαρίθμους τῶν χιλίων πρώτων φυσικῶν ἀριθμῶν (ἀπὸ τοῦ 1—1000), εἰς σύστημα μὲ βάσιν τὸν 10 καὶ μὲ 14 δεκαδικὰ ψηφία, δηλαδὴ μὲ πολλὴν μεγάλην προσέγγισιν (ὡς γνωστόν, οἱ ἐν χρήσει σήμερον κατὰ τὸν Lalande πίνακες Dupuis δίδονται μόνον μὲ 5 ψηφία δεκαδικά). Τὸ δὲ ἔτος 1624 ἐδημοσίευσε τὴν «Arithmetica logarithmica», εἰς ἣν μὲ τὸ αὐτὸ πλῆθος δεκαδικῶν ψηφίων ἔδωκε τοὺς λογαρίθμους τῶν ἀριθμῶν 1—20.000 καὶ 90.000—100.000, ἀφήσας κενὸν τὸ διάστημα τῶν φυσικῶν ἀριθμῶν ἀπὸ 20.000 ἕως 90.000. Τὸ κενὸν τοῦτο συνεπληρώσεν ἀργότερον, τῷ 1628, ὁ Ὀλλανδὸς μαθηματικὸς Adr. Vlacq. Συνεργάται δὲ τοῦ Μπρίγκς, οἱ E. Gunther καὶ H. Gellibrand, συνέταξαν πίνακας λογαρίθμων τῶν ἡμιτόνων καὶ ἐφαπτομένων, μὲ ἀρκετὴν λεπτομέρειαν (ἀνὰ 1ον λεπτὸν ἑκάστου τόξου) τῶν κυκλικῶν τόξων μέχρις 90 μοιρῶν. Ν. Γ.

**Μπριὲ** (Briey), ***Εὐγένιος***. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τὴν 19 Ἰανουαρίου 1858. Ὑπάλληλος κατ' ἀρχὰς καὶ κατόπιν δημοσιογράφος, ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ὡς δραματικὸς συγγραφεὺς ἐν τῷ «Ἐλευθέρῳ θεάτρῳ», τῷ 1890, μὲ τὸ τρίπρακτον ἔργον του «Ménage d'artistes», τὸ ὁποῖον ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν. Μετὰ δύο ἔτη ἔδωσεν ἀπὸ τῆς αὐτῆς σκηνῆς καὶ μετὰ τῆς αὐτῆς ἐπιτυχίας τὸ τρίπρακτον ἔργον του «Blanchette», τὸ ὁποῖον μεταφρασθὲν καὶ ἑλληνιστὶ («Ἡ ἀσπρούλα») ἐπαίχθη κατ' ἐπανάληψιν ἐπιτυχῶς ἀπὸ τῆς ἐν Ἀθήναις σκηνῆς. Ἀλλὰ τὴν φήμην του ἐστερέωσεν ὁ Μπριὲ τῷ 1900 διὰ τοῦ δράματός του «Ἡ ἐρυθρὰ τήβεννος», ὅπερ καὶ αὐτὸ μεταφρασθὲν ἑλληνιστὶ ἐπαίχθη πλέον ἢ ἅπαξ ἐν Ἀθήναις. Ἄλλα ἔργα ἔδωσε μεταγενεστέρως τὰ ἑξῆς: «Les avariés», «Les remplaçantes», «La maternité», «La petite amie», «La déserteuse», ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ J. Sigaux «L'armature», «Les Hannetons» καὶ ἄλλα τινά. Διὰ τῶν ἔργων του ἐν γένει ὁ Μπριὲ ἐπιχειρεῖ πάντοτε νὰ λύσῃ σοβαρὰ κοινωνικὰ προβλήματα. Ἡ θέσις, ἣν προβάλλει πάντοτε, τοῦ χρησιμεύει ὡς πρόσχημα πρὸς καλλιτεχνικὴν ἀνάπτυξιν τοῦ δράματος, ἐκ τῆς δράσεως δὲ αὐτοῦ ἐκπορεύεται, τρόπον τινά, ἡ θέσις καὶ οὐχὶ ἡ δρᾶσις ἐκ τῆς θέσεως. Διὰ τὸν Μπριέ, οἱ δραματικοὶ συγγραφεῖς δέον νὰ εἶναι—οὕτω τοὺς ἀπεκάλεσεν—οἱ «commis voyageurs» τῶν ἰδεῶν, ὀφείλοντες νὰ φέρουν ἠθικήν, ἀλλὰ καὶ ψυχικὴν ἀνακούφισιν εἰς τὴν ἀνθρωπότητα. Ν. Ι. Λ.

**Μπριέν**, ἢ ***Μπριὲν-λὲ-Σατὼ*** (Brienne ἢ Brienne le-Château λατιν. Briona) [*Γεωγρ.*]. Ἱστορικὴ κωμόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Ὤμπ, ἀπέχουσα 24 χλμ. ἀπὸ τοῦ Μπάρ-σύρ-Ὤμπ. Κάτ. 1.930. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἦτο ἕδρα κομητείας, τῆς ὁποίας οἱ ἄρχοντες πολλάκις διεκρίθησαν εἰς τοὺς ἐν Λωραίνῃ καὶ Ἀνατολῇ ἀγῶνας. Εἰς τὸ ἐν αὐτῇ παλαιὸν μοναστήριον ἐστεγάζετο ἀπὸ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος στρατιωτικὴ σχολή, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐμαθήτευσε καὶ ὁ Ναπολέων Βοναπάρτης κατὰ τὰ ἔτη 1779—1783. Ἡ Μπριὲν εἶναι κυρίως γνωστὴ ἐκ τῆς παρ' αὐτὴν νίκης τοῦ Ναπολέοντος τῆς 29 Ἰανουαρίου 1814 (βλ. κατ.).

— [*Στρατ. Ἱστορ.*] Κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Γαλλίας τοῦ 1814, τὸ ὑπὸ τὸν Μπλύχερ πρωσσορωσικὸν στράτευμα (30.000 ἄνδρες) ὑπεχώρησε περὶ τὰ μέσα Ἰανουαρίου 1814 εἰς Μπριέν. Κατ' αὐτοῦ ἐπῆλθεν ὁ Ναπολέων (12.000 ἄνδρες, τελείως ἀνάσκητοι) τὴν 29ην Ἰανουαρίου, νομίζων ἀρχικῶς ὅτι ἐπρόκειτο περὶ ἀντιπάλου ὀπισθοφυλακῆς, ἀλλά, καὶ ἅμα ἐπληροφορήθη παρὰ τοῦ ἱππικοῦ του ὅτι ἐπρόκειτο περὶ κατὰ πολὺ ἀνωτέρων ἐχθρικῶν δυνάμεων, ἐπέμεινε νὰ ἐξακολουθήσῃ τὴν ἐπίθεσιν. Μετὰ ἀγῶνα, ἀπώθησε τὸν Μπλύχερ, ἐπιζητήσαντα ἀκάρπως ν' ἀνακαταλάβῃ τὸν πύργον τῆς Μπριέν. Ὁ ἀγὼν οὗτος ἔχει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι, καίτοι ὁ Ναπολέων εὑρέθη πρὸ δυνάμεων ἀσυγκρίτως ἀνωτέρων, δὲν ἀπηγορεύθη τὴν ἐπίθεσιν, ἐπιτυχὼν πλήρως εἰς τὴν τακτικὴν ἐξέλιξιν τοῦ ἀγῶνός του, ἀδιαφόρως ἂν στρατηγικῶς δὲν παρεκώλυσε τὸν Μπλύχερ νὰ ἐπιτύχῃ τοῦ σκοποῦ του, τῆς διὰ χρονοτριβῆς παροχῆς χρόνου πρὸς συγκέντρωσιν τῶν δυνάμεών του. Ν. Θ. Κ.

**Μπριὲντς** (Brienz) [*Γεωγρ.*]. Ἐλβετικὸν χωρίον εἰς τὸ καντόνιον τῆς Βέρνης, κείμενον εἰς ὕψος 604 μέτρων ὑπὲρ τὴν θάλασσαν, παρὰ τὴν ὁμώνυμον λίμνην. Κάτ. (1920) 2.500. Ἔχει ζωηρὰν τουριστικὴν κίνησιν, παράγει δὲ καὶ γνωστότατον εἶδος ἐλβετικοῦ τυροῦ. —Ω.

**Μπριὲρ ντὲ λ' Ἴλ** (Brière de l'Isle), ***Λουδοβῖκος-Ἀλέξανδρος***. Γάλλος στρατηγός, γεννηθεὶς ἐν Μαρτινίκᾳ τὴν 4ην Ἰουνίου 1827 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1896. Γενόμενος ἀξιωματικός, μετέσχε τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Κίνας καὶ τῆς Κοχιγκίνας (1859—1866), διέπρεψε δὲ κατὰ τὴν ἅλωσιν τῶν ὀχυρωμάτων τοῦ Κι-Χοά. Κατὰ τὸν Γαλλο-γερμανικὸν πόλεμον (1870), διοικῶν συντάγμα τῶν πεζοναυτῶν, διεξήγαγε τὴν ἡρωϊκὴν ἄμυναν τοῦ Μπαζέγι. Βραδύτερον ἐγένετο διοικητὴς τῆς Σενεγάλης καὶ τῷ 1883 ἀπεστάλη ὡς διοικητὴς τῆς μεραρχίας εἰς Τονκῖνον, ὅπου κατέλαβε τὴν πόλιν Λάγκ-Κὲπ καὶ ἐνίκησε τοὺς Κινέζους εἰς πλείστας μάχας. Θ. Β.

**Μπριέστα** (Briesta) [*Παραλ. Γεωγρ.*]. Ἀδριατικὸς λιμὴν παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Ναρέντα (πλάτ. 42° 55' Β., μῆκ. 17° 31' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2713: Curzola to Cattaro). Σ. Ε. Λ.

**Μπριζὲ** (Brizeux), ***Ἰούλιος***. Γάλλος ποιητὴς ἐκ Βρετάνης (1803—1858). Τῷ 1827 ἀνεβίβασεν ἀπὸ σκηνῆς τοῦ Γαλλικοῦ Θεάτρου τὴν μονόπρακτον κωμῳδίαν «Ρακίνας», γραφεῖσαν ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Φιλίππου Μπουζόνι. Ταξιδεύσας εἶτα ἐπανειλημμένως εἰς Ἰταλίαν, ἐμελέτησε τὴν ἰταλικὴν φιλολογίαν καὶ μετέφρασεν ἐμμέτρως εἰς τὴν γαλλικὴν τὴν «Θείαν Κωμῳδίαν» τοῦ Δάντη. Ὑπὸ τὴν ἐπίρρειαν τῆς ἰταλικῆς φιλολογίας τελοῦν τὰ ἔργα του: «Πριμὲλ ἐλ Νόλα» (1842) καὶ «Οἱ Τριμερεῖς» (Ternaires), ποιητικὸν ἔργον ὅπερ βραδύτερον ἐξεδόθη ὑπὸ τὸν τίτλον «Τὰ χρυσᾶ ἄνθη». Τὰ μᾶλλον ἐνδιαφέροντα ἔργα τοῦ Μπριζὲ εἶναι τὰ εἰς τὴν λαϊκὴν διάλεκτον τῆς Βρετάνης συντεθειμένα ᾄσματα ὑπὸ τὸν τίτλον «Telen-Aroor» (1844) καὶ τὸ ποίημα «Οἱ Βρετόνοι», ἐν οἷς ψάλλει μετὰ λυρισμοῦ τὰ ἔθιμα, τοὺς θρύλους καὶ τὰς παραδόσεις τῆς χώρας του. Ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιητικαὶ Ἱστορίαι» συλλογὴ μικρῶν ἱστοριῶν ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τὰ ἅπαντά του ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1912 ἐν Παρισίοις. Γ. Ι. Β.

**Μπρίζεν** (Briesen, πολων. Wabrzesno) [*Γεωγρ.*]. Παλαιὰ πολωνικὴ πόλις ἐν τῇ δυτικῇ Πρωσσίᾳ, ἀνήκουσα ἤδη ἀπὸ τοῦ 1919 εἰς τὴν Πολωνίαν. Κάτ. (1910) 8.200. Ἔχει ζωηρὸν ἐμπόριον δημητριακῶν καὶ ἵππων πολυτελείας. —Ω.

**Μπριζιγκέλλα** (Brisighella) [*Γεωγρ.*]. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ τῆς Ραβέννας. Ἔχει 13.000 κατοίκους ἀσχολουμένους εἰς τὴν κτηνοτροφίαν. Γ. Ι, Β.

**Μπριΐ** (Briey) [*Γεωγρ.*]. Πολίχνη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μὲρτ-ὲ-Μοζέλ, ἀπέχουσα 82 χλμ. τοῦ Νανσύ. Κάτ. 2.670. Εἶναι κυρίως γνωστὴ ἐκ τῶν παρ' αὐτὴν φερωνύμων μεταλλείων σιδήρου, ἅτινα, μολονότι ἔχουσι βάθος 50—250 μ. καὶ περιεκτικότητα εἰς σίδηρον 35—36 % μόνον, ἀποδίδουσιν ἐν τούτοις τεραστίας ποσότητας μεταλλεύματος, ἐρχόμενα ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης πρῶτα ἐκ πάντων τῶν μεταλλείων τῆς Εὐρώπης καὶ μεταξὺ τῶν κυριωτέρων τοῦ κόσμου ὅλου. Κατὰ τοὺς γενομένους ὑπολογισμούς, ἡ ἐκτεταμένη σιδηροῦχος λεκάνη τοῦ Μπριΐ περιλαμβάνει 30 ἑκατομ. τόννων μεταλλεύματος μὲ μέσην περιεκτικότητα εἰς σίδηρον 30 %, ἐπαρκοῦσα δι' ἐκμετάλλευσιν ἐπὶ ὁλόκληρον ἑκατονταετίαν, ἐὰν λειτουργοῦσιν ἐν αὐτῇ 15—20 ἐγκαταστάσεις ἀνορύξεως τοῦ μεταλλεύματος. Χ. Δ.

**μπρὶκ** (τὸ) [*Βρωματολ.*]. Εἶδος ἐρυθροῦ χαβιαρίου ἀποτελουμένου ἐκ τῶν ᾠῶν τοῦ σολωμοῦ. Προέρχεται ἐκ τῆς Ἄπω Ἀνατολῆς καὶ εἶναι λίαν εὔγευστον. Περιέχει μικρὰν ποσότητα ἅλατος, τὸ μέγεθος τῶν ᾠῶν εἶναι ἀρκούντως μέγα καὶ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ ἀέρος ξηραίνεται εὐκόλως. Σ. Γ.

**Μπρικὲ** (Briquet), ***γάγγραινα τοῦ*** — [*Ἰατρ.*]. Γάγγραινα τῶν διασταλέντων βρογχικῶν ἄκρων. Ποικιλία γαγγραίνης τῶν βρόγχων, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπιδρᾷ ἡ βρογχεκτασία (bronchectasie). Ἡ βρογχικὴ διαστολὴ εἶναι μία τῶν αἰτίων τῆς γαγγραίνης, καὶ ἡ γάγγραινα καταστρέφουσα τοὺς ἱστοὺς ἐπιφέρει ἐπίσης τὴν βρογχικὴν διαστολήν. Γ. Σ. Λ.

— **Μπρικὲ** (Briquet), ***σύνδρομον τοῦ*** — [*Ἰατρ.*]. Διαφραγματικὴ παράλυσις ὑστερικῆς προελεύσεως. Γ. Σ. Λ.

**μπρικέττα** (ἡ)· πλίνθος ἐν γένει μικροῦ μεγέθους (γαλλ. briquette)· || εἰδικώτερον, πλίνθος ἐκ κόνεως γαιανθράκων (βλ. λ. *βρικέττα*).

**μπρίκι** (τό)· μετάλλινον σκεῦος χρησιμοποιούμενον διὰ τὴν παρασκευὴν τοῦ καφὲ ἢ ἄλλων ἀφεψημάτων· ἄλλως *ἰμπρίκι*.

**μπρίκι** (τὸ) [*Ναυτ.*]· τύπος ἱστιοφόρου, τὸ *βρίκιον* (βλ. λ.).

**Μπρίκκιος** (Briccius ἢ Brictius), ***ἅγιος***. Ἐγένετο κατὰ τὴν παράδοσιν πρῶτος ἐπίσκοπος τοῦ Σπολέτο, χειροτονηθεὶς κατὰ τὸ 50 μ.Χ. Οἱ Βολλανδισταὶ ὅμως θεωροῦν αὐτὸν ἐπίσκοπον τῆς Μαρτάνα ἢ Μάρτουλας, συλληφθέντα καὶ βασανισθέντα κατὰ τοὺς διωγμοὺς τοῦ Διοκλητιανοῦ, ἔπειτα δέ, μετὰ τὴν ἀπελευθέρωσίν του, προσελκύσαντα πολλοὺς εἰς τὸν Χριστιανισμόν. Ἀπὸ τοῦ Βρικκίου τοῦτον πρέπει νὰ διακριθῇ ὁ ἅγιος *Βρίκκιος*, ἐπίσκοπος τοῦ Τούρ, μαθητὴς καὶ διάδοχος τοῦ ἁγίου Μαρτίνου, ἀκμάσας κατὰ τὰ μέσα τοῦ Ε' αἰῶνος. Ἡ μνήμη τοῦ πρώτου ἑορτάζεται τῇ 9 Ἰουλίου, τοῦ δὲ δευτέρου τῇ 13 Νοεμβρίου. Κ. Ι. Δ

**Μπρῖκος, *Θεόδωρος*.** Σύγχρονος Ἕλλην λόγιος καὶ ποιητής, καταγόμενος ἐκ Συρράκου τῆς Ἠπεί-

Digitized by Google

ρου, γεννηθεὶς δ' ἐν Μπαρλέτᾳ τῆς Ἰταλίας, ἔνθα, φεύγουσα τὸν τουρκικὸν διωγμόν, εἶχεν ἐγκατασταθῆ ἡ οἰκογένειά του. Διαμένων ἐν Ἰταλίᾳ καὶ γράφων ἀποκλειστικῶς εἰς ἰταλικὴν γλῶσσαν, ἀνήκει εἰς τὴν ἰταλικὴν φιλολογίαν, ἐν ᾗ, μετὰ πλείστας μεταφράσεις του ἐκ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς ποιήσεως (Μελέαγρος, Ἀνακρέων, Σαπφώ), κατέστησε γνωστὸν τὸ ἔργον τοῦ ἡμετέρου ποιητοῦ Βαλαωρίτου. Ἐξέδωκε τὰς ἑξῆς συλλογὰς πρωτοτύπων ποιημάτων: «Στίχοι» (Βολωνία 1907), «Ἑλλὰς καὶ Ἰταλία· προφητεῖαι ἑνὸς Ἕλληνος» (Μπαρλέτα 1914), «Ὁ κλοιὸς τῆς Σφιγγὸς» (Μπαρλέτα 1927) καὶ «Τὸ πρόσωπον τῆς Ἀθηνᾶς» (Τουρῖνον 1930). Τ. Α.

**Μπρικφίλντερ** (Brickfielder) *[Μετεωρολ.]*. Ὄνομα τοπικοῦ ἀνέμου τῆς Αὐστραλίας, ἔχοντος διεύθυνσιν ἀπὸ βορρᾶ καὶ πνέοντος κατὰ τοὺς μῆνας Νοέμβριον, Δεκέμβριον καὶ Ἰανουάριον. Οἱ ἄνεμοι οὗτοι προκαλοῦσιν ἐξαιρετικὴν ἄνοδον τῆς θερμοκρασίας καὶ κατακαίουσι, καταστρέφοντες τελείως, τὴν φυτικὴν βλάστησιν. Θ. Θ. Φ.

**Μπρὶλ** (Bril), ***Ματθαῖος***. Φλαμανδὸς ζωγράφος (1550—1584). Εἰργάσθη κατὰ τὸ πλεῖστον ἐν Ρώμῃ. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Κυνήγι ἐλάφου» (Λοῦβρον), «Ὁ Χριστὸς θεραπεύων τὸν παραλυτικὸν» (μουσεῖον Νεαπόλεως), «Ὁ νεαρὸς Τωβίας καὶ ἡ σύζυγός του», «Ἡ παρθένος, ὁ παῖς Ἰησοῦς καὶ δύο ἄγγελοι» (πινακοθήκη Δρέσδης) κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

— **Μπρὶλ** (Bril), ***Παῦλος***. Φλαμανδὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης (1556—1626). Διδάσκαλός του ὑπῆρξεν ὁ ἀδελφός του *Ματθαῖος*. Ἐξειργάσθη ἐν τῷ Βατικανῷ μίαν τοπιογραφίαν μήκους εἴκοσι μέτρων, ἐν ᾗ εἰκονίζεται «Ὁ ἅγιος Κλήμης προσδεθεὶς εἰς ἄγκυραν καὶ ριφθεὶς εἰς τὴν θάλασσαν». Ἕτερα ἔργα του εἶναι: «Ἀκροποταμιὰ» (ἐν Μαδρίτῃ), «Κυνήγι ἀγριοπαπιῶν», «Ὁ Πὰν καὶ ἡ σῦριγξ», «Ὁ ἅγιος Ἱερώνυμος προσευχόμενος», «Ψαρᾶδες» καὶ «Ἡ Ἄρτεμις μὲ τὰς νύμφας της» (Λοῦβρον), «Κυνήγι ἀγριοχοίρου», «Κυνήγι ἐλάφου», «Ὁ ἅγιος Παῦλος ἐν τῇ ἐρήμῳ» «Θαλασσογραφίαι» καὶ πέντε τοπιογραφίαι (πινακοθήκη Οὐφφίτσι Φλωρεντίας). Ι. Μ. Π.

**μπρίλια** (ἡ), καὶ *μπλίρα [Λαογρ.]*. Λεπτότατον χρυσοῦν σύρμα, διὰ τοῦ ὁποίου, κατὰ μικρασιατικὸν ἔθιμον, ἐκοσμεῖτο ἀφθόνως ἡ νύμφη κατὰ τὴν ἱεροτελεστίαν τοῦ γάμου. Τεμάχια τούτου ἀποκόπτουσα ἔδιδεν ἡ νύμφη καὶ εἰς τοὺς προσκεκλημένους, ἰδίως δὲ εἰς τὰς νεάνιδας, εὐχομένη τὴν ταχεῖαν αὐτῶν ἀποκατάστασιν. Ἐπίσης δι' αὐτῶν περιδένονται καὶ αἱ λαμπάδες τοῦ Πάσχα.

**Μπρὶλλ** (Brill), ***νόσος τοῦ —*** *[Ἰατρ.]*. Νόσος παρουσιάζουσα πολλὴν συμπτωματολογικὴν ὁμοιότητα πρὸς τὸν ἐξανθηματικὸν τῦφον, ἀλλὰ διάφορος τούτου. Ἐμελετήθη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Natham Brill ἐπὶ 17 ἀσθενῶν, οἵτινες ἐθεωροῦντο ὡς προσβεβλημένοι ὑπὸ τυφοειδοῦς πυρετοῦ, παρὰ τοῖς ὁποίοις ὅμως ἡ ἀντίδρασις τοῦ Widal ἐξεδηλοῦτο πάντοτε ἀρνητική, δὲν προηγεῖτο προδρομικὸν στάδιον καὶ ἡ νόσος ἐξειλίσσετο ταχύτερον τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ. Τῆς νέας ταύτης νόσου ἡ συμπτωματολογία εἶναι: αἰφνιδία εἰσβολή, πρόωρος ἐμφάνισις διασπάρτου ἐξανθήσεως ἐφ' ὅλων τῶν σημείων τοῦ σώματος, ἥτις δὲν ἐξαλείφεται τελείως ὑπὸ τὴν πίεσιν τοῦ δακτύλου· διάρκεια τῆς νόσου 12 - 14 ἡμέραι, λῆξις δ' αὐτῆς διὰ πτώσεως τοῦ πυρετοῦ ἐν εἴδει κρίσεως ἢ τοὐλάχιστον διὰ βαθμιαίας ταχείας πτώσεως, μὴ ὑπερβαινούσης τὰς 4 ἡμέρας. Εἰς τὰς κλινικὰς ὁμοιότητας ὅμως τῆς νόσου πρὸς τὸν ἐξανθηματκὸν τῦφον ἀντιτάσσονται ἡ μεγάλη καλοήθεια ταύτης (οὐδεμία θνησιμότης) καὶ ἡ ἔλλειψις μεταδοτικότητος (περιπτώσεις μένουσαι σχεδὸν πάντοτε μεμονωμέναι ἐντὸς τῆς οἰκογενείας ἢ τῆς οἰκίας). Σημειοῦται ἔλλειψις ἢ τοὐλάχιστον ἄκρα σπανιότης φθειρῶν ἐπὶ τοῦ ἀσθενοῦς ἢ περὶ τὸν ἀσθενῆ. Εἰς τὴν Ἀμερικήν, καθὼς καὶ εἰς τὴν Πολυνησίαν, εἰς τὴν Αὐστραλίαν, εἰς τὴν Γαλλίαν —ὅπου ἐσημειώθησαν περιπτώσεις καλοήθους ἐνδημικοῦ τύφου—παρετηρήθη τελεία σχεδὸν ἔλλειψις φθειρῶν παρὰ τοῖς ἀρρώστοις, εἰς τοὺς περὶ αὐτούς, ὡς καὶ εἰς τὸν ὑπόλοιπον πληθυσμόν. Τὰ παράσιτα ταῦτα, τῶν ὁποίων ὁ ρόλος εἶναι ὁμοφώνως παραδεδειγμένος ὅπου ἐνδημεῖ ὁ ἐξανθηματικὸς τῦφος, δὲν παρεμβαίνουσιν εἰς τὴν νόσον τοῦ Brill, ἥτις πιθανώτατα διαδίδεται διὰ τῶν μυῶν μᾶλλον ἢ ἀπὸ ἀνθρώπου εἰς ἄνθρωπον. Ἡ ἐμφάνισίς της ἐκδηλοῦται περίπου συγχρόνως εἰς πολλὰς χώρας, ὅπου ἐσημειώθη ἤδη ὁ τῦφος μετὰ τῶν κλασσικῶν του χαρακτηριστικῶν.

Ἡ νόσος τοῦ Brill ἀποκαλεῖται ἄλλως «ἐνδημικὸς καλοήθης τῦφος».

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Netter* «Le typhus endémique bénin (Maladie de Brill)», Académie de médecine (19 Juillet 1927). *Brill*, «An acute infectious disease of unknown Origin» ἐν American Journal of medical Sciences (1910). *Brill*, «A Study of seventeen cases of a disease clinically ressembling typhoid fever but without the Widal Reaction». New York Medical Journal, 9 et 16 Janvier 1898. Ι. ΚΑΜΙΝΗΣ

**μπριλλάντι**, ἢ ***μπριγιάντι*** (τὸ) (brillant). Ὀνομασία ἀδάμαντος ἐκ τοῦ τρόπου τῆς κατεργασίας αὐτοῦ (βλ. λ. *αἰγληφόρος* καὶ λ. *ἀδάμας*).

**μπριλλαντίνη** (ἡ)· βλ. *μπριγιαντίνη*.

**μπριλλαντοχρώματα** (τὰ) *[Βιομ. Χημ.]*. Εἰς τὴν τάξιν αὐτὴν κατατάσσονται πλεῖστα ὅσα συνθετικὰ χρώματα, τὰ ὁποῖα οὐδεμίαν ἔχουσι μεταξύ των ὁμοιότητα χημικήν, κοινὸν δὲ μόνον τὸ πρόθεμα *μπριλλαντο-* εἰς τὴν ὀνομασίαν των, πρὸς διάκρισιν ἀπὸ ἄλλων συγγενῶν ἢ συναφῶν χρωμάτων. Τὰ σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι:

1) Τὸ μπριλλαντοακριδινοπορτοκαλλόχρουν, ἀνῆκον εἰς τὴν τάξιν τῶν ἀκριδινοχρωμάτων· κατάλληλον διὰ βάμβακα καὶ μέταξαν. 2) Τὸ μπριλλαντοαλιζαρινοκυανοῦν· χρωστικὴ τῆς ὁμάδος τῆς θειαζίνης, κατάλληλος διὰ τὸν βάμβακα, τὸ ἔριον καὶ τὴν μέταξαν κατόπιν προστύψεως διὰ χρωμίου. 3) Ἡ μπριλλαντοαλιζαρινοκυανίνη· χρωστικὴ τῆς ἀνθρακινόνης τοῦ χαρακτῆρος τῆς *ἀλιζαρινοκυανίνης*. 4) Ἡ μπριλλαντοαλιζαρινοβιριδίνη· συγγενὴς πρὸς τὴν ἀλιζαρινοβιριδίνην. 5) Ἡ μπριλλανταζουρίνη· δισαζωχρωστική, βάπτει ἀπ' εὐθείας ἐν ἁλατούχῳ λουτρῷ τὸν βάμβακα. 6) Τὸ μπριλλαντοβενζοκυανοῦν. 7) Τὸ μπριλλαντοβενζοϊῶδες γνήσιον· ἀπ' εὐθείας βάπτουσα διαζωχρωστική, λίαν ἀνθεκτικὴ διὰ τὰ βαμβακερά. 8) Τὸ μπριλλαντοβενζοπράσινον· ἀζωχρωστική. 9) Τὸ μπριλλαντοβενζυλοκυανοῦν γνήσιον· διὰ τὸ ἔριον. 10) Τὸ μπριλλαντοβενζυλοϊῶδες· ὄξινον χρῶμα τοῦ τριφαινυλομεθανίου. 11) Τὸ μπριλλαντοκυανοῦν· βασικὴ χρωστική. 12) Τὸ μπριλλαντομπορντώ· ὀξίνη ἀζωχρωστική. 13) Ἡ μπριλλαντοκαρμοϊσίνη. 14) Τὸ μπριλλαντοχρωμοκυανοῦν. 15) Ἡ μπριλλαντοκοχενίλλη· ὀξίνη ἀζωχρωστική. 16) Ἡ μπριλλαντοκροκεΐνη· ὀξίνη δισαζωχρωστική. 17) Τὸ μπριλλαντοδελφινοκυανοῦν· ὀξαζινοχρωστική. 18) Τὸ μπριλλαντοδιανιλοκυανοῦν, ἀντιστοιχοῦν πρὸς τὸ *βηταμινοκυανοῦν*. 19) Τὸ μπριλλαντοδιανιλοπράσινον· ἀζωχρωστική. 20) Τὸ μπριλλαντοκυανοῦν γνήσιον· ἀπ' εὐθείας βάπτουσα ἀζωχρωστική, διὰ τὸν βάμβακα ἐξόχου ἀνθεκτικότητος. 21) Τὸ μπριλλαντοκυανοῦν βερνικίων· βασικὴ χρωστικὴ τοῦ τριφαινυλομεθανίου. 22) Τὸ μπριλλαντοκίτρινον· ἀπ' εὐθείας βάπτουσα δισαζωχρωστική. 23) Ἡ μπριλλαντογερανίνη. 24) Τὸ μπριλλαντοϊνδικόν· τετραχλωριωμένον ἰνδικόν. 25) Τὸ μπριλλαντοκογκό· δισαζωχρωστική. 26) Τὸ μπριλλαντοκογκοκυανοῦν. 27) Τὸ μπριλλαντοκρεζυλοκυανοῦν. 28) Τὸ μπριλλαντοναφθολοκυανοῦν. 29) Τὸ μπριλλαντοπορτοκαλλόχρουν· ὀξίνη ἀζωχρωστική. 30) Ἡ μπριλλαντοφωσφίνη. 31) Τὸ μπριλλαντοπονσώ· ὀξίνη ἀζωχρωστική. 32) Ἡ μπριλλαντοπορφυρίνη· ἀζωχρωστικὴ διὰ τὰ ἡμιμάλλινα. 33) Τὰ μπριλλαντοροδουλινοχρώματα· βασικὰ ἀζινοχρώματα. Τὰ κυριώτερα τὸ κυανοῦν, τὸ ἐρυθρὸν καὶ τὸ ἰῶδες. 34) Τὸ μπριλλαντοξυκυανοῦν· ὄξινον χρῶμα τοῦ τριφαινυλομεθανίου. 35) Ἡ μπριλλαντοξυκαρμίνη. 36) Τὸ μπριλλαντοξυπράσινον. 37) Τὸ μπριλλαντοΰσγινον. 38) Τὸ μπριλλαντομέλαν. 39) Τὸ μπριλλαντοσουλφοερυθρὸν κλπ. Σ. Γ.

**Μπρίλον** (Brilon) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ πόλις τοῦ νομοῦ Ἄρνσμπεργκ τῆς Βεστφαλίας, κειμένη εἰς ὕψος 455 μέτρων ἀπὸ τῆς θαλάσσης. Ἔχει δύο σιδηροδρομικοὺς σταθμοὺς καὶ παλαιὸν μητροπολιτικὸν ναὸν μὲ ἐνδιαφέροντα κειμήλια. Κάτοικοι (1924) 5.900. Ἡ περιφέρειά της εἶναι γεωργικὴ καὶ κτηνοτροφική, ἔχουσα καί τινα ὀρυχεῖα.

**Μπριμὸν** (Brimont) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μάρνη, ἀπέχον 10 χλμ. τῆς Ρέμς. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον τὰ ὀχυρὰ αὐτοῦ ἀπετέλουν τμῆμα τοῦ περικεχαρακωμένου στρατοπέδου τῆς Ρέμς. Καταληφθέντα ὑπὸ τῶν Γερμανῶν (Σεπτέμβριος 1914), ἐχρησίμευσαν εἰς αὐτοὺς ὡς κέντρον βομβαρδισμοῦ τῆς πόλεως καὶ τοῦ λαμπροῦ καθεδρικοῦ ναοῦ της. Οἱ Γάλλοι ἐπεχείρησαν δὶς (13—18 Σεπτεμβρίου 1914 καὶ Ἀπρίλιος 1 17) ἀνεπιτυχῶς νὰ ἀνακαταλάβωσι τὸ Μπριμόν, τέλος δ' ἐγένοντο κύριοι αὐτοῦ μόνον κατὰ τὴν γερμανικὴν ὑποχώρησιν, τὴν 5 Ὀκτωβρίου 1918. Χ. Δ.

**Μπρὶν** (Brin). Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ ναυπηγὸς (1833—1898). Διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ πολεμικοῦ ναυπηγείου τοῦ Λιβόρνου, τῷ 1873 ἐγένετο ὑφυπουργὸς καὶ τῷ 1876 ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν. Τῷ 1892 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ὑπὸ τὸν Τζιλιόττι καὶ μετὰ ταῦτα ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν ὑπὸ τὸν Ρουντίνι. Γ. Ι. Β.

**Μπρίνια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἡ ἐπέκτασις τῆς κωμοπόλεως τοῦ Πόρου πρὸς τὴν δυτικὴν πλευρὰν καὶ μέχρι τοῦ ἰσθμοῦ τῆς *Σφαιρίας*, γενομένη μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Καποδιστρίου σύστασιν τοῦ ἐν τῷ λιμένι τοῦ *Πώγωνος* ναυστάθμου. Κατόπιν ἀπετέλεσε τὴν συνοικίαν τοῦ Ἁγίου Ἀθανασίου (*Μηλιαράκη* Ἀργολ. Κορινθ. 198). Σ. Ε. Λ.

**Μπρινιὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἁγίου Λουκᾶ τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας. Κάτ. (1928) 131. Χ. Δ.

**Μπρὶνκ** (Brink), ***Ἰωάννης***. Ὁλλανδὸς ἱστορικὸς τῆς φιλολογίας καὶ συγγραφεὺς (1834—1901). Διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1884 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς ὁλλανδικῆς φιλολογίας ἐν Leiden καὶ ἔγραψε: «Gerbr. Adr. Bredero» (τιμηθὲν διὰ βραβείου, 1859), «Schets eener geschiedenis der Nederlandsche letterkunde» (1867—1869), «De roman in brieven 1740—1840» (1889), βιογραφίας τοῦ Vondel, Bulwer, Ζολὰ κλπ., μυθιστορήματα διακρινόμενα διὰ τὴν ἀκριβῆ περιγραφὴν τῶν χαρακτήρων («Oost - Indische dames en heeren» (1866), καὶ «De schoonzoon van mevrouw de Roggeveen» (1872—1873, μεταφρασθέντα ἀμφότερα καὶ εἰς τὴν Γερμανικήν). Πλήρης ἔκδοσις τῶν «Μυθιστορημάτων καὶ διηγημάτων» του ἐγένετο τῷ 1885 εἰς 13 τόμους καὶ τῶν «Φιλολογικῶν σκίτσων καὶ κριτικῶν» του τῷ 1882—1888, εἰς 20 τόμους. Γ. Ε. Κ.

**μπρίντα** *[Ναυτ.]*· ὅρος τῆς κοινῆς ναυτικῆς γλώσσης, σημαίνων τὸ *διάξυλον* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μπρίντα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Λακωνίας χωρίου *Βόρειον* (βλ. λ.).

**Μπριντζίνσκι** (Brindzinski), ***σημεῖον τοῦ —*** *[Ἰατρ.]*. 1) Ἀντανακλαστικὸν contro-latéral. Ἔχοντες τὸν ἀσθενῆ ὕπτιον καὶ κάμπτοντες ἰσχυρῶς τὴν κνήμην καὶ τὸν μηρὸν ἐκ τῆς μιᾶς πλευρᾶς, προξενοῦμεν μίαν κίνησιν εἰς τὸ ἕτερον ἄκρον, ἡ ὁποία καλεῖται διὰ τὴν κάμψιν «ἀντανακλαστικὸν παρόμοιον», διὰ δὲ τὴν ἔκτασιν «ἀντανακλαστικὸν ἀντίστροφον, ἢ ἀμοιβαῖον», ὅταν ὑπάρχῃ νωτιαία μηνιγγῖτις. 2) Σημεῖον τοῦ αὐχένος. Εἰς τὴν μηνιγγίτιδα ἡ κάμψις τοῦ αὐχένος πρὸς τὰ ἐμπρὸς προξενεῖ τὴν κάμψιν τῶν κάτω ἄκρων. Γ. Σ. Λ.

**Μπρίντιζι** (Brindisi) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας (βλ. λ. *Βρινδήσιον*).

**Μπρὶντ-λὲ-Μπαὶν** (Brides-les-Bains) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σαβοίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ντορὸν ντὲ Μποζέλ, 6 χλμ. ἀπὸ τῆς Μουτιέρ. Ἔχει σοδοχλωριούχους καὶ σοδοθειούχους θερμοπηγάς, ἐνδεικνυομένας ἐναντίον τῶν στομαχικῶν καὶ ἐντερικῶν παθήσεων, εἶναι δὲ λίαν πολυσύχναστος. Χ. Δ.

**Μπρίντλινγκτον** (Bridlington) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τῆς Ὑόρκης. Κάτ. 22.764. Δύο χλμ. Α. αὐτοῦ κεῖται τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ *Μπρίντλιγκτον Καί*, παρ' αὐτῷ δὲ εὕρηνται μεταλλειοῦχοι πηγαί. Γ. Ι. Β.

— **Μπρίντλινγκτον *κόλπος*** (Bridlington bay) *[Γεωγρ.]*. Κόλπος τῶν Α. ἀκτῶν τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Ὑόρκης, ὁ ἀρχαῖος *Γαβραντουΐκων* (βλ. λ.) κόλπος.

**Μπρὶντς** (Brinz), ***Ἀλοΐσιος***. Γερμανὸς νομομαθὴς καὶ πολιτικὸς (1820—1887). Ὑπῆρξε καθηγητὴς τοῦ ρωμαϊκοῦ δικαίου ἐν Ἐρλάγγῃ, Πράγᾳ καὶ Τυβίγγῃ καὶ βουλευτής. Θεωρεῖται ὡς εἷς τῶν μεγαλυτέρων κοινοβουλευτικῶν ρητόρων τῆς Γερμανίας. Ἔγραψεν: «Lehrbuch der Pandekten» (2 τόμοι, Ἐρλάγγη, 1857—1871), «Zur Lehre von der Kompensation» (Λειψία, 1894), «Zum Rechte der bonae fidei possessio» (Μόναχον, 1875), «Zur contravindicatio» κτλ.

**Μπρίξεν** (Brixen) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὸν ὄνομα τῆς ἰταλικῆς πόλεως *Μπρεσσανόνε* (βλ. λ.).

**Μπριὸν** (Brion), ***Γουσταῦος***. Γάλλος ζωγράφος (1824—1877). Διέπρεψεν ὡς ζωγράφος σκηνῶν τοῦ καθημερινοῦ βίου καὶ ἱστορικῶν ἐπεισοδίων, ἀπέδωκε δὲ μὲ ζωηρὸν καὶ εἰλικρινὲς αἴσθημα τὰ ἔθιμα τῶν παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Ρήνου οἰκούντων χωρικῶν. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ἐσωτερικὸν ἐν Ντάμπαχ», «Ἡ ἀνάγνωσις τῆς Βίβλου ἐν Ἀλσατίᾳ», «Συγκομιδὴ γεωμήλων ἐν Ἀλσατίᾳ», «Ἐνταφιασμὸς εἰς τὰ Βόσγια», «Ἡ θαυματουργὸς πηγή», «Σαλτιμπάγκος τοῦ μεσαίωνος», «Ἀλσατιανὸς γάμος», «Τὸ τραπέζι τοῦ γάμου», «Ἡ ἡμέρα τοῦ βαπτίσματος», «Ὁ Ἰησοῦς βαδίζων ἐπὶ τῶν ὑδάτων», «Χωρικοὶ τῶν Βοσγίων φεύγοντες πρὸ τῆς ἐχθρικῆς εἰσβολῆς» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

—**Μπριὸν** (Brion), ***Φρειδερίκη***. Θυγάτηρ τοῦ πάστορος Ἰωάννου-Ἰακώβου Μπριόν, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Φρειδερίκη φὸν Σέζενχάϊμ* (1752—1787). Ὁ Γκαῖτε εἶδεν αὐτὴν διὰ πρώτην φορὰν ὡς νεαρὸς φοιτητὴς ἐν Στρασβούργῳ, τὴν ἠγάπησε παραφόρως καὶ ἀντηγαπήθη παρ' αὐτῆς. Τὸ ἐρωτικὸν τοῦτο εἰδύλλιον ἐτερματίσθη διὰ τῆς ἀναχωρήσεως τοῦ Γκαῖτε ἐκ Στρασβούργου. Ἡ Φρειδερίκη ἔμεινε πιστὴ εἰς τὸν πρῶτον ἔρωτά της καὶ οὐδέποτε ἠθέλησε νὰ ἔλθῃ εἰς κοινωνίαν γάμου μετ' ἄλλου ἀνδρός. Ἡ ἱστορία τοῦ ἔρωτός της ἀποτελεῖ ἓν τῶν ὡραιοτέρων ἐπεισοδίων τοῦ ἔργου τοῦ Γκαῖτε «Dichtung und Wahrheit», εἰς πολλὰς δὲ γυναικείας μορφάς, ὡς τὴν Μαργαρίταν τοῦ «Φάουστ», τὴν Μαρίαν εἰς τὸ «Götz» καὶ «Clavigo», ἡ εἰκὼν αὐτῆς ἀναζῇ ἐξιδανικευομένη ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. Α. Δ.

**Μπριόνι** (Brioni) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Συστὰς Ἀδριατικῶν νήσων προσκειμένων τῇ δυτικῇ ἀκτῇ τῆς

Digitized by Google

Ἰστρίας (πλάτ. 44°59′ Β., μήκ. 13°41′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 201: Gulfs of Venice and Trieste), ἀφ' ἧς χωρίζονται διὰ τοῦ στενοῦ τῆς Φαζάνα (Fazana). Ἀπετέλουν ἄλλοτε διὰ τῶν ἐπ' αὐτῶν σπουδαιοτάτων ὀχυρωτικῶν ἔργων προκεχωρημένα σημεῖα τῆς ἀμύνης τοῦ ναυστάθμου τῆς Πόλας. Ἡ μεγαλυτέρα τούτων (Brioni Maggiore) ἀνεπτύχθη εἰς τόπον ἐξοχικῆς διαμονῆς, ἀνεγερθέντων ἐπ' αὐτῆς μεγάλων ξενοδοχείων. Ἐπὶ τῶν νησίδων ὑπάρχουσι λατομεῖα ὡραίου φαιοῦ μαρμάρου, ἐξ οὗ εἶναι κατεσκευασμένα πλεῖστα μέγαρα τῆς Βενετίας. Σ. Ε. Λ.

**Μπριοσέ**, ἢ **Μπριότσι** (γαλλ. Brioché, ἰταλ. Briocci), **Ἰωάννης**. Ἰταλὸς ἐκ καταγωγῆς, ἀνδρεικελοπαίκτης, ζήσας κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος ἐν Γαλλίᾳ, ὅπου περιέφερε τὸ μικροσκοπικόν του θέατρον ἀπὸ πανηγύρεως εἰς πανήγυριν, ἐξασκῶν ἅμα καὶ τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ὀδοντιάτρου. Εἶχε γίνει διάσημος διὰ τοὺς εὐφυεῖς διαλόγους τῶν ἀνδρεικέλων του καὶ ἔλαβε τὴν τιμὴν νὰ δώσῃ παραστάσεις καὶ εἰς τὰ ἀνάκτορα τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'. Ὁ υἱός καὶ ὁμότεχνος αὐτοῦ **Φραγκῖσκος** διετήρησε τὴν φήμην τοῦ πατρός του καὶ ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Μπουαλὼ εἰς τὴν «Πρὸς Ρακίναν ἐπιστολήν» του. —Ω.

**Μπριόσκο** (Briosco), **Ἀνδρέας**, ὁ ἐπιλεγόμενος *Il Riccio*. Ἰταλὸς γλύπτης, χρυσοχόος καὶ χαράκτης (1470—1532). Ὑπῆρξε παραγωγικώτατος, τὰ ὀρειχάλκινα δὲ μνημεῖα, ἅτινα ἐξειργάσθη, τάσσονται μεταξὺ τῶν καλυτέρων δημιουργιῶν τῆς σχολῆς τῆς Παδούης κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα. Ι. Μ. Π.

**Μπριούσωφ**, **Βαλέριος Ἰακώβλιεβιτς**. Ρῶσος ποιητὴς (1873—1921). Ἐσπούδασε φιλολογίαν καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν πολυμαθεστέρων ἀνδρῶν τῆς ἐποχῆς του. Ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον διὰ τῆς ποιητικῆς συλλογῆς «Τὰ ἀριστουργήματα» (1895), κατόπιν δ' ἐδημοσίευσε: «Me eum esse», «Tertia Vigilia», «Urbi et Orbi», «Στέφανος», «Οἱ δρόμοι καὶ τὰ σταυροδρόμια», «Ὁ καθρέπτης τῶν σκιῶν», εἰς πεζὸν δὲ λόγον: «Τὸ τέλος τῆς γῆς», «Ὁ ἄγγελος τοῦ πυρός», τὴν πραγματείαν «Περὶ τέχνης» κ. ἄ. Τὰ ποιήματά του κατέστησαν αὐτὸν ταχέως ἔνδοξον, θεωρεῖται δὲ ὡς ὁ μέγιστος τῶν συγχρόνων ποιητῶν τῆς Ρωσίας. Μεταχειρισθεὶς πάντα τὰ ποιητικὰ σχήματα καὶ ὅλα τὰ μέτρα, διήνοιξεν εὐρυτάτους ὁρίζοντας εἰς τὴν ρωσικὴν ποίησιν. Θ. Β.

**Μπρισγκάου** (Brisgau) *[Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Γερμανίας, περιλαμβανομένη νῦν ἐν τῇ ὁμοσπόνδῳ πολιτείᾳ τῆς Βάδης καὶ ἐκτεινομένη ἐπὶ ἀμφοτέρων τῶν κλιτύων τοῦ ὄρους Μέλας Δρυμός, ἀπὸ τοῦ Κίντσιγκ μέχρι τῆς πόλεως Βασιλείας. Κυριώτερον κέντρον της εἶναι τὸ Φράιμπουργκ. Ἡ χώρα αὐτὴ ἀπετέλει ἄλλοτε, ἀπὸ τοῦ ΙΑ' μέχρι τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ἰδίαν κομητείαν, ἀνήκουσαν εἰς τὸν οἶκον τῶν Ζαίχριγκεν, περιελθοῦσα δὲ ἀπὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν Αὐστρίαν παρέμεινεν ὑπ' αὐτὴν ἐπὶ μακρότατον χρονικὸν διάστημα. Ἀπὸ τῆς συνθήκης τοῦ Πρεσβούργου (1805) περιῆλθεν εἰς τὴν Βάδην, εἰς ἣν καὶ ὑπάγεται ἔκτοτε. Χ. Δ.

**μπρισίμι** (τό), καὶ **μπιρσίμι**· δημοτ., μεταξίνη κλωστὴ πρὸς ῥαφὴν (τουρκ. ibrisim).

**Μπρισιμιτζάκης**, **Ἰωάννης**. Πολιτευτὴς καὶ δικηγόρος ἐξ Ἡρακλείου τῆς Κρήτης. Συμμετέσχεν ὡς ἔφεδρος ἀνθυπολοχαγὸς πυροβολικοῦ εἰς τὴν κρητικὴν ἐπανάστασιν 1897, διοικήσας τὸν ὑπὸ τὸν Ἀριστοτέλην Κόρακαν οὐλαμὸν τοῦ πυροβολικοῦ (ἐπίθεσις κατὰ τοῦ φρουρίου Ἱεραπέτρας τῆς 12 Φεβρουαρίου 1897, κατὰ τοῦ φρουρίου Σπιναλόγκας τῆς 27 Φεβρουαρίου 1897, μάχαι Ἀρχανῶν Μαρτίου—Ἀπριλίου 1897, μάχαι Κανλὶ-Καστέλλι τῆς 14 Ἰουνίου 1897). Συμμετέσχεν ὡσαύτως εἰς τὸν πόλεμον 1912—1913. Ἐξελέγη κατ' ἐπανάληψιν βουλευτής, ἀντιπροσωπεύσας τὸν νομὸν Ἀττικοβοιωτίας (1912—1920). Ν. ΚΛΣ

**Μπρίσμπαιν** (Brisbane) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Αὐστραλίας καὶ πρωτεύουσα τῆς Κουήνσλαντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ὁμωνύμου ποταμοῦ. Κάτ. 274.500. Ἔχει ἐμπόριον δερμάτων καὶ πανιοειδῆ βιομηχανίαν. Γ. Ι. Β.

**Μπρίσμπαιν** (Brisbane), **Ἀρθοῦρος**. Ἀμερικανὸς ἐκδότης ἐφημερίδων, γεννηθεὶς τῷ 1864. Ἐγένετο διευθυντὴς τοῦ «Ἑσπερινοῦ Ἡλίου», ἀπὸ τοῦ 1890—1897 εἰργάσθη εἰς τὸν «Κόσμον» τῆς Νέας Ὑόρκης ὡς διευθυντὴς-ἐκδότης καὶ ἀπὸ τοῦ 1897—1921 ὡς διευθυντὴς τῆς «Ἑσπερινῆς». Τῷ 1917 ἠγόρασε τὸν «Χρόνον» τῆς Οὐασιγκτῶνος καὶ τῷ 1918 τὴν «Ἑσπερινὴν τοῦ Οὐΐσκονσιν», πωλήσας ἀμφοτέρας τῷ 1919 εἰς τὸν Γουλιέλμον Χῆρστ. Μετὰ τὸ 1918 ἦτο ἐκδότης τοῦ «Κήρυκος καὶ Ἐξεταστοῦ» τοῦ Σικάγου. Γ. Ι. Β.

— **Μπρίσμπαιν** (Brisbane), **Θωμᾶς-Μάκντουγωλ**. Σκῶτος στρατιωτικὸς καὶ ἀστρονόμος (1773—1860). Ὑπηρέτησεν ἐν Φλάνδρᾳ, ἐν ταῖς Δυτικαῖς Ἰνδίαις καὶ ἐν τῇ Μαλαϊκῇ χερσονήσῳ. Τῷ 1821 διωρίσθη κυβερνήτης τῆς Νέας Νοτίου Οὐαλλίας. Συνετέλεσεν εἰς τὴν ὀργάνωσιν διαφόρων ἐξερευνητικῶν ἀποστολῶν, αἱ ὁποῖαι ἀνεκάλυψαν τὸν ἀπὸ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ἀποκληθέντα ποταμὸν *Μπρίσμπαιν*. Τῷ 1822 ἵδρυσεν ἐν Παραμάττᾳ ἀστεροσκοπεῖον, ἐκ παρατηρήσεων δὲ γενομένων μέχρι τοῦ 1826 συνέταξε κατάλογον ἀπλανῶν, δημοσιευθέντα τῷ 1835 καὶ περιέχοντα τὰς θέσεις 7.385 ἀστέρων. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Σκωτίαν διέμεινεν ἐν Makerstoun, ὅπου συνετήρει καλῶς ὠργανωμένον ἀστεροσκοπεῖον. Ἐν αὐτῷ προέβη εἰς μαγνητικὰς παρατηρήσεις ἀπὸ τοῦ 1841, διὰ τὰς ὁποίας ἐτιμήθη ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τοῦ Ἐδιμβούργου διὰ τοῦ βραβείου τοῦ Keith. Ἐγένετο ὡσαύτως πρόεδρος τῆς ὡς ἄνω ἀκαδημίας, ἔλαβε τίτλον εὐγενείας καὶ προήχθη εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατηγοῦ. Σ. Π.

**Μπρισοννὲ** (Briçonnet), **Γουλιέλμος**, *αὐθέντης τοῦ* **Πλεσσὶς-Ριντὼ** (Plessis - Rideau). Γάλλος οἰκονομολόγος καὶ κληρικός, ἀποθανὼν τῷ 1514. Ἐχρημάτισε γενικὸς ἐπιμελητὴς τῶν οἰκονομικῶν ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΑ' καὶ Καρόλου Η'. Μετὰ τὸν θάνατον τῆς συζύγου του περιεβλήθη τὸ ἱερατικὸν σχῆμα καὶ ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Σαὶν-Μαλὼ (1493), καρδινάλιος (1495), ἀρχιεπίσκοπος τῆς Ρέϊμς (1497) καὶ τῆς Ναρμπὸν (1507). Ἤσκει μεγάλην ἐπιρροὴν ἐπὶ τοῦ Καρόλου Η', τὸν ὁποῖον ἐξώθησε νὰ ἐπιχειρήσῃ τὴν κατὰ τῆς Νεαπόλεως ἐκστρατείαν αὐτοῦ. Ἀντεπολιτεύθη δὲ ζωηρῶς τὸν πάπαν Ἰούλιον Β', ὅστις ἐξέδωκεν ἐν τέλει ἐναντίον αὐτοῦ ἀπαγόρευσιν ἱεροπραξίας, ἀρθεῖσαν βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Λέοντος Ι'.

Ὁ ὁμώνυμος υἱὸς τούτου (1470—1534), γενόμενος καὶ αὐτὸς ἐπίσκοπος, ἀπεστάλη τῷ 1507 ὑπὸ τοῦ Λοδοβίκου ΙΒ' εἰς Ρώμην, ὅπως ἄρῃ τὰς ἐναντίον τοῦ βασιλέως ριφθείσας ὑποψίας ὅτι ἐπεζήτησε νὰ ἐκθρονίσῃ τὸν πάπαν Ἰούλιον Β'. Ὁ Μπρισοννὲ ἐπέτυχε τελείως εἰς τὴν ἀποστολήν του, ἐκφωνήσας ἐνώπιον τοῦ πάπα μακρὸν λόγον, ἀπομείναντα περίφημον, ὅστις ἐξετυπώθη λατινιστὶ καὶ γαλλιστὶ καὶ διενεμήθη πανταχοῦ. Ἐπὶ Φραγκίσκου Α', τῆς εὐνοίας τοῦ ὁποίου ἐπίσης ἀπήλαυεν, ἐπεχείρησε νὰ εἰσαγάγῃ ἐκκλησιαστικάς τινας μεταρρυθμίσεις, κατηγορηθεὶς δ' ἐκ τούτου ὡς αἱρετικὸς ἠναγκάσθη νὰ ἐμφανισθῇ (τῷ 1525) ἐνώπιον τοῦ ἐν Παρισίοις δικαστηρίου, διέφυγεν ὅμως τὴν καταδίκην δι' ἐπεμβάσεως τῆς αὐλῆς. —Ω.

**Μπρισσὰκ** (Brissac). Γαλλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν (βλ. λ. *Κοσσέ*).

**Μπρισσὸ** (Brissot), **Ἰάκωβος-Πέτρος**. Γάλλος πολιτικὸς (1754—1793). Ἐσπούδασε νομικά, ἀλλ' ἕνεκα τῶν παρατόλμων ἰδεῶν του περὶ τῆς ἀνισότητος τῶν κοινωνικῶν τάξεων γενόμενος ὕποπτος, καθείρχθη δὶς εἰς τὴν Βαστίλλην. Μεταβὰς εἰς Λονδῖνον ἐξέδωκε τὴν «Ἐφημερίδα τοῦ Λυκείου τοῦ Λονδίνου», γενόμενος δὲ κατόπιν ἱδρυτὴς τῆς «Ἑταιρείας τῶν φίλων τῶν Μαύρων», ἐταξίδευσεν εἰς Ἡνωμένας Πολιτείας τῆς Ἀμερικῆς (1787), ὁπόθεν ἐπέστρεψεν εἰς Παρισίους ἅμα τῇ ἐκρήξει τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως. Αὐτόθι ἐξέδωκε τὸν «Γάλλον πατριώτην» καὶ ἐγένετο μέλος τῆς κοινότητος, εἰς αὐτὸν δὲ παρεδόθησαν αἱ κλεῖδες τῆς Βαστίλλης ὑπὸ τῶν ἐπαναστατῶν. Κατὰ τὴν ἐπάνοδον τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' ἐκ τῆς φυγῆς του, ὁ Μπρισσὸ συνέταξε τὴν περιβόητον ἀναφορὰν τοῦ Πεδίου τοῦ Ἄρεως, δι' ἧς ἐζητεῖτο ἡ ἐκθρόνισις τοῦ βασιλέως. Γενόμενος ἀντιπρόσωπος τῶν Παρισίων ἐν τῇ νομοθετικῇ συνελεύσει, ὤθησεν αὐτὴν εἰς τὴν κήρυξιν τοῦ πολέμου κατὰ τῆς Αὐστρίας τῷ 1792, καὶ βραδύτερον κατὰ τῆς Ἀγγλίας καὶ Ὁλλανδίας. Ἐγένετο ἀρχηγὸς τῶν Γιρονδίνων, οἵτινες ὠνομάζοντο *Μπρισσονισταί*. Μισούμενος ὑπὸ τοῦ Ροβεσπιέρρου διὰ τὰς μετριοπαθεῖς αὐτοῦ ἀρχὰς καὶ τὰς ἰδέας του περὶ ὁμοσπονδιακοῦ συστήματος, ὑπέστη τὴν θύελλαν τῆς ὀργῆς τῶν ὀρεινῶν καὶ προγραφεὶς ἀπεκεφαλίσθη μετὰ τῶν Γιρονδίνων. Ὁ Μπρισσὸ διέπρεψεν ὡς ῥήτωρ καὶ ὡς συγγραφεύς. Τὰ σπουδαιότερα τῶν συγγραμμάτων του εἶναι: «Θεωρία τῶν ποινικῶν νόμων», «Βιβλιοθήκη τῶν ποινικῶν νόμων» «Ἀπομνημονεύματα» καὶ ἡ «Πολιτικὴ διαθήκη» του. Θ. Β.

—**Μπρισσὸ** (Brissot), **Πέτρος**. Γάλλος ἰατρὸς (1478—1522). Γενόμενος καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων, προσεπάθει νὰ εἰσαγάγῃ τὰς ἀρχὰς τοῦ Ἱπποκράτους, ἐλθὼν ὅμως εἰς σύγκρουσιν πρὸς τοὺς πλείστους τῶν συναδέλφων του, ἀκολουθοῦντων, ὡς καὶ πᾶσαι αἱ ἄλλαι σχολαὶ τῆς Εὐρώπης, τοὺς Ἄραβας ἰατρούς, ἠναγκάσθη νὰ μεταβῇ εἰς Πορτογαλλίαν. Ἀλλὰ καὶ ἐνταῦθα δὲν ἤργησε νὰ ἔλθῃ εἰς ρῆξιν διὰ τὸ αὐτὸ ζήτημα πρὸς τὸν ἰατρὸν τοῦ βασιλέως Διονύσιον. Ἀντιθέτως πρὸς τὴν γνώμην τοῦ τελευταίου, ὁ Μπρισσὸ διϊσχυρίζετο ὅτι διὰ τὴν θεραπείαν τῆς πλευρίτιδος ἡ φλεβοτομία ἔδει νὰ γίνεται ἐκ τοῦ ἰδίου μέρους ἔνθα ἐμφανίζεται ἡ νόσος καὶ οὐχὶ ἐκ τοῦ ἀντιθέτου, ὡς ἔπραττον πάντες οἱ ἄλλοι. Ἐφαρμόσας δὲ τὴν μέθοδόν του εἰς τὸν βασιλέα ἐπέτυχε τὴν θεραπείαν του. Ἡ διαμάχη αὕτη παρέσχεν εἰς τὸν Μπρισσὸ ἀφορμὴν νὰ διατυπώσῃ τὰς γνώμας του εἰς τὴν διάσημον κατασταθεῖσαν ἀπολογίαν του («Apologetica disceptatio» Παρίσιοι 1525, 1630), ἥτις ἀποτελεῖ τὸ μόνον ἔργον του. Ο. Ρ.

**Μπρισσὸν** (Brisson), **Ἀδόλφος**. Γάλλος λογοτέχνης, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1860. Συνειργάσθη εἰς διαφόρους ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, γράφων κριτικὰ ἄρθρα καὶ χρονογραφήματα, ειδικώτερον δὲ εἰς τὸν παρισινὸν «Χρόνον», ὅπου, ὑπὸ τὸν τίτλον «Περίπατοι καὶ ἐπισκέψεις», ἔδωκε χαρακτηριστικάς, λεπτῆς ὑφῆς καὶ πνευματώδεις σκιαγραφίας διαφόρων προσωπικοτήτων τῆς συγχρόνου ἐποχῆς. Ἵδρυσε μετὰ τοῦ Ἰουλίου Μπρισσὸν καὶ διευθύνει ἀπὸ τοῦ 1895 τὸ περιοδικὸν «Χρονικά». Ἐκ τῶν εἰς τόμους ἐκδοθέντων ἔργων του ἀναφέρονται ἰδιαιτέρως: «Οἱ προφῆται», «Φιλολογικὴ κωμῳδία», «Ἡ ἀνάστροφος τῆς δόξης», «Οἱ οὑμορισταί μας», «Ξηρὰ ἀγκάθια», «Μιὰ γωνιὰ τοῦ Παρνασσοῦ», «Τὸ θέατρον» (εἰς 9 τόμους) κ.ἄ. Ἔγραψεν ἐπίσης ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Foley δύο λιμπρέττα ὀπερέττας: «Καπρίτσιο βασιλίσσης» καὶ «Βανδέα». —Ω.

— **Μπρισσὸν** (Brisson), **Εὐγένιος-Ἑρρῖκος**. Γάλλος πολιτικὸς (1835—1912). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ἤσκησεν ἐπί τινα καιρὸν τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα. Ἐν τῷ μεταξὺ ὑπῆρξεν εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς δημοκρατικῆς ἐφημερίδος «Μέλλον», συνειργάσθη κατόπιν εἰς τὸν «Χρόνον» καὶ ἵδρυσε τῷ 1869 τὴν «Πολιτικὴν Ἐπιθεώρησιν», τῆς ὁποίας τὴν ἔκδοσιν ἡ κυβέρνησις τοῦ Ναπολέοντος Γ' ἀπηγόρευσε μετὰ ἓν ἔτος. Τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁ Μπρισσὸν εἶναι ἤδη εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς ἐν Παρισίοις δημοκρατικῆς κινήσεως, ὑποστηρίζεται δὲ θερμότατα ὑπὸ τῶν κύκλων τῶν ἐλευθεροτεκτόνων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἤσκει πολλὴν ἐπιρροὴν ἀπὸ τοῦ 1856. Ἀποτυγχάνει παρὰ ταῦτα δὶς ὡς ὑποψήφιος εἰς τὰς βουλευτικὰς ἐκλογάς. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς δημοκρατίας τοῦ 1870, διωρίσθη βοηθὸς τοῦ δημάρχου τῶν Παρισίων. Κατὰ τὰς γενικὰς ἐκλογὰς τῆς 8ης Φεβρουαρίου τοῦ ἑπομένου ἔτους ἀποστέλλεται ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν καὶ τάσσεται ἐν αὐτῇ μὲ τὸ κόμμα τῆς ἄκρας ἀριστερᾶς, τοῦ ὁποίου ὀλίγον βραδύτερον γίνεται ἀρχηγός. Μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς συνελεύσεως ἐξελέγη τῷ 1876 βουλευτὴς Παρισίων, ἐπανεκλεγεὶς ἐπίσης τῷ 1877, κατέλαβε δὲ τῷ 1881 τὸ ἀξίωμα τοῦ προέδρου τῆς βουλῆς, εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ Γαμβέττα, καὶ παρέμεινε τοιοῦτος μέχρι τοῦ 1885. Ἐσχημάτισε τότε κυβέρνησιν ὡς διάδοχος τοῦ Ἰουλίου Φλερὺ καὶ διενήργησε τὰς νέας ἐκλογάς. Ἀλλ' ἡ στάσις τῆς εὐθύτητος, ἣν ἐτήρησε κατὰ τὴν διεξαγωγὴν αὐτῶν καὶ ἡ ἀπαγόρευσις οἱασδήποτε ἐπεμβάσεως τῶν διοικητικῶν ὀργάνων δυσηρέστησε τὸ κόμμα του, ἀποτέλεσμα δὲ τῆς δυσαρεσκείας ταύτης ὑπῆρξε νὰ συγκεντρώσῃ μικρὰν μόνον πλειοψηφίαν κατὰ τὴν ψήφισιν τῶν πιστώσεων τὰς ὁποίας ἐζήτησε διὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Τονκίνου. Ἠναγκάσθη τότε νὰ παραιτηθῇ. Τῷ 1894 ἐξελέγη καὶ πάλιν πρόεδρος τῆς βουλῆς, ἀντικατασταθεὶς τῷ 1898 ὑπὸ τοῦ Παύλου Ντεσανέλ. Ἡμέρας τινὰς βραδύτερον, παραιτηθέντος τοῦ ὑπουργείου Μελίν, ὁ Μπρισσὸν ἐσχημάτισε ριζοσπαστικὴν κυβέρνησιν ὑπὸ τὴν προεδρίαν του, κρατήσας δι' ἑαυτὸν τὸ χαρτοφυλάκιον τῶν Ἐσωτερικῶν. Ἦτο τότε ἡ ἐποχὴ τῆς ὀξυτέρας φάσεως τῆς ὑποθέσεως Δρεϋφούς, διαφωνήσας δὲ ἀναφορικῶς πρὸς αὐτὴν μὲ τοὺς ἐπὶ τῶν πολεμικῶν ὑπουργείων συναδέλφους του, ἠναγκάσθη νὰ παραιτηθῇ μετὰ πέντε μῆνας. Ὑπεστήριξε κατόπιν δι' ὅλων του τῶν δυνάμεων τὸ ὑπουργεῖον Βαλδὲκ-Ρουσσὼ καὶ ἐτάχθη ἔκτοτε ἐχθρὸς ἄσπονδος, μέχρι σχεδὸν ψυχοπαθείας, ἐναντίον πάσης παρεμβάσεως τῶν ἀνευθύνων ἐθνικιστικῶν καὶ ἐκκλησιαστικῶν κύκλων εἰς τὰ πολιτικὰ τῆς χώρας. Ἐμέμφθησαν πολλοὶ τὴν πολιτικήν του ὡς περικλειομένην ἐντὸς στενῶν ὁριζόντων καὶ ἀπορροφουμένην ἀπὸ δευτερεύοντα ἐσωτερικὰ ζητήματα. Ἀληθὲς δὲ πράγματι εἶναι ὅτι ὁ Μπρισσὸν δὲν συνεδέθη πρὸς τὰ μεγάλα ζητήματα, τὰ ὁποῖα ἀπησχόλησαν τὴν Γαλλίαν κατὰ τὴν περίοδον τῆς τρίτης δημοκρατίας. Ἀλλ' ἀνεγνωρίσθη ἐξ ἀντιθέτου γενικῶς ἡ εὐθύτης καὶ ἡ ἐντιμότης τῆς ὅλης πολιτικῆς του δράσεως καὶ ἡ μεγάλη ἀξία του ὡς ἐφόρου τῆς προεδρίας τῆς βουλῆς, τῆς ὁποίας τὰς ἐργασίας ἐγνώριζε νὰ διευθύνῃ μὲ ὑποδειγματικὴν ἱκανότητα. Γ. Ζ.

**Μπρισσῶ** (Brissaud), **Ἐδουάρδος**. Γάλλος ἀνατομοπαθολόγος καὶ νευρολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1852. Διετέλεσεν ἐπιμελητὴς τοῦ Σαρκὼ καὶ ἀναπληρωτὴς αὐτοῦ (1879—1894), καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῆς ἰατρικῆς (1899), κατόπιν καὶ τῆς παθολογίας, καὶ ἱδρυτὴς τῆς «Νευρολογικῆς ἐπιθεωρήσεως». Ἀπέδειξε πρῶτος τὴν φυματιώδη φύσιν τῶν βαρείας μορφῆς χοιραδώσεων. Αἱ μετέπειτα ἐργασίαι του ἀναφέρονται εἰς τὴν ἀνατομοπαθολογίαν, τὴν φυσιολογίαν τῶν νεύρων, τὰς ἐγκεφαλικὰς ἐντοπίσεις, τὰ ἀνακλαστικὰ φαινόμενα κλπ. Μνημονεύομεν τὰς ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Μελέτη ἐπὶ τῆς ἰδιωτίας», «Αἱ συσπάσεις τῶν ἡμιπληγικῶν καὶ ὑστερο-ἐπιληπτικῶν», «Ὁ σπασμωδικὸς γέλως καὶ κλαυθμός», «Ἡ ἰδιότης τοῦ συλλαβίζειν καὶ αἱ σχέσεις αὐτῆς μὲ τὴν ἀφασίαν», «Αἱ ὑστε-



Digitized by Google

ρικαὶ παραλύσεις, αἱ σχέσεις γιγαντισμοῦ καὶ ἀκρομεγαλίας», «Ἡ συριγγομυελία» κ. ἄ. ο. Ρ.

**Μπρίστολ** (Bristol) *[Γεωγρ.]*. Μεγάλη βιομηχανικὴ καὶ ἐμπορικὴ πόλις τῆς ΝΔ. Ἀγγλίας, κειμένη μεταξὺ τῶν κομιτειῶν Γκλῶστερ καὶ Σόμερσετ. Κάτ. (1922) 383.900. Κεῖται κατὰ τὴν συμβολὴν τοῦ Φρὸμ μετὰ τοῦ Αἶβον, εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας (διέκπλους τοῦ Μπρίστολ), ὅπου ἐκβάλλει ὁ Αἶβον, καὶ 190 χλμ. πρὸς Δ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς.

Ἡ πόλις εἶναι κτισμένη ἐπὶ ἀνωμάλου ἐδάφους καλυπτομένου ὑπὸ λόφων, ἐντεῦθεν δὲ οἱ παλαιοὶ Ἄγγλοι γεωγράφοι ἀριθμοῦντες εἰς 7 τοὺς λόφους παρέβαλον αὐτὴν πρὸς τὴν ἀρχαίαν Ῥώμην. Ὁ πυρὴν τοῦ Μπρίστολ ἐκτείνεται ἀκριβῶς ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Αἶβον, ἐν αὐτῷ δὲ συγκεντροῦται ὁλόκληρος ἡ ἐμπορικὴ κίνησις τῆς πόλεως. Ἐκ τῶν προαστείων αὐτῆς σπουδαιότερα εἶναι τὰ Μονπίλιερ, Κλίφτον, Οὐέστμπερυ, Αἰβονμάουθ Λόνγκ Αἶστον κλπ. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων μνημείων τοῦ Μπρίστολ διακρίνονται ὁ μητροπολιτικὸς ναός, κτισθεὶς τῷ 1307—1332, ὅστις θεωρεῖται ὡς πρότυπον ἀρχιτεκτονικῆς τῆς νορμανδικῆς ἐποχῆς, ὁ θαυμάσιος ναὸς τῆς Ἁγίας Μαρίας τοῦ Ῥέντκλιφ ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὁμωνύμου λόφου, ὁ Ἅγιος Στέφανος, ὁ κεκλιμένος πύργος τοῦ Τέμπλ-Τσώρτς, τὸ δημαρχεῖον (Guild hall) κτισθὲν τῷ 1826, τὸ χρηματιστήριον (1742), τὸ τελωνεῖον, τὸ θέατρον, θεωρούμενον ὡς κάλλιστον τῶν ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἐκ τῶν ὡραιοτέρων τῆς Εὐρώπης, ἡ ἐπὶ τοῦ Αἶβον κρεμαστὴ γέφυρα, ὁ πύργος τοῦ Κάμποτ κλπ. Σπουδαιότερα ἐκπαιδευτικὰ καὶ πνευματικὰ ἱδρύματα τοῦ ἐξόχως ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης προηγμένου Μπρίστολ εἶναι τὸ πανεπιστήμιον, ἱδρυθὲν τῷ 1909 καὶ ἀριθμοῦν (1923—1924) 1.000 σπουδαστάς· τὸ Τεχνικὸν Κολλέγιον (Technical College), ἱδρυθὲν τῷ 1856, μὲ 3.500 σπουδαστάς· τὸ κολλέγιον Κλίφτον, ἡ παλαιοτάτη σχολὴ κλασσικῶν σπουδῶν (Grammar School) καὶ τὸ κολλέγιον τοῦ Βαπτιστοῦ· ἐπίσης βιβλιοθήκη, μουσεῖον καὶ πινακοθήκη περιλαμβάνουσα πολύτιμον συλλογὴν σινικῶν καὶ ἀγγειοπλαστικῶν καλλιτεχνημάτων. Ἡ πόλις ἔχει λόρδον δήμαρχον, ἀποστέλλει δὲ 5 ἀντιπροσώπους εἰς τὸ κοινοβούλιον.

Ἡ βιομηχανικὴ ἀκμὴ τοῦ Μπρίστολ δὲν ἐντοπίζεται εἰς ὡρισμένον κλάδον, ἀλλὰ περιλαμβάνει ποικίλας βιομηχανίας, ὧν σπουδαιότεραι εἶναι ἡ ἀγγειοπλαστική, ἡ ὑαλουργία, ἡ τῶν χημικῶν προϊόντων, τοῦ καπνοῦ, τῆς ζαχάρεως, τῶν ὑποδημάτων, τοῦ σάπωνος, βάμβακος, μηχανῶν, σιδήρου, χαλκοῦ κλπ. Μεγάλα γαιανθρακωρυχεῖα, κείμενα περὶ τὴν πόλιν, μεγάλως συμβάλλουσιν εἰς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς βιομηχανίας αὐτῆς. Ὁ λιμὴν τοῦ Μπρίστολ, ὅστις κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἐξηκολούθει νὰ διατηρῇ τὴν δευτέραν θέσιν ἐν Ἀγγλίᾳ, ἀρχόμενος ἀμέσως μετὰ τὸν τοῦ Λονδίνου, ὑπεχώρησε σήμερον πρὸ τοῦ Λίβερπουλ, Νιοῦκαστλ, Σάουθάμπτον, Ῥότσεστερ κλπ., ἐξακολουθεῖ, οὐχ ἧττον, νὰ διατηρῇ ἀκμαίαν τὴν ναυτιλιακὴν αὐτοῦ κίνησιν μὲ κατάπλους (1922) ἐκ μὲν τοῦ ἐξωτερικοῦ 1.560 πλοίων χωρητικότητος 3.600.000 τόνν., ἐκ δὲ τοῦ ἐσωτερικοῦ 13.466 πλοίων χωρητικότητος 2.900.000 τόνν. Τὰ λιμενικὰ ἔργα ἐπερατώθησαν τῷ 1809 διὰ διευθετήσεως τῆς κοίτης τοῦ ποταμοῦ Αἶβον, στοιχίσαντα 600.000 λίρας, συνεπληρώθησαν δὲ ἀκολούθως (1884 καὶ 1904) διὰ τῆς ἱδρύσεως δεξαμενῶν καὶ ἄλλων βοηθητικῶν ἐγκαταστάσεων.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ Μπρίστολ εἶναι ἐκ τῶν παλαιοτέρων καὶ σημαντικωτέρων ἀπὸ ἱστορικῆς ἀπόψεως πόλεων τῆς Ἀγγλίας, πολλοὶ δὲ ἀποδίδουσι τὴν κτίσιν αὐτῆς εἰς τὸν ἀρχηγὸν τῶν Γαλατῶν Βρέννον. Κατ' ἄλλην γνώμην ἐκτίσθη ὑπὸ τῶν Σαξώνων, οἵτινες ὠνόμαζον αὐτὴν Bright Stowe, ἐντεῦθεν δὲ προῆλθε διὰ παραφορᾶς τὸ σημερινὸν αὐτῆς ὄνομα Κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα ἦτο ἤδη σπουδαιοτάτη πόλις, ἔχουσα ὀχυρὸν φρούριον, κτισθὲν κατὰ τὴν παράδοσιν ὑπὸ τοῦ Ἀλφρέδου τοῦ Μεγάλου, καὶ ἀξιολογωτάτην ἀγορὰν δούλων. Τῷ 1190 ὁ ἄρχων τοῦ Μπρίστολ, Ἰωάννης ντὲ Μόρτον, παρεχώρησεν εἰς τὸν ἀστικὸν πληθυσμὸν τῆς πόλεως χάρτην ἐλευθεριῶν, τῷ δὲ 1247 ἐτερματίσθησαν τὰ μεγάλα ἔργα πρὸς διευθέτησιν τῆς κοίτης τοῦ Αἶβον, ἐξεύχθησαν αἱ ὄχθαι αὐτοῦ διὰ γεφύρας καὶ ἐκτίσθησαν προκυμαῖαι. Ἤδη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἐκείνης τὸ Μπρίστολ ἀκμάζει σημαντικῶς ὡς ἐμπορικὸν κέντρον, μὲ τάσεις διαρκοῦς ἀναπτύξεως. Εἰς τοῦτο συνετέλεσαν ἀφ' ἑνὸς μὲν ὁ ἑκατονταετὴς πόλεμος, ὅστις σημαντικῶς τὸ ἐπλούτισεν, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὁ πόλεμος τῶν «Δύο ῥόδων», ὅστις, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰς ἄλλας μεγάλας ἀγγλικὰς πόλεις, ἀφῆκεν αὐτὸ ἄθικτον. Τῷ 1497 ἀπέπλευσεν ἐκ τοῦ λιμένος τοῦ Μπρίστολ ὁ θαλασσοπόρος Σεβαστιανὸς Κάμποτ, ὅστις ἀνεκάλυψε τὴν Νέαν Γῆν.

Ἐπὶ Ἑρρίκου Γ' νέα προνόμια καὶ ἐλευθερίαι δίδονται εἰς τὴν ἀστικὴν τάξιν τοῦ Μπρίστολ, τὸ ὁποῖον προάγεται εἰς «πόλιν» (city) καὶ καθίσταται ἕδρα ἐπισκόπου, τόση δὲ εἶναι ἡ ἀλματικὴ αὐτοῦ ἀκμή, ὥστε κατὰ τοὺς χρόνους τῆς Ἐλισάβετ ἔχει τὸ μονοπώλιον τοῦ μετὰ τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Ἰρλανδίας ἐμπορίου. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὅμως παρατηρεῖται στασιμότης, ὀφειλομένη εἰς τοὺς βαρεῖς φόρους καὶ τὰς δυσχερείας τὰς ὁποίας οἱ μεγαλέμποροι καὶ ἡ κυριαρχοῦσα τάξις τοῦ χρήματος παρεμβάλλει εἰς τοὺς ξένους καὶ αὐτοὺς τοὺς Ἄγγλους ἐμπόρους. Ἀφ' ἧς τέλος τῷ 1848 τὸ Μπρίστολ ἐκηρύχθη ὑπὸ τῶν κατοίκων του ἐλεύθερος λιμήν, εἰσῆλθεν εἰς νέαν περίοδον ραγδαίας ἀναπτύξεως, περὶ τὰ τέλη δὲ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ὑπερέβη εἰς πληθυσμὸν τὰς 200.000 κατοίκων καὶ ἐγένετο ἓν τῶν σπουδαιοτέρων βιομηχανικῶν κέντρων τῆς Ἀγγλίας. Παροιμιώδης εἶναι ἡ πολυτέλεια τῆς ζωῆς καὶ ἡ φιλοξενία τῆς εὐπόρου τάξεως τῆς πόλεως ταύτης, τῆς ὁποίας οἱ ἔμποροι ἐθεωροῦντο ἀνέκαθεν ὡς πρότυπα θαρραλέων μεγαλοεπιχειρηματιῶν, οὐδεμιᾶς φειδόμενοι δαπάνης πρὸς ἐπιτυχίαν τῶν μεγάλων αὐτῶν ἐπιχειρήσεων. Ἐκ τῶν ναυπηγείων τοῦ Μπρίστολ καθειλκύσθη τῷ 1838 τὸ πρῶτον ἀτμοκίνητον ὑπερωκεάνιον «Great Western» τὸ ὁποῖον ἔπλευσεν ἐκεῖθεν κατ' εὐθεῖαν πρὸς τὴν Ἀμερικήν. Ἐπίσης ὀνομαστοὶ εἶναι οἱ καταδρομεῖς (κουρσάροι) τοῦ Μπρίστολ ἐν τῇ ἱστορίᾳ τοῦ Ἀγγλικοῦ ναυτικοῦ. Χ. Δ.

—**Μπρίστολ** (Bristol) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας Κονεκτικούτης, κειμένη ΝΔ. τοῦ Χάρτφορδ. Κάτ. 20.600. Ἔχει ὡρολογοποιεῖα καὶ ἐργοστάσια μηχανῶν.

— **Μπρίστολ** (Bristol) *[Γεωγρ.]*. Βιομηχανικὴ πόλις ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ πολιτείᾳ τῆς Πενσυλβανίας. Κάτ. 12.849. Ἔχει ἐργοστάσια ταπήτων, ἀτμολεβήτων, ἀεροπλάνων, κλωστήρια κλπ.

— **Μπρίστολ** (Bristol) *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἐν τῇ βορειοαμερικανικῇ πολιτείᾳ Ῥὸντ Ἄιλαντ. Κάτ. 12.707. Ἔχει ὀνομαστὰ ναυπηγεῖα θαλαμηγῶν (γιώτ) καὶ μεγάλα ἐργοστάσια ἐλαστικῶν καὶ μαλλίνων εἰδῶν.

— **Μπρίστολ** (Bristol) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς. Κάτ. 22.000. Διὰ τῆς κεντρικωτέρας ὁδοῦ τῆς πόλεως διέρχεται ἡ γραμμὴ τῶν πολιτειῶν Τέννεση καὶ Βιργινίας. Ἔχει ποικίλην βιομηχανίαν (καπνοῦ, βάμβακος κλπ.) καὶ ἐξαγωγικὸν ἐμπόριον βουτύρου, τυροῦ κ. ἄ.

— **Μπρίστολ κόλπος** (Bristol Channel). Μικρὸς κόλπος ἐπὶ τῆς ΝΔ. ἄκρας τῆς Ἀγγλίας, ὁ μυχὸς τοῦ ὁποίου ἀποτελεῖ προέκτασιν τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Σέβερν καὶ τῆς διώρυγος τοῦ Ἁγίου Γεωργίου. Ἔχει μῆκος 128 χλμ., τὸ δὲ πλάτος του ποικίλλει ἀπὸ 8 μέχρις 70 χλμ. Εἰς τὸν κόλπον ἐκβάλλουσιν οἱ ποταμοὶ Σέβερν, Τόρριτζ, Πάρρετ, Τῶ κ. ἄ. Κυριώτεροι δὲ ὅρμοι εἶνε οἱ Κάμαρθεν, Κάρδιφφ, Σούανση, Πόρλοκ, Μπάρνσταιπλ, Μπρίτζουωταρ κλπ. Γ. Ι. Β.

**Μπρίστολ** (Bristol), ***Φρειδερῖκος - Γουλιέλμος Χέρβεϋ, μαρκήσιος ντὲ —.*** Ἄγγλος πολιτικὸς (1769—1859). Ἀπὸ τοῦ 1796 μέχρι τοῦ 1803 διετέλεσε μέλος τῆς βουλῆς τῶν κοινοτήτων ὑπὸ τὸ ὄνομα βαρῶνος Χέρβεϋ, εἶτα δ' ἀντικατέστησε τὸν πατέρα του κόμιτα τοῦ Μπρίστολ ἐν τῇ ἄνω βουλῇ. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε χρηματίσει ἐπὶ τριετίαν (1801—1803) σύμβουλος ἐπὶ τῶν ἐξωτερικῶν ὑποθέσεων τοῦ κράτους. Χάρις εἰς τὴν θερμὴν καὶ μακρὰν ὑποστήριξίν του πρὸς τὸ κόμμα τῶν Τόρις, ἀντημείφθη ἐπὶ κυβερνήσεως Κάννιγκ διὰ τοῦ τίτλου τοῦ μαρκησίου (1826). Χ. Δ.

**μπρίστολ** (τὸ) (bristol)· εἶδος πολυτελοῦς λεπτοῦ χαρτονίου, χρησιμοποιουμένου εὐρύτατα ἐν τῇ τυπογραφίᾳ (ἐπισκεπτήρια, κάρται κ.τ.τ.).

**Μπρίστω** (Bristow), ***Ἑρρῖκος-Γουλιέλμος.*** Ἄγγλος γεωλόγος (1817—1889). Ἐφοίτησεν εἰς τὸ ἐν Λονδίνῳ κολλέγιον τοῦ βασιλέως καὶ ἔλαβε δίπλωμα πολιτικοῦ μηχανικοῦ καὶ ἐπιστημῶν ἐφηρμοσμένων εἰς τὰς τέχνας καὶ τὴν βιομηχανίαν, εἶτα δὲ διωρίσθη γεωλόγος τοῦ κτηματολογίου (1842). Τῷ 1843 ἐξελέγη μέλος τῆς γεωλογικῆς ἑταιρείας, ἀπὸ δὲ τοῦ 1872 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς γεωλογικῆς ἐπιτροπῆς πρὸς σύνταξιν τοῦ χάρτου τῆς Ἀγγλίας καὶ Οὐαλλίας. Ἔγραψε: «Glossary of mineralogy» (Λονδῖνον 1861), «Table of British sedimentary and fossilifer strata» ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ρ. Ἔθεριτζ (Λονδῖνον, 1873), «Do of British strata» (Λονδῖνον, 1876) κ. ἄ. Χ. Δ.

**μπρίτζ** (τὸ) (bridge)· παίγνιον διὰ παιγνιοχάρτων, ἀγγλικῆς προελεύσεως, ἔχον ἀναλογίας τινὰς πρὸς τὴν *πρέφαν*.

—*[Ἐγκυκλ.]* Τὸ *μπρίτζ* παίζεται κατὰ δύο τρόπους: ὡς «Auctions-Bridge» καὶ ὡς «Kontrakt-Bridge» κατὰ τὸν πρῶτον τρόπον σήμερον μόνον ἐν Ἀγγλίᾳ, κατὰ τὸν δεύτερον δὲ εἰς ὅλα τὰ ἄλλα μέρη καὶ ἐν Ἑλλάδι. Θὰ ἐκτεθῇ ἐνταῦθα ὁ δεύτερος μόνον τρόπος, διότι αὐτὸς εἶναι ὁ σχεδὸν παγκοίνως ἀνεγνωρισμένος.

Διὰ τὸ παιγνίδι χρειάζονται δύο δεσμίδες παιγνιοχάρτων τῶν 52 φύλλων. Δὲν παίζεται ταυτοχρόνως μὲ τὰς δύο, ἀλλὰ καθ' ὃν χρόνον ὁ ἕνας ἐκ τῶν παικτῶν μοιράζει τὰ χαρτιὰ τῆς μιᾶς δεσμίδος, ὁ ἀπέναντι σύντροφός του μπλέκει τὰ χαρτιὰ τῆς ἄλλης καὶ τὰ τοποθετεῖ ἕτοιμα δεξιά του, διὰ νὰ χρησιμοποιηθῶσιν ἅμα τελειώσῃ τὸ παιγνίδι μὲ τὴν πρώτην. Αἱ δύο δεσμίδες δηλαδὴ χρειάζονται δι' οἰκονομίαν χρόνου.

Ἐκ τῶν 13 χαρτιῶν ἑκάστου χρώματος μεγαλύτερος εἶναι ὁ ἄσσος, ἕπονται δὲ κατὰ σειρὰν μετ' αὐτόν: ρήγας, ντάμα, βαλές, 10, 9, 8 κλπ. Ὅταν τὸ παιγνίδι ἐδηλώθη «χωρὶς ἀτοῦ», τὸ μεγαλύτερον χαρτὶ νικᾷ τὸ μικρότερον τοῦ αὐτοῦ χρώματος. Ὅταν ὅμως ἐδηλώθη ὡς ἀτοῦ ἕνα ὡρισμένον χρῶμα, τὰ χαρτιὰ τοῦ χρώματος αὐτοῦ νικοῦν ὅλα τὰ ἄλλα χαρτιὰ τῶν ἄλλων χρωμάτων· π. χ. ἂν ἐδηλώθησαν ὡς ἀτοῦ τὰ σπαθιά, τὸ δύο σπαθὶ ἠμπορεῖ νὰ νικήσῃ τὸν ἄσσον καρώ, ἂν ὑποτεθῇ ὅτι ὁ κρατῶν τὸ δύο σπαθὶ δὲν ἔχει καρὼ εἰς τὰ χαρτιά του.

Τὸ μπρίτζ παίζεται ἀπὸ δύο ζεύγη παικτῶν. Οἱ (σύντροφοι) παῖκται ἑκάστου ζεύγους κάθηνται ὁ ἕνας ἀπέναντι τοῦ ἄλλου· εἶναι δηλαδὴ ὁ Α σύντροφος τοῦ ἀπέναντί του καθημένου Γ καὶ ὁ ἀριστερὰ τοῦ Α καθήμενος Β εἶναι σύντροφος τοῦ ἀπέναντί του καθημένου Δ. Ὁ Α, ἀφοῦ μπλεχθοῦν τὰ χαρτιὰ καὶ κόψῃ ὁ δεξιά του καθήμενος Δ, μοιράζει, ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τὰ δεξιά, ἀνὰ ἕνα χαρτὶ εἰς τὸν καθένα παίκτην, μέχρις ἐξαντλήσεως τῆς τράπουλας. Παίρνει κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ὁ καθένας παίκτης 13 χαρτιά, τὰ ὁποῖα κρατεῖ εἰς τὰ χέρια του εἰς σχῆμα ριπιδίου, μὲ τὰ χρώματα ἐναλλὰξ καὶ κατὰ σειρὰν ἀξίας ἑκάστου χαρτιοῦ· ἡ τοποθέτησις αὐτὴ ἔχει τὴν πρακτικὴν ἀξίαν νὰ ἐπιβλέπωνται ὅλα τὰ χαρτιὰ μὲ ἕνα βλέμμα καὶ ν' ἀποφεύγωνται δυσάρεστα λάθη.

Πρὶν καθίσουν οἱ παῖκται, ξαπλώνουν τὴ μιὰ τράπουλα ἐπάνω εἰς τὸ τραπέζι, βλέποντες μόνον τὴν ράχιν τῶν χαρτιῶν καὶ τραβοῦν τυχερὰ καὶ οἱ τέσσαρες ταυτοχρόνως ἀπὸ ἕνα χαρτί. Τὸ ἀποκαλύπτουν καὶ ἀναλόγως τῆς ἀξίας τοῦ χαρτιοῦ ποῦ τράβηξεν ὁ καθεὶς ὁρίζονται τὰ ζεύγη. Ὁ παίκτης, ὁ ὁποῖος ἐπῆρε τὸ μικρότερον χαρτί, ἔχει τὸ δικαίωμα τῆς ἐκλογῆς τῆς θέσεως. Ὁ λαβὼν τὸ ἀμέσως μεγαλύτερον εἶναι ὁ σύντροφός του καὶ κάθεται ἀπέναντί του.

Ἂς ὑποθέσωμεν τώρα ὅτι ἤρχισε τὸ παιγνίδι (τὸ πῶς θ' ἀρχίσῃ θὰ ἐξηγηθῇ κατωτέρω). Ἕνας ἀπὸ τοὺς 4 παίκτας θὰ ρίξῃ ἕνα χαρτί. Κατόπιν ἐξ ἀριστερῶν πρὸς τὰ δεξιὰ θὰ ρίξῃ ἀπὸ ἕνα χαρτὶ ἐπίσης καθένας ἀπὸ τοὺς ἄλλους 3 παίκτας. Εἴτε χωρὶς ἀτοῦ εἶναι τὸ παιγνίδι, εἴτε ἐδηλώθη ἕνα χρῶμα ὡς ἀτοῦ, οἱ τρεῖς αὐτοὶ παῖκται εἶναι ὑποχρεωμένοι νὰ παίξουν χαρτὶ ὁμοίου χρώματος πρὸς ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον ἔπαιξεν ὁ πρῶτος, ἐὰν καὶ ἐφ' ὅσον ἔχουν χαρτὶ τοῦ χρώματος τούτου εἰς τὰ φύλλα των. Ἐὰν ἐδηλώθη ἕνα χρῶμα ὡς ἀτοῦ, τότε ὁ καθένας ἀπὸ τοὺς ἄλλους τρεῖς, ἐὰν δὲν ἔχῃ χαρτὶ τοῦ χρώματος τὸ ὁποῖον ἔπαιξεν ὁ πρῶτος, ἔχει τὸ δικαίωμα ἢ νὰ παίξῃ ἕνα οἱονδήποτε ἄλλο χαρτὶ ἢ νὰ «σπάσῃ» μὲ ἀτοῦ, δηλαδὴ νὰ παίξῃ ἕνα χαρτὶ τοῦ χρώματος ποῦ ἐδηλώθη ὡς ἀτοῦ. Ἐδῶ ὑπάρχει διαφορὰ μεταξὺ μπρίτζ καὶ πρέφας. Εἰς τὴν πρέφαν ὁ παίκτης εἶναι ὑποχρεωμένος νὰ «σπάσῃ» μὲ ἀτοῦ, ὅταν δὲν ἔχῃ χαρτὶ τοῦ χρώματος ποῦ ἔπαιξεν ὁ πρῶτος. Εἰς τὸ μπρίτζ δὲν ἔχει αὐτὴν τὴν ὑποχρέωσιν. Ὁ δεύτερος, ὁ τρίτος, ὁ τέταρτος ἔχουν τὸ δικαίωμα νὰ σπάσουν ἢ νὰ μὴ σπάσουν.

Ὅταν καὶ οἱ παῖκται ρίξουν ἀπὸ ἕνα χαρτὶ σύμφωνα μὲ τ' ἀνωτέρω, εἶναι τότε κάτω τέσσαρα χαρτιά, τὰ ὁποῖα ἀποτελοῦν μιὰ μπάζα (λεβέ). Ποιὸς θὰ τὴν πάρῃ; Ἐκεῖνος ὁ ὁποῖος ἔρριξε τὸ μεγαλύτερο χαρτί, ὅταν ὅλα τὰ χαρτιὰ εἶναι τοῦ αὐτοῦ χρώματος. Ἐὰν δὲν εἶναι τοῦ αὐτοῦ χρώματος, ἐκεῖνος ὁ ὁποῖος ἔρριξε τὸ μεγαλύτερο ἀτοῦ. Ἐὰν τὸ παιγνίδι εἶναι χωρὶς ἀτοῦ, ἡ μπάζα ἀνήκει εἰς τὸν πρῶτον παίξαντα, ἂν οἱ ἄλλοι δὲν ἔχουν μεγαλύτερο χαρτὶ τοῦ αὐτοῦ χρώματος. Π. χ. ὁ Α ἔπαιξε ρήγα πίκα, ὁ Β ἄσσο πίκα, ὁ Γ πέντε πίκα καὶ ὁ Δ δύο πίκα. Ἡ λεβὲ ἀνήκει στὸν Β. Ἢ ἐδηλώθησαν ἀτοῦ οἱ κοῦπες: ὁ Α παίζει ἄσσο σπαθί, ὁ Β παίζει λιμὸ σπαθί, ὁ Γ παίζει ἐπίσης λιμὸ σπαθί, ὁ Δ δὲν ἔχει σπαθὶ καὶ παίζει δύο κοῦπα. Ἡ μπάζα ἀνήκει στὸν Δ. Ἢ τὸ παιγνίδι εἶναι χωρὶς ἀτοῦ: ὁ Α παίζει 3 σπαθί, ὁ Β 8 κοῦπα, ὁ Γ 5 καρό, ὁ Δ 3 καρό. Ἡ μπάζα ἀνήκει εἰς τὸν Α. Ἐκεῖνος ὁ ὁποῖος κερδίζει τὴν μπάζαν, τὴν παίρνει καὶ τὴν τοποθετεῖ ἐμπρός του μὲ μαζεμένα τὰ χαρτιά, οὕτως ὥστε ἐὰν πάρῃ καὶ ἄλλην νὰ τὴν τοποθετήσῃ πάλιν κατὰ τὸν ἴδιον τρόπον, καλύπτων τὴν πρώτην κατὰ τὸ ἥμισυ. Ἐὰν ἡ μπάζα ἀνήκῃ εἰς τὸν δηλώσαντα τὸ παιγνίδι, τὴν παίρνει ὁ σύντροφός του καὶ τὴν τοποθετεῖ ὡς ἀνωτέρω. Κατ' αὐτὸν τὸν τρόπον ὅλοι οἱ παῖκται γνωρίζουν εἰς κάθε στιγμὴν πόσες μπάζες ἔκανε ἡ κάθε μιὰ μερίς. Διότι οἱ μπάζες εἶναι τοποθετημένες κατὰ τρόπον εὐδιάκριτον, ἡ μία παραπλεύρως καὶ ἐπάνω στὴν ἄλλην.

Σκοπὸς τοῦ παιγνιδιοῦ διὰ κάθε μίαν ἀπὸ τὰς δύο μερίδας εἶναι νὰ κάμῃ ὅσον τὸ δυνατὸν περισσότερες μπάζες. Οἱ μπάζες ἔχουν ἀξίαν ἀριθμητικήν. Εἶναι φανερὸν ὅτι ὅλες οἱ μπάζες εἶναι 13. Συνεπῶς ἐν πάσῃ περιπτώσει ἡ μία μερὶς θὰ κάμῃ τοὐλάχιστον μιὰ μπάζα περισσότερο ἀπὸ τὴν ἄλλην. Αὐτή, ἡ ἐπὶ πλέον μπάζα, ἐὰν μὲν τὸ παιγνίδι ἐδηλώθη χωρὶς ἀτοῦ, ἔχει ἀξίαν 10, ἐὰν τὸ παιγνίδι ἐδηλώθη πίκες ἔχει ἀξίαν 9, ἐὰν κοῦπες ὀκτώ, ἐὰν καρὸ ἑπτὰ καὶ ἐὰν σπαθιὰ ἕξ. Ἐὰν

Digitized by Google

μία μερὶς κάμῃ, ἀντὶ μιᾶς, τρεῖς μπάζες ἐπὶ πλέον τῆς ἄλλης, ἡ ἀξία τριπλασιάζεται καὶ οὕτω καθ' ἑξῆς. Π. χ. ἐδηλώθησαν δύο χωρὶς ἀτοῦ καὶ ἡ μερὶς ἡ ὁποία τὸ ἐδήλωσε ἔκαμε ὀκτὼ μπάζες, δηλαδὴ δύο μπάζες παραπάνω ἀπὸ τὴν ἄλλη· ἔχει τὸ δικαίωμα ἐπὶ 20 πόντων. Αὐτοὶ οἱ 20 πόντοι γράφονται ὡς ἑξῆς: Ἐπάνω σ' ἕνα κομμάτι χαρτὶ χαράσσεται μία γραμμὴ κάθετος καὶ εἰς τὸ μέσον αὐτῆς μία γραμμὴ ὁριζοντία. Ἔτσι σχηματίζεται ἕνας σταυρός. Ἀριστερὰ τῆς καθέτου γραμμῆς εἶναι ἡ πλευρὰ ἡ ἀνήκουσα εἰς τὴν συντροφιὰν τοῦ γράφοντος, ἡ δεξιὰ εἰς τοὺς ἀντιπάλους. Κάτω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν γράφονται οἱ πόντοι ποὺ ἀναλογοῦν εἰς τὶς ἐπιπλέον μπάζες. Ἐὰν οἱ πόντοι τῆς μιᾶς μερίδος φθάσουν ἢ ὑπερβοῦν τοὺς 30, ἡ μερὶς αὐτὴ ἐκέρδισε τὴν πρώτην μᾶνς (manche)· χαράσσεται μία γραμμὴ ὁριζοντία ἀπὸ κάτω καὶ ἡ μὲν μερὶς ποὺ ἐκέρδισε τὴν μᾶνς πηγαίνει διὰ τὸ ρόμπρ, δηλαδὴ διὰ τὴν δευτέραν μᾶνς ἐκ 30 πάλιν πόντων, ἡ ἐπιτυχία τῆς ὁποίας σημαίνει καὶ τὸ τέλος τοῦ παιγνιδιοῦ, ἡ δὲ ἀντίπαλος πηγαίνει διὰ τὴν πρώτην μᾶνς καὶ ταύτης ἐπιτυγχανομένης διὰ τὴν δευτέραν.

Ἂς ἀρχίσωμεν τώρα ἕνα παιγνίδι. Τὸ νόημα τοῦ παιγνιδιοῦ εἶναι τοῦτο: Ὁ καθένας παίκτης, ὅπως εἴπομεν, εἶναι σύντροφος τοῦ ἀπέναντί του. Ἡ κάθε συντροφιὰ ἐπιθυμεῖ φυσικὰ νὰ κερδίσῃ. Πῶς θὰ κερδίσῃ; Θὰ κερδίσῃ ἐὰν κάτω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν γράψῃ δύο φορὰς ἀπὸ 30 τοὐλάχιστον πόντους. Διὰ νὰ τοὺς γράψῃ αὐτοὺς τοὺς πόντους πρέπει νὰ «πῇ» αὐτὴ «παιγνίδι» τόσας φοράς, ὅσαι χρειάζονται διὰ νὰ συμπληρωθοῦν δυὸ φορὲς 30 πόντοι. Τί σημαίνει τοῦτο; Ἰδού. Τὰ χαρτιὰ ἐμοιράσθηκαν. Ὁ καθένας παίκτης ἔχει εἰς τὰ χέρια του 13 χαρτιά. Ὁ Α, ὁ ὁποῖος ἐμοίρασε, βλέπει τὰ ἰδικά του καὶ σκέπτεται ἂν μὲ αὐτὰ καὶ ἐκεῖνα τὰ χαρτιὰ ποὺ ἐνδεχομένως ἠμπορεῖ νὰ ἔχῃ ὁ σύντροφός του (καὶ τὰ ὁποῖα φυσικὰ αὐτὸς ἀγνοεῖ) εἶναι δυνατὸν νὰ κάμῃ ἑπτὰ μπάζες, εἴτε δηλώνων ἕνα χρῶμα ὡς ἀτοῦ, εἴτε δηλώνων τὸ παιγνίδι χωρὶς ἀτοῦ. Π. χ. ὁ Α ἔχει εἰς τὸ φύλλον του τὰ ἑξῆς χαρτιά: Ἄσσο, ρήγα, ἐννέα, ὀκτώ, ἑπτὰ πίκα—ἄσσο, ρήγα κοῦπα—ἄσσο, ρήγα, ντάμα καρὸ—καὶ δύο, τρία, τέσσερα σπαθί. Ἔχων αὐτὰ τὰ χαρτιὰ ὁ Α μπορεῖ ἀναμφισβητήτως νὰ δηλώσῃ (τοὐλάχιστον — διότι εἰς τὸ πραγματικὸ παιγνίδι θὰ δηλώσῃ πολὺ περισσότερα): «πίκες»! Τί σημαίνει αὐτὴ ἡ δήλωσις; Ὅτι αὐτὸς καὶ ὁ σύντροφός του ἀναλαμβάνουν τὴν ὑποχρέωσιν νὰ κάμουν ἑπτὰ μπάζες, παίζοντας τὸ παιγνίδι μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες. Ὁ Β, ὁ πρὸς τὰ ἀριστερὰ ἀντίπαλος τοῦ Α, βλέπει καὶ αὐτὸς τὰ χαρτιά του, ἀλλὰ δὲν μπορεῖ νὰ δηλώσῃ οὔτε σπαθιά, οὔτε καρά, οὔτε κοῦπες, διότι τὰ τρία αὐτὰ χρώματα εἶναι μικροτέρας ἀξίας ἀπὸ τὶς πίκες. Μπορεῖ ὅμως νὰ πῇ «δύο σπαθιά», ἢ «δύο καρά», ἢ «δύο κοῦπες». Ἡ δήλωσις αὐτὴ σημαίνει ὅτι ἡ ἰδική του συντροφιὰ ἀναλαμβάνει νὰ κάμῃ μὲ ἀτοῦ τὶς κοῦπες π.χ. (ἂν εἶπε «δύο κοῦπες») ὀκτὼ μπάζες. Ὁ Γ, ὁ σύντροφος τοῦ Α, κοιτάζει κι' αὐτὸς τὰ χαρτιά του. Ἄκουσε ὅτι ὁ σύντροφός του Α ὑπόσχεται νὰ κάνῃ ἑπτὰ μπάζες μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες. Αὐτὴ ἡ ὑπόσχεσις οὐδέποτε σημαίνει ὅτι οἱ μπάζες αὐτὲς θὰ γίνουν μὲ μόνον τὰ χαρτιὰ τοῦ δηλώσαντος. Ὁ δηλώσας ἐλπίζει πάντοτε ὅτι ὁ σύντροφός του θὰ τοῦ δώσῃ τοὐλάχιστον μία ἢ δύο μπάζες. Ὁ Γ, ἐὰν νομίζῃ ὅτι προσφέρει μὲ τὰ χαρτιὰ ποὺ ἔχει τόσα, ὥστε μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες νὰ γίνουν ὀκτὼ μπάζες, δηλώνει «δύο πίκες». Ὁ Δ κοιτάζει κι' αὐτὸς τὰ χαρτιά του. Ἤκουσε τὰς δηλώσεις τῶν ἄλλων τριῶν καὶ ἀναλόγως τοῦ χαρτιοῦ του δηλώνει ἢ δὲν δηλώνει «τρεῖς κοῦπες», τοῦθ' ὅπερ σημαίνει ἀνάληψιν ὑποχρεώσεως δι' ἐννέα μπάζες μὲ ἀτοῦ τὶς κοῦπες. Ὁ Α ἔχει καὶ αὐτὸς τὸ δικαίωμα νὰ πῇ ἢ νὰ μὴ πῇ «τρεῖς πίκες», τὸ ὁποῖον θὰ ἐσήμαινεν ἀνάληψιν ὑποχρεώσεως δι' ἐννέα μπάζες μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες. Ἐὰν οἱ κατόπιν τοῦ Α δηλώσαντες ἔχουν ἄλλα χρώματα γερά, μποροῦν νὰ τὸ δηλώσουν. Ἂν τὸ φύλλο των εἶναι ἀδύνατο, λέγουν «πάσσο». Ἐπίσης καὶ ὁ Α ἂν ἀντιλαμβάνεται ὅτι δὲν μπορεῖ νὰ ἐξακολουθήσῃ πλειοδοτῶν εἰς αὐτὴν τὴν «δημοπρασίαν», λέγει «πάσσο». Ὑποθέσωμεν τώρα ὅτι τὸ παιγνίδι ἔμεινε εἰς τὸν Α μὲ «τρεῖς πίκες». Αὐτὸ σημαίνει ὅτι ὁ Α καὶ ὁ Γ ἀνέλαβον τὴν ὑποχρέωσιν νὰ κάμουν ἐννέα μπάζες, παίζοντες τὸ παιγνίδι μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες. Ἄμ' ὡς κατηρτίσθη αὐτὴ ἡ συμφωνία, ὁ Β, ὁ ἀριστερὰ τοῦ Α ἀντίπαλός του, παίζει ἕνα χαρτί. Τότε ὁ Γ ἁπλώνει ἀμέσως τὰ χαρτιά του κάτω, μὲ τάξι καὶ μὲ σειρά, καθὼς τὰ κρατοῦσε στὰ χέρια του, καὶ μένει πλέον ἀμέτοχος εἰς τὸ παιγνίδι, τὸ ὁποῖον διεξάγει μόνος ὁ Α μὲ ἀντιπάλους τὸν Β καὶ Δ. Τὰ χαρτιὰ τοῦ Γ θὰ μείνουν ξαπλωμένα κάτω εἰς κοινὴν θέαν, ὅταν δὲ ἔρχεται ἡ σειρὰ τοῦ Γ, ὁ ὁποῖος εἶναι «μὸρ» (mort), παίζει ἀντ' αὐτοῦ ὁ Α. Ἐὰν ὁ Α κατορθώσῃ καὶ κάμῃ τὶς ἐννέα μπάζες ποὺ ὑπεσχέθη, ἐξεπλήρωσε τὰς ὑποχρεώσεις του· ἐὰν δὲν τὶς κάμῃ, ἡ συντροφιά του θὰ τιμωρηθῇ. Πῶς μεταφράζονται εἰς ἀριθμοὺς ὅλα αὐτά; Εἴπομεν ὅτι ὁ Α ἐδήλωσε «τρεῖς πίκες» καὶ ἔκαμε ἐννέα μπάζες. Θὰ γράψῃ εἰς τὴν μερίδα τῆς συντροφιᾶς του κάτω ἀπὸ τὴν ὁριζοντία γραμμὴ τὸν ἀριθμὸν 27. Διατί; Διότι οἱ πίκες ἔχουν ἀξίαν 9. Ἡ ὑπεσχημένη καὶ ἐπιτευχθεῖσα μία μπάζα ἐπὶ πλέον ἀπὸ τὶς 6 πληρώνεται λοιπὸν μὲ ἐννέα, αἱ δύο ὑπεσχημέναι καὶ ἐπιτευχθεῖσαι μὲ 18, αἱ τρεῖς μὲ 27, αἱ 4 μὲ 36, αἱ 5 μὲ 45, αἱ 6 μὲ 54 καὶ αἱ 7 μὲ 63. Ἐκτὸς αὐτῶν θὰ γράψῃ ὁ Α εἰς τὴν μερίδα τῆς συντροφιᾶς του ἐπάνω ἀπὸ τὴν ὁριζοντία γραμμὴ τὸν ἀριθμὸν 50. Εἶναι ἡ ἐπιβράβευσις τῆς ἐκπληρώσεως τῆς ἀναληφθείσης ὑποχρεώσεως (bien joué!). Ἐὰν ἀντιθέτως ὁ Α δὲν κατώρθωσε νὰ κάμῃ τὶς ἐννέα μπάζες ποὺ ἀνέλαβε, ἀλλὰ κάμῃ μόνον ὀκτώ, τότε οἱ ἀντίπαλοι θὰ γράψουν αὐτοὶ εἰς τὴν μερίδα των ἐπάνω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν τὸν ἀριθμὸν 100. Ἐὰν κάμῃ μόνον 7, θὰ γράψουν 200 καὶ οὕτω καθεξῆς. Κάθε μπάζα ποὺ χάνεται πληρώνεται εἰς τοὺς ἀντιπάλους μὲ 100 πόντους. Ἐὰν ὅμως ὁ Α ἔκαμε περισσότερες ἀπὸ τὶς ἐννέα μπάζες ποὺ ὑπεσχέθη, θὰ γράψῃ εἰς τὴν μερίδα του ἐπάνω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν 50 πόντους γιὰ κάθε ἐπὶ πλέον μπάζα. Ὥστε: Ἂν ὑποθέσωμεν ὅτι ὁ δηλώσας «τρεῖς πίκες» ἔκανε ἕνδεκα μπάζες, τὸ σημειωματάριον θὰ δείξῃ τὴν εἰκόνα:

| | |
|---|---|
| 150 | — |
| 27 | |

δηλαδή: 50 bien joué καὶ 100 διὰ τὶς δύο ἐπὶ πλέον μπάζες. Ἐὰν ὅμως ἔκαμε μόνον ἑπτὰ μπάζες, εἰς τὸ σημειωματάριον θὰ γραφοῦν:

| | |
|---|---|
| — | 200 |

δηλαδή: μηδὲν ἀπὸ κάτω, διότι ἡ συμφωνία δὲν ἐξεπληρώθη καὶ 200 πόντοι χρηματικὴ ποινὴ ὑπὲρ τῶν ἀντιπάλων (100 πόντοι διὰ κάθε μπάζαν ποὺ ἔκαμεν ὀλιγώτερη ἀπὸ τὰς ὑποσχεθείσας).

Ὑποθέσωμεν τώρα ὅτι εἰς τὸ ἑπόμενον παιγνίδι ὁ Α ἐδήλωσε «σπαθιά», δηλαδὴ ὑπεσχέθη νὰ κάμῃ ἑπτὰ μπάζες μὲ ἀτοῦ τὰ σπαθιὰ καὶ ἐξεπλήρωσε τὴν ὑπόσχεσίν του· θὰ γράψῃ εἰς τὴν μερίδα του 50 ἐπάνω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν (bien joué) καὶ 6 κάτω ἀπὸ αὐτήν. Ἀλλὰ εἶχε ἤδη γράψει 27. Ἐὰν προστεθοῦν εἰς τοὺς 27 οἱ 6 νέοι πόντοι, γίνονται 33, συνεπῶς οἱ 30 πόντοι συνεπληρώθησαν. Ἡ συντροφιὰ τοῦ Α ἐπῆρε τὴν πρώτην μᾶνς. Ἡ ἐπιτυχία αὐτὴ ἀμείβεται μὲ 350 πόντους. Ὥστε τὸ σημειωματάριον θὰ δείξῃ:

| | |
|---|---|
| 50 | |
| 150 | — |
| 27 | |
| 6 | |
| 350 | |

Εἰς τὴν δευτέραν μᾶνς, τὸ κλείσιμον τῆς ὁποίας σημαίνει καὶ τὸ τέλος τοῦ παιγνιδιοῦ, τὰ πράγματα βαίνουν ὅπως καὶ εἰς τὴν πρώτην, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι, διὰ μὲν τὰ bien joué καὶ κάθε ἐπὶ πλέον μπάζαν γράφονται 100 πόντοι, διὰ κάθε μπάζαν ποὺ χάνεται γράφονται 200 πόντοι, ὡς ἀμοιβὴ δὲ διὰ τὸ κλείσιμον τῆς δευτέρας μᾶνς (τοῦ ρόμπρ), γράφονται πόντοι 700. Ὥστε, ἡ συντροφιὰ τοῦ Α ἂν πῇ «τρία χωρὶς ἀτοῦ» καὶ κάμῃ τὶς ἐννέα μπάζες, θὰ γράψῃ:

| | |
|---|---|
| 100 | |
| 50 | |
| 150 | — |
| 27 | |
| 6 | |
| 350 | |
| 30 | |
| 700 | |

Ἐπὶ πλέον γράφονται οἱ ἑξῆς πόντοι: 100 πόντοι ἐπάνω ἀπὸ τὴν ὁριζοντίαν γραμμὴν ὑπὲρ τοῦ δηλώσαντος παιγνίδι καὶ ἐπιτυχόντος 12 μπάζες ἐν συνόλῳ (πτὶ σλέμ), 200 πόντοι δὲ ἐὰν ἐπέτυχε 13 μπάζες (γκρὰν σλέμ).

Ἐπίσης ἀμείβονται τὰ ὀνέρ. Ὀνόρια εἶναι ὁ ἄσσος, ὁ ρήγας, ἡ ντάμα, ὁ βαλὲς καὶ τὸ δέκα. Ἐὰν ὁ δηλῶν ἔχῃ τέσσαρα ὀνὲρ εἰς τὰ χέρια του, ὀφείλει νὰ τὸ δηλώσῃ ἅμα τῇ ἐνάρξει τοῦ παιγνιδιοῦ (ἄλλως δὲν γράφονται), ὁπότε γράφει ὑπὲρ τῆς συντροφιᾶς του 100 πόντους. Ἐὰν τὸ πέμπτο ὀνὲρ τὸ ἔχῃ ὁ σύντροφός του, γράφει 150 πόντους. Ἐὰν ἔχῃ καὶ τὸ πέμπτον ὀνὲρ εἰς τὰ χέρια του, γράφει 200 πόντους. Ὀνὲρ εἶναι ἐπίσης καὶ οἱ 4 ἄσσοι, ἀλλὰ μόνον ὅταν τὸ παιγνίδι εἶναι χωρὶς ἀτοῦ. Ἐὰν ὁ δηλῶν τὸ «χωρὶς ἀτοῦ» ἔχῃ καὶ τοὺς 4 ἄσσους εἰς τὰ χέρια του, γράφει 200 πόντους.

Αἱ ἀμοιβαὶ καὶ αἱ τιμωρίαι διπλασιάζονται, ἂν οἱ ἀντίπαλοι τῶν δηλωσάντων εἶπαν «κόντρα» καὶ τετραπλασιάζονται ἂν οἱ δηλώσαντες εἶπαν «ρεκόντρα». Συμβαίνει δηλαδὴ τὸ ἑξῆς: Εἰς τὸ πρῶτον παράδειγμα ὁ Α εἶπε «τρεῖς πίκες». Ὁ ἀντίπαλός του Β ἢ ὁ σύντροφος τοῦ Β, ὁ Δ, βλέπουν τὰ χαρτιά των καὶ σχηματίζουν τὴν ἐντύπωσιν ὅτι εἶναι ἀδύνατον νὰ κάμῃ ὁ Α ἐννέα μπάζες μὲ ἀτοῦ τὶς πίκες· τοῦ ἀπαντοῦν λοιπὸν «κόντρα». Αὐτὸ σημαίνει ὅτι προτείνουν νὰ γραφοῦν ὅλοι οἱ πόντοι διπλοῖ. Ὁ Α ἢ δέχεται ἁπλῶς τὸ «κόντρα» ἤ, ἂν ἔχῃ πεποίθησιν εἰς τὸ χαρτί του καὶ εἰς τὴν τέχνην του, λέγει «ρεκόντρα», δηλαδή: καὶ ἐγὼ σὲ ὑποχρεώνω νὰ γραφοῦν ὅλα τετραπλᾶ. Ἐννοεῖται ὅτι μπορεῖ νὰ τὰ ξεφύγῃ ὅλα αὐτὰ κάμνοντας ἄλλην δήλωσιν ἀνωτέρας ἀξίας ἀπὸ τὴν κοντραρισθεῖσαν. Π. χ. ἂν τοῦ ἐκοντράρισαν τὶς «τρεῖς πίκες», μπορεῖ νὰ πῇ «τέσσερα σπαθιά». Ἡ δήλωσις αὐτὴ εἶναι ἀνωτέρας ἀξίας εἰς λεβέ, διότι ὑποχρεώνει εἰς 10 μπάζες καὶ αὐτὸ εἶναι τὸ κύριον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Franzi Klein*, Mein Bridge-Buch (Wien und Leipzig, Verlag Dr Hans Epstein, ἐκδ. 1930). Πρβλ. ἐπίσης: *Dr Richard Münzer*, Bridge und Auction-Bridge (Leipsig n. Zürich, Verlag Grethlein und Co. — *Le Savigny*, La pratique de tous les jeux de Bridge (Albin Michel, Paris 22 Rue Huyghens). —*W. Dalton*, Bridge Abridged or Practical Bridge (1901). — *J. B. Elwell*, Advanced Bridge (1904).—*Cut Cavendish*, Bridgebuch (γερμ. μετ. 2α ἐκδ. 1911). —*Cato*, Beliebte Kartenspiele (1922). Χ. Ν. Τ.

**Μπρίτζ** (Bridge), ***Ἰωάννης - Φρειδερῖκος***. Ἄγγλος συνθέτης (1844—1924). Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ Βασιλικοῦ Μουσείου Κολλεγίου τοῦ Λονδίνου, διευθυντὴς τῆς Βασιλικῆς Ἑταιρείας Χορῳδίας κτλ. Ἔγραψεν ἐγχειρίδιά τινα ἀντιστίξεως, κανόνας κλ. Ὡς συνθέτης ἔγραψε τὰς καντάτας: «Λαοδίκη», «Καλλιρρόη», τὰ ὀρατόρια: «Mount Moriah», «Niniveh», ὕμνους, ἀνθέμια κτλ.

— **Μπρίτζ** (Bridge), ***Ἰωσὴφ-Κόξ***. Ἄγγλος συνθέτης, ἀδελφὸς τοῦ *Ἰωάννου-Φρειδερίκου*, γεννηθεὶς τῷ 1853. Συνέθεσε: «Δανιὴλ» (ὀρατόριον), «Rudel» (δραματικὴ καντάτα), ἐν «Ρέκβιεμ», μίαν συμφωνίαν κτλ.

— **Μπρίτζ** (Bridge), ***Φράνκ***. Ἄγγλος συνθέτης καὶ διευθυντὴς ὀρχήστρας (1879). Ἠσχολήθη κυρίως μὲ τὴν μουσικὴν δωματίου (τρίο, 2 κουαρτέττα, σεξτέττο κτλ.) καὶ μὲ συμφωνικά τινα ἔργα, φέροντα τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Ντεμπυσσῦ («Ἰσαβέλλα» 1907, «Dance rapsody» 1909, «Ἡ θάλασσα», σουίτα, «Τὸ θέρος» κτλ.). Γ. Σ.

**μπρι(τ)ζόλα** (ἡ)· τεμάχιον κρέατος ἐκ τῆς πλευρᾶς τοῦ ζῴου: «μπριτζόλαι χοιριναί,—ἀρνήσιαι» κτλ.

— *[Μαγειρ.]* Αἱ *μπριτζόλαι* γίνονται στὴν ἐσχάρα ἢ τηγανηταὶ ὡς ἑξῆς: Ἀποχωρίζοντες τὸ κρέας κατὰ μῆκος τοῦ ὀστοῦ τῆς πλευρᾶς, τὸ γυρίζομεν καὶ τὸ ἑνώνομεν μὲ τὸ ὑπόλοιπον τοῦ ἐπάνω μέρους κοπανίζοντες ἐλαφρῶς. Συνήθως ἡ προετοιμασία αὐτὴ γίνεται εἰς τὰ κρεοπωλεῖα. Τὰς θέτομεν εἰς πιατέλαν καὶ τὰς ἀλείφομεν μὲ χυμὸν λεμονίου, ρίπτομεν ἁλάτι, πιπέρι καὶ ρίγανη καὶ τὰς ἀφήνομεν ὀλίγα λεπτὰ νὰ διαποτισθοῦν. Κατόπιν τὰς θέτομεν εἰς τὴν ἐσχάραν (ἀφοῦ προηγουμένως τὴν ἀλείψωμεν μὲ λάδι καὶ τὴν ἀφήσωμεν νὰ θερμανθῇ) ἢ εἰς τὸ τηγάνι, ἀφοῦ κάψωμεν εἰς αὐτὸ ἀνάλογον βούτυρον ἢ φριτοῦραν. Τὰς ψήνομεν καὶ ἀπὸ τὰς δύο πλευρὰς κατ' ἀρχὰς εἰς δυνατὴν φωτιὰν καὶ κατόπιν εἰς μετρίαν, προσέχοντες νὰ λάβουν καλὸν χρῶμα καὶ νὰ μὴ καοῦν. Αἱ ἐκ χοιρινοῦ κρέατος μπριτζόλαι καλὸν εἶναι νὰ μένουν ἐπί τινας ὥρας εἰς τὸ ξίδι, εἰς τὸ ὁποῖον προσθέτομεν καὶ ὀλίγον κύμινο. Αἱ μπριτζόλαι σερβίρονται μὲ πατάτες τηγανητὲς ἢ μὲ πουρὲ (σπανάκι, πατάτες, μπιζέλια) καὶ μὲ σαλάτα. Μ. ΔΡ.

**Μπρίτζπορτ** (Bridgeport). Ποτάμιος πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς πολιτείας τῆς Κονεκτικούτης Κάτ. (1927) 170.000. Ἔχει μεγάλα ἐργαστάσια ραπτομηχανῶν, πυροβόλων ὅπλων, χάρτου, πίλων, ἁμαξῶν, γραμμοφώνων, ἠλεκτρικῶν μηχανῶν καὶ ἐξαρτημάτων κλπ. Γ. Ι. Β.

**Μπρίτζταουν** (Bridgetown) *[Γεωγρ.]*. Πρωτεύουσα τῆς νήσου Μπάρμπαντος τῶν Μικρῶν Ἀντιλλῶν, ἕδρα τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ τῶν νήσων τούτων. Κάτ. 35.000. Γ. Ι. Β.

**Μπρίτο Καπέλλο** (Brito-Capello), ***Ἑρμενεζίλντο ντὲ***—. Πορτογάλος ἐξερευνητής, γεννηθεὶς ἐν Λισσαβῶνι τῷ 1839. Τῷ 1879 ἐπεχείρισε ταξίδιον εἰς Ἀφρικήν, ἐξερευνήσας τὸν ποταμὸν Κουάνζα εἰς τὴν πορτογαλικὴν Ἀγγόλαν. Ἀνεκάλυψε τὸν Κάμπομπυ, ἕνα τῶν κυριωτέρων παραποτάμων τοῦ Ζαμπέζη καὶ διέτρεξε τὴν μεταξὺ τῆς λίμνης Μπαγκουέλο καὶ τοῦ Ζαμπέζη χώραν. Ἐδημοσίευσε: «De Benguella ás terras de Jacca» (1881), «De Angola à Contra-Costa». Γ. Ι. Β.

**Μπρίττον-Φέρρυ** (Briton-Ferry) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Γκλάμοργκαν (Οὐαλλίας), παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Νήθ. Κάτ. 9.165. Ἔχει ναυπηγεῖα καὶ μεγάλα ἐργοστάσια φύλλων ψευδαργύρου καὶ γαλβανισμένων εἰδῶν. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουσι γαιανθρακωρυχεῖα. Γ. Ι. Β.

**Μπρνὸ** (Brno). Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας (βλ. *Μπρύν*). Γ. Ι. Β.

**Μπροὰν** (Brohan), ***Αἰμιλία-Μαγδαληνή***. Γαλλὶς ἠθοποιός, ἀδελφὴ τῆς Ἰωσηφίνης (1833—1900). Τῷ 1850 ἔλαβε τὸ πρῶτον βραβεῖον κωμῳδοῦ, ἀνῆλθε δ' ἀμέσως ἐπὶ τῆς σκηνῆς τῆς «Comédie

Digitized by Google

Française», τῆς ὁποίας μετὰ διετίαν ἐγένετο ἑταῖρος. Διεκρίνετο διὰ τὸ κάλλος καὶ τὴν χάριν της. Χ. Δ.

—**Μπροὰν** (Brohan), ***Αὐγουστίνη-Σουζάννα.*** Γαλλὶς ἠθοποιὸς (1807—1887). Ἔτυχε τοῦ πρώτου βραβείου κωμῳδοῦ εἰς ἡλικίαν 14 μόλις ἐτῶν. Τῷ 1834 ἐγένετο ἑταῖρος τῆς «Comédie Française» καὶ διέπρεψεν εἰς ῥόλους σουμπρέττας, ἰδίᾳ δὲ εἰς τὰ ἔργα «Ταρτοῦφος», «Γάμος τοῦ Φιγκαρῶ» κλπ.

—**Μπροὰν** (Brohan), ***Ἰωσηφίνη-Εὐτυχία-Αὐγουστίνη.*** Γαλλὶς ἠθοποιός, θυγάτηρ τῆς προηγουμένης (1824—1893). Δεκαεξαέτις ἐτιμήθη διὰ τοῦ πρώτου βραβείου κωμῳδοῦ, τῷ δὲ 1841 ἐνεφανίσθη ἀπὸ τῆς σκηνῆς τῆς «Comédie Française» ὑποδυθεῖσα μέχρι τοῦ 1868, ὁπότε ἀπεσύρθη τῆς σκηνῆς, τοὺς δυσκολωτέρους ῥόλους σουμπρέττας. Καθηγήτρια τοῦ Ὠδείου, ἐδημοσίευσε τῷ 1851, ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Σουζάννα,* πνευματωδέστατα κοσμικὰ σχόλια εἰς τὴν ἐφημερίδα «Φιγκαρῶ» καὶ ἔγραψε διάφορα θεατρικὰ ἔργα. Χ. Δ.

**μπρογγὸς** (ὁ). Σφὴν ἐπὶ τοῦ ῥυμοῦ τοῦ *ἀρότρου* (βλ. λ.), χρησιμεύων διὰ τὴν ἐπ' αὐτοῦ πρόσδεσιν τοῦ ζυγοῦ.

**Μπρογὶ** καὶ *Μπρόγλ* (Broglie). Εὐγενὴς γαλλικὴ οἰκογένεια (βλ. λ. *Μπρολί*).

**Μπρὸς Γκαρθία·** βλ. λ. *Γκαρθία* ντὲ Μασκαρένχας.

**Μπρὸκ** (Brocq), ***Ἄννα-Ἰωάννης-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος δερματολόγος, γεννηθεὶς εἰς τὸ Lot-et-Garonne τῷ 1856 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1929. Διετέλεσε πρόεδρος τῆς Γαλλικῆς ἑταιρείας δερματολογίας καὶ συφιλιδογραφίας (1919) καὶ ὑπῆρξεν εἷς τῶν σημαντικωτέρων ἀντιπροσώπων τῆς σχολῆς τοῦ Saint Louis. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Θεραπευτικὴ τῶν νόσων τοῦ δέρματος» (1890), «Κλινικὴ δερματολογική» (1924—1927). Οὗτος ἐθεώρει δερματώσεις μέν τινας ὡς ἰδιοπαθεῖς νόσους τοῦ δέρματος, ἑτέρας δὲ ὡς ἀντιδράσεις τοῦ δέρματος, ἤτοι ὡς ἀποτελούσας συνδρομὴν πολλαπλῶν καὶ ποικίλων αἰτιῶν ἐξωτερικῆς ἢ ἐσωτερικῆς φύσεως.

Ὁ ὁρισμὸς τῶν νευροδερμιτίδων, ὡς καὶ ἡ περιγραφή, ἣν ἔδωκε τῶν διαφόρων μορφῶν αὐτῶν, ἀπέμειναν κλασσικαί. Ἀνεκάλυψε μετὰ τοῦ Vidal (1885) τὴν διάσπαρτον κατὰ πλάκας ἐρυθροδερμίαν, ἣν ἀργότερον μετὰ τοῦ Civatte κατέταξεν εἰς τὴν ὁμάδα τῶν παραψωριάσεων. Ὑπεστήριξε τὸ ἰδιοπαθὲς τῆς μεσοθωρακικῆς δερματώσεως τῶν ψωριασιμόρφων παρακερατώσεων καὶ τῆς μέσης γλωσσίτιδος. Περιέγραψε τὴν ψευδο-πελάδα, ἥτις φέρει ἔκτοτε τὸ ὄνομά του (1901) καὶ εἰσήγαγεν εἰς τὴν θεραπευτικὴν τὴν ζυθοζύμην, τὴν ἐπίχρισιν τοῦ coaltar διὰ τὸ ἔκζεμα καὶ τὸ ὀξὺ ἔτι, καὶ κατέστησε κοινὰς τὰς ἐνδείξεις καὶ τὰς μεθόδους ἐφαρμογῆς τῆς ῥαδιοθεραπείας εἰς τὰς διαφόρους δερματώσεις καὶ τοὺς ὄγκους τοῦ δέρματος. Ο. Ρ.

**Μπρὸκ** (Brock), *σὲρ Θωμᾶς —.* Ἄγγλος γλύπτης (1847—1922). Ἐξειργάσθη ἰδίᾳ ἀνδριάντας καὶ προτομάς. Τῷ 1883 ἐξελέγη μέλος τῆς βασιλικῆς Ἀκαδημίας τοῦ Λονδίνου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Ὁ Ἡρακλῆς στραγγαλίζων τὸν Ἀνταῖον», τὸ μνημεῖον τῆς βασιλίσσης Βικτωρίας πρὸ τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Μπάκκιναμ (Λονδῖνον), «Ὁ Πάρις», «Λόνγκφελλω», «Κόλμαν», «Λόρδος Λαίτον» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

— **Μπρὸκ** (Brocq), ***πολύμορφος δερματῖτις*** *τοῦ —·* βλ. λ. *δερματῖτις* (τ. Θ', σ. 61 β').

**Μπροκὰ** (Broca), ***Αὔγουστος.*** Γάλλος χειρουργός, υἱὸς τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς ἀνθρωπολογίας, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1859 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1924. Εἰδικευθεὶς εἰς τὴν χειρουργικὴν τῶν παίδων, ἐγένετο τῷ 1913 καθηγητὴς τῆς ἐγχειρητικῆς καὶ τῷ 1919 τῆς παιδικῆς χειρουργικῆς καὶ ὀρθοπεδικῆς. Εἶναι γνωστὸς ἰδίως διὰ τὰς ἀνατομοπαθολογικὰς καὶ κλινικὰς ἐρεύνας του, τὴν μελέτην του ἐπὶ τοῦ ῥαχιτισμοῦ καὶ τὰς θεραπευτικὰς μεθόδους του ἐπὶ τοῦ μέσου ὠτὸς καὶ τῆς μαστοειδίτιδος, τοῦ λαγωχείλους, τῆς βουβωνοκήλης, σκωληκοειδοῦς ἀποφύσεως, τοῦ συγγενοῦς κατ' ἰσχία ἐξαρθρήματος κλ. Πρῶτος ἐφήρμοσεν ἐν Γαλλίᾳ τὴν ἀνάτρησιν διὰ τὴν ὑδροκεφαλήν, καὶ τὴν αἱματηρὰν θεραπείαν τοῦ συγγενοῦς κατ' ἰσχία ἐξαρθρήματος. Πρῶτος ἐπίσης παρετήρησε τὴν συνύπαρξιν τῆς συγγενοῦς σκολιώσεως μετὰ τῆς συριγγομυελίας. Ἠρεύνησε μετὰ τοῦ Weil τὸ ζήτημα τῆς αἱμοφιλίας καὶ τὴν θεραπείαν ταύτης διὰ νωποῦ ὀροῦ. Τέλος ἐμελέτησε τὰς ὀστεομυελίτιδας, ὀστεΐτιδας καὶ φυματιώδεις ἀρθρίτιδας. Ἐδημοσίευσεν ἐκτὸς πολλῶν ἄλλων: «Ἰατροχειρουργικὴν τῶν παίδων» μετὰ τοῦ Legendre (1894), «Χειρουργικὴν τοῦ ἐγκεφάλου» μετὰ τοῦ Maubert (1895). Ἐξέδωκε δύο τόμους τῶν κλινικῶν του μαθημάτων (1903), πραγματείαν «Περὶ τῶν διαπυήσεων τῆς μαστοειδοῦς ἀποφύσεως καὶ τῆς θεραπείας των», ἐγχειρίδιον «Ἐγχειρητικῆς τοῦ μέσου ὠτὸς» (1899) καὶ τέλος «Χειρουργικὴν τῶν παίδων» (1916). Τῷ 1917 ἐγένετο πρόεδρος τῆς χειρουργικῆς ἑταιρείας Παρισίων. Ο. Ρ.

— **Μπροκὰ** (Broca), ***Παῦλος.*** Ἐκ τῶν κορυφαίων ἀνθρωπολόγων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, γεννηθεὶς τῷ 1824 ἐν Sainte-Foy-la Grande καὶ ἀποθανὼν τῷ 1880 ἐν Παρισίοις. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς παθολογίας ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων, τὸ ὄνομά του δὲ φέρει νοσοκομεῖον ἐν Παρισίοις. Τῷ 1859 ἵδρυσε τὴν «Ἀνθρωπολογικὴν Ἑταιρείαν τῶν Παρισίων», τῆς ὁποίας διετέλεσε γενικὸς γραμματεὺς μέχρι τοῦ θανάτου του. Τῷ 1867 ἵδρυσε τὸ «Ἀνθρωπολογικὸν Ἐργαστήριον» καὶ τῷ 1876 τὴν «Ἀνθρωπολογικὴν Σχολὴν» (μεθ' ἧς ἡνώθη τὸ ἐργαστήριον), ἅτινα ὑπῆρξαν ἐπὶ μακρὸν ἡ κοιτὶς τῆς ἀνθρωπολογίας καὶ σχολεῖον διὰ τοὺς ἐπιστήμονας ὅλου τοῦ κόσμου. Τῷ 1872 ἵδρυσε καὶ τὴν «Association française pour l'avancement des sciences». Πλὴν τῶν χειρουργικῶν ἐργασιῶν αὐτοῦ ὁ Μπροκὰ ἐδημοσίευσε πλείστας ὅσας μελέτας ἀνατομικοανθρωπολογικοῦ διαφέροντος. Τὸ ὄνομα αὐτοῦ συνεδέθη μὲ τὴν τρίτην ἀριστερὰν μετωπιαίαν ἕλικα τοῦ ἐγκεφαλικοῦ φλοιοῦ, ἣν ὥρισεν οὗτος ὡς τὸ κινητικὸν κέντρον τῆς λαλιᾶς (ἕλιξ Μπροκά, βλ. λ. *ἕλιξ* βροκαία). Ἐμελέτησε δὲ ἰδιαιτέρως τὸν σχηματισμὸν τοῦ ἐγκεφάλου (ἐργασίαν, ἣν δὲν ἐπρόφθασε νὰ συμπληρώσῃ) καὶ δὴ σχετικῶς μὲ τὴν κρανιακὴν κάψαν, καὶ ἐν σχέσει πρὸς τὸν ἐγκέφαλον τῶν ἄλλων πρωτευόντων. Ἐπενόησεν ἀκριβεῖς Ἀνθρωπομετρικὰς μεθόδους, ἐργαλεῖα καὶ κανόνας καὶ ἐδημοσίευσε τὰς περφήμους «Instructions Anthropologiques», ἐκδοθείσας παρὰ τῆς ἀνθρωπολογικῆς ἑταιρείας. Τῷ 1872 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Revue d'anthropologie». Εἰς τὸν Μπροκὰ ὀφείλεται ὁ κανὼν ὅτι ὁ ὥριμος ἄνθρωπος ζυγίζει τόσα κιλά, ὅσα ἑκατοστὰ ἄνω τοῦ 1 μ. εἶναι τὸ ἀνάστημά του (κανὼν Μπροκά). Ἔγραψε περὶ τῶν φυσικῶν χαρακτήρων τοῦ προϊστορικοῦ ἀνθρώπου καὶ πλείστων ἄλλων ἀνθρωπολογικῶν θεμάτων. Αἱ ἀνθρωπολογικαὶ παρατηρήσεις του συνεκεντρώθησαν εἰς τὰ «Mémoires anthropologiques» (1871—1883). Ἡ ἐπίδρασις τοῦ Μπροκά, ὅστις θεωρεῖται πατὴρ τῆς ἀνθρωπολογίας, ὑπῆρξε κολοσσιαία ὄχι μόνον ἐν Γαλλίᾳ, ἀλλὰ καὶ εἰς ὅλα τὰ λοιπὰ ἐπιστημονικὰ κέντρα, αἱ δὲ μέθοδοί του ἀπετέλεσαν ὑπόδειγμα καὶ σημεῖον ἀφετηρίας πάσης ἀνθρωπολογικῆς ἔκτοτε ἐπιδόσεως. Ὁ Μπροκὰ ἐχρημάτισε καὶ γερουσιαστής. Τῷ 1887 τῷ ἐστήθη ἀνδριὰς παρὰ τὴν ἰατρικὴν καὶ τὴν ἀνθρωπολογικὴν σχολήν. Ι. Γ. ΚΟΥΜΑΡΗΣ

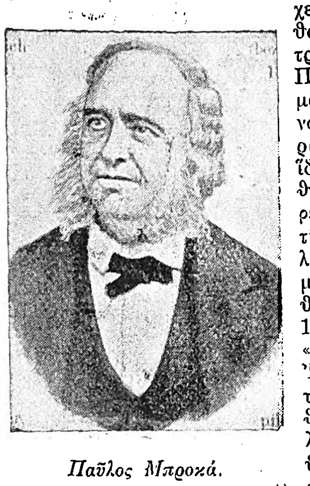
*Παῦλος Μπροκά.*

—**Μπροκὰ** (Broca), *ἕλιξ τοῦ —·* βλ. λ. *ἕλιξ βροκαία.*

**Μπροκὰρ** (Brocard), ***Ἐρρῖκος.*** Σύγχρονος Γάλλος μαθηματικός, ἀξιωματικὸς τοῦ μηχανικοῦ. Θεωρεῖται, μετὰ τῶν Lemoine καὶ Neuberg, ὡς ἱδρυτὴς τῆς γεωμετρίας τοῦ τριγώνου.

***Σημεῖα Μπροκάρ:*** Ἔστω τρίγωνόν τι ΑΒΓ. Ἐὰν ἐπὶ ἑκάστης τῶν πλευρῶν τοῦ τριγώνου τούτου γραφῇ περιφέρεια κύκλου ἐφαπτομένη ἄλλης πλευρᾶς τοῦ τριγώνου κατὰ τὴν ἑξῆς σειράν: ἡ διὰ τῆς πλευρᾶς ΑΒ περιφέρεια νὰ ἐφάπτηται τῆς πλευρᾶς ΒΓ, ἡ ἐπὶ τῆς ΓΒ νὰ ἐφάπτηται τῆς ΓΑ καὶ ἡ ἐπὶ τῆς ΓΑ περιφέρεια νὰ ἐφάπτηται τῆς πλευρᾶς ΑΒ αἱ τρεῖς οὕτω γραφεῖσαι περιφέρειαι συναντῶνται εἰς τὸ αὐτὸ σημεῖον ἐντὸς τοῦ τριγώνου, τὸ Μ, τὸ ὁποῖον ἔχει τὴν ἰδιότητα ὅτι αἱ ἐξ αὐτοῦ ἀγόμεναι εἰς τὰς κορυφὰς τοῦ τριγώνου εὐθεῖαι ΜΑ, ΜΒ καὶ ΜΓ σχηματίζουσιν ἴσας γωνίας πρὸς τὰς πλευρὰς ταύτας· δηλαδὴ ἔχομεν τὴν ἰσότητα τῶν γωνιῶν

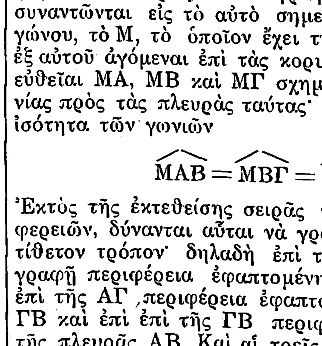

$$\widehat{MAB} = \widehat{MB\Gamma} = \widehat{M\Gamma A}.$$

Ἐκτὸς τῆς ἐκτεθείσης σειρᾶς γραφῆς τῶν περιφερειῶν, δύνανται αὗται νὰ γραφῶσι καὶ κατ' ἀντίθετον τρόπον· δηλαδὴ ἐπὶ τῆς πλευρᾶς ΑΒ νὰ γραφῇ περιφέρεια ἐφαπτομένη τῆς πλευρᾶς ΑΓ, ἐπὶ τῆς ΑΓ περιφέρεια ἐφαπτομένη τῆς πλευρᾶς ΓΒ καὶ ἐπὶ τῆς ΓΒ περιφέρεια ἐφαπτομένη τῆς πλευρᾶς ΑΒ. Καὶ αἱ τρεῖς αὗται περιφέρειαι συναντῶνται εἰς ἄλλο ἐντὸς τοῦ τριγώνου κείμενον σημεῖον Ν, ἔχον καὶ αὐτὸ τὰς ἰδιότητας τοῦ Μ. Δηλαδὴ αἱ γωνίαι τῶν ἐξ αὐτοῦ πρὸς τὰς κορυφὰς ἀγομένων εὐθειῶν μετὰ τῶν πλευρῶν εἶναι ἴσαι, τουτέστιν ἔχομεν τὰς ἰσότητας

$$\widehat{NBA} = \widehat{N\Gamma B} = \widehat{NA\Gamma}.$$

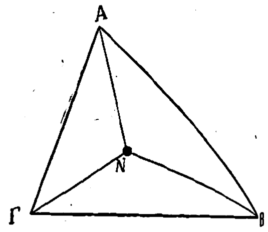

Τὰ σημεῖα ταῦτα Μ καὶ Ν λέγονται σημεῖα Μπροκάρ. Συμβολίζονται δὲ τὸ μὲν Μ μὲ τὸ σύμβολον $\Omega_1$ (πρῶτον σημεῖον Μπροκὰρ ἢ θετικὸν ἢ σημεῖον ἀναδρόμου φορᾶς), τὸ δὲ Ν διὰ $\Omega_2$ (δεύτερον σημεῖον Μπροκάρ, ἢ ἀρνητικὸν σημεῖον ἢ σημεῖον ὀρθῆς φορᾶς).

***Κύκλος Μπροκάρ.*** Καλεῖται οὕτω ὁ κύκλος, οὗτινος ἡ περιφέρεια διέρχεται διὰ τῶν δύο σημείων Μπροκὰρ καὶ διὰ τοῦ κέντρου τοῦ εἰς τὸ τρίγωνον περιγεγραμμένου κύκλου. Ν. Γ.

**Μπρόκβιλ** (Brockville) *[Γεωγρ.].* Πόλις τοῦ Καναδᾶ, πρωτεύουσα ὁμωνύμου κομιτείας, ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Ὀντάριο. Κάτ. 10.000. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου, διεξάγει ζωηρὸν ἐμπόριον καὶ ἔχει ἐργοστάσια χημικῶν προϊόντων καὶ μηχανημάτων καὶ χυτήρια. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν μεταλλεῖα σιδήρου καὶ ἅλατος. Μ.Δ.Β.

**Μπρόκεν Χὶλ** (Brokeu Hill) *[Γεωγρ.].*—1) Πόλις τῆς Αὐστραλίας, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Νέας Νοτίου Οὐαλλίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Γιανκοβισίνα. Κάτ. 32.000. Εἶναι σημαντικὸν κέντρον μεγάλης κτηνοτροφικῆς περιφερείας, ἔχει δὲ παρ' αὐτὴν τὸ μεγαλύτερον ὀρυχεῖον ἀργύρου ἐν τῷ κόσμῳ, εἰς τὸ ὁποῖον ἐργάζονται ὑπὲρ τοὺς 4.000 ἐργάται. Ἔχει ἐπίσης ὀρυχεῖα χρυσοῦ, λευκοσιδήρου καὶ μολύβδου.

— 2) Χωρίον τῆς Ν. Ἀφρικῆς ἐν τῇ Β. Ροδεσίᾳ. Κάτ. 2.100. Εἰς ἀπόστασιν 100 χλμ. ἀπ' αὐτῆς εὑρίσκονται κοιτάσματα χρυσοῦ καὶ γαιανθράκων. Μ. Δ. Β.

**Μπροκιὲρ** (Broquière), ***Μπερτραντὸν*** *ντὲ Λα—.* Γάλλος περιηγητὴς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἀποθανὼν ἐν Λίλλῃ τῷ 1459. Ἦτο σύμβουλος, αὐλάρχης καὶ ἀνώτερος ἀξιωματοῦχος τοῦ δουκὸς τῆς Βουργουνδίας Φιλίππου τοῦ Καλοῦ, ἐπεχείρησε δ' ὁμοῦ μετ' ἄλλων ἱπποτῶν ταξίδιον εἰς τοὺς Ἁγίους Τόπους. Ἐπανελθὼν ἐκεῖθεν διὰ ξηρᾶς, συνέγραψε τῷ 1433 βιβλίον, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀφηγεῖτο τὰς ἐκ τοῦ προσκυνήματος τούτου ἐντυπώσεις του. Τὸ βιβλίον του, ἐπιγραφόμενον «Voyage d'Outremer», εἶχεν ἐντελῶς λησμονηθῇ, ἀνεκαλύφθη δὲ μόνον κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ὑπὸ τοῦ Λεγκρὰν ντ' Ὠσὶ καὶ ἐγένοντο ἔκτοτε πολλαὶ ἐκδόσεις του, ὧν γνωστοτέρα ἡ τοῦ Ch. Scheffer (Παρίσιοι 1892). Εἶναι ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτον λόγῳ τῶν ἐν αὐτῷ ἀναφερομένων περιέργων λεπτομερειῶν καὶ ἐπεισοδίων. Χ. Δ.

**Μπρόκκεν** (Brocken) *[Γεωγρ.].* Ὑψηλοτάτη κορυφὴ τοῦ ὄρους Harz ἐν Γερμανίᾳ, ἐκ γρανίτου, ὕψους 1.142 μέτρων. Εἶναι τὸ ὑψηλότατον καὶ ψυχρότατον σημεῖον τῆς βορείου Γερμανίας. Ἐπ' αὐτῆς ὑπάρχει ξενοδοχεῖον καὶ μετεωρολογικὸς σταθμός· φαίνονται δὲ ἐξ αὐτῆς 89 πόλεις καὶ περὶ τὰ 700 χωρία. Ἔχει σιδηροδρομικὴν συγκοινωνίαν.

—**Μπρόκκεν,** ***φάσμα τοῦ —*** *['Οπτ. Μετεωρολ.].* Καλεῖται οὕτω τὸ ὀπτικὸν ἀτμοσφαιρικὸν φαινόμενον, τὸ παρατηρηθὲν τὸ πρῶτον ἐν Γερμανίᾳ καὶ ἐπὶ τοῦ ὄρους Μπρόκκεν. Κατὰ τὸ φαινόμενον τοῦτο ὁ παρατηρητὴς ἱστάμενος ἐπὶ σημείου τοῦ ὄρους τούτου ἐν ὥρᾳ ὁμίχλης βλέπει ἑαυτὸν σκιαγραφούμενον ἐπ' αὐτῆς, εἰς γιγαντιαίας δὲ διαστάσεις. Συχνὰ ἡ σκιὰ αὕτη συνοδεύεται ὑπὸ ἑνὸς ἢ πολλῶν φωτοστεφάνων, οἵτινες περιβάλλουν εἴτε μόνον τὴν κεφαλὴν εἴτε ὁλόκληρον τὴν σκιάν. Θ.Ε.Θ.

**Μπρόκκες** (Brockes), ***Βαρθόλδος-Ἐρρῖκος.*** Γερμανὸς ποιητής, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀμβούργῳ (1680—1747). Κατέλαβεν ἀνωτάτας διοικητικὰς θέσεις, ἐπεχείρησε διάφορα ταξίδια καὶ ἵδρυσεν ἐν Ἀμβούργῳ τὴν «Γερμανόφιλον Ἑταιρείαν» (Deutschliebende Gesellschaft) καὶ τὴν «Πατριωτικὴν Ἑταιρείαν», ὄργανον τῆς ὁποίας ὑπῆρξε τὸ περιοδικὸν «Ὁ Πατριώτης» (1724—1748). Ἐγένετο ὑπουργός, ἐτιμήθη δὲ διὰ τίτλου εὐγενείας ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Φραγκίσκου Α'. Τὸ κυριώτερον ἔργον εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐπίγειος εὐφροσύνη ἐν Θεῷ» (1721—1748, 9 τ.) ἀποτελοῦν συλλογὴν ποιητικῶν καὶ θρησκευτικῶν στοχασμῶν ἐπὶ τῆς φύσεως. Ἐδημοσίευσε πρὸς τούτοις καὶ πολλὰς μεταφράσεις («Ἐποχαί» τοῦ Τόμσον, 1745 κ. ἄ.). Γ. Ε. Κ.

**Μπρόκκι** (Brocchi), ***Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Ἰταλὸς φυσιοδίφης καὶ ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Μπασσάνο τῷ 1772 καὶ ἀποθανὼν ἐν Χαρτούμ τῷ 1826. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς, ἔγραψε ποιήματα: «Belvedere» (τελευταία ἔκδ.

σις 1835) καὶ διάφορα ἐπιστημονικὰ ἔργα, κυριώτερα ἐκ τῶν ὁποίων εἶναι: «Trattato di conchiliologia fossile subapennina» (2α ἔκδ. 1843) καὶ «Dello Stato fisico del suolo di Roma» (1820).
—Ω.

**μπρόκολο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κράμβη ἡ λαχανώδης*.

**Μπρόκτειον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κοσμίου τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 396.
Χ. Δ.

**Μπρόκτον** (Brockton) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Μασσαχουσσέτης. Κάτ. 70.000. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 32 χλμ. Ν. τῆς Βοστώνης καὶ εἶναι πόλις βιομηχανική, μὲ μεγάλα ἐργοστάσια ὑποδημάτων, κλειδοκυμβάλων, ἐπίπλων καὶ κυτιοποιίας.
Μ. Δ. Β.

**Μπροκχάους** (Brockhaus). Ἐνθύμιον Γερμανῶν ἐκδοτῶν, ὧν γνωστότεροι εἶναι οἱ ἑξῆς:

—1) ***Φρειδερῖκος-Ἀρνόλδος*** (1772—1823), ἱδρυτὴς τοῦ ἐν Λειψίᾳ οἴκου «F. A. Brockhaus». Τῷ 1805 ἵδρυσεν ἐν Ἀμστελλοδάμῳ γερμανικὸν βιβλιοπωλεῖον μετ' ἐκδοτικοῦ οἴκου, ὃν τῷ 1811 μετέφερεν εἰς Ἄλτεμπουργκ. Τῷ 1818, ἐγκατασταθεὶς ἐν Λειψίᾳ, ἵδρυσεν αὐτόθι καὶ τυπογραφεῖον. Ἡ κυριωτέρα τῶν ἐπιχειρήσεων αὐτοῦ ὑπῆρξεν ἡ ἔκδοσις τῶν: «Zeitgenossen» (ἀπὸ τοῦ 1816), «Literarisches Konversationsblatt» (1820), «Hermes oder Kritisches Jahrbuch der Literatur» (1819), καὶ «Isis» (1817).

—2) ***Φρειδερῖκος***, πρεσβύτερος υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1800—1865). Ἀνέλαβε μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του *Ἑρρίκου* τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου τοῦ πατρός του καὶ ἐτελειοποίησε τὸ τυπογραφεῖον.

—3) ***Ἑρρῖκος*** (1804—1874). Ἀπὸ τοῦ 1860 μόνος ἰδιοκτήτης τοῦ οἴκου Μπροκχάους, προήγαγεν αὐτὸν διὰ τῆς ἐκδόσεως νέων περιοδικῶν καὶ ἡμερησίων φύλλων, ἐν οἷς τά: «Historisches Taschenbuch» τοῦ Ράουμερ, «Repertorium der gesamten deutschen Literatur» τοῦ Γκέρσντορφ, «Allgemeine Bibliographie für Deutschland», «Leipziger Allgemeine Zeitung, (βραδύτερον «Deutsche Allgemeine Zeitung») κ. ἄ. Τῷ 1827 ὁ οἶκος ἐπεξέτεινε τὰς ἐργασίας αὐτοῦ διὰ τῆς ἱδρύσεως ἐν Παρισίοις καὶ Λειψίᾳ «βιβλιοπωλείου διὰ τὴν γερμανικὴν καὶ τὴν ξένην λογοτεχνίαν», βραδύτερον δὲ διὰ τῆς ἀγορᾶς τοῦ βιβλιοπωλείου Γκλέντιτς μετὰ τῆς «Γενικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας» τῶν Ἔρς καὶ Γκρούμπερ.

—4) ***Ἐδουάρδος***, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1829—1914). Διετέλεσε μέλος τοῦ Ράϊχσταγ, πρόεδρος τοῦ συλλόγου τῶν βιβλιοπωλῶν, τῶν τυπογράφων κλπ.

—5) ***Ἀλβέρτος***, ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου καὶ συνιδιοκτήτης τοῦ οἴκου ἀπὸ τοῦ 1889 μέχρι τοῦ 1905.

—6) ***Φρίτς***, νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, νομικὸς σύμβουλος καὶ μέτοχος τοῦ οἴκου.

—7) ***Χάνς***, υἱὸς τοῦ Ἀλβέρτου, μέτοχος τοῦ οἴκου ἀπὸ τοῦ 1914.

Ὁ οἶκος Μπροκχάους ἐξέδωκε τὸ ὁμώνυμον ἐγκυκλοπαιδικὸν λεξικὸν («Brockhaus Conversations Lexikon»), ἐπ' ἐσχάτων δὲ ἀνέλαβε τὴν ἔκδοσιν πλείστων ἐκλαϊκευτικῶν ἐπιστημονικῶν ἔργων, ὡς καὶ τῶν περιηγήσεων τοῦ Στάνλεϋ, Νάνσεν, Χέντιν κ. ἄ.
Α. Δ.

— **Μπροκχάους** (Brockhous), ***Ἑρμάννος***. Γερμανὸς ἀνατολιστὴς καὶ φιλόλογος (1806—1877). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἰνδικῆς γλώσσης καὶ φιλολογίας ἐν Ἰένῃ καὶ Λειψίᾳ. Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἐργασιῶν του καταλέγονται: ἡ ἔκδοσις τῶν πρώτων πέντε βιβλίων τῆς μεγάλης συλλογῆς μύθων τῆς Σαμαβέδας «Kathâ-Sarit-Sâgara» μετὰ μεταφράσεως εἰς τὴν γερμανικὴν (Λειψία 1839), ἡ ἔκδοσις τοῦ δράματος «Prabodha-Chandrodaya» τοῦ Κρίσνα Μίσρα (1845) καὶ ἡ κριτικὴ ἔκδοσις τῶν «Ἀσμάτων» τοῦ Χαφῆ (1854—1861 εἰς 3 τόμ.). Ὡς συνιδρυτὴς τῆς «Γερμανικῆς ἑταιρείας τῶν ἀνατολικῶν σπουδῶν», διηύθυνεν ἀπὸ τοῦ 1852—1865 τὸ ὁμώνυμον περιοδικόν της. Τῷ 1856 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τῆς συντάξεως τῆς «Γενικῆς Ἐγκυκλοπαιδείας» τῶν Ἔρς καὶ Γκρούμπερ.
Α. Δ.

**Μπρολὶ** (Broglie, ἀρχικὴ προφ. *Μπρόγλ*). Γαλλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν, ἀποτελοῦσα συνέχειαν τοῦ ἀρχαίου ἰταλικοῦ οἴκου τῶν *Μπρόλια* (Broglia), τοῦ ὁποίου μέλη μετηνάστευσαν εἰς Γαλλίαν κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ὡς ἀπώτατος γενάρχης αὐτῶν ἀναφέρεται ὁ Ἀμαλάριχος Γκριμάλντι, χωροδεσπότης τῆς Μπαρμπαρίας, τῆς Κόρια καὶ τῆς Ριβάρας (ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Πεδεμοντίου), ἀποθανὼν περὶ τὸ 960. Ὁ οἶκος Γκριμάλντι ὑποδιῃρέθη κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα εἰς τρεῖς κλάδους: τοὺς κυρίως Γκριμάλντι, τοὺς Μπόλιο ἢ Μπούλιο καὶ τοὺς Μπρόλια. Ἱδρυτὴς τοῦ τελευταίου τούτου κλάδου ὑπῆρξεν ὁ Οὐμβέρτος Μπρόλια, γερουσιαστὴς ἐκ Κιάρι τῆς Λομβαρδίας, ζήσας περὶ τὸ 1250.

Ἐκ τῆς γαλλικῆς οἰκογενείας τῶν Μπρολί, διαρκούντων τῶν ΙΖ' καὶ ΙΗ' αἰώνων, ἀναφέρονται ἰδίως οἱ κατωτέρω:

— 1) ***Φραγκῖσκος - Μαρία***, *κόμις ντὲ*—. Γενάρχης τοῦ γαλλικοῦ οἴκου (1610—1656). Ἀκόλουθος τοῦ δουκὸς τῆς Σαβοΐας μέχρι τοῦ 1634, ἀνέλαβεν ἔκτοτε ὑπηρεσίαν εἰς τὸν γαλλικὸν στρατόν, διακριθεὶς δὲ εἰς διαφόρους μάχας, προήχθη βαθμηδὸν εἰς στρατηγὸν καὶ ἐγένετο τῷ 1650 διοικητὴς τοῦ στρατοῦ τῆς Φλάνδρας. Ἀπὸ τοῦ ἰδίου ἔτους εἶχεν ἀποκτήσει τὴν γαλλικὴν ἰθαγένειαν. Ἀπέθανε κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Βαλεντίας.

— 2) ***Βίκτωρ - Μαυρίκιος***, *κόμις ντὲ*—. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1647—1727). Διεκρίθη ἰδίως εἰς τὴν μάχην τοῦ Σενὲφ (1674). Διορισθεὶς διοικητὴς τοῦ Λαγκεντόκ, κατέστειλε διὰ σκληρῶν μέτρων τὰ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην κινήματα τῶν προτεσταντῶν. Τῷ 1724 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ στρατάρχου.

—3) ***Φραγκῖσκος-Μαρία***, *κόμις καὶ εἶτα δοὺξ ντὲ* —. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1671—1745). Μετέσχε τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Φλάνδρας, τῆς Γερμανίας καὶ τῆς Ἰταλίας. Γενόμενος στρατάρχης ἀπὸ τοῦ 1734 ἐνίκησε τοὺς Αὐστριακοὺς ἐν Ἰταλίᾳ, διώκησε δὲ τὸν στρατὸν τῆς Βοημίας τῷ 1741. Ἀπὸ τοῦ 1742 ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ δουκός.

—4) ***Φραγκῖσκος-Βίκτωρ***, *δοὺξ ντὲ*—. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1718—1804). Ἐπολέμησεν ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ πατρός του, τὸ πρῶτον ἐν Ἰταλίᾳ εἰς ἡλικίαν δεκαπέντε ἐτῶν, καὶ εἶτα εἰς Φλάνδραν. Τῷ 1742 ἐγένετο στρατηγός, διεκρίθη δὲ μόνος αὐτὸς ἐκ τῶν Γάλλων στρατιωτικῶν ἀρχηγῶν κατὰ τὸν Ἑπταετῆ πόλεμον, ἀνδραγαθήσας κατὰ τὴν μάχην τοῦ Ρόσμπαχ (1757) καὶ καταγαγὼν λαμπρὰν νίκην κατὰ τῶν Γερμανῶν εἰς Κόρμπαχ (1760). Τῷ 1762 ἐγένετο στρατάρχης. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τῆς ἐπαναστάσεως τοῦ 1789 διωρίσθη παρὰ τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' διοικητὴς τῶν εἰς Βερσαλλίας συγκεντρωθέντων βασιλικῶν στρατευμάτων, ἀναλαβὼν ἅμα τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν, τὸ ὁποῖον διετήρησεν ἐπὶ ὀλίγας μόνον ἡμέρας. Κατόπιν ἀπεσύρθη εἰς Γερμανίαν καὶ διῴκησε τὸ πρῶτον σῶμα τῶν ἐξορίστων Γάλλων, τὸ δρᾶσαν ἐν Καμπανίᾳ τῷ 1792, ὑπηρέτησε δ' ἀκολούθως εἰς τὸν ἀγγλικὸν στρατὸν (ἀπὸ τοῦ 1794) καὶ εἰς τὸν ρωσικὸν (ἀπὸ τοῦ 1797). Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἐγγράφων τοῦ ἀρχείου αὐτοῦ καὶ προσωπικῶν σημειωμάτων του ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1792 ὑπὸ τοῦ ντὲ Μπουρσὲ «Ἀπομνημονεύματα ἐπὶ τοῦ Ἑπταετοῦς πολέμου».

— 5) ***Κάρολος-Φραγκῖσκος***, *κόμις ντὲ* —. Ἀδελφὸς τοῦ Φραγκίσκου-Βίκτωρος (1719—1781). Πρεσβευτὴς τῆς Γαλλίας ἐν Πολωνίᾳ, εἰργάσθη μετὰ ζήλου, ἀλλ' ἄνευ ἀποτελέσματος, ἐναντίον τῶν ρωσσικῶν σχεδίων καὶ τῆς πολωνικῆς ὑποδουλώσεως. Ὑπηρέτησεν εἶτα ἐπί τινα χρόνον ἐν Γερμανίᾳ. μετὰ τὸ τέλος δὲ τοῦ Ἑπταετοῦς πολέμου ὁ Λουδοβῖκος ΙΕ' ἀνέθηκεν εἰς αὐτὸν τὸ «Μυστικὸν ὑπουργεῖον», τοῦ ὁποίου ἀποστολὴ ἦτο ν' ἀλληλογραφῇ ἀπ' εὐθείας μετὰ τοῦ βασιλέως καὶ νὰ τὸν διαφωτίζῃ ἐπὶ τῆς ἑκάστοτε διεθνοῦς πολιτικῆς καταστάσεως.

— 6) ***Βίκτωρ - Κλαύδιος***, *πρίγκηψ ντὲ* —. Υἱὸς τοῦ Φραγκίσκου - Βίκτωρος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1757 καὶ ἀποκεφαλισθεὶς αὐτόθι τῷ 1794. Τῷ 1789 ἐτάχθη ἀρχικῶς μὲ τὸ μέρος τῆς ἐπαναστάσεως καὶ ἐξελέγη βουλευτὴς ἐν τῇ ἐθνοσυνελεύσει, διωρίσθη δὲ στρατοπεδάρχης κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ρήνου καὶ προήχθη εἰς στρατάρχην, Ἀρνηθεὶς ὅμως ν' ἀποδεχθῇ τὴν ἔκπτωσιν τῶν Βουρβόνων καὶ ἀντιταχθεὶς εἰς τὴν θανάτωσιν τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ', παρεπέμφθη ἐνώπιον τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον.

—7) ***Μαυρίκιος-Ἰωάννης*** *ντὲ* —. Κληρικός, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου (1766—1821). Προσχωρήσας καὶ οὗτος ἐν ἀρχῇ εἰς τὴν ἐπανάστασιν, ἠναγκάσθη κατόπιν, ὅταν ὁ ἀδελφός του ἐθανατώθη, νὰ ἐγκαταλείψῃ κρυφίως τὴν Γαλλίαν, ὅπου ἐπανῆλθε τῷ 1803 ἐπὶ τῆς ὑπατείας τοῦ Ναπολέοντος. Τῷ 1807 ἐγένετο ἐπίσκοπος ἐν Γάνδῃ. Ἀντιταχθεὶς τότε κατὰ τῶν ἐπεμβάσεων τῆς πολιτικῆς ἐξουσίας εἰς τὰ πράγματα τῆς ἐκκλησίας, κατεδιώχθη καὶ ἐφυλακίσθη, ἐπανῆλθεν ἐν τούτοις εἰς τὴν ἕδραν του τῷ 1814. Τῷ 1816 ὁ προτεστάντης βασιλεὺς τῆς Ὁλλανδίας Γουλιέλμος τὸν παρέπεμψεν εἰς δίκην, καταδικασθεὶς δὲ εἰς ἐξορίαν, κατέφυγεν εἰς Παρισίους, ὅπου διῆλθε τὸ ὑπόλοιπον τῆς ζωῆς του ἐν ἀφανείᾳ.
—Ω.

— **Μπρολὶ** (Broglie) ***Ἀχιλλεὺς-Κάρολος***, *δοὺξ ντὲ* —. Γάλλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, υἱὸς τοῦ πρίγκηπος *Βίκτωρος-Κλαυδίου* ντὲ *Μπρολὶ* (βλ. ἀνωτ. ἀριθ. 6), γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1785—1870). Ἀπὸ τοῦ 1809 εἶχε διορισθῇ ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος πάρεδρον μέλος τοῦ Συμβουλίου τῆς Ἐπικρατείας καὶ ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του ταύτην διεξήγαγε διαφόρους ἐπιτυχεῖς διπλωματικὰς ἀποστολάς. Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Βοναπάρτου, μόνος αὐτὸς ἐν τῇ βουλῇ τῶν ὁμοτίμων ὑπερημύνθη τοῦ στρατάρχου Νέϋ, διεκρίθη δὲ διὰ τὰς ὑγιεῖς αὐτοῦ φιλελευθέρας ἀρχάς, πολεμῶν ἐξ ἴσου τὰς ἀκρότητας τόσον τῶν ἐπαναστατικῶν ὅσον καὶ τῶν φανατικῶν ὀπαδῶν τοῦ παλαιοῦ καθεστῶτος καὶ ἀγωνιζόμενος μετὰ θέρμης νὰ φέρῃ εἰς συνδιαλλαγὴν τὰς δύο μερίδας πρὸς τὸ καλὸν τῆς χώρας. Προσχωρήσας εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1830, ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως εἰς τὴν πρώτην ἐπὶ Λουδοβίκου-Φιλίππου κυβέρνησιν, ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν τῷ 1832 καὶ εἶτα πρωθυπουργὸς (1835). Συνῆψε τότε τὴν μετὰ τῆς Ἀγγλίας συμμαχίαν καὶ ἐψήφισε τοὺς «νόμους τοῦ Σεπτεμβρίου», δι' ὧν περιωρίζοντο αἱ ἐλευθερίαι τοῦ τύπου, ἀλλ' ἀνετράπη τῷ 1836 ὑπὸ τῆς βουλῆς. Ἐπὶ τῆς δημοκρατίας τοῦ 1848 ἀντέδρασε κατὰ τῶν φιλομοναρχικῶν βλέψεων τοῦ Λουδοβίκου-Ναπολέοντος, μετὰ δὲ τὸ πραξικόπημα τοῦ 1851 ἀπεσύρθη τῆς πολιτικῆς καὶ ἀφωσιώθη εἰς τὴν μελέτην. Ἡ Ἀκαδημία τὸν ἐξέλεξε μέλος αὐτῆς ἀπὸ τοῦ 1856. Ἀποθνήσκων ἀφῆκε τρεῖς τόμους «Λόγων» του καὶ τέσσαρας τόμους «Ἀπομνημονευμάτων», ἐκδοθέντων ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του (1888), εἶχε δὲ ἐν ζωῇ δημοσιεύσει μονογραφίας τινὰς ἐπὶ τοῦ ποινικοῦ δικαίου καὶ ἓν ἔργον ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἀπόψεις ἐπὶ τῆς διακυβερνήσεως τῆς Ἰταλίας» (1856). Ἀπὸ τοῦ 1816 εἶχε νυμφευθῇ τὴν θυγατέρα τῆς κυρίας Στάελ, ἥτις, ὅπως καὶ ἡ μήτηρ αὐτῆς, ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πλέον διακεκριμένων γυναικῶν τῆς ἐποχῆς ἐκείνης.

—**Μπρολὶ** (Broglie), ***Ἰάκωβος - Βίκτωρ - Ἀλβέρτος***, *πρίγκιψ καὶ εἶτα δοὺξ ντὲ*—. Γάλλος ἱστορικὸς καὶ πολιτικός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου (1821—1901). Ἀρχίσας τὸ στάδιόν του ὡς διπλωματικὸς ἀκόλουθος, ὑπηρέτησεν εἰς τὰς πρεσβείας Μαδρίτης καὶ Ρώμης, παρῃτήθη ὅμως τῷ 1848 διὰ νὰ ὑπερασπίσῃ διὰ τοῦ τύπου, ἐναντίον τῆς δημοκρατίας ἐν ἀρχῇ καὶ εἶτα ἐναντίον τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας, τὰ συμφέροντα τοῦ καθολικισμοῦ καὶ τῆς πολιτικῆς ἐλευθερίας τῶν ἀτόμων. Τῷ 1856 ἐδημοσίευσε περισπούδαστον ἔργον του περὶ τῆς «Ἐκκλησίας καὶ τοῦ ρωμαϊκοῦ κράτους κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα», ἐξ ἀφορμῆς τοῦ ὁποίου ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς ἀκαδημίας (1862). Ἐκθέσας ὑποψηφιότητα κατὰ τὰς βουλευτικὰς ἐκλογὰς τοῦ 1869 ἀπέτυχεν, ἐξελέγη ὅμως δύο ἔτη βραδύτερον ὡς ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν ἐθνοσυνέλευσιν τοῦ 1871. Τὴν ἰδίαν ἐποχὴν διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Λονδίνῳ, ὁπόθεν ἐπανῆλθε μετὰ ἓν ἔτος εἰς Παρισίους διὰ νὰ ἀναλάβῃ τὴν ἀρχηγίαν τῆς φιλομοναρχικῆς ἀντιπολιτεύσεως ἐναντίον τῆς δημοκρατικῆς πολιτικῆς τοῦ Θιέρσου. Ἐπιτυχὼν νὰ ἐξαναγκάσῃ τοῦτον εἰς παραίτησιν, ἔλαβε παρὰ τοῦ διαδόχου του στρατηγοῦ Μὰκ-Μαὸν τὴν ἐντολὴν νὰ σχηματίσῃ κυβέρνησιν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐκράτησε δι' ἑαυτὸν τὸ χαρτοφυλάκιον τοῦ ὑπουργείου τῶν Ἐξωτερικῶν. Μετὰ ἑνὸς ὅμως ἔτους παραμονὴν ἐν τῇ ἐξουσίᾳ ἀνετράπη, παρὰ τὰ φιλομοναρχικὰ αἰσθήματά του, ὑπ' αὐτῆς ταύτης τῆς ἄκρας δεξιᾶς. Ἐκλεγεὶς γερουσιαστὴς τῷ 1875, ἐγένετο καὶ πάλιν πρωθυπουργὸς τῷ 1877, ὁπότε διέλυσε τὴν βουλὴν καὶ διενήργησε νέας ἐκλογὰς μὲ τὴν ἐλπίδα ὅτι θὰ προέκυπτεν ἐξ αὐτῶν ἰσχυρὰ φιλομοναρχικὴ πλειοψηφία. Ἀλλ' ἡ προελθοῦσα ἐκ τῶν ἐκλογῶν βουλὴ ἦτο ἐχθρικὴ πρὸς τὴν πολιτικήν του καὶ ὁ ντὲ Μπρολὶ ἠναγκάσθη νὰ καταθέσῃ τὴν ἐξουσίαν. Ἀποτυχὼν ἐπὶ πλέον καὶ ὁ ἴδιος κατὰ τὰς ἐνεργηθείσας βραδύτερον γερουσιαστικὰς ἐκλογάς, ἀπεσύρθη ἔκτοτε τῆς πολιτικῆς καὶ ἐπανέλαβε τὰς προσφιλεῖς εἰς αὐτὸν μελέτας ἐπὶ τῆς διπλωματικῆς ἱστορίας τῆς Εὐρώπης, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀνεγνωρίσθη ὡς συγγραφεὺς πρώτης γραμμῆς. Ἐκ τῶν ἔργων του προέχουν ἰδίως: «Τὸ μυστικὸν ὑπουργεῖον τοῦ βασιλέως» (1878), «Φρειδερῖκος Β' καὶ Λουδοβῖκος ΙΕ'» (1885), «Αὐτοκράτειρα Μαρία-Θηρεσία» (1888) κλπ.

— **Μπρολὶ** (Broglie), ***Λουδοβῖκος-Βίκτωρ*** *ντὲ* —. Γάλλος φυσικός, γεννηθεὶς ἐν Διέππῃ τῷ 1892. Ἡ οἰκογένειά του τὸν προώριζε διὰ τὸ διπλωματικὸν στάδιον, δι' ὃ καὶ ἐσπούδασεν ἐν ἀρχῇ πολιτικὰς ἐπιστήμας, ἀκολουθῶν ὅμως βραδύτερον τὴν κλίσιν του, ἠκολούθησε σπουδὰς φυσικῶν ἐπιστημῶν, τὰς ὁποίας καὶ συνεπλήρωσε τῷ 1914. Εἰς τὴν ἐναίσιμον διατριβήν, τὴν ὁποίαν ὑπέβαλε διὰ τὴν ἀνακήρυξίν του εἰς διδάκτορα τῷ 1924, ἐξέθηκε νέαν ὅλως θεωρίαν ἐπὶ τῆς ὀπτικῆς, βασιζομένην ἐπὶ μαθηματικῶν καὶ φιλοσοφικῶν αὐτοῦ ὑποθέσεων, τὰς ὁποίας ἐπηλήθευσαν πειραματικῶς τρία ἔτη βραδύτερον ἄλλοι σοφοί. Στηριζόμενος ἐπὶ τῆς θεωρίας τοῦ Ἀϊνστάϊν, ὁ Μπρολὶ συνεπλήρωσε τὰς θεωρίας τῶν ***κβάντα*** (βλ. λ.) τῶν Πλὰνκ καὶ Μπόρ, προέκυψε δ' ἐκ τούτου εἷς ἀξιοθαύμαστος συνδυασμὸς μηχανικῆς, ἠλεκτρισμοῦ καὶ ὀπτικῆς, γνωστὸς ἤδη ὑπὸ τὸ ὄνομα «κυματομηχανική». Ἐμελέτησεν εἶτα πειραματικῶς τὰς ἰδιότητας τῶν ἀτόμων, προαγαγὼν σημαντικῶς τὰς ἐπὶ τούτων γνώσεις τῆς ἐπιστήμης. Διὰ τὰς ἐργασίας του ταύτας ὁ Μπρολὶ ἐτιμήθη τῷ 1929, εἰς ἡλικίαν 36 μόλις ἐτῶν, διὰ τοῦ βραβείου Νόμπελ τῆς φυσικῆς. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του (βλ. κατωτ.) ἐδημοσίευσεν: «Εἰσαγωγὴν εἰς τὴν φυσικὴν

Digitized by Google

τῶν ἀκτίνων Χ καὶ γ» (1928), ἔγραψε δὲ καὶ ἄλλα ἔργα, ἐν οἷς: «Recueil d'exposés sur les ondes et corpuscules» (1930), ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκθέτει τὴν ἀπαρχὴν τῆς περιφήμου θεωρίας του, τὴν ἐξέλιξίν της καὶ τὴν τελικὴν αὐτῆς μορφήν.

— **Μπρολί** (Broglie), ***Λουδοβῖκος - Καῖσαρ - Βίκτωρ - Μαυρίκιος***, *δοὺξ ντὲ* —. Γάλλος φυσικός, πρεσβύτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1875. Ἐγένετο ἐν ἀρχῇ ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ, ἀπὸ τῶν τάξεων τοῦ ὁποίου παρῃτήθη βραδύτερον, διὰ ν' ἀκολουθήσῃ τὴν πρὸς τὰς φυσικὰς ἐπιστήμας ζωηράν του κλίσιν. Ἐγένετο διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τῶν Παρισίων, διὰ τὰς λαμπρὰς δὲ ἐργασίας αὐτοῦ τῷ ἀπενεμήθη ὁ τίτλος τοῦ ἐπιτίμου διδάκτορος ἐκ μέρους τῶν πανεπιστημίων τῆς Ὀξφόρδης καὶ τοῦ Λήδς. Σημαντικαὶ διὰ τὴν ἐπιστήμην ὑπῆρξαν αἱ ἔρευναί του ἐπὶ τῶν φασμάτων τῶν προσφάτως ἀνακαλυφθεισῶν νέων ἀκτινοβολιῶν, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἔγραψεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Βίκτωρος τὸ ἔργον: «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν φυσικὴν τῶν ἀκτίνων Χ καὶ γ» (1928). Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐπενόησε συσκευὴν διὰ τὴν λῆψιν τῶν ραδιοτηλεγραφημάτων ὑπὸ τῶν ὑποβρυχίων ἐν καταδύσει. Ἀπὸ τοῦ 1924 εἶναι μέλος τῆς γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Γ. Ζ.

**Μπρόλιο** *ντ' Ἀϊάνο* (Broglio d'Aïano). Ἰταλὸς φιλέλλην (βλ. λ. *Ἀϊάνο*).

**Μπρὸμ** (Brome), ***Ἀλέξανδρος***. Ἄγγλος ποιητής (1620—1666). Ἔγραψεν ᾠδάς, σονέττα, ᾄσματα καὶ ἐπιγράμματα, ἅτινα ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1661 ἐν Λονδίνῳ. Ἔγραψε καὶ κωμῳδίαν ἐπιγραφομένην «Οἱ πονηροὶ ἐρασταί». Α. Δ.

— **Μπρὸμ** (Brome), ***Ριχάρδος***. Ἄγγλος θεατρικὸς συγγραφεύς, ἀποθανὼν τῷ 1652. Ἦτο ὑπηρέτης τοῦ Μπὲν Τζόνσον, παρὰ τῷ ὁποίῳ ἔμαθε τὴν τέχνην τῆς σκηνῆς, τὴν ὁποίαν προήγαγε δι' ἰδίας μελέτης καὶ ἐποπτείας. Ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων του τὰ «The Northern Lasse or a nest of fools», «The Antipodes», «The jovial crew», «The city wit» καὶ «The court beggar». Τὸ πρῶτον καὶ τὸ τρίτον διακρίνονται διὰ τὴν πραγματιστικὴν περιγραφὴν σκηνῶν ἐκ τοῦ βίου τοῦ ἀγγλικοῦ λαοῦ. Α. Δ.

**Μπρόμλεϋ** (Bromley) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ Κέντ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ράβεσμπωρν, 17,5 χλμ. πρὸς ΝΑ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς, ἀποτελοῦσα διαμονητήριον προάστειον αὐτοῦ. Ἔχει ἐργοστάσια μίκας. Κάτ. 33.646. Χ. Δ.

**Μπρόμο** (τὸ) (Bromo) *[Ἡφαιστειολ.]*. Ἡφαίστειον ἐνεργὸν τῆς Ἰάβας. Μεγαλυτέρας διαρκείας περιόδοι ἐνεργείας του ἐπεκράτησαν κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα, διακοπτόμεναι ὑπὸ σημαντικῶν περιόδων ἠρεμίας. Ἡ κατὰ τὴν ἔκρηξιν τοῦ 1829 ἀνατιναχθεῖσα σποδὸς ἀπέκρυψε τὸν ἥλιον καὶ προὐκάλεσε σκότος ἀρκετόν, εἰς πολλὰ δὲ μέρη τῆς περιοχῆς ἐσχηματίσθη στρῶμα σποδοῦ πάχους 20—23 ἑκατοστομέτρων. Ἐκχύσεις λαβῶν δὲν ἐσημειώθησαν κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους. Γ. Κ. Γ.

**Μπρόμπεργκ** (Bromberg, πολων. Bydgoszcz) *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Πόζεν, ἀνήκουσα ἀπὸ τοῦ 1919 εἰς τὴν Πολωνίαν. Κάτ. (1921) περὶ τὰς 88.000. Ἔχει ποικίλην βιομηχανίαν, ἐμπόριον ξυλείας, δημητριακῶν, δερμάτων κτλ. Ἔχει ἐπίσης ἀγροτικὸν ἰνστιτοῦτον, θέατρον, μουσεῖον κτλ. Παρ' αὐτὴν διέρχεται ὁμώνυμος διῶρυξ, συνδέουσα τοὺς ποταμοὺς Weichsel καὶ Oder.

**Μπρόμσγκροβ** (Bromsgrove) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομητείᾳ Οὐώρτσεστερ, κειμένη 19 χλμ. πρὸς ΒΑ. τῆς πόλεως Οὐώρτσεστερ, μεθ' ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει ὡραῖον γοτθικὸν ναὸν καὶ περίφημον σχολὴν κλασσικῶν σπουδῶν, ἱδρυθεῖσαν τῷ 1553. Βιομηχανίαι σιδηροδρομικοῦ ὑλικοῦ, ἥλων, κομβίων κλπ. Κάτ. 8.926. Χ. Δ.

**Μπρονικόβσκι** (Bronikowski), ***Φρειδερῖκος***, *βαρῶνος φὸν Ὄππελν* —. Γερμανὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1873 ἐν Κάσσελ. Ἔγραψε διηγήματα ἐκ τῆς στρατιωτικῆς ζωῆς, ἐδημοσίευσε μεταφράσεις Γάλλων καὶ Βέλγων ποιητῶν (Stendhal, Maupassant, Maeterlinck, de Coster κλπ.) καὶ διηύθυνε τὴν ἔκδοσιν ὅλων τῶν ἔργων καὶ ἐπιστολῶν Φρειδερίκου τοῦ Μεγάλου (1912—1914, 12 τόμοι). —Ω.

**Μπρόνκχορστ** (Bronkhorst), ***Γιὰν - Γκέρριτς***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1602—1662). Ἐμαθήτευσε παρὰ τῷ Παῖλεμπουργκ καὶ ἐξειργάσθη κατὰ τὸ πλεῖστον ἀλληγορίας καὶ ἀπεικονίσεις συναυλιῶν. Ι. Μ. Π.

— **Μπρόνκχορστ** (Bronkhorst), ***Ἰωάννης*** *βὰν* —. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1648—1726). Διέπρεψεν εἰς τὴν ἀπεικόνισιν πτηνῶν καὶ τετραπόδων ζῴων. Ι. Μ. Π.

—**Μπρόνκχορστ** (Bronkhorst), ***Πέτρος*** *βὰν*—. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1588—1661). Ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ δικαστηρίου τοῦ Ντὲλφτ ἀπόκεινται δύο ἀξιολογώτατοι πίνακές του: «Ἡ κρίσις τοῦ Σολομῶντος» καὶ «Ὁ Ἰησοῦς ἐκδιώκων τοὺς ἐμπόρους ἐκ τοῦ ναοῦ». Ι. Μ. Π.

**Μπρόνλη** (Brownlee), ***Ἰωάννης***. Σκῶτος ἰατρὸς καὶ σοφὸς (1868—1927). Ἀπὸ τοῦ 1914 διηύθυνε τὴν στατιστικὴν τῆς «Ἰατρικῆς ἐπιτροπῆς ἐρευνῶν», διδάξας εἰς τὰ πανεπιστήμια Γλασκώβης καὶ Λονδίνου σειρὰν μαθημάτων ἐπὶ τῆς ἰατρικῆς στατιστικῆς. Τῷ 1924 ἐδημοσίευσε μελέτην «Περὶ τῆς καταγωγῆς καὶ τῆς διανομῆς τῶν φυλῶν ἐν Σκωτίᾳ». Διετέλεσε μέλος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας στατιστικῆς Λονδίνου καὶ τοῦ ἐπιδημιολογικοῦ τμήματος τῆς Βασιλικῆς ἰατρικῆς ἑταιρείας. Ο. Ρ.

**Μπρόννερ** (Bronner), ***Φραγκῖσκος - Ξαβέριος***. Γερμανὸς ποιητής (1758—1850). Κατ' ἀρχὰς βενεδικτῖνος μοναχός, ἐγένετο τῷ 1820 προτεστάντης, εἰργάσθη δὲ κατόπιν ὡς δημοσιογράφος, διδάσκαλος καὶ ἐν τέλει βιβλιοθηκάριος. Ἔγραψε: «Ποιήματα καὶ διηγήματα τῶν ἁλιέων» (1787), «Νέα ποιήματα ἁλιέων» (1794, 2 τ.), «Ὁ πρῶτος πόλεμος» (1810, 2 τ.), «Ταξίδια εἰς τὴν χώραν τῶν εἰδυλλίων» (1833, 3 τ.) καὶ τὴν πλήρη χάριτος «Αὐτοβιογραφίαν» του (1795—1797, 3 τ., νέα ἔκδ. 1810).

**Μπροννιὰρ** (Brongniart), ***Ἀδόλφος-Θεόδωρος***. Γάλλος βοτανικός, υἱὸς τοῦ *Ἀλεξάνδρου Μπροννιὰρ* (βλ. κατωτ.), γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1801—1876). Ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς βοτανικῆς καὶ τῆς φυσιολογίας τῶν φυτῶν ἐν τῷ μουσείῳ τῆς φυσικῆς ἱστορίας (ἀπὸ τοῦ 1833) καὶ γενικὸς ἐπόπτης ἐν τῷ πανεπιστημίῳ (ἀπὸ τοῦ 1852), εἶχε δ' ἐκλεγῆ ἀκαδημαϊκὸς ἀπὸ τοῦ 1834. Αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ περιεστράφησαν ἰδίως ἐπὶ τῆς ἐπιστήμης τῆς παλαιοφυτολογίας, τῆς ὁποίας ὑπῆρξεν ἐκ τῶν κυριωτέρων ἱδρυτῶν. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων αὐτοῦ ἀναφέρομεν: «Βοτανικαὶ καὶ γεωλογικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τῶν φυτῶν τῶν ἐγκεκλεισμένων εἰς τὰ διάφορα τῆς γῆς στρώματα» (1828), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς παλαιοφυτολογίας» (1828), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς φύσεως τῶν φυτῶν, τὰ ὁποῖα ἐκάλυπτον τὴν ἐπιφάνειαν τῆς γῆς κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχὰς τοῦ σχηματισμοῦ της» (1838), «Ἐπὶ τῆς γενέσεως καὶ ἀναπτύξεως τοῦ ἐμβρύου εἰς τὰ φανερόγαμα φυτά» (1828), «Περὶ τῆς συστάσεως καὶ τῆς λειτουργίας τῶν φύλλων» (1831). Ἔγραψεν ἐπίσης τὸ βοτανολογικὸν τμῆμα τῆς ἐκθέσεως τοῦ γύρου τοῦ κόσμου τοῦ ἐκτελεσθέντος διὰ τοῦ πλοίου «Coquille» (1831) κλπ.

—**Μπροννιὰρ** (Brongniart), ***Ἀλέξανδρος***. Γάλλος ὀρυκτολόγος καὶ γεωλόγος (1770—1847), υἱὸς τοῦ *Ἀντωνίου-Λουδοβίκου Μπροννιὰρ* (βλ. κατωτ.). Ἀπὸ τοῦ 1800 διηύθυνε τὰ ἐργοστάσια κεραμουργίας τῶν Σεβρῶν, ὅπου ἔκαμε ν' ἀναβιώσῃ ἡ τόσον ἄλλοτε ἀνθήσασα ἐκεῖ τέχνη τῆς κεραμευτικῆς ζωγραφικῆς. Διωρίσθη κατόπιν καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῶν Παρισίων καὶ τὸ μουσεῖον τῆς φυσικῆς ἱστορίας καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν ἀπὸ τοῦ 815. Ἐδημοσίευσε: «Δοκίμιον κατατάξεως τῶν ἑρπετῶν» (1805), πολλὰς μονογραφίας ἐπὶ τῶν παλαιοντολογικῶν ὀστράκων καὶ ὀστρακοδέρμων καὶ «Ἐγχειρίδιον ὀρυκτολογίας» (1807). Γενόμενος συνεργάτης τοῦ Κυβιέρου, μετέσχε τῆς συγγραφῆς τοῦ μεγάλου ἔργου «Γεωλογικὴ περιγραφὴ τῆς περὶ τοὺς Παρισίους περιοχῆς» (1822). Ἔγραψεν ἐπίσης «Ἐγχειρίδιον κεραμευτικῶν τεχνῶν» (1845, ἐπανεκδοθὲν τῷ 1877).

—**Μπροννιὰρ** (Brongniart), ***Ἀλέξανδρος - Θεόδωρος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων (1739—1813) Ἤρχισε σπουδάζων ἰατρικήν, τὴν ὁποίαν ὅμως ἐγκατέλιπε διὰ ν' ἀφοσιωθῇ εἰς τὰς καλὰς τέχνας καὶ ἰδίως εἰς τὴν ἀρχιτεκτονικήν. Κατόπιν πολλῶν ἄλλων ἀξιολόγων ἐν Παρισίοις ἀρχιτεκτονικῶν του ἔργων, ἐσχεδίασε τὸ πάρκον τοῦ Μωπερτουΐ, τὸ κοιμητήριον τοῦ Πὲρ-Λασσαὶζ καὶ τὰς μεγάλας λεωφόρους τὰς πέριξ τοῦ μεγάρου τῶν Ἀπομάχων καὶ τῆς στρατιωτικῆς σχολῆς. Τὸ κύριον ὅμως αὐτοῦ ἔργον ὑπῆρξε τὸ μέγαρον τοῦ χρηματιστηρίου, τοῦ ὁποίου τὸν θεμέλιον λίθον ἔθεσε τῷ 1808. Ἀπὸ τοῦ 1777 εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. —Ω.

**Μπρόννικωφ**, ***Θεόδωρος Ἀντρέγιεβιτς***. Ρῶσος ζωγράφος, γεννηθεὶς ἐν Σαντρίνσκ τῷ 1827 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1902. Ἐσπούδασεν εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Πετρουπόλεως, εἶτα δὲ μετέβη εἰς Ρώμην, ὅπου παρέμεινε μέχρι τοῦ θανάτου του. Τῷ 1863 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ ἐπιτίμου καθηγητοῦ τῆς Ἀκαδημίας διὰ τὸν πίνακα αὐτοῦ «Ἡ ἐπάνοδος τοῦ Ὀδυσσέως», χρυσοῦν μετάλλιον ἀπὸ τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Ρώμης διὰ τὸν πίνακα «Ὁ Ὁράτιος ἀναγινώσκων τὰς σατίρας του εἰς τοὺς φίλους του». Οἱ ὡραιότεροι τῶν ἱστορικῶν πινάκων του ὑπάρχουσιν εἰς Ρωσίαν, Ἀγγλίαν, Δανιμαρκίαν, Ἰταλίαν καὶ Ἀμερικήν. Δύο ἐκ τούτων, «Ὁ Ὁράτιος εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Αὐγούστου» καὶ «Ὁ ἀσθενὴς καλλιτέχνης» κατεστράφησαν κατά τινα πυρκαϊὰν τοῦ μουσείου τοῦ Σικάγου. Ἄλλοι πίνακες αὐτοῦ, εὑρισκόμενοι εἰς τὰς πινακοθήκας τῆς Ρωσίας καὶ τῆς Ἀμερικῆς, εἶναι: «Ὁ ὕμνος τῶν Πυθαγορείων πρὸς τὸν ἥλιον», «Ἡ τελευταία τράπεζα τῶν γλαδιατόρων», «Ὁ Ἀλκιβιάδης καὶ ἡ Ἀσπασία πρὸ τῶν ἀρχόντων», «Ὁ αὐτοκράτωρ Αὔγουστος παίζων μετὰ τῶν τέκνων του» κλπ. Θ. Ξ.

**Μπρὸντ** (Brod) *[Γεωγρ.]*. Ὀχυρὰ πόλις τῆς Νοτιοσλαυίας ἐν Κροατοσλοβενίᾳ, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς ὄχθης τοῦ Σαύου, εἰς ἀπόστασιν 250 χλμ. σιδηροδρομικῶς ἀπὸ τοῦ Βελιγραδίου. Παρ' αὐτὴν ὁ Σαῦος ζεύγνυται διὰ μεγάλης γεφύρας, δι' ἧς διέρχεται ἡ πρὸς τὸ Σεράγεβον σιδηροδρομικὴ γραμμή. Κατέχει τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας πόλεως *Μαρσονίας*. Κάτ. 10.200. Χ. Δ.

**Μπρόντε** (Bronte) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Κατάνης τῆς Σικελίας. Κάτοικοι 17.990. Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 52 χλμ. ἀπὸ τῆς Κατάνης, ἐπὶ τῶν Δ. προπόδων τῆς Αἴτνης, ἐν τῇ εὐφορωτάτῃ κοιλάδι Σιμέτο καὶ εἶναι ὀνομαστὴ διὰ τὸν πλοῦτον τῶν ἀμπελώνων της. Εἶναι σημαντικὸν γεωργικὸν κέντρον καὶ ἔχει ὡραίαν μεσαιωνικὴν μητρόπολιν. Εἰς παλαιοτέρους χρόνους ἦτο πρωτεύουσα δουκάτου, ὁ δὲ Ἄγγλος ναύαρχος Νέλσων ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τοῦ Μπράντε, ἀπονεμηθέντα εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῶν Δύο Σικελιῶν Φερδινάνδου Α' τῷ 1799. Μ. Δ. Β.

**Μπρόντε** (Bronte), ***Αἰμιλία-Ἰωάννα***. Ἀγγλὶς μυθιστοριογράφος, ἀδελφὴ τῶν *Ἄννης καὶ Καρλόττας Μπρόντε* (1819—1848). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτῆς διακρίνεται τὸ Wuthering heights» καὶ τὸ «Ποιητικὸν ἀπάνθισμα» αὐτῆς. Α. Σ.

—**Μπρόντε** (Bronte), ***Ἄννα***. Ἀγγλὶς μυθιστοριογράφος, ἀδελφὴ τῶν *Αἰμιλίας-Ἰωάννας καὶ Καρλόττας Μπρόντε* (1822—1849). Εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἄκτον Μπέλλ*. Τὸ ἔργον αὐτῆς «Ἄγνες Γκρέϋ», ἔσχε μεγάλην ἐπιτυχίαν. Α. Σ.

— **Μπρόντε** (Bronte), ***Καρλόττα***. Ἀγγλὶς μυθιστοριογράφος, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κοῦρερ Μπέλλ*, ἀδελφὴ τῆς *Ἄννης* καὶ τῆς *Αἰμιλίας-Ἰωάννας Μπρόντε* (1816—1855). Ἐν Βελγίῳ, ὅπου διέμενεν ὡς παιδαγωγός, ἔγραψε τὸ πρῶτον διήγημά της «Καθηγητής». Ἄλλα ἔργα αὐτῆς εἶναι τὸ μυθιστόρημα «Jane Eyre an autobiography», ὅπερ ἐδραματοποιήθη ὑπὸ τῆς Καρλόττας Μπίρχ-Πφάιφερ ὑπὸ τὸν τίτλον «Η ὀρφανὴ τοῦ Λόγουντ» καὶ «Σίρλεϋ». Α. Σ.

**Μπροντζίνσκι** (Brodzinski), ***Καζίμιρος***. Πολωνὸς ποιητὴς (1791—1835). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ ἄξια μνείας εἶναι τὰ «Ἀγροτικὰ ποιήματα» καὶ τὸ ἔπος «Βίσλαβ», ὅπερ ἐγράφη κατ' ἀπομίμησιν τοῦ «Ἕρμαν καὶ Δωροθέα» τοῦ Γκαῖτε. Τὰ ἅπαντά του εἰς δέκα τόμους, ἐδημοσιεύθησαν ἐν Βίλνᾳ τῷ 1844. Α. Σ.

**Μπρόντι** (Brodie), *σὲρ* ***Βενιαμὶν-Κόλλινς***. Ἄγγλος χειρουργός, γεννηθεὶς ἐν Winterslow (1783—1862). Ἐγένετο ὑφηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ τῆς Great Windmill Street, καὶ τῷ 1819 ἐγένετο καθηγητὴς καὶ τοῦ χειρουργικοῦ κολλεγίου, διδάξας συγκριτικὴν ἀνατομικήν. Ἐνέκυψεν εἰς τὴν σπουδὴν τῶν χειρουργικῶν νόσων τῶν ἀρθρώσεων, μεγάλην παρασχὼν συμβολὴν εἰς τὴν νεωτέραν γνῶσιν τούτων. Τῷ 1834 ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ βαρωνέτου καὶ τῷ 1858 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας Λονδίνου. Ὡς νωτιαία νευραλγία τοῦ Μπρόντι θεωρεῖται ἡ ἐπίμονος χρονία νευραλγία, ἡ ἐντοπιζομένη εἰς οἱονδήποτε σημεῖον τῆς σπονδυλικῆς στήλης καὶ ὑποδυομένη τὴν μορφὴν τῆς φυματιάσεως τῶν σπονδύλων. Ἐκτὸς τῶν πραγματειῶν του ἐξέδωκε καὶ τὰ κλινικά του μαθήματα τῆς χειρουργικῆς καὶ τὰ ἐπὶ διαφόρων ζητημάτων παθολογίας καὶ χειρουργικῆς. Ο. Ρ.

**Μπρόντολο** (Brondolo) *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Εἷς τῶν πρὸ τῆς Ἑνετίας λιμένων, 1½ μίλλ. Β. τοῦ Πόρτο Φοσῶνε (Fossone: πλάτ. 45° 09' Β., μῆκ. 12° 20' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 201: Gulfs of Venice and Trieste) κατὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Μπρέντα. Ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς ἐξωτερικὸν ὁρμητήριον τῶν ἑνετικῶν στόλων. Σ. Ε. Λ.

**Μπρόντολο** (Brondolo) *[Γεωγρ.]* Νῆσος τῆς Ἰταλίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βενετίας, πρὸς Ν. τῆς Κιότζια καὶ ἐπὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ Μπρέντα μεταξὺ τοῦ ποταμοῦ τούτου καὶ τῆς λιμνοθαλάσσης τῆς Βενετίας. Συνδέεται μετὰ τῆς Κιότζια διὰ λιθίνης γεφύρας μετὰ 43 τόξων. Ἔχει ἐπ' αὐτῆς φρούριον καὶ λιμένα καλούμενον Conca καὶ Brondolo, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην σημασίαν κατὰ τὸν μεσαίωνα εἰς τοὺς πολέμους μεταξὺ Βενετίας καὶ Γενούης. Σήμερον ὁ λιμὴν οὗτος μετὰ μικρᾶς ὁμωνύμου πολίχνης ἀποτελεῖ μικρὸν ἁλιευτικὸν κέντρον. Μ. Δ. Β.

**Μπρόντχεντ** (Brodhead), ***Ἰωάννης-Ρόμειν***. Ἀμερικανὸς ἱστορικὸς καὶ διπλωμάτης (1814—1873). Ἔγραψε: «Report as historical agent of the State of New York» (1845), «History of the State of New York» κτλ. Α. Σ.

Digitized by Google

**Μπρόντυ** (Brody) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας ἐν Γαλικίᾳ. Κάτ. (1919) περὶ τὰς 11.000, ἐξ ὧν τὰ 80% Ἑβραῖοι. Ἔχει ζωηρὸν ἐμπόριον δημητριακῶν, κτηνῶν, ξυλείας κτλ., ὡς καὶ ἀκμαίαν βιομηχανίαν κυρίως ὑφασμάτων. Κατὰ τὸν πόλεμον, ἰδίως ἀπὸ Ἰουλίου μέχρις Αὐγούστου 1917, ἐγένετο θέατρον αἱματηρῶν ἀγώνων.

**Μπρόξμπερν** (Broxburn) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Σκωτίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Λίνλιθγκωβ, κειμένη 17,5 χλμ. πρὸς Δ τοῦ Ἐδιμβούργου. Ἔχει γαιανθρακωρυχεῖα, πηγὰς ὀρυκτελαίων, βιομηχανίας παραφίνης, χημικῶν προϊόντων, κηρίων κλπ. Κάτ. 7.807. Χ. Δ.

**Μπρόος** (Broos, ρουμ. Orastie, οὑγγρ. Szaszvaros) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τρανσυλβανίας, ἀνήκουσα ἀπὸ τοῦ 1920 εἰς τὴν Ρουμανίαν. Κάτοικοι (1920) περὶ τοὺς 7 150, κυρίως Ρουμᾶνοι.

**Μπρόουερ** (Brauwer), *Ἀδριανός*. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (βλ. λ. *Μπράουερ*).

**Μπρόουν** (Brown ἢ Browne)· βλ. *Μπράουν*.

**Μπρόουν-Σεκάρ**, ἢ *Μπράουν-Σεκὰρ* (Brown Séquard), *Κάρολος-Ἐδουάρδος*. Διάσημος φυσιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Port-Louis τῆς νήσου τοῦ Μαυρικίου ἐκ πατρὸς Ἀμερικανοῦ καὶ μητρὸς Γαλλίδος (1818—1894). Τῷ 1869 ἐγένετο ὑφηγητὴς ἐν τῇ ἰατρικῇ σχολῇ Παρισίων, εἶτα ἐδίδαξε φυσιολογίαν καὶ παθολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον Harward τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν καὶ τῷ 1878 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς πειραματικῆς ἰατρικῆς ἐν τῷ κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας. Τῷ 1886 εἰσῆλθεν εἰς τὸ γαλλικὸν ἰνστιτοῦτον καὶ διετέλεσε πρόεδρος τῆς Βιολογικῆς ἑταιρείας. Διὰ τῆς ἐκ τοῦ ὀνόματός του κληθείσης μεθόδου ἔδωκεν ἀφορμὴν πρὸς γένεσιν τῆς ὀργανοθεραπείας καὶ ὀποθεραπείας. Διὰ τῶν πεντακοσίων περίπου ἐργασιῶν του παρέσχε μεγίστην συμβολὴν εἰς τὴν φυσιολογίαν καὶ παθολογίαν τοῦ νευρικοῦ συστήματος. Τῷ 1858 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Φυσιολογία τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ζῴων», οὗτινος μέχρι τοῦ 1863 ἐξεδόθησαν 6 τόμοι, τῷ 1868 ἵδρυσε μετὰ τοῦ Charcot καὶ Vulpian τὰ «Ἀρχεῖα φυσιολογίας καὶ παθολογίας» καὶ τῷ 1873 ἐξέδιδεν ἐν Φιλαδελφείᾳ περιοδικὸν θεωρητικῆς καὶ πρακτικῆς ἰατροχειρουργικῆς.

Αἱ ἐνέσεις τοῦ Μπρόουν-Σεκὰρ εἶναι αἱ ὑποδόριοι ἐνέσεις ὀρχιτικοῦ ὑγροῦ διὰ τὸν γεροντικὸν κάματον. Ἀποτελοῦσι τὴν πρώτην ἐφαρμογὴν τῆς ὀποθεραπείας. Ἡ μέθοδος τοῦ Μπρόουν-Σεκὰρ συνίσταται εἰς τὴν ἐν τῇ θεραπευτικῇ χρῆσιν τοῦ προϊόντος τῶν χυμῶν τῶν ὀργάνων, ἀποτελοῦσαν νέαν μέθοδον θεραπείας. Ἡ ἀνακλαστικὴ παραπληγία τοῦ Μπρόουν-Σεκὰρ ἀποτελεῖ χαλαρὰν ἰάσιμον παραπληγίαν, ἐπερχομένην κατὰ τὴν πορείαν νόσου τῆς οὐρήθρας, τῆς κύστεως, τοῦ προστάτου τῶν νεφρῶν. Τέλος ὡς συνδρομὴ τοῦ Μπρόουν-Σεκὰρ θεωρεῖται ἡ συμμετρικὴ κατὰ τὴν ἀλλοίωσιν παραπληγία μετὰ ἡμιαναισθησίας κατὰ τὴν ἀντίθετον μοῖραν (ἐξαιρουμένης τῆς μυϊκῆς αἰσθήσεως). Ἀποτελεῖ παθογνωμονικὸν σημεῖον ἡμιπλαγίου ἀλλοιώσεως τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Ο. Ρ.

**Μπρόρσεν** (Brorsen), *Θεόδωρος*. Δανὸς ἀστρονόμος, γεννηθεὶς τῷ 1819 ἐν Norburg τῆς νήσου Alsen. Κατέστη γνωστὸς διὰ τὰς ἐνδιαφερούσας παρατηρήσεις του ἐπὶ τῶν κομητῶν, κυριώτεροι ἐκ τῶν ὁποίων εἶναι οἱ ἀνακαλυφθέντες ὑπ' αὐτοῦ τὴν 26ην Φεβρουαρίου 1846, τὴν 30ὴν Ἀπριλίου 1846, τὴν 20ὴν Ἰουλίου 1847, τὴν 5ην Σεπτεμβρίου 1850, τὴν 1ην Αὐγούστου 1851, τὴν 22αν Ὀκτωβρίου 1851, τὴν 16ην Μαρτίου 1854 κλπ. Ἐκ τῶν διαφόρων πραγματειῶν, τὰς ὁποίας ἐδημοσίευσεν εἰς τὸ περιοδικὸν «Astronomische Nachrichten» (τόμος XXIV—XL), ἀξία ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι ἡ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Über d. Vertheilung d. grossen Axen d. Cometen bahnen» (1852). Ὁ *περιοδικὸς κομήτης τοῦ Μπρόρσεν* ἀνεκαλύφθη ἐν Κιέλῳ τὴν 26ην Φεβρουαρίου 1846. Ἐκ τῶν γενομένων ἐπ' αὐτοῦ παρατηρήσεων ἐξήχθη ὅτι διέγραφεν ἐλλειπτικὴν τροχιὰν καὶ ὅτι κατὰ τὴν προσεχῆ ἐμφάνισίν του θὰ διήρχετο διὰ τοῦ περιηλίου τὴν 26ην Σεπτεμβρίου 1851. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ὅμως ἐκείνην διῆλθεν ἐγγὺς τοῦ Ἡλίου καὶ διέφυγε τὴν παρατήρησιν. Μετὰ ἑξαετίαν (18 Μαρτίου 1857) ὁ Bruhnis ἐπανεῦρεν αὐτόν. Ὁ κομήτης οὗτος δὲν κατωρθώθη νὰ παρατηρηθῇ κανονικῶς καθ' ὅλας τὰς διαβάσεις του διὰ τοῦ περιηλίου, ἡ δὲ περίοδος του ὑπόκειται εἰς βαθμιαίαν ἐλάττωσιν, ἀνερχομένη εἰς 5,5 ἔτη. Κατὰ τὰς φασματοσκοπικὰς παρατηρήσεις τοῦ Konkoly ἐν Οὐγγαρίᾳ καὶ τοῦ C. A. Young ἐν Ἀμερικῇ κατὰ Μάρτιον 1879, τὸ φάσμα τοῦ περιοδικοῦ τούτου κομήτου ὁμοιάζει πρὸς τὸ τοῦ κομήτου τοῦ Encke, ἤτοι εἶναι φάσμα ὑδρογονανθράκων. Ἄξιον ἰδιαιτέρας μνείας εἶναι τὸ γεγονὸς ὅτι ὀλίγας ἑβδομάδας μετὰ τὴν διάβασιν διὰ τοῦ περιηλίου ὁ κομήτης οὗτος ἐλαττοῦται ταχέως κατὰ λαμπρότητα, ἐνῷ ἡ διάμετρός του αὐξάνει σημαντικῶς, φθάνουσα μέχρι 8' ἕως 10'. Κατὰ τὸν W. E. Plummer, ἡ τροχιὰ τοῦ κομήτου τούτου θὰ ὑποστῇ σημαντικὰς παρέλξεις ὑπὸ τοῦ Διὸς κατὰ τὴν ἐπάνοδον του 1937, ἐὰν κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐμφανισθῇ καὶ δὲν διαλυθῇ ἐν τῷ μεταξύ, ὅπως συνέβη εἰς διαφόρους ἄλλους. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**Μπρὸς** (Brosses), *Κάρολος*. Γάλλος δικαστικός, ἱστοριογράφος καὶ ἀρχαιολόγος, γνωστὸς ἰδίως ὑπὸ τὸ ὄνομα *ὁ πρόεδρος Μπρὸς* (1709—1777). Ταξιδεύσας εἰς Ἰταλίαν τῷ 1739 καὶ παραμείνας ἐπ' ἀρκετὸν αὐτόθι χάριν ἱστορικῶν καὶ ἀρχαιολογικῶν μελετῶν, ἔγραψεν ἐκεῖθεν εἰς τοὺς ἐν Βουργουνδίᾳ φίλους του σειρὰν ἐπιστολῶν, αἵτινες τὸν κατέστησαν βραδύτερον διάσημον. Ἀποσπάσματα αὐτῶν ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τοῦ Lalande εἰς τὸ ἔργον του «Ταξίδιον ἑνὸς Γάλλου εἰς Ἰταλίαν» (1769), ἐν τῷ συνόλῳ των δὲ ἐξεδόθησαν τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Serieys τῷ 1799 («Ἱστορικαὶ καὶ κριτικαὶ ἐπιστολαί», εἰς 3 τόμ.) καὶ βραδύτερον (1839) ὑπὸ τοῦ M. R. Colomb ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Ἰταλία πρὸ ἑκατὸν ἐτῶν» (2 τόμ.). Εἰς κριτικήν του ἐπὶ τῶν ἐπιστολῶν τούτων ὁ Sainte-Beuve ἔγραφε: «Κανεὶς ἕως τώρα δὲν εἶδε τὴν Ἰταλίαν μὲ τόσην λεπτότητα καλαισθησίας, μὲ τόσην κριτικὴν διαπεραστικότητα καὶ τόσην εὐφυΐαν βλέμματος». Τῷ 1750 ὁ Μπρὸς εἶχε δημοσιεύσει ἐνδιαφέρον ἀρχαιολογικὸν καὶ ἀρχαιογεωγραφικὸν ἔργον: «Ἐπιστολαὶ περὶ τῆς σημερινῆς καταστάσεως τῆς ὑπογείου πόλεως Ἡρακλείας», τῷ δὲ 1756: «Ἱστορίαν τῶν πρὸς τὰς χώρας τοῦ νοτίου ἡμισφαιρίου ἐξερευνήσεων», ὅπου διὰ πρώτην φορὰν ἀπαντῶνται αἱ ὀνομασίαι «Αὐστραλία» καὶ «Πολυνησία». Αἱ ἐν τῷ τελευταίῳ τούτῳ ἔργῳ πληροφορίαι ἀπέβησαν χρησιμώταται βραδύτερον εἰς τὸν Bougainville καὶ τοὺς Ἄγγλους ἐρευνητὰς Walter καὶ Carteret. Ἄλλο ἀξιόλογον γεωγραφικόν του σύγγραμμα ὑπῆρξε τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἐπικοινωνία τοῦ μεγάλου Ὠκεανοῦ τῶν δύο Ἰνδιῶν, μὲ τὰς βορείους θαλάσσας, τὸ κοινῶς καλούμενον στενὸν τοῦ Ἀνιάν» (1761), οὗτινος τὰ δεδομένα ἐπεβεβαιώθησαν κατόπιν κατὰ τὰς ἐξερευνήσεις τοῦ Cook καὶ τοῦ Vancouver. Ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του (1777) ἐδημοσίευσε τὴν «Ἱστορίαν τῆς Ρωμαϊκῆς δημοκρατίας διαρκοῦντος τοῦ Ζ' αἰῶνος» (εἰς τρεῖς ὀγκώδεις τόμους), συνταχθεῖσαν ἰδίᾳ ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ λατινικοῦ πρωτοτύπου τοῦ Σαλουστίου καὶ διαφόρων ἀποσπασμάτων ἐκ τῶν ἀπολεσθέντων ἔργων αὐτοῦ. Εἰς τὴν συγγραφὴν τοῦ ἔργου τούτου εἶχεν ἀσχοληθῇ ὁ Μπρὸς ἐπὶ 40ετίαν ὁλόκληρον. Γ. Ζ.

— **Μπρὸς** (Brosse), *Σολομὼν ντὲ* —. Διαπρεπὴς Γάλλος ἀρχιτέκτων (1565—1627). Ἦτο υἱὸς τοῦ *Ἰωάννου Μπρός*, ἀρχιτέκτονος τῆς Μαργαρίτας τῆς Γαλλίας, καὶ ἀνεψιὸς τοῦ *Ἰακώβου Ἀντρουέ*, ἀρχιτέκτονος τῆς Μαρίας τῶν Μεδίκων, ἐγένετο δὲ καὶ αὐτὸς ἀπὸ τοῦ θανάτου τοῦ θείου του (1614) ἀρχιτέκτων τῆς βασιλίσσης. Κατεσκεύασε δι' αὐτὴν τὸ ἀνάκτορον τοῦ Λουξεμβούργου (1615—1620), εἰς τὸν ἴδιον δ' ὀφείλεται ἡ πύλη τοῦ Saint-Gervais (1616), ἥτις παρέμεινεν ἐπὶ δύο αἰῶνας ὑπόδειγμα τῶν ἐκκλησιαστικῶν πυλώνων. Ἀπὸ τοῦ 1618 μέχρι τοῦ 1622 ἀνῳκοδόμησε τὴν καταστραφεῖσαν ἐκ πυρκαϊᾶς μεγάλην αἴθουσαν τοῦ Δικαστικοῦ μεγάρου, κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ περίπου χρόνον ἔδωκε τὰ σχέδια τοῦ ναοῦ τοῦ Charenton, ἀποπερατωθέντος τῷ 1623, ὅστις κατεστράφη ὑπὸ τῶν καθολικῶν μετὰ τὴν ἀνάκλησιν τοῦ ἐδίκτου τῆς Νάντης. Κατεσκεύασεν ἀκόμη τὸ ὑδραγωγεῖον τοῦ Arcueil καὶ ἐξεπόνησε τὰ σχέδια τοῦ δημαρχείου τῆς πόλεως Rennes καὶ τοῦ πύργου τοῦ Coulomiers. Ὁ ντὲ Μπρὸς συνέβαλεν εἰς τὸ νὰ δοθῇ εἰς τὸν ἀρχιτεκτονικὸν ρυθμὸν Λουδοβίκου ΙΓ' ἡ εὐρύτης τοῦ χώρου, ἥτις ἀποτελεῖ ἓν τῶν κυρίων αὐτοῦ χαρακτηριστικῶν. —Ω.

**Μπροσὰν** *ντὲ Βιλλιὲ* (Brochant de Villiers), *Ἀνδρέας*. Γάλλος γεωλόγος καὶ ὀρυκτολόγος (1773—1840). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς γεωλογίας καὶ γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῶν μεταλλείων καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Κύριον ἔργον αὐτοῦ ὑπῆρξεν ὁ «Γεωλογικὸς χάρτης τῆς Γαλλίας», συνοδευόμενος ὑπὸ ἐπεξηγηματικοῦ κειμένου καταλαμβάνοντος τρεῖς τόμους. Τὸ ἔργον τοῦτο, ἀπασχολῆσαν τὸν Μπροσὰν ἐπὶ εἰκοσαετίαν ὅλην, ἐσυνεχίσθη ὑπὸ τῶν μαθητῶν καὶ συνεργατῶν αὐτοῦ Μπωμὸν καὶ Ντυφρενουά. —Ω.

**Μπροσὰρ** (Brochard), *Βίκτωρ-Κάρολος-Λουδοβῖκος*. Γάλλος φιλόσοφος καὶ ἱστορικὸς τῆς φιλοσοφίας (1848—1907). Ἐχρημάτισεν ὑφηγητὴς εἰς τὴν ἀνωτέραν École Normale καὶ ἀπὸ τοῦ 1887 καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας φιλοσοφίας εἰς τὴν Σορβόννην. Τῷ 1900 ἔγινε μέλος τοῦ ἰνστιτούτου. Γνωσιολογικῶς συγγενεύει πρὸς τὸν Ρενουβιέ. Παραδέχεται ὅτι τὸ συναίσθημα καὶ ἡ βούλησις, ἑπομένως καὶ ἡ ἠθική, ἐπιδροῦν ἐπὶ τῆς γνώσεως. Μόνον ἐπειδὴ ὁ ἄνθρωπος εἶναι ἐλεύθερος, εἶναι ἱκανὸς νὰ ἀναπτύξῃ τὴν ἐπιστήμην, ἀλλὰ καὶ διὰ τοῦτο ἀκριβῶς σφάλλει. Ὁ Μπροσὰρ εἶναι ἄριστος ἱστορικὸς τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας, μὲ τὴν ὁποίαν ἠσχολήθη ἐπὶ μακρὰ ἔτη καὶ τὴν ὁποίαν κρίνει μὲ βαθύτητα καὶ ὀξύνοιαν. Σπουδαιότερα ἔργα του: αἱ δύο διδακτορικαὶ διατριβαί του «Περὶ τοῦ λογικοῦ σφάλματος» (1879, 6' ἔκδ. 1897) καὶ «De assensioni stoici quid senserint», «Οἱ Ἕλληνες σκεπτικοί» (1887, 6' ἔκδ. 1923), ἔργον βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας ἠθικῶν ἐπιστημῶν, «Ἡ ἀρχαία καὶ ἡ νεωτέρα ἠθική» (1901), ὅπου ἀπομακρύνεται τοῦ Ρενουβιὲ καὶ κλίνει πρὸς τὸν ἑλληνικὸν εὐδαιμονισμόν, «Ἡ ἐκλεκτικὴ ἠθική» (1902, ἐν «Φιλοσ. Ἐπιθ.») κ. ἄ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Robin*, «Τὸ φιλοσοφικὸν ἔργον τοῦ Μπροσάρ» (ἐν «Année Philos.», 1912).—*A. Rivaud*, «Ὁ Β. Μπροσὰρ φιλόσοφος καὶ ἱστορικὸς τῆς φιλοσοφίας» (ἐν «Ἐπιθ. Ἠθικ. καὶ Μεταφυσικῆς», 1912). Ε. Λ.

**Μπροσελιάντ**, ἢ *Μπρεσλιὰν* (Brocéliande ἢ Brecheliant) *[Γεωγρ.]*. Ἐκτεταμένον δάσος τῆς Γαλλίας ἐν Βρεττάνῃ (νομὸς Ἴλ-ἐ-Βιλαίν), καλούμενον ἐπίσης κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους «δάσος τοῦ Παιμπόν» ἐν τῷ ὁποίῳ, κατὰ τοὺς ὀπαδοὺς τῆς «στρογγύλης τραπέζης», ἔζησεν ὁ θρυλικὸς μάντις Μερλῖνος καὶ ἡ νύμφη Βιβιάνη. Χ. Δ.

**Μπρόσκλαβον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Σιταραλώνων τῆς ἐπαρχίας Τριχωνίδος τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας. Κάτ. (1928) 170. Χ. Δ.

**Μπροσνερίτης**, *Θεόδωρος*. Κρὴς ἀγωνιστὴς ἐκ Μπροσνέρου, υἱὸς τοῦ Ἐμμανουὴλ Ξενάκη. Νεώτατος παρηκολούθει τὸν πατέρα αὐτοῦ, ὅστις ἔζη βίον κλεφταρματολικὸν εἰς τὰ ὄρη τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου. Ἀλλὰ τὰ κατορθώματα αὐτοῦ, ἅτινα καὶ ἀπηθανάτισεν ἡ δημώδης μοῦσα, κυρίως ἄρχονται ἀπὸ τοῦ 1824. Ἐπίσης ἔδρασε κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866 ὡς ὁπλαρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας Ἀποκορώνου, ἔχων παρ' ἑαυτῷ καὶ τοὺς ἓξ υἱοὺς αὐτοῦ. Ἀπεβίωσε τῷ 1876. ΕΡ. Μ.

**Μπρόσνερο** *[Γεωγρ.]* Χωρίον τῆς Κρήτης ἐν τῷ νομῷ Χανίων (βλ. λ. *Ἐμπρόσνερος*).

**μπροσοῦρα** (ἡ) (brochure) (ἡ)· τεχν., σύνδεσις τῶν τυπογραφικῶν φύλλων ἑνὸς βιβλίου πρὸς ἄλληλα διὰ τῆς χειρὸς πρὸς βιβλιοδέτησιν || κατ' ἐπέκτ., μικρὸν βιβλίον, προπαγανδιστικὸν συνήθως περιεχομένου.

**Μπροσσὰρ** (Brossard), *Σεβαστιανός*. Γάλλος κληρικός, συνθέτης καὶ μουσικολόγος (1654—1730). Τῷ 1703 ἐξέδωκε τὸ πρῶτον ἐν Γαλλίᾳ μουσικὸν λεξικόν, ὑπὸ τὸν τίτλον «Dictionnaire de musique contenant une explication des termes grecs, italiens et français les plus usités dans la musique». Ἔγραψεν ἐπίσης, ἐν εἴδει ἐπιστολῆς, μελέτην ἐπὶ τοῦ τρόπου τοῦ γράφειν τὸ γρηγοριανὸν μέλος καὶ συνέθεσε πλεῖστα θρησκευτικὰ ἔργα, ὧν τὰ πλεῖστα εὑρίσκονται ἐν χειρογράφῳ. Γ. Σ.

**Μπροσσὲ** (Brosset), *Εὐτύχιος*. Γάλλος ἀνατολιστής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1802 καὶ ἀποθανὼν ἐν Πετρουπόλει τῷ 1880. Ἔζησεν ἀπὸ τῆς νεανικῆς του σχεδὸν ἡλικίας ἐν Ρωσίᾳ, ὡς καθηγητὴς ἐν ἀρχῇ τῆς ἀρμενικῆς καὶ γεωργιανῆς φιλολογίας. Τῷ 1842 διωρίσθη βιβλιοθηκάριος, ἐχρημάτισεν εἶτα σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς Πετρουπόλεως. Ἐκ τῶν ἔργων του ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Ἀνέκδοτα σημειώματα περὶ τῆς γεωργιανῆς γλώσσης καὶ ἱστορίας» (1834), «Ἀρχαιολογικὸν ταξίδιον εἰς Γεωργίαν καὶ Ἀρμενίαν» (1849—1851), «Συλλογὴ Ἀρμενίων ἱστοριογράφων» (1874—1876), «Ἐρείπια τῆς Ἀνί, πρωτευούσης τῆς Ἀρμενίας ὑπὸ τοὺς Βαγρατίδας βασιλεῖς» (1860—1861) κλπ. —Ω.

**Μπροσσὲτ** (Brossette), *Κλαύδιος*. Γάλλος λογοτέχνης (1671—1743). Ἀσκῶν τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου ἐν Λυών, συνεδέθη διὰ φιλίας μὲ τὸν Μπουαλῶ, ἐπεδόθη δὲ καὶ ὁ ἴδιος εἰς τὴν φιλολογίαν καὶ ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τῆς Ἀκαδημίας τῆς Λυών. Γνωστὸς ἰδίως εἶναι διὰ τὴν ὑπ' αὐτοῦ γενομένην ἔκδοσιν τῶν «Ἔργων τοῦ Μπουαλῶ» (1716), ἐν τῇ ὁποίᾳ περιλαμβάνονται ἐνδιαφέρουσαι πληροφορίαι περὶ τῆς ζωῆς καὶ τοῦ ἔργου τοῦ ποιητοῦ. Τῷ 1770 ἐδημοσιεύθη ἡ μετὰ τοῦ Μπουαλῶ ἀλληλογραφία του ὑπὸ τὸν τίτλον: «Φιλικαὶ ἐπιστολαὶ τῶν Μπουαλῶ καὶ Μπροσσέτ». —Ω.

**μπροστά**· βλ. λ. *ἐμπρός*.

**μπροστάντζα** (ἡ)· τὸ προκαταβολικῶς εἰσπραττόμενον μέρος μισθοῦ, ἡμερομισθίου, ἢ ἄλλης οἱασδήποτε χρηματικῆς ἀμοιβῆς: «ἐπῆρα ἑκατὸ δραχμὲς μπροστάντζα».

**μπροστάρι** (τό)· δημοτ., τὸ πρόσθιον σκέλος τοῦ σάγματος, κατ' ἀντιδιαστολὴν πρὸς τὸ ὀπίσθιον, τὸ καλούμενον *πιστάρι* ἢ *πισάρι*.

**μπροστινέλα** (ἡ). Τὸ μέρος τῆς ζευκτηρίας τῶν ἵππων σαγῆς, τὸ προσαρμοζόμενον ἐπὶ τοῦ στήθους τῶν ζῴων καὶ χρησιμεῦον διὰ τὴν ἔλασιν καὶ διὰ τὴν ἕλξιν.

**μπροστινός**, *—ή*, *—ό*· δημοτ., ὁ πρόσθιος, ὁ ἀποτελῶν τὸ πρόσωπον, τὴν ὄψιν, ἀντίθ. *πισινός*: «τὸ μπροστινὸ μέρος τοῦ σπιτιοῦ,—τοῦ φορέματος,—τοῦ καπέλλου» || ὁ προηγούμενος, ὁ προπορευόμενος: «οἱ μπροστινοί μας», παροιμ.: «ὁ μπροστινὸς τοῦ πισινοῦ γιοφύρι γίνεται».

**μπροστόβαρο** (τό)· ἐπὶ ὑποζυγίου, ὁ φόρτος τὸ σάγμα εἶναι οὐχὶ ἀκριβῶς εἰς τὸ μέσον τῆς ράχεως, ἀλλὰ πρὸς τὸ μέρος τοῦ τραχήλου.

Digitized by Google

**Μπροτιὲ** (Brotier), ***Γαβριήλ.*** Γάλλος ἰησουΐτης φιλόλογος καὶ νομισματολόγος (1723—1789). Διεκρίθη διὰ τὴν εὐρυμάθειάν του, ἐφημίσθη δὲ ἰδίως διὰ τὰ σχόλια αὐτοῦ ἐπὶ τῶν ἔργων τοῦ Τακίτου (1771). Προγενεστέρως εἶχε δημοσιεύσει «Ἐγχειρίδιον τῶν ρωμαϊκῶν, ἑλληνικῶν καὶ ἑβραϊκῶν νομισμάτων» (1760). —Ω.

**Μπρότσι** (Brozzi) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Φλωρεντίας, τῆς Τοσκάνης, παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ ποταμοῦ Ἄρνο. Κάτ. 10.476. Ἀπέχει τῆς Φλωρεντίας περὶ τὰς 8 χλμ. Ἔχει σημαντικὴν βιομηχανίαν ψιαθίνων πίλων. Μ. Δ. Β.

**Μπρουαρντὲλ** (Brouardel), ***Παῦλος-Κάμιλλος-Ἱππόλυτος.*** Γάλλος ἰατροδικαστὴς καὶ ὑγιεινολόγος, γεννηθεὶς ἐν Saint-Quentin (1837—1906). Τῷ 1879 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἰατροδικαστικῆς εἰς τὴν ἰατρικὴν σχολὴν Παρισίων, τῷ 1881 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς καὶ πρύτανις τῆς σχολῆς, καὶ τῷ 1892 ἐλεύθερον μέλος τοῦ γαλλικοῦ ἰνστιτούτου. Διετέλεσεν ἐπίσης καὶ πρόεδρος τῆς ἑταιρείας τῆς ἰατροδικαστικῆς. Μεταξὺ τῶν πολλῶν συγγραμμάτων του ἀναφέρομεν τὸ ἑπτάτομον σύγγραμμα τῆς ἰατροδικαστικῆς του, ὡς καὶ τὴν μεγάλην δεκάτομον παθολογίαν καὶ θεραπευτικὴν του, ἐκπονηθεῖσαν ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τοῦ A. Gilbert. Ο. Ρ.

**Μπρουγιὲ** (Brouillet), ***Πέτρος-Ἀριστείδης-Ἀνδρέας.*** Γάλλος ζωγράφος (1857—1914). Ἐξεικόνισεν ἱστορικὰ ἐπεισόδια καὶ σκηνὰς τοῦ καθημερινοῦ βίου. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται: «Κλινικὸν μάθημα τοῦ δόκτορος Σαρκὼ» (μουσεῖον Νικαίας), «Οἰκειότης» (μουσεῖον Λουξεμβούργου), «Προσωπογραφία ἀνδρός», «Ἡ ἐπίσκεψις τοῦ τσάρου εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν», «Κοντὰ στὴ φωτιὰ» κ. ἄ. Ι. Μ. Π.

**Μπρούγκαμ** (Brougham), ***Ἐρρῖκος.*** Ἄγγλος πολιτικὸς (βλ. λ. *Μπρούμ*).

**Μπρούγκμαννν** (Brugmann), ***Κάρολος.*** Γερμανὸς γλωσσολόγος, γεννηθεὶς ἐν Wiesbaden τῷ 1849 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1919. Διωρίσθη κατὰ πρῶτον ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Λειψίας (1877), κατόπιν δὲ τακτικὸς καθηγητὴς ἐν Φρειβούργῳ (1884), ἀπὸ δὲ τοῦ 1887 ἐν Λειψίᾳ. Ἐδημοσίευσε πλείστας γλωσσολογικὰς πραγματείας καὶ αὐτοτελῆ ἔργα, διὰ τῶν ὁποίων προήγαγεν, ὅσον ὀλίγοι, τὴν γλωσσικὴν ἐπιστήμην. Τὰ κυριώτερα ἐκ τούτων εἶναι: «Ein Problem der homerisch. Textkritik und der vergleich. Sprachwissenschaft» (1876), «Morpholog. Untersuchungen auf dem Gebiete der indogerm. Sprachen» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *Osthoff*, 1878 κ. ἑξ.), «Griechische Grammatik» (α' ἔκδ. 1900, δ' ἔκδ. ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ *A. Thumb* 1913, ἔργον πολύτιμον), «Zum heutigen Stande der Sprachforschung» (1885), «Grundriss der vergleichenden Grammatik der indogerm. Sprachen» (ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς συγκριτικῆς συντάξεως *B. Delbrück*, εἰς 5 τόμ., 1886—1892, 6' ἔκδ. 1897—1913· μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν ἀγγλικήν, 1888 κ. ἑξ.), ἔργον θεμελιῶδες, «Kurze vergleich. Grammatik der indogerm. Sprachen» (εἰς 3 τεύχη, 1902—1903. Τὸ ἔργον ἀποτελεῖ εὔχρηστον ἐπιτομὴν τοῦ προηγουμένου, μετεφράσθη δὲ καὶ εἰς τὴν γαλλικὴν ἐπιμελείᾳ τῶν *A. Meillet* καὶ *Gauthiot*) κλ. Μετὰ τοῦ Streitberg ἵδρυσε (1892) τὸ ἔγκριτον γλωσσολογικὸν περιοδικὸν «Indogermanische Forschungen», τὸ ὁποῖον ἐξακολουθεῖ νὰ ἐκδίδεται ἐν Βερολίνῳ. Γ. Π. Α.

**Μπροῦγκς** (Brugsch), ***Ἐρρῖκος-Κάρολος*** *πασᾶς.* Περιφανὴς Γερμανὸς αἰγυπτιολόγος (1827—1894). Ἤδη ὡς μαθητὴς τοῦ γυμνασίου ἐδημοσίευσε τὸ «Scriptura Aegyptiorum demotica» (1848), ὅπερ ἐξησφάλισεν εἰς αὐτὸν τὴν εὔνοιαν τοῦ Ἀλεξάνδρου Οὐμβόλδου καὶ τοῦ βασιλέως Φρειδερίκου Γουλιέλμου Δ'. Ἠκολούθησαν τὰ «Numerorum apud veteres Aeguptios demoticorum doctrina» (Βερολῖνον 1849), «Ἡ ἐπιγραφὴ τῆς Ροζέττας», «Συλλογὴ δημοτικῶν ἐγγράφων» καὶ ἄλλαι πραγματεῖαι. Μετὰ τὸ πέρας τῶν φιλολογικῶν καὶ ἀρχαιολογικῶν σπουδῶν αὐτοῦ ἐν Βερολίνῳ, Λονδίνῳ, Παρισίοις, Τουρίνῳ καὶ Λάϊντεν, ἔκαμε τὸ πρῶτον ἐπιστημονικὸν ταξίδιόν του (1853), δαπάναις τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας, εἰς Αἴγυπτον, ὅπου συνηντήθη μετὰ τοῦ Γάλλου αἰγυπτιολόγου Μαριέτ, αἱ ἀνασκαφαὶ τοῦ ὁποίου παρὰ τὴν Μέμφιδα ἔφερον εἰς φῶς ἄφθονον ὑλικὸν διὰ γλωσσικὰς καὶ ἱστορικὰς σπουδάς. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν πατρίδα του, διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου, συγχρόνως δὲ βοηθὸς ἐν τῷ αἰγυπτιολογικῷ μουσείῳ. Μικρὸν μετὰ ταῦτα ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Monuments de l'Égypte» (Βερολῖνον, 1857), ὡς καὶ τὴν συγγραφὴν «Recueil des monuments égyptiens» (Λειψία, 1885). Τῷ 1860 συνώδευσε τὸν πρεσβευτὴν τῆς Πρωσσίας εἰς τὴν Περσίαν ὑπὸ ἐπίσημον ἰδιότητα. Τῷ 1861 ἐδημοσίευσε τὸ «Ταξίδιον τῆς βασιλικῆς πρωσσικῆς πρεσβείας εἰς Περσίαν». Ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Zeitschrift für ägyptische Sprache und Altertum», τὴν σύνταξιν τοῦ ὁποίου ἀνέλαβε κατόπιν ὁ Λέψιος. Τῷ 1864 διωρίσθη πρόξενος ἐν Καΐρῳ, τῷ 1868 καθηγητὴς τῆς αἰγυπτιολογίας ἐν Γοττίγγῃ καὶ τῷ 1870 ἐκλήθη ὑπὸ τοῦ ἀντιβασιλέως τῆς Αἰγύπτου εἰς Κάϊρον, ἵν' ἀναλάβῃ τὴν διεύθυνσιν τῆς «École d'Égyptiologie». Τῷ 1873 ἀντεπροσώπευσε τὴν Αἴγυπτον ἐν τῇ διεθνεῖ ἐκθέσει τῆς Βιέννης, ὁ δὲ διάδοχος τοῦ Ἰσμαὴλ Τεφὶκ ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ πασᾶ. Τῷ 1883 συνώδευσε τὸν πρίγκιπα Φρειδερῖκον-Κάρολον τῆς Πρωσσίας εἰς τὴν Αἴγυπτον, τὴν Συρίαν, τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Ἰταλίαν, περὶ τῶν χωρῶν δὲ τούτων ἔγραψε θαυμασίαν μελέτην ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁ πρίγκιψ Φρειδερῖκος-Κάρολος εἰς τὴν Ἀνατολήν». Τῷ 1885 μετέβη ἐκ νέου εἰς τὴν Περσίαν ὡς σύμβουλος τῆς γερμανικῆς πρεσβείας παρὰ τῷ σάχῃ τῆς Περσίας, τὰς σχετικὰς δὲ ἐντυπώσεις του περιγράφει εἰς τὸ ἔργον του «Ἡ χώρα τοῦ ἡλίου». Τῷ 1891 ἔκαμε, κατ' ἐντολὴν τῆς πρωσσικῆς κυβερνήσεως, νέον ταξίδιον εἰς τὴν Αἴγυπτον, ὅπόθεν συναπεκόμισε τρεῖς χιλιάδας παπύρους.

Τὸ σπουδαιότερον ἔργον τοῦ Μπροῦγκς εἶναι τὸ «Ἱερογλυφικὸν-δημοτικὸν λεξικὸν» (ἑπτὰ τόμοι, Λειψία 1867—1882), ἐκ δὲ τῶν λοιπῶν ἐξαίρονται: ἡ εἰς τὴν λατινικὴν μετάφρασις τοῦ «Sai an sinsin, sive liber metempsychosis veterum Aegyptiorum» (Βερολῖνον 1851), «Nouvelles recherches sur la division de l'année chez les ancieus Égyptiens» (αὐτόθι 1856), «Grammaire démotique» (αὐτόθι 1855), «Γεωγραφικαὶ ἐπιγραφαὶ ἀρχαίων αἰγυπτιακῶν μνημείων» (Λειψία 1860), «Histoire d'Égypte» (αὐτόθι 1875), «Matériaux pour servir à la reconstruction du calendrier des anciens égyptiens» (αὐτόθι 1864), «Ὁ θρῦλος τοῦ πτερωτοῦ δίσκου τοῦ ἡλίου» (Γοττίγγη, 1870) «Ἱερογλυφικὴ γραμματικὴ πρὸς χρῆσιν τῶν νέων» (γερμανιστὶ καὶ γαλλιστί, 1872), «Νέα ἀποσπάσματα τοῦ Σιναϊτικοῦ κώδικος», «Ἱστορία τῆς Αἰγύπτου ὑπὸ τοὺς φαραὼ» (Λειψία 1877), τὸ μνημειῶδες ἔργον «Dictionnaire géographique de l'ancienne Égypte» (αὐτόθι 1877—1880), «Θρησκεία καὶ μυθολογία τῶν ἀρχαίων Αἰγυπτίων ἐπὶ τῇ βάσει τῶν μνημείων» (Λειψία 1891) καὶ «Thesaurus inscriptionum aegyptiacarum» (Λειψία 1883—1891). Α. Δ.

**Μπροὺερ** (Brewer), ***Ἰωάννης Σέρρεν.*** Ἄγγλος ἱστορικὸς (1810—1879). Ἐσπούδασεν ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ τῷ 1841 διωρίσθη καθηγητὴς ἐν Λονδίνῳ. Ἐξέδωκε τὴν ἐκκλησιαστικὴν ἱστορίαν τοῦ Ρούλλερ καὶ συνειργάσθη εἰς τὴν ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως γενομένην ἔκδοσιν τῶν «The Calendars of State papers, relating to the reign of Henry VIII» καὶ «Calendar of the Carew Manuscripts». Ἐδημοσίευσεν ἐπὶ πλέον τά: «Monumenta Franciscana» (1858) καὶ «The Athanasian origin of the Athanasian creed» (1872). Μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐξεδόθησαν τὰ «English studies, or essays in English history and literature» (1881). Α.Δ.

**Μπροὺκ** (Bruck) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Αὐστρίας ἐν τῇ περιοχῇ Σταϊερμαρκ. Κάτ. 11.300. Ἔχει ζωηρὰν βιομηχανίαν ξυλείας καὶ σιδήρου. Γ. Θ. Κ.

**Μπροὺκ** (Brook), ***Ἐρρῖκος.*** Ἰρλανδὸς συγγραφεὺς (1703 ἢ 1706—1783). Ὑπῆρξε φίλος τοῦ Pope καὶ Swift καὶ ἔγραψε τὴν τραγῳδίαν «Γουσταῦος Βάζας» (1739) καὶ ἃ μυθιστορήματα: «The Fool of Quality» (1776—1770, 5 τ., νεώτεραι ἐκδόσεις τῷ 1856 καὶ 1906), «Juliette Granville» (1774). Τὰ ἔργα του διακρίνονται διὰ τὴν ἁπλότητα τοῦ ὕφους καὶ τὸ χιουμόρ των. Ἡ θυγάτηρ του *Καρλόττα*, ἡ μόνη ἐπιζήσασα ἐκ τῶν 22 τέκνων του, ἐδημοσίευσε τὰ ἅπαντά του εἰς 4 τόμους (1792). —Ω.

—**Μπροὺκ** (Brooke), *σὲρ* ***Ἰάκωβος.*** Ἡγεμὼν τοῦ Σαραουὰκ τῆς Βόρνεο (1803—1868). Γεννηθεὶς ἐν Μπενάρες, ὑπηρέτησεν εἰς τὸν Ἀγγλο-ινδικὸν στρατὸν καὶ τῷ 1839 ἀπεβιβάσθη εἰς Σαραουὰκ ἐπὶ τῆς Βόρνεο, ὅπου, μετὰ τῶν εὐρωπαϊκῶν του στρατευμάτων κατέπνιξε τὴν ἐναντίον τοῦ ἡγεμόνος Μούντα-Χασσὶμ ἐπανάστασιν. Κατόπιν δύο ἐπιτυχῶν ἐπιχειρήσεων του ἐναντίον πειρατῶν διωρίσθη, πρὸς ἀμοιβὴν τῶν ὑπηρεσιῶν του, ὑπὸ τοῦ σουλτάνου τῆς Μπρουνέϊ διοικητὴς τοῦ Σαραουάκ, τοῦ ὁποίου ἐν τέλει ἀνεγνωρίσθη ὡς ἡγεμὼν καὶ ὑπὸ τῆς Ἀγγλίας, Ἰταλίας καὶ Ἡνωμ. Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς. Διάδοχός του ὑπῆρξεν ὁ ἀνεψιός του σὲρ *Κάρολος Μπροὺκ* (1829—1907) καὶ τούτου ὁ υἱός του σὲρ *Κάρολος Βάϋνερ* (γεννηθεὶς τῷ 1874). Γ. Ε. Κ.

—**Μπροὺκ** (Brooke), ***Ροῦπερτ.*** Ἄγγλος ποιητὴς (1887—1915). Ἐγεννήθη ἐν Ρέγκμπυ καὶ ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς ἐν τῇ ὀνομαστῇ καὶ ὁμωνύμῳ τῆς γενετείρας του σχολῇ, τῆς ὁποίας διευθυντὴς ἦτο ὁ πατήρ του, καὶ κατόπιν φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Καίμπριτζ. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του ἔζησεν ἐπί τινα ἔτη εἰς τὴν παρὰ τὸ Καίμπριτζ ἐξοχὴν τοῦ Γκράντσεστερ, ὅπου ἐνεπνεύσθη καὶ ἔγραψε τὰ πλεῖστα τῶν πρώτων ποιημάτων του. Βραδύτερον ἐπεζήτησε νὰ θεραπεύσῃ τὴν ψυχικὴν ἀνησυχίαν, ὑπὸ τῆς ὁποίας κατείχετο, εἰς τὰ ταξίδια καὶ ἐπεσκέφθη τὴν Ἰταλίαν, τὴν Γερμανίαν, τὴν Ἀμερικὴν καὶ τὴν Ὠκεανίαν, ἐπανελθὼν εἰς τὴν πατρίδα του κατὰ τὴν κήρυξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Καταταχθεὶς τότε εἰς τὸ ναυτικὸν ὡς ἐθελοντής, ἐπολέμησε μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ἀνθυποπλοιάρχου ἐν τῇ «ναυτικῇ μεραρχίᾳ», κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν Ἀμβέρσαν, μετὰ τὴν ἐκκένωσιν τῆς ὁποίας ἀπεστάλη μετὰ τῆς μεραρχίας του εἰς τὸ μέτωπον τῶν Δαρδανελλίων. Κατὰ τὴν μετάβασιν ὅμως ἠσθένησεν ἐν πλῷ ἐξ ἡλιάσεως, ἥτις ἐπέφερε δηλητηρίασιν τοῦ αἵματός του, καὶ ἀπέθανεν ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ πλωτοῦ νοσοκομείου «Duguay Trouin», μεταξὺ Λήμνου καὶ Σκύρου, ὅπου ἐτάφη παρὰ τὴν θέσιν Ἁγία Τριὰς τὴν 23 Ἀπριλίου 1915. Μετὰ τὸν πόλεμον, τῇ πρωτοβουλίᾳ τοῦ Βέλγου συγγραφέως Βάντερμποργκ, καθὼς καὶ Ἄγγλων καὶ Ἑλλήνων διανοουμένων, διενηργήθη διεθνὴς ἔρανος πρὸς ἀνέγερσιν μνημείου, εἰς τὸν Μπρούκ. Τὸ μνημεῖον τοῦτο, τοῦ ὁποίου ἡ ἐκτέλεσις ἀνετέθη εἰς τὸν Ἕλληνα γλύπτην Μ. Τόμπρον, ἐστήθη ἐν Σκύρῳ εἰς τὴν θέσιν Ἁγία Τριὰς καὶ ἀπεκαλύφθη κατὰ τὴν ἐπέτειον τοῦ θανάτου του, τὴν 23 Ἀπριλίου 1931, ἐν ἐπισήμῳ τελετῇ, καθ' ἣν ἀντεπροσωπεύθησαν ἡ ἑλληνικὴ καὶ ἡ ἀγγλικὴ κυβέρνησις καὶ πλεῖσται διεθνεῖς ὁμάδες διανοουμένων. Τὸ μνημεῖον ἀποτελεῖται ἐξ ὀρειχάλκου ἀγάλματος τοῦ ποιητοῦ ὑπὸ τύπον γυμνοῦ ἐφήβου εἰς φυσικὸν μέγεθος ἐπὶ μαρμαρίνου ὑποβάθρου φέροντος ἐν ἀναγλύφῳ μεταλλείῳ τὴν κεφαλὴν τοῦ ποιητοῦ καὶ ἀφιέρωσιν εἰς αὐτὸν καὶ εἰς τὴν ἀθάνατον ποίησιν εἰς ἀγγλικήν, γαλλικὴν καὶ νεοελληνικὴν γλῶσσαν, καθὼς καὶ τὴν φράσιν αὐτοῦ: «Εἶδα τὴν ἱερὰν γῆν τῆς Ἀττικῆς κι τώρα δύναμαι ν' ἀποθάνω».

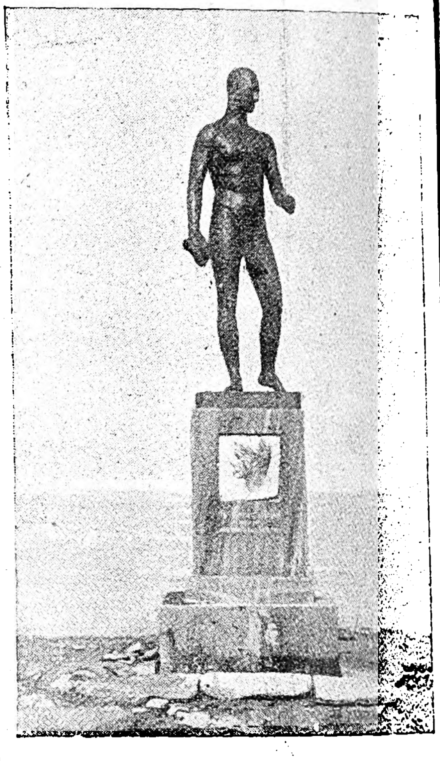

*Τὸ ἐν Σκύρῳ μνημεῖον τοῦ Ροῦπερτ Μπρούκ.*

Τὰ πρῶτα ποιήματα τοῦ Μπροὺκ ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1911 ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιήσεις» καὶ κατέστησαν αὐτὸν τάχιστα δημοφιλέστατον. Τῷ 1912 ἐξέδωκε τὸ μονόπρακτον μελοδραματικὸν ποίημα «Λιθουανία» καὶ τὸ «Γκράντσεστερ», τῷ δὲ 1914 ἐδημοσίευσε τὴν συλλογὴν «1914 καὶ ἄλλα ποιήματα», ἐν τῇ ὁποίᾳ περιελήφθησαν τὰ ὡραῖα πολεμικὰ σονέτα του, γραφέντα κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ πολέμου. Μετὰ τὸν θάνατόν του συνεκεντρώθησαν εἰς τόμους καὶ ἐξεδόθησαν τῷ 1916 αἱ «Ἐπιστολαὶ ἐξ Ἀμερικῆς», ἀνταποκρίσεις τὰς ὁποίας εἶχεν ἀποστείλει εἰς τὴν «Οὐεστμίνστερ Γκαζέτ», πλήρεις λεπτῆς εἰρωνείας καὶ ζωηρᾶς παρατηρητικότητος, καθὼς καὶ αἱ μελέται του ἐπὶ τοῦ «Τζὼν Οὐέμπστερ» καὶ τοῦ «Τζὼν Ντόν». Τῷ 1918 ἐξεδόθησαν τὰ ἅπαντά του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ποιήματα». Ὁ Ροῦπερτ Μπροὺκ ἐχαιρετίσθη εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ὡς μεγάλη ὑπόσχεσις τοῦ μέλλοντος. Εἰς τοὺς στίχους του ἡ κριτικὴ διεῖδεν ἀναζῶσαν «τὴν φλόγα τοῦ Σέλλεϋ καὶ τὴν Βύρωνος, τὴν τρυφερότητα τοῦ Σέλλεϋ καὶ τὴν κλασσικὴν σαφήνειαν τοῦ Κήτς», ὁ δὲ πρόωρος θάνατος ἐθεωρήθη ὡς μεγάλη ἐθνικὴ ἀπώλεια διὰ τὰ ἀγγλικὰ γράμματα. Μ. Δ. Β.

—**Μπροὺκ** (Brooke), *σὲρ* ***Φοὺλκ Γκρέβιλ*** (Greville). Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1554—1628). Ἔγραψε δύο τραγῳδίας, πολλὰ σονέττα καὶ βιογραφίαν τοῦ Φιλίππου Σίδνεϋ. Τὰ ἔργα του ἐξεδόθησαν ὑπὸ τοῦ Grosart τῷ 1870. —Ω.

—**Μπροὺκ** (Brooke), ***Φραγκίσκη Μοὺρ*** *γυν.* Ἀγγλὶς συγγραφεὺς (1724—1789). Ἔγραψε μυθιστορήματα καὶ θεατρικὰ ἔργα, καταστάντα λίαν δημοφιλῆ κατὰ τὴν ἐποχήν της. Μεταξὺ τούτων εἶναι:

Digitized by Google

«Ροζίνα» λιμπρέττον ὁμωνύμου ὀπερέττας (1782), «Ἡ πολιορκία τῆς Σινώπης» τραγῳδία, «Μαριάνα», λιμπρέττον ὀπερέττας, «Βιργινία» τραγῳδία, τὴν ὁποίαν δὲν ἐδέχθη νὰ παίξῃ ὁ περίφημος συγγραφεὺς Γκάρρικ, πρᾶγμα διὰ τὸ ὁποῖον ἐξεδικήθη αὐτόν, γράψασα τὸ πλῆρες ὑπαινιγμῶν ἐναντίον του μυθιστόρημα «Ἡ ἐκδρομή», «Λουΐζα καὶ Μαρία», «Ἱστορία τῆς λαίδης Ἰταλίας Μαντεβίλ», «Ἀπομνημονεύματα τοῦ μαρκησίου Σαὶν-Φορλαί», «Αἰμιλία Μοντάγκ» κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μπροὺκ** (Bruck), ***Κάρολος - Λουδοβῖκος***, *βαρῶνος φὸν* —. Γερμανὸς πολιτικὸς (1798—1860). Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ πρωσσικοῦ στρατοῦ κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ 1814 καὶ 1815, εἶτα δὲ ἵδρυσεν ἐν Τεργέστῃ τὴν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Αὐστριακὸν Λόϋντ» ἑταιρείαν θαλασσίων διαπορθμεύσεων, ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁποίας παρέμεινε μέχρι τοῦ 1848. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ὠνομάσθη ἀντιπρόσωπος τῆς Τεργέστης ἐν τῇ βουλῇ τῆς Φραγκφούρτης, τὸ δ' ἑπόμενον ἔτος ἐκλήθη εἰς Βιέννην ὡς ὑπουργὸς τοῦ Ἐμπορίου καὶ τῶν Δημοσίων Ἔργων, ὅπου προέβη εἰς πλείστας λυσιτελεῖς μεταρρυθμίσεις. Τῷ 1855 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Ὁ Μπροὺκ προσεπάθησε νὰ ἐπιτύχῃ τὴν μετὰ τῆς Αὐστρίας καὶ Γερμανίας τελωνειακὴν ἕνωσιν. Μετὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἰταλίας, κατηγορηθεὶς ἐπὶ καταχρήσει, ὑπέβαλε παραίτησιν καὶ ηὐτοκτόνησεν ἐν τῷ μεγάρῳ του. Ἡ ἀθωότης αὐτοῦ κατεδείχθη εὐθὺς ἀμέσως. Α. Δ.

**Μπροὺκ *ἀγροικία*** (Brook farm). Συνοικισμὸς ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Μασαχουσέτης τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, παρὰ τὸ ΝΔ. προάστειον Οὐέστ Ρόξμπερυ τῆς Βοστώνης. Ἱδρύθη τῷ 1841, ἵνα χρησιμεύσῃ ὡς πρότυπος πόλις καὶ κοινωνία, βασιζομένη ἐπὶ τῶν σοσιαλιστικῶν θεωριῶν τοῦ Φουριέ, πρὸς συμβιβασμὸν τῶν συμφερόντων τοῦ κεφαλαίου καὶ τῆς παραγωγῆς, τόσον τῆς χειρωνακτικῆς ὅσον καὶ τῆς πνευματικῆς, καὶ πρὸς ἀντικατάστασιν τοῦ ἀνταγωνισμοῦ τῶν τάξεων διὰ τῆς ἁρμονικῆς συνεργασίας. Τῷ 1844 ἡ ἀγροικία αὕτη, τῆς ὁποίας τὰ μέλη ἀνῆλθον εἰς ἑβδομήκοντα, ἔλαβε τὸ ὄνομα «Φάλαγξ τῆς Μπροὺκ Φάρμ». Τῷ 1847 ὅμως ἠναγκάσθη νὰ διαλυθῇ λόγῳ οἰκονομικῶν δυσχερειῶν, τὰς ὁποίας δὲν ἠδυνήθη νὰ ὑπερνικήσῃ. Μ. Δ. Β.

**Μπροῦκερ** (Brooker bank) *[Γεωγρ.]*. Ὑφαλόνησος μεγάλη, ἰσομεγέθης πρὸς τὴν Θάσον, κειμένη ἐν τῷ βορείῳ Αἰγαίῳ, μεταξὺ Σκύρου, Ψαρῶν καὶ ὑφαλονήσου Μένσελλ. Ἡ κορυφή της (βόλ. 50 ὀργ., πλάτ. 38°52′ Β., μῆκ. 15°10′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2836 : Archipelago, northern sheet) ἀπέχει 19 μίλ. Δ. ΒΔ. τῶν Ψαρῶν. Σ. Ε. Λ.

**Μπροῦκκερ** (Brucker). ***Ἰωάννης-Ἰάκωβος***. Γερμανὸς φιλόσοφος (1696—1770). Ἔγραψε τὴν πρώτην γερμανικὴν ἱστορίαν τῆς φιλοσοφίας, ἐκδοθεῖσαν τῷ 1744 εἰς πέντε τόμους, ὑπὸ τὸν τίτλον «Historia critica philosophiae». Γ. Θ. Κ.

**Μπρούκλαϊν** (Brookline) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Μασαχουσέτης. Κάτ. 41.336, Κεῖται εἰς ἀπόστασιν 5 χλμ. πρὸς Δ. τῆς Βοστώνης, τῆς ὁποίας ἀποτελεῖ προάστειον. Ἐν αὐτῇ εὑρίσκονται τὰ μεγάλα ὑδραγωγεῖα, ἐκ τῶν ὁποίων ὑδρεύεται ἡ πόλις Βοστώνη. Κατ' ἀναλογίαν πληθυσμοῦ εἶναι ἡ πλουσιωτέρα πόλις τοῦ κόσμου, καθότι ἐν αὐτῇ κατοικοῦν πολλοὶ μεγάλοι κεφαλαιοῦχοι τῆς Βοστώνης καὶ ἔχει παντοειδεῖς πλουσιωτάτας βιομηχανικὰς ἐγκαταστάσεις. Μ. Δ. Β.

**Μπροῦκλυν** (Brooklyn) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Νέας Ὑόρκης, ἑνωθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1897 μετὰ τῆς Νέας Ὑόρκης.

**Μπροῦκνερ** (Bruckner), ***Ἀντώνιος***. Διακεκριμένος Αὐστριακὸς συνθέτης (1824—1896). Σχεδὸν αὐτοδίδακτος, κατώρθωσε ν' ἀποκτήσῃ ἀξιοσημείωτον δεξιοτεχνίαν εἰς τὸ ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον καὶ νὰ σπουδάσῃ κατὰ βάθος τὴν ἁρμονίαν καὶ τὴν ἀντίστιξιν. Τῷ 1867 διωρίσθη ὀργανοκρούστης ἐν τῇ αὐλῇ τῆς Βιέννης καὶ καθηγητὴς ἐν τῷ Ὠδείῳ. Τῷ 1891 τὸ πανεπιστήμιον τῆς αὐτῆς πόλεως ἀνεκήρυξεν αὐτὸν ἐπίτιμον διδάκτορα τῆς φιλοσοφίας. Ὁ Μποῦκνερ διαιωνίζει ἐν τῇ συμφωνίᾳ τὰς παραδόσεις τοῦ Βάγνερ, οὗτινος ὑπῆρξε φανατικὸς θαυμαστής. Ἐν τῇ συνθέσει τῶν ἔργων του ἐπιζητεῖ τὴν ἑνότητα, ἣν ἐπιτυγχάνει διὰ τῆς κυκλικῆς μορφῆς. Τὰ ἔργα τοῦ Μπροῦκνερ δὲν εἶναι μὲν πολυάριθμα, ἀλλ' ὀγκώδη. Πρωτεύουσαν θέσιν μεταξὺ τούτων κατέχουσιν αἱ ἐννέα συμφωνίαι του, ἐξ ὧν ἡ τετάρτη ὑπῆρξεν ἀνέκαθεν ἡ δημοφιλεστέρα, ἡ ἕκτη εἶναι ὑπέροχος εἰς ἔμπνευσιν, ἡ ὀγδόη κολοσσὸς ἀρχιτεκτονικῆς, ἡ ἐνάτη πλήρης εὐλαβείας καὶ μυστικοπαθείας. Ἔγραψε προσέτι : 3 λειτουργίας μετ' ὀρχήστρας, ἓν μνημειῶδες «Te Deum», «Ave Maria», «Tantum Ergo» ἐν κουϊντέττο ἐγχόρδων κλπ. Γ. Σ.

*Ἀντώνιος Μπροῦκνερ.*

**Μπροὺκς** (Brooks), ***Νῶε***. Βορειοαμερικανὸς δημοσιογράφος καὶ συγγραφεὺς (1830—1903). Τῷ 1871 διηύθυνε τὴν ἐφημερίδα «Tribune» τῆς Νέας Ὑόρκης, τῷ δὲ 1884 τὴν «Dayly Advertiser» τῆς Νιούαρκ. Ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Καστὶν* ἐδημοσίευσε πολλὰ λογοτεχνικὰ καὶ ἱστορικὰ ἔργα, ἐν οἷς : «The Boy Emigrants» (1876), «The Fair Post Nine» (1881), «Our Base-Bull Club» (1883), «Life of Abraham Lincoln» (1889), «American statsmen» (1893), «The Story of Marco Polo» (1898). Α. Δ.

**Μπροὺκς** (Brooks) ***κομήτης***. Ἀνεκαλύφθη τὴν 6ην Ἰουλίου 1889. Ὅτε προσδιωρίσθη τὸ πρῶτον ἡ τροχιά του, ἡ μικρὰ κλίσις αὐτῆς καὶ ἡ ὀρθὴ κίνησις τοῦ σώματος ἔδωκαν τὴν ὑπόνοιαν ὅτι ὁ κομήτης οὗτος ἦτο περιοδικός, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν ἐβράδυνε νὰ ἐπιβεβαιωθῇ. Κατὰ τὸ ἀφήλιον διέρχεται ἐγγύτατα τοῦ Διός. Ὁ Chandler τῷ 1886 ὑπελόγισε τὴν ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ πλανήτου τούτου οὐχὶ ἀνωτέραν τοῦ δεκάτου τῆς μέσης ἀποστάσεως τοῦ Ἡλίου ἀπὸ τῆς Γῆς. Ἡ περίοδος τοῦ κομήτου τούτου ὑπελογίσθη εἰς 7 ἔτη περίπου, ἐγένοντο δὲ παρατηρήσεις αὐτοῦ κατὰ τὰς ἐπανόδους τοῦ 1896, 1903, 1911 καὶ 1925. Σ. Π.

**Μπρούλλωφ, *Ἀλέξανδρος Παύλοβιτς***. Ρῶσος ζωγράφος καὶ ἀρχιτέκτων (1801—1877). Μεταβὰς εἰς Ἰταλίαν ἐξετέλεσεν ἐν Νεαπόλει τὰς προσωπογραφίας τῶν μελῶν τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας, κατόπιν δὲ ἐν Παρισίοις τὰς προσωπογραφίας πλείστων ἐπισήμων ἀνδρῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ τὴν τοῦ Οὐάλτερ Σκώττ, πολλάκις ἐκδοθεῖσαν ἐν χαλκογραφίᾳ. Ἐξελέγη μέλος τοῦ γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου, ἐπιστρέψας δὲ εἰς Πετρούπολιν διωρίσθη καθηγητὴς τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ἐξετέλεσε τὴν προσωπογραφίαν τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Α′ καὶ τοῦ πρίγκιπος Λαπουχίν. Εἶτα ἀφωσιώθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν ἀρχιτεκτονικήν, τὰ κάλλιστα δὲ τῶν ἔργων του εἶναι : τὸ θέατρον Μιχαήλ, ἡ ἐκκλησία τῶν Προτεσταντῶν, τὸ μέγαρον τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου, τὸ ἀστεροσκοπεῖον τοῦ Πόλκοβο κ. ἄ. Μετὰ τὴν καταστροφήν, ἣν ὑπέστη ἐκ πυρκαϊᾶς τὸ χειμερινὸν ἀνάκτορον, τῷ ἀνετέθη ἡ ἀνοικοδόμησις ἑνὸς τμήματος αὐτοῦ εἰς ρυθμὸν πομπηϊανόν. Θ. Β.

—**Μπρούλλωφ, *Κάρολος Παύλοβιτς***. Ρῶσος ζωγράφος (1799—1852). Πρῶτον ἔργον αὐτοῦ ἦτο «Ὁ Νάρκισσος κατοπτριζόμενος εἰς τὴν πηγήν», διὰ τὸ ὁποῖον ὁ καλλιτέχνης ἔλαβε τὸ χρυσοῦν μετάλλιον καὶ ἐστάλη ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Πετρουπόλεως εἰς Ἰταλίαν πρὸς εὐρυτέρας σπουδάς. Ἐν Ρώμῃ κατέγινεν εἰς τὴν ἀντιγραφὴν τοῦ περιφήμου πίνακος τοῦ Ραφαὴλ «Ἡ ἀθηναϊκὴ σχολή» κατ' ἐντολὴν τοῦ αὐτοκράτορος Νικολάου Α′, μετὰ ἓν δ' ἔτος ἐπεράτωσε πίνακα δέκα περίπου μέτρων πλάτους, παριστῶντα τὴν «Τελευταίαν ἡμέραν τῆς Πομπηΐας». Τὸ ἔργον τοῦτο οἱ κριτικοὶ ἐχαρακτήρισαν ὁμοφώνως ὡς τὸ ὡραιότερον τοῦ ΙΘ′ αἰῶνος καὶ ἀπεκάλεσαν τὸν καλλιτέχνην Μιχαὴλ Ἄγγελον τῆς ἐποχῆς. Ὁ πίναξ περιήχθη εἰς διαφόρους πόλεις τῆς Ἰταλίας, πανταχοῦ δὲ προεκάλει τὸν θαυμασμόν. Τὸν καλλιτέχνην ὑπεδέχοντο μετὰ μουσικῶν καὶ λαμπάδων, εἰς δὲ τὸ Μιλᾶνον ἡ ὑποδοχή του ὑπῆρξεν ἀληθῶς θριαμβευτική. Μετ' ἀναλόγου ἐνθουσιασμοῦ ἐγένετο δεκτὸς καὶ εἰς τὴν λοιπὴν Εὐρώπην. Ἡ Ἀκαδημία τῶν Καλῶν τεχνῶν τῶν Παρισίων τῷ ἀπένειμε τὸ πρῶτον βραβεῖον, ὁ Οὐάλτερ Σκὼττ ἀπεκάλεσε τὸν πίνακα «ἀληθῆ ἐποποιίαν» καὶ ὁ Νικόλαος Γκόγκολ ἔγραψε περὶ αὐτοῦ μίαν ἀπὸ τὰς θαυμασιωτέρας μελέτας του. Τῷ 1831 ἐπεράτωσεν ἐν Μιλάνῳ ἕτερον, ἐξ ἴσου σπουδαῖον, πίνακα, τὸν «Θάνατον τῆς Ἰνὲς ντὲ Κάστρο», ὅστις ἐπηύξησε τὴν φήμην αὐτοῦ. Τῷ 1834 κατῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ παρέμεινεν ἐπὶ πολὺ ἐν Ἀθήναις, ἔνθα συνέθεσε διαφόρους ὑδατογραφίας, κατόπιν δέ, ἐπισκεφθεὶς τὰς νήσους τοῦ Αἰγαίου, ἀπεικόνισε πλεῖστα τοπία, ἀποδώσας τὴν διαύγειαν τῆς ἑλληνικῆς ἀτμοσφαίρας μετ' ἀπαραμίλλου λεπτότητος. Εἶτα μετέβη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ἀπεικόνισε τὰ «Γλυκὰ Νερά», τὸ Μπουγιοὺκ - ντερὲ καὶ πολλὰ ἄλλα ἐκ τῶν περιχώρων τῆς πόλεως. Τῷ 1836 ἐπέστρεψεν εἰς Ρωσίαν, ὅπου ἐγένετο καθηγητὴς τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, ὅπως καὶ ἐν Μόσχᾳ, ἔγραψε πλείστας προσωπογραφίας, ἐκ τῶν ὁποίων αἱ τῆς πριγκιπίσσης Σαμοήλωφ, τῆς κομίσσης Σιρμάρωφ, τοῦ πρίγκιπος Ὀμπολιένσκι καὶ ἡ ἰδική του θεωροῦνται ὡς ἀριστουργήματα εἰς τὸ εἶδός των. Ἐκ τῶν ἱστορικῶν πινάκων του τῆς περιόδου ταύτης διακρίνονται : «Ἡ Ἄρτεμις φερομένη ἐπὶ τῶν πτερύγων τῆς νυκτός», «Ἡ πολιορκία τοῦ Πσκὸβ» καὶ «Ἡ μάχη τῶν Ἱπποτῶν μετὰ τῶν Μουσουλμάνων». Ἰδίως ὅμως κατέγινεν εἰς ἐκκλησιαστικὰς εἰκόνας, ἐκ τῶν ὁποίων ἄρισται θεωροῦνται : «Ἡ σταύρωσις» ἐν τῷ ναῷ τῶν Λουθηρανῶν, «Ἡ ἀνάληψις τῆς Θεοτόκου» εἰς τὴν μητρόπολιν τῆς Παναγίας τοῦ Καζάν, «Ἡ Ἁγία Τριάς» εἰς τὸ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Σεργίου, «Οἱ Ἀπόστολοι» εἰς τὴν μητρόπολιν τοῦ Ἁγίου Ἰσαὰκ κ. ἄ. Λόγῳ προσβολῆς τῆς ὑγείας του ἀπῆλθεν εἰς Μαδέραν καὶ κατόπιν εἰς Ρώμην, ὅπου ἀπέθανε. Θ. Β.

**Μπροὺμ** (Broome), ***Γουλιέλμος***. Ἄγγλος ποιητὴς καὶ ἑλληνιστὴς (1689—1745). Μετέφρασεν ὀκτὼ στοιχεῖα ἐκ τῆς «Ὀδυσσείας» τοῦ Ὁμήρου, ἅτινα ἐξέδωκε μετὰ σημειώσεων, καὶ κατέλιπε μετὰ θάνατον ποιητικὸν ἀπάνθισμα καὶ μετάφρασιν τῶν ᾠδῶν τοῦ Ἀνακρέοντος, δημοσιευθεῖσαν ἐν τῷ «Gentleman's Magazine». Α. Δ.

**Μπροὺμ** (Brougham), ***Ἐρρῖκος***, *λόρδος*—. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεὺς (1778—1868). Κατ' ἀρχὰς ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα καὶ βραδύτερον ἵδρυσε μετὰ τοῦ Σίντνεϋ Σμὶθ τὴν «Ἐπιθεώρησιν τοῦ Ἐδιμβούργου» (1802). Τῷ 1810 ἐξελέγη μέλος τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων. Ἀλλ' ἡ ὑπεροψία του καὶ ἡ καυστικὴ εἰρωνεία του διέθεσαν δυσμενῶς τοὺς κοινοβουλευτικοὺς κύκλους. Ἐπανεκλεγεὶς κατόπιν βουλευτής, ὑπεστήριξε μετὰ τοσαύτης δεξιότητος τὴν ὑπόθεσιν τῆς Καρολίνας Μπρούνσβιχ, ἐνώπιον τῆς βουλῆς τῶν Λόρδων, ὥστε ὁ ὑπουργὸς δὲν ἐτόλμησε νὰ εἰσαγάγῃ τὸ νομοσχέδιον τῆς κατηγορίας εἰς τῆς βουλήν. Τῷ 1823 ἠσχολήθη ἰδιαίτατα μὲ τὴν ἐκλογικὴν μεταρρύθμισιν καὶ διεξήγαγε σφοδροτάτους ἀγῶνας ἐναντίον τῆς κυβερνήσεως, τὴν ὁποίαν τῷ 1830 κατώρθωσε ν' ἀνατρέψῃ. Προσληφθεὶς κατόπιν εἰς τὴν κυβέρνησιν Γκρέϋ μὲ τὸν τίτλον τοῦ ἀρχικαγκελλαρίου, κατεπολέμησεν ἐρρωμένως πᾶσαν κατάχρησιν, ἀπέκτησε δὲ τοσαύτην δημοτικότητα, ὥστε τὸ πλῆθος μετὰ τὴν ἐπιψήφισιν τοῦ νομοσχεδίου περὶ ἐκλογικῆς μεταρρυθμίσεως (1832) ἔσυρεν εἰς τὰς ὁδοὺς τοῦ Λονδίνου τὴν ἅμαξάν του. Ταχέως ὅμως ἐγκατελείφθη ὑπὸ πάντων καὶ ἠναγκάσθη ν' ἀποσυρθῇ τῆς κυβερνήσεως, διότι εἰσηγήθη τὴν ἐφαρμογὴν μέτρων σκληρῶν ἐναντίον τῆς Ἰρλανδίας, καὶ ἐπὶ πλέον ἐζήτησε καὶ ἔλαβεν ἐν Σκωτίᾳ σχεδὸν ἡγεμονικὰ προνόμια. Ὁ Μπροὺμ ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, ἐν οἷς : «Speeches at the bar and in parliament», «Opinions on politics, theology and law», «Essay on the British constitution», «Sketches of statesmen of the time of George III». Τὰ ἅπαντά του ἐδημοσιεύθησαν εἰς ἕνδεκα τόμους τῷ 1872 ἐν Ἐδιμβούργῳ. Τὸ εἰς αὐτὸν ἀποδιδόμενον μυθιστόρημα «Ἀλβέρτος Λοῦνελ» ἐξεδόθη μετὰ τὸν θάνατόν του. Α. Δ.

**Μπρούμα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Ἠλείας χωρίου *Ἡράκλεια* (βλ. λ.).

**Μπρουμάζι** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Μεσσηνίας χωρίου *Διάσελα* (βλ. λ.)

**Μπροῦμμελ** (Brummel), ***Γεώργιος*** · βλ. λ. *Μπράμμελ*.

**Μπρούμπουθι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀλβανικὴ ὀνομασία (=κάνθαρος) τῆς ΒΔ. ἄκρας τῶν Σπετσῶν (πλάτ. 37°16′20″ Β., μῆκ. 23°05′40″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525 : Hydra, Spezzia and Dhokos). Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην, ἀναφέρεται ὑπὸ τοῦ Μηλιαράκη («Ἀργολ. Κορινθ.» σ. 232). Ἀπὸ ταύτης ἔλαβε τὴν ὀνομασίαν καὶ τὸ πρὸ αὐτῆς νησίον, τὸ ἄλλως *Μπρούμπουλο*. Σ. Ε. Λ.

**Μπρούμπουλο** *[Γεωγρ.]*. Νησὶς τοῦ Μυρτῴου πελάγους (βλ. λ. *Βρομπόλι*).

**μπρούμυτα** · ἐπίρρ., ἀντὶ *προύμυτα* (βλ. λ.).

**μπρουμυτίζω** · ἀντὶ *προυμυτίζω* (βλ. λ.).

**Μπρόϋν** (Bruyn), ***Βαρθολομαῖος*** *βὰν*—. Ὁλλανδὸς ζωγράφος (1493—1555). Διήγαγε τὸ πλεῖστον τοῦ βίου του ἐν Κολωνίᾳ καὶ διεκρίθη ὡς προσωπογράφος. Μεταξὺ τῶν καλυτέρων του ἔργων τάσσονται ἡ προσωπογραφία τοῦ χωροδεσπότου Van Ryth (μουσεῖον Βερολίνου) καὶ ἡ προσωπογραφία τοῦ Browiller (μουσεῖον Κολωνίας). Ὁ Μπρόϋν ὑπῆρξεν ὁ ὀνομαστότερος ζωγράφος τῆς Κολωνίας κατὰ τὴν ἐποχήν του, ἡ δὲ τέχνη του φαίνεται στενῶς συνδεδεμένη πρὸς τὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Χολμπάϊν διὰ τὴν δύναμιν καὶ τὴν λεπτότητα συγχρόνως τῆς ἐκφράσεως. Ι. Μ. Π.

— **Μπρόϋν** (Bruyn), ***Κορνήλιος***. Ὁλλανδὸς ζωγράφος καὶ περιηγητής, γεννηθεὶς τῷ 1652 ἐν Χάγῃ. Ἀπὸ τοῦ 1674—1708 περιηγήθη τὴν Περσίαν, τὴν Ἀνατολήν, τὴν Ρωσίαν καὶ τὰς Ἀνατολικὰς Ἰνδίας. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι : «Voyage au Levant, c'est - à - dire dans les principales endroits de l'Asie mineure, dans les isles de Chio, Rhodes, Chypre etc.» (Paris 1725), «Voyage par la Moscovie, en Perse et aux Indes Orientales». Δ. Π. Π.

**Μπροὺν** (Brunn), ***Ἐρρῖκος***. Ἐπιφανὴς Γερμανὸς ἀρχαιολόγος (1822—1894). Ἐτέλεσε τὰς σπουδὰς αὐτοῦ ἐν Βόννῃ. Τῷ 1843 μετέβη εἰς τὴν βό-



Digitized by Google

ρειον Ἰταλίαν καὶ τῷ 1855 εἰς τὴν νότιον, ἵνα περισυλλέξῃ ἐπιγραφικὸν ὑλικὸν χάριν τοῦ Μόμμσεν. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Γερμανίαν, διωρίσθη ὑφηγητὴς ἐν Βόννῃ. Τῷ 1856 διωρίσθη γραμματεὺς τῆς ἐν Ρώμῃ γερμανικῆς ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, τὴν ὁποίαν ἀνήγαγεν εἰς περιωπὴν καὶ ἀνέδειξε κέντρον ἀρχαιολογικῆς ἐκπαιδεύσεως. Τῷ 1865 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Μονάχου καὶ ἔφορος τοῦ ἐκεῖ νομισματικοῦ μουσείου, τῷ 1867 διευθυντὴς τῆς συλλογῆς ἀγγείων τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου Α', καὶ τέλος, τῷ 1888, ἔφορος τῆς Γλυπτοθήκης. Ἔγραψε πλῆθος ἀξιολόγων ἔργων καὶ διατριβῶν, ἐν οἷς: «Ἱστορία τῶν Ἑλλήνων καλλιτεχνῶν» (2 τόμ. 1853—1859), «I relievi delle urne etrusche» (1870), «Ἱστορία τῆς τέχνης τῶν Ἑλλήνων» (1893, 1897), «Αἱ εἰκόνες τοῦ Φιλοστράτου» (1861), «Ἡ τέχνη παρ' Ὁμήρῳ» (1868), «Περιγραφὴ τῆς ἐν Μονάχῳ γλυπτοθήκης τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου Α'» (1868), «Προβλήματα ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἀγγειοπλαστικῆς» (1871—1887), «Περὶ τῆς θέσεως τῆς γιγαντομαχίας τῆς Περγάμου ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς τέχνης» (1884), «Μνημεῖα ἑλληνικῆς καὶ ρωμαϊκῆς γλυπτικῆς, ἱστορικῶς τεταγμένα» (1888) κ. ἄ.

*Ἐρρῖκος Μπρούν.*

Α. Δ.

**Μπροῦνεκ** (Bruneck) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Ἰταλίας (βλ. λ. *Μπρούνικο*).

**Μπρουνελλέσκι,** ἢ ***Μπρουνελλέσκο*** (Brunelleschi, ἢ Brunellesco), ***Φίλιππος.*** Διάσημος Ἰταλὸς ἀρχιτέκτων καὶ γλύπτης, γεννηθεὶς ἐν Φλωρεντίᾳ τῷ 1379 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1446. Ὁ Μπρουνελλέσκι διὰ τοῦ ἔργου του σημειώνει τὴν ἀπαρχὴν τῆς ἀρχιτεκτονικῆς ἀναγεννήσεως ἐν Ἰταλίᾳ. Ἐμπεποτισμένος ἀπὸ τὸ πνεῦμα τῆς γοτθικῆς τέχνης ἀφ' ἑνός, ἀπὸ τὴν ἁρμονίαν τῆς ἑλληνορρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος ἀφ' ἑτέρου, ὑπῆρξεν εἷς μέγας ἀνανεωτής, συνέδεσε δ' αἰωνίως τὸ ὄνομά του μὲ πολυάριθμα καὶ σημαντικώτατα μνημεῖα, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὴν πρωτεύουσαν κατέχει θέσιν ἡ περίφημος μητρόπολις τῆς Φλωρεντίας (Santa Maria de Fiore), τῆς ὁποίας ὁ Μπρουνελλέσκι κατεσκεύασε τὸν μεγαλειώδη θόλον, ἐξικνούμενον εἰς ὕψος ἑκατὸν περίπου μέτρων. Ἡ μητρόπολις τῆς Φλωρεντίας εἶναι ρωμανικὸν μνημεῖον, οὗ ἡ ἔναρξις τῆς κατασκευῆς ἐγένετο τῷ 1294 ὑπὸ τοῦ Ἀρνόλφο ντὶ Κάμπιο. Τῷ 1364 ἐξηκολούθησε τὴν οἰκοδόμησιν ταύτην ὁ Φραγκῖσκος Ταλέντι ἐπὶ διαγράμματος μεγαλοπρεπεστέρου καὶ συμφωνοτέρου πρὸς τὰς προσφάτους κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους καλλιτεχνικὰς ἐξελίξεις. Ἀπὸ δὲ τοῦ 1420 μέχρι τοῦ 1434 συνεπληρώθη αὕτη διὰ τῆς προσθήκης τοῦ θόλου τοῦ Μπρουνελλέσκι καὶ ἀπετέλεσε τὸ τόσον θαυμαζόμενον κατάλοιπον τῆς ἰταλικῆς τέχνης τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Ἐν τῇ ἐκτιμήσει τῆς σημασίας καὶ τῇ ἀναζητήσει τῆς προελεύσεως τοῦ θόλου τούτου πολλαὶ διεξήχθησαν συζητήσεις. Ὑπεστηρίχθη, ὡς συνοπτικῶς ἀναφέρει ὁ L. Hourticq (Initiation artistique, σελ. 87), ὅτι ὁ Μπρουνελλέσκι συνέλαβε τὴν ἰδέαν τοῦ ἀρχιτεκτονικοῦ τούτου μεγαλουργήματος ἐκ τῆς θεωρήσεως τοῦ θόλου τοῦ Πανθέου τοῦ Ἀγρίππα (ἐν Ρώμῃ). Ἀλλ' ἀντιπαρετηρήθη (βλ. *Marcel Reymond:* Brunelleschi, σελ. 7) ὅτι, μολονότι οἱ παλαιοὶ τεχνοκρίται, στηριζόμενοι ἐπὶ τοῦ Βαζάρι, ἀπέδιδον εἰς τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀρχαιότητος ὅλην τὴν ἀξίαν τοῦ ἔργου τούτου, φαίνεται ἀσφαλεστέρα ἡ γνώμη, καθ' ἣν ἡ μητρόπολις τῆς Φλωρεντίας ἀποτελεῖ σύλληψιν τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, εἰς ἣν ἀπέληξαν ὅλαι αἱ ἀναζητήσεις τῶν καλλιτεχνῶν τοῦ μεσαίωνος καὶ ὅτι εἶναι δυσκολώτατον νὰ ἀνεύρῃ τις ἐν αὐτῇ οἱανδήποτε καὶ ὁσονδήποτε μακρινὴν μίμησιν ἀρχαίου ἔργου. Βεβαίως, ἡ ρωμαϊκὴ ἀρχαιότης κατέλιπε τὸ πάνθεον· ἀλλ' ὁ θόλος τούτου εἶναι χαμηλός, ἡ δ' ἀντίληψις περὶ ὑψηλοῦ, μεγαλειώδους καὶ κατακορύφως ἐγειρομένου ἐπιστεγάσματος, ἡ τόσον χριστιανικὴ καὶ τόσον ἔκδηλος ἐν τῇ μητροπόλει τῆς Φλωρεντίας, φαίνεται ἀπολύτως ξένη πρὸς τοῦτον.

Εὐθὺς ὡς ἐπερατώθη ὁ θόλος τῆς φλωρεντινῆς μητροπόλεως, κατενοήθη ὅτι μέγα τι καὶ ὅλως ἀπροσμετρήτου καλλιτεχνικῆς σημασίας γεγονὸς εἶχε συμβῆ εἰς τὴν τέχνην τῆς ἰταλικῆς Ἀναγεννήσεως, ἀπὸ τῆς ἐποχῆς δ' ἐκείνης ὁ θόλος φαίνεται ἀπασχολῶν περισσότερον ἢ πᾶν ἄλλο ἀρχιτεκτονικὸν μέλος τὴν σκέψιν τῶν Ἰταλῶν ἀρχιτεκτόνων. Ἡ Ἀναγέννησις ὅμως ἐν τῇ ἀρχιτεκτονικῇ δὲν ἄρχεται διὰ τοῦ θόλου τῆς μητροπόλεως τῆς Φλωρεντίας, ἀλλὰ διὰ τῆς περιφήμου στοᾶς τοῦ Νοσοκομείου τῶν Ἀθῴων (τουτέστι τῶν παίδων) τῆς Φλωρεντίας, οὗτινος ἡ οἰκοδόμησις ἤρξατο τῷ 1419. Ἐν τῇ στοᾷ ταύτῃ ἀκριβῶς δυνάμεθα ν' ἀνεύρωμεν τὴν ἐπίδωσιν τοῦ πνεύματος τῆς κλασσικῆς τέχνης, ἐκδηλουμένην ἰδίᾳ ἐν τῇ συμμέτρῳ καὶ καλαισθήτῳ χρήσει τῶν ἐπὶ κομψῶν βάσεων ἐρειδομένων καὶ δι' ὡραιοτάτων κορινθιακῶν κιονοκράνων ἐπιστεφομένων, κατ' ἀραιὰ δὲ διαστήματα διατεταγμένων κιόνων. Τὸ κορινθιακὸν κιονόκρανον ὑπῆρξεν ἓν τῶν στοιχείων τῆς κλασσικῆς ἀρχιτεκτονικῆς, τὰ ὁποῖα διαθέρμως ἠγάπησεν ὁ Μπρουνελλέσκι· διὰ τοῦτο σπανίως ἔκαμε χρῆσιν ἄλλου τύπου κιονοκράνου, οὐδέποτε δὲ ἐχρησιμοποίησε τὸ δωρικὸν κιονόκρανον, οὗτινος ἡ τραχεῖα λιτότης τόσον ὀλίγον ἀνταπεκρίνετο πρὸς τὴν ἀθηναϊκὴν εὐστροφίαν τοῦ φλωρεντινοῦ πνεύματος. Πολὺ δὲ μᾶλλον ἀπέφυγε νὰ ἐπινοήσῃ φαντασιώδεις καὶ καινοτρόπως διακεκοσμημένους τύπους κιονοκράνων, ὡς ἔπραξαν οἱ πλεῖστοι τῶν μεταγενεστέρων του.

Εὐρύτερον ἡ εἰς τὸ νοσοκομεῖον τῶν Ἀθῴων ἐμφανίζεται ἡ στροφὴ τοῦ Μπρουνελλέσκι πρὸς τὴν κλασσικὴν ἀρχαιότητα ἐν τῇ σακριστίᾳ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου, τῆς ὁποίας ἡ λαμπρὰ διακόσμησις ἐγένετο ἐξ ὁλοκλήρου ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀρχαίων προτύπων. Καὶ εἰς τὸ ἔργον αὐτὸ ἐν τούτοις ὁ προσεκτικὸς παρατηρητὴς θ' ἀνεύρῃ ἀρκετὰ ἀκόμη λείψανα τῆς γοτθικῆς παραδόσεως ἐν τῷ πνεύματι τοῦ Μπρουνελλέσκι. Ὁ κατατεμαχισμὸς τῶν ἁψίδων καὶ ἡ χρῆσις μακρῶν καὶ στενῶν παραθύρων, μολονότι ταῦτα δὲν καταλήγουν εἰς ὀξυκόρυφα τόξα, ὁμιλοῦν εὐγλώττως περὶ τούτου. Τὰ ἴδια ἀρχιτεκτονικὰ καὶ διακοσμητικὰ δεδομένα ἀπαντῶσιν ἐπίσης καὶ εἰς τὸ παρεκκλήσιον Pazzi (1430—1440), οὗτινος ὅμως ἡ τεχνοτροπία εἶναι λεπτοτέρα, κομψοτέρα καὶ περισσότερον προσηρμοσμένη πρὸς τὸ πνεῦμα τῆς Ἀναγεννήσεως. Ὅ,τι δ' ὑπάρχει ἐν αὐτῷ νέον καὶ μᾶλλον ἐνδιαφέρον εἶναι ἡ στοὰ καὶ ἡ πρόσοψις ταύτης. Ἡ θύρα τοῦ παρεκκλησίου Pazzi παρέχει τὸ πρῶτον ὑπόδειγμα θύρας ἐπεστεμμένης δι' ἀετώματος, πρᾶγμα ὅπερ ἀνήκει ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν λαμπρὰν τέχνην τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος.

Διὰ τοῦ ναοῦ τοῦ Ἁγίου Λαυρεντίου ὁ Μπρουνελλέσκι ἐπιχειρεῖ διὰ μεγαλειώδους συλλήψεως ν' ἀναστήσῃ τὸν παλαιόν, ἀρχέγονον τύπον τῆς παλαιοχριστιανικῆς βασιλικῆς, ἐξαφανισθέντα ὑπὸ τὴν καταθλιπτικὴν ἐπίδρασιν τοῦ γοτθικοῦ ρυθμοῦ. Πρὸς τοῦτο ἀρύεται ἐμπνεύσεις ἐκ τῶν καταλοίπων τῆς ρωμαϊκῆς ἀρχαιότητος, ἴσως ἐκ τῶν θερμῶν τοῦ Καρακάλλα. Διατηρεῖ, ἐν τούτοις, καί τινα βυζαντινὰ καὶ γοτθικὰ στοιχεῖα, ὡς ἡ συνένωσις τῶν κιόνων δι' ἁψίδων· ἀλλ' ἄνωθεν τῶν κιονοκράνων θέτει μικρὰ ἐπιστύλια, ἅτινα ἀνάγονται εἰς τὸν εἰδωλολατρικὸν τύπον τῆς βασιλικῆς. Τὸ σύνολον, τοιουτοτρόπως, μακρὰν τοῦ νὰ ἀπολέσῃ τὴν ἑνότητά του, ἀποκτᾷ ἰδιαιτέραν τινὰ κομψότητα, ἐλαφρότητα καὶ χάριν, ἰδιότητας στερρῶς συνδεδεμένας μετὰ τῆς καθόλου καλλιτεχνικῆς ἰδιοσυγκρασίας τοῦ Μπρουνελλέσκι.

Ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἀποτελεῖ συνέχειαν τῆς προσπαθείας, τὴν ὁποίαν ὁ καλλιτέχνης κατέβαλεν ἐν τῷ Ἁγίῳ Λαυρεντίῳ. Ἀλλ' ἐνῷ ἐν ἐκείνῳ ἐδεσμεύετο ὑπὸ προϋπάρχοντος διαγράμματος, διότι ἐπρόκειτο περὶ ἀνακαινίσεως καὶ οὐχὶ περὶ πρώτης οἰκοδομήσεως μνημείου, ἐνταῦθα ἀφίνετο ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν ἔμπνευσίν του. Τοιουτοτρόπως ἐν τῷ ναῷ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος ἀποκαλύπτεται ἐν ὅλῃ τῇ δόξῃ της μία ἄλλη ἄποψις τῆς ἰδιοσυγκρασίας τοῦ μεγάλου ἀρχιτέκτονος: τὸ μεγαλεῖον. Ἡ προγενεστέρα λεπτότης τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τοῦ Μπρουνελλέσκι ἀντικαθίσταται ἤδη διὰ τοῦ μεγαλείου τούτου, ὅπερ τόσον πανηγυρικῶς ἐκδηλοῦται ἐν τῷ ἑτέρῳ ἐκείνῳ ἀριστουργήματι τοῦ καλλιτέχνου, ἐν τῇ μητροπόλει δηλονότι τῆς Φλωρεντίας.

Παρὰ τὰ θρησκευτικὰ μνημεῖα ὁ Μπρουνελλέ-

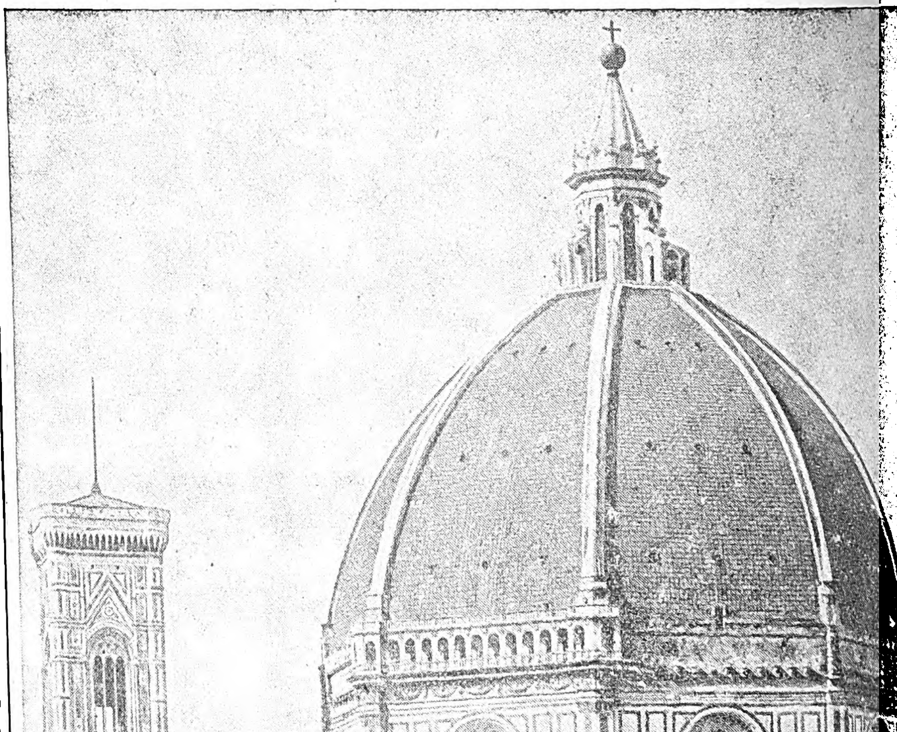
***Φ. Μπρουνελλέσκι:*** *Ὁ θόλος τῆς Σάντα Μαρία ντὲ Φιόρε ἐν Φλωρεντίᾳ.*

Digitized by Google

σκι ἐξειργάσθη μετὰ τῆς αὐτῆς ἐπιτυχίας καὶ δημόσια καὶ ἰδιωτικὰ ἱδρύματα. Μνημονεύομεν τὸ θαυμάσιον παλάτιον Πίττι, ἀνακαινισθὲν μετὰ ταῦτα, καὶ τὸ παλάτιον τῆς Μερίδος τῶν Γουέλφων, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀποδίδει ἐντονώτερον τὴν θελκτικὴν χάριν τῆς Ἀναγεννήσεως διὰ τῆς χρήσεως

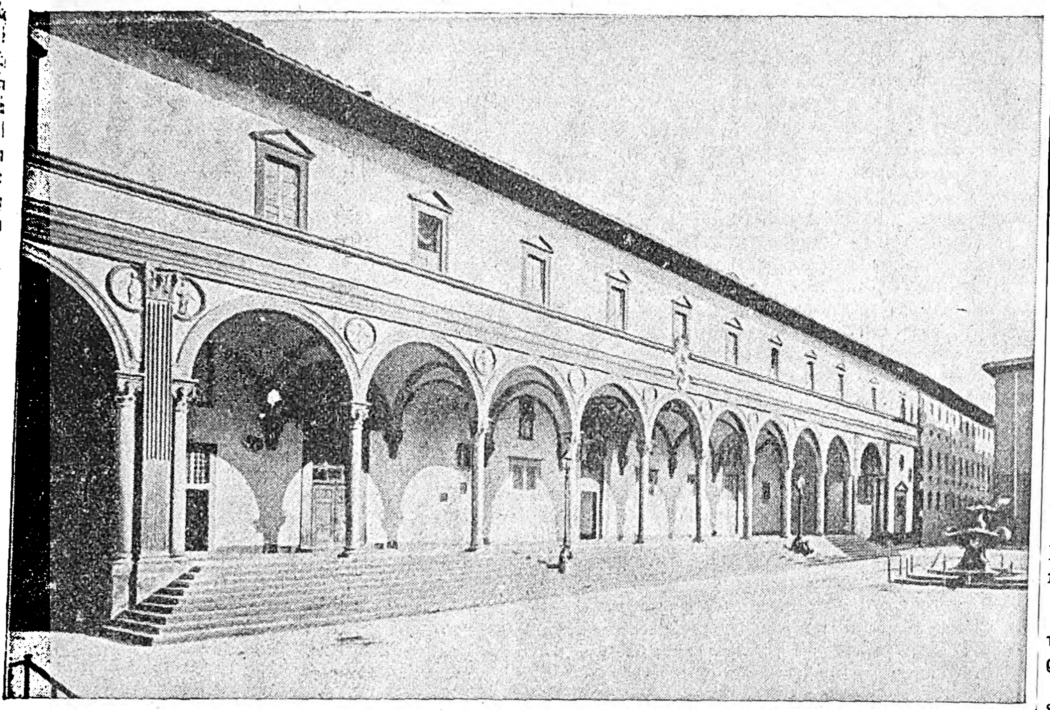

*Φ. Μπρουνελλέσκι: Στοὰ τοῦ νοσοκομείου τῶν Ἀθῴων.*

τῶν ἐπιστυλίων, τῶν παραστάδων, τῶν εὐρυτάτων παραθύρων καὶ τῆς καλαισθήτου διακοσμήσεως. Ἡ διακόσμησις, ἄλλως τε, ὑπῆρξε μία ἀπὸ τὰς περιοχάς, εἰς ἃς ἐντονώτερον ἐξεδηλώθη ἡ καλλιτεχνικὴ μεγαλοφυΐα τοῦ Μπρουνελλέσκι. Ὁ Μπρουνελλέσκι ἀντικατέστησε τὴν μέχρις αὐτοῦ ἐν χρήσει ἐν τῇ διακοσμήσει πολυχρωμίαν διὰ τῆς εντέχνου χρήσεως τῆς σκιᾶς καὶ τοῦ φωτὸς καὶ τὰ φορτικὰ πλαστικὰ στοιχεῖα διὰ κομψῶν, λιτῶν καὶ μεγαλοπρεπῶν ἐν ταὐτῷ ἀρχιτεκτονικῶν μελῶν.

Ἡ τέχνη τοῦ Μπρουνελλέσκι, ἐν τῷ συνόλῳ της κρινομένη, εἶναι ἁπλῆ, σοβαρὰ καὶ μεγαλοπρεπής. Μολονότι δ' ἀποτελεῖ τὴν πρώτην καθαρῶς ἀναγεννητικὴν ἐκδήλωσιν, ἐν τῇ περιοχῇ ἰδίᾳ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς, καὶ μολονότι ἐπέδρασε βαθέως ἐπὶ τῶν μεταγενεστέρων καλλιτεχνικῶν ἐξελίξεων, συμπληρωθεῖσα καὶ ἐπεκταθεῖσα διὰ της τέχνης τοῦ Μικελότσο, τοῦ ἐξοχωτάτου ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ τοῦ Ἀλμπέρτι, δὲν εὗρεν ἀμέσους μιμητάς: ὀλίγα εἶναι τὰ μνημεῖα τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἅτινα φέρουσι προφανῆ καὶ ἄμεσον τὴν ἐπίδρασίν της, αἱ δ' ἀρχιτεκτονικαί της μορφαὶ ἐπανεμφανίζονται μόλις κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, εἰς τὸ ἔργον ἀνδρῶν, ὡς ὁ Βίνιολα ἢ ὁ Παλλάντιο, βαθέως ἐμπεποτισμένων ὑπὸ τοῦ κλασσικοῦ πνεύματος. Τὸ κλασσικὸν τοῦτο πνεῦμα ὁ Μπρουνελλέσκι τὸ ἐνεκολπώθη μετὰ στοργῆς, ἀλλ' οὐχὶ ἐν πληρότητι· καὶ ἂν τις ἔτι ταχθῇ μὲ τὴν γνώμην τὴν θεωροῦσαν τὸν θόλον τῆς μητροπόλεως τῆς Φλωρεντίας ὡς ὀφειλόμενον εἰς κλασσικὰς ἐπιδράσεις, πάλιν εὑρίσκει, ὡς παρετηρήθη ἤδη, εἰς τὰ πλεῖστα τῶν κτισμάτων τοῦ ἀρχιτέκτονος τούτου ἱκανὰς ἐπιβιώσεις τῶν παλαιῶν γοτθικῶν παραδόσεων, αἵτινες δὲν εἶχον ἐξ ὁλοκλήρου ἐκπνεύσει ἀρχομένου τοῦ ΙΕ' αἰῶνος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. Durm*, Die Baukunst der Renaissance in Italien (Στουτγάρδη 1903).— *A. Haupt*, Baukunst der Renaissance (Βερολῖνον 1923).—*A. Doren*, Zun Bau der Florentiner Domkuppel (Repertorium, 1898, σελ. 249).— *C. von Fabriczy*, Fil. Brunelleschi (Στουτγάρδη 1892).— *M. Reymond*, Brunelleschi (Παρίσιοι 1912).

Ι. Μ. ΠΑΝΑΓΙΩΤΟΠΟΥΛΟΣ

**Μπρουνετιὲρ** (Brunetière), ***Φερδινάνδος***· βλ. λ. *Μπρουνετιέρ.*

**Μπρουνέττο** (Brunetto), ***Λατίνι.*** Ἰταλὸς λόγιος καὶ πολιτικός (βλ. λ. *Λατίνι*).

**Μπροῦνι**, ἢ ***Μπρουνεΐ*** (Bruni ἢ Brunei) *[Γεωγρ.]*. Ἰθαγενὲς κράτος τῆς ΒΔ. παραλίας τῆς νήσου Βόρνεο, ἀποτελοῦν ἀπὸ τοῦ 1906 βρεττανικὸν προτεκτοράτον. Κεῖται μεταξὺ τοῦ Σαραβὰκ καὶ τῆς ἀποικίας τῆς Βορείου βρεττανικῆς Βόρνεο, ἦτο δὲ ἄλλοτε, μέχρι τοῦ 1888, ἓν τῶν ἰσχυροτέρων κρατῶν τῆς νήσου, τοῦ ὁποίου αἱ κτήσεις ἐξετείνοντο ἐπὶ τοῦ μεγαλυτέρου τμήματος αὐτῆς. Σήμερον καλύπτει ἔκτασιν 10.400 τετρ. χλμ., ἀριθμεῖ δὲ πληθυσμὸν (1921) 25.454 κατ. Τὸ ἔδαφος τοῦ Μπροῦνι περικλείει κοιτάσματα γαιανθράκων καὶ ὀρυκτελαίου, εὑρισκόμενα ἀμφότερα ὑπὸ ἐκμετάλλευσιν. Ἡ ὁμώνυμος πρωτεύουσα, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Λίμπανγκ ἢ Μπροῦνι, εἶναι ἄξιον λόγου ἐμπορικὸν κέντρον, ἀπέχον διὰ θαλάσσης 770 μίλλια ἀπὸ τοῦ λιμένος τῆς Σινγκαπούρης, καὶ ἔχει ἐργαστήρια κομψοτεχνημάτων ἐκ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου. Κάτ. 10.000. Χ. Δ.

**Μπροῦνι, *Θεόδωρος Ἀντώνοβιτς.*** Ρῶσος ζωγράφος (1860—1875). Τὰ ἄριστα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ὁ Μωϋσῆς καὶ ὁ Ἐλεάζαρ», «Ἡ προσευχή», «Ἡ Βακχὶς καὶ τὸ παιδάκι», ἀποκείμενα εἰς τὸ μουσεῖον Ἐρμιτὰζ τῆς Πετρουπόλεως. Θ. Β.

—**Μπροῦνι** (Bruni), ***Λεονάρδος***, ὁ ἐπονομαζόμενος ***Ἀρητινός***. Εἷς τῶν σπουδαιοτέρων Ἰταλῶν σοφῶν τῆς Ἀναγεννήσεως, γεννηθεὶς ἐν Ἀρητίῳ τῷ 1369 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1444. Μεταβὰς εἰς Φλωρεντίαν, ἐδιδάχθη παρὰ τοῦ Ἕλληνος λογίου Χρυσολωρᾶ, κατόπιν δ' ἐγένετο ἀρχιγραμματεὺς τῆς δημοκρατίας. Ἀνὴρ ἐξόχου ἱκανότητος, ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς Φλωρεντίας μέχρι τοῦ 1404» εἰς 12 βιβλία (1415), «De temporibus suis libri II» (1474—1475), Commentarium rerum Graecorum», «Βίοι τοῦ Πετράρχου καὶ τοῦ Δάντου», μετέφρασε τὰ «Πολιτικὰ» καὶ τὰ «Οἰκονομικὰ» τοῦ Ἀριστοτέλους, τοὺς λόγους τοῦ Αἰσχίνου, τὸν «Περὶ τοῦ στεφάνου» τοῦ Δημοσθένους, κατέλιπε δὲ καὶ ἐπιστολὰς («Epistolae familiares») πολυτίμους διὰ τὴν φιλολογικὴν ἱστορίαν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος. Τ. ΣΤΡ.

**Μπρούνικελ** (Bruniquel) *[Γεωγρ.]*. Τὴν ὀνομασίαν ταύτην φέρει περίφημον σπήλαιον τῆς ὁμωνύμου κοινότητος, ἐν τῷ διαμερίσματι Tarn-et-Garonne τῆς Γαλλίας, καὶ διάφορα ἄλλα μέρη ὑπὸ βράχους, ἐκ τοῦ ἐδάφους τῶν ὁποίων ἐξήχθησαν ἀντικείμενα προϊστορικά, ἀποκείμενα ἤδη ἐν τοῖς μουσείοις τοῦ Λονδίνου, Montauban κτλ. Ταῦτα ἀνήκουν εἰς τὴν μαγδαληναίαν ἐποχήν, ἧς ἀποτελοῦν τὴν ὡραιοτέραν καλλιτεχνικὴν ἔκφανσιν. Μεταξὺ αὐτῶν καταλέγονται τὸ γλυπτικὸν ἔργον «Μαμμούθ τοῦ Μπρουνικέλ», «Οἱ δύο τάρανδοι τοῦ Μπρουνικὲλ» κ. ἄ. Ι. Γ. Κ.

**Μπρούνικο** (Brunico) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰταλίας ἐν τῷ νομῷ Τρέντο τῆς Βενετίας Τριντεντίνα παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Ριέντζο καὶ Ἄχρεν, ἐν τῷ μέσῳ ὡραίας κοιλάδος. Κάτ. 3.280. Εἶναι εἷς ἀπὸ τοὺς μᾶλλον πολυσυχνάστους κλιματολογικοὺς σταθμοὺς κατὰ τὸ θέρος. Ἔχει μοναστήρια, ἀνώτερον παρθεναγωγεῖον, ὡραῖαν ἐκκλησίαν τοῦ ΙΕ' αἰῶνος καὶ βιομηχανίαν μαλλίνων ὑφασμάτων. Μ. Δ. Β.

**Μπροῦννεν** (Brunnen) *[Γεωγρ.]*. Ἱστορικὴ κωμόπολις τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ Σβύτς, κειμένη παρὰ τὰς ὄχθας τῆς λίμνης τῶν Τεσσάρων Καντονίων. Ἐν αὐτῇ συνωμολογήθη τὴν 9 Δεκεμβρίου 1315 ἡ πρώτη συμμαχία τῶν καντονίων Σβύτς, Οὔρι καὶ Οὐντερβάλντεν ἐναντίον τῆς Αὐστρίας, ἥτις ἀποτελεῖ μίαν τῶν ἀπαρχῶν τῆς ἀπελευθερωτικῆς ἐν Ἑλβετίᾳ κινήσεως. Διαρκούντων τῶν πολέμων τῆς Γαλλικῆς δημοκρατίας, ἡ περιοχὴ τοῦ Μπροῦννεν ἐγένετο θέατρον πολλῶν μαχῶν μεταξὺ τῶν Γάλλων καὶ τοῦ στρατοῦ τῆς Αὐστρίας, κατὰ τὰ ἔτη 1799—1800. Κάτ. 3.500. Χ. Δ.

**Μπροῦννερ** (Brunner), ***Αἰμίλιος***. Ἔγκριτος Γερμανοελβετὸς διαμαρτυρόμενος θεολόγος, ἀνήκων εἰς τὴν ὁμάδα τῶν διαλεκτικῶν. Ἐγεννήθη τῷ 1889 ἐν Winterthur. Ἀπὸ τοῦ 1924 εἶναι καθηγητὴς τῆς συστηματικῆς καὶ πρακτικῆς θεολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ζυρίχης. Ἐδημοσίευσε πολλὰ ἔργα, ἐξ ὧν τὰ σπουδαιότατα εἶναι: «Erlebnis, Erkenntnis und Glaube» (β' ἔκδ. 1923), «Das Mystik und das Wort» (β' ἔκδ. 1928), «Der Mittler» (1927), «Religions Philosophie der evangelischen Theologie» (1927), «The theology of Crisis» (1929), «Das Grundproblem der Ethik» (1931). Π. Ι. Μ.

— **Μπροῦννερ** (Brunner), ***Ἐρρῖκος***. Αὐστριακὸς νομοδιδάσκαλος, γεννηθεὶς τῷ 1840. Τῷ 1870 διωρίσθη τακτικὸς καθηγητὴς ἐν Πράγᾳ, τῷ 1872 ἐν Στρασβούργῳ καὶ τῷ 1873 ἐν Βερολίνῳ. Τῷ 1884 ἐξελέγη μέλος τῆς βασιλικῆς πρωσσικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ συγχρόνως τῆς κεντρικῆς ἐπιτροπῆς τῶν «Monumenta Germaniae historiae». Ἔγραψε πλῆθος ἔργων, ἐν οἷς διακρίνονται: «Zeugen und Inquisitions beweis der Karoling. Zeit» (1866), «Wort und Form im altfranzösischen Prozess» (1868), «Das anglonormannische Erbfolgesystem» (1869), «Die Entstehung der Schwurgerichte» (1872), «Handbuch des Handelsrechts» (1882) κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μπροῦννερ** (Brunner), ***Σεβαστιανός***. Αὐστριακὸς θεολόγος καὶ συγγραφεὺς (1814—1893). Ἀπὸ τοῦ 1848—1865 διηύθυνε τὸ ἐκκλησιαστικὸν περιοδικὸν «Wiener Kirchenzeitung» καὶ κατόπιν ὠνομάσθη ἀποστολικὸς πρωτονοτάριος καὶ σύμβουλος τοῦ πάπα. Ἔγραψεν: «Ὁ θρῦλος τῶν Νιμπελούγγεν», κριτικὸς ἔλεγχος τῆς ἑγελιανῆς σχολῆς, «Ὁ Γερμανὸς Ἰώβ», «Οἱ ἠλίθιοι ἱππόται» «Clemens Maria Hoffbauer und seine Zeit», «Die Kunstgenossen der Klosterzelle» κ. ἄ. Α. Δ.

**Μπροῦνο** (Bruno). Ὄνομα διαφόρων κληρικῶν τῆς δυτικῆς Ἐκκλησίας, τῶν ὁποίων σπουδαιότεροι εἶναι:

—1) Ὁ ἀρχιεπίσκοπος τῆς Κολωνίας καὶ ἀρχιδοὺξ τῆς Λωρραίνης (925—965). Ἦτο ὁ τρίτος καὶ νεώτατος υἱὸς τοῦ Ἐρρίκου Α' καὶ ἀδελφὸς τοῦ Ὄθωνος τοῦ Μεγάλου, ὅστις ἀπὸ τοῦ 940 εἶχε προσλάβει αὐτὸν ἐν τῇ αὐλῇ του. Τῷ 953 ἐγένετο ἀρχιεπίσκοπος τῆς Κολωνίας καὶ ἔπειτα ἀρχιδοὺξ τῆς Λωρραίνης, διακριθεὶς καὶ ὡς ἐκκλησιαστικὸς καὶ ὡς πολιτικὸς ἄρχων. Παρ' ὅλας τὰς πολιτικὰς αὐτοῦ ἀπασχολήσεις, ἐφρόντιζε καὶ περὶ τῶν ἐκκλησιαστικῶν πραγμάτων καὶ ἐξήρυπτε τακτικὰς μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Τὴν ὑπὸ τοῦ μοναχοῦ Ρουότγκερ συγγραφεῖσαν βιογραφίαν αὐτοῦ ἐξέδωκαν οἱ Βολλανδισταί.

—2) Ὁ ἐκ Κβερφούρτ, ὁ ἐπικληθεὶς ἀπόστολος τῶν Πρώσσων. Οὗτος ἐγεννήθη τῷ 970, σπουδάσας δὲ πιθανῶς ἐν Μαγδεμβούργῳ ἐγένετο κληρικός. Ὅτε ὁ αὐτοκράτωρ Ὄθων Γ', ἐν ἔτει 996, ἦλθεν εἰς τὴν Ρώμην, ἔλαβεν αὐτὸν μεθ' ἑαυτοῦ. Ἐκεῖ ἐγνώρισεν ὁ Μπροῦνο τὸν ἐκ Πράγας Ἀδαλβέρτον, τοῦ ὁποίου ἡ μετὰ ταῦτα ἱεραποστολικὴ δρᾶσις καὶ ὁ μαρτυρικὸς θάνατος προὐξένησαν αὐτῷ βαθεῖαν ἐντύπωσιν καὶ μεγάλην ἐπιθυμίαν πρὸς μίμησιν. Λαβὼν τὴν ἄδειαν παρὰ τοῦ πάπα Σιλβέστρου Β, ἐστράφη κατ' ἀρχὰς πρὸς τὴν Πολωνίαν, ἔπειτα πρὸς τὴν Οὐγγαρίαν καὶ τέλος πρὸς τοὺς Πετσενέγους, οὓς κατώρθωσε νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὸν Χριστιανισμόν. Ἐπανελθὼν εἰς Πολωνίαν καὶ μὴ εὑρὼν ἐκεῖ κατάλληλον ἔδαφος πρὸς διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ, ἐστράφη μετὰ 18 ὀπαδῶν πρὸς τοὺς ἐθνικοὺς Πρώσσους. Ἐν Πρωσσίᾳ ἐργαζόμενος πρὸς διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ ἀπέθανε μαρτυρικὸν θάνατον μετὰ τῶν ὀπαδῶν του τῇ 14 Φεβρουαρίου τοῦ 1009. Μετὰ τοῦ βίου τοῦ Μπροῦνο ἔχουσι συνδεθῆ πλεῖσται μυθώδεις διηγήσεις, ὁ δὲ ὑπό τινων ἀναφερόμενος ἱεραπόστολος τῶν Πρώσσων *Βονιφάτιος* εἶναι ὁ ἡμέτερος Μπροῦνο, ὅστις, ὡς φαίνεται, ἔφερεν ὡς βαπτιστικὸν ὄνομα καὶ τὸ Βονιφάτιος ἢ ἔλαβε τοῦτο ὑπὸ τῶν θαυμαστῶν του. Τὸ ἔργον, ὅπερ ἀσφαλῶς δύναται νὰ ἀποδοθῇ εἰς αὐτόν, εἶναι ὁ βίος τοῦ ἁγίου Ἀδαλβέρτου, ὃν συνέγραψε πιθανῶς ἐν Πολωνίᾳ.

— 3) Ὁ ἱδρυτὴς τοῦ τάγματος τῶν Καρτεσίων. Οὗτος ἐγεννήθη τῷ 1032 ἐν Κολωνίᾳ καὶ ἐτελεύτησε τῇ 6 Ὀκτωβρίου τοῦ 1101. Μετὰ τὸ πέρας τῶν σπουδῶν του ἐγένετο κληρικός, διευθύνας ἐπὶ ἔτη τὴν ἐν Ρήμοις σχολὴν μετὰ μεγάλης ἱκανότητος καὶ ἐπιτυχίας. Ἐλθὼν εἰς προστριβὰς πρὸς τὸν ἐπίσκοπον τῆς Κολωνίας Μανασσῆν καὶ φύσει ῥέπων πρὸς τὸν μοναχικὸν βίον, ἦλθε τῷ 1082 μετὰ ἓξ συντρόφων πρὸς τὸν ἐπίσκοπον τῆς Γρενόβλης, τῇ συναινέσει τοῦ ὁποίου ἵδρυσεν ἐν ἐρημικῷ τόπῳ, Chartreuse καλουμένῳ, ἱερὰν μονὴν (τῷ 1084), ἐν ᾗ ἔζη μετὰ τῶν περὶ αὐτὸν μοναχῶν βίον αὐστηρῶς ἀσκητικόν. Ὁ πάπας Οὐρβανὸς Β', ἐπιθυμῶν νὰ ἔχῃ αὐτὸν παρὰ ἑαυτῷ, ἐκάλεσεν αὐτὸν εἰς Ρώμην. Οὗτος ὅμως, ἐλθὼν εἰς Ρώμην καὶ μὴ δυνάμενος νὰ μένῃ ἐκεῖ, παρεκάλεσε τὸν πάπαν ὅπως ἐπιτρέψῃ αὐτῷ νὰ ἀπέλθῃ. Μετὰ τὴν συγκατάθεσιν τοῦ πάπα ἦλθεν εἰς τὴν Καλαβρίαν, ἔνθα ἵδρυσε μονὴν διεπομένην ὑπὸ τῶν αὐτῶν κανόνων, ἐν ᾗ καὶ ἐτελεύτησεν. Ἡ δυτικὴ Ἐκκλησία τιμᾷ αὐτὸν ὡς ἅγιον, ἑορτάζουσα τὴν μνήμην αὐτοῦ τῇ 6 Ὀκτωβρίου. Ὁ βίος τῆς ἐγράφη τὸ ἐξεδόθησαν ἐν Παρισίοις τῷ 1594 καὶ ἔπειτα πολλάκις. Ἐκ τῶν ἀποδιδομένων ὅμως εἰς αὐτὸν ἔργων τὰ σχό-

Digitized by Google

λια εἰς τοὺς Ψαλμοὺς καὶ εἰς τὰς ἐπιστολὰς τοῦ ἀποστόλου Παύλου, ὡς καί τινες ἐπιστολαὶ εἶναι γνήσια. Κ. Ι. Δ.

—**Μπροῦνο** (Bruno). Ἰταλὸς ἰατρός, παρακολουθήσας τὸν Βύρωνα τῷ 1823 εἰς Κεφαλληνίαν, ὅταν κατήρχετο πρὸς ἔνοπλον ὑπεράσπισιν τῆς μαχομένης Ἑλλάδος. Τ. Χ. Κ.

— **Μπροῦνο** (Bruno), ***Παῦλος***. Γερμανὸς ζωγράφος καὶ ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς τῷ 1874. Ἐσπούδασεν ἐν Δρέσδῃ καὶ Μονάχῳ. Τῷ 1900 ἔτυχε τοῦ πρώτου βραβείου τῶν Παρισίων, τῷ 1907 διωρίσθη διευθυντὴς τῶν σπουδῶν ἐν τῷ μουσείῳ τῶν ἐφηρμοσμένων τεχνῶν τοῦ Βερολίνου, συγχρόνως δ' ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. Ὁ Μπροῦνο ἔγραψε λίβελλον ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἡ εἰς τὰ σχολεῖα τοῦ κράτους μόρφωσις τῶν καλλιτεχνῶν», ὅστις θεωρεῖται κλασσικὸς εἰς τὸ εἶδός του. Α. Δ.

— **Μπροῦνο** (Bruno), ***Τζορντάνο***. Ἐπιφανὴς Ἰταλὸς φιλόσοφος (1548—1600), γεννηθεὶς ἐν Νόλᾳ τοῦ βασιλείου τῆς Νεαπόλεως. Δεκαπενταετὴς εἰσελθὼν εἰς μοναστήριον τῶν δομινικανῶν, διῆλθεν ἀλληλοδιαδόχως ὅλα τὰ στάδια τῶν θεολογικῶν σπουδῶν καὶ ἔγινε διδάκτωρ τῆς θεολογίας. Καταστὰς ὕποπτος μετέβη εἴς τι μοναστήριον ἐν Ρώμῃ, ἀλλὰ κατηγορήθη εἰς 130 «θέσεις» δι' αἱρετικότητα καὶ μαγείαν, ἀπέθεσε τὸ μοναχικὸν ἔνδυμα καὶ ἔφυγε κρυφίως. Ἔκτοτε ἀρχίζει βίος περιπλανήσεων καὶ περιπετειῶν. Καταδιωκόμενος πανταχοῦ, ἐπεσκέφθη ἀλληλοδιαδόχως τὴν Γένουαν, τὸ Μιλᾶνον, τὴν Βενετίαν, τὴν Νίκαιαν, τὴν Γενεύην, τὴν Λυών, τὴν Τουλούζην, ὅπου παρέμεινεν ἐπί τινα χρόνον ὡς καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου. Εἰς ἑκάστην τῶν πόλεων τούτων ὑπερήσπισε «θέσεις» ἀντιθέτους πρὸς τὸν ἀριστοτελισμὸν καὶ τὴν σχολαστικὴν φιλοσοφίαν. Κατόπιν μετέβη εἰς Παρισίους, ὅπου τὸν ἐπροστάτευσεν ὁ Ἐρρῖκος Δ'. Τὰ συγγράμματά του τῆς ἐποχῆς ταύτης εἶναι ἀποκλειστικῶς ἀφιερωμένα εἰς τὴν λογικὴν ἐπεξεργασίαν τῶν ἔργων τοῦ Ραϋμόνδου Λούλλι, τὰ ὁποῖα ἀντιτάσσει εἰς τὴν μηχανικὴν λογικὴν τῶν συλλογισμῶν τοῦ Ἀριστοτέλους καὶ τοῦ Πέτρου Ράμου.

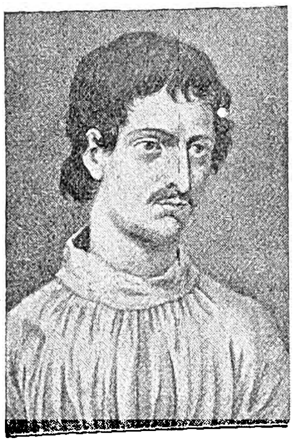

*Τζορντάνο Μπροῦνο.*

Μεταβὰς κατόπιν εἰς Λονδῖνον καὶ γενόμενος δεκτὸς εἰς τὴν αὐλὴν τῆς Ἐλισάβετ, τὴν ὁποίαν ἐξυψώνει καὶ ἐξυμνεῖ ὑπερβολικά, λαμβάνει τὴν ἄδειαν νὰ δώσῃ μαθήματα καὶ νὰ συζητήσῃ τὰς ἀρχάς του ἐν Ὀξφόρδῃ. Ἡ ἐλευθερία τῆς ὁποίας ἀπέλαυσεν ἐν Ἀγγλίᾳ ὑποβοηθεῖ τὴν πνευματικήν του ὡριμότητα καὶ τὰ καλύτερα ἔργα του συνετάχθησαν τότε, ἀλλὰ καταστὰς καὶ ἐκεῖ ὕποπτος, μετὰ δύο περίπου ἐτῶν διαμονήν, ἐπανέρχεται εἰς Παρισίους καὶ κατόπιν μεταβαίνει εἰς τὸ Μαρβοῦργον, ὅπου τοῦ ἀρνοῦνται καθηγητικὴν ἕδραν, καὶ εἰς τὴν Βυρτεμβέργην, τὴν ὁποίαν ἀποκαλεῖ Ἀθήνας τῆς Γερμανίας καὶ ὅπου ἀναπαύεται ἐπί τινα χρόνον ἀπὸ τοὺς διωγμούς. Ἐπιτίθεται μετ' ὀλίγον ἐναντίον τοῦ καθολικισμοῦ ἐν Πράγᾳ, ὅποθεν διωχθεὶς καταφεύγει εἰς Φραγκφούρτην, ὅπου πληροφορεῖται ὅτι εὐγενὴς Βενετός, ὀνόματι Μοντσενῖγος, ἐπιθυμεῖ νὰ τὸν προσλάβῃ εἰς τὸν οἶκόν του ὡς διδάσκαλον. Ἐδέχθη ἀπερισκέπτως καὶ μόλις ἔφθασεν εἰς Βενετίαν ἐπροδόθη ὑπ' αὐτοῦ καὶ συνελήφθη (1592). Ἡ δίκη διήρκεσεν ἐν Βενετίᾳ δύο ἔτη, ἐχάθησαν ὅμως τὰ πλεῖστα τῶν ἐγγράφων. Τὸν Μπροῦνο διεκδικεῖ κατόπιν ὁ μέγας ἱεροεξεταστὴς τῆς Ρώμης, εἰς ὃν παρεδόθη μετὰ πολλὰς συζητήσεις μεταξὺ Βενετίας καὶ Ρώμης. Ἐπὶ ἑπτὰ ὅλα ἔτη ὁ Μπροῦνο ἀρνεῖται ν' ἀποκηρύξῃ οἱαδήποτε ἔργα ἢ θεωρίας του, μολονότι ἐν Βενετίᾳ εἶχε δείξει τάσεις ὑποχωρητικότητος, διακρίνων τὴν ἀλήθειαν τοῦ λόγου ἀπὸ τὴν ἐξ ἀποκαλύψεως τοιαύτην καὶ θεωρῶν αὐτὰς ἀσυμμέτρους μεταξύ των. Τῷ 1599 κατεδικάσθη εἰς θάνατον καὶ παρεδόθη εἰς τὴν πολιτικὴν δικαιοσύνην, ἵνα τιμωρηθῇ «μὲ τὸν ἐπιεικέστερον τρόπον, χωρὶς νὰ χυθῇ αἷμα», ἤτοι νὰ καῇ ζῶν. Ἡ ἀπόφασις ἐξετελέσθη τὴν 17ην Φεβρουαρίου τοῦ 1600.

Τὸν κεντρικὸν πυρῆνα τῆς σκέψεως τοῦ Μπροῦνο ἀποτελεῖ ὁ ποιητικὸς καὶ βαθύτατα θρησκευτικὸς πανθεϊσμός του, ὁ ὁποῖος εὑρίσκει τὸ φυσικόν του στήριγμα εἰς τὴν τότε διαδεδομένην ἀστρονομικὴν θεωρίαν τοῦ Κοπερνίκου. Μολονότι ἐγνώριζε μαθηματικὰ καὶ ἀστρονομίαν, ὁ Μπροῦνο λαμβάνει ἀφετηρίαν, διὰ νὰ παραδεχθῇ τὸ ἄπειρον τοῦ σύμπαντος, μᾶλλον ἐκ τῆς θρησκευτικῆς του ἐναισθήσεως ἢ ἐκ μαθηματικῶν ὑπολογισμῶν, προχωρεῖ δὲ πέραν τοῦ Κοπερνίκου, ὑποστηρίζων τὴν ὕπαρξιν ἀπείρων πλανητικῶν συστημάτων ἐντὸς τοῦ ἀπείρου χώρου, ὅπου κέντρον καὶ περιφέρεια, ἄνω καὶ κάτω, κίνησις καὶ ἠρεμία εἶναι μόνον σχετικαὶ ἔννοιαι. Οἱοσδήποτε περιορισμὸς τοῦ σύμπαντος, χρονικὸς ἢ τοπικός, θὰ ἦτο ἀσυμβίβαστος πρὸς τὰς ἀπείρους ἰδιότητας τοῦ Ἑνός, τῆς ἀπολύτου ἑνότητος τοῦ Θεοῦ. Οἱ ἄπειροι αὐτοὶ κόσμοι κατοικοῦνται ὑπὸ ἐμψύχων ὄντων, ὡς ἡ γῆ. Ὁ Tocco διακρίνει τρεῖς φάσεις εἰς τὴν πνευματικὴν ἐξέλιξιν τοῦ Μπροῦνο: Ἡ πρώτη εἶναι ἀκόμη ἡλιοκεντρικὴ καὶ ὑλιστική· ἐν ταύτῃ δέχεται τὸν φυσικὸν ἀτομισμόν. Εἰς τὴν δευτέραν, ὁ Θεὸς εἶναι ἡ ἄπειρος οὐσία καὶ ὁ κόσμος εἶναι ὅλος ἔμψυχος καὶ διαποτίζεται ἀπὸ τὴν θείαν ἑνότητα. Εἰς τὴν τρίτην φάσιν παραδέχεται τὴν ἀπειρίαν τῶν πνευματικῶν μονάδων. Τὸ πρῶτον συστηματικὸν ἔργον του εἶναι τὸ «De umbris idearum» (1582), ὅπου δίδει μεταφυσικὴν καὶ γνωσιολογικὴν βάσιν εἰς τὴν μνημονικήν. Σκοπὸς τῆς λογικῆς ὡς τέχνης τοῦ σκέπτεσθαι εἶναι νὰ στηρίξῃ τὸν λογισμὸν ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς, ἥτις κυριαρχεῖ εἰς πᾶσαν δημιουργίαν τῆς φύσεως. Τὰ πάντα προέρχονται ἀπὸ τὴν θείαν ἑνότητα καὶ ἡ φύσις εἶναι διαμορφωμένη μὲ τὰς ἰδέας, αἵτινες ἐνυπάρχουν ἐν τῇ θείᾳ οὐσίᾳ ὡς ἰδεατὴ ἑνότης. Αἱ παραστάσεις καὶ αἱ ἔννοιαι εἶναι σκιαὶ τῶν ἰδεῶν αὐτῶν ἢ ἐκδήλωσις των κατὰ τὸ ἀνθρώπινον μέτρον. Ἡ γνῶσις ἀποβαίνει τελειοτέρα ἐφ' ὅσον προσεγγίζει πρὸς τὴν ἄπειρον ἀρχικὴν ἑνότητα. Καὶ ὁ ἄνθρωπος προσπαθεῖ νὰ μετατρέψῃ τὰς σκιὰς τῶν αἰσθήσεων εἰς νοητικάς, ἀντιστοίχως πρὸς τὴν μετάβασιν ἀπὸ τὰ κατώτερα πρὸς τὰ ἀνώτερα πράγματα. Τὸ «Περὶ τῆς Αἰτίας, τῆς Ἀρχῆς καὶ τοῦ Ἑνὸς» εἶναι τὸ κυριώτερον ἔργον τοῦ Μπροῦνο εἰς διαλόγους. Ὁ πρῶτος πραγματεύεται περὶ τοῦ συστήματος τοῦ Κοπερνίκου, ὁ δεύτερος ἀναπτύσσει τὴν θεωρίαν περὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ κόσμου. Ἡ γνῶσις τῆς θείας οὐσίας εἶναι πέραν τῶν ὁρίων τῆς ἀνθρωπίνης διανοίας, ἀλλ' ὁ ἄνθρωπος δύναται νὰ τὴν συλλάβῃ, διότι κατὰ βάθος εἶναι ὁ ἴδιος ἀπαύγασμά της. Ἀρχὴ τῶν πραγμάτων εἶναι ὅ,τι συντελεῖ ἐσωτερικῶς εἰς τὴν δημιουργίαν οἱουδήποτε πράγματος καὶ ἐξακολουθεῖ νὰ ἐνυπάρχῃ ἐν αὐτῷ. Αἰτία ἀντιθέτως εἶναι τὸ ἐξωτερικῶς προκαλοῦν τὴν μεταβολήν. Ὑπάρχουν δύο αἰτίαι, ἡ δημιουργοῦσα καὶ ἡ τελικὴ ἢ ὁ σκοπός, καὶ δύο ἀρχαί, ἡ ὕλη καὶ ἡ μορφή. Ἀλλ' ἡ μορφὴ δὲν εἶναι παρὰ ἰδιότης ἢ περίπτωσις τοῦ φυσικοῦ γίγνεσθαι καὶ δὲν ὑπάρχει καθ' ἑαυτήν. Ἡ ὕλη εἶναι δημιουργικὴ δύναμις πάντοτε ἐν ἐνεργείᾳ, ἐκ τῆς ὁποίας προέρχονται τὰ πάντα μὲ τὰς διαφορὰς καὶ τὰ περιστατικά των, μολονότι εἶναι πάντοτε ἑνιαία καὶ ἀδιαίρετος. Ἡ ὕλη δὲν γνωρίζεται διὰ τῶν αἰσθήσεων, ἀλλὰ διὰ τοῦ λόγου, ὡς ἡ ἀπόλυτος ἑνότης. Ἐπομένως αἱ δύο ἀρχαὶ συμπίπτουν εἰς μίαν, τὴν ὕλην, καὶ αἱ δύο αἰτίαι εἰς μίαν, τὴν κινοῦσαν. Ἐὰν ἀνέλθωμεν ἀκόμη ὑψηλότερον εἰς τὸ ἀπόλυτον, δύναμις καὶ ὕλη συμπίπτουν εἰς τὴν ἑνότητα τῆς οὐσίας. Δὲν ὑπάρχει παρὰ μία ὀντότης, ὁ Θεός, ὅστις δύναται νὰ ὀνομασθῇ καὶ Natura Naturans, ἐνῷ ἡ ἄλλη, ἡ Natura Naturata, εἶναι ἡ μονογενὴς κόρη τοῦ Θεοῦ, ἔξω τῆς ὁποίας οὗτος εἶναι ἀπρόσιτος εἰς τὴν σκέψιν, ἀνώτερος παντὸς καθορισμοῦ. Εἰς τὸ ἀπόλυτον ἐξαλείφεται ἡ διάκρισις μεταξὺ δυνάμεως καὶ ἐνεργείας καὶ ἡ ὕλη δὲν χωρίζεται ἀπὸ τὴν δημιουργοῦσαν ψυχήν, ἀλλ' ὡς περιέχουσα ἐν αὐτῇ πάσας τὰς μορφὰς εἶναι ἡ θεία μήτηρ ὅλων τῶν πραγμάτων.

Ὁ Θεὸς ἢ τὸ Ἓν εὑρίσκεται ὁλόκληρος καὶ ἀδιαίρετος εἰς πᾶν σημεῖον τῆς φύσεως, ὅπως τὸ φῶς ἢ μία φωνή. Ἡ ἑνότης, ἐκδηλουμένη μετατρέπεται εἰς τρία ἐξελικτικὰ στάδια. Ἡ κατωτέρα μορφὴ τῆς ὑπάρξεως, τὸ ἐλάχιστον ὅριον, εἶναι μονάδες καὶ τὰ ἄτομα χωρὶς διακριτικὰς διαφοράς, ἄπειρα, ἀδιαίρετα. Ὁ ἀνώτατος βαθμὸς τῆς ὑπάρξεως εἶναι ἡ πλήρης ἐκδήλωσις τοῦ Ὄντος, αὐτὴ ἡ κατασκευὴ τοῦ σύμπαντος· μεταξὺ τῶν δύο γίνεται ὁ κύκλος τῆς ἀναβάσεως καὶ καταβάσεως καὶ ὁ νοῦς ἀνέρχεται πρὸς τὴν γνῶσιν κατὰ τὴν αὐτὴν κλίμακα, τὴν ὁποίαν κατέρχεται ἡ φύσις πρὸς δημιουργίαν τῶν ὄντων. Εἰς πᾶσαν γνῶσιν περιέχεται ἡ τάσις ἢ προσπάθεια τῆς ἐν αὐτῇ ἀπείρου δυνάμεως πρὸς τὴν ἐνέργειαν. Ἡ αἰσθησιακὴ ἱκανότης τείνει νὰ περιλάβῃ τὸν ὅλον αἰσθητὸν κόσμον, ἡ διανόησις ὁλόκληρον τὴν ἀλήθειαν, διότι πραγματικῶς περικλείουν ἐντὸς αὐτῶν δυνάμει ὁλόκληρον τὸ αἰσθητὸν καὶ νοητὸν Ὄν. Ρίζα τῆς ἀπείρου ταύτης προσπαθείας εἶναι ἡ ἐνύπαρξις (Immanence) τοῦ θείου πνεύματος ἐν παντί. Κατὰ βάθος ἔνστικτον, αἴσθησις καὶ νόησις εἶναι ταυτόσημα. Ἡ ἐνατένισις τοῦ Μπροῦνο δὲν εἶναι ἁπλῶς παθητικὴ παραδοχὴ τῆς θείας ἐμπνεύσεως, καὶ κατὰ τοῦτο διακρίνεται τῆς νεοπλατωνικῆς ἐκστάσεως, ἀλλὰ τάσις τοῦ λογικοῦ, προερχομένη ἀπὸ διανοητικὴν ἐπαφὴν μὲ τὸ ἀπόλυτον, ὅπου τὰ ἀντίθετα συμπίπτουν κατὰ τρόπον συγκεκριμένον. Ἡ ἀνθρωπίνη διάνοια συλλαμβάνει τὸ ἀπόλυτον μόνον κατὰ τρόπον ἀναλυτικῆς προόδου, οὕτως ὥστε ὁ νοῦς εὑρίσκεται ἐπ' ἄπειρον εἰς μεταφυσικὴν κίνησιν. Καταλήγομεν ἑπομένως εἰς μίαν ἑνιαίαν καὶ ἄπειρον ὕλην κινουμένην ἀπὸ μίαν ἄπειρον καὶ ἐσωτερικὴν αἰτίαν. Πᾶσα διάκρισις εἶναι συμπτωματικὴ καὶ τυχαία. Ἡ ἄπειρος ἑνότης συμπίπτει μὲ τὴν ἄπειρον συνθετότητα, ἡ ἄπειρος δύναμις πρέπει νὰ μετατραπῇ εἰς ἄπειρον ἐνέργειαν ἐν τῷ ἀπείρῳ χρόνῳ καὶ τόπῳ. Ἡ ἠθικὴ τοῦ Μπροῦνο ἐκτίθεται εἰς τὸ μυθολογικὸν ποίημα «Spaccio della bestia triomfante», ὅπου ὁ Ζεὺς ἐκδιώκει ἀπὸ τὸν οὐρανὸν τοὺς ἀστέρας, ὡς προσωποποιήσεις τῶν εἰδωλολατρικῶν θεῶν, καὶ τοποθετεῖ εἰς τὰς θέσεις των τὰς ἀρετάς, τῶν ὁποίων ἡ πρώτη εἶναι ἡ ἀλήθεια· ἀκολουθοῦν ἡ σωφροσύνη, ἡ ἔννομος τάξις, ἡ κρίσις, ἡ ἀξιοπρέπεια, ἡ ἀγάπη τῆς ἐργασίας, ἡ φιλία, ἡ μετάνοια κλπ. Ὁ Ζεὺς ἐνταῦθα συμβολίζει ὄχι τὸν θεόν, ἀλλὰ τὸν παραπλανώμενον καὶ ἀγωνιζόμενον ἄνθρωπον ἐν τῷ μέσῳ τῆς ἀπείρου ζωῆς, ὅστις ἐκδιώκει τὸ ἄλλως θριαμβεῦον θηρίον, τὴν ἁμαρτίαν. Ἡ ἰσχυροτέρα ἑνοποιοῦσα δύναμις εἶναι ἡ ἀγάπη, ἥτις εἶναι αἰσθησιακὴ ἢ ζωϊκή, ἠθικὴ ἐνεργητικὴ ἢ ἀνθρωπίνη, διανοητικὴ ἐνατενιστικὴ ἢ θεία. Εἰς τὸν Μπροῦνο κυριαρχεῖ ἡ ποιητικὴ ἔξαρσις, ἡ δὲ ὑπερφυσικὴ τάσις καὶ προσπάθεια νὰ συλλάβῃ τὸ ἀσύλληπτον εἶναι πάντοτε συγκεκριμένη, ζωντανὴ πνευματικὴ ἐνέργεια, διαπεποτισμένη μὲ πάθος καὶ ἀγωνίαν, ἐντεινομένην ἀπὸ τὴν ριζικὴν ἀντίθεσίν του πρὸς τὴν ἐπικρατοῦσαν φιλοσοφίαν καὶ τὴν ὅλην ἀντίληψιν τῆς ζωῆς τῆς ἐποχῆς του. Μισεῖ τὴν ἐκκλησιαστικὴν ὀργάνωσιν, τὸ τυφλὸν καὶ φανατικὸν ρεῦμα τοῦ σχολαστικοῦ συστήματος, τὴν στενὴν ἀντίληψιν περὶ τοῦ θεοῦ, ἥτις ζητεῖ νὰ τὸν φυλακίσῃ ἐντὸς στενῶν δογματικῶν ὁρίων, ἐντὸς τύπων ἀνθρωπίνων δημιουργηθέντων ὑπὸ ἀπολύτως περιωρισμένας ἱστορικὰς καὶ τοπικὰς συνθήκας. Μισεῖ ἐξ ἴσου τὸν πουριτανισμόν, καὶ δὲν εἶναι δυνατὸν ν' ἀληθεύῃ ὁ θρῦλος ὅτι προσηλυτίσθη ἐπί τι διάστημα εἰς τὸν προτεσταντισμόν, ἀφοῦ ἔχομεν χαρακτηρισμόν του, ὅτι ὁ χειρότερος τύπος θρησκευτικοῦ φανατισμοῦ, ἀγρίας προκαταλήψεως καὶ πνεύματος αἱρέσεως εἶναι ἡ θρησκευτικὴ ἀναμόρφωσις. Καὶ ἡ σχεδιασθεῖσα ἐπάνοδος εἰς τὴν καθολικὴν Ἐκκλησίαν δύναται νὰ ἐξηγηθῇ ὡς μία ὁρμὴ κοινωνικὴ πνεύματος ἐλευθέρου, τὸ ὁποῖον δὲν φαντάζεται ὅτι πρέπει νὰ ζητήσῃ συγχώρησιν ἐκεῖ ὅπου συνεχώρησε τόσους διωγμούς. Μετενόησεν ἄλλωστε ὁ ἴδιος καὶ ἀπέστειλεν εἰς Φλωρεντίαν τὸ χειρόγραφον τοῦ ἔργου του «Le setti arte liberale e inventive», ὅπερ προώριζε διὰ τὸν πάπαν.

Ἐκ τῶν ἄλλων ἔργων του ἀπωλέσθησαν ἡ διατριβὴ περὶ τῆς κιβωτοῦ τοῦ Νῶε, «Dei segni dei tempi», «Arbor philosophorum» (1585), «De predicamenti di dio» (1592) κ. ἄ., ἐκ τῶν διασωθέντων δὲ κυριώτερα εἶναι: 1) Λογικὰ καὶ μνημοτεχνικά: «De architectura et commento artis Lulli» (ἐν Παρισίοις 1582), «Ars reminiscendi», «Triginta sigillorum explicatio», «Sigillus sigillorum» (ἐν Λονδίνῳ, 1584), «De specierum scrutinio», σχόλια ἐπὶ μελέτης τοῦ Lulli. 2) Μεταφυσικὰ καὶ σχετικὰ πρὸς τὸ σύστημα τοῦ Κοπερνίκου: «Cena de le ceneri», διάλογος ἐπὶ τοῦ συστήματος τοῦ Κοπερνίκου (1584), «Del infinito universo e mondi» (1585), εἰς πέντε διαλόγους περὶ τῆς ἀπειρίας τῶν κόσμων, «De triplici, minimo et mensura», λατινικὸν διδακτικὸν ποίημα, «De monade, numero et figura», «De immenso et innumerabilibus» (ἐν Φραγκφούρτῃ 1591) κ. ἄ. 3) Πέντε ἔργα ἀφιερωμένα εἰς τὴν μαγείαν, ἥτις δικαιολογεῖται διὰ τὸν Μπροῦνο ἐκ τῆς συσχετίσεως καὶ τῆς ἐσωτερικῆς ταυτότητος τῶν πάντων ἐν τῇ θείᾳ ἑνότητι: «De magia», «Theses de magia», «De magia mathematica», «De rerum principiis», «Medicina lulliana et summa terminorum metaphysicorum». 4) Σατιρικά, ποιητικὰ καὶ ἄλλα: «Il candelajo», κωμῳδία, «Caballa del cavallo pegaseo», «Degl' eroici furori» (1585), δέκα διάλογοι ὡς ἀλληγορικὴ ἑρμηνεία ἐκστατικῶν ἐρωτικῶν ποιημάτων, ὅπου ὑποστηρίζει τὸ δικαίωμα τοῦ ἡρωϊκοῦ πάθους, τὸ ὁποῖον ἀντιλαμβάνεται ὄχι ὡς ἀχαλίνωτον μέθην, ἀλλ' ὡς ὑψίστην ἔντασιν τῆς συνειδήσεως, καὶ ἑπομένως δυνατὸν μόνον διὰ τῆς γνώσεως, «Articuli adversus mathematicos», ὅπου ἐξυμνεῖ τὸν θεῖον νόμον τῆς ἀγάπης καὶ τὴν ἀξίαν τῆς ἀνθρωπίνης ἐλευθερίας κ. ἄ.

Ὁ Μπροῦνο ὑπέστη πολλὰς ἐπιδράσεις, ἀλλὰ τὰς συνεχώνευσεν ὅλας ὑπὸ τὴν ἰδίαν αὐτοῦ ἔμπνευσιν. Ὅπως καὶ ἄλλοι φιλόσοφοι τῆς ἐποχῆς του, ἐπανέρχεται εἰς τὸν Πλάτωνα καὶ ἀνατρέχει πρὸ αὐτοῦ εἰς τὸν Ἀναξαγόραν, τὸν Ἡράκλειτον, τὸν Πυθαγόραν. Γνωρίζει ἀτελῶς τοὺς νεοπλατωνικοὺς καὶ ὀφείλει μέρη τινὰ τῆς θεωρίας του εἰς τὸν Λουκρήτιον καὶ τὸν φυσικὸν πανθεϊσμὸν τῶν στωϊκῶν. Ἐκ τῶν ἀμέσως προγενεστέρων του συγγενεύει πολὺ μὲ τὸν Νικόλαον Κουζᾶνον, καί, καθὼς οἱ Ἄραβες λογικοί, πιστεύει ὅτι αἱ ἀρχέτυποι ἰδέαι ὑπάρχουν μεταφυσικῶς μὲν εἰς τὴν ἀπόλυτον ἑνότητα, φυσικῶς εἰς αὐτὰ τὰ πράγματα καὶ λογικῶς εἰς τὰ σύμβολά των, τὰς ἐννοίας (Ante res, in rebus, post res). Ὁ Μπροῦνο ἐξήσκησεν ἀφ' ἑτέρου σημαντικὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ πάν-

Digitized by Google

των τῶν μεγάλων φιλοσόφων τῆς νεωτέρας ἐποχῆς. Ὁ Καρτέσιος παρέλαβεν ἐξ αὐτοῦ τὴν μέθοδον τῆς ἐλλόγου ἀμφιβολίας καὶ τὴν προφάνειαν (évidence) ὡς ἀρχὴν τῆς φιλοσοφικῆς βεβαιότητος· ὁ Σπινόζα τὴν ἔννοιαν τοῦ ἐνυπάρχοντος ἐν τῷ κόσμῳ θεοῦ καὶ τὴν διάκρισιν μεταξὺ natura naturans καὶ natura naturata.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. 1) *Ἐκδόσεις* : «Opere italiane» ἔκδ. *Ad. Wagner* (τ. 2, Λειψία 1829). Ἀνατύπωσις μετ᾽ ἐπεξεργασίας τοῦ *Paul de Lagarde* (1888—1889).—«Opere italiane» (I Dialoghi metaphys. II Dialoghi morali) ἐπιμελείᾳ *G. Gentile* (Bari, 1907—1908).—«Opere latine conscripta, publicis sumptibus edita» ὑπὸ *Fiorentino* (I, II 1880—1886), *F. Tocco* καὶ *A. Vitelli* (III, IV 1889—1891).—«Scripta omnia» ἔκδ. *A. F. Groerer* (1834, ἀτελής).—2) *Μελέται* : *Dilthey*, Auffassung u. Analyse D. Menschen im 15 U. 16 Jahrh. (Schriften II, 1914).—*J. Burckhardt*, Die Kultur der Renaissance in Italien (10 ἔκδ. 1908).—*Walter Pater*, Renaissance (β´ ἔκδ. 1906).—*G. Gentile*, Storia della filosofia italiana (1905).—*Schelling*, Bruno oder das natürliche u. göttliche Princip der Dinge.—*E. Tocco*, G. Br. (Φλωρεντία 1886).—*Levi*, G. Br. o la religione del pensiero (1887).—*Alandseck*, G. Br. martyrer der neuen Weltanschauung (1890).—*J. Levis-Mac Intyre*, G.Br. (1903).—*Jul. Reiner*, G. Br. u. seine Weltanschauung.—*G. Gentile*, G. Br. nella storia della cultura (1907).—*A. Labriola*, G. Br. (Ρώμη, 1910). —*C. Martin*, G. Br. mystic and martyr (1921).—*R. Mariano*, G. Br., la vita e l' uomo (1881).—*V. Spampanato*, Vita di G. Br. (Μεσσήνη 1921).—*Fiorentino*, Panteismo di Br. (1861).—*H. Brunhofer*, G. Br., Weltanschauung und Verhaengnis (1882).—*B. Croce*, La polemica filosofica in G. Br. e la sua efficacia presente (ἐν la Critica, V, 1907).

Ε. Λ.

**Μπροὺνς** (Bruns), ***Βίκτωρ***. Διάσημος Γερμανὸς χειρουργὸς (1812—1883). Τῷ 1843 ἐκλήθη εἰς Τυβίγγην ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς. Ἔγραψεν: «Ἐκτομαὶ νεύρων προσώπου ἐπὶ νευραλγίας αὐτοῦ» (1859), «Ἡ πρώτη ἐξαίρεσις πολύποδος λάρυγγος ἄνευ διανοίξεως τούτου» (1862), «Ἡ λαρυγγοσκοπία καὶ ἡ λαρυγγοσκοπικὴ χειρουργική» (1865), «Περὶ γαλβανοκαυστικῆς» (1874) κ. ἄ. Ο. Ρ.

— **Μπροὺνς** (Bruns), ***Κάρολος-Γεώργιος***. Γερμανὸς νομοδιδάσκαλος (1816—1884). Διετέλεσε καθηγητὴς εἰς διάφορα πανεπιστήμια καὶ ἀπὸ τοῦ 1861 ἐν Βερολίνῳ. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Τὸ δίκαιον τῆς νομῆς κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ τὴν σήμερον» (1848). Ἐκτὸς τούτου ἔγραψε: «Fontes juris romani antiqui» (=«Πηγαὶ τοῦ ἀρχαίου Ρωμαϊκοῦ Δικαίου»), ἐκδοθὲν τὸ πρῶτον τῷ 1860 καὶ κατ᾽ ἐπανάληψιν μετέπειτα, ἐν χρήσει δ᾽ ἀκόμη καὶ σήμερον, «Ἡ καλὴ πίστις ἐν τῇ χρησικτησίᾳ» (1872) κλπ. —Ω.

— **Μπροὺνς** (Bruns), ***Κάρολος-Χριστιανός***. Γερμανὸς ἀστρονόμος (1830—1881). Τῷ 1856 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ, ὑποβαλὼν διατριβὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «De planetis minoribus inter Martem et Jovem», κατὰ δὲ τὸ 1860 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀστρονομίας καὶ διευθυντὴς τοῦ ἀστεροσκοπείου τῆς Λειψίας, ὅπερ καὶ ἀνῳκοδόμησε. Διεκρίθη διὰ τὰς παρατηρήσεις του ἐπὶ τῶν ἀστεροειδῶν, ἀπλανῶν καὶ κομητῶν, ὧν τινας ἀνεκάλυψεν ὁ ἴδιος. Κυριώτεροι ἐκ τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ ἀνακαλυφθέντων εἶναι ὁ τοῦ 1853 IV, ὁ τοῦ 1854 IV, ὁ τοῦ 1855 III, ὁ τοῦ 1858 I (κομήτης τοῦ Tuttle), ὁ τοῦ 1862 III, ὁ τοῦ 1863 I κλπ. Πρὸς τούτοις ἀνεῦρε τὴν 18 Μαρτίου 1857 τὸν ὡς ἀπολεσθέντα θεωρούμενον κομήτην τοῦ Μπρόρσεν καὶ κατὰ τὴν 7ην Σεπτεμβρίου 1858 τὸν κομήτην τοῦ Faye. Ἐπὶ πλέον παρετήρησε τοὺς κομήτας τοῦ Tempel 1867 II καὶ 1869 III. Ἠσχολήθη μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Bayer εἰς γεωδαιτικὰς ἐργασίας, ἐγκατέστησε δὲ ἐν Σαξωνίᾳ δίκτυον ἐξ 24 μετεωρολογικῶν σταθμῶν.

Αἱ πλεῖσται τῶν ἐπιστημονικῶν του πραγματειῶν ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὸ περιοδικὸν «Astronomische Nachrichten», ἐκ δὲ τῶν συγγραμμάτων του διακρίνονται: ὁ «Ἀστρονομικὸς ἄτλας», οἱ «Λογαριθμικοὶ πίνακες μὲ ἑπτὰ δεκαδικὰ ψηφία» κτλ. Σ. Π.

— **Μπροὺνς** (Bruns), ***Παῦλος***. Γερμανὸς χειρουργός, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1846. Ἔγραψε: «Περὶ λαρυγγοτομίας πρὸς ἀφαίρεσιν ὄγκων ἐνδολαρυγγικῶν» (1877), «Περὶ λαρυγγεκτομῆς ἐπὶ ὀστεώσεως» (1886), «Περὶ ἐγχειρήσεων ἐπὶ τῶν ὀστῶν» κ. ἄ. Τῷ 1883 ἵδρυσε τὸ περιοδικὸν «Συμβολὴ εἰς τὴν κλινικὴν χειρουργικήν» καὶ ἐξέδωκε μετὰ τοῦ E. von Bergmann τὴν «Γερμανικὴν χειρουργικήν». Ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρεται μεταλλικὴ συσκευὴ διὰ τὰ κατάγματα τῆς κνήμης. Ο. Ρ.

**Μπρούνσβικ** (Brunswick) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ παλαιὸν δουκᾶτον τῆς Γερμανίας, ἀποτελοῦν σήμερον (ἀπὸ τοῦ τέλους τοῦ Παγκοσμίου πολέμου) μίαν τῶν 18 ὁμοσπόνδων πολιτειῶν αὐτῆς (βλ. λ. *Βρουνσβίκη)*. Ὑπὸ τὴν γραφὴν Brunswick ἀπαντᾷ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως εἰς τὴν γαλλικὴν καὶ ἀγγλικὴν γλῶσσαν καὶ εἰς τὴν ἰδιωματικὴν διάλεκτον τῆς κάτω Γερμανίας, ἐνῷ ἐν τῇ καθαρᾷ γερμανικῇ γράφεται Braunschweig (προφ. *Μπάουνσβαϊγκ*).

Ἐκ τῆς γερμανικῆς Μπρούνσβικ ὠνομάσθησαν ὁμοίως διάφοροι νεώτεραι πόλεις ἐν τῇ Β. Ἀμερικῇ καὶ Αὐστραλίᾳ (περὶ ὧν ἐπίσης βλ. λ. *Βρουνσβίκη)*. Χ. Δ.

**Μπρούνσβικ** (Brunswick), ***Κάρολος-Γουσταῦος-Γουλιέλμος-Φερδινάνδος***, *δοὺξ τῆς —*. Γερμανὸς στρατηγὸς (βλ. λ. *Βρουνσβίκης δούξ*).

— **Μπρουνσβὶκ** (Brunschwicg) ***Λέων***· βλ. λ. *Μπρουνσβίκ*.

**Μπρουντζέϊκα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀρείας τῆς ἐπαρχίας Ναυπλίας τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 73. Χ. Δ.

**μπρουντζίνα** (ἡ)· βλ. λ. *βρονζίνα*.

**μπρούντζινος**, *—η*, *—ο*· δημοτ., ὁ κατεσκευασμένος ἀπὸ μπροῦτζο, ἐξ ὀρειχάλκου, ὀρειχάλκινος· || μεταφ. «μπρούντζινο κεφάλι» ἐπὶ ἀνθρώπου ἐπιμόνου καὶ νωθροῦ τὴν διάνοιαν: «τὸ κεφάλι του εἶναι μπρούντζινο, δὲ γυρίζει».

**μπροῦντζος** (ὁ)· κρᾶμα χαλκοῦ καὶ κασσιτέρου, κρατέρωμα, ὀρείχαλκος.

— *[Ἐγκυκλ.]* Ἐν τῇ κοινῇ γλώσσῃ γίνεται συνήθως χρῆσις τῆς ξενικῆς λέξεως *μπροῦντζος*, ὅπως καὶ τῆς ἑλληνικῆς *ὀρείχαλκος*, πρὸς ὀνομασίαν οἱουδήποτε κράματος χαλκοῦ μετ᾽ ἄλλων μετάλλων. Ἐν τῇ ἀκριβείᾳ ὅμως ὁ μπροῦντζος (κρατέρωμα, γαλλ. bronze, ἰταλ. bronzo) περιλαμβάνει μόνον τὰ κράματα χαλκοῦ *μετὰ κασσιτέρου*, εἴτε ἁπλᾶ, εἴτε μετὰ προσμίξεως καὶ ἄλλων μετάλλων εἰς ἐλαχίστας ποσότητας. Εἰς αὐτὰ ἡ ἀναλογία τοῦ περιεχομένου χαλκοῦ κυμαίνεται ἀπὸ 75 ἕως 90%, ὅταν ὁ μπροῦντζος προορίζεται διὰ κατασκευὴν κωδώνων, ἀγαλμάτων καὶ μηχανῶν, ἀπὸ 90 δὲ ἕως 96%, ὅταν προορίζεται διὰ κοπὴν νομισμάτων. Τῶν περὶ ὧν πρόκειται κραμάτων δὲν γίνεται συνήθως ἐν τῇ κοινῇ γλώσσῃ διάκρισις ἀπὸ τοῦ χαλκοῦ ὅταν εἶναι μεγάλη ἡ ἐν αὐτοῖς ἀναλογία τοῦ μετάλλου τούτου, ὅπως εἰς τὰ (χάλκινα λεγόμενα) νομίσματα καὶ ἀγάλματα. Τὰ κράματα τοῦ χαλκοῦ *μετὰ ψευδαργύρου* (ὀρείχαλκος τοῦ ψευδαργύρου, γαλλ. laiton ἢ cuivre jaune) τὰ χρησιμοποιούμενα πρὸς κατασκευὴν ἀντικειμένων κοινῆς χρήσεως, ὡς στροφίγγων, δοχείων, λαβῶν κλπ, ἀποτελοῦσιν ἄλλην κατηγορίαν. Εἰς αὐτὰ ἡ ἀναλογία τοῦ χαλκοῦ εἶναι κατὰ πολὺ μικροτέρα παρ᾽ ὅσον εἰς τὸν μπροῦντζον (56—65% χαλκός, 35—44% ψευδάργυρος), καὶ ἡ τιμὴ ἄρα τοῦ κράματος εὐθηνοτέρα.

[Βλ. καὶ λ. *βροῦνζος, κρατέρωμα καὶ ὀρείχαλκος*.] —Ρ.

**Μπρούνφελς** (Brunfels ἢ Brunsfels), ***Ὄθων***. Γερμανὸς ἰατρὸς καὶ βοτανικός, γεννηθεὶς τῷ 1464 ἐν Brunfels πιθανῶς τῆς Μαγεντίας καὶ ἀποθανὼν τῷ 1534. Ὑπῆρξεν ὁ ἀνακαινιστὴς τῆς βοτανικῆς κατὰ τὸν ΙΣΤ´ αἰῶνα, διανοίξας νέας ὁδοὺς εἰς τὴν ἐπιστήμην ταύτην. Τὸ πλέον ἀξιοσημείωτον βοτανικὸν ἔργον του φέρει τὸν τίτλον «Herbarum vivae icones» (Στρασβοῦργον 1530—1536). Μεταξὺ δὲ τῶν ἰατρικῶν του ἐργασιῶν σημειοῦμεν τὰς ἀκολούθους: «Iatreion medicamentorum simplicium» (δίτομον 1533), «Onomasticon, seu Lexicon medicinae simplicis» (1534), «Chirurgia parva» (1569) κλπ. Ο. Ρ.

**Μπροὺς** (Bruce). Παλαιὰ νορμανδικὴ οἰκογένεια μεταναστεύσασα εἰς τὴν Σκωτίαν. Ἔλαβε παρὰ τοῦ Γουλιέλμου τοῦ Κατακτητοῦ ὡς δωρεὰν ἀπεράντους γαίας καὶ ἔδωσεν εἰς τὴν Σκωτίαν καὶ τὴν Ἰρλανδίαν ἡγεμόνας τινάς. Ἱδρυτὴς τοῦ οἴκου τούτου ὑπῆρξεν ὁ *Ροβέρτος Γ´* (1138—1189), εἰς ὃν ἐδωρήθη ἡ κομιτεία τοῦ Ἀνναντάλ. Ὁ *Ροβέρτος ΣΤ´ ντὲ Μπρούς* (1210—1295), κόμις τοῦ Ἀνναντάλ, διεξεδίκησε τὸν θρόνον τῆς Σκωτίας μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἀλεξάνδρου Γ´ (1286). Ἀλλ᾽ ὁ Ἐδουάρδος Α´, βασιλεὺς τῆς Ἀγγλίας, ἐκηρύχθη ὑπὲρ τοῦ Ἰωάννου Μπαλιόλ, ὅστις καὶ ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ θρόνου. Ἀπέθανε τῷ 1304. *Ροβέρτος ὁ Η´* (1274—1329), υἱὸς Ροβέρτου τοῦ Ζ´, κατεπολέμησε τοὺς Ἄγγλους, οἵτινες τῷ 1305 εἶχον προσαρτήσει τὴν Σκωτίαν, καὶ ἀναγνωρισθεὶς ὡς νόμιμος διάδοχος τοῦ σκωτικοῦ θρόνου ὑπὸ τῶν εὐγενῶν, ἐστέφθη βασιλεὺς ἐν Σκὸν τὸν Μάρτιον τοῦ 1306 καὶ κατώρθωσε νὰ ἐπανακτήσῃ ὁλόκληρον τὴν Σκωτίαν, νικήσας τοὺς Ἄγγλους κατὰ τὴν αἱματηρὰν μάχην τοῦ Μπάννοκμπὲρν (1314). Ἐπίσης ἠμύνθη ἀποτελεσματικῶς ἐναντίον τοῦ Ἐδουάρδου Γ´, ὃν ἐξηνάγκασε τῷ 1328 ν᾽ ἀναγνωρίσῃ τὴν ἀνεξαρτησίαν τῆς Σκωτίας. Ὁ νεώτερος ἀδελφός του *Ἐδουάρδος ντὲ Μπρούς* ἀνέλαβε τὴν ἐκ τῆς Ἰρλανδίας ἀποδίωξιν τῶν Ἄγγλων, ἀπεβιβάσθη ἐν Οὔλστερ τῷ 1315 καὶ ἐστέφθη βασιλεύς, ἀλλὰ τῷ 1318 ἡττήθη κατὰ κράτος καὶ ἐφονεύθη ἐν Ντελντάκ. Ὁ *Δαυῒδ ντὲ Μπρούς* (1324—1371), βασιλεὺς τῆς Σκωτίας, υἱὸς τοῦ Ροβέρτου Η´, ἐξεθρονίσθη ὑπὸ τοῦ Ἐδουάρδου Μπαλιόλ, υἱοῦ τοῦ Ἰωάννου Μπαλιόλ, τῷ 1332 καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Γαλλίαν, ὅπου διέμεινεν ἀπὸ τοῦ 1334 μέχρι τοῦ 1341. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Σκωτίαν, κατῆλθεν εἰς νέον ἀγῶνα κατὰ τῶν Ἄγγλων κατακτητῶν. Ἡττηθεὶς καὶ συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ἐν Νέβιλλς Κρὸς τῷ 1346, ἐπανέκτησε τὴν ἐλευθερίαν του τῷ 1357, καταβαλὼν ὡς λύτρα μέγα χρηματικὸν ποσόν. Α. Δ.

— **Μπροὺς** (Bruce), ***Ἰάκωβος***. Σκῶτος περιηγητὴς (1730—1794). Τῷ 1768 μετέβη εἰς τὴν Αἴγυπτον, κατόπιν δὲ εἰς τὴν Ἀβησσυνίαν, ἐξηρεύνησε τὰ ἐρείπια τῆς Ἀξούμης καὶ ἐσυνέχισε τὸ ταξίδιόν του εἰς Γκοντάρ. Κατὰ τὴν μακρὰν διαμονὴν αὐτοῦ ἐν Ἀβησσυνίᾳ ἐπεσκέφθη τὰς πηγὰς τοῦ Μπάχρ-ἐλ-Ἀζράκ, τὰς ὁποίας ἐξέλαβεν ὡς πηγὰς τοῦ Νείλου. Κατόπιν ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Αἴγυπτον διὰ τῆς Νουβίας καὶ τῷ 1772 ἐπανῆλθεν εἰς τὴν πατρίδα του, ὅπου ἠσχολήθη περὶ τὴν σύνταξιν ἔργου, ἐν ᾧ περιγράφει τὰς διαφόρους ἀνὰ τὴν Ἀφρικὴν περιηγήσεις του. Α. Δ.

— **Μπροὺς** (Bruce), ***Στάνλεϋ Μέλπμουρν***. Αὐστραλὸς πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1883. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν εἰς τὸν ἀγγλικὸν στρατόν, ἀποστρατευθεὶς ὡς ἀνάπηρος πολέμου τῷ 1917. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Αὐστραλίαν ἐξελέγη βουλευτής, τῷ 1921 ἀντεπροσώπευσε τὴν Αὐστραλίαν εἰς τὴν συνέλευσιν τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν καὶ κατόπιν διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν, τῷ δὲ 1923, μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ ὑπουργείου Παίητζ, ἀνέλαβε τὸν σχηματισμὸν τῆς κυβερνήσεως. Κατὰ τὰς ἐκλογὰς τοῦ 1925 ἐξῆλθε νικητής, καὶ μετ᾽ ὀλίγον κατώρθωσε νὰ ἐπιτύχῃ, κατόπιν διαπραγματεύσεων μετὰ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως, πολλὰς παραχωρήσεις ἀφορώσας τὴν αὐτοδιοίκησιν τῆς Αὐστραλίας, ἐν τῇ χορείᾳ τῶν Βρεττανικῶν ἀποικιῶν. Μ. Δ. Β.

**Μπροῦσα** *[Γεωγρ.]*. Τουρκικὸν ὄνομα τῆς *Προύσης* (βλ. λ.). Εἰς παλαιοτέρας ἐποχὰς οἱ Τοῦρκοι ἔλεγον *Μπεροῦσα*.

**Μπρουσίλωφ** (Brussilof, Drnsilov), ***Ἀλέξιος Ἀλεξέϊβιτς***. Ρῶσσος στρατηγὸς (1853—1826). Κατήγετο ἐξ ἀριστοκρατικῆς οἰκογενείας καὶ ἐσπούδασεν ἐν τῇ στρατιωτικῇ σχολῇ τῆς Πετρουπόλεως, ὑπηρετήσας κατ᾽ ἀρχὰς εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Καυκάσου καὶ λαβὼν μέρος κατόπιν εἰς τὸν Ρωσοτουρκικὸν πόλεμον τῷ 1877—1878, ὅπου διεκρίθη διὰ τὸ θάρρος του καὶ διὰ τὴν διοικητικήν του ἱκανότητα. Τῷ 1900 διωρίσθη διευθυντὴς τῆς σχολῆς τοῦ ἱππικοῦ ἐν Πετρουπόλει, τῷ 1905 διοικητὴς τῆς δευτέρας μεραρχίας τοῦ ἱππικοῦ καὶ τῷ 1909 στρατιωτικὸς διοικητὴς τῆς Βαρσοβίας. Τῷ 1911 διωρίσθη στρατιωτικὸς διοικητὴς τῆς ΝΔ. περιφερείας τῆς Ρωσίας, ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του δὲ ταύτην κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου διῴκησε τὴν Η´ στρατιάν, ἥτις εἰσέβαλεν εἰς τὴν Γαλικίαν ἀπ᾽ Α., ἀναπτυχθεῖσα εἰς τὸ ἄκρον ἀριστερὸν ἐπὶ τοῦ Δνειστέρου, καὶ συνέβαλε μεγάλως εἰς τὴν νίκην τῆς Λεοπόλεως (Λεμβέργης) τῇ 26—30 Αὐγούστου 1914. Τὸν Σεπτέμβριον τοῦ 1915 κατέλαβε τὸ Ρόβνο καὶ κατόπιν τὸ Λούτσκ. Μετὰ τὰς ἐπιτυχίας του ταύτας, τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1916, διωρίσθη ἀρχηγὸς τῶν πρὸς Ν. τῶν ἑλῶν τοῦ Πρίπετ ρωσικῶν «στρατιῶν τοῦ νότου» (Ζ´, Η´, Θ´ καὶ ΙΑ´) καί, κατόπιν συντόνου προπαρασκευῆς, τὸ θέρος τοῦ αὐτοῦ ἔτους, ἐνήργησε τὴν μεγάλην ἐπίθεσιν, γνωστὴν ὡς «ἐπίθεσιν τοῦ Μπρουσίλωφ» ἐν Γαλικίᾳ, κατὰ τὴν ὁποίαν ἔσχε σημαντικωτάτας ἐπιτυχίας, θεωρηθείσας ἐκ τῶν κεφαλαιωδεστέρων τοῦ Παγκοσμίου πολέμου. Αἱ ἐπιτυχίαι αὗται, κατὰ τὰς ὁποίας, προελάσας μέχρι τῶν Καρπαθίων, ἐντὸς πέντε ἑβδομάδων συνέλαβεν ὑπὲρ τὰς 200.000 αἰχμαλώτων, ἀνεκούφισαν μεγάλως τὰ ἄλλα μέτωπα τῆς Ἀντάντ, ἰδίως δὲ τὸ ἰταλικόν, καθότι οἱ Γερμανοὶ καὶ οἱ Αὐστριακοὶ ἠναγκάσθησαν ν᾽ ἀποσύρουν ἱκανὰς δυνάμεις ἐξ αὐτῶν πρὸς ἐνίσχυσιν τοῦ ΝΑ. μετώπου των. Μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς ρωσικῆς ἐπαναστάσεως ὁ Μπρουσίλωφ, ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ τσάρου ἐπὶ τῆς ἀνάγκης ἢ μὴ τῆς ἀποδοχῆς τῆς παραιτήσεως, τὴν ὁποίαν ἐπέβαλλον οἱ ἐπαναστάται, ἀπήντησεν, ἐκ συμφώνου μεθ᾽ ἁπάντων σχεδὸν τῶν ἄλλων διοικητῶν στρατιῶν, οἵτινες ἐγνώριζον τὸ ἐπικρατοῦν φρόνημα παρὰ τῷ στρατῷ, ὅτι ὤφειλε νὰ δεχθῇ τὸ τετελεσμένον γεγονός. Κατόπιν τούτου, ἀποκτήσας τὴν ἐμπιστοσύνην τῶν ἐπαναστατῶν, διωρίσθη τὴν 4 Ἰουνίου, ὑπὸ τῆς νέας κυβερνήσεως Λβώφ, ἀρχιστράτηγος καὶ ἐνήργησε τὴν τελευταίαν ἐπίθεσιν τοῦ ρωσικοῦ στρατοῦ, τὴν ἀποκληθεῖσαν «ἐπίθεσιν τοῦ Κερένσκυ» ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν, ὁ ὁποῖος διέταξε τὴν ἐκτέλεσίν της. Μετά τινας ὅμως ἀρχικὰς ἐπιτυχίας, ὁ ρωσικὸς στρατός, τοῦ ὁποίου ἡ πειθαρχία εἶχεν ἤδη κλονισθῆ σοβαρῶς, κατέστη πλέον ἀνίκανος διὰ πᾶσαν προέλασιν. Τὴν 1 Αὐγούστου ἀφῃρέθη ἀπὸ τὸν Μπρουσίλωφ ἡ ἀρχιστρατηγία, πιθανῶς λόγῳ διαφωνιῶν πρὸς τὸν Κερένσκυ. Κατ᾽ ἄλλους ὁ Μπρουσίλωφ εἶχεν ὑποβάλῃ τότε τὴν παραίτησίν του καὶ ἔζη ἰδιωτεύων ἐν Πετρουπόλει μέχρι τοῦ θανάτου του, χωρὶς νὰ ἀναλάβῃ ὑπηρεσίαν ἐπὶ τοῦ μπολσεβικικοῦ καθεστῶτος, ὅπως ἐπιστεύθη γενικῶς ἐν Εὐρώπῃ. Ἕτεραι πληροφορίαι φέρουν αὐτὸν ὡς ἀποδεχθέντα τὸ μπολσεβικικὸν καθεστὼς καὶ διορισθέντα τῷ 1920 στρατιωτικὸν σύμβουλον τοῦ μπολσεβίκου ἀρχιστρατήγου Καμένεφ, κατόπιν δὲ ἀνώτατον διοικητὴν τῆς νοτίου Ρωσίας καὶ ὅτι κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα Ρωσοπολωνικὸν πόλεμον ἀπηύθυνεν ἔκκλησιν πρὸς τοὺς Ρώσους ἀξιωματικούς, ἵνα βοηθήσωσι τὴν πατρίδα των. Ὁ Μπρουσίλωφ κρίνεται ὡς ὁ ἀξιολογώτερος τῶν Ρώσων στρατηγῶν, οἵτινες ἀνεδείχθησαν κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Μετὰ τὸν θάνατόν του ἐδημοσιεύθησαν τὰ «Ἀπομνημονεύματά» του, τὰ ὁποῖα διαφωτί-

Digitized by Google

ζουν πολλὰ σημεῖα τῆς στρατιωτικῆς καταστάσεως τῶν συμμάχων κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Ν. Θ. Κ.

**μπρούσκλι** (τό), καὶ *μπρουσκλιὰ* (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κισσὸς ὁ ἕλιξ*.

**μπρουσκλιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]* βλ. *μπρούσκλι*.

**μπροῦσκος**, —α, —ο· δημοτ., ἐπὶ τοῦ οἴνου, ὑπόξινος, ἀλλ' ὑγιής: «μπροῦσκο κρασί» ἄλλως «ἀγουρόπιοτο —»· || ὁ ἐκτροπίας οἶνος, τὸ κρασὶ ποῦ εἶναι γιὰ νὰ χαλάσῃ· || ὁ παρέχων γεῦσιν στυφράν, ἄλλως «στυφὸ κρασί» (αἱ σημασίαι κατὰ τόπους) (ἐκ τοῦ ἰταλ. brusco).

**Μπρουσσαὶ** (Broussais), ***Φραγκῖσκος-Ἰωσὴφ-Βίκτωρ***. Γάλλος ἰατρός, γεννηθεὶς τῷ 1772 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1838. Εἰς ἡλικίαν εἴκοσι ἐτῶν κατετάγη ὡς ἐθελοντής, ἀσθενήσας ὅμως ἠναγκάσθη νὰ ἀποχωρήσῃ τοῦ στρατεύματος καὶ ἐπεδόθη εἰς τὴν σπουδὴν τῆς ἰατρικῆς. Τῷ 1805 ἐγένετο στρατιωτικὸς ἰατρός, ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν μελέτην τῆς πνευμονικῆς φθίσεως καὶ διεπίστωσεν ὅτι ἡ νόσος αὕτη συνίσταται εἰς τὴν φυματίασιν τοῦ πνεύμονος, ἀλλ' ἠπατήθη ὡς πρὸς τὰ γενεσιουργὰ αἴτια τῆς νόσου. Τῷ 1808 ἐξέδωκε τὸ ἔργον του: «Histoire des phlegmasies ou inflammations chroniques», καὶ ἐγένετο ἀρχίατρος τοῦ στρατοῦ τῆς Ἱσπανίας. Κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐκστρατείας συνέγραψε τὸ ἔργον: «Memoires sur la circulation capillaire», τὸ ὁποῖον προδίδει μᾶλλον φαντασίαν ἢ παρατηρητικότητα. Κατὰ τὸ σύστημά του, ὅπερ ἐστηρίζετο ἐπὶ τῆς ἀστασίας τῶν ἱστῶν, ἡ ζωὴ συνίσταται εἰς τὴν διέγερσιν τῶν ἱστῶν, αἱ δὲ νόσοι εἶναι ἅπασαι, φλεγμοναί. Τῷ 1817 ἐξέδωκε τὸ περίφημον «Examen des doctrines médicales», ὅπερ ἀποτελεῖ κριτικὴν ὅλων τῶν παλαιῶν ἰατρικῶν θεωριῶν. —Ω.

**μπρουσσαϊσμός**, ἡ *βρουσσαισισμὸς* (broussaisisme). Ἐκλήθη οὕτως, ἐκ τοῦ δημιουργοῦ ταύτης Γάλλου Broussais, ἡ θεωρία, κατὰ τὴν ὁποίαν πάντα τὰ νοσηρὰ ἰατρικὰ φαινόμενα, καὶ αὗται ἔτι αἱ χρόνιαι φλεγμοναὶ καὶ αὐτοὶ προσέτι οἱ ὄγκοι, ἔχουσιν ὡς ἀφετηρίαν αὐτῶν τὴν φλεγμονήν. Μ. Ν. Κ.

**Μπρουσσὲλ** (Broussel), ***Πέτρος***. Γάλλος δικαστικός, ζήσας περὶ τὰ μέσα τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐγένετο δημοφιλής, διότι ἀντιταχθεὶς εἰς τὰ φορολογικὰ μέτρα τῆς κυβερνήσεως τοῦ Μαζαρίνου ἐπέσυρεν ἐκ τούτου τὴν ὀργὴν τῆς αὐλῆς, κατὰ διαταγὴν τῆς ὁποίας καὶ συνελήφθη (28 Αὐγούστου 1648). Ἡ σύλληψις αὕτη ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὴν πρώτην ἔκρηξιν τῶν ταραχῶν τῆς «Σφενδόνης». Μετὰ δύο ἡμέρας ὁ Μπρουσσὲλ ἀφέθη ἐλεύθερος ὑπὸ τὴν ἀπειλὴν τοῦ ἐξεγερθέντος λαοῦ, ὅστις ἐκάλυψε τοὺς Παρισίους δι' ὁδοφραγμάτων. Ἐφεξῆς ἡ δρᾶσίς του δὲν ὑπῆρξε σπουδαία, ἐλησμονήθη δὲ ὁλοτελῶς μετὰ τὸν τερματισμὸν τῆς περιόδου τῶν ταραχῶν ἐκείνων (1649). —Ω.

**Μπρουσσοννὲ** (Broussonnet), ***Πέτρος-Μαρία-Αὔγουστος***. Γάλλος φυσιολόγος, βοτανολόγος καὶ ἰχθυολόγος, γεννηθεὶς εἰς Montpellier (1761—1807). Μέλος τοῦ Ἰνστιτούτου, διωρίσθη (1805) εἰς τὴν βοτανικὴν ἕδραν τοῦ Montpellier. Ἔργα τούτου εἶναι: «Variae positiones circa respirationem» (1772), «Ἀγροτικὸν ἔτος ἢ ἡμερολόγιον πρὸς χρῆσιν τοῦ γεωργοῦ» (1787—1788), «Elenchus plantarum horti Monspeliensis» (1805), «Ichthyologiae decas prima» (1782) κλπ. Ι. Σ. Κ.

**Μπροῦστερ** (Brewster), *σὲρ* ***Δαυΐδ***. Ἄγγλος φυσικός, γεννηθεὶς εἰς τὸ Jedburgh τῆς Σκωτίας (1781—1868). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Saint-Andrews. Ἐφεῦρε τὸ στερεοσκόπιον καὶ τὸ καλειδοσκόπιον καὶ ἔγραψε πλεῖστα ὅσα ἐπιστημονικὰ συγγράμματα ἀναφερόμενα εἰς τὴν ὀπτικήν, πρὸς δὲ καὶ δίτομον βιογραφίαν τοῦ Νεύτωνος.

— **Μπροῦστερ**, ***νόμος τοῦ*** —· βλ. *πόλωσις*.

**Μπρούσωφ**, ***Βαλέριος-Ἰακώβλιεβιτς***. Ρῶσος ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1873 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1921. Ἀνῆκεν εἰς τὴν νέαν συμβολιστικὴν σχολὴν τῆς Ρωσίας, εὐθὺς δ' ἐξ ἀρχῆς προσείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ φιλολογικοῦ κόσμου, ἕνεκα τοῦ πλούτου τῶν ῥυθμῶν, τῆς πρωτοτύπου φαντασίας καὶ τῆς κομψότητος τῆς στιχουργίας του. Τὰς συλλογὰς «Me eum esse» (1890) καὶ «Ἀριστούργημα» (1895) ἠκολούθησαν αἱ «Tertie Vigilia» (1890), «Urbi et Orbi» (1903) «Ὁ Στέφανος» (1906), «Οἱ δρόμοι καὶ τὰ σταυροδρόμια» (1908), πρὸς δὲ αἱ τραγῳδίαι: «Τὸ τέλος τῆς γῆς», «Τὸ κάτοπτρον τῶν σκιῶν», τὸ μυθιστόρημα «Ὁ ἄγγελος τοῦ πυρός» καὶ διάφοροι μελέται: «Περὶ τέχνης» καὶ «Τὰ μακρινὰ καὶ τὰ πλησίον». Ὁ Μπρούσωφ ἦτο πολυμαθέστατος· εἶχε μελετήσει τὴν φιλοσοφίαν, τὴν παγκόσμιον ἱστορίαν, ἦτο διαπρεπὴς μαθηματικὸς καὶ ἐγνώριζε πολλὰς ξένας γλώσσας. Διηύθυνε τὴν «Πλάστιγγα», ἐπίσημον ὄργανον τῶν Ρώσων συμβολιστῶν, εἰς ἣν ἐδημοσίευσε τὰς κριτικάς του μελέτας. Πνεῦμα εἰς ἄκρον ἐρευνητικὸν καὶ ἐπιδιῶκον τὴν πλήρη μεταβολὴν τοῦ διέποντος τὸν κόσμον συστήματος, ἀπεδέχθη τὰς ἀρχὰς τῆς ρωσικῆς ἐπαναστάσεως, ἀλλὰ δύο ἔτη μετὰ ταύτην, βλέπων ὅτι διεψεύσθη εἰς τὰς ἐλπίδας του, ἐπεκαλεῖτο ἄλλους Οὔνους, οἵτινες θὰ κατέστρεφον τὸ ὑφιστάμενον καθεστώς, ὅπως δημιουργηθῇ ἐπὶ τῶν ἐρειπίων του νέον. Ἐν Ρωσίᾳ θεωρεῖται ὡς ὁ μέγιστος τῶν ποιητῶν τοῦ παρόντος αἰῶνος. Θ. Β.

**μπροῦτο** (γαλλ. brut, ἰταλ. bruto)· ὅρος χρησιμοποιούμενος ἐν τῷ ἐμπορίῳ πρὸς δήλωσιν τοῦ συνολικοῦ βάρους ἑνὸς ἐμπορεύματος ὁμοῦ μετὰ τῆς συσκευασίας αὐτοῦ. Ὁ ἀντίθετος ὅρος *νέτο* (net, netto) δηλοῖ τὸ καθαρὸν τοῦ ἐμπορεύματος βάρος, μὴ συνυπολογιζομένου εἰς αὐτὸ τοῦ βάρους τῆς συσκευασίας («ἀμπαλλάζ»), ὅπερ καλεῖται *ἀπόβαρον*. —Ρ.

**Μπρούφλιανη** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος χωρίου *Δίλοφον* (βλ. λ.).

**Μπροὺχ** (Bruch), ***Μάξ***. Γερμανὸς συνθέτης (1838—1920). Ὠνομάσθη μουσικὸς διευθυντὴς ἐν Κόμπλεντς, εἶτα διευθυντὴς ὀρχήστρας τῆς φιλαρμονικῆς τοῦ Λίβερπουλ, ὑπὸ τὴν αὐτὴν ἰδιότητα ἐν Βρεσλαυΐᾳ καὶ τέλος ἀπὸ τοῦ 1892 διηύθυνεν ἀνωτέραν τάξιν συνθέσεως ἐν τῇ μουσικῇ Ἀκαδημίᾳ τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1892 ἔτυχε τοῦ τίτλου τοῦ ἐπιτίμου διδάκτορος τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κανταβριγίας καὶ τῷ 1898 ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν τῆς Γαλλίας. Ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μπροὺχ δύο κατέστησαν αὐτὸν κατ' ἐξοχὴν διάσημον: τὸ «Πρῶτον κοντσέρτο» διὰ βιολίον, ἐκτελούμενον παρὰ τῶν μεγίστων δεξιοτεχνῶν, καὶ τὸ «Kol Nidrei». Ἡ ἀξία τοῦ Μπροὺχ εὑρίσκεται εἰς τὰ μεγάλα του ἔργα διὰ χορῳδίαν καὶ ὀρχήστραν, ὧν τὰ σημαντικώτερα εἶναι: Schön Ellen», «Ὀδυσσεύς», «Ἀρμίνιους», «Das Lied von der Glocke», «Ἀχιλλεύς», «Μωϋσῆς», «Gustav Adolf», «Nal und Damajanti». Ὁ Μπροὺχ ἔδειξεν ἐπίσης μεγίστην προτίμησιν εἰς τὴν σύνθεσιν ἔργων χορῳδίας καὶ ὀρχήστρας ἑλληνικῆς ὑποθέσεως· τοιαῦτα εἶναι: «Σαλαμίς», «Λεωνίδας», «Θερμοπύλαι», «Τυρταῖος» κλπ. Εἰς ταῦτα πρέπει νὰ προστεθῶσι δύο ἀκόμη χορικὰ ἔργα: «Frithjof» καὶ «Römischer Triomphgesang». Εἰς τὸ θέατρον ὁ Μπροὺχ ἔδωκε τὰ μελοδράματα «Λορελάϊ» (Μανχάϊμ 1863) καὶ «Ἑρμιόνη», κατὰ τὸ «Χειμωνιάτικο παραμύθι» τοῦ Σαίξπηρ (Βερολῖνον 1872), ἔργα σχόντα μετρίαν ἐπιτυχίαν. Συνέθεσεν ἐπίσης 3 συμφωνίας, τρία κοντσέρτα διὰ βιολίον, ἔργα τινὰ μουσικῆς δωματίου, τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, μελῳδίας κτλ. Τὰ χαρακτηριστικὰ τῆς τέχνης τοῦ Μπροὺχ εἶναι εὔληπτος ἀλλ' οὐχὶ κοινότυπος μελῳδικὴ γραμμή, θερμῆς ἐκφράσεως ἁρμονικὸς καὶ ἀντιστικτικὸς πλοῦτος διαυγὴς ἐνσχηστρωσις. Ἡ μουσική του συνεχίζει μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ Κ' αἰῶνος τὸν ῥωμαντισμὸν ἐν συνδυασμῷ μέ τινα νεοκλασσικισμόν. Γ. Σ.

**Μπρούχαμ** (Brougham) ***Ἐρρῖκος*** βλ. λ. *Μπρουμ Ἐρρῖκος*.

**Μπρούχσαλ** (Bruchsal) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Βάδῃ. Κάτ. (1919) περὶ τοὺς 15.500. Ἔχει σημαντικὸν ἐμπόριον, ὡς καὶ ζωηρὰν βιομηχανίαν ἰδίως ἠλεκτρικῶν μηχανημάτων, χάρτου, ἐπίπλων κτλ.

**Μπρόφελτ** (Brofeldt), ***Ἰωάννης***. Φιλολογικὸν ψευδώνυμον τοῦ Φινλανδοῦ συγγραφέως Ἰωάννου Ἄχο (βλ. λ.).

**Μπροφφέριο** (Brofferio), ***Ἄγγελος***. Ἰταλὸς πολιτικὸς καὶ λογοτέχνης (1802—1866). Ἐσπούδασε τὴν νομικὴν καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς φιλολογικὰς μελέτας. Ἤδη ὡς φοιτητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Τουρίνου, ὅπερ τὸν εἶχεν ἀποβάλει ὡς ἐπαναστάτην καὶ θορυβοποιόν, ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὴν τραγῳδίαν «Eudossia», ἥτις ἐξησφάλισεν εἰς αὐτὸν φήμην θεατρικοῦ συγγραφέως. Ἠκολούθησαν τὰ δράματα: «Salvatore Rosa», «Salmorre» «Il retorno del proscritto», «Il Vampiro», «Angelica Kaufmann» καὶ αἱ κωμῳδίαι: «Mio cugino» καὶ «Tutto per il meglio». Τῷ 1830 ἤρχισε νὰ ἐξασκῇ ἐν Τουρίνῳ τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Ἀναμειχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ συμμετασχὼν εἰς ἀνατρεπτικὸν κίνημα, κατεδικάσθη εἰς φυλάκισιν ἐξ μηνῶν. Μετὰ τὴν ἀποφυλάκισίν του ἐξέδωκε τὰ πολυθρύλητα «Ἄσματα τοῦ Πεδεμοντίου» (Canzoni piemontesi), ἅτινα κατέστησαν αὐτὸν λαϊκώτατον. Τῷ 1834 ἵδρυσε τὴν δημοκρατικὴν ἐφημερίδα «Messaggiere Torinese», τῷ δὲ 1849 τὴν ῥιζοσπαστικὴν «Voce della libertà». Τῷ 1848 ἐγένετο ἀρχηγὸς τοῦ δημοκρατικοῦ κόμματος, ὡς τοιοῦτος δὲ κατεπολέμησε τὴν πολιτικὴν τοῦ Καβούρ, ὃν ἐσατίρισεν εἰς τὴν κωμῳδίαν του «Ὁ πολιτικὸς ταρτοῦφος», καὶ κατέβαλεν ὑπερανθρώπους προσπαθείας, ὅπως ματαιώσῃ τὴν συμμετοχὴν τῆς Ἰταλίας εἰς τὸν Κριμαϊκὸν πόλεμον καὶ τὴν συμμαχίαν της μετὰ τῆς Γαλλίας. Κατ' ἐντολὴν τοῦ βασιλέως Βίκτωρος Ἐμμανουὴλ Β' ἔγραψε τὴν «Storia del parlamento subalpino». Τὰ ἀπομνημονεύματά του «I miei tempi» (20 τόμ., Τουρῖνον 1858—1861) διακρίνονται διὰ τὴν ἁδρότητα τοῦ ὕφους, τὸ κάλλος καὶ τὴν ἁρμονίαν τῆς γλώσσης, στεροῦνται ὅμως ἀμεροληψίας καὶ ἀκριβείας κατὰ τὴν ἐξιστόρησιν τῶν γεγονότων. Τὰς ἰδίας ἀρετὰς καὶ τὰ ἐλαττώματα ἔχει καὶ ἡ «Ἱστορία τοῦ Πεδεμοντίου» (5 τόμ., 1849—1852). Ἡ φιλοπατρία καὶ τὸ μῖσος τοῦ Μπροφφέριο ἐναντίον τῶν Αὐστριακῶν ἐκδηλοῦνται εἰς τὴν περίφημον τραγῳδίαν «Vitige, re dei Gothi» καὶ τὸ πολεμικὸν ἐμβατήριον «Delle spade il fiero lampo», ὅπερ παραβάλλεται, ὡς πρὸς τὴν ἔμπνευσιν καὶ τὸ πάθος, πρὸς τὴν Μασσαλιῶτιδα. Ἀξιόλογον ἔργον τοῦ Μπροφφέριο εἶναι καὶ αἱ «Ἑλληνικαὶ σκηναὶ» (Scene elleniche) (2 τόμ. 1858). Τῷ 1871 ἀνηγέρθη εἰς αὐτὸν μνημεῖον ἐν Τουρίνῳ. Α. Δ.

**Μπρυὰ** (Bruat), ***Ἀρμάνδος-Ἰωσήφ***. Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1796 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1855. Διεκρίθη εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ἀλγερίου. Τῷ 1843 διωρίσθη διοικητὴς τῶν Μαρκησίων νήσων καὶ τῷ 1848 τῆς Μαρτινίκας καὶ Γουαδελούπας. Τῷ 1852 προήχθη εἰς ἀντιναύαρχον καὶ διοικητὴν τοῦ εἰς Εὔξεινον ἀποσταλέντος γαλλικοῦ στόλου ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Ἀμελέν, ὃν καὶ διεδέχθη εἰς τὴν ἀρχηγίαν τῶν συμμαχικῶν στόλων (1854). Διεκρίθη εἰς τὴν πολιορκίαν τῆς Σεβαστουπόλεως καὶ κατάληψιν τοῦ Κιμπουρνοῦ, καθὼς καὶ εἰς πάσας τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς ἐκστρατείας ταύτης. Γ. Ν. Κ.

**Μπρυαὶ-ἂν-Ἀρτουὰ** (Bruay-en-Artois) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ Πὰ-ντὲ-Καλαί, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 10 χλμ. ἀπὸ τῆς Μπετύν. Ἔχει μεγάλα γαιανθρακωρυχεῖα, ἐκ τῶν ὁποίων ἐξάγονται ἄνθρακες, κατάλληλοι ἰδίως πρὸς παρασκευὴν φωταερίου καὶ κὼκ. Κάτ. 30.900.

—**Μπρυαὶ-σὺρ-λ' Ἐσκὼ** (Bruay-sur-l'Escault) *[Γεωγρ.]*. Κοινότης τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τοῦ Βορρᾶ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Σκάλδιος εἰς ἀπόστασιν 5 χλμ. ἀπὸ τῆς Βαλανσιέν. Ἔχει γαιανθρακωρυχεῖα, χυτήρια σιδήρου καὶ ὑελουργεῖα. Κάτ. 9.040. Χ.Δ.

**Μπρυὰν** (Bruant), ***Ἐλευθέριος***. Γάλλος ἀρχιτέκτων (1637—1697), εἷς ἐκ τῶν ἱδρυτῶν τῆς ἐν Γαλλίᾳ Ἀκαδημίας τῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Ἔφερε τὸν τίτλον τοῦ ἀρχιτέκτονος τοῦ βασιλέως, ἔργον δ' αὐτοῦ ὑπῆρξε τὸ ἐν Παρισίοις μέγαρον τῶν Ἀπομάχων, παρεκτὸς τοῦ θόλου τοῦ ἐπιστέφοντος τὸν ναόν, ὅστις προσετέθη βραδύτερον ὑπὸ τοῦ Ἀρντουὲν-Μανσάρ. Ἐπὶ σχεδίων τοῦ ἰδίου ᾠκοδομήθη ὁ ἐν Ἀγγλίᾳ πύργος Richemont (1662) καὶ ἄλλα ἐνδιαφέροντα κτίσματα τῆς ἐποχῆς του. Δύο υἱοὶ καὶ εἷς ἀνεψιὸς τοῦ Μπρυὰν ὑπῆρξαν διακεκριμένοι ἐπίσης ἀρχιτέκτονες. —Ω.

**Μπρύγγε**, ἢ ***Μπρὺζ*** (φλαμανδ. Brügge, γαλλ. Bruges, ἑλληνιστὶ ἀπεδόθη ὡς *Βρύγη*) *[Γεωγρ.]*. Σπουδαιοτάτη πόλις τοῦ Βελγίου, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Δυτικῆς Φλάνδρας, κειμένη εἰς ἀπόστασιν 13 χλμ. ἀπὸ τοῦ ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Βορείου θαλάσσης λιμένος Ζέεμπρουγκ (=Μπρύγγε τῆς θαλάσσης), μεθ' οὗ συνδέεται διὰ νεωτάτης τεχνητῆς διώρυγος βάθους 8 μ. Κάτ. (1930) 51.220 καὶ μετὰ τῶν προαστείων 78.000. Εἶναι κτισμένη ἐντὸς πεδινῆς περιοχῆς, ἐλάχιστα ὑπερκειμένης τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης, περιβάλλεται δὲ καὶ διασχίζεται ὑπὸ πλήθους μικρῶν διωρύγων, λόγῳ τῶν ὁποίων καὶ προσονομάζεται «Βενετία τοῦ Βορρᾶ». Εἶναι κυρίως ἐνδιαφέρουσα ἀπὸ ἀρχαιολογικῆς καὶ καλλιτεχνικῆς ἀπόψεως ὅσον οὐδεμία ἄλλη πόλις τοῦ Βελγίου, διατηροῦσα ἀμιγῆ τὸν μεσαιωνικὸν αὐτῆς χαρακτῆρα καὶ ἀποτελοῦσα ἓν ἀπέραντον μουσεῖον τῆς φλαμανδικῆς τέχνης. Ἔχει σχέδιον ἀπολύτως ἐλλειψοειδές, περιοριζόμενον πανταχόθεν ὑπὸ τάφρου πλήρους ὕδατος (διώρυγος), ἥτις προήσπιζε κατὰ τὸν μεσαίωνα τὸ περιφερειακὸν τεῖχος της, σωζόμενον κατὰ μέγα μέρος μέχρι σήμερον. Αἱ ὁδοὶ εἶναι στεναὶ καὶ ἀκανόνιστοι, καθαραὶ ὅμως καὶ ἰδιότυποι, περιβαλλόμεναι ὑπὸ κτηρίων λιθίνων ἢ ξυλίνων, ἀριθμούντων συχνὰ βίον πολλῶν αἰώνων. Αἱ εὐρεῖαι πλατεῖαι καὶ τὰ εὐθαλῆ πάρκα, ὧν βρίθουσιν αἱ σημεριναὶ εὐρωπαϊκαὶ μεγαλοπόλεις, ἐλλείπουσι σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου ἀπὸ τὴν Μπρύγγε. Ἡ κίνησις ἐν αὐτῇ περιορίζεται εἰς τὰς ὁδοὺς καὶ τὰ κέντρα, ὁλόκληρος δὲ ἡ πόλις μετὰ τῶν κατοίκων της φαίνεται ζῶσα μὲ τὴν νοσταλγικὴν ἀνάμνησιν τοῦ παρελθόντος. Μόνον ἀπὸ τῆς ἀνεξαρτησίας τοῦ Βελγίου (1830), ἰδιαιτέρως δὲ κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη, παρετηρήθη σχετικὴ ἀναγέννησις, ὀφειλομένη κυρίως εἰς τὴν εὐνοϊκὴν ἀπὸ συγκοινωνιακῆς ἀπόψεως θέσιν τῆς πόλεως κατὰ τὸ σημεῖον τῆς συναντήσεως τῶν πρὸς τὴν Ὀστάνδην, τὴν Γάνδην, τὸ Ζέεμπρουγκ κλπ. διωρύγων καὶ τῶν σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν τῆς βελγικῆς Φλάνδρας. Ἐκ τῶν ἀνθουσῶν σήμερον ἐν αὐτῇ βιομηχανιῶν εἶναι ἡ τῶν τριχάπτων, χάριν τῆς ὁποίας λειτουργοῦσιν αὐτόθι δώδεκα εἰδικαὶ σχολαί.

Μεταξὺ τῆς ἀτελευτήτου σειρᾶς τῶν παλαιῶν μνημείων τῆς Μπρύγγε ἀξιολογώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: Τὸ Δημαρχεῖον, μεγαλοπρεπὲς ἀψιδωτὸν οἰκοδόμημα τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ὑπερτεροῦν κατὰ πολὺ

Digitized by Google

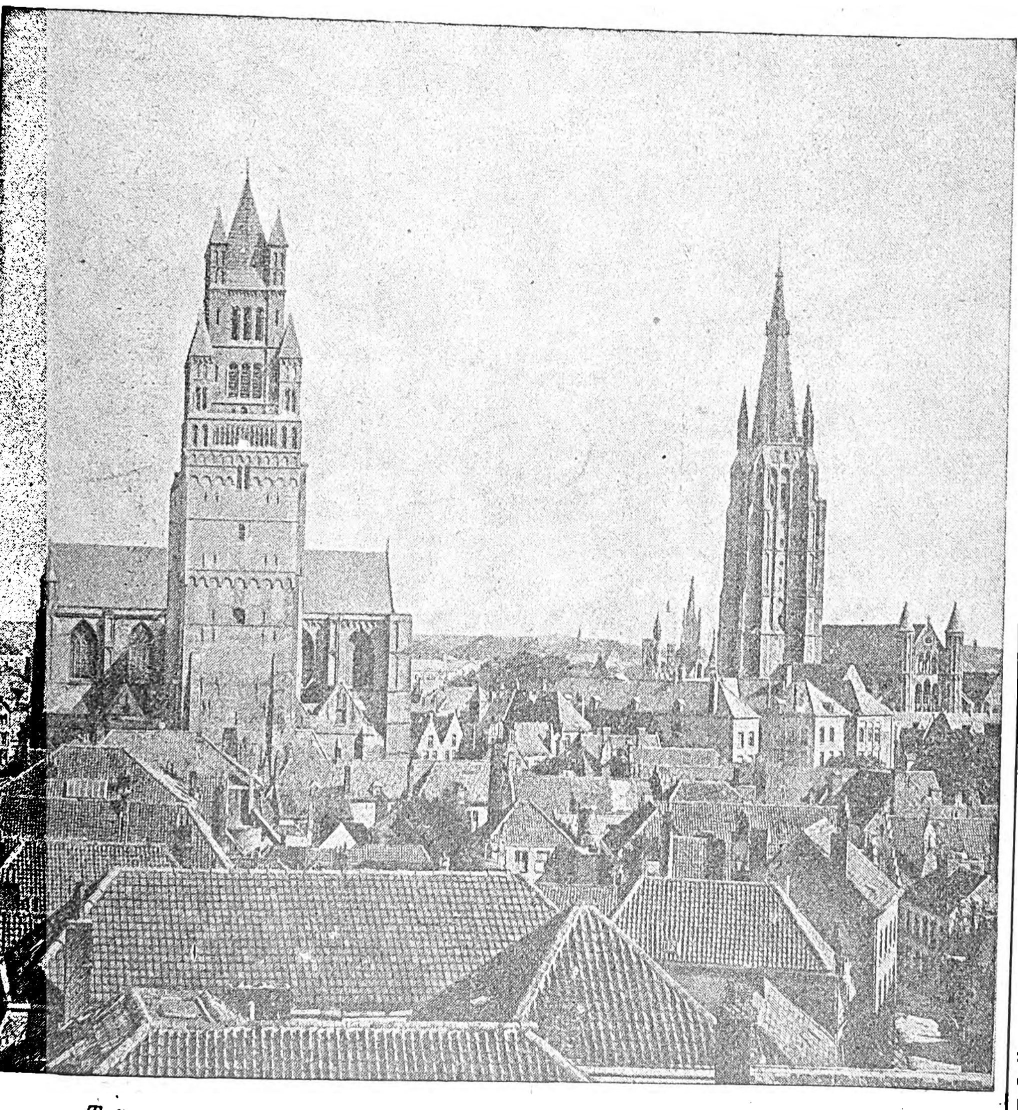

*Τμῆμα τῆς Μπρύγγε ἔνθα ἡ μητρόπολις τοῦ Σωτῆρος καὶ ὁ ναὸς τῆς Παναγίας.*

ἀπὸ ἀπόψεως κομψότητος τὰ ὀνομαστὰ ἐν Βελγίῳ σύγχρονα αὐτοῦ δημαρχεῖα τῶν Βρυξελλῶν καὶ τῆς Λουβαίν. Ἡ Ἀγορά, ἀψιδοειδοῦς ἐπίσης ῥυθμοῦ, κτισθεῖσα κατὰ τὸν ΙΓ' αἰῶνα, ἀλλ' ἐπισκευασθεῖσα πολλάκις βραδύτερον καὶ μεταρρυθμισθεῖσα, εἰς βάρος, ἀτυχῶς, τῆς ἀρτίας καλλιτεχνικῆς ἐμφανίσεως. Ὁ δεσπόζων αὐτῆς μεγαλοπρεπὴς πύργος ὕψους 107 μ. περικλείει τὴν καλυτέραν πασῶν τῶν ἐν Εὐρώπῃ κωδωνοστοιχιῶν (ἐκ 48 κωδώνων). Τὸ Δικαστικὸν μέγαρον, τοῦ ὁποίου ἡ πρόσοψις ἐπανεκτίσθη κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα, εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτοῦ διακόσμησιν καὶ μάλιστα διὰ μίαν περίφημον ἑστίαν, θεωρουμένην ὡς ἀριστούργημα γλυπτικῆς τέχνης. Ἐπ' αὐτῆς εἰκονίζονται, ἐν τῷ μέσῳ λεπτοτάτων διακοσμητικῶν σχεδίων, θυρεοὶ καὶ ἀνάγλυφοι εἰκόνες τῶν ἡγεμόνων Καρόλου Κουΐντου Μαξ μιλιανοῦ, Μαρίας τῆς Βουργουνδίας καὶ Καρόλου τοῦ Τολμηροῦ. Εἶναι κατεσκευασμένη ἐκ ξύλου, λίθου καὶ μαρμάρου καὶ ἀνάγεται εἰς τὸ 1559. Ἡ μητρόπολις τοῦ Σωτῆρος, ἀψιδωτὸν οἰκοδόμημα, ἐπιστεφόμενον ὅμως διὰ πύργου ῥωμανικοῦ ῥυθμοῦ. Ὁ ναὸς οὗτος, ἐν τῷ ὁποίῳ σῴζονται γλυπτὰ τῶν ὀνομαστῶν καλλιτεχνῶν Quellyn, Fulinckx καὶ πίνακές τῶν Stuerbut, van Orley, van Oost κλπ., πολλάκις ὑπέστη πυρκαϊάς, αἵτινες προὐξένησαν εἰς αὐτὸν σημαντικὰς ζημίας. Ὁ ναὸς τῆς Παναγίας, ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτος λόγῳ τῶν πολυτίμων καλλιτεχνικῶν θησαυρῶν του, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνονται οἱ τάφοι Καρόλου τοῦ Τολμηροῦ καὶ Μαρίας τῆς Βουργουνδίας, κοσμούμενοι δι' ἀγαλμάτων καὶ ἀναγλύφων ἐκ βρούντζου, οἱ πίνακες τῶν ζωγράφων Κράγιερ, Ζέγκερς κλπ., τὸ θαυμάσιον βῆμα, τὸ περίφημον ἄγαλμα τῆς Παναγίας κρατούσης τὸν Χριστόν, ἔργον τοῦ Μιχαὴλ Ἀγγέλου καὶ πολλὰ ἄλλα. Τὸ παρεκκλήσιον τοῦ Ἁγίου Βασιλείου ἢ τοῦ Ἁγίου Αἵματος. Τὸ δεύτερον ὄνομά του ὀφείλεται εἰς τὰς ἐν αὐτῷ φυλασσομένας ὀλίγας σταγόνας αἵματος τοῦ Χριστοῦ, τὰς ὁποίας κατὰ τὴν παράδοσιν ἔφερεν ἐξ Ἱεροσολύμων ὁ Ἀλσατὸς Τιερρύ. Κατὰ τοὺς χρονογράφους, ἑκάστην Παρασκευὴν τὸ αἷμα τοῦτο ἐρευστοποιεῖτο, τὸ θαῦμα ὅμως ἔπαυσεν ἀπὸ τοῦ 1310. Τὸ παρεκκλήσιον ἔχει ὡραίαν πρόσοψιν γοτθικοῦ ῥυθμοῦ, ἐπιστεφομένην ὑπὸ μαυριτανικοῦ πύργου, φυλάσσεται δὲ ἐν αὐτῷ θαυμάσιον χρυσοχοϊκὸν ἔργον τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἐπίσης ἀξιομνημόνευτοι εἶναι οἱ ναοὶ τοῦ Ἁγίου Ἰακώβου, Ἁγίας Βαλπούργης, Ἁγίας Ἄννης κ. ἄ., πλούσιοι εἰς πίνακας μεγάλων ζωγράφων. Τὸ ἐπισκοπικὸν σεμινάριον περιλαμβάνει περίφημον βιβλιοθήκην, πλουσίαν εἰς χειρόγραφα καὶ μικρογραφίας. Τὸ νοσοκομεῖον τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου ἔχει θαυμασίαν πινακοθήκην περιλαμβάνουσαν πολλὰ ἔργα τοῦ Μέμλινγκ. Τὸ κοινοτικὸν μουσεῖον εἶναι ἐπίσης πλούσιον εἰς ἔργα τῶν Μέμλινγκ καὶ Βὰν Ἄϋκ, τῶν ὁποίων οἱ ἀνδριάντες ὡς καὶ πολλῶν ἄλλων ἐπιφανῶν τέκνων τῆς Μπρύγγε κοσμοῦσι τὴν πόλιν.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ *Μπρύγγε*, τῆς ὁποίας τὸ ὄνομα σημαίνει γέφυρα, ἀνῆκε κατὰ τὴν ἀρχαιότητα εἰς τὴν περιοχὴν τῆς Μεναπίας, ὅπου ὁ ἅγιος Χρύσολος εἰσήγαγε τὸν Χριστιανισμὸν περὶ τὰ τέλη τοῦ Γ' αἰῶνος. Μετὰ τετρακόσια περίπου ἔτη εἶχεν ἤδη σημαντικῶς ἀναπτυχθῆ καὶ ἔλαβε τὸν τίτλον τῆς πόλεως, τῷ δὲ 867 ὁ κόμις τῆς Φλάνδρας Βαλδουῖνος ὁ Σιδηρόχειρ, καταστήσας αὐτὴν πρωτεύουσάν του, διέταξε τὴν κατασκευὴν μεγάλων ὀχυρώσεων καὶ ὑπεστήριξε τὸ ἐμπόριον καὶ τὴν βιομηχανίαν. Κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα εὑρίσκετο εἰς στενὰς ἐμπορικὰς σχέσεις μετὰ τῆς Ἀγγλίας, Δανίας καὶ βορείου Γερμανίας, κατέστη δὲ μετέπειτα κατὰ τοὺς ΙΓ' καὶ ΙΔ' αἰῶνας τὸ κέντρον τοῦ ἐμπορίου τῶν Ἀνσεατικῶν πόλεων. Ὅτε ὁ Φίλιππος ὁ Ὡραῖος ὑπέταξε τὴν Φλάνδραν καὶ κατήργησε τὰ προνόμια τῶν πόλεών της, πρώτη ἡ Μπρύγγε ἔδωσε τὸ σύνθημα τῆς ἐξεγέρσεως καὶ τὴν 18 Μαΐου 1302 πλείονες τῶν 4.000 Γάλλων ἐσφάγησαν ἐντὸς αὐτῆς. Κατὰ τοὺς μετέπειτα χρόνους (ΙΔ' καὶ ΙΕ' αἰῶνες) ἡ Μπρύγγε ἔφθασεν εἰς τὸ ἀπόγαιον τῆς δόξης της, ἀριθμοῦσα τότε 200.000 περίπου κατοίκων. Εἶχε καταστῆ ἡ πραγματικὴ ἐμπορικὴ μητρόπολις τῆς ὑφηλίου, μὲ κυριωτέραν ἀντίζηλον τὴν Βενετίαν, ἐπεκοινώνει ἐμπορικῶς μεθ' ὁλοκλήρου τῆς Εὐρώπης καὶ τῶν ἐν τῇ Μεσογείῳ χωρῶν τῆς Ἀσίας καὶ ἦτο ἕδρα ἐπισήμων ἐμπορικῶν πρακτόρων 17 βασιλέων. Κατὰ τὸ ἔτος 1486 ἀναφέρεται, ὅτι κατέπλευσαν ἐν μιᾷ μόνῃ ἡμέρᾳ εἰς τὸν λιμένα της 150 ξένα ἐμπορικὰ πλοῖα, μεταφέροντα ὅλα τὰ εἴδη τοῦ παγκοσμίου τότε ἐμπορίου. Αἱ ἐν αὐτῇ βιομηχανίαι τριχάπτων, βελούδων, ταπήτων μεταξωτῶν καὶ ἄλλων ποικίλων πολυτελῶν ὑφασμάτων ἐπρομήθευον τὰς αὐλὰς ὁλοκλήρου τῆς Εὐρώπης καὶ αἱ δέσποιναι τῆς ἀστικῆς ἐν τῇ πόλει τάξεως συνηγωνίζοντο εἰς πολυτέλειαν τὰς πλουσιωτέρας πριγκιπίσσας. Χαρακτηριστικὴν εἰκόνα τοῦ πλούτου τῶν κατοίκων της δίδουσιν οἱ λόγοι θαυμασμοῦ τῆς βασιλίσσης Ἰωάννας τῆς Ναβάρρας, συζύγου τοῦ Φιλίππου τοῦ Ὡραίου, ὅτε τὸ πρῶτον ἐπεσκέπτετο τὴν Μπρύγγε: «Ἐνόμιζα» ἀνεφώνησεν «ὅτι ἤμην ἡ μόνη βασίλισσα ἐνταῦθα, βλέπω ὅμως ἑκατοντάδας τοιούτων πέριξ μου». Πρὶν ὅμως ἀρχίσῃ ὁ ΙΣΤ' αἰὼν ἤρχισε ταχέως νὰ πλήττῃ τὴν πόλιν ἡ παρακμή, στρεφομένη κυρίως εἰς τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους, οἱ ὁποῖοι ἐδημιούργησαν διαρκεῖς ἐξεγέρσεις καὶ ἐμφυλίους ἔριδας ἐν Φλάνδρᾳ. Οἱ ξένοι μεγαλέμποροι ἔσπευσαν τότε χάριν ἀσφαλείας νὰ καταλίπωσι τὴν Μπρύγγε, τραπέντες κυρίως πρὸς τὴν Ἀμβέρσαν καὶ τὴν Ἀγγλίαν καὶ μεταφέροντες ἐκεῖ τὴν πεῖραν καὶ τὸ ἐμπορικὸν αὐτῶν κῦρος. Ἐπηκολούθησε μακραίων περίοδος καταπτώσεως, ἀλλ' ἤδη, ὡς καὶ ἀνωτέρω ἀνεφέρθη, διὰ τῶν νέων ἰδίᾳ ἔργων τῆς διώρυγος τοῦ Ζέεμπρουγκ ἡ Μπρύγγε τείνει νὰ ἐπανεύρῃ μέρος τῆς παλαιᾶς ἀκμῆς της.

Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἡ Μπρύγγε κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν τὴν 14 Ὀκτωβρίου 1914, παρέμεινε δὲ ὑπ' αὐτοὺς ἐπὶ ὁλόκληρον τετραετίαν μέχρι τῆς 18 Ὀκτωβρίου 1918. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο οἱ λιμένες αὐτῆς διευθετηθέντες καταλλήλως ἐχρησίμευσαν ὡς βάσις στολίσκου ὑποβρυχίων, ἐντεῦθεν δὲ πολλάκις ὑπέφερεν ἐκ τῶν γαλλο-βρεττανικῶν ἀεροπορικῶν βομβαρδισμῶν. Ἡ Μπρύγγε κατὰ τοὺς χρόνους τῆς ἀκμῆς της ὑπῆρξεν ἡ κοιτὶς ἰδίας φερωνύμου σχολῆς ζωγράφων, τῆς ὁποίας ἱδρυτὴς μὲν ἦτο ὁ μέγας Φλαμανδὸς καλλιτέχνης Ἰωάννης βὰν Ἄϋκ, τελευταῖοι δὲ ἀντιπρόσωποι οἱ Ἰάκωβος βὰν Ὄοστ καὶ ὁ υἱός του Ἰωάννης, οἵτινες, παρ' ὅλην τὴν καλλιτεχνικὴν ὑπεροχήν των, δὲν κατώρθωσαν νὰ συγκρατήσουν τὴν σχολήν, τῆς ὁποίας ἡ τύχη ἠκολούθησε τὴν οἰκονομικὴν παρακμὴν τῆς πόλεως. Μεταξὺ τῶν ἐνδοξοτέρων ἀνδρῶν τῆς Μπρύγγε ἀξιομνημόνευτοι εἶναι, παρεκτὸς τῶν προαναφερθέντων ζωγράφων, οἱ: *Λουδοβῖκος βὰν Μπέρκεν* γεννηθεὶς τῷ 1476, ἐφευρέτης τοῦ τρόπου κατεργασίας τῶν ἀδαμάτων, *Πέτρος ντὲ Βίττ*, γνωστὸς ὡς *Καντίντο* (ΙΣΤ' αἰών), ὀνομαστὸς ζωγράφος, γλύπτης καὶ ἀρχιτέκτων, *Σίμων Στέβιν* καὶ *Γρηγόριος ντὲ Σαὶν Βενσάν*, διάσημος μαθηματικὸς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ πολλοὶ ζωγράφοι.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Pirenne*, «Histoire de la Belgique» (Βρυξέλλαι 1900).—*Pirenne*, «Les villes flamandes avant la fin du XIIe siècle» (Βρυξέλλαι 1905).—*Häpke*, «Brügges Entwickuungsgeschichte zum mittelalterlichen Weltmarkt» (Βερολῖνον 1909).

Χ. Δ.

**Μπρυγιὲρ** (Bruyères). Οἰκογένεια Φράγκων ἀρχόντων τῆς Πελοποννήσου (βλ. λ. *Βρυέροι*).

**Μπρυὲ** (Brué), ***Στέφανος-Ροβέρτος.*** Γάλλος γεωγράφος καὶ χαρτογράφος (1786—1832). Ἐξέδωκε τῷ 1816 ἕνα «Παγκόσμιον ἄτλαντα», ἀποτελούμενον ἀπὸ 65 χάρτας, πολλάκις ἔκτοτε ἐπανεκδοθέντα, ἐσχεδίασε δὲ τοὺς χάρτας τοῦ περιφήμου «Ταξιδίου εἰς τὴν Ἀμερικὴν» τοῦ Γερμανοῦ περιηγητοῦ Humboldt. Ἐξέδωκεν ἐπίσης «Κλασσικὸν ἄτλαντα», ὁ ὁποῖος ὅμως δὲν ἐσημείωσεν ἐπιτυχίαν.

—Ω.

**Μπρυὲς** (Brueys), ***Δαυὶδ-Αὐγουστῖνος.*** Γάλλος λογοτέχνης (1640—1723). Ἀνῆκεν εἰς οἰκογένειαν καλβινιστῶν, ὁ Βοσσουέτος ὅμως τὸν ἔπεισε νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὸν καθολικισμὸν καὶ νὰ περιβληθῇ τὸ μοναχικὸν σχῆμα. Ἔγραψε τότε: «Περὶ τῆς θείας εὐχαριστίας» (1686), «Ἱστορία τοῦ φανατισμοῦ τῆς ἐποχῆς μας» (1692) καὶ ἄλλα ἐκκλησιαστικὰ ἔργα, πρᾶγμα ποὺ δὲν τὸν ἠμπόδιζε νὰ συχνάζῃ εἰς τὴν Γαλλικὴν Κωμῳδίαν ὅσον καὶ εἰς τοὺς ναούς. Συνδεθεὶς μετὰ τοῦ Palaprat ἔγραψεν ἐν συνεργασίᾳ μετ' αὐτοῦ τὰς κωμῳδίας: «Κωμικὸ κοντσέρτο» (1689), «Ὁ γκρινιάρης» (1691), «Ὁ μουγγός» (1691), «Ὁ δικηγόρος Πατ'λέν», παραλλαγὴν τῆς ὁμωνύμου φάρσας τοῦ παλαιοῦ γαλλικοῦ θεάτρου (1706) κλπ., μόνος δὲ δύο κωμειδύλλια καὶ μίαν τραγῳδίαν, ἀναβιβασθέντα πάντα ἀπὸ σκηνῆς τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας.

—Ω.

**Μπρὺζ** (Bruges) *[Γεωγρ.]*. Γαλλικὴ ὀνομασία τῆς βελγικῆς πόλεως *Μπρύγγε* (βλ. λ.).

**Μπρυΐξ** (Bruix), ***Εὐστάχιος.*** Γάλλος ναύαρχος, γεννηθεὶς ἐν Ἁγίῳ Δομίγκῳ τῷ 1759 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1805. Διεκρίθη κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἀμερικανικῆς ἀνεξαρτησίας, καὶ εἰς τὴν κατὰ τῆς Ἰρλανδίας ἐκστρατείαν. Τῷ 1799 ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στόλου τῆς Βρέστης καὶ διὰ θαυμαστῆς ἐπιδεξιότητος καὶ τόλμης κατώρθωσε ν' ἀνεφοδιάσῃ τὸν Μασσενά, στενῶς ἀποκεκλεισμένον ἐν Γενούῃ ὑπὸ τοῦ ἀγγλικοῦ στόλου. Προαχθεὶς εἰς ναύαρχον ἀνέλαβε τὴν διοργάνωσιν καὶ ἀρχηγίαν τοῦ ἐν Βουλώνῃ συγκεντρουμένου στόλου διὰ τὴν εἰς Ἀγγλίαν ἀπόβασιν.

Γ. Ν. Ν.

**Μπρύκκε** (Brücke), ***Ἐρνέστος-Γουλιέλμος,*** *ἱππότης φὸν* —. Γερμανὸς φυσιολόγος γεννηθεὶς ἐν Βερολίνῳ (1819—1892). Διετέλεσεν ὑφηγητὴς καὶ ἔκτακτος καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας, καὶ διευθυντὴς τῆς φυσιολογίας ἐν Καινιξβέργῃ καὶ τῷ 1849 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς φυσιολογίας καὶ τοῦ φυσιολογικοῦ ἰνστιτούτου Βιέννης, παραμείνας ἐν τῇ θέσει ταύτῃ μέχρι τοῦ θανάτου του καὶ ἀξιωθεὶς μεγάλων τιμῶν. Αἱ ἐργασίαι του ἐκτείνονται εἰς τὴν μορφολογίαν, τὴν φυσιολογικὴν χη-

Digitized by Google

**μείαν, τὴν φυσικὴν καὶ φυσιολογικὴν ὀπτικήν, τὴν φυσιολογίαν τῶν νεύρων καὶ μυῶν,** τὴν φυσιολογίαν τοῦ λόγου, τὸ αἷμα καὶ τὴν πέψιν κλπ. Αἱ μικροσκοπικαὶ αὐτοῦ ἐργασίαι παρέσχον τὴν ὁριστικὴν κατεύθυνσιν ἐπὶ τῶν ἀπόψεων τῆς ἐπιστήμης δι' ὅ,τι ἀφορᾷ τὰ κύτταρα. Αἱ περὶ ὀπτικῆς ἐργασίαι του ἔδωκαν λαβὴν πρὸς ἀνακάλυψιν τοῦ ὀφθαλμοσκοπίου καὶ αἱ χημικαὶ του ἐργασίαι διεφώτισαν πολλὰ σκοτεινὰ σημεῖα τῶν λευκωματοειδῶν οὐσιῶν. Τέλος, μνημονευτέαι αἱ ἐργασίαι αὐτοῦ: «Περὶ φθογγολογίας καὶ διὰ συμβόλων γραφῆς διὰ τοὺς γλωσσολόγους καὶ διδασκάλους κωφαλάλων» (1856), «Περὶ φυσιολογίας χρωμάτων», «Συγκριτικαὶ παρατηρήσεις περὶ χρωμάτων καὶ τῆς ἀλλαγῆς τούτων εἰς τὰ κεφαλόποδα καὶ τοὺς χαμαιλέοντας», «Περὶ τῶν χυλοφόρων ἀγγείων καὶ τῆς ἀπορροφήσεως τοῦ χυλοῦ», «Περὶ τῆς διαδρομῆς τῶν λεπτῶν χολαγωγῶν ἀγγείων», «Περὶ τῆς ὑφῆς τῶν ἐρυθρῶν αἱμοσφαιρίων» κλπ. Τέλος σημειοῦμεν τὰ ἐκ δύο τόμων μαθήματα τῆς φυσιολογίας αὐτοῦ (Βιέννη 1873—1874). Ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ ὡς μυϊκὰ δεμάτια χαρακτηρίζονται τὰ μυϊκὰ στοιχεῖα τῶν ἐντερικῶν λαχνῶν (1851). Ἐπίσης ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρεται φακὸς μεγενθυντικὸς καὶ ὡς μῦς τοῦ Μπρύκκε ὁ μῦς τῶν βλεφαρίδων. Ο. Ρ.

*Ἐρνέστος Μπρύκκε.*

**Μπρύκνερ, Ἀλέξανδρος.** Ρῶσος ἱστορικός, ἀποθανὼν τῷ 1896. Ἐδίδαξεν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πετρουπόλεως καὶ ἔγραψεν: «Ἡ ἱστορία τοῦ Σουηδικοῦ πολέμου 1788—1790», «Ἡ οἰκογένεια τῶν Μπρουνσβὶκ ἐν Ρωσίᾳ», «Γκοσσόκωφ», «Οἱ ξένοι ἐν Ρωσίᾳ κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα», «Ἱστορία τοῦ Μεγάλου Πέτρου», «Ὁ Τσάρεβιτς Ἀλέξιος». Θ. Β.

— **Μπρύκνερ** (Brückner), ***Ἐδουάρδος.*** Γερμανὸς γεωγράφος καὶ μετεωρολόγος, γεννηθεὶς ἐν Ἰένα τῷ 1862 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1927. Ἀπὸ τοῦ 1886—1888 ἦτο συνεκδότης τοῦ μετεωρολογικοῦ περιοδικοῦ «Meteorologische Zeitschrift». Τῷ 1891 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς γεωγραφίας ἐν Βέρνῃ καὶ τῷ 1906 ἐν Βιέννῃ. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ A. Penck ἐμελέτησε τὴν τεταρτογενῆ περίοδον τῶν Ἄλπεων, τὰ πορίσματα δὲ τῶν μελετῶν του ἐδημοσίευσε τῷ 1901—1909 εἰς τὸ τρίτομον ἔργον «Die Alpen in Eiszeitalter». Ὁ Μπρύκνερ εἶναι γνωστὸς ἐκ τῆς γνωστῆς ἐργασίας του «Ὁ 35ετὴς κύκλος καιροῦ», ἥτις εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «περίοδος τοῦ *Μπρύκνερ*» (βλ. λ.). Σπουδαιότεραι ἐργασίαι τοῦ Μπρύκνερ εἶναι: «Μελέται περὶ τῶν προόδων τῆς γεωγραφικῆς μετεωρολογίας» (1891, 1894, 1899), «Ἐπίδρασις τῆς χιόνος ἐπὶ τοῦ κλίματος τῶν Ἄλπεων» (1893), «Κλιματικαὶ κυμάνσεις εἰς τὰς Ἰνδίας ἀπὸ τοῦ 1813—1912» (1918) κλπ. Θ. Θ. Φ.

— **Μπρύκνερ, περίοδος τοῦ** — (Brückner cycle) *[Μετεωρολ.—Κλιματολ.].* Καλεῖται οὕτω ἀπὸ τοῦ ἀνακαλύψαντος *Ἐδουάρδου Μπρύκνερ* χρονικὴ περίοδος ψυχρῶν καὶ ὑγρῶν ἐτῶν ἐναλλασσομένων μετὰ θερμῶν καὶ ξηρῶν τοιούτων. Ἡ τιμὴ τῆς περιόδου ταύτης εἶναι 35 περίπου ἔτη, εὑρέθη δὲ αὐτὴ ἐκ παρατηρήσεων ἐπὶ τῆς στάθμης καὶ ἄλλων μετεωρολογικῶν δεδομένων, ἐπικρατούντων ἐπὶ τῆς Κασπίας θαλάσσης, τοῦ Εὐξείνου Πόντου, τῆς Βαλτικῆς, ἐπὶ τῶν λιμνῶν κλπ. Πράγματι ἡ τριακονταπενταετὴς περίοδος ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τοῦ Sir Francis Bacon τῷ 1625, ἐβεβαιώθη ὅμως τῷ 1890 ὑπὸ τοῦ Brückner, ὅστις ὑπελόγισε τὸ μέσον μῆκος πράγματι εἰς 34.8 ἔτη. Ἔκτοτε περιοδικότητες περίπου τοῦ μήκους τούτου εὑρέθησαν εἰς πολλὰς σειρὰς μετεωρολογικῶν δεδομένων. Ἡ ἔρευνα τῶν κυμάνσεων εἰς τοὺς ἐτησίους μέσους τῆς ἀτμοσφαιρικῆς πιέσεως κατέδειξεν ὅτι αἱ περίοδοι τούτων εἶναι διάφοροι ἐπὶ τῶν ἠπείρων καὶ διάφοροι ἐπὶ τῶν ὠκεανῶν. Θ. Θ. Φ.

**Μπρὺλ** (Brühl) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γερμανίας ΝΔ. τῆς Κολωνίας, ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κολωνίας-Βόννης. Κάτ. (1919) περὶ τοὺς 10.000. Ἔχει λιγνιτωρυχεῖα καὶ ποικίλην βιομηχανίαν.

—**Μπρὺλ** (Brühl), ***Ἐρρῖκος,*** *κόμης*—. Πολωνὸς πολιτικὸς (1700—1763). Ὑπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν τῷ 1733, τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ τῶν Στρατιωτικῶν τῷ 1737, τῶν Ἐξωτερικῶν τῷ 1758, ἐγένετο τῷ 1746 πρόεδρος τῆς κυβερνήσεως. Α. Δ.

— **Μπρὺλ** (Brüll), ***Ἰγνάτιος.*** Αὐστριακὸς μουσικοσυνθέτης (1846—1907). Δεξιοτέχνης τοῦ κλειδοκυμβάλου, ἐδίδαξε τὸ ὄργανον τοῦτο εἰς τὸ ἰνστιτοῦτον Χορὰκ τῆς Βιέννης. Ἔγραψε τὰ μελοδράματα: «Die Bettler von Samarkand» (1864), «Das goldene Kreuz» (1875), ὅπερ ἔσχε καταπληκτικὴν ἐπιτυχίαν, «Der Landfriede» (1877), «Bianca» (1879), «Königin Marietta» (1883), «Das steinerne Herz» (1888), «Gringoire» (1892), «Schach dem Könige» (1893), «Gloria» (1896), καὶ «Der Hnsar» (1898). Ἔγραψεν ἐπίσης ἔργα μουσικῆς δωματίου, 2 κοντσέρτα διὰ κλειδοκύμβαλον, 1 κοντσέρτο διὰ βιολίον, μελῳδίας, χορῳδίας κτλ. Γ. Σ.

—**Μπρὺλ** (Bruhl), ***Λουκιανὸς-Λεβύ.*** Γάλλος φιλόσοφος καὶ ἐθνολόγος, καθηγητὴς ἀπὸ τοῦ 1899 τῆς φιλοσοφίας ἐν τῇ Σορβόννῃ. Τὸ ἐνδιαφέρον του στρέφεται κυρίως πρὸς τὴν φιλοσοφικὴν ἑρμηνείαν τῶν κοινωνικῶν καὶ ἠθικῶν φαινομένων. Κατ' αὐτὸν οἱ ἠθικοὶ νόμοι ἑκάστης ἐποχῆς εἶναι κοινωνικὰ γεγονότα, δεδομένα τῆς κοινωνικῆς ἐπιστήμης, ἅτινα εἶναι ἀδύνατον νὰ μεταβληθῶσιν αὐθαιρέτως, νοοῦνται δὲ μόνον ἱστορικῶς. Τὰ ἄτομα δὲν κατανοοῦν τὴν φύσιν καὶ τὴν ἐνέργειαν αὐτῶν, μολονότι καθορίζονται ὑπ' αὐτῶν εἰς τὴν ζωήν των. Ὁ ἠθικὸς νόμος εἶναι δεσμευτικὸς διὰ τὴν ἀτομικὴν συνείδησιν, ἔστω καὶ ἂν δυνάμεθα ἐπιστημονικῶς νὰ καθορίσωμεν τίνων ἱστορικῶν φαινομένων εἶναι ἀποτέλεσμα. Εἶναι σφαλερὰ ἡ ἀντίληψις καὶ ἡ προσπάθεια τῆς κοινωνιολογίας νὰ βελτιώσῃ τοὺς ἠθικοὺς νόμους καὶ νὰ ἐπιταχύνῃ τὴν φυσικὴν ἐξέλιξιν. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Ἀνέκδοτοι ἐπιστολαὶ τοῦ J. S. Mill πρὸς τὸν Comte» (1899), «Ἱστορία τῆς νεωτέρας φιλοσοφίας ἐν Γαλλίᾳ» (1899), «Ἡ φιλοσοφία τοῦ Αὐγούστου Comte» (1900), «Αἱ πνευματικαὶ λειτουργίαι εἰς τὰς κατωτέρας κοινωνίας» (1910), «Ἡ ἠθικὴ καὶ ἡ ἐπιστήμη τῶν ἠθῶν» (1904), «Ὁ καθορισμὸς τῆς ἠθικῆς πράξεως» (1906), «Ἡ πρωτόγονος νοοτροπία» (1922), «Ἡ πρωτόγονος ψυχὴ» (1927). Τακτικὸς συνεργάτης τῆς «Année Sociologique» (1898—1908). Ε. Λ.

**Μπρυμὰτ** (Brumath) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κάτω Ρήνου, ἀπέχουσα 17 χλμ. ἀπὸ τοῦ Στρασβούργου. Ἔχει ἀμπελῶνας καὶ δάση καὶ βιομηχανίαν βυρσοδεψίας. Κάτ. 5.740. Εἶναι ἡ ἀρχαία *Βρευκόμαγον* (βλ. λ.) ἢ *Βροκόμαγος*, παρὰ τὴν ὁποίαν ὁ Ἰουλιανὸς (356 μ. Χ.) ἐνίκησε τοὺς Ἀλαμανούς. Χ. Δ.

**Μπρυμὲλ** (Brumel), ***Ἀντώνιος.*** Συνθέτης τῆς γαλλοφλαμανδικῆς πολυφωνικῆς σχολῆς, δράσας περὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος. Ἐκ τῆς ζωῆς του εἶναι μόνον γνωστὸν ὅτι ἔζησεν ἐπί τινα χρόνον ἐν Λυών, ἣν ἐγκατέλειψε τῷ 1505, ἵνα ἀναλάβῃ ὑπηρεσίαν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς Φερράρας. Τὰ ἔργα του, κυρίως θρησκευτικά, περιλαμβάνουν εἰκοσάδα λειτουργιῶν, μοτέττα καί τινα τρίφωνα γαλλικὰ τραγούδια. Ὁ Μπρυμὲλ ἔγραψε πλείστας ἐκ τῶν λειτουργιῶν του ἐπὶ λαϊκῶν ᾀσμάτων ἐκ τῶν ἔργων του φημίζονται ἡ δωδεκάφωνος λειτουργία: «Et ecce Terrae motus», «Pleni sunt cœli», «Benedictus qui venit» κτλ. Ἐκ τῶν λειτουργιῶν του ἡ «Beata Virgine» περιελήφθη, ἐν συγχρόνῳ σημειογραφίᾳ, ἐν τῇ συλλογῇ «Διδάσκαλοι μουσικοὶ τῆς Ἀναγεννήσεως» τοῦ Ἐξπέρ. Γ. Σ.

**Μπρύμμελ** (Brummel) ***Γεώργιος*** βλ.λ. *Μπράμμελ*, Γεώργιος.

**Μπρυμουὰ** (Brumoy), ***Πέτρος.*** Γάλλος ἰησουΐτης, φιλόλογος καὶ ἱστοριογράφος (1688—1742). Ἐδίδαξεν ἐν ἀρχῇ μαθηματικὰ εἰς διάφορα κολλέγια τοῦ τάγματός του, ἐπεφορτίσθη δὲ κατόπιν νὰ συνεχίσῃ τὴν συγγραφὴν τῆς «Ἱστορίας τῆς ἀγγλικῆς Ἐκκλησίας», τῆς ὁποίας εἶχον ἤδη ἐκδοθῆ δέκα τόμοι ὑπὸ τῶν Longueval καὶ Fontenoy, ἐπεξειργάσθη δὲ τὸν ἑνδέκατον τόμον αὐτῆς καὶ συνέταξεν ἐξ ὁλοκλήρου τὸν δωδέκατον. Ἔγραψεν ἐξ ἄλλου θεολογικὰ ἐγχειρίδια, ποιήματα εἰς λατινικήν, μικρὰ σχολικὰ θεατρικὰ ἔργα, φιλολογικὰς ἱστορικὰς καὶ κριτικὰς μελέτας, ἔτι δὲ καὶ ἐπιμεμελημένας μεταφράσεις ξένων συγγραφέων, ἐκδοθείσας ὑπὸ τὸν τίτλον: «Συλλογὴ διαφόρων ἔργων εἰς στίχους καὶ πεζὸν» (Παρίσιοι 1741, εἰς 4 τόμους). Κυριώτερον ἔργον του θεωρεῖται τὸ «Θέατρον τῶν Ἑλλήνων» (Παρίσιοι 1730, 3 τόμ.), διὰ τοῦ ὁποίου συνέβαλε σημαντικῶς εἰς τὴν ἐκλαΐκευσιν τῶν ἀρχαίων ἑλληνικῶν θεατρικῶν ἀριστουργημάτων ἐν Γαλλίᾳ. Τὸ ἔργον του τοῦτο ἐπανεξεδόθη τῷ 1832 ἐν Ἀμστελοδάμῳ καὶ τῷ 1847 ἐν Παρισίοις, νεώτεραι δ' ἐκδόσεις αὐτοῦ πρὸς χρῆσιν σχολείων καὶ ἐπαυξήσεων ἐγένοντο ὑπὸ τοῦ Fleriau (Παρίσιοι 1863), τοῦ Brotier (1785—1889, 13 τόμ.) καὶ τοῦ Rochette (1820—1825, εἰς 16 τόμους). —Ω.

**Μπρὺν** (γερμ. Brünn, τσεχ. Brno, πρφ. *Μπέρνο*) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου διαμερίσματος ἐν Μοραβίᾳ, παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Σβαρτσάβα καὶ Ζβιτάβα. Κάτοικοι μετὰ τῶν προαστείων 220.000. Εἶναι πόλις βιομηχανικωτάτη, ἀποκαλουμένη «Μάντσεστερ τῆς Τσεχοσλοβακίας» ἔχουσα δὲ ἰδίως ὀνομαστὰ ὑφαντουργεῖα, ζαχαροπλαστεῖα, ἐργοστάσια πορσελάνης κλπ. Εἶναι ἐξ ἄλλου σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ ἔχει πλεῖστα ἐνδιαφέροντα παλαιὰ καὶ νέα κτήρια, μετὰ θαυμασίων πάρκων. Ἀξιολογώτερα ἐκ τῶν ἐν αὐτῇ μνημείων εἶναι: ἡ μητρόπολις τῶν Ἁγίων Πέτρου καὶ Παύλου ἐπὶ βραχώδους λόφου κτισθεῖσα κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα· ὁ γοτθικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Ἰακώβου, ἔχων κωδωνοστάσιον ὕψους 93 μ. καὶ ὡραῖα ὑαλογραφήματα· ὁ ναὸς τῶν Μινοριτῶν, μὲ ὡραίας τοιχογραφίας· ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Αὐγουστίνου τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, τὸ μέγαρον τῆς διαίτης κτισθὲν τῷ 1881, τὸ δημαρχεῖον (1551), ἡ βιομηχανικὴ σχολή, τὸ βιομηχανικὸν μουσεῖον, τὸ θέατρον (1882) ὅπερ εἶναι τὸ πρῶτον ἠλεκτροφωτισθὲν θέατρον ἐν Εὐρώπῃ κ. ἄ. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ πρὸς Δ. τῆς πόλεως λόφου Σπεϊλμπεργκ, ὕψους 288 μ., ὑπάρχει παλαιὸν φρούριον, μετὰ θαυμασίου πάρκου, χρησιμεῦον ἄλλοτε ὡς ἕδρα τοῦ ἀρχιδουκὸς τῆς περιφερείας καὶ κατόπιν ὡς φυλακή, νῦν δὲ ὡς στρατών. Ἐν αὐτῷ παρέμεινεν ἐγκεκλεισμένος ἀπὸ τοῦ 1822 μέχρι τοῦ 1830 ὁ Ἰταλὸς ποιητὴς Σίλβιο Πέλλικο, περιγράψας τὰ δεινοπαθήματά του ἐν τῷ ἔργῳ του «Αἱ φυλακαί μου». Ἡ πόλις εἶναι σήμερον σπουδαῖον κέντρον πνευματικῆς καὶ βιομηχανικῆς μορφώσεως μετὰ πλήθους εἰδικῶν σχολῶν, μουσείων, ᾠδείων κλπ.

Ἡ Μπρὺν ἐκτίσθη κατὰ τὸν Θ' αἰῶνα, προσαχθεῖσα δὲ τάχιστα ἀπὸ πάσης ἀπόψεως, ἐθεωρεῖτο κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα ὡς μία τῶν πλουσιωτέρων καὶ τῶν ἐχουσῶν τὰ σπουδαιότερα πνευματικὰ κέντρα πόλεων τῆς Εὐρώπης. Πολλάκις ἀπετέλεσε τὸ μῆλον τῆς ἔριδος μεταξὺ διαφόρων φεουδαρχῶν, ἀλλ' ὀχυρωθεῖσα ἰσχυρῶς, κατώρθωσε νὰ ἀντιστῇ εἰς πλείστας πολιορκίας, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι: ἡ τῶν Χουσιτῶν τῷ 1498, τοῦ βασιλέως Γεωργίου τῆς Βοημίας τῷ 1467, τῶν Σουηδῶν τῷ 1645, τῶν Πρώσσων τῷ 1742 κτλ. Τὰ ὀχυρώματά της κατεστράφησαν τῷ 1809 ὑπὸ τῶν Γάλλων. Ἐν αὐτῇ εἶχεν ἐγκατασταθῆ ὁ Ναπολέων τὸ στρατηγεῖον του πρὸ τῆς μάχης τοῦ Αὐστερλίτς. Μ. Δ. Ε.

**Μπρὺν** (Brunhes), ***Βερνάρδος.*** Γάλλος φυσικὸς καὶ μετεωρολόγος (1867—1910). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς φυσικῆς ἐν Clermont-Ferrand καὶ διευθυντὴς ἀπὸ τοῦ 1900 τοῦ ἀστεροσκοπείου τοῦ Puy-de Dôme. Ἐκτὸς τῶν μελετῶν καὶ ἐργασιῶν του, συνέγραψε (1909) καὶ ἀξιόλογον ἔργον περὶ τῆς ἐλαττώσεως τῆς ἐνεργείας. Θ. Θ. Φ.

—**Μπρὺν** (Brune), ***Γουλιέλμος-Μαρία.*** Γάλλος στρατάρχης, γεννηθεὶς τῷ 1763 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1815. Διέπρεψεν εἰς διαφόρους μάχας ἐν Ἰταλίᾳ, Ἑλβετίᾳ καὶ Ὁλλανδίᾳ. Τῷ 1814 ἐγένετο στρατάρχης ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος Α' καὶ τῷ 1807 κατέλαβε τὸ Στράλσουντ. Κατὰ τὴν περίοδον τῶν Ἑκατονθημέρου ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ στρατοῦ τοῦ Βάρ. Θ. Θ.

**Μπρυνὲ** (Brunet), ***Ἰάκωβος-Κάρολος.*** Διάσημος Γάλλος βιβλιογράφος (1780—1867). Υἱὸς βιβλιοπώλου καὶ συνεργάτης τοῦ πατρός του ἀπὸ νεαρωτάτης ἡλικίας, ἐνεφανίσθη τὸ πρῶτον ἐν τῇ βιβλιογραφίᾳ τῷ 1802, δημοσιεύσας ἀνωνύμως «Συμπλήρωμα τοῦ βιβλιογραφικοῦ λεξικοῦ σπανίων βιβλίων» τῶν Cailleau καὶ Duclos. Τὸ μετριόφρον ἐκεῖνο ἔργον του ἔτυχεν ἀρίστης ὑποδοχῆς, ἔκτοτε δὲ ὁ Μπρυνὲ ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς βιβλιογραφικὰς μελέτας. Τῷ 1810 ἐξέδωκε τὸν «Ὁδηγὸν τῶν βιβλιοπωλῶν καὶ τοῦ βιβλιοφίλου», σημειώσαντα τεράστιαν ἐπιτυχίαν καὶ ἐπανεκδοθέντα τῷ 1814 καὶ τῷ 1820 (4 τόμοι). Τῷ 1834 συνεπλήρωσεν αὐτὸν διὰ παραρτήματος ὑπὸ τὸν τίτλον «Νέαι βιβλιογραφικαὶ ἔρευναι» (3 τόμ.), εἰς τετάρτην δ' ἐπηυξημένην ἔκδοσιν του προέβη τῷ 1843 (5 τόμ.). Ὀγδοηκοντούτης ὁ Μπρυνὲ ἐπεξειργάσθη τὴν πέμπτην καὶ τελευταίαν ἔκδοσιν τοῦ ἔργου του (1860—1865, 6 τόμοι εἰς 12 μέρη), ἥτις δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ θαῦμα ὑπομονῆς, ἀκριβείας καὶ πολυμαθείας. Ἀποθανὼν ἀφῆκε πλουσίαν συλλογὴν σπανίων βιβλίων καὶ ἀριστουργημάτων τῆς παλαιᾶς βιβλιογραφικῆς, ἐκληροδότησε δὲ εἰς τὴν Γαλλικὴν Ἀκαδημίαν κεφάλαια πρὸς ἵδρυσιν βραβείων διὰ τὰς καλυτέρας βιβλιογραφικὰς ἐργασίας.

**Μπρυνὲλ** (Brunel), ***Μάρκος-Ἰζαμπάρ.*** Γάλλος μηχανικός, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις (1769) καὶ ἀποθανὼν ἐν Λονδίνῳ (1849). Ὑπηρετῶν εἰς τὸ γαλλικὸν ναυτικὸν ἀπὸ τοῦ 1787, κατεδιώχθη ὡς ἀντιβασιλόφρων καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς Ἀμερικήν, ἐκεῖθεν δέ, ἀπὸ τοῦ 1799, εἰς Ἀγγλίαν, ὅπου καὶ ἐγκατεστάθη μονίμως. Ἐκεῖ ἐξετέλεσε διάφορα σημαντικὰ ἔργα, μεταξὺ τῶν ἄλλων δὲ τὴν ὑπὸ τὸν Τάμεσιν σήραγγα (1824—1842) ἔργον διὰ τὸ ὁποῖον κατέστη διάσημος καὶ ἡμείφθη ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως διὰ τοῦ τίτλου τοῦ βαρονέτου τοῦ *Kingdom.* Εἰς τὸν Μπρυνὲλ ὀφείλονται πολλοὶ νεωτερισμοὶ ἐν ταῖς μηχανικαῖς κατασκευαῖς καὶ ἐπινοήσεις διαφόρων τεχνικῶν ὀργάνων καὶ μηχανημάτων.

Ὁ υἱὸς αὐτοῦ *Ἰζαμπὰρ Κίνγκντομ Μπρυνέλ*, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀγγλίᾳ (1806—1859), μηχανικὸς ἐπίσης ὡς ὁ πατήρ του, διεκρίθη εἰς κατασκευὰς μεγάλων τεχνικῶν ἔργων (δεξαμενῶν, σιδηροδρόμων, γεφυρῶν καὶ σηράγγων), ἐπεδόθη δὲ κατόπιν εἰς τὴν ναυπηγικήν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἰδιαιτέρως διέπρεψεν. Ἐπὶ ἰδικῶν του σχεδίων κατεσκευάσθησαν τὰ μεγαλύτερα τῆς ἐποχῆς του

Digitized by Google

ωκεάνια σκάφη «Μ. Βρεττανία» (1845), «Λεβιάθαν» 1853—1858) κ. ἄ. —Ω.

**Μπρυνὲ ντὲ Πρὲλ** (Brunet de Presle), ***Κάρο-ος-Μαρία-Βλαδίμηρος.*** Γάλλος ἑλληνιστής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1809 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ιαρουζὼ τῷ 1875. Ἐπιφορτισθεὶς μετὰ τὸν θάατον τοῦ Letronne (1848) νὰ συνεχίσῃ μετὰ τοῦ gger τὴν δημοσίευσιν τῶν ἑλληνικῶν παπύρων ῆς Αἰγύπτου, οἱ ὁποῖοι ἐνεφανίσθησαν τῷ 1865 πὸ τὸν τίτλον: «Les papyrus grecs du musée u Louvre et de la Bibliothèque impériale», ἐξεέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν τῷ 852. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Mémoies sur le Sérapéum de Memphis», «Recherches ur les établissements des Grecs en Sicile» (1845), Examen critique de la succession des dynasties gyptiennes» (1850), «Sur le papyrus grec du usée du Louvre, contenant un Traité de la phère, et sur le rodiaque triangulaire de Dendéah» (1853), «La Grèce depuis la conquête romaine» (1860). Ὁ Μπρυνὲ ντὲ Πρὲλ ἦτο γνώστης αὶ τῆς νεοελληνικῆς, τὴν ὁποίαν ἐδίδασκεν εἰς ἡν σχολὴν τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν ἀπὸ τοῦ 1864. —Ω.

**Μπρυνετιὲρ** (Brunetière), ***Βικέντιος-Παῦλος-Ιαρία-Φερδινάρδος.*** Γάλλος φιλόλογος καὶ κριτιός, γεννηθεὶς ἐν Τουλὼν (1849—1906). Ἐγένετο αθηγητὴς τῆς École Normale καὶ ἀπὸ τοῦ 1886 ρχισυντάκτης καὶ κατόπιν (1893) διευθυντὴς τῆς Ἐπιθεωρήσεως τῶν δύο Κόσμων». Ρήτωρ δεινὸς ὲ ἐκτεταμένην πολυμάθειαν, ἐσχημάτισε περὶ αὐὸν κύκλον φιλολόγων καὶ κριτικῶν. Ὀρθολογιτής, μεταχειρίζεται αὐστηρὰν λογικὴν διὰ νὰ ὑποτηρίξῃ θεωρίας ἐν πολλοῖς αὐθαιρέτους. Τὸν χααχτηρίζει ἐπίσης τὸ θάρρος, μὲ τὸ ὁποῖον συχνὰ πέκλινε τῶν παραδεδεγμένων ἀπόψεων τῆς κριτικῆς. Ἐχειρίσθη τὴν πολεμικήν του ἐναντίον τοῦ νατουραλισμοῦ, ἀπὸ τοῦ Ραμπελαὶ μέχρι τοῦ Ζολᾶ, τοῦ ρωμαντισμοῦ, τοῦ ἐμπρεσσιονισμοῦ καὶ τῆς θεωρίας «ἡ τέχνη διὰ τὴν τέχνην», ἐπεζήτησε δὲ νὰ ἀνορθώσῃ τὴν ἱεραρχίαν τῶν καλαισθητικῶν καὶ ἠθικῶν ἀξιῶν τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Φιλοσοφικῶς ἐπρέσβευεν ὅτι ὁ κόσμος κυβερνᾶται ἀπὸ τάξιν λογικήν, τῆς ὁποίας τοὺς νόμους δύναται ἡ νόησίς μας νὰ συλλάβῃ καὶ ἡ βούλησίς μας νὰ ἐφαρμόσῃ ἐπὶ τῆς ἀνρωπίνης κοινωνίας. Ἀπὸ τὰς νεωτέρας φιλοσοκὰς θεωρίας παρεδέχθη ὡς δόγμα τὸν δαρβισμὸν καὶ ἠθέλησε νὰ ἐφαρμόσῃ τὰς ἀρχάς του ι τῆς ἐξελίξεως τοῦ πνεύματος καὶ τῶν εἰδῶν ις φιλολογίας. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Κριτικαὶ μεται» (εἰς 9 τόμους, οἱ τελευταῖοι τῶν ὁποίων ἐξόθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τῶν μαθηὸν του 1800—1925), «Ζητήματα κριτικῆς», «Νέα τήματα κριτικῆς» (1890), «Τὸ νατουραλιστικὸν μυθιόρημα» (1883), «Ἡ ἐξέλιξις τῆς λυρικῆς ποιήσεως» 394), «Αἱ ἐποχαὶ τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου», «Ἐγχειδιον τῆς ἱστορίας τῆς γαλλικῆς φιλολογίας» (1897), ι τῇ βάσει τοῦ ὁποίου συνέταξεν ἀργότερον ήρη «Ἱστορίαν τῆς γαλλικῆς φιλολογίας» τὴν ὁποίαν ηκολούθησαν οἱ μαθηταί του (1904—1918), «Πομικοὶ λόγοι» (τόμοι τρεῖς 1900—1907), «Ἡ ἠθικὴ ς ἐξελικτικῆς θεωρίας», «Ἡ ἐξέλιξις τῶν εἰδῶν εἰς ν ἱστορίαν τῆς φιλολογίας» (1890), «Τὰ σύγχρονα ητρα τῆς πίστεως» (1901), «Μπαλζὰκ» (μονογραα), «Ἡ χρησιμοποίησις τοῦ θετικισμοῦ» κ. ἄ.

*Βικέντιος Μπρυνετιέρ.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *V. Giraud*, «Φ. Μπρυνετιέρ, Σημειώσεις ι ἀναμνήσεις» (1907).—*Th. Delmont*, «Φ. Μπρυνετιὲρ» 08).—*H. Guyot*, «Ἡ ἀπολογητικὴ τοῦ Μπρυνετιὲρ» (1909). *E. Φραγκέ*, «Φ. Μπρυνετιὲρ» (1911).—*E. P. Κούρτιος*, «Φ. τρυνετιὲρ» (1914).—*W. Jequier*, «Φ. Μπρυνετιὲρ καὶ ἡ φιλογικὴ κριτική» (1922).
Ε. Λ.

**Μπρυνεώ**, ἢ ***Μπρυνχίλντ*** (Brunehaut ἢ Brunlde)· βλ. λ. *Βρουγχίλδη*.

**Μπρύνιγκ** (Brünig) *[Γεωγρ.]*. Δίοδος τῶν Ἄλων ἐν Ἑλβετίᾳ, ὕψους 1011 μέτρων, συντομωτη ὁδὸς μεταξὺ τῆς λίμνης Vierwald=Stätter ι τῆς περιοχῆς τῆς Βέρνης. Δι' αὐτῆς διέρχεται ι σιδηροδρομικὴ γραμμή.

**Μπρύνινγκ** (Brüning), ***Ἐρρῖκος.*** Γερμανὸς ποτικός, γεννηθεὶς τῷ 1885. Ἐσπούδασε νομικὰ ; τὸ Μόναχον καὶ κατόπιν φιλοσοφίαν καὶ πολικὰς ἐπιστήμας εἰς τὸ Στρασβοῦργον καὶ τὴν Βιένν καὶ ἐταξίδευσεν εἰς διαφόρους χώρας τῆς Εὐρώπης, παραμείνας ἐπὶ πολὺ ἐν Ἀγγλίᾳ πρὸς μελέτην τῶν ἐκεῖ πολιτικῶν ἠθῶν. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, καίτοι εἶχεν ἀπαλλαγὴ τῆς στρατιωτικῆς ὑπηρεσίας λόγῳ ὑγείας, ἐν τούτοις ἐπέμεινε νὰ προσληφθῇ ὡς ἐθελοντὴς καὶ ὑπηρέτησεν ὡς ἁπλοῦς στρατιώτης, προαχθεὶς κατόπιν εἰς ἀνθυπολοχαγὸν καὶ διακριθεὶς εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον. Μετὰ τὸν πόλεμον ἀνεμίχθη ἐνεργῶς εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ τῷ 1919 ἐγένετο ἰδιαίτερος γραμματεὺς τοῦ ὑπουργοῦ Στέγγερβαλντ, ὁ ὁποῖος ὑπῆρξε πρόεδρος τοῦ Συνδέσμου τῶν Χριστιανικῶν Συνδικάτων. Τῷ 1921 ὁ Μπρύνινγκ ἐγένετο αὐτὸς πρόεδρος τοῦ Συνδέσμου τῶν Χριστιανικῶν Συνδικάτων, τῷ δὲ 1924 ἐξελέγη διὰ πρώτην φορὰν βουλευτής, διακριθεὶς ἀμέσως εἰς τὸ Ράϊχσταγ ὡς εἰδικὸς εἰς τὰ οἰκονομικὰ ζητήματα, γενόμενος μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῶν φορολογιῶν. Εἷς φορολογικὸς νόμος, ψηφισθεὶς κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, φέρει τὸ ὄνομά του. Τῷ 1929 ἐξελέγη πρόεδρος τῆς ὁμάδος τῶν βουλευτῶν τοῦ Κέντρου, τὴν δὲ 30 Μαρτίου 1930 διωρίσθη ἀρχικαγκελλάριος. Μ. Δ. Β.

*Ἐρρῖκος Μπρύνινγκ.*

**Μπρὺνκ** (Brunck), ***Ριχάρδος-Φραγκῖσκος-Φίλιππος.*** Γάλλος φιλόλογος, γεννηθεὶς ἐν Στρασβούργῳ τῷ 1729 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1803. Μαθητὴς τῶν ἰησουϊτῶν, ἐγένετο στρατιωτικός, ἀλλὰ κυρίως ἠσχολήθη μὲ τὴν ἑλληνικὴν φιλολογίαν. Φυλακισθεὶς κατὰ τὴν Τρομοκρατίαν ὡς μετριοπαθής, ἀπεφυλακίσθη κατὰ τὴν 9ην Θερμιδώρ. Μεταξὺ τῶν σπουδαιοτέρων του ἔργων εἶναι: «Analecta veterum poetarum graecorum» (1772—1776, τόμ. 3) καὶ αἱ ἐκδόσεις τοῦ Ἀνακρέοντος (1778), τοῦ Ἀπολλωνίου τοῦ Ροδίου (1780), τοῦ Ἀριστοφάνους (1781—1783, τόμ. 4) μετὰ καλῆς λατινικῆς μεταφράσεως, τῶν γνωμικῶν ποιητῶν (1784), τοῦ Βιργιλίου (1785), τοῦ Σοφοκλέους (1786, τόμ. 2) κτλ. —Ω.

**Μπρύνν**, ***σκελετὸς τῆς —.*** Παλαιοντολογικὸς σκελετὸς ἀνθρώπου, ἀνακαλυφθεὶς τῷ 1891 ἐν τῇ πόλει Brünn τῆς Μοραβίας. Ἀνευρέθη μεταξὺ ὀστῶν μαμμοὺθ καὶ ρινοκέρωτος, περιβαλλόμενος ὑπὸ 600 καὶ πλέον κογχυλίων περιδεραίου, λίθων ἀντικειμένων καὶ εἰδωλίων ἐξ ἐλεφαντοστοῦ. Ὁ κατὰ τὴν ἐκσκαφὴν ἡμικαταστραφεὶς σκελετὸς οὗτος ἐμφανίζει ἴχνη χρώσεως ἐρυθρᾶς, δεῖγμα ταφῆς, μετὰ τὴν ἐκ τῶν μαλακῶν μορίων ἀποψίλωσιν. Τὸ κρανίον εἶναι δολιχοκέφαλον, μὲ τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ παλαιοντολογικοῦ νέου ἀνθρώπου (Homo sapiens fossilis), δηλαδὴ ὁμοιάζοντα πρὸς τὰ τῶν συγχρόνων. Ἀνήκει πάντως εἰς τὴν ἐποχὴν τοῦ Ταράνδου, τὴν νεωτέραν παλαιολιθικήν. Τινὲς κατατάσσουν τοῦτον εἰς τὴν σολουτραίαν φυλὴν (μετὰ τῶν κρανίων Predmost), ἄλλοι δὲ τὸν ταυτίζουσι πρὸς τὴν κρομανιόνιον φυλὴν ἢ πρὸς φυλὴν πολὺ ἐγγὺς ταύτῃ. Ι. Γ. Κ.

**Μπρύνσβικ** (Brunschvicg), ***Λέων.*** Γάλλος φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1869. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς γενικῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν Σορβόννην καὶ ἀπὸ τοῦ 1920 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Εἶναι συνεργάτης τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τῆς Μεταφυσικῆς καὶ Ἠθικῆς», τῆς ὁποίας ὑπῆρξε συνιδρυτὴς μετὰ τοῦ Darlu καὶ τοῦ Xavier Léon. Ἀνενέωσε τὰ προβλήματα τῆς γνωσιολογικῆς κριτικῆς τοῦ Κὰντ καὶ ἐξήγαγεν ἐπὶ ἰδεαλιστικῆς βάσεως ἐνδιαφέροντα συμπεράσματα περὶ τῆς ἐξελίξεως καὶ τῶν θεωρητικῶν προϋποθέσεων τῆς φυσικῆς ἐπιστήμης. Θεωρεῖ τὸν κόσμον ὡς δημιούργημα τοῦ πνεύματος καὶ προσπαθεῖ νὰ ἀποδείξῃ πῶς οἱ σκοποὶ καὶ ἡ φύσις τῆς ἐπιστημονικῆς γνώσεως, καὶ ἑπομένως ἡ πραγματικότης, μεταβάλλονται συνεπείᾳ τῆς ἐξελίξεώς του ἐν τῇ ἱστορίᾳ. Συγγενεύει οὕτω πρὸς τὸν νεοκαντιανισμὸν καὶ τὸν Ἕγελον. Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Οἱ τρόποι τῆς κρίσεως» (1897), «Ὁ Σπινόζας καὶ οἱ σύγχρονοί του» (1894 καὶ 1923), «Εἰσαγωγὴ εἰς τὴν πνευματικὴν ζωὴν» (1900), «Ὁ σύγχρονος ἰδεαλισμὸς» (1905), «Οἱ σταθμοὶ τῆς φιλοσοφίας τῶν μαθηματικῶν» (1912), «Φύσις καὶ ἐλευθερία» (1921), «Ἡ ἀνθρωπίνη ἐμπειρία καὶ ἡ φυσικὴ αἰτιότης» (1922), «Ἡ μεγαλοφυΐα τοῦ Πασκὰλ» (1925), «Ἡ πρόοδος τῆς συνειδήσεως ἐν τῇ εὐρωπαϊκῇ φιλοσοφίᾳ» (1927). Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Μπουτροὺ καὶ τοῦ Φ. Γκαζιὲ ἐκδίδει ἀπὸ τοῦ 1897 τὰ ἅπαντα τοῦ Πασκάλ. Ε. Λ.

**Μπρυνχλίντ**, ἢ ***Μπρυνεὼ*** (Brunhilde ἢ Brunehaut)· βλ. λ. *Βρουγχίλδη*.

**Μπρυνὼ** (Bruneau), ***Ἀλφρέδος.*** Γάλλος συνθέτης, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1857. Συνέθεσεν: «Ἡρωϊκὴ εἰσαγωγή», «Λήδα», «Ἡ Πεντάμορφη στὸ δάσος», «Πενθεσίλεια», τὴν λυρικὴν κωμῳδίαν «Κερίμ», ἐπὶ ποιήματος τῶν Λαβεντὰν καὶ Μιλλιὲ (Λυρικὸν θέατρον 1887), «Ὄνειρον» (Κωμικὸν μελόδραμα Παρισίων 1891), «L'attaque du Moulin» (Κωμικὸν - μελόδραμα 1893), «Requiem» (1896), «Messidor» (1897), «L'Ouragan» (Κωμικὸν-μελόδραμα 1901), «L'Enfant-Roi» (Κωμικὸν-μελόδραμα 1905), «Naïs Micoulin» (Μόντε Κάρλο 1907), «La faute de l'Abbé Mouret» (Ὀντεὸν 1907), «Les bacchantes» (Μελόδραμα Παρισίων 1912), «L'Amoureuse leçon» (Θέατρον τῶν Τεχνῶν 1913), «Le Tambour» (Κωμικὸν-μελόδραμα 1915), «Les quatre journées» (Κωμικὸν μελόδραμα 1916), τὸ χαριτωμένον κωμικὸν μελόδραμα «Le roi Candaule» (1920), «Le jardin de Paradis» (Μελόδραμα 1923), «Angelo, tyran de Padoue» (Κωμικὸν μελόδραμα 1928). Ὁ Μπρυνὼ εἶναι ἐκ τῶν συνθετῶν τῶν κεκτημένων πραγματικὸν δραματικὸν τάλαντον. Ἡ μουσική του προκαλεῖ συγκίνησιν. Κάτοχος ἀπείρου τεχνικῆς, δύναται ἐξ ἄλλου, λόγῳ τῶν τολμηροτήτων του καὶ τῶν ἀπροσδοκήτων καὶ ἐνίοτε τραχέων ἁρμονικῶν του συνδυασμῶν, νὰ θεωρηθῇ ὡς ἐκ τῶν πρωτοπόρων τῆς συγχρόνου δραματικῆς τέχνης. Παρὰ τὰς ἄκρας ὅμως τολμηρότητάς της, ἡ μουσικὴ τοῦ Μπρυνὼ δὲν παύει νὰ μένῃ μελῳδική, ἀποφεύγουσα τὰς ἀτονικότητας. Ὁ Μπρυνὼ κατέχει καὶ ἐξέχουσαν θέσιν μουσικοῦ συγγραφέως διὰ τῶν ἔργων: «Musique d'hier et musique de demain» (1900), «Musique de Russie et Musiciens de France» (1903), «La Musique française», (1901), «La vie et les oeuvres de Gabriel Fauré». Ἐχρημάτισεν ἐπίσης κριτικὸς τοῦ «Φιγκαρό», τῆς «Πρωΐας» καὶ πολλῶν ἐπιθεωρήσεων. Τῷ 1925 ὠνομάσθη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Καλῶν τεχνῶν. [Πρβλ. *A. Hervey*, «A. Bruneau» (1907).] Γ. Σ.

— **Μπρυνὼ** (Bruneau), ***Μαθουρῖνος.*** Περίφημος Γάλλος τυχοδιώκτης (1784—1825). Υἱὸς σανδαλοποιοῦ, κατώρθωσεν ἐπί τινα χρόνον νὰ ζῇ ἐν Παρισίοις ὡς δῆθεν βαρῶνος ντὲ Βενζέν, ἀποκαλυφθεὶς δὲ βραδύτερον ἐφυλακίσθη ὡς ἀλήτης καὶ μετὰ πολλὰς ἄλλας περιπετείας μετηνάστευσεν εἰς Ἀμερικήν. Τῷ 1816 ἐπέστρεψεν ἐκεῖθεν εἰς Γαλλίαν ἐφωδιασμένος διὰ πλαστῶν ἐγγράφων, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων ἐνεφανίσθη ὡς Κάρολος τῆς Ναβάρρας, υἱὸς τοῦ ἀποκεφαλισθέντος κατὰ τὴν Γαλλικὴν ἐπανάστασιν βασιλέως Λουδοβίκου ΙΣΤ'. Συνελήφθη τότε ὑπὸ τῆς ἀστυνομίας, ὑπῆρξαν ὅμως μεταξὺ τῶν Γάλλων βασιλοφρόνων ἀρκετοὶ οἱ πιστεύσαντες εἰς τὴν πλαστήν του προσωπικότητα, ἐξ οὗ καὶ προεκλήθη πολὺς περὶ αὐτὸν θόρυβος. Ἐν τέλει κατεδικάσθη ἐπὶ ἰδιοποιήσει βασιλικῶν τίτλων καὶ ἐξυβρίσει τῶν δικαστῶν του εἰς ἑπταετῆ εἱρκτήν, ἐκτίνων δὲ τὴν ποινήν του ἀπέθανεν εἰς τὰς φυλακὰς τοῦ φρουρίου Σαὶν-Μισέλ. —Ω.

**Μπρὺξ** (Brüx) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Τσεχοσλοβακίας, ἐν Βοημίᾳ. Κάτ. 27.240. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μπιέλα εἰς ἀπόστασιν 160 χλμ. ΒΔ τῆς Πράγας. Ἔχει ὡραῖον γοτθικὸν ναὸν τοῦ 1517, ἀνωτέρας τεχνικὰς σχολάς, ἐργοστάσια μηχανημάτων, ζαχάρεως, χυτήρια, ἀλευρομύλους κτλ. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν γαιανθρακωρυχεῖα καὶ αἱ ἁλατοῦχοι θερμοπηγαὶ τῶν χωρίων Πύλλνα, Σέντλιτς καὶ Σάρντσιτς. Κατὰ τὸ 1895 τὸ κατώτερον τμῆμα τῆς πόλεως κατεστράφη ὑπὸ καθιζήσεως. Μ. Δ. Β.

—**Μπρύξ**, ***κρανίον τῆς —.*** Παλαιολογικὸν εὕρημα ἀμφιβόλου χρονολογικῆς ἢ στρωματογραφικῆς κατατάξεως, εὑρεθὲν τῷ 1872 εἰς Brüx τῆς Βοημίας εἰς παλαιὰς προσχώσεις τοῦ μέρους. Πρόκειται περὶ τοῦ θόλου μόνον τοῦ κρανίου, ὅπερ δύναται νὰ θεωρηθῇ ὡς ἀντιπρόσωπος ἀκόμη καὶ τοῦ νεαντερταλίου τύπου. Ὑπάρχουν ὅμως διάφοροι ἀμφιβολίαι περὶ τούτου. Ι. Γ. Κ.

**Μπρὺς** (Bruce), ***Μιχαήλ.*** Σκῶτος ποιητὴς (1746—1767). Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ (δημοσιευθέντων τῷ 1870) ἄξια μνείας εἶναι τὸ «Loch-Leven», διακρινόμενον διὰ τὴν ζωηρότητα καὶ ὡραιότητα τῶν εἰκόνων, καὶ «Ἡ ἐλεγεία τῆς ἀνοίξεως». Α. Δ.

**Μπρύτζις** (Brydges), *σὲρ* ***Σαμουὴλ-Ἔγκερτον.*** Ἄγγλος συγγραφεὺς (1762—1837). Ἀπὸ τοῦ 1812 μέχρι τοῦ 1818 παρεκάθησεν εἰς τὴν βουλὴν τῶν Κοινοτήτων. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὰ κυριώτερα εἶναι: «Σονέττα καὶ ἄλλα ποιήματα». «Ἡ ἐν τῇ λογοτεχνίᾳ λογοκρισία», «Ὁ Ἄγγλος βιβλιογράφος», «Res litterariae», «Ἐπιστολαὶ περὶ τοῦ λόρδου Βύρωνος», «Ἀναμνήσεις περιηγήσεων εἰς τὴν ξένην», «Stemmata illustria, praecipue regia» καὶ «Αὐτοβιογραφία». Α. Δ.

**Μπρυὺ** ***ντ' Αἰγκαγιὲ*** (Brueys d' Aigalliers), ***Φραγκῖσκος-Παῦλος.*** Γάλλος ἀντιναύαρχος, γεννηθεὶς τῷ 1753. Τῷ 1798 τῷ ἀνετέθη ἡ ἀρχηγία τοῦ στόλου τοῦ μεταφέροντος τὸν Ναπολέοντα εἰς Αἴγυπτον. Μετὰ τὴν ἀποβίβασιν τῶν στρατευμάτων, παρακούσας τὸν Ναπολέοντα, ἐπροτίμησε ν' ἀγκυροβολήσῃ εἰς τὸν ἀναπεπταμένον ὅρμον τοῦ



Digitized by Google

'Αβουκίρ, ἔνθα καταληφθεὶς ἀπαράσκευος ὑπὸ τῆς ὑπὸ τὸν Νέλσωνα ἀγγλικῆς μοίρας ἐναυμάχησε (1 Αὐγούστου 1798), καταστραφέντος σχεδὸν ὁλοκλήρου τοῦ γαλλικοῦ στόλου. Ὀλίγον πρὸ τῆς ἀνατινάξεως τῆς ναυαρχίδος του «Ἀνατολὴ» ἀπέθανεν ἐκ τῶν τραυμάτων του (βλ. καὶ λ. *Ἀβουκὶρ ναυμαχία*). Γ. Ν. Ν.

**Μπρώντσταιρς** (Broadstairs) *[Γεωγ.]*. Λουτρόπολις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ τοῦ Κέντ. Κάτ. 8.929. Κεῖται ἐν τῇ νήσῳ τοῦ Θάνετ καὶ εἶναι πολυσύχναστος λουτρόπολις, καταστᾶσα ἰδίως σημαντική, ἀφ' ἧς ἐποχῆς ὁ Κάρολος Ντίκενς καὶ ὁ Γεώργιος Ἔλλιοτ κατέστησαν αὐτὴν θερινὴν διαμονήν των. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, τὸν Φεβρουάριον καὶ Μάρτιον τοῦ 1917, ὑπέστη ἐπίθεσιν γερμανικῶν ἀεροπλάνων, ἐβομβαρδίσθη δὲ καὶ ὑπὸ γερμανικῶν ὑπερτηλεβόλων, στηθέντων ἐπὶ τῆς ἀντιπέραν βελγικῆς ἀκτῆς. Μ. Δ. Β.

**Μπρῶτον** (Broughton), ***Ἰωάννης Κὰμ-Χόμπχαους***, *βαρῶνος* —. Ἄγγλος, φίλος τοῦ Βύρωνος (βλ. λ. *Χόμπχαους*).

**Μπυὰ** (Byat), ***Ἐδμόνδος-Ἀλφόνσος-Λέων***. Γάλλος στρατηγὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1868 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1923. Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς σχολῆς πολέμου, συγγράψας πλεῖστα στρατιωτικὰ διδακτικὰ βιβλία. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐτοποθετήθη ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τοῦ στρατοῦ τῆς Ἀλσατίας καὶ κατόπιν ὡς διευθυντὴς τοῦ γραφείου τοῦ Μιλλεράν. Συνέγραψε πλείστας πραγματείας περὶ τοῦ Παγκοσμίου πολέμου, δημοσιευθείσας ὑπὸ τὸν τίτλον «Λούντεντορφ», καὶ μετέφρασε τ' ἀπομνημονεύματα τοῦ στρατηγοῦ τούτου. Θ. Β.

**Μπὺγκ** (Byng), ***Ἰουλιανὸς-Γεώργιος***, *ὑποκόμις* —. Ἄγγλος στρατηγός, γεννηθεὶς τῷ 1862. Ὑπηρέτησεν ἐν Ἰνδίαις, μετέσχεν εἰς τὸν πόλεμον κατὰ τῶν Μπόερς, τῷ δὲ 1912 ἐστάλη εἰς τὴν Αἴγυπτον ὡς ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τῆς κατοχῆς. Κατ' Ὀκτώβριον τοῦ 1914 διηύθυνεν ἐν Γαλλίᾳ τὴν τρίτην μεραρχίαν ἱππικοῦ καὶ κατ' Ἰούνιον τοῦ αὐτοῦ ἔτους ὁλόκληρον τὸ ἱππικὸν σῶμα. Δύο μῆνας βραδύτερον ἀπεστάλη εἰς Δαρδανέλλια, ἵνα ἀναλάβῃ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἐνάτου σώματος στρατοῦ. Μετακληθεὶς κατόπιν εἰς τὸ δυτικὸν μέτωπον (1916), ὠνομάσθη ἀρχηγὸς τοῦ σώματος τῶν Καναδῶν καὶ διεκρίθη κατὰ τὰς ἐναντίον τοῦ Βιμὺ ἐπιχειρήσεις. Τῷ 1917 ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ τρίτου σώματος στρατοῦ, ἣν διετήρησε μέχρι τέλους τοῦ πολέμου. Τὴν 20 Νοεμβρίου ἀπέκρουσεν αἰφνιδιαστικὴν ἐπίθεσιν κατὰ τοῦ μετώπου τοῦ Καμπραί. Τῷ 1919 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ βαρώνου καὶ 30.000 λιρῶν στερλινῶν. Κατ' Ἰούνιον τοῦ 1921 διωρίσθη διοικητὴς τοῦ Καναδᾶ, διατηρήσας τὴν θέσιν του ταύτην μέχρι τοῦ 1926, ὁπότε διωρίσθη ἀνώτατος ἀρχηγὸς τῆς μητροπολιτικῆς ἀστυνομίας καὶ ἔλαβε συγχρόνως τὸν τίτλον τοῦ ὑποκόμιτος. Α. Δ.

**Μπυγκωΐς** *[Ἀρχ.]*. Νύμφη καὶ προφῆτις τῶν Ἐτρούσκων (βλ. λ. *Μπαγκωή*).

**Μπυὲ** (Buet) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Ἄνω Σαβοΐας, παρὰ τὰ ἰταλοελβετικὰ σύνορα. Ἔχει ὕψος 3.109 μ. καὶ εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ ὡραῖον πανόραμα τοῦ Λευκοῦ ὄρους. Καλύπτεται ὑπὸ παγετῶνος καὶ παρέχει εὔκολον τὴν ἀνάβασιν ἐκ τοῦ Ἀρζαντιὲρ ἢ τοῦ Σίξτ. Μ. Δ. Β.

**Μπυζὲ** (Bugey) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ μικρὰ χώρα τῆς Γαλλίας ἐν Βουργουνδίᾳ, περιλαμβανομένη ἐν τῷ σημερινῷ νομῷ Αἲν καὶ ἐκτεινομένη μεταξὺ τῆς Φρὰνς Κοντὲ πρὸς Β. καὶ τῶν ποταμῶν Αἲν πρὸς Δ. καὶ Ροδανοῦ πρὸς Α. καὶ Ν. Ἔφερεν ἄλλοτε τὸν τίτλον τῆς κομιτείας, περιῆλθε δὲ μετὰ τῆς Μπρὲς καὶ τῆς χώρας τοῦ Γκὲξ εἰς τὴν Γαλλίαν, κατόπιν τῆς συνθήκης τῆς Λυὼν (1601). Πρωτεύουσα *Μπελλέ*. Χ. Δ.

**Μπυζενβὰλ** (Buzenval) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σὲν-ἑ-Ουάζ, ἐγγὺς τῶν Παρισίων.

—*[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὴν πολιορκίαν τῶν Παρισίων, διαρκοῦντος τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου 1870—1871, ἀπεφασίσθη ὅπως τὴν 19ην Ἰανουαρίου 1871 ἐκτελεσθῇ μεγάλη γαλλικὴ ἔξοδος πρὸς τὴν κατεύθυνσιν τοῦ *Μπυζενβάλ*. Ἡ ἔξοδος αὕτη ἐπρόκειτο νὰ γίνῃ τὴν πρωΐαν διὰ τριῶν φαλάγγων: τῆς δεξιᾶς τοῦ στρατηγοῦ Ντυκρὸ ἐκ 35.000 ἀνδρῶν, τῆς κεντρικῆς τοῦ στρατηγοῦ Μπελμὰρ ἐκ 34.000 ἀνδρῶν, τῆς ἀριστερᾶς τοῦ στρατηγοῦ Βινουὰ ἐξ 20.000 ἀνδρῶν· αἱ φάλαγγες αὗται θὰ ἐπροχώρουν εἰς τὰς ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαινομένας κατευθύνσεις, ἡ δὲ ἐξόρμησις των πρὸς ἐπίθεσιν θὰ ἐγίνετο συγχρόνως τὴν 6,30 ὥραν. Λόγῳ ὅμως τοῦ συμφυρμοῦ τῶν διαφόρων μονάδων εἰς τὰς γεφύρας τοῦ Σηκουάνα, δὲν ἐπετεύχθη ὁ συγχρονισμός, οὕτω δὲ μόνον ἡ φάλαγξ τοῦ ἀριστεροῦ εὑρέθη εἰς τὴν θέσιν ἐξορμήσεως τὴν ὡρισμένην ὥραν, ἐνῷ ἡ κεντρικὴ ἐξώρμησε τὴν 9ην καὶ ἡ δεξιὰ τὴν 10ην. Ὑπὸ τοὺς ὅρους τούτους ἡ γαλλικὴ ἐπίθεσις ἀπέτυχεν, ἀνακοπεῖσα περὶ τὴν 15ην ὥραν, ὁπότε ἐπεζήτησαν οἱ Γερμανοὶ ν' ἀντεπιτεθῶσιν, ἵνα διαρρήξωσι τὸ γαλλικὸν

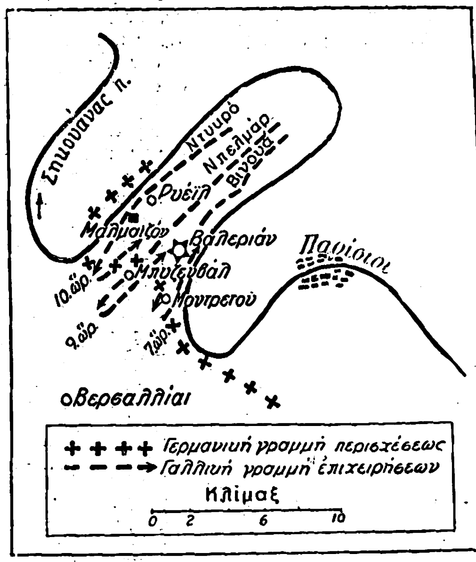


*Μάχη Μπυζενβὰλ 19 Ἰανουαρίου 1871.*

μέτωπον, ἀλλὰ δὲν τὸ κατώρθωσαν. Τὴν 19ην ὥραν τῆς ἰδίας ἡμέρας διετάχθη ἡ ἀναστροφὴ τῶν γαλλικῶν στρατευμάτων καὶ ἡ ἐπιστροφὴ των ἐντὸς τοῦ περιχεχαρακωμένου στρατοπέδου τῶν Παρισίων. Ν. Θ. Κ.

**Μπυζὸ** (Buzot), ***Φραγκῖσκος-Νικόλαος-Λεονάρδος***. Γάλλος πολιτικός (1760—1794). Ἐκλεγεὶς πληρεξούσιος εἰς τὴν γαλλικὴν ἐθνοσυνέλευσιν, διεκρίθη ἀμέσως ὡς δεινὸς ῥήτωρ καὶ ἐγένετο εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῶν Γιρονδίνων, κατηγορήσας τὸν Ροβεσπιέρρον ὡς ἐπιδιώκοντα τὴν δικτατορίαν. Ἐπικηρυχθεὶς τὴν 31 Μαΐου 1793 μετὰ τῶν λοιπῶν Γιρονδίνων ὡς ὁμοσπονδιακός, μετέβη εἰς Καλβαντός, ὅπως ἐξεγείρῃ τὸ διαμέρισμα τοῦτο, ἀποτυχὼν δὲ κατέφυγεν εἰς Γιρόνδην, ὅπου καὶ ἐφονεύθη. Θ. Β.

**Μπυζὼ ντὲ λὰ Πικοννερὶ** (Bugeaud de la Piconnerie), ***Θωμᾶς-Ροβέρτος***, *δοὺξ ντ' Ἰσλύ*. Γάλλος στρατάρχης (1784—1849). Τέκνον οἰκογενείας ἀφοσιωθείσης εἰς τὴν καλλιέργειαν τῆς γῆς, ἔζησε καὶ αὐτὸς ὡς ἀγρότης, χωρὶς ν' ἀκολουθήσῃ ἰδιαιτέρας σπουδάς. Καταταχθεὶς εἰς τὸν στρατόν, παρέμεινεν ἐπὶ ἀρκετὸν χρόνον ὡς δεκανεύς. Μετασχὼν ὅμως τῶν ἐκστρατειῶν τῆς Πρωσσίας καὶ Πολωνίας καὶ τραυματισθεὶς προήχθη εἰς ἀξιωματικόν, τῷ δὲ 1814 ἐγένετο συνταγματάρχης. Μετὰ τὴν παλινόρθωσιν, περιπεσὼν εἰς δυσμένειαν, ἀπεβλήθη τοῦ στρατεύματος καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὰς προσφιλεῖς του ἀγροτικὰς ἐργασίας. Ὅτε ἐξεθρονίσθη ὁ Κάρολος Ι' (1830) ἐπανῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν μὲ τὸν βαθμὸν τοῦ ὑποστρατήγου καὶ ἐξελέγη βουλευτής. Ἐδέχθη τὴν ἐντολὴν νὰ φρουρήσῃ τὴν δεσμώτιδα δούκισσαν ντὲ Μπερὺ εἰς τὸ φρούριον Blaye, ἐφόνευσε δὲ εἰς μονομαχίαν τὸν βουλευτὴν Ντυλόνι, ὀνομάσαντα αὐτὸν δεσμοφύλακα τῆς δουκίσσης. Ἀποσταλεὶς εἰς Ἀλγερίαν τῷ 1836, ἐνίκησε τὸν ἐμίρην Ἄμπτ-ἐλ-Καντὲρ καὶ ὑπέγραψε μετ' αὐτοῦ συνθήκην (1837). Τῷ 1840, διορισθεὶς γενικὸς διοικητὴς τῆς Ἀλγερίας, ἀπώθησε τὸν Ἄμπτ-ἐλ-Καντὲρ εἰς Μαρόκκον καὶ ἐνίκησε τοὺς Μαροκκινοὺς κατὰ κράτος εἰς Ἰσλύ, διὸ καὶ προήχθη εἰς στρατάρχην, τῷ ἀπενεμήθη δὲ ὁ τίτλος τοῦ δουκός. Τεθεὶς κατὰ τὰς ἡμέρας τῶν ταραχῶν τοῦ 1848 ἐπὶ κεφαλῆς τῆς φρουρᾶς τῶν Παρισίων, δὲν ἠδυνήθη νὰ στηρίξῃ εἰς τὸν θρόνον τὸν Λουδοβῖκον-Φίλιππον. Συνέγραψε διάφορα ἔργα, εἰς δὲ τὸ Ἀλγέριον ἐστάλη ὁ ἀνδριάς του τῷ 1852. Θ. Β.

**Μπυϊσσὸν** (Buisson), ***Φερδινάνδος***. Γάλλος παιδαγωγὸς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1841 ἐν Παρισίοις. Τῷ 1878 διωρίσθη γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς δημοτικῆς ἐκπαιδεύσεως, τῷ 1879 διευθυντὴς ταύτης παρὰ τῷ ὑπουργείῳ Παιδείας καὶ ἀπὸ τοῦ 1896—1906 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς παιδαγωγικῆς ἐν Σορβόννῃ. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν ὑπερμάχων τῶν ἐκπαιδευτικῶν μεταρρυθμίσεων, ὑπὲρ τῶν ὁποίων καὶ ἠγωνίσθη, ἔγραψε δέ, ἐκτὸς ἄλλων, «Λεξικὸν παιδαγωγικῆς» (1882—1893, 6 τ.). Γ. Ε. Κ.

**Μπύκκεμπουργκ** (Bückeburg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, πρωτεύουσα τοῦ ἐλευθέρου κράτους Σάουμπουργ-Λίππε. Κάτ. 5.580. Ἔχει τρία ἀνάκτορα, γυμνάσιον, πρακτικὸν λύκειον, κρατικὴν βιβλιοθήκην μὲ 70.000 τόμους, θέατρον κ. τ. λ. Γ. Θ. Κ.

**Μπύκκινγκ** (Bücking), ***Οὖγος***. Γερμανὸς γεωλόγος, γεννηθεὶς τῷ 1851. Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν Στρασβούργῳ, τῇ ἀρωγῇ δὲ τῆς Βασιλικῆς Πρωσσικῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν κατῆλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα μετὰ τοῦ R. Lepsius, πρὸς μελέτην τῶν κρυσταλλοσχιστωδῶν πετρωμάτων τῆς Ἀττικῆς. Τὰ πορίσματα τῶν ἐρευνῶν του ἐδημοσίευσεν ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Die Kristallinischen Schiefer von Attika» (1881), «Über die Lagerungsverhältnisse der älteren Schichten in Attika» (Litz. der Königl. pr. Akad. der Wiss. 1882, σ. 749 καὶ 1883 σ. 669), παρασχὼν οὕτω σπουδαίαν συμβολὴν εἰς τὴν γεωλογίαν τῆς Ἀττικῆς, τὴν ὁποίαν συνεπλήρωσε βραδύτερον ὁ Lepsius. Ἀσχοληθεὶς καὶ εἰς καθαρῶς πετρολογικὰς ἐρεύνας, ἔγραψε: «Augitandesite in d. südl. Rhön u. Wetterau» (1878), «Die Basalte und Phonolithe der Rhön i. Verbrei. u. chem. Zusammensetzung» (1910) κ.ἄ. Γ. Θ.

**Μπύλερ** (Bühler), ***Γεώργιος***. Γερμανὸς ἰνδολόγος (1837—1898). Διωρίσθη κατ' ἀρχὰς καθηγητὴς τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν ἐν τῷ κολλεγίῳ Ἐλφινστον τῆς Βομβάης, βραδύτερον δ' ἐγένετο διευθυντὴς τῶν σανσκριτικῶν σπουδῶν ἐν Πούνᾳ (1866), ὅπου περισυνέλεξε πλεῖστα ἰνδικὰ χειρόγραφα. Ἐπιστρέψας εἰς τὴν Εὐρώπην, διωρίσθη καθηγητὴς τῆς σανσκριτικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης, συγχρόνως δ' ἐξελέγη ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς ἐν Παρισίοις Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν. Ἔγραψε διάφορα ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὴν λογοτεχνίαν, φιλοσοφίαν καὶ νομοθεσίαν τῶν Ἰνδῶν καὶ ἐξέδωκε τὴν «Παντσατάντρα», «Ἀπαστάμπα-Νταρμασοῦτρα», «Ντάτσα-κουμαρατσάριτα» κ.ἄ. Λ. Ι.

**Μπύλμαν** (Bühlmann) ***Ἰωσήφ***. Ἑλβετὸς ἀρχιτέκτων, γεννηθεὶς τῷ 1844. Διετέλεσεν ἐπὶ πολλὰ ἔτη καθηγητὴς τῆς ἀρχιτεκτονικῆς ἐν τῷ Πολυτεχνείῳ τοῦ Μονάχου. Ἐκ τῶν κυριωτέρων ἔργων του εἶναι τὸ μέγα «Πανόραμα τῆς Ρώμης κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Μ. Κωνσταντίνου», ἐν τῷ Πολυτεχνείῳ τοῦ Μονάχου, ὅπερ ἐξετέλεσε μετὰ τοῦ Ἀλ. Βάγνερ. Μεταξὺ τῶν πολλῶν συγγραμμάτων του τὸ σημαντικώτερον εἶναι «Ἡ ἀρχιτεκτονικὴ τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος» (1904, γ' ἔκδ.). Μ. Δ. Β.

**Μπυλὸ** (Byloz), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος λόγιος (1803—1877), διακριθεὶς διὰ τὸ βαθὺ κριτικόν του πνεῦμα. Διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1831 μέχρι τοῦ θανάτου του διευθυντὴς τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τῶν δύο Κόσμων», τὴν ὁποίαν ἀνήγαγεν εἰς ἐξαίρετον περιωπήν, καὶ τῆς «Ἐπιθεωρήσεως τῶν Παρισίων» ἀπὸ τοῦ 1835—1845. Ἀναλαβὼν τὴν διεύθυνσιν τοῦ Γαλλικοῦ θεάτρου (1838—1848), ἀνεβίβασεν εἰς αὐτὸ ἔργα τοῦ Οὐγκὼ καὶ τοῦ Μυσσέ. Γ. Ε. Κ.

**Μπύλοβ** (Bülow), ***Βερνάρδος-Ἐρρῖκος-Κάρολος***, *πρίγκιψ φὸν* —. Ἐπιφανὴς Γερμανὸς πολιτικὸς (1849—1919), γεννηθεὶς ἐν Κλάϊν-Φλόττμπεκ

*Βερνάρδος Μπύλοβ.*

παρὰ τὴν Ἄλτοναν. Νεαρώτατος συμμετέσχεν, ὡς ἐθελοντής, τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου (1870—1871). Διετέλεσεν ἐπί τινα χρόνον ὑπάλληλος ἐν Ἀλσατίᾳ καὶ Λωρραίνῃ, τῷ δὲ 1874 εἰσῆλθεν εἰς τὴν διπλωματίαν. Ἐχρημάτισε διαδοχικῶς ἀκόλουθος τῆς ἐν Ρώμῃ πρεσβείας, γραμματεὺς τῶν πρεσβειῶν Πετρουπόλεως καὶ Βιέννης, κατὰ δὲ τὴν ἐν τῇ Ἀνατολῇ κρίσιν τοῦ 1877 διπλωματικὸς πράκτωρ ἐν Ἀθήναις. Τῷ 1879 ἀπεστάλη εἰς Παρισίους ὡς γραμματεὺς τῆς ἐκεῖ γερμανικῆς πρεσβείας, τῷ δὲ 1885 εἰς τὴν Πετρούπολιν ὑπὸ τὴν ἰδιότητα συμβούλου πρεσβείας. Κατὰ τὴν διαμονήν του ἐν τῇ ῥωσικῇ πρωτευούσῃ συνεζεύχθη τὴν Μαρίαν Μπεκκαντέλι ντὶ Μπολόνια, ἐκ τῆς ἰταλικῆς πριγκιπικῆς οἰκογενείας Καμπορεάλε. Τῷ 1888 ὠνομάσθη πληρεξούσιος ὑπουργὸς ἐν Βουκουρεστίῳ, τῷ δὲ 1894 πρεσβευτὴς ἐν Ρώμῃ, ὅπου αἱ συγγένειαι καὶ αἱ ὑψηλαὶ σχέσεις τῆς συζύγου του ἀπετέλουν εὐμενὲς περιβάλλον διὰ τὴν ἀποστολὴν αὐτοῦ. Τῷ 1897 διωρίσθη ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ὑπὸ τὸν ἀρχικαγκελλάριον Χοενλόε. Διετέθη δυσμενῶς εἰς τὴν σύναψιν ἀγγλογερμανικῆς συμμαχίας κατὰ τὰς γενομένας διαπραγματεύσεις τῶν ἐτῶν 1898 καὶ 1901 μεταξὺ τῶν δύο χωρῶν καὶ ἐν τέλει ἠρνήθη κατηγορηματικῶς νὰ προέλθῃ εἰς οἱανδήποτε συμφωνίαν, δικαιολογηθεὶς ὅτι ἡ Μεγάλη Βρεττανία θὰ περιέπλεκε τὴν Γερμανίαν εἰς πολεμικὸν ἀγῶνα κατὰ τῆς Ρωσίας. Τὸν Νοέμβριον τοῦ 1897, μετὰ τὴν δολοφονίαν δύο Γερμανῶν ἱεραποστόλων ἐν Κίνᾳ, ὁ Μπύλοβ ἔδωσεν ἐντολήν, ὅπως γερμανικὴ μοῖρα καταλάβῃ τὸ Κιάο-Τσάο, ὅπερ βραδύτερον ἡ Κίνα ἐξεμίσθωσεν εἰς τὴν Γερμανίαν (5 Ἰανουαρίου 1898). Τῷ 1899 ἐπέτυχε παρὰ τῆς Ἰσπανίας, μετὰ τὸν ἀτυχῆ αὐτῆς πόλεμον ἐναντίον τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς, νὰ παραχωρήσῃ εἰς τὴν Γερμανίαν τὸ ἀρχιπέλαγος τῶν Καρολινῶν, ὅπερ πρὸ 14 ἐτῶν εἰς μάτην προσεπάθησεν ὁ Μπίσμαρκ ν' ἀποσπάσῃ. Ὁ Μπύλοβ ἔλαβε, λόγῳ τῆς ἐπιτυχίας ταύτης, τὸν τίτλον τοῦ κόμητος. Τὸν Ὀκτώβριον τοῦ 1900 διεδέχθη τὸν πρίγκιπα Χοενλόε ὡς ἀρχικαγκελλάριος καὶ πρόεδρος τοῦ ὑπουργικοῦ συμβουλίου τῆς Πρωσσίας. Αἱ σχέσεις αὐτοῦ μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος Γουλιέλμου Β' ὑπῆρξαν ἐπὶ χρόνον μακρὸν φιλικώταται. Ἡ ἐξωτερικὴ

Digitized by Google

ιολιτική τοῦ Μπύλοβ ὑπῆρξεν εὔστροφος καὶ ἐπιιεξία ὡς πρὸς τὰς λεπτομερείας, ἀλλ' ἐστερεῖτο ιχεδίου ὀργανικοῦ. Κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸν Μπίσιαρκ, δὲν ὑπῆρξεν ἱκανὸς νὰ θέσῃ χαλινὸν εἰς ούς στρατιωτικοὺς κύκλους καὶ ἀφῆκε νὰ πραματοποιηθῇ τὸ πρόγραμμα τῶν ναυτικῶν ἐξο:λισμῶν, οἵτινες ὑπῆρξαν ἀφορμή, ὅπως ἐντα:ιῶσιν αἱ ἀγγλογερμανικαὶ σχέσεις ἐπικινδύνως. Ὅτε ὁ Ντελκασέ, ἐνθαρρυνθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἐδουάρου Ζ' τῆς Ἀγγλίας, ἐπεδίωξε νὰ ἐξασφαλίσῃ τὴν αλλικὴν ἐπικυριαρχίαν εἰς τὸ Μαρόκκον, ἀδιαφοῶν διὰ τὴν στάσιν τῆς Γερμανίας, ὁ Μπύλοβ ἐπεέβη δραστηρίως καὶ παρώτρυνε τὸν αὐτοκράτορα ὰ ἐπισκεφθῇ τὴν Ταγγέρην (31 Μαρτίου 1905), ιὰ τῆς ἐν γένει δὲ πολιτικῆς του ἐπέτυχε τὴν ἀπο:άκρυνσιν τοῦ Ντελκασὲ (6 Ἰουνίου), ἡ παράτολ.ος πολιτικὴ τοῦ ὁποίου εἶχεν εὕρει καὶ εἰς αὐτὴν ὴν Γαλλίαν σοβαρὰν ἀντίδρασιν. Ὁ διαδεχθεὶς όν Ντελκασὲ Ρουβιὲ διεπνέετο ὑπὸ τῶν εὐμενεστέρων διαθέσεων πρὸς τὴν Γερμανίαν καὶ ἐπεθύ.ει νὰ προέλθῃ εἰς συμφωνίαν μετ' αὐτῆς· ἀλλ' ὁ Ἰπύλοβ δὲν ἐπωφελήθη τῆς εὐκαιρίας, ἀλλ' ἐπέεινεν εἰς τὴν συγκρότησιν διεθνοῦς συνεδρίου, περ συνῆλθεν ἐν Ἀλγεθίρας, αὐτὸς δ' ἐξηκολούησε νὰ κατακρίνῃ τὴν ἐν Μαρόκκῳ ἐνέργειαν ῆς Γαλλίας. Ἀλλ' ἔχανε καθημερινῶς ἔδαφος αὶ τέλος ἐγένετο αἰτία, ὅπως συσφιγχθῶσιν ἔτι ἄλλον οἱ δεσμοὶ τῆς Γαλλίας μετὰ τῆς Μεγάλης ιρεττανίας. Ἐπ' εὐκαιρίᾳ τῶν γάμων τοῦ διαδόου τοῦ γερμανικοῦ θρόνου ὁ Μπύλοβ ἐτιμήθη διὰ οῦ τίτλου τοῦ πρίγκιπος, τοῦτο δ' ἐγένετο ἀκριῶς τὴν ἡμέραν, καθ' ἣν ὑπέβαλε τὴν παραίτησίν ου ὁ Ντελκασέ. Κατὰ τὴν προκληθεῖσαν κρίσιν ῷ 1908, λόγῳ τῆς προσαρτήσεως τῆς Βοσνίας καὶ ῆς Ἑρζεγοβίνης ὑπὸ τῆς Αὐστρίας, ὁ Μπύλοβ πεστήριξεν αὐτήν, διὰ δὲ τῆς ἐνεργοῦ ἐπεμβάεώς του ἠνάγκασε τὸν Ρῶσον ὑπουργὸν τῶν Ἐξωερικῶν Ἰσβόλσκι νὰ ὑποχωρήσῃ καὶ ν' ἀναγνωρίσῃ ) τετελεσμένον γεγονός. Ὁ Μπύλοβ ἐκαλλιέργησε ὴν τριπλῆν Συμμαχίαν, καίτοι ἦτο ἐνήμερος τῶν εγονότων, ἅτινα καθημερινῶς ἐξησθένουν τὴν ότητα αὐτῆς. Εν τῇ ἐσωτερικῇ πολιτικῇ ἐπέειξε πολιτικὴν εὐστροφίαν ἔναντι τῶν διαφόρων ομμάτων. Τῷ 1906, μετὰ τὴν μετάστασιν τοῦ έντρου εἰς τὴν ἀντιπολίτευσιν, ἵδρυσε τὴν ὁμάδα ῶν συντηρητικῶν καὶ τῶν φιλελευθέρων, ἥτις ιτὰ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐπλειοψήφησε. Κατ' Ὀτώβριον τοῦ 1908 ὁ Γουλιέλμος Β' ἔδωκε συνένευξιν πρὸς Ἄγγλον δημοσιογράφον, σχετικὴν πρὸς ὰς ἀγγλογερμανικὰς σχέσεις, ἥτις ἐνεποίησεν ὀδυηρὰν ἐντύπωσιν εἰς τὸ γερμανικὸν κοινόν, διατειμένον ἤδη δυσμενῶς πρὸς τὸν αὐτοκράτορα, όγῳ τῶν ἀποκαλύψεων τοῦ Χάρντεν διὰ τὸ σκάνιλον τῆς στρογγύλης τραπέζης. Ὁ Μπύλοβ, ὅστις αβε γνῶσιν τῆς συνεντεύξεως ἐκ τῶν ὑστέρων, ν ἠδυνήθη νὰ καλύψῃ τὸν αὐτοκράτορα εἰς τὸ αἴχσταγ. Ἐπὶ πλέον δέ, κατά τινα στιχομυθίαν ετ' αὐτοῦ, ἐζήτησε πληροφορίας περὶ τῆς ἐν τῷ ἑλλοντι προσωπικῆς του ἀναμίξεως εἰς τὴν πολιιν. Ὁ Γουλιέλμος, καιρίως θιγείς, διετήρησε μὲν ν Μπύλοβ εἰς τὴν θέσιν του, δὲν ἠθέλησεν ὅμως ι ἔχῃ μετ' αὐτοῦ εἰς τὸ ἑξῆς εἰμὴ μόνον καθαῶς ὑπηρεσιακὰς σχέσεις. Κατὰ τὸ 1909 τὸ Ράϊχαγ κατεψήφισε κυβερνητικὸν νομοσχέδιον, ἀφοῶν τὴν ἐπιβολὴν φορολογίας ἐπὶ τῶν κληρονοῶν. Ὁ Μπύλοβ ὑπέβαλε παραίτησιν, ἣν ὁ Γουέλμος δεχθεὶς ὥρισεν ὡς ἀντικαταστάτην του ν Μπέτμαν-Χόλβεκ.

Κατὰ τὸ τέλος τοῦ 1914 ὁ Μπύλοβ ἐδέχθη νὰ αλῇ ὡς πρεσβευτὴς εἰς Ρώμην, ὅπως προλάβῃ τὸν ιλεμον τῆς Ἰταλίας ἐναντίον τῶν κεντρικῶν αὐκρατοριῶν. Δὲν ἐπέτυχεν ὅμως εἰς τὴν ἀποστον του ταύτην. Τῷ 1917, ὅτε ἐπρόκειτο ν' ἀντιτασταθῇ ὁ Μπέτμαν-Χόλβεκ, ἐγένετο λόγος περὶ ῦ Μπύλοβ, ἡ ὑποψηφιότης τοῦ ὁποίου ἦτο εὐπρόσδεκτος τόσον εἰς τοὺς στρατιωτικοὺς ὅσον καὶ εἰς ὰς κοινοβουλευτικοὺς κύκλους. Ἀλλ' ἡ πρὸς αὐν ἀποστροφὴ τοῦ Γουλιέλμου καὶ ἡ ἐναντίον του οκατάληψις τῆς Αὐστρίας συνέβαλον εἰς τὴν ματίωσιν τοῦ διορισμοῦ του ὡς ἀρχικαγκελλαρίου. ῷ 1916 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον «Deutsche Poli:» (=Ἡ γερμανικὴ πολιτική), ἐν ᾧ ἐπικρίνει τοὺς ιδόχους του, μὴ δυνηθέντας ν' ἀποσοβήσωσι τὸν ταστρεπτικὸν πόλεμον, εἰς ὃν περιεπλάκη ἡ Γερνία. Μετὰ τὴν σύναψιν τῆς εἰρήνης ἐπεσκέφθη χνάκις τὴν Ἰταλίαν, διερχόμενος τὸν χειμῶνα εἰς ν ἐν Ρώμῃ ἔπαυλίν του «Μάλταν», ὅπου καὶ ἀπεσεν. Ὁ Μπύλοβ συνέγραψεν «Ἀπομνημονεύματα» 4 τόμους, ἅτινα εἶναι ἐνδιαφέροντα κυρίως τὰ κεφάλαια, δι' ὧν χαρακτηρίζει τὸν αὐτοκράρα Γουλιέλμον Β'. Ὁ Γουλιέλμος, λέγει, εἶναι αθὸς καὶ συμπαθητικὸς ἐκ πρώτης ὄψεως. Συικις ἐνεργῶν αὐθορμήτως καὶ ἐπιπολαίως, μεβάλλει τὴν ὁμαλὴν πορείαν τῶν πραγμάτων ἐπιδύνως. Ὁ Μπύλοβ ζητεῖ παρὰ τοῦ μονάρχου νον «ἀρνητικὴν βοήθειαν», ἤτοι νὰ μὴ ὁμιλῇ, ἀλλ' ριβῶς ἡ σιωπὴ εἶναι ἀδύνατος διὰ τὸν Γουλιέλν. Ἀπὸ τοῦ 1897 μέχρι τοῦ 1902 παρουσιάσθηεἰς τὸν Γουλιέλμον Β' πλεῖσται εὐκαιρίαι νὰ λήσῃ, ἑκάστη ὅμως τῶν ὁμιλιῶν του εἶχε καταρεπτικὰς συνεπείας. Κατὰ τὸν Ἱσπανοαμερικανι πόλεμον ὁ Μπύλοβ ἠναγκάσθη νὰ τὸν συγκρατήσῃ, ἵνα μὴ διαδηλώσῃ τὰ ἀντιαμερικανικὰ του αἰσθήματα. Ὅτε μετέβη εἰς Κίελον, ὅπως ἀποχαιρετίσῃ τὸν ἀδελφόν του Ἐρρῖκον, ἀπερχόμενον εἰς Κίναν, ἐξώρκισεν αὐτὸν νὰ πατάξῃ πάντα, ὅστις θὰ ἐτόλμα νὰ θίξῃ τὴν Γερμανίαν ὁπωσδήποτε. Κατὰ τὸν πόλεμον τοῦ Τρανσβάαλ, λησμονῶν τὸ πρὸς τὸν Κροῦγερ φιλικὸν καὶ ἐνθαρρυντικὸν τηλεγράφημά του, καὶ δὴ καθ' ἣν ὥραν ἡ κοινὴ γνώμη ἐν Γερμανίᾳ ἐμαίνετο ἐναντίον τῶν Ἄγγλων, ἐξεδήλωσε φιλικώτατα αἰσθήματα πρὸς τὴν Ἀγγλίαν. Κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Κίνας (1900) ἔδωσεν εἰς τὸ πλήρωμα τῆς ἐκεῖ ἀποσταλείσης γερμανικῆς μοίρας ἐντολὴν ν' ἀκολουθήσῃ τὸ παράδειγμα τῶν Οὔννων τοῦ Ἀττίλα: νὰ μὴ ἀφήσῃ πέτραν ἐπὶ πέτρας. Οἱ λόγοι τοῦ Γερμανοῦ αὐτοκράτορος συνεκίνουν καὶ ἐξηρέθιζον ὁλόκληρον τὴν ὑφήλιον. Καὶ ὅμως ὁ Γουλιέλμος Β', λέγει ὁ Μπύλοβ, ἠγάπα τὴν εἰρήνην περισσότερον παντὸς Γάλλου ἢ Ἄγγλου εἰρηνοποιοῦ, ἀλλ' οἱ λόγοι καὶ αἱ χειρονομίαι του δὲν ἀνταπεκρίνοντο πρὸς τὸ εἰλικρινέστατον τοῦτο αἴσθημά του. Συχνάκις ἐξεφώνει τοὺς ἀπειλητικοὺς λόγους του, ἵνα ἀποκρύψῃ τὴν ἰδίαν αὐτοῦ ἀγωνίαν. Αἱ ἰδέαι τοῦ Γουλιέλμου ἦσαν συχνάκις ὀρθαὶ καὶ σοφαί, ἀλλ' ὁ μονάρχης ἔσφαλλεν ὡς πρὸς τὴν ἐκλογὴν τῶν μέσων, δι' ὧν αὗται θὰ ἠδύναντο νὰ πραγματοποιηθοῦν. Ὁ Γουλιέλμος ἐκυμαίνετο μεταξὺ αἰσιοδοξίας καὶ ἀπαισιοδοξίας ὑπερμέτρου, ἐφοβεῖτο δὲ πάντοτε μήπως φανῇ κατώτερος τῶν συμβούλων του, τῶν ὑπουργῶν του, τῶν στρατηγῶν καὶ τῶν ναυάρχων του. Γενικῶς εἰπεῖν, ὁ Γουλιέλμος εἶχε πολλὰς ἀρετάς, ἀλλ' ἐστερεῖτο ἀκριβῶς ἐκείνων, αἵτινες εἶναι διὰ τοὺς μονάρχας ἀπαραίτητοι. «Συχνάκις, ἐπάγεται ὁ Μπύλοβ, ἀνησύχησα διὰ τὴν πνευματικὴν ἰσορροπίαν τοῦ μονάρχου, ἡ ἀνησυχία μου δ' αὕτη ὑπῆρξεν εἷς τῶν λόγων, δι' οὓς κατηύθυνα τὴν πολιτικήν μου πρὸς τὴν εἰρήνην. Ἤμην βέβαιος ὅτι ὁ Γουλιέλμος δὲν ἦτο ἱκανὸς νὰ ὑπομείνῃ τὰς μεταβολὰς τῆς τύχης καὶ τὴν βαρεῖαν δοκιμασίαν τῶν εὐθυνῶν ἑνὸς μεγάλου πολέμου, εἶχον δὲ τὴν πεποίθησιν ὅτι καὶ ὁ ἴδιος διῃσθάνετο τοῦτο, διὸ καὶ ηὔχετο ἑκάστοτε εἰλικρινέστατα, ὅπως ὁ μέγας πόλεμος ἀποσοβηθῇ».

Πλὴν τῶν ἀνωτέρω ἔργων, ὁ Μπύλοβ ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἑξῆς: «Λόγοι» (1903—1909), «Deutschland und die Mächte vor dem Krieg in amtlichen Schriften» (1929), «Wilhelm II, Ereignisse und Gestalten» (1922).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *R. Martin*, «Fürst Bülow und Kaiser Wilhelm II» (Λειψία 1909).— *A. Tardieu*, «Le prince de Bülow» (Παρίσιοι 1909).— *Spickernagel*, «Fürst Bülow» (Ἀμβοῦργον 1921).— *Haller*, «Die Ara Bülow's» (Στουτγάρδη 1922).— *Eschenberg*, «Die Kaiserreich am Scheideweg-Bassermanu, Bülow und der Block» (Βερολῖνον 1909).

Α. ΔΑΛΕΖΙΟΣ

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Ἐρρῖκος***, *βαρῶνος φὸν*—. Πρῶσσος διπλωμάτης (1792—1846). Τῷ 1817 συνώδευσε τὸν Γουλιέλμον Οὐμβόλδον εἰς Λονδῖνον, ὡς γραμματεὺς τῆς ἐκεῖ πρωσσικῆς πρεσβείας, τῷ δὲ 1827 διωρίσθη πρεσβευτὴς εἰς τὴν ἀγγλικὴν πρωτεύουσαν. Ὡς τοιοῦτος διεδραμάτισε σημαντικώτατον πρόσωπον κατὰ τὰ συνέδρια τ' ἀφορῶντα εἰς τὸ βελγικὸν καὶ τὸ ἀνατολικὸν ζήτημα, κατὰ τὴν σύνταξιν τοῦ συμφώνου τῶν τεσσάρων Δυνάμεων (15 Ἰουλίου 1840) ἐναντίον τῆς ἐν τῇ Ἀνατολῇ πολιτικῆς τῆς Γαλλίας, ὡς καὶ κατὰ τὴν σύναψιν τῆς ἐμπορικῆς συμβάσεως μεταξὺ τῆς Ἀγγλίας καὶ τῆς γερμανικῆς τελωνειακῆς ἑνώσεως.

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Κάρολος*** *φὸν*—. Γερμανὸς στρατηγὸς (1846—1921). Ἔλαβε μέρος εἰς τὸν πόλεμον τοῦ 1866 καὶ τὸν Γαλλογερμανικὸν (1870—1871). Ἀπὸ τοῦ 1903 μέχρι τοῦ 1912 ἦτο ἀρχηγὸς τοῦ τρίτου σώματος στρατοῦ, κατὰ δὲ τὴν ἔκρηξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀρχηγὸς καὶ γενικὸς ἐπιθεωρητὴς τῆς τρίτης στρατιᾶς. Βραδύτερον, ἀναλαβὼν τὴν ἀρχηγίαν τοῦ δευτέρου σώματος στρατοῦ, διηύθυνε τὴν ἐπίθεσιν ἐν Λύττιχ, ὡδήγησε τὴν πρώτην καὶ τὴν δευτέραν στρατιὰν διὰ τοῦ Βελγίου, ἐνίκησε τὴν 24 Αὐγούστου παρὰ τὸ Ναμύρ, ἐκάλυψε μετὰ τοῦ Κλοὺκ τὴν ὑποχώρησιν πρὸς τὴν Αἴν, τὸν δὲ Ὀκτώβριον τοῦ 1914 ὑπερήσπισε τὸ παρὰ τὸν ποταμὸν τοῦτον γερμανικὸν μέτωπον. Ἀπὸ τοῦ 1915 ἀρχιστράτηγος, ἐτέθη τῷ 1916 εἰς ἀποστρατείαν. Ἔγραψεν: «Ἡ ἔκθεσίς μου περὶ τῆς μάχης τῆς Μάρνης» (1919).

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Κάρολος-Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς λογοτέχνης (1803—1853). Τὴν φήμην αὐτοῦ ὀφείλει εἰς τὸ «Novellenbuch» (4 τόμοι, Λειψία 1834—1836), ὅπερ περιέχει ἑκατὸν διηγήματα, συνταχθέντα ἐπὶ τῇ βάσει παλαιῶν ἰταλικῶν, ἱσπανικῶν, γαλλικῶν, ἀγγλικῶν, λατινικῶν καὶ γερμανικῶν κειμένων, εἰς τὸ «Neues Novellenbuch» καὶ εἰς τὰ πρωτότυπα διηγήματά του. Πλὴν τούτων ἐξέδωκε τὰς ἐπιστολὰς τοῦ Κλάϊστ, τὴν αὐτοβιογραφίαν τοῦ Ἑλβετοῦ Οὐλερίχου Μπραΐκερ κ.τ.λ.

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Μαργαρίτα*** *φὸν*—. Γερμανὸς διηγηματογράφος (1860—1884). Τῷ 1884, θελήσασα νὰ σώσῃ παῖδα πεσόντα εἰς τὴν παρὰ τὸ Βερολῖνον λίμνην Ρούμμελσμπουργ, εὗρεν οἰκτρὸν θάνατον. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτῆς ἄξια μνείας εἶναι: «Διηγήματα» προλογισθέντα ὑπὸ τοῦ Ἰουλιανοῦ Σμίτ, «Νέα διηγήματα», «Ἰωανᾶς Μπρίτσιους» καὶ «Κύριος εἰς τὸ σπιτικό του».

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Ντίντριχ-Ἀδὰμ-Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς στρατιωτικὸς συγγραφεὺς (1757—1807). Συμμετέσχεν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Σαϊνφελντ εἰς τὴν καταστολὴν τῆς ἐπαναστάσεως τῶν Κάτω Χωρῶν. Ἔγραψε: «Τὸ πνεῦμα τοῦ νέου πολεμικοῦ συστήματος» (Ἀμβοῦργον 1798), «Τὰ δόγματα τοῦ νέου πολέμου» (Βερολῖνον 1805), τὰς πραγματείας: «Ὁ πρίγκιψ Ἐρρῖκος τῆς Πρωσσίας, κριτικὴ ἱστορία τῶν ἐκστρατειῶν αὐτοῦ» (2 τόμοι, αὐτόθι 1805) καὶ «Πῶς πρέπει νὰ εἶναι ἡ νέα τακτική» (2 τόμοι, Λειψία 1805). Ὁ Μπύλοβ ἐξέδωκε μετὰ τοῦ Μπέρενχορστ, τοῦ Βεντουρίνι, τοῦ Φὸς καὶ τοῦ Ρέτσοβ τὰ «Χρονικὰ τοῦ πολέμου». Τὸ ἔργον του «Ἡ ἐκστρατεία τοῦ 1805» (2 τόμοι, Λειψία 1806) ἐγένετο ἀφορμή, ὥστε νὰ ριφθῇ εἰς τὰς φυλακὰς κατ' ἀπαίτησιν τοῦ πρεσβευτοῦ τῆς Ρωσίας, ἀπέθανε δὲ εἰς τὰς φυλακὰς τῆς Ρίγας. Τὰ ἔργα τοῦ Μπύλοβ ἐξήσκησαν μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς πολεμικῆς τέχνης.

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Ὄθων*** *φὸν*—. Γερμανὸς διπλωμάτης (1827—1901). Τῷ 1857 εἰσῆλθεν εἰς τὸ ὑπουργεῖον τῶν Ἐξωτερικῶν, τῷ 1867 ἔλαβε τὸν τίτλον συμβούλου πρεσβείας, τῷ 1881 διωρίσθη πρεσβευτὴς ἐν Στουτγάρδῃ καὶ κατόπιν ἐν Βέρνῃ. Ἔλαβε μέρος ἐνεργὸν εἰς τὰς διαπραγματεύσεις τῆς τριπλῆς Συμμαχίας, ἐκτελέσας μετὰ συνέσεως καὶ δεξιότητος τὰς ἐντολὰς τοῦ Μπίσμαρκ. Τῷ 1892 ἐστάλη πρεσβευτὴς παρὰ τῇ Ἁγίᾳ Ἕδρᾳ, ἵνα ζητήσῃ ὅπως ὁ Λέων ΙΓ' ἀποσπάσῃ τὴν προστασίαν τῶν καθολικῶν τῆς Ἀνατολῆς ἀπὸ τῆς Γαλλίας καὶ ἀναθέσῃ αὐτὴν εἰς τὸν Γερμανὸν αὐτοκράτορα, ἀπέτυχεν ὅμως εἰς τὴν ἀποστολήν του.

Α.Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Φρειδερῖκος-Γουλιέλμος***, *κόμης φὸν* ***Ντέννεβιτς***. Πρῶσσος στρατηγὸς (1755—1816). Ἔλαβε μέρος εἰς τοὺς πολέμους 1806 καὶ 1807 ὑπὸ τὸν Λ' Ἐστόκ, τῷ 1807 ἐτραυματίσθη παρὰ τὸ Βάλτερσντορφ καὶ βραδύτερον ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν ταξιαρχίας εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Μπλύχερ. Τῷ 1808 προήχθη εἰς στρατηγὸν τῶν πομμερανικῶν στρατευμάτων, τῷ δὲ 1812 ὠνομάσθη διοικητὴς τῆς ἀνατολικῆς καὶ δυτικῆς Πρωσσίας. Ὁ Μπύλοβ ὑπῆρξε νικητὴς ἐν Λυκάου, Γκροσμπέρεν καὶ Ντέννεβιτς. Συνέβαλεν εἰς τὴν ἐν Λειψίᾳ καὶ βραδύτερον ἐν Βατερλὼ ἧτταν τοῦ Ναπολέοντος.

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Φρειδερῖκος-Ἐρρῖκος*** *φὸν*—. Δανὸς στρατηγὸς (1791—1858). Μετέσχε τῶν πολέμων τοῦ 1807 καὶ 1848, τῷ δὲ 1849 ἐξηνάγκασε τὸν στρατηγὸν Μπόνιν εἰς ὑποχώρησιν. Μετὰ τὸν πόλεμον ὠνομάσθη ἀρχηγὸς τοῦ στρατοῦ τοῦ Σλέσβιχ, εἶτα δὲ (μέχρι τοῦ 1856) τῆς ἐν Σέελαντ στρατιᾶς.

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Φρίντα***, *βαρωνὶς φὸν*—. Γερμανὶς συγγραφεὺς (1857—1909). Ἐξέδωκε τὰ ἔργα: «Reiseskizzen und Tagebuchblätter aus Deutsch-Ostafrika» (1889) καὶ «Deutsch - Ostafrikanische Novellen» (1892). Ἐκ τῶν μυθιστορημάτων αὐτῆς διακρίνονται τά: «Ἐν τῇ γῇ τῆς ἐπαγγελίας» (1899), «Αἱ ἀδελφαὶ» καὶ «Ἐπεισόδιον ἐκ τῆς ζωῆς τῶν Γερμανῶν ἀποίκων» (1896).

Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Χὰνς-Γουΐδος*** *φὸν*—. Γερμανὸς μουσικὸς (1830—1894). Υἱὸς τοῦ ποιητοῦ καὶ διηγηματογράφου *Καρόλου - Ἐδουάρδου φὸν Μπύλοβ*. Ἔσχε διδασκάλους εἰς τὸ κλειδοκύμβαλον καὶ τὰ θεωρητικὰ τὸν Βίκ, τὸν Λίτολφ, τὸν Ἔμπερβάϊν, τὸν Χάουπτμαν, τὸν Λίστ, ἐνῷ τὴν ἐπίδοσίν του εἰς τὴν διεύθυνσιν τῆς ὀρχήστρας ὤφειλεν εἰς τὸν Βάγνερ, ὃν ἠκολούθησεν ἐν Ζυρίχῃ κατὰ τὴν ἐκεῖσε ἐξορίαν τοῦ μεγάλου μουσουργοῦ (1850—1851). Ἀπὸ τοῦ 1853 ὁ Μπύλοβ ἤρχισε τὰς θριαμβευτικὰς καλλιτεχνικὰς περιοδείας του ἀνὰ τὰ μεγαλύτερα μουσικὰ κέντρα τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀμερικῆς. Κατηχηθεὶς εἰς τὰς νέας τάσεις τῆς τέχνης τοῦ Σοῦμαν καὶ τοῦ Λίστ, ἐνθουσιώδης θαυμαστὴς τῶν θεωριῶν τοῦ Βάγνερ, ἔθεσεν ὅλον του τὸ τάλαντον εἰς τὴν διάθεσιν τοῦ μεγάλου τούτου μεταρρυθμιστοῦ, εἴτε ὑπεραμυνόμενος αὐτοῦ διὰ τοῦ τύπου, εἴτε ἀναλύων τὰ ἔργα του («Περὶ τῆς εἰσαγωγῆς τοῦ Φάουστ τοῦ Βάγνερ» 1861), εἴτε ἀναβιβάζων ἀπὸ σκηνῆς κατὰ μοναδικὸν τρόπον τὸν «Τριστᾶνον καὶ Ἰζόλδην» ἐν Μονάχῳ, ἔνθα εἶχεν ὀνομασθῇ διευθυντὴς ὀρχήστρας τοῦ Βασιλικοῦ θεάτρου. Ὁ Μπύλοβ εἶχε νυμφευθῇ τὴν θυγατέρα τοῦ Λίστ, Κόζιμα, ἥτις ἀργότερον ἠκολούθησε τὸν Βάγνερ, ὡς σύζυγός του. Ὡς ἐκ τούτου ὁ ἐνθουσιασμὸς τοῦ Μπύλοβ πρὸς τὸν Βάγνερ μετέπεσε πρὸς τὸν Μπράμς, ὃν ἀνεκήρυξεν ἐκ τῶν μεγίστων συνθετῶν τῆς Γερμανίας διὰ τῶν περιφήμων τριῶν *B* (Bach, Beethoven, Brahms). Μετὰ τὴν ἀπὸ τοῦ Βάγνερ ἀπόσχισίν του (1869), ὁ Μπύλοβ ὠνομάσθη διευθυντὴς ὀρχήστρας ἐν Ἀννοβέρῳ καὶ εἶτα ἐν Μάϊνιγκεν, οὗτινος ἡ ὀρχήστρα ἐγένετο ἐντὸς ὀλίγου χρόνου μοναδικὴ εἰς τὸ εἶδός της· εἶτα ἐν Πετρουπόλει, ἐν Βερολίνῳ κτλ. Ὁ Μπύλοβ εἶναι ὁ πρῶτος εἰσαγαγὼν τὴν ἄνευ μερολογίου διεύθυνσιν καὶ ἐκ τῶν πρώτων, οἵτινες ἔδωκαν ὑψίστην σημασίαν εἰς τὴν ἀνάλυσιν ἑνὸς

Digitized by Google

ἔργου καὶ εἰς τὴν καλλιτεχνικὴν ἑρμηνείαν ἑνὸς συμφωνικοῦ τεμαχίου. Ὡς συνθέτης ἔδωκε τὰ συμφωνικὰ ποιήματα: «Des Sängersfluch», «Νιρβάνα» καὶ «Tharakterstück» τεμάχια διὰ κλειδοκύμβαλον, μελῳδίας, σκηνικὴν μουσικὴν διὰ τὸν «Ἰούλιον Καίσαρα» κτλ. Ἐπεμελήθη ἐπίσης τῆς κριτικῆς ἐκδόσεως, μετὰ παιδαγωγικῶν σημειώσεων μεγάλης ἀξίας, τῶν κλασσικῶν τοῦ κλειδοκυμβάλου. Μελέτας ἐπὶ τοῦ Μπύλοβ ἔγραψαν οἱ Vogel (1887), Zabel (1894), Pfeiffer (1894). Ἡ μετὰ τοῦ Νίτσε ἀλληλογραφία του περιελήφθη ἐν τῷ 3ῳ τόμῳ τῶν ἐπιστολῶν τοῦ Νίτσε (1905). Γ. Σ.

— **Μπύλοβ** (Bülow), ***Χὰνς-Ἰούλιος-Ἀδόλφος.*** Πρῶσσος στρατηγὸς (1816—1897). Ἀνεδείχθη, ὡς ἀρχηγὸς τοῦ πυροβολικοῦ τοῦ ἑβδόμου σώματος στρατοῦ, κατὰ τὴν ἐν Βοημίᾳ ἐκστρατείαν, τῷ δὲ 1870 καὶ 1871 παρὰ τὸ Σπίχερν, Βιονβίλ, Γκραβελότ, Ὀρλεάνην καὶ Λὲ Μάνς. Α. Δ.

— **Μπύλοβ** (Bülow) ***ἀντίδρασις.*** Καλεῖται οὕτω ἡ κατὰ τὴν ὀξείδωσιν τῶν ὑδραζονῶν ἐν πυκνῷ θειικῷ ὀξεῖ ἐπερχομένη ἐμφάνισις κυανῆς χροιᾶς. Σ. Γ.

**Μπύλωφ** (Bülow)· βλ. λ. *Μπύλοβ.*

**Μπὺνγκ** (Byng), ***Γεώργιος,*** *ὑποκόμις* ***Τόρριν-γκτον.*** Ἄγγλος ναύαρχος γεννηθεὶς τῷ 1663 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1733. Κατ' ἀρχὰς ὑπηρέτησεν εἰς τὸν στρατὸν τῆς ξηρᾶς, μεταταχθεὶς δὲ εἰς τὸ ναυτικὸν προήχθη τῷ 1703 εἰς ὑποναύαρχον. Διεκρίθη κατὰ τοὺς πολέμους διαδοχῆς τῆς Ἱσπανίας, καταλαβὼν τῷ 1704 τὸ Γιβραλτάρ. Τῷ 1706 ἐξελέγη βουλευτὴς Πλυμούθης. Τῷ 1708, ἐπὶ κεφαλῆς μοίρας τοῦ στόλου, ἀνέκτησε τὴν Μινόρκαν καὶ τῷ 1720 κατεναυμάχησεν ἐν Μεσσήνῃ τῆς Σικελίας τὸν ἱσπανικὸν στόλον. Τῷ 1727 διωρίσθη πρῶτος λόρδος τοῦ ναυαρχείου. Προεχειρίσθη εἰς πατρίκιον, ὑποκόμιτα Torrington καὶ βαρῶνον Southill. Γ. Ν. Ν.

— **Μπὺνγκ** (Byng), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος ναύαρχος, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1704. Τῷ 1756, σπεύδων εἰς βοήθειαν τῆς Μινόρκας, συνήντησε τὴν 20ὴν Μαΐου τὸν ὑπὸ τὸν La Galissonière γαλλικὸν στόλον ἔξωθεν τῆς Mahon, πρὸς ὃν ἐναυμάχησεν· ὑποστὰς ὅμως σοβαρὰς ζημίας ὑπεχώρησε, περιελθούσης τῆς Mahon εἰς χεῖρας τῶν Γάλλων. Διὰ τὴν ἀποτυχίαν του ταύτην εἰσαχθεὶς εἰς δίκην κατεδικάσθη εἰς θάνατον, τυφεκισθεὶς τῇ 14 Μαρτίου 1757. Γ. Ν. Ν.

**Μπυντὲν** (Budin), ***Πέτρος-Παῦλος-Κωνστάν.*** Γάλλος μαιευτήρ, γεννηθεὶς ἐν Emencourt-le Sec τῷ 1846. Τῷ 1880 ἐγένετο ὑφηγητής, τῷ 1889 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῆς ἰατρικῆς, καὶ τῷ 1898 καθηγητὴς τῆς μαιευτικῆς κλινικῆς τῆς ἰατρικῆς σχολῆς Παρισίων. Ἔγραψε: «Μαιευτικὴν γυναικολογίαν» (1886), «Μαθήματα μαιευτικῆς κλινικῆς» (1889) κ. ἄ. Ὑπὸ τὸ ὄνομά του φέρεται διπλοῦς καθετὴρ πρὸς ἐνδομητρίους πλύσεις. Ο. Ρ.

**μπύρα** (ἡ)· βλ. λ. *ζῦθος.*

**Μπύργκερ** (Bürger), ***Γοδεφρεῖδος-Αὔγουστος.*** Ὀνομαστὸς Γερμανὸς ποιητὴς (1747—1794). Υἱὸς κληρικοῦ, ἐσπούδασε κατ' ἀρχάς, παρὰ τὴν θέλησίν του, θεολογίαν καὶ κατόπιν νομικὰ καὶ διωρίσθη διοικητικὸς ὑπάλληλος. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπεδόθη εἰς τὴν ποίησιν καὶ ἀπετέλεσε μέλος τοῦ «ὁμίλου τῶν ποιητῶν τῆς Γοττίγγης» (Hölty, Voss, κόμητες Stolberg κλπ.). Εὐθὺς μετὰ τὸν πρῶτον του γάμον εἶχε καταληφθῆ ὑπὸ σφοδροῦ ἐρωτικοῦ πάθους πρὸς τὴν γυναικαδέλφην του, τὴν ὁποίαν ὕμνησεν εἰς τὰ ποιήματά του ὑπὸ τὸ ὄνομα Μόλλυ καὶ συνεζεύχθη μετὰ τὸν θάνατον τῆς συζύγου του. Ἀναγκασθεὶς ἔπειτα, ἕνεκα πλημμελοῦς ἐκτελέσεως τῶν δημοσιοϋπαλληλικῶν καθηκόντων του, νὰ παραιτηθῇ τῆς θέσεώς του, ἐγκατεστάθη ἐν Γοττίγγῃ, ἔνθα ἐτιμήθη διὰ τοῦ τίτλου τοῦ διδάκτορος τῆς φιλοσοφίας καὶ διωρίσθη ἀπὸ τοῦ 1789 ἔκτακτος καθηγητής, ἄνευ ἀμοιβῆς ὅμως, τοῦ αὐτόθι πανεπιστημίου. Μετὰ τὸν πρόωρον θάνατον τῆς Μόλλυ συνῆψε καὶ τρίτον γάμον (1790), ὅστις ὅμως διαλυθεὶς μετ' ὀλίγον (1792) συνέτριψε τὸ πρὸς τὴν ζωὴν θάρρος τοῦ ποιητοῦ.

*Γοδεφρ. Μπύργκερ.*

Ὁ Μπύργκερ, ὅστις ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων λυρικῶν τῆς Γερμανίας καὶ ὁ πρῶτος μέγας ἀριστοτέχνης τῆς γερμανικῆς μπαλάντας, διαγὰς διὰ τὴν θέρμην τοῦ αἰσθήματος, τὴν βαθεῖάν του ἐσωτερικότητα, τὴν δημιουργικὴν εὐχέρειαν καὶ τὴν ἁπαλότητα καὶ δύναμιν συγχρόνως τῆς ἐκφράσεως. Περιφημότερα ἀπὸ τὰς μπαλάντας του εἶναι ἡ «Λεονώρα» (1774), μεταφρασθεῖσα καὶ παρ' ἡμῖν (ὑπὸ Ἀ. Βλάχου, Δ. Μαβίλλη καὶ Π. Γνευτοῦ). Τῷ 1778 ἐδημοσίευσε πλήρη συλλογὴν τῶν «Ποιημάτων» του, τῆς ὁποίας ἡ δευτέρα ἔκδοσις (1789) ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς αὐστηρὰν κριτικὴν ἐκ μέρους τοῦ Σίλλερ. Νεώτεραι τῶν ἔργων του ἐκδόσεις ἐγένοντο ὑπὸ Reinhard (1823—1824, 7 τ.), W. v. Wurzbach (1902, 4 τ.) καὶ ἄλλων. Ἀπὸ τοῦ 1895 ἔχει ἀνεγερθῆ ἐν Γοττίγγῃ ὁ ἀνδριάς αὐτοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Barth,* Der Stil von Bürgers Lyrik (1911). —*Zaunert,* Bürgers Verskunst (1911).—*Ebstein,* G. A. B. und Philippine Gattener (1921). Γ. Ε. Κ.

**Μπύργκλεν** (Burglen) *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ Οὔρι, κείμενον παρὰ τὴν εἴσοδον τῆς κοιλάδος Σαΐχεν, 2,5 χλμ. πρὸς ΝΑ. τοῦ Ἄλντορφ. Κάτ. 1.900. Εἶναι γνωστὸν ὡς πατρὶς τοῦ ἐθνικοῦ ἥρωος τῶν Ἑλβετῶν Γουλιέλμου Τέλλου. Χ. Δ.

**Μπύρεν,** ἢ ***Μπίρεν,*** ἢ ***Μπιρὸν*** (Büren, ἢ Biren, ἢ Biron), ***Ἐρνέστος-Ἰωάννης ντὲ —.*** Δοὺξ τῆς Κουρλανδίας (1690—1772). Ἦτο υἱὸς χωρικοῦ ἢ κατ' ἄλλους ναυτικοῦ, χάρις ὅμως εἰς τὴν ὡραίαν μορφήν, τὸν θαρραλέον χαρακτῆρα καὶ τὰ πνευματικὰ προτερήματα δι' ὧν ἦτο πεπροικισμένος, κατώρθωσε, παρ' ὅλην τὴν ἄσημον καταγωγήν του, νὰ καταλάβῃ σημαίνουσαν θέσιν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς δουκίσσης τῆς Κουρλανδίας Ἄννης Ἰβανόβνας, ἀνεψιᾶς τοῦ τσάρου. Ἐκεῖ ἐπέτυχεν ἐντὸς ὀλίγου νὰ κατακτήσῃ τὴν ἐμπιστοσύνην καὶ τὴν εὔνοιαν τῆς ἡγεμονίδος, ἥτις ἐνύμφευσεν αὐτὸν τῷ 1722 μετὰ κόρης ἀνηκούσης εἰς μίαν ἐκ τῶν εὐγενεστέρων οἰκογενειῶν τῆς χώρας. Ὅτε τῷ 1730 ἡ Ἄννα ἐκλήθη ν' ἀνέλθῃ ἐπὶ τοῦ θρόνου τῆς Ρωσίας, ἐζητήθη ἀπὸ αὐτήν, μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ὅρων, νὰ μὴ συνοδεύεται εἰς Ρωσίαν ὑπὸ τοῦ Μπύρεν. Ἡ ὑποψηφία αὐτοκράτειρα πρὸ τῆς ἀνάγκης ἐδέχθη προσωρινῶς τὸν ὅρον τοῦτον, εὐθὺς ὅμως ὡς κατέλαβε τὴν ἐξουσίαν, ἔσπευσε ν' ἀκυρώσῃ τὴν συμφωνίαν, προσκαλέσασα δὲ πλησίον της τὸν ὡραῖον εὐνοούμενον, ὠνόμασεν αὐτὸν αὐλάρχην καὶ κόμιτα τῆς Ρωσικῆς αὐτοκρατορίας καὶ τοῦ ἐπέτρεψε νὰ λάβῃ τὸν γαλλικὸν δουκικὸν τίτλον τοῦ Μπιρόν. Ἔκτοτε ὁ Μπύρεν, ἀσκῶν τεραστίαν ἐπιβολὴν ἐπὶ τῆς Ἄννης, κατέστη ὁ πραγματικὸς κυρίαρχος ἐν τῇ αὐτοκρατορίᾳ. Ὑπερήφανος καὶ ἐπηρμένος, συμπεριεφέρθη μετὰ πρωτοφανοῦς σκληρότητος ἀπέναντι τῶν ἀντιπάλων του καὶ μάλιστα τῶν πριγκίπων Ντολγκορούσκι, ἐθανάτωσε δὲ πλέον τῶν 11.000 ἀνθρώπων καὶ ἐξώρισε διπλασίους. Πρὸς δικαιολόγησιν τῆς σκληρότητός του, ὑπεστήριζεν ὅτι ἡ τάξις δὲν ἠδύνατο νὰ τηρηθῇ ἐν Ρωσίᾳ παρὰ μόνον διὰ τοῦ τρόπου τούτου, ματαίως δὲ οἱ περὶ αὐτόν, μὴ ἐξαιρουμένης οὐδ' αὐτῆς τῆς αὐτοκρατείρας, προσεπάθησαν νὰ καταστήσωσιν ἠπιωτέραν τὴν πολιτικήν του.

Ὅτε τῷ 1737 ἀπέθανεν ὁ δοὺξ τῆς Κουρλανδίας, ὁ Μπύρεν ἐζήτησε νὰ διαδεχθῇ αὐτόν, ὅπερ καὶ ἐπέτυχε χάρις εἰς τὴν ὑποστήριξιν τῆς αὐτοκρατείρας. Καὶ μετὰ τὴν ἀνάληψιν ὅμως τῆς νέας ταύτης ἐξουσίας, δὲν ἔπαυσεν ἀναμιγνυόμενος εἰς τὰ ρωσικὰ πράγματα, ὅτε δὲ μετ' ὀλίγον προεῖδε προσεγγίζοντα τὸν θάνατον τῆς Ἄννης, κατώρθωσε νὰ πείσῃ αὐτὴν ὅπως τὸν ὑποδείξῃ ὡς ἀντιβασιλέα τοῦ θρόνου, δεδομένου ὅτι ὁ ἔχων δικαίωμα διαδοχῆς ἔγγονος τοῦ Ἰβὰν Ε' ἦγε ἡλικίαν ὀλίγων μόλις ἑβδομάδων. Ἀναλαβὼν τὰ νέα του καθήκοντα εὐθὺς μετὰ τὸν θάνατον τῆς αὐτοκρατείρας (1840), ἐδείχθη τὴν φορὰν ταύτην ἠπιώτερος, προσεπάθησε δὲ καὶ κατώρθωσε νὰ κερδίσῃ τὴν ἐμπιστοσύνην τῆς γερουσίας, ἡ ὁποία ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τῆς αὐτοκρατορικῆς ὑψηλότητος. Παρ' ὅλας ὅμως τὰς προφυλάξεις, τὰς ὁποίας ἔλαβε πρὸς ἐξασφάλισιν τῆς ἐξουσίας του δι' ἀπομακρύνσεως παντὸς ἐπικινδύνου ἀντιπάλου, δὲν κατώρθωσε νὰ ἄρξῃ ἐπὶ μακρόν, διότι ὑποψιασθέντες οἱ αὐλικοὶ προσπάθειαν σφετερισμοῦ τοῦ θρόνου χάριν τῶν οἰκείων του, μάλιστα δὲ κατόπιν τοῦ γάμου τοῦ υἱοῦ του μετὰ τῆς πριγκιπίσσης Ἐλισάβετ, ἀνέτρεψαν αὐτὸν δι' ἐπαναστάσεως τὴν 20 Νοεμβρίου 1740. Τὴν ἀντιβασιλείαν ἀνέλαβεν ἡ μήτηρ τοῦ νεαροῦ βασιλέως Ἰβὰν ΣΤ' Ἄννα, ὁ δὲ Μπύρεν συλληφθεὶς προσήχθη ἐνώπιον δικαστηρίου καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον ὡς πολιτικὸς ἐγκληματίας. Ἀλλὰ μετετράπη ἡ ποινή του εἰς ἰσόβιον ἐξορίαν ἐν Σιβηρίᾳ, ὅπου ἐστάλη μεθ' ὁλοκλήρου τῆς οἰκογενείας του. Ὅτε τὸ ἑπόμενον ἔτος ἀνετράπη ἡ Ἄννα καὶ ὁ μικρὸς Ἰβάν, ἀνῆλθε δ' ἐπὶ τοῦ ρωσικοῦ θρόνου ἡ Ἐλισάβετ, θυγάτηρ τοῦ Μεγάλου Πέτρου, ὁ Μπύρεν ἀνεκλήθη ἐκ τῆς ἐξορίας καὶ ἐγκατεστάθη ἐν Γιαροσλάβᾳ, ἀπαγορευθείσης τῆς ἐπανόδου του εἰς τὴν πρωτεύουσαν, παρέμεινε δ' ἐκεῖ οἱονεὶ ἐξόριστος ἐπὶ εἰκοσιδύο ὁλόκληρα ἔτη. Ἐπὶ Πέτρου Γ' (1762) ἤρθησαν οἱ εἰς βάρος του περιορισμοί, ὅτε δὲ βραδύτερον ἀνῆλθεν ἐπὶ τοῦ ρωσικοῦ θρόνου ἡ Αἰκατερίνη Β', ὁ Μπύρεν ἀποκατεστάθη εἰς τὴν ἡγεμονίαν τῆς Κουρλανδίας (1763), τὴν ὁποίαν διώκησε μετὰ πολλῆς τὴν φορὰν ταύτην συνέσεως μέχρι τοῦ θανάτου του. Χ. Δ.

— **Μπύρεν** (Büren), ***Πέτρος.*** Δοὺξ τῆς Κουρλανδίας, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, τὸν ὁποῖον διεδέχθη τῷ 1772 (1742—1800). Ἡ Αἰκατερίνη Β' δυσαρεστηθεῖσα διότι οὗτος ἐτέθη ὑπὸ τὴν προστασίαν τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας, κατέλαβε καὶ προσήρτησε τὸ δουκᾶτον, ἐπλήρωσε δὲ εἰς αὐτὸν πρὸς ἀποζημίωσιν 500.000 δουκᾶτα, διὰ τὰς ἰδιοκτήτους γαίας του, καὶ ἐτησίαν ἐπιχορήγησιν 1000... σκούδων (1795). Χ. Δ.

**Μπυριγέριος** ***Τέντζα.*** Οὕτω καλοῦσιν οἱ Βυζαντινοὶ χρονογράφοι τὸν *Βερεγγάριον Δ' Ἐστάνζα*, εὐγενῆ Καταλᾶνον, ὅστις καταπλεύσας εἰς Κωνσταντινούπολιν τὸν Μάρτιον 1306 μετὰ 9 πλοίων, 300 ἱππέων καὶ 1.000 πεζῶν συμπατριωτῶν του ἔπεισε τὸν βασιλέα Ἀνδρόνικον Β' Παλαιολόγον νὰ προσλάβῃ αὐτὸν εἰς τὴν ὑπηρεσίαν του. Ὁ Βερεγγάριος, ἀφοῦ ἐτιμήθη ὑπὸ τοῦ βασιλέως διὰ τοῦ τίτλου τοῦ μεγάλου δουκὸς καὶ ἔλαβε παρ' αὐτοῦ πλούσια δῶρα καὶ ἄφθονα χρήματα, ἀπῆλθεν εἰς Καλλίπολιν καὶ ἑνωθεὶς μετὰ τῶν πολυαρίθμων ἐκεῖ Καταλάνων μισθοφόρων ἐδῄωσε τὴν Θρᾴκην καὶ τὴν Μακεδονίαν, ἐν τέλει δέ, προελθὼν εἰς ρῆξιν πρὸς τοὺς ἄλλους ἀρχηγοὺς Καταλάνους, ἐδολοφονήθη τῷ 1308 ἐν Κασσάνδρᾳ ὑπὸ τοῦ Ρακκοφόρτε (βλ. καὶ λ. *Καταλανοί*). Ν. ΚΕ.

**μπυρίζω**· ἰδιωματ., θέτω πῦρ εἴς τι, καίω.

**Μπυρινιὺ** (Burigny), ***Ἰωάννης-Λεβέκ.*** Γάλλος φιλόσοφος (1692—1785). Συνειργάσθη κατ' ἀρχὰς μὲ τὸν ἀδελφόν του *Λεβὲκ ντὲ Πουγιύ.* Ἔργα αὐτοῦ εἶναι: «Περὶ τῆς αὐθεντίας τοῦ πάπα» (17..), ὅπου ἀποκρούει τὸ ἀλάθητον, ἀλλὰ ὑπερασπίζει τὰ δικαιώματα τῆς Ἐκκλησίας, «Ἱστορία τῆς Σικελίας» (1746), «Ἱστορία τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐπαναστάσεων» (1750), βιογραφίαι τῶν Ἐράσμου, Γροτίου, Βοσσουέτου, καρδιναλίου Ντυπερὸν καὶ «Ἱστορία τῆς εἰδωλολατρικῆς φιλοσοφίας» (1724), ἐπανεκδοθεῖσα ἐπηυξημένη ὑπὸ τὸν τίτλον: «Εἰδωλολατρικὴ θεολογία» (1754). Μετέφρασε τὸ ἔργον «Περὶ Πλωτίνου βίου καὶ τῆς τάξεως τῶν βιβλίων αὐτοῦ» τοῦ Πορφυρίου, προσθέσας βιογραφίαν τοῦ Πλωτίνου καὶ μελέτην ἐπὶ τῆς μεγαλοφυΐας (1740). Ἐπίσης ἔγραψε πλεῖστα ὑπομνήματα, δημοσιευθέντα εἰς τὴν συλλογὴν τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν, τῆς ὁποίας ἦτο μέλος. Ε. Κ.

**Μπυρνοὺφ** (Burnouf), ***Αἰμίλιος-Λουδοβίκος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1821. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις καὶ ἐγένετο καθηγητὴς τῶν ἀνατολικῶν σπουδῶν ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Νανσύ. Ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Leupol ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Méthode pour étudier la langue sanskrite» (1859, ἔκδ. β') καὶ «Dictionnaire classique sanskrit-français» (1865). Τῷ 1863 ἐξέδωκε τὸ «Essai sur le Veda». Προηγουμένως εἶχεν ἀσχοληθῆ μὲ τὴν ἀρχαίαν ἑλληνικὴν φιλολογίαν, δημοσιεύσας τὰ ἔργα: «Des principes de l'art d'après la méthode et les doctrines de Platon» (18..), «De Neptuno ejusque cultu, praesertim in Peloponneso» (1850). Τῷ 1867 ἐγένετο διευθυντὴς τῆς ἐν Ἀθήναις γαλλικῆς ἀρχαιολογικῆς σχολῆς, δημοσιεύσας πλεῖστα φιλολογικὰ ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Histoire de la littérature grecque» (1869, τόμ. 2), «La légende athénienne» (1871), «La science des religions» (1872) κλπ. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο διηύθυνεν ἐνδιαφερούσας ἀνασκαφὰς ἐν Ἑλλάδι. Ἀνακληθεὶς τῷ 18.. εἰς Παρισίους, ἐσυνέχισε τὰς ἀνατολικὰς καὶ ἀρχαιολογικὰς μελέτας του καὶ ἐδημοσίευσε τὰ ἔργα: «La mythologie des Japonnais, d'après le Kokoussi-Ryakel», «La ville et l'Acropole d'Athènes aux diverses époques» (1877), «Memoires sur l'antiquité» (1879), «Le catholicisme contemporain» (1879) κλπ.

— **Μπυρνοὺφ** (Burnouf), ***Εὐγένιος.*** Διάσημος Γάλλος ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1801 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1852. Μετὰ τὴν ἀποφοίτησίν του ἐκ τοῦ Λυκείου Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου, παρηκολούθησε μαθήματα εἰς τὴν σχολὴν τοῦ δικαίου καὶ τῷ 1824 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ δικηγόρου διὰ τῆς διατριβῆς του «De re judicata». Αἰσθανόμενος ὅμως ἰδιάζουσαν κλίσιν πρὸς τὴν μελέτην τῆς μυστηριώδους τότε Ἀνατολῆς, παρηκολούθησεν εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας τὰ μαθήματα τοῦ Chézy καὶ τοῦ A. de Rémusat καὶ ἐπετέλεσε τόσον ταχείας προόδους, ὥστε τῷ 1826 ἐδημοσίευσεν, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ φίλου του Ch. Lassen, μελέτην ἐπὶ τῆς γλώσσης Πάλι τῶν Ἰνδιῶν («Essai sur Pâli»). Τὴν ἐργασίαν ταύτην ἠκολούθησεν ἄλλη ὑπὸ τὸν τίτλον «Observations grammaticales sur quelques passages de l' Essai sur le Pâli» (18..). Τῷ 1827 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς γραμματικῆς εἰς τὴν École normale. Συνειργάσθη εἰς τὴν «Inde Française» (Paris 1827—1835, τόμ. 2) εἰς τὸ «Journal asiatique», τὸ «Journal de savants» κλπ. ἐπεδόθη εἰς τὴν μελέτην τῶν ζενδικῶν χειρογράφων, τὰ ὁποῖα εἶχε κομίσει ὁ Anquetil-Duperron, καὶ τὰ ὁποῖα ἀνέγνωσε, κατενόησε καὶ ἀνέλυσε ... τος καὶ ἐδημοσίευσεν εἰς λιθογραφημένον κείμενον τὸ «Vendidad-Sadé» (1830). Τῷ 1832 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ Κολλεγίου τῆς Γαλλίας καὶ παρ...

Digitized by Google

...εν εἰς τὴν θέσιν ταύτην μέχρι τοῦ θανάτου του. Τῷ 1835 ἐξέδωσε τὸν πρῶτον τόμον τῶν ὑπομνημάτων του ἐπὶ τοῦ ζωροαστρικοῦ βιβλίου «Γυάσνα» («Commentaire sur Yaçna»). Αἱ ἐργασίαι αὗται τοῦ παρέσχον τὴν κλεῖδα διὰ τὴν ἀνάγνωσιν τῶν σφηνοειδῶν ἐπιγραφῶν τῆς Περσεπόλεως, αἱ ὁποῖαι εἶχον γραφῆ εἰς διάλεκτον παραπλησίαν πρὸς τὴν ζενδικήν. Τῷ 1836 ἐξέδωκε τὸ «Memoire sur deux inscriptions cunéiformes». Τὰ ἔργα του περὶ τῆς περσικῆς γλώσσης ἐξεδόθησαν ἀπὸ τοῦ 1840 μέχρι τοῦ 1860 ὑπὸ τὸν τίτλον «Études sur la langue et les textes zends». Τῷ 1844 ἐξέδωκε τὴν «Introduction à l'histoire du Bouddhisme Indien», τῷ δὲ 1852 «Le lotus de la Bonne Loi». Ἐφιλοτέχνησεν ἐπίσης μετάφρασιν της μεγάλης βουδικῆς ἐγκυκλοπαιδείας: «Lalita-Yistâra» καὶ ἤρχισε τὴν ἔκδοσιν καὶ μετάφρασιν τοῦ «Bhâgavata-Pourâna», τοῦ ὁποίου ἐδημοσίευσε τοὺς τρεῖς πρώτους τόμους (1840—1849). Τῷ 1852 ὠνομάσθη ἰσόβιος γραμματεὺς τῆς Ἀκαδημίας. —ο.

**—Μπυρνοὺφ** (Burnouf), ***Ἰωάννης - Λουδοβῖκος***. Γάλλος φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1755 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1844. Ἀπομείνας ἐνωρὶς ὀρφανός, κατώρθωσε νὰ συνεχίσῃ τὰς σπουδάς του εἰς τὸ κολλέγιον d' Harcourt, χάρις εἰς τὴν προστασίαν τοῦ Gardin Dumesnil. Μετὰ τὴν ἀποφοίτησίν του ἐχρημάτισε κοινοτικὸς ὑπάλληλος, ἐμπορικὸς πράκτωρ καὶ κατόπιν ἐνεγράφη εἰς τὸ πανεπιστήμιον. Τῷ 1807 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ῥητορικῆς εἰς τὸ λύκειον Καρολομάγνου. Κατόπιν ὑπῆρξεν ἀλληλοδιαδόχως καθηγητὴς εἰς τὸ αὐτοκρατορικὸν λύκειον, καθηγητὴς τῆς λατινικῆς ῥητορικῆς εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας, ἐπιθεωρητὴς τῆς Ἀκαδημίας τῶν Παρισίων, γενικὸς ἐπιθεωρητὴς καὶ τῷ 1836 ἐξελέγη μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῆς φιλολογίας. Μετέφρασεν εἰς τὴν γαλλικὴν τοὺς «Κατιλιναικούς», τὸν «Περὶ ῥητόρων» διάλογον, τὸ «Περὶ καθηκόντων» τοῦ Κικέρωνος καὶ ὁλόκληρον τὸν Τάκιτον. Ἐπίσης ἐξέδωκε τὸν Σαλλούστιον (1821) καὶ τὰ πρωτότυπα ἔργα: «Méthode pour étudier la langue latine» (1838) καὶ «Méthode pour étudier la langue grecque» (1813), τὰ ὁποῖα ἔσχον μεγίστην ἐπιτυχίαν καὶ ἐχρησιμοποιήθησαν ἐπὶ πολλὰ ἔτη. —ο.

**Μπὺρντ** (Byrd), ***Ριχάρδος***. Ἀμερικανὸς ἐξερευνητὴς (βλ. λ. *Μπέρντ*).

**Μπύρομ** (Byrom), καὶ ***Μπύρον*** (Byron). Ἄγγλος ποιητὴς (1692—1703). Ἐγένετο μέλος τῆς Βασιλικῆς ἑταιρείας τῶν ἐπιστημῶν. Ἔγραψεν ὡραίους στίχους καὶ μικρὰ ποιήματα, πολλὰ τῶν ὁποίων ἐδημοσιεύθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του. Ἐπίσης κατέλιπεν ἀπομνημονεύματα καὶ ἐπιστολάς. Α. Δ.

**Μπύρχνερ** (Bürchner), ***Λουδοβῖκος-Ἰωάννης-Κλήμης-Χριστιανός***. Γερμανὸς φιλόλογος καὶ ἀρχαιολόγος (βλ. λ. *Βύρχνερος*).

**Μπυσὲ** (Buchez), ***Φίλιππος-Ἰωσὴφ-Λουδοβῖκος***. Γάλλος φιλόσοφος καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1791 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1865. Ἀνεμίχθη εἰς ὅλας τὰς πολιτικὰς συνωμοσίας τῆς παλινορθώσεως καὶ προσεχώρησεν εἰς τὸν καρβοναρισμόν. Μετασχὼν τῆς συνωμοσίας τοῦ Belfort, συνελήφθη ἐν Νανσὺ καὶ ἐκομίσθη ἐνώπιον τοῦ βασιλικοῦ δικαστηρίου τοῦ Colmar, σωθεὶς ἕνεκα διχασμοῦ τῶν ψήφων τῶν δικαστῶν. Κατόπιν ἐγένετο σαινσιμονιστὴς (ὀπαδὸς τῶν θεωριῶν τοῦ Σαὶν-Σιμόν), ἀλλὰ πολὺ ταχέως ἀπεχωρίσθη τῆς σχολῆς, ἕνεκα τῶν ἐρίδων καὶ διαφωνιῶν, αἱ ὁποῖαι ἀνεπτύχθησαν εἰς τοὺς κόλπους της, καὶ ἰδίᾳ διότι ἐπίστευεν ὅτι αὕτη δὲν ἦτο ὅσον ἔπρεπε πνευματόδοξος. Ἵδρυσε τότε μίαν νεοκαθολικὴν σχολήν, ἡ ὁποία ὠνομάσθη *μπυσεσισμὸς* (buchésisme) καὶ διὰ νὰ ὑποστηρίξῃ τὰς ἀπόψεις του ἐξέδωκε τὸ «Journal des sciences morales et politiques», ὅπερ κατόπιν ἔλαβε διαδοχικῶς τοὺς τίτλους «Européen» καὶ «Revue nationale» (1831—1848). Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Introduction à la science de l' histoire ou Science du développement de l'humanité» (1833), «Histoire parlementaire de la révolution française» (1839), «Essai d' un traité complet de la philosophie au point de vue du catholicisme et du progrès» (1839) κ. ἄ. Κατὰ τὸν Μπυσέ, ἡ πρόοδος συμβιβάζεται πρὸς τὴν ἀποκάλυψιν ἢ μᾶλλον τὰς διαδοχικὰς ἀποκαλύψεις, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνει: τὴν ἀδαμικὴ ἀποκάλυψις, ἡ προκατακλυσμιαία ἀποκάλυψις, ἡ βραχμανικὴ ἀποκάλυψις καὶ ἡ χριστιανικὴ ἀποκάλυψις. Ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ὁ Χριστιανισμὸς ἐγκατέλειψε τὴν ἀποστολήν του, διότι παρῃνόησε τὴν κοινωνικὴν φοράν του καὶ ἑπομένως θὰ παρέλθουν πολλοὶ αἰῶνες ἕως οὗ παρουσιασθῇ ἐπὶ τῆς γῆς ἠθικῶς ἀνωτέρα φυλή. Τῷ 1848 ὁ Μπυσὲ ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν συνταχτικήν, ἀλλ' ἀπέτυχε τόσον, ὥστε ἀπέθανεν ἐν πλήρει ἀφανείᾳ. —ο.

**Μπυσνὰκ** (Busnach), ***Γουλιέλμος-Βερτράνδος***. Γάλλος δραματικὸς συγγραφεὺς (1832—1907). Ὑπῆρξεν ὁ ἱδρυτὴς τοῦ θεάτρου «Ἀθήναιον», τὸ ὁποῖον καὶ διηύθυνεν ἐπὶ μακρόν. Μεταξὺ τῶν ἔργων του, ἐξ ὧν τινα ἔγραψε μόνος, περισσότερα δὲ ἐν συνεργασίᾳ μετ' ἄλλων, πλειοτέραν ἐπιτυχίαν ἀπὸ σκηνῆς ἐσημείωσαν τά: «Ἐλοΐζα καὶ Ἀβελάρδος» (1872), «Ὁ μικρὸς Ἰάκωβος» (1885), «Κλικὲτ» (1893), «Ὁ ἀντικαταστάτης» (1895) κλπ. Διεσκεύασεν ἐπίσης διὰ τὸ θέατρον τὴν «Ταβέρναν» καὶ τὴν «Νανὰ» τοῦ Ζολά, ἔγραψε δὲ καὶ μυθιστορήματα, ἐν οἷς: «Ἡ κόρη τοῦ κ. Λεκόκ» κ. ἄ. —ο.

**Μπυσὸν** (Buchon), ***Ἰωάννης-Ἀλέξανδρος***. Γάλλος ἱστορικὸς (1791—1846). Ἀπὸ τῶν πρώτων χρόνων τῆς παλινορθώσεως μετέσχεν ἐνεργῶς τῶν ἐναντίον τῆς κυβερνήσεως ἀγώνων τῶν φιλελευθέρων, ὑπεστήριξε δὲ μετὰ σθένους τὴν πολεμικήν του ἀπὸ τῶν στηλῶν τῆς «Rénommée» καὶ τοῦ «Censeur européen». Ἀπὸ τοῦ 1821 ἐμφανίζεται ἀναμιγνυόμενος ἐνεργῶς εἰς τὰ γράμματα διὰ σειρᾶς μαθημάτων ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῆς δραματικῆς τέχνης ἐν Ἀγγλίᾳ, τὰ ὁποῖα ἔσχον σημαντικὴν ἐπιτυχίαν. Ἡ ἐν τῷ μεταξὺ ἐκραγεῖσα ἑλληνικὴ ἐπανάστασις εὗρε τὸν Μπυσσόν, ἀπὸ τῆς παιδικῆς του ἤδη ἡλικίας συμπαθοῦντα τὴν Ἑλλάδα, μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ὑποστηρικτῶν αὐτῆς ἐν Γαλλίᾳ. Τῷ 1822 ἐπεχείρησε μακρὸν ταξίδιον ἀνὰ τὴν Εὐρώπην, συλλέγων πληροφορίας καὶ αὐθεντικὰ ἔγγραφα πρὸς συμπλήρωσιν τῆς ὑπ' αὐτοῦ ἐκδοθείσης κατὰ τὰ ἔτη 1824—1829 συλλογῆς ἐθνικῶν χρονικῶν (Collection des Chroniques nationales). Διετέλεσεν ἀκολούθως (1829—1830) γενικὸς διευθυντὴς τῶν ἐπαρχιακῶν καὶ κοινοτικῶν ἀρχείων τῆς Γαλλίας, ἀλλ' ἐπαύθη ἐκ τῆς θέσεως ταύτης λόγῳ τῶν πολιτικῶν του φρονημάτων. Κατὰ τὴν ἐπακολουθήσασαν ἐννεαετίαν ἠσχολήθη σχεδὸν ἐξ ὁλοκλήρου με τὴν δημοσίευσιν ἀπὸ τῶν στηλῶν τοῦ «Panthéon littéraire» ἀνεκδότων ἔργων συγγραφέων τοῦ μεσαίωνος καὶ τῶν νεωτέρων χρόνων. Τότε τὸ πρῶτον ἐκινήθη τὸ διαφέρον αὐτοῦ διὰ τὴν ἐν Ἑλλάδι φραγκοκρατίαν ἐκ τῆς μελέτης διαφόρων ἔργων ἀφορώντων τὴν ἐγκατάστασιν τῶν Γάλλων ἐν τῇ Στερεᾷ καὶ τῇ Πελοποννήσῳ, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΓ' αἰῶνος. Ἔκτοτε ἠσχολήθη μὲ τὴν συλλογὴν πάντων τῶν σχετικῶν ἔργων καὶ τὴν μελέτην καὶ ἔκδοσιν αὐτῶν. Πρὸς τοῦτο ἀνεχώρησε κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1840 διὰ τὴν Ἑλλάδα, ἀφοῦ διῆλθε πρῶτον χάριν μελετῶν ἐκ τῆς μεσημβρινῆς Ἰταλίας, τῆς Σικελίας καὶ τῆς Μάλτας. Ἐν Ἑλλάδι ὁ Μπυσὸν παρέμεινεν ἐπὶ ὁλόκληρον διετίαν, καθ' ἣν περιῆλθε τοὺς διαφόρους τόπους αὐτῆς. Ἀφήγησιν τῶν ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα ταξιδίων του ἐδημοσίευσεν εἰς διαφόρους ἐπιθεωρήσεις, ἰδιαιτέρως δὲ εἰς τὴν «Revue de Paris», ἐν ᾗ ἐπὶ διετίαν (1842—1844) ἔγραψε μελέτας ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ Ἑλλάς, αἱ Κυκλάδες καὶ αἱ Ἰόνιοι νῆσοι» καὶ τὴν «Revue indépendante» ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορικαὶ ἐκδρομαὶ ἀνὰ τὰς Κυκλάδας». Ἐπίσης ἐξεδόθη μετὰ τὸν θάνατον αὐτοῦ τό: «Ταξίδιον εἰς τὴν Εὔβοιαν, τὰς Ἰονίους καὶ τὰς Κυκλάδας νήσους κατὰ τὸ 1841», ἐν δὲ τῇ Ἐθνικῇ βιβλιοθήκῃ τῶν Παρισίων φυλάσσεται τετράτομον ἀνέκδοτον ἡμερολόγιον τοῦ ἰδίου ἐκ τοῦ ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα ταξιδίου του.

Ὁ Μπυσὸν ὑπῆρξε πολυγραφώτατος συγγραφεύς, καταλιπὼν μέγαν ἀριθμὸν ἱστορικῶν ἔργων, ἐν οἷς: «Συνοπτικὴ ἱστορία τῶν μεταφυσικῶν, ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν ἀπὸ τῶν χρόνων τῆς Ἀναγεννήσεως τῶν γραμμάτων» (1820), «Ἑλληνικαὶ ἀρχαιότητες ἢ πίναξ τῶν ἐθίμων, συνηθειῶν καὶ θεσμῶν τῶν Ἑλλήνων» (2 τόμ. 1822), «Συλλογὴ τῶν ἐθνικῶν γαλλικῶν χρονικῶν» (1824—1829 εἰς 47 τόμ.), «Λαϊκὴ ἱστορία τῶν Γάλλων» (1832), «Ἱστορικαί, νομισματολογικαὶ καὶ ἀρχαιολογικαὶ ἔρευναι περὶ τοῦ πριγκιπάτου τοῦ Μορέως» (1840), «Ἔρευναι καὶ στοιχεῖα διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς γαλλικῆς κυριαρχίας εἰς τὰς κατακτηθείσας ἐπαρχίας τῆς ἑλληνικῆς αὐτοκρατορίας» (1840), «Νέαι ἱστορικαὶ ἔρευναι περὶ τοῦ πριγκιπάτου τοῦ Μορέως καὶ τῶν βαρονειῶν αὐτοῦ» (1843—1844) εἰς δύο τόμους μετὰ γενεαλογικῶν πινάκων, «Ἡ Στερεὰ Ἑλλὰς καὶ ἡ Πελοπόννησος (Μορέας), ταξίδιον, διαμονὴ καὶ ἱστορικαὶ μελέται» (1843), «Ἱστορία τῶν κατακτήσεων καὶ τῆς ἐγκαταστάσεως τῶν Γάλλων εἰς τὰς χώρας τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος, ὑπὸ τὸν Βιλλεαρδουῖνον» (1846), μεῖναν ἀτελές, καὶ πλῆθος ἄλλο συγγραμμάτων καὶ διατριβῶν, ἄρθρων κτλ. εἰς διάφορα περιοδικά. Χ. Δ.

**Μπυσσὰν** (Bussang) *[Γεωγρ.]*. Λουτρόπολις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Βοσγίων, κειμένη παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Μοζέλλα καὶ ἀπέχουσα 60 χλμ. τοῦ Ἐπινάλ. Ἔχει βιομηχανίαν βάμβακος καὶ ξυλείας. Τὰ ψυχρὰ σιδηροῦχα ὕδατά της χρησιμοποιοῦνται πρὸς πόσιν ἐναντίον τῆς ἀναιμίας, κατὰ τὸν μεσαίωνα δὲ ὑπῆρχον παρ' αὐτὴν ἀργυρορύχοι. Ἡ Μπυσσὰν εἶναι κυρίως γνωστὴ ἐκ τοῦ ἐν αὐτῇ ἱδρυθέντος τῷ 1895 ἐρασιτεχνικοῦ «θεάτρου τοῦ λαοῦ», ὑπὸ τοῦ Μαυρικίου Ποττεσέρ. Καὶ σήμερον δ' ἔτι δίδονται ἐτησίως αὐτόθι, κατὰ μῆνα Αὔγουστον, δύο μεγάλαι ὑπαίθριοι παραστάσεις, καθ' ἃς χρησιμοποιεῖται ὡς σκηνογραφία τὸ φυσικὸν περιβάλλον τοῦ ὑπερκειμένου βουνοῦ, τὰ δένδρα, οἱ βράχοι κλπ.

**—Μπυσσὰν αὐχὴν** (col de Bussang) *[Γεωγρ.]*. Αὐχὴν τῶν Βοσγίων ἐν Γαλλίᾳ, παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ Μοζέλλα, εἰς ὕψος 734 μ. ὑπὲρ τὴν θάλασσαν. Δι' αὐτοῦ ἐπικοινωνοῦσιν οἱ νομοὶ τῶν Βοσγίων καὶ τοῦ Ἄνω Ρήνου. Χ. Δ.

**Μπυσσὲ** (Busser), ***Ἐρρῖκος***. Γάλλος συνθέτης, γεννηθεὶς τῷ 1872. Πρῶτον βραβεῖον τῆς Ρώμης τοῦ Ὠδείου τῶν Παρισίων, ἔνθα ἀπὸ τοῦ 1904 ὠνομάσθη καθηγητὴς καὶ διευθυντὴς ὀρχήστρας τοῦ μελοδράματος, ἔδωκε δείγματα συνθετικοῦ ταλάντου διὰ τῶν μελοδραμάτων: «Κορινθιακοὶ γάμοι», «Colomba», «Δάφνις καὶ Χλόη», διὰ τοῦ μπαλλέττου «La Ronde des saisons», τῶν συμφωνικῶν ποιημάτων «Εἰς τὸ φῶς», «Ὁ Ἡρακλῆς εἰς τὸν κῆπον τῶν Ἑσπερίδων» κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μπυσσὺ** (Bussy), ***Ρογῆρος ντὲ Ραμπυτὲν*** (Rabutin), *κόμης ντὲ—*. Γάλλος πολεμιστὴς καὶ λόγιος (1618—1693). Εἰσῆλθεν εἰς τὸν στρατὸν ἀπὸ τοῦ 1635 ὡς λοχαγὸς τοῦ πρώτου λόχου τοῦ συντάγματος τοῦ πατρός του, τὸν ὁποῖον διεδέχθη βραδύτερον εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατοπεδάρχου καὶ εἶτα τοῦ στρατιωτικοῦ διοικητοῦ ἐν Νιβερναί. Ὑπηρετήσας ὑπὸ τὸν πρίγκιπα Κονδὲ καὶ συνδεθεὶς μαζί του δι' οἰκειότητος, τὸν ἠκολούθησεν εἰς διαφόρους ἐκστρατείας. Κατὰ τὴν διάρκειαν ὅμως τῶν ταραχῶν τῆς Σφενδόνης, μετέχων ὑπὸ τὸν Τυρὲν τῆς μάχης τοῦ Ντύν, συνέβη νὰ ἐξαναγκάσῃ εἰς ὑποχώρησιν τὸν Κονδέ, ὅστις εἶχε ταχθῆ μὲ τοὺς ἐπαναστάτας. Τὴν φήμην ἐν τούτοις, τὴν ὁποίαν ἐκ τῆς τελευταίας του ταύτης ἰδίως ἐπιτυχίας ἀπέκτησε, τὴν ἠμαύρωσε μὲ μίαν του ἐλαφρότητα: εἶχε λάβει μέρος εἰς μίαν ὀργιώδη διασκέδασιν, ἐξ ἧς ἐδημιουργήθη μέγα σκάνδαλον, ἐφυλακίσθη δὲ τότε καὶ ἐξωρίσθη βραδύτερον εἰς τὰ ἐν Βουργουνδίᾳ κτήματά του. Ἐκεῖ, διὰ νὰ διασκεδάζῃ τὴν ἐρωμένην του κυρίαν ντὲ Μονγκλάς, συνέθεσε τὸ περίφημον βιβλίον του «Ἐρωτικὴ ἱστορία τῶν Γαλατῶν», πλῆρες σαφῶν ὑπαινιγμῶν εἰς βάρος τῶν πλειοτέρων προσωπικοτήτων τῆς ἐποχῆς ἐκείνης. Τὸ βιβλίον τοῦτο τοῦ προσεκόμισε νέους ἐχθρούς, ἐν οἷς καὶ αὐτὸν τοῦτον τὸν βασιλέα Λουδοβῖκον ΙΔ'. Ἔγραψεν ἐπίσης «Ἀπομνημονεύματα», «Συνοπτικὴν ἱστορίαν τοῦ Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου», «Λόγους πρὸς τὰ παιδιά του», ἀφῆκε δὲ ὀγκώδη ἀλληλογραφίαν δημοσιευθεῖσαν τῷ 1697 εἰς 7 τόμους. Μεταξὺ αὐτῆς ὑπάρχουν καὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἐξαδέλφης του Κας ντὲ Σεβινιέ, τῆς ὁποίας δὲν εἶχον φεισθῆ οἱ ἐν τῇ «Ἐρωτικῇ Ἱστορίᾳ» ὑπαινιγμοί του. Ἀπὸ τοῦ 1665 εἶχεν ἐκλεγῆ μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. —ο.

**—Μπυσσὺ ντ' Ἀμπουὰζ** (Bussy d'Amboise), ***Λουδοβῖκος, αὐθέντης τοῦ —***. Γάλλος πυργοδεσπότης (1549—1579), γενναῖος ἀλλ' ἀνήθικος, γνωστὸς ἰδίως ἐκ τοῦ ὅτι ὁ Δουμᾶς πατὴρ ἐνεπνεύσθη ἀπ' αὐτοῦ τὸ δρᾶμά του «Dame de Monsoreau». Ἐπωφεληθεὶς τῆς νυκτὸς τοῦ Ἁγίου Βαρθολομαίου, διὰ νὰ φονεύσῃ ἕνα τῶν συγγενῶν του εἰς τὸν ὁποῖον ὤφειλε χρήματα, ἠκολούθησεν εἶτα τὸν δοῦκα τοῦ Ἀνζοῦ κατὰ τὴν ἐκστρατείαν εἰς Πολωνίαν (1573) καὶ εἰσῆλθε βραδύτερον εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ δουκὸς τοῦ Ἀλανσόν, τοῦ ὁποίου κατέκτησε τὴν εὔνοιαν. Διορισθεὶς διοικητὴς τοῦ Ἀνζοῦ κατεληλάτησε τὴν ἐπαρχίαν ταύτην διὰ φορολογιῶν καὶ νοσφίσεων. Ἠκολούθησεν εἶτα τὸν δοῦκα τοῦ Ἀλανσὸν κατὰ τὴν ὀλεθρίαν ἐκστρατείαν αὐτοῦ εἰς τὰς Κάτω Χώρας, ἐπιστρέψας δ' ἐκεῖθεν ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ κόμητος ντὲ Μονσορώ, τοῦ ὁποίου τὴν σύζυγον εἶχε κάμει ἐρωμένην του. —ο.

**Μπυστραὶμ** (Bystroem), ***Ὀσκάρ***. Σουηδὸς συνθέτης, κλειδοκυμβαλιστὴς καὶ μουσικολόγος (1821—1909). Ἐξέδωκε τὰ συγγράμματα: «Luthers Kirchenlieder» (1897), «Ur Medeltidens Kyrkosäng i Sverige» (1900), «Ur Medeltidens Kyrkosäng i Sverige, Norge och Finland» (1903). Ὡς συνθέτης ἐγένετο γνωστὸς δι' ἔργων μουσικῆς δωματίου, μιᾶς συμφωνίας, διὰ τῆς ὀπερέττας «Hermann Wimpel» κ. τ. λ. Γ. Σ.

**Μπυφφιὲ** (Buffier), ***Κλαύδιος***. Γάλλος ἰησουίτης, γραμματικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Πολωνίᾳ τῷ 1661 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1737. Ἐδίδαξε τὴν θεολογίαν κατ' ἀρχάς, κατόπιν δὲ ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις καὶ συνεργάσθη εἰς τὸ «Journal de Trévoux». Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων τὰ ἑξῆς: «Cours des sciences» (1732), σπουδαιότερον τμῆμα τοῦ ὁποίου εἶναι ἡ «Grammaire française sur un plan nouveau», ἐξ ἧς ἤντλησαν ἀφθόνως οἱ μεταγενέστεροι γραμματικοί, «Traité des vérités premières et de la source de nos jugements», ὅπου ἀποδίδει μεγάλην σημασίαν εἰς τὴν αὐθεντίαν τοῦ κοινοῦ νοῦ. —ο.

**Μπυφφὸν** (Buffon), ***Βενιαμὶν-Φραγκῖσκος Λεκλὲρκ ντὲ—***. Γάλλος ἄρχων, γεννηθεὶς τῷ 1683 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1775. Ὑπῆρξε διαδοχικῶς σύμβουλος τοῦ βασιλέως, γενικὸς διοικητὴς τῆς ἐφίππου χωροφυλακῆς τῆς Γαλλίας καὶ τῷ 1720 σύμβουλος εἰς τὸ παρλαμέντον τῆς Βουργουνδίας. Τῷ 1706 συνεζεύχθη τὴν Ἄνναν Χριστῖναν Μάζλιν ἐξ εὐγενοῦς οἰκογενείας καὶ ἀπέκτησε πέντε τέκνα, ἐξ ὧν

Digitized by Google

τὸ πρῶτον *Γεώργιος-Λουδοβῖκος* εἶναι ὁ περίφημος φυσιοδίφης. Χηρεύσας εἰς ἡλικίαν τεσσαράκοντα ἐννέα ἐτῶν, συνῆψε δεύτερον γάμον μετὰ τῆς Ἀντουανέττας Ναντώλ, ἕνεκα τοῦ ὁποίου ἐψυχράνθη πρὸς τὸν πρεσβύτερον υἱόν του. Βραδύτερον, ἐπελθούσης συμφιλιώσεως, ὁ φυσιοδίφης ἔδειξεν ἐξ ἴσου ἀγάπην πρὸς τὸν πατέρα του καὶ τὴν μητρυιάν του. —Ω.

— **Μπυφφὸν** (Buffon), ***Γεώργιος - Λουδοβῖκος Δεκλέρκ, κόμις ντὲ —.*** Μέγας Γάλλος φυσιοδίφης, γεννηθεὶς ἐν Montbard τῷ 1707 καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις τῷ 1788. Μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν σπουδῶν του εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ντιζόν, ἀφιερώθη κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν μελέτην τῶν μαθηματικῶν. Τὸ πρῶτόν του ἔργον ὑπῆρξε μετάφρασις τῆς «Στατιστικῆς τῶν φυτῶν» τοῦ Ἄγγλου Hales (1735), εἰς τὸν πρόλογον τῆς ὁποίας ἐτόνιζε τὴν σημασίαν τῆς συλλογῆς παρατηρήσεων διὰ τὴν αὔξησιν τῶν ἀνθρωπίνων γνώσεων. Κατόπιν ἐδημοσίευσε πλείστας μονογραφίας ἐπὶ διαφόρων ζητημάτων τῆς φυσικῆς καὶ τῆς ἀστρονομίας, χάρις εἰς τὰς ὁποίας ἤδη ἀπὸ τοῦ 1739 ἐγένετο μέλος

*Γεώργιος Μπυφφόν.*

τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Τὸ αὐτὸ ἔτος προσελήφθη ὡς ἐπιμελητὴς εἰς τὸν Βασιλικὸν κῆπον καὶ ὡς τοιοῦτος συνέλαβε τὸ σχέδιον τῆς «Φυσικῆς Ἱστορίας» του, εἰς τὴν ὁποίαν ἀφιέρωσεν ὅλην του τὴν ζωήν. Οἱ τρεῖς πρῶτοι τόμοι τοῦ τεραστίου τούτου συγγράμματος ἐξεδόθησαν τῷ 1749, ὁ δὲ τριακοστὸς ἕκτος ἓν ἔτος μετὰ τὸν θάνατόν του. Συνήθως ἐπικρίνουν τὰς ψευδεῖς ταξινομίσεις καὶ τὰς ἀδικαιολογήτους γενικεύσεις τοῦ ἔργου τούτου. Καὶ εἶναι μὲν ἀληθὲς ὅτι ὁ Μπυφφὸν ὁρμᾶται ἐκ μιᾶς ὅλως αὐθαιρέτου τάξεως, ἡ ὁποία δῆθεν καθορίζει τὰς σχέσεις τῶν ζῴων πρὸς τὸν ἄνθρωπον, θεωρούμενον ὡς βασιλέα τῆς φύσεως. Ἀλλά, ἐφ' ὅσον προχωρεῖ τὸ ἔργον, ἐπὶ τοσοῦτον ὁ συγγραφεὺς μορφώνεται καὶ ὡριμάζει, εἰς τρόπον ὥστε εἰς τοὺς τελευταίους τόμους καταλήγει μὲ τὴν χρησιμοποίησιν τῆς ἀληθοῦς ἐπιστημονικῆς μεθόδου, τῆς στηριζομένης ἐπὶ τῆς σπουδῆς τῶν ἐσωτερικῶν χαρακτήρων. Καὶ ἂν ἐνίοτε δεικνύεται πολὺ πρόθυμος ὅπως παραδεχθῇ εὐρείας θεωρίας, τὰς ὁποίας ἀκριβεστέρα γνῶσις τῆς πραγματικότητος θ' ἀνέτρεπεν, εἶναι γνωστὸν ὅτι πολλαὶ ἐκ τῶν ὑποθέσεών του ἐπεβεβαιώθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τῶν προόδων τῆς ἐπιστήμης καὶ ἰδίᾳ ὅτι ἡ μαντικὴ φαντασία του προησθάνθη πλείστας ἐκ τῶν νεωτέρων ἰδεῶν ἐπὶ τῆς ποικιλίας τῶν εἰδῶν καὶ ἰδίᾳ ἐπὶ τοῦ μεταμορφισμοῦ.

Ὁ Μπυφφὸν εἶναι περισσότερον φιλόσοφος καὶ ὀλιγώτερον φυσιοδίφης μὲ τὴν στενὴν σημασίαν τῆς λέξεως. Αἱ λεπτομέρειαι, τὰ μεμονωμένα φαινόμενα δὲν τὸν ἐνδιαφέρουν καθ' ἑαυτά. Σπεύδει νὰ συναγάγῃ ἐξ αὐτῶν γενικωτέρας ἀπόψεις καὶ νὰ τὰς συναρμόσῃ εἰς συστηματικὰ σύνολα. Ἀρέσκεται εἰς τὰς μεγάλας συλλήψεις. Εἰς μίαν ἐποχήν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ ἐπιστήμη καὶ ἡ διανόησις εἶχον τεθῆ εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τοῦ πολιτικοῦ ἀγῶνος, ὁ Μπυφφὸν διετήρησε τὸν καθαρῶς ἐπιστημονικόν του χαρακτῆρα. Θρησκεία του ἦτο ἡ μελέτη τῆς φύσεως καὶ ἠθική του ἡ ὑποταγὴ εἰς ἀναγκαίους καὶ ἀμεταβλήτους νόμους. Ἐστάθη ἔξω τῆς πολιτικῆς, ὑπεράνω παντὸς ὅ,τι παρέχει προσωρινὰ μόνον ἐνδιαφέροντα, συνηθισμένος δὲ ν' ἀντικρύζῃ εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς φύσεως εὐρέα σύνολα, ἀνέμενεν ἐξελικτικῶς τὴν κοινωνικὴν πρόοδον, τὴν ὁποίαν ἄλλοι κοινωνικώτεροι, ἐμπαθέστεροι καὶ ζωηρότεροι ἐζήτουν νὰ ἐπισπεύσουν, ἀγωνιζόμενοι κατὰ τῆς ἀδικίας καὶ τῶν καταχρήσεων. Ἂν καὶ μὲ τὸ βάθος τῶν ἰδεῶν του ὁ Μπυφφὸν ἀνήκει εἰς τὸν ΙΗ' αἰῶνα, μὲ τὴν μορφὴν τοῦ πνεύματός του, τὸ ὁποῖον ἔχει καθαρῶς κλασσικοὺς χαρακτῆρας, ἀνήκει εἰς τὸν ΙΖ' αἰῶνα. Κυριαρχία τοῦ ὀρθοῦ λόγου, αἴσθησις καὶ ἔφεσις τῆς τάξεως, φυσικὴ διάθεσις πρὸς ἐξέτασιν κάθε πράγματος ὑπὸ τὴν γενικωτέραν του ἄποψιν, ταῦτα εἶναι τὰ βασικὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ πνεύματος τοῦ Μπυφφόν.

Ὁ Μπυφφὸν ὑπῆρξεν ὄχι μόνον μέγας ἐρευνητὴς ἐπιστήμων ἀλλὰ καὶ μέγας συγγραφεύς. Τὸ ὕφος του εἶναι λαμπρὸν καὶ διακεκοσμημένον, σαφὲς καὶ ἁρμονικόν, εὐχάριστον καὶ διὰ τὸν σημερινὸν ἀκόμη ἀναγνώστην.

Ἡ φύσις κατὰ τὸν Μπυφφὸν εἶναι ἓν σύνολον ἀπείρως διαφοροποιημένον καὶ μὴ ὑποβαλλόμενον εἰς κατηγορικὰς διαιρέσεις. Κάθε ἀντικείμενον ἐν τῇ φυσικῇ ἱστορίᾳ πρέπει νὰ ἔχῃ εἰδικὴν βιογραφίαν καὶ περιγραφήν. Ἡ ζωὴ εὑρίσκεται εἰς τὰ ὀργανικὰ μόρια, ἐξ ὧν ἀποτελοῦνται τὰ ζῶντα ὄντα. Τὰ μόρια ταῦτα, ἄπειρα ἐν τῷ σύμπαντι, εἶναι ἀδιάφθορα καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ, ὅστις ἐπέρχεται δι' ἀποχωρισμοῦ τῶν μορίων, εἰσδύουν εἰς τὴν ἄψυχον ὕλην, τὴν κατεργάζονται κατὰ τὴν φύσιν της καὶ τὴν ζωογονοῦν γεννῶντα ζῷα ἢ φυτά. Κυκλοφοροῦν εἰς τὸ σύμπαν, μεταβιβάζονται ἀπὸ ἑνὸς ὄντος εἰς ἄλλο, χρησιμεύουν διὰ τὴν ἑκάστοτε ζωὴν καὶ διὰ τὴν διαιώνισιν τῆς ζωῆς, ἀπεργάζονται τὴν θρέψιν καὶ αὔξησιν τοῦ ἀτόμου καὶ καθορίζουν τὴν ἀναπαραγωγὴν τοῦ εἴδους. Χάρις εἰς ζωϊκάς τινας δυνάμεις, ἃς ὁ Μπυφφὸν ἀποκαλεῖ διεισδυτικὰς δυνάμεις, τὰ μόρια ταῦτα ἐγκαθίστανται εἰς τὰ ὄργανα, εἰσδύουν εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ ὀργανισμοῦ καὶ συμβάλλουν εἰς τὴν διαρκῆ ἀνανέωσιν τῆς ζώσης ὕλης. Τὰ μόρια ἐλευθερωμένα μετὰ τὴν καταστροφὴν ἑνὸς ἐνοργάνου σώματος, προσελκύονται ὑπό τινος ζωϊκοῦ ἢ φυτικοῦ τύπου, ἢ ἂν δὲν συναντήσουν τοιοῦτον διὰ τῆς τυχαίας ἀλληλοσυναντήσεώς των γεννοῦν διαφόρους σκώληκας καὶ ἀνανεώνουν οὕτω τὴν ζωήν. Κυρίως εἰπεῖν δὲν ὑπάρχει οὔτε δημιουργία ζωῆς (διὰ τῆς γεννήσεως), οὔτε καταστροφὴ ζωῆς διὰ τοῦ θανάτου. —Ω.

— **Μπυφφὸν** (Buffon), ***Γεώργιος-Λουδοβῖκος-Μαρία Δεκλέρκ, κόμις ντὲ —.*** Μοναδικὸς υἱὸς τοῦ περιφήμου φυσιοδίφου *Γεωργίου-Λουδοβίκου Μπυφφόν,* γεννηθεὶς τῷ 1764 καὶ ἀποθανὼν ἐπὶ τοῦ ἰκριώματος τῷ 1793. Καταταγεὶς εἰς τὸν στρατόν, ἦτο ταγματάρχης ὅταν ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις. Ὡς δήμαρχος τοῦ Μονμπὰρ καὶ συνταγματάρχης τῆς ἐθνοφρουρᾶς τοῦ καντονίου, ἠθέλησε νὰ συγκρατήσῃ τὴν τάξιν. Εἰς ἡλικίαν εἴκοσι ἓξ ἐτῶν ἐγένετο στρατηγὸς τοῦ ὁμοσπονδιακοῦ στρατοῦ, συλληφθεὶς ὅμως ἐν Παρισίοις ἐφυλακίσθη καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἡ σύζυγός του εἶναι γνωστὴ διὰ τὰς σχέσεις της πρὸς τὸν δοῦκα τῆς Ὀρλεάνης. —Ω.

— **Μπυφφὸν** (Buffon), ***Πέτρος - Ἀλέξανδρος Δεκλέρκ,*** *ἱππότης ντὲ —.* Ἀδελφὸς ὅμαιμος τοῦ μεγάλου φυσιοδίφου, γεννηθεὶς τῷ 1734 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1825. Νεώτατος κατετάγη εἰς τὸν στρατὸν καὶ μετέσχεν ἐνεργῶς τοῦ Ἑπταετοῦς πολέμου (1756—1762) καὶ τῆς ἐκστρατείας τῆς Κορσικῆς. Τῷ 1790 ὠνομάσθη στρατοπεδάρχης. Συνειργάσθη εἰς τὴν «Collection académique» (1761), συνέγραψε διάφορα ἔμμετρα καὶ πεζὰ εἰς τὸν «Mercure», μίαν «Πραγματείαν περὶ τῆς ἀγάπης τῆς δόξης» (1787) καὶ ἱστορικὴν μονογραφίαν περὶ τῆς ζωῆς τοῦ ἀδελφοῦ του. —Ω.

**Μπύχερ** (Bücher), ***Κάρολος.*** Γερμανὸς οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Kirberg τῆς Ρενανίας τῷ 1847. Διετέλεσε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Λειψίας. Ἀπὸ τοῦ 1917 ἀφιερώθη εἰς τὴν διοίκησιν τοῦ ὑπ' αὐτοῦ ἱδρυθέντος δημοσιογραφικοῦ ἰνστιτούτου. Σ ουδαιότερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Die Entstehung der Volkswirtschaft» (1893, τελευταία ἔκδοσις 1922), «Arbeit und Rhythmus» (6η ἔκδ. 1924), «Beiträge zur Wirtschaftsgeschichte» (1922). Ὁ Μπύχερ προσεπάθησεν ἰδίως νὰ προσδιορίσῃ τὰς ἀλληλοδιαδόχους βαθμῖδας ἐξελίξεως, καθ' ἅς, ἀντιστοίχως πρὸς τὴν ἑκάστοτε πορείαν τῆς κοινωνικῆς προόδου, λαμβάνουν μορφὴν αἱ τυπικαὶ ἐμφάνσεις τῆς οἰκονομικῆς ζωῆς. Τοιαῦτα στάδια ἐξελίξεως διακρίνει ὁ Μπύχερ κατὰ τὸ βασικὸν γνώρισμα τῆς διαρκείας τοῦ μεταξὺ παραγωγῆς καὶ καταναλώσεως τῶν ἀγαθῶν διανυομένου διαστήματος τρία: τὴν περίοδον τῆς προεχούσης οἰκιακῆς, ἀστικῆς καὶ ἐθνικῆς οἰκονομίας. Ἡ θεωρία αὐτὴ τοῦ Μπύχερ, καίτοι, παρὰ τοῦ Sombart ἰδίως, καταπολεμηθεῖσα, διατηρεῖ εἰσέτι ὀπαδούς τινας. Α. Α. Τ.

**Μπύχνερ** (Büchner), ***Γεώργιος.*** Γερμανὸς ποιητὴς καὶ φιλόλογος (1813—1838). Ἐνέκυψεν εἰς τὴν μελέτην τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας, τῆς τοῦ Καρτεσίου καὶ τοῦ Σπινόζα. Ἔγραψε τὸ ποιητικὸν ἔργον: «Ὁ θάνατος τοῦ Δαντόν», ἐν ᾧ περιγράφει διὰ ζωηρῶν χρωμάτων, ἀλλ' ἄνευ τέχνης πολλῆς, τὰ γεγονότα τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, βραδύτερον δ' ἐδημοσίευσεν: «Ἱστορίαν τῆς παλαιοτέρας ἑλληνικῆς φιλοσοφίας», «Τὰ συστήματα τοῦ Καρτεσίου καὶ τοῦ Σπινόζα». Ἐκ τῶν θεατρικῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνεται ἡ κωμῳδία «Λεὸνς καὶ Λένα». Λ. Δ.

— **Μπύχνερ** (Büchner), ***Λουδοβῖκος.*** Εἷς τῶν γνωστοτέρων ὑλιστῶν φιλοσόφων τῶν μέσων τοῦ ΙΘ' αἰῶνος (1824—1899). Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικήν, διετέλεσεν ἐπὶ βραχὺ χρονικὸν διάστημα ὑφηγητὴς καὶ βοηθὸς ἰατρὸς ἐν Τυβίγγῃ, ἀπολυθεὶς ὅμως τῆς θέσεώς του, λόγῳ τοῦ βιβλίου του «Δύναμις καὶ ὕλη», ἐγκατεστάθη ἐν Δαρμστάτῃ, ἔνθα ἐξήσκησε τὸ ἐπάγγελμα τοῦ ἰατροῦ. Ἱδρυτὴς καὶ ἡγέτης τοῦ «Γερμανικοῦ συνδέσμου ἐλευθεροφρόνων», συνετέλεσε διὰ τῶν ἔργων του τὰ μέγιστα εἰς τὴν διάδοσιν τῶν φυσικοϊστορικῶν γνώσεων μεταξὺ τῶν λαϊκῶν μαζῶν. Τὸ κυριώτερον τῶν ἔργων του «Δύναμις καὶ ὕλη» (1855, ἔκδ. 21, 1904) ἔσχε τεραστίαν διάδοσιν καὶ μετεφράσθη εἰς ἁπάσας τὰς γλώσσας τῶν πεπολισμένων λαῶν, ἐπεσκιάσθη δὲ μόνον διὰ τῆς ἐμφανίσεως τοῦ ἀντιστοίχου ἔργου τοῦ Χαίκελ «Τὰ προβλήματα τοῦ κόσμου». Σημαντικωτάτη ὑπῆρξεν ἡ συμβολὴ τοῦ Μπύχνερ εἰς

*Λουδ. Μπύχνερ.*

τὸ κεφάλαιον τῆς ἱδρύσεως μορφωτικῶν ἐργατικῶν ἑνώσεων. Τὸ ἔργον τοῦ Μπύχνερ δὲν διακρίνει οὔτε πρωτοτυπία, ἀλλ' οὔτε καὶ βαθύτης, διετέλεσεν ἐν τούτοις εἷς τῶν δραστηριωτέρων προπαγανδιστῶν τοῦ ὑλισμοῦ καὶ τοῦ δαρβινισμοῦ, τὸν ὁποῖον καὶ ἐξελαΐκευσεν. Ὅπως ὁ Κάρολος Φόγτ οὕτω καὶ ὁ Μπύχνερ μετέφερε κατὰ τρόπον ἥκιστα κριτικὸν τὴν διδασκαλίαν τοῦ Δαρβίνου εἰς τὴν ἀνθρωπίνην ἱστορίαν καὶ τὴν κοινωνιολογίαν. Τὴν λύσιν τοῦ κοινωνικοῦ προβλήματος διέβλεπεν ὁ Μπύχνερ εἰς τὴν δημιουργίαν «κοινωνικῆς ἀριστοκρατίας» διὰ τῆς προαγωγῆς τοῦ ἐλευθέρου ἀνταγωνισμοῦ. Εἰς τὸ κεφάλαιον τῆς θρησκείας, τοῦ κοινωνικοῦ καὶ πολιτικοῦ ζητήματος, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν τολμηρὸν ριζοσπαστισμὸν τῶν Γάλλων ὑλιστῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, παρέμεινεν ὁ φρασεολόγος φιλισταῖος, ὁ στενός, εἰλικρινὴς ἐν τούτοις, μικροαστὸς δημοκράτης. Ὁ ὑλισμὸς τοῦ Μπύχνερ, παρ' ὅλην τὴν στενότητά του, στερεῖται ὁλοκληρώσεως καὶ συνεπείας, εἶναι δὲ πλήρης ἀντιφάσεων ἰδίως εἰς τὰ θεμελιώδη προβλήματα τῆς γνωσιολογίας. Οὕτω τὸ ψυχικὸν στοιχεῖον παρουσιάζεται παρ' αὐτῷ ὁτὲ μὲν ὡς οὐσιώδης ἁπλῶς ἰδιότης τῆς ὕλης, ὁτὲ δὲ ὡς ἀποτέλεσμα τῆς ἐνεργητικότητος τῆς ὠργανωμένης ὕλης, τοῦ ἐγκεφάλου. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Φύσις καὶ πνεῦμα» (1857), «Ἡ θέσις τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ φύσει» (1869), «Φύσις καὶ ἐπιστήμη» (1884), «Ἡ δαρβινικὴ θεωρία» (1890), «Δαρβινισμὸς καὶ σοσιαλισμὸς» (1894), «Θεὸς καὶ ἐπιστήμη» (1897), «Παρὰ τὴν ἐπιθανάτιον κλίνην τοῦ αἰῶνος» (1898), «Εἰς τὴν ὑπηρεσίαν τῆς ἀληθείας» (1900). Ι. Ι. Ι.

—**Μπύχνερ** (Bühner), ***Λουΐζα.*** Γερμανὶς συγγραφεὺς (1821—1877). Ὑπῆρξεν ἀντιπρόεδρος τοῦ «Alice - Verein» (τμῆμα τοῦ Ἐρυθροῦ Σταυροῦ) καὶ ἱδρυτὴς τοῦ «Alice - Lyzeum». Ἐδημοσίευσε τὰς πραγματείας: «Αἱ γυναῖκες καὶ ἡ σταδιοδρομία αὐτῶν» (5η ἔκδ. 1883), «Πρακτικαὶ ἀπόπειραι πρὸς λύσιν τοῦ ζητήματος τῆς γυναικὸς» (1870), «Περὶ τῶν γυναικείων ἐπαγγελμάτων» (1872). Ἔγραψε καὶ μυθιστορήματα, διηγήματα καὶ ποιήματα. Α. Δ.

**μπῶ** (Bô) *['Ινδ. Μυθολ.].* Δένδρον, ὑπὸ τὴν σκιὰν τοῦ ὁποίου ἀνεπαύθη ἐπὶ ἑπτὰ ἔτη ὁ Βούδας ἐν πλήρει ἀπομονώσει, μέχρι τῆς ἐποχῆς καθ' ἣν ἀπέκτησε τὴν ἀπόλυτον γνῶσιν καὶ λύτρωσιν. Τὸ γένος, εἰς ὃ ἀνήκει τὸ δένδρον τοῦτο, δὲν εἶναι γνωστόν. Ἀρχικῶς ἐκαλεῖτο bodhitaru, bodhidruma, bodhivriksha (=δένδρον τῆς σοφίας, δένδρον τοῦ σοφοῦ, δένδρον τοῦ Βούδα), bodhi καὶ κατόπιν *μπῶ*. Τοῦ δένδρου τούτου, τὸ ὁποῖον θεωρεῖται ἱερόν, πιστεύεται ὅτι οὐδέποτε πίπτουσι τὰ φύλλα, ἀλλὰ μόνον μαραίνονται ὀλίγας στιγμὰς κατὰ τὴν ἐπέτειον τῆς Νιρβάνα ἢ τοῦ θανάτου τοῦ Βούδα. Α. Δ.

**Μπῶ** (Beaux), ***Βερτράνδος ντὲ —.*** Φράγκος εὐπατρίδης, μέλος ἐπιφανεστάτης προβηγκιανῆς οἰκογενείας, ἀποσταλεὶς ὡς βάϊλος τῆς Ἀχαΐας τῷ 1340 ὑπὸ τῆς ἐπὶ ψιλῷ ὀνόματι αὐτοκρατείρας τῆς Κωνσταντινουπόλεως Αἰκατερίνης τῆς Βαλεσιακῆς, ἐν ὀνόματι τοῦ Ἀνδηγαυϊκοῦ οἴκου. Αἱ Πάτραι κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην, τελοῦσαι ὑπὸ τὸν ἀρχιεπίσκοπον Γουλιέλμον Φραντζιπάνην, ἦσαν πράγματι αὐτόνομοι, ἀλλ' ὁ Βερτράνδος Μπῶ, ἐπωφελούμενος τοῦ θανάτου τοῦ ἀρχιεπισκόπου, κατέλαβε τὸ ἄστυ καὶ ἐπολιόρκησε τὴν ἀκρόπολιν τῶν Πατρῶν. Ὁ πάπας Βενέδικτος ὁ ΙΒ' προέβη εἰς δριμεῖαν διαμαρτυρίαν ἐναντίον τοῦ πραξικοπήματος τούτου καὶ διέταξε τοὺς ἐπισκόπους Ὠλένης καὶ Κορώνης νὰ ἐπιβάλωσιν ἀφορισμὸν κατὰ τοῦ Μπῶ. Τῷ 1345 ὁ Μπῶ, τυχὼν ἐκ νέου τῆς εὐνοίας τοῦ Ἀνδηγαυϊκοῦ οἴκου, ἀντεπροσώπευσεν ὡς τὸ

Digitized by Google

τοτηρητὴς τὸν ἀνήλικον καὶ ἀπόδημον ἡγεμόνα τοῦ Τάραντος Ροβέρτον ἐν Πελοποννήσῳ, τὸν ἐπὶ ψιλῷ ὀνόματι δοῦκα τῶν Ἀθηνῶν Βάλθερον Βριέννιον, λαβόντα παρὰ τοῦ Ροβέρτου τὸ Ἄργος καὶ τὴν Ναυπλίαν, τοὺς Βενετούς, ὄντας ἀνεξαρτήτους κυρίους τῆς Μεθώνης καὶ Κορώνης, καὶ τὸν Ἕλληνα αὐτοκράτορα τῆς Κωνσταντινουπόλεως.
Δ. Π. Π.

—**Μπὼ** (Beaux), ***Ἰάκωβος ντὲ*** —. Ἔγγονος τοῦ *Βερτράνδου ντὲ Μπώ*, ὁ τελευταῖος ἐπὶ ψιλῷ ὀνόματι αὐτοκράτωρ τῆς ὀνόματι φραγκικῆς αὐτοκρατορίας τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἡγεμὼν τῆς Ἀχαΐας. Μετὰ τὸν θάνατον Φιλίππου Γ′ τοῦ Ἀνδηγαυϊκοῦ (1373), τῆς ἀδελφῆς τοῦ ὁποίου, χήρας τοῦ βασιλέως τῆς Σκωτίας Ἐδουάρδου, ἦτο υἱός, ἀπέβη κληρονόμος ἁπασῶν αὐτοῦ τῶν προσωνυμιῶν καὶ κτήσεων. Περιπλακεὶς εἰς διενέξεις, αἵτινες κατέληξαν εἰς λυσσώδη ἐμφύλιον πόλεμον πρὸς τὴν βασίλισσαν τῆς Νεαπόλεως Ἰωάνναν, προβάλλουσαν ἀξιώσεις ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας τῆς Ἀχαΐας, ὁ Ἰάκωβος ντὲ Μπὼ συνεβλήθη μετὰ τῆς ἀργούσης κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους Ἑταιρείας τῶν Ναβαρραίων, εὐνοϊκῶς διακειμένης πρὸς αὐτόν, ἅτε συγγενῆ τοῦ παλαιοῦ αὐτῶν ἀρχηγοῦ. Τὸ πρῶτον κατόρθωμα τῆς Ἑταιρείας τῶν Ναβαρραίων ὑπῆρξεν ἡ κατάληψις τῆς ὑπὸ τῆς βασιλίσσης Ἰωάννας δεσποζομένης Κερκύρας. Κατόπιν, ἀρχομένου τοῦ 1380, οἱ Ναβαρραῖοι ἐπέδραμον εἰς τὴν Ἀττικὴν καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πελοπόνησον καὶ ἐγένοντο κύριοι τῆς Ἀχαΐας. Καὶ συνήνεσε μὲν ὁ ἀρχηγὸς αὐτῶν Μαϊῶτος Κοκερὲλ νὰ καλῆται βάϊλος τοῦ ἐπὶ ψιλῷ ὀνόματι αὐτοκράτορος τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἡγεμόνος τῆς Ἀχαΐας Ἰακώβου ντὲ Μπὼ ἐφ' ὅσον οὗτος θὰ ἔζη, ἀλλ' ὅτε ὁ Ἰάκωβος ἀπέθανε (1383) ἐν Τάραντι ἄτεκνος, οἱ Ναβαρραῖοι ἀπέβησαν ἐντελῶς ἀνεξάρτητοι.
Δ. Π. Π.

**Μπωαρναὶ** (Beauharnais). Γαλλικὴ οἰκογένεια εὐγενῶν τῆς Ὀρλεάνης, ἀναφερομένη τὸ πρῶτον ἀπὸ τῆς ΙΕ′ ἑκατονταετηρίδος. Διαρκούντων τῶν τριῶν ἑπομένων αἰώνων πολλὰ μέλη τοῦ οἴκου τούτου κατέλαβον ἀνώτερα πολιτικὰ καὶ στρατιωτικὰ ἀξιώματα ἐν Γαλλίᾳ, ἀλλὰ θέσιν ἐν τῇ ἱστορίᾳ λαμβάνουσι κυρίως οἱ Μπωαρναὶ ἀπὸ τῶν ἀμέσως πρὸ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως καὶ μετ' αὐτὴν χρόνων, καθ' οὓς ἀναφέρονται ἰδίᾳ οἱ ἑπόμενοι:

—1) ***Φραγκῖσκος, μαρκήσιος ντὲ Μπωαρναί.*** Ἀνώτερος ἀξιωματικὸς τοῦ ναυτικοῦ (μοίραρχος), γεννηθεὶς τῷ 1756. Ἐκλεγεὶς ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν Συνέλευσιν τῶν Τάξεων, παρέμεινε σταθερῶς μὲ τὴν μερίδα τῶν εὐγενῶν καὶ ὑπῆρξε μεταξὺ τῶν διαμαρτυρηθέντων κατὰ τῶν ἀποφάσεων τῆς συντακτικῆς συνελεύσεως. Ἐπιχειρήσας ἐπὶ ματαίῳ νὰ φυγαδεύσῃ τὸν βασιλέα Λουδοβῖκον ΙΣΤ′, ἐγκατέλιπε τὴν Γαλλίαν τῷ 1792 καὶ ἔσπευσε νὰ ταχθῇ εἰς τὸν στρατὸν τοῦ Λουδοβίκου-Ἰωσὴφ τῶν Βουρβώνων (πρίγκιπος Κονδέ). Ὅταν βραδύτερον ἡ νύμφη του Ἰωσηφίνα ἐγένετο σύζυγος τοῦ Βοναπάρτου, ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν, διωρίσθη δ' ἐπί τινα καιρὸν πρεσβευτὴς ἐν Ἱσπανίᾳ. Περιέπεσεν ὅμως μετ' οὐ πολὺ εἰς τὴν δυσμένειαν τοῦ Ναπολέοντος καὶ ἀνακληθεὶς ὑπεχρεώθη νὰ ζήσῃ ἐφεξῆς ἐν περιορισμῷ εἰς τὰ ἐν Sologne κτήματά του. Οὔτε δὲ καὶ ἐπὶ τῆς παλινορθώσεως ἀνεμείχθη τοῦ λοιποῦ εἰς τὴν πολιτικὴν δρᾶσιν μέχρι τοῦ θανάτου του (1823).

—2) ***Ἀλέξανδρος, ὑποκόμις ντὲ Μπωαρναί.*** Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Μαρτινίκᾳ τῷ 1760 καὶ ἀποθανὼν ἐπὶ τῆς λαιμητόμου ἐν Παρισίοις τῷ 1794. Τῷ 1779 ἐνυμφεύθη τὴν Ἰωσηφίναν Τασὲ ντὲ λὰ Πασερί, τὴν βραδύτερον πρώτην σύζυγον τοῦ Μεγάλου Ναπολέοντος (βλ. λ. *Ἰωσηφίνα*). Ἔλαβε μέρος καὶ διεκρίθη ὡς ἀξιωματικὸς ἐν τῷ πολέμῳ τῆς Ἀμερικῆς, ἐπανελθὼν δὲ εἰς Παρισίους, μετὰ τὴν εἰρήνην, κατέλαβεν ἐξέχουσαν θέσιν μεταξὺ τῶν ἀριστοκρατῶν τῆς ἐποχῆς του καὶ ὁ οἶκός του ἐσυχνάζετο ἀπὸ τὰς πλέον διακεκριμένας προσωπικότητας τῆς αὐλῆς, τῶν ἐπιστημῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Διῆγεν ὅμως βίον ἀδιακόπων διχονοιῶν καὶ ἐρίδων πρὸς τὴν σύζυγόν του, τὴν ὁποίαν ἐν τέλει καὶ διεζεύχθη. Ὅταν ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις, ὢν τότε ἀνώτατος ἀξιωματικός, ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος εἰς τὴν συνέλευσιν τῶν τάξεων, ὅπου ὑπῆρξεν ἐκ τῶν πρώτων εὐγενῶν τῶν συνειργασθέντων μετὰ τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ λαοῦ καὶ συνέβαλε ἐνεργῶς εἰς τὴν κατάλυσιν τοῦ τιμαριωτισμοῦ. Κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς φυγῆς τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ′ προήδρευε τῆς ἐθνοσυνελεύσεως, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνήγγειλε τὸ γεγονὸς διὰ φράσεως, τῆς ὁποίας παρέμεινεν ἱστορικὴ ἡ ὀλιγόλογος ἀξιοπρέπεια: «Κύριοι—εἶπεν—ὁ βασιλεὺς ἀνεχώρησε τὴν νύκτα ἐκ Γαλλίας· εἰσερχόμεθα εἰς τὴν ἡμερησίαν διάταξιν». Ὀλίγον βραδύτερον (Ἰούλιος 1791) ἐξελέγη τακτικὸς πρόεδρος τῆς ἐθνοσυνελεύσεως, μετὰ τὴν διάλυσιν δ' αὐτῆς, ἐπικειμένου τοῦ πολέμου ἀπεστάλη εἰς τὴν στρατιὰν τοῦ Βορρᾶ, ὅπου αἱ ὑπηρεσίαι του ὑπῆρξαν ἀξιόλογοι. Διετέλεσε διοικητὴς τοῦ στρατοπέδου τοῦ Σουασὸν καὶ μέραρχος ἐν τῇ στρατιᾷ τοῦ Ρήνου, τῆς ὁποίας τῷ ἀνετέθη μετέπειτα ἡ γενικὴ ἀρχηγία (Μάρτιος 1793). Δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένον ἂν ἐξ ἰδικῆς του ὑπαιτιότητος, ἢ ἂν ἐκ σφάλματος ἄλλων, ἐπέδειξε τότε περίεργον ἀδράνειαν, ἥτις ἐπέτρεψεν εἰς τοὺς Πρώσσους νὰ ἐκπορθήσουν τὴν Μαγεντίαν. Παραιτηθεὶς ἀμέσως μετὰ τὸ ἀτύχημα ἐκεῖνο, δυνάμει τοῦ διατάγματος ὅπερ ἀπηγόρευεν ἐφεξῆς εἰς τοὺς εὐγενεῖς νὰ κατέχουν ἀνώτερα ἀξιώματα, ἀπεσύρθη εἰς τὰ κτήματά του. Ἀλλ' ἠγέρθη ἐναντίον του σφοδρὰ πολεμικὴ διὰ τὴν ἀτυχῆ δρᾶσίν του ἐν τῷ Ρήνῳ, ἀχθεὶς δ' ἐν τέλει πρὸ τοῦ ἐπαναστατικοῦ δικαστηρίου κατεδικάσθη εἰς θάνατον, τὸν ὁποῖον ἀντεμετώπισε μετὰ τοῦ μεγαλυτέρου θάρρους.

3) ***Ἰωσηφίνα Μπωαρναί.*** Σύζυγος τοῦ ἀνωτέρου καὶ κατόπιν τοῦ Ναπολέοντος Α′ (βλ. λ. *Ἰωσηφίνα*).

—4) ***Εὐγένιος Μπωαρναί,*** υἱὸς τοῦ Ἀλεξάνδρου καὶ θετὸς υἱὸς τοῦ Ναπολέοντος Α′ (βλ. κατωτ.).

—5) ***Εὐγενία-Ὀρτανσία ντὲ Μπωαρναί,*** *βασίλισσα τῆς Ὁλλανδίας.* Ἀδελφὴ τοῦ προηγουμένου, δευτερότοκον τέκνον τοῦ Ἀλεξάνδρου Μπωαρναὶ καὶ τῆς Ἰωσηφίνας. Ἐγεννήθη τῷ 1783 ἐν Παρισίοις καὶ ἦγεν ἡλικίαν δεκατριῶν ἐτῶν ὅταν ὁ Βοναπάρτης, ἁπλοῦς στρατηγὸς τότε, ἐνυμφεύθη τὴν μητέρα της. Συνεπλήρωσεν ἔκτοτε τὴν μόρφωσίν της, ἥτις προσέδωκε νέα θέλγητρα εἰς τὰ φυσικά της πνευματικὰ χαρίσματα καὶ τὴν ἐξαιρετικὴν καλλονήν της. Τῷ 1800 ἦτο τὸ κόσμημα τῆς αὐλῆς τοῦ ὑπάτου. Ἀλλ' αἱ κακολογίαι τῆς ἐποχῆς τὴν παρίστανον ὡς ἐλαφρὰν τὰ ἤθη, ἔφθανον δ' ἀκόμη νὰ ἐκφράζουν ἀμφιβολίας περὶ τῆς ἀθωότητος τῶν μεταξὺ αὐτῆς καὶ τοῦ πατρυιοῦ της σχέσεων. Ἐκ τῶν λόγων τούτων ὁ Ναπολέων συνήντησε μεγάλας δυσκολίας, ὅταν ἠθέλησε νὰ τὴν ὑπανδρεύσῃ. Ἐκ μέρους τοῦ στρατηγοῦ Μορώ, πρὸς τὸν ὁποῖον ἀπετάθη πρῶτον, ἔλαβεν ἀνεπιφύλακτον ἀρνητικὴν ἀπάντησιν, ἐστράφη δὲ τότε πρὸς τὸν ἀδελφόν του Λουδοβῖκον, νέον ἰδιότροπον καὶ φιλύποπτον, ὅστις, ἀφοῦ ἐπὶ μακρὸν προσεπάθησε ν' ἀποφύγῃ τὸν γάμον, ὑπετάχθη ἐν τέλει εἰς τὴν θέλησιν τοῦ ὑπάτου καὶ ἐνυμφεύθη τὴν Ὀρτανσίαν τὸν Ἰανουάριον τοῦ 1802. Ἐκ τῶν πρώτων ἐτῶν τῆς συμβιώσεώς των ἐγεννήθησαν δύο τέκνα, ὁ Ναπολέων-Κάρολος (1802) καὶ ὁ Ναπολέων-Λουδοβῖκος (1804). Ἀλλ' ὁ βίος τοῦ συζυγικοῦ ζεύγους ἀπέβαινεν ὁλονὲν δυσαρμονικώτερος, ὅταν δὲ ὁ Λουδοβῖκος Βοναπάρτης ἐγένετο βασιλεὺς τῆς Ὁλλανδίας, ἡ σύζυγός του πολὺ σπανίως παρέμενεν εἰς τὸ κράτος της. Ἐγεννήθη ἐν τούτοις τῷ 1808 καὶ τρίτον ἐκ τοῦ γάμου των τέκνον, ὁ Κάρολος-Λουδοβῖκος-Ναπολέων, ὁ μετέπειτα *Ναπολέων Γ′*. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὁ αὐτοκράτωρ ἐσχεδίαζε νὰ διαζευχθῇ τὴν Ἰωσηφίναν, ἡ δὲ Ὀρτανσία κατέβαλε μεγάλας προσπαθείας πλησίον του, ὅπως τὸν ἀποτρέψῃ. Οὐδὲν ὅμως κατώρθωσεν, ὑπεχρεώθη δ' ἐξ ἄλλου νὰ λάβῃ μέρος εἰς τὰς μεγάλας ἑορτάς, αἵτινες ἐπηκολούθησαν τὴν ἄφιξιν τῆς νέας αὐτοκρατείρας. Ἐνθαρρυνθεῖσα ἀπὸ τὸ παράδειγμα τοῦ πατρυιοῦ της, τὸν παρεκάλεσε τότε νὰ ἐπιτρέψῃ καὶ εἰς αὐτὴν τὴν διάλυσιν τοῦ γάμου της μὲ τὸν Λουδοβῖκον. Ἀλλ' ὁ Ναπολέων, εἴτε διὰ πολιτικοὺς λόγους, εἴτε πρὸς ἀποτροπὴν σκανδάλων, δὲν ἐπέτρεψεν οὔτε τὸ διαζύγιον, οὔτε κἂν τὸν ἀπὸ κοίτης χωρισμόν των. Ἄλλως τε, μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ συζύγου της καὶ τὴν ἕνωσιν τοῦ βασιλείου του μετὰ τῆς Γαλλίας, ἡ Ὀρτανσία ἔζη διαρκῶς μεμακρυσμένη ἀπ' αὐτοῦ καὶ ἐν πλήρει ἀνεξαρτησίᾳ. Ὁ Ναπολέων τῆς εἶχε παραχωρήσει εἰσόδημα δύο ἑκατομμυρίων φράγκων καὶ τὴν ἐπιτροπείαν τῶν τέκνων της, διέμενε δὲ κατὰ τὸ πλεῖστον εἰς τὴν ἐν Saint-Leu ἔπαυλίν της, περιβαλλομένη ἀπὸ καλλιτέχνας καὶ ποιητάς, γράφουσα αἰσθηματικοὺς στίχους καὶ ἀσχολουμένη μετὰ πάθους εἰς τὴν ἀνθοκομίαν. Πολὺς ἐγίνετο τότε λόγος διὰ τὰς σχέσεις της μὲ τὸν ναύαρχον Verhueul, τὸν ὁποῖον ἀντικατέστησε βραδύτερον ὁ στρατηγὸς Flahaut. Ἐκ τοῦ δεσμοῦ της δὲ πρὸς τὸν τελευταῖον τοῦτον ἐγεννήθη τῷ 1811 ὁ σημαντικῶς δράσας ἐπὶ τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας πολιτικὸς *Μορνὺ* (βλ. λ.).

Μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ναπολέοντος, ἡ Ὀρτανσία ἠθέλησε νὰ παραμείνῃ ἐν Γαλλίᾳ, κατώρθωσε δὲ νὰ εὐνοηθῇ ὑπὸ τῶν συμμάχων ἡγεμόνων, χάρις εἰς τοὺς ὁποίους ὁ Λουδοβῖκος ΙΗ′ ἔδωκεν εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ Sain-Leu τίτλον δουκάτου καὶ ἐξησφάλισεν εἰς αὐτὴν εἰσόδημα 400.000 φράγκων. Κατὰ τὴν ἐπάνοδόν του ἐκ τῆς Ἔλβας ὁ Ναπολέων, δυσηρεστημένος διὰ τὴν στάσιν αὐτῆς ἐπὶ τῆς παλινορθώσεως, δὲν ἠθέλησε νὰ συναντηθῇ μαζί της. Δὲν ἐδυσκολεύθη ὅμως νὰ τὸν καταπραΰνῃ καὶ νὰ ἐπανακτήσῃ τὴν ἀγάπην καὶ τὴν ἐμπιστοσύνην του. Μετὰ τὴν δευτέραν πτῶσιν τοῦ Βοναπάρτου ἀπηγορεύθη εἰς τὴν Ὀρτανσίαν ἡ ἐν Γαλλίᾳ διαμονή, τὸ δὲ δουκᾶτόν της ἐδημεύθη. Παρέμεινεν ἔκτοτε, μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ ἀδελφοῦ της Εὐγενίου καὶ τοῦ αὐτοκράτορος Μαξιμιλιανοῦ, κατ' ἐπανάληψιν καὶ ἐπὶ μακρὸν χρόνον ἐν Βαυαρίᾳ, ἐπιμελουμένη τῆς ἀνατροφῆς τῶν τέκνων της. Ἡ προσπάθειά της ὅπως ἐπανέλθῃ εἰς Γαλλίαν ἐπὶ Λουδοβίκου-Φιλίππου ἀπέτυχεν, ἐγκατασταθεῖσα δ' ἐφεξῆς ἐν Ἑλβετίᾳ ἀπέθανεν ἐκεῖ (5 Ἀπριλίου 1837). Τὰ λείψανά της μεταφερθέντα ἐτάφησαν ἐγγὺς τῆς ἐπαύλεως Μαλμαιζόν, παρὰ τὸν τάφον τῆς μητρός της, ὅπου βραδύτερον ὁ Ναπολέων Γ′ ἤγειρε μεγαλοπρεπὲς εἰς μνήμην της μαυσωλεῖον.
—Ω.

**Μπωαρναὶ** (Beauharnais), ***Εὐγένιος ντὲ***—, *δοὺξ τοῦ **Λόϋχτεν-Μπέργ**, πρίγκιψ τοῦ **Ἄιχσταντ**.* Ἀντιβασιλεὺς τῆς Ἰταλίας, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1781 καὶ ἀποθανὼν ἐν Μονάχῳ τῷ 1824. Ἦτο υἱὸς τοῦ ὑποκόμιτος Μπωαρναὶ καὶ τῆς Ἰωσηφίνης Τασὲ ντὲ λὰ Παζερί, τῆς μετέπειτα αὐτοκρατείρας τῆς Γαλλίας. Μετὰ τὴν 13 Βαντεμιαὶρ (5 Ὀκτωβρίου 1795), παρουσιασθεὶς ὁ Εὐγένιος εἰς τὸν Βοναπάρτην, ᾐτήσατο παρ' αὐτοῦ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ πατρικοῦ ξίφους, κατασχεθέντος κατὰ τὸν γενικὸν ἀφοπλισμὸν τῶν Παρισίων. Τὸ γεγονὸς τοῦτο ἐγένετο ἀφορμὴ ὅπως ἀναλάβῃ ὁ Βοναπάρτης αὐτὸν ὑπὸ τὴν προστασίαν του· ἀπὸ τῆς ἡμέρας δὲ ταύτης ἤρξατο διὰ τὸν Εὐγένιον ἡ τύχη, ἥτις τὸν συνέδεσε μέχρι τῆς τελευταίας στιγμῆς μὲ τὴν δόξαν τῆς Γαλλίας καὶ τὸ μεγαλεῖον τοῦ Ναπολέοντος. Συγκινηθεὶς ἐκ τῆς εὐγενείας τῶν αἰσθημάτων τοῦ παιδός, μετέβη τὴν ἑπομένην ὅπως συγχαρῇ τὴν μητέρα του, καταθελχθεὶς δὲ ὁ Βοναπάρτης ἐκ τῶν θελγήτρων καὶ τῆς εὐγενείας τῆς Ἰωσηφίνης, προσέφερε μετά τινα χρόνον εἰς αὐτὴν τὴν χεῖρά του.

*Εὐγένιος Μπωαρναί.*

Ὁ Ναπολέων ἠγάπησε τὰ τέκνα τῆς Ἰωσηφίνης ὡς ἰδικά του καὶ ἠσχολήθη μὲ τὴν ἐκπαίδευσιν τοῦ Εὐγενίου, τὴν ὁποίαν αἱ ἐπαναστατικαὶ θύελλαι ἀφῆκαν ἀσυμπλήρωτον. Διορισθεὶς ἀρχιστράτηγος τοῦ στρατοῦ τῆς Ἰταλίας, ἐκάλεσεν αὐτὸν ἐκεῖ καὶ τὸν προσέλαβεν ὡς ὑπασπιστήν του, δὲν ἐβράδυνε δὲ νὰ διακρίνῃ τὰς ἀρετὰς τοῦ νεανίσκου, αἵτινες ἀνεπτύχθησαν μεγάλως βραδύτερον. Μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τοῦ Κάμπο-Φόρμιο, μεταξὺ Γαλλίας καὶ Αὐστρίας, διὰ τῆς ὁποίας αἱ Ἰόνιοι νῆσοι ἡνοῦντο μετὰ τῆς Γαλλίας, ὁ Βοναπάρτης ἀπέστειλεν εἰς Κέρκυραν τὸν δεκαεξαετῆ Εὐγένιον Μπωαρναί, ὅστις ἀφίκετο τὴν 1 Νοεμβρίου 1797 φέρων τὴν ἀνακοίνωσιν τῆς ἑνώσεως. Μετὰ τὴν ἀποστολὴν ταύτην ὁ Εὐγένιος ἠκολούθησε τὸν Ναπολέοντα εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Αἰγύπτου καὶ ἀποβιβασθεὶς ἐκ τῶν πρώτων εἰς τὴν Μελίτην, ἀφήρπασεν ἰδίᾳ χειρὶ ἐχθρικὴν σημαίαν. Τὸ θάρρος καὶ ἡ τόλμη του ἀπέσπασαν τὸν θαυμασμὸν πάντων κατὰ τὴν ἔφοδον τῆς Ἀλεξανδρείας, τὴν μάχην τῶν Πυραμίδων, κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ Καΐρου, τὴν σύγκρουσιν τοῦ Ἐλ Ἀρίχ, τὴν ἅλωσιν τῆς Ἰόππης, τὴν πολιορκίαν τῆς Πτολεμαΐδος καὶ τὴν περίφημον μάχην τοῦ Ἀβουκίρ. Κατὰ τὴν πρώτην ἔφοδον τῆς Πτολεμαΐδος, ὁ Εὐγένιος, τραυματισθεὶς ὑπὸ ἐκραγείσης βόμβας, παρέμεινεν ἐπὶ μακρὸν ὑπὸ τὰ ἐρείπια καταρρεύσαντος τείχους. Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν λοχαγὸς τοῦ ἱππικοῦ, προήχθη εἰς ταγματάρχην διαρκούσης τῆς μάχης τοῦ Μαρέγκου. Μετὰ δύο ἔτη, προαχθεὶς εἰς συνταγματάρχην, ἐγένετο διοικητὴς τοῦ περιβοήτου συντάγματος τῶν κυνηγῶν τῆς φρουρᾶς καὶ ἐτοποθετήθη κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατηγοῦ Μπεσσιέρ. Τῷ 1804 προήχθη εἰς ὑποστράτηγον. Ἀνελθὼν εἰς τὸν θρόνον τῆς Γαλλίας ὁ Ναπολέων, ἀπένειμεν εἰς αὐτὸν τὸν τίτλον τοῦ πρίγκιπος τῆς Γαλλίας Μετὰ τὴν σύστασιν τοῦ ἰταλικοῦ κράτους, ὁ Εὐγένιος διωρίσθη, εἰκοσιτετραετὴς τότε, ἀντιβασιλεὺς αὐτοῦ καὶ ἐξέλεξεν ὡς ἕδραν του τὸ Μιλᾶνον, ἐνασκῶν πᾶσαν τὴν πολιτικὴν καὶ στρατιωτικὴν ἐξουσίαν.

Ὁ πρίγκιψ Εὐγένιος ἐπέδειξεν ἀρετὰς σπανίου πολιτικοῦ ἀνδρός. Οἱ διοικητικοὶ κλάδοι ἐρρυθμίσθησαν μετὰ τάξεως καὶ οἰκονομίας· ὠργανώθησαν τὰ δικαστήρια καὶ μετ' ὀλίγον χρόνον ὁ παρ' αὐτοῦ ὀργανωθεὶς ἰταλικὸς στρατὸς ἐγένετο ἐφάμιλλος τοῦ γαλλικοῦ. Ἐπὶ πλέον ἐπέδειξε διοικητικὴν ἰδιοφυΐαν, ἐνισχύσας τὴν γεωργίαν, τὸ ἐμπόριον καὶ τὴν βιομηχανίαν, ἐξετέλεσε μεγάλα δημόσια ἔργα, ἔθεσε τὰς βάσεις τῆς δημοσίας παιδεύσεως καὶ ἔδωκε μεγάλην ὤθησιν εἰς τὰς ἐπιστήμας. Ἐπὶ τῶν ἡμερῶν του ἤνθησαν ἐκ νέου τὰ διάσημα πανεπιστήμια τῆς Βολωνίας καὶ τοῦ Παταβίου, συνεστήθησαν δὲ πολυάριθμα εὐαγῆ ἱδρύματα καὶ τεχνικαὶ σχολαί. Ὁ νεαρὸς ἀντιβασιλεὺς δὲν παρεῖδε καὶ τὰς καλὰς τέχνας· συνέλεξε τὰς ἐγκατεσπαρμένας ἑλληνικὰς καὶ ρωμαϊκὰς ἀρχαιότητας, ἵδρυσε τὸ περίφημον μουσεῖον Μπρέρα καὶ συνέστησεν ᾠδεῖον μουσικῆς καὶ ἀπαγγελίας ἐν Μιλάνῳ, ὅπερ ἐγένετο ἡ βάσις τῆς διαπλάσεως τοῦ θεάτρου ἐν τῇ πόλει ταύτῃ. Εἰς τὸν Εὐγένιον ὀφείλεται ἐπίσης ἡ ἀναγέννησις τῆς μαρανθείσης τέχνης τῶν μεγάλων μωσαϊκῶν, αἱ δὲ θαυμάσιαι τοι-

Digitized by Google

χογραφίαι τοῦ 'Αππιάνι καὶ αἱ τῆς προσόψεως τῆς μητροπόλεως τοῦ Μιλάνου εἰσὶ μνημεῖα ἀθάνατα τῆς διοικήσεως τοῦ ἀντιβασιλέως καὶ τοῦ θερμοῦ ἔρωτος αὐτοῦ πρὸς τὰς τέχνας. Ὁ Ναπολέων ἐξήτησε διὰ τὸν Εὐγένιον τὴν χεῖρα τῆς θυγατρὸς τοῦ ἐκλέκτορος τῆς Βαυαρίας πριγκιπίσσης Αὐγούστας-'Αμαλίας. Δύο ἔτη μετὰ τὴν ὑπογραφὴν τῆς συνθήκης τοῦ Τιλσίτ, ἡ Αὐστρία, ἐπωφελουμένη τῆς παραμονῆς τοῦ Ναπολέοντος μετὰ μεγάλου μέρους τῶν στρατιωτικῶν του δυνάμεων εἰς Ἱσπανίαν, εἰσέβαλεν ἄνευ κηρύξεως πολέμου εἰς τὴν Βαυαρίαν, διέταξε δὲ τὸν ἀρχιδοῦκα Ἰωάννην νὰ προελάσῃ ἐπὶ κεφαλῆς πολυαρίθμου στρατοῦ εἰς Ἰταλίαν. Ὁ ἀντιβασιλεὺς Εὐγένιος δὲν εἶχεν εἰμὴ στρατὸν ἐκ 40.000 Ἰταλῶν νεοσυλλέκτων, ὅπως ἀντιμετωπίσῃ τὰ ἐξησκημένα στρατεύματα τοῦ ἀρχιδουκός. Καὶ ἡ μὲν ἀρχὴ τοῦ πολέμου τούτου ὑπῆρξε δυσμενής, καθ' ὅσον ἀπώλεσε τὴν μάχην τοῦ Σατσίλε. Ἀλλ' ἡ στρατιωτικὴ μεγαλοφυΐα αὐτοῦ ἀνεπλήρωσε τὰς ὑλικὰς ἀπωλείας, καὶ μετὰ μικρὸν ἠκολούθησαν αἱ περίλαμπροι νῖκαι τοῦ Πιάβε, τοῦ Ἁγίου Δανιήλ, τοῦ Ρατβὶρ καὶ τοῦ Ἁγίου Μιχαήλ, αἵτινες ἤνοιξαν αὐτῷ τὰς πύλας τῆς Αὐστρίας καὶ τὴν ὁδὸν πρὸς τὴν Βιέννην. Οὐδὲν παρεκώλυε πλέον τὴν ὁρμητικὴν προέλασιν αὐτοῦ· συνέτριψε πάντα τὰ ἀνθιστάμενα αὐστριακὰ στρατιωτικὰ σώματα καὶ ἐξετέλεσε μετὰ καταπλησσούσης ταχύτητος τὴν ἕνωσιν αὐτοῦ μετὰ τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ ἐπὶ τῶν ὑψωμάτων τοῦ Σέμμεριγκ. Ἡ ἕνωσις αὕτη παρεσκεύασε τὴν μεγάλην νίκην τοῦ Ναπολέοντος ἐν Βαγκράμ. Ἄξιος μαθητὴς τοῦ Ναπολέοντος, παρέσυρε τὸν ἀρχιδοῦκα Ἰωάννην εἰς τὴν ἀξιομνημόνευτον μάχην ἐκ παρατάξεως τοῦ Ραάμπ, ἥτις ἐνέγραψε τὸ ὄνομα αὐτοῦ εἰς τὴν ἱστορίαν μετὰ τοῦ ὀνόματος τοῦ μεγάλου στρατηλάτου.

Μετὰ τὴν συνομολόγησιν τῆς εἰρήνης, ὁ πρίγκιψ Εὐγένιος ἐγένετο ἀναπληρωτὴς τοῦ αὐτοκράτορος καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐντολήν, ἐπιστρέφων εἰς Ἰταλίαν, νὰ ἐπιφέρῃ τάξιν εἰς τὸ ἐξεγερθὲν Τυρόλον. Ἀποφασίσας ὁ Ναπολέων νὰ διαζευχθῇ, εἰς αὐτὸν ἀνέθεσε τὸ βαρὺ ἔργον, ὅπως παρασκευάσῃ τὴν μητέρα του. Ὁ Εὐγένιος ἐδέχθη, ἐξ ἀφοσιώσεως καὶ εὐγνωμοσύνης πρὸς τὸν Ναπολέοντα, τὴν θυσίαν ταύτην, ἐζήτησεν ὅμως νὰ παραιτηθῇ ἀπὸ παντὸς ἀξιώματος καὶ ν' ἀποσυρθῇ εἰς τὸν οἰκογενειακὸν βίον. Ἀλλὰ ὑποκύψας εἰς τὰς παρακλήσεις τῆς μητρός του καὶ τοῦ Ναπολέοντος, ἐδέχθη μὲν ὅπως τηρήσῃ τὴν ἀντιβασιλείαν τῆς Ἰταλίας, ἐδήλωσεν ὅμως ὅτι θὰ ἠρνεῖτο τοῦ λοιποῦ πᾶσαν εὔνοιαν τοῦ Ναπολέοντος, ὅπως μὴ θεωρηθῇ αὕτη ὡς ἀντιστάθμισμα τοῦ διαζυγίου τῆς μητρός του. Ἐπιστρέψας εἰς Ἰταλίαν ἠσχολήθη εἰς τὴν ὀργάνωσιν τῶν νέων διαμερισμάτων, τὰ ὁποῖα προσέθεσεν ἡ συνθήκη τῆς Βιέννης εἰς τὸ κράτος του, ὡς καὶ εἰς τὴν ὀργάνωσιν σώματος στρατοῦ ἐξ Ἰταλῶν καὶ Γάλλων, ὅπως χρησιμοποιηθῇ κατὰ τὴν μεγάλην ἐκστρατείαν τοῦ Ναπολέοντος κατὰ τῆς Ρωσίας. Τὸ σῶμα τοῦτο, ὅπερ ἦτο τὸ τέταρτον, ἐκαλύφθη ὑπὸ δόξης κατὰ τὴν φοβερὰν ἐκείνην ἐκστρατείαν, ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ἰδίου ἀντιβασιλέως, διαπρέψαν ἰδίως κατὰ τὰς μάχας τοῦ Ὀστρόβνο, τοῦ Βίτεπκ, τὴν μεγάλην μάχην τῆς Μόσχας καὶ ἰδίως κατὰ τὴν ἐν Μαλοϊεροσλάβιτς, καθ' ἣν μόνος του ὁ Εὐγένιος ἀντεμετώπισε πάσας τὰς ἐχθρικὰς δυνάμεις. Μόλις ὁ Εὐγένιος ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τοῦ ὅλου στρατοῦ, ὑπὸ τὴν ἰδιότητα τοῦ ἀναπληρωτοῦ τοῦ αὐτοκράτορος, τὰ πάντα μετέβαλον ὄψιν. Ὁ στρατὸς ἀνεπαύθη καὶ ἀναδιωργανώθη, ἐπὶ κεφαλῆς δὲ 12.000 ἀνδρῶν, ἐπὶ τέσσαρας ὁλοκλήρους μῆνας, ὁ ἀντιβασιλεὺς ἐκράτησε τοὺς ἐχθροὺς ἐπὶ τῶν ὀχθῶν τοῦ Ἔλβα καὶ διέσωσε τὸ Βερολῖνον ἀπὸ τῆς λεηλασίας. Ἔδωσεν οὕτω τὸν καιρὸν εἰς τὸν Ναπολέοντα νὰ παρασκευάσῃ νέαν μεγάλην στρατιάν. Τὰ λείψανα τοῦ στρατοῦ τῆς Μόσχας συνεκεντρώθησαν περὶ τὸν αὐτοκρατορικὸν ἀετόν, ὑπὸ τὴν διοίκησιν πάντοτε τοῦ Εὐγενίου καὶ οὐχὶ μακρὰν τῆς πυραμίδος ἐπὶ τοῦ πεδίου τῆς μάχης τοῦ Λούτζεν. Ὁ Εὐγένιος ἡνώθη ἐν καιρῷ μετὰ τοῦ Ναπολέοντος, ὅπως μετάσχῃ νέας νίκης, εἰς ἣν συνετέλεσεν ἡ ὁρμή, δι' ἧς ἐξετέλεσεν οὗτος ἐπικίνδυνον κίνησιν ἐπὶ τῆς δεξιᾶς πτέρυγος τοῦ ἐχθροῦ. Ἐπιστρέψας εἰς Ἰταλίαν ὁ ἀντιβασιλεὺς αὐτῆς δὲν εὗρεν οὔτε ἀξιωματικούς, οὔτε στρατιώτας, οὔτε ἀποθήκας, οὔτε χρηματικὰ μέσα. Ἡ ἀκατάβλητος ἐν τούτοις στρατιωτικὴ μεγαλοφυΐα του ἐτέθη ὑπεράνω τῆς θλιβερᾶς καταστάσεως. Ἐντὸς δύο μηνῶν 40.000 ἀνδρῶν παρετάσσοντο εἰς τὰ σύνορα πρὸς ἐκστρατείαν καὶ ἦτο ἤδη ἕτοιμος ὅπως μεταφέρῃ τὸν πόλεμον ἐπὶ τοῦ ἐχθρικοῦ ἐδάφους. Ἀπεμάκρυνε τοὺς ἐχθροὺς ἐκ τῶν Ἄλπεων καὶ ἠπείλει τὴν Ἰλλυρίαν, ὅτε ἐπληροφορήθη ὅτι 60.000 ἀνδρῶν ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Χίλλερ κατεῖχον ἤδη τὴν ἐπαρχίαν ταύτην. Μετέβαλε τότε σχέδιον καὶ παρεσκευάσθη εἰς ἀμυντικὸν πόλεμον, λαβὼν πάντα τὰ μέτρα ὅπως κρατήσῃ πάντα τὰ ὑψώματα τοῦ Σάβου. Ἀλλ' ἡ μετάστασις τῆς Βαυαρίας πρὸς τοὺς ἀντιπάλους διήνοιξεν εἰς τὸν ἐχθρὸν τὴν λεωφόρον τοῦ Τυρόλου, καὶ ὁ ἀντιβασιλεὺς συνεπτύχθη ἐπὶ τοῦ Ἴντζο καὶ τοῦ Ἀδίγου. Ἠκολούθησεν ἡ λιποταξία τοῦ βασιλέως τῆς Νεαπόλεως Μυρᾶ, ἥτις ἠνάγκασε τὸν Εὐγένιον νὰ ὀχυρωθῇ ὄπισθεν τοῦ Μίντσιο, ἀναμένων τὴν ἐξέλιξιν τῶν γεγονότων. Παρὰ τὸ ὀλιγάριθμον τοῦ στρατοῦ του καὶ τὰς πολιτικὰς καὶ στρατιωτικὰς δυσχερείας, εἰς ἃς εὑρίσκετο, ἐνίκησε τοὺς Αὐστριακοὺς εἰς Μίντσιο καὶ τοὺς Νεαπολίτας ἐπὶ τῶν τειχῶν τῆς Πάρμας. Τῷ ἐπροτάθη τότε ὅπως ἑνώσῃ τὰς δυνάμεις του μετὰ τῶν συμμαχικῶν, ἐναντίον τοῦ Ναπολέοντος, εἰς ἀντάλλαγμα δὲ τῷ προσεφέρετο ὁ θρόνος, ἀλλ' ὁ Εὐγένιος τὰς ἀπέρριψε. Μετὰ τὴν παραίτησιν τοῦ Ναπολέοντος ἀπεμακρύνθη τῆς Ἰταλίας καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Μόναχον ἐν μέσῳ τῆς οἰκογενείας του. Κληθεὶς εἰς Παρισίους ὑπὸ τῆς μητρὸς καὶ τῆς ἀδελφῆς του, ὅπως διαπραγματευθῇ τὰ τῆς θέσεως αὐτῶν μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Ρωσίας Ἀλεξάνδρου Α', συνεδέθη μετ' αὐτοῦ διὰ στενῆς φιλίας, τῇ ἐπεμβάσει δὲ αὐτοῦ ἀνέκτησε τὴν ἐν Ἰταλίᾳ περιουσίαν του. Ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Βαυαρίας ἀνηγορεύθη δοὺξ τοῦ Λόϋχτενμπεργκ καὶ πρίγκιψ τοῦ Ἄϊχσταντ. Ἀφῆκε πολυάριθμα ἔγγραφα σχετικὰ πρὸς τὴν ἱστορίαν τῆς Γαλλίας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐκτενῆ μετὰ τοῦ Ναπολέοττος ἀλληλογραφίαν ἐπὶ πολιτικῶν καὶ στρατιωτικῶν ζητημάτων.

Θ. ΒΕΛΛΙΑΝΙΤΗΣ

**Μπωβαὶ** (Beauvais) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας, πρωτεύουσα τοῦ νομοῦ Οὐὰζ εἰς ἀπόστασιν 79 χλμ. πρὸς Β. τῶν Παρισίων. Ἔχει κρατικὰς βιομηχανίας ταπήτων, ὑφισταμένας ἀπὸ τοῦ 1604, καὶ ἐργοστάσια ὑφασμάτων, βελούδων, κλινοσκεπασμάτων κλπ. Κάτ. 19.850. Ἔχει ἐνδιαφέροντα μνημεῖα, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐξέχουσαν θέσιν κατέχει ἡ παλαιὰ γοτθικὴ μητρόπολις τοῦ Ι' αἰῶνος, ἀνοικοδομηθεῖσα κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, ἥτις θεωρεῖται ἓν τῶν καλλίστων θρησκευτικῶν κτηρίων τῆς Γαλλίας. Περιλαμβάνει ὁλόκληρον θησαυρὸν ὑελογραφιῶν, γλυπτῶν, ξυλογλυπτικῶν κλπ. ἔργων μεγάλης καλλιτεχνικῆς ἀξίας.

— *[Ἱστορ.]* Ἡ *Μπωβαὶ* εἶναι παλαιοτάτη πόλις, εὑρισκομένη εἰς μεγάλην ἀκμὴν ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τῶν Ρωμαίων, οἵτινες κατέλαβον τὴν χώραν μετὰ δωδεκαετῆ πόλεμον πρὸς τὸν οἰκοῦντα αὐτὴν λαὸν τῶν Βελοβάκων. Μετὰ πολλὰς περιπετείας κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν βαρβαρικῶν ἐπιδρομῶν περιελήφθη εἰς τὸ βασίλειον τῆς Γαλλίας, ἐξηκολούθησεν ὅμως νὰ ὑφίσταται τὰς ἐπιδρομὰς τῶν Νορμανδῶν, οἵτινες τῷ 850 ἐπυρπόλησαν αὐτήν. Κατὰ τὸ 1471 ἡ πόλις ἐπολιορκήθη ἐπὶ μακρὸν ὑπὸ τῶν στρατευμάτων τοῦ Καρόλου τοῦ Τολμηροῦ, ἀλλ' ἐσώθη χάρις εἰς τὸν ἡρωϊσμὸν τῆς νεαρᾶς ἐκ Μπωβαὶ ἡρωΐδος Ἰωάννας Ἀσέτ.

Χ. Δ.

**Μπωβαὶ** (Beauvais), ***Γουλιέλμος***. Γάλλος νομισματολόγος (1695—1773). Κατήρτισε πολύτιμον συλλογὴν μεταλλίων καὶ ἔγραψεν ἐνδιαφέροντα νομισματολογικὰ συγγράμματα καὶ μελέτας, ἐν οἷς: «Συνοπτικὴ ἱστορία τῶν Ρωμαίων αὐτοκρατόρων συμφώνως πρὸς τὰ νομίσματα» (3 τόμ. 1767), «Πραγματεία περὶ τῶν δημοσίων οἰκονομικῶν καὶ τῶν κιβδήλων νομισμάτων τῶν Ρωμαίων» (1740) κ. ἄ.

Χ. Δ.

— **Μπωβαὶ** (Beauvais), ***Ἰωάννης-Βαπτιστὴς-Κάρολος-Μαρία***. Γάλλος κληρικὸς (1731—1790). Μετὰ λαμπρὰς σπουδὰς ἐν Παρισίοις ἐγένετο ἱεροκήρυξ τῆς αὐλῆς, τῆς ὁποίας τὰ τρωτὰ ἤλεγξε πολλάκις μετὰ θάρρους. Τὴν ἡμέραν τῆς Μεγάλης Πέμπτης τοῦ 1774 ἀπηύθυνε πρὸς τὸν βασιλέα Λουδοβῖκον ΙΕ' τοὺς ἑξῆς λόγους: «Μεγαλειότατε, τὸ καθῆκόν μου ὡς θεράποντος τοῦ Θεοῦ τῆς ἀληθείας μοῦ ἐπιβάλλει νὰ σᾶς εἴπω ὅτι ὁ λαός σας εἶναι δυστυχής, ἐξ αἰτίας σας, καὶ ὅτι σᾶς ἀφίνουν νὰ τὸ ἀγνοῆτε», περαίνων δὲ τὴν ὁμιλίαν του ἀπήγγειλε τοὺς προφητικοὺς λόγους τοῦ Ἰωνᾶ περὶ τῆς ἐντὸς τεσσαρακονθημέρου καταστροφῆς τῆς Νινευΐ. Κατὰ σύμπτωσιν ὁ Λουδοβῖκος ἀπέθανεν ἐντὸς τεσσαράκοντα ἡμερῶν, μεγάλη δὲ προεκλήθη ἐκ τῆς προφητείας ταύτης ἐντύπωσις παρὰ τῷ λαῷ. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ βασιλέως ἐπεφορτίσθη ὑπὸ τοῦ διαδεχθέντος αὐτὸν Λουδοβίκου ΙΣΤ' νὰ ἐκφωνήσῃ τὸν ἐπικήδειον. Τῷ 1773 ἐγένετο ἐπίσκοπος τοῦ Σενέζ, κατὰ τὴν σύγκλησιν δὲ τῶν γενικῶν τάξεων ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τοῦ κλήρου τῶν Παρισίων, δὲν ἠδυνήθη ὅμως νὰ παίξῃ σημαίνοντα ῥόλον λόγῳ κλονισμοῦ τῆς ὑγείας του. Ὁ Μπωβαὶ ἦτο ῥήτωρ γλαφυρός, ἐπαγωγὸς καὶ λιτός. Τὰ ἔργα του ἐδημοσιεύθησαν ὑπὸ τὸν τίτλον «Ὁμιλίαι, πανηγυρικοὶ καὶ ἐπικήδειοι λόγοι τοῦ ἀββᾶ Μπωβαὶ» (1807, εἰς 4 τόμ.).

Χ. Δ.

— **Μπωβαὶ** (Beauvais), ***Κάρολος-Θεόδωρος***. Γάλλος στρατηγὸς καὶ συγγραφεὺς (1772—1830). Μετασχὼν τῆς εἰς Αἴγυπτον ἐκστρατείας, παρῃτήθη τοῦ στρατεύματος κατόπιν συγκρούσεως του πρὸς τὸν Βοναπάρτην (1796). Αἰχμαλωτισθεὶς ὑπὸ τῶν Τούρκων κατὰ τὴν εἰς Γαλλίαν ἐπάνοδόν του, ἤχθη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπου καθείρχθη ἐπὶ 18 μῆνας ἐν ταῖς φυλακαῖς τοῦ Ἑπταπυργίου. Τῷ 1809 ἐπανῆλθεν εἰς τὰς τάξεις τοῦ στρατοῦ, προαχθεὶς δὲ εἰς ὑποστράτηγον καὶ ὀνομασθεὶς βαρῶνος ἐστάλη κατ' ἀρχὰς εἰς Ἱσπανίαν. Ἀκολούθως ἐπολέμησεν εἰς Ρῆνον (1813), ἀνακατέλαβε τὸ Νοὺς, διωρίσθη κατὰ τὸ Ἑκατονθήμερον διοικητὴς τοῦ Μπαγιὸν καὶ τέλος ἀπεσύρθη μετὰ τὸ Βατερλὼ εἰς τὸν ἰδιωτικὸν βίον. Ἦτο εἷς τῶν κυριωτέρων συντακτῶν τῶν ἔργων: «Νῖκαι καὶ κατακτήσεις τῶν Γάλλων» (1817, εἰς 28 τόμ.) καὶ «Ἱστορικὸν λεξικὸν ἢ διεθνεῖς κλασσικαὶ βιογραφίαι» (18..-1829, τόμ. 6) καὶ ἐδημοσίευσεν: «Ἐπίσημος καὶ [illegible]στικὴ ἀλληλογραφία τοῦ Ναπολέοντος Βοναπάρτου [illegible] τῶν ξένων αὐλῶν κλπ.» (1819—1820, τόμ. 7).

Χ. Δ.

**Μπωβιλλιὲ** (Beauvilliers). ***Παῦλος***, δοὺξ [illegible] Γάλλος εὐπατρίδης (1648 — 1714). Διεκρίνετο ἐν τῇ αὐλῇ τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ' διὰ τὴν χρηστότητα καὶ τὰ αὐστηρὰ ἤθη του, διὸ καὶ ὁ βασιλεὺς ἀνέθεσεν εἰς αὐτὸν τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν νεαρῶν πριγκίπων. Ἦτο ἐπιστήθιος φίλος τοῦ Φενελόν, τοῦ ὁποίου ἠσπάζετο τὰς μεταρρυθμιστικὰς ἰδέας καὶ ἀπελάμβανε μεγάλης ἐκτιμήσεως παρὰ τῷ ἐπιστημονικῷ κόσμῳ. Κατεῖχεν ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ αὐλῇ καὶ ἦτο ἀρχηγὸς τοῦ βασιλικοῦ συμβουλίου ἐπὶ τῶν δημοσίων οἰκονομικῶν.

— **Μπωβιλλιὲ** (Beauvilliers). ***Φραγκῖσκος-Ὀνόριος***, *δοὺξ τοῦ **Σαὶντ Αἰνιάν***. Γάλλος εὐπατρίδης (1607—1687). Διετέλεσε μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ ἀνεδείχθη θερμὸς ὑποστηρικτὴς τῶν ἀνθρώπων τῶν γραμμάτων. Ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ' διωρίσθη διοικητὴς τῆς Τουραίνης καὶ εἶτα [illegible]τάρχης τῆς αὐλῆς.

Χ. Δ.

**Μπωβουὰρ** (Beauvoir), ***Ἐδουάρδος-Ρογῆρος-Μπυλλύ***. Γάλλος λογοτέχνης (1809—1866), [illegible]στὸς κυρίως ὡς *Ρογῆρος*. Ἔγραψε πολυάριθμα μυθιστορήματα, ποιήματα, κωμειδύλια, κωμῳδίας, ἄρθρα ποικίλου περιεχομένου κλπ., διακρινόμενα διὰ τὸ ζωηρόν, γοργὸν καὶ πνευματῶδες ὕφος του. Κυριώτερα ἐξ αὐτῶν εἶναι τὰ μυθιστορήματα «Βραδιὰ στὸ Λίντο ἢ ἡ ἐξοχότης» (1833), «Τὸ [illegible] Προκὸπ» (1835», «Ruysch», ἐπεισόδιον ἐκ τῆς ὁλλανδικῆς ἱστορίας τοῦ ΙΖ' αἰῶνος (1836), «Ὁ [illegible] Μπεμπὲ [illegible]πότης τοῦ Ἁγίου Γεωργίου» (1840), «Μπεμπὲ [illegible]νος τοῦ βασιλέως τῆς Πολωνίας» (1853), «Τὸ [illegible]χεῖον Πιμοντὰν» (1846—1847), τὰ θεατρικὰ ἔργα «Ἕνας θεὸς τῆς ἡμέρας», κωμειδύλλιον (1850), «[illegible] κολάσεις τῶν Παρισίων» (μελόδραμα γραφὲν μετὰ τοῦ Λαμπὲρ Τιμποὺστ (1855), «Παρὶ-Κρινολέν», [illegible] θεώρησις (1857) καὶ αἱ συλλογαὶ ποιημάτων: «[illegible]ριστέρια καὶ φίδια» (1853), «Αἱ τυχοδιώκτριαι» (18..), «Τὰ αὐγὰ τοῦ Πάσχα» (1857), «Τὰ κολύτερα [illegible] τοῦ καλαθιοῦ μου» (1862) κ. ἄ.

Χ. Δ.

**Μπωβὼ** (Beauvau, λατιν. Bella Vallis=ὡραία κοιλάς) *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Μαὶν-ἐ-Λουάρ, χρησιμεῦσαν κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ μέχρι τοῦ 1616 ὡς ἕδρα φερωνύμου ἐπιφανοῦς οἰκογενείας.

**Μπωὲν** (Bauhin), ***Γάσπαρ***. Ἑλβετὸς βοτανικὸς καὶ ἀνατόμος (1560—1624). Τῷ 1596 ὠνομάσθη πρῶτος καθηγητὴς τῆς ἰατρικῆς ἐν Βασιλείᾳ. Κατήρτισε νέον ὀνοματολόγιον διὰ τὰ φυτὰ καὶ ἀφιέρωσε 40 ὅλα ἔτη διὰ τὴν συγγραφὴν συγγράμματος συγκεντροῦντος πᾶν ὅ,τι σχετικὸν περὶ φυτῶν ἐγράφη μέχρι τῆς ἐποχῆς του. Διὰ τοῦ ἔργου τούτου ἐκτήσατο μεγάλην φήμην, τὸ δὲ ὄνομά του διαρκῶς ἀνεφέρετο ὑπὸ τοῦ Tournefort καὶ τοῦ Λινναίου. Ἔγραψεν ὡσαύτως: «De humani corporis partibus externis» (1588), «De corporis humani fabrica» (1590), «Institutiones anatomicae» (1592), «Theatrum anatomicum, infinitis locis [illegible]ctum» (1592), ἐν τῷ ὁποίῳ ἀναφέρει τὴν ὑπ' αὐτοῦ γενομένην ἀνακάλυψιν τῆς εἰλεοτυφλικῆς βαλβῖδος, κληθείσης ἐκ τοῦ ὀνόματός του μπωενίου βαλβῖδος, «Phytopinax seu enumeratio plantarum» (1596), ἐν ᾧ περιγράφονται περὶ τὰ 2700 φυτὰ (1596), «Pinax theatri botanici» (1596) κ. ἄ.

— **Μπωὲν** (Bauhin), ***Ἰωάννης***. Ἑλβετὸς φυσιογράφης καὶ ἰατρὸς (1541—1613), ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Ἔγραψε λατινιστὶ «Ἱστορίαν τῆς [illegible]» (1591), διαφόρους διατριβὰς περὶ τῶν ἀπ[illegible] καὶ πτερωτῶν ζῴων, ὧν τὰ δήγματα εἶναι βλαβερά, καὶ μεγάλην βοτανικὴν ἐγκυκλοπαιδείαν ὑπὸ τὸν τίτλον: «Historia universalis plantarum nova et absolutissima» (1650).

**Μπωζὲ** (Beauzée), ***Νικόλαος***. Γάλλος γραμματικός, μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, γεννηθεὶς τῷ 1717 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1789. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς μαθηματικὰ καὶ κατόπιν ἀφιερώθη ἐξ [illegible] κλήρου εἰς τὴν γλωσσολογίαν. Τῷ 1756, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Dumarsais, ἀνέλαβε τὴν σύνταξιν τῶν γραμματικῶν ἄρθρων τῆς «Encyclopédie». Τὰ ἄρθρα ταῦτα, συγκεντρωμένα εἰς τόμους [illegible] μία γραμματική του ἐβραβεύθησαν διὰ τοῦ χρυσοῦ μεταλλίου τῆς Μαρίας-Θηρεσίας τῆς Αὐστρίας [illegible]κῆς καὶ ἐγένοντο ἀφορμὴ ὅπως καταλάβῃ τὴν ἕδραν τῆς γραμματικῆς ἐν τῇ στρατιωτικῇ σχολῇ τῶν Παρισίων (1767). Τῷ 1772 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Ἐδημοσίευσε τὰ ἑξῆς ἔργα: «Dictionnaire de grammaire et de littérature» (συλλογὴ τῶν γραμματικῶν ἄρθρων του), «Grammaire générale ou exposition raisonnée des éléments necessaires du langage pour servir de fondement à l'étude de toutes les langues» (17..

Digitized by Google

τόμ. 2), «Exposition abrégée des preuves historiques de la religion chrétienne» (1747) κλπ. Μετέφρασεν ἐκ τῆς γαλλικῆς τὸν Σαλλούστιον καὶ τὴν «Ἱστορίαν τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου» τοῦ Κοΐντου Κουρτίου. —Ω.

**Μπωζολαὶ** (Beaujolais, λατιν. Bellojecensis pagus) *[Γεωγρ.]*. Παλαιὰ χώρα τῆς Γαλλίας, ἐκτεινομένη ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ Λυονναί, ἐπὶ τμημάτων τῶν σημερινῶν νομῶν Ροδανοῦ καὶ Λίγηρος καὶ καλυπτομένη ὑπὸ τῶν ὁμωνύμων ὀρέων. Ὡς πρωτεύουσαι αὐτῆς ἐχρησίμευσαν διαδοχικῶς αἱ πόλεις *Μπωζὲ* καὶ *Βιλλφράνς*. Τὸ Μπωζολαὶ περιῆλθε τῷ 1265 εἰς τὸν οἶκον τῶν Φορέζ, ἀφοῦ προηγουμένως ἐπὶ τρεῖς ὁλοκλήρους αἰῶνας παρέμεινεν ὑπὸ παλαιὰν ὁμώνυμον οἰκογένειαν ἐξαφανισθεῖσαν. Τῷ 1400 ἐγένετο κύριος αὐτοῦ ὁ οἶκος τῶν Βουρβώνων, κατόπιν δὲ περιῆλθε γαμικῷ δικαιώματι εἰς τὸν Γάστωνα τῆς Ὀρλεάνης. Ἡ θυγάτηρ αὐτοῦ δούκισσα τοῦ Μονπανσιὲ ἐδώρησε τὸ Μπωζολαὶ εἰς τὸν Φίλιππον τῆς Ὀρλεάνης, ἀδελφὸν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ'. Τὸ Μπωζολαὶ ἀπετέλει κατ' ἀρχὰς βαρωνίαν, προήχθη δὲ εἰς κομιτείαν ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ'. Τελευταῖος ἔφερε τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος Μπωζολαὶ ὁ τρίτος ἀδελφὸς τοῦ Λουδοβίκου-Φιλίππου.

— **Μπωζολαὶ** *ὄρη [Γεωγρ.]*. Σύμπλεγμα μικρῶν θουνοσειρῶν τῆς Γαλλίας, κείμενον μεταξὺ τῶν ποταμῶν Γκρὸν καὶ Μπρεβέν. Καλύπτεται ὑπὸ θαυμασίων ἀμπελώνων κατὰ τὴν πρὸς τὸν Σὼν πλευράν, οἱ ὁποῖοι παράγουσιν ἐκλεκτὸν οἶνον. Ὑψηλοτέρα κορυφὴ εἶναι τὸ κατάφυτον *Σαὶν Ριγκὼ* (1.012 μ.) Χ. Δ.

**Μπωζὸν** (Beaujon), ***Νικόλαος***. Γάλλος χρηματιστὴς (1708—1786). Καταδιωχθεὶς ὑπὸ τῶν τοπικῶν ἀρχῶν τοῦ Μποροντώ, λόγῳ τῶν κερδοσκοπικῶν ἐπιχειρήσεών του ἐπὶ τῶν σιτηρῶν, κατέφυγεν εἰς Παρισίους, ὅπου διεδραμάτισε σπουδαῖον πρόσωπον εἰς τοὺς πολιτικοὺς καὶ χρηματιστικοὺς κύκλους, γενόμενος ἀλληλοδιαδόχως διευθυντὴς τῶν οἰκονομικῶν ὑπηρεσιῶν τῆς Νορμανδίας, σύμβουλος τῆς ἐπικρατείας καὶ τραπεζίτης τῆς αὐλῆς. Τὴν κολοσσιαίαν περιουσίαν του διέθεσε κατὰ μέγα μέρος εἰς φιλανθρωπικοὺς σκοπούς. Α. Α. Τ.

**Μπωζοὺρ** (Beaujour), ***Λουδοβῖκος-Αὔγουστος-Φῆλιξ***, *βαρῶνος ντὲ* —. Γάλλος διπλωμάτης (1765—1836). Διετέλεσε διαδοχικῶς πρόξενος ἐν Ἑλλάδι (1794), Σουηδίᾳ, Ἡνωμέναις Πολιτείαις καὶ Σμύρνῃ (1816). Τῷ 1831 ἐξελέγη βουλευτὴς Μασσαλίας, μετὰ τετραετίαν δὲ εἰσῆλθεν εἰς τὴν βουλὴν τῶν ὁμοτίμων. Ἔγραψε πολλὰ καὶ ποικίλου περιεχομένου ἔργα, ὧν σπουδαιότερα εἶναι: «Πίναξ τοῦ ἐμπορίου τῆς Ἑλλάδος ἀπὸ τοῦ 1787 μέχρι τοῦ 1797» (1808, εἰς 2 τόμ.), «Πίναξ τῶν ἐπαναστάσεων τῆς Γαλλίας ἀπὸ τῶν χρόνων τῆς κατακτήσεως τῶν Φράγκων» (Παρίσιοι, 1825), «Τεκμήριον εἰς τὴν ὀθωμανικὴν αὐτοκρατορίαν» (1829—1830) κ. ἄ. Διετέλεσεν ἐπίσης μέλος τοῦ Γαλλικοῦ Ἰνστιτούτου. Χ. Δ.

**Μπωκαὶρ** (Beaucaire) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Γκάρντ καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ροδανοῦ. Διεξάγει ἐμπόριον μεταξωτῶν, ὑφασμάτων, ἐλαίου, οἰνοπνεύματος κλπ. Ἀπ' αὐτῆς ἄρχεται ἡ ὁμώνυμος διῶρυξ, συνδέουσα τὸν Ροδανὸν μετὰ τῆς παραλίας τῆς Μεσογείου παρὰ τὸ Αἰγκμὸρτ καὶ μετὰ τῆς μεσημβρινῆς διώρυγος τῆς Γαλλίας. Κατέναντι αὐτῆς κεῖται τὸ Ταρασκόν, μεθ' οὗ συνδέεται δι' ὡραίας κρεμαστῆς γεφύρας. Ἡ Μπωκαὶρ εἶναι τὸ Bellum Quadrum τῶν Ρωμαίων, κατὰ δὲ τὸν μεσαίωνα εἶχε καταστῆ μία ἐκ τῶν πλουσιωτέρων ἐμπορικῶν πόλεων τῆς μεσημβρινῆς Γαλλίας, εὑρισκομένη εἰς στενὰς σχέσεις μετὰ τῆς Ἀνατολῆς, Ἰταλίας, Ἱσπανίας, Ἀφρικῆς κλπ. Ἡ μέχρι σήμερον διεξαγομένη μεγάλη ἐτησία ἐμποροπανήγυρις (1—28 Ἰουλίου) καθιερώθη ἀπὸ τοῦ 1217 καὶ ἦτο παγκοσμίως γνωστή, συγκεντροῦσα ὑπὲρ τὰς 250.000 ἐπισκεπτῶν. Κάτ. 8.500. Χ. Δ.

**Μπωκιὲ** (Beauquier), ***Κάρολος***. Γάλλος πολιτικός, δημοσιογράφος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1833. Ἐχρημάτισε κατὰ τοὺς χρόνους τῆς δευτέρας αὐτοκρατορίας συντάκτης τῶν ἐφημερίδων «Tribune» καὶ «Reveil», ἵδρυσε τῷ 1870 τὴν ἐφημερίδα «Doubs», διετέλεσεν ἔπαρχος ἐν Ποντάρλιὲ (1870—1871) καὶ διευθυντὴς τῶν ἐφημερίδων «Republicain de l' Est» καὶ «Fraternité», ἀπὸ δὲ τοῦ 1880 ἐξελέγη ἐπανειλημμένως βουλευτὴς τοῦ Μπεζανσόν. Ἔγραψε πολλὰ ἔργα, ἐξ ὧν γνωστότερα εἶναι: «Φιλοσοφία τῆς μουσικῆς» (1865), «Ὁ πόλεμος τοῦ 1870—1871» (1873), «Ἡ μουσικὴ καὶ τὸ δρᾶμα» (1884), «Λαϊκὰ τραγούδια, συλλεγέντα ἐν Φρὰνς-Κοντὲ» (1894) κ. ἄ. Χ. Δ.

**Μπωκμάστερ** (Buckmaster), *βαρῶνος* ***Στάνλεϋ Ὄουεν***. Ἄγγλος νομομαθὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1861. Ἀνήκων εἰς τὸ κόμμα τῶν φιλελευθέρων, ἐξελέγη πολλάκις βουλευτής, τῷ 1913 διωρίσθη γενικὸς εἰσαγγελεὺς καὶ τῷ 1915 λόρδος σφραγιδοφύλαξ, παραιτηθεὶς τὸ ἑπόμενον ἔτος μετὰ τῆς κυβερνήσεως Ἀσκουὶθ, ἧς ἀπετέλεσε μέλος. Α. Δ.

**Μπὼλ** (Ball), ***Ἰωάννης***. Ἄγγλος ἱερεύς, ἀκμάσας κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα. Κηρύσσων τὴν ἐλευθερίαν καὶ τὴν ἰσότητα, ἐγένετο δημοφιλέστατος, τῷ δὲ 1381 συμμετέσχεν εἰς τὸ στασιαστικὸν κίνημα τῶν δουλοπαροίκων, οἵτινες κατέλαβον τὸ Λονδῖνον καὶ κατέσφαξαν τὸν ἀρχιεπίσκοπον τῆς Καντερβουρίας. Ὁ Μπὼλ συνέταξε ραψῳδίαν, ἥτις ὑπῆρξε τὸ ἐγερτήριον σάλπισμα τῶν δουλοπαροίκων ἐναντίον τοῦ φεουδαρχικοῦ δεσποτισμοῦ. Συλληφθεὶς ἐν Κόβεντρυ, ὑπεβλήθη εἰς βασανιστήρια. Α. Δ.

**Μπωλιὲ** (Beaulieu) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τῶν Παραθαλασσίων Ἄλπεων, ἐπὶ τῆς Κυανῆς Ἀκτῆς. Κάτ. 1 980. Κεῖται μεταξὺ Νικαίας καὶ Μόντε Κάρλο, ἐπὶ ὡραίας τοποθεσίας, μετὰ μικροῦ λιμενίσκου καὶ εἶναι κλιματολογικὸς σταθμὸς λίαν πολυσύχναστος κατὰ τὸν χειμῶνα. Ἔχει μεγάλα ξενοδοχεῖα, πλουσίας ἐπαύλεις ἐντὸς ἀνθοσπάρτων κήπων καὶ θαυμάσια πάρκα. Μ. Δ. Β.

**Μπωλιὲ** (Beaulieu), ***Ἰωάννης-Πέτρος***, *βαρῶνος φὸν* —. Αὐστριακὸς στρατηγὸς (1725—1819). Κατατάχθεὶς εἰς τὸν αὐστριακὸν στρατὸν τῷ 1743, διεκρίθη κατὰ τὸν Ἑπταετῆ πόλεμον, τῷ δὲ 1792 ἐνίκησε τοὺς Γάλλους ὑπὸ τὸν Μπιρὸν ἐν Βαλανσιὲν καὶ τῷ 1794 παρὰ τὸ Ἀρλόν. Ἀλλὰ τῷ 1796, ἀποσταλεὶς εἰς τὴν Ἰταλίαν ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἐκεῖ αὐστριακῆς στρατιᾶς, ἡττήθη κατὰ κράτος ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος καὶ ἠναγκάσθη νὰ ὑποχωρήσῃ ἀτάκτως εἰς τὸ Τυρόλον. Α. Δ.

— **Μπωλιὲ-*Λεροβὰ*** (Leroy-Beaulieu), ***Πέτρος-Παῦλος***· βλ. *Λερουά*.

— **Μπωλιὲ** (Beaulieu), ***Μαρία - Ντεζιρὲ - Μαρτέν***, ἐπιλεγόμενος —. Γάλλος μουσικὸς (1791—1863). Συνέθεσε τὰ μελοδράματα: «Ἀνακρέων» καὶ «Φιλαδέλφεια», ἓν Ρέκβιεμ, τὰς λυρικὰς σκηνὰς «Σαπφώ», «Ψυχὴ» καὶ «Ἔρως», τεμάχια δι' ὀρχήστραν, καὶ ἔγραψε τὰ θεωρητικὰ ἔργα: «Περὶ ρυθμοῦ» (1852), «Ὑπομνήματα περὶ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς μουσικῆς τῆς ὑπολειπομένης ἐν τοῖς πρώτοις ᾄσμασι τῆς Ἐκκλησίας» (1852), «Οἱ τόνοι τῆς Ἐκκλησίας ἐν τοῖς λαϊκοῖς ᾄσμασι» (1858), «Περὶ τῶν ἀρχῶν τῆς μουσικῆς» (1859). Γ. Σ.

**Μπωμαρσαὶ** (Beaumarchais) ***Πέτρος - Αὐγουστῖνος, Καρὸν ντὲ*** —. Γάλλος θεατρικὸς συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1732 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1799. Υἱὸς ὡρολογοποιοῦ, ἐσπούδασεν εἰς ἐπαγγελματικήν τινα σχολὴν καὶ ἀνεκάλυψε νέον σύστημα ἐκφυγῆς τοῦ ἀτμοῦ. Τῷ 1755 ἠγόρασε θέσιν ἐλεγκτοῦ παρὰ τῇ αὐλῇ. Κατόπιν, γενόμενος δεκτὸς ὡς μουσικὸς εἰς τὸν σύλλογον τῶν θυγατέρων Λουδοβίκου τοῦ ΙΕ', ἐχρησιμοποίησε τὴν φερεγγυότητά του διὰ νὰ βοηθήσῃ τὸν χρηματιστὴν Pâris-Duverney, ὅστις τὸν ἐπλούτισε, καταστήσας τὸν Μπωμαρσαὶ μέτοχον τῶν κερδοσκοπικῶν του ἐπιχειρήσεων. Τῷ 1761 ἐξηγόρασε τὸν τίτλον τοῦ γραμματέως τοῦ βασιλέως, ὅστις συνεπήγετο καὶ τὴν ἀναγνώρισίν του ὡς εὐγενοῦς. Τῷ 1764 μετέβη εἰς Ἱσπανίαν διὰ νὰ ἐκδικηθῇ μίαν ἐκ τῶν ἀδελφῶν του, ἡ ὁποία εἶχεν ἀποπλανηθῆ καὶ ἐγκαταλειφθῆ.

*Πέτρος Μπωμαρσαὶ*

Ἐκ τῆς περιπετείας ταύτης, τὴν ὁποίαν τόσον θαυμαστῶς περιγράφει εἰς ἓν ἐκ τῶν «Mémoires» αὐτοῦ, ἐνεπνεύσθη τὸ πρῶτόν του δρᾶμα: «Eugenie» (1767). Τρία ἔτη κατόπιν ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς, ἄνευ ἐπιτυχίας, τὸ δρᾶμα «Les deux amis». Τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ Pâris-Duverney ἀπέθανεν, ὀφείλων εἰς τὸν Μπωμαρσαὶ 15.000 φράγκων, τὰ ὁποῖα διεκδικήσας οὗτος κατηγορήθη ἐπὶ ψεύδει ὑπὸ τοῦ La Blache, κληρονόμου τοῦ ὀφειλέτου. Ὁ Μπωμαρσαὶ ἐκέρδισε τὴν δίκην, ἀλλ' ὁ La Blache ἐφεσίβαλε τὴν ἀπόφασιν, ἐνῷ ὁ Μπωμαρσαὶ ἦτο φυλακισμένος ἕνεκα ἐρωτικῆς ἔχθρας πρὸς τὸν δοῦκα ντὲ Σώλν, καὶ διεχειρίσθη τόσον καλῶς τὴν ὑπόθεσιν, ὥστε ἐπέτυχε τῷ 1773 ἀκύρωσιν τῆς πρώτης ἀποφάσεως καὶ τῆς διεκδικουμένης ὀφειλῆς. Ὁ Μπωμαρσαὶ τότε ἐστράφη πρὸς ἄλλον ὀφειλέτην, τὴν σύζυγον τοῦ συμβούλου Goëzman, ἡ ὁποία ἐδωροδόκει νὰ ἐπιστρέψῃ τὰ ὀφειλόμενα. Φοβούμενος μήπως ἀπολέσῃ τὴν δίκην, ἂν ἠκολούθει τὴν συνήθη ὁδόν, ἔφερε τὴν ὑπόθεσίν του ἐνώπιον τοῦ κοινοῦ, δημοσιεύσας περὶ αὐτῆς τέσσαρα ἀλλεπάλληλα ὑπομνήματα («Mémoires»), τὰ ὁποῖα ἐν τῷ συνόλῳ των εἶναι ἀριστούργημα χλευαστικοῦ ἀλλὰ καὶ εὐγλώττου ὕφους. Δι' αὐτῶν ἐπέτυχε τὴν καταδίκην τοῦ Goëzman καὶ τῆς συζύγου του, ἀλλ' ἐπέσυρε καὶ τὴν ἰδικήν του καταδίκην εἰς μομφὴν καὶ τὴν τῶν «Ὑπομνημάτων» του εἰς δημοσίαν καῦσιν.

Ἓν ἔτος κατόπιν ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὸν «Κουρέα τῆς Σεβίλλης» (1775) καὶ μετὰ ἐννέα ἔτη τὸν «Γάμον τοῦ Φιγκαρώ», διὰ τοῦ ὁποίου ἔφθασεν εἰς τὸν κολοφῶνα τῆς δόξης του. Εἰς τὸ μεταξὺ τῶν δύο τούτων ἔργων διάστημα ὁ Μπωμαρσαὶ ἤγαγεν εἰς πέρας πλείστας μυστικὰς ἀποστολὰς εἰς τὸ ἐξωτερικόν, ἵδρυσεν ἑταιρείαν πρὸς ἐφοδιασμὸν τῶν Ἀμερικανῶν δι' ἵππων, ἀπεδύθη εἰς μακρὸν ἀγῶνα πρὸς τοὺς ἠθοποιοὺς τοῦ Γαλλικοῦ Θεάτρου περὶ τῶν συγγραφικῶν δικαιωμάτων, ἀνέλαβε τὴν πλήρη ἔκδοσιν τῶν ἔργων τοῦ Βολταίρου καὶ ἀνεμίχθη εἰς πλῆθος βιομηχανικῶν καὶ χρηματιστικῶν ἐπιχειρήσεων.

Μετὰ τὴν παράστασιν τοῦ «Γάμου τοῦ Φιγκαρώ» ἀρχίζει ἡ κατάπτωσις τοῦ Μπωμαρσαί. Ἐξ ἀφορμῆς χρηματιστηριακῆς τινος ἐπιχειρήσεως, συνεκρούσθη πρὸς τὸν Μιραμπώ, οἱ πρὸς τὸν ὁποῖον χλευασμοί του ἐπέσυραν τρομερὰν τὴν μῆνιν τοῦ Μιραμπὼ καὶ ἔγιναν ἀφορμὴ νὰ χάσῃ τὴν ἐκτίμησιν καὶ τὴν ἀγάπην τοῦ κοινοῦ. Τῷ 1787 ἐξέδιδε τὸ ὑπόμνημά του κατὰ τοῦ χρηματιστοῦ Kornmann, ἀλλ' ὁ δικηγόρος Bergasse ἐξεγείρει ἐναντίον του τὴν κοινὴν γνώμην. Τὸ αὐτὸ ἔτος ἀνεβίβασε τὸ φιλοσοφικὸν μελόδραμα «Tarare», τὸ ὁποῖον ὅμως ἔσχε μετρίαν ἐπιτυχίαν. Ἡ Ἐπανάστασις τὸν ἀνεστάτωσε καὶ τὸν κατέστρεψεν. Ὕποπτος, ἐγκαταλελειμμένος, διῆλθε τὸ ὑπόλοιπον τοῦ βίου του ἐν μέσῳ διηνεκῶν ἀνησυχιῶν. Τῷ 1792 ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς τὴν «Ἔνοχον μητέρα», συνέχειαν τοῦ «Γάμου τοῦ Φιγκαρώ». Μία ἐπιχείρησις τυφεκίων ἀγορασθέντων ἐξ Ὁλλανδίας διὰ τὴν γαλλικὴν κυβέρνησιν τοῦ ἐστοίχισε πολλὰς θλίψεις καὶ ἐπροκάλεσε τὴν φυλάκισίν του. Ἀποσυρθεὶς εἰς Ἀγγλίαν καὶ κατόπιν εἰς Ἀμβοῦργον, ἐπανῆλθεν εἰς Γαλλίαν τῷ 1796 καὶ ἀπέθανε μετὰ τρία ἔτη ἐξ ἀποπληξίας.

Ἐκ τοῦ θεατρικοῦ του ἔργου, δύο μόνον συνθέσεις ἐπέζησαν: «Ὁ κουρεὺς τῆς Σεβίλλης» καὶ ὁ «Γάμος τοῦ Φιγκαρώ». Τὰ ἄλλα του τεμάχια εἶναι ἀστικὰ δράματα χυδαῖα καὶ ψευδῆ. Εἰς τὰ δύο ταῦτα ἔργα ἔχει δανεισθῆ ἀφθόνως ἐκ τοῦ Μολιέρου, τοῦ Regnard, τοῦ Le Sage, τοῦ Μαριβὼ καὶ συνεπίλησεν ὅλα τὰ εἴδη καὶ ὅλα τὰ στοιχεῖα τοῦ διαφέροντος. Τὸ αὐτὸ δύναται νὰ λεχθῇ καὶ διὰ τὰς καινοτομίας τοῦ θεάτρου του. Ὁ «Κουρεὺς τῆς Σεβίλλης» καὶ ὁ «Γάμος τοῦ Φιγκαρώ» ἔχουν ἐκεῖνο, τοῦ ὁποίου ἐστερεῖτο ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Regnard ἡ γαλλικὴ κωμῳδία: τὴν κίνησιν καὶ τὴν χάριν. Ἀμφότερα τὰ ἔργα εἶναι κοινωνικαὶ σάτιραι, γεγραμμέναι εἰς ὕφος λαμπρὸν καὶ πνευματῶδες. Κανεὶς κωμικὸς δὲν εἶχεν ὅσον ὁ Μπωμαρσαὶ ἐκεῖνο, ὅπερ ἀποκαλοῦσι πνεῦμα. —Ω.

**Μπωμὲ** (Baumé), ***Ἀντώνιος***. Περίφημος Γάλλος χημικὸς (1728—1804). Εἰργάσθη κατ' ἀρχὰς ὡς μαθητευόμενος ὑπάλληλος φαρμακείου, ἐνῷ συγχρόνως κατεγίνετο καὶ εἰς ἰδιαιτέρας μελέτας, αἵτινες τοῦ ἐπέτρεψαν νὰ τελειοποιήσῃ τὰς σπουδάς του. Βραδύτερον προσελήφθη εἰς τὸ ὀνομαστὸν φαρμακεῖον Ζωφφρουὰ τῶν Παρισίων καὶ τῷ 1752 ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ διδασκάλου φαρμακοποιοῦ, κατὰ τὸ αὐτὸ δ' ἔτος διωρίσθη καθηγητὴς εἰς τὴν φαρμακευτικὴν σχολήν. Ἐγένετο κατόπιν μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν (1772) καὶ τοῦ Ἰνστιτούτου (1796) καὶ ἐπίτιμον μέλος τῆς Ἰατρικῆς Ἑταιρείας. Ἀποκτήσας μεγάλην φήμην καὶ ἐκτίμησιν, λόγῳ τῶν σπουδαιοτάτων ἐργασιῶν του αἵτινες τὸν κατέταξαν αὐτὸν μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἐπιστημόνων τῆς ἐποχῆς του, ἵδρυσεν ἐργοστάσιον χημικῶν προϊόντων, ἀνελθὸν εἰς μεγάλην ἀκμήν, ὅπερ διηύθυνε μέχρι τοῦ θανάτου του. Αἱ κυριώτεραι ἐκ τῶν ἐργασιῶν του καὶ τῶν ἐφευρέσεών του εἶναι: νέος τρόπος βαφῆς ὑφασμάτων, ἡ τελειοποίησις τοῦ ἐρυθροῦ χρωματισμοῦ διὰ τὴν βαφὴν τῶν ταπήτων Γκομπλέν, διάφοροι μέθοδοι καὶ πειράματα βελτιώσεως τῆς ποιότητος τῆς πορσελάνης, μέθοδοι διατηρήσεως σταφυλῶν καὶ τοῦ οἴνου. Θεωρητικὸς καὶ πρακτικὸς συγχρόνως καὶ γνώστης τῶν ἀρχῶν τῆς χημείας τοῦ Λαβουαζιέ, κατώρθωσε νὰ παραγάγῃ ἐν τῷ ἐργαστηρίῳ αὐτοῦ χημικῶν προϊόντων διὰ πρώτην φορὰν ἐν Γαλλίᾳ ἀμμωνιακὸν ἅλας. Ἔκαμε κατόπιν σειρὰς μελετῶν καὶ πειραμάτων πρὸς τὸν σκοπὸν τῆς τελειοποιήσεως τῶν θερμομέτρων καὶ τῶν ἀραιομέτρων, ἀνακαλύψας τὸ φέρον τὸ ὄνομά του ἀραιόμετρον, χρησιμοποιούμενον πρὸς καθορισμὸν τῆς εἰς οἰνόπνευμα περιεκτικότητος τῶν οἴνων καὶ τῶν οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν, ὅπερ μετερρύθμισεν ἐλαφρῶς ὁ Καρτιὲ μετά τινα ἔτη καὶ ὅπερ ἐξακολουθεῖ νὰ εἶναι ἐν χρήσει μέχρι σήμερον. Κατεσκεύασεν ἐπίσης καὶ τὰ φερώνυμά του ὀξύμετρα, ἁλάτομετρα καὶ σιροπιόμετρα, ἅτινα χρησιμοποιοῦνται πρὸς καθορισμὸν τῆς πυκνότητος τῶν βαρυτέρων τοῦ ὕδατος ὑγρῶν. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, τὰ κυριώτερα τῶν ὁποίων εἶναι: «Πραγματεία περὶ αἰθέρος» (1757), ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐξετάζει τὰ διάφορα παράγωγα ἐκ τῆς μείξεως τοῦ οἰνοπνεύματος μετὰ μεταλλικῶν ὀξέων, «Στοιχεῖα θεωρητικῆς καὶ πρακτικῆς φαρμακευτικῆς» (1762, θ' ἔκδοσις 1818), «Ἐγχειρίδιον χημείας» (1765), «Ἔρευναι καὶ χημικὰ καὶ φυσικὰ πειράματα περὶ τοῦ καθορισμοῦ τῶν καταλληλοτέρων πρὸς καλλιέργειαν γαιῶν καὶ περὶ τῶν μέσων τῆς μεταβολῆς τῶν ἀγόνων εἰς γονίμους» (1770), «Πειράματα πρὸς ἀνάλυσιν καὶ σύνθεσιν τοῦ ὕδατος» (1787) κλ. —Ω.



Digitized by Google

**Μπωμὲς** (Baumès), ***νόμος τοῦ—***. Ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ταύτην ὁ κατὰ τὸ 1840 ἀκμάσας Γάλλος ἰατρὸς Μπωμὲς καθώρισε νόμον ἀναφερόμενον εἰς τὴν ἐκ συλλήψεως συφίλιδα. Κατ' αὐτὸν ἡ μήτηρ δύναται νὰ τεκνοποιήσῃ τέκνον συφιλιδικὸν προερχόμενον ἐκ τῆς συφίλιδος τοῦ πατρός, χωρὶς αὐτὴ νὰ ἐμφανίσῃ εἰδικὰ συμβάματα συφιλιδικῆς φύσεως. Οὕτως ἡ μήτηρ εὑρίσκεται ἐν προφυλάξει ἀπὸ τῆς μεταδόσεως τῆς νόσου καὶ δύναται νὰ γαλουχήσῃ τὸ τέκνον αὐτῆς, ἔστω καὶ ἂν τὸ τελευταῖον τοῦτο ἐμφανίζῃ ἐκδηλώσεις ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ. Σήμερον ὅμως παραδέχονται ὅτι καὶ αὐτὴ ἡ μήτηρ δύναται νὰ μολυνθῇ. Μ. Ν. Κ.

**Μπωμὸν** (Beaumont) *[Γεωγρ.]*. Δύο μικραὶ παλαιαὶ φεουδαρχικαὶ χῶραι τῆς Γαλλίας, ἐξ ὧν ἡ μὲν περιλαμβάνεται ἐν τῇ σημερινῇ ἐπαρχίᾳ Γρενόβλης τοῦ νομοῦ Ἰζὲρ καὶ εἶναι γνωστὴ ἐκ τῆς φερωνύμου ἐπιφανοῦς οἰκογενείας, ἡ δὲ ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Βαλόνι τοῦ νομοῦ Μάγχης.

— **Μπωμὸν** (Beaumont) *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ κοινότης τῆς Γαλλίας, κειμένη 26 χλμ. ἀπὸ τοῦ Σεδὰν ἐν τῷ νομῷ Ἀρδεννῶν. Εἶναι γνωστὴ ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἐκ τοῦ συντάγματος ἐλευθεριῶν τοῦ γνωστοῦ ὡς «νόμου τοῦ Μπωμόν», τὸ ὁποῖον ἀπένειμεν αὐτῇ τῷ 1189 ὁ ἀρχιεπίσκοπος τῆς Ρέμς, Γουλιέλμος ὁ Λευκόχειρ. Ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ νόμου τούτου, ὅστις καθώριζε λεπτομερῶς τὰ ἀμοιβαῖα δικαιώματα καὶ τὰς ὑποχρεώσεις τῶν ἐπικυριάρχων εὐγενῶν καὶ τῶν ὑποτελῶν κατοίκων, ἐκανονίσθησαν οἱ συνταγματικοὶ χάρται ὑπερτετρακοσίων μεσαιωνικῶν πόλεων, χωρίων κλπ. ἐν Γαλλίᾳ.

— **Μπωμὸν-σὺρ-Οὐάζ** (Beaumont-sur-Oise) *[Γεωγραφ.]*. Πόλις μικρὰ τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σὲν-ἐ-Οὐάζ, ἀπέχουσα 19 χλμ. ἀπὸ τοῦ Ποντουάζ. Διεξάγει ἐμπόριον κτηνῶν καὶ σιτηρῶν καὶ ἔχει ἐργοστάσια τσιμέντων. Κάτ. 5.170. Ἦτο ἄλλοτε ἕδρα ὁμωνύμου κομιτείας, τῆς ὁποίας ὁ πρῶτος γνωστὸς κόμις ἔζησε περὶ τὸ 1022. Ἡ κομιτεία αὕτη περιῆλθεν ἐπανειλημμένως κατὰ καιροὺς εἰς τὸ στέμμα, ἀνῆκε δὲ εἰς τὰ ἐνδιάμεσα διαστήματα εἰς τοὺς δοῦκας τῆς Ὀρλεάνης (ΙΕ'—ΙΣΤ' αἰῶνας), τὸν κοντόσταβλον τοῦ Μονμορανσύ, τὸν δοῦκα τοῦ Ἀνζοῦ (μετέπειτα Κάρολον Θ') καὶ τὸν οἶκον τοῦ Κονδέ. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]*. Διαρκοῦντος τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870, τὸ 5ον γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ, ἐπιφορτισμένον ὅπως προκαλύψῃ τὴν προσπέρασιν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μόζα, εὑρέθη τὴν 1ην ὥραν τῆς 30ῆς

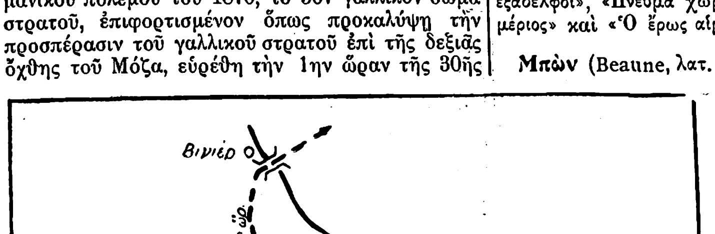

*Μάχη Μπωμὸν 30 Αὐγούστου 1870.*

Αὐγούστου εἰς *Μπωμόν*, ὡς ἐν τῷ παρατιθεμένῳ σχήματι ἐμφαίνεται, ὑποχωρῆσαν πρὸς αὐτὸ μετὰ τὴν ἐκ Νουὰρ ἀπώθησίν του. Εὑρίσκετο ὅμως εἰς τοιαύτην ἠθικὴν κατάπτωσιν, ὥστε οὔτε μέτρα ἀσφαλείας δὲν ἠδυνήθη νὰ λάβῃ, καθ' ὃν χρόνον τὸ παραπλεύρως αὐτοῦ 7ον σῶμα, κατορθῶσαν νὰ διαρρεύσῃ ἐν μέρει πρὸς Ρωκούρ, εἶχε μίαν μόνον μεραρχίαν του εἰς τὰ πλευρὰ τοῦ 5ου σώματος ὅτε ἐπετέθησαν οἱ Γερμανοί. Ὁ καταδιώκων γερμανικὸς στρατὸς ἐπετέθη διὰ τῶν σωμάτων στρατοῦ 1ου, 4ου καὶ 12ου. Περὶ τὴν μεσημβρίαν τῆς ἡμέρας ταύτης τὸ γερμανικὸν πυροβολικόν, ἐξελθὸν βορείως τοῦ δάσους Ντιελέ, δι' οὗ κατώρθωσε νὰ προχωρήσῃ χωρὶς νὰ γίνῃ τὸ παράπαν ἀντιληπτὸν ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἤρξατο πυρὸς κατὰ τῶν γαλλικῶν γραμμῶν ἀπὸ ἀποστάσεως 1.000 μόνον μέτρων. Οἱ Γάλλοι ὑπέστησαν τότε πλήρη αἰφνιδιασμόν, ἀποτέλεσμα τοῦ ὁποίου ὑπῆρξεν ἡ πανικόβλητος φυγὴ τοῦ 5ου σώματος πρὸς βορρᾶν καὶ ἡ ἐγκατάλειψις τοῦ πυροβολικοῦ του· ἐγκατασταθὲν ἐπὶ τῶν νοτίως τοῦ Μουζὸν ὑψωμάτων, προσεβλήθη ταχέως ὑπὸ τῶν Γερμανῶν καὶ μετὰ ἀγῶνα μέχρι τῆς 18ης ὥρας τῆς ἡμέρας ταύτης ἠναγκάσθη νὰ προσπεράσῃ φύρδην μίγδην διὰ τῆς γεφύρας τοῦ Βιγιὲρ ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μόζα. Τὸ ἐπὶ τῆς ὄχθης ταύτης εὑρισκόμενον ἤδη 12ον γαλλικὸν σῶμα στρατοῦ διὰ μάτην προσεπάθησε νὰ ὑποστηρίξῃ τὴν ὑποχώρησιν τοῦ φιλίου 5ου σώματος, ματαίως δ' ἐθυσιάσθη ἓν σύνταγμα Γάλλων θωρακοφόρων, θελῆσαν νὰ προκαλύψῃ τὴν γέφυραν τοῦ Βιγιέρ. Ν. Θ. Κ.

**Μπῶμοντ** (Beaumont) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς βορειοαμερικανικῆς ὁμοσπονδίας, πρωτεύουσα τῆς κομιτείας Τζέφφερσον ἐν τῇ πολιτείᾳ Τεξάς. Κεῖται ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Νέτσες, 47 χλμ. ἀπὸ τῆς παραλίας τοῦ Μεξικανικοῦ κόλπου. Εἶναι κόμβος σιδηροδρομικῶν συγκοινωνιῶν, διεξάγει ἐμπόριον ξυλείας καὶ ὀρύζης καὶ ἔχει τὰς πλουσιωτέρας πετρελαιοπηγὰς τῶν Ἡν. Πολιτειῶν, ἀνακαλυφθείσας τῷ 1900. Κάτ. (1920) 40.422. Χ. Δ.

**Μπῶμοντ** (Beaumont), ***Φράνσις***. Ἄγγλος θεατρικὸς συγγραφεὺς (1585—1615). Ὑπῆρξε συνεργάτης τοῦ *Φλέτσερ*. Ἐκ τῶν 52 ἔργων τῶν ἀποδιδομένων εἰς τοὺς συγγραφεῖς τούτους, τὰ 18 ἐγράφησαν ἀπὸ κοινοῦ, τὰ δὲ λοιπὰ ὑπὸ μόνου τοῦ Φλέτσερ. Ἀμφότεροι ἀπεμιμήθησαν τὸν Σαίξπηρ, ἰδίᾳ ὡς πρὸς τὸ πάθος καὶ τὴν καυστικὴν σάτιραν. Καίτοι δὲ εἶναι πολὺ κατώτεροι αὐτοῦ, ἐν τούτοις τὰ ἔργα των ἐξετιμήθησαν ὑπὸ τοῦ κοινοῦ κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην περισσότερον τῶν τοῦ Σαίξπηρ. Ἐξ αὐτῶν κυριώτερα εἶναι: «Ἡ μνηστή», «Ὁ βασιλεὺς ποὺ δὲν εἶναι βασιλεύς», «Οἱ δύο εὐγενεῖς ἐξάδελφοι», «Πνεῦμα χωρὶς χρῆμα», «Ὁ Ἱσπανὸς ἐφημέριος» καὶ «Ὁ ἔρως αἱμορροεῖ». Α. Δ.

**Μπὼν** (Beaune, λατ. Belna) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Κὸτ-ντ' Ὂρ, ἀπέχουσα 38 χλμ. ἀπὸ τῆς Ντιζόν. Εἶναι κέντρον τοῦ οἰνεμπορίου τῆς Βουργουνδίας καὶ ἔχει ἐργοστάσια ὄξους, ποτῶν, γεωργικῶν μηχανῶν, βαρελίων, διϋλιστήρια οἰνοπνεύματος κλπ. Ἔχει ἐπίσης οἰνολογικὸν σταθμὸν καὶ ἀμπελουργικὴν σχολήν. Κάτοικοι 12.000.

Ἡ Μπὼν ἤκμαζεν ἐξόχως κατὰ τὸν μεσαίωνα καὶ τοὺς μετέπειτα χρόνους, μετέσχε δὲ ἐνεργῶς εἰς τοὺς θρησκευτικοὺς ἀγῶνας, ὑποστᾶσα κατ' αὐτοὺς οὐκ ὀλίγας ζημίας. Περιβάλλεται ὑπὸ ὀχυρώσεων μεταβληθεισῶν σήμερον εἰς τερπνοὺς περιπάτους καὶ ἔχει λαμπρὰ κτήρια καὶ καλλιτεχνικὰ μνημεῖα, ἅτινα τάσσουσιν αὐτὴν μεταξὺ τῶν σημαντικωτέρων ἀπὸ ἀπόψεως τέχνης πόλεων τῆς Γαλλίας. Κάλλιστα ἐκ τῶν κτηρίων της εἶναι ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Νικολάου (ΙΔ' αἰῶνος), ὁ ναὸς τῆς Παναγίας καὶ τὸ νοσοκομεῖον. Τὸ μουσεῖον τοῦ τελευταίου τούτου περιλαμβάνει μεταξὺ πολλῶν ἄλλων θαυμασίων ἔργων καὶ τὸ τρίπτυχον τὸν βὰν ντὲρ Βάϋντεν «Ἡ τελευταία κρίσις». Ἡ περὶ αὐτὴν ἐκτεταμένη οἰνοφόρος χώρα εἶναι γνωστὴ ὡς *ἀκτὴ τῆς Μπὼν* (côte de Beaune). Χ. Δ.

**Μπὼν** (Beaune), ***Φραγκῖσκος-Ἐρρῖκος***. Γάλλος νομομαθής, γεννηθεὶς ἐν Ντιζὸν τῷ 1833. Ἀσκήσας ἐπί τι διάστημα τὸ ἐπάγγελμα τοῦ δικηγόρου ἐν τῇ γενετείρᾳ του, εἰσῆλθεν εἰς τὴν δημοσίαν ὑπηρεσίαν καὶ ἐσταδιοδρόμησεν ἐπιτυχῶς ὡς δικαστικός, γενόμενος τῷ 1877 γενικὸς εἰσαγγελεύς. Τῷ 1880 ἐγένετο καθηγητὴς τοῦ δικαίου τῶν ἐθίμων καὶ τῆς ἱστορίας τοῦ δικαίου ἐν Λυών. Ὑπῆρξε μέλος τῶν ἀκαδημιῶν τοῦ Aix, τοῦ Besançon, τοῦ Caen καὶ τῆς Λυὼν καὶ ἐπίτιμος διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου τοῦ Λουβαίν. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι τὰ ἑξῆς: «Étude de droit administratif romain» (1863), «Voltaire au collège, sa famille, ses études, ses premiers amis» (1867), «Le droit coutumier et l'unité législative en France» (1880), «Introduction à l'étude historique du droit coutumier français jusqu'à la rédaction des coutumes» (1880), «L'enseignement du droit romain et la papauté» (1882) «La démocratie et le suffrage universel» (1887). Συνειργάσθη εἰς τὴν «Biographie universelle», εἰς τὴν «Gazette des tribunaux», εἰς τὸν «Correspondant», εἰς τὴν «Revue contemporaine», τὴν «Revue des sociétés savantes» κλπ. —Ι.

**Μπωνιὲ** (Beaunier), ***Ἀνδρέας***. Γάλλος λογοτέχνης (1869—1925). Σπουδάσας φιλολογίαν ἠσχολήθη ἐν ἀρχῇ μὲ τὴν παλαιὰν ρωμανικὴν λογοτεχνίαν, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἐδημοσίευσεν ἀρκετὰ ἔργα, συνεργάσθη δὲ κατόπιν εἰς διαφόρους ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ἰδίως εἰς τὴν «Ἐπιθεώρησιν τῶν δύο Κόσμων», τὴν «Ἐφημερίδα τῶν Συζητήσεων» καὶ τὸ «Φιγκαρώ». Ἀπὸ τοῦ 1900 ἤρχισε δημοσιεύων σειρὰν μυθιστορημάτων διαπνεομένων ὑπὸ λεπτῆς καὶ πνευματώδους σατίρας, ἐν οἷς: «Les Dupont-Leterrier» (1900), «Les trois Legrand ou les dangers de la littérature» (1903), «Le roi Tobol» (1905) κλπ. καὶ ἔργα κριτικῆς: «La poésie nouvelle» (1902), «L'art de regarder les tableaux» (1906) κλπ. Τὰ μετέπειτα δημοσιευθέντα ἔργα του στρέφονται πρὸς τὴν ἐρωτικὴν ψυχολογίαν, τῆς ὁποίας ἐπετύγχανε συχνὰ νὰ δίδῃ θαυμασίως διαυγῆ ἀνάλυσιν, ὅπως εἰς τά: «La folle jeune fille» (1922), «Une âme de femme» (1924), «Les folies amoureuses» κ. ἄ. Τὸ ἔργον του ὅμως δὲν περιωρίσθη μέχρις ἐδῶ. Ἐκταθὲν ἐπὶ πάντα σχεδὸν τὰ λογοτεχνικὰ εἴδη περιλαμβάνει ἀκόμη ἱστορικὰς συγκριτικὰς μελέτας: «Éloges» (1909), «Chateaubriaud» (1912), «La Grèce et nous» (1912)· ταξιδιωτικὰς ἐντυπώσεις, ἐν αἷς: «Le sourire d'Aténa» (ἀφήγησις μιᾶς περιηγήσεώς του ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα)· πορτραῖτα: «Visages de femmes» (1913), «Figures d'autrefois» (1917)· μυθιστορήματα περιπετειῶν: «L'assassinée» (1923)· καὶ τέλος θεατρικὰ ἔργα: «Les limites du coeur», κωμῳδία (1910), «La crise», κωμῳδία, ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Παύλου Μπουρζὲ (1912) κλπ. —α.

**Μπὼν-λὰ-Ρολὰντ** (Beaune-la-Rolande) *[Γεωγραφ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Λίγηρος, ἀπέχουσα 19 χλμ. ἀπὸ τοῦ Πιτιβιέ. Εἶναι γνωστὸν ἐκ τῆς παρ' αὐτὸ φερωνύμου φονικῆς μάχης μεταξὺ Πρώσσων καὶ Γάλλων τὴν 28 Νοεμβρίου 1870 (βλ. κατωτ.). Κάτ. 1.870. Χ. Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Κατὰ τὰς ἐπιχειρήσεις τοῦ Λίγηρος, διαρκοῦντος τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου τοῦ 1870, διετάχθησαν ὑπὸ τῆς γαλλικῆς κυβερνήσεως τὸ 20ὸν καὶ τὸ 18ον σώματα στρατοῦ νὰ ἐπιτεθῶσι τὴν 28ην Νοεμβρίου κατὰ τοῦ 10ου γερμανικοῦ σώματος, ὅπερ κατέχον τὸ *Μπὼν λὰ Ρολὰντ* ἔφρασσε τὴν πρὸς Παρισίους ἄγουσαν. Ἐν ἀρχῇ τὸ 20ὸν γαλλικὸν σῶμα κατώρθωσε νὰ περιβάλῃ τὸ Μπών, ἀλλ' ἐπειδὴ οὐδόλως ὑπεβοηθήθη ὑπὸ τοῦ δεξιόθεν (ἀνατολικῶς) αὐτοῦ δρῶντος 18ου σώματος, ἐνῷ ἐν τῷ μεταξὺ ἐνισχύθη τὸ γερμανικὸν σῶμα, ἠναγκάσθη περὶ τὴν ἑσπέραν τῆς αὐτῆς ἡμέρας νὰ ὑποχωρήσῃ πρὸς νότον, παραιτηθὲν τῆς περαιτέρω προσπαθείας πρὸς διάνοιξιν τῆς πρὸς Παρισίους ὁδοῦ. Ν. Θ. Κ.

**Μπωντάρτιος**, ἢ ***Μπωνταὶρτ*** (Baudartius ἢ Baudaert), ***Γουλιέλμος***. Φλαμανδὸς ἱστορικὸς (1564-1640). Εἶναι γνωστὸς κυρίως ἐκ τῆς μεταφράσεως τῆς Βίβλου εἰς τὴν ὀλλανδικὴν γλῶσσαν, ἣν ἀνέλαβε μετ' ἄλλων τῷ 1618 κατὰ παραγγελίαν τῆς συνόδου τοῦ Ντόρντρεχτ καὶ ἣν ἀπεπεράτωσε τῷ 1637, καθὼς καὶ ἐκ τῶν «Ἀπομνημονευμάτων» του, τὰ ὁποῖα περιέχουν πολυτίμους πληροφορίας περὶ τῆς πολιτικῆς καὶ θρησκευτικῆς ἱστορίας τῆς Εὐρώπης κατὰ τὴν περίοδον 1613—1624. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης ἐνδιαφέρουσαν συλλογὴν χαλκογραφιῶν πολεμικῶν σκηνῶν τοῦ πολέμου τῶν Κάτω χωρῶν ὑπὸ τὸν τίτλον «Πολεμογραφία» (1632) καὶ συλλογὴν «Χριστιανικῶν ἀποφθεγμάτων» (1657). Μ. Δ. Β.

**Μπωντ(ε)λαὶρ** (Baudelair), ***Κάρολος-Πέτρος***. Μέγας Γάλλος ποιητής, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1821 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῷ 1867. Κατήγετο ἐκ γονέων μεσαίας κοινωνικῆς τάξεως καὶ μετρίας περιουσίας. Εἰς ἡλικίαν εἴκοσιν ἐτῶν ἐστάλη εἰς Ἰνδίας παρά τινι πλοιάρχῳ, οἰκογενειακῷ φίλῳ, διὰ νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὸ ἐμπόριον. Ἀλλ' ὁ Μπωντελαίρ, ἀντὶ νὰ γίνῃ ἔμπορος, ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους μετ' ὀλίγον καὶ ἤρχισε νὰ ἐπιδίδεται μετὰ πάθους εἰς τὴν ποίησιν. Τὰ πρῶτα του ποιήματα, δημοσιευθέντα εἰς διάφορα νεωτεριστικὰ περιοδικά, ἐκίνησαν ἀμέσως τὴν προσοχὴν τῆς διανοουμένης νεολαίας. Ἀλλ' εἰς τὸ πολὺ κοι-

Digitized by Google

νὸν ἔγινε γνωστὸν τὸ ὄνομά του μόνον μὲ τὴν ἀριστοτεχνικὴν μετάφρασιν ὅλων τῶν πεζογραφημάτων τοῦ Ἀμερικανοῦ διηγηματογράφου καὶ ποιητοῦ Ἔντγκαρ Ἄλλαν Πόε, ὅστις χάρις εἰς τὸν Μπωντλαὶρ ἔγινε γνωστὸς εἰς τὴν Εὐρώπην.

Ἐν Παρισίοις ὁ ποιητὴς ἔζη βίον ἰδιόρρυθμον, ὁ ὁποῖος ἤγγιζε τὰ ὅρια τοῦ σκανδάλου. Ἐσύχναζεν εἰς χασισοποτεῖα μετ' ἄλλων λογίων τῆς ἐποχῆς, διέπραττε μακαβρίους φάρσας καὶ ἐπεδίδετο ἀκρατήτως εἰς τὴν ἀπόλαυσιν τῆς ἡδονῆς. Ἐντὸς ὀλίγου ἐξήντλησε τὴν μικρὰν περιουσίαν, τὴν ὁποίαν εἶχε κληρονομήσει ἀπὸ τὸν πατέρα του, καὶ ἤρχισε ν' ἀντιμετωπίζῃ τὸ πρόβλημα τοῦ ἐπιουσίου ἄρτου. Τῷ 1857, κατόπιν πολλῶν κόπων, ἐπέτυχε τέλος τὴν ὑποστήριξιν ἑνὸς διασήμου ἐκδότου καὶ κατώρθωσε νὰ ἐκδώσῃ τὴν μοναδικήν του ποιητικὴν συλλογήν: «Ἄνθη τοῦ κακοῦ», καρπὸν δεκαπενταετοῦς ἐντατικῆς καὶ ὑπομονητικῆς ἐργασίας. Ἡ συλλογὴ αὕτη ἔτυχεν ἀρίστης ὑποδοχῆς ἐκ μέρους τῶν νεαρῶν λογίων τῶν Παρισίων, ἀλλ' ἀφῆκεν ἀσυγκίνητον τὸ πολὺ κοινόν, τὸ ὁποῖον ἐθέλγετο μὲ τὰ ρωμαντικὰ κατασκευάσματα.

*Κάρολος Μπωντελαίρ.*

Μετ' ὀλίγον ὅμως ἡ τύχη ἦλθεν ἐπίκουρος τοῦ Μπωντελαίρ. Αἱ δικαστικαὶ ἀρχαὶ ἐθεώρησαν τὴν συλλογὴν ὡς προσβλητικὴν τῆς θρησκείας, τῆς κοινωνικῆς τάξεως καὶ τῆς ἠθικῆς, εἰσήγαγον εἰς δίκην τὸν ποιητήν, κατέσχον τὴν συλλογὴν καὶ ὑπεχρέωσαν τὸν ἐκδότην ν' ἀφαιρέσῃ ἐξ αὐτῆς ἓξ ἐκ τῶν ποιημάτων, τὰ πλέον ἀνήθικα, κατὰ τὴν κρίσιν τοῦ δικαστηρίου. Ἡ περιπέτεια αὕτη κατέστησεν ἐντὸς ἐλαχίστου χρόνου ἔνδοξον τὸν Μπωντελαίρ, ἀλλὰ δὲν τὸν ἀπήλλαξεν ἀπὸ τῆς φροντίδος διὰ τὸν ἐπιούσιον, μολονότι τῷ 1861 ἐγένετο καὶ νέα ἔκδοσις τῆς συλλογῆς.

Συντετριμμένος ἀπὸ τὴν ἀνέχειαν, προδομένος ἀπὸ τοὺς φίλους του καὶ κατατρεγμένος ἀπὸ τοὺς ἐχθρούς του, ὁ Μπωντελαὶρ ἀπεφάσισε νὰ ἐγκαταλείψῃ τοὺς Παρισίους καὶ τῷ 1864 αὐτοεξορίσθη εἰς Βρυξέλλας, ὅπου ὅμως, ἄγνωστος καὶ ἔρημος, ἐδοκίμασε μεγαλυτέρας θλίψεις καὶ μεγαλυτέραν δυστυχίαν. Προσβληθεὶς ὑπὸ γενικῆς παραλύσεως μετεφέρθη ὑπὸ τῶν φίλων του εἰς Παρισίους καὶ ἐτοποθετήθη εἰς μίαν κλινικήν, ὅπου ἀπέθανε τὴν 2 Σεπτεμβρίου τοῦ 1867.

Ὁ Μπωντελαὶρ ἔζησεν εἰς μίαν ἐποχήν, καθ' ἣν ἐμεσουράνει ὁ ρωμαντισμός, ἐκπροσωπούμενος ὑπὸ μεγάλων καὶ ἀνυπερβλήτων ποιητῶν ὡς ὁ V. Hugo, ὁ A. Lamartine, ὁ A. de Musset, ὁ A. de Vigny, ὁ Th. Gautier, κατώρθωσε δὲ νὰ ἐπιβληθῇ, διότι συνεκέντρωνεν ὅ,τι ἔλειπεν ἀπὸ τοὺς μεγάλους τούτους τεχνίτας. Συνεκέντρωσε τὸ μέτρον καὶ τὴν συνοχήν, τῆς ὁποίας ἐστερεῖτο ὁ Hugo, τὴν ποικιλίαν καὶ τὸ εὖρος, ἡ ὁποία ἔλειπεν ἀπὸ τὸν Musset, τὴν σκέψιν καὶ τὴν φόρμαν, ἡ ὁποία ἀπουσίαζεν ἀπὸ τὸν Lamartine, τὸν στοχασμόν, τὴν δύναμιν καὶ τὴν θέρμην, κατὰ τὰ ὁποῖα ἐμειονέκτει ὁ Vigny. Ἀντλήσας συναισθηματικῶς ἀπὸ τὸν Βύρωνα καὶ καλλιτεχνικῶς ἀπὸ τὸν Πόε, ἐπέτυχε πρωτότυπα καὶ ἄφθαστα ἀποτελέσματα χάρις καὶ εἰς τὴν ἐργώδη του ὑπομονὴν καὶ τὴν καλλιτεχνικήν του ἰδιοσυγκρασίαν, Τὰ «Ἄνθη τοῦ Κακοῦ», μὲ τὸ σκανδαλῶδες καὶ παράδοξον περιεχόμενον, τὴν σαφῶς ἐξειργασμένην μορφήν των, τὴν ἄκραν διανοητικὴν συγκέντρωσιν καὶ τὴν λεπτότητα τῆς περιγραφῆς, κατατάσσουν τὸν Μπωντελαὶρ μεταξὺ τῶν παρνασσικῶν καὶ τῶν συμβολιστῶν καὶ τὸν ἀναδεικνύουν μέγαν ποιητὴν τῆς ὀδύνης καὶ τῆς ἡδονῆς.

Ἐκ τῶν «Ἀνθέων τοῦ Κακοῦ» μετεφράσθησαν εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἐκλογαὶ ὑπὸ Γ. Σημηριώτη, Κ. Παράσχου καὶ Μ. Κανελλῆ (1928). —Ω.

**Μπωντελὸ** (Baudelot de Dairval), ***Κάρολος-Καῖσαρ.*** Γάλλος φιλόλογος καὶ ἀρχαιοδίφης (1648—1722). Κατ' ἀρχὰς ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, βραδύτερον ὅμως, ἀγοράσας πολύτιμον συλλογὴν νομισμάτων, ἐπεδόθη ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν μελέτην αὐτῶν, καταστὰς εἷς τῶν σημαντικωτέρων ἀρχαιοδιφῶν τῆς ἐποχῆς του. Τῷ 1705 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν, εἰς τὴν ὁποίαν ἐδώρησε, μετὰ τὸν θάνατόν του, τὴν πλουσίαν βιβλιοθήκην του καὶ τὰς ἀρχαιολογικὰς συλλογὰς τὰς ὁποίας εἶχε κατορθώσει νὰ συγκεντρώσῃ ἐκ διαφόρων ἀγορῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι καὶ ἡ πολύτιμος συλλογὴ τῶν λεγομένων «μαρμάρων τοῦ Νοαντέλ», ἣν εἶχεν ἀγοράσει ἀπὸ τὸν περιηγητὴν Τεβενὸ καὶ ἡ ὁποία εὑρίσκεται εἰς τὸ Λοῦβρον. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων τὸ ἔργον «Περὶ τῆς ὠφελείας τῶν ταξιδίων καὶ περὶ τοῦ πλεονεκτήματος, ὅπερ παρέσχεν εἰς τοὺς σοφοὺς ἡ ἔρευνα τῶν ἀρχαίων» (1686). Μ. Δ. Β.

**Μπωντελὸκ** (Baudelocque), ***Ἰωάννης-Λουδοβῖκος.*** Διάσημος Γάλλος μαιευτὴρ (1746—1810). Ἀπέβη ὁ πρῶτος μαιευτὴρ τῶν Παρισίων καὶ ἄριστος διδάσκαλος. Περιέγραψε τὸ κατώτερον ὅριον τῆς κινητικῆς ζώνης τῆς μήτρας, ἀναφερόμενον ἔκτοτε ὑπὸ τὸ ὄνομα *μητρικὸς κόλπος τοῦ Μπωντελόκ.*

— **Μπωντελὸκ** (Baudelocque) ***Λουδοβῖκος-Αὔγουστος.*** Γάλλος μαιευτὴρ (1800—1864), ἀνεψιὸς τοῦ προηγουμένου. Κατέστη γνωστὸς διὰ τὴν ἀνακάλυψίν του τοῦ κεφαλοθρύπτου (1829) καὶ διὰ τὴν διάνοιξιν τοῦ ὀπισθίου θόλου τοῦ κόλπου (ἐλυτροτομῆς) εἰς τὰς ἐξωμητρίους κυήσεις. Ο. Ρ.

**Μπωντὲν** (Baudin), ***Ἀλφόνσος-Βίκτωρ-Ἰωάννης-Βαπτιστής.*** Γάλλος ἰατρὸς καὶ πολιτικὸς (1811—1851). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν Λυῶν καὶ Παρισίοις καὶ προσέφερε πολυτίμους ὑπηρεσίας κατὰ τὴν χολέραν τοῦ 1832. Ἐπειδὴ ὅμως ἐπρέσβευε τὰς σοσιαλιστικὰς ἰδέας τοῦ Σαὶν-Σιμὸν καὶ ἐθεωρήθη ἐπικίνδυνος, ἀπεστάλη εἰς τὴν Ἀφρικήν. Τυχὼν ὅμως χάριτος ἐπέστρεψε καὶ ἐγκατεστάθη εἰς Παρισίους, ὅπου ἔλαβε μέρος εἰς διαφόρους μυστικὰς ἑταιρείας, διακριθεὶς διὰ τὰς ἐπαναστατικάς του ἰδέας καὶ ἐκλεγεὶς βουλευτής. Τὴν δευτέραν ὅμως ἡμέραν τοῦ πραξικοπήματος τῆς 2 Δεκεμβρίου 1851 ἐφονεύθη ἐπὶ τῶν ὁδοφραγμάτων τοῦ προαστείου τοῦ Ἁγίου Ἀντωνίου, καθ' ἣν στιγμήν, μετ' ἄλλων βουλευτῶν, παρώτρυνε τὸν λαὸν εἰς ἀντίστασιν κατὰ τοῦ Ναπολέοντος Γ'. Θεωρηθεὶς ὡς εἷς τῶν ἡρωϊκωτέρων ὑπερασπιστῶν τῆς δημοκρατίας, ἐγένετο ἀντικείμενον μεγάλων τιμῶν μετὰ θάνατον ὑπὸ τῶν δημοκρατικῶν, οἵτινες ἔστεφον κατ' ἔτος τὸν τάφον του ἐν Μονμάρτρῃ, τῷ δὲ 1889 τὰ ὀστᾶ του ὁμοῦ μὲ τὰ τοῦ Καρνὼ μετεφέρθησαν εἰς τὸ Πάνθεον, ἀνεγερθέντος, δι' ἐράνων, τῷ 1901 καὶ ἀνδριάντος εἰς αὐτὸν ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐφονεύθη. Ἔγραψε καὶ τὸ ἐνδιαφέρον ἔργον «Περὶ τῶν γαστρικῶν φλογώσεων». Μ. Δ. Β.

—**Μπωντὲν** (Baudin), ***Κάρολος.*** Γάλλος ναύαρχος (1784—1854). Νεαρώτατος καταταχθεὶς εἰς τὸ ναυτικόν, ἔλαβε μέρος ὡς δόκιμος εἰς τὴν ὑπὸ τὸν *Νικόλαον Μπωντὲν* ἐξερευνητικὴν ἀποστολήν, κατόπιν δὲ ἐτοποθετήθη εἰς τὴν μοῖραν τῶν Ἰνδιῶν, ἔνθα διεκρίθη διὰ τὴν ἀνδρείαν καὶ τὴν ναυτικὴν ἐμπειρίαν του. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν διέπρεψεν ὡς κυβερνήτης τοῦ βρικίου «Renard», δι' οὗ κατόπιν λαμπρᾶς ναυμαχίας ᾐχμαλώτισε τὸ ἀγγλικὸν βρίκιον «Awallon». Παραιτηθεὶς μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τοῦ Ναπολέοντος, ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ναυτικὸν τῷ 1830. Τῷ 1838 προαχθεὶς εἰς ὑποναύαρχον ἀνέλαβε τὴν ἀρχηγίαν τῆς εἰς Μεξικὸν ἀποσταλείσης γαλλικῆς μοίρας, ὅπως ζητήσῃ ἱκανοποίησιν διὰ τὰς γενομένας προσβολὰς εἰς τὴν γαλλικὴν σημαίαν. Δι' ὁρμητικῆς ἐπιθέσεως κατὰ τοῦ φρουρίου τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τῆς Οὐλόας, ὅπερ κατέλαβε, καθὼς καὶ τῆς Βέρα Κρούζ, ἀπέσπασε τὴν ζητουμένην ἱκανοποίησιν. Ἐπιστρέψας εἰς Γαλλίαν προήχθη εἰς ἀντιναύαρχον καὶ τῷ 1841 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν. Κατόπιν ἐγένετο ναυτικὸς διοικητὴς τῆς Τουλῶνος καὶ τῷ 1848 ἀρχηγὸς τοῦ στόλου τῆς Μεσογείου. Ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του προήχθη εἰς ναύαρχον. Γ. Ν. Ν.

— **Μπωντὲν** (Baudin), ***Νικόλαος.*** Διάσημος Γάλλος θαλασσοπόρος (1750—1803). Κατετάχθη τῷ 1786 εἰς τὸ πολεμικὸν ναυτικόν. Ἐξετέλεσε δύο ἐπιστημονικὰς ἐξερευνήσεις εἰς τὰς Ἰνδίας. Τῷ 1800 προήχθη εἰς πλοίαρχον καὶ ἐπὶ κεφαλῆς δύο κορβεττῶν ἐξετέλεσε μακρὸν ἐξερευνητικὸν πλοῦν εἰς τὰς μεσημβρινὰς ἀκτὰς τῆς Νέας Ὁλλανδίας. Κατὰ τὸ διάστημα τῆς ἐξερευνήσεως ταύτης τὰ πληρώματα ἀπεδεκατίσθησαν ἐκ τῶν ἀσθενειῶν, αὐτὸς δ' οὗτος ὁ Μπωντὲν ἠσθένησε σοβαρῶς καὶ κατὰ τὴν ἐπιστροφὴν ἀπέθανεν εἰς τὴν νῆσον τῆς Γαλλίας. Γ. Ν. Ν.

**Μπωντιὲ** (Baudier), ***Μιχαήλ.*** Γάλλος ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1589 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1645. Εἶχε τὸν τίτλον τοῦ ἱστοριογράφου τῆς Γαλλίας καὶ συνέγραψε τὰ ἔργα: «Histoire générale de la religion des Turcs, avec la vie de leur prophète», μεταφρασθὲν ἐκ τοῦ ἀραβικοῦ (1626), «Histoire de la cour du roi de Chine» (1626), «Histoire de l' administration du cardinal d' Amboise etc.». (1634), «Histoire de l' incomparable administration de Romieu, grand ministre d'état de Raymond Béranguir comte de Provence» (1635), «Histoire de la vie du cardinal de Ximénès» (1635). —Ω.

**Μπωντὸ** (Baudot). Γάλλος τηλεγραφητὴς (1845—1903), εἰς τὰς ἐφευρέσεις τοῦ ὁποίου ὀφείλεται μέγα μέρος τῆς προόδου τῆς τηλεγραφίας. Ὁ Μπωντὸ ἐπενόησεν ἐν τοῖς ἄλλοις σύστημα, ἐν τῷ ὁποίῳ τὰ διαβιβαζόμενα τηλεγραφήματα ἐκτυποῦνται ἐν τῷ δέκτῃ διὰ τυπογραφικῶν χαρακτήρων, ὅπως καὶ εἰς τὸ σύστημα Huges, καὶ τὸ ὁποῖον ἐπιτρέπει σύγχρονον διαβίβασιν πολλῶν τηλεγραφημάτων διὰ τοῦ ἰδίου ἀγωγοῦ. [Βλ. λ. *τηλεγραφία.*] —Ρ.

**Μπωντουὲν** (Baudouin) *ντὲ* ***Κουρτεναί.*** Πολωνὸς γλωσσολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1845 ἐξ οἰκογενείας γαλλικῆς καταγωγῆς, ἐγκατεστημένης ἐν Πολωνίᾳ ἀπὸ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος. Ἐσπούδασεν ἐν Βαρσοβίᾳ, Πετρουπόλει καὶ ἐν Γερμανίᾳ, ἠσχολήθη δὲ εἰδικῶς μὲ τὴν σλαβικὴν φιλολογίαν. Τῷ 1875 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς σλαυϊκῆς φιλολογίας εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Καζὰν καὶ βραδύτερον εἰς τὸ τοῦ Ντορπάτ. Ἔγραψε πολυάριθμα ἔργα πολωνιστί, τσεχιστί, ρωσιστί, σλοβενιστί, γερμανιστὶ καὶ ἰταλιστί, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Περὶ τῆς διαδόσεως τοῦ λατινικοῦ ἀλφαβήτου παρὰ τοῖς σλαβικοῖς λαοῖς» (1865), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς πολωνικῆς ὀρθογραφίας» (1868), «Περὶ τῆς ἀρχαίας πολωνικῆς γλώσσης, τῆς πρὸ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος» (1870) κ. ἄ. Μετὰ τῶν Γ. Κάρλοβιτς καὶ Κρύνσκι ἵδρυσε συλλογὴν φιλολογικῶν μονογραφιῶν εἰς πολωνικὴν γλῶσσαν, συνειργάσθη δὲ εἰς πλεῖστα περιοδικά, ἐν οἷς τὰ «Archiv für Slavische Philologie», «Ρωσικὴ ἐπιθεώρησις τοῦ ὑπουργείου τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως», «Σλαβικὴ ἐπιθεώρησις τῆς Πράγας» κλπ. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων Πολωνῶν γλωσσολόγων. —Ω.

— **Μπωντουὲν** (Baudouin). Γαλλικὴ γραφὴ τοῦ ὀνόματος *Βαλδουῖνος* (βλ. λ.).

**Μπωντουὲν** (Baudouin) ***ἀντίδρασις.*** Χαρακτηριστικὴ ἀντίδρασις τοῦ σησαμελαίου. Ἐπιτελεῖται δι' ἀναμίξεως τοῦ ἐξεταζομένου ἐλαίου μετὰ πυκνοῦ ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος καὶ μικρᾶς ποσότητος διαλύματος φουρφουρόλης ἐν ἀλκοόλῃ καὶ ἀκολούθου ἀναταράξεως. Παρουσίᾳ σησαμελαίου ἐμφανίζεται ἐρυθρὸς χρωματισμός. Σ. Γ.

**Μπωντρὰν** (Baudrand), ***Ἐρρῖκος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1774—1848). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς ἐπὶ τοῦ δημοκρατικοῦ καθεστῶτος, μετασχὼν εἰς ὅλας τὰς ἐκστρατείας, αἵτινες ἐγένοντο ἐπὶ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως, βραδύτερον δὲ καὶ ἐπὶ τῆς αὐτοκρατορίας τοῦ Ναπολέοντος, τὸν ὁποῖον ἠκολούθησεν εἰς ὅλας τὰς ἐκστρατείας του. Ἀπὸ τοῦ 1808—1813 διετέλεσε διευθυντὴς τῶν ὀχυρώσεων τῆς Κερκύρας κατὰ τὴν γαλλικὴν κατοχὴν τῶν Ἰονίων νήσων καὶ βραδύτερον, ἐπὶ Λουδοβίκου Φιλίππου, ἐγένετο πατρίκιος τῆς Γαλλίας. Μ. Δ. Β.

**Μπωντριγιὰρ** (Baudrillart), ***Ἀλφρέδος.*** Γάλλος ἱστορικός, πρύτανις τοῦ καθολικοῦ ἰνστιτούτου τῶν Παρισίων, γεννηθεὶς τῷ 1859. Υἱὸς τοῦ οἰκονομολόγου *Ἐρρίκου Μπωντριγιάρ,* μετὰ λαμπρὰς σπουδὰς εἰς τὴν σχολὴν Βοσσουέτου καὶ τὸ λύκειον Λουδοβίκου τοῦ Μεγάλου, εἰσήχθη τῷ 1878 εἰς τὴν École Normale supérieure καὶ ἀπεφοίτησε ταύτης τῷ 1881, μετὰ διετίαν δὲ διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ λυκείου Στανισλάου ἐν Παρισίοις. Τῷ 1884 ἐδημοσίευσε τὸν πρῶτον τόμον τοῦ «Cours d' histoire» πρὸς χρῆσιν τῶν πρωτοβαθμίων σχολῶν καὶ τῷ 1885 «Μελέτην ἐπὶ τῆς πολιτικῆς Ἐρρίκου Δ' ἐν Γερμανίᾳ». Αἰσθανόμενος ἰδιαιτέραν κλίσιν πρὸς τὴν θρησκείαν, εἰσῆλθεν εἰς τὸ Ὀρατόριον, ἐχειροτονήθη ἱερεὺς (1893), παρηκολούθησε τὰ μαθήματα τῆς θεολογικῆς σχολῆς τοῦ πανεπιστημίου καὶ τῷ 1895 ἀνηγορεύθη διδάκτωρ τῆς θεολογίας διὰ τῆς διατριβῆς του: «Comment et pourquoi la France est restée catholique au XVI siècle». Τῷ 1894 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἱστορίας εἰς τὸ καθολικὸν ἰνστιτοῦτον, τῷ δὲ 1907 πρύτανις αὐτοῦ. Ὡς καθηγητὴς καὶ ὡς πρύτανις ἐδίδαξεν ἀπολογητικήν, ἱστορίαν τῆς Ἐκκλησίας, ἱστορίαν τῶν θρησκειῶν, ἱστορίαν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως κλπ. καὶ συνειργάσθη εἰς πλεῖστα περιοδικά, ὡς τά: «Correspondant», «Revue hebdomadaire», «Revue des questions historiques», «Revue de l'Institut catholique», «Revue apologétique», «Bulletin critique» κλπ. Τὸ σπουδαιότερον ἔργον του εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Philippe V et la cour de France» (1890—1900) εἰς πέντε τόμους, ἄλλα δὲ τὰ ἑξῆς: «L'église catholique, la renaissance, le protestantisme» (1904), «Quatre cents ans de concordat» (1905), «L'enseignement catholique dans la France contemporaine» (1910), «Vie de M. d'Hulst» (1912—1914 τόμ. 2), «La guerre allemande et le catholicisme» (1915), «L'Allemagne el les Alliés devant la concience chrétienne» (1915), «La France, les catholiques et la guerre» (1916) κ. ἄ. —Ω.

—**Μπωντριγιὰρ** (Baudrillart), ***Ἐρρῖκος-Ἰωσὴφ-Λέων.*** Γάλλος οἰκονομολόγος, γεννηθεὶς ἐν Παρισίοις τῷ 1821. Κατόπιν λαμπρῶν σπουδῶν ἐνεφανίσθη εἰς τὸν φιλολογικὸν κόσμον τῷ 1845 δι' ἑνὸς «Ἐπαίνου τοῦ Τυργκό», δι' ὃ ἔτυχε τοῦ βραβείου τῆς εὐγλωττίας τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας. Τῷ 1852 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας, τῷ δὲ 1866 καθηγητὴς τῆς ἱστορίας τῶν οἰκονομικῶν θεωριῶν. Τῷ 1853 ἐξέδωκε τὸ ἔργον: «J. Bodin et son temps», ὅπερ ἀποτελεῖ πιστὴν εἰκόνα τῶν πολιτικῶν θεωριῶν καὶ τῶν οἰκονομικῶν ἰδεῶν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος καὶ ἐβραβεύθη ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας. Κατόπιν τῆς ἐπιτυχίας τοῦ βιβλίου τούτου προσελήφθη εἰς τὴν σύνταξιν τοῦ «Journal des Débats» καὶ εἰς τὴν

Digitized by Google

διεύθυνσιν τοῦ «Journal des économistes», τὴν ὁποίαν ἐκράτησεν ἐπὶ δεκαετίαν, ἀπὸ τοῦ 1855 μέχρι τοῦ 1864. Τῷ 1860 ἐξέδωκε τὰ μαθήματά του ἐν τῷ Κολλεγίῳ τῆς Γαλλίας ὑπὸ τὸν τίτλον: «Philosophie de l'économie politique. Des rapports de la morale et de l'économie politique». Τὸ ἔργον τοῦτο ἐβραβεύθη ταυτοχρόνως ὑπὸ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας καὶ ὑπὸ τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἠθικῶν καὶ πολιτικῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Μπωντριγιὰρ ἔγραψεν ἐπίσης καὶ τὰ ἑξῆς: «Manuel d'économie politique» (1857), «Études de philosophie morale et d'économie politique» (1883), «La liberté du travail, l'association et la démocratie» (1865), «Histoire du luxe privé et public etc., depuis l'antiquité jusqu' à nos jours» (1878—1880, τόμοι 4). —Ω.

**Μπωντρὺ** (Baudry), ***Πέτρος***. Γάλλος φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1877. Ἐσπούδασεν ἐν Παρισίοις, κατόπιν δ' ἐδίδαξεν ὡς καθηγητὴς τὴν γαλλικὴν γλῶσσαν καὶ φιλολογίαν ἐν Ἀγγλίᾳ, Γερμανίᾳ, Ἰταλίᾳ, Αἰγύπτῳ καὶ Ἑλλάδι (1906), ἔνθα καὶ ἐγκατεστάθη ὁριστικῶς, νυμφευθεὶς Ἑλληνίδα. Μετέφρασεν εἰς τὴν γαλλικὴν τὴν «Φόνισσαν» καὶ ἄλλα διηγήματα τοῦ Παπαδιαμάντη, διηγήματα τοῦ Μωραϊτίδη, Καμπύση, Ἐφταλιώτη, τὰ «Θρύψαλα» τοῦ Καμπούρογλου καὶ τὸ μυθιστόρημα «Ὁ κατάδικος» τοῦ Θεοτόκη, ἐμμέτρως δὲ τοὺς «Ἰάμβους καὶ ἀναπαίστους», τὸν «Τάφον» καὶ ἄλλα ποιήματα τοῦ Κωστῆ Παλαμᾶ, τὴν «Παγὰν Λαλέουσαν» τοῦ Π. Νιρβάνα, καὶ ἐκ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς φιλολογίας τὸ στοιχεῖον α τῆς Ὀδυσσείας. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης καὶ πρωτότυπα ποιήματα, ὑπὸ τὸν γενικὸν τίτλον «En flânant vers la Mort», μεταφρασθέντα ἑλληνιστὶ ὑπὸ τοῦ Κ. Παλαμᾶ. Παρεσημοφορήθη διὰ τοῦ γαλλικοῦ παρασήμου τῶν ἀκαδημαϊκῶν δαφνῶν. Τ. Α.

**Μπώρνμαουθ** (Bournemouth) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀγγλίας ἐν τῇ κομιτείᾳ Χάμψαϊρ, κειμένη 172 χλμ. πρὸς ΝΔ. τοῦ Λονδίνου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Κεῖται ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ κόλπου Πούλ, ἔναντι τῆς νήσου Οὐάϊτ, καὶ εἶναι ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων λουτροπόλεων καὶ κλιματολογικῶν σταθμῶν τῆς Ἀγγλίας. Ἔχει ὡραῖα κτήρια καὶ ἐγκαταστάσεις λουτροθεραπευτικὰς κατὰ μῆκος τῆς παραλίας, διακρίνεται δὲ διὰ τὸ λαμπρὸν κλῖμά της. Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτον εἶναι τὸ μέγα φθισιατρεῖον της, ἱδρυθὲν τῷ 1855. Κάτ. (1921) 91.761. Χ. Δ.

**Μπώρρους** (Burroughs), ***Ἰωάννης***. Ἀμερικανὸς συγγραφεὺς καὶ ποιητὴς (1837—1921). Ἤρχισε δημοσιεύων σειρὰν ἁπλῶν περιγραφῶν ἐκ τῆς ζωῆς τῶν ἀγροτῶν, τῶν ζῴων καὶ τῶν φυτῶν, διακριθεὶς διὰ τὴν φυσικότητα τοῦ ὕφους του καὶ τὴν ζωηρότητα τῶν εἰκόνων του. Βραδύτερον προσεπάθησε νὰ προσδώσῃ εἰς τὰ ἔργα του καί τινα φιλοσοφικὴν καὶ φιλολογικὴν χροιάν, χωρὶς ὅμως νὰ ἀπομακρυνθῇ ἀπὸ τὰ θέματα τῆς ἀγροτικῆς καὶ φυσικῆς ζωῆς, μιμηθεὶς ἐν πολλοῖς τὸν Ἔμερσον καὶ τὸν Τόρω. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ξύπνα πουλάκι» (1871), «Χειμωνιάτικη λιακάδα» (1875), «Πουλιὰ καὶ ποιηταὶ» (1877), «Δροσεροὶ ἀγροί», «Χρόνος καὶ ἀλλαγὴ» (1912), «Ἀγρὸς καὶ μελέτη» (1919) κτλ. Μ. Δ. Β.

— **Μπώρρους** (Burrows), ***Ρονάλδος Μόνταγκ***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ συγγραφεὺς (1867—1920). Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν Ὀξφόρδῃ καὶ διετέλεσε βοηθὸς τοῦ καθηγητοῦ Τζίλμπερτ Μώρραιη ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γλασκώβης (1891—1897). Προέβη εἰς τὰς σημαντικὰς ἀνασκαφὰς τῆς Πύλου καὶ τῆς Σφακτηρίας (1895—1896), ἐκ τῶν κυριωτέρων ἀποτελεσμάτων τῶν ὁποίων ὑπῆρξεν ἡ ἐπαλήθευσις πλείστων σημείων τῆς ἱστορίας τοῦ Θουκυδίδου. Ἀπὸ τὸ 1898 μέχρι τοῦ 1908 διετέλεσε καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Κάρντιφ καὶ ἀπὸ τοῦ 1909—1913 εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Μάντσεστερ. Ἐν τῷ μεταξύ, τῷ 1905 καὶ 1907, ἐνήργησεν ἀνασκαφὰς ἐν Βοιωτίᾳ εἰς τὴν περιοχὴν ὅπου καὶ ἡ ἀρχαία Μυκαλησσός, συστηματοποιήσας διὰ πρώτην φορὰν τὰς ἀρχαιολογικὰς μελέτας ἐν Βοιωτίᾳ, τῷ δὲ 1907 ἐδημοσίευσε τὸ ἔργον του «Ἀνακαλύψεις ἐν Κρήτῃ». Ἀπὸ τοῦ 1913 μέχρι τοῦ θανάτου του διετέλεσε διευθυντὴς τοῦ ἐν Λονδίνῳ Βασιλικοῦ Κολλεγίου. Ἀπὸ τοῦ 1913 ἀνεμίχθη καὶ εἰς τὴν πολιτικήν, συνηγορῶν ἑκάστοτε ὑπὲρ τῶν ἑλληνικῶν δικαίων, καὶ κατέστη ὁ κυριώτερος τῶν Ἄγγλων φιλελλήνων, γνωρίσας εἰς τὸ ἀγγλικὸν κοινὸν ἀπὸ τοῦ 1912 τὸν Βενιζέλον, ὑφ' οὗ καὶ διωρίσθη τῷ 1916 ἡμιεπίσημος διπλωματικὸς ἀντιπρόσωπος ἐν Λονδίνῳ τῆς προσωρινῆς κυβερνήσεως Θεσσαλονίκης. Κατὰ τὸ 1915 εἶχεν ὑποβάλει τὴν πρότασιν, ὅπως ἡ Ἀγγλία παραχωρήσῃ εἰς τὴν Ἑλλάδα τὴν Κύπρον, εἰς ἀντάλλαγμα τῆς ἐξόδου αὐτῆς εἰς τὸν πόλεμον παρὰ τὸ πλευρὸν τῆς Ἀντάντ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον κατώρθωσε νὰ γίνῃ δεκτὸν ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς κυβερνήσεως. Ἔγραψεν ἐπίσης πλεῖστα ἄρθρα καὶ ἔκαμε πολλὰς διαλέξεις περὶ ἑλληνικῶν καὶ ἄλλων ζητημάτων τῆς Ἀνατολῆς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *George Glasgow*, «Ronald Burrows, A memoir» μετὰ προλόγου τοῦ *Ε. Κ. Βενιζέλου*. Μ. Δ. Β.

**Μπωσὰν** (Beauchamps), ***Ἀλφόνσος***. Γάλλος ἱστοριογράφος ἐκ Μονακὸ (1767—1832). Ὑπηρετήσας εἰς τὸν στρατὸν τῆς Σαρδηνίας καὶ ἀπὸ τοῦ 1792 ἕως τοῦ 1806 εἰς τὴν ἐν Παρισίοις διεύθυνσιν τῶν ἀστυνομικῶν ὑπηρεσιῶν, συνέλεξε διάφορα στοιχεῖα ἱστορικῆς σημασίας, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁποίων συνέταξε καὶ ἐδημοσίευσε τῷ 1806 «Ἱστορίαν τῆς Βανδέας», δι' ἣν καὶ κατεδιώχθη, ὡς χρησιμοποιήσας ἐμπιστευτικὰ ἔγγραφα. Ἔγραψε καὶ ἄλλα ἔργα πολιτικῆς ἱστορίας, ἐν οἷς καὶ «Βίον τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τῶν Ἰωαννίνων», ἐκδοθέντα ἐν Παρισίοις τῷ 1822. —Ω.

—**Μπωσὰν** (Beauchamp, ἢ Beauchamps), ***Ἰωσὴφ*** *ντὲ* —. Γάλλος ἀστρονόμος (1752—1801). Ἐπισκεφθεὶς τὸ Χαλέπιον, τὴν Βαγδάτην, τὴν Βασόραν καὶ τὴν Περσίαν, ἐξετέλεσε σημαντικὰς παρατηρήσεις ἀστρονομικὰς καὶ γεωδαιτικὰς καὶ κατέστρωσε τὸν χάρτην τοῦ ροῦ τῶν ποταμῶν Τίγρητος καὶ Εὐφράτου, ὡς καὶ τῆς πόλεως Βαβυλῶνος. Ἐπὶ πλέον ἠσχολήθη καὶ εἰς ἀρχαιολογικὰς ἐρεύνας, συλλέξας δὲ σημαντικὰ στοιχεῖα περὶ τῆς ἀρχαίας Βαβυλῶνος ἀπέστειλεν αὐτὰ εἰς τὸν ἀβ-βᾶν Barthélemy. Τῷ 1796 διωρίσθη πρόξενος εἰς Μασκάτην, ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ δὲ ταύτῃ ἐβελτίωσε τοὺς ὑπάρχοντας χάρτας τῆς Μαύρης θαλάσσης. Ὁ Βοναπάρτης ἀπέστειλεν αὐτὸν ἐπὶ μυστικῇ ἀποστολῇ εἰς Κωνσταντινούπολιν. Τὴν ἀποστολὴν ὅμως ταύτην δὲν ἠδυνήθη νὰ φέρῃ εἰς πέρας, διότι μόλις ἀνεχώρησεν ἐξ Αἰγύπτου, συνελήφθη ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καὶ παρεδόθη ὑπ' αὐτῶν εἰς τὸν σουλτᾶνον ὡς κατάσκοπος. Μετὰ σκληρὰν αἰχμαλωσίαν ἀπελύθη τῷ 1801. Ὁ Μπωσὰν ἦτο μέλος τοῦ ἰνστιτούτου τῆς Γαλλίας καὶ ἀντεπιστέλλον μέλος τῆς Ἀκαδημίας, συνέγραψε δὲ διαφόρους πραγματείας περὶ τῶν ταξιδίων του εἰς τὴν Ἀνατολήν, περὶ τῶν ἀρχαιοτήτων τῆς Βαβυλῶνος καὶ περὶ τῶν ἀστρονομικῶν φαινομένων, τὰ ὁποῖα παρετήρησε. Σ. Π.

— **Μπωσὰν** (Beauchamp), ***Καίτλην***. Ἀγγλὶς λογογράφος, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ψευδώνυμον *Μάνσφιλντ* Αἰκατερίνη (βλ. λ.).

— **Μπωσὰν** (Beauchamps), ***Πέτρος***. Γάλλος λόγιος καὶ δραματικὸς ποιητὴς (1689—1769). Ἀνεβίβασεν ἀρκετὰ θεατρικὰ ἔργα, ἐν οἷς: «Τὸ διαζύγιον» (1721), «Ὁ ἐρωτευμένος Ἀρλεκῖνος» (1723) καὶ ἄλλα, σημειώσαντα πολλὴν ἐπιτυχίαν, καὶ ἔγραψε διασκευὰς ἀρχαίων ἑλληνικῶν μυθιστοριῶν, ὡς «Οἱ ἔρωτες τῆς Ροδάνθης καὶ τοῦ Δοσικλέους» κατ' ἀπομίμησιν τοῦ Θεοδώρου Προδρόμου κλπ. Σημαντικώτερον ἔργον του ὑπῆρξεν ἡ συνταχθεῖσα παρ' αὐτοῦ βιβλιογραφία τοῦ γαλλικοῦ θεάτρου ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἔρευναι ἐπὶ τῶν θεάτρων τῆς Γαλλίας ἀπὸ τοῦ 1161» (1735 εἰς 3 τόμους). —Ω.

**Μπωσολέγ** (Beausoleil) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ κλιματολογικὸς σταθμὸς τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Παραθαλασσίων Ἄλπεων. Κεῖται ἐγγύτατα καὶ ἐν συνεχείᾳ τῆς πόλεως τοῦ Μόντε Κάρλο καὶ εἰς ἀπόστασιν 21 χλμ. ἀπὸ τῆς Νικαίας. Ἡ λεωφόρος τῆς Μεσημβρίας ἀποτελεῖ τὸ σύνορον μεταξὺ Γαλλίας καὶ Μονακό, καὶ τὰ ἐπ' αὐτῆς καταστήματα, τὰ μὲν ἐπὶ τῆς μιᾶς πλευρᾶς εἶναι γαλλικά, τὰ δὲ ἐπὶ τῆς ἄλλης ὑπάγονται εἰς τὸ Μονακό. Εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον συχναζομένων κατὰ τὸν χειμῶνα ἰδίως κέντρων τῆς ἀκτῆς τῆς Ριβιέρας καὶ ἔχει πολυάριθμα καὶ καλὰ ξενοδοχεῖα, ἐπαύλεις καὶ ἄλλα ὡραῖα κτήρια. Κάτ. 11.650. Χ. Δ.

**Μπωταὶν** (Bautain), ***Λουδοβῖκος - Εὐγένιος. Μαρία, ἀββᾶς*** —. Γάλλος φιλόσοφος (1796—1867). Διδάκτωρ τῆς θεολογίας τοῦ δικαίου, τῆς ἰατρικῆς, τῶν φυσικῶν ἐπιστημῶν καὶ τῆς φιλολογίας ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «La philosophie du christianisme» (1835, τόμ. 2), «La psychologie experimentale» (1839, τόμ. 2), «La philosophie morale» (1840, τόμ. 2), «Propositions générales sur la vie» (1826), «La morale de l'Évangile, comparée à la morale des philosophes» (1827), «Manuel de philosophie morale» (1866), «La liberté et la religion considérées dans leur rapports» (1858), «De l'éducation publique en France au XIXe siècle» (1876). Κεντρικὸς ἄξων τῶν ἀπόψεων τοῦ Μπωταὶν εἶναι ὅτι μόνον ὁ καθολικισμὸς διδάσκει τὴν ἀλήθειαν. —Ω.

**Μπὼτζ** (Budge), *σὲρ* ***Ἐρνέστος - Ἀλφρέδος - Οὐάλλις***. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1857. Τῷ 1885 διωρίσθη ἔφορος τῶν ἀσσυριακῶν καὶ τῶν αἰγυπτιακῶν ἀρχαιοτήτων τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου καὶ κατόπιν διηύθυνε τὰς ἐν Ἀσσουάν, Γκεμπὲλ Μπαρκάλ, Μεσοποταμίᾳ καὶ Σουδὰν γενομένας ἀνασκαφάς. Ἐκ τῶν ἔργων αὐτοῦ διακρίνονται: «Οἱ θεοὶ τῆς Αἰγύπτου» (1903), «Τὸ αἰγυπτιακὸν Σουδὰν» (1907), «Ὁ Νεῖλος» (1912), «Ἡ λογοτεχνία τῶν Αἰγυπτίων κατὰ τὴν ἀρχαιότητα» (1914), «Παρὰ τὸν Νεῖλον καὶ τὸν Τίγρητα» (1920). Τῷ 1920 ἔλαβε τίτλον εὐγενείας. Α. Δ.

**Μπῶφορ** (Beaufort) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα πολλῶν κωμῶν, χωρίων καὶ πύργων τῆς Γαλλίας. Ἐκ τούτων ἀξιομνημόνευτος εἶναι ἡ ἐν τῷ νομῷ Μαὶν-ἐ-Λουὰρ κώμη, ἕδρα παλαιᾶς κομιτείας, ἐξ ἧς ἔλαβε τὸ ὄνομα ὁ ἀγγλικὸς οἶκος Μπῶφορτ. Ἔχει 4.100 κατ. καὶ ἐμπόριον κτηνῶν. Ἕτερον χωρίον ἐν τῷ νομῷ τῆς Σαβοΐας, εἰς ἀπόστασιν 50 χλμ. ΒΑ τοῦ Σαμπερί, εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὴν παραγωγὴν φερωνύμου τυροῦ. Μ. Δ. Β.

**Μπωφόρ**, καὶ ***Μπῶφορτ*** (Beaufort). Ὄνομα τριῶν μεγάλων ἀριστοκρατικῶν οἰκογενειῶν τῆς Δυτικῆς Εὐρώπης, ὧν ἡ μὲν εἶναι βελγική, ἡ ἄλλη γαλλικὴ καὶ ἡ τρίτη ἀγγλική.

Α΄) ***Βελγικὴ οἰκογένεια***. Ταύτην ἀποτελοῦν οἱ κόμιτες, οἵτινες κατόπιν ἐγένοντο δοῦκες τοῦ Μπωφὸρ καὶ τῶν ὁποίων τὸ ὄνομα προῆλθεν ἐκ τῆς ὁμωνύμου κομιτείας τοῦ Ναμούρ. Ἡ οἰκογένεια αὕτη κατὰ τὸν ΙΓ΄ αἰῶνα διῃρέθη εἰς τέσσαρας κλάδους: εἰς Μπωφὸρ τοῦ *Γκόν*, τοῦ *Φαλλαί*, τοῦ *Σὲλ* καὶ τοῦ *Σποντέν*. Ὁ τελευταῖος οὗτος κλάδος ἔσχε πολλὰ ὀνομαστὰ μέλη, ὧν κυριώτερα εἶναι:

—1) ***Γουλιέλμος Β΄***, ζήσας κατὰ τὸν ΙΓ΄ αἰῶνα καὶ διακριθεὶς κατὰ τὸν περίφημον πόλεμον τὸν ἐπικληθέντα «τῆς Ἀγελάδος», ὁ ὁποῖος ἠρήμωσε τὰς περιφερείας τῆς Λιέγης καὶ τοῦ Ναμούρ. Ἔλαβεν ἐπίσης μέρος εἰς τὴν μάχην τοῦ Βαίρινγεν, καθ' ἣν ὁ δοὺξ Ἰωάννης Α΄ τῆς Βραβάντης ἐνίκησε τὸν δοῦκα τοῦ Λουξεμβούργου τῷ 1288.

— 2) ***Φρειδερῖκος-Αὔγουστος-Ἀλέξανδρος***, δοὺξ *τοῦ Μπωφόρ*. Βέλγος πολιτικὸς (1751—1817). Διετέλεσεν αὐλάρχης τῆς Μαρίας-Θηρεσίας καὶ ἔλαβε παρὰ τοῦ Ἰωσὴφ Β΄ τὸν τίτλον τοῦ δουκὸς τῷ 1782. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τῆς Βραβάντης ἀπεσύρθη εἰς τὴν Ἱσπανίαν, ὁπόθεν ἐπανῆλθεν εἰς τὸ Βέλγιον τῷ 1793, ὅπου ἔπαιξε σπουδαιότατον ρόλον, χρησιμοποιήσας πᾶσαν αὐτοῦ τὴν ἐπιρροήν, ὅπως ἀποτρέψῃ καὶ ματαιώσῃ τὰς ἀποτόμους ἀντεκδικήσεως, αἵτινες ἠπειλήθησαν μετὰ τὴν αὐστριακὴν παλινόρθωσιν. Βραδύτερον ὅμως ἠναγκάσθη ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ Βέλγιον, εἰς τὸ ὁποῖον ἐπανῆλθε τῷ 1814, ὅπου οἱ σύμμαχοι προσέφερον εἰς αὐτὸν τὴν διοίκησιν τῶν Κάτω Χωρῶν. Αἱ πολυάριθμοι ὅμως δυσχέρειαι, τὰς ὁποίας συνήντησε, τὸν ἀπεγοήτευσαν ταχέως καὶ τὸν ἠνάγκασαν νὰ παραιτηθῇ μετὰ ἕνα μῆνα καὶ νὰ δεχθῇ τὴν θέσιν τοῦ αὐλάρχου τοῦ Γουλιέλμου Α΄, μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τοῦ βασιλείου τῶν Κάτω Χωρῶν.

Β΄) ***Γαλλικὴ οἰκογένεια***. Οἱ δοῦκες οὗτοι τοῦ Μπωφὸρ εἶναι γνωστότεροι ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ *Βαντὼμ* (βλ. λ.), ἐξαιρέσει τοῦ σημαντικωτέρου μέλους τῆς οἰκογενείας δουκὸς *Φραγκίσκου* τοῦ Βαντώμ, δουκὸς τοῦ Μπωφόρ. Οὗτος ὑπῆρξεν εἷς τῶν ὀνομαστοτέρων στρατιωτικῶν τῆς Γαλλίας (1616—1669). Ἦτο υἱὸς τοῦ Καίσαρος τῆς Βαντὼμ καὶ τῆς δουκίσσης Φραγκίσκης ντὲ Μερκέρ. Κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν ἀπὸ νεαρᾶς ἡλικίας καὶ μετέσχε τῆς ἐκστρατείας τῆς Σαβοΐας (1630), βραδύτερον δὲ διεκρίθη κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Ἀρρὰς (1640). Ἀναμιχθεὶς ὅμως εἰς συνωμοτικὰς ἐνεργείας, ἠναγκάσθη, μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν αὐτῶν, νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Ἀγγλίαν, ὁπόθεν ἐπέστρεψε μετὰ τὸν θάνατον τοῦ καρδιναλίου Ρισελιέ, τῷ 1642. Κατὰ τὰς πρώτας ἡμέρας τοῦ νέου καθεστῶτος εἶχεν εὐνοηθῇ πολὺ ὑπὸ τῆς αὐλῆς καὶ ἐτάχθη πρὸς τὸ μέρος τῆς ἀντιβασιλευούσης Ἄννης τῆς Αὐστριακῆς κατὰ τοῦ δουκὸς τοῦ Ὀρλεὰν καὶ τοῦ πρίγκιπος τοῦ Κοντέ. Ἐπειδὴ ὅμως βραδύτερον ἤρχισε νὰ παραγκωνίζεται, μὴ δυνάμενος νὰ ἀνεχθῇ τὴν προέχουσαν θέσιν τοῦ Μαζαρίνου μετέστη πρὸς τὴν ἀντιπολίτευσιν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς νέαν συνωμοσίαν, ἧς σκοπὸς ἦτο ἡ ἀνατροπὴ αὐτοῦ. Ἀλλὰ καὶ ἡ συνωμοσία αὕτη ἀνεκαλύφθη, ὁ δὲ Μπωφὸρ συνελήφθη καὶ ἐνεκλείσθη ἐν Βενσάν, ὅπου παραμείνας ἐπὶ πέντε ἔτη ἐγκάθειρκτος κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ τῷ 1648. Ἡ δραπέτευσις αὕτη ὑπῆρξε λίαν μυθιστορηματικὴ καὶ κατέστη περιώνυμος. Ὅτε δὲ μετὰ δύο μῆνας ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις τῆς Σφενδόνης, ὁ Μπωφὸρ ἐτάχθη πρὸς τὸ μέρος τοῦ κοινοβουλίου κατὰ τῆς αὐλῆς καὶ συνειργάσθη μὲ τὸν πρίγκιπα τοῦ Κοντὶ καὶ μὲ τὸν καρδινάλιον Ρέτζ, τοῦ ὁποίου ἀπέβη ὁ πολυτιμότερος σύμμαχος. Ἔδειξε δὲ κατὰ τὴν περίστασιν ταύτην τοσαύτην δραστηριότητα καὶ ἐδημιούργησε περὶ ἑαυτὸν τόσον θόρυβον, ὥστε ταχέως ἀπέβη τὸ εἴδωλον τοῦ ὄχλου, ὑπὸ τοῦ ὁποίου ὠνομάζετο «ὁ βασιλεὺς τῆς ἀγορᾶς». Βραδύτερον ὅμως συνεφιλιώθη μετὰ τοῦ πρίγκιπος τοῦ Κοντέ, ὁ ὁποῖος τὸν διώρισε διοικητὴν τῶν Παρισίων τῷ 1649. Κατὰ τὸ 1652, προκληθεὶς ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ του δουκὸς τῆς Νεμούρ, ἐφόνευσεν αὐτὸν εἰς μονομαχίαν, καταστᾶσαν περίφημον διὰ τὴν αὐστηρότητα τῶν ὅρων ὑπὸ τοὺς ὁποίους ἐγένετο. Μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ Λουδοβίκου ΙΔ΄ εἰς Παρισίους, ἐδήλωσε πρὸς αὐτὸν ὑποταγὴν τῷ 1652, ἀλλὰ δὲν περιελήφθη εἰς τὸ διάταγμα τῆς χάριτος καὶ ἐξωρίσθη. Τῷ 1653 ἐχορηγήθη χάρις καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Γαλλίαν. Κατὰ τὰ ἔτη 1664—1665 διοριςθεὶς ἐπιθεωρητὴς τοῦ ναυτικοῦ διηύθυνε πολλὰς ἐκστρατείας κατὰ τῶν Ἀλγερίνων πειρατῶν, τῷ δὲ 1666 ἀνετέθη εἰς αὐτὸν ἡ διοίκησις τοῦ γαλλικοῦ στόλου, ὁ ὁποῖος ἐπρόκειτο νὰ ἑνωθῇ μετὰ τοῦ ὀλλανδικοῦ

καταπολέμησιν τῆς Ἀγγλίας. Τῷ 1669, ὅτε ἡ Βενετία ἐζήτησε τὴν βοήθειαν τῆς Γαλλίας ἐναντίον τῶν Τούρκων, ἀπὸ μακροῦ πολιορκούντων τὸν Χάνδακα τῆς Κρήτης, ἀνετέθη εἰς τὸν Μπωφὸρ ὑπὸ τοῦ βασιλέως Λουδοβίκου ΙΔ' ἡ ἀρχηγία τοῦ στόλου, ὅστις ἐστάλη εἰς Κρήτην μετὰ 6.000 ἀνδρῶν. Δέκα ἡμέρας μετὰ τὴν ἄφιξιν καὶ εἴσοδόν του εἰς τὴν πολιορκουμένην πόλιν, ἐπεχείρησεν ἔξοδον πρὸς διάλυσιν τοῦ πολιορκητικοῦ στρατοῦ, ἥτις ὅμως ἀπέτυχε. Κατὰ τὴν ἔξοδον ταύτην ὁ Μπωφὸρ ἐφονεύθη, ὁ δὲ νεκρὸς αὐτοῦ δὲν ἀνευρέθη, ἕνεκα τοῦ δημιουργηθέντος πανικοῦ μεταξὺ τῶν Γάλλων στρατιωτῶν, οἵτινες ἀπεσύρθησαν ἐν μεγάλῃ συγχύσει.

Γ') ***Ἀγγλικὴ οἰκογένεια.*** Αὕτη ὠνομάσθη ἐκ πύργου τινὸς τῆς Ἀνδηγαυΐας καὶ κατάγεται ἐκ τοῦ Ἰωάννου τῆς Γκάουντ, δουκὸς τοῦ Λανκάστερ. Οὗτος ἦτο τέταρτος υἱὸς τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐδουάρδου τοῦ Γ' καὶ τῆς ἐρωμένης του Αἰκατερίνης Σουύνφορντ. Ὁ πρεσβύτερος τούτων ἔλαβε καὶ τὸν τίτλον τοῦ οἴκου τοῦ *Σόμερσετ* καὶ ἐγένετο ὁ ἀρχηγὸς τοῦ οἴκου τῶν Μπῶφορτ-Σόμερσετ. Οὗτος ἀπέθανε τῷ 1409, ἀφήσας τρεῖς υἱούς. Ὁ τελευταῖος τούτων Ἐδμόνδος ἀφῆκεν ἐπίσης τρεῖς υἱοὺς καὶ μίαν θυγατέρα, τὴν Μαργαρίταν, ἡ ὁποία ἐνυμφεύθη τὸν Ἐδμόνδον Τυντὸρ καὶ ἐγένετο κατόπιν μήτηρ τοῦ βασιλέως Ἐρρίκου Ζ'.

Μ. Δ. Β.

—**Μπωφὸρ ντ' *Ὠτποὺλ*** (Beaufort d' Hautepoul), ***Κάρολος - Μάριος - Ναπολέων.*** Γάλλος στρατηγὸς (1804—1890). Ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τὸν στρατηγὸν Μαιζῶνα ἐν Πελοποννήσῳ (1828) καὶ κατόπιν ἔλαβε μέρος ὡς ὑπασπιστὴς τοῦ στρατηγοῦ Βαλαζὲ εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ἀλγερίου (1830). Ἀπὸ τὸ 1854—1858 ἐπολέμησεν ἐν Μαρόκκῳ, ὅπου διεκρίθη, τῷ δὲ 1859 διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τῆς 5ης στρατιᾶς κατὰ τὸν πόλεμον τῆς Ἰταλίας. Τῷ 1860, προαχθεὶς εἰς στρατηγόν, διωρίσθη διοικητὴς τοῦ ἐκστρατευτικοῦ σώματος τῆς Συρίας, ὅπου ἐπροστάτευσε τοὺς Χριστιανοὺς τοῦ Λιβάνου, ἰδίως κατὰ τῶν ἐπιθέσεων τῶν Δρούσων. Κατὰ τὸν Γαλλογερμανικὸν πόλεμον τοῦ 1870 διεπραγματεύθη τὴν σύναψιν ἀνακωχῆς, ἣν καὶ ὑπέγραψε.

Μ. Δ. Β.

**Μπῶφορτ** (Beaufort) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Νοτίου Καρολίνας. Κάτ. 10.000 περίπου. Κεῖται ἐπὶ τῆς διώρυγος τοῦ Πὸρτ - Ρουαγιὰλ καὶ εἶναι πολυσύχναστος τὸ θέρος διὰ τὰ θαλάσσια αὐτῆς λουτρά.

Μ. Δ. Β.

— **Μπῶφορτ *Δυτικὸν*** (Beaufort West) *[Γεωγρ.]*. Πόλις καὶ διαμέρισμα τῆς ἀγγλικῆς ἀποικίας τοῦ Ἀκρωτηρίου τῆς Ν. Ἀφρικῆς. Τὸ διαμέρισμα ἔχει ἔκτασιν 16.508 τ. χλμ. καὶ κατοικεῖται ὑπὸ Μπαντοὺ καὶ Ὀττεντόττων καὶ ὀλίγων λευκῶν, μὴ ὑπερβαινόντων ἐν τῷ συνόλῳ τὰς 10.000. Ἔχει κτηνοτροφίαν καὶ παράγει δημητριακοὺς καρπούς. Ἡ πόλις εἶναι πρωτεύουσα τοῦ διαμερίσματος καὶ ἔχει 5.481 κατ. Κεῖται παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Νίβφελντ εἰς ὕψος 850 μ. καὶ συνδέεται σιδηροδρομικῶς μετὰ τοῦ Καιπτάουν καὶ τῆς Κίμπερλεϋ. Εἶναι κέντρον ἐμπορίου ἐρίων.

Μ. Δ. Β.

— **Μπῶφορτ *θάλασσα*** (Beaufort see) *[Γεωγρ.]*. Τμῆμα τοῦ Β. Παγωμένου ὠκεανοῦ μεταξὺ τῆς ΒΑ. Ἀλάσκας καὶ τῆς νήσου Μπάνκ. Εἰς τὴν θάλασσαν ταύτην ἐκβάλει ὁ ποταμὸς τοῦ Καναδᾶ Μακέντζη, ἐν τῷ κόλπῳ τοῦ Μακέντζη, ὁ ὁποῖος ἀποτελεῖ τὸ νοτιώτατον ἄκρον αὐτῆς, εἰσχωροῦν εἰς τὴν ΒΑ. ἀκτὴν τοῦ Καναδᾶ.

Μ. Δ. Β.

**Μπῶφορτ** (Beaufort). Ἀγγλικὸς τίτλος οἰκογενείας δουκῶν (βλ. λ. *Μπωφόρ*, Γ'-Ἀγγλικὴ οἰκογένεια).

—**Μπῶφορτ** (Beaufort), ***Ἐρρῖκος.*** Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ κληρικὸς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, δευτερότοκος υἱὸς τοῦ Ἰωάννου Γκάντ, δουκὸς τοῦ Λανκάστερ καὶ τῆς Αἰκατερίνης Σουύνφορτ. Διετέλεσεν ἐπίσκοπος τοῦ Λίνκολν (1398) καὶ τοῦ Οὐΐντσεστερ (1403), βραδύτερον δὲ ἐγένετο λόρδος ἀρχικαγκελλάριος. Κατὰ τὴν βασιλείαν τοῦ Ἐρρίκου ΣΤ' ἀντεπολιτεύθη σφοδρῶς τὸν δοῦκα τοῦ Γκλάουτσεστερ. Τῷ 1426, γενόμενος καρδινάλιος, παρεσκεύασεν ἐν Γερμανίᾳ τὸν πόλεμον ἐναντίον τῶν Οὐσσιτῶν. Ὡς πολιτικὸς ὑπεστήριξε τὸν Μπέντφορντ, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου (1435) κατέβαλε πᾶσαν προσπάθειαν, ὅπως ἐξασφαλίσῃ τὴν εἰρήνην μετὰ τῆς Γαλλίας. Ἀπεβίωσε τῷ 1447.

Α. Δ.

**Μστὰ** (Msta) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Κεντρικῆς Ρωσίας πηγάζων ἐκ τῆς λίμνης Μστίνο ἐν τῷ κυβερνείῳ Τβὲρ καὶ ἐκβάλλων μετὰ ροῦν 240 χλμ. ἐν τῇ λίμνῃ Ἴλμεν τοῦ κυβερνείου Νίζνι-Νοβγκορόντ, νοτιοανατολικῶς τοῦ Νοβγκορόντ. Ὁ ροῦς αὐτοῦ χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν μεταφορὰν ξυλείας καὶ σιτηρῶν, συνδέεται δὲ μετὰ τοῦ Βόλγα διὰ συστήματος διωρύγων.

Χ. Δ.

**Μστισλάβ, *Βλαδιμίροβιτς*.** Ρῶσος ἡγεμών, γεννηθεὶς τῷ 976 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1036. Υἱὸς τοῦ ἁγίου Βλαδιμίρου, ἐκληρονόμησεν ἀπὸ τοῦ πατρός του τὴν ἡγεμονίαν Τμουτοροκάν. Κατεχόμενος ὑπὸ πολεμικῆς φιλοδοξίας, συνεφώνησε μετὰ τοῦ αὐτοκράτορος τοῦ Βυζαντίου Βασιλείου τοῦ Βουλγαροκτόνου, ὅπως καταστρέψουν τοὺς ἐν Ταυρίδι Χαζάρους· δι' ὃ ἀποβὰς (1016) εἰς τὰ παράλια τῆς Ταυρικῆς χερσονήσου ὁ Βυζαντινὸς στρατηγὸς Ἀνδρόνικος, ἡνώθη μετὰ τοῦ στρατοῦ τοῦ Μστισλάβ, ὁμοῦ δὲ κατενίκησαν τοὺς Χαζάρους. Ὁ Κεδρηνὸς ἐσφαλμένως ἀναφέρει ὅτι ὁ Ἀνδρόνικος ἐκυρίευσε τὴν Ταυρικήν, βοηθούμενος ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ Βλαδιμίρου. Ὁ Μστισλάβ, ἀφήσας τὴν Ταυρικὴν εἰς τοὺς Ἕλληνας, ἠρκέσθη εἰς τὴν εὐγνωμοσύνην καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν. Τῷ 1022 ἐκήρυξε πόλεμον κατὰ τῶν ὁμόρων αὐτοῦ Κιρκασίων καὶ ἐκυρίευσε τὴν χώραν αὐτῶν, ἀλλὰ θεωρῶν τὴν ἡγεμονίαν του λίαν ἀπομεμακρυσμένην τῆς Ρωσίας, ἐξεστράτευσεν ὅπως καταλάβῃ τὸ Κίεβον, ἐφ' οὗ ἡγεμόνευεν ὁ ἀδελφός του Ἰαροσλάβ. Κατανικήσας τοὺς στρατοὺς αὐτοῦ ἐπέδειξε σπανίαν γενναιοψυχίαν, μοιρασθεὶς τὸ βασίλειον μετ' αὐτοῦ καὶ θέσας τὸν Βορυσθένην ὡς φυσικὸν ὅριον. Τὰς πέραν τῆς ἀνατολικῆς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ χώρας κατέλαβεν αὐτός, ἀφῆκε δὲ τὰς ὑπολοίπους εἰς τὸν ἀδελφόν του. Ὁ Μστισλάβ, ὁ ἐπικληθεὶς *Γενναῖος*, συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὴν διάδοσιν τοῦ Χριστιανισμοῦ εἰς Ρωσίαν. Ἀπέθανεν ἄνευ διαδόχων καὶ ἐτάφη εἰς τὸν ἐν Τσέρνιγκοβ ναὸν τοῦ Σωτῆρος, τὸν ὁποῖον αὐτὸς ἵδρυσε.

Θ. Β.

—**Μστισλὰβ *Βλαδιμίροβιτς*.** Μέγας ἡγεμὼν τῆς Ρωσίας, γεννηθεὶς τῷ 1075 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1132. Υἱὸς τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος Βλαδιμίρου τοῦ Μονομάχου, διεδέχθη τὸν πατέρα αὐτοῦ τῷ 1125. Ὁ ἡγεμὼν οὗτος κατεπολέμησε τοὺς Πολυβτσοὺς καὶ ἀπέβαλεν αὐτοὺς ἐκ τῆς Ρωσίας. Ἔπειτα ἐστράτευσε κατὰ τῆς Λιθουανίας καὶ συναπήγαγε πολλοὺς αἰχμαλώτους ἐκεῖθεν. Ἓν ἔτος μετὰ τὴν ἐκστρατείαν ταύτην ἀπέθανε, κηρύττων ὅτι ἡ πρὸς τὴν εἰρήνην ἀγάπη εἶναι καθῆκον τοῦ Χριστιανοῦ.

Θ. Β.

— **Μστισλὰβ *Ἰσιασλάβιτς*.** Ρῶσος μέγας ἡγεμών, γεννηθεὶς τῷ 1118 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1170. Ἦτο ἡγεμὼν τῆς Βολυνίας, μετὰ δὲ τὸν θάνατον τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος Ρατισλὰβ (1167) ἐκλήθη ὑπὸ τῶν υἱῶν αὐτοῦ, τοῦ ἀδελφοῦ του Βλαδιμίρου, τοῦ λαοῦ τοῦ Κιέβου καὶ τῶν Μαύρων Κλοβούκων, ἐκτελούντων τὴν θέλησιν τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος, εἰς τὸν θρόνον τοῦ Κιέβου. Ἀλλ' οὗτος, κωλυθείς, ἀνέθηκε τὴν διοίκησιν τοῦ Κιέβου εἰς τὸν ἀνεψιόν του Βασίλσκον. Ἡ Ρωσία τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ὑπέφερε δεινῶς ἐκ τῶν εἰσβολῶν τῶν Πολοβτσῶν. Ὁ Μστισλὰβ κατώρθωσε νὰ συνενώσῃ τοὺς Ρώσους ἡγεμόνας ἐναντίον τῶν Πολοβτσῶν, οὓς καὶ κατενίκησε. Παρελθόντος ὅμως τοῦ κινδύνου οἱ πρώην ἀντίθετοι τοῦ Μστισλὰβ στρατεύσαντες κατὰ τοῦ Κιέβου ἥλωσαν αὐτὸ καὶ ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας διήρπαζον τὴν πόλιν. Οὕτως ἠναγκάσθη ὁ Μστισλὰβ νὰ ἐγκαταλείψῃ τὸ Κίεβον, νὰ παραιτηθῇ τῆς μεγάλης ἡγεμονίας καὶ νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Βολυνίαν. Τῷ 1169 εἰσήλασεν εἰς τὰς ἐπαρχίας τῶν ἐχθρῶν του πυρπολῶν τὰς πόλεις των, εἰσελθὼν δὲ ἄνευ ἀντιστάσεως εἰς τὸ Κίεβον ἐστράφη κατὰ τοῦ Βισεγορόδ. Ἀλλὰ προδοθεὶς ὑπὸ τῶν συμμάχων του ἐπανέκαμψεν εἰς Βολυνίαν καὶ ἀπεβίωσεν ἐν Βλαδιμίρ, φημιζόμενος ὡς ἔμφρων καὶ ἄγρυπνος ἡγεμὼν ὑπὸ τῶν Ρώσων καὶ Πολωνῶν χρονογράφων.

Θ. Β.

— **Μστισλὰβ *Ροστισλάβιτς*.** Ρῶσος μέγας ἡγεμών, ὁ ἐπικληθεὶς *Ἀνδρεῖος*, υἱὸς τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος Ροστισλάβ, γεννηθεὶς τῷ 1136. Ἡγεμόνευε τοῦ Κιέβου ὅταν ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον τοῦ Βλαδιμὶρ ὁ μέγας ἡγεμὼν Ἀνδρέας (1169). Οὗτος ὑποπτευόμενος τὸν Μστισλὰβ καὶ τοὺς ἀδελφούς του Ρούρικ καὶ Δαβίδ, προσέταξεν αὐτοὺς ν' ἀπέλθωσι τῶν μεσημβρινῶν ἐπαρχιῶν καὶ ἐξεχώρησε τὸ Κίεβον εἰς τὸν ἡγεμόνα τοῦ Τορτσὲνσκ Μιχαήλ. Οὗτοι ἐξεγερθέντες ἐπὶ τῇ γενομένῃ πρὸς αὐτοὺς ἀδικίᾳ, εἰσῆλθον νύκτωρ εἰς τὸ Κίεβον καὶ ἐνεθρόνισαν ἡγεμόνα τὸν Ρούρικ. Ὁ ἡγεμὼν Ἀνδρέας εἰδοποίησε τὸν Μστισλάβ, θεωρούμενον ἀρχηγὸν τοῦ στασιαστικοῦ τούτου κινήματος, ὅτι δὲν θὰ ἐπέτρεπεν εἰς αὐτὸν νὰ παραμείνῃ ἐπὶ ρωσικοῦ ἐδάφους. Ὁ Μστισλὰβ ὅμως διέταξεν ὅπως κείρωσι τὴν κόμην καὶ τὸ γένειον τοῦ πρεσβευτοῦ τοῦ μεγάλου ἡγεμόνος. Ὁ Ἀνδρέας, ἐκμανεὶς διὰ τὴν γενομένην εἰς τὸν πρεσβευτὴν αὐτοῦ ἀτιμίαν, ἐξεστράτευσε μετὰ δυνάμεως 100.000 ἀνδρῶν κατὰ τοῦ Μστισλάβ, ὅστις κλεισθεὶς εἰς τὸ φρούριον Βισεγορὸδ ὑφίστατο τὴν πολιορκίαν ἐπὶ ἐννέα ἑβδομάδας. Εἰς ἐπικουρίαν αὐτοῦ προσέτρεξε τότε ὁ ἡγεμὼν τῆς Λουτσίσκ, τότε δὲ τὸ στρατόπεδον τῶν πολιορκητῶν περιῆλθεν εἰς ταραχὴν καὶ τὴν νύκτα οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἤρξαντο δραπετεύοντες. Τὴν πρωΐαν ὁ Μστισλάβ, ἐπιτεθεὶς μετ' ὀλίγων ἀνδρῶν κατὰ τῶν πολεμίων, ἄλλους μὲν ἐξ αὐτῶν κατέπνιξεν εἰς τὰ ὕδατα τοῦ Βορυσθένους, πολλὰς δὲ χιλιάδας ἠχμαλώτισε καὶ ἐκυρίευσε τὸ στρατόπεδον καὶ τὰς ἀποσκευὰς αὐτοῦ. Ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης διεφημίσθη ὡς ὁ ἀνδρειότερος ἡγεμὼν τοῦ αἰῶνος. Οὕτως ὁ Μστισλὰβ ἐκληρονόμησε τὴν μεγάλην ἡγεμονίαν τοῦ φονευθέντος Ἀνδρέου καὶ ἐγκατεστάθη εἰς τὴν πρωτεύουσαν τῆς τότε Ρωσίας Βλαδιμίρ. Τὸ Νοβογορὸδ ἐξέλεξεν ἐπίσης ἡγεμόνα αὐτοῦ τὸν Μστισλάβ, ὅστις ἐξεπόρθησε τὴν Ἐσθονίαν μέχρι θαλάσσης, παρεσκευάζετο δὲ νὰ καταλάβῃ καὶ τὴν Λιβονίαν, ὅτε ἀσθενήσας ἀπέθανε (1180).

Θ. Β.

**Μστισλάβιτς, *Μσεβολόδος*** —. Ρῶσος ἅγιος (βλ. λ. *Γαβριήλ*, τ. Η', σ. 7α').

**μύα** (ἡ) (Mya) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων πεταλοβραγχίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *προσθιοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *τριτωνιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς θαλάσσας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μύα ἡ ἐδώδιμος* (Mya edulis), ἥτις ἔχει μέτριον μέγεθος, σίφωνας ἐπιμηκεστάτους, οἵτινες συνενοῦνται κατὰ τὴν διαδρομήν των καὶ τελευτῶσιν εἰς θύσανον προσακτρίδων. Ἡ κόγχη της εἶναι ᾠοειδὴς καὶ κυρτὴ κατὰ τὴν ραχιαίαν αὐτῆς ἐπιφάνειαν, φέρουσαν κωνοειδῆ διόγκωσιν περὶ τὸ μέσον της μὲ ἑλικοειδεῖς συσπειρώσεις. Αἱ βαλβῖδες τῆς κόγχης εἶναι ἀνόμοιοι καὶ ἀνισομήκεις. Ἐνδιαιτᾶται ἐντὸς τῆς ἄμμου παρὰ τὰς ἀκτάς.

Δ. Ν. Π.

— *[ Παλαιοζῳολ ]* Ἀπολιθωμένα λείψανα τῆς *μύας* εὑρίσκονται πολλαχοῦ ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων ὑποδιαπλάσεων τῆς τριτογενοῦς καὶ τεταρτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Ἐν Ἑλλάδι ἀπολιθωμένα λείψανα τοῦ εἴδους *μύα Tugon (ornata)* εὑρέθησαν ἐντὸς νεογνῶν στρωμάτων τῆς δυτικῆς Πελοποννήσου.

Γ. Κ. Γ.

**μυάγρα** (ἡ). Παγίς, διὰ τῆς ὁποίας συλλαμβάνονται οἱ μύες, ποντικοπαγίς, κοιν. *δόκανο, φάκα*· || (ναυτ.) συσκευὴ περιλαμβάνουσα τρεῖς ἠλεκρικοὺς λαμπτῆρας ἀσθενοῦς φέγγους, πράσινον, ἐρυθρὸν καὶ λευκόν, ρίπτοντας τὸ φῶς μόνον πρὸς τὰ ὀπίσω. Τοποθετουμένη εἰς τὴν πρύμνην (κορώνην) τῶν τορπιλλικῶν καὶ τῶν ἀντιτορπιλλικῶν, χρησιμεύει εἰς τὸ νὰ σημαίνῃ ὁ προπλέων εἰς τὸν ἐπιπλέοντα τὰς αὐξομειώσεις τῆς ταχύτητός του ὡς καὶ τὰς ἀλλαγὰς πλεύσεως, ὅταν τὰ τοιαῦτα σκάφη στολοδρομοῦν ἐν γραμμῇ παραγωγῆς καὶ ὑπὸ συνθήκας ἀπαγορευούσας τὴν ἀφὴν φανεροῦ φωτός.

**μύαγρος** (ὁ) (Myagrus) *[Ζῳολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ξηροβατικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυοφαγιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Ἀφρικήν, τὰς Ἰνδίας καὶ τὴν Αὐστραλίαν. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μύαγρος ὁ δίχρους* (Myagrus bicolor), ὅστις ἔχει ράμφος ἰσχυρόν, κωνικόν, μὲ σκληρὰς τρίχας κατὰ τὴν βάσιν του, πτέρυγας μετρίου μεγέθους καὶ ἀρκετὰ εὐρείας, οὐρὰν λεπτὴν καὶ ἐπιμήκη καὶ πόδας βραχεῖς καὶ λεπτούς. Ὁ χρωματισμός του εἶναι φαιὸς κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ λευκὸς κατὰ τὴν κοιλίαν. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Αὐστραλίαν.

Δ. Ν. Π.

**μυαιματίνη** (ἡ) *[Χημ.]*. Ζωϊκὴ χρωστικὴ ὕλη ἀνευρισκομένη εἰς τοὺς μῦς τῶν σπονδυλωτῶν καὶ διαφόρων ἄλλων ζῴων, τῶν ὁποίων τὸ αἷμα δὲν περιέχει αἱμογλοβίνην.

**μυακοτροφεῖον** (τό)· ὁ τόπος, τὸ μέρος τῆς θαλάσσης ὅπου καλλιεργοῦνται μύακες, μύδια, ἄλλως *μυτιλοτροφεῖον*.

**μυαλγία** (ἡ). Τὸ ἄλγος τῶν μυῶν.

— *[ Ἰατρ.]* *Μυαλγίαι* κυρίως ὀνομάζονται οἱ ὁτὲ μὲν ψευδονευραλγικοί, ὁτὲ δὲ συνεχεῖς, ἐπιτεινόμενοι κατὰ τὰς κινήσεις, πόνοι. Δέον νὰ διακρίνωνται τῶν μυϊκῶν πόνων ἅμα τῇ πιέσει τῶν μυϊκῶν μαζῶν καὶ τῶν κατὰ τὰς συσπάσεις παραγομένων.

Αἱ μυαλγίαι παρατηροῦνται ἐπὶ νευροαρθριτικῶν καταστάσεων, ἐπὶ νευριτίδων, ἐπὶ μυΐτιδος, ἐπὶ τριχινώσεως, ἐπὶ ριζιτίδων, διαχύτων μυελιτίδων, ληθαργικῆς ἐγκεφαλίτιδος, καθ' ἣν συγχέονται πρὸς τοὺς πόνους τοὺς ὀφειλομένους εἰς προσβολὴν τῶν κεντρικῶν αἰσθητικῶν ὁδῶν καὶ κέντρων, ὅτε προσομοιάζουσι πρὸς νευραλγίας, μὲ ἐντόπισιν καθαρῶς μυϊκὴν ἐνίοτε. Ἐπίσης παρατηροῦνται μυαλγίαι ἐπὶ λοιμωδῶν νόσων παντοίων, διαφόρων δηλητηριάσεων, ρευματικῶν ἰδίᾳ παθήσεων, εἰς ἃς συνυπάρχουσι μετ' ἀρθρικῶν τοιούτων πόνων. Ἡ πρόγνωσις καὶ ἡ θεραπεία αἰτιολογικαί.

Τ. Α. ΖΗΣ

**μυαλγικός, —ή, —όν**· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυαλγίαν, ὁ τῆς μυαλγίας: «μυαλγικαὶ ἐνοχλήσεις».

**μυαλὸ** (τό)· δημοτ., ὁ ἐγκέφαλος: «μυαλὸ μοσχαρήσιο, — ἀρνήσιο»· || ἡ διανοητικὴ ἱκανότης, ἀντίληψις, σκέψις, κρίσις: «ἔχει δυνατὸ μυαλό», «δὲν ἔχει πολὺ μυαλό», «δὲν φταίει τὸ μυαλό του», «ἔχασε τὰ μυαλά του»· || φρ. «πῆραν τὰ μυαλά του ἀέρα» ἀντὶ «πῆρε τὸ κεφάλι του ἀέρα», ἐπὶ τετυφωμένου, ἀλαζόνος· || παροιμ. «τὰ μυαλά του καὶ μιὰ λύρα καὶ τοῦ μπογιατζῆ ὁ κόπανος» ἐπὶ ἀνοηταίνοντος· || μεταφ. ἐπὶ ἁπαλοῦ ἢ τρυφεροῦ: «τοῦ φάνη τὸ γουλὶ μυαλὸ καὶ τὸ ζουμί του μέλι» ἐπὶ σφόδρα πεινῶντος.

**μυαλωμένος, —η, —ο**· δημοτ., παθ. μετχ. ἄνευ ρήματος, αὐτὸς ποῦ ἔχει μυαλό, νοήμων, κριτικός, ἔξυπνος, ὁ μὴ εὐκόλως ἐξαπατώμενος· ἀντίθ. *ἄμυαλος*: «μυαλωμένος ἄνθρωπος», «—μένη γυναῖκα», «—μένο παιδί».

Digitized by Google

**μύαξ,** *—ακος* (ὁ)· εἶδος ὀστρέου, ἄλλως *μυτίλος*, κοιν. *μύδι*.

— *[Ἐγκυκλ.]*. Βλ. λ. *μυτίλος*.

**μύαρχος** (ὁ) (Myarchus) *[Ζωολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀηδονιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 12 εἴδη ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μύαρχος ὁ ἡμιπόρφυρος* (Myarchus semirufus), ὅστις ἔχει μέτριον μέγεθος, κεφαλὴν λεπτὴν καὶ ἐπιμήκη, ῥάμφος κωνικόν, μετρίως χονδρὸν καὶ ἀρκετὰ ἐπίμηκες, ὀφθαλμοὺς στρογγύλους, πτέρυγας βραχείας καὶ ἀμβλείας, οὐρὰν μακρὰν καὶ μᾶλλον στενὴν καὶ πόδας λεπτοὺς καὶ ὑψηλούς. Ὁ χρωματισμός του εἶναι ὑπόπυρρος κατὰ τὴν ῥάχιν καὶ ὑπόλευκος κατὰ τὴν κοιλίαν. Δ. Ν. Π.

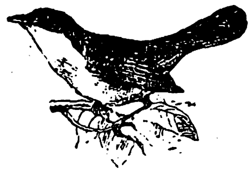

*Μύαρχος ὁ ἡμιπόρφυρος.*

**μυασθένεια** (ἡ) *['Ιατρ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ὑπὸ τοῦ Wilks καὶ τοῦ Erb περιγραφεῖσα πάθησις, καλουμένη πρὸς τούτοις καὶ *μυασθένεια προμηκονωτιαία*. Ἡ πάθησις αὕτη εἰσβάλλει ὁτὲ μὲν ἀποτόμως, ὁτὲ δὲ ὑπούλως καὶ βαθμιαίως. Τὰ πρῶτα συμπτώματα αὐτῆς συνίστανται, ἐκτὸς ἀπαθοῦς κεφαλαγίας, προηγουμένης ἐνίοτε, εἰς ταχέως ἐπερχόμενον κάματον καὶ μετὰ ἐντονωτέραν ἐργασίαν, εἰς παροδικὴν πάρεσιν τῶν μυῶν, οἵτινες νευροῦνται ὑπὸ τῶν ἐγκεφαλικῶν νεύρων κυρίως. Κατὰ πρῶτον δηλαδὴ καταλαμβάνεται τὸ κοινὸν κινητικόν, ἐξ οὗ πτῶσις τῶν βλεφάρων, εἶτα τὰ χείλη, ἡ γλῶσσα, ὁ φάρυγξ, ἐξ οὗ δυσκαταποσία, σπανιώτερον δ' οἱ μύες τοῦ τραχήλου καὶ τῶν ἄνω ἄκρων. Οὐχὶ σπανίως προσβάλλονται ἐκλεκτικῶς μύες τινές, ἀλλὰ συνήθως, ἡ ἐντόπισις, ἐν ἀρχῇ οὖσα μονόπλευρος, γίνεται ἀμφοτερόπλευρος καὶ καταλαμβάνει ὅλους τοὺς ῥηθέντας μῦς. Ἐπίσης προσβάλλονται καὶ οἱ ἀναπνευστικοὶ μύες, ἐξ οὗ δύσπνοια καὶ κρίσεις ἀσφυκτικαί, ἔτι δὲ καὶ ὁ καρδιακὸς μῦς, ἐξ οὗ ἀρρυθμία καὶ διάτασις τῆς καρδίας. Αἰσθητικαί, αἰσθητήριοι καὶ ψυχικαὶ διαταραχαὶ συνήθως δὲν παρατηροῦνται. Οἱ προσβληθέντες μύες δὲν ἐμφανίζουσιν ἀντίδρασιν ἐκφυλίσεως, ἀλλὰ τὴν μυασθενικὴν καλουμένην ἀντίδρασιν, συνισταμένην εἰς τὴν μετ' ἐπανειλημμένον ἐρεθισμὸν δι' ἠλεκτρικοῦ ῥεύματος πάρεσιν, ἧς ἕνεκα ἀδυμία ἀμέσου βουλητικῆς συστολῆς. Αἱ ἀνακλάσεις εἶναι ἠλαττωμέναι καὶ ἐλλείπουσαι. Ἡ ἐξέλιξις, οὖσα βραδεῖα (2—3 ἔτη), βαίνει ἢ πρὸς ἴασιν ἢ πρὸς θάνατον λόγῳ τῶν προμηκικῶν φαινομένων. Αἱ ὀξεῖαι μορφαὶ ἐπιφέρουσι θάνατον ἐντὸς δύο μηνῶν καὶ συντομώτερον.

Δέον νὰ διακρίνεται τῆς νευρασθενείας, τῆς μυατονίας, τῶν προμηκικῶν παραλύσεων ἐκ χρονίας πολιεγκεφαλίτιδος ἰδίᾳ, ὡς καὶ τῶν μυασθενικῶν συνδρόμων ἔκ τινων τοξικῶν καταστάσεων, ὡς ἐκ βαρύου, βερατρίνης, θειούχου ἄνθρακος, νόσου τοῦ Addison κ.τ.τ.

Ἡ αἰτιολογία καὶ ἡ παθογένεια δὲν εἶναι καθωρισμέναι, διότι ἐπί τινων περιπτώσεων εὑρέθησαν ἀλλοιώσεις τοῦ τε νευρικοῦ συστήματος τῶν ἀδένων, καὶ δὴ τοῦ θυρεοειδοῦς, ὡς καὶ τῶν μυῶν, ἐπὶ ἄλλων ὅμως οὐχί. Ἕνεκα τῶν σχετικῶς σταθερῶν μυϊκῶν ἀλλοιώσεων θεωρεῖται ὡς νόσος τῶν μυῶν, τῶν ἀλλοιώσεων οὐσῶν ἀποτόκων, πιθανῶς, ἐνδοκρινῶν διαταραχῶν. Ἡ θεραπεία συνίσταται εἰς χορήγησιν σκευασμάτων ἐνδοκρινῶν ἀδένων μετὰ ἠλεκτροθεραπείας καὶ τῶν σὺν αὐτῇ. Τ. Α. Ζ.

**μυασθενικὸν** ***σύνδρομον*** *['Ιατρ.]*. Ὡς ἰδιοπαθὴς νόσος εἶναι ἡ *μυασθένεια* (βλ. λ.). Ὡς δευτεροπαθὴς δὲ παρατηρεῖται ἐπὶ τοξικῶν τινων καταστάσεων, οἷον δηλητηριάσεων διὰ βαρύου, θειούχου ἄνθρακος, βερατρίνης, ἐπὶ τῆς νόσου Addison καὶ ἄλλων ἐνδοτοξικῶν καταστάσεων καὶ ἀλλαχοῦ. Τ. Α. Ζ.

**μυατονία** (ἡ) *['Ιατρ.]*. Ἡ νόσος αὕτη, περιγραφεῖσα τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Oppenheim ἐμφανίζει οὐσιῶδες καὶ μοναδικὸν σύμπτωμα τὴν μυϊκὴν ἀτονίαν, ἤτοι ἔλλειψιν τοῦ τόνου τῶν μυῶν, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας αἱ κινήσεις καθίστανται ἐνίοτε ἀδύνατοι. Ἰδίᾳ τὸ ἵστασθαι καὶ τὸ καθῆσθαι εἰς τὰ παιδία εἶναι ἀδύνατον. Ἐντοπίζεται εἰς τοὺς μῦς τῶν ἄκρων καὶ τοῦ κορμοῦ. Συνυπάρχει δὲ καὶ χαλάρωσις τῶν ἀρθρώσεων, ἧς ἕνεκα αἱ παθητικαὶ κινήσεις τελοῦνται εἰς μέγα εὖρος. Οἱ μύες εἶναι μαλακοί, δὲν παρατηροῦνται ἰνικαὶ συστολαί, καὶ δὲν ὑπάρχει ἀντίδρασις ἐκφυλίσεως, ἀλλ' εἰδικὴ τοιαύτη, μυατονικὴ καλουμένη, συνισταμένη εἰς διατήρησιν τῆς μυϊκῆς συσταλτότητος εἰς τὸ γαλβανικὸν ῥεῦμα μετ' ἐλαττώσεως αὐτῆς εἰς τὸ φαραδικόν. Παρατηρεῖται ἐλάττωσις τῆς ἱστομυϊκῆς συσταλτότητος καὶ ἐλάττωσις ἢ ἔλλειψις τῶν ἀνακλάσεων. Παθολογοανατομικῶς ἀνευρέθησαν ἀλλοιώσεις τῶν μυῶν, ὡς καὶ τοῦ θύμου ἀδένος καὶ τοῦ θυρεοειδοῦς. Ἡ παθογένεια αὐτῆς ἀκαθόριστος, φαίνεται δ' ὅμως κατὰ τοὺς πλείστους ὡς πάθησις μυϊκή, ἀπότοκος ἐνδοκρινῶν ἀλλοιώσεων. Ὡς νόσος σύμφυτος δέον νὰ διακρίνεται τῶν μαιευτικῶν παραλύσεων, τῆς μυϊκῆς ἀτροφίας Wordnig Hoffmann, τῆς πρωΐμου μυοπαθείας ὡς καὶ τῆς πρωΐμου νωτιαίας παραλύσεως τῶν παίδων. Ἡ βελτίωσις εἶναι ὁ κανών, ἡ δὲ ἴασις οὐχὶ σπανία. Ἡ θεραπεία αἰτιολογικὴ μετὰ ἠλεκτροθεραπείας καὶ λοιπῆς συμπτωματικῆς τοιαύτης. Τ. Α. Ζ.

**μυατονικὸν** ***σύνδρομον*** *['Ιατρ.]*. Ἐκτὸς τῶν περιπτώσεων τῆς συμφύτου *μυατονίας* (βλ.λ.), ὑπάρχουσι καὶ περιπτώσεις, ἐμφανίζουσαι ὅλα τὰ συμπτώματα τῆς μυατονίας, αἵτινες δὲν ἀνήκουσιν εἰς τὴν νόσον ταύτην, διότι προηγεῖται τῆς ἐγκαταστάσεως τοῦ συνδρόμου αὐτῆς ἑτέρα νόσος, ὡς ἡ μογγολικὴ καὶ ἡ ἀμαυρωτικὴ ἰδιωτία καὶ ὁ ῥαχιτισμός, εἰς ἃς ἡ μυατονία εἶναι δευτεροπαθής. Διαφέρουσι δὲ τὰ σύνδρομα ταῦτα προγνωστικῶς, διότι οὐδέποτε ἰῶνται, ἀλλ' ἢ μένουσι στάσιμα ἢ χειροτερεύουσι. Θεραπεία ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν τῆς μυατονίας. Τ. Α. Ζ.

**μυατροφία** (ἡ), ἡ ***μυϊκὴ ἀτροφία*** *['Ιατρ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ἐλάττωσις τῆς θρέψεως τοῦ μυός. Αἱ μυατροφίαι διακρίνονται εἰς μυοπαθητικὰς καὶ νευρικάς. Καὶ αἱ μὲν *μυοπαθητικαὶ* ἀποτελοῦσι τὴν πρωτόγονον *μυοπάθειαν* (βλ.λ.), χαρακτηρίζονται δὲ ἐκ τοῦ ὅτι ἄρχονται ἐκ τῆς παιδικῆς ἡλικίας εἰς πλείονας ἀδελφούς. Ἐκ τῶν κεντρικῶν τμημάτων τῶν ἄκρων δὲν ἐμφανίζουσιν ἰνικὰς συστολάς, οὔτε ἔλλειψιν τῶν ἀνακλάσεων, οὔτε ἠλεκτρικὴν ἐκφύλισιν. Χαρακτηρίζονται ἐπίσης ἐξ εἰδικῶν τινων μορφῶν, ἃς λαμβάνουν αἱ κινήσεις ἀνεγέρσεως (ὡς ἐκ τῆς ἀτροφίας τῶν ῥαχιαίων ἰδίᾳ μυῶν καὶ ἐν γένει τῶν μυῶν τοῦ κορμοῦ), ἐκ τῆς ὑπάρξεως ψευδυπερτροφίας, ἤτοι αὐξήσεως τοῦ ὄγκου τοῦ μυὸς δι' ἀναπτύξεως λίπους ἢ συνδετικοῦ ἱστοῦ, ἐνῷ ὁ μυϊκὸς ἐξαλείφεται, πρὸς δὲ καὶ ἐκ τῆς ἐλλείψεως κυστικῶν, αἰσθητικῶν καὶ παραλυτικῶν φαινομένων ἢ διαταραχῶν. Αἱ δὲ *νευρικαὶ* διακρίνονται εἰς ὀργανικὰς καὶ νευρωσικάς. *Νευρωσικαὶ* εἶναι αἱ τῆς ὑστερίας κυρίως, ὡς καὶ τῆς χορείας, αἵτινες οὖσαι ἐντετοπισμέναι εἰς ἓν τμῆμα, εἰσβάλλουσιν ἀποτόμως, τῆς ὑστερίας μὲν μετὰ παροξυσμόν, τῆς δὲ χορείας κατὰ τὴν διαδρομὴν αὐτῆς. Δὲν ἐμφανίζουσιν ἔλλειψιν τῶν ἀνακλάσεων καὶ ἀντίδρασιν ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως. Αἱ *ὀργανικαὶ* διακρίνονται εἰς πρωτοπαθεῖς τοῦ νευρῶνος καὶ εἰς ἀντανακλαστικὰς ἢ δευτεροπαθεῖς, εἰς ἃς δηλαδὴ ἡ ἀλλοίωσις διὰ τοῦ νευρῶνος προκαλεῖται ἀντανακλαστικῶς, εἴτε ἐξ ὑπαρχούσης ἀρθρίτιδος, εἴτε ἐκ βλάβης τοῦ κεντρικοῦ νευρῶνος, δρῶντος ἐρεθιστικῶς ἐπὶ τοῦ περιφερικὸν καὶ συνεπῶς καὶ τροφικῶς. Αἱ πρωτοπαθεῖς τέλος ὀργανικαὶ διακρίνονται εἰς μυελικάς, εἰς ῥιζιτικὰς καὶ εἰς πολυνευριτικάς. Αἱ *πολυνευριτικαὶ* ἐντοπίζονται ἀναλόγως τῆς διανομῆς τῶν προσβληθέντων νεύρων, δεσπόζουσι περιφερικῶς, ἐμφανίζουσιν ἀντίδρασιν ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως καὶ συνυπάρχουσι μετὰ αἰσθητικῶν διαταραχῶν πολυνευριτικῶν, ἔτι δὲ καὶ μετὰ πολυνευριτικῶν παραλύσεων. Αἱ *ῥιζιτικαὶ* διακρίνονται, διότι ἐμφανίζουσι διανομὴν μυελικήν, δὲν ἔχουσιν ἰνικὰς συστολάς, συνήθως συνοδεύονται μὲ αἰσθητικὰς διαταραχάς, ὡς ἐκ τῆς συγχρόνου προσβολῆς καὶ τῶν ὀπισθίων (αἰσθητικῶν) ῥιζῶν καὶ παρουσιάζουσιν ἀντίδρασιν ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως. Αἱ δὲ *μυελικαὶ* διακρίνονται, διότι ἐκτὸς τῆς μυελικῆς ἔχουσι καὶ ἰνικὰς συστολὰς καὶ ἀντίδρασιν ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως.

Ἐκ τῶν εἰς τὰς ὁμάδας ταύτας ὑπαγομένων ἀτροφιῶν τινὲς φέρονται ὑπὸ εἰδικὰς ὀνομασίας. Τοιαῦται εἶναι, ἐκτὸς τῶν προμνησθεισῶν διαφόρων μορφῶν τῆς μυοπαθείας, αἱ ἑξῆς, αἵτινες εἶναι φύσεως νευρικῆς.

α) *Μυατροφία Aran-Duchenne.* Ἄρχεται ἐκ τῶν μικρῶν μυῶν τῶν ἄνω ἄκρων συμμετρικῶς καὶ προχωρεῖ πρὸς τὸ κέντρον. Παρουσιάζει ἰνικὰς συστολάς. Ὀφείλεται ἢ εἰς χρονίαν μυελίτιδα, ἢ εἰς λέπραν, ἢ συριγγομυελίαν, ἢ συφίλιδα, ἢ οἰνοπνευμάτωσιν. Καὶ ἡ νόσος Charcot τοιαύτην ἀτροφίαν ἐμφανίζει συνήθως.

β) *Μυατροφία Werdnig - Hoffmann.* Εἶναι ἡ αὐτὴ χρονία μυελῖτις ἡ προκαλοῦσα τὴν προηγουμένην ἀτροφίαν, ἀλλ' εἰς τὴν πρώτην παιδικὴν ἡλικίαν (παιδικὴ μορφή).

γ) *Μυατροφία Charot - Marie.* Ἀτροφία ἀρχομένη ἐκ τῶν περιφερικῶν τμημάτων τῶν κάτω ἄκρων καὶ προχωροῦσα συμμετρικῶς πρὸς τὰ ἄνω. Τὰ ἀτροφοῦντα τμήματα χωρίζονται ἀποτόμως, ὥστε σχηματίζεται στεφάνη.

δ) *Τύπος βραχιόνιος τοῦ Erb.* Ἄρχεται ἀπὸ τῶν ἄνω ἄκρων (ἀνώτερος βραχιόνιος ῥιζιτικὸς τύπος).

ε) *Τύπος Dejerine-Klumpke.* Κατώτερος βραχιόνιος ῥιζιτικὸς τύπος (7—8α — 1 θωρ. τμ.) μετὰ συνδρομῆς Claude Bernard, Horner (ἀτροφία δικεφάλου, θωρακικῶν μυῶν, μυῶν νευρουμένων ὑπὸ μέσου καὶ ὠλενίου νεύρου, μετὰ στενοχωρίας, ἐσοχῆς τοῦ ὀφθαλμοῦ, τοῦ συστοίχου μετὰ σμικρύνσεως τῆς βλεφαρικῆς σχισμῆς).

Ἔχομεν ἐπίσης καὶ ἀτροφίας, αἵτινες ἀπαντῶσιν εἰς πλείστας νόσους καὶ καταστάσεις καὶ δὴ τὴν καχεξίαν. Αὗται εἶναι γενικαὶ καὶ συνυπάρχουσι μετ' ἐλαττώσεως τῆς θρέψεως ὅλων τῶν ἱστῶν (καθολικαὶ ἀτροφίαι φθίσεως). Ἐπίσης ἔχομεν ἀτροφίας ἀγγειακῆς ἀρχῆς, ἐπὶ ἀρτηριοσκληρυντικῶν (ἐξ οὗ καὶ διαλείπουσα χώλωσις ἐκ στιγμιαίας ἰσχαιμίας καὶ ἀπολύτου ἀποφράξεως), ἔτι δὲ καὶ ἐκ διαταραχῶν τοῦ συμπαθητικοῦ, αἵτινες ἐπίσης, ἂν δὲν εἶναι γενικαὶ ὡς πρὸς τὴν ἐντόπισιν ἐπὶ τῶν μυῶν, εἶναι γενικαὶ κατὰ τὸ ὅτι ἐκτείνονται ἐπὶ τῶν πλησίον κειμένων ἱστῶν, (π. χ. ἡ μυατροφία τοῦ προσώπου), ἀκόμη καὶ τῶν ὀστῶν.

Ἡ πρόγνωσις καὶ ἡ θεραπεία ἐξαρτῶνται ἐκ τῆς αἰτιολογίας. Τ. Α. Ζ.

**μυατροφικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυατροφίαν· ‖ ὁ πάσχων μυατροφίαν, ὁ ἔχων ἀτροφίαν τῶν μυῶν.

—**μυατροφικὴ** ***πλαγία σκλήρυνσις*** *['Ιατρ.]*. Πάθησις τῶν προσθίων κερῶν, ἐξ οὗ μυατροφία καὶ τῶν πλαγίων δεσμῶν (σκλήρυνσις) καὶ σπασμωδικὰ φαινόμενα (βλ. νόσος *Σαρκώ*). Τ. Α. Ζ.

**μῦγα** (ἡ)· δημοτ., μυῖα, τὸ γνωστὸν ἔντομον: «κόλλησε σὰν τὴ μῦγα 'ς τὸ μέλι»· ‖ φρ. «βαράει —, σκοτώνει —, χάφτει μῦγες» ἐπὶ ἀργοῦντος εἴτε ἐκ νωθρότητος εἴτε ἐξ ἀνεργίας· ὁμοίως: «πιάνει μῦγες καὶ τοὺς βγάνει τὰ μάτια»· ‖ «βγάζει κι' ἀπ' τὴ μῦγα ξύγκι» ἐπὶ φειδωλῶν ἅμα καὶ φιλαργύρων· ‖ «ὅποιος ἔχει τὴ μῦγα μυγιάζεται» ἐπὶ ἐνόχου ἐμφανίζοντος τὴν ἐνοχήν του καὶ ὅταν ὁ λόγος δὲν ἀφορᾷ αὐτόν.

—**μῦγα** ***τῆς ἐλιᾶς*** (ἡ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *δάκου*.

**μυγαλῆ** (ἡ) (Sorex) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυγαλιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ ζῷα νυκτόβια. Ζῶσι μονήρη καὶ ἐνδιαιτῶνται ἐντὸς ὑπογείων στοῶν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον. Ἀπαντῶσι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης καὶ τρέφονται ἐξ ἐντόμων. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μυγαλῆ ἡ ὀξύρρυγχος* (Sorex oxyrhynchus) ἥτις ἔχει μέγεθος ὅμοιον πρὸς τὸ τοῦ κοινοῦ κυνός, κεφαλὴν λεπτήν, ἀπολήγουσαν εἰς ὀξὺ ῥύγχος, σῶμα εὐκίνητον καὶ λεπτὸν μετὰ μακρᾶς κυλινδρικῆς οὐρᾶς καὶ χρῶμα φαιοκαστανόν. Δ. Ν. Π.

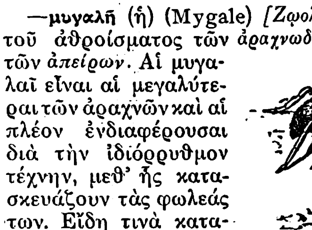

*Μυγαλῆ ἡ ὀξύρρυγχος.*

— *[Παλαιοζωολ.]* Βλ. *μυγαλίδαι*.

—**μυγαλῆ** (ἡ) (Mygale) *[Ζωολ.]*. Γένος ἀραχνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀραχνωδῶν*, τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀπείρων*. Αἱ μυγαλαῖ εἶναι αἱ μεγαλύτεραι τῶν ἀραχνῶν καὶ αἱ πλέον ἐνδιαφέρουσαι διὰ τὴν ἰδιόρρυθμον τέχνην, μεθ' ἧς κατασκευάζουν τὰς φωλεάς των. Εἴδη τινὰ κατασκευάζουσι ταύτας ἐντὸς τῆς γῆς, ἄλλα ἐπὶ τῶν ῥωγμῶν τῶν δένδρων καὶ ἄλλα ἐπὶ τῶν κλάδων. Γνωστὰ πολυάριθμα εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Τὸ σῶμα πλείστων εἰδῶν καλύπτεται ὑπὸ πυκνῶν ἀκανθωδῶν τριχῶν φαιοῦ ἢ ἐπιξάνθου χρώματος. Τοιαῦται εἶναι αἱ ἀμερικανικαὶ μυγαλαῖ, αἵτινες πολλάκις ἐπιφέρουσι θανατηφόρα δήγματα. Μεγαλυτέρα τῶν μυγαλῶν τούτων εἶναι ἡ *μυγαλῆ ἡ λεμπλόντειος* (Mygale leblondii). Δ. Ν. Π.

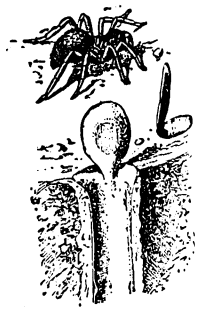

*Μυγαλῆ ἡ λεμπλόντειος.*

**μυγαλίδαι** (οἱ) (Soricidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἐντομοφάγων*, περιλαμβάνουσα μικρὰ ζῷα, μυοειδῆ, μὲ δέρμα μαλακόν, κεφαλὴν ὀξύρρυγχον, σκέλη λεπτὰ καὶ οὐρὰν κυλινδρικὴν καὶ μακράν. Εἶναι νυκτόβια καὶ ἐνδιαιτῶνται ἐντὸς τρωγλῶν, ἃς σκάπτουσι διὰ τῶν ἰσχυρῶν ὀνύχων των ὑπὸ τὴν γῆν. Εἶναι ὠφέλιμα γενικῶς εἰς τὴν γεωργίαν, διότι κατατρώγωσιν ἐπιζησίως πλῆθος ἐντόμων. Κυριώτερον γένος εἶναι ἡ *μυγαλῆ* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα μυγαλιδῶν εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς ὀλιγοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν Εὐρώπῃ, ἐντὸς τῶν φωσφοριτῶν τοῦ Quercy, ἐντὸς στρωμάτων τῆς μειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὸ Ulm, Mainz, Sansan καὶ Reischenau, ὡς καὶ ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ. Τὰ λείψανα ταῦτα ἀνήκουν εἰς τὰ γένη *μυγαλῆ, κροκιδοῦρα* καὶ χ… πους. Γ. Κ.

**Μύγγελ** (Grosser Müggelsee) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη ΝΑ. τοῦ Βερολίνου τῆς Γερμανίας ἐν Βρανδεμβούργῳ,

Digitized by Google

ρολίνου. Ἔχει ἔκτασιν 8 τ. χλμ. καὶ βάθος 8 μ. Διὰ ταύτης διέρχεται ὁ ποταμὸς Σπρέε. Γ. Ι. Β.

**μυγδαλιὰ** (ἡ)· δημοτ. τύπος τοῦ *ἀμυγδαλῆ*.

**Μυγδαλιὰ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ὁ βόρειος μυχὸς τοῦ κολπίζοντος ὅρμου, ὃν σχηματίζει κατὰ τὴν ἀνατολικὴν πλευράν της ἡ δωδεκανησιακὴ ἐλάσσων νῆσος Φάρμακο (πλάτ. 37°18′05″ Β., μῆκ. 27°07′10″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1546: Ssmos strait to Mandelyah gulf). —2) Ὕφορμος τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τοῦ Ἁγίου Ὄρους. Σ. Ε. Λ.

**Μυγδαλιὰ** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Γλανιτζιὰ* καὶ *Σταυροκκλήσιον*. Κάτ. (1928) 876. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τοὺς συνοικισμοὺς *Κυρᾶς-Γεφύρι* καὶ *Παναγουλέϊκα*. —2) Χωρίον τῆς κοινότητος Δάφνης (Στρέζοβας) τῆς ἐπαρχίας Καλαβρύτων τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μαμαλοῦκα*. Κάτοικοι (1928) 169. Χ. Δ.

**Μύγδονες** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς τῆς Μακεδονίας, θρακικῆς καταγωγῆς, κατοικῶν ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων τὴν ἀπ᾿ αὐτοῦ κληθεῖσαν *Μυγδονίαν*. Γενάρχης τῶν Μυγδόνων θεωρεῖται ὁ *Μύγδων*, υἱὸς τοῦ Ἄρεως καὶ τῆς νύμφης Καλλιόπης, καὶ ἀδελφὸς τοῦ Ἠδωνοῦ. Καταληφθεῖσα ἡ χώρα αὐτῶν ὑπὸ τῶν Τημενιδῶν, πρώτων βασιλέων τῆς Μακεδονίας, ἀπετέλεσε τμῆμα τοῦ μακεδονικοῦ βασιλείου. Μύγδονες ὑπῆρχον ὡσαύτως ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ, περὶ τὸν Ὄλυμπον, τὴν Βιθυνίαν τὴν Περγαμηνήν, τὴν κοιλάδα τοῦ Ἕρμου καὶ ἀλλαχοῦ. Α. Θ. Σ.

**Μυγδονία**, ἡ ***Μυγδονὶς*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Μακεδονίας, κατοικουμένη ὑπὸ τῶν *Μυγδόνων*, μεταξὺ τοῦ κάτω ροῦ τοῦ Ἀξιοῦ καὶ τοῦ Στρυμόνος, ὁριζομένη πρὸς Ν. ὑπὸ τῆς Χαλκιδικῆς Χερσονήσου καὶ πρὸς Β. ὑπὸ τῆς Κρηστωνίας καὶ Βισαλτίας. Διασχιζομένη ὑπὸ τῶν διακλαδώσεων τοῦ ὄρους τῆς Κερκίνης καὶ διαρρεομένη ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ἐχεδώρου (νῦν Γαλλικοῦ), ἦτο εὐφορωτάτη καὶ πολυάνθρωπος χώρα, ἀριθμοῦσα 14 πόλεις καὶ πολίσματα, μεταξὺ τῶν ὁποίων κατελέγοντο ἡ *Θέρμη, Θεσσαλονίκη, Χαλαίστρα, Σίνδος, Λήτη* ἢ *Λιτή, Ἀπολλωνία* καὶ ἄλλαι. Α. Θ. Σ.

— **Μυγδονία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, κειμένη ἐν τῇ ἐφ᾿ Ἑλλησπόντῳ Φρυγίᾳ, πρὸς Α. τοῦ Ρυνδάκου ποταμοῦ (νῦν Ἀδρανὸς-τσάϊ), περὶ τὸ ὄρος Ὄλυμπον καὶ τὴν λίμνην Δασκυλῖτιν, κατοικουμένη ὑπὸ τῶν *Μυγδόνων*. Α. Θ. Σ.

— **Μυγδονία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χώρα τῆς ΒΑ. Μεσοποταμίας, ἐκτεινομένη μεταξὺ τοῦ Μασίου ὄρους καὶ τοῦ ποταμοῦ Ἀβόρρα ἢ Χαβώρα (νῦν Κχαβούρ), ὅστις ἐχώριζεν αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ὀσροηνῆς. Ὠνομάσθη δὲ οὕτω, καθὼς καὶ ὁ διαρρέων αὐτὴν ποταμὸς *Μυγδόνιος*, μετὰ τὴν μακεδονικὴν κατάκτησιν. Ἐκαλεῖτο ἐπίσης καὶ *Ἀνθεμουσία*, διὰ τὴν εὐφορίαν της. Πρωτεύουσα αὐτῆς ἦτο ἡ *Νίσιβις*, ἥτις ἐπὶ τῶν Σελευκιδῶν ἐκαλεῖτο *Ἀντιόχεια ἡ Μυγδονική*. Α. Θ. Σ.

**Μυγδόνιος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ΒΑ. Μεσοποταμίας, ὅστις πηγάζων ἀπὸ τοῦ Μασίου ὄρους καὶ διαρρέων τὴν Μυγδονίαν ἐκβάλλει εἰς τὸν Σαοκόραν (νῦν Χεζάουϊ). Σήμερον καλεῖται *Τζαγχγιαγᾶ*. Α. Θ. Σ.

**μυγιάγγιχτος**, *—η, —ο*, καὶ *μυγάγγιχτος*· δημοτ., ὁ λίαν εὔθικτος, ὁ μὴ ἀνεχόμενος οὐδὲ ἀθῷα πειράγματα, εὐερέθιστος καὶ ἐκ μικρᾶς ἀφορμῆς (ἡ λ. προέκυψεν ἐκ τῆς *μημάγγιχτος—μὴ μ᾿ ἀγγίζῃς*, κατὰ παρετυμολογίαν πρὸς τὸ *μῦγα*).

**μυγιάζομαι**· δημοτ., οἱονεὶ ἐνοχλοῦμαι ἀπὸ τὴν μῦγα, ἐμφανίζω τὴν ἐνοχήν μου καὶ ὅταν ὁ γινόμενος λόγος δὲν ἀφορᾷ ἐμέ: «ὅποιος ἔχει τὴ μῦγα μυγιάζεται»· εἶμαι καχύποπτος, εὐερέθιστος, προσβάλλομαι μὲ τὸ παραμικρό: «γιατὶ μυγιάζεται μὲ τὸ κάθε τι ποῦ θὰ ποῦμε;»

**μυγιαστήρι** (τό)· δημοτ., τὸ δι᾿ οὗ ἀποδιώκομεν τὰς μυίας, μυιοσόβη, ἄλλως *ξεμυγιαστήρι*.

**μυγίτσα** (ἡ)· μικρὴ μῦγα.

**Μύγκε** (Mügge), *Ἰωάννης*. Γερμανὸς ὀρυκτολόγος καὶ γεωλόγος, γεννηθεὶς τῷ 1856. Διετέλεσε καθηγητὴς εἰς τὰ πανεπιστήμια τῆς Καινιξβέργης καὶ τῆς Γοτίγγης καὶ ἐδημοσίευσε πλείστας ἐπιστημονικὰς ἐργασίας, ἐν αἷς: «Αἱ συνήθεις συμφύσεις κρυστάλλων διαφόρων εἰδῶν» (1903). Γ. Κ. Γ.

**μυγοκάθισμα** (τό)· τὰ εἰς τὸ κρέας ἢ εἰς φαγητὰ ἢ εἰς ἄλλα ἐδώδιμα καταλειπόμενα ᾠάρια ἀπὸ τὴν κρεατόμυγαν.

**μυγοχάφτης** (ὁ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ πτηνοῦ *μυοθήρας ὁ δίχρους*.

**μυγόχεσμα** (τό)· τὸ ἀποπάτημα τῆς μυίας.

**μυδάκι** (τό)· μικρὸν μύδι.

**Μυγχάουζεν** (Münchhausen)· βλ. λ. *Μυνχάουζεν*.

**μυδάος** (ὁ) (Mydaüs) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μουστελιδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους ἁρπακτικά, ἰθαγενῆ τῆς Μαλαισίας. Ἐκ τῶν δύο εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ὁ *μυδάος ὁ ταινιοφόρος* (Mydaüs taeniophorus), ὅστις ἔχει μέτριον μέγεθος, σῶμα ἀτρακτοειδές, κεφαλὴν ἀρκετὰ ὀγκώδη, ἀπολήγουσαν εἰς ὀξὺ ρύγχος, ὦτα μικρά, λαιμὸν χονδρὸν καὶ βραχύν, σῶμα ὀγκῶδες, πόδας χονδροὺς καὶ οὐρὰν παχεῖαν καὶ βραχυτάτην. Ὁ χρωματισμός του εἶναι μελανόφαιος μὲ φαιόλευκον κηλῖδα κατὰ τὴν κορυφὴν τῆς κεφαλῆς καὶ τὸ ἄκρον τῆς οὐρᾶς καὶ τεφρόλευκον λωρίδα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ λαιμοῦ μέχρι τῆς ρίζης τῆς οὐρᾶς. Ὅταν εὑρίσκεται ἐν ἀμύνῃ ἢ καταδιώκεται, ἐκκρίνει ἐξ ἀδένων, οἵτινες εὑρίσκονται παρὰ τὴν ἕδραν, δυσῶδες ὑγρόν, ὅπερ τρέπει εἰς φυγὴν τὸν ἄνθρωπον καὶ τὰ ἄλλα ζῷα. Δ. Ν. Π.

*Μυδάος ὁ ταινιοφόρος.*

**μύδας** (ὁ) (Mydas) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυιιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὰς θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ὁ *μύδας ὁ γίγας* (Mydas gigas), ὅστις ἔχει κεφαλὴν ἀπεστρογγυλωμένην καὶ πεπλατυσμένην ἐκ τῶν ἄνω πρὸς τὰ κάτω καὶ συνδεομένην διὰ λεπτοῦ κυλινδρικοῦ μίσχου μετὰ τοῦ προθώρακος, κοιλίαν κυλιδρικήν, ἐπιμήκη καὶ πολυαρθρωτήν, φέρουσαν βραχείας ἀκανθωτὰς ἀποφύσεις, πτέρυγας ἡμιδιαφανεῖς, πολυνευρώδεις καὶ κολπωτὰς κτατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῶν περιφέρειαν, κεραίας μακράς, πόδας ἰσχυροὺς καὶ ἀκανθωτοὺς καὶ χρωματισμὸν φαιοκίτρινον μὲ μελανὰς καὶ κυανᾶς ἀποχρώσεις. Τρέφεται ἐκ διαφόρων ἐντόμων. Δ. Ν. Π.

*Μύδας ὁ γίγας.*

**μύδι** (τὸ) *[Ζωολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ ζῴου *μυτίλος ὁ ἐδώδιμος*.

**μυδραλλιοβόλον** (τό). Οὕτω μετεφράσθη παλαιότερον παρ᾿ ἡμῖν ὁ γαλλικὸς ὅρος mitrailleuse, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ χρησιμοποιηθῇ ὡς ἐπίσημος τοιοῦτος, καθ᾿ ὅσον ἀπὸ τῆς ἐν ἔτει 1911 διὰ πρώτην φορὰν εἰσαγωγῆς τοιούτου ὅπλου ἐν τῷ ἑλληνικῷ στρατῷ ἐδόθη ὁ ὅρος *πολυβόλον*, ὅστις ἔκτοτε ἐπεκράτησε. Ν. Θ. Κ.

**μυδρίασις** (ἡ) *[Ὀφθαλμ.]*· βλ. λ. *κορεκτασία*.

**μυδριατικὰ** (τὰ) (Mydriatica) *[Φαρμακογ.]*. Καλοῦνται οὕτω τὰ φάρμακα, ἅτινα τοπικῶς χρησιμοποιούμενα ἐπὶ τῶν ὀφθαλμιῶν προκαλοῦν διεύρυνσιν τῆς κόρης, Τὰ μᾶλλον εὔχρηστα ἐκ τῶν μυδριατικῶν εἶναι τὰ σκευάσματα τὰ ἀνήκοντα εἰς τὴν ὁμάδα τῶν τροπεϊνῶν, ἰδίᾳ δὲ ἡ θειικὴ ἀτροπίνη. Ἡ μυδριατικὴ ἐνέργεια τῶν σκευασμάτων τῶν περιεχόντων ἀτροπίνην ἢ σκοπολαμίνην ἐκδηλοῦται καὶ ὅταν ληφθῶσι ταῦτα ἐσωτερικῶς, ὡς ἐπίσης καὶ ἐπὶ δηλητηριάσεων διὰ τῶν σκευασμάτων αὐτῶν, εἰς τὰς περιστάσεις δὲ ταύτας εἶναι σπουδαῖον διαγνωστικὸν σύμπτωμα. Κ. Γ. Μ.

**μυδρίνη** (ἡ) *[Φαρμ.]*. Κολλύριον συντεθειμένον ἐκ μείγματος δύο διασταλτικῶν τῆς κόρης φαρμάκων, τῆς ἐφεδρίνης καὶ τῆς ὁματροπίνης. Ἡ χρῆσις τῆς μυδρίνης εἶναι λίαν περιωρισμένη. Α. Γ.

**μυδροβόλησις**, *—εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια καὶ τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μυδροβολεῖν, βολὶς διὰ πολυβόλων.

**μυδροβολῶ** *(—έω)*· βάλλω διὰ πολυβόλων, διὰ βολιδοθηκῶν.

**μυδρόλη** (ἡ) (Mydrol) *[Φαρμ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ ἰωδομεθυλοφαινυλοπυραζολόνη, κόνις διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ, τηκομένη εἰς 178—179°. Ἀνεγράφη ἀντὶ τῆς ἀτροπίνης εἰς διαλύματα, προκαλεῖ δὲ μυδρίασιν διαρκοῦσαν ἐπὶ μίαν ὥραν. Κ. Γ. Μ.

**μύδρος** (ὁ)· πεπυρακτωμένος σίδηρος· ‖ καθόλου, πᾶσα πεπυρακτωμένη ὕλη· ‖ βλῆμα πυροβόλου· ‖ «μύδρος διάπυρος» ἐκαλεῖτο ὑπὸ τοῦ Ἀναξαγόρου ὁ ἥλιος.

— *[Πυροβολ.] Μύδρος* ἐκαλεῖτο μεταλλικὴ συμπαγὴς σφαῖρα πεπυρακτωμένη (boulet rouge), ἥτις ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς βλῆμα εἰς τὰ παλαιὰ ἐμπροσθογεμῆ πυροβόλα. Ν. Θ. Κ.

— *[Ἡφαιστειολ.]* Καλεῖται *μύδρος* τεμάχιον στερεοποιημένης λάβας, ἀνεκτινασσόμενον μετὰ τῶν ἄλλων ἡφαιστείων ἀναβλημάτων κατὰ τὰς ἐκρήξεις. Συνήθως τὸ μέγεθός των εἶναι μικρὸν (*ἡφαίστεια λιθάρια*). Γ. Κ. Γ.

— *[Μεταλλ.]* Καλεῖται *μύδρος* τεμάχιον πεπυρακτωμένον ὀρυκτῶν λίθων ἢ μετάλλων, καὶ δὴ σιδήρου προερχομένου ἐξ ἀποχύσεως, ὁπότε καλεῖται εἰδικώτερον *πλίνθος* ἢ *πλίνθωμα* (γαλλ, lingot), ἢ κατόπιν σφυρηλασίας ἢ ἐλάσεως ἐκ τεμαχισμοῦ πλινθώματος ἢ ἐκ συσσωματώσεως διὰ σφυρηλασίας ἢ ἐλάσεως δέσμης προερχομένης ἐκ κατεργασίας πολτοπαγοῦς σιδήρου εἰς χαμηλὴν ἑστίαν ἢ εἰς κάμινον ἀναδεύσεως. Θ. Χ.

**μυελασθένεια** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτως ἡ νωτιαία μορφὴ τῆς νευρασθενείας, καθ᾿ ἣν ὁ πάσχων ἐμφανίζει πόνους κατὰ τὴν ὀσφύν, ἀδυναμίαν τῶν κάτω ἄκρων μετ᾿ ἐλαττώσεως τῶν ἀνακλάσεων καὶ δυσχέρειαν βαδίσματος, προσομοιάζοντος πρὸς τὸ ἀταξικόν, γεννητικοουρητικὰς διαταραχὰς (γεννητικὴν ἀνικανότητα, δυσουρίαν, δυσκριλιότητα), ἤτοι κλινικὴν εἰκόνα προσομοιάζουσαν πρὸς μυελικὰς παθήσεις, ἀφ᾿ ὧν διακρίνεται διὰ τὴν ἔλλειψιν παντὸς ὀργανικοῦ φαινομένου. Τ. Α. Ζ.

**μυελατέλεια** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Ἀτελὴς ἀνάπτυξις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ὀφειλομένη εἰς ἀνωμαλίαν τῆς διαπλάσεως αὐτοῦ. Ι. Π.

**μυελεγκέφαλος** (ὁ), ἡ ***ἔσχατος ἐγκέφαλος*** *[Ἀνατομ.]*. Ἀποτελεῖ μέρος τοῦ ρομβοειδοῦς ἐγκεφάλου καὶ ἀπαρτίζεται ἐκ τοῦ προμήκους μυελοῦ (βλ. λ. *ἐγκέφαλος*). Ι. Π.

**μυελικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μυελόν, ὁ τοῦ μυελοῦ.

— **μυελικαὶ *αὔλακες*** *[Ἀνατομ.]*. Τέσσαρες ἐπιμήκεις αὔλακες ἐπὶ τοῦ τελείως διαπεπλασμένου νωτιαίου μυελοῦ, ἤτοι μία προσθία καὶ μία ὀπισθία, φερόμεναι κατὰ τὴν μέσην γραμμήν, καὶ δύο πλάγιαι, ἡ προσθία πλαγία καὶ ἡ ὀπισθία πλαγία.

— **μυελικὴ *αὖλαξ*** *[Ἀνατομ.]*. Ἡ πρώτη καταβολὴ τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος τοῦ κυήματος κατὰ τὴν ἐξέλιξιν τοῦ ἔξω βλαστικοῦ δέρματος. Ι. Π.

— **μυελικὴ *λεμφαδενία*** *[Ἰατρ.]*· βλ. λ. *λεμφαδενία*.

— **μυελικὸς *κῶνος*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. *κῶνος* μυελικός.

— **μυελικὸς *σωλὴν*** *[Ἐμβρ.]*. Μία τῶν φάσεων τῆς διαπλάσεως τοῦ κεντρικοῦ νευρικοῦ συστήματος, καθ᾿ ἣν τὰ χείλη τῆς μυελικῆς πλακὸς συγκλειόμενα σχηματίζουσι σωλῆνα, οὗ τὸ πρόσθιον ἄκρον ἀποτελεῖ τὸ ἐγκεφαλικὸν ἀνεύρυσμα ἢ κυστίδιον. Ι. Π.

**μυελίνη** (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Οὐσία λιπολευκωματώδης ἡμίρρευστος καὶ λίαν φωτοθλαστική, ἐξ ἧς συνίσταται τὸ μυελῶδες ἔλυτρον τοῦ νευρίτου (=νευρικῆς ἰνός, νευράξονος). Ι. Π.

**μυελίνης** (ὁ) (Myelin) *[Ὀρυκτολ.]*. Ὀρυκτὸν πυριτικὸν ἅλας τοῦ ἀργιλλίου ἔνυδρον, ἀνῆκον εἰς τὴν ὁμάδα τοῦ καολίνου. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ καολινίτου, ἀπαντᾷ δὲ μετὰ τοῦ ὁμοίου ὀρυκτοῦ καρνάτου εἰς φωλεὰς ἐντὸς τοῦ χαλαζιακοῦ πορφύρου τοῦ Rochlitz κ. ἀ. Γ. Β.

**μυέλινος**, *—η, —ον*· ὁ οἱονεὶ ἐκ μυελοῦ κατεσκευασμένος, τρυφερός, ἁπαλὸς ὡς μυελός· ‖ ὁ ὄντως ἐκ μυελοῦ συνιστάμενος: «μυέλινον ἱστίον».

— **μυελίνη *ταινία*** *[Ἀνατομ.]*. Δεσμὶς λευκή, ἥτις ἀφορίζει ἐπὶ τὰ ἐντὸς τὴν ραχιαίαν ἐπιφάνειαν ἑκατέρου ὀπτικοῦ θαλάμου, μεταβαίνουσα πρὸς τὰ ὀπίσω εἰς τὰ σκέλη τοῦ κωναρίου. Ι. Π.

— **μυέλινον *ἱστίον*** *[Ἀνατομ.]*· βλ. λ. *ἱστίον* μυέλινον.

**μυελῖτις**, *—ιδος* (ἡ). Καλεῖται ἡ ὀξεῖα ἢ χρονία ἢ ὑποξεῖα φλεγμονὴ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ὀφειλομένη εἰς λοίμωξίν τινα ἢ δηλητηρίασιν. Μεταξὺ τῶν αἰτίων αὐτῆς καταλέγονται τὰ πλεῖστα τῶν μικροβίων τῶν προκαλούντων γνωστὰς νόσους, ὡς τοῦ τύφου, τῶν ἐξανθηματικῶν νόσων ἐν γένει, τῆς δυσεντερίας, τῆς πνευμονίας, τῶν κυστιτίδων καὶ πυελονεφριτίδων, ὡς καὶ τῶν δηλητηρίων, οἷον ὁ μόλυβδος, ὁ ἀλκοολισμός, τὸ ἀρσενικὸν κ. ἄ. Αἱ ἀλλοιώσεις εἶναι ἢ διάχυτοι, ἢ ἐντετοπισμέναι ἐγκαρσίως (*ἐγκαρσία μυελῖτις*) εἰς ὕψος ὡρισμένον· ἄλλοτε ἐντοπίζονται εἰς τὴν βάσιν καὶ εἶτα ἀνέρχονται (*ἀνιοῦσαι*)· ἄλλοτε εἶναι *διάσπαρτοι* καὶ ἄλλοτε ἐντοπίζονται εἰς ἓν σύστημα κυττάρων ἢ ἰνῶν τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Συνίστανται δὲ κατ᾿ ἀρχὰς μὲν εἰς σύμφυσιν τῶν μηνίγγων καὶ ἐρυθρότητα τοῦ μυελοῦ, ὅστις ἐνίοτε αἱμορραγεῖ, εἰς δὲ τὸ μικροσκόπιον παρατηρεῖται: διάτασις τῶν μηνιγγικῶν καὶ περιμυελικῶν ἀγγείων μετὰ διηθήσεως λευκοκυτταρικῆς καὶ νεοσχηματισμοῦ ἢ ρήξεων τῶν ἀγγείων, ἡ ἀπόφραξις αὐτῶν. Ἡ διή-

Digitized by Google

θησις περιορίζεται συνήθως εἰς τὰ τοιχώματα τῶν ἀγγείων, ἐνίοτε δ' ὅμως εἰσέρχονται τὰ λεμφοκύτταρα εἰς τὸν διάμεσον ἱστὸν καὶ σχηματίζουσι περὶ τὰ κύτταρα κόμβους. Τὰ νευρικὰ κύτταρα εἶναι διωγκωμένα καὶ ἐμφανίζουσι πυρῆνα ἐκκεντρικὸν μετὰ χρωματολύσεως καὶ καταστροφῆς τῶν τιγροειδῶν βωλίων τοῦ Nissl, μέχρις ἀτροφίας καὶ νεκρώσεως αὐτῶν. Οἱ ἀξονικοὶ κύλινδροι παχύνονται, διακόπτονται κατὰ μέρη καὶ ἐμφανίζουσιν ἐναλλὰξ παχύνσεις καὶ στενώσεις. Εἶτα ἡ ἀπόφραξις τῶν ἀγγείων ἄγει εἰς αἱμορραγικὴν ἔμφραξιν, διὰ παθητικῆς ὑπεραιμίας, ἐνῷ αἱ μήνιγγες ἐμφανίζουσι μείζονας ἀλλοιώσεις. Παρατηρεῖται ὑπερπλαστία νευρογλοίας, καὶ νευρωνοφαγία πέριξ τῶν νευρικῶν κυττάρων. Ἐκ τῆς νευρογλοιακῆς ὑπερπλαστίας παράγεται ἡ καλουμένη σκλήρυνσις. Εἰς τὰς λίαν τοξικὰς μορφὰς παρατηρεῖται μόνον ὑπεραιμία μετ' ἐντόνων ἀλλοιώσεων τῶν κυττάρων, τῆς φλεγμονῆς μὴ προλαβούσης νὰ ἐγκατασταθῇ. Εἶτα παρατηροῦνται ἐκφυλίσεις τῶν νευραξόνων, ὧν τὰ κύτταρα κατεστράφησαν εἰς ὅλην τὴν ἔκτασιν αὐτῶν. Εἴς τινας περιπτώσεις παράγονται καὶ μυελικὰ ἀποστήματα. Σπανίως μετέχουσι τῶν ἀλλοιώσεων καὶ αἱ μήνιγγες, εἰς ἃς παρατηρεῖται διήθησις καὶ αἱμορραγίαι (*μηνιγγικὴ μυελῖτις*). Ἡ ἔκτασις τῶν ἀλλοιώσεων ἔχει ὡς ἀνωτέρω. Εἰς τὰς ἰωμένας μορφὰς παρατηρεῖται μόνον συμφόρησις καὶ οἴδημα.

Τὰ συμπτώματα ἔχουσιν οὕτως: Τῆς μὲν *ἐγκαρσίας*, ἂν ἡ ἀλλοίωσις ἑδράζεται εἰς τὸν θωρακικὸν μυελόν, εἶναι παράλυσις τῶν κάτω ἄκρων, χαλαρὰ ἂν ἡ μυελῖτις εἶναι πλήρως ἐγκαρσία, μετὰ ὀρθοκυστικῶν διαταραχῶν καὶ ἀναισθησίας ἀπὸ τοῦ δερματώματος τοῦ ἀντιστοιχοῦντος εἰς τὸ ἀνώτερον προσβεβλημένον μυελοτόμιον, καὶ κάτω μετὰ ταχειῶν ἀτροφικῶν διαταραχῶν (=ἀτροφίαι μετ' ἐκφυλίσεως ἠλεκτρικῆς, ἐσχάραι) καὶ ἀγγειοκινητικῶν διαταραχῶν, ὡς καὶ ἐλλείψεως τῶν ἀνακλάσεων. Τῆς *διαχύτου μυελίτιδος*, ἂν αἱ ἀλλοιώσεις δεσπόζουσιν εἰς τὰς πλαγίας δέσμας, ἔχομεν σπασμωδικὴν παράλυσιν μετ' ἀτροφίας τῶν μυῶν καὶ αἰσθητικῶν διαταραχῶν (=πόνων καὶ ἀντικειμενικῶν διαταραχῶν), ὡς καὶ ὀρθοκυστικῶν. Αἱ αἰσθητικαὶ καὶ τροφικαὶ διαταραχαί, ὡς καὶ αἱ παραλύσεις, σχεδὸν εἰς ὅλους τοὺς μῦς τῆς *διασπάρτου* μυελίτιδος εἶναι σπασμωδικὴ παραπληγία μετὰ αἰσθητικῶν διαταρχῶν, ὀρθοκυστικῶν καὶ προσβολῶν ὑπὸ παραλύσεως χαλαρᾶς διαφόρων μυῶν τῶν ἄνω ἄκρων μετ' αἰσθητικῶν διαταραχῶν. Ἐπὶ τῆς *προσθίας πολυμυελίτιδος* ἔχομεν μόνον παράλυσιν χαλαρὰν μετ' ἀτροφίας τῶν μυῶν, ὧν τὰ κινητικὰ κέντρα ἐν τῷ μυελῷ κατεστράφησαν, ἄνευ αἰσθητικῶν καὶ ὀρθοκυστικῶν διαταραχῶν. Ὑπάρχει καὶ ἀταξικὴ μορφή, ἐμφανίζουσα χαλαρὰν παράλυσιν τῶν κάτω ἄκρων οὐχὶ ὁλοσχερῆ, μετ' αἰσθητικῶν διαταραχῶν καὶ ὀρθοκυστικῶν τοιούτων, ἥτις, ἐπειδὴ τὸ βάδισμα εἶναι ἀτομοπαρετικόν, ἐλλείπουσι δὲ αἱ ἀνακλάσεις, ἀφοῦ ἡ παράλυσις εἶναι χαλαρά, ὁμοιάζει πρὸς νωτιαίαν φθίσιν, διὸ καὶ καλεῖται *ψευδὴς νωτιαία φθίσις μυελική*.

Ἀναλόγως τῆς ἐξελίξεως διακρίνονται αἱ μυελίτιδες, ὡς ἐλέχθη, εἰς *ὀξείας*, οἷαι αἱ περιγραφεῖσαι, εἰς *ὑποξείας*, ὧν παράδειγμα εἶναι ἡ πολιομυελῖτις τῶν ἐνηλίκων τοῦ Duchenne de Boulogne, ἥτις ἔχει τὰ ὡς ἄνω φαινόμενα τῆς πολιομυελίτιδος, καὶ εἰς *χρονίας*, ὧν διακρίνομεν τὴν *νωτιαίαν σπασμωδικὴν παραπληγίαν*.

Ἡ διάγνωσις, πρῶτον μὲν ὡς πρὸς τὴν μορφὴν καὶ ἐντόπισιν καὶ εἶτα ὡς πρὸς τὴν αἰτιολογίαν, γίνεται διὰ τῆς ἀνευρέσεως τοῦ γενεσιουργοῦ παράγοντος ἢ διὰ τῆς μεθόδου τοῦ ἀποκλεισμοῦ. Ἡ πρόγνωσις ἐξαρτᾶται ἐκ τῶν ἀλλοιώσεων. Αἱ σπασμωδικὴν παράλυσιν δίδουσαι μορφαὶ εἶναι σχεδὸν ἀνίατοι, ἂν ἐγκατασταθῶσι πλήρως (ἐμφανισθῇ κλόνος τοῦ ποδός). Αἱ ἐμφανίζουσαι φαινόμενα ἀπὸ τῶν προσθίων μερῶν (=χαλαρὰν παράλυσιν καὶ ἀτροφίαν) εἶναι ἀγαθωτέρας ἐκβάσεως. Αἱ ἐγκάρσιαι εἶναι ἀπολύτως κακῆς καὶ ἀπὸ ἀπόψεως ζωῆς λόγῳ τῶν ἐσχαρῶν κατακλίσεως. Ἀπὸ ἀπόψεως αἰτιολογικῆς, αἱ ὀφειλόμεναι εἰς αἴτιον, ὅπερ δυνάμεθα νὰ πολεμήσωμεν, εἶναι ἐπιδεκτικαὶ τοὐλάχιστον μεγάλης βελτιώσεως, ἂν μὴ πλήρους θεραπείας, δι' οἱανδήποτε μορφὴν (π. χ. αἱ συφιλιδικῆς ἀρχῆς). Ἡ θεραπεία εἶναι αἰτιολογική, πρώϊμος ἠλεκτροθεραπεία, ἂν δὲν ὑπάρχῃ σπασμωδικὴ παράλυσις ἀλλὰ χαλαρὰ διαθερμία.

Τ. Α. Ζ.

**μυελοβλάστη** (ἡ) (συνών. *μυελοπλάστης, λευκοβλάστη, λευκοπλάστης, λεμφοειδὲς μυελοκύτταρον*). Αἱ μυελοβλάσται εἶναι εἰδικὰ ἄωρα λευκοκύτταρα, ἅτινα παράγονται ἐντὸς ὡρισμένων αἱμοποιητικῶν ὀργάνων (μυελὸς τῶν ὀστῶν, ἧπαρ, σπλὴν) ἐκ τῶν ἐντελῶς ἀρχεγόνων λευκοκυττάρων τῶν λευκογονίων διὰ βαθμιαίας μεγεθύνσεως τοῦ τε πρωτοπλασματικοῦ σώματος καὶ τοῦ πυρῆνος καὶ ἰσχυροποιήσεως τῆς βασιοφιλίας τοῦ πρωτοπλάσματος αὐτῶν. Αἱ μυελοβλάσται εὑρίσκονται ἐν μεγάλῃ ποσότητι ἐν τῷ αἵματι ἐμβρύων 6ου καὶ 7ου μηνός, ἐλαττοῦνται δὲ κατόπιν βαθμιαίως, ἵνα ἐν τῇ μετεμβρυϊκῇ ζωῇ ἐξαφανισθῶσι τελείως ἐκ τοῦ περιφερικοῦ αἵματος, ἐναπομένουσαι μόνον ἐν τῷ μυελῷ τῶν ὀστῶν. Αἱ μυελοβλάσται ἀποτελοῦσι τὰ μητρικὰ κύτταρα (τὸ προστάδιον) τῶν *μυελοκυττάρων*· κατ' ἀρχὰς προκύπτουσι δι' ἐμμέσου ἢ ἀμέσου πυρηνοδιαιρέσεως τῶν μυελοβλαστῶν τὰ *προμυελοκύτταρα* καὶ ἐκ τούτων διὰ τῆς χαρακτηριστικῆς κοκκυλιοποιήσεως τοῦ πρωτοπλάσματος τὰ μυελοκύτταρα. Ἐν τῷ κυκλοφορουμένῳ αἵματι τοῦ τελείου ἀτόμου παρουσιάζονται μυελοβλάσται μόνον ὑπὸ παθολογικὰς συνθήκας (κατὰ τὴν μυελοβλαστικὴν λευχαιμίαν).

Θ. Σ.

**μυελοδυσπλαστία** (ἡ) (myélodysplasie) [*Ἰατρ.*]. Ὅρος ἀποδιδόμενος εἰς ἐλαχίστας καὶ σπανίας συγγενεῖς πλημμελείας περὶ τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Αἱ βλάβαι αὗται, αἵτινες παρέρχονται συνηθέστατα ἀπαρατήρητοι, εἶναι ἀφ' ἑνὸς αἴτιον παραμορφώσεων, οἷον: συνδακτυλίας, κενώσεως τοῦ ἱεροῦ σωλῆνος, παραμορφώσεως τῶν ὀστῶν τοῦ ποδός, καὶ ἀφ' ἑτέρου αἴτιον λειτουργικῶν διαταραχῶν ἀναγομένων πολλάκις μεταξὺ τῶν νευρώσεων, οἷον: νυκτερινῆς ἀκρατείας τῶν οὔρων, διαταραχῶν τῆς αἰσθητικότητος πρὸς τοὺς πόδας κυρίως, ἀνωμαλίας τῶν ἀνακλαστικῶν φαινομένων κλπ.

Μ. Ν. Κ.

**μυελοκήλη** (ἡ) [*Ἰατρ.*]. Καλεῖται ἡ πρόπτωσις τοῦ περιεχομένου τοῦ νωτιαίου σωλῆνος (νωτιαίου μυελοῦ) διά τινος σχισμῆς τῶν τόξων τῶν σπονδύλων οὐχὶ φυσιολογικῆς, ὀφειλομένης εἰς διαμαρτίαν περὶ τὴν διάπλασιν τούτων (ράχις δισχιδής). Ἡ ἔκχυσις τοῦ ἐν τῷ σάκκῳ ὑγροῦ δύναται νὰ λάβῃ χώραν εἴτε εἰς τὴν ὀπισθίαν ἐπιφάνειαν τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, εἴτε εἰς τὴν προσθίαν, ἐξ οὗ καὶ οἱ διάφοροι τύποι ταύτης, Τῆς μυελοκήλης ἀπαντῶσι δύο μορφαί, ἡ ὑπαραχνοειδὴς καὶ ἡ σκληρά, διαφέρουσαι κατὰ τοῦτο, ὅτι κατὰ μὲν τὴν πρώτην μορφὴν τὰ νεῦρα διέρχονται ἐλεύθερα διὰ τοῦ πλήρους ὑγροῦ σάκκου, ἐνῷ κατὰ τὴν δευτέραν περιβάλλονται ὑπὸ τῶν δύο πετάλων τῆς ἀραχνοειδοῦς μορφῆς. Ἡ μυελοκήλη ἀπαντᾷ κατὰ τὴν ὀσφυϊκὴν χώραν καὶ σπανιώτερον εἰς τὴν ἱεράν, ἀποτελεῖ δὲ ὄγκον μαλακὸν μεγέθους ᾠοῦ περιστερᾶς μέχρι πυγμῆς ἀνδρὸς ἢ καὶ μείζονος. Ἡ θεραπεία εἶναι χειρουργική.

Ι. Κ. Κ.

**μυελοκυστοκήλη** (ἡ) [*Ἰατρ.*]. Ἀποτελεῖ ἰδιαίτερον τύπον τῆς *μυελοκήλης*, καθ' ὃν ἡ ἔκχυσις τοῦ ὑγροῦ λαμβάνει χώραν ἐν αὐτῷ τούτῳ τῷ κεντρικῷ σωλῆνι τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, οὗ τὸ ραχιαῖον τοῦτο τμῆμα διευρύνεται σακκοειδῶς καὶ ὑφίσταται ἐκφυλιστικὰς μεταβολάς.

Ι. Κ. Κ.

**μυελοκύτταρον** (τό). Διὰ τῆς διαφοροποιήσεως τῶν ἀμεταπλάστων *μυελοβλαστῶν* ἐν ὡρισμένοις αἱμοποιητικοῖς ὀργάνοις, ἰδίως ἐν τῷ μυελῷ τῶν ὀστῶν, παράγονται τὰ μυελοκύτταρα, ἅτινα χαρακτηρίζονται ἐκ τοῦ κοκκώδους πρωτοπλάσματος, καὶ τοῦ ἐκ μετρίως χονδροειδοῦς δικτύου χρωματίνης ἀποτελουμένου πυρῆνος. Οὗτος χρωματίζεται ὑπὸ τῆς αἱματοξυλίνης καὶ τῶν βασικῶν χρωμάτων τῆς ἀνιλίνης βαθύτερον τοῦ πυρῆνος τῶν μυελοβλαστῶν. Ὡς πρῶτος ὁ Ehrlich σαφῶς κατέδειξε, τὰ μυελοκύτταρα διακρίνονται εἰς τρία εἴδη, ἀναλόγως τῆς χημικῆς συγγενείας τῶν κοκκίων τοῦ πρωτοπλάσματος αὐτῶν πρὸς τὰς χρωστικὰς (ἰδίως τῆς ἀνιλίνης): 1) Τὰ *οὐδετερόφιλα* ἢ *φιλουδέτερα* μυελοκύτταρα, τῶν ὁποίων τὰ λεπτότατα κοκκία τοῦ πρωτοπλάσματος χρώννυνται ὑπὸ μείγματος βασικῆς καὶ ὀξίνης χρωστικῆς. 2) Τὰ *ἠωσινόφιλα* ἢ *φιληώσινα* ἢ *ὀξίφιλα* μυελοκύτταρα, τῶν ὁποίων τὰ χονδροειδῆ κοκκύλια δεικνύουσι φιλόξινον ἀντίδρασιν, χρωματιζόμενα ἰδίως ὑπὸ τῆς ἠωσίνης λίαν ἐντόνως. 3) Τὰ *βασιόφιλα* ἢ *φιλοβασικὰ* ἢ *σιτευτικὰ* μυελοκύτταρα, τῶν ὁποίων τὸ πρωτόπλασμα ἐνέχει φιλοβασικά, χονδρά, ἀνώμαλα καὶ ἀραιῶς διατεθειμένα κοκκία. Ἐκ τῶν τριῶν τούτων τύπων μυελοκυττάρων ἀφθονώτερα εἶναι τὰ οὐδετερόφιλα. Διὰ βαθμιαίας πυκνώσεως καὶ οὐχὶ τελείας λοβώσεως τοῦ πυρῆνος προέρχονται καὶ ἐκ τῶν τριῶν τύπων τὰ *μεταμυελοκύτταρα* καὶ ἐκ τούτων εἶτα, διὰ τῆς περαιτέρω ἀνίσου λοβώσεως καὶ μείζονος πυκνώσεως τοῦ πυρῆνος, τὰ *πολυμορφοπύρηνα* ἢ *λοβοπύρηνα λευκοκύτταρα*. Τὰ τελευταῖα ταῦτα, τελείως ὥριμα, λευκοκύτταρα, ἕνεκα τῆς ἰδιότητος τῆς ἀμοιβαδοειδοῦς κινήσεως, εἰσδύουσιν εἰς τὰ τριχοειδῆ τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν καὶ ἀποτελοῦσιν οὕτω ἔμμορφον φυσιολογικὸν συστατικὸν τοῦ κυκλοφορουμένου αἵματος. Ὑπὸ παθολογικὰς ὅμως περιστάσεις (κατὰ τὴν μυελογενῆ ἢ μυελικὴν λευχαιμίαν), ὅταν δηλαδὴ ὑπάρχῃ παθολογικὴ ὑπενεργητικότης τῶν αἱμοποιητικῶν ὀργάνων, μάλιστα δὲ τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν, εἰσδύουσι καὶ ἐπὶ ἐνηλίκων αἱ ἄωροι προβαθμῖδες τῶν πολυμορφοπυρήνων λευκοκυττάρων εἰς τὸ κυκλοφορούμενον αἷμα, ἤτοι τὰ τρία εἴδη (οὐδετερόφιλα, ὀξίφιλα καὶ βασιόφιλα) τῶν προμυελοκυττάρων, μυελοκυττάρων καὶ μεταμυελοκυττάρων.

Θ. Σ.

**μυελοκυψέλαι** (αἱ), ἢ ***μυελώδη ἀραιώματα*** [*Ἀνατομ.*]. Κοιλότητες μικραί, χωριζόμεναι ἀπ' ἀλλήλων διὰ διασταυρουμένων ὀστεΐνων δοκίδων καὶ πεταλίων τῆς σπογγώδους τῶν ὀστῶν οὐσίας, πληρούμεναι ὑπὸ μυελοῦ.

Ι. Π.

**μυελομαλακία** (ἡ) [*Ἰατρ.*]. Καλεῖται οὕτω ἡ μαλάκυνσις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ἤτοι ἡ ἀπόφραξις τῶν ἀγγείων ἐξ ἀρτηρίτιδος, ἥτις ἔχει ὡς συνέπειαν τὴν ἔλλειψιν αἱματώσεως τοῦ ὑπὸ τοῦ ἀποφραχθέντος ἀγγείου αἱματουμένου τμήματος τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, διότι αἱ ἀρτηρίαι αὐτοῦ εἶναι ἀκρόληπτοι, οὐχὶ ὅμως πλήρως. Ἡ μυελικὴ μαλάκυνσις εἶναι σπανιωτέρα τῆς ἐγκεφαλικῆς, διότι αἱ ἀρτηρίαι τοῦ πλέγματος τῆς ψευδοῦς μήνιγγος, αἵτινες διὰ τῶν προσθίων καὶ ὀπισθίων ριζιτικῶν αἱματοῦσι τὸν μυελόν, παρουσιάζουσιν ἀναστομώσεις ἀναμεταξύ των καὶ μετὰ τῆς προσθίας μυελικῆς ἀρτηρίας. Τὴν μαλάκυνσιν διευκολύνει ἡ σύφιλις καὶ διάφοροι λοιμώδεις μυελίτιδες. Ἰδιαιτέραν θέσιν κατέχουν μεταξὺ τῶν αἰτίων τῆς μαλακύνσεως αἱ συνθῆκαι ἐργασίας τῶν ἐργαζομένων ὑπὸ πίεσιν ἀέρος (νόσοι τῶν σκαφάνδρων), διότι ἡ ἀπότομος καὶ οὐχὶ ἐπιστημονικὴ ἐλάττωσις τῆς πιέσεως προκαλεῖ ἀθρόαν ἔξοδον ἀερίων ἐκ τοῦ αἵματος, ὑπὸ μορφὴν φυσαλίδων, αἵτινες δρῶσιν ὡς ἔμβολα καὶ σχηματίζουσιν οὕτως ἀποφράξεις ἀρτηριῶν. Ἐπίσης ἡ διάσεισις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ προκαλεῖ ἰσχαιμικὰς ἀλλοιώσεις τοῦ μυελοῦ. Αἱ ἑστίαι μαλακύνσεως εἶναι μονήρεις ἢ πολλαπλαῖ, συνεχεῖς ἢ διάχυτοι, ἢ διάσπαρτοι. Εἰς ἁπλᾶς ἰσχαιμίας παρατηροῦνται διαταραχαὶ βαδίσματος καὶ σφιγκτήρων παροδικαί. Εἰς πλήρεις ἀποφράξεις ἐπέρχεται παράλυσις, ἥτις εἰσβάλλει ἀποτόμως, χαλαρὰ ἢ σπασμωδική, ἀναλόγως τῆς ἐντοπίσεως τῶν ἀλλοιώσεων, μετὰ ὀρθοκυστικῶν διαταραχῶν. Ἡ θεραπεία εἶναι προληπτικὴ καὶ συνίσταται εἰς βαθμιαίαν ἐλάττωσιν τῆς πιέσεως τοῦ ἀερίου, ὥστε ἡ ἄνοδος τοῦ σκαφάνδρου νὰ γίνεται ἀνὰ ὀλίγα μέτρα.

Τ. Α. Ζ.

**μυελομηνιγγῖτις,** —*δος* (ἡ) [*Ἰατρ.*]. Φλεγμονὴ τῆς τε μήνιγγος καὶ τοῦ μυελοῦ, καλουμένη καὶ *μηνιγγομυελῖτις*. Ἐκδηλοῦται κλινικῶς διὰ πόνων ριζιτικῶν καὶ μηνιγγικῆς δυσκαμψίας μετὰ φαινομένων ἐκ τοῦ μυελοῦ ἀναλόγως τῶν προσβαλλομένων τμημάτων αὐτοῦ. Συνήθως ὑπάρχει χαλαρὰ παράλυσις μετ' ἀτροφίας καὶ αἰσθητικῶν διαταραχῶν ριζικῆς τοπογραφίας. Ὑπάρχει ὡσαύτως ὑπερλευκωμάτωσις καὶ ὑπερλευκοκύττωσις τοῦ ἐγκεφαλονωτιαίου ὑγροῦ. Ἡ μυελομηνιγγῖτις ὀφείλεται κυρίως εἰς σύφιλιδα, οἰνοπνευμάτωσιν καὶ πλείστας ἄλλας λοιμώξεις. Ἡ πρόγνωσις γίνεται ἐκ τῆς μορφῆς καὶ τῆς αἰτιολογίας. Ἡ θεραπεία εἶναι αἰτιολογικὴ μετὰ συμπτωματικῆς τοιαύτης καὶ ἠλεκτροθεραπείας-διαθερμίας, ἐν ἀρχῇ καὶ πρωΐμως.

Τ. Α. Ζ.

**μυελονευρῖτις,** —*ιδος* [*Ἰατρ.*]. Φλεγμονὴ τῶν νεύρων καὶ τοῦ μυελοῦ συγχρόνως. Ὀφείλεται εἰς οἰνοπνευμάτωσιν, σύφιλιδα, λέπραν καὶ πλείστας λοιμώξεις καὶ δηλητηριάσεις. Κλινικῶς χαρακτηρίζεται ἀφ' ἑνὸς μὲν διὰ μυελικῶν φαινομένων, ὡς ἡ σπασμωδικὴ παράλυσις, αἱ ὀρθοκυστικαὶ διαταραχαί, αἱ ἰνικαὶ συστολαί, αἱ αἰσθητικαὶ καὶ κινητικαὶ διαταραχαὶ μυελικῆς τοπογραφίας, ἀφ' ἑτέρου δὲ διὰ πολυνευριτικῶν, ὡς ἡ χαλαρὰ παράλυσις καὶ αἱ αἰσθητικαὶ διαταραχαὶ ριζικῆς τοπογραφίας, οἱ πόνοι οἱ προκαλούμενοι διὰ πιέσεως τῶν μαζῶν τῶν μυῶν καὶ τῶν νευρικῶν κορμῶν, αἱ μυϊκαὶ συσπάσεις καὶ ἡ ἀτροφία περιφερικῆς τοπογραφίας μετὰ ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως. Ἡ πρόγνωσις εἶναι καλή, ἐκτὸς τῆς λεπρικῆς, ἂν δὲν ὑπάρχουσιν ἔντονα σπασμωδικὰ φαινόμενα. Θεραπεία αἰτιολογικὴ μετὰ συμπτωματικῆς.

Τ. Α. Ζ.

**μυελοπάθεια** (ἡ) [*Ἰατρ.*]. Καλοῦνται οὕτω πᾶσαι αἱ παθήσεις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ἤτοι αἱμορραγία, μαλάκυνσις, τραυματικαὶ μυελίτιδες, διάσεισις, μυελίτιδες ὀξεῖαι, χρόνιαι καὶ ὑποξεῖαι, αἱ μυελικαὶ σκληρύνσεις αἱ πρωτοπαθεῖς, ἡ σύφιλις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, ἡ συριγγομυελία, ἡ οἰνοπνευμάτωσις, ἡ νόσος τοῦ Heine-Medin, ἡ νωτιαία φθίσις, ἡ νόσος τοῦ Charcot, ἡ σκλήρυνσις κατὰ πλάκας, ἡ φυματίασις τοῦ μυελοῦ, αἱ συνδεδυασμέναι σκληρύνσεις κλπ. Ὁ ὅρος οὗτος δὲν χρησιμοποιεῖται πρὸς ὀνομασίαν ὡρισμένης τινὸς παθήσεως.

Τ. Α. Ζ.

**μυελόπλαξ** (ἡ) [*Ἀνατομ.*]. Μυελόπλακες εἶναι κύτταρα τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων, ἐμφανιζόμενα δίκην πολυγώνων πρωτοπλασματικῶν πλακῶν καὶ διακρινόμενα διὰ τὸ μέγεθος αὐτῶν· προσονομάζονται δὲ καὶ *γιγαντοκύτταρα* καὶ διαστέλλονται εἰς *μεγαλοπύρηνα*, ἔχοντα ποικιλόμορφον πυρῆνα, καὶ εἰς *πολυπύρηνα* μετὰ πολυπληθῶν (5—20) πυρήνων, ἅτινα ἐπικαλοῦνται καὶ ὀστεορρηκτικὰ ἢ ὀστεολυτικὰ κύτταρα, ἅτε ἐνεργοῦντα ὡς διαλυτικὰ τῆς ὀστεΐνης οὐσίας.

Ι. Π.

**μυελοπλάστης** [*Ἱστολογ.*]· βλ. *μυελοβλάστη*.

**μυελοπλαστικὸν** *σάρκωμα* [*Παθολογοανατ.*] βλ. *μυελοσάρκωμα*.

**μυελὸς** (ὁ)· ἡ ἐντὸς τοῦ ὀστοῦ λιπώδης οὐσία, κοιν. *μεδούλι* ἢ *μυαλό*· || «νωτιαῖος μυελός» ὁ ἐντὸς τοῦ κοιλώματος τῆς σπονδυλικῆς στήλης μυελός·

Digitized by Google

— **μυελὸς** *νωτιαῖος* [*᾿Ανατομ.*]· βλ. *νωτιαῖος* ιελός.

— **μυελὸς** *ὀστῶν* [*᾿Ανατομ.*]. Μᾶζα μαλθακή, ιηροῦσα τὰς κοιλότητας τῶν ὀστῶν, ἤτοι τὸν ιελώδη αὐλὸν (ἐπιμήκη ὀστᾶ), τὰς μυελοκυψέλας ιπογγώδης οὐσία) καὶ ᾿Αβερσείους τινὰς σωλῆ- ις. Εἶναι δ᾿ ὁ μυελὸς σπουδαῖον συστατικὸν τοῦ ιτοῦ, πρῶτον μέν, διότι κατὰ τὴν ἐμβρυϊκὴν ἡλι- ιαν καὶ μετὰ τὸν τοκετὸν μέχρι τελειώσεως τοῦ ιτοῦ χρησιμεύει ὡς ὀστεοπλαστικὸν ὄργανον αὐ- ιοῦ, εἶτα δέ, διότι διὰ παντὸς τοῦ βίου λειτουρ- ιεῖ ὡς αἱμοποιητικὸν ὄργανον, παράγον ἐρυθρὰ ιμοσφαίρια. Διακρίνονται δὲ τοῦ μυελοῦ τρία ιδη, ὁ *ἐρυθρός*, ὁ *ὠχρὸς* καὶ ὁ *πηκτοειδὴς* μυελός. ιαὶ ὁ μὲν *ἐρυθρὸς* μυελὸς ἀπαντᾷ ἐφ᾿ ὅλων τῶν ιστῶν τοῦ ἐμβρύου καὶ τοῦ νεογνοῦ, ἐπὶ δὲ τοῦ ιελείου διατηρεῖται μόνον ἐν ταῖς κοιλότησι σπογ- ιωδῶν τινων ὀστῶν, ὀφείλεται δ᾿ ἡ ἐρυθρότης αὐ- ιοῦ εἰς τὰ ἄφθονα ἀγγεῖα καὶ τὰ ἐρυθροκύτταρα. ῾Ο δ᾿ *ὠχρὸς* ἢ *λιπώδης* μυελὸς εἶναι ὁ κατ᾿ ἐξοχὴν ιυελὸς τῶν ὀστῶν τοῦ ἐνήβου, ὀφείλει δὲ τὴν ιχρὰν χροιὰν αὐτοῦ εἰς τὰ ἄφθονα λιπώδη κύτ- ιαρα. ῾Ο δὲ *πηκτοειδὴς* πληροῖ τὰς μυελώδεις κυ- ιέλας πολλῶν ὀστῶν τοῦ κρανίου καί τινων τοῦ ιροσώπου, καὶ διακρίνεται διὰ τὸν ἄφθονον συν- ιετικὸν ἱστὸν καὶ τὴν δαψιλῆ ἄμορφον ὕλην. Συν- ιστᾶται δ᾿ ὁ μυελὸς τῶν ὀστῶν ἐκ δικτύου λεπτῶν ιυνδετικῶν ἰνιδίων καὶ ἐκ κυττάρων, ὧν ἀξιολο- ιώτερα εἶναι τὰ λεπτόκοκκα λευκοκύτταρα, τὰ ιονδρόκοκκα, αἱ ἐρυθροβλάσται καὶ τὰ γιγαντο- ιύτταρα. ι. π.

**μυελοσάρκωμα** (τὸ) [*᾿Ιατρ.*]. Παριστᾷ τὸν σαρ- ιωματικὸν (κακοήθη) τύπον τοῦ *μυελώματος* (βλ. λ.), ιποτελεῖται δὲ μικροσκοπικῶς ἐξ οὐχὶ τελείως ιιαπλασθέντων ἀτύπων μυελοπλαστῶν, μυελοκυτ- ιάρων καὶ ἐρυθροπλαστῶν, οἵτινες ἀπομιμοῦνται ιὴν ὑφὴν τῶν κατὰ φύσιν κυτταρικῶν στοιχείων ιοῦ μητρικοῦ ἱστοῦ, δηλαδὴ τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν, ιξ οὗ καὶ παράγονται. ᾿Εμφανίζεται δὲ κατὰ πολ- ιαπλᾶ νησίδια ἐν τῷ μυελῷ τῶν ὀστῶν, ἅτινα κα- ιαστρεπτικῶς δρῶντα ἐπὶ τοῦ ὀστίτου ἱστοῦ καὶ ιοῦ περιοστέου ἐπινέμονται τοὺς πέριξ ἱστοὺς καὶ ιχηματίζουσι μεταστάσεις. ᾿Εν περιπτώσει καθ᾿ ἣν ιαρουσιάζονται πρωτοπαθῶς πολλαπλαῖ ἑστίαι μυε- ιοσαρκώματος εἰς διάφορα ὀστᾶ, πρόκειται περὶ ιενικευμένης *μυελοσαρκωματώσεως*, ὅταν δὲ συγ- ιρόνως εἶναι καὶ ἡ κυτταρικὴ εἰκὼν τοῦ αἵματος ιευχαιμικῶς μεταβεβλημένη, τότε ὀνομάζομεν τὴν ιλην νοσηρὰν ἐξεργασίαν *σαρκολευχαιμίαν*.

Συνώνυμα: *μυελοπλαστικὸν σάρκωμα, σαρκωμα- τῶδες μυέλωμα.*

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *M. Letulle*, «Anatomie pathologique» Masson et Cie, éditeurs, Paris 1931). θ. σ.

**μυελοσαρκωμάτωσις** (ἡ) [*Παθολογοανατ.*]· βλ. *μυελοσάρκωμα*.

**μυελοσκλήρυνσις** (ἡ) [*᾿Ιατρ.*]. Καλοῦνται οὕ- τως αἱ σκληρύνσεις τοῦ νωτιαίου μυελοῦ. Εἰς ταύ- τας ἀνήκει καὶ ἡ τελικὴ περίοδος πάσης φλεγμο- νῆς (=μυελίτιδος) ἢ ἄλλης παθήσεως προκαλού- σης ἐκφύλισιν μετὰ δευτερογενοῦς σκληρύνσεως, δηλαδὴ αἱ δευτερογενεῖς σκληρύνσεις. Κυρίως σκληρύνσεις εἶναι αἱ πρωτογενεῖς, εἰς ἃς δὲν ἀνευ- ρίσκεται στάδιον φλεγμονῆς, ἀλλ᾿ εὐθὺς ἀρχῆθεν ὑπάρχει ἀτροφία τοῦ εὐγενοῦς ἱστοῦ μετ᾿ ἐπακο- λούθου νευρογλοιακῆς ὑπερπλαστίας. Αἱ σκληρύν- σεις αὗται περιλαμβάνουν ἀφ᾿ ἑνὸς μὲν τὰς κυ- ρίως πρωτοπαθεῖς οἷαι ἡ τῆς οἰνοπνευματώσεως, τῆς κακοήθους ἀναιμίας, τῆς πελάγρας, τοῦ λα- θουρισμοῦ, τοῦ ἐργοτισμοῦ, τῆς νόσου τοῦ Ad- dison, τῆς προϊούσης παραλύσεως· ἀφ᾿ ἑτέρου δὲ τὰς κυρίως συνδεδυασμένας σκληρύνσεις: νόσον Friedreich, ἀταξίαν κληρονομικήν, νωτιαίαν φθί- σιν, τὰς σκληρύνσεις τῶν γερόντων καὶ ἄλλα. ᾿Εν- ταῦθα ἀνήκουσι περιπτώσεις κακῶς μέχρι τοῦδε ταξινομούμεναι καὶ σπουδασθεῖσαι ἀτελῶς. ᾿Από- πειραν ἐπιστημονικῆς λύσεως τοῦ ζητήματος τῶν συνδεδυασμένων σκληρύνσεων ἀποτελεῖ ἡ περι- γραφὴ τῆς οἰνοπνευματώσεως μὲ τὰς διαφόρους μυελικὰς αὐτῆς μορφάς, ἀγνώστους ἄχρι τοῦδε, ὡς παράδειγμα αἰτιολογικῆς διαιρέσεως αὐτῶν. Διότι δὲν ὑπάρχουσι πλέον νοσήματα μὲ τύπους ὡρισμέ- νους, ἀλλὰ σύνδρομα διαφόρων ἐντοπίσεων, τὰ ὁποῖα πᾶσα αἰτία δύναται νὰ προκαλέσῃ. π. α. ζ.

**μυελόφιλος** (ὁ) (Myelophilus) [*Ζωολ.*]. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ρυγ- χοφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κουρκουλιονιδῶν*, περιλαμβάνον κανθάρους μικροῦ σχετικῶς μεγέ- θους, ἰθαγενεῖς τῆς Εὐρώπης. Γνωστὰ δύο εἴδη ἐπὶ διαφόρων δένδρων ἐνδιαιτώμενα καὶ ἰδίως ἐπὶ τῆς πεύκης, κατατρώγοντα τοὺς τρυφεροὺς βλαστούς. Δ. Ν. Π.

**μυελώδης** (ὁ, ἡ), —*ες* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μυε- λόν, ὁ ἁπαλός, ὁ τρυφερὸς ὡς μυελός.

— **μυελώδεις** ***ἀκτῖνες***, ἢ ***φερρεΐνειαι πυραμίδες*** [*᾿Ανατομ.*]. Κωνοειδεῖς μικροσκοπικαὶ περιοχαί, γραμμωταί, ἃς ἐμφανίζει ἡ φλοιώδης οὐσία τοῦ νεφροῦ, ὠχρότεραι τῆς λοιπῆς φλοιώδους αὐτοῦ οὐσίας, οὖσαι προσεκβολαὶ τῆς μυελώδους νεφρι- κῆς οὐσίας, αἵτινες ἐκπορεύονται ἀκτινηδὸν ἐκ τῆς βάσεως ἑκάστης μαλπιγιανῆς πυραμίδος καὶ ὧν ὁ ἀριθμὸς δι᾿ ἑκάστην πυραμίδα ὑπολογίζεται εἰς 400. ῎Εχει δ᾿ ἑκάστη μυελώδης ἀκτὶς σχῆμα πρόμηκες κωνοειδές, οὗ ἡ μὲν βάσις συνέχεται μετὰ τῆς βάσεως τῆς μαλπιγιανῆς πυραμίδος, ἡ δὲ κορυφὴ στρέφεται πρὸς τὸν ἰνώδη χιτῶνα τοῦ νεφροῦ, εἰς ὃν ὅμως δὲν φθάνει. ι. π.

— **μυελώδη** ***ἀραιώματα*** [*᾿Ανατομ.*]· βλ. λ. *μυε- λοκυψέλαι*.

**μυέλωμα** (τὸ) [*᾿Ιατρ.*]. ᾿Εν μέρει πρόκειται περὶ γνησίων νεοπλασμάτων, ἐν μέρει ὅμως περὶ και- νοπλαστιῶν τοῦ μυελοῦ τῶν ὀστῶν, αἵτινες παρι- στῶσι μᾶλλον ὀγκοειδεῖς ὑπερπλάσεις καὶ οὐχὶ ἀληθῆ αὐτόνομα νεοπλάσματα τοῦ μυελοῦ. ῾Ιστο- λογικῶς ἀποτελοῦνται ἢ ἐκ μυελοπλαστῶν, μυελο- κυττάρων καὶ ἐρυθροπλαστῶν, τοιαῦτα δὲ εἶναι τὰ *γνήσια* μυελώματα, ἢ ἐκ λεμφοκυτταροειδῶν κυττάρων καὶ πλασματοκυττάρων, ὁπότε τὰ ὀνομά- ζομεν *μυελικὰ λεμφώματα*. ῾Η κυτταρικὴ εἰκὼν τοῦ αἵματος δύναται νὰ μείνῃ φυσιολογικὴ ἢ νὰ μετα- βληθῇ ἀντιστοίχως πρὸς τὴν μεταβολὴν τῶν αἱμο- ποιητικῶν ὀργάνων. Τὸ *πολλαπλοῦν μυέλωμα* ἐντο- πίζεται κυρίως ἐν τῷ μυελῷ τῶν ὀστῶν (σπόνδυ- λοι, πλευραί, στέρνον, θόλος τοῦ κρανίου), σπανιώ- τερον δὲ ἐν τῷ περιοστέῳ ὑπὸ μορφὴν πρωτοπα- θῶς πολλαπλῶν ἑστιῶν κιτρίνων ἢ ἐρυθρωπῶν ἢ καὶ ἐν εἴδει διηθήσεων. Συνήθως τὸ μυέλωμα δὲν ὑπερβαίνει τὰ ὅρια τοῦ περιοστέου, ὡς τοῦτο εἶναι ὁ κανὼν εἰς τὸ κακόηθες μυελοσάρκωμα, εἰ καὶ ἄλλοι (π. χ. ὁ Hart) περιέγραψαν ἱστολογικῶς κα- λοήθη μυελώματα μετὰ περιοστικῆς ὑπερβάσεως, μεταστάσεων καὶ αὐτομάτων καταγμάτων τῶν ὀστῶν. Τέλος λίαν χαρακτηριστικὸν τοῦ μυελώμα- τος εἶναι ἡ λευκωματουρία (λεύκωμα τῶν Bence- Jones).

Συνώνυμα: *μυελοκυττάρωμα, μυελοβλάστωμα*.

θ. ΣΚΛΑΒΟΥΝΟΣ

**μυεντερικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ κείμενος μεταξὺ τῶν μυϊκῶν στιβάδων τοῦ ἐντερικοῦ τοιχώματος. ι. π.

— **μυεντερικὸν** ***πλέγμα*** [*᾿Ανατομ.*]. Πλέγμα νευ- ρικόν, κείμενον μεταξὺ τῆς κυκλοτεροῦς καὶ τῆς ἐπιμήκους στιβάδος τοῦ μυϊκοῦ χιτῶνος τοῦ ἐντε- ρικοῦ τοιχώματος. ι. π.

**Μυζὰρ** (Musard), ***Φίλιππος***. Γάλλος συνθέτης χορῶν, γεννηθεὶς περὶ τὸ 1792 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1859. Εἶχεν ἐπικληθῆ ὁ «βασιλεὺς τῆς καντρίλλιας», λόγῳ τῆς ἐξαιρετικῆς ἰδιοφυΐας του πρὸς τὴν σύν- θεσιν μουσικῆς διὰ τοὺς χοροὺς τούτους, εἴτε ἐπὶ ἰδίων θεμάτων, εἴτε ἐπὶ θεμάτων μελοδραμάτων, καταλλήλως διασκευαζομένων. ῎Εδρασε κυρίως ἐν Παρισίοις ὡς διευθυντὴς τῶν χορῶν τοῦ Θεάτρου τῶν Ποικιλιῶν. ῾Ο υἱός του *᾿Αλφρέδος* διέπρεψεν ἐπίσης ὡς συνθέτης χορῶν. γ. σ.

**μυζήθρα** (ἡ) [*Βρωματοχ.*]. Προϊὸν τῆς γαλα- κτοκομίας, λαμβανόμενον ἐκ τοῦ ὑπολοίπου τοῦ γάλακτος μετὰ τὴν πῆξιν καὶ παραλαβὴν τοῦ τυ- ροῦ. Πρὸς παρασκευὴν τῆς μυζήθρας τὸ μετὰ τὴν παραλαβὴν τοῦ τυροπήγματος παραμένον τυρό- γαλα, ὅπερ περιέχει εἰσέτι λίπος, ἀζωτούχους ὕλας καὶ λοιπὰ συστατικὰ τοῦ γάλακτος, θερμαίνεται ἐντὸς λέβητος μέχρι πήξεως τῶν λευκωμάτων ὑπὸ ἀνάδευσιν. Τὸ πῆγμα παραλαμβάνεται διὰ διατρή- του κοχλιαρίου, φέρεται ἐντὸς μικρῶν πλεκτῶν ἐκ βρύων κοφινίων, ἀφίνεται ἐπὶ 24 ὥρας πρὸς στράγ- γισιν καὶ εἶτα ἁλατίζεται καὶ ἀφίνεται πρὸς ὡρί- μανσιν. Συχνάκις πρὸς βελτίωσιν τῆς ποιότητος προστίθεται εἰς τὸ τυρόγαλα πρὸ τῆς θερμάνσεως αὐτοῦ ποσότης τις γάλακτος (πρόσγαλα).

῾Η ποιότης τῆς μυζήθρας ἐξαρτᾶται πλὴν τῶν ἄλλων καὶ ἐκ τῆς περιεκτικότητος αὐτῆς εἰς λίπος. Πλουσία εἰς λίπος, λίαν εὔγευστος, μυζήθρα εἶναι τὸ *μανοῦρι* (᾿Ηπείρου, Θρᾴκης, Μακεδονίας). ᾿Απα- χὴς δὲ μυζήθρα εἶναι ἡ καλουμένη *γκίζα* ἢ *φι- στίνα* ἢ *οὖρδα*. σ. γ.

**μύζησις**, —*εως* (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μυζᾶν, ἀπομύ- ζησις, ἀπορρόφησις διὰ τοῦ στόματος, βύζαγμα.

**μυζητήρ**, —*ῆρος* (ὁ)· τὸ δι᾿ οὗ γίνεται ἡ μύζησις, ὄργανον μυζητικὸν τῶν ἀτόμων.

—[*Ζωολ.*] Καλεῖται *μυζητὴρ* τὸ προβοσκιδοειδὲς ρύγχος πολλῶν ἐντόμων, δι᾿ ὧν ἀπομυζῶσιν ἐκ δια- φόρων ζῴων τὸ αἷμα καὶ ἐκ διαφόρων φυτῶν τοὺς χυμούς των.

— [*Βοτ.*] Καλεῖται *μυζητὴρ* ἡ ρίζα πολλῶν πα- ρασιτικῶν φυτῶν, ἥτις προσκολλᾶται ἐπί τινος φυ- τικοῦ μορίου τοῦ ξενίζοντος τοῦτο φυτοῦ καὶ ἀπο- μυζᾷ ἐξ αὐτοῦ τοὺς θρε- πτικοὺς χυμούς. Δ. Ν. Π.

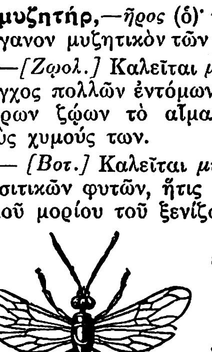

*Μυζητὴς ὁ τρίστικτος.*

**μυζητὴς** (ὁ) (Myzetes) [*Ζωολ.*]. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τοῦ ἀθροί- σματος τῶν *κεντροφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *σφη- κιδῶν*, περιλαμβάνον πο- λυπληθῆ εἴδη σφηκῶν παν- ταχοῦ τῆς γῆς διαδεδομέ- νων, κυρίως ὅμως εἰς τὰς θερμὰς χώρας τῆς γῆς. ᾿Εκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μυζητὴς ὁ τρί- στικτος* (Myzetes tripuctatus), ὅστις ἀπαντᾷ εἰς πάσας τὰς παραμεσογειακὰς χώρας. ῎Εχει μέτριον μέγεθος, κεφαλὴν ἀπεστρογγυλωμένην, θώρακα κυλινδρικὸν καὶ κοιλίαν ἀπολήγουσαν εἰς τριχωτὸν τέρετρον. Κεφαλή, θώραξ καὶ κοιλία συνδέονται διὰ λεπτῆς ἀποφύσεως. Αἱ κεραῖαι εἶναι λεπταὶ καὶ ἐπιμήκεις, οἱ πόδες μέτριοι καὶ τριχωτοί, αἱ πτέρυγες ἀνεπτυγμέναι καὶ ὁ χρωματισμός του ποι- κίλος. Δ. Ν. Π.

**μυζητικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἱκανός, ὁ κατάλληλος πρὸς μύζησιν, ὁ μυζῶν: «μυζητικὰ ὄργανα τοῦ ἐν- τόμου», «σίφων μυζητικός».—᾿Επίρρ. *μυζητικῶς*.

**Μυζὸρ** (Mysore) [*Γεωγρ.*]. Κράτος τῶν Βρετ- τανικῶν ᾿Ινδιῶν (βλ. λ. *Μάϋσορ*).

**μυζόδενδρον** (τὸ) (Myzodendron) [*Βοτ.*]. Γέ- νος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *προσωπανθῶν*, πε- ριλαμβάνον εἴδη τινὰ θαμνώδη ἰθαγενῆ τῶν δυτι- κῶν καὶ νοτίων χωρῶν τῆς ᾿Αμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**μυζομελὴς** (ὁ) (Myzomeles) [*Ζωολ.*]. Γένος πτη- νῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *αἰγιθαλιδῶν*, περιλαμ- βάνον μετρίου μεγέθους πτηνά, μὲ κεφαλὴν ἀπε- στρογγυλωμένην, ἀπολή- γουσαν εἰς μακρόν, κυρτὸν καὶ αἰχμηρὸν κατὰ τὸ ἄκρον του ράμφος, σῶμα βραχύ, πτέρυγας βραχείας, οὐρὰν στενὴν καὶ μακρὰν καὶ πόδας βραχεῖς μετὰ μεγάλων ὀνύχων. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μυζο- μελὴς ὁ φαιὸς* (Myzomeles cinereus), ἰθαγενὴς τῆς Αὐστραλίας. Δ. Ν. Π.

*Μυζομελὴς ὁ φαιός.*

**μυζοστομίδαι** (οἱ) (Myzostomidae) [*Ζωολ.*]. Οἰ- κογένεια σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πολυχαι- τῶν*, περιλαμβάνουσα σκώληκας μὲ σῶμα δισκοει- δές, μικροῦ μεγέθους, ζῶντας παρασιτικῶς ἐπὶ ἑτέ- ρων ζῴων. ᾿Εκ τῶν γνωστοτέρων γενῶν εἶναι τὸ *μυζόστομον* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυζόστομον** (τὸ) (Myzostomum) [*Ζωολ.*]. Γέ- νος σκωλήκων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυζοστομιδῶν*, περιλαμβάνον μικροτάτους σκώληκας παρασιτικῶς ζῶντας ἐπὶ ἑτέρων σκωλήκων. Δ. Ν. Π.

**μυζῶ** (—*άω*)· ροφῶ διὰ τοῦ στόματος, βυζάνω, πιπιλίζω.

**Μύης** [*᾿Αρχ. Γεωγρ.*]. ῾Η κατὰ τὸν ῾Εκαταῖον (ἀπόσπ. 224) ὀνομασία τῆς *Μυοῦντος* (βλ. λ. *Μυοῦς*) τῆς Καρίας. Σ. Ε. Λ.

**μύησις**, —εως (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ *μυῶ*, εἰσ- αγωγὴ εἰς τὰ μυστήρια, διδασκαλία μυστικῶν τελε- τῶν: «μύησις εἰς τὸν τεκτονισμόν»· || συνεκδ. ἐμπι- στευτικὴ ἀνακοίνωσις μυστικῆς τινος ὑποθέσεως, ἑταιρείας, συνωμοσίας κττ.

—[*Θρησκειολ.*] Βλ. *μυστηριακαὶ* θρησκεῖαι.

**μυθάριον** (τό)· μικρὸς μῦθος, παραμυθάκι.

**μύθευμα** (τό)· τὸ μυθευόμενον, ψευδές, πλα- στὸν διήγημα: «ἡ εἴδησις αὐτὴ ἀπεδείχθη μύθευμα».

**μυθικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μύ- θους, ὁ τῶν μύθων: «μυθικὰ γεγονότα, —πρόσωπα»· || «μυθικοὶ χρόνοι» οἱ χρόνοι τῆς ἱστορίας ἑνὸς ἔθνους, καθ᾿ οὓς τὰ γεγονότα καλύπτονται ὑπὸ μυ- θικῶν παραδόσεων, ἀντιδιαστέλλονται πρὸς τοὺς «ἱστορικοὺς χρόνους».

**μυθιστόρημα** (τό)· πλαστὸν διήγημα, μυθώδης ἱστορία, ἄλλως *ρωμάτζο*.

— [*Λογοτ.*] *Μυθιστόρημα* (κοιν. *ρωμάντζο* ἐκ τοῦ ξενογλώσσου roman, romanzo) καλεῖται ἡ ἔντε- χνος διήγησις ἀλληλοσυνδεομένων γεγονότων, ἀφο- ρώντων τὴν τύχην ἢ ἐξέλιξιν τῆς ζωῆς ἑνὸς ἢ περισσοτέρων προσώπων, τὰ ὁποῖα, ἀποτελοῦντα τὸν ἄξονα τῶν περιγραφομένων γεγονότων καὶ πράξεων καλοῦνται ἥρωες τοῦ μυθιστορήματος. ῾Ο ὅρος roman, δι᾿ οὗ ὠνομάσθη τὸ μυθιστόρημα εἰς τὰς εὐρωπαϊκὰς γλώσσας, ἐχρησίμευε κατὰ τὸν μεσαίωνα ὅπως σημάνῃ τὰ θύραθεν ἔμμετρα ἢ πεζὰ ἔργα, τὰ γεγραμμένα εἰς τὴν λαϊκὴν γλῶσσαν (langue romane) καὶ ἔχοντα διηγηματικὸν ἰδίᾳ χαρακτῆρα, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ χρονικά, τὰς βι- βλικὰς ἱστορίας, τὰς ἐκκλησιαστικὰς διηγήσεις, αἱ ὁποῖαι ἐγράφοντο εἰς τὴν λατινικήν, γλῶσσαν τοῦ σχολείου καὶ τῆς ἐκκλησίας. Κυρίως εἰπεῖν μυθι- στόρημα εἶναι πλαστὴ ἱστορία γεγραμμένη εἰς πε- ζόν, εἰς τὴν ὁποίαν ὁ συγγραφεὺς ζητεῖ νὰ κινήσῃ τὸ ἐνδιαφέρον εἴτε δι᾿ ἀναλύσεως παθῶν, εἴτε διὰ περιγραφῆς ἠθῶν, εἴτε διὰ περιέργων περιπετειῶν. Οὕτω θεωρούμενον τὸ μυθιστόρημα, διαφέρει ρι- ζικῶς τῶν ἄλλων λογοτεχνικῶν εἰδῶν: τοῦ διη- γήματος, τῆς νουβέλλας καὶ τοῦ μύθου, δύναται δὲ νὰ διαιρεθῇ εἰς τρεῖς κυρίας κατηγορίας: εἰς μυθιστόρημα παθῶν, εἰς μυθιστόρημα ἠθῶν καὶ



Digitized by Google

εἰς μυθιστόρημα περιπετειῶν. Ἀναλόγως πάλιν τοῦ τρόπου, καθ' ὃν διαχειρίζεται ὁ συγγραφεὺς τὸ θέμα του καὶ ἀναλόγως τοῦ θέματος καὶ τῆς ἐμπνεύσεως, τὸ μυθιστόρημα δύναται νὰ διακριθῇ εἰς ἱστορικόν, φιλοσοφικόν, πολιτικὸν καὶ κοινωνικὸν (μυθιστορήματα μὲ θέσιν), ἰδεαλιστικόν, ρεαλιστικὸν ἢ νατουραλιστικόν, ψυχολογικόν, λυρικὸν κλπ. Ἀλλ' οἱαδήποτε καὶ ἂν εἶναι ἡ εἰδικὴ μορφὴ ἑνὸς μυθιστορήματος, τὸ βάθος του εἶναι πάντοτε τὸ ἴδιον· τὸ μυθιστόρημα εἶναι πάντοτε μία ἱστορία, μία διήγησις, καὶ πάντοτε ὁ συγγραφεὺς προτίθεται νὰ κινήσῃ τὸ ἐνδιαφέρον μας πρὸς τὸ πεπρωμένον ἑνὸς ἢ περισσοτέρων προσώπων. Ἀπὸ τὴν ἄποψιν ταύτην τὸ μυθιστόρημα προσεγγίζει πρὸς τὸ δρᾶμα, διὸ καὶ πάντοτε ἓν καλὸν μυθιστόρημα δύναται νὰ μεταβληθῇ εἰς ἐπιτυχὲς δρᾶμα καὶ τἀνάπαλιν.

Ἐξ ὅλων τῶν λογοτεχνικῶν εἰδῶν τὸ μυθιστόρημα εἶναι τὸ ὀλιγώτερον ὑποτεταγμένον εἰς ἀκριβῶς καθωρισμένους κανόνας, καὶ τοῦτο ἴσως νὰ ὀφείλεται εἰς τὸ γεγονὸς ὅτι, ὅπως τὸ ἀντιλαμβανόμεθα ἡμεῖς σήμερον, δὲν ὑπῆρχε κατὰ τὴν κλασσικὴν ἀρχαιότητα. Ὁ Ἀριστοτέλης καὶ οἱ διάδοχοί του δὲν ἔλαβον τὴν εὐκαιρίαν νὰ συναγάγουν γενικοὺς κανόνας ἀφορῶντας τὸ μυθιστόρημα, καὶ οἱ νεώτεροι μυθιστοριογράφοι δὲν εἶναι ὑποχρεωμένοι, ὅπως οἱ ρήτορες, οἱ ἱστορικοὶ καὶ οἱ δραματικοὶ συγγραφεῖς, ν' ἀκολουθήσουν πιστῶς τὴν πεπατημένην ἢ νὰ διανοίξουν τολμηρῶς νέας ὁδούς. Ὁ μυθιστοριογράφος δύναται, κατὰ τὸ δοκοῦν αὐτῷ, νὰ δώσῃ ποιητικὴν χροιὰν εἰς τὴν διήγησίν του ἢ ν' ἀκολουθήσῃ τὸν τρόπον τῆς διηγήσεως τῶν ἱστορικῶν ἢ νὰ παρουσιάσῃ τὰ γεγονότα ὑπὸ τύπον ἡμερολογίου, ἀπομνημονευμάτων, ἀλληλογραφικὸν κλπ. Οὕτω ἐξηγεῖται ἡ πληθὺς καὶ ἡ ποικιλία τῶν μυθιστορημάτων, τὰ ὁποῖα ἔχουν παραγάγει ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ὅλαι αἱ λογοτεχνίαι τοῦ πεπολιτισμένου κόσμου.

*Ἀνατολικὸν μυθιστόρημα*. Τὸ μυθιστόρημα ὑφίσταται παρ' ἅπασι τοῖς λαοῖς. Ἐν Κίνᾳ χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καὶ ἐκπροσωπεῖται ἀπὸ πολυάριθμα ἔργα ἱστορικοῦ, φανταστικοῦ καὶ κοινωνικοῦ τύπου. Ἐν Ἰαπωνίᾳ παρηκολούθησε τὴν ἐξέλιξιν τοῦ κινεζικοῦ. Παρ' Ἄραψι τὸ μυθιστόρημα εἶναι σύγχρονον τῆς γενέσεως τοῦ μωαμεθανισμοῦ, τὰ δὲ θέματά του εἶναι δανεισμένα ἀποκλειστικῶς σχεδὸν ἐκ τῶν ἐθνικῶν θρύλων καὶ τῆς θρησκευτικῆς ἢ θύραθεν ἱστορίας. Οἱ Πέρσαι ἔχουν μικρὰν μυθιστορηματικὴν παραγωγήν, πτωχὴν καὶ ἐλάχιστα πρωτότυπον, ἐνῷ ἡ ἐποποιία ἀκμάζει παρ' αὐτοῖς μεγάλως.

*Ἑλληνικὸν μυθιστόρημα*. Τὸ μυθιστόρημα, ὅπως ἐννοοῦμεν τοῦτο σήμερον καὶ μὲ τὴν σημερινήν του μορφήν, ἦτο βεβαίως ἄγνωστον παρ' ἀρχαίοις Ἕλλησιν, ὑπῆρχεν ὅμως τὸ εἶδος ἢ παρεμφερές τι, ὅπερ ἐκαλεῖτο *μῦθος, διήγημα, σύνταγμα, ἐρωτικοὶ λόγοι* κλπ. καὶ ὅπερ ἐμβρυωδῶς πως περιέλαβεν ὅλα τὰ εἴδη τοῦ νεωτέρου μυθιστορήματος. Στοιχεῖα μυθιστορήματος δυνάμεθα ν' ἀνεύρωμεν ἤδη εἰς τὴν ἐπικὴν («Ἰλιὰς» καὶ «Ὀδύσσεια» τοῦ Ὁμήρου) ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν λυρικὴν ἀκόμη ποίησιν («Καλύκη», «Ραδινὴ» τοῦ Στησιχόρου), κυρίως ὅμως εἰς τὸν πεζὸν λόγον. Ὁ Ἡρόδοτος ἐπανειλημμένως παρεμβάλλει ἱστορίας ὑπὸ μορφὴν μυθιστορικῶν διηγήσεων (Γύγου, Ἰνταφέρνους, Ραμψινίτου), ὁ δὲ Πλάτων ἄλλοτε δι' ἄλλους σκοποὺς δὲν ὀκνεῖ νὰ παραθέτῃ διαφόρους μύθους ὑπὸ μορφὴν διηγημάτων (περὶ Ἀτλαντίδος, περὶ Ἀρετῆς καὶ Κακίας, περὶ Προδίκου κλπ.). Ὁ ἱστορικὸς πάλιν Κτησίας ὁ Κνίδιος ἐλάχιστα ἐξυπηρετεῖ τὴν ἱστορίαν διὰ τοῦ ἔργου του, ὅπερ εἶναι περίεργος συλλογὴ τερατολογιῶν καὶ φανταστικῶν ἱστοριῶν, τὰς ὁποίας κατὰ καιροὺς εἶχον πλάσει οἱ ἀνατολικοὶ λαοὶ καὶ τὰς ὁποίας ἰσχυρίζεται ὅτι ἤκουσεν ἢ ἔζησεν ὁ ἴδιος. Ἡ «Ἱστορία» του εἶναι εἶδος πρωτογόνου καὶ ἀφελοῦς μυθιστορήματος, ἐξ οὗ ἤντλησαν κατόπιν οἱ διάφοροι ἱστορικοὶ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ὁ συγγραφεὺς τοῦ «Βίου Ἀπολλωνίου τοῦ Τυάνεως» Φιλόστρατος καὶ πλεῖστοι τερατολόγοι συγγραφεῖς τῶν μεταγενεστέρων καὶ μεσαιωνικῶν χρόνων. Εἰς τὴν ἀρχαίαν ταύτην περίοδον τοῦ μυθιστορήματος ἐν Ἑλλάδι ἀνήκει καὶ ἡ «Κύρου παιδεία» τοῦ Ξενοφῶντος, τὸ πρῶτον κυρίως μυθιστόρημα, ὅπερ ὑπὸ ἔντεχνον (λογοτεχνικὴν) μορφὴν σκοπεῖ τὴν διατύπωσιν πολιτικῶν καὶ παιδαγωγικῶν θεωριῶν. Ἡ ἀλεξανδρινὴ ἐποχὴ ἀνοίγει νέαν περίοδον εἰς τὸ ἑλληνικὸν μυθιστόρημα. Ὁ περιπετειώδης βίος καὶ αἱ μεγαλειώδεις καταχτήσεις τοῦ Μακεδόνος κοσμοκράτορος παρέχουν ἄφθονον ἔδαφος ἐκμεταλλεύσεως καὶ δημιουργίας εἰς τὴν φαντασίαν (Ψευδοκαλλισθένης). Ἔπειτα τὸ ἀνέφικτον τῆς τελειότητος, εἰς τὴν ὁποίαν εἶχον φθάσει τὰ ἑλληνικὰ γράμματα (ποίησις, δρᾶμα, πεζὸς λόγος) κατὰ τὴν κλασσικὴν περίοδον, ὤθησε τοὺς συγγραφεῖς εἰς τὴν ἐκμετάλλευσιν νέων λογοτεχνικῶν τύπων, εἰς τοὺς ὁποίους δὲν θὰ ὑπῆρχε τόσον αὐστηρὸν μέτρον συγκρίσεως, προερχόμενον ἐκ τῶν κλασσικῶν χρόνων. Ἐκαλλιέργησαν λοιπὸν τὸ μυθιστόρημα, τοὺς «ἐρωτικοὺς λόγους», ὅπου τὰ πλάσματα τῆς φαντασίας ἠδύναντο νὰ λάβουν ποιητικήν πως μορφὴν λόγου, χωρὶς νὰ μένουν προσκεκολλημένα εἰς τοὺς κανόνας τῆς ποιητικῆς τέχνης. Κατὰ τὴν ἀλεξανδρινὴν περίοδον συνανεμίγησαν καὶ ἀνεπλάσθησαν ὑπὸ τὴν ἐπήρειαν τοῦ ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ ἡ ἑλληνικὴ καὶ ἡ ἀνατολικὴ θρησκεία, φιλολογία καὶ τέχνη, οἱ δὲ λογογράφοι *(σοφισταί)*, συμπληρώνοντες τὰς ἑλληνικὰς παραδόσεις καὶ τὰ λαογραφικὰ στοιχεῖα, τὰ ὁποῖα διετηροῦντο εἰς διαφόρους τοπικὰς διηγήσεις, δι' ἀνατολικῶν, ἔπλασαν τὸ μέγα μυθιστόρημα, ἀναλόγως τῆς συγγραφικῆς των ἱκανότητος. Βασικὸν χαρακτηριστικὸν τοῦ νέου τούτου μυθιστορικοῦ τύπου εἶναι ἡ χρησιμοποίησις τῆς φαντασίας ὡς μοναδικῆς πηγῆς.

Πατὴρ τοῦ μυθιστορήματος τούτου (*σοφιστικοῦ* καλουμένου) εἶναι, κατὰ τὸν πατριάρχην Φώτιον, ὁ Ἀντώνιος Διογένης, ὁ συγγραφεὺς τῆς ἐν περιλήψει μόνον διασωθείσης φανταστικῆς διηγήσεως: «Τῶν ὑπὲρ Θούλην ἀπίστων λόγοι ΚΔ'». Ὁ χρόνος τῆς ζωῆς τούτου ἀμφισβητεῖται· κατὰ τὸν Φώτιον ἔζη ἔτη τινὰ μετὰ τὸν Μέγαν Ἀλέξανδρον, κατὰ τοὺς νεωτέρους ὅμως φαίνεται ν' ἀνήκῃ εἰς τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα. Εἰς ὅλα τὰ σοφιστικὰ μυθιστορήματα ἡ ὑπόθεσις εἶναι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἡ αὐτή: δύο ἐρωτευμένοι ἀποχωρίζονται ἐξ ἀνθρωπίνης βίας (συνήθως δι' ἁρπαγῆς τοῦ ἑνὸς ἐξ αὐτῶν ἢ καὶ τῶν δύο ὑπὸ λῃστῶν). Κατόπιν ἄρχεται μακρὰ ἀναζήτησις ἀλλήλων ἐν μέσῳ σκληρῶν δοκιμασιῶν καὶ μεγάλων κινδύνων, παρὰ τοὺς ὁποίους οἱ ἐρῶντες κατορθώνουν νὰ μείνουν σταθεροὶ εἰς τὴν ἀγάπην των· ἡ ἐρωμένη κατορθώνει νὰ διατηρῇ πάντοτε τὴν παρθενίαν της, ὁ δὲ ἐραστὴς δὲν ὑποκύπτει εἰς τὰ θέλγητρα ἄλλης γυναικός, μέχρις οὗ λήγουν αἱ δοκιμασίαι καὶ οἱ δύο ἐρασταὶ συναντῶνται καὶ ζοῦν ἐφεξῆς εὐτυχεῖς. Τὰ μυθιστορήματα ταῦτα, στηριζόμενα ἐπὶ τῆς ἐρωτικῆς ἐλεγείας καὶ τῆς ἀγάπης τῶν περιπετειῶν, ἐξελθόντα δὲ ἐκ τῶν σχολικῶν ἀσκήσεων τῶν σοφιστικῶν σχολῶν, ἐστεροῦντο παρατηρητικότητος καὶ ἔκειντο ἐκτὸς τῆς πραγματικότητος. Παρόμοια ἦσαν τὰ ἐπίσης ἐν περιλήψει διασωθέντα «Βαβυλωνιακὰ» τοῦ ἐξελληνισμένου Συρίου Ἰαμβλίχου, γραφέντα μεταξὺ τοῦ 166 καὶ 180 μ. Χ. Κατὰ τὸν Γ' μ. Χ. πιθανῶς αἰῶνα ἐγράφησαν τὰ «Ἐφεσιακὰ» τοῦ Ξενοφῶντος τοῦ Ἐφεσίου, τὰ ὁποῖα, διασωθέντα, ἔχουν ὡς ὑπόθεσιν τοὺς ἔρωτας Ἀβροκόμα τοῦ Ἐφεσίου καὶ τῆς νεαρᾶς Ἀνθείας καὶ διακρίνονται διὰ τὸ γοργὸν καὶ ἐλαφρὸν τῆς διηγήσεως. Τὸ σπουδαιότερον ἔργον, τὸ ὁποῖον παρήγαγεν εἰς τὸ εἶδος τοῦτο ἡ ἑλληνικὴ φαντασία, εἶναι τὰ «Αἰθιοπικὰ» ἢ «Τὰ κατὰ Θεαγένην καὶ Χαρίκλειαν» τοῦ Ἡλιοδώρου, ζήσαντος πιθανῶς κατὰ τὸν Γ' αἰῶνα. Ὡς πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τὸ μυθιστόρημα τοῦτο δὲν διαφέρει τῶν προηγουμένων. Πρόκειται περὶ παρομοίας φύσεως περιπετειῶν, ἀναλήθων δηλαδὴ καὶ περιπλόκων. Ἀλλὰ ἔχει ἀξίαν ὡς πρὸς τὴν σύνθεσιν καὶ οἱ ἥρωές του δὲν στεροῦνται οὔτε ζωῆς οὔτε χαρακτῆρος. Ἄξια λόγου ἐπίσης εἶναι καὶ «Τὰ κατὰ Λευκίππην καὶ Κλειτοφῶντα» τοῦ Ἀχιλλέως Τατίου καὶ «Τὰ κατὰ Χαιρέαν καὶ Καλλιρρόην» Χαρίτωνος τοῦ Λαμψακηνοῦ. Ἀνήκουν ἀμφότερα πιθανῶς εἰς τὸν Δ' ἢ τὸν Ε' αἰῶνα καὶ ἀποτελοῦν τὰ τελευταῖα δημιουργήματα τοῦ ἑλληνικοῦ μυθιστορήματος πρὸ τῆς βυζαντινῆς περιόδου. Μεγάλης ἀξίας καὶ ἐντελῶς ἰδιότυπον εἶναι τὸ ποιμενικὸν μυθιστόρημα «Δάφνις καὶ Χλόη» τοῦ Λόγγου, τοῦ ὁποίου ἡ ἀκμὴ δύναται νὰ τοποθετηθῇ μεταξὺ τοῦ Β' καὶ τοῦ Ε' αἰῶνος. Ἡ μεγάλη ἀξία τοῦ Λόγγου ἔγκειται εἰς τὸ ὅτι παρ' αὐτῷ τὸ μυθιστόρημα ἀποβαίνει ἐξεικόνισις ἠθῶν καὶ συναισθημάτων, σχεδὸν ἄνευ σπουδαίων περιστατικῶν καὶ ἐξελίσσεται ἐν τῷ αὐτῷ τόπῳ. Οἱ ἥρωές του εἶναι ἓν παιδίον καὶ μία νεαρὰ κόρη, τὰ ὁποῖα ἀναπτύσσονται ὑπὸ τὰ ὄμματα τοῦ ἀναγνώστου καὶ μεταξὺ τῶν ὁποίων γεννᾶται ἔρως συνειδητοποιούμενος σὺν τῷ χρόνῳ. Αἱ ἀγροτικαὶ περιγραφαὶ εἶναι χαρίεσσαι, ἡ δὲ μελέτη τῶν συναισθημάτων ἔχει γίνει μετὰ λεπτότητος.

Τὴν παράδοσιν τοῦ ἀλεξανδρινοῦ σοφιστικοῦ μυθιστορήματος ἐσυνέχισαν, μὲ μικρὰν διακοπήν, οἱ Βυζαντινοί. Κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ Ζ' αἰῶνος ἐνεφανίσθη τὸ μυθιστόρημα: «Βίος Βαρλαὰμ καὶ Ἰωσαφάτ», ὅπερ παρεκκλίνει ἀπὸ τοῦ σοφιστικοῦ τύπου. Βραδύτερον οἱ Βυζαντινοὶ λόγιοι ἀπομιμοῦνται ἐξ ὁλοκλήρου τὸ σοφιστικὸν μυθιστόρημα μὲ ὅλα του τὰ χαρακτηριστικά: τὴν προτίμησιν διὰ τὰς δραματικὰς περιπετείας, τὸ ὑπερφυσικόν, τὸ φανταστικόν, τὴν φλύαρον καὶ στομφώδη περιγραφήν, τὴν δεισιδαιμονίαν, τὰ θαυμαστὰ γεγονότα κλπ. Τὰ γνωρίσματα ταῦτα παρουσιάζονται περισσότερον εἰς ἐκείνους ἐκ τῶν Βυζαντινῶν μυθιστοριογράφων, οἱ ὁποῖοι ἔγραψαν εἰς ἀρχαίαν γλῶσσαν, ὡς ὁ Ἰ. Πρόδρομος, ὁ Εὐστάθιος ἢ Εὐμάθειος, ὁ Νικήτας ὁ Εὐγενειανός, ὁ Κωνσταντῖνος Μανασσῆς κλπ. Ἀλλὰ καὶ οἱ γράψαντες εἰς λαϊκὴν γλῶσσαν εἶναι ἁπλοῖ μιμηταὶ τῶν σοφιστικῶν μυθιστορημάτων. Οἱ παλαιότεροι ἀναμιγνύουν ἀρχαῖα καὶ ἀνατολικὰ στοιχεῖα, χριστιανικὰ καὶ εἰδωλολατρικά, ἄνευ οὐδεμιᾶς δυσκολίας. Οἱ νεώτεροι ἐμφανίζουν ἐπίδρασιν τοῦ δυτικοῦ πνεύματος, ἡ ὁποία παρουσιάσθη ἐν τῇ βυζαντινῇ αὐτοκρατορίᾳ μετὰ τὰς σταυροφορίας. Ὅλα τὰ μυθιστορήματα τῆς βυζαντινῆς ἐποχῆς ἔχουν ρωμαντικόν τινα χαρακτῆρα καὶ ἱκανὰ στοιχεῖα λαϊκῆς παραδόσεως. Εἰς τὴν πρώτην κατηγορίαν δύναται νὰ καταταγῇ τὸ μυθιστορηματικὸν ἔπος τοῦ Διγενῆ Ἀκρίτα καὶ τὰ μυθιστορήματα: «Τὰ κατὰ Καλλίμαχον καὶ Χρυσορρόην», «Βίλθανδρος καὶ Χρυσάντζα», «Λίβιστρος καὶ Ροδάμνη» κλπ. Εἰς τὴν δευτέραν κατηγορίαν, εἰς ἣν ἀνήκουν μυθιστορήματα προελθόντα ἐκ διασκευῆς παρομοίων ἔργων τῆς δυτικῆς λογοτεχνίας, δύνανται νὰ καταταγῶσι τὰ «Ἰμπέριος καὶ Μαργαρώνα», «Φλώριος καὶ Πλατζιαφλώρη», «Ὁ πρέσβυς ἱππότης», «Ὁ πόλεμος τῆς Τρωάδος» κλπ. Ἰδιότυπον καὶ πρωτότυπον εἰς τὸ εἶδός του μυθιστορηματικὸν ποίημα εἶναι τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον: «Λόγος παρηγορητικὸς περὶ εὐτυχίας καὶ δυστυχίας» ἄνευ ἀναλόγου εἰς οὐδεμίαν ἐκ τῶν ξένων λογοτεχνιῶν.

[Περὶ τοῦ νεοελληνικοῦ μυθιστορήματος βλ. λ. *Ἑλλὰς [Λογοτ.]*.]

*Ρωμαϊκὸν μυθιστόρημα*. Ἡ ρωμαϊκὴ λογοτεχνία δὲν ἔχει μυθιστορήματα. Ἓν ἐκ τῶν ὀλίγων πρωτοτύπων δημιουργημάτων αὐτῆς εἶναι τὸ σατιρικὸν μυθιστόρημα τοῦ Πετρωνίου ὑπὸ τὸν τίτλον «Satiricon», τὸ ὁποῖον ἀνήκει εἰς τὰ μέσα τοῦ Α' μ. Χ. αἰῶνος. Ἐνδιαφέρουσαι διὰ τὴν σπουδὴν τῶν ἠθῶν τῆς ἐποχῆς (Β' μ. Χ.) αἰὼν εἶναι αἱ «Μεταμορφώσεις» τοῦ Ἀπουληΐου, τὰς ὁποίας κατέστησαν περιφήμους τὰ παρεμβληθέντα διηγήματα τοῦ «Χρυσοῦ ὄνου» καὶ τῆς «Ψυχῆς».

*Γαλλικὸν μυθιστόρημα*. Ἀπὸ τοῦ ΙΒ' μέχρι τοῦ ΙΕ' αἰῶνος τὴν μυθιστορηματικὴν τέχνην ἐν Γαλλίᾳ ἀντιπροσωπεύουν αἱ ἐν πεζῷ λόγῳ διηγήσεις τοῦ ἀρθουρικοῦ κύκλου, αἱ ὁποῖαι ἐλήφθησαν ἐκ παλαιοτέρων συναφῶν ποιημάτων. Μόλις κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα ἀναφαίνεται τὸ πρῶτον εἰς πεζὸν μυθιστόρημα: «Le petit Jehan de Saintré» τοῦ La Salle. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, ἂν ἐξαιρέσωμεν τὸν «Gargantua» τοῦ Ραμπελαί, οὐδὲν τὸ ἄξιον λόγου παρήχθη εἰς τὸ εἶδος τοῦτο. Κατόπιν ἔρχονται αἱ «Aventures du baron de Foeneste» τοῦ A. d'Aubigné, αἵτινες φαινομενικῶς μὲν εἶναι μυθιστόρημα, οὐσιαστικῶς δὲ πολιτικὸς λίβελλος. Βραδύτερον ἡ ἀγάπη τῆς ποιμενικῆς ποιήσεως εἰσήχθη ἐξ Ἰταλίας εἰς τὴν αὐλὴν Ἑρρίκου τοῦ Δ' τῆς Γαλλίας καὶ ἐξ αὐτῆς προῆλθεν ἡ «Astrée» τοῦ d'Urfé (1610), ὅπου τὰ πρόβατα ἀντιπροσωπεύουν τὰς ἑταίρας τοῦ βασιλικοῦ περιβάλλοντος. Τὸ βιβλίον τοῦτο ἐγκαινιάζει τὴν ἀτελείωτον σειρὰν τῶν μυθιστορημάτων τοῦ ΙΖ' αἰῶνος καὶ διαδίδει τὴν μόδαν τῆς κατηγορίας ἐκείνης τῶν μυθιστορημάτων, εἰς τὰ ὁποῖα ὑπὸ ξένον ἔνδυμα ἀναγνωρίζει τις πρόσωπα γνωστὰ τοῦ περιβάλλοντός του. Τοιαῦτα εἶναι ἡ «Polexandre» τοῦ Gomberville, ὁ «Grand Cyrus» καὶ ἡ «Clélie» τῆς M. de Scudery, ὁ «Faramond» καὶ ἡ «Cléopâtre» τοῦ La Calprenède καὶ πλεῖστα ἄλλα, τὰ ὁποῖα ἀπεθαύμαζεν ἡ κυρία de Sévigné καὶ ὅλοι οἱ σύγχρονοι. Τόση ἦτο ἡ ἐπιτυχία τῶν ὀκτατόμων τούτων μυθιστορημάτων, ὥστε ἀμέσως τὰ διεσκεύαζον καὶ εἰς τραγῳδίας μὲ ἐξησφαλισμένην ἐπιτυχίαν, ὡς: ὁ «Mort de Cyrus» τοῦ Quinault καὶ πρὸ πάντων ὁ «Timocrate» τοῦ Th. Corneille. Ματαίως οἱ λεπταίσθητοι, ὡς ὁ Ch. Sorel, συγγραφεὺς τοῦ «Berger extravagant» καὶ ὁ Boileau, συγγραφεὺς τοῦ χαριτωμένου: «Dialogue sur les héros de romans», κατεδείκνυον τὴν ἀνουσιότητα τῶν κατασκευασμάτων τούτων. Μάτην ὁ Scarron μὲ τὸ «Roman comique», ὁ Furetière μὲ τὸ «Roman bourgeois» καὶ ἡ κυρία de La Fayette μὲ τὴν «Princesse de Clèves» καὶ τὴν «Zayde» παρέσχον τὰ πρότυπα ἄλλου μυθιστορικοῦ εἴδους. Παρ' ὅλα τὰ ἐλαττώματά των, τὰ ἀνούσια μυθιστορήματα ἤρεσκον καὶ κατὰ τὴν βασιλείαν Λουδοβίκου τοῦ ΙΔ', ὁπότε εἶδον τὸ φῶς τὸ μυθολογικὸν μυθιστόρημα τοῦ La Fontaine: «Les amours de Psyché» καὶ τὸ μέγα παιδαγωγικὸν μυθιστόρημα τοῦ Fénelon: «Les aventures de Télémaque».

Ὁ ΙΗ' αἰών, τόσον διάφορος τοῦ προηγουμένου ἀπὸ πολλῶν ἀπόψεων, ἐδανείσθη παρ' αὐτοῦ καὶ τὸ μυθιστόρημα. Ὁ Lesage, ὅστις εἶχεν ἀρχίσει νὰ μεταφράζῃ τὸν «Δὸν Κιχώτην» τοῦ Θερβάντες, κατέστη διάσημος διὰ τῆς ἐκδόσεως δύο μυθιστορημάτων: τοῦ «Le Diable boiteux» καὶ τοῦ «Gil Blas», ἐμπνευσμένων ἐκ τοῦ ἱσπανικοῦ μυθιστορήματος. Ὁ Montesquieu ἤρχισε τὰς φιλοσοφικάς του ἐπιθέσεις μὲ τὸ σατιρικὸν μυθιστόρημα: «Lettres persanes» καὶ σχεδὸν ὅλοι οἱ μεγάλοι συγγραφεῖς τῆς ἐποχῆς Λουδοβίκου τοῦ ΙΕ' συνέγραψαν μυθιστορήματα. Ὁ Voltaire ἔδωσε τὰ «L'Ingénu», «Candide», «Zadig» κ. ἄ., ὁ Rousseau ἐξέδωκε τὴν «Nouvelle Héloïse» παθητικὸν μυθιστόρημα ὑπὸ ἐπιστολιμαίαν μορφήν, ὅπερ μὲ τὴν ἐξεικόνισιν τῶν ὀδυνῶν τῆς καρδίας καὶ τὴν βαθεῖαν ἀγάπην τῆς φύσεως ἤσκησε μεγίστην ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ γαλλικοῦ μυθιστορήματος. Ὁ Diderot, ἐμπνευσθεὶς ἐκ τοῦ ἀγγλικοῦ οἰκογενειακοῦ μυθιστορήματος, συνέγραψε τά: «Jacques le fataliste», «La religieuse», «Le neveu de Rameau»· ὁ Marmontel κατέστη διάσημος χάρις εἰς τὸν «Belisaire» καὶ τοὺς «Incas». Ὁ ἀββᾶς Prevost, ἀφοῦ συνέγραψεν ἑκατὸν τόμους, οἱ ὁποῖοι δὲν ἔσχον ἀναγνώστας, εὗρε τέλος τὴν ὁδὸν τῆς δόξης παρεμβαλὼν εἰς τὰ «Mémoires d'un homme

Digitized by Google

de qualité», τὸ μυθιστόρημα: «Manon Lescaut». Ὁ Bernardin de Saint-Pierre, τέλος, ἐξ ἐπιδράσεως τοῦ Rousseau, παρενέθεσεν εἰς τὰς «Études de la nature» τὸ μικρὸν ἀριστούργημα, ὅπερ καλεῖται «Paul et Virginie». Παραλλήλως πρὸς τοὺς ἐνδόξους τούτους συγγραφεῖς ἄλλοι ἐπεζήτησαν τὴν δόξαν καὶ τὴν ἐπιτυχίαν δι' ὀλιγώτερον ἐντίμων μέσων, δημιουργήσαντες ἐλευθεριάζοντα μυθιστορήματα, ὡς ὁ Crébillon υἱός, ὁ Louvet κ. ἄ.

Ὁ ΙΘ' αἰὼν δύναται νὰ ὀνομασθῇ αἰὼν τοῦ μυθιστορήματος. Ὁ Chateaubriand μὲ τὴν «Atala», τὸν «René», τοὺς «Martyrs», τοὺς «Natchez», τὸν «Dernier des Abencérages» καὶ ἡ κυρία de Staël, προητοίμασαν τὸν ρωμαντισμόν, τὸν ὁποῖον ἐδόξασε καὶ ἀνήγαγεν εἰς φιλολογικὴν θεωρίαν ὁ V. Hugo. Ὁ A. de Vigny συνθέτει τὸ πρῶτον ἄξιον λόγου ἱστορικὸν μυθιστόρημα, τὸ «Cinq-Mars». Ὁ Mérimée δίδει τὸν τελειότερον τύπον τῆς νουβέλλας. Ὁ Balzac, ἐμπεποτισμένος ἀπὸ τὸν ρωμαντισμόν, δημιουργεῖ τὴν «Comédie humaine», διακρινομένην διὰ τὸν βαθύτατον ρεαλισμὸν καὶ τὴν σχεδὸν προφητικὴν ψυχολογίαν. Ταυτοχρόνως ὁ A. Dumas πατὴρ καὶ ὁ E. Sue κυκλοφοροῦν τὰ μυθιστορήματα περιπετειῶν, τὰ ὁποῖα εὑρίσκουν μέγα ἀναγνωστικὸν κοινόν. Ὁ Flaubert γράφει ἓν ἐκ τῶν καλυτέρων ρεαλιστικῶν μυθιστορημάτων τὴν «Madame Bovary» (1858). Τὴν ὁδὸν ταύτην ἠκολούθησαν οἱ ἀδελφοὶ Goncourt καὶ ὁ Zola, ὠθήσαντες αὐτὴν μέχρι τοῦ νατουραλισμοῦ, τοῦ ὁποίου ὁ Guy de Maupassant δίδει τοὺς κλασσικωτέρους τύπους. Τὸ ἰδεαλιστικὸν μυθιστόρημα ἐξυψώθη σημαντικῶς διὰ τῶν ἔργων τῆς G. Sand, ἡ ὁποία ἐπελήφθη καὶ τοῦ κοινωνικοῦ μυθιστορήματος. Ὁ O. Feuillet, ἀκολουθῶν ἄλλην ὁδόν, ἐδημοσίευσεν ἀριστοκρατικὰ καὶ κοσμικὰ μυθιστορήματα, ὁ δὲ G. Ohnet μυθιστορήματα ἀηδῶς ἀστικά, τὰ ὁποῖα ἐν τούτοις ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν. Ὁ P. Bourget καὶ ὁ M. Prevost, ἀντιδρῶντες κατὰ τοῦ νατουραλισμοῦ, ἐπεδόθησαν εἰς ψυχολογικὰς ἀναλύσεις κλπ.

Κατὰ τὸν Κ' αἰῶνα ἡ Γαλλία ἔδωσε πλείστους μυθιστοριογράφους, οἱ ὁποῖοι ἐκαλλιέργησαν ἐπιτυχῶς ὅλα τὰ εἴδη τοῦ μυθιστορήματος, ἀπὸ τοῦ ψυχαναλυτικοῦ μέχρι τοῦ μυθιστορήματος περιπετειῶν. Σπουδαιότεροι ἐξ αὐτῶν εἶναι ὁ M. Proust, ὁ R. Rollan, ὁ A. Gide, ὁ J. Giraudoux, ὁ P. Mac Orlan, ὁ G. Duhamel, ὁ M. Barrès, ὁ F. Mauriac, ὁ A. Morois, ὁ P. Benoit, ὁ F. Carco, ὁ P. Morand, ὁ J. Benda, ὁ M. Decobra, ὁ H. Barbusse κλπ.

*Ἰταλικὸν μυθιστόρημα.* Ἐν Ἰταλίᾳ τὸ μυθιστόρημα δύναται ν' ἀναχθῇ εἰς τὸν ΙΓ' αἰῶνα, ὁπότε ἀνευρίσκονται μεταφράσεις εἰς ἰταλικὸν πεζὸν λόγον μυθιστορημάτων περιπετειῶν. Τῷ 1340 ὁ Βοκκάκιος συνέγραψε τὸ μακρὸν μυθιστόρημα: «Filocolo», τῷ 1341 τὴν εἰδυλλιακὴν καὶ ἀλληγορικὴν ἱστορίαν «Ameto», καὶ κατόπιν τὴν «Fiammetta». Κατὰ τὸν ΙΕ' αἰῶνα εἶδε τὸ φῶς τὸ «Il Paradiso degli Alberti» τοῦ G. da Prato, παραμεῖναν ἡμιτελές, καὶ τὸ ποιμενικὸν μυθιστόρημα «Arcadia» (1489) τοῦ Sannazaro, τὸ ὁποῖον ἔσχε πολλοὺς μιμητάς. Πολυπληθέστερα εἶναι τὰ μυθιστορήματα κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα· εἶναι ἐρωτικὰ μυθιστορήματα, τινὰ πολὺ ἐλαφρά, ὡς τὰ «Cortigiano disperato» τοῦ Pascoli, «Peregrino» τοῦ Caviceo, «Filena» τοῦ Franco, ἢ ἠθοπλαστικὰ μυθιστορήματα ὡς τά: «Metamorfosi del Virtuoso» τοῦ Selva, «Brancaleone» τοῦ Besozzi, «Compassionevoli avenimenti di Erasto» ἀνωνύμου κλπ. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα τὸ μυθιστόρημα εἶναι τὸ φιλολογικὸν εἶδος τοῦ συρμοῦ. Ἓν ἐκ τῶν καλυτέρων μυθιστορημάτων τῆς ἐποχῆς ταύτης εἶναι τὸ «Calloandro» τοῦ Marini, κατὰ μίμησιν γαλλικήν. Ἄλλοι συγγραφεῖς ἐπιζητοῦν ν' ἀντιδράσουν εἰς τὴν γαλλικὴν μίμησιν καὶ γράφουν μυθιστορήματα ἠθῶν (Brusoni), ἠθοπλαστικὰ ὡς τὸ «Principe Altomiro» τοῦ Mancini, ἱστορικά, πολιτικὰ (Pallavicini). Οἱ Ἰταλοὶ συγγραφεῖς τοῦ ΙΖ' καὶ τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἐλησμονήθησαν καὶ πρέπει νὰ φθάσωμεν εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος, εἰς τὸ 1802, διὰ ν' ἀνεύρωμεν ἓν καλὸν μυθιστόρημα (μίμησιν, ἄλλωστε, τοῦ «Βερθέρου») τὸ «Ultime lettere di Jacopo Ortis» τοῦ U. Foscolo. Τὸ ἱστορικὸν μυθιστόρημα, τὸ ὁποῖον ἔσχε τόσην ἐπιτυχίαν μὲ τὸν W. Scott, ἐνέπνευσε τὸ «Promessi Sposi» τοῦ Manzoni (1827), ὅπερ ἔτυχε πολλῶν μιμητῶν. Μεταξὺ τῶν σπουδαιοτέρων Ἰταλῶν μυθιστοριογράφων τοῦ ΙΘ' καὶ τοῦ Κ' αἰῶνος συγκαταλέγονται ὁ de Amicis, ὁ d'Annunzio, ὁ G. da Verona κλπ.

*Ἱσπανικὸν καὶ πορτογαλικὸν μυθιστόρημα.* Ἐν Ἱσπανίᾳ καὶ Πορτογαλίᾳ οἱ συγγραφεῖς ἤρχισαν κατὰ τὸν ΙΔ' αἰῶνα νὰ ἀντλοῦν ἀπὸ τὰ γαλλικὰ μυθιστορήματα καὶ ἀπὸ τὰς κλασσικὰς καὶ χριστιανικὰς παραδόσεις. Τὸ «El conde Lucanor» τοῦ ἰνφάντου don Juan Manuel εἶναι ἡ πρώτη ἐκ τῶν συλλογῶν διηγημάτων, ἡ ὁποία ἔχει κάποιαν πρωτοτυπίαν. Εἰς τὴν Πορτογαλίαν ὀφείλεται τὸ περίφημον μυθιστόρημα τῆς ἱπποσύνης «Amadis» (ΙΔ' αἰών), ὅπερ πολὺ ταχέως διεδόθη καὶ εἰς τὴν Ἱσπανίαν καὶ περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος (1490), ὑπὸ νεωτεριστικωτέραν καὶ μᾶλλον τελειοποιημένην μορφήν, ἔδωκεν ἀφορμὴν εἰς τὴν γένεσιν τῶν ἱπποτικῶν μυθιστορημάτων, τῶν ὁποίων ἡ προτίμησις ἐκράτησεν ἐπὶ ἕνα αἰῶνα. Τὸ καλύτερον ἐκ τῶν μυθιστορημάτων τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὸ πορτογαλικόν: «Palmeirim de Inglaterra» (1545), καὶ τὸ καταλωνικόν: «Tirant lo Blanch» (1460). Κατὰ τὸν ΙΕ' ἐπίσης αἰῶνα, συγγραφεῖς τινες ἐπεχείρησαν νὰ συγγράψουν καὶ συναισθηματικὰ μυθιστορήματα, παραλλήλως πρὸς τὰ μυθιστορήματα περιπετειῶν. Τοιοῦτοι εἶναι ὁ Rod. del Padron μὲ τὸ ἀλληγορικόν του «Siervo libre de Amor» (1450), ὁ D. de San Pedro μὲ τὸ «Carcel de Amor», ὁ A. Piccolomini μὲ τὴν νουβέλλαν «Eurialo y Lucrecia». Κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος εἰσέβαλον εἰς τὴν Ἱσπανίαν καὶ Πορτογαλίαν τὰ ποιμενικὰ μυθιστορήματα. Τὸ καλύτερον ἐκ τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὸ «Merina e Moça» τοῦ Πορτογάλου B. Ribeiro, μετὰ τὸ ὁποῖον ἐνεφανίσθη ἡ «Diana» τοῦ J. de Montemor (πορτογαλιστί). Μετὰ τὰ ἱπποτικὰ καὶ ποιμενικὰ μυθιστορήματα, ἡ Ἱσπανία παρήγαγε πρωτότυπον εἶδος μυθιστορημάτων, τὰ ὁποῖα, καλούμενα picaresques, παρουσιάζουν ζωηρούς, φαιδροὺς καὶ ρεαλιστικοὺς ἀπατεῶνας καὶ ἐπαίτας ἥρωας. Τὰ σπουδαιότερα ἔργα τῆς κατηγορίας ταύτης εἶναι: «Lazarillo de Tormes» τοῦ Mendoza (1553), «Gurman de Alfarache» τοῦ M. Aleman (1599) «Marcos de Obregon» κλπ. Τῷ 1605 εἶδε τὸ φῶς ὁ «Δὸν Κιχώτης» τοῦ Θερβαντές, τὸ μεγαλύτερον καὶ σπουδαιότερον μυθιστόρημα τῆς ἱσπανικῆς φιλολογίας. Κατὰ τὸν ΙΗ' καὶ τὸν ΙΘ' αἰῶνα οἱ Ἱσπανοὶ καὶ οἱ Πορτογάλοι ἐμιμοῦντο τοὺς Γάλλους καὶ τοὺς Ἄγγλους, κατὰ δὲ τὸν Κ' αἰῶνα εἶδον τὸ φῶς τὰ σπουδαιότατα καὶ ἰδιότυπα μυθιστορήματα τοῦ Ἱσπανοῦ B. Ibanez.

*Ἀγγλικὸν μυθιστόρημα.* Ἐν Ἀγγλίᾳ τὸ μυθιστόρημα χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ ΙΕ' αἰῶνος καὶ προέρχεται ἀπὸ τὰ ἔμμετρα ἱπποτικὰ ποιήματα, ὡς αἱ «Histories of King Arthur» (1849) τοῦ Malory. Μετὰ τὴν ἡρωϊκὴν ταύτην λογοτεχνίαν ἀνευρίσκομεν, κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, ποιμενικὰ μυθιστορήματα, ὡς ἡ «Arcadia» τοῦ Sidney, καὶ μυθιστορήματα περιπετειῶν, ὡς ὁ «Unfortunate traveller» τοῦ Nash. Ταυτοχρόνως ἐμφανίζεται καὶ μία καθαρῶς ἐθνικὴ παραγωγή, ἡ περιγραφὴ θαλασσίων ταξιδίων («Voyages» τοῦ Hakluyt, τῷ 1582), ἡ ὁποία ἐνεποίησε μεγάλην αἴσθησιν ἐν Ἀγγλίᾳ. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα ἀκμάζουν κυρίως οἱ δοκιμιογράφοι, οἱ ὁποῖοι τελειοποιοῦν τὴν ἀγγλικὴν λογοτεχνίαν κατὰ γαλλικὰ πρότυπα. Τὸν ἑπόμενον αἰῶνα ἀναφαίνονται αἱ ἱστορίαι τῶν θαλασσοπόρων ὡς τὸν «Robinson Crusoe» τοῦ D. Defoe (1719), ὅστις ἐνέπνευσε πλείστας περιγραφὰς τῆς ζωῆς τῶν θαλασσῶν, καὶ τὰ αἰσθηματικὰ μυθιστορήματα μὲ τὴν «Pamela» τοῦ Richardson (1741). Πρὸς ἀντίδρασιν εἰς τὸ εἶδος τοῦτο ὁ Fielding εἰσήγαγε τὸ οὑμοριστικὸν μυθιστόρημα μὲ τὸν «Joseph Andrews» (1741) καὶ τὸν «Tom Jones» (1749). Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΗ' αἰῶνος ἐνεφανίσθη νέα τάσις μὲ τὸ «Castle of Otranto» (1765) τοῦ Walpole, ἱπποτικὸν τρομακτικὸν μυθιστόρημα. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ὁ W. Scott ἐδημιούργησε τὸ ἱστορικὸν μυθιστόρημα· τὸ πρῶτόν του βιβλίον: «Waverley», χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 1814. Ἄλλο ἐθνικὸν εἶδος εἶναι τὸ μυθιστόρημα τῆς ἀστικῆς ζωῆς, τοῦ ὁποίου δημιουργὸς εἶναι ὁ Goldsmith μὲ τὸν «Vicar of Wakefield» (1766) καὶ κύριος ἐκπρόσωπος ὁ Dickens, τοῦ ὁποίου τὸ πρῶτον μυθιστόρημα εἶναι ὁ «Oliver Twist» (1838). Ὁ W. Scott καὶ ὁ Dickens ἔσχον πολυπληθεῖς συνεχιστάς, σπουδαιότερος τῶν ὁποίων εἶναι ὁ Bulwer καὶ ἡ G. Eliot. Ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων Ἄγγλων μυθιστοριογράφων τῶν νεωτέρων χρόνων εἶναι ὁ H. Ward, ὁ O. Shreiner, ὁ R. Kipling, ὁ Wels, ὁ Wallace κλπ.

*Γερμανικὸν μυθιστόρημα.* Ἐν Γερμανίᾳ τὸ καθ' ἑαυτὸ μυθιστόρημα χρονολογεῖται ἀπὸ τῶν τελευταίων χρόνων τοῦ μεσαιῶνος, συνιστάμενον εἰς πεζὴν διασκευὴν θρύλων ᾀδομένων εἰς ἐπικὰ ποιήματα. Κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα τὰ τρία κυριώτερα θέματα ἦσαν: «Eulenspiegel», «Faust» καὶ «Die Schildbürger». Ὁ πρῶτος Γερμανὸς συγγραφεύς, τοῦ ὁποίου τὰ μυθιστορήματα δεικνύουν ποιάν τινα πρωτοτυπίαν, εἶναι ὁ J. Wickram, ἀλλ' ἐπὶ μακρὸν ἀκόμη ἡ γερμανικὴ λογοτεχνία δανείζεται ἀπὸ τὰ ξένα ἱπποτικὰ ἢ ποιμενικὰ μυθιστορήματα. Κατὰ τὸν ΙΖ' αἰῶνα, παραλλήλως πρὸς τὰ φανταστικὰ μυθιστορήματα, ἀρέσκουν καὶ τὰ οὑμοριστικά. Τὸ πρωτοτυπώτερον τῆς ἐποχῆς ταύτης εἶναι ὁ «Simplicissimus» τοῦ Grimmelshausen, ὅστις ἔσχε πολυαρίθμους μιμητάς. Περὶ τὸ τέλος τοῦ αἰῶνος τούτου γεννῶνται ἐν ἀφθονίᾳ ἡρωϊκὰ καὶ ἐρωτικὰ μυθιστορήματα, ὡς τὰ τοῦ A. Ulrich von Braunschweig, ὁ «Arminius» τοῦ «Lohenstein, τὸ «Asiatische Banise» τοῦ Ziegler κλπ. Τῆς αὐτῆς ἐποχῆς εἶναι καὶ τὰ σατιρικὰ μυθιστορήματα τοῦ Hunold καὶ τοῦ Ch. Reuter. Κατὰ τὸν ἑπόμενον αἰῶνα ἀφθονοῦν οἱ μιμηταὶ τῶν ἀγγλικῶν μυθιστορημάτων καὶ ἰδίᾳ τοῦ «Robinson Crusoe» (ὡς τὸ «Insel Felsenburg» τοῦ Schnabel). Ὁ Hermes, ὁ Hippel, ὁ Thummel, ὁ Nicolai κλπ. ἐμπνέονται ἐκ τῆς αἰσθηματικότητος τοῦ Richardson ἢ τοῦ χιοῦμορ τοῦ Fielding. Ἀκολουθεῖ κατόπιν ἡ μεγάλη ἐποχὴ τῆς γερμανικῆς λογοτεχνίας μὲ τὰ ἀριστουργήματα τοῦ Wieland («Agathon» καὶ «Abderiten») τοῦ Goethe («Werther» «Wilhelm Meister», «Wahlverwandtschaften») καὶ τὰ μυθιστορήματα τοῦ Klinger, τοῦ Heinse, τοῦ F. H. Jacobi κλπ. Εἰς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων ποιητῶν τῆς ἐποχῆς ταύτης ἐχρησιμοποίησε σχεδὸν μυθιστορηματικὴν μορφὴν εἰς τὰ ἔργα του. Ὁ γερμανικὸς ρωμαντισμὸς παρήγαγε τὸν Novalis καὶ τὸν Tick. Ἐκ τῶν νεωτέρων ἐκπροσώπων τοῦ μυθιστορήματος ἐν Γερμανίᾳ σπουδαιότεροι εἶναι: ὁ G. Keller, ὁ P. Heyse, ὁ N. Alexis, ὁ Ebers, ὁ Auerbach, ὁ Th. Mann, ὁ Remark κ. ἄ.

*Ρωσικὸν κλπ. μυθιστόρημα.* Ἡ ρωσικὴ λογοτεχνία κατέλαβεν ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ παγκοσμίῳ λογοτεχνίᾳ ἀπὸ τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Σπουδαιότεροι ἐκπρόσωποι τοῦ ρωσικοῦ μυθιστορήματος εἶναι ὁ Γκόγκολ, ὁ Χέρτζεν, ὁ Τουργκένιεφ, ὁ Γκοντσάρωφ, ὁ Ντοστογιέφσκι, ὁ Τολστόϊ, ὁ Γκόρκι, ὁ Ἀντρέγιεφ, σχόντες πολλοὺς μαθητάς, ὡς τὸν Πισσέμσκι, τὸν Γκριγκόροβιτς, τὸν Ντρουσίνιν, τὸν Σολλογκούμ, τὴν Σβοστσινσκάγια κλπ. Ἐκ τῶν νεωτέρων γνωστοὶ εἶναι ὁ Κιουπρίν, ὁ Μποῦνιν, ὁ Ἀρτζιμπάτσεφ κλπ.

Ἡ Πολωνία ἐπίσης κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ' αἰῶνος ἀνέδειξεν ἐνδόξους μυθιστοριογράφους. Τὰ πρῶτα πολωνικὰ μυθιστορήματα εἶναι μιμήσεις τῶν ἱστορικῶν μυθιστορημάτων τοῦ W. Scott. Τοιαῦτα εἶναι τὰ τῶν Νίμτσεβιτς, Μπερνάτοβιτς, Σκάρμπεκ. Πρωτοτυπώτερα εἶναι τὰ μυθιστορήματα τῶν Κρασζέφσκι, Γκραμπόφσκι, Ζαϊκόφσκι, Κορτσενόφσκι, Κασκόφσκι, Μιλκόφσκι. Κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους μεγίστην ἐπιτυχίαν ἔσχον τὰ μυθιστορήματα τοῦ Σέγκιεβιτς, τοῦ ὁποίου τὸ «Quo vadis?» μετεφράσθη εἰς ὅλας τὰς γλώσσας τοῦ κόσμου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Chassang*, Histoire du roman et de ses rapports avec l'histoire dans l'antiquité grecque et latine (Paris 1862).—*E. Rohde*, Der griechische Roman und seine Vorlaeufer (Leipzig 1876). — *Morillot*, Le roman en France depuis 1610 jusqu' à nos jours (Paris 1893). — *Wolff*, Geschichte des Romans (1876).— *Spielhagen*, Beiträge zur Theorie und Technik des Romans (Leipzig 1883). — *H. Gerschmann*, Studie über den modernen Roman (Königsberg 1894). Θ. ΠΑΠΑΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΥ

**μυθιστορηματικός,** —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς μυθιστόρημα, ὁ ἔχων ὁμοιότητα πρὸς μυθιστόρημα: «*μυθιστορηματικαὶ περιπέτειαι*».

**μυθιστορία** (ἡ)· ἄλλως *μυθιστόρημα* (βλ. λ.).

**μυθιστοριογραφία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μυθιστοριογράφου, ἡ τέχνη τοῦ γράφειν μυθιστορίας.

**μυθιστοριογράφος** (ὁ, ἡ)· ὁ γράφων μυθιστορίας.

**μυθιστοριογραφῶ** (—έω)· εἶμαι μυθιστοριογράφος, ἀσχολοῦμαι εἰς τὴν μυθιστοριογραφίαν.

**μυθογραφία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μυθογράφου, τὸ νὰ συλλέγῃ τις καὶ καταγράφῃ μύθους || μυθοπλαστία, σύνθεσις μύθων.

**μυθογραφικός,** —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυθογραφίαν.

**μυθογράφος** (ὁ, ἡ)· ὁ συλλέγων καὶ καταγράφων μύθους, καὶ καθόλου ὁ περὶ τὴν ἑρμηνείαν καὶ μελέτην τῶν μύθων ἀσχολούμενος: «οἱ Ἕλληνες μυθογράφοι» || ὁ πλάττων, ὁ συνθέτων μύθους.

—[*Ἱστορ. Λογ.*] Καλοῦνται *μυθογράφοι* οἱ συγγραφεῖς οἱ ἀσχοληθέντες κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους περὶ τὴν ἑρμηνείαν τῶν περὶ θεῶν ἢ ἡμιθέων μύθων, ἢ περὶ τὴν περισυλλογὴν καὶ καταγραφὴν αὐτῶν. Τοιοῦτοι ἦσαν ὁ Εὐήμερος ὁ Μιλήσιος, ὁ Παλαίφατος, ὁ Ἀπολλόδωρος, ὁ ἐν Ρώμῃ γραμματικὸς Κόνων, ὁ Ἡράκλειτος γράψας «Ὁμηρικὰς ἀλληγορίας» καὶ «Περὶ ἀπίστων», ὁ στωϊκὸς Λούκιος Ἀνναῖος Κορνοῦτος γράψας: «Ἐπιδρομὴν τῶν κατὰ τὴν ἑλληνικὴν θεολογίαν παραδεδομένων», ὁ Ἀντωνῖνος Λιβεράλις, ἀκμάσας κατὰ τοὺς χρόνους τῶν Ἀντωνίνων, συγγραφεὺς «Μεταμορφώσεων συναγωγῆς» εἰς 41 κεφάλαια, Διονύσιος ὁ Σκυτοβραχίων, ὅστις μετὰ μεγάλης πολυμαθείας ἰδίως περισυνήγαγε πάσας τὰς παραλλαγὰς τῶν μύθων, τὰς ἀναφερομένας ὑπὸ τῶν ἀρχαίων συγγραφέων, ποιητῶν καὶ λογογράφων, ἐξετάσας πᾶσαν τὴν εὐρυτάτην περιοχὴν τῶν περὶ θεῶν καὶ ἡρώων μύθων. Ἐπὶ τῶν στωϊκῶν ηὐδοκίμει ἡ ἀλληγορικὴ ἐξήγησις, ἀφορμωμένη ἐξ ἀνυποστάτων ἐτυμολογιῶν, ἰδίως δὲ ὡς πρὸς τοὺς ὁμηρικοὺς μύθους ἀπηρτίσθη αὕτη κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Αὐγούστου εἰς τέλειον σύστημα.

Ἔκδοσις τῶν Ἑλλήνων μυθογράφων ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Westerman (1844) καὶ κατόπιν ἀπὸ τοῦ 1894 ὑπὸ τῶν Βάγνερ, Σακολόβσκι, Μαρτίνι, Φέστα, μήπω περατωθεῖσα. —π.

**μυθογραφῶ** (—έω)· εἶμαι μυθογράφος, ἀσχολοῦμαι περὶ τὴν καταγραφήν, μελέτην κτλ. τῶν μύθων || πλάττω, συνθέτω μύθους.

Digitized by Google

**Μῦθοι** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μουρνιῶν τῆς ἐπαρχίας Βιάννου τοῦ νομοῦ Λασηθίου Κρήτης. Κάτ. (1928) 285. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον.
Ε. Γ.

**μυθολόγημα** (τό)· λόγος μυθικός, μυθικὸν διήγημα· || λόγος πλαστός, ψευδολόγημα.

**μυθολογία** (ἡ)· τὸ σύνολον τῶν μύθων καὶ παραδόσεων λαοῦ τινος, τῶν ἀναφερομένων ἰδίᾳ εἰς τὴν θρησκείαν, ἔτι δὲ ἡ περὶ τούτων μελέτη καὶ θεωρία: «*ἀρχαία ἑλληνικὴ μυθολογία*».

—*[Ἐγκυκλ.]* Ὁ ὅρος *μυθολογία* εἶναι ἐν χρήσει ὑπὸ διττὴν ἔννοιαν· σημαίνει δηλαδὴ ἀφ' ἑνὸς μὲν τὸ σύνολον τῶν μύθων ἑνὸς λαοῦ ἢ ὁμάδος λαῶν ἢ τῆς ἀνθρωπότητος καθόλου, ἀφ' ἑτέρου δὲ τὴν ἐπιστημονικήν, ψυχολογικὴν ἅμα καὶ ἱστορικὴν ἔρευναν τῶν μύθων, τουτέστι τῶν παραδόσεων τῶν ἀναφερομένων εἰς τὴν ἱστορίαν, τὸν βίον καὶ τὰς πράξεις τῶν θεῶν, τῶν ἡμιθέων καὶ τῶν ἡρώων.

Τὴν μυθολογίαν ἐν τῇ πρώτῃ ἐννοίᾳ τῆς λέξεως δυνάμεθα νὰ διαιρέσωμεν κατὰ διαφόρους τρόπους, ἀναλόγως τῶν ἀρχῶν, αἵτινες ὑπόκεινται ἑκάστοτε ὡς βάσις τῆς διαιρέσεως. Οὕτω, ἐὰν χρησιμοποιήσωμεν ὡς τοιαύτην ἀρχὴν τὴν ἔννοιαν τῆς φυλῆς, ἔχομεν μυθολογίαν τουρανικήν, χαμιτικήν, σημιτικήν, ἰνδογερμανικήν, ἀφρικανικὴν κλπ. Ἐὰν τοὐναντίον προσέξωμεν μᾶλλον εἰς τὸν χρόνον καὶ τὴν γεωγραφικὴν σειράν, διακρίνομεν μυθολογίαν τῶν κατὰ φύσιν ζώντων λαῶν, μυθολογίαν τῆς Ἄπω καὶ τῆς Ἐγγὺς Ἀνατολῆς, μυθολογίαν τῶν Ἀρίων λαῶν. Κατὰ τὰ ἀντικείμενα ἢ κατὰ τὸ περιεχόμενον θὰ ἠδύνατο νὰ διαιρεθῇ ἡ μυθολογία αὐτὴ ἑνὸς λαοῦ ἢ τῶν λαῶν εἰς θεογονικήν, κοσμογονικήν, κοσμολογικήν, ἀνθρωπολογικήν, ἐσχατολογικὴν κλπ. Ἡ γνῶσις τῶν διαφόρων μυθολογιῶν ὁδηγεῖ εἰς τὴν παρατήρησιν τῶν μεταξὺ ἀλλήλων ὑφισταμένων σχέσεων, εἰς τὴν διακρίβωσιν ἀναλογιῶν καὶ ὁμοιοτήτων. Ἐκ τῆς ῥοπῆς πρὸς ἐξήγησιν τοῦ φαινομένου τούτου καὶ πρὸς εὕρεσιν ἑνιαίας ἀρχῆς, ἐξ ἧς καὶ παράγεται ἡ ὅλη μυθολογία καὶ διὰ τῆς ὁποίας νὰ δημιουργῆται ἑνότης καὶ κόσμος ἐκ τοῦ μυθολογικοῦ χάους, γεννᾶται ἡ ἐν ἐπιστημονικῇ ἐννοίᾳ μυθολογία, ἡ ψυχολογικὴ καὶ ἱστορικὴ ἔρευνα τοῦ περιεχομένου αὐτῆς. Ἡ ἔρευνα αὐτὴ συνδέεται ἀναποσπάστως μετὰ τοῦ μύθου, ὡς εἶναι ἄλλως τε φυσικόν, τῆς ἐννοίας αὐτοῦ, τῆς γενέσεως κτλ. Διὰ τοῦτο παραπέμποντες εἰς ὅσα ἐν τῷ σχετικῷ ἄρθρῳ (βλ. λ. *μῦθος*) πραγματευόμεθα περὶ αὐτοῦ, περιοριζόμεθα ἐνταῦθα εἰς σύντονον ἐπισκόπησιν τῆς ἱστορίας τῆς περὶ τὴν μυθολογίαν ἐρεύνης, ἡ ὁποία ἐξαρτᾶται ἐκ τῶν κατὰ καιροὺς ἀρχαιολογικῶν καὶ ἄλλων ἀνακαλύψεων, ἐκ τῶν διαδεχομένων ἀλλήλας θεωριῶν καὶ μεθόδων καὶ ἐκ τῶν ἑκάστοτε ἐπικρατούντων φιλοσοφημάτων, ἀκριβῶς ὡς καὶ ἡ περὶ τὸν μῦθον ἔρευνα, ὅστις ἀποτελεῖ τὸ κέντρον καὶ τὸ περιεχόμενον τῆς μυθολογίας. Περὶ τοὺς μύθους ἀσχολοῦνται κατὰ τὴν ἀρχαιότητα τόσον οἱ ἱστορικοὶ (μᾶλλον μυθογράφοι ἢ λογογράφοι), ὅσον καὶ οἱ φιλόσοφοι. Ἐκ τῶν πρώτων μάλιστα γνωστὸς εἶναι ὁ Ἡρόδοτος, ὅστις γνωρίζει τὰς θρησκευτικὰς παραστάσεις καὶ τοὺς θεοὺς καὶ τῶν πεπολιτισμένων λαῶν τῆς Ἀνατολῆς, συγκρίνει αὐτὰς πρὸς τὰς ἑλληνικὰς καὶ γίνεται εἰσηγητὴς εἴδους τινὸς συγκρητισμοῦ. Ἐκ δὲ τῶν στωϊκῶν ἄξιοι μνείας εἶναι ἐνταῦθα οἱ στωϊκοί, οἵτινες ὁρμώμενοι ἐκ τῆς περὶ Λόγου πανθεϊζούσης διδασκαλίας αὐτῶν κατήντων εἰς συγχώνευσίν τινα τῶν θεῶν τῆς μυθολογίας, τοὺς ὁποίους ἡρμήνευον ὡς δυνάμεις ἢ ὡς τρόπους ἐμφανίσεως τοῦ ἑνὸς Λόγου, τοὺς δὲ περὶ αὐτῶν μύθους ὡς σύμβολα θρησκευτικῶν ἢ φυσικῶν ἐννοιῶν, τῇ βοηθείᾳ τῆς ἀλληγορίας, στηριζομένης συχνὰ ἐπὶ ψευδοῦς ἐτυμολογίας τῶν θείων ὀνομάτων. Παρὰ τὴν μέθοδον ταύτην, ἥτις ἤσκησε μεγάλην ῥοπὴν ἐπί τε τῆς ἰουδαϊκῆς καὶ τῆς χριστιανικῆς ἑρμηνείας, ἀναφαίνεται καὶ ἡ θεωρία τοῦ Εὐημέρου, ὅστις, ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν πολιτικῶν καὶ πολιτιστικῶν συνθηκῶν τῶν ἀλεξανδρεωτικῶν χρόνων, πειρᾶται νὰ μεταβάλῃ τρόπον τινὰ τὴν μυθολογίαν εἰς ἱστορίαν, διδάσκων ὅτι οἵ τε θεοὶ καὶ οἱ περὶ αὐτοὺς μῦθοι ἀποτελοῦν ἀπήχησιν ἱστορικῶν γεγονότων, συντελεσθέντων κατὰ τὴν παλαιὰν ἀρχαιότητα ὑπὸ ἐξεχόντων ἀνθρώπων, ἐκλάμπρων ἡγεμόνων, ἱδρυτῶν θεσμῶν καὶ εὑρετῶν. Ἡ θεωρία αὐτὴ τοῦ Εὐημέρου ἐξακολουθεῖ ὑφισταμένη καὶ κατὰ τοὺς ἔπειτα αἰῶνας, παρὰ τὴν ἀλληγορικὴν ἑρμηνείαν, τὴν ὁποίαν ἀνανεώνει ὁ Κορνοῦτος καὶ ὁ Ἡράκλειτος καὶ ἡ ὁποία εὐνοεῖ καὶ προάγει τὸν συγκρητισμόν.

Κατὰ τοὺς πρώτους χριστιανικοὺς αἰῶνας οἱ ἐκκλησιαστικοὶ συγγραφεῖς ἐνδιαφέρονται ὅπως καθορίσωσι τὴν σχέσιν τῆς νέας θρησκείας πρὸς τὰς ἐθνικάς, ἐξηγοῦντες καὶ τὰς ὑφισταμένας ἀναλογίας μεταξὺ αὐτῆς καὶ ἐκείνων. Ἐν τῇ ἀποπείρᾳ ταύτῃ καταλήγουσιν αἱ τρεῖς θεωρίαι περὶ ἐθνικῶν θρησκειῶν καὶ τῶν περὶ τοὺς θεοὺς διηγήσεων. Ἄλλοι μὲν τουτέστιν αὐτῶν θεωροῦσι ταύτας ὡς ἔργον τῶν δαιμόνων, ἄλλοι ὁμιλοῦσι περὶ συγκαταβάσεως τοῦ Θεοῦ καὶ ἄλλοι, ὡς Ἰουστῖνος ὁ φιλόσοφος καὶ μάρτυς, προστρέχουν εἰς τὴν περὶ σπερματικοῦ λόγου ὑπόθεσιν, ἵνα ἐξηγήσωσι τὰς παραστάσεις ἐκείνας, ἐφόσον τοὐλάχιστον ἐμφανίζουσιν ὁμοιότητά τινα πρὸς τὰς χριστιανικάς. Παραλλήλως πρὸς τὰς χριστιανικὰς ταύτας θεωρίας βαίνει, ἀπὸ τοῦ Γ' μ. Χ. αἰῶνος, ἡ διδασκαλία τῶν νεοπλατωνικῶν, κατὰ τὴν ὁποίαν οἱ θεοὶ εἶναι ἀπόρροια τῆς μιᾶς θείας οὐσίας, οἱ δὲ περὶ αὐτοὺς μῦθοι σύμβολα καὶ ἀλληγορίαι. Αἱ βάσεις πρὸς ἐπιστημονικὴν ἔρευναν τῶν μύθων καταβάλλονται κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους, καὶ δὴ ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' καὶ ἰδίᾳ τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, ἀφοῦ πρότερον ἀνεβίωσε κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Ἀναγεννήσεως ἡ ἀλληγορικὴ ἑρμηνεία τῶν κλασσικῶν χρόνων τῆς ἀρχαιότητος. Διότι κατὰ τοὺς χρόνους τούτους ἐπέρχεται ἡ ἐπαφὴ πρὸς διαφόρους ἀγνώστους τέως λαοὺς καὶ πρὸς ἐξαφανισθέντας πολιτισμούς, ἀπαλλασσομένης τῆς ἐρεύνης ἀπὸ τοῦ περιορισμοῦ αὐτῆς εἰς τὴν ἑλληνικὴν καὶ ῥωμαϊκὴν ἀρχαιότητα. Ἀποστολαὶ καὶ ἱεραποστολαὶ ἀνακαλύπτουν τὰς θρησκείας καὶ τὰς μυθολογίας τῆς Ἀμερικῆς, τῆς Ἀφρικῆς, τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Κίνας καὶ συγκομίζουν ἄπειρον ὑλικόν, ὅπερ κινεῖ πρὸς σύγκρισιν, πρὸς κατάταξιν, συσχέτισιν καὶ ἑρμηνείαν. Ὁ πλοῦτος τῶν γνώσεων ἀφ' ἑνὸς μὲν δίδει ἀφορμὴν πρὸς ἀναβίωσιν τοῦ εὐημερισμοῦ καὶ τῆς ἀλληγορικῆς ἑρμηνείας, ἀφ' ἑτέρου ὅμως ὁδηγεῖ εἰς τὴν καταβολὴν τῶν θεμελίων τῆς ἀνθρωπολογικῆς σχολῆς διὰ τῆς ἐρεύνης τῶν φαινομένων τοῦ φετιχισμοῦ καὶ τοῦ τοτεμισμοῦ.

Ὁ ΙΘ' αἰὼν διακρίνεται διὰ τὴν ἀεὶ αὔξουσαν εὔρυνσιν τοῦ ὁρίζοντος συνεπείᾳ τῶν ἀνακαλύψεων ἐν Περσίᾳ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ τῶν μεταφράσεων καὶ ἐκδόσεων κλασσικῶν πηγῶν τῶν θρησκειῶν τῆς Ἀνατολῆς. Ἀλλ' ἀπαλλασσόμενος τοῦ ὀρθολογισμοῦ τοῦ προηγουμένου αἰῶνος, ὅστις εἶχεν ὁδηγήσει εἰς τὴν περὶ φυσικῆς θρησκείας θεωρίαν καὶ ἐκήρυττε τὰς ἱστορικὰς θρησκείας ἀπάτην δεξιῶν ἱερέων, περιπίπτει τὸ μὲν εἰς τὴν ἠθικὴν ἑρμηνείαν τῶν μύθων, συνέπειαν τῆς φιλοσοφίας τοῦ Καντίου, τὸ δὲ εἰς τὸν ἐξελικτικὸν ἰδανισμὸν τοῦ Ἕγελου, τὸν συμβολισμὸν τοῦ Φρεὶς καὶ τὸν συναισθηματικὸν ὑποκειμενισμὸν τοῦ Σλαϊερμάχερ. Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἰδεῶν τούτων συγκροτεῖ ὁ Κρώϊτσερ τὴν περὶ τῶν μύθων θεωρίαν αὐτοῦ, κατὰ τὴν ὁποίαν οὗτοι εἶναι σύμβολα γεννηθέντα ἐκ τῆς αὐθορμήτου καὶ φυσικῆς συμβολικῆς γλώσσης, τὴν ὁποίαν ἐχρησιμοποίησαν οἱ ἱερεῖς, ἵνα ἐκφράσουν ἀλληγορικῶς ἠθικὰς καὶ θρησκευτικὰς ἰδέας. Συγχρόνως ὅμως ἀναφαίνεται νῦν καὶ ἡ ἱστορικὴ σχολὴ διὰ τοῦ Κ. Ο. Μύλλερ καὶ τοῦ Κ. Χ. Φαῖλκερ, ἥτις εἰσάγει τὴν κριτικὴν τῶν πηγῶν, ἀνερευνᾷ τοὺς τοπικοὺς καὶ ἱστορικοὺς ὅρους τῆς διαμορφώσεως τῶν μύθων καὶ πειρᾶται νὰ ἑρμηνεύσῃ αὐτοὺς διὰ τῶν περὶ τὴν λατρείαν καὶ τῶν ἄλλων ἐθίμων τῶν ἀρχαιοτάτων ἀνθρώπων. Οὕτω ἡ ἀπὸ φιλοσοφικῶν προϋποθέσεων ὁρμωμένη ἔρευνα ὑποχωρεῖ ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ παρελθόντος αἰῶνος εἰς τὴν θετικὴν ἔρευναν τῶν μυθολογικῶν δεδομένων. Ἀπροσδόκητοι ὅσον καὶ σπουδαιόταται ἀνακαλύψεις προάγουν ἄπειρον ὅσον τὴν ἔρευναν ταύτην. Κείμενα καὶ ἐπιγραφαί, ἐν πολλαῖς ἀρχαιότατα, ἀνευρίσκονται, μεταφράζονται καὶ ἐκδίδονται, ὡς ἐπίσης καὶ παντοδαπὰ ἄλλα μνημεῖα ἀναφερόμενα εἰς τὴν βεδικήν, περσικὴν καὶ βαβυλωνιακὴν θρησκείαν, ὡς καὶ εἰς τὴν θρησκείαν τῆς Αἰγύπτου, τῆς Συρίας, τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Ῥώμης. Συγχρόνως ἡ προσοχὴ κατευθύνεται καὶ ἐπὶ τοὺς προϊστορικοὺς χρόνους, οἱ ὁποῖοι παύουσι νὰ περιβάλλωνται ὑπὸ τοῦ πυκνοῦ σκότους, ὅπερ ἐπεκάθητο μέχρι τοῦδε ἐπ' αὐτῶν, διὰ τῶν περιλάμπρων ἀνασκαφῶν τῆς Τροίας καὶ Κρήτης, τῆς Αἰγύπτου, τῆς Περσίας, τῆς Μεσοποταμίας. Ἐξ ἄλλου ἡ πληρεστέρα καὶ ἀκριβεστέρα γνῶσις τῶν διαφόρων γλωσσῶν τῆς ἀρχαιότητος, καὶ δὴ τῶν ἰνδογερμανικῶν, ὁδηγήσασα εἰς τὴν συγκριτικὴν γλωσσολογίαν, ἐπιδρᾷ καὶ ἐπὶ τῆς μυθολογικῆς ἐρεύνης, ὅπου χρησιμοποιεῖ αὐτὴν ὁ Μὰξ Μύλλερ πρὸς ἐξεύρεσιν τῆς ἀρχῆς καὶ τῶν πρωταρχικῶν πηγῶν τῆς μυθολογίας, τῆς ὁποίας τὰς μορφὰς ἐξηγεῖ ἐκ τῶν λέξεων, τῶν ὀνομάτων καὶ τῶν προσωνυμιῶν. Ὅ,τι κατ' ἀρχὰς ἦτο ἁπλοῦν ὄνομα, ἀπέβη, κατὰ τὸν περιφανῆ τοῦτον ἐρευνητήν, σὺν τῷ χρόνῳ θεότης. «Nomina numina». Ἡ μυθολογία εἶναι συνεπῶς καὶ αὐτὴ μία διάλεκτος, γεννηθεῖσα ab ingenii humani sapientia et a dictionis abundantia (πολυωνυμία καὶ ὁμωνυμία), ὡς αὐτὸς ὁ Μύλλερ λέγει ἀντικρούων τὸν Χάϋνε, ἕνα τῶν συνιδρυτῶν τῆς ἱστορικῆς σχολῆς.

Ἡ φιλολογικὴ ὅμως, ὅπως ἐκλήθη, σχολὴ τοῦ Μὰξ Μύλλερ δὲν ἠδυνήθη νὰ ἐπικρατήσῃ· τοὐναντίον ἐνισχύονται καὶ ἐπιδίδουν ἐν τῷ μεταξὺ αἱ δύο ἄλλαι σχολαί, περὶ ὧν ὡμιλήσαμεν ἤδη, ἡ ἀνθρωπολογικὴ καὶ ἡ ἱστορική. Ἡ πρώτη τούτων ὁρμᾶται, γενικῶς εἰπεῖν, ἀπὸ δύο βασικῶν ἀρχῶν, ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τουτέστι τῆς ἐξελίξεως καὶ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῆς ὁμοιομορφίας τῶν νόμων, οἵτινες διέπουσι τὴν ἐξέλιξιν ταύτην· μέθοδος δέ, τὴν ὁποίαν ἐφαρμόζει, εἶναι ἡ τῆς συγκρίσεως καὶ παραβολῆς. Ἀφορμὴν πρὸς τὴν ἐπίδοσιν αὐτῆς παρέσχον αἱ ἀνθρωπολογικαὶ καὶ λαογραφικαὶ ἔρευναι ὡς καὶ αἱ ἀρχαὶ καὶ αἱ ἰδέαι τῆς θετικοδοξίας, αἴτινες καὶ ἄλλως ηὐνόησαν τὴν ἔρευναν. Ἡ σχολὴ αὐτὴ ὑποδιαιρεῖται εἰς διαφόρους ῥοπάς, καθ' ὅσον ἄλλοι μὲν τῶν ὀπαδῶν αὐτῆς ὁρμῶνται ἀπὸ τῆς λατρείας τῶν ψυχῶν *(Σπένσερ)*, ἄλλοι προστρέχουσιν εἰς τὸν ἀνιμισμὸν *(Τάϋλορ)*, τὸν ὁποῖον πάλιν ἄλλοι ἄλλως ἐκδέχονται, ἄλλοι τέλος πειρῶνται νὰ ἑρμηνεύσουν τὰ μυθολογικὰ φαινόμενα ἐκ τοῦ τοτεμισμοῦ *(Φράτσερ)*. Κοινὸν πρὸς ἀλλήλας ἔχουσι πᾶσαι αὗται αἱ κατευθύνσεις, πλὴν τῶν ἀρχῶν ἐκείνων καὶ τῆς μεθόδου, τὸν περιορισμὸν εἰς τοὺς κατὰ φύσιν ζῶντας λαοὺς ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὰς δοξασίας τῶν κατωτέρων στρωμάτων τῶν πεπολιτισμένων λαῶν.

Ἡ ἱστορικὴ ἢ νέα ἱστορικὴ σχολὴ ἐξ ἄλλου ἐμμένει εἰς τοὺς κριτικοὺς κανόνας τοὺς διατυπωθέντας ὑπὸ τοῦ Κ. Ο. Μύλλερ καὶ ἐπιζητεῖ τὴν ἀκριβῆ ἐξέτασιν τῆς ἱστορίας τῶν μύθων (*Μόμμσεν, Βισσόβα, Κυμόντ, Ἐδ. Μάϋερ* κλ.). Ὡς ἐν παρόδῳ εἰρήσθω ὅτι ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἐν Βαβυλῶνι ἀνασκαφῶν καὶ τῶν ἐκ πρώτης ὄψεως ἀναλογιῶν τῆς βαβυλωνιακῆς μυθολογίας πρὸς τὴν μυθολογίαν τῶν περὶ τὴν ἀνατολικὴν λεκάνην τῆς Μεσογείου λαῶν ἐγένετο ἀπόπειρα ὑπὸ τοῦ βαβυλωνιολόγου Βίγκλερ καὶ τοῦ θεολόγου Γερεμίας ἐξηγήσεως τῆς μυθολογίας ἐν γένει ἐκ τῆς ἀστρολογίας τῆς Μεσοποταμίας, τελευταία συνέπεια τῆς ὁποίας εἶναι ἡ μέχρι πρό τινων ἐτῶν συνταράσσουσα τὰ πνεύματα ἑρμηνεία τῆς εὐαγγελικῆς ἱστορίας καὶ ἰδίᾳ τοῦ προσώπου καὶ τοῦ πάθους τοῦ Χριστοῦ, ὡς ἀστρολογικοῦ μύθου, διαμορφωθέντος ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἐν τῷ οὐρανῷ συμβαινόντων κατὰ τὸν ἀστρικὸν μῦθον τῶν Βαβυλωνίων. Τέλος, αἱ πρόοδοι τῆς νεωτέρας ψυχολογίας, ἄνευ τῆς ὁποίας δὲν δύναται νὰ νοηθῇ ἔρευνα ἱστορικῶν φαινομένων καὶ ἡ ὁποία ἀπηλλάγη βαθμηδόν, ὅσον εἶναι τοῦτο δυνατόν, τοῦ μονομεροῦς μεταφυσικοῦ χαρακτῆρος, ὃν τέως ἔφερε, συνετέλεσαν καὶ αὗται εἰς τὸν πλουτισμὸν τῶν περὶ γενέσεως καὶ φύσεως τῆς μυθολογίας θεωριῶν, αἵτινες ποικίλλουσιν ἀναλόγως τῆς περὶ πρωταρχικοῦ παράγοντος τοῦ ψυχικοῦ βίου ἀντιλήψεως τῶν ἐρευνητῶν (*βουλησιαρχία, νοησιαρχία, ὑποσυνείδητον* κλ.). Ἡ ψυχολογικὴ αὕτη ἔρευνα, ἐφ' ὅσον ἐπεκτείνεται εἰς λαοψυχολογικήν, ἄγει εἰς τὴν κοινωνιολογικὴν ἀνίχνευσιν καὶ τὴν ἀπὸ τῶν κοινωνικῶν φαινομένων καὶ σχέσεων ἑρμηνείαν τῆς μυθολογίας, τὴν ὁποίαν τινὲς τῶν ἐκπροσώπων (*Βοὺντ* λ. χ.) τῆς σχολῆς ταύτης θεωροῦσιν ὡς τὸ πρωταρχικὸν καὶ τῆς θρησκείας χρονικῶς πρότερον. Περὶ τῆς σχέσεως ὅμως ταύτης μεταξὺ μυθολογίας καὶ θρησκείας γίνεται ὁ προσήκων λόγος ἐν λ. *μῦθος*, ὅπου καὶ ἡ σχετικὴ πρὸς τὰ ἐνταῦθα βιβλιογραφία.
Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**μυθολογικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυθολογίαν, ὁ τῆς μυθολογίας.

**μυθολόγος** (ὁ)· ὁ διηγούμενος μύθους, μυθικὰς παραδόσεις κττ.: «μυθολόγοι καὶ ποιηταί» || ὁ ἀσχολούμενος περὶ τὴν μυθολογίαν.

**μυθολογῶ** (*—έω*)· εἶμαι μυθολόγος, διηγοῦμαι μυθώδεις ἱστορίας· || ἀσχολοῦμαι περὶ τὴν μυθολογίαν· || ὁμιλῶ διεξοδικῶς, ἀπεραντολογῶ.

**μυθομανής,** *—οῦς* (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ πάσχων μυθομανίαν, ὁ ἐμμανῶς ἀγαπῶν νὰ διηγῆται ψευδῆ γεγονότα ἢ αὐτοσχεδίους μύθους.

**μυθομανία** (ἡ) *[Ψυχοπαθολ.]*. Καλεῖται οὕτως ἀπὸ τοῦ Dupré καὶ ἐντεῦθεν, ἡ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐνσυνείδητος καὶ ἑκουσία παθολογικὴ τάσις πρὸς τὸ ψεύδεσθαι καὶ τὴν δημιουργίαν φανταστικῶν διηγήσεων. Πρόκειται δηλαδὴ περὶ ἰδιοσυστασίας εἰδικῆς, ἥτις ὠθεῖ τὰ εἰς αὐτὴν ἀνήκοντα ἄτομα πρὸς τὸ ψεῦδος καὶ τὴν ἐφεύρεσιν μύθων, συνεπείᾳ ηὐξημένης ἐνεργητικότητος τῆς δημιουργικῆς φαντασίας, ἧς εἶναι διαταραχή. Αἱ φανταστικαὶ αὗται δημιουργίαι ἢ ἀφορῶσιν ἄλλους, ἢ αὐτὸν τὸν ἴδιον. Ἡ μυθομανία παρατηρεῖται καὶ ἐπὶ τοῦ παιδὸς καὶ ἐπὶ τοῦ ἐνήλικος ἀκόμη καὶ ἐπὶ τοῦ γέροντος (πρεσβυοφρενία τοῦ Wernicke). Εἰς τὴν ἀνδρικὴν ἡλικίαν ἐγκαθίσταται συνήθως ὡς συνέχεια ηὐξημένης μυθοπλαστικῆς ἐνεργητικότητος τοῦ παιδός· σπανίως ἐμφανίζεται τὸ πρῶτον, ὀφειλομένη κυρίως εἰς τὴν ἀτελῆ παρατήρησιν τῆς παιδικῆς ἡλικίας, ὅτε εἶναι μᾶλλον συμπτωματικὴ καὶ ἀνήκει εἰς τὰ πολύμορφα παραληρήματα φαντασίας. Ἡ μυθομανία ἀπὸ ἀπόψεως μορφῆς χαρακτηρίζεται, ὡς ἐκ τοῦ περιεχομένου τῶν μυθικῶν διηγήσεων, εἰς συκοφαντικὰς διηγήσεις, εἰς τοιαύτας αὐτοκατηγορίας· δημιουργεῖ π. χ. ἱστορίαν, ἵνα θεωρηθῇ ὁ ἴδιος αἴτιος σοβαροῦ τινος ἐγκλήματος, πλάττει διαφόρους διηγήσεις κλπ. Ἡ μυθομανία προσομοιάζει πρὸς ὑστερίαν, ἠθικὴν παράνοιαν, διάφορα παραληρήματα καὶ ἐκφυλογενεῖς ἄλλας καταστάσεις. Δέον νὰ διακρίνηται τῶν παραληρημάτων φαντασίας καὶ διαδικασίας, καὶ τῶν λοιπῶν δευτερογενῶν καταστάσεων, ὡς καὶ τῶν συμπτωμααικῶν παραληρημάτων φαντασίας.

Ἡ πρόγνωσις βαρεῖα ὡς πρὸς τὴν νόσον, οὐχὶ ὅμως ὡς πρὸς τὴν ἐξέλιξιν αὐτῆς, διότι μένει τοιαύτη ἢ ἀπολήγει εἰς παραλήρημα φαντασίας, οὐχὶ

Digitized by Google

δὲ εἰς ἄνοιαν. Ἡ θεραπεία ψυχοπαιδαγωγικὴ ἐν τῇ ἀρχῇ. Τ. Α. Ζ.

**μυθοπλάστης** (ὁ)· ὁ πλάττων, ὁ ἐπινοῶν μύθους· || ψευδολόγος.

**μυθοπλαστία** (ἡ)· τὸ πλάττειν ἢ ἐπινοεῖν μύθους· || ψευδολογία.

— [*Ἐγκυκλ.*] Ἡ *μυθοπλαστία* παρατηρεῖται εἰς τὴν παιδικὴν ἡλικίαν. Αὕτη ἐλέγχεται εἴτε κατὰ τὴν ἐπανάληψιν τῆς διηγήσεως ὑπὸ τοῦ ἔχοντος ἐν ἐξάρσει τὴν μυθοπλαστικὴν ἱκανότητα ἀτόμου, καθ' ἣν βλέπομεν ὅτι παρεμβάλλει πλῆθος ἄλλων ἱστοριῶν, εἴτε διὰ τῆς μεθόδου τοῦ Ranschburg. Ἡ μυθοπλαστία δέον νὰ διακρίνεται τῶν παθολογικῶν ἐξάρσεων τῆς φαντασίας, ἤτοι τῆς μυθομανίας καὶ τῶν παραληρημάτων φαντασίας, ἔτι δὲ τοῦ ψεύδους καὶ τῆς ὑποκρίσεως. Τ. Α. Ζ.

**μυθοποιία** (ἡ)· ἐπινόησις μύθων, ἄλλως *μυθοπλαστία*.

**μυθοποιὸς** (ὁ)· ὁ ποιῶν, ὁ ἐπινοῶν μύθους.

**μῦθος** (ὁ)· ψευδής, πλαστὸς λόγος, *κοιν. παραμύθι*: «οἱ περὶ θεῶν καὶ ἡρώων μῦθοι», «ὁ μῦθος περὶ τῆς ἀλκυόνος»· || ἡ μυθικὴ παράδοσις ἀναφερομένη εἰς θεοὺς ἢ ἥρωας: «ἀργεῖοι—,θηβαϊκοί—, αἰτωλικοί—,κρητικοὶ μῦθοι»· || ἡ ὡς ὑπόθεσις δράματος λαμβανομένη παράδοσις: «ὁ περὶ Ἠλέκτρας καὶ Ὀρέστου μῦθος παρὰ Σοφοκλεῖ καὶ παρ' Εὐριπίδῃ εἶναι διάφορος»· || λόγος ἀλληγορικός, ἀναφερόμενος εἰς ζῷα ἢ εἰς φυτά, τὰ ὁποῖα παριστάνονται ὡς ἔχοντα ἔναρθρον φωνήν: «αἰσώπειοι μῦθοι», «ὁ μῦθος δηλοῖ»· || παρ' Ὁμήρῳ καὶ ἄλλοις ποιηταῖς, λόγος, ῥῆσις: «ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;» ὁποῖον λόγον εἶπες; || διήγησις: «βραχεῖ δὲ μύθῳ πάντα συλλήβδην μάθε» *(Αἰσχ.)*.

— [*Ἐγκυκλ.*] Ὁ *μῦθος* γενικώτατα καὶ ὡς εἰπεῖν ἐκ τῶν ἔξω θεωρούμενος εἶναι ἱστορία θεῶν. Ὡς τοιαύτη περιέχει κατ' ἀνάγκην δύο στοιχεῖα, τὸ μὲν τὴν παράστασιν τῶν θείων ὄντων, τὸ δὲ τὴν παράστασιν τῆς δράσεως, τῶν περιπετειῶν, τῶν παθῶν καὶ τῶν τυχῶν τῶν ὄντων τούτων, καὶ δὴ τελουμένων ἐν χώρῳ καὶ χρόνῳ. Ἀλλ' ὅμως ἐκ τῆς ἐρεύνης τῆς θρησκείας τῶν ἀγρίων λαῶν γνωρίζομεν ὅτι τῆς σαφοῦς περὶ θεῶν παραστάσεως προηγήθη περίοδος, καθ' ἣν ἐπεκράτει ἀμυδρά, γενικὴ καὶ λίαν ἀόριστος ἰδέα περὶ τοῦ θείου, ὅπερ ἦτο ἄμοιρον προσωπικοῦ χαρακτῆρος καὶ ἀπὸ τοῦ κόσμου τῶν ἀντικειμένων μὴ διακριτόν. Εἶναι φυσικὸν ὅτι κατὰ τὴν περίοδον ταύτην δὲν ὑπάρχει κυρίως εἰπεῖν μῦθος, εἰ μὴ μόνον πενιχραί τινες ἀρχαὶ αὐτοῦ. Τοὺς χρόνους τούτους καλοῦμεν διὰ τοῦτο προμυθικὴν περίοδον. Ἐξ ἄλλου τὴν κυρίως μυθικὴν περίοδον, καθ' ἣν ἀκμάζει ἡ μυθοποιία, διαδέχονται χρόνοι βαθμιαίας ἐκλείψεως τῆς πρὸς μυθοπλαστίαν ἱκανότητος· τοῦτο δέ, ἐπειδὴ κατὰ ταύτην ἐξαιρομένης καὶ ἐξευγενιζομένης τῆς περὶ θεοῦ ἰδέας ὑποχωροῦσιν αἱ περὶ περιπετειῶν, παθῶν κλ. τοῦ θείου παραστάσεις ὡς ἀνάξιαι αὐτοῦ. Οἱ χρόνοι οὗτοι ὀνομάζονται μεταμυθικὴ περίοδος. Πρὸς ἐξεύρεσιν νῦν τῆς φύσεως, τῆς οὐσίας τοῦ μύθου εἶναι ἀνάγκη νὰ συνεξετάζωνται καὶ αἱ τρεῖς αὗται περίοδοι, ἡ τοῦ γεννωμένου, ἡ τοῦ ἀπηρτισμένου καὶ ἡ τοῦ ἐκλείποντος μύθου, καὶ δὴ οὐ μόνον διὰ συγκρίσεως τοῦ ἱστορικοῦ ὑλικοῦ, ἀλλὰ καὶ διὰ ψυχολογικῆς διεισδύσεως εἰς αὐτὸ καὶ ἐμβαθύνσεως. Ἡ τοιαύτη ἔρευνα ὁδηγεῖ εἰς τὴν γνῶσιν ὅτι ὁ μῦθος ἀποτελεῖ εἶδός τι γλώσσης, τρόπον ἐκφράσεως ψυχικοῦ περιεχομένου, ὅτι εἶναι σύνολον συνηρμολογημένον ἐκ στοιχείων τῆς πραγματικότητος πρὸς ἔκφρασιν τοῦ ἀπολύτου, τοῦ ἐπέκεινα, τῆς οὐσίας καὶ τοῦ Εἶναι, ὅπερ ὁ ἄνθρωπος συλλαμβάνει ἐν τῷ θρησκευτικῷ βιώματι καὶ τοῦ ὁποίου λαμβάνει πεῖραν ἐν αὐτῷ. Ἡ συναρμολόγησις ὅμως αὕτη οὐδεμίαν ἔχει σχέσιν πρὸς τὴν λογικὴν σύνδεσιν τῶν παραστάσεων, ἀλλ' ἀποτελεῖ γνώρισμα τῆς προ-λογικῆς ἢ τῆς μὴ κατὰ λόγον, τῆς ἀ-λόγου συνειδήσεως, καὶ ὀφείλεται εἰς τὴν καταθυμίαν, εἰς τὴν σύνδεσιν περιεχομένων τῆς συνειδήσεως τῇ βοηθείᾳ ἰσχυρᾶς συναισθηματικῆς διεγέρσεως. Τὰ πλάσματα, ἅπερ γεννῶνται ἐκ τῶν ἰσχυρῶν τούτων συναισθημάτων, ἀψιμυθιῶν, πόθων κττ., προβάλλονται εἶτα εἰς τὸν ἐξωτερικὸν κόσμον καὶ ἐπανευρίσκονται ἐν αὐτῷ. Κατὰ ταῦτα θὰ ἠδύνατό τις δικαίως νὰ ἰσχυρισθῇ ὅτι οὐδεμία ὑπάρχει ἐποχὴ ἄμοιρος μύθου, ὡς θὰ λεχθῇ κατωτέρω. Πρὸς ἀκριβεστέραν διασαφήνισιν τῆς φύσεως τοῦ μύθου δέον νὰ ἐξετάζεται ἡ σχέσις αὐτοῦ πρὸς τὸν θρῦλον καὶ τὸ παραμύθιον. Τὴν σχέσιν ταύτην ἐνόησαν ὡς σχέσιν ἐξαρτήσεως τόσον οἱ ἀδελφοὶ Grimm, ὅσον καὶ ὁ Γ. Βούντ· καὶ ἐκεῖνοι μὲν συνεκρότησαν τὴν σειράν: μῦθος-θρῦλος-παραμύθιον, ὁ δὲ Βούντ τὴν ἀντίστροφον: παραμύθιον-θρῦλος-μῦθος. Ἀληθὲς εἶναι ὅτι τὰ τρία ταῦτα εἴδη ἐμφανίζουν μορφολογικὰς ὁμοιότητας, ὅπερ φυσικόν, ἀφοῦ εἶναι εἴδη πρωτογόνου διηγηματικῆς τέχνης καὶ ὑπόκεινται γενικῶς εἰς τοὺς αὐτοὺς κανόνας τοῦ ὕφους. Ἐντεῦθεν ὅμως δὲν ἐπιτρέπεται νὰ συνάγωμεν ἐν σπουδῇ τὸ συμπέρασμα ὅτι πρόκεινται καὶ πραγματικαὶ σχέσεις, αἰτιώδεις σχέσεις ἢ σχέσεις ἐξαρτήσεως, παρ' ὅλην τὴν ἀλληλεπίδρασιν, τὴν ὁποίαν ἀσκοῦσιν ἀμοιβαίως τὰ τρία ταῦτα εἴδη. Τοῦτο δέ, διότι ἐξ ἀρχῆς ὑφίσταται θεμελιώδης διαφορὰ μεταξὺ ἀλλήλων. Ὁ μῦθος φέρει φύσει χαρακτῆρα θρησκευτικόν, ἐνῷ ὁ θρῦλος καὶ τὸ παραμύθιον οὐδὲν κοινὸν ἔχουν πρὸς τὴν θρησκείαν. Ὁ μῦθος τελεῖται ἐν τῇ σφαίρᾳ τοῦ ὑψηλοῦ, τοῦ καταπληκτικοῦ, σχετίζεται πρὸς τὸ mysterium tremendum· τοὐναντίον θρῦλος καὶ παραμύθιον παραμένουσιν ἐν τῇ σφαίρᾳ τῆς ἀνθρωπίνης ζωῆς, ἐκεῖνος μὲν μετὰ τῆς ῥοπῆς πρὸς σύνδεσιν μεθ' ὡρισμένων προσώπων, τόπων καὶ χρόνων, τοῦτο δὲ αἰωρούμενος ὑπεράνω χώρου καὶ χρόνου. Ἐν τῷ μύθῳ ἡ φαντασία χαλιναγωγεῖται ὑπὸ τοῦ δέους καὶ τοῦ σεβασμοῦ πρὸς τὸ «ὅλως διάφορον», τὸ ἐπιβλητικόν· ἐν τῷ παραμυθίῳ ὀργιάζει ἀχαλίνωτος καὶ πραγματοποιεῖ τὸ ἀδύνατον. Ἐννοεῖται ὅτι ταῦτα δὲν ἀποκλείουν τὴν ἀλληλεπίδρασιν, ἰδίως ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὰ θέματα· ἀλλ' ἡ ἀλληλεπίδρασις αὕτη εἶναι πολὺ μείζων μεταξὺ θρύλου καὶ παραμυθίου ἢ μεταξὺ τούτων καὶ τοῦ μύθου. Οὕτω οἱ ἥρωες τοῦ παραμυθίου δύνανται νὰ ἀποκτήσωσιν ὀνόματα καὶ νὰ ἐντοπισθοῦν εἰς ὡρισμένον χῶρον καὶ χρόνον, ὁπότε τὸ παραμύθιον προσλαμβάνει τὸν χαρακτῆρα τοῦ θρύλου. Ὁ ἀνώνυμος ὀφεοκτόνος καλεῖται τώρα Σίγφριδ, αἱ περιπέτειαι αὐτοῦ λαμβάνουν χώραν περὶ τὸν Ρῆνον, ἡ ἄχρονος δρᾶσίς του συνδέεται πρὸς τὴν ἐπιδρομὴν τῶν Οὔνων ἐναντίον τῆς Βουργουνδίας. Ἐντεῦθεν δὲν ὑπολείπεται εἰμὴ μόνον ἓν βῆμα μέχρι τῆς ἱστορίας, ἥτις ἐνδιαφέρεται περὶ τοῦ τί, ποῦ, πῶς, καὶ πότε τι συνέβη.

Ἀπαραίτητον εἶναι ἐπίσης ὅπως διακρίνωμεν τὰς δύο μυθοπλαστικὰς περιόδους, τὰς ὁποίας δεικνύει εἰς ἡμᾶς ἡ ἱστορία τοῦ μύθου, αὐστηρῶς ἀπ' ἀλλήλων. Ἡ πρώτη τούτων συμπίπτει πρὸς τοὺς κυρίως μυθικοὺς χρόνους, ἡ δευτέρα ἀνήκει εἰς τὴν μεταμυθικὴν ἐποχήν. Ἐν τῇ πρώτῃ περιόδῳ ὁ μῦθος ἀποτελεῖ θρησκευτικὴν κατηγορίαν, εἶναι τρόπος ἐκφράσεως θρησκευτικῶν βιωμάτων, ἐνσάρκωσις τρόπον τινὰ καὶ σχηματοποίησις τοῦ θείου, τοῦ numen, τοῦ ὁποίου τὴν παρουσίαν συναισθάνεται καὶ βιοῖ ὁ ἄνθρωπος. Εἶναι ἀκόμη ἀφομοίωσις, προσοικείωσις τοῦ θρησκευτικοῦ περιεχομένου δι' ὡρισμένων μορφῶν, μυθικῶν μορφῶν. Διὰ τοῦτο μῦθος καὶ θρησκεία δὲν διακρίνονται ἀλλήλων κατὰ τὴν περίοδον ταύτην, ἀποτελοῦν ἓν ἀδιαίρετον καὶ ἑνιαῖον ὅλον· ὁ μῦθος ἀνήκει εἰς τὰ πρωταρχικὰ στοιχεῖα τῆς θρησκείας τῶν κατὰ φύσιν ζώντων λαῶν. Πᾶσα θρησκευτικὴ τελετὴ προϋποθέτει μυθικήν τινα παράστασιν· ἡ θυσία εἰς δαίμονα ἢ καὶ φετὶχ ἀπαιτεῖ τὴν προΰπαρξιν τῆς παραστάσεως ὑπερανθρώπου ὄντος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἡ θυσία ἐπιδρᾷ διὰ τῶν ἐν αὐτῇ προσφερομένων δώρων. Δὲν εἶναι λοιπὸν ὑπερβολὴ ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἡ θρησκεία τῶν λεγομένων πρωτογενῶν λαῶν εἶναι θρησκεία μυθική. Πᾶσα περὶ θεῶν παράστασις εἶναι ἐν αὐτῇ μυθική, ὡς πᾶσα θυσία καὶ πᾶσα θρησκευτικὴ πρᾶξις καθόλου ἐκπηγάζουν ἐκ μυθικῶν ἐλατηρίων, ἡ δὲ θρησκεία τροφοδοτεῖται διαρκῶς διὰ τῶν προϊόντων τοῦ μυθοπλαστικοῦ πνεύματος τοῦ ἀνθρώπου, ὅπερ δημιουργεῖ ὅλας ἐκείνας τὰς ἀπροσώπους δυνάμεις, αἵτινες ἔπειτα ἐκδηλοῦνται ἐν τῇ θρησκείᾳ ὡς φετιχισμός, ἀνιμισμός, τοτεμισμός, πολυδαιμονισμὸς κτλ. Διάφορα εἶναι τὰ μυθολογικὰ προϊόντα τῆς μεταμυθικῆς περιόδου, κατὰ τὸ πλεῖστον τοὐλάχιστον. Ταῦτα μεταπίπτουν ἀπὸ τῆς ἱερᾶς εἰς τὴν κοινήν, τὴν ἔξω σφαῖραν, εἶναι δευτερεύοντα ἐν συγκρίσει πρὸς τὴν λατρείαν, δημιουργήματα τῆς κατὰ λόγον χωρούσης φαντασίας καὶ οὐχὶ ἄμεσος ἔκφρασις θρησκευτικοῦ βιώματος. Ἡ ἀνθρωπίνη φαντασία ἐπιλαμβάνεται τῶν μυθικῶν ἐλατηρίων, ἀναμειγνύει αὐτά, πλουτίζει διὰ λεπτομερειῶν καὶ νέων γνωρισμάτων τὸν ὑπάρχοντα μῦθον, συνδέει πλείονας μύθους εἰς ἓν ὅλον καὶ συγκροτεῖ τέλος ὁλόκληρον σύστημα μυθολογίας. Ταῦτα εἶναι προϊόντα τέχνης, καλλιτεχνικὸν δημιούργημα, ἔργον ποιητοῦ καὶ καλλιτέχνου. Ὁ μῦθος εἶναι ἐνταῦθα λογοτεχνία, οὔτε ἐκ τῆς λαϊκῆς ψυχῆς γεννηθεὶς οὔτε ὑπ' αὐτῆς ἀφομοιούμενος. Παράδειγμα ἡ ὁμηρικὴ ποίησις, ἡ ὁποία οὐδέποτε ἔγινε ζωντανὸν κτῆμα τῆς ψυχῆς τοῦ λαοῦ, ἀλλὰ παρέσχε τὸ ὑλικὸν εἰς τὴν μετέπειτα ποίησιν. Οὕτω ὁ ἀρχικῶς θρησκευτικὸς μῦθος ἀποβάλλει τὸν χαρακτῆρα αὐτοῦ τοῦτον καὶ ἅμα καθίσταται ἐπικίνδυνος εἰς τὴν θρησκείαν, ἐπειδὴ ἀπειλεῖ νὰ διαλύσῃ τὰ πάντα, μεταβάλλων εἰς φαντασιώματα καὶ καλλιτεχνικὴν παιδιάν. Ἐν τούτοις ἡ σειρὰ τῶν δύο τούτων περιόδων δὲν πρέπει νὰ νοηθῇ αὐστηρῶς χρονική. Πρόκειται μᾶλλον περὶ δύο παραλλήλων γραμμῶν, αἵτινες ἐπιδρῶσιν ἐπ' ἀλλήλας καὶ ἔστιν ὅτε καὶ τέμνονται ὑπ' ἀλλήλων ἢ διεισδύουσιν εἰς ἀλλήλας. Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται τὸ γεγονὸς ὅτι ἡ εἰς ἡμᾶς παραδεδομένη μυθολογία ἀποτελεῖ θελκτικὸν μεῖγμα ἐλατηρίων πεπληρωμένων θρησκευτικότητος καὶ στοιχείων φιλολογικῶν. Ἡ διάκρισις τῶν δύο τούτων ἑτερογενῶν συστατικῶν εἶναι δυσχερής, ἂν μὴ ἀδύνατος. Πάντως ὅμως εἶναι ἀνάγκη νὰ γνωρίζῃ ὁ περὶ τὴν μυθολογίαν ἀσχολούμενος καὶ περὶ τὴν ἑρμηνείαν τοῦ μύθου ἐνδιαφερόμενος, νὰ διακρίνῃ μεταξὺ τοῦ μύθου ὡς ἀμέσου ἐκδηλώσεως θρησκευτικότητος καὶ τοῦ μύθου ὡς λογοτεχνικοῦ προϊόντος. Ἡ σύγχυσις ἀμφοτέρων τούτων ὁδηγεῖ καὶ εἰς σύγχυσιν περὶ τὴν ἔννοιαν καὶ τὴν φύσιν τοῦ μύθου καὶ εἰς πολλὰ ἄλλα ἐσφαλμένα συμπεράσματα καὶ πεπαλαιωμένας ἀπόψεις ὅσον ἀφορᾷ τὴν θέσιν τοῦ μύθου ἐν τῷ πνευματικῷ βίῳ, τὸ νόημα αὐτοῦ, τὰ ψυχολογικὰ ἐλατήρια κτλ.

Αἱ ἀρχαί, αἱ ῥίζαι τοῦ μύθου, ὡς ἐκ τῶν ἔμπροσθεν εἰρημένων εὐκόλως καταφαίνεται, ἀνέρχονται μέχρι τῶν πρώτων ἀρχῶν τοῦ ἀνθρωπίνου γένους, συμφυεῖς οὖσαι πρὸς αὐτὴν τὴν φύσιν τοῦ ἀνθρώπου. Ἀλλ' ὡς πανταχοῦ, οὕτω καὶ ἐνταῦθα ἡ ἀνακάλυψις αὐτῶν δὲν εἶναι τόσον ἔργον ἐπιστημονικῶν καὶ κατὰ λόγον μεθόδων ὅσον τοῦ λεπτοῦ καὶ μέχρι τοῦ βάθους τοῦ ψυχικοῦ βίου χωροῦντος συναισθήματος, ὅπερ οἰκειοῦται ὡς εἰπεῖν τὸ ὅμοιον διὰ τοῦ ὁμοίου. Ὁ μῦθος ἀνήκει εἰς τὰς ἐσωτάτας κινήσεις τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς καὶ εἶναι μία ἐκ τῶν πρωταρχικῶν ἀντιδράσεων τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος πρὸς τὸ περιβάλλον καὶ πρὸς ἑαυτό. Γεγονότα τοῦ πέριξ κόσμου καθίστανται εἰς τὸν ἄνθρωπον ἀσυνήθη βιώματα καὶ πληροῦν τὴν ζωήν του μὲ περιεχόμενον. Τότε ἐκ τῶν σκοτεινῶν βαθῶν τοῦ ἐσωτερικοῦ κόσμου ἀνακύπτουν ἄνευ τῆς μεσιτείας τῆς λογικῆς σκέψεως παραστατικαὶ μορφαὶ πρὸς ἔκφρασιν τῶν βιωμάτων ἐκείνων· τὰ σχήματα, αἱ μορφαὶ αὗται, διὰ τῶν ὁποίων ἐκφράζει τὴν ψυχήν του καὶ σκέπτεται ὁ πρωτόγονος ἄνθρωπος, εἶναι ὁ μῦθος. Οὕτω ὁ μῦθος εἶναι ἐνορατική τις σύλληψις καὶ σχηματοποίησις ἐσωτερικῆς ἐμπειρίας. Τὸ κύριον περιεχόμενον αὐτῆς εἶναι ἡ ὄπισθεν τῶν προκαλούντων τὸ βίωμα φαινομένων ὑπεμφαινομένη βούλησις, ἡ ὁποία ἀποβαίνει διὰ τὸν ἄνθρωπον μυθικὴ ὀντότης. Ἀνθρωποποιεῖ τὰ πάντα, ἵνα ἀφομοιώσῃ αὐτά· τὸ ἄψυχον καθιστᾷ ἔμψυχον, μεταβάλλει τὸ ὑπερφυσικὸν εἰς φυσικόν, παρέχει μορφὴν εἰς τὸ ἀσχηματοποίητον. Στοχάζεται τοῦ ὀρθοῦ ὁ Ρ. Μάϋερ ὁρίζων τὸν μῦθον ὡς μέσον ἀμύνης τοῦ ἀνθρώπου κατὰ παντός, ὅπερ δὲν εἶναι ὅμοιον πρὸς αὐτόν. Ἡ ἄμυνα αὕτη συνίσταται εἰς τὴν μεταβολὴν τοῦ ξένου εἰς συγγενὲς καὶ ὅμοιον διὰ μυθικῆς αὐτοῦ ἐξηγήσεως, ἥτις διαρκεῖ διὰ τῶν αἰώνων μέχρι σήμερον. Ἂς ἐνθυμηθῇ ὁ ἀμφιβάλλων τὸν παῖδα, ὅστις τιμωρεῖ τὴν τράπεζαν, ἐπὶ τῆς ὁποίας προσέκρουσεν. Ὡς ἐνταῦθα, οὕτω καὶ ἐν τῇ μυθοπλαστικῇ δημιουργίᾳ, δὲν πρόκειται περὶ λογικῆς ἐνεργείας τοῦ νοῦ, ἀλλὰ περὶ αὐθορμήτου πράξεως, ἐκπηγαζούσης ἐξ ἀνεξερευνήτων βαθῶν τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Ἡ προσφυγὴ εἰς τὴν μυθοπλαστικὴν φαντασίαν ἢ εἰς ἄλλην τινὰ ψυχικὴν ἢ λογικὴν ἐνέργειαν πρὸς ἐξήγησιν τοῦ ἐν τῷ μύθῳ μυστηρίου εἰς οὐδὲν ὠφελεῖ· διότι ἡ ὑπὸ ἐννοίας ὑπαγωγὴ δὲν αἴρει τὸ μυστήριον, οὔτε καθιστᾷ σαφέστερον τὸ φαινόμενον. Ὅ,τι δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν εἶναι ὅτι πρὸς γένεσιν τοῦ μύθου ἀπαιτοῦνται δύο παράγοντες· ἀφ' ἑνὸς ἐξαιρετικὸν φαινόμενον ἢ γεγονὸς ὡς σύμβολον ἢ ὡς ἐκδήλωσις τοῦ θείου, τοῦ διαφόρου, τοῦ numinis, καὶ ἀφ' ἑτέρου δημιουργικὴ πρᾶξις τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος, ὅπερ τὸ ἔξωθεν δεδομένον ὑλικὸν τοῦτο ἐπεξεργάζεται, ἵνα προσοικειωθῇ αὐτὸ ὑπὸ μορφὴν παραστάσεως καταληπτῆς εἰς αὐτό. Ἓν παράδειγμα πάλιν ἐκ τοῦ παιδικοῦ βίου δύναται νὰ διασαφήσῃ τὰ ἐνταῦθα λεγόμενα. Μικρὸς παῖς παίζων μὲ λιθάρια, εἰς τὰ ὁποῖα παρέχει διὰ τῆς φαντασίας του μορφὴν καὶ ζωήν, ἐκπέμπει αἴφνης κραυγὴν φόβου, ἐπειδὴ ἓν ἐκ τῶν λιθαρίων ἐκείνων μετεβλήθη αἴφνης εἰς λύκον, ὁ ὁποῖος ἀπειλεῖ νὰ καταβροχθίσῃ αὐτόν. Τοῦτο εἶναι δημιουργικὴ πρᾶξις, κατὰ τὴν ὁποίαν τὸ πνεῦμα διαμορφώνει τὸ ὑλικὸν τῆς ἐμπειρίας εἰς βίωμα.

Περὶ τὴν ἑρμηνείαν τοῦ μύθου ἠσχολήθη ἀνέκαθεν ἡ ἐπιστήμη καὶ ἡ φιλοσοφία (βλ. λ. *μυθολογία*). Οὕτως ἐδημιουργήθη σὺν τῷ χρόνῳ σειρὰ ὅλη θεωριῶν, αἵτινες ὑπὸ τοῦ Τίλλιχ διαιροῦνται εἰς *θετικὰς* καὶ εἰς *ἀρνητικάς*. Ταύτων αἱ μὲν ἀρνητικαὶ ἀρνοῦνται εἰς τὸν μῦθον αὐτοτελὲς πνευματικὸν περιεχόμενον· τοὐναντίον αἱ θετικαὶ ἀναγνωρίζουσιν εἰς τὰ μυθικὰ δημιουργήματα αὐτοτελῆ καὶ πραγματικὴν σημασίαν. Ἐκεῖναι ἐξηγοῦσι τὸν μῦθον, ἀναφέρουσαι αὐτὸν εἰς ἄλλο τι φαινόμενον καὶ αἴρουσαι διὰ τούτου πᾶσαν ἰδίαν τυχὸν αὐτοῦ σημασίαν. Αἱ θετικαὶ πειρῶνται νὰ διασώσουν εἰς αὐτὸν τὴν σημασίαν ταύτην διὰ τῆς μεταφυσικῆς ἢ τῆς γνωσιολογικῆς ὁδοῦ. Αἱ ἀρνητικαὶ θεωρίαι δύνανται νὰ συνοψισθῶσιν εἰς τὰς ἑξῆς τρεῖς, τὴν ἀλληγορικήν, τὴν ψυχολογικὴν καὶ τὴν ψυχαναλυτικήν. Καὶ ἡ μὲν πρώτη τούτων ἑρμηνεύει τὸν μῦθον ὡς ὑπὸ τὴν ἀλληγορίαν κεκρυμμένην ἐξήγησιν τῶν φυσικῶν φαινομένων, ὡς εἶδός τι φυσικῆς ἐπιστήμης. Τὴν τοιαύτην ἀλληγορικὴν ἑρμηνείαν, δι' ἧς ἐπειράθησαν πολλοὶ τῶν παλαιῶν νὰ διασώσουν τὴν ἀλήθειαν τὴν περιεχομένην εἰς τὰ ὡς ἱερὰ θεωρούμενα ἔπη τοῦ Ὁμήρου, κατειρωνεύεται ἤδη αὐτὸς ὁ Πλάτων, ὅστις ἀνέλαβε τὸν μῦθον εἰς τὴν φιλοσοφίαν του. Ἡ δευτέρα, ἡ ψυχολογική, ζητεῖ νὰ παραγάγῃ τὸν μῦθον ἐξ ὡρισμένων ψυχικῶν ῥοπῶν καὶ ψυχολογικῶν νόμων. Γνωστοτάτη εἶναι ἡ **ἀπόπειρα**

Digitized by Google

τοῦ Βούντ, ὅστις φρονεῖ ὅτι ὁ μῦθος γεννᾶται διὰ τῆς ἀντικειμενοποιήσεως τῶν θυμικῶν κινήσεων τῆς ψυχῆς, συντελουμένης τῇ βοηθείᾳ τῆς προσωποποιούσης ἀφομοιώσεως τῶν ἀντικειμένων. Προστρέχει λοιπὸν εἰς τὸ πρωταρχικὸν φαινόμενον τοῦ *ἀνιμισμοῦ* (βλ. λ.), ἐπὶ τοῦ ὁποίου στηρίζεται καὶ ἀπὸ τοῦ ὁποίου ὁρμᾶται. Τέλος, ἡ ψυχαναλυτικὴ θεωρία θέλει νὰ ἑρμηνεύσῃ τὸν μῦθον καὶ τὰ μυθικὰ καθόλου πλάσματα ὡς σύμβολα ὑποσυνειδήτων πόθων, ἐρωτικῆς πρὸ πάντων φύσεως. Καὶ αἱ θετικαὶ περὶ τοῦ μύθου θεωρίαι συνοψίζονται εἰς τρεῖς, τὴν μεταφυσικήν, τὴν γνωσιολογικὴν καὶ τὴν συμβολικὴν - πραγματοκρατικήν. Ὁ κυριώτατος ἐκπρόσωπος τῆς πρώτης εἶναι ὁ φιλόσοφος Σέλλινγκ, ὅστις διαβλέπει ἐν τῷ μύθῳ τὴν ἔκφρασιν πραγματικῆς θεογονικῆς ἐνεργείας, τουτέστιν ἐνεργείας κατὰ τὴν ὁποίαν αἱ ἐν τῷ θεῷ συνηνωμέναι εἰς ἓν ἑνιαῖον καὶ ἁρμονικὸν ὅλον ἀρχαὶ συγκεντροῦνται ἀνακύπτουσαι εἰς τὴν ἀνθρωπίνην συνείδησιν ὑπὸ τὴν μορφὴν ἀντιφατικοῦ πρὸς ἑαυτὸ ὅλου. Ἀπὸ τῆς μεταφυσικῆς ταύτης πεποιθήσεως ὁρμώμενος ἐπιχειρεῖ ἔπειτα ὁ Σέλλινγκ πραγματοκρατικὴν ἑρμηνείαν τοῦ μύθου. Τὴν γνωσιολογικὴν ἐξ ἄλλου θεωρίαν ἀντιπροσωπεύει κατὰ τοὺς χρόνους ἡμῶν ὁ νεοκαντιανὸς Κασσίρερ. Ὁ μῦθος εἶναι, κατ' αὐτόν, ὅπως ἡ ἐπιστήμη, ἡ τέχνη, ἡ γλῶσσα, ἀναγκαῖον στοιχεῖον τοῦ πνευματικοῦ βίου. Ὅπως ἡ πραγματικότης τῶν ἀξιολογικῶν ἐκείνων πεδίων, οὕτω καὶ ἡ τοῦ μύθου δὲν ἔγκειται εἰς τὴν ὀρθὴν ἀπεικόνισιν κόσμου ἐκτὸς ἡμῶν ὑπάρχοντος, ἀλλ' εἰς τὴν δημιουργίαν κόσμου πνευματικοῦ, περικλείοντος καὶ ἐκφράζοντος νόημα. Κέκτηται λοιπὸν ὁ μῦθος ἐσωτερικὴν πραγματικότητα καὶ ἀλήθειαν, ἡ ὁποία ἐκφράζεται διὰ τῆς πλήρους νοήματος συγκροτήσεως τοῦ μυθικοῦ κόσμου. Τὴν μεταξὺ τῶν δύο τούτων θεωριῶν ὑφισταμένην ἀντίθεσιν ἐπιδιώκει νὰ ἄρῃ ὁ Τίλλιχ διὰ τῆς συμβολικῆς ἅμα καὶ πραγματοκρατικῆς περὶ τοῦ μύθου ἀντιλήψεως αὐτοῦ. Συμφώνως πρὸς ταύτην ὁ μῦθος κέκτηται μὲν πραγματικότητα, διότι κατευθύνεται ἐπὶ τὸ ἀπολύτως πραγματικόν, ἐπὶ τὸ πέραν τοῦ εἶναι χωροῦν, τὸ ὑπερβατικόν, ἀλλὰ ἡ πραγματικότης αὕτη δὲν εἶναι ἡ πραγματικότης τῆς ἀπεικονίσεως, διότι ζῇ ἐν συμβόλοις, ἅπερ ὅμως δὲν εἶναι αὐθαίρετα οὔτε κατὰ συνέπειαν ἁπλῶς ὑποκειμενικά. Οὕτω ἀμφότεραι αἱ ἐκδοχαί, ἥ τε φιλοσοφικὴ καὶ ἡ γνωσιολογική, περικλείουν ἐν ἑαυταῖς ἀλήθειαν. Ἡ θεωρία αὕτη, σύμφωνος πρὸς τὴν ὁποίαν εἶναι καὶ ὁ ἐν ἀρχῇ τοῦ ἄρθρου τούτου διατυπούμενος ὁρισμὸς τοῦ μύθου, δὲν ἐξηγεῖται μόνον ἐκ τῶν ἐγελιανῶν προϋποθέσεων τοῦ ἱδρυτοῦ αὐτῆς, ἀλλὰ στηρίζεται καὶ ἐπὶ τῶν πορισμάτων τῶν νεωτέρων θρησκειολογικῶν ἐρευνῶν, αἱ ὁποῖαι ἀνέτρεψαν μακροχρονίους προλήψεις διὰ τῆς ἐμπειρικῆς γνώσεως, τὴν ὁποίαν προσεπόρισαν. Παρὰ τὸν ἀνιμισμὸν λ. χ. ἠρευνήθη ὁ δυναμισμός, καθωρίσθη δὲ ἐξ ἄλλου ἀκριβέστερον ἡ φύσις τῆς θρησκευτικότητος, ἥτις συνδέεται κατὰ τὴν μυθοπλαστικὴν περίοδον ἀρρήκτως πρὸς τὸν μῦθον. Μόνον ἡ γνῶσις τῆς οὐσίας τῆς θρησκευτικότητος, ἡ ἐνόρασις τοῦ ἐν αὐτῇ mysterium tremendum καὶ mysterium fascinosum καὶ ἡ ἐκδοχὴ τοῦ μύθου ὡς ἐκφράσεως τῶν βαθυτάτων τούτων κινήσεων ὁδηγοῦν εἰς τὴν ὀρθὴν κατανόησιν καὶ τὴν ὀρθὴν ἑρμηνείαν τοῦ μύθου, εἰς τὴν ἀντίληψιν αὐτοῦ ὡς συμβόλου συγκεκροτημένου ἐκ στοιχείων τῆς πραγματικότητος πρὸς ἔκφρασιν τοῦ ἐν τῷ θρησκευτικῷ βιώματι συλλαμβανομένου ἀπολύτου καὶ ὑπερβατικοῦ. Ἐν πάσῃ περιπτώσει παρῆλθον πλέον ὁριστικῶς καὶ ἀνεπιστρεπτὶ οἱ χρόνοι, κατὰ τοὺς ὁποίους ἐπίστευον ὅτι αἱ μυθολογικαὶ —καὶ μετ' αὐτῶν καὶ αἱ θρησκευτικαὶ παραστάσεις καθόλου— ἐξηγοῦνται ἐκ τῶν φαινομένων τῆς φύσεως, ὡς ἐπίσης καὶ ἐκεῖνοι, καθ' οὓς ἐνόμιζον ὅτι ἡ μυθολογία ὀφείλεται εἰς γλωσσικήν τινα παρανόησιν, ὀφειλομένην εἰς τὴν συνήθειαν τῆς γλώσσης, ὅπως ἐκφράζῃ διὰ τῶν ῥιζῶν τῶν λέξεων προσωπικὰς ἐνεργείας. Ὁ μῦθος εἶναι—ὑπὸ ὡρισμένας προϋποθέσεις, ὡς θὰ ἴδωμεν—στοιχεῖον τῆς θρησκείας τῶν πρωτογενῶν λαῶν· μόνον ἄρα ἐκ ταύτης εἶναι δυνατὸν νὰ ἑρμηνευθῇ ὀρθῶς. Πρὸς τοῦτο ὅμως χρειάζεται νὰ ἔχῃ τις πρὸ ὀφθαλμῶν ὅτι ἡ θρησκεία καθόλου προσαρμόζει μὲν ἑαυτὴν καὶ πρὸς τὴν φύσιν, ἀλλὰ μόνον ἵνα συλλάβῃ ἐν αὐτῇ ὅ,τι δὲν εἶναι εἰς τὸν καθένα ἀντιληπτόν.

Τ' ἀνωτέρω περὶ τῆς φύσεως τοῦ μύθου καθίστανται μᾶλλον σαφῆ, ἐὰν ἐξετάσωμεν τὴν σχέσιν τοῦ μύθου πρὸς τὸν πολιτισμὸν καὶ τὰς διαφόρους ἐκδηλώσεις τοῦ πνευματικοῦ βίου τῶν ἀνθρώπων. Ὁ πολιτισμὸς εἶναι σύμπλεγμα ἀξιολογικῶν κατευθύνσεων καὶ ἀξιῶν, διακρινόμενος κατὰ τὴν φύσιν τούτων εἰς διαφόρους ἐπὶ μέρους κύκλους. Ἐκ τούτων σπουδαῖον διὰ τὸ θέμα ἡμῶν εἶναι ἡ θρησκεία, ἡ τέχνη, καὶ δὴ ἡ ποίησις, ἡ ἠθικὴ καὶ ἡ ἐπιστήμη καθόλου τε καὶ ἰδίᾳ ὡς μεταφυσικὴ καὶ ὡς ἱστορία. Ποίαν σχέσιν ἔχει ὁ μῦθος πρὸς τὰ διάφορα ταῦτα πολιτιστικὰ πεδία; Ὅσον ἀφορᾷ τὴν θρησκείαν ἐτονίσθη ἤδη ἀνωτέρω ὅτι συνδέεται στενῶς μετὰ τοῦ μύθου. Ἀλλ' ὡς πρὸς τὸ εἶδος καὶ τὸν τρόπον τῆς συνδέσεως ταύτης ὑπῆρξε παλαιόθεν ἀντιγνωμία, καθ' ὅσον ἄλλοι μὲν ῥέπουσιν εἰς ταύτισιν θρησκείας καὶ μύθου, ἄλλοι δὲ τοὐναντίον εἰς τὸν πλήρη χωρισμὸν καὶ τὴν αὐστηρὰν αὐτῶν ἀπ' ἀλλήλων διάκρισιν. Αἱ ἀντίθετοι αὗται ἐκδοχαὶ ἐξαρτῶνται ἐκ τῆς περὶ φύσεως τῆς θρησκείας θεωρίας, ἀφ' ἧς τις ὁρμᾶται. Οὕτω ἡ νοησιαρχικὴ περὶ θρησκείας ἀντίληψις φιλεῖ κατὰ φυσικὸν λόγον νὰ ἀνευρίσκῃ τὴν οὐσίαν τῆς θρησκείας εἰς τὸν μῦθον, νὰ διαβλέπῃ ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῶν θρησκευμάτων ἱστορίαν τῶν μύθων καὶ νὰ πιστεύῃ ὅτι γνῶσις θρησκείας τινὸς ἴσα δύναται πρὸς τὴν γνῶσιν τῆς μυθολογίας αὐτῆς. Ἀντιθέτως πρὸς ταύτην πειρᾶται ἡ συναισθηματικὴ καὶ βουλησιαρχικὴ ἐκδοχὴ τῆς θρησκείας νὰ καταδείξῃ ὅτι ὁ μῦθος δευτερεύουσαν μόνον ἢ καὶ οὐδεμίαν ἀξίαν κέκτηται διὰ τὴν θρησκείαν. Τὸ οὐσιῶδες ἐν αὐτῇ εἶναι ἡ λατρεία καὶ ἡ εὐλάβεια, ἐνῷ ὁ μῦθος περιέχει ἐν ἑαυτῷ ἐπιστημονικὰ καὶ καλλιτεχνικὰ στοιχεῖα, τὰ ὁποῖα εἶναι ἐντελῶς ξένα πρὸς τὴν ἀληθῆ φύσιν τῆς θρησκείας. Ἀπὸ τῆς μονομερείας ἀμφοτέρων τούτων τῶν θεωριῶν ἀπαλλάσσει ἡμᾶς ἡ ὀρθὴ ἐκδοχὴ τῆς φύσεως τῆς θρησκείας, ὡς λ. χ. ἐμφανίζει ταύτην ἡ φαινομενολογικὴ μέθοδος τῆς σχολῆς τοῦ Χοῦσσερλ καὶ ἡ νεωτέρα ψυχολογικὴ ἔρευνα διὰ τοῦ Ρ. Ὄττο ἐπὶ παραδείγματι. Πᾶσα θρησκευτικὴ πρᾶξις, πᾶν θρησκευτικὸν βίωμα κατευθύνεται ἐπί τι ἀντικείμενον· τὸ ἀντικείμενον τοῦτο λέγεται θρησκευτικόν, μόνον ἐφ' ὅσον νοεῖται ἐν τῇ θρησκευτικῇ πράξει τοῦ ὑποκειμένου, μόνον ἐφ' ὅσον τὸ θρησκευτικὸν βίωμα ἀναφέρεται εἰς αὐτό. Κατὰ ταῦτα μόνον ἐφ' ὅσον ὁ μῦθος ζῇ ἐν τῇ λατρείᾳ καὶ τῇ θρησκευτικῇ ἐν γένει διαθέσει εἶναι θρησκευτικὸς καὶ ἔχει σχέσιν πρὸς τὴν θρησκείαν. Ἡ ἔκτασις ὅμως τῆς σχέσεως ταύτης δὲν εἶναι κατὰ πάντας τοὺς χρόνους καὶ εἰς πάσας τὰς θρησκείας ἡ αὐτή. Οὕτω λ.χ. ἡ μεταμυθικὴ περίοδος, κατὰ τὴν ὁποίαν δὲν αἴρεται παντελῶς ὁ μῦθος, ἀλλὰ μεταβάλλει ὄψιν ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ὑπερβατικῆς περὶ τῶν θεῶν ἐννοίας, ἐμφανίζει σχέσιν θρησκείας καὶ μύθου διάφορον τῆς κατὰ τὴν μυθικὴν περίοδον ὑφισταμένης. Ἀκόμη περισσότερον ἡ θρησκεία διαμαρτύρεται κατὰ τοῦ μύθου καὶ ἀντιδρᾷ κατ' αὐτοῦ. Οἱ προφῆται καταπολεμοῦν τὴν αἰσθητοποίησιν τῆς θεότητος, οἱ μυστικοὶ αἴρουσιν αὐτήν, οἱ φιλόσοφοι κηρύττουσιν αὐτὴν ἀναξίαν τῆς θρησκείας. Ὅσῳ ὑψηλοτέρα ἡ θρησκεία, τόσῳ ἡ προσπάθεια αὐτῆς πρὸς ἀπαλλαγὴν ἀπὸ τοῦ μύθου ἐντονωτέρα. Ὑψουμένη ἀπὸ τῆς κατωτέρας μυθολογίας εἰς τὴν ἀνωτέραν, τὴν εἰς τοὺς προέχοντας θεοὺς ἀναφερομένην, καταδικάζει πᾶσαν τὴν κατωτέραν μυθολογίαν, τὴν συνδεομένην πρὸς τὸν φετιχισμόν, τὸν ἀνιμισμόν, τὸν τοτεμισμὸν κλπ. ὡς δεισιδαιμονίαν, ἵνα τέλος ἀπαλλαγῇ παντελῶς τοῦ μύθου. Τοῦτο ὅμως οὐδέποτε κατορθώνει ἐντελῶς. Ὄχι μόνον διότι τὰ κατώτερα στρώματα τροφοδοτοῦνται διαρκῶς ὑπὸ τῶν ἀκενώτων ἐκείνων πηγῶν τοῦ πρωτογενοῦς μύθου, ἀλλὰ καὶ διότι τὴν ὑψηλοτέραν καὶ πνευματικωτέραν περὶ θεῶν ἔννοιαν εἶναι ἠναγκασμένη νὰ ἐκφράσῃ διὰ συμβόλων, τὰ ὁποῖα φέρουν κατ' ἀνάγκην τὸν χαρακτῆρα τοῦ χώρου καὶ τοῦ χρόνου. Οὕτω, ἐνῷ ἡ θρησκεία διαμαρτύρεται κατὰ τοῦ μύθου ἐν τῇ μορφῇ, τὴν ὁποίαν ἔχει οὗτος κατὰ τὴν μυθικὴν περίοδον, χρησιμοποιεῖ ἐξ ἄλλου τὸ μυθικὸν στοιχεῖον κατὰ τοὺς μεταμυθικοὺς χρόνους, ἵνα καὶ δι' αὐτοῦ ἐκφράσῃ τὸ βίωμα τοῦ Ἀπολύτου καὶ τοῦ Ἐπέκεινα, τοῦ παροδικοῦ καὶ αἰσθητοῦ Εἶναι. Ὁ μῦθος γίνεται ἐνταῦθα θρησκευτικὴ κατηγορία, ἀλλ' ὁ χαρακτὴρ καὶ τὸ περιεχόμενον αὐτοῦ εἶναι νῦν παντελῶς διάφορα. Ὁ μῦθος ἔχει ὑπερνικηθῆ κατ' ἀρχήν. Ἡ πλήρης διάλυσις αὐτοῦ ἐπέρχεται διὰ τῆς συνειδήσεως τῆς ἀπολύτου ὑπερβατικότητος τοῦ θεοῦ, τὴν ὁποίαν ἐδημιούργησεν ὁ Χριστιανισμός.

Διττὴ εἶναι καὶ ἡ σχέσις τοῦ μύθου πρὸς τὴν ἐπιστήμην καθόλου. Διότι, ὡς ἡ συνείδησις τοῦ ὑπερβατικοῦ ἐν τῇ θρησκείᾳ, οὕτω διαλύει αὐτὸν ἢ μεταβάλλει αὐτὸν ἐν τῇ ἐπιστήμῃ ἡ συνείδησις τοῦ ἐνδοκοσμικοῦ. Ἐν ἑκάστῳ μύθῳ ἡ περὶ θεῶν παράστασις, ἣν περιέχει, συνδέεται πρὸς ὡρισμένην ἀντίληψιν. πρὸς κοσμολογικήν τινα γνῶσιν. Κατὰ τοὺς μυθικοὺς λοιπὸν χρόνους ὁ μῦθος συνδέεται οὐ μόνον πρὸς τὴν θρησκείαν, ἀλλὰ καὶ πρὸς τὴν ἐπιστήμην, καὶ δὴ τοσοῦτον, ὥστε οὐχὶ ἀδίκως ἠδυνήθησαν νὰ ἐκλάβωσι τὸν μῦθον καὶ ὡς πρωτογενῆ ἐπιστήμην, μὲ τὴν διαφορὰν ὅτι δὲν πρέπει τις νὰ νοήσῃ ὑπὸ τὴν λέξιν ταύτην τὴν ἐπιστήμην, ὡς ἡμεῖς ἐκδεχόμεθα ταύτην σήμερον, τουτέστιν ὡς κατὰ λόγον χωροῦσαν ἔρευναν νόμων, ἀλλ' ὡς ἐκ τῆς φαντασίας ἀπορρέουσαν διήγησιν περὶ τοῦ κόσμου καὶ τῶν ἐν αὐτῷ φαινομένων. Γεγονότα τινὰ στηρίζουσι τὴν ἐκδοχὴν ταύτην, ὡς λ. χ. ὁ χαρακτὴρ πολλῶν μύθων, οἵτινες χρησιμεύουν ὡρισμένως πρὸς ἐξήγησιν φυσικῶν φαινομένων, δηλαδὴ τῶν αἰτιολογικῶν μύθων, ἡ γέννησις οὐ μόνον τῆς ἀστρολογίας, ἀλλὰ καὶ αὐτῆς τῆς ἀστρονομίας ἐκ τῶν ἀστρικῶν μύθων, ἡ ἐκ τῶν κοσμογονικῶν μύθων ἀνάπτυξις τῆς φυσικῆς φιλοσοφίας τῶν Ἑλλήνων, ἡ σχέσις τῆς ἱστορικῆς ἐπιστήμης πρὸς τοὺς περὶ κοσμικῶν περιόδων μύθους, ἡ διάκρισις τοῦ κόσμου εἰς μέρη κτλ. Τὰ γεγονότα ταῦτα καὶ πλεῖστα ἄλλα δεικνύουσιν ὅ,τι ἐν ἀρχῇ εἴπομεν, ὅτι δηλαδὴ ὁ μῦθος περιέχει καὶ γνῶσιν τοῦ κόσμου, ὅτι θεογνωσία καὶ κοσμογνωσία εἶναι ἐν αὐτῷ συνδεδεμέναι καὶ συνυφασμέναι πρὸς ἀλλήλας. Τοῦτο ὅμως κατ' οὐδένα τρόπον σημαίνει ὅτι μῦθος καὶ πρωτογενὴς ἐπιστήμη συμπίπτουν. Ἡ σχέσις αὕτη μύθου καὶ ἐπιστήμης χαλαροῦται βαθμηδόν, ἰδίᾳ κατὰ τὴν μεταμυθικὴν περίοδον, ὅτε ὁ μῦθος ἀποβάλλει τὸν ἀρχικὸν αὐτοῦ χαρακτῆρα ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς συνειδήσεως τοῦ ἐνδοκοσμικοῦ ἐν τῇ ἐπιστήμῃ, ὡς διὰ τῆς συνειδήσεως τοῦ ὑπερβατικοῦ ἐν τῇ ἐπιστήμῃ. Ὅσῳ περισσότερον περιορίζεται εἰς ἑαυτὴν ἡ ἐπιστήμη, ὅσῳ περισσότερον πειρᾶται νὰ ἐρευνήσῃ κατ' αὐστηρὰς μεθόδους, ἀντικειμενικῶς καὶ τῇ βοηθείᾳ τῆς νοήσεως τὰ φαινόμενα τοῦ κόσμου, τόσῳ περισσότερον ὑποχωρεῖ τὸ μυθικὸν στοιχεῖον. Σκοπὸς αὐτῆς εἶναι ἡ συγκρότησις κοσμοθεωρίας ἀπηλλαγμένης μυθικῶν ὑποκειμενικῶν στοιχείων. Χάριν τοῦ σκοποῦ τούτου ἀφαιρεῖ ἀπὸ τὰ ἀντικείμενα τὴν ζωντανότητα αὐτῶν, τὴν ἀτομικότητα, τὴν ψυχὴν καὶ διαλύει αὐτὰ εἰς μεγέθη καὶ συνεξαρτήσεις ποσοτικῶς ὁριστάς. Παρὰ ταῦτα ὅμως τὸ μυθικὸν στοιχεῖον, ἡ μυθικὴ οὐσία, δὲν ἀφανίζεται παντελῶς καὶ ἐν τῇ ἐπιστήμῃ· τοῦτο δέ, ἐπειδὴ ὑπάρχουσι καὶ ἐνταῦθα ὅρια, τὰ ὁποῖα δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ καταλυθοῦν. Εἰς πᾶν ἀντικείμενον ἐνυπάρχουν ἴχνη τοῦ Εἶναι, τοῦ πρωταρχικῶς δεδομένου, τοῦ ἀδιεισδύτου, ὅπερ ἀνθίσταται εἰς πᾶσαν λογικὴν διείσδυσιν.

Ὀλίγα τινὰ περὶ τῆς σχέσεως τοῦ μύθου, τὰ μὲν πρὸς τὴν μεταφυσικήν, τὰ δὲ πρὸς τὴν ἱστορίαν, ἀρκοῦν ὅπως διασαφήσουν ὁπωσδήποτε ὅσα ἐν μεγίστῃ συντομίᾳ ἐλέχθησαν ὅσον ἀφορᾷ τὴν μεταξὺ μύθου καὶ ἐπιστήμης σχέσιν. Ἡ μεταφυσικὴ ἐρευνᾷ τὰ ἴχνη ἐκεῖνα τοῦ μυστηριώδους Εἶναι, τὰ ὁποῖα παραμένουν ἀσύλληπτα εἰς τὴν ἐπὶ μέρους ἐπιστήμην· ὑποκείμενον ἐρεύνης αὐτῆς εἶναι τὸ ἀκατανόητον ἐκεῖνο, ὅπερ πειρᾶται νὰ ἐκφράσῃ διὰ τοῦ μύθου ἡ θρησκεία κατὰ τὴν μυθικὴν περίοδον καὶ ὅπερ διαισθανόμεθα πάντοτε ὄπισθεν τῶν πραγμάτων, βιοῦμεν αὐτὸ ὥς τι ξένον καὶ συγγενὲς συγχρόνως. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον ὑφίσταται στενὸς σύνδεσμος μεταξὺ μύθου καὶ μεταφυσικῆς. Καὶ ὅπως ὡρίσθη αὕτη ὡς σύνθεσις πίστεως καὶ ἐπιστήμης, οὕτω θὰ ἠδύνατο νὰ ὁρισθῇ ἀκριβέστερον μῦθος αὐξανόμενος ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τῆς ἐπιστήμης καὶ συγκροτούμενος δι' ἐπιστημονικῶν μέσων. Περικλείει λοιπὸν ἐν ἑαυτῇ διαλεκτικήν τινα ἀντίφασιν, συνισταμένην ἐν τούτῳ, ὅτι δημιουργεῖ μῦθον διὰ λογικῶν, ἐπιστημονικῶν μέσων. Ἐντεῦθεν κατανοεῖται καὶ ἡ μοῖρα αὐτῆς, ὅτι δηλαδὴ ἀναιρεῖται ἑκάστοτε διὰ τῆς νοήσεως καὶ ὅτι συγχρόνως παραμένει αἰωνία καὶ ἐπέκεινα πάσης ἐπιστημονικῆς γνώσεως. Διότι ὁ μῦθος ἀποτελεῖ τὴν ἀκαταγώνιστον αὐτῆς δύναμιν. Εἶναι δὲ ὁ μῦθος οὗτος σύμβολον, διὰ τοῦ ὁποίου θέλει νὰ ἐκφράσῃ τὸ ἐν τοῖς πράγμασι καὶ ἐν τῷ ἐπέκεινα αὐτῶν ἀνέκφραστον, τοῦ ὁποίου πεῖραν λαμβάνει διὰ βιωμάτων λαμβανόντων χώραν ἐν τοῖς μυχαιτάτοις τῆς ψυχῆς καὶ τὰ ὁποῖα συλλαμβάνει νοητικῶς διὰ φαντασίας, ἡ ὁποία δύναται νὰ ὀνομασθῇ ἐπιστημονική. Ὁ χαρακτὴρ καὶ τὸ νόημα τοῦ μεταφυσικοῦ μύθου ποικίλλει κατὰ ἀτομικότητας, οἴκοθεν δὲ νοεῖται ὅτι φέρει τὰς ἰδιότητας τοῦ μύθου τῆς μεταμυθικῆς περιόδου, τοῦ μεταβεβλημένου, ὡς εἴπομεν, ὑπὸ τῆς συνειδήσεως τοῦ ὑπερβατικοῦ ἀφ' ἑνὸς καὶ τοῦ ἐνδοκοσμικοῦ ἀφ' ἑτέρου.

Σαφεστέρα εἶναι ἡ σχέσις τοῦ τοιούτου μύθου πρὸς τὴν ἱστορίαν, ὅπου ἡ δύναμις τῆς μυθικῆς ἀντιλήψεως καὶ τὰ ἴχνη τῆς μυθικῆς πλαισιώσεως εἶναι καταφανῆ. Τὸ γεγονὸς τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὴν φύσιν τῆς ἱστορικῆς θεωρήσεως, κατὰ τὴν ὁποίαν δημιουργοῦμεν συγχρόνως τὸ νόημα τῆς ἱστορίας· ἐπειδὴ δὲ τὸ νόημα καὶ οἱ ἔσχατοι σκοποὶ τῆς ἱστορίας φέρουσι χαρακτῆρα ὑπερβατικὸν καὶ πέραν τῆς ἐμπειρίας χωροῦντα, ἡ ἐκδήλωσις αὐτῶν προσλαμβάνει μυθικὴν μορφήν. Τοῦτο βλέπομεν σαφῶς οὐ μόνον ἐν τῇ στενῇ σχέσει, ἥτις ὑφίσταται μεταξὺ μύθων καὶ ἱστορίας, ἀλλὰ πρὸ πάντων ἐν ταῖς ἱστορικαῖς περιπετείαις μεγάλων ἀνδρῶν, οἵτινες ἀνυψοῦνται ὑπὸ τῶν ἐπιγιγνομένων μέχρι τοῦ μυθικοῦ οὐρανοῦ, περιβαλλόμενοι ὑπὸ τῆς αἴγλης αὐτοῦ καὶ ἀποβάλλοντες κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον τὴν ἱστορικὴν αὐτῶν μορφήν. Τὸ αὐτὸ ἰσχύει καὶ ὡς πρὸς τὰ ἱστορικὰ γεγονότα, τὰ ὁποῖα μεταπίπτουσιν εἰς μυθικὴν διήγησιν. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι, ἐφ' ὅσον ἡ μυθικὴ συνείδησις παραμένει ἀκόμη ἀκλόνητος καὶ ἀκμαία, ἡ ἐπίδρασις τοῦ μύθου ἐπὶ τῶν ἱστορικῶν γεγονότων εἶναι σχεδὸν ἀπεριόριστος· ἀλλ' ὅταν ἡ συνείδησις αὕτη ἀμαυρωθῇ, ὡς συμβαίνει κατὰ τὴν μεταμυθικὴν περίοδον, τὰ γεγονότα ὑπερισχύουν τοῦ μύθου, χωρὶς ἐν τούτοις νὰ εἶναι δυνατὸν νὰ ἀπαλλαγῶσι πλήρως αὐτοῦ. Τὰ ἴχνη αὐτοῦ διαφαίνονται οὐ μόνον ἐν τῇ ἐπιστημονικῇ ἱστοριογραφίᾳ, ἀλλὰ πολὺ περισσότερον καὶ ἐν τῇ φιλοσοφικῇ ἑρμηνείᾳ τῆς καθόλου ἱστορίας. Μῦθος εἶναι λ. χ. ἡ ἰδέα τῆς προόδου, διὰ τῆς ὁποίας ταξινομοῦμεν καὶ κρίνομεν τὴν ἱστορικὴν κίνησιν, ἡ ἱστορικὴ ἀπαισιοδοξία, ἡ διαλεκτικὴ τῆς ἱστορίας τοῦ

Digitized by Google

Εγέλου καὶ τοῦ Μάρξ, καὶ ἡ μία καὶ ἡ ἄλλη ἱστορικοὶ μῦθοι ἐντὸς μεταφυσικοῦ περικαλύμματος.

Κατὰ τὸν ἐν ἀρχῇ διατυπωθέντα ὁρισμὸν τοῦ μύθου, οὗτος ἐκφράζει τὴν ἐπὶ τὸ ἀπόλυτον καὶ ὑπερβατικὸν κατεύθυνσιν τοῦ θυμικοῦ. Τὸ ἀπόλυτον τοῦτο δὲν ἀποκαλύπτει μόνον ἑαυτό, ἀλλὰ καὶ τὴν βούλησιν αὐτοῦ, τουτέστι μετὰ τῆς ἐποπτείας αὐτοῦ συνδέονται καὶ αἰτήματα πρὸς τὸ θεωροῦν ὑποκείμενον. Οὕτω μῦθος καὶ ἠθικὴ τελοῦσιν εἰς στενὴν σχέσιν πρὸς ἄλληλα. Ἐν παντὶ μύθῳ ἐνυπάρχει καὶ στοιχεῖόν τι, ὅπερ καθορίζει τὴν βούλησιν καὶ τὴν πρᾶξιν. Ἡ σχέσις αὕτη χαλαροῦται βεβαίως βαθμηδὸν καὶ αἴρεται παντελῶς ὅταν διαμυθῇ ὁ μῦθος ὑπὸ τοῦ ἀπολύτου ἠθικῆς ἀπαιτήσεως, διὰ τῆς ὁποίας καθίσταται ἀδύνατος οἱαδήποτε ἀνάμειξις θεοῦ καὶ κόσμου. Ἡ ἀπόλυτος αὕτη ἠθικὴ ἀπαίτησις συνδέεται στενῶς πρὸς τὴν ὑπερβατικότητα τοῦ θεοῦ, ὅστις εἶναι νῦν ἡ ἀπόλυτος ἁγιότης. Ἐν ὀνόματι τοῦ θεοῦ τούτου πλήττουσιν οἱ προφῆται τὴν μυθικὴν συνείδησιν καὶ αἴρουν αὐτήν. Ἀπὸ τῆς νέας, τῆς ἀπηλλαγμένης τοῦ μύθου συνειδήσεως ἐξεταζόμενοι οἱ μυθικοὶ χρόνοι θεωροῦνται φέροντες δαιμονικὸν χαρακτῆρα· καὶ αὐτοὶ οἱ τοὺς δαίμονας κατανικῶντες θεοὶ θεωροῦνται παρὰ ταῦτα δαίμονες, ἐπειδὴ ἐλλείπει ἀπ' αὐτῶν ἡ ὑπερβατικότης καὶ ἡ ἁγιότης. Καὶ ὅμως ἡ ἀρχικῶς ὑφισταμένη στενὴ σύνδεσις μεταξὺ μύθου καὶ ἤθους ὑπερφαίνεται ἐκ νέου εὐθὺς ὡς ἐπανεμφανισθῇ ὁ μῦθος ἐν μεταφυσικῇ μορφῇ. Ὁ τοιοῦτος μεταφυσικὸς μῦθος περιέχει ἠθικὴν καὶ στηρίζεται ἐπὶ τῆς συνειδήσεως ὅτι εἶναι φορεὺς ἠθικῆς. Ὁ Σπινόζας ἀποκαλεῖ τὴν μεταφυσικήν του «Ἠθικήν», ὁ δὲ μαρξικὸς ἱστορικὸς μῦθος ἔγινεν ἀφορμὴ ἀπροσμετρήτων ἠθικοκοινωνικῶν μεταβολῶν.

Ἐπειδὴ ἡ συμμετοχὴ τῆς φαντασίας πρὸς δημιουργίαν τοῦ μύθου εἶναι ἀναντίρρητος, ἔπεται ὅτι μεταξὺ μύθου καὶ ποιήσεως ὑφίσταται συγγένεια, τουλάχιστον ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὴν μορφήν. Γενικῶς θὰ ἠδύνατό τις νὰ ἰσχυρισθῇ ὅτι ὁ μῦθος εἶναι πρωτόγονος ποίησις κατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτοῦ μορφήν, τουτέστιν ἕνεκα τῆς μετεώρου διαθέσεως καὶ τῆς ἐξάρσεως, τὴν ὁποίαν περικλείει καὶ τῆς ὁποίας ἔκφρασις εἶναι ἡ ποίησις. Ἀλλ' ἐκτὸς τούτου ὁ μῦθος ἐμφανίζει μορφολογικὰ γνωρίσματα, τὰ ὁποῖα ἐπανευρίσκομεν καὶ εἰς τὰ δημιουργήματα τῆς ποιήσεως. Τοιαῦτα εἶναι ἡ ἐνάργεια καὶ ἡ πλαστικὴ ἐποπτικότης τῆς διηγήσεως, διὰ τῶν ὁποίων ἐμψυχοῦνται τὰ ἄψυχα καὶ προσωποποιοῦνται τὰ ἀντικείμενα, αἴρονται τὰ μεταξὺ ἀνθρώπου καὶ ζῴου ὅρια, τὰ πρόσωπα χαρακτηρίζονται δι' ἀπαριθμήσεως τῶν ἰδιαζόντων εἰς αὐτὰ ἀτομικῶν γνωρισμάτων, ἀρεταὶ καὶ κακίαι καθίστανται τι συγκεκριμένον διὰ τῆς περιγραφῆς τῶν σχετικῶν ἐνεργειῶν, τὸ ἀφῃρημένον παριστᾶται διὰ συγκεκριμένης περιγραφῆς καὶ οὕτω καθεξῆς. Παρὰ τὴν ἐνάργειαν ταύτην ἀπαντῶμεν καὶ ἐν τῷ μύθῳ τὴν ῥοπὴν πρὸς ἐξιδανίκευσιν. Αἱ μορφαί, περὶ τῶν ὁποίων ὁμιλεῖ ὁ μῦθος, εἶναι ἐν τῷ εἴδει αὐτῶν τέλειαι· οἱ θεοὶ κέκτηνται ἀνυπέρβλητον σοφίαν, ὁ ἥρως ἀπαραμίλλητον γενναιότητα καὶ ἰσχύν, καθόλου δὲ αἵ τε φωτειναὶ καὶ σκιεραὶ πλευραὶ τῶν δρώντων προσώπων ἐκτείνονται μέχρι τοῦ ὑπερανθρώπου, τοῦ ὑπερφυσικοῦ σχεδόν. Τὸ αὐτὸ δὲ ἰσχύει καὶ ὡς πρὸς τὰ ἀντικείμενα· οὕτω λ. χ. τὸ μυθικὸν δένδρον φθάνει αὐξανόμενον μέχρι τοῦ οὐρανίου θόλου. Εἰς τὴν τοιαύτην τεχνικὴν τοῦ μύθου ἀνήκουν καὶ διάφορα σχήματα τῆς διηγήσεως, διὰ τῶν ὁποίων ἐπιδιώκεται μεταξὺ ἄλλων καὶ ἡ δημιουργία ἐντάσεως, ἡ ἔξαρσις τῆς πράξεως διὰ τῆς παρεμβολῆς δυσχερειῶν, αἱ ὁποῖαι κατανικῶνται, ἐπαναλήψεις τοῦ αὐτοῦ φαινομένου ἢ τῆς αὐτῆς ἐνεργείας, παραβολὴ ἀριθμῶν ἐν τῇ διηγήσει κ.τ.τ. Ἐν πάσῃ περιπτώσει τὰ μορφολογικὰ ταῦτα γνωρίσματα δέον νὰ διακρίνωνται αὐστηρῶς ἀπὸ τοῦ περιεχομένου πρὸς ἀποφυγὴν συγχύσεως τὸ μὲν μύθου καὶ ποιητικῶν ἁπλῶς δημιουργημάτων, τὸ δὲ μύθων διαφόρων τὴν καταγωγὴν καὶ οὐδὲν πλὴν τῆς μορφῆς κοινὸν ἐχόντων πρὸς ἀλλήλους. Ἡ στενὴ σχέσις μεταξὺ μύθου καὶ ποιήσεως, κατὰ τὴν ὁποίαν τὸ ποιητικὸν εἶναι συνυφασμένον πρὸς τὰ μυθικὸν καὶ τἀνάπαλιν, χαλαροῦται βαθμηδὸν καὶ αἴρεται μόνον κατὰ τοὺς μεταμυθικοὺς χρόνους, ὅτε τὸ ποιητικὸν ἐν τῷ μύθῳ στοιχεῖον καθίσταται αὐτοτελές, ἀκριβῶς ὅπως καὶ τὸ ἐπιστημονικόν. Τὰ μυθικὰ περιεχόμενα μεταβάλλονται τότε εἰς ποιητικά. Τοῦτο βλέπομεν λ. χ. παρὰ τῷ Ὁμήρῳ. Βραδύτερον ἐκπίπτει ὁ μῦθος εἰς κενὴν περιεχομένου ἀλληγορίαν. Ἀλλ' ὅμως, ὅπως ἐν τῇ μεταφυσικῇ, οὕτω καὶ ἐν τῇ ποιήσει, ἡ μυθικὴ συνείδησις παραμένει ἀνεξίτηλος, τοσούτῳ μᾶλλον, ὅσῳ μεταξὺ ποιήσεως καὶ τέχνης καθόλου ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀπολύτου ἀφ' ἑτέρου, τοῦ ὁποίου τρόπος ἐκφράσεως εἶναι καὶ ὁ μῦθος, ὑπάρχει στενὴ σχέσις, ἄλλαις λέξεσιν ἐπειδὴ καὶ ἡ ποίησις ἐκπηγάζει ἐκ βαθείας ἀνάγκης πρὸς ἔκφρασιν κοσμοθεωρίας. Διὰ τοῦτο οὐδόλως παράδοξον ὅτι τὸ μυθικὸν στοιχεῖον ἐπανεμφανίζεται σαφῶς εἰς ποιητικὰ δημιουργήματα μεταφυσικοῦ χαρακτῆρος, οἷα ἡ «Θεία κωμῳδία» τοῦ Δάντου, ὁ «Φάουστ» τοῦ Γκαίτε, ὁ «Ζαρατούστρας» τοῦ Νίτσε κ. ἄ. Διὰ τῶν τοιούτων ποιητικῶν δημιουργημάτων ἐπανιδρύεται ἡ πρωταρχικὴ ἑνότης, ἡ ὁποία ὑφίσταται μεταξὺ θρησκείας, ποιήσεως καὶ ἐπιστήμης καὶ ἡ ὁποία ζῇ λανθανόντως· ἢ ἀκριβέστερον ὁ λανθάνων μῦθος ἀφυπνίζεται δι' αὐτῶν καὶ ἀνακαλεῖται εἰς τὴν ζωήν. Ἡ διαφορὰ ποιήσεως καὶ μεταφυσικῆς ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει ἔγκειται εἰς τὴν ἰδιότυπον ὑφ' ἑκατέρας διατύπωσιν τοῦ μύθου ἑκάστης ἐποχῆς.

Ἡ συνολικὴ ἔρευνα τῶν σχέσεων τοῦ μύθου πρὸς τὰ διάφορα ταῦτα πεδία τοῦ ἀνθρωπίνου πολιτισμοῦ ὁδηγεῖ εἰς τὴν ἱστορίαν τοῦ μύθου ἐντὸς τοῦ πλαισίου τῆς ἱστορίας τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος. Ἡ ἱστορία αὕτη ἔργον ἔχει νὰ διακριβώσῃ τὰς διαφόρους περιόδους τοῦ μύθου, τὰς ὁποίας ὡρίσαμεν εἰς τρεῖς, τὴν προμυθικήν, τὴν κυρίως μυθικὴν καὶ τὴν μεταμυθικήν. Κατὰ τὴν πρώτην ὑφίσταται κυρίως εἰπεῖν μόνον ἡ πρὸς μῦθον ῥοπή, ἐπειδὴ ἡ θεία δύναμις (Μανὰ) δὲν νοεῖται ὥς τι προσωπικὸν καὶ ἐπειδὴ προσωπικότης καὶ ἀντικείμενα δὲν διακρίνονται εἰσέτι ἀλλήλων. Κατὰ τὴν κυρίως μυθικὴν περίοδον ἡ προσωπικότης χωρίζεται τῶν ἀντικειμένων καὶ οὕτω καθίσταται δυνατὴ ἡ σύλληψις τοῦ θείου ὡς προσωπικότητος καὶ ἡ δημιουργία προσωπικῶν θεῶν, διὰ τῶν ὁποίων ἐκπροσωπεῖται. Ὁ ἰουδαϊκὸς καὶ πολὺ μᾶλλον ὁ χριστιανικὸς μονοθεϊσμὸς διαλύουν τὸν μυθικὸν κόσμον τῶν θεῶν καὶ ἐκδιώκουσι τὴν πρὸς μῦθον ὁρμὴν εἰς τὰ ὑποσυνείδητα βάθη τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Ἐκεῖθεν ἀναδύεται λίαν συχνά, ὡς εἴδομεν, ἵνα ἐν ὅλοις τοῖς κύκλοις τοῦ πνευματικοῦ βίου ἐκφράζηται διὰ τῶν δημιουργημάτων τῆς ὁρμῆς ταύτης ἡ ἐξάρτησις τοῦ ἀνθρώπου ἐκ τοῦ ἀπολύτου Εἶναι, ὅπερ διαισθάνεται ὄπισθεν καὶ πέραν τῆς παροδικῆς ὑπάρξεως τῶν ὄντων.

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω γίνεται φανερὸν ὅτι ὁ μῦθος εἶναι συμφυὴς πρὸς τὴν φύσιν τοῦ ἀνθρώπου καὶ ὅτι κατὰ συνέπειαν εἶναι φαινόμενον καθολικόν. Τὴν ἀλήθειαν τοῦ συμπεράσματος τούτου πιστοποιεῖ ἡ ἱστορία τῶν θρησκευμάτων, ἡ ὁποία δεικνύει πράγματι ὅτι ἀπ' οὐδενὸς τῶν ὑπὸ τὸν οὐρανὸν λαῶν λείπει ἡ μυθολογία. Ἀλλὰ συγχρόνως καταδεικνύει καὶ χαρακτηριστικὰς διαφοράς, αἵτινες ὑφίστανται ἐν τῇ μυθολογίᾳ τῶν διαφόρων τούτων λαῶν. Διότι παρέχει μὲν εἰς πάντας ὁ βίος τὰ αὐτὰ βασικὰ στοιχεῖα τῆς ἐμπειρίας, ἀλλὰ ταῦτα διαμορφοῦνται ἄλλως ὑπ' ἄλλων καὶ ἐκφράζονται διὰ μυθικῶν μορφῶν ἰδιαζουσῶν εἰς ἕκαστον ἐξ αὐτῶν. Οἱ παράγοντες τῆς διαφοροποιήσεως ταύτης καὶ τῆς ἐξ αὐτῆς ποικιλίας εἶναι διάφοροι. Μεταξὺ τούτων πρωτεύουσαν θέσιν κατέχει ἡ φυσικὴ προδιάθεσις, ἥτις ποικίλλει ἀναλόγως τῶν φυλῶν· ἔπειτα τὸ κλῖμα καὶ ἡ γεωγραφικὴ θέσις, αἱ κοινωνικαὶ συνθῆκαι, ὑπὸ τὰς ὁποίας ζῇ ἕκαστος τῶν λαῶν, ἡ πολιτιστικὴ καὶ πνευματικὴ ἐξέλιξις αὐτοῦ κτλ. Οὕτω συμβαίνει ὥστε οἱ κατὰ φύσιν ζῶντες λαοί, οὓς ἐπεκράτησε νὰ καλῶμεν πρωτογενεῖς, νὰ περιστρέφωνται περὶ ὡρισμένην μυθολογίαν, χωρὶς νὰ δύνανται νὰ ὑψωθῶσιν εἰς ἀνωτέραν τινὰ μυθολογικὴν βαθμῖδα. Ὁλόκληρος ἡ αὐστραλιανὴ μυθολογία ἀσχολεῖται περὶ τὸ πρόβλημα τῆς γενέσεως τῶν περὶ τὸ Ταμποὺ ἐθίμων ἢ περὶ τὸν τρόπον καθ' ὃν ἐκτήσαντο τὰ προστατεύοντα πνεύματα αἱ διάφοροι τοτεμιστικαὶ ὁμάδες, αἵτινες διακρίνονται ἐν ταῖς ἐπὶ μέρους φυλαῖς. Ἡ μυθολογία τῶν Ζουλοῦ ἐν Ἀφρικῇ ἀποτελεῖται ἐκ παραστάσεων ἀναφερομένων εἰς τὴν λατρείαν τῶν νεκρῶν. Ἐπίσης οἱ μῦθοι τῶν Φινλανδῶν, τῶν Μογγόλων καὶ τῶν Ἐσκιμώων ὡς κύριον περιεχόμενον ἔχουσι τὴν μαγείαν καὶ τὴν μαγικὴν πρᾶξιν. Τὰ ἴχνη τῆς μυθολογίας ταύτης ἀπαντῶμεν καὶ ἐν ταῖς θρησκείαις τῶν πεπολιτισμένων λαῶν, ὅπου ὅμως διάφοροι νέοι παράγοντες ὡδήγησαν εἰς ἐξέλιξιν καὶ εἰς πλουτισμόν, χωρὶς ὅμως νὰ κατορθώσουν νὰ ἐξαλείψουν τὰς θεμελιώδεις ψυχικὰς προδιαθέσεις τῶν λαῶν τούτων. Εἶναι δὲ οὗτοι ἀφ' ἑνὸς μὲν οἱ Σῖναι, οἱ Ἰάπωνες, οἱ Βαβυλώνιοι καὶ οἱ Αἰγύπτιοι, ἀφ' ἑτέρου δὲ οἱ Ἰνδογερμανοί. Πλησιαίτατα τῇ μυθολογίᾳ τῶν πρωτογενῶν ἵσταται ἡ μυθολογία τῶν Σινῶν. Τοὐναντίον, ἡ ἰαπωνικὴ μυθολογία περιέχει πολλὰ ἴχνη ἱστορικῶν ἀναμνήσεων· ἄλλως τε καὶ ἡ μυθολογία τοῦ Σιντοϊσμοῦ καθόλου ἐμφανίζει ἑαυτὴν ὡς χρονογραφικὴν καὶ ἀπέριττον ἔκθεσιν γεγονότων καὶ καταστάσεων ἀρχουσῶν κατὰ τὸν χρυσοῦν αἰῶνα, τὴν πρώτην ἡλικίαν τῆς ἀνθρωπότητος. Ἡ ἔρις λ. χ. μεταξὺ τῆς Ἀματεράσου, προσωποποιήσεως τοῦ ἡλίου, καὶ τοῦ ἀδελφοῦ της Σουσανόβα, ἑρμηνευτέα ὡς μυθολογικὴ ἀπήχησις τοῦ πολιτικοῦ ἀνταγωνισμοῦ μεταξὺ μαλαϊκῶν καὶ ματζουριακῶν φύλων. Ἡ βαβυλωνιακὴ μυθολογία εἶναι ἀστρικὴ καὶ κοσμολογική. Τὰ πάντα ἀναφέρονται ἐνταῦθα εἰς τὰς ἐν τῷ κόσμῳ ἀποκαλυπτομένας ὑπερφυσικάς, οὐρανίας δυνάμεις καὶ εἰς τὴν ἔρευναν αὐτῶν. Φυσικὸν εἶναι ὅτι ἡ ἀστρικὴ αὕτη μυθολογία διακρίνεται τῆς δημώδους καὶ ὁδηγεῖ τέλος εἰς τὴν ἀστρολογίαν καὶ τὴν ἀστρονομίαν. Σημειωτέον ὅμως ὅτι ἡ μυθολογία εἶναι λίαν περιωρισμένη παρὰ τοῖς Σημίταις. Οὕτω λ. χ. οἱ Ἄραβες ἐλαχίστην μυθολογίαν ἐκέκτηντο καὶ πρὸ τοῦ Μωάμεθ· ὡς πρὸς δὲ τοὺς Ἰσραηλίτας, εἶναι γνωστὸν ὅτι ὁ μονοθεϊσμὸς ἐξώβελισε τὸν μῦθον, καθ' ἃ ἀνωτέρω εἴπομεν. Ἄλλως παρὰ τοῖς Αἰγυπτίοις, τῶν ὁποίων ἡ μυθολογία διακρίνεται διὰ τὸν στενὸν αὐτῆς σύνδεσμον πρὸς τὴν ζῳολατρείαν. Ἐξαιρετικὴ εἰς δύναμιν καὶ εἰς πλοῦτον εἶναι ἡ μυθοπλαστικὴ φαντασία τῶν Ἰνδογερμανικῶν λαῶν. Ἡ μυθολογία αὐτῶν περιλαμβάνει χαρακτηριστικὰ γνωρίσματα κοινὰ εἰς ὅλους τούτους τοὺς λαούς. Οὕτω εἶναι οὐρανία γενικῶς μυθολογία· τὸ κέντρον τοῦ πανθέου ἀποτελοῦν ὁ πατὴρ οὐρανὸς καὶ ἡ μήτηρ γῆ. Παρ' αὐτοὺς ἐμφανίζονται δύο νεαροὶ δίδυμοι θεοί, συνδεόμενοι συνήθως πρὸς τὸν Ἑωσφόρον καὶ τὸν Ἕσπερον. Ὁ ἥλιος καὶ τὸ πῦρ ἀπολαύουσιν ἐξαιρετικῆς λατρείας, ὡς πηγὴ τῆς ζωῆς. Ἔναντι τῶν θεῶν τοῦ φωτὸς ἵστανται οἱ θεοὶ τοῦ σκότους, τῶν ὁποίων ἡ πρὸς ἀλλήλους ἀντίθεσις διαμορφοῦται μυθικῶς. Ἡ μοῖρα εἶναι τὸ δῶρον, ὅπερ οἱ θεοὶ ἐξεχώρησαν εἰς τοὺς ἀνθρώπους. Τὰ εἰς πάντας τοὺς ἰνδογερμανικοὺς λαοὺς κοινὰ ταῦτα θέματα διαφοροποιοῦνται καὶ μεταλλάσσουσι διὰ τῆς ἐπιδράσεως παραγόντων ἰδίων εἰς ἕκαστον τῶν λαῶν τούτων. Οἱ Ἰνδοὶ ἐπὶ παραδείγματι συνδυάζουσιν αὐτὰ πρὸς φιλοσοφικὰ στοιχεῖα, διὰ τῶν ὁποίων δημιουργεῖται εὐρὺ χάσμα μεταξὺ δημώδους μυθολογίας καὶ βραχμανικῆς σοφίας. Παρὰ τοῖς Πέρσαις ἐξελίσσεται ἡ μεταξὺ φωτεινῶν καὶ σκοτεινῶν θεῶν ἀντίθεσις εἰς ἰσχυρὰν διαρχίαν, ἐπιβαλοῦσαν τὴν σφραγῖδα αὐτῆς εἰς ὅλον τὸν βίον τῶν ἀνθρώπων. Ἡ δημώδης μυθολογία τῶν Ἑλλήνων ὡς κέντρον αὐτῆς ἔχει τὴν παράστασιν τῆς μητρὸς Γῆς, ἡ δὲ ὑπὸ τῶν ποιητῶν διαμορφωθεῖσα διακρίνεται διὰ τὸν πλοῦτον τοῦ περιεχομένου καὶ τὴν πλαστικὴν δύναμιν τῆς φαντασίας. Οἱ Ῥωμαῖοι ἐξαρτῶνται ὡς πρὸς τοὺς μυθολογικάς των παραστάσεις κατὰ τὸ πλεῖστον ἀπὸ τῶν Ἑλλήνων. Ἡ προσωποποίησις ἀφῃρημένων ἐννοιῶν δὲν δύναται νὰ ὀνομασθῇ μῦθος. Τῆς γερμανικῆς τέλος μυθολογίας κυριαρχεῖ ἡ ἰδέα τῆς Μοίρας, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπόκεινται καὶ αὐτοὶ οἱ θεοί, τὸ δὲ χαρακτηριστικὸν γνώρισμα αὐτῆς εἶναι ἡ ἀπαισιοδοξία.

Τὴν μυθοπλαστικὴν φαντασίαν γονιμοποιοῦν, παρέχοντα ἀφορμὰς καὶ ὑλικόν, τὸ μὲν τὰ φαινόμενα τῆς φύσεως καθόλου, τὸ δὲ τὸ βασίλειον τῶν ζῴων, τὸ δὲ τέλος τὰ βιώματα τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Φυσικὰ φαινόμενα εἶναι ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη, οἱ ἀστέρες, τὰ νέφη, ἡ ἶρις, οἱ ἄνεμοι καὶ αἱ καταιγίδες, οἱ σεισμοί. Τοσοῦτῳ δὲ ὑπερέχουν ταῦτα ἐν τῷ μύθῳ, ὥστε ἐπεχείρησαν πολλοὶ ἐξ αὐτῶν μόνον νὰ ἑρμηνεύσουν τὴν ὅλην μυθολογίαν. Ἀλλ' ὅμως ὑπάρχουν καὶ ἄλλα πολλὰ πράγματα, τὰ ὁποῖα ἀσκοῦν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ ἀνθρώπου ἢ ἀπαιτοῦν τὴν λύσιν τοῦ μυστηρίου, τὸ ὁποῖον ὑποκρύπτουν, οἷα ἡ παραγωγὴ τῆς ζωῆς καὶ ὁ θάνατος, ὁ ὕπνος, αἱ ἀσθένειαι κτλ. Καὶ ἡ ποικιλία τοῦ ζωϊκοῦ βασιλείου παρέχει ὑλικὸν εἰς τὴν μυθοπλαστικὴν φαντασίαν καὶ περιεχόμενον εἰς τὸν μῦθον. Πολλὰ εἴδη ζῴων ἄλλως τε πιστεύονται συνδεόμενα στενῶς πρὸς ἄτομα ἢ καὶ ὁλοκλήρους ὁμάδας ἀνθρώπων, ὅπως ἐξ ἄλλου πολλὰ ἐξ αὐτῶν θεωροῦνται κατέχοντα μαγικὰς δυνάμεις, ὑπερτεροῦντα οὕτω τοῦ ἀνθρώπου. Σπουδαίαν συμβολὴν πρὸς μυθοπλαστίαν παρέχουν καὶ διάφορα βιώματα τοῦ ἀνθρώπου. Ἐκ τούτων ἰδιάζουσαν σημασίαν κέκτηνται τὰ περὶ τὰ ὄνειρα συμβαίνοντα, ὡς ὁ ἐφιάλτης καὶ τὰ παραπλήσια, τὰ ὁποῖα δίδουν ἀφορμὴν πρὸς γέννησιν παραδόξων ὅσον καὶ φοβερῶν μυθικῶν πλασμάτων. Ἐπίσης τὰ βιώματα τῆς ἐκστάσεως, τὰ ὁράματα καὶ τὰ τοιαῦτα. Ἀλλ', ὡς ἐρρέθη, ὅλα ταῦτα παρέχουν τὸ ὑλικὸν μόνον πρὸς δημιουργίαν μύθων. Ἐκ τούτου διαμορφοῦται ὁ μῦθος διὰ δημιουργικῆς πράξεως τοῦ ἀνθρωπίνου πνεύματος, ὅπερ διὰ δημιουργικῆς συνθέσεως ἀλλοιοῖ τοὺς ἔξωθεν ἐρεθισμούς, παρέχον οὕτω ἀφορμὴν εἰς ἰδιότυπα βιώματα, τὰ ὁποῖα ἀντιδρῶσι πάλιν μὲ τὴν σειράν των εἰς τὴν περαιτέρω διαμόρφωσιν τοῦ προϊόντος τῆς δημιουργικῆς ἐκείνης συνθέσεως.

Ἀντικείμενον τοῦ μύθου εἶναι ἡ ἱστορία τῶν θεῶν. Αὕτη περιλαμβάνει τὸ μὲν τὴν γέννησιν καὶ τὸν χαρακτῆρα τῶν θεῶν, τὸ δὲ ἐνεργείας καὶ πράξεις αὐτῶν, οἷαι λ. χ. ἡ δημιουργία τοῦ κόσμου, εὐεργεσίαι πρὸς τοὺς ἀνθρώπους, ἡ καταστροφὴ ἢ ἡ ἀνακαίνισις τοῦ κόσμου. Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ἀντικειμένων τούτων τοῦ μύθου ἐπεχείρησαν τυπολογίαν αὐτοῦ, τουτέστιν ἐπεξεργάσθησαν διαφόρους τύπους τοῦ μύθου, ἵνα τῇ βοηθείᾳ αὐτῶν ταξινομηθῇ τὸ ἀπέραντον μυθολογικὸν ὑλικὸν καὶ καταστῇ εὐχερὴς ἡ ἐπισκόπησις αὐτοῦ. Οὕτω διακρίνομεν θεογονικούς, κοσμογονικούς, κοσμολογικούς, ἀνθρωπολογικούς, σωτηριολογικούς, ἐσχατολογικούς, αἰτιολογικοὺς μύθους. Οἱ *θεογονικοὶ* μῦθοι ἀσχολοῦνται περὶ τὴν γένεσιν τῶν θεῶν καὶ τοὺς πρὸς ἀλλήλους ἀγῶνας καὶ ἀνεπτύχθησαν πρὸ πάντων ἐν ταῖς θρησκείαις τῶν πεπολιτισμένων λαῶν. Γνωστὴ εἶναι ἡ βαβυλωνιακὴ παράστασις περὶ ἐκφύσεως τῶν θείων γενεῶν ἐκ τοῦ Τιαμάτ. Κατὰ τὴν αἰγυπτιακὴν μυθολογίαν ὁ ἡλιακὸς θεὸς Ρά, ἐκ τοῦ ὕδατος γεννηθείς, παρήγαγεν ἐξ ἑαυτοῦ τὸ πρῶτον ζεῦγος τῶν θεῶν. Ὁ Ἡσίοδος ἱστορεῖ διὰ μακρῶν τοὺς ἀγῶνας τῶν Τιτάνων, οἵτινες προηγήθησαν τῆς μονοκρατορίας τοῦ Διός. Μάλιστα διαδεδομένοι εἶναι οἱ *κοσμογονικοὶ*

Digitized by Google

μῦθοι, οἵτινες ἐξιστοροῦν τὴν γένεσιν καὶ δημιουργίαν τοῦ κόσμου. Τοιούτους μύθους ἀπαντῶμεν ἤδη παρὰ τοῖς πρωτογόνοις λαοῖς, εἶναι δὲ συνήθως συνδεδεμένη ἡ κοσμογονία πρὸς τὴν παράστασιν ὑψίστου ὄντος, αἰτίου τοῦ κόσμου καὶ τῆς σωτηρίας. Κατὰ τὴν πίστιν τῶν Ἰνδιάνων, ἡ γῆ εἶναι τεραστία γυνή, τῆς ὁποίας μαστοὶ μὲν εἶναι τὰ ὄρη, φλέβες οἱ ποταμοὶ καὶ κόμη τὰ φυτά. Κατὰ τοὺς ἀρχαίους Μεξικανοὺς κατὰ τὴν δημιουργίαν ἐγεννήθη τεράστιος ἰχθῦς, ὅστις νήχεται ἐπὶ τῆς θαλάσσης καὶ οὗτινος τὸ σῶμα ἀποτελεῖ τὴν γῆν μετὰ τῶν ὀρέων αὐτῆς. Εἰς χώρας πλουσίας εἰς ὕδατα, ὡς ἀρχὴ τοῦ παντὸς πιστεύεται τὸ ὕδωρ. Οὕτω, κατὰ τοὺς Βαβυλωνίους, ἀρχικὴ κατάστασις τοῦ χάους ἦτο ἡ θάλασσα, προσωποποιηθεῖσα διὰ τοῦ Τιαμάτ. Ἐκ τοῦ σώματος αὐτοῦ δημιουργεῖ ὁ Μαρδοὺκ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Μετὰ τῶν μύθων τούτων συνδέονται συχνὰ οἱ *ἀνθρωπολογικοί*, ἀναφερόμενοι εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ ἀνθρώπου.

Κατὰ τοὺς Φοίνικας, τόσον τὰ φυσικὰ φαινόμενα ὅσον καὶ τὰ ἔμψυχα ὄντα γεννῶνται ἐκ τῆς συζεύξεως τοῦ Ἀνέμου καὶ τοῦ Χάους. Ὁ Μαρδοὺκ δημιουργεῖ ἐκ τοῦ αἵματος τοῦ Κιγκοῦ, τοῦ συντρόφου τοῦ Τιαμάτ, τοὺς ἀνθρώπους, ἐν δὲ τῇ ἑλληνικῇ μυθολογίᾳ γεννῶνται ἐκ τῶν λίθων, τοὺς ὁποίους ῥίπτει ὄπισθεν αὐτοῦ ὁ Δευκαλίων ἢ ἐκ τῆς τέφρας τῶν ἀπὸ τοῦ κεραυνοῦ τοῦ Διὸς κατακαιομένων Τιτάνων. Εὐρέως διαδεδομένοι εἶναι καὶ οἱ *κοσμολογικοὶ* μῦθοι, οἱ ὁποῖοι συνδέονται πρὸς τὰ φαινόμενα τοῦ κόσμου καὶ περιλαμβάνουσιν ἱστορίας θεῶν, ἀποσκοπούσας εἰς τὴν ἐξήγησιν ἰδιαιτέρων φαινομένων τῆς φύσεως. Χαρακτηριστικὸν παράδειγμα κοσμολογικοῦ μύθου εἶναι οἱ ἀστρικοὶ μῦθοι, οἵτινες εὑρίσκονται καὶ πανταχοῦ καὶ ἰδίᾳ ἐν τῇ βαβυλωνιακῇ θρησκείᾳ. Οἱ πλεῖστοι τῶν θεῶν τῆς μεξικανικῆς θρησκείας εἶναι ἀστρικαὶ θεότητες. Εἰς τοὺς κοσμολογικοὺς μύθους ὑπάγονται καὶ οἱ πρὸς μετεωρολογικὰ φαινόμενα, νέφη, ἀνέμους κτλ. σχετιζόμενοι, οἱ περὶ κατακλυσμοῦ μῦθοι καὶ οἱ εἰς τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους ἀναφερόμενοι. Τὴν ἐναλλαγὴν τῶν ἐποχῶν τοῦ ἔτους ἐκδέχονται οἱ μῦθοι οὗτοι ὡς ἀγῶνα μεταξὺ τῶν δυνάμεων τοῦ φωτὸς καὶ τῶν δυνάμεων τοῦ σκότους ἢ ὡς θάνατον καὶ ἀνάστασιν τῶν θεῶν τῆς βλαστήσεως. Στενὴν πρὸς τούτοις σχέσιν ἔχουσιν οἱ περὶ θανάτου καὶ ἀναστάσεως μῦθοι μετὰ τῶν περὶ Ἅδου παραστάσεων αὐτῶν. Ἐπίσης οἱ *σωτηριολογικοὶ* μῦθοι, ἐν οἷς ἐμφανίζονται κυρίως οἱ θεοὶ ἐκεῖνοι τῆς βλαστήσεως ὡς σωτῆρες καὶ λυτρωταὶ ἀπὸ παντοίων δεινῶν, φυσικῶν, κοινωνικῶν, ἠθικῶν, ἀναλόγως τῆς πνευματικῆς βαθμίδος, ἐπὶ τῆς ὁποίας ἵστανται οἱ καθ' ἕκαστον λαοί, ὡς καὶ τῶν ἐξωτερικῶν συνθηκῶν, ὑφ' ἃς τελοῦσιν. Οἱ *ἐσχατολογικοὶ* μῦθοι καλοῦνται οὕτω, ἐπειδὴ ἀναφέρονται εἰς τὰ ἔσχατα πράγματα καὶ τοὺς ἐσχάτους καιρούς, εἰς τὴν καταστροφὴν τοῦ κόσμου καὶ εἰς τὴν ἀνακαίνισιν αὐτοῦ. Τὸ ὑλικὸν αὐτῶν ἠντλησαν ἀναμφιβόλως οἱ μῦθοι οὗτοι καὶ ἀπὸ τεραστίων φυσικῶν καταστροφῶν, οἷαι οἱ σεισμοί, αἱ ἐκρήξεις ἡφαιστείων, μεγάλης ἐκτάσεως πλήμμυραι κτλ. Συχνὴ εἶναι ἡ παράστασις τρομερῶν μαχῶν, αἵτινες ἐπιφέρουν τὸ τέλος τῶν αἰώνων. Πολλάκις οἱ ἐσχατολογικοὶ μῦθοι ἀντιστοιχοῦσι πρὸς τοὺς θεογονικοὺς καὶ κοσμογονικοὺς μύθους, ὄντες ἐπανάληψις τρόπον τινὰ αὐτῶν μεταβεβλημένη καὶ ἐν τέλει τῶν αἰώνων. Τέλος *αἰτιολογικοὶ* μῦθοι ἐν στενοτέρᾳ ἐννοίᾳ, διότι ἐν εὐρυτέρᾳ ἐννοίᾳ εἶναι τοιοῦτοι τὸ πλεῖστον τῶν μύθων, εἴθισται νὰ ὀνομάζωνται ὅσοι ἐξευρέθησαν, ἵνα ἐξηγήσουν ἀξιοσημείωτα πλάσματα τῆς φύσεως καὶ τοῦ περιβάλλοντος, ὡς λ. χ. σπανίας μορφὰς φυτῶν καὶ ζῴων, ἰδιότυπα σχήματα βράχων, ἀνθρωπίνους ἰδιότητας ἐμποιούσας ἐντύπωσιν. Αἰτιολογικὸς μῦθος εἶναι λ. χ. ὁ τῆς Νιόβης, πρὸς τὸν ὁποῖον ἀφορμὴν ἔδωκε βράχος ὁμοιάζων πρὸς μορφὴν ἀνθρώπου, τοῦ ὁποίου τὸ σχῆμα ἔδει νὰ ἐξηγηθῇ. Ἰδιαίτερον εἶδος αἰτιολογικοῦ μύθου εἶναι οἱ μῦθοι τῆς λατρείας, διὰ τῶν ὁποίων ἐξηγοῦνται ὡρισμέναι λατρεῖαι καὶ τύποι λατρείας ἢ πιστοποιεῖται ἡ παλαιοτάτη αὐτῶν καταγωγή.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Fr. Creuzer*, Symbolik und Mythologie der alter Völker (1829).—*M. Müller*, Einleitung in die vergleichende Religionswissenschaft (β' ἔκδ. 1876).—*H. Usener*, Götternamen (1896).—*E. Rohde*, Psyche (ε' καὶ στ' ἔκδ. 1910).—*F. Lauger*, Intellektual Mythologie.—*W. Wundt*, Völkerpsychologie (4—6 τόμ.. β' ἔκδ. 1911).—*S. Freud*, Totem und Tabu (ἔργα τόμ. 10, 1923).—*O. Rank*, Psychoanalytische Beiträge zur Mythenforschung (1919).— *E. Cassirer*, Die Begriffsform im mythischen Denken (1922).—*P. Tillich*, Religionsphilosophie (1925).—*Bignoli*, Mythus und Wissenschaft (1880).—*A. Liebert*, Mythus und Kultur (1925).—*F. Lipps*, Mythenbildung und Erkenntnis (1907).—*E. Howald*, Mythus und Tragödie (1927).—*J. Hauer*, Die Religionen (τόμ. Α', 1923).—*P. Ehrenreich*, Die allgemeine Mythologie und ihre ethnologischen Grundlagen (1910).—*Van der Leenn*, Phänomenologie der Religion (1925).—*Vaihinger*, Der Mythus und das Als Ob (1926).— Τὰ ἄρθρα Mythus und Mythologie (Religion in Geschichte und Gegenwart, ἔκδ. β', τόμ. 4, 1930) τῶν *Rühle* καὶ *Tillich*, εἰς ὃν πολλὰ ὀφείλει ἡ παροῦσα πραγματεία.— Τῆς μυθολογίας τῶν διαφόρων θρησκειῶν παρὰ *Chantepie de la Saussaye*, (ἔκδ. 4η ὑπὸ *Bertholet* καὶ *Lehmann*, 1925).— *Pinard de la Boulaye*, L'étude comparée des religions (τόμ. Α', 1925).—*A. Lang*, Myth, Ritual and Religion (1887). —*K. Abraham*, Traum und Mythos (1909).—*Leyen*, Das Märchen (β' ἔκδ. 1917).—*K. Beth*, Einführung in die vergleichende Religionsgeschichte (1920).

Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

—*[Παιδαγ.]* Αἱ ψυχικαὶ καὶ ἀνώτεραι νοητικαὶ δεξιότητες τοῦ παιδὸς βραδέως καὶ ἐν διαδοχικῇ ἀλληλουχίᾳ ἄρχονται λειτουργοῦσαι. Ὡσαύτως ἡ προσοχὴ καὶ ἡ παρατήρησις εἶναι ἀσθενεῖς κατὰ τὰς πρώτας περιόδους της παιδικῆς ἡλικίας. Ἀντιθέτως, ἡ φαντασία ἐξελίσσεται ἐνωρίτερον καὶ καθ' ὡρισμένα ἔτη τῆς παιδικῆς ἡλικίας ἀποτελεῖ τὴν κεντρικὴν ψυχικὴν δεξιότητα, κυριαρχοῦσα τοῦ ὅλου ψυχικοῦ βίου τοῦ παιδός. Εἰς τὴν πρώϊμον αὐτῆς ἐξέλιξιν ὀφείλεται ἡ ἀτέλεια καὶ ἀνακρίβεια τῶν γνώσεων τοῦ παιδός, ὡς καὶ ἡ τάσις αὐτοῦ πρὸς τὸ μυθικόν. Τῇ ἐπικουρίᾳ ὡσαύτως τῆς φαντασίας πληροῖ ὁ παῖς τὰ χάσματα, ὧν βρίθουν αἱ γνώσεις αὐτοῦ διὰ ψευδῶν γνωρισμάτων. Τὴν ῥοπὴν ταύτην τοῦ παιδὸς πρὸς τὸ ὑπερφυσικὸν καὶ ἀνύπαρκτον ἐθεωρήθη ὀρθὸν ὅτι πρέπει νὰ χρησιμοποιῇ ἡ ἀγωγή. Ἰδίᾳ προεβλήθη εἰς τὴν διδασκαλίαν ἡ ἀπαίτησις, ὅπως κατὰ τὴν περίοδον ταύτην τῆς παιδικῆς ἡλικίας ἀπασχολῇ τὸν παῖδα μὲ μύθους. Ἰδιαιτέρως πρέπει νὰ τονισθῇ, ὡς πρὸς τὸ σημεῖον τοῦτο, ἡ προσπάθεια τῆς σχολῆς τοῦ Ἑρβάρτου. Οὗτος, ἐκτὸς τῆς ἄλλης φρονηματιστικῆς ὕλης, ὁρίζει κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τῆς εἰς τὸ σχολεῖον φοιτήσεως τοῦ παιδὸς τὴν παροχὴν ἐκλεκτῶν μύθων. Κατὰ τὴν παροχὴν ὅμως τῶν μύθων εἶναι ἀνάγκη νὰ τηρῶνται ὡρισμένοι ὅροι καὶ δή: α') Κατάλληλος ἐκλογὴ τῶν μύθων κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τῆς παιδικῆς ἡλικίας. β') Εἰς παῖδας ἔχοντας ὑπὲρ τὸ μέτρον φαντασίαν εἶναι ἐπικίνδυνος ἡ παροχὴ φανταστικῶν διηγήσεων. γ') Ἐπὶ παίδων πρεσβυτέρων, ἐφ' ὧν ἔχει παρέλθει ἡ ἐποχὴ τῆς κυριαρχίας τῆς φαντασίας, πρέπει νὰ παρέχηται ὕλη πραγματικοῦ περιεχομένου.

Τ. ΣΤΡ.

**μυθώδης** (ὁ, ἡ), —ες (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μῦθον, πλαστός, οὐχὶ ἀληθινός· ‖ ὁ εἰς μύθους μόνον ἀναφερόμενος, ὑπὲρ τὴν πραγματικότητα, ἀφάνταστος: «μυθώδης πολυτέλεια».

**μυῖα** (ἡ) (Musca) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυιιδῶν*, περιλαμβάνουσα ποικιλωτάτου μεγέθους ἔντομα, χαρακτηριζόμενα ἰδίως ἐκ τοῦ μαλακοῦ ῥύγχους των, ὅπερ ἀπολήγει εἰς προβοσκίδα ἐλάχιστα προέχουσαν καὶ φέρουσαν κατὰ τὸ ἄκρον εὐρεῖαν σικυοειδῆ ἀπόφυσιν. Τὸ γένος τοῦτο περιλαμβάνει περὶ τὰ 20.000 εἴδη, πανταχοῦ τῆς γῆς διαδεδομένα. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ἡ *μυῖα ἡ κοινὴ* (Musca domestica). κοιν. *μῦγα*. Αὕτη εἶναι διαδεδομένη εἰς πᾶσαν τὴν γῆν καὶ ἀναφαίνεται καθ' ὅλας τὰς ἐποχὰς τοῦ ἔτους καὶ ἰδίως κατὰ τὸ ἔαρ καὶ τὸ θέρος. Κυριώτερα χαρακτηριστικὰ τοῦ εἴδους τούτου εἶναι τὰ ἑξῆς: Σῶμα λεπτὸν καὶ σχεδὸν κυλινδρικόν· κεφαλὴ σφαιρική, εὐρεῖα, μὲ δύο ὀφθαλμοὺς ἀρκετὰ μεγάλους σχετικῶς πρὸς τὰς διαστάσεις τοῦ ἐντόμου καὶ παρ' αὐτοὺς τρεῖς μικροτέρους εὐδιακρίτους. Ἐπὶ τοῦ μετώπου φύονται αἱ κεραῖαι, ἑκάστη τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν ἀρθρώσεων, ἐκ τῶν ὁποίων ἡ πρώτη καὶ ἡ δευτέρα εἶναι βραχύταται καὶ καλύπτονται ὑπό τινων σκληρῶν τριχῶν. Ἡ τρίτη ἄρθρωσις εἶναι τριπλασία εἰς μῆκος τῶν δύο ἄλλων ὁμοῦ λαμβανομένων, ἔχει σχῆμα σχεδὸν πρισματικὸν καὶ κατὰ τὴν βάσιν της φέρει πυκνὴν τρίχωσιν. Ἡ στοματικὴ κοιλότης φέρει μεμβρανώδη προβοσκίδα, συσταλτήν, τελευτῶσαν εἰς δύο χειλικὰς ἀποφύσεις, αἵτινες προσομοιάζουσι πρὸς σικύαν. Αἱ κεραῖαι εἶναι νηματοειδεῖς. Τὸ στῆθος κυλινδρικόν. Αἱ πτέρυγες μεγάλαι, ὁριζόντιαι, μετὰ πολλῶν ἐπιμήκων νευρώσεων. Οἱ πόδες εἶναι ἐπιμήκεις, λεπτοὶ καὶ τελευτῶσιν εἰς δύο ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις, αἵτινες εἶναι ἐφωδιασμέναι διὰ μικρῶν προσκεφαλαιοειδῶν διογκώσεων ὑπὸ τριχῶν κεκαλυμμένων. Ἡ κοιλία εἶναι ᾠοειδὴς καὶ τελευτᾷ εἰς τὴν θήλειαν εἰς βραχύ, λεπτὸν καὶ δυσδιάκριτον τέρετρον.

Αἱ νύμφαι τῆς μυίας εἶναι ἄποδοι μὲ σῶμα κυλινδρικὸν καὶ μαλακόν, κεφαλὴν ἐφωδιασμένην διὰ

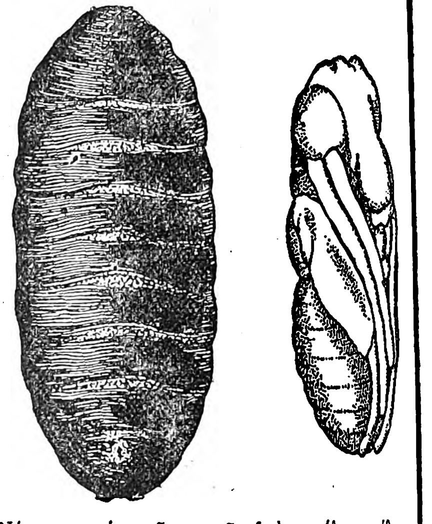

*Νύμφαι μυίας τῆς κοινῆς ὑπὸ μεγάλην μεγέθυνσιν.*
[Ἐκ τῆς πρὸς τὰ δεξιὰ ἔχει ἀφαιρεθῇ τὸ νυμφικὸν κάλυμμα.]

μιᾶς ἢ δύο ἀγκιστροειδῶν ἀποφύσεων. Ζῶσιν ἐντὸς ἀποσυντεθειμένων οὐσιῶν, τὴν κόπρον, τὰ ἀπορρίματα τῶν ζῴων κ. τ. λ. Αἱ μυῖαι εἶναι ἀφθονώταται κατὰ τὸ θέρος καὶ ἰδίως εἰς τὰς μεσημβρινὰς χώρας τῆς Εὐρώπης καὶ καθίστανται ἐνοχλητικώτατα ἔντομα εἰς τοὺς ἀνθρώπους καὶ τὰ ζῷα. Ὁ χρωματισμὸς εἶναι γενικῶς τεφρός· τὸ πρόσωπον μελανόν, αἱ πλευραὶ τοῦ σώματος ὑποκίτρινοι, τὸ μέτωπον κίτρινον μὲ μελανὴν λωρίδα, αἱ κεραῖαι μελαναί, ὁ θώραξ πεποικιλμένος διὰ μελανῶν ῥαβδώσεων, ἡ κοιλία μελανῶς διάστικτος, οἱ πόδες μελανοὶ καὶ αἱ πτέρυγες ἀνοικτόχροοι καὶ ὑποκίτρινοι κατὰ τὴν βάσιν.

Ἡ θήλεια γεννᾷ 10—12 φορὰς τὸ ἔτος ἀπὸ 10—120 ᾠὰ ἑκάστην φοράν. Ἐκ τῶν ᾠῶν μετὰ πάροδον ὀλίγων ὡρῶν ἐκκολάπτονται αἱ νύμφαι, οἵτινες μεταμορφοῦνται μετὰ 25 ἡμέρας εἰς τέλεια ἔντομα. Αἱ μυῖαι εἶναι φορεῖς τῶν περισσοτέρων ἐπιδημικῶν νόσων καὶ διὰ τοῦτο δέον ἐπιμελῶς νὰ καταστρέφωνται.

Ἐκ τῶν λοιπῶν πολυπληθῶν εἰδῶν τῶν μυιῶν γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς:

*Μυῖα ἡ ἐμετικὴ* (Musca vomitoria). Εἶναι μεγαλυτέρα τοῦ προηγουμένου εἴδους καὶ ἔχει κοιλίαν κυανῆν καὶ λάμπουσαν. Κατὰ τὸ θέρος εἰσχωρεῖ εἰς τὰ ὀψοφυλάκια τῶν οἰκιῶν καὶ ἀποθέτει τὰ ᾠά της ἐπὶ τοῦ κρέατος, ὅπερ ἐσθιόμενον ἐπιφέρει συνήθως ἐμετὸν καὶ σπανιώτερον τοπικὴν στομαχικὴν δηλητηρίασιν.

*Μυῖα ἡ φιλόκρεως* (Musca carnaria). Ἔχει τὸ χαρακτηριστικὸν ὅτι γεννᾷ ζώσας κάμπας, ἃς ἀποθέτει ἐπὶ τῶν πτωμάτων διαφόρων ζῴων, ἐπὶ διαφόρων ἀποσυντεθειμένων οὐσιῶν, ἐπὶ τοῦ νωποῦ κρέατος κτλ.

*Μυῖα ἡ ἀνθόμυια* (Musca anthomia). Εἶναι κατά τι μεγαλυτέρα τῆς κοινῆς μυίας καὶ αἱ κάμπαι της ἐνδιαιτῶνται ἐπὶ διαφόρων ἀποσυντεθειμένων φυτῶν, ἀνθέων καὶ σπανιώτερον ἐπὶ πτωμάτων ζῴων ἢ ἐπὶ περιττωμάτων. Ἐνίοτε ἐπισκέπτεται καὶ τὰς οἰκίας.

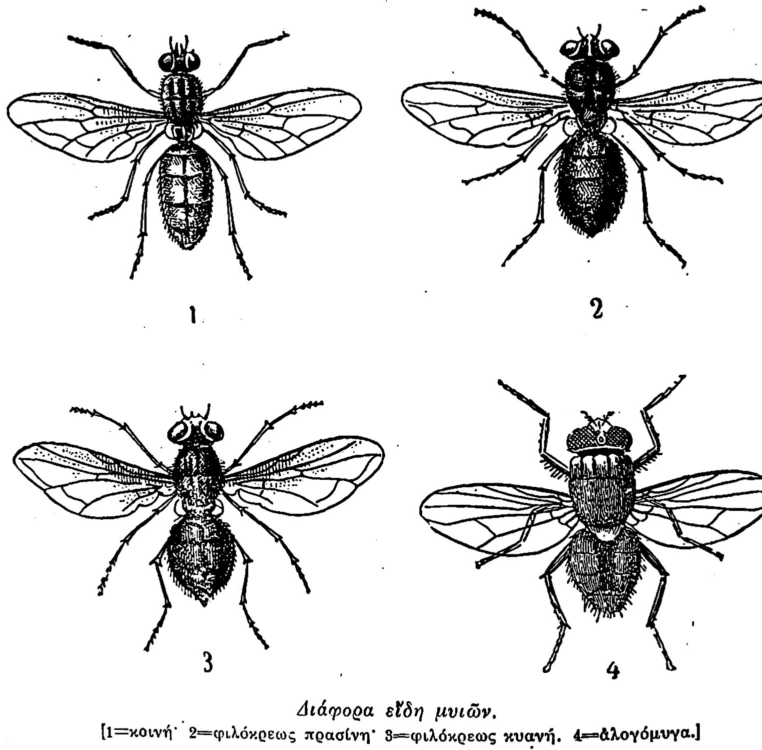


*Διάφορα εἴδη μυιῶν.*
[1=κοινή· 2=φιλόκρεως πρασίνη· 3=φιλόκρεως κυανή. 4=ἀλογόμυγα.]

*Μυῖα ἡ κεντροφόρος* (Musca acanthina). Ἔχει μικρὸν μέγεθος καὶ εὐμέγεθες αἰχμηρὸν τέρετρον, δι' οὗ νήσσει τοὺς ἀνθρώπους καὶ τὰ ζῷα.

*Μυῖα ἡ χρυσόχρους* (Musca aurata), κοιν. χρυσόμυγα. Εἶναι γνωστότατον ἔντομον κατὰ πολὺ μεγαλύτερον τῆς κοινῆς μυίας καὶ χαρακτηρίζεται ὑπὸ τοῦ κυανοχρύσου χρώματός της καὶ τοῦ ἰδίου

Digitized by Google

ρύθμου βόμβου της. Ἀπαντᾷ εἰς τοὺς ἀγρούς, τὰ δάση καὶ τοὺς κήπους καὶ ἐνδιαιτᾶται ἐπὶ διαφόρων ἀνθέων.

*Μυῖα ἡ γλωσσίνα* (Musca glossina) ἢ ἁπλῶς *γλωσσίνα,* γνωστὴ ὑπὸ τὸ ἰθαγενὲς ὄνομα *τσὲ-τσέ.* Εἶναι φορεὺς τοῦ τρυπανοσώματος καὶ τῆς ἀσθενείας τοῦ ὕπνου. Τὸ εἶδος τοῦτο ἔχει τὰς πτέρυγας διεσταυρωμένας ἐπὶ τῆς ράχεως καὶ τὸ ρύγχος μακρόν, λεπτὸν καὶ εὐκινητότατον. Ζῇ εἰς τὰς ὑγρὰς καὶ θερμὰς χώρας καὶ ἐνδιαιτᾶται πλησίον τῶν ὑδάτων.

*Μυῖα ἡ τῶν δημητριακῶν καρπῶν* (Musca chlorops). Ἐνδιαιτᾶται ἐπὶ τῶν φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀγρωστοειδῶν* καὶ ἐπιφέρει μεγάλας καταστροφὰς εἰς τὴν συγκομιδήν.

*Μυῖα τῆς ἐλαίας* (Musca dacus) ἢ ἁπλῶς *δάκος* (βλ. λ.). Ἐνδιαιτᾶται κυρίως ἐπὶ τῶν ἐλαιοδένδρων καὶ ἐπιφέρει μεγάλας καταστροφὰς εἰς τὴν καρποφορίαν.

*Μυῖα τῆς μηδικῆς* (Musca nigripes). Ἡ κάμπη ταύτης κατατρώγει τὰ φύλλα τῆς *μηδικῆς* (τριφυλλίου) καὶ καλύπτει ταῦτα διὰ λευκῶν πλακῶν.

*Μυῖα ἡ τοῦ τυροῦ* (Musca piophila). Ἡ κάμπη ταύτης εἰσερχομένη εἰς τὸν πεπτικὸν σωλῆνα τοῦ ἀνθρώπου ἐξέρχεται ὡς νύμφη, ἐπιφέρουσα πολλάκις στομαχικὰς διαταραχάς.

*Μυῖα ἡ τῶν οὐρητηρίων* (Musca urinaria). Κοινοτάτη εἰς τὰ οὐρητήρια καὶ τὰ ἀποχωρητήρια. Ἡ κάμπη της ζῇ ἐντὸς τῶν οὔρων καὶ τῶν ὑδάτων τῶν ὑπονόμων.

*Μυῖα ἡ σαρκόφιλος* (Wohlfarti). Ὁμοιάζει πρὸς τὴν κοινὴν μυῖαν, χροιᾶς γενικῶς σποδόχρου, ἐπὶ τοῦ θώρακος δὲ κυανοφαίου μετὰ γραμμῶν μελανωπῶν. Οἱ σχαδόνες αὐτῆς εἶναι ἀτρακτοειδεῖς, ἔχοντες δύο ἄγκιστρα ἐπὶ τοῦ κεφαλικοῦ ἄκρου αὐτῶν. Ἡ μυῖα αὕτη εὑρίσκεται ἰδίᾳ ἐν τῇ ἐξοχῇ καὶ εἶναι ἐκ τῶν κυριωτέρων ἐντόμων, ἅτινα προσβάλλουν τὰ ζῷα καὶ τὸν ἄνθρωπον. Ἐναποθέτει τοὺς σχαδόνας αὐτῆς εἴτε εἰς τὰς φυσικὰς κοιλότητας καὶ πτυχὰς τοῦ δέρματος τῶν ζῴων καὶ ἀνθρώπων, εἴτε ἐπὶ ἐξελκώσεων καὶ τραυματικῶν ἐπιφανειῶν. Καὶ ἡ ἁπλουστέρα τραυματικὴ ἐπιφάνεια καταλαμβάνεται τάχιστα ὑπὸ τῶν σχαδόνων τούτων καὶ καθίσταται δυσίατος. Ἡ μυῖα αὕτη ἀναζητεῖ ἰδιαζόντως τὰ κεκρυμμένα μέρη τοῦ δέρματος καὶ ἰδίᾳ τὰς βουβωνικὰς χώρας τῶν ἀγελάδων, ἔνθα οἱ σχαδόνες αὐτῶν προξενοῦσιν ἐπισήμους καὶ βαρείας πληγάς. Παρὰ τοῖς κυσὶν οἱ αὐτοὶ σχαδόνες ἐμφανίζονται συνήθως ἐμφωλεύοντες ἐντὸς τῶν ὤτων. Ἐπὶ ἀνθρώπων δὲ βιούντων ἐν ἀγροτικοῖς τόποις καὶ ὡς ἐκ τοῦ βίου αὐτῶν εὐκόλως ἐκτιθεμένων ἐν ὑπαίθρῳ, συχνάκις ἀπαντῶσιν οἱ σχαδόνες τῶν μυιῶν τούτων, οἵτινες συνήθως βιοῦσιν ἐντὸς τῶν ὤτων, τῆς ρινὸς καὶ ἐν αὐτῇ ἔτι τῇ ὑπερῴᾳ, ἐφ' ὧν προξενοῦ-

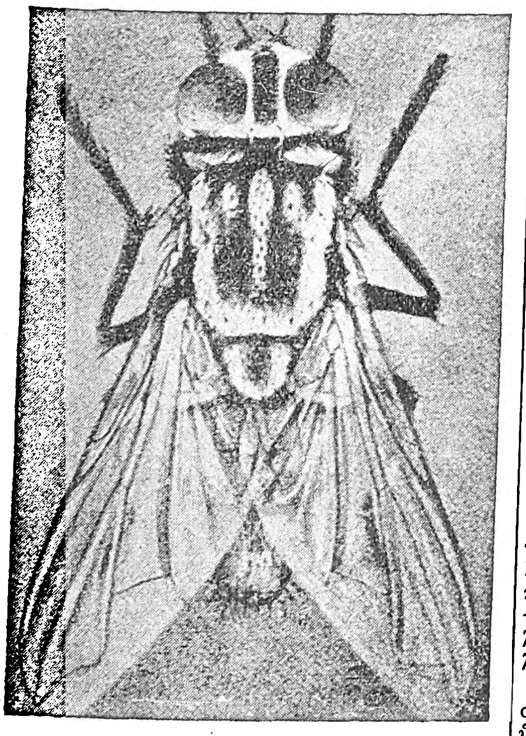

*Μυῖα ἡ κοινὴ ὑπὸ μεγάλην μεγέθυνσιν.*

σιν ἐπωδύνους φλογιστικὰς ἐξογκώσεις, αἱμορραγίας συχνὰς καὶ ἀφθόνους καὶ βαρείας πολλάκις βλάβας.

*Μυῖα ἡ ἀνθρωποφάγος* ἢ *ὠχρόμυια* (Ver du Cayor. Ochromyia anthropophaga). Τὸ ἔντομον τοῦτο καὶ ἡ προνύμφη αὐτοῦ ἀπαντῶσιν ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Cayor τῆς Σενεγαμβίας. Ἡ προνύμφη εἰσδύεται ἐντὸς τοῦ δέρματος καὶ παράγει μικρὸν φλεγμονῶδες ἐξόγκωμα, ἐξ οὗ ἀναδύεται πάλιν μετὰ ἓξ ἢ ἑπτὰ ἡμέρας. Ἐν Ἀφρικῇ καὶ πολλαχοῦ τῆς διακεκαυμένης ζώνης, συχνότατα ἀπαντῶσι τοιαῦται ἀνθρωποφάγοι προνύμφαι, τῶν ὁποίων ὅμως δὲν εἶναι ἀποχρώντως ἐξηκριβωμένη ἡ ταυτότης.

*Μυῖα ἡ δερματόβιος* ἢ *ἐπιβλαβής* (Dermatobia noxialis. Ver macaque). Εἶναι ἡ προνύμφη ἀμερικανικῆς μυίας, ἡ ταυτότης τῆς ὁποίας, πρὶν ἢ σπουδάσῃ ταύτην ὁ Blanchard τῷ 1898, ἦτο μάλλον ἀμφίβολος. Αὕτη βιοῖ εἰς δασώδεις τόπους καὶ ἀποτίθησι τὰ ᾠὰ αὐτῆς ἐπὶ κτηνῶν καὶ κυνῶν, ἔστι δ' ὅτε καὶ ἐπὶ ἀνθρώπου. Ἐκκολαφθεῖσαι αἱ προνύμφαι παρεισδύονται εἰς τὸ δέρμα καὶ παράγουσι φλεγμονῶδες οἴδημα περὶ τὸ στόμιον τῆς εἰσόδου, ἐξ οὗ καὶ ἐξιδροῦται ὀροπυῶδες ὑγρὸν περιέχον τὰ μέλανα περιττώματα τῆς προνύμφης. Ἡ προνύμφη αὕτη ἀπαντᾷ ἐν τῷ τριχωτῷ δέρματι τῆς κεφαλῆς ἰθαγενῶν τοῦ Τογκίνου. Τὸ ὄνομα μυῖα δίδουσι καὶ εἰς πλῆθος ἄλλων ἐντόμων, ὅπως *μυῖα τοῦ ἀσπαράγου* (Musca platyparea poecioptera), *μυῖα ἡ τῶν τεύτλων* (Musca pegomya hyoscyami), *μυῖα τῆς πορτοκαλέας* (Musca ceratitis capitata), *μυῖα ἡ τοῦ ἵππου* (Musca hippobosca equina), ἢ ἄλλως *ἱππόβοσκος ἢ ἵππειος* καὶ *ἀλογόμυγα, μυῖα ἡ μηλοφάγος τῶν προβάτων* (Musca melophagus ovinus), *μυῖα ἡ ἱσπανικὴ* (Musca hispanica) ἢ *καθαρὶς* κτλ. Δ. Ν. Π.—Μ. Ν. Κ.

—*[Φυτοπαθ.]* Εἰς τὴν γεωργικὴν ἐντομολογίαν *μυῖαι* ὀνομάζονται κοινῶς δίπτερα, ὁμοιάζοντα πρὸς τὴν κοινὴν μυῖαν καὶ βλαβερὰ εἰς τὰς καλλιεργείας. Οὕτω *μῦγα τῆς ἐλιᾶς* καλεῖται κοινῶς ὁ δάκος (βλ. λ.) *τῆς ἐλαίας, μῦγα τῶν ξινοδένδρων* ἢ *κερατῖτις* (Ceratitis capitata), *μῦγα τῶν κερασιῶν* ἢ *ραγολέτις* (Rhagolethis cerasi). Τὰ ἔντομα ταῦτα εἶναι καταστρεπτικὰ μόνον διὰ τῶν προνυμφῶν των, αἱ ὁποῖαι κατατρώγουν τοὺς ἱστοὺς τῶν φυτῶν (κυρίως τοὺς καρπούς). Αἱ ζημίαι εἶναι διτταί: ἐλάττωσις ποσοτικὴ τοῦ καρποῦ καὶ βλάβη τῆς ἐμπορικῆς ἀξίας. Συνήθως τρέφονται ἀπὸ σακχαρούχους οὐσίας, δι' ὃ καὶ ἡ καταπολέμησίς των συνίσταται γενικῶς εἰς τὴν τοποθέτησιν δολωμάτων ἐκ δηλητηριασμένων γλυκειῶν οὐσιῶν ἐπὶ τῶν προσβαλλομένων δένδρων ἢ φυτῶν. Ε.Τ.Ε.

—*[Μικροβ.]* Αἱ *μυῖαι* καὶ ἰδίᾳ τὰ τέσσαρα κυριώτερα εἴδη τούτων, ἤτοι ἡ *κοινή,* ἡ *ἐμετική,* ἡ *μικρὰ* (Lyperozia irritans) καὶ ἡ *στόμοξυς* (Stomoxys calcitrans) ἀνέκαθεν ἐθεωροῦντο ὡς ἀκάθαρτα ἔντομα. Ὁ σπουδαῖος ὅμως ρόλος, τὸν ὁποῖον παίζουσιν αἱ μυῖαι εἰς τὴν μετάδοσιν λοιμωδῶν τινων νόσων, ἀπεδείχθη μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν τῶν μικροβίων. Ἵνα αἱ μυῖαι μεταδώσωσι νόσον τινά, πρέπει πρότερον νὰ μολυνθῶσιν αὐταὶ αὗται. Ἡ μόλυνσις αὐτῶν γίνεται ὡς ἐκ τῆς συνηθείας, τὴν ὁποίαν ἔχουσιν, ὅπως ἐπικάθηνται ἐπὶ μεμολυσμένων οὐσιῶν, ὡς πτυέλων, κοπράνων, οὔρων, πύου, κρεάτων, θνησιμαίων ζῴων κ.τ.τ., ἀπὸ τῶν ὁποίων καὶ διατρέφονται. Τοιουτοτρόπως δὲ μολύνεται οὐ μόνον ἡ ἐξωτερικὴ ἐπιφάνεια τοῦ σώματος αὐτῶν, οἱ πόδες καὶ αἱ πτέρυγες, ἀλλὰ καὶ τὸ ρύγχος καὶ τὸ ἐντερικὸν αὐτῶν σύστημα. Αἱ οὕτω μολυνθεῖσαι μυῖαι δύνανται νὰ μεταδώσωσι τὰ μικρόβια, ἅτινα φέρουσιν, εἴτε ἀμέσως, ἐπικαθήμεναι ἐπὶ τῶν πληγῶν, τῶν τραυμάτων, τῶν ὀφθαλμῶν κ.τ.τ., εἴτε ἐμμέσως, μολύνουσαι τὰ τρόφιμα, ἅτινα ὁ ἄνθρωπος τρώγει ἄνεφθα (ὀπωρικά, ἄρτος, τυρός, γλυκίσματα κ.τ.τ.). Ἐκ διαφόρων ἐρευνῶν γενομένων ἐπὶ μυιῶν μολυνθεισῶν εἴτε πειραματικῶς εἴτε ὑπὸ φυσικοὺς ὅρους ἀπεδείχθη ἡ ἐπ' αὐτῶν ὕπαρξις διαφόρων μικροβίων, ἤτοι φυματιάσεως, λέπρας, κοιλιακοῦ τύφου, παρατύφων, δυσεντερίας, ἐντερίτιδος, χολέρας, πανώλους, σπληνάνθρακος, στρεπτοκόκκων, σταφυλοκόκκων, ὡς καὶ τοῦ ἰοῦ τῆς εὐλογίας, τῆς δαμαλίδος, τῶν τραχωμάτων κττ. Ἀλλὰ καὶ πρωτόζῳα, ὡς κύστεις ἀμοιβάδων καὶ ᾠάρια σκωλήκων (ὀξυούρων, ταινιῶν, ἀσκαρίδων κτλ.) ἀνευρέθησαν ἐπίσης εἰς τὰ ἀποχωρήματα τῶν μυιῶν. Ἑπομένως εἶναι δυνατὸν τὰ ἀνωτέρω μικρόβια νὰ μεταδοθῶσιν εἰς τὸν ἄνθρωπον καὶ νὰ προκαλέσωσι τὴν ἔκρηξιν νόσου. Σπουδαιοτάτη ἀπὸ ἐπιδημιολογικῆς ἐπόψεως εἶναι ἡ παρατήρησις ὅτι τὰ διάφορα μικρόβια δύνανται οὐ μόνον νὰ διατηρηθῶσι ζῶντα ἐπὶ πολλὰς ὥρας καὶ ἐνίοτε ἐπὶ ἡμέρας ἐπὶ τῆς ἐξωτερικῆς ἐπιφανείας τῶν μυιῶν (ἀνευρέθησαν τοιαῦτα τοῦ κοιλιακοῦ τύφου μετὰ 23 ἡμέρας ἀπὸ τῆς μολύνσεως), ἀλλὰ καὶ νὰ διέλθωσι τὸν ἐντερικὸν σωλῆνα αὐτῶν ἄνευ οὐδεμιᾶς ἀλλοιώσεως.

Ὁ ἐκ τῶν μυιῶν κίνδυνος θεωρεῖται τοσοῦτον σοβαρός, ὥστε ὑπὸ τῶν διαφόρων ὑγειονομικῶν ὑπηρεσιῶν τῶν κρατῶν συνιστᾶται ὁ ἀμείλικτος κατ' αὐτῶν πόλεμος. Τὰ πρὸς καταπολέμησιν τῶν μυιῶν μέσα εἶναι ἀφ' ἑνὸς μὲν τὰ ἐμποδίζοντα τὸν πολλαπλασιασμὸν αὐτῶν (ἀποτέφρωσις τῆς κόπρου τῶν ζῴων καὶ τῶν ἀπορριμμάτων τῶν οἰκιῶν, ἐπικάλυψις βόθρων κτλ.), ἀφ' ἑτέρου δὲ τὰ φονεύοντα αὐτὰς ἢ τὰς προνύμφας αὐτῶν (μυιοκτόνος χάρτης, μυιοπαγίδες, ψεκασμοὶ διαφόρων ἐντομοκτόνων φαρμάκων κτλ.). Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

—*[Ὀφθαλμολ.]* Ἡ *μυῖα* φέρεται ὡς αἰτία διαφόρων ὀφθαλμικῶν νοσημάτων, ὧν τὸ συχνότερον εἶναι ἡ ἐπιπεφυκῖτις. Διάφορα πειράματα ἀπέδειξαν ὅτι τὰ ἐπὶ τῆς μυίας εὑρισκόμενα παθογόνα μικρόβια τοῦ Βὲξ ζῶσι 4—24 ὥρας καὶ ἐπομένως καθ' ὅλον αὐτὸ τὸ διάστημα ἡ μυῖα δύναται νὰ μεταδώσῃ τὴν πάθησιν. Ἡ διάδοσις τῆς νόσου γίνεται ἐπὶ τόπου, ἢ καὶ μακρὰν τῆς ἀρχικῆς ἑστίας τῆς μολύνσεως. Ἡ συμπτωματολογία τῶν διαφόρων ἐκ μυιῶν ἐπιπεφυκιτίδων ποικίλλει ἀναλόγως τῶν προκαλούντων αὐτὰς αἰτίων, ἀπὸ ἁπλῆς βλεννώδους ἐκκρίσεως μέχρι πυώδους καὶ ψευδομεμβρανώδους. Τὰ ᾠὰ καὶ αἱ νύμφαι ἐνδέχεται νὰ ἐντοπισθῶσιν ἐπὶ ἢ καὶ ὑπὸ τὸ δέρμα τῶν βλεφάρων καὶ ἐκεῖθεν νὰ εἰσχωρήσωσι βαθέως καὶ νὰ προκαλέσουν διαπύησιν τῆς κόγχης. Αἱ νύμφαι τῶν μυιῶν δύνανται νὰ εἰσέλθωσιν ἐντὸς τῆς κόγχης καὶ διὰ τῶν ρινικῶν κόλπων. Ὅταν τὰ ᾠὰ καὶ αἱ νύμφαι τῶν μυιῶν εἰσχωρήσουν καὶ ἐντὸς τοῦ βολβοῦ, προκαλοῦσιν ἰριδοκυκλῖτιδα καὶ χοριοαμφιβληστροειδῖτιδα. Αἱ συνεπείᾳ εἰσχωρήσεως νυμφῶν μυίας ἐντὸς τῶν διαφόρων ἱστῶν προκαλούμεναι νόσοι καλοῦνται *μυιάσεις* (βλ. λ.). Α. Γ.

— μυῖα (ἡ) *[Βυζαντ.].* Ἐκαλοῦντο *μυῖαι* ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν μικρά τινα βέλη, ἅτινα ἔβαλλοντο δι' εἰδικῶν τόξων, τῶν λεγομένων «σωληναρίων», ἅτινα ἔφερον ἐνίοτε οἱ ἄνδρες τοῦ ἐλαφροῦ πεζικοῦ. Μυίας ἔβαλλον καὶ τοξοβαλίστραι τινές, δι' ὧν ὡπλίζοντο συνήθως τὰ πλευρὰ τῶν πολεμικῶν πλοίων. Αἱ μυῖαι ἐνέπνεον φόβον εἰς τοὺς πολεμίους, διότι, ἕνεκα τῶν μικρῶν αὐτῶν διαστάσεων, δὲν διεκρίνοντο βαλλόμεναι, ὅπως τὰ συνήθη βέλη, καὶ διότι εἰσδύουσαι ἐντὸς τοῦ σώματος προὐξένουν ὀδυνηρότατα τραύματα. Οἱ Ἰταλοὶ ὠνόμαζον αὐτὰς *μουσκέττας* (muschetta=μικρὰ μυῖα), ἐκ τούτου δὲ ὠνομάσθησαν «μουσκέττα» καὶ τὰ βραδύτερον ἐφευρεθέντα τυφέκια. Ν. ΚΛΣ

—**μυῖαι, ἱπτάμεναι**— (Mouches volantes, myodesopsie, myopsie). Ὀνομάζουσιν οὕτως ἰδιαιτέραν ὀπτικὴν αἴσθησιν, δίδουσαν εἰς τὰ διάφορα ἄτομα τὴν ἐντύπωσιν μικρῶν μυιοειδῶν ἀντικειμένων, κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον σκιερῶν ἢ διαφανῶν, ἅτινα φαίνονται κινούμενα ἐντὸς τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου των. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ὑπάγεται εἰς τὰ λεγόμενα ἐνδοπτικά.

Αἱ ἱπτάμεναι μυῖαι δὲν ἐμποδίζουσι ποσῶς τὴν δι' αὐτῶν ὅρασιν, παρουσιάζονται δὲ ὑπὸ διαφόρους μορφάς, ὡς π. χ. σταγὼν δρόσου, σφαιρίδια μαργαριτοειδῆ μεμονωμένα, κατὰ στρεπτοὺς ἢ καθ' ὁμάδας, ἢ ὡς νημάτια ποικιλοτρόπως περιπεπλεγμένα. Τὰ σχήματα ταῦτα μένουσι κατὰ κανόνα ἀμετάβλητα, γίνονται δὲ περισσότερον εἴδωλα, ὅταν τὰ διάφορα ἄτομα προσβλέπουσιν ἐπὶ λευκῶν καὶ στιλπνῶν ἀντικειμένων (χάρτης, τοῖχος, οὐρανός, πεδίον μικροσκοπίου κτλ.). Αἱ μυῖαι αὗται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον κινοῦνται εἰς ὡρισμένα τμήματα τοῦ ὀπτικοῦ πεδίου, ἀκολουθοῦσι δὲ ἀντίθετον φορὰν πρὸς τὰς κινήσεις τοῦ βολβοῦ, ὅταν ὅμως ὁ βολβός, ἅπαξ κινηθείς, μείνῃ ἀκίνητος, τότε αἱ μυῖαι φαίνονται κατερχόμεναι. Ὅταν ἄτομόν τι ἴδῃ ἅπαξ ἱπταμένας μυίας, ὄχι μόνον δυσκόλως ἀπαλλάσσεται αὐτῶν, ἀλλὰ τοὐναντίον βλέπει αὐτὰς πολυπληθεστέρας καὶ πολὺ συχνότερον, ἐπειδὴ δὲ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τὰ ἄτομα ταῦτα εἶναι νευρασθενικὰ ἢ μύωπες ἢ καὶ στομαχομελαγχολικὰ *(Γαληνός, Ἀκτουάριος* κτλ.) καταντῶσιν ὑποχονδριακά.

Αἱ ἱπτάμεναι μυῖαι δὲν ἀποτελοῦν παθολογικὴν κατάστασιν, δι' ὃ καὶ ὀνομάζονται *φυσιολογικαὶ μυοειδεῖς ὄψεις.* Εἶναι ὑπόλοιπα ἐμβρυολογικῶν κυττάρων ἢ ἀγγειοειδῶν νηματίων μὴ ἀπορροφηθέντων καὶ τῶν ὁποίων αἱ σκιαί, προσπίπτουσαι ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς, προβάλλονται ἐντὸς τοῦ πεδίου τῆς ὁράσεως. Τὰ σωμάτια ταῦτα εἶναι τόσον διαφανῆ, ὥστε δὲν ἀποκαλύπτονται καὶ διὰ τῆς πλέον ἐπισταμένης ὀφθαλμοσκοπικῆς ἐξετάσεως.

Ἐκτὸς τῶν φυσιολογικῶν τούτων ἱπταμένων μυιῶν, ὑπάρχουσι καὶ ἄλλαι, αἵτινες εἶναι παθολογικῆς φύσεως καὶ παρατηροῦνται ἐπὶ παθήσεων τοῦ χοριοειδοῦς, τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς καὶ εἰς τοὺς μεγάλους μύωπας. Αἱ μυῖαι αὗται δὲν εἶναι διαφανεῖς, ἐλαττοῦσι τὴν ὅρασιν καὶ φαίνονται διὰ τοῦ ὀφθαλμοσκοπίου ὡς μελανὰ κοκκία, κροκύδες, τολύπαι ἢ νήματα, ἀτάκτως κινούμενα ἐντὸς τοῦ ὑαλοειδοῦς σώματος, καθ' ἁπάσας τὰς διευθύνσεις καὶ ἀσχέτως πρὸς τὴν φορὰν τοῦ κινουμένου βολβοῦ· μόλις δὲ ὁ βολβὸς ἀκινητήσῃ, τὰ σωμάτια ταῦτα φαίνονται καταχρημνιζόμενα.

Θεραπευτικῶς διὰ τὰς φυσιολογικὰς μυοειδεῖς ὄψεις πρέπει νὰ πεισθῇ τὸ ἄτομον ὅτι ἡ κατάστασίς του δὲν εἶναι παθολογικὴ καὶ ὅτι οὐδένα διατρέχει κίνδυνον ἡ ὅρασίς του. Συνηθεστάτη ἡ χρῆσις ἐγχρώμων ὑάλων καὶ διόρθωσις τῆς μυωπικῆς ἀμετρωπίας, ἐὰν ὑπάρχῃ. Αἱ παθολογικαὶ ἱπτάμεναι μυῖαι θεραπεύονται ἀναλόγως τῶν αἰτίων, αἵτινες προκαλοῦσιν αὐτάς. Α. ΓΑΒΡΙΗΛΙΔΗΣ

—**μυίας, ἦχος** — (bruit de mouche). Οὕτω καλεῖται μουσικὸς ἀγγειακὸς ἦχος μετ' ἀπηχήσεως ὑψηλῆς, παραγόμενος ἐντὸς τῆς σφαγίτιδος φλεβός, τῆς ἐξωτερικῆς, καὶ καθιστάμενος ἀντιληπτὸς διὰ τῆς ἀκροάσεως, ὅταν στηρίζηται ἐλαφρῶς τὸ στηθοσκόπιον (στηθακουστικὸν) ἐπὶ τῆς φλεβὸς ταύτης· ὁ ἦχος οὗτος παρατηρεῖται εἰς τὰς χλωρασικὰς ἰδίως νεάνιδας. Μ. Ν. Κ.



Digitized by Google

**Μυῖα** *['Αστρον.]*. Μικρὸς ἀστερισμὸς τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου, κείμενος ἄνωθεν τοῦ Κριοῦ. Ὁ κυριώτερος ἀστήρ του εἶνε διπλοῦς 4ου μεγέθους. Ὑπὸ τὸ αὐτὸ ὄνομα (Musca) ἢ ὡς *μέλισσα* (Apis) φέρεται καὶ ἕτερος μικρὸς ἀστερισμὸς ἐν τῷ νοτίῳ ἡμισφαιρίῳ, κείμενος ὑπὸ τοὺς πόδας τοῦ Κενταύρου, μεταξὺ τοῦ Νοτίου Σταυροῦ καὶ τοῦ Χαμαιλέοντος. Ὁ ἀστερισμὸς οὗτος περιλαμβάνει περὶ τοὺς 13 ἀστέρας, ὧν ὁ λαμπρότερος εἶναι περίπου 4ου μεγέθους. Σ. ΠΛΑΚΙΔΗΣ

**μυίασις** *['Ιατρ.]*. Αἱ μυῖαι, πλὴν τῶν νόσων τὰς ὁποίας προκαλοῦσι διὰ τῆς μεταδόσεως διαφόρων μικροβίων, δύνανται νὰ προκαλέσωσι καὶ διαφόρους παθήσεις διὰ τῶν προνυμφῶν αὐτῶν. Τὰς παθήσεις ταύτας, τὰς ὁποίας καλοῦμεν *μυιάσεις*, διακρίνομεν εἰς δερματικάς, εἰς γαστρεντερικὰς καὶ τῶν κοιλοτήτων.

*Δερματικὴ μυίασις*. Πρόκειται περὶ ἰδιοτύπου δερματοπαθείας, προκαλουμένης ὑπὸ τῆς διαδρομῆς ἐν τῷ δέρματι ἢ ὑπὸ τὸ δέρμα προνυμφῶν διαφόρων διπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *οἰστροειδῶν* (Oestrides) καὶ ἰδίᾳ τοῦ *ὑποδέρματος* (Hypoderma), τοῦ *γαστροφίλου* (Gastrophilus) καὶ τοῦ *δερματοβίου* (Dermatovia). Εἶναι νόσος σπανία καὶ ἀπαντᾷ πανταχοῦ. Τῆς δερματοπαθείας ταύτης διακρίνομεν τρεῖς κλινικὰς μορφάς: 1) Τὴν *ἕρπουσαν γραμμοειδῆ δερματίτιδα*, ἥτις περιεγράφη τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ R. Lee τῷ 1874 καὶ χαρακτηρίζεται ὑπὸ γραμμῶν ροδοχρόων, προεχουσῶν, σκολιώδους διαδρομῆς, πλάτους 3—4 χιλιστ. καὶ μήκους ἀπὸ ἑκατοστῶν τινων μέχρι πολλῶν μέτρων. Τὸ παράσιτον, ὅπερ προκαλεῖ τὴν δερματοπάθειαν ταύτην, ὑποσκάπτει σήραγγα ὑπὸ τὴν ἐπιδερμίδα καὶ εἶναι δύσκολον νὰ συλληφθῇ, ὡς ἑδραζόμενον ἔμπροσθεν τοῦ ἄκρου τῆς σήραγγος. Τῆς μυιάσεως ταύτης περιεγράφησαν ἐν Ἑλλάδι δύο περιπτώσεις. 2) Τὴν *ὑποδόριον μυίασιν* μετὰ περιοδικῶν διογκώσεων, καθ' ἣν τὸ παράσιτον μεταναστεῦον προκαλεῖ φλεγμονώδεις διογκώσεις κατὰ διαστήματα. 3) Τὴν *δοθιηνοειδῆ μυίασιν*, καθ' ἣν ἡ προνύμφη τοῦ ἐντόμου προκαλεῖ μίαν καὶ μόνην φλεγμονώδη διόγκωσιν μεγέθους καρύου μέχρις ᾠοῦ καὶ ἥτις μετὰ 6—9 ἡμέρας διανοίγεται αὐτομάτως. Ἀπὸ ταύτης, ἐὰν τὸ παράσιτον δὲν ἐξαχθῇ βιαίως, ἐκρέει ὀρῶδες ὑγρόν, μετὰ ἕνα δὲ ἕως δύο μῆνας ἐξέρχεται τοῦτο ἀφ' ἑαυτοῦ καταλεῖπον οὐλήν.

Ὁ τρόπος τῆς μολύνσεως τῆς δερματικῆς μυιάσεως εἶναι διάφορος καὶ γίνεται εἴτε διὰ τοῦ ἐντερικοῦ συστήματος, τῆς προνύμφης διερχομένης διὰ τῶν τοιχωμάτων τῶν ἐντέρων καὶ τῶν διαφόρων ἱστῶν, ἵνα φθάσῃ εἰς τὸ δέρμα, εἴτε ἀπ' εὐθείας. Ἡ θεραπεία τῆς παθήσεως ἔγκειται εἰς τὴν ἐξαγωγὴν τοῦ παρασίτου ἢ ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει εἰς τὸν θάνατον αὐτοῦ, προκαλούμενον δι' ἰωδιούχων ἢ ὑδραργυρούχων διαλυμάτων ἢ ἀλοιφῶν.

*Γαστρεντερικὴ μυίασις*. Αὕτη προκαλεῖται ὑπὸ προνυμφῶν, αἵτινες καταπίνονται μετὰ τῶν μολυνθεισῶν τροφῶν τῶν τρωγομένων ἀνέφθων (σαλάται, ὀπῶραι, τυρὸς κτλ.). Ἡ παραμονὴ τῶν προνυμφῶν ἐν μὲν τῷ στομάχῳ προκαλεῖ ναυτίας καὶ ἐμέτους, ἐν δὲ τοῖς ἐντέροις κωλικοὺς καὶ διαταραχὰς ἀναλόγους πρὸς τὴν δυσεντερίαν μεθ' αἱμορραγιῶν.

*Μυίασις τῶν κοιλοτήτων καὶ ἑλκώσεων*. Μυῖαί τινες προσελκυόμεναι ὑπὸ τῆς ὀσμῆς ἑλκώσεων ἢ διαπυήσεων (χρονία ῥινῖτις, ὠτῖτις, ὀφθαλμία κτλ.) ἀφίνουσι τὰ ᾠὰ αὐτῶν ἐπὶ τῶν πασχόντων. Αἱ ἀναπτυσσόμεναι δὲ προνύμφαι ἄλλων μὲν μυιῶν διατρέφονται ἁπλῶς διὰ τοῦ πύου, χωρὶς νὰ προσβάλλωσι τοὺς ζῶντας ἱστούς (M. callifora vomitoria), ἄλλων δὲ μυιῶν (Lucilia macellaria καὶ Sarcophila Wolfarti) αἱ προνύμφαι ἀναπτυσσόμεναι διατέμνουσι τοὺς ἱστοὺς καὶ προκαλοῦσι σφοδροὺς πόνους, διαπυήσεις καὶ αἱμορραγίας. Ἡ θεραπεία τῶν μυιάσεων τούτων εἶναι δυσχερὴς καὶ ἀπαιτεῖ ἐπίμονον καὶ παρατεταμένην χρῆσιν ἀντισηπτικῶν διαλυμάτων καὶ ἀλοιφῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *E. Brumpt*, «Précis de Parasitologie» (Paris 1922).—*J. Darier*, «Précis de Dermatologie» (Paris 1923 .—*Besnier-Brocq-Jacquet*, «La pratique dermatologique» (1900 T. I. p. 862).—*F. Fülleborn*, «Handb. der Tropenkrankheiten (II Aufl. Bd I).—*M. Petrovskaia*, «Sur les myases produites chez l' homme etc.» (Thèse Paris 1910). —*E. Riecke*. «Hand. der Haut und Geschleschtskrankheiten» (II Aufl. 1912).—*Schlesinger*, «Ueber die Myiasis intestinalis» (Zentralbl. f. innere Med. Ba XXIII 1902).—*Sergent*, («Ann. Inst. Pasteur 1907). *Γ. Φωτεινός*, «Ἕρπουσα γραμμοειδὴς δερματῖτις» («Ἰατρικὴ» Τ. Β. 1923).—*Ph. B. Photinos*, «La dermatite linéaire rampante» (Paris 1927). Ν. Α. ΜΙΧΑΗΛΙΔΗΣ

**μυῖγα** (ἡ)· *ἄλλως μῦγα* (βλ. λ.).

**Μυιγιάκης**, ***Γεώργιος***. Κρὴς ὁπλαρχηγὸς ἐκ Κάμπων, δράσας κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866 καὶ φονευθεὶς τὴν 1ην Ἰουλίου 1867 κατὰ τὴν ἐν Ἁλικάμπῳ συμπλοκήν. ΕΡ. Μ.

**μυῖδαι** (οἱ) (Murides) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τρωκτικῶν*, περιλαμβάνουσα μικρὰ ἢ μετρίου μεγέθους τρωκτικὰ μὲ σῶμα ἐπίμηκες, ἀρκετὰ εὔρωστον, κεφαλὴν μετρίου μεγέθους, ῥύγχος ὀξύ, ὦτα μεγάλα, εὐκίνητα καὶ φοειδῆ. Εἰς ἑκάστην σιαγόνα φέρουσι δύο στενοὺς κοπτῆρας καὶ 6 φυματιώδεις. Οἱ πόδες εἶναι λεπτοὶ καὶ ἀραιῶς τριχωτοί, ἡ οὐρὰ μακρά, κυλινδρικὴ καὶ λεπτὴ κατὰ τὸ ἄκρον της. Οἱ μυῖδαι εἶναι διαδεδομένοι εἰς ὁλόκληρον τὴν γῆν καὶ ἐνδιαιτῶνται ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ὑπογείους στοάς, εἰς ὀπὰς τοίχων καὶ δένδρων, τοὺς ἀγρούς, τὰ δάση, ἐντὸς τῶν διαφόρων ἀποθηκῶν, τῶν ὑπογείων καὶ τῶν ὀρόφων τῶν οἰκιῶν, κτλ. Ἡ οἰκογένεια περιλαμβάνει περὶ τὰ 80 γένη, ὧν γνωστότερον εἶναι ὁ *μῦς* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυῒδῶν* εὑρίσκονται σποραδικῶς ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως καὶ πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωικοῦ τῆς Εὐρώπης. Ἐπίσης ἀπολιθωμένα λείψανα εἶναι γνωστὰ ἐκ τῆς Ἀσίας καὶ Αὐστραλίας καὶ ἀνήκουν εἰς τὰ γένη *μῦς*, *γερβίλλος* καὶ *νεσοκία*. Ὡσαύτως ἀπολιθωμένα λείψανα μυῒδῶν καὶ δὴ τοῦ γένους *ἀκόμυς* εὑρέθησαν καὶ εἰς τὸ Πικέρμι τῆς Ἀττικῆς. Γ. Κ. Γ.

**μυιίδαι** (οἱ) (Muscides) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ρυγχοφόρων*, περιλαμβάνουσα πολυπληθῆ γένη καὶ περὶ τὰ 20.000 εἴδη, διαδεδομένα πανταχοῦ τῆς γῆς. Γενικῶς ἡ οἰκογένεια περιλαμβάνει ἔντομα μικρὰ ἢ μετρίου μεγέθους, ἐνοχλητικώτατα καὶ ἐπικίνδυνα, διότι τὰ περισσότερα τούτων εἶναι φορεῖς πλείστων ἐπιδημικῶν νόσων τῶν ζῴων καὶ τῶν ἀνθρώπων. Ἀξιολογώτερον καὶ γνωστότερον γένος εἶναι ἡ *μυῖα* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυϊκός, —ή, —όν**· ὁ τῶν μυῶν, ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς μῦς: «μυϊκὴ δύναμις», «μυϊκὸς ἱστός».

— **μυϊκὰ αἰσθήματα**· βλ. λ. *κιναισθητικὰ* αἰσθήματα.

— **μυϊκαὶ ἶνες** *['Ανατομ.]*· βλ. λ. *ἶνες*.

— **μυϊκὴ *δυστροφία μυελονευριτική***. Ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ταύτην φέρεται ἡ νόσος Charcot-Marie, οὕτω κληθεῖσα ὑπ' αὐτῶν τὸ πρῶτον, ὅτε τὴν περιέγραψαν (1886). Εἶναι νόσος τῆς παιδικῆς καὶ δὴ τῆς νεανικῆς ἡλικίας, οὐχὶ σπανίως οἰκογενής. Ἄρχεται δι' ἀτροφίας τῶν μυῶν τῶν κάτω ἄκρων, ἀπὸ τῶν περιφερικῶν τμημάτων αὐτῶν, ἧς ἀποτέλεσμα εἶναι ἡ ἀδυναμία, ἣν αἰτιᾶται ὁ πάσχων νέος καὶ ἥτις ἐπισύρει τὴν προσοχήν του. Ἡ ἀτροφία εἶναι προϊοῦσα πρὸς τὰ ἄνω, χωρίζεται δὲ τὸ ὑγιὲς μέρος τῶν μυῶν ἀπὸ τὸ ἀτροφικὸν δίκην ἀμφιδέας, ἀποτόμως καὶ σχεδὸν κατ' εὐθεῖαν ἐγκαρσίαν γραμμὴν κυκλικήν. Εἶτα καταλαμβάνονται καὶ οἱ μύες τῶν μηρῶν καὶ τὰ ἄνω ἄκρα. Ἡ ἀτροφία εἶναι συμμετρική, μετὰ ἰνικῶν συστολῶν, μετ' ἐλλείψεως ἢ ἐλαττώσεως τῶν ἀνακλάσεων τῶν τενοντίων (σημείου Babinski) καὶ ἠλεκτρικῆς ἐκφυλίσεως. Πρὸς δὲ παράγονται συσπάσεις ἰνοτενοντώδεις, παραμορφώσεις σκληρώδους μυωσίτιδος. Ὑπάρχουσι καὶ αἰσθητικαὶ διαταραχαί. Ἡ διάγνωσις εἶναι εὐχερής, ἡ δὲ πρόγνωσις μοιραία, ἀλλὰ βραδυτάτης ἐξελίξεως. Παθολογοανατομικῶς εὑρίσκονται ἀλλοιώσεις τοῦ τε μυελοῦ καὶ τῶν περιφερικῶν νεύρων, ἐπίσης δὲ καὶ τῶν ἀδένων ἔσω ἐκκρίσεως μετὰ ἀντιστοίχου μυϊκῆς δυστροφίας. Τ. Α. Ζ.

— **μυϊκὴ *δυστροφία προϊοῦσα*** *['Ιατρ.]*· βλ. λ. *δυστροφία*.

—**μυϊκὴ *ἰσχύς***. Καλεῖται τὸ ποσὸν τῆς δυνάμεως τῶν μυῶν ἀτόμου τινός. Ὁ βαθμὸς τῆς ἰσχύος τῶν μυῶν ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς φυσικῆς αὐτῶν διαπλάσεως, ὡς καὶ ἐκ τῆς ἀσκήσεως, εἰς ἣν οὗτοι ὑπεβλήθησαν, ἀποτελεῖ δὲ τεκμήριον τῆς σωματικῆς τοῦ ἀτόμου καταστάσεως καὶ ἀντοχῆς. Παρὰ ταῦτα ὅμως ὁ βαθμὸς τῆς μυϊκῆς ἰσχύος, τὴν ὁποίαν καταβάλλει ἄτομόν τι, ὁρίζεται καὶ ὑπὸ τῆς θυμικῆς καταστάσεως καὶ βουλήσεως αὐτοῦ, ὡς καὶ ἐκ τοῦ βαθμοῦ τῆς κοπώσεως, ὑφ' ἧς τοῦτο κατέχεται. Μετρήσεως τῆς μυϊκῆς ἰσχύος ἔχουσιν ἐπινοηθῆ πολλοὶ τρόποι. Ἐπειδὴ ὅμως δὲν εἶναι δυνατὴ ἡ μέτρησις τῆς δυνάμεως τῶν μυῶν ὅλου τοῦ σώματος, ἡ ἔρευνα τῆς μυϊκῆς ἰσχύος περιορίζεται εἰς μετρήσεις τῆς ἰσχύος ὡρισμένων μυώνων καὶ ἰδίᾳ τῶν μυῶν τῶν χειρῶν. Μετρεῖται δὲ ἡ φυσιολογικὴ αὕτη λειτουργία πρὸς ποικίλους σκοποὺς ἰατρικούς, πρακτικοὺς σχολικούς, ἀποβλέποντας ἰδίᾳ εἰς τὴν ἔρευναν τῆς ἐκ τῶν μαθημάτων προερχομένης κοπώσεως καὶ τὴν κατάλληλον διαρρύθμισιν τοῦ προγράμματος τῆς διδασκαλίας, παιδολογικούς, ἀποσκοποῦντας τὸν καθορισμὸν τῆς πορείας, τὴν ὁποίαν διατρέχει ἡ ἐξέλιξις τῆς λειτουργίας ταύτης κατὰ τὴν παιδικὴν ἡλικίαν. Τοιαῦται ἔρευναι ὑπὸ τῶν Ἑλληνοπαίδων πρὸς παιδολογικοὺς σκοποὺς ἐγένοντο διὰ πρώτην φορὰν ἐν Ἑλλάδι εἰς τὸ ἐργαστήριον πειραματικῆς παιδαγωγικῆς τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν.

Μετρεῖται δ' ἡ φυσιολογικὴ αὕτη λειτουργία στιγμιαίως μὲν διὰ πιέσεως ἢ ἕλξεως, ὁπότε καθορίζεται τὸ ποσὸν τῆς καταβαλλομένης δυνάμεως οὐχὶ ἐν διαρκείᾳ, ἀλλ' ἐν μιᾷ δεδομένῃ στιγμῇ, ἐπὶ μακρότερον δὲ χρόνον, ὁπότε ἐλέγχεται ἡ διάρκεια τῆς ἐργασίας τῶν μυῶν καὶ ἡ ἀντοχὴ αὐτῶν. Ἁπλούστατος καὶ συνηθέστατος τρόπος μετρήσεως τῆς ἰσχύος τῶν μυῶν εἶναι ὁ διὰ πιέσεως, ἄριστον δὲ πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον ὄργανον εἶναι τὸ *δυναμόμετρον* τοῦ Collin. Τοῦτο ἀποτελεῖται ἐξ ᾠοειδοῦς χαλυβδίνου ἐλάσματος, ἐντὸς τοῦ ὁποίου εὑρίσκεται πλὰξ ἡμικυκλικὴ μεταλλίνη, ἡ ἐπιφάνεια τῆς ὁποίας εἶναι διῃρημένη εἰς χιλιόγραμμα. Τὸ δυναμόμετρον τοποθετεῖται ἐντὸς τῆς παλάμης, δείκται δὲ προσηρμοσμένοι ἐπὶ τῆς πλακὸς κινοῦνται διὰ τῆς πιέσεως καὶ δεικνύουσι τὸν μέγιστον βαθμὸν τῆς ὑπὸ τοῦ μετρουμένου προσώπου καταβληθείσης δυνάμεως. Ἄριστα ὡσαύτως εἶναι καὶ τὰ δυναμόμετρα τοῦ Andrew καὶ τοῦ Ulmann. Πρὸς μέτρησιν τῆς ἀντοχῆς τῶν μυῶν γίνεται χρῆσις ἄλλου ὀργάνου, τοῦ *δυναμογράφου*, ἐπινοηθέντος ὑπὸ τοῦ Ἰταλοῦ φυσιολόγου Mosso. Πρὸς σχολικοὺς σκοποὺς συνιστᾶται ὁ δυναμογράφος Dubois. Τέλος, πρὸς ἔρευναν τῆς ἐξελίξεως τῶν μυῶν, συνιστῶνται μετρήσεις τοῦ πάχους τοῦ ἄνω βραχίονος καὶ τοῦ ἄνω σκέλους, αἵτινες γίνονται διὰ ταινίας μεταλλίνης.

*[Ν. Ἐξαρχοπούλου*, «Σωματολόγιον τοῦ παιδός» (ἔκδ. β' 2ə3 ἑ.). —*Σ. Γεδεών*, «Παιδομετρικαὶ ἔρευναι ἐν Ἑλλάδι» (1931, σ. 171 ἑπ.). Τ. ΣΤΡ.

—**μυϊκὴ *καμπύλη***. Καλεῖται ἡ καμπύλη γραμμή, τὴν ὁποίαν γράφει ὁ μῦς κατὰ τὴν συστολήν αὐτοῦ διὰ τοῦ μυογράφου. Διακρίνομεν δὲ αὐτῆς τὸ ἀνιὸν σκέλος ἢ τὴν αὐξανομένην ἐνέργειαν, ὅπερ παριστᾷ τὴν σύσπασιν καὶ βράχυνσιν τοῦ μυός, καὶ τὸ κατιὸν καὶ τὴν ἐλαττουμένην ἐνέργειαν, ὅπερ παριστᾷ τὴν χάλασιν καὶ ἐπιμήκυνσιν τῶν μυῶν. Ι. Ν. Μ.

—**μυϊκὴ *ὑποτονία***. Καλεῖται ἡ ἐλάττωσις τοῦ μυϊκοῦ τόνου, ὥστε τὸ ἄτομον νὰ δύναται νὰ ἐπιτελῇ τὰς διαφόρους κινήσεις αὐτοῦ καὶ πέραν τῶν φυσιολογικῶν αὐτῶν ὁρίων, ὡς εἶναι ἡ κάμψις τοῦ μηροῦ πρὸς τὴν κοιλίαν μετὰ τεταμένης τῆς κνήμης, εἰς σημεῖον ὥστε νὰ ἐφάπτεται ὁ ποὺς τῆς ὀπισθίας ἐπιφανείας τοῦ σώματος κττ. Ὀφείλεται δέ: 1) Εἰς ἄσκησιν, ὅτε παρατηρεῖται ἐπὶ φυσιολογικῶν ἀτόμων εἰδικῶν ἐπαγγελμάτων, π.χ. χορευτῶν, κλόουν τῶν ἱπποδρομιῶν κτλ. 2) Εἰς παθήσεις τῶν ὀπισθίων ριζῶν, οἷα ἡ νωτιαία φθίσις, εἰς ἣν αἱ κινήσεις τελοῦνται καὶ ἀνεστραμμέναι. 3) Εἰς χαλαρὰς παραλύσεις, ἐπὶ βλάβης εἴτε τοῦ περιφερικοῦ εἴτε τοῦ κεντρικοῦ νευρῶνος (πρόσθιαι μυελίτιδες, ἡμιπληγίαι χαλαραί, νευρίτιδες). 4) Εἰς τὴν μυασθένειαν, τὴν μυατονίαν καὶ τὰς παρομοίας παθήσεις τῶν μυῶν. Τ.Α.Ζ.

— **μυϊκοὶ *θύλακοι*** *['Ανατομ.]*· βλ· λ. θύλακοι δρογόνοι.

— **μυϊκοὶ *τόνοι***. Καλεῖται τὸ φαινόμενον τὸ συνιστάμενον εἰς διαρκῆ ἀλλ' ἀσθενῆ σύσπασιν τῶν μυῶν τοῦ σώματος, ἧς ἕνεκα δὲν δύναται τὸ ἄτομον νὰ ἐκτελῇ τὰς κινήσεις αὐτοῦ πέραν ὡρισμένων ὁρίων, π. χ. ἡ κάμψις τοῦ μηροῦ μετὰ τεταμένης τῆς κνήμης πρὸς τὸν κορμὸν (κοιλίαν) τελεῖται μέχρι γωνίας 70° μοιρῶν καὶ οὐχὶ περαιτέρω, ἐν φυσιολογικῇ καταστάσει. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ἐξαρτᾶται ἀποκλειστικῶς ἐκ τοῦ σαρκοπλάσματος τοῦ μυός, ὅπερ εὕρηται ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ παρασυμπαθητικοῦ, δρῶντος διὰ τῶν ὀπισθίων ριζῶν, καὶ τοῦ συμπαθητικοῦ, δρῶντος διὰ τῶν προσθίων ριζῶν. Τ. Α. Ζ.

— **μυϊκὸν *σύστημα*** *['Ανατομ.]*. Ἀπαρτίζεται ἐξ ὀργάνων, ὁμοειδῆ τὴν κατασκευὴν ἐχόντων, τῶν *μυῶν*, οἵτινες ἀποτελοῦσι τὸ ἐνεργητικὸν σύστημα τῶν κινητικῶν τοῦ σώματος ὀργάνων, ὧν τὸ παθητικὸν ἀποτελεῖ ὁ σκελετός. Τὸ μυϊκὸν δὲ σύστημα μετὰ τοῦ σκελετοῦ ἀπεξεργάζεται τὴν ὅλην ἐπιφάνειαν τοῦ σώματος καὶ τὰς ἀναγλυφάς αὐτοῦ (βλ. λ. *μῦς*). Ι. Π.

— **μυϊκὸς *ἦχος*** *[Φυσιολ.]*· βλ. λ. ἦχος μυϊκός.

— **μυϊκὸς *ἱστὸς*** *['Ανατομ]*. Κύριον γνώρισμα τοῦ ἱστοῦ τούτου εἶναι ὅτι τὸ πρωτόπλασμα τῶν κυττάρων αὐτοῦ μετεπλάσθη εἰς συσταλτὴν οὐσίαν ὑπὸ μορφὴν παραλλήλων ἰνιδίων, ὧν μεταξὺ παρεμβάλλεται ὀλίγον ἀμετάπλαστον πρωτόπλασμα καλούμενον *σαρκόπλασμα*. Ι. Π.

**μυΐνδα** (ἐπίρρ. ἐκ τοῦ *μύω*=κλείω τοὺς ὀφθαλμούς) */ 'Αρχ./*. Ἀρχαῖον παίγνιον. Καθ' Ἡσύχιον ἦτο παιδιά, καθ' ἣν εἷς τῶν παιζόντων, ἔχων κεκαλυμμένους τοὺς ὀφθαλμούς, προσεπάθει ἐρωτώμενος νὰ ὀνομάσῃ τὸν ὑπ' αὐτοῦ συλλαμβανόμενον ἐκ τῶν συμπαικτῶν· ἐὰν δὲ «ἁμαρτὼν ἀναβλέψῃ, πάλιν καταμύει». Ἡ μυΐνδα ἄρα ἦτο ἡ παρ' ἡμῖν σήμερον παιδιά, ἡ καλουμένη *τυφλόμυγα*. Κατὰ τὸν Πολυδεύκην ὁ κεκαλυμμένους ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς ἤρχετο τῆς προσπαθείας του φωνάζων «φυλάττου», οἱ δὲ συμπαῖκται ἔφευγον πρὸ αὐτοῦ· ὁ συλλαμβανόμενος δὲ τότε ἐξ αὐτῶν ἀντικαθίστα τὸν πρῶτον καὶ οὕτω καθ' ἑξῆς. Β. Δ. Ε.

**μυιοθήρας** (ὁ) (Muscicapa) *[Ζωολ.]*. Γένος πτηνῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυιοθηριδῶν*, περιλαμβάνον μικροῦ μεγέθους πτηνὰ μὲ σῶμα εὔρωστον καὶ βραχύ, κεφαλὴν ἀπεστρογγυλωμένην, ῥάμφος κωνικόν, πτέρυγας βραχείας, οὐρὰν μετρίου μήκους καὶ πόδας λεπτοὺς καὶ ἀρκετὰ ἐπιμήκεις. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μυιοθήρας ὁ δίχρωμος* (Muscicapa variegata), κοινῶς *μυγοχάφτης*, ὅστις

Digitized by Google

φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ χρῶμα μελανὸν κατὰ τὰς παρειάς, τὸ ἀνώτερον μέρος τοῦ λαιμοῦ καὶ τὴν ἄνω ἐπιφάνειαν τοῦ σώματος καὶ λευκὸν κατὰ τὴν κορυφὴν τῆς κεφαλῆς, τὸ στῆθος καὶ τὴν κοιλίαν. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Εὐρώπην. Δ. Ν. Π.

**μυιοθηρίδαι** (οἱ) (Muscicapidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν*, περιλαμβάνουσα μικροῦ μεγέθους πτηνά, ἐνδιαιτώμενα ἐντὸς τῶν δασῶν καὶ τρεφόμενα ἐξ ἐντόμων καὶ ἰδίως ἐκ μυιῶν. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μυιοθήρας* (βλ. λ.). Κοινῶς καλοῦνται *μυγοχάφτης*. Δ. Ν. Π.

**μυιοπαγίς, —ίδος** (ἡ)· τὸ δι' οὗ συλλαμβάνονται αἱ μυῖαι.

**μυιοσόβη** (ἡ)· τὸ δι' οὗ σοβοῦμεν, ἀποδιώκομεν τὰς μυίας, κοιν. *μυγιαστήρι*.

**μυΐτις, —ιδος** (ἡ) (myosite) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτω φλεγμονὴ τῶν μυῶν, ἥτις διακρίνεται ὡς ἀκολούθως:

α) *Ὀξεῖα μυΐτις*. Αὕτη παράγεται συνήθως κατόπιν νυγμοῦ ἢ τομῆς ἢ εἰσδύσεως ἀλλοτρίου σώματος (ἐξαχθέντος εἶτα ἢ μή), θλάσεως, ῥήξεως τοῦ μυός, ψύξεως ἢ καμάτου. Ἡ ἐκ τῶν τοιούτων αἰτίων μυΐτις παρατηρεῖται ἀποκλειστικῶς σχεδὸν ἐπὶ τῶν ἐνηλίκων ἀνδρῶν, ἐξασκούντων ἐπίπονα ἐπαγγέλματα (χε ρωνακτικὰ ἢ μηχανικά), καὶ ἐντοπίζεται συνήθως εἰς τοὺς ἐκτείνοντας τῆς κνήμης καὶ τοῦ ποδὸς μῦς, τοὺς δικεφάλους, τοὺς ψοάς, τοὺς προσαγωγοὺς τῶν βραχιόνων, τοὺς δελτοειδεῖς καὶ τοὺς θωρακικούς. Ἄλλοτε ἡ μυΐτις εἶναι δευτεροπαθής, ἀναπτυσσομένη κατὰ τὴν πορείαν γενικῆς τινος λοιμώδους νόσου, οἷον τυφοειδοῦς πυρετοῦ, ἱλαρᾶς, εὐλογίας, ὀστρακιᾶς, ἐπιλοχείου λοιμώξεως, φυματιάσεως, σκωληκοειδίτιδος κλπ. Τὰ συμπτώματα ταύτης εἶναι πόνος ὀξὺς καὶ ἐντετοπισμένος, ἐπιτεινόμενος κατὰ τὴν συστολὴν τοῦ πάσχοντος μυός· οἱ πόνοι ἐλαττοῦνται ὅταν ὁ μῦς εὑρίσκηται ἐν χαλάσει. Παρατηρεῖται ἐξοίδησις τῆς πασχούσης χώρας, ἥτις εἶναι φλεγμονώδης καὶ σκληρὰ τὴν σύστασιν, ἡ σκληρία δ' αὐτὴ ἐξελίσσεται εἶτα εἰς τῆξιν διὰ τοῦ σχηματισμοῦ ἀποστήματος. Συχνότατα ὅμως οἱ πόνοι ἐλαττοῦνται βαθμηδὸν καὶ ὁ μῦς προϊόντος ἀνακτᾷ τὰς λειτουργίας αὐτοῦ· δυνατὸν ὅμως νὰ ἐπακολουθήσῃ ἰνώδης ἐκφύλισις μετὰ πλημμελῶν θέσεων (συσπάσεων) τοῦ μέλους. Πρὸς θεραπείαν συνιστᾶται ἀπόλυτος ἀνάπαυσις, ἀκινητοποίησις τοῦ μέλους ὑπὸ ἐλαφρὰν πιεστικὴν ἐπίδεσιν, καὶ ἀκολούθως, μετὰ τὰ ὀξέα φαινόμενα, μαλάξεις καὶ ἠλεκτρισμοί. Τὸ ἀπόστημα θεραπεύεται χειρουργικῶς.

β) *Χρονία μυΐτις*. Αὕτη ἀποτελεῖ συνέχειαν οἱονεὶ τῆς ὀξείας ὑπὸ μορφὴν ἰνώδους ἐξαλλαγῆς· ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ὅμως εἶναι ἐπακολούθημα ὀστεΐτιδος ἢ ἀρθρίτιδος χρονίας παρακειμένου ὀστοῦ ἢ ἀρθρώσεως, ἀπολήγουσα εἰς ἀτροφίαν τοῦ μυός. Πρὸς θεραπείαν συνιστᾶται ἡ καταπολέμησις τοῦ αἰτίου, οἱ ἠλεκτρισμοὶ καὶ ἡ μάλαξις.

γ) *Μυΐτις ὀστεωσικὴ* ἢ *ὀστεοποιητική*. Χαρακτηρίζεται ὑπὸ τῆς προϊούσης ὀστεώσεως τῶν μυῶν, τῶν ἀπονευρώσεων, τῶν συνδέσμων καὶ τῶν περὶ τὰ ὀστᾶ ἱστῶν, ἀπολήγουσα εἰς πραγματικὴν ἀπολίθωσιν τοῦ ζῶντος ὀργανισμοῦ. Εἶναι εὐτυχῶς νόσος σπανιωτάτη καὶ ἄρχεται γενικῶς κατὰ τὴν παιδικὴν ἡλικίαν, παρατηρεῖται δὲ κυρίως εἰς ἄρρενας παῖδας. Ἡ πάθησις βαίνει κατὰ διαδοχικὰς ἐξάρσεις, φλεγμονώδους πολλάκις πορείας, μετ' οἰδημάτων τοπικῶν, κυκλοφορικῶν διαταραχῶν, πυρετοῦ κλπ. Κατὰ τὸν πρῶτον παροξυσμὸν παρατηρεῖται, εἰς ἕνα ἢ πλείονας μῦς, ἡ παρουσία ὄγκων, οἵτινες εἶναι ἐν τῇ ἀρχῇ μαλακοὶ ἢ σταιτώδεις, λαμβάνοντες μεταγενεστέρως ἰνώδη σύστασιν καὶ ἀποβαίνοντες εἶτα σαφῶς ὀστεώδεις. Ἐκ τούτου προκύπτει ἀναπηρία κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον τελεία τῶν οὕτω προσβεβλημένων χωρῶν. Μικρὸν κατὰ μικρὸν οἱ διάφοροι μύες φαίνονται πεπληρωμένοι ὀστεωδῶν ὄγκων, οἵτινες ἔχουσι τάσιν πρὸς συγκόλλησιν καὶ πρὸς ἐπιμήκυνσιν. Ἡ ἐξωτερικὴ παράστασις τοῦ πάσχοντος βαίνει ἐπιδεινουμένη πάντοτε ἕνεκα τῆς προϊούσης καθολικεύσεως τῆς παθήσεως. Ὁ πάσχων ἐμφανίζεται ἰσχνός, ἔχων τὸ σῶμα πεπληρωμένον ὕβων, τοὺς ὤμους προέχοντας καὶ φερομένους ἐπὶ τὰ πρόσω, τὸν θώρακα κοῖλον καὶ εἰσέχοντα· ἡ κεφαλὴ καὶ ὁ κορμὸς κλίνουσιν ἐπὶ τὰ πρόσω καὶ ἐπὶ τὰ δεξιά, τὸ πρόσωπον ἀκίνητον καὶ ἐστραμμένον ἐπὶ τ' ἀριστερά· τὰ ἄκρα καὶ ὁ κορμὸς εἶναι ἀνίκανα καὶ πρὸς ἐλαχίστην κίνησιν, μόνον δὲ οἱ δάκτυλοι δύνανται νὰ παρέχωσιν εἰσέτι ὑπηρεσίας τινάς. Ὁ πάσχων μεταφέρεται ἐν εἴδει μάζης καὶ παραμένει ἐκεῖ ὅπου τὸν τοποθετήσουν, ἐν τῇ στάσει καὶ θέσει τὴν ὁποίαν δίδουσιν εἰς αὐτόν, μὴ δυνάμενον νὰ παραμείνῃ ἐν ὀρθίᾳ στάσει, καθ' ὅσον ἡ ἰσορροπία αὐτοῦ εἶναι ἀσταθής. Ἀγνοοῦμεν τελείως ὁποία εἶναι ἡ φύσις καὶ ἰδίᾳ ἡ προέλευσις τῆς παθήσεως ταύτης.

Θεραπευτικῶς καὶ ἡ παθολογία καὶ ἡ χειρουργικὴ εἶναι ἐντελῶς ἀνίσχυροι κατὰ τῆς ὀστεωσικῆς μυΐτιδος. Διὰ χειρουργικῆς ἐξαιρέσεως ἀντιμετωπίζονται ἐν ἀνάγκῃ οἱ κίνδυνοι ἢ τὰ ἄλγη τὰ προξενούμενα ὑπὸ τῶν ὄγκων· ἀλλὰ τοῦτο εἶναι μικρᾶς διαρκείας καὶ ἁπλῆ ἐπιβράδυνσις τῆς μοιραίας ἐξελίξεως τῆς παθήσεως. Οὐδὲν φάρμακον εἶναι ἱκανὸν νὰ καταπολεμήσῃ αὐτήν. Μ. Ν. Κ.

**Μυκάλη** *[Γεωγρ.]*. Ἡ πρὸς δυσμὰς καὶ πρὸς τὴν Σάμον προβολὴ τῆς Ἰωνίας, καθ' ἣν ἀπολήγει ἡ ὀροσειρὰ τῆς Μεσωγίδος, τερματιζομένη εἰς τὸ ἀκρωτήριον Τρωγύλιον (Καναπίτσα). Ὑπὸ τὴν αὐτὴν δὲ ὀνομασίαν φέρεται καὶ ὄρος (νῦν *Σαμσοὺν Νταγ*, ὑψόμ. 4.130 ποδ. = 1630 μέτρ., πλάτ. 37° 39' ¾ Β., μῆκ. 27° 10' ½ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1546: Samos strait to Mandelyah gulf) «εὔθηρον καὶ εὔδενδρον» (*Στράβ.* ΙΔ, 636) «ἐκλήθη δέ, ἐπεὶ αἱ λοιπαὶ Γοργόνες ἐπὶ τόπου μυκώμεναι, τὴν κεφαλὴν Μεδούσης ἀνεκαλοῦντο» (*Στεφ. Βυζ.* 459, 16). Τερματίζεται δὲ ἡ προβολή, ἐφ' ἧς τὸ πάλαι ἦσαν τὸ *Πανιώνιον* καὶ ἡ *Πριήνη*, οὐχὶ εἰς μοναδικὸν ἀκρωτήριον ἀλλ' εἰς ἀκτὴν περιλαμβανομένην μεταξὺ τῶν συγχρόνων ἀκρωτηρίων Καναπίτσα καὶ Ἅγιος Νικόλαος· ἔχουσα δὲ ἡ ἀκτὴ αὕτη κατέναντί της τὸ Ποσίδειον ἄκρον τῆς Σάμου καὶ τὴν νησίδα Ναρθηκίς, ἀποτελεῖ τὴν ΝΑ. ἀκτὴν τοῦ πορθμοῦ τῆς Μυκάλης, δηλαδὴ τὴν ἀνατολικὴν τοῦ νοτίου στομίου τοῦ στενοῦ τῆς Σάμου. Ἡ προβολὴ καλεῖται σήμερον κοινῶς *Καμήλι*. Σ. Ε. Λ.

**—«Μυκάλη».** Μέγα, διὰ τὴν ἐποχήν του, ὁπλιταγωγὸν τοῦ στόλου, πρώην ἀγγλικὸν ἐπιβατηγὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα «Eldorado». Ἠγοράσθη ἐν βίᾳ μετὰ τῆς «Σφακτηρίας» τῷ 1885, κατὰ τὰς γενομένας τότε ἑτοιμασίας πρὸς πόλεμον. Ἐχρησιμοποιήθη πολὺ εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις τῆς Κρήτης (Ἰανουάριος 1897) καὶ κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον. Πωληθεῖσα κατόπιν ἀπετέλεσεν ἓν τῶν ἀρίστων σκαφῶν τῆς ἐπιβατικῆς μας ἀτμοπλοΐας. Παρέσχε δὲ καὶ πάλιν τὰς ὑπηρεσίας της τῷ 1912—1913, ἐπιταχθεῖσα ὡς βοηθητικὸν εὔδρομον. Σ. Ε. Λ.

**— Μυκάλης** *μάχη*. Πεζομαχία συναφθεῖσα κατὰ τὴν νοτίαν παραλίαν τῆς χερσονήσου τῆς Μυκάλης καὶ ἐλευθερώσασα τὴν Ἰωνίαν, τὴν αὐτήν, ὡς πιστεύεται, ἡμέραν (κατὰ Σεπτέμβριον τοῦ 479 π. Χ.), καθ' ἣν ἡ ἐν Πλαταιαῖς μάχη ἐξησφάλιζε τὴν ἐλευθερίαν τῆς Ἑλλάδος. Ὁ Θεμιστοκλῆς, μὴ θεωρῶν ἀρκοῦσαν καὶ ὁριστικὴν τὴν κατὰ τὴν ἐν Σαλαμῖνι ναυμαχίαν νίκην, ἐφ' ὅσον καὶ ἓν μόνον ἐχθρικὸν πλοῖον εἶχε διαφύγει, εἶχεν ἐπιμείνει εἰς τὴν δίωξιν τῶν ἐν ὑποχωρήσει διασωθεισῶν περσικῶν νεῶν· μὴ εὑρὼν ὅμως συμφώνους τοὺς Πελοποννησίους καὶ τὸν Εὐρυβιάδην, θεωρήσαντας ἑαυτοὺς εὐτυχεῖς μὲ μόνην τὴν ἀπαλλαγὴν τῆς παρουσίας τῶν Περσῶν, ἀπέστειλε πρὸς καταστροφὴν τῶν διαφυγόντων μοῖραν ἀθηναϊκήν, ἥτις πλεύσασα μέχρι Καφηρέως καὶ Ἄνδρου ἐπανέπλευσε μηδὲ κἂν συναντήσασα τὰ διαφυγόντα περσικὰ πλοῖα. Πράγματι, ἀνενόχλητος ὁ στόλος οὗτος εἶχε πλεύσει εἰς Ἑλλήσποντον καὶ ἀφοῦ περισυνήγαγε τὰ λείψανα τοῦ πρὸς Σηστὸν φυγόντος στρατοῦ τοῦ Ξέρξου καὶ ἀπεχωρίσθη τῶν αἰγυπτιακῶν καὶ φοινικικῶν πλοίων τον, ἅτινα ἔπλευσαν εἰς τὰς πατρίδας των, συγκεντρωθεὶς ὑπὸ τοὺς ναυάρχους Μαρδόντην καὶ Ἀρταΰντον, κατέπλευσεν εἰς τὰ ὕδατα τῆς Σάμου, ὀρθῶς σκεφθέντος τοῦ βασιλέως ὅτι μόνον ὁ ἀπὸ τῆς θέας τοῦ στόλου φόβος θὰ ἠδύνατο νὰ συγκρατήσῃ εἰς σεβασμὸν τὴν γείτονα παραλίαν τῆς Ἰωνίας. Ἐπελθόντος τοῦ ἔαρος, οἱ Ἕλληνες, εἴτε λόγῳ τῶν ζημιῶν ἃς τὰ πλοῖά των εἶχον ὑποστῇ κατὰ τὴν ναυμαχίαν τῆς Σαλαμῖνος, μᾶλλον ὅμως διότι εἶχε ψυχρανθῇ πως ὁ ζῆλος τῶν συμμάχων, δὲν ἠδυνήθησαν νὰ ἑτοιμάσουν κατὰ τῶν ὑπερτριακοσίων περσικῶν τριήρεων πλείονας τῶν 110, αἵτινες καὶ συνεκεντρώθησαν ἐν Αἰγίνῃ, αἱ μὲν πελοποννησιακαὶ ὑπὸ τὸν Λεωτυχίδην, αἱ δὲ ἀθηναϊκαὶ ὑπὸ τὸν Ξάνθιππον. Τὴν πρὸς ἀπόπλουν ἀβουλίαν τοῦ Λεωτυχίδου διέλυσε πρεσβεία Χίων, ἀνακοινωσάντων αὐτῷ ὅτι ἡ ἐμφάνισις τοῦ στόλου του πρὸ τῶν Ἰάδων ἀκτῶν θὰ ἐπήνεγκε τὴν ἄμεσον τῆς Ἰωνίας ἀποστασίαν, ἐκδηλωσάσης ἄλλοστε τὸν προηγηθέντα χειμῶνα σπέρματα ἀνταρσίας. Μόλις ἐν τούτοις ὁ στόλος ἔφθασεν εἰς τὴν Δῆλον, δὲν ἀπετόλμα συνέχισιν τοῦ πλοῦ του καὶ θὰ ἠρκεῖτο εἰς ἀσκόπους περιπολίας, ἂν μὴ κατέφθανεν ἐκεῖ νέα πρεσβεία, ἐκ Σάμου αὕτη, ἐπαναλαμβάνουσα τὰς αὐτὰς βεβαιώσεις καὶ ἂν μὴ τὸ ὄνομα τοῦ ἐπὶ κεφαλῆς τῆς πρεσβείας Ἡγησιστράτου δὲν ἐπέδρα ὡς οἰωνὸς ἀγαθὸς ἐπὶ τοῦ προληπτικοῦ Λεωτυχίδου (*Ἡροδ.* 9, 91) ἀναθέσαντος εἰς αὐτὸν τὴν πρὸς ἀναζήτησιν τῶν Περσῶν πλοηγίαν τοῦ στόλου του. Μαθόντες ὅμως οἱ ἐν Σάμῳ ἐλλιμενισμένοι Πέρσαι τὸν ἐν πολεμικῇ ἐγέρσει κατάπλουν τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου, μεθωρμίσθησαν εἰς τὴν νοτίαν ἀκτὴν τῆς χερσονήσου τῆς Μυκάλης, ἐν ἀρχῇ μὲν ἀποκλίναντες ὑπὲρ ναυμαχίας, κατόπιν δὲ προτιμήσαντες πεζομαχίαν· ἐνεώλκησαν δὲ πρὸς τοῦτο τὰ πλοῖά των, τὰ ἐπροφύλαξαν διὰ προπετασμάτων ἐκ ξύλων, κλάδων καὶ χώματος, ἥνωσαν δὲ τὰ πληρώματα πρὸς τὸν ὑπὸ τὸν Τιγράνην ἐστρατοπεδευμένον ἐκεῖ ἐκ 40 χιλιάδων στρατόν, οὐδόλοτε πιστεύοντες ὅτι θὰ ἠδύναντο νὰ δοκιμάσωσιν οἱ Ἕλληνες ἐπίθεσιν, ὡς διαθέτοντες ἐν συνόλῳ μόνον 25.000 ἀνδρῶν. Ὁ Λεωτυχίδης ὅμως, πλησιάσας ὅσον περισσότερον ἠδύνατο τὴν ἀκτήν, εἰδοποίει ἀπὸ τῆς ναυαρχίδος του καὶ διὰ κηρύκων περὶ τῆς ἐπικειμένης πεζομαχίας τοὺς Ἴωνας τῆς παραλίου καὶ καλῶν αὐτοὺς πρὸς συνεργασίαν, ἐν τῇ βεβαιότητι ὅτι, ἂν δὲν τοὺς ἀπέκτα συμμάχους, θὰ τοὺς καθίστα ὑπόπτους εἰς τοὺς Πέρσας καὶ συνεπῶς ἀχρήστους εἰς αὐτούς. Γοργῶς δὲ ἐπηκολούθησε τῶν Ἑλλήνων ἡ ἀπόβασις. Πρῶτοι οἱ Ἀθηναῖοι, τεταγμένοι κατὰ τὸ ἀριστερὸν κέρας, προσέβαλον τὴν περσικὴν παράταξιν, κατόπιν δὲ ἐνεφανίσθησαν οἱ Λακεδαιμόνιοι, οἵτινες διήλασαν διὰ τῶν χαραδρῶν τῶν κρασπέδων τοῦ ὄρους, ἀλλὰ καὶ οἱ Σάμιοι καὶ οἱ Μιλήσιοι, μόλις ἐπείσθησαν περὶ τῆς ἐπικρατήσεως τῶν Ἑλλήνων, ἐπέπεσαν καὶ οὗτοι κατὰ τῶν Περσῶν. Ἡ πυρπόλησις τῶν προπετασμάτων καὶ τῶν νεωλκημένων περσικῶν πλοίων, ἡ φυγὴ τῶν Περσῶν ναυάρχων Ἰθαμίτρου καὶ Ἀρταϋνδρου, ὁ φόνος τοῦ ναυάρχου Μαρδόντη καὶ τοῦ στρατηγοῦ Τιγράνη, ἐπέστεψαν τὴν νίκην, διὰ τῆς ὁποίας ἡ Ἰωνία ἀπετίνασσεν ἐκ νέου τὸν περσικὸν ζυγόν. Ἐγένετο ὅμως ἡ νίκη αὕτη ἀφορμὴ σοβαρωτάτων προστριβῶν μεταξὺ τῶν συμμάχων, προειδοποιητικῶν ὡς πρὸς τὴν μέλλουσαν τύχην τῆς Ἰωνίας, τῶν μὲν Πελοποννησίων διατυπωσάντων ὅτι ἔπρεπε νὰ ἐγκαταλειφθῇ ἡ χώρα εἰς τοὺς βαρβάρους, μετοικιζομένων τῶν Ἰώνων εἰς τὰς πόλεις τῶν μηδισάντων Ἑλλήνων, τῶν δὲ Ἀθηναίων κατηγορηματικῶς ἀρνηθέντων εἰς τοὺς Λακεδαιμονίους τὸ δικαίωμα ἐκφράσεως οἱασδήποτε γνώμης ἀφορώσης εἰς τὴν τύχην ἀποικιῶν, αἵτινες ἐθεωροῦντο ἰδικαί των. Τέλος, ἀφοῦ αἱ προσκείμεναι τῇ Μικρασίᾳ μεγαλόνησοι ὑπεσχέθησαν ἐνόρκως σταθερὰν πρὸς τοὺς Ἕλληνας κατὰ τῶν Περσῶν συμμαχίαν, οἱ μὲν ὑπὸ τὸν Λεωτυχίδην Πελοποννήσιοι ἐπανέπλευσαν εἰς τὰ ἴδια, οἱ δὲ ὑπὸ τὸν Ξάνθιππον Ἀθηναῖοι ἔπλευσαν εἰς Ἑλλήσποντον πρὸς ὑποταγὴν τῆς Θρακικῆς χερσονήσου, τῆς ὑπ' αὐτῶν ἁλώσεως τῆς Σηστοῦ σημανάσης τὸ τέλος τοῦ Μηδικοῦ πολέμου. Σ. Ε. Λ.

**—Μυκάλης** *ναυμαχία*. Αἱ εἰς τέσσαρας φάσεις (31 Ἰουλίου—5 Αὐγούστου 1824) δοθεῖσαι ὑπὸ τοῦ ἀντιναυάρχου Γεωργ. Σαχτούρη ναυμαχίαι ἐπ' ἀγκύρας, αἱ ὁποῖαι ἔσωσαν τὴν Σάμον ἀπὸ τῆς καταστροφῆς, εἶναι γνωσταὶ ὡς ναυμαχία τοῦ *Νταρ μπογάζ* (βλ. λ.).

**—Μυκάλης** *πορθμὸς [Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Τὸ μεταξὺ τῆς ΝΑ. ἀκτῆς τῆς Σάμου καὶ τῆς ΒΔ. ἀκτῆς τῆς χερσονησώδους προβολῆς τῆς Μυκάλης ἀμφίγειον. Σχηματίζει δὲ (*Στράβ.* ΙΔ, 637, Teubner) τὴν μεγίστην στενότητά του πρὸς τὸ *Ποσείδιον* τῆς Σάμου, ἥτις εἶναι «ἄκρα ἡ ποιοῦσα πρὸς τὴν Μυκάλην τὸν ἑπταστάδιον πορθμόν», τῆς ἐκτιμήσεως ταύτης τοῦ Στράβωνος ἐλεγχομένης κατὰ 250 περίπου μέτρα μικροτέρας τῆς πραγματικῆς. Νῦν ὀνομάζεται ἐπισήμως *Στενὸν τῆς Μυκάλης* (κοινῶς *Σάμου μπογάζι*), εἶναι δὲ περίδοξον διὰ τὴν ναυμαχίαν τοῦ Ἀγῶνος, ὑπὸ τὴν τουρκικὴν του ὀνομασίαν *Νταρ μπογάζ* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μυκαλησσός** (ὁ, καὶ ἡ) *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Βοιωτίας, ἀπέναντι τῆς Χαλκίδος, κειμένη πρὸς Δ. τῆς Αὐλίδος, ἐπὶ τῆς ἀπὸ ταύτης εἰς Θήβας ἀγούσης ὁδοῦ. Ἔλαβε δὲ τὸ ὄνομα, κατὰ τὴν παράδοσιν, «διότι βοῦς ἐνταῦθα ἐμυκήσατο ἡ Κάδμον καὶ τὸν σὺν αὐτῷ στρατὸν ἄγουσα εἰς Θήβας» (*Παυσ.* IX, 19, 4). Παρ' αὐτὴν ἔκειτο τὸ ἱερὸν τῆς Μυκαλησσίας Δήμητρος. Τῷ 413 π. Χ. ἐλεηλατήθη ὑπὸ τῶν μισθοφόρων Θρακῶν καὶ Ἀθηναίων ὑπὸ τὴν ἡγεσίαν τοῦ Διοτρέφους, οἵτινες κατέσφαξαν σχεδὸν πάντας τοὺς κατοίκους (*Θουκ.* VII, 29). Ἔκτοτε ἤρχισε νὰ παρακμάζῃ, ἐπὶ δὲ τοῦ Παυσανίου ἦτο ἤδη κατεστραμμένη. Σῴζονται νομίσματα αὐτῆς τῶν ἐτῶν 387—373 π. Χ., καθὼς καὶ ἀφανῆ τινα ἐρείπια. Α. Θ. Σ.

**μυκεδίνη** (ἡ), ἢ *βλεννιδίνη [Ὀργ. Χημ.]*. Πρωτεϊνικὴ ὕλη ἀνήκουσα εἰς τὰ κυρίως λευκώματα καὶ δὴ τὰς φυτικὰς γλοβουλίνας. Ἀπαντᾷ εἰς τὸν σῖτον καὶ τὰ ἄλλα σιτηρὰ καὶ εἶναι διαλυτὴ εἰς τὴν ἀλκοόλην. Σ. Γ.

**Μυκερῖνος.** Φέρεται οὕτω ὑπὸ τοῦ Ἡροδότου ἐξηλληνισμένον τὸ ὄνομα τοῦ τετάρτου φαραὼ τῆς Δ' Μεμφιτικῆς δυναστείας *Μενκάουρι* ἢ *Μενκερές*, υἱοῦ τοῦ Χέοπος. Παρὰ Μανέθωνι φέρεται *Μεγχέρης*. Εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τῆς τρίτης τῶν τριῶν μεγάλων πυραμίδων τῆς Γκίζης, ὕψ. 66 μετρ. Ἡ σαρκοφάγος του εὑρέθη ἐντὸς τῆς πυραμίδος, ἀλλὰ μεταφερομένη εἰς τὴν Ἀγγλίαν ἐβυθίσθη μετὰ τοῦ πλοίου εἰς τὰ πορτογαλικὰ παράλια. Ἀπέμεινεν εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Καΐρου μόνον τὸ κάλυμμα τοῦ φερέτρου ἐκ ξύλου συκομορέας, σχήματος ἀνθρωποειδοῦς, μετ' ἐπιγραφῆς. Πεισθεὶς εἰς χρησμὸν ὅτι θὰ ζήσῃ μόνον ἓξ ἔτη ἀκόμη, κατεσκεύασε μυριάδας λυχνιῶν, δι' ὧν ἐφώτιζε τὴν πόλιν δι' ὅλης τῆς νυκτός, οὕτως ὥστε τὰ ἓξ ἔτη νὰ λογισθοῦν δώδεκα καὶ ἐπεδόθη εἰς τὰς σαρκικὰς ἀπολαύσεις. Ἡ βασίλισσα Νιτακρὶτ (ἢ Νιτωκρὶς τῶν Ἑλλή-

Digitized by Google

νων) ἐδιπλασίασε τὰς διαστάσεις τῆς πυραμίδος τοῦ Μυκερίνου καὶ ἐπέθηκε τὸ λαμπρὸν ἐκ συκι-

*Ὁ Μυκερῖνος καὶ ἡ σύζυγός του.*

νίτου λίθου ἐπίστρωμα, οὗτινος μικρὸν μέρος ἀπέμεινε κατὰ τὴν κορυφήν. Γ. Λ. Α.

**Μύκη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ξάνθης τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 319. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει ὡσαύτως τὰ χωρία καὶ τοὺς συνοικισμούς: *Αἰώρα, Ἅλμα, Γλαυκή, Γοργῶνα, Κένταυρος, Κότινον, Κύρρα, Μάνταινα, Πανέριον, Σιρόκον* καὶ *Σμύνθη*. Χ. Δ.

**μυκηθμὸς** (ὁ) τὸ μυκᾶσθαι, ἡ φωνὴ τῶν βοῶν, κοιν. *μούγγρισμα*, ἀντιδιαστέλλεται πρὸς τὸ *μηκηθμὸς* (βλ. λ.).

**Μυκῆναι.** Ἀρχαιοτάτη πόλις τῆς Πελοποννήσου, κειμένη εἰς τὸ ΒΑ. ἄκρον τῆς εὐρείας Ἀργολικῆς πεδιάδος, ὑπὸ τοὺς πρόποδας τοῦ ὄρους Τρητοῦ (τοῦ σημερινοῦ Ζάρα), ἀπέχουσα δὲ τῆς θαλάσσης (Ἀργολικὸς κόλπος) τετράωρον πορείαν.

Τὸ ὄνομα τῆς πόλεως θεωρεῖται κατὰ τὰ τελευταῖα πορίσματα τῆς ἐπιστήμης προελληνικόν. Ὁ γνωστὸς τύπος, *Μυκῆναι*, προῆλθεν ἐκ τοῦ Μυκήνη, ὡς *Ἀθῆναι* ἐκ τοῦ Ἀθήνη. Πάντα, ἢ σχεδὸν πάντα τὰ εἰς —ήνη ὀνόματα, δωρικῶς —ανα, θεωροῦνται σήμερον προελληνικά (Παλλήνη, Μυτιλήνη, Πριήνη κλπ.). Δύναται νὰ θεωρηθῇ πιθανώτατον ὅτι ὡς τὸ Ἀθῆναι παρήχθη ἐκ τοῦ ὀνόματος τῆς πολιούχου θεᾶς Ἀθήνη, οὕτω καὶ τῶν Μυκηνῶν ἐπώνυμος πρέπει νὰ ὑπῆρξε προελληνική τις θεότης Μυκήνη. Αὕτη ὅμως ἐλησμονήθη τελείως κατόπιν καὶ μόνον ἐν τῇ Ὀδυσσείᾳ ἀναφέρεται ὡς μία σπουδαιοτάτη ἡρωΐς:

Τυρώ τ' Ἀλκμήνη τε ἐυστέφανός τε Μυκήνη.

Οἱ γλωσσολόγοι συνάπτουσι τὸ ὄνομα πρὸς τὸ Μυκάλη καὶ Μυκαλησσὸς καὶ θεωροῦσι τοῦτο ἀσφαλῶς προελληνικόν.

**[ΙΣΤΟΡ.—ΜΥΘΟΛ.]** Τὴν δόξαν καὶ τὴν φήμην των ὀφείλουν αἱ Μυκῆναι οὐχὶ εἰς τὸν μετριώτατον ῥόλον των ἐν τῇ ἱστορικῇ ἐποχῇ, ἀλλ' εἰς τὴν διὰ τῶν ἀνασκαφῶν ἀποδειχθεῖσαν μυθώδη ὄντως δύναμιν καὶ τὸν πλοῦτον τῶν κραταιῶν δυναστῶν τῆς μυκηναϊκῆς πόλεως. Ὁ πανίσχυρος ὁμηρικὸς βασιλεὺς τῶν Μυκηνῶν Ἀγαμέμνων, ὅστις εἶναι καὶ ἀρχιστράτηγος τῶν ἑλληνικῶν δυνάμεων κατὰ τὸν Τρωϊκὸν πόλεμον, ἀποτελεῖ τὴν τελευταίαν καὶ μόνην περισωθεῖσαν ἱστορικὴν ἀναλαμπὴν πολὺ πλουσιωτέρων καὶ ἐνδοξοτέρων δυναστειῶν.

Αἱ μετὰ τὸν Μέγαν πόλεμον ἐνεργηθεῖσαι συστηματικαὶ καὶ προσεκτικαὶ ἀνασκαφαὶ τῆς Ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς Σχολῆς ὑπὸ τὸν Wace, ὡς ἐπίσης καὶ ἡ προσεκτικὴ μελέτη τοῦ παλαιοτέρου ὑλικοῦ τῶν ἀνασκαφῶν Schliemann, Σταματάκη καὶ Τσούντα, ἀπέδωκαν ἀρκετὰ ἀσφαλῆ ἱστορικὰ συμπεράσματα. Ἤδη κατὰ τὴν Πρωτοελλαδικὴν περίοδον (3ην χιλιετηρίδα) τὸ ὕψωμα ἐφ' οὗ ἡ πόλις ὑπῆρχεν, ἦτο κατῳκημένον, ἐκ δὲ τῆς Μεσοελλαδικῆς ἐποχῆς διετηρήθησαν ἀκόμη περισσότερα ἴχνη καὶ τάφοι. Ἡ μεγάλη ὅμως τῆς πόλεως δύναμις ἐμφανίζεται αἰφνιδίως κατὰ τὸ τέλος τῆς ἐποχῆς ταύτης καὶ τὴν ἀρχὴν τῆς Ὑστεροελλαδικῆς (περὶ τὸ 1600 π. Χ.) διὰ μιᾶς ἰσχυροτάτης δυναστείας, ἧς οἱ περίφημοι πλήρεις θησαυρῶν τάφοι ἀνευρέθησαν ἐντὸς τῆς ἀκροπόλεως. Ἔκτοτε αἱ Μυκῆναι ἐπιζοῦν ἀδιακόπους ἡμέρας μεγαλείου καὶ δόξης, ἔχουσαι τὸν πρωτεύοντα ῥόλον ἐν Ἑλλάδι μέχρι τοῦ τέλους τῆς μυκηναϊκῆς ἐποχῆς καὶ τοῦ χαλκοῦ αἰῶνος τῆς ἀνθρωπότητος.

Τὴν δυναστείαν τῶν τάφων τῆς ἀκροπόλεως διαδέχεται ἑτέρα, ἥτις κτίζει τοὺς μεγαλοπρεπεστάτους θολωτοὺς τάφους· ἐν τούτοις τινὲς τούτων φαίνονται νὰ εἶναι σύγχρονοι πρὸς τοὺς τάφους τῆς ἀκροπόλεως, ἄλλοι δὲ μεταγενέστεροι. Ἡ κάτω πόλις τῶν Μυκηνῶν, ἡ ἐκτὸς τῶν τειχῶν κειμένη, προάγεται συνεχῶς εἰς μεγαλυτέραν ἔκτασιν, ὡς ἀποδεικνύουσιν οἱ μετ' ὀλίγον ἐμφανιζόμενοι λαξευτοὶ ἀναρίθμητοι σπηλαιώδεις τάφοι. Ψιλὰ ὀνόματα μόνον μᾶς διέσωσεν ἡ παράδοσις περὶ βασιλέων τινῶν τῆς τελευταίας περιόδου τῆς ἀντιστοιχούσης πρὸς τὴν *μυκηναϊκὴν* κοινὴν (βλ. λ.). Ὁ ἀρχιστράτηγος Ἀγαμέμνων τῆς Ἰλιάδος παριστᾷ τὸν τελευταῖον ἔνδοξον γόνον μακραίωνος δυναστειακῆς λαμπρότητος καὶ ἀκμῆς. Ὀλίγα ἔτη μετ' αὐτὸν ἐπισυμβαίνει κατὰ τὴν παλαιὰν παράδοσιν ἡ κάθοδος τῶν Δωριέων, ἥτις σημαίνει τὸ τέλος τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ (δύο γενεὰς μετὰ τὰ τρωϊκά). Αἱ Μυκῆναι, αἱ ὁποῖαι ἐπὶ τῆς τελευταίας δυναστείας τῶν Πελοπιδῶν ἀπαρτίζουσι τὸ κέντρον ἀχαϊκοῦ βασιλείου, περιλαμβάνοντος ἅπαν τὸ Ἀργολικὸν πεδίον καὶ πολλὰς νήσους, μὲ τὸν Ἀγαμέμνονα ἀρχιστράτηγον ἐφ' ὅλων τῶν Ἑλλήνων, βυθίζονται εἰς τὴν ἀφάνειαν τῆς γεωμετρικῆς ἐποχῆς, ὡς καὶ ἡ λοιπὴ Ἑλλάς. Μόνον τὰ μνημειώδη τείχη τῆς πόλεως, ὡς καὶ τὰ τῆς Τίρυνθος, παραμένουσιν ἔτι ὄρθια ἐπὶ μακροὺς αἰῶνας, διὰ νὰ μαρτυροῦν περὶ τοῦ παρελθόντος μεγαλείου. Ἡ νέα τῶν πραγμάτων κατάστασις μετὰ τὴν πλήμμυραν τῶν Δωριέων εὑρίσκει ὅτι ἡ κλεὶς τοῦ Ἀργολικοῦ πεδίου κεῖται ἀλλαχοῦ καὶ οὕτω θεμελιοῦται νῦν καὶ ἀκμάζει ἐφεξῆς τὸ Ἄργος. Ὁπωσδήποτε, ἡ πόλις αὕτη, ἥτις οὐδὲν ἀρχιτεκτονικὸν ἴχνος ὑπάρξεως ἐκ τῆς μυκηναϊκῆς ἐποχῆς παρουσιάζει, ἀναφέρεται οὐ μόνον ἐν τῇ Ἰλιάδι (βασιλεὺς ταύτης εἶναι ὁ Διομήδης), ἀλλὰ καὶ εἰς τοὺς παλαιοτέρους μύθους.

Κατὰ τὴν μυθολογίαν, αἱ Μυκῆναι ἐκτίσθησαν ὑπὸ τοῦ Περσέως. Οὗτος δισκοβολῶν ἐφόνευσεν ἀκουσίως τὸν πάππον του καὶ βασιλέα τοῦ Ἄργους Ἀκρίσιον. Ἡ βασιλεία περιῆλθεν εἰς αὐτόν, ἀλλ' ἐπειδὴ δὲν τοῦ ἦτο πλέον εὐχάριστον νὰ βασιλεύῃ εἰς τὸ Ἄργος, ἀντήλλαξε τὴν ἀρχήν του πρὸς τὴν τοῦ ἐξαδέλφου του Μεγαπένθους. Οὗτος ἦτο υἱὸς τοῦ Προίτου καὶ βασιλεὺς τῆς Τίρυνθος, ἔχων ὑπὸ τὸ κράτος του ἔτι τὸ Ἡραῖον καὶ τὴν Μιδέαν, ἤτοι τὸ ἀνατολικὸν μέρος τοῦ Ἀργολικοῦ πεδίου. Τότε λοιπὸν ὁ Περσεὺς ἔκτισε τὰς Μυκήνας. Ἔγγονος τοῦ Περσέως ἦτο ὁ περίφημος Εὐρυσθεύς, ὅστις ἐπεφόρτισε τὸν Ἡρακλέα νὰ ἐκτελέσῃ τοὺς δώδεκα ἄθλους. Τὸν Εὐρυσθέα εὑρίσκομεν βασιλεύοντα ἤδη ἐν Μυκήναις, εἰς τὰς ὁποίας ὑπακούει καὶ ἡ Τίρυνς.

Μετὰ τὴν ἐπὶ τῆς Οἴτης ἀποθέωσιν τοῦ Ἡρακλέους οἱ υἱοὶ καὶ ὀπαδοί του, οἵτινες κατεδιώκοντο καὶ ὑπεβλέποντο ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῶν Μυκηνῶν, γενόμενοι δεκτοὶ ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων καὶ συνοικισθέντες εἰς τὸν ἀττικὸν δῆμον Τρικόρυνθον, προεκάλεσαν τὴν μῆνιν καὶ στρατείαν τοῦ Εὐρυσθέως κατὰ τῶν Ἀθηνῶν. Κατὰ τὴν συναφθεῖσαν μάχην ἡττήθησαν οἱ Μυκηναῖοι, αὐτὸς δ' ὁ Εὐρυσθεὺς κατὰ τὴν φυγήν, συντριβέντος τοῦ ἅρματός του, ἐφονεύθη ὑπὸ Ὕλλου τοῦ υἱοῦ τοῦ Ἡρακλέους. Ἐπειδὴ κατὰ τὴν μάχην ἔπεσαν καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Εὐρυσθέως, τὴν βασιλείαν κατέλαβεν ἡ δυναστεία τῶν Πελοπιδῶν, ἤτοι οἱ ἐκ Πισάτιδος ἐλθόντες υἱοὶ τοῦ Πέλοπος Ἀτρεὺς καὶ Θυέστης. Οἱ Ἡρακλεῖδαι, πτερωθέντες ἐκ τῆς νίκης, θέλουν νὰ κατέλθουν εἰς τὴν Πελοπόννησον, στρατηγοῦντος τοῦ Ὕλλου. Ὁ Ἀτρεύς, προσλαβὼν συμμάχους τοὺς Τεγεάτας καὶ ἄλλους, ἀπαντᾷ ἐν τῷ Ἰσθμῷ. Ἐκεῖ ὁ Ὕλλος προεκάλεσεν εἰς μονομαχίαν τὸν βουλόμενον, ἐφ' ὅροις, ἐὰν μὲν νικήσῃ, νὰ παραλάβωσιν οἱ Ἡρακλεῖδαι τὴν βασιλείαν τοῦ Εὐρυσθέως, ἐὰν δὲ νικηθῇ, νὰ μὴ δύνανται οὗτοι νὰ κατέλθωσιν εἰς Πελοπόννησον πρὸ τῆς παρελεύσεως πεντήκοντα ἐτῶν. Τὴν πρόκλησιν ἐδέχθη ὁ βασιλεὺς τῶν Τεγεατῶν Ἔχεμος. Ὁ Ὕλλος ἐφονεύθη, οἱ δ' Ἡρακλεῖδαι κατὰ τὰς ὁμολογίας ἐπανῆλθον εἰς Τρικόρυνθον.

Υἱὸς τοῦ Ἀτρέως ὑπῆρξεν, ὡς γνωστόν, ὁ τελευταῖος μέγας τῶν Μυκηνῶν βασιλεύς, ὁ Ἀγαμέμνων. Δύο γενεὰς μετὰ τοῦτον, ἤτοι βασιλεύοντος Τισαμενοῦ τοῦ υἱοῦ τοῦ Ὀρέστου, ἐγένετο κατὰ τὴν παράδοσιν ἡ κάθοδος τῶν Δωριέων, ἥτις ἐσήμανε καὶ τὴν ὁριστικὴν παρακμὴν τῶν Μυκηνῶν.

***Οἱ ἱστορικοὶ χρόνοι.*** Ἐπὶ τῶν Δωριέων ἡ πρώτη πόλις ἦτο τὸ Ἄργος. Αἱ Μυκῆναι δὲν ἐξηφανίσθησαν, ἀλλὰ περιέπεσαν εἰς ἀσημότητα καὶ πιθανώτατα διέκειντο φιλικῶς πρὸς τὴν Σπάρτην. Κατὰ τὴν κρίσιμον ἐποχὴν τῶν Περσικῶν πολέμων τὸ Ἄργος ἔμεινεν ἀμέτοχον εἰς τὸν ὑπὲρ ἀνεξαρτησίας ἀγῶνα τῶν Ἑλλήνων, ἐνῷ αἱ ἀδύνατοι Μυκῆναι ἔστειλαν ὁμοῦ μετὰ τοῦ Λεωνίδου 80 ὁπλίτας εἰς τὰς Θερμοπύλας. Μετὰ ἓν ἔτος (479 π. Χ.) ἡ συμβολὴ παρουσιάζεται ἔτι ἀξιολογωτέρα, διότι αἱ Μυκῆναι, ὁμοῦ μετὰ τῆς Τίρυνθος, παρατάσσουν ἐν Πλαταιαῖς τετρακοσίους ὁπλίτας. Οἱ Μυκηναῖοι ἵσταντο ἔναντι τῶν Βακτριανῶν στρατιωτῶν τοῦ Μαρδονίου. Μετὰ τὴν νίκην οἱ Μυκηναῖοι ἔτυχον τιμητικῆς ἀναγραφῆς τοῦ ὀνόματός των (ὁμοῦ μετὰ τῶν λοιπῶν συναγωνισθεισῶν πόλεων) ἐπὶ τῶν ἐν Ὀλυμπίᾳ καὶ Δελφοῖς ἀναθημάτων. Ἡ νῦν ἐν Κωνσταντινουπόλει χαλκῆ βάσις ἐκ τριῶν συμπεπλεγμένων ὄφεων, ἐπὶ τῶν κεφαλῶν τῶν ὁποίων πάλαι ἵστατο χρυσοῦς τρίπους ἐν Δελφοῖς, φέρει μέχρι σήμερον τὸ ὄνομα τῶν Μυκηνῶν.

Δυστυχῶς ἡ ἔχθρα τοῦ Ἄργους, ἐπαυξηθεῖσα ἀσφαλῶς λόγῳ τῶν ἐπιτυχιῶν ἐκείνων, ἀπέβη εἰς τὸ τέλος ὀλεθρία διὰ τὰς Μυκήνας. Περὶ τὸ 468 π. Χ. οἱ Ἀργεῖοι, ἐπωφελούμενοι ἐσωτερικῶν ταραχῶν ἐν Σπάρτῃ, ἐπολιόρκησαν τὰς Μυκήνας καὶ παρὰ τὴν ἀπὸ τῶν γηραιῶν κυκλωπείων τειχῶν ἄμυναν, ἡ πόλις ἐκυριεύθη ἐν τέλει καὶ οἱ κάτοικοι ἐξεπατρίσθησαν. Ὁ Παυσανίας, ὁ Στράβων καὶ ὁ Διόδωρος διηγοῦνται ὅτι αἱ Μυκῆναι ἐπ' αὐτῶν ἦσαν ἔρημοι. Αἱ ἀνασκαφαὶ πράγματι ἀπέδειξαν ὅτι ἀπὸ τῆς καταστροφῆς τῆς πόλεως μέχρι τοῦ Γ' π. Χ. αἰῶνος οὐδὲν ἴχνος κατοικήσεως ἀποφαίνεται. Ἐπὶ τῆς ἑλληνιστικῆς ἐποχῆς ὅμως ὑπάρχει συνοικισμός τις ἐν Μυκήναις, ἔχομεν δὲ καὶ μαρτυρίας ὅτι ἐπὶ τῶν πάλαι ἐνδόξων ἐρειπίων ἀνηγέρθη μία κώμη ὑπὸ τῶν Ἀργείων. Ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Παυσανίου (Β' αἰὼν μ. Χ., ἐπὶ Ἀδριανοῦ καὶ Ἀντωνίνων) φαίνεται ὅτι καὶ ἡ κώμη αὕτη εἶχεν ἐκλίπει, ὥστε οὗτος ἀκριβολογεῖ, ὅταν ὁμιλῇ περὶ τελείας ἐρημίας. Καὶ αὐτὸς ὁ βωμὸς τῆς Ἀθηνᾶς ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς ἀκροπόλεως δὲν ὑπάρχει, ἀφοῦ δὲν ἀναφέρεται ὑπ' αὐτοῦ. Μόνον ἴσως ποιμένες κατῴκουν εἰς τὰ πέριξ, ἐπωφελούμενοι τῆς ὑπαρχούσης γνωστῆς πηγῆς τῶν Μυκηνῶν, τῆς Περσείας.

Περὶ τῆς μνημονευθείσης ἑλληνιστικῆς κώμης ἔχομεν ὀλίγας ἱστορικὰς μαρτυρίας, κυρίως δύο ἐπιγραφάς. Ἱδρυθεῖσα ὑπὸ τοῦ δήμου τῶν Ἀργείων πέριξ τοῦ ἐπὶ τῆς ἀκροπόλως βωμοῦ τῆς Ἀθηνᾶς, ἦτο ὠχυρωμένη, ὡς φαίνεται νὰ ἦσαν καὶ αἱ ἄλλαι «κῶμαι» τῆς ἐποχῆς ταύτης (Ἀσίνη), πρώτη δὲ περὶ αὐτῆς μαρτυρία εἶναι ἡ τοῦ ἔτους 235 π. Χ. Τότε ἐφονεύθη ἐκεῖ ὁ Ἀργεῖος τύραννος Ἀρίστιππος, ἐπιστρέφων ἐξ ἀτυχοῦς ἐφόδου κατὰ τῶν Κλεωνῶν. Ἐκ τῶν ἐτῶν 195—194 π. Χ. κατέχομεν δύο ἐπιγραφάς, ἐξ ὧν ἡ τελευταία, νεωστὶ ἀνακαλυφθεῖσα, εἶναι ψήφισμα τῆς κώμης ὑπὲρ Λακεδαιμονίου τινὸς Δαμοκλείδα. Ἡ προηγουμένη ἀναφέρει ὅτι ἔφηβοι τῶν Μυκηνῶν μετεφέρθησαν εἰς Σπάρτην ὑπὸ τοῦ τυράννου Νάβιδος, ὅστις ὑπῆρξε κύριος τοῦ Ἀργείου πεδίου κατὰ τὰ ἔτη 198—197 καὶ 195. Ἐν Σπάρτῃ οἱ ἔφηβοι ἐκεῖνοι ἔτυχον περιποιήσεων καὶ προστασίας ἐκ μέρους Προτίμου τινὸς ἐκ Γόρτυνος. Φαίνεται δὲ ὅτι καὶ ὁ Δαμοκλείδας ἐπίσης εὐηργέτησε τοὺς ἐφήβους ἐκείνους ἢ ἄλλως παρέσχεν εἰς τὸ Ἄργος ὑπηρεσίας διαρκούσης τῆς τυραννίας τοῦ Νάβιδος.

Βραδύτερον, κατὰ τὴν ῥωμαϊκὴν ἐποχήν, ἐξέλιπεν, ὡς ἐλέχθη ἤδη, καὶ ἡ ἀνωτέρω κώμη. Σποραδικὰ εὑρήματα τῆς αὐτοκρατορικῆς ἐποχῆς, ἀσήμαντα ἄλλως, δὲν ἀντιτίθενται πρὸς τὴν περὶ ἐρημώσεως μαρτυρίαν τοῦ Παυσανίου. Μόλις κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα ἀνέζησεν ἡ παλαιὰ δόξα τῶν Μυκηνῶν διὰ τῶν ἐκπληκτικῶν ἀνακαλύψεων τοῦ Σλῆμαν (1876) καὶ εὐθὺς κατόπιν διὰ τῶν προσεκτικῶν ἐργασιῶν τοῦ Τσούντα καὶ τελευταίως τῆς Ἀγγλικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς.

ΤΟΠΟΓΡΑΦΙΑ ΤΗΣ ΑΚΡΟΠΟΛΕΩΣ. Ἡ ἀκρόπολις τῶν Μυκηνῶν εὑρίσκεται ἐπὶ λόφου, ὅστις οὔτε λίαν ὑψηλὸς εἶναι, οὔτε καθ' ὑπερβολὴν δύσβατος. Ἀφαιρουμένου τοῦ μεγάλου πλεονεκτήματος ὅτι ἡ ἀκρόπολις ἐκείνη εἶχεν ὕδωρ (ὡς καὶ ἡ τῶν Ἀθηνῶν) δὲν εἶναι πολὺ καταληπτοὶ σήμερον οἱ λόγοι, οἵτινες ἐπέβαλον τὴν κτίσιν κοσμοϊστορικῆς σημασίας κέντρων, ὡς τῆς Κνωσοῦ καὶ τῶν Μυκηνῶν, εἰς τοποθεσίας στερουμένας στρατηγικῆς ἢ ἄλλης ἰδιαιτέρας σπουδαιότητος. Ἡ ὀχυρότης εἶναι βραδύτερον, εἰς τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους, ὁ κυριώτατος παράγων διὰ τὴν ἐκλογὴν μιᾶς ἀκροπόλεως. Τοῦτο δὲν εἶναι τόσον σπουδαίας σημασίας διὰ τὴν μυκηναϊκὴν ἐποχήν. Σπουδαιότατα κέντρα, ὡς αἱ Μυκῆναι καὶ ἡ Τίρυνς, αἱ Θῆβαι καὶ ὁ Ὀρχομενός, δὲν εἶναι ἰδιαιτέρως ὀχυρά· ἴσως δὲ μόνη ἡ διεύθυνσις τῶν κυρίων ἐμπορικῶν ὁδῶν δύναται νὰ ἑρμηνεύσῃ τὴν θέσιν καὶ τὴν σημασίαν των.

Ὁ λόφος τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν κεῖται μεταξὺ δύο ὑψηλῶν βουνῶν. Βορειοανατολικῶς ὑψοῦται ὁ Ἅγιος Ἠλίας, μεσημβρινῶς δ' ἡ Σάρα. Τὰ δύο ταῦτα ὑψώματα τείνουσι νὰ ἑνωθῶσι πρὸς ἀνατολὰς τῆς ἀκροπόλεως, χωρίζονται δ' ἀπ' ταύτης δι' ἠπίας τοῦ ἐδάφους βυθίσεως. Ὁμοίως ἡ ἀνατολικὴ πλευρὰ εἶναι ὁμαλωτάτη, ὡς ἐκ τούτου δ' ὀχυρωματικῶς ἀσθενεστάτη. Ἡ βορεία πλευρὰ εἶναι ὀχυρωτέρα, διότι χωρίζει ταύτην ἀπὸ τῶν προπόδων τοῦ Ἁγίου Ἠλία τὸ ῥεῦμα Κοκορέτσα. Ὀχυρωτάτη εἶναι τέλος ἡ μεσημβρινὴ πλευρά, ἣν ἡ ἀπότομος καὶ βαθεῖα φάραγξ Χάβου χωρίζει ἀπὸ τῆς Σάρας.

Τὴν ἀκρόπολιν περιβάλλει τὸ ἰσχυρόν, παχὺ καὶ διὰ μεγάλων λίθων ἐκτισμένον κυκλώπειον τεῖχος. Τοῦτο ἀκολουθεῖ κατὰ τὸ δυνατὸν τὸ περίγραμμα τοῦ λόφου, εἰς τρόπον ὥστε ἡ ἀκρόπολις ἔχει σχῆμα ἀκανονίστως τριγωνοειδές, οὗ ἡ ὀξυτέρα κορυφὴ εὑρίσκεται πρὸς ἀνατολάς, ἀπέναντι δὲ ταύτης πρὸς δυσμὰς ἐκτείνεται ἡ στενοτέρα τῶν πλευρῶν

Digitized by Google

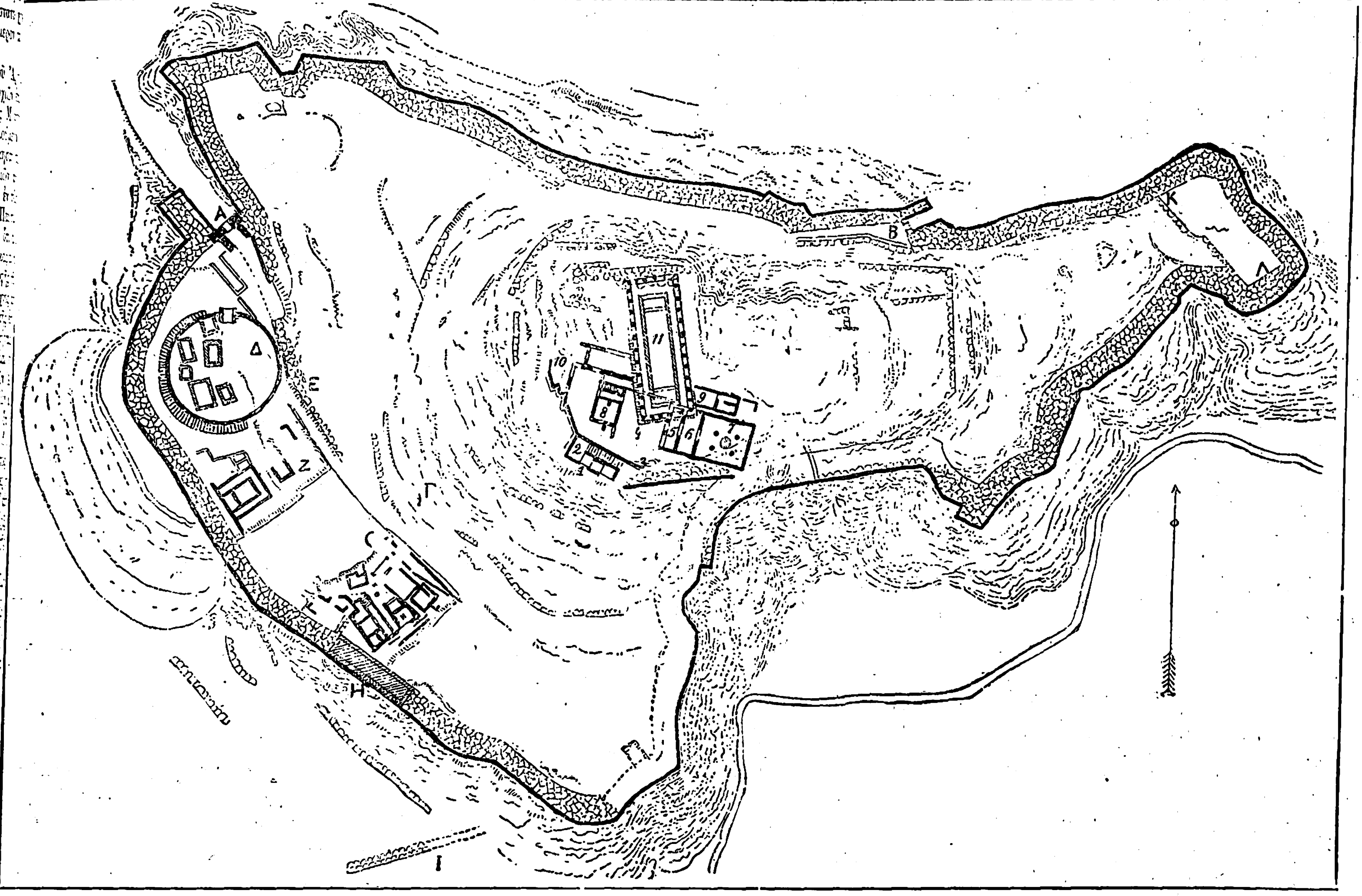


Σχ. 1. *Σχεδιαγράφημα τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν.*

[Α= πύλη τῶν λεόντων· Β=βορεία πύλη· Γ=πιθανὴ θέσις ἀρχαιοτέρας πύλης· Δ=περίβολος τάφων· Ε=ἀνάλημμα ἀναβάσεως· Ζ=ἐρείπια οἰκιῶν· Η=πύργος ἐκ πολυγωνικῶν λίθων· Θ=λείψανα οἰκίας· Ι=λείψανα τείχους τοῦ ἄστεως· Κ=κρυπτὴ κατάβασις· Λ=συριγγοειδὴς ἔξοδος· 1, 2, 3=κάθοδος εἰς τὸ ἀνάκτορον· 4=αὐλὴ ἀνακτόρου. 5, 6=αἴθουσα καὶ πρόδομος τοῦ μεγάρου· 7=μέγαρον τῶν ἀνδρῶν. 8,9=ἕτερα δωμάτια τοῦ ἀνακτόρου. 10=δευτέρα πύλη αὐτοῦ· 11=ναός.]

σχ. 1). Περὶ τὸ μέσον τῆς ἀκροπόλεως ἦτο τὸ ὑψηλότατον σημεῖον, ἐκεῖ δ' εἶχεν ἀνεγερθῆ τὸ ἀνάκτορον (ἀριθ. 5—7) μετὰ τῶν πέριξ αὐτοῦ οἰκοδομημάτων, εἰς μεταγενεστέραν δ' ἐποχὴν ὁ ἑλληνικὸς ναὸς τῆς Ἀθηνᾶς (ἀρ. 11). Τὸ ἐντεῦθεν μέρος πρὸς δυσμὰς ἦτο πλῆρες οἰκοδομῶν: ἀναλημμάτων διὰ τὴν πρὸς τὸ ἀνάκτορον ἀνάβασιν, οἰκοδομημάτων ἰδιωτικῶν, ἀποθηκῶν καὶ τοῦ περιφήμου κυκλικοῦ περιβόλου τῶν βασιλικῶν τάφων (Δ ἐν τῷ σχήμ.). Τὸ ἀνατολικὸν καὶ στενότατον ἄκρον τῆς ἀκροπόλεως ἐστερεῖτο πάσης σπουδαίας οἰκοδομῆς, πλὴν τῆς κρυπτῆς καταβάσεως πρὸς τὴν περίφημον δεξαμενὴν (Κ).

***Τὰ τείχη.*** Ὁλόκληρον τὴν ἀκρόπολιν περιέβαλλε κύκλῳ, ὡς προελέχθη, τὸ ἰσχυρότατον «κυκλώπειον» καλούμενον τεῖχος, ὅπερ μετὰ τοῦ ἀναλόγου τοιούτου τῆς Τίρυνθος εἶναι τὰ δύο κυριώτατα παραδείγματα τῆς καλουμένης κυκλωπείου οἰκοδομικῆς τέχνης. Κατὰ τὸν μῦθον, τὰ τείχη ταῦτα ἔκτισαν Κύκλωπες ἐλθόντες ἐκ Λυκίας, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα. Ὁ κυκλώπειος τρόπος συνίσταται εἰς τὴν χρησιμοποίησιν ὅσον τὸ δυνατὸν ὀγκωδεστέρων λίθων, οἵτινες παρατιθέμενοι πλησίον ἀλλήλων μετὰ μικροτέρων πολλάκις τοιούτων, κατὰ τὰ σημεῖα τῶν ἁρμῶν, ἀποτελοῦσι τὰ δύο πρόσωπα τοῦ τείχους, ἐσωτερικὸν καὶ ἐξωτερικόν. Τὸ ἐνδιάμεσον κενὸν ἐπληροῦτο μικροτέρων λίθων καὶ χωμάτων, ἐδίδετο δὲ κατὰ κανόνα εἰς τὰ τείχη μέγα πάχος.

Τὰ τείχη τῶν Μυκηνῶν διατηροῦνται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν τοῦ περιβόλου. Περισσότερον κατεστραμμένα εἶναι εἰς ἓν τμῆμα τῆς μεσημβρινῆς πλευρᾶς. Ἡ τειχοδομία δὲν εἶναι πανταχοῦ ὁμοιόμορφος. Τὸ πλεῖστον μέρος τῶν τειχῶν εἶναι κτισμένον κατὰ τὸν κυρίως κυκλώπειον τρόπον, διὰ μεγάλων δηλαδὴ λίθων, σχεδὸν ἐντελῶς ἀκατεργάστων, ὡς ἐξήρχοντο ἐκ τοῦ λατομείου, δι' ὃ καὶ ἔμενον κενά, τὰ ὁποῖα ἐπληροῦντο διὰ μικροτέρων λίθων κατὰ τὰς ἁρμογάς. Δεύτερος, πολὺ τεχνικώτερος τρόπος, εἶναι ὁ διὰ πελεκητῶν ὀρθογωνίων λίθων, οἵτινες τίθενται παρ' ἀλλήλους εἰς ὁριζοντίους σειρὰς ἢ δόμους ἰσοϋψεῖς, εἰς τρόπον ὥστε ἡ τειχοδομία ἔχει σχεδὸν κανονικὴν μορφὴν ἰσοδομικοῦ ῥυθμοῦ. Κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον εἶναι κτισμένη ἡ κυριωτάτη πύλη τοῦ τείχους, ἡ περίφημος «Πύλη τῶν Λεόντων μετὰ τοῦ ὀρθογωνίου προμαχῶνος της, ἡ βορεία πύλη (Β ἐν σχ. 1), ἔτι δ' εἷς πύργος κατὰ τὸ ἀνατολικὸν ἄκρον τῆς μεσημβρινῆς πλευρᾶς. Τρίτος τέλος τρόπος εἶναι ὁ διὰ πολυγωνικῶν λίθων, οἵτινες εἶναι μετ' ἀκριβείας πελεκημένοι καὶ προσηρμοσμένοι μεταξύ των. Ὁ τρόπος οὗτος εἶναι ὁ νεώτατος πάντων καὶ ἀσφαλῶς προέρχεται ἀπὸ μεταγενεστέρας ἐπισκευὰς των τειχῶν. Τὸ κυριώτατον πολυγωνικὸν τμῆμα τοῦ τείχους (κατὰ τὴν δυτικὴν πλευρὰν) τοῦ περιβόλου, πρὸς Ν. τοῦ περιβόλου τῶν τάφων (Η ἐν σχ. 1) εἶναι ἑλληνικῆς ἐποχῆς.

Τὸ ὕψος καὶ τὸ πάχος τῶν τειχῶν ἐποίκιλλον κατὰ τόπους, ἀναλόγως τῶν ὀχυρωτικῶν ἀναγκῶν.

*Οἱ λέοντες τῶν Μυκηνῶν.*

Μέγιστον πάχος ἀποκτῶσι τὰ τείχη κατὰ τὴν βορείαν καὶ τὸ ἀνατολικὸν ἥμισυ τῆς νοτίας πλευρᾶς, φθάνοντα μέχρις ἑπτὰ μέτρων. Ἀναλόγου πάχους τείχη ἐν Τίρυνθι ἔφερον εἰς τὸ ἐσωτερικὸν των σύριγγας, αἵτινες ἐχρησιμοποιοῦντο ὡς καταφύγια τῆς φρουρᾶς, τῶν ἐν καιρῷ πολιορκίας εἰς τὴν ἀκρόπολιν συρρεόντων πληθυσμῶν, ἢ τέλος καὶ ὡς ἀποθῆκαι. Ἐν Μυκήναις μόνον ἐν τῇ βορείᾳ πλευρᾷ τοῦ τείχους ὑπάρχει μικρὸν συριγγοειδὲς δωμάτιον 3,50×2,10 μ. καὶ ὕψους 2,60. Ἑτέρα σῦριγξ, ἥτις ἀσφαλῶς θὰ ἐχρησιμοποιεῖτο διὰ μικρᾶς πυλίδος ὡς μυστικὴ ἔξοδος, διατηρεῖται κατὰ τὴν ΝΑ. γωνίαν τοῦ περιβόλου (Λ ἐν σχ. 1). Τέλος, ἀπέναντι περίπου ταύτης, πρὸς βορρᾶν ὑπάρχει ἑτέρα μνημειώδης κατασκευὴ (Κ), ἥτις σκοπὸν ἀναμφίβολον εἶχε τὴν ὕδρευσιν τῆς ἀκροπόλεως ἐν ὥρᾳ ἀνάγκης. Μία σῦριγξ ὁδηγεῖ ἐκ τοῦ σημείου τούτου ὑπογείως ὑπὸ τὰ τείχη, διευθυνομένη κατ' ἀρχὰς πρὸς βορρᾶν, εἶτα πρὸς δυσμὰς καὶ τέλος βορειοανατολικῶς, εἰς βαθὺ φρέαρ. Ἡ ὅλη διαδρομὴ τῆς σύριγγος ἔξω τῶν τειχῶν εἶναι περὶ τὰ 40 μέτρα. Εἰς τὸ ἀνωτέρω φρέαρ κατέληγε τὸ ὕδωρ μικρᾶς, ἀλλ' ἀενάου πηγῆς, ἥτις εὑρίσκεται περὶ τὰ 100 μέτρα μακρὰν τῶν τειχῶν. Ἡ πηγὴ αὐτὴ καὶ μόνη ἠδύνατο ἐπωφελῶς νὰ χρησιμοποιηθῇ ἐν ὥρᾳ πολιορκίας, διότι ἡ πολὺ ἀφθονωτέρα τοιαύτη, ἥτις ἀσφαλῶς εἶναι ἡ ὑπὸ τοῦ Παυσανίου ἀναφερομένη Περσεία, κεῖται πολὺ μακράν, ἀπέχουσα 360 μ. ἀπὸ τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τῆς ἀκροπόλεως. Ἐν πάσῃ περιπτώσει, ἐπειδὴ οἱ πολιορκηταὶ ἦτο δυνατὸν νὰ ἀνακαλύψωσι καὶ ἀποκόψωσι τὸν ὑπόγειον ἀγωγόν, ὅστις ὡδήγει τὸ ὕδωρ εἰς τὸ μνημονευθὲν ὑπόγειον φρέαρ, οἱ Μυκηναῖοι ἀρχιτέκτονες διεμόρφωσαν τὴν περιγραφεῖσαν σύριγγα, οὕτως ὥστε νὰ δύναται νὰ χρησιμεύσῃ καὶ ὡς δεξαμενὴ ὀμβρίων ὑδάτων. Αὐτὴ δηλαδὴ εἶναι κατωφερής, κατέρχεται τις δὲ μέχρι τοῦ πέρατος διὰ 16 βαθμίδων ὑπὸ τὸ τεῖχος καὶ ἄλλων 83 κατὰ τὴν ὑπόλοιπον διαδρομήν. Πᾶσαι λοιπὸν αἱ βαθμῖδες, ἔτι δὲ τὸ πρὸς τὸν μυχὸν ἥμισυ τῶν τοιχωμάτων τῆς σύριγγος ἐπεχρίσθησαν διὰ κονιάματος, εἰς τρόπον ὥστε ταῦτα ἦσαν ὑδατοστεγῆ. Οὕτως ἠδύναντο οἱ ἐν τῇ ἀκροπόλει νὰ ἀντλῶσι τὸ ὕδωρ, κατερχόμενοι βαθμῖδα πρὸς βαθμῖδα, ἐφ' ὅσον τοῦτο ἐξηντλεῖτο. Εἶναι μία διαρρύθμισις, τῆς ὁποίας ἀνάλογον ἐν μικρογραφίᾳ συναντῶμεν ἐν Κρήτῃ, εἰς τὴν ὑδραυλικὴν ἐγκατάστασιν τοῦ μινωϊκοῦ μεγάρου τῆς Τυλίσου. Ὁλόκληρος ὁ ΒΑ. τομεὺς τῶν τειχῶν μετὰ τῶν δύο μνημονευθεισῶν συρίγγων εἶναι μεταγενεστέρα κατά τι προσθήκη εἰς τὸν λοιπὸν περίβολον.

Εἰς πύλας δὲν ἦτο πλούσιος ὁ περίβολος τῶν Μυκηνῶν. Κατὰ τὴν βορείαν πλευρὰν ὑπῆρχε μία μικρὰ τοιαύτη (Β ἐν σχ. 1), μονόφυλλος καὶ ἐφωδιασμένη δι' ὀρθογωνίου προμαχῶνος, ἀφ' οὗ οἱ ἀμυνόμενοι ἠδύναντο νὰ προσβάλλωσι τὰ γυμνὰ μέρη τῶν ἐφορμώντων. Κυρία ὅμως εἴσοδος εἰς τὴν ἀκρόπολιν εἶναι ἡ περιλάλητος Πύλη τῶν Λεόντων (Α ἐν σχ. 1), ὀνομασθεῖσα οὕτως ἀπὸ τοῦ γνωστοῦ ἀναγλύφου, ὅπερ καλύπτει τὸ ὑπὲρ τὸ

Digitized by Google

ὑπέρθυρον ἀνακουφιστικὸν τρίγωνον. Ὁλόκληρος ἡ πύλη μετὰ τοῦ ὀρθογωνίου προμαχῶνός της εἶναι ᾠκοδομημένη διὰ μεγάλων κροκαλοπαγῶν λίθων, ἐχόντων μέχρι 5, 6 ἢ καὶ περισσοτέρων τόννων βάρος. Ἡ κυρίως πύλη, ἥτις εἶναι εἰς τὸ ἄνω μέρος στενοτέρα κατά τι, ἀποτελεῖται κατὰ τὸν μεγαλιθικὸν τρόπον ἐκ τεσσάρων λίθων, ἤτοι δύο παραστάδων, ἑνὸς ἀνωφλίου καὶ ἑνὸς κατωφλίου, ὅπερ φέρει καὶ τὰ ἴχνη τροχῶν, οἵτινες ἄλλοτε διήρχοντο ὑπὲρ τοῦτο. Ἡ πύλη εἶχε δύο θυρόφυλλα, φαίνονται δ' ἔτι αἱ ὀπαὶ τῶν στροφίγγων καὶ μοχλῶν ἀσφαλείας. Τὸ ὑπὲρ τὸ ὑπέρθυρον κενὸν τρίγωνον, ὅπερ ἀφήνετο ἐπίτηδες καὶ εἰς μερικοὺς ἐκ τῶν θολωτῶν τάφων, ἵνα μὴ τὸ ὑπέρθυρον κινδυνεύῃ ἐκ τοῦ βάρους τῶν ὑπερκειμένων λίθων, πληροῦται ἐνταῦθα διὰ πλακὸς ἐκ σκληροῦ ἀσβεστολίθου, ἥτις φέρει τὸ περίφημον ἀνάγλυφον. Ἑκατέρωθεν ἑνὸς κρητομυκηναϊκοῦ κίονος, παχυτέρου πρὸς τὸ ἄνω μέρος, ἵστανται δύο λέοντες πατοῦντες διὰ τῶν ἐμπροσθίων ποδῶν ἐπὶ βωμοειδῶν βάθρων. Αἱ κεφαλαὶ τῶν λεόντων, αἵτινες ἔβλεπον πρὸς τὰ ἐμπρός, εἶχον ποιηθῆ χωριστά, ἴσως ἐκ στεατίτου, καὶ ἐξηφανίσθησαν.

Ἡ ὁδός, ἥτις ἔξωθεν κατέληγε πρὸ τῆς πύλης, πιθανώτατα διήρχετο κάτωθεν τῆς ΒΔ. γωνίας τοῦ τείχους (σχ. 1), εἰς τρόπον ὥστε οἱ ἐφορμῶντες ἦσαν ἐκτεθειμένοι εἰς τὰ βλήματα. Ἐσωτερικῶς ἡ πύλη τῶν Λεόντων ἔφερε δύο μικροὺς τοίχους, ἰσοϋψεῖς πρὸς τὰς παραστάδας. Οὗτοι ἔφερον στέγην, εἰς τρόπον ὥστε ἐσχηματίζετο μικρὸν ὑπόστεγον ὄπισθεν τῆς πύλης (βλ. σχ. 3). Παραπλεύρως τοῦ δυτικοῦ ἐκ τῶν τοίχων τοῦ ὑποστέγου τούτου εὑρίσκεται στενόμακρον κατασκεύασμα (ἀρ. 8 ἐν τῷ σχήματι), ὅπερ ἀσφαλῶς ἦτο κλῖμαξ, ἴσως ξυλίνη κατὰ τὸ ἀνώτερον μέρος. Οὕτως εἶχον οἱ φρουροὶ τῆς πύλης πᾶσαν εὐκολίαν, ὅπως ἀνέρχωνται ταχέως ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὑποστέγου καὶ ἐκεῖθεν ἐπὶ τῶν τειχῶν καὶ τοῦ ὀρθογωνίου προμαχῶνος.

Ὡς πρὸς τὴν χρονολογίαν τέλος τοῦ περιβόλου, αἱ ἔρευναι ὑπὸ τὰ κυκλώπεια τείχη εἰς διάφορα σημεῖα, ὡς καὶ ὑπὸ τὰ κατώφλια τῶν πυλῶν, ἔφερον πάντοτε εἰς φῶς ὄστρακα ὑστεροελλαδικῆς 3 ἐποχῆς. Ὁ περίβολος ἑπομένως ἐκτίσθη κατὰ τὴν περίοδον ἀπὸ 1400—1350 π. Χ., χρονολογία ἥτις ἐξετάζεται ὁμοίως καὶ διὰ τὰ τείχη τῆς Τίρυνθος. Πλὴν τούτου ἡ πύλη τῶν Λεόντων ἔχει τόσην ἀναλογίαν πρὸς τὴν πύλην τῆς Τίρυνθος, ἥτις ἔδιδε πρόσοδον εἰς τὴν ὑψηλοτέραν ἀκρόπολιν καὶ τὸ ἀνάκτορον, ὥστε, ἐκτὸς πάσης ἀμφιβολίας, ἀμφότεραι αἱ μνημειώδεις ἐκεῖναι ὀχυρώσεις οὐ μόνον σύγχρονοι εἶναι, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ ἀρχιτεκτονικοῦ πνεύματος διαπνέονται.

***Ἡ ἐντὸς τῆς ἀκροπόλεως τοπογραφία.*** Τὰ διασωθέντα εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς ἀκροπόλεως ἐρείπια θὰ περιγραφῶσι κατὰ σειρὰν ὡς πρὸς τὸν ἀνερχόμενον ἐκ τῆς πύλης τῶν Λεόντων, μετὰ παραπομπῆς εἰς τὸ σχεδιάγραμμα 3, ὅπου σημειοῦνται ταῦτα μετὰ πάσης ἀκριβείας.

*Ἡ σιταποθήκη.* Οὕτως ὠνομάσθη περιέργου σχεδίου οἴκημα, κείμενον πρὸς Δ. τῆς πύλης τῶν Λεόντων καὶ ἀμέσως μετὰ τὴν κλίμακα, ἥτις ἦγεν ἄνω εἰς τὸ ὑπόστεγον τῆς πύλης. Τὴν ἀνασκαφὴν τοῦ καλῶς διατηρουμένου κτηρίου ἤρχισεν ὁ Σλῆμαν τῷ 1876 καὶ ἐπεράτωσαν οἱ Ἄγγλοι τῷ 1920. Τὸ ἀνωτέρω ὄνομα ἔλαβεν ἕνεκα τῆς ἐν αὐτῷ εὑρέσεως χονδροειδῶν πηλίνων σκευῶν ἐν σχήματι κάδου (ὕψος 0,70, διάμ. 0,50), ἐντὸς τῶν ὁποίων παρετηρήθησαν λείψανα ἀπηνθρακωμένων σιτηρῶν. Τὸ οἰκοδόμημα φέρει πρὸς Δ. δύο στενομάκρους κεκαμμένους διαδρόμους, εἶτα δὲ ἄλλα διαμερίσματα. Εἶχε τοὐλάχιστον δύο πατώματα, οἱ δὲ τοῖχοι σῴζονται μέχρι σήμερον εἰς ὕψος 5,30 μέτρων.

*Ὁ τάφος.* Ὑπὸ τὸ δάπεδον τοῦ διαμερίσματος 15 τῆς ἀνωτέρω οἰκοδομῆς ἀνεκαλύφθη λακκοειδὴς τάφος, ὅμοιος πρὸς τοὺς βασιλικοὺς τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου (περὶ ὧν βλ. κατ.). Αἱ διαστάσεις του ἦσαν 2,07×8,80. Εἶχεν ἀνακαλυφθῆ καὶ συληθῆ κατὰ τὴν θεμελίωσιν τῆς οἰκοδομῆς, οὐχ ἧττον εὑρέθησαν ἐντὸς αὐτοῦ εἴκοσι ῥόδακες ἐκ λεπτοῦ χρυσοῦ φύλλου καὶ ἄλλα τινὰ συνήθη μικροπράγματα. Ὁ τάφος προέρχεται ἐκ τῆς ὑστεροελλαδικῆς 1—2 ἐποχῆς, ἤτοι εἶναι ὀλίγον μεταγενέστερος τῶν βασιλικῶν τάφων τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου.

*Ἡ ἀνωφέρεια.* Ἐκ τῆς πύλης τῶν Λεόντων ἤρχιζεν ὁδός, ἥτις ἦγεν ἄνω εἰς τὴν κορυφὴν τῆς ἀκροπόλεως, ὅπου ἔκειτο τὸ ἀνάκτορον. Ἡ ὁδὸς ἐχαράχθη ἀνωφερικῶς ἐντὸς τοῦ βράχου καὶ φέρει κυκλώπεια ἀναλήμματα πρὸς ὑποστήριξιν ἢ πρὸς προφύλαξιν ἀπὸ τῶν καταπιπτόντων ἐξ ὑψηλοτέρων μερῶν χωμάτων. Κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς ἀνωφερείας ὑπάρχει μέγας λίθος ἐξ ἀμυγδαλίτου (σχ. 3, ἀριθμ. 24—25). Ἡ ὁδὸς παρακολουθεῖται καλῶς μέχρις ἀποστάσεως 25 μέτρων. Εἶτα φαίνεται ὅτι κατ' ὀρθὴν γωνίαν ἐκάμπτετο πρὸς ἀνατολὰς καὶ ἐξηκολούθει πάλιν τὴν ἀνάβασιν, ὡς συμβαίνει καὶ ἐν Τίρυνθι. Ἡ ὁδὸς αὕτη κατέληγεν εἰς τὸ μέγα κλιμακοστάσιον, δι' οὗ ἀνήρχοντο πρὸς τὸ ἀνάκτορον.

*Ἡ «οἰκία τῆς ἀνωφερείας».* Κατὰ τὸ δεξιόν, δηλαδὴ τὸ δυτικόν, ἄκρον τῆς ἀνωφερείας ὑπάρχει ἄλλη μικροτέρα, πρὸς τὸ δυτικὸν τῆς ὁποίας μέρος ὑπάρχει οἰκία ἐκ τῆς ὑστεροελλαδικῆς 3 ἐποχῆς χρονολογουμένη, ἥτις εἶναι τὸ μέγιστον ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως ἰδιωτικὸν οἰκοδόμημα. Ἀποτελεῖται ἐκ προδόμου (σχ. 3, ἀριθ. 42) καὶ κυρίως μεγάρου (40), δυτικῶς δὲ συνάπτονται ἄλλα δωμάτια. Ἡ οἰκία αὕτη ἀποβαίνει ἔτι σπουδαιοτέρα ἐκ τῆς κατὰ τὰς ἀγγλικὰς ἀνασκαφὰς τοῦ 1921 εὑρέσεως τεμαχίων τοιχογραφιῶν ὑπὸ τὸ δάπεδον τοῦ μεγάρου. Οὕτως ἀπεδείχθη ὅτι ἐντεῦθεν προέρχονται καὶ παλαιότερα τεμάχια εὑρεθέντα ὑπὸ τοῦ Σλῆμαν, ὧν ἡ ἀκριβὴς προέλευσις δὲν ἦτο γνωστή. Αἱ τοιχογραφίαι αὗται εἶναι σύγχρονοι πρὸς τὰς τῶν Θηβῶν καὶ τοῦ παλαιοτέρου μεγάρου τῆς Τίρυνθος (ἐποχῆς ὑστεροελλαδικῆς 1—2), παρίστανον δὲ κυρίως σκηνὰς ταυρομαχίας καὶ γυναῖκας θεωμένας ἀπὸ ἐξωστῶν καὶ παραθύρων, εἰς τὸν γνωστὸν μικρογραφικὸν ῥυθμὸν τῶν Κνωσίων ἀνακτόρων.

Ὑπὸ τὴν οἰκίαν ταύτην εὑρέθησαν ἐντὸς τοῦ βράχου λελαξευμένοι μικροὶ καὶ ἀβαθεῖς τάφοι τῆς μεσοελλαδικῆς περιόδου (πρὸ τοῦ 1600 π. Χ.). Ὅμοιοι τούτοις εὑρέθησαν καὶ εἰς ἄλλα μέρη τῆς ἀκροπόλεως.

*Ἡ «οἰκία τοῦ ἀγγείου τῶν πολεμιστῶν».* Ἡ οἰκία αὕτη, μεταγενεστέρας ὑστεροελλαδικῆς 3 ἐποχῆς οὖσα, κεῖται δυτικώτερον τῆς προμνημονευθείσης καὶ εἰς χαμηλότερον ἐπίπεδον. Ἀνεσκάφη ἤδη τῷ 1876 ὑπὸ τοῦ Σλῆμαν καὶ ἔλαβε τὸ ὄνομά της ἐκ τῆς ἐν αὐτῇ εὑρέσεως τοῦ περιφήμου μυκηναϊκοῦ

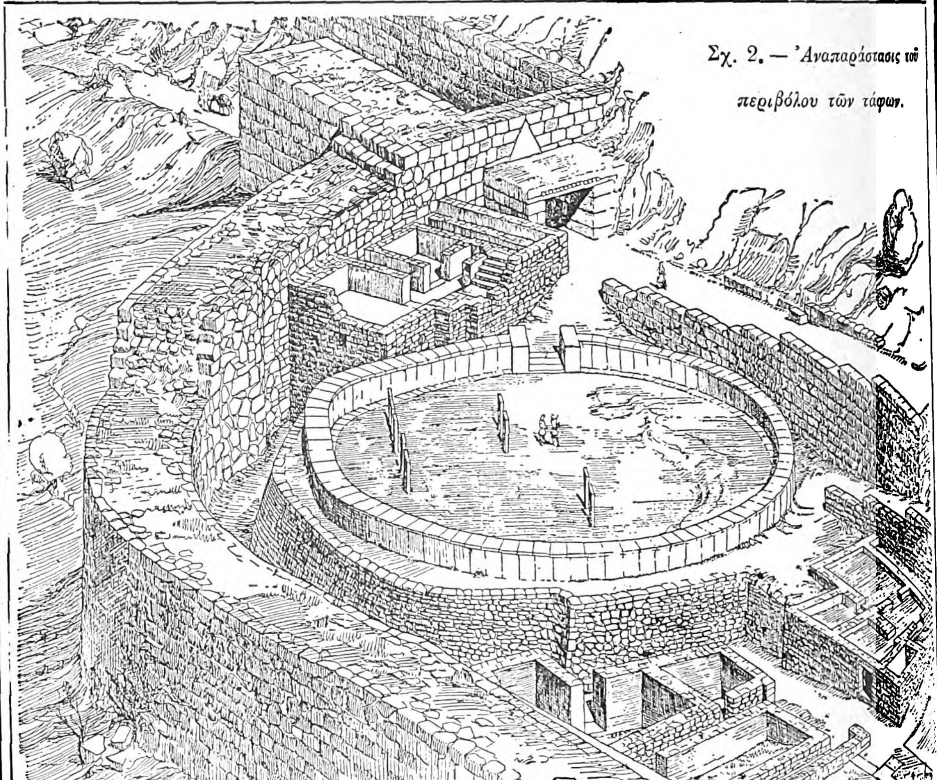

Σχ. 2. — *Ἀναπαράστασις τοῦ περιβόλου τῶν τάφων.*

κρατῆρος, τοῦ παριστῶντος ἔξοδον πολεμιστῶν καὶ εὑρισκομένου νῦν ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ. Μεταξὺ τῶν λοιπῶν εὑρημάτων ἦσαν καί τινα χαλκᾶ σκεύη. Ἡ οἰκία εἶχε δύο πατώματα, κατὰ δὲ τὸν ἀνατολικὸν τοῖχον (46) καὶ τὴν ΒΔ. γωνίαν (53) ὑπῆρχον δύο παλαιότερα φρέατα, ἐξ οὗ καὶ ἡ περίεργος ἐντομὴ τῆς ἀνωτέρω γωνίας, ὅπως ἀποφευχθῇ ἡ θεμελίωσις ἐπὶ τοῦ φρέατος.

*Ἡ «νοτία οἰκία».* Αὕτη κεῖται ἀμέσως πρὸς Ν. τῆς περιγραφείσης ἀνωτέρω καὶ ἀνεσκάφη κυρίως τῷ 1920 ὑπὸ τῶν Ἄγγλων. Ἀποτελεῖται ἐξ ἀνοικτῆς στοᾶς (54), ἐξ ἧς εἰσέρχεταί τις εἰς μέγαν ὀρθογώνιον χῶρον (55), διαστάσεων 5×8,30 μέτρων. Νοτίως συνάπτονται πρὸς τοῦτον δύο ἄλλα διαμερίσματα (56 καὶ 57). Τέλος, ἔτι ἀνατολικώτερον ὑπάρχει τὸ διαμέρισμα 58, ὅπου εἰσέρχεταί τις ἐκ τοῦ προθαλάμου 54. Καὶ ἐνταῦθα ὑπῆρχον δύο πατώματα, ἡ δὲ στέγη, κατὰ τὰς γενομένας παρατηρήσεις, ἦτο, ὡς συνήθως, ἐπίπεδος (δῶμα). Ἐπὶ τῶν ὁριζοντίων δοκῶν ἐπετίθεντο κλάδοι χλωροὶ μετὰ τῶν φύλλων των, εἶτα πηλὸς καὶ εἶτα τσιμεντοειδὴς σκληρὰ πρόσμειξις. Ἐνταῦθα εἶχον χρησιμοποιηθῆ κλάδοι πικροδάφνης, ἥτις, ὡς γνωστόν, ἀφθόνως φύεται εἰς τὰ βάθη τῶν ἑλληνικῶν χαραδρῶν.

Ἡ οἰκία χρονολογεῖται ἐκ τῆς ἀρχῆς τῆς ὑστεροελλαδικῆς 3 ἐποχῆς. Βαθέως ὑπὸ τὸ δάπεδον τοῦ ἀνατολικοῦ δωματίου (58) εὑρέθη μεσοελλαδικὸς τάφος, φέρων, ὡς συνήθως, τὸν συνεσταλμένον σκελετὸν καὶ παρ' αὐτὸν ἓν πήλινον ἀγγεῖον, σχήματος εὐρείας ἀβαθοῦς λοπάδος μετὰ ἐρυθρωποῦ ἐστιλβωμένου γανώματος. Οὐδεμία ἀμφιβολία ὑπάρχει ὅτι ἐκτεταμένον μεσοελλαδικὸν νεκροταφεῖον ὑπῆρχε καθ' ὅλην τὴν δυτικὴν κλιτὺν τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν, προτοῦ ἀνοιχθῶσιν οἱ βασιλικοὶ τάφοι καὶ κτισθῶσι τὰ τείχη ταύτης.

*Ὁ κυκλικὸς περίβολος τῶν βασιλικῶν τάφων.* Ὁ σπουδαιότερος καὶ ἱερώτερος χῶρος τῆς ὅλης ἀκροπόλεως, ὁπόθεν προέρχονται οἱ ἀνεκτίμητοι θησαυροὶ τοῦ κρητομυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ, εἶναι ὁ κυκλικὸς περίβολος ὁ περικλείων τοὺς ἓξ βασιλικοὺς τάφους. Οὗτος εὑρίσκεται ἐντὸς τοῦ κατωτέρου μέρους τῆς ἀκροπόλεως, πρὸς Ν. τῆς πύλης τῶν Λεόντων. Ἐνταῦθα ἐξετείνετο, καθ' ὅλον τὸν πέριξ χῶρον, ὡς ἤδη ἐλέχθη, μεσοελλαδικὸν νεκροταφεῖον. Ἐντὸς τοῦ περιβόλου ἀνεκάλυψαν ἀρκετοὺς τάφους τῆς ἀνωτέρω ἐποχῆς ὁ Σλῆμαν καὶ ὁ Σταματάκης, ἐξ αὐτῶν δὲ προέρχονται ὁ μεσοελλαδικὰ ἀγγεῖα, ἅτινα βραδύτερον, κατὰ λάθος, ἀπεδόθησαν εἰς τὸν ΙΙΙ βασιλικὸν τάφον.

Κατὰ τὴν ἀρχὴν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος ἐμφανίζεται νέα δυναστεία ἐν Μυκήναις, ἥτις προορίζει τὸ μέρος τοῦτο ἀποκλειστικῶς ὡς βασιλικὸν νεκροταφεῖον. Ἀνοίγονται ἐντὸς μικροῦ χρονικοῦ διαστήματος ἓξ τάφοι, ὧν ὁ μέγιστος (ὁ IVος) ἔχει τὰς διαστάσεις πραγματικοῦ δωματίου (5×6,75 μ.). Ὁ μικρότερος πάντων εἶναι ὁ ΙΙ (2, 73×3 μ.). Οἱ τάφοι εἶναι ὀρθογώνιοι ἢ σχεδὸν ὀρθογώνιοι λάκκοι, οἵτινες ἐλαξεύθησαν ἐντὸς τοῦ μαλακοῦ πετρώματος. Μετὰ τὴν κατάθεσιν ἑκάστου νεκροῦ ὁ τάφος ἐσκεπάζετο τιθεμένων ὑπὲρ αὐτὸν ὁριζοντίων δοκῶν· ἐπὶ τούτων ἐτοποθέτουν μικρὰς πλάκας καὶ τέλος λεπτὸν στρῶμα πηλοῦ. Πολλαὶ ἐκ τῶν δοκῶν κατὰ τὰ ἄκρα ἐπενεδύοντο διὰ χαλκοῦ πεδίλου, ἵνα προφυλάττωνται κατὰ τῆς ὑγρασίας. Διετηρήθησαν τέσσαρες τοιαῦται ἐπενδύσεις ἐκ τοῦ ΙΙΙ τάφου. Ὑπὲρ ἕκαστον τάφον ἵσταντο στῆλαι ἐκ κογχυλιάτου λίθου, ἄλλαι ἀκόσμητοι καὶ ἄλλαι φέρουσαι διάφορα κοσμήματα ἢ καὶ εἰκονιστικὰς παραστάσεις. Αἱ πλάκες αὗται, κατὰ τὰς παλαιὰς περιγραφὰς τοῦ Σλῆμαν, διανέμονται μεταξὺ τῶν τάφων. Τέλος ὑπὲρ τὸν IV τάφον ὑπῆρχε κτιστὸς κυκλικὸς βόθρος, ὅστις ἐχρησίμευε πρὸς χοὰς καὶ λοιποὺς ἐναγισμούς.

Ἐκ τῶν ἓξ τάφων τοὺς πέντε ἀνεκάλυψεν ὁ Σλῆμαν τῷ 1876, τὸν δ' ἕκτον καὶ τελευταῖον, μετὰ ἓν ἔτος, ὁ Ἕλλην ἔφορος Σταματάκης, ὅστις ἐνήργησε συμπληρωματικὰς ἐρεύνας ἐντὸς τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου. Ἀμφίβολον παραμένει, ἂν ὁ χρυσοῦς θησαυρός, ὃν ἐκτὸς τοῦ περιβόλου εὗρεν ὁ Σλῆμαν (πρὸς Ν. τούτου καὶ παρὰ τὴν ΒΔ. γωνίαν τῆς οἰκίας τοῦ ἀγγείου τῶν πολεμιστῶν), προέρχεται ἐξ ὁμοίου καταστραφέντος τάφου. Ἐπίσης ἀμφίβολος εἶναι ἡ ἐνταῦθα ταξινόμησις τοῦ ὑπὸ τὴν Σιταποθήκην εὑρεθέντος τάφου (βλ. ἀνωτ.). Ὥστε βασιλικοὶ ἀσφαλῶς παραμένουσι μόνον οἱ ἓξ τάφοι, οἱ ἐντὸς τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου περιληφθέντες, οἵτινες περιεῖχον ἐν ὅλῳ 19 νεκρούς.

Ὁ κυκλικὸς περίβολος δὲν εἶναι σύγχρονος πρὸς τοὺς τάφους. Πολὺ βραδύτερον, ἤτοι κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἐκτίσθη καὶ οὗτος ἐν συνεχείᾳ εὐρυτέρας μνημειώδους ἐργασίας, ἥτις συντελεῖται περὶ τὴν ἀκρόπολιν. Τότε κτίζεται τὸ μέγα τεῖχος μετὰ τῆς μεγαλοπρεποῦς πύλης τῶν Λεόντων. Ἐπὶ τῆς κορυφῆς ἀνεγείρεται τὸ ἀνάκτορον. Τότε λοιπὸν ἐσκέφθησαν νὰ δώσουν μνημειωδεστέραν μορφὴν καὶ εἰς τὸν ἱερὸν χῶρον, ὅπου ἀνεπαύοντο τὰ λείψανα τῶν προκατόχων βασιλικῶν

Digitized by Google

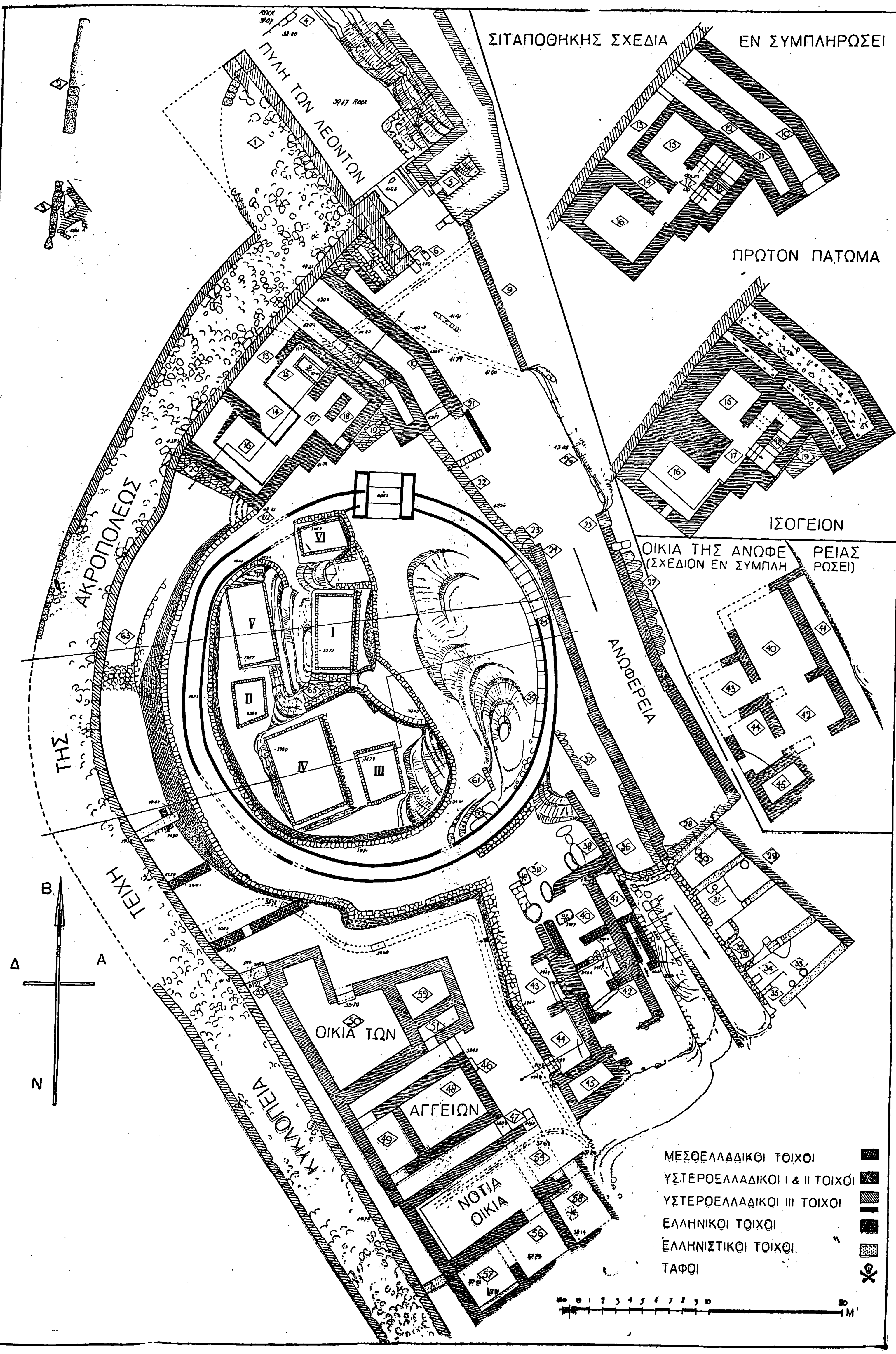


Σχ. 3. Ὁ κυκλικὸς περίβολος τῶν βασιλικῶν τάφων μετὰ τῶν περιξ.

Digitized by Google

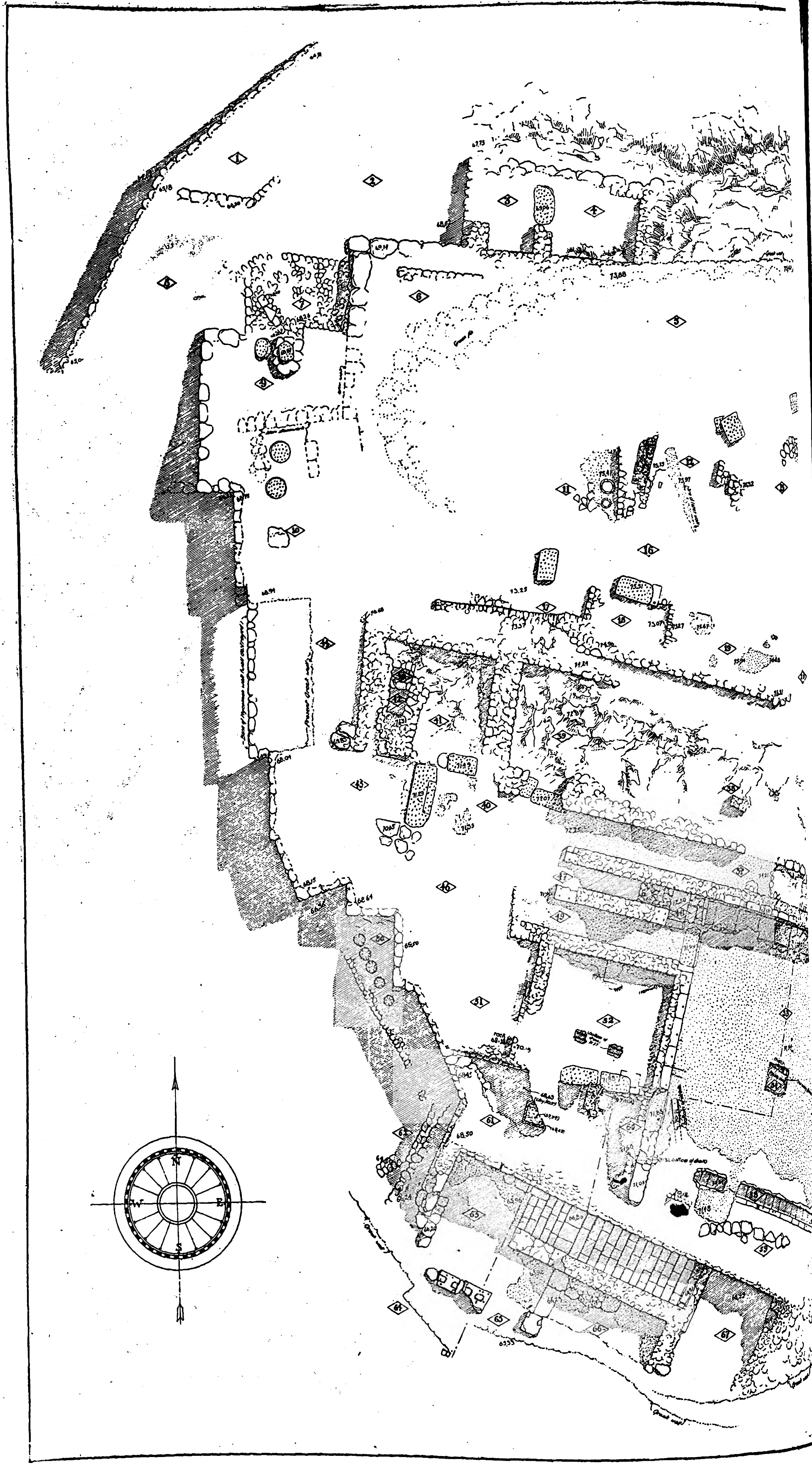


Digitized by Google

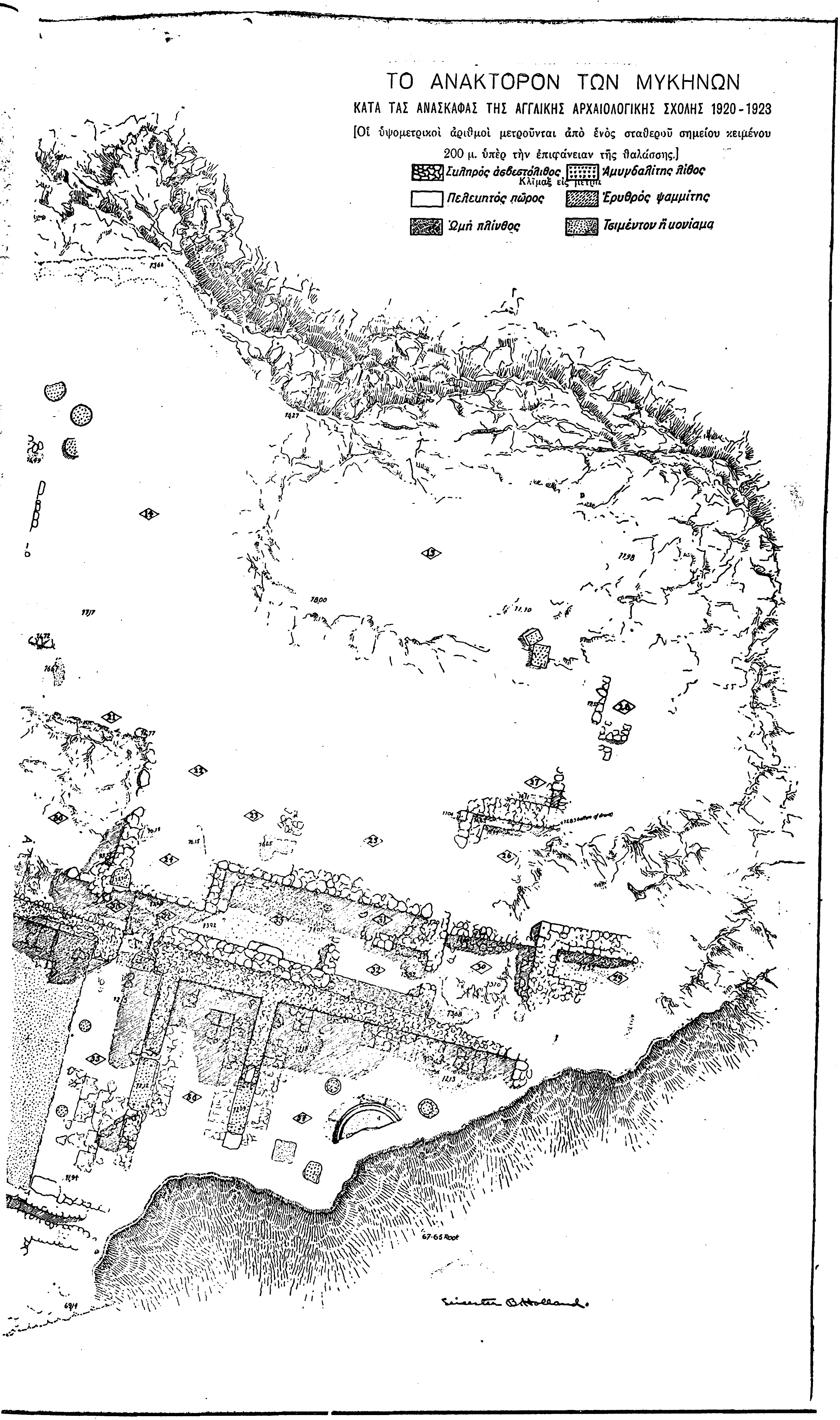


Digitized by Google

γενεῶν. Ἡ φυσικὴ διαμόρφωσις τοῦ ἐδάφους τῆς ἀκροπόλεως ὑπέβαλλεν ἢ νὰ διέλθῃ τὸ τεῖχος ἐκ τοῦ μέσου τῶν τάφων, ἢ νὰ ἀφήσῃ τούτους ἔξω τῆς ἀκροπόλεως. Ἀντὶ τούτων ὅμως προετιμήθη, ὅπως, διὰ κοπιώδους καὶ πολυδαπάνου ἐργασίας, ἡ γραμμὴ τῶν τειχῶν μετατοπισθῇ ἐξώτερον, διαγράφουσα εὐρὺ τόξον, ἵνα περιλάβῃ καὶ τοὺς βασιλικοὺς τάφους. Συγχρόνως κτίζεται μέγας κυκλικὸς περίβολος (διάμ. 26,50 μ.), ἵνα περικλείσῃ ἐντὸς αὐτοῦ τούτους. Ὁ περίβολος οὗτος ἀποτελεῖται ἐκ διπλῆς σειρᾶς ὀρθίων πλακῶν, ὑπὲρ τὰς ὁποίας ἐπιτίθενται ἄλλαι ὁριζόντιαι, εἰς τρόπον ὥστε ἡ τομὴ νὰ ἔχῃ τὸ σχῆμα Π. Εἰς τὴν δυτικὴν πλευρὰν τοῦ περιβόλου κατεσκευάσθη εἴσοδος, ἥτις ὅμως οὐδέποτε ἐφωδιάσθη διὰ θυρῶν.

Ὁ περίβολος ἐθεμελιώθη κατὰ τὸ ἥμισυ ἐπὶ τοῦ φυσικοῦ βράχου, λειανθέντος πρὸς τοῦτο ἐπιμελῶς, κατα δὲ τὸ ἕτερον ἥμισυ ἐπὶ ἀναλημματικοῦ τοίχου, ἔχοντος τὴν μὲν ἐσωτερικὴν ἐπιφάνειαν σχεδὸν κάθετον, τὴν δ' ἐξωτερικὴν συγκλίνουσαν πρὸς τὰ ἄνω (μέρος τοῦ τοίχου τούτου, ἐπειδὴ διετηρεῖτο εἰς κακὴν κατάστασιν, κατηδαφίσθη καὶ ἀνεκτίσθη ἐκ νέου). Περατωθέντος τοῦ περιβόλου ἐγένετο εἰς τὸ ἐσωτερικὸν ἀρκετὴ ἐπίχωσις, εἰς τρόπον ὥστε ἡ ἐπιφάνεια τοῦ ἐδάφους νὰ γίνῃ σχεδὸν ὁμαλή, αἱ δ' ἐπιτύμβιοι πλάκες ἐστήθησαν ἐκ νέου εἰς τὸ ὑψηλότερον τοῦτο ἐπίπεδον. Ἐνταῦθα ἠσκεῖτο λατρεία ἐπὶ τῶν τάφων τῶν νεκρῶν μέχρι τοῦ τέλους τῆς μυκηναϊκῆς ἐποχῆς.

***Τὸ ἀνάκτορον.*** Τὰ λείψανα τοῦ ἀνακτόρου τῶν Μυκηνῶν δὲν διατηροῦνται τόσον καλῶς ὡς ἐν Τίρυνθι, καταστραφέντα καὶ δι' ἄλλους λόγους καὶ διὰ τὴν οἰκοδομὴν ναῶν ἐπὶ τῶν ἐρειπίων ἐκείνων κατὰ τὴν ἀρχαϊκὴν ἐποχήν. Ταῦτα κατελάμβανον τὸ μεσημβρινοδυτικὸν ἥμισυ τοῦ ὑψηλοτέρου σημείου τῆς ἀκροπόλεως, ἀνεκαλύφθησαν δὲ τὸ πρῶτον ὑπὸ τοῦ Τσούντα τῷ 1886. Κατὰ τὸ 1914 ἐγένετο μικρὰ ἐπαναξέτασις ὑπὸ τοῦ Rodenwaldt. Τελευταῖοι προέβησαν εἰς λεπτομερεστάτην ἔρευναν τοῦ ἀνακτόρου οἱ Ἄγγλοι, ἀπὸ τοῦ 1920—1923, δημοσιεύσαντες καὶ τὸ ἀκριβέστατον τῶν ὑπαρχόντων σχεδίων, ὅπερ χρησιμοποιεῖται καὶ ἐνταῦθα (βλ. σχεδιογράφημα σελ. 832—833).

*Οἱ προθάλαμοι.* Ἀνωτέρω ἐξετέθη ὅτι ἡ διὰ τῆς «μεγάλης ἀνωφερείας» ἐρχομένη ὁδὸς ἐκ τῆς πύλης τῶν Λεόντων κατέληγεν εἰς τὴν πρὸ τοῦ ἀνακτόρου κλίμακα. Ἡ εἴσοδος ἐκ τῆς ὁδοῦ πρὸς τὴν κλίμακα σημειοῦται διὰ μεγάλων λίθων πελεκητοῦ πώρου (ἀρ. 65 ἐν τῷ σχήμ.). Ἐντεῦθεν κάμπτοντες ἀριστερὰ εἰσερχόμεθα εἰς τὸν δυτικὸν προθάλαμον (63), ἤτοι ὀρθογώνιον χῶρον ἔχοντα τὸ δάπεδον ἐπεστρωμένον διὰ σκληροῦ κονιάματος καὶ φέροντα κτιστὰ θρανία κατὰ μῆκος τοῦ βορείου καὶ δυτικοῦ τοίχου. Ὑπῆρχον δύο ἔτι προθάλαμοι, ἐξ ὧν ὁ μὲν κεντρικὸς (66) κεῖται ὑπὸ τὴν ἀνωτέραν πτέρυγα τῆς κλίμακος, ὁ δὲ ἀνατολικὸς (67), ὅστις διατηρεῖται κακῶς, ἦτο προσιτὸς διὰ θύρας κειμένης κατὰ τὸ βόρειον μέρος τοῦ ἀνατολικοῦ τοίχου του.

*Τὸ κλιμακοστάσιον.* Τοῦτο ἀπετελεῖτο ἐκ διπτερύγου λιθίνης κλίμακος. Ἡ πρώτη πτέρυξ σῴζεται καλῶς, ἀποτελουμένη ἐξ 22 ἀναπαυτικῶν βαθμίδων, αἵτινες ἀποτελοῦνται ἐκ μικροτέρων λίθων καὶ ἠλείφοντο συχνάκις διὰ σκληροῦ κονιάματος. Ἐνιαχοῦ διακρίνονται μέχρι πέντε τοιούτων ἐπιχρισμάτων. Ἡ πρώτη πτέρυξ κατέληγεν εἰς μέγα πλατύσκαλον, ἐκεῖθεν δέ, καμπτομένη κατ' ὀρθὴν γωνίαν, ὡς ἦτο ὁ κανὼν διὰ τὰς κρητομυκηναϊκὰς κλίμακας, ἐξηκολούθει τὴν ἄνοδον διὰ τῆς δευτέρας πτέρυγος, ἥτις εἶχε πιθανῶς 17 βαθμῖδας. Οὕτως ἔφθανέ τις ὑπὲρ τὸν δυτικὸν προθάλαμον, ὁπόθεν εἰσήρχετο εἰς ἀνοικτὸν χῶρον (61), κείμενον πρὸ τῆς αὐλῆς καὶ τοῦ «δωματίου τοῦ θρόνου». Τὸ κλιμακοστάσιον ἀσφαλῶς ἦτο ἐστεγασμένον.

*Τὸ «δωμάτιον τοῦ θρόνου».* Ὁ ἀνοικτὸς χῶρος (61) καλύπτεται ὑπὸ κονιάματος καὶ ἦτο σχεδὸν ἀσφαλῶς ὑπαίθριος. Ἐντεῦθεν, διὰ δύο μεγάλων κατωφλίων ἐκ κροκαλοπαγοῦς λίθου, εἰσήρχετό τις εἰς τὴν καλουμένην «αἴθουσαν τοῦ θρόνου», διότι τὸ ἐπίσης διὰ κονιάματος ἐστρωμένον δάπεδόν της φέρει κατὰ τὸ μέσον τοῦ βορείου τοίχου ὀρθογώνιον βύθισμα (0,82×1,08), ὅπερ ἀσφαλῶς ὑποδεικνύει τὴν ὕπαρξιν θρόνου κατ' ἐκεῖνο τὸ μέρος. Ἐνταῦθα ὁ βασιλεὺς τῶν Μυκηνῶν θὰ ἐδέχετο τοὺς διὰ τῆς μεγάλης κλίμακος πρὸς αὐτὸν ὁδηγουμένους ξένους, ἢ θὰ προήδρευε συνεδριάσεων ἢ θὰ ἐδίκαζε.

*Ἡ αὐλή.* Ἐκ τοῦ ἀνωτέρω χώρου εἰσερχόμεθα εἰς μεγάλην ὀρθογώνιον αὐλὴν (12×15 μ.), ἧς ἡ εἴσοδος φαίνεται νὰ ἔκειτο κατὰ τὴν ΝΔ. γωνίαν, ὅπου εἶναι ἔτι ὁρατὸν μέγα κατώφλιον ἀμυγδαλίτου λίθου. Ἡ αὐλὴ ἦτο φυσικὰ ὕπαιθρος, πρὸς αὐτὴν δ' ἔβλεπον παράθυρα ἐκ τῶν διαφόρων οἰκοδομημάτων τῆς βορείας, δυτικῆς καὶ ἀνατολικῆς πλευρᾶς. Ἡ νοτία τοιαύτη δὲν διατηρεῖται. Ἡ αὐλὴ ἐκαλύπτετο ὑπὸ ἐπανειλημμένων στρωμάτων κονιάματος, ἐξ ὧν τὰ ψαθυρὰ ἴχνη τοῦ τελευταίου, ἐπιμελῶς ἐξετασθέντα, ἀπέδειξαν ὅτι τὸ δάπεδον ἦτο κεκοσμημένον ὡς ἑξῆς: Διῃρεῖτο εἰς τετράγωνα ἐναλλὰξ κίτρινα, κυανᾶ, ἐρυθρὰ καὶ πάλιν κυανᾶ. Τὰ τετράγωνα ταῦτα ἐπλαισιοῦντο ὑπὸ ἐρυθρῶν γραμμῶν καὶ ἔφερον γραπτὰ σχέδια μιμούμενα τὰς φλέβας μαρμάρου, ἀλαβάστρου ἢ ἄλλων λίθων, ἢ τέλος φέροντα ἄλλα γεωμετρικὰ σχέδια (βλ. εἰκόνα σελ. 836).

Πρὸς δυσμὰς περιωρίζετο ἡ αὐλὴ ὑπὸ τοῦ περιγραφέντος δωματίου τοῦ θρόνου καὶ ἔφερε κατὰ τὸ κάτω μέρος (τὸ ΝΔ.) εἴσοδον, ἥτις ἐμνημονεύθη ἤδη, κατὰ δὲ τὸ ἀντίθετον ἄκρον (τὸ ΒΔ.), ὅπου σῴζεται ἕτερον κατώφλιον ἐξ ἀμυγδαλίτου, ἑτέραν θύραν. Εἰς ταύτην κατέληγεν εἷς διάδρομος (49), ἐρχόμενος ἐκ τοῦ δυτικοῦ προπύλου τῶν ἀνακτόρων.

Πρὸς βορρᾶν περιωρίζετο ἡ αὐλὴ ὑπὸ τοίχου, ὅστις συγχρόνως ἀπετέλει τὸ ἕτερον τῶν σκελῶν τοῦ «νοτίου διαδρόμου» (37) (βλ. κατ.). Ὁ τοῖχος οὗτος ἀναμφιβόλως ἔφερε πολλὰ παράθυρα. Εἰς μεταγενεστέραν ἐποχὴν ἐκαλύπτετο ὑπὸ κονιάματος, κάτω δ' ἔφερε ζωφόρον ἐκ τοῦ γνωστοῦ μυκηναϊκοῦ κοσμήματος τῶν τριγλύφων καὶ ἡμιροδάκων. Τὰ ἀνωτέρω στοιχεῖα εἶναι ἀρκετά, ὅπως γίνῃ ἀπόπειρα ἀναπαραστάσεως τῆς ΒΔ. γωνίας τῆς αὐλῆς (βλ. σχ. 4).

*Τὸ κυρίως ἀνάκτορον.* Ἡ ἀνατολικὴ πλευρὰ τῆς αὐλῆς τέλος περιορίζεται ὑπὸ τοῦ κυρίως ἀνακτόρου, τοῦ σπουδαιοτάτου οἰκοδομήματος τῆς ὅλης συστάδος. Τοῦτο εἶναι, κατὰ τὸ γνώριμον σχέδιον τῶν μυκηναϊκῶν ἀνακτόρων, οὗ ἡ ἀπήχησις διατηρεῖται καλῶς εἰς τὰ ὁμηρικὰ ἔπη, τριμερές.

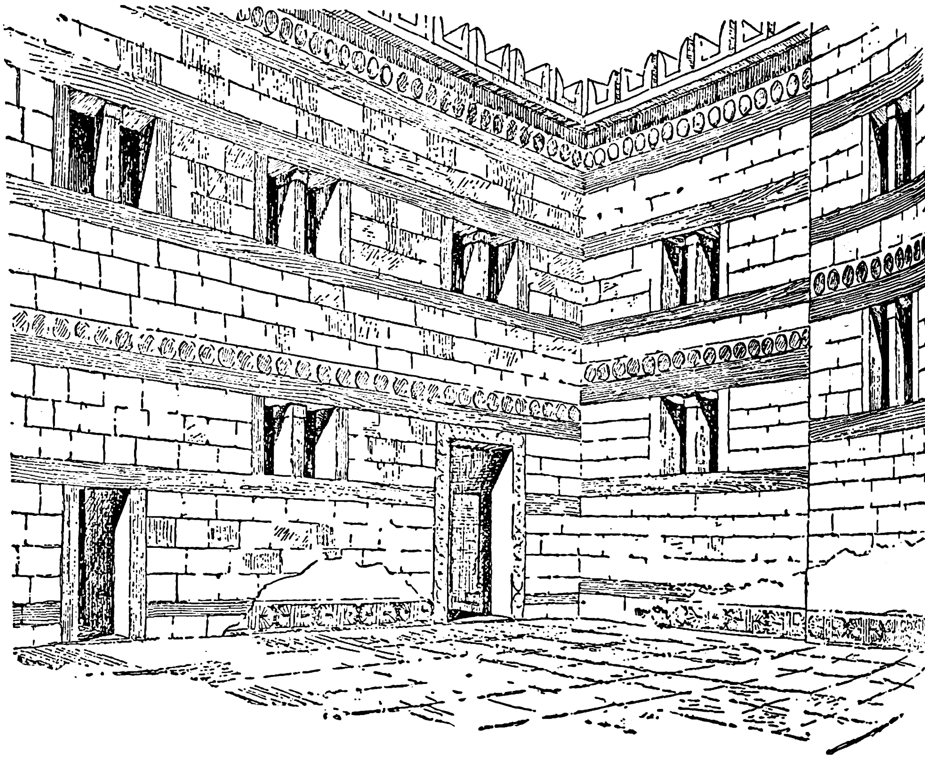

Σχ. 4. *Ἀναπαράστασις τῆς ΒΔ. γωνίας τοῦ ἀνακτόρου τῶν Μυκηνῶν.*

Ἀποτελεῖται ἐκ τῆς στοᾶς ἢ «αἰθούσης» ὁμηριστὶ (55), τοῦ προδόμου (56) καὶ τοῦ κυρίως μεγάρου (57), ἤτοι τοῦ μεγίστου καὶ σπουδαιοτάτου διαμερίσματος, ὅπερ ἔφερε τὴν κυκλικὴν ἑστίαν ἐν τῷ μέσῳ καὶ τέσσαρας κίονας περὶ αὐτήν.

Ἡ αἴθουσα ἢ στοὰ ἀνοίγεται ἀπ' εὐθείας πρὸς τὴν αὐλὴν καὶ ἔχει τὸ γνωστὸν σχῆμα «ἐν παραστάσι», ἤτοι εἰς τὴν πρόσοψιν φέρει δύο κίονας μεταξὺ δύο παραστάδων. Αἱ βάσεις τῶν κιόνων, ἐξ ἀμυγδαλίτου λίθου, ἔχουσι διάμετρον 0,57. Ὁ βόρειος τοῖχος τῆς αἰθούσης ἔχει τοῦτο τὸ ἰδιάζον, ὅτι ἔφερε δίφυλλον θύραν, δι' ἧς συνεκοινώνει πρὸς τὸν νότιον διάδρομον. Τὸ δάπεδον ἦτο ἐπεστρωμένον διὰ πλακῶν γύψου, αἵτινες πιθανῶς εἰσήχθησαν ἐκ Κρήτης. Οἱ τοῖχοι ἐκοσμοῦντο διὰ γραπτοῦ κονιάματος, παριστάνοντος τριγλύφους καὶ ἡμιρόδακας, ὡς εἴδομεν καὶ ἐν τῇ αὐλῇ.

Εἰς τὸν πρόδομον (56) εἰσερχόμεθα διὰ κατωφλίου ἐξ ἀμυγδαλίτου. Ἡ θύρα ἐνταῦθα ἦτο μονόφυλλος, ὡς ἀποδεικνύει μία καὶ μόνη ὀπὴ στροφέως κατὰ τὴν ΝΑ. γωνίαν. Ἐντὸς αὐτῆς ἀνεκαλύφθησαν ὑπὸ τοῦ Τσούντα καὶ τὰ ἴχνη τῆς χαλκῆς ἐπενδύσεως, ἣν ἔφερεν ὁ στροφεύς, ἵνα μὴ φθείρηται. Οἱ τοῖχοι διατηροῦνται ἰδιαιτέρως κατὰ τὸ βόρειον μέρος, ὅπου τὸ ὕψος φθάνει τὰ 2 μέτρα. Ἦσαν ἐπενδεδυμένα δι' ἐγχρώμου κονιάματος, τὸ δὲ δάπεδον ἔφερε πλαίσιον ἐκ πλακῶν γύψου, ἐνῷ τὸ ὑπόλοιπον ἦτο ἐκ ζωγραφιστῆς κονίας. Διῃρεῖτο εἰς τετράγωνα, φέροντα ἕνα λίαν γνωστὸν κοσμηματικὸν τύπον τεθλασμένων γραμμῶν (zigzag), αἵτινες ἔλαβον τὴν ἀρχήν των ἐκ τῆς μιμήσεως τῶν φλεβῶν τοῦ ἀλαβάστρου.

Τὸ κυρίως μέγαρον (57) εἶχεν ἄνοιγμα θύρας, ἐπὶ τοῦ κατωφλίου τοῦ ὁποίου δὲν ὑπάρχουσιν ὀπαὶ στροφέων, ἀλλὰ μόνον τοιαῦται πρὸς στερέωσιν τῶν ξυλίνων παραστάδων τῆς θύρας. Κατ' ἀκολουθίαν φαίνεται ὅτι ἓν ἁπλοῦν παραπέτασμα μόνον ἐχώριζε τὸ μέγαρον ἀπὸ τοῦ προδόμου. Αἱ διαστάσεις τοῦ μεγάρου ἦσαν 13×12 μέτρα, ἀλλὰ μόνον τὸ ΒΔ. ἥμισυ διατηρεῖται. Οἱ τοῖχοι ἦσαν ἐφωδιασμένοι διὰ ξυλίνων σκελετῶν (ξυλοδεσίας) πρὸς μεγαλυτέραν ἀσφάλειαν, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον καὶ ἀλλαχοῦ τῆς ἀκροπόλεως συναντᾶται. Ἦσαν κεκαλυμμένοι διὰ γραπτοῦ κονιάματος καὶ τοιχογραφιῶν, ὧν ἐλάχιστα λείψανα διετηρήθησαν. Τὸ δάπεδον, ὡς καὶ ἐν τῷ προδόμῳ, ἦτο ἐκ γραπτοῦ κονιάματος πλαισιουμένου διὰ πλακῶν γύψου, ἕνεκα δὲ τῶν κατὰ καιροὺς ἐπισκευῶν παρετηρήθησαν μέχρι 5 ἀλλεπαλλήλων στρωμάτων. Ὁ διάκοσμος συνέκειτο ἐκ τετραγώνων φερόντων διάφορα σχέδια, ὡς ἐν τῇ αὐλῇ καὶ τῷ προδόμῳ.

Κατὰ τὸ κέντρον τοῦ μεγάρου εὑρίσκετο ἡ εὐρεῖα καὶ χαμηλὴ κυκλικὴ ἑστία (διάμ. 3,70, ὕψος 0,15), ἥτις ἐπίσης τακτικώτατα ἀνεκαινίζετο, καὶ οἱ Ἄγγλοι ἐξηκρίβωσαν δέκα ἀλλεπάλληλα στρώματα τοῦ γραπτοῦ ταύτης κονιάματος. Ἡ ἑστία ἢ ἐσχάρα, ὡς τὴν ὀνομάζει ὁ Ὅμηρος, ἔφερε κύκλῳ ἐλαφρὸν περιχείλωμα, τὰ δὲ στρώματα τοῦ κονιάματός της ἔφερον ὅλα ἢ σχεδὸν ὅλα τὴν αὐτὴν διακόσμησιν, λόγῳ συντηρητικότητος ἢ θρησκευτικοῦ ἐθίμου. Τὸ περιχείλωμα ἐκοσμεῖτο ὑπὸ σπειρῶν, ἡ δ' ἐξωτερικὴ περιφέρεια δὶς διὰ τοῦ καλουμένου «ὀδοντωτοῦ πτεροῦ», ὅπερ ἀπαντᾷ καὶ ἐπὶ μικρῶν φορητῶν τραπεζῶν προσφορῶν, ἐπὶ δὲ καὶ ἄλλων θρησκευτικῆς σημασίας ἀντικειμένων, φαίνεται ὅτι εἶχεν ἱερὰν σημασίαν.

Ὀλίγαι ἔτι λέξεις εἶναι ἀναγκαῖαι, προτοῦ ἐγκαταλείψωμεν τὸ ἀνάκτορον, ἐπὶ τῆς ἐξωτερικῆς ἀρχιτεκτονικῆς μορφῆς του κατόπιν τῶν τελευταίων ἐρευνῶν τῶν Ἄγγλων. Αἱ μέχρι τοῦδε ἀναπαραστάσεις, καὶ κυριώτατα ἡ τῶν Perrot-Chipiez, παριστῶσι τὴν πρόσοψιν τοῦ μεγάρου μετὰ δύο κιόνων ἐν παραστάσιν. Ἀλλ' αἱ βάσεις τῶν κιόνων τῆς αἰθούσης, ἔχουσαι, ὡς ἐλέχθη, διάμετρον 0,57 μόνον, δὲν θὰ ἐπέτρεπον νὰ συναγάγωμεν ὕψος κίονος πλέον τῶν 3 μέτρων, κατὰ τοὺς κανόνας τοὐλάχιστον τῆς μινωϊκῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Δὲν ἦτο λοιπὸν δυνατὸν νὰ ὑπάρχωσιν εἰς τὴν πρόσοψιν ῥαδινοὶ κίονες ὕψους 6 μέτρων, ἵνα βαστάσωσι τὸ ἐπιστύλιον. Διὰ τοῦτο εἶναι πιθανὸν ὅτι ἡ πρόσοψις τοῦ ἀνακτόρου εἶχε δύο πατώματα, ἤτοι τὴν ἰσόγειον αἴθουσαν μὲ τοὺς δύο κίονας ὕψους 3 μέτρων, ἄνω δὲ ταύτης μίαν ἀνοικτὴν πρὸς τὴν αὐλὴν ἐξέδραν ἢ στοάν, ὁπόθεν ἦτο δυνατὴ ἡ θέα τῶν ἐν τῇ αὐλῇ συναθροίσεων. Τὴν νέαν ταύτην ἄποψιν ἀπεικονίζει ἡ ἐν εἰκόνι ἀναπαράστασις.

Τέλος καὶ ὡς πρὸς τὸν φωτισμὸν τοῦ μεγάρου εἶναι ἀναγκαῖαι ὀλίγαι λέξεις. Κατὰ τὰς παλαιοτέρας ἀναπαραστάσεις οἱ περὶ τὴν ἑστίαν τέσσαρες κίονες ὑπεβάσταζον στέγην κατά τι ὑψηλοτέραν τῆς τοῦ ὑπολοίπου ἀνακτόρου (αἱ στέγαι πάντοτε πρέπει νὰ νοῶνται ὁριζόντιοι, ἤτοι δώματα ἢ ταράτσαι). Οὕτως ἐσχηματίζετο τὸ κοινῶς λεγόμενον φανάρι, τὰ εἰς τὰς πλευρὰς τοῦ ὁποίου ἀνοίγματα ἐπέτρεπον τὴν εἴσοδον τοῦ φωτὸς καὶ τὴν ἔξοδον τοῦ καπνοῦ. Ἐν τούτοις παρουσιάζεται ἡ αὐτὴ δυσκολία τῶν κιόνων, διότι καὶ τούτων αἱ βάσεις εἶναι ὡς αἱ τῆς αἰθούσης, ἄρα τὸ ὕψος πρέπει νὰ ἦτο περὶ τὰ 3 μέτρα. Οὕτω γεννᾶται τὸ πρόβλημα, μήπως καὶ τὸ μέγαρον εἶχε δεύτερον πάτωμα, ἢ τοὐλάχιστον εἶδος ἐξώστου (γαλαρίας), σχηματιζομένου ὑπὸ τῶν δοκῶν τοῦ πρώτου πατώματος τοῦ

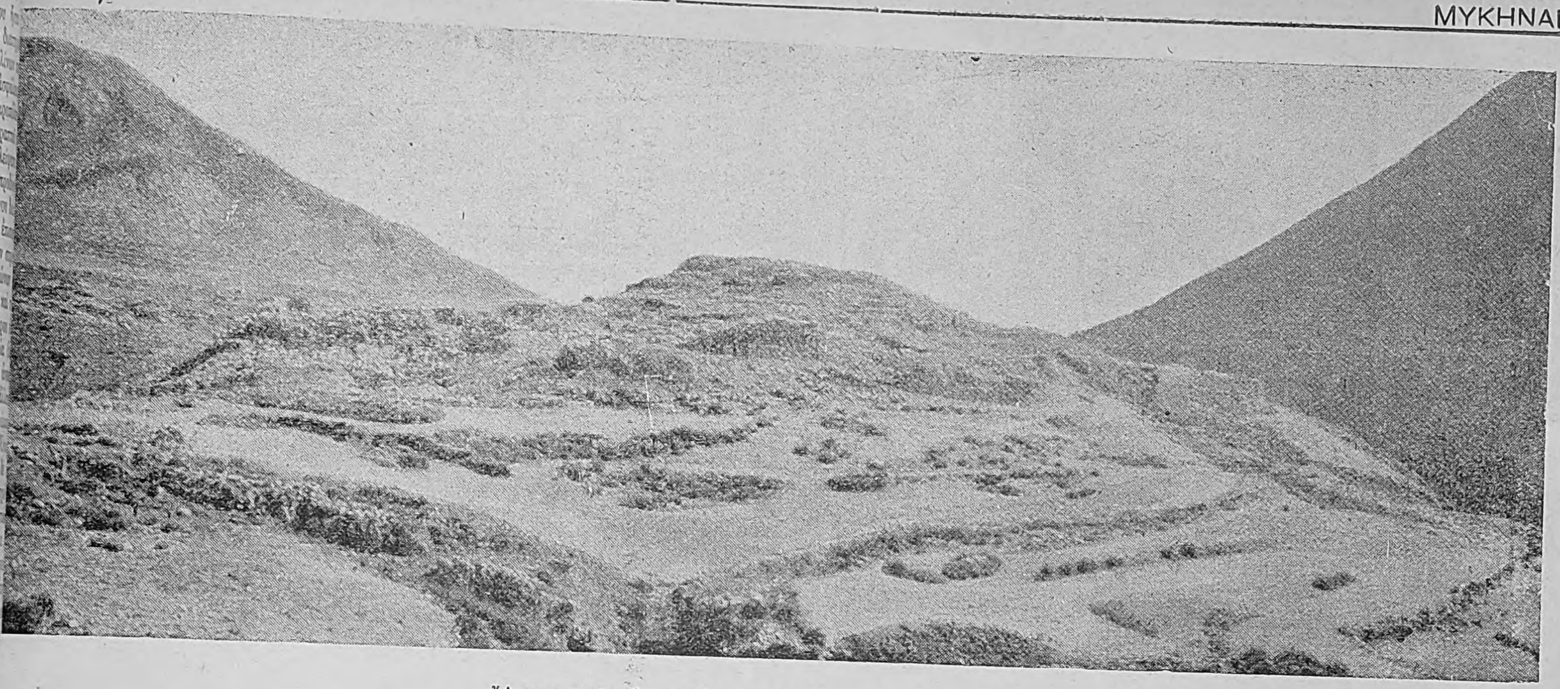

Ἄποψις τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν ἐκ δυσμῶν.

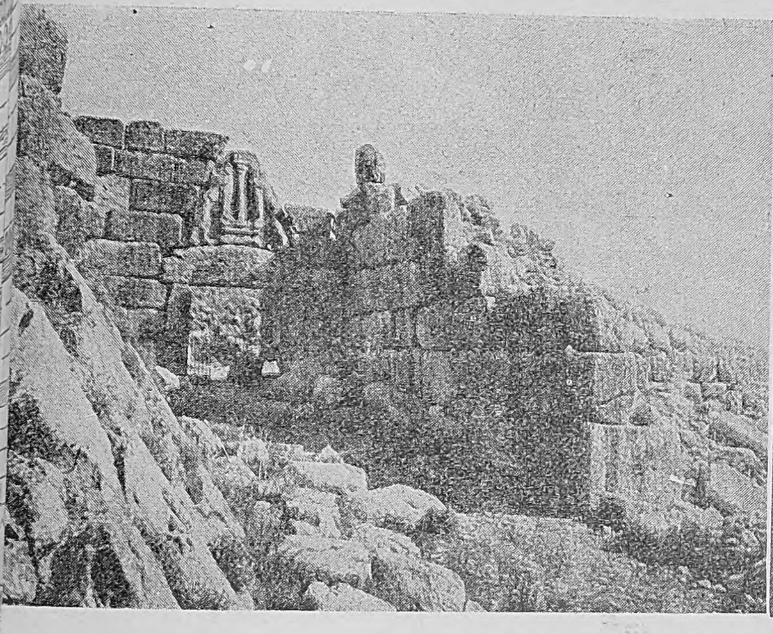

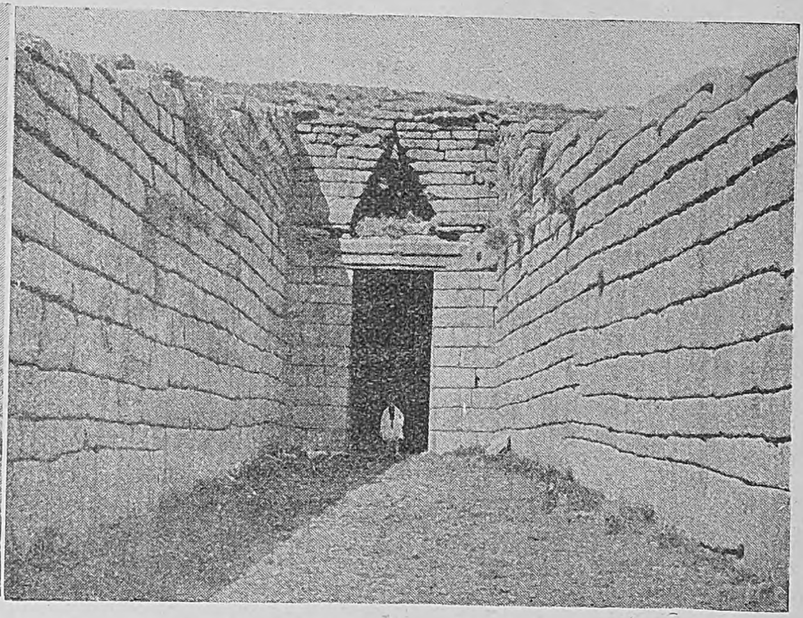

1) Ἡ πύλη τῶν Λεόντων. 2) Δρόμος καὶ θύρα τοῦ θησαυροῦ τοῦ Ἀτρέως.

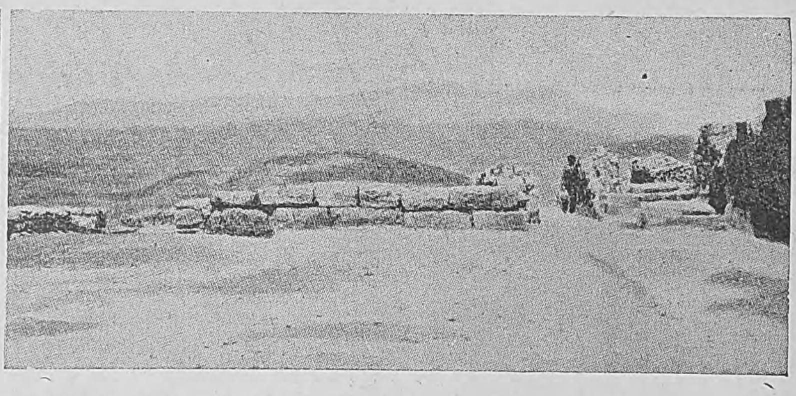

1) Τὸ βόρειον τεῖχος ἐν τῇ αὐλῇ τῶν ἀνακτόρων. 2) Ἡ δυτικὴ πλευρὰ τῆς αὐλῆς.

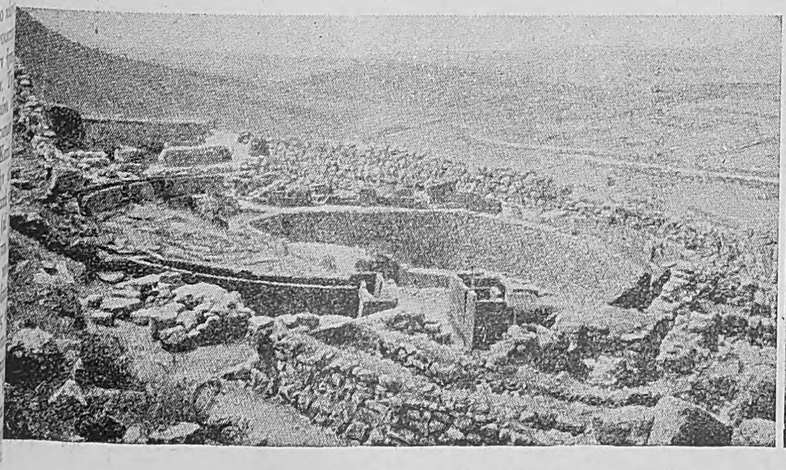

1) Ἄποψις ἀπὸ Νότου τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου. 2) Ὁ δυτικὸς πυλὼν τῶν ἀνακτόρων.

Digitized by Google

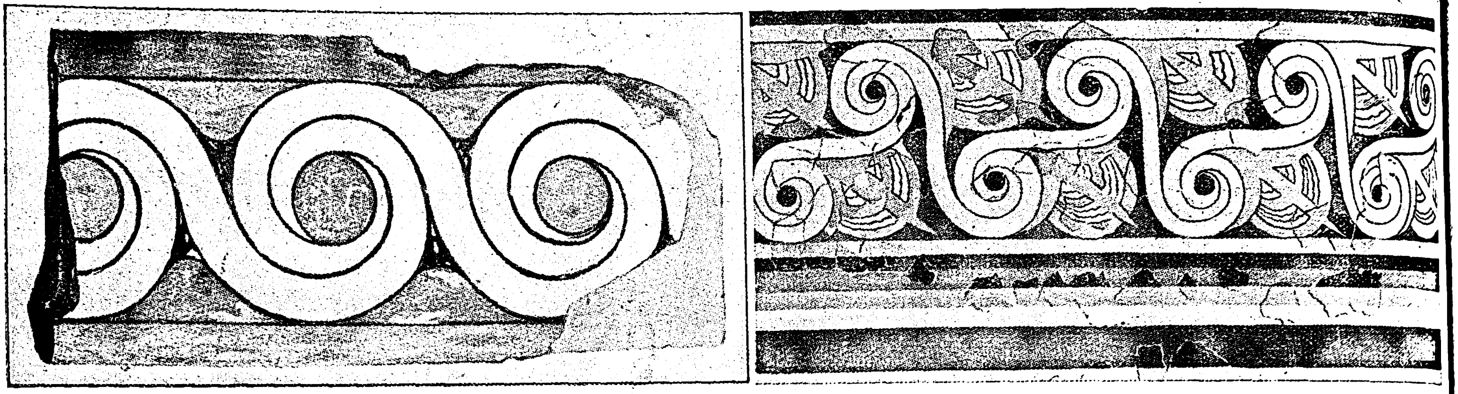

1) Νωπογραφία ἀνευρεθεῖσα κατὰ τὰς ἀνασκαφὰς τὰς ἐνεργηθείσας ὑπὸ τοῦ Τσούντα. 2) Γύψινον ἐπίχρισμα.

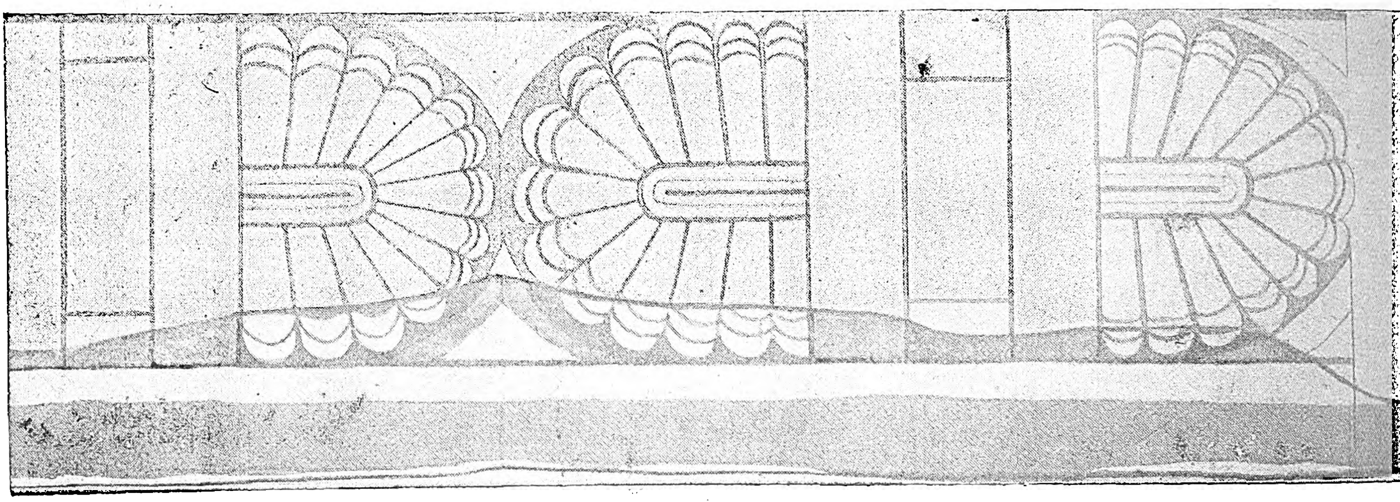

Διακόσμησις ἐκ κονιάματος ἐν τῇ αἰθούσῃ τοῦ ἀνακτόρου.

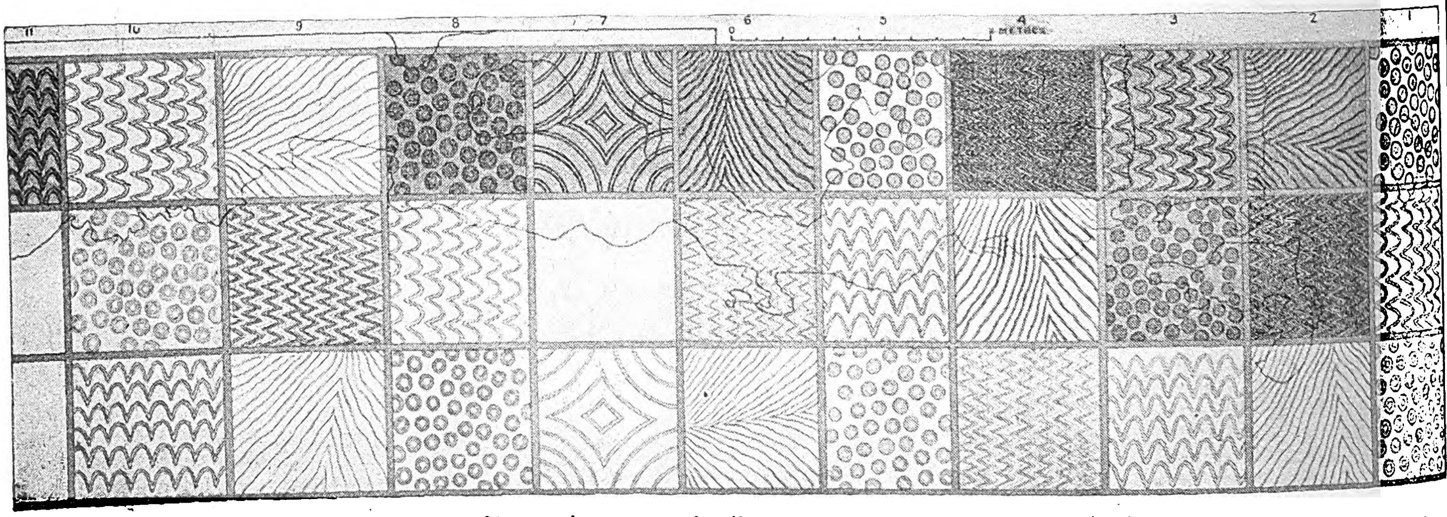

Ἀναπαράστασις τοῦ δαπέδου τῆς αὐλῆς τοῦ ἀνακτόρου.

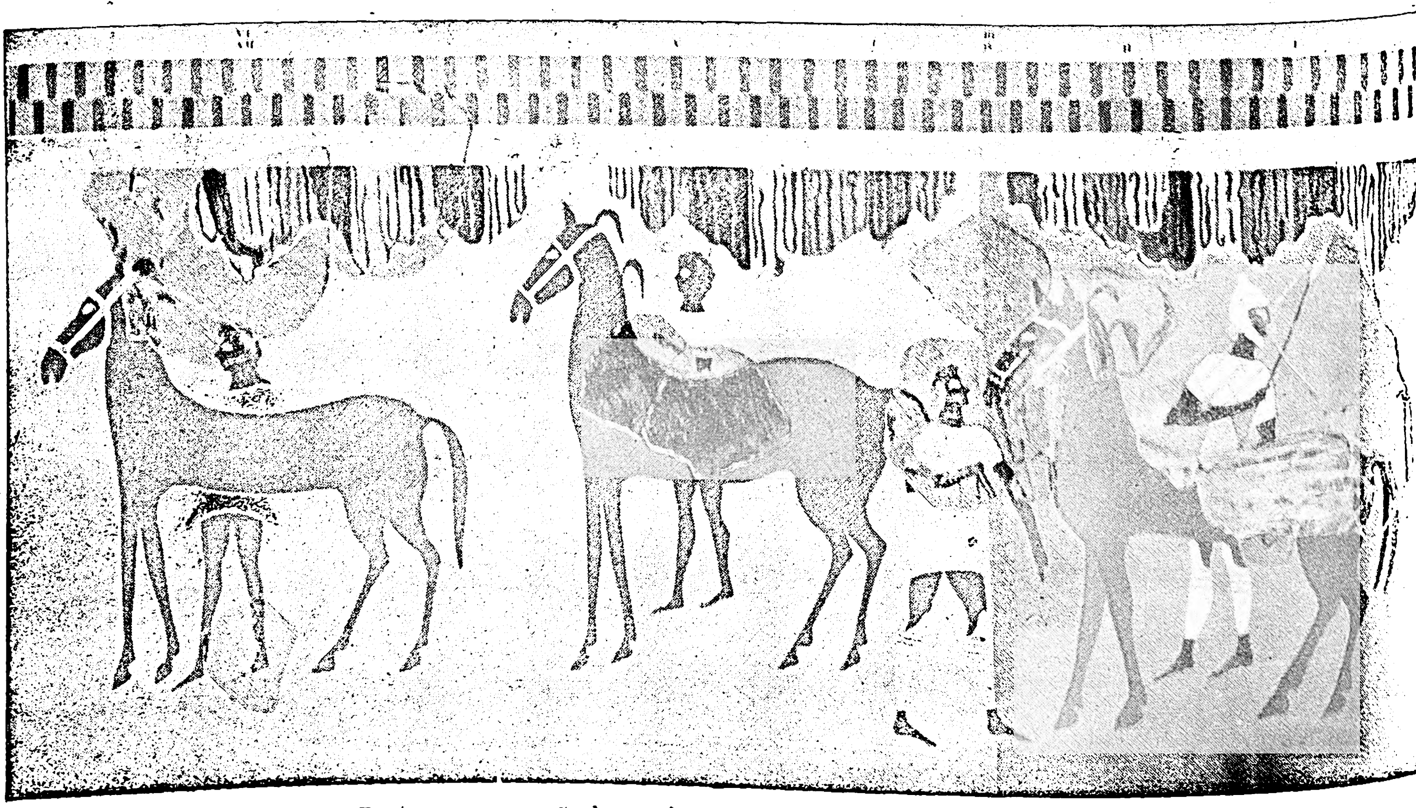

Τεμάχια τοιχογραφιῶν ἐκ τοῦ ἀνακτόρου: Προετοιμασία ἵππων καὶ πολεμιστῶν.

Digitized by Google

ροδόμου, αἵτινες προεκτεινόμεναι ἠδύναντο νὰ ατῶσιν ἀπ' εὐθείας ἐπὶ τῶν κιόνων πέριξ τῆς στίας. Ὅπως καὶ ἂν ἔχῃ τὸ πρᾶγμα, διὰ τὴν τεικὴν τοῦ ὁποίου λύσιν πρέπει νὰ περιμένωμεν νεωέρας ἀνακαλύψεις, φῶς ἠδύνατο φυσικώτερον καὶ ὐκολώτερον νὰ εἰσέρχεται εἰς τὸ μέγαρον καὶ διὰ αραθύρων ἀνοιγομένων εἰς τὸν ἀνατολικὸν ἢ νόιον ἢ καὶ ἀμφοτέρους τοὺς τοίχους. Ἐκεῖθεν θὰ αρείχετο καὶ μεγαλοπρεπὴς θέα κάτω τοῦ κρηινοῦ πρὸς τὸ Ἀργολικὸν πεδίον. Ἐπίσης φῶς θὰ ισήρχετο καὶ διὰ τῆς θύρας ἐκ τοῦ προδόμου, τι δ' ἄνωθεν τούτου διὰ τῆς στοᾶς, ἥτις κατὰ τὴν νωτέρω ἐκτεθεῖσαν νέαν ἀναπαράστασιν ἐξετείετο εἰς τὸ ἄνω πάτωμα ὑπὲρ τὴν αἴθουσαν καὶ ὸν πρόδομον.

*Ὁ διάκοσμος τοῦ ἀνακτόρου.* Τοῦ μεγάρου τοὺς οίχους ἐκάλυπτον τοιχογραφίαι, ὧν ἴχνη διετηοῦντο ἔτι κατὰ χώραν ὅτε τὸ πρῶτον ἀνεσκάφη οῦτο ὑπὸ τοῦ Τσούντα (1886). Πάντα τὰ ἀνακαυφθέντα τεμάχια εἶναι τόσον οἰκτρῶς κολοβὰ καὶ εβλαμμένα ὑπὸ τοῦ πυρός, ὥστε, παρ' ὅλους τοὺς όπους καὶ τὴν ἐπιμονὴν τῶν μελετητῶν, ἐλάχιστα εμάχια κατέστη δυνατὸν νὰ ἀπαρτισθῶσιν. Ἡ υριωτάτη διακόσμησις φαίνεται ὅτι ἀπετελεῖτο πὸ μίαν ζωφόρον, ἥτις παρίστανε τὰς χαρακτηιστικὰς σκηνὰς πολεμικῶν παρασκευῶν καὶ μαῶν, αἵτινες εἶναι τὸ προσφιλέστερον θέμα τοῦ υκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν μιωϊκὸν τοιοῦτον (βλ. λ. *Μινωϊκὸς πολιτισμός*). Ἐκ ῶν διαφόρων θεμάτων ἀναγνωρίζονται σκηναὶ ολεμιστῶν ἀσχολουμένων νὰ ζεύξωσιν ἵππους ὑπὸ ὰ ἅρματα, σκηναὶ ἐπειγομένων ὁπλιτῶν, πιπτόνων ἀγωνιστῶν. Ἓν εὐμέγεθες τεμάχιον, ἀνασυγκροηθὲν ὑπὸ τῶν Ἄγγλων τελευταίως (.65×.33×.23), αρουσιάζει προσόψεις οἰκοδομημάτων, πρὸ τῶν ποίων γυναῖκες θεῶνται τὸν ἀγῶνα. Τὸ σύνολον ῶν παραστάσεων τῆς ζωφόρου ἐνθυμίζει ζωηρῶς ὸ περίφημον τεμάχιον ἀργυροῦ ἀγγείου ἐκ τοῦ V βασιλικοῦ τάφου, ὅπερ εἰκονίζει μάχην πρὸ ῶν τειχῶν πόλεως. Τοῦτο ὅμως εἶναι κατὰ δύο ἰῶνας παλαιότερον, διότι αἱ τοιχογραφίαι, ὡς ἀνήουσαι εἰς τὸ νῦν σῳζόμενον ἀνάκτορον, δὲν εἶναι ρογενέστεραι τῆς ὑστεροελλαδικῆς 3 ἐποχῆς, ἤτοι ῆς ἀρχῆς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος.

*Ἡ κατοικίδιος συνοικία.* Τὸ περιγραφὲν μέγαρον ῶν Μυκηνῶν, ὁμοῦ μετὰ τῆς αὐλῆς καὶ τοῦ δωατίου τοῦ θρόνου, ἦτο βεβαίως τὸ κέντρον τῆς νακτορικῆς ζωῆς. Ἐνταῦθα, ἐκ τῶν ὁμηρικῶν πειγραφῶν κρίνοντες, δυνάμεθα νὰ φαντασθῶμεν αμβανούσας χώραν τὰς ποικίλας συγκεντρώσεις, αρουσιάσεις, τελετάς, συμπόσια μετὰ τῶν μουσιῶν ἑσπερίδων, ἀπαγγελίας ἐπῶν κλπ. Ἐν τούτοις πῆρχεν ἐν τοῖς ἀνακτόροις καὶ ἕτερον σύμπλεγμα ἰκοδομημάτων, τύπου γνωστοῦ, ἐκ τῶν καλύτερον ῳζομένων ἐρειπίων τῆς Τίρυνθος. Ἐνταῦθα διέενον ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον αἱ γυναῖκες καὶ τὸ ὑπηετικὸν προσωπικόν, ὑπῆρχον ἐργαστήρια καὶ λοιπὰ πηρετικὰ διαμερίσματα καὶ ἐφυλάσσοντο τὰ ἀγαθὰ οῦ βίου.

Ἡ κατοικίδιος συνοικία ἐν Μυκήναις ἔκειτο βοείως τοῦ κυρίως μεγάρου καὶ διὰ τὴν ἐλαχίστην πίχωσιν καὶ ἄλλα αἴτια ἐξηφανίσθη μέχρις ἀσημάντων τινῶν ἰχνῶν. Ὑπῆρχεν ἓν διαμέρισμα (σχ. , ἀριθ. 33), ὀνομασθὲν «προθάλαμος πρὸς τὴν κατοικίδιον συνοικίαν», ἔχον διαστάσεις 6×3,50. Ἔφερε ύκλῳ κτιστὰ θρανία καὶ οἱ τοῖχοι του ἐκαλύτοντο ὑπὸ τοιχογραφιῶν. Πρὸς ἀνατολὰς τούτου ὑρίσκονται δύο μικρὰ διαμερίσματα (31 καὶ 32), ξ ὧν τὸ πρῶτον ἦτο ἴσως κλῖμαξ ἀνόδου πρὸς ὰ ὑψηλότερα ἐπίπεδα. Ἔτι ἀνατολικώτερον ὑπῆρεν ἄλλο δωμάτιον (30), φέρον ἐπίσης λίθινα θρανία, πέραν δὲ τούτου περίεργον κτίσμα (29) στεόμακρον καὶ μετὰ παχυτάτων τοίχων, ἀγνώστου ρήσεως.

Βορείως τῶν διαμερισμάτων τούτων ἔκειτο ἡ υρίως κατοικίδιος συνοικία. Ἴχνη δαπέδων ἐδῶ αὶ ἐκεῖ (23, 24) δεικνύουν τοὐλάχιστον τὸ ἐπίπεον, ἐφ' οὗ ἵσταντο αἱ οἰκοδομαί. Ὀλίγον ἀνατοικώτερον (26) φαίνονται ἴχνη περιέργου κλιμακωοῦ κτίσματος, ὅπερ δυνατὸν νὰ ἦτο εἶδος «ἱερᾶς εξαμενῆς», ὡς αἱ τῶν μινωϊκῶν ἀνακτόρων τῆς ρήτης (ἡ γνωστοτάτη τούτων εἶναι ἡ ἐντὸς τῆς ἰθούσης τοῦ θρόνου ἐν τῷ ἀνακτόρῳ τῆς Κνωοῦ). Βορειοανατολικῶς φαίνονται ἴχνη μόνον ἄλων τοίχων ὅλως ἀκατάληπτα. Κυρία εἴσοδος πρὸς ὰ διαμερίσματα ταῦτα ἦτο ἡ ἐκ τοῦ μνημονευέντος χώρου 31, ἀλλὰ θὰ ὑπῆρχε καὶ ἄλλη οιαύτη ἐκ τοῦ ἀνατολικοῦ μέρους, ἄγουσα ἀπ' εὐείας εἰς τὰ διαμερίσματα τῆς κατοικιδίου συνικίας.

*Διάδρομοι, πρόπυλα, φυλακεῖα.* Ὑπολείπονται ὀλίαι λέξεις περὶ ἐρειπίων διασωθέντων κατὰ τὴν ΒΔ. πλευρὰν κυρίως τοῦ συμπλέγματος τῶν ἀνακτόρων. Ὁ «δυτικὸς διάδρομος» (49) εὑρίσκετο κατὰ ὴν ΒΔ. γωνίαν τῆς αὐλῆς, ὅπου διατηρεῖται ἔτι ὸ κατώφλιον. Τὸ πλάτος του εἶναι 1,50 καὶ παακολουθεῖται μέχρις 8 μέτρων καὶ πλέον. Ὁ «νόιος διάδρομος» (37, 35), ὅστις ἐπανειλημμένως ἤδη μνημονεύθη, εἶναι προσιτὸς μόλις κάμψῃ τις δεξιά, ἤτοι πρὸς βορρᾶν, ἐκ τοῦ δυτικοῦ διαδρόμου. Ἐκτείνεται παραλλήλως τῆς βορείας πλευρᾶς τῆς αὐλῆς καὶ ἦτο κυριωτάτη ἀρτηρία συγκοινωνίας, ὑποστὰς βραδύτερον μετατροπὰς ὡς πρὸς τὸν προορισμόν του. Ὁ «βόρειος διάδρομος» (18, 19, 20, 21) ἦτο προσιτὸς ἐκ τοῦ χώρου 40, ὅστις ἦτο κεντρικὸν σταυροδρόμιον πρὸς πολλὰς διευθύνσεις. Ὁ βόρειος διάδρομος ἦτο παράλληλος πρὸς τὸν νότιον, εἶχε δ' ἔτι τὴν αὐτὴν ἀνηφορικὴν κλίσιν ἐκ δυσμῶν πρὸς ἀνατολάς. Ἦτο περὶ τὰ 2 μ. εὐρὺς (ἐνῷ ὁ νότιος ἦτο 1,70), ὁ ἕτερος δὲ τῶν τοίχων του (ὁ νότιος), ὅστις καὶ μόνος διατηρεῖται, παρακολουθεῖται περὶ τὰ 13 μέτρα. Καὶ ὁ διάδρομος οὗτος ἀπετέλει κυρίαν ἀρτηρίαν συγκοινωνίας.

Ἀκριβῶς ἀπέναντι τοῦ δυτικοῦ ἄκρου τοῦ βορείου διαδρόμου ἠνοίγετο τὸ «Δυτικὸν Πρόπυλον» (45), οὗτινος διατηρεῖται τὸ πελώριον κατώφλιον ἐξ ἀμυγδαλίτου. Τὸ πρόπυλον εἶχε μικρὰν στοὰν κατὰ τὴν εἴσοδόν του, ἐνταῦθα δὲ κατέληγεν ὁδὸς ἐρχομένη ἄνωθεν ἐκ βορρᾶ (ἀρ. 7, 9, 10, 44).

Προχωροῦντες ἐκ τοῦ δυτικοῦ προπύλου πρὸς βορρᾶν καὶ ἔχοντες πρὸς ἀριστερὰ τὸν ἀναλημματικὸν τοῖχον τῆς ὁδοῦ, ὅστις σχηματίζει διαφόρους καμπάς, συναντῶμεν ἑλληνιστικὸν ἐλαιοπιεστήριον (10) καὶ περαιτέρω πρὸς βορρᾶν τὰ ἴχνη τοῦ «Βορειοδυτικοῦ Προπύλου» (9), ὅπερ φαίνεται ὅτι εἶχε δύο κίονας εἰς τὸ ἐσωτερικὸν μέρος καὶ ἕνα εἰς τὸ ἐξωτερικὸν (τὸ βορειότερον). Ἐπίσης διατηροῦνται τὰ ἴχνη αὐλῆς τετραγώνου (7) ἐπεστρωμένης διὰ χαλίκων. Ἀπὸ τοῦ σημείου τούτου ὁ ἀναλημματικὸς τοῖχος, σχηματίζων ὀρθὴν γωνίαν, βαίνει πρὸς ἀνατολὰς μέχρις ὅτου ἀποσβέννυται. Ἐνταῦθα ἀκριβῶς εὑρίσκονται τὰ ἐρείπια δύο δωματίων (3 καὶ 4), ἅτινα ἦσαν ἀξιόλογα φυλακεῖα, ὁπόθεν, πλὴν τοῦ μνημονευθέντος προπύλου, ἠδύνατο νὰ ἀσκῆται ἐποπτεία ἐπὶ τῆς βορείας ὁδοῦ πρὸς τὰς Κλεωνὰς καὶ τὴν Κόρινθον.

Ταῦτα εἶναι ἐν τῷ συνόλῳ των τὰ μέχρι σήμερον διατηρηθέντα ἐρείπια τοῦ ἐνδόξου ἀνακτόρου μιᾶς μακραίωνος δυναστείας, ἥτις ἐπεῖδεν ἡμέρας πλούτου, μεγαλείου καὶ δόξης, ἔζησε δὲ τὰς τραγικὰς στιγμὰς τὰς συνυφασμένας πρὸς τοὺς τελευταίους γόνους τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας τῶν Μυκηνῶν. Ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ ἀνακτόρου τούτου ἔρχονται αὐθόρμητοι εἰς τὴν μνήμην αἱ μοιραῖαι στυγεραὶ στιγμαὶ τῆς ἐναγοῦς δυναστείας καὶ τὰ φρικτὰ γεγονότα τοῦ Ἀτρέως καὶ Θυέστου, τοῦ Ἀγαμέμνονος καὶ Κλυταιμνήστρας, τοῦ Ὀρέστου καὶ τῶν Ἐρινύων. Ἐλάχιστα ἀκόμη λείψανα βωμῶν, ἀποθηκῶν καὶ ἄλλων δωματίων εἶναι πᾶν ὅ,τι ἀπέμεινεν ἐκ τοῦ ἀνακτόρου τῶν Ἀτρειδῶν, μέχρις ὅτου ἡ θύελλα τῶν κατερχομένων Δωριέων κατέρριψεν εἰς ἐρείπια καὶ τὸ ἀνάκτορον καὶ πᾶν ἄλλο ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως οἰκοδόμημα.

***Δεξαμεναὶ καὶ ὀχετοί.*** Προτοῦ ἐγκαταλείψωμεν τὴν τοπογραφίαν τῆς μυκηναϊκῆς ἀκροπόλεως, ὀλίγαι λέξεις εἶναι ἀναγκαῖαι περὶ τῶν ὑδραυλικῶν ἔργων. Ἡ μεγάλη ὑπογεία δεξαμενή, εἰς ἣν ἦγεν ἡ σῦριγξ, ἐμνημονεύθη ἤδη, καθὼς καὶ φρέατα σποραδικῶς ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως. Τούτων ἰδιαιτέρως ἀξιοσημείωτον εἶναι ἓν εὑρεθὲν περὶ τὰ 50 μ. πρὸς ΝΑ. τῆς κορυφῆς τῆς κλιτύος καὶ καλούμενον «Φρέαρ τοῦ ρυτοῦ», διότι ἐντὸς αὐτοῦ εὑρέθησαν τὰ τεμάχια ἑνὸς ρυτοῦ ἐν σχήματι βοοκεφαλῆς ἐκ στεατίτου, ἑνὸς ἄλλου χοανοειδοῦς ἐκ λίθου τοῦ Ταϋγέτου, ποὺς κύλικος ἐξ ἀλαβάστρου, ἓν πήλινον σφράγισμα καὶ τὰ λείψανα μολυβδίνου ἀγγείου. Τέσσαρες ἄλλαι δεξαμεναὶ ἔκειντο ἐπὶ τῆς πρὸς δυσμὰς κλιτύος τῆς ἀκροπόλεως, ἀλλὰ δὲν εἶναι πᾶσαι μυκηναϊκῆς ἐποχῆς. Ὡς πρὸς τὴν ἀποχέτευσιν τῶν ὀμβρίων καὶ τῶν ἀκαθάρτων ὑδάτων εἶχε ληφθῆ ἰδιαιτέρα φροντίς, διότι τοῦτο ἐπέβαλλε καὶ ἡ ἰσχυρὰ κλίσις τοῦ ἐδάφους τῆς ἀκροπόλεως πρὸς ἀσφάλειαν τῶν εἰς χαμηλότερα μέρη εὑρισκομένων οἰκοδομημάτων. Διὰ τοῦτο πολλοὶ ὀχετοὶ εἴτε κτιστοὶ ἐκ μικρῶν λίθων, εἴτε ἐκ κεράμων ἐχόντων ἐν τομῇ τὸ σχῆμα ἀνεστραμμένου Π ἀνεκαλύφθησαν ὑπὸ τὰς οἰκίας καὶ τὰς ὁδοὺς τῆς ἀκροπόλεως. Τὸ ἀνάκτορον εἶχε μέγα κύριον ὑδραγωγεῖον (58) καὶ ἄλλα δευτερεύοντα, ὧν ἓν ἀνεκαλύφθη ὑπὸ τὸ δάπεδον τοῦ δωματίου τοῦ θρόνου (52).

***Ὁ ἀρχαϊκὸς ναός.*** Κατὰ τὴν ἀρχαϊκὴν ἐποχὴν (Ζ' ἢ ἀρχὰς ΣΤ' αἰῶνος π. Χ.) ἠγέρθη ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ ἀνακτόρου, μετὰ προηγουμένην ἰσοπέδωσιν τοῦ χώρου, ναὸς τῆς Ἀθηνᾶς μὲ διεύθυνσιν τοῦ κυρίου ἄξονος ἀπὸ Β. πρὸς Ν. Ἡ κτίσις τοῦ ναοῦ τούτου συνέτεινεν οὐκ ὀλίγον εἰς τὴν καταστροφὴν τῶν λειψάνων τοῦ ἀνακτόρου, διότι, πλὴν τῆς γενομένης ἰσοπεδώσεως, τὸ μεσημβρινὸν μέρος τοῦ ναοῦ ἐκτίσθη ἀπ' εὐθείας ἐπὶ τοῦ ἡμίσεος περίπου τῆς αὐλῆς καὶ τῶν βορείων ἄκρων τῆς αἰθούσης καὶ τοῦ προδόμου. Ὁ ναὸς φαίνεται ὅτι διετηρεῖτο καὶ ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τῆς ἑλληνιστικῆς κώμης, ἀλλὰ καὶ ἐκ τούτου ὀλίγιστα ἴχνη περιεσώθησαν. Ἐξ ἀρχιτεκτονικῶν μελῶν ἓν μόνον τεμάχιον γείσου ἦλθεν εἰς φῶς καὶ δύο μικρὰ τεμάχια πωρίνων ἀναγλύφων, πιθανῶς ἀπὸ μετόπας τοῦ ναοῦ.

ΤΟΠΟΓΡΑΦΙΑ ΤΗΣ ΚΑΤΩ ΠΟΛΕΩΣ. Μέγας μόνιμος πληθυσμὸς οὔτε ὑπῆρξέ ποτε, οὔτε ἦτο δυνατὸν νὰ ὑπάρξῃ ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν. Κύριος αὐτῆς προορισμὸς ἦτο νὰ προφυλάττῃ ἐν ὥρᾳ πολιορκίας τοὺς κατοίκους, οἵτινες συνέρρεον ἐντὸς αὐτῆς. Ἐν καιρῷ εἰρήνης ὅμως μόνος ὁ βασιλεὺς μετὰ τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς καὶ ἴσως τινὲς προὔχοντες ἢ μεγιστᾶνες ἐκ τοῦ βασιλικοῦ αἵματος ἀπετέλουν τοὺς διαρκεῖς κατοίκους τῆς ἀκροπόλεως. Πᾶς ὁ ὑπόλοιπος πληθυσμὸς κατῴκει τὴν ἀνοχύρωτον κάτω πόλιν, ἥτις ἐξετείνετο ἐπὶ τῶν κλιτύων καὶ ὑψωμάτων πέριξ τῆς ἀκροπόλεως. Οὕτως ἡ μορφὴ τῆς πόλεως ἐν τῇ μυκηναϊκῇ ἐποχῇ θὰ παρουσίαζε τὸ θέαμα κωμῶν διεσπαρμένων μὲ κενὰ διαστήματα καὶ εὐρείας ὁδοὺς μεταξύ των· τοῦτο δύναται ἴσως νὰ ἑρμηνεύσῃ τὸ ὁμηρικὸν ἐπίθετον τῆς πόλεως: *Εὐρυάγυια*. Ἴχνη τῶν μυκηναϊκῶν κατοικιῶν ἐμφανίζονται ἐδῶ καὶ ἐκεῖ, ἀλλ' ὅ,τι κυρίως μαρτυρεῖ περὶ τῆς ἐκτάσεως τῆς κάτω πόλεως εἶναι αἱ συστάδες τῶν τάφων, διότι αἱ συστάδες αὗται εἶναι βέβαιον ὅτι θὰ ἀντεστοίχουν πρὸς τοὺς συνοικισμούς.

***Οἱ τάφοι.*** Οὗτοι διαιροῦνται εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας, τοὺς κτιστούς, δηλαδὴ θολωτούς, καὶ τοὺς λαξευτούς, ἢ θαλαμωτοὺς λεγομένους. Ἀμφότεραι αἱ κατηγορίαι, οὖσαι ὑπόγεια κατασκευάσματα ἐντελῶς ἀόρατα, εἶναι κατὰ βάσιν αἱ αὐταὶ καὶ διαφέρουσι τελείως τῶν ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως βασιλικῶν τάφων. Κατ' ἀρχὰς δηλαδὴ σκάπτεται εἰς τὴν κλιτὺν λόφου τινὸς ἔχοντος μαλακὸν πέτρωμα, στενὸς καὶ μακρὸς διάδρομος, ὁ καλούμενος δρόμος. Κατὰ τὸ τέρμα τούτου ἀνοίγεται ὁ νεκρικὸς θάλαμος, ὅστις εἰς μὲν τοὺς λαξευτοὺς τάφους εἶναι ὀρθογώνιον συνήθως ἢ ἐνίοτε σπηλαιῶδες ἀκανόνιστον ἐντὸς τοῦ βράχου· εἰς τοὺς θολωτοὺς τάφους τοὐναντίον ἡ κοιλότης λαξεύεται κυκλικὴ καὶ ἐπενδύεται, ὡς καὶ ὁ δρόμος, διὰ τοίχου. Ὁ τοῖχος τοῦ κυρίως τάφου συγκλίνει διαρκῶς πρὸς τὰ ἔσω ἐφόσον ἀνέρχεται, ὥστε τέλος καταντᾷ ἄνω εἰς αἰχμηρὰν κορυφὴν φρασσομένην δι' ἑνὸς μόνου λίθου, ὡς γίνεται εἰς τοὺς σημερινοὺς φούρνους τῶν χωρικῶν.

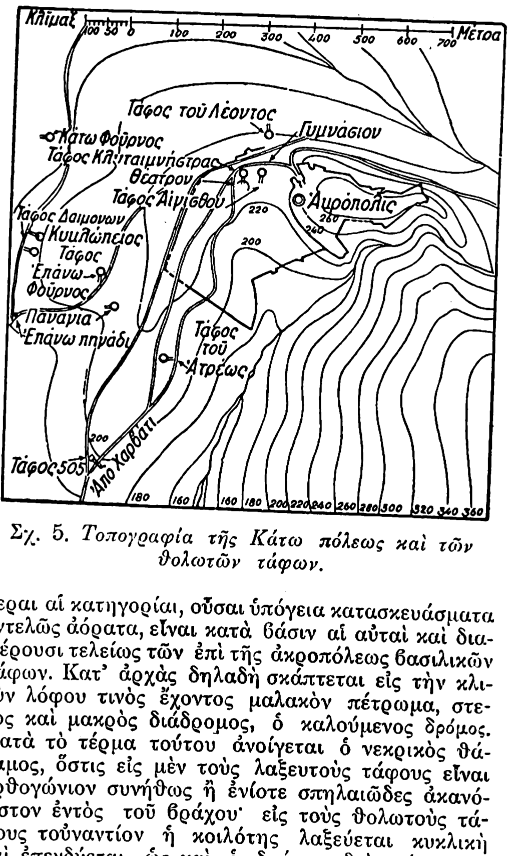

*Σχ. 5. Τοπογραφία τῆς Κάτω πόλεως καὶ τῶν θολωτῶν τάφων.*

*Οἱ θολωτοὶ τάφοι.* Τούτων οἱ ἐπιμελέστερον κατεσκευασμένοι ἀνήκουσιν εἰς τὰ ἐξοχώτερα δημιουργήματα τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ, ἦσαν δὲ ἤδη ἐν τῇ κλασσικῇ ἀρχαιότητι γνωστοὶ καὶ ἐθαυμάζοντο. Ἐπειδὴ εἶναι ἐκτὸς πάσης ἀμφιβολίας ὅτι οἱ πρῶτοι ἀνακαλύψαντες καὶ συλήσαντες τούτους εὗρον ἐντὸς μεγάλους θησαυρούς, ἐνομίσθη ὅτι πρόκειται περὶ θησαυροφυλακίων, ὅπου ἐφυλάσσοντο τὰ πολύτιμα βασιλικὰ σκεύη. Οἱ δύο σπουδαιότατοι καὶ ὡραιότατοι τῶν θολωτῶν τάφων τῆς Ἑλλάδος, ὁ ἐν Μυκήναις καὶ ὁ ἐν Ὀρχομενῷ, εἶναι ἀκριβῶς γνωστοὶ ὡς «θησαυρὸς τοῦ Ἀτρέως» καὶ «θησαυρὸς τοῦ Μινύου».

Θολωτοὶ τάφοι εἶναι γνωστοὶ ἐν Μυκήναις μέχρι σήμερον ἐννέα, ἀποτελοῦντες καὶ τὴν μεγίστην γνωστὴν συστάδα. Οἱ σπουδαιότατοι εἶναι οἱ δύο παρὰ τὴν σημερινὴν ὁδὸν ἀπὸ τοῦ χωρίου Χαρβάτι εἰς Μυκήνας. Ὁ νοτιώτερος εἶναι ὁ περίφημος θησαυρὸς τοῦ Ἀτρέως (ἢ Ἀγαμέμνονος, ὡς ἄλλοι τὸν ὀνομάζουν), ὁ δὲ βορειότερος εἶναι ὁ «τάφος τῆς Κλυταιμνήστρας» καὶ παρ' αὐτὸν ὁ «τάφος τοῦ Αἰγίσθου». Ἐννοεῖται ὅτι καὶ τὰ ὀνόματα ταῦτα, ὡς καὶ τὰ ὑπόλοιπα, εἶναι καθαρῶς συμβατικά. Οἱ ἄλλοι ἓξ τάφοι, ὧν τὴν θέσιν παριστᾷ τὸ σχ. 5, φέρουσι τὰ ὀνόματα (κατὰ γενικὴν φορὰν ἐκ βορρᾶ πρὸς νότον): Τάφος τοῦ λέοντος, Κάτω φοῦρνος, Τάφος τῶν δαιμόνων, Κυκλώπειος τάφος, Ἐπάνω φοῦρνος, Παναγία. Θὰ περιορισθῶμεν εἰς τὴν περιγραφὴν μόνον τοῦ περιλαλήτου τάφου τοῦ Ἀτρέως.

Ὁ τάφος οὗτος εἶναι ὁ ἐπιμελέστατα πάντων ἐκτισμένος. Ὁ δρόμος εἶναι ἐπενδεδυμένος διὰ κανονικῶν ὀρθογωνίων λαξευτῶν πωρίων ἐξ ἀμυγδαλίτου. Ἔχει μῆκος περὶ τὰ 36 μ. καὶ πλάτος 6. Ἡ ἀρχή του ἐφράσσετο ἐν τῇ ἀρχαιότητι διὰ τοίχου, οὗτινος σῴζονται οἱ κατώτεροι πώρινοι λίθοι. Τὸ στόμιον πρὸς τὴν θόλον ἔχει ὕψος 5,40

Digitized by Google

καὶ πλάτος 2,66 ἕως 2,46 (διότι ἄνω στενεύει). Ἐπ' αὐτοῦ ἐπικάθηνται ὡς ἀνώφλια δύο πελώριαι πλάκες, ὧν ἡ ἐσωτέρα, ἔχουσα μῆκος 9, πλάτος 5 καὶ πάχος 1 μέτρου, ζυγίζει περὶ τὰς 120 χιλιάδας χιλιογράμμων, ἤτοι 93.500 ὀκάδας. Δεξιὰ καὶ ἀριστερὰ ἐκόσμουν τὴν εἴσοδον τοῦ στομίου τὰ περίφημα ἡμικιόνια ἐκ πρασίνου μαρμάρου, ὧν τὰ τεμάχια εἶναι νῦν διεσκορπισμένα εἰς τὰ διάφορα εὐρωπαϊκὰ μουσεῖα, πλὴν δὲ τούτων ἡ πρόσοψις ἐκοσμεῖτο πλουσίως καὶ δι' ἄλλων ποικιλοχρώμων μαρμάρων φερόντων γλυπτὰ κοσμήματα. Ἡ θόλος ἔχει διάμετρον 14,60 καὶ ὕψος 13,30, εἶναι δὲ καὶ αὐτὴ κατεσκευασμένη ἰσοδομικῶς ἐκ μεγάλων πελεκητῶν λίθων. Ἐπὶ τούτων ἦσαν ἐσωτερικῶς προσηλωμένοι χαλκοῖ ῥόδακες κατὰ διαστήματα, ὥστε καὶ τὸ ἐσωτερικὸν τῆς θόλου ἦτο περιτέχνως κεκοσμημένον. Ἐξαιρετικῶς ὁ τάφος οὗτος φέρει παραπλεύρως καὶ ἓν μικρότερον ὀρθογώνιον δωμάτιον, προσιτὸν ἐκ τῆς θόλου διὰ θύρας καὶ διαστάσεων 8,50×6 μ. Τὸ τοιοῦτον ἐπαναλαμβάνεται ἔτι μόνον ἐν τῷ θησαυρῷ τοῦ Μινύου.

Ὁ θησαυρὸς τοῦ Ἀτρέως προξενεῖ εἰς τὸν ἐπισκέπτην καταπληκτικὴν ἐντύπωσιν, ἥτις κατατάσσει τοῦτον μεταξὺ τῶν περιφημοτάτων ἀρχαιολογικῶν μνημείων τῆς Ἑλλάδος. Ἐν τῇ ἀρχαιότητι ὑπῆρχε πρὸ αὐτοῦ πλατεῖα, συγκρατουμένη ὑπὸ κυκλωπείου κρηπιδώματος. Κατὰ τὴν παράδοσιν ἐσυλήθη ὑπὸ Βελῆ, τοῦ υἱοῦ τοῦ Ἀλῆ πασᾶ τῶν Ἰωαννίνων. Φαίνεται ὅμως ὅτι καὶ πολὺ προηγουμένως εἶχεν ἤδη συληθῆ.

Δεύτερος κατὰ τὴν σπουδαιότητα εἶναι ὁ «τάφος τῆς Κλυταιμνήστρας», ὀλιγώτερον μεγαλοπρεπὴς τοῦ πρώτου, ἀλλὰ φέρων ἐπίσης περίτεχνον διακόσμησιν ἐν τῇ ἀρχαιότητι. Ἡ θόλος τούτου ἔχει καταρρεύσει πρὸ πολλοῦ. Πάντες οἱ ἄλλοι τάφοι εἶναι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐπιμελοῦς κατασκευῆς, ἐξ οὗ καὶ ἐπεχειρήθη ἡ ἐξ ἀρχιτεκτονικῶν τεκμηρίων διαίρεσίς των εἰς δύο κατηγορίας, ἐξ ὧν ἡ νεωτέρα περιλαμβάνει τοὺς μᾶλλον περιτέχνους. Ὑπεστηρίχθη ἐπίσης ὅτι πάντες οἱ θολωτοὶ τάφοι εἶναι μεταγενέστεροι τῶν βασιλικῶν τάφων τῆς ἀκροπόλεως καὶ ἀντιπροσωπεύουν νέαν δυναστείαν. Κατὰ τῆς γνώμης ταύτης ἀντεπεξῆλθον ζωηρῶς ἄλλοι, ὑποστηρίζοντες ὅτι οἱ τάφοι εἶναι σύγχρονοι. Ὁ Evans μάλιστα φθάνει μέχρι τοῦ σημείου νὰ ὑποστηρίζῃ ὅτι ἐντὸς τῶν τάφων τῆς ἀκροπόλεως ἐγένετο ἁπλῶς μετακομιδὴ τῶν λειψάνων τῶν νεκρῶν καὶ τῶν πολυτίμων κτερισμάτων των ἐκ τῶν θολωτῶν τάφων, πρὸς περισσοτέραν ἀσφάλειαν. Πᾶσαι αὗται αἱ δυσκολίαι πηγάζουσιν ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι πάντες οἱ θολωτοὶ τάφοι ἔχουσιν ἔκπαλαι συληθῆ καὶ δι' ἔλλειψιν κτερισμάτων δὲν εἶναι δυνατὴ ἀκριβὴς χρονολόγησις. Ἐν τούτοις, ἐκ λειψάνων τινῶν περισωθέντων φαίνεται πιθανώτερον ὅτι καὶ οἱ μεγαλοπρεπεῖς θολωτοὶ τάφοι εἶναι γενικῶς σύγχρονοι πρὸς τοὺς τῆς ἀκροπόλεως, ἢ κατά τι μόνοι μεταγενέστεροι.

*Οἱ λαξευτοὶ θαλαμοειδεῖς τάφοι.* Οἰκονομικώτεροι εἰς κατασκευήν, πτωχότεροι εἰς κτερίσματα καὶ ἐν γενικαῖς γραμμαῖς μεταγενέστεροι τῶν πλουσίων θολωτῶν βασιλικῶν τάφων εἶναι οἱ θαλαμοειδεῖς, αἵτινες ἐδέχοντο τοὺς νεκροὺς τῶν εὐπορωτέρων ἀστῶν κατὰ οἰκογενείας μᾶλλον ἢ κατὰ φυλάς. Καὶ ἐκ τούτου τοῦ εἴδους τῶν τάφων ὁ μεγαλύτερος μέχρι σήμερον γνωστὸς ἀριθμὸς ἀνεκαλύφθη ἐν Μυκήναις, εἶναι δ' οἱ τάφοι οὗτοι οὐχὶ εἰς ἓν μέρος, ἀλλὰ κατὰ συστάδας κεῖνται εἰς διαφόρους τοποθεσίας πέριξ τῆς ἀκροπόλεως. Τοῦτο ὑποδεικνύει ἴσως τὰς διαφόρους συνοικίας τῆς πόλεως. Τοὺς πλείστους τῶν τάφων τούτων ἐκαθάρισεν ὁ Τσούντας, κειμένους κατὰ ὁμάδας ἐπὶ τῆς ῥάχεως τοῦ λοφίσκου τῆς Παναγίας, παρὰ τὸ Ἐπάνω πηγάδι, παρὰ τὸν Κάτω φοῦρνον, παρὰ τὰ ῥεύματα Ἀσπρόχωμα καὶ Ἀγριοσυκιά, παρὰ τὴν θέσιν Σουλεϊμάνι κλπ. Εἰς τὰς συστάδας ταύτας πρέπει νὰ προστεθῇ καὶ ἡ τελευταίως ὑπὸ τῶν Ἄγγλων ἀνακαλυφθεῖσα ἐπὶ τοῦ λόφου Καλκάνη.

Οἱ τάφοι οὗτοι ἔφερον λαξευτοὺς δρόμους, ὡς ἐλέχθη ἤδη, τὰ δὲ στόμιά των ἐφράσσοντο μεθ' ἑκάστην ταφὴν διὰ ξηρολιθιᾶς ἢ ὠμῶν πλίνθων. Οἱ νεκροὶ εἴτε ἀπετίθεντο ἁπλῶς ἐπὶ τοῦ δαπέδου, εἴτε ἐθάπτοντο ἐντὸς ἰδιαιτέρων λάκκων ἀνοιγομένων ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τοῦ θαλάμου. Τὰ κτερίσματα γενικῶς εἶναι μέτρια, ἐν τούτοις εὑρέθησαν ἀξιόλογα ὅπλα, ἀντικείμενα ἐξ ἐλεφαντόδοντος, σκεύη χαλκᾶ ἢ καὶ ἐκ πολυτιμοτέρου ὑλικοῦ, ἄφθονοι γλυπτοὶ λίθοι καὶ πήλινα ἀγγεῖα.

***Ὁ λόφος τοῦ Ἁγίου Ἠλία.*** Πρὸς περάτωσιν τῆς τοπογραφίας τῶν Μυκηνῶν ὀλίγαι λέξεις εἶναι ἔτι ἀναγκαῖαι περὶ τῶν ἐρειπίων ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ Ἁγίου Ἠλία, τοῦ ὑψηλοῦ βουνοῦ, τὸ ὁποῖον ὑπέρκειται τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν πρὸς βορρᾶν. Τὸ βουνὸν τοῦτο (ὕψους 807 μέτρων, ἐνῷ ἡ Ζάρα εἶναι 659) παρουσίασεν ἐπὶ τῆς κορυφῆς του ἴχνη ὀχυρώσεων, τὰ ὁποῖα προσείλκυσαν ἤδη τὴν προσοχὴν τοῦ Σλῆμαν. Οἱ Ἄγγλοι κατὰ τὸ 1922 ἐσυνέχισαν τὰς ἐρεύνας, ἀλλ' ὑπολείπεται ἔτι ἐργασία. Πρόκειται περὶ μικροῦ ὀχυρώματος, ὅπερ εἶχεν εἴσοδον ἐξ ἀνατολῶν. Ἐπειδὴ τὸ μέρος εἶναι κατάξηρον καὶ οὐδὲν ἴχνος δεξαμενῆς ὑπάρχει, δὲν ἦτο δυνατὸν ἡ κορυφὴ νὰ ἐχρησίμευεν ὡς σταθμὸς μεγαλυτέρας φρουρᾶς. Ἁπλῶς καὶ μόνον θὰ παρέμενεν ἐκεῖ φυλακεῖον ἐκ δύο ἢ τριῶν ἀνδρῶν, οἵτινες ἦσαν σκοποί, ἵνα διὰ φρυκτωρειῶν ἢ πυρσῶν ἀναγγέλλωσι διάφορα νέα. Ἐκ τοῦ Ἀγαμέμνονος τοῦ Αἰσχύλου γνωρίζομεν ὅτι εἷς τοιοῦτος σκοπὸς ἦτο τοποθετημένος ἐπὶ τῆς στέγης τοῦ ἀνακτόρου τῶν Μυκηνῶν, ἵνα ἐγκαίρως ἴδῃ τοὺς πυρσούς, οἵτινες θὰ ἀνήγγελλον τὴν ἅλωσιν τῆς Τροίας καὶ τὴν ἐπάνοδον τοῦ Ἀγαμέμνονος. Οἱ δυνάσται τῆς πόλεως ἐν ὑστεροελλαδικῇ 3 ἐποχῇ εἶχον ἀνεγείρει τὸν ἀνωτέρω περίβολον, ἐκ τοῦ ὁποίου ἡ μεγαλοπρεπὴς θέα ἐκτείνεται ἀπὸ τοῦ Κορινθιακοῦ καὶ Γερανείων καὶ Ἀκροκορίνθου μέχρι τοῦ Ἄργους καὶ Μιδέας καὶ Ἀσίνης.

***Αἱ μεγάλαι ὁδοί.*** Ἀναγκαῖον τέλος εἶναι νὰ γίνῃ δι' ὀλίγων λόγος καὶ περὶ τῶν μεγάλων συγκοινωνιακῶν ὁδῶν, αἱ ὁποῖαι εἶναι ἴσως καὶ αἱ μόναι δυνάμεναι νὰ ἑρμηνεύσωσιν οὐ μόνον τὸ μεγαλεῖον καὶ τὴν δύναμιν τῶν Μυκηνῶν, ἀλλὰ καὶ τὸν λόγον ὑπάρξεως τῆς πόλεως καὶ τοῦ μέρους ἔνθα εὑρίσκεται. Ἦτο δηλαδὴ ἡ κλεὶς τῶν συγκοινωνιῶν ἀπὸ τοῦ Ἀργολικοῦ πεδίου πρὸς τὸν Κορινθιακὸν καὶ ἐκεῖθεν πρὸς τὴν Στερεὰν Ἑλλάδα. Πολλαὶ ὁδοὶ ἀναχωροῦσιν ἐκ Μυκηνῶν πρὸς διαφόρους κατευθύνσεις, τὰς ὁποίας ἐμελέτησε καὶ ἐσημείωσεν εἰς τοὺς «χάρτας τῶν Μυκηνῶν» του ὁ Γερμανὸς ἀξιωματικὸς Steffen. Εἶναι ἀσφαλῶς μυκηναϊκαὶ καὶ βαίνουσαι ἐπὶ τῶν κλιτύων τῶν ὀρέων ὑποστηρίζονται κατὰ τὰς πλευρὰς των διὰ κυκλωπείων ἀναλημμάτων. Τρεῖς τοιαῦται ὁδοὶ ἤρχιζον ἀπὸ τῆς πύλης τῶν Λεόντων καὶ διηυθύνοντο ἡ μὲν πρὸς τὴν κοίτην τοῦ Κηφισοῦ, ἔνθεν σχιζομένη ἦγεν ἀριστερά, πρὸς Νεμέαν καὶ Φλιοῦντα, δεξιὰ δὲ πρὸς Κλεωνὰς καὶ Κόρινθον. Ἄλλη, δι' ὀρεινῶν τοποθεσιῶν βαίνουσα, ἦγε συντομώτερον πρὸς τὰς Κλεωνὰς καὶ ἐκεῖθεν εἰς Κόρινθον. Τρίτη δέ, τέλος, ἡ ἀνατολικωτάτη πασῶν, διήρχετο διὰ τῆς χώρας τῆς Τενέας, πλησίον τῶν σημερινῶν χωρίων Ἁγιονόρι, Κλένιες καὶ Χιλιομόδι. Μία ἄλλη ὁδὸς ἦγε πρὸς τὸ σπουδαιότατον κέντρον τοῦ Ἡραίου, αὕτη δὲ διήρχετο ὑπὲρ τὸ ῥεῦμα τοῦ Χάβου, ζευχθὲν διὰ κυκλωπείου γεφύρας. Αἱ ὁδοί, πλὴν τῶν ἀναλημμάτων, ἦσαν ἐφωδιασμέναι καὶ δι' ὀχετῶν. Τὸ πλάτος των εἶναι μόνον περὶ τὰ 3,50 μ., ἐπειδὴ δὲ ἔχουσι συνήθως καὶ μεγάλην κλίσιν, μόνον εἰς φορτηγὰ ζῷα θὰ ἦσαν προσιταί, οὐχὶ ὅμως καὶ ἁμάξας φορτηγούς. Προϋποτιθεμένης λαμπρᾶς διατηρήσεως, ἴσως μόνον τὰ ἐλαφρὰ πολεμικὰ ἅρματα, ἅτινα ἐσύροντο ὑπὸ δύο ἵππων, ἦτο δυνατὸν νὰ χρησιμοποιῶνται ἐπὶ τῶν ὁδῶν τούτων, αἱ ὁποῖαι ὁπωσδήποτε ἀποδεικνύουν τὴν ζωηρὰν ἐπικοινωνίαν καὶ ἀκμαῖον ἐμπόριον τῆς τότε ἐποχῆς.

*Εἷς ἐκ τῶν καλύτερον διατηρουμένων νεκρῶν τῶν βασιλικῶν τάφων, φέρων λείψανα ταριχεύσεως.*

***Ἡ ἑλληνιστικὴ Κάτω πόλις.*** Ὑπάρχουσι τὰ λείψανα τείχους τινὸς ἐν τῇ Κάτω πόλει, τὰ ὁποῖα ἐξέλαβόν τινες ὡς μυκηναϊκά. Τοῦτο δὲν εἶναι ὀρθόν. Ἡ μυκηναϊκὴ πόλις, ὡς εἴδομεν, ἦτο τελείως ἀνοχύρωτος. Ἄλλοι ἀπέδωκαν τὰ τείχη ἐκεῖνα εἰς τοὺς χρόνους, καθ' οὓς ἱδρύθη καὶ ὁ δωρικὸς ναὸς ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως (Dörpfeld). Νῦν ὅμως γνωρίζομεν ὅτι ταῦτα ἀνήκουσιν εἰς τὴν ἑλληνιστικὴν ἐποχήν, δι' ἣν εἶναι ἀκριβῶς χαρακτηριστικὴ ἡ τείχισις κωμῶν, ὡς ἦσαν τότε αἱ Μυκῆναι. Τὰ ἀνωτέρω τείχη ἤρχιζον ἐκ τῆς ΝΔ. γωνίας τῆς ἀκροπόλεως καὶ ἐπροχώρουν κατ' εὐθεῖαν γραμμήν, μετά τινων πύργων, πρὸς τὰ νοτιοδυτικὰ διὰ τῆς μικρᾶς κοιλάδος, ἥτις σχηματίζεται ὑπὸ τὸν τάφον τῆς Κλυταιμνήστρας. Εἶτα ἐστρέφοντο ἐπ' ὀλίγον πρὸς νότον καὶ δι' ἀποτόμου ὀξείας γωνίας, περὶ τὰ 130 μέτρα προτοῦ φθάσωσι παρὰ τὸν θησαυρὸν τοῦ Ἀτρέως, ἐκάμπτοντο κατ' εὐθεῖαν γραμμὴν πρὸς ΒΔ. Ἀνερχόμενα οὕτω τὴν κλιτὺν ἐκάμπτοντο εἶτα πρὸς ἀνατολὰς καὶ δι' εὐρέος τόξου ἤρχοντο νὰ ἑνωθῶσι πρὸς τὴν ΒΔ. γωνίαν τῆς ἀκροπόλεως (βλ. σχ. 5). Ἐντὸς τοῦ περιβόλου τούτου εὑρίσκονται τὰ κυριώτατα ἑλληνιστικὰ ἐρείπια, ἅτινα σημειοῦνται καὶ ἐπὶ τῶν χαρτῶν τοῦ Στέφφεν.

*Τὸ θέατρον καὶ τὸ γυμνάσιον.* Τὰ ἀνωτέρω ἑλληνιστικὰ ἐρείπια δὲν ἀνεσκάφησαν ἔτι, οὔτε ἐμελετήθησαν ἐπαρκῶς. Ἐν τούτοις ἐταυτίσθησαν τοὐλάχιστον τὸ θέατρον καὶ τὸ γυμνάσιον. Τὸ πρῶτον ἐκ τούτων ἔκειτο ἐπὶ τοῦ δρόμου τοῦ τάφου τῆς Κλυταιμνήστρας (βλ. σχ. 5), μία ἀπόδειξις ὅτι καὶ τότε ἔτι ἦτο ὁ τάφος οὗτος ἐντελῶς ἀόρατος καὶ ἄγνωστος. Τὸ κοῖλόν του ἦτο ἐστραμμένον πρὸς ΝΔ., ἡ δὲ κατωτάτη σειρὰ καθισμάτων ἐκ πώρου σῴζεται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον κατὰ χώραν. Τὰ καθίσματα, ἅτινα ἦσαν ὑπὲρ τὸν δρόμον τοῦ τάφου, ἀφῃρέθησαν κατὰ τὴν ἀνασκαφὴν τούτου.

Πρὸς βορρᾶν τῶν τάφων τοῦ Αἰγίσθου καὶ τῆς Κλυταιμνήστρας ἀνεκαλύφθησαν ὑπὸ τῶν Ἄγγλων καὶ ἀτελῶς ἀνεσκάφησαν τὰ ἐρείπια οἰκοδομήματος μὲ παχεῖς τοίχους, συνισταμένους ἐκ πελεκητῶν πώρων λίθων. Ἀπέναντι τῆς βορείας προσόψεως κεῖται σειρὰ λεκανῶν, αἵτινες ἐδέχοντο προφανῶς ὕδωρ, διότι εὑρέθησαν καὶ τὰ ἴχνη ἀγωγοῦ. Πιθανῶς πρόκειται περὶ τοῦ γυμνασίου τῆς ἑλληνιστικῆς κώμης, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον θὰ ἐξακριβώσωσιν ὁριστικῶς μέλλουσαι ἀνασκαφαί.

Κατὰ τὴν περιοχὴν τῆς ἑλληνιστικῆς κώμης ἀνεκαλύφθησαν τέλος μερικοὶ τάφοι, ἰδίως ἀμέσως πρὸς βορρᾶν τοῦ θησαυροῦ τοῦ Ἀτρέως, παρὰ τὴν σημερινὴν ὁδόν. Τὰ πενιχρὰ ἄλλως εὑρήματα τῶν τάφων ἀποδεικνύουσι τούτους ὡς ἀνήκοντας εἰς τὴν ἑλληνιστικὴν περίοδον, εἰς ἣν ἀνήκει καὶ ἡ κώμη.

ΑΝΑΣΚΑΦΑΙ ΚΑΙ ΕΥΡΗΜΑΤΑ. Αἱ πρῶται ἀνασκαφαὶ ἐν Μυκήναις ἐπεχειρήθησαν ὑπὸ τοῦ Σλῆμαν κατὰ Φεβρουάριον τοῦ 1874, ὁπότε ἤνοιξε μερικὰς δοκιμαστικὰς τάφρους ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως. Ἡ πραγματικὴ ὅμως ἀνασκαφὴ ἤρχισε κατ' Αὔγουστον τοῦ 1876, μέχρις ὅτου, περὶ τὰ τέλη Νοεμβρίου, ὁ εὐτυχὴς ἐρευνητὴς ἐπέτυχε τὴν θριαμβευτικὴν ἀποκάλυψιν τῶν πέντε περιφήμων βασιλικῶν τάφων. Ὁ Σλῆμαν ἦτο ἔνθεος ἐρασίτεχνος ἐρευνητής, ὅστις ἐνόμιζεν ὅτι βαδίζει ἐπὶ τὰ ἴχνη τοῦ Ὁμήρου. Ὅτε ἀνεῦρε τοὺς τάφους, οὐδ' ἐπὶ στιγμὴν ἐδίστασεν ὅτι εἶχεν ἐνώπιόν του τὰ σεβάσμια λείψανα τοῦ Ἀγαμέμνονος καὶ τῶν σὺν αὐτῷ σφαγιασθέντων. Πλάνη ἀπολύτως δικαιολογημένη διὰ τὴν ἐποχήν του, τοσούτῳ μᾶλλον, καθ' ὅσον ἡ θέσις τῶν τάφων συνεφώνει πρὸς τὰς περὶ τάφου τοῦ Ἀγαμέμνονος ἀσαφεῖς, ὡς πάντοτε, εἰδήσεις τοῦ Παυσανίου. Πλὴν δὲ τούτου, πλῆθος ἄλλων χαρακτηριστικῶν τῆς εὑρέσεως συνεφώνει παραδόξως πρὸς τὰ περὶ δολοφονίας τοῦ Ἀγαμέμνονος καὶ τῶν σὺν αὐτῷ παραδεδομένα. Εἶναι ὡς ἐκ τούτου ἐντελῶς καταληπτὴ ἡ πλάνη τοῦ Σλῆμαν, διὰ τὴν ὁποίαν ἐπανειλημμένως τὸν κατηγόρησαν ἢ τὸν εἰρωνεύθησαν, διότι εὐθὺς μετὰ τὴν ἐκπληκτικήν του ἀνακάλυψιν διεμήνυσε πανταχοῦ, ἀπὸ τοῦ βασιλέως Γεωργίου μέχρι τῶν περάτων τῆς οἰκουμένης, ὅτι ἀνεκάλυψε τὸν τάφον τοῦ Ἀγαμέμνονος. Ἐπὶ μακρὸν κατόπιν ἠσχολεῖτο μὲ διαφόρους λεπτομερείας ἐπὶ τῆς ἐσφαλμένης ταύτης ὁδοῦ, ὡς λ. χ. νὰ καθορίσῃ τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ Ἀγαμέμνονος ἐπὶ τῇ βάσει τῶν χρυσῶν προσωπίδων. Ἀπέθανε μὲ τὴν πλάνην ὅτι εἶχεν εὐτυχήσει νὰ φέρῃ εἰς φῶς τὰ ἱερὰ λείψανα τοῦ ἀρχιστρατήγου τῆς Τρωικῆς ἐκστρατείας, ὡς ὁ Κολόμβος ἀπέθανε νομίζων ὅτι εἶχεν ἀνακαλύψει τὰς Δυτικὰς Ἰνδίας. Ἐχρειάσθη κατόπιν πολλῶν δεκαετηρίδων ἐργασία ἵνα καθορισθῇ ὁριστικῶς ἡ ἀξία τῶν ἀνακαλύψεων τοῦ Σλῆμαν καὶ νὰ ἀποδειχθῇ ὅτι τὰ ἀνευρεθέντα ἀρχαῖα ἦσαν κατὰ τέσσαρας αἰῶνας παλαιότερα τῆς ἐποχῆς τοῦ Ἀγαμέμνονος.

Μετὰ τὴν ἐγκατάλειψιν τῶν Μυκηνῶν ὑπὸ τοῦ Σλῆμαν ἀνετέθη ἡ περαιτέρω ἔρευνα τοῦ κυκλικοῦ περιβόλου εἰς τὸν Ἕλληνα ἔφορον Σταματάκην (ἀπὸ Νοεμβρίου 1877 μέχρι τέλους Μαρτίου 1878). Κατὰ τὰς ἐργασίας του ἀνεκάλυψεν οὗτος τὸν ἕκτον τάφον, οὗτινος τὸ περιεχόμενον μετὰ τῶν σκελετῶν, μετακομισθὲν εἰς Ἀθήνας, ἀναπαρεστάθη ἐντὸς τῆς Μυκηναϊκῆς αἰθούσης τοῦ Ἐθνικοῦ μουσείου. Ἀκολουθοῦσιν εἶτα χρονολογικῶς αἱ μεθοδικαὶ ἐργασίαι τοῦ Τσούντα, ὅστις ἀνεκάλυψε τὸ

Digitized by Google

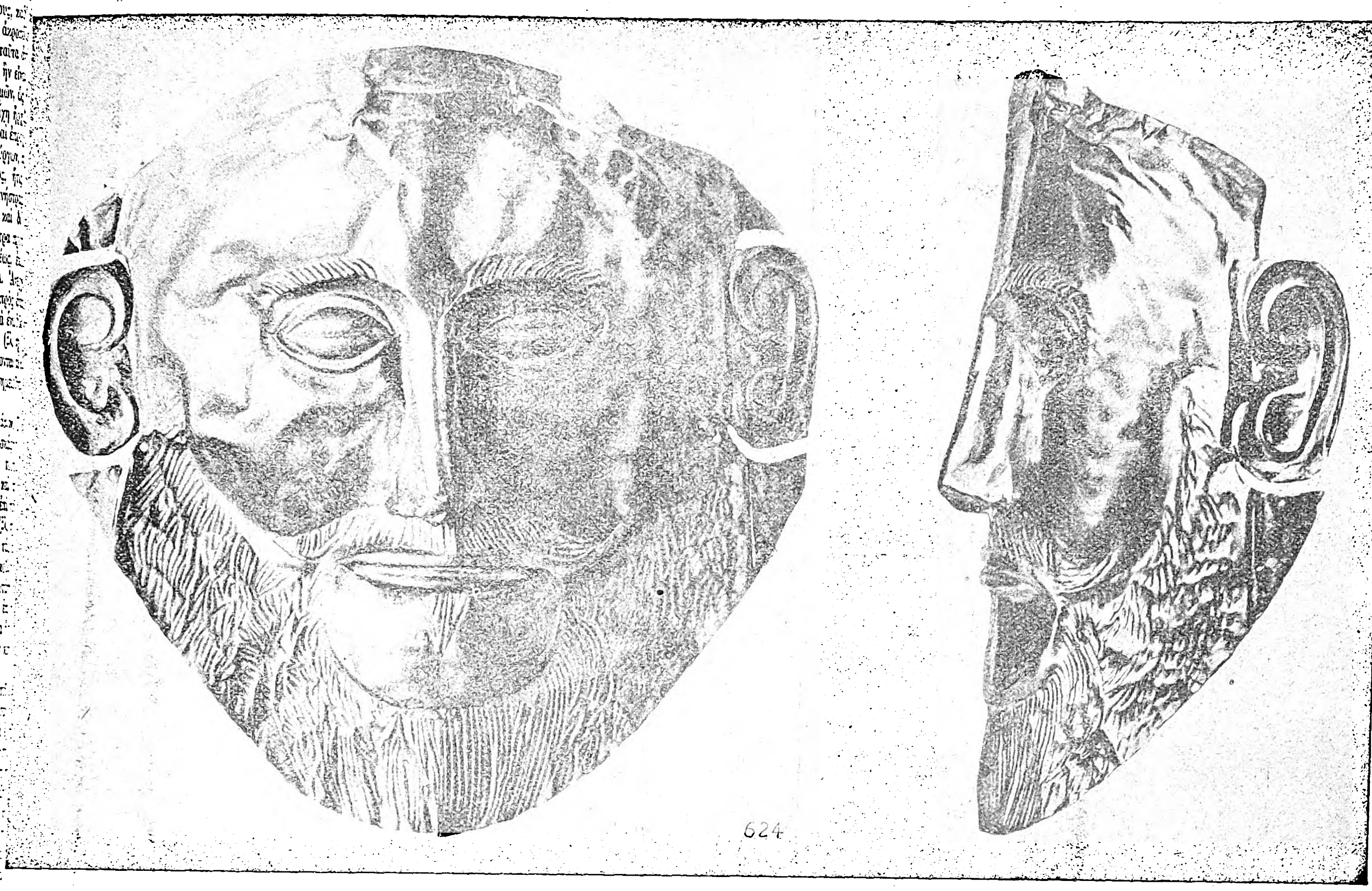

Χρυσῆ προσωπὶς ἐκ τοῦ 5ου βασιλικοῦ τάφου (ὁ «Ἀγαμέμνων» τοῦ Σλῆμαν).

...γυροῦν καὶ χρυσοῦν ῥυτὸν ἐν σχήματι βουκεφαλῆς ἐκ τῶν βασιλικῶν τάφων. — Χρυσοῦν ῥυτὸν ἐν σχήματι λεοντοκεφαλῆς ἐκ τοῦ 4ου βασιλικοῦ τάφου.

Digitized by Google

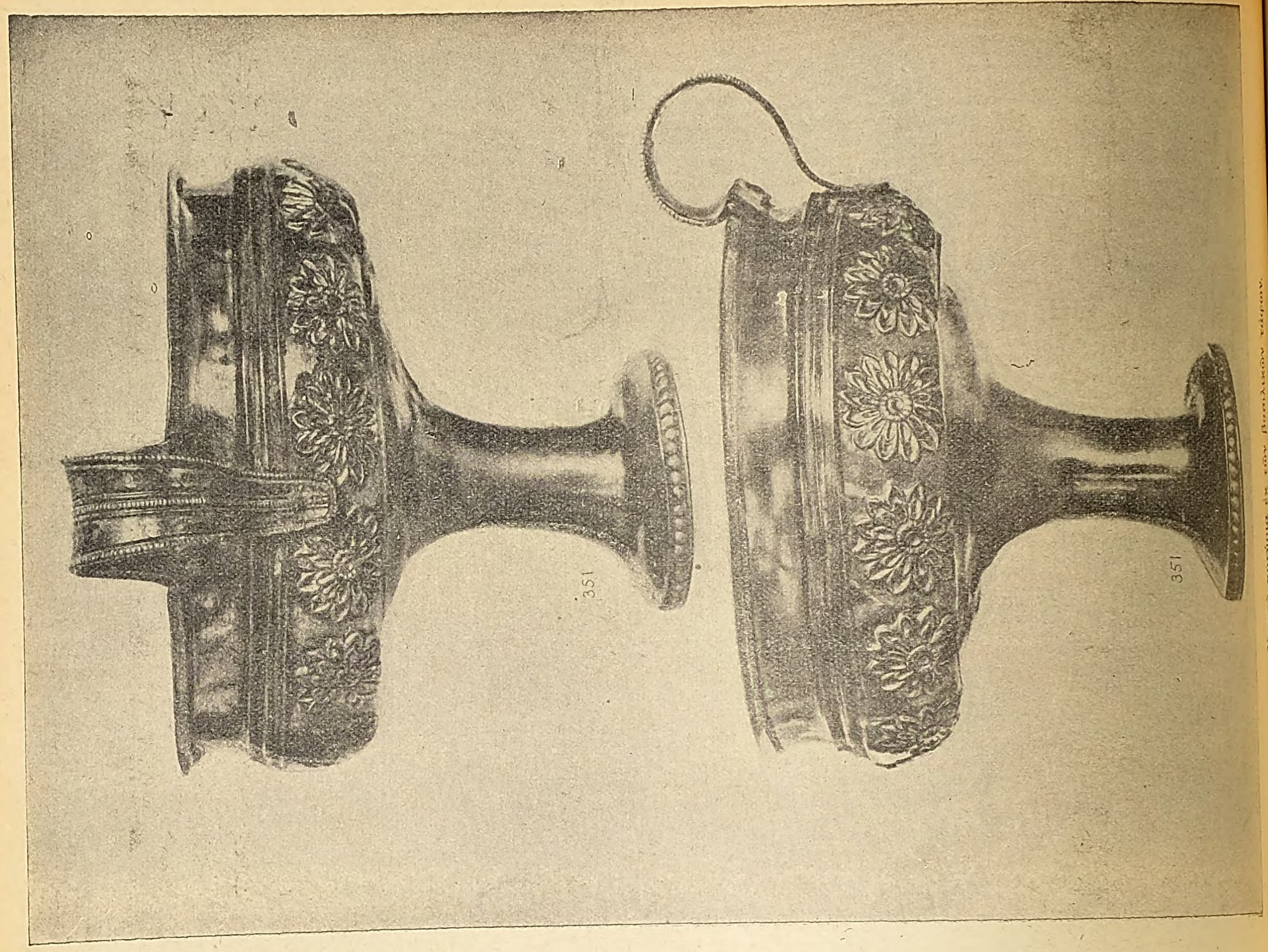


Χρυσᾶ ποτήρια ἐκ τῶν βασιλικῶν τάφων.

Ἐπιτύμβια στήλη ἐκ τῶν βασιλικῶν τάφων.

Digitized by Google

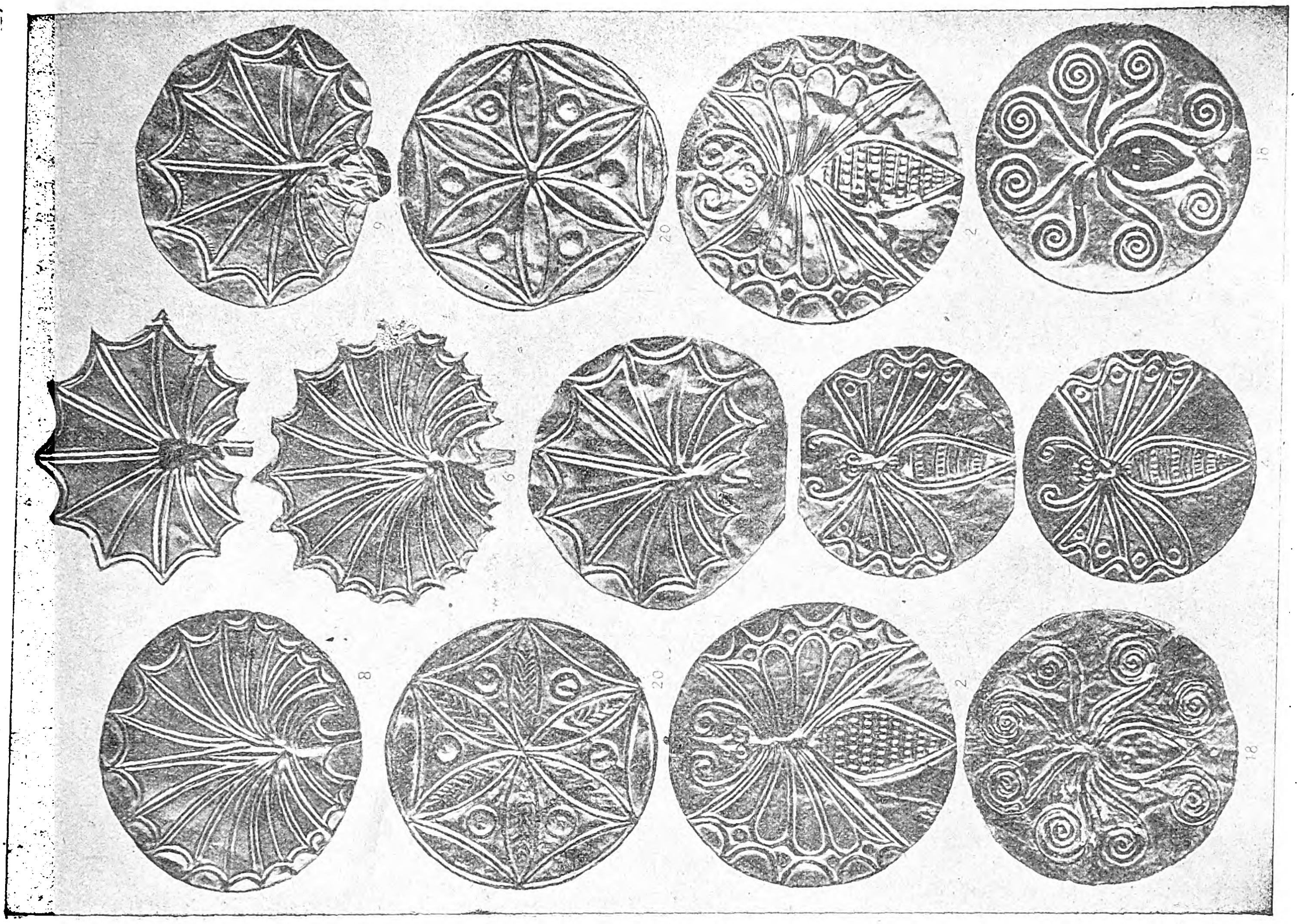

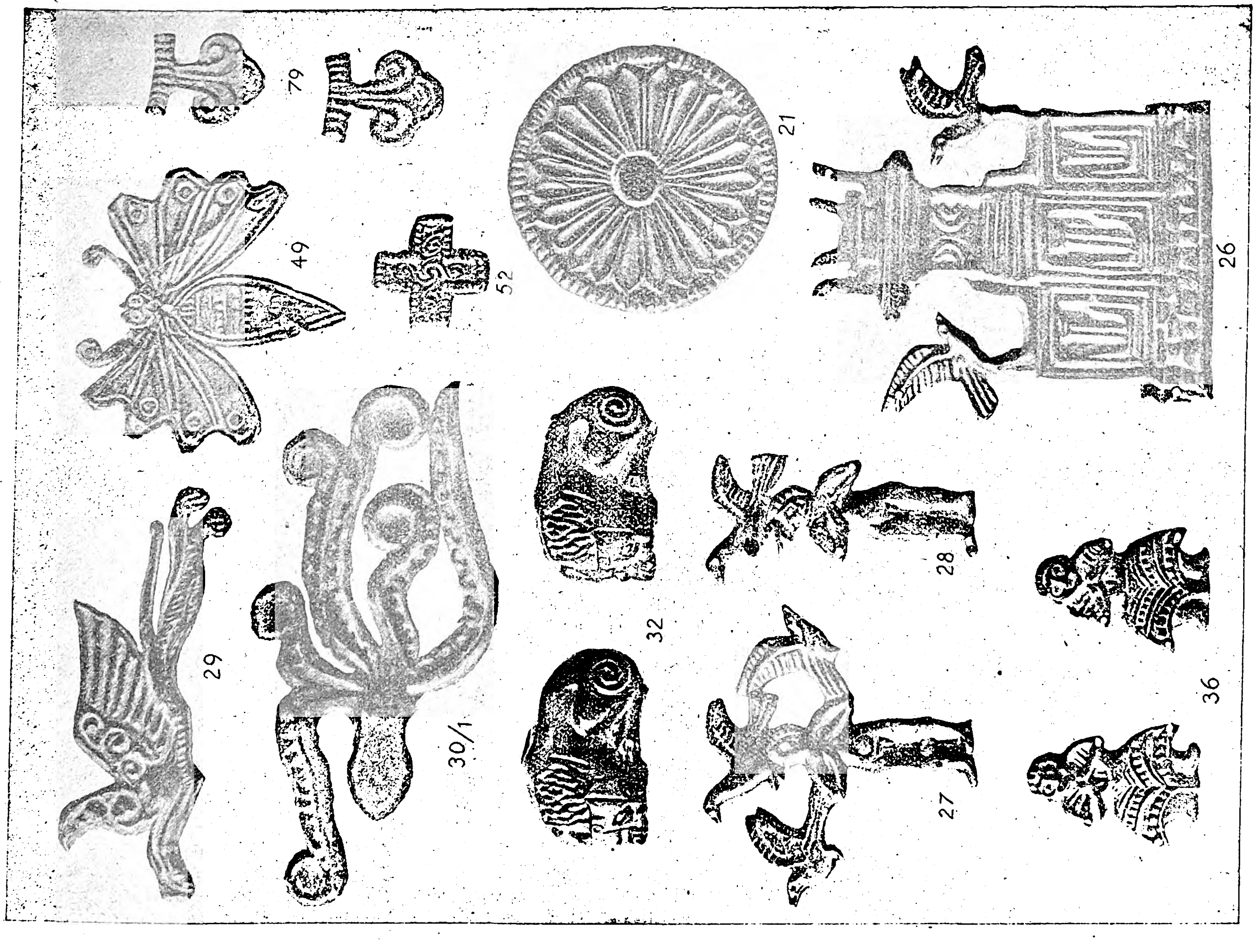


Ἀντικείμενα ἐκ περιτμήτου χρυσοῦ ἐλάσματος.



Digitized by Google

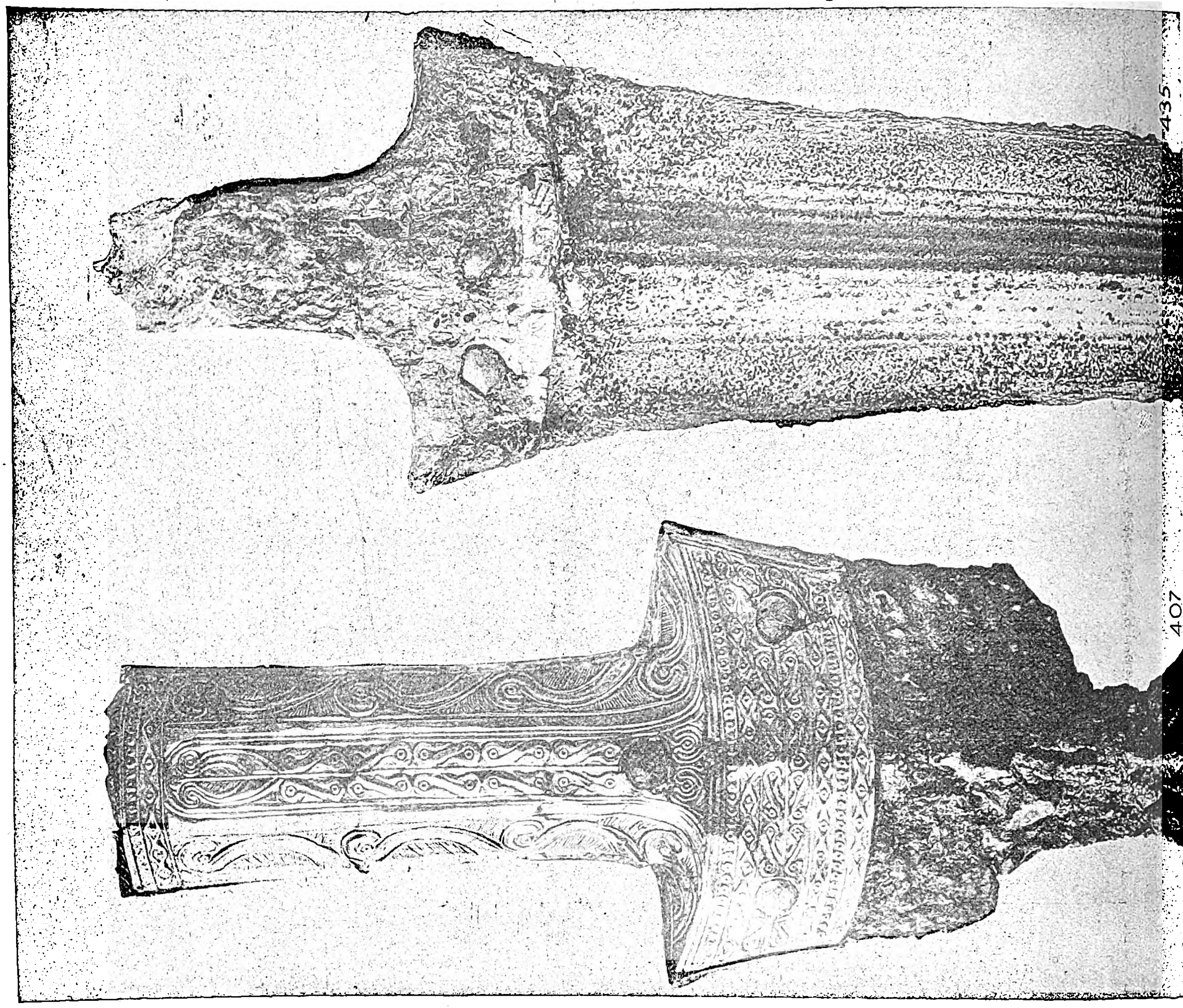


Χρυσοέλληνα ξίφη ἐκ τοῦ 4ου βασιλικοῦ τάφου.

Ξυλίνη κυτὶς ἐπενδεδυμένη διὰ φύλλων χρυσοῦ ἐκ τοῦ 5ου βασιλικοῦ τάφου.

Digitized by Google

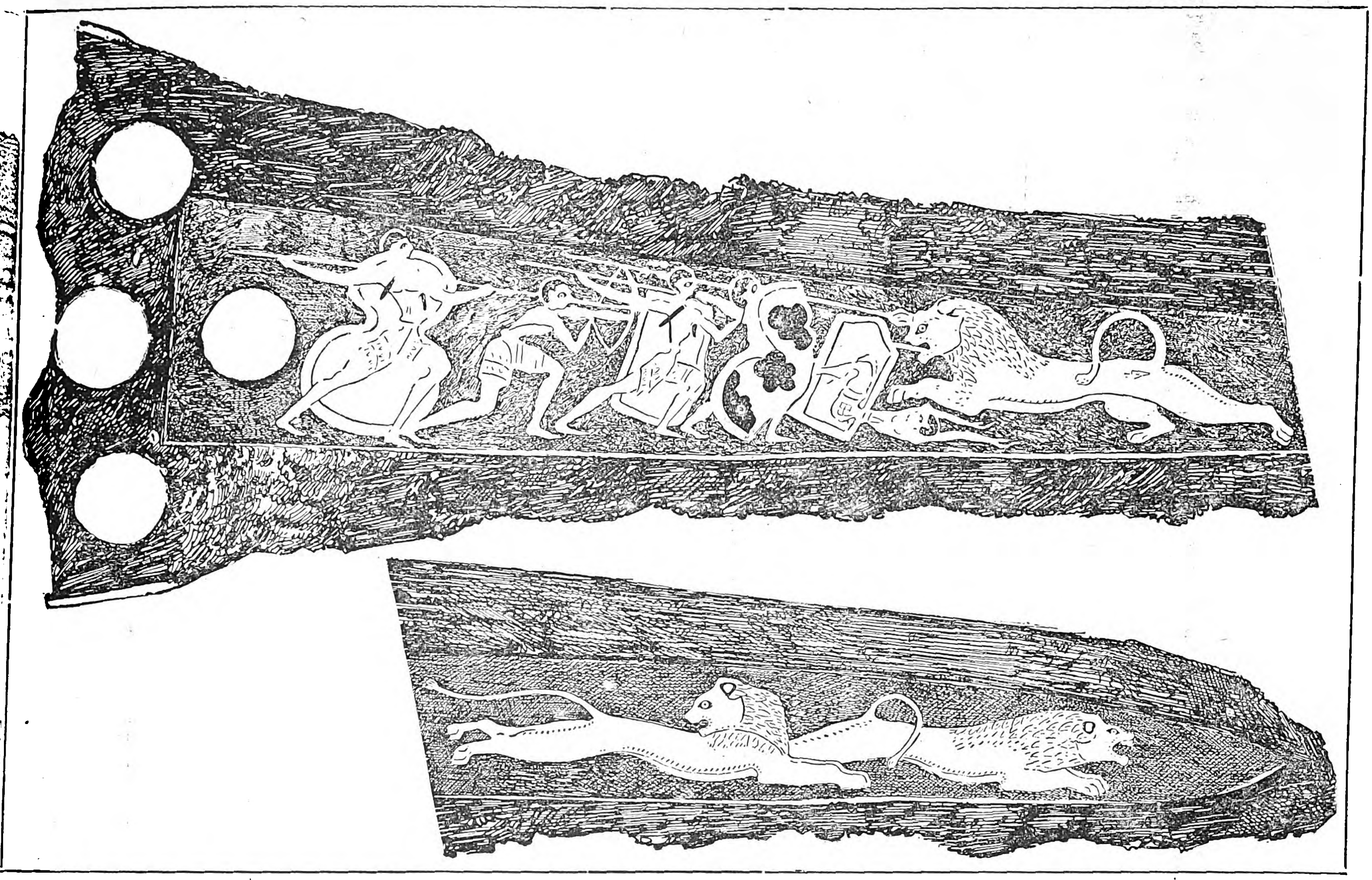

*Ἐγχειρίδιον χαλκοῦν μετ' ἐμπαιστικῆς παραστάσεως θήρας λεόντων (ἐκ τοῦ 4ου βασιλικοῦ τάφου).*

ἀνάκτορον καὶ εἰργάσθη εἰς τὰ νεκροταφεῖα τῆς Κάτω πόλεως (1886 καὶ ἑξῆς). Ἐπηκολούθησαν μικραὶ ἔρευναι ὑπὸ Κεραμοπούλου τῷ 1913 καὶ Rodenwaldt τῷ 1914, μεθ' ὃ ριζικὴν καὶ ἐξονυχιστικὴν ἐπανεξέτασιν τῶν Μυκηνῶν ἀνέλαβεν ἡ ἀγγλικὴ ἀρχαιολογικὴ σχολὴ (1921—1923) διὰ τοῦ τότε διευθυντοῦ αὐτῆς Wace. Εἰς τὴν ἔρευναν ταύτην ὀφείλομεν κυρίως τὰς γνώσεις ἡμῶν περὶ τῆς παλαιοτάτης ἱστορίας τῶν Μυκηνῶν, περὶ ἀκριβεστέρων χρονολογιῶν καὶ περὶ τῆς μορφῆς τοῦ οἰκτρῶς κατεστραμμένου ἀνακτόρου.

Τὰ εὑρήματα ἐκ τῶν ἀνασκαφῶν τῶν Μυκηνῶν, τόσον τῆς ἀκροπόλεως ὅσον καὶ τῆς Κάτω πόλεως, ἂν καὶ καθ' ἑαυτὰ σπουδαιότατα, ἐπισκιάζονται ὑπὸ τῶν ἀπιστεύτων θησαυρῶν, οὓς ἔκρυπτον οἱ ἓξ βασιλικοὶ τάφοι, θησαυρῶν οἵτινες συγκαταριθμοῦνται μεταξὺ τῶν σπουδαιοτάτων κειμηλίων, ἅτινα ηὐτύχησέ ποτε νὰ ἀγάγῃ εἰς φῶς ἡ ἀρχαιολογικὴ ἔρευνα. Πάντες οὗτοι οἱ τάφοι ἀνήκουσιν εἰς τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα, ἔκρυπτον δὲ καὶ οἱ ἓξ ἐντὸς αὐτῶν 19 ἐν συνόλῳ νεκρούς, ἐξ ὧν 9 ἄνδρας, 8 γυναῖκας καὶ 2 νήπια. Ὁ πρῶτος καὶ ὁ τρίτος ἦσαν τάφοι μόνον γυναικῶν. Ὁ τέταρτος ἦτο ὁ μόνος, ὅστις περιεῖχε νεκροὺς ἀμφοτέρων τῶν φύλων, οἱ δὲ λοιποὶ ἦσαν τάφοι ἀνδρῶν. Παλαιότατος πάντων εἶναι ὁ ἕκτος, ὕστερον ἔρχονται κατὰ σειρὰν οἱ δεύτερος, τέταρτος, πέμπτος, τρίτος καὶ πρῶτος. Ἐν τούτοις ἡ ἀπ' ἀλλήλων χρονικὴ ἀπόστασις εἶναι μικρὰ καὶ ἐνῷ ὁ παλαιότατος χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 1600 περίπου, ὁ νεώτατος δὲν κατέρχεται πολὺ κάτω τοῦ 1500 π. Χ. (ἐντὸς τοῦ πρώτου τάφου μόνον εὑρέθησαν μερικὰ ἀγγεῖα τοῦ «θαλασσίου ρυθμοῦ» τῆς ὑστερομινωϊκῆς ἐποχῆς).

Ὑπὲρ τοὺς τάφους ὑπῆρχον ὄρθιαι ἐπιτύμβιοι στῆλαι ἐκ λίθου κογχυλιάτου, ἐξ ὧν ἕνδεκα τοὐλάχιστον ἔφερον γλυπτὴν διακόσμησιν. Οἱ νεκροὶ εἶχον θεοποιηθῆ ἢ τοὐλάχιστον ἐθεωροῦντο ἥρωες, εἰς τοὺς ὁποίους προσεφέροντο θυσίαι καὶ ἐναγισμοὶ μέχρι τέλους τῆς μυκηναϊκῆς ἐποχῆς. Τοῦτο μαρτυροῦσι κτιστὸς κυκλικὸς βόθρος, ἀνακαλυφθεὶς ὑπὸ τοῦ Σλῆμαν ὑπὲρ τὸν τέταρτον τάφον καὶ δυστυχῶς καταστραφείς, ἔτι δὲ μικρὰ σπηλαιώδης κοιλότης ἐντὸς τοῦ βράχου, ἣν ἀνεκάλυψεν ὁ Κεραμόπουλος.

Οἱ νεκροὶ ἔκειντο ἐκτάδην ἐντὸς τῶν τάφων. Οἱ σκελετοὶ κατὰ τὴν ὥραν τῆς ἀνακαλύψεως διετηροῦντο καλῶς, ἂν καὶ εὐθὺς κατόπιν διελύθησαν εἰς κόνιν. Εἰς μίαν μάλιστα περίπτωσιν φαίνεται ὅτι ἀτελής τις ταρίχευσις εἶχε συντελέσει, ὥστε εἷς νεκρὸς νὰ διατηρῇ ἔτι καὶ λείψανα σαρκῶν. Τούτου εἰκόνα ἐδημοσίευσεν ὁ Σλῆμαν, κατ' ἐλαιογραφίαν γενομένην εὐθὺς μετὰ τὴν ἀνακάλυψιν. Τινῶν ἐκ τῶν νεκρῶν τὰ πρόσωπα ἐκαλύπτοντο ὑπὸ χρυσῶν προσωπίδων καὶ ἐνίοτε τὰ στήθη ὑπὸ χρυσῶν ἐλασμάτων. Αἱ προσωπίδες εἶναι ἀδέξια ἔργα τῆς στιγμῆς, γενόμενα διὰ σφυρηλασίας, ἐν τούτοις εἶναι καταφανὴς ἡ προσπάθεια ὅπως ἀποδοθῶσι τὰ χαρακτηριστικὰ ἑκάστου νεκροῦ. Κατὰ τὴν σχετικὴν προσωπίδα εἷς ἐκ τῶν νεκρῶν ἔφερε μύστακα καὶ οὐχὶ μακρὸν γένειον, εὐγενῆ κατατομὴν μετὰ κανονικῶν καὶ αὐστηρῶν χαρακτηριστικῶν καὶ ἦτο ὡρίμου ἤδη, ἀλλ' οὐχὶ καὶ περασμένης ἡλικίας. Εἶναι ὁ «Ἀγαμέμνων» τοῦ Σλῆμαν.

Πάντες ἢ σχεδὸν πάντες οἱ ἐντὸς τῶν ἓξ τάφων νεκροὶ ἦσαν πλουσιώτατα ἐκτερισμένοι, ἀλλ' ὁ πάντων πλουσιώτατος ἦτο ὁ τέταρτος τάφος, ὅστις εἶναι καὶ ὁ μέγιστος. Τὰ εὑρήματα σύγκεινται ἐξ ὀλίγων πηλίνων ἀγγείων καὶ ἐξ ὑπερμεγέθους μεταλλικοῦ πλούτου ἢ ἄλλων ἀντικειμένων ὑλικῆς εὐημερίας. Δυστυχῶς τὸ κλῖμα τῆς Ἑλλάδος δὲν εὐνοεῖ, ὡς τὸ τῆς Αἰγύπτου, τὴν διατήρησιν φθαρτῶν ὑλῶν. Διὰ τοῦτο δὲν πρέπει νὰ λησμονῶμεν ὅτι περιῆλθον εἰς χεῖράς μας μόνον τὰ ἐκ διαρκεστέρων ὑλῶν ἀντικείμενα. Ἐνδύματα καὶ ὑφάσματα, ξύλινα καὶ δερμάτινα σκεύη ἢ ὅπλα, ἀποθέματα τροφῶν καὶ ἄλλα ἀνάλογα εἴδη, τὰ ὁποῖα εἶχον τεθῆ ἐντὸς τῶν τάφων, ἀπώλοντο διὰ παντός. Χαλκᾶ καὶ ἀργυρᾶ σκεύη ἢ ἐργαλεῖα ἐφθάρησαν ἐν ὅλῳ ἢ ἐν μέρει ὑπὸ τῆς ὀξειδώσεως, ἀντικείμενα δ' ἐξ ἠλέκτρου, φαγεντιανῆς, ᾠοῦ στρουθοκαμήλου, ὀστοῦ κλπ. ἐφθάρησαν ἐπίσης μεγάλως. Ἐν τούτοις, παρ' ὅλα ταῦτα ὁ περισωθεὶς πλοῦτος τῶν τάφων εἶναι ὑπέρογκος, μόνος δ' ὁ χρυσὸς ἐκ τῶν ἓξ τάφων ἔχει βάρος περὶ τὰ 15 χιλιόγραμμα.

*Ἐλεφαντίνη κεφαλὴ πολεμιστοῦ.*

[Τὸ κράνος τοῦ τύπου τούτου κατεσκευάζετο ἐξ ὀδόντων ἀγριοχοίρου συρραπτομένων παρ' ἀλλήλους.]

Τὰ ἐκ τοῦ πολυτίμου τούτου μετάλλου εὑρήματα εἶναι ἀφθονία ποτηρίων καὶ ἄλλων ἀγγείων ἢ σκευῶν, μεγάλα στέμματα, διαδήματα καὶ «ἡμιδιαδήματα», πλεῖστα κοσμήματα, ὡς δακτύλιοι, ψῆφοι περιδεραίων, ἐνώτια, καρφίδες κλπ., πλεῖστα ἐλάσματα μετὰ παντοίων ἐκτύπων παραστάσεων, πολλαὶ ἑκατοντάδες μικρῶν στρογγύλων δισκαρίων μὲ διάφορα κοσμήματα, χρησιμοποιηθέντων πρὸς στολισμὸν τῶν νεκρῶν, περιβραχιόνια καὶ ἄλλα ἀγνωστοτέρας χρήσεως κοσμήματα, παντοῖαι ἐπενδύσεις τελαμώνων, θηκῶν, κομβίων κλπ., τέλος δ' αἱ μνημονευθεῖσαι προσωπίδες καὶ ἐλάσματα τοῦ στήθους. Ἀκολουθοῦσιν εἶτα μέγα πλῆθος χρυσοποικίλτων ὅπλων, μεγάλων καὶ μικρῶν χαλκῶν ἀγγείων, ἀντικειμένων ἐξ ἡμιπολυτίμων λίθων, ἐξ ἠλέκτρου, φαγεντιανῆς, ὀστοῦ, ᾠῶν στρουθοκαμήλου καὶ παντοίας ἄλλης ὕλης, τέλος λείψανα μολυβδίνων καὶ ἀργυρῶν σκευῶν.

Πάντων τούτων τῶν εὑρημάτων ἡ σπουδαιότης εἶναι μεγάλη, ἀπὸ τῆς μιᾶς ἢ τῆς ἄλλης ἀπόψεως, ἀλλὰ μερικὰ ἐξ αὐτῶν ἔχουσιν ὅλως ἰδιαιτέραν σημασίαν ὡς ἔργα τέχνης ἢ ἱστορικὰ μνημεῖα. Τοιαῦτα εἶναι χρυσοῦν ρυτὸν ἐν σχήματι λεοντοκεφαλῆς, ἕτερον τοιοῦτον ἐξ ἀργύρου καὶ χρυσοῦ, ἐν σχήματι κεφαλῆς ταύρου, μερικὰ ποτήρια καὶ αἱ λαβαὶ ξιφῶν τινων ἢ ἐγχειριδίων, τέλος δὲ τὰ περίφημα ὅπλα πολυτελείας, ἤτοι ξίφη καὶ πρὸ παντὸς ἐγχειρίδια, ὧν αἱ λεπίδες ἔφερον ἔξοχον ἐμπαιστικὴν διακόσμησιν, ἤτοι ἀποτελουμένην ἐκ λεπτῶν φυλλαρίων χρυσοῦ, ἀργύρου, κράματος ἀμφοτέρων τῶν μετάλλων καὶ μελανῆς ὕλης (niello). Οὕτως ὁ τεχνίτης κατώρθωνε διὰ τῶν ὑλικῶν τούτων, τὰ ὁποῖα καταλλήλως ἐστερέωνεν ἐντὸς τῶν χαλκῶν λεπίδων, νὰ παραγάγῃ κοσμήματα καὶ παραστάσεις διαφόρους, αἵτινες δικαίως ὠνομάσθησαν «ἡ διὰ μετάλλου ζωγραφική». Μία ἐκ τῶν περιφημοτέρων παραστάσεων εἶναι ἡ τοῦ ἐγχειριδίου, τὸ ὁποῖον εἰκονίζει θήραν λεόντων ἐκ μέρους Μυκηναίων κυνηγῶν, κεκαλυμμένων διὰ τῶν πελωρίων των ἀσπίδων. Πάντες οἱ λέοντες ἔχουσι τραπῆ εἰς φυγήν, εἷς ὅμως ἀνθίσταται ἔτι καὶ ὑπὸ τοὺς ὄνυχάς του κεῖται ἐκτάδην εἷς ἀτυχήσας κυνηγός. Οἱ συνάδελφοί του ἀπεγνωσμένως καὶ γενναίως προσπαθοῦν ἔτι νὰ τὸν σώσουν, ἐπιτιθέμενοι κατὰ τοῦ θηρίου διὰ τόξων καὶ ἀκοντίων, ὑφ' ὧν τοῦτο ἔχει ἤδη θανασίμως τραυματισθῆ. Σπουδαιότατον ἱστορικὸν μνημεῖον εἶναι ἕν, μικρὸν δυστυχῶς, τεμάχιον ἐκ καταστραφέντος ἀργυροῦ ρυτοῦ, τὸ ὁποῖον διασῴζει ἐν ἐκτύπῳ ἐργασίᾳ πολεμικὴν σκηνήν: Μία ὠχυρωμένη πόλις παριστάνεται ἐν ἀποπείρᾳ προσβολῆς ἐκ μέρους μυκηναϊκῶν πολεμιστῶν, ἐρχομένων ἀπὸ θαλάσσης. Οἱ κάτοικοι ἐξέρχονται γυμνοὶ καὶ μάχονται διὰ σφενδονῶν καὶ τόξων ἔξω τῶν τειχῶν, παρὰ τὴν θάλασσαν, προσπαθοῦντες νὰ ἐμποδίσουν τὴν ἀπόβασιν, ἐνῷ ἐπὶ τῶν ἐπάλξεων ἵστανται ὀλολύζουσαι γυναῖκες. Δυστυχῶς εἶναι πολὺ μικρὸν τὸ τεμάχιον, ἵνα δυνηθῇ τις νὰ κρίνῃ ἂν οἱ μυκηναϊκοὶ πολεμισταὶ παριστάνωνται ἐν ἐπιτυχεῖ ἀποβάσει ἢ μᾶλλον ἀποσύρωνται πρὸς τὴν ἀνοικτὴν θάλασσαν ἐπὶ τῶν πλοίων των ἐν τάχει, κατόπιν ἀποτυχούσης ἀποπείρας. Διὰ τὴν σπουδαιότητα τοῦ τεμαχίου πλεῖστα ἔχουσι γραφῆ, ἀλλ' ἡ γενικὴ ἑρμηνεία τῆς παραστάσεως παραμένει προβληματική.

Πάντα τὰ ἀνωτέρω εὑρήματα διακρίνονται ἐμφανῶς εἰς δύο κατηγορίας: Εἰς τὰ γνήσια μινωϊκὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα εἴτε εἰσήχθησαν ἐκ Κρήτης, εἴτε ἐποιήθησαν ἐπὶ τόπου ὑπὸ Κρητῶν τεχνιτῶν, καὶ εἰς τὰ ἔργα τῆς ἐντοπίας τέχνης, τὰ ὁποῖα δεικνύουσιν ὀλίγον μὲν γηγενῆ χαρακτῆρα, πολλὴν

Digitized by Google

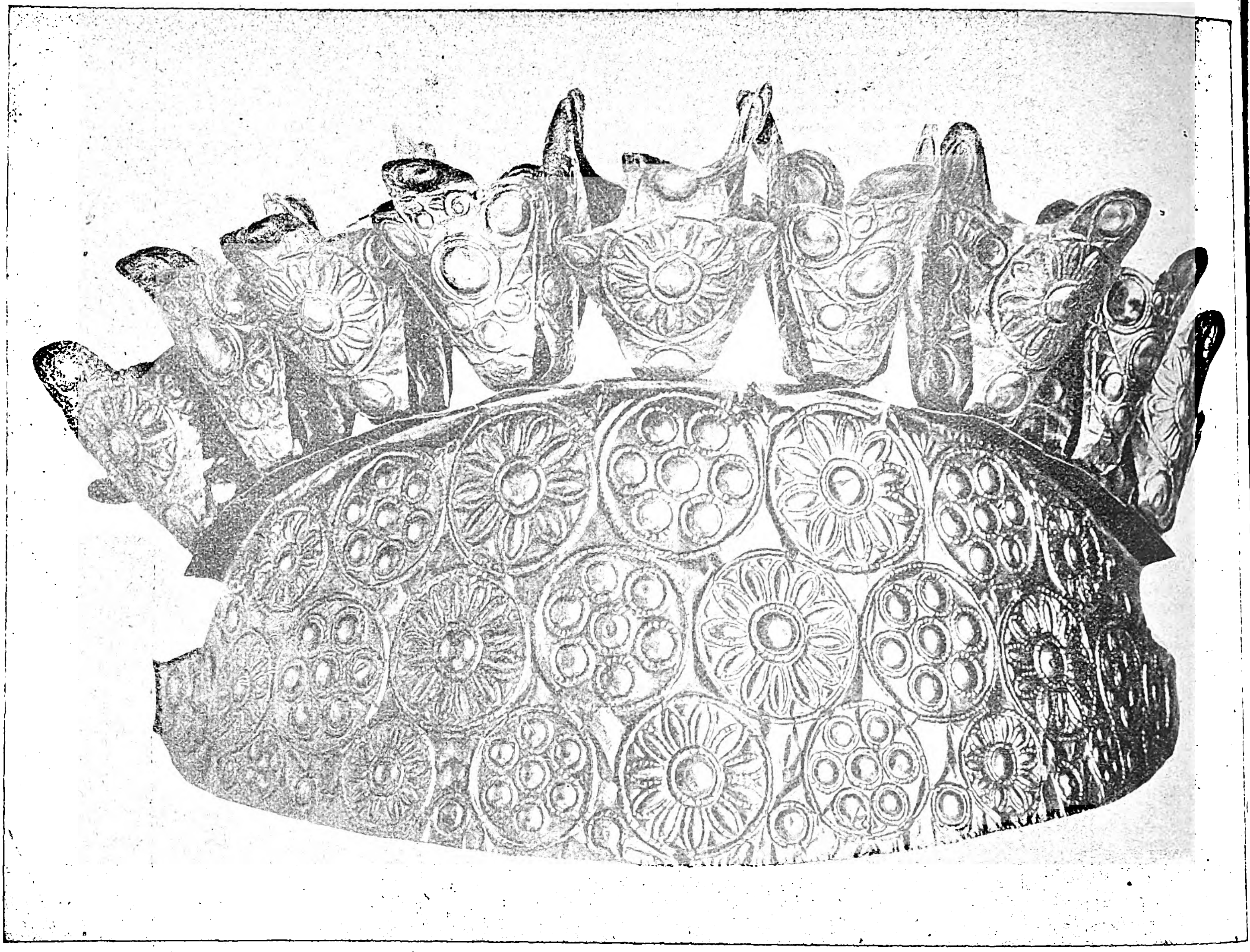

Χρυσοῦν στέμμα ἐκ τοῦ 3ου βασιλικοῦ τάφου.

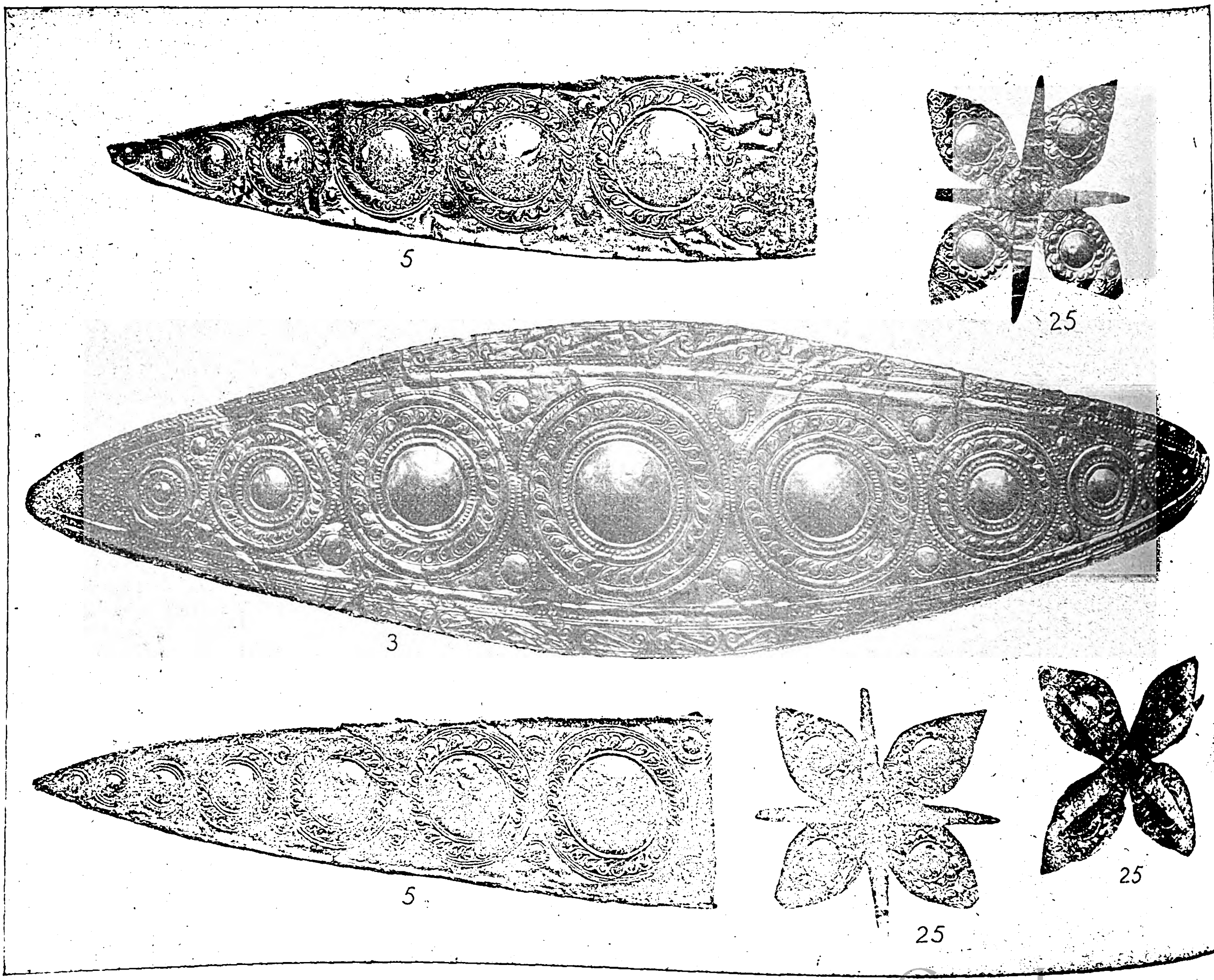


Χρυσοῦν διάδημα καὶ ἡμιδιαδήματα ἐκ τοῦ 3ου τάφου.

Digitized by Google

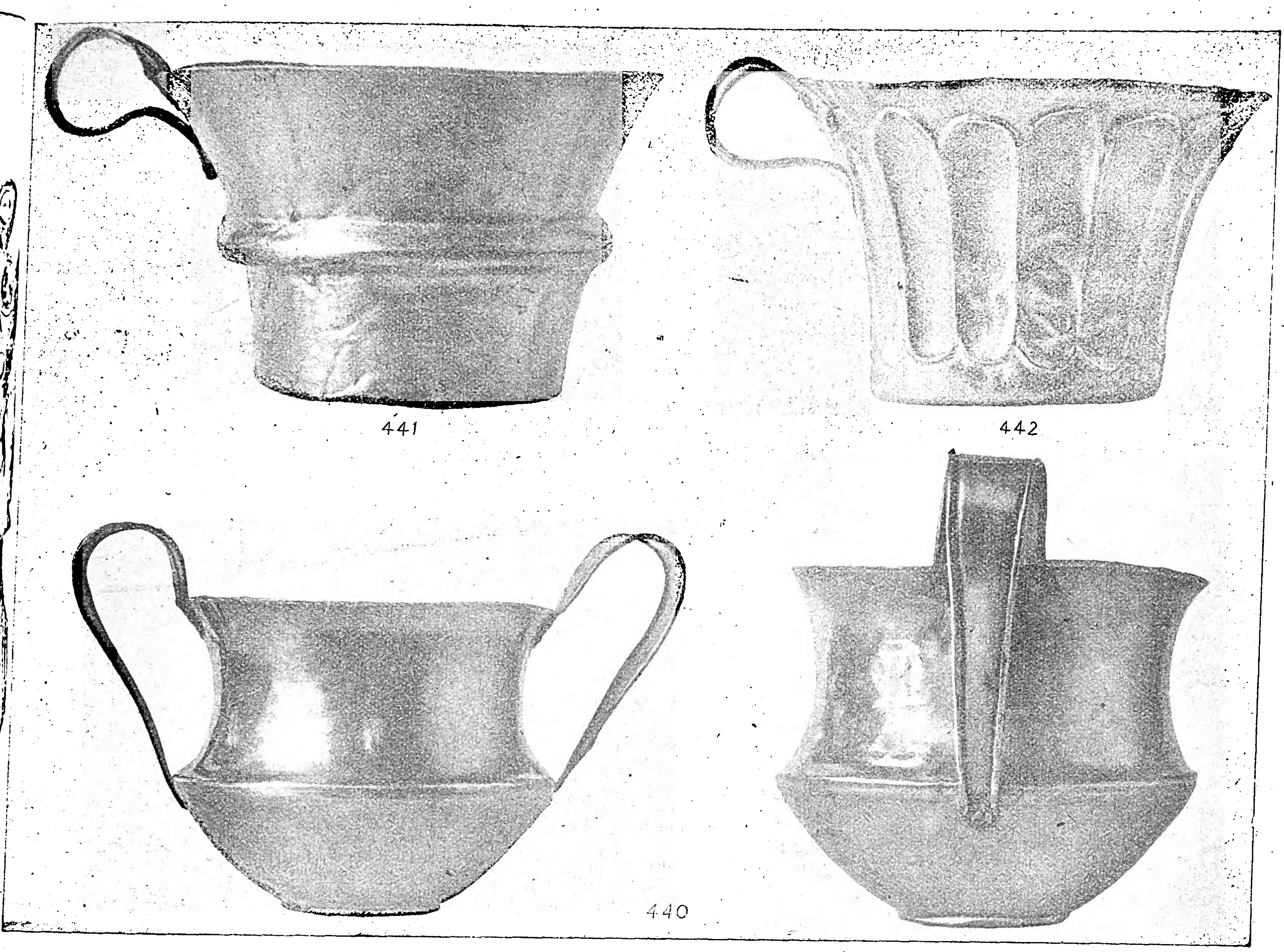


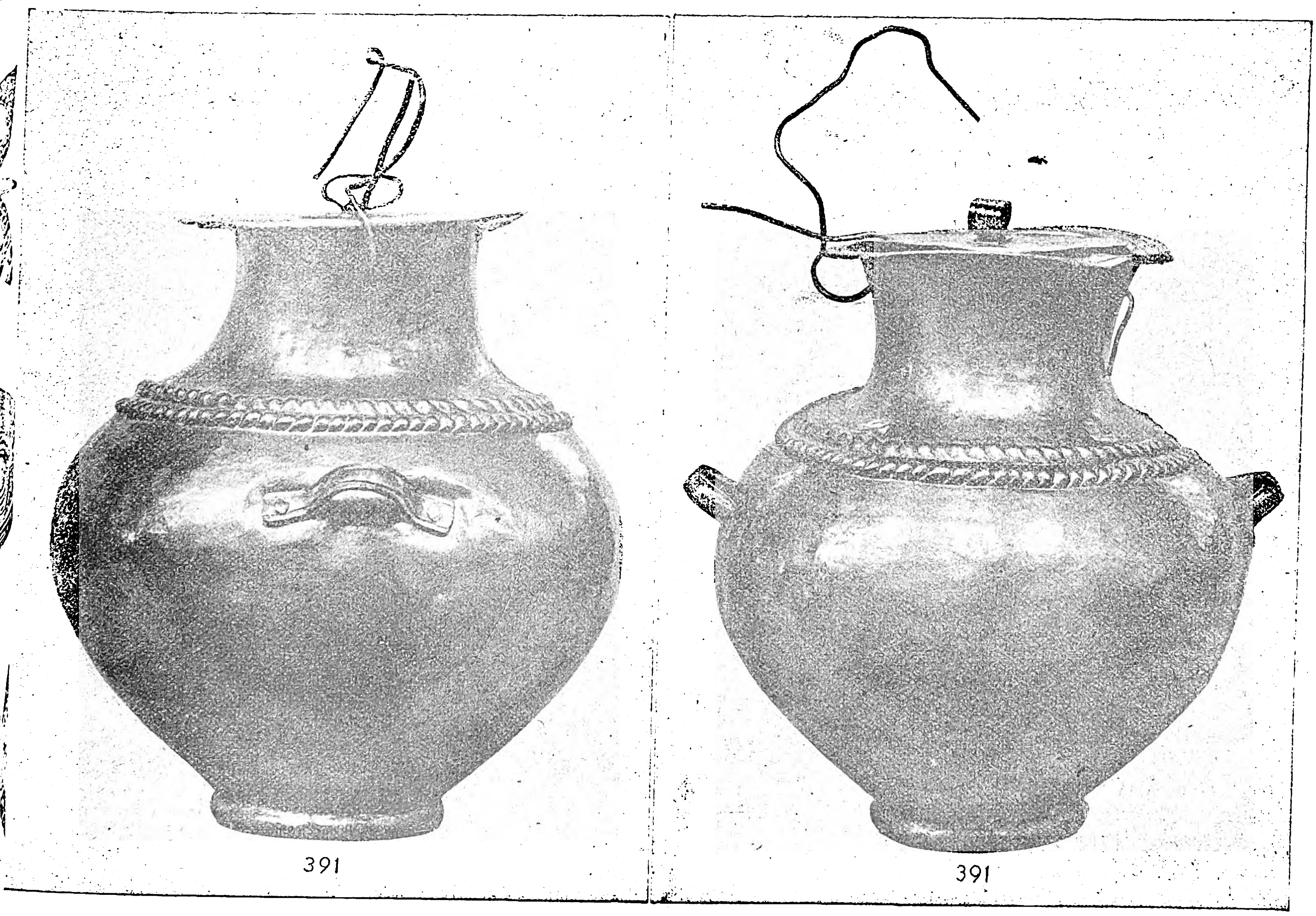


Χρυσᾶ ποτήρια καὶ σκεύη ἐκ τῶν βασιλικῶν τάφων.

Digitized by Google

δὲ μινωϊκὴν ἐπίδρασιν καὶ κατὰ τὸ πλεῖστον εἶναι ἀδέξιαι ἀπομιμήσεις μινωϊκῶν προτύπων. Πλὴν τούτων ὑπάρχουσι καὶ μεμονωμένα ἔργα ἢ προϊόντα (ἤλεκτρον), ὑποδεικνύοντα τὴν σχέσιν πρὸς τὰς βορείας εὐρωπαϊκὰς χώρας. Ἡ παλαιὰ θεωρία περὶ τῆς ὑπὸ φοινικικὴν ἐπίδρασιν γενέσεως τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ κατέπεσε πρὸ πολλοῦ, ἀφ' ὅτου ἀνεκαλύφθη ὁ μινωϊκὸς πολιτισμὸς καὶ οὐδεὶς πλέον πιστεύει εἰς αὐτήν, πλὴν τῶν περὶ τὸν Δαϊρπφελδ (βλ. καὶ *Μυκηναϊκὸς* πολιτισμός).

Ἐκ τῶν ἄλλων εὑρημάτων τῶν ἀνασκαφῶν τῶν Μυκηνῶν τὰ λείψανα τῶν τοιχογραφιῶν ἐμνημονεύθησαν ἤδη ἐν τῇ τοπογραφίᾳ. Μνημονευτέον ἔτι ἑνὸς σπουδαίου πηλίνου κρατῆρος μετὰ παραστάσεως πολεμιστῶν, ὅστις εὑρέθη ὑπὸ τοῦ Σλήμαν εἰς τὴν ὁμώνυμον οἰκίαν. Αἱ ἀνασκαφαὶ ἐν τῇ Κάτω πόλει δὲν ἔφερον εἰς φῶς ἐξαιρετικῶς πολυτίμους θησαυρούς, διότι οἱ μὲν μεγαλοπρεπεῖς θολωτοὶ τάφοι εἶχον, ὡς ἐλέχθη ἤδη, συληθῆ πρὸ πολλοῦ, οἱ δὲ θαλαμωτοὶ ἀντιπροσωπεύουν τὴν ἀστικὴν κοινωνίαν καὶ ἦσαν μετρίως πλούσιοι, ὁσάκις καὶ οὗτοι ἦσαν ἀσύλητοι. Οὗτοι ἀπέδωκαν τὰ συνήθη εὑρήματα, ἤτοι πήλινα ἀγγεῖα, χαλκᾶ ὅπλα, σκεύη καὶ ἐργαλεῖα, κοσμήματα ἐκ πολυτίμων καὶ ἡμιπολυτίμων ὑλῶν, ἐλεφάντινα καὶ

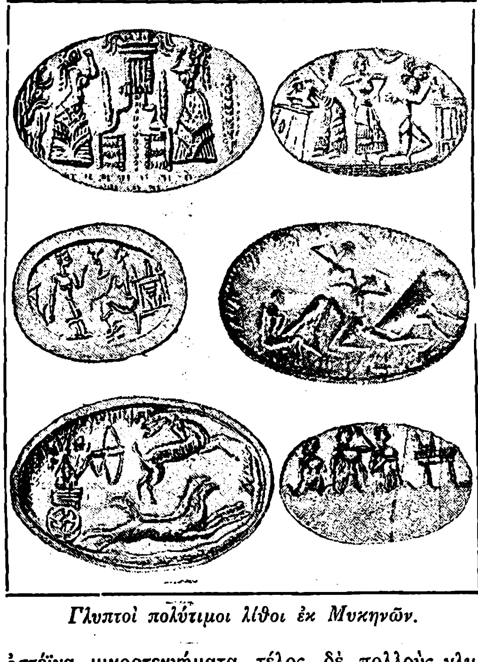

*Γλυπτοὶ πολύτιμοι λίθοι ἐκ Μυκηνῶν.*

ὀστέϊνα μικροτεχνήματα, τέλος δὲ πολλοὺς γλυπτοὺς λίθους. Ἰδιαιτέρως δέον νὰ μνημονευθῇ ἀργυροῦν ποτήριον μετ' ἐμπαιστικῆς παραστάσεως ἀνδρικῶν πωγωνοφόρων κεφαλῶν καὶ ἐπιτύμβιος στήλη πωρίνη, φέρουσα γραπτοὺς πλὴν ἄλλων καὶ πολεμιστὰς ἐντελῶς ἀναλόγους πρὸς τοὺς τοῦ μνημονευθέντος κρατῆρος.

Χωριστῆς μνείας ἄξια εἶναι τὰ σημειωθέντα αἰγυπτιακῆς προελεύσεως εὑρήματα κατὰ τὰς ἀνασκαφὰς τῶν Μυκηνῶν, διότι τῇ βοηθείᾳ τούτων ἐπετεύχθη ἡ ἀκριβεστέρα χρονολόγησις τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Τοιαῦτα εἶναι: Μικρὸς πίθηκος ἐκ κυανῆς ὑαλομάζης, εὑρεθεὶς ἐν τοῖς ἐρειπίοις τῆς ἀκροπόλεως καὶ φέρων ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ βραχίονος τὴν δέλτον τοῦ φαραὼ Ἀμενόφιος τοῦ Β΄ (1447—1420 π. Χ.). Ἀγγεῖον ἐκ φαγεντιανῆς εὑρεθὲν ἐντὸς θαλαμωτοῦ τάφου τῆς Κάτω πόλεως καὶ φέρον τὴν δέλτον Ἀμενόφιος τοῦ Γ΄ (1411—1375). Τοῦ αὐτοῦ βασιλέως τὸ ὄνομα φέρουσιν ἕτερα τεμάχια φαγεντιανῆς, εὑρεθέντα ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως ἐν τοῖς ἐρειπίοις οἰκιῶν, τὴν ἰδίαν δὲ τέλος προέλευσιν ἔχει σκαραβαῖος φέρων τὸ ὄνομα τῆς συζύγου τούτου Τῖ ἢ Τεγέ. Ἐκ τούτων ἐξηκριβώθη ὅτι ἡ ὑστερωτέρα μυκηναϊκὴ ἐποχή, ἐν τῷ περιβάλλοντι τῆς ὁποίας εὑρέθησαν πάντα τὰ ἀνωτέρω ἔργα, ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὴν ὑστερωτέραν 18ην αἰγυπτιακὴν δυναστείαν, καθ' ἣν ἔζησαν οἱ ἀνωτέρω φαραώ, ἤτοι τὸ τέλος τοῦ ΙΕ΄ καὶ τὴν ἀρχὴν τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος π. Χ.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἀκριβῶς ταύτην συντρίβεται ὁριστικῶς ἡ δύναμις τῆς Κνωσοῦ καὶ τὴν διεθνῆ αὐτῆς θέσιν καταλαμβάνουν αἱ Μυκῆναι, αἵτινες μέχρι τέλους τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ διατηροῦν τὴν ὑπεροχήν των ὡς κέντρον ἀκμῆς, δυνάμεως καὶ δόξης. Σχετικὴ παρακμὴ ἐπακολουθεῖ ἐντὸς ὀλίγου ὡς πρὸς τὴν τέχνην, ἀλλ' οὐχὶ καὶ ὡς πρὸς τὴν πολιτικὴν δύναμιν, ἥτις αὐξάνει διαρκῶς. Τὰ ὑπερήφανα κυκλώπεια τείχη εἶναι τὸ ἐπιτυχέστερον ἔμβλημα τῆς ὑλικῆς ταύτης δυνάμεως τῶν μυκηναϊκῶν πόλεων. Μεταξὺ δὲ τούτων τὴν πρωτίστην καὶ ἡγεμονεύουσαν θέσιν ἔσχον πάντοτε αἱ Μυκῆναι, αἵτινες οὕτως ὑπῆρξαν διὰ τὸν μυκηναϊκὸν πολιτισμὸν ἀκριβῶς ὅ,τι ὑπῆρξεν ἡ Κνωσὸς διὰ τὸν μινωϊκὸν τοιοῦτον.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Τὰς πρώτας ἀρχαιολογικὰς εἰδήσεις περὶ Μυκηνῶν μᾶς δίδει ὁ ἀρχαῖος συγγραφεὺς Παυσανίας ὁ Περιηγητὴς (Β΄ αἰὼν μ. Χ.). Ἐκ τῶν νεωτέρων περιηγητῶν πολλοὶ ἀνέγραψαν εἰδήσεις περὶ τῆς πόλεως, ἐξ ὧν οἱ σπουδαιότεροι εἶναι ὁ *Dodwell* κατὰ τὸ 1801 — 1806 («Cyclopean and Pelasgic remains»), ὁ λόρδος *Elgin* κατὰ τὸ 1802, ὁ *Leake* κατὰ τὸ 1806 («Morea» τόμ. 2), ὁ *Gell* κατὰ τὸ 18 0 («Argolis») καὶ 1816 («Itinerary»), ὁ *Pouqueville* κατὰ τὸ 1813 («Voyage en Morée etc.»), ὁ *Blouet* κατὰ τὸ 1833 («Expédition Scientifique de Morée» τόμ. 2) καὶ ἄλλοι πολλοί. Συστηματικὸν βιβλίον ἐδημοσίευσε πρῶτος ὁ *H. Schliemann*, κατόπιν τῶν ἀνασκαφῶν του, ἐκδοθὲν εἰς πλείονας γλώσσας (ἡ γερμανικὴ ἔκδοσις «Mykenae» 1878). Ἀκολουθοῦσι τὸ γλαφυρὸν βιβλίον τοῦ *Χ. Τσούντα* «Μυκῆναι καὶ Μυκηναῖος πολιτισμὸς» (1893) καὶ *Tsountas-Manatt* «The Mycenaean Age» εἰς ἐπανειλημμένας ἐκδόσεις. Διὰ τὴν τοπογραφίαν τῆς πόλεως καὶ τῶν πέριξ χρησιμεύουσιν οἱ ἐξαίρετοι χάρται τοῦ λοχαγοῦ *Steffen*, διὰ τοὺς ὁποίους ἐξέδωκε καὶ ἐπεξηγηματικὸν κείμενον («Karten von Mykenae, Erläutender Text, Berlin» 1884). Μνημονευτέα ἔτι ἐκ βιβλίων: Ὁ 6ος τόμος τῆς «Histoire de l' Art» τῶν *Perrot-Chipiez*—*G. Rodenwaldt* «Der Fries des Megaron von Mykenae» 1921.—British School Annual at Athens, τόμ. 24, σ. 185—200 καὶ ὁλόκληρος ὁ τόμος 25 (1921—1923), ὅστις εἶναι καὶ τὸ σπουδαιότατον τῶν νεωτέρων ἔργων περὶ τῆς τοπογραφίας τῶν Μυκηνῶν.—*A. Evans*, «The Shaft Graves and Bee-hive Tombs of Mycenae» 1929.—*G. Karo*, «Die Schachtgräber von Mykenae» (1930) (μνημειῶδες ἔργον περιλαμβάνον εἰς 175 πίνακας ὁλόκληρον τὸν θησαυρὸν τῶν τάφων τῆς ἀκροπόλεως. Τοῦ κειμένου ἐξεδόθη μόνον τὸ 1ον μέρος, περιγραφὴ τῶν πινάκων). Ἐκ τῶν ἀπειραρίθμων ἐργασιῶν εἰς περιοδικὰ ἀναφέρονται ἐνταῦθα μόνον αἱ κυριώτεραι ἀνασκαφικαὶ ἐκθέσεις τοῦ Τσούντα εἰς τὰ Πρακτικὰ τῆς Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας 1886—1887 καὶ τὴν Ἀρχαιολογικὴν Ἐφημερίδα 1887 καὶ ἐφεξῆς (περαιτέρω βιβλιογραφίαν βλέπε καὶ ἐν τῷ ἄρθρῳ *Μυκηναϊκὸς Πολιτισμός*).

ΣΠ. Ν. ΜΑΡΙΝΑΤΟΣ

— **Μυκῆναι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Εἶναι τὸ πρώην *Χαρβάτι*, κατέχει δὲ τὴν θέσιν τῶν ἀρχαίων Μυκηνῶν. Ἔχει σταθμὸν τοῦ σιδηροδρόμου ΣΠΑΠ, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 268. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μοναστηράκι (Πρίφτανι)*. Χ. Δ.

—**Μυκηνῶν**, *τέως δῆμος* — *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Κουτσοποδίου*, *Μαλανδρινίου*, *Μυκηνῶν*, *Σχινοχωρίου* καὶ *Φύχτιας*. Εἶχε πρωτεύουσαν τὸ *Κουτσοπόδι*, ἠρίθμει δὲ περὶ τοὺς 2.500 κατ. Χ. Δ.

— **Μυκῆναι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κρήτης, περὶ τῆς ὁποίας οὐδὲν θετικὸν γνωρίζομεν. Κατὰ τὴν παράδοσιν (διασωθεῖσαν παρὰ *Velleius*, βιβλ. 1), ὁ Ἀγαμέμνων ριφθεὶς ὑπὸ θυελλῶν εἰς Κρήτην ἵδρυσε τρεῖς πόλεις, ἐξ ὧν εἰς τὰς δύο ἔδωκεν ὀνόματα τῆς πατρίδος, εἰς δὲ τὴν τρίτην ὄνομα ἀναμνηστικὸν τῆς τρωϊκῆς νίκης: *Μυκήνας*, *Τεγέαν*, *Πέργαμον*. Παρὰ Πλινίῳ φέρεται ὁ τύπος *Μύρινα*, ὅστις ἴσως διορθωτέος εἰς *Μυκῆναι*. Ἡ ὕπαρξις τῆς πόλεως ἐν Κρήτῃ εἶναι χαρακτηριστικὴ τῆς εἰσόδου τῶν ἀχαϊκῶν φυλῶν ἐν τῇ νήσῳ, γεγονὸς τὸ ὁποῖον προηγήθη τῆς δωρικῆς καταχτήσεως καὶ σημαίνει τὴν ὁριστικὴν παρακμὴν τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ. ΣΠ. Μ.

**μυκηναϊκός**, *—ή*, *—όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰς Μυκήνας, ὁ τῶν Μυκηνῶν: «μυκηναϊκὰ ἀγγεῖα», «μυκηναϊκὸς πολιτισμός».

— **Μυκηναϊκὴ Ἑλλάς**. Ἡ ἐξάπλωσις τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ ἀνὰ τὰς χώρας τῆς Ἑλλάδος, ἔτι δὲ ἐκτὸς τούτων, εἶναι πολὺ μεγάλη καὶ καταλαμβάνει περισσοτέρας χώρας ἢ ὅσας ἀναφέρουν ἐπὶ παραδείγματι τὰ ὁμηρικὰ ἔπη. Ἡ ἔκτασις αὕτη συμπίπτει πρὸς τοὺς ὑστερωτέρους μυκηναϊκοὺς χρόνους (1400—1200 π. Χ.), ὁπότε ὁ πολιτισμὸς λαμβάνει καὶ ἐξωτερικὴν ἑνιαίαν μορφὴν (βλ. *Μυκηναϊκὴ* Κοινή). Ἐνταῦθα θὰ ἀπαριθμηθοῦν διὰ βραχέων τὰ κυριώτατα μυκηναϊκὰ κέντρα ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τῆς Ἑλλάδος.

*Πελοπόννησος*. Ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς ἔχει εἰσδύσει πανταχοῦ κατὰ μῆκος τῶν ἀκτῶν, καὶ μόνον ἡ Ἀρκαδία φαίνεται ὅτι δὲν ὑπέστη τὴν ἐπίδρασίν του. Ἐκτὸς τῶν κυρίων κέντρων τοῦ Ἀργολικοῦ πεδίου (Μυκῆναι, Τίρυνς, Ἀσπὶς παρὰ τὸ Ἄργος, Ἡραῖον, Ναυπλία καὶ τὰ τελευταίως ὑπὸ τῶν Σουηδῶν ἐξερευνηθέντα κέντρα Μιδέας καὶ Ἀσίνης) ἔχει καὶ ἡ Λακωνικὴ σπουδαῖα κέντρα, ὡς τὸ Βαφειὸ (Ἀμύκλαι), τὸ παρὰ τὴν Σπάρτην Μενελάειον (Θεράπναι), τὸν Κάμπον (Θολωτὸς τάφος) καὶ ἄλλα ἀσημότερα. Τὰ Κύθηρα ἔδωκαν ἐπίσης ἀρκετὰ δείγματα μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ἐν Μεσσηνίᾳ, πλὴν παλαιοτέρων τινῶν ἀσήμων κέντρων, ἠρεύνησαν ὁ Σκιᾶς καὶ ὁ Κουρουνιώτης εἰς Τραγανὰ παρὰ τὴν Πύλον μυκηναϊκὰ λείψανα ἀκροπόλεως καὶ δύο θολωτῶν τάφων. Ἐν Τριφυλίᾳ ἔχομεν τὸ σπουδαιότατον κέντρον τοῦ Κακοβάτου, ὅπερ ταυτίζεται πρὸς τὴν Πύλον τοῦ Νέστορος, μὲ τρεῖς θολωτοὺς τάφους παλαιοτέρας ἐποχῆς. Ἐκτὸς μικρῶν τινων ἄλλων κέντρων ἀνέσκαψεν ἐσχάτως ὁ Σουηδὸς Σβένσσον εἰς θέσεις Βοδιὰ καὶ Μαλτὶ θολωτοὺς τάφους καὶ λείψανα ἀκροπόλεως. Ἐν Ἀχαΐᾳ ἐπίσης ἀνεφάνησαν τελευταίως λείψανα σπηλαιωδῶν τάφων. Ἐκ Κορινθίας εἶναι πολὺ ὀλίγα δείγματα μυκηναϊκῆς κεραμεικῆς γνωστὰ καὶ ἴχνη κυκλωπείων τειχῶν ἐπὶ τοῦ Ἀκροκορίνθου.

*Στερεὰ Ἑλλάς*. Τὰ σπουδαιότερα κέντρα ἐνταῦθα εἶναι: Ἡ Ἀττική, ἔνθα ἀνεκαλύφθησαν εἰς πολλὰ μέρη μυκηναϊκὰ ἀγγεῖα. Ἐν Θορικῷ εὑρέθη θολωτὸς τάφος τῆς παλαιοτέρας περιόδου (ΙΕ΄ αἰῶνος), παρὰ δὲ τὸ Μενίδι ἕτερος τῆς νεωτέρας τοιαύτης. Παρὰ τὸ χωρίον Σπάτα εὑρέθησαν λαξευτοὶ θαλαμοειδεῖς τάφοι, ὧν εἷς μετὰ τριῶν δωματίων, εἰς πολλὰ δὲ ἄλλα μέρη ἀνεφάνησαν τάφοι ἢ ἀρχαῖα, ὧν ἰδιαιτέρως μνημονευτέα ἡ Ἐλευσίς. Ἐπὶ τῆς Ἀκροπόλεως, πλὴν τῶν κυκλωπείων τειχῶν, ἀνευρέθησαν καὶ ἐλάχιστα ἴχνη τοῦ μυκηναϊκοῦ ἀνακτόρου, ἰδίως αἱ βάσεις δύο κιόνων, αἵτινες, ὡς ἱερώτατα καὶ παλαιότατα λείψανα τῶν οἴκων τοῦ Κέκροπος καὶ Ἐρεχθέως, ἔχουσι περιφραχθῆ διὰ σιδηρῶν κιγκλίδων καὶ φαίνονται πλησίον τοῦ Ἐρεχθείου καὶ τοῦ παλαιοτέρου ἑκατομπέδου ναοῦ. Πρὸ ὀλίγου μόλις χρόνου ἦλθον εἰς φῶς καὶ τὰ πρῶτα λείψανα μυκηναϊκῶν ἐνταφιασμῶν παρὰ τὸν λόφον Φιλοπάππου. Ἐπίσης ἡ Σαλαμὶς καὶ ἡ Αἴγινα παρουσίασαν συστάδας λαξευτῶν τάφων. Ἐν Βοιωτίᾳ ἔχομεν δύο σπουδαιότατα μυκηναϊκὰ κέντρα, τὰς Θήβας καὶ τὸν Ὀρχομενόν. Ἐν τῇ πρώτῃ πόλει εὑρέθησαν τὰ λείψανα τοῦ ἀνακτόρου, τοῦ *Καδμείου*, ὡς ὠνομάσθη, λαξευτοὶ τάφοι καὶ πολλὰ ἄλλα λείψανα, ἐρευνηθέντα κυριώτατα ὑπὸ τοῦ Κεραμοπούλου. Εἰς τὸν Ὀρχομενὸν τὸ μὲν ἀνάκτορον φαίνεται ὅτι κατεστράφη ἐντελῶς, εὑρέθησαν ὅμως αἱ τοιχογραφίαι, πρὸ πολλοῦ δὲ ἦτο γνωστὸς ὁ περίφημος θολωτὸς τάφος ὁ λεγόμενος θησαυρὸς τοῦ Μινύου. Τὴν δύναμιν τῶν δυναστῶν τοῦ Ὀρχομενοῦ ἀποδεικνύουν τὰ πελώρια ἀποξηραντικὰ ἔργα τῆς Κωπαΐδος, τὰ ὁποῖα ἀνήκουσιν εἰς τὰ ἐπιβλητικώτερα τῶν μνημειωδῶν λειψάνων τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ἐν Εὐβοίᾳ ἀνεφάνησαν τάφοι λαξευτοὶ παρὰ τὴν Χαλκίδα, ἐκ δὲ τῆς Λοκρίδος καὶ Φωκίδος ἰδιαιτέρως πρέπει νὰ σημειωθῶσιν οἱ Δελφοί, τῶν ὁποίων ἡ ἱστορία ἀνάγεται μέχρι τῶν μυκηναϊκῶν χρόνων, ὡς ἀπέδειξαν αἱ ἀνασκαφαὶ (τάφοι λαξευτοὶ καὶ ἄλλα λείψανα εἰς τὰ βαθέα στρώματα τῆς κατόπιν περιοχῆς τοῦ τεμένους τοῦ ναοῦ). Ἐκ τῆς Θεσσαλίας μνημονευτέον ἰδιαιτέρως θολωτῶν τάφων, ὧν εἷς τοῦ Καπακλὶ (παρὰ τὸν Βόλον) ἀνήκει εἰς τὴν παλαιοτέραν περίοδον (ΙΕ΄ αἰῶνα), εἷς δ' ἄλλος ἐν Δημητριάδι-Παγασαῖς καὶ ἕτερος ἐν Σέσκλῳ εἰς τὴν νεωτέραν. Ἐπίσης ἐκ τοῦ Κάστρου Βόλου (Ἰωλκοῦ) καὶ πολλῶν ἄλλων μερῶν προέρχονται μυκηναϊκὰ ἀρχαῖα.

Ἐκ τῶν νήσων πρέπει νὰ μνημονευθοῦν ἰδιαιτέρως εἰς μὲν τὰς Κυκλάδας τὸ σπουδαῖον κέντρον τῆς Φυλακωπῆς ἐν Μήλῳ, ἔτι δὲ τὰ μυκηναϊκὰ ἀρχαῖα τῆς Δήλου καὶ Θήρας. Ἐκ τῶν Ἰονίων νήσων μόνη ἡ Κεφαλληνία παρουσίασε σπουδαῖα μυκηναϊκὰ ἴχνη, ὧν κυριωτάτη εἶναι ἡ ἐκτεταμένη συστὰς θαλαμωτῶν τάφων παρὰ τὰ Μαζαρακᾶτα. Σποραδικῶς εὑρέθησαν τοιοῦτοι καὶ εἰς ἄλλας τοποθεσίας, τελευταίως δὲ καὶ ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Ληξουρίου εἰς θέσιν Οἰκόπεδα.

*Ὁ Μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς ἔξω τῆς Ἑλλάδος*. Ἐξαιρέσει τοῦ ἑλληνικοῦ κλασσικοῦ πολιτισμοῦ οὐδεὶς ἄλλος ἔτυχε τοιαύτης ἐξαπλώσεως εἰς ξένας χώρας ὡς ὁ μυκηναϊκός. Ἐν τούτοις ὑπάρχει ἡ δυσκολία ὅτι ἕνεκα τῆς πλημμελοῦς ἔτι μελέτης τῶν κατὰ τόπους κεραμεικῶν συλλογῶν δὲν δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν δι' ὡρισμένα κέντρα τῆς ἀλλοδαπῆς ἂν ἐδέχθησαν ἐπίδρασιν μυκηναϊκὴν ἢ εἰδικώτερον κρητικήν. Οὕτως ὑπάρχει ἡ γνώμη ὅτι τὰ πλούσια «μυκηναϊκὰ» εὑρήματα ἐξ Αἰγύπτου, ἰδίως ἐκ Tell-el-Amarna δυνατὸν νὰ προέρχωνται ἐκ Κρήτης. Ὁμοίως φαίνεται ὅτι ἔχομεν πρώϊμον κρητικὴν ἐπίδρασιν ἐν Κύπρῳ (ἤδη κατὰ τὸν ΙΕ΄ αἰῶνα), ἀλλ' ἀσφαλῶς καὶ μυκηναϊκὴν τοιαύτην, ἐπισχυομένην ἐκ τῆς παραδόσεως, καθ' ἣν Ἀρκάδες εἶχον μεταναστεύσει εἰς τὴν νῆσον. Ἐνταῦθα ἔχομεν μίαν ἰδιαιτέραν περαιτέρω ἀνάπτυξιν τῆς μυκηναϊκῆς τέχνης ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῶν ἐντοπίων βαρβαρικῶν ἢ ἀνατολικῶν στοιχείων. Νοτιώτατον σημεῖον, μέχρι τοῦ ὁποίου εἶχον εἰσδύσει μυκηναϊκὰ προϊόντα, ἐθεωρεῖτο τὸ Anibe τῆς Νουβίας, περὶ τὰ 1350 χιλιόμετρα ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Νείλου. Ἐκεῖ εἶχεν εὑρεθῆ «μυκηναϊκὸν» ἀγγεῖον πλειστάκις ἀπεικονισθέν. Ἐν τούτοις, τελευταίως, φαίνεται ὅτι τοῦτο δὲν θεωρεῖται γνησίως μυκηναϊκόν. Πρὸς ἀνατολὰς ἔχομεν πολλὰ δείγματα εἰσδύσεως τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ προτεύει ἡ Τροία, τῆς ὁποίας ὁ ἕκτος συνοικισμὸς παρέσχεν ἄφθονα μυκηναϊκὰ εὑρήματα καὶ ταυτίζεται πρὸς τὸ ὁμηρικὸν Ἴλιον. (Ὡς γνωστὸν ἀπεκαλύφθησαν τὰ λείψανα ἐννέα ἐν ὅλῳ πόλεων, αἵτινες ὑπέρκεινται ἀλλήλων. Ἐκ τῶν ἄλλων σπουδαιοτάτη ἦτο ἡ δευτέρα, ἀνήκουσα εἰς τὴν πρώϊμον χαλκῆν ἐποχήν, ὁπόθεν προέρχεται ὁ περίφημος «Θησαυρὸς τοῦ Πριάμου», ὃν ἀνεκάλυψεν ὁ Σλήμαν.) Ὁλόκληρος μυκηναϊκὸς συνοικισμὸς φαίνεται ἐπίσης ὅτι ὑπάρχει ἐν Μιλήτῳ, εἰς ἀρκετὰς δ' ἄλλας τοποθεσίας εὑρέθησαν μεμονωμένα μυκηναϊκὰ ἀρχαῖα: Ἀσσαρλὶκ παρὰ τὴν Ἁλικαρνασσόν, Μακρὶ (Τελμησσὸς) τῆς Λυκίας, Ἀκαλὰν παρὰ τὴν Σαμψοῦντα κ.λ.π. Παρὰ τὴν Κολοφῶνα (βορείως τῆς Ἐφέσου) ἀνέσκαψαν τελευταίως οἱ Ἀμερικανοὶ ἕνα θολωτὸν τάφον. Ἀναμφιβόλως σπουδαίαν μυκηναϊκὴν ἀποικίαν ἐδέχθη ἡ νῆσος Ρόδος, ὅπου εὑρίσκομεν πυκνὸν καὶ ἀκμαῖον ὑστερομυκηναϊκὸν πολιτισμόν. Νοτιώτερον πρὸς τὴν Συρίαν πυκνοῦνται διαρκῶς τὰ τεκμήρια ζωηρᾶς μυκηναϊκῆς ἐπιδράσεως. Ἐν Quatna εὗρε πολλὰ μυκηναϊκὰ ἀγγεῖα τελευταίως ὁ κόμις du Mesnil de Buisson. Ἐν Ras Shamra (ἐν τῇ περιοχῇ τῆς ἀρχαίας Λαο-

Digitized by Google

ικείας) εὗρεν ἐσχάτως ἐπίσης ὁ Γάλλος Schäffer ντὸς φοινικικοῦ τάφου ἐλεφάντινον κτένιον μετὰ πουδαίας μυκηναϊκῆς παραστάσεως, ἧς ὁμοία (κοοβή) ἔχει εὑρεθῆ πρὸ πολλοῦ ἐπὶ ἄλλου ἐλεφανίνου ἀντικειμένου ἐκ Μυκηνῶν. Ἡ λεγομένη κεαμεικὴ τῶν Φιλισταίων, ἣν ἀπέδωκαν διάφορα έντρα τῆς ἀνωτέρω περιοχῆς, φέρει μὲν μυκηναϊὴν ἐπίδρασιν ἢ μᾶλλον ἀνάμνησιν ὡς πρὸς τὰ οτίβα, ἀλλὰ τεχνικῶς εἶναι διάφορος, συγχρόνως ὲ μεταγενεστέρα, διότι ἀνήκει ἤδη εἰς τὴν πρώην ἐποχὴν τοῦ σιδήρου. Τέλος, εἰς πολὺ ἀπόμαρον σημεῖον, τὸ Samarra τῆς Μεσοποταμίας, εὑέθησαν μυκηναϊκὰ ὄστρακα.

Βορείως εἰσέδυσεν ὁ πολιτισμὸς οὗτος ἐντὸς τῆς Ιακεδονίας, εἰς ἀρκετὰ τῆς ὁποίας μέρη εὑρέθηαν καὶ εὑρίσκονται διαρκῶς μυκηναϊκὰ ἀγγεῖα ἢ στρακα. Δυτικῶς ἔχομεν τὴν ἐξάπλωσιν τοῦ μυηναϊκοῦ πολιτισμοῦ πρωτίστως ἐν Σικελίᾳ, εἰς ολλὰ τῆς ὁποίας μέρη εὑρέθη μυκηναϊκὴ κεραεικὴ (Συρακούσας, Ἀκράγαντα, Θάψον, ὅπου εὑέθησαν δύο δωδεκάδες μυκηναϊκῶν ἀγγείων ἐν ῇ αὐτόθι νεκροπόλει κ. ἁ.). Ἐκ Κάτω Ἰταλίας αὶ ἄλλων μερῶν τῆς Ἰταλικῆς χερσονήσου προρχονται ἐπίσης τινὰ κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον βέαια εὑρήματα.

*Μυκηναϊκὸν κράτος ἐν Μικρᾷ Ἀσίᾳ.* Πρὸς συμλήρωσιν τῶν ἀνωτέρω πληροφοριῶν περὶ ἐξαλώσεως τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ, παρατίθεναι ἐνταῦθα ὀλίγα τινὰ περὶ τοῦ ἀσαφοῦς ἔτι ἱστοικοῦ περιεχομένου τῶν πινακίδων τοῦ Μπογάζιοϊ. Ἐνταῦθα ἔκειτο ἡ πρωτεύουσα τοῦ κράτους ῶν Χετταίων, αἱ δ' ἀνασκαφαὶ ἔφερον εἰς φῶς τὸ ἰκτρῶς κατεστραμμένον ἀρχεῖον. Ἐκ μερικῶν πιακίδων τοῦ ἀρχείου τούτου συνάγεται πιθανῶς ἡ παρξις μυκηναϊκοῦ τινος κρατιδίου κατὰ τὰ νόια παράλια τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, ἴσως ἐν Παμφυίᾳ. Τούτου ὁ βασιλεὺς Attarissijas, μεταγλωττιζόενος ἑλληνιστὶ Ἀτρεύς, Ἀκρίσιος ἢ Τειρεσίας, ρχεται εἰς δυσαρέστους δοσοληψίας πρὸς τὸν βαιλέα τῶν Χετταίων Dudhalia τὸν Δ' (περὶ τὸ 1260 —1230). Οἱ δύο δυνάσται ἀλληλοαποκαλοῦνται δελφοί, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον δὲν συνεχώρει ὁ βαιλεὺς τῶν Χετταίων ἢ εἰς τοὺς ἰσοτίμους συναέλφους του τῆς Ἀσσυρίας, τῆς Αἰγύπτου καὶ—νίοτε μόνον—τῆς ἤδη ἐξασθενούσης Βαβυλῶνος. Φαίνεται λοιπὸν ὅτι ὄπισθεν τοῦ μυκηναϊκοῦ κραιδίου τῆς Μικρᾶς Ἀσίας κρύπτεται ἡ ἰσχυρὰ δύαμις τῆς Ahhijava (Ἀχαΐας), ἤτοι τὸ μυκηναϊκὸν ασίλειον τῆς Πελοποννήσου, τὸ ὁποῖον ἄρα ἦτο νεγνωρισμένη σπουδαία δύναμις, ὑπολογίσιμος αὶ ἐν τῇ διεθνεῖ διπλωματίᾳ. Τὰ ἀνωτέρω γεγοότα παραμένουσιν ἔτι σκοτεινά, πάντως φαίνεται έβαιον ὅτι ἔκτοτε ἤδη σπουδαῖοι δεσμοὶ συνδέουν ὸ μυκηναϊκὸν κράτος τῆς Πελοποννήσου πρὸς ὰς μικρασιατικὰς ἀκτάς. Τοῦτο ἄλλως τε ἐπικυοῦσι καὶ οἱ μῦθοι. Μικρασιατικῆς καταγωγῆς ἦτο ὸ γένος τῶν Πελοπιδῶν, ὁ δὲ Προῖτος εἶχε συγενεῖς εἰς τὴν Λυκίαν, ὅπου ἔστειλε καὶ τὸν Βελεροφόντην, ὅπως ὁ πενθερός του φροντίσῃ νὰ τὸν φανίσῃ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Διὰ τὰ μέχρι τοῦ 1924 γνωστὰ πορίματα τῆς ἐπιστήμης ἀρίστη συγκεφαλαίωσις εἶναι ἡ παρὰ ). *Fimmen*, Kretisch-mykenische Kultur ², σελ. 2 ἑξ., 95 ξ. Διὰ τὰς κατόπιν ἐρεύνας δὲν ὑπάρχει συγκεντρωτικὴ ημοσίευσις, τινὲς τῶν ὁποίων εἶναι ἀκόμη καὶ ἀνέκδοτοι.

ΣΠ. Μ.

— **Μυκηναϊκὴ *Κοινή*.** Οὕτως ἀπεκλήθη τὸ φαιόμενον τῆς κατὰ τὴν ὑστάτην μυκηναϊκὴν περίοον (περὶ τὸ 1350—1250 π. Χ.) ἐξαπλώσεως τοῦ ρητομυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ ὑπὸ ἑνιαίαν μορφὴν ανταχοῦ τοῦ ἑλληνικοῦ κόσμου. Τὸ ὄνομα ἐδόθη ατ' ἀναλογίαν τῆς κοινῆς διαλέκτου, ἥτις ἐκ τῆς Ἀττικῆς, ὡς γενικῶς πιστεύεται, κυριώτατα καταομένη, ἐξηπλώθη ὑπὸ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν μορφὴν πανταχοῦ τῶν ἑλληνικῶν χωρῶν, ἐκτοπίσασα ὰς ἄλλας ἀσημοτέρας διαλέκτους σχεδὸν ὁλοσχεῶς. Κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον διαδίδεται περὶ τοὺς νωτέρω χρόνους μία ἑνιαία ἀγγειοπλαστικὴ τενοτροπία μυκηναϊκή, ἥτις ἐκτοπίζει τὰς τοπικὰς υλλογὰς ἢ τοὐλάχιστον ἐπισκιάζει τελείως ταύας. Ἡ Μυκηναϊκὴ Κοινὴ περιλαμβάνει τὴν ἀνατοικὴν καὶ δυτικὴν Κρήτην (Κυδωνίαν τοὐλάχιστον, τοι τὰ σημερινὰ Χανιά), τὰς νήσους τοῦ Αἰγαίου έχρι Ρόδου καὶ Κύπρου, τὴν μικρασιατικὴν καὶ υριακὴν παραλίαν, ὁλόκληρον τὴν Στερεὰν Ἑλάδα, Θεσσαλίαν καὶ Πελοπόννησον, ἔτι δὲ τὰς Ιονίους νήσους (Κεφαλληνίαν). Οὐδεμία σχεδὸν ιάκρισις εἶναι δυνατή, κατὰ τὴν παροῦσαν ἐποήν, ἀγγείων προερχομένων ἐκ τῶν Ἰονίων νήσων τῆς Ρόδου, τῶν Μυκηνῶν ἢ τῆς Θεσσαλίας. Τενική, σχῆμα καὶ διακόσμησις τῶν ἀγγείων εἶναι κριβῶς τὰ αὐτά. Ὑπάρχουσι, φυσικῷ τῷ λόγῳ, αὶ χονδροειδῆ μονόχρωμα ἀγγεῖα παραπλεύρως ῆς μυκηναϊκῆς κεραμεικῆς. Εἶναι μάλιστα πιθαὸν ὅτι εἰς τὰ ἀπόκεντρα μέρη, ὡς τὰ ἐνδότερα ῆς Πελοποννήσου ἢ τὴν Δυτικὴν Ἑλλάδα, αἱ τοικαὶ συλλογαὶ οὐδέποτε ἐξετοπίσθησαν. Κατὰ τὴν νωτέρω ἐποχὴν εἷς ἑνιαῖος πολιτισμὸς κυριαρχεῖ ανταχοῦ τῶν μνημονευθεισῶν χωρῶν. Δὲν δυάμεθα δηλαδὴ νὰ ὑποθέσωμεν ὅτι πρόκειται πλῶς περὶ εἰσαγωγῆς ἔξωθεν τῆς μυκηναϊκῆς κεαμεικῆς, διότι ἑνιαῖα ἀποβαίνουσι καὶ ἡ μέθοος τῆς ταφῆς καὶ τὸ σχῆμα τῶν τάφων, οἵτινες εἶναι οἱ λαξευτοὶ σπηλαιώδεις. Τὸ φαινόμενον τοῦτο θὰ ἀντεστοίχει ἀκριβῶς πρὸς τὴν πολιτικὴν κατάστασιν τῆς Ἰλιάδος, ὅπου ἐπὶ τὸ αὐτὸ συνενοῦνται ἡγεμόνες ἐκ πάσης τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς Κρήτης, εἰς τὸν αὐτὸν ἀνήκοντες πολιτισμὸν καὶ κατὰ τὰ ἄλλα ἀρκούντως ὁμοιογενεῖς, ὥστε νὰ ὑπακούωσι πάντες εἰς ἕνα ἀρχιστράτηγον. Ἐν τούτοις οὐδὲν συντελεῖ εἰς τὸ νὰ πιστεύσωμεν ὅτι ὑπῆρξε πραγματικὴ πολιτικὴ ἑνότης διαρκούσης τῆς Μυκηναϊκῆς Κοινῆς, ἡ δὲ θεωρία ὅτι ἡ Κρήτη ἔσχε τότε τὴν ἡγεμονίαν ἐφ' ἁπάσης τῆς Ἑλλάδος πρέπει νὰ θεωρηθῇ τελείως ἀβάσιμος. Βέβαιον εἶναι ὅτι ἡ Μυκηναϊκὴ Κοινὴ προῆλθεν ἐκ τῆς κεραμεικῆς περιόδου τῶν Μυκηνῶν, Κακοβάτου-Πύλου, Θηβῶν κλπ., ἥτις μιμεῖται τὴν κρητικὴν περίοδον τοῦ ἀνακτορικοῦ ρυθμοῦ. Ἡ σχηματοποίησις τῶν ἐμψύχων ὄντων καὶ τῶν φυτικῶν τύπων, ἥτις κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ἔχει ἤδη ἀρχίσει, προβαίνει ἔτι περαιτέρω μέχρι τοῦ ἀμόρφου κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς Μυκηναϊκῆς Κοινῆς. Παραλλήλως τὰ γραμμικὰ μοτίβα κερδίζουσι πολὺ ἔδαφος, ἐνῷ συγχρόνως, ἴσως ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς τοιχογραφίας τῶν ὑστερωτέρων μυκηναϊκῶν ἀνακτόρων, ἐμφανίζονται ἐπὶ μερικῶν ἀγγείων πρωτόγονοι εἰκονιστικαὶ παραστάσεις (ἁρμάτων, ἵππων καὶ ἀνθρώπων, σειραὶ πολεμιστῶν). Ὑλικῶς ἡ περίοδος τῆς Μυκηναϊκῆς Κοινῆς, παρὰ τὴν κατάπτωσιν τῆς τέχνης, εὑρίσκεται ἐν μεγίστῃ ἀκμῇ. Τὸ ἐμπόριον εἶναι ζωηρότατον, τὰ δὲ μνημειώδη τείχη τῆς Τίρυνθος καὶ τῶν Μυκηνῶν, ὡς καὶ αἱ μεγάλαι στρατιωτικαὶ ἐπιχειρήσεις, ὧν ἀναμνήσεις μᾶς περιέσωσαν τὰ αἰγυπτιακὰ κείμενα καὶ ὁ τρωϊκὸς μῦθος, ἀνήκουσιν εἰς τὴν παροῦσαν ἐποχήν.

ΣΠ. Μ.

— **μυκηναϊκὸς *πολιτισμός*.** Οὕτως ὠνομάσθη καὶ ἐξακολουθεῖ νὰ ὀνομάζεται ὁ πολιτισμός, ὁ ὁποῖος ἤκμασεν ἐν ταῖς ἑλληνικαῖς χώραις ἀπὸ τοῦ 1600—1200 π. Χ. Κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν ἀρχαιολόγων Blegen καὶ Wace γενομένην διαίρεσιν τοῦ χαλκοῦ αἰῶνος τῶν ἑλληνικῶν χωρῶν εἰς πρωτοελλαδικήν, μεσοελλαδικὴν καὶ ὑστεροελλαδικὴν περίοδον ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς συμπίπτει πρὸς τὴν τελευταίαν. Κυρίως μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς θεωρεῖται νῦν εἰδικώτερον ἡ ἀπὸ τοῦ 1400—1200 ἐποχή, ἥτις συμπίπτει πρὸς τὴν ὑστεροελλαδικὴν τῶν ἀνωτέρω ἀρχαιολόγων. Δι' ὁλόκληρον τὴν περίοδον ἀπὸ τοῦ 1600—1200 χρησιμοποιεῖται ὁ ἀπὸ ἀπόψεως τῆς οὐσίας τῶν πραγμάτων ἐπιτυχέστερος ὅρος *κρητομυκηναϊκὸς* πολιτισμός.

*Ὄνομα καὶ πρῶται ἀνακαλύψεις.* Μέχρι τοῦ 1876, τοῦ ἔτους τῶν περιφήμων ἀνακαλύψεων τοῦ Σλῆμαν ἐν Μυκήναις, ἡ ἐπιστήμη οὐδὲν τὸ θετικὸν ἐγνώριζε περὶ τῶν προγενεστέρων τῆς κυρίως ἑλληνικῆς ἐποχῆς περιόδων. Ἐπὶ τῇ βάσει τῶν συγκεχυμένων μαρτυριῶν τῶν ἀρχαίων συγγραφέων ἐγίνετο λόγος περὶ προϊστορικῶν ἢ μυθικῶν περιόδων τῶν Πελασγῶν, Καρῶν, Λελέγων κτλ. Διὰ τῶν ἐν Μυκήναις ἀνακαλύψεων τοῦ Σλῆμαν ἤρχοντο διὰ πρώτην φορὰν εἰς φῶς τὰ δείγματα ἑνὸς προελληνικοῦ πολιτισμοῦ λαμπροῦ καὶ πλουσίου. Ἡ ἀνακάλυψις ἦτο τόσον ἀπροσδόκητος, ὥστε οἱ ἀρχαιολόγοι ἐκυμάνθησαν πρὸς στιγμὴν ποῦ ἔπρεπε νὰ κατατάξωσι τὸν καινοφανῆ πολιτισμόν, ὃν δὲν ἐδίστασάν τινες νὰ ἀποδώσωσιν εἰς βαρβαρικὴν περίοδον τοῦ μεσαίωνος. Μετ' ὀλίγον ὅμως ἀνεγνωρίσθη ὅτι πρόκειται περὶ τοῦ πολιτισμοῦ, τοῦ ὁποίου τὴν ζωηροτάτην ἀπήχησιν μᾶς παρουσιάζουν τὰ ὁμηρικὰ ἔπη. Ἐκ τοῦ τόπου τῆς πρώτης εὑρέσεως ὠνομάσθη *μυκηναϊκὸς* πολιτισμός, ἂν καὶ εὐθὺς ἀμέσως ἀπεδείχθη ὅτι οὗτος ἦτο ἐξηπλωμένος καὶ εἰς πολλὰ ἄλλα μέρη τῆς Ἑλλάδος. Τὸ ὄνομα ἐν τούτοις παρέμεινεν ὁριστικῶς καὶ εἶναι ὡς πρὸς τοῦτο ἐπιτυχές, διότι αἱ Μυκῆναι ἀπεδείχθησαν πράγματι τὸ πρώτιστον καὶ λαμπρότατον κέντρον τῆς φερωνύμου περιόδου.

*Καταγωγή.* Εὐθὺς μετὰ τὰς πρώτας ἀνακαλύψεις ἡ συστηματικὴ μελέτη ἔδεικνυs καθαρὰ ὅτι ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς ἐμφανίζεται αἰφνιδίως, ἄνευ προβαθμίδων, εἰς μέγαν βαθμὸν ἀναπτύξεως. Ἡ προκάτοχος τούτου μεσοελλαδικὴ περίοδος εἶναι ἀπολύτως πτωχὴ εἰς ἔργα τέχνης καὶ εἰς πᾶσαν ἄλλην ἐκδήλωσιν. Ὑπελείπετο λοιπὸν νὰ ἑρμηνευθῇ ἔξωθεν ἡ ἀπότομος ἐμφάνισις τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ἐπειδὴ τότε, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν, οἱ Φοίνικες ἐθεωροῦντο ὡς οἱ κατ' ἐξοχὴν φορεῖς τοῦ πολιτισμοῦ ἐν τῇ Μεσογείῳ, ἐπιστεύθη ὅτι καὶ ὁ λεγόμενος μυκηναϊκὸς ἦτο φοινικικὸς πολιτισμός. Εἶναι γνωστὸν ὅτι παρ' Ὁμήρῳ οἱ Φοίνικες εἶναι οἱ ἔμποροι παντὸς ἔργου τέχνης καὶ τὰ προϊόντα των περιγράφονται μετὰ θαυμασμοῦ. Οὕτω λοιπὸν ἐπιστεύθη ὅτι φοινικικῆς προελεύσεως ἦσαν καὶ τὰ πρὸς τὰς ὁμηρικὰς περιγραφὰς τόσον λαμπρῶς συμφωνοῦντα ἔργα τοῦ μηκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ. Ὑπὸ τὸ πνεῦμα τοῦτο ἐγράφησαν παλαιότερον ἀξιόλογα βιβλία, ὡς τὸ τοῦ Helbig περὶ τῶν ὁμηρικῶν ἐπῶν. Ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἤρχισαν, ἀπὸ τοῦ 1900 καὶ ἑξῆς, αἱ συστηματικαὶ ἀνασκαφαὶ τῆς Κρήτης, ὁ δ' ἐπιστημονικὸς κόσμος ἔβλεπε μετ' ἐκπλήξεως τὴν ραγδαίαν ἀποκάλυψιν ἑνὸς νέου ὑπερόχου πολιτισμοῦ, τοῦ *μινωϊκοῦ*. Ἐν διαστήματι ὀλίγων μόνον ἐτῶν ὁ πολιτισμὸς οὗτος ἐνεφανίσθη ἐν ὅλῃ του τῇ λαμπρότητι, παρουσιάσας τὰ ἔξοχα ἀρχιτεκτονικά, κεραμεικά, μεταλλουργικὰ καὶ ἄλλα προϊόντα του. Τότε ἐγένετο ἀμέσως φανερὸν ὅτι καὶ ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς οὐδὲν ἄλλο εἶναι ἢ ἀπότοκος τοῦ μινωϊκοῦ τοιούτου. Ἡ παλαιοτέρα ἐποχὴ (1600—1500), ἣν ἀντεπροσώπευον αἱ ἀνακαλύψεις τοῦ Σλῆμαν ἐν Μυκήναις, εἶναι αὐτούσιος μ.ι.ωϊκὸς πολιτισμὸς μὲ ἐλάχιστα μόνον ἐντόπια στοιχεῖα. Οὕτως ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς εὗρηκεν αὐτομάτως τὴν μόνην ὀρθὴν ἑρμηνείαν τῆς καταγωγῆς του. Ἐν τῷ μεταξὺ αἱ πρόοδοι τῆς ἐπιστήμης ἀπέδειξαν ὅτι ἡ τόσον ὑπερτιμηθεῖσα δρᾶσις τῶν Φοινίκων ἀρχίζει πολὺ ἀργά, περὶ τὸ 1000 π. Χ. καὶ ἔτι βραδύτερον, ἤτοι εἰς ἐποχὴν καθ' ἣν εἶχον ἐκλείψει ὁριστικῶς καὶ ὁ μινωϊκὸς καὶ ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμός. Τὰ πορίσματα ταῦτα τῆς ἐπιστήμης εἶναι σήμερον γενικῶς παραδεδεγμένα, μόνος δ' ὁ Δαϊρπφελδ ἐπιμένει πάντοτε εἰς τὴν παλαιὰν περὶ Φοινίκων θεωρίαν, ἀναγκαζόμενος πρὸς τοῦτο νὰ παραδέχεται καὶ ἄλλας παλαιοτέρας χρονολογίας διὰ τὸν γεωμετρικὸν καὶ πρωτοκορινθιακὸν ρυθμόν.

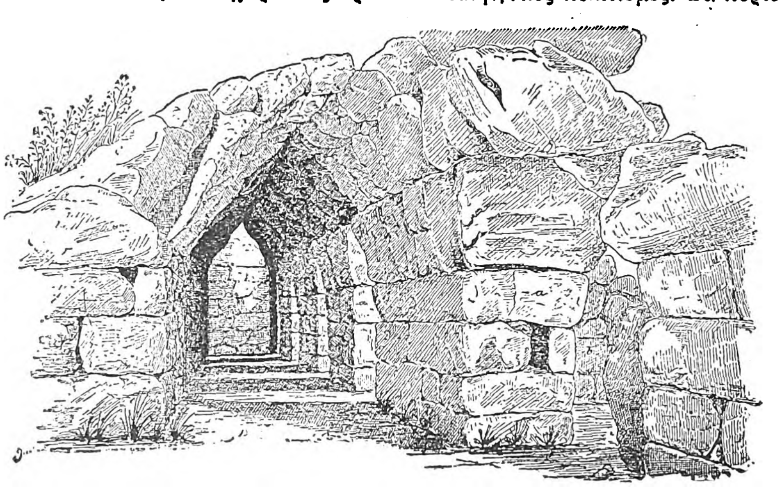

*Τίρυνς : Κυκλώπεια τείχη μετὰ σύριγγος.*

*Ἡ τέχνη.* Ἂν καὶ στηριζόμενος ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς ἐπὶ τοῦ μινωϊκοῦ, ἔχει ἐν τούτοις ἰδιαιτέρας ἐκφάνσεις ἐν τῇ τέχνῃ του, αἵτινες καταφανῶς ἀποδεικνύουν τοὺς διαφόρους ὅρους ὑπὸ τοὺς ὁποίους ἀνεπτύχθη καὶ τὸν κατὰ βάθος ἀλλότριον τοῦ μινωϊκοῦ χαρακτῆρά του. Ἐν τ ῇ ἀρχιτεκτονικῇ παρουσιάζει πρωτίστως τὰ μνημειώδη τείχη τῶν ἀκροπόλεων, τὰ ὁποῖα εἶναι ἄγνωστα εἰς τὴν μινωϊκὴν Κρήτην. Ὁ τρόπος τῆς κατασκευῆς τῶν τειχῶν τούτων διὰ μεγάλων λίθων εἶναι λίαν χαρακτηριστικός, ἀποκληθεὶς *πελασγικὸς* ἢ *κυκλώπειος*. Τὰ σπουδαιότατα τῶν τειχῶν τούτων διετηρήθησαν εἰς τὰς Μυκήνας καὶ τὴν Τίρυνθα. Ἴχνη διετηρήθησαν καὶ ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν (ἰδίως κατὰ τὴν δεξιάν, ἤτοι τὴν νοτίαν, γωνίαν τῶν Προπυλαίων), σπουδαῖα δὲ λείψανα ἐπὶ μιᾶς μυκηναϊκῆς ἀκροπόλεως τοῦ σημερινοῦ λόφου Γουλᾶ ἢ Γλᾶ ἐν τῇ λίμνῃ Κωπαΐδι, ἀποδοθείσης εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Ὁμήρου ἀναφερομένην πόλιν «πολυστάφυλον Ἄρνην». Πελασγικὰ μὲν ἐκλήθησαν τὰ τείχη ἐκεῖνα ὡς πανάρχαια, ἐκ τῶν μυθολογικῶν Πελασγῶν, κυκλώπεια δὲ τὰ εἶχον ἀποκαλέσει ἤδη οἱ ἀρχαῖοι, διότι ἐκτίσθησαν δῆθεν ὑπὸ Κυκλώπων, ἐν ἄλλοις λόγοις ἐθεωροῦντο ἔργα ὑπεράνθρωπα. Τὰ μυκηναϊκὰ ἀνάκτορα παρουσιάζουσι καὶ ταῦτα σημαντικὰς διαφορὰς ἀπὸ τῶν μινωϊκῶν, κυρίως διότι ἔχουσιν ὁμαλωτέραν ἀρχιτεκτονικὴν μορφὴν καὶ διότι τὸ κυρίως ἀνάκτορον ἢ μέγαρον ἔχει πάντοτε μεγαλύτερον βάθος ἢ πλάτος καὶ ἀνοίγεται πρὸς τὴν αὐλὴν (βλ. λ. *Μυκῆναι* καὶ *Τίρυνς*). Παρὰ τὸ κυρίως ἀνάκτορον ἁπλοῦται μία ἄλλη μικρὰ συνοικία ἐξ ἄλλων βοηθητικῶν οἰκοδομημάτων. Ἡ ταφικὴ ἀρχιτεκτονικὴ παρουσιάζει λαμπρότατα δημιουργήματα τοὺς θολωτοὺς τάφους, οἱ ὁποῖοι φαίνονται νὰ μὴ ἐξαρτῶνται διόλου ἐκ τῆς μινωϊκῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Ἐν Κρήτῃ ἔχομεν τοὺς πρωτομινωϊκοὺς μεγάλους κυκλικοὺς τάφους, οἵτινες ὑποστηρίζεται ὅτι ἦσαν θολωτοί, ἀλλά, καὶ ἂν ἔτι τοῦτο ἀληθεύῃ, εἶναι πολὺ παλαιότεροι τῶν θολωτῶν τάφων τῆς μυκηναϊκῆς Ἑλλάδος. Ἐπὶ πλέον οἱ μὲν πρῶτοι ἦσαν ὑπαίθρια καλυβοειδῆ οἰκοδομήματα, ἐνῷ οἱ δεύτεροι εἶναι ὑπόγειοι μετὰ δρόμου. Ἐκ τῶν τάφων τούτων σπουδαιότατοι

Digitized by Google

ἀπὸ ἀρχιτεκτονικῆς ἀπόψεως καὶ θαυμαζόμενοι ἤδη ἐν τῇ ἀρχαιότητι ἦσαν ὁ περιλάλητος θησαυρὸς τοῦ Ἀτρέως ἐν Μυκήναις καὶ ὁ θησαυρὸς τοῦ Μινύου ἐν Ὀρχομενῷ. Ἀμφότεροι οἱ τάφοι οὗτοι ἔχουσι κατ' ἐξαίρεσιν καὶ μικρὸν τετράπλευρον δωμάτιον παραπλεύρως τοῦ κυρίου κυκλικοῦ θαλάμου. Ὁ θησαυρὸς τοῦ Ἀτρέως ἔφερε καὶ τὸ ἐσωτερικόν του, ἀλλὰ πρὸ παντὸς τὴν πρόσοψίν του κεκοσμημένην διὰ δαπανηρᾶς πολυτελείας, ἐκ δὲ τοῦ τάφου τοῦ Ὀρχομενοῦ (ὅστις ἔχει καταρρεύσει πρὸ πολλοῦ) διετηρήθη ἡ διακόσμησις τῆς μεγάλης λιθίνης πλακός, ἥτις ἐχρησίμευεν ὡς στέγη τοῦ μικροῦ δωματίου. Πλὴν τῆς μεγάλης ὁμάδος τῶν ἐννέα θολωτῶν τάφων τῶν Μυκηνῶν εἶναι γνωστοὶ τοιοῦτοι καὶ εἰς πολλὰ ἄλλα μέρη τῆς Ἑλλάδος (Ἀργολικὸν πεδίον, Λακεδαίμονα καὶ Λακωνικήν, μεσσηνιακὴν Πύλον, Ἀττικήν, Βοιωτίαν, Θεσσαλίαν, Κεφαλληνίαν κλπ.). Ἐν Κρήτῃ τοιοῦτοι τάφοι ἐμφανίζονται (μικρῶν διαστάσεων καὶ ἀμελοῦς ἐκτελέσεως) μόνον περὶ τὰς τελευταίας ἡμέρας τοῦ μινωϊκοῦ πολιτισμοῦ καὶ κατὰ τὴν πρωτογεωμετρικὴν περίοδον, πρέπει δὲ νὰ θεωρηθῶσιν εἰσηγμένοι ὁμοῦ μετὰ τοῦ νέου φυλετικοῦ στοιχείου ἐξ Ἑλλάδος. Παρεμπιπτόντως πρέπει νὰ λεχθῇ ἐνταῦθα, ὡς πρὸς τὰ ταφικὰ ἔθιμα, ὅτι οἱ θαλαμοειδεῖς λαξευτοὶ τάφοι εἶναι κοινοὶ εἰς ἀμφοτέρους τοὺς πολιτισμούς. Οἱ λακκοειδεῖς τάφοι τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν ἵστανται ὡς μεμονωμένα παραδείγματα ἐντὸς τῆς περιοχῆς τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ καὶ ἴσως δύνανται νὰ ἑρμηνευθοῦν ὡς συνέχεια τῆς μεσοελλαδικῆς παραδόσεως, ὁπότε οἱ νεκροὶ ἐθάπτοντο εἰς μικροὺς λάκκους λαξευτοὺς ἐν τῷ βράχῳ. Τὸ ἔθιμον τέλος τοῦ θάπτειν ἐντὸς πηλίνων λαρνάκων, ὅπερ εἶναι κοινότατον ἐν Κρήτῃ, εἶναι σπανιώτατον καὶ σχεδὸν εἰπεῖν ἀβέβαιον ἔτι διὰ τὴν μυκηναϊκὴν περιοχήν.

Ὡς πρὸς τὴν καθ' ἑαυτὸ τέχνην, αὕτη ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς μινωϊκῆς. Ἐν μὲν τῇ ἀρχιτεκτονικῇ ὅλα τὰ στοιχεῖα, κυρίως ἀρχιτεκτονικὰ ἢ διακοσμητικά, εἶναι εἰλημμένα ἐκ Κρήτης. Οἱ κίονες ἔχουσι παχυτέραν πρὸς τὰ ἄνω μινωϊκὴν μορφήν. Αἱ ζωφόροι, αἱ ἀποτελούμεναι ἐξ ἡμιροδάκων καὶ τριγλύφων, εἶναι κρητικαί, ἐπίσης αἱ τοιχογραφίαι οὐ μόνον ἀπὸ τεχνικῆς ἀπόψεως, ἀλλὰ καὶ ὡς πρὸς τὸ περιεχόμενον. Ἐπὶ τῶν τοίχων τῶν διαφόρων μυκηναϊκῶν ἀνακτόρων ἀπεικονίζονται ταυρομαχίαι κατὰ μίμησιν τῆς κνωσιακῆς τέχνης, ἂν καὶ δύναται νὰ θεωρηθῇ βέβαιον ὅτι τοιοῦτοι ἀγῶνες δὲν ὑπῆρχον ἐν Ἑλλάδι. Αἱ αὐλικαὶ κυρίαι εἰκονίζονται κατὰ τὸν κνωσιακὸν ρυθμὸν ἐνδεδυμέναι, ἐκτενισμέναι καὶ κεκοσμημέναι, ἂν καὶ εἶναι προβληματικὸν κατὰ πόσον ἦσαν πράγματι τοιαύτης ἐξωτερικῆς ἐμφανίσεως. Μία ζωφόρος ἐξ ὀκτωσχήμων ἀσπίδων ἐκ τοῦ ἀνακτόρου τῆς Τίρυνθος εἶναι μικρογραφία ὁμοίου θέματος, τὸ ὁποῖον ἐκόσμει τὸ μέγα κλιμακοστάσιον τοῦ ἀνακτόρου τῆς Κνωσοῦ. Φαίνεται ὅτι οἱ Κρῆτες τοιχογράφοι, οἵτινες μετεκαλοῦντο, ἀφήνοντο ἐν μέρει ἐλεύθεροι εἰς τὴν ἐκλογὴν τῶν θεμάτων των.

Ἐκ τῶν ἄλλων κλάδων τῆς τέχνης ἀσφαλῶς ἐντοπία κατὰ μέγιστον μέρος εἶναι ἡ κεραμεική, ἀλλὰ μεταχειρίζεται ἀποκλειστικῶς μοτίβα τοῦ μινωϊκοῦ ρεπερτορίου. Δι' αὐτὸν τὸν λόγον θεωρεῖται ὅτι πάντα ταῦτα τὰ ἀγγεῖα ἦσαν εἰσηγμένα ἐκ Κρήτης. Ἐν τούτοις τὰ γνήσια μινωϊκὰ ἀγγεῖα εἶναι ἐλάχιστα, τὰ δὲ ὑπόλοιπα διαφέρουσιν ἀπὸ τεχνικῆς ἀπόψεως καὶ ἐποιοῦντο εἰς ἓν ἴσως μυκηναϊκὸν κέντρον, τὸ ὁποῖον εἶναι ἄγνωστον ἀκόμη. Τὰ καλύτερα ἐκ τῶν προϊόντων τούτων εἶναι οἱ εὐμεγέθεις πίθοι ἐκ τῶν θολωτῶν τάφων τοῦ Κακοβάτου-Πύλου. Ἐπίσης μερικὰ ἐκ τῶν σχημάτων τῶν ἀγγείων δὲν ἔχουσιν ἀκριβῆ ἀντίστοιχα ἐν Κρήτῃ.

Εἰς μεγάλην ἀκμὴν ἔφθασεν ἡ παντὸς εἴδους μεταλλουργία ἐν τῇ μυκηναϊκῇ ἐποχῇ. Τὰ ξίφη τὰ προερχόμενα ἐκ τῶν τάφων τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν ἀνήκουσιν εἰς τὰ μέγιστα καὶ ὡραιότατα ἐν γένει παραδείγματα τῆς προϊστορικῆς ὁπλουργίας. Περιλάλητα εἶναι ἐπίσης τὰ ἐγχειρίδια τὰ φέροντα ἐμπαιστικὰς παραστάσεις ἐκ χρυσοῦ καὶ ἀργύρου ἐπὶ τῶν λεπίδων των. Τὰ ἔργα ταῦτα, κατὰ πᾶσαν πιθανότητα, ἐποιήθησαν ἐπὶ τόπου. Ἀμφίβολον εἶναι, τοὐναντίον, ἂν τὰ ὡραῖα χάλκινα σκεύη, λέβητες, προχόαι, ὧν τινες διὰ χρυσοῦ ἢ ἄλλως κεκοσμημέναι, καὶ ἄλλα ἀνάλογα σκεύη εἶναι ἐπιτόπια κατασκευάσματα ἢ εἰσήχθησαν ἐκ Κρήτης. Ἀσφαλῶς εἰσηγμένα δύνανται νὰ θεωρηθοῦν τὰ δύο περίφημα χρυσᾶ ποτήρια τοῦ Βαφειοῦ, φέροντα θαυμασίας παραστάσεις συλλήψεως ταύρων. Ὁ θολωτὸς τάφος τοῦ Βαφειοῦ τῆς Λακωνικῆς, ἔνθα ταῦτα εὑρέθησαν, ὑπῆρξεν ὁ πλουσιώτατος τῶν ἐλαχίστων ἄλλως ἀσυλήτων εὑρεθέντων θολωτῶν τάφων, περιεῖχε δὲ καὶ ἓν πολυτελὲς ἀκόντιον ὁλόχαλκον, τὸ ὁποῖον εἶναι ἐπίσης κρητικὸν ὅπλον. Τὰ μνημονευθέντα ποτήρια παριστάνουν ἐν ἐκτύπῳ ἐργασίᾳ τὸ ἓν σύλληψιν ταύρων διὰ τοῦ δικτύου καὶ τὸ ἄλλο πρόσδεσιν καὶ ἀπαγωγὴν ἑνὸς τοιούτου ζῴου ἐκ τῆς ἀγέλης. Ἡ ἐργασία εἶναι θαυμασίως ἐπιτυχὴς καὶ αἱ παραστάσεις εἶναι πλήρεις ζωῆς καὶ πάθους. Ἐκ τῶν ὑπολοίπων κλάδων τῆς μικροτεχνίας διεσώθησαν κομψουργήματα ἐξ ὀστοῦ καὶ ἐλεφαντοστοῦ, μέγα πλῆθος γλυπτῶν λίθων ἐξ ἡμιπολυτίμων ὀρυκτῶν (σαρδίου καὶ σαρδώνυχος, ἀχάτου, χαλκηδονίου, ἰάσπιδος, μετεωρίτου, ἀμεθύστου καὶ ἄλλων) καὶ ποικίλα ἄλλα μικρὰ ἔργα. Ἐν μεγάλῃ χρήσει ἦσαν τὰ περιδέραια, ὧν αἱ ψῆφοι ἦσαν ἐκ χρυσοῦ, ὑαλομάζης, φαγεντιανῆς ἢ ὀρυκτῶν λίθων (κοινότατος ἰδίως ἦτο ὁ σάρδιος). Εὑρέθησαν ἔτι ὀλίγα λείψαναα ὑαλίνων ἀγγείων, ἅτινα εἶναι ἴσως πάντα εἰσηγμένα ἔξωθεν. Ἐν μεγάλῃ χρήσει ἦτο ἐπίσης τὸ ἤλεκτρον, τὸ ὁποῖον, κατὰ τὰς γενομένας ἀναλύσεις, προέρχεται πάντοτε ἐκ Βαλτικῆς. Διὰ τῆς ὁδοῦ ταύτης ἑρμηνεύεται ἡ ἐντὸς τάφου τῆς ἀκροπόλεως τῶν Μυκηνῶν εὕρεσις ἑνὸς περιέργου ὅπλου (ἐγχειριδίου, τὸ ὁποῖον ἐστειλεοῦτο δίκην πελέκεως) προσιδιάζοντος εἰς τὴν περιοχὴν τῆς κεντρῴας Εὐρώπης καὶ τῆς Μεγάλης Βρεττανίας.

Ὡς πρὸς τὴν ἐξέλιξιν τῆς μυκηναϊκῆς τέχνης δέον νὰ παρατηρηθῇ ὅτι ἡ νεωτέρα περίοδος ταύτης (ἀπὸ τοῦ 1400 καὶ ἑξῆς) βαίνει πρὸς ταχεῖαν παρακμὴν καὶ ἀπόκλισιν ἀπὸ τῶν μινωϊκῶν τύπων. Ἐν τῇ κεραμεικῇ ἀποβαίνει τότε συχνότατον καὶ χαρακτηριστικώτατον σχῆμα ἀγγείου ὁ ψευδόστομος ἀμφορεύς, ἐν δὲ τῇ διακοσμήσει ὑπεισέρχεται πανταχοῦ τὸ γραμμικὸν στοιχεῖον. Τὰ προϋπάρχοντα ἔμψυχα μοτίβα γραμμοποιοῦνται καὶ ταῦτα, ἐνῷ ἐκ παραλλήλου, ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν ἴσως τῆς τοιχογραφίας, ὑπεισέρχονται καὶ διηγητικὰ θέματα εἰς τὴν ἀγγειογραφίαν, ἀλλ' ἡ

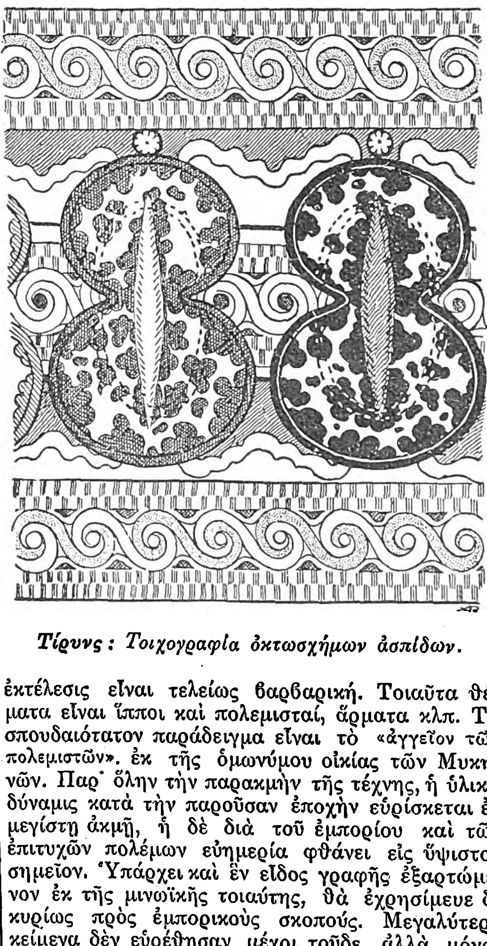

*Τίρυνς: Τοιχογραφία ὀκτωσχήμων ἀσπίδων.*

ἐκτέλεσις εἶναι τελείως βαρβαρική. Τοιαῦτα θέματα εἶναι ἵπποι καὶ πολεμισταί, ἅρματα κλπ. Τὸ σπουδαιότατον παράδειγμα εἶναι τὸ «ἀγγεῖον τῶν πολεμιστῶν». ἐκ τῆς ὁμωνύμου οἰκίας τῶν Μυκηνῶν. Παρ' ὅλην τὴν παρακμὴν τῆς τέχνης, ἡ ὑλικὴ δύναμις κατὰ τὴν παροῦσαν ἐποχὴν εὑρίσκεται ἐν μεγίστῃ ἀκμῇ, ἡ δὲ διὰ τοῦ ἐμπορίου καὶ τῶν ἐπιτυχῶν πολέμων εὐημερία φθάνει εἰς ὕψιστον σημεῖον. Ὑπάρχει καὶ ἓν εἶδος γραφῆς ἐξαρτώμενον ἐκ τῆς μινωϊκῆς τοιαύτης, θὰ ἐχρησίμευε δὲ κυρίως πρὸς ἐμπορικοὺς σκοπούς. Μεγαλύτερα κείμενα δὲν εὑρέθησαν μέχρι τοῦδε, ἀλλὰ μόνον ὀλίγα ψηφία κεχαραγμένα κυριώτατα ἐπὶ ψευδοστόμων ἀμφορέων. Εἷς ἐξ αὐτῶν εἶναι πρὸ πολλοῦ γνωστὸς ἐξ Ὀρχομενοῦ, πολλοὶ δ' ἄλλοι εὑρέθησαν τελευταίως εἰς τὰς ἀνασκαφὰς τῆς Τίρυνθος καὶ τοῦ Καδμείου τῶν Θηβῶν (διὰ τὴν ἐξάπλωσιν τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ κατὰ τὴν παροῦσαν ἐποχὴν βλ. *Μυκηναϊκὴ* Ἑλλὰς καὶ Μυκηναϊκὴ Κοινή).

*Ἰδιαίτερα χαρακτηριστικά.* Ἡ ἰδιοτυπία καὶ ἀνεξαρτησία τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ ἔναντι τοῦ μινωϊκοῦ, παρ' οὗ ἐξαρτᾶται ἐν τῷ κεφαλαίῳ τῆς τέχνης, συνίσταται κυριώτατα εἰς τὰς ριζικῶς διαφόρους ψυχικὰς ἰδιότητας ἑκατέρου. Ὁ μινωϊκὸς χαρακτὴρ εἶναι εἰρηνικῆς, γεωργικῆς καὶ βιομηχανικῆς φύσεως, ἐνῷ ὁ μυκηναϊκὸς πολιτισμὸς παρουσιάζει κυριώτατον γνώρισμα τοῦ χαρακτῆρός του τὸν ἀδιάκοπον πολεμικὸν ὀργασμὸν καὶ τὴν κατακτητικὴν φύσιν. Κατὰ τοῦτο ὁμοιάζει πρὸς τοὺς ἀνατολικοὺς πολιτισμοὺς τῶν Χετταίων καὶ τῶν Ἀσσυρίων. Ἐντὸς τῶν μινωϊκῶν τάφων εἶναι λίαν σπάνιον πρᾶγμα ἡ εὕρεσις πολεμικῶν ὅπλων, καὶ ὁσάκις εὑρίσκονται ταῦτα, πρόκειται ἀποκλειστικῶς περὶ τάφων τῆς ὑστέρας καὶ ὑστάτης μινωϊκῆς ἐποχῆς, ὁπότε ἀσφαλῶς τὸ φυλετικὸν στοιχεῖον εἶχεν ἤδη ἀλλοιωθῇ. Τοὐναντίον οἱ ἀσύλητοι μυκηναϊκοὶ τάφοι δίκην ὁπλοστασίων παρέσχον ἑκατοντάδας ὁλοκλήρους ξιφῶν, μαχαιρῶν, ἐγχειριδίων, λογχῶν, ἀπείρους αἰχμὰς βελῶν καὶ πολλὰ λείψανα ὅπλων ἐκ φθαρτῆς ὕλης (ἀσπίδων καὶ κρανῶν). Τὸ γεγονὸς τοῦτο εἶναι λίαν ἐνδεικτικὸν τῶν ἐντελῶς διαφόρων ἀσχολιῶν ἀμφοτέρων τῶν λαῶν. Ἐνῷ εἰς τὰ μινωϊκὰ ἀνάκτορα οὐδ' ἅπαξ αἱ τοιχογραφίαι παριστάνουσι σκηνὰς μαχῶν καὶ πολιορκιῶν, ἐπίσης δὲ καὶ τὰ λοιπὰ ἔργα τέχνης μόνον σπανίως εἰκονίζουσι καὶ αὐτὰς ἔτι τὰς σκηνὰς κυνηγίων, ἡ μυκηναϊκὴ τέχνη, ὅλως τοὐναντίον, ἔχει αὐτὰς ὡς κυριώτατα θέματα. Οἱ τεχνῖται, οἱ ὁποῖοι εἶναι ἀσφαλῶς Κρῆτες, λαμβάνουν ἐνταῦθα εἰδικὰς ὁδηγίας. Εἰς τὰ ἀνάκτορα τῶν Μυκηνῶν μία ὁλόκληρος ζωφόρος εἰκονίζει σκηνὰς μαχῶν, ἁρμάτων, πολιορκιῶν, αἵτινες θὰ ἦσαν μία εἰκονογράφησις περιπετείας ὡς ἡ τῶν Ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας. Τὸ ἀνάκτορον τῆς Τίρυνθος ἐκοσμεῖτο ἀπὸ τοιχογραφίαν μετὰ θήρας ἀγριοχοίρου ἐκ μέρους ἀνδρῶν καὶ γυναικῶν, θέματος γνωστοῦ ἀπὸ τὴν θήραν τοῦ Καλυδωνίου κάπρου, ὅπου ἔλαβε μέρος καὶ ἡ Ἀταλάντη. Δακτύλιοι, χρυσαῖ ψῆφοι καὶ γλυπτοὶ λίθοι παριστάνουν σκηνὰς σκληρᾶς μονομαχίας, αἱ ὁποῖαι ἐνθυμίζουν τὰς τραγικὰς στιγμὰς τοῦ Ἐτεοκλέους καὶ τοῦ Πολυνείκους, τοῦ Ἀλεξάνδρου καὶ Μενελάου, τοῦ Ἕκτορος καὶ Ἀχιλλέως. Αἱ παραδόσεις αὗται τῶν μύθων, οἵτινες ἔχουν πάντως ἱστορικὸν πυρῆνα, δὲν θὰ μᾶς ἐχρειάζοντο διὰ νὰ κρίνωμεν περὶ τοῦ χαρακτῆρος τῶν μυκηναϊκῶν λαῶν. Ἀρκεῖ ὁ χαρακτὴρ τῆς τέχνης των καὶ τὰ πελώρια τείχη τῶν ἀκροπόλεών των, διὰ νὰ συμπεράνωμεν ὅτι ὁ πόλεμος ἦτο ἡ ζωή των. Ἀλληλοσπαραγμοί, ὡς ὁ τῶν Ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας, ἦσαν ἀσφαλῶς συχνότατοι καθὼς ἐπίσης εἶναι ἀσφαλὴς ἡ εὐρυτέρα συνεργασία πολλῶν πόλεων πρὸς μεγάλας ἐξωτερικὰς ἐπιχειρήσεις. Ὁ Τρωϊκὸς πόλεμος εἶναι ἓν καὶ μόνον—τελευταῖον δὲ—τοιοῦτον ἐπεισόδιον. Ἀλλ' ἰδοὺ ὅτι καὶ ἐπὶ ἑνὸς ἐκ τῶν πρωϊμωτάτων ἔργων τῆς μυκηναϊκῆς τέχνης, ἐπὶ τοῦ τεμαχίου ἀργυροῦ ρυτοῦ τῶν Μυκηνῶν, παριστάνεται μία ἀνάλογος σκηνή. Ἡ παράστασις δυστυχῶς εἶναι κολοβή, ἀλλὰ φαίνονται καθαρὰ οἱ μυκηναϊκοὶ πολεμισταὶ μὲ τὰ γνωστὰ κράνη των, ἐρχόμενοι διὰ θαλάσσης ἵνα ἐπιχειρήσουν μίαν ἀπόβασιν. Ἡ πόλις, ἡ ὁποία κινδυνεύει, δὲν εὑρίσκεται ἐπὶ ἑλληνικοῦ ἐδάφους διότι τὸ τεμάχιον τοῦ ἀγγείου ἀνήκει εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, τότε δὲ δὲν ὑπῆρχον ὠχυρωμέναι πόλεις ἐν Ἑλλάδι. Πρέπει προφανῶς νὰ ἀποβλέψωμεν εἰς τὴν ἀσιατικὴν παραλίαν. Οἱ κάτοικοι τῆς πόλεως σπεύδουν γυμνοὶ παρὰ τὸν αἰγιαλὸν διὰ νὰ ἀποκρούσουν τὴν ἀπόβασιν μὲ τόξα καὶ σφενδόνας, ὅπλα δηλαδὴ βαρβαρικὰ καὶ πρωτόγονα ἐν σχέσει πρὸς τὸν βαρὺν μυκηναϊκὸν ὁπλισμόν. Τὸ αὐτὸ εἶχον πράξει καὶ οἱ Τρῶες τέσσαρας αἰῶνας κατόπιν. Δυστυχῶς ἡ πολύτιμος παράστασις εἶναι κολοβή, καὶ ἐνῷ αἱ γυναῖκες τῆς πόλεως ὀλολύζουν καὶ χειρονομοῦν ἐπὶ τῶν ἐπάλξεων, δὲν γνωρίζομεν τί εἶχον ἀποκάμει οἱ ἐπιτιθέμενοι. Ἐκεῖνο τὸ ὁποῖον παραμένει βέβαιον, εἶναι ὅτι ἔχομεν πρὸ ἡμῶν μίαν ἀπὸ τὰς πολεμικὰς περιπετείας πρὸς λαφυραγωγίαν, εἰς τὰς ὁποίας οἱ μυκηναϊκοὶ δυνάσται ὤφειλον τὸν πλοῦτον καὶ τὴν δύναμίν των. Τοιαύτης φύσεως ἦτο καὶ ἡ τρωϊκὴ ἐκστρατεία. Σκοπὸς αὐτῆς ἦτο ἡ λαφυραγώγησις τῆς γηραιᾶς πλουσίας πόλεως τοῦ Ἰλίου, οὐχὶ ἡ ἐκδίκησις διὰ τὴν ἀνώδυνον προσβολὴν τῆς τιμῆς τοῦ Μενελάου. Ὁλόκληρον τὸν τοιοῦτον χαρακτῆρα τοῦ μυκηναϊκοῦ πολιτισμοῦ βλέπομεν ἐκπεφρασμένον ὄχι μόνον εἰς τὴν τέχνην του, ἀλλὰ καὶ εἰς κἄτι πολὺ πολυτιμότερον, τὸ ὁποῖον εὐτυχῶς ἐπέζησε μέχρις ἡμῶν: τὴν ποίησίν του. Τὰ ὁμηρικὰ ποιήματα, ἰδιαιτέρως δὲ ἡ Ἰλιάς, ὅσ εἰ... λουσιν οὐχὶ ἁπλῶς τὰς ρίζας των, ἀλλ' ὁλόκληρον τὴν μορφήν των εἰς τὸν μυκηναϊκὸν πολιτισμόν. Τοῦτον ψάλλουσι καὶ δοξάζουσι, τούτου τὴν τέχνην καὶ τὰ ἤθη παριστῶσιν. Ἐν τούτοις πρέπει νὰ εἴμεθα βέβαιοι ὅτι εἰς τὰ μέγαρα τῶν μυκηναϊκῶν ἀνακτόρων ἀντήχουν καθ' ἑσπέραν αἱ ἀπαγγελίαι καὶ ἡ μουσικὴ τῶν ραψῳδῶν, οἵτινες ἔργον εἶχον νὰ κλεΐζουν τὰς πράξεις καὶ προσωπικὰ ἀνδραγαθήματα τῶν Μυκηναίων δυναστῶν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Οὐδὲν εἰδικώτερον βιβλίον πραγματεύεται τὰ ζητήματα ἀφ' ἧς ἀπόψεως ἐκτίθενται εἰς τὸ ἀνωτέρω ἄρθρον, γενικὰς ὅμως παρατηρήσεις ἢ ἀνάπτυξιν εἰδικωτέρων μυκηναϊκῶν προβλημάτων βλ. ἐν τῇ βιβλιογραφίᾳ τῆς λ. Μυκῆναι, ὡς καὶ εἰς τὰ κατωτέρω: *Karo*, Mykenae καὶ Mykenische Kultur ἐν Reallexikon der Vorgeschichte τοῦ *Ebert*.—*Τοῦ αὐτοῦ*, ἐν Athenische Mitteilungen 1915.—*K. Müller* ἐν Jahrbuch des Institutes, 1914.—*G. G.*—*R. Dussaud*, Civilisatiois Préhelléniques[2], 1914.—*G. Glotz*, Civilisation Égéenne (1923).—*G. Rodenwaldt*, Tiryns (II, 2, 1912).—*Furtwängler - Loeschcke*, Mykenische Tongefässe (1979) καὶ Mykenae Vasen (1886).—*Perrot-Chipiez*, Histoire de l' art, τόμ. 6 (1894). — Εἰκονογράφησις μυκηναϊκῶν ἔργων: *H. Bossert*, Altkreta[2], 1923.—*F. Winter*, Kunstgeschichte in Bildern I, τεῦχος 3. ΣΠ. Ν. ΜΑΡΙΝΑΤΟΣ

**Μυκήνη** *[Μυθολ.]*. Θυγάτηρ τοῦ Ἰνάχου, ... σιλέως τοῦ Ἄργους, σύζυγος τοῦ Ἀκέστορος, ... κοῦ ἥρωος τῶν Ἀρκάδων, ἀπὸ τῆς ὁποίας, ... τινας, ὡς ἀναφέρει ὁ Παυσανίας (B, 16, 4), ὠνομάσθησαν αἱ *Μυκῆναι*. Α. Ε. Σ.

**μυκήνη** (ἡ) (mucine). Οὐσία διαφανής, ... ἡμίρρευστος, μὴ πηκτουμένη διὰ τῆς θερμάνσεως, ἀλλὰ διὰ τοῦ ὀξικοῦ ὀξέος. Ἡ οὐσία αὕτη ... γάζεται διὰ τῶν κυττάρων τοῦ βλεννώδους ... καὶ συσσωρεύεται εἰς τὰ μεσοδιαστήματα αὐτ... καλεῖται δὲ καὶ *βλεννίνη*. Μ. Κ. Κ.

Digitized by Google

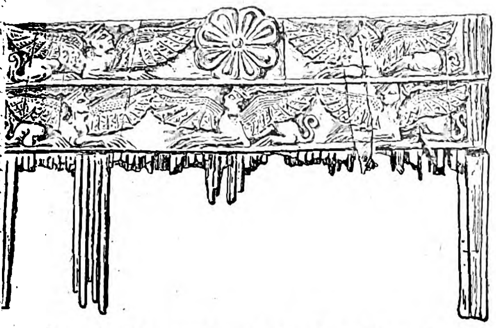

Κτένιον ἐξ ἐλεφαντοστοῦ. Σπάτα (Ἀττικῆς).

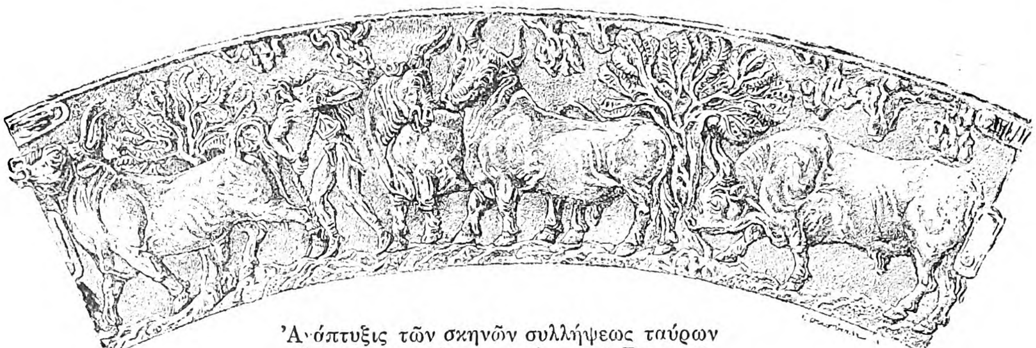

Ἀνάπτυξις τῶν σκηνῶν συλλήψεως ταύρων ἐπὶ τῶν χρυσῶν ποτηρίων τοῦ Βαφειοῦ.

Τεμάχιον ἀργυροῦ ρυτοῦ ἐκ Μυκηνῶν, εἰκονίζον ἐπίθεσιν κατὰ ὀχυρωμένης πόλεως.

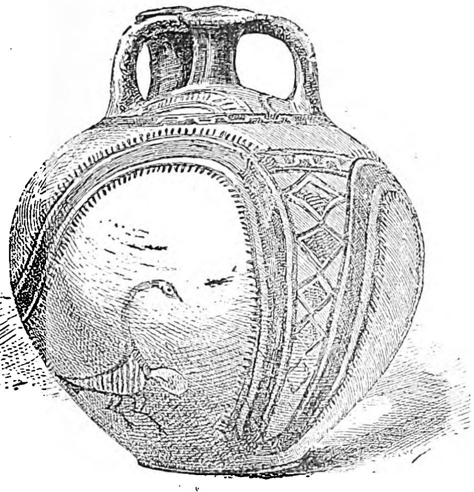

Ψευδόστομος ἀμφορεὺς ἐξ Ἰαλύσου τῆς Ρόδου.

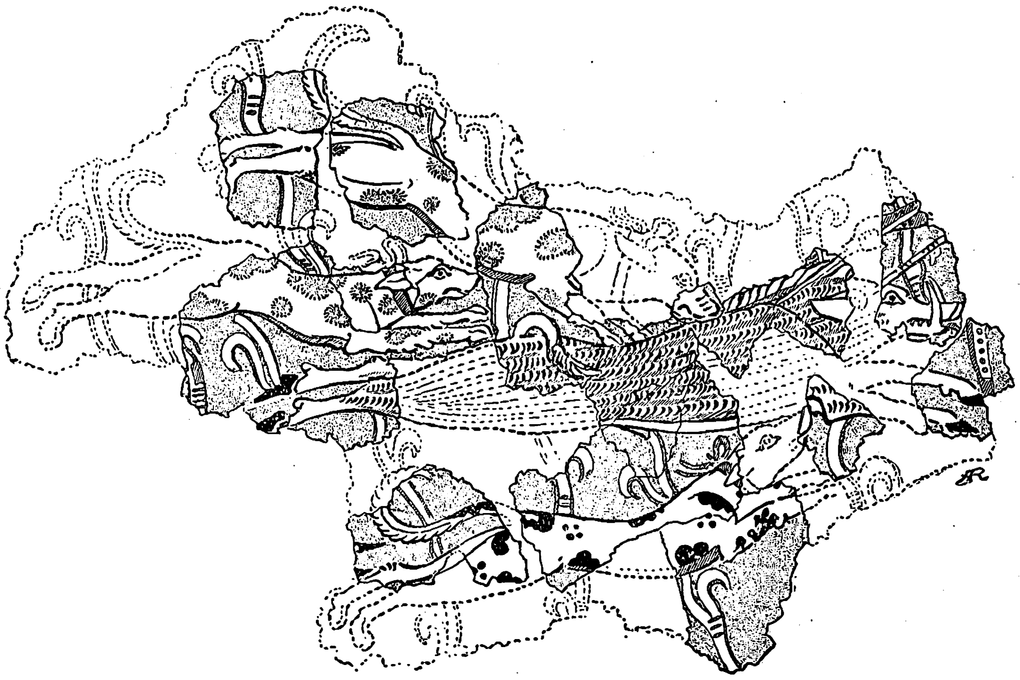

Θήρα ἀγριοχοίρου. Τοιχογραφία Τίρυνθος.

Μυκηναϊκὸν ἀγγεῖον ἐκ Κακοβάτου-Πύλου.

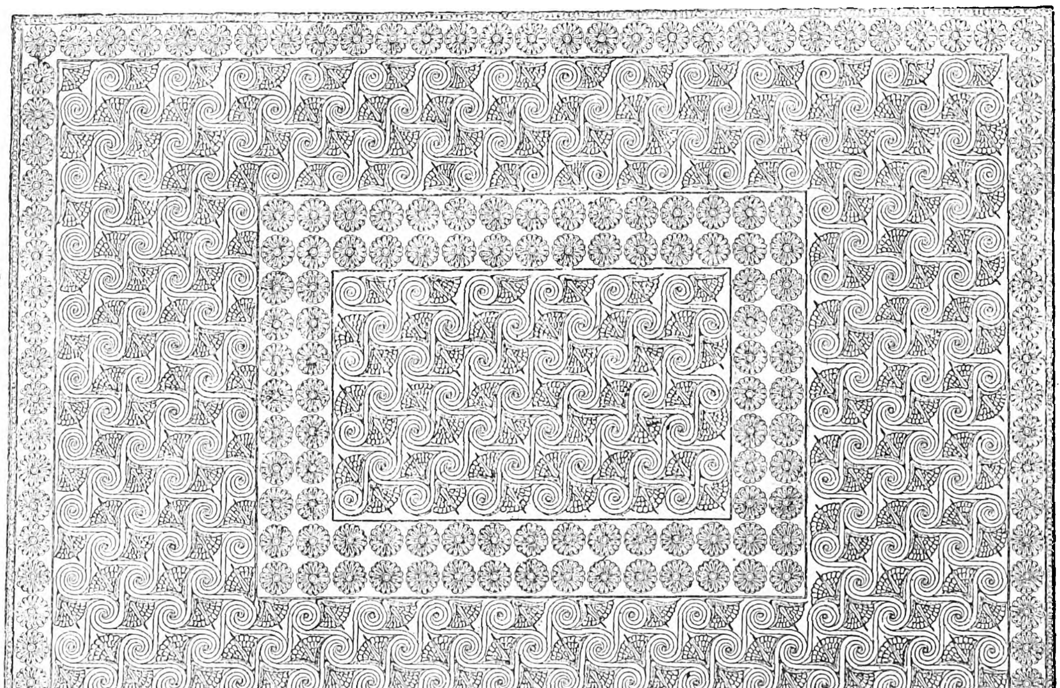

Ἰχνογράφημα τῆς πλακός, ἥτις ἐκόσμει τὸ μικρὸν δωμάτιον τοῦ «Θησαυροῦ τοῦ Μινύου» ἐν Ὀρχομενῷ.



Digitized by Google

**Μυκῆνοι** (οἱ) [*Ἀρχ.*]. Λιβυκὸς λαός, κατοικῶν, κατὰ τὸν Πτολεμαῖον (*Γεωγρ.* Δ', 2, 5), τὰ παράλια τῆς Μαυριτανίας Καισαρηνσίας, πρὸς Ν. τοῦ ὄρους Γάραφα ἢ Γάφαρα καὶ πρὸς Δ. τοῦ ποταμοῦ Χυλιμάθ. Κατά τινα παράδοσιν κατήγοντο ἀπὸ τῶν μετὰ τοῦ Ἡρακλέους ἐλθόντων ἐκεῖ Ὀλβιανῶν καὶ Μυκηναίων. Νικήσας αὐτοὺς ὁ Σερτώριος τῷ 82 π. Χ., ἀφῆκεν ἐλευθέρους, παραλαβὼν ἐκ τῶν χρημάτων μόνον ὅσα οἰκειοθελῶς παρέδωκαν εἰς αὐτόν. **Α. Θ. Σ.**

**μύκης** (ὁ) (Fungus) [*Βοτ.*]. Κατηγορία κρυπτογαμικῶν φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν θαλλοφύτων, ἅτινα εἶναι γνωστὰ ὑπὸ τὸ κοινὸν ὄνομα *μανιτάρια*.

Γενικῶς οἱ μύκητες εἶναι φυτὰ στερούμενα παντελῶς χλωροφύλλης, ὡς ἐκ τούτου τρέφονται ἀναλώμασι διαφόρων ζωσῶν ἢ νεκρῶν οὐσιῶν, ἐνεργοῦντες φθοροποιῶς ἐπὶ τῆς ζωῆς. Ὅ,τι αἱ ἀτμοσφαιρικαὶ μεταβολαὶ ἀδυνατοῦν νὰ ἀπεργασθῶσιν ἐπὶ ὁλόκληρον πεντηκονταετίαν ἐπὶ τῶν κορμῶν τῶν δένδρων, δύνανται νὰ ἐπιτύχωσιν οἱ μύκητες ἐντὸς ἐλαχίστου, σχετικῶς, χρονικοῦ διαστήματος, διότι ἀναφαίνονται κατὰ χιλιάδας ἐπὶ τῶν δι' οἱονδήποτε λόγον νεκρωθέντων φυτικῶν ἱστῶν καὶ παρεμποδίζουσι τὰς διαφόρους ὀργανικὰς οὐσίας, ἐξ ὧν τρέφεται τὸ φυτόν, νὰ προσληφθῶσιν ὑπὸ τούτου, ὁπότε ἐπέρχεται ὁ ἐκ τῆς ἀτροφίας θάνατος.

*Ὑφὴ τῶν μυκήτων*. Ὁ σπόρος τῶν μυκήτων κατὰ τὴν βλάστησίν του ἐκπέμπει νημάτια πολυπληθῆ καὶ στενῶς συνδεδεμένα μεταξύ των, ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον. Τὸ σύνολον τοῦτο τῶν νηματίων καλεῖται *θαλλὸς* ἢ *μυκήλιον*. Ὁ μύκης παραμένει ἐν τῇ καταστάσει ταύτῃ ἐπὶ χρονικὸν διάστημα, ὅπερ, ἀναλόγως τοῦ εἴδους καὶ τῶν συνθηκῶν, δύναται νὰ ποικίλλῃ ἀπὸ ὡρῶν τινων μέχρις ἐτῶν. Τὸ τέλος τῆς περιόδου ταύτης ἐκδηλοῦται διὰ τῆς ἐμφανίσεως εἰς διάφορα σημεῖα τοῦ μυκηλίου ὀργάνων ἀναπαραγωγῆς. Ἕκαστον τοιοῦτον ἀναπαραγωγικὸν ὄργανον ἀποτελεῖται ἐκ δύο τμημάτων, τοῦ ὑποδοχέως, ὅστις εἶναι στεῖρον ὄργανον καὶ χρησιμεύει μόνον ὡς ὄργανον ὑποστηρίξεως, καὶ τοῦ *ὑμενίου*, ὅπερ δίδει τὴν γένεσιν εἰς τὰ σπόρια. Εἰς τοὺς κατωτέρας ὀργανικῆς συνθέσεως μύκητας ἡ διάκρισις τῶν δύο τούτων τμημάτων εἶναι συγκεχυμένη. Ἔκτοτε δὲ τὰ δύο ταῦτα ὄργανα ἀπουσιάζουν τελείως, ὁπότε τὰ σπόρια γεννῶνται ἀπ' εὐθείας ἐκ τοῦ μυκηλίου.

*Θαλλός*. Ὁ θαλλὸς τῶν μυκήτων ἀμοιρεῖ κυτταρικοῦ ἐπιστρώματος εἰς τοὺς *μυξομύκητας* καὶ τοὺς *χυτριδινομύκητας*, ὁπότε τὰ κύτταρα εἶναι εὐκίνητα καὶ προσομοιάζουσι πρὸς ἀμοιβάδας. Αἱ δύο αὗται κατηγορίαι τῶν μυκήτων εἶναι αἱ κατώτεραι ἀπὸ ἀπόψεως ὀργανισμοῦ, πασῶν τῶν λοιπῶν, ἀποτελοῦσαι τὸ μεταίχμιον μεταξὺ ζωϊκοῦ καὶ φυτικοῦ κόσμου. Εἰς πάντας τοὺς λοιποὺς μύκητας ὁ θαλλὸς φέρει κυτταρικὸν ἐπίστρωμα ἢ μεμβρᾶναν. Ὑπὸ τὴν ἁπλουστέραν αὐτοῦ μορφὴν τὸ ἐπίστρωμα τοῦτο εἶναι συνεχὲς καὶ δὲν φέρει διαφράγματα, ἀποτελεῖται δὲ ὑπὸ ἑνὸς μόνον κυττάρου. Πολλάκις ὁ θαλλὸς εἶναι πολυκύτταρος καὶ φέρει πλείονα τοῦ ἑνὸς διαφράγματα, ἅτινα ἔχουσι τὴν αὐτὴν διεύθυνσιν, ὁπότε τὰ κύτταρα εἶναι διατεταγμένα κατὰ στίχους διασταυρουμένους περὶ τὸ ἄκρον των. Οἱ στίχοι οὗτοι διακλαδοῦνται διχοτομικῶς καὶ αἱ ποικίλαι αὐτῶν διακλαδώσεις, καταλλήλως διαμορφούμεναι, σχηματίζουσι πυκνότατον πῖλημα (στιβάδας). Εἰς πλεῖστα εἴδη τὸ πίλημα, ἀντὶ νὰ σχηματίσῃ πλέγμα ἐκ τῶν διαφόρων νηματίων, παρουσιάζει συμπαγῆ τμήματα, ὧν τὰ νημάτια παρουσιάζουσι πολυπλοκωτέρας διακλαδώσεις. Τὸ σύνολον τούτων σχηματίζει μικρὰν μᾶζαν, ὁτὲ μὲν ἀπεστρογγυλωμένην, ὁτὲ δὲ πεπλατυσμένην καὶ σπανιώτερον ἐπιμήκη, ἥτις λόγῳ τῶν πολυπληθῶν μικροσκοπικῶν ἐπιστρώσεων, ἃς φέρει, καλεῖται *στρῶμα*. Ἐνίοτε τὰ νημάτια, ἅτινα σχηματίζουσι τὸ στρῶμα, ἐξαφανίζονται τελείως, ὁπότε ὁ θαλλὸς καθίσταται σκληρὸς καὶ σμηριγγώδης, λαμβάνει μελανὸν χρωματισμὸν κατὰ τὴν ἐπιφάνειάν του καὶ ἀποξηραίνεται. Οἱ παλαιότεροι μυκητολόγοι ὑπήγαγον τοὺς μύκητας τοὺς ἀποτελουμένους ἐκ τοιούτων στρωμάτων εἰς ἴδιον γένος τὸ *σκληρωτόν*, οὗ διέκριναν ἄνω τῶν 80 εἰδῶν. Τῷ 1843 ὁ Léveillé ἀπεκάλυψεν ὅτι τὸ γένος τοῦτο μεθ' ὅλων αὐτοῦ τῶν εἰδῶν δὲν ἦτο παρὰ μυκήλια συνεσφιγμένα μεταξύ των, ἀπεσκληρυμμένα, ἅτινα ἔζων ἐν λανθανούσῃ καταστάσει καὶ ἐν δεδομένῃ στιγμῇ παρῆγον τὰ ἤδη γνωστὰ εἴδη τῶν μυκήτων. Οἱ σκληρωτοὶ ἔχουσι διαφορώτατον ὄγκον· οἱ μικρότεροι τούτων δὲν ὑπερβαίνουσι τὴν κεφαλὴν καρφίδος, ἐνῷ οἱ μεγαλύτεροι φθάνουν εἰς μῆκος πλειόνων ἑκατοστομέτρων. Κάθετος τομὴ τούτων φανεροῖ ὅτι τὰ κύτταρα τῆς ἐξωτερικῆς ζώνης ἔχουσι παχέα τοιχώματα καὶ χρῶμα σκοτεινόν, ἐνῷ τὰ κύτταρα τῆς ἐσωτερικῆς ζώνης ἔχουσι λεπτὰ τοιχώματα καὶ χρῶμα ὑπόλευκον. Τὸ ἐσωτερικὸν τοῦτο τμῆμα μετὰ βραχὺ ἢ μακρὸν χρονικὸν διάστημα, ἀναλόγως τῶν διαφόρων εἰδῶν, παράγει τὸν ὑποδοχέα. Εἰς ἄλλας περιπτώσεις τὰ νημάτια, ἀντὶ νὰ σχηματίζωσι στρῶμα, συνάπτονται καὶ σχηματίζουσι θυσάνους, οἵτινες ἔχουσι μορφὴν ἐπιμήκων νηματίων καὶ προσομοιάζουσι πρὸς ῥίζας. *Ὁ φαλλὸς ὁ ἀναίσχυντος* π. χ. φέρει τοιαύτας ῥιζοειδεῖς ἀποφύσεις, αἵτινες πολλάκις ὑπερβαίνουσιν εἰς μῆκος τὰ 100 ἑκατοστ. Ἄλλοτε πάλιν τὰ νημάτια ἐκτείνονται καὶ σχηματίζουσι λεπτοτάτας μεταξοειδεῖς μεμβράνας, ὅπως π. χ. εἰς τὸ *ῥακόδιον*. Τὸ μυκήλιον, ὅπερ εἴς τινας περιπτώσεις ἀποτελεῖ τὸν κορμόν, οὕτως εἰπεῖν, τοῦ μύκητος, ἔχει ποικίλην διάρκειαν ζωῆς. Εἴς τινας περιπτώσεις εἶναι μονοετὲς καὶ δὲν καρποφορεῖ παρὰ ἅπαξ, ὁπότε καὶ μονοκαρπικὸν καλεῖται καὶ ἐξαφα-

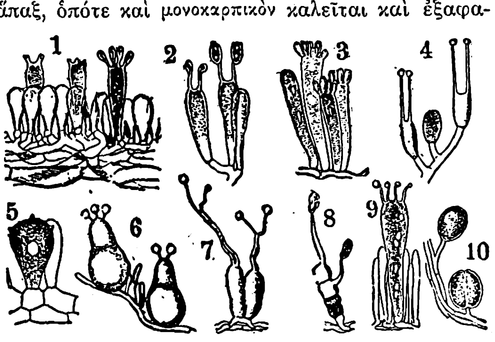


*Διάφοροι τύποι βασιδίων.*

[1,2—Ἀγαρικοῦ. 3—Κλεΐθρου. 4—Λυκαπέρδου. 5—Βωλίτου. 6—Γαιαστέρος. 7—Μελανοσπόρου. 8—Κολεοσπόρου. 9—Κλαβαυρίας. 10—Τρεμέλης.]

νίζεται ὀλίγον μετὰ τὴν ἐμφάνισιν τοῦ ὑποδοχέως. Εἰς τοὺς περισσοτέρους μύκητας τὸ μυκήλιον εἶναι πολυετές, καλεῖται πολυκαρπικὸν καὶ καρποφορεῖ πολλάκις.

***Ὄργανα ἀναπαραγωγῆς***. Τὸ ἀναπαραγωγικὸν τῶν μυκήτων ὄργανον, ἐν τῇ ἁπλουστέρᾳ αὐτοῦ μορφῇ, εἶναι ἁπλοῦν ἢ καὶ διακεκλαδισμένον νημάτιον, ὅπερ δὲν διαφέρει τῶν νηματίων τοῦ μυκηλίου καὶ φέρει κατὰ τὸ ἄκρον του ἢ τὰ πλάγια αὐτοῦ τὰ πολλαπλασιαστικὰ ἢ ἀναπαραγωγικὰ ὄργανα. Ὅταν τὰ νημάτια ταῦτα ἀποτελοῦνται ἐξ ἑνὸς μόνον ἐπιμήκους, σωληνοειδοῦς κυττάρου, τὸ ἄκρον του διογκοῦται, χωρίζεται ὑπὸ διαφράγματος καὶ γεννᾷ τὸ σπόριον. Ὅταν ὅμως ἀποτελῆται ἐκ στιβάδος κυττάρων, τὰ φαινόμενα ταῦτα παρατηροῦνται εἰς τὸ τελευταῖον κύτταρον. Οὕτω παράγονται πλείονα τοῦ ἑνὸς σπόρια εἰς τὸ ἄκρον ἑκάστου νηματίου καὶ ἑκάστης διακλαδώσεως τούτων. Συνηθέστερον τὸ ἀναπαραγωγικὸν ὄργανον διακρίνεται τελείως τοῦ μυκηλίου, ὁπότε καὶ *σποροκάρπιον* ἢ *σποριοκάρπιον* καλεῖται. Τὰ στοιχειώδη νημάτια συνενοῦνται πρὸς ἄλληλα εἰς σαρκώδεις ἢ σκληρὰς μάζας, αἵτινες χρησιμεύουσιν ὡς προστατευτικὰ καλύμματα τῶν μητρικῶν κυττάρων τοῦ ἀναπαραγωγικοῦ σώματος. Ἀναλόγως τῆς διαφόρου διαμορφώσεως τοῦ σποριοκαρπίου, ὑπάρχουσι σποριοκάρπια *γυμνόκαρπα* καὶ *ἀγγειόκαρπα*, ὅπου τὰ σπόρια περικλείονται ἐντὸς ἰδίων ἀγγείων, τῶν κύστεων. Εἰς τὰ πρῶτα, τὰ γεννητικὰ ὄργανα καλύπτονται ὑπὸ λεπτοτάτου στρώματος, ὅπερ καλεῖται ὑμένιον, δι' ὃ καὶ οἱ ἔχοντες τοιαῦτα γεννητικὰ ὄργανα μύκητες καλοῦνται *ὑμενομύκητες*. Οὗτοι εἶναι οἱ πολυπληθέστεροι πάντων τῶν ἄλλων εἰδῶν τῶν μυκήτων. Ἐνίοτε τὸ ὑμένιον προσκολλᾶται ἀπ' εὐθείας μετὰ τοῦ θαλλοῦ, ὁπότε καλεῖται *ἐξωβασίδιον*. ἄλλοτε πάλιν ἐπιστρώνει τὴν ἀνωτέραν ἐπιφάνειαν τοῦ θαλλοῦ δι' ἐπιπέδου πλακός, ἥτις εἶναι μεμβρανώδης ἢ σαρκώδης. Εἰς τὰ περισσότερα εἴδη τῶν μυκήτων τὸ γυμνόκαρπον σποριοκάρπιον λαμβάνει ἰδιορρυθμοτάτην μορφὴν καὶ ὀρθοῦται μέχρι τοῦ θαλλοῦ, διακρίνεται δὲ κατὰ τὸ ἀνώτατον αὐτοῦ τμῆμα καὶ σχηματίζει εἶδος πίλου. Ὑπὸ τὴν μορφὴν ταύτην παρουσιάζουσι οἱ περισσότεροι καὶ οἱ γνωστότεροι μύκητες. Τὸ τμῆμα τοῦ σποριοκαρπίου, ὅπερ φθάνει μέχρι τοῦ θαλλοῦ, καλεῖται *πούς*. Οὗτος καλεῖται *κεντρικός*, ὅταν συνάπτεται μετὰ τοῦ κέντρου τοῦ πίλου, καὶ *πλάγιος*, ὅταν συνάπτεται κατὰ τὰς πλευρὰς αὐτοῦ. Ὁ πους συνήθως εἶναι κυλινδρικὸς καὶ ἐνίοτε βολβώδης ἢ διωγκωμένος κατὰ τὸ βασικὸν αὐτοῦ τμῆμα. Ἐπίσης δυνατὸν νὰ εἶναι συμπαγὴς ἢ κενός, ὁπότε οἱ κεντρικοὶ ἱστοὶ ἐξαφανίζονται. Ὁ πῖλος ἔχει σχῆμα σκιαδίου, κώδωνος, κώνου κτλ.

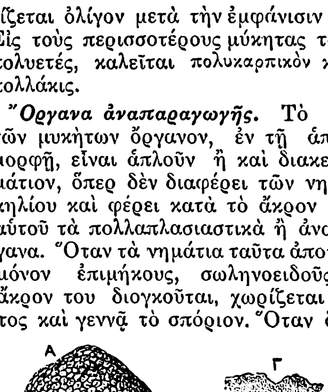


*Τρύφη ἐδώδιμος.*

[Α—Ἀκέραιος μύκης. Β—Τομὴ τούτου. Γ—Τομὴ δεικνύουσα τὰ σποριάγγεια. Δ—Σποριάγγειον μετὰ δύο σπορίων.]

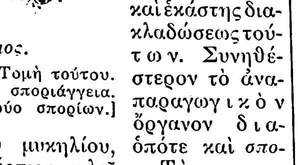


*Ὠΐδιον τῆς ἀμπέλου.*

[μ,μ—Μυκήλιον. α,α,α—Ἀπομυζητῆρες. κ,κ—Κλαδίσκοι κονιδιοφόροι.]

καὶ κατὰ τὸ κέντρον του σχηματίζει χαρακτηριστικὴν διόγκωσιν. Εἴς τινας μύκητας οἱ πόδ[ες] συνάπτονται μεταξύ των καὶ οἱ πῖλοι ἐπιτίθεντ[αι] ἀλλήλων ἐν εἴδει κεράμων. Εἰς τοὺς βολβώδε[ις] ὑμενομύκητας τὸ σποριοκάρπιον καλύπτεται κατ' ἀρχὰς ὑπὸ λεπτοτάτου ὑμένος, ὅστις καλεῖται πέπλος καὶ δύναται νὰ καλύπτῃ ὁλόκληρον τὸ σποριοκάρπιον ἢ τμῆμα τούτου. Ὅταν ὁ πέπλος εἶναι λίαν λεπτός, ἐξαφανίζεται τελείως κατὰ τὴν τελείαν ἀνάπτυξιν τοῦ μύκητος· ὅταν ὅμως εἶναι πυκνός, διασχίζεται καὶ ἀφίνει χαίνουσαν ὀπὴ[ν] κατὰ τὴν βάσιν τοῦ ποδὸς καὶ κατὰ τὰ περὶ τὴ[ν] ἀνωτέραν ἐπιφάνειαν τοῦ πίλου εὑρισκόμενα νημάτια. Ἐν τῇ τελευταίᾳ περιπτώσει ἀναφαίνονται τὰ στρωματικὰ νήματα τοῦ θαλλοῦ.

Τὸ ἀγγειόκαρπον σποριοκάρπιον παρουσιάζετ[αι] ὑπὸ δύο διαφόρους μορφάς, ἀναλόγως τῶν ὁποίω[ν] ἐσχηματίσθησαν καὶ αἱ δύο μεγάλαι κατηγορίαι τῶν μυκήτων, οἱ *πυρηνομύκητες* καὶ οἱ *γαστερομύκητες*. Εἰς τοὺς πρώτους τὸ σποριοκάρπιον εἶναι ἁπλούστατον καὶ ἀποτελεῖται ἐκ μικρᾶς κύστεως, ἥτις ἔχει σφαιροειδὲς ἢ φιαλοειδὲς σχῆμα καὶ ἐντὸς τῆς ὁποίας γεννᾶται τὸ ὑμένιον. Ἡ κύστ[ις] αὕτη φέρει κατὰ τὴν κορυφήν της ὀπὴν ἀπεστρογγυλωμένην ἢ μικρὰν σχισμήν, τὸ περιθήκιον. Ε[ἰς] τοὺς γαστερομύκητας τὸ σποριακάρπιον εἶνα[ι] διωγκωμένον καὶ κατὰ τὸ κέντρον του φέρει ἐ[κ]σκαφὴν καὶ πέριξ πλείστας κοιλότητας, ὧν τὰ τοιχώματα ἐπιστρώννυνται διὰ τοῦ ὑμενίου. Τὸ περιφερικὸν στρῶμα καλεῖται περίδιον. Τοῦτο ὁτὲ μὲν εἶναι ὁμοιογενές, ὁτὲ δὲ ἀποτελεῖται ἐκ δ[ύο] στρωμάτων.

***Ἀγενὴς γένεσις. Σπόρια.*** Τὰ ἀναπαραγωγ[ικὰ] σωμάτια ὀφείλουσι συνήθως τὴν γένεσίν των ε[ἰς] τὸν ἀγενῆ πολλαπλασιασμὸν καὶ σπανιώτερον ε[ἰς] τὸν ἐγγενῆ τοιοῦτον. Ἡ ἀγενὴς γένεσις ἢ πολλαπλασιασμὸς λαμβάνει χώραν τῇ συμμετοχῇ τῶ[ν] σπορίων. Ἕκαστον σπόριον εἶναι εἰδικὸν κύτταρο[ν] παραχθὲν ὑπὸ τοῦ θαλλοῦ καὶ ὅπερ, βραδύτερ[ον] βλαστάνον, παράγει νέον θαλλόν, καθ' ὅλα ὅμοιο[ν] πρὸς τὸν μητρικὸν τοιοῦτον. Τὰ σπόρια δυνατὸ[ν] νὰ εἶναι ἁπλᾶ ἐξωτερικὰ κύτταρα, ἅτινα διαφο[ρο]ποιοῦνται καὶ καλοῦνται *ἐξωγενῆ*. Τὰ νημάτια τοῦ σποριοκαρπίου διογκοῦνται κατὰ τὸ ἄκρον τω[ν] καὶ σχηματίζουσι περὶ τὸ μητρικὸν κύτταρον τ[ὰ] καλούμενα *βασίδια* (βλ. λ.), ἕκαστον στήριγμα τοῦ ὁποίου διογκοῦται καὶ σχηματίζει τὸ σπόριον. Τ[ὰ] σπόρια ἐπίσης δυνατὸν νὰ σχηματισθῶσιν εἰς τ[ὸ] ἐσωτερικὸν τοῦ μητρικοῦ κυττάρου. Ἐφ' ὅσον τ[ὸ] μητρικὸν κύτταρον ἀναπτύσσεται, πολλαπλασιάζονται οἱ πυρῆνές του καὶ σχηματίζουσι διαφράγματα εἰς τρόπον ὥστε νὰ ἀπομονῶνται τὰ θυγατρικὰ κύτταρα. Ὅταν πέριξ ἑκάστου πυρῆνος συμπυκνοῦται τμῆμα μόνον τοῦ πρωτοπλάσματος, ὅπερ καὶ χωρίζεται ὑπὸ τοῦ ἄλλου πρωτοπλάσματος δι[ὰ] μεμβράνης, τότε τὸ μητρικὸν κύτταρον καλεῖτ[αι] *ἀσκὸς* ἢ *θήκη*. Εἰς ἑκάστην θήκην περικλείοντ[αι] ὀκτὼ *θυγατρικὰ κύτταρα* ἢ *σπόρια*.

Ὁ σχηματισμὸς τῶν σπορίων εἰς τὴν θήκην τῆς *πεζίζης* διαιρεῖ τὸν πυρῆνα εἰς ὀκτὼ τμήματα. Εἰς ἕκαστον τῶν ὀκτὼ τούτων πυρήνων συναθροίζεται ποσόν τι πρωτοπλάσματος, ὅπερ περιβάλλεται ὑπὸ λεπτοτάτης μεμβράνης. Ὅταν τὰ σπόρια περιβάλλωνται ὑπὸ κυτταρικοῦ περιβλήματος, τότε παραμένουσιν ἀκίνητα, ὅταν δὲ καλύπτωνται μόνον ὑπὸ λεπτοτάτης λευκωματώδους μεμβράνης, τότε νήχονται ἐν τῷ ὕδατι καὶ καλοῦνται *ζωοσπόρια*. Τὰ ζωοσπόρια σπανίως ἀπαντῶσιν εἰς τοὺς μύκητας.

***Πολυμορφισμός***. Μύκητές τινες ἔχουσι μόνον μίαν κατηγορίαν σπορίων, ἐνῷ εἰς τοὺς περισσοτέρους ὁ θαλλὸς παράγει διαφόρων μορφῶν σπόρια. Τὸ φαινόμενον τοῦτο καλεῖται *πολυμορφισμὸς* τῆς σποριογόνου συσκευῆς. Μεταξὺ τῶν διαφόρων εἰδῶν τῶν σπορίων ὑπάρχει ἕν, ὅπερ ἀπαντᾷ εἰς πάσας σχεδὸν τὰς λοιπὰς κατηγορίας τῶν μυκήτων. Τὰ σπόρια ταῦτα καλοῦνται *κονίδια*, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὰ ἄλλα, ἅτινα *κυρίως σπόρια* καλοῦνται. Ἡ ἁπλουστέρα ἐκδήλωσις τοῦ πολυμορφισμοῦ εἶναι ὁ *διμορφισμός*. Ἡ *φιστουλίνα ἡ ἡπατική*, ἐκτὸς τῶν σπορίων ἅτινα φέρει εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῶν ὑμενοφόρων σωλήνων, παράγει κατὰ τὴν ἀνωτέραν ἐπιφάνειαν τῆς σποριοθήκης κονίδια, ἅτινα εἶναι παχύτερα τῶν κανονικῶν σπορίων πρὸς τὰ ὁποῖα καὶ ὁμοιάζουσι κατὰ τὸ σχῆμα καὶ τὸ χρῶμα. Ἡ *τρημέλη ἡ μεσεντερική*, μήκης ἀπαντῶν εἰς τοὺς ἀποσυνθέσει κορμοὺς τῶν δένδρων, παρουσιάζει ἀνάλογον φαινόμενον, ἀλλὰ τὰ κονίδια διαφέρουσι τῶν σπορίων, διότι τὰ πρῶτα εἶναι αἰχμηρότερα καὶ βαθυτέρου χρώματος τῶν δευτέρων. Εἰς τὸ *κοπρῖνον* παρουσιάζονται σπερματοφόρα κονίδια, ἀλλ' ἀντὶ νὰ ἀναφανῶσι ταῦτα ἐπὶ τῆς σποριοθήκης, παρουσιάζονται ἐπὶ τῶν νηματίων τοῦ μυκηλίου. Κλασσικὸν παράδειγμα πολυμορφισμοῦ παρουσιάζει ἡ *ἐρυσίβη τῆς ῥοΐζης*.

***Ἐγγενὴς γένεσις***. Αὕτη ἀπαντᾷ σπανιώτερον εἰς τοὺς μύκητας καὶ ἰδίως εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν *ᾠομυκήτων*. Κατὰ ταύτην, ὁ σχηματισμὸς τοῦ ᾠοῦ ἰδιορρύθμως καὶ ποικίλως σχηματίζεται. Ἕνεκα λόγῳ τοῦ τρόπου τοῦ σχηματισμοῦ τοῦ ᾠοῦ, οἱ ᾠομύκητες διαιροῦνται εἰς 7 οἰκογενείας. Τὸ

Digitized by Google

*Πίναξ ἐμφαίνων τὰ διάφορα εἴδη τῶν μυκήτων.*

ἐντὸς παρενθέσεως στοιχεῖα σημαίνουν : Α=ἀβλαβής. Δ=δηλητηριώδης. Ε=ἐδώδιμος. Θ=θανατηφόρος καὶ Υ=ὑπόπτου ἐνεργείας). 1=Μύκης ὁ καισαρικὸς (Ε). 2=Ὁ μυοκτόνος 3=Ὁ κίτρινος (Θ). 4=Ὁ φαλλοειδὴς (Θ). 5=Ὁ πανθήριος (Δ). 6=Ὁ ἐρυθρωπὸς (Ε). 7=Ὁ κολεοφόρος (Ε). 8=Ὁ ἀνεπτυγμένος (Ε). 9=Ὁ ἀσπιδοειδὴς (Ε). 10=Ἡ ἀρμιλλαρία ἐλιτοφόρος (Ε). 11=Ὁ ἐναργὴς (Δ). 12=Ὁ γυμνὸς (Ε). 13=Ὁ βαρύοσμος (Ε). 14=Ἡ κολλυβία ἢ ἀτρακτόπους (Ε). 15 Ὁ στιλπνὸς (Ε). 16=Ὁ χοανοειδὴς (Ε). 17=Ὁ πράσινος 18=Ὁ ἀμιγὴς (Δ). 19=Ὁ ἐπιπτερύγιος (Δ). 20=Ἡ ὀμφαλία ἢ περόνη (Α). 21=Ὁ ὀστρεοειδὴς (Ε). 22=Ὁ προτεταμένος (Ε). 23=Ὁ πτελέϊος (Ε). 24=Ὁ ἐλεφαντόδους (Ε). Ὁ ψιττάκειος (Α). 26=Ὁ κωνικὸς (Υ). 27=Ὁ κιτρινοφυλλαριώδης (Α). 28=Ἡ νυκταλὶς ἢ ἀστρόσπορος (Α). 29=Ὁ ἐδώδιμος (Ε). 30=Ὁ πορτοκαλλιώδης (Δ). 31=Ὁ μαλλωτὸς (Δ). Ὁ κηλιδωτὸς (Ε). 33=Ὁ πεπερώδης (Ε). 34=Ὁ ζωνηφόρος (Δ). 35=Ὁ δηλητηριώδης (Δ). 36=Ὁ πυρρὸς (Δ). 37=Ὁ ὑπόγλυκος (Ε). 38=Ὁ γλυκὺς (Ε). 39=Ὁ ὠχρογάλακτος (Δ). Ὁ ἰξώδης (Δ). 41=Ὁ ἀγαλακτοφόρος (Ε). 42=Ὁ εὐειδὴς (Ε). 43=Ὁ ἐμετικὸς (Δ). 44=Ὁ κελτικὸς (Δ). 45=Ὁ ὠχροκίτρινος (Ε). 46=Ὁ κυανοκίτρινος (Ε). 47=Ὁ δικρανώδης (Δ). Ὁ μαράσμιος (Ε). 49=Ὁ ὀρειάδης (Ε). 50=Ὁ τροχίσκος (Α). 51=Ὁ πὰν ὁ στυπτικὸς (Δ). 52=Ὁ σχιζόφυλλος ὁ κοινὸς (Α). 53=Ἡ βολβαρία ἢ ἰξώδης (Δ). 54=Ὁ πλούτιος ὁ ἐλαφόχρους. Ὁ ἀσπιδοειδὴς (Ε). 56=Ὁ ὠχρὸς (Δ). 57=Ὁ λεπτίνιος (Α). 58=Ἡ φολιωτὶς ἢ ποικιλόχρους (Α). 59=Ὁ ρικνὸς (Ε), 60=Ὁ λεπιδωτὸς (Υ). 61=Ὁ γλοιώδης (Α). 62=Ὁ πορφυρό-ς (Α). 63=Ὁ ἰόλευκος (Α). 64=Ἡ γαλέρα ἢ τριχωτὴ (Α). 65=Ὁ πάξιλλος ὁ ἑλισσόμενος (Ε). 66=Ὁ πεδινὸς (Ε). 67=Ὁ χιονώδης (Ε). 68=Ἡ στροφαρία ἢ πρασινόφαιος (Υ), 69=Τὸ ὑφόλωμα τὸ πυκνὸν (Δ). 70=Ὁ κομόθις (Ε). 71=Ὁ μελανόχρους (Α). 72=Ὁ λευκομελανὸς (Α).]

Digitized by Google

*Πίναξ ἐμφαίνων τὰ διάφορα εἴδη τῶν μυκήτων.*

[(Τὰ ἐντος παρενθέσεως στοιχεῖα σημαίνουν: Α=ἀβλαβής. Δ=δηλητηριώδης. Ε=ἐδώδιμος καὶ Υ=ὑπόπτου ἐνεργείας). 1=Μύκης ὁ τῆς σημύδας (Α). 2=Ἡ δαιδαλεία ἡ τῆς δρυὸς (Α). 3=Ὁ φωτοβόλος (Α). 4=Ὁ θειοειδὴς (Α). 5=Ὁ ποικιλόχρους (Α). 6=Ὁ λεντσίτης (Α). 7=Ὁ βωλίτης (Α). 8=Ὁ ἐδώδιμος (Ε). 9=Ὁ τῆς πίτυος (Ε). 10=Ὁ πικρὸς (Δ). 11=Ὁ χαλκόχρους (Ε). 12=Ὁ κιτρινόχρους (Ε). 13=Ὁ τραχὺς (Ε). 14=Ὁ τραχυπορτοκαλλιώδης (Ε). 15=Ὁ σατανᾶς (Δ). 16=Ὁ ὠχρὸς (Υ). 17=Ὁ πεπερώδης (Δ). 18=Ὁ ὀρφνὸς (Ε). 19=Ὁ βόϊος (Ε). 20=Ὁ κοκκώδης (Ε). 21=Ἡ φιστουλίνα ἡ ἡπατικὴ (Ε). 22=Ὁ κεραμοειδὴς (Ε). 23=Ὁ ἀνάκυρτος (Ε). 24=Ὁ κοραλλοειδὴς (Ε). 25=Ὁ ἐχῖνος (Ε). 26 = Ἡ σπάρασσις ἡ οὔλη (Ε). 27=Ὁ ἐπίξανθος (Ε). 28=Ὁ χρυσόχρους (Υ). 29=Ὁ εὐειδὴς (Ε). 30=Ὁ ὑπεροειδὴς (Α). 31=Ὁ κρατηρίσκος τὸ κέρας τῆς ἀμαλθείας (Ε). 32= Ὁ στερεὸς ὁ τριχωτὸς (Α). 33=Ὁ φαλλὸς ὁ ἀναίσχυντος (Δ). 34=Ὁ κλεῖθρος ὁ δικτυωτὸς (Α). 35=Ὁ κύαθος ὁ μεταξοειδὴς (Α). 36=Ὁ λίθινος (Α). 37=Ὁ ἀπιδοειδὴς (Α). 38=Ὁ σκληρόδερμος ὁ κοινὸς (Α). 39=Τὸ γέαστρον τὸ γεωμετρικὸν (Α). 40=Ὁ καλόκερως ὁ ἰξώδης (Α). 41=Ἡ τρεμέλλη ἡ μεσεντερικὴ (Α). 42=Τὸ ὠτίον τοῦ Ἰούδα (Α). 43=Ὁ ἀσκοειδὴς (Α). 44=Ὁ κυαθοειδὴς (Ε). 45=Ὁ πορτοκαλλιώδης (Ε). 46=Ἡ κοχενίλλη (Ε). 47=Ἡ ὀνωτὶς (Ε). 48=Ἡ μορχέλλη (Α). 49=Ὁ ἐδώδιμος ὁ λευκὸς (Ε). 50=Ὁ ἐδώδιμος ὁ μελανὸς (Ε). 51=Ὁ ῥυτιδόπους (Ε). 52=Ὁ κωνικὸς (Ε). 53=Ὁ οὖλος (Ε). 54=Ὁ λαγυνώδης (Ε). 55=Ὁ ἐλαστικὸς (Ε). 56=Ἡ ξυλαρία ἡ ξυλώδης (Α). 57=Ὁ μελανόσπορος (Ε). 58=Ὁ χειμερινὸς (Ε). 59=Ὁ κυματοϊνώδης (Ε). 60=Ὁ θερινὸς (Ε). 61=Ἡ ἀρκυρία ἡ φοινικοειδὴς (Υ). 62=Ἡ ἐρυσίβη τῆς βρίζης. 63=Ἡ ἐρυσίβη τοῦ σίτου. 64=Ὁ ἄνθραξ τοῦ σίτου. 65=Ἡ τερρουβία ἡ στρατιωτική. 66=Τὸ ᾠΐδιον. 67=Ὁ περονόσπορος. 68=Τὸ φῦμα. 69=Ὁ σφακελισμός.]

Digitized by Google

σχηματίζεται πάντοτε διὰ συσσωματώσεως δύο κυττάρων. Ἐὰν τὰ δύο πρωταρχικὰ κύτταρα εἶναι ὅμοια πρὸς ἄλληλα, τότε ὁ σχηματισμὸς τοῦ ᾠοῦ καλεῖται *ἰσόγαμος*. Ἐάν, ἀντιθέτως, τὰ πρωταρχικὰ κύτταρα εἶναι διάφορα μεταξύ των κατὰ μέγεθος καὶ σχῆμα, τότε ὁ σχηματισμὸς τοῦ ᾠοῦ καλεῖται *ἑτερόγαμος*. Τὸ φαινόμενον τῆς ἑτερογαμίας παρατηρεῖται εἰς τὸ *πύθιον*, εἰς ὃ μία ἐκ τῶν διακλαδώσεων τοῦ θαλλοῦ διογκοῦται κατὰ τὸ ἄκρον του εἰς σφαῖραν, ἥτις χωρίζεται ὑπὸ μεμβρανώδους διαφράγματος ἀπὸ τοῦ λοιποῦ τμήματος. Συγχρόνως ἑτέρα διακλάδωσις, ἀποσπασθεῖσα ἐκ γειτονικοῦ τινος τμήματος, σχηματίζει τὸ ἀνθηρίδιον. Ἡ διακλάδωσις αὐτὴ κυρτοῦται πρὸς τὸ ᾠογόνον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου προσηλοῦται τὸ ἀνθηρίδιον. Τοῦτο κατὰ τὸ ἄκρον τοῦ ᾠογόνου ἐξαπολύει μικρὸν νημάτιον, ὅπερ ἐπισυνάπτεται πρὸς τὸ ᾠοσφαίριον. Οὕτως ἄρχεται ὁ σχηματισμὸς τοῦ ᾠοῦ, ὅπερ γίνεται ὥριμον πρὸς ἀναπαραγωγὴν κατὰ τὸ ἔαρ. Τὰ ἀνθηρίδια δὲν σχηματίζουσιν ἀνθηροζωΐδια. Ἰσογαμικῶς σχηματίζεται τὸ ᾠὸν τοῦ *μυκερίνου*· νημάτιόν τι τοῦ θαλλοῦ ἐπιμηκύνεται μικρὸν κατὰ μικρόν, ἐνῷ συγχρόνως εἰς γειτονικὸν πρὸς τὸ πρῶτον νημάτιον βλαστάνει κλαδίσκος ὅμοιος πρὸς τὴν ὑφὴν τοῦ ἐπιμηκυνθέντος νήματος, μεθ' οὗ συναντᾶται. Τὰ ἄκρα τῶν δύο τούτων κλαδίσκων ἀπομονοῦνται κατ' ἀρχὰς διὰ διαφράγματος, ὅπερ σὺν τῷ χρόνῳ ἀπορροφεῖται, καὶ τὰ δύο κύτταρα συνταυτιζόμενα εἰς ἓν σχηματίζουν τὸ ᾠόν, ὅπερ ἀναπτυσσόμενον ταχύτατα περιβάλλεται ὑπὸ παχείας μεμβράνης καὶ εἰσέρχεται εἰς τὴν λανθάνουσαν ζωήν. Εἰς τὸν *κοπρῖνον*, μετὰ τὸν σχηματισμὸν τοῦ ᾠοῦ, ἄρχεται ἡ βλάστησις ἑνὸς σπορίου ἐφ' ὅσον τοῦτο εὕρῃ καταλλήλως λιπασμένον ἔδαφος, ὁπότε, μετ' οὐ πολύ, ἀναφαίνεται κλαδίσκος τις κεντρικός, ὅστις εὐθὺς ἀμέσως ἄρχεται διακλαδιζόμενος. Ἕκαστος τῶν νεοφανῶν κλαδίσκων φέρει εἰς τὴν κορυφὴν ἢ τὰ πλάγιά του ἄθροισμα μικρῶν κυττάρων σχήματος ῥαβδίων. Ὁ Reess ἀποφαίνεται ὅτι τὰ ῥαβδοειδῆ ταῦτα κύτταρα εἶναι κονίδια. Τὰ θήλεα γεννητικὰ ὄργανα εὑρίσκονται εἰς γειτονικὰ κύτταρα, ἅτινα διογκοῦνται καὶ εἶναι πεπληρωμένα διὰ κοκκώδους πρωτοπλάσματος. Τὰ ῥαβδοειδῆ κύτταρα γονιμοποιοῦσι τὰ πρῶτα, ἀποτέλεσμα δὲ τῆς γονιμοποιήσεως ταύτης εἶναι ἡ βλάστησις πολυπληθῶν κλαδίσκων, οἵτινες συνενούμενοι ἀποτελοῦσι τὸν καρπόν.

**Διασπορὰ τῶν σπορίων.** Οἱ μύκητες, ὡς καὶ τὰ περισσότερα τῶν κατωτέρας βαθμίδος φυτικὰ εἴδη, ἐμφανίζουν ἀναρίθμητα γονιμοποιὰ σωμάτια. Ἐπίσης εἰς τὸν ἀέρα διαρκῶς αἰωροῦνται μυριάδες σπορίων μυκήτων, ἅτινα εἶναι ἕτοιμα νὰ ἀναπτυχθῶσιν εὐθὺς ὡς εὕρωσιν εὐνοϊκὰς συνθήκας. Ὁ τρόπος τῆς διασπορᾶς τῶν σπορίων τῶν μυκήτων ἐξαρτᾶται ἐκ τοῦ εἴδους τοῦ πολλαπλασιαστικοῦ ὀργάνου. Εἰς τοὺς γυμνοκάρπους π. χ. μύκητας, ἐὰν μὲν τὸ ὑμένιον σχηματίζεται ἐκ βασιδίων, τὰ σπόρια πίπτουσιν ἐπὶ τῆς γῆς κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ὡριμάνσεώς των· ἐὰν δὲ σχηματίζεται ἐξ ἀσκιδίων, τότε τὰ σπόρια διασκορπίζονται μετὰ δυνάμεως πρὸς πάσας τὰς διευθύνσεις καὶ κατὰ πολυπληθεῖς μάζας. Εἰς τὰς ἀγγειοκαρπα τὰ σπόρια δὲν ἀπελευθεροῦνται εἰμὴ μόνον διὰ διαρρήξεως τοῦ περιδίου, ὅπερ χρησιμεύει ὡς περικάλυμμα τοῦ ὑμενίου. Ὁ σφαιροβόλος μικρὸς μύκης, ὅστις ἀναφαίνεται κατὰ τὸ ἔαρ καὶ τὸ φθινόπωρον ἐπὶ γηραιῶν κορμῶν δένδρων ἢ καὶ ἀποσυντεθειμένων φυτικῶν οὐσιῶν, φέρει σφαιρικὸν περίδιον, ὅπερ σχηματίζεται ὑπὸ διπλῆς μεμβράνης, ἥτις διαχωρίζεται κατὰ τὴν ὡρίμανσιν εἰς πέντε ἢ ἓξ λεπίδας. Ἐν δεδομένῃ στιγμῇ ἡ ἐξωτερικὴ μεμβρᾶνα ἀναδιπλοῦται, ἀνυψοῦται ὑπὲρ τὴν ἐσωτερικὴν μεμβρᾶναν καὶ προβάλλει ἀπελευθεροῦσα τὴν σπερμοθήκην, ἧς ἀποσυντιθεμένης διασκορπίζονται οἱ ἀσκοί.

**Βλάστησις τῶν σπορίων.** Ὁ ἀήρ, τὸ ὕδωρ, ἡ θερμότης εἶναι ἀπαραίτητα διὰ τὴν βλάστησιν τῶν σπορίων. Ἡ βλάστησις λαμβάνει χώραν μεταξὺ 0° καὶ 50°. Κάτωθεν ἢ ἄνωθεν τῆς θερμοκρασίες ταύτης παρατηρεῖται ἀδράνεια εἰς τὴν βλάστησιν. Ἡ εὐνοϊκωτέρα θερμοκρασία εἶναι ἡ κυμαινομένη μεταξὺ 12° καὶ 25°. Εἰς μικροτέραν ἢ μεγαλυτέραν ταύτης θερμοκρασίαν τὰ σπόρια μένουσιν ἀδρανῆ, χωρὶς ὅμως καὶ νὰ ἀπολέσωσι τὴν βλαστικὴν αὐτῶν δύναμιν. Ἐὰν ἡ θερμοκρασία κατέλθῃ τοῦ μηδενὸς ἢ ἀνέλθῃ πέραν τῶν 100°, τότε τὰ περισσότερα σπόρια ἀποθνήσκουν. Ἐλαχίστων μόνον εἰδῶν εἶναι γνωστὸς ὁ τρόπος τῆς βλαστήσεως τῶν σπορίων καὶ αἱ εὐνοϊκαὶ πρὸς τοῦτο συνθῆκαι. Ὁ Hoffman οὐδέποτε κατώρθωσε νὰ παρατηρήσῃ βλάστησιν σπορίων *λυκοπέρδου*. Εἰς τὴν βλάστησιν τῶν σπορίων ἐπιβοηθητικὸν ῥόλον παίζουσιν ἡ παρουσία ἀλκαλικῶν, ὀξίνων, ζαχαρωδῶν, κολλωδῶν καὶ λοιπῶν ὀργανικῶν οὐσιῶν. Διά τινα εἴδη ἀγαρικῶν καλλιεργησίμων πιστεύεται ὅτι τὰ σπόριά των δέον νὰ διέλθωσιν ἐπί τι χρονικὸν διάστημα εἰς τὸν ἐντερικὸν σωλῆνα τοῦ ἵππου, διὰ νὰ ἀποκτήσωσι τὴν δύναμιν τῆς βλαστήσεως. Τὰ σπόρια τοῦ *πιλοβόλου* δὲν βλαστάνουσιν, ἐὰν δὲν διέλθωσιν ἐκ τῆς πεπτικῆς συσκευῆς τοῦ κονίκλου. Τὰ σπέρματα τῆς *μορχέλλας* εἶναι ἐλλειπτικὰ καὶ καλύπτονται σχεδὸν καθ' ὅλην αὐτῶν τὴν ἐπιφάνειαν ὑπὸ ἐλαιώδους φυσαλλίδος, ἥτις διαχωρίζεται τῶν τοιχωμάτων τοῦ κυττάρου ὑπὸ λεπτοῦ στρώματος πρωτοπλάσματος. Τῇ προσθήκῃ σταγόνος ὕδατος θερμοκρασίας 15°—20° τὰ σπόρια διογκοῦνται, τὸ πρωτοπλασματικὸν στρῶμα παχύνεται, ἡ ἐλαιώδης σταγὼν ἀποσύρεται πρὸς τὰ τοιχώματα καὶ ἀμέσως διαχωρίζεται εἰς πολυπληθῆ μικρότατα σταγονίδια, ὁπότε καὶ τὰ σπόρια πληροῦνται ὑπὸ εἴδους ἐκχυλίσματος. Ἀπὸ τῆς στιγμῆς ταύτης τὰ σπόρια μεγεθύνονται καὶ ὁ ὄγκος των διπλασιάζεται ἢ καὶ τριπλασιάζεται. Συγχρόνως ἀναφαίνεται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας των, συνήθως ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς ἐλλείψεως, μικρὰ διαφανὴς προέκτασις, ἀκολουθουμένη ὑπὸ λεπτοτάτης μεμβράνης, ἥτις διαχωρίζει τὸ περίβλημα τοῦ σπορίου· ἐκεῖ ἀκριβῶς ἀναφαίνεται τὸ μυκήλιον. Τὸ πρωτόπλασμα ἀλλάσσει ἐκ νέου ὄψιν· τὸ ἐλαιῶδες ὑγρὸν φαίνεται ὅτι συνενοῦται μετὰ τοῦ πρωτοπλάσματος καὶ φέρεται πρὸς τὰ ἄκρα τοῦ κυττάρου, ἐνῷ τὸ κέντρον τούτου πληροῦται ὑπὸ ὑαλώδους ὑγροῦ. Παραλλήλως ἡ μικρὰ προέκτασις ἐπιμηκύνεται περαιτέρω καὶ λαμβάνει σχῆμα ἐντερικοῦ σωλῆνος, ἐνῷ εἰς τὸ μέρος ὅπου ὁ σωλὴν οὗτος ἐξέρχεται τοῦ σπορίου ἀναφαίνεται κυκλικὴ κηλίς, ἥτις ἐπιτρέπει νὰ διακρίνῃ τις ὅτι ἡ ἐξωτερικὴ μεμβράνα διερράγη καὶ ὅτι ἡ ἐσωτερικὴ ἐπιμηκύνθη διὰ τὸν σχηματισμὸν τοῦ σωλῆνος. Μετὰ 24 ὥρας ὁ σωλὴν οὗτος γίνεται τρὶς ἢ τετράκις ἐπιμηκέστερος τοῦ σπορίου καὶ μετά τινας ὥρας ἀναφαίνονται τὰ πλάγια διαφράγματα τοῦ σπορίου, ἐνῷ ὁ σωλὴν ἐξακολουθητικῶς ἐπιμηκύνεται, διακλαδίζεται καὶ σχηματίζει τὸν πυρῆνα, οὕτως εἰπεῖν, τοῦ μυκηλίου. Μετὰ τὴν πολύπλοκον ταύτην διεργασίαν ἄρχεται ἡ βλάστησις τῶν σπορίων καὶ κονιδίων.

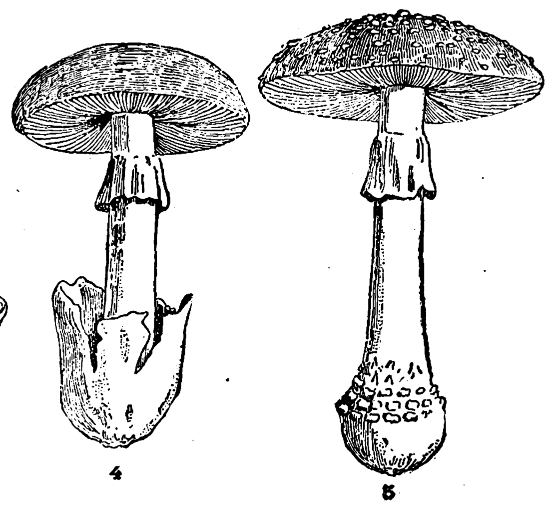

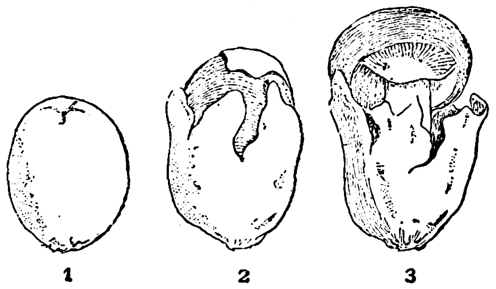

1 2 3 4 5

*Διαδοχικαὶ φάσεις τῆς ἀναπτύξεως βολβοφόρου μύκητος.*

[1—Ὁ μύκης τελείως περιβαλλόμενος ὑπὸ τοῦ βολβοῦ του. 2—Διασχίζων τὸν βολβόν του. 3—Περαιτέρω διάσχισις τοῦ βολβοῦ. 4—Ἴχνη βολβοῦ πέριξ τοῦ ποδίσκου. 5—Τελείως διαμεμορφωμένος.]

**Χημικὴ σύστασις.** Τὰ 60—90% τοῦ βάρους τῶν μυκήτων ἀποτελοῦνται ἐξ ὕδατος. Ὑπάρχουσι πλεῖστοι μύκητες, οἵτινες ἐμβαπτιζόμενοι ἐντὸς ὕδατος ἀπορροφῶσι τοῦτο ἐν εἴδει σπόγγου. Κυριώτερα συστατικά, ἅτινα περιέχουσιν οἱ μύκητες, εἶναι ἡ μαννῖτις, ἡ γλυκόζη, ἡ μυκητίνη, τὸ λεύκωμα, τὸ ἄμυλον, ἡ ἐργοτίνη, ἡ ἀμανιτίνη καὶ ἄλλα τινὰ εἰς μικροτέραν ποσότητα καὶ δευτερευούσης σημασίας.

**Ἰδιότητες.** Μεταξὺ τῶν κυριωτέρων ἰδιοτήτων τῶν μυκήτων εἶναι ὁ χρωματισμός, ἡ ὀσμή, ἡ γεῦσις καὶ ὁ φωσφορισμός. Ὁ χρωματισμὸς παρουσιάζει θαυμαστὴν ποικιλίαν· τὸ ἐρυθρὸν χρῶμα ἀπαντᾷ εἰς πάσας αὐτοῦ τὰς ἀποχρώσεις, ἀπὸ τοῦ ὠχροερύθρου μέχρι τοῦ πορφυροῦ· τὸ κίτρινον ἀπὸ τοῦ ὠχροκιτρίνου μέχρι τοῦ χρυσοκιτρίνου· ἐπίσης ἀναλόγως ἀντιπροσωπεύονται τὸ λευκόν, τὸ φαιόν, τὸ τεφρόν, τὸ μελανὸν εἰς ὅλας αὐτῶν τὰς ἀποχρώσεις. Τὰ λαμπρότερα χρώματα ἔχει ἡ *πεζίζα*, ὡς καί τινα εἴδη *ἀγαρικῶν*. Ἐπίσης θαυμασίους χρωματισμοὺς ἔχουσι πλεῖστοι δηλητηριώδεις μύκητες, ὅπως ὁ *βωλίτης* καὶ ἄλλοι. Οἱ πλεῖστοι τῶν μυκήτων ἀναδίδουσιν ἰδιάζουσαν ὀσμήν· τινὲς δριμεῖαν ὀσμὴν ἡμιαποσυντεθειμένων οὐσιῶν, ἄλλοι ὀσμὴν εὐρῶτος, ἄλλοι τελείως δυσάρεστον καὶ ἄλλοι ἀρκετὰ εὐάρεστον. Ἡ *φολιωτὶς* π. χ. ἀναδίδει ὀσμὴν πικρῶν ἀμυγδάλων, ἡ *ρουσσούλα* μήλου, ἡ *ψαλιωτὶς* ἡδυόσμου, ὁ *γαλακτίτης* καφουρᾶς κτλ. Ἡ γεῦσις τῶν μυκήτων εἶναι ποικιλωτάτη. Ὁ *βωλίτης ὁ πεπερώδης* π. χ. ἔχει γεῦσιν πεπέρεως, ὁ *κυρτινάριος ὁ κιναμωμοειδὴς* εἶναι ἁλμυρός, ἡ *κλαβαρία* ἔχει πικρὰν γεῦσιν κτλ. Τὸ φαινόμενον τοῦ φωσφορισμοῦ δὲν εἶναι σπάνιον εἰς τοὺς μύκητας. Κατὰ τὰς θερινὰς καὶ θερμὰς νύκτας ἀπαντᾷ τις ἐντὸς τῶν διαφόρων δασῶν κορμοὺς ἡμικατεστραμμένους νὰ ἐκπέμπωσι ποικίλον φῶς. Τὰ φωτεινὰ ταῦτα σημεῖα εἶναι τὰ μυκήλια διαφόρων μυκήτων. Φωσφορίζοντες μύκητες εἶναι πλεῖστα εἴδη *ἀγαρικοῦ*, ὡς τὸ *ἀγαρικὸν ἡ λαμπάς*, τὸ *ἀγαρικὸν τὸ νυκτόφως* κτλ., τινὰ εἴδη *πολυπόρου* καὶ πλεῖστα εἴδη *ῥιζομόρφου*.

**Χρῆσις.** Οἱ μύκητες ἐχρησιμοποιοῦντο ἄλλοτε εὐρέως εἰς τὴν φαρμακευτικήν, ἐνῷ σήμερον ἐλάχιστα, ὡς εἴδη τινὰ *πολυπόρου* κ. ἄ. Κυρίως οἱ μύκητες χρησιμοποιοῦνται ὡς ἐκλεκτὸν ἔδεσμα. Ἐκ τῶν πλέον περιζητήτων ἐδωδίμων μυκήτων εἶναι τὸ *ἀγαρικὸν τὸ ἀγροδίαιτον*, τὸ *ἀγαρικὸν τὸ καισαρικόν*, ὁ *βωλίτης ὁ ἐδώδιμος*, ἡ *τρύφη ἡ μελανόσπορος*, ἡ *μορχέλλα ἡ ἐδώδιμος* κλπ.

**Γεωγραφικὴ ἐξάπλωσις.** Ἡ γεωγραφικὴ ἐξάπλωσις τῶν μυκήτων δὲν εἶναι τελείως ἐξηκριβωμένη. Ἰδίως ἀπαντῶσιν εἰς τὴν Εὐρώπην, τὴν Β. Ἀμερικὴν καί τινας χώρας τῆς Ἀφρικῆς καὶ τῆς Ἀσίας. Κυρίως διακρίνονται δύο ζῶναι ἐξαπλώσεως τῶν μυκήτων, ἡ εὔκρατος, ὅπου γενικῶς ἀπαντῶσιν οἱ σαρκώδεις μύκητες, καὶ ἡ τροπική, ὅπου ἀπαντῶσιν οἱ ξυλώδεις μύκητες. Οὕτω τὸ γένος *ἀγαρικὸν* ἀπαντᾷ εἰς τὸ κέντρον τῆς εὐκράτου ζώνης καὶ ἐπεκτείνεται ἀπὸ Σουηδίας μέχρις Ἑλλάδος καὶ ἀπὸ τῆς Ἀγγλίας μέχρι τῆς Βορείου Ἀμερικῆς. Εἰς τὴν τροπικὴν ζώνην ἀφθονοῦσιν οἱ *πολύποροι*. Οἱ *βωλῖται* ἀφθονοῦσι κυρίως εἰς τὰς εὐκράτους καί τινα εἴδη καὶ εἰς τὰς ψυχρὰς ζώνας. Οἱ *γαστερομύκητες* ἀπαντῶσιν ἀφθονώτεροι εἰς τὰς θερμοτέρας χώρας τῆς εὐκράτου ζώνης. Οἱ *ἀσκομύκητες* ἀπαντῶσι σχεδὸν πανταχοῦ.

**Κατάταξις.** Πλεῖστοι, κατὰ διαφόρους ἐποχάς, ἐπενόησαν ποικίλην κατάταξιν τῶν μυκήτων. Οὕτω ὁ Fries διήρεσε τοὺς μύκητας εἰς ἓξ μεγάλα ὑπαθροίσματα ἢ κατηγορίας, τοὺς *κωνομύκητας*, τοὺς *ὑφομύκητας*, τοὺς *γαστερομύκητας*, τοὺς *πυρηνομύκητας*, τοὺς *δισκομύκητας* καὶ τοὺς *ὑμενομύκητας*. Ὁ Léveillé διήρεσεν αὐτοὺς εἰς ἓξ κατηγορίας: τοὺς *βασιδιοσπόρους*, τοὺς *θηκοσπόρους*, τοὺς *κλινοσπόρους*, τοὺς *κυτισπόρους*, τοὺς *τριχοσπόρους* καὶ τοὺς *ἀρθροσπόρους*. Ὁ De Bary διήρεσε τούτους εἰς *φυκομύκητας*, *ὑποδερμικούς*, *βασιδιομύκητας* καὶ *ἀσκομύκητας*. Ὁ Sachs τοὺς ὑποδιαιρεῖ εἰς *φωτόφυτα*, *ζυγόσπορα*, *ᾠόσπορα* καὶ *καρπόσπορα*. Ἡ διαίρεσις τῶν μυκήτων, ἥτις ὑπὸ τῶν περισσοτέρων βοτανικῶν εἶναι παραδεδεγμένη, εἶναι ἡ ἑξῆς: *βασιδιομύκητες*, *ἀσκομύκητες*, *φομύκητες* καὶ *μυξομύκητες* (βλ. λ.).

**Καλλιέργεια.** Οἱ μύκητες καλλιεργοῦνται τινὲς μὲν διὰ τὸ ἐδώδιμον αὐτῶν, ἄλλοι δὲ πρὸς κόσμον. Ἐπίσης καλλιεργοῦνται καί τινες μύκητες, οἵτινες χρησιμεύουσιν ὡς ἀρίστη τροφὴ διὰ τὰ κτήνη, κυρίως τὰ διάφορα εἴδη τοῦ *βωλίτου*. Ἡ καλλιέργεια τῶν μυκήτων διενήργειτο ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων. Παρὰ ταῦτα ὅμως οἱ περισσότεροι ἐδώδιδοι μύκητες συλλέγονται ἀπὸ τοὺς ἀγροὺς καὶ τὰ δάση, ὅπου εἶναι αὐτοφυεῖς.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Hesse*, Die Hypogaen Deutschlands (Halle 1890—1894).—*Cooke*, An introduction to the Study of microscopic fangi (London, 1886). — *Fuckel*, symbolae mycologicae (Wiesbaden, 1869—1893).—*Hoffman*, Index fungorum (Leipzig, 1863). — *Saccardo*, Sylloge fungorum omninm hucusque cognitorum (Padua, 1882—1906),—*Berlese*, Icones fungorum omnium hucnsque cognitorum (Padua, 1891—1905).—*Làraro è Ibiza*, Nuevos tuberaceos de Espana (Madrid, 1908).—*Rolland*, Atlas des champignons de France, Suisse et Eelgique (Paris, 1906—1909). — *Dufour*, Atlas des champignous comestibles et véneneux (Paris, 1891).—*Boyer*, Champignons cornestibles et vénéneux (Paris, 1891). — *Bulliard*, Champignons de la France (Paris, 1791—1812).—*Ludwig*, Lehrbuch der niedern Kryptogamen (Stuttgart, 1892). — *Sydow*, Annales mycologici (Berlin, 1885). — *Codina*, 'A puntes para la floru de La sellera (Gerona, 1908).

Δ. Ν. ΠΑΠΑΓΙΑΝΝΟΠΟΥΛΟΣ

—*[Φυτοπαθ.]* Ἀναλόγως τοῦ τρόπου τῆς ζωῆς των οἱ *μύκητες* δύνανται νὰ διαιρεθῶσιν εἰς *σαπροφύτους*, εἰς *παρασίτους* καὶ εἰς *συμβιοῦντας*. Οἱ σαπρόφυτοι τρέφονται ἀπὸ ὀργανικὰς οὐσίας ἐν ἀποσυνθέσει, ὡς π.χ. οἱ κοινοὶ εὐρῶτες ἢ μοῦχλαι τοῦ ἄρτου, τοῦ τυροῦ καὶ οἱ πλεῖστοι τῶν φαγωσίμων καὶ δηλητηριωδῶν μυκήτων, οἱ ὁποῖοι ζοῦν ἐπὶ τῆς χωμάδος καὶ ἐν γένει ἐπὶ ὑπολειμμάτων φυτῶν ἢ ζῴων ἐν ἀποσυνθέσει. Οἱ μύκητες οὗτοι εἶναι συνήθως ἀβλαβεῖς διὰ τὰ πέριξ φυτά, ἐνίοτε ὅμως τινὲς ὑπὸ ὡρισμένας συνθήκας δύνανται νὰ προσαρμοσθοῦν εἰς τὴν παρασιτικὴν ζωήν, μεταβαλλόμενοι εἰς *προαιρετικὰ παράσιτα*, πολλάκις δυσ-

Digitized by Google

εξοντοτώτερα ἀπὸ τοὺς κυρίως παρασίτους μύκητας, διότι καὶ μετὰ τὸν θάνατον τοῦ φυτοῦ ἐξακολουθοῦν ζῶντες ἐπ' αὐτοῦ ὡς σαπρόφυτα. Οἱ σαπρόφυτοι ἀποτελοῦν τὴν μεγίστην πλειονότητα τῶν μυκήτων. Οἱ κυρίως *παράσιτοι* ἢ *ὑποχρεωτικῶς παράσιτοι* εἶναι ἐκεῖνοι, τῶν ὁποίων ἡ ἀνάπτυξις εἶναι στενῶς συνδεδεμένη μὲ ἕνα ζῶντα ὀργανισμόν, ἀπὸ τὸν ὁποῖον ἀπορροφοῦν τὰς θρεπτικὰς οὐσίας, ὧν ἔχουν ἀνάγκην, καὶ ἐπιφέρουν οὕτω εἰς αὐτὸν διαταραχὰς κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον σοβαράς. Οὗτοι ζοῦν εἴτε ἐπὶ φυτικῶν ὀργανισμῶν προκαλοῦντες φυτονόσους, εἴτε ἐπὶ ζωϊκῶν ἢ καὶ τοῦ ἀνθρώπου προκαλοῦντες ἐνίοτε σοβαρὰς ἀσθενείας. *Συμβιοῦντες* τέλος εἶναι οἱ μύκητες οἱ συζῶντες ἐν ἁρμονίᾳ μετὰ ἑτέρου τινὸς φυτοῦ κεκτημένου χλωροφύλλην, εἰς τὸ ὁποῖον προσφέρουν οὐσίας, τὰς ὁποίας ἀπορροφοῦν ἀπὸ τὸ ἔδαφος ἢ ἀλλαχόθεν καὶ λαμβάνουν εἰς ἀντάλλαγμα παρ' αὐτοῦ ἄλλας οὐσίας, ὧν ἔχουν ἀνάγκην. Κλασσικὸν παράδειγμα συμβιώσεως εἶναι αἱ *λειχῆνες*. Ἕτερον σπουδαῖον παράδειγμα συμβιώσεως εἶναι τὸ τῶν *μυκορριζίων*. Ἀπὸ φυτοπαθολογικῆς ἀπόψεως μόνον οἱ παράσιτοι μύκητες τῶν φυτῶν ἐνδιαφέρουν. Οὗτοι δύνανται νὰ ὑποδιαιρεθοῦν εἰς *ἐκτοπαράσιτα* (μὲ ἐξωτερικὸν μυκήλιον) καὶ εἰς *ἐνδοπαράσιτα* (μὲ ἐσωτερικὸν μυκήλιον). Τὸ ἐκτοπαράσιτα ἢ τρέφονται ἀπὸ ἐκκρίσεις εὑρισκομένας ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῶν φυτῶν, ὁπότε ἡ βλάβη προέρχεται ἐκ τοῦ ὅτι ἐμποδίζουν τὰς ἡλιακὰς ἀκτῖνας νὰ φθάσουν μέχρι τῆς χλωροφύλλης καὶ τὴν διαπνοὴν τοῦ φυτοῦ (π. χ. αἱ καπνίαι) ἢ τὸ ἐπιφανειακόν των μυκήλιον ἐξαποστέλλει μυζητῆρας ἐντὸς τῶν ἐπιδερμικῶν κυττάρων τοῦ ξενιστοῦ, δι' ὧν ἀπορροφεῖ τὰς ἀναγκαιούσας εἰς αὐτὰ τροφὰς (π.χ. τὰ ᾠίδια), ὁπότε ἡ βλάβη εἶναι ἄμεσος. Εἰς τὰ ἐνδοπαράσιτα τὸ μυκήλιον εἶναι ἐσωτερικόν, μόνον δὲ τὰ ὄργανα ἀναπαραγωγῆς εἶναι ἐξωτερικὰ συνήθως. Τὸ μυκήλιον τῶν μυκήτων τούτων ἢ κυκλοφορεῖ μεταξὺ τῶν κυττάρων ἀποστέλλον ἐντὸς αὐτῶν μυζητῆρας (π. χ. περονόσπορος τῆς ἀμπέλου), ἢ διατρυπᾷ τὰ κύτταρα καὶ ἀπορροφεῖ κατ' εὐθεῖαν ἀπ' αὐτῶν τὰς τροφάς του (π. χ. πολυποριίδαι τινές).

Ἐκ τῶν παρασίτων μυκήτων τινὲς προσβάλλουν μέγαν ἀριθμὸν φυτικῶν εἰδῶν, ὡς π. χ. ἡ Phytophtora omnivora καὶ αἱ ποικιλίαι της, πολλὰ Sclerotinia κλπ., οἱ πλεῖστοι ὅμως φαινομενικῶς μόνον εἶναι πολυφάγοι, ἐνῷ πραγματικῶς ἀναπτύσσονται ἐπὶ ἑνὸς εἴδους ἢ μιᾶς ὁμάδος εἰδῶν παραπλησίων. Κατὰ νεωτέρας μελέτας πολλὰ μεγάλα πολυφάγα εἴδη οὐρηδινιδῶν, ἐρυσιβιδῶν, ἀκόμη δὲ καὶ περονοσποριιδῶν διεμελίσθησαν εἰς πολυαρίθμους φυσιολογικὰς φυλὰς ἢ ἐξειδικευμένας μορφάς. Ἰδίως εἴς τινας οὐρηδινίδας ἡ ἐξειδίκευσις αὕτη φθάνει εἰς μέγιστον βαθμόν.

Εἰς τὰς πλείστας περιπτώσεις οἱ μύκητες εἶναι *ὁμόοικοι*, ἤτοι ὁλόκληρος ὁ βιολογικός των κύκλος συμπληροῦται ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ ξενιστοῦ. Ὑπάρχουν ὅμως καὶ μύκητες, ὧν ὁ βιολογικὸς κύκλος συμπληροῦται διὰ τῆς διόδου ἐπὶ δύο διαφόρων φυτῶν, π. χ. ἡ Puccinia graminis ἀναπτύσσεται ὡς αἰκιδιακὴ μορφὴ ἐπὶ τῆς βερβερίδος, ἐνῷ τὰ οὐρεδοσπόρια καὶ τελευτοσπόριά της ἀναπτύσσονται ἐπὶ τοῦ σίτου (σκωρίασις). Οἱ μύκητες οὗτοι καλοῦνται *ἑτερόοικοι*.

Ἡ ἰδιότης ἡ διακρίνουσα τὰ παράσιτα ἀπὸ τὰ σαπρόφυτα εἶναι ἡ μιασματικότης, ἥτις ἐμφανίζεται ὑπὸ μορφὴν ἐκκρίσεων διαλυουσῶν (κυτάζαι καὶ ἀδρομᾶζαι) τὴν κυτταρίνην καὶ τὰς ἀπεξυλωμένας μεμβράνας καὶ διευκολυνουσῶν οὕτω τὴν εἴσοδον τοῦ παρασίτου ἐντὸς τοῦ ζῶντος φυτοῦ καὶ ἑτέρων ἀναλόγων πρὸς τὰς τοξίνας διαχεομένων ἐν τῇ κυκλοφορίᾳ τῶν χυμῶν τοῦ ξενιστοῦ καὶ προκαλουσῶν πλασμόλυσιν καὶ καταστροφὴν τῶν χλωροπλαστῶν (δι' ὃ συχνάκις ἐμφανίζονται κηλῖδες εἰς τὰ προσβεβλημένα ὄργανα). Εἰς τὰ ὅπλα ταῦτα τῶν παρασίτων μυκητῶν τὸ φυτὸν ἀντιτάσσει ἄμυναν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἰσχυράν, ὡς π. χ. ἐκκρίνει κόμμι, σχηματίζει ἀφοριστικοὺς φελλώδεις ἱστοὺς κ.λ.π. Σπανίως ὅμως διὰ τῶν μέσων τούτων τὸ φυτὸν ὑπερνικᾷ τὸν μύκητα. Συνήθως ὁ μύκης ὑπερισχύει καὶ τότε ἐμφανίζεται ἡ φυτονόσος. Διὰ νὰ ἐμφανισθῇ ὅμως αὕτη, δὲν ἀρκεῖ μόνον ἡ ὕπαρξις τοῦ ξενιστοῦ καὶ τοῦ μύκητος, ἀλλὰ καὶ ἡ σύμπτωσις εὐνοϊκῶν ὅρων τοῦ περιβάλλοντος, κυρίως δὲ θερμοκρασίας καὶ ὑγρασίας. Δι' ἕκαστον μύκητα ἀναγκαιοῦν ὡρισμένοι βαθμοὶ τῶν δύο τούτων παραγόντων, π. χ. διὰ τὴν προσβολὴν τῆς ἀμπέλου ὑπὸ τοῦ περονοσπόρου ἡ εὐνοϊκωτέρα θερμοκρασία εἶναι +25°Κ καὶ ἀτμοσφαιρικὴ ὑγρασία 80 %. Ὅταν εἷς τῶν δύο τούτων παραγόντων δὲν εἶναι εὐνοϊκός, ὁ περονόσπορος δὲν ἀναπτύσσεται.

Αἱ διαταραχαὶ τὰς ὁποίας οἱ μύκητες προξενοῦν ἐπὶ τοῦ ξενιστοῦ εἶναι διαφόρων εἰδῶν, ἕκαστος δὲ μύκης προκαλεῖ ἰδιαιτέραν βλάβην. Ὑπάρχουν μύκητες προκαλοῦντες χλώρωσιν καὶ κατόπιν ἀποξήρανσιν τῶν ἱστῶν (περονόσπορος)· ἄλλοτε οἱ ἱστοὶ κατατρώγονται ἢ σχηματίζονται καρκινώματα, πληγαί, ἐκφυλισμὸς τῶν ἱστῶν, ὑπερτροφίαι, τερατομορφίαι, σῆψις καὶ ἀποσύνθεσις. Ἐνίοτε οἱ μύκητες ἐντοπίζονται εἰς ὡρισμένα ὄργανα τοῦ ξενιστοῦ (ἄνθραξ τῶν σιτηρῶν), ἄλλοτε προσβάλλουν ὁλόκληρον τὸ φυτόν, ἀναλόγως δὲ τῶν συνθηκῶν τοῦ περιβάλλοντος τῶν ἀκολουθουσῶν τὴν προσβολὴν ἢ ἀναπτύσσονται ἐμφανῶς ἢ ὑπὸ λανθάνουσαν μορφήν. Ἡ μετάδοσις τῶν μυκήτων γίνεται διὰ διαφόρων μέσων, ἤτοι ὑγρῶν ἀνέμων, ἐντόμων κλπ. καὶ διὰ τῶν σπορίων των, διατηροῦνται δὲ οὗτοι ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἔτους εἰς τὸ ἄλλο διὰ τῶν ᾠῶν, τὰ ὁποῖα ἀντέχουν εἰς λίαν δυσμενεῖς συνθήκας, διὰ τμημάτων μυκηλίου ἢ ὑπὸ μυκοπλασματικὴν μορφὴν διὰ τὰς σκωριάσεις κατὰ τὸν Eriksson. Ἡ ἐμφάνισις τῆς φυτονόσου δύναται νὰ προληφθῇ πολλάκις διὰ καταλλήλων καλλιεργητικῶν φροντίδων, τεινουσῶν νὰ ἐνδυναμώσουν τὸ φυτὸν ἐν σχέσει πρὸς ὡρισμένον μύκητα ἢ μὲ διαφόρους ἀντικρυπτογαμικὰς ἢ μυκητοκτόνους οὐσίας, αἱ ὁποῖαι ἀποτίθενται ἐπὶ τῶν φυτῶν εἴτε ὑπὸ ὑγρὰν μορφήν, εἴτε ὑπὸ μορφὴν κόνεων (βορδιγάλλειος πολτός, θεῖον) καὶ αἱ ὁποῖαι καταστρέφουν συνήθως τὸν μύκητα προτοῦ εἰσέλθῃ εἰς τὸ φυτόν, χωρὶς νὰ βλάπτουν τὸ τελευταῖον ἤ, ἐφ' ὅσον πρόκειται περὶ ἐκτοπαρασίτων, καταστρέφουν τὸ μυκήλιόν των (τὸ ᾠΐδιον τῆς ἀμπέλου καταστρέφεται μὲ τὸ θεῖον). Ὀλίγων ὅμως μυκήτων αἱ ζημίαι δύνανται νὰ προληφθοῦν διὰ τῶν μέσων τούτων, εἰς τὰς περισσοτέρας δὲ περιπτώσεις ἐνδείκνυται ἡ καταστροφὴ τῶν προσβεβλημένων φυτῶν πρὸς πρόληψιν ἐξαπλώσεως τῆς φυτονόσου.

Αἱ ἐτήσιαι ζημίαι τῆς παγκοσμίου γεωργίας ἐκ τῶν ὑπὸ τῶν παρασίτων μυκήτων προκαλουμένων φυτονόσων εἶναι τεράστιαι. Πρὸς ἀντιμετώπισιν τῶν ζημιῶν τούτων ἅπαντα τὰ κράτη ἔχουν ἱδρύσει φυτοπαθολογικὰς ὑπηρεσίας καὶ ἱδρύματα ἀποσκοποῦντα τὴν πρόληψιν τῆς μεταδόσεως φυτονόσων σοβουσῶν εἰς ἄλλας ἐπικρατείας καὶ τὴν μελέτην, πρόληψιν ἢ θεραπείαν τῶν ἑκάστοτε ἀναφαινομένων τοιούτων. Ἡ ἐπιστήμη ἡ ἀσχολουμένη μὲ τὴν μελέτην τῶν παθογόνων αἰτίων τῶν φυτονόσων καὶ μὲ τὴν ὑπόδειξιν τῶν μέσων προλήψεως καὶ θεραπείας αὐτῶν καλεῖται *φυτοπαθολογία*.

Ε. Τ. ΕΥΑΓΓΕΛΙΔΗΣ

**—μύκητες ξύλου**. Οἱ μύκητες οὗτοι τρέφονται δι' ἀπορροφήσεως τῆς κυτταρίνης, τοῦ ἀμύλου καὶ ἄλλων συστατικῶν τοῦ ξύλου, ἀφοῦ πρῶτον καταστήσωσι ταῦτα διὰ τῶν ἐνζυμῶν των ἀπορροφήσιμα. Τὸ ἀποτέλεσμα τῆς δράσεως τῶν μυκήτων καθὼς καὶ τῶν βακτηρίων ἐπὶ τῆς ξυλείας εἶναι ἡ σῆψις (βλ. λ. *ξυλεία*). Α. Ι. Σ.

**μυκητὴς** (ὁ) (Mycetes) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τετραχείρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κηβιδῶν*, περιλαμβάνον πιθήκους μήκους 80 περίπου ἑκατοστομέτρων, μὲ σῶμα εὔρωστον, κεφαλὴν ὀγκώδη καὶ ἀρκούντως ὑψηλήν, ὦτα μικρά, μέτωπον καὶ ρύγχος προέχοντα, πόδας μετρίου μήκους καὶ ἰσχυρούς, τρίχωμα πυκνόν, ὅπερ παρὰ τὸ ρύγχος ἐπιμηκύνεται σχηματίζον εἶδος πώγωνος. Γνωστὰ εἴδη τινά, ἀπαντῶντα εἰς τὰς δασώδεις ἐκτάσεις τῆς νοτίου Ἀμερικῆς καὶ κατὰ προτίμησιν ἐνδιαιτώμενα παρὰ τὰς ροὰς τῶν ὑδάτων ἢ τὰς ὄχθας τῶν λιμνῶν. Ἀξιολογώτερα εἴδη εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μυκητὴς ὁ ἐρυθρὸς* (Mycetes seniculus), ὅστις ἔχει χρῶμα καστανόχρουν πρὸς τὸ ὑπέρυθρον μὲ χρυσοκιτρίνας ἀποχρώσεις. Τὸ μῆκός του δὲν ὑπερβαίνει τὸ 1,25 μ., ἐκ τοῦ ὁποίου τὸ ἥμισυ καὶ πλέον ἀνήκει εἰς τὴν οὐράν. Τὸ θῆλυ ἔχει μῆκος 1,10 μ. καὶ σκοτεινότερον χρῶμα τοῦ ἄρρενος. Ἀπαντᾷ εἰς τὰς ἀνατολικὰς χώρας τῆς νοτίου Ἀμερικῆς. *Μυκητὴς ὁ μελανὸς* (Mycetes niger), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος 1,05 μ., ἐξ οὗ τὰ 50 ἑκατοστόμετρα ἀνήκουσιν εἰς τὴν οὐράν. Τὸ τρίχωμά του εἶναι μακρότερον τοῦ προηγουμένου εἴδους καὶ ἔχει μελανὸν χρωματισμὸν κατὰ τὴν ράχιν καὶ ὀρφνέρυθρον κατὰ τὴν κοιλίαν. Ἡ θήλεια ἔχει μελανόφαιον χρωματισμὸν κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ ὀρφνοκίτρινον κατὰ τὰ ὑποκάτω. Ἀπαντᾷ εἰς τὰ δάση τῆς Οὐρουγουάης καὶ Παραγουάης. Οἱ μυκηταὶ ἐνδιαιτῶνται κατὰ πολυπληθεῖς ἢ ὀλιγοπληθεῖς ὁμάδας καὶ ἐκβάλλουσιν ἀποκρουστικὴν φωνὴν ἐν εἴδει μυκηθμοῦ, ὅστις ἀκούεται εἰς μεγάλην ἀπόστασιν, ἰδίως κατὰ τὴν νύκτα. Δ.Ν.Π.

—*[Παλαιοζῳολ.]*. Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυκητῶν* εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν ὀστεοφόρων σπηλαίων τῆς Βραζιλίας. Γ. Κ. Γ.

**μυκητιασικὰ καμμιώματα** (Gommes mycosiques) *[Δερματολ.]*· βλ. λ. *κομμίωμα*.

**μυκητίασις** (ἡ) *[Δερματολ.]*. Νόσος οὐχὶ σπανία, ὀφειλομένη εἰς διαφόρους παθογόνους μύκητας, ἥτις προσβάλλει οὐ μόνον τὸ δέρμα ἀλλὰ καὶ ἄλλα ὄργανα καὶ προκαλεῖ τὸν σχηματισμὸν τῶν φλεγμονωδῶν ὄγκων, οἱ ὁποῖοι μαλακύνονται, ἀποβάλλονται καὶ σχηματίζουσι συρίγγια. Οἱ παθογόνοι μύκητες εἶναι πολλοί, διαρκῶς δὲ ἀνακαλύπτονται νέαι παθογόνοι μορφαὶ αὐτῶν. Διακρίνομεν δύο ὁμάδας τῆς νόσου ταύτης. Ἡ πρώτη περιλαμβάνει γενικῶς τὰς κατ' ἐπιπολὴν μυκητιάσεις, αἱ ὁποῖαι προσβάλλουν μόνον τὴν ἐπιδερμίδα καὶ τὰ ἀνώτερα στρώματα τοῦ δέρματος. Αὗται διαγιγνώσκονται εὐχερῶς διὰ τῆς μικροσκοπικῆς ἀνευρέσεως τοῦ παθογόνου μύκητος, εἶναι καλοήθους μορφῆς καὶ ἰῶνται εὐκόλως. Εἰς τὴν ὁμάδα ταύτην ἀνήκουν αἱ *μικροσπορίαι*, αἱ *τριχοφυτίαι*, ὁ *ἀχώρ*, ἡ ποικιλόχρους *πιτυρίασις*. Ἡ δευτέρα ὁμὰς περιλαμβάνει τὰς κατὰ βάθος μυκητιάσεις, αἱ ὁποῖαι προσβάλλουν οὐ μόνον τὸ δέρμα, ἀλλὰ καὶ ὅλα τὰ ἄλλα ἐσωτερικὰ ὄργανα, συγχέονται δὲ συνήθως πρὸς τὴν συφίλιδα, τὴν φυματίασιν καὶ τὴν ὀστεομυελίτιδα· ἡ ἔγκαιρος διάγνωσις αὐτῶν ἀπαλλάσσει τοὺς πάσχοντας σοβαρωτάτων κινδύνων καὶ βασάνων. Εἰς τὴν ὁμάδα ταύτην ἀνήκουν: 1) Ἡ *βλαστομυκητίασις* ἢ *μυκητίασις τοῦ Gilchrist*, ἡ ὁποία προσβάλλει τὰ ἀκάλυπτα μέρη τοῦ σώματος, ἤτοι τὸ πρόσωπον, τὰς χεῖρας, τὸν λαιμόν· ἐμφανίζεται κατ' ἀρχὰς διὰ μιᾶς ἑστίας ὑπὸ μορφὴν ἐκθύματος, ἡ ὁποία σὺν τῷ χρόνῳ αὐξάνεται καὶ πολλαπλασιάζεται δι' αὐτομολύνσεως. Ἡ πάθησις αὕτη διαρκεῖ ἐπὶ μακρὰ ἔτη καὶ ἔχει κακὴν τὴν πρόγνωσιν, διότι συνήθως ὁ θάνατος ἐπέρχεται διὰ τῆς μολύνσεως καὶ τῶν ἄλλων σπουδαίων ὀργάνων τοῦ σώματος. 2) Ὁ πούς τῆς *Μαδούρας* (βλ. λ.). 3) Αἱ *ἀκτινομυκητιάσεις*. 4) Αἱ *σποροτριχιάσεις*: α') Ἡ *νόσος τοῦ Reurmann καὶ Gougerot*, ἡ ὁποία προσβάλλει πάντα τὰ μέρη τοῦ σώματος, τὸ δέρμα, τὰς ἀρθρώσεις, τὴν γλῶσσαν, τοὺς πνεύμονας κλπ., γεννᾷ ὅλας τὰς δυνατὰς ἐκδηλώσεις, ὀγκίδια ἁπλᾶ, ὄγκους πολλαπλοῦς ἐξελκωμένους, μεγάλα ἀποστήματα καὶ ἁπλουστάτας πιτυριάσεις· διὰ τοῦτο πρέπει καὶ εἰς τὰς ἁπλᾶς ἀκόμη περιπτώσεις συφίλιδος καὶ φυματιάσεως νὰ σκεφθῶμεν ὅτι εἶναι δυνατὸν νὰ πρόκειται περὶ σποροτριχιάσεως. Ἡ διάγνωσις τῆς παθήσεως ταύτης γίνεται διὰ τῆς τεχνικῆς καλλιεργείας καὶ τῆς ὀροαντιδράσεως κατὰ τὸν Vidal καὶ Abrami. Ἡ ἴασις ἐπιτυγχάνεται εὐκόλως κατὰ 90 % διὰ τοῦ ἰωδιούχου καλίου. β') Ἡ *ἡμισποριάσις* (Hemisporose). γ') Πολλαὶ ἄλλαι νεωστὶ περιγραφεῖσαι σποροτριχιάσεις, ὀφειλόμεναι εἰς διαφόρους παθογόνους μύκητας, αἱ ὁποῖαι διαγιγνώσκονται καὶ θεραπεύονται εὐκόλως, ὅπως καὶ αἱ λοιπαὶ σποροτριχιάσεις.

*Μυκητίασις ἡ σπογγοειδὴς* (Mycosis fungoides). Αὕτη εἶναι νόσος σπανία, φύσεως ἐπίσης μολυσματικῆς, καίτοι μέχρι σήμερον δὲν ἐπετεύχθη ἡ ἀνεύρεσις τοῦ παθογόνου αὐτῆς μύκητος. Κύριον αὐτῆς γνώρισμα εἶναι ὁ σχηματισμὸς ὄγκων. Παρουσιάζεται εἰς πᾶσαν ἡλικίαν, ἐξελίσσεται βραδύτατα καὶ ἄρχεται πάντοτε δι' ἑνὸς πολυμόρφου ἐξανθήματος εἰς τὰ ἄκρα καὶ τὸν θώρακα, τὸ ὁποῖον προκαλεῖ ἐντονώτατον κνησμόν. Εἰς τὸ πρῶτον τοῦτο στάδιον ἡ πάθησις δὲν διακρίνεται ἀπὸ τὸ κοινὸν ἔκζεμα, διατηρεῖται δὲ ἐπὶ ἔτη. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως αὐξάνει ἡ διήθησις τοῦ δέρματος καὶ ἡ ἀπολέπισις, ἀναφαίνονται ὀγκίδια ἐρυθρὰ μαλακά, τὰ ὁποῖα αὐξάνονται μέχρι μεγέθους ᾠοῦ ὄρνιθος καὶ ἐξελκοῦνται. Ἡ διάρκεια τοῦ σταδίου τούτου εἶναι 2—20 ἔτη. Τέλος ἀναφαίνεται συνεχὴς πυρετὸς καὶ οἱ ἄρρωστοι ἀποθνήσκουν ἐκ μαρασμοῦ ἢ ἐξ ἐπιπλοκῆς νέας τινὸς νόσου. Μολύνσεις ἐσωτερικῶν ὀργάνων παρετηρήθησαν σπανίως. Ἡ διάγνωσις τῆς σπογγοειδοῦς μυκητιάσεως εἰς τὸ πρῶτον αὐτῆς στάδιον εἶναι δυσκολωτάτη, διότι ἐκλαμβάνεται συνήθως ὡς ἁπλοῦν ἔκζεμα ἢ ψωρίασις· εἰς τὸ δεύτερον ὅμως στάδιον εἶναι σχετικῶς εὔκολος. Ἡ πρόγνωσις εἶναι πάντοτε κακή. Θεραπευτικῶς ἐπιδροῦν εὐνοϊκῶς αἱ ἀκτῖνες Ραϊντγκεν καὶ ἐσωτερικῶς τὸ ἀρσενικόν.

Κ. Κ. ΚΥΡΙΑΖΟΠΟΥΛΟΣ

— *[Κτηνιατρ.]* Ἡ *μυκητίασις* εἰς τὰ ζῷα εἶναι νόσημα δερματικόν, κατὰ τὸ ὁποῖον ἀναφαίνονται ἐπὶ τοῦ δέρματος ὄγκοι φλεγμονώδεις, διαφόρου μεγέθους, οἵτινες, ἐμπυούμενοι καὶ σχαζόμενοι ἀφ' ἑαυτῶν, καταλήγουσιν εἰς συρίγγια. Οἱ ὄγκοι οὗτοι ὀφείλονται εἰς φυτικά τινα παράσιτα (*ἐπίφυτα*), τὰ ὁποῖα ζοῦν ἐπὶ τοῦ δέρματος τῶν διαφόρων κατοικιδίων ζῴων καὶ ἀντιπροσωπεύουν ὄντα ἁπλουστάτης ὀργανικῆς φύσεως. Τὰ ἐπίφυτα ταῦτα καλοῦνται *μύκητες*, τὸ δὲ νόσημα τὸ ὑπ' αὐτῶν προκαλούμενον *μυκητίασις*. Οἱ κυριώτεροι μύκητες εἶναι: ὁ *λευκάζων ἐνδομύκης* τῆς ἀφθώδους στοματίτιδος, ὁ *οἰδηματοποιὸς* ὑποδορίων ὄγκων καὶ ἀποστημάτων, ὁ *ἀκτινομύκης τοῦ βοὸς* τοῦ Harz καὶ ὁ *βοτρυομύκης τοῦ ἵππου* (Discomyces equi) τοῦ Rivolta.

Ἡ μυκητίασις προσβάλλει ὅλα τὰ κατοικίδια ζῷα καὶ τὰ πτηνά. Ὑπὸ τὴν μορφὴν τοῦ ἄχορος, ὀφειλομένου εἰς τὸ ἀχόριον τοῦ Chônleini, προσβάλλονται αἱ γαλαῖ, οἱ κύνες, οἱ βόες, αἱ ὄρνιθες καὶ σπανιώτατα οἱ ἵπποι (Megnin). Τὸ νόσημα συνίσταται εἰς ἐμφάνισιν εὐαρίθμων πλακῶν ἐπὶ διαφόρων μερῶν τοῦ σώματος (ἐπὶ τῆς κνήμης καὶ ἐπὶ τῆς βάσεως τῶν ὀνύχων εἰς τὰς γαλᾶς). Αἱ πλάκες αὐταί, μεγέθους φακῆς καὶ χρώματος πρασινοκιτρίνου ἢ μελανοφαίου, καταλήγουν εἰς ἐσχάρας (κροῦστες)· καὶ ἄλλοτε μὲν ἀπέχουσιν ἀλλήλων, ἄλλοτε δὲ συνενούμεναι ἀποτελοῦν πλάκας μεγαλυτέρας τὸ μέγεθος. Χαρακτηριστικὸν τοῦ δερματικοῦ τούτου νοσήματος εἶναι ἡ ἔλλειψις τῆς τριχοπτώσεως. Ἄλλο σύμπτωμα τοῦ ἄχορος εἶναι ὁ κνησμός, ὅστις, ἐνῷ εἰς τὸν κύνα παρουσιάζεται ἐντονώτατος, εἰς τὴν γαλῆν ἐλλείπει. Ὁ κύων προσβάλλεται ὑπὸ τοῦ νοσήματος τούτου κατὰ τὴν ὀμφαλικὴν χώραν, τὸ στῆθος, τὸν λαιμόν, τὴν κεφαλὴν καὶ τὴν ράχιν, ἔνθα ἀναφαίνονται αἱ

Digitized by Google

αἱ πλάκες· κατ' ἀναλογίαν συμβαίνει καὶ εἰς τὰ ἄλλα ζῷα. Χαρακτηριστικὸν τῶν πλακῶν τούτων εἶναι ἡ κακοσμία. Ὁ ἄχωρ μεταδίδεται ἀπὸ τῶν ζῴων εἰς τὸν ἄνθρωπον. Ἄλλη μορφὴ μυκητιάσεως, ἐκ τῆς ὁποίας προσβάλλονται μόνον ὁ ἵππος καὶ ὁ κύων καὶ ἥτις μεταδίδεται ἐπίσης εἰς τὸν ἄνθρωπον, εἶναι ὁ *ἕρπης τ ῦ ἵππου*, ὀφειλόμενος εἰς τὸν μικροσπόρον τοῦ Gruby· τὸ νόσημα τοῦτο λέγεται καὶ *ἄχωρ τοῦ Gruby*. Ἡ θεραπεία τοῦ ἄχορος ἐσωτερικῶς συνίσταται εἰς τὴν χορήγησιν κινίνης, σιδηρούχων σκευασιῶν, ἰτεϋλικοῦ ὀξέος, καμφορᾶς καὶ βορικοῦ ὀξέος, εἰς ἐνδοφλεβικὰς ἐνέσεις μὲ διάλυσιν τοῦ Lygol καὶ ὑδραργυρικάς τινας διαλύσεις. Ἐξωτερικῶς μεταχειριζόμεθα τὸ μεῖγμα τοῦ Burow.

Ἄλλη μορφὴ μυκητιάσεως εἶναι ὁ *ἕρπης ὁ τριχοκείρας*, ὀφειλόμενος εἰς τριχόφυτον. Τὸ νόσημα τοῦτο προσβάλλει τοὺς βοῦς, τὸν κύνα, τὸν ἵππον, τὴν γαλῆν, τὴν αἶγα καὶ τὸν χοῖρον. Ἐπὶ τοῦ δέρματος τῶν ζῴων τούτων παρουσιάζονται κηλῖδες μεγέθους δραχμῆς ἀργυρᾶς καὶ χρώματος λευκοφαίου, καταλήγουσαι εἰς φολίδας (λέπια), ἑνούμεναι δὲ μεταξύ των μεγεθύνονται εἰς σχῆμα παλάμης. Καὶ ἄλλοτε μὲν αἱ κηλῖδες αὗται ἀποψιλοῦνται, ἄλλοτε δὲ παραμένουν ὀλίγαι μόνον τρίχες, αἵτινες συλλαμβανόμεναι διὰ τῶν δακτύλων τῆς χειρὸς ἀποκόπτονται εὐκόλως. Εὑρίσκονται δὲ διεσπαρμέναι εἰς τὴν κεφαλὴν καὶ τὸν λαιμὸν καὶ ἐνίοτε εἰς τοὺς πόδας. Ὁ κνησμὸς εἶναι ἔντονος, ὅπως καὶ κατὰ τὴν ψώραν. Ἡ θεραπεία συνίσταται εἰς πλύσεις διὰ σάπωνος φαρμακευτικοῦ καὶ ὕδατος χλιαροῦ καὶ εἰς ἐπαλείψεις τῶν πασχόντων μερῶν δι' ἀλοιφῶν ἐκ πετρελαίου, βενζίνης, φαινικοῦ ὀξέος καὶ σάπωνος. Ὠφέλιμον καὶ πρακτικὸν μέσον εἶναι καὶ τὸ ἐπίπασμα διὰ κόνεως ἄνθρακος. Εἰς τὰς ὄρνιθας παρατηρεῖται ἡ μορφὴ τῆς *μυκητιάσεως τῶν ὀρνίθων*, ὀφειλομένη εἰς τὸ ἀχόριον τοῦ Chönleini. Τὸ νόσημα ἄρχεται ἀπὸ τοῦ λόφου τῶν ὀρνίθων (λειρί) καὶ τοῦ ὑποτυπώδους ὄνυχος, τοῦ εὑρισκομένου εἰς τὸ μέσον τῆς κνήμης, καὶ ἐξαπλοῦται ἐφ' ὅλου τοῦ σώματος διὰ τοῦ σχηματισμοῦ πλακῶν, αἵτινες ἑνούμεναι ἀποτελοῦσι μεγάλας τοιαύτας. Ὁ λόφος τῶν ὀρνίθων ἐξογκοῦται καὶ γίνεται λευκός, ἐξ οὗ καὶ οἱ Ἄγγλοι ἀποκαλοῦν τὴν μυκητίασιν ταύτην τῶν ὀρνίθων «λευκὸν λόφον» (Tinea cristae galli). Δὲν ἐξηκριβώθη ἀκόμη ἂν ἡ μυκητίασις τῶν ὀρνίθων μεταδίδεται εἰς τὰ ἄλλα ζῷα ἢ τὸν ἄνθρωπον. Ἡ θεραπευτικὴ ἀγωγὴ συνίσταται εἰς τὴν ἐπάλειψιν τοῦ λόφου δι' ἀλοιφῆς ὑδραργύρου καὶ τὴν πλύσιν τῶν προσβεβλημένων μερῶν μὲ μίαν ἀντισηπτικὴν διάλυσιν ἢ καὶ μὲ τὸ ὑγρὸν τοῦ Fowler.

Εἰς τὸν ἵππον ἡ μυκητίασις ἀπαντᾶται ὑπὸ μορφὴν οἰδήματος φλεγμονικοῦ, ἀναπτυσσομένου ἐπὶ τοῦ σπερματικοῦ χώρου, συνεπείᾳ μολύνσεως κατὰ τὸν εὐνουχισμόν. Ἀναλόγως τῆς ἕδρας τοῦ οἰδήματος ἡ *μυκητίασις τοῦ ἵππου* διακρίνεται εἰς ἐξωτερικὴν καὶ ἐσωτερικήν, ὅταν δηλαδὴ τὸ ἐν λόγῳ οἴδημα εὑρίσκεται ἐκτὸς ἢ ἐντὸς τοῦ ὀσχέου (περικαλύμματος τῶν ὄρχεων). Κατὰ τὴν ἐνδοσχεακὴν μάλιστα μυκητίασιν τοῦ ἵππου δυνατὸν νὰ προσβληθῶσι καὶ ἄλλα βαθύτερα ὄργανα. Ἡ θεραπεία τοῦ νοσήματος τούτου ἀπαιτεῖ χειρουργικὴν ἐπέμβασιν. Δ. Φ. ΠΑΠΑΔΗΜΗΤΡΙΟΥ

**μυκητογραφία** (ἡ)· ἡ περὶ τὴν μελέτην καὶ ταξινόμησιν τῶν μυκήτων ἐπιστημονικὴ ἐνασχόλησις.

**μυκητοδερμοθεραπεία** (ἡ) (mycodermothérapie). Ἡ ἐν τῇ θεραπευτικῇ χρῆσις τῶν ἐνζύμων καὶ ἰδιαίτατα τῆς ζυθοζύμης. Μ. Ν. Κ.

**μυκητοειδής** (ὁ, ἡ), —ἐς (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μύκητα: «κεφαλὴ μυκητοειδής».

**μυκητόζων** (τό) *[Βοτ.]*. Καλεῖται συνήθως ὁ *μυξομύκης* (βλ. λ.).

**μυκητοκηκὶς** (ἡ) *[Φυτοπαθολ.]*. Καλεῖται ἡ διόγκωσις, ἣν παρουσιάζουσι πλεῖστα μόρια τῶν φυτῶν, ὀφειλομένη εἰς τὴν προσβολὴν τούτων ὑπὸ διαφόρων παρασίτων ὀργανισμῶν. Δ. Ν. Π.

**μυκητοκτόνα** (τά) *[Φυσιολ.]*. Καλοῦνται τοξικαὶ χημικαὶ οὐσίαι, χρησιμοποιούμεναι εἰς τὴν φυτοπαθολογίαν διὰ τὴν καταπολέμησιν τῶν παρασίτων μυκήτων τῶν φυτῶν. Τὸ μυκητοκτόνον πρέπει νὰ ἔχῃ τὰς ἑξῆς ἰδιότητας: 1) Νὰ δρᾷ ἀποτελεσματικῶς κατὰ τῶν μυκήτων. 2) Νὰ μὴ προξενῇ βλάβην εἰς τὸ φυτόν. 3) Ἡ χρῆσίς του νὰ εἶναι εὔκολος καὶ οἰκονομική. Ἐπειδὴ αἱ δύο πρῶται ἰδιότητες δυσκόλως συμβιβάζονται, διότι τὰ δηλητήρια δροῦν σχεδὸν ὁμοιομόρφως ἐπὶ τῶν ζώντων ὀργανισμῶν, διὰ τοῦτο τὰ εὐρέως χρησιμοποιούμενα μυκητοκτόνα εἶναι πολὺ ὀλίγα. Σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι τὸ *θεῖον*, δραστικώτατον κατὰ τῶν ἐκτοπαρασίτων μυκήτων, ἰδίως τῶν ἐρυσιβοειδῶν, ὁ *θειικὸς χαλκός*, χρησιμοποιούμενος προληπτικῶς κατὰ πλείστων φυτονόσων (περονόσπορος, δαυλίτης, φουσικλάδια κλπ.), ὁ *θειικὸς σίδηρος* χρησιμοποιούμενος εἰς ἰσχυρὰς διαλύσεις διὰ τὴν ἀπολύμανσιν τῶν πληγῶν, ἡ *φορμόλη* διὰ τὴν ἀπολύμανσιν τῶν σπόρων καὶ τοῦ ἐδάφους, κ. ἄ. Τὰ μυκητοκτόνα χρησιμοποιοῦνται ἢ ὑπὸ μορφὴν κόνεως λεπτῆς (θεῖον, ἀνθρακικὸς χαλκὸς) ἢ ἐν διαλύσει ἐν ὕδατι κατὰ διαφόρους ἀναλογίας μόνα ἢ μετ' ἄλλων οὐσιῶν, ἀναλόγως τοῦ φυτοῦ καὶ τοῦ μύκητος· ἐφαρμόζονται δ' ἐπὶ τῶν φυτῶν αἱ μὲν κόνεις διὰ θειωτήρων, τὰ δὲ ὑγρὰ διὰ ψεκαστήρων. Ε. Τ. Ε.

**μυκητολογία**, ἡ *μυκολογία*. Καλεῖται ὁ κλάδος τῆς βοτανικῆς ὁ ἀσχολούμενος εἰς τὴν μελέτην τῶν *μυκήτων*. Οἱ ἀρχαῖοι ἐγνώριζον περιωρισμένα μόνον εἴδη αὐτῶν, ἅτινα διέκρινον εἰς δύο κατηγορίας: εἰς *ἐδωδίμους* καὶ εἰς *δηλητηριώδεις* μύκητας. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἡ μυκητολογία οὐδεμίαν πρόοδον ἐσημείωσε. Τῷ 1601 ὁ Lecluse εἰς τὸ ἔργον του «Historia variorum plantarum» ἔδωσεν ἐκτενῆ ὁπωσδήποτε περιγραφὴν καὶ εἰκόνας εἰδῶν τινων μυκήτων. Ὁ Ray («Synopsis methodica» 1686—1696) ἔκαμε τὴν πρώτην κατάταξιν τῶν μυκήτων. Ὡσαύτως ὁ Tournefort καὶ ὁ Vaillan ἠσχολήθησαν ἰδιαιτέρως μὲ τοὺς μύκητας. Ὁ Micheli τῷ 1729 προέβη εἰς πλήρη κατάταξιν τῶν *ἀγαρικῶν*. Σπουδαίας ἐργασίας περὶ μυκήτων ἔκαμον ὁ Bulliard («Histoire des champignons de la France» 1780—1793) καὶ ὁ Paulet («Traité des champignons» 1793), καὶ κατόπιν ἐμελέτησαν τοὺς μύκητας ἀπὸ πάσης ἀπόψεως ὁ Persoon («Sinopsis methodica fungorum» 1801), ὁ Fries («Systema mycologicum» 1823) καὶ ὁ Léveillé (1837), ὅστις ἠσχολήθη εἰδικῶς μὲ τὸν τρόπον τῆς γενέσεως τῶν σπορίων τῶν ἀγαρικῶν. Ἔκτοτε ἡ μυκητολογία ἀπετέλεσεν ἁλματικὰς προόδους. Δ. Ν. Π.

**μυκητολογικός**, —ή, —όν· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυκητολογίαν, εἰς τὴν περὶ τῶν μυκήτων μελέτην: «μυκητολογικὴ πραγματεία, —παρατήρησις».

**μυκητολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ περὶ τὴν μελέτην τῶν μυκήτων ἀσχολούμενος.

**μυκητοπόρος** (ὁ) (Mycetoporus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κρυπτοφαγιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 50 εἴδη κανθάρων, ἀπαντῶντα εἰς πάσας σχεδὸν τὰς χώρας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μυκητοπόρος ὁ τῆς δρυὸς* (Mycetoporus quercus), ὅστις ἔχει κεφαλὴν μικρὰν ἀπολήγουσαν εἰς χηλοειδεῖς ἀποφύσεις, κεραίας πολυαρθρωτάς, προθώρακα ὑποτριγωνικὸν καὶ ἀρκετὰ ὀγκώδη, κοιλίαν ἐπιμηκεστάτην, φοειδῆ καὶ ὑπὸ λεπτῶν ἀκανθῶν κατὰ τὴν περιφέρειάν της κεκαλυμμένην, πόδας βραχεῖς καὶ πολυακανθωτοὺς καὶ χρῶμα τεφρόφαιον. Ἐνδιαιτᾶται ὑπὸ τὰς ρωγμὰς τοῦ φλοιοῦ τῶν δρυῶν. Δ. Ν. Π.

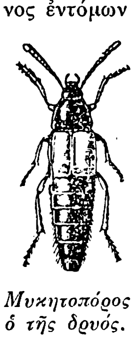
*Μυκητοπόρος ὁ τῆς δρυός.*

**μυκητοσάκχαρον** (τό) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἕτερον ὄνομα τῆς *τρεαλόζης* (βλ. λ.).

**μυκητοφάγος** (ὁ) (Mycetophagus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κοιλοκέρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *τριτομιδῶν*, περιλαμβάνον ἀρκετὰ εἴδη κανθάρων, ἀπαντῶντα εἰς τὰς χώρας τοῦ νοτίου ἡμισφαιρίου. Δ. Ν. Π.

**μυκητοφιλίδαι** (οἱ) (Mycetophilidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων*, περιλαμβάνουσα μυίας πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης καὶ τῶν βορείων χωρῶν τῆς Ἀφρικῆς ἀπαντώσας. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μυκητόφιλος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυκητόφιλος** (ὁ) (Mycetophilus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυκητοφιλιδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 50 εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μυκητόφιλος ὁ φυλλόπους* (Mycetophilus phyllopus), ὅστις ἔχει μῆκος 5 περίπου ἑκατοστομέτρων, κεφαλὴν σφαιρικήν, ὀφθαλμοὺς ἀρκετὰ μεγάλους, κεραίας λεπτὰς καὶ μετρίου μήκους, πόδας λεπτοὺς καὶ ἐπιμηκεστάτους, πτέρυγας εὐρείας, διαφανεῖς καὶ πολυνευρωτὰς καὶ χρῶμα φαιοτεφρὸν μὲ κιτρινοχρόους ἀποχρώσεις. Αἱ προνύμφαι τῶν ἐντόμων τούτων ἐνδιαιτῶνται ἐπὶ διαφόρων μυκήτων. Δ. Ν. Π.

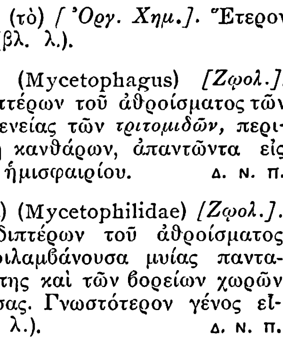
*Μυκητόφιλος ὁ φυλλόπους.*

**μυκητώδης** (ὁ, ἡ), —ες (τό)· ὁ πλήρης μυκήτων: «μυκητώδης στοματῖτις» ‖ ὁ ὅμοιος πρὸς μύκητα, μυκητοειδής.

**μυκήτωμα** (τό), ἢ *μαδούρειος πους* *[Ἰατρ.]* βλ. λ. *μαδοῦρα*.

**μυκήτωσις**, —εως (ἡ)· νοσηρὸς σχηματισμὸς μυκήτων εἰς διάφορα σημεῖα τοῦ ὀργανισμοῦ.

**μυκικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]* βλ. *μυκονικὸν ὀξύ*.

**μυκῖναι** (αἱ), ἢ *βλεννῖναι* *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτως ὁμὰς πρωτεϊδικῶν ὑλῶν, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *γλυκοπρωτεϊδῶν*. Ἀπεκκρίνονται κυρίως ὑπὸ τῶν ὑπογναθίων σιαλογόνων ἀδένων, ἀπαντῶσιν ὅμως καὶ εἰς τὰ πλεῖστα βλεννώδη ὑγρὰ τοῦ σώματος, ὡς καὶ εἰς τὸ βλεννῶδες περίβλημα τοῦ κοχλίου. Εἰς ξηρὰν κατάστασιν εἶναι λευκὴ μὴ ὑγροσκοπικὴ κόνις, περιέχουν μέχρι 35 % γλυκοζαμίνην, δι' ὃ διασπώμεναι δι' ὀξέων ἢ ἀλκαλίων δεικνύουσιν ἀναγωγικὰς ἰδιότητας. Κέκτηνται ὀξίνους ἰδιότητας, καθιζάνονται δι' ὀξικοῦ ὀξέος εἰς λίαν δυσδιάλυτα ἰζήματα (διαφορὰ ἀπὸ τῶν *μυκοειδῶν ὑλῶν*) καὶ εἰς ἀραιὰ ἀλκάλια σχηματίζουσι βλεννώδεις μάζας δυναμένας νὰ συρθῶσιν εἰς ἶνας. Σ. Γ.

**Μύκκε** (Mücke), *Χέλμουτ φόν—*. Ἀξιωματικὸς τοῦ γερμανικοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1885. Εἶναι γνωστὸς ἐκ τοῦ κατορθώματος, ὅπερ ἐπετέλεσε κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διὰ τοῦ ἱστιοφόρου «*Αἴσσα*» (βλ. λ.).

**μυκόδερμα** (τὸ) (Mycoderma) *[Βοτ.]*. Γένος μυκήτων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ζυγομυκήτων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μικρομυκητιδῶν*, περιλαμβάνον κρυπτογαμικοὺς ὀργανισμούς, οἵτινες ἀναπτύσσονται ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας σακχαρούχων καὶ οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν καὶ ἀλλοιοῦσι τὴν γεῦσιν ἢ τὴν ὀσμὴν αὐτῶν. Γνωστότερα εἴδη εἶναι τὸ *μυκόδερμα τοῦ οἴνου* καὶ τὸ *μυκόδερμα τοῦ ζύθου*. Δ. Ν. Π.

**μυκοειδεῖς ὗλαι** *[Ὀργ. Χημ.]*. Ὁμὰς πρωτεϊδικῶν ὑλῶν, ἀνήκουσα εἰς τὴν τάξιν τῶν *γλυκοπρωτεϊδῶν*. Δὲν περιέχουσι φώσφορον καὶ δὲν καθιζάνονται δι' ὀξικοῦ ὀξέος (διαφορὰ ἀπὸ τῶν *μυκινῶν*). Ἀπαντῶσι εἰς τὰ οὖρα, τὸ λευκὸν τοῦ ᾠοῦ, τὸ ὑαλῶδες τοῦ ὀφθαλμοῦ κ. ἄ. Σ. Γ.

**μυκόζη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἕτερον ὄνομα τῆς *τρεαλόζης* (βλ. λ.).

**Μύκοι** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Λαὸς περσικὸς ἀγνώστου διαμονῆς, ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Ἡροδότου (Γ' 93, Ζ' 68) ὡς ὑπαγόμενος εἰς τὸν δέκατον τέταρτον νομὸν τοῦ περσικοῦ κράτους καὶ συνεκστρατεύσας μετὰ τοῦ Ξέρξου κατὰ τῆς Ἑλλάδος. Α. Θ. Σ.

**μυκοκελλουλόζη** (ἡ)· βλ. *κυτταρίνη*.

**μυκοκήλη** (ἡ) (Mucocèle), ἢ *βλεννοκήλη* *[Ἰατρ.]*. Οὕτω καλεῖται: 1) ὄγκος ἀποτελούμενος ὑπὸ βλέννης, 2) ὄγκος σχηματιζόμενος ὑπὸ τοῦ δακρυϊκοῦ θυλάκου, ὅταν οἱ δακρυϊκοὶ πόροι δὲν εἶναι εὐδιαπέραστοι καὶ ὅταν ὁ ρινικὸς πόρος εἶναι ὡσαύτως ἐμπεφραγμένος. Μ. Ν. Κ.

**μυκοκυτταρίνη** (ἡ)· βλ. *κυτταρίνη*.

**μυκολογία** (ἡ). Κλάδος τῆς βοτανικῆς, ἄλλως καλούμενος *μυκητολογία* (βλ. λ.).

**μυκομύκητες** (οἱ) *[Βοτ.]*. Ὑποδιαίρεσις μυκήτων, περιλαμβάνουσα μύκητας ἀνωτέρους, χαρακτηριζομένους ἀπὸ μυκήλιον μᾶλλον ἐξειλιγμένον καὶ πολυκύτταρον καὶ ἀπὸ τρόπον πολλαπλασιασμοῦ δι' ἀγόνου ὁδοῦ. Ἐν τούτοις ὑπάρχουν μεταξὺ αὐτῶν καὶ μύκητες (*σακχαρομύκητες*) μὲ ὑποτυπῶδες μυκήλιον, ἁπλοῦν κύτταρον, τοῦτο ὅμως ὀφείλεται εἰς τὸν εἰδικὸν τρόπον ζωῆς τῶν μυκήτων τούτων. Τὰ χαρακτηριστικὰ ὄργανα ἀγόνου ἀναπαραγωγῆς αὐτῶν εἶναι ὁ *ἀσκὸς* καὶ τὸ *βασίδιον*, παράγοντα ἀσκοσπόρια καὶ βασιδιοσπόρια. Ὑπάρχουν ὅμως εἰς τινας μύκητας καὶ ἄλλα ὄργανα ἀγόνου ἀναπαραγωγῆς, ὡς κονίδια, χλαμυδοσπόρια κλπ., ὁπότε ὁ βιολογικὸς των κύκλος γίνεται πολυπλοκώτερος. Μεταξὺ τῶν μυκήτων ὑπάρχουν σαπρόφυτα, παράσιτα καὶ συμβιωτικῶς ζῶντα εἴδη. Οἱ μύκητες οὗτοι ὑποδιαιροῦνται περαιτέρω: εἰς τοὺς *ἀσκομύκητας* καὶ τοὺς *βασιδιομύκητας*. Ε.Τ.Ε.

**μυκονικόν**, ἢ *μυκικὸν ὀξὺ* *[Ὀργ. Χημ.]*. Καλεῖται οὕτω τὸ *ἑξαδιενικὸν διοξύ*: HOOC. CH : CH. CH : CH. COOH, σχετιζόμενον γενετικῶς πρὸς τὸ βλεννικὸν ὀξύ. Λευκὴ κρυσταλλικὴ κόνις, τηκομένη εἰς 212°, ὀλίγον διαλυτὴ εἰς τὸ ὕδωρ. Σ. Γ.

**Μυκόνιος**, *Σοφοκλῆς Ν.* Ἕλλην στρατιωτικὸς ἰατρός, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις (1835—1900). Υἱὸς τοῦ *Νικολάου Μυκονίου*, ἀξιωματικοῦ τοῦ Ἀγῶνος, ἐσπούδασεν ἰατρικὴν ἐν Ἀθήναις καὶ Παρισίοις, μεθ' ὃ ἐτάχθη ἐν τῷ ὑγειονομικῷ σώματι τοῦ στρατοῦ. Ἡ ἐπιστημονικὴ καὶ διοικητικὴ αὐτοῦ ἱκανότης διετυπώθη ἰδίως ἀπὸ τοῦ 1884 μέχρι τοῦ 1896, ὅτε ὡς ἐπίατρος καὶ ἀρχίατρος διηύθυνε τὸ κεντρικὸν (1ον) στρατιωτικὸν νοσοκομεῖον Ἀθηνῶν, ὅπερ ἀνήγαγεν εἰς πρότυπον νοσηλευτήριον ἵδρυμα, μορφωτικὸν γενόμενον πολλῶν ὑγειονομικῶν ἀξιωματικῶν. Συνειργάσθη ὡσαύτως ἐπὶ μακρὸν μετὰ τοῦ τότε διευθυντοῦ τῆς ὑγειονομικῆς ὑπηρεσίας Π. Σούτσου ὑπὲρ τῆς ἀναπτύξεως καὶ προαγωγῆς τοῦ ὑγειονομικοῦ σώματος τοῦ στρατοῦ. Διετέλεσεν ὡσαύτως γενικὸς

Digitized by Google

ἐπιθεωρητής, διευθυντὴς τοῦ ὑγειονομικοῦ τμήματος τοῦ ὑπουργείου τῶν Στρατιωτικῶν κλπ. Ι. Π.

**Μύκονος** *[Γεωγρ.]*. Νῆσος τοῦ ἀρχιπελάγους τῶν Κυκλάδων μεταξὺ τῶν νήσων Τήνου, Σύρου, Πάρου καὶ Νάξου, προσκειμένη πρὸς τὰς δύο πρώτας, ἀπὸ τῶν ὁποίων ἀπέχει τῆς μὲν 10 ναυτ. μίλλ., τῆς δὲ 18. Ἔχει σχῆμα τριγωνικὸν καὶ ἔκτασιν 89,7 τετρ. χμτρ. (Strebbitzky κατὰ Wisotzki 86). Εἶναι ἡ ὀλιγώτερον ὀρεινὴ κυκλαδικὴ νῆσος. Τὰ ὑψηλότερα ὄρη της εἶναι αἱ πρὸς Β. *(Βορνιώτης)* καὶ πρὸς Α. *(Ἀνωμερίτης)* κορυφαὶ τοῦ *Προφήτου Ἠλία* (364 καὶ 347 μ.). Ἄλλα χαμηλότερα εἶναι τὸ *Μορόεργο* καὶ ὁ *Κούνουπας*, κείμενα περίπου εἰς τὸ μέσον τῆς νήσου. Πηγαίων ὑδάτων ἡ νῆσος σχεδὸν στερεῖται. Μικρὰ πηγή, εὑρισκομένη εἰς τὸ ἀνατολικὸν μέρος αὐτῆς, παρέχει ὕδωρ εἰς τὴν *Μονὴν Τουρλιανῆς*, ἥτις ἀπέχει μίαν περίπου ὥραν ἀπὸ τῆς πόλεως Μυκόνου. Ἡ νῆσος ὑδρεύεται ἐκ φρεάτων, ἅτινα ἔχουν ἄριστον ὕδωρ εἰς βάθος 4—7 μ. Στερεῖται δασῶν καὶ ἡ φυτεία της εἶναι ἐλαχίστη. Ἔχει μικρὰς κοιλάδας, ὧν ἡ κυριωτέρα ἡ τῆς *Ἄνω Μερᾶς*. Τὸ κλῖμά της εἶναι ὑγιεινότατον. Ἐν Μυκόνῳ ὑπάρχει ἄξιον λόγου μουσεῖον, ἐν ᾧ συγκεντροῦνται αἱ πλεῖσται τῶν ἐν Δήλῳ εὑρισκομένων ἀρχαιοτήτων.

Ἡ Μύκονος διοικητικῶς ὑπάγεται εἰς τὴν ἐπαρχίαν Σύρου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Ἀριθμεῖ (1928) 4.505 κατοίκους (ἄρρενες 2.076, θήλεις 2.429), διαιρεῖται δ' εἰς δύο κοινότητας, τὴν τῆς *Μυκόνου* (Χώρας) καὶ τὴν τῆς *Ἄνω Μερᾶς*. Εἰς τὴν περιφέρειαν τῆς Μυκόνου ὑπάγονται καὶ αἱ παρ' αὐτὴν νησῖδες καὶ δὴ αἱ *Ρήνεια* καὶ *Δῆλος*. Οἱ κάτοικοι αὐτῆς εἶναι πάντες ὀρθόδοξοι.

Εἰς τὴν περιφέρειαν τῆς Μυκόνου (μετὰ τῶν νησίδων) σπείρεται κυρίως ἡ κριθὴ (700.000 ὀκ.), ὀλιγώτερον ὁ σμιγὸς (200.000 ὀκ.) καὶ ἐλάχιστον ὁ σῖτος (8.000 ὀκ.) καὶ δὴ εἰς τὴν Ἄνω Μερᾶν. Ἀμπελῶνας ἔχει εἰς ὡρισμένα σημεῖα εἰς ἔκτασιν 700 στρεμ. περίπου, ἐλαιώνων δὲ στερεῖται. Ἡ συκῆ εὐδοκιμεῖ πολύ, καίτοι εἶναι ἀραιῶς πεφυτευμένη. Τὰ ξηρὰ σῦκα καθὼς καὶ τὸ γλεῦκος, παρὰ τὴν μικρὰν ἀπόδοσίν των, εἶναι ἀντικείμενον ἐμπορίου. Ἡ κτηνοτροφία ἐνταῦθα εἶναι εἰς καλυτέραν κατάστασιν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων. Ἐκτρέφονται κυρίως πρόβατα καὶ αἶγες. Ὁ τυρὸς τῆς Μυκόνου (κοπανιστὴ) εἶναι ἐκλεκτὸς καὶ περιζήτητος, ὡς καὶ τὸ μέλι.

Ἡ Μύκονος στερεῖται ἀξιολόγων ἐσωτερικῶν συγκοινωνιῶν. Ἡ Χώρα μετὰ τῆς Ἄνω Μερᾶς συνδέονται διὰ βατῆς ἡμιονικῆς ὁδοῦ, ἥτις, χαρακτηρισθεῖσα ὡς ἐπαρχιακή, μελετᾶται νὰ γίνῃ ἁμαξιτὸς (χιλμ. 7). Ἐπίσης ἁμαξιτὸς θὰ κατασκευασθῇ καὶ ἡ μέχρι τῆς ἀκτῆς Ἁγ. Ἰωάννου τοιαύτη πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῆς ἔναντι εὑρισκομένης Δήλου. Εἰς τὸν λιμένα τῆς Μυκόνου προσεγγίζουσι πολλάκις τῆς ἑβδομάδος τὰ ἀτμόπλοια τῆς γραμμῆς Πειραιῶς—Σύρου—Τήνου—Σάμου κατά τε τὴν ἄνοδον καὶ τὴν κάθοδον. Δ. Ε. Μ.

—*[Ἱστορ.]* Ἡ *Μύκονος* ὠνομάσθη ἐκ τοῦ ἐπωνύμου αὐτῆς ἥρωος Μυκόνου. Τινές, ὡς ὁ Ἱεροκλῆς ὁ Γραμματικός, Θεόδωρος ὁ Βυζάντιος καὶ ὁ Σέργιος Μακραῖος, ὀνομάζουσι ταύτην *Μύκων*, ὑπολαμβάνοντες τὸ Μύκονος ὡς γενικήν. Ὁ Ἄραψ γεωγράφος Ἐδριζὶ (1153) ὀνομάζει τὴν νῆσον *Μίκουλην*. Λόγῳ τοῦ ὅτι τὰ βουνὰ τῆς Μυκόνου καλύπτονται ὑπὸ διεσπαρμένων κολοσσιαίων βράχων, ἐγεννήθη ὁ μῦθος ὅτι ὑπὸ τὴν Μύκονον ἔκειντο οἱ ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους καταβληθέντες γίγαντες. Ἐλέγετο δ' ὅτι ἐν Μυκόνῳ ὑπῆρχε καὶ ὁ τάφος τοῦ Αἴαντος καὶ ὅτι οἱ Μυκόνιοι ἐγεννῶντο ἄνευ τριχῶν. Μετὰ τοὺς Κᾶρας καὶ Αἰγυπτίους καὶ Φοίνικας, ἡ Μύκονος τὸ πρῶτον μὲν ὑπῆρξεν ἀποικία Κρητῶν, εἶτα δ' Ἰώνων, τοὺς ὁποίους ὡδήγησεν εἰς τὴν νῆσον ἐξ Ἀθηνῶν ὁ Ἱπποκλῆς, υἱὸς τοῦ Νηλέως καὶ πατὴρ τοῦ Φοβίου ἢ Φορβίου, ἐξ οὗ ἴσως ἐκλήθη ἡ *Φορβία ἄκρα* τῆς Μυκόνου, πιθανῶς τὸ σημερινὸν ἀκρωτήριον *Τοῦρλος*. Εἶχε δὲ τὸ πάλαι ἡ Μύκονος δύο πόλεις, τὴν μὲν ἐν ᾗ θέσει κεῖται ἡ σημερινὴ αὐτῆς πόλις, τὴν δ' ἄλλην κατὰ τὸν πρὸς Β. λιμένα Πάνορμον· κατὰ τὸν Πλίνιον δὲ καὶ ὄρος *Δίμαστον* καλούμενον, ὅπερ τινὲς μὲν τῶν νεωτέρων γεωγράφων λέγουσιν ὅτι εἶναι τὸ ὄρος τοῦ *Ἁγίου Ἠλία τοῦ Βορνιώτη*, ἄλλοι δέ, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ὁ χάρτης τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου, τὸ τοῦ *Ἁγίου Ἠλία τοῦ Ἀνωμερίτη*. Ἀμφότερα τὰ ὄρη ταῦτα ἔκ τινων μερῶν ὁρώμενα ὑπὸ τῶν παραπλεόντων τὴν νῆσον φαίνονται δικόρυφα (δίμαστα). Ἐκ τῶν ἐπιγραφῶν μανθάνομεν ὅτι ἡ νῆσος εἶχε καὶ ποταμόν, *Ἀχελῷον* καλούμενον, οὗτινος οὐδ' ἴχνος κἂν σῴζεται σήμερον· πρὸς δὲ ὅτι ἡ πρὸς δυσμὰς τῆς νήσου καὶ καταντικρὺ τῆς Δήλου χερσόνησος (νῦν *Διακόφτι*) ἐκαλεῖτο *Ἀπολλώνιον*.

Ὁ Διόνυσος ἀπέβη ὁ κατ' ἐξοχὴν ἐν τῇ νήσῳ λατρευόμενος θεός. Ἐλατρεύετο ἐπίσης καὶ ἡ μήτηρ τοῦ Διονύσου Σεμέλη καὶ αὐτὸς ὡς Βακχεὺς καὶ Ληνεύς, ἐξ οὗ εἷς μὲν τῶν μηνῶν τῆς νήσου ἐκαλεῖτο Βακχιών, ἕτερος δὲ Ληναιών. Ἡ μετὰ τὸν Διόνυσον λατρεία τῆς Δήμητρος ἦτο ἡ μᾶλλον ἐν τῇ νήσῳ ἐξέχουσα. Εἰς τὴν Δήμητραν Χλόην ἔθυον τῇ μὲν δωδεκάτῃ τοῦ Ποσειδεῶνος μηνὸς δύο ὗς καλλιστευούσας, ὧν ἡ ἑτέρα ἐγκύμων, τῇ δὲ δωδεκάτῃ τοῦ Ληναιῶνος «ἐπὶ ᾠδῇ καὶ ὑπὲρ καρποῦ» ὗν ἐγκύμονα πρωτότοκον. Συγχρόνως ἐθύετο τῇ Κόρῃ αὐτῆς κάπρος τέλειος. Ὁ Ποσειδῶν ἐλατρεύετο ὡς Τεμενίτης καὶ Φύκιος, καὶ ἐθύετο τῷ μὲν πρώτῳ κριὸς καλλιστεύων ἐνόρχης, μὴ εἰσαγόμενος εἰς τὴν πόλιν, τῷ δὲ δευτέρῳ ἀμνὸς λευκὸς ἐνόρχης. Οἱ Μυκόνιοι τῇ ἑβδόμῃ τοῦ Ἑκατομβαιῶνος ἔθυον «Ἀπόλλωνι τῷ Ἑκατομβίῳ» ταῦρον καὶ δέκα ἄρνας. Ἐλατρεύοντο πρὸς τούτοις ὁ Ζεὺς Βουλεὺς καὶ Χθόνιος, ἡ Γῆ Χθονία, ὁ Ἀχελῷος ποταμός, ὁ Ἡρακλῆς καὶ ὁ ἀρχηγέτης τῆς νήσου ἥρως Μυκόνιος. Πρὸς δὲ καὶ ὁ Ζεὺς Διμερανὸς ἢ Μερανὸς καὶ αἱ Νύμφαι. Ἐλατρεύετο δ' ἐν τῇ νήσῳ καὶ Αἴας ὁ Λοκρός, ὅστις ἐτάφη ἐν Μυκόνῳ. Τὸ ἔτος παρὰ τοῖς Μυκονίοις ἤρχιζεν ἀπὸ τοῦ μηνὸς Ποσειδεῶνος, εἰς τὸ μηνολόγιον δ' αὐτῶν περιλαμβάνοντο καὶ οἱ προμνημονευθέντες μῆνες Βακχιών, Ληναιὼν καὶ Ἑκατομβαιών, τῶν λοιπῶν μὴ ὄντων γνωστῶν.

Κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους σπανιώτατα ἡ Μύκονος ἀναφέρεται ὀνομαστί. Γινώσκομεν δὲ μόνον ὅτι μετὰ τὴν ἐν ἔτει 490 ἐν Μαραθῶνι ἧτταν τῶν Περσῶν, ὅτε ὁ Δάτις μετὰ παντὸς τοῦ στόλου ἐπέστρεφεν ἐσπευσμένως εἰς τὴν Ἀσίαν, παρέμεινε χρόνον τινὰ ἐν τῇ νήσῳ, ἐξ οὗ φαίνεται ὅτι ἕνεκα τῆς γειτνιάσεως ταύτης πρὸς τὴν Δῆλον οἱ στόλοι τῶν Περσῶν συχνὰ θὰ διέμενον ἐν Μυκόνῳ, ἀναγκάζοντες οὕτω τοὺς Μυκονίους εἰς τελείαν ὑποταγήν. Οἱ Μυκόνιοι κατέβαλον καὶ μικρὸν φόρον πρὸς τοὺς Ἀθηναίους, τὸ μὲν 451 ἓν καὶ ἥμισυ τάλαντον, τὸ δὲ 443—442 ἕν, διὰ τὴν οὐχὶ ἀνθηρὰν οἰκονομικὴν αὐτῶν κατάστασιν. Πράγματι κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην οἱ Μυκόνιοι διεκωμῳδοῦντο ὡς πένητες, παράσιτοι καὶ γλίσχροι. Μετὰ τὴν ἐν Χαιρωνείᾳ μάχην (338) ἡ Μύκονος ἠκολούθησε τὰς τύχας τῶν ἄλλων Κυκλάδων. Ἐπὶ Βυζαντινῶν ὑπήχθη τὸ πρῶτον εἰς τὴν ἐπαρχίαν τῆς Ἀχαΐας καὶ εἶτα εἰς τὸ θέμα τῶν νήσων. Μετὰ τὴν ὑπὸ τῶν Σταυροφόρων κατάλυσιν τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας (1204) κατελήφθη (1207) ὑπὸ τῶν Βενετῶν εὐπατριδῶν Ἀνδρέου καὶ Ἱερεμία Γκίζη, στενῶν συγγενῶν τοῦ μεγάλου δόγη Ἑρρίκου Δανδόλου. Ἡ δυναστεία τῶν Γκίζη διήρκεσε μέχρι τῶν ἀρχῶν τοῦ 1390, ὅτε ὁ Γεώργιος Γ' Γκίζης, ἀποθανὼν ἄπαις, κατέλιπε τὴν Μύκονον διὰ διαθήκης του εἰς τὴν Βενετίαν. Ὑπὸ τὴν ἄμεσον τῆς Βενετίας κυριαρχίαν ἡ κατάστασις τῆς νήσου ἦτο οἰκτρά. Τῷ 1537 κατέλαβε ταύτην ὁ Χαϊρεδδὶν Βαρβαρόσσας, ὑποκύψασαν εἰς τοὺς Τούρκους ἄνευ τινὸς ἀντιστάσεως. Ἐκ τῶν κατοίκων πολλοὶ μὲν εἶχον ἀπαχθῆ ὑπὸ τοῦ Βαρβαρόσσα ἐξανδραποδισθέντες, οἱ δὲ λοιποὶ ἔφυγον εἰς τὴν Τῆνον. Μάτην δ' ἡ Βενετία ἐπειράθη τῷ 1545 νὰ τύχῃ τῆς εἰρηνικῆς εἰς αὐτὴν ἀποδόσεως τῆς Μυκόνου διὰ συνθήκης πρὸς τὴν Τουρκίαν. Τελευτῶντος τοῦ ΙΓ' αἰῶνος ἡ Μύκονος ὑπέστη μεγάλας καταστροφάς, δῃωθεῖσα ὑπὸ τῶν ναυτῶν τοῦ Καταλανοῦ ναυάρχου Ρογήρου Δελόρια. Ἐπὶ τουρκοκρατίας ἡ Μύκονος ὑπήγετο ὑπὸ τὸν μπέην τῆς νήσου Κῶ καὶ διῳκεῖτο τὸ πρῶτον μὲν ὑπὸ καπιτάνου, εἶτα δ' ὑπὸ ἐπιτρόπων καὶ βοεβόδα, ὅστις ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ἦτο Χριστιανός. Τῷ 1669 τὰ ἐκ τῆς Μυκόνου ἐτήσια εἰσοδήματα, ἀνερχόμενα ἐν ὅλῳ εἰς 4.000 γρ. ἐτησίως, ἐξεχωρήθησαν εἰς τὸν μέγαν διερμηνέα τοῦ ὀθωμανικοῦ κράτους Παναγ. Νικούσιον Μαμωνᾶν, ἅτινα οὗτος εἰσέπραττε δι' ἐπιτρόπου ἑδρεύοντος ἐν τῇ νήσῳ καὶ διοικοῦντος ταύτην ἐν ὀνόματι ἐκείνου. Μετὰ τὸν Νικούσιον τὴν ἐπικαρπίαν τῆς Μυκόνου ἔλαβεν ὁ ἐξ ἀπορρήτων Ἀλέξανδρος Μαυροκορδᾶτος μέχρι τοῦ θανάτου του (1709). Ἀναφέρεται δὲ καὶ Ἰωάννης Μαυροκορδᾶτος, βοεβόδας καὶ κριτὴς Μυκόνου. Οἱ πλεῖστοι τῶν Μυκονίων ἦσαν ναῦται καὶ πειραταὶ καὶ ἡ νῆσος αὐτῶν ἦτο μεγάλη ἀποθήκη λειῶν. Ἐσύχναζον δ' εἰς αὐτὴν καὶ πολλοὶ ἄλλοι πειραταί, ἔχοντες ἐν αὐτῇ τὰς γυναῖκας, τὰ τέκνα καὶ τὰς παλλακὰς αὐτῶν. Ἡ νῆσος, ἥτις εἶχε καλὸν λιμένα καὶ πόλιν ἀτείχιστον καὶ ἀνόχυρον, παρῆγεν ἱκανὴν ποσότητα οἴνου καὶ σίτου καὶ ἰδίως κριθῆς, εἶχε δ' ἐπὶ τουρκοκρατίας σημαντικὸν ναυτικόν, παρέχουσα ἀπὸ κοινοῦ μετὰ τῆς Σερίφου εἰς τὸν ὀθωμανικὸν στόλον μίαν γαλέραν ὡς καὶ πληρώματα. Οἱ Μυκόνιοι ἐπὶ τουρκοκρατίας μετήρχοντο καὶ τὴν σωματεμπορίαν, πλεῖστα δὲ σῴζονται συμβόλαια γενόμενα ἐν Μυκόνῳ, ἀφορῶντα πωλήσεις, ἀγορὰς καὶ διαφορὰς ἀνδραπόδων.

Ἡ Μύκονος παρέμεινε συνεχῶς ὑπὸ τοὺς Τούρκους μέχρι τοῦ ὑπὲρ ἐλευθερίας Ἀγῶνος (1821), διακοπείσης τῆς τουρκικῆς κυριαρχίας μόνον κατὰ τὰ ἔτη 1770—1774, ὅτε τὴν νῆσον κατεῖχον οἱ Ρῶσοι, διοικουμένην κατὰ τὴν περίοδον ταύτην ὑπὸ τεσσάρων συνδίκων καὶ ἑνὸς καντζιλλιέρη.

Ἐπὶ τῆς Ἑλληνικῆς Ἐπαναστάσεως (1821) οἱ Μυκόνιοι ὕψωσαν ἐκ τῶν πρώτων τὴν σημαίαν τῆς ἐλευθερίας καὶ ἥνωσαν τὰ πλοῖά των μὲ τὴν ὑπὸ τὸν ναύαρχον Τομπάζην μοῖραν τοῦ στόλου. Ἦσαν δὲ τότε τὰ πλοῖα τῆς Μυκόνου εἴκοσι δύο καὶ ἔφερον ἑκατὸν τριάκοντα δύο κανόνια. Ἕνεκα τούτου ὁ καπουδὰν πασᾶς ἐπεχείρησε τῷ 1822 ἀπόβασιν εἰς Μύκονον. Ἀλλ' οἱ Μυκόνιοι, ὑπὸ τὴν ἡρωΐδα τῆς νήσου των Μαντὼ Μαυρογένους, ἥτις βραδύτερον ἔλαβε βαθμὸν ἀντιστρατήγου, ἀπέκρουσαν μετ' ἀνδρείας τοὺς Τούρκους, ἀφήσαντας 17 νεκροὺς καὶ 60 τραυματίας. Διαρκούσης τῆς Ἐπαναστάσεως ὁ Αὐστριακὸς ναύαρχος Παυλούτσης, ἐξ ἀφορμῆς τῆς διώξεως της πειρατείας, διέπραξε πλείστας βιαιοπραγίας κατὰ τῶν Μυκονίων καὶ πολλαχῶς ἐπίεσε τὴν νῆσον.

***Ἐκκλησιαστικῶς.*** Ἡ Μύκονος κατ' ἀρχὰς μὲν ἀπετέλει μέρος τῆς ἐπισκοπῆς Δήλου, ταύτης δὲ τέλεον παρακμασάσης προσετέθη εἰς τὴν ἐπισκοπὴν Τήνου. Ἐπὶ δὲ φραγκοκρατίας ἡ ἐκκλησία τῆς Μυκόνου ἠκολούθησε τὰς τύχας τῶν ἄλλων νησιωτικῶν ἐκκλησιῶν μέχρι τῆς καταλήψεως τῆς νήσου ὑπὸ τῶν Τούρκων (1537), ὅτε ἡ μεγάλη τοῦ Χριστοῦ Ἐκκλησία, ἀνασυστήσασα τὴν μητρόπολιν Παροναξίας, ἔταξε τὴν Μύκονον ἐξαρχικῶς ὑπ' αὐτήν, παραμείνασαν μέχρι καὶ τοῦ 1646, ὅτε, ἀποσπασθεῖσα τῆς μητροπόλεως Παροναξίας, ἀπετέλεσε μέρος τῆς μητροπόλεως Σίφνου καὶ Μήλου, ὑφ' ἣν παρέμεινε μέχρι τοῦ 1833, ὅτε συνεχωνεύθη μὲ τὴν ἐπισκοπὴν Κυκλάδων. Νῦν ὑπάγεται εἰς τὴν μητρόπολιν Σύρου, Τήνου καὶ Ἄνδρου.

Ἅμα τῇ καταλήψει τῆς Μυκόνου ὑπὸ τῶν Γκίζη, ἱδρύθη καὶ ἡ λατινικὴ ἐπισκοπὴ Μυκόνου, διατηρηθεῖσα μέχρι τοῦ 1449, ὅτε ὁ πάπας Νικόλαος ὁ Ε' δι' ἔλλειψιν πιστῶν ἥνωσε τὴν ἐπισκοπὴν Μυκόνου μετὰ τῆς Τήνου καὶ ἔκτοτε ἡ ἐπισκοπὴ καλεῖται Τήνου καὶ Μυκόνου, εἰ καὶ ἡ Μύκονος δὲν ἔχει οὐδένα σήμερον δυτικόν.

***Νομίσματα τῆς νήσου.*** Τὰ σῳζόμενα νομίσματα τῆς Μυκόνου εἶναι πάντα χαλκᾶ, πλὴν ἑνὸς ἀργυροῦ λίαν ἀμφιβόλου γνησιότητος. Ὁ κυριώτερος τῶν ἐπ' αὐτῶν τύπων εἶναι ἡ σταφυλή, ἡ κισσοστεφὴς δὲ κεφαλὴ τοῦ Διονύσου ἀποτελεῖ τὸν ἐπὶ τῆς κυρίας ὄψεως τύπον πάντων ἀνεξαιρέτως τῶν μετὰ τὰ Μηδικὰ κοπέντων νομισμάτων τῆς Μυκόνου. Ἐπὶ τῶν κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Αὐγούστου κοπέντων εὕρηται ὁ Διόνυσος ἱστάμενος, γυμνός, φέρων φιάλην καὶ θύρσον, πιθανῶς κατ' ἀντιγραφὴν τοῦ ἐν τῇ νήσῳ κυρίου ἀγάλματος αὐτοῦ. Εὑρίσκομεν ὡσαύτως κόκκον κριθῆς παρακείμενον τῇ σταφυλῇ, ἐπὶ δὲ τῶν ἀπὸ 167 π. Χ. μέχρις Αὐγούστου στάχυν ἀντικαθιστῶντα τὴν σταφυλὴν ἐν τῇ θέσει τοῦ κυρίου τύπου. Ἀπαντᾷ ἐπίσης καὶ ἡ κεφαλὴ Ποσειδῶνος μετὰ δελφῖνος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Tomaso Porcacchi*, «L' isole più famose del mondo» (Venetia 1686, σ. 77).—*J. P. Tournefort*, «Relation d' un voyage du Levant» (Paris 1717, σ. 278).—*Pasch van Krienen*, «Breve descrizione dell' Arcipelago particolarmente delle isole sotomesse l' anno 1771 al dominio Russo» (1860). — *Ν. Δραγούμη*, «Ἀποσπάσματα ὑπομνημάτων ἀνεκδότων» (ἐν «Πανδώρᾳ», τ. Δ' (1854), σ. 483 κ. ἑ.).— *Βαρθολομαίου Γκίζη* «Περὶ Μυκόνου» (ἐφημ. «Αὐγὴ» 30 Ὀκτωβρίου 1869). — *Κλωνὸς Στεφάνου*, «Ἀνέκδοτα ἔγγραφα ἀποσταλέντα πρὸς τοὺς κατοίκους τῶν Κυκλάδων κατὰ τὴν ὑπὸ τῶν Ρώσων κατοχὴν αὐτῶν» («Ἀθήναιον» 1878, σ. 203).— *Παύλου Λάμπρου*, «Ἀνέκδοτα νομίσματα καὶ μολυβδόβουλλα τῶν κατὰ τοὺς μέσους αἰῶνας δυναστῶν τῆς Ἑλλάδος» (Ἀθῆναι 1888, σ. 60). — *Κ. Δ. Παλαιολόγου*, «Ρωσικὰ περὶ Ἑλλάδος ἔγγραφα» («Παρνασσός», τ. Α' 1877, σ. 917, τ. Β' 1878, σ. 458 κ. ἑ. καὶ τ. Γ' 1879, σ. 37 κ. ἑ.). — «Μαντὼ Μαυρογένους, ἡ ἡρωῒς τῆς Μυκόνου» (μετὰ εἰκόνος) («Ἀθηναϊκὸν Ἡμερολόγιον», ἔτος 1888, σ. 246—249). — *Ι. Ν. Σβορώνου*, «Νομισματικὴ καὶ ἱστορία τῆς ἀρχαίας Μυκόνου» (Ἀθῆναι 1894).— *Σπυρ. Παγανέλη*, «Εἰς τὴν νῆσον» (σειρὰ ἐπιφυλ. ἐν ἐφημ. «Ἑστία» Ἰανουαρίου 1896). — *Μ. Ι. Γεδεών*, «Ἀνατολικοὶ καὶ Δυτικοὶ ἐν Μυκόνῳ τῷ 1749» («Ἐκκλησιαστικὴ Ἀλήθεια» Κωνσταντινουπόλεως, τ. Θ', σ. 139—140).— *Th. Blancard*, «Les Mavroyeni» (τ. 1—2, Paris 1909, ἔκδ. β').— *W. Miller*, «The Myconos» (ἐν τῇ English Historical Review, τ. XXII, σ. 327 κ. ἑ.).— *Τρυφ. Ε. Εὐαγγελίδου*, «Ἡ Μύκονος» (Ἀθῆναι 1914. Ἐπίκρισις ὑπὸ *Π. Γ. Ζερλέντη* ἐν «Νησιωτικῇ Ἐπετηρίδι», τ. Β' 1918, σ. 312—319).— *Σίμου Μενάρδου*, «Περὶ τοπωνυμιῶν τῆς Μυκόνου» («Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν», τ. Ε' 1930, σ. 344—355).— *Τοῦ αὐτοῦ*, «Τοπωνυμικὸν τῆς Μυκόνου» (ἐν «Ἐπετηρίδι Ἑταιρείας Βυζαντινῶν Σπουδῶν», ἔτ. Ζ', σ. 240—252). — Περὶ τῶν ἐπιγραφῶν τῆς Μυκόνου βλ. *Fr. Hiller de Gaertringen*, ἐν ταῖς ὑπ' αὐτοῦ ἐν Βερολίνῳ ἐκδοθείσαις ἐπιγραφαῖς τῶν Κυκλάδων. Περὶ τῆς διαλέκτου δὲ τῶν Μυκονίων ἔγραψεν ἱκανὰ ὁ *K. Dieterich* ἐν τῷ ἔργῳ του «Die Sprache und Volksuberlieferungen der Südlichen Sporaden» (Wien 1908), ἔνθα δημοσιεύει καὶ περὶ τὰ δέκα λαϊκὰ ᾄσματα τῆς Μυκόνου.— Δημώδη δ' αἰνίγματα τῆς νήσου βλ. ἐν «Ἀναλέκτοις Παρνασσοῦ», τ. Α' (1871), σ. 197 καὶ 319, παροιμίας δὲ μυκονιακὰς ἐδημοσίευσε τῷ 1888 ἡ *Ἀργυρὼ Παταβασιλείου*.— Βλ. καὶ «Δελτίον Λαογραφικῆς Ἑταιρείας», τ. ΣΤ' (1917), σ. 264.—Περὶ δὲ τῶν ἀπὸ τῆς ΙΓ' μέχρι τῆς ΙΣΤ' ἑκατονταετηρίδος κρατούντων ἐν Μυκόνῳ θεσμίων καὶ προνομίων βλ. *Κ. Ν. Σάθα*, «Monumenta Historiae Hellenicae» (τ. Α' καὶ Δ').

Δ. Π. ΠΑΣΧΑΛΗΣ

— **Μύκονος** *[Γεωγρ.]*. Παράλιος κωμόπολις, κειμένη εἰς τὴν δυτικὴν πλευρὰν τῆς ὁμωνύμου νήσου μεταξὺ τῶν ὅρμων *Τούρλου* καὶ *Κόρφου*. Εἶναι ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος καὶ ἀριθμεῖ 1.665 κατοίκους. Πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τῆς νήσου καλεῖται κοινῶς *Χώρα*. Εἶναι ἕδρα τοῦ ἐφόρου τῶν ἀρχαιοτήτων Κυκλάδων. Ἔχει ταχ. τηλ. γραφεῖον γ' τάξεως, εἰρηνοδικεῖον καὶ ἀστυνομικὸν σταθμόν, ἡμιγυμνάσιον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κατὰ τὰς ἄλλας ἀρχὰς ὑπάγεται εἰς τὴν Τῆνον ἢ Σῦρον. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται, πλὴν τῶν νησίδων *Ρηνείας* καὶ *Δήλου*, καὶ οἱ ἀγροτικοὶ κυρίως συνοικισμοί: *Ἁγία Παρασκευή*, *Ἅγιος Ἰσίδωρος*, *Ἀγράραινα*, *Βόθωνας*, *Βόρειες Πλευρές*, *Βρύση Γλήστρα*, *Δροσοποῦλα*, *Λινόν*, *Μαράθι* καὶ *Μουρζικά*. Ἡ Μύκονος ἔχει κλῖμα ὑγιεινότατον, ἕνεκα δὲ τούτου ἀποτελεῖ ἄριστον κέντρον θερινῆς διαμονῆς. Ἔχει ὡραίαν ἐμφάνισιν μὲ τὰς ἰδιάζοντος νησιωτικοῦ χαρακτῆρος οἰκίας της καὶ τὴν ἐν γένει καθαριότητά της. Δὲν στερεῖται ξενοδοχείων καὶ ὅλων ἐν γένει τῶν συντελούντων εἰς τὴν ἄνεσιν παντὸς ἐ-

Digitized by Google

σκεπτομένου αὐτήν. Ὡραῖον κτήριον εἶναι τὸ κοινοτικὸν κατάστημα, κτίσμα τοῦ ΙΗ' αἰῶνος, ἐπίσης καὶ τὸ μουσεῖον τῶν δηλιακῶν ἀρχαιοτήτων. Εἰς ἀπόστασιν ὥρας περίπου εὑρίσκεται ἡ μονὴ *Τουρλιανῆς*, ἱδρυθεῖσα κατὰ τὴν παράδοσιν τῷ 1542. Ἔχει λαμπρὸν ξυλόγλυπτον τέμπλον καὶ ἄλλα κειμήλια. Δ. Ε. Μ.

**μυκοριίδαι** (οἱ) (Mucoraceae) *[Βοτ.]*. Ὁμὰς μυκήτων τῆς τάξεως τῶν *ζυγομυκήτων*. Ἡ ὁμὰς αὕτη περιλαμβάνει ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον σαπρόφυτα. Ε. Τ. Ε.

**μυκόρριζον** (τὸ) (Mycorhizum) *[Βοτ.]*. Συνήθως μεταξὺ τῶν ριζῶν φυτῶν τινων καὶ τοῦ μυκηλίου ὡρισμένων μυκήτων ἀναπτύσσεται στενὸς συμβιωτικὸς σύνδεσμος, καθ' ὃν τὰ νηματοειδῆ μυκήλια ἀπομυζῶσι μέρος τι ἐκ τῶν θρεπτικῶν τοῦ φυτοῦ οὐσιῶν, ἀποδίδοντα ὅμως ὡς ἀντάλλαγμα ὀρυκτά τινα ἅλατα, ἅτινα ἐν περισσείᾳ κέκτηνται, ὡς καὶ τὸ ἐλεύθερον ἄζωτον τῆς ἀτμοσφαίρας ὃ δεσμεύουσι καὶ προσδίδουσιν εἰς τὸ ξενίζον τούτους φυτόν. Ὁ σύνδεσμος οὗτος καλεῖται *μυκόρριζον*. Τὰ μυκόρριζα διακρίνονται εἰς ἐξώτροφα, ἐνδότροφα καὶ μικτά. 1) *Ἐξώτροφα*. Τούτων τὸ μυκήλιον σχηματίζει ἐξωτερικὸν περίβλημα ἐπὶ τῶν ἄκρων τῶν ριζῶν δένδρων τινῶν, ὡς τῆς πίτυος καὶ ἄλλων. 2) *Ἐνδότροφα*. Τούτων τὸ μυκήλιον διεισδύει εἰς τὸ παρέγχυμα τοῦ φλοιοῦ τῶν ριζῶν τοῦ ξενίζοντος τὸν μύκητα φυτοῦ, ὅπως παρατηρεῖται εἰς τὰ λειριοειδῆ καὶ ἄλλα. 3) *Μικτά*. Τούτων τὸ μυκήλιον σχηματίζει ἐξωτερικὸν περίβλημα πέριξ τῆς ρίζης τοῦ φυτοῦ καὶ συγχρόνως διεισδύει καὶ εἰς τὸ παρέγχυμα τοῦ φλοιοῦ, ὅπως παρατηρεῖται εἰς τὴν *λιστερίαν* καὶ ἄλλα. Δ. Ν. Π.

**μυκτῆρες** (οἱ) *[Ἀνατομ.]*. Τὰ δύο στόμια ἢ ὀπαί, δι' ὧν αἱ δύο ρινικαὶ κοιλότητες ἢ θαλάμαι ἐκβάλλουσι πρὸς τὰ ἐμπρός· οἱ μυκτῆρες χωρίζονται ἀπ' ἀλλήλων διὰ πτυχῆς τοῦ δέρματος τοῦ *κίονος* ἢ τῆς *στυλίδος*. Ι. Π.

**μυκτηρίζω**· οἱονεὶ διὰ τῶν μυκτήρων, διὰ τῶν ρωθώνων, δεικνύω τὴν πρός τινα περιφρόνησιν, εἰρωνεύομαι, σκώπτω, περιπαίζω, χλευάζω, ὀνειδίζω.

**μυκτηρισμὸς** (ὁ)· τὸ μυκτηρίζειν, σκῶμμα, εἰρωνεία, χλεύη.

**μυκτηριστικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μυκτηρισμόν, εἰρωνικός, χλευαστικός: «λόγος μυκτηριστικός» || ὁ ἀγαπῶν νὰ μυκτηρίζῃ, ὁ ἔχων τάσιν πρὸς μυκτηρισμούς.

**μύκτηρος** (ὁ) (Mycterus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σαρκοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *καραβιδῶν*, περιλαμβάνον ἑπτὰ εἴδη ἰθαγενῆ τῶν χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μύκτηρος ὁ κουρκουλιονοειδὴς* (Mycterus curculionoides), ὅστις εἶναι μικρὸς κάνθαρος μὲ σῶμα ἐπίμηκες, ᾠοειδές, κεφαλὴν ἀπεστρογγυλωμένην, προθώρακα ᾠοειδοτριγωνικόν, κοιλίαν ἀπεστρογγυλωμένην κατὰ τὸ ἄκρον της, κεραίας μετρίου μεγέθους, πολυαρθρωτὰς καὶ λεπτὰς καὶ πόδας εἰς ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις ἀπολήγοντας. Ὁ χρωματισμός του εἶναι μελανοκαστανός. Ἀπαντᾷ πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

*Μύκτηρος ὁ κουρκουλιονοειδής.*

**μυκῶμαι** (*—άομαι*)· ἐπὶ τῶν βοῶν, φωνάζω, ἐκβάλλω μυκηθμούς, κοιν. *μουγκρίζω*· || μεταφ. ἐπὶ ποταμοῦ, ἐπὶ τῶν κυμάτων τῆς θαλάσσης κ.τ.τ., βοΐζω.

**μυκωνινικὸν** ***ὀξὺ*** *[Χημ.]*. Χημικῶς χαρακτηρίζεται ὡς 3, 4-διμεθοξυλιωμένον ο-ὀξυμεθυλοβενζοϊκὸν ὀξύ. Ἔχει τὸν τύπον:

$$(CH_3O)_2C_6H_2 \begin{cases} COOH \\ CH_2OH \end{cases}$$

καὶ εἶναι ἀσταθές, μεταπῖπτον εὐκόλως εἰς τὸ ἀντίστοιχον φθαλίδιον, ἤτοι τὴν *μυκωνίνην*. Σ. Γ.

**μύκωρ** (ὁ) (Mucor). Γένος μυκήτων τῆς οἰκογενείας τῶν *ᾠομυκητιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινά, εἰς ἃ ὀφείλεται ἡ εὐρωτίασις πολλῶν φυτῶν. Δ. Ν. Π.

**μύλα** (ἡ)· ἰδιωματ., τὸ χοίρειον λίπος (ἐκ τοῦ *ἄμυλον*).

**μυλαβρὶς** (ἡ) (Mylabre) *[Ζωολ..]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀπομυζητικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μελοϊδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 300 εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὰς εὐκράτους καὶ θερμὰς χώρας τῆς γῆς. Αἱ μυλαβρίδες εἶναι μελόαι μετρίου μεγέθους, μὲ σῶμα κυλινδρικόν, τριχωτόν, γενικῶς μελανόν, μὲ ἔλυτρα κίτρινα καὶ ὑπὸ ἐρυθρῶν κηλίδων κοσμούμενα. Αἱ προνύμφαι των ἀναπτύσσονται ἐντὸς τῶν φωλεῶν τῶν ἀκρίδων, τῶν ὁποίων κατατρώγουσι τὰ ᾠά. Τὰ ἔντομα ταῦτα χρησιμοποιοῦνται ἐνιαχοῦ τῆς Ἀσίας πρὸς ἀπομύζησιν τοῦ αἵματος ἀντὶ βδελλῶν. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μυλαβρὶς ἡ στικτὴ* (Mylabre punctata), ἥτις φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ χρῶμα μελανὸν κατὰ τὴν κοιλίαν τὰς κεραίας καὶ τὴν κεφαλήν, μὲ κίτρινα ἔλυτρα κοσμούμενα ὑπὸ ἐρυθρομελανῶν κηλίδων. Δ. Ν. Π.

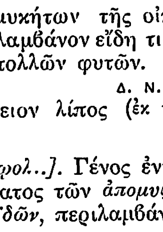

*Μυλαβρὶς ἡ στικτή.*

**Μύλαι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία (Mylae), ὑφ' ἣν ὁ Πλίνιος (4,20 § 61) ὀνομάζει δύο νήσους «παρὰ τὴν Κρήτην καὶ πρὸ τῆς Πελοποννήσου» οὔσας. Καὶ ἡ μὲν μία εἶναι ἡ *Μύλη* (βλ. λ.), ἡ δ' ἑτέρα ταυτίζεται πρὸς τὴν νῆσον *Ποντικονήσι* (πλάτ. 35°34' 3/4 Β., μῆκ. 23°28' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536a: Candia western portion), 15 μίλ. Ν. ΝΑ. τῶν Ἀντικυθήρων καὶ 6 μιλ. Δ. ΝΔ. τῆς Ἄγριας Γραμπούζας. Σ.Ε.Λ.

— **Μύλαι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς Κιλικίας, δυτικῶς τῆς Σαρπηδονίας ἄκρας (Λισσὰν-ἐλ-Καχπὲ μπουρνοὺ) καὶ μεταξὺ Ὅλμων (Λιμὰν-Ἰσκαλεσσὶ) καὶ Νησουλίου (Ἀγᾶ-Ἀντασὶ) κατὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ Σταδιασμοῦ (181), ἐξ ἧς προκύπτει ἡ ταυτότης τοῦ λιμένος πρὸς τὸν σύγχρονον *Ἀγᾶ-Λιμὰν* (πλάτ. 36°17' Β., μῆκ. 33°51' Αν., χάρτ. ἀγγλ. 237: Kara Burnù to Karadash Burnù). Λέγεται καὶ *Μύλη* καὶ *Μυλέων λιμήν*. Σ. Ε. Λ.

— **Μύλαι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλισμα θεσσαλικόν, ταυτιζόμενον πρὸς τὸ σύγχρονον χωρίον *Δαμάσι Βίγλα*. Τὸ ἐθνικὸν *Μυλαῖος*. Σ. Ε. Λ.

**Μυλαὶ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Χερσονησὶς τοῦ ἀνατολικοῦ τμήματος τῆς βορείας πλευρᾶς τῆς Σικελίας, πρὸς τὸν πορθμὸν τῆς Μεσσήνης, μεταξὺ Πελωριάδος ἄκρας (Capo Peloro) καὶ Τυνδαρίδος ἄκρας (Capo Tindaro), εἰς 25 στάδια ἀφ' ἑκατέρας καὶ ἐπ' αὐτῆς πόλις φερώνυμος (τὸ ἐθνικὸν *Μυλαΐτης*), ἀποικία Ζαγκλαίων (*Στράβ.* ΣΤ', 266 καὶ 272) κατ' ἄγνωστον ἐποχὴν ἱδρυθεῖσα. Ἡ χερσονησὶς αὕτη ἔδωσε τὸ ὄνομά της καὶ εἰς τὴν ἔνδον τῆς χερσονήσου πεδιάδα, τὸ ὑπὸ τοῦ Λογγανοῦ ποταμοῦ διαρρεόμενον *Μυλαῖον* πεδίον (*Πολυβ.* Α, θ, 7). Κατὰ τὸ θέρος τοῦ ἕκτου ἔτους τοῦ Πελοποννησιακοῦ πολέμου (427) ἡ πόλις κατελήφθη καὶ ἐκακοποιήθη ὑπὸ τοῦ ἀθηναϊκοῦ στόλου ὑπὸ τὸν Λάχητα καὶ τὸν Χαριάδην (*Θουκ.* Γ' 90), τῷ δὲ 315 κατελήφθη ὑπὸ τοῦ Ἀγαθοκλέους (*Πλουτ.* Τιμ. 37). Παρ' αὐτὴν ὁ Ἱέρων ἐνίκησε τοὺς Μαμερτίνους τῷ 270 καὶ ὁ Δουΐλιος τοὺς Καρχηδονίους τῷ 260. Ἐν ὄψει τῆς χερσονησῖδος ἐδόθη τῷ 36 ἡ ἀμφίρροπος ναυμαχία Ἀγρίππα καὶ Πομπηΐου. Ὁ Πτολεμαῖος (Γ, δ, 1), τοποθετῶν αὐτὴν μεταξὺ Φαλάκρου ἄκρου (capo Rasocolmo) καὶ Ἑλικῶνος ποταμοῦ (fiume Salica), αἴρει πᾶσαν ἀμφιβολίαν ὡς πρὸς τὴν ταυτότητα τῶν Μυλῶν πρὸς τὸ σύγχρονον Milazzo (πλάτ. 38°13' Β., μῆκ. 15°15' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 188: Catania to Cefalù). Σ. Ε. Λ.

**μυλαίδη** (ἡ) (ἐκ τοῦ ἀγγλ. my-lady=κυρία μου). Τίτλος ἀπονεμόμενος εἰς Ἀγγλίδα δέσποιναν, σύζυγον λόρδου ἢ βαρωνέτου, εἴτε ὁμιλοῦμεν πρὸς αὐτήν, εἴτε ὁμιλοῦμεν περὶ αὐτῆς. Τ. Δ.

**Μυλαῖον** ***πεδίον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πεδιὰς τῆς ΒΑ. ἐσχατιᾶς τῆς Σικελίας, διαρρεομένη ὑπὸ τοῦ Λογγανοῦ ποταμοῦ καὶ ἀπολήγουσα εἰς τὴν χερσόνησον τῶν *Μυλῶν*. Σ. Ε. Λ.

**μυλακέφαλος** (ὁ, ἡ) (Mylacéphale) *[Τερατογ.]*. Τερατογονικὴ διάπλασις, καθ' ἣν τὸ ἀκέφαλον τέρας ἔχει τὴν διάπλασιν τοῦ σώματος ἐν εἴδει μάζης ἀμόρφου τοσοῦτον ἀκανονίστου καὶ παραμεμορφωμένης, ὥστε πᾶσα συστηματικὴ περιγραφὴ τούτου ἀποβαίνει ἀκατόρθωτος. Μ. Ν. Κ.

**Μυλαντία** ***ἄκρα*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς ΒΔ. πλευρᾶς τῆς Ρόδου (πλάτ. 36°21' Β., μῆκ. 27°58' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1667: Rhodos island) μεταξὺ τῶν χωρίων Καλαβάρδα καὶ Λογγώνια προέχον, πλησίον τῆς ἀρχαίας Καμείρου. Τανῦν ὀνομάζεται *Ἅγιος Μηνᾶς*. Κατὰ Στέφανον τὸν Βυζάντιον, ὀφείλει τὴν ὀνομασίαν εἰς τὸν Μύλαντα, «τὸν πρῶτον εὑρόντα ἐν τῷ βίῳ τὴν τοῦ μύλου χρῆσιν». Σ. Ε. Λ.

**μύλαξ**, *—ακος* (ὁ)· ἡ μυλόπετρα, ἄλλως *μυλίας* ἢ *μυλίτης λίθος*.

**Μυλάοντος**, ***τέως δῆμος*** — *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Γορτυνίας τοῦ νομοῦ Ἀρκαδίας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Καμινίτσης*, *Λάστας* καὶ *Καλυβίων Λάστας* καὶ *Ἀργυροκάστρου*. Εἶχε πρωτεύουσαν τὴν *Μαγούλιαναν* (νῦν Ἀργυρόκαστρον) καὶ κατ. 1.350 περίπου. Χ.Δ.

**Μύλασα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν Καρίᾳ, διατελέσασα καὶ πρωτεύουσα ταύτης μέχρι τῶν χρόνων, καθ' οὓς ὁ Μαύσωλος μετέθηκε τὴν ἕδραν αὐτοῦ εἰς Ἁλικαρνασσὸν (370 π. Χ.). Ἔκειτο ἐπὶ εὐρείας πεδιάδος ἀφοριζομένης πρὸς Α. ὑπὸ τοῦ ὄρους Λάτμου καὶ παρὰ τὸν Μαρσύαν ποταμὸν (Σαρὶ τσάϊ). Ἦτο πόλις λαμπρῶς ᾠκοδομημένη, ὡς ἐκ τῶν πλησίον αὐτῆς πλουσίων λατομείων μαρμάρου, λείψανα δὲ τῶν οἰκοδομημάτων ἐκείνων σῴζονται ἔτι καὶ νῦν, ὡς καὶ ἀρχαῖος μεγαλοπρεπὴς τάφος, θεωρούμενος ὡς ὁμοιότυπον, ἐν σμικρῷ, τοῦ περιφήμου ἐν Ἁλικαρνασσῷ μαυσωλείου.

Ἡ ὁμώνυμος σύγχρονος πόλις (τουρκ. *Μίλας*) εἶναι ἕδρα τῆς ὑποδιοικήσεως Μίλας, ὑπαγομένης εἰς τὸν νομὸν Μοῦγλα (Μούγλων). Ἔχει 7.346 κατ. (1927), πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς δὲ τῶν πληθυσμῶν εἶχε καὶ 2.000 Ἕλληνας. Οἱ Ἕλληνες τῶν Μυλάσων εἶχον ἔλθει πρὸ 200 καὶ ἐπέκεινα ἐτῶν ἐκ Ρόδου, Καρπάθου, Κύπρου καὶ Κῶ ὡς οἰκοδόμοι,

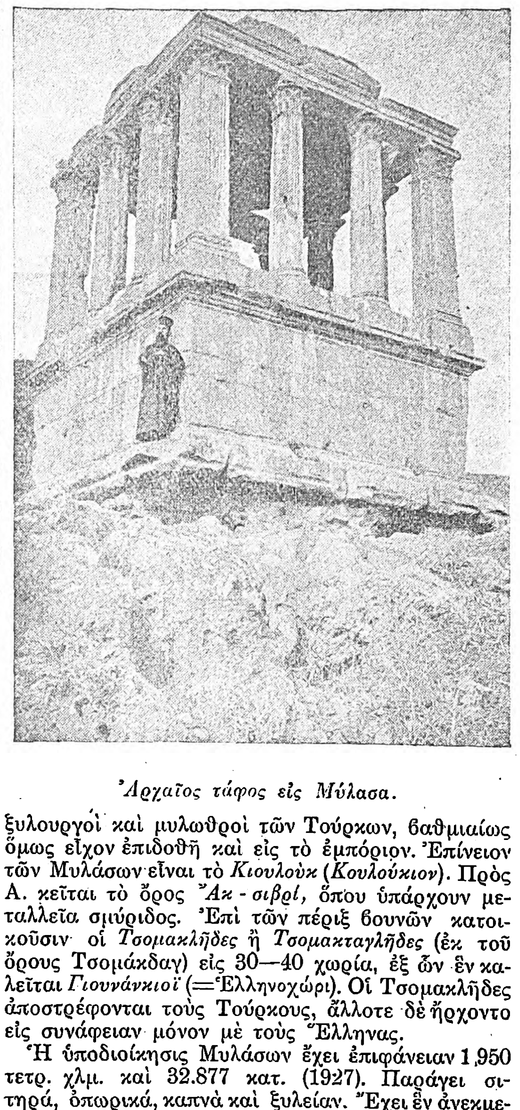

*Ἀρχαῖος τάφος εἰς Μύλασα.*

ξυλουργοὶ καὶ μυλωθροὶ τῶν Τούρκων, βαθμιαίως ὅμως εἶχον ἐπιδοθῆ καὶ εἰς τὸ ἐμπόριον. Ἐπίνειον τῶν Μυλάσων εἶναι τὸ *Κιουλοὺκ* (*Κουλούκιον*). Πρὸς Α. κεῖται τὸ ὄρος *Ἀκ-σιβρί*, ὅπου ὑπάρχουν μεταλλεῖα σμύριδος. Ἐπὶ τῶν πέριξ βουνῶν κατοικοῦσιν οἱ *Τσομακλῆδες* ἢ *Τσομακταγλῆδες* (ἐκ τοῦ ὄρους Τσομάκδαγ) εἰς 30—40 χωρία, ἐξ ὧν ἓν καλεῖται *Γιουννάνκιοϊ* (=Ἑλληνοχώρι). Οἱ Τσομακλῆδες ἀποστρέφονται τοὺς Τούρκους, ἄλλοτε δὲ ἤρχοντο εἰς συνάφειαν μόνον μὲ τοὺς Ἕλληνας.

Ἡ ὑποδιοίκησις Μυλάσων ἔχει ἐπιφάνειαν 1,950 τετρ. χλμ. καὶ 32.877 κατ. (1927). Παράγει σιτηρά, ὀπωρικά, καπνὰ καὶ ξυλείαν. Ἔχει ἓν ἀνεκμετάλλευτον ἀνθρακωρυχεῖον καὶ λατομεῖα μαρμάρου. Κ. ΛΣ—Ν. Μ.

**μυλαύλακο** (τό)· δημοτ., τὸ αὐλάκι τοῦ μύλου, ἡ αὖλαξ διὰ τῆς ὁποίας ρέει τὸ ὕδωρ τὸ χρησιμεῦον ὡς κινητήριος δύναμις αὐτοῦ.

**Μυλάων** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Μικρὸς ποταμὸς τῆς Κυνουρικῆς Ἀρκαδίας, ὅστις ρέων ἀπὸ Ν. πρὸς Β. διὰ τῆς πρὸς Λυκαίῳ Θεισοαίας χώρας καὶ δεχόμενος τὰ ὕδατα τῶν χειμάρρων Νοῦ, Ἀχελῴου, Κελάδου καὶ Ναλίβου, ἐκβάλλει εἰς τὸν Ἀλφειὸν ποταμὸν (*Παυσ.* Η' 38, 9). Α. Θ. Σ.

**Μύλβα** (Mylva) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δύο ποταμῶν τῆς Ρωσίας ἐν τῷ κυβερνείῳ Βολογκτά, ὧν ὁ μὲν καλούμενος *Ἄνω Μύλβα* πηγάζει ἐκ τῶν λιμνῶν Μαϊντὰρ καὶ διευθύνεται πρὸς τὰ ΒΑ., χυνόμενος, μετὰ ροῦν 300 χλμ., εἰς τὸν ποταμὸν Πετχόρα παρὰ τὴν πόλιν Τροϊτσκόϊε· ὁ δὲ ἄλλος, καλούμενος *Νότιος* ἢ *Κάτω Μύλβα*, πηγάζει ἐκ τοῦ ὄρους Ναλντεγκέρες καὶ διευθύνεται πρὸς τὰ ΝΑ., χυνόμενος μετὰ ροῦν 130 χλμ. εἰς τὸν Βυτσέγκντα. Ἀπέχουν ἀλλήλων περὶ τὰ 5 χλμ. καὶ εἶναι πλωτοί, ἀφθονοῦντες εἰς ἰχθῦς, ὧν διεξάγεται ἐντατικὴ ἁλιεία. Μ. Δ. Β.

**μυλεργάτης** (ὁ)· εἰδικὸς ἐργάτης τῶν ἀλευρομύλων.

**μυλεσῖνος** (ὁ) (Mylesinus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐσωχιδῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὸν *μυλεσῖνον τὸν βραζιλιανὸν* (Mylesinus brasiliensis), ὅστις ἀπαντᾷ εἰς τοὺς ποταμοὺς τῆς Βραζιλίας καὶ τῆς Γουϊάνας καὶ ἔχει σῶμα ἀρκετὰ μέγα, ὑψηλὸν καὶ λίαν ἐκ τῶν πλαγίων πεπλατυσμένον, κεφαλὴν σχετικῶς μικράν, ἀπολήγουσαν εἰς βραχὺ

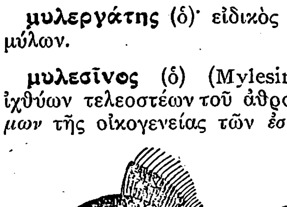

*Μυλεσῖνος ὁ βραζιλιανός.*



Digitized by Google

καὶ ἀμβλὺ ῥύγχος, ὀφθαλμοὺς ἀρκετὰ μεγάλους καὶ στρογγύλους, βράγχια καὶ ἐπιπτύγματα ἀπεστρογγυλωμένα καὶ ὀδοντωτὰ κατὰ τὴν περιφέρειάν των, πρῶτον ραχιαῖον πτερύγιον ἀρκετὰ ἐπίμηκες καὶ πολυακανθωτόν, ἑδραῖον εὐρύτατον καὶ ἀρκετὰ μέγα καὶ οὐραῖον πλατύτατον καὶ βαθέως δισχιδές. Ὁ χρωματισμός του εἶναι φαιομελανὸς καὶ ἀργυρόλευκος. Ἁλιεύεται διὰ τὸ νοστιμώτατον κρέας του. Δ. Ν. Π.

**μύλη** (ἡ)· ἡ πέτρα τοῦ μύλου, ὁ μυλίτης λίθος· || ὁ μύλος, ἡ μηχανὴ διὰ τῆς ὁποίας τρίβομέν τι εἴτε ἐκ λίθου ἀποτελεῖται εἴτε ἐκ μετάλλου· || ἀκονόπετρα ἢ καὶ ὁ ἀκονιστικὸς τροχός· || τὸ στρογγύλον ὀστάριον τοῦ γόνατος, ἡ ἐπιγονατίς· || σκυρώδης ὄγκος κατὰ τὸ στόμιον τῆς μήτρας.

—*[Μεταλλ.]* Ἡ *μύλη* ἢ *τροχὸς* εἶναι ἐργαλεῖον ἐν σχήματι τροχοῦ ἀκόνης (ἐν εἴδει μικρᾶς μυλοπέτρας) πρὸς ἀφαίρεσιν διὰ δήξεως τεμαχίων ἀπὸ σκληρῶν μετάλλων ἢ ἄλλων σκληρῶν οὐσιῶν πρὸς ἀκόνησιν, τρόχισιν ἢ τελειωτικὴν μόρφωσιν τῆς ἐπιφανείας διαφόρων ἀντικειμένων, τεμαχίων μηχανῶν κτλ. καὶ λείανσιν αὐτῶν. Εἶναι σχήματος κυλινδρικοῦ ἢ κωλουροκωνικοῦ καὶ δάκνει τὰ πρὸς ἐπεξεργασίαν ἀντικείμενα, εἴτε διὰ τῆς ἐξωτερικῆς ἐπιφανείας, εἴτε διὰ τῆς δισκοειδοῦς πλευρικῆς ἐπιπέδου ἐπιφανείας.

Καλοῦνται *μυλιστικαὶ μηχαναὶ* διάφορα μηχανικὰ ἐργαλεῖα ἐφωδιασμένα διὰ μύλης, χρήσιμα πρὸς τελικὰς κατεργασίας ἐν τῇ μεταλλοτεχνίᾳ. Εἰς αὐτὰ ἡ μύλη ἐπιτρέπει ἐργασίαν μεγάλης ἀκριβείας, διὸ καὶ αἱ μηχαναὶ αὗται καλοῦνται καὶ *διορθωτικαὶ μηχαναὶ* (machines à rectifier). Θ. Χ.

—*[Μαιευτ.]* *Μύλη* (môle) καλεῖται ἡ κατὰ τοὺς πρώτους τῆς κυήσεως μῆνας καταστροφὴ καὶ τελεία παραμόρφωσις τοῦ ᾠοῦ. Διακρίνονται δὲ δύο μορφαὶ μύλης: ἡ *αἱματώδης* ἢ *σαρκώδης* καὶ ἡ *ὑδατιδώδης* ἢ *φυσαλλιδώδης* ἢ *βοτρυοειδὴς* μύλη. Ἡ μύλη ἦτο γνωστὴ ἀπὸ τοῦ Ἱπποκράτους.

*Αἱματώδης μύλη*. Τὸ ᾠὸν κατὰ τὰς πρώτας ἑβδομάδας τῆς κυήσεως περιβάλλεται πανταχόθεν ὑπὸ τῶν χοριακῶν λαχνῶν καὶ τοῦ περὶ αὐτὸ παχέος φθαρτοῦ ὑμένος· μεταξὺ δὲ τοῦ χορίου καὶ τοῦ φθαρτοῦ ὑπάρχουσιν οἱ μεσολάχνιοι χῶροι, ἐν οἷς κυκλοφορεῖται μητριαῖον αἷμα, ἐν τῷ ὁποίῳ βυθίζονται αἱ χοριακαὶ λάχναι. Ὅταν ἐκ παθήσεώς τινος τοῦ φθαρτοῦ ὑμένος τὰ ἀγγεῖα αὐτοῦ διαταραχθῶσι, τὸ ἐντὸς τῶν μεσολαχνίων χώρων συλλεγόμενον ἐξ αὐτῶν αἷμα καταστρέφει αὐτοὺς καὶ τὰς λάχνας· ἐπὶ ἀφθόνου δὲ καὶ συνεχοῦς αἱμορραγίας, ὁ φθαρτὸς ὑμὴν ῥήγνυται καὶ ἐπακολουθεῖ ἔκτρωσις. Ὅταν ὅμως ἡ αἱμορραγία ἐπέρχεται κατὰ μικρὸν καὶ κατὰ διάφορα χρονικὰ διαστήματα, ὁ φθαρτὸς ὑμὴν ἀνθίσταται καὶ τὸ συλλεγόμενον αἷμα, περιβάλλον τὸ ᾠόν, ἐπιφέρει τὴν καταστροφὴν τοῦ χορίου καὶ τῶν λαχνῶν· ὁ δὲ ἀμνιακὸς σάκκος δὲν περιέχει αἷμα, ἀλλὰ καθαρὸν ἐνάμνιον ὑγρόν, ἐντὸς τοῦ ὁποίου τὸ ἔμβρυον κατ' ἀνάγκην ἀποθνήσκει καὶ εἶτα καταστρέφεται καὶ ἀπορροφεῖται τελείως ἢ παραμένει παραμεμορφωμένον. Ὅταν δὲ τὸ ἐνάμνιον ὑγρὸν ἀπορροφηθῇ τελείως, τότε τὸ ᾠὸν ὁλόκληρον παραμορφοῦται, μεταβαλλόμενον εἰς ἀνωμάλους πολυποδοειδεῖς μάζας ἢ εἰς τὴν κατὰ τὸν Γαληνὸν «ἀδιάπλαστον σάρκα». Τὸ τοιοῦτον παραμορφωθὲν ᾠὸν παραμένει ἐν τῇ μήτρᾳ ἐπὶ μακρὸν χρονικὸν διάστημα, καθίσταται στερεὸν καὶ προσλαμβάνει σύστασιν σαρκώδη, ἐξ οὗ ἡ *σαρκώδης μύλη*. Αἱ προκαλοῦσαι ταύτην αἱμορραγίαι τοῦ φθαρτοῦ ὑμένος ἀποδίδονται εἰς παθήσεις τούτου, προερχομένας ἐκ συφίλιδος, λευκωματουρίας καὶ μητρίτιδος. Τὰ συμπτώματα τῆς μύλης ταύτης εἶναι ἀόριστα καὶ ἐν πολλοῖς ὅμοια πρὸς τὰ τῆς ἐπικειμένης αὐτομάτου ἐκτρώσεως. Διαγιγνώσκεται δὲ μόνον μετὰ τὴν ἐκ τῆς μήτρας ἀποβολὴν τοῦ ᾠοῦ. Ἡ θεραπεία ἀπαιτεῖ τὴν ἐπέμβασιν τοῦ ἰατροῦ μόνον ὅταν τὸ ἐκ τῆς μήτρας ἔκκριμα εἶναι κάκοσμον καὶ σεσηπός, ὁπότε προβαίνομεν εἰς τὴν διαστολὴν τῆς μήτρας καὶ τὴν κένωσιν ταύτης, ἀπαραλλάκτως ὅπως ἐπὶ ἁπλῆς ἐκτρώσεως.

*Ὑδατιδώδης μύλη*. Εἶναι πάθησις προερχομένη ἐκ κυστικῆς ἐκφυλίσεως τῶν πλακουντίων λαχνῶν, ἀσυμβίβαστος πρὸς τὴν φυσιολογικὴν καὶ κανονικὴν ἀνάπτυξιν τοῦ ἐμβρύου, πλὴν μόνον ἐὰν ἡ ἐκφύλισις αὕτη ἀναφέρεται εἴς τινας μόνον λάχνας. Ἡ μύλη ἐμφανίζεται ἐξωτερικῶς ὑπὸ μορφὴν πολλαπλῶν λαχνῶν, διαυγῶν, ἀντιστοιχουσῶν πρὸς λάχνας διατεταμένας ὑπὸ ὑγροῦ. Ἑκάστη φυσαλλὶς ἔχει διαστάσεις κόκκου καννάβεως μέχρι κόκκου ῥαγὸς σταφυλῆς. Ὅταν ὁ πλακοῦς ὁλόκληρος εἶναι ἐκπεφυλισμένος, ἡ μύλη εἶναι εὐμεγέθης ἕνεκεν ὑδρωπος τῶν λαχνῶν. Ἡ μύλη καλεῖται καὶ *ἐμβρυϊκή*, ὅταν περιέχῃ ἔμβρυον, *κοίλη* δὲ ἢ *κενή*, ὅταν τὸ ἐσωτερικὸν τῆς κοιλότητος τοῦ ᾠοῦ δὲν περιέχῃ πλέον ἔμβρυον. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἐνάρξεως ἡ κύησις τῆς ὑδατιδώδους μύλης ἄρχεται ὥσπερ καὶ ἡ συνήθης κύησις, ἤτοι διὰ τῆς ἐπισχέσεως τῆς ἐμμηνορρυσίας, διὰ τῶν μεταβολῶν τῶν μαστῶν καὶ τῆς αὐξήσεως τοῦ μεγέθους τῆς μήτρας. Κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἀκμῆς τὰ κυριώτερα σημεῖα εἶναι τὰ ἀκόλουθα: ἡ ὑπερβολικὴ ἀνάπτυξις τοῦ ὄγκου τῆς μήτρας, ἡ μαλθακότης αὐτῆς, ἥτις εἶναι τοιαύτη, ὥστε ἀποβαίνει ἀδύνατον νὰ καταστῇ ἀντιληπτὴ ἡ ἀντιτυπία τοῦ ἐμβρύου, αἱ αἱμορραγίαι, αἵτινες ἐμφανίζονται λίαν ἐνωρίς, ἤτοι εὐθὺς ἀπὸ τοῦ 2ου ἢ τοῦ 3ου μηνός, ὡς ἐκ τούτου δὲ διακρίνονται αὗται ἀπὸ τῶν αἱμορραγιῶν τοῦ προδρόμου πλακοῦντος, ἡ ἀποβολὴ τῶν ὑδατιδωδῶν φυσαλλίδων ἢ βοτρύων· διὰ τῆς δακτυλικῆς ἐπεμβάσεως ἐξάγομεν ἀπὸ τοῦ κόλπου μικρὰ κοκκία διαφανῆ, θρυμματιζόμενα ὑπὸ τοὺς δακτύλους ἡμῶν, χαρακτηριστικὰ τῆς μύλης. Ἡ αὐτόματος ἔκτρωσις ἢ ἀποβολὴ εἶναι ἡ συνήθης ἔκβασις τῆς ποικιλίας ταύτης τῆς κυήσεως. Ἐνίοτε ἡ ἔκβασις εἶναι πρώϊμος, ἤτοι πρὸς τὸν 2ον ἢ 3ον μῆνα τῆς κυήσεως, δυνατὸν ὅμως νὰ εἶναι καὶ βραδεῖα, ὁπότε ἡ κύησις παραμένει μέχρι τοῦ 6ου καὶ τοῦ 7ου μηνός. Ἀλλὰ καὶ κατὰ τὴν περίοδον ταύτην δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ἀντιληφθῶμεν τοῦ ἐμβρύου ἢ νὰ ἀκροασθῶμεν τῶν παλμῶν τῆς καρδίας αὐτοῦ. Ὅταν δὲ συντελεσθῇ ἡ ἔκτρωσις, αἱ αἱμορραγίαι εἶναι δυνατὸν νὰ ἐπιμένωσιν εἰσέτι, διότι εἶναι συχναὶ αἱ ἐπισχέσεις τῶν φυσαλλιδίων· τοῦτο δ' ἄλλως τε εἶναι τὸ σοβαρώτερον αἴτιον τῆς βαρύτητος τῆς παθήσεως, καθόσον ἐπὶ τῶν φυσαλλιδίων τούτων ἀναπτύσσονται κακοήθεις ὄγκοι τῆς μήτρας καὶ δὴ τὸ κακόηθες χοριοεπιθηλίωμα.

Ἡ πρόγνωσις τῆς παθήσεως εἶναι βαρεῖα διὰ τὴν μητέρα. Μετὰ τὴν διάγνωσιν διακόπτομεν τὴν κύησιν, κενοῦντες τὴν μήτραν μετὰ μεγάλης ἐπιμελείας διὰ τοῦ δακτυλικοῦ καθαρμοῦ, δὲν χρησιμοποιοῦμεν δὲ τὸ ξέστρον-κοχλιάριον, καθότι τοῦτο δυνατὸν νὰ ἀποβῇ ἐπικίνδυνον, ἕνεκα τῆς πιθανῆς λεπτότητος τῶν τοιχωμάτων τῆς μήτρας, ὁπότε δυνατὸν νὰ διατρήσωμεν ταύτην. Ἀκολούθως δέον νὰ παρακολουθῶμεν τὴν γυναῖκα διὰ τὸ ἐνδεχόμενον τῆς ἀναπτύξεως τοῦ κακοήθους χοριοεπιθηλιώματος. Μ. Ν. Κ.

— **μύλη ὀδόντος** *[Ἀνατομ.]*. Καλεῖται τὸ ἐλεύθερον μέρος τοῦ ὀδόντος, τὸ ἀκάλυπτον ὑπὸ τῶν οὔλων, ὅπερ προέχει εἰς τὸ κοῖλον τοῦ στόματος, χαρακτηριζόμενον διὰ τὴν λευκότητα καὶ τὴν σκληρότητα αὐτοῦ. Ι. Π.

**Μύλη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νησίον τῆς δυτικῆς πλευρᾶς τῆς Κρήτης, νοτίως τῶν Φαλασάρνων. Εἶναι τὸ σύγχρονον *Πρασσονήσι* (πλάτ. 35°28′ Β., μήκ. 23°33′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2536a: Candia Western portion), νότιον κέρας τοῦ κολπίζοντος ὅρμου Κουτρί. Σ. Ε. Λ.

**μυλητὴς** (ὁ) (Myletes) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων* τῆς οἰκογενείας τῶν *χαρακινιδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους ἰχθῦς μὲ σῶμα ἀρκετὰ ἐπίμηκες καὶ πεπιεσμένον ἐκ τῶν πλευρῶν. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τοὺς ποταμοὺς καὶ τὰς λίμνας τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**Μύλια** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἠπείρου (βλ. λ. *Μήλια*).

**μυλίας** (ὁ)· ὁ μυλίτης λίθος, ἡ μυλόπετρα, ὁ μυλόλιθος.

**Μυλικούρι** *[Γεωγρ.]*. Ὀρεινὴ κώμη ἐν Κύπρῳ ἐπὶ τῆς ὀροσειρᾶς Τροόδους, πλησίον τῆς ἱερᾶς μονῆς Κύκκου. Κάτ. 400, ἀσχολούμενοι εἰς γεωργικὰς ἐργασίας καὶ εἰς τὴν ἐξαγωγὴν ῥοδελαίου. Α. Κ. Α.

**μυλιοβατὶς** (ἡ) (Myliobatis) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τῆς οἰκογενείας τῶν *ναρκιδῶν*, περιλαμβάνον ἀρκετοῦ μεγέθους ἰχθῦς, πανταχοῦ τῶν εὐρωπαϊκῶν χωρῶν ἀπαντῶντας. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μυλιοβατὶς ὁ ἀετός*.

— *[Παλαιοζ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυλιοβατίδων* εὑρέθησαν πολυάριθμα ἐντὸς στρωμάτων ἀπὸ τῆς ἠωκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ μέχρι σήμερον ἐν Ἀγγλίᾳ, Αἰγύπτῳ καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Κ. Γ.

**Μύλιους-Ἔρικσεν** (Mylius-Erichsen), ***Λουδοβῖκος***. Δανὸς ἐξερευνητής. Τῷ 1902 ἔλαβε μέρος, μετὰ τοῦ Ρασμοῦσσεν καὶ τοῦ Μόλτκε, εἰς εἰδικὴν ἐξερευνητικὴν ἀποστολήν, ἀποκληθεῖσαν «Φιλολογικὴ ἀποστολὴ εἰς Γροιλανδίαν», κατὰ τὴν ὁποίαν ἐμελέτησε τὴν γλῶσσαν, τὰ ἤθη καὶ τὰς παραδόσεις τῶν Ἐσκιμώων, παραμείνας ἐν Γροιλανδίᾳ μέχρι τοῦ 1904. Τῷ 1906 ἐτέθη ἐπὶ κεφαλῆς νέας ἀποστολῆς εἰς τὴν ἀνατολικὴν Γροιλανδίαν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἐξηκρίβωσεν ὅτι ἡ Γροιλανδία εἶναι νῆσος. Μετὰ ἑνὸς ἔτους παραμονήν, κατὰ τὸν Μάρτιον τοῦ 1907, διαιρέσας τὴν ἀποστολήν του εἰς δύο τμήματα, ἐστράφη πρὸς Β. Ἀλλ' ἐνῷ τὸ ἓν τμῆμα ἠδυνήθη, μετὰ τὴν ἀποπεράτωσιν τῶν μελετῶν του, νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τὴν Δανίαν, τὸ ἕτερον ὑπὸ τὸν Μύλιους-Ἔρικσεν ἀπεκλείσθη ἐπὶ τῶν πάγων καὶ ἀπωλέσθη. Βραδύτερον ἀνευρέθη τὸ πτῶμα τοῦ ἑνὸς ἐκ τῶν δύο συντρόφων τοῦ Μύλιους πλησίον μιᾶς κατασκηνώσεως. Ἐπ' αὐτοῦ ἀνευρέθη σημείωμα, διὰ τοῦ ὁποίου καθίστα γνωστὸν ὅτι ὁ Μύλιους, μεθ' ἑνὸς ἀκόμη συντρόφου του, ὑπέκυψαν εἰς τὰς στερήσεις καὶ ὅτι αὐτὸς ἡμιθανὴς μόλις εἶχε κατορθώσει νὰ συρθῇ μέχρι τοῦ μέρους ἐκείνου. Τῷ 1909 νέα ἀποστολὴ ὑπὸ τὸν Μίκκελσον ἐξηρεύνησε τὰ μέρη ὅπου ἀπωλέσθη ὁ Μύλιους καὶ κατώρθωσε νὰ ἀνεύρῃ, τῷ 1912, τὴν ἔκθεσιν τοῦ Μύλιους, χάρτας τινὰς καὶ τὸ ἡμερολόγιόν του. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς πρώτης των ἀποστολῆς ἐδημοσίευσεν ὁ Μύλιους μετὰ τοῦ Μόλκε τῷ 1906 ὑπὸ τὸν τίτλον «Γροιλανδία, εἰκονογραφημένη περιγραφή». Ἡ ἔκθεσις καὶ τὸ ἡμερολόγιόν του τῆς δευτέρας ἀποστολῆς ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1913—1917 εἰς τὴν σειρὰν «Ἀνακοινώσεις περὶ Γροιλανδίας». Μ. Δ. Β.

**μυλιοφαρόδους** (ὁ) (Myliopharodon) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τελεοστέων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κυπρινιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ζῶντα εἰς τὰ γλυκέα ὕδατα τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**μυλιστικός**, *—ή*, *—όν*· ὁ διὰ μύλης ἐφωδιασμένος, ὁ διὰ μύλης ἐνεργῶν.

—**μυλιστικαὶ** ***μηχαναὶ*** *[Μεταλλοτ.]*· βλ. λ. *μύλη*.

**μυλίτης** (ὁ)· ἐξυπακουομένου τοῦ *λίθος*, μυλόπετρα, ἄλλως *μυλίας*.

—**μυλῖται** ***ὀδόντες***· βλ. *γόμφιοι*.

**μυλκίνι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *βερβερὶς ἡ κρητική*.

**Μύλλενχοφ** (Müllenhof), ***Κάρολος-Βίκτωρ***. Γερμανὸς φιλόλογος (1818—1884). Διετέλεσε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Κιέλου καὶ συνέγραψε: «Γερμανικὴ ἀρχαιολογία» (1870), ἔργον θεωρούμενον ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων μνημείων τῆς γερμανικῆς φιλολογικῆς ἐπιστήμης. Α. Δ.

**Μύλλερ** (Muller), ***Ἀδὰμ-Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς συγγραφεύς, εἷς ἐκ τῶν τυπικῶν ἀντιπροσώπων τοῦ ρωμαντισμοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1779 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1829. Καταγόμενος ἐκ διαμαρτυρομένων γονέων, μετέβη τῷ 1805 εἰς Βερολῖνον καὶ μετεστράφη πρὸς τὸν καθολικισμόν. Κατὰ τὸ παράδειγμα τοῦ φίλου του Gentz ἀφιέρωσε τὴν γραφίδα του εἰς τὴν ἐξυπηρέτησιν τῆς ἀντιδραστικῆς πολιτικῆς τοῦ Μέττερνιχ. Ἀπὸ τοῦ 1816 μέχρι τοῦ 1820 ὑπῆρξε γενικὸς πρόξενος τῆς Αὐστρίας ἐν Λειψίᾳ. Τὰ περισσότερα ἔργα του ἀφοροῦν τὴν πολιτικὴν οἰκονομίαν: «Θεωρία τῆς πολιτικῆς οἰκονομίας καὶ τῶν προόδων της ἐν Γερμανίᾳ καὶ Ἀγγλίᾳ ἀπὸ τοῦ Α. Σμὶθ» (1812) κλπ. Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Ἀδόλφος***. Οὔγγρος συνθέτης, οὗτινος τὸ πραγματικὸν ὄνομα ἦτο *Schmidt* (1801—1886). Διετέλεσε διευθυντὴς ὀρχήστρας καὶ συνθέτης τοῦ θεάτρου «An der Wien» τῆς Βιέννης, διὰ τὸ ὁποῖον ἔγραψε μέγαν ἀριθμὸν ἐλαφρῶν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον σκηνικῶν ἔργων. Ὁ υἱός του, ***Ἀδόλφος*** ἐπίσης (1839—1901), ἐξήσκησε τὰ αὐτὰ μὲ τὸν πατέρα του καθήκοντα ἐν τῷ ἰδίῳ θεάτρῳ καὶ ἔγραψε τὰ μελοδράματα: «Heinrich der Goldschmied», «Waldmeisters Brautfahrt», «Van Dyck», ὡς καὶ ἀριθμόν τινα ὀπερεττῶν. Γ. Σ.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Ἀνδρέας***. Γερμανὸς ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1630 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1694. Κατ' ἀρχὰς συνειργάσθη ἐν Λονδίνῳ εἰς τὴν ἔκδοσιν τῆς πολυγλώσσου «Βίβλου» τοῦ Walton καὶ Castell. Κατόπιν ἐσπούδασε τὴν κινεζικὴν γλῶσσαν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1685 ἀφωσιώθη ἐξ ὁλοκλήρου εἰς τὴν μελέτην τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν. Μὴ εὑρίσκων ἐκδότην ὅπως δημοσιεύσῃ ἔργον του περὶ τῆς κινεζικῆς γραφῆς, ἔκαυσε τὰ χειρόγραφά του. Ἐκ τῶν ἄλλων ἔργων του, τὰ ὁποῖα συνετέλεσαν εἰς τὴν γνῶσιν τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν, σπουδαιότερα εἶναι: «Opuscula nonnulla orientalia» (1695) καὶ «Catalog der chinesischen Bücher in der churfürstlichen Brandeburg Bibliothek» (1683). —Ω.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Ἀνδρέας-Ἰωάννης-Ἰάκωβος-Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1811 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1890. Εἰργάσθη ἐν Μονάχῳ ὑπὸ τὴν διεύθυνσιν τοῦ Cornelius καὶ ἐν Δυσσελδόρφῃ ὑπὸ τοὺς Sohn καὶ Schadow. Βραδύτερον ἐγένετο καθηγητὴς ἐν τῇ Ἀκαδημίᾳ τῆς Δυσσελδόρφης καὶ μέλος τῶν Ἀκαδημιῶν τῆς Βιέννης, τοῦ Ἄμστερνταμ καὶ τῆς Λισσαβῶνος. Ἠσχολήθη μὲ τὴν ἱστορικὴν καὶ τοπιογραφικὴν κυρίως ζωγραφικήν, κατὰ δὲ τὴν ἐν Ἰταλίᾳ παραμονήν του ἐξειργάσθη καὶ θρησκευτικὰ θέματα: «Εὐαγγελισμόν», «Τέσσαρας εὐαγγελιστάς», «Μοναχὸν ἀναγινώσκοντα ἐν τῇ αὐλῇ μοναστηρίου» κλπ. —Ω.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Αὔγουστος***. Γερμανὸς ἀνατολιστής, γεννηθεὶς τῷ 1848 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1892. Ὑπῆρξε καθηγητὴς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Χάλλης (1870) καὶ τῆς Καινιξβέργης (1882), ἐδημοσίευσε δὲ τὰ ἑξῆς: «Imruulkaisi Muallaka» (1869), «Ibn Abi Useibia» (1884), «Turkische Grammatik» (1889), «Orientalische Bibliographie» (1888—1892) κλπ. —Ω.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Αὔγουστος-Ἔμπερχαρντ***. Γερμανὸς μουσικὸς (1767—1817). Διετέλεσεν ἀλληλοδιαδόχως ὀργανοκρούστης ἐν Μαγδεμβούργῳ, κάντωρ τοῦ Ἁγ. Θωμᾶ τῆς Λειψίας, ἔνθα διετέ-

χθη τὸν Ἰω. Σεβ. Μπάχ, καὶ τέλος μουσικὸς διευθυντὴς τῆς αὐλῆς τῆς Βαϊμάρης. Λαμπρὸς παιδαγωγός, ἐξέδωκε τῷ 1804 μίαν ἀρίστην «Μέθοδον κλειδοκυμβάλου», ὡς καὶ ἕτερα τεμάχια δι' ἀρχαρίους. Ὡς συνθέτης ἔδωκε 2 κοντσέρτα καὶ 5 σονάτας διὰ κλειδοκύμβαλον, τεμάχια δι' ἐκκλησιαστικὸν ὄργανον, 2 σονάτας διὰ βιολίον, 6 καπρίτσια καὶ φαντασίας διὰ κλειδοκύμβαλον, 11 κοντσέρτα διὰ πλαγίαυλον κτλ. γ. σ.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Βόλφγκανγκ.*** Γερμανὸς ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1873. Συνέγραψεν ἐπικὰ καὶ λυρικὰ ποιήματα, δράματα, μυθιστορήματα καὶ διηγήματα, ἀνήκει δὲ μὲ τὴν χαρίεσσαν φαντασίαν του, τὴν λεπτὴν εὐαισθησίαν του καὶ τὴν διηγηματικήν του γονιμότητα εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ἐπαρχιωτῶν παραμυθάδων, τοὺς ὁποίους ἀναδεικνύει ἀφθόνους ἐκ τῶν κόλπων τοῦ λαοῦ ἡ πλουσία εἰς ἀναμνήσεις καὶ παραδόσεις κοιλὰς τοῦ Ρήνου. Σπουδαιότερα ἔργα του εἶναι: «Die Meikönigin» (1853), «Lorelei (1873), «Prinz Minnewin» (1856), «Der Rattenfänger von Saint Goar» (1856). —ω.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Γεώργιος-Ἠλίας.*** Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1850. Ἐσπούδασεν ἐν Λειψίᾳ, Βερολίνῳ καὶ Γοτίγγῃ, ὅπου ἐγένετο ὑφηγητὴς κατ' ἀρχὰς καὶ τῷ 1881 τακτικὸς καθηγητής. Κατέστη γνωστὸς διὰ τὴν βαθεῖαν κριτικήν, ἣν ἤσκησε κατὰ τῶν ψυχολογικῶν νόμων τοῦ Fechner καὶ διὰ μίαν προσωπικὴν καὶ στηριζομένην ἐπὶ μαθηματικῶν βάσεων μέθοδον πρὸς λύσιν τῶν θεμελιωδῶν προβλημάτων τῆς ψυχοφυσικῆς. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Θεμέλια τῆς ψυχοφυσικῆς» (1879), «Θεωρία τῆς μυϊκῆς συσπάσεως» (1891). —ω.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Γουλιέλμος.*** Γερμανὸς ποιητὴς καὶ φιλέλλην, γεννηθεὶς ἐν Dessau τῇ 7ῃ Ὀκτωβρίου 1794 καὶ ἀποθανὼν ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τῇ 30ῇ Σεπτεμβρίου 1827. Τὴν σχολικήν του παίδευσιν ἔλαβεν ἐν τῇ γενετείρᾳ του πόλει. Ἤδη ἐκ τῶν σχολικῶν βάθρων ἐφανερώθη ἡ πρὸς ἐκμάθησιν τῶν γλωσσῶν ἰδιοφυΐα του, πρὸς δὲ τούτοις καὶ ἡ φιλελεύθερος καὶ ὁρμητικὴ φύσις νεανίου ῥέποντος εἰς τὴν ποίησιν. Τὸ τελευταῖον τοῦτο ἔγινεν ἀφορμή, ἰδίως κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη τῆς σχολικῆς φοιτήσεώς του, εἰς τὸ νὰ προσκρούσῃ ὁ νεαρὸς Μύλλερ εἰς τοὺς σχολικοὺς κανονισμοὺς καὶ νὰ λεχθῶσι καὶ ἀναγραφῶσι περὶ αὐτοῦ δριμεῖαι ἐκφράσεις ὀργίλων παιδαγωγῶν. Ὁ πατήρ του ὑπῆρξε ῥάπτης. Ἡ μήτηρ του ἀπέθανεν ἐνῷ οὗτος διέτρεχε τὸ ἑνδέκατον μόλις ἔτος τῆς ἡλικίας του. Τοῦτο πάντως συνετέλεσεν, ὥστε ἡ ἀγωγή του νὰ μὴ ἔχῃ οὐδεμίαν ἐπίδρασιν βίας ἢ ἐξαναγκασμοῦ τινος, καὶ ὁ παῖς νὰ ἀσχολῆται ἐλευθέρως μὲ ὅ,τι κυρίως ἤρεσκεν εἰς αὐτόν. Οὕτως ἑρμηνεύεται καὶ ἡ πολυμερεία τῶν ἐπιστημονικῶν καὶ καλλιτεχνικῶν του τάσεων εἰς τὴν μετὰ ταῦτα συγγραφικήν του δρᾶσιν. Δεκαοκταετὴς ἐνεγράφη, κατ' Ἰούλιον τοῦ 1812, εἰς τὸ ἀρτισύστατον ἀκόμη τότε πανεπιστήμιον τοῦ Βερολίνου. Ἐπεδόθη ἐν αὐτῷ εἰς φιλολογικὰς καὶ ἱστορικὰς κυρίως μελέτας ὑπὸ τὴν ἄμεσον ἐπίδρασιν τοῦ μεγάλου φιλολόγου Φρειδερίκου-Αὐγούστου Βόλφ, πρὸς ὃν ᾐσθάνετο μεγίστην ἀφοσίωσιν καὶ σεβασμόν, παρηκολούθει δὲ ἐκτὸς τούτου καὶ τὰς παραδόσεις τῶν Boeckh, Buttmann, Rühs, Solger καὶ Uhden. Τῇ 16ῃ Φεβρουαρίου 1813 κατετάχθη μετὰ πολλῶν φίλων του ὡς ἐθελοντὴς εἰς τοὺς κυνηγοὺς τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς (Gardejäger), ὑπακούων εἰς τὴν σχετικὴν ἔκκλησιν τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας Φρειδερίκου-Γουλιέλμου Γ', διὰ τὸν πόλεμον ἐναντίον τοῦ κατέχοντος τὴν Πρωσσίαν Ναπολέοντος. Φαίνεται ὅμως ὅτι δὲν ὑπῆρξεν ἰδιαιτέρως πολεμοχαρής, ἂν καὶ μετέσχε τῶν μαχῶν ἐν Lützen, Bautzen, Hanau καὶ Kulm, διότι δὲν ἀφῆκε, παραδόξως, σημειώσεις τῶν ἐκ τοῦ πολέμου ἀναμνήσεών του. Μετὰ τὴν ἐκ τοῦ πολέμου ἐπάνοδόν του εἰς Βερολῖνον, κατὰ Νοέμβριον 1814, ἤλλαξεν ἐντελῶς ὁ εἰκοσαετὴς νεανίας, μεταβληθεὶς εἰς ἄνδρα σχεδόν. Τὸ συναίσθημα ὅτι ἐβοήθησε καὶ αὐτὸς εἰς τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς πατρίδος του ἐξῆρε τὸ φρόνημά του καὶ ἐζωογόνει τὴν φαντασίαν του δι' ἀνδρικῶν σκέψεων καὶ τολμημάτων. Χαρακτηριστικὸν τῆς ἐποχῆς του ταύτης εἶναι ὁ περιπαθὴς ἀλλ' ἀτυχὴς ἔρως του πρὸς τὴν Λουΐζαν, κόρην τοῦ ἱεροκήρυκος Hensel. Ἴσως νὰ συνετέλεσε καὶ ἡ περιπέτειά του αὕτη μὲ τὴν ζωηρότατον θρησκευτικὸν συναίσθημα ἔχουσαν νεάνιδα εἰς τὴν μεγάλην ἐσωτερικὴν διαμάχην ὡς πρὸς τὰς θρησκευτικὰς αὐτοῦ πεποιθήσεις, ἥτις, ὡς φαίνεται, κατέλαβε τὸν νεαρὸν ποιητὴν καὶ ἐτάραξεν ὀδυνηρῶς τὴν ψυχικήν του γαλήνην. Τὸν χειμῶνα τοῦ 1814—1815 προσελήφθη ὡς μέλος συνδέσμου νεαρῶν Γερμανῶν ποιητῶν, οἵτινες πάντες εἶχον συμπολεμήσει διὰ τὴν ἐλευθερίαν τῆς πατρίδος των καὶ διέτριβον τότε ἐν Βερολίνῳ. Ἦσαν μεταξὺ τούτων καὶ ὁ κόμις Fr. von Kalckreuth, ὁ κόμις G. von Blankensee, ὁ ζωγράφος Will. Hensel καὶ ὁ Will. von Studnitz. Καὶ ἐχώρισε μὲν αὐτοὺς ἀπ' ἀλλήλων ὁ πόλεμος κατὰ τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1815, ἀλλὰ συνήθροισαν οὗτοι κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος τὰ ποιήματά των (Bundesblülhen), πρόωρα ἐν πολλοῖς δοκίμια ἀώρου φαντασίας, τὰ ὁποῖα καὶ ἐξέδωκαν τῷ 1816. Γενικώτερον χαρακτηριστικὸν τῆς ἐποχῆς ταύτης εἶναι ἡ ἄκρα ἀφοσίωσις πρὸς τὸν γερμανικὸν ἐθνισμὸν τοῦ μέσου ἰδίως αἰῶνος, τὸν ὁποῖον οὐ μόνον ἐν τῇ τέχνῃ ἀλλὰ καὶ ἐν αὐτῇ τῇ ἐξωτερικῇ ἐνδυμασίᾳ ἐζήτουν νὰ ἀναστήσουν. Εὐεξήγητος λοιπὸν εἶναι ἡ κλίσις τὴν ὁποίαν αἰσθάνεται ὁ νεαρὸς Μύλλερ πρὸς τοὺς παλαιοτέρους ῥωμαντικοὺς Fouqué καὶ Brentano. Κατὰ τὸν χρόνον τοῦτον ἐσπούδαζεν ἰδιαιτέρως τὴν παλαιὰν γερμανικὴν φιλολογίαν, ἀσχολούμενος πρὸ πάντων μὲ τὰ ποιήματα αὐτῆς. Καρπὸς τῶν μελετῶν τούτων εἶναι ἡ «Blumenlese aus den Minnensingern», ἥτις ἐξεδόθη τῷ 1816, καὶ νέαι τινὲς μετρικαὶ θεωρίαι του περὶ ἀποκαταστάσεως τοῦ ᾄσματος τῶν Νιμπελοῦγκεν, θεωρίαι ὅμως τὰς ὁποίας ἀνηλεῶς κατέρριψεν ὁ Jakob Grimm ἐν τῇ «Leipziger Literatur-Zeitung» (1817). Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἔκαμε πολλὰ ποιήματα ὁ νεαρὸς Μύλλερ, ἰδίας δὲ μνείας ἀξία εἶναι καὶ ἡ ποιητικὴ μετάφρασις τοῦ «Doctor Faustus» τοῦ Ἄγγλου δραματικοῦ Christ. Marlowe (1564—1593), ἐκδοθεῖσα μετὰ προλόγου τοῦ Ludv. von Arnim τῷ 1818. Σπουδάζων ἐν Βερολίνῳ ὁ Μύλλερ ἀπέβλεπεν εἰς πανεπιστημιακὴν καθηγεσίαν διὰ τὴν παλαιοτέραν γερμανικὴν γλῶσσαν καὶ φιλολογίαν. Ὅτε ἡτοιμάζετο νὰ ὑποβάλῃ εἰς τὴν φιλοσοφικὴν σχολὴν τὴν ἐναίσιμον διατριβήν του πρὸς ἔγκρισιν διὰ τὰς προφορικὰς ἐξετάσεις, προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ Αὐστριακοῦ βαρώνου von Sack, διὰ νὰ συνοδεύσῃ αὐτὸν εἰς ταξίδιον ἀνὰ τὴν Ἑλλάδα καὶ Ἀνατολήν. Ὁ Sack εἶχε ζητήσει παρὰ τῆς ἐν Βερολίνῳ Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν ἐπιστημονικὸν συνοδὸν τοῦ ταξιδίου του, καὶ ἡ Πρωσσικὴ Ἀκαδημία, εἰσηγουμένου τοῦ Boeckh (σχεδιάζοντος τὸ Corpus τῶν ἐπιγραφῶν), Buttmann καὶ Wolff συνέστησε τὸν Μύλλερ. Ἡ εἰς τὴν Ἀνατολὴν εἴσοδος ἐπρόκειτο νὰ γίνῃ διὰ Κωνσταντινουπόλεως. Ἦλθον διὰ τοῦτο κατ' ἀρχὰς εἰς Βιέννην. Κατὰ τὴν ἐκεῖ διαμονὴν ὁ Μύλλερ ἐζήτησε καὶ ἐγνώρισε τοὺς ἐκεῖ Ἕλληνας, πρὸς τοὺς ὁποίους εἶχεν ἰδιαιτέραν συστατικὴν ἐπιστολὴν τοῦ Βόλφ, ἐκτὸς τῶν ἐπισήμων συστατικῶν γραμμάτων, τὰ ὁποῖα εἶχε γράψει ὁ Buttmann, καὶ ἄλλων ἀκόμη τοῦ Boeckh. Τὸ ὄνομα τοῦ Βόλφ ἤνοιξεν εἰς αὐτὸν τὰς θύρας τῶν ἑλληνικῶν τῆς Βιέννης οἴκων. Ἐσχετίσθη μὲ αὐτοὺς καὶ ἔμαθε τὰ δεινοπαθήματα τῶν Ἑλλήνων ἐν τῇ ὑπὸ τῶν Τούρκων τυραννουμένῃ Ἑλλάδι. Ἡ συμπάθειά του ἐξεδηλώθη ἐν τῇ ἐπιθυμίᾳ του νὰ διδαχθῇ τὴν νεωτέραν ἑλληνικὴν γλῶσσαν, τὴν ὁποίαν καὶ πρακτικῶς θὰ ἐφήρμοζε κατὰ τὸ ταξίδιον. Τὰ στοιχεῖα αὐτῆς ἐδίδαξεν εἰς αὐτὸν τότε ἐκεῖ ὁ Ἀθανάσιος Βογορίδης. Ἡ ἐμφάνισις καὶ διάδοσις πανώλους ἐν Κωνσταντινουπόλει μετέβαλε τὰ σχέδια τοῦ ταξιδίου, ἀπεφάσισαν δὲ τώρα νὰ μεταβοῦν κατ' ἀρχὰς εἰς Ἰταλίαν καὶ ἐκεῖθεν νὰ διαπεραιωθῶσιν εἰς τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Ἀνατολήν. Διὰ Τεργέστης, Βενετίας καὶ Φλωρεντίας ἦλθον εἰς Ῥώμην τῇ 4 Ἰανουαρίου 1818. Ὁ νέος τῆς Ἰταλίας βίος μὲ τὰ λαϊκὰ ᾄσματα, τὴν μουσικὴν καὶ καλλιτεχνίαν του, τὴν εὐθυμίαν, ζωηρότητα καὶ ἀφέλειάν του συνεκίνησε τὴν ψυχὴν τοῦ νεαροῦ ποιητοῦ, ἐκίνησε τὸ ἐνδιαφέρον αὐτοῦ καὶ ἐπέδρασε μεγάλως ἐπὶ τὸ θυμικόν του. Πρὸς ταῦτα ὅμως ὁ von Sack οὐδεμίαν ἰδιαιτέραν κλίσιν ἐδείκνυεν. Ἡ ἀδιαφορία του αὕτη ἐνοχλεῖ, ὡς φαίνεται, τὸν Μύλλερ, ἴσως δὲ καὶ ἐξ ἄλλων διαφωνιῶν ἀποφασίζει οὗτος καὶ χωρίζεται τοῦ δυσκόλου βαρώνου, διὰ νὰ μείνῃ χρόνον τινὰ ἐν Ῥώμῃ. Ἐκεῖ ἐσχετίσθη πρὸς τὸν ἱστορικὸν Niebuhr, τὸν μετὰ ταῦτα ἐπιφανῆ πολιτικὸν βαρῶνον Bunsen (ἄσχετον πρὸς τὸν φυσικὸν P. Bunsen) καὶ τὸν ποιητὴν Rückert. Καρπὸς τῆς ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Ῥώμῃ διαμονῆς του εἶναι τὸ μετὰ ταῦτα ἐν Βερολίνῳ (1820) ἐκδοθὲν δίτομον ἔργον του «Rom, Römer und Römerinnen», τὸ ὁποῖον εἶναι γεγραμμένον μετὰ ζωηρότητος καὶ χάριτος καὶ μεγάλης παρατηρητικότητος, ἀποτελεῖ δὲ διὰ τοῦτο, καὶ σήμερον ἔτι, ἀξιόλογον ἀνάγνωσμα πρὸς γνῶσιν τοῦ νεωτέρου ἰταλικοῦ βίου. Ἐπανελθὼν κατὰ Δεκέμβριον τοῦ 1818 εἰς Dessau, διωρίσθη, ἂν καὶ ἐστερεῖτο τῶν τυπικῶν προσόντων, διδάσκαλος τῶν κλασσικῶν γλωσσῶν, ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς, εἰς τὴν Gelehrtenschule τῆς πόλεως ταύτης. Περιελθὼν εἰς ῥῆξιν πρὸς τὸν ἰδιόρρυθμον διευθυντὴν τῆς σχολῆς Stadelmann, μετετέθη ὡς βοηθὸς κατ' ἀρχὰς εἰς τὴν δουκικὴν βιβλιοθήκην τῆς πόλεως, ἀργότερον δὲ ἀνέλαβε καὶ τὴν διεύθυνσιν ταύτης. Τῷ 1821 ἐνυμφεύθη τὴν ὡραίαν καὶ μουσικωτάτην Ἀδελαΐδα Bassedow, ἐγγόνην τοῦ ὁμωνύμου μεγάλου παιδαγωγοῦ. Ἐκ τοῦ γάμου του τούτου ἐγεννήθη (6 Δεκ. 1823) ἓν καὶ μόνον τέκνον, ὁ μετὰ ταῦτα περίφημος γλωσσολόγος καὶ ἀνατολιστὴς *Μὰξ Μύλλερ* (βλ. κατ.). Ἡ οἰκία του ἐν τῇ μικρᾷ πόλει ἀπέβη σὺν τῷ χρόνῳ τὸ ἐντευκτήριον τῆς μεμορφωμένης κοινωνίας τοῦ Dessau. Κατὰ τὸ ἔτος τοῦτο ἐξερράγη ἐν Ἑλλάδι ἡ μεγάλη ἐπανάστασις, ἥτις τόσην ἀπήχησιν ἔσχε τότε καὶ ἐν Γερμανίᾳ μὲ τὸν ἐκεῖ τότε ἐπικρατοῦντα «νεοουμανισμόν», ῥωμαντισμὸν καὶ «λιμπεραλισμόν». Ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ Μύλλερ ὑπῆρχεν ἤδη ἀποτεταμιευμένη συμπάθεια ὑπὲρ τοῦ ἀγῶνος (τὸν ὁποῖον ἤδη ἐγνώριζε παρασκευαζόμενον) καὶ εὔφλεκτος ὕλη πρὸς ἔκρηξιν ποιητικοῦ ἐνθουσιασμοῦ ὑπὲρ τῶν ἀγωνιζομένων ὑπὲρ τῶν πάντων Ἑλλήνων. Τὸν Δεκέμβριον τοῦ αὐτοῦ ἔτους, ἐνῷ ἀκόμη ἦτο ἄδηλος ἡ πορεία τῆς ἐπαναστάσεως, ἐξέδωκε τὸ πρῶτον τεῦχος τῶν «Ἑλληνικῶν του ᾀσμάτων» («Lieder der Griechen»), τὸ ὁποῖον ἐθεμελίωσε τὴν φήμην του ὡς λυρικοῦ ποιητοῦ, κατὰ τὴν ὁμολογίαν τῶν Γερμανῶν γραμματολόγων. Τὸ τεῦχος περιέχει δέκα ποιήματα: «Οἱ Ἕλληνες πρὸς τοὺς φίλους τῆς ἀρχαιότητός των», «Ὁ Φαναριώτης», «Ἡ παρθένος τῶν Ἀθηνῶν», «Ἡ Μανιάτισσα», «Ὁ γέρων τῆς Ὕδρας», «Ὁ Ἱερὸς Λόχος», «Οἱ Ἕλληνες πρὸς τὸν Αὐστριακὸν Παρατηρητὴν» (τὴν ἐφημερίδα τοῦ Μέττερνιχ), «Τὰ πνεύματα τῶν ἀρχαίων ἡρώων κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς Ἀναστάσεως», «Τὰ ἐρείπια τῶν Ἀθηνῶν πρὸς τὴν Ἀγγλίαν» καὶ «Ἡ ἐλπὶς τῆς Ἑλλάδος». Πρὸ ὀλίγου (1820) εἶχε συμπληρώσει καὶ ἐκδώσει ἄλλην λυρικὴν συλλογήν, ἄσχετον πρὸς τὸν ἑλληνικὸν Ἀγῶνα, «Gedichte aus den hinterlassenen Papieren eines Waldhornisten» (β' ἔκδ. 1826), εἰς τὴν ὁποίαν περιέχονται πλεῖστα ποιημάτια καθ' ὑπόδειγμα τῶν γερμανικῶν δημοτικῶν ᾀσμάτων, σύντομα, δροσερά, μὲ θερμότητα ψυχῆς καὶ διαύγειαν ὑπομιμνήσκουσαν παρόμοια ποιημάτια τοῦ Goethe. Τὸ δεύτερον τεῦχος τῶν ποιημάτων τούτων ἐξεδόθη τῷ 1824, δεικνύει δὲ τὴν ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ ἐπελθοῦσαν πολυμέρειαν τοῦ ἐνδιαφέροντος τοῦ Μύλλερ. Χαρακτηριστικὴ διὰ τὴν ποίησιν ταύτην, ἣν ἰδιαιτέρως ἐκαλλιέργησεν, εἶναι ἐπιστολὴ τοῦ ποιητοῦ Χάϊνε ἐξ Ἁμβούργου (7 Ἰουνίου 1826), ἣν ἔγραψε πρὸς τὸν Μύλλερ ἀποστέλλων εἰς αὐτὸν τὰ «Reisebilder» του: ἀναγνωρίζει, λέγει ὁ Χάϊνε, τὴν ἐπ' αὐτοῦ ἐπίδρασιν τῶν δροσερῶν καὶ διαυγῶν ποιηματίων τοῦ Μύλλερ, τὰ ὁποῖα ἔχουσιν ὅλα τὰ χαρακτηριστικὰ καθαρῶς δημοτικῶν ᾀσμάτων, διὰ τοῦτο δὲ δὲν ἀγαπᾷ ἄλλον ποιητὴν ᾀσμάτων (Liederdichter), ἐξαιρουμένου τοῦ Goethe, τόσον ὅσον τὸν Μύλλερ. Καὶ καταλήγει ἐν τῇ ἐπιστολῇ ταύτῃ ὁ Χάϊνε: «εἶμαι ματαιόδοξος ἀρκετὰ νὰ πιστεύω ὅτι τὸ ὄνομά μού ποτε, ὅταν καὶ οἱ δύο δὲν θὰ ὑπάρχωμεν πλέον, θὰ ἀναφέρεται μαζὶ μὲ τὸ ἰδικόν σας».

Δεύτερον τεῦχος τῶν ἑλληνικῶν του ᾀσμάτων ἐδημοσιεύθη τῷ 1822, περιέχον ὀκτὼ νέα ποιήματα («Ἡ Ὑψηλὴ Πύλη», «Ὁ ἐξόριστος τῆς Ἰθάκης», «Ἀλέξανδρος Ὑψηλάντης», «Ἡ ἐπιβίβασις τῶν Ἀθηναίων εἰς τὰ πλοῖά των», «Ἡ Σκλάβα εἰς τὴν Ἀσίαν», «Ὁ μικρὸς Ὑδραῖος», «Ἡ διδασκαλία τῆς Μανιάτισσας», «Ἡ γλαῦξ»), ἐκ τῶν ὁποίων «Ὁ μικρὸς Ὑδραῖος» εἶναι ἀκόμη καὶ σήμερον δημοφιλὴς ἐν Γερμανίᾳ. Τῷ 1823 ἐξέδωκεν ὁ Μύλλερ τρία τεύχη «Νέων ᾀσμάτων τῶν Ἑλλήνων» («Neue Lieder der Griechen») ἐν Λειψίᾳ, παρὰ τῷ Brockhaus, φεύγων τὸ Dessau καὶ τὴν ὀχληρὰν λογοκρισίαν του. Ἐκ τῶν τριῶν τούτων τευχῶν τὸ πρῶτον περιέχει ἑπτὰ ᾄσματα, τὸ δεύτερον ὀκτὼ καὶ τὸ τρίτον ἑπτά. Εἰς τὰ τεύχη ταῦτα εὑρίσκονται ὀξεῖς ὑπαινιγμοὶ κατὰ τῆς ἀνοικτίρμονος ἀπέναντι τῶν Ἑλλήνων καὶ φιλοτούρκου εὐρωπαϊκῆς πολιτικῆς, καὶ ἐνθουσιώδεις ἐκκλήσεις πρὸς βοήθειαν τῶν Ἑλλήνων. Τῷ 1824 ἐξέδωκε «Νεώτατα ᾄσματα τῶν Ἑλλήνων» («Neueste Lieder der Griechen»), ἑπτὰ τὸν ἀριθμόν. Εἰς ταῦτα συγκαταλέγονταί τινα ἐκ τῶν ὡραιοτάτων ᾀσμάτων τοῦ ποιητοῦ. Ἀναφέρω μόνον τὸ ὡραῖον ποίημα «Ἡ Ἑλλὰς καὶ ὁ κόσμος» μὲ τοὺς γνωστοὺς ἐν ἀρχῇ στίχους του: «Χωρὶς τὴν ἐλευθερίαν τί θὰ ἦσουν, ὦ Ἑλλάς, χωρὶς ἐσὲ ὦ Ἑλλάς, τί θὰ ἦτο ὁ κόσμος!» (Ohne die Freiheit, was wärest du, Hellas? Ohne dich, Hellas, was wäre die Welt?) Περὶ δύο τινὰ περιστρέφεται μετὰ ταῦτα ἡ διὰ τὰ ἑλληνικὰ πράγματα ποίησίς του, εἶναι δὲ ταῦτα ὁ Βύρων καὶ τὸ Μεσολόγγι. Πρὸς τὸν Βύρωνα καὶ τὴν ποίησίν του ἀνέκαθεν ᾐσθάνετο ἰδιαιτέραν κλίσιν ὁ Μύλλερ. Εἶχε γράψει περὶ αὐτοῦ ὡς ποιητοῦ εὐμενεστάτην κριτικὴν ἐν τῷ ἡμερολογίῳ «Urania» τοῦ 1822, ὑπάρχει δὲ ἀναμφισβητήτως συγγένειά τις πνευματικὴ κατὰ τὴν ὁρμητικότητα καὶ τὸ φιλελεύθερον πνεῦμα τοῦ Μύλλερ πρὸς τὸν μέγαν Ἄγγλον ποιητὴν καὶ φιλέλληνα. Ὁ πρόωρος θάνατος τοῦ Βύρωνος ἐνέπνευσεν εἰς τὸν Μύλλερ ποίημα μεστὸν θερμοῦ λυρισμοῦ καὶ ὑψηλῆς ἐμπνεύσεως, τὸ ὁποῖον ἐξέδωκε τῷ 1824, κατὰ δὲ τὸ ἑπόμενον ἔτος ἔγραψε τὴν νεκρολογίαν τοῦ Ἄγγλου ποιητοῦ («George Gordon Lord Byron») ἐν τοῖς «Zeitgenossen». Ἡ δὲ τραγῳδία τοῦ Μεσολογγίου συνεκλόνησε βα-

*Γουλιέλμος Μύλλερ.*

Digitized by Google

θύτατα τὴν ψυχὴν τοῦ Μύλλερ καὶ εἰς τέσσαρα σχετικὰ ποιήματά του («Τὸ φρούριον τοῦ οὐρανοῦ», «Ἡ ἀνάληψις τοῦ Μεσολογγίου», «Τὸ νέον Μεσολόγγι», «Ἔπεσε τὸ Μεσολόγγι»—Missolunghi ist gefallen) δίδει ζωηρὰν ἔκφρασιν τοῦ πόνου, ὁ ὁποῖος κατέλαβεν ἐκ τούτου τὴν ψυχήν του. Εἶναι τώρα τὰ ἔτη, καθ' ἃ ἐπανέρχεται εἰς τὰς κλασσικὰς σπουδάς, διότι τῷ 1824 ἐξέδωκε, τῇ ἐμπνεύσει πάντως τοῦ Φρειδ. Αὐγ. Βόλφ, τὸ βιβλίον «Homerische Vorschule», ἐν ᾧ ἐκθέτει καὶ ὑποστηρίζει τὰς ῥηξικελεύθους θεωρίας τοῦ Βόλφ περὶ τῶν ὁμηρικῶν ποιημάτων.

Τῷ 1824 εἶχεν ἐκδοθῇ ἐν Παρισίοις εἰς δύο τεύχη ὑπὸ τοῦ C. Fauriel ἡ συλλογὴ τῶν νεοελληνικῶν ποιημάτων («Chants populaires de la Grèce moderne»), ὁ Μύλλερ δ' ἐπεχείρησεν ἀμέσως τὴν εἰς τὴν γερμανικὴν γλῶσσαν μετάφρασίν των, τὴν ὁποίαν καὶ ἐξέδωκεν εἰς δύο τεύχη (ἐν Λειψίᾳ 1825), κατορθώσας ν' ἀποδώσῃ ἐπιτυχῶς εἰς τὴν γερμανικὴν γλῶσσαν τὰ ἐν πολλοῖς ξένα πρὸς τὴν γλῶσσαν ταύτην συναισθήματα καὶ ἰδέας καὶ εἰκόνας τῶν ἑλληνικῶν πρωτοτύπων. Ἐπικρίνας δὲ ἔν τινι ὑπερφροσύνῃ τὴν ἀπόπειραν τοῦ Goethe πρὸς μετάφρασιν νεοελληνικῶν ποιημάτων ἐκίνησε τὸν χόλον τοῦ Ὀλυμπίου ποιητοῦ. Τὸ βέβαιον εἶναι ὅτι ὁ Goethe δὲν διέκειτο εὐμενῶς πρὸς τὴν φιλοπόλεμον ποίησιν, τὴν ζητοῦσαν αἵματα καὶ θάνατον. Περαιτέρω ἐδημοσίευσεν ὁ Μύλλερ «Εἰκόνας ἐκ τοῦ νέου ἑλληνικοῦ βίου» εἰς τὸ «Morgenblatt», δὲν ἐτελείωσεν ὅμως τὸ αὐτοτελὲς ἔργον, τὸ ὁποῖον ἐσχεδίαζε περὶ τοῦ νεωτέρου ἑλληνικοῦ βίου. Ἐπίσης δὲ ἤρχισε καὶ συλλογὴν ἰταλικῶν δημωδῶν ᾀσμάτων, ἥτις μετὰ τὸν θάνατόν του ἐξεδόθη ἐκ τῶν καταλοίπων του τῷ 1829 ὑπὸ τοῦ O. L. B. Wolff ὑπὸ τὸν τίτλον «Egeria».

Ἡ ἐπίδρασις τῶν ποιημάτων τοῦ Μύλλερ ἐν τῇ Δυτικῇ Εὐρώπῃ ὑπὲρ τῶν ἀγωνιζομένων Ἑλλήνων ὑπῆρξε μεγάλη, καὶ ὁ Treitsche παρατηρεῖ ὅτι «παρέσχον εἰς τὸν ἑλληνικὸν Ἀγῶνα ἠθικὴν βοήθειαν κατὰ πολὺ ἀνωτέραν πολλῶν ἀμφιβόλου ἀξίας συμμάχων». Ἀναντίρρητα χαρακτηριστικὰ καὶ αὐτῶν καὶ γενικῶς τῆς ὅλης τοῦ ἀνδρὸς ποιήσεως εἶναι ἡ εἰλικρίνεια καὶ βαθύτης τοῦ αἰσθήματος, ἡ ἁγνότης τοῦ ἐνθουσιασμοῦ, ἡ γραφικὴ δύναμις τῆς ἐκθέσεως καὶ ἡ ἐναλλαγὴ ἐν τῷ τόνῳ καὶ τῷ χρωματισμῷ. Τέσσαρα ἐκ τῶν ποιημάτων του ηὐτύχησαν νὰ γίνουν δημοτικὰ γερμανικὰ ᾄσματα: 1) «Das Wandern ist des Müllers Lust» (παίζει πρὸς τὸ ὄνομά του καὶ πρὸς τὸ Muller=μυλωνᾶς)· 2) «Im Kruge zum grünen Kranze»· 3) «Die Fenster auf, die Herzen auf!» καὶ 4) τὸ γνωστότατον «Am Brunnen von dem Tore da Steht ein Lindenbaum». Περὶ τοὺς τεσσαράκοντα δὲ καὶ πλέον μουσικοὶ συνθέται (μεταξὺ τῶν ὁποίων ὁ Schubert καὶ ὁ Brahms) ἠσχολήθησαν κατὰ διαφόρους ἐποχὰς περὶ τὴν μελοποίησιν τῶν ποιημάτων τοῦ Μύλλερ.

Πολυμερεστάτη ὑπῆρξεν ἡ ἄλλη δρᾶσις τοῦ Μύλλερ. Ὑπῆρξεν ὄχι μόνον συνεργάτης εἰς τὸ «Literarisches Conversationsblatt» (1820—1826), τὸ ὁποῖον μετὰ τὸ 1826 ἐξεδίδετο ὑπὸ τὸν τίτλον «Blätter für literarische Unterhaltung» (1826—1827), καὶ εἰς τὴν «Hallische Litteraturzeitung» (1825), ἔνθα (Ἰανουάρ.) ὑπάρχει ἡ κριτική του διὰ τὴν μετάφρασιν ἑλληνικῶν ποιημάτων ὑπὸ τοῦ Goethe, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ «Conversations-Lexikon» τοῦ Brockhaus (6ην καὶ 7ην ἔκδ.), καὶ εἰς τὸν «Hermes» (1820—1823) καὶ εἰς τὰ ἐν Βερολίνῳ ἐκδιδόμενα «Jahrbücher für Wissenschaftliche Kritik» ἐδημοσίευσεν ἄρθρα, διατριβὰς καὶ κριτικάς. Ἐπὶ ἓν ἔτος (1820) ἐξέδωκε τὸ περιοδικὸν «Askania» καὶ τῷ 1822 ἵδρυσε τὴν «Bibliothek deutscher Dichter des siebzehnten Jahrhunderts», ἥτις ἐξεδίδετο μέχρι τοῦ θανάτου του, περιλαμβάνει δὲ 10 τόμους, συνεχισθεῖσα βραδύτερον ὑπὸ τοῦ K. Förster (τόμ. 11—14, ἐν Λειψίᾳ 1828—1838). Πλὴν πολλῶν ἄλλων μνημονευτέαι ἰδιαιτέρως ἐνταῦθα αἱ δύο Novellen αὐτοῦ «Der dreizehnte» (1827) καὶ ἡ μετὰ τὸν θάνατον του ἐκδοθεῖσα «Debora» (1828). Τῷ 1825 ἀνέλαβε μετὰ τοῦ Hassel τὴν συνδιεύθυνσιν τῆς δευτέρας Sektion (H—N) τῆς Μεγάλης Ἐγκυκλοπαιδείας Ersch καὶ Gruber καὶ γράφει διάφορα ἄρθρα (κυρίως ἐκ τῆς ἀγγλικῆς καὶ ἰταλικῆς φιλολογίας καὶ ἰταλικῆς τοπογραφίας). Ἤδη ἀπὸ τοῦ ἔαρος τοῦ 1826 ἠσθένησεν ὁ ποιητής, καὶ ἔκτοτε δὲν ἀνέλαβε πλέον, παρ' ὅλα τὰ λουτρὰ καὶ τὰς ἐξοχάς, εἰς τὰς ὁποίας κατέφυγε διὰ νὰ ζητήσῃ θεραπείαν. Ἰδίως τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1827 κατελήφθη ὁ ἀκάματος ἀνὴρ ὑπὸ μεγάλης ἐξαντλήσεως, ἀκριβῶς δὲ τὴν ἐποχὴν αὐτὴν ἐξέδωκε τὸ τελευταῖον ἔργον του «Lyrische Reisen nnd epigrammatische Spaziergänge». Ὁ θάνατός του ἐπῆλθε τὸ μεσονύκτιον τῆς 30ῆς Σεπτεμβρίου πρὸς τὴν 1 Ὀκτωβρίου 1827, εἴκοσιν ἡμέρας πρὸ τῆς ἐν Ναυαρίνῳ ναυμαχίας. Δὲν ἐπέζησε λοιπὸν νὰ ἴδῃ οὐδὲ ὑποφώσκουσαν τὴν ἀνατολὴν τῆς ἐλευθερίας τῆς Ἑλλάδος. Ἡ ἀπελευθερωθεῖσα ἑλληνικὴ πατρὶς ἐτίμησεν ἐπανειλημμένως ἐν Dessau τὴν μνήμην τοῦ ποιητοῦ, τελευταίως δέ, κατὰ τὰς ἐπισήμους ἑορτὰς ἐν Dessau (30 Σεπτεμβρίου —1 Ὀκτωβρίου 1927), ἐπὶ τῇ παρελεύσει ἑκατονταετίας ἀπὸ τοῦ θανάτου αὐτοῦ, ἀντεπροσωπεύθη ἐκεῖ καὶ ἡ ἑλληνικὴ κυβέρνησις (ὑπὸ τοῦ ἐν Βερολίνῳ πρεσβευτοῦ Ε. Κανελλοπούλου καὶ ὑπὸ τοῦ Ἔσλιν) καὶ ἡ Ἀκαδημία (ὑπὸ τοῦ Κ. Καραθεοδωρῆ) καὶ τὸ πανεπιστήμιον Ἀθηνῶν (ὑπὸ τοῦ Ἰω. Καλιτσουνάκι), καὶ αὐτὴ δὲ ἡ πρωσσικὴ κυβέρνησις ἔστειλεν ἴδιον ἀντιπρόσωπον (τὸν βαρῶνον φὸν Χύνε). Πλὴν τῶν λόγων, οὓς οἱ ῥηθέντες ἀντιπρόσωποι ἐξ ὀνόματος τῆς εὐγνωμονούσης Ἑλλάδος κατὰ τὴν ἐπίσημον ἑορτὴν εἶπον, ἐνετοιχίσθη εἰς τὴν οἰκίαν, ἐν ᾗ ἀπέθανεν ὁ ποιητής, καὶ μεγάλη πλὰξ ἐκ πεντελικοῦ μαρμάρου (δῶρον τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως) μετὰ διγλώσσου ἐπιγραφῆς: «Γουλιέλμῳ Μύλλερ τῷ ποιητῇ τῶν ἑλληνικῶν ᾀσμάτων ὁ εὐγνωμονῶν ἑλληνικὸς λαός—Wilhelm Müller dem Dichter der Griechenlieder das dankbare Griechische Volk», καὶ πανηγυρικῶς τότε ἀπεκαλύφθη.

Ἐκ τῶν ἀνωτέρω λεχθέντων δύναται εὐκόλως νὰ χαρακτηρισθῇ ἡ ποίησις τοῦ Μύλλερ. Ἐχάρισεν εἰς τὴν γερμανικὴν λογοτεχνίαν σύντομα ποιητικὰ ἔργα, διακρινόμενα διὰ τὴν εὔκολον δύναμιν τῆς παραστάσεως, διὰ τὴν ἁπλῆν μελῳδικὴν γλῶσσαν καὶ διὰ τὸ βάθος τῆς ἀντιλήψεως καὶ τοῦ συναισθήματος. Πάντα ταῦτα, ἐν συνδυασμῷ πρὸς ποικίλας γνώσεις ἱστορικὰς καὶ ἄλλας, αἵτινες εὐκαιρίας διδομένης παρορμῶσι πρὸς ὑποστήριξιν τῶν δικαιωμάτων καὶ τῆς εὐτυχίας τῶν λαῶν, ἐκεῖ ἔνθα ταῦτα ἐπιβάλλονται ὡς ἱστορικοὶ νόμοι (ἐσκόπει καὶ ἱσπανικὰ ᾄσματα νὰ ἐκδώσῃ). Ἄλλο προτέρημα τῆς ποιήσεώς του εἶναι ἡ ἀφέλεια καὶ φυσικὴ χαρὰ διὰ τὴν φύσιν καὶ τὰς ἀπολαύσεις της καὶ ἡ ἐνθουσιώδης περιγραφή της. Ἔχει τοῦτο κοινὸν πρὸς τὸν Chamisso καὶ τὸν Eichendorff. Μὲ τὸν τελευταῖον μάλιστα ἔχει ἐν πολλοῖς ἰδιαιτέραν συγγένειαν ἡ ζωὴ καὶ ἡ ποίησίς του. Ἀμφότεροι ἐπολέμησαν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας τῆς πατρίδος των, ἀμφότεροι ἐκαλλιέργησαν τὸ δημοτικὸν ᾆσμα. Ἀμφότεροι ἔψαλαν τὸ Wandern, οὕτως ὥστε ὁ αἰωνίως περιπλανώμενος μουσικὸς τοῦ μεσαίωνος νὰ ἀναφανῇ καὶ ἀναζήσῃ εἰς τὰ ποιήματά των. Ἀμφότεροι ἠγάπων, ὡς καὶ ὁ Goethe, Uhland καὶ Hebel, νὰ κάμνουν ποιήματα ὁρμώμενοι ἀπὸ ὡρισμένων προσώπων (ῥόλλων) μουσικῶν Ἀτσιγγάνων, Γερμανῶν μισθοφόρων (Landsknechte), φοιτητῶν, ναυτῶν, κυνηγῶν, χειρωνάκτων, ποιμένων κτλ. Ἰδιαιτέρως ὁ Μύλλερ ἀναλαμβάνει τὸ πρόσωπον «μυλωνᾶ» (Müller), διὰ νὰ ψάλῃ ἰδίας εὐτυχίας ἢ ἀτυχίας εἰς τοὺς ἔρωτάς του. Ἡ ποίησις τοῦ Μύλλερ δὲν ἀναφέρεται εἰς τὴν θρησκείαν καὶ τὰ βαθέα θρησκευτικὰ συναισθήματα (ὡς ἡ τοῦ καθολικοῦ Eichendorff) ἢ εἰς τὸν μεσαίωνα· ἀποβλέπει εἰς τὸ παρόν, ὁ ποιητὴς ἀνήκει εἰς τοὺς φιλελευθέρους (ὡς καὶ ὁ Chamisso). Ἡ ποίησίς του ἀποπνέει ἐγκοσμίαν δροσερότητα καὶ γοργότητα· εὐκόλως προσλαμβάνεται καὶ εὐκόλως φεύγει. Χαιρετίζει ἐνθουσιωδῶς τὸ ἔαρ καὶ εἰς τὰ ᾄσματά του περὶ τοῦ οἴνου καὶ τοῦ ἔρωτος αἰσθανόμεθα συγγένειάν του πρὸς τὸν Ἀνακρέοντα.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ὁ θέλων νὰ ἀσχοληθῇ μὲ τὸν Γ. Μύλλερ πρέπει νὰ ἀνατρέξῃ εἰς δύο θεμελιώδη περὶ τοῦ ποιητοῦ βιβλία. Τὸ πρῶτον εἶναι ἡ κριτικὴ ἔκδοσις τοῦ κειμένου τῶν ποιημάτων του ὑπὸ τοῦ Ἀμερικανοῦ καθηγητοῦ *James Taft Hatfield* μετὰ εἰσαγωγῆς καὶ βιογραφίας τοῦ ποιητοῦ («Wilhelm Müller Gedichte Vollständige Kritische Ausgabe mit Einleitung und Anmeckungen») ἐν Βερολίνῳ καὶ Λειψίᾳ 1906 (ἐν σελ. 445—494 περιέχονται βιβλιογραφικαὶ καὶ κριτικαὶ σημειώσεις). Τὸ δεύτερον εἶναι τὸ ἔργον τοῦ Γερμανοῦ καθηγητοῦ *Heinrich Lohre* «Wilhelm Müller als kritiker und Erzähler. Ein Lebensbild mit Briefen an F. A. Brockhaus und anderen Schuftstücken» ἐν Λειψίᾳ 1927 (ἐν σελ. 387—396 ὑπάρχει λεπτομερὴς βιβλιογραφία τῶν ἔργων τοῦ ποιητοῦ καὶ τῶν περὶ αὐτοῦ γραψάντων). Κατάλογος τῶν συγγραμμάτων τοῦ Μύλλερ ἐδημοσιεύθη ἐν τῷ «Anhaltisches Schriftsteller-Lexikon» ὑπὸ *A. G. Schmidt* (Bernburg 1830). Βιογραφία τοῦ ποιητοῦ ἐδημοσιεύθη ὑπὸ τοῦ υἱοῦ του *F. Max Müller* ἐν τῇ «Allgemeine Deutsche Bibliographie» τόμ. 22. Ἐπιτομὴ τῶν ποιημάτων (τῇ συνδρομῇ Ἑλλήνων ἐν Γερμανίᾳ ἐπὶ τῇ παρελεύσει ἑκατονταετίας ἀπὸ τοῦ θανάτου τοῦ ποιητοῦ) ἐδημοσιεύθη ὑπὸ *Paul Wahl* «Wilhelm Müller Gedichte ausgewählt von Paul Wahl, Einführung von Otto Hachtmann» (ἐν Λειψίᾳ 1927). Μνημονευτέα ἐπίσης καὶ τὰ ἑξῆς τρία βιβλία: —1) Τὸ ἀξιόλογον ἔργον τοῦ Γάλλου *Gaston Caminade*, «Les Chants des Grecs et le Philhellénisme de Wilhelm Müller» (ἐν Παρισίοις 1913, Bibliothèque de Philologie et de littérature modernes, X).—2) *G. Arnold*. «Der Deutsche Philhellenismus» (1896, δεύτερον Ergänzungsheft τοῦ περιοδικοῦ «Euphorion»), καὶ 3) *Curt Erler*, «Der Philhellenismus in Deutshland 1821—1829» (Diss. τοῦ πανεπιστημίου Λειψίας 1906). Καὶ ἐν τῇ Reclam'sche Bibliothek (ἀριθμ. 3261—3264) εὑρίσκονται ἐκδεδομένα τὰ ποιήματα τοῦ Μύλλερ, ἀλλ' αἱ εἰς τὰ ἑλληνικὰ τοῦ ποιητοῦ σημειώσεις εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἀνακριβεῖς.— *Ἰ. Καλιτσουνάκι*, «Γουλιέλμος Μύλλερ καὶ ὁ φιλελληνισμὸς ἐν τῇ Δυτικῇ Εὐρώπῃ» (Ἀθῆναι 1928).

Ι. ΚΑΛΙΤΣΟΥΝΑΚΙΣ

— **Μύλλερ** (Müller), ***Γουλιέλμος***. Γερμανὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1820 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1892. Τῷ 1865 ἐγένετο καθηγητὴς ἐν τῷ γυμνασίῳ τῆς Τυβίγγης. Συνέγραψε τὰ ἔργα: «Ἱστορία τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου» (1873), «Ὁ Ρωσοτουρκικὸς πόλεμος τοῦ 1877—1878» (1878), «Ὁ αὐτοκράτωρ Γουλιέλμος» (1888), «Ὁ πρίγκιψ Βίσμαρκ» (1890), «Ὁ αὐτοκράτωρ Φρειδερῖκος» (1888), «Οἱ πόλεμοι διὰ τὴν γερμανικὴν ἑνότητα 1864—1871» (1889) κλπ. Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ἢ ***Μύλλερ-Ἔς, Γουλιέλμος Φρειδερῖκος-Ἐδουάρδος***. Ἑλβετὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1853. Ἐσπούδασεν ἐν Βασιλείᾳ, Λειψίᾳ, Ἀϊδελβέργῃ, Τυβίγγῃ, Λονδίνῳ, Ὀξφόρδῃ, ἔζησε καὶ ἐν Ἰνδίαις, ὅπου συνέλεξεν ἐπιγραφάς, ἐδίδαξεν ὡς ἔκτακτος καθηγητὴς ἀπὸ τοῦ 1886 τὴν σανσκριτικὴν καὶ τὴν συγκριτικὴν γραμματικὴν ἐν Βέρνῃ καὶ ἐξέδωκε τὰ ἑξῆς ἔργα: «Dialecte Latita vistara» (1874), «Anciennes inscriptions de Ceylan» (1881), «Grammaire simplifiée de la langue pali» (1884), «Dhammasangani» (1880) κλπ. Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Δαβὶδ-Ἐρρῖκος***. Αὐστριακὸς σοφός, γεννηθεὶς τῷ 1846. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τοῦ πανεπιστημίου τῆς Βιέννης καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Sudarabische Studie» (1877), «Die Burgen und Schlösser Sudarabiens» (1879—1881), «Die altsemitischen Inschriften von Sendschirli» (1893), ἐξέδωκε δὲ τὴν «Γεωγραφίαν τῆς Ἀραβίας» τοῦ Χαμντανὶ (1884—1891 εἰς 2 τόμ.) καὶ τμῆμα τῶν «Χρονικῶν» τοῦ Ταμπαρὶ (1888—1889). Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἐδουάρδος***. Γερμανὸς γλύπτης, γεννηθεὶς τῷ 1828 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1895. Ἐφιλοτέχνησε: «Ψυχὴν» (1856), «Νύμφην ἐναγκαλιζομένην τὸν Ἔρωτα» (1862), «Ξύπνημα νεαροῦ παιδὸς» (1854), «Ξύπνημα νεαρᾶς κόρης» (1872), «Ναπολιτᾶνον ἁλιέα καὶ τὸν υἱόν του» καὶ μέγα σύμπλεγμα παριστῶν τὸν «Προμηθέα καὶ τὰς Ὠκεανίδας» (1874—1879). Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Muller), ***Ἕρμαν***. Γερμανὸς σοσιαλιστής, γεννηθεὶς τῷ 1876 ἐν Μανχάϊμ. Ὑπῆρξε κατ' ἀρχὰς ἐμποροϋπάλληλος, ἀπὸ δὲ τοῦ 1899 μέχρι τοῦ 1906 συντάκτης σοσιαλιστικῆς ἐφημερίδος. Τῷ 1916 ἐξελέγη βουλευτὴς τοῦ Ράϊχσταγ, εἰς ἀναπληρωματικὴν ἐκλογήν, κατόπιν δὲ ἐχρημάτισε μέλος τῆς ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς τῆς σοσιαλιστικῆς ἐργατικῆς συνομοσπονδίας τοῦ Βερολίνου, μέλος τοῦ κεντρικοῦ συμβουλίου τῶν γερμανικῶν συμβουλίων ἐργατῶν καὶ στρατιωτῶν (Δεκέμβριος 1918), μέλος τῆς συντακτικῆς συνελεύσεως, ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν εἰς τὴν κυβέρνησιν Bauer κατ' Ἰούνιον τοῦ 1919, ὑπογράψας τὴν συνθήκην τῶν Βερσαλλιῶν, καγκελλάριος τοῦ κράτους, ἀπὸ τοῦ πραξικοπήματος τοῦ Kapp μέχρι τῶν ἐκλογῶν τοῦ 1920, καὶ πρόεδρος κατόπιν τῆς σοσιαλιστικῆς ἑνωτικῆς φράξεως τοῦ Ράϊχσταγ. Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς ἱεροκήρυξ, γεννηθεὶς τῷ 1631 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1675. Ἱερεὺς κατ' ἀρχὰς καὶ κατόπιν καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν Ροστόκ, ἀπεκάλυψε τὴν πρακτικὴν καὶ ἐσωτερικὴν ἀξίαν τοῦ Χριστιανισμοῦ καὶ ἀπέβη πρόδρομος τοῦ εὐσεβισμοῦ. Ὡς λαϊκὸς συγγραφεὺς ἤσκησε μεγάλην ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ γερμανικοῦ προτεσταντισμοῦ, ἐξακολουθοῦσαν καὶ σήμερον ἀκόμη. Σπουδαιότερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Die apostolische Schlusskette und Kraftkern» (1663), «Die evangelische Schluskette» (1672), «Des evangelischen Herzensspiegel» (1679), «Die Graeber der Heiligen» (1685), «Die geistlichen Erquickstunden» (1664—1666), «Der himmlische Liebeskuss» (1664), «Die Kreuz-Buss und Betschule» (1661). Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Ἐρρῖκος***. Γερμανὸς ἀνατόμος (1820—1864). Τῷ 1858 διωρίσθη ἐν Φραιβούργῃ τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς. Κατέστη γνωστὸς ἐκ τῶν ἱστολογικῶν ἐρευνῶν του ἐπὶ τοῦ ὀφθαλμοῦ καὶ εἰδικῶς ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς, τὰς ὁποίας ἐξέθηκεν εἰς πλείστας μελέτας δημοσιευθείσας μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τοῦ Becker ὑπὸ τὸν τίτλον: «H. M. gesammelte und hinterlassene Schriften zur Anatomie und Physiologie des Auges» (1872). Ἔγραψεν ὡσαύτως πολλὰς διατριβάς, ἐν αἷς: «Περὶ ἀναπτύξεως τοῦ ὀστίτου ὀστοῦ καὶ τῆς ὑφῆς τῶν ῥαχιτικῶν ὀστῶν», διὰ τῆς ὁποίας καθωρίσθησαν σαφῶς αἱ ἀνατομικαὶ σχέσεις τῶν ὀστῶν πρὸς τοὺς χόνδρους. Ο. Ρ.

— **Μύλλερ** (Muller), ***Εὐγένιος***. Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1823 καὶ χρηματίσας βιβλιοθηκάριος ἐπὶ μακρόν. Ἔγραψε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «La Mionette» (1858), «Le trésor de Blaise» (1860), «Les boutiques de Paris» (1868), «Le champ maudit» (1877), «Le géant et l'oiseau» (1880), «La morale en actions par l'istoire» (1877), «En famille chez les fleurs» (1889) κλπ. Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰβάν***. Διάσημος Ἐσθονὸς δεξιοτέχνης τοῦ εὐθυαύλου (1786—1854). Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις τοῦ ὀργάνου τούτου μετὰ 13 κλειδιῶν. Παρ' ὅλην τὴν ἀποτυχίαν τοῦ ἐργοστασίου, ὅπερ πρῶτον ἀνέλαβε τὴν κατασκευὴν τῶν τελειοποιουμένων τούτων ὀργάνων, οἱ εὐθύαυλοι τοῦ Μύλλερ ἐν τέλει ἐπεβλήθησαν καὶ ἐγένοντο πανταχοῦ ἀποδεκτοί. Γ. Σ.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰβάν***. Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1830. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς κλασσικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ἐρλάγγης (1862) καὶ κατόπιν τοῦ Μονάχου (1893). Ἐξέδωκε τοῦ Γαληνοῦ τὸ «De placitis Hippocratis et Platonis» (1874) καὶ τὰ «Scripta minora» (1884—1893) καὶ ἐσυνέχισε τὸ «Jahresbericht» τῆς κλασσικῆς ἀρχαιότητος, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἀρχίσει ὁ Bursian τῷ 1873. Θ. Π.

Digitized by Google

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰούλιος.*** Γερμανὸς θεολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1801 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1878. Ἐσπούδασε δίκαιον καὶ θεολογίαν καὶ ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς θεολογίας ἐν Γοτίγγῃ, Μαρβούργῳ καὶ Χάλλῃ. Κατέστη διάσημος διὰ τοῦ ἔργου του: «Die christliche Lehre von der Sünde» (1878, τόμ. 2). Διὰ τοῦ λόγου καὶ τῶν συγγραμμάτων του ὑπεστήριξε τὴν πρωσσικὴν ἕνωσιν. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: «Die erste Generalsynode der evangelischen Landeskirche Preussens» (1847), «Die evangelische Union, ihr Wesen und göttliches Recht» (1854). Μετὰ τοῦ Nitzsch καὶ ἄλλων θεολόγων ἐξέδιδε τὸ περιοδικόν: «Deutsche Zeitschrift fur christliche Nissenschaft und christliches Leben» (1850—1861). θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης*** *φὸν* — . Ἑλβετὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1752 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1809. Ὑπὸ τῶν γονέων του προωρίζετο διὰ τὴν σπουδὴν τῆς θεολογίας, ἀλλ' αὐτὸς ᾐσθάνετο κλίσιν εἰς τὴν ἱστορίαν καὶ τῷ 1773 ἐξέδωκε λατινιστὶ διατριβὴν «Περὶ τοῦ πολέμου τῶν Κίμβρων». Τὸ ἑπόμενον ἔτος μετέβη εἰς Γενεύην, ὅπου ἀνέλαβε τὴν ἐκπαίδευσιν τῶν τέκνων τοῦ συμβούλου Tronchin. Τῷ 1811 ἐξεδόθη, μετὰ τὸν θάνατόν του, ἡ «Παγκόσμιος ἱστορία» του εἰς 4 τόμους. Προηγουμένως (1780) εἶχεν ἐκδοθῆ ὁ πρῶτος τόμος τῆς «Ἱστορίας τῆς ἑλβετικῆς ὁμοσπονδίας». Τῷ 1786, ἀφοῦ ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν Κάσσελ, ἐγένετο σύμβουλος ἐξ ἀπορρήτων τοῦ ἀρχιεπισκόπου τῆς Μαγεντίας καὶ ὡς τοιοῦτος ἤγαγεν εἰς πέρας διαφόρους διπλωματικὰς ἀποστολὰς εἰς Ῥώμην καὶ Ἑλβετίαν. Τῷ 1793 ἐγένετο αὐλικὸς σύμβουλος ἐν Βιέννῃ καὶ ἐπιμελητὴς τῆς Βασιλικῆς βιβλιοθήκης. Τῷ 1804 μετέβη εἰς Βερολῖνον ὡς ἱστοριογράφος τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας καὶ ἐγένετο φίλος τοῦ Schiller, τοῦ Goethe καὶ τοῦ Humboldt. Τῷ 1807, τέλος, ἐγένετο, τῇ μεσολαβήσει τοῦ Ναπολέοντος, κρατικὸς γραμματεὺς τοῦ βασιλείου τῆς Βεστφαλίας. Ἐν ὅσῳ ἔζη ἐξεδόθησαν ὀκτὼ τόμοι τῆς «Ἑλβετικῆς ἱστορίας» του, ἥτις συνεπληρώθη τῷ 1851, ὅτε ἐξεδόθη ὁ δέκατος ὄγδοος καὶ τελευταῖος τόμος αὐτῆς. Ἡ ἱστορία αὕτη ἀπέβη κλασσικὴ καὶ ὡς πρὸς τὸ περιεχόμενον καὶ ὡς πρὸς τὴν μορφήν, ἤσκησε δὲ μεγίστην ἐπιρροὴν ἐν Ἑλβετίᾳ. Ὁ Μύλλερ ἔγραψεν ἐπίσης: «Ἱστορικὰ δοκίμια» καὶ «Ἱστορίαν τῆς κοσμικῆς ἐξουσίας τοῦ μεγάλου ποντίφικος» (1780—1783). θ. π.

— **Μύλλερ** (Muller), ***Ἰωάννης*** βλ. λ. *Ρεγιομοντᾶνος.*

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης.*** Διάσημος Γερμανὸς βιολόγος (1801—1858). Τῷ 1824 διωρίσθη ἐν Βόννῃ ὑφηγητὴς καὶ μετὰ δύο ἔτη ἔκτακτος καθηγητής, τῷ δὲ 1833 ἀντικατέστησεν ἐν Βερολίνῳ τὸν Rudolphi ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ἀνατομικῆς καὶ φυσιολογίας καὶ διευθυντὴς τοῦ ἀνατομικοῦ καὶ τοῦ ζῳοτομικοῦ μουσείου. Ὡς συγγραφεὺς καὶ ὡς διδάσκαλος ἐδόξασε τὴν ἰατρικὴν σχολὴν τοῦ Βερολίνου, δικαίως δὲ ἀνεγνωρίσθη ὡς ἀρχηγὸς τῆς βιολογικῆς σχολῆς. Ἡ ῥηξικέλευθος καὶ αὐτοῦ δρᾶσις ἐξεδηλώθη ἰδίως ἐν τῇ συγκριτικῇ ἀνατομικῇ καὶ φυσιολογίᾳ, ἃς ἐπλούτισε διὰ πλείστων ἀνακαλύψεων. Κλασσικὸν παρέμεινε τὸ σύγγραμμά του «Φυσιολογία τοῦ ἀνθρώπου», ὅπερ διατηρεῖ ἔτι καὶ νῦν τὴν ἀξίαν του. Τὸ σύνολον τῶν συγγραμμάτων καὶ διατριβῶν του ἀνῆλθεν εἰς 267, ἀφορῶσι δὲ τὴν περιγραφικὴν καὶ συγκριτικὴν ἀνατομικήν, τὴν ἀνατομοπαθολογίαν, τὴν φυσιολογίαν καὶ τὴν ἐμβρυολογίαν. Σοβαρὰς ἐπίσης μελέτας ἔκαμεν ἐπὶ τῆς ἀνατομικῆς ὑφῆς τῶν ὀστῶν καὶ χόνδρων, τοῦ λίπους καὶ τοῦ συνεκτικοῦ ἱστοῦ. ο. ρ.

*Ἰωάννης Μύλλερ.*

***Νόμος τοῦ Μύλλερ.*** Πᾶς ὄγκος ἀναπτυσσόμενος ἐν τῷ ὀργανισμῷ ἀποτελεῖται ἐξ ἱστοῦ ἔχοντος τὸν ἀνάλογον αὐτοῦ ἐν τῷ φυσιολογικῷ ὀργανισμῷ, εἴτε ἐν ἐμβρυϊκῇ καταστάσει, εἴτε ἐν καταστάσει τελείας ἀναπτύξεως.

***Μυλλέρειος πόρος*** (canal de Müller). Οὕτω καλεῖται ἐν τῇ ἐμβρυολογίᾳ ἡ πρώτη παρὰ τῷ ἐμβρύῳ παρατηρουμένη καταβολὴ τῆς διαπλάσεως τῶν γεννητικῶν ὀργάνων ἀμφοτέρων τῶν φύλων· ἡ φάσις αὕτη τῆς διαπλάσεως παρίσταται ὡς ὄργανον σωληνῶδες, ἀναπτυσσόμενον παρὰ τὸν βολφιανὸν πόρον, ἐκ τοῦ ἐπιθηλίου τῆς ἐμβρυϊκῆς οὐρογεννητικῆς πτυχῆς. μ. ν. κ.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης-Γκόττβερτ,*** ἐπονομαζόμενος ***Μύλλερ ντὲ Ἰτζεχόε.*** Γερμανὸς μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1743 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1828. Ἐπεχείρησε νὰ εἰσαγάγῃ εἰς Γερμανίαν τὴν μυθιστορικὴν τεχνοτροπίαν τοῦ Smollet καὶ τοῦ Fielding, περιγράφων μετὰ συμπαθείας καὶ φαιδρότητος τὰ ἤθη τῆς ἀστικῆς τάξεως. Τὸ κύριον μυθιστόρημά του: «Siegfried von Lindenberg» (1779) καὶ τὰ κωμικὰ μυθιστορήματά του: «Komische Romane aus den Papieren des braunen Mannes» (1784—1791, τόμ. 8), τὸν κατέστησαν δημοφιλέστατον. θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης-Γοθάρδος*** *φὸν* —. Γερμανὸς χαράκτης, γεννηθεὶς τῷ 1747 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1830. Ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ πατρός του εἰς Στουτγάρδην, ὅπως παρακολουθήσῃ μαθήματα θεολογίας, ἐπροτίμησε νὰ ἐγγραφῇ εἰς τότε ἱδρυθεῖσαν Ἀκαδημίαν τῶν καλῶν τεχνῶν καὶ ἐπετέλεσε τόσον ταχείας προόδους, ὥστε ὁ δοὺξ Κάρολος-Εὐγένιος τὸν ἔθεσεν ὑπὸ τὴν προστασίαν του. Χάρις εἰς τὴν προστασίαν ταύτην ἠδυνήθη ἐπὶ ἑξαετίαν νὰ ἐπιδοθῇ εἰς τὴν ζωγραφικὴν καὶ τὸ σχέδιον καὶ τέλος ἐγκατεστάθη ἐν Παρισίοις. Τῷ 1776 ἐγένετο μέλος τῆς ἐν Παρισίοις ἀκαδημίας, προσκληθεὶς δὲ ὑπὸ τοῦ δουκὸς ἐπανῆλθεν εἰς Στουτγάρδην, ὅπου ἵδρυσαν Ἀκαδημίαν τοῦ σχεδίου, ἧς ὑπῆρξε καθηγητὴς μέχρι τοῦ 1794. Τῷ 1781 ἐσχεδίασε τὸν πίνακα «Ὁ Ἀλέξανδρος νικητὴς ἑαυτοῦ», ὅστις ἔσχε μεγίστην ἐπιτυχίαν. Ὑπῆρξε μέλος τῶν Ἀκαδημιῶν τοῦ Βερολίνου, τῆς Κοπεγχάγης, τοῦ Μονάχου καὶ τῆς Βιέννης, ἐφιλοτέχνησε δὲ 33 πίνακας, σπουδαιότεροι τῶν ὁποίων εἶναι: τὰ πορτραῖτα τοῦ Wille, τοῦ Galoche, τοῦ Lerambert, τοῦ Schiller, ἡ «Δήμητηρ» κατὰ τὸν Goltzius, ἡ «Κυρία παίζουσα κιθάραν» κατὰ τὸν Wille, «Λὼτ καὶ αἱ θυγατέρες του» κατὰ τὸν Honthorst, «Ἡ Παναγία τῆς Σεγιόλας» κατὰ τὸν Ραφαήλ, ἡ «Ἁγία Καικιλία» κατὰ τὸν Δομενικῖνον, ἡ «Ἁγία Αἰκατερίνη» κατὰ τὸν Λ. ντὰ Βίντσι, ἡ «Παρθένος» κατὰ τὸν Spada, ἡ «Τρυφερὰ μήτηρ» κατὰ τὸν Tischbein κλπ. θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης-Ἐρρῖκος.*** Γερμανὸς φυσικὸς καὶ ἀστρονόμος (1671—1731). Διετέλεσε καθηγητὴς τῶν φυσικομαθηματικῶν ἐν Altdorf, ὅπου ἵδρυσε καὶ διηύθυνεν ἀστεροσκοπεῖον. Ἔγραψε: «De operandis math. etc.» (1710), «De eclipsibus solis annularibus» (1716), «Paradoxorum geographicorum semicenturia» (1718), «Observationes astronomicae Altdorficae ab anno 1711 usque ad 1723 habitae» (1723), «De scientiae cometicae fatis et progressu» (1730) κ. ἄ. Ἐνυμφεύθη τὴν Μαρίαν Claire, κόρην τοῦ ἀστρονόμου Eimmart (1676—1705), ἥτις ἐβοήθει αὐτὸν ὅπως καὶ τὸν πατέρα της κατὰ τὰς ἀστρονομικὰς των παρατηρήσεις. σ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης-Ἐρρῖκος-Ἰάκωβος.*** Γερμανὸς φυσικός, γεννηθεὶς τῷ 1809 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1875. Ἐσπούδασε τὴν φυσικὴν ἐν Δαρμστάτῃ, Βόννῃ καὶ Giessen καὶ τῷ 1844 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς φυσικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Φρειβούργου, τὴν ὁποίαν ἐκράτησε μέχρι τοῦ θανάτου του. Συνέγραψε πολλὰ καὶ ἐνδιαφέροντα ἔργα ἐπὶ τοῦ ἠλεκτρομαγνητισμοῦ, τῆς ὀπτικῆς, τῆς θερμότητος κλπ., σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Lehrbuch der Physik und Meteorologie» (1842, τόμ. 2), «Grundriss der Physik und Meteorologie» (1846), «Lehrbuch der Kosmischen Physik» (1856) κλπ. θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Ἰωάννης-Σεβαστιανός.*** Γερμανὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, γεννηθεὶς τῷ 1715 ἢ 1720 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1785. Ἐσπούδασεν ἐν Νυρεμβέργῃ, τῷ δὲ 1741 ἀνεχώρησεν εἰς Ἀγγλίαν, ἐγκατασταθεὶς ἐν Λονδίνῳ, ὅπου ἐφιλοτέχνησεν ἱκανὸν ἀριθμὸν χαλκογραφιῶν. Τὸ χαρακτικόν του ἔργον περιλαμβάνει 31 πίνακας, ἐν οἷς τὸ πορτραῖτον τοῦ J. Wilhes, τῆς ἰνφάντης Ἰσαβέλλας κατὰ τὸν Rubens, τὴν «Ἀνάπαυσιν τῆς Ἁγίας οἰκογενείας» καὶ τὴν «Ἁγίαν οἰκογένειαν» κατὰ τὸν Bavroche, τὴν «Ἁγίαν οἰκογένειαν» κατὰ τὸν Murillo, τὸ «Σεληνόφως» τοῦ Van der Neer, δύο «Ἀπόψεις τῆς Ῥώμης» κατὰ τὸν Panini κλπ. Ὡς ζωγράφος ἠσχολήθη μὲ τὴν πλαστογραφίαν ἔργων μεγάλων ζωγράφων, τὰ ὁποῖα, κατὰ τὴν ἰδίαν του ὁμολογίαν, ὑπέγραφε μὲ τὸ ὄνομα τοῦ Murillo, τοῦ Pontoja de la Cruz κλπ. θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Κάρολος-Λουδοβῖκος.*** Γάλλος ζωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1815 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1892. Ὑπῆρξε μαθητὴς τοῦ Gros καὶ τοῦ L. Gogniet, ἐνεφανίσθη δὲ διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὸ Σαλὸν τοῦ 1834 καὶ διεκρίθη διὰ σειρᾶς εὐρειῶν ἱστορικῶν συνθέσεων, αἱ ὁποῖαι ἐπὶ τῆς βασιλείας Λουδοβίκου-Φιλίππου ὑπερήρεσαν εἰς τὴν ἀστικὴν τάξιν, τόσον διὰ τὴν ἐκλογὴν τῶν θεμάτων, ὅσον καὶ διὰ τὴν κάπως μελοδραματικὴν σκηνογραφίαν των: «Ἡ ἐπαύριον τῶν Χριστουγέννων» (1837), «Τὸ μαρτύριον τοῦ ἁγίου Βαρθολομαίου» (1838), «Ἡ δολοφονία τοῦ Ἀρθούρου τῆς Βρετάνης», «Διογένης», «Ἡ σφαγὴ τῶν ἀθῴων», «Μία ἑορτὴ τοῦ Ἡλιογαβάλου» (1841), «Εἴσοδος τοῦ Ἰησοῦ εἰς Ἱεροσόλυμα» (1844), «Φάννυ», «Ἄνοιξις» (1846), «Λαίδη Μάκβεθ» (1849), «Λήδα» καὶ ἡ περίφημος «Ἔκκλησις τῶν θυμάτων τῆς τρομοκρατίας» (1849—1850). θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Κάρολος-Ὀτφρῖντ.*** Ἐπιφανὴς Γερμανὸς ἀρχαιολόγος καὶ φιλόλογος. Ἐγεννήθη ἐν Brieg τῷ 1797 καὶ ἀπέθανεν ἐν Ἀθήναις τῇ 1ῃ Αὐγούστου 1840. Μετὰ τὰς ἐν Βρεσλαυΐᾳ καὶ Βερολίνῳ (ἰδίως παρὰ τῷ διασήμῳ Böckh) πανεπιστημιακὰς σπουδάς του, ἐδίδαξεν εἰς διάφορα γυμνάσια, ἀπὸ δὲ τοῦ 1819 ὡς καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γοτίγγης. Κατελθὼν εἰς Ἑλλάδα τῷ 1839 διενήργησεν ἀνασκαφὰς ἐν Δελφοῖς, ἀσθενήσας ὅμως καὶ ἀποθανὼν ἐτάφη ἐν Κολωνῷ, ὅπου σῴζεται τὸ μνῆμά του. Πολυμαθέστατος καὶ ἐντριβέστατος περὶ τὴν κλασσικὴν φιλολογίαν καὶ τὴν ἀρχαίαν ἱστορίαν, κριτικὸς δὲ ἄριστος τῆς τέχνης τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων, συνέγραψε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Geschichte hellenischer Stämme und Städte» περίφημος ἱστορία τῶν ἑλληνικῶν φύλων, «Orchomenos und die Minyer» (β' ἔκδ. 1844) καὶ «Die Dorier» (β' ἔκδ. εἰς 3 τ. 1844, ἐπιμελείᾳ τοῦ ***Schneidewin***), περισπούδαστα ἔργα περὶ τῆς συμβολῆς τῶν Μινύων, τῶν Δωριέων καὶ τῆς ἀπολλωνείου θρησκείας εἰς τὴν διαμόρφωσιν τοῦ ἑλληνικοῦ πνεύματος, «Über die Wohnsitze Abstammung und ältere Geschichte des Makedonischen Volks» (β' ἔκδ. 1877), «Prolegomena zu einer wissenschaftlichen Mythologie», μεθοδικὸν ἔργον περὶ τῆς γενέσεως καὶ κατατάξεως τῶν ἑλληνικῶν μύθων, «Handbuch der Archäologie der Kunst» (γ' ἔκδ. ἐπιμελείᾳ τοῦ ***Welcker*** 1846), «Denkmäler der alter Kunst» κ. ἄ. Τὸ γνωστότερον ὅμως παρ' ἡμῖν ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι ἡ «Geschichte der griechischen Litteratur bis auf das Zeitalter Alexanders» (I—II, Breslau 1841, εἰς δ' ἔκδ. κατ' ἐπεξεργασίαν καὶ συμπλήρωσιν ὑπὸ ***Heitz*** ἐν Στουτγάρδῃ 1882—1884). Τὸ ὡραῖον τοῦτο ἔργον μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ τοῦ Α. Κυπριανοῦ (1867) ὑπὸ τὸν τίτλον: «Ἱστορία τῆς Ἑλληνικῆς φιλολογίας». Διάφοροι πραγματεῖαι τοῦ Μύλλερ ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὰ «Göttinger gelehrten Anzeigen» καὶ εἰς ἄλλα ἐπιστημονικὰ περιοδικά, τὰ δὲ «Kleine deutsche Schriften» αὐτοῦ ἐδημοσιεύθησαν μετὰ τὸν θάνατόν του ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ του Ἐδουάρδου (3 τόμ. ἐν Βρεσλαυΐᾳ 1847—1848).

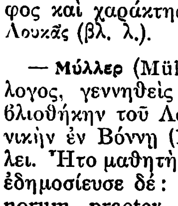

*Κάρολος Μύλλερ.*

[*Lücke*, Erinnerungen an Otfried Müller, Göttingen 1841.] Γ. Π. Α.—Β. Δ. Θ.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Λουκᾶς.*** Γερμανὸς ζωγράφος καὶ χαράκτης, γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *Κράναχ Λουκᾶς* (βλ. λ.).

— **Μύλλερ** (Müller), ***Λουκιανός.*** Γερμανὸς φιλόλογος, γεννηθεὶς τῷ 1836. Εἰργάσθη εἰς τὴν βιβλιοθήκην τοῦ Λουγδούνου καὶ ἐδίδαξε τὴν λατινικὴν ἐν Βόννῃ (1867) καὶ κατόπιν ἐν Πετρουπόλει. Ἦτο μαθητὴς τοῦ Bentley καὶ τοῦ Lachmann, ἐδημοσίευσε δέ: «De re metrica poetarum latinorum praeter Plautum et Terentium» (1861), «Der saturnische Vers» (1885), «De Pacuvii fabulis» (1889), «De Accii fabulis» (1890) καὶ ἐξέδωκε τὸν Ὀβίδιον («Amores» 1861), τὸν Ὁράτιον (1869), τὸν Κάτουλλον, τὸν Τίβουλλον, τὸν Προπέρτιον κλπ. θ. π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Μάξ.*** Γερμανὸς γλωσσολόγος καὶ ἀνατολιστής, υἱὸς τοῦ ποιητοῦ Γουλιέλμου Μύλλερ (1823—1900). Μετὰ τὰς ἐγκυκλίους καὶ πανεπιστημιακὰς σπουδάς του διέμεινεν ἐπί τινα χρόνον ἐν Παρισίοις, ἀπὸ δὲ τοῦ 1847 ἐγκατεστάθη ἐν Ὀξφόρδῃ τῆς Ἀγγλίας, ἔνθα ἀνέλαβεν, ἐντολῇ τῆς ἑταιρείας τῶν Ἀνατολικῶν Ἰνδιῶν, τὴν ἔκδοσιν τοῦ Rig-veda μετὰ τῶν σχολίων τοῦ Sayana. Τὸ ἔργον ἐδημοσιεύθη εἰς 6 τόμους (1849—1874, εἰς 6' δὲ ἔκδοσιν εἰς 4 τόμους, 1890—1892). Τῷ 1850 διωρίσθη ἔκτακτος καθηγητής, τῷ δὲ 1854 τακτικὸς καθηγητὴς ἐν Ὀξφόρδῃ τῶν νεωτέρων γλωσσῶν καὶ φιλολογιῶν, τῷ δὲ 1869 καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας. Τῷ 1872 ἐδέχθη τὴν θέσιν τοῦ καθηγητοῦ ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Στρασβούργου, ἀλλὰ τῷ 1876 ἐπανῆλθεν εἰς Ὀξφόρδην καὶ ἐπανέλαβε τὴν ἐν αὐτῇ διδασκαλίαν του. Ἐκτὸς τοῦ ῥηθέντος ἔργου του, ὁ Μὰξ Μύλλερ ἐδημοσίευσε καὶ πολλὰ ἄλλα ἔργα. Ὑπὸ τὴν διεύθυνσίν του παρεσκευάσθησαν μεταφράσεις διαφόρων ἀρχαίων ἰνδικῶν συγγραμμάτων ὑπὸ τὸν τίτλον «Sacred books of the East», ὧν ἡ πρώτη σειρὰ ἐξ 24 τόμων ἐξεδόθη τῷ 1879—1885, ἡ δὲ δευτέρα, ἐξ 25 τόμων, τῷ 1886—1895, τρίτη δὲ σειρὰ ἤρχισε νὰ ἐκδίδεται ἀπὸ τοῦ 1894. Ὁ ἴδιος ἐξέδωκε τὸν 1ον, τὸν 15ον, τὸν 32ον καὶ 48ον τόμον τῶν ἀνωτέρω μεταφράσεων. Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσεν ἱστορίαν τῆς σανσκριτικῆς φιλολογίας (History of ancient Sanskrit literatures», 6' ἔκδ. τῷ 1860 ἐν Λονδίνῳ), σανσκριτικὴν γραμματικὴν (ὡσαύτως ἀγγλιστί), μεταφρασθεῖσαν καὶ εἰς τὴν γερμανικὴν (ὑπὸ τοῦ ***Kielhorn*** καὶ ***Oppert***, τῷ 1868 ἐν Λιψίᾳ), καὶ δὴ τὸ γνωστότερον ἐκ τῶν ἔργων του «Lectures on the science

Digitized by Google

of language» (ἐν Λονδίνῳ 1861, εἰς 14ην ἔκδοσιν τῷ 1885, καὶ μετὰ νέαν ἐπεξεργασίαν τῷ 1891. Ἡ τελευταία ἔκδοσίς της μετεφράσθη καὶ εἰς τὴν γερμανικὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Die Wissenschaft der Sprache» ὑπὸ *Fick* καὶ *Wischmann* ἐν Λειψίᾳ τῷ 1892—1893 εἰς 2 τόμους). Τὸ ἔργον τοῦτο, γραφὲν ὑπὸ ἐκλαϊκευτικὴν μορφήν, ἔσχεν εὐρεῖαν διάδοσιν καὶ συνετέλεσεν εἰς τὸ νὰ καταστήσῃ γνωστοτέραν τὴν γλωσσολογίαν εἰς τὸ πολὺ κοινόν. Πλὴν τῶν γλωσσολογικῶν ἐδημοσίευσε καὶ διάφορα ἄλλα ἔργα, μυθολογικά, καὶ δὴ καὶ εἰς τὴν ἱστορίαν τῆς θρησκείας ἀναφερόμενα, ὅπως τὴν γνωστήν του «Einleitung in die vergleichende Religionswissenschaft» (ἐν Στρασβούργῳ 1874). Γ. Π. Α.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Ὄθων***. Γερμανὸς μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1816 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1894. Ἐγένετο διάσημος διὰ τοῦ ἔργου του: «Bürger, ein Deutsches Dichterleben» (1845), τὸ ὁποῖον ἠκολούθησαν πλεῖστα ἄλλα, ἐν οἷς καὶ τὰ «Σαρλόττα Ἄκκερμαν» (1854), «Ekhof und seine Schüler» (1863, τόμ. 2), «Der Wildpfarrer» (1866, τόμ. 3) κλπ. Θ. Π.

— **Μύλλερ**, ***Ὀρέστης-Θεοδώροβιτς***. Ρῶσος συγγραφεὺς (1834—1889). Ἤρξατο τοῦ φιλολογικοῦ του σταδίου διὰ τῆς πραγματείας «Περὶ τοῦ ἠθικοῦ στοιχείου ἐν τῇ ποιήσει», δι' ἧς ἐρευνᾷ τὰ ποιητικὰ μνημεῖα ὅλων τῶν λαῶν, ἀπὸ τῆς ἠθικῆς αὐτῶν ἀπόψεως. Τῷ 1863 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς νεωτέρας λογοτεχνίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Πετρουπόλεως. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Συγκριτικὴ μελέτη ἐπὶ τῆς συνθέσεως τοῦ δημώδους ρωσικοῦ ἔπους», «Οἱ μετὰ τὸν Γκόγκολ Ρῶσοι συγγραφεῖς», μελέται περὶ τοῦ Σίλλερ, Γκαῖτε, Βύρωνος κ.ἄ. Θ. Β.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Οὐΐλλιαμ***. Στρατιωτικὸς συγγραφεύς, ἀποθανὼν τῷ 1846. Κατήγετο ἐξ Ἀννοβέρου, τῷ δὲ 1807 μετέβη εἰς Ἀγγλίαν καὶ τῷ 1816 ἐγένετο ἀξιωματικὸς τοῦ ἀννοβερικοῦ στρατοῦ. Ἐδημοσίευσε τὰ ἔργα: «Analytische Trigonometrie» (1807), «Anfangsgründe der reinen Mathematik» (1807), «Handbuch der Artillerie» (1810), «A relation of the military operations of the Austrian and French armies in the campaign of 1809» (1810), «Elements of science of war» (1811), «The cosmosphere» (1829) κλπ. Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Muller), ***Πέτρος-Λουδοβῖκος***. Ὁλλανδὸς ἱστορικός, γεννηθεὶς τῷ 1842. Ὑπῆρξε καθηγητὴς τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Λουγδούνου καὶ ἐδημοσίευσε πλεῖστα ἔργα, σπουδαιότερα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ ἑξῆς: «Ἱστορία τῶν Ἡνωμένων ἐπαρχιῶν μέχρι τῆς ἀφίξεως τοῦ Λάϊτσεστερ» (1·67), «Αἱ πρῶται σχέσεις τῶν Κάτω Χωρῶν μετὰ τῆς Αὐστρίας, κατὰ τὰς διπλωματικὰς ἀλληλογραφίας» (1870), «Ἡ ἕνωσις τῆς Οὐτρέχτης» (1879), «Αἱ Ἡνωμέναι ἐπαρχίαι ἐν τῇ γενέσει των» (1872) κλπ. Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Müller), *βαρῶνος* ***Φερδινάνδος*** *φὸν*—. Γερμανὸς βοτανικὸς καὶ ἰατρὸς (1825—1896). Ἐταξίδευσεν εἰς Αὐστραλίαν, ὅπου ἀφιερώθη εἰς ἰατρικὰς μελέτας, τῷ 1853 ὠνομάσθη κυβερνητικὸς βοτανικὸς τῆς ἀποικίας Βικτωρίας, ἧς ἐξερεύνησε τὴν φυτείαν, τῷ δὲ 1857 ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ τότε συσταθέντος βοτανικοῦ κήπου τῆς Μελβούρνης. Ὁ Μύλλερ προσέφερε σπουδαίας ὑπηρεσίας ὄχι μόνον εἰς τὴν βοτανικήν, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν γεωγραφικὴν ἐξερεύνησιν τῆς Αὐστραλίας. Ἐπίσης συνέβαλε τὰ μέγιστα διὰ τὸν ἐγκλιματισμὸν καλλιεργουμένων φυτῶν τῆς Εὐρώπης. Κ. Γ. Μ.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Φράενφελς***. Γερμανὸς φιλόσοφος, γεννηθεὶς τῷ 1882. Ἔγραψε: «Ψυχολογία τῆς τέχνης», «Συναίσθημα καὶ βούλησις», «Νόησις καὶ φαντασία», «Ψυχολογία τῆς θρησκείας», «Μεταφυσικὴ τοῦ ἀλογισμοῦ» κ.ἄ. Ἐξέδωκε τὰ ἔργα τοῦ Γκαῖτε, τὸ «Φιλοσοφικὸν λεξικὸν» τοῦ Ἄϊσλερ καὶ τὴν «Φιλοσοφίαν τοῦ Ὡραίου» τοῦ Ἐδουάρδου Χάρτμαν. Εἶναι πρόεδρος τῆς ἐν Βερολίνῳ «Ψυχολογικῆς ἑταιρείας», τῆς «Ἑταιρείας τοῦ Καντίου», τῆς «Ἑταιρείας ἐμπειρικῆς ψυχολογίας» κ. ἄ. Α. Δ.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Φράντς-Οὔμβερτος***. Γερμανὸς ζωγράφος, χαράκτης, τεχνοκρίτης καὶ ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1784 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1835. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς νομικά, κατόπιν δὲ ἀφωσιώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς ζωγραφικῆς καὶ ὑποστὰς πολλὰς στερήσεις ἐπέτυχε τέλος (1807) νὰ γίνῃ ἐπίσημος ζωγράφος τοῦ πρίγκιπος Waldeck. Παρέμεινεν ἐπ' ἀρκετὸν ἐν Κάσσελ, ὅπου εἰργάσθη διὰ τὴν διακόσμησιν τοῦ ἀνακτόρου τοῦ βασιλέως Ἱερωνύμου, εἶτα δὲ μετέβη εἰς Ρωσίαν καὶ τέλος ἐγκατεστάθη ἐν Φραγκφούρτῃ. Τῷ 1817 διωρίσθη ἐπιθεωρητὴς τῆς πινακοθήκης τῆς Δαρμστάτης, ἧς συνέταξε καὶ τοὺς καταλόγους. Τῷ 1819 διωρίσθη καθηγητὴς τοῦ σχεδίου εἰς τὸ κολλέγιον τῆς Δαρμστάτης, ἐφεξῆς δὲ ἠσχολήθη μὲ τὴν τέχνην τοῦ μεσαίωνος καὶ μὲ τὴν ζωγραφικὴν ἱστορικῶν θεμάτων. Συνέγραψε πολλὰς πραγματείας περὶ τοῦ σχεδίου καὶ ἓν ἔργον περὶ τῆς γερμανικῆς τέχνης κατὰ τὸν μεσαίωνα. Θ. Π.

—**Μύλλερ** (Müller), ***Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς χαράκτης, ζωγράφος καὶ ποιητής, γεννηθεὶς τῷ 1749 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1825. Συνειργάσθη εἰς τὸ «Goettinger Musenalmanach», βραδύτερον δὲ εἰς τὰς «Horen» τοῦ Schiller καὶ διωρίσθη κατὰ τὸ μικρὸν χρονικὸν διάστημα, καθ' ὃ ἐπεδόθη εἰς τὰ γράμματα ὡς τὸ πρωτοτυπώτερον πνεῦμα τῆς ἐποχῆς του. Ὁ δροσερὸς νατουραλισμός του καὶ ἰσχυρὰ ποιητικὴ ἰδιοσυγκρασία του ἐξεδηλώθησαν εἰς τὰ δράματά του: «Faust» (1778), «Niobe» (1778), «Golo nnd Genoveva», (1781). Τὰ εἰδύλλιά του: «Ulrich von Kossheim», «Das Nusskernen», «Die Schafschur» ἀναγινώσκονται καὶ σήμερον ἀκόμη εὐχαρίστως. Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Φρειδερῖκος***. Ἔγκριτος Γερμανὸς γλωσσολόγος (1834—1898). Μετὰ τὰς ἐν Βιέννῃ καὶ Γοτίγγῃ φιλολογικὰς σπουδάς του, διωρίσθη κατὰ πρῶτον μὲν ἔκτακτος καθηγητὴς (1866), τῷ δὲ 1869 τακτικὸς καθηγητὴς τῆς συγκριτικῆς γλωσσολογίας καὶ τῆς σανσκριτικῆς φιλολογίας καὶ γλώσσης ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης. Μετά τινα ἔτη ἐξελέγη μέλος τῆς ἐν Βιέννῃ Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν. Ὁ Φρ. Μύλλερ θεωρεῖται ὡς ὁ κύριος ἀντιπρόσωπος τῆς γλωσσολογικῆς ἐθνογραφίας. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν ἔργων του εἶναι: «Allgemeine Ethnographie» (Βιέννη 1873, β' ἔκδ. 1879) καὶ «Grundriss der Sparchwissenschaft» (1876—1877, τόμ. 4). Πλὴν τούτων ἐδημοσίευσε πολλὰς γλωσσολογικὰς πραγματείας εἰς τὰ «Πρακτικὰ» τῆς ἐν Βιέννῃ Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν, εἰς τὸ περιοδικὸν «Orient und Occident», εἰς τὸ περιοδικὸν τοῦ Kuhn, εἰς τὴν «Wiener Zeitschrift für die Kunde des Morgenlandes κ. ἄ. Γ. Π. Α.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Φρίτζ***. Γερμανὸς φυσιοδίφης, γεννηθεὶς τῷ 1821 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1897. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν ἐν Βερολίνῳ καὶ Γκράϊφσβαλντ, μετηνάστευσε τῷ 1852 εἰς Βραζιλίαν, ὅπου ἠσχολήθη κατ' ἀρχὰς μὲ τὴν γεωργίαν, καὶ κατόπιν ἐγένετο καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐν Desterro. Ἔκτοτε ἀφιερώθη εἰς τὴν μελέτην τῆς θαλασσίας πανίδος. Αἱ ἐργασίαι του ἐπὶ τῆς θεωρίας τῆς ἐξελίξεως («Περὶ Δαρβίνου» 1864) συνετέλεσαν εἰς τὴν διάδοσιν αὐτῆς ἐν Εὐρώπῃ. Διετύπωσε πρῶτος τὸν μέγαν βιογενετικὸν νόμον, ὁ ὁποῖος φέρει τὸ ὄνομά του καὶ καθ' ὅν: ἡ ὀντογένεια ἢ ἀνάπτυξις τοῦ ἀτόμου εἶναι ἡ σύντομος καὶ ταχεῖα ἀναπαράστασις τῆς φυλογενείας ἢ γενεαλογικῆς ἀναπτύξεως τοῦ εἴδους, εἰς τὸ ὁποῖον τὸ ἄτομον ἀνήκει. Ὅταν εἰσεχώρησαν οἱ ἰησουῖται εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Desterro, ὁ Μύλλερ κατέφυγεν εἰς Blumenau. Ἐδημοσίευσε σειρὰν ἐπιστημονικῶν ἔργων, κυρίως περὶ τῶν ἐντόμων. Θ.Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Χριστιανὸς - Φρειδερῖκος***. Γερμανὸς χαράκτης, γεννηθεὶς τῷ 1783 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1816. Τῷ 1802 μετέβη εἰς Παρισίοις, ὅπου ἐγένετο γνωστὸς διὰ τοῦ «Ἁγίου Ἰωάννου» κατὰ τὸν Dominiquin. Κατόπιν ἐταξίδευσεν εἰς Ρώμην καὶ ἀφοῦ ἐχάραξε τὴν «Παναγίαν τοῦ Ἁγίου Σέξτου» κατὰ τὸν Ραφαήλ, ἀπέθανεν εἰς ἡλικίαν 33 ἐτῶν. Ὁ Μύλλερ ἀπὸ τοῦ 1814 ἦτο καθηγητὴς τῆς χαρακτικῆς εἰς τὴν Ἀκαδημίαν τῆς Δρέσδης, ἀφῆκε δὲ 18 πίνακας, σπουδαιότεροι τῶν ὁποίων εἶναι: ἓν πορτραῖτον τοῦ Βοναπάρτου, ἡ «Ἀφροδίτη τῆς Ἄρλης», «Αἱ τέσσαρες ἐποχαὶ» κατὰ τὸν Jordaens, «Ὁ ἅγιος Ἰωάννης ἐν Πάτμῳ», «Ἀδὰμ καὶ Εὔα» κατὰ τὸν Ραφαὴλ κλπ. Θ. Π.

— **Μύλλερ** (Müller), ***Χριστόφορος - Φρειδερῖκος***. Ἑλβετὸς σοφός, γεννηθεὶς τῷ 1740 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1807. Εἰς ἡλικίαν εἴκοσι ἑνὸς ἐτῶν ἐγένετο καθηγητὴς τῆς φιλοσοφίας καὶ τῆς ἱστορίας εἰς τὸ κολλέγιον Joachim τοῦ Βερολίνου καὶ κατόπιν ἀπεσύρθη εἰς τὴν γενέτειράν του, ἐπιχορηγούμενος ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας. Εἶναι εἷς ἐκ τῶν πρώτων, οἱ ὁποῖοι κατέστησαν γνωστὴν τὴν ἀρχαίαν γερμανικὴν λογοτεχνίαν. Ἡ ἔκδοσίς του τῶν «Νιμπελοῦγκεν» καὶ ἡ συλλογή του τῶν Γερμανῶν ποιητῶν τοῦ ΙΒ' μέχρι τοῦ ΙΔ' αἰῶνος τὸν κατέστησαν διάσημον. Θ. Π.

— **Μύλλερ** ***ἀδελφοί***. Διάσημος γερμανικὸς ὅμιλος μουσικῆς δωματίου, ἀποτελούμενος ἐκ τῶν τεσσάρων ἀδελφῶν: *Καρόλου-Φρειδερίκου* (1797—1873) πρώτου βιολίου, *Θεοδώρου-Ἑρρίκου-Γουσταύου* (1799—1855) βιόλας, *Αὐγούστου-Θεοδώρου* (1802—1875) βιολοντσέλλου καὶ *Φραγκίσκου-Φερδινάνδου-Γεωργίου* (1808—1875) δευτέρου βιολίου. Οἱ τέσσαρες οὗτοι ἀδελφοὶ εἶχον καταρτίσει περίφημον κουαρτέττο, ὅπερ διέτρεξε τὴν μουσικὴν Εὐρώπην ἀπὸ τοῦ 1831 μέχρι τοῦ 1855. Μετὰ τὴν διάλυσιν τοῦ πρώτου τούτου κουαρτέττου συνεπήχθη δεύτερον, ὑπὸ τὴν αὐτὴν προσωνυμίαν, ἐκ τῶν τεσσάρων υἱῶν τοῦ Καρόλου-Φρειδερίκου: *Καρόλου* (1829—1907), *Οὔγου* (1832—1886), *Βερνάρδου* (1825—1895) καὶ *Γουλιέλμου* (1834—1897). Γ. Σ.

**Μύλλνερ** (Müllner), ***Ἀμεδαῖος-Γοδεφρεῖδος-Ἀδόλφος***. Γερμανὸς δραματικὸς ποιητὴς καὶ συγγραφεὺς (1774—1829). Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ ὑπηρέτησε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸν δικαστικὸν κλάδον, ἀλλὰ βραδύτερον ἀφιερώθη εἰς τὴν ποίησιν καὶ εἰς τὸ θέατρον, γενόμενος κυρίως γνωστὸς ἐκ τοῦ δραματικοῦ ἔργου «Ἡ 29η Φεβρουαρίου» (1812). Τῷ 1813 ἐπαίχθη «Τὸ κρῖμα», ὅπερ ἐξεδόθη τῷ 1816. Ἀκολούθως ἔγραψε «Τὸν βασιλέα Ἴνγκουρντ» (1817) καί τινα ἄλλα δράματα. Τὰ ἔργα του ταῦτα, ἐπιδράσαντα μεγάλως ἐπὶ τῶν συγχρόνων του, ἀνήκουν εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν ἐξαρτώντων τὸν ἄνθρωπον ἀπὸ τῆς μοίρας. Ἀπὸ τοῦ 1820 ἀφιερώθη σχεδὸν ἀποκλειστικῶς εἰς τὴν θεατρικὴν κριτικήν, ἀπὸ τοῦ 1820—1825 ἐξέδωσε τὸ φιλολογικὸν περιοδικὸν «Morgenblatt» καὶ τῷ 1823 τὸ περιοδικὸν «Ἑκάτη». Τὰ ποιητικά του ἔργα ἐξεδόθησαν τῷ 1828 ὑπὸ τὸν τίτλον «Δραματικὰ ἔργα». Μ. Δ. Β.

**Μυλμπάχερ** (Mülbacher), ***Ἐγελβέρτος***. Αὐστριακὸς ἱστορικὸς (1843—1903). Τῷ 1881 κατέλαβε τὴν ἕδραν τῆς ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Βιέννης. Ἀπὸ τοῦ 1896 διηύθυνε τὸ Ἱστοριογραφικὸν Ἰνστιτοῦτον τῆς Αὐστρίας. Τὸ κυριώτερον πεδίον τῶν ἱστορικῶν αὐτοῦ ἐρευνῶν ὑπῆρξεν ἡ Καρολίγγειος ἐποχή. Σχετικὸν δὲ ἔργον αὐτοῦ ἐδημοσιεύθη ἐν τῇ Βιβλιοθήκῃ τῆς Γερμανικῆς ἱστορίας τοῦ Τσβίντινεκ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἱστορία τῆς Γερμανίας ὑπὸ τοὺς Καρολιγγείους». Γ. Ι. Β.

**Μύλντερ** (Mülder), ***Γεράρδος - Ἰωάννης***. Ὁλλανδὸς χημικὸς (1802—1880). Ἐσπούδασεν ἰατρικὴν καὶ διετέλεσε καθηγητὴς τῆς Χημείας ἐν Οὐτρέχτῃ μέχρι τοῦ 1868. Ὁ Μύλντερ συνέβαλε πολύ, διὰ τῶν ἐπιστημονικῶν ἐργασιῶν του, ἰδίως ἐπὶ τῶν πρωτεϊνῶν, εἰς τὴν πρόοδον τῆς ὀργανικῆς χημείας. Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Δοκίμιον γενικῆς φυσιολογικῆς Χημείας» (1843), «Χημικαὶ ἔρευναι» (1848) κλ. Γ. Ι. Β.

— **Μύλντερ** (Mülder), ***Λουδοβῖκος***. Ὁλλανδὸς ἀξιωματικὸς καὶ συγγραφεὺς (1822—1907). Ἐγένετο ἰδίᾳ γνωστὸς εἰς τὸν φιλολογικὸν κόσμον διὰ τοῦ μυθιστορήματός του «Ἰωάννης Φάσσεν», ἐν ᾧ ἀπεικονίζοντο τὰ ἤθη τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, καὶ διὰ τῆς κωμῳδίας «Ἐκλογικὴ ἕνωσις τοῦ Στέλλεννττὺκ». Γ. Ι. Β.

**Μυλόγουστα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἐλασσόνος τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 477. Χ. Δ.

**μυλόδους** (ὁ) (Mylodon Owen) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν ὑποοικογένειαν τῶν *μυλοδοντινῶν βραδυβαμόνων νωδῶν* θηλαστικῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα ἔφερον πέντε δακτύλους εἰς τοὺς ἐμπροσθίους πόδας καὶ τέσσαρας εἰς τοὺς ὀπισθίους. Τὸ δέρμα των εἶχε πολλὰς ἀποστεώσεις. Λείψανα ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Ἀργεντινήν, Βολιβίαν καὶ Βραζιλίαν, Βόρ. Ἀμερικὴν ὡς καὶ ἐντὸς σπηλαίων καὶ ἐντὸς τῆς ἀσφάλτου τοῦ Rancho la Brea.
Συνώνυμα: *εὐμυλόδους, παραμυλόδους*. Γ. Κ. Γ.

**Μύλοι** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κυβερίου τῆς ἐπαρχίας Ἄργους τοῦ νομοῦ Ἀργολίδος καὶ Κορινθίας. Κάτ. (1928) 284. Τὸ ὁμώνυμον ἀγκυροβόλιον κεῖται ἐν τῷ ΒΔ. μυχῷ τοῦ Ἀργολικοῦ κόλπου (πλάτ. 37°33' 10" Β., μῆκ. 22°43' 10" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1308: Head of Gulf of Nauplia) ἀκριβῶς πρὸς δυσμὰς τοῦ Ναυπλίου (οὗ ἀπέχει 3 ½ μὲν μίλλ. διὰ θαλάσσης, 13 δὲ χιλιόμετρα διὰ ξηρᾶς), μεταξὺ δὲ τοῦ Κυβερίου καὶ τῆς ἐκβολῆς τῆς Βαλκαριᾶς (Ἐρασίνου). Ὀφείλει τὴν ὀνομασίαν του εἰς τοὺς κατὰ τὴν παραλίαν του ὑδρομύλους, λαμβάνοντας τὴν κίνησιν ἐκ τῶν ρείθρων πηγῶν, αἵτινες ἀναβλύζουν 300 μέτρα ἔνδον καὶ ἐκβάλλουσιν εἰς τὴν θάλασσαν, σχηματιζομένου ἀρίστου ὑδρείου, ἀφ' οὗ συχνά, ἐπίτηδες καταπλέοντες εἰς Ναύπλιον, ὑδρεύονται οἱ ἀγγλικοὶ στόλοι. Σχηματίζουν ὅμως καὶ ἕλη, ἅτινα ἔφερον παρ' ἀρχαίοις διάφορα ὀνόματα: Ποντῖνος, Λέρνα, περιώνυμος ἐν τῇ μυθολογίᾳ τῶν ἡρακλείων ἄθλων, Ἀμυμώνη, Ἀλκυωνίς. Ἐπὶ ἑνετοκρατίας πεισμόνως ἠμφισβητεῖτο ἡ κατοχὴ τῆς θέσεως μεταξὺ Ἑνετῶν καὶ Τούρκων, ὠχυρωμένης οὔσης τότε τῆς θέσεως τοῦ Κυβερίου (*Μηλιαρ.* Ἀργολ. Κορινθ. σελ. 42 καὶ παραπ.)· ἀλλὰ καὶ ὡς ἐπίνειον τῆς Τριπόλεως ἐχρησιμοποιεῖτο, τῶν δι' αὐτὴν ἐμπορευμάτων μεταφερομένων πρὸς περαιτέρω μεταφορὰν εἰς τὴν ὁδὸν Ἄργους—Τριπόλεως. Πρὸ πάντων ὅμως ὑπῆρξαν ἀπὸ στρατιωτικῆς ἀπόψεως ἐπίκαιρον σημεῖον οἱ Μύλοι πρὸς συγκέντρωσιν στρατοῦ, τόσον πρὸς φύλαξιν τῶν ἐκ Τριπόλεως πρὸς Ἄργος διόδων, ὅσον καὶ πρὸς πολιορκίαν τοῦ Ναυπλίου. Δι' ὃ ἐκεῖθεν ἐστρατήγησεν ὁ Κολοκοτρώνης (Αὔγ. 1822) παρασκευάσας τοὺς ἄθλους τῶν Δερβενακίων καὶ τοῦ Ἁγιονόρους (*Τρικούπη*, Ἱστορ. Ἑλλην. Ἐπαν., Γ' ἔκδ. Ἀσλάνη, τόμ. Β' 215), καὶ ἐκεῖ ἠδρεύεν ἡ κυβέρνησις, διευθύνουσα τὴν πολιορκίαν τοῦ Ναυπλίου (αὐτ. 241). Κατὰ τάς, διὰ τὴν σύνταξιν τῶν δύο νομοτελεστικῶν, ἐμφυλίους διαμάχας ὁ Μιαούλης εὑρέθη εἰς τὴν ἀνάγκην νὰ διασκορπίσῃ διὰ βομβαρδισμοῦ τοὺς ἐν τοῖς Μύλοις (Μάϊος 1824), γεγονὸς ὅπερ πάντοτε ἐχαρακτήριζεν ὡς τὸ θλιβερώτερον τῆς ζωῆς του. Σ. Ε. Λ.

— **Μύλοι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Καρυστίας τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τῆς

Digitized by Google

Καρυστίας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 321.

—2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φιλιατῶν τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Σκέφαρη* Κάτ. (1928) 320. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Σμέρτος*.

—3) Χωρίον τῆς κοινότητος Μελάνων τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 109.

—4) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἁγίου Νικολάου τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας. Κάτ. (1928) 27.

—5) Μικρὸν χωρίον τῆς κοινότητος Χρωμοναστηρίου τῆς ἐπαρχίαν, καὶ τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης. Κάτ. (1928) 88. Εἶναι ὀνομαστὸν διὰ τὰ ἄφθονα ὕδατά του.

—6) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Σάμου, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται μεσογείως τῆς Χώρας, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 474.

—7) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φθιώτιδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τῆς Κρεμαστῆς Λαρίσης καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 586. Χ. Δ.

**—Μύλοι** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀγκυροβόλιον ἐν τῇ Προποντίδι διὰ χειμερινὰς λαίλαπας, κατὰ τὸ μέσον τῆς δυτ. πλευρᾶς τῆς νήσου Ἰμραλῆ ἢ Καλόλιμνος (πλάτ. 40° 32′ Β., μῆκ. 28° 32′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara). Σ. Ε. Λ.

**—Μύλοι *Λάμπου*, —*Μπέη*,** καὶ **—*Τρεῖς*** *[Γεωγρ.]*. Χωρία τῆς Ἑλλάδος (βλ. λ. *Λάμπου* Μύλοι, *Μπέη* Μύλοι καὶ *Τρεῖς* Μύλοι).

**μυλοκόπος** (ὁ)· ὁ κόπτων, ὁ χαράττων μύλους, ὁ κατεργαζόμενος τὰς μυλοπέτρας, ὁ μυλοχαράκτης· || εἶδος ἰχθύος, ὁ μύλλος.

**Μυλοκοτὸς** *[Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς νήσου Ἴου, ἀμέσως πρὸς ἀνατολὰς τοῦ κολπίζοντος λιμένος τῆς νήσου (πλάτ. 36° 43′ Β., μῆκ. 25° 16′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2753: Port Nio), ἀμφίδομος πρὸς τὸν ὅρμον Κολιτσᾶνοι. Σ. Ε. Λ.

**μυλόλιθος** (ὁ)· μυλίτης λίθος, κυρίως λίθινος δίσκος, *μυλόπετρα*, ἀνέκαθεν ἐν χρήσει πρὸς ἄλεσιν δημητριακῶν καρπῶν κ. ἄ.

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὰ πετρώματα, ἀφ' ὧν λαμβάνονται οἱ *μυλόλιθοι*, εἶναι πολλά. Οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες ἐχρησιμοποίησαν τοὺς τραχείτας τοῦ Λαυρείου πρὸς μυλολίθους διὰ τὴν ἄλεσιν των δημητριακῶν καὶ τὴν τριβὴν τῶν μεταλλευμάτων. Ἐπίσης τὸν θηβαϊκὸν λίθον, τραχείτην τῶν Θηβῶν κοκκώδη μετὰ χρυσιζόντων στιγμάτων μαρμαρυγίου. Ἐν χρήσει ἀκόμη εἶναι οἱ γρανιτικοὶ τραχεῖται τῆς Μήλου καὶ τὰ παρόμοια πετρώματα τῆς Κιμώλου, τῶν Μεθάνων, τοῦ Πόρου. Ὡς ἄριστοι μυλόλιθοι θεωροῦνται οἱ γαλλικοὶ ἐκ χαλαζιακοῦ πετρώματος ὑποκιτρίνου χρώματος καὶ κοκκώδους ὑφῆς, συναντώμενοι ἐν τῇ τριτογενεῖ διαπλάσει ἐν Seine et Marne. Οἱ οὑγγρικοὶ μυλόλιθοι εἶναι πορφυρικὰ πετρώματα. Ψαμμῖται καὶ κροκκαλοπαγῆ χρησιμοποιοῦνται ὡς ὑλικὸν μυλολίθων ἐν Ἀμερικῇ. Ἡ θρυπτικὴ ἐπιφάνεια τῶν μυλολίθων, ἐξ οἱουδήποτε πετρώματος ληφθέντων, φθείρεται μετά τινα χρόνον χρήσεως, καθισταμένη λεία, ὅθεν δέον οἱ μυλόλιθοι νὰ χαράσσονται ἐκ νέου ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρόν. Τεχνητοὶ μυλόλιθοι ἐφαρμόζονται κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ποικίλοι τὴν σύνθεσιν. Ἐκ σμύριδος π. χ. ἐν κόνει, ἢ κόνεως χαλαζίου, πλασθέντων μετὰ μαγνησιακῆς κονίας, λαμβάνονται ἀκονόλιθοι καὶ τεχνητοὶ μυλόλιθοι. Μολονότι τελευταῖον οἱ χαλύβδινοι κύλινδροι ἀντικατέστησαν ἐν γένει τοὺς μυλολίθους, γίνεται ἀκόμη χρῆσις τῶν τελευταίων πρὸς ἄλεσιν τῶν ἁδροτέρου κόκκου δημητριακῶν, τῶν γεωδῶν χρωμάτων, τῶν λιπασμάτων, τῶν πρώτων ὑλῶν ὑδραυλικῶν κονιῶν κτλ. Α. Ι. Σ.

**μυλονίτης** (ὁ) (Mylonit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα μορφῆς κατὰ τὸ πλεῖστον λατυποπαγοῦς, προερχόμενον ἐκ συνθλίψεως καὶ κατακερματισμοῦ τῆς μάζης αὐτοῦ συνεπείᾳ ὀρεσιγόνου πιέσεως. Τὰ διάφορα τεμάχια, μετὰ τὸν κατακερματισμὸν τοῦ πετρώματος, ὑφίστανται βραδύτερον συγκόλλησιν διὰ κολλητικῆς τινος ὕλης, συνήθως ἀσβεστολιθικῆς, λόγῳ δὲ τῆς διαφορᾶς χρώσεως μεταξὺ τῶν τεμαχίων τοῦ πετρώματος καὶ τῆς κολλητικῆς των ὕλης, οἱ μυλονῖται πολλάκις χρησιμεύουν ὡς λίθοι διακοσμητικοί. Εἰς τὰ πετρώματα ταῦτα ἀνήκουν διάφορα λατυποπαγῆ ἐκ μαρμάρων, οἱ σερπεντῖναι μὲ φλέβας ἐξ ἀσβεστίτου κ. ἄ. Γ. Β.

**μυλόπετρα** (ἡ)· μυλίτης λίθος, *μυλόλιθος* (βλ. λ.).

**Μυλόπετρα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ποταμῶν τῆς ἐπαρχίας Νευροκοπίου (Ζυρνόβου) τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Μουζδέλ*. Κάτ. (1928) 88. Χ. Δ.

**Μυλοπόταμος** *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης (Κρήτης), κειμένη μεταξὺ τῶν ἀρκτικῶν κλιτύων τῆς Ἴδης καὶ τῆς ἐπακτίου ὀροσειρᾶς τοῦ Κουλούκουνα Περιλαμβάνει τὰς κοινότητας: *Ἀγγελιανῶν, Ἁγ. Μάμαντος, Ἁγιᾶς, Ἀείμονος, Ἀλόειδας, Ἀλφᾶ, Ἀνωγείων, Ἀξοῦ, Ἀχλαδέ, Γαράζου, Δαμαβόλου, Ἐπισκοπῆς, Ἕρφων, Ζωνιανῶν, Καλύβου, Καμαριώτου, Κλεψιμίων, Λειβαδίων, Μαργαριτῶν, Μελιδονίου, Μελισσουργακίου, Μετοχίων Καμαριώτου, Ὀρθέ, Πανόρμου, Πρινέ, Πρίνου, Σεισῶν* καὶ *Χουμερίου*, ἔχει δὲ ὁλικὸν πληθυσμὸν 20.214 κατοίκων. Τὸ ἔδαφος τῆς ἐπαρχίας ταύτης, διαρρεομένης ἀπὸ τοῦ ἀνατολικοῦ μέχρι τοῦ δυτικοῦ αὐτῆς ἄκρου ὑπὸ τοῦ ρύακος *Μυλοποτάμου* ἢ *Γέρω - Ποταμοῦ* εἶναι εὐφορώτατον καὶ καλύπτεται ὑπὸ ἐκτεταμένων δασῶν ἐξ ἐλαιῶν, κερατεῶν καὶ διαφόρων ὀπωροφόρων δένδρων (ἀπιδεῶν, πορτοκαλλεῶν κ. λ.) καὶ παράγει ἄφθονον ἔλαιον, δημητριακοὺς καρπούς, βαλανίδια, οἶνον, πορτοκάλλια, λεμόνια, διαφόρους ὀπώρας, λάδανον, δίκταμον κ. λ. Διατρέφει ὡσαύτως πολλὰ ποίμνια (αἶγας καὶ πρόβατα). Διὰ τῆς ἐπαρχίας ταύτης διέρχεται ἡ μεταξὺ Ρεθύμνης καὶ Ἡρακλείου ἁμαξιτὸς ὁδός.

— *[Ἱστορ.]* Κατὰ τοὺς ἐνετικοὺς χρόνους (1204—1669) ὁ Μυλοπόταμος, ὡς ἐκ τῆς θέσεως αὐτοῦ, ὑπῆρξεν ἓν τῶν σπουδαιοτέρων τῶν ἐναντίον τῆς Ἑνετοκρατίας ἐπαναστάσεων καὶ ἐγένετο κατ' ἐπανάληψιν τὸ θέατρον πλείστων μαχῶν. Ὁμοίως καὶ κατὰ τοὺς τουρκικοὺς χρόνους. Οἱ Τοῦρκοι, μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Ρεθύμνης (1646), κατέλαβον τὸ λεκανοπέδιον τοῦ Μυλοποτάμου καὶ ἐκεῖθεν εἰσέβαλον εἰς τὴν περὶ τὸ Ἡράκλειον χώραν.

Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1821 οἱ Ἕλληνες, ἐπιτεθέντες εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς κατὰ τῶν Τούρκων, ἐξεδίωξαν αὐτοὺς ἐκ τῆς ἐπαρχίας ταύτης. Τὸν Μάϊον 1822 τμῆμα τουρκικοῦ στρατοῦ ὑπὸ τὸν Λαδάογλουν, εἰσβαλὸν ἐξ Ἡρακλείου εἰς Μυλοπόταμον ἵνα σώσῃ τοὺς ἐν τῷ χωρίῳ Πισκοπῇ πολιορκουμένους ὁμοεθνεῖς του, προσεβλήθη εἰς θέσιν Σκλαβόκαμπον ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ Β. Σμπόκου καὶ ἐξωλοθρεύθη. Ἀρχομένου τοῦ 1822 ὁ τουρκικὸς στρατὸς ὑπὸ τὸν Σερὶφ πασᾶν ἐπέδραμεν ἐξ Ἡρακλείου εἰς Μυλοπόταμον καὶ ἐνέπρησε τὸ χωρίον Ἀνώγεια, μεθ' ὃ ἀπῆλθε πάλιν εἰς τὴν περὶ τὸ Ἡράκλειον πεδιάδα.

Κατ' Αὔγουστον 1822 ὁ Χασὰν πασᾶς εἰσέβαλεν ἐκ Ρεθύμνης εἰς Μυλοπόταμον ἐπὶ κεφαλῆς 15 χιλ. ἀνδρῶν. Οἱ Ἕλληνες ὑπὸ τὸν Θ. Χοῦρδον προσέβαλον αὐτὸν παρὰ τὴν Μονὴν τῆς Χαλέπας καὶ εἶτα ἀπεσύρθησαν εἰς Σκλαβόκαμπον, ἔνθα προσβαλόντες τὸν μετά τινας ἡμέρας διερχόμενον ἐκεῖθεν ἐχθρικὸν στρατὸν ἐξηνάγκασαν αὐτόν, μετὰ αἱματηρὰν μάχην, νὰ ἐγκαταλείψῃ ἁπάσας αὐτοῦ τὰς ἀποσκευὰς καὶ νὰ τραπῇ εἰς ἄτακτον φυγὴν πρὸς τὸ Ἡράκλειον. Τὰ αὐτὰ καὶ κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1866—1869. Ἀρχομένου τοῦ Μαΐου 1867 ὁ Ὀμὲρ πασᾶς, εἰσβαλὼν ἐκ Ρεθύμνης εἰς Μυλοπόταμον μετὰ ἰσχυροτάτου στρατοῦ, κατεσκήνωσε περὶ τὰ Ἀγγελιανὰ καὶ εἶτα προήλασε πρὸς Α., ἀναπτύξας ἐπὶ μεγίστου μετώπου τὰ στρατεύματά του. Οἱ Ἕλληνες, μὴ δυνάμενοι νὰ ἀναχαιτίσωσι τὴν πρόοδον τοσούτων δυνάμεων, ἠρκοῦντο ἐπιτιθέμενοι κατὰ τῶν πλευρῶν καὶ τῶν νώτων τοῦ ἐχθροῦ, ἀναρπάζοντες τὰς ἀποσκευάς του καὶ ἐπιβραδύνοντες τὴν προχώρησίν του, ἐνίοτε δὲ καὶ συμπλεκόμενοι πρὸς ἰσχυρὰς αὐτοῦ φάλαγγας. Τοιουτοτρόπως, τὴν 6ην Μαΐου ὁ μὲν Κορωναῖος ἐν Μαργαρίταις, ὁ δὲ Σγουρὸς ἐν Μελιδονίῳ ἀνέστειλαν δι' ὁλοημέρου μάχης τὴν ἐχθρικὴν προέλασιν. Πρὸς βοήθειαν τοῦ οὕτω πιεζομένου ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων Ὀμὲρ πασᾶ ἔσπευσεν ἐξ Ἡρακλείου ἄλλη φάλαγξ ὑπὸ τὸν Ρεσὶτ πασᾶν, ὅστις, εὑρὼν ἀφυλάκτους τὰς διαβάσεις τῆς Τυλίσσου, εἰσέβαλεν εἰς Μυλοπόταμον, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον προσεβλήθη καὶ τούτου ἡ ὀπισθοφυλακὴ ὑπὸ τῶν προσδραμόντων Πετροπουλάκη, Νιώτη, Σκουλᾶ κλπ. Ἑλλήνων ἀρχηγῶν, οἵτινες, καταλαβόντες τὴν παρὰ τὴν Μονὴν Χαλέπας θέσιν «Σπηλιὰ τοῦ Ἀράπη», ἀνήρπασαν τὰς ἐχθρικὰς ἀποσκευὰς καὶ ἐξηνάγκασαν τὸν Ρεσὶτ νὰ ὀχυρωθῇ εἰς Μονὴν Χαλέπας. Μετὰ συνεχεῖς μάχας ὁ Ρεσὶτ ἡνώθη εἰς Πέραμα μετὰ τοῦ Ὀμέρ. Οὗτος τότε διῄρεσε τὰς δυνάμεις του εἰς δύο σώματα· καὶ τὸ μὲν ἓν ἐξ αὐτῶν κατέλιπεν εἰς Μυλοπόταμον, ἵνα ἐξασφαλίσῃ τὴν κατοχὴν αὐτοῦ, τὸ δ' ἕτερον παραλαβὼν ὁ ἴδιος, κατηυθύνθη πρὸς Α. (εἰς Ἡράκλειον), διαρκῶς παρενοχλούμενος ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων. Τὸ καταλειφθὲν ἐν Μυλοποτάμῳ σῶμα, προσβαλλόμενον καθ' ἑκάστην ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων καὶ κινδυνεῦον νὰ ἀποκλεισθῇ ἐν τῇ δυσβάτῳ ἐκείνῃ χώρᾳ, ἠναγκάσθη μετ' οὐ πολὺ νὰ ἐγκαταλίπῃ αὐτήν.

Ἀρχομένου τοῦ Σεπτεμβρίου 1868, ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐκ 12.000 ἀνδρῶν εἰσέβαλεν ἐκ Ρεθύμνης εἰς Μυλοπόταμον καὶ κατέλαβε τὰ Ἀγγελιανά. Τὴν 12ην Σεπτεμβρίου οἱ Ἕλληνες ὑπὸ τοὺς Σγουρὸν καὶ Κώσταν Τσάκωναν ἐπετέθησαν κατὰ τοῦ ἐχθροῦ, προσελθόντων δὲ καὶ ἄλλων ὑπὸ τοὺς Βαρδάκην, Πορτάλιον, Μοσχοβίτην, Ζῆκον, Μήτσαν, Ζερβομπεάκον κλπ. ἐπανελήφθησαν αἱ ἐπιθέσεις τὴν 15ην καὶ 16ην ἀπὸ Ἀγγελιανῶν μέχρι Μελιδονίου. Ἐν τέλει ὁ ἐχθρός, ἐπωφεληθεὶς τῆς ἐλλείψεως πυρομαχικῶν παρὰ τοῖς Ἕλλησιν, ἠδυνήθη νὰ συνεχίσῃ τὴν προέλασίν του. Ἡ ἐπανάστασις ἤρχισεν ἤδη νὰ κάμπτεται καὶ ὁ ἐχθρὸς ἠδυνήθη νὰ οἰκοδομήσῃ πλείστους πύργους ἐπὶ τῶν ἐπικαιροτέρων θέσεων καὶ νὰ ἐξασφαλίσῃ τὴν κατοχὴν τῆς ἐπαρχίας. Ν. ΚΛΣ

**—Μυλοπόταμος** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Κυθήρων τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται εἰς τὸ Β. τμῆμα τῆς νήσου, τρίωρον πρὸς Β. τοῦ ποταμοῦ, ἐντὸς καταφύτου καὶ πολυύδρου θέσεως, διαιρεῖται δὲ εἰς τρεῖς συνοικίας. Ἐπὶ τοῦ ὑπερκειμένου τοῦ χωρίου προβούνου σῴζονται ἐρείπια παλαιοῦ ἐνετικοῦ φρουρίου. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 460. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Ἀρέων*.

—2) Χωρίον τῆς κοινότητος Ξηροποτάμου (Βησωτσάνης) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Τουρκοχώρι*. Κάτ. (1928) 475.

—3) Χωρίον τῆς κοινότητος Κορησίας τῆς ἐπαρχίας Κέας τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 122. Χ. Δ.

**—Μυλοπόταμος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ὕφορμος τῆς Α. ἀκτῆς τοῦ Ἄθωνος (πλάτ. 40°13′30″ Β., μῆκ. 24°19′00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1086: Gulf of Kassandra to Thassos and Lemnos), 6 μίλ. βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου Τίμιος Πρόδρομος. Ὀνομάζεται καὶ *Νταρσανᾶς Φιλοθέου*, ἅτε τῆς φερωνύμου μονῆς. —2) Ὅρμος κατὰ τὴν Α. ἐσχατιὰν τῆς κολπώσεως τῆς Ρεθύμνης, μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Μαλέτσι καὶ Λιανὸς Κάβος (πλάτ. 35°24′40″ Β., μῆκος 24′ 29′30″ Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 2536 a: Candia western portion) εὐαναγνώριστος ἀπὸ τοῦ Καστελλίου. Ἐν τῷ ὅρμῳ ἐκβολὴ φερωνύμου ποταμίου, τοῦ ἄλλως *Σαπουνιᾶ* ὀνομαζομένου. —3) Ὅρμος τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τῶν Κυθήρων (πλάτ. 36°16′ Β., μῆκ. 22°55″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Venetico to Spezzia). Ἐκβολὴ διαρκοῦς σχεδὸν ρείθρου, ὠνομάζετο ὑπὸ τῶν παλαιῶν ναυτικῶν καὶ *Σπηλιὰ τῆς Ἁγιὰ Σοφιᾶς*, ἀπὸ τοῦ ἐν τῷ ὑπερκειμένῳ τῷ ὅρμῳ βουνῷ λαβυρινθώδους σπηλαίου σταλακτιτῶν, ἔχοντος κατὰ τὸ στόμιον ἐρημοκκλήσιον τῆς Ἁγίας. Ἐπίνειον τοῦ φερωνύμου χωρίου. Σ. Ε. Λ.

**μυλόρδος** (ὁ) (ἐκ τοῦ ἀγγλ. mylord). Τίτλος ἀπονεμόμενος εἰς τοὺς λόρδους ἢ ὁμοτίμους τῆς Ἀγγλίας. Εἶναι τίτλος ἐνδεικτικὸς ἀξιώματος μᾶλλον ἢ ὑπεροχῆς. Ὁ τίτλος αὐτός, χωρὶς νὰ εἶναι ριζικῶς ἀριστοκρατικός, κατέστη οὐχ ἧττον τὸ ἔμβλημα τῆς ἀγγλικῆς ἀριστοκρατίας. Τ. Δ.

**Μυλόρρευμα** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Λευκογείων (Μπελοτίντσης) τῆς ἐπαρχίας Νευροκοπίου (Ζυρνόβου) τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Μαχαλετζίκ*. Κάτ. (1928) 110. Χ. Δ.

**μύλος** (ὁ)· τὸ μηχάνημα διὰ τοῦ ὁποίου γίνεται ἡ ἄλεσις τοῦ σίτου καὶ τῶν σιτιδῶν: «ἀλέθει ὁ μύλος συρματικά», «πηγαίνω τ' ἄλεσμα 'ς τὸ μύλο». || τὸ μηχάνημα διὰ τοῦ ὁποίου γίνεται ἡ ἄλεσις, ἡ κονιοποίησις οἱουδήποτε στερεοῦ: «μύλος τοῦ καφέ, — τοῦ πιπεριοῦ κττ.»· || «μύλος πυρίτιδος, — γύψου κττ.»· || συνεκδ., πᾶν ὅ,τι στρέφεται δίκην μύλου, οἷον ἡ ἀντλία φρεάτων ἡ κινουμένη διὰ τοῦ ἀνέμου, τὸ ἄθυρμα τῶν παίδων ἐκ ποικιλοχρώμων χαρτίων κττ.· || μεταφ. ἐπὶ ἀνθρώπου, ἰδίᾳ παρήλικος, ὅστις καλῶς μασᾷ τὴν τροφήν του καὶ καλῶς πέσσει αὐτήν: «ἀλέθει ὁ μύλος του».

— *[Ἐγκυκλ.]* Ὁ προϊστορικὸς τύπος τοῦ ἀλευρομύλου, ὁ ἀποτελούμενος ἀπὸ δύο βαρείας κυκλικὰς λιθίνας πλάκας, ἐξ ὧν ἡ ἄνω, περιστρεφομένη διὰ τῶν χειρῶν ἐπὶ τῆς κάτω, ἔτριβε καὶ ἐκονιοποίει ἐν τέλει τὸν μεταξὺ αὐτῶν παρεντιθέμενον σῖτον (σχ. 5), ἐξακολουθεῖ καὶ σήμερον ἀκόμη νὰ χρησιμοποιῆται ἐνιαχοῦ, εἰς ἀπεμεμονωμένους ἰδίως ἀγροτικοὺς συνοικισμούς. Οἱ τὸν χειρόμυλον ὅμως τοῦτον διαδεχθέντες ρωμαϊκοὶ κωνοειδεῖς μύλοι (σχ. 6) ἐξέλιπον ὁλοτελῶς ἀφ' ἧς ὁ ἄνθρωπος ἐσκέφθη νὰ χρησιμοποιήσῃ τὸν ἄνεμον καὶ τὴν ροὴν τῶν ὑδάτων πρὸς παραγωγὴν μηχανικοῦ ἔργου. Τόσον εἰς τοὺς *ἀνεμομύλους* (βλ. λ.) ὅσον καὶ τοὺς *ὑδρομύλους*, ἡ ἄλεσις ἐγίνετο—καὶ γίνεται ἀκόμη μέχρι σήμερον—διὰ τοῦ πρωταρχικοῦ συστήματος τῶν ἐπαλλήλων κυκλικῶν μυλολίθων, μὲ τὴν διαφορὰν μόνον ὅτι τοὺς παλαιοὺς μικροὺς μονολίθους ἀντικατέστησαν ἄλλοι μεγαλύτεροι, κατασκευαζόμενοι ἐκ συγκροτήματος πολλῶν τεμαχίων, τὰ ὁποῖα, καταλλήλως λαξευόμενα καὶ συναρμολογούμενα, περιβάλλονται διὰ σιδηρᾶς στεφάνης συνεχούσης αὐτὰ στερεῶς πρὸς ἄλληλα. Διὰ τὴν κατασκευὴν τῶν μυλολίθων προτιμᾶται ἰδίως ὁ χαλαζίας, κατὰ δεύτερον δὲ λόγον ὁ γρανίτης καὶ ὁ ψαμμόλιθος, χρησιμοποιεῖται δ' ἀκόμη καὶ ὁ βασάλτης, ὁ πορφυρίτης καὶ ὁ τραχείτης. Ἄλλοτε πάλιν κατασκευάζονται διὰ χυτῶν μειγμάτων ἀποτελουμένων ἀπὸ θραύσματα τῶν ὡς ἄνω λίθων συμπαγῶς συσσωματωμένα τῇ βοηθείᾳ καταλλήλου συνδετικῆς ὕλης. Κατασκευάζονται δ' ἐπίσης σήμερον καὶ ἐπίπεδοι μυλόλιθοι ἐκ χυτοχάλυβος. Ἡ διάμετρος τῶν σημερινῶν μυλολίθων εἶναι συνήθως 1 μ. 30, τὸ δὲ πάχος των 25—30 ἑκατοστῶν. Διατάσσονται δὲ οὗτοι κατὰ ζεύγη, εἰς ἕκα-

Digitized by Google

στον ἐκ τῶν ὁποίων ὁ κάτω λίθος εἶναι στερεωμένος ἐπὶ σταθεροῦ ὑποστηρίγματος, ὁ δὲ ἄνω, προσηρμοσμένος ἐπὶ κατακορύφου καὶ ὁμοκέντρου πρὸς τοὺς μυλολίθους ἄξονος, περιστρέφεται μὲ ταχύτητα ποικίλλουσαν, ἀναλόγως τῆς διαμέτρου τῶν λίθων καὶ τοῦ εἴδους τῶν ἀλεθομένων σπόρων. Αἱ ἔσω ἐπιφάνειαι τῶν λίθων ἔχουσι χαραχθῆ δι' αὐλακωτῶν ἐγκοπῶν, βάθους ἡμίσεος πε-

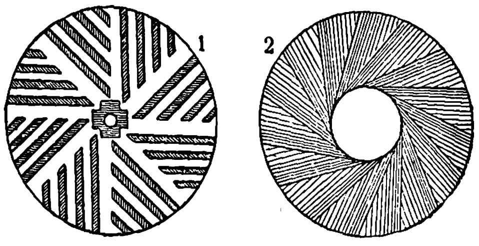

Σχ. 1.—*Μυλόλιθοι.*
[1—'Εκ χαλαζίου. 2—'Εκ χάλυβος.]

ρίπου χιλιοστοῦ, εἶναι δὲ οὕτω διαμορφωμέναι, ὥστε, ὅταν οἱ μυλόλιθοι τοποθετηθῶσιν ἐπαλλήλως, αἱ ἐπιφάνειαι αὗται δὲν εἶναι παράλληλοι μεταξύ των παρὰ μόνον κατὰ τὴν περιφέρειαν αὐτῶν, ἐπὶ μιᾶς στεφάνης πλάτους 20—22 ἑκατοστῶν. Περαιτέρω αἱ ἔσω ἐπιφάνειαι τῶν μυλολίθων, ἀφιστάμεναι βαθμηδόν, σχηματίζουσι φακοειδῆ κοιλότητα ἔχουσαν κατὰ τὸ κέντρον αὐτῆς πάχος 3—4 χιλιοστῶν. Ὁ ἄνω μυλόλιθος φέρει κατὰ τὸ κέντρον του ὀπὴν (διαμέτρου 25—30 ἑκατ.), διὰ τῆς ὁποίας οἱ σπόροι τοῦ σίτου καταρρέουν συνεχῶς εἰς τὸν κοῖλον τοῦτον χῶρον, ἐμπίπτοντες δὲ εἰς τὰς αὐλακώσεις θραύονται ἐν ἀρχῇ καὶ προωθούμεναι βαθμηδὸν διὰ τῆς φυγοκέντρου δυνάμεως πρὸς τὴν περιφέρειαν (ὅπου αἱ μεταξὺ τῶν αὐλακώσεων ἀποστάσεις γίνονται ὁλονὲν μικρότεραι), συνθλίβονται, τρίβονται καὶ τέλος κονιοποιοῦνται. Ἡ μεταξὺ τῶν μυλολίθων ἀπόστασις δύναται ν' αὐξομοιώνεται δι' εἰδικῶν μοχλῶν, ἀναλόγως τοῦ εἴδους τῶν πρὸς ἄλεσιν σπόρων καὶ τοῦ εἴδους τοῦ ἀλεύρου, τὸ ὁποῖον πρόκειται νὰ παραχθῇ ἐκ τούτων.

Εἰς τὸ σχ. 2 δείκνυται ἡ διάταξις ἑνὸς ὑδρομύλου παλαιοῦ τύπου. Τὰ κύρια μέρη αὐτοῦ ἀποτελοῦσιν ὁ σταθερὸς μυλόλιθος D καὶ ὁ περιστρε-

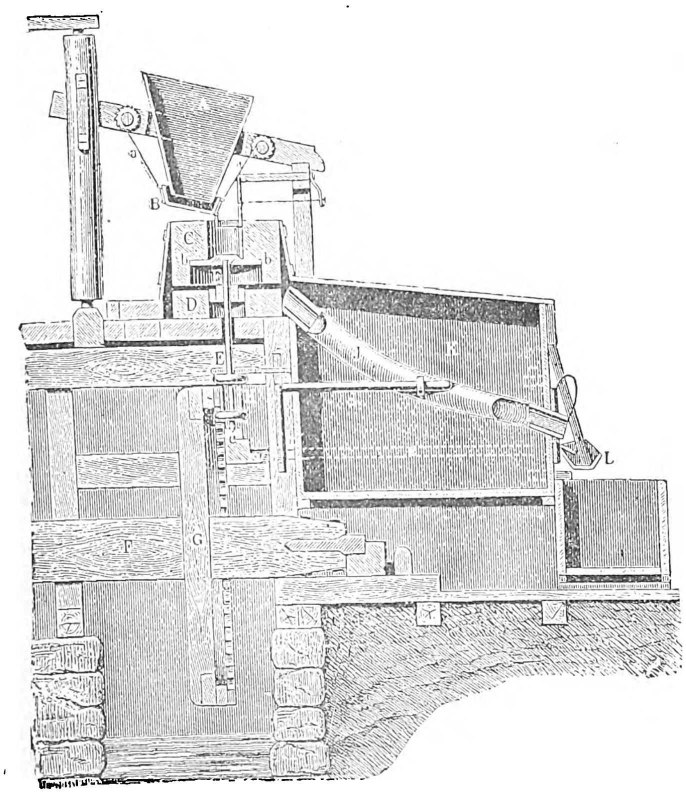

Σχ. 2. *Διάγραμμα ὑδρομύλου.*

φόμενος C, ὅστις εἶναι συνδεδεμένος διὰ τοῦ στηρίγματος b πρὸς τὸν ἄξονα E. Ὁ ἄξων E κινεῖται ὑπὸ τοῦ ὀδοντωτοῦ τροχοῦ G, συνδεδεμένου μετὰ τοῦ ὑδροστροβίλου. Ὁ σῖτος ἀπὸ τοῦ δοχείου A καταρρέει εἰς τὸ κόσκινον B, τὸ ὁποῖον ταλαντεύεται συνεχῶς διὰ τῶν σχοινίων aa, συνδεδεμένων καταλλήλως πρὸς τὸν κινητῆρα, ἐκεῖθεν δέ, διὰ τῆς ὀπῆς τοῦ ἄνω ἐκ τῶν μυλολίθων, κατέρχεται εἰς τὸ μεταξύ των διάκενον. Τὸ ἄλευρον ἐκχύνεται εἰς τὸν εὐρὺν ἀγωγὸν R, ὅστις εἶναι κατεσκευασμένος ἐκ πλέγματος. Ὁ σωλὴν οὗτος, κραδαινόμενος συνεχῶς διὰ τοῦ στελέχους d, κοσκινίζει τὸ ἄλευρον, ἀφήνων δὲ νὰ ἐκχυθῇ ἐντὸς τοῦ χώρου K τὸ λεπτότερον (φαρίνα), ἀπάγει τὸ χονδρὸν (σιμιγδάλι) καὶ τὰ λοιπὰ προϊόντα τῆς ἀλέσεως εἰς τὸ κόσκινον L. Τοῦτο, ταλαντευόμενον ἐπίσης συνεχῶς, χωρίζει τὸ σιμιγδάλι ἀπὸ τῶν πιτύρων.

Τὸ σύστημα τῆς δι' ἐπιπέδων μυλολίθων ἀλέσεως ἀντικατεστάθη βαθμηδόν, ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος καὶ ἐφεξῆς, διὰ τῶν λεγομένων *κυλινδρομύλων*. Εἰς αὐτοὺς ὁ σῖτος ἐμπίπτει μεταξὺ δύο κυλίνδρων, τῶν ὁποίων οἱ ἄξονες εἶναι παράλληλοι, αἱ δὲ περιφέρειαι ἐγγύτατα πρὸς ἀλλήλας, περιστρεφομένων κατ' ἀντίθετον φοράν. Οἱ κύλινδροι κατασκευάζονται ἐκ χυτοχάλυβος ἢ ἐκ λίθου, ἢ καὶ ἐκ πορσελλάνης δι' ὡρισμένας χρήσεις, εἶναι δὲ εἴτε λεῖοι ἐξωτερικῶς, εἴτε χαραγμένοι δι' αὐλάκων προσομοίων πρὸς τὰς τῶν μυλολίθων. Ἕνα τύπον τοιαύτης χαράξεως δίδει τὸ παρατιθέμενον σχῆμα.

Τὸ σχ. 3 εἰκονίζει διάγραμμα ἑνὸς συγχρόνου κυλινδρομύλου. Εἰς αὐτὸν ὁ σῖτος καταρρέει βαθμηδὸν ἀπὸ τοῦ δοχείου r, παρασυρόμενος ἀπὸ τὸν περιστρεφόμενον κυλινδρίσκον V, εἰς τὸ δοχεῖον f, ἀπὸ τούτου δὲ ἄγεται διὰ τοῦ ὁδηγοῦ $f^1$ εἰς τὸ μεταξὺ τῶν δύο πρώτων κυλίνδρων διάκενον. Ὑφιστάμενος ἐκεῖ τὸν πρῶτον κατατεμαχισμόν, μεταπίπτει διὰ τοῦ ὁδηγοῦ $f^2$ εἰς τὸ διάκενον τοῦ δευτέρου καὶ τρίτου κυλίνδρου, καὶ ἐφεξῆς διὰ τοῦ ὁδηγοῦ $f^3$ εἰς τὸ μεταξὺ τοῦ τρίτου καὶ τοῦ τετάρτου. Ἀπὸ ζεύγους εἰς ζεῦγος αἱ μεταξὺ τῶν κυλίνδρων ἀποστάσεις βαίνουσιν ὁλονὲν μειούμεναι, οὕτω δὲ ἡ κονιοποίησις τοῦ σίτου προχωρεῖ εἰς λεπτοτέρας βαθμηδὸν μορφάς. Εἰδικὰ ὄργανα (a) καθαρίζουσι συνεχῶς τοὺς κυλίνδρους ἀπὸ τὸ ἐπ' αὐτῶν ἐπικαθήμενον συμπεπιεσμένον ἄλευρον καὶ ἀποκαθιστῶσιν ἐλευθέραν τὴν λειτουργίαν τῶν χαραγῶν. Αἱ διαστάσεις τῶν κυλίνδρων κυμαίνονται εἰς μῆκος μὲν ἀπὸ 0,30 μ. μέχρις 1 μ. καὶ εἰς διάμετρον ἀπὸ 25—30 ἑκατοστῶν.

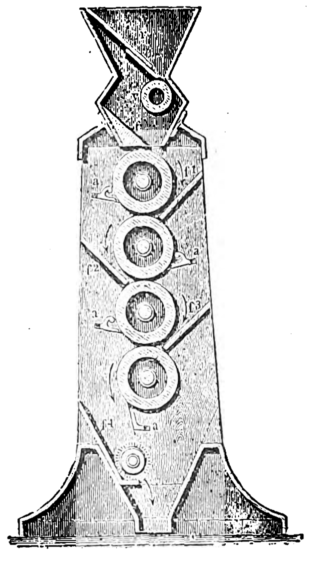

Σχ. 3. *Διάγραμμα κυλινδρομύλου.*

Εἰς τοὺς σημερινοὺς μεγάλους μύλους, κινουμένους δι' ἀτμοῦ, διὰ θερμοκινητήρων ἢ δι' ἠλεκτρικοῦ ρεύματος, ὄχι μόνον ἡ ἄλεσις, ἀλλὰ καὶ πᾶσαι αἱ λοιπαὶ ἐργασίαι ἐκτελοῦνται μηχανικῶς. Ὁ σῖτος ἅμα ὡς φθάσῃ εἰς τὸν μύλον ἀναβιβάζεται δι' ἀνυψωτήρων εἰς τοὺς ἄνω αὐτοῦ ὀρόφους, ὅπου διὰ μηχανημάτων ἐπίσης γίνεται ὁ καθαρισμὸς αὐτοῦ ἀπὸ ἀχύρων, χώματος καὶ ἄλλων ξένων ὑλῶν καὶ ὁ χωρισμός του εἰς διαφόρους κατηγορίας κατὰ μέγεθος κόκκων καὶ ποιότητας. Ἐκεῖθεν φέρεται πρὸς ἀλευροποίησιν εἰς τὸ συγκρότημα τῶν κυλινδρομύλων, μεθ' ὅ, διὰ μηχανικῶν πάντοτε μέσων, γίνεται ὁ διαχωρισμὸς τῶν διαφόρων εἰδῶν ἀλεύρων καὶ τῶν παραπροϊόντων τῆς ἀλέσεως. [Βλ. καὶ λ. *ἀνεμόμυλος* καὶ *ἀτμόμυλος*.]

Οἱ δι' ἄλλας χρήσεις μύλοι (καφφέ, πεπέρεως, ξηρῶν καρπῶν κ.λ.π.) ἀποτελοῦνται κατὰ κανόνα ἐκ κωνοειδοῦς χαλυβδίνου κυλίνδρου, φέροντος ἐξωτερικῶς

Σχ. 4. *Μικροὶ χειροκίνητοι μύλοι.*
[1='Αγροτικὸς ἀλευρόμυλος. 2=Μύλος καφφέ. 3=Μύλος πεπέρεως.]

αὐλακοειδεῖς ὀδοντώσεις καὶ περιστρεφομένου ἐντὸς ὁμοιοσχήμου περίπου κοιλότητος, τῆς ὁποίας ἡ ἐσωτερικὴ ἐπιφάνεια ἔχει ἐπίσης αὐλακωθῆ διὰ χαραγῶν· ἄλλοι δὲ ἐκ δύο κανονικῶν αὐλακωτῶν κυλίνδρων, περιστρεφομένων, παραλλήλως καὶ πλησιέστατα ἀλλήλων, κατ' ἀντίθετον φοράν. Γ. Ζ.

—[*Ἱστορ.*] Ἀπὸ τῆς ἀπωτάτης ἀρχαιότητος ὁ *μύλος* ἀπαντᾷ, ὑπὸ τύπον κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον πρωτόγονον, εἰς ὅλους τοὺς λαούς, τοὺς ἀσχολουμένους εἰς τὴν γεωργίαν καὶ γνωρίζοντας τὴν θρεπτικὴν ἀξίαν τῶν προϊόντων τῆς γῆς. Καίτοι οὐχὶ σπανίως ἀπαντῶνται ἄνθρωποι τρώγοντες τὸν σῖτον εἰς κόκκους (σχετικὸς ὑπαινιγμὸς ἀναφέρεται ἐν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Λουκᾶ Δ', 1), ἐν τούτοις ὁ γενικὸς σχεδὸν κανὼν καὶ τὸ σύνηθες εἶναι ἡ ὑποβολὴ αὐτοῦ εἰς κατεργασίαν πρὸς τὸν σκοπὸν τῆς ἐξαγωγῆς τοῦ ἀλεύρου καὶ τῆς δι' αὐτοῦ κατασκευῆς τοῦ ἄρτου. Ἡ κατεργασία αὕτη ἐπιτυγχάνεται εἰς τὰς χώρας τοῦ κατωτέρου πολιτισμοῦ διὰ μέσων λίαν διαφερόντων ἀπ' ἀλλήλων, καίτοι κατ' οὐσίαν πάντα ταῦτα συμπίπτουν εἰς τὴν τοποθέτησιν τῶν κόκκων (σίτου, ἀραβοσίτου κτλ.) μεταξὺ δύο σκληρῶν σωμάτων καὶ τὴν ἐξαγωγὴν τοῦ ἀλεύρου διὰ τριβῆς. Κατ' ἀρχὰς μετεχειρίζοντο ἁπλᾶ ἰγδία, ἀλλὰ παρὰ τοῖς ἀρχαιοτάτοις πεπολιτισμένοις λαοῖς ἀπαντῶνται ἤδη μύλοι ὑπὸ τὴν πλήρη σημασίαν τῆς λέξεως. Ἓν τῶν περιεργοτέρων αἰγυπτιακῶν ἀγαλμάτων τοῦ μουσείου τοῦ Καΐρου παριστάνει γυναῖκα γονατισμένην πρὸ στρογγύλου λίθου φέροντος ὀπὴν εἰς τὸ μέσον, τὸν ὁποῖον περιστρέφουσα διὰ τῶν δύο χειρῶν της ἐπὶ μεγαλυτέρου λίθου θρυμματίζει τὸν σῖτον. Κατὰ φυσικὴν συνέπειαν τὸ διὰ τοιούτων πρωτογόνων μέσων ἐπιτυγχανόμενον ἄλευρον ἦτο κοινότατον, ἀναμεμειγμένον μετὰ πιτύρων, μετὰ τεμαχίων λίθου, ἅτινα ἀπεσπῶντο διὰ τῆς ἀλέσεως ἀπὸ τὰς μυλοπέτρας καὶ μὲ κόκκους κακῶς ἢ οὐδόλως ἀλεσθέντας, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον καθίστα τὸν ἄρτον λίαν δύσπεπτον καὶ δυσμάσητον. Χαρακτηριστικὸν εἶναι, ὀφειλόμενον εἰς τὴν ἀνωτέρω ἀναφερομένην αἰτίαν, καὶ τὸ γεγονὸς ὅτι οἱ γεροντότεροι ἐκ τῶν ἀνηκόντων εἰς τὰς ἰθαγενεῖς φυλὰς τῆς Μοζαμβίκης, ἔχουν κατεστραμμένους σχεδὸν πάντας τοὺς ὀδόντας των.

Σχ. 5. *Χειρόμυλος τῶν παναρχαίων χρόνων, ἐν χρήσει ἀκόμη καὶ σήμερον παρ' ἀγρόταις.*

Παραλλήλως ὅμως πρὸς τὸν τοιοῦτον μύλον, ἤδη ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ταύτης ὑπῆρχον ἐν χρήσει οἱ κυρίως μύλοι. Οὗτοι συνέκειντο ἐκ δύο μερῶν, ἑνὸς κινητοῦ καὶ ἑνὸς ἀκινήτου. Τὸ ἀκίνητον τεμάχιον ἐκαλεῖτο μύλη καὶ ἦτο λίθος κωνικοῦ σχήματος ἐν μέσῳ λεκάνης ἀποτελούσης ἓν σῶμα μετ' αὐτοῦ. Τὸ κινητὸν τεμάχιον ὠνομάζετο ὄνος, ὄνος ἀλέτης ἢ ἐπιμύλιον, καὶ ἦτο λίθος ἐν σχήματι χωνοειδοῦς κυλίνδρου, κοίλου ἐξ ἀμφοτέρων τῶν βάσεων. Ἡ κοίλη κάτω βάσις προσηρμόζετο ἐπὶ τῆς μύλης, εἰς δὲ τὴν ἄνω ἐρρίπτοντο οἱ κόκκοι, οἵτινες κατερχόμενοι δι' ἐγκαρσίως συνδεούσης τὰς δύο κοιλότητας ὀπῆς ἠλευροποιοῦντο διὰ τῆς περιστροφῆς τοῦ ὄνου ἐπὶ τῆς μύλης. Ἐκινεῖτο δὲ τὸ ἐπιμύλιον διὰ δύο ξύλων προσηρμοσμένων ἐντὸς ὀπῶν ἑκατέρωθεν αὐτοῦ. Τὸ ἄλευρον ἐξεχύνετο εἰς τὴν πέριξ τῆς μύλης λεκάνην. Τὸ σχῆμα τοῦ τοιούτου μύλου («χειρομύλης» ἢ «χειρομύλου») παρέχει ἡμῖν ὁ ἐν Philippeville εὑρεθεὶς λίθινος ρωμαϊκὸς μύλος, ὡς καὶ πλεῖστοι ἄλλοι, ἰδίως ἐν Πομπηΐᾳ εὑρεθέντες. Εἰς τοὺς μεγαλυτέρας ἀποδόσεως τύπους τὸ ἐπιμύλιον ἐστρέφετο διὰ λαβῆς πέριξ σιδηροῦ ἄξονος ἐγειρομένου ἐκ τοῦ κέντρου τῆς μύλης, διὰ τοὺς ἔτι δὲ μεγαλυτέρους ἡ περιστροφικὴ κίνησις τοῦ ἐπιμυλίου διενηργεῖτο δι' ὁριζοντίας ράβδου προσηρμοσμένης ἑκατέρωθεν αὐτοῦ καὶ ὠθουμένης δι' ἀνθρώπων ἢ ζῴων.

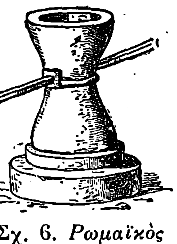

Σχ. 6. *Ρωμαϊκὸς μύλος χειροκίνητος.*

Ἐν Ἑλλάδι ἡ ἄλεσις ἦτο ἔργον τῶν γυναικῶν. Ὁ Ὅμηρος ἀναφέρει ὅτι ἐν μὲν τῷ ἀνακτόρῳ τοῦ Ἀλκινόου ἦσαν πεντήκοντα γυναῖκες ἀπησχολημέναι εἰς τὸ ἔργον τοῦτο, ἐν δὲ τῷ ἀνακτόρῳ τοῦ Ὀδυσσέως δώδεκα. Αἱ γυναῖκες αὗται, καὶ ἐν Ἑλλάδι καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, ἦσαν συνήθως δοῦλαι, ᾄδουσαι κατὰ τὴν ἐπίπονον ἐργασίαν των ταύτην. Ἐν Ρώμῃ τὸ ἔργον τῆς ἀλέσεως ἦτο, φαίνεται, ἀνατεθειμένον ἐπίσης εἰς δούλους. Οἱ μεγάλων ὅμως διαστάσεων μύλοι ἐκινοῦντο συνήθως διὰ ζῴων, ὄνων ἢ ἵππων, τῶν ὁποίων οἱ ὀφθαλμοὶ ἐκαλύπτοντο, ἵνα μὴ ζαλίζωνται διὰ τῆς ἐξακολουθητικῆς περιστροφικῆς κινήσεως. Χαρακτηριστικὸν δεῖγμα τοιούτου μύλου εἶναι ἡ ἐπὶ σαρκοφάγου τοῦ μουσείου τοῦ Βατικανοῦ σχετικὴ παράστασις.

Οἱ Ἑβραῖοι ἐγνώριζον ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων τοὺς χειρομύλους. Ἐν τοῖς «Ἀριθμοῖς» τῆς Παλαιᾶς διαθήκης (ΙΑ' 8) ἀναφέρεται ὅτι κατὰ τὴν παραμονήν των εἰς τὴν ἔρημον συνέλεγον τὸ μάννα «καὶ ἤληθον αὐτὸ ἐν τῷ μύλῳ καὶ ἔτριβον ἐν

Digitized by Google

τῇ θυίᾳ καὶ ἥψουν αὐτὸ ἐν τῇ χύτρᾳ καὶ ἐποίουν αὐτὸ ἐγκρυφίας. Καὶ ἦν ἡ ἡδονὴ αὐτοῦ ὡσεὶ γεῦμα ἐγκρὶς ἐξ ἐλαίου». Ἐπειδὴ δὲν εἶναι δυνατὸν νὰ ὑποτεθῇ ὅτι μετέφερον τόσον βαρέα πέτρινα ἀντικείμενα ἐκ τῆς Αἰγύπτου, συμπεραίνεται ὅτι τοὺς ἀναγκαιοῦντας λίθους διὰ τὴν κατασκευὴν τῶν μύλων εὕρισκον ἑκάστοτε καθ᾽ ὁδόν. Ὁ μύλος οὗτος τῶν Ἑβραίων ἀπετελεῖτο ἐκ δύο πετρῶν, ὧν ἡ πρὸς τὰ κάτω εὑρισκομένη ἦτο μεγαλυτέρα καὶ σκληροτέρα, ὡς ἐμφαίνεται καὶ ἐκ τοῦ βιβλίου τοῦ Ἰὼβ (ΜΑ´ 15), ὅπου ἡ σκληρότης τῆς καρδίας τοῦ Λεβιάθαν παρομοιάζεται πρὸς ταύτην. Ἐπειδὴ δὲ μεταξὺ τῶν Ἑβραίων ὁ μύλος ἀπετέλει ὄργανον ἐκ τῶν ἀπαραιτήτων τῆς καθημερινῆς ζωῆς, ἐν τῷ «Δευτερονομίῳ» (ΚΔ´ 6) ἀπαγορεύεται ἡ ἐνεχυρίασις αὐτοῦ: «οὐκ ἐνεχυράσεις μύλον, οὐδ᾽ ἐπιμύλειον, ὅτι ψυχὴν οὗτος ἐνεχυράζει». Πᾶσαι αἱ διὰ τοῦ μύλου γινόμεναι ἐργασίαι ἀνετίθεντο εἰς τὰς γυναῖκας καὶ τοὺς δούλους, ἦσαν δὲ αὗται βαρύταται, τόσον διὰ τὴν μακρὰν διάρκειαν αὐτῶν καὶ τὴν βραδύτητα μὲ τὴν ὁποίαν ἐξετελοῦντο, ὅσον καὶ διὰ τὸ μέγεθος καὶ τὸ βάρος τῶν κινουμένων λίθων. Λίαν δὲ χαρακτηριστικὴ ἀπὸ τῆς ἀπόψεως ταύτης εἶναι καὶ ἡ ἱστορία τοῦ Σαμψών, τὸν ὁποῖον οἱ Φιλισταῖοι, συλλαβόντες καὶ ὁδηγήσαντες εἰς τὴν Γάζαν, ἐνέκλεισαν εἰς φυλακὴν καὶ ἀφοῦ τοῦ ἐξώρυξαν τοὺς ὀφθαλμούς, τὸν ὑπεχρέωσαν νὰ γυρίζῃ τὸν μύλον.

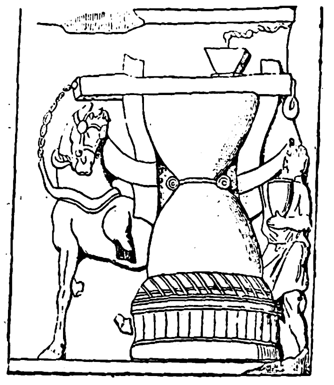

Σχ. 7. *Ρωμαϊκὸς μύλος ἱπποκίνητος.*

Πλὴν τῶν τοιούτων μύλων, κινουμένων δι᾽ ἀνθρώπων ἢ ζῴων, ὑπῆρχον ἀπὸ τῶν ἀρχαίων χρόνων καὶ οἱ ὑδρόμυλοι, καλούμενοι *ὑδραλέται*, ὡς τοὺς ὀνομάζει ὁ Στράβων. Ὁ ἀρχαιότερος τῶν ἀναφερομένων ὑδρομύλων ἦτο ὁ τοῦ βασιλέως Μιθριδάτου ἐν Πόντῳ.

Βραδύτερον ἐνεφανίσθησαν καὶ οἱ ἀνεμόμυλοι, ἀναφερόμενοι ἐν Γερμανίᾳ τὸ πρῶτον κατὰ τὸν ΙΑ´ αἰῶνα.

Ἡ τεραστία νεωτέρα ἀνάπτυξις καὶ ἐξέλιξις τῶν μύλων ὀφείλεται εἰς τὴν σημαντικὴν σιτοπαραγωγὴν τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἕνεκα τῆς ὁποίας παρέστη ἀνάγκη νὰ ἐγκατασταθοῦν παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Μισσισσιπῆ καὶ ἐν Πενσυλβανίᾳ χιλιάδες ὑδρομύλων πάσης φύσεως, ὁλονὲν τελειοποιουμένων. Ἡ ἐφεύρεσις βραδύτερον τῆς ἀτμομηχανῆς (1784) συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν τελειοποίησιν τῶν μύλων καὶ εἰς τὴν ἵδρυσιν τοιούτων καὶ μακρὰν τῶν ὀχθῶν τῶν ποταμῶν. Τῷ 1834 ὁ Σούλτμπεργκερ ἀντικατέστησε τοὺς μυλολίθους διὰ χαλυβδίνων κυλίνδρων, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἀπετέλεσε τὴν βάσιν τῆς τελευταίας κολοσσιαίας ἐξελίξεως τῶν ἀλευρομύλων, εἰς ἣν συνέβαλεν ἐν τοῖς ἄλλοις ἡ ὑπὸ τοῦ Βέγκμαν γενομένη τῷ 1874 πρώτη χρησιμοποίησις κυλίνδρων ἐκ πορσελλάνης.
Β. Δ. Θ.—Μ. Δ. Β.

**μύλος** (ὁ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *οὐρόσπερμον τὸ πικροειδές*.

**Μύλος,** ἢ ***Σταυρὸς*** *[Γεωγρ.]*. Οὕτω καλεῖται ἡ ἐν Πειραιεῖ καὶ ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς Ἀκτῆς (Πειραϊκῆς χερσονήσου, 57,7 μ.) τοποθεσία, ἔνθα ἵσταται μέγας σταυρὸς προσημαίνων τὰ εἰσπλέοντα εἰς τὸν λιμένα σκάφη. Οὐ μακρὰν τούτου ὑπῆρχον τὸ πάλαι τὰ περίφημα ἱερὰ τῆς Οὐρανίας Ἀφροδίτης καὶ τῆς Συρίας Ἀφροδίτης. Ἐπίσης αὐτόθι εὑρέθησαν δύο ψηφίσματα, εἷς χέρνιψ ἐνεπίγραφος καὶ πολλαὶ ἐπιγραφαὶ ἀναφερόμεναι κυρίως εἰς τὴν Ἀφροδίτην. Εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἔκειτο τὸ Μητρῷον, ἔτι δὲ διὰ τῆς κορυφῆς διήρχετο τὸ Θεμιστόκλειον τεῖχος, πέριξ τοῦ ὁποίου ὑπάρχουσιν ἐγκοπαὶ βράχων, ποικίλαι ὑπόγειαι οἰκήσεις καὶ οὐκ ὀλίγαι θυρίδες ἀφιερωμάτων.
Α. Σ. Χ.

—**Μύλος, *Κάτω*** — *[Γεωγρ.]*. Χωρίον ἐν τῇ ἐπαρχίᾳ Λεμεσοῦ καὶ τῷ διαμερίσματι Κοιλανίου. Κάτ. 180 περίπου, πάντες Ἕλληνες ὀρθόδοξοι. Α. Κ. Α.

**Μυλότοπος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Γιαννιτσῶν (Γενιτσῶν) τοῦ νομοῦ Πέλλης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται πρὸς Δ. τῶν Γιαννιτσῶν ἐπὶ ποταμίου ἐκβάλλοντος εἰς τὴν ὁμώνυμον τῇ πόλει λίμνην καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Βούδριστα*. Κάτ. (1928) 1.098. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Μελίσσι* (Μπαλίτσα) καὶ *Παλαιὸν* (Ἐσκιτζέ). Χ. Δ.

**Μυλούζ(η),** ἢ ***Μυλχάουζεν*** (γαλλ. Mulhouse, γερμ. Mülhausen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας (ἀπὸ τοῦ 19.8) ἐν τῷ νομῷ Ἄνω Ρήνου τῆς Ἀλσατίας, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Ἴλλ, 90 χλμ. πρὸς Ν.ΝΔ. τοῦ Στρασβούργου. Ἐντεῦθεν διέρχεται ἡ διῶρυξ Ρήνου—Ροδανοῦ καὶ ἡ μεγάλη σιδηροδρομικὴ γραμμὴ Στρασβούργου—Βασιλείας. Κάτ. (1926) 99.892. Εἶναι σπουδαιότατον κέντρον βιομηχανίας τοῦ βάμβακος, ἔχει δὲ καὶ πολυάριθμα ἄλλα ἐργοστάσια ἐρίου, χάρτου, χημικῶν προϊόντων, χυτήρια, σιδηρουργεῖα κλπ. καὶ διεξάγει ἐμπόριον οἴνου καὶ σιτηρῶν. Ἡ Μυλούζη κοσμεῖται ὑπὸ πολλῶν καλλιτεχνικῶν κτηρίων, μαρτυρούντων τὴν μακρὰν αὐτῆς ἱστορίαν καὶ ἔχει πλούσιον ἀρχεῖον περιλαμβάνον 50.000 χειρόγραφα, βιβλιοθήκην (50.000 τόμ.), πολλὰ μουσεῖα καὶ ἄλλα ἱδρύματα. Τῷ 1198 ἐγένετο ἐλευθέρα πόλις, ἦτο δ᾽ ἐπὶ μακρὸν μικρὰ ὁμόσπονδος δημοκρατία ἡνωμένη μετὰ τῆς Ἑλβετίας. Τῷ 1797 περιῆλθεν εἰς τὴν Γαλλίαν καὶ παρέμεινεν ὑπ᾽ αὐτὴν μέχρι τοῦ γαλλοπρωσσικοῦ πολέμου τοῦ 1870, κατόπιν τοῦ ὁποίου προσηρτήθη εἰς τὴν Γερμανίαν. Ἀρχομένου τοῦ Παγκοσμίου πολέμου κατελήφθη ἐπὶ μικρόν, κατ᾽ Αὔγουστον τοῦ 1914, ὑπὸ τῶν Γάλλων, ἐγένετο δὲ τέλος γαλλικὴ μετὰ τὴν λῆξιν αὐτοῦ.
Χ. Δ.

**μυλουργὸς** (ὁ)· ὁ παρασκευάζων μύλους, μυλόπετρες.

**μυλοχαράκτης** (ὁ)· ὁ χαράκτης μύλων, ὁ χαράσσων τὶς μυλόπετρες.

**Μυλοχῶρι** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀντιγονείας (Μοράφτσας) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης. Κάτ. (1928) 225.

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἐορδαίας (Καϊλαρίων) τοῦ νομοῦ Κοζάνης, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται τρίωρον πρὸς Δ. τῆς Πτολεμαΐδος καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Λύγκα*. Κάτ. (1928) 520. Χ. Δ.

**Μύλχαϊμ** (Mülheim) *[Γεωγρ.]*. Ὄνομα δύο πόλεων καὶ ποταμίων λιμένων τῆς Γερμανίας, ὧν ἡ μὲν κεῖται ἐπὶ τοῦ Ρήνου, ἡ δὲ ἐπὶ τοῦ Ρούρ.— 1) Ἡ *ἐπὶ τοῦ Ρήνου Μύλχαϊμ* (Mülheim-am-Rhein), ὑπαγομένη εἰς τὴν πρωσσικὴν Ρηνανίαν, κεῖται παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ ποταμοῦ, ἀπέναντι τῆς Κολωνίας, ἀποτελεῖ δὲ οἱονεὶ προάστειον αὐτῆς. Ἔχει καλὸν λιμένα, βιομηχανίας χημικῶν προϊόντων, καπνοῦ, ὑφαντουργικάς, μηχανουργικὰς κλπ. Ἱδρύθη τῷ 1322, ἀπετέλεσε δὲ κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους τὸ κέντρον τῶν ἐκ Κολωνίας φευγόντων καθολικῶν. Κάτ. 51.000. — 2) Ἡ *ἐπὶ τοῦ Ροὺρ Μύλχαϊμ* (Mülheim-an-der-Rhur) ὑπάγεται εἰς τὸν νομὸν Ντύσσελντορφ τῆς πρωσσικῆς Ρηνανίας, ἀπέχει δὲ 25 χλμ. ἀπὸ τῆς Ντύσσελντορφ. Εὑρίσκεται ἐντὸς πλουσιωτάτης εἰς ὀρυχεῖα ἄνθρακος καὶ σιδήρου περιοχῆς καὶ ἔχει πολλὰ ὡραῖα κτήρια, μεταξὺ τῶν ὁποίων διακρίνεται ναὸς τοῦ ΙΒ´ αἰῶνος, τὸ δημαρχεῖον κλπ. καὶ βιομηχανίας μηχανῶν, ὑφασμάτων, ὑάλου, εἰδῶν ἐκ ψευδαργύρου, δερμάτων κλπ. Κάτοικοι (1929) 127.400. Χ. Δ.

**Μυλχάουζεν** (Mühlhausen) *[Γεωγρ.]*. Πόλις ἐν τῇ Πρωσσικῇ Σαξωνίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Οὔνστρουτ, εἰς ἀπόστασιν 40 χλμ. ἀπὸ τῆς Γκότα, μεθ᾽ ἧς συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Μεταξὺ τῶν κτηρίων της διακρίνονται τὸ μεσαιωνικὸν δημαρχεῖον καὶ οἱ παλαιότατοι ναοὶ τῆς Παναγίας καὶ τοῦ Ἁγίου Βλασίου. Εἶναι σπουδαῖος σιδηροδρομικὸς κόμβος καὶ ἔχει βιομηχανίας ὑφαντουργικάς, μηχανουργικάς, βυρσοδεψικὰς καὶ χημικάς. Ἀνῆκε κατ᾽ ἀρχὰς εἰς τὴν Θουριγγίαν, εἶτα δὲ ἐγένετο ἐλευθέρα πόλις μέχρι τοῦ 1815, ὁπότε προσηρτήθη ὑπὸ τῆς Πρωσσίας. Κάτ. (1925) 36.755.
Χ. Δ.

— **Μυλχάουζεν** (Mülhausen) *[Γεωγρ.]*. Γερμανικὴ ὀνομασία τῆς ἀλσατικῆς πόλεως *Μυλοὺζ* (βλ. λ.).

**Μυλωβὸς** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Μεγάλη Γέφυρα* (βλ. λ.).

**μυλωθρικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μυλωθρόν, ὁ τοῦ μυλωθροῦ: «μυλωθρικὰ σκεύη».

—**μυλωθρικὰ *μέλη*** *[Ἀρχ.]*· βλ. λ. *ἐπιμύλια μέλη*.

**μυλωθρίς,** *—ίδος* (ἡ)· γυνὴ ἡ ἔχουσα μύλον, κοιν. *μυλωνοῦ* (θηλ. τοῦ *μυλωθρός*).

**μυλωθρὸς** (ὁ)· ὁ ἔχων, ὁ κεκτημένος μυλῶνα· || ὁ ἐργαζόμενος ἐν τῷ μυλῶνι, ὁ ἀπὸ τοῦ μυλῶνος ποριζόμενος τὰ πρὸς τὸ ζῆν.

**Μυλώμη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἐκλήθη οὕτω βραδύτερον ἡ ἀρχαία Μιλυάς, ἡ κατὰ Στράβωνα μεταξὺ Λυκίας καὶ Πισιδίας ὀρεινὴ χώρα. Νῦν *Ἐλμαλῆ*.

**μυλών,** *—ῶνος* (ὁ)· τὸ οἴκημα ἐν τῷ ὁποίῳ εἶναι ἱδρυμένος ὁ μύλος, κοιν. *μύλος*.

**μυλωνᾶς** (ὁ), θηλ. *μυλωνοῦ*· δημοτ., ὁ ἐργαζόμενος ἐν τῷ μυλῶνι, ὁ ἀπὸ τοῦ μυλῶνος ποριζόμενος τὰ πρὸς τὸ ζῆν εἴτε ὡς ἰδιοκτήτης τοῦ μυλῶνος, εἴτε ὡς ἐνοικιαστὴς ἢ ἐργάτης, *μυλωθρός*: παροιμ. «θεωρία ἐπισκόπου καὶ καρδία μυλωνᾶ» οἱ μυλωνᾶδες διαβάλλονται ὡς σκληροί, διότι τὸ μέτρον τῶν ἀλεστικῶν εἶναι ὑπερβολικόν, «ὅλοι κλαίνε τὸν πόνο τους κι᾽ ὁ μυλωνᾶς τ᾽ αὐλάκι» διότι τὸ μᾶλλον ἐπιμελείας δεόμενον διὰ τὸν μυλωθρὸν εἶναι ἡ αὖλαξ, δι᾽ ἧς διοχετεύεται τὸ πρὸς κίνησιν τοῦ μύλου ὕδωρ· || ἐν γένει, ὁ ἰδιοκτήτης ἀλευρομύλου: «οἱ μυλωνᾶδες τοῦ Πειραιῶς»· || ὁ εἰς οἱονδήποτε μύλον ἐργαζόμενος, οἷον ἐν τοῖς ἐλαιοτριβείοις ὁ διενεργῶν τὴν ἄλεσιν τῶν ἐλαιῶν.

**Μυλωνᾶς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον τῆς Ἑρμιονίδος (πλάτ. 37° 17′ 00″ Β., μῆκ. 23° 10′ 15″ Ἀν., χάρτ ἀγγλ. 1525: Hydra, Spezzia and Dhokos), μεταξὺ τοῦ Πόρτο Χέλι καὶ ὅρμου Τηγάνι. Μεσαία ἄκρα τῆς ἀκτῆς Κόστα, ἀντικρύζει πρὸς Ν. τὸν λιμένα Σπετσῶν καὶ ἀποτελεῖ τήν, 3 μίλλ. Δ.ΝΔ. τοῦ Μιλιανοῦ, νοτίαν τῆς Ἀργολίδος ἐσχατιάν. Σ. Ε. Λ.

**Μυλωνᾶς, *Ἀλέξανδρος***. Πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, υἱὸς τοῦ *Κυριάκου Μυλωνᾶ,* γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1881. Ἐσπούδασε νομικὰ καὶ οἰκονομικὰ εἰς τὰ πανεπιστήμια Ἀθηνῶν καὶ Βερολίνου, μετὰ ὀλιγοετῆ δὲ ἄσκησιν τῆς δικηγορίας, ἀνέλαβεν ἀπὸ τοῦ 1912 τὴν γενικὴν γραμματείαν τοῦ ὑπουργείου Ἐθνικῆς Οἰκονομίας καὶ εἶτα τῆς Γεωργίας. Τῷ 1919 μετέσχε τῆς ἑλληνικῆς ἀντιπροσωπείας εἰς τὴν διάσκεψιν τῆς εἰρήνης ἐν Παρισίοις. Ἀπὸ τοῦ 1923 διετέλεσε βουλευτὴς Ἀθηνῶν, ἔπειτα Ἰωαννίνων καὶ τελευταῖον ἀριστίνδην γερουσιαστής. Ἀπὸ του 1924 ἐχρημάτισε τετράκις ὑπουργὸς τῆς Γεωργίας, τῷ δὲ 1928 καὶ ὑφυπουργὸς τῶν Οἰκονομικῶν. Συνέγραψε πλείστας μονογραφίας καὶ ἄρθρα οἰκονομικοῦ, πολιτικοῦ καὶ νομικοῦ περιεχομένου, ἐξ ὧν κυριώτερα: «Παρεμβολαί εἰς τοὺς Πανδέκτας», «Ἡ δικαιοσύνη μας ἀντικοινωνική» (1912, Ἀθῆναι), «Ἡ ἀνάγκη τῶν συνεταιρισμῶν» (Μηνιαία ἐπιθεώρησις πολιτ. καὶ κοινοβουλευτική, Ἀθῆναι τόμ. 1 1916), «Le mouvement coopératif en Grèce» (Annales de la Coopération et de la Mutualité Agricoles, τόμ. 13, Paris 1919), «Γεωργικὴ καὶ κτηματικὴ πίστις, ὑποδείξεις διὰ τὴν ὀργάνωσιν αὐτῶν ἐν Ἑλλάδι» (Ἀθῆναι, 1919), «Ἡ ἀγροτικὴ νομοθεσία καὶ ἡ προταθεῖσα μεταρρύθμισίς της», «Τὰ παρ᾽ ἡμῖν κόμματα καὶ ἡ ἀναλογικὴ ἐκλογή», «Κεφαλαιώδη τινὰ σημεῖα τοῦ προσφυγικοῦ ζητήματος», «Αὐτοδιοίκησις καὶ περιφέρεια αὐτῆς» (Ἀθῆναι 1930).

— **Μυλωνᾶς, *Γεώργιος Ἐμμ***. Ἕλλην ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ τῷ 1898. Τελειόφοιτος τῆς Εὐαγγελικῆς Σχολῆς καὶ τοῦ ἐν Σμύρνῃ International College, διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν (1922), διετέλεσεν ἀπὸ τοῦ 1925—1928 γραμματεὺς τῆς Ἀμερικανικῆς Ἀρχαιολογικῆς σχολῆς Ἀθηνῶν. Ἀπὸ τοῦ 1929 καὶ ἐντεῦθεν ἐχρημάτισε καθηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Σικάγου καὶ νῦν καθηγητὴς τοῦ αὐτοῦ μαθήματος ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Ἰλλινόϊς. Ἐπεδόθη κυρίως εἰς τὴν προϊστορικὴν ἀρχαιολογίαν, ἐνεργήσας ἀνασκαφὰς ἐν Ὀλύνθῳ, ἔνθα ἀπεκάλυψε τὸν ἀρχαιότερον νεολιθικὸν συνοικισμὸν ἐν Μακεδονίᾳ, ἐν Ἁγίῳ Κοσμᾷ, πέραν τοῦ Φαλήρου, ὅπου ἔφερεν εἰς φῶς προϊστορικὸν συνοικισμὸν καὶ τὸ ἀρχαιότερον νεκροταφεῖον τῆς Ἀττικῆς· καὶ ἐν Ἐλευσῖνι, ἔνθα ἀπεκάλυψε μεσοελλαδικὸν συνοικισμόν, συνεχίσας, εἰς τοῦτο, τὸ ἐκεῖ ἔργον Σκιᾶ. Ἐδημοσίευσε: «The Neolithic settlement of Olynthus», «The local olynthian Pottery of the iron age», «Ἡ νεολιθικὴ ἐποχὴ ἐν Ἑλλάδι» (ἐναίσιμος διατριβή), «Προϊστορικὴ Ἐλευσίς», ἄρθρα καὶ μελέτας. Β. Δ. Α.

— **Μυλωνᾶς, *Εὐστάθιος***. Ἀξιωματικὸς τοῦ ὑλικοῦ πυροβολικοῦ, προερχόμενος ἐκ τοῦ στρατεύματος καὶ προαχθεὶς μέχρι τοῦ βαθμοῦ τοῦ λοχαγοῦ. Κατέστη πασίγνωστος διὰ τῆς ἐφευρέσεως ὀπισθογεμοῦς τυφεκίου, φερομένου ὑπὸ τὸ ὄνομα «τυφέκιον Μυλωνᾶ ὑποδείγματος 1872» (βλ. λ. *Μυλωνᾶ τυφέκιον*), δι᾽ οὗ ὡπλίσθησαν τῷ 1876 μονάδες τινὲς τοῦ ἑλληνικοῦ πεζικοῦ. Ν. Θ. Κ.

— **Μυλωνᾶς, *Κυριάκος Διον***. Ἕλλην ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ (1835—1913). Ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν Ἀθήναις, Μονάχῳ, Βερολίνῳ καὶ Γοτίγγῃ, ἐπιδοθεὶς ἰδιαιτέρως εἰς τὴν ἀρχαιολογίαν, καὶ κατόπιν ὑπηρέτησεν ἐν γυμνασίοις Ἀθηνῶν ὡς καθηγητὴς τῶν ἑλληνικῶν καὶ ὡς γυμνασιάρχης. Τῷ 1868 διωρίσθη διευθυντὴς τοῦ τμήματος τῆς μέσης ἐκπαιδεύσεως τοῦ ὑπουργείου τῆς Παιδείας καὶ ἀπὸ τοῦ 1876 ἐδίδασκεν εἰς τὸ πανεπιστήμιον ὡς ὑφηγητὴς τῆς ἀρχαιολογίας, βραδύτερον δὲ ἐξελέγη τακτικὸν μέλος τοῦ γερμανικοῦ ἀρχαιολογικοῦ ἰνστιτούτου. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν μᾶλλον διακεκριμένων ἀρχαιολόγων τῆς ἐποχῆς του καὶ μετέσχε πολυτρόπως τῆς ἐπιστημονικῆς κινήσεως τοῦ κλάδου του, ἐργασθεὶς εἰς ἀνασκαφὰς καὶ εἰς συγγραφὰς μέχρι τοῦ θανάτου του. Συνώδευσε τὸν διδάσκαλόν του Ἐρνέστον Κούρτιον τῷ 1873 εἰς Ὀλυμπίαν καὶ ἐβοήθησεν εἰς τὰς ἐκεῖ γενομένας ἀνασκαφάς. Τῷ 1883 ἵδρυσε τὴν Γ´ περίοδον τῆς «Ἀρχαιολογικῆς Ἐφημερίδος» (1883—1884), ἐπὶ νέων ὅλως βάσεων, ἐπαναλαβὼν τὴν ἔκδοσιν κατὰ τὰ ἔτη 1893—1894. Τῷ 1891 ἀνέσκαψεν, ἐντολῇ καὶ δαπάναις τῆς Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας, ὁλόκληρον τὸ δυτικὸν μέρος τοῦ Διπύλου. Τῷ 1898 ἐνήργησεν, ἐντολῇ τῆς Ἀρχαιολο-



Digitized by Google

γικῆς Ἑταιρείας, τὴν συνέχισιν τῆς ἀνασκαφῆς τῆς στοᾶς τοῦ Ἀττάλου, ἐργασθεὶς εἰς αὐτὴν ἐπὶ πενταετίαν καὶ ἀποκαλύψας πάντα τὰ λείψανα τοῦ μεγαλοπρεποῦς οἰκοδομήματος τῆς στοᾶς. Προσκληθεὶς ὑπὸ τῆς ὀθωμανικῆς κυβερνήσεως τῷ 1895, κατέταξεν, ἀδείᾳ τοῦ ἑλληνικοῦ κράτους, τὰς μὴ ταξινομημένας ἀρχαιότητας τοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἀρχαιολογικοῦ μουσείου. Ὁ Μυλωνᾶς ὑπῆρξε καὶ ἀξιόλογος συγγραφεὺς πλείστων μονογραφιῶν καὶ πραγματειῶν ἀρχαιολογικοῦ περιεχομένου, αἱ κυριώτεραι τῶν ὁποίων εἶναι: «Ἱστορία τῆς Σμύρνης» λατινιστὶ («De Smyrnaeorum rebus gestis» 1866), «Ἑλληνικὰ κάτοπτρα» (1876), «Ὁ Φειδίας καὶ ἡ ἐποχή του» (1877), «Ἐπιγραφαὶ ἐκ τῆς Ἀκροπόλεως» (1888), «Ἀμφορεὺς πήλινος ἐκ Μύλου» (1895), «Ἀνασκαφὴ τῆς ἐν Ἀθήναις στοᾶς τοῦ Ἀττάλου» (1900), κτλ. Προσέτι ἐδημοσίευσε πλείστας μελέτας εἰς ξένα καὶ ἑλληνικὰ ἀρχαιολογικὰ περιοδικά. Τὸ ἐπιστημονικὸν ἔργον τοῦ Μυλωνᾶ μνημονεύεται εὐφήμως εἰς συγγράμματα Ἑλλήνων καὶ ξένων ἀρχαιολόγων, ἰδίως δὲ ὑπὸ τοῦ διασήμου Γάλλου Γεωργίου Περρώ. Ζ. Π.

*Κυριάκος Μυλωνᾶς.*

— **Μυλωνᾶς, *Κωνσταντῖνος*, ἢ *Δελῆς-Κωσταντῆς*.** Ἕλλην πολεμιστής, γεννηθεὶς ἐν Ζακύνθῳ. Ἔδρασεν ἐν Πελοποννήσῳ, ὅπου ἀπέβη ὁ τρόμος τῶν Τούρκων. Συλληφθεὶς καὶ φυλακισθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἐρρίφθη εἰς μίαν καραβέλαν τοῦ τουρκικοῦ στόλου, διαπλέων δὲ τὸ Αἰγαῖον, τῷ 1756, κατώρθωσε μετ' ἄλλων συναιχμαλώτων νὰ διαρρήξωσι τὰ δεσμά των καὶ νὰ φονεύσωσι τοὺς Τούρκους τοῦ πληρώματος, ὁδηγήσαντες κατόπιν τὸ πλοῖον εἰς Μάλταν, τὸ ὁποῖον καὶ παρέδωκαν εἰς τὸ τάγμα τῶν Ἱπποτῶν Μελίτης. Ὁ Δελῆ-Κωσταντῆς ἡνώθη ἀκολούθως μετὰ τοῦ Λάμπρου Κατσώνη εἰς τὸν ρωσικὸν πόλεμον καὶ τὴν ἑλληνικὴν ἐθνεγερσίαν, ἔτυχε τιμῶν καὶ συντάξεως ὑπὸ τῆς Αἰκατερίνης τῆς Ρωσίας καὶ ἀπέθανεν ἐν Τεργέστῃ. Λ. Χ. Ζ.

— **Μυλωνᾶς, *Νικόλαος*.** Ἐγεννήθη ἐν Κεφαλληνίᾳ καὶ τῷ 1798 κατετάχθη εἰς τοὺς ἀκροβολιστὰς τῆς Κερκύρας μετὰ τοῦ Βούρβαχη, τοῦ Βουλγάρεως, τοῦ ἐν Ἀλγερίᾳ συναγωνισθέντος Λοβέρδου καὶ ἄλλων πολλῶν. Μετέσχεν ἀκολούθως τῆς εἰς Ἰταλίαν ἐκστρατείας ὡς ἀξιωματικὸς ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ στρατηγοῦ Σαὶν-Σύρ. Ἐν τῷ μεταξὺ συνετέλεσεν εἰς τὴν ἔκδοσιν διαφόρων ἑλληνικῶν συγγραμμάτων, ἐν οἷς τῆς Γεωγραφίας τοῦ Μελετίου καὶ τῆς παρὰ Θεοδώρου τοῦ Γαζῆ παραφρασθείσης Ἰλιάδος. Κηρυχθέντος τοῦ μεταξὺ Ρωσίας καὶ Τουρκίας πολέμου, ὁ Μυλωνᾶς ἔσπευσε νὰ καταταχθῇ εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Δουνάβεως ὡς ταγματάρχης, τῷ δὲ 1815 ἀνευρίσκομεν αὐτὸν παρὰ τῷ στρατηγῷ Τσώρτς, ὅστις ἐστρατολόγει Ἕλληνας ἐθελοντάς, ὅπως ἐπιχειρήσῃ ἐπίθεσιν κατὰ τῆς Τουρκίας. Τῷ 1821 ἦτο ὑποπρόξενος τῆς Ρωσίας ἐν Χίῳ κατὰ τὴν στιγμὴν τῶν σφαγῶν, ὁπότε κατέβαλε πᾶσαν προσπάθειαν, ὅπως σώσῃ ὅσον περισσότερα ἠδύνατο θύματα ἀπὸ τῶν χειρῶν τῶν Τούρκων. Λαβὼν μέρος εἰς τὴν πολιορκίαν τοῦ Μυστρᾶ, ἐπανῆλθε κατόπιν ἀσθενὴς καὶ ἄπορος εἰς Παρισίους, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν. Δ. Π. Π.

— **Μυλωνᾶ τυφέκιον.** Ἐκ τῶν πρώτων ἐμφανισθέντων ὀπισθογεμῶν τυφεκίων μετὰ μεταλλικοῦ κάλυκος, ἐκ περιεστραμμένου φύλλου ὀρειχάλκου,

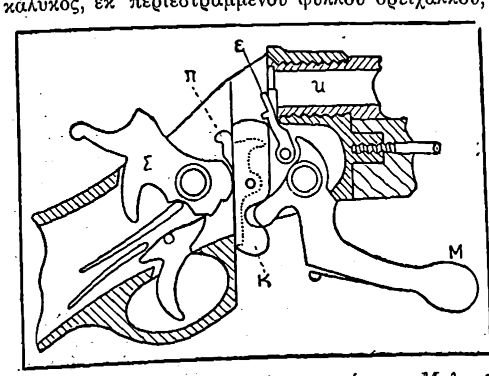

*Τομὴ τοῦ κλείστρου τυφεκίου συστήματος Μυλωνᾶ.*
[κ=κάννη· Σ=σφῦρα· π=ἐπικρουστήρ· ε=ἐξολκεύς· Κ=κορμὸς κλείστρου· Μ=μοχλὸς κλείστρου.]

διασκευασθέν, ὑπὸ τοῦ *Μυλωνᾶ*, κατὰ τὸ σύστημα τοῦ βελγικοῦ τυφεκίου συστήματος Κομπλαὶν (Comblain) ὑποδείγμ. 1870. Τὸ κλεῖστρον ἀποτελεῖται ἐκ τεμαχίου, κινουμένου κατακορύφως διὰ μοχλοῦ, διατεταγμένου κάτωθεν τῆς θήκης τοῦ κλείστρου καὶ ἀμέσως μετὰ τὸν ἐπιφυλακτῆρα. Ὡς ὑπόδειγμα τοῦ 1872 τῶν 11 χιλ. ἐγένετο ἀποδεκτὸν εἰς τὸν ἑλληνικὸν στρατὸν διὰ τὸν ὁπλισμὸν τῶν ταγμάτων τοῦ πεζικοῦ μετὰ τοῦ κατὰ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν εἰσαχθέντος τυφεκίου συστήματος Σασσεπώ· πρὸς τοῦτο ἐγένετο τῷ 1874 παραγγελία κατασκευῆς 5.000 τυφεκίων εἰς τὸ ἐν Βελγίῳ ἐργοστάσιον Ναγκάν. Κ. Δ.

**Μυλωνὲς** *[Γεωγρ.]*. Μικρὸς συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Στροβλῶν τῆς ἐπαρχίας Σελίνου τοῦ νομοῦ Χανίων Κρήτης. Κάτ. (1928) 11. Ε. Γ.

**Μυλωνιανὰ** *[Γεωγρ.]*. Μία τῶν δέκα παλαιοτέρων συνοικιῶν τῆς πρωτευούσης τῆς κοινότητος Ἁγίας Βαρβάρας τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου Κρήτης. Ε. Γ.

**Μυλωνογιάννης.** Ὄνομα ἐπιφανοῦς κρητικῆς οἰκογενείας, ἥτις ἐπρωτοστάτησε κατὰ τοὺς ἐθνικοὺς ἀγῶνας. Διασημότεροι τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι οἱ ἑξῆς:

—1) ***Σταμάτιος.*** Γεννηθεὶς περὶ τὸ 1790 εἰς τὸ χωρίον Ἐπάνω Κεφαλᾶ. Συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐπαναστάσεις 1821—1830, 1841 καὶ 1858, τῷ δὲ 1866 ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῆς ἐπαρχίας του ἐν τῇ Συνελεύσει τὴν 23 Ἀπριλίου 1866 εἰς Μπουτσουνάρια (Κυδωνίας), ἵνα διοργανώσῃ καὶ διαδώσῃ τὴν ἐπανάστασιν, καθ' ἥν, ὑπέργηρως ἤδη ὤν, δὲν ἠδυνήθη νὰ δράσῃ διὰ τῶν ὅπλων.

—2) ***Ματθαῖος.*** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Ἐπάνω Κεφαλᾷ περὶ τὸ 1828. Καταδιωχθείς, νεώτατος ἔτι, ὑπὸ τῶν τουρκικῶν ἀρχῶν ἕνεκα τοῦ ἀνυποτάκτου χαρακτῆρός του, κατέφυγεν εἰς Ἀθήνας καὶ μετ' ὀλίγον συμμετέσχεν εἰς τὴν Θεσσαλικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1854 ἐπὶ κεφαλῆς σώματος ἐπιλέκτων Κρητῶν καὶ ἐτραυματίσθη σοβαρῶς εἰς τὴν μάχην Καλαμπάκας (Μάϊος 1854). Συμμετέσχεν ὡσαύτως ὡς ὁπλαρχηγὸς εἰς τὴν Κρητικὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1858. Κατὰ τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1866, λαβὼν ἐκ τῶν πρώτων τὰ ὅπλα, ἀπεστάλη ὑπὸ τῆς ἐν Μπουτσουναρίοις συνελθούσης ἐπαναστατικῆς συνελεύσεως (23 Ἀπριλίου 1866) μὲ εἰδικὴν ἐντολὴν εἰς τὰς λοιπὰς τῆς Κρήτης ἐπαρχίας, μεθ' ἣν ἐπανελθὼν εἰς Ἀποκόρωνον ἐξελέγη εἷς τῶν ἀρχηγῶν τῆς ἐπαρχίας ταύτης καὶ ὡς τοιοῦτος διεκρίθη διὰ τὴν ἀκατάσχετον ἀνδρείαν του καθ' ὅλον τὸν τριετῆ ἐκεῖνον ἀγῶνα, συμμετασχὼν εἰς πάσας τὰς πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις ἐν ταῖς ἐπαρχίαις Ἀποκορώνου, Κυδωνίας, Σελίνου, Σφακίων, Κισάμου, Ρεθύμνης καὶ Ἁγίου Βασιλείου. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ ἀγῶνος (Ἰανουάριος 1869) κατέφυγεν εἰς Ἀθήνας μέχρι τοῦ 1878, ὅτε, κατελθὼν πάλιν εἰς τὴν ἐπαναστατήσασαν πατρίδα του, διεκρίθη ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας του ἰδίᾳ κατὰ τὴν τριήμερον μάχην τοῦ Τσιβαρᾶ (10—12 Ἰουνίου 1878), καθ' ἣν κατεδίωξε τὰ πολυάριθμα τουρκικὰ στρατεύματα μέχρι τῆς παραλίας, ὑπὸ τὰς ἐπευφημίας τοῦ ἐν Σούδᾳ ναυλοχοῦντος ἀγγλικοῦ στόλου. Κατὰ τὴν περίοδον τοῦ αὐτονόμου πολιτεύματος τῆς Κρήτης (1878 κλπ.) ἐξελέγη κατ' ἐπανάληψιν βουλευτὴς τῆς ἐπαρχίας του μέχρι τοῦ 1889, ὅτε, καταλυθείσης τῆς αὐτονομίας, κατέφυγε πάλιν εἰς Ἀθήνας. Τῷ 1896 κατῆλθε πάλιν εἰς Κρήτην καὶ συμμετέσχεν ὡς γενικὸς ἀρχηγὸς Ἀποκορώνου κατὰ τὴν ἐπανάστασιν 1896—1897. Διὰ τὰς πρὸς τὴν πατρίδα μακρὰς ὑπηρεσίας του ἐτιμήθη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως διὰ τοῦ σταυροῦ τοῦ Σωτῆρος. Ἀπέθανεν ἐν Χαλέπᾳ τὴν 14 Νοεμβρίου 1901 καὶ ἐκηδεύθη ὑπὸ τῆς κρητικῆς πολιτείας μὲ τιμὰς στρατηγοῦ ἐν ἐνεργείᾳ.

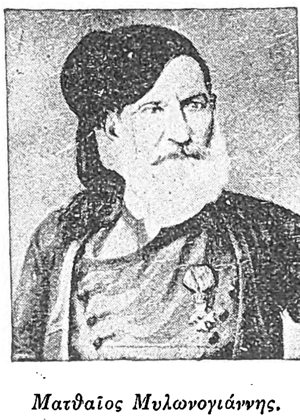
*Ματθαῖος Μυλωνογιάννης.*

—3) ***Γεώργιος.*** Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Ἐπάνω Κεφαλᾷ περὶ τὸ 1867. Νεώτατος ἀπεδήμησεν εἰς Ἀθήνας, ἔνθα ἐσπούδασε τὴν ἰατρικὴν ὡς ὑπότροφος τοῦ βασιλέως Γεωργίου, τιμῆς ἕνεκεν πρὸς τὸν πατέρα του. Συμμετέσχεν ἐκ τῶν πρώτων εἰς τὴν ἐπανάστασιν 1895—1897, καθ' ἣν ἀπετέλεσε μέλος τῆς ὑπὸ τὸν Μανοῦσον Κούντουρον «μεταπολιτευτικῆς ἐπιτροπῆς» καὶ συγχρόνως διεκρίθη ὡς ἀρχηγὸς τῆς ἐπαρχίας, συμμετασχὼν εἰς πλείστας μάχας μέχρι τέλους τοῦ ἀγῶνος (1897), ὅτε ἐξελέγη μέλος τῆς ὑπὸ τὸν Κ. Σφακιανάκην ἐκτελεστικῆς ἐπιτροπῆς τῆς ἀναλαβούσης τὴν διοίκησιν τῆς νήσου μέχρι τῆς εἰς Χανιὰ καθόδου τοῦ πρίγκιπος Γεωργίου, ὅτε διωρίσθη νομάρχης Λασηθίου, εἶτα σύμβουλος ἐπὶ τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ εἶτα πάλιν νομάρχης Χανίων. Μετὰ τὴν κατὰ Σεπτέμβριον 1906 ἀνάκλησιν τοῦ πρίγκιπος Γεωργίου ἐκ Κρήτης, ὁ Γεώργιος Μυλωνογιάννης, ἵνα ματαιώσῃ τὴν ἀναχώρησιν τοῦ πρίγκιπος, διωργάνωσε μετὰ τοῦ Μ. Κουντούρου, Γ. Δασκαλογιάννη, Λ. Λιωνάκη, Γ. Γαλάνη κλπ. ἔνοπλον κίνημα. Τῷ 1910 ἀπετέλεσε μέλος τῆς ὑπὸ τὸν Ἐ. Βενιζέλον κρητικῆς κυβερνήσεως. Τῷ 1912, σχηματίσας ἰσχυρὸν σῶμα Κρητῶν, συμμετέσχεν εἰς τὰς ἐν Ἠπείρῳ ἐπιχειρήσεις μέχρι τέλους τοῦ πολέμου ἐκείνου. Ἔκτοτε, κλονισθείσης σοβαρῶς τῆς ὑγείας του, δὲν ἀνεμίχθη πλέον εἰς τὰ κοινά, ἡ δὲ ἑλληνικὴ κυβέρνησις, ἀμείβουσα τὰς πρὸς τὴν πατρίδα ὑπηρεσίας του, ἐτίμησεν αὐτὸν διὰ τοῦ χρυσοῦ σταυροῦ τοῦ Σωτῆρος.

—4) ***Ἀλέξανδρος.*** Υἱὸς τοῦ *Σταματίου*, ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς τῷ 1884. Διδάκτωρ τῆς νομικῆς, κατετάχθη εἰς τὸ σῶμα τῆς στρατιωτικῆς δικαιοσύνης καὶ συμμετέσχε τῶν πολέμων 1912—1913 καὶ 1917—1922. Παραιτηθεὶς τῶν τάξεων τοῦ στρατοῦ τῷ 1928, μὲ τὸν βαθμὸν ἀντισυνταγματάρχου, ἐπεδόθη εἰς τὴν πολιτικὴν καὶ ἐξελέγη τῷ 1928 βουλευτὴς Χανίων. Ν. ΚΛΣ—ΕΡ. Μ.

**Μυλωτίνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Κερασιᾶς τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κοζάνης. Κάτ. (1928) 139. Χ. Δ.

**μυμαρίδαι** (οἱ) (Mymaridae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων ὑμενοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *νυκτίων*, περιλαμβάνουσα γένη τινά, ὧν ἀξιολογώτερον ἡ *μυμαρὶς* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυμαρὶς** (ἡ) (Mymaris) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυμαριδῶν*, περιλαμβάνον τέσσαρα εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων χωρῶν τοῦ παλαιοῦ κόσμου. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ἡ *μυμαρὶς ἡ πλατυκέφαλος* (Mymaris platycephala), ἥτις διακρίνεται ἐκ τοῦ μετρίου μεγέθους της, τῆς πλατυτάτης κεφαλῆς, τῶν στενῶν προσθίων πτερύγων καὶ τοῦ ὑπομελανοῦ χρώματός της. Δ. Ν. Π.

**Μυνδία *χερσόνησος*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ δυτικῶς τῆς κατὰ τὴν Ἁλικαρνασσὸν σχηματιζομένης στενώσεως μικρασιατικὴ χερσόνησος, λαβοῦσα τὸ ὄνομα ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῇ πόλεως *Μύνδου*. Σ. Ε. Λ.

**Μύνδος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαιοτάτη ἑλληνικὴ πόλις τῆς Καρίας ἐπὶ τῆς Μυνδίας χερσονήσου ἐν τῷ Βαργυλιακῷ κόλπῳ, ἔχουσα λιμένα (*Στράβ.* ΙΔ', 658). Τὸ ἐθνικὸν *Μύνδιος*. Ταύτην ἀπῴκισαν Τροιζήνιοι ὑπὸ Ἀέτιον τὸν Ἄνθα (*Παυσ.* Β', λ, 8), σύμμαχον τῶν Ἀθηναίων. Εἶναι ἡ σύγχρονος *Γκουμισλοῦ* (πλάτ. 37°04′ 1/2 Β., μῆκ. 27°17′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1899: Kalimno, Kappari and Kos channels), φυσικὸς λιμήν, ἓν μίλ. βορείως τοῦ ἀκρωτηρίου Καραμπαγλᾶ. Σ. Ε. Λ.

— **Μύνδου *ὕφαλος*** *[Γεωγρ.]*. Ὕφαλος τῆς μικρασιατικῆς ἐπὶ τοῦ Αἰγαίου ἀκτῆς πρὸ τοῦ λιμένος τῆς Γκουμισλοῦ (Myndus rock: πλάτ. 37°05′ Β., μῆκ. 27°15′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1546: Samos Strait to Mandelyah gulf), ἓν μίλ. ΒΑ. τῆς νήσου Ποντικοῦσα. Ἡ κεφαλή της ἔχει βόλισμα 4 1/2 ὀργ. Σ. Ε. Λ.

**Μύνης** *[Μυθολ.]*. Υἱὸς τοῦ Εὐήνου, βασιλεὺς τῆς Λυρνησσοῦ καὶ σύζυγος τῆς Βρισηΐδος, φονευθεὶς ὑπὸ τοῦ Ἀχιλλέως. Λ. Θ. Σ.

**Μύννιχ** (Münnich), ***Μπούχαρντ-Χριστόφορος, κόμις***—. Ρῶσος στρατάρχης καὶ πολιτικὸς (1683—1767). Ὑπηρέτησεν εἰς τοὺς στρατοὺς τῆς Πολωνίας καὶ τῆς Σουηδίας μέχρι τοῦ 1720 καὶ κατόπιν εἰσῆλθεν εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν ὡς ἀρχηγὸς τοῦ μηχανικοῦ, ὡς τοιοῦτος δὲ διηύθυνε τὴν κατασκευὴν τῆς διώρυγος τῆς Λαδόγας, τοῦ φρουρίου τῆς Ρίγας καὶ τοῦ λιμένος τῆς Κρονστάνδης. Ἐπὶ τῆς αὐτοκρατείρας Ἄννης ἔλαβε τὸν τίτλον τοῦ κόμιτος καὶ τῷ 1732 προήχθη εἰς στρατάρχην. Εἰσήγαγε τότε νέον ὀργανισμὸν εἰς τὸν ρωσικὸν στρατὸν καὶ συνέστησε διαφόρους στρατιωτικὰς σχολάς. Μετὰ τὴν ἄνοδον εἰς τὸν πολωνικὸν θρόνον τοῦ Στανισλάου, ὁ ρωσικὸς στρατὸς ὑπὸ τὸν Μύννιχ εἰσέβαλεν εἰς τὴν Πολωνίαν καὶ ἐπολιόρκησεν εἰς Δάντζιγκ τὸν νεοεκλεγέντα βασιλέα, ὅστις ἔφυγε προτοῦ καταληφθῇ ἡ πόλις ὑπὸ τῶν Ρώσων. Κατόπιν ἐστράφη κατὰ τῶν κατεχόντων τὴν Κριμαίαν Τούρκων, ἐξεβίασε τὰς γραμμὰς τῆς Περικόπ, κατέλαβε τὸ Μπαξὲ Σεράϊ, πρωτεύουσαν τοῦ χάνου τῶν Τατάρων, καὶ ἥλωσεν ἐξ ἐφόδου τὸ Οὐτσάκοβ. Τῷ 1739 ἤρατο περιφανῆ νίκην εἰς Σαβουτσάν, κατέλαβε τὸ Χοκίν, διῆλθε τὸν Προῦθον καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πρωτεύουσαν τῆς Μολδαβίας. Συνέπεια τῶν ἐπιτυχιῶν τούτων ὑπῆρξεν ἡ συνομολόγησις τῆς εἰρήνης τοῦ Βελιγραδίου. Ὅτε ἐπέστρεψεν εἰς Πετρούπολιν, ἡ αὐτοκράτειρα Ἄννα ἀπέθανε (1740), ὁρίσασα ὡς διάδοχόν της τὸν ἀνήλικον ἀνεψιόν της Ἰβὰν ΣΤ'

Digitized by Google

ὑπὸ τὴν κηδεμονίαν τοῦ εὐνοουμένου της Μπίρεν. Ὁ Μύννιχ ἀνατρέψας αὐτὸν μετά τινα χρόνον, ἐγένετο πρωθυπουργός. Ἀλλὰ κατὰ τὴν ἄνοδον εἰς τὸν θρόνον τῆς Ἐλισάβετ συλληφθεὶς κατεδικάσθη εἰς διαμελισμὸν καὶ δήμευσιν τῆς περιουσίας του· λαβὼν ὅμως χάριν εἰς τὸν τόπον τῆς ἐκτελέσεως, διὰ μετατροπῆς τῆς ποινῆς του εἰς ἰσόβια δεσμά, ἀπεστάλη εἰς Σιβηρίαν. Παραμείνας αὐτόθι κάθειρκτος ἐπὶ ἕνδεκα ἔτη, ἠλευθερώθη τῷ 1762, ὅτε ἀνῆλθε τὸν θρόνον ὁ Πέτρος Γ', ὅστις ἀποκατέστησεν αὐτὸν εἰς τὰ ἀξιώματά του καὶ τῷ ἐπέστρεψε τὴν περιουσίαν του. Ὑπὸ τῆς Αἰκατερίνης Β' διωρίσθη γενικὸς διοικητὴς τῶν λιμένων τῆς Βαλτικῆς. Ὁ Μύννιχ συνέγραψε γαλλιστί: «Ébauche pour donner une idée de la forme du gouvernement de l'empire de Russie». Θ. Β.

**Μυννίων.** Ἕλλην γλύπτης τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τῆς Ε' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος. Τὸ ὄνομα, ὁ χρόνος καὶ τὸ ἔργον τοῦ τεχνίτου τούτου ἐγνώσθησαν ἔκ τινος ἐπιγραφῆς ἀπολογισμοῦ ταμιῶν, εὑρεθείσης τῷ 1836 ἐν τῇ ἀριστερᾷ πτέρυγι τῶν Προπυλαίων τῆς Ἀκροπόλεως Ἀθηνῶν, τῇ καλουμένῃ Πινακοθήκῃ. Κατὰ τὴν ἐπιγραφὴν ταύτην, ἀνήκουσαν εἰς τὸ ἔτος 407 π. Χ., ὁ Μυννίων κατήγετο ἐκ τοῦ ἐν Ἀττικῇ δήμου Ἀγρυλῆς ἢ Ἀγραυλῆς, ἔλαβε δὲ μέρος, μετὰ ἑπτὰ ἄλλων καλλιτεχνῶν, εἰς τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἀναγλύφων τῆς ζωφόρου τοῦ Ἐρεχθείου. Τὰ ἀνάγλυφα ταῦτα, εἰργασμένα ἐπὶ λευκοῦ μαρμάρου, ἦσαν προσηρμοσμένα διὰ μεταλλίνων γόμφων ἐπὶ πλακῶν μέλανος ἐλευσινιακοῦ λίθου, εἶχον δὲ θέμα πιθανῶς τοὺς περὶ τοῦ Ἐριχθονίου μύθους. Οἱ ἀναλαβόντες τὴν ἐκτέλεσιν τῶν ἀναγλύφων τεχνῖται ἐλάβευσαν τὰς μορφὰς τῆς ζωφόρου ἀντὶ δραχμῶν 60 ἑκάστην. Ὁ Μυννίων, λαβὼν 127 δραχμάς, ἐξετέλεσε τὸν ἵππον καὶ τὸν κτυπῶντα τὸ ζῷον τοῦτο ἄνδρα, προσθέσας ἀργότερον καὶ τὴν στήλην. Β. Δ. Θ.

**Μύνστερ** (Münster) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν τῷ πρωσσικῷ διαμερίσματι τῆς Βεστφαλίας, πρωτεύουσα ὁμωνύμου νομοῦ. Κάτ. 106.418. Κεῖται παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Ἄα καὶ Βέρσε καὶ τῆς διώρυγος Ντόρτμουντ-Ἔμς καὶ εἶναι σιδηροδρομικὸς κόμβος ὀκτὼ σιδηροδρομικῶν γραμμῶν. Εἶναι πόλις παλαιά, διατηροῦσα εἰσέτι ἐν τῷ κέντρῳ αὐτῆς τὴν παλαιὰν φυσιογνωμίαν, μὲ πολλὰς ἱστορικὰς ἐκκλησίας καὶ ἐνδιαφέροντα κτήρια. Ἡ νέα πόλις ἐκτείνεται πέριξ τῶν κατεδαφισθέντων τειχῶν τῆς παλαιᾶς, ἅτινα μετεβλήθησαν εἰς ὡραίους κήπους καὶ περιπάτους. Ἐκ τῶν ἐκκλησιῶν αὐτῆς αἱ κυριώτεραι εἶναι ἡ μητρόπολις, κτισθεῖσα κατὰ τὸν ΙΒ' αἰῶνα καὶ ἀνακαινισθεῖσα τὸν ΙΔ', ρυθμοῦ γοτθικορρωμανικοῦ, ἡ Παναγία κτισθεῖσα τῷ 1340 κ. ἄ., ἐκ δὲ τῶν κτηρίων τὸ δημαρχεῖον, ὅπου ὑπεγράφη τῷ 1648 ἡ καλουμένη «εἰρήνη τῆς Βεστφαλίας», δι' ἧς ἐτερματίσθη ὁ Τριακονταετὴς πόλεμος, τὸ φρούριον καὶ πλεῖστα μέγαρα Βεστφαλιανῶν εὐγενῶν. Ἡ σημερινὴ πόλις ἔχει ἀκμάζουσαν βιομηχανίαν ὑφασμάτων, χρωμάτων, μηχανημάτων, κλειδοκυμβάλων, ταπήτων, τυπογραφικῶν καὶ ἠλεκτρικῶν εἰδῶν κ.τ.λ. Τὸ ἐμπόριον ἐπίσης εἶναι λίαν ζωηρόν, συνιστάμενον κυρίως εἰς σιτηρά, ξυλείαν, βάμβακα, εἴδη μεταλλουργίας, γεωργικὰ ἐργαλεῖα, κτηνοτροφικὰ προϊόντα κλπ. Ἡ Μύνστερ εἶναι ἐπίσης σημαντικὸν ἐκπαιδευτικὸν κέντρον, ἔχουσα πανεπιστήμιον ἱδρυθὲν τῷ 1631, ἰνστιτοῦτον φυσικῆς, χημείας, βοτανικῆς, βιομηχανικὴν καὶ ἐπαγγελματικὴν σχολήν, διδασκαλεῖα, ἰνστιτοῦτον ἐπιστημονικῆς παιδαγωγικῆς καὶ πρακτικῆς ψυχολογίας, ᾠδεῖον, μουσεῖον φυσικῆς, γεωλογίας καὶ ὀρυκτολογίας, μουσεῖον χριστιανικῆς τέχνης, ζωολογικὸν κῆπον, γεωργικὴν σχολήν, ἀρχαιολογικὸν μουσεῖον, βιβλιοθήκην μετὰ 300.000 τόμων καὶ ὑπερχιλίων χειρογράφων κλπ. Ἱδρύθη κατὰ τὸν ΙΑ' αἰῶνα πέριξ μοναστηρίου (γερμ. Münster), τῷ δὲ 1186, ὀχυρωθεῖσα ὑπὸ τῶν κατεχόντων αὐτὴν ἐπισκόπων, ἐγένετο τὸ θέατρον αἱματηρῶν ἀγώνων, ἰδίως κατὰ τοὺς θρησκευτικοὺς πολέμους. Μ. Δ. Β.

**Μύνστερμπεργκ** (Münsterberg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Σιλεσίᾳ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Ὀλάου, 59 χλμ. πρὸς Ν. τοῦ Μπρεσλάου, μεθ' οὗ συνδέεται σιδηροδρομικῶς. Ἔχει βιομηχανίας ζύθου, πλίνθων κλπ. Κάτ. 8.427. Χ. Δ.

**Μύνστερμπεργκ** (Münsterberg), ***Οὔγων***. Γερμανὸς φιλόσοφος καὶ ψυχολόγος (1863—1916). Ἤρχισε τὸ στάδιόν του ὡς ὑφηγητὴς ἐν Φρειβούργῳ, ὅπόθεν ἐκλήθη εἰς Harvard τῆς Ἀμερικῆς ὡς τακτικὸς καθηγητὴς τῆς ψυχολογίας. Ὁ Μύνστερμπεργκ εἶναι εἷς τῶν ἱδρυτῶν τῆς ἀξιολογικῆς φιλοσοφίας παρὰ τὸν Windelband, τὸν Rickert κ. ἄ., διακρινόμενος τῶν λοιπῶν διὰ τῆς ἰδεολογικῆς ἅμα καὶ πραγματοκρατικῆς ἐκδοχῆς τῶν ἀξιῶν. Ταύτας διαιρεῖ εἰς δύο μεγάλας κατηγορίας, εἰς ζωϊκὰς καὶ εἰς πολιτιστικὰς ἀξίας, ἑκατέραν δὲ τούτων πάλιν εἰς τέσσαρα εἴδη, ἤτοι εἰς λογικάς, αἰσθητικάς, ἠθικὰς καὶ μεταφυσικὰς ἀξίας. Καὶ αἱ μὲν λογικαὶ ἀποσκοποῦσιν εἰς τὴν αὐτοσυντήρησιν τοῦ κόσμου· αἱ δὲ αἰσθητικαὶ εἰς τὴν πρὸς ἑαυτὸν συμφωνίαν αὐτοῦ· αἱ ἠθικαὶ εἰς τὴν αὐτενέργειαν καὶ αἱ μεταφυσικαὶ τέλος εἰς τὴν αὐτοτελείωσιν τοῦ κόσμου. Αἱ ζωϊκαὶ ἀξίαι εἶναι ἀμέσως τεθειμέναι ἀξίαι· ἐνῷ τοὐναντίον αἱ πολιτιστικαὶ δημιουργοῦνται συνειδητῶς ὑπὸ τοῦ ἀνθρώπου. Καὶ αἱ μὲν καὶ αἱ δὲ ἀναφέρονται ἢ εἰς τὸν ἐξωτερικὸν κόσμον ἢ εἰς τὸν κόσμον τῶν ἀνθρώπων ἢ εἰς τὸν ἐσωτερικὸν τοῦ ἀτόμου κόσμον. Ἀναλόγως πρὸς τὴν τριτὴν ταύτην κατανομὴν διακρίνεται καὶ ἕκαστον τῶν τεσσάρων εἰδῶν τῶν ἀξιῶν εἰς τρεῖς ὑποδιαιρέσεις, αἵτινες ὅμως δὲν εἶναι αἱ αὐταὶ διά τε τὰς ζωϊκὰς καὶ τὰς πολιτιστικὰς ἀξίας. Οὕτω αἱ λογικαὶ ἀξίαι εἶναι ἀξίαι ὑπάρξεως, ἐφ' ὅσον ἀνήκουν εἰς τὰς ζωϊκάς, καὶ ἀξίαι συναρτήσεως, ἐφ' ὅσον ἀνήκουν εἰς τὰς πολιτιστικάς. Αἱ αἰσθητικαὶ κατὰ μὲν τὴν πρώτην περίπτωσιν εἶναι ἀξίαι ἑνότητος, κατὰ δὲ τὴν δευτέραν ἀξίαι κάλλους κλ. Οὕτω ὁ Μύνστερμπεργκ δημιουργεῖ μεγαλοπρεπὲς σύστημα ἀξιῶν, αἵτινες ὅμως τελοῦσιν εἰς ἀντίθεσιν πρὸς ἀλλήλας ἐν τῷ πραγματικῷ βίῳ, ὡς φαίνεται λ. χ. ἐκ τούτου, ὅτι δύναταί τι νὰ εἶναι ἀληθές, χωρὶς νὰ εἶναι συγχρόνως ἀγαθὸν ἢ καλόν, ἢ νὰ εἶναι καλὸν ἀλλ' οὐχὶ ἀγαθόν. Ὁ θεὸς ἀποτελεῖ τὴν ἑνότητα τῶν ἀξιῶν τούτων, ἡ δὲ θρησκεία εἶναι ὁ σκοτεινὸς πόθος πρὸς τὴν ἑνότητα ταύτην τῶν ἀξιῶν, ἥτις ζῇ ὡς αἴτημα ἐντὸς τῆς ψυχῆς τοῦ ἀνθρώπου. Διὰ τοῦ θρησκευτικοῦ συναισθήματος βεβαιούμεθα ὅτι ὁ κόσμος ἀποτελεῖ διατεταγμένον κατὰ νόμους καὶ ἑνιαῖον ὅλον, ὅτι τὰ πάντα ἐν αὐτῷ συμβάλλουν εἰς τὴν ἁρμονίαν καὶ ὅτι ἐν τέλει θὰ ὑπερισχύσῃ τὸ ἀγαθόν. Διὰ τῆς πίστεως ταύτης ἐπιτυγχάνει ὁ ἄνθρωπος τὴν ἀπολύτρωσιν, τὴν ἐξαρσιν αὐτοῦ μέχρι τῆς ἀχρόνου μακαριότητος. Ὅ,τι ἡ θρησκεία ὀνομάζει θεόν, ὑπερβατικὴν ἀρχὴν τῆς ἑνότητος τῶν ἀξιῶν, τοῦτο εὑρίσκει ἡ φιλοσοφία ἐν τῷ βάθει τῆς ψυχῆς ὡς ὑπερπροσωπικὴν πρωταρχικὴν βούλησιν, ἡ ὁποία εἶναι ἡ πηγὴ πασῶν τῶν ἐκτιμήσεων ἡμῶν καὶ ἀξιολογικῶν κρίσεων. Ἐκ τῶν ἔργων τοῦ Μύνστερμπεργκ κυριώτερα εἶναι τὰ ἑξῆς: «Grundzüge der Psychologie» (β' ἔκδ. 1918), «Philosophie der Werte» (β' ἔκδ. 1921), «Psychologie und Wirtschaftsleben» (ε' ἔκδ. 1920), «The eternal Values» (1909)· πρὸς τούτοις ἐξέδιδεν ἐπὶ μακρὰ ἔτη τὸ «Harvard Psychological Studies». Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

*Οὔγων Μύνστερμπεργκ.*

**Μύντεν** (Münden) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Ἀννοβέρῳ τῆς Πρωσσίας, παρὰ τὴν συμβολὴν τῶν ποταμῶν Φούλντα καὶ Βέρρα μετὰ τοῦ Βέζερ, 24 χλμ. πρὸς ΝΔ. τῆς Γοττίγγης. Ἔχει βιομηχανίας χημικῶν προϊόντων, καουτσούκ, κυτταρίνης, σιγαρέττων κλπ. καὶ ὀρυχεῖα γαιανθράκων εἰς τὰ περίχωρα. Κάτ. (1925) 11.991. Χ. Δ.

**μυντιλί** (τό)· μικρόσωμος ἵππος τῆς Μυτιλήνης (ἐκ τοῦ γαλλ. Mytilène ἢ Medelène).

**Μὺντς** (Müntz), ***Εὐγένιος***. Γάλλος τεχνοκρίτης (1845—1902). Ἔγραψεν: «Αἱ τέχναι ἐν τῇ αὐλῇ τῶν παπῶν κατὰ τὸν ΙΕ' καὶ ΙΣΤ' αἰῶνα», «Ὁ Ραφαήλ, ὁ βίος, τὸ ἔργον καὶ ἡ ἐποχή του» (γ' ἔκδ. 1899), «Μελέται περὶ τῆς ἱστορίας τῆς τέχνης ἐν Ρώμῃ κατὰ τὸν μεσαίωνα» (1881), «Ντονατέλλο» (1885), «Ἱστορία τῆς τέχνης κατὰ τὴν Ἀναγέννησιν» (1888—1895 τόμ. 3), «Φλωρεντία καὶ Τοσκάνη» (β' ἔκδ. 1901), «Λεονάρδος ντὰ Βίντσι» (1898). Γ. Ι. Β.

**Μυνχάουζεν** (Münchhausen), ***Ἱερώνυμος-Κάρολος-Φρειδερῖκος, βαρῶνος ντὲ***—. Γερμανὸς ἀξιωματικὸς ἐξ Ἀννοβέρου (1720—1797), γενόμενος διάσημος διὰ τὰς τερατολογίας καὶ ψευδολογίας του. Ὑπηρετήσας ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ ἱππικοῦ ἐν τῷ ρωσσικῷ στρατῷ, ἐπολέμησεν ἐναντίον τῶν Τούρκων (1740—1741), μετὰ δὲ τὴν ἐπάνοδον του εἰς Ἀννόβερον διηγεῖτο τὰς περιπετείας του μετὰ χονδροειδῶν καὶ ἀπιθάνων ὑπερβολῶν τόσον καταφανῶν, ὥστε προεκάλεσε τὴν γενικὴν περιέργειαν καὶ θυμηδίαν. Μετ' ὀλίγον (1785) ἐκυκλοφόρει ἡ πρώτη συλλογὴ τῶν περιπετειῶν του, γραφεῖσα ἀγγλιστὶ ὑπὸ τοῦ συμπατριώτου του καὶ φίλου του Ροδόλφου-Ἐρρίκου Ράσπε, ὑπὸ τὸν τίτλον «Baron Munchansen's narrative of his mervellous travels and camplaigns in Russia». Τὸ ἔργον τοῦτο, τὸ ὁποῖον, κατὰ τὴν ἐπικρατοῦσαν γνώμην, ἐλήφθη ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν «Facetiae Bebelianae» (1508) τοῦ Μπέμπελ καὶ «Deliciae Academicae» (1765) τοῦ Λάγκε, ἔσχεν ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς τεραστίαν διάδοσιν παρὰ τῷ λαῷ, ὁ ὁποῖος διεσκέδαζεν εὐχαρίστως μὲ τὰς ἀστείας καὶ ὅλως ἀπιστεύτους περιπετείας τοῦ ἥρωος του. Μετ' ὀλίγον ἐξεδίδετο συμπεπληρωμένη μετάφρασις γερμανιστὶ ὑπὸ τοῦ Μπύργκερ (1788), ἠκολούθησαν δὲ καὶ ἄλλαι εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς γλώσσας τοῦ κόσμου. Αἱ περιπέτειαι τοῦ βαρώνου Μυνχάουζεν ἀπετέλεσαν βαθμηδὸν ὁλόκληρον λογοτεχνικὸν κύκλον, τὸ δὲ ὄνομα αὐτοῦ θεωρεῖται ἔκτοτε ὡς ἡ προσωποποίησις τοῦ δεινοῦ τερατολόγου. Χ. Δ.

**Μύνχεν** (München), *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας, πρωτεύουσα τῆς Βαυαρίας (βλ.λ. *Μόναχον*).

**Μύνχμπεργκ** (Münchberg) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γερμανίας ἐν Ἄνω Φρανκονίᾳ τῆς Βαυαρίας, κειμένη ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς Χὸφ-Κούλμπαχ, Κάτ. (1925) 6.195. Χ. Δ.

**μύξα** (ἡ)· ἡ ἐκ τῶν μυκτήρων ρέουσα βλεννώδης ὕλη, ἔκκριμα τῶν μυκτήρων: «τρέχουν οἱ μύξες του», «βγάλε τὴ μύξα σου»· || φρ. «σάλια μύξες» ἐπὶ λόγων ἀηδῶν.

—*[Φαρ.]* Καλεῖται *μύξα* ἑκάστη τῶν ἐντὸς τῶν θρυαλλιδοδοχῶν τοῦ μυκτῆρος τοποθετουμένων θρυαλλίδων τῆς λυχνίας τοῦ φάρου. Κυκλικῆς τομῆς πάντοτε καὶ δὴ ἐν σχήματι δακτυλίου, δύνανται νὰ εἶναι μόνον μία ὡς εἰς τοὺς μικροὺς φάρους (*λυχνίαι μονόμυξοι*) ἢ πλείονες τῆς μιᾶς, μέχρις ἕξ, συγκεντρικῶς τοποθετημέναι, ὡς εἰς τοὺς μεγάλους φάρους (*λυχνίαι πολύμυξοι: δίμυξοι* ἕως *ἑξάμυξοι*). Ὑπάρχουσι δὲ δύο ὑποδείγματα μυξῶν, αἱ ἀρτίας τάξεως, ἔχουσαι μεσαίας διαμέτρους 2, 4, 6, 8, 10, 12 ἑκατοστά, καὶ αἱ περιττῆς τάξεως, ἔχουσαι μεσαίας διαμέτρους 3, 5, 7, 9, 11, 13 ἑκατοστά. Αἱ πρόοδοι τῶν ἐπινοήσεων εἰς τὸν διὰ πυρακτώσεως φωτισμὸν τῶν φάρων, τόσον ἀπὸ πετρελαιοατμῶν, ὅσον καὶ ἀπὸ ἀερίου Νταλλέν, ἐκτοπίζουν ὁλονὲν τὰς μύξας, αἵτινες τελικῶς θὰ περιορισθοῦν μόνον εἰς τοὺς φανοὺς λιμένων τοὺς διὰ πετρελαίου φωτίζοντας. Σ. Ε. Λ.

**Μύξα** *[Γεωγρ.]*. Μικρὰ νῆσος τῆς Προποντίδος (πλάτ. 40° 27' 15" Β., μήκ. 28° 05' 45" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara) ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Περάμου καὶ τῇ συστάδι Μολὰ-Ἀντασσί. Σ. Ε. Λ.

**μυξαδενία** (ἡ) (myxadénie) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται τὸ ἄθροισμα παθολογικῶν συνδρομῶν, τὰς ὁποίας προκαλεῖ ἡ ἀνατομικὴ βλάβη ἢ αἱ λειτουργικαὶ διαταραχαὶ τῆς ὑποφύσεως τοῦ ἐγκεφάλου ἢ τοῦ μυξαδένος. Ἡ ἔλλειψις ἢ ἡ ἀνεπάρκεια, εἴτε καὶ ἡ ὑπερβάλλουσα λειτουργία τῆς ἐσωτερικῆς ἐκκρίσεως τοῦ ἀδένος τούτου τοῦ ἐγκεφάλου, ἔχει ὡς ἐπακολούθημα διαφόρους παθολογικὰς καταστάσεις, οἷον τὴν πολυουρικὴν συνδρομήν, ἤτοι τὸν ἄποιον καλούμενον διαβήτην, τὴν ὑπερπιμέλωσιν τοῦ Froechlich, παρακολουθουμένην ὑπὸ ἀτροφίας τῶν γεννητικῶν ὀργάνων, τὴν μεγαλακρίαν, τὸν γιγαντισμὸν ἢ ἐξ ἀντιθέτου τὸν νεανισμόν, τὴν ἐπώδυνον ὑπερλίπωσιν ἢ νόσον τοῦ Dercum κλπ. Μ. Ν. Κ.

**μυξαδενικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μυξαδένα, ὁ τοῦ μυξαδένος· || ὁ ἔχων πάθησιν τοῦ *μυξαδένος* (βλ. λ.).

**μυξαδὴν** (ὁ), ἢ *ὑπόφυσις* (ἡ) *[Ἀνατομ.]*. Κατασκηνοῖ οὗτος ἐντὸς τοῦ βόθρου τοῦ ἐφιππίου τοῦ σφηνοειδοῦς ὀστοῦ, ἀπηρτημένος ὢν διὰ μίσχου ἀπὸ τῆς χοάνης (τοῦ ἐγκεφάλου) καὶ καλυπτόμενος ἄνωθεν ὑπὸ τοῦ ὁριζοντίου πετάλου τῆς σκληρᾶς μήνιγγος. Παριστᾷ σῶμα ᾠοειδές, πεπλατυσμένον ἐκ τῶν πρόσω πρὸς τὰ ὀπίσω, ἐρυθρόφαιον τὴν χροιάν, τὴν δὲ σύστασιν μᾶλλον ἢ ἧττον στερράν. Ἀποτελεῖται δ' ἐκ δύο λοβῶν διακρίτων, διαφόρων τὴν κατασκευὴν καὶ τὴν καταγωγήν, τοῦ *προσθίου* ἢ *στοματικοῦ* καὶ τοῦ *ὀπισθίου* ἢ *ἐγκεφαλικοῦ*. Καὶ ὁ μὲν πρόσθιος λοβὸς διεπλάσθη ἐξ ἐκκολπώματος τοῦ ἀρχεγόνου στόματος, διὸ παριστᾷ πρόσθετον μοῖραν ὑποπεφυκυῖαν τῷ ἐγκεφάλῳ· ὁ δ' ὀπίσθιος, μικρότερος ὤν, εἶναι προσεκβολὴ τοῦ ἐδάφους τῆς 3ης κοιλίας τοῦ ἐγκεφάλου. Οὕτω δὲ δύο βλαστήματα διαφόρου προελεύσεως συναφθέντα ἀπαρτίζουσι τὸν μυξαδένα. Μεταξὺ δὲ τῶν δύο τούτων λοβῶν παρεμβάλλεται ὁ *διάμεσος λοβός*, μηνοειδὴς τὸ σχῆμα, εἰς οὗ τὸ κοῖλον ἐναρμόζεται ὁ ὀπίσθιος λοβός. Καὶ ὁ μὲν πρόσθιος λοβὸς εἶναι ἀδενικός, παριστῶν ἀδένα ἐνδοκρινῆ, ὅστις ἐκκρίνει οὐσίαν αὐξάνουσαν πιθανῶς τὴν πίεσιν τοῦ αἵματος, συμβάλλουσαν δ' εἰς τὸν σχηματισμὸν τῶν ἱστῶν, τὴν ἀνάπτυξιν τοῦ σώματος καὶ εἰς τὴν ὀστεογονίαν· συνίσταται δ' ἐκ κυττάρων ἐμφανιζόντων χαρακτῆρας ἀδενικῶν κυττάρων. Ὁ ὀπίσθιος λοβὸς σύγκειται ἐκ νευρικῶν κυττάρων καὶ ἰνῶν, κυρίως νευρογλοιακῶν. Ὁ δὲ διάμεσος λοβὸς ἀποτελεῖται ἐκ κυττάρων ἐκκρινόντων οὐσίαν κολλοειδῆ, ἥτις εἰσδύεται εἰς τὸν ὀπίσθιον λοβὸν καὶ ἐντεῦθεν διὰ τοῦ ὑποφυσικοῦ μίσχου ἢ διὰ τοῦ ἐγκεφαλονωτιαίου ὑγροῦ διαχέεται εἰς τὸν ὀργανισμόν, δρῶσα ἐπὶ τῆς συστολῆς τῶν λείων μυϊκῶν ἰνῶν (τῶν αἱμοφόρων ἀγγείων, τῶν ἐντέρων, τῆς μήτρας κλπ.), ἐπὶ τῆς γλυκομετρουργίας καὶ τῆς διουρήσεως. Ἐν γένει δ' ὁ μυξαδὴν εἶναι ὄργανον ἀπαραίτητον τῇ ζωῇ· ἡ ἀφαίρεσις αὐτοῦ ἢ ἡ αὐτόματος καταστροφὴ ἐπάγονται μαρασμώδη κατάστασιν, ἐξασθένησιν, οἰδήματα, καχεξίαν χαρακτηριστικήν, ἅτινα ἄλλως τε μετριάζονται ἢ ἀνακόπτονται δι' ἐνέσεων ἐκχυλίσματος ὑποφυσικοῦ (μυξαδένος). Ι. Π.

—*[Φυσιολ.]* Ὁ *μυξαδήν*, παρὰ τὴν σμικρότητά του, ἀσκεῖ σπουδαιοτάτας ἐπιδράσεις ἐπὶ τὸν ὀρ-

Digitized by Google

γανισμόν, διότι ἐκ τῆς κανονικῆς λειτουργίας αὐτοῦ ἐξαρτᾶται κατὰ μέγα μέρος ἡ σωματική, ἐν μέρει δὲ καὶ ἡ ψυχικὴ τοῦ ἀτόμου ἐξέλιξις. Ἐξ ἀνωμάλου λειτουργίας τοῦ μυξαδένος προέρχονται ποικίλαι τοῦ σώματος διαταραχαὶ καὶ πολλαὶ ἄλλαι σωματικαὶ ἀνωμαλίαι (βλ. λ. *μυξαδενία*), συνοδευόμεναι ἐνίοτε καὶ ὑπὸ ψυχικῶν διαταραχῶν, ἤτοι διαλείψεων τῆς μνήμης, καταπτώσεως τοῦ συναισθηματικοῦ βίου, νωθρότητος, ὑπνηλίας. Ἐξαίρεσις δὲ τοῦ μυξαδένος ἔχει ὡς ἐπακολούθημα ἐλάττωσιν τῆς θερμοκρασίας, ἰσχνότητα καὶ σπασμούς.
Τ. ΣΤΡ.

**μυξάζω**· ἔχω μύξας, εἶμαι μυξιάρης.

**μυξῆς** (ὁ), καὶ *μύξης*, θηλ. *μυξοῦ*, οὐδ. *μύξικο*· ἐκεῖνος, ἐκ τῶν ρωθώνων τοῦ ὁποίου ρέουν μύξαι· || προσηγορία εὐτελιστική: «αὐτὴ ἡ μυξοῦ».

**μυξιάρης** (ὁ), θηλ. *—άρα*, οὐδ. *—άρικο*· ἄλλως *μυξῆς* (βλ. λ.): «μυξάρικο παιδί».

**Μυξιάταις** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Μεξιάταις*.

**μυξικόλη** (ἡ) (Myxicola) *[Ζῳολ.]*. Γένος σκωλήκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κρικωτῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἑρπυλιδῶν*, περιλαμβάνον εὐμεγέθεις θαλασσίους σκώληκας φθάνοντας εἰς μῆκος 10 περίπου ἑκατοστομέτρων. Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τὴν Μεσόγειον θάλασσαν.
Δ. Ν. Π.

**μυξινάρι** (τό), καὶ *μουξινάρι*, ἢ *λεφτάκι* *[Ζῳολ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ *μυξίνου* (βλ. λ. *κέφαλος*).

**μυξίνη** (ἡ) *[Χημ.]*. Συνώνυμον τοῦ *μυκῖναι* (βλ. λ.).

**μυξινίδαι** (οἱ) (Myxinidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἰχθύων κυκλοστόμων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀνοικτορρωθώνων*, περιλαμβάνουσα σκωληκομόρφους ἰχθῦς ζῶντας παρασιτικῶς ἐπὶ ἑτέρων ἰχθύων. Τὸ σῶμά των εἶναι γυμνὸν καὶ φέρει τέσσαρα ζεύγη τριχοειδῶν ἀποφύσεων, ἐν εἴδει γενείων, ἐπὶ τῆς κάτω σιαγόνος. Εἰς τὰ πλάγια τοῦ σώματος καὶ κατὰ μῆκος φέρουσι μεγάλους βλεννογόνους θυλάκους καὶ ἑκατέρωθεν τοῦ λαιμοῦ ἀνὰ ἓν βραγχιῶδες τρῆμα. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μυξῖνος* (βλ. λ.).
Δ. Ν. Π.

**μυξῖνος** (ὁ) (Myxinus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἰχθύων κυκλοστόμων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυξινιδῶν*, περιλαμβάνον σκωληκοειδεῖς ἰχθῦς μετρίου μεγέθους, τυφλούς, γυμνοὺς λεπίων, οἵτινες διεισδύουσιν εἰς τὸ σῶμα ἑτέρων ἰχθύων, ὧν διατρυποῦσι τοὺς ἱστούς. Τὸ μόνον γνωστὸν εἶδος εἶναι ὁ *μυξῖνος ὁ πηκτωματώδης* (Myxinus glutinosus), ὅστις ἀπαντᾷ εἰς τὰ παράλια τῆς Εὐρώπης καὶ Ἀμερικῆς.
Δ. Ν. Π.

**— μυξῖνος** *[Ζῳολ.]*· βλ. λ. *κέφαλος*.

**μυξοβακτήρια** (τὰ) *[Μικροβιολ.]*. Ἡ δευτέρα τάξις τῶν βακτηρίων, ἡ ὁποία ἀκολουθεῖ τὴν τάξιν τῶν κυρίως βακτηρίων. Περιλαμβάνει βακτήρια περικλειόμενα εἰς βλεννώδεις μάζας κατ' ἀποικίας, αἱ ὁποῖαι ζῶσι σαπροφυτικῶς ἐπὶ τῆς κόπρου ζῴων. Αἱ βλεννώδεις μᾶζαι ὁμοιάζουν κατ' ἀρχὰς μὲ πλασμώδια, τὰ ὁποῖα κατόπιν λαμβάνουν σταθερὰν μορφὴν διὰ τοῦ σχηματισμοῦ στερεοῦ λεπτοῦ περιβλήματος. Σχηματίζουν ζωηρῶς χρωματισμένα καρποφόρια, ἐντὸς τῶν ὁποίων τὰ κατ' ἀρχὰς ῥαβδοειδῆ κύτταρα μεταβάλλονται εἰς σφαιρικὰ σπόρια. Τὰ καρποφόρια εἶναι ἄνευ μίσχου κύστεις, αἱ ὁποῖαι ὅμως φέρονται πολλαὶ ὁμοῦ ἐπὶ κοινοῦ μίσχου. Ἐκ τῶν διαρρηγνυομένων κύστεων ἐξέρχονται ραβδοειδῆ, κινούμενα, ἀλλ' ἄνευ μαστιγίου, κύτταρα, προερχόμενα ἐκ τῶν σπορίων, τὰ ὁποῖα πάλιν σχηματίζουν νέας ἀποικίας κ.ο.κ. Ἡ τάξις περιλαμβάνει μίαν μόνον οἰκογένειαν μὲ τὰ γένη *μυξόκοκκος, χονδρομύκης, πολυάγγειον* κλπ.
Θ. ΒΛ.

**μυξογάστερες** (οἱ) *[Βοτ.]*· βλ. *μυξομύκητες*.

**μυξοθαλόφυτα** (τὰ) *[Βοτ.]*· βλ. *μυξομύκητες*.

**μυξοίδημα** (τὸ) (muxoedème) *[Ἰατρ.]*. Συνδρομὴ ἐμφανιζομένη μετὰ χειρουργικὴν ἀφαίρεσιν ἢ ἕνεκα διαφόρων παθήσεων τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος. Ὡς πιθανὰ αἴτια φέρονται αἱ ποικίλαι λοιμικαὶ νόσοι, ὀξεῖαι καὶ χρόνιαι, αἱ δημιουργοῦσαι συνηθέστατα θυρεοειδίτιδα, καταλήγουσαν σιωπηρῶς εἰς τὴν σκλήρυνσιν καὶ ἀτροφίαν τῶν ὀργάνων.

*Ἐγχειρητικὸν μυξοίδημα*. Τοῦτο ἀφορᾷ τὴν ὁλικὴν ἐξαίρεσιν τοῦ ἀδένος· ἀρκεῖ δὲ τὸ τρίτον τοῦ ἀδένος νὰ παραμείνῃ ἐν τῇ θέσει αὐτοῦ, ὅπως μὴ ἐμφανισθῇ ἡ καχεξία. *Τὸ συγγενὲς μυξοίδημα* ἀπορρέει πάντοτε ἐκ τῆς ἐλλείψεως τοῦ θυρεοειδοῦς σώματος· τὸ δὲ *ἐπίκτητον* ἐξ ἀτροφικῆς καὶ σκληρυντικῆς θυρεοειδίτιδος. Ἡ σκλήρυνσις τοῦ ὀργάνου εἶναι ὁλική, ἐν τῇ ἀρχῇ ὅμως εὑρίσκονται σωρεῖαι στρογγύλων κυττάρων εἰς τὸ τοίχωμα τῶν ἀδένων καὶ πολλαπλασιασμὸς τοῦ ἐπιθηλίου. Πᾶσα πάθησις τοῦ θυρεοειδοῦς, καταλήγουσα εἰς τὴν ἀναστολὴν τῶν λειτουργιῶν αὐτοῦ, ἄγει εἰς τὸ μυξοίδημα. Ἡ διήθησις τοῦ ὑποδορίου κυτταρώδους ἱστοῦ ὑπὸ βλεννοειδοῦς οὐσίας εἶναι συνηθεστάτη καὶ γνωστοτάτη ἀλλοίωσις, ὡσαύτως καὶ ἡ ἀληθὴς λιπωμάτωσις. Τὰ πρῶτα συμπτώματα τοῦ ἐγχειρητικοῦ μυξοιδήματος ἐμφανίζονται 3—4 ἡμέρας ἀπὸ τῆς ἀφαιρέσεως τοῦ ἀδένος. Ἀδυναμία καὶ αἴσθημα ψύξεως εἰς τὰ ἄκρα, διήθησις βλεννώδης καὶ ἀποχρωματισμὸς τοῦ καλυπτηρίου συστήματος, ἀναστολὴ τῆς λειτουργίας τοῦ δέρματος, ἰδιάζουσα ἐγκεφαλικὴ νάρκη εἶναι τὰ συμπτώματα, ἅτινα ἐγκαθίστανται διαδοχικῶς, εὑρισκόμενα καὶ εἰς τὸ παθολογικὸν μυξοίδημα. Ἡ νόσος ὑποχωρεῖ καὶ ἰᾶται, ἀλλὰ τότε πρόκειται ἀναμφισβητήτως περὶ μερικῆς ἀφαιρέσεως τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος. Ἂν τὸ ἐξοφθάλμιον μυξοίδημα ἀπορρέῃ ἐκ τῆς ἀφαιρέσεως τοῦ θυρεοειδοῦς παρὰ παιδίῳ πάσχοντι, ἡ ἀνάπτυξις τούτου ἀναστέλλεται καὶ ἐπιφαίνονται βαρεῖαι διανοητικαὶ διαταραχαί, προστιθέμεναι εἰς τὰς τοῦ συγγενοῦς μυξοιδήματος.

*Μυξοίδημα παθολογικὸν παρὰ τῷ ἐνηλίκῳ*. Ἡ ἔναρξις εἶναι γενικῶς λαθραία, ἡ δὲ νόσος ἐξελίσσεται εἰς τρεῖς περιόδους. Ἐν πρώτοις ἐμφανίζεται ἡ βλεννοειδὴς διήθησις τοῦ δέρματος, τὸ δὲ χόριον καὶ ὁ κυτταρώδης ἱστὸς διηθοῦνται ὑπὸ κολλώδους οὐσίας. Τὸ δέρμα εἶναι οἰδαλέον, ὑπότρεμον, ἐλαστικόν, χάνει τὴν μαλθακότητα αὐτοῦ, κιτρινωπὸν τὴν χροιάν· διὰ τῆς δακτυλικῆς πιέσεως δὲν προκαλεῖται ἡ ἐντύπωσις τοῦ οἰδήματος. Τὰ χείλη εἶναι παχέα, ἡ ρὶς πεπλατυσμένη, τὸ δὲ καθόλου πρόσωπον ὁμοιάζει πρὸς πανσέληνον. Οἱ πόδες καὶ αἱ χεῖρες εἶναι ἐξῳδημένα καὶ ἀποβαίνουσι παχυδερμικά· ἡ ἐπιδερμὶς ἀποξηραίνεται, ἡ ἔκκρισις τοῦ ἱδρῶτος ἀναστέλλεται, τὸ τριχωτὸν τῆς κεφαλῆς, τὰ βλέφαρα, αἱ βλεφαρίδες, αἱ τρίχες ἐν γένει ἀραιοῦνται, ἡ δὲ γλῶσσα καὶ ὁ βλεννογόνος στόματος καὶ φάρυγγος παχύνονται. Μετά τινας μῆνας ἐμφανίζεται ἔντονος μυασθενία καὶ ψυχικαὶ διαταραχαί, ἐξαγγελλόμεναι διὰ μελαγχολίας, διανοητικῆς καταπτώσεως καὶ ἀπολύτου ἀδιαφορίας. Ὁ σφυγμὸς βραδύνεται καὶ ἡ θερμοκρασία ὑποβιβάζεται εἰς 35° καὶ 33°, ὁ δὲ ἄρρωστος ἔχει ἰδιάζουσαν αἴσθησιν ψύχους. Εἰς τὴν περίοδον ταύτην ἡ ἀτροφία τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος εἶναι σταθερά, κατ' ἐξαίρεσιν δ' ὑπερτρέφεται οὗτος· ἂν δὲ δὲν ἐπεμβῶμεν δι' εἰδικῆς θεραπείας, ὁ πάσχων φέρεται βαθμηδὸν πρὸς τὴν παχυδερμικὴν καχεξίαν καὶ ὁ θάνατος ἐπακολουθεῖ ἀσφαλῶς κατὰ τὴν τρίτην περίοδον· εἰδικὴ ὅμως θεραπεία ἀναστέλλει τὴν πρόοδον τῆς περιόδου ταύτης.

*Συγγενὲς μυξοίδημα. Μυξοιδηματώδης ἠλιθιότης* (idiotie myxoedémateuse). Παρατηρεῖται ἀπὸ τῆς ἡλικίας τῶν δύο ἐτῶν ἢ καὶ ἐνωρίτερον. Ἡ ἔλλειψις τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος καὶ ἡ διήθησις τοῦ δέρματος ἀπαντῶσιν εἰς τὰ παιδία καὶ εἰς τοὺς ἐνηλίκους, ἡ δὲ ἀναστολὴ τῆς νοητικῆς ἢ σωματικῆς ἀναπτύξεως χαρακτηρίζει τὴν μυξοιδηματώδη ἠλιθιότητα. Δὲν ἐξελίσσεται αὕτη, διότι δὲν παρατηροῦνται διαδοχικαὶ περίοδοι καὶ δὲν καταλήγει εἰς τὴν καχεξίαν· παρατηρεῖται ἡ αὐτὴ κατάστασις ἀπὸ τῆς πρώτης ἡμέρας τῆς ἐμφανίσεως μέχρι τῆς τελευταίας. Ὁ πάσχων δὲν ἀντελήφθη τῆς ζωῆς· ἡ γενικὴ θρέψις, βραδυνομένη μεγάλως, καθ' ἣν ἐποχὴν ἔπρεπε νὰ εἶναι ἐν ζωτικότητι, μόλις ἐπαρκεῖ πρὸς συντήρησιν ἀτόμου ἀνωφελοῦς, παχέος, ἀπαθοῦς, ἄνευ πρωτοβουλίας, ἄνευ ἀναγκῶν, σχεδὸν ἄνευ ὁρμεμφύτων. Ἡ καρδία πάλλεται, οἱ πνεύμονες ἀναπνέουσιν, ἀλλ' ὁ ἐγκέφαλος παραμένει βεβυθισμένος ἐν τῇ ἐμβρυϊκῇ αὐτοῦ νάρκῃ καὶ οὐδὲν δύναται νὰ ἐξεγείρῃ αὐτόν. Ἡ μυξοιδηματώδης βλακεία ἢ ἠλιθιότης ἀναπαράγεται καὶ πειραματικῶς παρὰ τοῖς νεαροῖς ἀτόμοις, ὧν ἀφῃρέθη ὁ θυρεοειδὴς ἀδήν. Τὸ μυξοίδημα θεωρεῖται τροφικὴ διαταραχὴ προερχομένη ἐκ τῆς ἀφαιρέσεως τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος, τὰ δὲ ἀποτελέσματα ταύτης ποικίλλουσιν ἀναλόγως τῆς ἡλικίας τοῦ ἀτόμου.

Τὸ μυξοίδημα διαγιγνώσκεται εὐχερῶς ἀπὸ τῶν μαλθακῶν εὐπιέστων οἰδημάτων, τῶν ἐκ καρδιοπαθειῶν ἢ παθήσεων τῶν νεφρῶν, τῆς λιπωματώσεως ἢ τῆς μεγαλακρίας. Ὑφίστανται σχέσεις τινὲς τοῦ μυξοιδήματος πρὸς τὴν ἐξοφθάλμιον βρογχοκήλην. Ἡ αὔξησις τῆς λειτουργίας τοῦ θυρεοειδοῦς δύναται βαθμηδόν, δι' ἐξαντλήσεως αὐτοῦ, ν' ἀντικατασταθῇ ὑπὸ ἐλαττώσεως τῆς λειτουργίας αὐτοῦ. Ἡ βρογχοκήλη δ' ὑφ' ἧς πάσχουσιν ἄτομά τινα εἶναι συνήθως κληρονομική.

*Θεραπεία*. Ἡ κατάλληλος δίαιτα τῶν τροφῶν, ἀποφυγὴ ἐρεθιστικῶν καὶ διεγερτικῶν ἐν γένει· καταπολέμησις τῆς ραχίτιδος καὶ τῆς κληρονομικῆς συφίλιδος παρὰ τοῖς παιδίοις, κυρίως δὲ ἡ εἰδικὴ ὀποθεραπεία διὰ τῆς χορηγίας προσφάτου θυρεοειδοῦς ἀδένος ἢ τῆς θυρεοειδίνης εἰς δισκία.
Μ. Ν. ΚΑΪΡΗΣ

**μυξοκήλη** (ἡ) (mucocèle) *[Ἰατρ.]*. Οὕτω καλεῖται ὄγκος σχηματιζόμενος ὑπὸ τῆς βλέννης (μύξας), ὡσαύτως δὲ καὶ ὄγκοι σχηματιζόμενοι ὑπὸ τοῦ δακρυϊκοῦ σάκκου, ὅταν οἱ δακρυοφόροι ἀγωγοὶ δὲν εἶναι διηθητοί, εὐδιαπέραστοι καὶ ὅταν καὶ αὐτὸς ὁ ρινικὸς πόρος εἶναι ὡσαύτως ἐμπεφραγμένος.
Μ. Ν. Κ.

**μυξομάντηλο** (τό)· δημοτ., μαντήλι γιὰ τὶς μύξες, ρινόμακτρον.

**μυξομύκητες** (οἱ) (Myxomycetes) *[Βοτ.]*. Ὑπάθροισμα τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μυκήτων*. Οἱ μυξομύκητες χαρακτηρίζονται ὑπὸ θαλλοῦ σχηματιζομένου ὑπὸ γυμνῶν μεμβράνης κυττάρων, ἅτινα κάμνουν ἐλαχίστας κινήσεις καὶ συνάπτονται μεταξύ των, ἀποτελοῦντα πρωτοπλασματικὰς μάζας (*πλασμώδια*). Ὁ θαλλὸς ζῇ συνήθως ἀναλώμασι φυτικῶν συντριμμάτων, ξηρῶν φύλλων κτλ., ἐπὶ τῆς ἐπιφανείας τῶν ὁποίων ἕρπει ὡς εὐμεγέθης ἀμοιβάς. Ἐνίοτε ὁ μικροσκοπικὸς θαλλὸς εἶναι μόλις ὁρατὸς διὰ γυμνοῦ ὀφθαλμοῦ καὶ σπανίως λαμβάνει ἀρκετὰς διαστάσεις, σχηματίζει δὲ συνήθως πλάκας διαστάσεων 20—30 ἑκατ. μήκους καὶ 2—3 διαμέτρου. Εἴδη τινὰ μυξομυκήτων ζῶσιν ἐντὸς τοῦ ὕδατος. Οὐδέποτε παρετηρήθη εἰς τὰ μικροσκοπικὰ ταῦτα φυτὰ σχηματισμὸς ᾠαρίων, ἀλλὰ σπορίων περιβαλλομένων ὑπὸ κυτταρώδους συστάσεως μεμβράνης. Γενικῶς τὰ σπόρια ἐξαπλοῦσι τὸ πρωτοπλασματικὸν σῶμά των πρὸς τὰ ἔξω, ἐξέρχονται τῆς μεμβράνης καὶ προσομοιάζουσι πρὸς ἀληθῆ ἀμοιβάδα καλουμένην *μυξαμοίβην*, ἥτις τρέφεται, ἀναπτύσσεται καὶ πολλαπλασιάζεται διὰ διαδοχικῶν καταμερισμῶν. Αἱ θυγατρικαὶ μυξαμοῖβαι ἀποχωρίζονται μετ' ὀλίγον τῆς μυξαμοίβης μητρός, διὰ νὰ εὕρωσι μόναι τὴν τροφήν των. Εἰς δυσμενεῖς ἐξωτερικὰς περιστάσεις αἱ θυγατρικαὶ μυξαμοῖβαι διὰ νὰ προφυλαχθῶσιν ἀπὸ τῶν ἐξωτερικῶν ἐπιδράσεων ἐγκυστοῦνται ἐντὸς μεμβράνης.
Δ. Ν. Π.

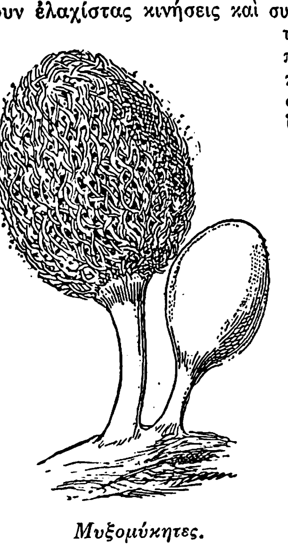

*Μυξομύκητες.*
[1) Δύο μυξαμοιβάδες μετὰ τὸν χωρισμὸν αὐτῶν.—2) Συγκρότημα πολλῶν μυξαμοιβάδων, ἐγκεκλεισμένων ὁμοῦ μετὰ ξένων σωμάτων εἰς ἑνιαῖον πλασμώδιον (ὑπὸ μεγέθυνσιν).]

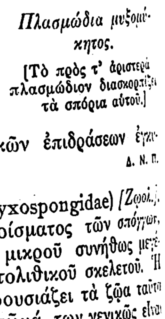


*Πλασμώδια μυξομύκητος.*
[Τὸ πρὸς τ' ἀριστερὰ πλασμώδιον διασκορπίζει τὰ σπόρια αὐτοῦ.]

**μυξοσπογγίδαι** (οἱ) (Myxospongidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν σπόγγων, περιλαμβάνουσα σπόγγους, μικροῦ συνήθως μεγέθους, ἀμοιροῦντας ἀσβεστολιθικοῦ σκελετοῦ. Ἡ ἔλλειψις τοῦ σκελετοῦ παρουσιάζει τὰ ζῷα ταῦτα μὲ διάφορον μορφήν. Τὸ σῶμά των γενικῶς εἶναι μαλακὸν καὶ σποραδικῶς φέρει μικρὰ σωμάτια τετάνου ἢ ἀσβέστου ἢ πυριτίου. Κυριώτερον γένος εἶναι ὁ *μυξόσπογγος* (Myxospongus), ὅστις παρουσιάζει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τῆς οἰκογενείας.
Δ. Ν. Π.

**μυξόσπογγος** (ὁ) *[Ζῳολ.]*· βλ. *μυξοσπογγίδαι*.

**μυξοσπορίδια** (τὰ) *[Μικροβ.]*. Τάξις τῶν σποροζῴων πρωτοζῴων, περιλαμβάνουσα ἀποκλειστικῶς μονοκυττάρους ὀργανισμούς, ζῶντας παρασιτικῶς ἐπὶ ἀμφιβίων, ἑρπετῶν καὶ ἰδίᾳ ἰχθύων, εἰς τοὺς ὁποίους προξενοῦν οὗτοι μεγάλας καταστροφάς. Ἡ μορφὴ αὐτῶν εἶναι διάφορος. Οὕτω τὰ παρασιτοῦντα εἰς τὴν οὐροδόχον καὶ τὴν χοληδόχον κύστιν ἀποτελοῦνται ἀπὸ ἀμοιβαδοειδὲς πλασματικὸν σῶμα, τὸ ὁποῖον φθάνει ἐνίοτε διάμετρον 4—5 μικροχιλιοστομέτρων, ἐνῷ τὰ παρασιτοῦντα ἐντὸς ἱστῶν ἔχουν σχῆμα κύστεων, διαμέτρου πολλάκις 1–3 [illegible]. Τὰ μυξοσπορίδια πολλαπλασιάζονται διὰ σπορίων, ὑποδιαιροῦνται δὲ εἰς ἓν μικρότερον ἄθροισμα (τῶν *δισπόρων*) καὶ εἰς ἓν μεγαλύτερον (τῶν *πολυσπόρων*), τὸ ὁποῖον περιλαμβάνει τρεῖς οἰκογενείας. Εἰς τὸ ἄθροισμα τοῦτο ὑπάγονται τὰ παράσιτα τῶν ἰχθύων, ὡς λ. χ. ὁ *μυξόβολος* τοῦ *Πφάϊφερ*, ὁ ὁποῖος προκαλεῖ ἐξοιδήματα ἐπὶ τῶν τριγλίδων (μπαρμπούνια), ὁ *μυξόβολος ὁ νευρικός*, παράσιτον τοῦ νευρικοῦ συστήματος τῆς τρώκτης, ὁ *μυξόβολος τοῦ κυπρίνου*, ὁ ὁποῖος θεωρεῖται ὡς αἴτιον τῆς λεγομένης εὐλογίας τῶν κυπρίνων καὶ παρασιτεῖ εἰς τοὺς νεφροὺς τοῦ ἰχθύος. Ὑπάρχουν ὅμως καὶ παράσιτα εἴδη ἀβλαβῆ.
Θ. ΒΛΗΣΙΔΗΣ

**μυξοχόνδρωμα** (τὸ) (Chondroma myxomatodes). Βλάστωμα ἀποτελούμενον ἐκ χονδρικοῦ καὶ βλεννώδους ἱστοῦ. Εἶναι μᾶλλον κακόηθες, ἀνήκει δὲ εἰς τὰς δὴ καλουμένας μεικτὰς ἢ συνθέτους μορφὰς τοῦ χονδρώματος, εἰς ἃς πλὴν τοῦ μυξοχονδρώματος ἀνήκουσι καὶ τὸ ἰνοχόνδρωμα καὶ τὸ ὀστεοχόνδρωμα. Ὡς πρὸς τὴν μορφικὴν ἐξέλιξιν τοῦ μυξοχονδρώματος δυνάμεθα νὰ φαντασθῶμεν ὅτι τὸ ἀρχικὸν μητρικὸν βλάστημα τῆς ἐρειστικῆς οὐσίας (ἡ καταβολὴ τοῦ ὄγκου) διαφοροποιεῖται κατὰ δύο διαφόρους κατευθύνσεις, ἤτοι ἀφ' ἑνὸς

Digitized by Google

μὲν εἰς βλεννώδη ἱστόν, ἀφ' ἑτέρου δ' εἰς χονδρικὸν ἱστόν. Συναντῶμεν ὅμως καὶ εἰς τελείως ὥριμα χονδρώματα μίαν δευτερογενῆ μυξωματώδη μεταβολήν, καθ' ἣν ἡ μὲν μεσοκυττάριος χονδρίνη οὐσία μεταβάλλεται εἰς βλεννώδη οὐσίαν (τὴν *βλεννίνην* ἢ *μυξίνην*), τὰ δὲ χονδρικὰ κύτταρα εἰς ἀστεροειδῆ κύτταρα, ἀναστομούμενα διὰ λεπτῶν ἀποφυάδων εἰς δίκτυον. Θ. Σ.

**μυξώδης** (ὁ, ἡ), —*ες* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μύξαν, γλοιώδης· || ὁ γεμᾶτος ἀπὸ μύξαν.

**μύξωμα** (τό), ἢ *μυξοβλάστωμα*. Καλόηθες νεόπλασμα, τοῦ ὁποίου τὸ ὀγκικὸν παρέγχυμα ἀποτελεῖται ἀποκλειστικῶς ἐκ διαφανοῦς βλεννώδους ἱστοῦ, ὁμοίου πρὸς τὸν φυσιολογικῶς ἐν τῇ ὀμφαλίδι παρουσιαζόμενον πηκτοειδῆ βλεννώδη ἱστὸν τοῦ Wharton. Τὰ μυξώματα μακροσκοπικῶς εἶναι κομβοειδεῖς, πολυποειδεῖς, μαλακοί, φαιόλευκοι ἢ φαιοέρυθροι καὶ χυμοβριθεῖς νεοσχηματισμοί, οἵτινες κατὰ κανόνα εἶναι πλούσιοι εἰς ἀγγεῖα. Πολὺ σπανίως παρατηροῦμεν τοπικὰς ὑποτροπιάσεις ἢ καὶ μεταστάσεις ἱστολογικῶς καλοήθων μυξωμάτων. Συνήθεις θέσεις διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῶν μυξωμάτων εἶναι αἱ ἑξῆς: ὁ ὑποδόριος συνδετικὸς ἱστὸς (ἰδίως τῆς ὀμφαλικῆς χώρας), τὸ περιόστεον, ὁ ὑπορογόνιος ἱστὸς (ἰδίως τοῦ μεσεντερίου), ὁ συνδετικὸς ἱστὸς τῶν βλεννογόνων (ἐνίοτε μάλιστα ὡς πολλαπλοῖ ὄγκοι, π.χ. ἐν τῇ οὐροδόχῳ κύστει), ὁ συνδετικὸς ἱστὸς τῶν περιφερικῶν νεύρων (ἐπίσης πολλαπλῆ ἐμφάνισις), ὁ μυελὸς τῶν ὀστῶν, ὁ μαστικὸς ἱστὸς (ἐνταῦθα ὡς μυξαδένωμα), τὸ ἐνδοκάρδιον καὶ αἱ βαλβῖδες τῆς καρδίας. Ἡ διάγνωσις δέον νὰ γίνεται ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἱστολογικῆς ἐξετάσεως καὶ ὄχι μόνον ἐπὶ τῇ βάσει τῆς μακροσκοπικῆς ὄψεως τῆς νεοπλασίας, καθ' ὅσον μακροσκοπικῶς καὶ ἐν ἁπλοῖν οἰδηματῶδες ἴνωμα δυνατὸν νὰ κάμῃ τὴν ἐντύπωσιν μυξώματος. Τοὐναντίον κατὰ τὴν ἱστολογικὴν ἐξέτασιν δυνάμεθα διὰ καταλλήλου εἰδικῆς χρώσεως τῶν νηματίων βλεννίνης (διὰ τῶν χρωστικῶν Muzikarmin, Muzihaematein καὶ ἄλλων) νὰ πεισθῶμεν ἂν πράγματι πρόκειται περὶ ἀληθοῦς βλεννώδους ἱστοῦ (μύξωμα) ἢ ἁπλῶς περὶ οἰδηματώδους διαποτίσεως συνδετικοῦ ἱστοῦ (ἴνωμα). Πλὴν τοῦ καλοήθους τούτου μυξώματος γνωρίζομεν καὶ τὴν σπανιωτέραν κλινικῶς καὶ ἱστολογικῶς κακοήθη μορφήν, ἣν ὀνομάζομεν *μυξοσάρκωμα* (ἢ *μυξοπλαστικὸν σάρκωμα* ἢ *σαρκωματῶδες μύξωμα*). Ἱστολογικῶς διακρίνεται τὸ μυξοσάρκωμα τοῦ ἁπλοῦ μυξώματος ἕνεκα τῆς κυτταροβριθείας καὶ τῆς ἀνωμαλίας ἐν τῇ παραγωγῇ τῆς βλέννης. Τὸ μυξοσάρκωμα εἶναι ἀγγειοβριθές, αἱμορραγικόν, αὐξάνει ταχέως καὶ κάμνει μεταστάσεις εἰς ἕτερα ὄργανα. Θ. Σ.

**μυοασπάλαξ** (ὁ) (Myoaspalax) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τρωκτικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ἀσπαλακιδῶν*, περιλαμβάνον ἀσπάλακάς τινας ἰθαγενεῖς τῶν θερμῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μυοασπάλαξ ὁ λευκομελανὸς* (Myoaspalax albaniger), ὅστις ἔχει μικρὸν μέγεθος, σῶμα φοειδοσφαιροειδές, ρύγχος βραχύ, ὑπὸ σκληρῶν τριχῶν περιβαλλόμενον, πόδας βραχεῖς καὶ χρῶμα μελανὸν κατὰ τὴν ράχιν καὶ λευκὸν κατὰ τὰς πλευρὰς καὶ τὴν κοιλίαν. Ἐνδιαιτᾶται ἐντὸς ὑπογείων στοῶν. Δ. Ν. Π.

*Μυοασπάλαξ ὁ λευκομελανός.*

**μυοβλάστη** (ἡ). Καλοῦνται *μυοβλάσται*: 1) Ὡρισμένα ἄωρα, ἐκ τοῦ μέσου βλαστοδέρματος προερχόμενα, κύτταρα τῶν μυοτομίων τοῦ ἐμβρυϊκοῦ σώματος, ἐξ ὧν ἐξελίσσονται αἱ ἐγκαρσίως γραμμωταὶ μυϊκαὶ ἶνες. 2) Τὰ ἐκ τοῦ μεσεγχύματος προερχόμενα ἀμετάπλαστα προστάδια τῶν λείων μυϊκῶν κυττάρων. 3) Ὁ ὅρος *μυοβλάσται* χρησιμοποιεῖται καὶ ἐν τῇ ζωολογίᾳ δι' ὡρισμένα συσταλτὰ κύτταρα τῶν ἀσπονδύλων ζῴων, ἰδίως τῶν κοιλεντεροζῴων. Τὰ ἐπιθηλιακὰ ταῦτα μυϊκὰ κύτταρα διὰ τοῦ ἑνὸς μὲν ἄκρου αὐτῶν διήκουσι μέχρι τῆς ἐλευθέρας ἐπιφανείας, ἔνθα δύνανται νὰ φέρωσιν ἐπικυττάριον δερμάτιον, μαστίγια ἢ κροσσούς, διὰ τοῦ ἑτέρου δὲ ἄκρου παράγουσι συσταλτὴν οὐσίαν ὑπὸ μορφὴν λεπτοτάτων μυϊκῶν ἰνιδίων.

Συνώνυμα: *μυοβλάστης, μυοπλάστης, σαρκοπλάστης, σαρκοβλάστης, σαρκοβλάστη.* Θ. ΣΚΛΑΒΟΥΝΟΣ

**μυογαλῆ** (ἡ) (Myogale) *[Ζωολ.]*. Γένος ζῴων θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυογαλιδῶν*, περιλαμβάνον ζῷα ἱκανοῦ μεγέθους μὲ σῶμα εὔρωστον, λαιμὸν βραχὺ καὶ χονδρόν, ὀφθαλμοὺς μικροτάτους, ὦτα μικρά, ρύγχος σωληνοειδὲς καὶ τρίχωμα βραχὺ καὶ πυκνόν. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἴδων εἶναι ἡ *μυογαλῆ ἡ πυρηναϊκὴ* (Myogale pyreneensis), ἥτις φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ χρῶμα φαιόν. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυογαλῶν* εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν Εὐρώπῃ. Γ. Κ. Γ.

**μυογαλίδαι** (οἱ) (Myogalidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἐντομοφάγων*, περιλαμβάνουσα ἐλάχιστα εἴδη, ὧν γνωστότερον ἡ *μυογαλῆ* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυογενὴς** (ὁ, ἡ), —*ές* (τό)· ὁ παραγόμενος ἢ ὁ σχηματιζόμενος ἐκ τοῦ μυϊκοῦ ἱστοῦ. Τὸ *μυογενὲς* (Myogen) *τοῦ v. Fürth* εἶναι ὡρισμένον εἶδος λευκώματος, παραγόμενον ἐκ τοῦ μυοπλάσματος (=σαρκοπλάσματος) καὶ μεταβαλλόμενον κατὰ τὴν πῆξιν εἰς τὸ μυογενὲς ἰνῶδες (Myogenfibrin).

*Μυογενὴς θεωρία τοῦ Egelmann.* Κατὰ ταύτην τὰ ἐρεθίσματα τὰ προκαλοῦντα τὴν συστολὴν τῆς καρδίας παράγονται ἐν αὐτῷ τούτῳ τῷ καρδιακῷ μυΐ. Θ. Σ.

**μυογενοφιβρίνη** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *γλοβουλῖναι*.

**μυόγναθος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τὸ) *[Τερατολ.]*. Τερατογονία διπλοῦ τέρατος, παρὰ τῷ ὁποίῳ ἡ ὑπεράριθμος κεφαλὴ εἶναι προσπεφυκυῖα εἰς τὴν κάτω γνάθον τοῦ κυρίως ἀτόμου (τέρατος), συνεχομένη διὰ μυῶν καὶ δέρματος. Μ. Ν. Κ.

**μυογόνον** (τὸ) *[Χημ.]*· βλ. *γλοβουλῖναι*.

**μυογόνος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ παράγων μυϊκὸν ἱστόν.

— **μυογόνος ἱστός.** Καλεῖται οὕτω τὸ σύνολον τῶν ἀρχεγόνων ἐπιθηλιακῶν μυοστομίων (Myomeren), ἅτινα παριστῶσι τὴν πρώτην καταβολὴν τὴν χορηγοῦσαν τὸ ὑλικὸν διὰ τὴν διάπλασιν τῶν ἐγκαρσίως γραμμωτῶν μυῶν τοῦ σώματος. Θ. Σ.

**μυογραφία** (ἡ)· ἡ ἐπιστημονικὴ ἐνασχόλησις περὶ τὴν περιγραφὴν τῶν μυῶν τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ζῴων, ἔτι δὲ τῆς κινήσεως καὶ τῆς λειτουργίας αὐτῶν.

**μυογράφος** (ὁ). Ὄργανον, ὅπερ χρησιμοποιεῖται διὰ τὴν γραφικὴν παράστασιν τῆς συστολῆς τῶν μυῶν. Οἱ μυογράφοι ὑπάγονται εἰς τοὺς κινησιογράφους. Ι.Ν.Μ.

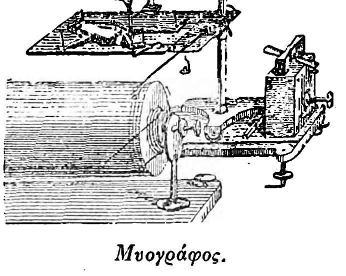

*Μυογράφος.*

**μυοδερμ ατικὸν βραχιόνιον νεῦρον** *[Ἀνατομ.]*. Τὸ παχύτερον τῶν δερματικῶν νεύρων τοῦ βραχίονος. Ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ βραχιονίου πλέγματος κοινῇ μετὰ τῆς ἔξω ρίζης τοῦ μέσου νεύρου, διήκει ἐπὶ τὰ κάτω εἰς τὴν ἔξω αὔλακα τοῦ δικεφάλου μυὸς καὶ ἄνωθεν τῆς κατ' ἀγκῶνα καμπῆς διατιτραῖνον τὴν βραχιόνιον περιτονίαν γίνεται ὑποδόριον (αἰσθητικὸν) καὶ καλεῖται περαιτέρω *ἔξω δερματικὸν νεῦρον τοῦ πήχεως*. Χορηγεῖ δὲ κλωνία εἰς τὸν κορακοβραχιόνιον μῦν, τὸν δικέφαλον καὶ τὸν πρόσθιον βραχιόνιον καὶ κλωνίον εἰς τὸ βραχιόνιον ὀστοῦν. Ι. Π.

**μυοδερμικὸν νεῦρον ἔξω** *[Ἀνατομ.]*. Νεῦρον ἐκ τῶν μακρῶν κλάδων τοῦ ὀσφυϊκοῦ πλέγματος, διέρχεται ὑπὸ τὸν βουβωνικὸν σύνδεσμον καὶ διατιτραῖνον τὴν μηριαίαν περιτονίαν ἀναδύεται ὑπὸ τὸ δέρμα εἰς τὴν ἔξω ἐπιφάνειαν τοῦ μηροῦ καὶ ἀποσχίζεται εἰς 2—3 κλάδους, οἵτινες νευροῦσι τὸ δέρμα τῆς ἔξω καὶ ἐν μέρει τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ μηροῦ, ἀναστομούμενοι κατὰ τὸ γόνυ μετὰ τῶν δερματικῶν κλάδων τοῦ μηριαίου νεύρου. Ι. Π.

**μυοδίτης** (ὁ) (Myodites) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἑτερομερῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *ριπιφοριδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους ἔντομα μὲ κεφαλὴν βραχυτάτην καὶ πεπλατυσμένην, κεραίας φυλλοειδεῖς κατὰ τὸ ἄκρον των, ὀφθαλμοὺς προτεταμένους, προθώρακα ἀρκετὰ ἐπιμήκη καὶ εὐρύτατον, κοιλίαν κυλινδρικήν, ἀπολήγουσαν εἰς τέρετρον, πόδας πολυακανθώτους καὶ πτέρυγας ἐπιμήκεις, ἡμιδιαφανεῖς μετὰ νευρώσεων καταφανῶν. Ἐκ τῶν ἓξ εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερον εἶναι ὁ *μυοδίτης ὁ φυλλόκερως* (Myodites phyllocerus), ὅστις φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους, ἔχει χρῶμα φαιοκίτρινον καὶ ἀπαντᾷ πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

*Μυοδίτης ὁ φυλλόκερως.*

**μυοδοκάρπιον** (τὸ) (Myodocarpium) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σκιαδανθῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἢ δενδρύλλια μὲ φύλλα παλαμοειδῆ καὶ μεγάλα ἄνθη κατὰ βότρυς διατεταγμένα. Γνωστὰ 6 εἴδη ἰθαγενῆ τῆς Νέας Καληδονίας. Δ. Ν. Π.

**μυοδρόμων** *[Ναυτ.]* (κοιν. *γαβάρα* ἢ *μπάρκο*, γαλλ. corvette-à-matereau, ἀγγλ. bark-rigged). Τρίστηλον ἱστιοφόρον πλοῖον, οὗ τὸ πέτασμα τοῦ ἀκατίου ὡς καὶ τὸ τοῦ μεγάλου ἱστοῦ ἔχουν τὰ αὐτὰ τετράγωνα ἱστία, ὡς καὶ παρίστια καὶ προΐστια καὶ ἀναδρομικά, καθὼς καὶ οἱ δρόμωνες, ἀλλὰ τοῦ ὁποίου ὁ ἱστὸς τοῦ ἐπιδρόμου (ὁ πάντων πρυμναῖος) οὐδεμίαν φέρει σταυρωτὴν κεραίαν ἢ τετράγωνον ἱστίον, ἀλλὰ μόνον ἐπίδρομον καὶ λαῖφος. Σ. Ε. Λ.

**μυοθήρας** (ὁ)· ὁ θηρεύων, ὁ κυνηγῶν μῦς: «μυοθήρας κύων».

**μυοθηρῶ** (—*έω*)· θηρεύω μῦς, πιάνω ποντικούς.

**μυοκαρδίασις**, —*άσεως* (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Σύνδρομον καρδιακῆς ἀνεπαρκείας, κλινικῶς πρωτογενοῦς. Διακρίνομεν τὴν *ἀμιγῆ* μυοκαρδίασιν, καθ' ἣν πᾶσα αἰτιολογικὴ ἔρευνα παραμένει ἀρνητική, καὶ τὴν *μικτήν*, ἥτις συνυπάρχει μετ' ἄλλων βλαβῶν τοῦ καρδιαγγειακοῦ συστήματος. Ἡ πάθησις αὕτη περιεγράφη τὸ πρῶτον ὑπὸ τῶν Laubry καὶ Walser κατὰ τὸ 1925. Κατὰ τοὺς συγγραφεῖς τούτους ἡ καρδιακὴ ἀνεπάρκεια δὲν ὀφείλεται εἰς μηχανικόν τι πρόσκομμα περὶ τὴν κυκλοφορίαν, οὔτε εἰς ἀλλοίωσιν τοῦ καρδιακοῦ μυὸς πάντοτε.

***Συμπτωματολογία.*** *Λειτουργικὰ συμπτώματα.* Ἡ ἀρχὴ τῆς νόσου εἶναι πάντοτε ὕπουλος, ἐκδηλουμένη διὰ δυσπνοίας, ἥτις κατ' ἀρχὰς ἀναφαίνεται μετὰ κόπον, ἀργότερον δὲ καθίσταται μόνιμος. Τὸ προκάρδιον ἄλγος σπανίως λαμβάνει τὴν μορφὴν στηθάγχης· συχνότερον πρόκειται περὶ ἐπωδύνων καρδιακῶν παλμῶν ἢ ἁπλοῦ προκαρδίου βάρους.

***Φυσικὰ σημεῖα.*** Ἐκ τῆς ἐπισκοπήσεως ἀνευρίσκομεν τὴν κορυφὴν τῆς καρδίας κάτω καὶ ἔξω τῆς φυσιολογικῆς αὐτῆς θέσεως, ἡ δὲ καρδιακὴ ὦσις εἶναι διάχυτος καταλαμβάνουσα πλείονα τοῦ ἑνὸς μεσοπλεύρια διαστήματα. Ἐκ τῆς ψηλαφήσεως ἀντιλαμβανόμεθα πρὸ τῆς συστολικῆς ὤσεως τῆς καρδίας προσυστολικὴν τοιαύτην· τοῦτο ἀποτελεῖ τὸν ψηλαφητὸν καλπαστικὸν ρυθμόν, ὅστις εἶναι ἔνδειξις μυοκαρδικῆς ὑποτονίας. Ἡ ἐπίκρουσις μᾶς δίδει αὔξησιν τῆς καρδιακῆς ἀμβλύτητος, ἥτις κυρίως ὀφείλεται εἰς ὑπερτροφικὴν διάτασιν τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας. Τὸ ὀρθοκαρδιογράφημα δεικνύει ὁλικὴν αὔξησιν τῆς καρδιακῆς σκιᾶς καὶ ἰδίᾳ τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας.

Κατὰ τὴν ἀκρόασιν, πλὴν τῆς βυθιότητος τῶν καρδιακῶν τόνων, ἀκούει τις καλπαστικὸν ρυθμόν, σημεῖον καρδιακῆς ἀνεπαρκείας· ἀργότερον ἀναφαίνονται φυσήματα λειτουργικῆς ἀνεπαρκείας τῆς μηροειδοῦς ἢ τῆς ἀορτῆς, ὀφειλόμενα εἰς τὴν καρδιακὴν διάτασιν, προαγγέλλοντα δὲ ἀνεπανόρθωτον προσβολὴν τοῦ καρδιακοῦ τόνου. Ἡ ἀρτηριακὴ πίεσις εἶναι φυσιολογική, συνηθέστερον δὲ χαμηλή, ἡ δὲ διαφορικὴ πίεσις εἶναι ἠλαττωμένη. Ἐκ τοῦ ἠλεκτροκαρδιογραφήματος οὐδὲν τὸ παθογνωμονικὸν ἀποκομίζομεν· ἐνίοτε παρατηροῦμεν αὔξησιν τοῦ κύματος Q, R, S, ἢ παρουσίαν ἀγκιστροειδῶν διακοπῶν ἐπὶ τῶν συμπλεγμάτων, ἄλλοτε τέλος ἀναστροφὴν τοῦ κύματος T. Ἡ ἐπιτάχυνσις τοῦ σφυγμοῦ, ὅστις παραμένει ρυθμικός, εἶναι ἄριστον σημεῖον τῆς μυοκαρδιάσεως.

***Κλινικαὶ μορφαί.*** *Ἀμιγὴς μορφὴ ταχέως ἐξελισσομένη.* Ἡ μορφὴ αὕτη παρατηρεῖται εἰς νεαρὰ ἄτομα. Ἡ καρδιακὴ ἀνεπάρκεια παρ' αὐτοῖς λαμβάνει πρωτογενῆ χαρακτῆρα, μὴ δυναμένη ν' ἀποδοθῇ εἰς οὐδὲν αἴτιον τοξικὸν ἢ λοιμῶδες. Ἡ πάθησις ἐξελίσσεται ὅλως ἀθορύβως· κατ' ἀρχὰς αἱ λειτουργικαὶ διαταραχαὶ εἶναι ἐλάχιστοι, ἐνῷ ἡ κλινικὴ ἐξέτασις ἀποδεικνύει σημεῖα σοβαρᾶς προσβολῆς τοῦ μυοκαρδίου. Ταχέως ὅμως ἐμφανίζεται ἡ ἀνεπάρκεια τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας. Τὰ φυσήματα τῆς λειτουργικῆς ἀνεπαρκείας τῶν στομίων ἐγκαθίστανται, οὐδόλως ἐπηρεαζόμενα ὑπὸ τῆς θεραπείας, ὁ δὲ συχνάκις παρατηρούμενος εἰς τὰς περιπτώσεις ταύτας ἐναλλασσόμενος σφυγμὸς εἶναι σημεῖον μυοκαρδικῆς ἀνεπαρκείας. Ἡ ραγδαία αὕτη ἐξέλιξίς του καταλήγει πολὺ ταχέως εἰς τὸν θάνατον, τὴν ἔλευσιν τοῦ ὁποίου οὐδεμία θεραπευτικὴ ἐνέργεια εἶναι δυνατὸν ν' ἀνακόψῃ.

*Ἀμιγὴς μορφὴ βραδέως ἐξελισσομένη.* Κατ' αὐτὴν ἡ ἀρχὴ εἶναι πάντοτε ὕπουλος, ἡ ἐξέλιξις ὅμως εἶναι ὀλιγώτερον ταχεῖα τῆς προηγουμένης. Συχνότερον παρατηρεῖται εἰς μεσήλικας παραπονουμένους συνήθως διὰ κοινὰς καρδιακὰς ἐνοχλήσεις, εἰς ἃς δὲν ἀποδίδεται ἡ δέουσα σημασία, ἐκλαμβανομένων τούτων ὡς νευρικῆς φύσεως: καρδιακοὺς παλμούς, προκάρδια ἄλγη, ταχυκαρδίαν, ἐλαφρὰν δύσπνοιαν· ἡ κλινικὴ ὅμως ἐξέτασις ἀποκαλύπτει: βυθιότητα τῶν τόνων, καλπαστικὸν ρυθμόν, λειτουργικὴν ἀνεπάρκειαν τῆς μηροειδοῦς, σημεῖα ἀντιτιθέμενα πρὸς τὰ ἐλαφρὰ σχετικῶς ὑποκειμενικὰ συμπτώματα. Ἡ τελικὴ περίοδος ἐπιβραδύνεται λόγῳ τῆς ἀπὸ καιροῦ εἰς καιρὸν ὑφέσεως τῶν συμπτωμάτων τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀναπαύσεως καὶ τῆς θεραπείας. Σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως τὰ οἰδήματα αὐξάνουν, ἡ συμφόρησις τοῦ ἥπατος καὶ ἡ ὀλιγουρία ἀναφαίνονται, ἐνῷ τὰ ἀπὸ τῶν πνευμονικῶν βάσεων σημεῖα συμφορήσεως ἐμφανίζονται,

Digitized by Google

οὐδόλως ἐπηρεαζόμενα ὑπὸ τῆς θεραπευτικῆς ἀγωγῆς. Οὐχὶ σπανίως φαινόμενα θρομβώσεως ἢ ἐμβολῆς τῆς μικρᾶς κυκλοφορίας προηγοῦνται τοῦ θανάτου.

*Ἀμιγὴς μορφὴ μὲ ἐξέλιξιν σχετικῶς εὐνοϊκήν.* Παρὰ τὰς ἀνωτέρω δύο σοβαρὰς μορφάς, ὑπάρχει καὶ ἄλλη, ἧς ἡ ἐξέλιξις εἶναι εὐνοϊκή, παρατηρουμένη εἰς νευρικὰ καὶ εὐσυγκίνητα ἄτομα ἢ εἰς ὑποβαλλόμενα εἰς σωματικὴν ἢ πνευματικὴν ὑπερκόπωσιν. Κατ' αὐτήν, ἐνῷ ἡ πάθησις ἐξελίσσεται ἀπειλητικῶς ἐπί τινα χρόνον, ἀνακόπτεται ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς ἀναπαύσεως καὶ τῆς θεραπείας.

***Μικτὴ μυοκαρδίασις.*** Ὁ Laubry καὶ ὁ Walser πλὴν τῆς ἀμιγοῦς παραδέχονται καὶ τὴν μικτὴν μυοκαρδίασιν, καθ' ἣν ἡ πάθησις συνυπάρχει μετὰ βαλβιδικῶν ἀλλοιώσεων, ἀρτηριακῆς ὑπερπιέσεως λοιμωδῶν ἢ τοξικῶν νόσων. Ἡ συνύπαρξις τῆς πρωτογενοῦς ταύτης μυοκαρδικῆς ἀνεπαρκείας μετ' ὀργανικῶν βλαβῶν τοῦ καρδιαγγειακοῦ συστήματος ἑρμηνεύει τὴν τόσον διάφορον ἐξέλιξιν καρδιοπαθειῶν τινων.

***Παθογένεια.*** Κατὰ τοὺς Laubry καὶ Walser, ἡ μυοκαρδίασις ὀφείλεται εἰς λειτουργικὴν διαταραχὴν τοῦ τόνου καὶ τῆς συσταλτικότητος τοῦ μυοκαρδίου, ἐν οἷς διαβλέπει τις τὴν ἐπέμβασιν πλειόνων παραγόντων ἐπενεργούντων μεμονωμένως ἢ ἐκ παραλλήλου, οἷοι τὸ νευρικὸν σύστημα, οἱ ἀδένες τῆς ἔσω ἐκκρίσεως, ἡ φυσικοχημικὴ σύστασις τοῦ αἵματος.

Ἡ ἀμιγὴς μυοκαρδίασις παρατηρεῖται συχνότερον κατὰ τὴν ἐφηβικὴν ἡλικίαν, τὸν χρόνον τῆς παύσεως τῶν ἐμμήνων καὶ κατὰ τὴν κύησιν. Ἡ κληρονομικότης καὶ αἱ συγκινήσεις προδιαθέτουν εἰς αὐτήν.

***Θεραπεία.*** Ἡ θεραπευτικὴ ἀγωγὴ συνίσταται εἰς τὴν χορήγησιν καρδιοτονωτικῶν, τὰ ἀποτελέσματα ὅμως τούτων εἶναι προσωρινὰ καὶ ἀβέβαια. Ἡ αἰτιολογικὴ θεραπεία δίδει ἐνίοτε ἀποτελέσματα ἱκανοποιητικά. Ἐπιτυχῆ ἀποτελέσματα ἐπετεύχθησαν καὶ δι' ἐνδοφλεβίων ἐνέσεων ἀσβεστίου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Laubry et Walser*, «Sur un cas d'insuffisance cardiaque primitive. Les myocardies» (Bull. et Mém. de la Société Med. des Hôpitaux 1925, 19 Mars). — *Merklen*, «Asystolie par compression du pneumogastrique» (Bull. et Mém. de la Société Med. des Hôpitaux 1893).— *Mouriquand et Bouchut*, «L'asystolie mortelle dans la maladie de Basedow» (Semain Médicale 1908). — *Parissot*, «Les thyroïdites aigues et leurs complications cardiomusculaires» (Presse Médicale 7 καὶ 1910).—*Renaud*, «Tachycardie et asystolie dans les compressions du pneumogastrique» (Thèse Paris 1893). — *Ribière et Pichon*, «Le rhusatisme cardiaque évolutif» (Paris Médical, 5 Juillet 1924).— *J. Walser*, «La myocardie» (Thèse de Paris 1925). — *Α. Ἀραβαντινοῦ*, «Εἰδικὴ νοσολογία καὶ θεραπευτική» (τόμ. 2ος «Νόσοι τοῦ κυκλοφορικοῦ συστήματος» 1930).

Α. ΚΑΝΑΤΣΟΥΛΗΣ

**μυοκάρδιον** (τὸ) [*Ἀνατομ.*]. Καλεῖται ὁ μυϊκὸς χιτών, ὁ ἀποτελῶν τὸ κύριον τοίχωμα τῆς καρδίας· σύγκειται ἐκ μυϊκῶν ἰνῶν, ἐγκαρσίως γραμμωτῶν καὶ σχεδὸν ὁμοίων τὴν κατασκευὴν πρὸς τὰς τῶν μυῶν τοῦ σκελετοῦ, ἀπὸ τῶν ὁποίων διαφέρουσιν ἐκ τοῦ ὅτι δὲν ἐξαρτῶνται ἐκ τῆς βουλήσεως (βλ. λ. *καρδία*). Ι. Π.

**μυοκαρδῖτις,** —*ιδος* [*Ἰατρ.*]. Φλεγμονὴ ὀξεῖα ἢ χρονία τοῦ καρδιακοῦ μυός.

***Ὀξεῖα μυοκαρδῖτις.*** Αὕτη παρατηρεῖται κατὰ τὴν διαδρομὴν λοιμωδῶν τινων νόσων, εἰδικώτερον δὲ κατὰ τὴν διφθερίτιδα, τὸν τῦφον, τὴν οστρακιάν, τοὺς ὀξεῖς ρευματισμοὺς τῶν ἄρθρων καὶ σπανιώτερον κατὰ τὸν ἐξανθηματικὸν τῦφον, ὁπότε λαμβάνει ἐξαιρετικῶς βαρεῖαν μορφήν, τὴν πνευμονίαν, τὴν γρίππην, τὰς ἐξανθηματικὰς νόσους κλπ. Ἡ καρδία εἶναι πλαδαρά, διατεταμένη, μὲ τοιχώματα λεπτά, ἡ χροιά της ροδίζουσα ἢ κιτρινωπή. Αἱ μικροσκοπικαὶ ἀλλοιώσεις εἶναι ποικίλαι: παρεγχυματώδεις, καθ' ἃς αἱ μυϊκαὶ ἶνες εἶναι ὑπερτροφικαί, ἀτροφικαί, ἐκφυλισμέναι, μὲ πυρῆνα οἰδηματώδη καὶ πρωτόπλασμα τὸ ὁποῖον ἔχει χάσει τὰς ὁριζοντίας γραμμώσεις του, ἢ ἀφοροῦν τὸν ἐνδιάμεσον συνεκτικὸν ἱστόν, ὁπότε παρατηρεῖται ἐν αὐτῷ ἄφθονος διαπιδυτικὴ διήθησις ἐκ λευκοκυττάρων καὶ ἐρυθροκυττάρων, σχηματίζουσα φλεγμονώδεις καὶ αἱμορραγικὰς ἑστίας. Τὰ ἀγγεῖα τοῦ μυοκαρδίου παρουσιάζουν συμφορητικὰς ἢ φλεγμονώδεις βλάβας. Σχεδὸν πάντοτε αἱ δύο αὗται μορφαὶ τῶν ἀνατομοπαθολογικῶν ἀλλοιώσεων συνυπάρχουν. Ὅλως ἰδιάζουσα εἶναι ἡ ὑπὸ τῶν Aschoff καὶ Tawara τὸ πρῶτον περιγραφεῖσα ἀνατομοπαθολογικὴ ἀλλοίωσις, κατὰ τὴν ρευματικὴν μυοκαρδίτιδα συγκειμένη ἐκ χαρακτηριστικῶν ὀζιδίων. Τὰ ὀζίδια ταῦτα ἑδράζονται ἐπὶ τοῦ ἐνδοκαρδίου, μυοκαρδίου καὶ περικαρδίου, ἀλλ' ἡ κυρία αὐτῶν θέσις εἶναι τὸ ὑπὸ τὸ ἐνδοκάρδιον στρῶμα τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας. Ταῦτα ἀποτελοῦνται εἰς τὸ κέντρον, ὅταν ἡ ὀζιδικὴ μορφὴ των εἶναι τυπική, ἐκ γιγαντοκυττάρων ἐχόντων περισσοτέρους πυρῆνας, συνήθως φερομένους ἀκανονίστως ἢ διήκοντας ὅλως συμμετρικῶς καὶ καταλαμβάνοντας τὴν περιφέρειαν τοῦ γιγαντοκυττάρου ἐν εἴδει ἀμπιδίου. Πέριξ αὐτῶν ὑπάρχει ἑτέρα ζώνη ἐκ λιμφοκυττάρων μετά τινων πολυπυρήνων οὐδετεροφίλων ἢ ἠωσινοφίλων. Ἐνίοτε ἡ ὀξεῖα μυοκαρδῖτις παραμένει λανθάνουσα, συνήθως δ' ἐμφανίζεται κατὰ τὴν περίοδον ἐγκαταστάσεως τοῦ λοιμώδους νοσήματος. Ἐκδηλοῦται διὰ προκαρδίου βάρους, μετ' ἐλαφρᾶς δυσπνοίας ἢ καὶ ἄλγους, συνοδευομένων ὑπὸ καρδιακῶν παλμῶν, οἵτινες δυνατὸν νὰ εἶναι καὶ ὀδυνηροί. Ὁ σφυγμὸς εἶναι μικρὸς καὶ εὐπίεστος. Ἐκ τῆς ψηλαφήσεως ἡ καρδιακὴ ὦσις καθίσταται μόλις ἀντιληπτή, ἐκ δὲ τῆς ἐπικρούσεως ἡ καρδιακὴ ἀμβλύτης δὲν εἶναι ηὐξημένη παρὰ μόνον εἰς τὰς λίαν σοβαρὰς μορφάς. Ἐκ τῆς ἀκροάσεως κατὰ τὴν βάσιν τῆς καρδίας, κατ' ἀρχὰς ὁ πρῶτος τόνος καθίσταται βύθιος, ἀργότερον καὶ ὁ δεύτερος, ἐνῷ ἐκ τῆς κορυφῆς ἐξακολουθοῦν νὰ ἀκούωνται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον εὐκρινῶς οἱ τόνοι. Δυνατὸν νὰ ἀντιληφθῶμεν καλπαστικὸν ρυθμὸν καὶ λειτουργικὸν συνολικὸν φύσημα τῆς κορυφῆς τῆς καρδίας. Ἡ φλεγμονὴ ἐντοπιζομένη ἐπὶ διαφόρων σημείων τοῦ πρωτογόνου ἱστοῦ, δυνατὸν νὰ προκαλέσῃ ὅλων τῶν εἰδῶν τὰς ἀρρυθμίας: ταχυκαρδίας, αἵτινες λαμβάνουν ἐνίοτε μορφὴν ἐμβρυοκαρδίας, βραδυκαρδίας, φλεβοκομβικὰς ἢ καὶ ἐκ κολποκοιλιακοῦ ἀποκλεισμοῦ, ἐκτακτοσυστολάς, εἴς τινας δὲ περιπτώσεις καὶ ταχυαρρυθμίας. Ἐπίσης παρατηρεῖται πτῶσις τῆς ἀρτηριακῆς πιέσεως, ὀφειλομένη εἰς τὴν καρδιακὴν ἐξασθένησιν ἀφ' ἑνὸς καὶ τὴν ἀγγειακὴν ὑποτονίαν ἀφ' ἑτέρου.

*Τυφικὴ μυοκαρδῖτις.* Κατὰ τὴν διαδρομὴν τοῦ τυφοειδοῦς πυρετοῦ, ὅσῳ μᾶλλον ὁ ἄρρωστος εἶναι προβεβηκὼς τὴν ἡλικίαν, ἐπὶ τοσοῦτον οἱ φόβοι προσβολῆς τοῦ καρδιακοῦ μυὸς εἶναι μεγαλύτεροι. Ἡ τυφικὴ μυοκαρδῖτις ἀναφαίνεται κατὰ τὸ τέλος τῆς δευτέρας ἑβδομάδος ἢ τὴν ἀρχὴν τῆς τρίτης. Ἐπὶ βαρείας μορφῆς ἡ ἐξέλιξις πρὸς τὴν καρδιακὴν ἀνεπάρκειαν εἶναι ταχεῖα.

*Ρευματικὴ μυοκαρδῖτις.* Αὕτη παρατηρεῖται συχνότερον κατὰ τὴν ἐφηβικὴν καὶ παιδικὴν ἡλικίαν. Ἡ προσβολὴ τοῦ καρδιακοῦ μυὸς δὲν ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς ἐντάσεως τοῦ ἀρθρικοῦ ρευματισμοῦ, διότι καὶ ἐλαφρὰ ἀκόμη ρευματικὴ ἀρθρῖτις δυνατὸν νὰ ἐπιπλακῇ μὲ θανατηφόρον μυοκαρδίτιδα. Ἀλλὰ καὶ ἡ ἀπ' εὐθείας προσβολὴ τοῦ μυοκαρδίου ὑπὸ τοῦ ὀξέος ρευματισμοῦ εἶναι δυνατή, δηλαδὴ ἄνευ προηγουμένης προσβολῆς τῶν ἀρθρώσεων. Τὰ συμπτώματά της εἶναι ἀνάλογα πρὸς τὰ τῶν ἄλλων μορφῶν. Ἡ πρόγνωσις συνήθως εἶναι καλή, ἐξαρτᾶται ὅμως ἐκ τῆς προτέρας καταστάσεως τοῦ μυοκαρδίου καὶ ἐκ τῆς ἐντάσεως τῶν ἀλλοιώσεων.

*Διφθεριτικὴ μυοκαρδῖτις.* Ἀναφαίνεται κατὰ τὸ πέρας τῆς νόσου καὶ τὴν ἀνάρρωσιν, δύναται ὅμως νὰ ἐμφανισθῇ καὶ κατὰ τὴν διαδρομὴν αὐτῆς. Κατ' αὐτὴν παρατηρεῖται χαρακτηριστικὴ ὠχρότης τοῦ προσώπου, δύσπνοια, σφυγμὸς μικρός, ταχὺς ἢ καὶ βραδὺς ἐκ κολποκοιλιακοῦ ἀποκλεισμοῦ, ἐνίοτε ἀρρυθμία. Ὁ θάνατος ἐπέρχεται ἐκ καρδιακῆς ἀνεπαρκείας ἢ συγκοπῆς. Ἡ νόσος δυνατὸν νὰ ἀπολήξῃ εἰς ἴασιν.

*Ὑποξεῖα ἀλκοολικὴ μυοκαρδῖτις.* Παρατεταμένη δι' οἰνοπνεύματος δηλητηρίασις δύναται νὰ ἐπιφέρῃ μυοκαρδίτιδα. Δύσπνοια καὶ ταχυκαρδία εἶναι τὰ ἀρχικὰ αὐτῆς συμπτώματα, ἡ ἐξέλιξις βαίνει ταχέως, μετά τινα δὲ χρόνον ἡ δύσπνοια εἶναι τοσοῦτον ἔντονος, ὥστε ὁ ἄρρωστος ἀναγκάζεται νὰ παραμένῃ κλινήρης, τὰ δὲ συμπτώματα τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας δὲν ἀργοῦν ν' ἀναφανοῦν. Μὲ τὴν ἀνάπαυσιν καὶ τὴν δέουσαν θεραπείαν ἐπέρχεται σχετικὴ βελτίωσις, ἀλλ' ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν κοπώσεως ἢ ἐπαναλήψεως τῆς οἰνοπνευματοποσίας ἐπανέρχονται βαρύτερα τὰ συμπτώματα τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας.

Ἡ ὀξεῖα μυοκαρδῖτις δύναται νὰ ἐξελιχθῇ καλῶς. Τότε ὁ σφυγμὸς βελτιοῦται, οἱ καρδιακοὶ τόνοι καθίστανται σαφέστεροι, ἡ ἀρτηριακὴ πίεσις αὐξάνει, ἐνῷ ὁ καλπαστικὸς ρυθμὸς ἐξαφανίζεται. Κατὰ τὰς βαρείας περιπτώσεις ἀναφαίνονται φαινόμενα καταπτώσεως, ἡ πτῶσις τῆς πιέσεως εἶναι μεγάλη, ἡ ποσότης τῶν οὔρων ἐλαττοῦται, ὁ πυρετὸς πίπτει ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου, ἡ κυάνωσις ἀναφαίνεται καὶ ψυχρὸς ἱδρὼς περιβάλλει τὸ σῶμα τοῦ ἀρρώστου. Παρ' ὅλην τὴν τρομερὰν αὐτὴν κατάστασιν, ἡ ἴασις δὲν εἶναι ἀδύνατος, ἐνῷ καὶ ἐπὶ φαινομενικῆς βελτιώσεως οὐδόλως ἀπίθανον εἶναι νὰ ἐπέλθῃ τὸ μοιραῖον ἐκ συγκοπῆς.

Ἡ ὑπὸ τοῦ ἰατροῦ ἄγρυπνος παρακολούθησις τῆς καρδίας κατὰ τὴν ἐξέλιξιν τῶν λοιμωδῶν νοσημάτων καθίσταται ἀναγκαία πρὸς ἔγκαιρον διάγνωσιν τῆς ὀξείας μυοκαρδίτιδος. Ὡς πρὸς τὴν πρόγνωσιν δέον νὰ εἴμεθα ἐπιφυλακτικοί. Μολονότι ἡ ἴασις δὲν εἶναι σπανία, ὁ δὲ θάνατος παρατηρεῖται μόνον εἰς τὰς βαρείας μορφάς, οὐχ ἧττον ἐνδέχεται νὰ καταλήξῃ εἰς τὸν ἐκ συγκοπῆς θάνατον. Ὡς πρὸς τὴν θεραπείαν ἡ ἐν τῇ κλίνῃ ἀνάπαυσις καθίσταται ἀναγκαία πρὸς ἀποφυγὴν τῆς συγκοπῆς, ἥτις δύναται νὰ ἐπέλθῃ καὶ κατὰ τὴν παραμικροτέραν κίνησιν. Εἰς περίπτωσιν τυφικῆς μυοκαρδίτιδος, ἡ ψυχρὰ λουτροθεραπεία ἡ χρησιμοποιουμένη κατὰ τοῦ τύφου θὰ διακοπῇ, κατὰ δὲ τὴν διφθεριτικὴν μυοκαρδίτιδα ἡ ἀκινησία θὰ εἶναι ἀπόλυτος, ἀκόμη καὶ κατὰ τὴν ἀνάρρωσιν. Ἡ χορήγησις θερμῶν ποτῶν, ὡς τείου, καφέ, οἰνοπνεύματος, καὶ ἡ θρεπτικὴ τροφὴ συνοψίζουσι τὴν διαιτητικὴν ἀγωγήν. Εὐθὺς ὡς τὰ ἀπὸ τῆς καρδίας συμπτώματα ἀναφανοῦν, θὰ ἐνεργήσωμεν ἐνέσεις καφουρᾶς καὶ καφεΐνης καὶ θὰ χορηγήσωμεν ἐσωτερικῶς δακτυλίτιδα εἰς μικρὰς δόσεις. Πρὸς καταπολέμησιν τῶν λιποθυμικῶν καταστάσεων χρησιμοποιοῦμεν ἀδρεναλίνην ὑπὸ μορφὴν ἐνέσεων ἢ τὸ ἐκχύλισμα τοῦ ὀπισθίου λοβοῦ ὑποφύσεως εἰς ἐνέσεις ἐπίσης.

***Χρονία μυοκαρδῖτις.*** Αὕτη δυνατὸν νὰ ὀφείλεται εἰς ἐξωγενεῖς τοξικὰς οὐσίας (οἰνόπνευμα, μόλυβδον, καπνόν), ὡς καὶ εἰς τὰς ἐν τῷ ὀργανισμῷ παραγομένας τοιαύτας (διαβήτης, ποδάγρα, νόσος τοῦ Bright, ἐντερικαὶ αὐτοδηλητηριάσεις). Αἱ πλεῖσται τῶν λοιμωδῶν νόσων, αἵτινες προκαλοῦν ὀξείας μυοκαρδίτιδας, ἔχουν ὡς ἐπακόλουθον τὴν ἰνώδη μυοκαρδιτικὴν ἐκφύλισιν καὶ χρονίαν μυοκαρδίτιδα, ἡ σύφιλις, ἥτις κατ' ἐξοχὴν προσβάλλει τὰς ἀρτηρίας, δὲν ἀφήνει ἀμέτοχον καὶ τὸ μυοκάρδιον, σπανιώτερον δὲ ἡ φυματίασις. Ἡ φθορὰ τοῦ καρδιαγγειακοῦ συστήματος, ἡ παρατηρουμένη κατὰ τὴν γεροντικὴν ἡλικίαν, ἐπιφέρει δευτερευούσας ἐκφυλιστικὰς ἀλλοιώσεις τοῦ μυοκαρδίου καὶ προκαλεῖ χρονίαν μυοκαρδίτιδα. Ἀναλόγως τοῦ ἀνατομοπαθολογικοῦ τύπου καὶ ἡ ὄψις τῆς καρδίας ἐκ τῆς μακροσκοπικῆς ἐξετάσεως εἶναι διάφορος. Κατὰ τὸν *λιπώδη* τύπον στρῶμα λίπους καλύπτει ὁλόκληρον τὴν ἐπιφάνειαν τῆς ἀριστερᾶς κοιλίας καὶ διήκει κατὰ μῆκος τοῦ χείλους τῆς δεξιᾶς κοιλίας, πληροῦν τὰς πέριξ τῶν μεγάλων ἀγγείων αὔλακας. Ἐνίοτε ὁ ὄγκος τῆς καρδίας διπλασιάζεται. Ὁ *ὑπερτροφικὸς* τύπος συνυπάρχει ἐνίοτε μετὰ τοῦ προηγουμένου, ὁπότε ἡ ἀριστερὰ κυρίως κοιλία αὐξάνει κατ' ὄγκον, ἐπίσης δὲ καὶ ἡ δεξιά. Συνήθως αἱ καρδιακαὶ κοιλότητες διατείνονται. Ὁ *σκληρώδης* τύπος, πλὴν τῆς ὑπερτροφικῆς διατάσεως τῶν κοιλοτήτων, παρουσιάζει κατὰ τὴν τομὴν δεσμίδας ἐκ συνεκτικοῦ ἱστοῦ κατευθυνομένας πρὸς ὅλας τὰς διευθύνσεις, αἵτινες ἐνίοτε σχηματίζουν καὶ νησίδια. Κατὰ τὸν *βαλβιδικὸν* τύπον δὲν παρατηρεῖται παρὰ ἁπλῆ διάτασις καὶ ὑπερτροφία τῶν καρδιακῶν κοιλοτήτων. Μικροσκοπικῶς αἱ βλάβαι τῆς μυϊκῆς ἰνὸς εἶναι συνήθως μικταί: λιπώδης ἐκφύλισις τῶν μυϊκῶν κυττάρων ἢ ἁπλῆ ἀτροφία αὐτῶν, χρωστικὴ ἀτροφία ἢ ὑπερτροφία κ. λ. π. Διακρίνομεν τρία στάδια ἐξελίξεως τῶν ἀλλοιώσεων τοῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ: τὸ *δικτυωτόν*, καθ' ὃ αἱ ἐκφυλισμέναι μυοκαρδικαὶ ἶνες περικλείονται ἐντὸς δικτύου, τὴν *μαλακὴν σκλήρυνσιν*, καθ' ἣν τὸ ἰνῶδες δίκτυον ὑπερτρεφόμενον ἀπομονώνει τὰς μυϊκὰς ἶνας ἐντὸς μικροτέρων διαστημάτων, καὶ τὴν *τραχεῖαν σκλήρυνσιν*, καθ' ἣν ὁ σκληρὸς ἱστὸς ἔχει τελείως ὀργανοποιηθῆ σχηματίζων νησίδια ἐντὸς τῶν ὁποίων φαίνονται σπάνιαι μυϊκαὶ ἶνες. Ἡ ἀρχὴ τῆς χρονίας μυοκαρδίτιδος εἶναι ὕπουλος καὶ ἀκαθόριστος. Ἡ δύσπνοια κατ' ἀρχὰς ἀναφαίνεται ὑπὸ μορφὴν παροδικοῦ προκαρδίου βάρους, ἀργότερον δὲ καθίσταται διαρκής, ἐπιτεινομένη κατὰ τὴν κατάκλισιν. Συνοδεύεται ὑπὸ φαινομένων πνευμονικῆς στάσεως, χρονίας βρογχίτιδος μὲ ἀφθόνους ἀποχρέμψεις αἱματηρὰς ἢ μή. Ἐνίοτε παρατηροῦνται νυκτερινοὶ παροξυσμοὶ ἄσθματος μετὰ ἢ ἄνευ πνευμονικοῦ οἰδήματος καὶ στηθικοῦ ἄλγους. Τὴν δύσπνοιαν οὐχὶ σπανίως ἀκολουθοῦν παλμοὶ καὶ διαταραχαὶ τοῦ ρυθμοῦ τῆς καρδίας, ὡς ἐκτακτοσυστολαί, σπανιώτερον ταχυαρρυθμίαι, ἔτι δὲ σπανιώτερον βραδυκαρδίαι ἐκ κολποκοιλιακοῦ ἀποκλεισμοῦ μετὰ τοῦ ἐπακολουθοῦντος αὐτὰς συνδρόμου τοῦ Stockes Adams. Ὅταν παρατηρηθῇ ἐναλλασσόμενος σφυγμός, τὸ προγνωστικὸν πρέπει νὰ θεωρηθῇ βαρύ. Τὰ συμπτώματα εἶναι διάφορα κατὰ τὴν συφιλιδικὴν μυοκαρδίτιδα, ὅταν μετ' αὐτῆς συνυπάρχῃ καὶ συφιλιδικὴ ἀορτῖτις, ἢ ὅταν μετὰ τῆς μυοκαρδίτιδος συνυπάρχωσιν ἀθηρωματώδης ἀορτῖτις, χρονία νεφρῖτις, ἀρτηριοσκλήρυνσις, ὁπότε παρατηρεῖται ἴλιγγος, κεφαλαλγία, προκάρδιον ἄλγος, πολυουρία κλπ. Ἐκ τῆς ἐπικρούσεως καὶ τῆς ὀρθοκαρδιογραφικῆς ἐξετάσεως ἡ καρδία παρουσιάζεται ηὐξημένη κατὰ τὸ μέγεθος. Ἡ αὔξησις αὕτη ἀφορᾷ ὁλόκληρον τὴν καρδίαν ἢ τμήματα μόνον αὐτῆς. Ἡ ἀκρόασις μᾶς δίδει βυθιότητα τῶν καρδιακῶν τόνων, λειτουργικὸν φύσημα κατὰ τὴν κορυφὴν τῆς καρδίας ἢ ὀργανικὸν ἐξ ἀθηρωματωδῶν ἀλλοιώσεων βαλβῖδός τινος, ἐνίοτε δὲ καλπαστικὸν ρυθμόν.

Τὸ ἠλεκτροκαρδιογράφημα παρουσιάζει χαρακτηριστικὴν αὔξησιν τοῦ εὔρους τοῦ κύματος Q R S καὶ ἀναστροφὴν τοῦ T. Ἡ ἀρτηριακὴ πίεσις εἶναι ἄλλοτε ἄλλη· ὅταν εἶναι ηὐξημένη, ἀναφανοῦν δὲ τὰ σημεῖα τῆς μυοκαρδικῆς ἀνεπαρκείας, ἡ μεγίστη πίεσις καταπίπτει, ἐνῷ ἡ ἐλαχίστη παραμένει ἡ αὐτὴ ἢ ὑψοῦται ὀλίγον. Ἐκ τῆς γενικῆς ἐξετάσεως ὁ ἰατρὸς ἀνευρίσκει διάφορα σημεῖα ὀφειλόμενα εἰς τὴν καρδιακὴν ἀνεπάρκειαν: αὔξησιν τοῦ ὄγκου τοῦ ἥπατος, περιφερικὰ οἰδήματα, ὑγροὺς ρόγχους κατὰ τὰς πνευμονικὰς βάσεις κλπ. Ἡ πάθησις αὕτη ταχύτερον ἢ βράδιον ὁδηγεῖ πρὸς τὴν καρδιακὴν ἀνεπάρκειαν, οὐχὶ σπανίως ὅμως ἡ κατάστασις τοῦ ἀρρώστου ἐπὶ πολλὰ ἔτη παραμένει ἱκανοποιητική, πρὸ παντὸς ὅταν οὗτος δὲν ὑποβάλλεται εἰς κόπους καὶ ἐν γένει ἀκολουθεῖ τὴν δέουσαν ὑγιεινοδιαιτητικὴν θεραπείαν.

*Χρόνιαι μυοκαρδῖτιδες τῶν δηλητηριάσεων.* Τὸ οἰνόπνευμα ἐπὶ μακρὸν λαμβανόμενον προσβάλλει

Digitized by Google

τὸ μυοκάρδιον καὶ τὰς ἀρτηρίας ἐν γένει (*ἀλκοολικὴ μυοκαρδῖτις*). Ἡ ὀξεῖα δηλητηρίασις προκαλεῖ λιπώδη ἐκφύλισιν τοῦ μυοκαρδίου, ἡ δὲ χρονία ὑπερτροφικὴν διάτασιν αὐτοῦ.

*Χρόνιαι μυοκαρδίτιδες δυσκρασικῶν νόσων.* Ἡ ποδάγρα ἐπιδρᾷ ἐπὶ τοῦ μυοκαρδίου, προκαλοῦσα ἐπ' αὐτοῦ καὶ τῆς ἀορτῆς διαφόρων εἰδῶν ἐκφυλιστικὰς ἀλλοιώσεις. Ἐπίσης κατὰ τὸν διαβήτην τὸ μυοκάρδιον προσβάλλεται, παρατηροῦνται δὲ συνηθέστερον λιπώδεις ἐκφυλίσεις αὐτοῦ καὶ λιπώδης καρδία.

*Χρόνιαι μυοκαρδίτιδες λοιμώδους φύσεως.* Αἱ ὀξεῖαι λοιμώδεις νόσοι, ὡς οἱ ὀξεῖς ρευματισμοὶ τῶν ἄρθρων, ὁ τυφοειδὴς πυρετός, ἡ διφθερῖτις δυνατὸν νὰ προκαλέσουν ὀξείας μυοκαρδίτιδας καὶ νὰ ἀφήσουν ὑπολείμματα σκληρώδους ἱστοῦ ἐπὶ τοῦ μυοκαρδίου.

*Χρόνιαι μυοκαρδίτιδες ἀγνώστου φύσεως.* Συχνάκις ἡ πρώτη αἰτιολογία τῆς παθήσεως παραμένει ἀκαθόριστος, ὡς τοῦτο ἄλλωστε συμβαίνει οὐχὶ σπανίως καὶ κατὰ τὰς σκληρύνσεις διαφόρων ὀργάνων. Εἰς τὴν τάξιν ταύτην δυνάμεθα νὰ καταλέξωμεν καὶ τὰς ὑπὸ τοῦ Jusserant καὶ Gollavardin τὸ πρῶτον περιγραφείσας ὑποξείας πρωτογενεῖς μυοκαρδίτιδας.

Ἡ τοπογραφικὴ ἐγκατάστασις τῶν μυοκαρδικῶν ἀλλοιώσεων προκαλεῖ ὡρισμένας λειτουργικὰς ἀνωμαλίας. Ἐπὶ ἀτόμων παρουσιαζόντων ἐν τῇ ζωῇ πλήρη ἀρρυθμίαν, παρατηροῦμεν ἐνίοτε κατὰ τὴν ἀνατομοπαθολογικὴν ἐξέτασιν βλάβας ἐπὶ τοῦ μυοκαρπίου τῶν κόλπων. Τὰ συμπτώματα τῆς νόσου συνοψίζονται εἰς τὸ προκάρδιον βάρος, τὴν δύσπνοιαν, τὴν ἐκτατοσυστολικὴν ἀρρυθμίαν, τὴν ταχυκαρδίαν, τὴν ὑπερτροφίαν τῆς καρδίας, τὴν αὔξησιν ἢ μὴ τῆς ἀρτηριακῆς πιέσεως, τὴν χρονίαν βρογχίτιδα. Ἀργότερον ἀναφαίνεται βυθιότης τῶν καρδιακῶν τόνων, λειτουργικὸν φύσημα τῆς κορυφῆς, καλπαστικὸς ρυθμός, περιφερικὰ οἰδήματα καὶ ὅλα ἐν γένει τὰ σημεῖα τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας. Ὅταν τὰ ὡς ἄνω συμπτώματα ἀναφανοῦν εἰς ἄτομον ἄγον ὥριμον ἤδη ἡλικίαν, εἰς γέροντα, ὅταν κατὰ τὴν αἰτιολογικὴν ἔρευνάν μας διαπιστωθοῦν: ἀρτιοσκλήρυνσις, ἄλλα τοξικὰ καὶ λοιμώδη αἴτια, σύφιλις, διαθεσικαὶ νόσοι, τότε θ' ἀποδώσωμεν τὴν μυοκαρδίτιδα εἰς τὴν ἐκ τῶν αἰτίων τούτων προηγηθεῖσαν ἐκφύλισιν τοῦ μυοκαρδίου.

Ἡ διάγνωσις θὰ γίνῃ κυρίως ἀπὸ τὴν μυοκαρδίασιν, ἥτις εἶναι λίαν δυσχερής· ἡ νεαρὰ ἡλικία τοῦ ἀρρώστου καὶ τὸ λευκὸν αὐτοῦ ἀναμνηστικὸν συνηγοροῦν ὑπὲρ τῆς μυοκαρδιάσεως, ἐνῷ τοὐναντίον ἡ προβεβηκυῖα ἡλικία καὶ τὸ ἐπιβεβαρημένον ἀναμνηστικὸν θὰ κατατοπίσουν μᾶλλον τὸν ἰατρὸν πρὸς μίαν χρονίαν μυοκαρδίτιδα. Ὡς πρὸς τὴν πρόγνωσιν, ὅσον γηραιότερος εἶναι ὁ πάσχων, τοσοῦτον αὕτη εἶναι καλυτέρα. Ὑπάρχουν καλοήθεις μορφαί, ἡ ἐξέλιξις τῶν ὁποίων εἶναι βραδεῖα, τὰ δὲ σημεῖα τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας ἀναφαίνονται ἀργά, ὡς καὶ βαρεῖαι τοιαῦται, ὧν ἡ πρὸς τὴν τελικὴν καρδιακὴν ἀνεπάρκειαν ἐξέλιξις βαίνει ταχέως. Ἡ θεραπεία ἐν ἀρχῇ εἶναι κυρίως αἰτιολογική. Εἰς περίπτωσιν συφιλιδικῆς μυοκαρδίτιδος θὰ ἐφαρμοσθῇ ἡ ἀντισυφιλιδικὴ θεραπεία ἐπὶ μακρόν. Ἀκόμη καὶ εἰς τὰς ἀμφιβόλους περιπτώσεις, καθ' ἃς ἡ κλινικὴ καὶ ἐργαστηριακὴ ἐξέτασις δὲν ἐπιβεβαιώσουν τὴν αἰτιολογίαν ταύτην, ἡ ἀντισυφιλιδικὴ θεραπεία ἐνδείκνυται. Ἡ ἀρτηριοσκλήρυνσις θὰ καταπολεμηθῇ διὰ χορηγήσεως ἀλκαλικῶν ἰωδιούχων εἰς μικρὰς δόσεις καὶ διὰ τῆς θεοβρωμίνης εἰς περίπτωσιν συνυπάρξεως νεφρικῆς ἀνεπαρκείας. Ἡ ὑγιεινοδιαιτητικὴ θεραπεία συνίσταται εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ ἀσθενοῦς ἀποφυγὴν τῶν συγκινήσεων, ὡς καὶ παντὸς εἴδους ἐργασίας, ἀποφυγὴν τοῦ ψύχους, ἐλάττωσιν τῆς χορηγουμένης ποσότητος ἄρτου καὶ κρέατος, ὅπερ θὰ χορηγῆται τρὶς μόνον τῆς ἑβδομάδος κατὰ τὸ γεῦμα. Ἐπίσης καὶ ἡ κατανάλωσις τῶν ὑγρῶν δέον νὰ μὴ ὑπερβῇ τὸ ποσὸν τῶν χιλίων ἢ χιλίων διακοσίων γραμμαρίων ἡμερησίως, ἀποκλειομένης ἐντελῶς τῆς χρήσεως οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν. Ὅταν ἀναφανοῦν τὰ σημεῖα τῆς καρδιακῆς ἀνεπαρκείας, θὰ καταπολεμηθοῦν ταῦτα διὰ τῆς ἀναπαύσεως, τῆς διαίτης, τῆς χορηγήσεως διουρητικῶν καὶ καρδιοτονωτικῶν εἰς μικρὰς δόσεις, προτιμωμένης τῆς δακτυλίτιδος, διὰ τὰς περιπτώσεις ταχυαρρυθμιῶν, τῆς δὲ οὐαβαΐνης διὰ τὰς ἁπλᾶς καρδιακὰς ἀνεπαρκείας.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Aschoff*, «Zur myocardisiofrage Deutsch pathol. Gesell.» (Breslau, 1904).—*Aschoff et Tawara*, «Die heutige Lehre von den Pathologisch-anatomischen Grundlagen der Herzschwäch» (Berlin-Jena, 1906).—*Aviraguet Lutembacher et Le Loudier*, «Le cœur dans la diphtérie. Archives des maladies du cœur des vaisseaux et de sang» (1918).—*Laubry*, «Nouveau traité de pathologie interne» (1931).—*Kanatsoulis*, «La myocardite rhumatismale à nodules» (Lyon, 1923).—*E. Pichon*, «Le rhumatisme cardiaque évolutif» (Paris, 1925).—*Romeo Boucher*, «L'endocardite rhumatismale maligne a forme évolutive» (Paris, 1924).

Α. ΚΑΝΑΤΣΟΥΛΗΣ

— *[Κτηνιατρ.]* Ἡ *μυοκαρδῖτις*, ἤτοι ἡ φλεγμονὴ τοῦ καρδιακοῦ μυός, ἀπαντᾶται εἰς τὰ ζῷα σπανιώτατα, ἀνακαλύπτεται δὲ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ μετὰ τὸν θάνατον, κατὰ τὴν νεκροψίαν, ἀπὸ τὰς τυχὸν παρουσιαζομένας ἀνατομοπαθολογικὰς ἀλλοιώσεις τοῦ καρδιακοῦ μυός. Ἐξ ὅλων τῶν κατοικιδίων ζῴων τὰ συχνότερον προσβαλλόμενα ἐκ μυοκαρδίτιδος εἶναι τὰ σαρκοφάγα (κύων, γαλῆ). Προσβάλλονται οὐχ ἧττον καὶ οἱ ἵπποι, αἱ ἀγελάδες κλπ. Ἡ μυοκαρδῖτις εἶναι ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐπιφαινόμενον, ἀποτέλεσμα δηλονότι τῶν μολυσματικῶν παθήσεων τῶν βρόγχων καὶ τῶν πνευμόνων, τοῦ τύφου, τῆς φυματιάσεως. Ὁ μικροργανισμὸς τῆς προκαλούσης ταύτην μολυσματικῆς ἀσθενείας, ἐξαπλούμενος διὰ τῆς κυκλοφορίας, προσβάλλει καὶ τὸ μυοκάρδιον. Ἡ αὐτοπαθὴς μυοκαρδῖτις εἶναι σπανία καὶ ὀφείλεται εἰς ψύξεις καὶ τραυματικὰς ἐπιδράσεις. Τὰ κυριώτερα συμπτώματα τῆς νόσου ταύτης εἶναι ἡ γενικὴ τοῦ ζῴου κατάπτωσις, ἡ δυσκολία εἰς τὰς κινήσεις του, ἡ ὑπεραιμία τοῦ βλεννογόνου τῶν ὀφθαλμῶν, ὁ ἀσθενὴς σφυγμὸς μετὰ διαλείψεων ἐνίοτε, ἡ δύσπνοια, ὁ καρδιακὸς παλμός, καταφανὴς καὶ ἐξ ἀποστάσεως, καὶ ἀκανόνιστοι τῶν λαγόνων κινήσεις. Ἡ διάγνωσις, ὅταν τὸ ζῷον εὑρίσκεται ἐν τῇ ζωῇ, εἶναι πολὺ δύσκολος. Ἡ πρόγνωσις εἶναι βαρεῖα, ἡ δὲ θεραπεία ἀβεβαία. Ὡς τοιαύτην, ἐν τούτοις, ἐφαρμόζομεν τὴν γενικήν, ἤτοι τὴν καταπολέμησιν τῆς προκαλούσης τὴν μυοκαρδίτιδα ἀσθενείας. Ἐσωτερικῶς χορηγοῦμεν φάρμακα καρδιοτονωτικά, ἐξωτερικῶς μεταχειριζόμεθα τὰ ἐπισπαστικά, ἤτοι ἐντριβὰς ἐπὶ τῆς καρδιακῆς χώρας διὰ καμφορούχου οἰνοπνεύματος ἢ βάμματος κανθαρίδος. Ὡς κατακλεῖδα δὲ τῆς θεραπείας ταύτης ἐφαρμόζομεν τὴν ἀνάπαυσιν.

Δ. Φ. Π.

**μυοκάτοχον** (τό)· ἐργαλεῖον χειρουργικὸν (σήμερον ἐν ἀχρηστίᾳ) ἐν εἴδει λαβίδος, χρησιμεῦον πρὸς συγκράτησιν τῶν μυῶν κατὰ τὰς διαφόρους ἐγχειρήσεις.

Ι. Κ. Κ.

**μυόκλονοι** (οἱ). Καλοῦνται οὕτω βραχεῖαι μυϊκαὶ συσπάσεις, ἀκούσιαι, κλονικαί, ἐπιπόλαιαι, ἐντοπιζόμεναι κυρίως εἰς τοὺς μῦς τῶν ἄκρων καὶ τοῦ κορμοῦ. Ἐπαναλαμβάνονται κατ' ἄτακτα χρονικὰ διαστήματα, ἐνίοτε ὅμως λίαν ταχέως. Δύνανται νὰ ὦσιν ἐντετοπισμένοι εἰς ἓν μέρος ἢ γενικοὶ (paramyclonus multiplex de Friedreich). Κατὰ τὸν ὕπνον συνήθως ἐμφανίζονται, ἐνῷ ἡ συγκίνησις αὐξάνει αὐτούς. Ὑπάγονται εἰς τὰ ὑπερκινητικὰ φαινόμενα καὶ τὰς ἀνωμάλους κινήσεις. Ὀφείλονται δὲ εἰς ληθαργικὴν ἐγκεφαλίτιδα κυρίως καὶ ἄλλα αἴτια, διότι ταῦτα εἶναι συνδρομικὰ συμπτώματα, ὀφειλόμενα εἰς παθήσεις τοῦ ραβδωτοῦ σώματος. Παρατηροῦνται εἰς δηλητηριάσεις τινὰς καὶ δὴ ἐκ κοκαΐνης (σημεῖον κοκαϊνισμοῦ), ἐπίσης δὲ ἐπὶ ὑστερίας.

Τ. Α. Ζ.

**μυοκόπτης** (ὁ) (Myocoptes) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἀκάρεων τῆς οἰκογενείας τῶν *δερμολειχιδῶν*, περιλαμβάνον μικροσκοπικὰ ζῴάρια ζῶντα παρασιτικῶς ἐπὶ τοῦ σώματος τῶν μυῶν.

Δ. Ν. Π.

**μυοκτονία.** Ὅλα τὰ εἴδη τῶν μυῶν, ἰδίᾳ ὅμως εἴδη τινὰ ἐπιμύων *(ἐπίμυς ὁ μέλας, ἐπίμυς ὁ ἀλεξανδρινός, ἐπίμυς ὁ δεκατευτής)*, εἶναι λίαν ἐπικίνδυνοι φορεῖς μικροβίων καὶ ἰδίως τοῦ μικροβίου τῆς πανώλους. Τούτου ἕνεκα αἱ ὑγειονομικαὶ ὑπηρεσίαι τῶν διαφόρων κρατῶν ἐφαρμόζουσι διάφορα μέσα πρὸς ἐξολόθρευσιν αὐτῶν, ἤτοι ἐπιβάλλουσι τὴν *μυοκτονίαν*. Ἡ μυοκτονία διενεργεῖται κατὰ διαφόρους τρόπους. 1) Διὰ συλλήψεως ὑπ' ἀνθρώπων, γαλῶν ἢ γεγυμνασμένων κυνῶν. 2) Διὰ συλλήψεως τούτων διὰ μυοπαγίδων. 3) Διὰ μεταδόσεως εἰς αὐτοὺς θανατηφόρων νόσων ὑπὸ μυοκτόνων μικροβίων. 4) Διὰ χορηγήσεως εἰς αὐτοὺς τροφῶν περιεχουσῶν διάφορα χημικὰ δηλητήρια (φωσφόρος, στρυχνίνη, ἀρσενικόν, σκίλλα κ. τ. τ.). 5) Διὰ καταστροφῆς αὐτῶν διὰ διαφόρων δηλητηριωδῶν ἀερίων. Ὁ τρόπος οὗτος, ὅστις εἶναι καὶ ὁ προτιμότερος, ἐφαρμόζεται ἰδίᾳ εἰς τὰς ὑπονόμους, εἰς τὰ πλοῖα καὶ ἐν γένει εἰς χώρους τοὺς ὁποίους δυνάμεθα νὰ κλείσωμεν ὁπωσδήποτε στεγανῶς. Τὰ κυριώτερα τῶν ἀερίων, ἅτινα μεταχειριζόμεθα πρὸς μυοκτονίαν, εἶναι τὰ ἑξῆς: Τὸ θειῶδες ὀξύ. Πρὸς ἐφαρμογὴν τοῦ μέσου τούτου καίομεν θεῖον ἐν ἀναλογίᾳ 100—200 γρ. δι' ἕκαστον κυβικὸν μέτρον χώρου, κλείομεν τὸν χῶρον καλῶς καὶ ἀφήνομεν νὰ ἐπιδράσῃ ἐφ' ἱκανὰς ὥρας. Ἡ ἐφαρμογὴ τοῦ μέσου τούτου γίνεται καλυτέρα, ἐὰν μεταχειρισθῶμεν τὴν συσκευὴν τοῦ Clayton, λίαν ἐν χρήσει ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ παρ' ἡμῖν, ἢ τὴν συσκευὴν τοῦ Marot. β') Τὸ ἀνθρακαέριον, ὅπερ παράγεται ὑπὸ τῆς συσκευῆς τῶν Nocht-Giemsa. Δὲν φονεύει μὲν τοὺς ψύλλους καὶ τὰ βακτηρίδια τῆς πανώλους, ὅπως τὸ θειῶδες ὀξύ, ἀλλὰ καὶ δὲν βλάπτει τὸ φορτίον τοῦ πλοίου. Τῆς μεθόδου ταύτης γίνεται χρῆσις ἐν Γερμανίᾳ. γ') Τὸ ὑδροκυάνιον. Τοῦ ἀερίου τούτου δὲν πρέπει νὰ γίνηται χρῆσις, διότι εἶναι λίαν δηλητηριῶδες καὶ ἐπικίνδυνον διὰ τὸν ἄνθρωπον ὡς ἄοσμον. Τὸ ἀέριον τοῦτο ἀντικατεστάθη ὑπὸ τοῦ ἀερίου Cyclon, ὅπερ ὡς ἐκ τῆς ἐρεθιστικῆς ἰδιότητος, τὴν ὁποίαν ἔχει ἐπὶ τῶν ἀναπνευστικῶν ὁδῶν, καθίσταται ἀμέσως ἀντιληπτόν.

Ν. Α. Μ.

**μυοκτόνος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ κτείνων, ὁ φονεύων μῦς: «*μυοκτόνα φάρμακα*».

— **μυοκτόνα μικρόβια**. Ὀνομάζονται οὕτω βακτηρίδιά τινα προκαλοῦντα θανατηφόρους ἐπιζῳοτίας εἰς τοὺς μῦς. Τὰ μικρόβια ταῦτα, κατατασσόμενα εἰς τὴν τάξιν τῶν *σαλμονελίων*, εἶναι τὰ ἑπόμενα:

1) *Βακτηρίδιον σηψαιμίας τῶν μυῶν* (B. murisepticum). Ὁ Gafky, σπουδάζων τὸ βακτηρίδιον τοῦτο, παρετήρησεν ὅτι ἐπέφερε τὸν θάνατον τῶν λευκῶν μυῶν, ὡς καὶ τῶν τῶν οἰκιῶν, ἐὰν ἐμολύνοντο διὰ καλλιεργήματος τοῦ μικροβίου τούτου. Ἐπίσης παρετήρησεν ὅτι οἱ ἀρουραῖοι ἠνείχοντο μεγάλας δόσεις καλλιεργήματος ἄνευ σοβαρῶν ἐκδηλώσεων. 2) *Βακτηρίδιον τοῦ τύφου τῶν μυῶν* (B. typhi murium). Πειραματικῶς τὸ βακτηρίδιον τοῦτο φονεύει τοὺς ἀρουραίους καὶ ἐπίμυς εἴτε δι' ἐνοφθαλμισμοῦ, εἴτε διὰ μολύνσεως ἐκ τοῦ στόματος. Ἡ θνητότης τῶν μυῶν ἐκ τῶν ἀναπτυσσομένων ὑπὸ τοῦ μικροβίου τούτου ἐπιζῳοτιῶν εἶναι μεγίστη, δι' ὃ ἡ ἰδιότης αὕτη ἐχρησιμοποιήθη πρὸς καταπολέμησιν αὐτῶν. Ἐν Ἑλλάδι ἡ μέθοδος αὕτη ἐφηρμόσθη τῷ 1892 ὑπὸ τοῦ ἀνευρόντος τὸ βακτηρίδιον Löffler ἐν Θεσσαλίᾳ μετὰ μεγάλης ἐπιτυχίας. Πρὸς τοῦτο ἐνεβράχησαν τεμάχια ἄρτου εἰς καλλιέργημα τοῦ βακτηριδίου, ἅτινα εἶτα ἐτέθησαν εἰς τὰς ὀπὰς τῶν φωλεῶν τῶν μυῶν. Τὰ τεμάχια ταῦτα τρωγόμενα ὑπὸ τῶν μυῶν μετέδιδον εἰς αὐτοὺς τὴν νόσον, ἐξ ἧς καὶ ἀπέθνῃσκον. Ἡ νόσος μετεδίδετο εὐκόλως καὶ εἰς τοὺς μῦς, οἵτινες κατέτρωγον τὰ πτώματα τῶν ὁμοφύλων των. Ἂν καὶ ἡ μέθοδος αὕτη ἐφηρμόσθη καὶ ὑπ' ἄλλων ἐρευνητῶν μετ' ἐπιτυχίας, ἐν τούτοις δὲν διεδόθη εὐρέως, ὡς ἐκ τῶν ἐλαττωμάτων, ἅτινα παρουσιάζει. Παρετηρήθη δηλαδὴ ὅτι πλὴν τῶν μυῶν δύνανται νὰ προσβληθῶσιν, οὐ μόνον καὶ ἄλλα ζῷα, ἀλλὰ καὶ ὁ ἄνθρωπος. Οὕτω ὁ Shibayama ἀναφέρει 189 τυχαίας μολύνσεις, ὧν αἱ 5 θανατηφόροι. Ἐπίσης παρετηρήθη, ὅτι τὸ βακτηρίδιον φονεύεται εὐκόλως ὑπὸ τῆς ξηρασίας καὶ τοῦ ἡλίου, πρᾶγμα ὅπερ καθιστᾷ δύσκολον τὴν ἐφαρμογὴν αὐτοῦ ἐν τῇ ὑπαίθρῳ χώρᾳ.

3) *Ὁ ἰὸς τοῦ Danysz.* Ὁ ἐρευνητὴς οὗτος, ἀπομονώσας ἔκ τινος ἐπιδημίας μυῶν βακτηρίδιόν τι, παρετήρησεν ὅτι τοῦτο φονεύει τοὺς μῦς, οὐχὶ ὅμως καὶ τοὺς ἐπίμυς ἢ τοὺς ἀρουραίους. Καλλιεργήσας ὅμως τὸ μικρόβιόν του εἰς κεκλεισμένας φύσιγγας καὶ ἐπαυξήσας τὴν ἰοβόλον αὐτοῦ δύναμιν διὰ διαβιβάσεως ἀπὸ τοῦ περιτοναίου ἐπιμύων ἐν σάκκοις κολλοδίου, κατώρθωσε νὰ παραγάγῃ θανατηφόρους ἐπιζῳοτίας ἐπιμύων, χορηγῶν εἰς αὐτοὺς ἐμβεβρεγμένα τεμάχια ἄρτου διὰ καλλιεργήματος τοῦ μικροβίου. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ ἰὸς διερχόμενος ἐκ τῶν μολυνθέντων ἐπιμύων ἐξασθενεῖ, διὰ τοῦτο πρέπει νὰ χρησιμοποιῆται πρόσφατον καλλιέργημα καὶ νὰ χορηγῆται τοιοῦτον κατὰ δεκαήμερα διαστήματα καὶ δὴ κατὰ τοὺς μῆνας Ἀπρίλιον μέχρι Ἰουνίου καὶ Σεπτέμβριον μέχρι Δεκεμβρίου, ὅτε ὑπάρχουσι νεαραὶ γενεαὶ τούτων, αἵτινες εἶναι περισσότερον εὐπρόσβλητοι. Ὁ Bainbridge ἀπέδειξεν ὅτι ὁ ἰὸς τοῦ Danysz εἶναι καθαρὸν καλλιέργημα βακτηριδίου τοῦ Gärtner καὶ ὅτι εἶναι παθογόνος διὰ τὸν ἄνθρωπον.

4) Ἡ *ρατίνη* (Ratin). Μυοκτόνος οὐσία, ἥτις φέρεται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὴν μορφὴν δύο σκευασμάτων. Τούτων ἡ μὲν *ρατίνη I* εἶναι καθαρὸν καλλιέργημα βακτηριδίου μυοκτόνου, ἡ δὲ *ρατίνη II* ἐκχύλισμα βολβοῦ σκίλλης.

5) Ὁ *λιβερπούλειος ἰὸς* (Liverpool virus). Πωλεῖται εἰς τὸ ἐμπόριον καὶ εἶναι καλλιέργημα μυοκτόνου μικροβίου. Ἀμφότερα τὰ σκευάσματα ταῦτα εἶναι ἐπικίνδυνα διὰ τὸν ἄνθρωπον.

6) Ὁ Grimm ὑπὸ τὸ ὄνομα B. septicaemiae murium περιέγραψε μικρόβιον ὅμοιον περίπου πρὸς τὸ τοῦ Danysz.

Ν. Α. Μ.

**μυόλεμμα,** —*ατος* (τὸ) (ἐκ τοῦ *μῦς* καὶ *λέμμα* = φλοιός· συνών.: *μυείλημα, σαρκείλημα, σαρκόλεμμα*). Σωληνῶδες, ὑμενῶδες ἔλυτρον, τὸ ὁποῖον περιβάλλει ἑκάστην ἐγκαρσίως γραμμωτὴν μυϊκὴν ἶνα. Τὸ μυόλεμμα ἐπίκειται στενῶς τῇ ἐπιφανείᾳ τῆς μυϊκῆς ἰνός, εἶναι δὲ ἕνεκα τοῦ ὁμοειδοῦς καὶ τῆς λεπτότητος αὐτοῦ δυσθεώρητον, καθίσταται δ' ὅμως εὐδιάκριτον, ὅταν διά τινα αἰτίαν ἀποκολληθῇ τῆς ἰνὸς ἢ ὅταν ἡ συσταλτὴ οὐσία τῇ χρήσει ἀντιδραστηρίων διαλυθεῖσα ἀποπέσῃ.

Θ. Σ.

**μυολογία** (ἡ). Τὸ τμῆμα τῆς Ἀνατομικῆς, τὸ περὶ τοῦ μυϊκοῦ συστήματος πραγματευόμενον.

Ι. Π.

**μυολόγος** (ὁ)· ὁ ἀσχολούμενος εἰς τὴν ἐπιστημονικὴν μελέτην τῶν μυῶν καὶ τῆς λειτουργίας αὐτῶν.

**μυομαχία** (ἡ)· μάχη τῶν μυῶν, τῶν ποντικῶν, ποντικομαχία.

**μυομέρεια** (ἡ) *[Ἱστολ.]*· βλ. *μυοτόμια*.

**μυομήτριον** (τὸ) *[Ἀνατομ.]*. Καλεῖται οὕτω ὁ μυϊκὸς χιτὼν τοῦ τοιχώματος τῆς μήτρας.

Ι. Π.

**μύομμα** (τὸ) (κοιν. *μυόμμα*, γαλλ. patte, ἀγγλ. cringle). Ἕκαστος τῶν σχοινίνων δακτυλίων, οἵτινες ἐπιδένονται εἰς ὡρισμένας θέσεις τῶν λωμάτων, κατασκευαζόμενον δι' ἐμβόλου σχοινίου ἁμματιζομένου ἀφ' ἑαυτοῦ. Πολλάκις ἐντίθενται ψέλλια ἐντὸς τῶν μυομμάτων, ὁπότε ταῦτα, χρησιμεύοντα

Digitized by Google

ὡς στρόφοι τῶν ψελλίων, ὀνομάζονται *ψελλιωτὰ μυόμματα*. Μυομμάτων γίνεται μεγάλη χρῆσις ἐν τῇ ἱστιοποιΐᾳ, λαμβάνουσι δὲ ἴδιον ὄνομα ἀναλόγως τοῦ προορισμοῦ των. Ἰδίως ὅμως κατασκευάζουν τοιαῦτα εἰς τὰς ἄνω γωνίας τῶν τετραγώνων ἱστίων διὰ τὴν πρόσδεσιν τῶν ἀναδετικῶν ἀκροδεῶν, ἐπίσης ἐπὶ τῶν πλαγίων λωμάτων παρ' ἑκάστην σειρὰν πρὸς δίερσιν τῶν σειροδετικῶν ἀκροδεῶν τῶν στερεουσῶν κατὰ τὰς σειροδετήσεις τὰς πλευρὰς τῶν ἱστίων ἐπὶ τῶν ἀκροκεραίων, ἀλλὰ καὶ διὰ νὰ ἀγκυρίζωνται τὰ σύσπαστα τῶν ἐκφόρων καὶ τῶν παρεκφόρων. Δὲν πρέπει νὰ συγχέωνται πρὸς τὰ *ὀμμάτια* (κοιν. *πορτούζια*). Σ. Ε. Λ.

**μυόνημα** (τό)· τὸ σύστημα τῶν συσταλτῶν ἰνῶν, αἵτινες διατρέχουσι τὸ σῶμα πρωτοζῴων τινῶν.

**μυόνημα** (Myonema) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ρουβιδοειδῶν*, περιλαμβάνον δένδρα ἢ δενδρύλλια μὲ φύλλα ἀντίθετα καὶ ἄνθη μονήρη ἀνὰ δύο ἢ τρία διατεταγμένα παρὰ τὰς μασχάλας τῶν κλάδων. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἰθαγενῆ τῆς Ἀφρικῆς. Δ. Ν. Π.

**Μυονία** *[Γεωγρ.]*· βλ.λ. *Μυωνία*.

**Μυόννησος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. —1) Νησίον προσκείμενον εἰς τὴν ἀκτὴν τῆς Φθιώτιδος τὴν κατέναντι τῆς Ἱστιαίας, μεταξὺ Κρεμαστῆς Λαρίσης (νῦν Γαρδίκι) καὶ Ἀντρῶνος (νῦν Γλύφα). Εἶναι τὸ σύγχρονον *Ἅγιος Νικόλαος* (πλάτ. 38° 55' 45'' Β., μῆκ. 22° 57' 55'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1556: Gulf of Volo with Oreos and Talanta channels) ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸν λιμένα Βαθὺ τοῦ διέκπλου τῶν Ὠρεῶν. —2) Ἀκρωτήριον τῆς Ἰωνίας μεταξὺ Τέω καὶ Λεβέδου, ὧν τοὺς κόλπους χωρίζει ἀμφιδύμως καὶ πόλις «Μυόννησος ἐφ' ὕψους χερσονησίζοντος κατοικεῖσθαι» (*Στράβ.* ΙΔ, 644, Teubner). Ἀποικισθεῖσα ὑπὸ τοῦ Ἀττάλου (δὲν ἀναφέρει ὁ Στράβων τίνος), ἐπρόκειτο νὰ ὀχυρωθῇ ὑπὸ τῶν Ρωμαίων, τοῦθ' ὅπερ ἀπέτρεψαν οἱ Τήϊοι, ἀποστείλαντες εἰς Ρώμην πρεσβείαν. Ἐν ὄψει δὲ τοῦ ἀκρωτηρίου ἐνίκησαν οἱ Ρωμαῖοι (190 π. Χ.) Ἀντίοχον τὸν Γ' τῆς Συρίας. Εἶναι τὸ σύγχρονον *Ὀρλιὸς Καλεσσὶ Μπουρνοῦ*.

**μυοπαγὶς** (ἡ)· βλ. *ποντικοπαγίς*.

**μυοπάθεια** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτω πάθησις τῶν μυῶν, συνισταμένη εἰς ἀτροφίαν τοῦ μυϊκοῦ εὐγενοῦς ἱστοῦ καὶ ὑπερπαραγωγὴν τοῦ ἀμεταπλάστου σαρκαπλάσματος, ἤτοι εἰς μετάπτωσιν ἐμβρυϊκήν, μετὰ ἐπακολούθου λιπώδους - ὑαλώδους ἐκφυλίσεως. Ἐπίσης ὑπάρχει αὔξησις τοῦ σαρκειλήμματος καὶ ἰδίᾳ τῶν πυρήνων αὐτοῦ, καὶ ὑπερπλαστία συνεκτικοῦ ἱστοῦ, ἧς ἕνεκα (εἰς τὴν καλουμένην ψευδυπερτροφικὴν μορφήν), ὁ μῦς φαίνεται ὑπερφυσικός, εἰ καὶ λειτουργικῶς ὑπολείπεται λίαν τοῦ φυσιολογικοῦ ὁρίου.

Εἶναι νόσος κληρονομικὴ (56 %) καὶ οἰκογενειακή, προσβάλλουσα συνήθως τὰ ἄρρενα μέλη τῆς οἰκογενείας. Ὀφείλεται δὲ πιθανῶς εἰς ἐνδοκρινεῖς διαταραχάς, ἐπιδρώσας ἐπὶ τοῦ μυὸς διὰ τοῦ αὐτονόμου συστήματος, εἰ καί τινες ὑποστηρίζουσιν ἄλλην θεωρίαν. Ἀναλόγως τῶν μυῶν, οὓς προσβάλλει ἡ μυοπάθεια, ἐξαρτῶνται καὶ αἱ λειτουργικαὶ διαταραχαί. Γενικῶς οἱ προσβληθέντες μύες καθίστανται ἀνίκανοι διὰ τὴν ἐπιτέλεσιν καὶ τῆς ἁπλουστέρας ἐργασίας. Μορφαὶ μυοπαθείας εἶναι αἱ ἑξῆς:

1) Ἡ ψευδυπερτροφικὴ (Duchenne de Boulogne). Ἐμφανίζεται εἰς τὴν παιδικὴν ἡλικίαν, ἐκδηλουμένη δι' ἀδυναμίας τῶν κάτω ἄκρων. Ἐνίοτε επεκτείνεται εἰς ὅλον τὸν κορμὸν καὶ τὰ ἄνω ἄκρα, ἀλλὰ δὲν προσβάλλει τὸ πρόσωπον.

2) Ἡ Leyden Moebius. Εἶναι ἡ αὐτὴ πρὸς τὴν προηγουμένην, ὡς πρὸς τὴν ἐντόπισιν, ἀλλὰ διακρίνεται διὰ τὴν ἔλλειψιν ψευδυπερτροφίας.

3) Ἡ ὠμοβραχιόνιος (Erb). Εἰσβάλλει εἰς τὴν νεανικὴν ἡλικίαν καὶ προσβάλλει τοὺς μῦς ὅλου τοῦ κορμοῦ καὶ τῶν ἄνω ἄκρων, ἀρχομένη ἀπὸ τῶν μυῶν ὤμου καὶ βραχίονος.

4) Ἡ Zimmerlin. Εἰσβάλλει εἰς τὴν ἐφηβικὴν ἡλικίαν καὶ προσβάλλει τοὺς μῦς τοῦ ἄνω ἡμίσεος τοῦ κορμοῦ καὶ τοῦ βραχίονος.

5) Ἡ προσωπικὴ (Loudouzy - Déjerine). Προσβάλλει τοὺς μῦς τοῦ προσώπου, οὗ ἕνεκα ἡ φυσιογνωμία ἀλλοιοῦται, οἱ ὀφθαλμοὶ μένουσιν ἀνοικτοὶ καὶ κατὰ τὴν νύκτα, τὸ δὲ στόμα δὲν κλείει. Ἄρχεται εἰς τὴν πρώτην παιδικὴν ἡλικίαν. Ἐνίοτε προσβάλλεται καὶ τὸ διάφραγμα.

Ἡ νόσος εἶναι προϊοῦσα, ἀλλὰ βραδυτάτη τὴν ἐξέλιξιν, ἐκτὸς τῶν προσβαλλουσῶν τοὺς μῦς τοῦ θώρακος ἢ τοῦ ὤμου μορφῶν, εἰς ἃς ὁ θάνατος ἐπέρχεται ἐνωρίτερος, λόγῳ φυματιάσεως, ὀφειλομένης εἰς τὴν δυσχέρειαν τῆς ἀναπνοῆς. Ὁ ἀσθενὴς πίπτει κλινήρης, λόγῳ τῆς ἀδυναμίας τῶν μυῶν τοῦ κορμοῦ ἢ τῶν κάτω ἄκρων, καὶ θνῄσκει μετὰ μακρὰ ἔτη ἢ ἐξ καχεξίας ἢ ἐξ ἐσχαρῶν ἐκ κατακλίσεως. Εἰς τὰς σπανίας μορφάς, εἰς ἃς εἰσβάλλει εἰς μεγάλην ἡλικίαν, ἡ πρόγνωσις τῆς νόσου εἶναι διάφορος, διότι ὁ θάνατος ἐπέρχεται τότε συνηθέστερον ἐκ παρεμπιπτούσης νόσου.

Ἡ θεραπεία συνίσταται εἰς ἠλεκτροθεραπείαν μετὰ ἐντριβῶν (massage), εἰ καὶ προὐτάθη χειρουργικὴ τοιαύτη, συνισταμένη εἰς ἀντικατάστασιν τοῦ ἀτροφήσαντος μυὸς ὑπὸ μέρους ὑγιοῦς μυός. Ἐπίσης συνιστᾶται καὶ ἡ θεραπεία δι' ἐκχυλισμάτων ἀδένων, συμφώνως πρὸς τὴν ἀδενικὴν περὶ αἰτιολογίας θεραπείαν. Τ. Α. ΖΗΣ

**μυοπάρων** (ὁ) (κοιν. *γολετόμπρικο* ἢ καὶ *σκούννα*, γαλλ. brig-goellette, ἀγγλ. hermaphrodite-brig). Δίστηλον ἱστιοφόρον πλοῖον, τοῦ ὁποίου τὸ πρωραῖον πέτασμα εἶναι ὅμοιον πρὸς τὸ τοῦ πάρωνος, καθὼς καὶ πάντα τὰ ἀναδρομικὰ ἱστία, ἀλλὰ τοῦ ὁποίου ὁ πρυμναῖος (μέγας) ἱστὸς οὐδεμίαν φέρει σταυρωτὴν κεραίαν ἢ τετράγωνον ἱστίον, ἀλλὰ μόνον ἐπίδρομον καὶ λαῖφος. Ὁ τύπος τῶν τοιούτων πλοίων εὐκολύνει τὰς ἀναστροφάς, ἐνῷ κατὰ τὰς οὐριοδρομίας οὐδόλως ὑστερεῖ τοῦ τῶν παρώνων. Σ. Ε. Λ.

**μυόπλασμα** (τὸ) *[Ἱστορ.]*· βλ. *σαρκόπλασμα*.

**μυοπόρη** (ἡ) (Myopora) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυοποριδῶν*, περιλαμβάνον δενδρύλλια μὲ φύλλα ἐναλλασσόμενα, ἀκέραια ἢ πολυοδοντωτά, ἄνθη λευκὰ ἢ ὑπέρυθρα, γενικῶς κατὰ δέσμας διατεταγμένα παρὰ τὰς μασχάλας τῶν φύλλων, καὶ καρπὸν δρύπην περικλείουσαν τέσσαρα σπέρματα. Τὸ γένος τοῦτο περιλαμβάνει περὶ τὰ 80 εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων χωρῶν τῆς Μαλαισίας, Κίνας, Ἰαπωνίας καὶ Αὐστραλίας. Ἀξιολογώτερον ἐκ τῶν εἰδῶν, ὅπερ καλλιεργεῖται καὶ ἐν Εὐρώπῃ πρὸς κόσμον διὰ τὰ ὡραῖα ἄνθη του, εἶναι ἡ *μυοπόρη ἡ μικρόφυλλος* (Myopora parvifolia), δενδρύλλιον φέρον πολυπληθῆ λευκὰ ἄνθη. Δ. Ν. Π.

*Μυοπόρη ἡ μικρόφυλλος.*

**μυοπορίδαι** (οἱ) (Myoporidae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνον δενδρύλλια μὲ κορμόν, γενικῶς, λεῖον καὶ φέροντα κατὰ διαστήματα λεπτοτάτους πόρους, ἐξ ὧν ἐκκρίνεται παχύρρευστός τις ἀρωματώδης ρητινώδης οὐσία. Τὰ φύλλα τῶν φυτῶν τούτων εἶναι ἐναλλασσόμενα καὶ σπανίως ἀντίθετα, ἁπλᾶ καὶ ἄξοδιν. Τὰ ἄνθη των εἶναι μονήρη ἢ κατὰ κῦμα διατεταγμένα εἰς τὰς μασχάλας τῶν φύλλων καὶ ὁ καρπὸς δρύπη ἢ κάψα. Γνωστότερον γένος εἶναι ἡ *μυοπόρη* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυοποροειδῆ** (τὰ) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα γένη τινὰ ἰθαγενῆ τῆς Αὐστραλίας. Κυριώτερον εἶναι ὁ *μυοπόρος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυοπόρος** (ὁ) (Myoporus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυοποροειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ καὶ δένδρα δασικά, ἀπαντῶντα εἰς τὴν Αὐστραλίαν καὶ τὰς περὶ αὐτὴν νήσους. Δ. Ν. Π.

**μυοπόταμος** (ὁ) (Myopotamus) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *τρωκτικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *καπροδοντιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἰθαγενῆ τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων εἰδῶν εἶναι ὁ *μυοπόταμος ὁ Βραζιλιανὸς* (Myopotamus Brasiliensis), ὅστις φθάνει εἰς μῆκος ἑνὸς μέτρου καὶ ἔχει σῶμα κυρτὸν κατὰ τὴν ῥάχιν καὶ πολυτριχωτόν, κεφαλὴν ἀπολήγουσαν εἰς κεχολοβωμένον ῥύγχος, ὅπερ περιβάλλεται ὑπὸ σκληρῶν τριχῶν ἐν εἴδει μύστακος, ὦτα μικρὰ καὶ ἠνωρωμένα, οὐρὰν μακράν, κυλινδρικήν, παχεῖαν κατὰ τὴν ῥίζαν της καὶ λεπτὴν κατὰ τὸ ἄκρον της καὶ χρῶμα βαθέως τεφρόν. Ἐνδιαιτᾶται ἐντὸς ὑπογείων στοῶν, ἀπαντᾷ εἰς τὴν Βραζιλίαν καὶ θηρεύεται διὰ τὸ κρέας του, ὅπερ τρώγεται παρὰ τῶν ἰθαγενῶν τῶν μερῶν ἐκείνων, καὶ διὰ τὸ δέρμα του, ὅπερ ποικίλως χρησιμοποιεῖται. Δ. Ν. Π.

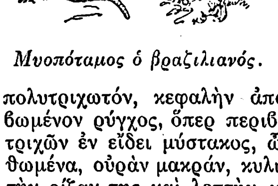

*Μυοπόταμος ὁ βραζιλιανός.*

— *[Παλαιοζῳολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυοποτάμων* εὑρέθησαν ἐν Βραζιλίᾳ καὶ Βολιβίᾳ ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωικοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μυορρινίδαι** (οἱ) (Myorhinidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ρυγχοφόρων*, περιλαμβάνουσα ἀρκετὰ γένη κανθάρων, ἐκ τῶν ὁποίων ἀξιολογώτερον εἶναι ὁ *μυόρρινος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυόρρινος** (ὁ) (Myorhinus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυορρινιδῶν*, περιλαμβάνον μικροὺς κανθάρους ἀπαντῶντας πανταχοῦ τῆς ἀνατολικῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**Μυὸς ὅρμος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τῆς Αἰγύπτου ἐν τῷ Ἀραβίῳ κόλπῳ, μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Δρεπάνου καὶ τοῦ λιμένος Φιλωτέρας, ὀνομασθεὶς κατόπιν *Ἀφροδίτης ὅρμος*. Ὅτε ὁ Καῖσαρ Αὔγουστος (24 π. Χ.) ὠργάνωσεν ἐκστρατείαν πρὸς ἐξερεύνησιν τῆς Τρωγλοδυτικῆς ἐνδοχώρας, διεπιστώθη ἡ μεγίστη ἐμπορικὴ σπουδαιότης τοῦ λιμένος, τῶν ἐξ Ἰνδιῶν ἐμπορευμάτων διαμετακομιζομένων, κατὰ τὴν ἐφεξῆς ἀρχαιότητα, εἰς Μυὸς ὅρμον, ἐκεῖθεν διὰ καμήλων εἰς Κοπτὸν τῆς Θηβαΐδος, ὁπόθεν διὰ διώρυγος πρὸς τὸν Νεῖλον καὶ διὰ τοῦ ποταμοῦ πρὸς τὴν Ἀλεξάνδρειαν (Στρ. ΙΣΤ' 781, 782, 815 Teubner). Ὁ Πλίνιος (6,168) διέσωσε τὴν ὀνομασίαν *Αἰνοκρήνη* (Aenocrene) τοῦ νοτίου τοῦ ὅρμου κέρατος. Νῦν ὁ ὅρμος οὗτος, ὁ ταυτιζόμενος πρὸς τὸν *Σὰμπ-Ἀμποὺ-Σαὰρ* (πλάτ. 27° 25' Β., μῆκ. 33° 43' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2835: Strait of Jubal) ἀπώλεσε τὴν ἐμπορικήν του σημασίαν. Σ. Ε. ΛΥΚΟΥΔΗΣ

**μυοσαλβαρσάνη** (ἡ). Προϊὸν συμπυκνώσεως τῆς *σαλβαρσάνης* μετὰ τῆς μετ' ὀξίνου θειώδους νατρίου ἑνώσεως τῆς *φορμαλδεΰδης*. Πλεονεκτεῖ τῆς νεοσαλβαρσάνης ὡς γινομένη εἰς ἐνέσεις ὑποδορίους ἢ ἐνδομυϊκὰς ἀνωδύνους. Σ. Γ.

**μυοσίνη** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *γλοβουλῖναι*.

**μυοσιγόνον** (τὸ) *[Χημ.]*· βλ. λ. *γλοβουλῖναι*.

**μυοσινοφιβρίνη** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *γλοβουλῖναι*.

**μυοστέωμα** (τὸ) *[Ἰατρ.]*. Ἡ ἐπὶ τοῦ μυώδους ἱστοῦ ἀνάπτυξις ὀστεώματος, ὀφειλομένου εἴτε εἰς ἁπλοῦν τραυματισμόν, εἴτε εἰς ἐπανειλημμένους τοιούτους τῶν μυῶν. Ι. Κ. Κ.

**μυοσωτὶς** (ἡ) (Myosotis) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *βοραγινοειδῶν*, περιλαμβάνον περὶ τὰ 50 εἴδη, ἰθαγενῆ τῶν εὐκράτων χωρῶν τοῦ παλαιοῦ κόσμου. Τὰ φυτὰ τοῦ γένους τούτου εἶναι ἐτήσιοι πόαι, ἢ πολυετεῖς συνήθως, μὲ καυλὸν τριχωτόν, μὲ ἄνθη ἀνοικτῶς κυανᾶ καὶ ἐνίοτε ὑπέρυθρα ἢ λευκὰ καὶ κατὰ κῦμα διατεταγμένα. Γνωστότερον εἶδος, κοινότατον παρ' ἡμῖν, εἶναι ἡ *μυοσωτὶς ἡ ἑλοχαρὴς* (Myosotis helochares), κοιν. μή με λησμόνει. Εἶναι πολυετὴς πόα, καλλιεργουμένη πολλαχοῦ ὡς κοσμητικὸν φυτόν. Δ. Ν. Π.

*Μυσωτὶς ἡ ἑλοχαρίς.*

**μυοτικὰ** (τὰ) (Myotika) *[Φαρμακογ.]*. Καλοῦνται οὕτως αἱ πόαι ἐκεῖναι, αἵτινες φερόμεναι τοπικῶς ἐπὶ τοῦ ὀφθαλμοῦ στενοῦσι τὴν κόρην προκαλοῦσαι μυωπίαν. Τοιαῦται οὐσίαι εἶναι τὰ ἀλκαλοειδῆ: ἐσεριδίνη, πιλοκαρπίνη, ἀρεκολίνη, καὶ ἡ τὴν ἐντονωτέραν δρᾶσιν παρουσιάζουσα φυσοστεγμίνη. Ἡ δρᾶσις τῶν μυοτικῶν εἶναι ἀντίθετος πρὸς τὴν τῶν μυδριατικῶν, ἡ χρῆσίς των ὅμως εἶναι λίαν περιωρισμένη. Κ. Γ. Ν.

**μυοτομία** (ἡ) *[Χειρουργ.]*. Ἡ ἐπὶ τοῦ μυϊκοῦ ἱστοῦ ἐπιφερομένη τομὴ κατ' ἀντίθεσιν πρὸς τὴν *τενοντοτομήν*. Ι. Κ. Κ.

**μυοτόμον** (τό). Μαχαίριον χειρουργικόν, χρησιμοποιούμενον πρὸς τομὴν τῶν μυῶν. Ι. Κ. Κ.

**μυοτονία** (ἡ), ἡ ***νόσος τοῦ*** Thomsen *[Ἰατρ.]*. Εἰδικὴ πάθησις τῶν μυῶν, συνισταμένη εἰς αὔξησιν τοῦ σαρκοπλάσματος τοῦ μυός, δαπάναις τοῦ μυοπλάσματος, ἄνευ δευτερογενοῦς ὑπερτροφίας. Κλινικῶς ἐκδηλοῦται διὰ τῆς ἐμφανίσεως εἰδικῆς μυϊκῆς δυσκαμψίας, ἐπερχομένης κατὰ τὰς βουλητικὰς κινήσεις, ἧς ἕνεκα καθίσταται ἀδύνατος ἡ ἄμεσος χάλασις τοῦ μυός. Τὸ φαινόμενον τοῦτο κατὰ τὰς παθητικὰς κινήσεις δὲν ἐμφανίζεται, ἐπίσης δὲ τὰς ἀνακλαστικὰς ἐνίοτε. Ἀλλεπάλληλοι βουλητικαὶ κινήσεις ἐξαφανίζουσιν αὐτό. Προσβάλλονται ὅλοι οἱ γραμμωτοὶ μύες. Οἱ μύες εἶναι σκληροὶ τὴν αἴσθησιν καὶ ἐνίοτε ὑπερτροφικοὶ ὀλίγον. Ἠλεκτρικῶς

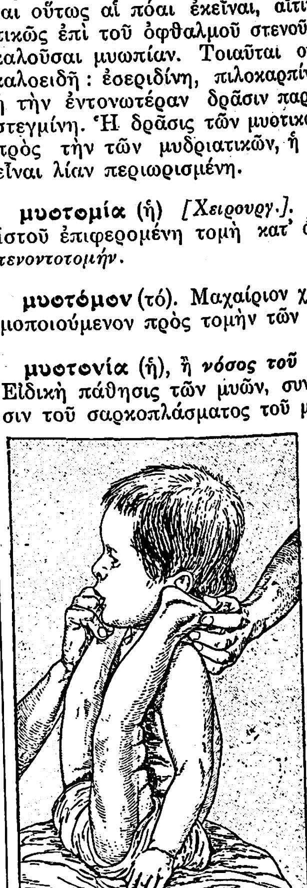

*Ἀσθενὴς πάσχων ἀπὸ μυοτονίαν.*

Digitized by Google

ἔχομεν τὴν λεγομένην μυοτονικὴν ἀντίδρασιν, οἱ δὲ ἐπανειλημμένοι ἐρεθισμοὶ προκαλοῦσι κυματοειδεῖς κινήσεις. Εἶναι νόσος οἰκογενειακὴ καὶ σύμφυτος, εἰ καὶ καθίσταται δήλη εἰς τὴν νεανικὴν ἡλικίαν. Ἐνίοτε εἶναι κληρονομική. Εἶναι ἐπιδεκτικὴ βελτιώσεως, ἀλλὰ καὶ ἐπιδεινώσεως, ἄνευ τινὸς ἄλλου ἐπακολουθήματος. Ἡ νόσος παραμένει ἐφ' ὅρου ζωῆς. Θεωρεῖται ὡς φύσεως ἐνδοκρινοῦς, πολυαδενικῆς. Τ. Α. Ζ.

**—μυοτονία ἀτροφική** *[Ἰατρ.]*. Συνύπαρξις μυοτονίας καὶ μυϊκῆς ἀτροφίας (μυοπαθείας). Ἐντοπίζεται εἰς τὸ πρόσωπον, τὸν στερνοκλειδομαστοειδῆ, τοὺς μῦς τοῦ μηροῦ καὶ τοὺς ραχιαίους καμπτῆρας τοῦ ποδός. Οἱ μύες οὗτοι εἶναι ἡτροφηκότες καὶ ἐμφανίζουσι συγχρόνως βραδύνουσαν χάλασιν μετὰ βουλητικὴν μυϊκὴν συστολήν. Ἐμφανίζεται συνήθως εἰς ἄρρενας καὶ κατὰ τὸ 30ὸν ἔτος, εἶναι δὲ οἰκογενειακὴ καὶ ἐνίοτε κληρονομική. Τὰ πρῶτα συμπτώματα ἐμφανίζονται κατόπιν ἐπιδράσεως ἄλλης τινὸς αἰτίας. Ἐμφανίζουσι δὲ καὶ τὴν ἠλεκτρικὴν μυοτονικὴν ἀντίδρασιν. Ὀφείλεται εἰς αὔξησιν τοῦ σαρκοπλάσματος μετὰ διαμέσου σκληρύνσεως. Αἰτιολογικῶς θεωρεῖται ὡς φύσεως πολυαδενικῆς. Τ. Α. Ζ.

**μυοτονικὸν** *σύνδρομον* *[Ἰατρ.]*. Καλεῖται οὕτω σύνδρομον, χαρακτηριζόμενον ὑπὸ εἰδικῆς μυϊκῆς δυσκαμψίας, ἐπερχομένης κατὰ τὴν βουλητικὴν συστολὴν τῶν μυῶν, ἧς ἕνεκα ἡ ἄμεσος χάλασις καθίσταται ἀδύνατος ἐπί τινα χρόνον. Ἠλεκτρικῶς παρουσιάζει τὴν καλουμένην μυοτονικὴν ἠλεκτρικὴν ἀντίδρασιν. Παρατηρεῖται πρωτοπαθῶς μὲν ἐπὶ τῆς εἰδικῆς τοιαύτης νόσου τοῦ Thomson, καὶ κατὰ δεύτερον εἰς διαφόρους ἄλλας παθήσεις ὡς δευτερογενὲς σύνδρομον, οἷον ἐπὶ πολυνευριτίδων, συριγγομυελίας, ληθαργικῆς ἐγκεφαλίτιδος κλπ. Παρατηρεῖται δὲ μεμονωμένως συνήθως εἴς τινας μῦς. Συνυπάρχει ἐνίοτε μετὰ τοῦ συνδρόμου Parkinson, καταληψίας, μυοκλονίας, παραλύσεως γλώσσης καὶ μασητήρων. Ἡ πρόγνωσις ἀνάλογος τῆς προκαλούσης νόσου, ὡς καὶ ἡ θεραπεία. Τ. Α. Ζ.

**μυουρίζω** (κοιν. *καβιλιάρω τὴν ἄκρη*). Καθιστῶ αἰχμηρὸν τὸ ἄκρον σχοινίου, τερματίζων αὐτὸ διὰ κατασκευῆς μυούρου πρὸς εὐχερῆ εἰσαγωγήν του ἐν τοῖς τροχίλοις. Σ. Ε. Λ.

**μύουρον** (τό), κοιν. *καβίλια τοῦ σχοινιοῦ*. Πρωρατικὸν ἔργον κατασκευαζόμενον εἰς τὴν ἄκραν σχοινίου ἢ κάλω, ἵνα μὴ φθείρωνται ταῦτα ἐκ τῆς ἐκστροφῆς τῶν ἐμβόλων, εὐτρεπίζωνται δ' ἅμα τὰ τοιαῦτα ἀγόμενα, λεπτυνόμενα ἐν σχήματι ὀξέος κώνου κατὰ τὴν ἄκραν, ἐπιτρέποντι ἅμα τὴν εὐχερῆ εἰσαγωγὴν των εἰς τροχίλους κτλ. Διὰ τὴν κατασκευὴν μυούρου φιμῶμεν πρῶτον τὸ σχοινίον εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τοῦ ἄκρου κατόπιν, ἐκπλέκοντες τὰ ἄκρα τῶν ἐμβόλων μέχρι τοῦ φιμώματος καὶ ἀναστρέφοντες τὰ ἐξωτερικά, λεπτύνομεν τὰ ἐσωτερικὰ ξέοντες αὐτὰ διὰ μαχαιριδίου. Ἐμπλέκομεν ἀκολούθως τὰ ἐξωτερικὰ κλώσματα κατὰ ἄρτια καὶ περιττά, συνδέοντες ἑκάστην στροφὴν ἰσχυρῶς δι' ἱστιορράμματος, μεθ' ὃ ὑφαίνομεν τὸ σύνολον ἐν εἴδει πλέγματος. Σ. Ε. Λ.

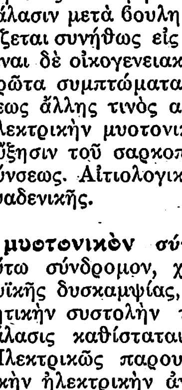

*Μύουρον.*

**μύουρος** (ἡ) (Muosurus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *βατραχιοειδῶν*, περιλαμβάνον μικρότατα δικοτυλήδονα φυτά, ἀπαντῶντα εἰς τὰς ἀμμώδεις ἐκτάσεις τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων εἰδῶν γνωστότερον εἶναι ἡ *μύουρος ἡ ἐλαχίστη* (Myosurus minima), πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης ἀπαντῶσα. Ὁ Διοσκορίδης ἐκάλει *μύουρον* εἶδος τι τοῦ φυτοῦ *δενδρόβιον*. Δ. Ν. Π.

**Μυοῦς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἰωνίας, «μία τῶν Ἰάδων τῶν δώδεκα», κατὰ τὴν νοτίως τοῦ Μαιάνδρου ἔκτασιν, κτισθεῖσα ἐπὶ ἐδάφους εὐσείστου, ὑπὸ τὸ ὁποῖον ὑπέβοσκε θερμότης τῆς γῆς καὶ τῶν ὑδάτων· «εὔθρυπτός τε γάρ ἐστιν ἡ γῆ καὶ ψαθυρὰ καὶ εὐέκπυρωτος». Ἀρχαιότατα παράλιος οὖσα, ἦτο κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος, λόγῳ τῶν προσεπιχώσεων ἀπὸ τῆς ὑπὸ τοῦ Μαιάνδρου κυλινδουμένης ἰλύος, μεσογαία καὶ εἰς 30 στάδια ἔνδον τῆς ἐκβολῆς. Κτίτωρ αὐτῆς ὑπῆρξε κατὰ μὲν τὸν Παυσανίαν *Κυαρίδης*, ὁ τοῦ Κόδρου υἱός, κατὰ δὲ τὸν Στράβωνα *Κυδρῆλος*, νόθος υἱὸς τοῦ Κόδρου. Τὸ πάλαι κατεῖχον τὴν πόλιν Κᾶρες, ἐκβληθέντες βραδύτερον ὑπὸ τῶν Ἰώνων. Ἡ Μυοῦς ἦτο μία τῶν πόλεων, τὰς ὁποίας ὁ Ἀρταξέρξης παρεχώρησεν εἰς τὸν Θεμιστοκλῆ. Κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον ἦτο σύμμαχος τῶν Ἀθηναίων (*Θουκ.* Γ', 19). Εὐημεροῦσα ἀνέκαθεν, ὁπότε εἶχε καὶ στόλον, οὗ τμῆμα συμμετέσχε τῆς ναυμαχίας τῆς Λάδης, ἐξέπεσε σὺν τῷ χρόνῳ, μέχρι σημείου ὥστε ὁ Φίλιππος «Μυοῦντος κυριεύσας τοῖς Μάγνησιν ἐχαρίσατο τὸ χωρίον ἀντὶ τῶν σύκων» (*Στράβ.* ΙΒ', 579). Κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος εἶχε τοσοῦτον ἐκπέσει, ὥστε οἱ Μυούσιοι ἐθεωροῦντο ὡς τῇ Μιλήτῳ ἀνήκοντες, ἀφοῦ ἡ πόλις των «δι' ὀλιγανδρίαν Μιλησίοις συμπεπόλισται» (ΙΔ', 636)· ὁ Παυσανίας ἀποδίδει τὴν μετοικεσίαν εἰς τὰς ἀπὸ τῆς γενέσεως τῆς *Μυουσίας* λιμνοθαλάσσης προκυψάσας εἰς τοὺς κατοίκους ἐνοχλήσεις. Ταυτίζεται δὲ ἡ θέσις της πρὸς τοποθεσίαν (πλάτ. 37°31'45" Β., μῆκ. 27°17'40" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1546: Samos Strait to Mandelyah gulf) δυτικῶς τῶν ἐρειπίων τῆς Μιλήτου κειμένην, ἣν οἱ μὲν Τοῦρκοι ὀνομάζουν *Ἀβσιὰρ Καλεσσί*, οἱ δὲ Ἕλληνες *Παλάτια*. Σ. Ε. Λ.

**—Μυοῦς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαιοτάτη ὀνομασία πόλεως μετὰ λιμένος ἐν Κιλικίᾳ μεταξὺ Σάλου (Κὶζλιμάν) καὶ Κελενδέρεως (Τσελενδρέ). Ὁ Στράβων ἀναφέρει αὐτὴν ὡς *Μελανίαν*, ὁ Πλίνιος ὡς Myanda (V, 22 § 92) καὶ ὁ Σταδιασμὸς (104) ὡς *Μανδάνην*. Ὑπὸ τῶν Τούρκων ὀνομάζεται *Ἀκσάς*, ὑπὸ δὲ τῶν Ἄγγλων ἐπεκλήθη διεθνῶς ἡ παρὰ Στράβωνι ἀρχαία ὀνομασία (Port Melania, πλάτ. 36°08' Β., μῆκ. 33°19' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 237: Kara Burnù to Karadash Burnù). Σ. Ε. Λ.

**Μυουσία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κόλπωσις, ἥτις ἐσχημάτιζετο ἀρχαιότατα κατὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Μαιάνδρου, πρὸ τῆς Μυοῦντος. Ταύτην αἱ ἀπὸ τοῦ Μαιάνδρου κυλινδούμεναι ἰλύες ἀπέφραξαν διὰ σχηματισθέντος προσχωματικοῦ θέλους, μεταβληθεῖσαν οὕτω εἰς λίμνην· «ὡς δὲ ἐνόσησε τὸ ὕδωρ καὶ οὐκέτι ἦν θάλασσα, οἱ κώνωπες ἄπειρον πλῆθος ἐγίνοντο ἐκ τῆς λίμνης, εἰς ὃ τοὺς ἀνθρώπους ἠνάγκασαν ἐκλιπεῖν τὴν πόλιν». Ἀπεχώρησαν δὲ τότε εἰς Μίλητον οἱ Μυούσιοι, συνακομίσαντες ὅ,τι ἠδύνατο νὰ μετενεχθῇ ὡς καὶ τὰ ἀγάλματα τῶν θεῶν των, δι' ὃ καὶ ταῦτα ἱστορῶν ὁ Παυσανίας (Ἀχαϊκὰ Ζ, β, 10—11) οὐδὲν σχετικὸν πρὸς τὴν λατρείαν εὗρε σῳζόμενον εἰμὴ ναὸν τοῦ Διονύσου ἐκ λίθου λευκοῦ (βλ. λ. *Μυοῦς*). Σ. Ε. Λ.

**μυόφονον** (τὸ) *[Βοτ.]*. Ἐκλήθη οὕτω ὑπὸ τοῦ Θεοφράστου τὸ φυτὸν *πευκέδαιμον*.

**μυοφορία** (ἡ) (Myophoria Bronn) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *τριγωνιδῶν ἑτεροδόντων ὁμομυαρίων ἐλασματοβραγχίων* μαλακίων. Τὸ ὄστρακον αὐτῶν ἦτο λοξῶς ᾠοειδὲς μέχρι τραπεζοειδοῦς καὶ λεῖον. Λείψανα ἀπολιθωμένα τῶν ζῴων τούτων εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῶν διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς δεβονίου τοῦ παλαιοζωϊκοῦ μέχρι καὶ τῆς τριασίου τοῦ μεσοζωϊκοῦ. Ἄφθονα λείψανα συναντῶνται κατὰ τὴν τριάσιον διάπλασιν. Ἐν Ἑλλάδι λείψανα μυοφοριῶν εὑρέθησαν: α') Ἐντὸς τῶν ψαμμιτῶν-ἀσβεστολίθων τῆς κατωτέρας τριασίου ὑποδιαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ παρὰ τὴν Ἁγίαν Τριάδα (κορυφὴ Βελέτσι τῆς Πάρνηθος) τὸ εἶδος *μυοφορία praeorbicularis*. β') Ἐντὸς μεταμορφωμένων φυλλιτωδῶν ἀσβεστολίθων καὶ μελανῶν φυλλιτῶν τῆς δυτικῆς Κρήτης. Συνώνυμον: *νεοσχιζόδους*. Γ. Κ. Γ.

**μυοφορικάρδιον** (τὸ) (Myophoricardium Wöhrm.) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *τριγωνιδῶν ἑτεροδόντων ὁμομυαρίων ἐλασματοβραγχίων* μαλακίων. Λείψανά των εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ. Ἐν Ἑλλάδι λείψανα αὐτῶν εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν μεταμορφωμένων φυλλιτωδῶν ἀσβεστολίθων καὶ μελανῶν φυλλιτῶν τῆς δυτικῆς Κρήτης. Γ. Κ. Γ.

**μυοφοριόπις** (ἡ) (Myophoriopis Wöhrm.) *[Παλαιοζῳολ.]*. Γένος ἐκλειψάντων ζῴων, ἀνῆκον εἰς τὴν οἰκογένειαν τῶν *ἀπαρτιδῶν ἑτεροδόντων ὁμομυαρίων ἐλασματοβραγχίων* μαλακίων. Λείψανά των ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριασίου διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ. Ἐν Ἑλλάδι λείψανα αὐτῶν εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν μεταμορφωμένων φυλλωδῶν ἀσβεστολίθων καὶ μελανῶν φυλλιτῶν τῆς δυτικῆς Κρήτης. Γ. Κ. Γ.

**μυοφρενικὴ ἀρτηρία** *[Ἀνατομ.]*. Ἡ ἑτέρα τῶν ἀκρεμόνων τῆς ἔσω μαστικῆς ἀρτηρίας, χορηγοῦσα μεσοπλευρίους κλάδους εἰς τὰ κατώτερα μεσοπλεύρια διαστήματα. Ι. Π.

**μυόφωνος** (ὁ) (Myophonus) *[Ζῳολ.]*. Γένος πτηνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ᾠδικῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *κοττυφιδῶν*, περιλαμβάνον μετρίου μεγέθους κοττύφους ἰθαγενεῖς τῆς Ἀσίας καὶ τῶν παρὰ ταύτην νήσων. Ἐκ τῶν 5 εἰδῶν τοῦ γένους γνωστότερον εἶναι ὁ *μυόφωνος ὁ στικτὸς* (Myophonus maculatus), ὅστις ἔχει μέγεθος παρεμφερὲς πρὸς τὸ τοῦ κοινοῦ κοττύφου, κεφαλὴν λεπτήν, ράμφος μέτριον καὶ λεπτόν, σῶμα ἐπίμηκες καὶ μέτριον, πτέρυγας μακράς, οὐρὰν μακρὰν καὶ ῥιπιδοειδῆ, πόδας λεπτοὺς καὶ ὑψηλοὺς μετὰ μεγάλων δακτύλων καὶ χρῶμα μελανοκυανοῦν μετὰ ἀργυροχρόων κηλίδων ἐπὶ τῆς ῥαχιαίας ἐπιφανείας. Τρέφεται ἐκ διαφόρων ἐντόμων καὶ κόκκων. Δ. Ν. Π.

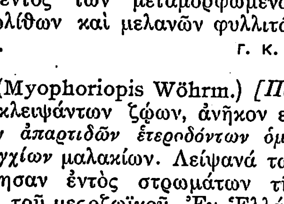

*Μυόφωνος ὁ στικτός.*

**μυοχάμη** (ἡ) (Myochame) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων πεταλοβραγχίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *προσθιοβραγχίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *πανδοριδῶν*, περιλαμβάνον πέντε εἴδη ἰθαγενῆ τῶν περὶ τὴν Αὐστραλίαν θαλασσῶν. Γενικῶς τὰ μαλάκια ταῦτα ἔχουσι μικρὸν μέγεθος, κόγχην ἀκανόνιστον μετὰ πολλῶν συσπειρώσεων καὶ χρῶμα ἐρυθρὸν ἢ ἐρυθρομαργαριτῶδες. Κατὰ τὰς πρώτας φάσεις τῆς ἀναπτύξεώς των κινοῦνται ἐλευθέρως ἐν τῇ θαλάσσῃ, κατὰ δὲ τὴν ὥριμον αὐτῶν ἡλικίαν προσκολλῶνται ἐπὶ ἑτέρων κογχοειδῶν. Δ. Ν. Π.

**μυόχειλος** (ὁ) (Myochilus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *λωρανθοειδῶν* ἢ *λωρανθῶν*, περιλαμβάνον δενδρύλλια ἰθαγενῆ τῆς Χιλῆς, ὧν τὰ φύλλα ἐνέχουσι καθαρτικὰς ἰδιότητας. Δ. Ν. Π.

**μυόχρους** (ὁ, ἡ), —ουν (τό)· ὁ ἔχων τὸ χρῶμα τοῦ μυός, τοῦ ποντικοῦ, τεφρόχρους, τεφρός.

**μυοψυχία** (ἡ). Ὅρος πλασθεὶς ὑπὸ τοῦ Joffroy πρὸς ὀνομασίαν τῶν περιπτώσεων πρωτογόνου μυοπαθείας μετὰ ψυχικῶν διαταραχῶν, αἵτινες συνίστανται εἰς σύμφυτον διανοητικὴν ἐξασθένησιν (μικρονοια, μωρία, ἰδιωτία), αἵτινες εἶναι συνήθεις εἰς τὰς περιπτώσεις μυοπαθείας, ὡς καὶ ἡ ἐπιληψία. Τ. Α. Ζ.

**Μύρα** (τουρκ. *Τέμπρε*) *[Γεωγρ.]*. Διάσημος πόλις τῆς Λυκίας, ἧς ἐπὶ Θεοδοσίου τοῦ Β' ὑπῆρξε καὶ πρωτεύουσα. Κεῖται εἰς τὸ βάθος εὐρείας πεδιάδος, ἀπέχουσα τῆς θαλάσσης 4 περίπου χλμ. καὶ ἔχουσα ἐπίνειον τὴν *Ἀνδριάκην* (νῦν *Ἀνδράκι*). Παρὰ τὴν πόλιν ῥέει ὁ *Μύρων* ποταμὸς (*Τέμπρε τσάϊ*). Ἐκ τῶν ἀρχαίων αὐτῆς οἰκοδομημάτων σῴζεται μεγαλοπρεπὲς θέατρον, ὡς καὶ τὰ ἐρείπια ναοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ Κουριδίου. Σῴζονται ὡσαύτως τὰ ἐρείπια τοῦ μεγάλου ναοῦ τοῦ Ἁγίου Νικολάου, ἀνεγερθέντος ὑπὸ Θεοδοσίου τοῦ Β'. Κατὰ τὸν Δ' αἰῶνα τὰ Μύρα διετέλεσαν ἐπισκοπή, ἧς προΐστατο ὁ ἐκ Πατάρων τῆς Λυκίας καταγόμενος Ἅγιος Νικόλαος. Πρὸ τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν εἶχεν 800 κατοίκους, πάντας σχεδὸν Ἕλληνας. Κ. ΛΣ

**Μυρὰ** (Murat), *Ἰωακείμ*. Γάλλος στρατάρχης καὶ βασιλεὺς τῆς Νεαπόλεως (1767—1815). Ὁ πατήρ του ἦτο πανδοχεύς, ἀλλ' αὐτός, προστατευόμενος ὑπὸ τῆς οἰκογενείας ντὲ Περιγκόρ, ἀπεστάλη πρὸς ἐκπαίδευσιν εἰς τὸ σεμινάριον τῆς Τουλούζης. Ἀποβληθεὶς ἐξ αὐτοῦ μετέβη εἰς Παρισίους πρὸς βιοπορισμὸν καὶ ἐγένετο ὑπηρέτης ξενοδοχείου. Στρατευθεὶς ὅμως μετὰ τὴν ἔκρηξιν τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως καὶ ἐπιδείξας ἀγχίνοιαν καὶ ἀνδρείαν, ἀπέκτησε ταχέως τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντισυνταγματάρχου. Ἐνθουσιώδης ἐπαναστάτης, ἀπώλεσε τὸν βαθμόν του μετὰ τὴν πτῶσιν τοῦ Ροβεσπιέρρου, ἀλλ' ἀνέκτησεν αὐτὸν τῷ 1795, τεθεὶς ὑπὸ τὰς διαταγὰς τοῦ Βοναπάρτου, ὃν ἠκολούθησεν εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἰταλίας, διαπρέψας κατὰ τὰς μάχας αὐτῆς καὶ προαχθεὶς τῷ 1797 εἰς τὸν βαθμὸν στρατηγοῦ ταξιαρχίας. Ἠκολούθησεν εἶτα τὸν Βοναπάρτην εἰς Αἴγυπτον, ἐπληγώθη κατὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Ἀλεξανδρείας καὶ ἐδοξάσθη κατὰ τὰς μάχας τῶν Πυραμίδων, τῆς Κάζας καὶ τοῦ Ἀμπουκίρ, προαχθεὶς εἰς τὸν βαθμὸν στρατηγοῦ μεραρχίας. Ἐπανελθὼν εἰς Γαλλίαν μετὰ τοῦ Βοναπάρτου, ἐτάχθη ἐπὶ κεφαλῆς τῶν γρεναδιέρων τὴν 16 Ὀκτωβρίου 1799 καὶ διεσκόρπισε διὰ τῆς λόγχης τὸ συμβούλιον τῶν Πεντακοσίων. Ἐγένετο τότε ἀρχηγὸς τῆς φρουρᾶς τοῦ πρώτου ὑπάτου καὶ ἐνυμφεύθη τὴν ἀδελφήν αὐτοῦ Καρολίναν Βοναπάρτου. Κατὰ τὰ ἑπόμενα ἔτη δὲν ἐγνώρισεν εἰμὴ μόνον ἐνδόξους νίκας. Διώκων τὸ ἱππικὸν κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μαρέγγου, ἐξηνάγκασε τοὺς Νεαπολιτανοὺς νὰ ἐκκενώσουν τὰς χώρας τοῦ πάπα. Τῷ 1805 ἀνεδείχθη ἥρως εἰς τὴν μάχην τοῦ Αὐστερλίτς, διὸ ἀπενεμήθη αὐτῷ ὁ τίτλος τοῦ μεγάλου δουκὸς τοῦ Μπέργκ. Δια-

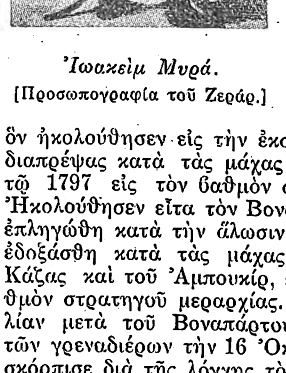

*Ἰωακεὶμ Μυρά.*

[Προσωπογραφία τοῦ Ζεράρ.]



Digitized by Google

πρέψας καὶ εἰς πλείστας ἄλλας μάχας, ἀπεστάλη τῷ 1808 ὡς ἀρχηγὸς τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ τῆς Ἱσπανίας καὶ κατέλαβε τὴν Μαδρίτην, κατὰ τὸ αὐτὸ δὲ ἔτος ἀνηγορεύθη βασιλεὺς τῆς Νεαπόλεως ὑπὸ τὸ ὄνομα *Ἰωακεὶμ - Ναπολέων* καὶ κατήρτισε στρατὸν ἐξ 70.000 ἀνδρῶν. Καίτοι δυσηρεστημένος κατὰ τοῦ Ναπολέοντος, μετέσχεν ἐν τούτοις τῆς ἐκστρατείας τῆς Ρωσίας (1812), ἀλλὰ μετὰ τὴν καταστρεπτικὴν ὑποχώρησιν τῆς Μεγάλης Στρατιᾶς ἤρξατο δυσπιστῶν πρὸς τὸ ἄστρον τοῦ Ναπολέοντος. Καταλιπὼν τὸ στράτευμα, ἐπέστρεψεν εἰς τὸ βασίλειόν του, ὁπόθεν ἐπανῆλθε πάλιν εἰς Γαλλίαν, ὅπως ἀναλάβῃ τὴν εἰς Γερμανίαν ἐκστρατείαν. Μετά τινας μῆνας ὑπέγραψε συνθήκην μετὰ τῶν συμμάχων ἐπὶ τῇ ἐλπίδι τῆς διατηρήσεως τοῦ θρόνου του. Οἱ σύμμαχοι, μὴ ἔχοντες τὴν ἀνάγκην αὐτοῦ, παρέβησαν τὰς ὑποσχέσεις των καὶ ὁ Μυρά, μετὰ τὴν ἐπάνοδον ἐξ Ἔλβας τοῦ Ναπολέοντος, ἐτάχθη ὑπὲρ αὐτοῦ καὶ κατέλαβε τὴν Ρώμην καὶ τὴν Βολωνίαν· ἡττηθεὶς ὅμως ἐν Τολεντίνῳ κατέφυγεν εἰς Κορσικήν, ὅπου συνήθροισεν εὐάριθμον στρατόν, ὅπως ἐπιχειρήσῃ τὴν ἀνάκτησιν τοῦ θρόνου του. Κατὰ τὸν πλοῦν του καταληφθεὶς ὑπὸ τρικυμίας ἀπεβιβάσθη μόνος εἰς Πίτζο τῆς Καλαυρίας, ὅπου συλληφθεὶς παρεπέμφθη εἰς τὸ στρατοδικεῖον καὶ καταδικασθεὶς ἐτυφεκίσθη (13 Ὀκτωβρίου), ἐπιδείξας πλήρη ἀπάθειαν κατὰ τὴν ἐκτέλεσιν. Θ. Β.

**Μύραι** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς θεσσαλικῆς Μαγνησίας, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Σκύλακος. Ἔκειτο εἰς τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν αὐτῆς πρὸς τὸ Αἰγαῖον. Ὁ Μέζιέρες τὴν τοποθετεῖ εἰς τὴν περιοχὴν τοῦ σημερινοῦ χωρίου Μούρεσι. Τὸ ὄνομα ὅμως αὐτοῦ οὐδεμίαν σχέσιν ἔχει μὲ τὴν ἀρχαίαν πόλιν Μύραι, διότι εἶναι νεώτερον καὶ προῆλθεν ἀπὸ τὰς πολλὰς μορέας, αἵτινες ἄλλοτε ἐκάλυπτον τὴν περιφέρειάν του. Ἡ πιθανωτέρα ἐκδοχὴ εἶναι ὅτι αἱ Μύραι ἔκειντο παρὰ τὴν θέσιν Παλιόκαστρο τῆς σημερινῆς Ζαγορᾶς, διότι εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ ποταμίσκου Καλοκαιρινὸς καὶ πλησίον τῶν θέσεων Παπαπαναγιώτη—Παλιόκαστρο εὑρέθησαν κατὰ τὰς ἑκάστοτε γενομένας ἐκχερσώσεις ἐρείπια βυζαντινὰ ἀνάμεικτα μετ' ἀρχαίων ἑλληνικῶν. Γ. Κ. ΚΟΡ.

**μύραινα** (ἡ) (Myraena) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυραινιδῶν*, περιλαμβάνον μεγάλους ἰχθῦς μὲ σῶμα ἐπίμηκες, κυλινδρικόν, ταινιοειδές, δέρμα λεῖον καὶ γυμνὸν λεπίων, κεφαλὴν μόλις διακρινομένην ἐκ τοῦ κυρίως σώματος, ὀφθαλμοὺς ἀπεστρογγυλωμένους, ῥύγχος ἐπίμηκες, μυκτῆρας ἄνωθεν τοῦ ῥύγχους τοποθετημένους.

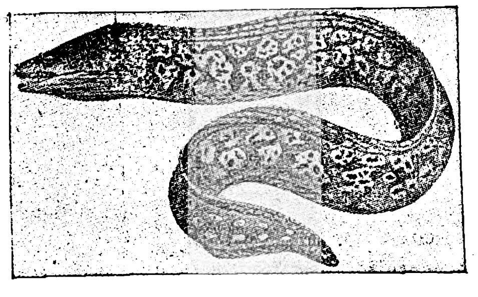

*Μύραινα ἡ τῶν ἀρχαίων.*

στόμα βαθέως ἐσχισμένον, ὀδόντας πολυπληθεῖς καὶ ἰσχυρούς, ῥαχιαῖον πτερύγιον ἐπίμηκες, διῆκον καθ' ὅλον τὸ μῆκος τοῦ σώματος. Γνωστότερον εἶδος τῆς οἰκογενείας εἶναι ἡ *μύραινα ἡ τῶν ἀρχαίων* (Myraena hellena), κοινῶς *σμύρνα* ἢ *σμέρνα* ἢ *σφύρνα*, ἥτις παρέχει νοστιμώτατον κρέας. Οἱ Ρωμαῖοι τὰς προσέφερον εἰς τὰ συμπόσιά των, τὰς ἔτρεφον δὲ ἐντὸς μεγάλων δεξαμενῶν, ἃς διετήρουν. Ἀπαντῶσιν εἰς τὸν Ἀτλαντικὸν καὶ τὴν Μεσόγειον θάλασσαν. Δ. Ν. Π.

**μυραινέσοξ** (ὁ) (Myraenesox) *[Ζωολ.]*. Γένος ἰχθύων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυραινιδῶν*, περιλαμβάνον μεγάλους ἰχθῦς μὲ σῶμα κυλινδρικόν, ταινιοειδὲς καὶ παραπλήσιον πρὸς τὸ σῶμα τῶν ἐγχέλεων. Γνωστὰ εἴδη τινὰ ἀπαντῶντα εἰς τὴν Μεσόγειον καὶ τὸν Ἀτλαντικὸν ὠκεανόν. Δ. Ν. Π.

**μυραινίδαι** (οἱ) (Myraenidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἰχθύων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυσοστόμων*, περιλαμβάνουσα εὐμεγέθεις ἰχθῦς, ὧν τὸ μῆκος πολλάκις φθάνει τὰ 2,50 μ., μὲ σῶμα ἐπίμηκες, ὀφιοειδὲς καὶ γυμνὸν λεπίων. Ἴδιον χαρακτηριστικὸν τῶν μυραινιδῶν εἶναι ὅτι ὁ σκελετὸς τῆς ὠμοπλάτης στηρίζεται ἐπὶ τῆς σπονδυλικῆς στήλης καὶ οὐχί, ὅπως εἰς τοὺς περισσοτέρους τῶν ἰχθύων, ἐπὶ τῆς κεφαλῆς. Γνωστότερα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι: ὁ *ἔγχελυς* (Anguilla), ὁ *γόγγρος* (Conger), ἡ *μύραινα* (Myraena), ὁ *μυραινέσοξ* (Myraenesox) καὶ ὁ *ὀφεόυρος* (Ophisurus). Δ. Ν. Π.

**Μυρακτὴ** *[Γεωγρ.]*. Προάστειον τῆς Σμύρνης (βλ. λ. *Κοκὰρ - γιαλί*).

**μυραλοιφὴ** (ἡ)· τὸ νὰ ἀλείφεταί τις μὲ μύρα· ‖ εἶδος εὐώδους ἀλοιφῆς, κοιν. *πομάδα*.

**Μυράτ**, *Μῆτσος*. Ἕλλην ἠθοποιός, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ τῷ 1878. Μετὰ τὴν ἐκεῖ ἀποπεράτωσιν τῶν γυμνασιακῶν αὐτοῦ σπουδῶν, ἠκολούθησε διάφορα στάδια, ἅτινα ἀλληλοδιαδόχως ἐγκατέλιπεν, ἵν' ἀφοσιωθῇ εἰς τὸ θέατρον, εἰς ὃ τὸν ὤθει ἔμφυτος κλίσις. Μεταβὰς εἰς Παρισίους παρηκολούθησε τὰς παραστάσεις τῶν κυριωτέρων θεάτρων, μεθ' ὃ, ἐπιστρέψας εἰς Ἑλλάδα, εἰσῆλθε μεταξὺ τῶν πρώτων διὰ διαγωνισμοῦ εἰς τὴν τότε συσταθεῖσαν (1900) δραματικὴν σχολὴν τοῦ «Βασιλικοῦ θεάτρου», μετὰ τὴν διάλυσιν τῆς ὁποίας προσελήφθη ὡς ἠθοποιὸς εἰς τὸν ἐν Πάτραις ἐργαζόμενον τὴν ἐποχὴν ἐκείνην θίασον τοῦ Δ. Κοτοπούλη. Ἱδρυθείσης κατόπιν τῆς «Νέας Σκηνῆς» ὑπὸ τοῦ Χρηστομάνου, προσελήφθη εἰς αὐτὴν καὶ ὑπὸ τὰς ὁδηγίας τοῦ ἱδρυτοῦ της ἐμορφώθη εἰς ἕνα τῶν καλῶν ἠθοποιῶν. Διαρκούσης τῆς μὲ τὸν Χρηστομάνον συνεργασίας του ἐνυμφεύθη τὴν δεσποινίδα Κυβέλην Ἀδριανοῦ, ἐξ ἧς ἀπέκτησε τὴν νῦν ἠθοποιὸν Μιράνταν Θεοχάρη. Διαζευχθεὶς τὴν πρώτην του σύζυγον ἐνυμφεύθη τὴν δευτερότοκον θυγατέρα τοῦ Δ. Κοτοπούλη Χρυσούλαν, ἐξ ἧς ἀπέκτησεν υἱόν, ὅστις ἠσπάσθη ὡσαύτως τὸ ἐπάγγελμα τοῦ πατρός του. Διαλυθείσης τῆς «Νέας Σκηνῆς» συνειργάσθη ἔκτοτε ἐπὶ μακρὸν μετὰ τῆς Μαρίκας Κοτοπούλη, μεθ' ἧς τῷ 1929, συμπράττοντος καὶ τοῦ Σπύρου Μελᾶ, ἵδρυσαν τὴν «Ἐλευθέραν Σκηνήν», ἧς αἱ παραστάσεις διήρκεσαν μέχρι τοῦ Ὀκτωβρίου τοῦ 1930. Μεταξὺ τῶν πολυαρίθμων ῥόλων, οὓς διέπλασε κατὰ τὸ τριακονταετὲς τοῦ σταδίου του διάστημα, ἀξιομνημόνευτοι εἶναι ὁ τοῦ Ἅμλετ καὶ ὁ τοῦ Συρανὸ ντὲ Μπερζεράκ. Τῷ 1928 ἐδημοσίευσεν εἰς τόμον καὶ τὰ ἀπομνημονεύματα αὐτοῦ ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἡ ζωή μου». Ν. Ι. Λ.

**Μυρελαίου** *μονή*. Μία τῶν ἀρχαιοτέρων μονῶν τοῦ Βυζαντίου, κειμένη ἐν τῇ συνοικίᾳ τῆς Βλάγκας. Ἐν αὐτῇ ἀπετέθησαν τὰ ὀστᾶ τοῦ αὐτοκράτορος Μαυρικίου (582—602). Ὁ αὐτοκράτωρ Ρωμανὸς Β' ὁ Λεκαπηνὸς (920—944) ἀνεκαίνισε καὶ ἐξωράϊσεν αὐτήν, ἐκεῖ δ' ἐτάφη αὐτός τε καὶ ἡ σύζυγός του Θεοδώρα καθὼς καὶ ἡ θυγάτηρ των Ἑλένη, σύζυγος τοῦ Κωνσταντίνου Ζ' τοῦ Πορφυρογεννήτου. Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῶν Τούρκων μετετράπη εἰς τέμενος (περὶ τὸ 1500) καὶ ἔκτοτε καλεῖται *Μπουντρούμ-τζαμισί*», ἕνεκα τῶν βαθέων ὑπογείων της. Ν. ΚΛΣ

**Μύρες** (Myres), *Ἰωάννης Λίντον*. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1869. Τῷ 1910 ἐγένετο καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἱστορίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Ὀξφόρδης. Ἐνήργησεν ἀρχαιολογικὰς ἀνασκαφὰς ἐν Ἑλλάδι, Μικρασίᾳ, Κύπρῳ καὶ ἰδίως ἐν Κρήτῃ καὶ τῷ 1894 ἀνέλαβε τὴν ἀναδιοργάνωσιν καὶ τακτοποίησιν τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Κατάλογος τοῦ μουσείου τῆς Κύπρου» (1899), «Ἱστορία τῆς Ρώμης» (1902), «Ἡ αὐγὴ τῆς ἱστορίας» (1914) κ. ἄ. Μ. Δ. Β.

**Μυρεσίου**, *τέως δῆμος* — *[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας: *Λαμπινοῦ, Μουρεσίου, Ξουρίχτι* καὶ *Τσαγκαράδας*. Εἶχε πρωτεύουσαν τὴν Τσαγκαράδαν, ἠρίθμει δὲ κατ. 3.200 περίπου. Χ. Δ.

**μυρέψημα** (τό)· μυρεψικὸν κατασκεύασμα, ἀπόσταγμα ἀρωματῶδες.

**μυρεψικός**, —*ή*, —*όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μυρεψόν, ὁ τοῦ μυρεψοῦ: «μυρεψικὴ τέχνη» ἡ τέχνη τοῦ μυρεψοῦ, τοῦ ἀποστάζειν ἄνθη.

**μυρεψὸς** (ὁ, ἡ)· ὁ ἕψων μύρα, ὁ παρασκευάζων μύρα διὰ τῆς ἑψήσεως, διὰ τῆς ἀποστάξεως, μυροποιός.

**Μυρζὲ** (Murger), *Ἐρρῖκος*. Γάλλος συγγραφεὺς (1822—1861). Εἰς νεαρὰν ἡλικίαν ᾐσθάνθη κλίσιν πρὸς τὴν ζωγραφικήν, ἀλλ' ἀποτυχὼν ἐστράφη πρὸς τὴν λογοτεχνίαν. Τὰ πρῶτα βήματά του ὑπῆρξαν πλήρη στερήσεων, διότι ἔζη μὲ τὸν πενιχρὸν μισθὸν ἀναγνώστου παρὰ τῷ κόμιτι Τολστόϊ. Εἰς τὰ πλήρη αἰσθήματος ποιήματά του ἐπεχείρησε νὰ περιγράψῃ ὅλας τὰς δυστυχίας καὶ τὰς ἀπογοητεύσεις μιᾶς τοιαύτης ζωῆς, καὶ τέκνον τοῦ λαοῦ καθὼς ἦτο, ὅλας του τὰς ὑποθέσεις τὰς ἐνεπνεύσθη ἀπὸ τὸ περιβάλλον, εἰς τὸ ὁποῖον ἐφυτοζῴει. Ἡ «Via dolorosa», ποίημα, τοῦ ὁποίου ἀποσπάσματα ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1843 εἰς μίαν ἐφημερίδα, ἐσυνεχίσθη ὑπὸ τῶν «Scènes de la vie de Bohême», αἱ ὁποῖαι ἐδημοσιεύθησαν τῷ 1848 εἰς τὸν «Corsaire». Αἱ περιγραφαὶ αὗται ἠθῶν ἀγνώστων ἀκόμη εἰς τὸ πολὺ κοινόν, τῶν ὁποίων ἡ χυδαιότης καὶ ἠθικὴ ἀδιαφορία ἐπιμελῶς ἐκρύπτοντο ὑπὸ ἑνὸς εἴδους γυναικείου συναισθηματισμοῦ καὶ φιλελευθερίας, ἤρεσαν πολύ. Ὁ Μυρζὲ ἀπέβη ἔνδοξος καὶ συνειργάζετο κατόπιν τακτικὰ εἰς τὰ «Évènement», «Dix Décembre», «Revue des Deux Mondes» (1851) κλπ. Ἀλλὰ δυστυχῶς οὐδέποτε κατώρθωσε ν' ἀποτινάξῃ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ βοημισμοῦ τούτου, ὅστις τὸν ὡδήγησεν εἰς τὴν ἐπιτυχίαν καὶ μέχρι τέλους τοῦ βίου του οὐδὲν κατώρθωσε νὰ δημιουργήσῃ ἔξω τῆς πρώτης του ἐμπνεύσεως. Ὑπῆρξεν εἷς ἐκ τῶν προδρόμων τῆς ῥεαλιστικῆς σχολῆς, ἂν καὶ τὰ δημιουργήματά του εἶναι περισσότερον ποιητικὰ ἢ πραγματικά.

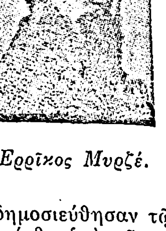

*Ἐρρῖκος Μυρζέ.*

Τὰ κυριώτερα ἔργα του εἶναι: «Le pays latin» (1851), «Scènes de la vie de Bohême» (1851, μεταφρασθὲν καὶ εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ Ε. Ροΐδου μὲ τὸν τίτλον: «Σκηναὶ ἐκ τοῦ βοημικοῦ βίου»), «Scènes de la vie de jeunesse» (1851), «Le bonhomme Jadis» (κωμῳδία 1852), «Propos de ville et propos de théâtre» (1853), «Scènes de campagne» (1854), «Ballades et fantaisies» (1854), «Les buveurs d' eau» (1855), «Le dessous du panier» (1855), «Le roman de toutes les femmes» (1854), «Le dernier rendez-vous» (1856), «Les vacances de Camille» (1857), «Madame Olympe» (1859), «Le sabot rouge» (1860), «Le serment d' Horace» (κωμῳδία 1861), «Les nuits d' hiver (ποιήματα 1861), «Le roman d' un capucin» (1868) «Le souper des funerailles» (1873), «Dona Sirene (1874), «Les roueries de l' ingénue» (1874). Τὸ «Le pays latin», διασκευασθὲν εἰς δρᾶμα, ἀνεβιβάσθη ἐπὶ σκηνῆς τῷ 1864, αἱ δὲ «Σκηναὶ ἐκ τοῦ βοημικοῦ βίου» διεσκευάσθησαν ὑπὸ τοῦ G. Puccini εἰς τὴν γνωστὴν ὑπὸ τὸν τίτλον «Μποὲμ» λυρικὴν κωμῳδίαν ἥτις ἐπαίχθη τὸ πρῶτον τῷ 1898 μετ' ἐπιτυχίας. Θ. Π.

**μυρηκίδαι** (οἱ) (Murecidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια μαλακίων γαστεροπόδων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *προσθιοβραγχίων*, περιλαμβάνουσα μαλάκια μὲ κόγχην, ἧς τὸ ἐξωτερικὸν χεῖλος τοῦ ἀνοίγματος φέρει εὐμεγέθη ἀναδίπλωσιν, ἥτις, ὅταν ἡ κόγχη λάβῃ τὴν τελείαν αὐτῆς ἀνάπτυξιν, ἀπομένει ὡς ὀδοντωτὴ ἐπιμήκης ὀφρύς. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μύρηξ* (βλ. λ.) Δ. Ν. Π.

**μύρηξ** (ὁ) (Murex) *[Ζωολ.]*. Γένος μαλακίων γαστεροπόδων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρηκιδῶν*, περιλαμβάνον θαλάσσια μαλάκια μὲ κόγχην ἀτρακτοειδῆ, φέρουσαν πολλὰς διαυλακώσεις ἑλικοειδεῖς ἢ καὶ ἀκανθωτὰς ἢ φυματιώδεις διογκώσεις. Ἀξιολογώτερα εἴδη εἶναι: ὁ *μύρηξ ὁ φλογώδης* (Murex brandaris) καὶ *μύρηξ ὁ κολοβός* (Murex trunculus), κοινότατοι εἰς τὴν Μεσόγειον θάλασσαν, καλούμενοι κοινῶς *πορφύρες*. Δ. Ν. Π.

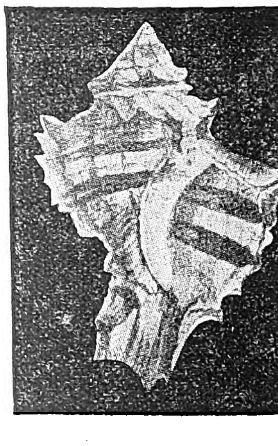

*Μύρηξ ὁ φλογώδης.*

— *[Παλαιοζωολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα μυρήκων εὑρίσκονται ἀμφίβολα μὲν ἐντὸς στρωμάτων τῆς κρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ, ἀφθονώτερα δ' ἐντὸς στρωμάτων τοῦ καινοζωϊκοῦ. Ἐν Ἑλλάδι λείψανα ἀπολιθωμένα εὑρέθησαν: α) Ἐντὸς τῶν στρωμάτων τῆς ὑποπλειοκαίνου σειρᾶς τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὸν Ἰσθμὸν τῆς Κορίνθου (τὰ εἴδη *μύρηξ brandaris* καὶ *μύρηξ trunculus*). β') Ἐντὸς νεογενῶν στρωμάτων παρὰ τὴν Πύλον (τὸ εἶδος *μύρηξ trunculus*). γ') Ἐντὸς ὀλιγοκαινικῶν στρωμάτων παρὰ τὴν Σινοὺ-Κερασιά (τὸ εἶδος *μύρηξ conspicuus*). δ') Ἐντὸς τῶν νεογενῶν στρωμάτων τῆς λεκάνης τοῦ Στρυμόνος παρὰ τὸ Γενήκιοϊ (τὰ εἴδη *μύρηξ brandaris* καὶ *trunculus*). ε') Ἐντὸς τῶν νεογενῶν στρωμάτων τῆς λεκάνης τῶν Μεγάρων (τὸ εἶδος *μύρηξ sublavatus*). στ') Ἐντὸς τῶν τεταρτογενῶν ἀποθεμάτων τῶν νήσων Στροφάδων (τὸ εἶδος *μύρηξ inermis*), καὶ ἀλλαχοῦ. Γ. Κ. Γ.

**Μύρθιο** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἁγίου Βασιλείου τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 336. Εἰς τὴν κοινότητα ὑπάγονται οἱ συνοικισμοὶ Δαμνόνι καὶ Νιοχωριό. —2) Χωρίον τῆς κοινότητος Πρασῶν τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ρεθύμνης. Κάτ. (1928) 121. Ε. Γ.

**Μυρὶ** *ὁ ἐκ Παρισίων* (Muris de Paris ἢ De Francia ἢ Julianus de Muris). Γάλλος σοφός, καθηγητὴς τῆς Σορβόννης, ζήσας περὶ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ἠσχολήθη εἰδικῶς μὲ τὴν θεωρίαν τῆς μουσικῆς καὶ τὴν σημειογραφίαν, αἱ δὲ πληροφορίαι του εἶναι πολύτιμοι διὰ τὰ πρῶτα βήματα τῆς ἀντιστίξεως καὶ τὴν περὶ τῶν διαστη-

Digitized by Google

μάτων ἀντίληψιν κατὰ τὴν περίοδον ἐκείνην. Ἔγραψε: «Musica practica» (1321), «Musica speculativa» (1323), «Questiones super partes musicae» καὶ «De discantu et consonantiis». Γ. Σ.

— **Μυρὶ** (Muris), ἢ ***Νορμαννὸς*** (Normannus), ***Ἰωάννης ντὲ —***. Ἄγγλος καθηγητὴς τῶν μαθηματικῶν ἐν Ὀξφόρδῃ, ζήσας περὶ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΔ´ αἰῶνος. Δεινὸς θεωρητικὸς τῆς μουσικῆς, ἀφῆκε πολυτίμους πληροφορίας περὶ τῆς σημειογραφίας τῶν σκοτεινῶν ἐκείνων χρόνων, ἃς περιέλαβεν εἰς τὸ σύγγραμμά του «Polyphonia basilica». Εἰς δεύτερον ἑπτάτομον βιβλίον, γραφὲν ἀπὸ τοῦ 1340 μέχρι 1350, ὁμιλεῖ ἐκτενῶς περὶ τῶν διαστημάτων, περὶ τῶν μουσικῶν ἀναλογιῶν, περὶ τῆς μουσικῆς τῶν ἀρχαίων, περὶ τῶν ἐκκλησιαστικῶν τρόπων, περὶ ἀναλογικῆς σημειογραφίας, διαψάλματος κτλ. Γ. Σ.

**μυριάκις**· ἐπίρρ., ἀπειράκις, ἀναρίθμητες φορές, πολλάκις: «σᾶς τὸ εἶπα μυριάκις, ἀλλὰ δὲ μὲ ἀκούσατε» (λέγεται ὑπερβολικῶς ἀντὶ τοῦ *πολλάκις*· ἐκ τοῦ *μυρίος*, βλ. λ.).

**μυριάκριβος**, *—η*, *—ον*· δημοτ., πολὺ ἀκριβός, ἄλλως *πανάκριβος*.

**μυριάμετρον** (τό)· μύρια μέτρα ὡς μονὰς μήκους, μῆκος 10.000 μέτρων.

**Μυρίανδρος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Συρίας ἐμπορικωτάτη ἐπὶ τῆς νοτ. ἀκτῆς τοῦ Ἰσσικοῦ κόλπου (Σταδ. Μεγ. Θαλ. 150—153, *Στράβ.* ΙΔ, 675, *Πτολ.* Ε, ιε, 2 Nob.), μεταξὺ Ρωσοῦ-Τερδνίας (ταν. Ἀρσοὺ) καὶ Ἀλεξανδρείας κατ' Ἰσσὸν (ταν. Ἰσκενδεροὺμ) εἰς ἀπόστασιν 170 σταδ. ἀπὸ τοῦ Ρωσαίου σκοπέλου (Ρὰς-Ἐλ-Κανζὶρ) καὶ 125 ἀπὸ τῶν Κιλικίων Πυλῶν (ταν. Σακὰλ-Τουτούν). Ὁ Σκύλαξ (106) ὀνομάζων αὐτὴν *Μυρίανδον*, τονίζει τὴν φοινικικὴν αὐτῆς προέλευσιν, ἀκόμη δὲ περισσότερον ὁ Ξενοφῶν (Κύρ. Ἀνάβ. Δ, δ, 5). Ἐν αὐτῇ ἐστρατοπέδευσεν ὁ Ἀλέξανδρος, τὴν δευτέραν ἡμέραν ἀπὸ τῆς διελάσεως ὑπὸ τοῦ στρατοῦ του τῶν Κιλικίων Πυλῶν (*Ἀρριαν.* Ἀνάβ. Β, στ, 2). Ἡ τοποθεσία, ἣν κατεῖχεν, εἶναι νῦν ἔρημος (πλάτ. 36°31' Β., μῆκ. 36°01' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2188: Gulf of Alexandretta). Σ. Ε. Λ.

— **Μυριάνδρου *κόλπος*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ καθ' Ἡρόδοτον (Δ, 38) ὀνομασία τοῦ κόλπου, ὃν οἱ ἀρχαῖοι ὠνόμαζον καὶ *Ἰσσικὸν* καὶ *Ρωσαῖον*, ἀπὸ πόλεως Ρωσοῦ φερωνύμως τῇ σκοπέλῳ καὶ ὅστις σήμερον ὑπὸ μὲν τῶν Εὐρωπαίων ὀνομάζεται *κόλπος τῆς Ἀλεξανδρέττας*, ὑπὸ δὲ τῶν Τουρκοαράβων *Ἰσκενδερούμ*. Σ. Ε. Λ.

**μυριάποδα** (τὰ) (Myriapoda) *[Ζῳολ.]*. Κατηγορία ζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀρθροπόδων*, περιλαμβάνουσα μικρὰ ζῷα μὲ κεφαλὴν ἀποτελουμένην ἐκ συστήματος ἀρθρώσεων ἀρκετὰ μεγάλων καὶ οὕτω συναπτομένων μετὰ τῶν ἀρθρώσεων τοῦ ἐπιλοίπου σώματος, ὥστε νὰ καθίσταται ἀδύνατος ἡ διάκρισις τῆς κεφαλῆς ἀπὸ τοῦ θώρακος καὶ τούτου ἀπὸ τῆς κοιλίας. Ὁ ἀριθμὸς τῶν ἀρθρώσεων τῆς κεφαλῆς εἶναι ποικίλος, ἀναλόγως τῶν διαφόρων εἰδῶν, καὶ φθάνει εἴς τινα εἴδη τὰς 200. Ἑκάστη ἐκ τῶν ἀρθρώσεων φέρει ἓν ἢ δύο ζεύγη ποδῶν, ἐξ οὗ καὶ ὑποδιαιροῦνται εἰς τὰ *χη-*

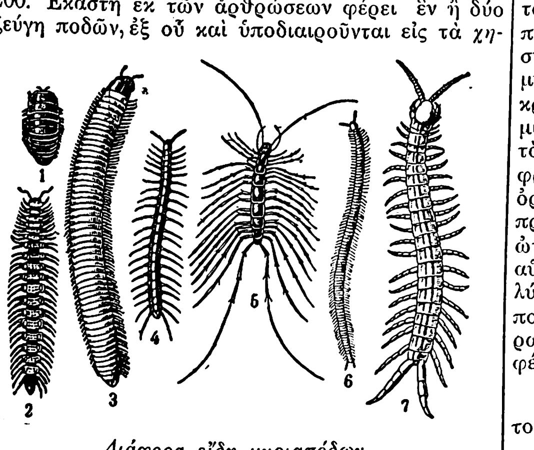

*Διάφορα εἴδη μυριαπόδων.*
[1=Γλομερίς. 2=Πολύδεσμος. 3=Ἴουλος. 4=Κρυπτώψ. 4=Σκυτηφόρος, 6=Γεώφιλος. 7=Σκολόπενδρα.]

*λόποδα*, ἅτινα φέρουσιν ἓν μόνον ζεῦγος κεφαλικῶν ποδῶν, καὶ εἰς τὰ *διπλόποδα*, ἅτινα φέρουσι δύο ζεύγη τοιούτων. Ἡ κεφαλὴ φέρει 5 ζεύγη προσαρτηματικῶν ὀργάνων, ἓν ζεῦγος κεραιῶν καὶ τέσσαρα ζεύγη στοματικῶν τμημάτων. Εἰς τὰ *χιλόποδα*, τὸ πρῶτον ζεῦγος τῶν ποδῶν, οἵτινες εἶναι διαμορφωμένοι εἰς δηλητηριώδη ἄγκιστρα, λειτουργεῖ ὡς πόδες—ὄργανα μασητικά. Ἡ πεπτικὴ συσκευὴ εἶναι εὐθεῖα καὶ φέρει τοὺς σιελογόνους ἀδένας καὶ τὰ μαλπίγγεια ἀγγεῖα, ἅτινα διανοίγονται κατὰ τὸ τρῆμα τοῦ παχέος ἐντέρου καὶ χρησιμεύουσιν ὡς ἐκκριτικὰ ὄργανα. Ἡ καρδία εἶναι ραχιαία, παρομοία πρὸς τὴν τῶν ἐντόμων. Ἡ ἀναπνοὴ διενεργεῖται διὰ τραχειῶν, ἐπὶ τῶν ὁποίων τὰ ἀναπνευστικὰ στίγματα εἶναι κανονικῶς διατεταγμένα. Τὸ νευρικὸν σύστημα εἶναι κανονικώτατα διατεταγμένον καὶ ἡ νευρικὴ κοιλιακὴ ἅλυσις φέρει ἐφ' ἑκάστης ἀρθρώσεως ἀνὰ ἓν ζεῦγος εὐδιακρίτων γαγγλίων. Ὁ ἐγκέφαλος ἀποτελεῖται, ὅπως εἰς τὰ ἔντομα καὶ τὰ μαλακόστρακα τὰ ἀνωτέρας ζῳολογικῆς βαθμῖδος ἐκ τριῶν ζευγῶν γαγγλίων. Ρόλον αἰσθητηρίων ὀργάνων παίζουσι τὰ περὶ τὸν κεφαλοθώρακα ἀπαντῶντα στίγματα, ὧν ὁ ἀριθμὸς εἶναι ποικίλος εἰς τὰ διάφορα εἴδη. Τὰ γένη εἶναι κεχωρισμένα. Τὰ γεννητικὰ ὄργανα εἶναι περιττοῦ ἀριθμοῦ καὶ τὰ γεννητικὰ τρήματα εἶναι τοποθετημένα, τόσον εἰς τὰ ἄρρενα ὅσον καὶ εἰς τὰ θήλεα, ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ σημείου τοῦ σώματος. Γνωστὰ ἐλάχιστα σχετικῶς εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς τόπους ὑγρούς, σκοτεινούς, ὑπὸ τοὺς λίθους, τοὺς φλοιοὺς τῶν δένδρων ἢ ἐντὸς τῆς γῆς. Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζῳολ.]* Τὰ ἀρχαιότατα λείψανα *μυριαπόδων* εἶναι τοῦ γένους *ἀρχιδέσμου*, εὑρεθέντα εἰς στρώματα τῆς ἀνωτάτης σιλουρίου ὑποδιαπλάσεως τοῦ παλαιοζωϊκοῦ εἰς Σκωτίαν. Λείψανα ἀπολιθωμένα ἄλλων γενῶν εἶναι γνωστὰ ἐκ στρωμάτων διαπλάσεων τοῦ παλαιοζωϊκοῦ καὶ ἰδίᾳ τοῦ καινοζωϊκοῦ αἰῶνος. Γ. Κ. Γ.

**μυριάς**, *—άδος* (ἡ)· μύριαι, ἤτοι δεκακισχίλιαι μονάδες ὁμοειδεῖς ὡς ἓν ὅλον θεωρούμεναι: «μυριὰς ἀνθρώπων, —ἵππων, —δένδρων κττ.»· || ***μυριάδες*** (αἱ)· ἀορίστως πρὸς δήλωσιν μεγάλου ἀριθμοῦ, οἱονεὶ κατὰ μυριάδας ἀριθμουμένου: «αἱ μυριάδες τῶν ἐχθρῶν», «μυριάδες μυρμήκων, — ἐντόμων».

**Μυριβήλης, *Στρατῆς***. Σύγχρονος Ἕλλην διηγηματογράφος καὶ δημοσιογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1892 ἐν Σκαμνιᾷ τῆς Μυτιλήνης. Διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα ἐν Μυτιλήνῃ καὶ Κυδωνίαις, βραδύτερον δὲ παρηκολούθησε μαθήματα νομικῆς καὶ φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῶν Ἀθηνῶν. Λίαν ἐνωρίς, ἐκδίδων τὸ σατιρικὸν «Σκρὶπ» ἐν Μυτιλήνῃ, ἠκολούθησε τὸ δημοσιογραφικὸν ἐπάγγελμα, γενόμενος τέλος ἐκδότης τῆς «Καμπάνας» (1923—1925) καὶ ἤδη τοῦ «Ταχυδρόμου» τῆς Μυτιλήνης. Βιβλία ἐξέδωκεν εἰς τὴν δημοτικὴν τά: «Κόκκινες Ἱστορίες» (1914), «Ἡ Ζωὴ ἐν Τάφῳ» (1925), «Διηγήματα» (1928) καὶ ἡ «Ζωὴ ἐν Τάφῳ» (1930 καὶ 1931). Εἰς τὸ ἔργον του, ρεαλιστικὸν καὶ ρασιοναλιστικὸν ἀπὸ ἀπόψεως φιλολογικῆς, κηρύσσει τὴν ἠθικὴν ἐξύψωσιν τοῦ ἀτόμου καὶ τὴν ἐξάπλωσιν τῶν ἀνθρωπιστικῶν ἰδεῶν ὡς μόνην λύτρωσιν τοῦ ἀνθρώπου. Ἡ κυριαρχία τοῦ λόγου ἐπὶ τοῦ ἐνστίκτου καὶ ἡ αἰσιοδοξία ἐπὶ τὰ πεπρωμένα τῆς ἀνθρωπότητος εἶναι ἐπίσης χαρακτηριστικὰ τοῦ ἔργου τοῦ Μυριβήλη. Τ. Α.

**μυριγγῖτις** (ἡ) *[Ἰατρ.]*. Φλεγμονὴ τοῦ ὑμένος τοῦ τυμπάνου τοῦ ὠτός. Πολὺ σπανίως ἀναπτύσσεται πρωτοπαθῶς· συνήθως συνυπάρχει μετὰ φλεγμονῆς τοῦ ἐξωτερικοῦ πόρου τοῦ ὠτὸς ἢ μετὰ μέσης ὠτίτιδος. Ἀπαντᾷ ὑπὸ μορφὴν ὀξεῖαν ἢ χρονίαν. Ἡ ὀξεῖα ἀναπτύσσεται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον αἰφνιδίως μετὰ ψῦξιν, συνεπείᾳ ρεύματος ψυχροῦ ἀέρος ἢ ψυχροῦ ὕδατος, ἰδίως μετὰ θαλάσσιον λουτρόν· ἰσχυροὶ πόνοι κατὰ τὸ οὖς καὶ σφύξεις, ἐμβοαὶ καὶ βαρηκοΐα εἶναι τὰ κύρια ἐνοχλήματα. Ἡ πάθησις προσβάλλει συνήθως τὸ ἓν μόνον οὖς, διαρκεῖ ὀλίγας ἡμέρας καὶ παρέρχεται πολλάκις ἄνευ διατρήσεως τοῦ ὑμένος τοῦ τυμπάνου ἢ ροῆς ὀρροπυώδους ὑγροῦ, ὅπερ, ὅταν συμβῇ, διαρκεῖ περισσοτέρας ἡμέρας. Ἡ δὲ χρονία μυριγγῖτις ἀναπτύσσεται κυρίως ἐπὶ ἀτόμων δυσκρασικῶν καὶ ἀδυνάτων, ἐπὶ χοιραδικῶν καὶ ἀναιμικῶν παιδίων, ἄνευ ἐντόνων συμπτωμάτων, κατὰ τὸ ἓν μόνον ἢ κατ' ἀμφότερα τὰ ὦτα, μὲ ἐλαφρὸν μόνον βάρος κατὰ τὸ οὖς καὶ ὀλίγην ροὴν ὀρροπυώδους ὑγροῦ, ὀσμῆς μᾶλλον δυσώδους, ὅπερ προκαλεῖ ἐρεθισμὸν καὶ ἐπίμονον κνισμονὴν τοῦ ὠτός, ἥτις ἀναγκάζει τὸν πάσχοντα νὰ ξέῃ τὸ οὖς αὐτοῦ· συνήθεια πολὺ ἐπικίνδυνος, διότι καὶ μεγαλύτερος ἐρεθισμὸς τοῦ ὠτὸς καὶ μολύνσεις τούτου πολλάκις προκαλοῦνται. Αἱ τοιαῦται ὠτόρροιαι, παρατεινόμεναι ἐπὶ πολλὰ ἔτη ἄνευ θεραπείας, ἐπιφέρουσι προϊοῦσαν κώφωσιν. Μ. Μ.

**μυρίγκα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μυρίκη ἡ μικρανθής*.

**μυρίζω**· ἀναδίδω, ἀποπνέω ὀσμήν, εὐωδίαν, εὐωδιάζω, ἄλλως *μοσχοβολῶ*: «τὰ ἀπριλιάτικα τριαντάφυλλα μυρίζουν ὡραῖα», «τί καλὰ ποῦ μυρίζει!»· || ἀρχ., ἀλείφω, ἐπαλείφω τι μὲ μύρα· καὶ παθ. *μυρίζομαι*=πληροῦμαι εὐωδίας· || συνηθ., ἀποπνέω ὀσμὴν δυσάρεστον, δυσωδίαν, ὄζω, ἀπόζω, ἄλλως *βρομῶ*: «μυρίζουν τὰ πόδια σου», «τὰ ροῦχα μυρίζουν ἀπλυσιά», «μύρισε τὸ κρέας ἀπὸ τὴ ζέστη»· || παθ. *μυρίζομαι*· αἰσθάνομαι τὴν ὀσμήν τινος: «τὸ σκυλλὶ μυρίστηκε λαγό», «ἡ γάτα μυρίζεται ποντικό»· || μεταφ., ἀντιλαμβάνομαι ὕποπτόν τι, ὑποπτεύω: «τὸν μυρίστηκε ἀπὸ τὰς προφυλάξεις του», «ὅσο νὰ τοὺς μυριστῇ καλὰ καλά, αὐτοὶ εἶχαν κάμει τὴ δουλειά τους», «μυρίζομαι ἐρωτοδουλειές»· || ἀπροσωπ. «μοῦ μυρίζεται πῶς δὲ θὰ πᾶμε καλά», «μοῦ μυρίζεται πῶς θὰ πέσῃ ξύλο» ἢ «μοῦ μυρίζεται ξύλο»· || ἐνεργ., ὀσφραίνομαι, δοκιμάζω διὰ τῆς ὀσφρήσεως: «μυρίζω τὸ τριαντάφυλλο, — τὰ λουλούδια», «μύρισε τὸ κρέας νὰ ἰδῇς ἂν εἶναι φρέσκο»· || φρ. «μυρίζω τὰ δάχτυλά μου» ἢ «—τὰ νύχια μου» διὰ νὰ προΐδω τι ὡς διὰ μαντικῆς δυνάμεως: «δὲν ἤξευρα νὰ μυρίσω τὰ νύχια μου γιὰ νὰ καταλάβω ἂν θά 'ρθῃς».

**μυρίκη** (ἡ) (Tamarix) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρικιδῶν*, περιλαμβάνον δενδρύλλια ἢ δένδρα ἀπαντῶντα κυρίως εἰς τὰς εὐκράτους χώρας τῆς βορείου Εὐρώπης καὶ τὴν νοτιοδυτικὴν Ἀφρικήν. Αἱ μυρίκαι εἶναι φυτὰ μὲ φύλλα ἐναλλασσόμενα, μικρά, μὲ κλάδους ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον λεπτοὺς καὶ ἄνθη ἀκανόνιστα, λευκὰ ἢ ὑπέρυθρα, κατὰ βότρυς διατεταγμένα εἰς τὴν κορυφὴν τῶν κλάδων. Τὸ γένος περιλαμβάνει 25 περίπου εἴδη, ὧν πλεῖστα κοσμητικά, ἅτινα εὐδοκιμοῦσιν εἰς ἑλώδεις τόπους καὶ ὑφαλμύρους γαίας, ὡς καὶ παρὰ τὰς ἀκτάς. Ἰθαγενῆ ἑλληνικὰ εἴδη εἶναι: ἡ *μυρίκη ἡ Ἀμπεανὴ* (Tamarix Hampeana), ἡ *μυρίκη ἡ μικρανθὴς* (Tamarix parviflora) καὶ ἡ *μυρίκη ἡ Παλάσσειος* (Tamarix Palassii), πάντα γνωστὰ ὑπὸ τὰ κοινὰ ὀνόματα *ἁρμυρίχια*, *ἁρμυρίκια*, *μυρίγκες*, *μέρικοι* καὶ *μεριτσέδες*. Ἐκ τῶν ἐξωτικῶν εἰδῶν γνωστότερα εἶναι: *Μυρίκη ἡ γαλλικὴ* (Tamarix gallica), ἥτις φθάνει εἰς ὕψος 4 περίπου μέτρων καὶ εὐδοκιμεῖ εἰς ἁλμυρὰς γαίας καὶ εἰς παραθαλάσσια μέρη. *Μυρίκη ἡ γερμανικὴ* (Tamarix germanica). Ἀμφότεραι εὐδοκιμοῦσι καὶ εἰς τὰς παραμεσογειακὰς χώρας καὶ παρ' ἡμῖν. *Μυρίκη ἡ μαννοφόρος* (Tamarix mannifera), ἰθαγενὴς τῆς Ἀμερικῆς, ἥτις εἶναι γνωστὴ διότι φέρει βαφικὰ κηκίδια καὶ εἶδος μάννα. Πᾶσαι αἱ μυρίκαι πολλαπλασιάζονται εὐχερῶς διὰ μοσχευμάτων. Δ. Ν. Π.

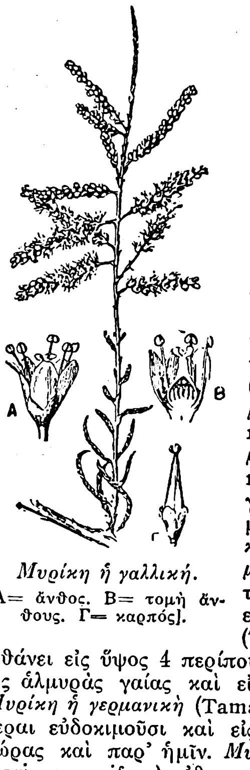

*Μυρίκη ἡ γαλλική.*
[Α= ἄνθος. Β= τομὴ ἄνθους. Γ= καρπός].

— *[Παλαιοφυτολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυρικῶν* εἶναι γνωστὰ ἐντὸς διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς κρητιδικῆς τοῦ μεσοζωϊκοῦ καὶ ἐντεῦθεν. Πολὺ διαδεδομένη ἦτο ἡ μυρίκη κατὰ τὴν κρητιδικὴν ἐποχὴν εἰς τὴν Βόρειον Ἀμερικήν, Γροιλανδίαν καὶ Εὐρώπην. Τὴν μεγίστην ἀνάπτυξίν της καὶ ἐξάπλωσίν της ἔλαβε κατὰ τὴν κατωτέραν ὀλιγόκαινον μέχρι καὶ τῆς μέσης μειοκαίνου ὑποπεριόδου τοῦ καινοζωϊκοῦ αἰῶνος καθ' ὅλον τὸ βόρειον ἡμισφαίριον. Ἐπὶ τοῦ νοτίου ἡμισφαιρίου εὑρέθησαν ἐπίσης λείψανα (ἄνθη ἐν ἠλέκτρῳ, καρποὶ καὶ ἄφθονα φύλλα) μυρικῶν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν νῆσον Seymour καὶ τὴν νότιον Χιλήν.

Ἐν Ἑλλάδι λείψανα τῶν εἰδῶν *μυρίκη* ***vindobonensis***, *μυρίκη* ***Solonis***, *μυρίκη* ***laevigata***, *μυρίκη* ***banksifolia***, *μυρίκη* ***angustifolia*** καὶ *μυρίκη* ***salicina*** εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν τριτογενῶν στρωμάτων τῆς λιγνιτοφόρου λεκάνης τῆς Κύμης ἐν Εὐβοίᾳ. Γ. Κ. Γ.

—**μυρίκης *φλοιὸς*** καὶ ***κηρὸς*** (Cortex et cera Myricae) *[Φαρμακογν.]*. Αἱ δρόγαι αὗται προέρχονται ἐκ τῆς *μυρίκης τῆς κηροφόρου* (Myrica cerifera, L.). Ὁ φλοιὸς τοῦ φυτοῦ τούτου φέρεται εἰς τεμάχια ἢ σωλῆνας, εἶναι δὲ ἄοσμος καὶ πικρᾶς γεύσεως. Συστατικὰ τοῦ φλοιοῦ τούτου εἶναι: γλίσχρασμα, χρωστικαὶ καὶ ρητινώδεις οὐσίαι, ταννίνη καὶ γαλλικὸν ὀξύ. Ἡ δρόγη ἀναγράφεται ὡς φάρμακον στυπτικὸν τοῦ ἐντέρου καὶ αἱμοστατική. Οἱ καρποὶ τῆς μυρίκης παρέχουν γαλακτώδη ὀπόν, ὅστις ἀποσπᾶται ἀπ' αὐτῶν εὐκόλως διὰ τῆς θερμότητος τοῦ ἀτμοῦ. Ὁ ὀπὸς οὗτος φέρεται εἰς μάζας κιτρινωπάς, διαφωτίστους, τηκομένας εἰς 47°, εἰδ. βάρους 1—1,05, ἐχούσας ἀριθμὸν ὀξύτητος 3, ἀριθμὸν σαπωνοποιήσεως 211, διαλυτὰς εἰς τὸν αἰθέρα καὶ τὸ χλωροφόρμιον, μερικῶς δὲ καὶ εἰς τὴν ἀλκοόλην. Ὁ κηρὸς οὗτος ἀποτελεῖται ἀπὸ μεῖγμα 70% παλμιτίνης, 8% μυριστικίνης καὶ 5% λαουρίνης. Ὁ κηρὸς τῆς μυρίκης ἀναγράφεται εἰς Εὐρώπην εἰς τὴν παρασκευὴν διαφόρων ἀλοιφῶν, χρησιμοποιεῖται δὲ ἐπίσης καὶ εἰς τὴν κηροποιίαν. Κ. Γ. Μ.

**Μυρίκη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος τῆς Αἰθιοπίας τῆς ὑπὸ Αἴγυπτον (Πτολεμ. Δ, ζ, 40, Nobbe) ἐν τῷ Ἱππάλῳ πελάγει, νοτίως τοῦ ἀκρωτηρίου τῶν Ἀρωμάτων. Κατὰ Στέφανον τὸν Βυζάντιον ἀνεφέρετο καὶ ἐν τῷ ὑπὸ Μαρκιανοῦ περίπλῳ τῆς Ἐρυθρᾶς. Ἡ ταυτότης της ἄγνωστος, οὐδεμιᾶς νήσου ἀπαντώσης εἰς πλάτ. 1° Β., ὅπερ τῇ δίδει ὁ Πτολεμαῖος, ἐκτὸς ἂν πρόκειται περὶ τῆς χερσονησῖδος *Μέρκα*, εὑρισκομένης εἰς 2/3 μοίρας βορειότερον. Σ. Ε. Λ.

— **Μυρίκη**, ἢ ***Μυρίσι*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Εὐρυτανίας τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀ-

Digitized by Google

καρνανίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 381. Χ. Δ.

**μυρικητίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*. Φλαβονικὸν παράγωγον *(ἑξαοξυφλαβόνη)* τοῦ τύπου $C_{15}H_{10}O_8$. Ἀπαντᾷ εἰς τὸν φλοιὸν ψευδομυρίνης τῆς Νάγης, εἰς τὰ φύλλα ροῦ τοῦ βυρσοδεψικοῦ, τοῦ κοτίνου καὶ τοῦ μετωπίου, εἰς πιστάκιον τὴν σχῖνον, αἱματόξυλον τὸ καμπέχιον κλπ. Τήκεται εἰς 355°. Σ. Γ.

**μυρικίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *κηρός*.

**μυρικιτρίνη** (ἡ) *['Οργ. Χημ.]*. Γλυκοζίτης τῆς μυρίκης. Ὑδρολύεται εἰς *ραμνόζην* καὶ *μυρικητίνην*.

**μυρικοειδῆ** (τά), ἢ *μυρικίδαι* (Tamariaceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα θάμνους ἢ δενδρύλλια ἰθαγενῆ τῶν βορείων εὐκράτων χωρῶν τῆς Εὐρώπης καὶ Ἀφρικῆς. Ἐκ τῶν ἀρκετῶν γενῶν τῆς οἰκογενείας, ἐξ ὧν τινα καλλιεργοῦνται πρὸς κόσμον, ἀξιολογώτερα εἶναι ἡ *μυρίκη* καὶ ἡ *ρεκμυρία*. Δ.Ν.Π.

—*[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυρικιδῶν* συναντῶνται σπάνια ἐντὸς στρωμάτων τῆς κρητιδικῆς διαπλάσεως τοῦ μεσοζωϊκοῦ καὶ ἀφθονώτερα ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς καὶ τεταρτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Λείψανά των εὑρέθησαν ἄφθονα καὶ ἐντὸς τῶν καινοζωϊκῶν στρωμάτων τῆς Ἑλλάδος. Γ. Κ. Γ.

**Μυρικοῦς** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις μικρασιατική, ἐπὶ τῆς κατέναντι πρὸς τὴν Λέσβον καὶ τὴν Τένεδον τρωϊκῆς ἀκτῆς. Ταυτότης ἄγνωστος. Σ. Ε. Λ.

**μυρικυλικὴ ἀλκοόλη** *['Οργ. Χημ.]*· βλ. *μελισσικὴ ἀλκοόλη*.

**μυρικυλικὸν ὀξὺ** *['Οργ. Χημ.]*. Συνώνυμον τοῦ *μελισσικοῦ ὀξέος* (βλ. λ.).

**Μύρινα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαία πόλις τῆς νήσου Λήμνου, κειμένη ἐπὶ τῆς δυτικῆς ἀκτῆς αὐτῆς. Ταύτης μόνης ἐκ τῶν πόλεων τῆς νήσου οἱ κάτοικοι ἀντέστησαν πρὸς τὸν Μιλτιάδην τὸν Κίμωνος, ὅτε οὗτος ἐξ Ἐλεοῦντος τῆς Θρακικῆς χερσονήσου ὁρμηθεὶς κατέπλευσεν εἰς Λῆμνον καὶ ἠξίωσε νὰ προσχωρήσῃ ἡ νῆσος εἰς τοὺς Ἀθηναίους. Κατὰ τὸν Ε' π. Χ. αἰῶνα ἡ Μύρινα ἦτο ἐκ τῶν συμμαχίδων πόλεων τῆς δημοκρατίας τῶν Ἀθηναίων. Τῆς πόλεως ταύτης διεσώθησαν καὶ χαλκᾶ νομίσματα τοῦ 300 π. Χ., φέροντα ἔμπροσθεν μὲν κεφαλὴν Ἀθηνᾶς, κατ' ἐνώπιον συνήθως, ὄπισθεν δὲ τὰ γράμματα ΜΥΡΙ καὶ γλαῦκα κατ' ἐνώπιον ἢ πρὸς δεξιὰ στρεφομένην.

*Νόμισμα τῆς Μυρίνης (Αἰολίδος).*

— **Μύρινα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἐκ τῶν ἕνδεκα Αἰολίδων πόλεων τῆς ἐν τῇ Μ. Ἀσίᾳ Μυσίας, ἐπὶ τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τῆς χώρας ταύτης κειμένη, κατὰ τὰς εἰς τὸν Ἐλεατικὸν κόλπον ἐκβολὰς τοῦ ποταμίου Πυθικοῦ καὶ μεταξὺ τῶν αἰολικῶν πόλεων Γρυνείου καὶ Κύμης. Κατὰ τὴν παράδοσιν (*Στρ.* C. 573), καὶ αὐτή, ὡς καὶ ἡ Σμύρνη καὶ ἡ Κύμη, εἶχε κτισθῆ ὑπὸ ὁμωνύμου τῆς Ἀμαζόνος. Ἡ Μύρινα, ἐπονομαζομένη ἐνίοτε καὶ *Σμύρνα*, εἶχεν ὀχυρὸν λιμένα καὶ κατὰ τὸν Ε' π. Χ. αἰῶνα ἦτο ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων συμμαχίδων πόλεων τῆς δημοκρατίας τῶν Ἀθηναίων, πληρώνουσα συμμαχικὸν φόρον ἑνὸς ταλάντου ἐτησίως. Κατὰ τὸ 399 π. Χ. ἡ Μύρινα, ὡς καὶ ἡ πόλις Γρύνειον, ἀμφότεραι ἀνήκουσαι εἰς τὸν Ἐρετριέα Γογγύλον, δωρηθεῖσαι εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῶν Περσῶν (*Ξεν.* Ἑλλ. III, 1, 6), προσεχώρησαν εἰς τὸν Σπαρτιάτην Θίβρωνα. Μετὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ περγαμηνοῦ βασιλείου περιῆλθεν εἰς αὐτὸ καὶ κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους (μετὰ τὴν ἐν Πύδνᾳ κατὰ τὸ 197 π. Χ. ἧτταν Φιλίππου τοῦ Ε'), μετονομασθεῖσα *Σεβαστούπολις*, ἦτο civitas libera. Ἐπὶ τῶν αὐτοκρατόρων Τιβερίου καὶ Τραϊανοῦ ὑπέστη μεγάλας καταστροφὰς ἐξ ἀλλεπαλλήλων σεισμῶν, ἀνακτισθεῖσα ὅμως προσέλαβε τὴν προτέραν της καὶ πάλιν ἀκμήν. Κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς χρόνους (ΣΤ' καὶ Ζ' μ. Χ. αἰῶνα) ἦτο ἐκ τῶν πόλεων τῆς ἐπαρχίας Ἀσίας καὶ εἶχεν ἴδιον ἐπίσκοπον. Εἰς τὴν πόλιν ταύτην ἀνῆκε καὶ τὸ περιώνυμον κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους μαντεῖον τοῦ Γρυνείου Ἀπόλλωνος. Τῆς Μυρίνης διεσώθησαν καὶ νομίσματα, ἀργυρᾶ καὶ χαλκᾶ, τοῦ τε Β' π. Χ. αἰῶνος (κοπέντα μετὰ τὸ 197 π. Χ.) καὶ τῶν ρωμαϊκῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων. Τὰ ἀρχαιότερα φέρουσιν ἔμπροσθεν μὲν κεφαλὴν Ἀπόλλωνος δαφνοστεφῆ (συνήθως) ἢ Ἀθηνᾶς, ὄπισθεν δὲ τὴν λέξιν ΜΥΡΙΝΑΙΩΝ ἢ τὰ γράμματα Μ-Υ ἢ ΜΥΡΙ καὶ εἰκόνα τοῦ ἀγάλματος Γρυνείου Ἀπόλλωνος μετὰ διαφόρων συμβόλων ἢ κεφαλὴν Ἀρτέμιδος ἢ ἀμφορέα, τὰ δὲ τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων τὴν λέξιν ΜΥΡΙΝΑΙΩΝ ἢ ΜΥΡΕΙΝΑΙΩΝ καὶ τὴν εἰκόνα τῆς προσώψεως τοῦ ναοῦ τοῦ Γρυνείου Ἀπόλλωνος ἢ ἱππέως κρανοφόρου μὲ τὴν ἐπιγραφὴν ΔΑΜΝΕΥΣ. Πολὺ ἀξιολογώτερα ὅμως τῶν νομισμάτων της εἶναι τὰ ἀνευρεθέντα δι' ἀνασκαφῶν ὡραιότατα πήλινα εἰδώλια τῶν νεκροπόλεων αὐτῆς τοῦ Δ' καὶ Γ' π. Χ. αἰῶνος (τούτων πολλὰ ἀπόκεινται ἐν τῷ Ἐθνικῷ μουσείῳ). Παρὰ τὸν χῶρον τῆς ἀρχαίας Μυρίνης κεῖται νῦν τὸ χωρίον Καλαμπᾶς-Σαρῆ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Pottier-Reinach*, «La necropole de Myrina».—*Α. Φιλαδελφέως*, «Πήλινα εἰδώλια ἐκ Μυρίνης». Γ. Δ. ΚΑΨΑΛΗΣ

— **Μύρινα** *['Αρχ. Γεωγρ.]*. Ἀμφισβητουμένη ἀρχαία πόλις τῆς Κρήτης, ὑπὸ μόνου τοῦ Πλινίου μνημονευομένη μετὰ τὴν Πολυρρηνίαν, ὡς μεσόγειος. Ἐξ εὑρεθέντος νομίσματος ἤχθησαν οἱ γεωγράφοι καὶ ἀρχαιολόγοι εἰς εἰκασίας, καὶ ἄλλοι μὲν λέγουν ὅτι τὸ νόμισμα ἀνήκει εἰς τὰς κρητικὰς Μυκήνας, ἄλλοι εἰς τὴν Σύβριτον, τὴν Σύρινθον, ἢ εἰς Μύριναν. Τὸ νόμισμα ἔχει ἐπὶ τοῦ ἑνὸς μέρους κεφαλὴν ταύρου κλίνουσαν πρὸς τὰ ἀριστερά, καὶ ἐπὶ τοῦ ἄλλου ὁμοίου πρὸς τὰ δεξιά, μὲ τὰ γράμματα ΜΥ ἢ Μ ἐντὸς στρογγύλου κοιλώματος. Ε. Γ.

**Μυρίνη** *[Μυθολ.]*. —1) Θυγάτηρ τοῦ βασιλέως τῆς Τροίας Τεύκρου καὶ σύζυγος τοῦ Δαρδάνου, καλουμένη καὶ *Βάτεια* (*Ὁμ.* Ἰλ. Β, 814).

—2) Θυγάτηρ τοῦ Κρηθέως καὶ σύζυγος τοῦ Θόαντος, βασιλέως τῆς νήσου Λήμνου. Ἀπὸ ταύτης, κατὰ τὴν παράδοσιν, εἶχε λάβει τὸ ὄνομά της ἡ πόλις τῆς Λήμνου Μύρινα.

—3) Ἀμαζών, ἀπὸ τῆς ὁποίας εἶχεν ὀνομασθῆ ἡ Μύρινα τῆς Αἰολίδος, διότι ἀποθανοῦσα εἶχε ταφῆ ἐν τῇ πόλει ἐκείνῃ. ΚΑΨ.

— **Μυρίνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Φυλλίδος (Ζίχνης) τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται παρὰ τοὺς Δ. πρόποδας τοῦ Παγγαίου, εἰς ἀπόστασιν μιᾶς ὥρας ἀπὸ τῆς Κερκινίτιδος λίμνης, καὶ ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γαφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Κοτσάκιον*. Κάτ. (1928) 447. Χ. Δ.

**Μυρῖνος**. Ἀρχαῖος Ἕλλην ἐπιγραμματοποιὸς ἀγνώστου ἐποχῆς. Τὰ διασωθέντα ἐκ τῶν ἐπιγραμμάτων του «Ἀνάθημα τοῖς Πασὶ παρὰ Διοτίμου» ἀφιερωτικόν, καὶ «Εἰς γραῖαν» συμποτικόν, εἶναι ἐκ τῶν ἀρίστων τῆς ἑλληνικῆς ἀνθολογίας (ΣΤ' 108, ΙΑ' 67). Π. Ν. Π.

**μυριο—**· θέμα τοῦ *μυρίος* ὡς πρῶτον συνθετικόν: *μυριόβλαστος, μυριόγλωσσος* (ὁ μυρίας λαλῶν γλώσσας), *μυριόγνωμος, μυριόδους* (ὁ μυρίους ἔχων ὀδόντας), *μυριόκαρπος, μυριόκεντρος, μυριοκύμων, μυριόλεκτος* (ὁ μυριάκις λεχθείς), *μυριόμματος, μυριοπλάσιος* (ἀπειροπλάσιος), *μυριόπλεθρος, μυριοπληθής* (ἀπειροπληθής), *μυριόπους, μυριόπτερος, μυριόστομος, μυριοτόκος, μυριότροπος, μυριόφυλλος, μυριόφωνος* (μυριόγλωσσος) κτλ.

**Μυριόβρυτη** *[Γεωγρ.]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ἀργαλαστῆς τῆς ἐπαρχίας Βόλου τοῦ νομοῦ Λαρίσης. Κάτ. (1928) 34. Χ. Δ.

**Μυριοκέφαλα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀρολιθίου τῆς ἐπαρχίας Ρεθύμνης Κρήτης. Κάτ. (1928) 251. Τὸ ὄνομα ὀφείλει εἰς τὰς πολλὰς βουνοκορυφάς, ὑφ' ὧν περιβάλλεται. † Ρ. Α. Τ.

—**Μυριοκεφάλων, μονὴ** —. Μονὴ τιμωμένη ἐπ' ὀνόματι τῆς *Θεοτόκου* καὶ ἑορτάζουσα τὸ Γενέθλιον αὐτῆς τῇ 8 Σεπτεμβρίου. Κεῖται παρὰ τὸ χωρίον Μυριοκέφαλα, ἱδρύθη δὲ κατὰ τὸν Ι' αἰῶνα ὑπὸ Ἰωάννου τοῦ ὁσίου. Ἐν τῇ μονῇ ταύτῃ, ἥτις ἔχει σήμερον τρεῖς μοναχούς, σῴζεται εἰκὼν θαυματουργὸς τῆς Θεοτόκου, βυζαντινῆς τέχνης, ἀναγομένη εἰς τοὺς χρόνους τῆς ἱδρύσεως τῆς μονῆς. Ἡ μονὴ εἶχε πρὸ τοῦ 1821 εὐρὺ καὶ πλούσιον μετόχιον, εἰς τὸ ὁποῖον καταλύοντες συχνότατα οἱ Τοῦρκοι, ὠργίαζον εἰς βάρος τῶν μοναχῶν καὶ τῶν κατοίκων τῶν πέριξ χωρίων. Οἱ μοναχοὶ ἐκδιωκόμενοι ἔσφαζον τοὺς κραιπαλοῦντας Τούρκους καὶ εἶτα ἐξηφάνιζον τὰ πτώματα αὐτῶν. Οἱ Τοῦρκοι ἐκδικούμενοι, ἀφοῦ ἔσφαξαν τοὺς μοναχούς, ἐπυρπόλησαν τὴν μονὴν καὶ ἐδήμευσαν τὴν περιουσίαν της. † Ρ. Α. Τ.—Ν. ΚΛΣ

**Μυριοκέφαλον** *[Βυζαντ.]*. Βυζαντινὸν φρούριον ἐν Μ. Ἀσίᾳ, παρὰ τὰς πηγὰς τοῦ ποταμοῦ Μαιάνδρου καὶ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ ἀπὸ Ἀπαμείας τῆς Κιβωτοῦ (παρὰ τὸ σημερινὸν χωρίον Ντιναίρ) πρὸς τὸ Ἰκόνιον. Περὶ τὸ φρούριον τοῦτο, ἠρειπωμένον ἤδη, ἐστρατοπέδευσεν ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου Μανουὴλ Α' Κομνηνὸς τῷ 1176, ὅτε ἐξεστράτευσε κατὰ τοῦ σουλτάνου τοῦ Ἰκονίου, καὶ ὑπέστη τὴν ἐν ταῖς «κλεισούραις τοῦ Τζυβρίτζη» φοβερὰν πανωλεθρίαν. Ν. ΚΛΣ

— **Μυριοκέφαλον** *[Γεωγρ.]*. Τοποτηρησία τοῦ θέματος Βουκελλαρίων τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας (ἐν Μ. Ἀσίᾳ, περιφέρεια Ἀγκύρας—Ἡρακλείας). Ὁ Λέων ΣΤ' (886—912), ἀποσπάσας τὴν τοποτηρησίαν ταύτην ἐκ τοῦ θέματος ἐκείνου, προσεκόλλησεν εἰς τὸ τοῦ Χαρσιανοῦ (περιφέρεια τῆς νῦν πόλεως Ὑοσκάτης). Ν. ΚΛΣ

**μυριόνεκρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μυρίους, ὁ ἀναριθμήτους νεκροὺς ἔχων ὡς ἀποτέλεσμα: «μυριόνεκρος μάχη».

**μυριόπλουτος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἄπειρον πλοῦτον ἔχων.

**μυριόρριζος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ μυρίας, ἀπείρους ρίζας ἔχων.

**μύριος**, *—α, —ον*· ἀρχ. (μόνον τὸ θηλυκόν) «μυρία ἵππος» δεκακισχίλιοι ἱππεῖς, «μυρία ἀσπὶς» δεκακισχίλιοι ὁπλῖται || συνήθ. πληθ. *μύριοι, —αι, —α*· δεκακισχίλιοι: «οἱ μετὰ τοῦ Κύρου μύριοι», «ἡ κάθοδος τῶν μυρίων».

—**Μύριοι** (οἱ) *['Αρχ.]*. Οὕτως ἐκαλεῖτο ἡ βουλὴ τῶν ἀρχαίων Ἀρκάδων, ὡς ἀποτελουμένη ἐκ 10.000 μελῶν, ἅτινα ἀντεπροσώπευον ἁπάσας τὰς πόλεις τῆς Ἀρκαδίας. Ὁ πολιτικὸς οὗτος θεσμὸς τῶν Ἀρκάδων ἱδρύθη μετὰ τὴν ἐν Λεύκτροις ἧτταν τῶν Λακεδαιμονίων ὑπὸ τῶν Θηβαίων καὶ μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Ἐπαμεινώνδου κτίσιν τῆς Μεγαλοπόλεως, ἥτις εἶχε γίνει τὸ πολιτικὸν κέντρον τῆς Ἀρκαδίας, μὲ σκοπὸν τὴν ἑνιαίαν πολιτικὴν τῆς χώρας ταύτης ὀργάνωσιν κατὰ τὸ ὑπόδειγμα τῆς Βοιωτίας. Οἱ Μύριοι συνήρχοντο εἰς τὸ ἐν Μεγαλοπόλει Θερσίλιον βουλευτήριον κατὰ τακτοὺς χρόνους καὶ ἀπεφάσιζον περὶ τῶν σπουδαιοτέρων ὑποθέσεων τῆς χώρας (πολέμου, εἰρήνης, συμμαχίας κλπ.) καὶ ἐξέλεγον τοὺς ἄρχοντας τοῦ κοινοῦ τῶν Ἀρκάδων, ἑδρεύοντας ἐν Μεγαλοπόλει (*Διοδ. Σικελ.* XV 59). Ὑπὸ τὰς διαταγὰς τῶν Μυρίων ἦσαν καὶ οἱ Ἐπαρῖται (ἢ Ἐπάριτοι), ἡ ἐκ πεντακισχιλίων ἀνδρῶν μόνιμος τῶν Ἀρκάδων στρατιά. Ὁ πολιτικὸς θεσμὸς τῶν Μυρίων δὲν ἔζησεν ἐπὶ μακρὸν χρόνον, διότι ἡ ἑνιαία πολιτικὴ ὀργάνωσις τῆς Ἀρκαδίας δὲν ἦτο τόσον εὔκολος ὅσον ἡ τῆς Βοιωτίας, ἐξ ἀντιστάσεως τῶν δύο μεγάλων ἀρκαδικῶν πόλεων, τοῦ Ὀρχομενοῦ καὶ τῆς Ἡραίας, καὶ ἀντιδράσεως τῶν μικρῶν πόλεων τῆς νοτιοδυτικῆς Ἀρκαδίας. ΚΑΨ.

—**Μυρίων *κάθοδος***. Οὕτως ὠνομάσθη ἡ μετὰ τὴν παρὰ τὰ Κούναξα μάχην (401 π. Χ.) καὶ τὸν διὰ δόλου θάνατον τῶν στρατηγῶν τῶν μετὰ τοῦ Κύρου κατὰ τοῦ Ἀρταξέρξου συνεκστρατευσάντων Ἑλλήνων (12, 900) πορεία τούτων εἰς Τραπεζοῦντα καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὰ παράλια τῆς Θρᾴκης. Ἡ πορεία αὕτη, γενομένη ὑπὸ τὴν τυπικὴν μὲν ἡγεμονίαν τοῦ Σπαρτιάτου Χειροσόφου, οὐσιαστικὴν δὲ τοῦ Ἀθηναίου ἱστορικοῦ Ξενοφῶντος, ὅστις καὶ περιέγραψε ταύτην εἰς τὸ σύγγραμμά του «Κύρου ἀνάβασις», διήρκεσεν ὀκτὼ ὅλους μῆνας, ἤτοι τέσσαρας μῆνας ἀπὸ Κουνάξων διὰ τῆς Μεσοποταμίας, τῆς Μηδίας καὶ τῆς Ἀρμενίας μέχρι τῆς Τραπεζοῦντος καὶ τέσσαρας ἐκεῖθεν μέχρι τῆς Θρᾴκης. Ἡ ἐπιτυχὴς αὕτη κάθοδος τῶν Ἑλλήνων διὰ τόπων ἀγρίων, ἀγνώστων καὶ χιονοσκεπάστων, κατοικουμένων ὑπὸ πολεμίων λαῶν, οἵτινες ἢ διὰ φανεροῦ πολέμου ἢ δι' ἐνεδρῶν παρεκώλυον τὴν πορείαν των, ὀφειλομένη εἰς τὰς στρατιωτικὰς ἀρετὰς τῆς ἑλληνικῆς ἐκείνης στρατιᾶς καὶ τὴν μεγάλην στρατηγικὴν ἀξίαν τοῦ Ξενοφῶντος, ἐφαρμόσαντος τὴν καταλληλοτέραν πρὸς τὰς ἑκάστοτε δυσχερείας τακτικήν, ἀπεκάλυψε τὴν ἀδυναμίαν τοῦ πανισχύρου θεωρουμένου τότε, διά τε τὴν ἔκτασίν του καὶ τὸν πληθυσμόν του, περσικοῦ κράτους καὶ ὑπῆρξε τὸ προοίμιον τῶν νικηφόρων ἐκστρατειῶν τοῦ βασιλέως τῆς Σπάρτης Ἀγησιλάου καὶ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου, ὅστις καὶ κατέλυσε τὸ περσικὸν κράτος. Ἡ κάθοδος τῶν Μυρίων καὶ σήμερον θεωρεῖται ἐκ τῶν σπουδαιοτέρων γεγονότων τῆς στρατιωτικῆς ἱστορίας τῶν ἀρχαίων χρόνων. ΚΑΨ.

**μυρίος**, *—α, —ον*· ἀρχ., ἀναρίθμητος, ἄπειρος, ἀπέραντος: «μυρίος χρόνος», «πένθος μυρίον» || συνήθ. πληθ. *μυρίοι, —αι, —α*· ἄπειροι, ἀναρίθμητοι: «μυρία κακὰ ὑπέστη».

— **«Μυρία ὅσα»**. Ἑλληνικὸν περιοδικόν, ἐκδοθὲν ἐν Παρισίοις τῷ 1868 εἰς σχῆμα 8ον ὑπὸ Ἰ. Ἰσιδωρίδου Σκυλίσση. Π. Ν. Π.

**μυριοστημόριον** (τό)· τὸ μυριοστὸν μέρος ἑνὸς ὅλου.

**μυριόστομος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ ἔχων οἱονεὶ μυρία, ἀναρίθμητα στόματα: «μυριόστομος φήμη».

**μυριοστός**, *—ή, —όν*· ὁ δεκάκις χιλιοστός, ὁ κατὰ ἀριθμητικὴν τάξιν κατέχων τὸν ἀριθμὸν 10000 || εἷς ἐκ τῶν δεκακισχιλίων ἴσων κατὰ ποσόν: «μυριοστὴ μοῖρα» ἢ «τὸ μυριοστὸν μέρος» || μυριοστὸ (τό)· ὡς οὐσ., τὸ μυριοστὸν μέρος, ἓν δεκακισχιλιοστόν.

Digitized by Google

**μυριότροχος** (ὁ) (Myriotrochus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐχινοζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ὁλοθουρίων* τῆς οἰκογενείας τῶν *ὁλοθουριδῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὸν *μυριότροχον τὸν ὁλοθουριοειδῆ* (Myriotrochus holothuroides), ὅστις ἀπαντᾷ εἰς τὴν Βόρειον θάλασσαν. Δ. Ν. Π.

**μυριόφυλλον** (τὸ) (Myriophyllum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἁλοραγοειδῶν*, περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς ὑδροβίους, ἰθαγενεῖς τῶν εὐκράτων καὶ θερμῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν 15 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι τὸ *μυριόφυλλον τὸ σταχυηρὸν* (Myriophyllum spicatum) καὶ *μυριόφυλλον τὸ σπονδυλωτὸν* (Myriophyllum verticulatum), ἀμφότερα ἰθαγενῆ τῆς Ἑλλάδος καὶ ἄλλων παραμεσογειακῶν χωρῶν. Ἐκ τῶν ἐξωτικῶν εἰδῶν ἀξιολογώτερον εἶναι τὸ *μυριόφυλλον τὸ προσερπινοειδὲς* (Myriophyllum proserpinoides), ἰθαγενὲς φυτὸν τῆς κεντρικῆς Ἀμερικῆς, καλλιεργούμενον πολλαχοῦ πρὸς κόσμον. Δ. Ν. Π.

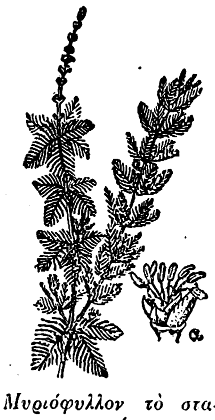

*Μυριόφυλλον τὸ σταχυηρόν.*

**Μυριόφυτον** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς Ἀνατολικῆς Θρᾴκης, κειμένη ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Προποντίδος, μεταξὺ Γάνου καὶ Περιστάσεως. Κατὰ πᾶσαν πιθανότητα ἐκτίσθη ἐπὶ τῶν ἐρειπίων τῆς ἀρχαίας *Μυρτήνου*, ἀναφέρεται δὲ διὰ πρώτην φορὰν τῷ 1063, ὁπότε κατεστράφη ὑπὸ σεισμοῦ. Ἀναλαβοῦσα, ὑπέστη καταστρεπτικοὺς σεισμοὺς τῷ 1343, 1354 καὶ 1766 μετὰ τῶν λοιπῶν Γανοχώρων, ὅπως καὶ κατὰ τὸν τελευταῖον σεισμὸν τῇ 9 Αὐγούστου 1912, ὁπότε κατεστράφη μετὰ τῆς Χώρας καὶ τοῦ Γιολτζίκ. Ἦτο ἕδρα τῆς ὑποδιοικήσεως Μυριοφύτου καὶ Περιστάσεως, ὡς καὶ ἐπισκόπου ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Ἡρακλείας, ἠρίθμει δὲ μέχρι τῆς ἀνταλλαγῆς τῶν πληθυσμῶν (1923) περὶ τοὺς 4.000 κατοίκους Ἕλληνας, διατηροῦντας ἐκκλησίας καὶ λαμπρὰ δημοτικὰ σχολεῖα. Α. Θ. Σ.

— **Μυριόφυτον** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμαράντων (Σουρλόβου) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Πόποβον*. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 473. —2) Χωρίον τῆς κοινότητος Μαρυανῶν τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χαλκιδικῆς. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ κατ. (1928) 307. Χ. Δ.

— **Μυριόφυτον** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον καὶ ὕφορμος (πλάτ. 40°40'10" Β., μῆκ. 27°15'15" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1004: Western part of Sea of Marmara) τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τῆς Θρᾴκης, 4 μίλλ. Α. ΒΑ. τοῦ ἀκρωτηρίου Πρακλίτζα-μπουρνοῦ καὶ εἰς τὸ στόμιον κοιλάδος τοῦ βουνοῦ Ἠλιὰ-τεπέ, ἣν διαρρέει τὸ ὡραῖον ποτάμιον Στέρνα Ντερεσσί. Πλεῖστα ναυάγια λαμβάνουν χώραν εἰς τὴν ἄξενον ἀκτήν του. Σ. Ε. Λ.

**μυρίπνους** (ὁ, ἡ), —ουν (τό)· ὁ μύρα ἀποπνέων, κοιν. *μυρωδᾶτος, μοσχᾶτος*.

**Μυρίσι** *[Γεωγρ.]* βλ. λ. *Μυρίκη*.

**μύρισμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μυρίζειν, τὸ νὰ ὀσφραίνεταί τις· || ἀρχ., μύρωμα, ἡ διὰ μύρου ἐπίχρισις.

**Μυρίσσης** *[Γεωγρ]*. Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κορωνίδος τῆς ἐπαρχίας Νάξου τοῦ νομοῦ Κυκλάδων. Κάτ. (1928) 27. Χ. Δ.

**μυριστικὴ** (ἡ) (Myristica) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυριστικοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν 100 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μυριστικὴ ἡ ἀγκολανὴ* (Myristica angolanensis), δένδρον μικροῦ ἀναστήματος, ἰθαγενὲς τῶν δυτικῶν χωρῶν τῆς Ἀφρικῆς, γνωστότατον ἐκ τοῦ καρποῦ του, ὅστις φέρεται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν αὐτοῦ ὄνομα *μουτόυγκο*. *Μυριστικὴ ἡ εὐώδης* (Myristica moschata), δένδρον ὅπερ φθάνει εἰς ὕψος 10 περίπου μέτρων, ἰθαγενὲς τῶν νήσων τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ. Ὁ καρπός του, ὅστις εἶναι γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *μοσχοκάρυον*, εἶναι δρύπη ἀποτελουμένη ἐκ τριῶν τμημάτων: τοῦ *ἐξωκαρπίου*, ὅπερ εἶναι λέπυρον σαρκῶδες καὶ διανοίγεται κατὰ τὴν ὡρίμανσίν του εἰς δύο τμήματα· τοῦ *μεσοκαρπίου*, δηλαδὴ τοῦ μεμβρανώδους, ποικιλοσχήμου καὶ ἐρυθροῦ περιβλήματος τοῦ πυρῆνος, ὅπερ καλεῖται ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν *μοσχομάκερ*, καὶ ἐκ τοῦ *ἐσωκαρπίου*, δηλαδὴ τοῦ πυρῆνος, ὅστις ἔχει μορφὴν μικροῦ καρύου καὶ περιβάλλεται ὑπὸ εὐθραύστου περικαλύμματος. Ὁ πυρὴν ἀποτελεῖ τὸ γνωστότατον ἀρτυματικὸν καὶ φαρμακευτικὸν *μοσχοκάρυον* (Nux moschata), ὅπερ ὁ Θεόφραστος ἐκάλει *κώμακον*. *Μυριστικὴ ἡ γουατεμάλιος* (Myristica guatemalensis), δένδρον φθάνον εἰς ὕψος 6 περίπου μέτρων· δι' ἐκθλίψεως τοῦ καρποῦ του παρέχεται στερεά, ἄοσμος καὶ παχεῖα οὐσία, κατὰ 50 % χρήσιμος εἰς τὴν κατασκευὴν σπερματοκηρίων καὶ εἰς τὴν σαπωνοποιίαν. *Μυριστικὴ ἡ σουρινάμιος* (Myristica surinamensis), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Γουϊάνας, οὗ ὁ καρπὸς περιέχει 70 % παχὺ καὶ ἄοσμον ἔλαιον, χρησιμοποιούμενον εἰς τὴν σαπωνοποιίαν. Δ. Ν. Π.

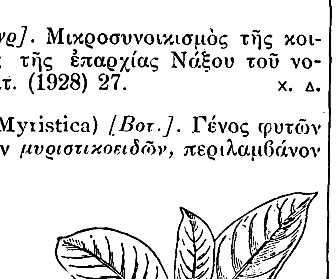

*Μυριστικὴ ἡ εὐώδης.*
[Α= Καρπός. Β= Σπέρμα.]

—**μυριστικῆς** *σπέρματα καὶ ἔλαιον* (Semen et Oleum Myristicae) *[Φαρμακογ.]*. Προέρχονται ἐκ τοῦ φυτοῦ *μυριστικὴ ἡ εὐώδης*. Οἱ καρποὶ τοῦ φυτοῦ τούτου εἶναι τὰ καλούμενα μοσχοκάρυα, ἅτινα συλλέγονται πρὶν ἢ ἀκόμη ὡριμάσουν. Ἀποξηραίνονται μερικῶς εἰς τὸν ἥλιον καὶ ἀκολούθως θραύονται καὶ ἀφαιρεῖται τὸ περικάρπιόν των, τὸ ὁποῖον χρησιμοποιεῖται ὡς λίπασμα. Τὰ ἀπογυμνωθέντα ἀμύγδαλα ξηραίνονται ὀλίγον, ἀφαιρεῖται ἀπ' αὐτῶν τὸ περικάλυμμα καὶ ἀκολούθως ξηραίνονται καὶ πάλιν, διαχωρίζονται ἀναλόγως τοῦ βάρους, τοῦ χρώματος καὶ τῆς διαμέτρου αὐτῶν, ἀπορριπτομένων τῶν βεβλαμμένων, τὰ ὁποῖα χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν ἐξαγωγὴν ἐξ αὐτῶν τοῦ βουτύρου τῶν μοσχοκαρύων, διαβρέχονται εἰς γάλα ἀσβέστου, ξηραίνονται ἐκ νέου καὶ ἐξάγονται εἰς Λονδῖνον, Ἀμβοῦργον, Μασσαλίαν, Χάβρην καὶ Ἀμστελλόδαμον. Εἰς τὸ ἐμπόριον τὰ μοσχοκάρυα φέρονται εἰς κιβώτια ἑρμητικῶς κεκλεισμένα, περιέχοντα ἐνίοτε ὀλίγον ὑποχλωριῶδες ἀσβέστιον, καρυόφυλλα ἢ σπέρματα πεπέρεως πρὸς προφύλαξιν ἀπὸ τῶν ἐντόμων καὶ παρασίτων. Εἶναι σώματα μικρά, βραχέως ᾠοειδῆ, 2,5—3 ἑκ. μήκους καὶ 1,5—2 διαμέτρου, σκληρᾶς συστάσεως, χρώματος ἐξωτερικῶς λευκωποῦ καὶ ἐρυθρωποῦ. Ἔχουν ὀσμὴν ἰσχυρῶς ἀρωματικὴν καὶ γεῦσιν ἐλαφρῶς πικράν. Συνήθως νοθεύονται δι' ἄλλων τοιούτων κατωτέρας ποιότητος, προερχομένων ἐξ ἀγρίων φυτῶν, ὡς καὶ διὰ σκωληκοβρώτων μοσχοκαρύων. Τὰ τελευταῖα ταῦτα ῥιπτόμενα εἰς τὸ ὕδωρ ἐπιπλέουν. Ὡσαύτως νοθεύονται καὶ διὰ τεχνητῶν τοιούτων, ἀποτελουμένων ἐκ μείγματος ἀργίλλου, κόνεως μοσχοκαρύων καὶ βουτύρου αὐτῶν. Τὸ αἰθέριον ἔλαιον τῶν μοσχοκαρύων εἶναι ὑγρὸν ἄχρουν ἢ ἐλαφρῶς κιτρινωπόν, ὀσμῆς εἰδικῶς ἀρωματικῆς, εἰδ. βάρους 0,90—0,92, διαλυτὸν εἰς τὸν αἰθέρα, τὴν ἀλκοόλην καὶ τὸ χλωροφόρμιον. Εἰς τὴν θεραπευτικὴν ἀναγράφονται εἰς δόσεις πλειστάκις τῆς ἡμέρας, εἰς κόνεις ἢ καταπότια καὶ εἰς ἀφεψήματα, ὡς φάρμακον εὐστόμαχον καὶ ἀντιφυσῶδες καὶ ὡς γλυκαντικόν. Τὴν αὐτὴν χρῆσιν εὑρίσκει εἰς τὴν θεραπευτικὴν καὶ τὸ ἔλαιον τῶν μοσχοκαρύων. Εἰς τὴν φαρμακοτεχνίαν τὸ ἔλαιον χρησιμεύει πρὸς παρασκευὴν τοῦ βαλσάμου τῶν μοσχοκαρύων (Balsamum Nucistae), τοῦ συνθέτου πνεύματος μελίσσης (Spiritus Melissae compositus), τῆς συνθέτου ἀλοιφῆς τοῦ δενδρολιβάνου (Unguentum Rosmarini compositum), διαφόρων ὀδοντοπλυμάτων κλπ. Κ. Γ. Μ.

**μυριστικίνη** (ἡ). *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *μυριστικὸν ὀξύ*.

**μυριστικοειδῆ** (τὰ) (Myristicaceae) *[Βοτ.]*. Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων*, περιλαμβάνουσα θάμνους ἢ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀσίας. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων γενῶν ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μυριστικὴ* (βλ.λ.). Δ. Ν. Π.

**μυριστικὸν ὀξὺ** *[Ὀργ. Χημ.]*. Κεκορεσμένον μονοκαρβονικὸν ὀξὺ τοῦ τύπου $C_{14}H_{28}O_2$, ἀπαντῶν εἰς τὸ μοσχοβούτυρον, τοῦ ὁποίου τὸ κύριον συστατικὸν εἶναι τὸ γλυκερίδιον τοῦ ὀξέος τούτου. Τὸ γλυκερίδιον τοῦ μυριστικοῦ ὀξέος καλεῖται *μυριστίνη* ἢ *μυριστικίνη* καὶ εὑρίσκεται, πλὴν τοῦ μοσχοβουτύρου, καὶ εἰς ἄλλα φυτικὰ λίπη. Σ. Γ.

**μυριστικός**,—ή,—ό· δημοτ., ὁ ἔχων ἄρωμα, ἀρωματικός· || **μυριστικὰ** (τά)· ὡς οὐσ., τὰ ἀρωματικά, τὰ εὐωδιάζοντα ἀρτύματα φαγητῶν, ἄλλως *μπαχαρικά*: «ἀπ' ὅλα τὰ μυριστικὰ μ' ἀρέσει ἡ κανέλλα».

—**μυριστικὴ ἀλδεΰδη**, ἢ **τετραδεκανάλη** *[Ὀργ. Χημ.]*. Κεκορεσμένη ἀλδεΰδη τοῦ τύπου $C_{14}H_{28}O$. Ἀπαντᾷ εἴς τινα αἰθέρια ἔλαια καὶ ἔχει ἰσχυρὰν ἀναψυκτικὴν ὀσμήν. Σ. Γ.

**Μύριτς λίμνη** (Müritzsee) *[Γεωγρ.]*. Λίμνη τῆς Γερμανίας ἐν Μεκλεμβούργῳ. Εἶναι ἡ μεγαλυτέρα ἐκ τῶν λιμνῶν τῆς περιοχῆς, καλύπτουσα ἔκτασιν 115 τετρ. χλμ., διασχίζεται δὲ ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ Ἔντε καὶ συνδέεται διὰ πλωτῶν διωρύγων μετὰ τοῦ Ἔλβα καὶ τῆς λίμνης Πλάουερ. Χ. Δ.

**μυρκένιον** (τὸ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Ἀκόρεστος ὑδρογονάνθραξ μετὰ τριῶν διπλῶν δεσμῶν τοῦ τύπου $(CH_3)_2$ C: CH. $CH_2$. $CH_2$. C (: $CH_2$). CH : $CH_2$. Εἶναι ἀλειφατικὴ τερπένη καὶ ἀπαντᾷ εἰς τὸ ἔλαιον τοῦ λυκίσκου, τὸ ἔλαιον τῆς Lippia citriodora καὶ τὸ ἔλαιον Bay. Σ. Γ.

**Μύρκινος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἠδωνίδος ἐν Θρᾴκῃ, κειμένη ΒΔ. τῆς Ἀμφιπόλεως, παρὰ τὸν ποταμὸν Στρυμόνα, ἐπὶ ὑψηλῆς καὶ ὀχυρᾶς θέσεως. Παραχωρηθεῖσα τῷ 513 π. Χ. ὑπὸ τοῦ Δαρείου εἰς τὸν Ἱστιαῖον τὸν Μιλήσιον, διὰ τὰς κατὰ τὴν ἐκστρατείαν τῶν Σκυθῶν ὑπηρεσίας αὐτοῦ, κατελήφθη ὑπὸ τῶν ἐπιδραμόντων Ἠδωνῶν, οἵτινες ἀνέδειξαν αὐτὴν πρωτεύουσάν των. Ἀποπειραθεὶς νὰ ἀνακτήσῃ αὐτὴν ὁ γαμβρός του Ἀρισταγόρας, τῷ 497 π. Χ., ἐφονεύθη ὑπὸ τὰ τείχη της. Ὀλίγα ἔτη πρὸ τοῦ Πελοποννησιακοῦ πολέμου ἐπεχείρησαν οἱ Ἀθηναῖοι νὰ καταλάβωσιν αὐτήν, ἀλλ' ὑπέστησαν φοβερὰν καταστροφήν. Παραμείνασα ἐλευθέρα μέχρι τοῦ 424 π. Χ., παρεδόθη εἰς τὸν Βρασίδαν, ὅστις εἶχε καταλάβει τὴν Ἀμφίπολιν μετὰ τῆς πέριξ χώρας. Ἔκτοτε παρήκμασε καὶ δὲν ἀναφέρεται πλέον. Α. Θ. Σ.

— **Μύρκινος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Δραβήσκου (Ζδράβικ) τῆς ἐπαρχίας Φυλλίδος (Ζίχνης) τοῦ νομοῦ Σερρῶν, ὀνομαζόμενον πρότερον *Δοξόμπος*. Κάτ. (1928) 198. Χ. Δ.

**Μυρλεανὸς κόλπος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ Στέφανον τὸν Βυζάντιον ὀνομασία τοῦ κόλπου τῶν *Μουδανιῶν*. Σ. Ε. Λ.

**Μυρλεᾶτις** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ περὶ τὴν *Μύρλειαν* (βλ. λ.), πόλιν τῆς ἐν τῇ Μ. Ἀσίᾳ Βιθυνίας, χώρα.

**Μύρλεια** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις παράλιος τῆς ἐν Μ. Ἀσίᾳ Βιθυνίας (Φρυγίας τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ), κειμένη κατὰ τὴν εἴσοδον τοῦ Κιανοῦ κόλπου. Ἐκτίσθη κατὰ τὸν Ε' π. Χ. αἰῶνα ὑπὸ ἀποίκων τῆς Κολοφῶνος καὶ κατὰ τὸν Γ' αἰῶνα προσηρτήθη εἰς τὸ κράτος τῆς Βιθυνίας, ὅτε καὶ κατεστράφη ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Μακεδονίας Φιλίππου τοῦ Ε' (201 π. Χ.). Ἀνεκτίσθη ὅμως ὑπὸ τοῦ βασιλέως τῆς Βιθυνίας Προυσίου τοῦ Α' (228—180 π. Χ.) καὶ μετωνομάσθη ἀπὸ τῆς συζύγου του Ἀπάμας *Ἀπάμεια*. Ἐπὶ Καίσαρος καὶ Αὐγούστου ἐδέχθη αὕτη καὶ ἀποίκους Ρωμαίους. Κατὰ τὸν μεσαίωνα ἔφερε τὸ ὄνομα Montagnac· διὰ τοῦτο, ὅτε ἐπὶ τῶν ἐρειπίων αὐτῆς, καταστραφείσης ὑπὸ τῶν Τούρκων κατὰ τὸ 1318, ἐκτίσθη νέα πόλις, ὠνομάσθη αὕτη, ἐκ παραφθορᾶς τῆς λέξεως Montagnac, *Μουντανιά*. Τῆς ἀρχαίας Μυρλείας διεσώθησαν καὶ νομίσματα χαλκᾶ, αὐτόνομα καὶ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων. Τὰ πρῶτα, κοπέντα περὶ τὸ 200 π. Χ., φέρουσι τὴν ἐπιγραφὴν ΜΥΡΛΕΑ ἢ ΜΥΡΛΕΑΝΩΝ ἢ ΤΩΝ ΜΥΡΛΕΑΝΩΝ ΑΠΑΜΕΩΝ καὶ διαφόρους τύπους, τῶν ὁποίων ἐπικρατέστεροι εἶναι κεφαλὴ Ἡλίου ἔμπροσθεν καὶ ἱππεὺς ὄπισθεν, ἢ κεφαλὴ Ἀθηνᾶς ἔμπροσθεν καὶ λύρα ὄπισθεν· τὰ δεύτερα εἶναι τριῶν κατηγοριῶν: τὰ φέροντα τὸ ὄνομα τοῦ Ρωμαίου διοικητοῦ, τὰ ἀποικιακά, καὶ τὰ τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων. Ἀπὸ τῆς Μυρλείας ἐκαλεῖτο *Μυρλεᾶτις* ἡ περὶ αὐτὴν χώρα. ΚΑΨ.

**Μύρλειον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἡ κατὰ τὸν Διονύσιον τὸν Βυζάντιον ὀνομασία ὑφόρμου τῆς εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς τοῦ Βοσπόρου, βορείως τοῦ Ἐφεσίου λιμένος καὶ νοτίως τοῦ Λυκίων λιμένος. Εἶναι ἡ ἀνώνυμος νῦν ἀγκάλη, ἡ σχηματιζομένη ἀμέσως πρὸς Β. τοῦ ἀκρωτηρίου Τασαλαντζίκμπουρνοῦ (ἀνώνυμον εἰς τὸν ἀγγλ. χάρτην: πλάτ. 41° 12' 00" Β., μῆκ. 29° 06' 15" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus), βορείου κέρατος τοῦ Μπουγιοὺκ λιμάν. Σ. Ε. Λ.

**Μυρμηγκάρης** *[Γεωγρ.]*. Βουνὸς κατὰ τὴν ΝΔ. ἐσχατιὰν τῶν Κυθήρων (ὑψόμετρ. 519 μέτρα) νοτίως τοῦ ὅρμου Βαθὺ Αὐλάκι ἢ Μυρτιδιώτισσα, εἰς ὃν χρησιμεύει ὡς γνώρισμα πρὸς προσγείωσιν. Σ. Ε. Λ.

**μύρμηγκας** (ὁ), καὶ **μέρμηγκας**· δημοτ. τύπος τοῦ *μύρμηξ* (βλ. λ.).

**μυρμήγκι** (τό), καὶ **μερμήγκι**· ὁ μύρμηξ: «τὸ ψωμὶ γέμισε ἀπὸ μερμήγκια» || μεταφ., μέγα, ἀναρίθμητον πλῆθος: «μυρμήγκι μαζεύτηκε ὁ κόσμος».

**Μυρμήγκια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἀκρωτήριον καὶ σκόπελος τῆς ἀριστερᾷ τῷ εἰσπλέοντι τὸν κόλπον τῆς Σμύρνης μικρασιατικῆς ἀκτῆς (πλάτ. 38°37'00" Β., μῆκ. 26°45'15" Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1645: Island of Khios and gulf of Smyrna), νοτίως τῆς Φωκαίας καὶ μεταξὺ τῶν ὅρμων Χατζῆ λιμὰν καὶ Ἀγριά. Ἔχει φάρον ἀπὸ τοῦ 1863. Σ. Ε. Λ.

—**Μυρμήγκια** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἄκρα χερσονησίζουσα τῆς ΝΑ. ἀκτῆς τῆς Ρόδου (πλάτ. 36°02'1/2 Β., μῆκ. 28°00'1/2 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1667: Rhodos

Digitized by Google

island), 6 μίλ. δυτικῶς τοῦ ἀκρωτηρίου Λίνδος καὶ διαχωρίζουσα ἀμφιδύμως τοὺς ὅρμους Γιαννάθη καὶ Λαρδός. Σ. Ε. Λ.

**μυρμηγκίζω**· ἰδιωματ., αἰσθάνομαι κνησμόν, φαγοῦραν, μυρμηκιῶ.

**Μυρμήγκιον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Χίου, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 271. Χ. Δ.

**μυρμηγκοβότανο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀψίνθιον ἢ κίνα* (Artemisia Cina).

**μυρμηγκότρυπα** (ἡ)· ἡ τρῦπα, ἡ φωλεὰ τῶν μυρμήκων, ἄλλως *μυρμηγκοφωλιά*.

**μυρμηγκοφωλιά** (ἡ)· φωλεὰ μυρμήκων, μυρμηκιά, ἄλλως *μυρμηγκότρυπα*· || μεταφ., μέγα πλῆθος.

**Μυρμηζὶκ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς Προποντίδος (πλάτ. 40°40′ Β., μῆκ. 27°40′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 224: Sea of Marmara), διανοιγόμενος κατὰ τὴν βορείαν ἀκτὴν τῆς Προκοννήσου μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Μπουγιουκλῆ Μπουρνοὺ καὶ τοῦ νησίου Νησί. Σ. Ε. Λ.

**μυρμηκαλδεΰδη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *φορμαλδεΰδη*.

**μυρμηκανιλίδη** (ἡ) (Formanilidum) *[Φαρμ. Χημ.]*. Σκεύασμα λαμβανόμενον διὰ θερμάνσεως τοῦ μυρμηκικοῦ μεθυλεστέρος μετ᾽ ἀνιλίνης, ἀνταποκρινόμενον δὲ εἰς τὴν σύνθεσιν: $C_6H_5NH(CHO)$. Πρίσματα ἄχροα, ἀρκούντως διαλυτὰ ἐν ὕδατι, εὐδιάλυτα εἰς τὴν ἀλκοόλην, τηκόμενα εἰς 46°. Ἡ μυρμηκανιλίδη θερμαινομένη δι᾽ ἀραιῶν ὀξέων σχᾶται εἰς ἀνιλίνην καὶ μυρμηκικὸν ὀξύ. Ἀνεγράφη ἐσωτερικῶς ὡς ἀντιπυρετικὸν καὶ ἀναλγητικὸν φάρμακον. Ἐξωτερικῶς ἐχορηγήθη ὡς κόνις ἐπιπάσεως πρὸς πρόκλησιν τοπικῆς ἀναισθησίας. Ἡ μυρμηκανιλίδη εἶναι δηλητηριωδεστέρα τῆς ἀκετανιλίδης, διὸ καὶ εἶναι ἤδη ἀπόθετον φάρμακον. Κ. Γ. Μ.

**μύρμηκες** (οἱ). Ναυτικὸς ὅρος σημαίνων πυκνὴν συστάδα μικρῶν σκοπέλων μόλις ἀναδυόντων τῆς θαλάσσης, ἢ καὶ ἐν χρῷ αὐτῆς, ἢ καὶ εἰς μικρὸν ὑπὸ τὴν ἐπιφάνειαν βάθος. Τὸν ὅρον τοῦτον μεταχειρίζεται καὶ ἡ κοινὴ ναυτικὴ γλῶσσα καὶ ὡς τοπωνυμικὸν ἀκόμη *(μερμήγκια)*. Σ. Ε. Λ.

**μυρμηκία** (ἡ)· ἀκροχορδών, κοιν. *μερμήγκι*.

— **μυρμηκίαι** ***γεροντικαὶ*** *[Δερματολ.]*· βλ. λ. *κεράτωσις* γεροντική.

**μυρμηκιά** (ἡ)· φωλεὰ μυρμήκων, μυρμηγκοφωλιά· || μεταφ., μέγα πλῆθος.

**μυρμηκίασις**, *—εως* (ἡ)· κνησμός, φαγοῦρα· || μούδιασμα.

— *[Ἰατρ.]* Ἡ *μυρμηκίασις* εἶναι παραίσθησις, κατὰ τὴν ὁποίαν ὁ ἄνθρωπος ὑφίσταται τὸ αἴσθημα ὅτι κυκλοφοροῦν ἐπὶ τοῦ δέρματος μυρμήκια. Ἡ παραίσθησις αὐτὴ ὀφείλεται εἰς συνεχῆ κατάστασιν ἐρεθισμοῦ ὡρισμένων αἰσθητηρίων νεύρων καὶ εἶναι χαρακτηριστικὸν σύμπτωμα πλείστων παθήσεων τοῦ νευρικοῦ συστήματος, π. χ. τῆς ὀξείας καὶ χρονίας μυελίτιδος, πολλῶν τοξικῶν νευριτίδων, παθήσεων τῆς φαιᾶς οὐσίας τοῦ νωτιαίου μυελοῦ, τῆς ἀταξίας, τῆς ὑστερίας κλπ. (βλ. καὶ λ. *αἱμωδία*).

**μυρμηκίδαι** (Formicaria) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων ὑμενοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κεντροφόρων*. Περιλαμβάνει ἔντομα μικροῦ, μετρίου ἢ καὶ μεγάλου μεγέθους, μὲ σῶμα διακεκριμένον εἰς κεφαλήν, κορμὸν καὶ κοιλίαν, μὲ κεραίας γωνιωδῶς κεκαμμένας καὶ ἀρθρώσεις τῆς κοιλίας ἐπιμήκεις. Ζῶσι συνήθως κατὰ ἀποικίας πολυπληθεῖς καὶ κατατρώγουσι τὰς ὀπώρας, τὰ ἄνθη, τὰ λάχανα καὶ τοὺς δημητριακοὺς καρπούς. Δὲν θεωροῦνται ὅμως πολὺ ἐπιζήμιοι, διότι κατ᾽ ἔτος κατατρώγουσι χιλιάδας ἐντόμων ἐπιβλαβῶν εἰς τὴν γεωργίαν. Ὁ Forel, παρακολουθήσας τοὺς μύρμηκας μυρμηκιᾶς τινος εἶδεν ὅτι μετέφερον 28 νεκρὰ ἔντομα κατὰ 1′ λεπτὸν εἰς τὴν φωλεάν των, ἤτοι περὶ τὰ 100.000 καθ᾽ ἡμέραν. Ἀξιολογώτερον γένος τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *μύρμηξ* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοζωολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυρμηκιδῶν* εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως. Γ. Κ. Γ.

**Μυρμηκίδης**. Ἕλλην τορευτής. Κατὰ τὸν Πλούταρχον ὁ Μυρμηκίδης μετὰ τοῦ Καλλικράτους ἐτεχνούργησαν τέθριππον ἅρμα πλησίον ὁδηγοῦ τοιαύτης σμικρότητος, ὥστε τὸ ὅλον τῆς παραστάσεως ταύτης ἐκαλύπτετο διὰ τῶν πτερύγων μυίας τεχνουργηθείσης ὑπὸ τῶν αὐτῶν τορευτῶν. Ὡσαύτως ἐτεχνούργησαν κόκκον σησαμίου, ἐφ᾽ οὗ ἀνέγραψαν χρυσοῖς γράμμασι, κατὰ μὲν τὸν Αἰλιανὸν δίστιχον, κατὰ δὲ τὸν Πλούταρχον ὁμηρικὸν στίχον. Ἀμφότεροι οἱ καλλιτέχναι ὑπῆρξαν ἔξοχοι τορευταὶ ἰδίως μυρμήκων καὶ ἄλλων μικρῶν ἐντόμων. Κατὰ τὰς ἐνδείξεις τῶν ἀρχαίων συγγραφέων ἤκμασαν κατὰ τοὺς ἀλεξανδρινοὺς χρόνους, ἐχρησιμοποίουν δὲ ὡς ὑλικὸν τὸ ἐλεφαντοστοῦν, σπανιώτερον δὲ τὸν σίδηρον καὶ τὸν χαλκόν. Β. Δ. Θ.

**μυρμηκίζω**· ἀντὶ *μυρμηκιῶ* (βλ. λ.).

**μυρμηκικός**, *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸν μύρμηκα, ὁ τοῦ μύρμηκος: «μυρμηκικὸν ὀξύ».

— **μυρμηκικὴ** ***ἀλδεΰδη*** *[Ὀργ. Χημ.]*· βλ. *φορμαλδεΰδη*.

— **μυρμηκικὸν** ***ἔρβιον*** *[Χημ.]*· βλ. λ. *ἔρβιον*.

— **μυρμηκικὸν** ***ὀξύ***, ἢ ***φορμικὸν ὀξύ***, ἢ ***μεθανικὸν ὀξὺ*** *[Ὀργ. Χημ.]*. Τὸ ἁπλούστερον κεκορεσμένον μονοκαρβονικὸν ὀξύ. Ἔχει τὸν τύπον $H.COOH$ καὶ εἶναι ἐκ τῶν ἀρχαιοτέρων γνωστῶν ὀργανικῶν ὀξέων, καθόσον εἶχεν ἤδη ἀπὸ τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος παρατηρηθῆ ὅτι εἰς τοὺς μύρμηκας ἐνυπῆρχε χαρακτηριστικόν τι ὀξύ, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα. Πλὴν τῆς ἐμφανίσεως αὐτῆς τὸ μυρμηκικὸν ὀξὺ ἀνευρέθη περαιτέρω εἴς τινας κάμπας, εἰς τὰς κνίδας, τὸ μέλι, τὸν ἱδρῶτα, τὰ οὖρα, τὸν ὀπὸν τοῦ κρέατος κλπ.

Τὸ μυρμηκικὸν ὀξὺ δύναται νὰ παρασκευασθῇ συνθετικῶς κατὰ πολλὰς μεθόδους, ὡς λ. χ. διὰ σαπωνοποιήσεως τοῦ ὑδροκυανίου, δι᾽ ὀξειδώσεως τῆς μεθυλικῆς ἀλκοόλης, διὰ θερμάνσεως τοῦ χλωροφορμίου μετ᾽ ἀλκαλίων, δι᾽ ἐπιδράσεως ἀλκαλίων ἐπὶ τῆς χλωράλης, διὰ θερμάνσεως τοῦ ὀξαλικοῦ ὀξέος, διὰ διοχετεύσεως μονοξειδίου τοῦ ἄνθρακος εἰς ξηρὸν ὑδροξείδιον τοῦ νατρίου εἰς 160°, δι᾽ ἀναγωγῆς τοῦ διοξειδίου τοῦ ἄνθρακος, δι᾽ ὀξειδώσεως πολλῶν πολυσυνθέτων ὀργανικῶν ὑλῶν κ.λ.π. Ὡς βιομηχανικὴ μέθοδος παρασκευῆς χρησιμεύει κυρίως ἡ δι᾽ ἐπιδράσεως μονοξειδίου τοῦ ἄνθρακος ἐπὶ ὑδροξειδίου τοῦ νατρίου ἢ ἀσβεστίου ὑπὸ πίεσιν καὶ εἰς ὑψηλὴν θερμοκρασίαν, ὁπότε σχηματίζεται τὸ ἀντίστοιχον μυρμηκικὸν ἅλας, τὸ ὁποῖον κατόπιν, δι᾽ ἐπιδράσεως θειικοῦ ὀξέος, διασπᾶται εἰς θειικὸν ἅλας καὶ μυρμηκικὸν ὀξύ, ὅπερ ἀποστάζεται. Τὸ ἄνυδρον μυρμηκικὸν ὀξὺ εἶναι εἰς συνήθη θερμοκρασίαν ὑγρὸν ἄχρουν, δριμείας ὀσμῆς, ἐκ τῶν μᾶλλον καυστικῶν ὑλῶν. Σταγὼν αὐτοῦ φερομένη ἐπὶ τοῦ δέρματος προκαλεῖ ἀνυποφόρους πόνους, σχηματιζομένης ἐν τέλει ὀδυνηρᾶς πυορροούσης πληγῆς. Ἀτμίζει ἀσθενῶς εἰς τὸν ἀέρα, τήκεται εἰς +8°,3, ἔχει εἰδικὸν βάρος 1,2187 καὶ βράζει εἰς 101°. Εἶναι ἰσχυρὸν ὀξύ, ἰσχυρότερον ὅλων τῶν ὁμολόγων του, χρησιμοποιεῖται πρὸς παρασκευὴν τοῦ ὀξαλικοῦ ὀξέος, εἰς τὴν βυρσοδεψικήν, τὴν ζυθοποιίαν, οἰνοποιίαν κλπ., ἡ σπουδαιοτέρα ὅμως χρησιμοποίησις αὐτοῦ εἶναι εἰς τὴν βαφικήν, ἡ δ᾽ ἐν Γερμανίᾳ μόνον διὰ τὴν χρῆσιν αὐτὴν παραγομένη ποσότης ὑπερβαίνει τοὺς 10 χιλ. τόννους ἐτησίως.

*Μυρμηκικὰ ἅλατα*. Τὸ μυρμηκικὸν ὀξὺ σχηματίζει μετὰ μετάλλων ἅλατα, ἅτινα εἶναι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον διαλυτὰ εἰς τὸ ὕδωρ καὶ τὰ πλεῖστα καλῶς κρυσταλλούμενα. Τὰ σπουδαιότερα ἐξ αὐτῶν εἶναι τὰ ἑξῆς:

*Μυρμηκικὸν ἀμμώνιον* $HCOONH_4$, ὅπερ προὐτάθη ὡς κατάλληλον σῶμα πρὸς ἐνανθράκισιν καὶ σκλήρυνσιν τοῦ χάλυβος. *Μυρμηκικὸν νάτριον* $HCOONa$, χρησιμοποιούμενον πρὸς παρασκευὴν τοῦ μυρμηκικοῦ καὶ ὀξαλικοῦ ὀξέος καὶ ὡς ἀναπλήρωμα τοῦ ἀκριβωτέρου ὀξικοῦ νατρίου. *Μυρμηκικὸν ἀργίλλιον*, χρησιμοποιούμενον ἀναλόγως πρὸς τὸ ὀξικὸν ἀργίλλιον. *Μυρμηκικὸν χρώμιον*, χρησιμεῦον εἰς τὴν βαφικὴν καὶ βυρσοδεψικήν, *ὁ μυρμηκικὸς χαλκὸς* εἰς τὴν βιομηχανίαν τοῦ ἀζώτου, *ὁ μυρμηκικὸς σίδηρος* εἰς τὴν βυρσοδεψικήν, τὸ *μυρμηκικὸν νικέλιον* ὡς καταλύτης εἰς τὴν βιομηχανίαν τῶν ἐσκληρυμένων ἐλαίων. Ἐπίσης δι᾽ ἀναλυτικοὺς καὶ ἐπιστημονικοὺς σκοποὺς ἔχουσιν ὡσαύτως σημασίαν τὰ μετὰ μολύβδου, ψευδαργύρου, ἀργύρου καὶ ὑδραργύρου ἅλατα τοῦ μυρμηκικοῦ ὀξέος.

*Μυρμηκικοῦ ὀξέος ἐστέρες*. Οἱ ἐστέρες τοῦ μυρμηκικοῦ ὀξέος, ἰδίως μετὰ τῶν σχετικῶν κατωτέρων ἀλκοολῶν, εἶναι εὐχαρίστου ὀσμῆς ὑγρά, χρησιμοποιούμενα ἐν τῇ ἀρωματοποιίᾳ καὶ ποτοποιίᾳ πρὸς παρασκευὴν ἀναπληρωμάτων τῶν ἀρωμάτων διαφόρων καρπῶν καὶ ὀπωρῶν. Οἱ σπουδαιότεροι ἐξ αὐτῶν εἶναι: *ὁ μεθυλικός*, ὑγρὸν βράζον εἰς 32°,3, *ὁ αἰθυλικός*, ὑγρὸν βράζον εἰς 54°,5 ὀσμῆς ἀρρὰκ καὶ ρουμίου, *ὁ ἀμυλικός*, βράζων εἰς 123°,5 κ. λ. π. Σ. Γ.

— **μυρμηκικὸς** ***κυανιοῦχος μεθυλεστὴρ*** *[Χημ. Πολ.]*. Ὑγρὸν πτητικὸν ($CN.CO.OCH_3$), ζέον εἰς 97°, αἰθερίας ὀσμῆς καὶ εἰδ. βάρους 1,08. Ἐρχόμενον εἰς ἐπαφὴν μετὰ ὕδατος ἀποσυντίθεται βαθμηδόν, σχηματιζομένου ὑδροκυανίου, εἰς ὃ καὶ ὀφείλεται ἡ δηλητηριώδης του ἐνέργεια:

$$CN.CO.OCH_3 + H_2O = HCN + CO_2 + CH_3OH$$

Λαμβάνεται ἐκ τοῦ χλωρομυρμηκικοῦ μεθυλεστέρος δι᾽ ἐπιδράσεως κυανιούχου νατρίου:

$$Cl.CO.OCH_3 + NaCN = CN.CO.OCH_3 + NaCl$$

Ὡς πολεμικὴ οὐσία ὁ ἐστὴρ οὗτος εἶναι ἀκατάλληλος, λόγῳ τῆς βραδείας του ἐπενεργείας, ἀντιθέτως ὅμως εἶναι ἀποτελεσματικώτατος ὡς ἐντομοκτόνον καὶ ὡς τοιοῦτος φέρεται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὸ ὄνομα *ὑγρὸν κυκλόνιον*.

— **μυρμηκικὸς** ***μεθυλεστὴρ χλωριοῦχος*** *[Χημ. Πολ.]*. Αἱ ἑνώσεις αὗται, παράγωγα τοῦ μυρμηκικοῦ μεθυλεστέρος, καταλέγονται εἰς τὴν τάξιν τῶν δηλητηρίων τῶν πνευμόνων (ἀποπνικτικῶν).

1) *Χλωρομυρμηκικὸς μεθυλεστὴρ* ($Cl.COOCH_3$). Εἶναι ὑγρὸν ἄχρουν, ἀποπνικτικῆς καὶ δυσαρέστου ὀσμῆς. Ὡς πολεμικὴ οὐσία οὐδεμίαν σημασίαν κέκτηται. Μεγάλην ὅμως ἐφαρμογὴν εὑρίσκει οὗτος προστιθέμενος ὡς προφυλακτικὸν μέσον εἰς τὸ πρὸς καταστροφὴν παρασίτων χρησιμοποιούμενον ὑδροκυάνιον.

2) *Μονοχλωριωμένος χλωρομυρμηκικὸς μεθυλεστὴρ* ($Cl.COOCH_2Cl$). Εἶναι ἄχρουν διαυγὲς ὑγρόν, ἀποπνικτικῆς ὀσμῆς, ἐρεθιστικὸν κυρίως τῶν ὀφθαλμῶν καὶ τῶν ἀναπνευστικῶν ὀργάνων, ἔχει δὲ δηλητηριώδη ἐνέργειαν.

3) *Διχλωριωμένος χλωρομυρμηκικὸς μεθυλεστὴρ* ($Cl.GOOCH_2Cl$). Ἄχρουν ὑγρόν, οὗτινος ἡ ἐρεθιστικότης εἶναι κατά τι μικροτέρα τῆς τοῦ μονοχλωριωμένου ἐστέρος, ἀντιθέτως ὅμως ἡ δηλητηριώδης του ἐνέργεια εἶναι μεγαλυτέρα.

4) *Ὑπερχλωριοῦχος μυρμηκικὸς μεθυλεστήρ*: ($Cl.COOCCl_3$). Ὑστερῶν ὀλίγον τῶν προηγουμένων ὡς πρὸς τὴν ἐρεθιστικότητα, ὑπερτερεῖ κατὰ πολὺ τούτων ὡς πρὸς τὴν δηλητηριώδη ἐνέργειαν. Ἡ μεγάλη του ἐφαρμογὴ ὡς πολεμικῆς οὐσίας ὀφείλεται κυρίως εἰς τὴν λόγῳ τῆς μικρᾶς πτητικότητος ἁπλῆν καὶ εὔκολον διὰ τούτου πλήρωσιν τοῦ κοίλου τῶν ὀβίδων. Οἱ Γερμανοὶ ἰδίως, ἐπιτυχόντες κατάλληλον διὰ μεγάλας ποσότητας τεχνικὴν παρασκευήν, ἀντικατέστησαν τελείως κατὰ τὸν πόλεμον εἰς τὰ βλήματα πυροβολικοῦ διὰ τοῦ ἐστέρος τούτου τὸ φωσγένιον. Εἶναι ἄχρουν ἐλαιῶδες ὑγρὸν καὶ ἐκ τῶν δηλητηριωδεστέρων γνωστῶν πολεμικῶν οὐσιῶν. Ἀποσυντίθεται ταχέως ὑπὸ τοῦ ὕδατος, ὡς τὸ φωσγένιον, σχηματιζομένου διοξειδίου ἄνθρακος καὶ ὑδροχλωρίου. Ἡ ἐπὶ τῆς ἐπιδερμίδος ἐρεθιστικότης ταύτης εἶναι ἀσήμαντος. Διάλυμα σόδας ἢ ποτάσσης ἐξουδετεροῖ τελείως καὶ ταχέως τὴν πολεμικὴν ταύτην οὐσίαν. Αἱ νεώτεραι προσωπίδες προφυλάσσουσιν ἀποτελεσματικῶς τὸν ἄνθρωπον ἀπὸ ταύτης. Ι. Γ. ΤΣΑΓΓΡΗΣ

**Μυρμήκιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις ἐπὶ τῆς ταυρικῆς ἀκτῆς τοῦ Κιμμερικοῦ Βοσπόρου εἰς 20 στάδια ἀπὸ τοῦ Παντικαπαίου. Πρὸς τὰ ἐγγὺς αὐτῆς, ἔνθα τὰ πολίσματα *Ἀχίλλειον* καὶ *Παρθένιον*, ἐσχηματίζετο κατὰ τὸν Στράβωνα (Ζ, 310) ἡ μεγίστη στενότης τοῦ Κιμμερικοῦ Βοσπόρου. Ἐκ τῆς τελευταίας λεπτομερείας προκύπτει ἡ θέσις τῆς πόλεως ἐπὶ τοῦ συγχρόνου ἀκρωτηρίου Παυλόφσκη (πλάτ. 45° 18′ Β., μῆκ. 36° 30′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 2205: Kertch Strait) τῆς δυτικῆς ἀκτῆς τοῦ πορθμοῦ τοῦ Κέρτς. Σ. Ε. Λ.

**μυρμηκίτης** (ὁ) (Myrmekit) *[Πετρογρ.]*. Πέτρωμα κρυσταλλοσχιστῶδες. Ἀποτελεῖ παραλλαγὴν τοῦ γνευσίου, τὴν ὁποίαν χαρακτηρίζει ὡρισμένος τρόπος συμφύσεως τῶν ἀστρίων μετὰ τοῦ χαλαζίου, ἐκ τῶν ὀρυκτολογικῶν του συστατικῶν. Εἰς τὸν μυρμηκίτην δηλαδὴ τὸ πλαγιόκλαστον, τὸ ὁποῖον παρουσιάζει μορφὴν σφαιροειδῆ ἢ φλοιώδη καὶ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον μικρὰν περιεκτικότητα εἰς μόριον ἀνορθίτου, διασχίζεται ἀπὸ χαλαζίαν. Ἄλλος τρόπος συμφύσεως τῶν ἀστρίων μετὰ τοῦ χαλαζίου εἰς τοὺς γνευσίους, διάφορος τοῦ μυρμηκίτου, εἶναι ἡ λεγομένη γρανοφυρικὴ σύμφυσις. Γ. Β.

**μυρμηκιῶ** *(—άω)*· αἰσθάνομαι μυρμηκίασιν, κνησμόν, φαγοῦραν.

**μυρμηκιώδης** ***φυματίασις*** *[Δερματοπ.]*· βλ. λ. *λύκος*.

**μυρμηκόβιος** (ὁ) (Myrmecobius) *[Ζωολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *μαρσιποφόρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *πηραμελιδῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος, τὸν *μυρμηκόβιον τὸν ραβδωτὸν* (Myrmecobius fasciatus), ὅστις ἔχει ἱκανὸν μῆκος, σῶμα εὔρωστον, λαιμὸν χονδρὸν καὶ βραχύν, κεφαλὴν ἀρκετὰ ἐπιμήκη καὶ λεπτήν, ὦτα μετρίου μήκους, οὐρὰν μακροτάτην καὶ θυσανωτὴν κατὰ τὸ ἄκρον της καὶ χρῶμα φαιοτεφρὸν μὲ μελανὰς καὶ λευκὰς ραβδώσεις ἐπὶ τῆς ράχεως. Ἀπαντᾷ εἰς τὴν Αὐστραλίαν. Δ. Ν. Π.

*Μυρμηκόβιος ὁ ραβδωτός.*

**μυρμηκολέων** (ὁ) (Myrmecoleon) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων τῆς οἰκογενείας τῶν *μεγαλοπτεριδῶν*, περιλαμβάνον ἔντομα μὲ σῶμα κυλινδρικὸν καὶ ἐπίμηκες, κεφαλὴν μικρὰν καὶ πεπιεσμένην, πτε-

Digitized by Google

ρυγας ἀνεπτυγμένας καὶ πόδας λεπτούς. Γνωστότερον εἶδος εἶναι ὁ *μυρμηκολέων ὁ μυρμηκοφάγος* (Myrmecoleon formicarius), ὅστις ἐν τελείᾳ ἀναπτύξει ἔχει μῆκος 16—26 χιλιοστομέτρων καὶ γενικὸν χρωματισμὸν φαιοϋπομελανόν. Αἱ πρόσθιαι πτέρυγές του εἶναι ὑαλώδεις μὲ νευρώσεις φαιὰς καὶ ὑπόλευκα στίγματα, αἱ δὲ ὀπίσθιαι εἶναι φαιοϋποκίτριναι καὶ φέρουσι κηλῖδάς τινας φαιάς. Τὸ ἔντομον τοῦτο εἶναι κοινότατον ἐν τῇ κεντρικῇ καὶ μεσημβρινῇ Εὐρώπῃ καὶ παρ' ἡμῖν. Ἡ προνύμφη του ἔχει χρῶμα φαιὸν ἢ ὑποκίτρινον, κεφαλὴν εὐρεῖαν καὶ τετραγωνικὴν καὶ σιαγόνας ἰσχυράς, φερούσας κατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῶν ἐπιφάνειαν ἀνὰ τρεῖς ὀδόντας. Ὁ θώραξ εἶναι στενός, ἡ κοιλία εὐρυτάτη, οἱ πόδες ἀνανάπτυκτοι καὶ δυσκόλως μετακινούμενοι. Ἀπαντᾷ εἰς ἀγόνους καὶ ἡλιολούστους ἐκτάσεις. Ὀρύσσει ἐντὸς τῆς ἄμμου ἢ τοῦ κονιορτοῦ παρὰ τὰς ὁδοὺς χωνοειδὲς βοθρίον, ὑπὸ τὸ ὁποῖον κεκρυμμένη παραφυλάσσει ὅπως συλλάβῃ ἔντομα καὶ ἰδίως μύρμηκας, ἐξ ὧν ἀποτελεῖται ἡ συνήθης αὐτῆς τροφή. Μετὰ πάροδον χρονικοῦ τινος διαστήματος κατασκευάζει βομβύκιον καὶ ἐντὸς αὐτοῦ μεταβάλλεται εἰς χρυσαλλίδα. Δ. Ν. Π.

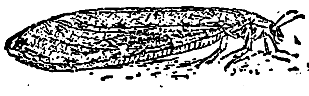

*Μυρμηκολέων ὁ μυρμηκοφάγος.*

**μυρμηκοφαγίδαι** (οἱ) (Myrmecophagidae). Οἰκογένεια θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *νωδῶν*, περιλαμβάνουσα ζῷα μικροῦ ἢ καὶ μεγάλου μεγέθους, ἰθαγενῆ τῶν θερμῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς, καὶ τρεφόμενα ἀποκλειστικῶς ἐκ μυρμήκων, ὡς καὶ ἡ ὀνομασία των δηλοῖ. Γνωστότερα εἴδη εἶναι ὁ *μυρμηκοφάγος* καὶ ἡ *ταμαδούλη* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**μυρμηκοφάγος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ τρώγων μύρμηκας, ὁ κατ' ἐξοχὴν τρεφόμενος ἐκ μυρμήκων.

**μυρμηκοφάγος** (ὁ) (Myrmecophagus) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *νωδῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρμηκοφαγιδῶν*, περιλαμβάνον ζῷα μὲ σῶμα χαμηλόν, ἐπίμηκες καὶ κεκαλυμμένον ὑπὸ σκληρῶν καὶ μακρῶν τριχῶν. Αἱ σιαγόνες στεροῦνται τελείως ὀδόντων, ἡ κεφαλὴ

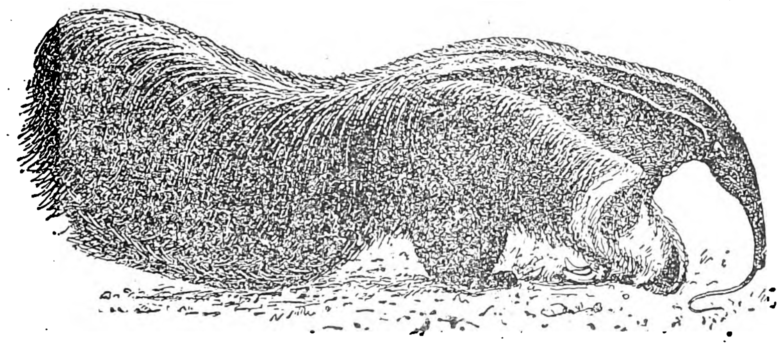

*Μυρμηκοφάγος ὁ κυκλότουρος.*

εἶναι ἐπιμήκης καὶ τελευτᾷ εἰς μικρότατον στόμα, ὅπερ φέρει λεπτοτάτην καὶ ἐπιμηκεστάτην γλῶσσαν, περιβαλλομένην ὑπὸ γλοιώδους οὐσίας, ἥτις ἐκκρίνεται ἐξ εἰδικῶν παρὰ τὰς σιαγόνας ἀδένων. Ὁ τρίτος δάκτυλος τῶν προσθίων ποδῶν εἶναι λίαν ἀνεπτυγμένος καὶ ἀπολήγει εἰς μέγαν ἱερακοειδῆ ὄνυχα, οἱ δὲ ὑπόλοιποι δάκτυλοι εἶναι ἀτροφικοί. Οἱ ὀπίσθιοι πόδες εἶναι βραχύτεροι τῶν προσθίων καὶ φέρουσι πλατύτατον πέλμα. Οἱ ὀφθαλμοὶ εἶναι μικρότατοι ὡς καὶ τὰ ὦτα. Ἡ θήλεια φέρει δύο μαστοὺς παρὰ τὸ στῆθος. Ἔχουσι χρῶμα φαιὸν μὲ εὐρεῖαν μελανὴν ταινίαν, ἥτις διευρύνεται κατὰ τὸ μέσον τῆς ράχεως καὶ λεπτύνεται κατὰ τὸ ὀπίσθιον ἄκρον τοῦ σώματος. Τὸ γένος περιλαμβάνει εἴδη τινὰ ἐνδιαιτώμενα εἰς τὰς δασώδεις ἐκτάσεις τῶν θερμῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Γνωστότερα εἴδη εἶναι τὰ ἑξῆς: *μυρμηκοφάγος ὁ κυκλότουρος* (Myrmecophagus cycloturus) ἢ *μέγας μυρμηκοφάγος*, ὅστις ἔχει τὰς σωματικὰς διαστάσεις κυνός, κεφαλὴν ἐπιμηκεστάτην, ἀπολήγουσαν εἰς κυλινδρικὸν ρύγχος, οὗ τὸ ἀκρότατον σημεῖον κατέχει τὸ στόμα, κρανίον παρουσιάζον περίπλοκον ἰδιορρυθμίαν, σῶμα ἐπίμηκες ὑπὸ ἐπιμήκων καὶ χονδρῶν τριχῶν κεκαλυμμένον, καὶ χρωματισμὸν φαιοκίτρινον. *Μυρμηκοφάγος ὁ διδάκτυλος* (Myrmecophagus didactylus) ἢ *μικρὸς μυρμηκοφάγος*, ὅστις ἔχει τὸ μέγεθος μεγάλου ἀρουραίου μυός, μὲ τὴν κεφαλὴν βραχυτέραν τοῦ προηγουμένου εἴδους, περισσότερον κωνικὴν καὶ τοξοειδῆ κατὰ τὴν κορυφήν της. Ἕκαστος τῶν προσθίων ποδῶν φέρει ἀνὰ δύο ἀνεπτυγμένους δακτύλους, ἐκ τῶν ὁποίων ὁ τρίτος εἶναι ἰσχυρότατος καὶ φέρει αἰχμηρὸν ὄνυχα, ὁ δεύτερος λεπτότερος καὶ ἐπιμηκέστερος, οἱ δὲ ὑπόλοιποι ἀνάπτυκτοι καὶ ἀτροφικοί. Οἱ πόδες εἶναι οὕτως διαμορφωμένοι, ὥστε νὰ δύναται τὸ ζῷον νὰ ἀναρριχᾶται. Ἡ οὐρὰ εἶναι ἐπιμηκεστέρα τοῦ σώματος, πεπλατυσμένη, γυμνὴ κατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῆς ἐπιφάνειαν καὶ συλληπτική. Τὸ τρίχωμά του εἶναι λεπτὸν καὶ μεταξοειδές. Ἐνδιαιτᾶται συνήθως ἐπὶ τῶν δένδρων, ἡ δὲ θήλεια κατὰ τὰς πορείας φέρει τὰ νεογνά της ἐπὶ τῆς ράχεώς της. Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοζῳολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μυρμηκοφάγων* εὑρέθησαν σποραδικῶς ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειστοκαίνου διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Νότιον Ἀμερικήν. Γ. Κ. Γ.

**μυρμηκόφιλος** (ὁ, ἡ), —*ον* (τό)· ὁ φιλῶν, ὁ οἱονεὶ ἀγαπῶν τοὺς μύρμηκας: «μυρμηκόφιλα ἔντομα» τὰ μετὰ τῶν μυρμήκων συζῶντα ἔντομα.

**μυρμηκόφιλος** (ὁ) (Myrmecophilus) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἀραχνῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *ἀραχνωδῶν* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυγαλιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ ἀραχνῶν ἱκανοῦ μεγέθους, ἰθαγενῆ τῶν χωρῶν τῆς νοτίου Ἀμερικῆς. Δ. Ν. Π.

**μυρμηκοφωλιά** (ἡ)· *μυρμηγκοφωλιά* (βλ. λ.).

**μύρμηξ** (ὁ) (Formica) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων ὑμενοπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρμηκιδῶν*. Ὁ μύρμηξ, κοιν. *μυρμήγκι, μερμήγκι, μύρμηγκας, μέρμηγκας* καὶ *μελιγκόνι*, εἶναι ἐκ τῶν γνωστοτέρων ἐν τῇ γῇ ἐντόμων.

*Γενικὰ γνωρίσματα.* Ὁ χρωματισμὸς εἶναι ποικίλος· ἐρυθρός, κίτρινος, φαιός, μελανός, ἢ παρουσιάζει συνδυασμὸν ἐκ πάντων ἢ τινῶν μόνον ἐκ τῶν χρωμάτων τούτων, συνήθως ὅμως εἶναι σκοτεινός. Ἡ κεφαλὴ ποικίλλει εἰς μέγεθος, ἀναλόγως εἰς τὰ διάφορα εἴδη. Εἶναι σφαιροειδὴς καὶ φέρει δύο τρήματα ἐν πρὸς τὸ μέρος τῆς συνδέσεως αὐτῆς μετὰ τοῦ θώρακος καὶ τὸ ἕτερον εἰς τὸ ἐμπρόσθιον ἄκρον, τοῦτο δὲ καὶ ἀποτελεῖ τὸ στόμα, ὅπερ φέρει δύο ἰσχυροτάτας σιαγόνας, συνήθως τριγωνικὰς καὶ ὀδοντωτὰς ἐν εἴδει πρίονος κατὰ τὴν ἐσωτερικὴν αὐτῶν περίμετρον. Αἱ σιαγόνες εἶναι συγχρόνως φοβερὸν ἀμυντικὸν ὅπλον καὶ πολύτιμον ὄργανον διὰ τοὺς μύρμηκας, χρησιμεύουσαι εἰς αὐτοὺς διὰ τὴν κοπήν, τὴν ἐκρίζωσιν καὶ ὡς ἐπιβοηθητικὸν ὄργανον πρὸς μεταφορὰν διαφόρων ἀντικειμένων, διὰ τὴν λείανσιν τούτων, διὰ νὰ ἀπομακρύνωσι τὰ χώματα ἐκ τῆς φωλεᾶς των κτλ. Οἱ ὀφθαλμοί των εἶναι ἐλλειπτικοὶ καὶ σπανιώτερον κυκλικοί, οἱ δὲ λεῖοι ὀφθαλμοὶ ἢ στίγματα εἶναι τοποθετημένοι ἐπὶ τῆς κορυφῆς τῆς κεφαλῆς εἰς σχῆμα τριγώνου. Στίγματα φέρουν μόνον οἱ ἄρρενες καὶ θήλεις μύρμηκες, σπανίως δὲ οἱ οὐδέτεροι μύρμηκες. Αἱ κεραῖαι εἶναι εὐκινητόταται καὶ ἐκφύονται ἀπὸ τῆς μεσαίας ἀρθρώσεως τῆς κορυφῆς τῆς κεφαλῆς. Ἑκάστη κεραία ἀποτελεῖται ἐκ μιᾶς πρώτης ἢ κυριώδους ἀρθρώσεως, ἥτις εἶναι ἐπιμηκεστέρα τῶν λοιπῶν καὶ ἐκ διαφόρου ἀριθμοῦ, ἀναλόγως τῶν διαφόρων εἰδῶν, δευτερευουσῶν. Πτέρυγας μόνον οἱ ἄρρενες καὶ αἱ παρθένοι θήλειαι φέρουσιν. Ἡ κοιλία ἀποτελεῖται ἐξ ἑπτὰ ἀρθρώσεων εἰς τὰ ἄρρενα καὶ ἐξ ἓξ εἰς τὴν θήλειαν καὶ τοὺς ἐργάτας. Ἡ πρώτη ἄρθρωσις ἢ αἱ δύο πρῶται τοιαῦται εἶναι στενόταται καὶ δίδουσι τὴν χαρακτηριστικὴν ἐκείνην διαμόρφωσιν εἰς τὸ σῶμα τῶν μυρμήκων, ἥτις διαφέρει τῶν ἄλλων ὑμενοπτέρων ἐντόμων. Ἕκαστος τῶν ποδῶν τελευτᾷ εἰς πέντε ἀρθρώσεις, ἐξ ὧν ἡ πρώτη εἶναι ἐπιμηκεστέρα τῶν λοιπῶν καὶ ἡ τελευταία φέρει κατὰ τὸ ἄκρον της δύο ἁπλᾶς ἢ ὀδοντωτὰς ἀγκιστροειδεῖς ἀποφύσεις, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι τοποθετημένα δύο σωμάτια προσκεφαλοειδῆ, καλυπτόμενα ὑπὸ πολυπληθῶν βραχειῶν τριχῶν. Οἱ *οὐδέτεροι* μύρμηκες ἢ *ἐργάτιδες* ἀναγνωρίζονται εὐθὺς ἐκ τῆς ἀπουσίας τῶν πτερύγων. Αἱ θήλειαι φέρουσιν εἰς τὸ κατώτερον ἄκρον τῆς κοιλίας των δύο ἰοφόρους ἀδένας, ἐξ ὧν ἐκκρίνεται τὸ μυρμηκικὸν ὀξύ. Εἴδη τινὰ φέρουσι τέρετρον λεῖον ἢ τριχωτὸν ἢ καὶ ἀκανθωτόν, δι' οὗ νύσσουτες τὸ ζῷον ἐκχύνουσιν εἰς τὴν πληγήν του τὸ δηλητήριον. Ἄλλα εἴδη, εἰς ἃ τὸ τέρετρον εἶναι ὑποτυπῶδες ἢ ἐλλείπει τελείως, ἐκβάλλουσιν ἐξ ἀποστάσεως τὸ δηλητήριόν των. Αἱ ἐργάτιδες παραμένουσι πάντοτε εἰς τὴν αὐτὴν φωλεὰν μὲ τοὺς ἄρρενας καὶ τὰς θηλείας καὶ εἶναι πολυπληθέστεραι τούτων. Εἰς τὴν αὐτὴν φωλεὰν εὑρίσκονται διαφόρου μεγέθους ἐργάτιδες μικρόταται, ὡς καὶ παμμέγισται, ἑκάστη τῶν ὁποίων προορίζεται δι' ἴδιον εἶδος ἐργασίας.

*Φυσιολογία καὶ βιολογία.* Ἡ τροφὴ τῶν μυρμήκων, τόσον κατὰ τὴν νεαρὰν αὐτῶν ἡλικίαν, ὅσον καὶ κατὰ τὴν μετέπειτα, ἐκτὸς ἐλαχίστων ἐξαιρέσεων, ἀποτελεῖται ἀπὸ φυτικὰς ἢ ζωϊκὰς οὐσίας. Πάντως ἡ διαμόρφωσις τοῦ στόματός των δὲν ἐπιτρέπει εἰς αὐτοὺς παρὰ νὰ τρέφωνται δι' ὑδαρῶν ἢ ἡμιυδαρῶν τροφῶν, δι' ὃ καὶ προτοῦ καταβροχθίσωσι τὴν τροφὴν των διαβρέχουσι ταύτην δι' ἀφθόνου σιέλου. Τὰς στερεὰς τροφὰς τεμαχίζουσι λεπτότατα διὰ τῶν ἰσχυρῶν σιαγόνων των καὶ εἶτα ἀπομυζῶσιν ἐκ τούτων τὸν ὑπάρχοντα χυμόν. Ἀπομυζῶσι τὸ νέκταρ τῶν ἀνθέων, τοὺς χυμοὺς τῶν ἀποσυντεθειμένων κρεάτων, τῶν ὡρίμων καρπῶν, τὰς ἀμυλώδεις οὐσίας τῶν δημητριακῶν καρπῶν, ὡς καὶ τὰ ἐκκρίματα τῶν διαφόρων ἐντόμων, ἅτινα πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον αἰχμαλωτίζουσι καὶ διατρέφουσιν ἰδιαιτέρως.

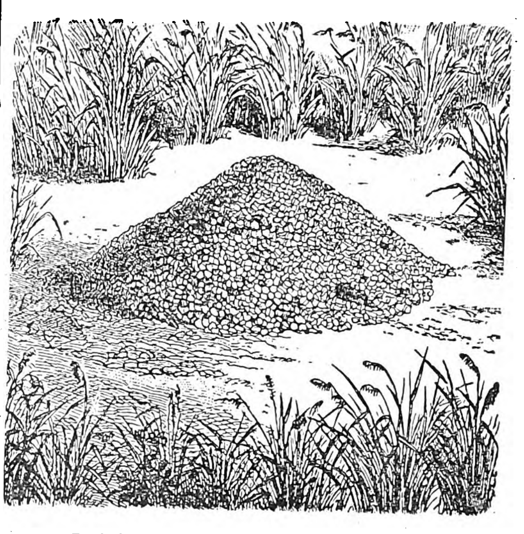

*Φωλεὰ πωγωνομύρμηκος τοῦ δυτικοῦ.*

Οἱ μύρμηκες διὰ τῆς παραδειγματικῆς ἐργατικότητός των ἐκίνησαν τὸ ἐνδιαφέρον τῶν διαφόρων σοφῶν καὶ ἐπιστημόνων ἀπὸ τῶν ἀρχαιοτάτων χρόνων. Ἐκ τῶν νεωτέρων ὁ La Fontaine ἐξύμνησε δι' ἀριστουργηματικῶν στίχων τὴν ἐργατικότητα καὶ προνοητικότητα τῶν μυρμήκων. Ὁ μέγας Γάλλος ἐντομολόγος Fabre ἠσχολήθη καθ' ὅλην αὐτοῦ τὴν ζωὴν μὲ τὰ ἤθη καὶ ἔθιμα τῶν «πτερωτῶν σοφῶν ἐντόμων», ὡς ἀπεκάλεσε τοὺς μύρμηκας, καὶ εἰς τόμους ὁλοκλήρους ἐξεγερετ τὰς θαυμαστὰς αὐτῶν ἰδιότητας. Ὁ Μαιτερλιγκ εἰς τὸ νεωστὶ ἐκδοθὲν σύγγραμμά του «La vie des fourmis», μὲ ὕφος γλαφυρὸν καὶ ἰδίαν ὅλως παρατηρητικότητα ἀσχολεῖται μὲ τὴν ζωήν, τὰ ἤθη καὶ τὰ ἔθιμα τῶν μυρμήκων καὶ παρ' ὅλην τὴν ποιητικὴν φαντασίαν τοῦ μεγάλου συγγραφέως, τὸ ἔργον δὲν παύει νὰ εἶναι ἡ πλέον λεπτομερὴς καὶ ἐξηλεγμένη περιγραφὴ τοῦ καθ' ὅλου βίου τῶν περιέργων τούτων ἐντόμων. Οἱ μύρμηκες ἐπαξίως ἐκίνησαν, κινοῦσι καὶ θὰ κινῶσι τὸ ἐνδιαφέρον παντὸς διανοουμένου καὶ παντὸς φυσιοδίφου καὶ βιολόγου, διότι οὐδαμοῦ καὶ εἰς οὐδὲν ἕτερον ζῷον παρατηρεῖται τοσαύτη ἐνεργητικότης, πρωτοφανὴς δρᾶσις καὶ ἄοκνος ἐργατικότης, ὅσον εἰς τὰ μικρότατα ταῦτα εἰς μέγεθος ἔντομα. Δεῖγμα τὸ ἐσωτερικὸν τῆς φωλεᾶς τῶν μυρμήκων, τῆς μυρμηκιᾶς (κοιν. μυρμηγκοφωλιᾶς). Αὕτη, πλὴν τῆς ἐπισωρεύσεως ὀλίγου χώματος, ἥτις περὶ τὸ μέσον φέρει μικράν τινα ὀπήν, οὐδὲν ἄλλο ἐξαιρετικὸν σημεῖον παρουσιάζει ἐξωτερικῶς. Παρὰ τὴν ἁπλουστάτην ὅμως καὶ πρωτόγονον ταύτην ἀρχιτεκτονικήν, τὸ ἐσωτερικὸν παρουσιάζει ἁρμονικὸν σύνολον ἀρχιτεκτονικῆς τάξεως καὶ ἀνέσεως, μαρτυροῦν ἀληθὲς δημιουργικὸν καὶ καλαισθητικὸν ἔνστικτον, διότι, ἐνῷ αἱ μέλισσαι πᾶσαι καὶ πάντοτε κατασκευάζουσι τὰς κυψέλας των ὁμοιομόρφως, οἱ μύρμηκες τὰς κατασκευάζουν ποικιλοτρόπως, ἀναλόγως τῆς φύσεως τοῦ ἐδάφους καὶ τῶν παρουσιαζομένων ἀναγκῶν. Αἱ φωλεαὶ αὗται εἶναι ὑπόγειοι, ἐπίγειοι ἢ μικταὶ στοαί, ἁπλαῖ ἢ πολύπλοκοι, ἔχουσαι πολλάκις 20 ὀρόφους. Πάντες οἱ ὄροφοι οὗτοι συγκοινω-

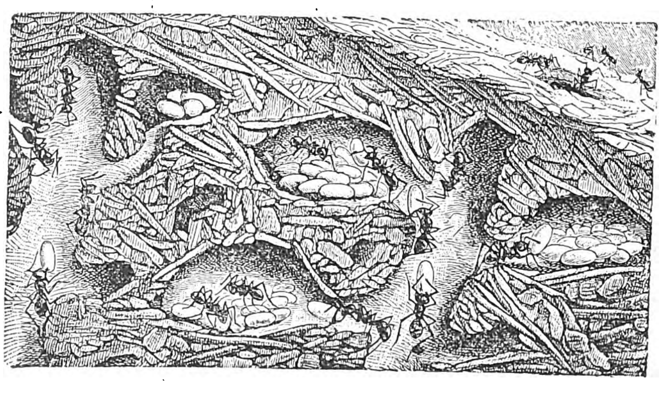

*Τμῆμα φωλεᾶς μύρμηκος τοῦ πυρροῦ*

Digitized by Google

νοῦσι μεταξύ των διὰ ποικίλως διασταυρουμένων διόδων, συμμετρικῶς καὶ κανονικῶς διατεταγμένων, ὅπως αἱ λεωφόροι μεγάλης πόλεως. Οἱ ὄροφοι οὗτοι φέρουσι διάφορα μικρότερα διαμερίσματα, ἅτινα χρησιμοποιοῦνται ὡς ἀποθῆκαι τῶν τροφίμων, ὡς κατοικίαι τῶν νεαρῶν μυρμήκων, ὡς φωλεαὶ τῶν θηλειῶν μυρμήκων, ὡς νοσοκομεῖον τῶν ἀσθενῶν μυρμήκων, κ.τ.λ. Αἱ τοιαῦται πολυώροφοι φωλεαὶ ἀπαντῶσιν εἰς τὰ δάση, ὅπου οἱ μύρμηκες κατασκευάζουσι τὴν φωλεάν των παρὰ τὴν βάσιν τοῦ κορμοῦ τῶν δένδρων, ὁπότε οἱ ἡμίσεις ἐκ τῶν ὀρόφων εὑρίσκονται ἐντὸς τῆς γῆς καὶ οἱ ἄλλοι ἡμίσεις ἐντὸς τοῦ κορμοῦ τοῦ δένδρου, ὃν οἱ μύρμηκες κοιλαίνουσι κατατρώγοντες τὴν ἐντεριώνην. Εἰς τὰς φωλεὰς ταύτας ζῶσιν οἱ ἄρρενες μύρμηκες, οἱ θήλεις καὶ αἱ ἐργάτιδες. Ἀντιθέτως πρὸς ὅ,τι παρατηρεῖται εἰς τὰς μελίσσας, οἱ θήλεις μύρμηκες, οἱ προοριζόμενοι πρὸς φοτοκίαν, εἶναι πολλοί. Οἱ μικροὶ μύρμηκες ἔχουσι συνήθως χρῶμα μελανόν, οἱ δὲ μεγάλων διαστάσεων πυρρέρυθρον. Οἱ δεύτεροι χρησιμοποιοῦνται κυρίως ὡς πολεμισταί. Πλὴν αὐτῶν ὑπάρχουσι καὶ ἐξωτικά τινα εἴδη μυρμήκων, ἀπαντώντων εἰς τὰ δάση τῶν θερμῶν ἰδίως χωρῶν, οἵτινες ἔχουσι μῆκος 2 περίπου ἑκατοστομέτρων καὶ εἶναι ἐπικινδυνότατοι καὶ εἰς τοὺς ἀνθρώπους ἀκόμη.

Ἐκ τῶν ἐργατίδων τινὲς ἀσχολοῦνται ἀποκλειστικῶς μὲ τὴν περιποίησιν τῶν προνυμφῶν. Εἰς

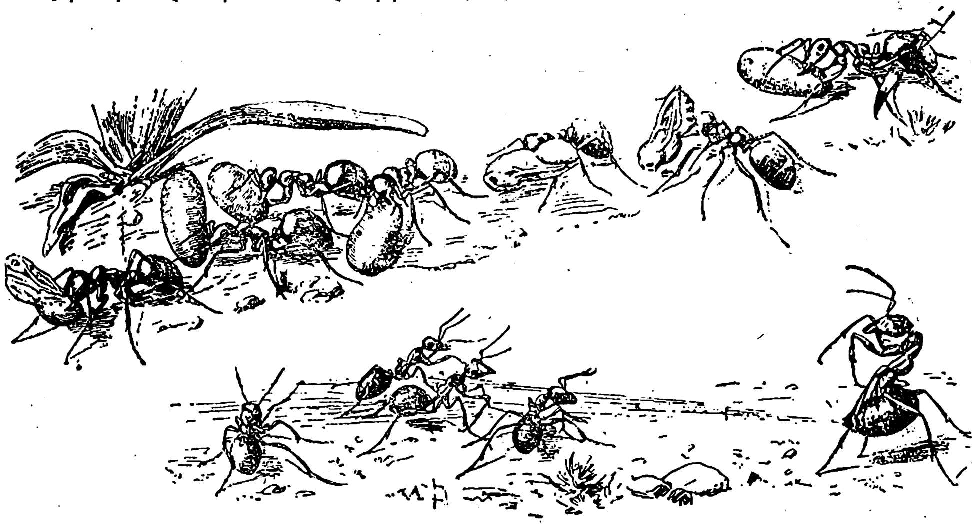

*Μύρμηκες ἀμαζόνιοι ἕτοιμοι πρὸς ἐπίθεσιν ἐναντίον μυρμήκων μελανῶν.*

τὸ ἔργον των δὲ αὐτὸ ὑπερβάλλουν εἰς φιλοστοργίαν καὶ αὐτὸν ἔτι τὸν ἄνθρωπον. Τὰς προνύμφας τρέφουσι διὰ τοῦ θρεπτικοῦ ὑγροῦ, ὅπερ ἀπεμύζησαν ἐκ τῶν εἰς τὰς ἀποθήκας εὑρισκομένων τροφῶν καὶ συνήθροισαν εἰς τὸν πρόλοβόν των, εἶτα δὲ καθαρίζουν ταύτας, λείχουσαι τὸ σῶμά των, καὶ τὰς μεταφέρουν ἀπὸ διαμερίσματος εἰς διαμέρισμα, ἀναλόγως τῆς ἐπικρατούσης θερμοκρασίας καὶ ὑγρασίας εἴς τι διαμέρισμα. Αἱ ἐργάτιδες-προμηθευταὶ κατὰ τὰς ἡμέρας καθ' ἃς ἐπικρατεῖ καλοκαιρία ἀποκομίζουν ἐκ τῶν πέριξ τῶν μυρμηκιῶν των ἢ καὶ μακρότερον παντοειδῆ τροφήν, ἣν ἐναποθηκεύουσιν εἰς ἴδια διαμερίσματα τῆς φωλεᾶς, τὰς ἀποθήκας, ἐκ τῶν ἐκεῖ δὲ συνηθροισμένων τροφῶν τρέφονται οἱ μύρμηκες κατὰ τὸν χειμῶνα, ὁπότε δὲν δύνανται νὰ ἐξέλθωσι τῶν φωλεῶν των. Οἱ μύρμηκες-φρουροί, οἵτινες εἶναι μεγαλύτεροι τῶν μυρμήκων-προμηθευτῶν, συνοδεύουν τούτους κατὰ τὴν μεταφορὰν τῶν τροφῶν, μήπως αὗται διαρπαγῶσιν ὑπὸ ἄλλων μυρμήκων. Οἱ μύρμηκες-βοσκοὶ διατηροῦν καὶ προφυλάττουν εἰς ἴδιον μέρος μικρότατά τινα ἔντομα, ἅτινα ἐκκρίνουσιν ὑγρόν τι γαλακτῶδες, δι' οὗ τρέφονται οἱ μύρμηκες. Οἱ μύρμηκες-νεκροθάπται μεταφέρουν καὶ θάπτουν εἰς ἴδιον μέρος τοὺς ἀποθνήσκοντας μύρμηκας καὶ τέλος οἱ μύρμηκες-πολεμισταί, ὑπὸ τὴν ὁδηγίαν τοῦ μεγαλυτέρου, ὅστις ἐκτελεῖ χρέη στρατηγοῦ, οὕτως εἰπεῖν, λαμβάνουν μέρος εἰς τὰς μάχας, αἵτινες πολλάκις λαμβάνουν χώραν μεταξὺ τῶν μυρμήκων δύο γειτονικῶν φωλεῶν διὰ τὴν κατάκτησιν τῆς φωλεᾶς, τῆς συγκομιδῆς κ. τ. λ. Ὁ Michelet περιγράφει τοὺς πολέμους τούτους τῶν στρατιωτῶν μυρμήκων, κινούντων τὴν ἔκπληξιν διὰ τὴν εὐπείθειαν, τὴν μαχητικότητα, τὰς πολεμικάς των μεθόδους, τὰς τιμωρίας ἃς ἐπιβάλλουν εἰς τοὺς ἡττημένους κ.τ.λ.

*Πάλη ἀμαζονίου μύρμηκος μετὰ μελανοῦ τοιούτου.*

***Πολλαπλασιασμός***. Εἰς ὡρισμένην ἐποχήν, διάφορον εἰς τὰ διάφορα εἴδη, αἱ παρθένοι θήλειαι ἐξέρχονται ἐκ τῶν φωλεῶν των, ἀκολουθούμεναι ὑπὸ τῶν ἀρρένων, οἵτινες ἵπτανται ὄπισθέν των καὶ τὰς κυνηγοῦν εἰς τὸν ἀέρα. Οἱ μικροῦ μεγέθους ἄρρενες φέρονται ἐπὶ τῆς ῥάχεως τῆς θηλείας, οἱ δὲ εὔρωστοι συλλαμβάνουν τὴν θήλειαν ἐκ τοῦ λαιμοῦ. Κατὰ τὴν ὀχείαν, ἥτις λαμβάνει χώραν ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, τὴν θήλειαν γονιμοποιοῦν περισσότεροι τοῦ ἑνὸς ἄρρενες, οἵτινες ἀμέσως μετὰ ταύτην ἢ ἀποθνήσκουν, ἢ χάνονται περιπλανώμενοι, ἢ κατατρώγονται ὑπὸ ἄλλων ἐντόμων, ἐνῷ ἡ θήλεια χάνει τὰς πτέρυγας καὶ μεταφέρεται ὑπὸ ἐργάτιδος εἰς τὴν φωλεάν της. Ἡ θήλεια ἅπαξ γονιμοποιηθεῖσα διατηρεῖ ἄνευ ἄλλης ἐπεμβάσεως τοῦ ἄρρενος ἐπὶ 9 ἔτη, ὅσον διαρκεῖ καὶ ἡ ζωή της, τὴν γονιμοποιόν της ἱκανότητα καὶ γεννᾷ πολυπληθῆ ᾠά, ἅτινα ἔχουσι μορφὴν μικρῶν ἐπιμήκων, ὑπολεύκων ἢ ὑποκιτρίνων κόκκων. Μετὰ τὸν τοκετὸν ἡ θήλεια ἐγκαταλείπει τὰ ᾠά της, ἅτινα αἱ διὰ τὴν ἐργασίαν ταύτην προοριζόμεναι ἐργάτιδες τοποθετοῦσι κατὰ σειράς. Μέχρι τῆς ἐκκολάψεώς των τὸ ἔμβρυον τρέφεται ἐκ τῶν ἐντὸς τοῦ ᾠοῦ ὑπαρχουσῶν θρεπτικῶν οὐσιῶν, μετὰ πάροδον δὲ βραχέος χρονικοῦ διαστήματος ἐξέρχεται ἡ προνύμφη, ποικιλόσχημος, ἀναλόγως τῶν διαφόρων εἰδῶν, ἀλλὰ πάντοτε ἄπους, τυφλή, λευκή, μὲ σῶμα ἀποτελούμενον ἐκ 12, μόλις διακρινομένων, ἀρθρώσεων καὶ μὲ κεφαλὴν στενοτέραν τοῦ λοιποῦ σώματος καὶ πρὸς τὰ πρόσω κεκλιμένην. Αἱ προνύμφαι ἀνατρέφονται ὑπὸ τῶν μυρμήκων τροφῶν. Μετὰ πάροδον ἱκανοῦ χρονικοῦ διαστήματος, ὅπερ κυμαίνεται, ἀναλόγως τῶν διαφόρων εἰδῶν, ἀπὸ 1 μέχρι 9 μηνῶν, μεταμορφοῦνται εἰς νύμφας ἄλλοτε γυμνὰς καὶ ἄλλοτε περιβεβλημένας μὲ μεταξοειδὲς βομβύκιον. Τὰ βομβύκια ταῦτα χρησιμοποιοῦνται πρὸς διατροφὴν ὡρισμένων πτηνῶν κατὰ τὴν νεαρὰν αὐτῶν ἡλικίαν, ὡς τῶν περδίκων, τῶν φασιανῶν, τῶν ἀηδόνων, κτλ. Αἱ νύμφαι μετὰ τὴν ἔξοδον ἐκ τοῦ βομβυκίου των ὁμοιάζουν πρὸς τὰ τέλεια ἔντομα, παραμένουν ὅμως ἀκίνητοι, τρεφόμεναι ὑπὸ τῶν μυρμήκων τροφῶν.

***Κοινότητες***. Αἱ κοινότητες τῶν μυρμήκων διακρίνονται εἰς τὰς *ἁπλᾶς*, δηλαδὴ εἰς ἐκείνας, αἵτινες ἀποτελοῦνται ἐξ ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ εἴδους μυρμήκων, καὶ εἰς τὰς *μικτάς*, καθ' ἃς συγκατοικοῦν πλείονα τοῦ ἑνὸς εἴδη μυρμήκων. Αἱ μικταὶ κοινότητες σχηματίζονται, ὅταν ὁ πληθυσμὸς μιᾶς φωλεᾶς ὑστερῇ εἰς ἐργάτιδας, ὁπότε οἱ πολεμισταὶ μύρμηκες ἐπιπίπτουν κατ' ἄλλων φωλεῶν καὶ ἐκεῖθεν ἀπάγουν βιαίως τὰς νεαρὰς ἐργάτιδας, ἃς μεταφέρουν εἰς τὴν ἰδικήν των φωλεὰν καὶ τὰς διατηροῦν αἰχμαλώτους, οὕτως εἰπεῖν, διὰ νὰ ἐκτελοῦν τὰς ἐργασίας των. Πολλάκις οἱ μύρμηκες συζῶσι καὶ μετὰ διαφόρου γένους ἐντόμων εἴτε εὑρεθέντων εἰς τὰς ὑπογείους φωλεάς των κατὰ τὴν κατασκευὴν τούτων, οὓς καὶ δὲν ἀποπέμπουν, διότι τοὺς μεταχειρίζονται διὰ τὴν ἐξυπηρέτησιν τῶν ἀναγκῶν των, εἴτε προσκομισθέντων ἔξωθεν,

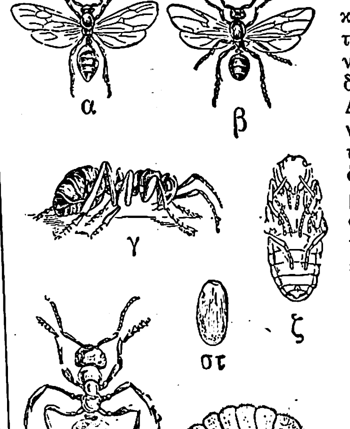


*Μύρμηξ ὁ πυρρός.*

[α=Ἄρρην. β=Θῆλυς. γ=Ἐργάτης. δ=Προνύμφη. ε=Κάμπη. στ=Ὠόν.]

ὅπως τοῦτο παρατηρεῖται εἰς εἶδός τι ψύλλων, οὓς συναθροίζουν ἐντὸς τῶν φωλεῶν των, διὰ τὸ γαλακτῶδες ὑγρόν, ὅπερ οὗτοι ἐκκρίνουσι καὶ δι' οὗ μύρμηκες τροφοὶ ἀνατρέφουσι τὰς προνύμφας.

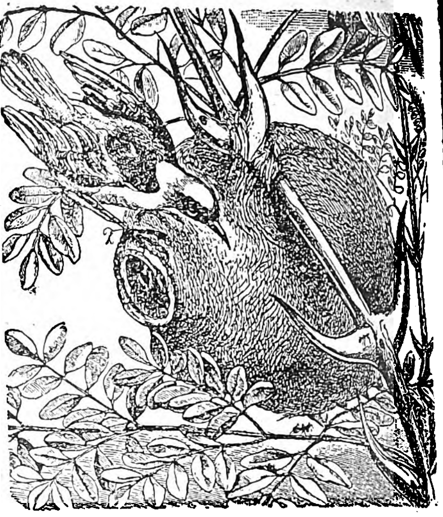

*Πτηνὰ καὶ μύρμηκες ἐν συμβιώσει ἐπὶ κλάδου ἀκακίας.*

Κατὰ τὰς διαβεβαιώσεις πλείστων ἐντομολόγων καὶ φυσιοδιφῶν, οἱ μύρμηκες τῶν ἀρκτικῶν χωρῶν δὲν συναθροίζουσι τὰς τροφάς των κατὰ τὸ θέρος, ὅπως τραφοῦν μὲ ταύτας κατὰ τὸν χειμῶνα, διότι κατὰ τὴν ψυχρὰν ἐποχὴν τοῦ ἔτους πολλοὶ ἀποθνήσκουν καὶ ἄλλοι περιπίπτουν εἰς χειμερίαν νάρκην.

***Διαίρεσις***. Γνωστότερα καὶ ἀξιολογώτερα ἐκ τῶν εἰδῶν, εἰς ἃ διαιρεῖται τὸ γένος τῶν μυρμήκων, εἶναι τὰ κάτωθι: *Μύρμηξ ὁ ἐρυθρὸς* (Formica rufa). Εἶναι τὸ ἀρχαιότερον γνωστὸν εἶδος. Ζῇ σχεδὸν ἀποκλειστικῶς ἐντὸς τῶν μεγάλων δασῶν καὶ κατασκευάζει τὴν φωλεάν του κωνικὴν ἐκ λεπτῶν κλάδων, φύλλων καὶ πηλοῦ. Εἶναι ῥωμαλέος καὶ πολεμικώτατος μύρμηξ καὶ δύναται νὰ ἐκτοξεύσῃ τὸ δηλητήριόν του κατὰ τοῦ ἐχθροῦ εἰς ἀπόστασιν 60 περίπου ἑκατοστομέτρων. Αἱ νύμφαι του συλλέγονται καὶ φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον ὑπὸ τὴν ὀνομασίαν ᾠὰ μυρμήκων, χρησιμεύουσι δὲ πρὸς διατροφὴν διαφόρων πτηνῶν.

*Μύρμηξ ὁ αἱματόχρους* (Formica sanguinea). Οἱ-τος καταλαμβάνει διὰ τῆς βίας τὰς φωλεὰς ἄλλων

*Κοινότης μυρμήκων ἐν πορείᾳ.*

εἰδῶν μυρμήκων καὶ ἐγκαθίσταται εἰς ταύτας. Ἐ-νίοτε ζῇ καὶ μεμονωμένος.

*Μύρμηξ ὁ ἡράκλειος* (Formica heracleanus). Ο-τος κατασκευάζει τὴν φωλεάν του ἐντὸς τῶν

Digitized by Google

ραιῶν κορμῶν τῶν δένδρων καὶ σπανιώτερον ὑπὸ τὴν γῆν ἐκ μικρῶν συντριμμάτων λίθων καὶ πηλοῦ.

*Μύρμηξ ὁ ἀμαζόνειος* (Formica amazonicus). Οὗτος οὔτε φωλεὰν κατασκευάζει οὔτε κατὰ κοινωνίας ζῇ. Περὶ τῆς τροφῆς του, τὴν ὁποίαν εἶναι τελείως ἀνίκανος ὄχι μόνον νὰ συγκομίσῃ ἀλλὰ καὶ νὰ ἀνεύρῃ, φροντίζουν ἄλλα εἴδη μυρμήκων, ἄνευ τῆς συνδρομῆς ταύτης τῶν ὁποίων θὰ ἀπέθνῃσκεν ἐκ πείνης.

*Μύρμηξ ὁ μελιφόρος* (Formica melifera). Οὗτος ἀπαντᾷ εἰς τὸ Μεξικὸν καὶ τὸ Κολοράδον. Ζῇ κατὰ πολυπληθεῖς κοινότητας, ἀλλ᾽ ἐντὸς τῆς φωλεᾶς ὑπάρχει μία μόνον γονιμοποιὸς θήλεια, ἡ βασίλισσα μήτηρ τῆς κοινότητος. Οἱ μελιφόροι μύρμηκες παρουσιάζουσι τόσον ἀπὸ μορφολογικῆς ὅσον καὶ ἀπὸ βιολογικῆς ἀπόψεως μεγίστην ἰδιορρυθμίαν. Ἡ κοιλία των εἶναι ὀγκώδης καὶ σφαιρικὴ καὶ φέρουσι πεπτικὸν σωλῆνα πλήρη γλυκέος ὑγροῦ, χρώματος ἠλέκτρου καὶ συνθέσεως παραπλησίας πρὸς τὴν τοῦ μέλιτος τῶν μελισσῶν. Ἡ οὐσία αὕτη ἔχει ἀρωματικὴν γεῦσιν ἰδιορρυθμοτάτην καὶ παρέχει, κατὰ τὸν Wetherill, διάλυσιν ἐν τῷ ὕδατι καθαρᾶς γλυκόζης. Ἡ ἀντίδρασίς της εἶναι οὐδετέρα κατὰ τὸ φθινόπωρον καὶ τὸν χειμῶνα καὶ ἐλαφρῶς ὄξινος κατὰ τὸ θέρος. Κατὰ τὸν Loew,

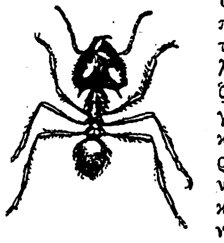

*Μύρμηξ ὁ οἰκοδόμος.*

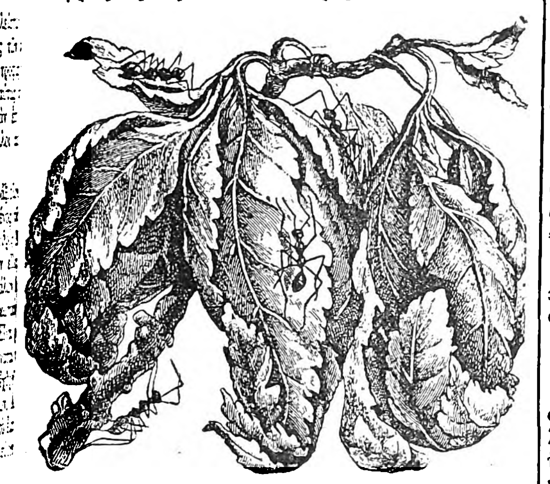

*Φωλεὰ μύρμηκος τοῦ οἰκοφύλλου.*

τὸ ὄξινον ὀφείλεται εἰς τὴν παρουσίαν μυρμηκικοῦ ὀξέος. Κατὰ τὸν Mac Kook, ὅστις ἰδιαιτέρως ἐμελέτησε τὸ εἶδος τοῦτο τῶν μυρμήκων, ἡ φωλεά των γίνεται καταφανὴς ἐξωτερικῶς ὑπὸ ἐπάρσεως ποσότητος ἄμμου, ἥτις ἔχει διάμετρον περὶ τὰ 15 ἑκατσμ., ὕψος 5—8 ἑκατσμ. καὶ φέρει 15 περίπου ὑπογείους ὀρόφους, ὧν τὸ ὕψος ἑκάστου κυμαίνεται μεταξὺ 2—3 ἑκατσμ. Ἕκαστον ἐκ τῶν εἴκοσι διαμερισμάτων τῆς ὑπογείου φωλεᾶς ἔχει διάμετρον 2 περίπου ἑκατσμ. καὶ ὕψος 2—4 ἑκατσμ. Τὰ διαμερίσματα ταῦτα χρησιμεύουσιν ἀποκλειστικῶς διὰ τὴν διαμονὴν τῶν μελιφόρων μυρμήκων. Εἰς τὸ κέντρον τῆς φωλεᾶς καὶ εἰς βάθος ἑνὸς περίπου μέτρου ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῆς γῆς ὑπάρχει κυκλικὸν διαμέρισμα, ὅπου ἐνδιαιτᾶται ἡ βασίλισσα μήτηρ, ἥτις περιστοιχίζεται ὑπὸ 20 περίπου ἐργατίδων, αἵτινες διαρκῶς προσφέρουν εἰς αὐτὴν τὰς ὑπηρεσίας των. Γενικῶς τὸ εἶδος τοῦτο τῶν μυρμήκων εἶναι νυκτόβιον, ἀποδεκατιζόμενον ὑπὸ τοῦ ἡλίου καὶ γενικῶς τῆς θερμότητος. Αἱ μελιφόροι ἐργάτιδες ἀπορροφοῦν τὸ μέλι ἐκ τῶν κηκίδων τῆς τῆς *δρυὸς τῆς κυματώδους* (Quercus ondulata). Ἅμα δὲ ὡς πληρωθῶσι μέλιτος, προσκολλῶνται ἐπὶ τῶν τοιχωμάτων τοῦ διαμερίσματός των, καὶ γίνονται ἀντικείμενον περιποιήσεως ὑπὸ τῶν κοινῶν ἐργατίδων μέχρι τοῦ χειμῶνος ὅτε μὲ τὴν σειράν των παρέχουν τὸ μέλι, ἐξ οὗ τρέφονται πάντες οἱ κάτοικοι τῆς φωλεᾶς. Εἰς ἑκάστην φωλεὰν ὑπάρχουσιν 600 περίπου μελιφόροι, περιέχουσαι περὶ τὰ 250 γραμμάρια μέλιτος, τὸ ὁποῖον, ἐκχυνόμενον κατὰ σταγόνας ἐκ τῶν ἀδένων τῶν σιαγόνων των τῇ ἐλαφρᾷ πιέσει τῶν κοιλιακῶν μυῶν τοῦ ἐντόμου, λείχουν μετὰ βουλιμίας ἐκ περιτροπῆς πάντες οἱ κάτοικοι τῆς φωλεᾶς. Κατὰ τὸν Diguet, οἱ μελιφόροι μύρμηκες εἶναι περιζήτητοι εἰς τὴν ἀγορὰν τοῦ Μεξικοῦ. Τὸ ἔντομον ἀποχωριζόμενον τῆς κεφαλῆς του καὶ τοῦ θώρακος τρώγεται ὑπὸ τῶν ἰθαγενῶν, ὠμὸν ὡς σαχαρόπηκτον (κουφέττο) καὶ προσφέρεται κατὰ τὰ ἐπιδόρπια εἰς τὰς δεξιώσεις τῶν πλουσίων.

***Γεωγραφικὴ ἐξάπλωσις*** Ὁ μύρμηξ ἀπαντᾷ πανταχοῦ τῆς γῆς. Εὑρίσκεται εἰς τόπους ποικιλωτάτης γεωλογικῆς διαμορφώσεως καὶ μετεωρολογικῶν συνθηκῶν. Ἰδίως ἀφθονεῖ εἰς τὰς τροπικὰς χώρας τῆς γῆς. Γνωστὰ περὶ τὰ 2.000 εἴδη, ἐξ ὧν 120 εἴδη ἀπαντῶσιν ἐν Εὐρώπῃ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *André*, «Les formicides d'Europe» (Paris 1881).—*Ebrard*, «Nonvelles observations sur les fourmis» (Genève 1861).—*Forel*, «Études myrmécologiques» (Lausanne 1875—1878).—*Latreille*, «Histoire naturelle des fourmis» (Paris 1802).—*Jacob*, «La vie curieuse des insectes» (Paris 1930).

Δ. Ν. ΠΑΠΑΓΙΑΝΝΟΠΟΥΛΟΣ

**Μύρμηξ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Βραχονησὶς προσκειμένη τῇ ἐπὶ τῆς Μεσογείου αἰγυπτίᾳ ἀκτῇ. Εἶναι ἡ σύγχρονος σκόπελος *Ἀμποῦ-Σαμρὰ* (πλάτ. 31° 07′ Β., μῆκ. 28° 16′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ 374: Mersa Matruh to Alexandria), 4 μίλλ. ἐκ τοῦ ἀκρωτηρίου Ἀμποῦ - Ζερὰμπ (ἀρχ. Τραχεῖα). Σ. Ε. Λ.

— **Μύρμηξ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νησίζων σκόπελος προσκείμενος τῇ ἀκτῇ τῆς Κυρηναϊκῆς (*Πτολεμ.* Δ, δ, 14, Nobbe) ἀνατ. μὲν τῆς Πτολεμαΐδος, ἐλάχιστα δὲ δυτ. τῆς Αὐσίγδης (*Πτολεμ.* Λιβύης πίναξ γ′) δι᾽ ὃ καὶ *Αὔσιγδα* παρὰ τοῦ Ἑκαταίου τὸ νησίον ὠνομάζετο (*Στεφ. Βυζ.* Βάρις 147, 13). Νῦν εἶναι ἀνώνυμος, ὡς «βράχος» (rock) μόνον ἀναφερόμενος ἐν ταῖς Ναυτιλικαῖς ὁδηγίαις (Medit. Pilot 1925: V, 41, 21), ἀναδύων εἰς 1/2 μίλλ. ἀπὸ τῆς ἀκτῆς, 3 μίλλ. ΒΑ. τοῦ φάρου Τολμέϊτα (πλάτ. 32° 43′ Β., μῆκ. 20° 53′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 241: Benghazi to Derna). Σ. Ε. Λ.

— **Μύρμηξ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἐπικινδυνωδεστάτη ὕφαλος (ἕρμα) μεταξὺ Σκιάθου καὶ Μαγνησίας, ἣν ἐπεσήμανεν ὁ Ξέρξης διὰ τοῦ ἀρχαιοτάτου τῶν γνωστῶν «σημείου ἡμέρας» ὡς ἱστορεῖ ὁ Ἡρόδοτος (Ζ, 183). Ἀνευρέθησαν καὶ ἀνειλκύσθησαν ὑπὸ τοῦ πλοιάρχου Σ. Ε. Λυκούδη διὰ τοῦ πλοίου φάρων «Πηνειὸς» ἱκανοὶ τὸν ἀριθμὸν εἰργασμένοι ὀγκόλιθοι ἐκ τῶν ἀποτελεσάντων τὸ πανάρχαιον τοῦτο ἔργον. Εἶναι δὲ ὁ Μύρμηξ ἡ σύγχρονος ὕφαλος *Λευθέρης*. Σ. Ε. Λ.

— **Μύρμηξ** *[Βυζαντ.]*. Βυζαντινὴ ὀνομασία τῆς λιμνοθαλάσσης τοῦ *Ρηγίου* (νῦν *Κουτσοὺκ - Τσεκμετζέ*), ἥτις «ἐς τόσον στενὴ τυγχάνει οὖσα, ὥστε δὴ καὶ Μύρμηξ ὠνόμασται». Ἐπὶ τοῦ στομίου αὐτῆς διήρχετο ξυλίνη γέφυρα, τὴν ὁποίαν καταστραφεῖσαν ἀνήγειρεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565), καταστήσας τὴν διάβασιν ἀκίνδυνον (*Προκ.* Περὶ Κτισμ. IV, 8, 16). Τῆς γεφύρας οὐδὲν ἴχνος σῴζεται. Α. Θ. Σ.

— **Μύρμηξ Φάριος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Βραχονησὶς προσκειμένη τῇ ἀφρικανικῇ ἀκτῇ τῆς Μεσογείου, ἀναφερομένη δὲ ὑπὸ Συνεσίου (ἐπιστ. 4). Σ. Ε. Λ.

**μυρμητσέλλα** (ἡ)· βλ. *ἀκροχορδόνες*.

**Μυρμιδόνες** (οἱ) *[Ἀρχ.]*. Ἐκ τῶν ἑλληνικῶν φύλων, ἅτινα ὡδήγησεν εἰς Τροίαν ὁ ἥρως Ἀχιλλεύς. Εἶχον ὀνομασθῇ οὕτως ἀπὸ τοῦ ἐπιχωρίου ἥρωος *Μυρμιδόνος*. Κατ᾽ ἄλλον μῦθον Μυρμιδόνες ἐκαλοῦντο παλαιότατα οἱ κάτοικοι τῆς νήσου Αἰγίνης, διότι μύρμηκες ὄντες μετεμορφώθησαν εἰς ἀνθρώπους κατόπιν δεήσεως τοῦ ἥρωος Αἰακοῦ πρὸς τὸν πατέρα του Δία (*Ἀπολλ.* III. 11.6), ὅτε ἕνεκα νόσου εἶχον ἀφανισθῇ οἱ κάτοικοι τῆς Αἰγίνης, διὰ νὰ μὴ εἶναι μόνος. Τούτων ἀπόγονοι ἦσαν (κατὰ τὴν παράδοσιν ταύτην) οἱ κατοικοῦντες τὰς ὑπὸ τῶν κόλπων Παγασιτικοῦ, Εὐβοϊκοῦ καὶ Μαλιακοῦ διαβρεχομένας ἀκτὰς τῶν ὑπωρειῶν τῆς Ὄθρυος Μυρμιδόνες, τῶν ὁποίων οἱ πρόγονοι εἶχον ἔλθει ἐκεῖ μετὰ τοῦ Πηλέως. Ὑπῆρχεν ἀκόμη καὶ ἡ παράδοσις ὅτι οἱ Μυρμιδόνες ὠνομάσθησαν οὕτω διὰ τὴν φιλοπονίαν των καὶ τὴν μεγάλην ἀγάπην των πρὸς τὴν καλλιέργειαν τῆς γῆς (*Στράβ.* C. 375 καὶ 433).

Ἐκ τοῦ μύθου τῶν Μυρμιδόνων ἐνεπνεύσθη ὁ Αἰσχύλος τὴν ἀπολεσθεῖσαν ὁμώνυμον («Μυρμιδόνες») τραγῳδίαν του.

Κατὰ τοὺς βυζαντινοὺς χρόνους, ὅτε τὸ ὄνομα Ἕλλην, διὰ τὴν ἐμμονὴν τῶν κατοίκων τῆς μεσημβρινῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν ἀρχαίαν θρησκείαν, εἶχε καταστῆ ταυτόσημον πρὸς τὴν λέξιν ἐθνικὸς καὶ εἰδωλολάτρης, τινὲς Χριστιανοὶ συγγραφεῖς ἔπλασαν τοὺς Μυρμιδόνας ὡς προγόνους τῶν Σκυθῶν καὶ τῶν Βουλγάρων (*Πολίτου*, Λαογρ. σύμμεικτα Β′ 15—16). ΚΑΨ.

**Μυρμιδὼν** *[Μυθολ.]*. Ὁ ἐπώνυμος ἥρως καὶ γενάρχης τῶν *Μυρμιδόνων*. Ἦτο υἱὸς τοῦ Διὸς καὶ τῆς Εὐρυμεδούσης, νυμφευθεὶς δὲ τὴν Πεισιδίκην, θυγατέρα τοῦ Αἰόλου, ἀπέκτησεν ἐξ αὐτῆς δύο υἱούς, τὸν Ἄντιφον καὶ τὸν Ἄκτορα. ΚΑΨ.

**Μύρνταλς-Γιόκουλ** (Myrdals-Jokul) *[Γεωγρ.]*. Ἡφαίστειον τῆς Ἰσλανδίας, παρὰ τὴν νοτίαν παραλίαν αὐτῆς, πρὸς Β τοῦ ἀκρωτηρίου Πόρτλαντ καὶ Ν.Α. τῆς Ἕκλα. Τὸ ὕψος αὐτοῦ εἶναι 1.700 μ., ἡ δὲ πρώτη γνωστὴ ἔκρηξίς του χρονολογεῖται ἀπὸ τοῦ 900 μ. Χ., τῆς τελευταίας λαβούσης χώραν τῷ 1823. Ἡ τρομακτικωτέρα πασῶν τῶν ἐκρήξεών του ὑπῆρξεν ἡ τοῦ ἔτους 1755, καθ᾽ ἣν ἠνεῴχθη μέγας κρατήρ, ἐκ τοῦ ὁποίου ἐπὶ πέντε ἡμέρας ἐξεχύνετο εἰς τὴν θάλασσαν ζέων ὄγκος ὕδατος μετ᾽ ὀγκωδῶν πετρῶν καὶ τμημάτων βράχων, σχηματίζων ποτάμιον ρεῦμα 16 χλμ. πλάτους. Ἐκ τῆς ἐκρήξεως ταύτης ἡ εὐρεῖα πεδιὰς τοῦ Μύνταλσαντρ ἐκαλύφθη ὑπὸ λάβας καὶ φαίνεται κατεσπαρμένη ὑπὸ μεμονωμένων βράχων. Ἐπίσης ἐσχηματίσθησαν εἰς ἱκανὸν μῆκος ἐν τῇ θαλάσσῃ τρεῖς σειραὶ σκοπέλων, ἀντιστοιχοῦσαι πρὸς τὰ τρία μεγάλα ρεύματα τῆς ἐκχυθείσης λάβας.

**μυροβάλανα** (Myrobalana) *[Φαρμακολ.]*. Καλοῦνται οὕτως οἱ καρποὶ τῶν φυτῶν *μυροβάλανος ἡ χεβούλειος, μυροβάλανος ἡ κατάππη κ. ἄ.*, τῶν ὁποίων οἱ καρποὶ εἶναι πλούσιοι εἰς ταννίνην, χεβουλικὸν ὀξύ, ρητινώδεις οὐσίας, πεκτινικὰς καὶ σακχαρούχους οὐσίας. Ἀναγράφονται εἰς τὴν λαϊκὴν θεραπευτικὴν ὡς φάρμακον στυπτικὸν τοῦ ἐντέρου. Λόγῳ τῆς μεγάλης περιεκτικότητός των εἰς δεψικὰς οὐσίας (32—45 %) αἵτινες περιέχονται σχεδὸν ἀποκλειστικῶς ἐν τῷ περικαρπίῳ αὐτῶν, καὶ τῆς μικρᾶς τιμῆς των, εὑρίσκουν μεγάλην ἐφαρμογὴν εἰς τὴν βυρσοδεψίαν καὶ εἰς τὴν βαφικήν. Φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον συνήθως ὡς χονδροκομμένον ἄλευρον. Κ. Γ. Μ.

**μυροβάλανος** (ἡ) (Myrobalanus) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *κομβερτοειδῶν*, περιλαμβάνον θάμνους ἢ δένδρα ἀειθαλῆ, δασικά, καρποφόρα, δεψικά, φαρμακευτικὰ ἢ κοσμητικά, ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν 100 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι τὰ ἑξῆς: *Μυροβάλανος ἡ βαλερικὴ* (Myrobalanus balerica), ἰθαγενὲς δένδρον τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Περσίας, οὗτινος τὸ ὕψος φθάνει μέχρις 25 περίπου μέτρων, ὁ δὲ καρπός του περιέχει δεψικὰς οὐσίας. *Μυροβάλανος ἡ κατάππη* (Myrobalanus catappa), δένδρον παμμέγιστον, ἰθαγενὲς τῶν νήσων τοῦ Ἰνδικοῦ ἀρχιπελάγους καὶ τῆς Αὐστραλίας, ὅπου καὶ καλλιεργεῖται ὡς καρποφόρον καὶ κοσμητικόν· τὰ σπέρματα τοῦ καρποῦ του, παρεμφερῆ πρὸς τὰ ἀμύγδαλα, εἶναι ἐδώδιμα καὶ ἔχουσι γεῦσιν λεπτοκαρύου, ὁ δὲ φλοιὸς καὶ τὰ φύλλα του εἶναι βαφικά. *Μυροβάλανος ἡ στενόφυλλος* (Myrobalanus angustifolia), δένδρον τῶν ἀνατολικῶν χωρῶν τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Μαλαισίας, οὗτινος ὁ καρπὸς ἐκκρίνει οὐσίαν τινὰ εὔοσμον, παρεμφερῆ πρὸς τὴν ρητίνην, ἥτις ἀποξηραινομένη εἰς τὸν ἀέρα χρησιμοποιεῖται ἀντὶ λιβάνου. *Μυροβάλανος ἡ χεβούλειος* (Myrobalanus Chebula), ἰθαγενὲς δένδρον τῶν Ἰνδιῶν καὶ τῆς Περσίας, φθάνον εἰς 30 περίπου μέτρα, οὗτινος τὰ ὥριμα σπέρματα ἔχουσι γεῦσιν λεπτοκαρύου καὶ εἶναι ἐδώδιμα· ὁ ἄωρος καρπὸς ἔχει μέγεθος ἐλαίας, ἀποξηραινόμενος δὲ λαμβάνει μελανὸν χρῶμα καὶ χρησιμοποιεῖται ὡς δεψικὴ οὐσία. *Μυροβάλανος τὸ βούκερας* (Myrobalanus buceras), ἰθαγενὲς δένδρον τῶν Ἀντιλλῶν καὶ τῆς Βραζιλίας, χρήσιμον διὰ τὸν δεψικὸν φλοιόν του. Οἱ ἀρχαῖοι ἐκάλουν *μυροβάλανον* τὸν καρπὸν τοῦ φυτοῦ *μυρίγγη ἢ ἄπτερος*. Δ. Ν. Π.

**Μυροβλήτης** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον τῆς κοινότητος Νικηφόρου (Νουσρατλῆ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μπουραζανλῆ*. Κάτ. (1928) 216.

— 2) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Κοτύλης (Κοτέλτσι) τῆς ἐπαρχίας Καστορίας τοῦ νομοῦ Φλωρίνης, ὀνομαζόμενος πρότερον *Μυροσλάβιστα*. Κάτ. (1928) 92. Χ. Δ.

**μυροβλύτης** (ὁ)· ὁ ἀναβλύζων μύρα, ὁ ἔχων βλύσιν μύρων (ἐπίθετον ἀποδιδόμενον ἰδίᾳ εἰς τὸν ἅγιον Δημήτριον, ἀλλὰ καὶ εἰς ἄλλους ἁγίους).

**μυροβόλος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ βάλλων μύρα, ὁ διαχέων εὐωδίαν.

**Μύροβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Θεσσαλονίκης χωρίου *Ἑλληνικὸν* (βλ. λ.).

**Μυρόβρυσις** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ ὑψηλῆς θέσεως τοῦ Παναχαϊκοῦ καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 310. Χ. Δ.

**μυροδότης** (ὁ). Καλεῖται ὁ ἐκκλησιαστικὸς ὑπηρέτης, ὅστις ἔχει καθῆκον νὰ διαφυλάττῃ τὸ ἅγιον μύρον, νὰ παρέχῃ δ᾽ ἐξ αὐτοῦ εἰς τοὺς αἰτοῦντας μόνον τῇ ἀδείᾳ τοῦ ἐπισκόπου. Τὸ διακόνημα τοῦ μυροδότου καταλέγεται ἐν τῷ εὐωνύμῳ χορῷ τῇ τάξει εἰκοστὸν τρίτον. Κ. Μ. Ρ.

**μυροδοχεῖον** (τό). Τὸ ἐμπερικλεῖον τὸ ἅγιον μύρον δοχεῖον. Ἐὰν συμπεράνωμεν ἐκ τῶν ἄλλων ὀνομασιῶν αὐτοῦ (ampulla = *λήκυθος*, καὶ *ἀλάβαστρον*), τοῦτο κατ᾽ ἀρχὰς ἦτο ὑάλινον ἢ πήλινον, πρὸς πρόληψιν τῆς ἐκ τοῦ μετάλλου χημικῆς ἀλλοιώσεως τοῦ ἐλαίου. Ἐνωρὶς ὅμως εἰσήχθησαν εἰς χρῆσιν καὶ ἀργυρᾶ ἢ χρυσᾶ τοιαῦτα, καθόσον τὰ ἄλλα ἦσαν εὔθραυστα, καὶ διότι πολύτιμα μυροδοχεῖα ἐχρησιμοποιοῦντο ἤδη κατὰ τὰς στέψεις τῶν αὐτοκρατόρων. Πρακτικώτερα τυγχάνουσι τὰ ὑάλινα μετὰ περιβλήματος μεταλλίνου. Ἡ ἐκ τοῦ μυροδοχείου ἐξαγωγὴ τοῦ μύρου γίνεται διὰ βελόνης, τῆς ὁποίας τὸ ἓν ἄκρον εἶναι στερεῶς προσηρμοσμένον ἐν τῷ κέντρῳ τῆς ἔνδον ἐπιφανείας τοῦ πώματος, τὸ δ᾽ ἕτερον ἄκρον φέρει τεμάχιον μικρὸν σπόγγου ἢ βάμβακος. Ἡ βελόνη, ἐφ᾽ ὅσον τὸ μυροδοχεῖον εἶναι πεπωματισμένον, εὑρίσκεται ἐμβεβαπτισμένη ἐντὸς τούτου, συνεξάγεται δ᾽ ἐξ αὐτοῦ μετὰ τοῦ πώματος. Π. Ν. Τ.



Digitized by Google

**μυροελιὰ** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία εἴς τινας τῶν Ἰονίων νήσων ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἐλαία ἡ εὐρωπαϊκή.* Δ. Ν. Π.

**μυροθήκη** (ἡ), θήκη, δοχεῖον πρὸς φύλαξιν μύρου.

**Μυροκεράτου *Μονὴ*** *[Βυζαντ.]*. Ἐκτίσθη ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ τὸν Ε′ ἢ ΣΤ′ αἰῶνα, ὀνομασθεῖσα οὕτω, διότι ἐν αὐτῇ κατετέθη τὸ κέρας τοῦ ἐλαίου, διὰ τοῦ ὁποίου ὁ προφήτης Σαμουὴλ ἔχρισε τοὺς βασιλεῖς τῶν Ἰουδαίων. Α. Θ. Σ.

**Μυρόκοβον** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Τρικκάλων χωρίου *Μυρόφυλλον* (βλ. λ.).

**μυρολίνη** (ὁ) *[Χημ. Τροφ.]*· βλ. *κόκκου* ἔλαιον.

**Μυρολιούμπωφ, *Κωνσταντῖνος Κρίστεφ***. Βούλγαρος συγγραφεὺς (βλ. λ. *Κρίστεφ*).

**μυρολογήτρα, *μυρολόγι, μυρολογῶ*** · βλ. *μοιρολογήτρα* κτλ.

**μυρόλυτα** (τὰ) (myrolis) *[Φαρμακοτεχ.]*. Καλοῦνται οὕτω διαλύματα φαρμάκων ἐντὸς αἰθερίων ἐλαίων. Τὰ σκευάσματα τοῦ εἴδους αὐτοῦ εἶναι εὐάριθμα (θειοῦχον τερεβινθέλαιον, θειοῦχον ἀνισέλαιον κ. ἄ.). Κ. Γ. Μ.

**μύρομαι**· ὀδύρομαι, θρηνῶ, κλαίω: «κλαίει καὶ μύρεται».

**μύρον** (τό)· ὁ ἐκκρινόμενος εὐώδης χυμὸς φυτῶν τινων· ‖ πᾶν εὐῶδες ἔλαιον εἴτε φυσικῶς ἔχει εἴτε εἶναι τεχνητῶς παρεσκευασμένον· ‖ ἅγιον μύρον (βλ. κατ.).

— *[Χημ.] Μύρον* ἢ *μύρρα* εἶναι κομμιορρητίνη ἐλευθέρως ἀπεκκρινομένη ἐκ διαφόρων θάμνων καὶ δένδρων τῆς οἰκογενείας τῶν βουρσεροειδῶν καὶ εἰδικῶς ἐκ τῆς Commiphora abyssinica καὶ C. Schimperi, αἵτινες εἶναι ἰθαγενεῖς εἰς τὴν νότιον Ἀραβίαν καὶ τὰς δυτικὰς ἀκτὰς τῆς Ἐρυθρᾶς Θαλάσσης. Ὁ ἐκκρινόμενος γαλακτώδης ὀπὸς εἶναι κατ' ἀρχὰς ἐλαιώδης καὶ κιτρινόλευκος, καθιστάμενος εἶτα βουτυροειδὴς καὶ τελικῶς σκληρύνεται εἰς ὑποκίτρινα ἕως ἐρυθρόφαια στρογγυλὰ ἢ ἀκανόνιστα τεμαχίδια μεγέθους πίσου ἢ καὶ μεγαλύτερα. Ἡ κάπως διαφανὴς μᾶζα ἀνωμάλου καὶ ὀλίγον κονιορτώδους ἐπιφανείας καὶ κηροειδοῦς θραύσεως ἔχει χαρακτηριστικὴν ἀρωματικὴν ὀσμὴν καὶ πικρὰν νύσσουσαν γεῦσιν, διογκοῦται κατὰ τὴν θέρμανσιν χωρὶς νὰ τακῇ καὶ καίεται μετ' αἰθαλιζούσης φωτεινῆς φλογὸς ἀναδιδομένης ἰσχυρᾶς εὐχαρίστου ὀσμῆς. Ἀποτελεῖται ἐκ μίγματος κόμμεως καὶ ῥητίνης καὶ δὲν διαλύεται πλήρως οὔτε εἰς τὸ ὕδωρ οὔτε εἰς τὸ οἰνόπνευμα. Τὸ οἰνόπνευμα παραλαμβάνει ἐξ αὐτοῦ περίπου 20 - 30%, σχηματιζομένου διαυγοῦς κιτρινερύθρου βάμματος. Τὸ μύρον περιέχει (περὶ τὰ 60%) κόμμι, μίαν ρεσένην, αἰθέριον ἔλαιον, πικρὰν ὕλην καὶ ἰδιάζοντά τινα σώματα χαρακτηριστικά, τὰς μυρρόλας καὶ μυρρολόλας. Ἡ χαρακτηριστικὴ ὀσμὴ καὶ γεῦσις βασίζεται εἰς τὴν παρουσίαν τοῦ αἰθερίου ἐλαίου *(μυρρέλαιον, μυρρόλη)* τὸ ὁποῖον περιέχεται εἰς ποσότητα 2—10%. Τὸ μυρρέλαιον λαμβάνεται ἐκ τοῦ μύρου δι' ἀποστάξεως δι' ὑδρατμῶν καὶ ἀποτελεῖ ἴδιον προϊὸν τοῦ ἐμπορίου. Τὸ μυρρέλαιον εἶναι πυκνόρρευστόν πως ὑγρόν, κιτρίνου, ὑποπρασίνου ἢ ὑποφαίου χρώματος, ἔχει ἀσθενῶς ὀξίνην ἀντίδρασιν, εἰδικὸν βάρος 0,988—1,024 καὶ εἰδικὴν στροφὴν —31 ἕως —93°. Τὸ μύρον ἤρχετο παλαιότερον ἀπ' εὐθείας ἐξ Ἀραβίας εἰς Εὐρώπην, δι' ὃ καὶ ἐκαλεῖτο *τουρκικὸν μύρον*, σήμερον ὅμως εἰσάγεται διὰ Βομβάης εἰς Ἀγγλίαν. Ἐξ ἀμφοτέρων τῶν εἰς τὸ ἐμπόριον ἐρχομένων εἰδῶν μύρου μόνον τὸ ἐκ καθαρωτάτων, ἀνοικτοχρόων καὶ μεγάλων τεμαχιδίων ἀποτελούμενον (M. electa) χρησιμοποιεῖται διὰ φαρμακευτικοὺς σκοπούς, ἐνῷ τὰ σκοτεινὰ καὶ δι' ἀκαθαρσιῶν προσμεμιγμένα κατωτέρας ὀσμῆς τεμάχια (M. in. sortis) χρησιμοποιοῦνται διὰ τεχνικοὺς σκοπούς. Τὸ μύρον εἶναι ἐκ τῶν ἀρχαιότερον γνωστῶν εἰς τὴν ἱστορίαν ῥητινῶν καὶ ἐχρησιμοποιεῖτο διὰ πομάδας καὶ πρὸς βαλσάμωσιν τῶν πτωμάτων. Σήμερον χρησιμοποιεῖται δι' ἀρώματα, διὰ θυμιάσεις καὶ εἰς τὴν ἰατρικήν. Σ. Γ.

— *[Φαρμακ.]* Εἰς τὴν θεραπευτικὴν τὸ *μύρον* ἀναγράφεται εἰς δόσεις πλειστάκις τῆς ἡμέρας ὑπὸ μορφὴν κόνεως ἢ καταποτίων ὡς καὶ ὑπὸ τὴν μορφὴν γαλακτωμάτων ὡς φάρμακον διεγερτικὸν τοῦ στομάχου, ἀποχρεμπτικόν, ἐμμηναγωγὸν κλπ. Εἰς ὑποκαπνισμοὺς ἀναγράφεται ὡς βαλσαμικὸν καὶ εἰς γαργαρίσματα ὡς εἰδικὸν κατὰ τοῦ σκορβούτου φάρμακον. Εἰς τὴν φαρμακοτεχνίαν χρησιμεύει πρὸς παρασκευὴν τοῦ βάμματος (Tinctura Myrrhae), ἐμπλάστρου (Emplastrum Vigo), τοῦ ἐλιξιρίου Garus καὶ τῆς θηριακῆς τῶν ἀρχαίων. Εἰς μεγάλας δόσεις τὸ μύρον προκαλεῖ ναυτίας καὶ ἐμέτους καὶ γαστρεντερικὰς διαταραχάς, συνοδευομένας ἐνίοτε καὶ ὑπὸ πυρετοῦ. Τὸ μύρον οὐδέποτε παραγγέλλεται μεθ' ἁλάτων μολύβδου, ἀλκαλίων, ὀξίνων ἁλάτων καὶ ἀνοργάνων ὀξέων. Κ. Ι. Μ.

— *[Τελετ.] Μύρον ἅγιον* καλεῖται τὸ ἠρωματισμένον καὶ ἡγιασμένον ἔλαιον, τὸ χρησιμοποιούμενον κατὰ τὸ μυστήριον τοῦ χρίσματος. Ἔλαιον ἁπλοῦν κατ' ἀρχάς, ἁγιαζόμενον ἐπὶ τῆς ἁγίας Τραπέζης (*Tertull.* de Baptis. 7, *Cypriani* Epistola 70 c. 2) καὶ *ἅγιον ἔλαιον* καλούμενον, ἤδη ἀπὸ τοῦ τετάρτου αἰῶνος ἀποκαλεῖται *μύρον* (Ἀποστ. Διαταγ. VII 43,3 καὶ 44,1) διὰ συνθέσεως καὶ ἄλλων εὐωδῶν ὑλῶν καὶ ἀρωματικῶν ἐλαίων ἀποτελούμενον, εἰς συμβολισμὸν τῶν ποικίλων καὶ εὐωδῶν χαρισμάτων τοῦ ἁγίου Πνεύματος. Ὄντως δὲ κατὰ τὴν ἐν τῷ Εὐχολογίῳ διάταξιν, τὴν μέχρι καὶ σήμερον ἰσχύουσαν, ἐν τῇ συνθέσει τοῦ μύρου χρησιμοποιεῖται μὲν ὡς κυρία ὕλη τὸ ἔλαιον, τίθενται ὅμως ἐντὸς αὐτοῦ καθ' ὡρισμένας ἀναλογίας καὶ ἄλλαι ἀρωματώδεις ὗλαι, τριάκοντα καὶ ἓξ τὸν ἀριθμόν, τὸ μεῖγμα δὲ τοῦτο βράζεται ἐπὶ πυρᾶς, προστιθεμένου εἰς αὐτὸ καὶ οἴνου τοσούτου, ὅσος ἐξαρκεῖ, «ὥστε εἶναι ὑποκάτω τοῦ ἐλαίου τὸν οἶνον πάντοτε καὶ μὴ ἐκκαίεσθαι τὸ ἔλαιον». Ὁ ἀρχαιόθεν δὲ μαρτυρούμενος καθαγιασμὸς τοῦ μύρου ἐτελεῖτο προνομιακῶς ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου, ἀπαγορευθέντος εἰς τοὺς πρεσβυτέρους νὰ παρασκευάζωσι μύρον (20 κανὼν τῆς ἐν Τολέδῳ συνόδου τοῦ 398), καὶ τοῦτο διότι ἡ διὰ τοῦ ἁγίου μύρου χρίσις ἀντικατέστησε τὴν ἐπίθεσιν τῶν χειρῶν, διὰ τῆς ὁποίας κατὰ τοὺς ἀποστολικοὺς χρόνους μετεδίδοντο ἐπὶ τοὺς βεβαπτισμένους τὰ χαρίσματα τοῦ ἁγίου Πνεύματος. Ἐπειδὴ δὲ ἡ ἐπίθεσις τῶν χειρῶν ἐγίνετο ὑπὸ μόνον τῶν Ἀποστόλων, καὶ ὁ καθαγιασμὸς τοῦ χρίσματος ἀπέμεινε προνόμιον τοῦ ἐπισκόπου, ἐπιτραπέντος εἰς τοὺς πρεσβυτέρους νὰ χρίωσι τοὺς βεβαπτισμένους διὰ τοῦ καθαγιασθέντος ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου ἁγίου μύρου. Καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν δὲν ἦτο ὡρισμένη ἡ ἡμέρα, καθ' ἣν καθηγιάζετο τὸ μύρον, ἀπὸ τοῦ Ζ′ ὅμως αἰῶνος ἐκράτησεν, ὅπως ὁ καθαγιασμὸς οὗτος γίνεται κατὰ τὴν Μεγάλην Πέμπτην. Ἐν τῇ Ἀνατολικῇ ἐκκλησίᾳ, μολονότι ἀναγνωρίζεται ὅτι δύναται καὶ ὁ ἐπίσκοπος διὰ τὴν παροικίαν αὐτοῦ νὰ καθαγιάζῃ μύρον, ἐν τούτοις ἐπεκράτησε νὰ παρασκευάζεται τὸ μύρον, οὐχὶ κατ' ἔτος ἀλλ' ὁσάκις παρουσιάζεται ἀνάγκη, ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ νὰ καθαγιάζηται ὑπὸ τοῦ πατριάρχου, ἐκεῖθεν δὲ ὡς ἐξωτερικὸν καὶ ἁπτότερον δεῖγμα ἑνότητος καὶ σεβασμοῦ πρὸς τὴν Μητέρα Ἐκκλησίαν νὰ λαμβάνωσιν αὐτὸ καὶ πολλαὶ τῶν ἐξ αὐτῆς ἀποσπασθεισῶν αὐτοκεφάλων ἐκκλησιῶν. Γίνεται δὲ ὁ καθαγιασμὸς οὗτος κατὰ τὴν θείαν λειτουργίαν τῆς Μεγάλης Πέμπτης, ἐκκομιζομένου, μετὰ τῶν τιμίων δώρων κατὰ τὴν μεγάλην εἴσοδον, τοῦ δοχείου τοῦ περιέχοντος τὴν παρεσκευασμένην ὕλην τοῦ μύρου καὶ ἀποτιθεμένου ὑπὸ τοῦ πατριάρχου εἰς τὸ ἀριστερὸν μέρος τῆς ἁγίας Τραπέζης, ἵνα μετὰ τὸν λειτουργικὸν ἀσπασμὸν «Καὶ ἔσται τὰ ἐλέη τοῦ μεγάλου Θεοῦ...» ἀναγνώσῃ τὰς κεκανονισμένας εὐχάς, σφραγίζων ἅμα διὰ τῆς χειρὸς τοῦτο σταυροειδῶς. Τὸ διὰ τοῦ οὕτω καθαγιασθέντος μύρου χρίσμα γίνεται παρ' ἡμῖν εὐθὺς μετὰ τὸ βάπτισμα ὑπὸ τοῦ πρεσβυτέρου, χρίοντος σταυροειδῶς τὸ μέτωπον, τοὺς ὀφθαλμούς, τοὺς μυκτῆρας, τὸ στόμα, τὰ ὦτα, τὸ στῆθος καὶ τὰ ἄκρα τοῦ βαπτισθέντος καὶ ἐπιλέγοντος ἐν ἑκάστῃ χρίσει καὶ τὸ «Σφραγὶς δωρεᾶς Πνεύματος ἁγίου Ἀμήν». Ἐν τῇ Δυτικῇ ὅμως ἐκκλησίᾳ τὸ χρίσμα παρέχεται ὑπὸ τοῦ ἐπισκόπου, οὐχὶ δὲ εὐθὺς μετὰ τὸ βάπτισμα, ἀλλ' ἀφοῦ οἱ παῖδες πρόσηβοι γενόμενοι κατηχηθῶσι.

Π. Ν. ΤΡΕΜΠΕΛΑΣ

**Μύρον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 100. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸν συνοικισμὸν *Ἀλημάκι*. Χ. Δ.

**μυρονάση** (ἡ) *[Χημ.]*· βλ. *ἔνζυμα*.

**μυρονικός,** *—ή, —όν*. Λέγεται περὶ τοῦ ὀξέος, τὸ ὁποῖον σχηματίζει μετὰ τοῦ καλίου τὸ ἅλας *μυρονικὸν κάλιον*.

— **μυρονικὸν *κάλιον*** *[Χημ.]*· βλ. *σινιγρίνη*.

**μυρόξυλον** (Myroxylum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *ἐλλοβοκάρπων*, περιλαμβάνον δένδρα ἀειθαλῆ, ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς Ἀμερικῆς. Ἐκ τῶν 5 εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι: *μυρόξυλον τὸ τολουϊφόρον* (Myroxylum toluiferum) καὶ *μυρόξυλον τὸ περουβιανὸν* (Myroxylum peruianensis). Ἐκ τῶν ἐντομῶν αἵτινες προξενοῦνται ἐπὶ τῶν κορμῶν τῶν δένδρων τούτων λαμβάνονται μυρεψικαὶ καὶ φαρμακευτικαὶ ῥητῖναι γνωσταὶ ὑπὸ τὸ ὄνομα *βάλσαμον τολουταϊκὸν* (Balsamum tolutaicum) καὶ *περουβιανὸν* (Balsamum peruvianum). Δ. Ν. Π.

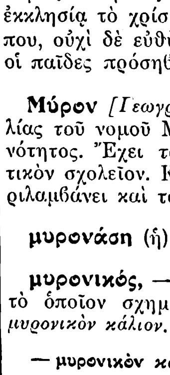

*Μυρόξυλον.*

**μυροποιία** (ἡ)· τὸ ἔργον τοῦ μυροποιοῦ, ἡ παρασκευὴ μύρων, ἀρωμάτων.

**μυροποιὸς** (ὁ, ἡ)· ὁ ποιῶν, ὁ παρασκευάζων μύρα, ἀρώματα, μυρεψός.

**μυροπωλεῖον** (τό)· ὁ τόπος, τὸ κατάστημα ὅπου πωλοῦνται μύρα, ἀρώματα, ἀρωματοπωλεῖον.

**μυροπώλης** (ὁ)· ὁ πωλητὴς μύρων, ἀρωμάτων, ἀρωματοπώλης.

**μυροσίνη** (ἡ), ἡ *μυροζίνη*, ἡ *μυρωσίνη* *[Χημ.]*. Ἔνζυμον, τὸ ὁποῖον διασπᾷ τὸν γλυκοζίτην *σινιγρίνη* ἢ *μυρονικὸν κάλιον* εἰς *ἀλλυλοσιναπέλαιον*, d-*γλυκόζην* καὶ *ὄξινον θειικὸν κάλιον*. Ἀπαντᾷ εἰς τὰ σπέρματα τοῦ σινάπεως ὡς καὶ πολλῶν ἄλλων σταυρανθῶν καθὼς καὶ διαφόρων ρεζεδοειδῶν, καππαριδοειδῶν κλπ. Εἶναι λευκὸν ἄμορφον σῶμα, διαλυτὸν ἐν μέρει εἰς τὸ ὕδωρ καὶ ἀδιάλυτον εἰς τὸ οἰνόπνευμα καὶ τὸν αἰθέρα. Σ. Γ.

**μυροσκέλλα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ὄρχις ὁ εὐώδης*.

**Μυροσλάβιτσα** *[Γεωγρ.]*. Παλαιότερον ὄνομα τοῦ ἐν τῷ νομῷ Φλωρίνης συνοικισμοῦ *Μυροβλήτης* (βλ. λ.).

**μυρόσπερμον** (τὸ) (Myrospermum) *[Βοτ.]*. Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *χεδροπῶν*, περιλαμβάνον ἓν μόνον εἶδος ἰθαγενὲς τῆς Νοτίου Ἀμερικῆς, τὸ *μυρόσπερμον τὸ ἐρυθρόξυλον* (Myrospermum erythroxylum), οὗ τὸ ξύλον χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν ἐβενουργίαν. Δ. Ν. Π.

**μυροφόρα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *λαβαντὶς ἡ στοιχάς*.

**μυροφόρος** (ὁ, ἡ), *—ον* (τό)· ὁ φέρων, ὁ κομίζων μύρα.

— **Μυροφόροι** (αἱ) *[Βιβλ.]*. Οὕτω καλοῦνται ἐν τῇ ἐκκλησιαστικῇ φιλολογίᾳ αἱ εὐσεβεῖς ἐκεῖναι γυναῖκες, αἵτινες, κατὰ τὴν εὐαγγελικὴν διήγησιν, παρακολουθήσασαι πιστῶς τὴν διδασκαλίαν τοῦ Ἰησοῦ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας καὶ «διακονοῦσαι αὐτῷ ἀπὸ τῶν ὑπαρχόντων αὐτῶν», δὲν διεσκορπίσθησαν μετὰ τὸν τραγικὸν θάνατον αὐτοῦ, ἀλλ' ἐπιδεῖξασαι τόλμην μεγαλυτέραν τῶν ἀνδρῶν ἀποστόλων, ἦλθον μόναι λίαν πρωῒ «τῇ μιᾷ Σαββάτων» (Κυριακῇ) εἰς τὸν ὑπὸ στρατιωτῶν φυλασσόμενον τάφον ἐκείνου, ἵνα ἀλείψωσι τὸ σῶμα αὐτοῦ διὰ μύρων καὶ ἠξιώθησαν τῆς τιμῆς νὰ μάθωσιν αὐταὶ πρῶται παρὰ τοῦ ἀγγέλου τὴν εὐφρόσυνον εἴδησιν περὶ τῆς ἀναστάσεως τοῦ Κυρίου καὶ νὰ ἀκούσωσι τὸ «*χαίρετε*» παρ' αὐτοῦ τοῦ ἀναστάντος Κυρίου, ἵνα γίνωσιν ἔπειτα πρῶτοι κήρυκες τοῦ γεγονότος τούτου. Ἐκ τούτων μνημονεύονται ἰδίᾳ ὑπὸ τῶν εὐαγγελιστῶν *Μαρία* ἡ τοῦ Ἰακώβου καὶ Ἰωσῆ μήτηρ, *Σαλώμη* ἡ σύζυγος τοῦ Ζεβεδαίου καὶ μήτηρ τῶν ἀποστόλων Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου καὶ *ἡ Μαρία ἡ Μαγδαληνή*, ἥτις καὶ ἰδιαιτέρας ἐμφανίσεως τοῦ Ἰησοῦ ἠξιώθη (*Ματθ.* κη′ 1 ἐξ., *Μάρκ.* ιστ′ 1 ἐξ., *Λουκᾶ* κδ′ 1 ἐξ., *Ἰωάνν.* κ′ 1 ἐξ.). Ἡ ἡμετέρα ἐκκλησία ἑορτάζει τὴν μνήμην τῶν μυροφόρων γυναικῶν ὄχι μόνον ἰδιαιτέρως μιᾶς ἑκάστης, ἀλλὰ καὶ συλλήβδην τῇ τρίτῃ Κυριακῇ ἀπὸ τῆς Ἀναστάσεως, διότι κατὰ τὸ Πεντηκοστάριον «πρῶται εἶδον τὸν Χριστὸν ἐκ νεκρῶν καὶ τοῖς πᾶσι κατήγγειλαν τὸ σωτήριον κήρυγμα καὶ τὴν κατὰ Χριστὸν πολιτείαν μετῆλθον ἀρίστως καὶ ὡς ἔχρην γυναιξὶ μαθητευθείσαις Χριστῷ». Π. Ι. Μ.

— **Μυροφόρων, *Κυριακὴ τῶν* —**. Ἡ τρίτη ἀπὸ τῆς Κυριακῆς τοῦ Πάσχα καὶ εὐθὺς ἑπομένη τῇ Κυριακῇ τοῦ Ἀντίπασχα ἢ τοῦ Θωμᾶ. Κατ' αὐτὴν τελεῖται ἡ μνήμη οὐ μόνον τῶν *Μυροφόρων* γυναικῶν, ἀλλὰ καὶ τῶν *Ἰωσὴφ* καὶ *Νικοδήμου*, οἵτινες τολμήσαντες νὰ ζητήσωσι τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ καὶ κηδεύσαντες αὐτὸ περιετύλιξαν εἰς σινδόνα χρησιμοποιήσαντες καὶ μύρα, σμύρναν καὶ ἀλόην ὡσεὶ λίτρας ἑκατὸν (*Ἰωάνν.* ιθ′ 39). Ἡ ἐκκλησία τιμᾷ τοὺς ἄνδρας καὶ τὰς γυναῖκας ταύτας διὰ τὴν μέχρις αὐτοθυσίας ἀφοσίωσιν πρὸς τὸν Κύριον. Π. Ν. Τ.

**Μυρόφυλλον** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Τρικκάλων, ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μυρόκοβον*. Κάτ. (1928) 796. Χ. Δ.

**μυρόχορτο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἄδωνις ὁ φθινοπωρινός*.

**μύρρα** (ἡ)· ὁ βαλσαμώδης ὀπὸς τῆς ἀραβικῆς μυρσίνης (βλ. *μύρον*).

**Μύρρα** *[Μυθολ.]*. Ὁ μῦθος τῆς Μύρρας, ἐπικαλουμένης καὶ *Σμύρνας*, εἶναι ἀναπόσπαστος ἀπὸ τοῦ μύθου τοῦ *Ἀδώνιδος*, ὅστις ἐλέγετο υἱός της. Κατὰ τὸν μῦθον τοῦτον, ἡ Μύρρα, θυγάτηρ τοῦ βασιλέως τῶν Ἀσσυρίων Θείαντος, περιέπεσεν εἰς τὴν μῆνιν τῆς Ἀφροδίτης, διότι καυχωμένη διὰ τὸ κάλλος της δὲν ἐτίμα τὴν θεάν. Ἡ Ἀφροδίτη ἐκδικουμένη τότε ἐνέβαλεν εἰς αὐτὴν ἔρωτα πρὸς τὸν ἴδιον πατέρα της, μετὰ τοῦ ὁποίου, διατελοῦντος ἐν ἀγνοίᾳ, συνεκοιμήθη αὐτή, τῇ συνερ-

Digitized by Google

γίᾳ τῆς τροφοῦ της, δώδεκα νύκτας. Μετὰ τὴν ἀποκάλυψιν τοῦ ἀνοσιουργήματος ὁ Θείας (κατ' ἄλλον μῦθον ὁ πατήρ της ἦτο ὁ μυθικὸς βασιλεὺς τῆς Κύπρου Κινύρας) ξιφήρης κατεδίωξε τὴν Μύρραν, ἀλλ' αὕτη ἐσώθη ἐκ τοῦ κινδύνου μεταμορφωθεῖσα, ἐξ οἴκτου τῶν θεῶν, εἰς τὸ ἀρωματικὸν δένδρον *σμύρναν ἢ μύρραν*, ἐκ τοῦ ὁποίου, ραγέντος μετὰ δέκα μῆνας, ἐγεννήθη ὁ Ἄδωνις, τὸν ὁποῖον ἡ Ἀφροδίτη, ἐκπλαγεῖσα διὰ τὸ κάλλος του, ἀπέθεσεν ἐντὸς κανίστρου καὶ ἐνεπιστεύθη εἰς τὴν Περσεφόνην. ΚΑΨ.

**μυρρέλαιον** (τό)· βλ. *μύρον*.

**Μυρρίνη.** Ὄνομα ἀρχαίων Ἑλληνίδων ἑταιρῶν. —1) Φίλη τοῦ πατρὸς τοῦ Ἀνδοκίδου Λεωγόρα, χάριν τῆς ὁποίας κατεστράφη οὗτος οἰκονομικῶς («τὰ χρήματα ἀποβέβληκε», Σχολ. *Ἀριστ.* Νεφ. 109). —2) Φίλη τοῦ ῥήτορος Ὑπερείδου «πολυτελεστάτη», διὰ τὴν ὁποίαν οὗτος διετήρει ἐν Ἀθήναις ἰδίαν οἰκίαν (*Ἀθην.* ΙΓ' 590). —3) Σαμία, φίλη Δημητρίου τοῦ Πολιορκητοῦ, καταστᾶσα ὑπ' αὐτοῦ «κοινωνὸς τῆς βασιλείας» (*Ἀθήν.* ΙΓ' 593). Π. Ν. Π.

**μύρρινος,** *—η, —ον·* ἀρχ., ὁ ἐκ μυρσίνης, μύρτινος.

—**μύρρινα ἀγγεῖα.** Οὕτως ἐκαλοῦντο, κατά τινας Λατίνους συγγραφεῖς, τὰ ἐκ μυρρίτου λίθου κατασκευαζόμενα ἀγγεῖα, τὰ ὁποῖα ἦσαν πολυτιμότατα. Κατὰ τὸν Πλίνιον, ὁ μυρρίτης λίθος εὑρίσκετο ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Πάρθων, ἦτο δὲ λίαν πολύτιμος, διότι εἶχε λάμψιν γλυκεῖαν, αἱ δὲ φλέβες του εἶχον ἀποχρώσεις τοῦ πορφυροῦ, τοῦ λευκοῦ καὶ τοῦ πυρροῦ, αἵτινες συνανεμίγνυντο βαθμηδόν, προσδίδουσαι οὕτως εἰς τὴν ὅλην ἐπιφάνειαν ἐρυθρογαλακτῶδες χρῶμα. Τὰ ἀγγεῖα ταῦτα ἐγνώρισεν εἰς τοὺς Ῥωμαίους πρῶτος ὁ Πομπήϊος, ὅστις νικήσας τὸν Μιθριδάτην ἔφερεν εἰς Ῥώμην ὡς λάφυρα ἓξ μύρρινα ἀγγεῖα καὶ ἀφιέρωσεν αὐτὰ εἰς τὸν Καπιτώλιον Δία. Ἔκτοτε οἱ Ῥωμαῖοι περὶ πολλοῦ ἐποιοῦντο τὰ τοιαῦτα ἀγγεῖα καὶ κατήρτιζον μεγάλας συλλογάς. Ὁ Πλίνιος διηγεῖται, ὅτι ὁ Πετρώνιος ἔθραυσεν ἓν μύρρινον ἀγγεῖον ἀξίας 300 ταλάντων, διὰ νὰ μὴ περιέλθῃ εἰς τὴν κατοχὴν τοῦ Νέρωνος. Κατὰ τὸν Winckelmann καὶ ἄλ-

*Τὸ ἐξ ἀχάτου πολύτιμον ποτήριον τῶν Πτολεμαίων ἢ τοῦ Μιθριδάτου, ἐφ' οὗ ἀνάγλυπτοι παραστάσεις βακχικῶν συμβόλων.*
[Μουσεῖον Λούβρου ἐν Παρισίοις.]

λους, φαίνεται, ὅτι τὰ ὑπὸ τοῦ Πλινίου θαυμαζόμενα καὶ καλούμενα μύρρινα ἀγγεῖα ἦσαν τὰ ἐξ ὡραίου ἀχάτου λίθου ἢ ἐκ σαρδόνυχος κατασκευαζόμενα ἀγγεῖα. Τὰ ἐκ τοιούτων ὑλικῶν διασωθέντα μέχρις ἡμῶν ἀνταποκρίνονται πληρέστατα πρὸς τὰς περιγραφὰς τοῦ Πλινίου, Προπερτίου καὶ Μαρτιαλίου περὶ τῆς διαφανείας καὶ ἀποχρώσεων τῶν μυρρίνων ἀγγείων. Τοιαῦτα πολύτιμα ἀγγεῖα εἶναι ὁ ἐξ ἀχάτου διονυσιακὸς κάνθαρος, ὁ ἐπιλεγόμενος ποτήριον τῶν Πτολεμαίων, ἀποκείμενος νῦν ἐν Παρισίοις εἰς τὸ μουσεῖον τοῦ Λούβρου. Ἡ ἐξωτερικὴ ἐπιφάνεια τοῦ ἀγγείου τούτου εἶναι κεκοσμημένη διὰ βακχικῶν συμβόλων ἐκτύπως γεγλυμμένων. Ὑπολογίζεται ὅτι ἐχρειάσθη τριακονταετὲς χρονικὸν διάστημα πρὸς ἐκτέλεσιν τοῦ ἀγγείου τούτου, τὸ ὁποῖον διὰ τὴν αἴγλην του καὶ τὴν θαυμασίαν τέχνην του ἐχρησιμοποιήθη κατὰ τὸν μεσαίωνα ὡς ἅγιον ποτήριον. Τὸ ἀγγεῖον τῆς Μαντούης ἐν τῷ μουσείῳ Μπρούνσβικ, τὸ κύπελλον τοῦ Farnese ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Νεαπόλεως καὶ πολλὰ ἄλλα ἐν διαφόροις μουσείοις. Παραλλήλως ὅμως πρὸς τὰ ἐκ πολυτίμων λίθων κατασκευαζόμενα μύρρινα ἀγγεῖα ὑπῆρχον καὶ τοιαῦτα κατασκευαζόμενα ἐξ ὑελώδους μάζης πρὸς ἀπομίμησιν τῶν πραγματικῶν. Τὰ τεχνικὰ ταῦτα μύρρινα ἀγγεῖα ὑπονοεῖ καὶ ὁ Ἀρριανὸς λέγων ὅτι ἐν Θήβαις τῆς Ἄνω Αἰγύπτου κατασκευάζουσι μύρρινα ἀγγεῖα ὡς καὶ ὑέλινα. Ἐκ τῶν σῳζομένων τεχνητῶν μυρρίνων ἀγγείων τὰ καλύτερα εἶναι: τὸ ἀγγεῖον τοῦ τρυγητοῦ ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Νεαπόλεως· τὸ ἀγγεῖον τοῦ Barberini ἢ τοῦ Portland ἐν τῷ Βρεττανικῷ Μουσείῳ καὶ ἄλλα τινὰ δευτερευούσης ἀξίας ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λούβρου. Τὰ ἀγγεῖα ταῦτα, τὰ ὁποῖα καλοῦνται καὶ *διπλᾶ ὑάλινα ἀγγεῖα,* κοσμοῦνται δι' ἐκτύπων παραστάσεων γαλακτώδους χρώματος ἐπὶ ἐδάφους βαθέος κυανοῦ ἢ ἀμαυροῦ ἡμιδιαφανοῦς. Τὰ πραγματικὰ μύρρινα ἀγγεῖα, ἀποτελοῦντα πολύτιμον θησαυρὸν ὕλης καὶ τέχνης, οὐδέποτε ἀπωλέσθησαν, ἀλλὰ μετεδόθησαν ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν διὰ μέσου τῶν αἰώνων· καὶ ἀφοῦ τὸ πρῶτον ἐχρησιμοποιήθησαν ἐν εἰδωλολατρικοῖς ναοῖς, ἐχρησίμευσαν ἔπειτα καὶ ἐν χριστιανικαῖς ἐκκλησίαις, διακοσμηθέντα καταλλήλως δι' ἐπιχρύσων καὶ ἀργυρῶν ἐπιθημάτων. Β. Δ. Θ.

**μύρρινος** (ὁ) *[Βοτ.].* Ἐκλήθη οὕτω ὑπὸ τοῦ Θεοφράστου ὁ *ἥμερος καὶ ἀείφυλλος θάμνος,* ὅστις ἐκαλλιεργεῖτο εἰς τὰ ὄρη τῆς Προποντίδος.

**Μυρρινοῦς** *['Αρχ. Γεωγρ.].* Ἀρχαῖος δῆμος τῆς Ἀττικῆς. Ἔκειτο κατὰ τὴν ἀνατολικὴν πλευρὰν αὐτῆς καὶ δὴ πλησίον τοῦ δήμου Πρασιῶν, ἤτοι τοῦ σημερινοῦ χωρίου Πόρτο - Ράφτη, καὶ παρὰ τὸ κατεστραμμένον νῦν χωρίον Μεράντα. Ἐν Μυρρινοῦντι ἐλατρεύετο, κατὰ τὸν Παυσανίαν, ἡ Κολαινὶς Ἄρτεμις, ἧς ὑπῆρχε ξόανον καὶ ναός. Οἱ Μυρρινούσιοι ἀνῆκον, κατά τινας μὲν ἐπιγραφάς, εἰς τὴν Πανδιονίδα φυλήν, κατ' ἄλλας δὲ εἰς τὴν Αἰγηΐδα. Β. Δ. Θ.

**μυρρίς** (ἡ) (Myrris) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *σκιαδανθῶν,* περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, ἰθαγενεῖς τῶν ὀρεινῶν μερῶν τῆς Εὐρώπης. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων εἰδῶν ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μυρρὶς ἡ εὐώδης* (Myrris odorata), πόα πολυετὴς καὶ ἀρωματική, ἀπαντῶσα εἰς τὰς ὀρεινὰς τοποθεσίας τῆς Εὐρώπης, καλλιεργουμένη δὲ καὶ πρὸς κόσμον. Δ. Ν. Π.

*Μυρρὶς ἡ εὐώδης.*

**μυρρίτης *λίθος*·** βλ. *μύρρινα ἀγγεῖα.*

**μυρρόλη** (ἡ)· βλ. *μύρον.*

**Μυρσίλος.** Τύραννος τῆς Μυτιλήνης, σύγχρονος καὶ πολέμιος τοῦ Πιττακοῦ. Εἰς τὴν κατ' αὐτοῦ ἐπαναστατικὴν κίνησιν ἀνάγονται κατὰ μέγα μέρος τὰ «στασιωτικὰ» ποιήματα τοῦ Ἀλκαίου (*Ἀθήν.* Ι' 430). Ἐφονεύθη κατά τινα στάσιν. Π. Ν. Π.

— **Μυρσίλος** ἢ ***Μυρτίλος.*** Λέσβιος ἱστορικὸς ἐκ Μηθύμνης, ἀκμάσας ἐπὶ Πτολεμαίου τοῦ Φιλαδέλφου. Ἔγραψε «Λεσβιακά», ἐνδιαφέροντα καὶ διὰ τὴν ἐν γένει ἱστορίαν τῶν Πελασγῶν, καὶ «Ἱστορικὰ παράδοξα». Τὰ σωζόμενα ἀποσπάσματα εὕρηνται ἐν Fragm. Histor. Graec. τόμ. Δ' 455-460. Π. Ν. Π.

— **Μυρσίλος.** Τὸ παρ' Ἕλλησιν ὄνομα τοῦ ἀρχαίου τυράννου τῶν Σάρδεων *Κανδαύλου,* υἱοῦ τοῦ Μύρσου (*Ἡρόδ.* Α' 7). Π. Ν. Π.

**μυρσινέλαιον** (τὸ) *[Χημ.].* Τὸ αἰθέριον ἔλαιον τῆς *μυρσίνης,* ἤτοι *μύρτου τῆς κοινῆς.* Ταυτόσημον πρὸς τὸ *μυρτέλαιον* (βλ. λ.). Σ. Γ.

**Μυρσινερὸν** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Μοκροῦ (Ζερνοβίτσης) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Πεπελές.* Κάτ. (1928) 79. Χ. Δ.

**μυρσίνη** (ἡ) (Myrsine) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρσινοειδῶν* ἢ *μυρσινιδῶν,* περιλαμβάνον θάμνους ἢ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἐκ τῶν 75 περίπου εἰδῶν, ἅτινα περιλαμβάνει τὸ γένος, γνωστότερα εἶναι: ἡ *μυρσίνη ἡ ἀφρικανικὴ* (Myrsine africana), ἰθαγενὴς θάμνος τῆς νοτιοανατολικῆς Ἀφρικῆς καὶ τῶν περὶ τὰ Ἱμαλάϊα χωρῶν, καὶ ἡ *μυρσίνη ἡ μικροκέφαλος* (Myrsine capitellata), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Νεπάλης. Οἱ ἀρχαῖοι τὴν μυρσίνην ἐκάλουν *μύρτον* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

— *[Παλαιοφυτολ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα *μυρσινῶν* εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὴν Εὐρώπην καὶ Γροιλανδίαν. Ἐν Ἑλλάδι εὑρέθησαν ἀπολιθωμένα λείψανα τῶν εἰδῶν *μυρσίνη Graeca, μυρσίνη Kymenea, μυρσίνη Proteus* καὶ *μυρσίνη Selenes* ἐντὸς τῶν τριτογενῶν στρωμάτων τῆς λιγνιτοφόρου λεκάνης τῆς Κύμης ἐν Εὐβοίᾳ. Γ.Κ.Γ.

**Μυρσίνη.** Ἀθηναία, θυγάτηρ Καλλίου τοῦ Ὑπεροχίδου, σύζυγος τοῦ Πεισιστρατίδου Ἱππίου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέκτησε πέντε τέκνα. Α. Θ. Σ.

**Μυρσίνη** *[Γεωγρ.].* —1) Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἀποτελοῦσα ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐντὸς πεδιάδος καὶ παρὰ τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Πηνειοῦ, ἡμίωρον πρὸς ΝΔ. τῶν Λεχαινῶν, ἐντὸς ἐκτεταμένων ἀμπελώνων, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Σουλεϊμάναγα.* Κάτ. (1928) 1.288.

—2) Χωρίον τῆς κοινότητος Τουρλωτῆς τῆς ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασηθίου. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον καὶ ταχυδρομικὸν γραφεῖον. Κάτοικοι (1928) 339.

—3) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Πρεβέζης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Συντικλιά.* Κάτ. (1928) 210. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μέγα Δένδρον.* Χ. Δ.

— **Μυρσίνη** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τοῦ Πόντου ἐν τῷ νομῷ Τραπεζοῦντος καὶ ἐπὶ τοῦ Πυξίτου ποταμοῦ. Κατῳκεῖτο ἄλλοτε ὑπὸ 80 ἑλληνικῶν οἰκογενειῶν, αἵτινες μετηνάστευσαν εἰς Ἑλλάδα τῷ 1923. Ε.Ι.Χ

—**Μυρσίνη** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ὅρμος τῆς δυτικῆς πλευρᾶς τῆς νήσου Σχοινοῦσα (πλάτ. 36°52, Β, μῆκ. 25°33' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1837: Paros and Naxos) τῆς ἐν τῇ συστάδι τῶν Κουφονησίων τῆς Παροναξίας. Σ. Ε. Λ.

**Μυρσινιὰ** *[Γεωγρ.].* Μικροσυνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πλατανοβρύσεως (Ὀλᾶ) τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Δράμας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Τσαλῆ-Μαχαλέ.* Κάτ. (1928) 25. Χ. Δ.

**Μυρσίννα** (Mursinna), ***Χριστιανὸς-Λουδοβῖκος.*** Διάσημος Γερμανὸς χειρουργὸς (1744—1823). Μετὰ τὸ πέρας τῶν πανεπιστημιακῶν του σπουδῶν ὑπηρέτησεν ὡς στρατιωτικὸς χειρουργὸς καὶ ἐδημοσίευσε παρατηρήσεις ὑπὸ τὸν τίτλον: «Beobachtungen über dte Ruhr und die Faulfieber» (1780). Κατόπιν ἐξέδωκε: «Med. chir. Beobachtungen, nebst einigen Anmerkungen darüber» (1782) καὶ «Abhandlung. über die Kraukheiten der Schwangeren, der Gebärenden, Wöcherinnen und Saüglinge» (1784). Τῷ 1787 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς χειρουργικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τοῦ Βερολίνου. Τῷ 1801 ἤρξατο τῆς ἐκδόσεως πεντατόμου συγγράμματος χειρουργικῆς ὑπὸ τὸν τίτλον: «Journal für die Chirurgie, Arzneykunde und Geburtshilfe». Κατὰ τὸ διάστημα μιᾶς τεσσαρακονταετίας ἐκτὸς διαφόρων ἄλλων ἐγχειρήσεων ἐξετέλεσε καὶ ὑπὲρ τὰς 900 ἐπεμβάσεις μαιευτικὰς λίαν ἐπιτυχεῖς, ἐκτὸς ἐλαχίστων ἐξαιρέσεων. Ἀνῆκεν εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν αὐτοδιδάκτων χειρουργῶν τῆς ἐποχῆς του, οἵτινες διὰ τῶν σοβαρῶν μελετῶν καὶ τῆς ἐκτάκτου δραστηριότητός των κατέλαβον ἐξέχουσαν θέσιν ἐν τῇ ἐπιστήμῃ. Ο. Ρ.

**μυρσινοειδῆ,** ἢ *μυρσινίδαι* (τά, οἱ) *[Βοτ.].* Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων,* περιλαμβάνουσα θάμνους, δενδρύλλια καὶ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν τροπικῶν χωρῶν τῆς γῆς. Ἀξιολογώτερα γένη εἶναι ὁ *αἰγίκερας,* ἡ *ἐμβελία,* ἡ *μυρσίνη* καὶ ὁ *πύργος* (βλ. τὰς λ.). Δ. Ν. Π.

**μυρσινοειδὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μυρσίνην.

**Μύρσινος** *['Αρχ. Γεωγρ.].* Πόλις παραθαλασσία τῆς Ἠλείας ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἀγούσης ἐκ Δύμης εἰς Ἦλιν καὶ εἰς 70 στάδια ἀπὸ τῆς δευτέρας. Ἐπὶ τῆς ἐποχῆς τοῦ Στράβωνος (Η, 341) ἐκαλεῖτο ἡ πόλις *Μυρτούντιον.* Ἐρείπιά της εὑρέθησαν παρὰ τὴν λιμνοθάλασσαν *Κοτίκι,* ἣν τότε δὲν εἶχεν ἀκόμη ἀποχωρήσει τῆς θαλάσσης ἡ ἀνάπτυξις προσχωματικοῦ βέλους (πλάτ. 38°00' Β., μῆκ. 21°19' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 207: Castro Tornese to Venetico). Σ.Ε.Λ.

**Μυρσινοχώρι** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Βουφράδος καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Πισπίσια.* Κάτ. (1928) 323. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μεταμόρφωσις (Σκάρμιγκα).* Χ. Δ.

**μυρσινών,** *—ῶνος* (ὁ), καὶ ***μυρρινών*·** τόπος ὅπου φύονται πολλαὶ μυρσίναι, δημοτ. *μουρτερή.*

**μυρσίφυλλον** (τὸ) (Myrsiphyllum) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *λειριοειδῶν,* περιλαμβάνον πόας πολυετεῖς, ἰθαγενεῖς τῶν περὶ τὸ ἀκρωτήριον τῆς Καλῆς Ἐλπίδος χωρῶν. Ἐκ τῶν ἐλαχίστων εἰδῶν γνωστότερον εἶναι τὸ *μυρσίφυλλον τὸ ἀσπαραγοειδὲς* (Myrsiphyllum asparagoides), πόα πολυετής, ἄφυλλος, ἀναρριχητική, καλλιεργουμένη ἐνιαχοῦ ὡς κοσμητικὸν φυτόν. Δ. Ν. Π.

**Μύρσος.** —1) Ἀρχαιότατος βασιλεὺς τῶν Λυδῶν, ζήσας περὶ τὰ μέσα τοῦ Η' π. Χ. αἰῶνος, τοῦ ὁποίου ἡ δυναστεία, ὡς ἀναφέρει ὁ Ἡρόδοτος (Α, 7) εἷλκε τὴν καταγωγὴν ἀπὸ τῶν Ἡρακλειδῶν. —2) Υἱὸς τοῦ Γύγου, βασιλέως τῶν Λυδῶν, φονευθεὶς περὶ τὰ 500 π. Χ. κατά τινα μάχην ὑπὸ τῶν ἐπαναστησάντων Καρῶν. Α. Θ. Σ.

**Μυρστὲγκ** *[Γεωγρ.]·* βλ. *Μύρτσστεγκ.*

**μυρτάδα** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία εἴς τινας νήσους τοῦ Ἰονίου πελάγους ποικιλίας τινὸς τοῦ φυτοῦ *ἐλαία ἡ εὐρωπαϊκή.*

**μυρταΐτης,** καὶ ***μέγας μυρταΐτης.*** Τίτλος αὐλικῶν ἀρχόντων τῶν παλατίων τοῦ Βυζαντίου, οἵτι-

Digitized by Google

νες ἀναφέρονται κατὰ τοὺς τελευταίους αἰῶνας τῆς αὐτοκρατορίας. Ν. ΚΛΣ

**Μυρτάλη.** —1) Ρωμαία ἀπελεύθερος, ἐρωμένη τοῦ ποιητοῦ Ὁρατίου, ἀναφερομένη εἰς τὰς Ὠδάς του (I 33.14) —2) Θυγάτηρ τοῦ Μυτιληναίου βοσκοῦ Λάμωνος, πρόσωπον τῶν Ποιμενικῶν τοῦ Λόγγου (Α 3.12 *κ.ἀ.*) —3) Σύζυγος τοῦ ἰατροῦ Ἀγαθημέρου. —Π.

**μυρτᾶτοι** (οἱ), ἢ *μουρτᾶτοι.* Σῶμα τῆς βασιλικῆς φρουρᾶς τοῦ Βυζαντίου, ἀναφερόμενον κατὰ τοὺς τελευταίους αἰῶνας τῆς αὐτοκρατορίας. Ἦσαν πεζοὶ τοξόται καὶ ἐφρούρουν τοὺς περιβόλους τῶν παλατίων. Ὁ ἀρχηγὸς αὐτῶν ἦτο ὁ *στρατοπεδάρχης τῶν μυρτάτων.* Ν. ΚΛΣ

**μυρτέλαιον** (τὸ) *[Χημ.].* Τὸ αἰθέριον ἔλαιον *μύρτου τῆς κοινῆς* (Myrtus communis). Εἶναι ὑγρὸν ἄχρουν ἰδιάζουσης ἀρωματικῆς ὀσμῆς, ἀδιάλυτον εἰς τὸ ὕδωρ καὶ διαλυτὸν εἰς τὸν αἰθέρα, τὴν ἀλκοόλην, τὸ χλωροφόρμιον, τὰ λιπαρὰ καὶ αἰθέρια ἔλαια. Ἔχει εἰδικὸν βάρος 0.890—0.925 καὶ εἰδικὴν στροφὴν +8 μέχρι +28°. Περιέχει ὡς συστατικὰ πινένιον, κινεόλην καὶ διπεντέντιον. Χρησιμοποιεῖται δι' ἀρωματικοὺς σκοποὺς καὶ πρὸς παρασκευὴν τῆς *μυρτόλης* ἥτις εἶναι τὸ κλάσμα τοῦ μυρτελαίου τὸ ἀποστάζον ἀπὸ 160° ἕως 180°. Ἡ μυρτόλη αὐτὴ χρησιμοποιεῖται θεραπευτικῶς εἰς τὰς ἀσθενείας τοῦ ἀναπνευστικοῦ συστήματος. Σ. Γ.

**Μυρτηνόν,** καὶ *Μύρτιον,* ἢ ***Μυρτώνιον*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Μικρὰ πολίχνη τῆς Θράκης, ἀλλὰ στρατηγικῆς σπουδαιότητος, τὴν ὁποίαν Φίλιππος ὁ Μακεδὼν κατέλαβε παρασπόνδως παρὰ τῶν Ἀθηναίων τῷ 346 π.Χ. μετὰ τοῦ Σερρείου, Ἐργέσκης καὶ Δορίσκου, ἐξαναγκάσας τὴν φρουρὰν τῶν Ἀθηναίων νὰ ἐκκενώσῃ αὐτὴν (*Δημοσθ.* Περὶ Στεφ. 27). Ποῦ ἔκειτο ἀκριβῶς δὲν εἶναι ἐξηκριβωμένον. Ἐκ τοῦ τόπου ὅμως, ὅπου ἀνευρέθη ἐπιγραφὴ ἀναγράφουσα τὸ ὄνομα τῆς πολίχνης, φαίνεται ὅτι ἔκειτο ὅπου ἡ νῦν κωμόπολις *Χώρα,* ἢ μᾶλλον, κατὰ Alb. Dumont, τὸ *Μυριόφυτον.* Α. Θ. Σ.

**μυρτιὰ** (ἡ) *[Βοτ.].* Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *μύρτος ἡ κοινή.*

**Μυρτιὰ** *[Γεωγρ.].* —1) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Τριχωνίδος τοῦ νομοῦ Αἰτωλίας καὶ Ἀκαρνανίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐγγὺς τοῦ Κεφαλοβρύσου, ἀπὸ τοῦ ὁποίου ἀπέχει 6 περίπου χλμ. καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Γουρίτσα.* Κάτ. (1928) 354. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία καὶ συνοικισμοὺς *Λυκοστόμιον, Παλαιόμυλος, Πεζούλια* καὶ *Πέρεβος.*

— 2) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ ποταμοῦ Ἰαρδάνου, 2 ὥρας πρὸς Β.Δ. τοῦ Πύργου, ἐπὶ τῆς πρὸς τὴν Ἀμαλιάδα σιδηροδρομικῆς γραμμῆς, καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 783. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Καλακεῖκα.* Ἐπίσης περιελάμβανε μέχρις ἐσχάτως τὸ χωρίον καὶ τὴν μονὴν τῆς *Σκαφιδιᾶς,* ἅτινα ἀποσπασθέντα ἀπετέλεσαν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα.

— 3) Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Ποντοκερασιᾶς (Πατρὰτ) τῆς ἐπαρχίας Κιλκὶς τοῦ νομοῦ Θεσσαλονίκης, ὀνομαζόμενος πρότερον *Χαμζαλῆ.* Κάτ. (1928) 51.

— 4) Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ἐπιδαύρου Λιμηρᾶς τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 590. Χ. Δ.

— **Μυρτιᾶς κόλπος** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Κόλπος διανοιγόμενος εἰς τὴν Ἀν. πλευρὰν τῆς ΒΑ. χερσονήσου τῆς Σάμου, μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Πράσσο καὶ Γάτα, ἀνοικτὸς πρὸς Α. Ἐν αὐτῷ ἀνέμενεν εὐνοϊκὸν ἄνεμον ὁ στόλος τοῦ Γεωργ. Σαχτούρη, ὅπως ἐπιδώσῃ ἀπὸ Β. εἰς τὸ στενὸν τῆς Μυκάλης, ἵνα ἀγκυροβολῶν ἐκεῖ, ἀποτρέψῃ τὴν ἀπόβασιν τῶν Τούρκων εἰς Σάμον (βλ. λ. *Ντὰρ Μπογάζ*). Σ. Ε. Λ.

**Μυρτίδια** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Καρβουνάδων τῆς ἐπαρχίας Κυθήρων τοῦ νομοῦ Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας, ὀνομαζόμενον πρότερον *Πιτσιάνικα.* Κάτ. (1928) 177. Χ. Δ.

**μυρτίδιον** (τὸ) (Vaccinium) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρτιδοειδῶν* ἢ *μυρτιδιδῶν,* περιλαμβάνον θάμνους ἢ καὶ δένδρα ἰθαγενῆ τῶν ὀρεινῶν μερῶν τῶν εὐκράτων χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Τὸ γένος περιλαμβάνει περὶ τὰ 100 εἴδη ἀειθαλῆ, ἐπίφυτα, καρποφόρα, κοσμητικὰ ἢ ποικίλως χρήσιμα. Ἐκ τῶν ἀξιολογωτέρων εἰδῶν εἶναι τὸ *μυρτίδιον ὁ ἀρκτοστάφυλλος* (Vaccinium arctostaphyllus), θάμνος ἀνεπτυγμένος, ἰθαγενὴς τῶν βορείων εὐκράτων χωρῶν τῆς Ἀσίας, οὗ τὸ ἀφέψημα τῶν φύλλων χρησιμοποιεῖται ἀντὶ τείου, ὅπερ εἶναι γνωστὸν ὑπὸ τὸ ὄνομα *τεῖον τῆς Τραπεζοῦντος. Μυρτίδιον ἡ Ἰδαία ἄμπελος* (Vaccinium vitis Idea). Εἶναι κοσμητικὸς θάμνος ἰθαγενὴς τῶν βορείων χωρῶν τῆς Εὐρώπης, τῆς κεντρικῆς Ἀσίας καὶ τῆς βορείου Ἀμερικῆς, ἧς αἱ ῥᾶγες, αἵτινες ἔχουσι γλυκόξινον γεῦσιν καὶ χρῶμα ἐρυθρόν, χρησιμοποιοῦνται πρὸς κατασκευὴν γλυκοῦ. *Μυρτίδιον τὸ δενδρῶδες* (Vaccinium arboreum). Ἰθαγενὴς θάμνος τῶν Καρολίνων νήσων, φθάνων εἰς ὕψος 6 περίπου μέτρων καὶ καλλιεργούμενος πρὸς κόσμον. *Μυρτίδιον τὸ καναδικὸν* (Vaccinium canadensis). Ἰθαγενὴς θάμνος τῆς Ἀμερικῆς, οὗ αἱ ῥᾶγες εἶναι ἐδώδιμοι, χρώματος κυανοῦ καὶ γεύσεως γλυκείας. *Μυρτίδιον τὸ κοινὸν* (Vaccinium vulgarum). Εἶναι θάμνος πολυκαρπικὸς ἰθαγενὴς τῶν βορείων χωρῶν τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας καὶ ἀπαντῶν καὶ παρ' ἡμῖν εἰς τὰ ὀρεινὰ μέρη τῆς Μακεδονίας καὶ τῆς Θεσσαλίας. Ὁ καρπὸς του μύρτιλλον, κοινῶς φίγγι, εἶναι ῥὰξ μελανὴ εὔγευστος καὶ εὐστόμαχος. Ἀποξηραινόμενος χρησιμοποιεῖται εἰς τὴν φαρμακευτικήν. Τὸ εἶδος τοῦτο πολλαπλασιάζεται εὐχερῶς διὰ παραφυάδων, σπορᾶς καὶ μοσχευμάτων καὶ τὸν καρπόν του μεταχειρίζονται καὶ πρὸς χρωματισμὸν τῶν οἴνων καὶ ἄλλων οἰνοπνευματωδῶν ποτῶν. *Μυρτίδιον τὸ κορυμβανθὲς* (Vaccinium corymbosum). Ἰθαγενὲς τῆς Ἀμερικῆς καλλιεργούμενον ἐνιαχοῦ ὡς κοσμητικόν. *Μυρτίδιον τὸ πενσυλβανικὸν* (Vaccinium pennsylvanicum). Ἰθαγενὲς τῆς βορείου Ἀμερικῆς, ὅπου καλλιεργεῖται διὰ τὰς ῥᾶγάς του, αἵτινες εἶναι ἐδώδιμοι. Δ. Ν. Π.

**μυρτιδιοειδῆ** (τὰ) *[Βοτ.]*· βλ. λ. *μυρτοειδῆ.*

**Μυρτιδίων *Μονή*.** Τὸ εἰς ἀπόστασιν 12 χλμ. Β.Δ. τῆς πόλεως τῶν Κυθήρων προσκύνημα τῆς *Μυρτιδιωτίσσης* (βλ. λ.) ἀποτελούμενον ἀπὸ μεγαλοπρεπῆ ναὸν μετὰ μεγάλου περιβόλου, ἐντὸς τοῦ ὁποίου γύρωθεν εἶναι κτισμένα κελλία, δυνάμενα νὰ περιλάβουν 500 περίπου προσκυνητάς, οἵτινες κατὰ ἐπικρατοῦσαν συνήθειαν μεταβαίνουν κατ' ἔτος (1—15 Αὐγούστου) καὶ παραμένουν εἰς αὐτά. Τὸ προσκύνημα ὑπάγεται εἰς τὴν «Ἐγχώριον περιουσίαν Κυθήρων». Ὁ ναὸς καὶ τὰ πλεῖστα τῶν κελλίων εἶναι κτίσματα τοῦ ΙΘ' αἰῶνος καὶ ἀνηγέρθησαν διὰ κυθηραϊκῶν ἐράνων. Σ. Σ.

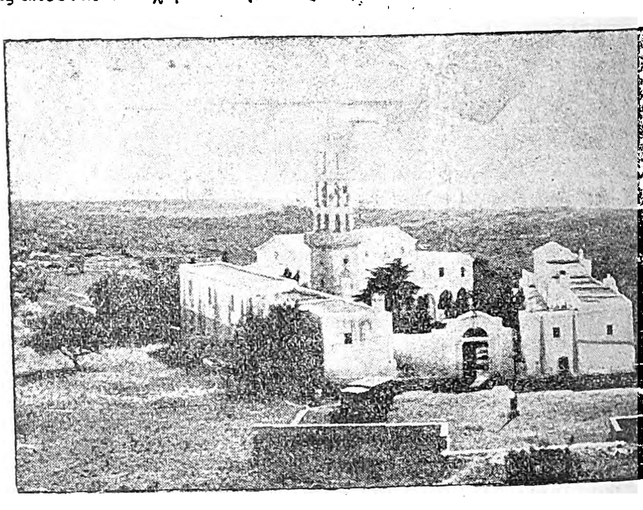

*Ἡ μονὴ Μυρτιδίων.*

**Μυρτιδιώτισσα** (ἡ). Μεγάλη φορητὴ εἰκὼν τῆς Θεοτόκου, φερούσης ἐπὶ τῆς ἀριστερᾶς χειρὸς τὸν Χριστὸν βρέφος, εὑρεθεῖσα πρὸ 400 περίπου ἐτῶν ἐν τῇ δυτικῇ ἀκατοικήτῳ περιοχῇ τῆς νήσου Κυ-

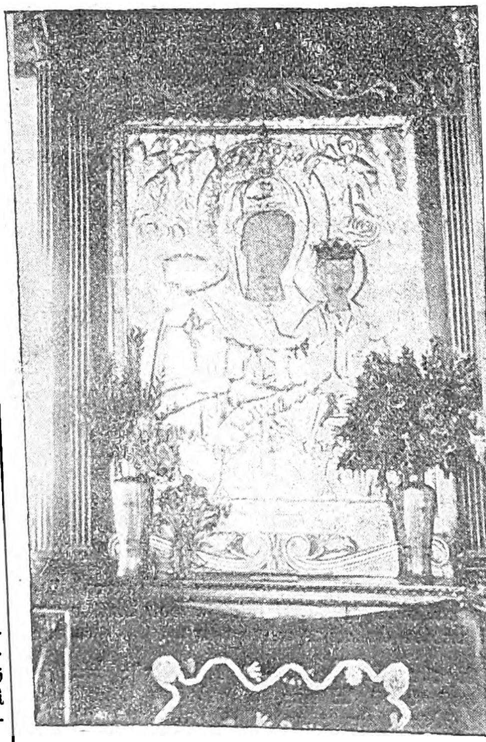

*Ἡ εἰκὼν τῆς Μυρτιδιωτίσσης.*

θήρων ἐντὸς χώρου καταφύτου ἐκ μυρτιῶν, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα τῆς περιοχῆς («Μυρτίδια») καὶ τῆς εἰκόνος. Ἐν τῷ τόπῳ τῆς εὑρέσεως ἀνηγέρθη κατ' ἀρχὰς ναΐσκος, εἰς τὸν χῶρον τοῦ ὁποίου μετὰ τὸ 1843 ᾠκοδομήθη μέγας ναὸς (βλ. *Μυρτιδίων μονή*). Πρὸς τιμὴν τῆς Εἰκόνος τελεῖται παγκυθηραϊκὴ πανήγυρις τὴν 24ην Σεπτεμβρίου ἑκάστου ἔτους, ἐπέτειον τῆς εὑρέσεώς της, καὶ τοῦ θαύματος τῆς ἰάσεως παραλύτου. Σ. Σ.

**Μυρτιδιώτισσα** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ὅρμος τῆς ΝΔ. ἀκτῆς τῶν Κυθήρων (πλάτ. 36° 17' Β., μῆκος 22° 55' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1685: Venetico to Spezia), οὕτω ὀνομαζόμενος ἀπὸ τῆς ἐκεῖ πλησίον φερωνύμου μονῆς. Ὑπὸ τῶν ναυτῶν ὀνομάζεται καὶ *Βαθὺ Αὐλάκι.* Σ. Ε. Λ.

**Μυρτίλος,** ἢ ***Μύρτιλος*** *[Μυθολ.].* Μυθικὸς ἥρως τῆς Ἤλιδος, υἱὸς τοῦ Ἑρμοῦ ἢ τοῦ Διὸς ἢ τοῦ Ὑπεροχείδου καὶ τῆς Μυρτοῦς ἢ τῆς Φαεθούσης. Ἦτο περίφημος ἡνίοχος καὶ συγγενὴς τοῦ Οἰνομάου, διευθύνων τὸ ἅρμα αὐτοῦ εἰς τοὺς ἀγῶνάς του πρὸς τοὺς μνηστῆρας τῆς Ἱπποδαμείας καὶ καταβαλὼν δεκαεπτὰ ἐξ αὐτῶν. Ἀγαπῶν καὶ αὐτὸς τὴν Ἱπποδάμειαν καὶ λαβὼν παρὰ τοῦ Πέλοπος τὴν ὑπόσχεσιν μιᾶς μετ' αὐτῆς νυκτερινῆς παραμονῆς, ἐφόνευσε κατὰ τὸν ἀγῶνα Πέλοπος καὶ Οἰνομάου τὸν δεύτερον, λογχίσας τοὺς ἵππους ἢ ταράξας αὐτοὺς ἢ καταστρέψας τοὺς ἄξονας τοῦ ἅρματος. Αἰτήσει ὅμως τῆς Ἱπποδαμείας, κατεποντίσθη ὑπὸ τοῦ Πέλοπος παρὰ τὴν Γεραιστόν. Ἐκβληθεὶς ὑπὸ κλύδωνος εἰς Φενεάτιδα, ἐτάφη ὄπισθεν τοῦ ναοῦ τοῦ Ἑρμοῦ καὶ ἐτιμᾶτο κατ' ἔτος διὰ νυκτερινῶν ἐναγισμῶν. Ναὸν αὐτοῦ («κενὸν ἠρίον») ἵδρυσεν ἐν Ὀλυμπίᾳ καὶ ὁ Πέλοψ καὶ κατέστησε θυσίας πρὸς αὐτὸν καὶ τὸν Ἑρμῆν, πρὸς ἀποτροπὴν τῆς ἐκραγείσης ὀργῆς τοῦ τελευταίου. Ὁ Μυρτίλος εἰκονίζετο ἐπὶ τοῦ ἀετώματος τοῦ ἐν Ὀλυμπίᾳ ναοῦ τοῦ Διὸς παρὰ τοὺς ἵππους τοῦ ἅρματος τοῦ Οἰνομάου. Ἀπ' αὐτοῦ ὠνομάσθη, κατά τινας τῶν ἀρχαίων, τὸ Μυρτῷον πέλαγος. Π. Ν. Π.

— **Μυρτίλος.** Ἀρχαῖος Ἕλλην κωμικὸς συγγραφεύς, υἱὸς τοῦ Λύσιδος καὶ ἀδελφὸς τοῦ κωμικοῦ Ἑρμίππου. Ἔγραψεν: «Ἔρωτας» καὶ «Τιτανόπανας». Διεσώθησαν ἀποσπάσματά τινα τοῦ τελευταίου καὶ ἔμμετρος μῦθος ἐξ ἀγνώστου ἔργου. Π. Ν. Π.

—**Μυρτίλος.** Ἀθηναῖος πολιτικός, γνωστὸς ἐκ τῆς ὑπογραφῆς του εἰς τὰς πεντηκονταετεῖς σπονδὰς καὶ τὴν ἐπακολουθήσασαν συμμαχίαν Ἀθηνῶν καὶ Σπάρτης, κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον (*Θουκ.* Ε' 19.24) Π. Ν. Π.

— **Μυρτίλος.** Ὁ «ἐπὶ τοῦ οἴνου» τοῦ βασιλέως Πύρρου, διαβαλὼν καὶ ἐπιτυχὼν τὸν φόνον τοῦ Νεοπτολέμου παρὰ τοῦ βασιλέως (*Πλουτάρχ.* Πύρρ. 5). Εἰκονίζεται ἐπὶ ἠπειρωτικοῦ νομίσματος. Π.Ν.Π.

— **Μυρτίλος.** Λέσβιος ἱστορικὸς (βλ. *Μυρσίλος*).

**Μυρτίλος κόλπος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Ὁ βορειοδυτικώτερος τῶν κόλπων τῆς Κρήτης, διανοιγόμενος ἀνατολικῶς τῆς χερσονήσου τοῦ Κωρύκου ἢ Κομάρου καὶ δυτικῶς τῆς τοῦ Δικτυνναίου (Σταδ. Μεγ. θαλάσσ. 338). Φέρεται καὶ ὡς *Μαρτίλος,* δι' ὃ καὶ πιθανολογεῖται ἡ ὀνομασία ἐκ κακῆς ἀντιγραφῆς τοῦ *Μάρτιδος,* συντετμημένης γραφῆς τοῦ *Βριτομάρτιδος* σημαίνουσα *Παρθένου Κόλπος.* Πάντως, πρόκειται περὶ τοῦ συγχρόνου *κόλπου τῆς Κισάμου.* Σ. Ε. Λ.

**μύρτινος,** *—η, —ον*· ὁ ἐκ μύρτου, ἐκ μυρσίνης κατεσκευασμένος: «μύρτινος στέφανος».

**Μύρτιον** (τό). Ὄνομα ἑταίρας τινός, ἀναφερομένης ὑπὸ τοῦ Λουκιανοῦ (Νεκρ. Διάλ. XXVII, διὰ τὸν ἔρωτα τῆς ὁποίας ηὐτοκτόνησε Λάμπις ὁ Ἀκαρνάν. Α. Θ. Σ.

**Μύρτιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Πολίχνη τῆς Θράκης, ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Προποντίδος, ἡ ἄλλως ὑπὸ τοῦ Σουΐδα καλουμένη *Μυρτώνιον* (βλ. *Μυρτηνον*). Α. Θ. Σ.

Digitized by Google

**Μύρτις,** ἢ ***Μύρτης.*** Τύραννος ἐν τῷ ἀρχαίῳ Ἄργει. Ὑπὸ τοῦ Δημοσθένους παροιμιωδῶς χαρακτηρίζεται ὡς προδότης καὶ ὡς δουλώσας τὴν πατρίδα του καὶ ὑπὸ τοῦ Πολυβίου παραλληλίζεται πρὸς τὸν Μνασίαν καὶ Τελέδαμον. Περιεστοιχίζετο ὑπὸ κολάκων, ἐν οἷς καὶ ὁ χορευτὴς Κλεώνυμος. Π. Ν. Π.

**Μυρτίς.** Ἀοιδὸς καὶ λυρικὴ ποιήτρια ἐξ Ἀνθηδῶνος τῆς Βοιωτίας φερομένη ὅτι ἐδίδαξε τὸν Πίνδαρον καὶ τὴν Κόρινναν. Ἦτο περίφημος διὰ τὴν τέχνην της («γλυκύηχος»), διαγωνισθεῖσα καὶ πρὸς τὸν Πίνδαρον. Π. Ν. Π.

**Μυρτίσκη** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς κοινότητος Ὀργάνης τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Μουσατζήκ.* Κάτ. (1928) 361. Χ. Δ.

**Μυρτιώτισσα.** Φιλολογικὸν ψευδώνυμον τῆς Ἑλληνίδος ποιητρίας Θεώνης *Δρακοπούλου* (βλ. λ.).

**μυρτοειδῆ** (τά), ἢ ***μυρτιδιοειδῆ,*** καὶ ***μυρτιδίδαι*** *[Βοτ.].* Οἰκογένεια φυτῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *δικοτυληδόνων,* περιλαμβάνουσα περὶ τὰ 80 γένη ἰθαγενῆ τῶν ὀρεινῶν χωρῶν τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου. Τὰ φυτὰ τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι δενδρύλλια ἢ δένδρα ἱκανοῦ ὕψους μὲ φύλλα ἀντίθετα, ἐνίοτε ἀπομεμονωμένα, ἄνευ μίσχου, ἁπλᾶ καὶ ἐλαιοφόρα καὶ ἄνθη ἑρμαφρόδιτα, κανονικά, διαφόρως διατεταγμένα, τετραμερῆ ἢ πενταμερῆ. Ὁ καρπὸς εἶναι δρύπη, κάψα, πυξίδιον ἢ ἀχαίνιον. Γνωστότερα γένη εἶναι ὁ *μελάλευκος,* ὁ *καλλιστήμων,* ἡ *βερθολεττία,* ὁ *μύρτος,* ἡ *ναπολεονία* κτλ. Πάντα τὰ γένη τῆς οἰκογενείας ταύτης παρέχουσι ξύλον σκληρὸν καὶ ἀσαπές, ἱστοὺς ὑφαντικούς, ἔλαιον ἀρωματικόν, φύλλα βαφικὰ ἢ φαρμακευτικὰ καὶ καρποὺς βρωσίμους. Δ. Ν. Π.

**μυρτοειδὴς** (ὁ, ἡ), *—ές* (τό)· ὁ ὅμοιος πρὸς μύρτα ἢ πρὸς τὸν καρπὸν τῆς μυρσίνης.

— **μυρτοειδὴς *μῦς*** *[Ἀνατομ.].* Οὗτος ἀποτελῶν μοῖραν τοῦ ρινικοῦ μυός, ἐκφύεται ἐκ τοῦ φατνιακοῦ ἐπάρματος τοῦ ἄνω τομικοῦ ὀδόντος καὶ φερόμενος πρὸς τἄνω καταφύεται εἰς τὴν ὀπισθίαν περιφέρειαν τῶν πτερυγίων τῆς ρινὸς (τῶν μυκτήρων). Καθέλκει τὸ πτερύγιον τῆς ρινός. Ι. Π.

**Μυρτόεσσα** *[Μυθολ.].* Μία ἐκ τῶν Ἀρκαδικῶν νυμφῶν, αἵτινες κατὰ τὴν παράδοσιν ἀνέθρεψαν τὸν Δία. Κατὰ τὸν Παυσανίαν (VIII, 31, 4) ἐσώζετο ἐπὶ τῆς ἐποχῆς του ἡ εἰκὼν αὐτῆς, φερούσης ὑδρίαν. Α. Θ. Σ.

**μυρτόλη** (ἡ) *[Χημ.]·* βλ. *μυρτέλαιον.*

**μύρτον** (τό)· ὁ καρπὸς τῆς μύρτου, κοιν. *μοῦρτο.*

— *[Ἀνατομ.]* Καλοῦνται *μύρτα* (caroncules myrtiformes ἢ hyménéales) τὰ μικρὰ ἐκεῖνα σαρκία, τὰ ἀνώμαλον ἔχοντα τὸ σχῆμα, ἅτινα εἶναι τὰ ὑπολείμματα τοῦ ἐκ τῆς πρώτης συνουσίας διαρραγέντος παρθενικοῦ ὑμένος. Προέρχονται δ' ἐκ τῆς ἐπουλώσεως τῶν σχηματισθέντων κρημνῶν ἐκ τῶν ρήξεων τοῦ ὑμένος ἢ ἐκ τοῦ σφακέλου μεμονωμένων τινῶν σημείων ὑπολειμμάτων τῆς ρήξεως τούτου. Γενικῶς ὑπάρχουσιν ἓν μέσον τοιοῦτον καὶ ἓν ἢ δύο πλάγια μύρτα. Εἶναι δὲ ταῦτα καὶ ἰατροδικαστικὸν σημεῖον ἀλάνθαστον ὅτι ὄντως ἐγένετο διακόρευσις. Μ. Ν. Κ.

*Μύρτος ἡ κοινὴ (κλάδος).*
[Α=τομὴ ἄνθους]

**μύρτος** (ἡ) (Myrtus) *[Βοτ.].* Γένος φυτῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυρτοειδῶν* ἢ *μυρτιδιδῶν,* περιλαμβάνον θάμνους, δενδρύλλια ἢ δένδρα φέροντα διογκώσεις ἐπὶ τοῦ κορμοῦ των, φύλλα ἀκέραια καὶ ἀντίθετα, ἄνθη ἐλάχιστα, κατὰ κῦμα διατεταγμένα, μὲ κάλυκα ἐκ 4—5 λοβῶν ἀποτελούμενον, 4—5 πέταλα ἐπ' ἀλλήλων διατεταγμένα, πολυπληθεῖς στήμονας καὶ πολύχωρον ᾠοθήκην. Ὁ καρπὸς εἶναι δρύπη. Τὸ γένος τοῦτο περιλαμβάνει περὶ τὰ 100 εἴδη, ἐξ ὧν εἰς τὰς παραμεσογείους χώρας ἀπαντᾷ ἓν μόνον, ἡ *μύρτος ἡ κοινὴ* (Myrtus communis), ἡ *μύρτος, μυρσίνη, μυρτίνη, μυρρίνη* ἢ *μύρρινος* τῶν ἀρχαίων συγγραφέων, γνωστὴ σήμερον παρ' ἡμῖν ὑπὸ τὰ ὀνόματα *μυρτιά, μερτιά, μερσινιά, σμερτιὰ* καὶ *σμυρτιά.* Εἶναι θάμνος ἀνεπτυγμένος, ἀρωματικὸς καὶ ἐνίοτε δενδρώδης. Ὁ καρπός του (*μύρτον,* κοινῶς *μερσινοκόκκωνο* ἢ *μερσινόκοκκο*) ἔχει χρῶμα μελανόν, εἶναι κατά τι μεγαλύτερος τοῦ κόκκου τοῦ πεπέρεως, ὑπόγλυκος καὶ ἀρωματικός. Τὸ εἶδος τοῦτο καλλιεργεῖται συχνότατα πρὸς κόσμον καὶ εἰς πλείστας ποικιλίας, ἐξ ὧν προτιμᾶται ἡ ***λευκόκαρπος*** (Myrtus communis leucocarpus), τὴν ὁποίαν ἀναφέρει καὶ ὁ Διοσκορίδης καὶ ὁ Θεόφραστος. Ὁ καρπὸς τῆς ποικιλίας ταύτης εἶναι λευκός, ὡριμάζει περὶ τὰς ἀρχὰς Νοεμβρίου, εἶναι εὐχυμότατος καὶ καταναλίσκεται ὡς τράγημα. Οἱ ἀρχαῖοι εἰς τοὺς καρποὺς καὶ τὰ φύλλα τῆς μυρσίνης ἀπέδιδον πλείστας ἰαματικὰς ἰδιότητας. Ὁ Διοσκορίδης γράφει περὶ αὐτῆς: «Μυρσίνη ἡ ἥμερος πρὸς μὲν τὴν ἰατρικὴν χρῆσιν ἡ μέλαινα τῆς λευκῆς ἁρμοδιωτέρα, καὶ ταύτης μᾶλλον ἡ ὀρεινή, τὸν μέντοι καρπὸν ἀτονώτερον ἔχει. Δύναμις δὲ αὐτῆς καὶ τοῦ καρποῦ στυπτική· δίδεται δὲ ὁ καρπὸς χλωρός τε καὶ ξηρὸς ἐσθιόμενος αἱμοπτυϊκοῖς καὶ τοὺς δακνομένους τὴν κύστιν· καὶ ὁ ἐκ τῶν χλωρῶν δὲ μύρτων ἐκθλιβέντων χυλὸς τὰ αὐτὰ ποιεῖ, εὐστόμαχος ὢν καὶ οὐρητικός». Τὸ αἰθέριον ἔλαιον, ὅπερ λαμβάνεται ἐκ τῆς ἀποστάξεως τῶν φύλλων τοῦ φυτοῦ χρησιμοποιεῖται πολλαχοῦ τῆς Ἀνατολῆς ὑπὸ τῶν λαϊκῶν μαζῶν δι' ἐντριβὰς κατὰ τῶν ρευματισμῶν, τὸ δὲ ἐκ τῶν ξηρῶν φύλλων της λαμβανόμενον ἄλευρον ὡς ἐπίπαστον κατὰ τῶν συγκαυμάτων τῶν βρεφῶν ἀντὶ *λυκοποδίου.* Οἱ κλάδοι τοῦ φυτοῦ τούτου τόσον παρ' ἡμῖν ὅσον καὶ ἐν Ἀνατολῇ χρησιμοποιοῦνται πρὸς διακόσμησιν, τὰ δὲ φύλλα του πρὸς ἐπίστρωσιν τῶν εἰσόδων τῶν ναῶν, τῶν σχολείων καὶ ἄλλων δημοσίων καταστημάτων κατὰ τὰς ἑορτασίμους ἡμέρας. Ἡ συνήθεια αὕτη εἶναι ἀρχαιοτάτη καὶ προέρχεται ἐκ τῆς Ἀνατολῆς. Κατὰ τὸν Ἡρόδοτον, οἱ Πέρσαι κατὰ τὰς τελετὰς αὐτῶν ἐπέστρωνον τὰς ὁδοὺς μὲ φύλλα καὶ κλάδους μύρτου (*Ἡροδ.* Ζ' 54), οἱ δὲ ἱερεῖς ἐστέφοντο μὲ κλάδους κατὰ τὰς θυσίας. Ἀλλὰ καὶ οἱ Ἕλληνες ἔφερον κατὰ τὰς ἑορτασίμους ἡμέρας κλάδους μύρτου, ἐπὶ δὲ τῶν νεκρῶν συνήθιζον νὰ καταθέτωσι καὶ στεφάνους ἐκ μύρτων. Ὡσαύτως κατὰ τὰ συμπόσια καὶ τὰς θυσίας ἔφερον στεφάνους ἐκ μύρτων, οἱ ἄρχοντες δὲ ἐκόσμουν διὰ μύρτων τὰς κεφαλάς των. Ἡ χρῆσις τῶν μυρτίνων στεφάνων ἦτο τοσαύτη, ὥστε ὑπῆρχον ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν Ἀθηνῶν ἰδιαίτερα διαμερίσματα *(μυρρίναι),* εἰς τὰ ὁποῖα ἀποκλειστικῶς ἐπωλοῦντο στέφανοι ἐκ μύρτων. Ὁ μύρτος ἦτο ἀφιερωμένος εἰς τὴν θεὰν Ἀφροδίτην, διὰ τοῦτο ὠνομάζετο καὶ *θάμνος ἱερὰ* καὶ ἐθεωρεῖτο ὡς σύμβολον τῆς παρθενίας· σήμερον δὲ κατὰ τοὺς γάμους, εἰς πλεῖστα μέρη τῆς Ἀνατολῆς, προσφέρουσιν εἰς τὴν νύμφην στέφανον ἐκ μύρτου. Κατὰ τὴν ἀρχαιότητα κατηναλίσκετο εὐρέως καὶ ὁ καρπὸς τῆς μύρτου (*μύρτον* ἢ *μυρτίς*). Ἐκ τῶν μύρτων τῶν μελανῶν παρεσκευάζετο ὁ καλούμενος *μυρρινίτης οἶνος.* Ἡ μύρτος ἡ κοινὴ εἶναι μακρόβιος θάμνος καὶ εὐδοκιμεῖ εἰς ὑγρὰς γαίας. Πολλαπλασιάζεται διὰ σπορᾶς καὶ μοσχευμάτων καὶ ἀπαντᾷ πολλαχοῦ ὡς αὐτοφυής. Τὰ φυτὰ ταῦτα προσβάλλονται μόνον ὑπὸ τῆς νόσου *ψωριάσεως,* ἥτις καταπολεμεῖται διὰ τῆς κλαδεύσεως τῶν προσβληθέντων κλάδων. Ἐκ τῶν διαφόρων εἰδῶν ἀξιολογώτερα εἶναι: *Μύρτος ἡ ἀκμηνοειδὴς* (Myrtus acmenoides), ἰθαγενὴς θάμνος τῆς Κουϊνσλάνδης, ὅπου καὶ καλλιεργεῖται διὰ τὰ φύλλα της, δι' ὧν ἀρωματίζεται τὸ τέϊον. *Μύρτος ἡ ἐδώδιμος* (Myrtus edulis), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Οὐρουγουάης, ὅπερ φθάνει εἰς ὕψος 8 περίπου μέτρων καὶ φέρει εὐμεγέθη ἐδώδιμον καρπόν. *Μύρτος ἡ εὐώδης* (Myrtus odoratus), ἰθαγενὴς θάμνος τῆς Ζαμάϊκας. *Μύρτος ἡ λοῦμα* (Myrtus luma), ἰθαγενὲς δένδρον τῆς Χιλῆς, φθάνον εἰς ὕψος μέχρι 30 μέτρων, ὅπερ παρέχει βαρύ, πολύτιμον ξύλον καὶ καρπὸν ἐδώδιμον. *Μύρτος ἡ οὔγνειος* (Myrtus Ugnii), ἰθαγενὴς θάμνος τῆς Χιλῆς μὲ βρώσιμον ἀρωματικὸν καρπόν. *Μύρτος ἡ πολιὰ* (Myrtus incanus). Θάμνος ἰθαγενὴς τῆς Ἀργεντινῆς. Δ. Ν. Π.

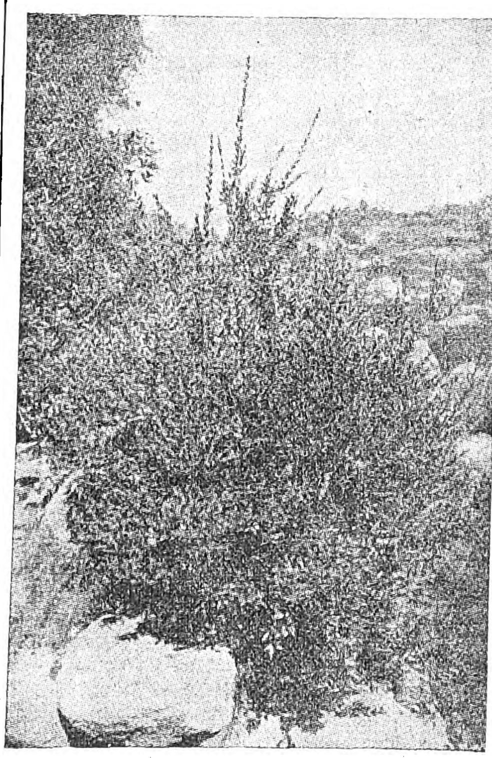
*Μύρτος ἡ κοινὴ (θάμνος).*

—*[Παλαιοφ.]* Λείψανα ἀπολιθωμένα τοῦ εἴδους *μύρτος paradisiaca* εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν τριτογενῶν στρωμάτων τῆς λιγνιτοφόρου λεκάνης τῆς Κύμης ἐν Εὐβοίᾳ. Γ. Κ. Γ.

**Μύρτος** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Πατρῶν τοῦ νομοῦ Ἀχαΐας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται παρὰ τοὺς βορείους πρόποδας τοῦ Μαυροβουνίου $1^{1}/_{2}$ ὥραν πρὸς ΝΔ. τῆς Κάτω Ἀχαΐας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μέρτεζα.* Κάτ. (1928) 234. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Γιαουελέϊκα* καὶ *Πουρνάρι.* Χ. Δ.

—**Μύρτος** *[Γεωγρ.].* Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας Βιάννου τοῦ νομοῦ Λασηθίου Κρήτης, μὲ 278 κατοίκους (1928) καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παράλιος κώμη μὲ μικρὸν ὅρμον, ὅστις ἐχρησιμοποιεῖτο ἐπὶ τῶν Ἑνετῶν. Εἰς τὴν κοινότητα ἀνήκουν καὶ τὰ *Γδόχια* μὲ 312 κατοίκους καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Ε. Γ.

— **Μύρτος** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Ἡ ΝΔ. ἐσχατιὰ τῆς Δωδεκανησιακῆς νήσου Χάλκης (πλάτ. 36° 22' Β., μῆκ. 27° 35' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1667: Rhodos island) τοῦ νοτίου Αἰγαίου. Σ. Ε. Λ.

—**Μύρτου *κόλπος*** *[Παραλ. Γεωγρ.].* Κόλπωσις τῆς ΒΔ. πλευρᾶς τῆς Κεφαλληνίας, ἀμφίπυγος πρὸς τὸν κόλπον τοῦ Ἀργοστολίου ἀπὸ τοῦ νοτίως της ἰσθμοῦ τῆς χερσονήσου τῆς Παληκῆς (ὁ μυχός της: πλάτ. 38° 18' 50'' Β., μῆκ. 20° 29' 45'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 203: Santa Maura, Ithaca, Cephallonia). Διανοίγεται μεταξὺ ἀκρωτηρίου Κακάτα καὶ χερσονησώδους φρουρίου τῆς Ἄσσου, εἰς εὖρος 4 μιλλ. καὶ εἴσοδον 3 μιλλίων. Σ. Ε. Λ.

**Μυρτούντιον** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* —1) Ἡ κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος ὀνομασία τῆς *Μυρσίνου* τῆς Ἤλιδος. —2) Λιμνοθάλασσα μεταξὺ Λευκάδος καὶ Ἀμβρακικοῦ κόλπου *(Στράβ.* Ι, 459). Θεωρεῖται ταυτιζομένη πρὸς τὴν μεταξὺ τῶν ὅρμων Δρεπάνου καὶ Βονίτσης ὡς καὶ Ζαβέρδας καὶ Δερματᾶ λίμνην Βουρκαριά· δεδομένου ὅμως ὅτι αὕτη δὲν φαίνεται πιθανὸν νὰ ἐπρόφθασε νὰ μεταβληθῇ εἰς λίμνην ἀπὸ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος μέχρι τῶν καθ' ἡμᾶς χρόνων, δὲν δύναται νὰ ἀποκλεισθῇ ἡ ταυτότης της πρὸς τὴν ἔτι καὶ νῦν λιμνοθάλασσαν *Χελοδίβαρο* (πλάτ. 38° 52' 10'' Β., μῆκ. 22°48' 00'' Ἀν., χάρτ. Ἑλλ. Ὑδρ. Ὑπηρ. 10: «Ἀμβρακικὸς Κόλπος»), τὴν μεταξὺ τοῦ μυχοῦ τοῦ ὅρμου Ἁγίου Νικολάου καὶ τῆς Βουρκαριᾶς. Σ. Ε. Λ.

—**Μυρτουντίων, *τέως δῆμος*** — *[Γεωγρ.].* Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἠλείας, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Ἀνδραβίδας, Βαρθολομιοῦ, Καβασίλων, Καρδιακαύτης, Κάστρου, Κυλλήνης, Λεχαινῶν, Μάχου, Μυρσίνης, Νεοχωρίου, Ρετούνης, Σταφιδοκάμπου (Μπράτι), Στρούσι* καὶ *Τραγανοῦ.* Ἔλαβε τὸ ὄνομα ἐκ τῆς ἀρχαίας πόλεως Μυρτούντιον, εἶχε πρωτεύουσαν τὰ *Λεχαινά,* ἠρίθμει δὲ κατοίκους 11.000 περίπου. Χ. Δ.

**Μύρτουσα,** ἢ ***Μύρτουσσα*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Ὄρος τῆς Λιβύης παραθαλάσσιον ἐγγὺς τῆς Κυρήνης. Ὠνομάζετο καὶ *Μυρτώνιον Αἶπος* (*Στεφ. Βυζ.* 464, 18. *Ἀπολ. Ῥόδ.* Β, 505). Ταυτότης ἀνεξακρίβωτος. Σ. Ε. Λ.

**Μυρτοῦσα** *[Γεωγρ.].* Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Πασχαλιᾶς (Μπαϊρακλῆ) τῆς ἐπαρχίας Νέστου τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ὀνομαζόμενος πρότερον *Μουρατζίκ.* Κάτ. (1928) 59. Χ. Δ.

**Μυρτόφυτον** *[Γεωγρ.].* Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Παγγαίου (Πραβίου) τοῦ νομοῦ Καβάλλας, ἀποτελοῦν ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐπὶ τῶν πρὸς τὴν θάλασσαν ἐστραμμένων κλιτύων τοῦ Συμβόλου ὄρους καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Δρέζνα.* Κάτ. (1928) 402. Χ. Δ.

**Μυρτσστὲγκ** (Mürzsteg) *[Γεωγρ.].* Θέσις τῆς Στυρίας (Αὐστρίας), παρὰ τὸ χωρίον Νόϋμπεργκ (Neuberg), οὕτως ὀνομασθεῖσα ἐκ τοῦ ἐκεῖ ὑπάρχοντος κυνηγετικοῦ περιπτέρου τοῦ Μυρτσστέγκ, ὅπερ ἀνῆκεν εἰς τὴν τέως αὐτοκρατορικὴν οἰκογένειαν τῆς Αὐστρίας. Κεῖται ἐπὶ τοῦ μικροῦ ποταμοῦ Μὺρτς (Mürz), ἐπὶ τοῦ ὁποίου φαίνεται, ὅτι ὑπῆρχεν ἐκεῖ ἄλλοτε ποτὲ μικρὰ μονόξυλος γέφυρα (steg).

Εἰς τὸ περίπτερον τοῦ Μυρτσστέγκ συνηντήθησαν τῇ 29 Σεπτεμβρίου 1903 οἱ αὐτοκράτορες τῆς Αὐστρουγγαρίας Φραγκῖσκος Ἰωσὴφ καὶ τῆς Ρωσίας Νικόλαος ὁ Β', συνοδευόμενοι ὑπὸ τῶν οἰκείων ὑπουργῶν τῶν Ἐξωτερικῶν, οἵτινες ἐξεπόνησαν τὸ ὑπὸ τὸ ὄνομα «πρόγραμμα τοῦ Μυρτσστὲγκ» γνωστὸν σχέδιον μεταρρυθμίσεων διὰ τὴν Μακεδονίαν, ἤτοι διὰ τὸ μεγαλύτερον μέρος τῶν βιλαετίων Θεσσαλονίκης, Μοναστηρίου καὶ Σκοπίων (Κόσοβο), τὸ ὁποῖον υἱοθετηθὲν καὶ ὑπὸ

Digitized by Google

τῶν λοιπῶν τεσσάρων μεγάλων εὐρωπαϊκῶν δυνάμεων, ἐπεβλήθη διὰ διπλωματικῆς πιέσεως εἰς τὴν Τουρκίαν.

Κατὰ τὸ πρόγραμμα τοῦτο διωρίζοντο παρὰ τὸν Τοῦρκον γενικὸν ἐπιθεωρητὴν τῶν τριῶν μακεδονικῶν νομῶν (ὅστις ἦτο ὁ Χουσεῒν Χιλμῆ πασᾶς) δύο πολιτικοὶ πράκτορες (agents civils), εἷς Αὐστροοῦγγρος καὶ εἷς Ρῶσος, πρὸς ἐπίβλεψιν τῆς ἐφαρμογῆς τῶν μεταρρυθμίσεων, τὰς ὁποίας προέβλεπον τὰ ὀκτὼ ἄλλα σημεῖα τοῦ προγράμματος. Τὸ κυριώτερον τούτων ἦτο ἡ ἀναδιοργάνωσις τῆς τουρκικῆς ἐν Μακεδονίᾳ χωροφυλακῆς ὑπὸ ἀξιωματικῶν τῶν μεγάλων δυνάμεων κατὰ τομεῖς (Θεσσαλονίκης ὑπὸ Ρώσων, Δράμας ὑπὸ Ἄγγλων, Σερρῶν ὑπὸ Γάλλων, Μοναστηρίου ὑπὸ Ἰταλῶν καὶ Σκοπίων ὑπὸ Αὐστροούγγρων), ὑπὸ τὴν προεδρίαν Γερμανοῦ. Τὸ σημεῖον τοῦτο ἐξετελέσθη. Ἐπειδὴ ὅμως ἡ Ρωσία ἦτο ἀπησχολημένη εἰς τὴν Ἄπω Ἀνατολὴν (Ρωσοϊαπωνικὸς πόλεμος καὶ συνέπειαί του), τὸ ὅλον πρόγραμμα τῶν μεταρρυθμίσεων ἐφαίνετο ἐφαρμοζόμενον ὑπὸ τὴν ἐπιρροὴν τῆς Αὐστρίας. Βραδύτερον (1905) εἰσήχθη καὶ ὁ οἰκονομικὸς ἔλεγχος τῶν ἓξ μεγάλων δυνάμεων ἐπὶ τοῦ προϋπολογισμοῦ τῶν τριῶν μακεδονικῶν νομῶν.

Τὸ πρόγραμμα τῆς Μυρτσστέγκ ἐφαίνετο προωριζόμενον ν' ἀντικατασταθῇ ὑπὸ εὐρυτέρου τοιούτου μετὰ τὴν ἐν Ρεβὰλ τῆς Βαλτικῆς συνέντευξιν τοῦ αὐτοκράτορος τῆς Ρωσίας μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς Ἀγγλίας Ἐδουάρδου τοῦ Ζ'. Ἀλλ' ἡ ἐφαρμογὴ τοῦ προγράμματος τοῦ Ρεβὰλ ἐγκατελείφθη μετὰ τὴν νεοτουρκικὴν μεταπολίτευσιν τῆς 10/23 Ἰουλίου 1908, μεθ' ἣν ἡ Ρωσία ἀνεκάλεσε καὶ τὸν πολιτικὸν αὐτῆς πράκτορα. Ἡ Αὐστροουγγαρία ἀσχάλλουσα ἠναγκάσθη νὰ ἀνακαλέσῃ καὶ αὐτὴ τὸν πολιτικόν της πράκτορα, οὕτω δὲ ἐγκατελείφθη ὁριστικῶς τὸ πρόγραμμα τοῦ Μύρτσστέγκ. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μυρτὼ** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Εὐβοϊκὴ νησὶς εὑρισκομένη ἀμέσως πρὸ τοῦ ἀκρωτηρίου Γεραιστὸς καὶ ἀποτελοῦσα δι' αὐτὸ τὸ ΝΔ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Καρύστου καὶ τὴν νοτίαν τῆς Εὐβοίας ἐσχατιάν. Ἀμφισβητεῖ, ἐναντίον τοῦ ὑπὸ τοῦ Πέλοπος πνιγέντος Μυρτίλου, τίτλους ἀναδόχου ἐπὶ τῆς ὀνομασίας τοῦ *Μυρτῴου πελάγους*. Ὀνομαζομένη ὑπὸ τοῦ Ἡροδότου (Θ, 105) *Κύρνος*, εἶναι ἡ σύγχρονος *Μαντήλι*, (πλάτ. 37° 56′ Β., μῆκ. 24° 32′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1820: Andros and Doro channels), ἔχουσα (1925) φάρον τριάδος λευκῶν ἐκλάμψεων 35 μιλλίων. Σ. Ε. Λ.

**Μυρτώ.** —1) Ἐγγονὴ τοῦ Ἀριστείδου, ἀπὸ τοῦ υἱοῦ του Λυσιμάχου, τὴν ὁποίαν, ὡς ἀναφέρει ὁ Πλούταρχος (Ἀριστ. 27), «χηρεύουσαν καὶ τῶν ἀναγκαίων δεομένην» ἔλαβε δευτέραν σύζυγον ὁ Σωκράτης, ἀπὸ τῆς ὁποίας, κατά τινας, ἀπέκτησεν υἱοὺς τὸν Σωφρονίσκον καὶ τὸν Μενέξενον. —2) Ποιμενίς τις, ἐρωμένη τοῦ Θεοκρίτου, τὴν ὁποίαν ἠγάπα «ὅσον εἴαρος αἶγες ἐρᾶντι» (Εἰδύλ. VII, 97). —3) Γυνή τις, ἀπὸ τῆς ὁποίας, κατὰ τὰς ὑπὸ τοῦ Παυσανίου (VIII, 14, 12) ἀναφερομένας εὐβοϊκὰς παραδόσεις «τῷ πελάγει γεγονέναι τὸ ὄνομα τῷ Μυρτῴῳ» οὐχὶ δὲ ἀπὸ τοῦ Μυρτίλου, υἱοῦ τοῦ Ἑρμοῦ καὶ ἡνιόχου τοῦ Οἰνομάου. Α. Θ. Σ.

**μυρτών, —ῶνος** (ὁ)· τύπος ὅπου φύονται πολλαὶ μύρτοι, μυρσινών, δημοτ. *μουρτερή*.

**Μυρτώνιον** [*Ἀρχ. Γεωγρ.*]. Πολίχνη τῆς Θρᾴκης ἐπὶ τῆς παραλίας τῆς Προποντίδος, ἀναφερομένη ὑπὸ Σουΐδα. Ἄλλως *Μυρτηνὸν* (βλ. λ.). Α.Θ.Σ.

**Μυρτῷον *Πέλαγος*** [*Γεωγρ.*]. Τμῆμα τοῦ Αἰγαίου πελάγους, κατὰ τὰ ἀνατολικὰ αὐτοῦ, οὕτω ὀνομασθὲν κατ' ἄλλους μὲν ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ μυθολογουμένης καταποντίσεως ὑπὸ τοῦ Πέλοπος τοῦ *Μυρτίλου*, κατ' ἄλλους δὲ ἐπώνυμον τῆς Εὐβοϊκῆς νησῖδος *Μυρτώ*. Τὰ ὅριά του (*Στράβ.* 124, 323, 331 ἀποσπ. 58, 335, 369, 375 *Ἀγαθήμ.* Α. 3. *Πτολεμ.* Ε, β, 1) δὲν εἶναι σαφῶς καθωρισμένα, οὔτε οἱ Λατῖνοι γεωγράφοι καὶ ποιηταὶ (*Pomp. Mel* 2,37 καὶ I 110, *Plin* 4, 19, 51. *Hor.* Carm 1, 1, 14· *Ovid.* Her. 16, 208) προσδιορίζουν ταῦτα σαφέστερον. Ἐπικρατεῖ ἐν τούτοις ἡ ἀντίληψις, παρὰ τοῖς συγχρόνοις τῶν γεωγραφούντων ἰδίᾳ, ὅτι εἶναι τὸ τμῆμα τοῦ Αἰγαίου τὸ ἁπλούμενον ΒΔ. τῆς νοητῆς γραμμῆς τῆς ἑνούσης τὴν Μαλέαν πρὸς τὸν Γεραιστὸν τῆς Εὐβοίας. Σ.Ε.Λ.

**Μυρωδᾶτον** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀβδήρων τῆς ἐπαρχίας Ξάνθης τοῦ νομοῦ Ροδόπης, ὀνομαζόμενον πρότερον *Καλφαλάρ*. Κάτ. (1928) 412. Χ. Δ.

*Ὁ Δισκοβόλος.*
[Ἀντίγραφον ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Βατικανοῦ.]

**μυρωδᾶτος, —ή, —ο·** δημοτ., ὁ γεμᾶτος ἀπὸ μυρωδιάν, ὁ εὐωδιάζων· ἀρωματικός, εὔοσμος: «καπνὸς μυρωδᾶτος» (βλ. λ. *καπνός*).

**μυρωδιὰ** (ἡ)· δημοτ., ὀσμὴ ἀποπνεομένη ἀπό τινος: «μυρωδιὰ φαγητοῦ, —ψητοῦ, —κρασιοῦ», «ἡ μυρωδιὰ τῆς μπουγάδας εἶναι ἡ καλυτέρα μυρωδιά», «ἡ μυρωδιὰ τοῦ μόσχου εἶναι βαρειά» || ὑγρὸν ἀρωματικόν, μύρον, ἄρωμα: «μοῦ 'χαμε δῶρον μιὰ καλὴ μυρωδιά» || ὀσμὴ δυσάρεστος, δυσωδία: «τὸ κρέας ἔχει μιὰ μυρωδιά», «τὸ ὑπόγειο βγάζει μιὰ μυρωδιά» || φρ. «τὸν παίρνω μυρωδιά» ἀντιλαμβάνομαι: «ἄργησε νὰ πάρῃ μυρωδιὰ τί τοῦ φτιάχνουν».

**μυρωδιὰ** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία πλείστων φυτῶν, ὡς τοῦ *ἀνθρίσκου*, τοῦ *ὑπερικοῦ*, τοῦ *πετροσελίνου*, κτλ.

**— μυρωδιὰ *ἄγρια*** (ἡ) [*Βοτ.*]. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *τρίγωνον τὸ κερατιοφόρον* (Trigonella cornuta).

**μυρωδικὸ** (τό)· δημοτ., ἀρωματικὸν ἄρτυμα ἐδεσμάτων, γλυκισμάτων κττ., ἄλλως *μπαχαρικό*, *μυριστικό*.

**μύρωμα** (τό)· δημοτ., ἡ διὰ τοῦ Ἁγίου μύρου ἐπίχρισις τοῦ βαπτισθέντος· || ἡ ἐπίχρισις τῶν Χριστιανῶν δι' ἡγιασμένου ἐλαίου κατὰ ἑορτήν τινα καὶ ἰδίᾳ τὴν Μεγάλην Τετάρτην.

**μυρωμένος, —η, —ο·** δημοτ. παθ. μετχ. τοῦ *μυρώνω* (βλ. λ.), ὁ διὰ τοῦ Ἁγίου μύρου χρισθείς: «βαφτισμένο, μυρωμένο, τοῦ Θεοῦ παραδομένο».

**Μύρων** [*Γεωγρ.*]. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λαρίσης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῇ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Φακίου καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Χατζῆ-Μπαϊράκι*. Κάτ. (1928) 430. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Καλὸ Νερὸ* (*Σουλεμέζ*), *Πουρναριὰ* (*Κριτσιλάρ*) καὶ *Σοφοῦ* (*Σοφόμπασι*). Χ. Δ.

**Μύρων.** Εἷς τῶν μεγίστων γλυπτῶν τοῦ ἀρχαίου ἑλληνικοῦ κόσμου. Κατὰ τὸν Πλίνιον, κατήγετο ἐξ Ἐλευθερῶν, ἐκ τοῦ δήμου, δηλαδή, ὅστις εὑρίσκετο ἐπὶ τῶν συνόρων Ἀττικῆς καὶ Βοιωτίας· ὁ Παυσανίας ὅμως ὀνομάζει αὐτὸν Ἀθηναῖον, ἴσως διότι αἱ ἀρχικῶς βοιωτικαὶ Ἐλευθεραὶ ἀνῆκον, κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Μύρωνος, εἰς τὰς Ἀθήνας, λόγῳ τοῦ μίσους τῶν Ἐλευθερέων πρὸς τὰς Θήβας· ἴσως ὅμως καὶ διότι ὁ Μύρων εἶχε τὸ ἐργαστήριον αὐτοῦ ἐν Ἀθήναις. Κατὰ τὸν Πλίνιον ἐπίσης, ὁ Μύρων ἔσχεν ὡς διδάσκαλον τὸν Ἀργεῖον γλύπτην Ἀγελάδαν, τοῦ ὁποίου μαθηταὶ ἐπίσης ὑπῆρξαν καὶ δύο ἕτεροι μεγάλοι γλύπται, ὁ Φειδίας καὶ ὁ Πολύκλειτος. Ἐκ τῆς μαρτυρίας ταύτης τοῦ Πλινίου συνάγεται τὸ συμπέρασμα ὅτι ὁ Μύρων ἦτο σύγχρονος τοῦ Φειδίου καὶ τοῦ Πολυκλείτου, πάντως ὅμως ἀρχαιότερος ἐκείνων ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς τέχνης, καθότι ὁ Μύρων φέρεται, κατὰ τὴν αὐτὴν ὡς ἄνω πηγήν, καὶ ὡς ἀντίπαλος τοῦ γλύπτου Πυθαγόρου, ὅστις ἤκμασε κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ Ε' π. Χ. αἰῶνος. Τὸ ὅτι δὲ ὁ Μύρων ἔδρα ἤδη ὡς γλύπτης κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐλέγχεται καὶ ἐκ τοῦ Παυσανίου, ὅστις ἀναφέρει ὅτι ὁ Μύρων ἐποίησεν ἐν Ὀλυμπίᾳ τὸ ἄγαλμα τοῦ Λάδα τῷ 476 π. Χ., τὸ ἄγαλμα τοῦ Κλεωναίου Τιμάνθους, ὅστις ἀνηγορεύθη ὀλυμπιονίκης κατὰ τὸ 456 π. Χ., καὶ τὰ δύο ἀγάλματα τοῦ Λυκίνου τοῦ Σπαρτιάτου, ὅστις ἐνίκησεν εἰς ἱπποδρομίας τῷ 448 π. Χ. Εἰς ἐπίρρωσιν τῆς χρονολογίας τῆς δράσεως τοῦ Μύρωνος πρόκειται ἡ πρὸ τῶν Προπυλαίων τῆς Ἀκροπόλεως τῶν Ἀθηνῶν ἐνεπίγραφος βάσις τοῦ 446 π. Χ., ἥτις λέγει: «Λύκιος ἐποίησεν Ἐλευθερεὺς Μύρωνος» καὶ ἐφ' ἧς ὑπῆρχον ἔφιπποι χάλκινοι ἀνδριάντες, ἔργα τοῦ Λυκίου, τοῦ υἱοῦ τοῦ Μύρωνος. Κατὰ ταῦτα, ἡ δρᾶσις τοῦ Μύρωνος συμπίπτει μεταξὺ τῶν ἐτῶν 480—445 π. Χ., διὰ τοῦτο δὲ καὶ θεωρεῖται οὗτος ὡς ὁ μέγιστος γλύπτης τῆς μεταβατικῆς περιόδου. Ὁ Μύρων εἶχε τὸ ἐργαστήριόν του ἐν Ἀθήναις, εἰργάσθη ὅμως ἢ καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐκτέλεσιν ἔργων καὶ διὰ τὰ πλέον ἀπομεμακρυσμένα σημεῖα τοῦ ἑλληνικοῦ κόσμου —ἀπὸ Μικρᾶς Ἀσίας μέχρι Σικελίας. Ὡς ὑλικὸν ὁ καλλιτέχνης οὗτος μετεχειρίζετο σχεδὸν ἀποκλειστικῶς τὸν χαλκόν, ἔπλασε δὲ πολλὰς εἰκόνας θεῶν, ἡρώων, ἀθλητῶν καὶ ζῴων. Τά, κατὰ ἀρχαίους συγγραφεῖς, περιφημότερα τῶν ἔργων τοῦ Μύρωνος ἦσαν τὰ ἑξῆς:

1) Ὁ ἐν Ἐφέσῳ Ἀπόλλων. Τὸ ἄγαλμα τοῦτο, κατὰ τὸν Πλίνιον, ἀπήγαγεν εἰς Ῥώμην ὁ τῆς τριανδρίας Ἀντώνιος, ἐπέστρεψεν ὅμως εἰς τὴν

Digitized by Google

ἀρχικήν του θέσιν βραδύτερον ὁ Αὔγουστος κατὰ θείαν ἐν ὁράματι ἐπιταγήν.

2) Ὁ ἐν Ἀκράγαντι ἕτερος Ἀπόλλων, ὅστις ἦτο ἱδρυμένος ἐν τῷ ἐκεῖ ναῷ τοῦ Ἀσκληπιοῦ. Κατὰ τὸν Κικέρωνα, τὸ ἄγαλμα τοῦτο ἔφερεν ἐπὶ τοῦ μηροῦ τὸ ὄνομα τοῦ Μύρωνος, μικροῖς ἀργυροῖς γράμμασι γεγραμμένον, ἔκλεψε δ᾽ ἐκ τοῦ ἱεροῦ ὁ Οὐέρρης.

3) Ὁ ἐν Ὀρχομενῷ τῶν Μινύων Διόνυσος. Κατὰ τὸν Παυσανίαν, τὸ ἔργον τοῦτο ἦτο «θέας μάλιστα ἄξιον», ὡς καὶ σχετικὸν ἐπίγραμμα μαρτυρεῖ. Τὸ περίφημον τοῦτο ἄγαλμα τοῦ Διονύσου ἀφήρεσεν ὁ Σύλλας ἀπὸ τῶν Ὀρχομενίων Μινύων καὶ ἀνέθηκεν ἐπὶ τοῦ Ἑλικῶνος.

4) Τὰ ἐν Ἡραίῳ τῆς Σάμου τρία κολοσσικὰ ἀγάλματα τοῦ Διός, τῆς Ἀθηνᾶς καὶ τοῦ Ἡρακλέους, τὰ ὁποῖα ἦσαν ἱδρυμένα ἐπὶ μιᾶς βάσεως, ὡς ἀναφέρει ὁ Στράβων, καὶ τὰ ὁποῖα ἀφήρεσεν ὁ Ἀντώνιος. Βραδύτερον ὁ Καῖσαρ ἀνέθηκε τὴν μὲν Ἀθηνᾶν καὶ τὸν Ἡρακλέα ἐπὶ τῆς αὐτῆς βάσεως, τὸν δὲ Δία μετέφερεν εἰς τὸ Καπιτώλιον, κατασκευάσας μάλιστα ἐπίτηδες ναΐσκον.

5) Ὁ ἐν Ἀθήναις Ἐρεχθεύς, περὶ τοῦ ὁποίου ὁ Παυσανίας ἀναφέρει ὅτι ἦτο ἐκ τῶν ἐξοχωτάτων ἔργων τοῦ Μύρωνος.

6) Ὁ ἐν Ῥώμῃ καὶ ἐν τῷ ναῷ τοῦ Μεγάλου Πομπηΐου παρὰ τὸ μέγα ἱπποδρόμιον ἱδρυμένος Ἡρακλῆς, ὡς ἀναφέρει ὁ Πλίνιος, ὡς καὶ ὁ ἕτερος Ἡρακλῆς, ἀσφαλῶς ἔργον καὶ αὐτὸς τοῦ Μύρωνος, ὡς τονίζει ὁ Κικέρων, ἀνήκων εἰς τὴν ἰδιωτικὴν συλλογὴν τοῦ Heius, ἀπὸ τῆς ὁποίας ἀφήρεσεν αὐτὸ ὁ Οὐέρρης.

7) Εἰς τὰ ὡς ἄνω χάλκινα, βεβαίως, ἀγάλματα θεῶν τοῦ Μύρωνος δέον νὰ συγκαταλεχθῇ καὶ τὸ μόνον ἐκ ξύλου πεποιημένον ἔργον αὐτοῦ ἡ Ἑκάτη ἐν Αἰγίνῃ. Κατὰ τὸν Παυσανίαν, ἡ Ἑκάτη αὕτη τοῦ Μύρωνος ἦτο πεποιημένη κατὰ τὴν ἀρχαίαν παράστασιν, ἤτοι μὲ μίαν μορφήν, καὶ ὄχι ὅπως ἀργότερον, μὲ τρεῖς μορφάς, ὅπως τὴν διέπλασε πρῶτος ὁ Ἀλκαμένης.

Μυθικῶν ἢ μυθολογικῶν θεμάτων ἀγάλματα τοῦ Μύρωνος ἐξαίρονται τὰ ἑξῆς:

1) Ὁ Σάτυρος καὶ ἡ Ἀθηνᾶ. Κατὰ τὸν Πλίνιον, αἱ δύο αὗται μορφαὶ ἀπετέλουν σύμπλεγμα, καθ᾽ ὃ ὁ Σάτυρος Μάρσύας ἔκπληκτος παρατηρεῖ καὶ ἑτοιμάζεται ν᾽ ἀναλάβῃ τοὺς αὐλούς, τοὺς ὁποίους ἡ Ἀθηνᾶ εἶχε ρίψει πρὸ τῶν ποδῶν αὐτοῦ. Τὸ σύμπλεγμα τοῦτο παρίστα τὴν ἐφεύρεσιν τοῦ αὐλοῦ.

2) Ἡ Νίκη καθημένη ἐπὶ ταύρου. Ὁ Τατιανὸς ὑπέλαβε τὸ σύμπλεγμα τοῦτο ὡς ἐξεικονίζον τὴν ἁρπαγὴν τῆς Εὐρώπης.

Διάσημος ἦτο ὁ Μύρων ἰδίως ὡς χαλκοπλάστης ἀθλητῶν. Τῶν ἀνδριάντων τούτων οἱ σπουδαιότεροι ἦσαν:

1) Ὁ Λακεδαιμόνιος Λάδας, διάσημος ὀλυμπιονίκης διὰ τὴν ὠκύτητα τῶν ποδῶν. Τὸ ἄγαλμα τοῦ Λάδα, ὅστις, κατὰ Παυσανίαν, ἀπέθανε συνεπείᾳ τῆς ὑπερκοπώσεως ἐκ τοῦ δολίχου κατὰ τὸ 476 π. Χ., ἐθαυμάζετο διὰ τὴν ζωηρότητα καὶ τὸ ψυχολογικὸν τῆς παραστάσεως, ὡς ἀναφέρει ἐπίγραμμά τι τῆς «Ἀνθολογίας». Ἴσως τὸ περὶ οὗ πρόκειται ἄγαλμα νὰ ἦτο τὸ ὑπὸ τοῦ Παυσανίου ἀναφερόμενον ὁμώνυμον ἄγαλμα ἐν τῷ ναῷ τοῦ Λυκίου Ἀπόλλωνος ἐν Ἄργει.

2) Δύο ἀγάλματα ἐν Ὀλυμπίᾳ τοῦ Λακεδαιμονίου Λυκίου, ὅστις, κατὰ Παυσανίαν, ἐνίκησεν εἰς τὸν δρόμον τῶν πώλων κατὰ τὸ 448 π. Χ.

3) Ὁ ἀνδριὰς τοῦ Κλεωναίου Τιμάνθους, ὅστις, κατὰ τὸν Παυσανίαν, ὑπῆρξε νικητὴς παγκρατίου ἐν Ὀλυμπίᾳ τῷ 456 π. Χ.

Ὁ ἐν Ὀλυμπίᾳ ἀνδριὰς τοῦ νικήσαντος εἰς πυγμὴν παίδων Φιλίππου τοῦ ἐκ Πελλάνας τῆς ἐν Ἀρκαδίᾳ Ἀζανίας, ὡς ἀναφέρει ὁ Παυσανίας.

Καὶ ἄλλους ἀνωνύμους ἀνδριάντας νικητῶν εἰς δελφικὰ πένταθλα καὶ ἄλλους παγκρατιαστὰς ἀναφέρει ὁ Πλίνιος ὡς ὑπὸ τοῦ Μύρωνος ποιηθέντας καὶ μάλιστα ἐκ τοῦ ἀνταγωνισμοῦ πρὸς τὸν Πυθαγόραν προελθόντας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐξαίρει τὸν Δισκοβόλον. Τὸν ἀνδριάντα τοῦ Δισκοβόλου ἐξαίρουσι καὶ ὁ Κουϊντιλιανὸς καὶ μάλιστα ὁ Λουκιανός. Κατὰ τὸν τελευταῖον τοῦτον συγγραφέα, ὁ ἀθλητὴς οὗτος κλίνει καὶ λαμβάνει φορὰν διὰ νὰ ρίψῃ δίσκον ὅσον τὸ δυνατὸν μακρύτερον. Ἡ κεφαλή του στρέφεται πρὸς τὴν δεξιὰν χεῖρα, ἥτις κρατεῖ τὸν δίσκον καὶ ἥτις ἐξέχει πρὸς τὰ ὀπίσω, ὁ δὲ κορμός του ἀκολουθεῖ τὴν κίνησιν τῆς κεφαλῆς. Ἡ δεξιὰ κνήμη, στερρῶς στηριζομένη ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, κάμπτεται κατὰ τὸ γόνυ διὰ νὰ κρατήσῃ τὴν ἰσορροπίαν, ἡ δὲ ἀριστερὰ τοιαύτη, ἐλαφρῶς κεκαμμένη, ἐγγίζει τὴν γῆν μὲ τὸ ἄκρον τοῦ ποδός, χωρὶς νὰ στηρίζηται, ἀλλ᾽ ἑτοίμη νὰ ὑψωθῇ ταυτοχρόνως μὲ τὴν ἐκσφενδόνισιν τοῦ δίσκου.

Ἕτερον ἔργον τοῦ Μύρωνος, μεγάλης ἀξίας, ἦτο, κατὰ Πλίνιον, καὶ τὸ ἐν Σμύρνῃ ἄγαλμα μεθυσμένης γραίας, τὸ ὁποῖον, ἐξαιρετικῶς, ἦτο κατεσκευασμένον ἐκ μαρμάρου. Ἐκ τῶν πολλῶν εἰκόνων ζῴων, ὡς σπουδαιότερα ἔργα τοῦ Μύρωνος ἀναφέρονται τὰ ἑξῆς:

1) Ἡ ἀγελάς. Ἔφερε τὸ ὄνομα τοῦ Μύρωνος, ἡ δὲ καλλιτεχνική του ἀξία ἦτο, φαίνεται, πολὺ μεγάλη, διότι πολλὰ ἐπιγράμματα ὁμιλοῦσιν εὐφήμως περὶ αὐτῆς. Ἐπὶ τῶν ἡμερῶν τοῦ Κικέρωνος τὸ ἀριστούργημα τοῦτο ἦτο ἱδρυμένον ἐπὶ τῆς Πνυκὸς τῶν Ἀθηνῶν· ὁ Προκόπιος ὅμως ἀναφέρει ὅτι τὸ εἶδεν ὑστερώτερον ἐν τῷ ναῷ τῆς Εἰρήνης ἐν Ῥώμῃ.

2) Τέσσαρες ταῦροι περὶ τὸν βωμὸν ἐν τοῖς προπυλαίοις τοῦ ναοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος ἐπὶ τοῦ Παλατίνου λόφου τῆς Ῥώμης, ὡς λέγει ὁ Προκόπιος.

3) Εἷς κύων, ὡς μνημονεύει ὁ Πλίνιος.

4) Μία πρίστις, εἶδος ἰχθύος.

Ἀλλὰ πλὴν τῶν καθαρῶς πλαστικῶν ἔργων ὁ Μύρων ἐτεχνούργησε καὶ διάφορα ἀνάγλυφα, ὡς π. χ. ὄφιν ἐπὶ ἀργυρᾶς φιάλης, ὡς μνημονεύει ὁ Μαρτιάλιος, καὶ διάφορα ἀνάγλυπτα ἄλλα ἀργυρᾶ σκεύη, ὡς ἀναφέρει ὁ Φαῖδρος, ἀναδειχθεὶς οὕτω καὶ τορευτής.

Ἐκ τῶν μνημονευομένων ὑπὸ τῶν ἀρχαίων συγγραφέων ἔργων τούτων οὐδὲν δυστυχῶς διεσώθη· ἀνεγνωρίσθησαν ὅμως πολλὰ ἀντίγραφα τούτων, ἐξ ὧν τὰ σημαντικώτερα εἶναι τὰ τοῦ Δισκοβόλου καὶ τοῦ Σατύρου Μαρσύου. Τὰ ἀντίγραφα τοῦ Δισκοβόλου ἀνεγνωρίσθησαν ἐκ τῆς λεπτομεροῦς περιγραφῆς τοῦ μυρωνείου ἐκείνου ἔργου ὑπὸ τοῦ Λουκιανοῦ. Τὸ καλύτερον τῶν σῳζομένων σήμερον ἀντιγράφων εἶναι ὁ ἐν τῷ μουσείῳ Lancelotti τῆς Ῥώμης μαρμάρινος Δισκοβόλος, πληρέστατα ἀνταποκρινόμενος πρὸς τὴν περιγραφὴν τοῦ Λουκιανοῦ. Ἄλλα καλὰ ἀντίγραφα ἐπίσης εἶναι τὸ ἐκ Τίβολι τῆς Ἰταλίας ἄγαλμα τοῦ Δισκοβόλου ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ, ὁ Δισκοβόλος τοῦ Βατικανοῦ, τὸ χάλκινον ἀγαλμάτιον τοῦ μουσείου τοῦ Μονάχου, διάφοροι κορμοί, ὡς ὁ ἐν τῷ Ἐθνικῷ μας μουσείῳ, ὅστις εὑρέθη ἐν Δαφνί, καὶ ὁ ἐν τῷ μουσείῳ τῶν Θερμῶν τῆς Ῥώμης. Παραστάσεις τοῦ Δισκοβόλου τοῦ Μύρωνος εὑρίσκονται ἐπίσης καὶ ἐπὶ πολλῶν ἀρχαίων δακτυλιολίθων καὶ σφραγιδολίθων. Βασιζομένη ἐπὶ τῶν ἀντιγράφων τούτων ἡ κριτικὴ καὶ ἔχουσα ὑπ᾽ ὄψιν τὸν χρόνον τῆς δράσεως τοῦ Μύρωνος, θεωρεῖ τὸν καλλιτέχνην τοῦτον ὡς τολμηρὸν πρωτοπόρον καὶ νεωτεριστήν, ὅστις, πρὸς ἀπόδοσιν βιαίας κινήσεως, δὲν ἐξέλεξε τοὺς πλαστικοὺς τῶν διασκελιζόντων ἢ συρομένων ἢ πιπτόντων σωμάτων τύπους, τοὺς ὁποίους ἐξετέλουν ἐπὶ τῶν ἀετωμάτων οἱ σύγχρονοι αὐτοῦ Κριτίας καὶ Νησιώτης μὲ τοὺς διασκελίζοντας τυραννοκτόνους των ἢ ὁ ἀνταγωνιστὴς αὐτοῦ Πυθαγόρας μὲ τὸν ἕρποντα σχεδὸν Ἀπόλλωνα φονεύοντα τὸν ὄφιν ἢ ὁ Κρησίλας μὲ τὸν πίπτοντα καὶ θνήσκοντα πολεμιστήν του, ἀλλὰ νέον ἐπινοήσας θέμα, παρέστησε τὴν κίνησιν ἐν συστρεφομένῳ σώματι καὶ ἐν στιγμιαίᾳ στάσει κατὰ τρόπον δὲ συμμετρικῶς ἁρμονικόν. Ὁ Μύρων, ἐκτελέσας οὕτω τὸν Δισκοβόλον, ἐφήρμοσε πρῶτος τὴν ἀρχήν, ἥτις οὐδέποτε ἔκτοτε παρεβιάσθη κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς γλυπτικῆς τέχνης, ἀρχήν, καθ᾽ ἣν τὸ πλαστικὸν ἔργον πρέπει νὰ ἔχῃ ἑνότητα καὶ συγκέντρωσιν, οὕτως ὥστε νὰ προσελκύῃ τὸ ἐνδιαφέρον τοῦ θεατοῦ ἐπὶ αὐτοῦ τούτου τοῦ ἔργου καὶ οὐχὶ νὰ διασκεδάζῃ αὐτὸ ἐπὶ ἄλλων ἐξωτερικῶν ἀντικειμένων. Ἐν τῷ Δισκοβόλῳ ἡ περιεχομένη ἐνέργεια τῆς δράσεως ἐκδηλοῦται διὰ τῶν γραμμῶν αὐτῆς ταύτης τῆς συνθέσεως, πᾶσα δὲ λεπτομέρεια εὑρίσκεται ἐν ἁρμονίᾳ μὲ τὸ ὅλον. Ἀλλ᾽ ἐκτὸς τῆς ἐξαιρέτου καλλιτεχνικῆς ταύτης συνθέσεως, ἐν τῷ Δισκοβόλῳ ἐξαίρεται ἐπίσης καὶ ἡ ἐπιτυχὴς ἐκλογὴ τῆς ἀκριβοῦς στιγμῆς πρὸς παράστασιν τοῦ ἀθλητικοῦ γυμνάσματος. Ὁ Μύρων, κατ᾽ εὐφυᾶ ἔκφρασιν νεωτέρου τεχνοκρίτου, ἀπελίθωσε, τρόπον τινά, τὸν ἀθλητὴν δισκοβόλον καθ᾽ ἣν στιγμὴν ὁ δίσκος ἐκφεύγει τῶν χειρῶν του, ἤτοι καθ᾽ ἣν στιγμὴν συγκεντροῦται πᾶσα ἡ δύναμις καὶ πᾶσα ἡ εὐλυγισία τῶν μελῶν τοῦ σώματος, ἀμέσως δ᾽ ἐπακολουθεῖ ἡ γενικὴ χαλάρωσις τῶν νεύρων ἐκ τῆς ἀκινησίας τοῦ ἀνορθωθέντος σώματος. Τὴν στιγμαίαν ταύτην κίνησιν ἀπέδωκεν ἄριστα ὁ Μύρων καὶ ἐν τῇ γενικῇ στάσει τοῦ σώματος καὶ ταῖς ἀνατομικαῖς λεπτομερείαις, δικαίως δὲ τὸ ἀριστούργημα τοῦτο θεωρεῖται παρά τε τῶν ἀρχαίων καὶ τῶν νεωτέρων τεχνοκριτῶν ὡς τὸ χαρακτηριστικώτερον ἔργον τῆς τεχνοτροπίας τοῦ μεγάλου τούτου καλλιτέχνου.

Ἐπίσης ὅμως χαρακτηριστικὸν τῆς τέχνης τοῦ Μύρωνος γνώρισμα ἦτο καὶ ὁ Μαρσύας μὲ τὴν Ἀθηνᾶν, δημιούργημα μεγάλης καλλιτεχνικῆς ἐμπνεύσεως καὶ ἐκτελέσεως. Καὶ τοῦ ἀριστουργήματος τούτου ἀνεγνωρίσθησαν πολλὰ ἀντίγραφα καὶ ἐκ τῆς περιγραφῆς τοῦ Πλινίου, ὅστις λέγει ὅτι ὁ Σάτυρος Μαρσύας ἠτένιζε μετ᾽ ἐκπλήξεως τοὺς αὐλοὺς καὶ τὴν Ἀθηνᾶν, ἀλλ᾽ ἰδίως ἐκ τῆς περιγραφῆς τοῦ Παυσανίου. Συμπλέγματα Ἀθηνᾶς καὶ Μαρσύου ἀνταποκρινόμενα πρὸς τὰς ἄνω περιγρα-

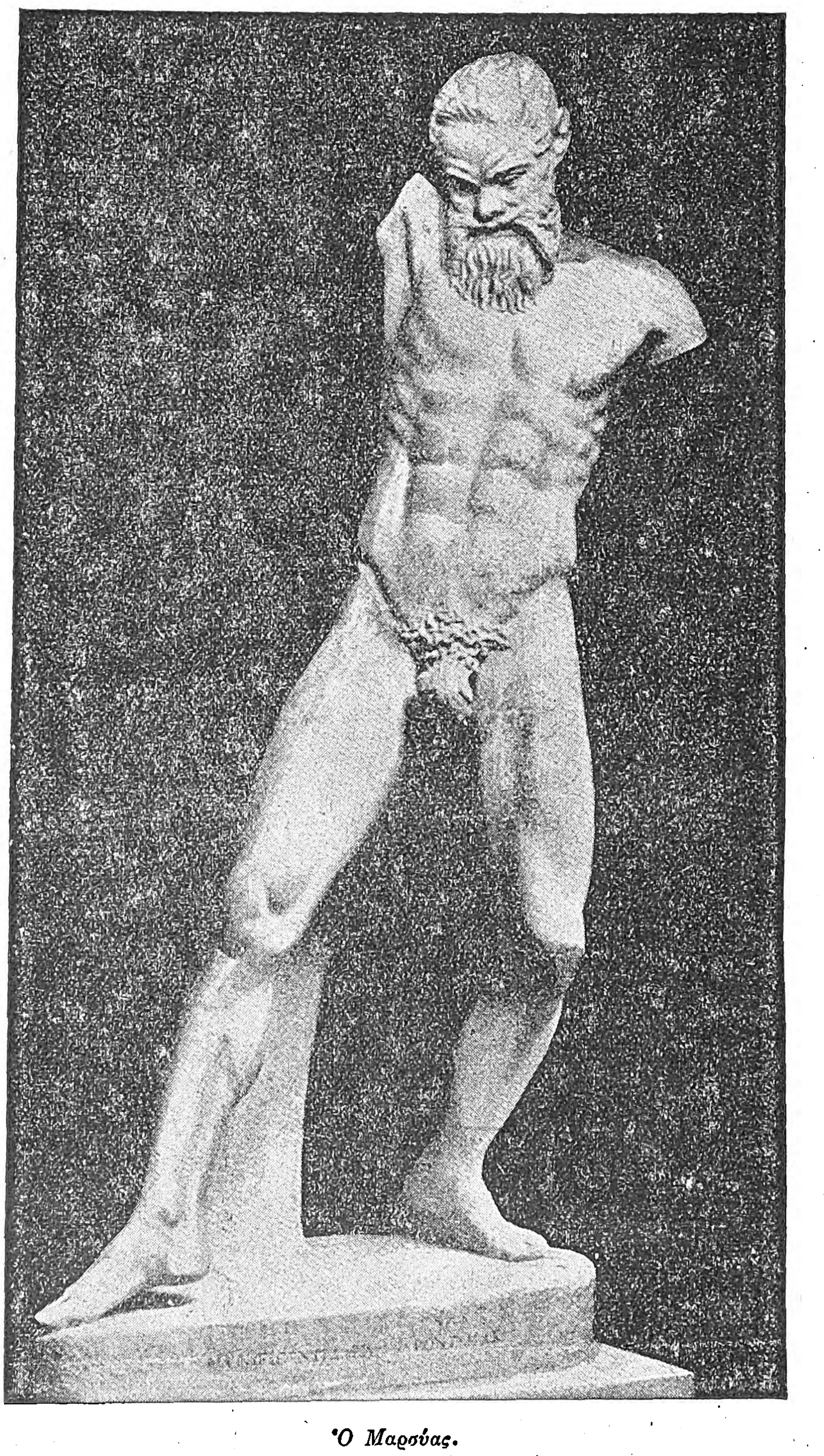

*Ὁ Μαρσύας.*

[Ρωμαϊκὸν ἀντίγραφον ἐν Λατερανῷ Ῥώμης.]

Digitized by Google

*Τὸ ἄγαλμα τῆς Ἀθηνᾶς τοῦ Μύρωνος (μέσον) καὶ δύο ὄψεις τῆς κεφαλῆς.*

[Μουσεῖον τῆς Φραγκφούρτης]

φὰς τῶν ἀρχαίων συγγραφέων ὑπάρχουσιν ἐπὶ ρωμαϊκῶν νομισμάτων τῶν Ἀθηνῶν καὶ ἐπὶ ἐρυθρομόρφου οἰνοχόης τοῦ μουσείου τοῦ Βερολίνου καὶ ἐπὶ μαρμαρίνου δοχείου τοῦ Ἐθνικοῦ ἀρχαιολογικοῦ μουσείου. Ἄλλα πραγματικὰ ἀντίγραφα εἶναι τὸ μαρμάρινον ἄγαλμα τοῦ Μαρσύου ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ Λατερανοῦ ἐν Ρώμῃ, τὸ χάλκινον ἀγαλμάτιον τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου, τὸ ἀγαλμάτιον τῆς Ἀθηνᾶς ἐν Φραγκφούρτῃ καὶ πολλὰ ἄλλα δευτερευούσης ἐκτελέσεως καὶ ἀντιγραφῆς. Ὁ Μαρσύας τοῦ Μύρωνος ἦτο θέμα ἀττικῆς παραδόσεως, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ Ἀθηνᾶ πρώτη ἀνεκάλυψε τοὺς αὐλοὺς καὶ τοὺς μετεχειρίσθη, ἀλλὰ τοὺς ἀπέρριψεν, ὅταν ἀντελήφθη ὅτι τὸ φύσημα παρεμόρφωνε τὸ πρόσωπόν της καὶ κατηράσθη ἐκεῖνον, ὅστις ἤθελε τοὺς ἀναλάβει. Ὁ Σειληνὸς Μαρσύας ὅμως τοὺς ἔλαβε, καὶ τοῦτο ἔφερε τὸν ὄλεθρόν του, διότι ἐπαρθεὶς προὐκάλεσεν εἰς ἀγῶνα μουσικῆς τὸν Ἀπόλλωνα καὶ νικηθεὶς ἐξεδάρη ζωντανός. Ἐκ τῶν σῳζομένων ἀντιγράφων καὶ τοῦ ὁμοφώνου θαυμασμοῦ τῶν ἀρχαίων συμπεραίνεται ὅτι καὶ τὸ ἔργον τοῦτο τοῦ Μύρωνος, ὅπως καὶ ὁ Δισκοβόλος του, ἦτο θαυμασία σύνθεσις, πλήρης δράσεως καὶ ἁρμονίας. Ἡ παρατηρουμένη ἐπὶ τῶν ὠχρῶν παραστάσεων καὶ ἀντιγράφων ρυθμικὴ μέν, ἀλλ' ὁρμητικὴ κίνησις ἀποδεικνύει τὸν Μύρωνα τολμηρόν, τῷ ὄντι, νεωτεριστήν. Καὶ ἐνταῦθα, ὅπως καὶ εἰς τὸν Δισκοβόλον, ὁ Μύρων παρέστησε τὴν κρισιμωτέραν καὶ δραματικωτέραν στιγμὴν τῆς ὑποθέσεως, τὴν στιγμὴν καθ' ἣν ἡ Ἀθηνᾶ, ἀπορρίψασα τοὺς αὐλούς, ἡτοιμάζετο νὰ ἀπέλθῃ, βλέπουσα ὅμως τὸν Μαρσύαν νὰ πλησιάζῃ διὰ νὰ τοὺς ἁρπάσῃ, σταματᾷ καὶ στρέφεται πρὸς αὐτὸν ἀπειλητική. Ὁ Σειληνὸς ἔντρομος ἀναπάλλεται πρὸς τὰ ὀπίσω, ἀλλὰ δὲν δύναται νὰ ἀποσπάσῃ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀπὸ τὰ μαγικὰ ὄργανα, τὰ ὁποῖα τὸν εἶχον θέλξει. Ἡ ἐξεικόνισις τῆς ὀπισθοχωρήσεως τοῦ Σατύρου εἶναι καὶ αὐτὴ τολμηρὸς νεωτερισμὸς ἐν τῇ τότε ἑλληνικῇ τέχνῃ. Ἐν τῷ Μαρσύᾳ μάλιστα ὁ νεωτερισμὸς οὗτος φανερώνεται καὶ διὰ τῆς ἐκδηλώσεως τῶν τεταμένων μυώνων ἐπὶ ἰσχνοῦ σώματος καὶ ἰδίᾳ διὰ τῆς ἐκφράσεως τῆς ἐκπλήξεως ἐπὶ τοῦ ἀγρίου προσώπου τοῦ Σατύρου μὲ τὰς πλαγίας αὐλακώσεις ἐπὶ τοῦ μετώπου καὶ τὴν δασύμαλλον κόμην καὶ γενειάδα. Ἀναπαράστασιν τῆς τολμηρᾶς συνθέσεως ἐπεχείρησεν ὁ Sieveking ἐπὶ τῇ βάσει τῶν παραστάσεων ἐπὶ ἀρχαίων νομισμάτων.

Πλὴν τῶν δύο ὡς ἄνω ἀντιγράφων ἔργων τοῦ Μύρωνος, διεσώθησαν ἀντίγραφα καὶ ἄλλων αὐτοῦ ἔργων, ὡς αἱ δύο ὡραῖαι κεφαλαὶ τοῦ Περσέως, ἡ μὲν ἐν τῷ μουσείῳ τοῦ ἀνακτόρου τοῦ Ὠδείου τῆς Ρώμης, ἡ δὲ ἐν τῷ Βρεττανικῷ μουσείῳ. Ἐπίσης ἀντίγραφα τοῦ μυρωνείου Ἀπόλλωνος θεωροῦνται ὁ ἐπιλεγόμενος Ἀπόλλων τοῦ Cassel καὶ ὁ ἀναπαυόμενος Ἡρακλῆς ἐν τῷ μουσείῳ τῆς Βοστώνης. Ἡ κριτική, ἡ τε ἀρχαία καὶ ἡ νεωτέρα, στηριζομένη ἐπὶ τοῦ πλουσίου εἰς ἀριθμόν, ἔμπνευσιν καὶ πρωτοτυπίαν ἔργου τοῦ καλλιτέχνου τούτου τοῦ πρώτου ἡμίσεος τῆς Ε' π. Χ. ἑκατονταετηρίδος, ἀποφαίνεται ὅτι τὰ κύρια γνωρίσματα τῆς τέχνης τοῦ Μύρωνος εἶναι τὸ ἔμψυχον καὶ ἡ φυσικότης τῶν μορφῶν· ὅτι πρὸς ἀπόδοσιν τούτων ὁ μέγας οὗτος καλλιτέχνης ἠρέσκετο νὰ παριστάνῃ τὴν ζωὴν συγκεντρωμένην εἰς ἀκαριαίας πράξεις, αἵτινες προκαλοῦσι βιαίας κινήσεις καὶ στιγμιαίας στάσεις, καὶ ὅτι, τοιαύτην ἐπιδείξας πρωτοτυπίαν καθ' οὓς χρόνους ἐπεκράτει ἐν τῇ τέχνῃ ὁ νόμος τῆς μετωπικότητος, ἀνεδείχθη τολμηρὸς νεωτεριστὴς καὶ πρωτοπόρος τῆς μεγάλης ἑλληνικῆς γλυπτικῆς. Δικαίως, ὅθεν, ὁ Μύρων κατατάσσεται μεταξὺ τῶν ἓξ μεγάλων γλυπτῶν τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος, ὧν μάλιστα ὁ ἀρχαιότερος τούτων.

Β. Δ. ΘΕΟΦΑΝ[illegible]

*Ἀθηνᾶ καὶ Μαρσύας.*

[Ἀναπαράστασις κατὰ Sieveking.]

Digitized by Google

—**Μύρων.** Τύραννος τῆς Σικυῶνος, ἀκμάσας κατὰ τὰ μέσα τοῦ Ζ′ π. Χ. αἰῶνος. Ἦτο πατὴρ τοῦ Ἀριστωνύμου καὶ πάππος τοῦ Κλεισθένους. Κατὰ τὴν τριακοστὴν τρίτην ὀλυμπιάδα, ἤτοι τῷ 648 π. Χ., λαβὼν μέρος εἰς τὰς ἁρματοδρομίας τῆς Ὀλυμπίας, ἀνηγορεύθη ὀλυμπιονίκης. Κατὰ τὸν Παυσανίαν, εἰς ἀνάμνησιν τῆς νίκης του ταύτης ὁ Μύρων ἀνήγειρε τὸν ἐκεῖ θησαυρὸν τῶν Σικυωνίων, συγκείμενον ἐκ δύο θαλάμων, ἰωνικοῦ καὶ δωρικοῦ ρυθμοῦ, καὶ ἐπενδεδυμένον ἔσωθεν διὰ χαλκίνων πλακῶν. Ἐκ τοῦ ἀνακαλυφθέντος ὅμως θησαυροῦ τῶν Σικυωνίων ἐν Ὀλυμπίᾳ συνάγεται, ὅτι ὁ Παυσανίας ὑπέπεσεν εἰς λάθος, ἐκλαβὼν τὸν θησαυρὸν τῶν Σικυωνίων ὡς ἔργον τῶν χρόνων τοῦ Μύρωνος, ἐνῷ πρόκειται περὶ ἔργου τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ Ε′ π. Χ. αἰῶνος, κατασκευασθέντος δηλαδὴ ἕνα καὶ ἥμισυν αἰῶνα μετὰ τὸν Μύρωνα. Κατὰ τὸν Adler καὶ Curtius, ὁ ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Παυσανίου θησαυρὸς τοῦ Μύρωνος πρέπει νὰ ἦτο κινητὸς χάλκινος θησαυρὸς ἐκ δύο διαφόρου ρυθμοῦ θαλάμων. Τοῦτο εὐλόγως συνάγεται καὶ ἐκ τῆς μνείας τοῦ Παυσανίου, ὅτι ὁ θησαυρὸς ἐκεῖνος εἶχε βάρος 500 ταλάντων. Β. Δ. Θ.

— **Μύρων, *ἅγιος*.** Ἐπίσκοπος Κρήτης, μαρτυρήσας κατὰ τὸν ἐπὶ Δεκίου διωγμὸν (249—251). Ἀνῆκεν εἰς εὐγενῆ οἰκογένειαν τῆς πόλεως Ραύκου, ἥτις πρὸς τιμὴν αὐτοῦ μετωνομάσθη εἰς *Ἅγιον Μύρωνα*. Διεκρίθη διὰ τὴν εὐσέβειαν, τὴν εὐποιίαν καὶ τὰ πολλὰ θαύματά του, ἐξ οὗ καὶ ἡ προσωνυμία αὐτοῦ ὡς θαυματουργοῦ. Ἡ μνήμη του τελεῖται τῇ 8ῃ Αὐγούστου. † Ρ. Α. Τ.

**Μύρων *Κρίστεα*** (Miron Kristea). Πατριάρχης τῆς Ρουμανίας, γεννηθεὶς τῷ 1868 ἐν Τρανσυλβανίᾳ. Ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς θεολογίαν ἐν Σέμπτου καὶ κατόπιν ἐν Βουδαπέστῃ φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ νεωτέραν λογοτεχνίαν. Ἠσπάσθη τὸν μοναχικὸν βίον τῷ 1902 καὶ λόγῳ τῆς εὐρυτάτης μορφώσεώς του ἀνῆλθε ταχύτατα τὰ ἀνώτατα ἀξιώματα τῆς χριστιανικῆς ἱεραρχίας ἐν Ρουμανίᾳ, γενόμενος ἀρχιεπίσκοπος Καρασεμπὲς τῆς Τρανσυλβανίας τῷ 1909 καὶ ἐκλεγεὶς πριμᾶτος τῆς ρουμανικῆς Ἐκκλησίας τῷ 1919, ἀφοῦ προηγουμένως ἐν τῇ ἐθνοσυνελεύσει τῆς Ἄλμπα Γιούλια, ὡς ἀντιπρόσωπος τῶν Ρουμάνων τῆς Τρανσυλβανίας καὶ τῆς Οὐγγαρίας, διεκήρυξε τὴν θέλησιν αὐτῶν ὅπως ἑνωθοῦν μετὰ τῆς Ρουμανίας. Ἐκλεγεὶς ἐν τῷ μεταξὺ πατριάρχης τῆς Ρουμανίας, ἐγένετο τῷ 1927, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ βασιλέως Φερδινάνδου Α′, μέλος τῆς τριμελοῦς ἀντιβασιλείας, ἥτις εἶχεν ἀναλάβει τὴν διακυβέρνησιν τῆς χώρας ἐν ὀνόματι τοῦ ἀνηλίκου βασιλέως Μιχαήλ, μέχρι τοῦ Ἰουνίου τοῦ 1930, ὁπότε ἐτερματίσθη ἡ περίοδος τῆς ἀντιβασιλείας, συνεπείᾳ τῆς ἐπανόδου τοῦ τέως διαδόχου καὶ τῆς ἀναλήψεως τῆς βασιλικῆς ἀρχῆς ὑπ' αὐτοῦ ὑπὸ τὸ ὄνομα Κάρολος Β′. Ὁ Μύρων ἀποτελεῖ μίαν τῶν σημαντικωτέρων ἐκκλησιαστικῶν μορφῶν τῆς Ρουμανίας, διακρινόμενος διὰ τὴν ρητορικήν του δεινότητα καὶ τὸ νεωτεριστικόν του πνεῦμα. Τῷ 1924 εἰσήγαγεν εἰς τὴν Ρουμανίαν τὸ Γρηγοριανὸν ἡμερολόγιον κατόπιν τοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει συνελθόντος συνεδρίου πολλῶν αὐτοκεφάλων Ἐκκλησιῶν. Εἰργάσθη ἐπίσης διὰ τὴν ἀνύψωσιν τοῦ κλήρου καὶ συνέβαλε τὰ μέγιστα εἰς τὴν ἐπάνοδον τοῦ γοήτρου τοῦ Οἰκουμενικοῦ πατριάρχου, μετὰ τὴν ἑλληνικὴν μικρασιατικὴν καταστροφήν, διὰ τῆς συσφίγξεως τῶν ὀρθοδόξων Ἐκκλησιῶν περὶ τὸ Οἰκουμενικὸν πατριαρχεῖον, ἐπισκεφθεὶς πρὸς τοῦτο τῷ 1927 τὴν Κωνσταντινούπολιν, τὰς Ἀθήνας, τὴν Ἀλεξάνδρειαν καὶ τὴν Ἱερουσαλήμ. Ὁ Μύρων διακρίνεται καὶ ὡς συγγραφεὺς καὶ εἶναι μέλος τῆς Ρουμανικῆς Ἀκαδημίας. Τὰ κυριώτερα τῶν ἔργων του εἶναι: «Ὁ βίος τοῦ μεγίστου τῶν Ρουμάνων ποιητῶν Μιχαὴλ Ἐμινέσκου» (1895), «Συλλογὴ ρουμανικῶν παροιμιῶν, ἀποφθεγμάτων καὶ ἰδιωτισμῶν», «Εἰκονογραφία καὶ ἐσωτερικὴ διαρρύθμισις τῆς Ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας», «Λόγοι» κ. ἄ. —Ω.

—**Μύρων, *Κωστῆς*.** Ρουμᾶνος χρονογράφος τοῦ δευτέρου ἡμίσεος τοῦ ΙΖ′ αἰῶνος. Ἀπὸ τοῦ 1684 μέχρι τοῦ 1695 ἐχρημάτισε μέγας λογοθέτης ἐπὶ τῆς ἡγεμονίας τοῦ Κωνσταντίνου Καντεμίρ. Συνέγραψε: «Νεωτέραν ἱστορίαν τῆς Μολδαβίας» ἀπὸ τοῦ 1591 καὶ ἕτερον ἔργον περιλαμβάνον τὴν ἱστορίαν τῆς ρωμαϊκῆς κυριαρχίας ἐν Δακίᾳ. Μετὰ τὸν θάνατόν του ὁ υἱός του *Νικόλαος Μύρων* συνηρμολόγησε τὰ δύο βιβλία εἰς ἕν, εἰς ὃ προσέθεσε καὶ τὸ χρονικὸν τοῦ Οὔρκ. Μεταφρασθὲν ὑπὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου Ἀμηρᾶ (1729) εἰς τὴν ἑλληνικήν, μετηνέχθη ἐκ ταύτης εἰς τὴν γαλλικὴν ὑπὸ τοῦ Γκρανιέ. Θ. Β.

**μυρώνι** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *σκάνδιξ ἡ κτεὶς τῆς Ἀφροδίτης*.

**Μυρωνία** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Ὀλυμπίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας ἀποτελοῦν ἰδίαν κοινότητα. Κεῖται ἐν τῷ περιφερείᾳ τοῦ τέως δήμου Ἀλιφείρας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Παλαιότερον ὠνομάζετο *Μπάρτζελι*. Κάτ. (1928) 639. Χ. Δ.

**Μυρωνίδης** Ἀθηναῖος, υἱὸς τοῦ Καλλίου, συστράτηγος τοῦ Ἀριστείδου κατὰ τὴν ἐν Πλαταιαῖς μάχην τῷ 479 π. Χ. Μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Τολμίδου εἰργάσθη ὑπὲρ τῆς ἑδραιώσεως τῆς δημοκρατίας τῷ 460 π. Χ. καὶ ἐπεδίωξε τὴν κατὰ ξηρὰν μᾶλλον παρὰ τὴν κατὰ θάλασσαν ἀνάπτυξιν τῆς δυνάμεως τῶν Ἀθηνῶν. Ἡττηθεὶς ἐν Τανάγρᾳ τῷ 457 π.Χ., ἐνίκησεν ὀλίγον μετὰ ταῦτα τοὺς Κορινθίους εἰς τὰ Μέγαρα. Ἰδίως ὅμως ἐθριάμβευσε τῷ 456 π. Χ. κατὰ τῶν Θηβαίων καὶ Λακεδαιμονίων ἐν Οἰνοφύτοις τῆς Βοιωτίας, ἐξασφαλίσας οὕτω τὴν ὑπεροχὴν τῶν Ἀθηναίων ἐν Βοιωτίᾳ, Λοκρίδι καὶ Φωκίδι *(Θουκ.* Α., 105,108). Ἐκστρατεύσας κατόπιν κατὰ τῆς Θεσσαλίας, πρὸς τιμωρίαν τῶν κατοίκων αὐτῆς, διότι κατὰ τὴν ἐν Τανάγρᾳ ἧττάν του ἐλακεδαιμόνιζον καὶ ἀποτυχὼν ἐν Φαρσάλοις, ἠναγκάσθη νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Ἀθήνας, ὅπου φαίνεται ἀπέθανεν ὀλίγον μετὰ ταῦτα. Α. Θ. Σ.

**μυρωνικός,** *—ή, —όν*· βλ. *μυρονικός*.

**Μύρωνος *νῆσος*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Νῆσος ἐν τῷ Ἀραβίῳ κόλπῳ (Ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ), προσκειμένη εἰς τὴν ἀκτὴν τῆς ὑπὸ Αἴγυπτον Αἰθιοπίας (*Πτολ.* Δ, ζ, 36 Nobbe, *Στεφ. Βυζαν.* ἐκδ. Βερολ. 464, 19). Ἐκ τῆς παραβολῆς τοῦ Πτολεμαίου πρὸς τὸν Πλίνιον προκύπτει ὅτι ὁ τελευταῖος τοποθετεῖ τὴν νῆσον εἰς τὸν κόλπον ὃν σχηματίζουν αἱ νῆσοι Marea καὶ Eratonos (6, 169). Δι' ὃ καὶ ταυτίζεται ἡ *Μύρωνος νῆσος* πρὸς τὴν «Μαρίαν, νῆσον δυσπελαγίαν» τοῦ Ἀγαθαρχίδου (σελ. 105) ταυτιζομένην πρὸς τὴν «νῆσον, ἐλαίᾳ κατάφυτον, ἐπικλυζομένην» τὴν μεταξὺ τοῦ «ἱεροῦ τῆς Ἴσιδος, τοῦ Σεσώστριος ἀφιδρύματος καὶ τῆς Πτολεμαΐδος... κτίσματος Εὐμήδους» (*Στράβ.* ΙΣΤ, 770, Teubner) καὶ πρὸς τὴν σύγχρονον νησῖδα *Ἐτγουΐντ* (Etwid: πλάτ. 19°01′ Β, μῆκ. 37°33′ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 81: Mersa Darur to Trinkitat) τὴν εἰς τὰ νότια πρόσγεια τοῦ Σουακίν. Σ. Ε. Λ.

**μυρώνω**· δημοτ., ἀλείφω, χρίω τὸν βαπτισθέντα διὰ τοῦ Ἁγίου μύρου: «βαφτισμένο, μυρωμένο, τοῦ Θεοῦ παραδομένο»· ‖ ἀλείφω, χρίω ἐπὶ τοῦ μετώπου τοὺς Χριστιανοὺς δι' ἡγιασμένου ἐλαίου κατὰ τὴν τελετὴν τοῦ εὐχελαίου, τὴν Μεγάλην Τετάρτην ἢ ἄλλας ἑορτάς· ‖ ἀρχ. *μυρόω*· ἀλείφω διὰ μύρου.

**μυρωσύνη** (ἡ)· βλ. *μυροσύνη*.

**μῦς,** *—υός, —ῦν* (ὁ) (πληθ. οἱ *μύες*, τῶν *μυῶν*, τοὺς *μῦς*)· τὸ σαρκῶδες καὶ ἰνῶδες μέρος τοῦ σώματος τῶν ζῴων, τὸ χρησιμεῦον ὡς ὄργανον κινήσεως· ‖ γένος τρωκτικῶν θηλαστικῶν ζῴων, κοιν. *ποντίκι*.

—*[Ἀνατομ.]* Οἱ *μύες* εἶναι ὄργανα ἔχοντα τὴν ἰδιότητα τοῦ συστέλλεσθαι καὶ οὕτως ἐπιτελοῦντα κινήσεις μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτεταμένας, ἑκουσίας ἢ ἀκουσίας. Ὑπάρχουσι δὲ δύο εἴδη μυῶν, οἱ τῆς ζωικῆς καὶ τῆς ὀργανικῆς ζωῆς. Καὶ οἱ μὲν τῆς ζωικῆς ζωῆς μύες, καλούμενοι ὡσαύτως καὶ μύες τῶν προαιρετικῶν ἢ ἑκουσίων κινήσεων, συστέλλονται ὑπὸ τῆς βουλήσεως, οἱ δὲ τῆς ὀργανικῆς ζωῆς, καλούμενοι καὶ μύες τῶν ἀπροαιρέτων ἢ ἀκουσίων κινήσεων, συστέλλονται ἄνευ τῆς βουλήσεως, ἐπιτελοῦντες οὕτω λειτουργίας, ὧν δὲν αἰσθάνεται ὁ ἄνθρωπος (συστολαὶ στομάχου, ἐντέρων κλπ.). Καὶ οἱ μὲν πρῶτοι ἀποτελοῦνται ἐκ γραμμωτῶν μυϊκῶν ἰνῶν, οἱ δὲ δεύτεροι ἐκ λείων ἢ ἀγραμμώτων μυϊκῶν ἰνῶν. Οἱ γραμμωτοὶ μύες, πολυπληθέστεροι καὶ αὐτοτελέστεροι ὄντες, συνιστῶσι τὴν μυωτὴν σάρκα, τὸ κρέας, συνάπτονται γενικῶς πρὸς τὰ διάφορα ὀστᾶ τοῦ σκελετοῦ (σκελετικοὶ μύες) καὶ ἀποτελοῦσι τὰ ἐνεργητικὰ ὄργανα τῆς κινήσεως. Ἕκαστος σκελετικὸς μῦς σύγκειται ἐκ μυϊκῶν ἰνῶν, ἐγκαρσίως γραμμωτῶν, αἵτινες ἐπὶ μὲν τῶν βραχέων μυῶν ἐκτείνονται ἀπὸ τῆς ἐκφύσεως μέχρι τῆς καταφύσεως τοῦ μυός, ἐπὶ δὲ τῶν μακρῶν πολλαὶ τούτων τελευτῶσιν ἐν τῇ γαστρὶ αὐτοῦ. Ἑκάστη δὲ ἲς περιβάλλεται ὑπὸ ἐλύτρου ἐκ συνδετικοῦ ἱστοῦ, τοῦ *ἐνδομυΐου* ἢ *σαρκειλήματος*, χωρίζοντος αὐτὴν ἀπὸ τῆς παρακειμένης, ὥστε αἱ ἶνες μυός τινος δὲν ἅπτονται ἀλλήλων· αἱ ἶνες δ' αὗται ἑνοῦνται καθ' ὁμάδας, τὰς *μυϊκὰς δεσμίδας*, ἄλλοτε ἄλλου πάχους, εἰς δεσμίδας *πρωτογενεῖς, δευτερογενεῖς* καὶ *τριτογενεῖς*, ὧν ἑκάστη περιβάλλεται ὑπὸ ἰδίου ἐλύτρου, τοῦ *ἐνδομυΐου* ἢ *ἔσω περιμυΐου*, ὅπερ εἶναι ὁ φορεὺς τῶν ἀγγείων καὶ νεύρων τοῦ μυός. Ἐκ τοῦ συνόλου τῶν δεσμίδων τούτων ἑνουμένων ἀπαρτίζεται ὁ ὅλος μῦς, οὗ ἡ ἐπιφάνεια περικαλύπτεται κύκλῳ ὑπὸ συνδετικοῦ ἱστοῦ, τοῦ *ἔξω περιμυΐου* ἢ *μυειλήματος*, ὅπερ ἀπὸ τοῦ ἑνὸς μέχρι τοῦ ἑτέρου ἄκρου τοῦ μυὸς ἐκτεινόμενον συνέχεται κατὰ τὰ πέρατα μετὰ τοῦ τένοντος ἢ τοῦ περιοστέου, ἀποτελοῦν οὕτω θήκην, ἐντὸς τῆς ὁποίας συστέλλεται καὶ χαλᾶται ὁ μῦς.

Ἐφ' ἑκάστου μυὸς διακρίνονται ἡ *ἔκφυσις*, ἡ *γαστὴρ* καὶ ἡ *κατάφυσις*. Καὶ ἔκφυσις μὲν εἶναι τὸ ἄκρον τοῦ μυός, ὅπερ προσφύεται εἰς τὸ ἀκίνητον ἢ σχετικῶς ἀκίνητον μέρος τοῦ σώματος, κατάφυσις δὲ τὸ ἄκρον τοῦ μυός, τὸ προσφυόμενον εἰς τὸ κινούμενον μέρος ἢ εἰς τὸ ἀπέχον περισσότερον τοῦ κορμοῦ. Ἡ δὲ γαστὴρ ἀποτελεῖ τὸ σαρκῶδες μέρος, ὅπερ, παχύτερον ὄν, καλεῖται καὶ *κοιλία* καὶ *σῶμα*. Ἡ ἔκφυσις καὶ ἡ κατάφυσις τῶν μυῶν τῶν μὲν μικρῶν γίνεται διὰ βραχειῶν συνδετικῶν ἰνῶν, τῶν δὲ μειζόνων καὶ ἰδίως τῶν μακρῶν, διὰ τῶν *τενόντων*, οἵτινες ἀποτελοῦνται ἐκ πυκνοῦ συνδετικοῦ ἱστοῦ, στιλπνοὶ ὄντες τὴν ὄψιν, συμπαγεῖς τὴν σύστασιν καὶ στρογγύλοι ἢ ταινιοειδεῖς τὸ σχῆμα, ἢ ἐνίοτε πλατεῖς, ὅτε καλοῦνται *ἀπονευρώσεις*. Προσφύονται δ' οἱ μύες οἱ πλεῖστοι ἐπὶ τῶν ὀστῶν, ἐνίοτε δ' ἐπὶ τοῦ δέρματος (*δερματικοί*), τῶν ἀπονευρώσεων ἢ ἐπὶ τῶν βλεννογόνων ὑμένων. Ὡς πρὸς δὲ τὸ σχῆμα διαιροῦνται εἰς *μακρούς, βραχεῖς, πλατεῖς* καὶ εἰς *σφιγκτῆρας*, ἀπαντῶντας τούτους κυρίως περὶ τὰς ὀπὰς τοῦ σώματος· καὶ ἀναλόγως τῆς φορᾶς εἶναι *εὐθύποροι, καμψίποροι* καὶ *ἐπικαμπεῖς*. Ἡ ἐνέργεια τοῦ μυὸς ἐξαρτᾶται μὲν ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν μυϊκῶν ἰνῶν (τοῦ πάχους) καὶ ἐκ τοῦ μήκους τῆς γαστρὸς αὐτοῦ, ἀλλ' ἐνίοτε καὶ ἐκ τοῦ νόμου τῶν μοχλῶν. Οἱ μύες οἱ συμπράττοντες πρὸς μίαν καὶ τὴν αὐτὴν κίνησιν λέγονται *συναγωνισταί*, οἱ δ' ἐνεργοῦντες πρὸς ἐκτέλεσιν κινήσεων ἀντιθέτων *ἀνταγωνισταί*. Οἱ λεῖοι μύες ἢ τῶν ἀπροαιρέτων κινήσεων εἶναι ὀλιγάριθμοι καὶ ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ μὴ κεχωρισμένοι εἰς αὐτοτελῆ ὄργανα, ἀποτελοῦσι δὲ ὑμένας συνεχεῖς, περιβάλλοντας τὰς κοιλότητας τῶν σπλάγχνων, οἷον τοῦ ἐντερικοῦ σωλῆνος, τοῦ ἀναπνευστικοῦ, τοῦ κυκλοφορικοῦ, τοῦ οὐροποιητικοῦ, τοῦ γεννητικοῦ συστήματος. Νευροῦνται δ' οὗτοι μὲν ὑπὸ τοῦ συμπαθητικοῦ συστήματος, οἱ δὲ τῶν προαιρετικῶν κινήσεων μύες ὑπὸ τῶν ἐκ τοῦ ἐγκεφάλου καὶ τοῦ νωτιαίου μυελοῦ ἐκφυομένων νεύρων Ι. Π.

— *[Φυσιολ.]* Οἱ *μύες* χρησιμεύουσι διὰ τὴν κίνησιν τῶν ζωϊκῶν ὀργανισμῶν, ἥτις προκαλεῖται διὰ τῆς συστολῆς αὐτῶν. Ἐπὶ τῶν ἀνωτέρων ζῴων ἔχομεν δύο εἴδη μυῶν, τοὺς *λείους* καὶ τοὺς *γραμμωτούς*. Ἑκάστη μυϊκὴ ἲς ἔχει σχῆμα κυλινδρικόν, μῆκος 5—15 ἑκ. καὶ πάχος 10—100 μ. Παρουσιάζει δὲ γράμμωσιν ἐγκαρσίαν καὶ ἐπιμήκη, καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ ὑμένιον (*σαρκείλημα*) ἐκ πυρήνων, πρωτοπλάσματος καὶ τῶν ἀρχεγόνων ἰνιδίων. Ἡ τοιαύτη κατασκευὴ τῆς μυϊκῆς ἰνὸς ἐξηγεῖται ἐκ τοῦ ὅτι ἑκάστη ἲς γεννᾶται ἐξ ἐπιμηκυνθέντος κυττάρου, τοῦ ὁποίου οἱ μὲν πυρῆνες διὰ διαιρέσεως ἐπληθύνθησαν, τὸ δὲ πρωτόπλασμα κατὰ τὸ πλεῖστον μετεπλάσθη εἰς μυϊκὰ ἰνίδια, μέρος δὲ παρέμεινεν ἀμετάπλαστον ὡς σαρκόπλασμα κείμενον μεταξὺ τῶν ἰνιδίων. Ἕκαστον ἰνίδιον ἀποτελεῖται ἀπὸ τὰ μυικὰ στοιχεῖα ἢ κυστίδια, ἅτινα ἐπίκεινται ἀλλήλων. Ἑκάτερον δὲ τούτων παρουσιάζει ἐναλλὰξ ζώνην ἀμαυρὰν καὶ λαμπράν. Καὶ ἡ μὲν ἀμαυρὰ ζώνη καλεῖται *ἀνισότροπος*, διότι τὸ φῶς διερχόμενον δι' αὐτῆς πάσχει διπλῆν διάθλασιν, ἡ δὲ λαμπρὰ καλεῖται *ἰσότροπος*, διότι τὸ δι' αὐτῆς διερχόμενον φῶς δὲν πάσχει τὴν διπλῆν διάθλασιν. Ἐν τῷ μέσῳ τῆς ἀμαυρᾶς ζώνης παρατηρεῖται ταινία λεπτὴ καὶ λαμπρά, ἥτις καλεῖται *μέσον δισκίον*. Ἐπὶ δὲ τῆς λαμπρᾶς ζώνης ὡσαύτως παρατηρεῖται ταινία λεπτὴ καὶ ἀμαυρὰ καὶ καλεῖται *παραδισκίον*. Εἰς τὸ πέρας ἑκάστου μυϊκοῦ στοιχείου ὑπάρχει τὸ τελικὸν ἐνδιάμεσον δισκίον, ὅπερ ἐμφανίζεται δίκην ταινίας καὶ ἔχει τὰς ἰδιότητας τῆς ἀνισοτρόπου ζώνης. Εἰς τοὺς μῦς εἰσέρχονται καὶ νεῦρα, τῶν ὁποίων ὁ ἀξονικὸς κύλινδρος μετὰ τὴν ἐξαφάνισιν τῶν ἐλύτρων ἀποσχίζεται εἰς διακλαδώσεις καὶ ἀπολήγει εἰς τὸ καλούμενον *τελικὸν πέταλον*. Ι. Ν. Μ.

— *[Παθολ.]* Οἱ *μύες* προσβάλλονται συνήθως ὑπὸ τῶν ἀκολούθων παθήσεων:

α′) *Ἀτροφία μυϊκή*. Σύνηθες φαινόμενον ἐπὶ παθήσεων τοῦ νωτιαίου μυελοῦ καὶ ἐπὶ παρατεταμένης ἀκινησίας.

β′) *Θλάσις τῶν μυῶν*. Ἐπέρχεται κατόπιν ἐξωτερικῆς ἢ ἐσωτερικῆς κακώσεως (πτώσεως, πλήγματος, κατάγματος κλπ.).

γ′) *Κήλη μυϊκή*. 1) *Γνησία κήλη*, ἥτις εἶναι πρόπτωσις μυός τινος διὰ τῆς περιβαλλούσης αὐτὸν ἀπονευρώσεως, καὶ 2) *Ψευδὴς κήλη*, προκαλουμένη κατόπιν ρήξεως μυός τινος.

δ′) *Προϊοῦσα πρωτοπαθὴς μυοπάθεια* (myopathie) ἢ *προϊοῦσα μυϊκὴ ἀτροφία*. Ταύτης διακρίνονται διάφοροι τύποι: 1) ἡ ψευδοϋπερτροφικὴ μυοπάθεια τύπου Aran-Duchenne de Boulogne, ἥτις εἶναι πάθησις οἰκογενής, κληρονομική. 2) Μυοπάθεια τύπου Leyden-Moebinus. 3) Ὠμοβραχιόνιος τύπος τοῦ Erb. 4) Προσωπικὸς τύπος τοῦ Landouzy-Déjerine κλπ. ε′) Μυΐτις. Μ. Ν. Κ.

— **μυῶν *ἐλαστικότης*.** Οἱ μύες ἔχουσιν ἐλαστικότητα καὶ ἀνακτῶσι τὸ ἀρχικὸν αὐτῶν μῆκος μετὰ τὴν ἄρσιν τοῦ διατείνοντος βάρους· ἡ διάτασις ὅμως τῶν μυῶν διαφέρει τῆς διατάσεως τῶν ἀνοργάνων σωμάτων κατὰ τοῦτο, ὅτι ἐνῷ ἐπὶ τῶν δευτέρων ἡ διάτασις εἶναι ἀνάλογος τοῦ διατείνοντος βάρους, ἐπὶ τῶν μυῶν δὲν συμβαίνει τὸ αὐτό, δηλαδὴ ἡ διάτασις τῶν μυῶν δὲν εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὸ διατεῖνον βάρος, ἀλλ' αὕτη πάντοτε αὐξάνεται ὀλιγώτερον, αὐξανομένου τοῦ διατείνοντος βάρους· τέλος δὲ ὅταν ἡ διάτασις τῶν μυῶν φθάσῃ εἰς ὅριόν τι, καίτοι αὐξάνεται τὸ



Digitized by Google

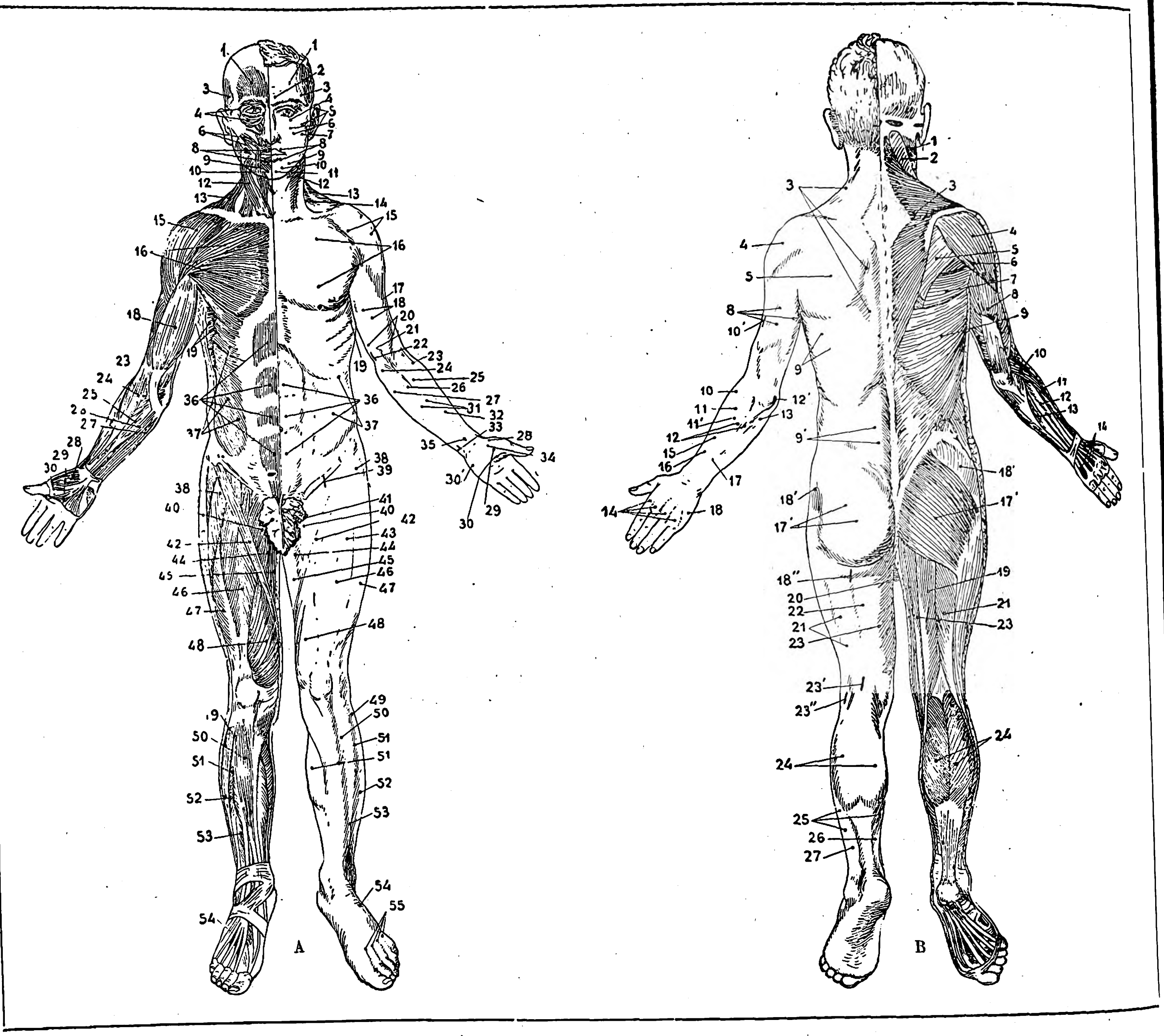

*Οἱ κυριώτεροι μύες τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος.*

[*A) Μύες τῆς προσθίας ἐπιφανείας τοῦ σώματος:* 1=μετωποϊνιακὸς μῦς ἢ ἐπικράνιος, 2=ὑπερόφρυος ἢ ἐπισκύνιος μῦς, 3=κροταφίτης, 4=σφιγκτὴρ τῶν βλεφάρων, 5=νεῦρον προσωπικόν, 6=ζυγωματικὸς μῦς, 7=μασητήριος, 8=σφιγκτὴρ τοῦ σώματος, 9=τρίγωνος τοῦ γενείου, 10=τετράγωνος τοῦ γενείου, 11=ἀνελκτὴρ τοῦ γενείου, 12=στερνοκλειδομαστοειδὴς μῦς, 13=τραπέζιος, 14=τραπέζιος, 15=δελτοειδής, 16=μείζων θωρακικός, 17=νεῦρον κερκιδικόν, 18=δικέφαλος μῦς, 19=ὀδοντωτὸς πλάγιος, 20=νεῦρον βραχιόνιον ἔσω, 21=νεῦρον μέσον, 22=νεῦρον ὠλενικόν, 23=ὑπτιαστὴς πλατύς, 24=πρινιστὴς στρογγύλος, 25=ὠλενικὸς πρόσθιος, 26=κερκιδικὸς πρόσθιος, 27=καμπτὴρ τοῦ μικροῦ δακτύλου, 28=ἀπαγωγὸς βραχὺς ἀντίχειρος, 29=καμπτὴρ βραχὺς τοῦ ἀντίχειρος, 30=προσαγωγὸς τοῦ ἀντίχειρος, 31=καμπτὴρ κοινὸς ἐπιπόλαιος, 32=καμπτὴρ πλατὺς τοῦ ἀντίχειρος, 33=νεῦρον ὠλένιον, 34=ἀπονεύρωσις παλαμιαία, 35=νεῦρον μέσον, 36=ὀρθὸς κοιλιακὸς μῦς, 37=λοξὸς μείζων, 38=τείνων τὴν πλατεῖαν περιτονίαν, 39=νεῦρον μηριαῖον, 40=κτενίτης μῦς, 41=νεῦρον ἐπιπωματικόν, 42=ραπτικὸς μῦς, 43=τρικέφαλος μηριαῖος, 44=προσαγωγὸς μείζων, 45=προσαγωγὸς ἐλάσσων, 46=ὀρθὸς πρόσθιος, 47=πλατὺς ἔξω, 48=πλατὺς ἔσω, 49=μακρὸς περονιαῖος, 50=πρόσθιος κνημιαῖος, 51=ἐκτείνων τοὺς δακτύλους, 52=βραχὺς περονιαῖος, 53=ἐκτείνων τὸν μέγαν δάκτυλον, 54=πούς, 55=ἐκτείνων τοὺς δακτύλους. — *B) Μύες τῆς ὀπισθίας ἐπιφανείας τοῦ σώματος:* 1=στερνοκλειδομαστοειδὴς μῦς, 2=σπληνιοειδὴς μῦς, 3=τραπέζιος, 4=δελτοειδής, 5=ὑποκάνθιος, 6=ἐλάσσων στρογγύλος, 7=μείζων στρογγύλος, 8=τρικέφαλος βραχιόνιος, 9=πλατὺς ραχιαῖος, 10=μακρὸς ὑπτιαστής, 11=μακρὸς ἐκτείνων τοῦ ἀντίχειρος, 12=κοινὸς ἐκτείνων τῶν δακτύλων, 13=ἴδιος ἐκτείνων τοῦ μικροῦ δακτύλου, 14=μεσόστεοι μύες, 10΄=νεῦρον κερκιδικόν, 15=μῦς ἐκτείνων τὸν δείκτην, 16=μακρὸς ἀπαγωγὸς τοῦ ἀντίχειρος. 17=μακρὸς ἐκτείνων τὸν ἀντίχειρα, 18=ἀπαγωγὸς τοῦ μικροῦ δακτύλου, 17΄=μέγας γλουτιαῖος μῦς, 18΄=μέσος γλουτιαῖος μῦς, 18΄΄=νεῦρον ἰσχιακόν, 19=μῦς ἡμιτενοντώδης, 20=μέγας προσαγωγὸς τοῦ μηροῦ, 21=δικέφαλος τοῦ μηροῦ, 22=ἡμιτενοντώδης, 23=ἡμιμεμβρανώδης, 23΄=νεῦρον κνημιαῖον, 23΄΄=νεῦρον περονιαῖον, 24=μῦς γαστροκνήμιος, 25=μῦς ὑποκνημίδιος, 26=κοινὸς καμπτὴρ τῶν δακτύλων τοῦ ποδός, 27=μακρὸς καμπτὴρ τοῦ μεγάλου δακτύλου.]

βάρος οὐδεμία διάτασις καταφανὴς παρατηρεῖται. Τὴν καμπύλην τῆς διατάσεως τοῦ μυὸς δυνάμεθα νὰ γράψωμεν διὰ μυογράφου, ἐπὶ τοῦ ὁποίου τὸ μὲν ἓν πέρας τοῦ μυὸς στηρίζομεν διὰ πιέστρου ἀκινήτως, τὸ δὲ ἄλλο συνδέομεν πρὸς μοχλόν, ὅστις εἰς τὸ ἄκρον φέρει γραφίδα. Ἀπὸ τοῦ μοχλοῦ ἐξαρτᾶται δίσκος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου θέτομεν βάρη πρὸς διάτασιν τοῦ μυός. Ἡ δὲ διάτασις τοῦ μυός, ἡ προκαλουμένη ὑπὸ τῶν βαρῶν, σημειοῦται ἐπὶ τῆς κινησιογραφικῆς συσκευῆς, ὑπὸ τῆς γραφίδος τοῦ μυογράφου. Τοιουτοτρόπως λοιπὸν εὑρέθη ἐπὶ μυὸς βατράχου, ὅτι, ἐνῷ διὰ βάρους 50 γραμμαρίων ἡ διάτασις τῶν μυῶν εἶναι 3,2 χλστ., διὰ διπλασίου βάρους δὲν ἦτο 6,4 ἀλλὰ μόνον 6· διὰ τριπλασίου βάρους δὲν ἦτο 9,6 ἀλλὰ μόνον 8 χλστ. καὶ οὕτω καθεξῆς. Ἐκ τούτων λοιπὸν ἀποδεικνύεται ὅτι, καίτοι ἡ αὔξησις τοῦ βάρους διπλασιάζεται, τριπλασιάζεται κλπ., ἡ διάτασις τοῦ μυὸς ὀλίγον κατ' ὀλίγον ἐλαττοῦται καὶ τέλος παύεται. Ἡ τοιαύτη ὅμως μέθοδος τῆς μετρήσεως τῆς διατάσεως τοῦ μυὸς δὲν εἶναι ἀκριβής, διότι ἔχομεν τὴν διάτασιν τοῦ μυὸς δι' ὡρισμένων μόνον βαρῶν, ἐλλείπουσι δὲ τὰ ἐν τῷ μεταξὺ τούτων, ἤτοι ἡ διάτασις δὲν εἶναι συνεχής. Διὰ νὰ ἔχωμεν ἀκριβῆ εἰκόνα τῆς διατάσεως τοῦ μυός, πρέπει τὸ μὲν διατεῖνον βάρος νὰ αὐξάνηται ὁμαλῶς, ἡ δὲ καμπύλη τῆς διατάσεως νὰ γράφηται συνεχῶς καὶ ἀμέσως παρὰ τοῦ διατεινομένου μυός. Τοῦτο κατορθοῦται δι' ὀργάνου, ὅπερ καλεῖται *διατασεογράφος*. Ἡ δι' αὐτοῦ γραφομένη καμπύλη τῆς διατάσεως τοῦ μυὸς ὁμοιάζει πρὸς ὑπερβολήν, ἐκ τούτου δὲ συνάγεται ὅτι ἡ διάτασις τοῦ μυὸς δὲν εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὴν αὔξησιν τοῦ βάρους, ἀλλ' ἐλαττοῦται αὐξανομένου τοῦ διατείνοντος βάρους.

Ι. Ν. Μ.

**μῦς** (ὁ) (Mus) *[Ζῳολ.]*. Γένος θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυϊδῶν*. Οἱ μύες, κοιν. *ποντίκια*, ἀπαντῶσιν εἰς πάσας τὰς χώρας τῆς γῆς, ἀφθονώτεροι δὲ ἐν Εὐρώπῃ, Ἀσίᾳ καὶ Ἀφρικῇ παρὰ ἐν Ἀμερικῇ καὶ Ὠκεανίᾳ. Εἶναι ζῷα ἰθαγενῆ τῆς Ἀσίας, ἐξ ἧς διεδόθησαν εἰς τὴν Εὐρώπην κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους, διότι οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες καὶ Ρωμαῖοι δὲν φαίνονται γνωρίζοντες τούτους. Σήμερον ἀπαντῶσι καὶ εἰς τὰς ἐρήμους ἔτι καὶ τὰ δάση.

Κυριώτερα χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους τούτου εἶναι τὰ ἑξῆς: Ὀδοντικὸς τύπος κοπ. $\frac{1}{1}$, κυνόδ. $\frac{0}{0}$, τραπ. $\frac{3}{3}\times 2=16$ ὀδόντες. Οἱ κοπτῆρες τῆς κάτω σιαγόνος εἶναι πεπιεσμένοι· κυνόδοντες καὶ προγόμφιοι δὲν ὑπάρχουν. Τὸ κρανίον εἶναι ἐπίμηκες, ἡ κεφαλὴ κωνικὴ καὶ τὸ ἄνω χεῖλος εὐρὺ καὶ ἐσχισμένον κατὰ τὸ ἄκρον του. Οἱ πόδες εἶναι βραχεῖς· ἐκ τούτων οἱ πρόσθιοι φέρουσι τέσσαρας δακτύλους καὶ μέγαν δάκτυλον ἀνανάπτυκτον, οἱ δὲ ὀπίσθιοι πέντε δακτύλους. Οἱ ὄνυχες εἶναι ἰσχυροὶ καὶ ὀξεῖς. Ἡ οὐρὰ εἶναι μακρά, ἀποτελουμένη ἐκ σειρᾶς ἀρθρώσεων, αἵτινες καλύπτονται ὑπὸ λεπιδοειδῶν ἀποφύσεων τετραγωνικῶν καὶ κεκολοβωμένων, μεταξὺ τῶν ὁποίων φύονται βραχεῖαι τινὲς τρίχες. Τὸ γένος περιλαμβάνει περὶ τὰ 800 εἴδη ὧν γνωστότερα εἶναι τὰ κάτωθι:

*Μῦς ὁ κοινὸς* (Mus musculus). Οὗτος ἔχει μῆκος σώματος 15 περίπου ἑκτστμ. καὶ οὐρᾶς 20 περίπου. Ἡ οὐρά του ἀποτελεῖται ἀπὸ 250—260 ἀποφύσεις. Ἡ κεφαλή του εἶναι μακρὰ καὶ τελευτᾷ εἰς ρύγχος ὀξύ, ὅπερ φέρει μακρὰς καὶ σκληρὰς τρίχας ἐν εἴδει μύστακος. Τὰ ὦτα εἶναι λεπτὰ γυμνὰ τριχῶν καὶ ἠνωρθωμένα. Τὸ σῶμα καλύπτεται ὑπὸ τριχῶν λεπτῶν καὶ ἀρκετὰ μακρῶν σκοτεινοφαίου, σχεδὸν ὑπομέλανος, χρώματος κατὰ τὴν ράχιν καὶ σκοτεινῶς τεφροῦ κατὰ τὰ ὑποκάτω μέρη τοῦ σώματος. Οἱ πόδες εἶναι μελανοὶ καὶ οἱ ὄνυχες φέρουσι βραχείας ὑπολεύκους τρίχας. Ποικιλίαι τοῦ γένους τούτου θεωροῦνται ὁ μῦς ὁ κοινὸς ὁ *ἀλεξανδρινὸς* (Mus musculus alexandrinus), ὅστις ἔχει χρῶμα ὀρφνόφαιον, λαιμὸν κιτρίνως διάστικτον καὶ κοιλίαν καὶ πόδας λευκοτέφρους, καὶ ὁ *μῦς ὁ κοινὸς ὁ διάμεσος* (Mus musculus intermedius), ὅστις φέρει σκοτεινῶς φαιὰν γραμμὴν κατὰ μῆκος τῆς ράχεώς του, ἔχει τὰς πλευρὰς ἀνοικτῶς τεφρὰς καὶ τὴν κοιλίαν ὑπόλευκον.

Ὁ μῦς ὁ κοινὸς (κοιν. ποντικὸς) ἀπαντᾷ πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης καὶ παρ' ἡμῖν. Κατὰ πᾶσαν πιθανότητα προέρχεται ἐκ τῆς Ἀσίας καὶ ὑποτίθεται ὅτι μετεφέρθη εἰς τὴν Εὐρώπην ὑπὸ τῶν σταυροφόρων καὶ ἐκεῖθεν διεδόθη ταχέως εἰς ὁλόκληρον τὴν γῆν, τὴν Ἀφρικήν, τὴν Ἀμερικὴν καὶ τὴν Αὐστραλίαν. Ἀπαντᾷ ἐντὸς τῶν οἰκιῶν, τῶν ὑπογείων, τῶν ἀποθηκῶν, στάβλων κτλ. Ἡ τροφή του εἶναι ποικιλωτάτη, ἡ δ' ὄσφρησίς του ἐξαιρετική. Λόγῳ

Digitized by Google

τῆς μεγάλης εὐκινησίας καὶ τῆς καταπληκτικῆς ἐλαστικότητος τοῦ σώματός του διεισδύει πανταχοῦ, σκάπτει κάτωθεν τῶν θεμελίων τῶν οἰκιῶν, κατατρώγει τὰ ξύλα καὶ νήχεται ἐπιτηδειότατα. Τὸ σαρκοφάγον ἔνστικτον τῶν ζῴων τούτων παροτρύνει πολλάκις αὐτὰ νὰ συνάπτωσι μάχας μεταξύ των, καθ' ἣν οἱ ἡττημένοι γίνονται βορὰ τῶν λοιπῶν. Ἐπίσης καὶ ὅταν δὲν εὑρίσκωσι τροφὴν ἀλληλοτρώγονται. Ἡ θήλεια ἔχει ἓξ ζεύγη μαστῶν, ἐγκυμονεῖ ἐπὶ ἕνα μῆνα καὶ γεννᾷ ἅπαξ τοῦ ἔτους 5—6 μικρά.

*Μῦς ὁ τεφρός* (Mus cinereus). Εἶναι ἐπίσης γνωστὸς ὑπὸ τὸ ὄνομα *μῦς ὁ τῶν ὑπονόμων*. Τὸ μῆκός του κυμαίνεται μεταξὺ 25 καὶ 30 ἑκατστ., πλὴν τῆς οὐρᾶς του ἥτις ἔχει μῆκος 20 ἑκατστ. καὶ ἀποτελεῖται ἀπὸ 210 λεπιδοειδεῖς ἀποφύσεις. Ἡ κεφαλὴ εἶναι στενὴ καὶ πεπιεσμένη καὶ οἱ δάκτυλοι ἡμιηνωμένοι διὰ μεμβράνης. Ὁ χρωματισμὸς εἶναι φαιοτεφρόπυρρος κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ τεφροϋπόλευκος κατὰ τὰ ὑποκάτω. Εἶναι ἰσχυρότερος καὶ ἀγριώτερος ἀπὸ τὸ προηγούμενον εἶδος. Ἐν Εὐρώπῃ ἀνεφάνη πρὸ ἑνὸς καὶ ἡμίσεος περίπου αἰῶνος. Ἰθαγενὴς τῶν Ἰνδιῶν ἢ τῆς Περσίας, κατὰ τὸν Pallas, ἐπέδραμε τῷ 1727 εἰς Εὐρώπην κατὰ πολυπληθῆ στίφη, διακολυμβήσαντα τὸν Βόλγαν. Εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας διεποντίσθησαν ἐπὶ τῶν ἀτμοπλοίων, τῷ δὲ 1900 ἐξηπλώθησαν εἰς ὁλόκληρον τὴν βόρειον καὶ νότιον Ἀμερικήν.

Τὸ εἶδος τοῦτο ἀπαντᾷ πανταχοῦ εἰς τὰς οἰκίας, τὰ ὑπόγεια, τὰς ἀποθήκας, ἀλλ' ἰδίως ἐντὸς τῶν ὑπονόμων, εἰς τοὺς λιμένας καὶ τὰ ἀτμόπλοια. Εἶναι ἀδηφαγώτατον καὶ σαρκοφάγον ζῷον. Τὸ θάρρος του τὸν καθιστᾷ ἐπικινδυνωδέστερον τοῦ προηγουμένου εἴδους, διότι ἐμφανίζεται καὶ κατὰ τὴν ἡμέραν ἀκόμη καὶ ἐπιπίπτει καὶ κατὰ ζώντων πολὺ μεγαλυτέρων του ζῴων, ὡς ὀρνίθων, μικρῶν κονίκλων καὶ μεγάλων ἀκόμη, τραυματίζων αὐτὰ εἰς τὸ ρύγχος. Οἱ μύες οὗτοι ἀναρριχῶνται ἐπὶ τῶν τοίχων μετὰ καταπλησσούσης ἐπιδεξιότητος καὶ κατατρώγουν τοὺς νεοσσοὺς τῶν περιστερῶν καὶ πολλάκις καὶ αὐτὰ τὰ ἐνήλικα πτηνά. Ἀναζητοῦν καὶ ἀρέσκονται εἰς τὰ ᾠά, τὰ ὁποῖα μεταφέρουν εἰς τὰς φωλεάς των, σχηματίζοντες σειρὰν ἀπὸ τῆς ἀποθήκης μέχρι τῆς φωλεᾶς καὶ μεταβιβάζοντες τὰ ᾠὰ ἕκαστος εἰς τὸν ἑπόμενόν του. Διὰ τῶν ἰσχυρωτάτων ὀδόντων του κατατρώγει καὶ τὰ σκληρότερα ξύλα, καταστρέφει δὲ καὶ αὐτοὺς τοὺς τοίχους τῶν οἰκιῶν ἢ τῶν περιφράκτων μερῶν, γεφύρας κτλ. Ἐπίσης μεγίστας καταστροφὰς προξενεῖ καὶ εἰς τὴν γεωργίαν γενικῶς. Ἡ θήλεια εἶναι πολυτόκος, φέρει δὲ 6 ζεύγη μαστῶν, ἐξ ὧν τὰ τρία εὑρίσκονται εἰς τὸ στῆθος καὶ τὰ ἄλλα τρία εἰς τὴν κοιλίαν. Ἐγκυμονεῖ ἐπὶ ἕνα μῆνα καὶ γεννᾷ τρεῖς φορὰς τὸ ἔτος ἀπὸ 8—12 μικρὰ ἑκάστην φοράν. Εἰς ἡλικίαν τριῶν μηνῶν τὰ νεαρὰ εἶναι εἰς θέσιν νὰ ἀναπαραγάγουν. Ὁ μῦς οὗτος εἶναι φορεὺς πλείστων ἀσθενειῶν, τῆς χολέρας, τῆς λέπρας, τῆς τριχινιάσεως κτλ.

*Μῦς ὁ κατοικίδιος* (Mus musculus domesticus). Τὸ μῆκος τοῦ σώματός του φθάνει τὰ 9 ἑκατστ., ἄλλα τόσα δὲ τὸ μῆκος τῆς οὐρᾶς του, ἥτις ἀποτελεῖται ἀπὸ 180 λεπιδωτὰς ἀρθρώσεις. Οἱ ὀφθαλμοί του εἶναι μεγάλοι καὶ τὰ ὦτά του μεγάλα, φαιά, γυμνὰ τριχῶν καὶ κατά τι ἐπιμηκέστερα τοῦ ἡμίσεος τοῦ μήκους τῆς κεφαλῆς. Τὸ τρίχωμα εἶναι μαλακὸν καὶ ἔχει χρῶμα φαιοτεφρὸν κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος, ἀνοικτότερον φαιὸν κατὰ τὰ ὑποκάτω καὶ τεφρὸν ἢ τεφρόλευκον κατὰ τὴν κοιλίαν. Αἱ πλευραὶ καὶ τὸ περὶ τὴν ἕδραν τμῆμα τοῦ σώματος εἶναι ὑποκίτρινα. Εἰς τοὺς ἐξημερωμένους μῦς διὰ καταλλήλων διασταυρώσεων καὶ ζῳοτεχνικῶν μεθόδων δίδουν ποικιλώτατον καὶ ἰδιορρυθμότατον χρωματισμόν, ἀπὸ τοῦ λευκοῦ μέχρι τοῦ μελανοῦ καὶ ἀπὸ τοῦ πυρροῦ μέχρι τοῦ φαιοῦ μὲ πάσας τὰς ποικιλίας τῶν χρωμάτων τούτων. Τοὺς βελτιωμένους τούτους μῦς πωλοῦσιν εἰς τὰ καταστήματα τῶν ᾠδικῶν κυρίως πτηνῶν εἰς πολλὰς μεγαλοπόλεις τοῦ ἐξωτερικοῦ ὡς διακοσμητικὰ τῶν αἰθουσῶν ζῷα, ὅπου διατηροῦνται ἐντὸς εἰδικῶν κλωβίων ἢ ὑαλίνων δοχείων.

*Μῦς ὁ κηπαῖος* (Mns musculus hortensis). Οὗτος θεωρεῖται ἁπλῆ ποικιλία τοῦ προηγουμένου εἴδους, οὗ διαφέρει μόνον κατὰ τὸν χρωματισμόν, ὅστις εἶναι πυρρόφαιος κατὰ τὴν ράχιν καὶ τεφροερυθρὸς κατὰ τὰ κάτω μέρη τοῦ σώματος. Ἀπαντᾷ πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης ὡς καὶ παρ' ἡμῖν καὶ ἐνδιαιτᾶται ἐντὸς τῶν οἰκιῶν, τῶν ἀποθηκῶν κλπ. Εἶναι ζωηρὸν καὶ εὐκίνητον ζῷον, ἀλλὰ δειλόν, τρεπόμενον ἀμέσως εἰς φυγὴν μὲ τὸν παραμικρότερον κρότον. Ἐξημεροῦται ὅπως καὶ τὸ προηγούμενον εἶδος, ἀλλ' ἀναδίδει χαρακτηριστικήν, δυσάρεστον ὀσμήν. Εἶναι ζῷον καταστρεπτικόν, κατατρῶγον πάντα τὰ τρόφιμα, τὰ ἐνδύματα, τὰ βιβλία, τὰς ὀπώρας, τοὺς δημητριακοὺς καρπούς, τὰ ξύλα κτλ. Εἶναι ἐνδημικὸν ζῷον, σπανιώτατα μεταναστεῦον εἰς μικρὰς ἀποστάσεις. Ἡ γονιμότης τοῦ εἴδους τούτου εἶναι καταπληκτική. Ἡ θήλεια φέρει πέντε ζεύγη μαστῶν, γεννᾷ δὲ κατὰ εἰκοσαήμερον ἢ εἰκοσιτετραήμερον 6 καὶ ἐνίοτε 8 μικρὰ ἑκάστοτε, ἅτινα εἰς ἡλικίαν 2 μηνῶν εἶναι ἕτοιμα νὰ ἀναπαράγωσιν, ἐφ' ὅσον διατρέφωνται καλῶς. Κατὰ τὸν χειμῶνα καὶ τὸ ἔαρ ἡ γονιμότης εἶναι μεγαλυτέρα παρὰ κατὰ τὰς ἄλλας ἐποχάς. Ὁ μῦς οὗτος ζῇ δύο ἔτη περίπου. Κυριώτερος ἐχθρός του εἶναι ἡ γαλῆ καὶ αἱ μυοπαγίδες, ἂν καὶ προφυλάσσεται καὶ ἀπομακρύνεται ἐπιμελῶς ἀπὸ τούτων.

*Μῦς ὁ τῶν δασῶν* (Mus sylvaticus). Εἶναι παρόμοιος πρὸς τὸν μῦν τὸν κοινὸν ἢ κατοικίδιον, ἀλλ' εἶναι κατά τι μεγαλύτερος καὶ ἰσχυρότερος. Τὸ σῶμά του ἔχει μῆκος 12—14 ἑκτστμ. καὶ ἡ οὐρά του 8—10, ἀποτελεῖται δὲ ἀπὸ 120 λεπιδοειδεῖς ἀρθρώσεις. Ἡ κεφαλή του εἶναι λεπτή, τὸ ρύγχος ὀξύ, τὰ δὲ ὦτα μεγάλα, ὑπερβαίνοντα εἰς μῆκος τὸ ἥμισυ τοῦ μήκους τῆς κεφαλῆς. Οἱ πρόσθιοι πόδες εἶναι ἐπιμηκέστατοι, δι' ὃ καὶ πηδᾷ μᾶλλον ἢ βαδίζει. Ὁ χρωματισμός του εἶναι τεφροϋπέρυθρος κατὰ τὰ ἄνω μέρη τοῦ σώματος καὶ ὑπόλευκος κατὰ τὴν κοιλίαν. Τὸ κατώτερον τμῆμα τῶν ποδῶν εἶναι ὑπόλευκον καὶ τὰ ἄκρα τῶν πτερυγίων τῶν ὤτων μελανά. Ἡ οὐρὰ εἶναι τεφρομελανή. Ἀπαντᾷ πανταχοῦ τῆς Εὐρώπης καὶ ἐνδιαιτᾶται κατὰ προτίμησιν εἰς τὰ δάση, ἀλλὰ συνήθως ἀπαντᾷ καὶ εἰς τοὺς ἀγρούς, τοὺς κήπους καὶ ἐνίοτε καὶ ἐντὸς τῶν οἰκιῶν. Κατατρώγει διάφορα φυτά, ἰδίως τοὺς κορμοὺς τῶν ρητινοφόρων δένδρων, τοὺς νεαροὺς βλαστοὺς καὶ τοὺς καρπούς. Κατὰ τὸν χειμῶνα ἀποσύρεται εἰς ὑπογείους στοὰς ἃς οὗτος κατασκευάζει καὶ περιπίπτει εἰς τὴν χειμερίαν νάρκην. Ἡ θήλεια ἔχει ἓξ μαστοὺς καὶ γεννᾷ δὶς ἢ τρὶς τοῦ ἔτους ἀπὸ 6—8 μικρά. Ἐξημεροῦται εὐκόλως καὶ ζῇ τρία περίπου ἔτη. Δ. Ν. Π.

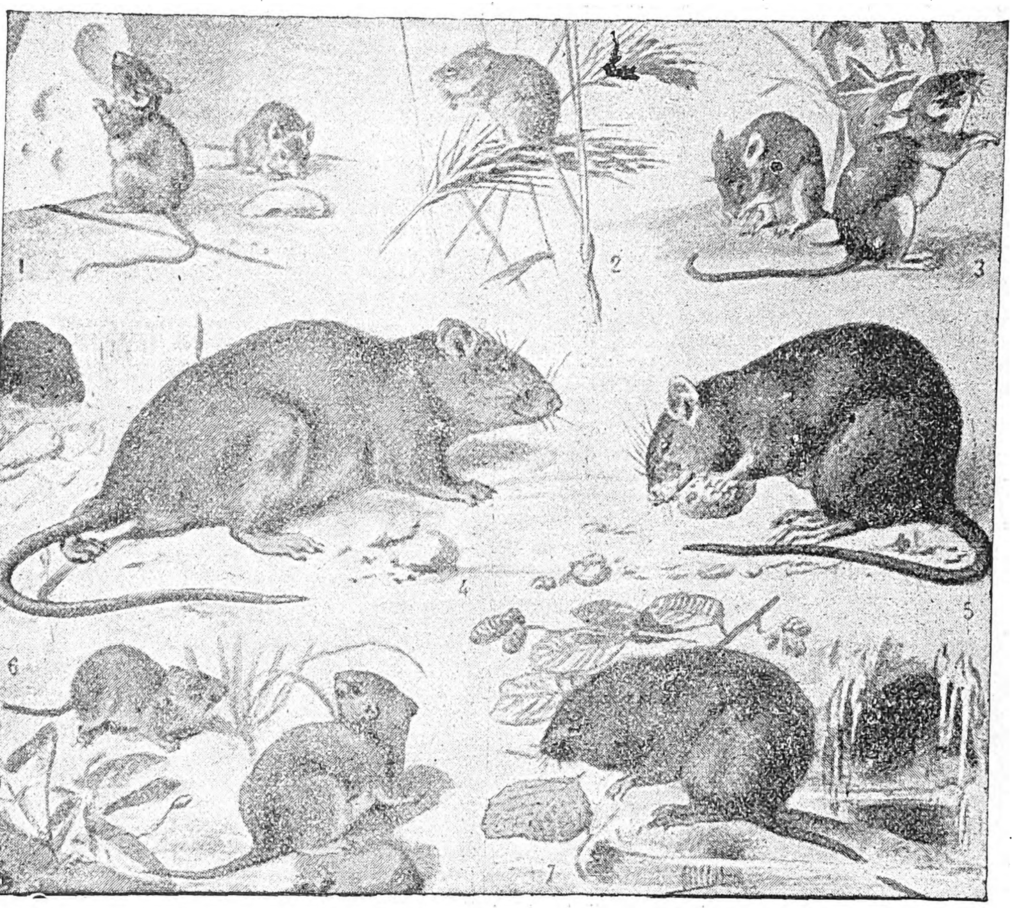

*Διάφορα εἴδη μυῶν.*
[ 1=Ὁ κοινός. 2—7=Ἄλλα εἴδη.]

— *[Παλαιοζῳολ.].* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυῶν* εὑρέθησαν τὸ πρῶτον ἐντὸς στρωμάτων τῆς πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ εἰς τὸ Rousillon. Γ. Κ. Γ.

**Μῦς.** Ἀρχαῖος τορευτής, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις. Κατὰ τὸν Παυσανίαν, περίφημον τεχνούργημα τοῦ τεχνίτου τούτου ἦτο ὁ τορευτικὸς διάκοσμος τῆς ἀσπίδος τοῦ χαλκίνου ἀγάλματος τῆς Ἀθηνᾶς τοῦ Φειδίου (Ἀθηνᾶς Προμάχου), τὸ ὁποῖον ἦτο ἱδρυμένον μεταξὺ τῶν Προπυλαίων καὶ τοῦ Ἐρεχθείου τῆς Ἀκροπόλεως. Ἡ ἀσπὶς ἔφερε τὴν παράστασιν μάχης τῶν Λαπιθῶν πρὸς τοὺς Κενταύρους. Τὴν παράστασιν ταύτην ἔγλυψεν ὁ Μῦς κατὰ τὰ σχέδια τοῦ ζωγράφου Παρρασίου. Ἀλλὰ καὶ ἄλλα ἔργα ἐτεχνούργησεν ὁ Μῦς ἐπὶ τῇ βάσει ζωγραφιῶν τοῦ Παρρασίου, μετὰ τοῦ ὁποίου τακτικώτατα συνειργάζετο. Τοῦτο ἀναφέρει ὁ Ἀθήναιος, ἐπιβεβαιοῖ δὲ καὶ ποτήριον ἐξ Ἡρακλείας, ἐφ' οὗ εἶναι ἐγγεγλυμμένη εἰκὼν τοῦ Ἰλίου καὶ ἡ ἐπιγραφή, ὅτι ἡ παράστασις ὀφείλεται εἰς τὴν ζωγραφίαν τοῦ Παρρασίου καὶ εἰς τὴν τέχνην τοῦ Μυός. Κατὰ τὸν Πλίνιον, ὁ τορευτὴς οὗτος ἐτεχνούργησε καὶ Σειληνοὺς καὶ Ἔρωτας, τορευτικὰ ἔργα τὰ ὁποῖα ἀνετέθησαν ἐν τῷ ἱερῷ τοῦ Διονύσου ἐν Ρόδῳ. Ὡς σύγχρονος τοῦ Παρρασίου ὁ Μῦς ἤκμασε πιθανῶς κατὰ τὸ δεύτερον ἥμισυ τοῦ Ε' π. Χ. αἰῶνος. Β. Δ. Θ.

— **Μῦς.** Σύμβουλος τοῦ Μαρδονίου, ἐξ Εὐρώμου τῆς Καρίας καταγόμενος. Συνοδεύσας αὐτὸν εἰς τὴν κατὰ τῆς Ἑλλάδος ἐκστρατείαν, ἀπεστάλη ἐκ Θεσσαλίας εἰς τὰ ἑλληνικὰ μαντεῖα, πρὸς συλλογὴν χρησμῶν διὰ τὴν ἔκβασιν τῆς ἐκστρατείας, καὶ εἰς τὰς ἑλληνικὰς πόλεις, καλῶν αὐτὰς εἰς ὑποταγὴν (*Ἡρόδ.* Η' 133—135). Π. Ν. Π.

**Μυσαρὶς** *ἄκρα [Ἀρχ. Γεωγρ.].* Ἀκρωτήριον Σαρματίας τῆς ἐν Εὐρώπῃ (Χερσῶνος) «δυτικὸν ἄκρον τοῦ Ἀχιλλέως δρόμου» (*Πτολεμ.* Ι, 414, 11). Ὁ τοιοῦτος καθορισμὸς τὴν ταυτίζει πρὸς τὴν *Ταμυράκην* ἄκραν τοῦ Στράβωνος (Ζ, γ, 19), καὶ πρὸς τὴν ἄκραν *Δζαρουϊλγκὰτς* (Dzaruilgach spit: πλάτ. $46^0$ 01' Β, μῆκ. $35^0$ 04' Ἀν. χάρτ. ἀγγλ. 2232: Odessa to Sevastopol), ἅτε οὖσαν δυτικὴν ἐσχατιὰν τῆς χερσονήσου Τένδρα (Ἀχιλλέως δρόμος), ὡς ὁρίζει ὁ Πτολεμαῖος. Σ. Ε. Λ.

**μυσαρός,** *—ά, —όν·* ὁ ἄξιος μίσους, ἀποστροφῆς, βδελυρός, ἀκάθαρτος, κοιν. *σιχαμερός*: «μυσαρὰ πρᾶξις» «μυσαρὸν ἔγκλημα».—Ἐπίρρ. *μυσαρῶς*.

**μυσαρότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μυσαροῦ, βδελυρότης· || πρᾶξις μυσαρά.

**μυσάττομαι·** αἰσθάνομαι μύσος, ἀποστροφήν, βδελύσσομαι, ἀποστρέφομαι, κοιν. *σιχαίνομαι*.

**μυσείδι** (τό)· βλ. *μισείδι*.

**Μυσία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Οὕτως ἐκαλεῖτο κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους τὸ βορειοδυτικὸν τμῆμα τῆς Μικρᾶς Ἀσίας, τὸ περιβρεχόμενον ὑπὸ τῆς Προποντίδος, τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ τοῦ Αἰγαίου πελάγους καὶ ὁριζόμενον ὑπὸ τῆς Φρυγίας πρὸς Α. καὶ τῆς Λυδίας πρὸς Ν. Εἰς τὴν χώραν ταύτην ἀνῆκεν ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγία καὶ ἡ Τρωάς, αἵτινες συναπετέλουν τὴν *Μικρὰν Μυσίαν*, ἡ Αἰολίς, ἡ περιλαμβάνουσα τὰς κατὰ τὰ παράλια αὐτῆς αἰολίδας πόλεις, καὶ ἡ μεσημβρινὴ ἢ *Μεγάλη Μυσία*, ἥτις ἦτο καὶ ἡ κυρίως λεγομένη Μυσία. Ταύτης τὸ νοτιώτερον τμῆμα ἐκαλεῖτο *Τευθρανία*, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἤκμασεν ἡ πόλις *Πέργαμος*. Ἡ χώρα αὕτη εἶναι ὀρεινὴ καὶ πολύυδρος καὶ κατὰ τοὺς ἀρχαίους χρόνους ἐκαλύπτετο εἰς μεγάλην ἔκτασιν ὑπὸ δασῶν καὶ ἑλῶν. Ἐκ τῶν ὀρέων της ὀνομαστότερα ἦσαν ἡ ἐν τῇ Τρωάδι *Ἴδη*, ὁ κατὰ τὰ ἀνατολικὰ αὐτῆς ὅρια *Ὄλυμπος* (ὁ *Μύσιος*) καὶ ὁ χωρίζων αὐτὴν κατὰ μέγα μέρος ἀπὸ τῆς Λυδίας *Τῆμνος*. Τῶν ποταμῶν ὁ *Ρύνδακος* κατὰ τὰ ἀνατολικὰ αὐτῆς ὅρια, ὁ *Μάκεστος*, ὅστις εἶναι καὶ ὁ κυρίως διαβρέχων αὐτήν, ὁ *Αἴσηπος*, ὁ ἱστορικὸς *Γρανικός*, ὁ *Σκάμανδρος* τῆς Τροίας καὶ ὁ κατὰ τὰ νότια ὅρια τῆς χώρας *Κάϊκος*, χωρίζων τὴν Μυσίαν ἀπὸ τῆς Λυδίας, καὶ τῶν λιμνῶν ἡ *Ἀπολλωνιᾶτις* καὶ ἡ *Ἀφνῖτις*. Ἂν καὶ ὀρεινὴ ἡ Μυσία

Digitized by Google

ἦτο χώρα εὔφορος εἰς δημητριακοὺς καρποὺς καὶ κτηνοτροφικὰ προϊόντα καὶ δὲν ἐστερεῖτο καὶ πλουσίων πόρων ἐκ τῶν ὀρυχείων της, ὡς μαρτυροῦσι καὶ τὰ σημερινὰ ἐν αὐτῇ μεταλλεῖα ἀργυρούχου μολύβδου τῆς Μπάλιας. Οἱ Μυσοί, φυλὴ συγγενὴς πρὸς τοὺς Φρύγας καὶ Θρᾷκας, μνημο-

νεύονται τὸ πρῶτον παρ' Ὁμήρῳ ὡς φίλοι καὶ σύμμαχοι τῶν Τρῴων καὶ ἐχθροὶ τῶν Ἀχαιῶν (Ἰλ. Β, 858). Κατὰ δὲ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους, μετὰ τὴν κατάληψιν τῶν παραλίων τῆς χώρας των ὑπὸ τῶν Αἰολέων, περιῆλθον, ὡς καὶ οἱ γειτονικοὶ αὐτῶν λαοί, ὑπὸ τοὺς Λυδοὺς (*Ἡροδ.* Α' 28) καὶ ἔπειτα τοὺς Πέρσας, ὅτε ἡ Μυσία μετὰ τῆς Λυδίας, ἐπὶ Δαρείου, συναπετέλει τὴν δευτέραν σατραπείαν τοῦ περσικοῦ κράτους. Μετὰ τοὺς μηδικοὺς πολέμους ἡ Μυσία ἔγινε σύμμαχος τῶν Ἀθηναίων, μετὰ δὲ τὴν ὑποταγήν της ὑπὸ τοῦ Μεγάλου Ἀλεξάνδρου περιῆλθεν εἰς τοὺς διαδόχους αὐτοῦ, διαμοιρασθεῖσα μεταξὺ τούτων, μετὰ δὲ τὴν ἵδρυσιν τοῦ βασιλείου τῆς Περγάμου (283 π. Χ.), εἰς αὐτό. Ὅτε δὲ διὰ διαθήκης περιῆλθε τὸ περγαμηνὸν βασίλειον εἰς τὴν Ρώμην, ἡ Μυσία ἔγινε τμῆμα τῆς ρωμαϊκῆς ἐπαρχίας «Ἀσία». Οἱ Μυσοὶ ἐθεωροῦντο λαὸς μαλθακὸς καὶ ἐκτεθηλυμμένος τὸν χαρακτῆρα καὶ δειλός. Διὰ τοῦτο καὶ ἐλέγοντο περὶ αὐτῶν αἱ παροιμίαι «Μυσῶν λεία» περὶ παντὸς πράγματος τὸ ὁποῖον ἦτο δυνατὸν νὰ λαφυραγωγηθῇ ἀτιμωρητὶ καὶ «Μυσῶν ἔσχατος» περὶ τοῦ εὐτελεστάτου τῶν ἀνθρώπων. Ἐν τῇ Μυσίᾳ, πλὴν τῶν κατὰ τὰ παράλια αὐτῆς κτισθεισῶν αἰολικῶν ἐν ἀρχῇ ἀποικιῶν, ἱδρύθησαν καὶ ἄλλαι πολλαὶ βραδύτερον, αἵτινες ἔφθασαν εἰς μεγάλην ἀκμήν, ὡς ἦσαν τὸ *Ἀδραμύττιον*, ἡ *Ἄντανδρος*, ἡ *Ἀπολλωνία*, ἡ *Ἄσσος*, ὁ *Ἀταρνεύς*, τὰ *Γάργαρα*, ἡ *Κύζικος*, ἡ *Λάμψακος*, ἡ *Μιλητόπολις*, τὸ *Πάριον*, ἡ *Πέργαμος*, ἡ *Πιτάνη*, ἡ *Πρίαπος*, ἡ *Προκόννησος*, ἡ *Στρατονίκεια*, ἡ *Τευθρανία*, αἱ πόλεις τῆς Τρωάδος *Ἄβυδος*, *Ἀλεξάνδρεια ἡ Τρωάς*, ἡ *Ἀμαξιτός*, ἡ *Δάρδανος*, ἡ *Ζέλεια*, τὸ *Ἴλιον*, ἡ *Λάρισα*, ἡ *Σκαμανδρία*, ἡ *Σκῆψις* καὶ πλεῖσται ἄλλαι, τῶν ὁποίων καὶ νομίσματα διεσώθησαν πολλά. ΚΑΨ.

**Μυσία** *[Μυθολ.]*. —1) Ἐπίθετον τῆς θεᾶς Δήμητρος: α') Ἐν Πελλήνῃ τῆς Ἀχαΐας, ἔνθα καὶ ἱερὸν αὐτῆς ὑπῆρχε, *Μύσαιον* καλούμενον, ἐντὸς ἄλσους διαρρεομένου ὑπ' ἀφθόνων ὑδάτων, καὶ ἑορτὴ ἐτελεῖτο πρὸς τιμὴν τῆς θεᾶς, διαρκείας ἑπτὰ ἡμερῶν. Κατὰ τὴν τρίτην ἡμέραν τῆς ἑορτῆς ἀπελαύνοντο ἐκ τοῦ ἱεροῦ ἅπαντες οἱ ἄνδρες καὶ πάντα τὰ ἄρρενα ζῷα (οἱ κύνες ἰδίως), αἱ δὲ γυναῖκες ἐτέλουν κατὰ τὴν νύκτα ὅσα ἦτο ἔθος νὰ τελῶσι. Κατὰ δὲ τὴν ἐπιοῦσαν προσερχομένων τῶν ἀνδρῶν συνηθύμουν καὶ ἀντήλλασσον μεταξύ των διάφορα σκώμματα (*Παυσ.* Ζ, 27. 9). β') Ἐν Ἄργει, ἔνθα ἐπίσης ὑπῆρχεν ἱερὸν αὐτῆς, *Μυσίας* ἐπικαλουμένης, κτισθὲν ὑπὸ τινος *Μυσίου*, φιλοξενήσαντος τὴν θεάν, ὅτε περιεπλανᾶτο ἀναζητοῦσα τὴν Περσεφόνην. Ἐν τῷ ἱερῷ τούτῳ, ὅπερ ἐστερεῖτο ὀρόφου, ὑπῆρχεν ἄλλος ναὸς ἐξ ὀπτῆς πλίνθου καὶ ξόανα τῆς Δήμητρος, τῆς Κόρης καὶ τοῦ Πλούτωνος. Ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ ἐκαλεῖτο *Μυσία* καὶ ἡ περὶ αὐτὸ τοποθεσία (*Παυσ.* Β, 18.3).— 2) Ἐπίθετον τῆς θεᾶς Ἀρτέμιδος ἐν Σπάρτῃ, ἔνθα καὶ ἱερὸν αὐτῆς ὑπὸ τὴν ἐπωνυμίαν ταύτην ὑπῆρχε, κατὰ τὴν ἀπὸ Σπάρτης εἰς Ἀρκαδίαν ὁδὸν καὶ παρὰ τὸ τέμενος Κρανίου Στεμματίου (*Παυσ.* Γ', 20. 9). ΚΑΨ.

**μυσίδαι** (οἱ) (Mysidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια μαλακοστράκων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *σχιζοπόδων*, περιλαμβάνουσα ἐλάχιστα γένη, ὧν γνωστότερον ὁ *μύσις* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

**Μύσιος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς ἐν Μ. Ἀσίᾳ Μυσίας, ὅστις πηγάζων κατὰ τὸν Στράβωνα (ΙΓ', 616) ἀπὸ τοῦ ὄρους Τήμνου (Δεμιρτζῆ-Νταγ) ἐκβάλλει εἰς τὴν δεξιὰν ὄχθην τοῦ Καΐκου (Μπακὶρ-Τσάϊ). Σήμερον καλεῖται *Μπέργκμα*. Α. Θ. Σ.

**Μύσιος** *[Μυθολ.]*. Ἀργεῖος, ὅστις φιλοξενήσας ἐν τῷ οἴκῳ του, κατὰ τὰς ἐπιχωρίους παραδόσεις, τὴν θεὰν Δήμητραν, ἵδρυσεν ἱερὸν αὐτῆς *Μυσίας* ἐπικληθείσης. Α. Θ. Σ.

**Μυσιργιοῦ** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καρυδίου τῆς ἐπαρχίας Σητείας τοῦ νομοῦ Λασιθίου. Κάτ. (1928) 96. Εἰς τὰ ΒΑ. αὐτοῦ ἐκτείνεται τὸ ἀκρωτήριον *Σαλμώνη* καὶ ΒΔ. τὸ *Παλαιόκαστρο*, ὅπου ἔγιναν σπουδαιόταται προϊστορικαὶ ἀνακαλύψεις. Ε. Γ.

**μύσις** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μύειν, τοῦ κλείειν, ἰδίως τὰ βλέφαρα, κλείσιμον τῶν ὀφθαλμῶν, συστολὴ (τῆς κόρης, τῶν χειλέων, τῆς μήτρας κλπ.).

— **μύσις τῆς κόρης** *[Ὀφθαλμ.]*. Διακρίνομεν διάφορα εἴδη *μύσεων τῆς κόρης*, τὰ ἑξῆς: 1) Τὴν *ἀντανακλαστικὴν φωτοκινητικὴν μύσιν*. Τὸ φυσιολογικὸν φαινόμενον τῆς συστολῆς τῆς κόρης τῇ ἐπιδράσει τοῦ φωτὸς ἦτο ἤδη γνωστὸν ἀπὸ τοῦ Ἱπποκράτους, Γαληνοῦ, Παύλου τοῦ Αἰγινήτου κ.τ.λ., ἀλλ' ἡ ἐπιστημονικὴ σπουδὴ τοῦ φαινομένου ὀφείλεται εἰς τοὺς Whyh (1751) καὶ Budge (1855), οἵτινες πρῶτοι ἠσχολήθησαν μὲ τὴν μελέτην τῶν ἀντιδράσεων τῆς κόρης (βλ. καὶ λ. *ὀφθαλμός*). 2) *Τὴν ἀνακλαστικὴν μύσιν εἰς τὴν προσαρμοστίαν*. 3) Τὴν *Ἀνακλαστικὴν μύσιν εἰς τὴν σύγκλισιν*. 4) Τὴν *ἀντανακλαστικὴν μύσιν προσοχῆς* (reflèxe à l'attention, —Haab). Κατ' αὐτὴν ἡ κόρη συστέλλεται, ὅταν φῶς εὑρίσκεται πλαγίως πρὸς τὸν ὀφθαλμὸν χωρὶς νὰ τὸν φωτίζῃ, ἢ καὶ ἀκόμη, ὅταν τὸ ἄτομον σκεφθῇ ἁπλῶς τὸ φῶς (Pilz). 5) Τὴν *ἀνακλαστικὴν βλεφαροκορικὴν μύσιν* (reflèxe orbiculo-pupillaire). Παρατηρηθεῖσα ὑπὸ τῶν Graefe (1854) καὶ Galvani (1887), φέρει τὸ ὄνομα τοῦ ἀντανακλαστικοῦ τοῦ Westphall-Pilz. Κατ' αὐτὴν παρατηρεῖται συστολὴ τῆς κόρης, ὅταν τὸ ἄτομον μύῃ τὰ βλέφαρα δι' ἰσχυρᾶς συσπάσεως τοῦ σφιγκτῆρος μυὸς τῶν βλεφάρων. 6) Τὴν *μύσιν συνεπείᾳ παραλύσεως τοῦ διαστολέως μυὸς τῆς κόρης*. Ὅταν παραλύσῃ ὁ διαστολεὺς μῦς, τότε ὑπερισχύει ἡ τονικὴ συσπαστικὴ δύναμις τοῦ σφιγκτῆρος καὶ ἡ κόρη συστέλλεται· ἐπειδὴ δὲ ὁ διαστολεὺς τῆς κόρης νευροῦται ὑπὸ τοῦ μεγάλου συμπαθητικοῦ καὶ δὴ ὑπὸ τοῦ θωρακικοῦ τμήματος τοῦ νωτιαίου μυελοῦ καὶ τοῦ ἄνω αὐχενικοῦ συμπαθητικοῦ γαγγλίου, ἕπεται ὅτι καὶ πᾶσα καταστροφὴ ἢ παράλυσις τοῦ ἀνωτέρω τμήματος τοῦ νωτιαίου μυελοῦ καὶ τοῦ ἄνω συμπαθητικοῦ γαγγλίου ἐπιφέρει καὶ τὴν μύσιν τῆς κόρης. Τοιαῦται μύσεις παρατηροῦνται κατὰ τοὺς τραυματισμοὺς τοῦ αὐχενικοῦ συμπαθητικοῦ νεύρου καὶ τοῦ ἄνω συμπαθητικοῦ γαγγλίου, ὡς καὶ τοὺς πέριξ αὐτῶν ὄγκους. Ἐπίσης τὸ σύμπτωμα τῆς μύσεως παρατηρεῖται εἰς ἀδενίτιδας, εἰς ἀνευρύσματα τῆς ἀορτῆς καὶ τῆς ὑποκλειδίου ἀρτηρίας (Gairdner), εἰς ὄγκους τινὰς τοῦ μεσοθωρακίου, τοῦ θυρεοειδοῦς ἀδένος καὶ τοῦ οἰσοφάγου καθὼς καὶ εἰς φυματώσεις τινὰς τῆς κορυφῆς τῶν πνευμόνων (Souques). Εἰς τὰς ἀνωτέρω παθήσεις, ἐπειδὴ ἡ μύσις εἶναι ἑτερόπλευρος, παρατηρεῖται καὶ σταθερὰ ἀνισοκορία. Ἰδιαιτέρα μνεία δέον νὰ γίνῃ καὶ διὰ τὴν εἰς τὸ tabes καὶ τὴν γενικὴν παράλυσιν παρατηρουμένην μύσιν τῶν κορῶν. Κατὰ τὰ νοσήματα ταῦτα ἡ κόρη συστέλλεται κατὰ τὴν προσαρμοστίαν καὶ τὴν σύγκλισιν, ὄχι ὅμως καὶ εἰς τὸ φῶς, (φαινόμενον τοῦ Argyll—Robertson). Ὅταν ἐξ ἀντιθέτου καταστραφῇ ἢ τραυματισθῇ τὸ ὀφθαλμικὸν γάγγλιον ἢ ὅταν παραλύσῃ τὸ μεσεγκεφαλικὸν κέντρον τοῦ σφιγκτῆρος τῆς κόρης, τότε θὰ ἔχωμεν μυδρίασιν. Ἐπίσης ὁσάκις ἀδρανῇ ὁ ἐγκέφαλος, ἔχομεν μύσιν (ἀποπληξία, γενικὴ ἀναισθησία, συγκοπὴ κτλ.). 6) Τέλος ἔχομεν μύσεις τῆς κόρης, συνεπείᾳ χρήσεως διαφόρων φαρμάκων καὶ κολλυρίων, ὡς ἡ πιλοκαρπίνη (Byasson, E. Hadry, Laqueur 1877), ἡ ἐζερίνη (Jobst et Hesse, Vee) κτλ. Ἐπίσης κατόπιν ἐσωτερικῆς λήψεως παρασκευασμάτων ὀπίου, δηλητηριάσεων ἐκ νικοτίνης κτλ. ἔχομεν μύσιν.

Ἡ μύσις τῆς μιᾶς κόρης συνεπάγεται καὶ συστολὴν τῆς ἑτέρας, καὶ ἐὰν αὕτη εὑρίσκεται ἐν τῷ σκότει. Ἡ τοιαύτη μύσις καλεῖται *συνανακλαστικὴ* ἢ *συνεργής*. Α. Γ.

**μύσις** (ἡ) (Mysis) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακοστράκων ποδοφθάλμων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυσιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ θαλάσσια ζῷα διακρινόμενα ἐκ τῶν 8 ζευγῶν θωρακικῶν ποδῶν. Τὰ ζῷα ταῦτα δὲν ἔχουσι θωρακικὰ βράγχια, ἐντὸς δὲ τοῦ οὐραίου πτερυγίου φέρουσι δύο ὠτοκύστεις. Γεννῶνται ὑπὸ μορφὴν *ναυπλίου* (βλ. λ.). Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, πάντα πελαγικά, ζῶντα καθ' ὁμάδας καὶ ἀποβαίνοντα λεία τῶν ἰχθύων. Ἀξιολογώτερον εἶδος εἶναι ἡ *μύσις ἡ κοινὴ* (Mysis vulgaris), ἥτις ἔχει μῆκος 2 περίπου ἑκατοστ. καὶ χρῶμα φαιοϋπόλευκον. Δ. Ν. Π.

**Μυσίστρατος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀχυρώτατον φρούριον τοῦ ἐσωτερικοῦ τῆς Σικελίας, κείμενον μεταξὺ τῶν νῦν Mussumeli καὶ Santa-Caterina. Σῴζονται χαλκᾶ νομίσματα αὐτοῦ τῶν χρόνων τοῦ Τιμολέοντος (περὶ τὰ 340 π. Χ.). Α. Θ. Σ.

**Μύσκελλος** *[Μυθολ.]*. Υἱὸς τοῦ Ἄλκμονος, ἐξ Ἄργους, ὅστις κατὰ τὴν παράδοσιν, ἐκτελῶν ἐντολὴν τοῦ Ἡρακλέους ἐμφανισθέντος καθ' ὕπνους, ἀπῆλθεν εἰς Ἰταλίαν, ὅπου ἔκτισε κατὰ τὸ 710 π. Χ. τὴν πόλιν Κρότωνα (*Στράβ.* VI, 262, *Ὀβιδ.* Μεταμ. XV). Α. Θ. Σ.

**Μύσκων**. Υἱὸς τοῦ Μενεκράτους, εἷς τῶν Συρακουσίων στρατηγῶν κατὰ τὴν ἐν Σικελίᾳ ἐκστρατείαν τῶν Ἀθηναίων τῷ 415—413 π. Χ. (Θουκ. VIII, 85, *Ξενοφ.* Ἑλλην. Α, 1, 29). Α. Θ. Σ.

**Μυσλιβέτσεκ** (Mysliweczek), *Ἰωσήφ*. Βοημὸς μουσικοσυνθέτης (1737 — 1781). Ἐσπούδασεν ἐν Πράγᾳ καὶ τῷ 1760 ἐδημοσίευσε τὰς πρώτας ἓξ συμφωνίας του. Τῷ 1764 ἐδημοσίευσεν ἐν Πάρμῃ τὸ πρῶτον μελόδραμά του, καὶ τῷ 1765 παρεστάθη ἐν Νεαπόλει τὸ μελόδραμά του, «ὁ Βελλεροφόντης», σημειῶσαν μεγάλην ἐπιτυχίαν. Τὰ μελοδράματά του ἀνῆλθον ἐν ὅλῳ εἰς 30. Τὰ κυριώτερα τούτων εἶναι: «Ἐριφύλη», «Ὀλυμπιάς», ὅπερ κατέστη δημοφιλέστατον, «Ὀρμίντα» κτλ. Συνέθεσεν ἐπίσης διαφόρους σονάτας, κουαρτέττα, ὀρατόρια, κοντσέρτα κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μύσλοβιτς**, ἢ *Μυσιοβίτσε* (γερμ. Myslowitz, πολων. Myssiovtze) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Πολωνίας, ἐν τῇ Ἄνω Σιλεσίᾳ. Κάτ. 18.115. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Πρζέμσα, πλωτοῦ παραποτάμου τοῦ Βιστούλα καὶ ἐπὶ τῆς σιδηροδρομικῆς γραμμῆς Κρακοβία-Κατοβίτσε. Ἔχει νηματουργεῖα καὶ κεραμοποιεῖα, παρ' αὐτὴν δὲ ὑπάρχουν γαιανθρακωρυχεῖα. Εἶναι γνωστὴ ὡς ἀποτελοῦσα τὸ «Σημεῖον τῶν τριῶν Αὐτοκρατόρων», ὅπου μέχρι τοῦ Παγκοσμίου πολέμου συνηντῶντο τὰ σύνορα τῆς Γερμανίας, τῆς Ρωσίας καὶ τῆς Αὐστροουγγαρίας. Μ. Δ. Β.

**Μυσοὶ** (οἱ) *[Ἀρχ.]*· βλ. *Μυσία*.

**Μυσοκάρας** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν Μαυριτανίας τῆς Τιγγιτανῆς (Μαρόκου) μεταξὺ *Ἡλίου Ὄρους καὶ Φοὺθ ποταμοῦ ἐκβολῶν* (*Πτολεμ.* Δ, 1, 3, Nobbe), ὃν γενικῶς ταυτίζουν πρὸς τὸ *Καρικὸν τεῖχος* τοῦ πλοῦ τοῦ Ἄννωνος (§ 5) καὶ πρὸς τὸν σύγχρονον *Σαφὴ* ἢ *Ἀφσὴ* (πλάτ. 32° 18' Β., μήκ. 9° 13' Δυτ., χάρτ. ἀγγλ. 714: cape Kantin to cape Sin), τὸν μεταξὺ ἀκρωτηρίου Καντίν, 15 μίλ. πρὸς Ν. του, καὶ λιμένος Μογαδόρ, 55 μίλ. ΒΑ. του, λιμένα τοῦ Μαρόκκου ἐπὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ (Africa Pilot I). Σ. Ε. Λ.

**Μύσορμος** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία κατ' ἄλλον κώδικα τοῦ *Μυὸς* ὅρμου (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μυσὸς** *[Μυθολ.]*. Ὁ ἐπώνυμος τῆς Μυσίας ἥρως, ὅστις ἐλέγετο ἀδελφὸς τοῦ Καρὸς καὶ τοῦ Λυδοῦ.

**Μυσός, Δημήτριος**. Διάκονος τοῦ πατριαρχείου Κωνσταντινουπόλεως. Ὁ Μελάγχθων συνάψας σχέσεις μετ' αὐτοῦ, διαμένοντος ἀπὸ τοῦ 1558 ἐν Βιτεμβέργῃ, ἄγνωστον ἐπὶ τίνι σκοπῷ, ἔδωκεν αὐτῷ κατὰ τὴν ἐπιστροφήν του (1559) εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἐπιστολὴν πρὸς τὸν τότε πατριάρχην Κωνσταντινουπόλεως Ἰωάσαφ τὸν Β' (1555—1565) μετὰ τῆς εἰς τὸ ἑλληνικὸν μεταφράσεως τῆς Αὐγουσταίας ὁμολογίας. Εἰς τὴν ἐπιστολὴν ταύτην, ἐν ᾗ ὁ Μελάγχθων ὑπερήσπιζε τὴν διδασκαλίαν τῆς διαμαρτυρομένης ἐκκλησίας ἀπὸ τῶν προσβολῶν τῆς δυτικῆς, δὲν ἀπήντησεν ὁ Ἰωάσαφ. Κ. Ι. Δ.

**Μυσσὲ** (Musset), *Ἀλφρέδος ντὲ—*. Γάλλος ποιητής, γεννηθεὶς καὶ ἀποθανὼν ἐν Παρισίοις (1810—1857). Ἐσπούδασεν εἰς τὸ κολλέγιον Ἐρρίκου τοῦ Δ' καὶ ὑπῆρξε συμμαθητὴς τοῦ δουκὸς τῆς

*Ἀλφρέδος ντὲ Μυσσέ.*
[Κατὰ λιθογραφίαν τοῦ Γκαβαρνί.]

Ὀρλεάνης. Ἀφοῦ ἀμφεταλαντεύθη ἐπ' ἀρκετὸν μεταξὺ τοῦ δικαίου, τῆς ἰατρικῆς, τῆς ζωγραφικῆς καὶ τῆς μουσικῆς, ἀνεμίχθη τέλος εἰς τὴν φιλολογικὴν

Digitized by Google

κίνησιν. Εἰς ἡλικίαν δέκα ὀκτὼ ἐτῶν εἰσήχθη εἰς τοὺς φιλολογικοὺς κύκλους καὶ τῷ 1830 ἐδημοσίευσε τά: «Contes d'Espagne et d'Italie», τὰ ὁποῖα ἔσχον μεγάλην ἐπιτυχίαν («Don Paëz», «L' Andalouse», «La ballade à la lune» κλπ.), καὶ διεκρίνοντο διὰ τὸν κομψὸν δανδισμὸν καὶ τὴν μελαγχολικὴν καὶ ἡδονικὴν φαντασίαν των. Ὁ Μυσσὲ ἐντὸς ὀλίγου ἀπέκτησε πλήρη τὴν εὔνοιαν τῆς ρωμαντικῆς σχολῆς. Κατόπιν ἔδωσεν εἰς τὴν «Revue de Paris» νέα διηγήματα ὡριμότερα: «Les voeux stériles», «Octave», «Les secrètes pensées de Rafaël». Μετὰ μίαν θεατρικὴν ἀποτυχίαν («La nuit vénitienne») ἐδημοσίευσε δευτέραν συλλογὴν «Un spectacle dans un fauteuil» (1832), περιλαμβάνουσαν ἓν σκοτεινὸν καὶ ποιητικὸν δρᾶμα: «La coupe et les lèvres», μίαν λεπτὴν κωμῳδίαν: «A quoi rêvent les jeunes filles», μίαν ἐλεγείαν: «Le saule» καὶ ἓν εἰρωνικὸν καὶ φανταστικὸν ποίημα: «Namouna», ὅπου ἠσχολεῖτο μὲ τὴν αἰνιγματικὴν μορφὴν τοῦ Δὸν Ζουάν, ὑπηρετῶν εἰς τὴν μόδαν καὶ κυρίως εἰς τὸν βυρωνισμόν. Παρομοίας ἐμπνεύσεως εἶναι καὶ τὸ ἔργον «Rolla» (1833), ὑπερβολικὰ θεατρικὸν καὶ συγκινητικόν, εἰς τὸ ὁποῖον ὁ συγγραφεὺς ἐξυμνεῖ τὸν ἔρωτα-παραφροσύνην.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ἐπέρχεται εἰς τὴν ζωὴν τοῦ Μυσσὲ ἡ κρίσις, ἡ ὁποία ἔμελλε νὰ μεταμορφώσῃ τὸ πνεῦμά του. Κατὰ τὸν χειμῶνα τοῦ 1833 ὁ Μυσσὲ μὲ τὴν G. Sand ἐπεσκέφθη τὴν Γένουαν, τὴν Φλωρεντίαν, τὴν Βολωνίαν, τὴν Φερράραν καὶ ἐγκατεστάθη μετ' αὐτῆς ἐν Βενετίᾳ. Ἐνταῦθα, κατόπιν θυελλωδῶν καὶ σκληρῶν συμβεβηκότων, ἐπῆλθεν ἡ ρῆξις μεταξὺ τῶν δύο ἐραστῶν. Ὁ Μυσσὲ ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1834. Τὸ ἑπόμενον καὶ τὸ μεθεπόμενον ἔτος εἶδον τὸ φῶς τὰ ἀριστουργήματά του, αἱ θαυμασταὶ αὗται κραυγαὶ ὀδύνης, ἀμφιβολίας καὶ παραμυθίας: «La nuit de Mai», «La nuit de Décembre», «La lettre à Lamartine», «La nuit d' Août», «Stances à la Malibran», «La nuit d'Octobre», «L'espoir en Dieu». Ταυτοχρόνως εἰς ἓν μέγα μυθιστόρημά του ὑπὸ τὸν τίτλον «La confession d'un enfant du siècle» (1836), ὁ ποιητής, ἡμιαναρρώσας, διηγεῖται τὰ δεινὰ τὰ ὁποῖα ὑπέστη. Κατόπιν ἐπανήρχισε νὰ συγγράφῃ ποιήματα γλυκυτέρου τόνου («Une Bonne Fortune») καὶ νὰ συνθέτῃ θεατρικὰ ἔργα, τὸ ὁποῖα δὲν προωρίζοντο διὰ τὴν σκηνήν: «Lorenzaccio» (1834), «Fantasio» (1833), «Les caprices de Marianne» (1833), «On ne badine pas avec l'amour» (1834), «Barberine» (1835), «Le chandelier» (1835), «Il ne faut jurer de rien» (1836), «Un caprice» (1837). Ταυτοχρόνως διέκοπτε πᾶσαν σχέσιν πρὸς τὸν ρωμαντισμὸν διὰ τῆς δημοσιεύσεως εἰς τὴν «Revue des Deux Mondes» τῶν «lettres de Dupuis et de Cotonet» (1836—1837).

Κατὰ τὰ ἀκόλουθα δέκα ἔτη (1837—1847) ἐξηκολούθησε νὰ δημοσιεύῃ ποικίλα ἔργα: «Contes et nouvelles», κωμῳδίας («Louison», «On ne saurait penser à tout», «Carmosine», «Bettine», «L' habit vert»), ἔμμετρα διηγήματα («Simone», «Silvia»), ἕνα σατιρικὸν διάλογον («Dupon et Durand»), ᾄσματα («Le Rhin allemand»), ὡραίας ἠθικὰς φαντασίας («Sur la paresse», «Une soirée perdue», «Après une lecture»), σοννέτα, κλπ. Τὸ τελευταῖόν του ἀριστούργημα ἦτο τὸ ὡραῖον «Souvenir». Ἀσθενὴς πλέον καὶ ἀπογοητευμένος, ἤρχισε νὰ γίνεται κατώτερος ἑαυτοῦ. Τῷ 1852 ἐξελέγη μέλος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας, ἀλλ' εἶχε πλέον ἀπολέσει τὴν «δύναμιν καὶ τὴν ζωήν» του. Παρὰ τὰ ἐλαττώματά του, ὁ Μυσσὲ διὰ τοῦ εἰρωνικοῦ, λεπτοῦ καὶ φωτεινοῦ του πνεύματος δέον νὰ καταταχθῇ μεταξὺ τῶν μεγάλων ποιητῶν τοῦ ΙΘ' αἰῶνος. Εἶναι πάντοτε ὁ μεγαλύτερος, ὁ αὐθορμητότερος καὶ ὁ συγκινητικώτερος ποιητὴς τοῦ ἔρωτος. θ. π.

**Μυσσοβάγια** (Myssowaja) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ρωσίας ἐν Σιβηρίᾳ, ἐπὶ τῆς ΝΑ. ὄχθης τῆς λίμνης Βαϊκάλης. Κάτ. 10.500. Εἶναι ἐκ τῶν κυριωτέρων λιμένων τῆς Βαϊκάλης, μέχρι δὲ τοῦ 1904, ὁπότε ἤρχισεν ἡ λειτουργία τοῦ τμήματος τοῦ ὑπερσιβηρικοῦ σιδηροδρόμου, τὸ ὁποῖον, περιβάλον τὸ νότιον τμῆμα τῆς λίμνης, ἥνωσε τὰ δύο ἄκρα αὐτοῦ, ἡ πόλις αὕτη ἐχρησίμευεν ὡς σταθμὸς τῶν πλοίων, τὰ ὁποῖα μετέφερον τοὺς σιδηροδρομικοὺς συρμοὺς ἀπὸ τῆς μιᾶς ὄχθης εἰς τὴν ἑτέραν. Μ.Δ.Β.

**μυσταγωγία** (ἡ)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μυσταγωγοῦ, ἡ εἰσαγωγὴ εἰς τὰ μυστήρια, κατήχησις, μύησις· || «θεία μυσταγωγία» ἡ κατὰ τὴν ἐκκλησιαστικὴν λειτουργίαν τελουμένη θυσία τοῦ αἵματος καὶ σώματος τοῦ Σωτῆρος.

— *[Ἐκκλ.]* Ἐν τῇ εὐρυτέρᾳ τῆς λέξεως σημασίᾳ καλεῖται *μυσταγωγία* ἡ περὶ ἐκκλησιαστικοῦ τινος μυστηρίου διδασκαλία. Οὕτω ὁ Γρηγόριος ὁ Ναζιανζηνὸς λέγει περὶ τοῦ Χριστοῦ κατὰ τὴν μεταμόρφωσιν: «ἀστράπτει καὶ ἡλίου φωτοειδέστερος γίνεται μυσταγωγῶν τὸ μέλλον», ὁ Γρηγόριος ὁ Νύσσης: «ἡ γενομένη τῇ παρθένῳ παρὰ τοῦ Γαβριὴλ μυσταγωγία» καὶ ὁ Φώτιος τὸ περὶ τῆς ἐκπορεύσεως τοῦ ἁγίου Πνεύματος ἔργον αὐτοῦ ἐπέγραψε: «περὶ μυσταγωγίας τοῦ ἁγίου Πνεύματος». Ἐν στενοτέρᾳ ἐννοίᾳ, ἥτις καὶ ἐπικρατεῖ, καλεῖται μυσταγωγία ἡ περὶ τῶν μυστηρίων διδασκαλία καὶ δὴ τῆς θείας εὐχαριστίας. Οὕτω ὁ Χρυσόστομος καλεῖ τὴν θείαν εὐχαριστίαν «ἱερὰν μυσταγωγίαν», ὁ Θεόδωρος ὁ Στουδίτης λέγει «ἡμεῖς τοῦ ἁγιωτάτου πατριάρχου μνημονεύομεν ἐν τῇ μυσταγωγίᾳ», ὁ Μάξιμος ὁ ὁμολογητὴς ἔχει γράψει «Μυσταγωγίαν περὶ τοῦ τίνων σύμβολα κατὰ τὴν ἁγίαν ἐκκλησίαν ἐπὶ τῆς συνάξεως τελούμενα συνέστηκε» καὶ ὁ Κύριλλος ὁ Ἱεροσολύμων «Μυσταγωγικὰς κατηχήσεις». Κ. Ι. Δ.

**μυσταγωγικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὴν μυσταγωγίαν, ὁ τῆς μυσταγωγίας.

—**μυσταγωγικὴ θεολογία.** Ἡ θεολογία, ἡ ἐξετάζουσα τὴν λειτουργίαν καὶ καθόλου τὰς λειτουργικὰς τελετὰς οὐχὶ ἱστορικῶς, ἀλλ' ἐν ὅλῳ ἢ ἐν μέρει μυστικῶς, καλεῖται *μυσταγωγική*. Κατὰ ταῦτα *μυσταγωγικὴ θεολογία* εἶναι μορφή τις τῆς *λειτουργικῆς*, ἥτις ἐξετάζει τὴν λειτουργίαν καὶ τὰς καθόλου τελετὰς οὐχὶ κατὰ τὴν ἱστορικὴν ἐξέλιξιν αὐτῶν, ἀλλὰ μυστικῶς. Ἱδρυτὴς τῆς μυσταγωγικῆς θεολογίας, ἥτις ἰδιάζει ἐν τῇ Ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ, εἶναι ὁ Διονύσιος ὁ ψευδοαρεοπαγίτης. Κ.Ι.Δ.

**μυσταγωγὸς** (ὁ)· ὁ εἰσάγων εἰς τὰ μυστήρια, ὁ μυῶν, ὁ κατηχῶν τοὺς ἀμυήτους.

— *[Ἀρχ.]* Οἱ *μυσταγωγοὶ* ἀπετέλουν ἰδίαν κληρικὴν τάξιν διερμηνέων, οἱ ὁποῖοι διὰ προπαρασκευαστικῆς διδασκαλίας ἐμύουν προκαταρκτικῶς τοὺς μύστας καὶ οἱονεὶ ὡδήγουν αὐτοὺς εἰς τὴν κατανόησιν τῶν μυστηρίων. Ἐν Ἐλευσῖνι τὴν τάξιν τῶν μυσταγωγῶν ἀπετέλουν αὐτοὶ οὗτοι οἱ Εὐμολπίδαι καὶ οἱ Κήρυκες. Τὸ καθῆκον τοῦτο ἐξετέλουν οἱ μυσταγωγοὶ κατὰ τὰς τελετὰς τῆς μυήσεως, παραλαμβάνοντες ἕκαστος ὡρισμένον ἀριθμὸν μυστῶν, οὓς ἐδίδασκον καὶ προπαρεσκεύαζον νὰ δίδωσι τὰς καταλλήλους ἀπαντήσεις κατὰ τὴν μύησιν. Ἀλλ' ἐκτὸς τῶν ἐπισήμων καὶ κληρονομικῶν μυσταγωγῶν ἐκ τῶν οἰκογενειῶν τοῦ Εὐμόλπου καὶ τῶν Κηρύκων, καὶ πᾶς Ἀθηναῖος μεμυημένος εἰς τὰ Ἐλευσίνια μυστήρια εἶχε τὸ δικαίωμα νὰ γίνῃ μυσταγωγός, συνιστῶν ξένον, ὡς ἀναφέρει ὁ Δημοσθένης. Ἐν Ἀνδανίᾳ ὑπῆρχεν ἐπίσημος κατάλογος τῶν μυσταγωγῶν. Διὰ τὰ μυστήρια τῶν Καβείρων ἐν Σαμοθράκῃ καὶ ἀλλαχοῦ, ὡς καὶ διὰ τὰ μυστήρια τῆς Ἴσιδος, οἱ μυσταγωγοὶ ἦσαν πιθανῶς ἀκαθορίστου ἀριθμοῦ. Κατ' ἐπέκτασιν, ἡ λέξις μυσταγωγὸς ἐσήμαινεν ἐν Σικελίᾳ τὸν ξεναγὸν τοῦ περιηγητοῦ. Β. Δ. Θ.

**μυσταγωγῶ** (*—έω*)· εἶμαι μυσταγωγός, εἰσάγω εἰς τὰ μυστήρια, μυῶ, κατηχῶ· || ἱερουργῶ.

**Μύστακας** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀρριανῶν τῆς ἐπαρχίας Σαπῶν τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Ἔχει δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 358.

**μυστακίας** (ὁ) *[Ζῳολ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τοῦ ἰχθύος *νημάχειλος* (βλ. λ.).

**Μυστακίδης, *Βασίλειος*.** Ἕλλην ἱστορικὸς καὶ γεωγράφος, γεννηθεὶς τῷ 1859. Ἀποφοιτήσας τῆς Μεγάλης τοῦ Γένους Σχολῆς ἐσπούδασε φιλολογίαν ἐν Ἀθήναις, ὁπόθεν μετέβη εἰς Γερμανίαν πρὸς εὐρυτέρας ἱστορικὰς σπουδὰς καὶ κατόπιν εἰς Παρισίους. Ἐδίδαξεν ἐν Φιλιππουπόλει, Καισαρείᾳ, Θεσσαλονίκῃ καὶ Κωνσταντινουπόλει, ὅπου καὶ διετέλεσεν ὑποδιευθυντὴς τοῦ ἀρχαιολογικοῦ μουσείου. Ἐταξίδευσεν εἰς ὁλόκληρον σχεδὸν τὴν Μικρὰν Ἀσίαν καὶ τὴν Ἑλληνικὴν Χερσόνησον, χάριν ἱστορικῶν, γεωγραφικῶν καὶ ἀρχαιολογικῶν σπουδῶν, καὶ ἐδημοσίευσε: «Σκωριῶν ἀνακαμίνευσις», «Ἱστορικαὶ εἰδήσεις περὶ Κουρούτσεσμε» (Ἀθῆναι 1888), «Αἱ θρηνῳδοί, ἤτοι ἡ σαρκοφάγος τῶν θρηνῳδῶν ἐν τῷ αὐτοκρατορικῷ μουσείῳ» (Κωνσταντινούπολις 1898), «Ἡ ἀρχαιολογία τῶν ἀνατολικῶν ἐθνῶν κατὰ τὸν ΙΘ' αἰῶνα» (1902), «Περὶ τῆς σπουδαιότητος τῆς ἱστορίας καὶ τῆς σχέσεως αὐτῆς πρὸς τὰς λοιπὰς ἐπιστήμας», «Κρίσεις, διορθώσεις καὶ προσθῆκαι εἰς τὴν Νεοελληνικὴν γεωγραφικὴν φιλολογίαν τοῦ Α. Μηλιαράκη», «Χάρτης τῆς Ἀσιατικῆς Τουρκίας» (ἐν Μονάχῳ 1908), «La première imprimerie turque et ses publications» (1911), «Μαρτῖνος ὁ Κρούσιος καὶ Ἀνδρέας Δάρμαρις ὁ Ἐπιδαύριος ἐν Τυβίγγῃ τῷ 1584» (Ἰένα 1915), «Μωάμεθ ὁ πορθητὴς—Γεννάδιος ὁ Σχολάριος» (Κωνσταντινούπολις 1919), «Αἱ λέξεις Ἕλλην, Γραικὸς (Γραικύλος), Βυζαντῖνος, Ρωμαῖος (Γραικορρωμαῖος), Ὀθωμανὸς (Ἑλληνοθωμανός), Μωαμεθανός, Τοῦρκος, Ὀσμανλῆς» (ἐν Τυβίγγῃ, β' ἔκδ. 1920), «Ἀνώτατα παιδευτήρια κατὰ τοὺς βυζαντιακοὺς χρόνους καὶ ἡ παρὰ τὰ Πατριαρχεῖα Μεγάλη τοῦ Γένους Σχολὴ μετὰ τὴν ἅλωσιν» (1921), «Ἡ τσεχοσλοβακικὴ δημοκρατία καὶ τὰ κατ' αὐτὴν ἐν τῇ κεντρικῇ Εὐρώπῃ» (Κωνσταντινούπ. 1921), «Germano-Graeca, Γερμανία-Ἑλλὰς κατὰ τὸν ΙΣΤ' αἰῶνα» (Κωνσταντινούπολις-Τυβίγγη 1923), «Θετταλικὰ σημειώματα ἐκ χειρογράφων» (1923), «Σελίδες ἐκ τῆς ἀναγεννήσεως τῶν γραμμάτων» (1923), «Δύο Ἕλληνες, Κωνσταντῖνος Ἀστέλλα καὶ Ἐμμανουὴλ Μουζίκιος ἐν Τυβίγγῃ κατ' Αὔγουστον τοῦ 1586» καὶ πλῆθος ἄλλο διατριβῶν, ἄρθρων, μελετῶν εἰς περιοδικά, ἐφημερίδας καὶ ἡμερολόγια· ἐπίσης συνέγραψε γεωγραφίαν καὶ ρωμαϊκὴν ἱστορίαν χάριν τῶν ἐν Τουρκίᾳ ἑλληνικῶν γυμνασίων, διακρινομένας διὰ τὴν ἀκρίβειαν καὶ περιεκτικότητα αὐτῶν. Ι. Φ. ΔΗΜΑΡΑΤΟΣ

— **Μυστακίδης, *Νικόλαος*.** Λόγιος Ἠπειρώτης (1863—1930). Ἐχρημάτισε διδάσκαλος ἐπὶ ἔτη εἰς πολλὰς πόλεις καὶ χωρία τῆς Ἠπείρου καὶ ἐδημοσίευσεν εἰς ἐφημερίδας, περιοδικὰ καὶ ἡμερολόγια διαφόρους μελέτας σχετικὰς μὲ τὴν ἱστορίαν τῆς Ἠπείρου. Χ. Ι. Σ.

**μυστακοδέτης** (ὁ), καὶ ***μουστακοδέτης***· ἐπίδεσμος τοῦ μύστακος πρὸς καλυτέραν εὐθέτησιν αὐτοῦ.

**μυστακοκήτη** (τὰ) *[Ζῳολ.]*. Κατηγορία ζῴων θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν *κητῶν*, περιλαμβάνουσα μεγάλα κήτη ἀπαντῶντα εἰς τὰς ἀρκτικὰς θαλάσσας τῆς γῆς. Δ. Ν. Π

**μυστακοφόρος** (ὁ)· ὁ φέρων μύστακας μεγάλους, κοιν. *μουστακαλῆς*.

**μύσταξ,** *—ακος* (ὁ)· τὸ ἐπὶ τοῦ ἄνω χείλους τρίχωμα τοῦ ἀνδρός, κοιν. *μουστάκι*.

— *[Ἐγκυκλ.]* Οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες καὶ Ρωμαῖοι εἶχον ἐκ περιτροπῆς γένειον καὶ μύστακα ἢ ἐξύριζον ἀμφότερα. Τὰ μετάλλια τὰ παρουσιάζοντα μορφὰς μυστακοφόρους εἶναι ἐκτάκτως σπάνια καὶ ἀποδίδονται εἰς βαρβάρους λαούς. Ὁ τραυματίας πολεμιστὴς ὁ γνωστὸς ὡς «Θνήσκων μονομάχος» εἶναι τὸ μόνον ἀρχαῖον μυστακοφόρον ἄγαλμα, θεωρεῖται δὲ ὁμοφώνως ὡς παριστῶν ἀλλοδαπὸν στρατιώτην, πιθανῶς Γαλάτην, χρησιμεύοντα ὡς διακοσμητικὸν στοιχεῖον θριαμβευτικοῦ μνημείου. Οἱ κάτοικοι τῆς Ἀνατολῆς, ἰδίως οἱ Κινέζοι, διετήρησαν ἀείποτε τὸν μύστακα, καίπερ ξυρίζοντες τὸ ὑπόλοιπον πρόσωπον. Οἱ Φράγκοι οἵτινες εἰσέβαλον εἰς τὴν Γαλατίαν διεκρίνοντο ἰδίως διὰ τοῦ μύστακος ἀπὸ τῶν Ρωμαίων. Ὁ μύσταξ ἀνέκτησε τὴν εὔνοιαν τοῦ συρμοῦ καὶ κατέστη φοβερὸς τὴν θέαν ἐπὶ Καρολομάγνου καὶ τῶν διαδόχων του μέχρι τοῦ Ι' αἰῶνος. Μετὰ διαφόρους φάσεις, ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΓ' ἐφέρετο μόνος ἢ μὲ δέσμην τριχῶν ἐπὶ τοῦ πώγωνος. Τὸν συρμὸν ἠκολούθησαν ὅλαι αἱ τάξεις τῆς κοινωνίας μέχρι καὶ τῶν δικαστικῶν καὶ κληρικῶν. Ὁ μύσταξ ἦτο προαιρετικὸς ἐπὶ Λουδοβίκου ΙΔ' καὶ περὶ τὰ τέλη τῆς βασιλείας του ἦτο ἀποκλειστικὸν προνόμιον τῶν στρατιωτικῶν καὶ τῶν κομψευομένων. Τὸ βίαιον κόψιμον τοῦ μύστακος ἢ καὶ τὸ ἁπλοῦν τράβηγμα ἐθεωρήθη ἀείποτε ὡς ἡ δεινοτέρα τῶν ὕβρεων. Ἡ σύγχρονος ἐποχὴ ἀκολουθοῦσα τὸν ἀγγλικὸν καὶ ἀμερικανικὸν συρμὸν θυσιάζει τὸν μύστακα ἐντελῶς ἢ τὸν περιορίζει μέχρι τοῦ ἐλαχίστου. Τ. Δ.

**Μυστεγνά,** ἢ ***Μυστιγνὰ*** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς ἐπαρχίας Μυτιλήνης τοῦ νομοῦ Λέσβου, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 1.322. Κεῖται ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς νήσου, εἰς μικρὰν ἀπόστασιν ἀπὸ τῆς Σκάλας Μυστεγνῶν, ἔνθα ἡ ἀρχαία Αἴγειρος. Ἔχει ἀκμάζουσαν ἐλαιοκομίαν καὶ παράγει κηπευτικὰ προϊόντα, καπνόν, σιτηρὰ κ. ἄ. Ἐπίσης ἔχει 6 ἐλαιοτριβεῖα, ἀστυνομικὸν σταθμόν, Τ.Τ.Τ. γραφεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον, ἐλαιουργικὸν συνεταιρισμὸν κ. τ. λ. Π. Ν. Π.

**Μυστὲλ** (Mustel), ***Βίκτωρ*.** Γάλλος κατασκευαστὴς μουσικῶν ὀργάνων (1815—1890). Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἀνακάλυψις (1854) τῆς *διπλῆς ἐκφράσεως* διὰ τὸ ἁρμόνιον, δηλαδὴ πτερυγίων κινουμένων διὰ τῶν γονάτων καὶ δυναμένων νὰ προκαλέσωσιν αὔξησιν ἢ μείωσιν τῆς ἐντάσεως τοῦ ἤχου. Τὸ παρὰ τοῦ Μυστὲλ τελειοποιηθὲν ἁρμόνιον ὠνομάσθη «Ὄργανον Μυστέλ». Ὁ οἶκος Μυστὲλ ἔλαβεν ἐπίσης δίπλωμα εὑρεσιτεχνίας διὰ τὸ *τυπόφωνον*, ὄργανον ἀποτελούμενον ἐκ σειρᾶς χαλυβδίνων πλακιδίων, κρουομένων διὰ πλήκτρων καὶ παραγόντων κρυσταλλίνους ἤχους. Τελειοποίησις τοῦ τυποφώνου εἶνε ἡ *τσελέστα* (célesta) τοῦ αὐτοῦ οἴκου. Γ. Σ.

**μυστηριακός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὰ μυστήρια, ὁ τῶν μυστηρίων: «μυστηριακὰ σύμβολα».

—**μυστηριακαὶ θρησκεῖαι.** Οὕτως ἐπεκράτησε νὰ καλῶνται αἱ κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους ἀναφανεῖσαι ἢ εἰς νέαν ζωὴν κληθεῖσαι θρησκεῖαι τῆς Κυβέλης, τοῦ Ἄττιος, τῆς Ἴσιδος, τοῦ Ταμμούζ, τοῦ Μίθρα καὶ ἄλλαι, ἐν ταῖς ὁποίαις ἀναβιοῦσι πανάρχαιαι παραστάσεις, συνδεόμεναι πρὸς τὰ φαινόμενα τῆς ἐναλλαγῆς χειμῶνος καὶ θέρους, ἀνατολῆς καὶ δύσεως τοῦ ἡλίου κ. τ. τ. καὶ αἱ ὁποῖαι διὰ μυστηριακῶν τελετῶν ὑπισχνοῦνται τὴν ἐξασφάλισιν τῆς σωτηρίας καὶ τῆς ἀθανασίας. Ἡ ἐμφάνισις ἢ ἡ ἀναβίωσις τῶν θρησκειῶν τούτων συνδέεται πρὸς τὸ ἔργον τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου καὶ τὴν ἐξ αὐτοῦ κατὰ πρῶτον λόγον δημιουργηθεῖσαν νέαν κατάστασιν τῶν πραγμάτων κατὰ τοὺς χρόνους τῶν Διαδόχων. Ἡ διὰ τῆς συγκεράσεως τῶν λαῶν ἐπελθοῦσα ἀκριβεστέρα γνῶσις τῶν ἀρχαίων θρησκειῶν ὡδήγησεν εἰς τὴν πίστιν ὅτι οὐδεμία αὐτῶν εἶναι ἀληθής, ἀλλὰ πᾶσαι σχετικαί. Μετὰ τῆς σχετικότητος αὐτῆς συνεδέθη, ὡς πάντοτε συμβαίνει, ἀπεριόριστος ὑποκειμενισμὸς ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὰς θρησκευτικὰς πεποιθήσεις **καὶ δοξασίας.**

Digitized by Google

Τὸ αὐτὸ συνέβη καὶ ὡς πρὸς τὴν ἠθικὴν ἐκ τῶν αὐτῶν ἀκριβῶς λόγων. Ἀμφότερα, σχετικότης καὶ ὑποκειμενισμός, ἔσχον ὡς ἀποτέλεσμα τὴν σκέψιν περὶ πάσης ἠθικῆς ἀρχῆς καὶ πρὸ πάντων περὶ πάσης θρησκείας. Ἡ διάλυσις τῆς τελευταίας ταύτης εἶχε παρασκευασθῆ ἀπὸ ἀρχαιοτέρων χρόνων διὰ τῆς θρησκευτικῆς κριτικῆς τῶν Ἐλεατῶν καὶ διὰ τῶν σοφιστικῶν δογμάτων, παρὰ δὲ τὴν προσπάθειαν τῶν στωϊκῶν πρὸς διάσωσιν αὐτῆς ἡ κατάστασις αὐτῆς βαίνει ἐπιδεινουμένη καὶ ἐπιταχύνεται ἡ διάλυσις διὰ τοῦ ὀρθολογισμοῦ τοῦ Εὐημέρου, ὅστις ἐπικουρεῖ εἰς τὸ ἔργον ἐκεῖνο τοῦ ὑποκειμενισμοῦ καὶ τῆς σκέψεως. Ἀλλ' οἱ παράγοντες οὗτοι δὲν εἶναι οἱ μόνοι. Ἡ διάλυσις τῶν πόλεων καὶ ἡ δημιουργία μεγάλων κρατῶν γίνονται ἀφορμὴ πρὸς ἐξάπλωσιν τοῦ ἀτομισμοῦ καὶ τοῦ ἀναποσπάστως μετ' αὐτοῦ συνδεομένου κοσμοπολιτισμοῦ. Συνέπεια τούτων εἶναι ἡ ἰσχυρὰ ῥοπὴ πρὸς τὸν ἀνθρωπισμὸν ὡς τὸ μόνον ἄξιον λόγου καὶ βέβαιον ἰδανικόν, ἡ διάγνωσις τῆς ἀξίας τῆς προσωπικότητος καὶ ἡ ἐμβάθυνσις καθόλου εἰς τὸν ψυχικὸν βίον, ὡς βλέπομεν λ. χ. ἐκ τοῦ χαρακτῆρος τῆς τέχνης τῶν ἀλεξανδρεωτικῶν χρόνων καὶ ἐκ τῆς πρὸς βιογραφίας καὶ αὐτοβιογραφίας κλίσεως. Δι' ὅλων τούτων τῶν δυνάμεων ἐπέρχεται ἡ ἐξάρθρωσις τοῦ ἀρχαίου κόσμου, ἡ καταστροφὴ τοῦ τέως πολιτισμοῦ καὶ ἡ διάλυσις τῶν ἕως τότε ἰσχυουσῶν ἀξιῶν, ἰδιαίτατα δὲ τῶν θρησκευτικῶν. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς καταπτώσεως ταύτης δὲν βραδύνουσι νὰ ἐμφανισθῶσι· συναίσθημα ἀβεβαιότητος καὶ ἀνησυχίας καὶ ζήτησις νέας ὑψίστης ἀξίας, ἥτις νὰ παρέχῃ σκοπὸν καὶ νόημα εἰς τὴν ὕπαρξιν. Ἄλλαις λέξεσιν ἐμφανίζεται ἰσχυρὰ καὶ βαθεῖα θρησκευτικότης, ἥτις εἶναι ἀδύνατον νὰ ἱκανοποιηθῇ ὑπὸ τῶν κλονισθεισῶν κατὰ παράδοσιν θρησκειῶν. Πρὸς ἱκανοποίησιν αὐτῆς ἀναφαίνονται ὑπὸ νέαν μορφὴν αἱ μυστηριακαὶ θρησκεῖαι, μεταβεβλημέναι κατά τε τὸν μῦθον καὶ τὰ μυστήρια. Ἐννοεῖται ὅτι εἰς τὴν ἀναβίωσιν ταύτην συμβάλλουσι καὶ ἄλλα πλὴν τῶν ἐκτεθέντων αἴτια, φύσεως μᾶλλον ἐξωτερικῆς, ὡς λ. χ. οἱ συχνοὶ καὶ μακροχρόνιοι πόλεμοι, σεισμοί, λοιμοί, ἔλλειψις ἀσφαλείας κ. ἄ. Ἡ θρησκευτικότης ἐκείνη φέρει χαρακτῆρα ὅλως διόλου διάφορον τοῦ τῆς παλαιᾶς καὶ καινομανῆ. Τὸ πρῶτον γνώρισμα αὐτῆς εἶναι ἡ ἐλπὶς καὶ ὁ πόθος τοῦ Ἐπέκεινα, ὁ πόθος ὅμως πρὸς ἀθανασίαν τοῦ ἀτόμου ὡς τοιούτου καὶ ἡ ῥοπὴ πρὸς τελειότητα, ἥτις θεωρεῖται ἰσοδύναμος πρὸς τὴν μακαριότητα. Ἐκ τοῦ πόθου τούτου πρὸς τὸ Ἐπέκεινα καὶ τὴν ἀτομικὴν ἀθανασίαν, τὴν ἐπιβίωσιν τῆς προσωπικότητος, ἐξηγεῖται ἡ ἐκ νέου ἀνάδυσις ἐκ τοῦ σκότους τοῦ παρελθόντος παλαιῶν μύθων περὶ ψυχῆς. Τοιοῦτοι μῦθοι εἶναι ὁ ἐκ τοῦ Πλάτωνος γνωστὸς περὶ πτώσεως τῆς ψυχῆς, δεσμεύσεως αὐτῆς ἐν τῷ σώματι καὶ ἀντιθέσεως πρὸς αὐτό, μεθ' οὗ συνδέεται διαρχικὴ κοσμοθεωρία καὶ ῥοπὴ πρὸς ἀπαλλαγὴν ἀπὸ τῆς ὕλης ὡς ψυχικὴ ἀνάγκη καὶ ὡς ἠθικὸν αἴτημα, καὶ ὁ περὶ ἀναλήψεως τῆς ψυχῆς μῦθος, λίαν διαδεδομένος κατὰ τοὺς χρόνους τούτους. Ἀμφότεροι οὗτοι οἱ μῦθοι ὑπεμφαίνουσιν ἠθικὴν ἀπαισιοδοξίαν, πρὸς τὴν ὁποίαν παράλληλος βαίνει ἄπελπις μοιρολατρεία. Fata regunt orbem, certa stant omnia lege. Τῆς ἀπαισιοδοξίας ταύτης καὶ τῆς εἰς τὴν εἱμαρμένην πίστεως μαρτυρεῖ κατ' ἐξοχὴν ἡ εὐρέως διαδεδομένη ἀστρολογία, κατὰ τῆς ἀνοίας τῆς ὁποίας οὐδὲν δύναται ἡ ἐπιστήμη καὶ ἡ λογική, ἀπήχησιν δὲ αὐτῆς ἀπαντῶμεν καὶ παρὰ τῷ ἀποστόλῳ Παύλῳ ἐν οἷς λέγει περὶ τῆς ἀντιθέσεως μεταξὺ σαρκὸς καὶ πνεύματος καὶ περὶ στοιχείων ὡς καὶ ἐν τῇ πίστει Χριστιανῶν τινων τοῦ δευτέρου αἰῶνος περὶ τοῦ Χριστοῦ ὡς λυτρωτοῦ ἀπὸ τῆς εἱμαρμένης καὶ τῆς ὑπὸ τὰ ἀστρικὰ πνεύματα δουλείας. Τὸ δεύτερον γνώρισμα τῆς νέας θρησκευτικότητος συνίσταται εἰς τὴν γενικὴν ῥοπὴν πρὸς μονοθεϊσμόν, ἀπότοκον τοῦ ἀτομισμοῦ καὶ τοῦ κοσμοπολιτισμοῦ, περὶ τῶν ὁποίων ὡμιλήσαμεν. Ὁ μὲν κοσμοπολιτισμὸς ὁδηγεῖ εἰς τὴν καθολικότητα τοῦ ἑνὸς πνεύματος ὡς τοῦ ἡγεμόνος τοῦ ἑνιαίου κόσμου, ὁ δὲ ἀτομισμὸς εἰς τὸ ἓν πνεῦμα, ὅπερ διέπει τὸν κόσμον. Ἐν τῷ μονοθεϊσμῷ τούτῳ οἱ καθ' ἕκαστον θεοὶ καθίστανται δυνάμεις καὶ ἀποκαλύψεις τοῦ ἑνὸς θεοῦ. Ἄλλο γνώρισμα δυνάμεθα νὰ θεωρήσωμεν τὴν διάδοσιν καὶ τὴν ἐνίσχυσιν τῆς πίστεως εἰς τὴν ἐνανθρώπησιν τῆς θεότητος. Ἡ πίστις αὕτη χαρακτηρίζει κυρίως τὰς ἀρίας φυλάς, ὡς βλέπομεν λ. χ. ἐκ τῆς ἰνδικῆς καὶ τῆς ἑλληνικῆς θρησκείας. Κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους ἀποβαίνει αὕτη κοινή, οἱ δὲ ἐνανθρωποῦντες θεοὶ πιστεύονται ὡς σωτῆρες, οἵτινες σκορπίζουν ἀνὰ τὴν οἰκουμένην ὑλικὰ καὶ πρὸ πάντων πνευματικὰ ἀγαθά. Οὕτως ἐκλαμβάνονται ὁ Διόνυσος, ὁ Ὄσιρις, ἡ Ἶσις. Τοιοῦτος θεωρεῖται ὁ Ἀλέξανδρος καὶ ὁ Αὔγουστος, τὸν ὁποῖον ὑμνεῖ ἡ ἐπιγραφὴ τῆς Πριήνης ὡς θεόν, σωτῆρα, τὴν δὲ γέννησιν αὐτοῦ χαρακτηρίζει ὡς εὐαγγέλιον. Συναφὴς πρὸς τὴν πίστιν ταύτην εἶναι ἡ προσδοκία περὶ ἐπικειμένης ἐλεύσεως θεοῦ σωτῆρος, ὅστις θὰ λυτρώσῃ τὸν κόσμον ἀπὸ τῶν δεινῶν καὶ θὰ πληρώσῃ τὸ κενὸν τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Ἄλλο γνώρισμα τῆς νέας θρησκευτικότητος εἶναι ἡ ζωηρότης τῆς παραστάσεως περὶ θνῃσκόντων καὶ ἀνισταμένων θεῶν. Παρὰ τῶν θεῶν τούτων προσδοκῶσιν οἱ ἄνθρωποι ἀπολύτρωσιν ἀπὸ τῶν δεινῶν καθόλου καὶ ἰδίᾳ ἀπὸ τῆς ἐσωτερικῆς διασπάσεως, ἀπὸ τῆς ἀβεβαιότητος καὶ τῆς ἀμφιβολίας. Ἀλλὰ πρὸ πάντων περιμένουν παρ' αὐτῶν τὴν ἐξασφάλισιν τῆς ἀθανασίας καὶ τὴν μακαρίαν διαβίωσιν ἐν τῷ Ἐπέκεινα. Τὸ ἀσφαλέστερον μέσον πρὸς ἐξασφάλισιν τῶν ἀγαθῶν τούτων εἶναι ἡ συμμετοχὴ εἰς τὴν θείαν ζωήν. Ἡ συμμετοχὴ δὲ αὕτη κατορθοῦται τὸ μὲν δι' ὡρισμένων τελετῶν, τῶν μυστηρίων, τὸ δὲ διὰ τῆς ἐκστάσεως, ἐξ ὧν ἐκεῖνα μὲν συνδέονται πρὸς τὴν μαγείαν, αὕτη δὲ πρὸς τὴν μυστικοπάθειαν τοῦ περὶ Ἑρμῆν τὸν Τρισμέγιστον κύκλου καὶ τῶν Νεοπλατωνικῶν. Οὕτω καταντῶμεν εἰς τὰ δύο τελευταῖα γνωρίσματα τῆς θρησκευτικότητος ἐκείνης, ἡ ὁποία θὰ ἠδύνατο νὰ χαρακτηρισθῇ, συντόμως καὶ γενικῶς, ὡς πόθος ἀπαλλαγῆς ἀπὸ τοῦ ὑλικοῦ καὶ ἐξηυγενισμένος ἀπὸ τὸ ἱλαρὸν φῶς ἑνὸς μακρινοῦ ἰδανικοῦ. Ἐκ τῶν δύο ἐκείνων τρόπων πρὸς πλήρωσιν τῆς ὁρμῆς πρὸς ἀπολύτρωσιν καὶ πρὸς συμμετοχὴν εἰς τὴν ζωὴν τῆς θείας φύσεως, ὁ εἷς, ἡ ἔκστασις, σημαίνει ἄμεσον ἕνωσιν μετὰ τοῦ θεοῦ, ἄμεσον πλήρωσιν τῆς ψυχῆς ὑπὸ τοῦ θείου πνεύματος. Ἡ ἔκστασις εἶναι φαινόμενον κοινὸν εἰς πάσας τὰς θρησκείας, ἀπὸ τῆς τοῦ Διονύσου μέχρι τῆς Βραχμανικῆς καὶ τῆς τῶν Σουφιτῶν τῆς Περσίας καὶ συνίσταται ἢ εἰς τὴν ἐνοίκησιν τῆς θεότητος ἐν τῷ ἀνθρώπῳ, τῆς ὁποίας τεκμήριον πιστεύεται τὸ δαιμονίζεσθαι καὶ ἡ ἐπιληψία, ἢ ἐν τῇ κυρίως ἐκστάσει, εἰς τὴν μετάστασιν τοῦ ἀνθρώπου, εἰς τὴν προσωρινὴν ἄνοδον τῆς ψυχῆς μέχρι τοῦ Ἐπέκεινα. Τὸ εἶδος τοῦτο τῆς ἐκστάσεως εἶναι λίαν ἐξηπλωμένον κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους—οὐχὶ ἄνευ τῆς συμβολῆς τῆς πλατωνικῆς φιλοσοφίας—, ὡς βλέπομεν λ.χ. ἐκ τῆς περὶ τὸν Ἑρμῆν θεολογίας καὶ ἐκ τοῦ Ποσειδωνίου. Τὰ ἀποτελέσματα τῆς ἐκστάσεως ταύτης, τῶν ὁποίων εἶναι πλήρεις οἱ χρόνοι οὗτοι, εἶναι τὸ μὲν ἀποκαλύψεις ἀναφερόμεναι εἰς τὴν δημιουργίαν τοῦ κόσμου τούτου, εἰς τὴν φύσιν τοῦ ἄλλου κόσμου καὶ τὰ ἐν αὐτῷ συμβαίνοντα καὶ εἰς τὰς βουλήσεις τοῦ Θεοῦ, τὸ δὲ θέωσις τοῦ ἀνθρώπου, συνεπείᾳ τῆς ὁποίας κτᾶται θαυματουργικὰς δυνάμεις. Ἀλλ' ὅπως οὐ πάντων ἡ πίστις, οὕτω καὶ ἡ ἔκστασις δὲν εἶναι κτῆμα πάντων, διότι δὲν εἶναι ὅλοι ἐκ φύσεως ἐκστατικοί. Διὰ τοῦτο ἀάνγκη τεχνητῶν μέσων πρὸς ἐπίτευξιν τῆς πρὸς τὸ θεῖον κοινωνίας. Τοιαῦτα μέσα παρέχουν εἰς ἡμᾶς ἐν ἀφθονίᾳ αἱ θρησκεῖαι, τὸν χορόν, τὴν μέθην, τὰς στερήσεις καὶ τὴν ἄσκησιν, τὴν ἐσωτερικὴν συγκέντρωσιν, ἰδιοτύπους τελετουργίας. Αἱ τελευταῖαι αὗται διακρίνονται εἰς μυήσεις, αἵτινες περιλαμβάνουσιν εἶδός τι καθαρισμοῦ δι' ὕδατος καὶ διαδοχικοὺς βαθμούς, καὶ εἰς μαγικὰς πράξεις, ὡς εἶναι τὰ δεῖπνα, μαγικοὶ τύποι καὶ λόγοι, δραματικαὶ ἀναπαραστάσεις τῆς ἱστορίας τοῦ θεοῦ, διὰ τῶν ὁποίων συντελεῖται ἡ συμμετοχὴ τοῦ μύστου εἰς τὰς περιπετείας τοῦ θεοῦ, περὶ τοῦ ὁποίου πρόκειται ἑκάστοτε. Οὕτω ἀναζῇ ἡ μαγεία τῶν πρωτογενῶν θρησκειῶν καὶ ἐν ταῖς μυστηριακαῖς θρησκείαις, ἵνα ἐξαναγκάζηται τὸ θεῖον κατὰ τὴν ἀρχὴν τοῦ ex opere operato. Ἡ ἀναδρομὴ αὕτη εἰς τὸ παρελθὸν ἰδιάζει εἰς τὰς θρησκείας ἕνεκα τοῦ ἐμφύτου εἰς αὐτὰς συντηρητισμοῦ καὶ τῆς δυνάμεως, τὴν ὁποίαν κέκτηται ἡ θρησκευτικὴ παράδοσις. Δὲν εἶναι διὰ ταῦτα παράδοξον ὅτι αἱ μυστηριακαὶ θρησκεῖαι ἀποτελοῦσιν ἀναβίωσιν τοῦ παρελθόντος καὶ προσφυγὴν εἰς τὸν Ὀρφέα, τὴν Ἶσιν, τὸν Ζωροάστρην, τὸν Ἑρμῆν, τὸν Μίθραν. Παρὰ ταῦτα ὅμως ὑπὸ τὴν ἀναβίωσιν ταύτην τῶν παλαιῶν μορφῶν καὶ τῶν τύπων τῆς πολιᾶς ἀρχαιότητος ἀποκρύπτονται πλεῖστα νέα. Ἀλλ' ἐν τῇ συγχύσει, ἥτις ἐπικρατεῖ μεταξὺ δημωδῶν δοξασιῶν καὶ φιλοσοφίας, μαγείας καὶ συμβολισμοῦ, μυστικοπαθείας καὶ ὀρθολογισμοῦ, φαντασίας καὶ ἱστορίας, ποιήσεως καὶ ἀληθείας, ὑψηλοῦ καὶ παιδαριώδους, ἐξατμίζεται ἡ συνείδησις τοῦ νέου τούτου, ὅπως ἄλλωστε συχνὰ συμβαίνει. Ποῖον εἶναι τὸ νέον τοῦτο, εἴπομεν ἀνωτέρω. Εἶναι ἡ ἰσχυρὰ ῥοπὴ πρὸς μονοθεϊσμὸν ἢ ἀκριβέστερον πρὸς ἑνοθεϊσμόν, ἡ ἐντεῦθεν ἀνακύπτουσα καθολικότης, ἥτις ἀπαλλάσσει τὴν θρησκείαν ἀπὸ τῶν ὁρίων καὶ τῶν δεσμῶν τῆς φυλῆς, καὶ ὁ κατὰ φυσικὴν συνέπειαν προσηλυτισμὸς ἐν συνδυασμῷ πρὸς τὴν φροντίδα περὶ τῆς ψυχῆς τοῦ ἀτόμου, τῆς καθ' ἕκαστον προσωπικότητος. Ὑπὸ τῆς φροντίδος ταύτης πρὸς σωτηρίαν τοῦ καθ' ἕκαστον κινοῦνται ἐξ ἴσου οἱ κήρυκες τῶν θρησκειῶν καὶ οἱ ἐκπρόσωποι τῆς φιλοσοφίας, ἁμιλλώμενοι πρὸς ἀλλήλους πρὸς ἄγραν πιστῶν καὶ διατρέχοντες τὴν οἰκουμένην, ὅπως ποιήσωνται προσηλύτους.

Ὀλίγα τινὰ θὰ λεχθῶσι κατωτέρω περὶ τῶν πηγῶν, ἐκ τῶν ὁποίων ἀντλοῦμεν τὴν γνῶσιν τῶν μυστηριακῶν ἐκείνων θρησκειῶν τῆς Ἀνατολῆς, αἵτινες ἡ μία μετὰ τὴν ἄλλην ἐχρημάτισαν κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐπικίνδυνοι ἀντίπαλοι τοῦ Χριστιανισμοῦ, περὶ τοὺς χρόνους τῆς ἐμφανίσεως καὶ τῶν πρώτων ἀρχῶν τοῦ ὁποίου συμπίπτει ἡ ἀκμὴ καὶ ἡ πρὸς κατάκτησιν τοῦ κόσμου κίνησις αὐτῶν. Αἱ πηγαὶ αὗται εἶναι δυστυχῶς λίαν πενιχραί. Ἄλλως θὰ εἶχε τὸ πρᾶγμα, ἂν διεσῴζοντο μέχρις ἡμῶν τὰ λειτουργικὰ βιβλία καὶ τὰ τυπικὰ τῶν ἀρχαίων θρησκειῶν. Ταῦτα ὅμως ἀπωλέσθησαν ἐκτὸς πτωχῶν τινων εἰδήσεων, ὡς ἀπωλέσθησαν καὶ οἱ περὶ τῶν μυστηρίων γράψαντες, ἐν οἷς λ. χ. οἱ Εὔβουλος καὶ Πάλλας, οἱ τὰ μυστήρια τοῦ Μίθρα ἱστορήσαντες. Οἱ ἱστορικοὶ ἐξ ἄλλου παρέργως μόνον καὶ δι' ὀλίγων μνημονεύουν τῶν θρησκειῶν τούτων. Πλείονα μανθάνομεν παρὰ τῶν σατιρικῶν (Juvenalis, Λουκιανὸς) καὶ τῶν μυθιστοριογράφων (Ἀπουλήϊος), οἵτινες εἶναι πάντως πολυτιμότεροι τῶν φιλοσόφων, ἀναμειγνυόντων τὰς δοξασίας τῶν θρησκειῶν τούτων πρὸς τὰ συστήματα αὐτῶν καὶ πρὸς αὐτὰ προσαρμοζόντων, πλὴν ἴσως τοῦ Πλουτάρχου. Ὅ,τι ἰσχύει περὶ τῶν φιλοσόφων δυνάμεθα νὰ εἴπωμεν καὶ περὶ τῶν ἐκκλησιαστικῶν συγγραφέων· καὶ αὐτοὶ εἶναι κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον προκατειλημμένοι, ἀναλόγως τῆς θεωρίας ἀπὸ τῆς ὁποίας ὁρμῶνται, τουτέστι τῆς περὶ σπερματικοῦ λόγου ἢ τῆς περὶ σατανικῆς ἐπενεργείας. Πασῶν τούτων τῶν πηγῶν δύναταί τις νὰ κάμῃ χρῆσιν μετὰ τῆς δεούσης προσοχῆς. Τὰς ἐξ αὐτῶν εἰδήσεις συμπληροῦσιν οἱ μαγικοὺς τύπους, προσευχὰς κ.τ.τ. περιέχοντες πάπυροι, καὶ πρὸ πάντων αἱ ἐπιγραφαὶ καὶ τὰ ἀρχαιολογικὰ εὑρήματα, τὰ ὁποῖα ἀποβαίνουν ὁλοὲν πολυπληθέστερα.

Τὰ μυστήρια τοῦ Μίθρα ἀπαιτοῦσι πρὸς κατανόησιν αὐτῶν τὴν γνῶσιν τῆς μασδαϊκῆς θρησκείας καὶ κοσμοθεωρίας. Αὕτη διέπεται ὑπὸ τῆς ἀρχῆς τῆς διαρχίας, ἐφ' ὅσον ἀντιπαραβάλλει ἐναντίον ἀλλήλων δύο ἀρχάς, τὴν τοῦ ἀγαθοῦ, ἀντιπροσωπευομένην ὑπὸ τοῦ Ὡρομάσδου καὶ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ, καὶ τὴν τοῦ πονηροῦ, ἣν ἐκπροσωπεῖ ὁ Ἀρειμὰν καὶ τὰ εἰς αὐτὸν ὑποτελῆ πνεύματα. Μεταξὺ τῶν δύο τούτων θεοτήτων τελεῖται διαρκὴς ἀγών, τοῦ ὁποίου μετέχει ἥ τε ἄψυχος καὶ ἡ ἔμψυχος φύσις καὶ τοῦ ὁποίου σύμβολα εἶναι τὸ σκότος καὶ τὸ φῶς, χρήσιμα καὶ ἐπικίνδυνα ζῷα (λ. χ. σκορπίος καὶ κύων), καθαρὰ καὶ ἀκάθαρτα κτλ. Ὁ ἀγὼν οὗτος θὰ περατωθῇ κατὰ τὴν συντέλειαν τῶν αἰώνων, ὡς διδάσκει ἡ περσικὴ ἐσχατολογία, διὰ τῆς τελικῆς νίκης τοῦ φωτὸς κατὰ τοῦ σκότους, τουτέστι τοῦ ἀγαθοῦ ἐναντίον τοῦ πονηροῦ. Ἐννοεῖται ὅτι τῆς νίκης ταύτης θὰ προηγηθῇ κρίσις καὶ ἀνάστασις νεκρῶν. Κατὰ ταῦτα ἡ κοσμοθεωρία τοῦ παρσισμοῦ φέρει χαρακτῆρα ὅλως διόλου αἰσιόδοξον καὶ φωτεινόν. Τὰς θελήσεις αὐτοῦ γνωστοποιεῖ εἰς τὸν ἄνθρωπον ὁ Ὡρομάσδης δι' ἀποκαλύψεων, τῶν ὁποίων μετόχους καθιστᾷ τοὺς ἐκλεκτούς, τοὺς προφήτας (Ζωροάστρης), ἵνα οὗτοι μεταδώσουν αὐτὰς εἰς τοὺς ἄλλους, ἀπαιτοῦντες παρ' αὐτῶν μετάνοιαν, ἐπιστροφήν, μεταβολὴν φρονήματος καὶ ἀπόφασιν ὅπως συνταχθῶσι μετὰ τοῦ φωτὸς ἐναντίον τοῦ σκότους. Διὰ τοῦ τρόπου τούτου ἐπέρχεται ἡ ἀπολύτρωσις, ἥτις δὲν εἶναι ἀπαλλαγὴ ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας, ὡς ἐν τῷ Χριστιανισμῷ, οὔτε ἀπὸ τῆς ζωῆς, ὅπως ἐν τῷ βουδισμῷ, ἀλλ' ἀπὸ τῆς κρίσεως καὶ τῆς τιμωρίας, ὡς ἐν τῷ μωαμεθανισμῷ. Συνελόντι εἰπεῖν ἐν τῇ μασδαϊκῇ θρησκείᾳ διδάσκεται ἡ μεταξὺ ὕλης καὶ πνεύματος ἀντίθεσις· τὸ πνεῦμα τίθεται ὑπὲρ τὴν ὕλην, τὴν ὁποίαν θὰ κατανικήσῃ ποτὲ τελεσιδίκως καὶ ὁριστικῶς· τὸ ἐν τῷ ἀνθρώπῳ φῶς εἶναι ἀποπλανηθὲν μόριον τοῦ θείου φωτός· ἀπολύτως προτιμητέαι, καθὸ αἰώνιαι, εἶναι μόνον αἱ ὑπερκόσμιαι ἀξίαι. Ἡ αἰσιόδοξος αὕτη διαρχία, αἱ ἐξ αὐτῆς ἀπορρέουσαι ἠθικαὶ ἀπαιτήσεις, ἡ μετ' αὐτῆς συνδεομένη ἐσχατολογία ἀποτελοῦν προϋποθέσεις καὶ τῶν μυστηρίων τοῦ περσικοῦ θεοῦ Μίθρα, ὅπως μέλλομεν νὰ ἴδωμεν. Πρὶν ἢ ὅμως προβῶμεν εἰς τὴν ἔκθεσιν τῶν κατ' αὐτά, εἶναι σκόπιμον νὰ ῥίψωμεν ταχὺ βλέμμα ἐπὶ τῶν μεταξὺ Ἀνατολῆς καὶ Δύσεως σχέσεων, διότι αὗται ἐδημιούργησαν τοὺς ἐξωτερικοὺς λόγους τῆς αἰφνιδίας ὅσον καὶ ταχείας διαδόσεως τῶν μυστηρίων τούτων ἀνὰ τὴν Δύσιν. Μεταξὺ περσικοῦ καὶ ἑλληνικοῦ πολιτισμοῦ ὑφίστατο διαρκὴς ἀντίθεσις. Ἐν τούτοις οἱ Πέρσαι, κατορθώσαντες νὰ ἱδρύσουν περσικὰ κράτη ἐν τῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ, ἤσκησαν ἤδη ἐνωρὶς ἰσχυρὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ δυτικοῦ πολιτισμοῦ, συμ... θούσης τῆς ἐκστρατείας τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου, τῆς μέχρι τῆς Συρίας διεισδύσεως τῶν Περσῶν βραδύτερον, τῆς εἰς Ἑλλάδα εἰσβολῆς τοῦ Μιθριδάτου καὶ τῆς ὑποταγῆς τῶν κρατιδίων ἐκείνων ὑπὸ τὴν Ῥώμην. Αἱ ἐπιδράσεις αὗται εἶναι τόσον πολιτικαὶ ὅσον καὶ θρησκευτικαί. Ἴχνη τῆς πολιτικῆς ἐπιδράσεως ἔχομεν πολλά· τοιαῦτα εἶναι λ.χ. τὸ ἱερὸν πῦρ, ὅπερ καίει πρὸ τῶν Ῥωμαίων αὐτοκρατόρων ὡς σύμβολον διαρκείας τῆς ἀρχῆς, ὁ ἀσπασμὸς ὡς μέρος τῆς αὐλικῆς ἐθιμοτυπίας, ἡ τήρησις ἡμερολογίου τῶν πεπραγμένων ὑπὸ τοῦ ἡγεμόνος, ἡ ἐκδοχὴ τοῦ αὐτοκράτορος ὡς θείου προσώπου, ἡ ὀργάνωσις τῶν αὐτοκρατορικῶν ταχυδρομείων, ἡ μυστικὴ ἀστυνομία, τὸ σύστημα τῆς ὑπαλληλικῆς ἱεραρχίας. Πολυπληθέστεραι καὶ σπουδαιότεραι εἶναι αἱ θρησκευτικαὶ ἐπιδράσεις, αἵτινες τὸ μὲν εἶναι ἔμμεσοι, διὰ τοῦ λαοῦ Ἰσραήλ, τὸ δὲ ἄμεσοι, διὰ τῆς περσικῆς διασπορᾶς καὶ διὰ τῆς ἀμέσου ἐπαφῆς. Δοῦλοι, ἔμποροι καὶ στρατιῶται μεταφέρουσι... μίζουσι τὴν μασδαϊκὴν θρησκείαν καὶ τὰ μυστήρια τοῦ Μίθρα μέχρι τῶν ἐσχατιῶν τῆς Δύσεως. Ἡ ἐπαφὴ τῶν ἰρανικῶν κρατῶν τοῦ Πόντου, τῆς Ἀρμενίας, τῆς Καππαδοκίας, τῆς Κομμαγηνῆς

Κιλικίας καὶ ἡ κατόπιν συγχώνευσις αὐτῶν ἀποτελεῖ πηγήν, ἐξ ἧς ἀφθόνως διοχετεύονται εἰς τὴν Δύσιν αἱ μιθραϊκαὶ ἰδέαι. Οἱ λόγιοι ἐνδιαφέρονται περὶ αὐτάς, οἱ φιλόσοφοι στρέφουσι πρὸς αὐτὰς τὴν προσοχήν των καὶ ὁ θρῦλος θέλει ὅτι ὁ Πυθαγόρας καὶ ὁ Δημόκριτος ἐμαθήτευσαν παρὰ τοῖς μάγοις. Ἡ ἐπίδρασις αὕτη βαίνει αὔξουσα σὺν τῇ παρόδῳ τοῦ χρόνου καὶ ἐξικνεῖται εἰς τὸ κορύφωμα αὐτῆς κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ Διοκλητιανοῦ. Εἶναι εὐνόητος κατόπιν τούτων ἡ ταχεῖα ἐξάπλωσις τοῦ μιθραϊσμοῦ. Ὀπαδοὺς τοῦ Μίθρα ἀπαντῶμεν ἐν Ρώμῃ ἤδη ἐπὶ Πομπηΐου (65 π. Χ.)· ἐπὶ τῶν Φλαβίων (100 μ. Χ.) ἡ ἐξάπλωσις τῆς λατρείας τοῦ περσικοῦ τούτου θεοῦ εἶναι λίαν εὐρεῖα· ἐπὶ Ἀντωνίνων καὶ Σεβήρων (150—200 μ. Χ.) ἡ λατρεία αὕτη εἶναι παντοδύναμος· ὁ Κόμμοδος μυεῖται ἐπισήμως εἰς τὰ μιθραϊκὰ μυστήρια, ὁ δὲ Διοκλητιανὸς καὶ ὁ Λικίνιος ἱδρύουν εἰς τὸν Μίθραν βωμὸν μετὰ τῆς ἐπιγραφῆς: Fautori imperii sui· τέλος ὁ Ἰουλιανὸς ἐπιχειρεῖ νὰ ἐπιβάλῃ εἰς τὸ ἀπέραντον αὐτοῦ κράτος τὴν θρησκείαν τοῦ Μίθρα-ἡλίου. Ἀλλὰ τῶν ἐξωτερικῶν ἐκείνων λόγων τῆς ἐξαπλώσεως τῆς μιθραϊκῆς θρησκείας σπουδαιότεροι εἶναι οἱ ἐσωτερικοί, ἡ γνῶσις, τῶν ὁποίων εἰσάγει ἅμα εἰς αὐτὴν τὴν φύσιν τῶν μυστηρίων τοῦ Μίθρα. Τὰ ἐσωτερικὰ ταῦτα αἴτια δὲν εἶναι ἡ περὶ θεῶν διδασκαλία, διότι αὕτη δὲν διαφέρει τῆς τῶν ἄλλων θρησκειῶν· οὔτε ἡ λειτουργία καὶ αἱ τελετουργίαι, διότι δεῖπνοι καὶ καθαρμοὶ ἀπαντῶσι καὶ εἰς τὰς ἄλλας θρησκείας, τὰ δὲ τῆς αἰγυπτιακῆς κέκτηνται μείζονα ἐντυπωσιακὴν δύναμιν. Ἡ ἰσχὺς τοῦ μιθραϊσμοῦ συνίσταται μᾶλλον εἰς τὴν διαρχίαν, ὑπὸ τῆς ὁποίας φέρεται, εἰς τὴν αὐστηρὰν αὐτοῦ ἠθικήν, εἰς τὴν ἐσχατολογικήν του προσδοκίαν καὶ εἰς τὴν ἰσχυρὰν πρὸς μονοθεϊσμὸν ῥοπήν, ἅτινα πάντα προσδίδουσιν εἰς τὰ μυστήρια αὐτοῦ ἰδιότυπον θέλγητρον. Περὶ τῆς μεταξὺ ὕλης καὶ πνεύματος, λόγου καὶ αἰσθήσεων ἀντιθέσεως ὡμιλήσαμεν ἤδη· ἡ δύναμις αὐτῆς εἶναι τόσον μεγάλη, ὥστε εὑρίσκει εἴσοδον καὶ εἰς τὸν νεοπλατωνισμόν, προπαρεσκευασμένον πρὸς τοῦτο ὑπὸ τῆς φιλοσοφίας τοῦ Πλάτωνος, καὶ ἐν τῷ μεταγενεστέρῳ ἰουδαϊσμῷ. Ἡ σημασία αὐτῆς εἶναι πολλαπλῆ. Διὰ τῆς θεοποιήσεως τῆς ἀρχῆς τοῦ κακοῦ παρέχει ἁπλῆν καὶ εὐπρόσδεκτον λύσιν εἰς τὸ πρόβλημα τῆς θεοδικίας καὶ ἐξηγεῖ τὰ δεινὰ καὶ τὴν δυστυχίαν καθόλου τῶν χρόνων ἐκείνων, παρέχουσα εἰς αὐτὰ μὲν νόημα, εἰς δὲ τὸν ἄνθρωπον τὴν παρηγορίαν τῆς ἐλπίδος. Ἐπειδὴ δὲ δὲν εἶναι μόνον μεταφυσικὴ σύλληψις, ἀλλὰ καὶ βάσις πρὸς ἰσχυρὰν πρακτικὴν δρᾶσιν, ἐκδεχομένη τὸν μὲν βίον ὡς ἀγῶνα, τοὺς δὲ ἀνθρώπους ὡς στρατιώτας καὶ κηρύττουσα τὴν ἀνάγκην τῆς ἐκλογῆς καὶ τῆς ἀποφάσεως, καθίσταται πηγὴ ἀξιολόγου ἠθικῆς ἐνεργείας. Ὁ Μίθρας, θεὸς τοῦ φωτὸς καὶ ἡγέτης τοῦ ἀγῶνος κατὰ τοῦ σκότους, εἶναι διὰ τοῦτο θεὸς τῆς ἀληθείας, ἐχθρὸς τοῦ ψεύδους, ἐπόπτης τῆς ἀμοιβαίας πρὸς ἀλλήλους πίστεως, πηγὴ τῆς δικαιοσύνης, φρουρὸς τῆς ἁγιότητος τοῦ ὅρκου, ἀρχηγὸς τῶν ἀνθρώπων τοῦ φωτός, οἵτινες εἶναι στρατιῶται αὐτοῦ ἐν τῷ κατὰ τοῦ σκότους ἀγῶνι. Ἀνάλογοι πρὸς τὰς ἰδιότητας αὐτοῦ ταύτας εἶναι αἱ ἐντολαί, τὰς ὁποίας προβάλλει εἰς τοὺς ὀπαδοὺς αὐτοῦ. Ἀπαιτεῖ παρ' αὐτῶν φιλαλήθειαν, εἰλικρίνειαν, ἀνδρείαν, ἁγιότητα τοῦ βίου, ἀδελφικὸν πρὸς ἀλλήλους φρόνημα, σωφροσύνην καὶ ἄσκησιν. Διότι αὐτὸς ὁ ἴδιος εἶναι ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸν Σέραπιν καὶ τὴν Ἶσιν ἢ τὸν Ἄττιν καὶ τὴν Κυβέλην «sanctus», ἁγνὸς καὶ μονήρης. Ἀλλ' ἡ ἄσκησις αὕτη δὲν εἶναι μόνον παθητική· διότι ἡ ζωὴ εἶναι ἀδιάλειπτος ἀγὼν καὶ ἡ νίκη ἀπαιτεῖ δρᾶσιν, ἐνεργὸν συμμετοχὴν εἰς αὐτόν. Ὁ πιστὸς εἶναι συνεργάτης τῶν θεῶν πρὸς κάθαρσιν καὶ τελειοποίησιν. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον ἐλλείπει ἀπὸ τοῦ μιθραϊσμοῦ πᾶν ἴχνος μυστικοπαθείας. Ἄλλως τε καὶ αὐτὸς ὁ Μίθρας διατελεῖ ἐν διηνεκεῖ δράσει, εἶναι ὁ ἀκατανίκητος θεός, ὅστις ὁδηγεῖ τοὺς μετ' αὐτοῦ ἀγωνιζομένους εἰς τὴν νίκην. Κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον, καθ' ὃν ἡ ἠθική, ἐξαρτᾶται καὶ ἡ μιθραϊκὴ ἐσχατολογία ἀπὸ τῆς μασδαϊκῆς ἐκείνης διαρχίας. Ἡ μεταξὺ οὐρανοῦ καὶ ᾅδου, φωτὸς καὶ σκότους ἀντίθεσις συνεχίζεται καὶ μετὰ θάνατον. Ὁ Μίθρας εἶναι καὶ ἐνταῦθα ἀκατάβλητος θεός, ὅστις ἐξασφαλίζει τὴν σωτηρίαν τῶν πιστῶν. Διότι ἡ ψυχὴ ἀπαλλασσομένη τοῦ σώματος γίνεται ἀφορμὴ δεινῆς πάλης μεταξὺ πονηρῶν καὶ ἀγαθῶν πνευμάτων, ἀγωνιζομένων περὶ τὴν λείαν. Ὁ Μίθρας ἐμφανίζεται ἐνταῦθα κριτὴς καὶ σωτήρ, ὁδηγῶν τὴν ἐξ οὐρανοῦ καταγομένην ψυχὴν ὀπίσω εἰς τὴν οὐρανίαν πατρίδα, εἰς ἣν εἰσέρχεται τέλος μετὰ τὴν διὰ τῶν διαφόρων οὐρανίων σφαιρῶν πορείαν, κατὰ τὴν ὁποίαν ἀπαλλάσσεται ἀπὸ παντὸς μὴ πνευματικοῦ. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὸ ὑποχθόνιον σκότος τῶν ἄλλων θρησκειῶν ἐπαγγέλλεται ὁ μιθραϊσμὸς τὸ αἰώνιον φῶς ὡς οἰκητήριον τῶν ψυχῶν τῶν σεσωσμένων. Τὸ προσωρινὸν τοῦτο οἰκητήριον ἀντικαθίσταται κατὰ τὴν συντέλειαν τῶν αἰώνων ὑπὸ σαρκοῦς καὶ αἰωνοβίου, μετὰ τὴν ἀνάστασιν τῆς σαρκὸς καὶ τὸν ὁριστικὸν ἀφανισμὸν τοῦ κακοῦ ἐκ τοῦ κόσμου. Πρὸς τὰς ἰδέας καὶ προσδοκίας ταύτας συνδέονται στενῶς, κατὰ φυσικὸν νόμον, τὰ μυστήρια τοῦ περσικοῦ θεοῦ. Πρὶν ὅμως προβῶμεν εἰς τὴν περιγραφὴν αὐτῶν, δέον νὰ ῥίψωμεν ταχὺ βλέμμα ἐπὶ τῶν περὶ τὸν Μίθραν μύθων, περὶ τοὺς ὁποίους περιστρέφονται τὰ μυστήρια αὐτοῦ. Κατὰ τὴν θεολογίαν τῶν μάγων, τὸ φῶς, ὅπερ καταυγάζει ἀπὸ τοῦ οὐρανίου θόλου, εἶναι αὐτὸς οὗτος ὁ Μίθρας. Ἐν τῇ μυθολογίᾳ ὁ οὐράνιος θόλος συμβολίζεται ὑπὸ βράχου, ἐκ τῶν σπλάγχνων τοῦ ὁποίου ἀναπηδᾷ ὁ Μίθρας· διὸ καὶ καλεῖται «θεὸς ἐκ πέτρας», αὕτη δὲ petra genitrix. Ἡ γέννησις αὐτοῦ λαμβάνει χώραν παρὰ τὰς ὄχθας ποταμοῦ ἢ ὑπὸ τὴν σκιὰν δένδρου, παρίσταται δὲ ἐκπηδῶν ἐκ τῆς πέτρας μετὰ φρυγικοῦ πίλου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς καὶ φέρων εἰς τὰς χεῖρας μάχαιραν καὶ δᾷδα. Μετὰ τὴν προσφώνησιν τῶν ποιμένων, μόνων θεατῶν τῆς γεννήσεώς του, ἀποδύεται πάνοπλος εἰς τὸν ἀγῶνα κατὰ τοῦ ἡλίου, τὸν ὁποῖον νικᾷ ἐν τῇ πάλῃ, καθιστᾷ αὐτὸν σύμμαχόν του καὶ στέφεται ὑπ' αὐτοῦ. Τὴν πρὸς τὸν ἥλιον πάλην ἀκολουθεῖ ἡ πάλη πρὸς τὸν ταῦρον. Οὗτος εἶναι τὸ πρῶτον κτίσμα τοῦ Ὡρομάσδου, ἡ δὲ ἐν τῇ μυθολογίᾳ σημαντικὴ θέσις τοῦ ζῴου ἐξηγεῖται ἐκ τῆς μεγάλης διὰ τοὺς ἀνθρώπους χρησιμότητος αὐτοῦ. Ὁ ταῦρος συλλαμβάνεται τῇ βοηθείᾳ τοῦ ἡλίου ὑπὸ τοῦ Μίθρα καὶ μεταφέρεται εἰς σπήλαιον. Ἐντεῦθεν καλεῖται οὗτος «Βουκλόπος θεός» (πρβλ. καὶ «Μύστα βοοκλοπίης»). Ἀλλ' ὁ ταῦρος διαφεύγει ἐκ τοῦ σπηλαίου, τὴν δὲ δραπέτευσιν αὐτοῦ ἀναγγέλλει εἰς τὸν Μίθραν ὁ ἥλιος διὰ τοῦ κόρακος. Ὁ Μίθρας κατορθώνει νὰ συλλάβῃ αὐτὸν ἐκ νέου καὶ θανατώνει αὐτὸν βοηθούμενος ὑπὸ τοῦ ἡλίου. Ἐκ τοῦ σώματος τώρα τοῦ ταύρου γεννῶνται τὰ φυτὰ (πρβλ. οὐρὰν ταύρου ἐν τέχνῃ περατουμένην εἰς στάχυν), παρὰ τὰς προσπαθείας τῶν ζῴων τοῦ πονηροῦ, τοῦ σκορπίου, τοῦ μύρμηκος καὶ τοῦ ὄφεως. Ἡ σελήνη συλλέγει τὸ σπέρμα τοῦ ταύρου, ἵνα ἐξ αὐτοῦ γεννηθῶσι τὰ διάφορα ζῷα τῆς γῆς. Καὶ ἡ ψυχή του ἀνέρχεται εἰς τὸν οὐρανόν, ὅπου διαιτᾶται ὡς θεότης προστάτις τῶν ἀγελῶν. Ἀλλ' ὁ Ἀρειμὰν βαρέως φέρων τὴν δημιουργίαν ἀποφασίζει νὰ καταστρέψῃ τὸ ἀνθρώπινον γένος, τοῦ ὁποίου φύλαξ καὶ προστάτης ἐτάχθη ὁ Μίθρας. Ἐξαπολύει λοιπὸν κατὰ τῶν ἀνθρώπων πολλὰς πληγάς. Καὶ δή, πρῶτον τὴν ξηρασίαν· ἀλλ' ὁ Μίθρας προμηθεύει ὕδωρ εἰς αὐτοὺς διατρυπῶν διὰ βέλους τὴν πέτραν, ὁ οὐράνιος τοξότης. Δευτέραν πληγὴν ἐπιφέρει τότε ὁ Ἀρειμὰν τὸν κατακλυσμόν. Καὶ ταύτην ὅμως ἐξουδετερώνει ὁ Μίθρας μετὰ τοῦ ἡλίου, συμβουλεύων τοὺς ἀνθρώπους νὰ κατασκευάσουν πλοῖον, ἐφ' οὗ σῴζονται. Τέλος σῴζει αὐτοὺς καὶ ἀπὸ τῆς τρίτης πληγῆς, ἀπὸ τοῦ πυρός, ὅπερ ὁ θεὸς τοῦ πονηροῦ καταπέμπει κατὰ τοῦ ἀνθρωπίνου γένους. Οὕτω περατοῦνται οἱ ἐπὶ τῆς γῆς ἀγῶνες τοῦ Μίθρα· τούτους ἐπιστέφει κοινὸν μετὰ τοῦ ἡλίου δεῖπνον, πρὸς ἀνάμνησιν τοῦ ὁποίου γίνεται παραπλησία τελετὴ ὑπὸ τῶν μυστῶν ἐν τοῖς Μιθραίοις. Τὸ δεῖπνον τοῦτο ἐπακολουθεῖ θριαμβευτικὴ ἄνοδος εἰς τὸν οὐρανὸν ἐπὶ τοῦ ἅρματος τοῦ ἡλίου. Ταῦτα πάντα καταδεικνύουν τὴν μεγίστην σημασίαν, τὴν ὁποίαν ὁ ταυροκτόνος θεὸς κέκτηται διὰ τὴν λατρείαν. Εἶναι ὁ δημιουργὸς τῆς ζωῆς, μέτοχος τῆς θείας παντοδυναμίας, ἀπαύγασμα τοῦ Ὡρομάσδου. Ὡς τοιοῦτος συνεχίζει ἐν οὐρανοῖς τὸν ἀγῶνα, ὅστις πιστεύεται διαρκῶς ὑφιστάμενος μεταξὺ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἀγαθοῦ καὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ κακοῦ. Αἱ οὐράνιαι δυνάμεις εἶναι κεχωρισμέναι εἰς ἀγαθὰς καὶ εἰς πονηράς, ὁ δὲ Μίθρας εἶναι ὁ ἀρχηγὸς τῶν ἀγαθῶν δυνάμεων, διὸ καὶ ἀρχάγγελος. Ἡ ἐν οὐρανοῖς πάλη αὕτη ἀντικατοπτρίζεται καὶ ἐπὶ τῆς γῆς ἐν ταῖς καρδίαις τῶν ἀνθρώπων. Πρὸς τοὺς μύθους τούτους καὶ τὴν θεολογίαν τοῦ Μίθρα ἀνάλογα εἶναι τὰ μυστήρια, γνωστὰ ὑπὸ τὸ ὄνομα «περσικὰ μυστήρια» (Ὠριγένης, Πρόκλος).

Ἡ γνῶσις ἡμῶν περὶ αὐτῶν εἶναι ἀτελεστάτη, ἐπειδὴ οὔτε αἱ προσευχαί, οὔτε τὸ τυπικὸν τῆς μυήσεως καὶ τὸ τῶν ἑορτῶν διεσώθησαν. Γλῶσσα τῆς λατρείας ἦτο ἡ ἑλληνική, εἰς ἣν κατεμείγνυον βαρβαρικὰς λέξεις. Οἱ βαθμοὶ τῆς μυήσεως ἀνήρχοντο κατὰ τὰς εἰδήσεις τοῦ Ἱερωνύμου εἰς ἑπτὰ καὶ ἦσαν αἱ ἑξῆς: κόραξ, κρύφιος, στρατιώτης, λέων, Πέρσης, ἡλιοδρόμος, πατήρ. Οἱ μύσται ἔφερον ἐνδυμασίας ἀντιστοίχους πρὸς τὰ ὀνόματα τῶν διαφόρων βαθμῶν. Φαίνεται δὲ ὅτι καὶ ἐμιμοῦντο τὸ διὰ τοῦ ὀνόματος σημαινόμενον, ἂν πιστεύσωμεν τὸν ψευδο-Αὐγουστῖνον ἀναφέροντα, ὅτι οἱ μὲν πλήττουν τὸν ἀέρα διὰ τῶν πτερύγων δίκην πτηνῶν, οἱ δὲ βρυχῶνται ὡς λέοντες. Πρὸς ἑρμηνείαν τῶν μυστηρίων τούτων πολλὰ ἐλέχθησαν κατά τε τοὺς ἀρχαίους καὶ τοὺς νεωτέρους χρόνους. Οὕτω οἱ ἐθνικοὶ θεολόγοι ἰσχυρίζονται, ὅτι ὑπάρχει σχέσις μεταξὺ τῶν μυστηρίων τούτων καὶ τοῦ ζῳδιακοῦ κύκλου ἕνεκα τῆς μεγάλης καὶ ἐπὶ τοῦ μιθραϊσμοῦ ἐπιδράσεως τῆς ἀστρολογίας, καὶ ὅτι ἡ σωτηρία, ἣν ἐπηγγέλλοντο, ἦτο καὶ ἡ ἀπὸ τῆς εἱμαρμένης, τουτέστιν ἡ ἀπὸ τῆς δυνάμεως τῶν ἀστρικῶν πνευμάτων ἀπαλλαγή. Ἢ δέχονται ὅτι συμβολίζουν τὴν μετεμψύχωσιν, ἥτις διὰ τοῦ συγκρητισμοῦ εἶχεν εἰσδύσει καὶ εἰς τὴν περσικὴν ταύτην θρησκείαν. Οἱ νεώτεροι ἐξ ἄλλου ἀποδέχονται μᾶλλον ὅτι πρόκειται περὶ καταλοίπων τῶν πρωτογενῶν θρησκειῶν, ἰδίᾳ δὲ τοῦ τοτεμισμοῦ, καὶ ἀναφέρονται εἰς τὴν διὰ τοῦ ὀνόματος καὶ τῆς μορφῆς τοῦ θεοῦ, ὅπερ ἀναλαμβάνει ὁ μύστης, ταύτισιν αὐτοῦ μετ' ἐκείνου. Ἐν τῷ ἀρχικῷ μιθραϊσμῷ, λέγουσιν, ἐλατρεύετο λ. χ. ὁ λέων· βραδύτερον τὴν λατρείαν αὐτοῦ ἀντικαθιστᾷ ὁ κεφαλὴν λέοντος φέρων Κρόνος. Ἴσως δὲ καὶ ἡ διὰ δερμάτων ζῴων περιβολὴ ὀφείλεται εἰς τὴν πίστιν ἐπὶ τὴν καθαρτικὴν δύναμιν τῶν αἱμασσόντων δερμάτων τῶν πρὸς θυσίαν σφαγιαζομένων ζῴων. Πιθανώτατον, φαίνεται, εἶναι ὅτι οἱ ἑπτὰ βαθμοὶ τῆς μυήσεως ἀνταποκρίνονται εἰς τὰς ἑπτὰ πλανητικὰς σφαίρας, διὰ τῶν ὁποίων διέρχεται ἡ ψυχή, ἕως οὗ φθάσῃ εἰς τὴν χώραν τῶν μακάρων. Τὰ δὲ ὀνόματα, τὰ ὁποῖα φέρουν οἱ μύσται τῶν διαφόρων βαθμῶν, ἔχουσι σχέσιν πρὸς τὸν μῦθον ἢ πρὸς τὰς ἰδιότητας τοῦ Μίθρα καὶ εἶναι δυνατὸν νὰ ἑρμηνευθοῦν εὐχερῶς. Περὶ τοῦ κόρακος, εἰς ὃν ἀντιστοιχεῖ ὁ πρῶτος βαθμὸς τῆς μυήσεως, γνωρίζομεν ἤδη ὅτι ἦτο ἄγγελος τῶν θεῶν. Ὁ κρύφιος ἐκαλεῖτο οὕτω, ἐπειδή, κεκαλυμμένος ὤν, παρέμενεν ἀθέατος εἰς τοὺς παρισταμένους, τῆς ἀποκαλύψεως αὐτοῦ ἀποτελούσης ἰδίαν ἐπίσημον ἑορτήν, ὡς τοὐλάχιστον ἀφήνει νὰ ὑπονοηθῇ ἡ ἐν λατινικῇ τινι ἐπιγραφῇ φράσις «ostenderunt cryfios». Ἐπειδὴ ὁ Μίθρας εἶναι θεὸς πολεμικός, οἱ δὲ μύσται ἀγωνίζονται μετ' αὐτοῦ κατὰ τῶν πονηρῶν δυνάμεων, εἶναι εὐνόητον ὅτι βαθμὸς μυήσεως, ὁ τρίτος, ἔφερε τὸ ὄνομα στρατιώτης. Ὁ μύστης τοῦ πέμπτου βαθμοῦ ἔφερε τὸ ὄνομα Πέρσης καὶ ἀνάλογον περιβολήν, ἴσως ἐπειδὴ ὁ προσήλυτος ἐθεωρεῖτο μέλος τῆς φυλῆς, τοῦ ἔθνους ἐν τῇ μασδαϊκῇ θρησκείᾳ, ὡς λ. χ. καὶ παρ' Ἰουδαίοις. Ὁ Μίθρας ταυτίζεται πρὸς τὸν ἥλιον, δι' ὃ καὶ καλεῖται sol invictus· ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται τὸ ὄνομα ἡλιοδρόμος, δι' οὗ γνωρίζονται οἱ μῦσται τοῦ ἕκτου βαθμοῦ. Ὁ μέτοχος τοῦ ὑπάτου βαθμοῦ λέγεται πατήρ, ἴσως ἐξ ἐπιδράσεως τῶν ἑλληνικῶν θιάσων, καὶ εἶναι ἡγέτης καὶ σύμβουλος τῆς κοινότητος τῶν πιστῶν καὶ προϊστάμενος τῆς λατρείας, pater sacrorum. Ὑπεράνω πάντων δίκην ἐπισκόπου ἵσταται ὁ πατὴρ πατέρων. Οἱ ἑπτὰ ἐκεῖνοι βαθμοὶ διακρίνονται σαφῶς εἰς δύο κατηγορίας, ἐκ τῶν ὁποίων ἡ μὲν μία περιλαμβάνει τοὺς τρεῖς πρώτους βαθμούς, ἡ δὲ δευτέρα τοὺς ὑπολοίπους τέσσαρας. Οἱ ἀνήκοντες εἰς τὴν πρώτην κατηγορίαν δὲν μετέχουσι τῶν μυστηρίων, εἶναι τρόπον τινὰ κατηχούμενοι καὶ καλοῦνται «ὑπηρετοῦντες»· οἱ τῆς δευτέρας κατηγορίας ἀποτελοῦσι τοὺς πραγματικοὺς βαθμοὺς καὶ λέγονται «μετέχοντες». Ἀλλὰ πάντες, καὶ οἱ τῶν κατωτέρων καὶ οἱ τῶν ἀνωτέρων βαθμῶν μύσται εἶναι πρὸς ἀλλήλους ἀδελφοὶ καὶ καλοῦνται οὕτω.

Εἶναι ἄγνωστος εἰς ἡμᾶς ὁ χρόνος τῆς διαρκείας ἑκάστου βαθμοῦ. Βέβαιον εἶναι μόνον ὅτι καὶ ἡ προαγωγὴ ἐγίνετο δι' ἀποφάσεως τοῦ πατρὸς καὶ ἡ τελετὴ τῆς μυήσεως ὑπὸ τοῦ αὐτοῦ. Ἡ τελετὴ αὕτη τῆς μυήσεως εἰς τοὺς διαφόρους βαθμοὺς ἀπετελεῖτο ἐκ τῆς κυρίως τελετῆς (sacramentum) καὶ ἐκ τῶν δοκιμασιῶν. Διὰ τῆς τελετῆς ἀνελάμβανε τὴν ὑποχρέωσιν ὁ νεόφυτος νὰ τηρήσῃ ἐχεμύθειαν ὅσον ἀφορᾷ τήν τε διδασκαλίαν καὶ τοὺς τύπους καὶ δὴ ὡς οἱ στρατιῶται δι' ὅρκου (sacramentum), στρατιώτης ἄλλως τε γινόμενος καὶ αὐτὸς τοῦ Μίθρα. Οἱ τύποι, εἰς οὓς ὑπεβάλλοντο οἱ μυούμενοι, ἦσαν ἀνάλογοι πρὸς τὸν βαθμόν, εἰς τὸν ὁποῖον εἰσήρχοντο. Οὕτω λ. χ. εἰς τὸν εἰσερχόμενον εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ στρατιώτου προσεφέρετο στέφανος ἐπὶ ξίφους, τὸν ὁποῖον ἔδει νὰ ἀπωθήσῃ διὰ τῆς χειρὸς «dicens Mithram esse coronam suam» κατὰ τὸν Τερτυλλιανόν. Πάντων ὅμως τῶν βαθμῶν προηγεῖτο σειρὰ λούσεων τοῦ νεοφύτου, συντελουμένων ὁτὲ διὰ ῥαντισμοῦ, ὁτὲ διὰ πλήρους λουτροῦ, τοῦ ὁποίου ἡ ἐνέργεια ἦτο διάφορος ἐν τοῖς διαφόροις βαθμοῖς. Διὰ τῶν καθαρμῶν τούτων προσεδόκων τὴν ἐξάλειψιν τῶν ἠθικῶν κηλίδων, ὡς τοὐλάχιστον βεβαιοῖ ὁ Τερτυλλιανὸς δι' ὧν λέγει: «Expiationem delictorum de lavacro repromittit. Κατὰ τὸν αὐτὸν ἐκκλησιαστικὸν συγγραφέα, Mithra signat in frontibus milites suos. Ἀναντιρρήτως ὅμως δὲν πρόκειται περὶ χρίσματος, ἀλλὰ ἡ τελετὴ αὕτη ὑπενθυμίζει τὰς μυστικὰς λεγομένας καύσεις, ἀναλόγους πρὸς τὸν στιγματισμὸν τῶν ἀγρίων, καὶ τὴν σφραγῖδα τὴν ἐπιτιθεμένην ἐπὶ τοῦ μετώπου τῶν στρατιωτῶν πρὸς ἀναγνώρισιν καὶ πρὸς ὑπόμνησιν τοῦ καθήκοντος. Ἡ εἴσοδος εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ λέοντος συνεδέετο πρὸς προσφορὰν μέλιτος, συμβόλου τῆς προφυλάξεως ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας. Μέλι προσεφέρετο καὶ εἰς τοὺς νεοφύτους τοῦ ἑπομένου βαθμοῦ, τοὺς Πέρσας, ἐπειδὴ τοῦτο, πλὴν τῆς προφυλακτικῆς δυνάμεως, τὴν ὁποίαν κέκτηται, ἀποτελεῖ τὴν τροφὴν τῶν μακάρων καὶ ἐξομοιοῖ πρὸς τὴν θεότητα. Ἐκτὸς τῶν δι' ὕδατος καθαρμῶν ἐγίνετο καὶ βρῶσις ἄρτου καὶ πόσις οἴνου, τῶν ὁποίων μετεῖχον μόνον οἱ μύσται τῶν ἀνωτέρων βαθμῶν, ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα «μετέχοντες». Celebrat (ὁ Μίθρας) panis oblationem, λέγει ὁ Τερτυλλιανός. Τοῦτο ἀποτελεῖ ἀρχαιότατον ἔθιμον ἐν τῇ μασδαϊκῇ θρησκείᾳ, παρ' ἧς ἐκληρονόμησεν αὐτὸ ὁ μιθραϊσμός, ὅστις ὅμως ἀντὶ τοῦ μεθυστικοῦ χυμοῦ (Haoma) ποιεῖται χρῆσιν τῆς σταφυλῆς. Ἡ χρῆσις τοῦ οἴνου ἐξηγεῖται ἐκ τῆς

Digitized by Google

πολλαπλῆς σημασίας τοῦ ποτοῦ τούτου. Διεγείρει εἰς μυστικοπαθῆ ἕνωσιν μετὰ τοῦ θείου, ἐνισχύει τὸν σωματικὸν ὀργανισμόν, παρέχει θάρρος πρὸς τὸν ἀγῶνα καὶ προπαρασκευάζει οὕτω πρὸς τὴν ἀθανασίαν καὶ τὴν μακαριότητα. Τῶν μυστηρίων προηγοῦντο ὡς εἰσαγωγὴ εἰς αὐτὰ ὡρισμέναι δοκιμασίαι. Τοιαῦται ἦσαν ἡ μακρὰ ἀποχὴ καὶ ἡ ἄσκησις, ἡ περίδεσις τῶν ὀφθαλμῶν, ἡ τῶν χειρῶν δι' ἐντέρου ὄρνιθος, τὸ πήδημα ὑπὲρ τάφρον πλήρη ὕδατος, σκηνοθετημένη δολοφονία κ. ἄ. τ. Σκοπὸς ὅλων τούτων τῶν δοκιμασιῶν ἦτο ὁ ἔλεγχος τῆς ἀφοβίας, τῆς ἀπαθείας καὶ τῆς ἀνδρείας τοῦ μυουμένου. Κατόπιν ἠκολούθει ἡ κάθοδος εἰς τὸ «σπήλαιον», τὸ ἐσωτερικὸν τοῦ ὁποίου ἦτο λαμπρῶς κεκοσμημένον καὶ κατάφωτον. Ὁ νεόφυτος, ἱστάμενος ἐπὶ τῶν βαθμίδων τῆς «κρύπτης», ἠτένιζεν ἀπέναντι αὐτοῦ ἐν τῇ ἁψῖδι τὸν τὸν ταῦρον φονεύοντα θεόν, πρὸ αὐτῆς δὲ ἄλλας συμβολικὰς εἰκόνας, ἐν αἷς τὴν τοῦ κεφαλὴν λέοντος φέροντος Κρόνου. Ταῦτα καὶ οἱ ἑκατέρωθεν τῆς ἁψῖδος εἰς μακρὰς σειρὰς γονυκλινεῖς πιστοί, αἱ ἐναλλαγαὶ καὶ τὰ παίγνια τῶν φώτων, τὰ λαμπρὰ ἐνδύματα τῶν ἱερουργούντων, αἱ μυστικαὶ μελῳδίαι καὶ ἡ ἐπενέργεια τοῦ μεθυστικοῦ ποτοῦ μετέθετον τὸν νεήλυδα εἰς παραίσθησιν καὶ εἰς ἔκστασιν. «In speleo» λέγει ὁ ψευδο-Αὐγουστῖνος, «ubi aliud est quam cernitur, operante illecebrosa fallacia». Τὴν ἐκ τῶν τοιούτων τελετῶν ἔκστασιν περιγράφει ὁ Ἀπουλήϊος διὰ τῶν ἑξῆς χαρακτηριστικῶν: «Διέβην τὰς πύλας τοῦ Ἅδου, διῆλθον τὸ κατώφλιον τῆς Περσεφόνης, ψχήθην ἐφ' ὅλων τῶν στοιχείων καὶ ἐπέστρεψα ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐν μέσῃ νυκτὶ εἶδον λάμποντα τὸν ἥλιον. Προσήγγισα εἰς τοὺς κάτω καὶ τοὺς ἄνω θεοὺς καὶ προσηυχήθην πρὸς αὐτοὺς πρόσωπον πρὸς πρόσωπον».

Ἡ φύλαξις τῶν μυστικῶν τούτων τύπων εἶναι ἀνατεθειμένη εἰς τὸν κλῆρον, ὁ ὁποῖος δέον νὰ διακρίνεται ἀφ' ὅλων τῶν κατηγοριῶν τῶν μυστῶν καὶ ὁ ὁποῖος ἀποτελεῖ ἰδίαν τάξιν (πρβλ. ordo sacerdotum τῶν ἐπιγραφῶν). Τὰ μέλη αὐτοῦ λαμβάνονται συνήθως ἐκ τοῦ βαθμοῦ τοῦ «πατρός», δὲν γνωρίζομεν ὅμως ἂν τὸ ἀξίωμα εἶναι κληρονομικὸν καὶ ἰσόβιον ἢ ἂν κατ' ἐκλογήν, ὡς ἀγνοοῦμεν καὶ τὰ προσόντα τῶν μιθραϊκῶν κληρικῶν. Ὁ ἱερεὺς τοῦ Μίθρα θεωρεῖται ἐν πάσῃ περιπτώσει ὡς ἐξ ἐπαγγέλματος μεσίτης μεταξὺ θεοῦ καὶ ἀνθρώπων, ἔργον δὲ αὐτοῦ εἶναι ἡ μετάδοσις τῶν μυστηρίων καὶ ἡ τέλεσις τῆς λειτουργίας. Ἡ λειτουργία αὕτη τελεῖται καθ' ἑκάστην, ἀποτελεῖται δὲ ἐκ προσευχῶν, θυσιῶν καὶ ψαλμῳδίας. Ὁ ἱερουργῶν προσεύχεται τρὶς τῆς ἡμέρας εἰς τὸν ἥλιον, τελεῖ δὲ τὰς θυσίας περιβεβλημένος λαμπρὰ ἐνδύματα. Εἶναι δὲ αἱ θυσίαι δύο εἰδῶν, ἀναίμακτοι καὶ αἱματηραί. Καὶ αἱ μὲν ἀναίμακτοι προσφέρονται πρὸς τιμὴν τῶν οὐρανίων δυνάμεων, αἱ δὲ αἱματηραὶ πρὸς τιμὴν τῶν δαιμόνων, ὡς ἀπαιτεῖ τὸ διαρχικὸν σύστημα τοῦ παρσισμοῦ. Τὰς ψαλμῳδίας τέλος συνοδεύουν ἦχοι μουσικῆς. Τὸ κορύφωμα τῆς ὅλης ἱεροτελεστίας ἀποτελεῖ ἡ εἰς τοὺς πιστοὺς δεῖξις τῆς εἰκόνος τοῦ Μίθρα, σημαινόμενον δι' ἤχων κωδωνίσκου. Ἑκάστη ἡμέρα εἶναι καθιερωμένη εἰς ἕνα τῶν ἑπτὰ πλανητῶν, εἰς τὸ δι' ἕκαστον δὲ τούτων ἀφωρισμένον μέρος τοῦ «σπηλαίου» ἀναπέμπεται προσευχὴ εἰς αὐτόν. Ἰδιαιτέραν σημασίαν κέκτηται ἡ εἰς τὸν ἥλιον ἀφιερωμένη ἡμέρα τῆς ἑβδομάδος. Ὡς ἑκάστη ἡμέρα τῆς ἑβδομάδος εἶναι ἀφιερωμένη εἰς ἕνα πλανήτην, οὕτω ἕκαστος μὴν εἰς ἓν ζῴδιον. Εἶναι τέλος πιθανὸν ὅτι εἰς τιμὴν τοῦ Μίθρα ἦτο ἀφιερωμένη ἡ 16η ἑκάστου μηνός. Ἡ 25η Δεκεμβρίου ἑωρτάζετο ὡς γενέθλιος ἡμέρα τοῦ θεοῦ (natalis invicti), κατὰ δὲ τὰς ἰσημερίας συνέπιπτον καὶ ἑορταὶ τῶν θεοποιημένων καὶ ἀεὶ ἐπανερχομένων ἐποχῶν τοῦ ἔτους. Ἡ τέλεσις τῆς λειτουργίας καὶ ὁ ἑορτασμὸς τῶν πολλῶν τούτων ἑορτῶν ἐγίνοντο ἐν τοῖς Μιθραίοις ἢ σπηλαίοις ἢ ἄντροις. Ταῦτα ἦσαν ἀρχικῶς σπήλαια, συμφώνως ἄλλως τε πρὸς τὸν περὶ τὸν Μίθραν μῦθον, ἡ δὲ ἀρχιτεκτονικὴ διάταξις αὐτῶν ἠκολούθει αὐστηρὰν παράδοσιν καὶ διὰ τοῦτο εἶναι πανταχοῦ τὰ αὐτά. Διὰ στοᾶς ἀποτελουμένης ἐκ σειρᾶς στύλων καὶ ἀετώματος κατήρχετό τις εἰς ὑπόγειον χῶρον, διαιρούμενον εἰς δύο μέρη, εἰς τὸν πρόναον καὶ εἰς τὴν ἔτι βαθύτερον ὑπὸ τὴν γῆν κειμένην κρύπτην. Αὕτη θολωτὴ οὖσα διεκρίνετο εἰς τρία μέρη, ὧν τὸ μὲν μεσαῖον ἦτο προωρισμένον διὰ τοὺς ἱερουργοῦντας, τὰ δὲ δύο πλάγια διὰ τοὺς πιστούς, οἵτινες ἐκάθηντο ἐπὶ πετρίνων θρανίων. Εἰς τὸ βάθος ὑπῆρχεν ἡ ἁψὶς μετὰ τῆς παραστάσεως τοῦ Μίθρα φονεύοντος τὸν ταῦρον, πρὸ αὐτῆς δὲ βωμὸς τοῦ ἡλίου καὶ τῆς σελήνης. Τὸ μικρὸν μέγεθος τῶν Μιθραίων δὲν ἐπιτρέπει κοινότητας ἐκ προσώπων πλειόνων τῶν ἑκατόν, ἐκ τῶν ὁποίων οἱ «μετέχοντες» ἐλάμβανον θέσιν ἐν τῇ κρύπτῃ, οἱ δὲ ὑπηρετοῦντες ἐν τῷ προνάῳ. Ὁ μικρὸς οὗτος ἀριθμὸς συνεπῆγε πολλὰς καλὰς συνεπείας. Ἐπειδὴ ἀποτελοῦν μεγάλην οἰκογένειαν καὶ εἶναι γνωστοὶ εἰς ἀλλήλους, βασιλεύει μεταξὺ αὐτῶν ζωηρὰ καὶ θερμὴ ἐγκαρδιότης καὶ φιλάλληλον φρόνημα, πρὸς δὲ τούτοις ἀπόλυτος ἰσότης τάξεων καὶ καθηκόντων. Εἶναι δυνατὴ ἡ ἀμοιβαία βοήθεια καὶ ἐνίσχυσις, ἀποφεύγεται δὲ ἐξ ἄλλου ὁ κίνδυνος τῆς κοινωνικῆς ἀπομονώσεως. Ἐκ τῶν λόγων τούτων ἐξηγεῖται ἡ μεγάλη ἀφοσίωσις, τὴν ὁποίαν δεικνύουν οἱ πιστοὶ πρὸς τὴν κοινότητά των καὶ τοὺς ἱεροὺς αὐτῶν τόπους καὶ τὴν ὁποίαν ἐκδηλοῦσι διὰ τῆς ἀνιδρύσεως Μιθραίων καὶ διὰ τῶν ἐράνων, τοὺς ὁποίους διενεργοῦσιν ὑπὲρ αὐτῶν μεταξὺ ἀλλήλων δοῦλοι καὶ ἀπελεύθεροι.

Παρὰ τὸν πλοῦτον τῶν πηγῶν, τὰς ὁποίας κατέχομεν κατ' ἐξαίρεσιν ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὴν αἰγυπτιακὴν θρησκείαν, δὲν γνωρίζομεν πολλὰ πράγματα περὶ τῆς σχέσεως τῆς λατρείας τῆς Ἴσιδος καὶ τοῦ Σεράπιδος πρὸς τὴν αἰγυπτιακὴν καθόλου θρησκείαν. Ὅ,τι δυνάμεθα μετὰ βεβαιότητος νὰ καθορίσωμεν εἶναι τὸ μὲν ὁ τρόπος καθ' ὃν ἐγεννήθη ἡ λατρεία τοῦ θείου τούτου ζεύγους, τὸ δὲ ἡ φύσις αὐτῆς πρὸ τῶν αὐτοκρατορικῶν χρόνων. Ἡ λατρεία αὕτη ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ Σεραπείου τῆς Ἀλεξανδρείας, ὅπερ ἵδρυσε Πτολεμαῖος ὁ Σωτήρ. Ἀλλὰ ὁποῖός τις εἶναι ὁ Σέραπις οὗτος; Εἶναι θεὸς ἐγχώριος ἢ ἔπηλυς ἐκ Σινώπης, Σελευκείας, Βαβυλῶνος; Ἔχει σχέσιν τὸ ὄνομα αὐτοῦ πρὸς τὸν Αἰγύπτιον Ὄσιριν ἢ πρὸς τὸν Χαλδαῖον Σὰρ-Ἀψί; Πρέπει νὰ δεχθῶμεν ὅτι ὁ Σέραπις ἢ ἦτο ἀπ' ἀρχῆς ὁ αὐτὸς πρὸς τὸν Ὄσιριν ἢ οἱ δύο θεοὶ ἐταυτίσθησαν εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς. Διότι ὁ ὑπὸ τῶν Πτολεμαίων εἰσαχθεὶς θεὸς εἶναι ὁ κύριος καὶ βασιλεὺς τῶν νεκρῶν καὶ χορηγὸς τῆς ἰδίας αὐτοῦ ἀθανασίας καὶ εἰς αὐτούς. Διὰ τοῦτο καὶ οἱ Αἰγύπτιοι δέχονται ἄνευ τινὸς δυσκολίας τὴν λατρείαν τοῦ νέου θεοῦ, ἐπειδὴ ἀναγνωρίζουν ἐν αὐτῷ τὸν ἰδικόν των Ὄσιριν, τὸν δημοφιλέστατον θεὸν τῆς χώρας τοῦ Νείλου κατὰ τὸν Ἡρόδοτον, ὄχι μόνον ἐπειδὴ ἦσαν συνηθισμένοι νὰ βλέπωσι μεταβαλλομένην τὴν ἐν οὐρανοῖς διοίκησιν ὁμοῦ μετὰ τῆς ἐπιγείου. Τὸν θεὸν δὲ τοῦτον εἰσάγουν οἱ Πτολεμαῖοι ἐν συνεχείᾳ τῆς πολιτικῆς τοῦ Μ. Ἀλεξάνδρου, ὅπως δηλαδὴ ἐπενέγκωσι τὴν ἕνωσιν καὶ τὴν συγχώνευσιν τῶν δύο λαῶν τῆς Αἰγύπτου, τοῦ ἰθαγενοῦς καὶ τοῦ ἑλληνικοῦ. Διότι πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον χρειάζεται εἰς αὐτοὺς θεός, τὸν ὁποῖον νὰ ὑποδεχθῶσιν ἀμφότερα τὰ στοιχεῖα ἐκεῖνα. Κατὰ τὸν Πλούταρχον δημιουργοὶ τοῦ θεοῦ τούτου κατ' ἐντολὴν τοῦ Πτολεμαίου εἶναι δύο ἄνδρες, ὁ ἐξ Ἡλιουπόλεως ἱερεὺς Μανέθων καὶ ὁ ἐξ Ἐλευσῖνος Εὐμολπίδης Τιμόθεος. Κατ' ἀκολουθίαν ἀποτελεῖ συνδυασμὸν τῆς ἀρχαίας πίστεως τῶν Φαραὼ καὶ τῶν μυστηρίων τῆς Ἑλλάδος. Κατὰ ταῦτα ἡ νέα θρησκεία τῶν Πτολεμαίων εἶναι συγκρητιστική. Ἀλλ' ἐν τῷ κράματι τούτῳ εἶναι λίαν αἰσθητὴ ἡ ὑπεροχὴ τῶν ἑλληνικῶν στοιχείων. Οὕτω λ. χ. ἡ λειτουργικὴ γλῶσσα εἶναι ἑλληνική. Δημήτριος ὁ Φαληρεὺς συνθέτει παιᾶνας εἰς τὸν νέον θεόν, ὅστις ἐθεράπευσε τὴν τύφλωσιν αὐτοῦ. Οἱ ὑπὸ τῶν Πτολεμαίων μισθούμενοι ποιηταὶ ἁμιλλῶνται πρὸς ἀλλήλους ἐν τῇ ἐξυμνήσει τοῦ θεοῦ τῶν εὐεργετῶν των. Τὰ ἀρχαῖα τυπικὰ μεταφράζονται, μετὰ προσθηκῶν καὶ βελτιώσεων πάντοτε, εἰς τὴν ἑλληνικήν. Εἰκόνα τῶν συνθέσεων τῶν Ἀλεξανδρεωτῶν ἐκείνων ποιητῶν παρέχει ὁ εἰς Ἶσιδα ὕμνος ὁ ἐν Ἄνδρῳ εὑρεθεὶς καὶ ἐπὶ μαρμάρου ἀναγεγραμμένος. Οὐ μόνον δὲ ἡ γλῶσσα, ἀλλὰ καὶ ἡ τέχνη, ἡ χρησιμεύουσα πρὸς ἐξυπηρέτησιν τῆς νέας λατρείας, εἶναι ἑλληνική. Οὕτω δημιουργεῖται νέος τύπος τῆς Ἴσιδος, συνδυάζων εἰς ἓν τὰς ἰδανικὰς μορφὰς τῆς Ἥρας καὶ τῆς Ἀφροδίτης.

Τὸ πρῶτον ἄγαλμα τῆς θεᾶς κατασκευάζει ὁ περίφημος Βρύαξις, σύγχρονος τοῦ Σκόπα, ἐμφανίσας αὐτὴν εἰς ὑπερφυσικὸν μέγεθος μετὰ μεγαλειώδους κεφαλῆς καὶ μετ' ἐκφράσεως μελαγχολικῆς ἅμα καὶ καλοκαγάθου, ἵνα δι' ἀμφοτέρων τούτων δείξῃ ὅτι εἶναι θεότης τῆς βλαστήσεως συγχρόνως καὶ τῶν νεκρῶν. Κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον κατορθώνουν οἱ Πτολεμαῖοι νὰ παράσχουν εἰς τὴν νέαν θρησκείαν μορφὴν φιλολογικὴν ἐν ταὐτῷ καὶ καλλιτεχνικήν. Συνέπεια τούτου εἶναι τὸ δυνατὸν τῆς προσαρμογῆς αὐτῆς εἰς τὰς ἑλληνικὰς ἀπαιτήσεις. Ἀλλ' ἡ σχέσις τῆς θρησκείας ταύτης πρὸς τὴν ἑλληνικὴν θρησκευτικότητα δὲν εἶναι μόνον ἐξωτερική. Ἤδη παλαιόθεν, κατὰ μάρτυρα τὸν Ἡρόδοτον, εἶχε ταυτισθῇ ὁ Ὄσιρις πρὸς τὸν Διόνυσον καὶ ἡ Ἶσις πρὸς τὴν Δήμητρα. Τοῦτο δὲ ἐπειδὴ τὰ μυστήρια τοῦ Ὀσίριδος ἐτέλουν εἰς ἐσωτερικὴν συγγένειαν πρὸς τὰ τοῦ Διονύσου. Ἀμφότεροι εἶναι θεοὶ τῆς βλαστήσεως· ἀμφότεροι εἶναι κύριοι τοῦ κάτω κόσμου· καὶ οἱ δύο κατασχίζονται ὑπὸ ἐχθρικῶν δυνάμεων καὶ ἀμφοτέρων τὰ μέλη συλλέγονται καὶ ἀναζωογονοῦνται κατὰ θαυμαστὸν τρόπον. Διὰ τοὺς λόγους τούτους ἀποβαίνουσιν οἱ Ἕλληνες εὐεπίφοροι πρὸς ἀποδοχὴν λατρείας, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἐπανεύρισκον τὰς ἰδίας αὐτῶν θεότητας μετὰ τῶν αὐτῶν μύθων καὶ ἐν καλλιτεχνικῇ ἐκφράσει. Ἡ συνεργασία τοῦ Τιμοθέου καὶ τοῦ Μανέθωνος, οἵτινες ἀφήρεσαν πᾶν τὸ μὴ αἰσθητικὸν καὶ διετήρησαν πᾶν ὅ,τι κατέπληττε καὶ εἵλκυε, κατέστησεν ἔτι εὐκολωτέραν τὴν ἀποδοχήν. Ἡ ἐξάπλωσις τῆς νέας ταύτης θρησκείας ἐκτὸς τῆς Αἰγύπτου τελεῖται βαθμιαίως καὶ παρουσιάζει πολλὰς περιπετείας καὶ μεταπτώσεις, ὑποβοηθεῖται δὲ ὑπὸ τῶν διπλωματικῶν καὶ τῶν ἐμπορικῶν σχέσεων τοῦ κράτους τῶν Πτολεμαίων καὶ ὑπὸ τοῦ θελγήτρου, ὅπερ ἤσκει ἐπὶ τῆς οἰκουμένης ἡ Ἀλεξάνδρεια ὡς κέντρον πνευματικὸν καὶ πολιτιστικόν. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι οἱ ἴδιοι οὗτοι λόγοι συνετέλουν καὶ εἰς τὸν διωγμὸν τῆς νέας λατρείας. Κατὰ τὸν τρίτον καὶ τὸν δεύτερον π. Χ. αἰῶνα ἀπαντῶμεν τὴν λατρείαν τῆς Ἴσιδος καὶ τοῦ Σεράπιδος ἐν Συρακούσαις, Κατάνῃ, Ποτιόλοις καὶ Πομπηΐᾳ. Δοῦλοι καὶ ἀπελεύθεροι ἔμποροι καὶ χειρώνακτες καὶ στρατιῶται διαδίδουν αὐτὴν πανταχοῦ ἀνὰ τὴν Ἀνατολὴν καὶ πρὸ πάντων ἀνὰ τὴν Δύσιν. Οἱ Τρίανδροι ἀποφασίζουν κατὰ τὸ 43 π. Χ. τὴν ἵδρυσιν ναοῦ εἰς τὴν Ἴσιδα, οὐχὶ δὲ πολὺν χρόνον ὕστερον ἐξαπλοῦται μέχρι τῆς Καρχηδόνος, τῆς Γαλατίας καὶ τῆς Βρεττανίας. Αἱ προσπάθειαι τῶν ἀρχῶν πρὸς ἀποτροπὴν τοῦ κινδύνου ἀπὸ τῆς Ρώμης ἀποδεικνύονται μάταιαι. Παρὰ τὴν restaurationem Augusti, παρὰ τοὺς συχνοὺς καὶ αἱματηροὺς διωγμούς, παρὰ τὰς ἀπαγορεύσεις καὶ τὰς αὐστηρὰς κυρώσεις, ἡ νέα θρησκεία καταλαμβάνει καὶ αὐτὴν τὴν Ρώμην.

Εἰς τὴν αἴγλην τῆς Ἀλεξανδρείας δὲν δύναται νὰ ἐπιβληθῇ ἡ βία, τὰ δὲ πολιτικὰ καὶ τὰ θρησκευτικὰ ἐλατήρια τῶν διωγμῶν δὲν ἰσοφαρίζουν πρὸς τὸ θέλγητρον, τὸ ὁποῖον ἀσκεῖ ἐπὶ τῶν ψυχῶν ἡ λατρεία τῶν νέων θεῶν. Ὁ Καλιγούλας ἱδρύει ἐπισήμως ναὸν εἰς τὴν Ἶσιν· ὁ Καρακάλλας κτίζει ἐξ ἁμίλλης νέον καὶ μεγαλοπρεπέστερον καὶ ὁ Δομιτιανὸς εὐρύνει αὐτὸν εἰς καλλιμάρμαρον οἰκοδόμημα. Ὁ θρῆνος τοῦ Ἑρμοῦ ἐπὶ τῇ παρακμῇ τῆς θρησκείας ταύτης ἀκούεται μόλις τρεῖς αἰῶνας βραδύτερον, ὅτε ἡ Ρώμη ἔχει στραφῆ πρὸς ἄλλους θεοὺς καὶ ὁ πατριάρχης Θεόφιλος κατακρημνίζει τὸ Σεραπεῖον. Τὰ αἴτια τῆς τηλικαύτης ἐξαπλώσεως καὶ τῆς ἐπιβιώσεως τῶν διωγμῶν εἶναι πολλά. Ἡ ἀοριστία καὶ τὸ ἀσυστηματοποίητον τῆς αἰγυπτιακῆς θεολογίας δημιουργοῦν ποιάν τινα ἐλαστικότητα καὶ δύναμιν προσαρμογῆς. Οὕτω κατορθώνει νὰ συμβιβάζεται πρὸς τὴν ἑκάστοτε ἰσχύουσαν φιλοσοφίαν καὶ νὰ δίδῃ ἱκανοποιητικὴν λύσιν εἰς τὸ αἰώνιον πρόβλημα τῶν σχέσεων μεταξὺ πίστεως καὶ γνώσεως. Πλὴν τούτου ἡ ἀπ' ἀρχῆς ὑφισταμένη ἑνοθεϊστικὴ ῥοπή, ἐνῷ ἐξυπηρετεῖ ἀφ' ἑνὸς τὰς μονοθεϊστικὰς ἀνάγκας τῶν πεπαιδευμένων τάξεων διὰ τῆς ἐξάρσεως ἑνὸς θεοῦ, ἀνταποκρίνεται συγχρόνως καὶ εἰς τὸν πολυθεϊσμὸν τοῦ ὄχλου διὰ τῆς ἀναγνωρίσεως καὶ τῶν λοιπῶν θεῶν. Εἶναι χαρακτηριστικὴ ἡ ἀπορρόφησις ὁλοκλήρου τοῦ πανθέου ὑπὸ τῆς Ἴσιδος, ἡ ὁποία ἀποβαίνει ἐν τέλει πανθεϊστικὴ θεότης «una quae est omnia». Ἐπὶ Πτολεμαίων ταυτίζεται πρὸς τὴν Δήμητρα, τὴν Ἀφροδίτην, τὴν Ἥραν, τὴν Σεμέλην, τὴν Ἰώ, τὴν Τύχην. Λατρεύεται ὡς βασίλισσα τοῦ οὐρανοῦ, τοῦ Ἅδου, τῆς γῆς καὶ τῆς θαλάσσης. Εἶναι «τὸ παρόν, τὸ παρελθὸν καὶ τὸ μέλλον», ἡ μήτηρ τῶν ὄντων, ἡ πρὸ τῶν αἰώνων γεννηθεῖσα κυρίαρχος τῶν στοιχείων, ἡ πολυώνυμος καὶ ἀπειρόμορφος θεά. Ἀντὶ λοιπὸν νὰ προάγῃ ἡ θεολογία τῶν αἰγυπτιακῶν μυστηρίων τὴν ἐξέλιξιν τῶν ἰδεῶν, ἀκολουθεῖ αὐτὴν καὶ προσαρμόζεται πρὸς αὐτήν. Τὸ αὐτὸ ἰσχύει καὶ ὡς πρὸς τὴν ἠθικήν, ἥτις οὐδέποτε ἐσκανδαλίσθη διὰ τὰς αἰσχρὰς σκηνὰς τοῦ μύθου καὶ τῆς λατρείας. Τινὰ τῶν ἱερῶν κειμένων μάλιστα συμβουλεύουσιν ἀπόλαυσιν τῆς ζωῆς, πρὶν ἢ ὁ θάνατος ἐπελθὼν κόψῃ τὸ νῆμα αὐτῆς. Δὲν εἶναι παράδοξον ὅτι ἡ Ἶσις ταυτίζεται πρὸς τὴν Ἀφροδίτην καὶ ὁ υἱὸς αὐτῆς Ἁρποκράτης πρὸς τὸν Ἔρωτα. Εἶναι καλόβουλος θεά, ἐπιεικὴς εἰς τὰς ἀνθρωπίνας ἀδυναμίας, καὶ δὴ εἰς τοιοῦτον βαθμόν, ὥστε ὁ Ἰουβενάλις νὰ δύναται νὰ χαρακτηρίσῃ αὐτὴν ὡς μαστρωπὸν (Isiacae sacraria lenae). Οἱ ναοὶ αὐτῆς φέρουν τὴν φήμην δυσωνύμων τρόπον τινὰ οἴκων, ὅπου οἱ νέοι ἐπιζητοῦν ἐρωτικὰς περιπετείας. Ἀλλ' ὅπως ὁλόκληρος ἡ αἰγυπτιακὴ θρησκεία ἀποτελεῖ σύστημα ἀντιφάσεων, ὅπου τὸ νέον, καίπερ ἀντίθετον, ζῇ εἰρηνικῶς παρὰ τὸ παλαιόν, οὕτω συμβαίνει καὶ περὶ τὴν ἰσιακὴν ἠθικήν. Ὅταν ἀνέκυψεν ἡ ἀπαίτησις ἀνωτέρας ἠθικῆς, σπεύδει ἡ μυστηριακὴ αὕτη θρησκεία νὰ ἱκανοποιήσῃ καὶ ταύτην, χρησιμοποιοῦσα τὴν μεγάλην σημασίαν, τὴν ὁποίαν δίδει τὸ αἰγυπτιακὸν τυπικὸν εἰς τὴν καθαρότητα. Ἀληθῶς πρὸ πάσης ἱεροτελεστίας ἀπαιτοῦνται λούσεις καὶ καθαρμοί, χρήσεις καθ... καί, ἀποχὴ ἀπὸ ὡρισμένων βρωμάτων καὶ γυναικός. Ταῦτα πάντα οὐδεμίαν σχέσιν ἔχουν κατ' ἀρχὰς πρὸς τὰς ἠθικὰς ἰδέας. Ἀποτελοῦν ἁπλῶς ἐνεργείας πρὸς ἀποτροπὴν πονηρῶν ... μάτων καὶ χρησιμεύουν πρὸς δημιουργίαν ... πρεπούσης διαθέσεως ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ ἱερουργοῦντος, ἡ ἠθικὴ διάθεσις τοῦ ὁποίου παραμένει ... τελῶς ἀδιάφορος εἰς τοὺς θεούς, τοὺς ὁ... ὑπηρετεῖ. Ἀλλ' ἐκ τῆς παλαιᾶς παραστ... γεννᾶται νέα ἔννοια. Ἀπὸ τὰς τελετουργικὰς ... ξεις προσδοκῶσι τώρα ἐξάλειψιν τῶν ἠθικῶν ... λίδων καὶ ἠθικὴν βελτίωσιν. Αἱ λάτρεις τῆς Ἴσιδος ῥιπτόμεναι εἰς τὸν ποταμὸν καὶ περι... σαι μὲ αἱματωμένα τὰ γόνατα τὸ ἱερὸν τῆς ... περιμένουν ἐξιλασμὸν καὶ συγχώρησιν τῶν ἁμ... Αἱ πρὸς τοὺς πιστοὺς ἀπαιτήσεις μεταβ... χαρακτῆρα· ὅ,τι νῦν ζητεῖ ἡ θεὰ εἶναι ... ἐσωτερικὴ καθαρότης τῆς καρδίας· ἡ ἀπ... ἀπὸ τῶν ὑλικῶν ἡδονῶν ἀποτελεῖ τὴν ἀ... προϋπόθεσιν διὰ τὴν γνῶσιν τῆς θεότητ... τὸ μέγιστον ἀγαθόν. Δὲν ἀρκεῖ πλέον ἡ μ...

Digitized by Google

ναι ἀνάγκη ἠθικοῦ βίου, διότι ἡ Ἶσις εἶναι τώρα πλέον προστάτις τῆς ἁγνότητος. Οὕτω καὶ ἡ νέα αὕτη ἠθικὴ ἀποβαίνει, ὡς ἡ παλαιά, ἓν ἐκ τῶν μέσων προσηλυτισμοῦ τῶν σοβαρωτέρων ὑπάρξεων. Τὸν προσηλυτισμὸν δὲ τοῦτον προάγουν τὸ μὲν ἡ γοητεία τῶν τύπων τῆς λατρείας, τὸ δὲ αἱ θαυμασταὶ ἐπαγγελίαι τῆς αἰγυπτιακῆς ἐσχατολογίας. Μακρὰ παράδοσις καὶ πιστὴ τήρησις προσέδωκαν εἰς τὸ τυπικὸν τῆς λατρείας ἀπαραμίλλητον πλοῦτον, λαμπρότητα καὶ τελειότητα. Ἡ τήρησις αὐτοῦ εἶναι ἐμπεπιστευμένη εἰς ὠργανωμένον κλῆρον, ὅστις ἀποτελεῖ αὐστηρὰν ἱεραρχίαν ὑπὸ ἀρχιερέα καὶ διακρίνεται εἰς προφήτας, γνώστας τῆς θείας σοφίας δηλαδή, κοσμητάς, οἵτινες ἐνδύουσι τὰ εἴδωλα τῶν θεῶν, καὶ παστοφόρους ἐνεργοὺς κατὰ τὰς λιτανείας. Οἱ ἱερεῖς οὗτοι φέρουν ἰδίαν στολήν, λινήν, λευκὰ ἐνδύματα, εἶναι ὑποχρεωμένοι νὰ διάγουν αὐστηρὸν βίον καὶ οὐδὲν ἀσκοῦσιν ἐπάγγελμα, ἀποδόντες, κατὰ τὸν Πορφύριον, «ὅλον τὸν βίον τῇ τῶν θεῶν θεωρίᾳ καὶ θεάσει». Πρώτιστον ἔργον αὐτῶν εἶναι ἡ καθ' ἡμέραν λειτουργία, ἥτις εἶναι οὕτω συχνὴ καὶ δι' ἄλλους λόγους καὶ διὰ τὴν παμπαλαίαν αἰγυπτιακὴν παράδοσιν, κατὰ τὴν ὁποίαν οἱ θεοὶ ἀνάγκη νὰ ἐνδύωνται καὶ νὰ τρέφωνται, ἵνα μὴ ἀφανισθῶσι. Μέρη τῆς λειτουργίας ταύτης εἶναι τὸ ἄνοιγμα τοῦ ναοῦ, ἡ παρασκευὴ τῆς ἱερᾶς πυρᾶς, αἱ σπονδαὶ τοῦ ὕδατος, ὅπερ de Nilo esse dicebatur, ἡ ἐν αἰγυπτιακῇ γλώσσῃ ἀφύπνισις τοῦ θεοῦ, ἡ διὰ πολυτίμων ἀμφίων καὶ λίθων ἀμφίεσις καὶ κόσμησις τῶν ἀγαλμάτων τῶν θεῶν καὶ οἱ πρὸς αὐτοὺς ὕμνοι, τοὺς ὁποίους συνώδευον ἦχοι αὐλοῦ.

Παραθέτομεν σχετικὸν χωρίον τοῦ Πορφυρίου, ...αφὲς καὶ χαρακτηριστικόν: «Ὥς που ἔτι καὶ νῦν ...ν τῇ ἀνοίξει τοῦ ἁγίου Σαράπιδος ἡ θεραπεία διὰ πυ...ὸς καὶ ὕδατος γίνεται, λείβοντος τοῦ ὑμνῳδοῦ τὸ ὕδωρ ...αὶ τὸ πῦρ φαίνοντος, ὁπηνίκα ἑστὼς ἐπὶ τοῦ οὐδοῦ τῇ ...ατρίῳ τῶν Αἰγυπτίων φωνῇ ἐγείρει τὸν θεόν». Ἡ ἐκ ...ῆς λειτουργίας ταύτης ἐντύπωσις, ἥτις ἐτελεῖτο ...αὶ κατὰ τὰς πρωϊνὰς καὶ κατὰ τὰς ἑσπερινὰς ...ὥρας, ἦτο βαθεῖα. Περιέχει ἄλλως τε σοβαρὸν ...εωτερισμόν. Ὁ θεὸς δηλαδὴ λατρεύεται οὐχὶ ἐπ' ...ὐκαιρίᾳ μόνον, ἀλλὰ δὶς τῆς ἡμέρας καὶ ἐπὶ μα...ρόν. Ἡ εὐσέβεια ἀρχίζει νὰ διαποτίζῃ ὁλόκλη...ον τὸν βίον, ἡ δὲ διαρκὴς ἐπανάληψις τῶν προ...ευχῶν τρέφει τὴν πίστιν καὶ ἐνισχύει τοὺς εὐσε...εῖς. Παρὰ τὴν τακτικὴν καθ' ἡμέραν λειτουργίαν ...πάρχουσιν, ὡς ἐν τῷ Μιθραϊσμῷ, περιοδικαὶ ἑορ...αί, συνδεόμεναι πρὸς τὴν ἔναρξιν τῶν ἐποχῶν ...οῦ ἔτους. Αἱ σπουδαιότεραι τούτων εἶναι τὸ Na...igium Isidis καὶ ἡ εὕρεσις. Τὴν πέμπτην Μαρτίου, ...μέραν ἐπαναλήψεως τῶν πλόων, ἐγίνετο λιτανεία ...ρὸς τὴν ἄμμον, τὴν ὁποίαν ἠκολούθουν ὁμάδες ...αραδόξως μετημφιεσμέναι, κοσμηταί, λευχείμονες ...υναῖκες, ὑμνῳδοὶ καὶ αὐληταί, παμπληθεῖς μύσται ...πὸ τὴν ἡγεσίαν λευχειμονούντων ἱερέων. Ἦτο ...ἑορτὴ τῆς καθελκύσεως πλοίου ἀφιερωμένου εἰς ...ὴν Ἶσιν, προστάτιδα τῶν ναυτιλλομένων. Μεγα...οπρεπεστέρα ἦτο ἡ ἑορτὴ τῆς Εὑρέσεως, ἥτις ἐτε...εῖτο παλαιότατα ἤδη ἐν Ἀβύδῳ. Ἐνταῦθα ἀνα...αρίσταντο αἱ περιπέτειαι, τὸ πάθος καὶ ἡ ἀνά...τασις τοῦ Ὀσίριδος, ὁ εἰς κακοποιοὺς ἐμπεσμὸς ...αὶ ὁ φόνος, οἱ θρῆνοι ἐπὶ τῆς σοροῦ καὶ ἡ ταφή, ...νίκη τοῦ Ὥρου κατὰ τοῦ Σὴθ καὶ ὁ θρίαμβος ...οῦ θεοῦ ἐναντίον τοῦ θανάτου. Ὁ μῦθος οὗτος ...ναπαριστᾶται ἐν Ῥώμῃ κατὰ τὸν Νοέμβριον ἑκά...του ἔτους. Ὁ Ὄσιρις ἀναζητεῖται ὑπὸ τῆς θρη...ούσης Ἴσιδος, συνθρηνούντων τῶν ἱερέων καὶ ...ῶν πιστῶν. Ἡ εὕρεσις τῶν λειψάνων τοῦ ἐραστοῦ ...εταβάλλει τὴν τέως λύπην εἰς χαράν, ἐκδηλουμέ...ην ζωηρῶς διὰ παντοίων τρόπων. Αἱ ἑορταὶ αὗ...αι κέκτηνται ἐσωτερικόν, μυστηριακὸν νόημα. Διὰ ...αθμιαίων μυήσεων, διαιρουμένων εἰς στάδια, τε...ιοῦται ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ μύστου ἡ θεία ἀποκάλυ...ις, τὴν ὁποίαν, ὡς καὶ τὰ κατὰ τὰς μυήσεις τε...ούμενα, δέον νὰ τηρῇ μυστικὰ ὁ μυούμενος.

Αἱ μυήσεις αὗται ἐξασφαλίζουν τὴν ἀθανασίαν, ...ότι δι' αὐτῶν ταυτίζεται ὁ μυούμενος πρὸς τὸν ...Όσιριν καὶ μετέχει οὕτω τῆς θείας φύσεως καὶ ...ῆς θείας ζωῆς. Ὁ βίος, ὡς ἐν Αἰγύπτῳ ἀνέκα...εν, νοεῖται ὡς προπαρασκευὴ διὰ τὸ Ἐπέκεινα. ...διάζουσα λοιπὸν καταβάλλεται φροντὶς πρὸς ἐξα...ράλισιν τῆς ζωῆς ταύτης εἰς τὸν θανόντα. Διὰ ...οῦτο ὁ πλοῦτος τῆς περὶ τοὺς νεκροὺς φιλολο...ας, ἡ αἰωνιότης καὶ ἡ μεγαλοπρέπεια τῶν πυρα...δων. Ἰδίᾳ ἐκδηλοῦται ὅμως ἡ φροντὶς αὕτη διὰ ...ῆς ἐξαιρετικῆς λατρείας τοῦ Ὀσίριδος. Ἡ τύχη ...οῦ θεοῦ τούτου εἶναι καὶ τύχη τοῦ θανόντος, ...' ὅσον ἐτήρει ζῶν τὰ περὶ τοὺς νεκροὺς ἔθιμα. ...ν αἰγυπτιακῷ τινι κειμένῳ ἀναγινώσκομεν τὰ ...ῆς ἀξιόλογα σημειώματα: «Ὡς ὁ Ὄσιρις θὰ ζῇ ...ὶ αὐτὸς (ὁ θανών). Ὡς ἐκεῖνος ζῇ, οὕτω καὶ οὗτος ...ν θὰ ἀποθάνῃ. Ὅπως δὲν ἠφανίσθη ἐκεῖνος, τοιου...τρόπως δὲν θὰ ἀφανισθῇ ὁ νεκρός». Ἡ ἀνθρωπίνη ...υχὴ ἐξαρτᾶται ἐντελῶς ἐξ αὐτοῦ, θεωμένη ἀπλή...ως αὐτὸν καὶ ποθοῦσα «τὸ μὴ φατὸν ἀνθρώ...οις κάλλος». Ἐὰν ὁ θανὼν ἐβίωσεν εὐσεβῆ βίον, ...ομοιοῦται πρὸς τὸν Ὄσιριν καὶ μετέχει τῆς ...ωνιότητος τοῦ θεοῦ. Ἀλλ' ἐν τοιαύτῃ περιπτώ...ι δὲν ζῇ ὡς ἀμυδρὰ σκιὰ οὔτε ὡς λεπτὴ πνοή, ...λ' ἀκριβῶς ὅπως ἐπὶ τῆς γῆς. Ὁ εὐσεβὴς ὅμως ...ος ἴσα δύναται πρὸς τὴν μύησιν. Αὕτη λοιπὸν ἐξασφαλίζει τὴν ταύτισιν ἐκείνην καὶ τὴν ἀθανασίαν, τὸν «ἀπαθανατισμόν». Τοῦτο εἶναι τὸ νόημα τῶν πολυπληθῶν ἐπιτυμβίων ἐπιγραφῶν «Εὐψύχει μετὰ τοῦ Ὀσίριδος», ὡς καὶ τῶν ἀναγλύφων παραστάσεων, ἐν αἷς παρίσταται ὁ θανὼν φέρων τὴν μορφὴν καὶ τὰ ἐνδύματα τοῦ Ὀσίριδος. Ἐκ τῶν εἰρημένων καταφαίνεται ἡ δύναμις τῆς ἐσχατολογίας ταύτης καὶ κατανοεῖται τὸ θέλγητρον τὸ ὁποῖον ἤσκησεν Ἀληθῶς οὐδεμία ἄλλη θρησκεία εἶχε παράσχει ἕως τότε τόσον ὡρισμένην ἐπαγγελίαν μακαρίας ἀθανασίας. Αἰωρουμένη ὑπεράνω τῶν ἀντιφατικῶν δοξῶν τῶν φιλοσόφων, ἀντλεῖ τὴν βεβαιότητα αὐτῆς ἐκ θείας ἀποκαλύψεως, πηγῆς ἀκενώτου καὶ ὑπερφυσικῆς, καὶ περιβάλλεται ὑπὸ τῆς αἴγλης, τὴν ὁποίαν χαρίζει ἡ μακραίων παράδοσις ἀτελευτήτων γενεῶν. Καὶ διὰ τοὺς Ὀρφικούς, ἐλαυνομένους ὑπὸ τῆς σκοτεινῆς προαισθήσεως τοῦ ἐν τῷ Ἐπέκεινα βίου, εἶναι ἡ ἐπίγειος ζωὴ προπαρασκευὴ μόνον πρὸς τὸν βίον ἐκεῖνον. Καὶ παρ' αὐτοῖς ἡ ἐν τῷ Ἐπέκεινα μακαριότης ἀσφαλίζεται διὰ τελετουργιῶν, τὰς ὁποίας ἀπεκάλυψεν εἰς τὸν ἄνθρωπον ὁ θεός. Τὰ αὐτὰ διδάσκει καὶ ὁ Ὄσιρις. Ἀλλὰ μετὰ βεβαιότητος καὶ σαφηνείας ἀνηκούστου τέως καὶ πειστικῆς. Οὗτος εἶναι ὁ λόγος, διὰ τὸν ὁποῖον αἱ ἐσχατολογικαὶ αὗται ἐπαγγελίαι προσελκύουν μετ' ἀκαταμαχήτου γοητείας τὰς ἀθλίας μάζας τῆς Ἀνατολῆς καὶ τῆς Δύσεως ἐν τῇ τότε οἰκουμένῃ.

Τὰ μυστήρια τῆς Μ. Ἀσίας συνδέονται πρὸς ὀνόματα, οἷα τὰ Κυβέλη, Μᾶ, Μήν, Σαβάζιος, Ἀναΐτις. Καὶ ἐνταῦθα παρατηροῦμεν τὴν αὐτὴν πρόοδον ἀπὸ φυσιοκρατικῶν παραστάσεων εἰς πνευματικὰ μυστήρια. Ἐν τοῖς ἑξῆς θὰ σκιαγραφήσωμεν τὴν ἱστορίαν καὶ τὰς φάσεις τῆς λατρείας τῆς Κυβέλης, ὡς τοῦ κατ' ἐξοχὴν ἀντιπροσωπευτικοῦ τύπου τῶν μικρασιατικῶν μυστηρίων καὶ ὡς τοῦ μᾶλλον σημαντικοῦ. Ἡ λατρεία τῆς θεότητος ταύτης ἔχει μακρὰν τὴν ἐξέλιξιν· διὸ καὶ ἐμφανίζει συνδυασμὸν παντοδαπῶν θρησκευτικῶν παραστάσεων. Ἓν τῶν ἀρχαιοτάτων στοιχείων αὐτῆς εἶναι ἡ λατρεία τῶν δένδρων, τὰ ὁποῖα οἱ πιστοὶ ἐλάτρευον συγκεντρούμενοι ἐπὶ τῶν κορυφῶν τῶν ὀρέων. Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται καὶ τὸ γεγονὸς ὅτι ἡ πεύκη ἦτο τὸ ἱερὸν φυτὸν τοῦ Ἄττιος. Δὲν ἔλειπεν ὅμως οὔτε ἡ λατρεία τῶν λίθων (φετιχισμός), οὔτε ἡ τῶν ζῴων (τοτεμισμός). Ἡ Κυβέλη αὐτὴ ἦτο χθονία θεότης, θεὰ τῆς βλαστήσεως, μήτηρ τῶν πάντων, ἡ δὲ ὑποδεεστέρα θέσις τοῦ Ἄττιος παρ' αὐτὴν ὑπενθυμίζει τοὺς χρόνους τῆς μητριαρχίας. Τὰ στοιχεῖα ταῦτα πλουτίζονται σὺν τῷ χρόνῳ διὰ παντοδαπῶν ξένων ἐπιδράσεων, αἵτινες καθιστῶσι τὴν θρησκείαν τῆς Κυβέλης τοῦτ' αὐτὸ συγκρητιστικήν. Οὕτω μετὰ τὴν ἐγκατάστασιν τῶν Φρυγῶν ἐκ Θρᾴκης εἰς Μ. Ἀσίαν συγχωνεύεται ὁ Διόνυσος-Σαβάζιος μετὰ τοῦ Ἄττιος, αἱ δὲ εἰς αὐτὸν ἀναφερόμεναι παραστάσεις καὶ αἱ περὶ αὐτὸν τελεταὶ γίνονται καὶ αἱ τοῦ Ἄττιος. Κατὰ τὸν μῦθον, ὅταν μυκᾶται ἡ καταιγὶς ἐπὶ τῆς Ἴδης, παρέρχεται ἡ Κυβέλη ὀχουμένη ἐπὶ βρυχωμένου λέοντος καὶ ἀναζητεῖ θρηνοῦσα τὸν νεκρὸν Ἄττιν. Ἀκολουθοῦν δρομαῖοι οἱ πιστοί, ἐκπέμποντες μακρὸν θρῆνον μετὰ κυμβάλων, πλήκτρων καὶ αὐλῶν. Κραυγαὶ καὶ δαιμονιώδης θόρυβος πλήττουσι τὸν ἀέρα, διακοπτόμεναι ὑπὸ τῶν ἀγρίων πηδημάτων τῶν πιστῶν. Οὕτω καταλαμβάνονται τέλος ὑπὸ ἱεροῦ ἐνθουσιασμοῦ, ὑπὸ ἐκστάσεως καὶ μανίας. Εἰς τὴν λατρείαν ταύτην μεγάλην ἔσχε ῥοπὴν ἡ φύσις καὶ τὸ κλῖμα τῶν ὀροπεδίων τῆς Μ. Ἀσίας. Ὁ σφόδρα δριμὺς χειμὼν καὶ ἡ ἐξαφνικὴ ἀναπήδησις τῆς βλαστήσεως ὑπὸ τὰς ῥαγδαίας βροχὰς τοῦ ἔαρος, ἡ ὁποία μαραίνεται πάλιν ταχέως ὑπὸ τὰ ἀφόρητα καύματα τοῦ θέρους. Αἱ ἐναλλαγαὶ αὗται εὐφορίας καὶ ξηρασίας, εὐθυμίας καὶ μελαγχολίας τῆς φύσεως ἐπιφέρουν ἀποτόμους ἐναλλαγὰς χαρᾶς καὶ πένθους ἐντὸς τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς. Τὸν θρῆνον ἐπὶ τῷ θανάτῳ τῆς φύσεως διαδέχεται ἡ ἔκρηξις παραφόρου χαρᾶς κατὰ τὸ ἔαρ. Ἡ ἀντίθεσις αὕτη τῶν συναισθημάτων ἐκδηλοῦται δι' ἀγρίων ἐθίμων, δι' ὀργιαστικῶν χορῶν, δι' ἑκουσίων τραυματισμῶν, διὰ τῆς ἐπὶ τῇ θέᾳ τοῦ αἵματος μέθης, διὰ ῥαντισμοῦ τῶν βωμῶν δι' αὐτοῦ, διὰ τῆς θυσίας τοῦ ἀνδρισμοῦ ὑπὸ τὸ κράτος τοῦ παροξυσμοῦ. Οὕτως ἐπίστευον ὅτι ἡνοῦντο μετὰ τῆς θεότητος καὶ μετετίθεντο πραγματικῶς εἰς πλήρη πάθους ἔκστασιν. Ἡ μανία αὕτη καὶ οἱ ἀκρωτηριασμοὶ εἶναι ἐκδήλωσις τοῦ διακαοῦς πόθου πρὸς ἀπαλλαγὴν ἀπὸ τῆς δουλείας τῶν σαρκικῶν ὁρμῶν καὶ πρὸς ἀπελευθέρωσιν τῆς ψυχῆς ἀπὸ τῶν δεσμῶν τῆς ὕλης. Δὲν εἶναι διὰ τοῦτο παράδοξον ὅτι ἐν τῇ λατρείᾳ τῆς Κυβέλης, τῆς Μητρὸς τῶν θεῶν, παρατηροῦνται ἀσκητικαὶ τάσεις, οὐχὶ βεβαίως ἄμοιροι ἐπιδράσεως τῆς φιλοσοφικῆς ἠθικῆς τῶν Ἑλλήνων καὶ τῆς ἑλληνικῆς θεολογίας, ὅπως δεικνύει ἤδη ἡ ὕπαρξις μοναχῶν γνωστῶν ὑπὸ τὸ ὄνομα μητραγύρται. Ὅπως αἱ ἄλλαι μυστηριακαὶ θρησκεῖαι, οὕτω καὶ ἡ τῆς Κυβέλης ἀγωνίζεται πρὸς ἐπικράτησιν, ἀναπτύσσουσα ἔντονον προσηλυτισμόν. Ἡ ἀντίθεσις αὐτῆς πρὸς τὴν ἠρεμίαν καὶ τὴν σεμνότητα τῆς θρησκείας τῶν Ῥωμαίων καὶ ὁ σεβασμὸς τῶν τελευταίων τούτων πρὸς τὸ jus majorum δημιουργεῖ κατ' ἀρχὰς δυσμενῆ ἐναντίον αὐτῆς διάθεσιν. Βαθμηδὸν ὅμως ἡ δυσπιστία διαλύεται, ἡ λατρεία τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἀπολαύει ἐλευθερίας καὶ περισσῆς εὐνοίας, εἰσάγεται δὲ μάλιστα καὶ νέος κύκλος ἑορτῶν ἐπισήμως. Αἱ ἑορταὶ αὗται, αἵτινες τελοῦνται ἀπὸ τῆς 15ης μέχρι τῆς 27ης Μαρτίου ἑκάστου ἔτους, βοηθοῦσιν ἡμᾶς εἰς τὸ νὰ εἰσδύσωμεν εἰς τὸν χαρακτῆρα τῆς μυστηριακῆς ταύτης θρησκείας, τῆς ὁποίας κέντρον καὶ αὐτῆς εἶναι ὁ θάνατος καὶ ἡ ἀνάστασις τῆς φύσεως. Κατὰ τὴν ἄνοιξιν ἀνίσταται ἡ φύσις εἰς νέαν ζωήν, προσωποποιουμένη διὰ τοῦ Ἄττιος καὶ τῶν περιπετειῶν αὐτοῦ. Διὰ τὸν λόγον τοῦτον ὡρίσθησαν αἱ ἑορταὶ ἐκεῖναι κατὰ τὸν Μάρτιον. Ἡ ἔναρξις αὐτῶν γίνεται διὰ τῶν cannophori τὴν 15ην τοῦ μηνὸς τούτου, καθ' ἣν ἑορτάζεται ἡ μνήμη τῆς εὑρέσεως τοῦ Ἄττιος ὑπὸ τῆς Κυβέλης εἰς τὰς ὄχθας τοῦ Σαγγαρίου. Τὴν 21ην Μαρτίου εἰς τὸ Παλατῖνον μεταφέρεται ὑπὸ τῶν δενδροφόρων πεύκη, σύμβολον τοῦ πτώματος τοῦ Ἄττιος. Ἡ ὑστεραία εἶναι ἡμέρα πένθους καὶ ἀποχῆς· οἱ πιστοὶ νηστεύουν καὶ θρηνοῦν τὸν θάνατον τοῦ θεοῦ. Κατ' ἄλλην τινὰ ἡμέραν (24 Μαρτίου) ἀναγνωρίζεται τὸ πτῶμα τοῦ Ἄττιος καὶ ἀκολουθοῦν αἱματηραὶ θυσίαι πρὸς ἐξιλασμὸν αὐτοῦ. Οἱ Galli μαστιγοῦσιν ἑαυτούς, κατακόπτουσι τὰς σάρκας των καὶ ἐν μέσῳ ἀγρίων κραυγῶν καὶ ἤχων αὐτῶν θυσιάζουσιν οἱ νεόφυτοι τὸν ἀνδρισμόν των. Κατὰ τὴν ἐπακολουθοῦσαν ἀγρυπνίαν ἑνοῦται ὁ νεόφυτος μετὰ τῆς Κυβέλης καὶ Ἄττιος. Τὴν 26ην ἑορτάζονται τὰ Ἱλάρια· ἡ ἀπελπισία καὶ τὸ πένθος μεταβάλλονται εἰς φρενίτιδα χαρᾶς, διότι μετὰ τῆς ἀφυπνίσεως τῆς φύσεως ἀνίσταται καὶ ὁ θεός. Διασκεδάσεις παντὸς εἴδους, δεῖπνοι, παιδιαὶ προσωπιδοφόρων εἶναι τρόποι ἐκφράσεως τῆς χαρᾶς ταύτης. Τὸν κύκλον τῶν ἑορτῶν τούτων κλείει μακρὰ λιτανεία διὰ τῶν ὁδῶν, κατὰ τὴν ὁποίαν μεταφέρεται τὸ ἀργυροῦν ἄγαλμα τῆς Κυβέλης εἰς τὸν ποταμὸν πρὸς λοῦσιν ὑπὸ βροχὴν ἀνθέων.

Ἡ ἐκ τῶν τελετῶν τούτων ἐντύπωσις ἦτο ἐξαιρετική. Ἤδη ἡ ἐξωτερικὴ ἐμφάνισις τῆς θεᾶς φερομένης ἐφ' ἁμάξης, οἱ ἦχοι τῆς μουσικῆς, τὰ λαμπρὰ ἐνδύματα τῶν ἱερέων εἶχόν τι τὸ ἀπείρως ἐπιβλητικόν. Ἀλλὰ πολὺ ἰσχυροτέρα ἦτο ἡ ἐντύπωσις, τὴν ὁποίαν ἤσκει ἐπὶ τῆς ψυχῆς τοῦ νεοφύτου ὁ ὅλος κύκλος τῶν ἑορτῶν. Ἰδίᾳ συνηρπάζετο οὗτος κατὰ τὴν εἰς τὸν ναὸν εἴσοδον, ὅπου ἤκουε τὴν τραγικὴν ἱστορίαν τῆς θεᾶς, ἤκουε τὰς θλιβερὰς τελετὰς καὶ κατεθέλγετο τέλος ὑπὸ τῶν θριαμβευτικῶν ὕμνων. Δι' ὅλων τούτων τῶν μέσων ἐπήρχετο βαθμηδὸν ἡ ἔξαρσις τοῦ συναισθήματος καὶ ἡ ἔκστασις, τῆς ὁποίας ἀποτέλεσμα ἡ ἐν τῇ ψυχῇ γέννησις τῆς ἀπεράντου ἐλπίδος, ἡ ἀναγέννησις καὶ ἡ βεβαιότης περὶ νέας ζωῆς μετὰ θάνατον. «Θαρσεῖτε, μύσται τοῦ θεοῦ σεσωσμένου· ἔσται γὰρ ὑμῖν ἐκ πόνων σωτηρία». Ἡ εὔνοια, τῆς ὁποίας ἀπήλαυεν ἐπισήμως ἡ λατρεία τῆς Κυβέλης καὶ τοῦ Ἄττιος, ἠνάγκασεν ἄλλας ἀνατολικὰς θρησκείας νὰ ἐπιζητήσωσι τὴν μετ' αὐτῆς ἕνωσιν· συνέπεια τούτου ἦτο ἡ ἀπορρόφησις πολλῶν μικρασιατικῶν θεῶν ὑπ' αὐτῆς, ἀπορρόφησις τὴν ὁποίαν προῆγε συνειδητῶς ὁ κλῆρος τῆς Κυβέλης, ὅστις ἐγνώριζε τὴν σημασίαν τῆς καθολικότητος καὶ ἐπεδίωκεν αὐτὴν διὰ τὴν Μητέρα τῶν θεῶν. Χαρακτηριστικὰ εἶναι τὰ ἐπίθετα τοῦ Ἄττιος, ἀνάγλυφα καὶ ἀγάλματα, τὰ ὁποῖα μαρτυροῦσι τὴν ἔκτασιν τοῦ συγκρητισμοῦ καὶ τὴν ἀπορρόφησιν τῶν θεοτήτων διαφόρων θρησκειῶν ὑπὸ τῆς Κυβέλης. Μεταξὺ τῶν θεοτήτων τούτων ἦτο καὶ ὁ Μίθρας· ἀλλ' οὗτος ἐπέδρασε καὶ αὐτὸς ἐπὶ τῶν μικρασιατικῶν μυστηρίων καὶ συνετέλεσε μεγάλως, διὰ τῆς αὐστηρᾶς ἠθικῆς κοσμοθεωρίας, τὴν ὁποίαν ἀντιπροσωπεύει, εἰς τὴν μεταβολὴν τοῦ χαρακτῆρος τόσον τῆς Κυβέλης, ὅσον καὶ τοῦ Ἄττιος. Τὴν μεταβολὴν ταύτην μαρτυρεῖ πρὸ πάντων ἡ εἰσαγωγὴ τοῦ Ταυροβολίου, ὅπερ σχετίζεται πρὸς τὸν μυθικὸν ταῦρον τοῦ παρσισμοῦ, ἐκ τοῦ ὁποίου ἐδημιουργήθη ὁ κόσμος. Τοῦτο συνίστατο ἐν τούτῳ, ὅτι ὁ ἐν τάφρῳ κεκρυμμένος μύστης περιελούετο διὰ τοῦ αἵματος ταύρου, ὅστις ἐσφάζετο ὑπεράνω αὐτοῦ ἐπὶ ξύλων σχηματιζόντων ἐσχάραν ἢ ἐφωδιασμένων δι' ὀπῶν. Ἐν τῇ τάφρῳ κατακείμενος φροντίζει ὅπως τὰ μέλη του καὶ τὰ ὑποδήματά του ῥαντισθῶσιν ὑπὸ τοῦ αἵματος, ἐν τέλει δὲ καὶ πίνει ἐξ αὐτοῦ. Οὕτω πιστεύει ὅτι καθαρίζεται ἀπὸ τῶν ἁμαρτημάτων του καὶ ἐξομοιοῦται πρὸς τὸν θεόν. Ἐνταφιάζει τρόπον τινὰ τὸν παλαιὸν ἄνθρωπον, ἵνα ἀναστῇ ὡς νέος, ἀναγεγεννημένος, «in aeternum renatus». Ἐνταῦθα καταφαίνεται ἡ δύναμις τῶν πρωτογενῶν περὶ τοῦ αἵματος παραστάσεων. Ἡ δι' αὐτοῦ ἀντιπροσωπευομένη συγγένεια προσλαμβάνει πνευματικὸν χαρακτῆρα, ἀντικαθισταμένου τοῦ συμβόλου ἐν τοῖς ἱεροῖς δείπνοις διὰ τοῦ κοινοῦ δείπνου ἀκριβῶς. Οἱ συντρώγοντες πιστοὶ ἀποτελοῦν μίαν οἰκογένειαν, ἐξομοιοῦνται δὲ πρὸς τὸν θεὸν διὰ τῆς συμμετοχῆς εἰς τὸ ἱερὸν δεῖπνον. Μετὰ τούτων συμμεταβάλλεται καὶ ἡ περὶ θεότητος παράστασις. Ἡ θρησκεία τοῦ Ἄττιος ὑψοῦται εἰς ἡλιακὸν ἑνοθεϊσμόν, διὰ τοῦ ὁποίου πάντες οἱ θεοὶ συγχωνεύονται πρὸς ἐκεῖνον, καλούμενον διὰ τοῦτο καὶ Πάνθεον. Ἡ ἀλληγορικὴ ἑρμηνεία τῶν νεοπλατωνικῶν κατορθώνει ὥστε ὁ μῦθος τοῦ Ἄττιος νὰ γίνῃ σύμβο-



Digitized by Google

λον τῶν ἰδεῶν αὐτῶν περὶ τῆς ἀπελευθερώσεως τῆς εἰς τὴν ὕλην ἐκπεσούσης ψυχῆς. Ἡ ἐξωτερικὴ ὁμοιότης τῶν μυστηρίων αὐτοῦ πρὸς τὰ χριστιανικὰ παρέχει τὸ θάρρος εἰς τὸν κλῆρον τῆς Mater Magna νὰ κάμῃ τὴν σύγκρισιν καὶ νὰ ἰσχυρισθῇ ὅτι τὸ ταυροβόλιον εἶναι δραστικώτερον τοῦ βαπτίσματος, ἡ ἐξιλαστικὴ δύναμις τοῦ αἵματος τοῦ ταύρου μεγαλυτέρα καὶ ὁ Ἄττις αὐτὸς Χριστιανός, ὡς ἀναφέρει ὁ ἱερὸς Αὐγουστῖνος (et ipse Pileatus christianus est).

Τὰ ἀρχαιότατα καὶ σημαντικώτατα πάντων τῶν μυστηρίων ἦσαν τὰ Ἐλευσίνια. Τὸ κατ' ἀρχὰς ἑορτὴ θέρους τῶν κατοίκων τοῦ Θριασίου πεδίου, ἀπέβησαν βραδύτερον μέρος τῆς ἐπισήμου λατρείας τῆς Ἀθηναϊκῆς πολιτείας, μετὰ τὴν πολιτικὴν ἕνωσιν τῆς Ἐλευσῖνος μετὰ τῶν Ἀθηνῶν. Ἐν τῷ προαστείῳ Ἄγρᾳ ἑωρτάζοντο κατὰ τὸ ἔαρ τὰ μικρὰ Ἐλευσίνια, τὰ ὁποῖα ἀπετελοῦντο ἐκ σειρᾶς καθαρμῶν, εἴδους τινὸς προμυήσεως, ἄνευ τῆς ὁποίας δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ προχωρήσῃ τις ἐν Ἐλευσῖνι εἰς τὸν βαθμὸν τοῦ μύστου καὶ τοῦ ἐπόπτου. Τὰ μεγάλα Ἐλευσίνια τοὐναντίον ἐλάμβανον χώραν κατὰ Σεπτέμβριον διὰ τῆς μεταφορᾶς τῶν ἱερῶν ἐξ Ἐλευσῖνος εἰς Ἀθήνας διὰ τῶν ἐφήβων. Κατὰ τὴν πρώτην ἡμέραν ἐγίνετο συγκέντρωσις, κατὰ τὴν ὁποίαν προσεφώνει τοὺς μετέχοντας ὁ ἄρχων βασιλεύς. Τὴν 16ην τοῦ αὐτοῦ μηνὸς προσεκαλεῖτο τὸ πλῆθος εἰς θαλάσσιον ἐξιλαστήριον λουτρὸν διὰ τῆς ἐπιφωνήσεως: Ἅλαδε, μύσται. Ἡ ὑστάτη τέλος ἡμέρα ἦτο ἀφιερωμένη εἰς τοὺς θεοὺς τῆς Ἐπιδαύρου, ἰδίᾳ εἰς τὸν Ἀσκληπιόν. Τὴν 19ην ἐγίνετο ἡ μεγάλη λιτανεία, καθ' ἣν οἱ μύσται, φέροντες στεφάνους ἐκ μύρτων, κατηυθύνοντο ἐπὶ τῆς ἱερᾶς ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἐλευσῖνα. Κατ' αὐτὴν ἐφέροντο τὰ ἱερὰ ἀντικείμενα τῆς Ἐλευσῖνος καὶ τὸ εἴδωλον τοῦ Ἰάκχου, ἐγίνοντο δὲ πολλοὶ σταθμοὶ μετὰ καθαρτικῶν πράξεων, ὧν εἷς, οἱ καλούμενοι Γεφυρισμοί, ἐπὶ τῆς γεφύρας τοῦ Κηφισοῦ. Κατὰ τὴν νύκτα φθάνοντες εἰς τὴν Ἐλευσῖνα κατήρχοντο εἰς τὸ Τελεστήριον, εὐρύτατον καὶ ὑπὸ στύλων φερόμενον χῶρον, ὅπου τὰς ἱεροτελεστίας διηύθυνεν ὁ Ἱεροφάντης ἐκ τοῦ γένους τῶν Εὐμολπιδῶν, βοηθούμενος ὑπὸ τοῦ Δᾳδούχου, τοῦ Κήρυκος καὶ τοῦ Ἱερέως τοῦ ἱεροῦ, πάντων ἐκ τοῦ ἀρχαίου ἀττικοῦ γένους τῶν Κηρύκων. Τῆς ὅλης τελετῆς προΐστατο ὁ ἄρχων βασιλεὺς μετὰ τῶν ἐπιμελητῶν. Τὸ πρῶτον μέρος τῆς τελετῆς συνίστατο εἰς τὸ βάπτισμα τοῦ νεοφύτου, παρὰ τὸν ὁποῖον ἵστατο ὁ μυσταγωγός. Τὸ βάπτισμα τοῦτο ἐτελεῖτο δι' ἐπιχύσεως κυπέλλου ὕδατος ἐπὶ τοῦ μυουμένου καὶ συνοδεύετο ὑπὸ καθαρτηρίου θυσίας. Ἔπειτα ἠκολούθει ἡ κυρία τελετή, εἰς τὴν ὁποίαν ἀνῆκον δεικνύμενα, δρώμενα καὶ λεγόμενα. Δεικνύμενα ἦσαν τὰ ἱερὰ σκεύη καὶ τὰ λοιπὰ ἱερὰ ἀντικείμενα. Δρώμενα ἐλέγοντο ἡ δραματικὴ ἀναπαράστασις τῶν περιπετειῶν τῆς Δήμητρος, συνοδευομένη ὑπὸ μουσικῆς, χοροῦ καὶ ὕμνων καὶ τῆς ἐντυπωσιακῆς ἐναλλαγῆς φωτὸς καὶ σκότους. Μετὰ ταῦτα μετεῖχε τοῦ ἱεροῦ δείπνου καὶ ἐκοινώνει ποτοῦ τινος. Εἰς ταῦτα ἐπηκολούθει συμβολικὴ παράστασις ὑλικῆς ἑνώσεως μετὰ τῆς θεότητος. Τὰ λεγόμενα ἦσαν ἀναγνώσματα ἐξ ἱερῶν κειμένων καὶ ἐντολαί, τῶν ὁποίων τὴν καταγωγὴν ἀνῆγον εἰς τὸν Τριπτόλεμον. Κατὰ τοὺς ἑλληνιστικοὺς χρόνους ἀπέκτησαν τὰ Ἐλευσίνια μυστήρια ἐξαιρετικὴν σημασίαν. Ὁ Κικέρων ὀνομάζει αὐτὰ Sancta illa et augusta, ubi initiantur gentes orarum ultimae. Πολλοὶ Ρωμαῖοι αὐτοκράτορες μυοῦνται εἰς αὐτά, διαδίδονται δὲ εἰς πλείστους τόπους ἐντὸς καὶ ἐκτὸς τῆς Ἑλλάδος, μόνα ἢ συνδεδεμένα πρὸς τὰ τῆς Σαμοθράκης καὶ τὰ τοῦ Διονύσου.

Τὰ ὀρφικὰ μυστήρια δὲν συνωδεύοντο πρὸς ὡρισμένον κέντρον λατρείας. Κήρυκες περιπλανώμενοι ἀπὸ τόπου εἰς τόπον ἐτέλουν ἐν ἱεροῖς οἴκοις τὰ ἑαυτῶν μυστήρια, τῶν ὁποίων μετεῖχον μόνον οἱ μύσται, οἱ λεγόμενοι ὀρφεοτελεσταί, ἀπαγορευομένης τῆς εἰσόδου εἰς τοὺς βεβήλους ἢ λαούς. Βάσις τῶν μυστηρίων τούτων εἶναι ἡ ὀρφικὴ θεολογία, ἥτις φέρει χαρακτῆρα μυστικοπαθῆ καὶ τὴν ὁποίαν ἐξηγένισεν ἡ πυθαγόρειος καὶ ἡ πλατωνικὴ φιλοσοφία. Ἡ θεολογία αὕτη ἤσκησε πολλὴν ἐπίδρασιν ἐπὶ τῶν διαφόρων μυστηρίων τῆς ἀρχαιότητος καὶ ἰδίᾳ ἐπὶ τῶν διονυσιακῶν. Τὰ τελευταῖα ταῦτα ἀναφαίνονται ἐν Ἀθήναις κατὰ τὸν Δ' π. Χ. αἰῶνα, ταχέως δὲ διαδίδονται ἀνὰ τὰς περὶ τὴν Μεσόγειον χώρας. Ὁ νεόφυτος περιπλανώμενος ἐν τῷ σκότει ἐρραντίζετο διὰ πηλοῦ καὶ κατεκλίνετο ἐπὶ τοῦ ἐδάφους, μέχρις ὅτου ἀνήγειρεν αὐτὸν ὁ δᾳδοῦχος, ἐκαθάριζεν αὐτὸν ἀπὸ τοῦ πηλοῦ καὶ μετεδίδεν εἰς τὴν δᾷδα αὐτοῦ τὸ φῶς ἐκ τῆς ἰδικῆς του δᾳδός. Τοῦ ἔργου τούτου ἤρχετο διὰ τοῦ παραγγέλματος «ἔγειρε». Ἔπειτα προέτρεπε τὸν μυούμενον νὰ πλησιάσῃ τῷ θεῷ καὶ νὰ μετάσχῃ τῆς χαρᾶς τῶν μακάρων. Ὁ Διόνυσος προσφωνεῖται ὡς νυμφίος καὶ ὡς νέον φῶς. Ἡ πρὸς αὐτὸν ἕνωσις συντελεῖται ὑπὸ τοῦ νεοφύτου διὰ τῆς περὶ τὸν κόλπον αὐτοῦ περιφορᾶς χρυσοῦ ὄφεως, ὅστις συμβολίζει τὸν θεόν, καλούμενον «ὑποκόλπιον» ἢ «διὰ κόλπου θεόν». Διὰ τούτων καὶ τῶν τοιούτων ὁ μύστης ἐξωμοιοῦτο πρὸς «Θεὸς ἐγένου ἐξ ἀνθρώπων» ἀνήκει τὸν θεόν.

μετ' ἄλλων σχετικῶν εἰς τὴν λειτουργίαν τῶν διονυσιακῶν μυστηρίων.

Ἡ σύγκρισις τῶν μυστηρίων τούτων καὶ τῶν λοιπῶν, ἐν οἷς τὸ τῆς Σαμοθράκης, πρὸς ἄλληλα δεικνύει τὴν μεταξὺ αὐτῶν ὑπάρχουσαν ἐσωτερικὴν συγγένειαν, παρ' ὅλην τὴν διαφορὰν τῶν ἐξωτερικῶν τύπων. Ἐν πᾶσι ζῇ ὁ πόθος πρὸς θέωσιν, πρὸς ἀπολύτρωσιν, καὶ ὅλοι ἐπιδιώκουν τὸν αὐτὸν σκοπόν, τουτέστι τὴν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ γέννησιν τοῦ θείου διὰ τῆς συνάψεως τῆς ψυχῆς αὐτοῦ πρὸς τὸν θεόν.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *J. Leipold*, Die Religionen in der Umwelt des Christentums (1926).—*O Kern*, Die griechischen mysterien der klassischen Zeit (1927).—*R. Reitzenstein*, Die hellenistischen Mysterienreligionen (β' ἔκδ. 1927).—*Fr. Cumont*, Les religions orientales dans l'empire romain (1909).
Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

**μυστήριον** (τό)· ἄρρητον, ἀπόκρυφον, μυστικόν, τελετὴ συμβολική: «ἐλευσίνια μυστήρια»· || ἐν τῇ χριστ. θρησκ., πᾶσα ἱερὰ πρᾶξις ἢ πᾶν δόγμα ἐνέχον τι ἀκατάληπτον ἢ ἀπόκρυφον: «τὸ μυστήριον τῆς Ἁγίας Τριάδος»· || ἱερὰ τελετή, διὰ τῆς ὁποίας μεταδίδεται ἡ θεία χάρις: «τὸ μυστήριον τοῦ βαπτίσματος, — τοῦ γάμου κττ»· || «τὰ ἄχραντα μυστήρια» ἡ θεία εὐχαριστία· || μεταφ., πᾶν ὅ,τι τηρεῖται μυστικὸν ἢ εἶναι ἄγνωστον: «ἡ ζωή του εἶναι μυστήριον»· || πρᾶξις φιλάνθρωπος, εὐεργεσία πρὸς δεινοπαθοῦντα: «βοήθησε αὐτὸν τὸν ἀτυχῆ καὶ θὰ κάμῃς μυστήριον».

—[*Θρησκειολ.*] *Μυστήριον* (*μυστήρια, τὰ μυστικά, τελεταί*, sacramenta) καλεῖται ἡ λατρεία ἡ εἰς μόνους τοὺς μύστας προσιτή, διὰ τῆς ὁποίας ὁ ἄνθρωπος κατορθώνει νὰ ἔλθῃ εἰς ἄμεσον κοινωνίαν μετὰ τῆς ἀποκαλυπτομένης εἰς αὐτὸν θεότητος, συμμετέχων τῶν μυστικῶν τελετῶν. Κατὰ Μάξιμον τὸν Τύριον, σκοπὸς τῶν μυστηρίων ἦτο «συγγενέσθαι τῷ δαιμονίῳ». Τὰ μυστήρια ἦσαν τὰ μὲν κρατικά, ἀνεγνωρισμένα καὶ ὑποστηριζόμενα ὑπὸ τῆς πολιτείας, τὰ δὲ ἰδιωτικά, ὑπὸ θιάσων, θρησκευτικῶν σωματείων καλλιεργούμενα (βλ. *μυστηριακαὶ θρησκεῖαι*). Ν. Λ.

—[*Δογμ.*] *Μυστήριον* σημαίνει παρά τε τοῖς ἔξω καὶ ἐν τῇ Καινῇ Διαθήκῃ κεκρυμμένον τι καὶ ἀκατάληπτον, μυστηριῶδές τι. Ἐν τῇ ἐκκλησιαστικῇ γλώσσῃ ἐπεκράτησε νὰ καλῶνται μυστήρια αἱ ἱεραὶ τελεταί, αἱ ὑπὸ τοῦ Χριστοῦ καὶ τῶν ἀποστόλων συστᾶσαι καὶ δι' αἰσθητῶν σημείων μεταδίδουσαι μυστηριωδῶς τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ. Κατὰ ταῦτα τρία εἶναι τὰ οὐσιώδη χαρακτηριστικὰ τῶν μυστηρίων, ἄνευ τῶν ὁποίων ἱερά τις τελετὴ δὲν δύναται νὰ κληθῇ μυστήριον: 1) ἡ θεία σύστασις, 2) τὰ αἰσθητὰ σημεῖα καὶ 3) ἡ μετάδοσις τῆς θείας χάριτος. Κατὰ τὴν ἐπικρατοῦσαν διδασκαλίαν τῆς Ἐκκλησίας, τὴν καὶ ἐπὶ τῆς ἁγίας Γραφῆς στηριζομένην, τὰ μυστήρια ἱδρύθησαν ὑπὸ τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ. Ἡ μεταδιδομένη δὲ χάρις ἐν τοῖς μυστηρίοις συνεδέθη μετ' αἰσθητῶν σημείων ἕνεκα τῆς φύσεως ἡμῶν, ὄντων καὶ ὑλικῶν καὶ ἐχόντων τρόπον τινὰ ἀνάγκην καὶ διὰ τῶν αἰσθήσεων ν' ἀντιληφθῶμεν τὴν μεταδιδομένην χάριν. Τὸ αἰσθητὸν κατὰ τὴν διδασκαλίαν τῆς χριστιανικῆς θρησκείας δὲν εἶναι φύσει κακόν τι ἢ τελείως ἀντίθετον πρὸς τὸ πνευματικόν, ὥστε νὰ μὴ δύναται νὰ γίνῃ σύμβολον καὶ φορεὺς τῆς θείας χάριτος. Αἰσθητὰ σημεῖα ἐν τοῖς μυστηρίοις καλοῦμεν τὴν τελετὴν τῶν μυστηρίων, τὴν ἐκ λόγων καὶ πράξεων συνισταμένην, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν μεταδιδομένην χάριν, τὴν ἀποτελοῦσαν τὸ ἀόρατον ἐν τοῖς μυστηρίοις. Ἡ σχολαστικὴ θεολογία τῆς Δύσεως διακρίνει ἐν τοῖς μυστηρίοις τὰ οὐσιώδη στοιχεῖα καὶ τὰ ἐπουσιώδη, ἐπίσης τὰς πράξεις (res), καὶ τοὺς λόγους (verbum), ἅτινα ἀπὸ τοῦ ΙΓ' αἰῶνος καλοῦνται ὕλη (materia) καὶ μορφὴ ἢ τύπος (forma). Αἱ σχολαστικαὶ αὗται διακρίσεις, εἰ καὶ δύνανται νὰ στηριχθοῦν ὁπωσδήποτε καὶ ἐπὶ τῆς ἀρχαιοτέρας δυτικῆς ἐκκλησιαστικῆς φιλολογίας, εἶναι ἄγνωστοι τῇ ἀνατολικῇ Ἐκκλησίᾳ καὶ περιττοὶ συγχρόνως, ἐπισκοτίζουσαι τὰ πράγματα, τοσούτῳ μᾶλλον καθ' ὅσον καὶ παρ' αὐτοῖς τοῖς σχολαστικοῖς θεολόγοις διαφωνίαι ὑπάρχουσι περὶ τοῦ ἀκριβοῦς προσδιορισμοῦ τῆς ὕλης καὶ τῆς μορφῆς ἐν τοῖς μυστηρίοις. Οὐδεμία δύναται νὰ ὑπάρξῃ ἀμφιβολία ὅτι τὰ αἰσθητὰ σημεῖα τινῶν ἐκ τῶν μυστηρίων (βάπτισμα, εὐχαριστία) ἱδρύθησαν ὑπὸ τοῦ Χριστοῦ. Ὡς πρὸς τὰ αἰσθητὰ σημεῖα τῶν λοιπῶν μυστηρίων, ἄλλοι μὲν τῶν δογματικῶν δέχονται ὅτι ἱδρύθησαν ὑπὸ τοῦ Χριστοῦ, ἄλλοι δὲ ὑπὸ τῶν Ἀποστόλων καὶ τῆς ἐκκλησίας, δόντος τοῦ Κυρίου αὐτοῖς ἐντολὴν ἢ καὶ ἐλευθερίαν πρὸς ἐκλογὴν καὶ προσδιορισμὸν αὐτῶν. Τῶν γνωμῶν τούτων ἡ πρώτη ἔχει ὑπὲρ ἑαυτῆς τὴν ἀναλογίαν, ἤθελε δ' εἶσθαι ἀκατανόητον, διατὶ ὁ Κύριος δύο μόνον τῶν μυστηρίων ἵδρυσε τὰ αἰσθητὰ σημεῖα καὶ οὐχὶ πάντων. Τὰ αἰσθητὰ σημεῖα τῶν μυστηρίων δὲν ἐνεργοῦσιν ἀφ' ἑαυτῶν τὴν μετάδοσιν τῆς θείας χάριτος, ἀλλὰ διὰ τῆς ἐνεργείας τοῦ ἁγίου Πνεύματος. Ἡ διὰ τῶν μυστηρίων δ' αὕτη μεταδιδομένη χάρις στηρίζεται καὶ ἀπορρέει ἐκ τοῦ ἀπολυτρωτικοῦ ἔργου καὶ δὴ τοῦ θανάτου τοῦ Χριστοῦ. Τὰ αἰσθητὰ σημεῖα δὲν εἶναι ψιλὰ σημεῖα τῶν ἐπαγγελιῶν τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ ὄργανα μεταδοτικὰ τῆς θείας χάριτος, διότι διὰ τοῦ θείου λόγου ἡ ὕλη τοῦ μυστηρίου καθίσταται μέσον μεταδόσεως τῆς θείας χάριτος. Ἐνῷ δὲ περὶ τῆς διὰ τῶν αἰσθητῶν σημείων μεταδόσεως τῆς θείας χάριτος οὐδεμία ἀμφιβολία οὐδὲ διαφωνία δύναται νὰ ὑπάρχῃ, τῆς τε ἁγίας Γραφῆς καὶ τῆς ἱερᾶς Παραδόσεως διδασκούσης τοῦτο, διαφωνίαι ἐγείρονται παρὰ τοῖς σχολαστικοῖς θεολόγοις περὶ τῆς σχέσεως τῆς θείας χάριτος πρὸς τὰ αἰσθητὰ σημεῖα διότι ἐνῷ τινες τούτων δέχονται, ὅτι ἡ θεία χάρις περικλείεται ἐν τοῖς αἰσθητοῖς σημείοις (continent), ἄλλοι δέχονται ὅτι τὰ αἰσθητὰ σημεῖα εἶναι ἁπλᾶ σημεῖα, τῆς θείας χάριτος μεταδιδομένης ἀπ' εὐθείας καὶ κεχωρισμένως τοῦ αἰσθητοῦ σημείου (conferunt). Τὸ ζήτημα τοῦτο δὲν δύναται νὰ λυθῇ γενικῶς ὡς πρὸς πάντα τὰ μυστήρια, διότι ἄλλως μεταδίδεται ἡ θεία χάρις ἐν τῇ εὐχαριστίᾳ, ἐν ᾗ ὁ ἄρτος καὶ ὁ οἶνος μεταβάλλονται εἰς σῶμα καὶ αἷμα τοῦ Χριστοῦ, καὶ ἄλλως ἐν τῷ βαπτίσματι καὶ τοῖς λοιποῖς μυστηρίοις, ἐν οἷς τὸ αἰσθητὸν σημεῖον ἄνευ μεταβολῆς μεταδίδει τὴν θείαν χάριν. Τίνι τρόπῳ συνδέεται ἡ θεία χάρις μετὰ τοῦ αἰσθητοῦ ἐν τοῖς μυστηρίοις τούτοις δὲν γνωρίζομεν, τῆς τε ἁγίας Γραφῆς καὶ τῆς ἱερᾶς Παραδόσεως οὐδὲν ὡρισμένον περὶ τούτου ἀναφερούσης. Ἀρκούμεθα λοιπὸν δεχόμενοι μὲν τὴν διὰ τῶν αἰσθητῶν σημείων μετάδοσιν τῆς θείας χάριτος, ὁμολογοῦντες δὲ μετὰ τῶν Πατέρων τῆς ἐκκλησίας τὴν ἄγνοιαν τοῦ τρόπου τῆς μεταδόσεως ταύτης.

Ἡ ἁγία Γραφὴ ἀναφέρει ἑπτὰ μυστήρια: τὸ *βάπτισμα* (*Ματθ.* 28, 19—29), τὸ *χρῖσμα* (Πράξ. 8, 14—17 καὶ 1, 9, 2—7), τὴν *εὐχαριστίαν* (Ματθ. 26, 26—28· πρβλ. καὶ τὰ παράλληλα χωρία), τὴν *μετάνοιαν* (*Ἰωάνν.* 20, 21—23. *Ματθ.* 16, 19 καὶ 18, 17), τὴν *ἱερωσύνην* (Α' Τίμ. 4, 14. Β' Τίμ. 1, 6), τὸν *γάμον* (Ἐφ. 5, 22 ἑ., Α' Κορ. 7, 14 καὶ 39) καὶ τὸ *εὐχέλαιον* (*Ἰάκ.* 5, 13 ἑ.). Ὡς δὲ ἡ ἁγία Γραφή, οὕτω καὶ ἡ ἱερὰ Παράδοσις ἀπ' ἀρχαιοτάτης ἐποχῆς ἐγνώριζε τὰ ἑπτὰ μυστήρια, εἰ καὶ ἐν ἀρκούντως μεταγενεστέρᾳ ἐποχῇ εὑρίσκομεν ῥητὰς μαρτυρίας ὅτι τὰ μυστήρια εἶναι ἑπτά. Πρῶτος ἐν τῇ ἀνατολικῇ ἐκκλησίᾳ ἀναφέρει ῥητῶς ὅτι τὰ μυστήρια εἶναι ἑπτὰ ὁ μοναχὸς Ἰὼβ (1270), ἐν δὲ τῇ δυτικῇ ὁ Λομβάρδος. Αἱ τόσον μεταγενέστεραι μαρτυρίαι περὶ τῆς ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας παραδοχῆς τῶν ἑπτὰ μυστηρίων, ἅτινα ἀρχαιόθεν εἶναι γνωστὰ ἐν αὐτῇ, δύνανται εὐκόλως νὰ ἐξηγηθῶσιν, ἐὰν λάβῃ τις ὑπ' ὄψει ἀφ' ἑνὸς μὲν ὅτι ἡ περὶ τῶν μυστηρίων διδασκαλία μὴ προσβληθεῖσα κατὰ τὴν ἀρχαίαν ἐποχὴν δὲν ἀνεπτύχθη ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας, ἀφ' ἑτέρου δ' ὅτι αὕτη ἐν τῇ ἀρχαιοτάτῃ ἐποχῇ ἐτηρεῖτο ἀπόρρητος. Τὸ γεγονὸς ἄλλως τε ὅτι αἱ κατὰ τὸν Ε' αἰῶνα ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας ἀποσχισθεῖσαι αἱρετικαὶ παραφυάδες τῶν Νεστοριανῶν καὶ Μονοφυσιτῶν ἀναγνωρίζουσι τὰ ἑπτὰ μυστήρια ἀποδεικνύει πασιφανῶς τὴν ἀρχαιότητα τῆς περὶ αὐτῶν διδασκαλίας τῆς ἐκκλησίας, ἀφ' ἧς ἀποσπασθεῖσαι αὗται παρέλαβον ἐκτὸς τῶν ἄλλων διδασκαλιῶν καὶ τὴν περὶ τῶν ἑπτὰ μυστηρίων. Καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν δὲ τοῦ σχίσματος οὐδεὶς γίνεται λόγος οὐδὲ μομφὴ περὶ τῆς αὐξήσεως ἢ ἐλαττώσεως τοῦ ἀριθμοῦ τῶν μυστηρίων μεταξὺ τῆς ἀνατολικῆς καὶ τῆς δυτικῆς ἐκκλησίας. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω προκύπτει ὅτι ἡ γνώμη τῆς διαμαρτυρομένης ἐκκλησίας, καθ' ἣν δύο μόνον μυστήρια, τὸ βάπτισμα καὶ ἡ εὐχαριστία, ὑπάρχουσιν ἐν τῇ χριστιανικῇ ἐκκλησίᾳ, δὲν εἶναι ὀρθή.

Ἡ διὰ τῶν μυστηρίων μεταδιδομένη χάρις εἶναι ἀπολύτως ἀναγκαία πρὸς σωτηρίαν. Ἐννοεῖται ὅμως ὅτι ἐκ τούτου δὲν ἕπεται ὅτι ὁ Θεὸς μόνον διὰ τῶν μυστηρίων δύναται νὰ σώσῃ καὶ ὅτι ὁ ἐπιθυμῶν νὰ μεταλάβῃ αὐτῶν μὴ δυνάμενος δὲ ἕνεκα λόγων ἀνεξαρτήτων τῆς θελήσεώς του δὲν δύναται νὰ σωθῇ. Τοὐναντίον πιθανωτάτη φαίνεται ἡ γνώμη τοῦ Αὐγουστίνου, ἡ καὶ ὑπὸ τῆς δυτικῆς ἐκκλησίας γενομένη ἀποδεκτή, ὅτι οὐχὶ ἡ ἔλλειψις, ἀλλ' ἡ περιφρόνησις τοῦ μυστηρίου καταδικάζει καὶ ὅτι ἑπομένως δύναταί τις νὰ σωθῇ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ καὶ ἄνευ τῆς χρήσεως τῶν μυστηρίων, ὅταν ἡ ἔλλειψις αὕτη δὲν προέρχεται ἐξ ἀσυγγνώστου ὀλιγωρίας ἢ περιφρονήσεως, ἀλλ' ἐκ τοῦ ἀδυνάτου τῆς μεταλήψεως αὐτῶν. Οὕτως ὁ Χριστὸς σώζει τὸν ἐπὶ τοῦ σταυροῦ μετανοήσαντα ληστὴν ἄνευ βαπτίσματος καὶ ἡ χριστιανικὴ ἐκκλησία ἀπ' ἀρχαιοτάτης ἐποχῆς θεωρεῖ τὸ μαρτύριον ὡς δυνάμενον νὰ ἀντικαταστήσῃ τὸ βάπτισμα καὶ σώσῃ καὶ μὴ βεβαπτισμένον. Ἡ διὰ τῶν μυστηρίων μεταδιδομένη χάρις φαίνεται ὅτι ἐν τρισὶ τούτων (βάπτισμα, χρῖσμα, ἱερωσύνη) ἔχει ἀνεξάλειπτον χαρακτῆρα, οὕτως ὥστε τὰ μυστήρια ταῦτα ὀρθῶς τελεσθέντα δὲν ἐπαναλαμβάνονται ἢ δὲν ἐπιτρέπεται νὰ ἐπαναλαμβάνωνται. Πρὸς ἐξήγησιν τῆς μὴ ἐπαναλήψεως μυστηρίων τινῶν καὶ τῆς ἐπαναλήψεως ἄλλων ἡ δυτικὴ ἐκκλησία, στηριζομένη ὁπωσδήποτε καὶ ἐπὶ τῆς διδασκαλίας τοῦ Αὐγουστίνου, ἔπλασε, κατὰ τὸν ΙΓ' περίπου αἰῶνα, τὴν ἑαυτῆς θεωρίαν περὶ τοῦ ἀνεξαλείπτου χαρακτῆρος (character indelebilis), τῶν τριῶν μυστηρίων, βαπτίσματος, χρίσματος καὶ ἱερωσύνης, ἃ ἕνεκα τούτου καὶ «sacramenta charactéristica» καλεῖ. Κατὰ τὴν θεωρίαν ταύτην τῆς δυτικῆς ἐκκλησίας, τὰ μυστήρια τοῦ βαπτίσματος, χρίσματος καὶ ἱερωσύνης ἐκτὸς τῆς μεταδιδομένης

Digitized by Google

ἐγχαράττουσι τῷ μεταλαμβάνοντι αὐτῶν σημεῖόν τι, δι' οὗ οὗτος διακρίνεται παντὸς μὴ μεταλαβόντος τῶν μυστηρίων τούτων. Ὡς ὁ ποιμὴν δι' ἰδιαιτέρου τινὸς σημείου διακρίνει τὰ ἑαυτοῦ πρόβατα τῶν ἀλλοτρίων, οὕτω καὶ ὁ Θεὸς ἐγχαράττει ἐν τῇ ψυχῇ τῶν μεταλαμβανόντων τῶν τριῶν τούτων μυστηρίων ἰδιαιτέραν τινὰ σφαγῖδα, δι' ἧς διακρίνονται οἱ μεταλαβόντες τῶν μυστηρίων τούτων ἀπὸ τῶν μὴ μεταλαβόντων. Ἡ σφραγὶς δ' αὕτη εἶναι ἀνεξάλειπτος, οὕτως ὥστε ἐκλιπούσης ἕνεκα διαφόρων λόγων τῆς θείας χάριτος, τῆς διὰ τῶν μυστηρίων τούτων μεταδοθείσης, μένει ἡ σφραγίς. Ἡ θεωρία αὕτη τῆς δυτικῆς ἐκκλησίας, ἥτις δύναται νὰ ἐξηγήσῃ ὁπωσδήποτε τὴν μὴ ἐπανάληψιν τῶν τριῶν μυστηρίων, μάλιστα δὲ τὴν ὑπὸ τῆς ἐκκλησίας ἀναγνώρισιν ὡς ἐγκύρου τοῦ μυστηρίου τῆς ἱερωσύνης καὶ ἑπομένως καὶ τῶν λοιπῶν μυστηρίων αἱρετικῶν τινων καὶ σχισματικῶν, προσκόπτει εἰς πολλὰς δυσχερείας, ἕνεκα τῶν ὁποίων δὲν δύναται νὰ γίνῃ ἀποδεκτή, διότι ὄχι μόνον δὲν δύναται νὰ στηριχθῇ ἐπὶ τῆς ἁγίας Γραφῆς καὶ τῆς ἱερᾶς παραδόσεως, ἀλλὰ καὶ ἀκατάληπτος εἶναι, μὴ δυναμένη νὰ ἐξηγήσῃ τί εἴδους εἶναι ἡ ἐγχαραττομένη σφραγὶς καὶ διατὶ ἀφαιρουμένης τῆς χάριτος μένει αὕτη καὶ ἐπιφέρει διαφορὰς καὶ διαιρέσεις μεταξὺ τῶν μυστηρίων, δεχομένη ὅτι ἄλλα μὲν τούτων μεταδίδουσιν ἐκτὸς τῆς θείας χάριτος καὶ χαρακτῆρα, ἄλλα δὲ ἁπλῶς τὴν θείαν χάριν. Παρ' ὅλας ὅμως τὰς ἐλλείψεις ταύτας ἐπικρατεῖ ἐν τῇ δυτικῇ ἐκκλησίᾳ, ἐγένετο δὲ δεκτὴ παρὰ πολλῶν καὶ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ.

Ἡ ἀποτέλεσις τοῦ μυστηρίου δὲν ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ τελοῦντος αὐτὸ ἱερέως, διότι ὁ ἱερεὺς εἶναι ἁπλῶς τὸ ὄργανον, δι' οὗ μεταδίδεται ἡ χάρις. Ἐὰν ἡ ἀποτέλεσις τοῦ μυστηρίου ἐξηρτᾶτο ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ τελοῦντος ἱερέως, ἡ σωτηρία ἤθελεν εἶσθαι ἀβέβαιόν τι τῷ τε ἀτόμῳ καὶ τῇ ἐκκλησίᾳ, ἧς ἡ ὕπαρξις ὡς ὁρατῆς κοινωνίας ἤθελεν εἶσθαι ἀμφίβολος. Ἐκτὸς δὲ τούτου θὰ ἤρετο τὸ ἑνιαῖον τῶν μυστηρίων, διότι θὰ ὑπῆρχον ἑνὸς καὶ τοῦ αὐτοῦ μυστηρίου διάφορα εἴδη ἐξαρτώμενα ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ τελοῦντος αὐτὰ ἱερέως. Κατὰ ταῦτα πρὸς τέλεσιν τῶν μυστηρίων ἀρκεῖ ἡ θέλησις τοῦ ἱερέως τοῦ νὰ τελέσῃ ἐκεῖνο, ὅπερ τελεῖ ἡ ἐκκλησία (intentio). Ὄχι δὲ μόνον ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ τελοῦντος ἱερέως εἶναι ἀνεξάρτητος ἡ ἀποτέλεσις τοῦ μυστηρίου, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ δεχομένου αὐτό, ἥτις δὲν εἶναι τὸ μεταδοτικὸν ἢ ἀποτελεσματικὸν τῆς χάριτος μέσον, ἀλλὰ τὸ δεκτικόν. Ἐκ τῆς πίστεως καὶ ἠθικῆς τελειότητος τοῦ δεχομένου δὲν ἐξαρτᾶται ἡ ἀποτέλεσις τοῦ μυστηρίου ἀλλ' ἡ προσδοχὴ τῆς δι' αὐτοῦ μεταδιδομένης χάριτος. Ὡς ὁ ἥλιος φωτίζει πάντας καὶ τοὺς ὑγιεῖς ἔχοντας τοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ τοὺς τυφλούς, ὡς ὁ ἦχος προσβάλλει τὰ ὦτα πάντων, οὕτω καὶ τὰ μυστήρια παρέχουσι πᾶσι, τοῖς τε πιστοῖς καὶ ἠθικοῖς καὶ τοῖς μὴ τοιούτοις, τὴν θείαν χάριν· ὡς ὅμως τό τε φῶς καὶ ὁ ἦχος ἐνεργοῦν ἐκεῖ μόνον ὅπου ὑπάρχουσιν ὑγιᾶ αἰσθητήρια ὄργανα, οὕτω καὶ ἡ διὰ τῶν μυστηρίων παρεχομένη χάρις ἐνεργεῖ ἐκεῖ μόνον, ὅπου ὑπάρχει δεκτικότης, ἐπιφέρουσα τὰ ὑπὸ τοῦ μυστηρίου παρεχόμενα ἀποτελέσματα. Ἐκ τῶν ἀνωτέρω γίνεται δῆλον ὅτι τὰ μυστήρια ἐνεργοῦσιν ὄχι μόνον ex opere operanis ἀλλὰ καὶ ex opere operato, ὡς κάλλιστα ἡ δυτικὴ ἐκκλησία δέχεται, ἀποκλειομένης, ἐννοεῖται, πάσης μαγικῆς καὶ μηχανικῆς ἐνεργείας καὶ μεταδόσεως τῶν μυστηρίων. Ἡ γνώμη τοῦ Λουθήρου καὶ τῶν ἀκολουθούντων αὐτόν, ὅτι ἡ ἀποτέλεσις τῶν μυστηρίων ἐξαρτᾶται ἐκ τῆς πίστεως τοῦ δεχομένου καὶ ὅτι ταῦτα ἐνεργοῦσι κατὰ τὴν χρῆσιν καὶ διὰ τῆς χρήσεως, εἶναι σφαλερά.

[*Κ. Ι. Δυοβουνιώτου*, «Τὰ μυστήρια τῆς ἀνατολικῆς ὀρθοδόξου ἐκκλησίας ἐξ ἀπόψεως ὀρθοδόξου», ἔνθα καὶ ἡ σχετικὴ βιβλιογραφία.]

Κ. Ι. Δ.

—*[Θεατρ.] Μυστήρια* ἐκαλοῦντο κατὰ τὸν μεσαίωνα τὰ *λειτουργικὰ δράματα* (βλ.λ.), τὰ ὁποῖα μετὰ τὴν ἀνάμειξιν εἰς αὐτὰ λαϊκῶν στοιχείων καὶ σκηνῶν ἥκιστα ἠθικοπλαστικῶν, μετεφέρθησαν ἐκ τῶν ναῶν, ἐν οἷς κατ' ἀρχὰς ἐπαίζοντο, εἰς τὰ προαύλια αὐτῶν καὶ τὰ νεκροταφεῖα καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὰς ὁδούς. Οἱ νεώτεροι ἱστορικοὶ τοῦ θεάτρου τὰ καθ' ἅπασαν τὴν δυτικὴν Εὐρώπην κατὰ τὸν μεσαίωνα ἐπικρατήσαντα μυστήρια, ἀνεξαρτήτως τῆς ἰδιαιτέρας αὐτῶν ὀνομασίας ἣν ἔλαβον κατὰ τόπους (Mystère καὶ Miracle ἐν Γαλλίᾳ, Miracle-Play καὶ Mysterie ἐν Ἀγγλίᾳ, Passions Spiele ἐν Γερμανίᾳ, Laude, Devozione καὶ Rappresentazione ἐν Ἰταλίᾳ, Auto sacramentales ἐν Ἱσπανίᾳ), ὑποδιαιροῦν εἰς *βιβλικὰ δράματα*, ὧν αἱ ὑποθέσεις ἐλαμβάνοντο ἐκ τῆς Παλαιᾶς καὶ Νέας Διαθήκης, εἰς *ἁγιογραφικά*, ὧν αἱ ὑποθέσεις ἐλαμβάνοντο ἐκ τοῦ βίου τῆς Παναγίας ἢ καὶ τῶν ἄλλων ἁγίων, καὶ εἰς *κοσμικὰ* ἢ *ἀνίερα*, ὧν αἱ ὑποθέσεις ἐλαμβάνοντο ἐκτὸς τῆς Ἁγίας Γραφῆς καὶ τῆς ἐκκλησιαστικῆς ἱστορίας. Κυρίως ὅμως *μυστήρια* ἐκαλοῦντο τὰ ἔχοντα ὑπόθεσιν τὰ πάθη τοῦ Χριστοῦ καὶ ἄλλα ἐπεισόδια αὐτοῦ. Ἑτέρα ὑποδιαίρεσις τῶν μυστηρίων εἶναι ἡ εἰς *βωβὰ* ἢ *παντομιμικὰ* καὶ εἰς *διαλογικὰ* τοιαῦτα. Τὰ πρῶτα, ἐπικρατήσαντα ἐν Γαλλίᾳ (ἐν Ἀγγλίᾳ ἐκαλοῦντο Pageants) ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος μέχρι τέλους τοῦ ΙΣΤ΄, ἐδίδοντο μεγαλοπρεπέστατα ἐν ταῖς ὁδοῖς ἐπ' εὐκαιρίᾳ βασιλικῶν ἢ ἄλλων ἑορτῶν, ἦσαν δὲ εἶδος διαδοχικῶν *πλαστικῶν εἰκόνων*. Τὰ διαλογικὰ μυστήρια, τὰ κυρίως μυστήρια, ἐπαίζοντο ἐν ταῖς ὁδοῖς ἢ ταῖς πλατείαις ἐπὶ ἰκριωμάτων, ἀποτελουμένων ἄλλοτε μὲν ἐκ τριῶν πατωμάτων, ὧν τὸ μὲν ὑψηλότερον παρίστανε τὸν παράδεισον, τὸ μεσαῖον τὴν γῆν καὶ τὸ τρίτον τὴν κόλασιν, ἄλλοτε δὲ ἐκ τριῶν κεχωρισμένων διαμερισμάτων διατεταγμένων ὁριζοντίως, ὧν τὸ μὲν πρὸς τὰ δεξιὰ τοῦ θεατοῦ παρίστανε τὸν παράδεισον, τὸ πρὸς τ' ἀριστερὰ τὴν κόλασιν καὶ τὸ μεσαῖον τὴν γῆν. Καὶ εἰς μὲν τὴν πρώτην διάταξιν ὁ παράδεισος παριστάνετο διὰ χαρτίνης σκηνογραφίας ἐφ' ἧς «ἔπρεπε νὰ ὑπάρχωσιν ἀειθαλῆ καὶ καρποφόρα δένδρα», εἰς δὲ τὴν δευτέραν ὁ παράδεισος εἶχε καὶ ὑποσκήνιον μετὰ μηχανημάτων, δι' ὧν ἐξετελοῦντο «αἱ θαυμασταὶ καὶ ἐκπληκτικαὶ ἀναβάσεις καὶ καταβάσεις». Εἰς ἀμφοτέρας τὰς διατάξεις τῶν ἰκριωμάτων ἡ κόλασις παριστάνετο δι' ὑπερμεγέθους στόματος ἀγρίου ζῴου, ἀνοιγομένου καὶ κλειομένου κατὰ τὰς ἀνάγκας τοῦ παριστανομένου ἔργου. Μεταξὺ τοῦ παραδείσου καὶ τῆς κολάσεως εὑρίσκετο πάντοτε ἡ γῆ, ἐφ' ἧς ὑπῆρχον οἰκίαι, ναοί, ἀνάκτορα κτλ., εἰς ἃ μετεφέρετο ἑκάστοτε ἡ δρᾶσις κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς παραστάσεως. Αἱ παραστάσεις τῶν μυστηρίων, τὴν πρωτοβουλίαν τῶν ὁποίων ἀνελάμβανον οἱ εὐγενεῖς καὶ ἡ δημοτικὴ ἀρχὴ τῆς πόλεως εἰς ἣν θὰ ἐτελοῦντο, προητοιμάζοντο ἀπὸ μακροῦ χρόνου, προαναγγελλόμεναι δι' ἐφίππου ἢ πεζῆς πομπῆς, δι' ἧς ἐκαλοῦντο καὶ οἱ βουλόμενοι νὰ λάβωσι μέρος εἰς αὐτὰς ὡς ὑποκριταί. Τὴν παραμονὴν δὲ τῆς παραστάσεως ἀνηγγέλλετο αὐτὴ δι' ἑτέρας ἐφίππου ἢ πεζῆς πομπῆς, εἰς ἣν ἐλάμβανον μέρος πάντες ὅσοι θὰ ἔπαιζον τὴν ἐπομένην, φέροντες καὶ τὴν ἐνδυμασίαν τοῦ ῥόλου των. Κατὰ σταθμοὺς ἐκ τῶν προτέρων ὡρισμένους, τινὲς τῶν ἠθοποιῶν ἐξέθετον τὴν ὑπόθεσιν τοῦ παρασταθησομένου ἔργου, διεφήμιζον δὲ συγχρόνως καὶ τὸν πλοῦτον τοῦ σκηνικοῦ διακόσμου. Οἱ ἠθοποιοὶ πάντες ἦσαν ἄρρενες, σὺν τῷ χρόνῳ ὅμως ἐνεφανίσθησαν ἐπὶ τῶν ἰκριωμάτων καὶ γυναῖκες, ἡ πρώτη δ' ἐμφάνισις αὐτῶν ἐσημειώθη τῷ 1468 εἰς τὸ Μέτς. Αἱ παραστάσεις διεξήγοντο κατ' ἀρχὰς ἅπαξ τοῦ ἔτους κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἑορτῆς τοῦ προστάτου ἁγίου τῆς πόλεως, ἐν ᾗ ἐδίδοντο αὗται, μεταγενεστέρως δὲ ἀπὸ τοῦ Πάσχα μέχρι τῶν Ἁγίων Πάντων καὶ τέλος καθ' ὅλον τὸ διάστημα τοῦ ἔτους. Ἡ ἱστορικὴ ἀκρίβεια τῶν ἐνδυμασιῶν κατὰ τὰς παραστάσεις τῶν μυστηρίων ἦτο ἐντελῶς ἄγνωστος· οὕτως, ὁ ὑποδυόμενος τὸν Πιλάτον ἐφόρει πάντοτε σύγχρονον τῆς ἐποχῆς τῆς παραστάσεως στολὴν ἱππότου τοῦ τόπου εἰς ὃν ἀνῆκεν, ὁ ὑποδυόμενος τὸν Θεὸν στολὴν αὐτοκράτορος ἢ πάπα μὲ τὴν τιάραν καὶ ἡ ὑποδυομένη τὴν Παναγίαν στολὴν μοναχῆς. Ἀλλὰ καὶ οἱ ἀναχρονισμοὶ καὶ ἡ ἄγνοια τῆς τε γεωγραφίας καὶ ἱστορίας ἔπαιζον σπουδαιότατον ῥόλον· οὕτως, εἰς τὸ μυστήριον τῆς Ἁγίας Βαρβάρας, ἡ ἡρωῒς ἀνεγίνωσκε τὰ διηγήματα τοῦ Βοκκακίου, εἰς ἕτερον μυστήριον ὁ ἀπόστολος Παῦλος προλέγει τὸ μέλλον τοῦ γαλλικοῦ πανεπιστημίου, εἰς ἄλλο ὁ Διοκλητιανὸς παρουσιάζει ὁλόκληρον πυρβολαρχίαν, ὁ δὲ αὐτοκράτωρ Αὔγουστος μεταφράζει εἰς τὴν γαλλικὴν γλῶσσαν λατινικήν τινα ἐπιγραφήν. Μετὰ τὸ τέλος τῆς παραστάσεως, ἥτις πολλάκις διήρκει ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας (μία τοιαύτη δοθεῖσα τῷ 1536 εἰς τὸ Bourges διήρκεσε 40 ἡμέρας), καθόσον τὰ περισσότερα τῶν μυστηρίων ἀπετελοῦντο ἀπὸ χιλιάδας στίχων («αἱ πράξεις τῶν Ἀποστόλων» τῶν ἀδελφῶν Grebon ἔφθανον τὰς 50 χιλ.), οἱ ἠθοποιοὶ πάντες, ὑπὲρ τοὺς τριακοσίους πολλάκις, μεθ' ὅλων τῶν θεατῶν μετέβαινον εἰς τὴν πλησιεστέραν ἐκκλησίαν καὶ ηὐχαρίστουν τὸν Θεόν, ὅστις ηὐδόκησε νὰ τοὺς χαρίσῃ μίαν τόσον ἐξαιρετικὴν ἀπόλαυσιν. Πρόδρομος ἁπάντων τῶν μυστηρίων τῆς Εὐρώπης ὑπῆρξε τὸ βυζαντινὸν «Ὁ Χριστὸς πάσχων». Ὁ Lintilhac ἀποδέχεται μὲν ὅτι τὸ βυζαντινὸν αὐτὸ μυστήριον εἶναι τὸ ἀρχαιότερον πάντων, φρονεῖ ὅμως ὅτι δὲν ὑπῆρξεν ὁ πρόδρομος αὐτῶν, καθόσον δὲν φαίνεται νὰ ἦτο γνωστὸν εἰς τὸν λοιπὸν χριστιανικὸν κόσμον πρὸ τῶν πεζῶν καὶ ἐμμέτρων μεταφράσεων αὐτοῦ, τὰς ὁποίας ἔκαμον οἱ λόγιοι τῆς Ἀναγεννήσεως ἀπὸ τῶν μέσων τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος. Ἕτερον ἑλληνικὸν μυστήριον τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος εἰς κρητικὴν διάλεκτον εἶναι «Ἡ θυσία τοῦ Ἀβραὰμ» ἀγνώστου συγγραφέως.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *L. Petit de Julleville*, Les Mystères. — *Eugène Lintilhac*, Le théâtre serieux du moyen âge. — *Onéssime Leroy*, Études sur les Mystères (Paris 1887). —*Em. Morice*, Essai sur la mise en scène depuis les Mystères jusqu'au Cid.—*Léon Gautier*, Histoire de la poésie liturgique au moyen âge (Paris 1886). —*Wright*, Early mysterie (London 1834). —*Davidson*, Studies in the english mystery plays (Newhaven 1893). —*Hase*, Das geistliche Schauspiel (Leipzig 1858). —*Ales. D'Ancona*, Origini del teatro iu Italia (Firenze 1872). Las fiestas ecclesiasticas, Μαδρίτη (Συλλογὴ *Rivadeneya* 1848).

Ν. Ι. ΛΑΣΚΑΡΗΣ

— *[Μουσ.]* Ἡ μουσικὴ τῶν *μυστηρίων* ἐλαμβάνετο ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τῶν ἀντιφώνων, ἐνίοτε ὅμως καὶ ἐκ τῶν δημωδῶν ᾀσμάτων. Κατ' ἀρχὰς ἁπλῶς φωνητική, δὲν ἤργησε νὰ προσφύγῃ καὶ εἰς τὴν συνοδείαν τῶν ὀργάνων, ἀποτελεσάντων πρωτογενῆ ὀρχήστραν, ἐκ σαλπίγγων, βυκανῶν, ἀσκαύλων, ὁλκωτῶν σαλπίγγων, ἁρπῶν, λαούτων, τυμπανίων, μικρῶν αὐλῶν, φορητῶν ἐκκλησιαστικῶν ὀργάνων κ.τ.λ. Ἡ ὀρχήστρα αὕτη δὲν περιωρίζετο μόνον εἰς τὴν συνοδείαν· συχνάκις ἐξετέλει ἓν εἶδος σκηνικῆς μουσικῆς, ἀνήγγελλε τὴν ἐμφάνισιν ἀπὸ σκηνῆς τῶν ἐπισήμων προσώπων, ἢ ἔπαιζε τὴν μουσικὴν τῶν χορῶν, ὡς π. χ. εἰς τὸ μυστήριον τοῦ «Πάθους», ἐν τῷ ὁποίῳ κατὰ τὸ συμπόσιον τοῦ Ἡρώδου ἡ κόρη αὐτοῦ χορεύει μαυριτανικὸν χορόν, ἢ εἰς τὸ μυστήριον τοῦ «Ἁγίου Λουδοβίκου», ἐν τῷ ὁποίῳ συναντᾶται αὐτοτελὴς χορὸς ἐκ μεγιστάνων καὶ δεσποινίδων τῆς αὐλῆς. Τὰ γνωστότερα ἐκ τῶν μυστηρίων, ὧν ἡ χρῆσις παρετάθη καθ' ὅλον τὸν ΙΣΤ΄ αἰῶνα, εἶναι: «Οἱ προφῆται», «Ὁ Εὐαγγελισμός», «Ἡ σφαγὴ τῶν ἀθώων», «Ἡ προσκύνησις τῶν μάγων», «Αἱ τρεῖς Μαρίαι», «Ἡ Ἀνάστασις», «Αἱ φρόνιμοι καὶ αἱ μωραὶ παρθένοι» κ. ἄ. Ὑπῆρχον ἐπίσης καὶ τὰ κωμικὰ μυστήρια, ὅπως π. χ. «Ὁ κλεμμένος Ἑβραῖος», εἶδος θρησκευτικῆς κωμῳδίας, ὡς καὶ ἡ περίφημος «Ἑορτὴ τῶν τρελλῶν ἢ Ἑορτὴ τοῦ γαϊδάρου», ἥτις γραφεῖσα ἀρχικῶς πρὸς τιμὴν τοῦ ὄνου, ὁ ὁποῖος εἶχε φέρει ἐπὶ τῶν νώτων του τὴν Παρθένον καὶ τὸν Χριστόν, κατέληξεν ἐν τέλει εἰς χονδροειδῆ παρῳδίαν, διατηρηθεῖσαν, παρ' ὅλα τὰ ἀναθέματα τῆς Ἐκκλησίας, μέχρι τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος. Ἀπὸ τῆς ἐποχῆς ἄλλως τε ταύτης τὰ μυστήρια ἐκλείπουσι βαθμηδόν, ἵνα δώσωσι θέσιν εἰς τὸ γεννώμενον *ὀρατόριον*. Σήμερον τὰ μυστήρια διετηρήθησαν μόνον εἰς τὸ Ὀμπεραμεργκάου τῆς Βαυαρίας, ἔνθα ἐκτελοῦνται κατὰ τετραετίαν. Τέλειον τύπον μυστηρίου ἀποτελεῖ ἐξ ἄλλου τὸ ἔργον «Ἀνθρώπων ἕκαστος» («Jedermann»), γραφὲν πρὸ ὀλίγων ἐτῶν ὑπὸ τοῦ Χόφμανσταλ καὶ ἐκτελούμενον ἔκτοτε ἀνελλιπῶς ἕκαστον Αὔγουστον, κατὰ τὰς μουσικὰς ἑορτὰς τοῦ Σάλτσμπουργκ, ἐπὶ τῶν βαθμίδων καὶ τῶν προπυλαίων τοῦ ἐκεῖσε καθεδρικοῦ ναοῦ.

Γ. Σ.

—**μυστήρια φάρμακα.** Ἐκλήθησον οὕτω οὐσίαι, σκευάσματα ἢ καὶ ἀντικείμενα, τῶν ὁποίων ἡ προέλευσις δὲν εἶναι γενικῶς γνωστὴ ἢ τηρεῖται μυστικὴ ὑπὸ τῶν παρασκευαστῶν αὐτῶν καὶ τὰ ὁποῖα φέρονται εἰς τὸ ἐμπόριον πρὸς θεραπευτικοὺς ἢ τεχνικοὺς σκοπούς. Εἰδικώτερον, σὺν τῇ παρόδῳ τοῦ χρόνου, καθωρίσθησαν ὡς *μυστήρια φάρμακα* μόνον τὰ πρὸς θεραπευτικοὺς σκοποὺς φερόμενα. Ὁ ὅρος οὗτος δὲν ταυτίζεται πλέον μὲ τὸν Arkana, ὡς ἐχαρακτήριζον τὰ μυστήρια φάρμακα τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Τὰ οὕτως σήμερον ὀνομαζόμενα εἶναι κυρίως «φάρμακα διαφημίσεως», ἀμφίβολον ἢ μᾶλλον οὐδεμίαν σχεδὸν ὠφέλειαν κατὰ τὸ πλεῖστον παρουσιάζοντα ὡς καὶ τὰ ἀνάλογα παλαιότερα φάρμακα. Ἡ μεγάλη ἐξάπλωσις τῶν μυστηρίων φαρμάκων ὀφείλεται εἰς τὴν διὰ τοῦ τύπου διαφήμισιν. Οὕτως ὁ κατὰ τὸ 1884 ἀποθανὼν Holloway κατασκευαστὴς τῶν ὁμωνύμων καταποτίων, ἀφῆκε περιουσίαν 5 ἑκατομμυρίων λιρῶν, μολονότι διέθετεν ἐτησίως διὰ τὴν διαφήμισίν των 40.000 λίρας. Σπουδαίως διὰ τὴν κατανάλωσιν τῶν μυστηρίων φαρμάκων καὶ γενικῶς τῶν ἰδιοσκευασμάτων συμβάλλουν καὶ τὰ εἰδικῶς ἐκτυπούμενα δι' αὐτὰ τεύχη, εἰς ἃ ἐκτίθενται αἱ ἐνδείξεις των καὶ καθόλου τὰ ἀφορῶντα αὐτά. Παρ' ἡμῖν τὰ τῆς κυκλοφορίας τῶν ἰδιοσκευασμάτων καὶ μυστηρίων φαρμάκων ῥυθμίζονται δι' ἰδίων νόμων τοῦ ὑπουργείου τῆς Ὑγιεινῆς.

Κ. Γ. Μ.

**μυστηριώδης** (ὁ, ἡ), —ες (τό)· ὁ ὁμοιάζων μὲ μυστήριον, μυστικός, ἀκατάληπτος, ἀκατανόητος: «οἱ λόγοι του ἦσαν μυστηριώδεις», «ζῇ βίον μυστηριώδη»· || ***μυστηριῶδες*** (τό)· ὡς οὐσ.: «ὁ τρόπος του ἔχει κάτι τὸ μυστηριῶδες». — Ἐπίρρ. ***μυστηριωδῶς***.

**μύστης** (ὁ)· ὁ μεμυημένος, ὁ διδαχθεὶς τὴν ἔννοιαν τῶν μυστηριακῶν συμβόλων καὶ τελετῶν || μεταφ., ὁ κατέχων τὰ τῆς ἐπιστήμης ἢ τέχνης ἐμβριθῶς, ἀκριβῶς: «μύστης τῆς ἰατρικῆς, — τῆς γλυπτικῆς».

**Μύστης** *[Μυθολ.]*. Ἐπίκλησις διαφόρων θεοτήτων παρ' ἀρχαίοις Ἕλλησι: 1) Τοῦ Διονύσου ἐν Τεγέᾳ, ἔνθα ὑπῆρχεν ἱερὸν αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ Παρθενίου ὄρους παρὰ τὸ ἄλσος τῆς «ἐν Κορυθεῦσι» Δήμητρος. 2) Τοῦ Ἀπόλλωνος ἐν Δάλδει τῆς Λυδίας καὶ 3) τοῦ Ἡρακλέους ἐν Ἐλευσῖνι, ὅπου καὶ τὰ πρὸς τιμήν του «Μικρὰ Μυστήρια».

Π. Ν. Π.

**Μυστία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Κάτω Ἰταλίας, κειμένη ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς παραλίας τῆς χώρας τῶν Βρεττίων (νῦν Καλαβρία). Σῴζονται χαλκᾶ νομίσματα αὐτῆς κοινὰ μετὰ τῆς Ὑπώρου τῶν ἐτῶν 332—300 π. Χ., φέροντα κεφαλὴν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὴν ἐπιγραφὴν ΜΥ-ΥΠΩΡ, μετὰ τρίποδος.

Α. Θ. Σ.

**Μυστιγνὰ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς Μυτιλήνης, ἄλλως *Μυστεγνὰ* (βλ. λ.).

**μυστικισμὸς** (ὁ)· ἡ συστηματικὴ τήρησις μυστικότητος, ἢ ἀποφυγὴ ἀνακοινώσεων: «τηρεῖται με-

Digitized by Google

γάλος μυστικισμὸς ὡς πρὸς τὴν ὑπόθεσιν αὐτήν»· || ψυχικὴ ῥοπὴ πρὸς σύλληψιν τοῦ ὑπερφυσικοῦ καὶ ταύτισιν μετ' αὐτοῦ.

—*[Φιλοσ.—Θρησκειολ.] Μυστικισμὸς* εἶναι ἔννοια, περὶ τοῦ περιεχομένου τῆς ὁποίας ἐπεκράτησε καὶ ἐπικρατεῖ εἰσέτι μεγάλη σύγχυσις, ὡς φαίνεται λ. χ. ἐκ τῆς μὴ συνεποῦς χρήσεως τοῦ ὅρου ἐν ὡρισμένῃ σημασίᾳ. Καὶ αὐτοὶ ἀκόμη οἱ μεταχειριζόμενοι αὐτὸν ἐν στενοτέρᾳ καὶ δὴ ὡρισμένῃ σημασίᾳ χρησιμοποιοῦσι μετ' ὀλίγον αὐτὸν ἐν εὐρυτέρᾳ, ἄλλοι δὲ οὐδὲ ἀφήνουσι νὰ ὑπονοηθῇ τί διὰ τοῦ ὅρου τούτου θέλουσι νὰ ἐκφράσωσι. Δὲν εἶναι ὑπερβολὴ ἄν τις ἰσχυρισθῇ ὅτι ὁ ὅρος οὗτος εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον ἀσαφῶν καὶ ἐκ τῶν μᾶλλον ῥευστῶν ἐν τῇ θεολογικῇ ὁρολογίᾳ. Ἡ σημασιολογικὴ ἐξέτασις τοῦ ὅρου καὶ τῶν συγγενῶν πρὸς αὐτὸν λέξεων ὁδηγεῖ εἰς τὸ συμπέρασμα ὅτι, μυστικισμὸς εἶναι ἡ μέθοδος, διὰ τῆς ὁποίας τῇ βοηθείᾳ τελετουργικῶν πράξεων, εἰς ὡρισμένους μόνον ἀνθρώπους νοητῶν, καὶ ψυχικῶν βιωμάτων, μὴ προσιτῶν εἰς πάντας, ἔρχεταί τις εἰς ἐπαφὴν πρὸς τὸ θεῖον, δέχεται τὴν ἐπίδρασιν αὐτοῦ καὶ λαμβάνει γνῶσιν τῶν μυστηρίων του. Ἡ πρωταρχικὴ σημασία τῆς λέξεως μυστικισμὸς εἶναι «ἕνωσις μετὰ τοῦ θείου», ἥτις ἐκπηγάζει ἐκ βαθέος βιώματος, λαμβάνοντος διαφόρους ἐκφράσεις καὶ μορφὰς ἐν τῇ ἱστορίᾳ. Ὁ ἄνθρωπος τ. ἔ. αἴρει τὴν μεταξὺ ὑποκειμένου καὶ ἀντικειμένου ἀντίθεσιν, βιοῖ ἑαυτὸν ἐν τοῖς ἀντικειμένοις καὶ τὰ ἀντικείμενα ἐν ἑαυτῷ, ἀνακαλύπτει ταυτότητα μεταξὺ ἐσωτερικοῦ καὶ ἐξωτερικοῦ κόσμου. Ἐν τῷ μυστικισμῷ λοιπὸν λαμβάνει συνείδησιν ἑνότητος Ἐγὼ καὶ Μὴ-Ἐγώ. Ἡ μεταξὺ Ἐγὼ καὶ Σὺ ἀντίθεσις αἴρεται. Ὁ ἰνδικὸς μυστικισμὸς ἐκφράζει τοῦτο διὰ τῆς περιφήμου καταστάσης φράσεως «τὰτ τβὰμ ἀσί» (Σὺ εἶσαι, ἐγὼ εἶμαι Σύ). Χαρακτηριστικοὶ εἶναι οἱ λόγοι τοῦ Ἔκκαρτ: «Ὁ ὀφθαλμός, δι' οὗ βλέπω τὸν θεόν, εἶναι ὁ αὐτὸς ὀφθαλμός, δι' οὗ ὁ θεὸς μὲ βλέπει. Ὁ ἰδικός μου καὶ τοῦ θεοῦ ὁ ὀφθαλμὸς εἶναι *εἷς* ὀφθαλμός, καὶ ἓν πρόσωπον, καὶ *μία* γνῶσις, καὶ *μία* ἀγάπη».

Οὕτως αἴρεται οὐ μόνον ἡ μεταξὺ ὑποκειμένου καὶ κόσμου ἀντίθεσις, ἀλλὰ καὶ ἡ μεταξὺ θεοῦ καὶ κόσμου. Ὁ θεὸς εἶναι ἐν πᾶσι καὶ τὰ πάντα εἶναι ἐν τῷ θεῷ. Ἐπειδὴ δὲ αἴρονται ἐν αὐτῷ πᾶσαι αἱ ἀντιθέσεις, εἶναι δὲ συγχρόνως ἡ γενικωτάτη καὶ ὑψίστη ἔννοια, ἀποβαίνει κενὴ παντὸς περιεχομένου καὶ μόνον διὰ τῆς ὁδοῦ τῶν ἀρνήσεων δύναταί τις νὰ ὑψωθῇ μέχρις αὐτοῦ. «Ὁ θεός, λέγει ὁ Ἔκκαρτ, εἶναι ὑπερούσιον Μηδέν». Ὁ δὲ Ἄγγελος Σιλέσιος: «Εἶμαι τόσον μέγας ὅσον ὁ θεὸς καὶ ἐκεῖνος τόσον μικρὸς ὅσον ἐγώ». Μυστικισμὸς ὑπάρχει πανταχοῦ ὅπου ὁ ἄνθρωπος αἰσθάνεται ὅτι δὲν σκέπτεται αὐτός, ἀλλ' ἄλλος τις σκέπτεται ἐν αὐτῷ, ὅτι δὲν ζῇ αὐτός, ἀλλ' ἄλλος τις δι' αὐτοῦ. Ἐντεῦθεν γίνονται νοητὰ ῥητὰ ὡς τὸ τοῦ Σέφφλερ: «γνωρίζω ὅτι ἄνευ ἐμοῦ ὁ θεὸς ἀδυνατεῖ νὰ ζήσῃ μίαν στιγμήν», ἢ τὸ τοῦ Ἔκκαρτ: «Ἐὰν δὲν ὑπῆρχον ἐγώ, δὲν θὰ ὑπῆρχε καὶ ὁ θεός». Ἐν τῇ ἐννοίᾳ ταύτῃ, τῇ τῆς ἑνώσεως, ἢ μᾶλλον τῇ τῆς πλήρους ταυτίσεως τοῦ ἀνθρώπου μετὰ τοῦ θεοῦ, ἐχρήσατο τῷ ὅρῳ ὁ δημιουργὸς τῆς χριστιανικῆς μυστικῆς θεολογίας Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγίτης καὶ οἱ ἐξ αὐτοῦ ἐξαρτώμενοι συγγραφεῖς. Διακρίνεται λοιπὸν κατ' ἀρχὴν ὁ μυστικισμὸς ἀπὸ τῶν ἄλλων ἐκδηλώσεων τῆς θρησκευτικότητος, ὡς εἶναι λ. χ. ἡ ἐξάρτησις ἐκ τοῦ θεοῦ, ἡ προσδοκία βοηθείας ἐξ αὐτοῦ, ἡ τελετουργικὴ ἢ ἡ ἠθικὴ σχέσις πρὸς αὐτόν. Ἀλλ' ἐπειδὴ μεταξὺ τῶν μορφῶν τούτων τῆς θρησκευτικότητος καὶ τοῦ μυστικισμοῦ ὑφίσταται στενὴ ἐπαφή, ἦτο φυσικὸν νὰ χρησιμοποιηθῇ ὁ ὅρος καὶ ἐν εὐρυτέρᾳ σημασίᾳ καὶ νὰ δημιουργηθῇ ἡ σύγχυσις περὶ ἧς ὡμιλήσαμεν. Ἀφορμὴν πρὸς τοῦτο παρέχει ἐν πρώτοις ἡ περὶ θεοῦ ἔννοια τοῦ μυστικισμοῦ, καὶ δή, τόσον τὸ λογικὸν ἐν αὐτῇ στοιχεῖον ὅσον καὶ τὸ μὴ δεκτικὸν λόγου. Εἰς τὸν θεὸν ἀνάγει τὰ πάντα ὁ μυστικισμὸς καὶ νοεῖ αὐτὸν ὡς τὸ ἕν, ἐκ τοῦ ὁποίου ἀπορρέει ἡ πολλότης καὶ ποικιλία.

Παραπλησίως ὅμως ἐκδέχονται τὸν θεὸν καὶ τὰ πρωτοπόρα πνεύματα ἐν ταῖς μονοθεϊστικαῖς θρησκείαις, διδάσκοντα ὅτι τὰ πάντα ἐδημιουργήθησαν ὑπὸ τοῦ θεοῦ καὶ διέπονται ὑπ' αὐτοῦ. Κατὰ τὸν Παῦλον λ. χ. ἐν τῷ θεῷ ζῶμεν καὶ κινούμεθα καὶ ἐσμέν. Φραγκῖσκος δὲ ὁ ἐξ Ἀσσισίου βλέπει ἔν τε τῇ ἐμψύχῳ καὶ τῇ ἀψύχῳ φύσει ἀδελφούς. Ἐν τούτοις ταῦτα δὲν εἶναι ἀκόμη μυστικισμὸς ἐν τῇ κυρίᾳ τῆς λέξεως σημασίᾳ, ἄλλαις λέξεσιν ἡ τοιαύτη περὶ θεοῦ ἔννοια δὲν εἶναι ἀποκλειστικὸν γνώρισμα τοῦ μυστικισμοῦ· δύναται ὅμως νὰ ὁδηγήσῃ εἰς αὐτὸν ἢ νὰ παραγάγῃ εἰς τὴν εὐρυτέραν χρησιμοποίησιν τοῦ ὅρου. Τὸ αὐτὸ ἰσχύει καὶ ὡς πρὸς τὸ μὴ δεκτικὸν λόγου στοιχεῖον, τὸν φόβον, τὸ συναίσθημα τῆς καθολικῆς καὶ ἀκαταμαχήτου κυριαρχίας, τὸν πόθον τῆς ἑνώσεως μετὰ τῆς κυριαρχούσης τοῦ κόσμου καὶ ἡμῶν δυνάμεως. Ταῦτα πάντα ἀποτελοῦσι στοιχεῖα τοῦ μυστικισμοῦ, ἀλλὰ συγχρόνως ἀπαντῶσι καὶ ἐκτὸς αὐτοῦ. Εἰς αὐτὰ δέον νὰ προστεθῇ τὸ συναίσθημα τῆς πλήρους ἑνώσεως, τῆς ταυτίσεως μετὰ τοῦ θεοῦ, ἵνα γεννηθῇ μυστικισμὸς ἐν τῇ αὐστηρᾷ σημασίᾳ τῆς λέξεως. Ἀλλὰ δὲν εἶναι βεβαίως δυνατὸν νὰ διακρίνῃ τις αὐστηρῶς καὶ πάντοτε μεταξὺ μυστικισμοῦ ἐν εὐρυτέρᾳ καὶ μυστικισμοῦ ἐν στενοτέρᾳ ἐννοίᾳ, καὶ μάλιστα τοσούτῳ μᾶλλον, ὅσῳ καὶ οἱ ἐν εὐρυτέρᾳ ἐννοίᾳ μυστικοὶ μεταχειρίζονται παρομοιώσεις καὶ εἰκόνας ἰδιαζούσας εἰς τὸν ἐν στενοτέρᾳ ἐννοίᾳ μυστικισμὸν καὶ ὑποδηλούσας ἕνωσιν τοῦ ἀνθρώπου μετὰ τοῦ θεοῦ ἢ ἀφανισμὸν τῆς συνειδήσεως αὐτοῦ ἐντὸς τοῦ θείου πνεύματος. Πάντως ὅμως δὲν εἶναι ἐπιτετραμμένον νὰ συγχέῃ τις πᾶν θρησκευτικὸν βίωμα ἢ τὴν θρησκευτικότητα καθόλου πρὸς τὸν μυστικισμόν, ὁ ὁποῖος δέον νὰ διακρίνεται τῶν ἄλλων μορφῶν τῆς θρησκευτικῆς ἐκφράσεως ὡς ἰδία καὶ αὐτοτελὴς ἔκφρασις, κεκτημένη διὰ τοῦτο καὶ τὸ ἴδιον αὐτῆς ὄνομα. Ἐμφανίζεται δὲ ἐν τῇ ἱστορίᾳ ὁ μυστικισμὸς ὑπὸ δύο μορφάς· ἡ ἕνωσις τουτέστιν ἐκείνη μετὰ τοῦ θεοῦ τελεῖται ἢ διὰ πλήρους ἀφανισμοῦ τοῦ ἀνθρωπίνου ἐγὼ ἐν τῷ θείῳ πνεύματι, ἢ διὰ τῆς παντελοῦς πληρώσεως τῆς ψυχῆς τοῦ ἀνθρώπου ὑπ' αὐτοῦ. Τὰ μέσα πάλιν, διὰ τῶν ὁποίων ἐπέρχεται ἡ κατάστασις αὕτη, δυνάμεθα νὰ διακρίνωμεν εἰς δύο κατηγορίας: εἰς τελετουργικὰς πράξεις καὶ ἄλλας παραπλησίας αὐταῖς καὶ εἰς καθαρῶς ψυχικάς. Ἄλλαις λέξεσιν ὁ ἄνθρωπος ἢ προσπαθεῖ νὰ καταβιβάσῃ τὸ θεῖον μέχρις ἑαυτοῦ, ἢ νὰ ὑψωθῇ ὁ ἴδιος μέχρις αὐτοῦ. Τοιουτοτρόπως ἀφ' ἑνὸς μὲν ἔχομεν βρῶσιν καὶ πόσιν τοῦ θεοῦ, ἱεροὺς γάμους, μουσικήν, χορόν, ἄσκησιν κττ., ἀφ' ἑτέρου δὲ ἔκστασιν διὰ τούτων ἐπιφερομένην συγκέντρωσιν καὶ θεωρίαν, ἥτις ἐξικνεῖται μέχρι τῆς μυστικοπαθοῦς φιλοσοφικῆς διανοήσεως (βλ. λ. *μυστηριακαὶ* θρησκεῖαι). Διὰ τῆς τελευταίας ταύτης ὑψοῦται ὁ μυστικισμὸς εἰς κοσμοθεωρίαν· ὡς τοιαύτη δὲ φέρει χαρακτῆρα μονιστικὸν ἢ πανθεϊστικόν. Ὁ κόσμος ἐμφανίζεται ὡς τέλειος καὶ ἀπηρτισμένος ὀργανισμός, ἐν τῷ ὁποίῳ ἡ θεία ζωὴ ἀναπτύσσεται ἐκ τοῦ Ἑνὸς εἰς τὸ Πᾶν, ἵνα ἐπιστρέψῃ πάλιν εἰς τὸ Ἕν. Τῆς μυστικιζούσης ταύτης κοσμοθεωρίας χαρακτηριστικὸς ἐκπρόσωπος εἶναι πλὴν πολλῶν ἄλλων ὁ Σέλλιγγ, ἐκφράζεται δὲ αὕτη καὶ κατὰ κοινὸν τρόπον ὑπὸ τῶν ἐκπροσωπούντων αὐτὴν φιλοσόφων διὰ τοῦ ὕφους τῆς γλώσσης καὶ τῆς συντάξεως καθόλου τῶν λέξεων. Συνδέουσι δηλαδὴ οὗτοι, ὡς παρετήρησεν ὁ Λάϊζεγκαγκ, ἀντιθέσεις εἰς μίαν ἄλυσιν ἐννοιῶν, ἡ ὁποία ἐπιστρέφει εἰς τὴν ἀρχὴν αὐτῆς, εἰς τὴν πρώτην ἔννοιαν. Λ. χ. «Ἓν εἶναι τὸ πᾶν καὶ τὸ πᾶν εἶναι Ἕν». Ὄπισθεν τῆς μορφῆς ταύτης ὑποκρύπτεται ἰδία λογικὴ καὶ ἰδία μορφὴ νοήσεως, τοὺς νόμους τῆς ὁποίας διετύπωσε πρὸ τριῶν ἐτῶν ὁ αὐτὸς Λάϊζεγκαγκ.

Ἐκ τῆς μυστικῆς ταύτης κοσμοθεωρίας ἀπορρέει καὶ ἰδία Ἠθική, ἰδία μυστικὴ πρᾶξις. Ἡ ἐνόρασις τῆς φύσεως τοῦ κόσμου καὶ τῶν ἐν αὐτῷ τελουμένων ἀπαιτεῖ παρὰ τοῦ μυστικοῦ, ὅπως μὴ παρακωλύῃ τὴν πορείαν αὐτῶν, ἀλλ' ὅπως ὑποτάσσηται εἰς αὐτήν, καταλείπῃ ἑαυτὸν εἰς αὐτὴν καὶ συνεργάζηται κατὰ τὸν τρόπον τοῦτον εἰς τὴν ἰδίαν αὐτοῦ τελείωσιν. Ὁ μυστικὸς ἐπιστρέφει εἰς τὸν θεόν, ἀφοῦ τὰ πάντα θὰ ἐπιστρέψουν εἰς αὐτὸν κατ' ἀνάγκην, καὶ συντελεῖ τοιουτοτρόπως ἐν ἑαυτῷ μόριόν τι τῆς κινήσεως ἐκείνης τοῦ κόσμου. Κατὰ τὸν βαθμὸν τῆς συμμετοχῆς τῆς ἰδίας αὐτοῦ ἐνεργείας ἐν τῇ ἐπιστροφῇ ταύτῃ δυνάμεθα νὰ διακρίνωμεν ἐνεργητικόν, θεωρητικὸν καὶ ἡσυχαστικὸν μυστικισμόν. Ὁ μυστικισμὸς δηλαδὴ δύναται νὰ εἶναι ἐνδοκοσμικός, τουτέστι νὰ μὴ ἀρνῆται ἀπολύτως τὴν ζωήν, ἀλλὰ νὰ ἀνευρίσκῃ ἐν ταῖς θετικαῖς ἀξίαις αὐτῆς τὸν θεόν, συσχετίζων αὐτὸν ὡς ὑψίστην ἀξίαν πρὸς αὐτάς· ἢ ὑπερβατικὸς μυστικισμός, διὰ τὸν ὁποῖον πᾶν ὄργανον πρὸς σύλληψιν τοῦ ὑψίστου νοήματος εἶναι ἀνεπαρκὲς καὶ ὅστις φθάνει διὰ τοῦτο εἰς τὴν σύλληψιν αὐτοῦ διὰ τῆς πλήρους ἀρνήσεως τῆς ζωῆς καὶ τῶν θετικῶν αὐτῆς ἀξιῶν. Νόησις, ἐπιστήμη, τέχνη, τὰ πάντα εἶναι διὰ τὸν μυστικιστὴν τοῦ τύπου τούτου μάταια, ἀνεπαρκῆ, ἐπιβλαβῆ ἴσως· δι' αὐτὸν ὑπάρχει μόνον τὸ μυστικὸν πνευματικὸν ὄργανον, διὰ τοῦ ὁποίου ὑψοῦται μέχρι τοῦ Ἀπολύτου, ἀφανίζεται ἐν αὐτῷ ἢ συγχωνεύεται μετ' αὐτοῦ. Οὕτω ἀποκτᾷ τὸ συναίσθημα, ὅτι ὁ θεὸς κατοικεῖ ἐν αὐτῷ καὶ ἔστιν ὅτε ὅτι αὐτὸς ὁ ἴδιος εἶναι θεός. Ὁ κοινὸς θνητὸς καὶ ὁ μυστικιστὴς τοῦ πρώτου τύπου (παράδειγμα: Ἰ. Βροῦνος, Γκαῖτε) κέκτηνται συνείδησιν τῆς διαφορᾶς αὐτῶν ἀπὸ τοῦ θεοῦ, τῆς μεταξὺ πεπερασμένου καὶ ἀπείρου, παροδικοῦ καὶ αἰωνίου ἀντιθέσεως, ὡς καὶ τῆς μεταξὺ ἁμαρτωλότητος καὶ ἁγιότητος διαφορᾶς. Τοὐναντίον ὁ μυστικιστὴς τοῦ δευτέρου τύπου, ὁ ἐν τῇ κυρίᾳ τῆς λέξεως σημασίᾳ μυστικιστής, ἐξαλείφει τὰ ὅρια ταῦτα καὶ μεταβάλλει τὸν θεὸν εἰς ἀκαθόριστόν τι Ὄν, ἴσον σχεδὸν πρὸς τὸ Μηδέν. Διὰ τοῦτο ὁ θεὸς οὗτος αὐτοῦ στερεῖται κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον προσωπικότητος, ἥτις ἀποτελεῖ περιορισμὸν καὶ ἥτις προϋποθέτει τὸ Ἐγὼ καὶ τὸ Σύ. Καὶ ὅπως ὁ μυστικισμὸς διακρίνεται εἰς διάφορα εἴδη, τοιουτοτρόπως ποικίλλουν καὶ αἱ προσωπικότητες τῶν μυστικῶν. Μεταξὺ αὐτῶν εὑρίσκομεν ἀπόλυτον ἠρεμίαν ἀφ' ἑνὸς καὶ ἀγρίαν παραφροσύνην ἀφ' ἑτέρου. Μάγους καὶ γόητας, μοναχούς, ποιητὰς καὶ φιλοσόφους, ἡσύχους ἀστοὺς καὶ ὑστερικὰς γυναῖκας. Ἀλλὰ πάντες ἔχουσιν ἓν κοινὸν πρὸς ἀλλήλους: ὅλοι προσπαθοῦν νὰ φθάσωσιν εἰς τὴν κατάστασιν, ἐν τῇ ὁποίᾳ λαμβάνουσιν αἴσθησιν τοῦ Ἀπολύτου. Τείνουσι νὰ ὑπερπηδήσωσι τὰ ὅρια τοῦ κόσμου τούτου, νὰ ἀπαλλαγῶσι τῶν αἰσθήσεων, νὰ ἐλευθερωθῶσιν ἑαυτῶν καὶ διὰ τῆς ἐκστάσεως νὰ μετάσχωσι τοῦ ὑπερβατικοῦ κόσμου τοῦ Ὑψίστου καὶ τοῦ Αἰωνίου.

Ἐν τοῖς ἑξῆς θὰ παράσχωμεν ἱστορικὴν εἰκόνα τοῦ μυστικισμοῦ παρὰ τοῖς διαφόροις λαοῖς, ἀπὸ τῶν λεγομένων πρωτογενῶν μέχρι τῶν χρόνων ἡμῶν, εἰς τὴν ὁποίαν θὰ συμπεριλάβωμεν καὶ τὰς νεωτάτας ἐκδηλώσεις τοῦ μυστικισμοῦ ἐν τῇ συγχρόνῳ τέχνῃ καθόλου. Οἴκοθεν νοεῖται ὅτι ὁ παρὰ τοῖς διαφόροις λαοῖς ἀπαντώμενος μυστικισμὸς τὸ μὲν εἶναι αὐτοφυής, ἀναβλύζων ἀμέσως ἐκ τῆς ψυχῆς, τὸ δὲ ὀφείλεται καὶ εἰς τὴν ἀμοιβαίαν ἀλληλεπίδρασιν τῶν λαῶν τούτων. Τὸ τελευταῖον τοῦτο ἰσχύει πρὸ πάντων περὶ τῆς σχέσεως μεταξὺ ἑλληνικοῦ καὶ χριστιανικοῦ μυστικισμοῦ, ὅπου διὰ τοῦ Φίλωνος κατ' ἀρχάς, ἔπειτα δὲ πρὸ πάντων διὰ Κλήμεντος τοῦ Ἀλεξανδρέως, τοῦ Αὐγουστίνου, τελοῦντος ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Πλωτίνου, καὶ τοῦ συγγραφέως τῶν ὑπὸ τὸ ὄνομα Διονυσίου τοῦ Ἀρεοπαγίτου φερομένων συγγραμμάτων, ἀντλοῦντος κυρίως ἐκ τοῦ Πρόκλου, εἰσῆλθεν ὁ ἑλληνικὸς μυστικισμὸς εἰς τὴν χριστιανικὴν Ἀνατολὴν καὶ Δύσιν καὶ ἐγονιμοποίησε τὰ ἐν τῇ Ἁγίᾳ Γραφῇ ἐνυπάρχοντα μυστικὰ σπέρματα.

Τὴν μετὰ τῆς θεότητος ἕνωσιν, κατὰ τὴν ὁποίαν καταλαμβάνει αὕτη ἐντελῶς τὸν ἄνθρωπον, ἀπαντῶμεν ἤδη παρὰ τοῖς πρωτογόνοις, παρὰ τοῖς ὁποίοις θεωροῦνται ὡς ὑπὸ τοῦ θείου κατειλημμένοι πρὸ πάντων οἱ μάγοι, οἱ γόητες, εἴτε πνεύματα τεθνεώτων πιστεύεται ὅτι ἐνοικοῦν ἐν αὐτοῖς, εἴτε τὰ λεγόμενα καθαρὰ πνεύματα. Ἐν τῇ καταστάσει ταύτῃ τῆς κατοχῆς τελοῦντες, ἀποβάλλουσι τὴν συνείδησιν καὶ καθίστανται ἀναίσθητοι πρὸς τοὺς ἐξωτερικοὺς ἐρεθισμούς, καὶ πρὸς αὐτὸν τὸν πόνον. Οἱ κατεχόμενοι οὗτοι φέρονται οἷον τρόπον πιστεύεται ὅτι φέρονται τὰ κατέχοντα αὐτοὺς πνεύματα, ὁμιλοῦσι σιγανῇ τῇ φωνῇ ἢ βρυχῶνται καὶ ἐκβάλλουσι γοερὰς κραυγάς, ἐπιπίπτουσι κατὰ τῶν παρευρισκομένων, δάκνουσιν αὐτοὺς κ. τ. λ. Ἀλλ' ἵνα μεταστῶσιν εἰς τὴν κατάστασιν ταύτην τῆς ἑνώσεως πρὸς τὸ πνεῦμα, εἶναι ἀνάγκη νὰ ὑποβληθῶσιν εἰς διαφόρους στερήσεις ἢ δι' ἄλλων τεχνητῶν μέσων νὰ ἐρεθίσωσι τὸ νευρικὸν αὐτῶν σύστημα. Οὕτω λ.χ. νηστεύουσιν, ἐπειδὴ ἡ νηστεία ὁδηγεῖ εἰς ὁράματα καὶ παντοίας ψευδαισθήσεις· γεύονται μεθυστικῶν ποτῶν, διὰ τῶν ὁποίων ἐπι- σκοτίζεται ἡ συνείδησις αὐτῶν· καπνίζουσι καθ' ὑπερβολὴν ἢ καὶ μασῶσι καὶ καταπίνουσι τὸν καπνόν· χορεύουσι μέχρι μανίας ὑπὸ τοὺς ἤχους ἐκκωφαντικῆς μουσικῆς καὶ μεθίστανται οὕτως εἰς ἔκστασιν, ἵνα οὕτω πληρώσῃ τὸ πνεῦμα τὴν ψυχήν των ἢ ἵνα ἀφανισθῶσιν ἐν τῇ θεότητι. Ἐκ δὲ τῶν τελετουργικῶν τούτων ἐθίμων ἀπαντῶμεν παρ' αὐτοῖς καὶ συστηματικὰς θεωρίας περὶ τῆς μεταξὺ ἀνθρώπου καὶ κόσμου καὶ θεῶν σχέσεως ... σμου, αἵτινες εἶναι τόσον μᾶλλον εὐχερεῖς ... ὁ πρωτογενὴς δὲν γνωρίζει τὴν μεταξὺ ὑποκειμένου καὶ ἀντικειμένου διάκρισιν καθ' ὃν τρόπον ... πεπολιτισμένοι λαοί.

Τοῦ πρωτογόνου τούτου μυστικισμοῦ ἴχνη εὑρίσκομεν παρ' ἅπασι τοῖς λαοῖς· ἀλλ' ἐκτὸς βεβαίως αὐτῶν καὶ στοιχεῖα ἀνωτέρου πνευματικοῦ τρόπου τινὰ μυστικισμοῦ, ἢ καθ' ἑαυτὰ ἢ συνδεδεμένα μετ' ἐκείνων. Ἐν Κίνᾳ ἐμφανίζονται κατὰ τὰς ἑορτὰς καὶ τὰς λιτανείας ἄνδρες καὶ γυναῖκες ἐν τοιαύτῃ καταστάσει ἐκστάσεως, ὥστε νὰ εἶναι ἀναίσθητοι πρὸς πάντα πόνον, αἱ δὲ ἀνόητοι αὐτῶν πράξεις ἑρμηνεύονται ὡς προερχόμεναι ἐκ τῶν ἐνοικούντων ἐν αὐτοῖς πνευμάτων. Παρὰ τὸν πρωτογενῆ ὅμως τούτων μυστικισμὸν ὑπάρχει καὶ ἀνωτέρα μορφὴ αὐτοῦ, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ *Ταοϊσμοῦ*. Ταὸ εἶναι ὡς εἰπεῖν τὸ νόημα τοῦ κόσμου, ἡ αἰωνία δύναμις, ὁ ἀμετάβλητος νόμος, ὑπὸ τὸν ὁποῖον τελοῦν τὰ πάντα, ὁρατὰ καὶ ἀόρατα. Ὁ Λαοτσὲ λέγει περὶ αὐτοῦ: «Ὑπάρχει τι, ὅπερ εἶναι ἀκατανόητον καὶ τέλειον καὶ ὅπερ ὑπῆρχε πρὸ πάντων τῶν αἰώνων, πρὸ τῆς γῆς καὶ πρὸ τοῦ οὐρανοῦ. Εἶναι σιγὴ καὶ στερεῖται πάσης μορφῆς. Εἶναι τὸ Μοναδικόν, τὸ Ἕν, ἄνευ μεταβολῆς καὶ ἄνευ ἀλλοιώσεως, πάντα πληροῦν. Δύναται νὰ ὀνομασθῇ ἡ μήτηρ ὅλων τῶν ὄντων. Ἀγνοῶ τὸ ὄνομά του, ἀλλὰ καλῶ αὐτὸ Ταό». Ὁ μυστικὸς ἀγωνίζεται δι' ὅλου τοῦ βίου νὰ καθαρίσῃ τὴν ψυχήν του ἀπὸ παντὸς ... κοῦ καὶ ἐγωϊστικοῦ, ἵνα οὕτω δημιουργήσῃ τόπον ἐν αὐτῇ πρὸς ἐγκατοίκησιν τοῦ Ταό, τῆς ... λῆς δυνάμεως, ἡ ὁποία πληροῖ τότε τὸν ἄνθρωπον καὶ καθιστᾷ αὐτὸν αὐτὸ τοῦτο Ταό. ... σκέψεις τοῦ ἀνθρώπου σβέννυνται καὶ μεταβάλλονται εἰς τέφραν, μετ' αὐτῶν δὲ ἀφανίζεται ... μενον καὶ τὸ ἴδιον ἐγὼ (Τσουὰγγ Τασί).

Κλασσικὴ χώρα τοῦ μυστικισμοῦ εἶναι αἱ Ἰνδίαι. Ἰδίᾳ ἡ φιλοσοφία τῆς Βιντάντα παρέχει εἰς ... ἀπαρτισμένον καὶ συστηματοποιημένον μυστικισμόν. Οἱ Βραχμᾶνες ἀνάγουσι τὸ πλῆθος τῶν θεῶν εἰς μίαν ἑνιαίαν καὶ μοναδικὴν ἀρχήν, τὴν ὁποίαν καλοῦσι Βραχμὰν ἢ Ἀτμάν. Τὸ Βρ...

Digitized by Google

τοῦτο, ὥς τι πνευματικὸν καὶ ἅμα ἀπρόσωπον, «βλέπει χωρὶς ὀφθαλμούς, ἀκούει ἄνευ ὤτων, δὲν ὁμιλεῖ διὰ λέξεων, δὲν νοεῖ δι' ἰδεῶν». Εἶναι ἡ ζωή, ἡ πνοὴ τοῦ σύμπαντος, ἐξ ἧς τὰ πάντα ἀπορρέουν καὶ εἰς τὴν ὁποίαν ἐπιστρέφουν τὰ πάντα, ἡ μόνη ἄφθαρτος οὐσία, ἡ ὁποία παραμένει ἀναλλοίωτος ἐν τῇ διηνεκεῖ ροῇ. Τοῦ Βραχμὰν ἀπορροὴ εἶναι καὶ ὁ ἄνθρωπος· κατ' ἀκολουθίαν ἡ πνοὴ αὕτη τοῦ σύμπαντος ζῇ καὶ ἐντὸς αὐτοῦ· εἶναι σπινθὴρ ἐκπηδήσας ἐκ τῆς θείας πυρᾶς, σταγὼν ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ τῆς θεότητος. Καθῆκον μοναδικὸν ἔχει νὰ ἐπιστρέψῃ ὀπίσω εἰς τὴν θείαν πηγήν, νὰ ἀφανίσῃ ἑαυτὸν ἐντὸς τοῦ ἀπείρου φωτός. Ἡ ἕνωσις αὕτη μετὰ τοῦ Βραχμὰν ἢ ὁ ἀφανισμὸς οὗτος τῆς ἰδίας προσωπικότητος ἐν αὐτῷ εἶναι ἡ μόνη ὁδὸς πρὸς τὴν ἀπολύτρωσιν ἀπὸ τοῦ πόνου τῆς ὑπάρξεως. Ἡ κατάστασις αὕτη τῆς ἀποσβέσεως, τὸ Νιρβάνα, κατορθοῦται διὰ τῆς Γιογκά, τῆς ἀσκήσεως, ἡ ὁποία ἀποτελεῖται ἐκ σειρᾶς συστηματικῶς διηρθρωμένων ἀσκήσεων, ὧν ἀποτέλεσμα ἡ συγκέντρωσις. Οὕτω τὸ Ἐγὼ τοῦ ἀσκητοῦ εὑρίσκει τὴν ἀνάπαυσίν του ἐν τῷ ἀπείρῳ Ἐγὼ (Ἀτμάν). Ἐὰν καὶ ἐν τῷ βουδισμῷ εὕρηται ἡ διὰ τῆς ἐκστάσεως συνταύτισις αὕτη μεταξὺ ἀνθρώπου καὶ θείου, εἶναι ἀμφίβολον, πρὸ πάντων ἐπειδὴ ὁ Βούδας ἀρνεῖται ἐκεῖνο τὸ Ἓν καὶ Πᾶν ὡς πραγματικῶς ὑπάρχον. Ἄλλως ἔχει τὸ πρᾶγμα ἔν τισιν αἱρέσεσι τοῦ ἰαπωνικοῦ βουδισμοῦ, ὅπου ὁ λόγος περὶ ἑνώσεως ἢ ταυτίσεως πρὸς τὸν Βούδαν, ἂν καὶ αὕτη θεωρεῖται μᾶλλον ἀποτέλεσμα νοητικῆς ἐνεργείας ἢ πραγματικὸν βίωμα τοῦ μυστικοῦ.

Ἐπίδρασιν τοῦ πρωτογόνου μυστικισμοῦ παρατηροῦμεν καὶ ἐν τῇ θρησκείᾳ τῶν Θρακῶν. Οἱ λάτραι τοῦ Διονύσου, καταλαμβανόμενοι ὑπὸ τῆς ἐπὶ τῇ ζωῇ χαρᾶς καὶ διὰ μεθυστικῶν ποτῶν καὶ μανιακῶν χορῶν ἐνισχυόμενοι, ἐπίστευον ὅτι εἶναι ἔνθεοι, πλήρεις τοῦ θεοῦ καὶ ἐνδύονται ἐνδύματα παρεμφερῆ πρὸς τὰ τῶν ἀκολούθων αὐτοῦ ἢ οἰκειοῦνται τὸ ἴδιον αὐτοῦ ὄνομα. Τὴν μετ' αὐτοῦ κοινωνίαν ἐπίστευον ἐπίσης ὅτι κατορθώνουν καταβροχθίζοντες ὠμὰ κρέατα ζῴων, τὰ ὁποῖα ἐσυμβόλιζον τὸν κατ' ἀρχὰς θηριόμορφον θεόν. Τὸ φαινόμενον τοῦτο ἐπανευρίσκομεν παρὰ τοῖς Ἕλλησι, μεταξὺ τῶν ὁποίων διεδόθη ἡ θρησκεία τοῦ Διονύσου διὰ τῆς καθόδου τῶν Δωριέων. Ἡ διάδοσις ἐν τούτοις αὐτῆς δὲν ὑπῆρξεν εὐρεῖα. Ἡ δευτέρα εἰσβολὴ τῶν θρακικῶν μυστηρίων ὡδήγησεν εἰς τὴν ἵδρυσιν θρησκευτικῶν θιάσων, τῶν ὀρφικῶν Κατὰ τὴν διδασκαλίαν τῆς αἱρέσεως ταύτης, ἡ πολλότης τῶν ὄντων αἰτίαν ἔχει τὴν ἁμαρτίαν· σκοπὸς δὲ τῆς ἱστορικῆς ἐξελίξεως εἶναι ἡ ἐπιστροφὴ εἰς τὴν μίαν θείαν οὐσίαν. Τὴν ἐπιστροφὴν ὅμως ταύτην βιοῖ ἤδη ἀπὸ τοῦδε ὁ μύστης διὰ τῆς ἐκστάσεως. Ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς θρησκείας τοῦ Διονύσου καὶ τῶν ὀρφικῶν μυστηρίων ἀναπτύσσεται ἐν Ἑλλάδι φιλοσοφικὸς μυστικισμός. Τοῦτον ἐπεξεργάζονται ἐν πρώτοις οἱ πρὸ τοῦ Σωκράτους φιλοσοφήσαντες ἐν τῇ περὶ ἑνὸς καὶ παντὸς διδασκαλίᾳ. Ὁ Πλάτων συνδυάζει αὐτὸν πρὸς τὴν θεωρίαν τῶν ἰδεῶν, οἱ Στωϊκοὶ πρὸς τὴν περὶ λόγου πανθεΐζουσαν θεολογίαν, ἐν δὲ τῷ νεοπλατωνισμῷ καὶ ἐν τῇ θεολογίᾳ τῶν μυστηριακῶν θρησκειῶν προσλαμβάνει ποικίλας νέας μορφάς. Οἱ Ἕλληνες ἐδημιούργησαν τὸν ἐν ἑαυτῷ ἀπηρτισμένον κόσμον, ἐν τῷ ὁποίῳ ὕλη, ψυχὴ καὶ πνεῦμα διεισδύουσιν ἄλληλα, καὶ ἔθεσαν ἐν αὐτῷ τὸν ἄνθρωπον ὡς κάτοπτρον τοῦ μακροκόσμου τούτου ὡς μικρόκοσμον περικλείοντα ἐν ἑαυτῷ τὰ στοιχεῖα ἐκεῖνα τοῦ μακροκόσμου. Διὰ τοῦτο πιστεύουσιν ὅτι εἶναι εἰς αὐτὸν δυνατὸν δι' ἀπαλλαγῆς ἀπὸ τοῦ γηΐνου στοιχείου νὰ ὑψωθῇ μέχρι τῆς ψυχῆς τοῦ κόσμου καὶ ἐντεῦθεν νὰ ἐξαρθῇ μέχρι τοῦ πνεύματος, τ. ἔ. διὰ μυστικῆς τινος κλίμακος, ἐν ᾗ ἡ ψυχὴ ἀνέρχεται βαθμηδὸν μέχρι τοῦ πνεύματος, συγκεντροῦται εἰς ἑαυτὴν καὶ ἀποπνευματοῦται. Ἐκτὸς τούτου ἐδίδαξαν τὴν γέννησιν τοῦ κόσμου ἐκ μιᾶς πρωταρχικῆς ἀρχῆς, ἥτις ἀφοῦ ἀναπτυχθῇ εἰς κόσμον ἐπανέρχεται πάλιν εἰς ἑαυτήν, ἱδρύσαντες οὕτω τὸν συνεπῆ εἰς ἑαυτὸν Μονισμὸν καὶ Πανθεϊσμόν. Μετὰ τῆς διδασκαλίας δὲ ταύτης συνέδεσαν τὴν περὶ μετεμψυχώσεως θεωρίαν ὀργανικῶς, ὡς καὶ τὴν περὶ αἰωνίας ἐπιστροφῆς καὶ ἀνακυκλώσεως τῶν ὄντων. Καὶ αὐτὴ ἡ περὶ καθολικῆς συμπαθείας ἰδέα, ἰδίᾳ δὲ ἡ περὶ συγγενείας καὶ συμπαθείας ψυχῆς καὶ ἀστέρων, κατάγεται ἐκ τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας, διαμορφωθεῖσα πρὸ πάντων ὑπὸ τοῦ Ποσειδωνίου. Πρὸς τούτοις μετὰ τῆς ἰδίας ἐκείνης ἀναπτύξεως καὶ τῆς εἰς τὴν πρώτην ἀρχὴν ἐπιστροφῆς τοῦ κόσμου συνεδύασαν μυστικοπαθῆ μεταφυσικὴν τῆς ἱστορίας, κατὰ τὴν ὁποίαν ἡ ἱστορία ἀποτελεῖ κύκλον, ὅστις ἄρχεται ἀπὸ τῶν χρυσῶν χρόνων, ἵνα διὰ τῆς καταπτώσεως καὶ τῆς παρακμῆς ἐπαναφέρῃ τὸν ἄνθρωπον εἰς τὸ ἀρχικὸν σημεῖον. Τὴν ἐπαναφορὰν δὲ ταύτην πιστεύουσιν ὡς ἀπολυτρωτικὸν ἔργον, διὰ τοῦ ὁποίου δίδεται εἰς τὸν ἀγωνιζόμενον ἄνθρωπον ἡ ὀρθὴ πρὸς τὰ ἄνω κατεύθυνσις. Τέλος διὰ τῆς ὅλης ταύτης φιλοσοφικῆς ἐπεξεργασίας τοῦ μυστικισμοῦ ἐξηυγένισαν τὰς περὶ μυστικῆς ἑνώσεως πρωταρχικὰς παραστάσεις τῶν ἑλληνικῶν μυστηρίων, ἀντικαταστήσαντες τὰ τελετουργικὰ ἔθιμα διὰ τῆς ἐκστάσεως τῆς διὰ φιλοσοφικῶν μέσων κατορθουμένης καὶ ἑρμηνεύσαντες αὐτὰ ὡς συμβολίζοντα τὴν ἕνωσιν τῆς ἀνθρωπίνης ψυχῆς μετὰ τοῦ θείου. Καὶ ὡς ὀρθῶς παρετήρησαν, ὅλη ἡ εἰκονικὴ γλῶσσα τοῦ δυτικοῦ μυστικισμοῦ, ἀπὸ τοῦ ψυχικοῦ σπινθῆρος τοῦ Ἔκχαρτ μέχρι τοῦ νυμφίου τῆς ψυχῆς τῶν εὐσεβιστῶν, εἶναι δημιούργημα τῆς μυστικιζούσης ἑλληνικῆς φιλοσοφίας. Ἡ ἐπίδρασις αὐτῆς ἐξικνεῖται μέχρι τῶν μυστηρίων τῆς Ἴσιδος καὶ τοῦ Μίθρα (βλ. λ. *μυστηριακαὶ θρησκεῖαι*). Ἰδίᾳ ἀνεπτύχθη καὶ διεμορφώθη ὁ μυστικισμὸς οὗτος ἐν τῇ νεοπλατωνικῇ φιλοσοφίᾳ. Ἐν αὐτῇ ἐξαίρεται ἤδη ἰσχυρῶς ἡ ἰδέα, ὅτι ὁ ἄνθρωπος δὲν θεοῦται, δὲν συγχωνεύεται μετὰ τῆς θεότητος τὸ πρῶτον μετὰ θάνατον, ἀλλ' ἤδη κατὰ τὴν διάρκειαν τῆς ἐπιγείου ζωῆς. Ὁ Πλωτῖνος ἔλαβε πεῖραν τῆς μακαριότητος ταύτης κατὰ τὰ ἓξ ἔτη, καθ' ἃ ἀνεστρέφετο μετ' αὐτοῦ ὁ Πορφύριος. Οὗτος δὲ πάλιν καυχᾶται ὅτι ἔτυχε τῶν αὐτῶν, ἂν καὶ ἀργὰ καὶ ἐν προβεβηκυίᾳ ἡλικίᾳ. Ὁ Ἰάμβλιχος τέλος, ὅστις ἐχρῆτο καὶ τῇ θεουργίᾳ, διηγεῖται ἡμῖν περὶ μυστικῶν ἑνώσεων καὶ περὶ τῶν ἐξαιρετικῶν ἱκανοτήτων, τὰς ὁποίας προσεκτῶντο οἱ θεοφόροι ἐν τῇ καταστάσει ταύτῃ διατελοῦντες. Διὰ τῆς ἀλληγορικῆς ἑρμηνείας τοῦ Φίλωνος ὁ μυστικισμὸς οὗτος τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας ὑπεμβάλλεται εἰς τὰ βιβλία τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης καὶ οὕτω εἰσδύει εἰς τοὺς κύκλους τῶν ἑλληνιστῶν Ἰουδαίων καὶ δι' αὐτῶν καὶ εἰς τὸν Χριστιανισμόν. Τὰ ἐν τούτῳ εἰσφρήσαντα στοιχεῖα τοῦ ἑλληνικοῦ μυστικισμοῦ χρησιμοποιοῦνται ὑπὸ τῆς Γνώσεως πρὸς συγκρότησιν καὶ δι' αὐτῶν τοῦ μεγαλοπρεποῦς ὅσον καὶ πολυδαιδάλου οἰκοδομήματος αὐτῆς. Τέλος διὰ τῆς συγκροτήσεως τῆς χριστιανικῆς θεολογίας τῇ βοηθείᾳ τῶν μέσων τῆς ἑλληνικῆς φιλοσοφίας, ἥτις ἦτο ἐμπεποτισμένη, ὡς εἴδομεν, ὑπὸ τοῦ μυστικισμοῦ, τὰ στοιχεῖα ταῦτα πληθύνονται, ἵνα ὁδηγήσωσι τέλος εἰς τὴν γέννησιν τοῦ χριστιανικοῦ μυστικισμοῦ, εἰς τὸν ὁποῖον μεταβαίνομεν, ἀφοῦ ὅμως προηγουμένως εἴπωμεν ὀλίγας λέξεις περὶ τοῦ ἰουδαϊκοῦ καὶ τοῦ ἰσλαμικοῦ μυστικισμοῦ.

Ὁ πρῶτος κέκτηται ἰδιάζοντα ὅλως χαρακτῆρα ἕνεκα τῆς ἰδιοτυπίας τοῦ ἰουδαϊσμοῦ. Δὲν ἀποσκοπεῖ οὔτε εἰς ἀπολύτρωσιν ἀπὸ τῆς βουλήσεως οὔτε ἀπὸ τοῦ ἐγὼ καὶ δὲν εἶναι πανθεϊστικός, ἀλλ' ἐξαίρει τοὐναντίον ἀφ' ἑνὸς τὴν προσωπικότητα τοῦ θεοῦ, τὴν δικαιοσύνην καὶ τὴν ἀγάπην αὐτοῦ, ἀφ' ἑτέρου τὸν ἄνθρωπον καὶ τὴν κατ' ἐλευθέραν ἐκλογὴν ἀπόφασιν αὐτοῦ. Ὁ ἰουδαϊκὸς μυστικισμὸς ὑπὸ χαρακτῆρα ἐκστατικὸν καὶ δραματιστικόν, παραπλήσιον πρὸς τὸν τῶν ἀποκρύφων βιβλίων τοῦ Β' καὶ Α' π. Χ. αἰῶνος, ἀπαντᾷ ἐν τῷ Ταλμούδ, διὰ ὁποίου ἤρχετο ἡ πρώτη αὐτοῦ περίοδος, διαρκοῦσα καθ' ὅλον τὸν μεσαίωνα. Ἐνταῦθα ἀνήκουσι τὸ «Βιβλίον τῶν οὐρανίων στοῶν» καὶ τὸ «Βιβλίον περὶ τῆς δημιουργίας», τὸ ὁποῖον τελεῖ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Πρόκλου καὶ ἔσχεν ἰσχυρὰν ῥοπὴν διὰ τῆς περὶ σφαιρῶν διδασκαλίας, ἣν περιέχει. Ἡ δευτέρα περίοδος εἶναι οἱ χρόνοι τῆς Καββάλας, τουτέστι τῆς παραδόσεως, κατὰ τοὺς ὁποίους συναρμολογοῦνται καὶ διαμορφοῦνται αἱ κατὰ τὴν προηγουμένην περίοδον ἐμφανισθεῖσαι μυστικαὶ ἰδέαι. Ἡ ἐξέλιξις τοῦ ἰουδαϊκοῦ μυστικισμοῦ κατὰ τὴν περίοδον ταύτην συνδέεται πρὸς τὴν προσωπικότητα Ἰσαὰκ τοῦ Τυφλοῦ. Οὗτος συνδυάζει τὴν ἰδέαν τοῦ πληρώματος, δηλαδὴ τῆς νοητῆς πρώτης ἀρχῆς μετὰ τῆς περὶ μετεμψυχώσεως διδασκαλίας. Μεγάλως συμβάλλουσιν εἰς τὴν διάδοσιν τοῦ μυστικισμοῦ τούτου ὁ Μωϋσῆς Μπὲν Μαχμὰν καὶ ὁ Ἀβραὰμ Ἀβουλαφίας, ἐνῷ ἐξ ἄλλου χαρίζει εἰς τὴν ὅλην κίνησιν τὸ κανονικὸν αὐτῆς βιβλίον «Ζοχὰρ» ὁ Μωϋσῆς Μπὲν Σεμπτόβ. Παρὰ τὸν μυστικισμὸν τοῦτον, τὸν ὁποῖον δυνάμεθα νὰ καλέσωμεν μεσημβρινόν, ἀναπτύσσεται καὶ ἕτερος τύπος, ὁ βόρειος ἢ ὁ γερμανικὸς διὰ Σαμουὴλ τοῦ Εὐσεβοῦς, τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ Ἰούδα τοῦ Εὐσεβοῦς καὶ τοῦ Ἐλεαζάρου Μπὲν Ἰούδα. Ἰδιαίτερον αὐτοῦ γνώρισμα εἶναι ἡ ἔξαρσις τῶν ψυχικῶν ἀξιῶν ἐν ἀντιθέσει πρὸς τὴν νόησιν καὶ τὴν θεωρίαν καὶ ἡ πρὸς τὴν προσευχὴν καὶ τὸν εἰς τὴν θείαν ἀγάπην βυθισμὸν τροπή. Τῆς τρίτης τέλος περιόδου κέντρον καὶ ἑστία ἐγένετο ἡ Παλαιστίνη, ἐξ ἧς ἐκπηγάζει ἀνακαίνισις τοῦ ἰουδαϊκοῦ μυστικισμοῦ, συνδεομένη πρὸς τὸ ὄνομα τοῦ Μωϋσέως Κορδοβέρο καὶ πρὸ πάντων τὸ τοῦ Ἰσαὰκ Λούρια, τοῦ ἁγίου τοῦ κύκλου τούτου τῶν μυστικιστῶν. Ὁ Λούρια ἔδωκεν εἰς τὸν μυστικισμὸν τῶν Ἰουδαίων τὸν «νόμον», τουτέστι σύνολον ἐθίμων, ἀσκήσεων καὶ προσευχῶν, ὡς προπαρασκευὴν τοῦ χρόνου τῆς ἀπολυτρώσεως. Δὲν ἀποστέργει λοιπὸν τὰ τελετουργικὰ καὶ θεουργικὰ μέσα, ὡς δὲν ἀποστέργει αὐτὰ οὐδ' ὁ ἐκ τῆς Καββάλας ἀναπτυχθεὶς Σασσιδισμός, τοῦ ὁποίου ὁ ἀρχηγὸς Βάαλ Σεμπτὸβ καὶ πρὸ πάντων ὁ μαθητής του Μπέαρ ἐχρησιμοποίουν τεχνητὰ μέσα, οἷος ὁ χορὸς καὶ τὸ ᾆσμα, πρὸς ἐπίτευξιν τῆς ἐκστάσεως.

Ὁ ἰσλαμικὸς μυστικισμὸς ἐκπηγάζει μὲν ἐκ τοῦ πρωτογενοῦς ἐκείνου μυστικισμοῦ, τελεῖ δὲ ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ νεοπλατωνικοῦ πρὸ πάντων, ἐν ἐν μέρει δὲ καὶ τοῦ ἰνδικοῦ. Περιώνυμοι μυστικισταὶ εἶναι ἐνταῦθα οἱ Σουφὶ τῆς Περσίας, χρησιμοποιοῦντες κυρίως τὸν οἶνον πρὸς ἐπίτευξιν τῆς ἐκστάσεως, διὰ τῆς ὁποίας ἐπέρχεται ἡ συγχώνευσις ἐκείνη μετὰ τῆς θεότητος. Χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ προσευχὴ τοῦ Βαγεζὶδ Μπεσταμί: «Πόσον καιρὸν ἀκόμη θὰ ὑφίσταται μεταξύ μας τὸ Ἐγὼ καὶ τὸ Σύ; Ἆρον τὸ Ἐγώ μου ἐκ τοῦ μέσου καὶ ἀφάνισε τὴν προσωπικότητά μου». Τολμηρότερος εἶναι ὁ Χουσεῒν Ἀλ Χαλλὰδς ἐν ὅσοις λέγει: «Ἐγὼ εἶμαι αὐτὸς τὸν ὁποῖον ἀγαπῶ, καὶ οὗτος τὸν ὁποῖον ἀγαπῶ εἶναι ἐγώ. Εἴμεθα δύο ψυχαὶ ἐνοικοῦσαι εἰς ἓν σῶμα· ὅταν βλέπῃς ἐμέ, βλέπεις αὐτόν, καὶ ὅταν βλέπῃς αὐτόν, βλέπεις ἐμέ». Καὶ ὁ μέγιστος τῶν μυστικῶν τοῦ Ἰσλαμισμοῦ, ὁ Τζελὰλ Ἀλ-Ντὶν ρουμί: «Θὰ ἦτο ψεῦδος νὰ ὁμιλῶ περὶ ἐμοῦ καὶ σοῦ· τὸ Ἐγὼ καὶ τὸ Σὺ ἔπαυσε νὰ ὑπάρχῃ μεταξύ μας». Καὶ αὐτὸς ὁ γνωστὸς θεολόγος τοῦ Ἰσλαμισμοῦ Τζελαλὶ ἐγνώρισε τὸ μυστικοπαθὲς βίωμα τῆς ἑνώσεως μετὰ τοῦ θεοῦ, ὡς ὁ ἴδιος διηγεῖται. Τέλος τίς ἀγνοεῖ τοὺς Δερβίσας, οἵτινες μεταπίπτουν εἰς ἔκστασιν τῇ βοηθείᾳ κυκλικῶν περὶ ἑαυτοὺς χορῶν; Σκοπὸς αὐτῶν, ὡς καὶ τῶν Ριφαϊτῶν, τῶν Σαδιτῶν, τῶν Ἰσαβιτῶν κ. ἄ. εἶναι ἡ ἕνωσις καὶ ἡ συγχώνευσις μετὰ τοῦ Ἀλλάχ, εἴτε ὡς μέσον χρησιμοποιεῖται ὁ χορός, εἴτε ἡ μουσική, εἴτε ἡ συχνὴ ἐπανάληψις τῆς συντόμου ὁμολογίας τῆς πίστεως ὅτι «οὐδεὶς ὑπάρχει θεὸς πλὴν τοῦ Ἀλλὰχ» (Λὰ Ἰλαχὰ Ἰλλὰ Ἰλλαχού).

Ἡ εὐσέβεια τῆς Καινῆς Διαθήκης δὲν εἶναι μυστικισμός, ἐπειδὴ ἡ περὶ σχέσεως μεταξὺ θεοῦ καὶ κόσμου διδασκαλία αὐτῆς οὐδὲν κοινὸν ἔχει πρὸς τὸν μυστικισμόν. Ὁ κόσμος καὶ ἡ ἱστορία δὲν θεωροῦνται ὡς τὸ κακὸν καὶ ἀντίθετον πρὸς τὸν θεόν, ὡς διδάσκει ὁ διαρχικὸς μυστικισμός· οὔτε ὡς σύμβολον ἢ ἐμφάνισις τοῦ θεοῦ ὡς τοῦ μόνου ὄντως Ὄντος, ὡς θέλει ὁ πανθεΐζων μυστικισμός. Ὁ θεὸς θεωρεῖται οὐχὶ ἐν τῇ ὑπερβατικῇ αὐτοῦ οὐσίᾳ, ἀλλ' ἐν τῇ ἐν τῷ κόσμῳ καὶ χάριν τοῦ κόσμου ἐνεργείᾳ αὐτοῦ. Ἡ ἐνέργεια δὲ αὕτη αὐτοῦ δὲν ἐκλαμβάνεται ὡς ἡ αἰωνία ἀνάπτυξις τοῦ κόσμου κατὰ νόμους σιδηροῦς καὶ ἀμεταβλήτους, ἀλλ' ὡς συγκεκριμένη ἐνέργεια τοῦ προσωπικοῦ θεοῦ, ἐκδηλουμένη ὡς βούλησις καὶ ὡς λόγος αὐτοῦ πρὸς τὸν ἄνθρωπον. Ὁ τελευταῖος δὲ οὗτος πάλιν δὲν ἀπαιτεῖται, ὅπως δι' ἀσκήσεως καὶ θεωρίας ἢ δι' ἐκστάσεως γένηται κοινωνὸς τῆς θείας οὐσίας, ἀλλ' ὅπως διὰ τῆς βουλήσεως καὶ τῶν ἔργων του τελειοποιήσῃ ἠθικῶς ἑαυτόν. Τέλος ἡ ἀπολύτρωσις αὐτοῦ εἶναι, κατὰ τὴν διδασκαλίαν τῆς Καινῆς Διαθήκης, ἱστορικὴ πρᾶξις τοῦ θεοῦ, τὴν ὁποίαν ὁ ἄνθρωπος προσοικειοῦται διὰ τῆς πίστεως καὶ τῶν ἔργων. Παρὰ ταῦτα ὑφίστανται στοιχεῖα μυστικισμοῦ ἐν τοῖς ἱεροῖς βιβλίοις ἢ τοὐλάχιστον χρησιμοποιεῖται ἡ γλῶσσα τοῦ μυστικισμοῦ πρὸς ἔκφρασιν θρησκευτικῶν ἀληθειῶν ἀναφερομένων εἰς τὴν σχέσιν κυρίως θεοῦ καὶ ἀνθρώπου ἢ ἀνθρώπου καὶ Λυτρωτοῦ, ὡς λ.χ. ὑπὸ τοῦ Παύλου καὶ τοῦ Ἰωάννου. Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται τὸ γεγονὸς ὅτι ὁ ἐν τῇ χριστιανικῇ ἐκκλησίᾳ ἀναπτυχθεὶς μυστικισμὸς ἀνάγει τὴν καταγωγὴν αὐτοῦ εἰς τὴν Καινὴν Διαθήκην, παρὰ δὲ τοῦ Παύλου καὶ τοῦ Ἰωάννου δανείζεται τὴν γλῶσσαν, ἐν τῇ ὁποίᾳ ὁμιλεῖ.

Τὴν σειρὰν τῶν μυστικιστῶν ἀνοίγει ἤδη Ἰγνάτιος ὁ Ἀντιοχείας, τελῶν ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς μυστικοπαθοῦς γλώσσης τοῦ εὐαγγελιστοῦ Ἰωάννου. Ἡ περαιτέρω ἐξέλιξις τοῦ μυστικισμοῦ συνδέεται πρὸς τὰ ὀνόματα Κλήμεντος τοῦ Ἀλεξανδρέως καὶ τοῦ Ὠριγένους, οἵτινες ἀμφότεροι ἀντιπροσωπεύουν μυστικὴν θεολογίαν, φέρουσαν ἐμφανῆ τὰ ἴχνη τῆς ἐπιδράσεως τοῦ ἑλληνικοῦ μυστικισμοῦ. Ἐκ τῶν ἔπειτα ἰδίας μνείας ἄξιος εἶναι Γρηγόριος ὁ Νύσσης, ὅστις ἐπλούτισε τὸν θησαυρὸν τῆς μυστικῆς γλώσσης καὶ πρῶτος ἐχαρακτήρισε τὸ μυστικὸν βίωμα ὡς ἀπόλαυσιν θεοῦ, καὶ Μακάριος ὁ Μέγας, τοῦ ὁποίου αἱ ἰδέαι περὶ αἰχμαλωσίας τῆς ψυχῆς καὶ περὶ αὐτῆς ὡς θρόνου τῆς θείας μεγαλειότητος, φέρουσιν ἐμφανῶς μυστικὸν χαρακτῆρα. Ἐκ τοῦ Ε' αἰῶνος ἀναφέρομεν Νεῖλον τὸν Σιναΐτην καὶ Ἡσύχιον τῶν Ἱεροσολύμων, ὅστις ἔγινε γνωστὸς καὶ ἐπέδρασεν ἐπὶ τῶν ἔπειτα διὰ τῆς ἀναλύσεως καὶ τῆς περιγραφῆς τοῦ ἐσωτερικοῦ βίου τῆς ψυχῆς. Εἰς τὸν ΣΤ' αἰῶνα ἀνήκει ὁ συγγραφεὺς τῶν ὑπὸ τὸ ὄνομα Διονυσίου τοῦ Ἀρεοπαγίτου φερομένων μυστικῶν συγγραμμάτων, ὁ κυρίως πατὴρ τῆς χριστιανικῆς μυστικῆς θεολογίας, ἐξαρτώμενος μεγάλως ἐκ τοῦ νεοπλατωνικοῦ μυστικισμοῦ καὶ μεγίστην ἀσκήσας ῥοπὴν ἐπὶ τῆς ἔπειτα ἐξελίξεως τόσον τῆς τελετουργικῆς ὅσον καὶ τῆς φιλοσοφικῆς μυστικοπαθείας. Εἰς τὸν κολοφῶνα αὐτῆς καταντᾷ ὁ μυστικισμὸς τῆς Ἀνατολῆς διὰ Ἰσαὰκ τοῦ ἐκ Νινευΐ, ἀκμάσαντος κατὰ τὸν Ζ' αἰῶνα. Ἐκ τῶν ἔπειτα χρόνων ἄξιοι μνείας εἶναι Μάξιμος ὁ Ὁμολογητής, Φιλόθεος ὁ Σιναΐτης, Συμεὼν ὁ Νέος Θεολόγος, Νικόλαος Καβάσιλας, μεθ' οὓς ἀκολουθεῖ ὁλόκληρος σειρὰ ἄλλων, τῶν ὁποίων τὰ συγγράμματα περιελήφθησαν εἰς τὴν «Φιλοκαλίαν», χρηστομάθειαν τοῦ μυστικισμοῦ, συναρμολογηθεῖσαν ὑπὸ Νικοδήμου τοῦ Ἀθωνίτου, ἀσκητοῦ καὶ μυστικοῦ. Τὸ χαρακτηριστικὸν γνώρισμα τοῦ παλαιοχριστιανικοῦ καὶ βυζαντιακοῦ τούτου μυστικισμοῦ εἶναι ἡ εἰς τὸ ἱστορικὸν πρόσωπον τοῦ Ἰησοῦ συγκέντρωσις αὐτοῦ, ὁ χριστοκεντρικὸς χαρακτήρ, ὅστις εἶναι συγχρόνως ὑπερβατικός. Ὁ χαρακτὴρ δὲ οὗ-

Digitized by Google

τος ἐκδηλοῦται τόσον ἐν τῷ τελετουργικῷ μυστικισμῷ τῆς ἀνατολικῆς ἐκκλησίας, ὅσον καὶ ἐν τῷ καθαρῶς προσωπικῷ. Ἐκεῖνος περιστρέφεται περὶ τὴν θείαν δόξαν καὶ τὴν λαμπρότητα τοῦ ἐνανθρωπήσαντος Λόγου, ὡς αὐτὴ ἐμφανίζεται ἡμῖν ἐν τῇ ἐνανθρωπήσει ταύτῃ, τῷ πάθει, τῷ θανάτῳ καὶ τῇ ἀναστάσει τοῦ κυρίου. Οὗτος ὡς κύριον αὐτοῦ περιεχόμενον ἔχει τὴν ἔξαρσιν τοῦ ἐσωτερικοῦ κόσμου μέχρι τοῦ Λυτρωτοῦ. Δι᾿ αὐτῆς, ἐπιστεφομένης ὑπὸ τῆς θείας χάριτος, ὁ ἄνθρωπος μεταβάλλεται εἰς καθαρὸν πνεῦμα, ζῇ ἤδη τὴν ζωὴν τοῦ ἄλλου κόσμου, τὸ πνεῦμα τοῦ θείου ζῇ ἐν αὐτῷ. Τὸ αὐτὸ ἰσχύει καὶ ὡς πρὸς τὸν μυστικισμὸν τῆς ρωσικῆς ἐκκλησίας, ὅστις τὸ μὲν ἐξηγεῖται ἐκ τῶν προϋποθέσεων τῆς χριστιανικῆς ἀνατολῆς καθόλου, τὸ δὲ ἐξαρτᾶται ἐκ ξένων ἐπιδράσεων. Γνωστὴ εἶναι ἐνταῦθα ἡ κίνησις τῶν λεγομένων Ἀνθρώπων τοῦ Θεοῦ καὶ τῶν Λευκῶν Περιστερῶν, ὀνομαστοὶ δὲ μυστικοὶ θεολόγοι ἐγένοντο καὶ ἄλλοι πολλοὶ καὶ οἱ Σκοβορόδα, Νόβικωφ, Λάψιν, Σοροβγιώβ, ὅστις ἐξαρτᾶται τόσον ἐκ τοῦ Σκώτου Ἐρίγενα, ὅσον καὶ ἀπὸ τοῦ νεοπλατωνισμοῦ ἀπ᾿ εὐθείας, ὁ φιλόσοφος Σομγιακώβ, ὁ ἐπεξεργαστὴς τῆς ἀνωτέρω μνημονευθείσης «Φιλοκαλίας» Θεοφάνης καὶ ὁ Τύχων, τοῦ ὁποίου τὴν φυσιογνωμίαν εἶχε πρὸ ὀφθαλμῶν ὁ Δοστογιέφσκη κατὰ τὴν περιγραφὴν τοῦ Ζωσιμᾶ ἐν τῷ ἔργῳ του «Οἱ ἀδελφοὶ Καραμάζωβ».

Ἐν τῇ Δυτικῇ Ἐκκλησίᾳ τὴν ἀπαρχὴν τοῦ μεσαιωνικοῦ μυστικισμοῦ ποιεῖται ὁ Σκῶτος Ἐρίγενα, ὅστις μετὰ τοῦ Αὐγουστίνου εἶναι ὁ εἰσηγητὴς τῆς νεοπλατωνικῆς φιλοσοφίας εἰς τὴν Ἐκκλησίαν. Οὖγος ὁ ἐξ Ἁγίου Βίκτωρος διασῴζει τὰς θεμελιώδεις ἀρχὰς τῆς φιλοσοφίας ταύτης εἰς τοὺς ἔπειτα αἰῶνας, ἂν καὶ τονίζει συγχρόνως τὸ ἀναγκαῖον τῆς εἰς αὐτὴν προπαρασκευῆς διὰ τῶν μέσων τῆς Ἐκκλησίας. Ἐν ἀντιθέσει πρὸς αὐτὸν ἀπαιτεῖ Βερνάρδος ὁ ἐκ Κλαιρβὼ τὴν συγκέντρωσιν περὶ τὸ ἱστορικὸν πρόσωπον τοῦ Ἰησοῦ, τοῦ ὁποίου τὰ πάθη διεγείρουσι τὸν πόνον ἐπὶ τῇ ἁμαρτίᾳ καὶ προκαλοῦσι τὸ συναίσθημα τῆς εὐγνωμοσύνης καὶ τῆς ἀγάπης. Χαρακτηριστικὴ διὰ τὸν μυστικισμὸν αὐτοῦ εἶναι ἡ παρομοίωσις τοῦ Χριστοῦ πρὸς νυμφίον, πρὸς τὸν ὁποῖον ἔρχεται εἰς σχέσιν ἡ ψυχὴ ὡς νύμφη. Ἐκ τοῦ συνδυασμοῦ τῶν ἰδεῶν τοῦ Βερνάρδου πρὸς τὸν μυστικισμὸν τοῦ Οὔγου ἐγεννήθη ὁ ἰταλικὸς μυστικισμός, κύριος ἐκπρόσωπος τοῦ ὁποίου εἶναι, πλὴν ἄλλων, ὁ Βοναβεντούρας. Ἀντιθέτως ὁ γερμανικὸς μυστικισμὸς ἐμφανίζεται ὡς ἐπεξεργασία καὶ περαιτέρω ἀνάπτυξις τοῦ παλαιοτέρου μυστικισμοῦ, ὡς βλέπομεν λ. χ. ἐκ τοῦ Ἔκκαρτ. Κατὰ τὸν περίφημον τοῦτον μυστικὸν ἡ ἀπὸ τῶν πραγμάτων ἀπομάκρυνσις, ἡ ἐπιστροφὴ εἰς τὴν ψυχήν, ἡ ἀπαλλαγὴ ἀφ᾿ ἡμῶν αὐτῶν, ὁδηγεῖ εἰς ἕνωσιν μετὰ τοῦ θεοῦ. Ἡ γέννησις αὐτοῦ ἐν τοῖς μυχιαιτάτοις τῆς ψυχῆς ἀποτελεῖ τὸν σκοπὸν τῆς ἱστορίας τῆς σωτηρίας καὶ τὸ νόημα τοῦ Χριστιανισμοῦ. Τὰς ἰδέας ταύτας ἠπλοποίησεν ὁ Τάουλερ, ὁ συμπαθὴς κήρυξ προσωπικοῦ Χριστιανισμοῦ. Ἐκ τοῦ Ἔκκαρτ συγχρόνως καὶ ἐκ τοῦ Βερνάρδου ἐξαρτᾶται ὁ μυστικισμὸς τοῦ Σούσωνος, ὅστις συνδυάζει σκληρὰν ἄσκησιν πρὸς ἐνθουσιαστικὴν ἀγάπην πρὸς τὸν θεῖον νυμφίον, ἀσκήσας ἰσχυρὰν ῥοπὴν ἐπὶ τῶν γυναικείων ταγμάτων. Τὸν ὀλλανδικὸν μυστικισμὸν ἀπησχόλησαν μᾶλλον οἱ ὅροι καὶ αἱ προϋποθέσεις τῆς μυστικῆς ἐποπτείας τῆς θεότητος, ὡς συμβαίνει λ. χ. περὶ τὸ πολυθρύλητον ἔργον τοῦ Θωμᾶ τοῦ ἐκ Κέμπης «De imitatione Christi». Ἐντελῶς νέον εἶναι ἐν αὐτῷ ἡ μέθοδος τῆς ἀσκήσεως τῆς βουλήσεως, ἥτις ὁδηγεῖ εἰς τὸν ἡσυχαστικὸν μυστικισμόν. Σαφέστερον ἐκφαίνεται αὐτὴ ἐν τῇ «Γερμανικῇ Θεολογίᾳ». Κατὰ τὴν ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ περιεχομένην διδασκαλίαν, ὁ θεὸς λαμβάνει συνείδησιν ἑαυτοῦ καὶ τῆς πρὸς ἑαυτὸν ἀγάπης αὐτοῦ διὰ τῆς δημιουργίας. Διὰ τοῦτο ὀφείλει ὁ ἄνθρωπος νὰ ἀφήνῃ νὰ ἐνεργῇ ἐν αὐτῷ ἀκωλύτως ὁ θεὸς καὶ νὰ καθίσταται ὄργανον αὐτοῦ ἄνευ ἰδίας βουλήσεως καὶ αὐτοτελείας.

Παρὰ τὸν μυστικισμὸν τοῦτον, ὅστις ζῇ ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ καὶ ἀναγνωρίζει τὸ κῦρος καὶ τὴν σημασίαν τῶν ὑπ᾿ αὐτῆς διδασκομένων μέσων πρὸς σωτηρίαν, ἀκμάζουν καὶ ἄλλαι μορφαὶ μυστικισμοῦ. Οὕτω οἱ ὑπὸ τὸ ὄνομα «Ἐλεύθερα πνεύματα» γνωστοὶ μυστικισταὶ ἀπορρίπτουσι τὸν νόμον καὶ τὴν ἐκκλησιαστικὴν τάξιν, ἀπαλλάσσουν ἑαυτοὺς ἀπὸ τῆς ὑποχρεώσεως τῶν μυστηρίων, θεωροῦσιν ἑαυτοὺς ἀνωτέρους τῶν ἄλλων Χριστιανῶν καὶ πιστεύουσιν ὅτι εἶναι κοινωνοὶ θείας γνώσεως. Τοιοῦτοι εἶναι οἱ ὀπαδοὶ τοῦ Ἀμαλρίχου, οἱ τοῦ Βεγάρδεν, οἱ Ἀλομβράδος ἐν Ἱσπανίᾳ. Ἡ ἡσυχαστικὴ μυστικοπάθεια τῆς Ὀλλανδίας διεμορφώθη καὶ διεδόθη ἐν Ἱσπανίᾳ διὰ τῆς Θηρεσίας τοῦ Ἰησοῦ πρὸ πάντων, ἡ ὁποία ἐν τοῖς διαφόροις αὐτῆς ἔργοις περιγράφει τὰς τέσσαρας βαθμῖδας, αἱ ὁποῖαι ὁδηγοῦν εἰς τὸν θεόν. Ἡ πρώτη συνίσταται εἰς τὴν προσευχὴν τῆς συγκεντρώσεως, τὴν δευτέραν ἀποτελεῖ ἡ προσευχὴ τῆς ἡσυχίας, εἰς τὴν τρίτην φθάνει τις διὰ τῆς προσευχῆς τῆς συνενώσεως, καθ᾿ ἣν βούλησις καὶ νοῦς εἶναι ἡνωμένα μετὰ τοῦ θεοῦ, ἡ δὲ τελευταία καλεῖται προσευχὴ τῆς ἐκστάσεως καὶ εἶναι ἡ λεγομένη Unio mystica. Εἰς τὴν Θηρεσίαν ταύτην ἀποβλέπει ὁ Φραγκῖσκος ντὲ Σάλες ὡς πρὸς τὸ πρότυπον καὶ ὑπόδειγμα αὐτοῦ, ἀκριβῶς ὅπως οἱ μεταγενέστεροι Ἱσπανοὶ μυστικισταί. Ἡ βούλησις εἶναι κατ᾿ αὐτὸν ὁ φυσικὸς μονάρχης ἐν τῇ ψυχῇ τοῦ ἀνθρώπου καὶ ὁ ἡγεμὼν τοῦ ψυχικοῦ βίου. Τὴν χριστιανικὴν τελειότητα εὑρίσκει ἐν τῇ τελειοποιήσει τῆς βουλήσεως ταύτης διὰ τῆς πρὸς τὸν θεὸν ἀγάπης, τὴν ὁποίαν διακρίνει εἰς παθητικὴν καὶ εἰς ἐνεργητικήν. Τὴν νέαν ταύτην μυστικοπάθειαν εἰσάγει ἡ μαθήτρια αὐτοῦ Σαντὰλ εἰς τὸ ἀπ᾿ ἐκείνου ὀνομασθὲν καὶ ὑπ᾿ αὐτῆς ἱδρυθὲν τάγμα. Ὁ ἡσυχαστικὸς οὗτος μυστικισμὸς περιέκλειεν ἐν ἑαυτῷ κινδύνους, τοὺς ὁποίους ἐνωρὶς διεῖδον οἱ Ἰησουῖται καὶ οἱ ὁποῖοι κατέστησαν μᾶλλον ἐμφανεῖς διὰ τῆς διδασκαλίας καὶ τῆς ἔναντι τῶν ἐξωτερικῶν τύπων τῆς Ἐκκλησίας διαγωγῆς τοῦ Ἱσπανοῦ Μολίνου, ὅστις τὰ πάντα ἀνάγει εἰς τὴν θείαν βούλησιν, ῥέπει πρὸς ἀνεξαρτησίαν ἀπὸ τῆς ἐκκλησιαστικῆς διδασκαλίας καὶ δὲν ἀποδίδει πολλὴν σημασίαν εἰς τὴν ἁμαρτίαν. Ἡ καταδίκη αὐτοῦ ἀποτελεῖ προηγούμενον, δυνάμει τοῦ ὁποίου καταπολεμεῖται καὶ ἡ πρὸς τὸ ὄνομα τῆς κυρίας de Guyon καὶ τοῦ Φενελῶνος συνδεομένη ἡσυχαστικὴ κίνησις τοῦ γαλλικοῦ μυστικισμοῦ, ὅστις ἐδίδασκε τὸν ἀφανισμὸν τῆς βουλήσεως τοῦ ἀνθρώπου ἐντὸς τῆς θείας βουλήσεως, τὴν πλήρη ἐγκατάλειψιν τῆς ἀνθρωπίνης βουλήσεως εἰς τὰς χεῖρας τοῦ θεοῦ.

Ὁ μυστικισμὸς τῆς διαμαρτυρομένης Ἐκκλησίας διακρίνεται εἰς δύο περιόδους, ἐκ τῶν ὁποίων ἡ μὲν πρώτη τροφοδοτεῖται ἐκ τοῦ παρελθόντος καὶ ἐν τῇ ὁποίᾳ διακρίνεται ὁ Βαλεντῖνος Βάϊγκελ διὰ τῆς συναρμολογήσεως τῶν παραδεδομένων εἰς σαφὲς καὶ ἀπηρτισμένον σύστημα, ἡ δὲ δευτέρα ἄρχεται διὰ τοῦ Ἰακὼβ *Μπαῖμε* (βλ. λ.) καὶ τῆς δημιουργικῆς αὐτοῦ διανοήσεως. Ὁ μυστικισμὸς αὐτοῦ παρέμεινε ξένος πρὸς τὴν Ἐκκλησίαν, ἐπὶ δὲ τῆς γερμανικῆς εὐσεβείας ἐπέδρασεν, ἀφοῦ πρότερον διεδόθη ἐν Ὀλλανδίᾳ καὶ ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ ἀφοῦ ὁ λουθηρανισμὸς διεποτίσθη ὑπὸ τῶν μυστικοπαθῶν ἰδεῶν τοῦ εὐσεβισμοῦ. Τὴν ἐπίδρασιν ταύτην ἀπαντῶμεν πρὸ πάντων παρὰ τῷ Γ. Ἀρνόλδ, ὡς πρότερον παρὰ τῷ Ἀγγ. Σιλεσίῳ, ὅστις πάλιν ἐπιδρᾷ ἐπὶ τοῦ Τερστέγεν, τοῦ εἰς τὴν καλβινικὴν Ἐκκλησίαν ἀνήκοντος ποιητοῦ. Μεταξὺ τῶν εὐσεβιστῶν διακρίνονται ὡς μυστικισταὶ ἡ Ἐλεονώρα Πέτερσεν καὶ ὁ Τσίντσεντορφ. Εἶναι ἐν πάσῃ περιπτώσει παράδοξον ὅτι παρὰ τὴν ἐξάπλωσιν τοῦ εὐσεβισμοῦ ἡ θεολογία παρέμεινε, γενικῶς εἰπεῖν, ξένη πρὸς τὸν μυστικισμὸν ἐπὶ πολὺν χρόνον. Μόλις διὰ τοῦ Σλαϊερμάχερ καὶ τοῦ γερμανικοῦ ἰδανισμοῦ ἀναλαμβάνεται πάλιν ἐν τῇ θεολογίᾳ. Ἔκτοτε ἀποτελεῖ ἓν τῶν βασικῶν στοιχείων αὐτῆς, ὡς ἀποδεικνύουν ὀνόματα οἷα τὰ τοῦ Ε. Τρόιλτς, Ρ. Ὄττο, Π. Τίλλιχ καὶ ἄλλα.

Ἡ κατὰ τοῦ ὑλισμοῦ καὶ τῆς φυσιοκρατίας ἀντίδρασις κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη ἐκδηλοῦται καὶ διὰ τοῦ πόθου πρὸς ἐσωτερικότητα καὶ πρὸς ψυχικὴν ἐμβάθυνσιν. Ὁ πόθος οὗτος δημιουργεῖ τροπὴν πρὸς τὸν ρωμαντισμόν, τὸν συμβολισμὸν καὶ τὸν μυστικισμόν, ἐν τῇ γενικωτάτῃ σημασίᾳ τῆς λέξεως, ἐννοεῖται. Τὸ ἐκ τῆς ἀντιδράσεως ταύτης γεννηθὲν ρεῦμα εὐνοεῖται ἤδη ἐν τοῖς δράμασι τοῦ γέροντος Ἴψεν, ὅπου ὑποσημαίνονται οὐ μόνον μυστηριώδη βάθη τῆς ψυχῆς, ἀλλὰ καὶ τὸ μυστήριον τῆς ζωῆς, ὅπερ ἐνυπάρχει εἰς τὸ βάθος τῶν ὄντων. Παραπλήσιόν τι παρατηρεῖται καὶ ἐν τοῖς ἔργοις τοῦ Χάουπτμανν, ὅστις μεταχειρίζεται συμβολικῶς τὴν θρησκευτικὴν παράδοσιν καὶ ποθεῖ τὴν τρίτην κατάστασιν, τὸ τρίτον βασίλειον, ὡς ὁ Ἴψεν. Παρὰ τῷ Χόφμανσταλ καὶ τῷ Μαίτερλιγκ συντελεῖται ἡ μετάστασις ἀπὸ τοῦ αἰσθητοῦ εἰς τὸ ὑπεραισθητὸν καὶ ἐπανασυνδέεται συνειδητῶς ἡ πρὸς τὸν παλαιὸν μυστικισμὸν σχέσις, ὡς καὶ παρὰ τῷ Στ. Γεῶργε καὶ τῷ Μόμπερτ. Δεύτερόν τι μυστικοπαθὲς ρεῦμα ἐκπηγάζει ἐκ τοῦ πανθεϊστικοῦ μονισμοῦ καὶ ὁδηγεῖ εἰς μυστικιστικὴν λατρείαν τῆς φύσεως, ὡς λ. χ. βλέπομεν παρὰ τῷ Βρούνῳ Βίλλκ καὶ τῷ Ἰουλίῳ Χάρτ, τῷ Thoreau καὶ τῷ Trine.

Τρίτη τις κίνησις ὁδηγεῖ εἰς τὴν ἀναβίωσιν τοῦ παλαιοῦ μυστικισμοῦ διὰ τῆς συλλογῆς καὶ τῆς ἐπανεκδόσεως τῶν ἔργων τῶν μυστικιστῶν τῶν διαφόρων ἐποχῶν ἀπὸ τοῦ Πλωτίνου μέχρι τῶν μοναχῶν τοῦ μεσαίωνος καὶ τῶν νεωτέρων χρόνων. Πραγματικῶς νέον μυστικισμὸν δημιουργεῖ ὁ Ράϊνερ Μαρία Ρίλκε. Ὁ θεός, μετὰ τοῦ ὁποίου αἰσθάνεται ἡνωμένην τὴν ψυχήν του, δὲν εἶναι οὔτε τὸ ὑπερούσιον Ἓν τῶν παλαιῶν οὔτε ἡ διὰ τῶν φυσικῶν νόμων ἀποκαλυπτομένη ψυχὴ τοῦ σύμπαντος, ἀλλ᾿ ἡ βαθεῖα καὶ σκοτεινὴ καὶ ἀνεξιχνίαστος ζωή, ὁ «Σιωπηλός», ἡ ἐναλλασσομένη μορφή, ἥτις ἀνακύπτει μονήρης ἀπὸ τὴν περιοχὴν τῆς Μοίρας. Ὁ μυστικισμὸς τοῦ Ρίλκε ἤσκησεν ἰσχυρὰν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ ἐξπρεσσιονισμοῦ τόσον ἐν τῇ ποιήσει ὅσον καὶ ἐν τῇ γλυπτικῇ καὶ τῇ ζωγραφικῇ. Ἄλλη τις μορφὴ μυστικισμοῦ εἶναι ἡ θεοσοφία τῆς Μπέζαντ καὶ ἡ ἀνθρωποσοφία τοῦ Στάϊνερ, εἰς ἣν τελευταίως προσέδωκε χαρακτῆρα χριστιανικὸν ὁ Ρίττελμάϋερ. Ὅσον ἀφορᾷ τέλος τὴν θεολογίαν, ἔλαβεν αὐτὴ ἰσχυρὰν ὤθησιν πρὸς τὸν μυστικισμὸν διὰ τοῦ Ρ. Ὄττο, ὅστις ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Σλαϊερμάχερ καὶ τοῦ Φρεὶς κατέδειξεν ἐν τῷ περιφήμῳ καταστάντι ἔργῳ του τὴν ἄρρηκτον σχέσιν τοῦ μυστικισμοῦ πρὸς τὴν θρησκευτικότητα. Ἄνδρες τῆς ἐπιστήμης καὶ ἄνδρες τῆς πράξεως ἀντλοῦν πάλιν σήμερον ἐκ τοῦ μυστικισμοῦ τόσον μεταξὺ τῶν καθολικῶν ὅσον καὶ μεταξὺ τῶν διαμαρτυρομένων θεολόγων. Ἡ σπουδαιότης καὶ τὸ πλῆθος τῶν σχετικῶν δημοσιευμάτων μαρτυροῦσι περὶ τοῦ βάθους καὶ τῆς ἐκτάσεως τῆς κινήσεως ταύτης.

Ὁ μυστικισμὸς εἶναι καθολικὸν φαινόμενον ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς θρησκείας, τὸ ὁποῖον αἴρει κατ᾿ οὐσίαν τὴν μεταξὺ θεοῦ καὶ ἀνθρώπου σχέσιν. Ἐν ταῖς ἀνωτάταις βαθμῖσιν αὐτῆς τοὐλάχιστον ἐξαφανίζεται ἡ μεταξὺ ὑποκειμένου καὶ ἀντικειμένου διάκρισις. Θεὸς καὶ ἄνθρωπος, ἄνθρωπος καὶ κόσμος συγχωνεύονται καὶ ἑνοποιοῦνται. Τὸ φαινόμενον τοῦτο εἶναι, ὡς εἴπομεν, καθολικόν, ἀπαντῶν εἰς ὅλους τοὺς χρόνους καὶ παρ᾿ ἅπασι τοῖς λαοῖς. Καθαρὸν καὶ ἐν πλήρει σαφηνείᾳ εὑρίσκομεν αὐτὸ παρὰ τοῖς Σουφί(ταις). Παρ᾿ αὐτοῖς κυρίως διαλύεται τὸ ἀνθρώπινον Ἐγώ, χεόμενον εἰς τὸν μέγαν ὠκεανὸν τῆς θεότητος. Ἡ μακαριότης αὕτη εἶναι ἀνέκφραστος· διὰ τοῦτο ὁ ἀγὼν περὶ τὴν ἔκφρασιν, τὸ ψέλλισμα, ἡ παραδοξότης τῆς φράσεως, ἅπερ χαρακτηρίζουν τὸν πραγματικὸν μυστικιστήν. Αἱ ψυχολογικαὶ προϋποθέσεις τῆς συγχωνεύσεως ταύτης θεοῦ καὶ ἀνθρώπου, τῆς ἄρσεως τῆς μεταξὺ ὑποκειμένου καὶ ἀντικειμένου διαφορᾶς, ἀνέρχονται μέχρι τῆς πρώτης ἡλικίας τῆς ἀνθρωπότητος. Ὁ πρωτογενὴς δὲν ἔχει συνείδησιν τῆς διαφορᾶς ἐκείνης, ἀλλὰ γνωρίζει τὰ ἀντικείμενα, μετέχων ψυχικῶς αὐτῶν καὶ γενόμενος αὐτὸς ὁ ἴδιος μέρος αὐτῶν. Γνῶσις ἴσα δύναται δι᾿ αὐτὸν πρὸς τὴν ὕπαρξιν· γινώσκειν σημαίνει Εἶναι. Τοῦτο εἶναι ἡ βάσις καὶ ἡ ἀφορμὴ τῆς μυστικῆς γνωσιολογίας, ἡ ὁποία εἶναι ἡ αὐτὴ παρά τε τοῖς Ἰνδοῖς καὶ παρὰ τοῖς νεωτέροις, παρά τε τῷ Γκαῖτε καὶ τῷ Πλωτίνῳ. Εἶναι αἰσθητικὴ συμπάθεια, συνταύτισις πρὸς τὸ ἀντικείμενον. Ἐνταῦθα ὁ μυστικισμὸς ἔχει κοινὰ γνωρίσματα πρὸς μέγα μέρος τῆς ἐπιστήμης, τὴν κυρίως θρησκείαν καὶ τὴν τέχνην. Μόνον ὅτι ἐξάγει μετὰ μείζονος ἀκολουθίας τὰ ἐντεῦθεν συμπεράσματα. Οὕτω ἔναντι τοῦ Ἑνὸς καὶ Παντὸς δὲν ὑπάρχει δι᾿ αὐτὴν θέσις, οὔτε διὰ τὴν ἠθικήν, οὔτε διὰ τὴν αἰσθητικήν, οὔτε διὰ τὴν θρησκευτικὴν κρίσιν, ἐπειδὴ αὗται προϋποθέτουσι τὴν διαρχίαν καὶ τὴν διάκρισιν, τὸ ἀντικείμενον παρὰ τὸ κρῖνον ἢ γινῶσκον ὑποκείμενον. Εἰς τὸν ἀφανισμὸν τοῦτον τοῦ τε Ἐγὼ καὶ τῶν ὄντων καταντᾷ ὁ μυστικισμὸς τὸ μὲν δι᾿ ἰδίων μεθοδικῶν μέσων, τὸ δὲ δι᾿ ἐκστάσεων, διὰ δύο τρόπων, οἵτινες συνδέονται στενῶς πρὸς ἀλλήλους καὶ μεταβαίνουσιν εἰς ἀλλήλους. Χορός, οἶνος, μουσική, συγκέντρωσις, πνευματικαὶ καὶ ἄλλαι ἀσκήσεις προπαρασκευάζουν οὕτω τὴν κατάστασιν τῆς ἐκστάσεως. Κατ᾿ αὐτὴν καταλαμβάνεται ὁ ἄνθρωπος ὑπὸ τοῦ συναισθήματος τῆς ψυχικῆς εὐρύνσεως, τὰ στενὰ ὅρια, ἅτινα ἐπίεζον αὐτόν, καταπίπτουν καὶ ἡ προσωπικότης ἐξαφανίζεται. Ἐν τῇ ἡμιεγρηγορυίᾳ καταστάσει, εἰς τὴν ὁποίαν περιπίπτει, γεύεται τὴν μακαριότητα τῆς ἑνώσεως μετὰ τοῦ θεοῦ, μετὰ τοῦ Ἑνὸς καὶ Παντός. Κατὰ τὰς στιγμὰς ταύτας εἶναι πράγματι σταγόνες χανόμεναι ἐν τῷ ὠκεανῷ ἢ σπινθῆρες ἐπιστρέφοντες εἰς τὸ αἰώνιον φῶς τῆς θεότητος. Φαντασία καὶ γλῶσσα σιγῶσι κατὰ τὰς στιγμὰς ταύτας, εἰκόνες καὶ παρομοιώσεις γίνονται αἰσθηταὶ ὡς προσβολὴ κατὰ τῆς θείας μεγαλειότητος. Praetermittantur simulacra nostra. Ὡς καλύτερος τρόπος πρὸς ἔκφρασιν τῆς μυστικῆς μακαριότητος παραμένει ἡ σιωπή. Ἀλλ᾿ ἡ μακαρία αὕτη ἔκστασις δὲν διαρκεῖ ἐπὶ πολύ. Ὁμοιάζει πρὸς τὴν πτῆσιν τοῦ Ἰκάρου, ἐν τούτῳ δὲ ἔγκειται ἡ τραγικότης τοῦ μυστικισμοῦ. Διότι πειρᾶται νὰ γευθῇ κατὰ πρόληψιν τῆς μακαριότητος ἐκείνης, ἥτις δὲν εἶναι παρὰ μόνον ἀντικείμενον τῆς ἀπεράντου νοσταλγίας τῶν ἀνθρωπίνων γενεῶν. Ἡ διάλυσις τῆς προσωπικότητος ἐν τῷ θεῷ, ὁ ἀφανισμὸς τοῦ ὑποκειμένου ἀποτελεῖ τὸν σκοπὸν τοῦ μυστικιστοῦ. Τύπος αὐτοῦ εἶναι ἡ χρυσαλίς, ἡ ὁποία ποθεῖ τὸ φῶς καὶ καταστρέφει ἑαυτὴν ἐν τῷ φωτί, ἵνα μεταχειρισθῶμεν τὴν εἰκόνα τοῦ μυστικοῦ Γκαῖτε. Ἡ ὁδὸς πρὸς τὸν μακάριον τοῦτον ἀφανισμὸν ὁδηγεῖ μέχρις αὐτοῦ διὰ πολλῶν βαθμίδων. Λέγονται θεία ἐπαφή, ἔλλαμψις, ἔξαρσις, θεία ἕνωσις, ἡσυχία, ὕπνος, ὁ ἄνευ ὀνείρου ὕπνος. Ἡ κλῖμαξ αὕτη προσκτᾶται παρὰ Διονυσίῳ τῷ Ἀρεοπαγίτῃ κοσμικὴν σημασίαν, ἐπειδὴ ἡ πρὸς τὸν θεὸν ἀνάγουσα ὁδὸς συμφωνεῖ κατὰ πάσας αὐτῆς τὰς βαθμῖδας πρὸς τὴν κάθοδον τῆς θεότητος αὐτῆς ἐπὶ τῆς γῆς. Εἶναι αὐτονόητον ὅτι πρὸς τὸν μυστικισμὸν ἀντιτίθενται ὅλαι ἐκεῖναι αἱ ροπαί, αἵτινες ἐξαίρουσι τὸ ἰδιάζον καὶ τὸ προσωπικόν, ἀποφεύγουσι τὴν συγχώνευσιν καὶ τὴν ταύτισιν. Ἐντεῦθεν ἐξηγεῖται τὸ γεγονός, ὅτι οἱ γνήσιοι μυστικισταὶ ὅλων τῶν αἰώνων αἰσθάνονται τὴν ἱστορικὴν θρησκείαν ὡς κώλυμα, τὸ ὁποῖον δέον νὰ ὑπερνικηθῇ. Οὕτω ὁ Χριστὸς ἀποβαίνει ἐν τῷ χριστιανικῷ μυστικισμῷ ἁπλοῦν σύμβολον τῆς μεταξὺ ὑποκειμένου

Digitized by Google

ιὶ ἀντικειμένου ἄρσεως, τῆς ἄρσεως τοῦ μεταξὺ εοῦ καὶ ἀνθρώπου χωρισμοῦ, καὶ ὡς σημεῖον ῆς συντελεσθείσης μυστικῆς ἑνώσεως. Ὁ μυστισμὸς—λέγει ὁ van Leeuw—ἀποτελεῖ καὶ διὰ τὸν έλοντα νὰ παραμείνῃ ξένος πρὸς αὐτὸν διαρκῆ τόμνησιν τοῦ μὴ δεκτικοῦ λόγου, ὅπερ ἐνυπάρι ἐν τῷ προσώπῳ τοῦ θεοῦ καὶ ὅπερ μόνον ἐν οῖς ψελλίσμασι τῆς βαθείας εὐλαβείας καθίσται ὁπωσδήποτε προσιτὸν εἰς τὴν ἀνθρωπίνην ψυὴν, ὅταν ἡ ἀκτὶς τοῦ θείου φωτὸς εἰσδύσῃ εἰς ην ἀπὸ παντὸς αἰσθητοῦ ἐλευθερωθεῖσαν φύσιν οῦ ἀνθρώπου.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Mehlis*, Die Mystik in der Fülle ihrer rscheinungsformen (1926). — *Jaspers*, Psychologie der eltamchauungen (1922, β' ἔκδ.).— *Leisegang*, Denkformen 928).—*Lehmanu*, Mystik (1908).—*Clemen*, Die Mystik nach esen, Entwicklung und Bedeutung (1923).—*Heiler*, Die edeutung der Mystik für die Weltreligionen (1919).— *ıek*, Ursprung und Anfänge der jüdischen Mystik (1927). *Weber*, Christusmystik (1924).—*Schweitzer*, Die Mystik es Apostels Paulus (1930).—*Bousset*, Kyrios Christos (1921, ἔκδ.).—*Arseniew*, Die Kirche des Morgenlandes (1926). *utler*, Western Mysticism.—*Berrhart*, Die philosophische ystik des Mittelalters (1922).—*Schwarr*, Ueber neue Myik (1922, β' ἔκδ.)—*Knevels*, Brücken zum Ewigen (1929, ἔκδ.).—*Bremond*, Mysticisme et Poésie (1927).

Ν. Ι. ΛΟΥΒΑΡΙΣ

— *[Ψυχοπαθολ.]* Καλεῖται *μυστικισμὸς* πᾶσα καίστασις, φαινομένη ὡς ἐσωτερικὴ ἐπαφὴ ἢ ὡς 'ωσις τοῦ ἀτομικοῦ ἐγὼ πρὸς τὸ ὑπερατομικὸν 'ώ, ἤτοι τὴν ψυχὴν τοῦ κόσμου, τὸν θεόν, τὸ τόλυτον. Ἡ κατάστασις αὕτη ἀποτελεῖ τὸ ὑποιμενικὸν εἶδος τῆς θρησκευτικῆς ἐπικοινωνίας, ιτ' ἀντίθεσιν πρὸς τὸ σύνηθες εἶδος, τὸ ἀντικειενικόν. Προεκαλεῖτο δὲ καὶ προκαλεῖται διὰ μέων φαρμακευτικῶν, φυσικῶν ἢ ψυχολογικῶν, ὡς ιὶ τὸ πολὺ δὲ μικτῶν. Ἡ μεσκολίνη ἐν τῷ Μεκῷ, τὸ σόμα παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς, ὁ οἶνος παρ' Ἕλησιν ἦσαν τὰ συνηθέστερα τῶν φαρμακευτικῶν δῶν, ἐπικουρικὰ δὲ οἱ χοροί, ἡ μουσικὴ κ.τ.τ. ἱ χοροὶ καὶ αἱ κινήσεις ἐτελοῦντο ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ιαδικῶς. Εἰς τὸν Μωαμεθανισμόν, οἱ δερβίσαι πλείνες ὁμοῦ ἐτέλουν ταῦτα, ἵνα οὕτω σχηματίζει κοινωνία καὶ ψυχὴ ὁμαδική, ἀπορροφουμέης τῆς ἀτομικῆς ὑπὸ τῆς ὑπερατομικῆς τοιαύης καὶ διευκολυνομένης οὕτω τῆς ἐκστάσεως. Ἐξ οὗ ιὶ τὰ φυσικὰ μέσα ἔδρων ψυχολογικῶς. Εἰς ον Βραχμανισμὸν προεξῆρχον τὰ καθαυτὸ ψυχοογικὰ μέσα. Βάσις τῆς προκλήσεως τῆς ἐκστάεως ἦτο τὸ λεγόμενον σύστημα Yoga, συνιστάενον εἰς τὴν ἀποχήν, τὴν ἀπομόνωσιν τοῦ ἐγὼ ιὶ τὴν καθήλωσιν τῆς σκέψεως ἐν ἑαυτῇ. Κατὰ ον μεσαίωνα ἡ ἔκστασις ἠκολούθει τὴν ἀποιήτευσιν ἢ τὴν δευτεροπαθῆ συγκέντρωσιν (ψευοναρκισσισμὸν - ὑστερίαν), εἴτε τὴν πρωτοπαθῆ ιαύτην, ἤτοι τὸν γνήσιον ναρκισσισμόν, ἐπιουρικὴν δ' ἐνέργειαν ἤσκει ὁ ἀσκητισμός. Ἡ ιστεία ἔδρα τοξικῶς. Ἡ οὕτω προκαλουμένη ἔκτασις καὶ ἐν γένει μυστικὴ κατάστασις εἶναι ὀνειικὴ, ὑπονοϊκή, διεπομένη πάντοτε ὑπὸ τῆς κενιικῆς ἰδέας ἐπικοινωνίας, εἴτε ἐνσυνειδήτου εἴτε τοσυνειδήτου, ἐν ᾗ εὑρισκόμενον τὸ ἄτομον ζῇ ς ἐν ὀνείρῳ μετὰ ψευδαισθήσεων.

Πρὸς ἐπιτυχίαν τούτων ἀποβαίνει ἀναγκαία ἡ ρὸς τὴν κατεύθυνσιν ταύτην προπαρασκευὴ τοῦ ιρακτῆρος τοῦ ὑποκειμένου, ἀπαραιτήτως ἢ ὑστεκοῦ ἢ σχιζοειδοῦς. Καὶ δὴ προϋποτίθεται εἴτε αὐιερωτισμὸς ἢ ναρκισσισμὸς (ὑστερία) ἐκ ρήξεως ιαφῆς, ἢ σχιζοφρενία, ἤτοι ρῆξις τῆς ἐπαφῆς ἐκ ογκεντρώσεως. Ἡ δὲ τοξικὴ οὐσία καὶ ἡ ἐκ τῆς ιστείας αὐτοφαγία καὶ αὐτοδηλητηρίασις δρᾷ ὡς ρᾷ ἐπὶ τοῦ σχιζοειδοῦς χαρακτῆρος, ὅταν προκαλῇ οσον, ἤτοι ἐξαίρουσα τὴν νοσηρὰν τοῦ χαρακτῆος πλευρὰν καὶ ἄγουσα οὕτως εἰς παροδικὴν σχιοφρενίαν ἢ ψυχικὰς ὑστερικὰς προσβολὰς καὶ βαιηδὸν εἰς μόνιμον ἐγκατάστασιν ἀμφοτέρων.

Νευρασθένεια καὶ ἐπιληψία δὲν ἔχουσιν ἄμεσον έσιν πρὸς τὸν μυστικισμόν. Τ. Α. ΖΗΣ

**μυστικιστὴς** (ὁ)· ὁ ἀποδεχόμενος τὸ δόγμα τοῦ οστικισμοῦ.

**μυστικιστικός,** *—ή, —όν*· ὁ ἀναφερόμενος εἰς ιν μυστικισμόν, ὁ τοῦ μυστικισμοῦ.

**μυστικοδόκη** (ἡ) *[Ναυτ.]*. Παλαιὰ ὀνομασία ῦ διαμερίσματος, ἐν ᾧ ἦσαν τοποθετημένοι τῆς ρπίλλης οἱ ρυθμισταὶ τοῦ βάθους (τὸ ἐκκρεμὲς ιὶ τὸ ὑδροστατικὸν ἔμβολον). Σ. Ε. Λ.

**μύστικον** (τὸ) *[Ναυτ.]*. Εἶδος πλοίου. Ἐπικρατεέρα γραφὴ *μίστικον* (βλ. λ.).

**μυστικὸν** (τό)· οὐδ. τοῦ ἐπιθ. *μυστικός*, ὡς οὐσ., ιν ὅ,τι τηρεῖ τις ὡς ἀπόκρυφον, τὸ μὴ ἀνακοιοσιμον, τὸ ἀπόρρητον: «κατώρθωσα νὰ μάθω τὸ οστικόν», «δὲν κρατεῖ μυστικό»· || ὅ,τι ἰδιαιτέρως ἐναφέρει τινὰ ἵνα παραμείνῃ ἀπόκρυφον, τὸ ἐπ' οὐνὶ λόγῳ ἀνακοινούμενον: «ὁ καθένας ἔχει τὸ μυικό του», «τὸ μυστικό μου δὲν τὸ λέω οὔτε 'ς τὸν ευματικό»· || ὁ ἰδιαίτερος τρόπος ἐνεργείας, διὰ τοῦ τοίου ἐπιτυγχάνεταί τι ἐξαιρετικόν: «πρέπει νὰ οης τὸ μυστικό του γιὰ νὰ κάμῃς ὡραῖο γλυκό»· || ὁ μυστικὸ τῆς ὀμορφιᾶς, — τῆς νιότης».

**μυστικοπάθεια** (ἡ)· τὸ νὰ εἶναί τις μυστικοπαθής, ἡ ἀναζήτησις, ἡ ὑπόθεσις ἐν παντὶ σχεδὸν μυστηριώδους τινὸς δυνάμεως, μυστικισμός.

— *[Ἐγκυκλ.]* Βλ. *μυστικισμὸς* καὶ *μυστικὸν παραλήρημα* [ψυχοπαθ.]

**μυστικοπαθὴς** (ὁ, ἡ), *—ὲς* (τὸ)· ὁ ἀναζητῶν ἢ ὑποθέτων ἐν παντὶ σχεδὸν μυστηριώδη τινὰ ἰδιότητα ἢ δύναμιν, μυστικιστής.

**μυστικός,** *—ή, —όν*· μυστηριώδης, ἀπόκρυφος, ἄρρητος: «μυστικὴ κλῖμαξ,—θύρα», «μυστικὴ συνάντησις», —διαθήκη», «μυστικαὶ διαπραγματεύσεις, —συνθῆκαι, — ἐνέργειαι»· || ὁ ἐνεργῶν μυστηριωδῶς, ὁ μὴ ἀνακοινῶν τὰς σκέψεις ἢ τὰς ἐνεργείας του: «εἶναι πολὺ μυστικὸς 'ς τὶς δουλειές του»· || ὁ φυλάττων, ὁ κρατῶν τὸ μυστικόν: «εἶναι μυστικός, ὅ,τι κι' ἂν τοῦ πῇς, δὲν τὸ βγάνει ἀπὸ τὸ στόμα του»· || κατὰ παράλειψιν τοῦ ἀστυνομικός: «αὐτὸς εἶναι μυστικός»· || «μυστικαὶ ἐπιστῆμαι» ἐκεῖναι τῶν ὁποίων τὸ περιεχόμενον εἶναι μυστηριῶδες, οἷον ἡ ἀλχημεία, ἡ μαγεία, ἡ μαντικὴ κτλ.· || «μυστικὸς δεῖπνος» ὁ τελευταῖος δεῖπνος τοῦ Ἰησοῦ μετὰ τῶν μαθητῶν του.—Ἐπίρρ. ***μυστικῶς, μυστικά.***

—**μυστικαὶ *γλῶσσαι*·** βλ. λ. *συνθηματικαὶ* γλῶσσαι.

—**μυστικαὶ *ἐπιστῆμαι*·** βλ. λ. *ἀποκρυφολογία*.

— **μυστικαὶ *ἑταιρεῖαι*.** Καλοῦνται σωματεῖα καὶ τάγματα, τὰ ὁποῖα τηροῦσι μυστικοὺς τοὺς σκοποὺς αὐτῶν καὶ τὰς συνηθείας. Τοιαύτας ἑταιρείας εὑρίσκομεν καθ' ὅλους τοὺς αἰῶνας καὶ παρ' ὅλοις τοῖς λαοῖς, ἂν καὶ αἱ περὶ αὐτῶν εἰδήσεις εἶναι πενιχραί, ἕνεκα ἀκριβῶς τῆς σιωπῆς, ἥτις ὑπεβάλλετο ὑπ' αὐτῶν εἰς τὰ μέλη των. Χαρακτηριστικὸν διὰ τὴν φύσιν τῶν τοιούτων ἑταιρειῶν εἶναι τὸ γεγονὸς ὅτι σχεδὸν πᾶσαι ἐγεννήθησαν ὅπως χρησιμεύσουν ὡς ἀντίρροπον ἐναντίον τοῦ θρησκευτικοῦ, κοινωνικοῦ καὶ πολιτικοῦ βίου τῶν χρόνων τῆς συστάσεώς των. Ἡ πλειονότης τῶν νεωτέρων μυστικῶν ἑταιρειῶν σκοπεῖ εἰς τὴν ἐξευγένισιν καὶ τὴν διαφώτισιν τῶν ἀποτελούντων αὐτὰς μελῶν. Ἀλλ' ἐν ἀρχαιοτέροις χρόνοις ὑπῆρξαν ἑταιρεῖαι, τὰ ἐλατήρια τῆς συστάσεως τῶν ὁποίων δὲν ἦσαν ἠθικὰ ἢ ἀπεσκόπουν εἰς πολιτικὴν ἁπλῶς δύναμιν καὶ ἐπαναστατικὰς ἀνατροπάς. Κατὰ τὰς θεμελιώδεις ἀρχάς, αἱ ὁποῖαι διέπουσι τὰς μυστικὰς ἑταιρείας, δυνάμεθα νὰ διαιρέσωμεν αὐτὰς εἰς διαφόρους κατηγορίας. Οὕτω λ.χ. διακρίνομεν θρησκευτικάς, πολιτικάς, ἀστικάς, δικαστικάς, στρατιωτικάς, ἐπιστημονικάς, κοινωνικὰς μυστικὰς ἑταιρείας, ἂν καὶ τὰ μεταξὺ ἀλλήλων ὅρια εἶναι συνήθως ρευστὰ καὶ ἀκαθόριστα. Μέγα μέρος αὐτῶν δὲν εἶναι ἄμοιροι θρησκευτικοῦ χαρακτῆρος, ὡς π.χ. οἱ Ροδοσταυρῖται, οἱ Ἀλχημισταὶ κ.ἄ. Διὰ τοῦτο θὰ ἦτο δυνατὸν νὰ διαιρεθῶσιν αἱ μυστικαὶ ἑταιρεῖαι εἰς δύο ὁμάδας, τὰς θρησκευτικὰς ἐν τῇ γενικωτάτῃ τῆς λέξεως σημασίᾳ καὶ τὰς πολιτικάς. Εἰς τὰς πρώτας ἀνήκουσιν οἱ μυστικοὶ σύνδεσμοι τῶν ἀγρίων λαῶν, οἱ θρησκευτικοὶ θίασοι τῶν παλαιῶν, τὰ μυστήρια, ὁ κύκλος τῶν πυθαγορείων καὶ τῶν ὀρφικῶν, οἱ Ἐσσαῖοι, οἱ Ναΐται, οἱ Σουφὶ τῆς Περσίας, οἱ Δρουΐδαι κ.ἄ.π.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Deschamps*, Les sociétés secrètes, (1883). —*Baron*. Les sociétés secrètes (1907).—*Zaccone*, Histoire des sociétés secrètes politiques et eligieuses.—*Schuster*, Die Geheimgesellschaften κ.λ. (1906). Ν. Λ.

—**μυστικὴ *θεολογία*** *[Θρησκειολ.]*· βλ. λ. *μυστικισμός*.

— **μυστικὴ *φιλολογία*·** βλ. λ. *μυστικισμός*.

— **μυστικοὶ** (οἱ)· βλ. λ. *μυστικισμός*.

—**μυστικὸν *καταπίστευμα*** *[Κληρον. Δίκ.]*· βλ. λ. *καταπίστευμα* μυστικόν.

—**μυστικὸν *παραλήρημα*** *[Ψυχοπαθολ.]*. Καλεῖται οὕτω πᾶν παραλήρημα, ὅπερ ὁ πάσχων τηρεῖ μυστικόν, εἶναι δὲ τοῦτο κατὰ κανόνα ἢ θρησκευτικόν, ὅτε τηρεῖται μυστικόν, εἴτε διότι ὁ πάσχων ἔλαβε διαταγὴν ἐκ τοῦ θεοῦ (ψευδαισθητικῶς ἢ ἄλλως πως διδομένην) εἴτε διότι ὅταν πρόκειται νὰ ὁμιλήσῃ λαμβάνει ψευδαισθητικῶς διαταγὰς ἀπαγορευτικάς, εἴτε διότι κατ' ὄναρ ὑπεδείχθη αὐτῷ τοῦτο κτλ.· ἢ ἐρωτικόν, ὅτε διὰ λόγους συμφέροντος τηρεῖται μυστικόν. Ὁ πάσχων θεωρεῖ ἑαυτὸν θεὸν ἢ ἀντιπρόσωπον αὐτοῦ, ἐν δὲ τῇ δευτέρᾳ περιπτώσει περιζήτητον γαμβρὸν ἢ ἐραστήν. Οὐχὶ σπανίως ὁ κατεχόμενος ὑπὸ θρησκευτικοῦ παραληρήματος θεωρεῖ ἑαυτὸν διωκόμενον ὑπὸ τοῦ διαβόλου, ὁ δὲ ὑπὸ ἐρωτικοῦ ὅτι διώκεται ὑπὸ τῶν ἀντιζήλων του. Εἶναι πάθησις χρονία τὴν ἐξέλιξιν καὶ συγχέεται πρὸς τὴν σχιζοφρενίαν, ἧς διακρίνεται διότι διατηρεῖται εἰς αὐτὴν ἡ ἐπαφὴ καὶ ἡ ἀντίδρασις. Οὐχὶ σπανίως συνυπάρχουσιν ἢ ἐναλλάσσονται τὸ ἐρωτικὸν πρὸς τὸ θρησκευτικόν. Βασίζονται ἐπὶ εἰδικοῦ θρησκευτικοῦ χαρακτῆρος, καθισταμένου μονίμου διὰ τῆς ἕξεως. Τ. Α. Ζ.

—**μυστικὸς *διδάσκαλος*** (Maitre Secret, Secret Master) *[Τεκτον.]*. Ὁ κατέχων τὸν τέταρτον βαθμὸν τοῦ ἀρχαίου καὶ ἀποδεδεγμένου σκωτικοῦ δόγματος τοῦ ἐλευθεροτεκτονισμοῦ. Η. Π. Γ.

—**Μυστικὸς *δεῖπνος*** *[Βιβλ.]*. Ὁ τελευταῖος δεῖπνος τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ τῶν ἀποστόλων του, χαρακτηριζόμενος μυστικός, διότι κατ' αὐτὸν ἱδρύθη τὸ μυστήριον τῆς θείας εὐχαριστίας. Κατὰ τοὺς τέσσαρας εὐαγγελιστὰς τὸ δεῖπνον ἔλαβε χώραν τὴν παραμονὴν τῆς σταυρώσεως τοῦ Κυρίου, δηλαδὴ τὴν Μεγάλην Πέμπτην (*Ματθ*. κα' 20 κλπ.). Ἕνεκεν ὅμως ἀσαφείας τινὸς τῶν εὐαγγελιστῶν ἐγεννήθη ζήτημα, ἂν ἡ Μεγάλη Πέμπτη εἶναι ἡ 13η ἢ 14η τοῦ μηνὸς Νισὰν καὶ ἐὰν τὸ δεῖπνον τοῦτο ἦτο τὸ πασχάλιον, ὡς φαίνεται ἐν τοῖς συνοπτικοῖς εὐαγγελίοις ἢ ἐὰν ἐτελέσθη πρὸ τοῦ Πάσχα, ὡς φαίνεται ἐν τῷ δ' εὐαγγελίῳ. Ἀποκλειομένης διὰ πολλοὺς λόγους τῆς μεταξὺ τῶν εὐαγγελιστῶν ἀντιφάσεως, διετυπώθησαν πρὸς ἐπίλυσιν τοῦ ζητήματος τούτου τρεῖς κύριαι γνῶμαι: α') Ἡ γνώμη τῶν προσπαθούντων νὰ ἐναρμονίσωσι τοὺς συνοπτικοὺς πρὸς τὸν Ἰωάννην. Οὗτοι δέχονται, ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐτέλεσε τὸν πασχάλιον δεῖπνον κατὰ τὴν 14 καὶ ἐσταυρώθη κατὰ τὴν 15 τοῦ Νισάν, δηλαδὴ κατ' αὐτὴν τὴν ἑορτὴν τοῦ Πάσχα. β') Ἡ ἤδη ἀπὸ τοῦ Β' μ. Χ. αἰῶνος ἐμφανιζομένη θεωρία, καθ' ἣν ὁ Ἰησοῦς ἔφαγε τὸν πασχάλιον δεῖπνον οὐχὶ κατὰ τὴν νόμιμον ἡμέραν (14 Νισάν), ἀλλὰ μίαν ἡμέραν ἐνωρίτερον. γ') Ἡ θεωρία τῶν ὁρμωμένων ἀπὸ τοῦ σημερινοῦ ἡμερολογίου τῶν Ἰουδαίων καὶ δεχομένων, ὅτι ὅπως καὶ σήμερον οὕτω καὶ τότε τὸ πάσχα θὰ μετετέθη διὰ τὸ Σάββατον, ἐπειδὴ συνέπεσε Παρασκευήν, ἀλλ' ὅτι ὁ Ἰησοῦς, ὅπως ποιοῦσιν εἰς παρεμφερεῖς περιστάσεις καὶ σήμερον αὐστηροὶ Ἰουδαῖοι, δὲν συνεμορφώθη πρὸς τὴν μετάθεσιν ταύτην. Ἡ ἐκδοχὴ αὕτη εἶναι ἡ πιθανωτέρα πασῶν. Π. Ι. Μ.

**μυστικοσυμβούλιον** (τό). Σῶμα συλλογικόν, ἀναπτυχθὲν κατὰ τὸν μεσαίωνα εἰς τὰς μοναρχικὰς πολιτείας καὶ ἱστάμενον ἱεραρχικῶς ἀμέσως μετὰ τὸν μονάρχην. Ἀπετελεῖτο ἐξ ἀνωτάτων τινῶν ὑπαλλήλων (μυστικοσυμβούλων) καὶ ἔδρα κατ' ἀρχὰς μὲν ὡς συλλογικὸν ὄργανον τοῦ κράτους, συζητοῦν καὶ ἀποφασίζον μετὰ τοῦ μονάρχου τὰς σπουδαιοτέρας ὑποθέσεις τῆς πολιτείας, βραδύτερον δὲ ἁπλῶς ὡς συμβουλευτικὸν σῶμα, γνωμοδοτοῦν περὶ τῶν νομοθετικῶν ἢ καὶ τῶν διοικητικῶν ζητημάτων τοῦ κράτους. Τοιαῦτα μυστικοσυμβούλια ἦσαν γνωστὰ ἐν Ἀγγλίᾳ τὸ «Privy Council», ἐν Γαλλίᾳ τὸ «Conseil du Roi» καὶ ἐν ταῖς γερμανικαῖς ἡγεμονίαις τὸ «Getreimer Rat». Διὰ τῆς ἀναπτύξεως τοῦ ἀντιπροσωπευτικοῦ συστήματος ἡ ἐξουσία τῶν μυστικοσυμβουλίων ἤρχισε νὰ περιορίζεται, διὰ τῆς καθιερώσεως δὲ τοῦ κοινοβουλευτισμοῦ μὲ τὸ σύστημα τῶν ὑπευθύνων ὑπουργῶν περιῆλθεν εἰς παντελῆ σχεδὸν ἀφάνειαν. Μόνον εἰς τὰς γερμανικὰς ἡγεμονίας διετηροῦντο ἀκόμη τὰ μυστικοσυμβούλια ὡς συμβουλευτικὰ σώματα μέχρι τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου, ἀλλὰ καὶ ἐκεῖ διὰ τῆς ἱδρύσεως τῶν νέων δημοκρατιῶν κατηργήθησαν πλήρως. Χ. Γ. Σ.

**μυστικοσύμβουλος** (ὁ)· ὁ μυστικὸς σύμβουλος, ἐκεῖνος τὸν ὁποῖον συμβουλεύεταί τις μετ' ἐμπιστοσύνης, ὁ ἔμπιστός τινος.

**μυστικότης,** *—ητος* (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μυστικοῦ, τὸ νὰ κρατῆταί τι ἀπόρρητον, ἀπόκρυφον: «οἱ κυβερνῶντες τηροῦσιν ἀπόλυτον μυστικότητα».

**Μυστρᾶς,** ἢ ***Μιστρᾶς*** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Λακεδαίμονος τοῦ νομοῦ Λακωνίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐπὶ τῶν Α. κλιτύων τοῦ Ταϋγέτου, 5 χλμ. πρὸς Δ. τῆς Σπάρτης, μεθ' ἧς συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ. Τοῦ χωρίου ὑπέρκεινται τὰ λαμπρὰ ἐρείπια τοῦ μεσαιωνικοῦ *Μυστρᾶ*, τὰ ὁποῖα προσελκύουν κατ' ἔτος μέγαν ἀριθμὸν ἀρχαιολόγων καὶ φιλοτέχνων ἐκ τῆς Ἑλλάδος καὶ τῆς ἀλλοδαπῆς. Τὸ χωρίον ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον· παράγει ἔλαιον, ἑσπεριδοειδῆ σῦκα κλπ., ἔχει δὲ πλούσιον κυνήγιον ἀγριοπεριστερῶν καὶ λατομεῖα μυλόπετρας. Κατ' ἔτος τελεῖται μεγάλη λαϊκὴ ἐμποροπανήγυρις (26—31 Αὐγούστου). Κάτ. (1928) 739. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία καὶ συνοικισμοὺς *Βαρσινῖκος, Βλαχοχώρι, Διάσελον, Κάτω Χώρα* (Μυστρᾶ) *Παρώρι* καὶ *Πικουλιάνικα*. Χ. Δ.

—[ΙΣΤΟΡ.] ***Ἡ κτίσις τοῦ Μυστρᾶ.*** Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατόπιν τῆς Δ' σταυροφορίας (1204), οἱ ποικιλώνυμοι λαοὶ τῆς Δύσεως, οἱ Λατῖνοι, οἱ Φράγκοι ὅπως κοινῶς λέγονται, ἵδρυσαν τὴν λατινικὴν αὐτοκρατορίαν τῆς Ρωμανίας καὶ διενεμήθησαν ὡς κατακτηταὶ τὰς ἑλληνικὰς χώρας. Τὸ λαμπρότερον ἀπὸ ὅλα τὰ κράτη, τὰ ὁποῖα ἵδρυσαν οἱ Φράγκοι, ὑπῆρξε τὸ γαλλικὸν πριγκιπᾶτον τοῦ Μορέως ἢ τῆς Ἀχαΐας. Μὲ πολὺν κόπον ὁ πρῶτος πρίγκιψ Γοδοφρεῖδος Βιλλαρδουῖνος ἐκυρίευσε τὴν Λακεδαιμονίαν, μόλις δὲ τῷ 1248, διὰ τῆς ἁλώσεως τῆς Μονεμβασίας, συνεπλήρωσεν ὁ Γουλιέλμος Βιλλαρδουῖνος

Digitized by Google

τὴν κατάκτησιν τῆς Λακωνίας καὶ ἓν ἔτος κατόπιν, ἀντιληφθεὶς τὴν στρατηγικὴν ἀξίαν τοῦ λόφου τοῦ Μυστρᾶ, ἔκτισεν ἐπ' αὐτοῦ τὸ κάστρον, τὸ ὁποῖον καὶ σήμερον, σῳζόμενον σχεδὸν ἄρτιον, στεφανώνει γραφικώτατα τὸ βουνόν.

«Βουνὶν εὗρε παράξενον ἀπόκομμα εἰς ὄρος,
Κάστρον ἐποῖκε ἀφηρόν, Μυζηθρᾶν ὠνόμασέ το,

κατὰ τὸ «Χρονικὸν» τοῦ Μορέως.

Τὸ ὄνομα ἴσως προῆλθεν ἀπὸ τὸ σχῆμα, διότι ὁ λόφος εἶναι κωνοειδής, πιθανώτερον δὲ ἀπὸ τὸ ὄνομα τοῦ κατέχοντος τοῦ λόφου ἐγχωρίου τοπάρχου, ὁ ὁποῖος ἐλέγετο Μυζηθρᾶς (ἐκ τοῦ μυζάω). Ὅλαι αἱ ἄλλαι ἐτυμολογίαι τοῦ ὀνόματος εἶναι ἐσφαλμέναι. Οἱ Βυζαντινοὶ ἱστορικοὶ ὀνομάζουν συνήθως τὸν Μυστρᾶν, κατὰ τὴν συνήθειάν των, μὲ τὰς ἀρχαίας λέξεις Σπάρτην ἢ καὶ Λακεδαιμονίαν.

Εἰς τὸ ἰσχυρὸν κάστρον τοῦ Μυστρᾶ ἀνέβησαν ἀμέσως μετὰ τὴν κτίσιν οἱ Γάλλοι ἱππόται καὶ πολεμισταί, οἱ ὁποῖοι ὤφειλον νὰ «φυλάττουν τὸν τόπον». Ἀλλ' ἡ φραγκικὴ φρουρὰ δὲν ἔμεινε πολὺν χρόνον εἰς τὸ ἀπόκρημνον κάστρον, διότι ὁ πρίγκιψ Γουλιέλμος πολὺ ὀλίγον χρόνον, μόλις 10 ἔτη, ἠδυνήθη νὰ κρατήσῃ τὸ κάστρον τοῦ Μυστρᾶ, συλληφθεὶς αἰχμάλωτος ὑπὸ τοῦ Ἕλληνος αὐτοκράτορος εἰς τὴν μάχην τῆς πεδιάδος τῆς Πελαγονίας, εἰς τὴν ὁποίαν ἔπεσε τὸ ἄνθος τῶν ἱππότων τοῦ Μορέως (1259). Ἀφοῦ ἔμεινε δέσμιος ἐπὶ τρία ὅλα ἔτη, συνεφωνήθη νὰ ἐλευθερωθῇ μὲ τοὺς βαρώνους, ἀλλὰ νὰ δώσῃ εἰς τοὺς Ἕλληνας τρία ἰσχυρὰ κάστρα τῆς Λακωνίας. Ἦσαν δὲ ταῦτα τὰ κάστρα τοῦ Μυστρᾶ, τῆς Μονεμβασίας καὶ τῆς Μάνης, εἰς τὰ ὁποῖα προστίθεται ὑπὸ τῶν Βυζαντινῶν ἱστορικῶν τὸ κάστρον τοῦ Γερακίου καὶ αἱ πόλεις Ἄργος καὶ Ναύπλιον. Τὰ τρία λακωνικὰ κάστρα ἦσαν ἀκριβῶς ἐκεῖνα, τὰ ὁποῖα ἀπέβησαν βραδύτερον ἑστίαι τῆς ἑλληνικῆς ἀναγεννήσεως. Ἀπὸ τότε, τὰς ἀρχὰς τοῦ 1262, οἱ Ἕλληνες ἔβαλον τὸν πόδα εἰς τὴν Λακωνίαν, ἐπέστρεψε δὲ καὶ ὁ πρίγκιψ εἰς τὴν Πελοπόννησον.

Ὅτε ὁ Γουλιέλμος ἦλθεν εἰς τὴν Λακεδαιμονίαν, ἡ φρουρὰ τοῦ Μυστρᾶ ἐφοβήθη μήπως ἐπιτεθῇ ὁ πρίγκιψ, συνεννώθη μὲ τοὺς Σλάβους Μελίγγους καὶ ἐμήνυσεν εἰς τὸν διοικητὴν τῆς Μονεμβασίας (πιθανώτατα τὸν Μιχαὴλ Καντακουζηνὸν) ὅτι ὁ Βιλλαρδουῖνος διέρρηξε τὴν εἰρήνην. Ἐστάλη τότε εἴδησις εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ ὁ αὐτοκράτωρ Μιχαὴλ ἀπέστειλεν εἰς τὸν Μορέαν στρατὸν μὲ τὸν στρατηγὸν Μακρινὸν (τὸ ἔαρ τοῦ 1263) καὶ τὸν μέγαν δομέστικον Καντακουζηνόν. Ὁ Μακρινὸς ἐκυρίευσε τὸ τρίτον τοῦ Μορέως καὶ ἐπολιόρκησε τὴν Λακεδαιμονίαν, εἰδοποίησε δὲ τὸν Μιχαήλ, ὁ ὁποῖος ἔστειλε τὸν μέγαν δομέστικον Κωνσταντῖνον. Εἰς τὴν Πρινίτσαν ἡττήθησαν οἱ Ἕλληνες καὶ ὁ σεβαστοκράτωρ κατέφυγεν εἰς τὸν ἀσφαλῆ Μυστρᾶν. Τὸ ἐπόμενον ἔαρ τοῦ 1264 συνήθροισεν ὁ σεβαστοκράτωρ καὶ ὁ Μακρινὸς πολυάριθμον στρατὸν ἀπὸ τοὺς Τσάκωνας, Μιλιγγούς, Μονεμβασιώτας καὶ Ἀρκάδας καὶ συνηντήθησαν μὲ τοὺς Φράγκους παρὰ τὸ Μακρυπλάγι (πλησίον τῆς Μεγαλοπόλεως). Ὁ μέγας δομέστικος Καντακουζηνὸς εἶχε φονευθῆ, οἱ δὲ Ἕλληνες καὶ πάλιν ἡττήθησαν. Τότε ὁ σεβαστοκράτωρ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν. Ὁ διαδεχθεὶς τὸν Καντακουζηνὸν μέγας δομέστικος Ἀλέξιος Φιλῆς καὶ ὁ Μακρινὸς συνελήφθησαν αἰχμάλωτοι. Ὁ Φιλῆς ἀπέθανε φυλακισμένος εἰς τὸ μέγα κάστρον Χλεμούτσι, ὁ δὲ Μακρινός, ἀνταλλαγεὶς μὲ Γάλλους αἰχμαλώτους, ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ὑπέπεσεν ὑπὸ τὴν δυσμένειαν τοῦ αὐτοκράτορος. Μετὰ τὰς νίκας ταύτας ὁ Γουλιέλμος μετέβη εἰς τὴν Λακεδαιμονίαν καὶ ἀπεφάσισε νὰ ἐπιτεθῇ κατὰ τοῦ Μυστρᾶ, ἐκεῖθεν δὲ ὁρμώμενος ν' ἀνακτήσῃ τὰ ἀπολεσθέντα.

Ὅταν ὁ Γουλιέλμος ἔφθασεν εἰς τὴν Λακεδαιμονίαν, τῷ 1264, οἱ περισσότεροι Ἕλληνες εἶχον καταφύγει εἰς τὸν Μυστρᾶν. Ὁ πρίγκιψ δὲν ἔμεινε πολὺ ἐκεῖ, διότι ἠναγκάσθη νὰ ὑπάγῃ εἰς τὴν Ἀρκαδίαν, ὅπου ἔγινεν ἐπανάστασις. Τότε ἤρχισεν ὁριστικῶς νὰ ἐγκαταλείπεται ἡ Λακεδαιμονία χάριν τοῦ Μυστρᾶ. Κατὰ τοὺς χρόνους λοιπόν, κατὰ τοὺς ὁποίους ἡ βυζαντινὴ Λακωνία διῳκεῖτο ἀπὸ στρατηγούς, ἤρχισε νὰ οἰκίζεται εἰς τοὺς πόδας τοῦ κάστρου ὁ Μυστρᾶς (πρὸ τοῦ 1300).

Κατὰ τοὺς χρόνους τούτους ἀπέθνησκον καὶ οἱ δύο πρωταγωνισταὶ τῆς τότε ἱστορίας τῶν ἑλληνικῶν χωρῶν, ὁ μεγαλόφρων Γάλλος πρίγκιψ Γουλιέλμος Βιλλαρδουῖνος (1278) καὶ ὁ κρατερὸς Ἕλλην μονάρχης Μιχαὴλ Η' ὁ Παλαιολόγος (1282). Ὁ θάνατος τοῦ Γουλιέλμου Βιλλαρδουΐνου ἦτο πλῆγμα καίριον κατὰ τῆς ἀρχῆς τῶν Φράγκων εἰς τὴν Πελοπόννησον. Ἤδη ὁ φραγκικὸς Μορέας ἔγινε προσάρτημα τῶν κτήσεων τοῦ Ἀνδεγαυϊκοῦ οἴκου τῆς Νεαπόλεως καὶ κατὰ τὰ τέλη τοῦ ΙΓ' αἰῶνος πρίγκιψ τοῦ Μορέως ἔγινεν ὁ Φλωρέντιος ὁ Ἀνναγαυϊκὸς (1289—1297) διὰ τοῦ γάμου αὐτοῦ μὲ τὴν κόρην τοῦ Γουλιέλμου, τὴν περίφημον Ἰσαβέλλαν Βιλλαρδουΐνην. Ὁ Φλωρέντιος συνωμολόγησεν εἰρήνην μὲ τὸν νέον αὐτοκράτορα, τὸν Ἀνδρόνικον Β'. Τοιουτοτρόπως ἡ Πελοπόννησος ἐπὶ ἑπτὰ ἔτη ἀπέλαυσεν ἡσυχίας, καθ' ὃν χρόνον ἐστερεώνετο ἡ δύναμις τοῦ ἐν Μυστρᾷ Ἕλληνος στρατηγοῦ.

Ὁ πρῶτος μετὰ τὴν ἀνάκτησιν τῶν κάστρων καὶ ὅλης τῆς Λακωνίας μνημονευόμενος στρατηγός, τῷ 1263, εἶναι ὁ Μιχαὴλ Καντακουζηνός, ὅστις ἐφονεύθη εἰς ἀτυχῆ μάχην κατὰ τῶν Φράγκων (1264). Ἔκτοτε εὑρίσκομεν πάντοτε νὰ ἑδρεύῃ εἰς τὸν Μυστρᾶν *στρατηγὸς* ἢ *κεφαλή*, ὡς ἐλέγετο κοινῶς, κεφαλὴ τοῦ βασιλέως, ὁ ὁποῖος μάλιστα ἔχει πολλὴν δικαιοδοσίαν. Ὁ στρατηγὸς εἶχεν ἐνιαύσιον ἀρχήν. Κατὰ τὴν ἐποχὴν τῶν ἐνιαυσίων στρατηγῶν, πρὸ τοῦ 1300, ὁ Μορέας ἤκμασε, διότι εἶχε συναφθῆ εἰρήνη μὲ τοὺς Φράγκους. Ὁ Ἀνδρόνικος Β' (1282—1328) κατενόησεν ὅτι ἡ ἕως τότε διοίκησις τῆς ἑλληνικῆς Πελοποννήσου ὑπὸ στρατηγῶν, ὁ ὁποῖος μόνον ἓν ἔτος ἔμενεν εἰς τὴν ἀρχήν, δὲν ἦτο χρήσιμος εἰς τὰ αὐτοκρατορικὰ συμφέροντα, καὶ διὰ τοῦτο παρέτεινεν ἐπ' ἀόριστον τὴν διάρκειαν. Κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος εὑρίσκομεν διαρκῆ στρατηγὸν τὸν Καντακουζηνόν, πατέρα τοῦ μετέπειτα αὐτοκράτορος, ὁ ὁποῖος ἐστάλη εἰς τὸν Μυστρᾶν νεώτατος, εἰς ἡλικίαν 21 ἐτῶν, καὶ εἰργάσθη ἐν πλήρει νεανικῇ ὁρμῇ ὑπὲρ τοῦ αὐτοκράτορος ἐπὶ ὀκτὼ ἔτη, ἕως ὅτου ἐφονεύθη εἰς σύγκρουσιν, ὡς φαίνεται, μὲ τοὺς Φράγκους τῷ 1316. Κατὰ τοὺς χρόνους αὐτοῦ, ὡς μνημονεύουν αἱ πηγαί, ἐκτίσθησαν πολλαὶ ἐκκλησίαι εἰς τὴν Πελοπόννησον, καὶ ὁ μητροπολίτης Λακεδαιμονίας μετεφέρθη εἰς Μυστρᾶν. Ἡ Λακεδαιμονία προήχθη εἰς μητρόπολιν ἐπὶ Ἀλεξίου τοῦ Κομνηνοῦ. Ὁ πρῶτος ἀναγραφόμενος μητροπολίτης Λακεδαιμονίας ἐν Μυστρᾷ εἶναι ὁ κτίτωρ τοῦ ναοῦ τῆς μητροπόλεως, ὁ Νικηφόρος, ὁ ὁποῖος προφανῶς κατεσκεύασε περὶ τὸν ναὸν τὸ μητροπολιτικὸν μέγαρον. Τοῦ Νικηφόρου διάδοχος ὑπῆρξεν ὁ μητροπολίτης Ματθαῖος, ὁ ὁποῖος ἀνεκαίνισε τὸν μητροπολιτικὸν ναόν. Ἀκόμη μὲ μεγαλυτέραν δραστηριότητα εἰργάσθη εἰς τὸν Μυστρᾶν ὁ διάδοχος τοῦ Καντακουζηνοῦ, ὁ Ἀνδρόνικος Παλαιολόγος Ἀσάν, υἱὸς τοῦ πρώην βασιλέως τῆς Βουλγαρίας Ἰωάννου Ἀσάν, ὁ ὁποῖος τοὐλάχιστον πέντε ἔτη (ἕως τὸ 1321) ἔμεινεν εἰς τὸν Μυστρᾶν. Ἄξιον σημειώσεως εἶναι ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ στρατηγοῦ Καντακουζηνοῦ, ὁ ἔπειτα περίφημος αὐτοκράτωρ Ἰωάννης ΣΤ' ὁ Καντακουζηνός, διωρίσθη ὑπὸ τοῦ Ἀνδρονίκου Β', μετὰ τὸν Ἀσάν, στρατηγὸς ἐν Πελοποννήσῳ, ἀλλὰ δὲν μετέβη, διότι ἔκτοτε ἐφιλοδόξει τὸν θρόνον. Κατὰ τὰ ἔτη ταῦτα, περὶ τὸ 1320, κατώρθωσεν ὁ Ἀσὰν νὰ ἐπεκτείνῃ τὴν Βυζαντινὴν αὐτοκρατορίαν καὶ νὰ ἀνακτήσῃ μέγα μέρος τῆς Ἀρκαδίας. Οὕτω, ἐκτὸς τῆς Λακωνίας, μία ἀκόμη ἐπαρχία ἔπεσεν εἰς χεῖρας τῶν Ἑλλήνων. Ἡ φραγκικὴ κυριαρχία περιωρίσθη εἰς τὴν Ἤλιδα καὶ τὴν Μεσσηνίαν. Ὁ Ἰωάννης Καντακουζηνὸς δὲν παρέμεινεν ὡς στρατηγὸς εἰς τὴν Πελοπόννησον, ἀλλὰ φαίνεται ὅτι μετέβη εἰς τὸν Μορέαν, τὸν ὁποῖον διῴκει δι' ἰδικῶν του ὑπαλλήλων, ὥστε ἐγνώριζε καλὰ τὸν τόπον. Τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος ἡ Λακωνία ἐδόθη ὡς κληρονομία (apanage) εἰς τὸν δευτερότοκον ἡγεμονόπαιδα τοῦ αὐτοκρατορικοῦ οἴκου τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Τὸ σύστημα τῆς διοικήσεως τοῦ ἑλληνικοῦ Μορέως διὰ στρατηγῶν διήρκεσεν ἕως τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ὅτε ἀνυψώθη ὁ Μυστρᾶς εἰς πρωτεύουσαν ἑλληνικῆς ἡγεμονίας, ἤτοι δεσποτάτου. Οὕτω ἡ πρώτη περίοδος τῆς ἱστορίας τοῦ Μυστρᾶ διήρκεσεν ὀλιγώτερον τοῦ ἑνὸς αἰῶνος (1261—1348). Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην εἶχεν ἤδη προχωρήσει ἡ οἰκοδόμησις τοῦ Μυστρᾶ καὶ ἡ ἀνάπτυξις αὐτοῦ ὡς πόλεως. Συγχρόνως διωργανώνετο ὁ Μυστρᾶς ὡς κέντρον πολιτικῆς καὶ στρατιωτικῆς διοικήσεως. Ὅτε ἀνῆλθεν εἰς τὸν θρόνον ὁ Ἰωάννης ΣΤ' ὁ Καντακουζηνός, ἔλαβε μέτρα ῥιζικώτερον ὡς πρὸς τὴν Πελοπόννησον μὲ τὴν συνήθη τόλμην αὐτοῦ. Βλέπων τὴν μεγάλην ἀναρχίαν, ἡ ὁποία ἐπεκράτει εἰς τὸν Μορέαν, εὗρεν ὅτι τὸ καλύτερον μέσον ἦτο ἡ μόνιμος διοίκησις, καὶ τότε ἔκαμε τὴν ἀπόφασιν νὰ στείλῃ εἰς τὴν Πελοπόννησον ὡς διοικητὴν ὄχι ἁπλοῦν στρατηγόν, ἀλλ' ἀνώτερον καὶ μόνιμον ἄρχοντα, εἶναι δ' οὗτος ὁ ἔχων τὴν προσωνυμίαν *δεσπότης*.

***Τὸ δεσποτᾶτον τοῦ Μυστρᾶ.*** Ὁ αὐτοκράτωρ Ἰωάννης ΣΤ' Καντακουζηνὸς ἔστειλε μὲ μεγάλην ἐπισημότητα ὡς δεσπότην εἰς τὸν Μυστρᾶν, τὰ τέλη τοῦ 1348, τὸν δευτερότοκον υἱόν του Μανουήλ, ὁ ὁποῖος ἐγκατεστάθη εἰς τὸν Μυστρᾶν καὶ ἤρχισε δραστηρίως τὸ ἔργον αὐτοῦ μὲ μεγάλας ἐλπίδας. Εὐθὺς μόλις ἀνέλαβε τὴν ἀρχὴν ὁ Βυζαντινὸς ἡγεμών, προσέκρουσεν εἰς τὰς ἀπαιτήσεις τῶν ἐγχωρίων. Οἱ φύλαρχοι, οἱ ὁποῖοι ἔζων τόσον καιρὸν ἀνεξάρτητοι, αἱ πόλεις καὶ τὰ χωρία, τὰ ὁποῖα εἶχον τὰ προνόμιά των, αἱ ἀνυπότακτοι φυλαὶ τῶν ὀρέων δὲν εἶδον μὲ καλὸν ὄμμα τὸν ἰσόβιον ἡγεμόνα των νὰ ἐγκαθίσταται εἰς τὸν Μυστρᾶν. Δύο ἦσαν οἱ μεγάλοι σκοποὶ τοῦ δεσπότου. Πρῶτον νὰ ἑνώσῃ ὅλας τὰς ἑλληνικὰς δυνάμεις, ν' ἀναπτερώσῃ τὸ φρόνημα καὶ ἔπειτα νὰ ἐκδιώξῃ τοὺς Φράγκους καὶ ν' ἀποκρούσῃ τὸν νέον φοβερὸν ἐχθρόν, τοὺς Τούρκους.

Ὅταν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰωάννης Καντακουζηνὸς παρῃτήθη ἀπὸ τὸν θρόνον (τῷ 1355), εὗρον εὐκαιρίαν οἱ κάτοικοι νὰ ἐπαναστατήσουν ἐναντίον τοῦ δεσπότου, τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ Μανουήλ. Πιθανὸν δὲ εἶναι ὅτι ἡ ἐπανάστασις ὑπεκινήθη ἐκ Κωνσταντινουπόλεως ὑπὸ τῆς αὐλῆς τῶν Παλαιολόγων, ἡ ὁποία δὲν ἔβλεπεν εὐχαρίστως ἕνα Καντακουζηνὸν ἡγεμόνα εἰς τὴν Πελοπόννησον. Τό[…] ἐστάλη ἀπὸ τὴν Κωνσταντινούπολιν ὑπὸ τῆς αὐ[λῆς] τῶν Παλαιολόγων εἰς τὸν Μυστρᾶν εἷς νέος αὐ[…]τοκρατορικὸς ἐπίτροπος ὡς διοικητής, ὁ Ἀσάν, ὁ ὁποῖος ἔγινε δεκτὸς ὡς ἐλευθερωτής. Ὁ δεσπότης Μανουὴλ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ μὲ τοὺς στρατιώτας του εἰς τὸ κάστρον τῆς Μονεμβασίας, ὅ[που] ἦτο ἀσφαλής. Ἀλλ' οἱ ἄστατοι τότε Πελοποννήσιοι ἐξηγέρθησαν ταχέως καὶ ἐναντίον τοῦ Ἀσ[άν], τὸν ὁποῖον ἐξεδίωξαν, καὶ ἀνεκάλεσαν τὸν Μανουὴλ εἰς τὸ ἀξίωμά του. Ἡ αὐλὴ τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἠναγκάσθη νὰ στηρίξῃ αὐτὸν εἰς τ[ὴν] ἐξουσίαν του, τὴν ὁποίαν ἐκράτησεν ἐπὶ μακ[…] (ἕως τὸ 1380). Ὁ πρῶτος οὗτος δεσπότης τῆς Πελοποννήσου, ὁ Μανουὴλ Καντακουζηνός, ἐ[…] εὐεργετικὸς εἰς τὴν χώραν, διότι ἦτο ἀνὴρ συνετ[ὸς] καὶ γενναιόφρων. Δὲν ἔπαυσε νὰ ἐργάζεται πρ[ὸς] περιορισμὸν τῶν Φράγκων καὶ ἐδημιούργησε στ[ό]λον διὰ νὰ φυλάττῃ τὰ παράλια τῆς Πελοποννήσου ἀπὸ τὰς ἐπιδρομὰς τῶν πειρατῶν. Ἐπὶ τ[ῆς] ἀρχῆς αὐτοῦ ἡ χώρα εὐημέρησε καὶ ὁ Μυστρᾶ[ς] καὶ ἄλλα μέρη τῆς χώρας, ἐκοσμήθησαν δι' ἐκκλησιῶν καὶ ἄλλων κτισμάτων.

Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Μανουὴλ οἱ Καντακουζηνοὶ ἀπεφάσισαν νὰ ἐξασφαλίσουν τὸ δεσποτᾶτο[ν] διὰ τὸν οἶκον αὐτῶν. Διάδοχος αὐτοῦ ἔγινε ὁ πρεσβύτερος ἀδελφός του Ματθαῖος (1380—13[…]) ὁ ἄλλοτε αὐτοκράτωρ. Πλησίον τοῦ Ματθαίου δ[ιέ]τριβεν εἰς τὸν Μυστρᾶν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, ὁ γέ[ρων] αὐτοκράτωρ Ἰωάννης. Ὁ Ματθαῖος ἦτο συνετὸς καὶ γενναῖος, ἐκυβέρνα καλῶς, ἀλλ' ὁ ἀνήσυχος καὶ ὑπερφίαλος υἱός του, ὁ σεβαστοκράτωρ Δημήτριος, ἠθέλησε καὶ αὐτὸς νὰ διευθύνῃ, καὶ οὕτω περιῆλθον τὰ πράγματα τοῦ δεσποτάτου εἰς μεγάλην ταραχήν. Ὅτε ἀπέθανεν ὁ Ματθαῖος (13[…]) καὶ μετ' ὀλίγον ἠκολούθησεν αὐτὸν εἰς τὸν τάφον καὶ ὁ πατήρ του, κατέλαβεν ὁ Δημήτριος τ[ὴν] κυβέρνησιν τοῦ δεσποτάτου (τῷ 1383 — 1384) κ[αὶ] ἐζήτησε νὰ διακόψῃ κάθε δεσμὸν ἐξαρτήσεως ἀ[πὸ] τὴν Κωνσταντινούπολιν. Τὸν οἶκον τῶν Καντακουζηνῶν, ὅπως καὶ εἰς τὴν πρωτεύουσαν, οὕτω κ[αὶ] εἰς τὴν Πελοπόννησον ἀντικατέστησεν ὁ νόμιμ[ος] ἐν Κωνσταντινουπόλει οἶκος τῶν Παλαιολόγων.

Οἱ Παλαιολόγοι ἀνερχόμενοι τὰ τέλη τοῦ Ι[Δ'] αἰῶνος εἰς τὸν δεσποτικὸν θρόνον τοῦ Μυστρᾶ π[α]ρελάμβανον βαρυτάτην κληρονομίαν ἀπὸ τοὺς Καντακουζηνοὺς καὶ εὕρισκον τὴν χερσόνησον εἰς πραγματικῶς ἀνάστατον κατάστασιν. Τὸ γαλλικὸ[ν] πριγκιπᾶτον εἶχεν ἤδη κολοβωθῆ ἀρκετὰ ἀπὸ τ[ὰ] μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἦτο δὲ ἰδίως περιωρισμένο[ν] εἰς τὰ ΒΔ. τῆς χερσονήσου καὶ τὴν Ἤλιδα. Μετ[ὰ] τὸν θάνατον τῆς τελευταίας ἀπογόνου τῶν Βιλλαρδουΐνων, τῆς Ἰσαβέλλας (1307), ἔγινεν ἐρισ[…] μεταξὺ τῶν οἴκων Ἀνδεγαυϊκοῦ, Βουργουνδικοῦ, Ἀνναγαυϊκοῦ, Μαγιορκινοῦ, ἀκόμη δὲ καὶ τοῦ ἐ[κ] Κύπρου οἴκου τῶν Λουζινιάν. Οἱ Ἐνετοὶ κατεῖχο[ν] πάντοτε τὰς πέντε παραλίους πόλεις, τὸ Ναύπλιο[ν], ἰδίως τὴν Μεθώνην καὶ τὴν Κορώνην μὲ τὴν π[ε]ριοχὴν αὐτῶν, συχνὰ δὲ διεπληκτίζοντο μὲ τοὺς δεσπότας ἕνεκα γειτονικῶν ἐδαφῶν. Ἀπὸ τὰ τέ[λη] τοῦ ΙΔ αἰῶνος ἐμφανίζονται οἱ Καταλανοί, οἱ Ναβαρραῖοι, διάφοροι μεγιστᾶνες ἐν Νεαπόλει, ὁ ἐκ Φλωρεντίας τραπεζικὸς οἶκος τῶν Ἀτσαϊωλῶν, οἱ γενναῖοι Ἰωαννῖται ἱππόται τῆς Ῥόδου, οἱ κοινῶς λεγόμενοι Ὀσπιταλῖται. Τὰς Πάτρας κατεῖχεν ὁ πάπας δι' ἀρχιεπισκόπων αὐτοῦ. Ἐκτὸς τῶν ποικιλωνύμων τούτων φραγκικῶν γενῶν, τ[ὰ] ὁποῖα διεξεδίκουν τὸν Μορέαν, ἐκτὸς τῶν Ἑλλήνων δεσποτῶν τοῦ Μυστρᾶ, οἱ ὁποῖοι ἀντεπροσώπευον τὴν ἐπίσημον βυζαντινὴν διοίκησιν, καὶ [οἱ] ἐγχώριοι τοπάρχαι καὶ φύλαρχοι, αἱ σλαβο[…] καὶ φυλαὶ καὶ πατριαὶ τῆς Λακωνίας, ἐξηγείροντο πότε κατὰ τῶν Φράγκων καὶ πότε κατὰ τῶν Ἑλλήνων τοῦ Μυστρᾶ. Ἀλλ' ἐκτὸς τῶν λαῶν τούτ[ων] εὑρίσκομεν ἐγκατεστημένους εἰς διάφορα μέρη τῆς Πελοποννήσου Ἰουδαίους ἀκόμη καὶ Ἀτσιγγάνους. Οἱ σπουδαιότεροι ὅμως ἔποικοι ἦσαν οἱ Ἀλβανοί, οἱ ὁποῖοι ἤρχισαν νὰ κατέρχωνται εἰς τὴν Ἑλλάδα ἀπὸ τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος καὶ ἐπληθύνοντο διαρκῶς εἰς τὴν Πελοπόννησον διὰ νέων ἐγκα[…] στάσεων. Ἀλλὰ καὶ Τοῦρκοι εἶχον ἀναμιχθῆ μ[ε]τὰ τῶν Φράγκων τοῦ Μορέως, ὑφίστατο δὲ ἡ χερσόνησος πολλὰς ἐπιδρομὰς ἀπὸ Τούρκους πειρατὰς ὁρμωμένους ἐκ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας. Τέλος, οἱ κα[θ'] ἡμέραν περισφίγγοντες τὰ λείψανα τῆς Ἑλληνικῆς αὐτοκρατορίας Ὀθωμανοὶ Τοῦρκοι ἀρχίζουν, ἀ[πὸ] τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ἐπανειλημμένας καὶ φο[βε]ρὰς ἐπιδρομὰς εἰς τὴν χερσόνησον. Τοιαύτη ἦ[το] ἡ κατάστασις εἰς τὴν Πελοπόννησον, τὴν ὁπο[ίαν] εἶχον ν' ἀντιμετωπίσουν οἱ δεσπόται Παλαιολόγοι.

Περὶ τὰ τέλη τοῦ ΙΔ' αἰῶνος (1383) ὁ αὐτοκράτωρ Ἰωάννης Ε' ὁ Παλαιολόγος ἔστειλεν ὡς δεσπότην τὸν υἱόν του Θεόδωρον. Μετ' ἐνθουσιασμοῦ ἐδέχθησαν οἱ Ἕλληνες τῆς Πελοποννήσου τὸν ἡγεμονίδην, ἐλπίζοντες ὅτι ὑπὸ τὴν διοίκησιν αὐτοῦ θὰ ἐπανήρχετο ἡ τάξις καὶ ἡ ἀσφάλεια ὅπως ἐπὶ τῆς δεσποτείας Μανουὴλ τοῦ Καντακουζηνοῦ. Ὁ Θεόδωρος ἐξεστράτευσεν ἐναντίον τ[ῶν] Γάλλων, ἐνίκησεν αὐτοὺς καὶ συνέλαβε πολ[…] βαρώνους αἰχμαλώτους. Μὲ τοὺς πολέμους τ[…]

Digitized by Google

Digitized by Google

κατώρθωσε ν' ἀπωθήσῃ ἐντελῶς τοὺς Γάλλους εἰς τὰ ΒΔ. τῆς χερσονήσου. Τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς Πελοποννήσου, τὰ δύο τρίτα, ἦσαν ἤδη εἰς τὴν ἐξουσίαν τῶν Ἑλλήνων. Ὁ Θεόδωρος ἐπολέμησεν ἐπίσης καὶ κατὰ τῶν Ναβαρραίων, ἀκόμη καὶ τῶν ἐγχωρίων τοπαρχῶν Ἑλλήνων καὶ Σλάβων. Διὰ νὰ κατορθώσῃ ταῦτα, κατήρτισε μισθοφορικὸν στρατὸν ἐκ τῆς Πελοποννήσου. Βλέπων τὸν τόπον ἔρημον κατοίκων, ἐγκατέστησε πολλοὺς Ἀλβανούς. Κατὰ τὰ τελευταῖα ὅμως ἔτη αὐτοῦ ὑπέστη ἡ χερσόνησος τὴν πρώτην τουρκικὴν ἐπιδρομήν, ἐπὶ Βαγιαζὶτ τοῦ Α' (1397). Ὁ Βαγιαζὶτ ὁ Α' εἶχεν ἀποφασίσει νὰ ἐξαλείψῃ πλέον τὴν σκιὰν τῆς Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας. Ἐνόησεν ὅτι ἐγίνετο σοβαρὰ προσπάθεια εἰς τὴν Πελοπόννησον, ἔστειλε τὸν στρατηγόν του Ἐβρενὸς πασᾶν μὲ στρατὸν κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ 1395, τὸ ἑπόμενον δ' ἔτος κατῆλθεν ὁ ἴδιος εἰς Φερὰς τῆς Θεσσαλίας μὲ τὴν πρόφασιν ὅτι ἤθελε νὰ τιμωρήσῃ τοὺς Ἀλβανούς. Ὁ Θεόδωρος, πρῶτος ἐκστρατεύσας κατὰ τῶν Τούρκων, ἐνικήθη καὶ ἠναγκάσθη νὰ γίνῃ φόρου ὑποτελὴς εἰς τὸν σουλτᾶνον. Ὁ τουρκικὸς στρατὸς ἐπέστρεψεν εἰς τὰ ἴδια, διὰ νὰ ἐπαναλαμβάνῃ ἔκτοτε κατ' ἔτος τὰς ἐπιδρομάς του. Οἱ Ἰωαννῖται πάλιν ἱππόται κατέλαβον, τῷ 1400—1404, τὸ μέγιστον μέρος τοῦ δεσποτάτου τοῦ Μυστρᾶ. Ὁ μέγας μάγιστρος τοῦ τάγματος Φιλιβέρτος δὲ Ναγιάκ, ἀντάξιος διάδοχος τοῦ μεγάλου Ἐρεδιᾶς, εἰδοποιήθη ὅτι ὁ δεσπότης Θεόδωρος, ὁ ὁποῖος εἶχε πλέον τελείως ἀπελπισθῆ, ἦτο διατεθειμένος νὰ παραδώσῃ διαφόρους ὀχυρὰς θέσεις εἰς τοὺς Ἰωαννίτας. Νέα ἐκδρομὴ τῶν Τούρκων εἰς τὸν Μορέαν, τῷ 1400 καὶ 1401, ἠνάγκασε τὸν δεσπότην νὰ ἐπισπεύσῃ τὰς συμφωνίας μὲ τοὺς Ἰωαννίτας καὶ νὰ παραχωρήσῃ εἰς αὐτοὺς ἀντὶ χρημάτων τὴν Κόρινθον, τὰ Καλάβρυτα, καὶ τέλος καὶ αὐτὴν ἀκόμη τὴν πρωτεύουσάν του, τὸν Μυστρᾶν. Καθ' ὃν χρόνον ὁ Θεόδωρος ἀπεσύρθη εἰς τὴν Μονεμβασίαν, ἐνεφανίσθησαν ἀπεσταλμένοι τοῦ τάγματος εἰς τὸν Μυστρᾶν διὰ νὰ παραλάβουν αὐτόν. Ἀλλ' ὁ θρησκευτικὸς καὶ ἐθνικὸς φανατισμὸς τῶν Ἑλλήνων τοῦ Μυστρᾶ ἐξηγέρθη κατὰ τῶν αἱρετικῶν ἐκείνων, οἱ ὁποῖοι ἐξεδιώχθησαν διὰ λίθων καὶ ῥοπάλων. Τότε ἐπενέβη ὁ μητροπολίτης, συνεκράτησε τὸ πλῆθος καὶ διέταξε τοὺς ἱππότας ν' ἀποχωρήσουν. Ὁ λαός, ὁ ὁποῖος εἶχε χάσει τὴν ἐμπιστοσύνην του εἰς τὸν δεσπότην, ἔβαλεν ἐπὶ κεφαλῆς τῆς διοικήσεως τὸν μητροπολίτην, ἀλλ' ὁ συνετὸς οὗτος ἱεράρχης κατώρθωσε νὰ συμφιλιώσῃ τοὺς ὑπηκόους μὲ τὸν ἡγεμόνα των, καὶ οὕτως ἐπέστρεψεν ὁ Θεόδωρος ἀπὸ τὴν Μονεμβασίαν, ὅπου εἶχε καταφύγει καὶ ἠκύρωσε τὴν παραχώρησιν τοῦ Μυστρᾶ. Ἡ διαμονὴ τοῦ αὐτοκράτορος Μανουὴλ (ἐπιστρέφοντος ἐκ τῆς Δύσεως) εἰς τὸν Μορέαν (1404), συνετέλεσεν εἰς τὴν πλήρη συμφιλίωσιν τῶν Θεοδώρων μὲ τοὺς Μυστριώτας. Εἰς τὸ μεταξὺ ἡ δύναμις τοῦ Βαγιαζὶτ Α' εἶχε θραυσθῆ εἰς τὴν Ἄγκυραν (1402), καὶ ὁ Θεόδωρος Α' ᾐσθάνετο ἤδη ἑαυτὸν ἀσφαλέστερον καὶ ἀνέλαβε ζωηρότερον τὸ ἔργον τῆς ἀνακτήσεως τοῦ Μορέως. Μετὰ μεγάλης διπλωματικῆς ἱκανότητος κατώρθωσε ν' ἀπομακρύνῃ τοὺς Ἰωαννίτας ἱππότας ἀπὸ τὸν Μορέαν, καὶ μάλιστα χωρὶς νὰ ψυχράνῃ αὐτούς. Ἔπειτα, παραχωρήσας νέα προνόμια εἰς τὴν Μονεμβασίαν (1404), κατώρθωσε νὰ συνδέσῃ στενότερον πρὸς τὸν οἶκον αὐτοῦ τοὺς κατοίκους τῆς πόλεως. Μετὰ μεγάλης δὲ ὁρμῆς παρεσκευάσθη τὸ θέρος 1406 νὰ καταλύσῃ ἐντελῶς τὴν φραγκοκρατίαν. Ἐν Πελοποννήσῳ ὁ Ἕλλην ἡγεμὼν τοῦ Μυστρᾶ ἐπέπεσεν ἐναντίον τῆς χώρας τοῦ φραγκικοῦ πριγκιπάτου καὶ ἔσχεν ἐπιτυχίας, τὰς ὁποίας ὅμως δὲν ἠδυνήθη νὰ συνεχίσῃ, διότι ἀπέθανεν ἄτεκνος εἰς τὸν Μυστρᾶν τῷ 1407, κατόπιν μακρᾶς ἀσθενείας. Τὸ δεσποτᾶτον περιῆλθεν εἰς τὸν αὐτοκράτορα Μανουήλ. Ὁ Μανουὴλ ἐπανήρχετο ἀπηλπισμένος ἐκ τῆς Δύσεως, διότι εἶχεν ἐννοήσει ὅτι πολὺ μικρὰν βοήθειαν ἔπρεπε νὰ ἐλπίζῃ ἀπὸ τοὺς Χριστιανοὺς τῆς Δύσεως. Μὲ πολὺ μεγάλην λοιπὸν στοργὴν περιέβαλε τὸ νέον ἑλληνικὸν κράτος τῆς Πελοποννήσου. Εἶχε διίδει πόσον μεγάλας δυνάμεις θὰ εὕρισκε ν' ἀντλήσῃ ἡ Κωνσταντινούπολις ἀπὸ τὴν Πελοπόννησον πρὸς διάσωσιν τῆς καταποντιζομένης αὐτοκρατορίας. Ἀμέσως μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του Θεοδώρου Α', ὁ Μανουὴλ κατέστησεν ἡγεμόνα τὸν δευτερότοκον υἱόν του Θεόδωρον, τὸν γνωστὸν ὡς δεσπότην Θεόδωρον Β' (1407—1443). Κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη, ἐπειδὴ ἦτο ἀνήλικος ὁ Θεόδωρος, ἐκυβέρνησε τὸ δεσποτᾶτον ὡς ἐπίτροπος ὁ μέγας δοὺξ καὶ πρωτοστράτωρ Μανουὴλ Φραγκόπουλος. Διὰ νὰ δείξῃ δὲ τὴν σημασίαν, τὴν ὁποίαν ἀπέδιδεν εἰς τὸ δεσποτᾶτον, συνέταξε μακρὸν ἐγκωμιαστικὸν λόγον εἰς τὸν ἀποθανόντα δεσπότην καὶ ἀδελφὸν αὐτοῦ Θεόδωρον Α'. Ὅτε ἀργότερα ἔγινεν ἐνήλικος ὁ υἱός του Θεόδωρος, ἦλθεν ὁ ἴδιος μὲ στρατὸν νὰ τὸν ἐγκαθιδρύσῃ εἰς τὸν δεσποτικὸν θρόνον τοῦ Μυστρᾶ (1414). Ἡ πρώτη φροντὶς τοῦ Μανουὴλ κατὰ τὸ ταξίδιον τοῦτο ἦτο ν' ἀνεγείρῃ τὰς ὀχυρώσεις τοῦ Ἰσθμοῦ, διὰ νὰ προφυλάξῃ τὴν χερσόνησον ἀπὸ νέας ἐπιδρομὰς τῶν Τούρκων. Ὁ αὐτοκράτωρ ἀνέκτισε τὸ τεῖχος, τὸ ἐξέτεινεν εἰς μῆκος 40 σταδίων, τὸ ἔκαμε πολὺ ὑψηλόν, τοῦ ἔδωκε δύο φορὰς τὸ ὕψος μιᾶς λόγχης, καὶ τὸ ἐνίσχυσε μὲ βαθείας τάφρους, μὲ ὑψηλὰ ὀχυρώματα, μὲ 153 πύργους. Ἔπειτα ἐπῆγεν εἰς τὸν Μυστρᾶν. Ἐκεῖ συνεκάλεσεν εἰς συνέλευσιν τοὺς Ἕλληνας ἀρχηγοὺς καὶ ἐξεφώνησεν εἰς αὐτοὺς ἀξιομνημόνευτον λόγον. Τοὺς εἶπε ποῖα εἶναι τὰ καθήκοντα ἑνὸς Ἕλληνος δεσπότου, ἐπροσπάθησε νὰ ζωογονήσῃ τὸν πατριωτισμὸν αὐτῶν καὶ νὰ τοὺς φέρῃ εἰς ὁμόνοιαν. Κατώρθωσε δέ, ὥστε ὅλοι οἱ ξένοι δυνάσται νὰ προσφέρουν εἰς αὐτὸν τὴν ὑποταγήν των, οἱ Γάλλοι, οἱ Ἰταλοί, οἱ Ἱσπανοί. Διὰ νὰ εἶναι ἥσυχος, παρέλαβε μεθ' ἑαυτοῦ εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν τοὺς μᾶλλον θορυβώδεις ἐκ τῶν ἀρχηγῶν. Τὰ πρῶτα ἔτη, τὰ ὁποῖα διῆλθεν ὁ νέος δεσπότης εἰς τὸν Μυστρᾶν (ἀπὸ τοῦ 1414), ὑπῆρξαν σχεδὸν εἰρηνικά, διότι τότε ὁ αὐτοκράτωρ Μανουὴλ εἶχεν κλείσει εἰρήνην μὲ τὸν σουλτᾶνον Μωάμεθ τὸν Α'. Ἀργότερα ἀνεφάνησαν δυσκολίαι, καὶ τότε ἦλθεν εἰς τὸν Μυστρᾶν πρὸς βοήθειαν τοῦ δεσπότου ὁ συμβασιλεὺς τοῦ Μανουὴλ καὶ υἱὸς αὐτοῦ Ἰωάννης (ὁ κατόπιν αὐτοκράτωρ Ἰωάννης Η'), διότι οἱ Ἑνετοὶ κατέλαβον τὴν Μονεμβασίαν τῷ 1419. Εἰς ἀντιστάθμισμα ὁ δεσπότης, μὲ τὴν βοήθειαν τοῦ Ἰωάννου, κατέλαβε τὰς φραγκικὰς κτήσεις τῆς Μεσσηνίας. Καὶ οὕτω τὸ φραγκικὸν πριγκιπᾶτον περιωρίσθη εἰς ὀλίγας θέσεις τῆς Ἤλιδος. Ἐπῆλθε κατόπιν εἰρήνη καὶ μὲ τὴν Ἑνετίαν, διότι ἐπλησίαζε πλέον ὁ κρίσιμος ἀγὼν πρὸς διάσωσιν τῆς χώρας ἀπὸ τοὺς Τούρκους, τῶν ὁποίων εἶχεν ἤδη στερεωθῆ πάλιν ἡ δύναμις διὰ τῆς ἀνόδου εἰς τὸν θρόνον τοῦ Μουρὰτ Β' (1421—1451). Ὁ γενναῖος οὗτος ἡγεμὼν ἀπεφάσισε νὰ κυριαρχήσῃ εἰς τὴν χερσόνησον καὶ νὰ καταλύσῃ καὶ τὰ σῳζόμενα λείψανα τῆς Ἑλληνικῆς αὐτοκρατορίας. Ἤρχισε τὰς πολιορκίας τῆς πρωτευούσης καὶ ἔστειλε τὸν Τουραχὰν εἰς τὸν Μορέαν νὰ καταστρέψῃ τὴν κυριαρχίαν τῶν Ἑλλήνων, τῶν Φράγκων καὶ τῶν Ἑνετῶν. Οἱ Τοῦρκοι εἰσβάλλουν τὸν Μάϊον τοῦ 1423 εἰς τὴν πολυπαθῆ χερσόνησον, καταρρίπτουν τὰ τείχη τοῦ Ἑξαμιλίου, καταστρέφουν τὴν χώραν καὶ φθάνουν ἕως τὸν Μυστρᾶν. Ἐπακολουθεῖ ἡ θλιβερὰ εἰρήνη μὲ τὸν Μουρὰτ Β', τῷ 1424, διὰ τῆς ὁποίας οἱ Βυζαντινοὶ παραχωροῦν εἰς τοὺς Τούρκους τὰς πόλεις τῆς Θρᾴκης, καὶ οὕτως ἡ Ἑλληνικὴ αὐτοκρατορία περιορίζεται εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν. Διὰ τῆς συνθήκης ταύτης τὸ δεσποτᾶτον καὶ ὁ Μορέας γίνονται φόρου ὑποτελεῖς. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Κωνσταντῖνος (ἀδελφὸς τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Η'), κατόπιν γάμου μὲ τὴν ἀνεψιὰν τοῦ δεσπότου τῆς Δυτικῆς Ἑλλάδος Καρόλου Α' τοῦ Τόκκου, Θεοδώραν, ἔλαβε τὴν Γλαρέντζαν καὶ τὴν περιοχὴν αὐτῆς. Οὕτω ἱδρύθη τὸ δεσποτᾶτον τοῦ Κωνσταντίνου εἰς τὰ ΒΔ. τῆς χερσονήσου (1428—1448). Τὸ δεσποτᾶτον τοῦ Κωνσταντίνου ηὐξήθη διὰ παραχωρήσεων τοῦ Θεοδώρου Β', ὁ ὁποῖος ἔδωκεν εἰς αὐτὸν τὴν Βοστίτσαν καὶ τὰ περὶ αὐτήν, καὶ πολίσματα εἰς τὴν Μεσσηνίαν. Τοιουτοτρόπως, ἀπὸ τοῦ 1414—1428 πᾶσα σχεδὸν ἡ Πελοπόννησος, ἐξαιρέσει τῶν ὑπὸ τῆς Ἑνετίας κατεχομένων παραλιακῶν πόλεων (τῆς Μεθώνης, Κορώνης, Ναυπλίου καὶ Ἄργους), ἔχει ἀνακτήσει τὴν ἀνεξαρτησίαν αὐτῆς, εἶναι ὅμως μοιρασμένη μεταξὺ τῶν τριῶν ἀδελφῶν Παλαιολόγων, τοῦ Θεοδώρου, τοῦ Θωμᾶ καὶ τοῦ Κωνσταντίνου.

Ἀγωνιζόμενος εἰς τὴν Πελοπόννησον πρὸς στερέωσιν τῆς ἡγεμονίας αὐτοῦ ὁ Κωνσταντῖνος, δὲν ἄφινεν ἀπὸ τὸ βλέμμα τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου ἐπῆγε τῷ 1435 καὶ κατόπιν διὰ ν' ἀναπληρώσῃ τὸν ἀδελφόν του Ἰωάννην Η', ὁ ὁποῖος ἦτο ὑποχρεωμένος ν' ἀναλάβῃ ταξίδιον εἰς τὴν Ἰταλίαν, διὰ νὰ φέρῃ εἰς πέρας τὸ ἔργον τῆς ἑνώσεως τῶν Ἐκκλησιῶν. Εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν ὁ Κωνσταντῖνος παρέμεινεν ἐπὶ ἓξ ἔτη ὡς ἀντιπρόσωπος τοῦ ἀδελφοῦ του. Κατόπιν, καὶ μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τοῦ αὐτοκράτορος, ἐξηκολούθησε νὰ παραμένῃ εἰς τὴν πρωτεύουσαν διὰ τὴν ἐλπίδα τῆς διαδοχῆς εἰς τὸν θρόνον. Τότε ἔλαβεν ὡς ἰδίαν κτῆσιν τὴν ἐπὶ τοῦ Εὐξείνου πόντου Σηλυμβρίαν καὶ ἄλλα παρ' αὐτὴν χωρία. Κατόπιν, διὰ τῆς δραστηρίας ἐπεμβάσεως τοῦ αὐτοκράτορος Ἰωάννου Η', ἐπειδὴ ἡ ἀσθενὴς κατὰ τὸν χαρακτῆρα δεσπότης τοῦ Μυστρᾶ Θεόδωρος Β' ν' ἀνταλλάξῃ τὸ δεσποτᾶτον τοῦ Μυστρᾶ μὲ τὴν εἰς τὸν Εὔξεινον πόντον κτῆσιν τοῦ Κωνσταντίνου, τὴν Σηλυμβρίαν. Ὁ Θεόδωρος, μετὰ ἡγεμονίαν εἰς τὸν Μυστρᾶν τριάκοντα καὶ ἓξ ὅλων ἐτῶν (1407—1443), ἀπῆλθεν ἐκ τῆς Πελοποννήσου εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὅπου μετ' ὀλίγα ἔτη ἀπέθανε (τῷ 1448).

Ἤδη ὁ Κωνσταντῖνος εἶναι δεσπότης τοῦ Μυστρᾶ. Ἀπὸ τὴν ἀρχὴν τοῦ ἔτους 1444 ὁ Μορέας εἶναι διῃρημένος εἰς δύο δεσποτᾶτα: τὸ δυτικόν, εἰς τὸ ὁποῖον ἐσχάτως εἶχε περιορισθῆ τὸ ἄλλοτε ἰσχυρὸν φραγκικὸν πριγκιπᾶτον τῆς Ἀχαΐας, ἀνήκει εἰς τὸν Θωμᾶν Παλαιολόγον· τὸ δ' ἀνατολικόν, τὸ ὁποῖον περιλαμβάνει, ἐκτὸς τῆς Λακωνίας, τὴν Κόρινθον, τὴν Μονεμβασίαν, τὰς Πάτρας, τὴν Μεσσηνίαν καὶ ἔχει πρωτεύουσαν τὸν Μυστρᾶν, διοικεῖται ὑπὸ Κωνσταντίνου, ὁ ὁποῖος κατ' οὐσίαν εἶναι ὁ δεσπότης τῆς Πελοποννήσου, διότι κατέχει τὸ μέγιστον μέρος τῆς χερσονήσου καὶ πόλεις σπουδαίας καὶ ἀσκεῖ ὑπεροχὴν ἐπὶ τοῦ Θωμᾶ. Ἐρχόμενος ὁ Κωνσταντῖνος εἰς τὸν Μυστρᾶν, βλέπει ὅτι ἔχει πρωτεύουσαν, ὄχι βεβαίως μεγαλόπολιν, ἀλλ' ἀρκούντως μεγάλην, πρὸ παντὸς πολὺ ὀχυρὰν πόλιν. Ἡ πρώτη φροντὶς τοῦ Κωνσταντίνου, ἀμέσως μόλις ἔφθασεν εἰς τὸν Μυστρᾶν, ὑπῆρξεν ἡ ἀνοικοδόμησις τοῦ Ἑξαμιλίου, ἤτοι τοῦ τείχους τοῦ Ἰσθμοῦ, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἀνεγείρει ἰσχυρότατον ὁ Μανουὴλ Β' τῷ 1415, κατὰ τὴν ἐπίσκεψιν αὐτοῦ εἰς τὸν Μυστρᾶν, ἀλλ' εἶχε καταρρίψει ἡ φοβερὰ ἐπιδρομὴ τοῦ Τουραχὰν κατὰ τὸ 1423. Συγχρόνως δὲν παύει νὰ συνεννοῆται μὲ τοὺς Οὔγγρους καὶ νὰ διαπραγματεύεται μὲ τοὺς Ἑνετούς. Εἰς τὸν Μυστρᾶν ἔρχονται πρέσβεις τοῦ πάπα, πρὸς συγκρότησιν συμμαχίας μετὰ τῆς Οὐγγαρίας ἐναντίον τῶν Ὀθωμανῶν. Τότε ὁ Κωνσταντῖνος μετὰ θάρρους καὶ ἐνθουσιασμοῦ, ἀνέλαβεν ἐκστρατείαν πρὸς βορρᾶν. Ὁ στρατὸς τοῦ Κωνσταντίνου, ὡς καὶ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ Θωμᾶ, συνεκεντρώθη εἰς τὴν Κόρινθον (1444), διέβη τὸν Ἰσθμόν, ἔκαμε φόρου ὑποτελεῖς τὸν δοῦκα τῶν Ἀθηνῶν Νέριον Β' Ἀτσαγιώλην καὶ κατέλαβε τὴν Βοιωτίαν. Τὸ ἑπόμενον ἔτος, κατὰ Φεβρουάριον τοῦ 1445, ἐπανέλαβεν ὁ δεσπότης τὴν ἐκστρατείαν, κατέλαβε μέγα μέρος τῆς Φωκίδος, ἀκόμη δὲ καὶ τὴν Θεσσαλίαν. Ἀλλ' ἤδη εἶχεν ἐπέλθει ἡ πανωλεθρία τῆς Βάρνας (10 Νομβρίου 1444) καὶ ὁ Κωνσταντῖνος εὑρέθη ἀντιμέτωπος τῆς ὀθωμανικῆς παντοδυναμίας. Ἤδη ὁ Μουρὰτ Β', ὁ νικητὴς τῆς Βάρνας, κατήρχετο ἐναντίον αὐτοῦ. Ὁ Κωνσταντῖνος ἐπέστρεψε, τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1445, εἰς τὴν Πελοπόννησον καὶ κατέγινεν ἐν τάχει εἰς τὴν συγκρότησιν τῶν δυνάμεων, αἱ ὁποῖαι θὰ ἠδύναντο ν' ἀποκρούσουν τὴν φοβερὰν ἐπιδρομήν.

Εἰς τὰς κυρίας πόλεις, τὰς Πάτρας, τὴν Κόρινθον, τὸν Μυστρᾶν, καθιστάνει ἰδίους διοικητάς, εἰς τὸν Μυστρᾶν τὸν ἔμπιστον Φρατζῆν, αὐτὸς δὲ περιέρχεται τὴν Πελοπόννησον, ὅπου εἶναι ἀνάγκη, προφανῶς πρὸς ἀναδιοργάνωσιν καὶ ἀνασύνταξιν τῶν δυνάμεων τοῦ τόπου. Ὁ σουλτᾶνος, πεισθεὶς ὅτι αἱ ἐνέργειαι τοῦ Κωνσταντίνου ἠδύναντο νὰ διαταράξουν τὴν κυριαρχίαν τῶν Τούρκων, συνεκέντρωσε, τὴν ἄνοιξιν τοῦ 1446, πολυάριθμον στρατὸν εἰς τὰς Φερὰς τῆς Θεσσαλίας.

Ὁ Κωνσταντῖνος εἶχε κατορθώσει νὰ εὕρῃ καὶ ξένας βοηθείας. Τριακόσιοι Βουργουνδοὶ εἶχον προσέλθει πρὸς αὐτόν, οἱ δὲ Σέρβοι καὶ οἱ Ἑνετοὶ ὑπεσχέθησαν βοήθειαν. Ὁ στρατὸς τοῦ σουλτάνου, ἐφωδιασμένος καὶ μὲ πολιορκητικὰς μηχανάς, ἐνεφανίσθη ἔμπροσθεν τοῦ Ἑξαμιλίου τὴν 27 Νοεμβρίου τοῦ 1446. Ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἐσείετο τὸ τεῖχος διὰ τῶν πολιορκητικῶν μηχανῶν, καὶ τὴν πρωΐαν τῆς 7 Δεκεμβρίου 1446 κύμβαλα καὶ αὐλοὶ καὶ σάλπιγγες ἔδωκαν τὸ σημεῖον τῆς γενικῆς ἐφόδου. Καὶ τότε πεισματώδης ἀγὼν συνήφθη ἐπὶ τῶν ἐπάλξεων, ὄπισθεν δ' αὐτῶν ὁ Κωνσταντῖνος καὶ ὁ Θωμᾶς παρώρμων τὸν στρατὸν εἰς ἐπίθεσιν. Ὁ Κωνσταντῖνος καὶ οἱ περὶ αὐτὸν ὑπεχώρησαν εἰς τὸν Μυστρᾶν. Ἡ Κόρινθος ἔπεσεν εἰς χεῖρας τοῦ Μουράτ, ὁ ὁποῖος, ἀφοῦ ἔστειλε τὸν Τουραχὰν νὰ δῃώσῃ τὸ ἐσωτερικὸν τῆς Πελοποννήσου, ἐβάδισε μὲ τὸ κύριον σῶμα, κατέλαβε καὶ ἐπυρπόλησε τὰ Βασιλικὰ (τὴν ἀρχαίαν Σικυῶνα), τὴν Βοστίτσαν (τὸ Αἴγιον), κατέλαβε τὴν πόλιν τῶν Πατρῶν, ἀλλ' εὗρε γενναιοτάτην ἀντίστασιν εἰς τὴν ἀκρόπολιν, ἡ ὁποία ἔσωσε τὴν ὑπόλοιπον Πελοπόννησον. Ὁ Μουρὰτ δὲν ἔκρινε καλὸν νὰ ἐπιμείνῃ· ἐπροχώρησε καὶ κατέστρεψε πάντα τὰ περὶ τὴν Γλαρέντζαν. Ἔπειτα συνωμολόγησεν εἰρήνην πρὸς τὸν Κωνσταντῖνον, διὰ τῆς ὁποίας ἔκτοτε ἔγινεν οὗτος φόρου ὑποτελὴς εἰς τοὺς Τούρκους. Ἐπιστρέφων κατέστρεψε τελείως τὸ Ἑξαμίλιον καὶ τὸ ἀφῆκεν ἐρείπιον καὶ ἀνεχώρησεν ἐκ τῆς Πελοποννήσου σύρων μεθ' ἑαυτοῦ ἑξήκοντα χιλιάδας καὶ ἐπέκεινα αἰχμαλώτων.

Ἡ ἐπιδρομὴ αὕτη τοῦ 1446, τὴν ὁποίαν ὡδήγησε κατὰ τῆς Πελοποννήσου ὁ ἴδιος ὁ σουλτάνος, ὁ νικητὴς τῆς Βάρνας, ἀνέκοψε τὸ γενναῖον ἐπιχείρημα τοῦ Κωνσταντίνου καὶ κατέστειλε τὴν ὁρμὴν τοῦ νεαροῦ ἑλληνικοῦ κράτους τῆς Πελοποννήσου, τὸ ὁποῖον θὰ ἠδύνατο νὰ σώσῃ τὴν Κωνσταντινούπολιν καὶ τὸ Γένος. Ἡ ἀνεξαρτησία τοῦ Μορέως εἶχε πραγματικῶς ἀπολεσθῆ. Οἱ δύο δεσπόται τῆς Πελοποννήσου ἔμειναν ἀκόμη δύο ἔτη ἥσυχοι εἰς τὴν χώραν των, ἀλλ' ὑποτελεῖς εἰς τὸν σουλτᾶνον.

Τὴν 3 Ὀκτωβρίου τοῦ 1448 ἀπέθανεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰωάννης Η' καὶ ἐξελέγη ὑπὸ τῶν ἀρχόντων, μὲ τὴν συναίνεσιν τοῦ Μουράτ, αὐτοκράτωρ ὁ Κωνσταντῖνος. Μετ' ὀλίγον, τὴν 6 Ἰανουαρίου τοῦ 1449, ἦλθον ἐκ Κωνσταντινουπόλεως εἰς τὸν Μυστρᾶν οἱ ἄρχοντες Ἀλέξιος ὁ Φιλανθρωπηνὸς καὶ ὁ Μανουὴλ ὁ Παλαιολόγος «ἵνα εἰς βασιλέα στέψωσι τὸν δεσπότην κῦρ Κωνσταντῖνον». Τὴν 12ην Μαρτίου τοῦ αὐτοῦ ἔτους ἔφθασεν ὁ Κωνσταντῖνος βασιλεὺς εἰς τὴν βασιλεύουσαν, διὰ νὰ πέσῃ μετὰ τέσσαρα καὶ ἥμισυ σχεδὸν ἔτη ἡρωϊκῶς ὑπερασπιζόμενος τὴν μεγάλην χριστιανικὴν πρωτεύουσαν.

Εἰς τὴν Πελοπόννησον ἔμειναν οἱ δύο ἀδελφοὶ Θωμᾶς καὶ Δημήτριος, ἐμοιράσθησαν αὐτὴν καὶ παρέτειναν ἐπὶ ἕνδεκα ἀκόμη ἔτη, καὶ ἑπτὰ ἔτη

Digitized by Google

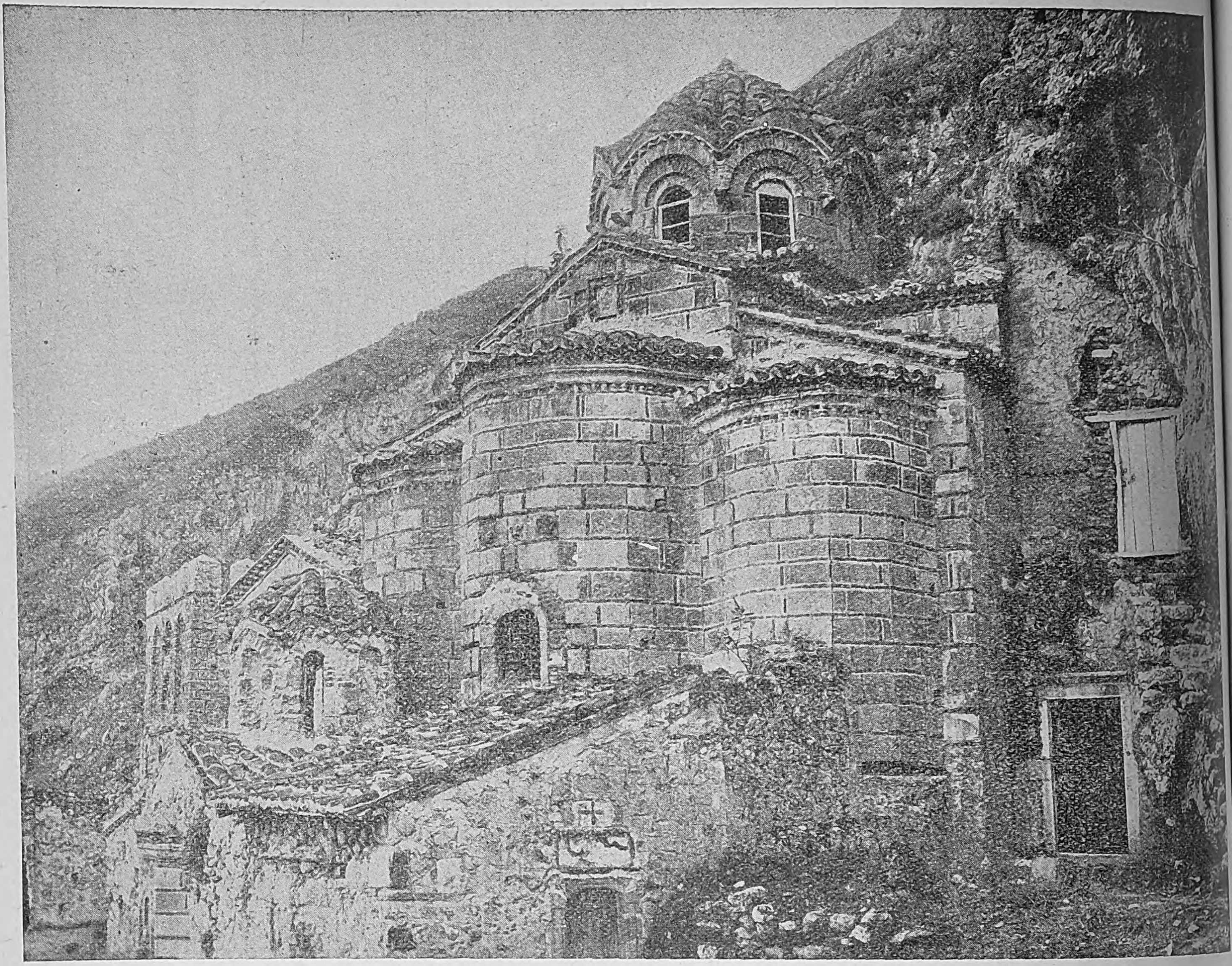

Ὁ ναὸς τῆς Περιβλέπτου (μεσημβρινὴ ἄποψις).

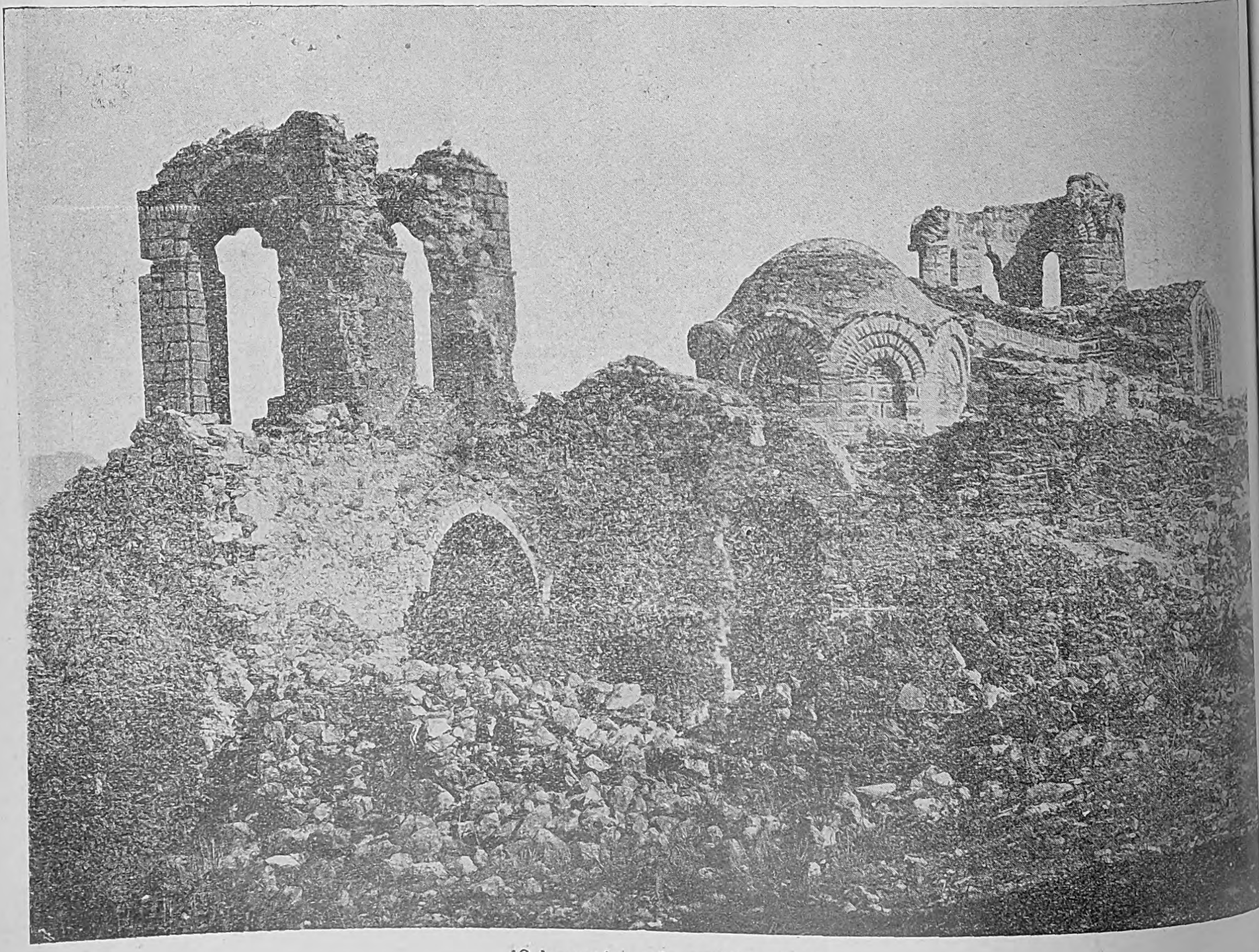

Ὁ ἐρειπωμένος ναὸς τῆς Ἁγίας Σοφίας.

[Ἐκ τοῦ *Λευκώματος φωτογραφιῶν* τοῦ *Μυστρᾶ* τοῦ Γ. Ν. Γεωργιάδου.]

Digitized by Google

Ὁ ναὸς τῆς Παναγίας τῆς Ὁδηγητρίας ἐν τῇ Μονῇ τοῦ Βροντοχίου.

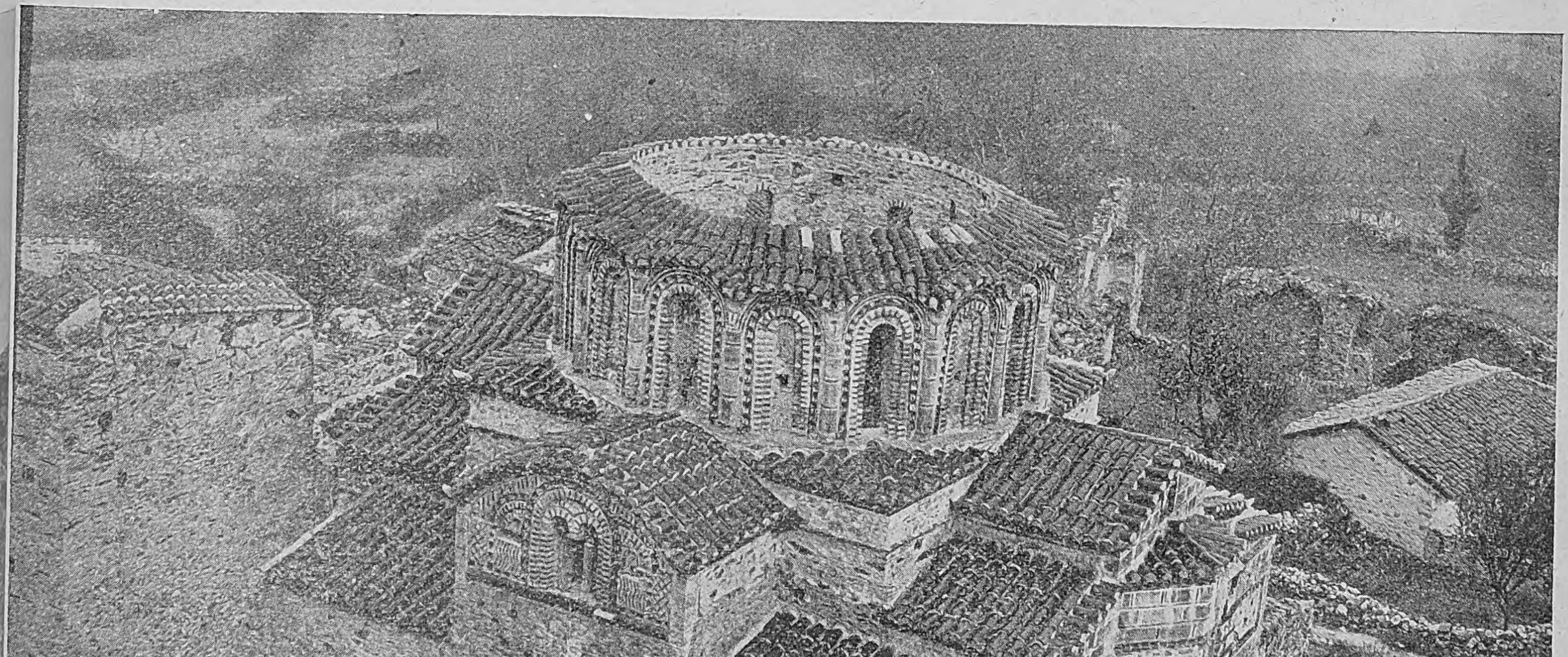

Ὁ ναὸς τῶν Ἁγίων Θεοδώρων.

[Ἐκ τοῦ Λευκώματος φωτογραφιῶν τοῦ Μυστρᾶ τοῦ Γ. Ν. Γεωργιάδου.]

Digitized by Google

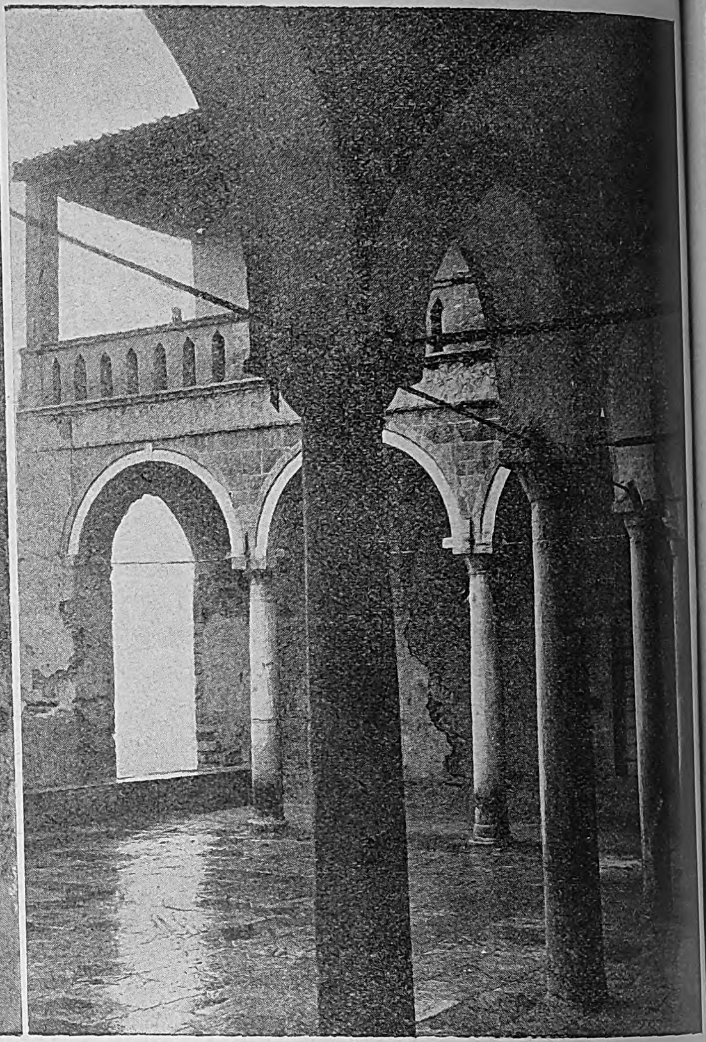

*1) Στοὰ ἐν τῇ Μονῇ τῆς Παντανάσσης. 2) Ἡ αὐλὴ τῆς μητροπόλεως.*

*Ἡ μητρόπολις τοῦ Μυστρᾶ (ναὸς Ἁγίου Δημητρίου).*

[*Ἐκ τοῦ Λευκώματος φωτογραφιῶν τοῦ Μυστρᾶ τοῦ Γ. Ν. Γεωργ*

Digitized by Google

ΜΥΣ

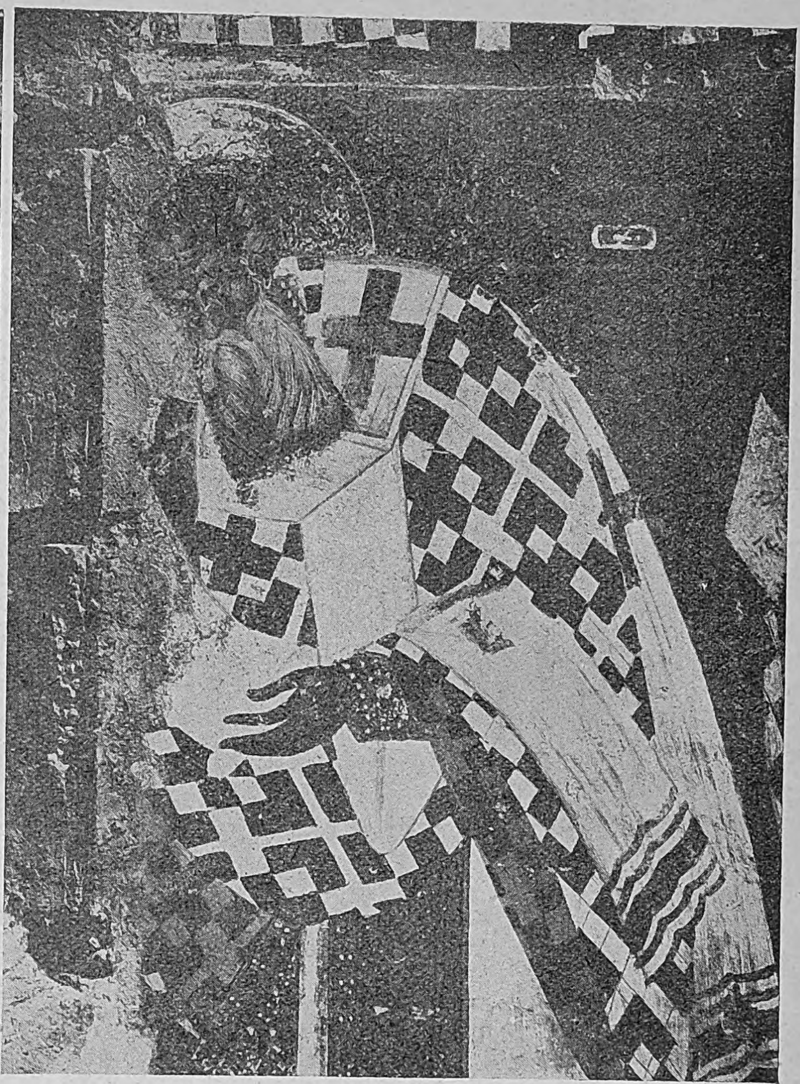

*1) Ὁ Ἅγιος Γεώργιος (Ναὸς Περιβλέπτου). 2) Ὁ Ἅγιος Γρηγόριος ὁ Θεολόγος (Ναὸς Περιβλέπτου).*

*Ἡ ἁγία νὺξ τῆς τοῦ Χριστοῦ Γεννήσεως (Ναὸς Παντανάσσης).*

[Ἐκ τοῦ *Λευκώματος φωτογραφιῶν τοῦ Μυστρᾶ* τοῦ Γ. Ν. Γεωργιάδου.]

Digitized by Google

 ΜΥΣΤΡΑΣ

1) Ὁ προφήτης Ζαχαρίας. 2) Ἅγιος Στρατηλάτης (Ναὸς Ἁγίων Θεοδώρων).

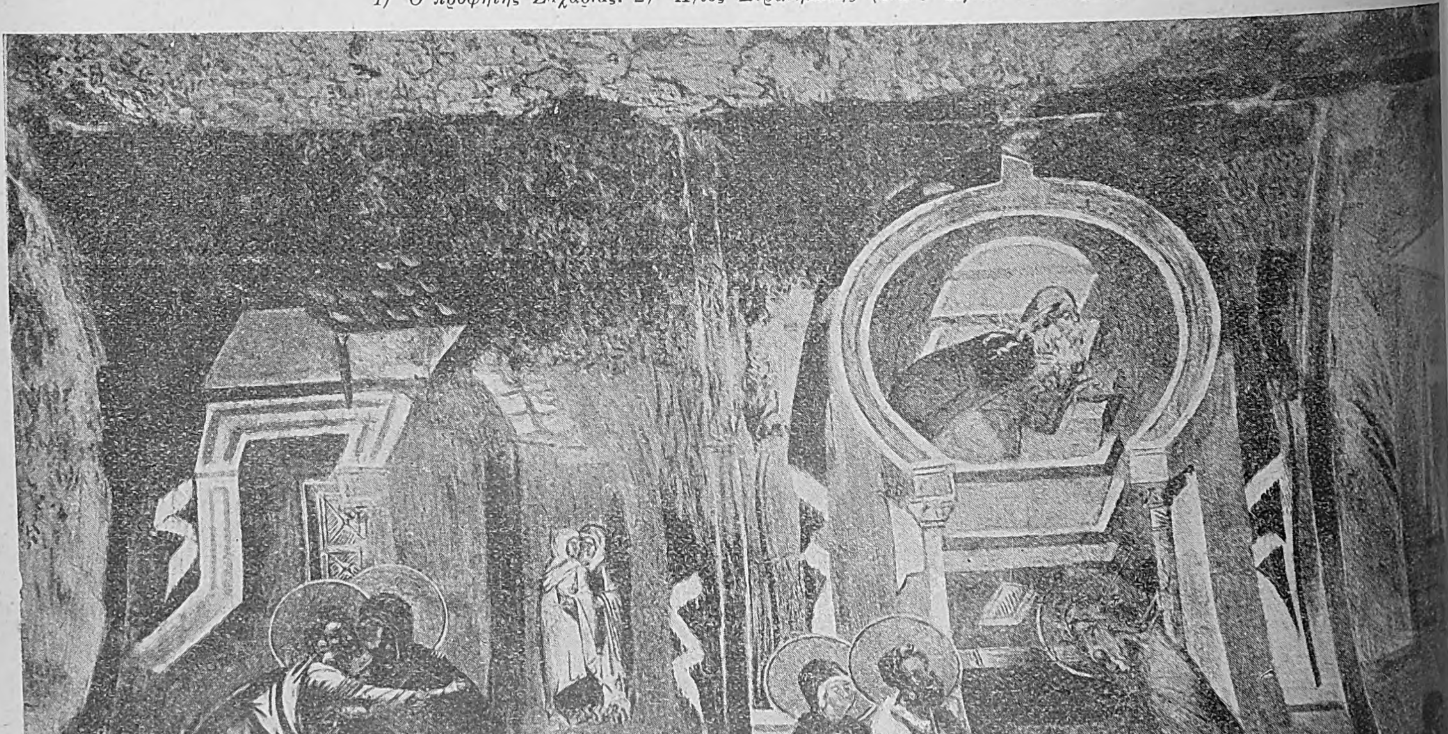

1) Ἡ συνάντησις τῶν Ἁγίων Ἰωακεὶμ καὶ Ἄννης. 2) Τὰ δῶρα (Ναὸς Περιβλέπτου).

Digitized by Google

1) Ἡ Πλατυτέρα τῶν Οὐρανῶν (Ναὸς Παντανάσσης). 2) Ὁ Ἅγιος Παντελεήμων (Ναὸς Μητροπόλεως).

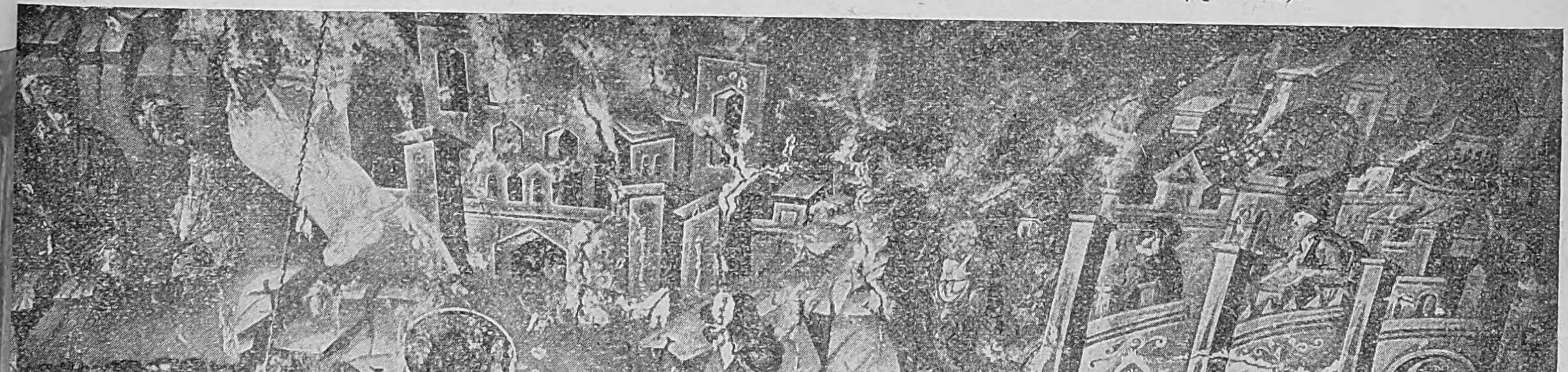

Ἡ θριαμβευτικὴ εἴσοδος τοῦ Ἰησοῦ εἰς Ἱεροσόλυμα (Ναὸς Παντανάσσης).

['Εκ τοῦ Λευκώματος φωτογραφιῶν τοῦ Μυστρᾶ τοῦ Γ. Ν. Γεωργιάδου.]



Digitized by Google

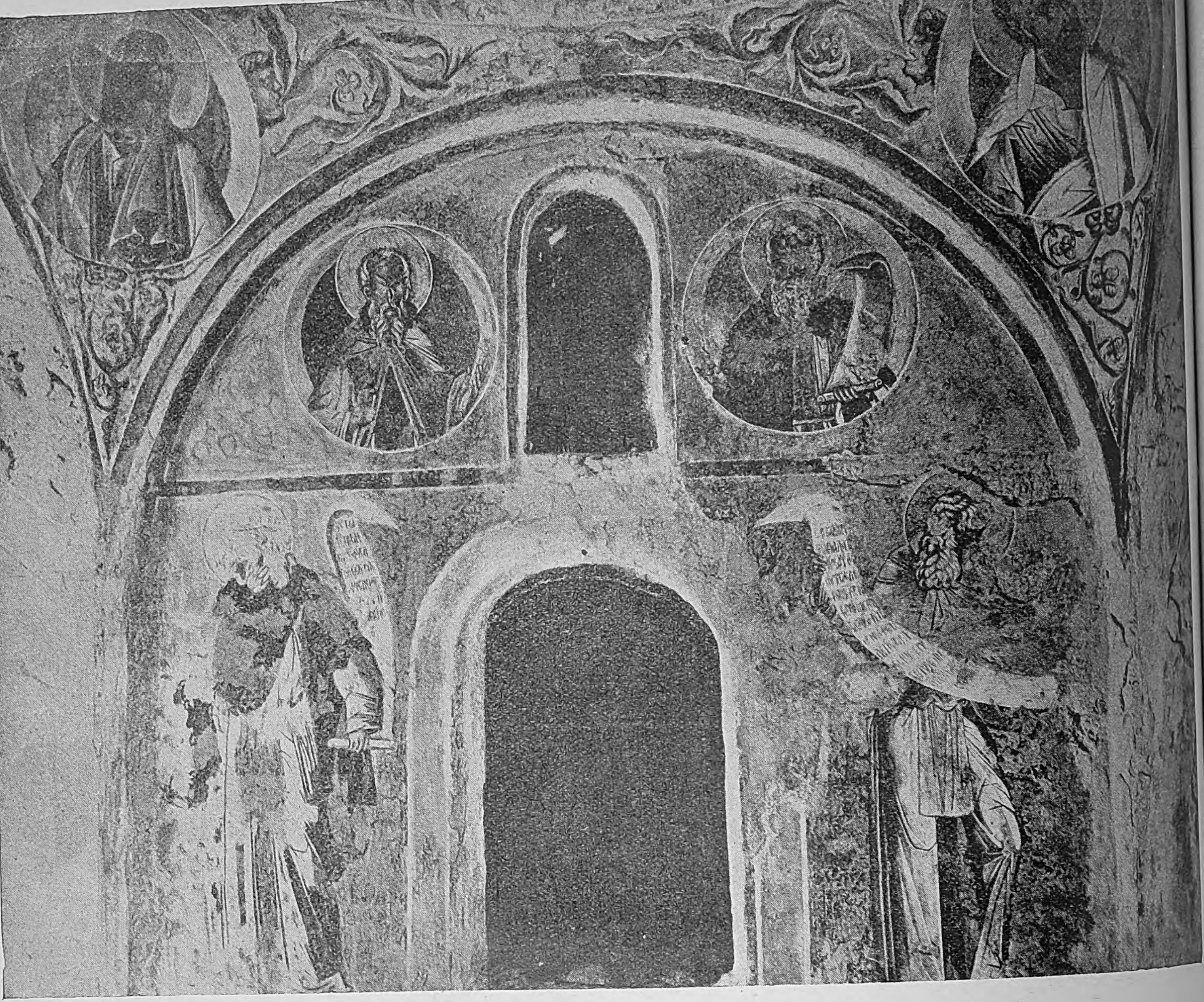

*Παράστασις προφητῶν καὶ ἀσκητῶν ἐν τῷ ναῷ τῆς Παντανάσσης.*

*Ἀπόσπασμα ἐκ τῆς Θείας Λειτουργίας (Ναὸς Περιβλέπτου.)*

Digitized by Google

μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Πόλεως, ἕως τὸ 1460, τὴν ἀγωνιώδη ζωὴν τοῦ δεσποτάτου τῆς Πελοποννήσου.

Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Κωνσταντινουπόλεως τὸ δεσποτᾶτον τοῦ Μυστρᾶ καὶ ὅλη ἡ Πελοπόννησος ἦτο εἰς τὴν διάκρισιν τοῦ σουλτάνου. Πρὸς τούτοις, κατὰ τὰς ἡμέρας τῆς ἁλώσεως, ἐξερράγη εἰς τὸν Μορέαν μεγάλη ἐπανάστασις τῶν Ἀλβανῶν, ἡ ὁποία ὑπενόμευσεν ἀκόμη περισσότερον τὸν βίον τοῦ δεσποτάτου. Οἱ ἐπαναστάται ἐπολιόρκησαν τὸν Μυστρᾶν, ἀλλὰ δὲ στίφη ἐξ αὐτῶν ἐλαφυραγώγησαν τὴν χώραν. Τότε οἱ δεσπόται δὲν ἐδίστασαν νὰ προσκαλέσουν εἰς βοήθειαν τοὺς Τούρκους· οὗτοι δὲ ἐλθόντες εἰς τὴν Λακωνίαν ἀπηλευθέρωσαν τὸν Μυστρᾶν (τῷ 1453 καὶ 1454) καὶ κατέστειλαν τὴν ἐξέγερσιν τῶν Ἀλβανῶν.

Οἱ δύο ἀδελφοὶ Παλαιολόγοι διετέλεσαν ἔκτοτε, ἀπὸ τὸ 1454, ὑπόδουλοι εἰς τοὺς Τούρκους, οἱ ὁποῖοι ἦσαν οἱ ἀδιαφιλονίκητοι κυρίαρχοι τῆς Πελοποννήσου. Ἠναγκάσθησαν νὰ κρύψουν τὴν ἀμοιβαίαν ἔχθραν αὐτῶν, διότι ἀπὸ τὴν Δύσιν δὲν ἠδύναντο νὰ περιμένουν σωτηρίαν καὶ ἦσαν ὑποχρεωμένοι ν' ἀναμένουν εὐνοϊκὴν περίστασιν διὰ ν' ἀποσείσουν τὸν τουρκικὸν ζυγόν.

Αἱ σχέσεις τῆς Ἑνετίας μὲ τὸν Θωμᾶν ἔγιναν στενότεραι, ἠναγκάσθη δὲ οὗτος ν' ἀποδώσῃ εἰς τὴν δημοκρατίαν τὰ ἀνήκοντα εἰς αὐτὴν φέουδα, τὰ ὁποῖα αὕτη πρὸ πολλοῦ ἐζήτει, ἤτοι τὸ Νησὶ τῆς Καλαμάτας καὶ ἄλλα 11 περὶ αὐτὸ χωρία. Ἤδη ὁ Θωμᾶς ἐνόμισεν ἑαυτὸν ἐν ἀσφαλείᾳ, ὡς ἔχων τὴν ἐνίσχυσιν τῆς δημοκρατίας καὶ ἀναμένων τὴν σχεδιαζομένην σταυροφορίαν καὶ προέβη εἰς πράξεις ἀσυνέτους, ἐπανέλαβε τὰς παλαιὰς διενέξεις μὲ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Δημήτριον, καὶ ὄχι μόνον τοῦτο, ἀλλ' ἠρνήθη νὰ πληρώσῃ εἰς τὴν Πύλην τὸν φόρον τοῦ 1457. Ἡ θρασύτης τοῦ Θωμᾶ ἐπέφερε τὴν καταστροφήν, διότι ὁ Μωάμεθ Β' ἀπεφάσισε νὰ τιμωρήσῃ τὸν ὑπερφίαλον δεσπότην καὶ νὰ ὑποδουλώσῃ τὴν Πελοπόννησον. Ὁ στρατός, τὸν ὁποῖον παρεσκεύασεν, 80.000 ἱππεῖς, ὡς λέγεται, καὶ ἀναρίθμητον πεζικόν, δεικνύει τὴν ὁριστικὴν ἀπόφασιν τοῦ σουλτάνου.

Ὁ τουρκικὸς στρατός, μὲ τὸν Μωάμεθ ἐπὶ κεφαλῆς, διῆλθε τὸν Ἰσθμὸν καὶ εἰσήλασεν εἰς τὸ ἐσωτερικὸν λαφυραγωγῶν καὶ καταστρέφων τὰ πάντα. Ἐντὸς ὀλίγου ἔσυρε μεθ' ἑαυτοῦ 25.000 δυστυχεῖς ἀνθρώπους εἰς δουλείαν. Τότε, διὰ νὰ ἐξευμενίσουν τὸν σουλτᾶνον, ὁ μὲν Θωμᾶς ἠναγκάσθη να παραχωρήσῃ εἰς αὐτὸν πόλεις καὶ τόπους, ὁ δὲ Δημήτριος νὰ παραδώσῃ διὰ τὸ χαρέμιον τὴν ὡραίαν κόρην του Ἑλένην. Τέλος, ἀφοῦ ὁ σουλτᾶνος ἀφῆκε 10.000 ἄνδρας εἰς τὸν Μορέαν, ἐπέστρεψε πρὸς Β., ἀκολουθούμενος ἀπὸ πολυάριθμον συνοδείαν δούλων. Ἐπιστρέφων ὁ Μωάμεθ Β' καθυπέταξεν ὁριστικῶς τὸ δουκᾶτον τῶν Ἀθηνῶν (1458). Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἔπεσε καὶ ἡ Σερβία εἰς χεῖρας αὐτοῦ, καὶ οὕτω δὲν ἔμεινε παρὰ μόνον εἰς τὴν Πελοπόννησον ἀμυδρὰ σκιὰ ὀνομαστικῆς ἀνεξαρτησίας. Ὁ Θωμᾶς ἐν τούτοις ἐτόλμησε νὰ ἐγείρῃ πάλιν κεφαλήν, ἐπιχειρήσας τὴν ἀνάκτησιν μερῶν τοῦ δεσποτάτου, ὁπότε ὁ Μωάμεθ Β', διὰ νὰ θέσῃ ὁριστικὸν τέρμα εἰς τὰς ἐκκρεμότητας αὐτάς, ἐνεφανίσθη εἰς τὸν Μορέαν τὸν Μάρτιον τοῦ 1460, ἐβάδισε κατ' εὐθεῖαν κατὰ τοῦ Μυστρᾶ, κατέλαβε τὴν πόλιν καὶ ἐξηνάγκασε τὴν φρουρὰν τοῦ κάστρου εἰς συνθηκολόγησιν. Ὁ Δημήτριος ἐστάλη εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν, ὁ δὲ Θωμᾶς κατώρθωσε νὰ φύγῃ εἰς τὴν Ἰταλίαν, ὅπου ἐτέθη ὑπὸ τὴν προστασίαν τοῦ πάπα. Οὕτω, ἀπὸ τὸ 1460, ἡ ἑλληνικὴ ἡγεμονία τῆς Πελοποννήσου συνεχωνεύθη ὁριστικῶς μὲ τὴν Ὀθωμανικὴν αὐτοκρατορίαν. Μόνη ἡ Μονεμβασία ἔμενεν ἀκόμη ἐλευθέρα. Ἀλλ' ὁ βίος τοῦ ἰσχυροῦ ἄλλοτε δεσποτάτου τῆς Πελοποννήσου, τὸ ὁποῖον τόσας ἐλπίδας εἶχεν ἐγείρει, τερματίζεται ὁριστικῶς.

*Ὁ Μυστρᾶς ἐπὶ τουρκοκρατίας.* Μόλις εἶχε νομίσει ὁ Μωάμεθ ὅτι ἐστερέωσε τὴν κυριαρχίαν αὐτοῦ εἰς τὸν Μορέαν, ἐξερράγη μακρὸς πόλεμος μεταξὺ τῶν Τούρκων καὶ τῶν Ἑνετῶν, κατὰ τὸν ὁποῖον αἱ μεγάλαι πόλεις τῆς χερσονήσου καταλαμβάνονται καὶ ἀνακτῶνται ἔπειτα. Ἀπὸ τὸ 1460 ἐγκαθίσταται εἰς τὴν πόλιν τῶν Παλαιολόγων Τοῦρκος διοικητής, σῴζεται δὲ ἡ παράδοσις τῆς ἀρχῆς τῶν Τούρκων εἰς τὸ βουνὸν τοῦ Μυστρᾶ ἡ ὀνομαζόμενη τὰ Σαράγια τῆς βασιλοπούλας καὶ Σιταροπάζαρο καὶ τὰ ἐρείπια τζαμίων καὶ μαχαλάδων. Ἐπί τινα χρόνον μάλιστα ἡ γενικὴ διοίκησις τοῦ Μορέως εἶχεν ὡς ἕδραν τὸν Μυστρᾶν, ἄλλοτε τὸ Λεοντάρι ἢ τὴν Κόρινθον, ἕως ὅτου ἀργότερα ὡρίσθη ἡ Τρίπολιν.

Ὀλίγα ἔτη μετὰ τὴν εἴσοδον τῶν Τούρκων εἰς τὸν Μυστρᾶν, τῷ 1464, ὁ αὐθέντης τοῦ Ἀριμίνου (Ρίμινι) τῆς Ἰταλίας Σιγισμοῦνδος Μαλατέστας ἐπολιόρκησε τὸν Μυστρᾶν καὶ ἐκυρίευσε τὸ διπλοῦν τεῖχος τῆς πόλεως, ἀλλὰ δὲν κατώρθωσε νὰ κυριεύσῃ τὸ κάστρον. Ὁ Σιγισμοῦνδος ἐπέστρεψεν ἄπρακτος, ἀλλ' ἔφερε μεθ' ἑαυτοῦ ὡς τρόπαιον τὸ λείψανον τοῦ περικαλλήτου νεοπλατωνικοῦ φιλοσόφου Γεμιστοῦ, πρὸς τιμὴν τοῦ ὁποίου ἤγειρε μαυσωλεῖον εἰς τὴν πατρίδα του.

Ἡ Ἑνετία ἤρχισε πάλιν ἐρρωμένως τὸν πόλεμον ἐναντίον τῆς Τουρκίας, καὶ τὸν Ἰούνιον τοῦ 1685 ὁ στρατηγὸς Φραγκῖσκος Μοροζίνης ἀπεβιβάσθη εἰς τὸν Μορέαν μὲ στρατὸν 8.000 ἀνδρῶν. Ἐκυρίευσε πρῶτον τὴν Κορώνην, ἔπειτα τὸ Ναβαρῖνον, τὴν Μεθώνην, τὴν Νεάπολιν τῆς Ρωμανίας. Αἱ Πάτραι, τὸ Νεόκαστρον, ὁ Μυστρᾶς, ὡς καὶ ἡ Ναύπακτος, παρεδόθησαν εἰς τοὺς Ἑνετούς, ἀργότερα δὲ καὶ ἡ Μονεμβασία. Ὁ Μυστρᾶς, ὁ ὁποῖος κατελήφθη τῷ 1687, ἦτο πρωτεύουσα τῆς ἑνετικῆς ἐπαρχίας Braccio di Maïna. Εἰς τὴν ἐξουσίαν τῶν Ἑνετῶν ὁ Μυστρᾶς ἔμεινε μόνον 28 ἔτη, διότι οἱ Τοῦρκοι ἀνέκτησαν αὐτὸν τῷ 1715.

Τὰ τέλη Φεβρουαρίου 1770 ἠγκυροβόλησεν εἰς Οἴτυλον ὁ ρωσικὸς στόλος τοῦ Ὀρλὼφ. Μικρὸς στρατὸς ἐξ Ἑλλήνων καὶ ὀλίγων Ρώσων, ὑπὸ τὸν Μυκόνιον Ἀντώνιον Ψαρόν, ἔκλεισε τοὺς Τούρκους εἰς τὸ κάστρον τοῦ Μυστρᾶ. Οἱ Τοῦρκοι ἐπρότειναν νὰ παραδοθοῦν ὑπὸ τὸν ὅρον νὰ παραλάβουν τὰς οἰκογενείας των, ἀλλὰ κατὰ τὴν ἔξοδον αὐτῶν οἱ ἀχαλίνωτοι Μανιᾶται ἐρρίφθησαν ἐναντίον τῶν Μουσουλμάνων καὶ τοὺς ἔσφαξαν. Τότε ὁ ἀρχιεπίσκοπος μὲ τοὺς ἱερεῖς του ἐξῆλθε κρατῶν τὸν σταυρὸν καὶ κατώρθωσε νὰ σταματήσῃ τὴν σφαγὴν καὶ προστατεύσῃ τοὺς ἡττημένους. Κατώρθωσε μάλιστα, ἐν συνεννοήσει μὲ τοὺς ἄρχοντας, νὰ ἱδρύσῃ διοίκησιν εἰς τὸν Μυστρᾶν, εἰς τὸν ὁποῖον συνεκεντρώθησαν οἱ χωρικοὶ τῶν περιχώρων.

Κατόπιν οἱ Ρῶσοι ἀπεσύρθησαν καὶ ὁ Μορέας ἔπλευσεν εἰς τὸ αἷμα. Ὅλα τὰ μέρη, τὰ ὁποῖα ἀπεδέχθησαν τοὺς Ρώσους, κατεστράφησαν. Εἰς ὀλίγα ἔτη ὁ πληθυσμὸς ἀπὸ 200.000 ἠλαττώθη εἰς τὸ πέμπτον (Pouqueville). Κατ' ἐκείνην τὴν ἐποχὴν ἤρχισε νὰ ἐγκαταλείπεται ἡ βυζαντινὴ πόλις καὶ νὰ κατέρχωνται οἱ κάτοικοι εἰς τοὺς πρόποδας καὶ νὰ κτίζουν τὸν Νέον Μυστρᾶν.

Κατὰ τὴν μεγάλην ἐπανάστασιν οἱ Ἄραβες τοῦ Ἰμπραὴμ πασᾶ κατέστρεψαν καὶ ἐπυρπόλησαν τὸν τόπον. Οἱ κάτοικοι ἔφυγαν τότε εἰς τὸν νέον Μυστρᾶν. Μεγάλοι οἶκοι καὶ γενναῖοι ἀρχηγοί, οἱ Κρεββατάδες, Γιατρᾶκοι καὶ ἄλλοι, διέσωσαν τὴν φήμην τοῦ ὀνόματος. Ἡ κτίσις τῆς νέας Σπάρτης, τῷ 1834, ἡ ὁποία εἶναι δημιούργημα τοῦ βασιλέως Ὄθωνος, ἐπέφερε τὴν τελείαν παρακμὴν. Τὸ νέον χωρίον, ὁ νέος Μυστρᾶς, ὡς λέγεται, ἤκμασε πολὺ κατὰ τελευταῖα ἔτη τῆς τουρκοκρατίας. Ἀλλὰ καὶ εἰς τὸν παλαιόν, τὸν βυζαντινὸν Μυστρᾶν, ἐξηκολούθησαν πάντοτε νὰ μένουν οἰκογένειαί τινες μεταξὺ τῶν ἐρειπίων, ὅπως καὶ σήμερον.

— [ΒΥΖΑΝΤ. ΤΕΧΝ.] *Τοπογραφία.* Τὸ βουνὸν τοῦ Μυστρᾶ στεφανώνεται εἰς τὴν κορυφὴν ἀπὸ τὸ κάστρον, τὸ κτισθὲν ἐπὶ τοῦ Γουλιέλμου Βιλλαρδουίνου τῷ 1249. Ἀπὸ τὸ Β. ἄκρον τοῦ κάστρου ἀρχίζουν τὰ τείχη κατερχόμενα πρὸς τοὺς πόδας τοῦ βουνοῦ, ἐξακολουθοῦν εἰς τὰ κράσπεδα αὐτοῦ καὶ ἔπειτα ἀναρριχῶνται πρὸς τὸ κάστρον πρὸς τὸ ἀντίθετον, τὸ νότιον, μέρος. Τὰ τείχη ἐνισχύονται ἀπὸ ἀποστάσεως εἰς ἀπόστασιν διὰ πύργων ὑψηλοτέρων τοῦ τείχους, ποῦ τετραγώνων, ποῦ πολυγωνικῶν. Ἐντὸς τοῦ σχηματιζομένου τούτου τριγώνου διακρίνομεν πρὸς τὸ Β. μέρος καὶ ἄλλο τεῖχος περικλεῖον τὸ ἐπάνω μέρος τῆς πόλεως. Οὕτω ἔχομεν καὶ δεύτερον περίβολον εἰς τὸ ἐσωτερικόν, ὄπισθεν τοῦ ὁποίου ὑψοῦνται οἱ σῳζόμενοι τοῖχοι τῶν παλατίων τῶν δεσποτῶν. Ὁ ἐσωτερικὸς οὗτος περίβολος περικλείει τὴν ἀριστοκρατικὴν συνοικίαν τῆς πόλεως, ὅπου ἦσαν τὰ παλάτια, τὰ ἀρχοντικὰ οἰκήματα καὶ τὰ δημόσια ἱδρύματα. Τρίτον, καὶ τελευταῖον, καταφύγιον τῶν κατοίκων ἦτο τὸ ἐντὸς τῆς κορυφῆς τοῦ βουνοῦ κάστρον, τὸ ὁποῖον ἐπροστάτευε τὴν ὅλην πόλιν.

Εἰς τὸ μέσον σχεδὸν τῆς πόλεως, εἰς τὸ ἀριστερὸν μέρος, ἐγείρεται ἐκκλησία ὡραιοτάτη, ἡ ὁποία εἶναι καταφανὴς εἰς τὸν ἐπισκέπτην μακρόθεν, διότι περιβάλλει αὐτὴν εὐρὺς πολυγωνικὸς περίβολος καὶ τὴν ἐξωραΐζει γραφικώτατον κωδωνοστάσιον. Εἶναι αὕτη τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς τῆς Παντανάσσης. Ὀλίγον κάτω αὐτῆς, πρὸς τὴν ἐκ Ν. ἐκ τοῦ Νέου Μυστρᾶ εἴσοδον πρὸς τὴν πόλιν, εἶναι ὁρατὴ ἡ μονὴ τῆς Περιβλέπτου, περιβαλλομένη καὶ αὐτὴ διὰ περιβόλου. Ἡ βυζαντινὴ πόλις τοῦ Μυστρᾶ δύναται νὰ διαιρεθῇ εἰς τὴν Κάτω πόλιν καὶ τὴν Ἄνω πόλιν.

Δὲν ὑπάρχει ἀμφιβολία ὅτι ἀπὸ τὸ 1265 περίπου, ὅτε εὑρίσκετο ἤδη ὁ Βυζαντινὸς στρατηγὸς εἰς τὸ κάστρον, πολλοὶ κάτοικοι τῆς Λακεδαιμονίας, ἡ ὁποία ἤρχιζε νὰ ἐρημώνεται, ἔκτισαν πρόχειρά τινα οἰκήματα εἰς τὰ κράσπεδα αὐτοῦ, ὑπὸ τὴν σκέπην καὶ τὴν προστασίαν τοῦ κάστρου. Τὰ οἰκήματα ταῦτα ἦσαν τὰ πρῶτα κτίσματα τοῦ Μυστρᾶ, ἡ Κάτω πόλις. Κατὰ τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, ὅτε ἡ πόλις ἔγινεν ἕδρα δεσπότου, ἤρχισε, φυσικά, καὶ ἡ ἐπέκτασις αὐτῆς πρὸς τὴν ἀνωφέρειαν τοῦ βουνοῦ, μεταξὺ τοῦ κάτω τούτου συνοικισμοῦ καὶ τοῦ φρουρίου. Καὶ τὰ δύο τμήματα τῆς πόλεως τοῦ βυζαντινοῦ Μυστρᾶ ἦσαν περιβεβλημένα διὰ περιτειχισμάτων, οὕτως ὥστε, συναριθμουμένου καὶ τοῦ κάστρου, τὸ ὁποῖον ἦτο τὸ ἔσχατον καταφύγιον, ἡ πόλις προεφυλάσσετο ὑπὸ τριῶν τειχῶν καὶ καθίστατο ἐξαιρετικῶς ὀχυρὰ καὶ δυσπόρθητος. Ἐκ τῆς ἄνω πόλεως δύο μεγάλαι ὁδοὶ διὰ δύο πυλῶν, τῆς μὲν ΒΔ., τῆς δὲ ΝΑ., ἦγον πρὸς τὰς δύο κυριωτάτας παραλίους πόλεις τῆς Πελοποννήσου, πρὸς τὸ Ναύπλιον καὶ τὴν Μονεμβασίαν. Τὰ παλαιότερα κτίσματα τῆς Ἄνω πόλεως εἶναι τοῦ πρώτου ἡμίσεος τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Ἰδίως ὅμως περὶ τὰ μέσα τοῦ αἰῶνος τούτου, διὰ τοῦ πρώτου δεσπότου, τοῦ Μανουὴλ Καντακουζηνοῦ, ἐπετάθη ἡ δραστηριότης πρὸς κτίσιν. Τὸ τμῆμα τοῦτο τῆς πόλεως ἔχει ἴδιον περίβολον, διότι προωρίζετο νὰ γίνῃ ἡ πόλις τῶν ἀρχόντων καὶ τῆς διοικήσεως. Ὁ Μανουὴλ Καντακουζηνὸς εἶχεν ἤδη ἕτοιμον τὸ ὑλικὸν πρὸς δημιουργίαν μεγάλης πόλεως. Τὰ σχέδια ταῦτα πρὸς ἀνύψωσιν τοῦ Μυστρᾶ εὗρον ὠφέλιμα καὶ ἠκολούθησαν καὶ οἱ Παλαιολόγοι, συνεχίζοντες τὸ ἔργον τοῦ Καντακουζηνοῦ. Τὰ κτίσματα λοιπὸν τῆς Ἄνω πόλεως εἶναι μερικὰ τοῦ Καντακουζηνοῦ καὶ πλεῖστα τῶν Παλαιολόγων.

*Αἱ ἐκκλησίαι τοῦ Κάτω Μυστρᾶ. Ἡ μητρόπολις καὶ ὁ Ἅγιος Δημήτριος.* Τὸ σημαντικώτατον μνημεῖον τοῦ Μυστρᾶ εἶναι ὁ ἀφιερωμένος εἰς τὸν ἅγιον Δημήτριον ναός, ὁ ὁποῖος ὑπῆρξε ναὸς τῆς ἄλλοτε μητροπόλεως, λέγεται δὲ σήμερον μητρόπολις. Τὸ μνημεῖον τοῦτο παρέχει καὶ γενικώτερον ἐνδιαφέρον ἀρχιτεκτονικόν, διότι ἀποτελεῖται ἀπὸ ἓν σύμπλεγμα κτισμάτων (τῶν ὁποίων κύριος πυρὴν εἶναι ἡ μητροπολιτικὴ ἐκκλησία), περιβαλλόμενον ὑπὸ ἐξωτερικοῦ περιτειχίσματος. Εἰς τὴν ΒΑ. πλευρὰν ἐγείρεται τὸ μητροπολιτικὸν μέγαρον, συνιστάμενον ἀπὸ δύο διαφόρους πτέρυγας, αἱ ὁποῖαι προχωροῦν πρὸς τὸ μέρος τῆς κοιλάδος τοῦ Εὐρώτα. Ἐξωτερικὴ αὐλὴ ἐκτείνεται πρὸς τὸ Β. μέρος τῆς ἐκκλησίας, εἰς τὴν ὁποίαν εἰσερχόμεθα διὰ μεγάλης κομαρωτῆς θύρας. Ἀπὸ τὴν αὐλὴν ταύτην εἰσερχόμεθα εἰς τὸ κυρίως προαύλιον τῆς ἐκκλησίας, εἶδος ἀτρίου, πρὸς τὸ ΒΔ. μέρος τοῦ ὁποίου ὑπάρχει κρήνη τῆς ἐποχῆς τῆς τουρκοκρατίας μετ' ἐπιγραφῆς ἀναγλύφων γραμμάτων. Ἀπὸ τὸ ἄτριον ἐρχόμεθα εἰς αὐλὴν ἐκτεινομένην πρὸς τὴν ΒΑ. πλευρὰν (τὸ Β. κλίτος) τῆς ἐκκλησίας, κειμένην δὲ μεταξὺ τῶν δύο πτερύγων τοῦ μητροπολιτικοῦ μεγάρου. Ἐνταῦθα ὑπάρχει τὸ βυζαντινὸν μουσεῖον τοῦ Μυστρᾶ, ὅπου ἔχουν περισυλλεγῆ ἰδίως γλυπτά.

Ἡ μητρόπολις, ὅπως καὶ σήμερον ὀνομάζεται ὅλον τὸ σύνολον τοῦτο οἰκοδομῶν, ὑπῆρξεν ἀπὸ τὰ τέλη τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἕως τοὺς τελευταίους χρόνους, τὸ κέντρον τοῦ ἐκκλησιαστικοῦ βίου τῆς πόλεως. Ὁ ἀρχικὸς κτίτωρ εἶναι ὁ μητροπολίτης Λακεδαιμονίας Νικηφόρος τῷ 1310, ὡς δεικνύουν τρεῖς ἐπιγραφαὶ σῳζόμεναι. Ὁ Νικηφόρος κτίζων τὸν ναόν, ἐμιμήθη ἑλληνιστικὴν βασιλικὴν παλαιῶν χρόνων. Ἔκτισε λοιπὸν βασιλικὴν τρίκλιτον καὶ ξυλόστεγον, τῆς ὁποίας αἱ πλάγιαι κλιταὶ χωρίζονται ἀπὸ τὴν ὀλίγον εὐρυτέραν μεσαίαν διὰ σειρᾶς ἑκατέρωθεν ἐκ τριῶν κιόνων. Ἀργότερον, κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος, ἕτερος μητροπολίτης, ὁ Ματθαῖος, μετέτρεψε τὴν ἁπλῆν βασιλικὴν εἰς τρουλλωτὴν βασιλικήν. Εἰς τὸ κάτω μέρος, εἰς τὸ ἰσόγειον, διετηρήθη ὁ ρυθμὸς βασιλικῆς. Ἄνω δὲ εἰς τὸν γυναικωνίτην προσέθηκε καμάρας διασταυρουμένας, αἱ ὁποῖαι φθάνουν ἕως τοὺς ἐξωτερικοὺς τοίχους, καὶ εἰς τὸ σημεῖον τῆς διασταυρώσεως ὕψωσε τροῦλλον. Ὡς πρὸς τὴν ἐσωτερικὴν διακόσμησιν εὑρίσκομεν ἀξιόλογα γλυπτὰ (εἰς τὸ τέμπλον, ὅσον εἶναι ἐξαίσια μικρὰ εἰκονοστάσια). Τὸν σπουδαιότερον στολισμὸν ἀποτελοῦν αἱ τοιχογραφίαι, αἱ ὁποῖαι καλύπτουν τοὺς τοίχους. Εἶναι δὲ αὗται δύο ἐποχῶν καὶ δεικνύουν δύο σχολάς. Τὰ κυριώτερα ἔργα εἶναι τῆς παλαιοτέρας (ἀρχῶν ΙΔ' αἰῶνος)· εἰς τὴν Β. κλιτύν: τὰ μαρτύρια τοῦ ἁγίου Δημητρίου, τῆς δὲ νεωτέρας εἰς τὸν νάρθηκα: Δευτέρα παρουσία. Ἡ πρώτη σχολὴ παρήγαγεν ἔργα ἰδίως διακοσμητικά, προσηλωμένα εἰς τὴν παράδοσιν, μὲ φόντο ἀραιὰ ἀρχιτεκτονήματα. Ἡ διάταξις καὶ οἱ σχηματισμοί της ἐνθυμίζουν μικρογραφίας προγενεστέρας ἐποχῆς, τῆς ἐποχῆς τοῦ Κομνηνοῦ. Ἡ δευτέρα σχολὴ εἶναι νεωτεριστική, ἐνθυμίζουσα τὰς τοιχογραφίας τοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει Καχριὲ τζαμί, τὰ ἔργα δ' αὐτῆς ἐκπλήττουν ἡμᾶς μὲ τὴν πλουσίαν φανταστικὴν ἀρχιτεκτονικὴν αὐτῶν, μὲ τὴν κομψότητα, ἀλλὰ καὶ τὴν τόλμην τῶν κινήσεων καὶ μὲ τὰς ζωηροτάτας ἀντιθέσεις τῶν χρωματισμῶν.

*Ἡ Εὐαγγελίστρια.* Εἰς τὴν ἰδίαν συνοικίαν (κατοικουμένην καὶ συνοικίαν τοῦ Βροντοχίου) εὑρίσκομεν, προχωροῦντες πρὸς τὰ ΒΔ. τῆς μητροπόλεως, κατὰ σειρὰν τρεῖς ἄλλας ἀξίας λόγου ἐκκλησίας, τὴν *Εὐαγγελίστριαν* τοὺς *Ἁγίους Θεοδώρους,* τὸ *Ἀφεντικό.* Καὶ αἱ τρεῖς ἀνήκουν εἰς τὴν ἰδίαν ἐποχήν, τὰ τέλη τοῦ ΙΓ' καὶ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, παρουσιάζουν δὲ καὶ αἱ τρεῖς ἀξιολογωτάτους ἀρχιτεκτονικοὺς τύπους.

Ὁ ναὸς τῆς Εὐαγγελιστρίας εἶναι ὁ μικρότερος ἀπὸ τοὺς καλῶς σῳζομένους καὶ τοὺς τρουλλωτοὺς ναοὺς τοῦ Μυστρᾶ, σήμερον δὲ χρησιμεύει ὡς νεκροταφεῖον τῆς συνοικίας. Ἡ ἐκκλησία αὕτη εἶναι μονόροφος, ἔχει εὐρὺν νάρθηκα, καὶ τὴν δυτικὴν καμάραν, ἤτοι τὸ δυτικὸν σκέλος τοῦ σταυροῦ, ἐπιμηκεστέραν ἀπὸ τὰ ἄλλα. Ὁ τροῦλλος εἶναι ραδινός, στηρίζεται δὲ εἰς δύο κίονας πρὸς Α.,

Digitized by Google

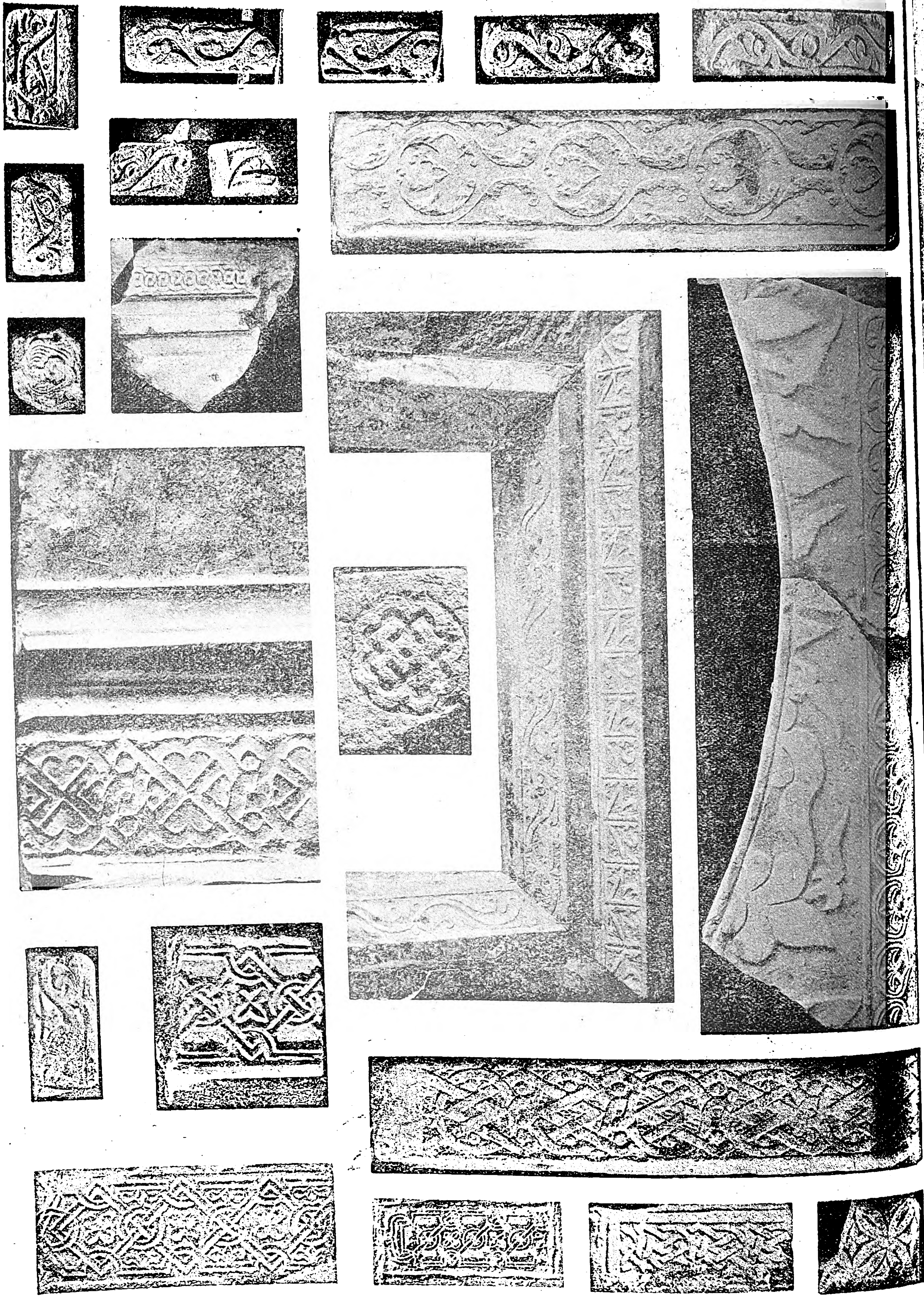

*Γλυπτὰ διάφορα τῆς νεκροπόλεως τοῦ Μυστρᾶ, φυλασσόμενα ἐν τῷ Μουσείῳ.*

Digitized by Google

Digitized by Google

Digitized by Google

πρὸς δὲ τὸ ἱερὸν δὲν ὑπάρχουν κίονες, ἀλλὰ παραστάδες συνδεόμεναι μὲ τὸν τοῖχον τοῦ ἱεροῦ. Εἰς τὸ πλαίσιον τῆς ἐξωτερικῆς θύρας, εἰς τὸ εἰκονοστάσιον, ἔχομεν καλὰ λείψανα τῆς γλυπτικῆς διακοσμήσεως. Αἱ τοιχογραφίαι ἔχουν πέσει ὅλαι καὶ ἡ κομψὴ ἐκκλησία εἶναι ἐστερημένη τοῦ καλυτέρου διακόσμου αὐτῆς.

*Οἱ Ἅγιοι Θεόδωροι.* Ἄλλου τύπου, ὅλως διαφόρου, εἶναι ἡ μεγαλυτέρα ἐκκλησία, ὁ ναὸς τῶν Ἁγίων Θεοδώρων. Ὁ ἀρχιτεκτονικὸς τύπος τῆς ἐκκλησίας ταύτης εἶναι ὁ λεγόμενος ὀκταγωνικός, κατὰ τὸν ὁποῖον ὁ τροῦλλος εἶναι εὐρύτατος καὶ στηρίζεται εἰς ὀκτὼ κύρια σημεῖα. Ὁ τροῦλλος κατέχει ὅλον τὸν χῶρον τῆς κυρίας ἐκκλησίας, περιλαμβάνων ὁλόκληρον τὸ ἱερὸν καὶ τὰς τρεῖς κόγχας αὐτοῦ, δὲν στηρίζεται δὲ εἰς τέσσαρα γωνιαῖα τρίγωνα (λοφεῖα), ἀλλ' εἰς τέσσαρας κόγχας (εἴτε ἡμιχώνια), μεταξὺ τῶν ὁποίων ἀνοίγονται καὶ ἰσομήκη τόξα τεσσάρων καμαρῶν, αἱ ὁποῖαι παρεκτείνονται ἔξω τοῦ κυρίως ναοῦ καὶ δίδουν καὶ ἐνταῦθα τὸ σχέδιον σταυροῦ.

Ἡ ἐξωτερικὴ διὰ πλίνθων καὶ πωρίνων λίθων διακόσμησις τοῦ ναοῦ εἶναι ἀξιολογωτάτη, ἰδίως δὲ τὰ κεραμοπλαστικὰ πλαίσια τῶν διλόβων ἢ μονολόβων παραθύρων. Ἡ ἐκκλησία αὐτὴ ἦτο ἐντελῶς ἠρειπωμένη, ἀνεστηλώθη δὲ ὑπὸ τοῦ Α. Ἀδαμαντίου. Ἀξιολογώταται ἦσαν καὶ αἱ τοιχογραφίαι, ὡς δεικνύουν τὰ σῳζόμενα λείψανα: εἷς ὡραῖος ἄγγελος τοῦ Εὐαγγελισμοῦ καὶ οἱ δύο στρατιῶται ἅγιοι Θεόδωροι. Σημαντικώτατον λείψανον σῴζεται εἰς τὸ παρεκκλήσιον τῆς ΒΑ. γωνίας, ἡ προσωπογραφία τοῦ αὐτοκράτορος Μανουὴλ Παλαιολόγου, ὁ ὁποῖος γονυπετὴς ἱκετεύει τὴν Θεοτόκον. Ἡ ὁπωσδήποτε σῳζομένη ἐπιγραφὴ φέρει χρονολογίαν 1423. Ἐνταῦθα ὑπάρχει καὶ ὁ τάφος τοῦ δεσπότου Θεοδώρου Α'. Οἱ Ἅγιοι Θεόδωροι εἶναι ἡ πρώτη χρονολογικῶς γνωστὴ καὶ σῳζομένη ἐκκλησία, διότι ἐκτίσθη ὀλίγον πρὸ τοῦ 1216, ὅτε ἦτο ἡγούμενος τῆς μονῆς ὁ Παχώμιος, ἴσως δηλαδὴ εἶναι τὸ πρῶτον ἐκκλησιαστικὸν ἵδρυμα τῆς Κάτω πόλεως, ἤτοι τῆς συνοικίας τοῦ Βροντοχίου.

*Τὸ Ἀφεντικό.* Ὁ ὡραιότερος ἀναμφισβητήτως, ὁ σπουδαιότερος ναὸς τοῦ Μυστρᾶ εἶναι ὁ ναὸς ὁ λεγόμενος σήμερον *Ἀφεντικό*, ὁ ὁποῖος σῴζεται καλῶς ὁπωσδήποτε, διὰ νὰ δώσῃ ἰδέαν τῆς ἀρχικῆς μορφῆς ἢ τῆς σημασίας αὐτοῦ. Ἡ μεγάλη μονή, τῆς ὁποίας καθολικὸν εἶναι τὸ Ἀφεντικό, εἶναι κτισμένη εἰς τὸ ΒΔ. ἄκρον τῆς πόλεως, ἀμέσως ἔσωθεν τοῦ περιβόλου, ὁ ὁποῖος περικλείει πρὸς τὸ μέρος τοῦτο τὴν ὅλην πόλιν. Ἦτο ἀφιερωμένος εἰς τὸ ὄνομα τῆς ὑπεραγίας Θεοτόκου τοῦ Βροντοχίου.

Τὸ Ἀφεντικό, τὸ ὁποῖον ἀνήκει εἰς τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΔ' αἰῶνος, παρ' ὅλην τὴν ἐρείπωσιν πολλῶν τμημάτων (τοῦ κεντρικοῦ τρούλλου, καμαρῶν καὶ ἄλλων), παρέχει ἱκανὰ στοιχεῖα, ὥστε νὰ γίνῃ τελεία ἀναπαράστασις αὐτοῦ, καὶ ἀνήκει εἰς τοὺς διωρόφους τρουλλωτούς, οἱ ὁποῖοι εἰς τὸ ἰσόγειον ἔχουν σχῆμα βασιλικῆς. Εἶναι θαυμάσιαι αἱ ἀρχιτεκτονικαὶ ἀναλογίαι, εὐχάριστον δὲ θέαν παρέχει καὶ ἡ ἐξωτερικὴ τοιχοδομία, ἡ ὁποία δὲν εἶναι κατὰ τὸ κλασσικὸν βυζαντινὸν ἰσοδομικὸν σύστημα, ἀλλὰ ἔχει ἄτακτον πλὴν χαρίεσσαν οἰκοδομίαν ἐκ λίθων, φαιδρυνομένη διὰ πολλῶν κεράμων. Οἱ ἀργοὶ λίθοι διακόπτονται ἀπὸ ὁριζοντίας σειρὰς πλίνθων. Πέριξ τῶν παραθύρων κεραμοπλαστικὰ πλαίσια προσδίδουν ἀκόμη μεγαλυτέραν χάριν εἰς τὸ σύνολον. Ἀρχεῖαι τοιχογραφίαι ἔχουν διασωθῆ εἰς τὸ Ἀφεντικό, αἱ ὁποῖαι δεικνύουν μεγάλην τελειότητα. Ἄξιαι σημειώσεως εἶναι εἰς τὰς καμάρας ἡ Γέννησις, ἡ Μεταμόρφωσις, ὡς καὶ οἱ ὁλοσώματοι ἅγιοι τῶν τοίχων καὶ αἱ προτομαὶ προφητῶν εἰς τοὺς θόλους τῶν μικρῶν τρούλλων.

Τὸ κύριον σῶμα τῆς ἐκκλησίας περιβάλλεται ἀπὸ πολλὰ παρεκκλήσια, τὸ ἀρχιτεκτονικὸν δὲ σύνολον ἀποτελεῖται ἀπὸ τὰ κτίσματα τὰ ἀνήκοντα εἰς τὴν μονήν. Ἀξία προσοχῆς εἶναι ἡ ὄπισθεν τοῦ νοτίου τοίχου τράπεζα τῶν μοναχῶν. Τὰ προσεπικτισμένα εἰς τὴν ἐκκλησίαν παρεκκλήσια εἶναι πολυτιμότατα μνημεῖα διὰ τὰς τοιχογραφίας. Τὸ εἰς τὴν ΒΑ. γωνίαν παρεκκλήσιον ἔχει ἐξαισίας ζωγραφίας: κάτωθεν ἀψῖδος, τὴν ὁποίαν ἀποτελοῦν ἄγγελοι, εἰκονίζεται ὁ κτίτωρ Παχώμιος, προσφέρων τὴν ἐκκλησίαν εἰς τὴν Θεοτόκον. Ἐνταῦθα ἔχομεν τοιχογραφίαν, ἡ ὁποία παριστάνει τὸν αὐτοκράτορα Ἀνδρόνικον Β', καὶ εἰς ἄλλην ἔχομεν διπλῆν προσωπογραφίαν, τοῦ δεσπότου Θεοδώρου, πιθανώτατα τοῦ Α', ὅστις εἰκονίζεται καὶ ὡς δεσπότης καὶ ὡς μοναχός.

Σπουδαιότατον εἶναι τὸ ἀπέναντι, εἰς τὴν ΝΑ. γωνίαν, παρεκκλήσιον, τὸ ὁποῖον πρέπει νὰ ὀνομάσωμεν παρεκκλήσιον τῶν χρυσοβούλλων. Ἐνταῦθα, εἰς θαυμασίαν σύνθεσιν, παριστάνονται ἄγγελοι, οἱ ὁποῖοι ἀνέχουσι τὰ ἀντίγραφα 4 χρυσοβούλλων, ἕκαστον ἐκ τῶν ὁποίων εἶναι ἀπεικονισμένον εἰς ἕνα ἐκ τῶν τεσσάρων τοίχων. Τὰ χρυσόβουλλα, τὰ ὁποῖα ἔχουν χρονολογίαν (1314—1315, 1319, 1320, 1322), δίδουν σημαντικὰς εἰδήσεις περὶ τῶν ἀφορώντων τὴν μονὴν καὶ ἰδίως τόπους καὶ κτήματα, τὰ ὁποῖα δωρεῖ ὁ αὐτοκράτωρ εἰς αὐτήν. Σπουδαῖαι τοιχογραφίαι σῴζονται εἰς παρεκκλήσια κατὰ μῆκος τῆς νοτίας πλευρᾶς. Ἐνταῦθα ἦσαν τάφοι ἀρχόντων, οἱ ὁποῖοι εἶχον ἄνωθεν αὐτῶν προσωπογραφίας τῶν νεκρῶν. Αἱ σπουδαιότεραι τοιχογραφίαι εἶναι ἡ Κοίμησις της Θεοτόκου καὶ ὁ Μυστικὸς δεῖπνος.

*Αἱ μικραὶ ἐκκλησίαι.* Εἰς τὴν βυζαντινὴν πόλιν, ἰδίως τὴν Κάτω πόλιν, εἶναι ἐσκορπισμέναι πολλαὶ μικραὶ ἐκκλησίαι τῆς ἐποχῆς τῶν δεσποτῶν, αἱ ὁποῖαι παρέχουν ἱκανὸν ἐνδιαφέρον καὶ δύνανται νὰ συμπληρώσουν τὴν μελέτην περὶ τῆς τέχνης καὶ τοῦ βίου ἐν Μυστρᾷ. Τὸ σπουδαιότερον ἀπὸ τὰ ναΐδια αὐτὰ εὑρίσκεται ἔξω τῶν τειχῶν τῶν πρὸς τὴν κοιλάδα τοῦ Εὐρώτα, εἶναι δὲ ἡ ἐκκλησία τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου (ὁ Ἅϊ Γιαννάκης), μονοκάμαρος, ἀνήκουσα εἰς τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος. Εἰς τὸν Ἅγιον Ἰωάννην σῴζονται ἀρκεταὶ τοιχογραφίαι, αἱ ὁποῖαι παρέχουν μέγα ἐνδιαφέρον. Αἱ ἀξιολογώτεραι εἶναι εἰς προφήτης ὑπὸ τὴν ἀψῖδα τοῦ ἁγίου Βήματος, ὁ Μυστικὸς δεῖπνος καὶ μεγάλη παράστασις τῆς Σταυρώσεως.

***Αἱ ἐκκλησίαι τοῦ Ἄνω Μυστρᾶ. Ἡ Περίβλεπτος.*** Ἀνερχόμενοι πρὸς τὸν βυζαντινὸν Μυστρᾶν βλέπομεν ἀριστερὰ πρὸς τὸν ἄνω ἕνα κομψὸν πύργον καὶ ὀλίγον πλησίον αὐτοῦ πολὺ περίεργον ἐκκλησίαν, κτισμένην πλησίον βράχου ἢ μᾶλλον στηριζομένην ἐπ' αὐτοῦ, ἡ ὁποία εἶναι τὸ καθολικὸν τῆς μονῆς τῆς Περιβλέπτου. Ὁ περίβολος τῆς μονῆς σῴζεται, ἀκόμη δὲ καλύτερα ὁ περίβολος τῆς ὑψηλότερον κειμένης μονῆς τῆς Παντανάσσης. Τὸ ὄνομα Περίβλεπτος ἀναφέρεται εἰς τὴν Παναγίαν,

*Ἀνάγλυφος δικέφαλος ἀετὸς πρὸ τοῦ Ἱεροῦ Βήματος τῆς Μητροπόλεως.*

ἡ Θεοτόκος ἡ Περίβλεπτος (ὑπῆρχεν ἐκκλησία τῆς Περιβλέπτου καὶ εἰς τὴν Κωνσταντινούπολιν). Ἡ ἐκκλησία ἀνήκει εἰς τὰ μέσα τοῦ ΙΔ' αἰῶνος (περὶ τὸ 1350), ὡς δεικνύει ἡ ἀρχιτεκτονικὴ καὶ αἱ τοιχογραφίαι, εἶναι δηλαδὴ τῆς μέσης περιόδου τοῦ Μυστρᾶ καὶ τῆς ἀρχῆς τῆς ἱδρύσεως τοῦ δεσποτάτου. Ἡ ἐκκλησία εἶναι περίεργος καὶ χαριτωμένη ὡς ἀρχιτεκτονικὸν ἔργον. Ἄνωθεν τοῦ ναοῦ, ἐπὶ τοῦ βράχου, ὑψώνεται ἁπλοῦν καὶ μακρὸν κωδωνοστάσιον. Ἡ ἐξωτερικὴ τοιχοδομία ἰσοδομική, κατὰ τὸν συνήθη βυζαντινὸν τρόπον, μὲ λίθους καὶ πλίνθους. Ἀξία θέας εἶναι ἡ Τράπεζα, τὸ ἑστιατόριον τῆς μονῆς, πρὸς τὴν ΝΑ. γωνίαν τοῦ μνημονευθέντος πύργου. Ἰδίως ὅμως αἱ τοιχογραφίαι τῆς Περιβλέπτου εἶναι μᾶλλον ἀξιοθαύμαστοι τῆς ἐκκλησίας καὶ ἴσως τὰ πλέον ἀξιοθαύμαστα καλλιτεχνικὰ ἔργα τοῦ Μυστρᾶ. Εἰς τὴν Περίβλεπτον ἔχει ἤδη προχωρήσει ἡ καλλιτεχνικὴ κίνησις καὶ ἔχει φθάσει εἰς τὴν λαμπροτέραν ἄνθησιν αὐτῆς. Αἱ τοιχογραφίαι τῆς Περιβλέπτου ἔχουν διανεμηθῆ ὡς ἑξῆς: Εἰς τὸν τροῦλλον εἰκονίζεται, ὅπως πάντοτε, ὁ Παντοκράτωρ, καὶ περὶ αὐτὸν τὰ Σεραφεὶμ καὶ τὰ Χερουβείμ, ὑποκάτω δὲ ὁλοσώματοι προφῆται. Εἰς τοὺς τοίχους τῆς ἐκκλησίας ἔχομεν σκηνὰς ἐκ τοῦ βίου τοῦ Σωτῆρος· εἰς τὸν τοῖχον τοῦ νοτίου κλίτους ἔχομεν σπανίας παραστάσεις ἐκ τοῦ βίου τῆς Θεοτόκου. Αὗται αἱ ζωγραφίαι εἶναι ἀξιολογώταται καὶ διὰ τὸ περιεχόμενον καὶ διὰ τὸν ἐξαίρετον τρόπον τῆς ἀπεικονίσεως. Ἐξαισία τοιχογραφία, ἡ ὁποία πρέπει νὰ θεωρηθῇ ἓν ἀπὸ τὰ ἀξιολογώτατα ἔργα τέχνης, εἶναι εἰς τὴν πρόθεσιν, εἰς τὸ Β. μέρος τοῦ ἱεροῦ, ἡ Θεία Λειτουργία, εἰς τὴν ὁποίαν ἄγγελοι, φέροντες ἅγια δῶρα, τελοῦν οὐρανίαν πομπήν. Ἡ παράστασις, διὰ τὴν τελειότητα τῆς ἐκτελέσεως, τὴν δύναμιν τῆς ἐκφράσεως καὶ τὴν ὅλην εὐγένειαν, ἐνθυμίζει ἀληθινὴν πομπὴν τῶν Παναθηναίων. Ἐν γένει οἱ ζωγράφοι τῆς Περιβλέπτου δεικνύουν τόσον μεγάλην γνῶσιν τῆς τέχνης, τόσην εἰλικρίνειαν, τόσην δύναμιν ἐκτελέσεως, ὥστε τὰ ἔργα αὐτῶν εἶναι ἀντάξια τῶν ἔργων, τὰ ὁποῖα ἐξετέλεσαν εἰς τὴν Ἰταλίαν οἱ καλύτεροι διδάσκαλοι τῆς παλαιοτέρας Ἀναγεννήσεως κατὰ τὸ πρῶτον ἥμισυ τοῦ ΙΔ' αἰῶνος.

*Ἡ Παντάνασσα.* Εἰς τὸ μέσον σχεδὸν τῆς κλιτύος τοῦ βουνοῦ, κάτωθεν τοῦ κάστρου καὶ ἄνω τῆς Περιβλέπτου, ἐγείρεται κομψὴ καὶ γραφικωτάτη ἡ ἐκκλησία τῆς μονῆς τῆς Παντανάσσης. Ἡ ἐκκλησία αὐτὴ εἶναι τὸ μνημεῖον, τὸ ὁποῖον διετηρήθη καλύτερον, παρέχει δὲ εἰς ἡμᾶς ἀκριβῆ εἰκόνα τῆς ἀρχιτεκτονικῆς καὶ τῆς ζωγραφικῆς τοῦ Μυστρᾶ, τῶν δύο δηλαδὴ σπουδαιοτάτων ὄψεων τῆς βυζαντινῆς τέχνης. Εἴς τινας πηγὰς μνημονεύεται μονὴ τοῦ Ζωοδότου (Χριστοῦ). Εἰς τὴν μονὴν ταύτην, λέγει ὁ Βυζαντινὸς χρονογράφος Γεώργιος Φραντζῆς, ἐτάφη ἡ ὡραία δέσποινα Κλεώπα Μαλατέστα, ἡ σύζυγος τοῦ δεσπότου Θεοδώρου Α'. Εἰς τὴν μονὴν ταύτην ἐπίσης ἀνεκομίσθησαν τὰ ὀστᾶ τῆς Θεοδώρας, συζύγου τοῦ Κωνσταντίνου Παλαιολόγου. Ἦτο ἀνδρική· ἔπειτα, λέγουν, ἔγινε γυναικεία, καὶ αὐτὴ εἶναι, νομίζεται, ἡ σήμερον μονὴ τῆς Παντανάσσης, ἀνακαινισθεῖσα τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ' αἰῶνος ὑπὸ τοῦ Φραγκοπούλου.

Ὁ περίβολος τῆς μονῆς ἀποτελεῖ μέγα τετράγωνον, ἂν ὄχι δὲ ὁλόκληρος, τοὐλάχιστον κατὰ μέγα μέρος, φαίνεται ὅτι εἶναι βυζαντινός. Τὸ ὕψωμα, ἐπὶ τοῦ ὁποίου εἶναι κτισμένη, κεῖται 4 μέτρα ὑψηλότερον ἀπὸ τὸ δάπεδον τῆς αὐλῆς. Κομψόταται εἶναι αἱ στοαί, αἱ ὁποῖαι τὴν περιέβαλλον, πρὸς Β. (πρὸς τὸ μέρος τῆς εἰσόδου) καὶ πρὸς Ν. Μόνον ἡ τελευταία αὐτὴ σῴζεται ἀκεραία πρὸς τὸ μέρος τῆς κοιλάδος, συγκειμένη ἀπὸ 4 ἀνοικτὰ τόξα. Εἰς τὴν γωνίαν τῆς ἐκκλησίας καὶ τῶν δύο στοῶν ὑψώνεται τὸ κωδωνοστάσιον. Αὕτη εἶναι συνολικῶς ἡ ἐξωτερικὴ ὄψις.

Ὁ ἀρχιτεκτονικὸς τύπος τῆς Παντανάσσης παρέχει τὴν τελειοτέραν ἐξέλιξιν καὶ ἄνθησιν τῆς βυζαντινῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Εἶναι κάλλιστον μεῖγμα τῆς βασιλικῆς καὶ τῆς σταυροειδοῦς ἐκκλησίας. Εἰς τὸ κάτω μέρος εἶναι βασιλική· εἰς τὸν γυναικωνίτην τέσσαρες διασταυρούμεναι καμάραι, εἰς τὸ κέντρον τῶν ὁποίων ὑψοῦται τροῦλλος, δίδουν τὸ σχῆμα σταυροῦ. Ἡ καινοτομία αὐτὴ δὲν εἶναι τοῦ ἀρχιτέκτονος τῆς Παντανάσσης, ἀλλὰ παλαιοτέρας ἐκκλησίας, τῆς τοῦ Ἀφεντικοῦ, κατὰ τὴν ὁποίαν μετεσκευάσθη καὶ ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Δημητρίου. Ὁ ρυθμὸς τρουλλωτῆς βασιλικῆς ποικίλλεται μὲ τοὺς 4 μικροτέρους τρούλλους, οἱ ὁποῖοι εἶναι εἰς τὰς γωνίας, τὰ διάμεσα τοῦ σταυροῦ καὶ δι' ἕκτου τρούλλου, ὁ ὁποῖος εἶναι ἐπάνω εἰς τὸν νάρθηκα-γυναικωνίτην.

Τὸ κωδωνοστάσιον εἶναι εἷς ὑψηλὸς τετράπλευρος πύργος, ὁ ὁποῖος κατὰ τὴν μίαν πλευρὰν συνέχεται μὲ τὴν ἐκκλησίαν καὶ εἶναι μετ' αὐτῆς συνδεδεμένος. Ἔχει τρεῖς ὀρόφους, τῶν ὁποίων τὰ τοξοειδῆ ἀνοίγματα δεικνύουν φραγκικὴν ἐπίδρασιν.

Ὅπως ἡ ἀρχιτεκτονική, ὁμοίως καὶ ἡ ζωγραφικὴ τῆς Παντανάσσης δεικνύει πλήρη ἐξέλιξιν. Αἱ ἀξιολογώτεραι εἶναι: Εἰς τὸν νάρθηκα ὁ Βυζαντινὸς ἄρχων, ὁ Μανουὴλ Καντζίκης Λάσκαρης, εἰς μέγεθος ὀλίγον μικρότερον τοῦ φυσικοῦ. Ἡ τοιχογραφία εἶναι τοῦ 1445. Τὸ ὅλον σχέδιον εἶναι κομψὸν καὶ ἀσφαλές, τὸ πρόσωπον εὐγενὲς καὶ μὲ δυνατὴν ἔκφρασιν. Εἰς τὰς καμάρας ὑπάρχουν: ἡ Γέννησις καὶ ὁ Εὐαγγελισμός, ἡ Βαϊοφόρος καὶ ἡ Ὑπαπαντή. Εἰς τὰς τρεῖς μεγάλας αὐτὰς συνθέσεις, αἱ ὁποῖαι διετηρήθησαν καλῶς, θαυμάζομεν τὴν εὐρύτητα τῆς συνθέσεως καὶ τὸν πλούσιον ἀρχιτεκτονικὸν διάκοσμον. Ἰδιαιτέρως ἀξιομνημόνευτοι εἶναι εἰς τὸν νότιον τοῖχον οἱ 24 οἶκοι τῆς Θεοτόκου, ἡ Ἀνάστασις τοῦ Λαζάρου, ὁ Εὐαγγελισμὸς καὶ αἱ μορφαὶ τῶν προφητῶν ἀπὸ τοὺς θόλους τῶν πλαγίων κλιτῶν.

*Ἡ Ἁγία Σοφία.* Προχωροῦντες περίπου 200 μέτρα ἀπὸ τὴν πύλην τῆς Μονεμβασίας εὑρισκόμεθα ἔμπροσθεν εἰς τὰ μεγαλοπρεπῆ παλάτια τῶν Παλαιολόγων. Ὑπεράνω δ' αὐτῶν, ἐπὶ ἰσοπέδου ὑψώματος, ἠγείρετο ἡ κομψοτάτη ἐκκλησία τῆς Ἁγίας Σοφίας. Ἡ ἐκκλησία αὐτὴ ἀνήκει εἰς τὸν τύπον τῶν μονορόφων τρουλλωτῶν βασιλικῶν, αἱ ὁποῖαι ἔχουν ἐπιμήκη τὴν Α. καμάραν καὶ ὡς ἐκ τούτου λαμβάνουν σχῆμα ὁμοιότατον μὲ τὸ τῆς βασιλικῆς. Ὁμοιάζει γενικῶς μὲ τὴν Περίβλεπτον, ἰδίως τὴν Εὐαγγελίστριαν, εἶναι ὅμως ραδινωτέρα ταύτης καὶ ἔχει καὶ κωδωνοστάσιον εἰς τὴν ΒΑ. γωνίαν.

Ἡ τοιχοδομία εἶναι κατὰ τὸ κλασσικὸν βυζαντινὸν σύστημα διὰ λίθων πωρίνων ἐναλλασσομένων μὲ πλίνθους, ἄξια δὲ προσοχῆς εἶναι καὶ τὰ περὶ τὴν ἐκκλησίαν προσκτίσματα, οἱ εὐρεῖς νάρθηκες πρὸς Α., ὡς καὶ σειρὰ παρεκκλησίων εἰς τὴν νοτίαν πλευρὰν καὶ ἡ ἔμπροσθεν τῆς Β. πλευρᾶς σῳζομένη ὑπόγειος δεξαμενή. Ἐκτίσθη ὡς καθολικὸν μονῆς, ἀλλὰ καὶ ὡς ἐκκλησία ἀνακτορικὴ μετὰ τὸ 1350 καὶ φαίνεται μεταγενεστέρα ὀλίγον τῶν δύο ἄλλων ὁμοιοτύπων ναῶν, τῆς Εὐαγγελιστρίας καὶ τῆς Περιβλέπτου.

Digitized by Google

Αἱ καλύπτουσαι τοὺς τοίχους τῶν ναῶν τοιχογραφίαι θὰ ἦσαν πολὺ ἀξιόλογοι, δὲν δυνάμεθα ὅμως καλῶς νὰ κρίνωμεν αὐτάς, διότι ἔχουν ὑποστῆ μεγάλας βλάβας. Εἰς τὸ διακονικὸν διακρίνομεν τὸν Ἑλκόμενον, εἰς τὸν κυρίως ναὸν τὴν Γέννησιν, εἰς δὲ τὸ ΝΔ. παρεκκλήσιον εἰς τὸν θόλον τὴν Θείαν λειτουργίαν.

*Ὁ Ἅγιος Νικόλαος.* Παρὰ τὴν πύλην τῆς Μονεμβασίας, ὀλίγα μέτρα πρὸς τὸ ἐσωτερικόν, ἐγείρεται ἀρκετὰ μεγάλη ἐκκλησία, ἡ ὁποία δὲν παρουσιάζει τὴν ἐξωτερικὴν κομψότητα τῶν ἄλλων ναῶν. Εἶναι μεταγενεστέρας ἐποχῆς, ἡ μεταγενεστέρα ὅλων τῶν ἄλλων, καὶ ἀνήκει εἰς τοὺς πρώτους χρόνους τῆς τουρκοκρατίας, προφανῶς τὰς ἀρχὰς ἢ τὰ μέσα τοῦ ΙΣΤ΄ αἰῶνος. Τὴν χρονολόγησιν τῆς ἐκκλησίας τοῦ Ἁγίου Νικολάου ἐπιτυγχάνομεν ἀπὸ τὴν συγκριτικὴν τεχνοκριτικὴν μελέτην τῶν πολυαρίθμων σῳζομένων τοιχογραφιῶν αὐτῆς, ἡ διατήρησις τῶν ὁποίων εἶναι ἀρκετὰ καλή. Ἀρχιτεκτονικῶς ἡ ἐκκλησία εἶναι σταυροειδὴς τρουλλωτή, ἔχει δ᾿ εὐρείας τὰς καμάρας καὶ ἡ ὅλη διάταξις αὐτῆς εἶναι πολὺ σύμμετρος. Αἱ τοιχογραφίαι παρέχουν ἀρκετὸν ἐνδιαφέρον, πρῶτον διότι διὰ τῆς μελέτης αὐτῶν δυνάμεθα νὰ συμπληρώσωμεν τὰς γνώσεις ἡμῶν καὶ περὶ τῆς παλαιοτέρας βυζαντινῆς ζωγραφικῆς, καὶ ἔπειτα διότι διατηροῦν ἀκόμη κάποιαν συμμετρίαν καὶ ζωηρότητα εἰς τὴν σύνθεσιν, ἀφοῦ οἱ ζωγράφοι αὐτῶν εἶχον πρόχειρα τὰ τέλεια ὑποδείγματα, τὰ ὁποῖα παρεῖχον αἱ προγενέστεραι. Ἐν γένει ὁ ναὸς τοῦ Ἁγίου Νικολάου, ὡς ἐκ τῆς ἀρχιτεκτονικῆς εὐρυχώρου διαθέσεως καὶ τῆς καλῆς συντηρήσεως τῶν τοιχογραφιῶν αὐτοῦ, δὲν στερεῖται ἐνδιαφέροντος.

***Τὰ ἀστικὰ καὶ στρατιωτικὰ κτίσματα.*** Τὸ κτήριον, τὸ ὁποῖον δεσπόζει πάντων εἰς τὴν Ἄνω πόλιν, εἶναι τὰ παλάτια τῶν δεσποτῶν. Εἰς τὸ ἄκρον μιᾶς μεγάλης πλατείας ὑψώνονται οἱ τοῖχοι κολοσσιαίων κτηρίων, τὰ ὁποῖα ἡ παράδοσις ὀνομάζει «σαράγια τῆς βασιλοπούλας». Τὸ σύμπλεγμα τῶν κτηρίων σχηματίζει τὸ γράμμα Γ, δύο δηλαδὴ μεγάλαι πτέρυγες, ἡ μία ἀνατολική, δεξιὰ πρὸς τὸν βλέποντα, καὶ ἡ ἄλλη βορεινή, ἀμέσως ἀπέναντι πρὸς τὸν ἀνερχόμενον, εἶναι σχεδὸν κάθετοι πρὸς ἀλλήλας. Αὐταὶ αἱ δύο πτέρυγες περικλείουν εὐρυχωροτάτην αὐλὴν (cour d'honneur) τῶν παλατίων. Ἡ ἀνατολικη πλευρὰ εἶναι τοποθετημένη ἔσωθεν τῶν τειχῶν, τὰ ὁποῖα περικλείουν τὴν Ἄνω πόλιν τοῦ Μυστρᾶ, καὶ βλέπει πρὸς τὴν κοιλάδα τοῦ Εὐρώτα.

Ἡ ἀνατολικὴ πτέρυξ συνίσταται ἀπὸ πολλὰ διαμερίσματα, τὰ ὁποῖα εἶναι διάφορα δωμάτια, τὸ πρῶτον μάλιστα μὲ μεγάλους θόλους. Εἰς ἓν ἀπὸ τὰ δωμάτια διακρίνει ὁ ἐπισκέπτης πηλίνους σωλῆνας, οἱ ὁποῖοι ἐχρησίμευον διὰ νὰ ἐξέρχωνται τὰ ὕδατα. Ἄλλο κτήριον, τὸ ὁποῖον ἔχει ὑπογείους δεξαμενάς, εἶναι τὸ λουτρὸν καὶ ἄλλο διαμέρισμα εἶναι οἱ κοιτῶνες. Τὸ πρὸς τὴν βορείαν πτέρυγα μέρος εἶχεν ἀνοικτὴν στοὰν καὶ ἐξώστας, οἱ ὁποῖοι ἔβλεπον πρὸς τὸν μαγευτικὸν ἐλαιῶνα τῆς Σπάρτης. Τὰ ἀποτελοῦντα τὴν πτέρυγα ταύτην κτήρια ἐκτίσθησαν διαδοχικῶς, τὰ νεώτερα δηλαδὴ κτίσματα προσεκολλῶντο εἰς τὰ παλαιά, χωρὶς νὰ ὑπάρχῃ ἐκ τῶν προτέρων γενικὸν σχέδιον.

Τὸ κύριον σῶμα τοῦ οἰκοδομήματος εἶναι ἡ μακρὰ βορεινὴ πτέρυξ, ἡ ὁποία εἶναι μεταγενεστέρα τῶν τελῶν τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος καὶ συνίσταται κυρίως ἀπὸ μίαν μεγάλην αἴθουσαν, ἥτις διαιρεῖται εἰς δύο ὀρόφους κατὰ τὸ ὕψος. Τὸ ἰσόγειον ἀποτελεῖται ἀπὸ ὀκτὼ στενὰ καὶ μακρὰ θολοσκέπαστα δωμάτια, τὰ ὁποῖα ἦσαν διὰ τοὺς σωματοφύλακας καὶ διὰ τὴν ὑπηρεσίαν ἐν γένει. Ἕκαστον ἀπὸ τὰ θολωτὰ ταῦτα δωμάτια εἶχεν ἰδιαιτέραν ἑστίαν (τζάκι), ἡ ὁποία ἐσχημάτιζε τὸ κάτω στόμιον καπνοδόχου. Ὅλαι αἱ σχηματιζόμεναι καπνοδόχοι ἀναβαίνουν ἕως τὴν στέγην τοῦ παλατίου, εἰς ὕψος 15 μέτρων, ἦσαν δ᾿ ἑστίαι πρὸς θέρμανσιν. Ὄπισθεν τῆς προσόψεως τῶν παλατίων, πρὸς Β., ἐκτείνεται αὐλή, εἰς τὴν ὁποίαν ὑπάρχει καὶ ἠρειπωμένη ἐκκλησία, ὁ Ἅγιος Κωνσταντῖνος, καὶ πλεῖστα κτίσματα, τὰ ὁποῖα εἶναι προφανῶς οἰκήματα τῶν ἀνθρώπων τῆς δεσποτικῆς αὐλῆς. Πέραν τῆς συνοικίας ταύτης περιβάλλει τὴν πόλιν τὸ πρὸς Β. τεῖχος καὶ εἶναι ἡ ὀχυρωτάτη πύλη τοῦ Ναυπλίου.

Τὰ μνημεῖα τὰ ὁποῖα παρουσιάζουν μέγιστον ἐνδιαφέρον εἶναι τὰ ἀστικὰ οἰκοδομήματα, διότι ταῦτα παρέχουν εἰς ἡμᾶς πλουσιώτατον καὶ μοναδικὸν σχεδὸν ὑλικὸν πρὸς μελέτην τῆς ἀρχιτεκτονικῆς τῶν Βυζαντινῶν. Εἶναι δὲ ἄπειρον τὸ ὑλικὸν καὶ θὰ ἠδυνάμεθα νὰ ὑπολογίσωμεν τὰ σῳζόμενα λείψανα οἰκημάτων εἰς δύο χιλιάδας περίπου. Αἱ οἰκίαι αὗται εἶναι σκορπισμέναι καθ᾿ ὅλην τὴν ἔκτασιν τῆς βυζαντινῆς πόλεως· αἱ περισσότεραι εἶναι τῶν τελευταίων χρόνων τοῦ δεσποτάτου, παρέχουν ὅμως μέγα ἐνδιαφέρον, διότι εἶναι ἐκ τῶν ὀλιγίστων σῳζομένων λειψάνων ἀστικῆς ἀρχιτεκτονικῆς. Οἰκήματά τινα εἶναι ἀξιολογώτερα καὶ προσελκύουν περισσότερον τὸ ὄμμα τοῦ ἐπισκέπτου, ἡ δὲ παράδοσις ἐβάπτισεν αὐτὰ μὲ ὀνόματα παλαιῶν ἀρχόντων τοῦ Μυστρᾶ, ὡς τοῦ Λασκάρεως, τοῦ Φραγκοπούλου κλπ. Τὴν προσοχὴν ἰδίως προσελκύουν τὰ εἰς τὸν τοῖχον τῆς προσόψεως μαρμάρινα ὑποθήματα, τὰ ὁποῖα ἐβάσταζον εὐρυχώρους ἐξώστας.

Εἰς τὴν Ἄνω πόλιν, καὶ ὑπεράνω τῶν παλατίων, διασῴζεται ἀρχοντικὸν οἴκημα στερεώτατα κτισμένον. Ἀποτελεῖται ἀπὸ τρεῖς ὀρόφους καὶ εἰς τοὺς τοίχους αὐτοῦ ἔχουν ἀνοιχθῆ τοξοθυρίδες. εἰς τὸν ἄνω δὲ τοῖχον ὑπῆρχεν ἐξώστης. Πρὸς τὸ Β. μέρος τοῦ οἰκοδομήματος τούτου ἕως τὸ παλάτιον σῴζονται καὶ πολλαὶ ἄλλαι ἀρχοντικαὶ οἰκοδομαί. Τὸ εὐρύτατον τοῦτο καὶ ὀλίγον χαῶδες σύμπλεγμα πτωχικῶν ἀστικῶν καὶ ἀρχοντικῶν οἰκημάτων, μὲ τοὺς στενοὺς δρομίσκους, παρέχει πολυγραφικὴν θέαν καὶ δίδει ὄψιν ζωντανῆς πόλεως ἐγκαταλελειμμένης.

Τὰ τείχη καὶ οἱ πύργοι, οἱ ὁποῖοι ἀποτελοῦν τὸν περικλείοντα τὸν Μυστρᾶν ἐξωτερικὸν περίβολον, εἶναι ἄξια ἰδιαζούσης προσοχῆς, πρῶτον διότι ἡ κτίσις αὐτῶν ἔγινε καθ᾿ ὡρισμένην ἐποχήν, τὰ μέσα τοῦ ΙΔ΄ αἰῶνος, καὶ ἔπειτα διότι σῴζονται ὅπως τότε ἐκτίσθησαν. Δὲν ὑπέστησαν καμμίαν μεταβολήν, οὔτε καὶ ἐπισκευήν, ὅπως τὰ ἀλλαχοῦ σῳζόμενα βυζαντινὰ τείχη, ἰδίως τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ὅπου ἀπὸ χίλια σχεδὸν ἔτη δὲν ἔπαυσαν νὰ ἐπισκευάζωνται. Τὰ τείχη τοῦ Μυστρᾶ σῴζονται εἰς μεγάλην ἔκτασιν, πολλαχοῦ δὲ σχεδὸν ἀκέραια. Ἡ οἰκοδομία αὐτῶν εἶναι στερεωτάτη, διότι οἱ ἀργοὶ λίθοι ἐνισχύονται, ὅπως καὶ εἰς τοὺς τοίχους τῶν παλατίων, διὰ παρενθέσεως ἀτάκτως πολυαριθμοτάτων θραυσμάτων πλίνθων, περισφίγγει δὲ τοὺς λίθους καὶ τὰς κεράμους παχὺ στρῶμα ἀσβέστου, τὸ ὁποῖον εἶναι μυστρισμένον μὲ πολὺ μεγάλην τέχνην καὶ στερεότητα. Εἰς πολλὰ μέρη τῶν τειχῶν σῴζονται αἱ ὀδοντωταὶ ἐπάλξεις καὶ ἐνιαχοῦ καὶ ὁ περιφερικὸς δρόμος (chemin de ronde), ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἱστάμενοι οἱ πολεμισταὶ ἐμάχοντο. Εἰς τὴν ΒΑ. γωνίαν τῆς μονῆς τοῦ Βροντοχίου σῴζεται πύργος τριώροφος, ἐν γένει δὲ εἶναι γραφικώτατον τὸ θέαμα τῶν ἀνερχομένων πρὸς τὸ κάστρον τειχῶν καὶ ἐρειπίων ὑψηλῶν πύργων, οἱ ὁποῖοι μόλις συγκρατοῦνται σῳζόμενοι καθ᾿ ὅλον τὸ ὕψος αὐτῶν.

Τὸ κάστρον ἐκτίσθη ὑπὸ τοῦ Γουλιέλμου Βιλλαρδουΐνου, ἀνήκει δηλαδὴ εἰς τὰ μέσα τοῦ ΙΓ΄ αἰῶνος καὶ σῴζεται ἀρκετὰ καλῶς. Ἂν καὶ ἐκτίσθη ὅμως ὑπὸ Φράγκων, εἶναι βυζαντινὸν κτίσμα, ὅπως καὶ ὅλα τὰ ἐν Ἑλλάδι λεγόμενα φραγκικὰ κάστρα. Ἡ τέχνη τοῦ λεγομένου φραγκικοῦ κάστρου εἶναι γνησία βυζαντινὴ τέχνη, διότι ἐγχώριοι τεχνῖται εἰργάσθησαν καὶ ὀλίγιστοι ἴσως Φράγκοι, οἱ ὁποῖοι ὀλίγας λεπτομερείας φραγκικὰς προσέθεσαν. Τὸ κάστρον καταλαμβάνει ὅλον τὸ ὕψος τοῦ λόφου καὶ ἔχει σχῆμα στενόμακρον καὶ ἀκανόνιστον. Πρὸς τὸ νότιον μέρος, πρὸς τὸν Ταΰγετον, ἡ οἰκοδομία εἶναι ὀλίγη, διότι τὸ μέρος τοῦτο κατέρχεται ἀποκρημνότατα εἰς βαθυτάτην φάραγγα, πέραν τῆς ὁποίας ὑψώνεται ὁ μεγαλοπρεπὴς Ταΰγετος. Πρὸς τὸ ΒΑ. ἄκρον πάλιν τὸ ἔδαφος κατέρχεται καὶ ἀπέναντι εἰς τὸ ὕψωμα εἶναι τὰ ἐρείπια τῆς ἑβραϊκῆς συνοικίας, ὅπου συνῳκίσθησαν, ἔξω ἀπὸ τὸν περίβολον τῶν τειχῶν, οἱ ἐκ τῆς Λακεδαίμονος Ἰουδαῖοι. Τὰ ἰσχυρὰ τείχη τοῦ κάστρου, ὡς τὸ πρὸς τὴν πόλιν μέρος, σῴζονται κάλλιστα καὶ ἐπ᾿ αὐτῶν γραφικώτατα εἶναι παρατεταγμέναι αἱ ἐπάλξεις. Ἐνίσχυον δὲ τὸ τεῖχος πολλοὶ πύργοι. Μετὰ τὴν πύλην τοῦ κάστρου, ἡ ὁποία ἀνοίγεται πρὸς τὸ Β. μέρος καὶ τὴν ὁποίαν ἐνισχύει πύργος ἔχων προμαχῶνας, ὁλόκληρον τὸ δυτικὸν μέρος καταλαμβάνει εὐρὺς χῶρος, αὐλὴ ὅπου ἦσαν οἱ στρατῶνες, τὰ οἰκήματα τῶν ἱπποτῶν, αἱ ἀποθῆκαι κττ. Τὸ νοτιοανατολικὸν ἄκρον περιβάλλεται καὶ δι᾿ ἰδίου τείχους καὶ ἔχει εἰς τὸ ἄκρον ἰσχυρὸν πύργον, ὁ ὁποῖος βλέπει πρὸς τὰ ἀνατολικὰ πρόβουνα τοῦ Ταϋγέτου καὶ πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῆς Τριπόλεως. Εἰς τὸ μέσον περίπου, ἀλλὰ πρὸς τὸ Δ. μέρος, εἶναι ἰσχυρὸν κτήριον, τὸ δυναμάρι (Donjon), τὸ ὁποῖον ἐχρησίμευεν ἴσως ὡς παλάτιον τοῦ πρίγκιπος καὶ ἔπειτα τῶν Βυζαντινῶν στρατηγῶν. Εἰς τὸ Δ. ἄκρον τοῦ κάστρου ὑψώνεται ἰσχυρὸς στρογγύλος πύργος, βλέπων πρὸς τὰ δυτικὰ πρόβουνα τοῦ Ταϋγέτου. Ὁ περιφερικὸς δρόμος, αἱ ὑπόγειοι δεξαμεναί, αἱ ὁποῖαι σῴζονται, δεικνύουν τὴν τελείαν κατάρτισιν ἰσχυροτάτου φρουρίου.

***Ἔρευναι περὶ Μυστρᾶ.*** Ἤδη ἀπὸ τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΕ΄ αἰῶνος ἐπῆγεν εἰς τὴν Σπάρτην λόγιος περιηγητής, ὁ Ἰταλὸς Κυριακὸς ὁ ἐξ Ἀγκῶνος, τῷ 1437. Μετὰ τὴν ἅλωσιν ἤρχισαν ἀμέσως οἱ περιηγηταὶ νὰ ἔρχωνται εἰς τὴν Ἑλλάδα, ὁ Ἰταλὸς Φραγκῖσκος Giambetti (1465), ὁ Guilletière (1676), ὁ Coronelli (1681), ὁ ἀββᾶς Fourmont (1728), ὁ γνωστὸς Pouqueville καὶ πολλοὶ ἄλλοι. Περισσότερα περὶ τῶν ἐρειπίων τοῦ Μυστρᾶ λέγουν οἱ περιηγηταὶ τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος. Ὁ περίφημος Chateaubriand ἀφιερώνει εἰς τὴν Λακωνίαν, τὰς ἀρχὰς τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος (τῷ 1807), ἐξαισίας σελίδας. Οἱ πρῶτοι ἐπιστημονικῶς ὁμιλήσαντες εἶναι οἱ ἐρευνηταὶ τῆς μεγάλης γαλλικῆς ἐπιστημονικῆς ἀποστολῆς καὶ μετ᾿ αὐτοὺς ὁ ἐρευνητὴς τῆς φραγκοκρατουμένης Ἑλλάδος Κάρολος Buchon.

Πρέπει ὅμως νὰ κατέλθωμεν εἰς τὰς τελευταίας δεκαετηρίδας, διὰ νὰ εὕρωμεν ἀληθινὴν ἐπιστημονικὴν προσοχὴν εἰς τὸν Μυστρᾶν. Πρῶτος ἀπέδειξε τὴν σημασίαν αὐτοῦ, ἐκδώσας καὶ ἐπιγραφὰς ἐκ Μυστρᾶ, ὁ ἀείμνηστος καθηγητὴς Κ. Ζησίου. Ἰδίως ὅμως ὁ ἐπιφανὴς Γάλλος Βυζαντινολόγος Γαβριὴλ Μιλλέ, κατὰ παρακίνησιν τοῦ διευθυντοῦ τῆς γαλλικῆς σχολῆς Θεοφίλου Homolle, κατέστησε τὸν Μυστρᾶν πεδίον λεπτομεροῦς ἐρεύνης, ἐπανειλημμένως διατρίψας ἐν μέσῳ τῶν ἐρειπίων αὐτοῦ. Ἕως τώρα ὁ Μιλλὲ ἐξέδωκε, πλὴν ἄλλων, ἓν μέγα λεύκωμα τῶν μνημείων τοῦ Μυστρᾶ (Album des monuments de Mistra, 1910). Τέλος ἀπὸ τὸ 1906 ἡ Ἀρχαιολογικὴ ἑταιρεία ἀπεφάσισε νὰ διεξαγάγῃ συστηματικὰς ἐργασίας πρὸς ἀναστήλωσιν, συντήρησιν καὶ εὐπρέπειαν τῶν μνημείων τοῦ Μυστρᾶ. Ἔκτοτε ὁ ἀναλαβὼν τὴν ἐργασίαν Ἀ. Ἀδαμαντίου ἐπὶ χρόνον μακρὸν εἰργάσθη πρὸς ἐπιστημονικὴν ἐξερεύνησιν αὐτοῦ. Οἱ ἱστορικοὶ καὶ ἀρχαιολόγοι Βέης, Σωτηριάδης, Ὀρλάνδος, Σωτηρίου, Ξυγγόπουλος, ὡς καὶ πολλοὶ ζωγράφοι, ξένοι καὶ ἰδικοί μας, ἐμελέτησαν τὰ κατὰ τὸν Μυστρᾶν. Οὕτως ἠγέρθη κατὰ τὰς δύο τελευταίας δεκαετίας ζωηρότατον ἐνδιαφέρον τῶν ἰδικῶν μας ὡς καὶ τῶν ξένων ἀρχαιολόγων, ἐπιστημόνων, περιηγητῶν, πρὸς τὸν πολύτιμον βυζαντινὸν ἐρειπιῶνα. Ἀφ᾿ ὅτου δὲ δύο ἐπιφανεῖς ξένοι λογοτέχναι, ὁ Γερμανὸς ποιητὴς Γεράρδος Hauptmann καὶ ὁ Γάλλος λογογράφος Μαυρίκιος Barrès, ἔγραψαν καὶ ἐνθουσιωδεστάτας ἐξαισίας σελίδας περὶ τοῦ Μυστρᾶ, ἐκορυφώθη τὸ ἐνδιαφέρον ὅλου τοῦ πολιτισμένου κόσμου πρὸς τὴν παρὰ τὸν Ταΰγετον πόλιν τῶν Παλαιολόγων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Πρῶτος ἐδημοσίευσεν ὁ *Κωνσ. Ζησίου* ἐπιγραφὰς τοῦ Μυστρᾶ εἰς τὰ «Σύμμεικτα», 1892. Κατόπιν ὁ *G. Millet* εἰς τὸ «Δελτίον Ἑλληνικῆς Ἀλληλογραφίας» (B. C. H. 1899).—*Ἀδ. Ἀδαμαντίου*, «Πρακτικὰ τῆς Ἀρχαιολογικῆς Ἑταιρείας», περὶ τῶν ἐργασιῶν ἀναστηλώσεως κατὰ τὰ ἔτη 1906, 1907, 1908 (δημοσιευθ. τὰ 1907, 1908, 1909).—*Millet*, Monuments byzantins de Mistra. Λεύκωμα 152 πινάκων (1910).—Οἱ *Millet* καὶ *Ἀδαμαντίου* ἐδημοσίευσαν πολλὰ πολλαχοῦ.—Συνολικὸν βιβλίον *Adolf Struck*, Mistra. Eine mittelalterliche Ruinenstadt (1910).—Ἡ ἱστορία τοῦ δεσποτάτου ἐξάγεται ἐκ τῶν Βυζαντινῶν ἱστορικῶν καὶ ἄλλων συγγραφέων (βλ. τὴν μεγάλην ἔκδοσιν *Σπ. Λάμπρου*, Παλαιολόγεια, 4 τ. 1912—1930), ἐκ τῶν ἐγγράφων, *Miklosich-Müller*, Acta et diplomata, τ. I, 1860), ἐκ τῶν ἐπιγραφῶν (τὰς ὁποίας ἐδημοσίευσαν οἱ *Ζησίου* καὶ *Millet*).—Αἱ αὐστηρῶς ἐρευνητικαὶ εἰδήσεις ὡς πρὸς τὴν ἱστορίαν εὑρίσκονται παρὰ τῷ *Hopf (Ersch-Gruber)*, πρόχειρως παρὰ τῷ *Μίλλερ-Λάμπρῳ*.—Βλ. *Ἀδ. Ἀδαμαντίου*, Τὰ Χρονικὰ τοῦ Μορέως («Δελτίον τῆς Ἱστορικῆς Ἑταιρείας», τ. ΣΤ΄, 1906).

ΑΔ. ΑΔΑΜΑΝΤΙΟΥ

—**Μυστρᾶς** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Καλαρρυτῶν τῆς ἐπαρχίας Δωδώνης (Ἰωαννίνων) τοῦ νομοῦ Ἰωαννίνων. Κάτ. (1928) 58. Χ. Δ.

**μυστρὶ** (τό)· δημοτ., ἐργαλεῖον τῶν κτιστῶν, ἀποτελούμενον ἐκ τριγωνικοῦ χαλυβδίνου ἐλάσματος μετὰ λαβῆς ξυλίνης· δι᾿ αὐτοῦ ὁ κτίστης ἀναλαμβάνει καὶ εὐθετεῖ τὸν πηλὸν κατὰ τὴν τοιχοδομίαν καὶ ὁ ἀμμοκονιατὴς κατὰ τὴν ἐπίχρισιν τοῦ τοίχου δι᾿ ἀμμοκονιάματος.

**μυστριὰ** (ἡ)· ὅσον περιλαμβάνει τὸ μαστρί: «μιὰ μυστριὰ ἀσβέστη».

**μυστρίζω**· διὰ τοῦ μυστρίου εὐθετῶ τὸν πηλὸν ἢ ἐπιχρίω τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ τοίχου· || ἰδιωματ. *μουστρίζω*· ἐπαλείφω τινά, λερώνω· || παθ. *μυστρίζομαι*· ἀλείφομαι.

**μύστρισμα** (τό)· ἡ ἐνέργεια τοῦ μυστρίζω. ἡ διὰ τοῦ μυστρίου εὐθέτησις τοῦ πηλοῦ ἢ ἐπίχρισις τοῦ τοίχου· || ἰδιωματ. *μούστρισμα*· ἐπάλειψις, λέρωμα ἰδίᾳ τοῦ προσώπου, ἐπὶ μικρῶν παιδίων.

**μύστρον** (τὸ) *[Ἀρχ.]*. Μέτρον ὑγρῶν ἐν χρήσει κυρίως ὑπὸ τῶν ἰατρῶν. Ἦτο τὸ διπλάσιον τοῦ κοχλιαρίου καὶ τὸ ἥμισυ τοῦ κυαθίου, διεκρίνετο δὲ εἰς *μέγα μύστρον* καὶ *μικρὸν* ἢ *μικρότερον*. Β. Δ. Θ.

**Μύστρος** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας Χαλκίδος τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 427. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὸ χωρίον *Μαυρόπουλον*. Χ. Δ.

**Μύσων *ὁ Χηνεύς***. Ἕλλην φιλόσοφος σύγχρονος τοῦ Σόλωνος ἐκ τῆς κώμης Χηνὸς τῆς Λακωνίας, ἢ κατὰ Παυσανίαν (X, 24, 1) ἐκ τῶν Χηνῶν τῆς Θεσσαλίας, τὸν ὁποῖον ὁ Πλάτων κατατάσσει μεταξὺ τῶν ἑπτὰ σοφῶν τῆς Ἀρχαίας Ἑλλάδος, ἀντὶ τοῦ Περιάνδρου. (Πρωτ. 343, καὶ ἀλλαχοῦ). Α. Θ. Ε.

**μυτακίζω**· ἀρχ., μεταχειρίζομαι συχνὰ τὸ στοιχεῖον *μῦ*, πβλ. *ἰωτακίζω*.

**μυταρᾶς** (ὁ)· δημοτ., αὐτὸς ποὺ ἔχει μεγάλη μύτη.

**Μυταρᾶς, *Ἀνδρέας***. Ἕλλην καραβοκύρης Ψαρῶν. Μυηθεὶς εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς ἑταιρείας, ὅταν ἐξερράγη ἡ ἐπανάστασις, ἐξώπλισε τὸ πλοῖόν του καὶ συμμετέσχεν εἰς τὴν παρὰ τὴν Ἐρεσὸν τῆς Μυτιλήνης ναυμαχίαν. Ἐπίσης ἔλαβε μέρος καὶ εἰς τὰς ναυμαχίας τοῦ Γέροντα, τοῦ Κ... ρέως καὶ τοῦ Κάβο Πάπα παρὰ τὰς Πάτρας. Μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν παρέμεινεν ὡς ἀξιωματικὸς τοῦ βασιλικοῦ ναυτικοῦ, προαχθεὶς εἰς πλοίαρχ... Τ. Ε.

**Μύτεν** (Mythen) *[Γεωγρ.]*. Ὄρος τῆς Ἑλβετίας ἐν τῷ καντονίῳ τῆς Σβύτς. Ἔχει τρεῖς κορυ-

Digitized by Google

ἡ ὑψηλοτέρα τῶν ὁποίων φθάνει τὰ 1.903 μ. Ἀποτελεῖ διακλάδωσιν τῶν Ἄλπεων καὶ ἔχει γραφικώτατα τοπία πλήρη κέντρων ἀναψυχῆς, κλιματολογικῶν σταθμῶν καὶ ἀναρρωτηρίων. Μ. Δ. Β.

**μυτερός,** *—ή, —ό*· δημοτ. αὐτὸς ποῦ ἔχει μύτη, ὁ καταλήγων εἰς ὀξύ, αἰχμηρός, ἄλλως *σουβλερός*, ἀντίθ. *κουτσουμπός*: «μυτερὴ πέννα», «μαχαίρι μυτερό».

**μύτη** (ἡ)· δημοτ., ἡ ρὶς τοῦ ἀνθρώπου καὶ τῶν ζῴων: «μεγάλη—, μικρὴ μύτη», «μύτη καμπουρή, —πλατσουρή», «κοκκίνησε ἡ μύτη του ἀπὸ τὸ κρασί»· || φρ. «δὲ βλέπει ὡς τὴ μύτη του» δὲν διακρίνει οὐδὲ τὰ ἐγγύτατα, κυριολεκτ. καὶ μεταφ., «τὸν σέρνει—, τὸν τραβᾷ ἀπὸ τὴν μύτη» ἐπὶ ἀνθρώπου φερομένου καὶ ἀγομένου δίκην κτήνους, «ἔχει ψηλὰ τὴ μύτη», ἢ «ψήλωσε ἡ μύτη του» εἶναι ἀλαζών, «χώνει παντοῦ τὴ μύτη του» ἐπεμβαίνει ἀπρόσκλητος· || τὸ ρύγχος τῶν ζῴων καὶ τὸ ράμφος τῶν πτηνῶν: «τὸ γρούνι σκάβει μὲ τὴ μύτη», «τὰ πουλλιὰ τσιμποῦν μὲ τὴ μύτη»· || οἱ ρώθωνες τῆς ρινός: «μάτωσε—, λύθηκε ἡ μύτη μου» ἐπὶ αἱμορραγίας τῆς ρινός, «ἔγινε ἐπανάστασις χωρὶς νὰ λυθῇ μύτη», «μιλάει μὲ τὴ μύτη»· || φρ. «μοῦ 'βγῆκε ἀπὸ τὴ μύτη» (=«μοῦ 'βγῆκε ξινὸ») ἐπὶ τῆς ἐννοίας ὅτι τὸ εὐχάριστον συναίσθημα ὅπερ ἐδοκίμασέ τις ἔκ τινος γεγονότος ὄχι μόνον ἐξουδετερώθη, ἀλλὰ καὶ ἀντικατεστάθη ὑπὸ δυσαρέστου ἐξ αἰτίας εἴτε προσώπου εἴτε γεγονότος τινός, «μοῦ 'καμες ἕνα καλὸ καὶ μοῦ τό 'βγαλες ἀπὸ τὴ μύτη», «καλὸ ἦταν τὸ ταξίδι, ἀλλὰ μοῦ βγῆκε ἀπὸ τὴ μύτη»· || «φυσῶ τὴ μύτη μου» ἀπομύττομαι· || ἡ ὄσφρησις, ἡ ἱκανότης τῆς ὀσφρήσεως: «ἔχει —, δὲν ἔχει μύτη» ἢ «καλὴ μύτη», «τὸ λαγωνικὸ σκυλλὶ ἔχει καλὴ μύτη»· || μεταφ., ἡ αἰχμηρά, ἡ ὀξεῖα ἄκρα: «τὸ μολύβι μου δὲν ἔχει μύτη», «ἡ μύτη τῆς βελόνας, —τῆς πέννας, —τοῦ μαχαιριοῦ», «οἱ μύτες τῶν παπουτσιῶν».

**Μύτη-Μύτη** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἄλλη ὀνομασία τῆς ἀκρωτηριαζούσης χθαμαλῆς γλώσσης *Ἄντερρος* (βλ. λ.) ΝΔ. τῆς Στυλίδος. Σ. Ε. Λ.

**μυτιὰ** (ἡ)· δημοτ., κτύπημα ἐπὶ τῆς ρινὸς διὰ τοῦ δακτύλου: «τοῦ δωσε μιὰ μυτιά», «ἔφαγε μιὰ μυτιά», «παίζομε τὶς μυτιές;».

**Μύτικας** *[Γεωγρ.]*. Ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος τῆς ἐπαρχίας Βονίτσης καὶ Ξηρομέρου τοῦ νομοῦ Αἰτωλοακαρνανίας. Κάτ. 724. Εἶναι ἐκτισμένη ἐπὶ ἀμμώδους ἄκρας, διαιρούσης εἰς δύο τὸν λιμένα τῆς κωμοπόλεως. Ἔχει ἀστυνομικὸν σταθμόν, εἰρηνοδικεῖον, τελωνοστοθμαρχεῖον, δημοτικὸν σχολεῖον, γεωργικὸν συνεταιρισμόν. Εἰς ἀπόστασιν 3 χιλιομέτρων εὕρηνται τὰ ἐρείπια τῆς ἀρχαίας Ἀλυξείας. Χ. Γ. Ε.

— **Μύτικας** *[Γεωγρ.]*. Κωμόπολις τῆς ἐπαρχίας Χαλκίδος τοῦ νομοῦ Εὐβοίας, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κάτ. (1928) 1.731. Ἔχει ταχυδρομεῖον, τηλεφωνεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον.

— **Μύτικας** *[Γεωγρ.]*. —1) Χωρίον παρὰ τὴν Πρέβεζαν, ἀνῆκον εἰς τὸν δῆμον, ἐπαρχίαν καὶ νομὸν Πρεβέζης. Κάτ. 344.

—2) Χωρίον ἀνῆκον εἰς τὴν κοινότητα Ἀνέζας τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Ἄρτης. Κάτ. 239.

—3) Χωρίον τῆς κοινότητος Πανδρόσου τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. 293. Ι. Σ. Σ.

**μυτίλασπις** (ὁ) (Mytilaspis) *[Ζῳολ.]*. Γένος ἐντόμων ἡμιπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *κοκκοειδῶν*. Τὸ εἶδος M. fulva (ἢ Lepidosaphes citricola) προσβάλλει ὅλα τὰ ἐνσέρια ὄργανα τῶν ἑσπεριδοειδῶν. Ἐνδείκνυνται ψεκασμοὶ διὰ θειασβεστίου κατὰ τὰς ἐποχὰς τῆς ἐκκολάψεως τῶν προνυμφῶν. Ε. Τ. Ε.

**Μυτιληναῖος, *Παναγῆς*.** Ἀγωνιστὴς ἐκ Μυτιλήνης, ὅστις, ἅμα τῇ ἐνάρξει τῆς ἐπαναστάσεως, κατῆλθεν εἰς Κρήτην, ὅπου ἠγωνίσθη ἐκθύμως, πολλάκις διακριθείς, ὡς εἰς τὰς κατὰ τῆς Ἱεραπέτρου ἐπιχειρήσεις. Ὑπὸ τοῦ ἁρμοστοῦ Τομπάζη διωρίσθη σωματάρχης ἐπικούρων. Ἐφονεύθη, ἀφοῦ ἐπὶ πολλὰς ὥρας γενναίως ἠγωνίσθη, κατὰ τὴν παρὰ τὸ Ἀμουργέλες μάχην (Αὔγουστος 1823). ΕΡ. Μ.

**Μυτιληνέου** (Mitilineou), ***Ἰωάννης*.** Ρουμᾶνος πολιτικός, γεννηθεὶς τῷ 1868. Ἐσπούδασε νομικὰ ἐν Βουκουρεστίῳ καὶ Παρισίους καὶ κατ' ἀρχὰς ἐγένετο διοικητικὸς ὑπάλληλος. Βραδύτερον ἐξήσκησε τὸ δικηγορικὸν ἐπάγγελμα, ἀπὸ δὲ τοῦ 1910—1912 διετέλεσε διευθυντὴς τῆς ἀστυνομίας Βουκουρεστίου. Τῷ 1917 προσελήφθη ὡς γενικὸς γραμματεὺς ἐν τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐσωτερικῶν καὶ κατόπιν ἐγένετο ὑπουργὸς τῆς Δικαιοσύνης. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1926 προσελήφθη ὡς ὑπουργὸς τῶν Ἐξωτερικῶν ἐν τῇ κυβερνήσει τοῦ στρατηγοῦ Ἀβερέσκου. Μ. Δ. Β.

**Μυτιλήνη** *[Μυθ.]*. Ἡρωῒς τῆς νήσου Λέσβου, μυθολογουμένη ἐπώνυμος τῆς πρωτευούσης αὐτῆς. Φέρεται θυγάτηρ ἢ μήτηρ τοῦ Μάκαρος, σύζυγος τοῦ Ποσειδῶνος ἢ τοῦ Λέσβου, ἀδελφὴ τῆς ἀμαζόνος Μυρίννης, θυγάτηρ τοῦ Πέλοπος κτλ. (βλ. καὶ *Μυτιλήνη* νῆσος). Π. Ν. Π.

**Μυτιλήνη *(νῆσος)*.** Ἑλληνικὴ νῆσος τοῦ ΒΑ. Αἰγαίου πελάγους, προσκειμένη τῇ Μικρᾷ Ἀσίᾳ κάτωθεν τῆς χερσονήσου τῆς Ἴδης καὶ ἔξω τοῦ Ἀδραμυττηνοῦ κόλπου, ἀπὸ τῆς πρωτευούσης της ἔχουσα τὸ ὄνομα (τουρκ. *Μεντιλί*), παλαιότερον δὲ καὶ ἐπισήμως νῦν καλουμένη *Λέσβος*. Ἡ γεωγραφικὴ θέσις αὐτῆς καθορίζεται ὑπὸ τῶν συντεταγμένων 39° 21'20" (ἀκρωτήριον Κόρακας) ἕως 38°57'30" (ἀκρ. Μέρικας) βορείου πλάτους καὶ 25°49'30" Α (ἀκρ. Σίγρι) ἕως 26°38' Α (ἀκρ. Ἀγρελιός) ἀπὸ Γκρήνουϊτς, ἡ μικροτέρα δὲ αὐτῆς ἀπόστασις ἀπὸ τῆς Μικρᾶς Ἀσίας εἶναι 4 3/4 περίπου μίλια ἐκ τῆς Α. ἀκτῆς (Μυστεγνά—Τοὺζ Μπουροὺν) καὶ 6 3/4 μίλλια ἐκ τῆς Β. ἀκτῆς (Α. κέρας κολπώσεως Ἐφταλοῦς—Δ. κόλπου Σιβριτζῆ) καὶ ἡ μεγίστη 30 μίλλια (ἀκρ. Κόρακας—βάθος Ἀδραμυττηνοῦ κόλπου). Ἔχει πληθυσμὸν (1928) 137.160 κατοίκων (ἐξ ὧν ἄρρενες 65.173), ἀποτελεῖ δὲ μετὰ τῶν παρακειμένων αὐτῇ νήσων Λήμνου καὶ Ἁγίου Εὐστρατίου τὸν νομὸν Λέσβου. Π. Ν. Π.

—[ΓΕΩΛΟΓ.] Εἰς τὴν γεωλογικὴν κατασκευὴν τῆς νήσου λαμβάνουν μέρος τὰ ἀκόλουθα πετρώματα:

α) Κρυσταλλοπαγῆ ἡμιμεταμορφωμένα.

β) Πετρώματα στρωσιγενῆ.

γ) Πετρώματα ἐκρηξιγενῆ (περιδοτῖται, ὀφεῖται καὶ νεοηφαιστειογενῆ).

Ἡ γενικὴ διάταξις τῶν διαφόρων τούτων κατηγοριῶν πετρωμάτων καὶ διαπλάσεων εἶναι ἡ ἀκόλουθος. Ἡ νῆσος διαιρεῖται ἁδρομερῶς διὰ τοῦ κόλπου τῆς Καλλονῆς εἰς δύο τμήματα, ἐκ τῶν ὁποίων τὸ μὲν ἀνατολικὸν εἶναι κατεσκευασμένον ἀπὸ τὰ κρυσταλλοπαγῆ κυρίως πετρώματα καὶ τοὺς ἐκρηξιγενεῖς περιδοτίτας καὶ ὀφείτας, ἐνῷ τὸ δυτικὸν ἀποτελεῖται κυρίως ἀπὸ ἐκρηξιγενῆ τριτογενῆ πετρώματα.

α) *Πετρώματα κρυσταλλοπαγῆ ἡμιμεταμορφωμένα.* Ταῦτα εἶναι κυρίως μαρμαρυγιακοὶ σχιστόλιθοι, ἀργιλλικοὶ μαρμαρυγιακοὶ ἢ χλωριτικοί, σπανιώτερον ἀμφιβολιτικοὶ σχίσται καὶ μάρμαρα. Τὰ στρώματα τῶν πετρωμάτων τούτων ἔχουν γενικὴν διεύθυνσιν Β.ΒΑ—Ν.ΝΔ (ἀκριβέστερον Β—15° —Α). Τὰ κρυσταλλοπαγῆ ταῦτα πετρώματα σχηματίζουν εἰς τὸ ἀνατολικὸν τμῆμα τῆς νήσου μέγαν ὄγκον, ὁ ὁποῖος ἀπολήγει εἰς τὴν ὑψίστην κορυφὴν τῆς νήσου, τὸ ὄρος Ὄλυμπον. Ἑκατέρωθεν, ἀνατολικὰ δηλαδὴ καὶ δυτικά, ὁ ὄγκος οὗτος περιβάλλεται ὑπὸ δύο παραλλήλων ζωνῶν ἐκ περιδοτιτῶν καὶ ὀφειτῶν. Εἰς τὸ δυτικὸν τμῆμα τῆς νήσου ἐπανευρίσκονται ἐν μέσῳ τῶν τριτογενῶν πετρωμάτων κεχωρισμένα τεμάχια ἐκ τῶν πετρωμάτων τούτων καὶ τῆς αὐτῆς διευθύνσεως, τὰ ὁποῖα ἀποδεικνύουν τὴν ἀρχαίαν ἑνότητα τῶν στρωμάτων τῶν πετρωμάτων τούτων καθ' ὅλην τὴν νῆσον.

Τὰ μάρμαρα, εἰδικώτερον, ἀποτελοῦν μεγάλους φακοὺς ἐντὸς τῶν σχιστολίθων, καὶ εἶναι ὡραῖα λευκὰ μάρμαρα, συχνὰ καθαρώτατα, ἐλαφρῶς μαγνησιοῦχα.

Ἡ γεωλογικὴ ἡλικία τῶν ἡμιμεταμορφωμένων τούτων κρυσταλλοπαγῶν πετρωμάτων δὲν εἶναι ἀκόμη ἐπακριβῶς καθωρισμένη, λόγῳ ἐλλείψεως ἀπολιθωμάτων. Θεωροῦνται ὑπὸ τῶν πλείστων γεωλόγων ὡς σχηματισθέντα εἰς τοὺς προδεβονίους χρόνους. Ἐσχάτως ὁ γεωλόγος Γ. Κ. Γεωργαλᾶς ἀνεῦρεν ἐντὸς φακῶν μαρμάρων, παρὰ τὰς θέρμας Κουρτζῆ (ἀνατολ. ἀκταὶ) καὶ παρὰ τὸν ὅρμον Γαβαθᾶ (βόρειοι ἀκταὶ τοῦ δυτικοῦ τμήματος), ἀπολιθώματα ὀργανισμῶν, τῶν ὁποίων ὁ προσδιορισμὸς εἶναι ἀρκετὰ δυσχερὴς λόγῳ τῆς ἰσχυρᾶς μετακρυσταλλώσεως τοῦ ἀσβεστίτου τῶν μαρμάρων. Ἐν τούτοις οἱ ὀργανισμοὶ οὗτοι προσομοιάζουν πολὺ καὶ ὑπενθυμίζουν τὰ ἀπολιθωμένα πρωτόζῳα φουσουλινέλλας, τὰ ὁποῖα ἔζησαν κατὰ τὴν λιθανθρακοφόρον καὶ τὴν πέρμιον περίοδον τοῦ παλαιοζωϊκοῦ αἰῶνος.

Οἱ ἀπὸ Δ. καὶ Α. περιβάλλοντες τὸν ὄγκον τῶν κρυσταλλοπαγῶν πετρωμάτων περιδοτῖται καὶ ὀφεῖται σχηματίζουσι δύο ζώνας. Ἐκ τούτων σημαντικωτέρα εἶναι ἡ δυτικὴ τοῦ Τσαμλικιοῦ, ἔχουσα πλάτος πλέον τῶν 5 χιλ. καὶ διεύθυνσιν ἀπὸ Β.ΒΑ.—Ν. ΝΔ. Ἡ ἄλλη, ἡ τῆς Ἀμαλῆς, εἶναι μικρᾶς ἐκτάσεως, καταλαμβάνουσα τὸ νότιον ἄκρον τῆς χερσονήσου τῆς Μυτιλήνης.

β) Τὰ *στρωσιγενῆ πετρώματα* τῆς νήσου εἶναι ἀφ' ἑνὸς μὲν στρώματα ἀσβεστολίθων, ψαμμιτῶν μαρμαρυγιούχων, ἀμμωδῶν τόφφων κτλ., μετὰ λιγνιτῶν καὶ ἀπολιθωμένων ζῴων γλυκέων ἢ ὑφαλμύρων ὑδάτων, ἀνήκοντα κατὰ τὸν μελετητὴν τῆς νήσου ντὲ Λωναὶ («Γεωλογικαὶ ἔρευναι ἐπὶ τοῦ Αἰγαίου», Annales de Mines, τόμ. XIII, 1898), εἰς τὴν πόντιον βαθμῖδα τῆς νεογενοῦς ὑποδιαπλάσεως τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ καὶ ἀφ' ἑτέρου ἀρκόσαι, κροκαλοπαγῆ ἀποθέματα τῆς πλειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ, ὡς καὶ ἰζήματα πλειστόκαινα καὶ ὁλόκαινα ἀργιλλώδη ἢ ἀμμώδη.

Τὰ στρώματα τῆς ποντίου βαθμῖδος συναντῶνται εἰς τρεῖς κυρίως θέσεις: 1) ἐγγὺς τῆς πόλεως Μυτιλήνης ἐπὶ τῆς ΝΑ. ἀκτῆς μεταξὺ Θέρμης καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Μαλέα· 2) εἰς τὸ βάθος τοῦ κόλπου Γέρας καὶ 3) εἰς τὰ δυτικὰ τῆς νήσου πρὸς βορρᾶν τοῦ ὄρους Ὀρδύμνου εἰς τὰς θέσεις Κελεμνία καὶ Λαψάρνα. Εἰς τὰς θέσεις ταύτας κοιτάσματα λιγνίτου εἶναι ἐστρωμένα ἐντὸς τῶν ἀσβεστολιθικῶν στρωμάτων. Τὰ κυριώτερα γένη τῶν ἀπολιθωμένων μαλακίων καὶ ὀστρακωδῶν ζῴων, τῶν ἐγκεκλεισμένων ἐντὸς τῶν ποντίων στρωμάτων, εἶναι τὰ γένη τῶν μαλακίων *βιθυνία, οὔνιον, κάρδιον, νεριτῖνα, πλανόρβις, πυργίδιον, πύργουλα, ὑδροβία* καὶ τὸ ὀστρακῶδες *κύπρις*. Ἐπίσης εἰς τὰ κοιτάσματα τοῦ ὄρους Ὄρδυμνος εὑρέθησαν καὶ ἀπολιθωμένα ξύλα δύο τύπων δικοτυληδόνων φυτῶν, ἑνὸς κορμοῦ πιθανῶς φοίνικος καὶ δύο ἢ τριῶν τύπων κωνοφόρων, τῶν κεδροξύλων καὶ ἴσως ἑνὸς ἀραουκαριοξύλου.

Τὰ πλειόκαινα στρώματα τῶν ἀρκοσῶν καὶ κροκαλοπαγῶν συναντῶνται μεταξὺ Θερμῆς καὶ τοῦ ἀκρωτηρίου Μαλέα, ὡς καὶ εἰς τὴν νότιον ἀκτὴν τῆς νήσου μεταξὺ Δρώτας καὶ Βρησιᾶς, παρὰ τὴν ἐκβολὴν τοῦ ποταμοῦ Βούρκου.

Τέλος εἰς τοὺς μυχοὺς τῶν ὅρμων Γέρας καὶ Καλλονῆς, καταλαμβανομένους ἀπὸ ἑλώδη χαμηλὰ πεδία, ἔχουν συσσωρευθῆ καὶ καταλαμβάνουν σημαντικὰς ἐκτάσεις αἱ ἄμμοι, αἱ ἄργιλλοι καὶ οἱ πηλοὶ τῆς πλειστοκαίνου καὶ ὁλοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ.

γ') Τὰ *νεοηφαιστειογενῆ πετρώματα*, μεθ' ἠφαιστείων τόφφων καὶ κροκαλοπαγῶν, καταλαμβάνουσιν ἀποκλειστικῶς σχεδὸν τὸ δυτικὸν ἥμισυ τῆς νήσου καὶ τὸ ΒΑ. ἀκραῖον τμῆμα αὐτῆς. Τὰ νεοηφαιστειογενῆ πετρώματα εἶναι κυρίως δακῖται καὶ ἀνδεσῖται ἀνδεσινικοὶ ἢ λαβραδορικοὶ ἢ καὶ αὐγιτικοί. Ἐκ τοιούτων πετρωμάτων συνίσταται τὸ ὄρος Λεπέτυμνος, ἡ κορυφὴ τοῦ Ὀρδύμνου καὶ ἄλλα τινὰ σημεῖα τῆς νήσου. Ὑπάρχουν ἐπίσης καὶ λάβαι βασικαί, βασάλται (κατὰ τὴν ἀνατολικὴν ἀκτὴν τῆς νήσου, παρὰ τὸν Μόλυβον καὶ τὴν Πέτραν, εἰς τὴν Βατοῦσαν καὶ τὴν Πτεροῦντα καὶ ἀλλαχοῦ) ὡς καὶ λαβραδορῖται. Τὰ τριτογενῆ ταῦτα ἠφαιστειογενῆ πετρώματα συνοδεύονται ἀπὸ λίαν σημαντικὰ ἀποθέματα ἠφαιστειογενῶν τόφφων, κροκαλοπαγῶν καὶ λατυποπαγῶν, παρουσιαζόντων συχνότατα στρῶσίν τινα.

Κατὰ τὸν ντὲ Λωναί, εἶναι πιθανὸν ὅτι τὰ ἠφαιστειογενῆ ταῦτα ἀναβλήματα, τὰ ὁποῖα συνιστῶσιν ὁλόκληρον σχεδὸν τὸ δυτικὸν ἥμισυ τῆς νήσου, ἀπετέθησαν ἐντὸς λιμνῶν, ὑπαρχουσῶν κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην. Ἐντὸς τῶν ἀποθεμάτων τούτων ἀνευρέθησαν καὶ τεμάχια κορμῶν ἀποπυριτιωμένων (ἐν ἀφθονίᾳ περὶ τὸ ὄρος Ὄρδυμνον καὶ εἰς τὸ νησύδριον τοῦ Σιγρίου), ἀνήκοντα εἰς τὰ γένη κεδρόξυλον καὶ πιτυόξυλον.

***Ὀρυκτὸς πλοῦτος—Μεταλλεύματα*.** Ἀποτέλεσμα τῆς γεωλογικῆς κατασκευῆς τῆς νήσου καὶ ἰδίᾳ τῆς ἐντόνου λειτουργίας τῆς ἠφαιστείου ἐνεργείας τόσον εἰς παλαιοτέρας ἐποχὰς (γένεσις περιδοτιτῶν), ὅσον καὶ εἰς νεωτέρας (γένεσις νεοηφαιστειογενῶν πετρωμάτων), εἶναι ἡ παρουσία ἀρκετῶν ἐμφανίσεων μεταλλευμάτων ἐπὶ τῆς νήσου. Φλέβες χαλαζίου μὲ ἀντιμονίτην παρουσιάζονται ἐντὸς τοῦ μαρμαρυγιακοῦ σχιστολίθου βορείως τοῦ Σκοπέλου. Σωροὶ χρωμιούχου σιδήρου μετὰ χαλκηδονίου καὶ χρυσοτίλου ἐντὸς τοῦ ὀφείτου μεταξὺ τοῦ ὄρους Ὀλύμπου καὶ τῶν Κεραμιῶν. Γαληνίτης μετὰ τῶν ἄλλων θειούχων καὶ μετὰ μολυβδαινίτου εἰς τὴν βόρειον ἀκτὴν μεταξὺ Μολύβου καὶ Συκαμιᾶς. Μικραὶ ποσότητες χαλκούχων μεταλλευμάτων βορείως τῶν Μυστεγνῶν, ὡς καὶ εἰς τὸ βουνὸν Ἴσσα μεταξὺ Βατούσσας καὶ Παρακοίλων. Ὑπάρχουν ἐπίσης σιδηροῦχοι σκωρίαι δυτικῶς τοῦ Ποταμοῦ (Πλωμαρίου) καὶ εἰς τὸν Ἀσώματον παρὰ τὸν Μεσότοπον. Στυπτηρία, προϊὸν τῆς ἀλλοιώσεως τῶν ἀνδεσιτῶν, ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς ἐρευνητικὰς ἐργασίας εἰς διαφόρους θέσεις, ὡς π. χ. παρὰ τὸ χωρίον Στύψη μεταξὺ Ἄγρας καὶ Μεσοτόπου, βορείως τῶν Παρακοίλων καὶ παρὰ τὰ Χύδηρα.

Σπουδαίαν ὅμως οἰκονομικὴν σημασίαν ἔχουν αἱ ἐμφανίσεις λευκολίθων ἀρίστης ποιότητος, περιεκτικότητος 96 % εἰς ἀνθρακικὸν μαγνήσιον ($Mg\,CO_3$) ἐντὸς τῆς ζώνης περιδοτιτῶν-ὀφειτῶν τοῦ Τσαμλικιοῦ. Μεγάλαι ἐκμεταλλεύσιμοι ποσότητες ὑπάρχουν ἰδίᾳ περὶ τὸ χωρίον Βασιλικά, ὅπου ὑπό τινος ἐκμεταλλευτοῦ ἐξήχθησαν 700 τόνν. τῷ 1927 καὶ 900 τόνν. τῷ 1928. Ἐντὸς τῆς αὐτῆς ζώνης ἐσημειώθησαν καὶ ἐμφανίσεις τινὲς νικελιούχων ὀρυκτῶν, ἄγνωστον ὅμως ἀκόμη ἂν αὗται ἔχωσιν οἰκονομικὴν σημασίαν.

***Θερμαὶ πηγαί*.** Ὡς ἀποτέλεσμα κυρίως τῆς κατὰ τὴν τριτογενῆ περίοδον ἐντόνως λειτουργησάσης ἠφαιστείου ἐνεργείας καὶ γενικώτερον τῶν ἐνδογενῶν δυνάμεων, δέον νὰ θεωρῶνται αἱ ἄφθονοι θερμαὶ πηγαὶ τῆς νήσου. Αἱ κυριώτεραι τούτων εἶναι αἱ ἀκόλουθοι:

Ἡ θερμὴ πηγὴ *Κουρτζῆ* («Κουτσοὺκ-Λίτζα» =μικρὰ λουτρὰ) ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς τῆς νήσου, εἰς ἀπόστασιν 1/4 τῆς ὥρας Β. τῆς πόλεως Μυτιλήνης, χλωριονατριοῦχος πηγὴ μὲ θερμοκρασίαν ὑδάτων 35°, 5 C.

Ἡ θερμὴ πηγὴ τῆς *Θέρμης* («Σάρλιτζα» =κίτρινα λουτρὰ) ὁμοίως ἐπὶ τῆς Ἀν. ἀκτῆς. Σιδηροῦχος ἁλιπηγὴ μὲ θερμοκρασίαν ὑδάτων 46°, 9.

Ἡ θερμὴ πηγὴ εἰς τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου *Γέ-*



Digitized by Google

ρας παρὰ τοὺς πρόποδας τοῦ ὑψώματος Γιαϊλατζὶκ (Προφ. Ἠλίας), χλωριονατριοῦχος πηγὴ μὲ θερμοκρασίαν 39°, 7.

Ἡ θερμὴ πηγὴ *Ἐφταλοῦς*, ἐπὶ τῆς βορείας ἀκτῆς τῆς νήσου, ἀνατολικῶς τοῦ Μολύβου. Χλωριοῦχος ραδιενεργὸς μὲ θερμοκρασίαν ὑδάτων 46°, 8.

Αἱ θέρμαι *Πολυχνίτου*, Α. ΝΑ. τῆς ὁμωνύμου κωμοπόλεως, ἐπὶ τοῦ ποταμίου Κουρούπης (Ἁλμυροπόταμος), χλωριονατριοῦχα ὕδατα θερμοκρασίας 60°—87°,6 Κ.

Ἡ θερμὴ πηγὴ τοῦ *Ἁγ. Ἰωάννου*, βορειοδυτικῶς τῆς κώμης Πολυχνίτου καὶ πλησίον τοῦ χωρίου Λισβόρι, χλωριονατριοῦχα ὕδατα θερμοκρασίας 69° Κ.

Ἐκτὸς τούτων εἴς τινας θέσεις παρατηροῦνται καὶ ἀναβλύσεις ψυχρῶν ὑδάτων, τὰ ὁποῖα οἱ κάτοικοι πίνουσιν ὡς καθαρτικὰ (Λιώτας, Γαβαθᾶ, Ἁγίας Μελανίας κτλ.) καὶ ὀνομάζουσιν ἁγιάσματα.

Δυτικῶς τοῦ Πλωμαρίου ἐντὸς κοιλώματος τῆς ἀσβεστολιθικῆς ἀποκρήμνου ἀκτῆς ὑπάρχει ἁλιπηγὴ θερμὴ τῆς *Παναγίας Κρυφτῆς* (43°,8—44°,2 Κ), τῆς ὁποίας ὅμως τὸ ὕδωρ εἶναι κατὰ τὸ μέγιστον μέρος θαλάσσιον.

***Σεισμοί.*** Ἡ νῆσος συχνάζεται μετρίως ὑπὸ σεισμῶν. Ἐπίκεντρα σεισμῶν παρετηρήθησαν ἀπὸ τοῦ 1918 καὶ ἐντεῦθεν παρὰ τὴν ἀπόκρημνον ἐγκαταχρημνισιγενῆ νοτίαν ἀκτὴν τῆς νήσου καὶ εἰς τὸν μεταξὺ Λέσβου καὶ Χίου—Ἐρυθραίας ἐγκαταχρημνισιγενῆ πορθμόν. Οὕτω τὴν 27 καὶ 28 Νοεμβρίου 1920 ἐγένοντο δύο σεισμικαὶ δονήσεις (ἐντάσεως δ' βαθμοῦ τῆς δεκαβάθμου κλίμακος εἰς τὴν πόλιν Μυτιλήνην) καὶ τὴν 24 Ἰουλίου 1921 ἑτέρα, καὶ αἱ τρεῖς δ' εἶχον ἐπίκεντρα εἰς τὸν μεταξὺ Λέσβου καὶ Χίου—Ἐρυθραίας πορθμόν. Ἐπίσης ἀπὸ τοῦ 1922—1924 ἐσημειώθησαν ἓξ σεισμικαὶ δονήσεις, ἔχουσαι ἐπίκεντρα τὴν παρὰ τὸ Πλωμάριον περιοχὴν (ἐντάσεως γ'—δ' βαθμοῦ εἰς τὴν κωμόπολιν ταύτην). (Περὶ τῶν εἰς παλαιοτέρους χρόνους σεισμῶν βλ. κατωτ. [*Ἱστορ.*]).

*Κατολισθήσεις* ἐδαφῶν λαμβάνουν χώραν ἐνίοτε, μεταξὺ τῶν ὁποίων σημαντικαὶ εἶναι ἡ τοῦ 1867 εἰς τὴν ἀκτὴν τῆς Γέρας (ὁπότε καὶ ἐφονεύθησαν ἑξακόσιοι ἄνθρωποι) καὶ ἡ τοῦ 1920—1921, νοτιοδυτικῶς τῆς κώμης Πολυχνίτου, εἰς τὰς δυτικὰς κλιτῦς τοῦ βουνοῦ Προφήτης Ἠλίας. Γ. Κ. Γ.

— [ΦΥΣ. ΓΕΩΓΡ.] Ἡ Μυτιλήνη εἶναι ἡ τρίτη εἰς μέγεθος ἑλληνικὴ νῆσος, μετὰ τὴν Κρήτην καὶ τὴν Εὔβοιαν, καὶ ἡ ἑβδόμη τῆς Μεσογείου, ἔχουσα ἐπιφάνειαν 1614,4 τετρ. χλμ. (ἐμβαδομέτρησις Κοτσοβίλη) καὶ περίμετρον περίπου 160 μιλλίων μὲ μέγιστον ἄξονα (Σίγρι - Ἀγρελιός) 71,3 χιλιομ. καὶ μικρότερον (στόμιον κόλπου Καλλονῆς — βάθος κόλπου Μακρυγιαλός) 33,3 χλμ.

***Ἀκτογραφία.*** Τὸ σχῆμα τῆς νήσου ἐνθυμίζει κυκλικὸν τομέα μὲ ἀποκεκομμένην ὀλίγον τὴν κορυφήν, οὗ τὸ τόξον, ἀποτελοῦν τὴν Ν. τῆς νήσου πλευράν, στρέφει τὰ κυρτὰ πρὸς Ν., τὰ δὲ σκέλη του, ὑπὸ ὀρθὴν περίπου γωνίαν τεμνόμενα, πρὸς Εὐρόνοτον (Ν.ΝΑ.) μὲν τὸ ἀποτελοῦν τὴν ἀνατολικὴν τῆς νήσου πλευράν, πρὸς Λιβοζέφυρον (Δ.ΝΔ.) δὲ τὸ σχηματίζον τὴν δυτικὴν τοιαύτην· ἡ ἀποτετμημένη κορυφὴ τοῦ τομέως τούτου παρουσιάζεται κατὰ τὴν μεταξὺ τοῦ ἀκρωτηρίου Συκαμιᾶς καὶ Μολύβου ἀκτήν, ἀνατεινομένην ἐπὶ 13 μίλ. καὶ ἀποτελοῦσαν τὰ πρὸς τὸν διάπλουν τοῦ Μουζελὶμ ἀποσβεννύμενα κράσπεδα τοῦ Λεπετύμνου ὄρους. Αἱ πλευραὶ τῆς νήσου, γενικῶς κατατετμημέναι, ἐμφανίζουν κολπώσεις, ἰδίᾳ ὅμως ἡ νοτία, ἐν τῇ ὁποίᾳ σχηματίζονται δύο ἀχανεῖς κολπίζοντες λιμένες, ὁ τῆς *Γέρας* (ἢ ὁ *Olivieri* τῶν ξένων, ἀρχ. Ἱερᾶς) καὶ ὁ τῆς *Καλλονῆς* (ἀρχ. Πυρραίων Εὔριπος), ὧν αἱ ἐπὶ μέρους ἀκτογραμμαὶ αὐξάνουν σημαντικῶς τῆς νήσου τὸ ἀνάπτυγμα, ἀνερχόμενον οὕτω εἰς 160 ναυτικὰ μίλ. καὶ δὴ 36 κατὰ τὴν ἀνατολικὴν πλευράν, 91 κατὰ τὴν νοτίαν καὶ 33 κατὰ τὴν δυτικήν. Δύο μεγάλοι καὶ ἐπισημότατοι εἰς τὴν ναυσιπλοΐαν δίαυλοι χωρίζουν τὴν νῆσον ἀπὸ τὰς Μικρασιατικὰς ἀκτάς: ὁ «*τῆς Μυτιλήνης*» (ὀνομαζόμενος οὕτω ἀπὸ τῆς ὑπ' αὐτοῦ βρεχομένης πρωτευούσης τῆς νήσου) ἀπὸ τὰς ἀκτὰς τῆς Αἰολίδος, ὧν τρικυμιωδέστατος μὲ τὰς ἀπὸ τοῦ 2ου τεταρτοκυκλίου κακοκαιρίας, καὶ ὁ «*τοῦ Μουζελὶμ*», φερώνυμος τῆς ἐν τῷ μέσῳ αὐτοῦ κινδυνώδους ὑφάλου.

Ἡ λεπτομερὴς ἀκτογραφία καὶ ὁ σταδιασμὸς τῆς παραλίου εἶναι τόσῳ μᾶλλον ἐνδιαφέροντα, ὅσον ὁ ἄριστος ἀπὸ ἀπόψεως ἀκριβείας τῆς χαρτῶν τῆς μεγαλονήσου, ὑποτυπωθεὶς τῷ 1834 ὑπὸ τοῦ Βρεττανοῦ πλοιάρχου Richard Copeland ἀπὸ τοῦ ὑδρογραφικοῦ HMS «Beacon» καὶ συμπληρωθεὶς ὑπὸ τῶν ἐργασιῶν τοῦ πλοιάρχου Spratt τῷ 1863 (πρὸς ὃν χάρτην σχετίζομεν τὰς εἰς τὸ ἄρθρον τοῦτο ἀναφερομένας συντεταγμένας) παραλείπει τὴν μνείαν πολλῶν τοπωνυμιῶν, ἐνῷ τινας τῶν ἀναφερομένων ἀναγράφει πεπλανημένως ἀπὸ φθογγικῆς ἀπόψεως. Ἐκτελοῦμεν δὲ τὴν τοιαύτην γεωγραφικὴν ὑφήγησιν ἀπὸ Ν. πρὸς Α. πρὸς Β. καὶ πρὸς Δ., ἀρχόμενοι ἀπὸ τῆς ΝΑ. τῆς νήσου ἐσχατιᾶς, εἶναι δὲ αὕτη τὸ ἀκρωτήριον *Ἐλιὸς* ἢ *Ἀγρελιός*, τὸ Ζεϊτούν μπουρούν τῶν Τούρκων καὶ τῶν ξένων χαρτῶν καὶ ἡ Μαλέα ἄκρα τῶν ἀρχαίων (πλάτ. 39°00'40" Β., μῆκ. 26°36'20" Ἀν.) ἀπόληξις καὶ τῆς χερσονήσου, ἥτις κλείει ἐξ ἀνατολῶν τὸν κολπίζοντα ὅρμον τῆς Γέρας· ἐπὶ τοῦ ἀκρωτηρίου ἀνηγέρθη (1930) αὐτόματος περιστροφικὸς φάρος «Ἄγκα» διὰ φωτὸς Νταλέν, ἀδελφὸς τῶν φάρων ἀκροπόλεως Κερκύρας καὶ Καβάλλας, ἐκπέμπων φῶς σταθερὸν ἐναλλάσσον πρὸς ζεῦγος ἐκλάμψεων (φωτοβολίας μηχανική. 37 μιλ., γεωγρ. 17 μιλ.). Περαιτέρω ἡ ἀκτογραμμὴ χωρεῖ ἐπὶ 6 μίλ. Β. ΒΔ., κυρτουμένη ἐλαφρῶς καὶ παραθέουσα τὴν ἁμαξιτὸν ὁδὸν Ἁγίου Γεωργίου-Βαριᾶς-Μυτιλήνης, μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου *Κάστρο Μυτιλήνης*. Ἡ μικρὰ χερσόνησος, ἡ καταλήγουσα εἰς τὸ ἀκρωτήριον τοῦτο, ἦτο ποτὲ νησίον, χωριζόμενον διὰ στενῆς λωρίδος θαλάσσης ἀπὸ τῆς νήσου, μετὰ τῆς ὁποίας ἐν τῇ παρόδῳ τοῦ χρόνου ἡνώθη διὰ προσχώσεων καὶ ἀποτελεῖ ἤδη συνοικίαν τῆς πόλεως Μυτιλήνης. Ἑκατέρωθεν αὐτῆς ἀνοίγονται ὁ βόρειος καὶ ὁ νότιος τῆς πρωτευούσης λιμένες («ἔχει δὲ ἡ Μυτιλήνη λιμένας δύο, ὧν ὁ νότιος κλειστὸς τριηρικὸς ναυσὶ πεντήκοντα, ὁ δὲ βόρειος μέγας καὶ βαθὺς χώματι σκεπαζόμενος· πρόκειται δὲ ἀμφοῖν νησίον, μέρος τῆς πόλεως, ἔχον αὐτόθι συνοικούμενον», *Στράβ.* ΙΓ, 617, Teubner). Ἐπὶ τῆς χερσονήσου ναυτικὸς φανὸς ἱδρύθεις ὑπὸ τῆς «Γαλ. Ἑταιρείας Ὀθωμανικῶν Φάρων» (1863) καὶ περιληφθεὶς εἰς τὸ ἑλληνικὸν δίκτυον τῷ 1915. Μεθ' ὃ ἡ ἀκτὴ χωρεῖ πρὸς ΒΔ., παρουσιάζουσα τὸν ὕφορμον *Ταμπάκικα*, τὴν ἄκραν *Καρατεπὲς* ἢ *Ἀσφαλή*, τοὺς ὅρμους *Παναγιοῦδα* καὶ *Καλαμιάρη*, καὶ τὸ ἀκρωτήριον *Πάφλα* ἢ *Μαχαίρα* εἰς 3 $^{2}/_{3}$ μιλ. ΒΔ. τοῦ Κάστρου. Μεθ' ὃ ἡ *Σκάλα Θερμῆς*, ἡ *Σκάλα τῶν Μυστεγνῶν* (πιθαλῶς ἡ Αἴγειρος τοῦ Στράβωνος), ὅπου φαίνονται ὕφαλα λείψανα ἀρχαίων λιμενικῶν ἔργων. Μεθ' ὃ ὁ κόλπος τῶν *Μακρυγιαλοῦ* ἀπὸ ὁμωνύμου ἐπινείου ἐγγύτατα τῆς πρὸς Μανδαμάδον ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, ἐν τῷ ὁποίῳ ἐκβάλλει ὁ χείμαρρος *Ἄσπρο ποτάμι*, καὶ ὕφορμοι *Ἅγιος Στέφανος* καὶ *Παλιός*, ὅπου λείψανα ἀρχαίων λιμενικῶν ἔργων· ἀπόληξις δὲ ὁ κόλπος εἰς τὸ ἀκρωτήριον *Τοκμάκι* (πλατ. 39°18'45" Β., μῆκ. 26°26'20" Ἀν.), ἔχον Ν. ΝΑ αὐτοῦ πεντάνησον συστάδα ὀνομαζομένην Τοκμάκια (Ἀσπρονήσια, αἱ ἀρχ. Λευκαί). Μεθ' ὅ, πρὸς ΒΔ., σχηματίζεται κόλπωσις *Τσόνια*, ἐν ᾗ αἱ ὁμώνυμοι ἀπορρῶγες, ἀπόληξις πρὸς Β. τῶν κρασπέδων τῶν λόφων Σαρακήνα, ἡ ἀπορρὼξ *Φεργόνια*, τὸ *Νέο λιμάνι* (Γενὶ λιμὰν) καὶ τὸ ἀκρωτήριον *Φέρρος*, 3 $^{3}/_{4}$ μίλ. ΒΔ. τοῦ Τοκμάκι. Ἐν τῇ κολπώσει δὲ ταύτῃ τὸ νησίον *Λησμονὴ* ἢ *Βουρβουλακας* ἢ *Μονόπετρα*. Μετὰ δὲ τὸ ἀκρωτήριον Φέρρος, 1 $^{1}/_{2}$ μίλ. Δ. ΒΔ., τὸ ἀκρωτήρον *Σ(υ)καμιὰ* ἢ *Κόρακας* (ἀρχ. Ἄργεννον), ἐπὶ τοῦ ὁποίου φάρος, ἡ βορεία τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιὰ (πλάτ. 39° 23' Β., μῆκ. 26°21' Ἀν.).

Ἡ περιγραφὴ τῆς Δ. τῆς νήσου πλευρᾶς ἔχει ὡς ἀκολούθως: Ἐπὶ 13 μίλ. ἡ ἀκτὴ χωρεῖ Δ. τῆς Σκαμιᾶς, μὴ παρουσιάζουσα ὅρμους, πλὴν τοῦ θερινοῦ καὶ προσκαίρου ἀγκυροβολίου *Θέρμα Ἐφταλοῦς*, εἰς 2 $^{2}/_{3}$ μίλ. Ἀν. τοῦ ἀκρωτηρίου *Μόλυβος* (πλάτ. 39°22' Β., μῆκ. 26°11' Ἀν.), Β.ΒΑ. τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιᾶς, σχηματίζοντος δὲ κατὰ τὴν ΝΔ. του μασχάλην ἀγκυροβόλιον *Μόλυβος* (ἀρχ. Μήθυμνα) καὶ τὸ ΒΑ. κέρας τῆς *κολπώσεως Μολύβου*, ἁπλουμένης μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου *Κεχράδα*, 4 $^{1}/_{2}$ μίλ. Δ.ΝΔ.· ἐν τῇ κολπώσει τὸ ἐπίνειον *Πέτρα* καὶ ἡ νησὶς *Πετρᾶς*. Ἀπὸ τοῦ Κεχράδα ἡ ἀκτὴ χωρεῖ 8 $^{2}/_{3}$ μίλ. πρὸς Δ. μέχρι τοῦ ἀκρωτηρίου *Ἰντζιρλῆ Μπουρούν*, ἀκρωρείας τοῦ Ὀρδύμνου, σχηματίζουσα κατὰ σειρὰν γεωγραφικῆς διαδοχῆς τὸν ὅρμον *Καλολιμνιῶνας*, τὸ ἀκρωτήριον *Ὀβριόκαστρο*, τοὺς ὅρμους *Κόκκινος Γιαλὸς* καὶ *Γαβαθᾶς*, οὗ ἔναντι οἱ μύρμηκες *Μερμήγκια τοῦ Γαβαθᾶ*, τὴν ἐκβολὴν τοῦ χειμάρρου Βούλγαρη, τὴν ἄκραν *Σὰλ-Τασί*, τὸν ὕφορμον *Ἀρείκια* καὶ τὸν ἀμέσως πρὸ τοῦ Ἰντζιρλῆ-μπουρούν *Λάπαρνα*. Μεθ' ὃ ἡ νησὶς *Ἅγιος Ἰωάννης*, ἡ ἄκρα *Πετεινός*. τὸ ἀκρωτήριον *Φιλίκα Τασὶ* μὲ τὸν νοτίως του ὅρμον τῆς *Παναγίας τῆς Φανερωμένης* καὶ τὸ ἀκρωτήριον τῆς *Ἐλαίας*, ἀκρώρειαν καὶ τοῦτο τοῦ Ὀρδύμνου, νοτίως τοῦ ὁποίου μορφοῦται ὁ ὑπέροχος λιμὴν τοῦ *Σιγρίου*, ὀνομαζόμενος ὡς καὶ κατὰ τὴν ἐποχὴν τοῦ Στράβωνος (ΙΓ, β, 3, ἔκδ. Teubner), σχηματιζόμενος ὑπὸ τῆς κυρίως Λέσβου, τῆς νήσου *Σίγρι* ἢ *Μεγαλόνησι*, τῶν ἐν τῷ λιμένι νησίδων *Φάνες* καὶ *Σιδοῦσα* καὶ τῆς χερσονήσου *Σίγρι*, κλειούσης τὸν λιμένα ἀπὸ νότου καὶ σχηματιζούσης τὴν δυτικὴν τῆς μεγαλονήσου ἐσχατιάν. Ἐπὶ τῆς νήσου Μεγαλονήσι φάρος Α' τάξεως, ἀνεγερθεὶς ὑπὸ τῆς «Γαλλικῆς Ἑταιρείας τῶν Ὀθωμανικῶν Φάρων» τῷ 1863, παραληφθεὶς τῷ 1915 ὑπὸ τῆς Ἑλλάδος καὶ ἀνακαινισθεὶς τῷ 1930, εἰς τρόπον ὥστε νὰ ἀποδίδῃ «φωτοβολίαν μηχανήματος» ἄνω τῶν 45 μιλ. (γεωγραφ. φωτοβ. 18 μιλ.) μὲ μίαν ἀναλαμπὴν ἀνὰ 30".

ΝΑ. τῆς χερσονήσου Σίγρι χωρεῖ ἡ νοτία τῆς Μυτιλήνης πλευρά, ἧς ἡ περιγραφὴ ἔχει οὕτω: *Ἐρεσσός*, ὅρμος καὶ ἀκρωτήριον 4 $^{1}/_{2}$ μίλ. ΑΝΑ. τοῦ Σίγρι, ἐκεῖ δὲ καὶ ἡ κοινὴ ἐκβολὴ τῶν συμβαλλομένων ποταμίων *Πετσούλης* καὶ *Χάλανδρα*, εἶτα ἡ ἄκρα *Κόπανος*, καθ' ἣν ἐκβάλλει τὸ ποτάμιον *Λακτοπέδια*, καὶ εἰς 13 $^{1}/_{2}$ μίλ. ἀπὸ τοῦ Σίγρι τὸ στόμιον τοῦ *κόλπου τῆς Καλλονῆς*, πρὸ τοῦ ὁποίου ἡ νησὶς *Γαρμπιᾶς*. Ἡ δὲ ἀκτογραφία τοῦ κόλπου τούτου εἶναι: *Πλατὺ* ἢ *Μάκαρα* τὸ ἀριστερὰ τῷ εἰσπλέοντι κέρας, *Ἐρημονήσι τοῦ Ἅϊ Γιώργη*, νησίον ἐν τῷ προκόλπῳ, *Παναγιοῦδα*, τὸ χωρίζον τὸν πρόκολπον ἀπὸ τὸν κυρίως κόλπον ἄκρον τῆς Δ. ἀκτῆς, *Κοῦκκος*, *Σκάλα Παρακοίλων*, *Πήγαδος*, *Ποχυάμμος*, *Ἁγία Ἄννα* καὶ *Ἁλυκὴ Καλλονῆς*, ἐπὶ τῆς ΒΔ. τοῦ κολπίζοντος λιμένος ἀκτῆς· ἐπὶ δὲ τῆς ΝΑ. τοιαύτης: ἐκβολὴ *Καλάμι*, *Πύρρα*, ἐκβολὴ *Βουβάρη*, ἐκβολὴ *Καβουροποτάμου*, *Ἁλυκὴ Πολυχνίτου* (Τοῦζλα), *Σκάλα Πολυχνίτου* (Ἐλπίς), ὅρμος *Νυφίδας*, ἄκρα *Πέραμα*, νότιον κέρας τοῦ στομίου τοῦ κόλπου· ἐπὶ της Ν. ἀκτῆς τοῦ προκόλπου: *Παχιὰ Ἀγκάρια*, *Ψηλόποδας*, *Παλιοφάναρο* καὶ ἀκρωτήριον *Ἀμμούδι*, τὸ ΝΑ. κέρας τοῦ ἐξωτερικοῦ στομίου τοῦ προκόλπου. Πέραν δὲ τοῦ στομίου εἰς 6 μίλ. ΝΑ. τὸ ἀκρωτήριον *Ἅγιος Φωκᾶς*, ἀνατολικῶς τοῦ ὁποίου 8 μίλ. ἁπλοῦται ἡ κόλπωσις *Χοχλακάρης*, ἐν ᾗ ὕφορμος *Ἅϊ Γιάννης*, ἐκβολὴ *Ἁλμυροποτάμου*, *Βατερὰ* (Σκάλα Βρησσᾶς), *Παναγιὰ Κρυφή*, *Μελίντα*, *Ἀγκαθερή*, ἀκρωτήριον *Κοπέλλα* ἢ *Ποταμός*, τὸ ἀνατολικὸν κέρας τῆς κολπώσεως, ἀνατολικῶς τῆς ὁποίας ἡ *κόλπωσις τοῦ Πλωμαρίου*· ἐν ταύτῃ ὅρμος *Κάτω Χωριό*, ὁ μεγίστου μέλλοντος καὶ ὑπὸ κατασκευὴν ἤδη τεχνητὸς λιμὴν *Πλωμαρίου*, οἱ ὕφορμοι *Ἅγιος Σάββας* καὶ *Ἅγιος Ἰσίδωρος*· μεθ' οὓς τὸ ἀκρωτήριον *Μέρικας* ἢ *Πιτσιλαδῆς*, ἡ νοτία τῆς νήσου ἐσχατιά. Ἐκεῖθεν ἡ ἀκτὴ κάμπτεται πρὸς Α.ΒΑ., χωροῦσα μέχρι τοῦ προκόλπου τῆς *Γέρας* καὶ παρουσιάζουσα ὑφόρμους *Ἁγία Βαρβάρα*, *Ἁγία Παρασκευή*, *Κοπέλλα*, *Τάλαντος*, νησῖδα καὶ ὅρμον *Μερσίνια*, νησῖδα, ἀκρωτήριον καὶ ὅρμον *Πετρᾶς*, νησῖδα *Ἅγιος Βασίλειος* ἢ *Προφυλακή*, καὶ ἀκρωτήριον *Μπάλμπι*, ΝΔ. κέρας τοῦ προκόλπου. Ἐπακολουθεῖ ὁ κόλπος τῆς Γέρας, ἔχων ΝΔ. κέρας τὸ ἀκρωτήριον καὶ νησῖδα *Καλόγερος*, μεθ' ὃν τὸ πόρθμευμα *Πέραμα*, ὁ ὕφορμος *Χαλακὲς* (ταυτιζόμενος πρὸς τὴν Ἱεράν), τὸ *Ντίπι* (μυχὸς τοῦ κόλπου), ἡ ἐκβολὴ *Μπαμπαδούλας* καὶ τὰ *Θέρμα*· ἐπὶ δὲ τῆς ἀν. τοῦ κόλπου ἀκτῆς τὰ χωρία *Κέντρο* καὶ *Πυργί*, *Κουντουρδιά*, ἀπόληξις ἁμαξιτοῦ ἐκ Μυτιλήνης ὁδοῦ καὶ ἐντεῦθεν πορθμεῖον πρὸς τὸ κατέναντι Πέραμα, ὅρμος *Βατσίνα*, ὁ ὕφορμος *Παλαιόλουτρα* καὶ ἡ ἄκρα *Ἔξω Πούντα* ἢ *Χαραμῆς*, τὸ δεξιὰ τῷ εἰσπλέοντι κέρας τοῦ στομίου. Ἡ ἀπὸ τοῦ στομίου τοῦ κόλπου τῆς Γέρας μέχρι τῆς ἄκρας Ἀγρελιός, ὅθεν ἠρξάμεθα τῆς περιγραφῆς, ἀκτή, ἐκτεινομένη 3 μίλ. Α. ΝΑ., ἀποτελεῖ ὑπόκρημνον ἀκρώρειαν τῶν ράχεων *Χαρχαλώνι*, *Νερούτσικα* καὶ *Κεραμίνα* τοῦ βουνοῦ *Ἀμαλῆ*. Οὐδεὶς ὕφορμος εἰς τὴν ἀκτὴν ταύτην, ἧς πρόκειται νησίον *Χαβιαρόπετρα* ἢ *Κύψελος* ἢ *Σίμβλος*. Σ. Ε. Λ.

***Μορφολογία τοῦ ἐδάφους.*** Ἡ Μυτιλήνη δύναται νὰ χαρακτηρισθῇ ὡς ὀρεινὴ νῆσος, μὴ στερουμένη μικρῶν πεδινῶν ἐκτάσεων. Τὸ σχῆμά της προσομοιάζει πρὸς τομέα κύκλου, τοῦ ὁποίου ἡ κορυφὴ ἀποτετμημένη κατά τι ἀποτελεῖ τὴν Β. ἀκτὴν τῆς νήσου (13 μίλια), τὰ σκέλη τὴν δυτικὴν (33 μίλ.) καὶ ἀνατολικὴν (36 μίλ.), τὸ δὲ τόξον, τὸ ἀποτελοῦν τὴν νοτίαν ἀκτὴν (91 μίλ.), τεμνόμενον κατὰ δύο σημεῖα σχηματίζει τοὺς κλειστοὺς κόλπους *Καλλονῆς* (ἀρχ. Πυρραίων Εὔριπος) καὶ *Γέρας* (ἀρχ. Ἱερᾶς). Κατὰ ταῦτα ἡ νῆσος χωρίζεται εἰς τέσσαρα χερσονησίζοντα τμήματα, πρὸς τὰ ὁποῖα ἀντιστοιχοῦν τὰ τέσσαρα σπουδαιότερα ἐκ τῶν ὀρέων αὐτῆς. Ἐκ τούτων ὁ *Ἅγιος Λιᾶς τῶν Γέλιων* (ἀρχ. Λεπέτυμνος, ὑψ. 838 μ., μῆκ. 26°15'36" Α., πλάτ. 39°20' Β) κατέχει τὸ Β. τμῆμα· τὸ *Ψηλὸ Μοναστῆρι* (ἀρχ. Ὄρδυμνος, ὑψ. 542 μ., μῆκ. 25°56'36" Α, πλάτ. 39°14' Β) κατέχει τὸ Δ. καὶ κατ' ἐξοχὴν ὀρεινὸν τμῆμα τῆς νήσου· ὁ *Ἅγιος Λιᾶς τῆς Ἁγιάσσου* (ἀρχ. Ὄλυμπος, ὑψ. 940 μ., μῆκ. 26°22'12" Α., πλάτ. 39°4'12" Β) κατέχει τὸ μεταξὺ τῶν δύο κόλπων τμῆμα, ἑνούμενος μετὰ τοῦ Λεπετύμνου διὰ τοῦ ὑψηλοῦ *Τσαμλικιοῦ* (ἀρχ. Πυρραίων Πιτυῶδες ὄρος)· τέλος δὲ τὸ *Βουνὸ τῆς Ἀμαλῆς* (ὑψόμ. 530, μῆκ. 26°35'36" Α, πλάτ. 39°2'36" Β) διασχίζει τὴν ὁμώνυμον χερσόνησον Α. τοῦ κόλπου τῆς Γέρας. Μικρότεροι βουνοὶ διακρίνονται· ἐπὶ μὲν τῆς χερσονήσου τοῦ Ὀρδύμνου: ἡ *Τσουλουμούντρα*, ΒΑ. ἄκρα τῆς νήσου καὶ τὸ *Παλαμούτ*, Β. τοῦ Ὀρδύμνου· ἀπὸ τῆς συμφύσεως Ὀρδύμνου - Λεπετύμνου κέ. πρὸς Α: τὸ *Σκοτεινὸ Βουνὸ* Δ. τοῦ Κλαπάδου, τὰ ὑψώματα *Πετσοφᾶς* καὶ *Γεράνι* μεταξὺ Στύψης, Καλλονῆς, τὸ *Παρθένι* (ὑψόμ. 593) παρὰ τὴν Μονὴν Λειμῶνος, ἡ *Φεράνα* (ὑψόμ. 385) Α. τῆς Ἁγίας Παρασκευῆς καὶ ἡ *Σαρακήνα* ΒΑ. τοῦ Μανδαμάδου· περὶ τὸ Τσαμλίκι σχηματίζονται: ΒΑ. ὁ ἐπιμήκης *Ταῦρος*, Ν. αὐτοῦ καὶ κατὰ σειρὰν ἐκ Δ. πρὸς Α. τὸ *Σαϊτάρι* (ὁ ἀρχ. Κρέων;), τὸ *Γιαϊλατζὶκ* (Προφητηλίας) καὶ παρὰ τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου Γέρας τὰ βραχώδη ὑψώματα τῆς *Λάρσας* (ἀρχ. Λαρισσαῖαι Πέτραι)· Ν. αὐτῶν ἄρχονται τὰ ἐπὶ τῆς χερσονήσου Ἀμαλῆς βουνὰ καὶ ράχεις: τὸ *Ἀκόθι* καὶ ὁ *Ἁγ. Ἰσίδωρος* (ὑψόμ. 269) Α. τῶν Λουτρῶν καὶ ἡ *Μικρὴ* καὶ *Μεγάλη Βατσίνα* (ὑψόμ. 200) Β. τῶν Παλαιολουτρῶν, καὶ ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ὁ *Στρόβιλος*, τὸ *Μπαΐρι τοῦ Προφήτη Ἠλία*, τὸ *Μάρμαρο*, τὸ *Μυριβίλι* καὶ ἄνωθεν τῆς πρωτευούσης ὁ ***Κοῦκκος*** καὶ ἡ *Οὐτζά*. Ἐπὶ τῆς

Digitized by Google

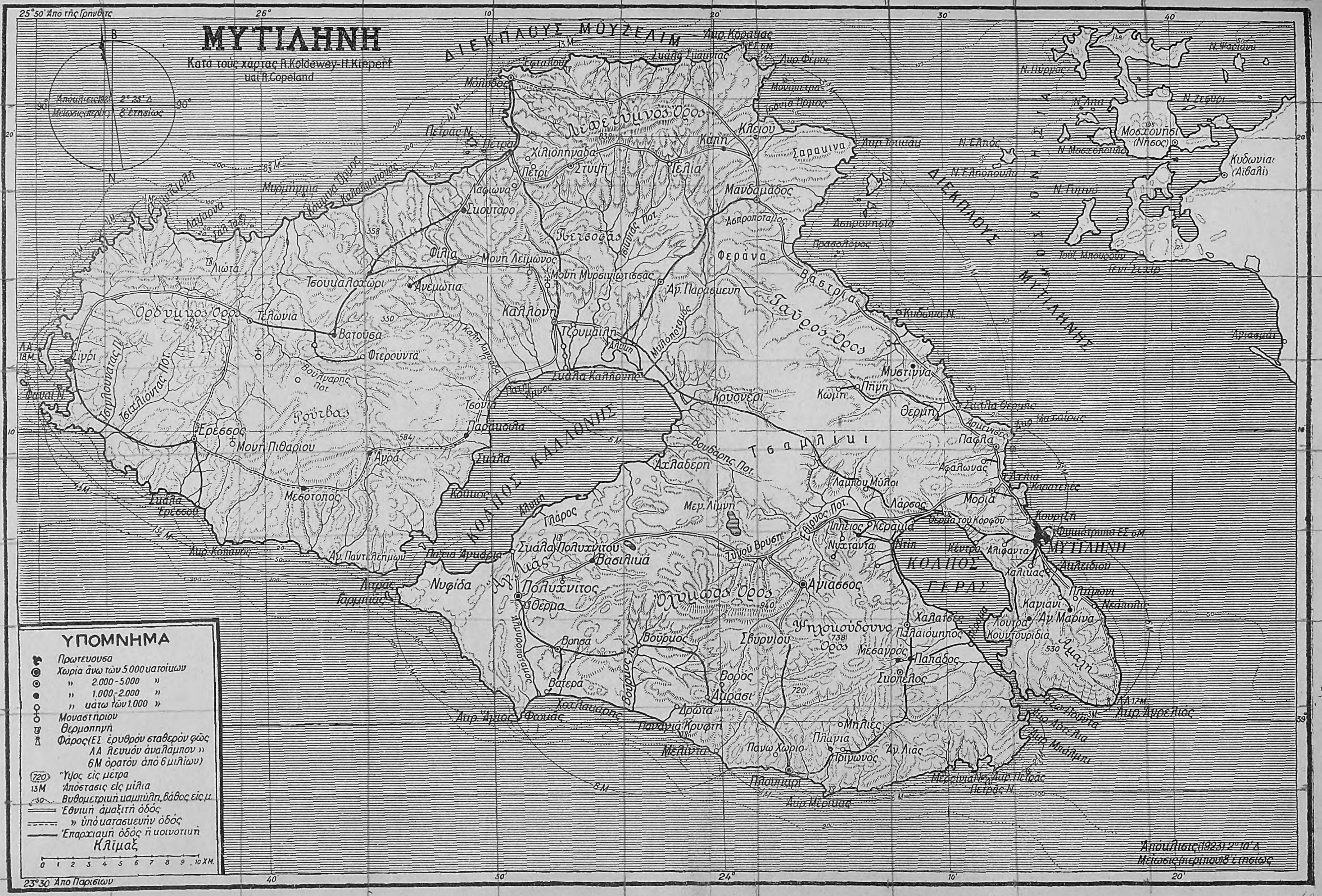
ΜΥΤΙΛΗΝΗ
Κατὰ τοὺς χάρτας R. Koldewey-H. Kiepert και R. Copeland
ΥΠΟΜΝΗΜΑ
Πρωτεύουσα
Χωρία ἄνω τῶν 5.000 κατοίκων
» 2.000-5.000 »
» 1.000-2.000 »
» κάτω τῶν 1.000 »
Μοναστήριον
Θερμοπηγή
Φάρος (ΕΣ ἐρυθρὸν σταθερὸν φῶς ΛΑ λευκὸν ἀναλάμπον » 6Μ ὁρατὸν ἀπὸ 6 μιλίων)
Ὕψος εἰς μέτρα
Ἀπόστασις εἰς μίλια
Βυθομετρικὴ καμπύλη, βάθος εἰς μ.
Ἐθνικὴ ἁμαξιτὴ ὁδός
» ὑπὸ κατασκευὴν ὁδός
Ἐπαρχιακὴ ὁδὸς ἢ κοινοτική
Κλίμαξ
ΔΙΕΚΠΛΟΥΣ ΜΟΥΖΕΛΙΜ
ΔΙΕΚΠΛΟΥΣ ΜΥΤΙΛΗΝΗΣ
ΚΟΛΠΟΣ ΚΑΛΛΟΝΗΣ
ΚΟΛΠΟΣ ΓΕΡΑΣ
ΜΥΤΙΛΗΝΗ
Μόλυβος
Πέτρα
Καλλονή
Ἐρεσσός
Σίγρι
Ἀντισσα
Πολύχνιτος
Πλωμάρι
Ἀγιάσσος
Μανδαμάδος
Κυδωνίαι (Αϊβαλί)
Μοσχονήσι (Νῆσος)
Λεπέτυμνος Ὄρος
Ὄλυμπος Ὄρος
Ὄρδυμνος Ὄρος
Ἀπόκλισις (1923) 2° 10' Δ
Μείωσις (περίπου) 8' ἐτησίως
25°50' Ἀπὸ τῆς Γρηνουΐτς
23°30' Ἀπὸ Παρισίων

χερσονήσου τοῦ Ὀλύμπου: πρὸς Β. τὸ *Καστρέλι* καὶ κατὰ τὰ ΝΑ. τὸ *Ψηλοκούδουνο* (ὑψόμ. 738), τὸ *Πετροβούνι* καὶ ἡ *Καρυώνα*, παρακτίως δὲ ὁ *Προφητηλίας τοῦ Πολυχνίτου* (ὑψόμ. 175) καὶ τὰ ἐν τῇ περιοχῇ Πλωμαρίου *Ἀγκαθερή, Λογαρᾶς, Ροδίτης* (ὑψόμ. 720). Ἀγνώστου σημερινῆς θέσεως παραμένουν τὰ ὄρη τῶν ἀρχαίων: *Πύλαιον, Τάνταλος, Ὑπερδέξιον, Κίλλαιον* (ἴσως τὸ παρὰ Μερσίνια «Τζίλιο») καὶ *Μάκιστος*.

Πεδιναὶ ἐκτάσεις ὁπωσδήποτε ἐκτεταμέναι εἶναι ἡ ἀφθονοῦσα ὑδάτων *πεδιὰς τοῦ κόλπου Γέρας*, διασχίζουσα τὸ ἀπὸ Κάτω-Τρίτος μέχρι Λάρσου τμῆμα τῆς ἀκτῆς καὶ ἁπλουμένη πρὸς Β. μὲν μέχρι τοῦ χωρίου Λάμπου Μύλοι καὶ πρὸς Δ. μέχρι τῶν πηγῶν τῆς Καρῆνης καὶ ὁ ξηρότερος *κάμπος τῆς Καλλονῆς*, περιστέφων τὸν μυχὸν τοῦ ὁμωνύμου κόλπου ἀπὸ Μέσων μέχρι ἐκβολῆς τῆς Καλῆς Λαγκάδας καὶ ἁπλούμενος πρὸς Β. μέχρι τῆς κώμης Καλλονή. Ἀλλὰ καὶ τὰ μικρότερα πεδινὰ τμήματα (*Πέτρα, Ἐρεσσός, Μόλυβος, Πολυχνῖτος, Μανδαμάδος* κ. ἄ.) ἐν τῷ συνόλῳ των κατέχουν ἀρκετὸν τμῆμα τῆς νήσου.

***Ὕδατα.*** Οἱ ποταμοὶ τῆς Μυτιλήνης εἶναι μᾶλλον μικροὶ καὶ χειμαρρώδεις, κυριώτεροι δὲ εἶναι· ἀπὸ Β. πρὸς Ν. ἐπὶ τῆς ἀνατολικῆς ἀκτῆς: ὁ *Τινέγιας* χυνόμενος Β. τῆς Σκάλας Θερμῆς καὶ ὁ *Καλαμιάρης* εἰς τὸν ὁμώνυμον αὐτοῦ ὅρμον· εἰς τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου τῆς Γέρας: ὁ *Εὐεργέτουλας*, πηγάζων ἀπὸ τῶν Β. κλιτύων τοῦ Ὀλύμπου («Ζυγοῦ Βρύση») καὶ ἀπὸ τοῦ Τσαμλικίου καὶ αὐξανόμενος διὰ τῶν ὑδάτων τοῦ *ποταμιοῦ τῆς Ἀνεράϊδας* καὶ τοῦ *Ἔθιρνου*· πέριξ τοῦ μυχοῦ τοῦ κόλπου Καλλονῆς χύνονται κατὰ σειρὰν ἐξ Α.: ὁ *Καβουροπόταμος*, ὁ *Βουβάρης*, ὁ *Μυλοπόταμος* (Ξυνόρροδος), ὁ *Τσικνιᾶς* καὶ τὸ *ποτάμι τῆς Καλῆς Λαγκάδας*· ἐπὶ τῆς Ν. ἀκτῆς ἐκβάλλουν: ἀπ' Α. καὶ ἑξῆς: ὁ *Σεδούντας* παρὰ τὸ Πλωμάριον, ὁ *Ἁλμυροπόταμος* (Κουρούπης) παρὰ τὰ Βατερά, αὐξανόμενος διὰ τῶν ἀφθόνων ῥοῶν τῶν αὐτόθι «Θερμῶν Πολυχνίτου», ὁ *Πετσούλης* παρὰ τὴν Ἐρεσσὸν καὶ ὁ *Τσιχλιώντας* Δ. τούτου· τέλος ἐπὶ τῆς ΒΔ. ἀκτῆς: ὁ *Βούλγαρης* καὶ ὁ *Κεχράδας*. Ἐξ αὐτῶν ἰχθυοτρόφοι, ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων γνωστοί, ἦσαν ὁ Βουβάρης καὶ ὁ Ξινόρροδος. Μικρότερα ποτάμια εἶναι ἐπὶ τῆς Α. ἀκτῆς τὸ *Ἄσπρο Ποτάμι*, ἐπὶ τῆς νοτίου ὁ *Χαραμῆς* καὶ ὁ *Βοῦρκος*, καὶ ἐπὶ τῆς ΒΔ. τὸ ῥεῦμα τῆς *Φλοῦ Βρύσης*.

Λίμνας ἔχει ἡ νῆσος μικρὰς καὶ μᾶλλον ἑλώδους μορφῆς τὴν *Μικρὴν* (ὑψόμ. 170) καὶ τὴν *Μεγάλην Λίμνην* (ἀρχ. Πυρραίων Λίμνη), κατὰ μέρος ἀποξηρανθεῖσαν. Ἱκανῆς ἐκτάσεως εἶναι τὰ ἕλη τῆς νήσου, ἐξ ὧν τὰ σπουδαιότερα εἶναι, εἰς μὲν τὸ Β. τμῆμα τῆς νήσου: ἡ λίμνη *Γιαλαμᾶ*, σχηματιζομένη ὑπὸ τῆς ἀκανονίστου ῥοῆς τῆς Φλοῦ Βρύσης (θέσις «Κάμπος» παρὰ τὰ Τελώνια)· περὶ τὸν κόλπον Καλλονῆς: τὰ ἕλη τῆς *Καλλονῆς*, τῶν *Μέσων* (Β. τῆς ἀρχαίας Πύρρας), τὰ *Βοῦρλα* καὶ ὁ *Πεστερμᾶς* (κοινότης Βασιλικῶν), καὶ τὸ *Ἑλικούδι* (κοινότης Λισβορίου)· καὶ περὶ τὸν κόλπον τῆς Γέρας: τὰ ἕλη τῆς *Λάρσου* καὶ *Ντιπίου*, *Περάματος* καὶ *Χαραμῆ*. Ἐξ αὐτῶν ἱκανὴν ἔκτασιν γαιῶν θὰ ἀπέδιδον ἀποξηραινόμενα τὰ Λάρσου-Ντιπιοῦ καὶ τὰ Καλλονῆς, σημαντικὴν καὶ ὡς πρὸς τὴν ἄρδευσιν.

***Κλῖμα.*** Αἱ μόναι γενόμεναι ἐπιστημονικαὶ παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ κλίματος τῆς νήσου ἀνάγονται εἰς τὰ τελευταῖα ἔτη, ἐγένοντο ὑπὸ τοῦ ἐν τῇ πόλει δευτεροβαθμίου μετεωρολογικοῦ σταθμοῦ τοῦ Ἐθνικοῦ Ἀστεροσκοπείου καὶ ἀφοροῦν κυρίως τὴν περὶ τὴν πρωτεύουσαν περιοχήν. Σποραδικῶς δὲ ἐγένοντο καὶ ὑπὸ μεμονωμένων ἐπιστημόνων διάφοροι παρατηρήσεις.

Τὸ κλῖμα τῆς νήσου ἐν γένει εἶναι εὔκρατον. Ὁ χειμὼν εἶναι μέτριος, σπανίως ἢ οὐδέποτε παγετώδης· ἡ μέση κατ' αὐτὸν μηνιαία θερμοκρασία κατέρχεται ἀπὸ $+12^{\circ},2$ (Μάρτιος) ἕως $+9^{\circ},1$ Κ. (Φεβρουάριος)· ἐκ τῶν βαρυτέρων ψυχῶν μοναδικὸν τὸ τοῦ 1850 (εἰς $-8^{\circ}$ Κ), καθ' ὃ πολλοὶ ἀπέθανον καὶ κατὰ 25% κατεστράφησαν τὰ ἐλαιόδενδρα. Κατὰ Ἰανουάριον σημειοῦνται τακτικῶς αἱ ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος γνωσταὶ «ἀλκυονίδες ἡμέραι» ὅμοιαι πρὸς ἡμέρας Ἰουνίου. Τοῦ θέρους ἡ μέση μηνιαία θερμοκρασία ἀνέρχεται ἀπὸ $23^{\circ},6$ (Σεπτέμβριος) ἕως $27^{\circ},7$ (Αὔγουστος)· οἱ σπανιώτατοι καύσωνες εἶναι συντόμου διαρκείας. Ἡμέραι παγετοῦ σημειοῦνται περίπου 19%· (ἀπὸ Νοεμβρίου ἕως Μαρτίου), κυρίως δὲ κατὰ Ἰανουάριον (7% μηνιαίως). Χιὼν σπανίως πίπτει, κυρίως εἰς τὰ ὑψηλὰ καὶ πάντοτε βραχείας διαρκείας. Ἐπίσης σπανία εἶναι ἡ πτῶσις χαλάζης, γινομένη ἰδίως κατὰ τοὺς μῆνας Μάρτιον—Μάϊον καὶ Αὔγουστον—Ὀκτώβριον. Τὸ φαινόμενον τῆς δρόσου παρατηρεῖται ἰδίως κατὰ Ὀκτώβριον—Ἀπρίλιον καὶ δὴ κατὰ Νοέμβριον καὶ Ἀπρίλιον· τῆς δὲ πάχνης κατὰ Σεπτέμβριον καὶ Ὀκτώβριον. Ἡ μέση μηνιαία σχετικὴ ὑγρασία κυμαίνεται ἀπὸ 57 (Ἰούλιος) ἕως 85 (Δεκέμβριος) καὶ ἡ μέση μηνιαία νέφωσις ἀπὸ 0,4 (Ἰούλιος) ἕως 5,6 (Δεκέμβριος). Ἡμέραι βροχῆς ἐτησίως σημειοῦνται 76,4, ἰδίως ἀπὸ Νοεμβρίου ἕως Φεβρουαρίου (9—12 μηνιαίως)· τὸ μέσον ἐτήσιον ὕψος βροχῆς ἀνέρχεται εἰς 663 χλστμ., μηνιαίως δὲ φθάνει τὰ 117 χλστ. (Δεκέμβριος) καὶ κατέρχεται εἰς τὰ 2 (Αὔγουστος-Σεπτέμβριος). Ἡμέραι καταιγίδος μόλις σημειοῦνται 9 ἕως 30 ἐτησίως. Οἱ σίφωνες εἶναι σπανιώτατοι· εἰς τὴν περιφέρειαν τῆς πόλεως ἐντὸς δεκαεξαετίας ὅλης ἐμετρήθησαν 4 (Δεκέμβριος, Ἰούνιος καὶ Αὔγουστος). Αἱ ὧραι ἡλιοφανείας ἀνέρχονται εἰς 3.031 ἐτησίως, τὰ μηνιαῖα δὲ ὅρια εἶναι ἀπὸ 120 (Δεκέμβριος) ἕως 433 (Ἰούνιος)· εἰς Μυτιλήνην σημειοῦται ἡ μεγαλυτέρα ἐν Ἑλλάδι ἡλιοφάνεια.

Οἱ συνήθως πνέοντες ἄνεμοι εἶναι δροσεροὶ βόρειοι καὶ ζέφυροι, ἐναλλασσόμενοι συχνότατα μὲ βιαιοτάτους τοιούτους. Τέλος ἡ παλίρροια μετρηθεῖσα εἰς τὸν λιμένα τῆς Μυτιλήνης παρουσιάζει συνήθες ἀνώτατον ὕψος 0,35 μ., ἐξαιρετικὸν δὲ (κατ' ἀνεπίσημους πληροφορίας) 0,65 μ. Ἄρχεται ἀπὸ τῆς μεσημβρίας καὶ κορυφοῦται τὸ μεσονύκτιον.

***Βλάστησις.*** Ἐπὶ τῆς βλαστήσεως τῆς νήσου βασικαὶ εἶναι αἱ ἐργασίαι τῶν Κ. καὶ Π. Κανταρτζῆ (βλ. κατωτ. Βιβλιογραφίαν) γενόμεναι εἰς τοὺς βοτανικοὺς κήπους Ἀθηνῶν καὶ Κωνσταντινουπόλεως, εἰς τὸ βοτανικὸν μουσεῖον τῆς Ζυρίχης καὶ τὰ ἐργαστήρια τῆς Σορβόννης ἐπὶ τῇ βάσει ἰδίων συλλογῶν. Κατὰ τὸν Π. Κανταρτζῆν, ἡ βλάστησις τῆς Μυτιλήνης ἀδρομερῶς χωρίζεται εἰς 5 περιοχάς: ἐλαίας, πεύκης, καστανέας, βαλανιδέας καὶ πεδινήν. Ἡ *περιοχὴ τῆς ἐλαίας* ἐκτείνεται ἐπὶ τῶν Ν., Α. καὶ τοῦ κέντρου τῆς νήσου, τεμνομένη ὑπὸ πευκωδῶν ἐκτάσεων, ἐν μεγαλυτέρᾳ δὲ ἀναπτύξει περὶ τὸν κόλπον τῆς Γέρας. Εἰς τὴν περιοχήν της συναπαντοῦν ξηρόφιλα εἴδη, ἄφυλλοι θάμνοι, βολβώδη

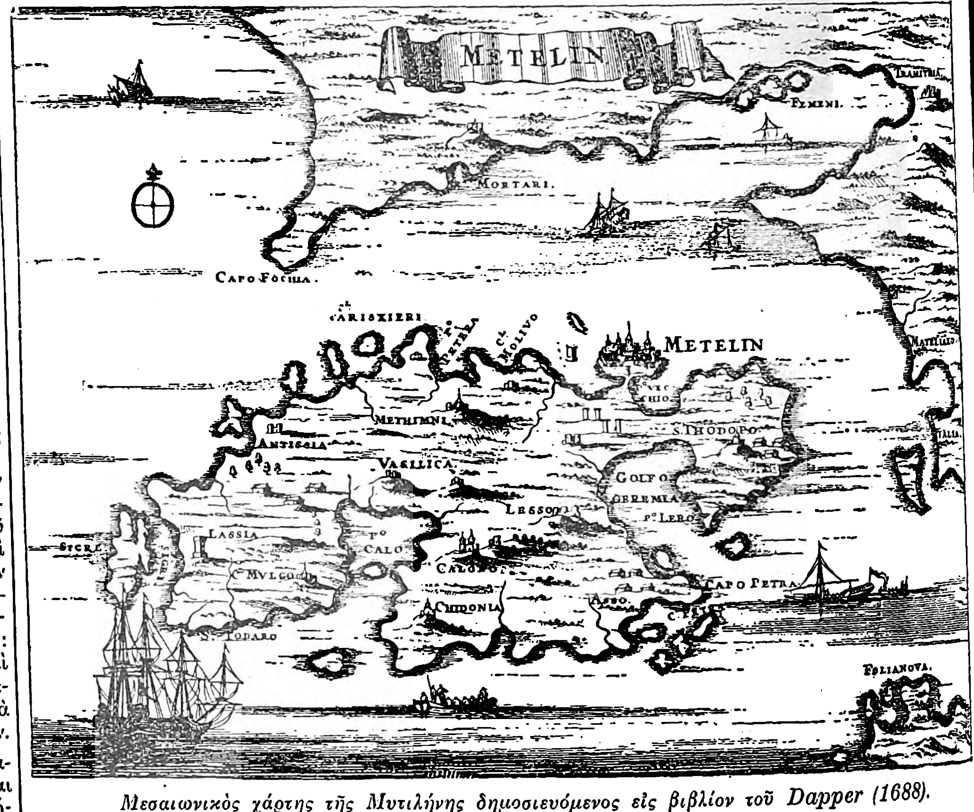


*Μεσαιωνικὸς χάρτης τῆς Μυτιλήνης δημοσιευόμενος εἰς βιβλίον τοῦ Dapper (1688).*

καὶ παχύρριζα, ἀρωματικὴ βλάστησις (μύρτος, ὀρίγανον), πρῖνοι κτλ. Ἡ *περιοχὴ τῆς πεύκης*, ἡ κατ' ἐξοχὴν δασώδης ἔκτασις τῆς νήσου, ἐκτεινομένη ἐν ἀξιολόγῳ συνεχείᾳ, εὑρίσκεται εἰς γεωγραφικὴν συνοχὴν μὲ τὴν τῆς ἐλαίας, μὴ ἐκτεινομένη ὅμως ὅσον αὕτη πρὸς Β. καὶ Δ. Ἀποτελεῖ τρίγωνον, οὗτινος κορυφὴ ὁ Μανδαμάδος καὶ βάσις ἡ μεταξὺ Ὀλύμπου καὶ Ἀμαλῆς ἔκτασις. Συναπαντᾷ ἐν τῇ περιοχῇ της ὁ σχοῖνος, ἡ χαμαιπεύκη, ἡ ἄλπειος πεύκη κτλ. Ἡ *περιοχὴ τῆς βαλανιδέας* ἐκτείνεται ἐπὶ ὅλου τοῦ ΒΔ. καὶ μέρους τοῦ Β. τμήματος τῆς νήσου, πυκνοτέρα δὲ ἀπαντᾷ παρὰ τὸν Μεσότοπον, Ἐρεσσόν, Β. τοῦ Ὀρδύμνου, Ἀνεμώτιαν, Στύψην κ.ἄ. Συναπαντοῦν δρῦς ἡ κηρρίς, ἀρκετὰ εἴδη ὀπωροφόρων κ. ἄ. Ἡ *καστανέα* ἐκτείνεται μόνον εἰς τὰς ὑψηλὰς ζώνας τοῦ Ὀλύμπου καὶ Λεπετύμνου, σχηματίζουσα ὡραιότατα δάση ἰδίως ἐπὶ τοῦ πρώτου· συνοδεύεται ὑπὸ τῆς κερασέας καὶ τῆς ἀλπείου καὶ ὑπαλπείου χλωρίδος τῆς Εὐρώπης καὶ Ἀσίας. Ἡ *πεδινὴ περιοχή*, ἀποτελουμένη ἐξ ἀπομεμακρυσμένων τεμαχίων, εἶναι κάπως ἀνεπτυγμένη μόνον περὶ τοὺς δύο κόλπους, ὅπου κυρίως ἡ καλλιέργεια.

***Πανίσκη.*** Τὸ ζωϊκὸν βασίλειον τῆς νήσου οὐδέποτε ἐμελετήθη συστηματικῶς. Ἐκ τῶν κυριωτέρων εἰδῶν ἀπαντῶσι:

Θηλαστικά. Ἐκ τῶν ἁρπακτικῶν: εἴδη ἰκτίδων (νυφίτσα, κουνάδι), ἡ ἐνυδρίς (σκυλοπόταμος), ἡ ἀλώπηξ καὶ τὰ συνήθη κατοικίδια. Ἐκ τῶν ἀρτιοδακτύλων: ὁ χοῖρος, ὁ βοῦς, ἡ αἴξ, τὸ πρόβατον. Ἐκ τῶν περιττοδακτύλων: ὁ ἵππος, ὁ ὄνος, ὁ ἡμίονος. Ἐκ τῶν τρωκτικῶν: ὁ λαγωός, ὁ κόνικλος, ὁ μῦς. Ἐκ τῶν ἐντομοφάγων: ὁ ἀσπάλαξ, ὁ ἀκανθόχοιρος.

Πτηνά. Ἐκ τῶν ἁρπακτικῶν: ὁ κόραξ, ἀετὸς ὁ νᾶνος (σταυραετὸς) κατὰ τὰ Δ. τῆς νήσου, βύας ὁ κοινὸς (μποῦφος), ἡ γλαῦξ. Ἐκ τῶν ὀρνιθοειδῶν: ἡ ὄρνις, ἡ ἰνδόρνις (κοῦρκος) καὶ ἡ πέρδιξ. Ἐκ τῶν περιστερωδῶν: ἡ τρυγὼν καὶ ἡ περιστερὰ (ἥμερος, ἀγριοπερίστερο, φάσα). Ἐκ τῶν νηκτικῶν: ἡ ἀγρία καὶ ἥμερος νῆσσα, ὁ χήν. Ἐκ τῶν ἀναρριχητικῶν: ὁ κόκκυξ, ὁ δρυοκολάπτης. Ἐκ τῶν ξηροβατικῶν: ὁ στρουθός, οἱ αἰγιθαλίδαι (τρυποκάρυδο, μελισσοφάγος), οἱ κορυδαλοὶ (γαλιάντρα, σταροπούλι κ.ἄ.), κίχλα ἡ ᾠδική, ἡ ἀκανθὶς (καρδερίνα), ἡ κορώνη, οἱ κόσσυφοι κ. ἄ. Ἐκ τῶν καλοβατικῶν: εἴδη ἐρωδιῶν, ὁ σκολόπαξ (μπεκάτσα) κ. ἄ. Ἐκ τῶν δρομέων: ἡ ὠτὶς (ἀγριόγαλλος).

Ἑρπετά. Ἐκ τῶν ὄφεων: ἔχις ὁ ἀμμοδύτης (ἀστρίτης), ἡ δενδρογαλῆ κ. ἄ. Ἐπίσης διάφοροι χελῶναι καὶ σαῦραι.

Ἰχθῦς. Ἀλόζη ἡ σαρδίνη (σαρδέλα), ἀφθονοῦσα ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Καλλονῆς, περίφημος ὡς ἁλίπαστος διὰ τὸ λίπος της, ὁ κέφαλος εἰς τὸν ποταμὸν Βουβάρην (βουβαρήσια), ἐπίσης ὡς ἁλίπαστος, ὁ κωβιός, ἡ τρίγλη (μπαρμπούνι) ἰδίως εἰς τὸν κόλπον τῆς Γέρας, τὸ σκύλλιον, ὁ γαλέος, κ. ἄ. ἄπειρα.

Μαλάκια, μαλακόστρακα, κ. ἄ. θαλάσσια. Μᾶλλον ἐξέχοντα: ὁ ὀκτάπους, ἡ σηπία, ἡ τευθὶς (καλαμάρι) καὶ ὁ ἀστακὸς κατὰ τὸν διέκπλουν τοῦ Μουζελίμ, ἡ ἄρκη (καλόγνωμη) τοῦ κόλπου Γέρας, κάρδιον τὸ ἐδώδιμον (κυδώνι) τοῦ κόλπου Καλλονῆς, ἔτι δὲ ὄστρεα ποικίλων εἰδῶν.

***Χαρτογράφησις.*** Ἱστορικὴν μᾶλλον ἀξίαν ἔχοντα καὶ ἐλαχίστως ἀποδίδοντα τὸ πραγματικὸν τῆς νήσου περίγραμμα καὶ τὸ ἀνάγλυφον τοῦ ἐδάφους σχεδιάσματα εἶναι τὰ κοσμοῦντα τὰ ἔργα περιηγητῶν (Dapper, Sophianus κ. ἄ.) καὶ τὰ ἄλλοθι δημοσιευθέντα: ὑπὸ τοῦ Σάθα (ἐν τῷ Β' τόμῳ τῶν Monuments), Koldewey, Legrand (ἐν τῇ ἐκδόσει τοῦ Buondelmonti) κ. ἄ. Πρῶτος ἐπὶ τριγωνομετρήσεων στηριζόμενος εἶναι ὁ χάρτης τοῦ Choiseul-Gouffier: «Carte de l'île de Métélin et du golfe d' Adramyti» (εἰς τὸ ἔργον του «Voyage pittoresque»). Ἀκολούθως ἀστρονομικῶς εἰργάσθη ὁ πλοίαρχος Gauttier (1818), τῶν ἐργασιῶν δὲ τούτου ἀντιγραφὴ εἶναι οἱ πρῶτοι χάρται οἱ ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ A. Arrowsmith γνωστοί, ἐν οἷς καὶ ὁ τῆς Μυτιλήνης. Τῷ 1834 ὑπετυπώθη ὁ ὑπ' ἀρ. 1665 ὑδρογραφικὸς χάρτης τοῦ ἀγγλικοῦ ναυαρχείου (Mityleni island with the gulfs of Adramyti and Sandarli) κατὰ τὰς ἐργασίας τοῦ πλοιάρχου R. Copeland, ἀναθεωρηθεὶς ὡς πρὸς τὸν κόλπον τῆς Καλλονῆς τῷ 1917 ὑπὸ R. L. Hancock, ἐκδοθεὶς δὲ τῷ 1860, 1915 καὶ 1919 καὶ συνεχῶς βελτιούμενος (τελευταία διόρθωσις 1924)· σημαντικώτατος διὰ τὴν ὑποτύπωσιν τῶν ἀκτογραμμῶν, τὰ βυθόμετρα κ. ἄ., ἔχει ἐν τούτοις πλεῖστα τοπωνυμικὰ σφάλματα καὶ οὐδὲ τὴν παραμικρὰν ἀντίληψιν δίδει τοῦ ἀναγλύφου τοῦ ἐδάφους. Συμπλήρωσις μικρὰ τῶν κενῶν αὐτοῦ ἐγένετο ὑπὸ τοῦ ἀρχαιολόγου Newton (Travels κτλ. Α' 49), καὶ μεγαλυτέρα ὑπὸ τοῦ De Launay τῷ 1887 (Carte de Métélin, 1: 240.000 εἰς τὴν Révue Archéologique 1880, πίν. IX). Πληρέστερος ὅμως πάντων καὶ βασικώτερος μέχρι νῦν παραμένει ὁ τῶν H. Kiepert καὶ R. Koldewey, ὑποτυπωθεὶς κατὰ τὰς

Digitized by Google

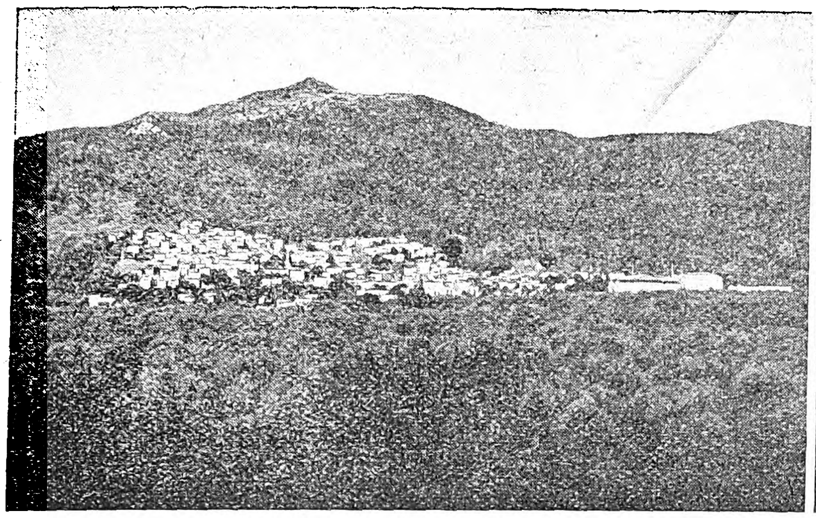
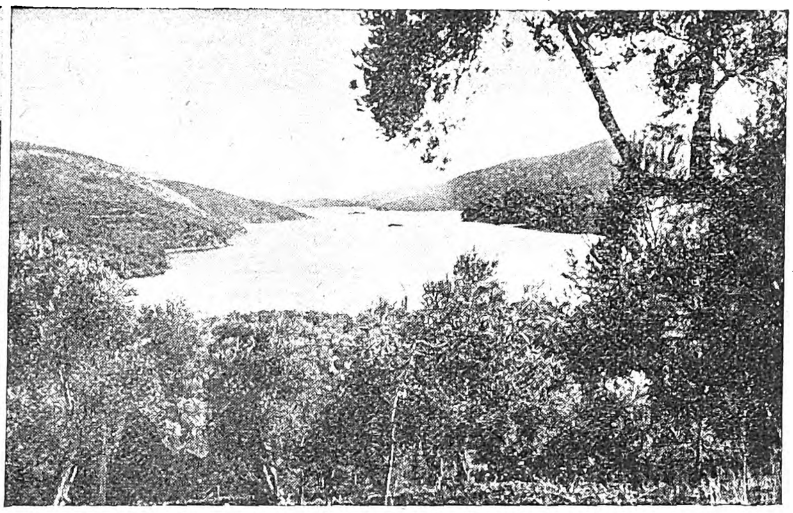

*1) Χωρίον «Λουτρά» Γέρας. 2) Ὁ κόλπος τῆς Γέρας ἀπὸ τοῦ μυχοῦ.*

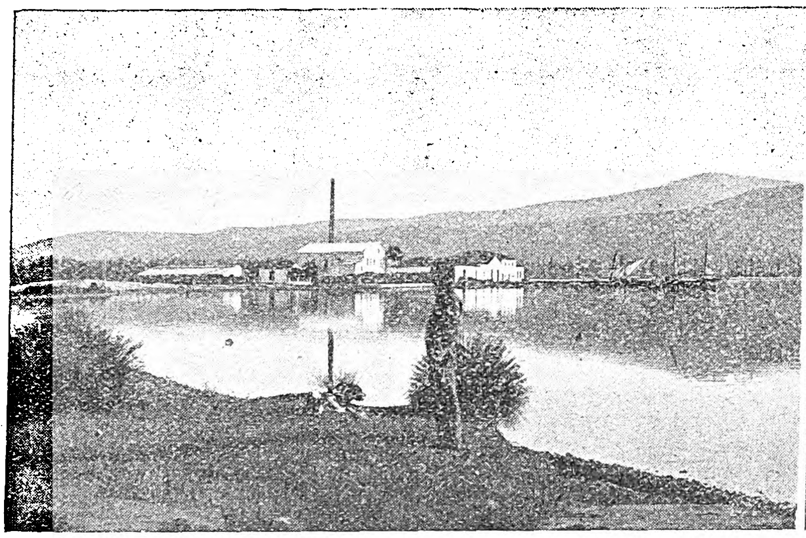
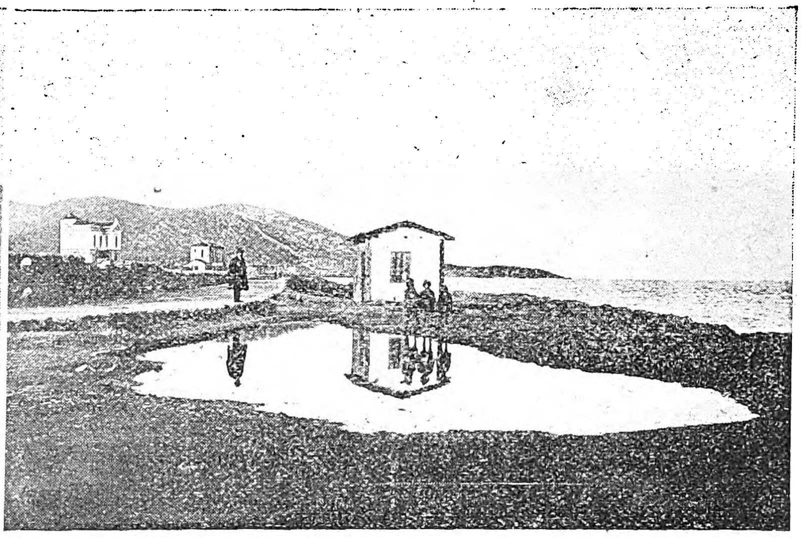

*1) Σκάλα Ντιπιοῦ (μυχὸς κόλπου Γέρας). 2) Σκάλα Θερμῆς.*

*1) Ἰαματικὰ λουτρὰ Θερμῆς (Σάρλιτζα Πάλας). 2) Ἰαματικὰ λουτρὰ κόλπου Γερας («Θέρμα τοῦ Κόρφου»).*

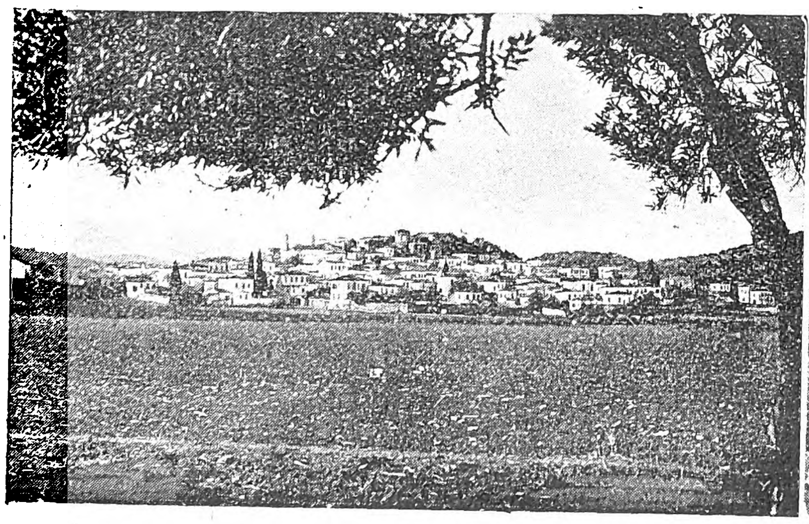
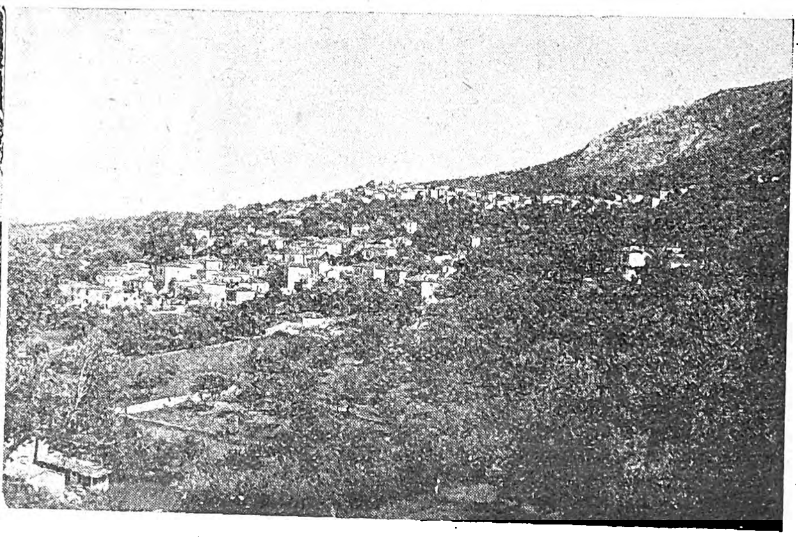

*Χωρία Πάφλα καὶ Χάλικας.*

[Φωτογραφίαι Ἀδελφῶν Χουτζαίου.]

Digitized by Google

Μυτιλήνη ἀρχαιολογικάς των ἐρεύνας τῷ 1841, 1886, 1888 (Kiepert) καὶ 1885/6 (Koldewey) ἐπὶ τῇ βάσει τοῦ περιγράμματος τοῦ Copelaud καὶ δι' ἰδίων αὐτῶν τριγωνομετρήσεων καὶ προσεκτικῆς συλλογῆς τοῦ τοπωνυμικοῦ· ἐδημοσιεύθη τῷ 1886 προχείρως («Λέσβου πίναξ τοπογραφικός, ἐκμετρηθεὶς καὶ σχεδιασθεὶς ὑπὸ Ἑνρίκου Κίπερτ καὶ Ροβέρτου Κολδεβάη» 1 : 150.000), ὁριστικῶς δὲ τῷ 1890 εἰς τὸ βιβλίον τοῦ τελευταίου (1 : 120.000).

Ἀπ' αὐτοῦ πλεῖσται ἑλληνικαὶ ἐκδόσεις μνημονευτέαι μόνον ἀπὸ ἀπόψεως τοπωνυμικοῦ· ἐξ αὐτῶν χρησιμοτάτη ἡ τοῦ Ἐμμ. Εὐαγγελινίδου («Γεωγραφικὸς χάρτης τῆς Λέσβου», Λειψία, 1898) καὶ μικροτέρας ἀξίας αἱ τῶν ἀδελφῶν Χατζηδανιὴλ (1 : 135.000 λιθογρ. Νικολαΐδου Σμύρνη καὶ 1 : 120.000 λιθ. Δημητράκου Ἀθῆναι 1930). Εἰδικοὺς χάρτας συνέταξεν: Βοτανικὸν ὁ Παλαιολ. Κανταρτζῆς (Carte botanique de l'île de Lesbos, 1 : 270.000), δημοσιευθέντα ἐν Revue générale de Botanique (τόμ. XI, πίν. 12—13) καὶ εἰς τὸ βιβλίον του «La végétatiou κτλ.», ἔτι δὲ οἱ Kiepert-Koldewey (Vertheilung der Vegetationsverhältnisse u. des Bodenanbaus d. Insel Lesbos, 1 : 210.000) εἰς τὸ βιβλίον τοῦ τελευταίου. Γεωλογικὸς ἀρκούντως νέος εἶναι ὁ τοῦ Philippson (Geolog. Karte des westl. Kleinasien 1 : 300.000) ἐν Petterman's, Mittheilungen κτλ. (Heft 167. 1900). Ἀρχαιολογικὸς ἄξιος λόγου ὁ τοῦ Kiepert (Lesbos insula cum indicatione locorum in quibus reperti sunt tituli graeci, 1 : 160.000) ἐν τέλει τῆς βερολινείου ἐκδόσεως τῶν λεσβιακῶν ἐπιγραφῶν. Τμήματα τῆς νήσου εἰδικῶς χαρτογραφηθέντα εἶναι: τὸ τῆς χερσονήσου τῆς Ἀμαλῆς (Umgebung der Stadt Mytilini mit Angabe der Localnamen, 1 : 80.000) ὑπὸ Κ. Α. Κανταρτζῆ εἰς τὸ βιβλίον τοῦ Koldewey· ὁ κόλπος τῆς Γέρας (Port of Iero, Nº 1664 τοῦ ἀγγλ. ναυαρχείου) ὑποτυπωθεὶς τῷ 1877 ὑπὸ F. J. Evans καὶ ὁ τοῦ Σιγρίου (Port of Sigri, Nº 1671) τῷ 1891 ὑπὸ W. J. L. Warton, Τέλος μικροτέρων περιοχῶν (θέσεων, πόλεων κτλ.) χάρται καὶ σχεδιάσματα μνείας ἄξια εἶναι τὰ παρὰ Conze, Koldewey κ. ἄ. ἀρχαιολόγοις, ἐπίσης δὲ ὁ λιμὴν τῆς Μυτιλήνης (Port of Mitylini, Nº 381 ἀγγλ. ναυαρχείου) ὑποτυπωθεὶς τῷ 1896· ἡ πόλις τῆς Μυτιλήνης (Forma urbis Mytilenearum 1 : 7.000) ὑπὸ Ἰακώβου Ἀριστάρχη Μπέη, ἔνθα καὶ ὁ ἀναφερθεὶς ἀρχαιολογικός· ἡ κόλπωσις Μολύβου - Πέτρας (Molivo road,) ἐν τῷ περιθωρίῳ τοῦ χάρτου τοῦ Copeland, κ. ἄ.

Ἡ περὶ τὴν νῆσον μαγνητικὴ ἀπόκλισις μετρηθεῖσα ὑπὸ τῆς ἀγγλικῆς ὑδρογραφικῆς ὑπηρεσίας εὑρέθη (1923) εἰς μὲν τὰ ΒΔ. καὶ ΝΔ.: 2° 25′ Δ., εἰς δὲ τὰ ΒΑ. καὶ ΝΑ.: 2° 10′ Δ., μειουμένη ἐτησίως κατὰ 8′ περίπου. Π. Ν. Π.

—[ΟΙΚΟΝΟΜ. ΓΕΩΓΡΑΦ.] Ἡ οἰκονομία τῆς νήσου εἶναι κατ' ἐξοχὴν ἀγροτική. Τὰ 33 % τοῦ ἐργαζομένου πληθυσμοῦ (1928) ἀσχολοῦνται μὲ τὴν γεωργίαν, κτηνοτροφίαν, θήραν καὶ ἁλιείαν. Αἱ ἐργαζόμεναι γυναῖκες ἀποτελοῦν τὸ $1/20$ τοῦ γυναικείου πληθυσμοῦ καὶ τὸ $1/10$ τῶν ἐργαζομένων περίπου. Ὁ κάτωθι πίναξ ἐμφαίνει τοὺς κατ' ἐπάγγελμα ἐργαζομένους καὶ τὴν % ἀναλογίαν ἐπὶ τῶν συνολικῶς ἐργαζομένων, καὶ εἰδικώτερον τὰς ἐργαζομένας γυναῖκας καὶ τὴν ἀναλογίαν των % καθ' ἕκαστον ἐπάγγελμα (ἀπογρ. 1928):

| | Σύνολον | | Γυναῖκες | |
|---|---|---|---|---|
| Γεωργία | 9.302 | 28.1 | 981 | 10.5 |
| Κτηνοτροφία | 1.758 | 5.3 | 30 | 1.8 |
| Ἁλιεία | 896 | 2.7 | 4 | 0.5 |
| Ὑπέδαφος | 44 | 0.1 | — | — |
| Βιομηχανία | 9.239 | 27.9 | 1.118 | 12.1 |
| Μεταφοραὶ | 2.805 | 8.8 | 7 | 0.2 |
| Πίστις κ.τ.τ. | 421 | 1.2 | 36 | 9.0 |
| Ἐμπόριον | 4.507 | 13.5 | 75 | 1.6 |
| Προσωπικαὶ ὑπηρεσίαι | 1.883 | 5.7 | 1.352 | 70.5 |
| Ἐλεύθερα ἐπαγγέλματα | 1.616 | 4.9 | 316 | 19.8 |
| Δημόσιαι ὑπηρεσίαι | 619 | 1.8 | 18 | 3.0 |
| Σύνολον | 33.093 | 100 | 3.937 | 11.9 |

***Γεωργία.*** Ἡ καλλιεργουμένη ἔκτασις τῶν κυρίων εἰδῶν (1930 : 25.297 στρέμ.) ἀνέρχεται εἰς τὰ 7,8% τῆς ἐπιφανείας τῆς νήσου. Βάσις τοῦ ἀγροτικοῦ εἰσοδήματος εἶναι ἡ ἐλαιοπαραγωγὴ καὶ ἡ καπνοκαλλιέργεια. Ἡ *ἐλαιοκομία* προήχθη ἀπὸ αἰώνων δι' ἐξημερώσεως τῶν αὐτοφυῶν ἀγριελαιῶν καὶ ἀπασχολεῖ ἡ συγκομιδή της περὶ τοὺς 6.000 ἐργάτας (τὰ 2/3 γυναῖκες) μὲ κέντρα ἰδίως τὴν Ἁγιάσσον, Πολυχνῖτον. Πλωμάριον, Γέραν καὶ Μόριαν· ὑπολογίζονται εἰς 11 ἑκατομμύρια τὰ ἐλαιόδενδρα, ὧν περὶ τὰ 3.000.000 (82.000 στρέμ., ἀξίας 921.000 ἀγγλ. λιρ.) τουρκικὰ ἐξ ἀνταλλαγῆς. Ὁ ἐλαιόκαρπος ἀκατάλληλος διὰ τὴν παρασκευὴν βρωσίμων ἐλαιῶν (συνήθη εἴδη: ἀδραμυττινές, ροπάδες), χρησιμοποιεῖται κυρίως εἰς τὴν ἐλαιουργίαν (βλ. *[Βιομηχανία]*.) Τὰ *δημητριακὰ* μόλις ἀρκοῦν διὰ τὴν διατροφὴν τῶν κατοίκων ἐπὶ 3 ἢ 4 μῆνας καὶ καλλιεργοῦνται εἰς τὴν πεδιάδα Καλλονῆς-Ἁγίας Παρασκευῆς, τὴν περιοχὴν Βασιλικῶν-Πολυχνίτου-Βρησᾶς, καὶ ἀλλαχοῦ εἰς μικροτέραν κλίμακα (Πέτρα, Μόλυβος, Στύψη, Ἐρεσσὸς κτλ.) Σημαντικὴ εἶναι ἡ *καπνοπαραγωγή*, ἀναπτυχθεῖσα ἀπὸ τοῦ 1910 καὶ κατὰ τὸ 1922· παράγονται μυρωδᾶτα Ἀνατολῆς (Σμύρνης) καὶ παραλλαγαὶ Ἀγρινίου, Καβάλλας, Ξάνθης κ. ἄ. Καπνοπαραγωγικὰ κέντρα εἶναι ἐν γένει τὰ ΒΔ. χωρία, ὁ κάμπος τῆς Καλλονῆς καὶ αἱ περιοχαὶ Ἐρεσσοῦ καὶ Πολυχνίτου. Τὰ *σῦκα* τῆς Μυτιλήνης, τὰ ἀνώτερα τοῦ Αἰγαίου, παράγονται ἐν Ἐρεσσῷ ἰδίως, καὶ εἰς τὰς περιφερείας Ἵππειος-Κατωτρίτος, Καλλονῆς καὶ Μολύβου· ἡ παραγομένη ποσότης ὑστερεῖ (1928) μόνον τῆς ἐν Λακωνίᾳ καὶ Μεσσηνίᾳ. Ἡ *ἀμπελουργία* ἤκμαζεν ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος, κατεστράφη κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους καὶ ἀπὸ ἐτῶν ἐτονώθη διὰ τῆς φυτεύσεως ἀμερικανικῶν κλημάτων· ἀκμάζει ἐν Καλλονῇ (μαῦρο κρασί), Πέτρᾳ (μυρωδᾶτο), Ἐρεσσῷ κ. ἄ. Ἐκ τῶν *ὀσπρίων* καλλιεργοῦνται κυρίως οἱ κύαμοι (Καλλονὴ—Ἁγία Παρασκευὴ) καὶ οἱ ἐρέβινθοι (Πολυχνῖτος-Βασιλικά, Τελώνια). *Γεώμηλα* παράγονται ἐλάχιστα (ἐν Ἁγιάσσῳ), ἐπίσης δὲ εἰς μικρὰν κλίμακα ὁ *βάμβαξ* καὶ τὸ *γλυκάνισον* (Πολυχνῖτος-Βασιλικά) καὶ *σησάμιον* (αὐτόθι καὶ ἐν Καλλονῇ). *Λαχανόκηποι* σημαντικοὶ ὑπάρχουν εἰς Μόριαν, Μόλυβον, Μυτιλήνην καὶ Καλλονήν. Τὰ *πεπονοειδῆ* εὐδοκιμοῦν ἐν Καλλονῇ, Πέτρᾳ, Μολύβῳ (καρπούζια) καὶ Θερμῇ (πεπόνια). Ὁ κατωτέρω πίναξ δεικνύει τὴν ἀπόδοσιν τῆς καλλιεργείας τῷ 1930.

| | Στρέμματα | Τόννοι |
|---|---|---|
| Σιτηρά: | | |
| Κριθὴ | 21.934 | 1.268 |
| Σῖτος | 48.962 | 1.264 |
| Σμιγὸς | 420 | 33,2 |
| Βρόμη | 413 | 33,9 |
| Σίκαλις | 300 | 20,2 |
| Ἀραβόσιτος | 1.285 | 37,3 |
| Ὄσπρια: | | |
| Κύαμοι | 7.336 | 410 |
| Ἐρέβινθοι | 954 | 36,4 |
| Φασόλια | 1.029 | 15,6 |
| Πεπονοειδῆ | 2.244 | 735 |
| Κηπευτικὰ | 2.654 | 3.435 |
| Ἀμπελουργία: | | |
| Κρασοστάφυλα | 6.345 | 579 |
| Φαγώσιμοι σταφυλαὶ | | 304 |
| Ἐλαιοκομία: | | |
| Ἔλαιον | — | 20 521 |
| Ἐλαῖαι φαγώσιμοι | — | 645 |
| Βιομηχανικὰ προϊόντα: | | |
| Καπνὸς | 30.825 | 1.834 |
| Βάμβαξ | 170 | 2,5 |
| Γλυκάνισον | 155 | 7,3 |
| Σησάμιον | 271 | 7,9 |

Τὰ *κάστανα* παράγονται ἰδίᾳ ἐν Ἁγιάσσῳ. Τὰ *βαλανίδια*, κατώτερα τῆς Ἀνατολῆς (Σμύρνη Δαρδανέλια), ὑπερέχουν τῶν τῆς λοιπῆς Ἑλλάδος· παράγονται εἰς τὰ ΒΔ. τῆς νήσου (Σκαλοχῶρι, Βατούσα, Φίλια, Μεσότοπος, Ἐρεσσός, Σίγρι), ἰδίως ὅμως εἰς Τελώνια. Ἐκ τῶν *ὀπωροφόρων* ἀκμάζει ἡ μηλέα (Ἁγιάσσος), ἀπιδέα (Ἁγιάσσος, Πλουμάρι, ΒΔ. χωρία), κυδωνέα (πολλαχοῦ) βυσσινέα καὶ κερασέα (Ἁγιάσσος - Κατωτρίτος), ἡ πορτοκαλέα (Παράκοιλα, Γέρα, Θερμὴ) καὶ εἰς μικρὰν κλίμακα ἡ λεμονέα (Θερμὴ κ. ἄ.), ἀμυγδαλῆ καὶ καρυδέα. Ἄλλοτε ἤκμαζε καὶ ἡ μορέα, ἐκριζωθεῖσα ὑπὸ τῆς πιπερίτιδος. Τῷ 1922—1923 ἐφυτεύθησαν 3.000 φυντάνια μορεῶν. Ἡ δενδροπαραγωγὴ τοῦ 1930 ἔχει οὕτω:

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| *Ἐσπεριδοειδῆ:* | | | *Νωπαὶ ὀπῶραι:* | | |
| Πορτοκάλια | τεμ. | 63.500 | Ἀπίδια | τόν | 667 |
| Μανδαρίνια | » | 14.500 | Κεράσια | » | 76,3 |
| Λεμόνια | » | 9.500 | Βύσινα | » | 32,3 |
| *Ξηροὶ καρποί:* | | | Μῆλα | » | 53,6 |
| Σῦκα | τόν. | 750 | Κυδώνια | » | 300 |
| Ἀμύγδαλα | » | 62,5 | Ρόδια | » | 83,2 |
| Κάστανα | » | 786,5 | Ροδάκινα | » | 16,8 |
| Βαλανίδια | » | 636,6 | | | |

*Ἀσθένειαι* μαστίζουσαι τὴν παραγωγὴν τῆς νήσου εἶναι: ὁ δάκος καὶ πυρηνοτρύτης διὰ τὸν ἐλαιόκαρπον (1930 : καταστροφὴ τῆς παραγωγῆς κατὰ 20—25 %), ὁ περονόσπορος διὰ τὴν ἄμπελον (1929 : 10 %) καὶ ἡ σκωρίασις διὰ τὰ σιτηρὰ (1929 : 40—50 %).

*Γεωργικαὶ ὑπηρεσίαι* τῆς νήσου εἶναι: τὸ «Γραφεῖον γεωργικῆς περιφερείας Λέσβου» (Μυτιλήνη) καὶ αἱ «Γεωργικαὶ ἐπιμελητεῖαι» αὐτοῦ (Μόλυβος, Πλουμάρι)· διατηρεῖ 3 φυτώρια δένδρων (Ἁγιάσσος, Παράκοιλα, Πλουμάρι) καὶ πλείστους ἀποδεικτικοὺς ἀγρούς. *Ὀργανισμοί*: τὸ «Γεωργικὸν ἐπιμελητήριον Λέσβου» ἀπὸ τοῦ 1929. *Συνεταιρισμοὶ* λειτουργοῦν (Μάϊος 1931) οἱ κάτωθι 73, συγκεντροῦντες 6.800 μέλη περίπου καὶ διατηροῦντες 27 ἐλαιουργεῖα (ὑδραυλ. πιεστήρια 63, ἀξία 27.280.000 δραχ.):

| | Ἀριθ. | Μέλη |
|---|---|---|
| Γεωργικοὶ-Πιστωτικοὶ | 18 | 1.500 |
| Ἐνοικιάσεως γαιῶν | 5 | 136 |
| Κτηματικῆς πίστεως | 3 | 160 |
| Καπνοκαλλιεργητῶν | 1 | 68 |
| Ἐλαιουργικοὶ-Πιστωτικοὶ | 42 | 4 600 |
| Κτηνοτροφικοὶ | 4 | 355 |
| Σύνολον | 73 | 6.819 |

*Ἀποξηραντικὰ ἔργα* τὰ πρῶτα μελετηθέντα: ἡ ἀποξήρανσις τῆς ἁλυκῆς Καλλονῆς (1874) καὶ τῶν ἑλῶν Γέρας (1926)· τὸ πρῶτον δὲ ἐκτελουμένη ἀποξήρανσις, ἡ τῆς «Μεγάλης Λίμνης» ὑπὲρ τοῦ συνεταιρισμοῦ ἀποκαταστάσεως ἀκτημόνων καλλιεργητῶν Ἁγιάσσου (ἀποξηρ. ἐκτάσεις 1.200 στρέμμ. μέχρι τοῦδε). Διὰ τὴν *ἀποκατάστασιν τῶν ἀκτημόνων* πλὴν τῆς Μεγάλης Λίμνης καὶ ἄλλων 2.000 στρεμμάτων («Καμπὶ» Ἁγιάσσου) οὐδὲν διετέθη ἐλλείψει μεγάλων ἀκαλύπτων κτημάτων πρὸς ἀπαλλοτρίωσιν. *Ἀγροτικὰ σωματεῖα* λειτουργοῦν: κτηματιῶν 3, παραγωγῶν 3, ἀκτημόνων αὐτοκαλλιεργητῶν 4 καὶ πλεῖστοι ἀγροτικοὶ σύνδεσμοι καὶ ἀγροτικαὶ ἑνώσεις.

***Δασικὸς πλοῦτος.*** Τὴν ἀνεγνωρισμένην δασικὴν βλάστησιν ἀποτελοῦν ἐκτάσεις 105.986 στρεμμάτων (ποσοστὸν δασώσεως τῆς νήσου 6.5 %), ὑπάρχουν δὲ ἔτι δασικαὶ βοσκαὶ 250.000 στρεμμάτων (15.4 % τῆς ἐπιφανείας τῆς νήσου) καὶ ἱκανὰ ὡς σύνολον ἀπομεμονωμένα δασοτεμάχια. Ἀπαντῶντα εἴδη: κυρίως ἡ χαλέπιος πεύκη, σύμφυτος ἐνιαχοῦ (Φτεροῦντα) μὲ τὴν λαρικοειδῆ, ἡ δρῦς καὶ τὰ ἀειθαλῆ πλατύφυλλα ὑπὸ βραχύκορμον μορφήν. Τὰ 71 % τῆς ὅλης δασικῆς βλαστήσεως ἀποτελοῦν τὰ ὑψηλὰ καὶ μέσα δάση, τὰ λοιπὰ δὲ εἶναι χθαμαλὰ (δρῦς, πρῖνος, ἀγριαχλαδέαι κ. ἄ.) ἢ γυμνὰ καὶ ἀραιῶς καλυπτόμενα.

| | Μυτιλήνης | Μολύβου | Σύνολον |
|---|---|---|---|
| Ὑψηλὰ | 57 436 | 11.150 | 68.586 |
| Μέσα | 7.1 0 | — | 7.100 |
| Χθαμαλὰ | 3.000 | 600 | 3 600 |
| Γυμνὸν κτλ. | 23.700 | 3.000 | 26.700 |
| Σύνολον | 91.236 | 14.750 | 105 986 |

Ὡς πρὸς τὴν ἰδιοκτησίαν τὰ δάση κατὰ 16,6 % εἶναι δημόσια, 67,4 % διακατεχόμενα καὶ ἰδιόκτητα (κοινοτικὰ 17,4 %, φυσικῶν προσώπων 50 %), 4 % μοναστηριακὰ καὶ 12 % ἐξ ἀνταλλαγῆς ὑπὸ τὴν Ἐθνικὴν Τράπεζαν. Κύρια δασικὰ προϊόντα τῆς νήσου: ἡ *ρητίνη*, παλαιότατα (1850) ἀνερχομένη εἰς 335 τόννους ἐτησίως· ἡ ἐκμετάλλευσίς της ἐνετάθη ἀπὸ τοῦ 1929 καὶ ἐξάγεται εἰς τὰ ἐν Ἐλευσῖνι ἐργοστάσια (ρητινοσυλλέκται 82)· ἡ *ἄσβεστος*, ἄφθονος λόγῳ τῆς φύσεως τοῦ ἐδάφους, καταναλισκομένη ἐπιτοπίως· οἱ *ξυλάνθρακες*, μὴ ἐπαρκοῦντες διὰ τὴν ἐπιτόπιον χρῆσιν, καὶ ὁ *πευκοφλοιός*· ἡ ἀπόληψις *τεχνικῆς ξυλείας* διενεργεῖται εἰς λίαν περιωρισμένην κλίμακα (καρυδέα, λεύκη, καστανέα) ἰδίως εἰς παρυφὰς δενδροκομικῶν ἐκτάσεων.

| | | Μυτιλήνης | Μολύβου |
|---|---|---|---|
| Ξυλάνθρακες | ὀκάδες | 1.000.000 | 700.0 0 |
| Ρητίνη | » | 350 000 | 60.000 |
| Βαλανίδια | » | — | 150.000 |
| Πευκοφλοιὸς | » | 30.000 | — |
| Καυσόξυλα | ζύγια | 6.000 | 300 |
| Τεχνικὴ ξυλεία | κυβ. μετρ. | 600 | 40 |
| Ἄσβεστος | στατῆρες | 45.000 | — |

*Δασικαὶ ὑπηρεσίαι* τῆς νήσου: ἡ «Δασικὴ Ἐπιθεώρησις Ἀρχιπελάγους», τὸ Δασαρχεῖον Μυτιλήνης εἰς ὃ ὑπάγεται τὸ ΝΑ. ἥμισυ τῆς νήσου (ἐπιφάν. 820.1 τετρ. χιλμ., δάση 10.6 τετρ. χιλμ.) καὶ τὸ Δασονομεῖον Μολύβου εἰς ὃ ἡ ὑπόλοιπος νῆσος, ἡ Λῆμνος, ὁ Ἅγιος Εὐστράτιος καὶ ἡ Σαμοθράκη (ἐπιφάν. 1622 τετρ. χιλμ., δάση 14,5 τετρ. χιλμ.).

***Κτηνοτροφία.*** Ἡ *ποιμνιακὴ κτηνοτροφία* ὡς καὶ ἐπὶ τουρκοκρατίας, ἀκμάζει κατὰ τὰ ΒΔ. μέρη τῆς νήσου. *Τυροκομία*, ὑπὸ βιοτεχνικὴν μορφὴν ὑπάρχει εἰς Γέλια, Ἄγραν, Μανδαμάδον κ. ἄ., ὠργανωμέναι δὲ ἐπιχειρήσεις εἰς Ἀχλαδερήν, Οὔτζαν, Σκαλοχώρι κ. ἄ. Παράγεται κυρίως φέτα, σαλαμούρα, μυζήθρα καὶ τουλουμοτύρι, ὀλίγα δὲ κασέρια καὶ κεφαλήσια· ἡ παραγωγὴ ἀνέρχεται εἰς 400—650.000 ὀκάδας, ἐνίοτε δὲ (1927) ἕως 1.000.000. Ἡ *πτηνοτροφία* παραμένει εἰς τὴν οἰκιακήν της μορφήν, μόνη δὲ ὠργανωμένη ἐπιχείρησις εἶναι ἡ τοῦ κτήματος «Ριζᾶ Πασᾶ» (Κράτηγος). Ἐκ τῶν *ὑποζυγίων* γνωστὰ κυρίως οἱ ταπεινοῦ ἀναστήματος ἀλλ' ἰσχυροὶ ἵπποι (poneys) τῆς Βατούσης καὶ οἱ μικρόσωμοι «μιντυλῆδες» τοῦ Μανδαμάδου ἀναφερόμενοι ἤδη (Bellon du Mans) ἀπὸ τοῦ ΙΣΤ' αἰῶνος, τῶν ὁποίων τὰ θήλεα ἀπεστέλλοντο εἰς Χίον.

Ἐκ τῶν *ἐπιζῳοτιῶν* σπουδαιότεραι ἡ εὐλογία τοῦ 1924/5, καταστρέψασα κατὰ 25—40 % τὰ ποίμνια.

*Κτηνοτροφικαὶ ὑπηρεσίαι*: ἡ νομοκτηνιατρικὴ Λέσβου καὶ *σωματεῖα*: 6 «σύνδεσμοι κτηνοτρόφων» καὶ 3 «ποιμενικοὶ σύνδεσμοι».

Ὁ κατωτέρω πίναξ ἐμφαίνει κατὰ κεφαλὰς τὰ κτήνη τῆς νήσου:

| | 1924 | 1926 | 1928 |
|---|---|---|---|
| Βόες μὴ ἀροτριῶντες | 1.347 | 1.648 | 1.433 |
| Βόες ἀροτριῶντες | 3 827 | 8 066 | 5.312 |
| Ἀγελάδες | 2.049 | 1 904 | 1.944 |
| Ἵπποι | 1 167 | 1 084 | 1.356 |
| Φορβάδες | 1 984 | 2.480 | 2.692 |
| Ἡμίονοι | 1 964 | 2.478 | 2.826 |
| Ὄνοι | 5.482 | 6.808 | 8.042 |
| Πρόβατα | 74 975 | 69.536 | 60.774 |
| Αἶγες | 24 631 | 29 931 | 30 393 |
| Χοῖροι | 895 | 1.186 | 1.274 |
| Πτηνὰ κατοικίδια | 72.533 | 100.834 | 134.478 |
| Ἀρνιὰ σφάγια | — | 7.658 | 12.454 |

***Ἁλιεία καὶ Ἁλυκαί.*** Ἡ ἁλιεία εἶναι ζωηρότατα ἀνεπτυγμένη. Ὑπάρχουν 332 ἁλιευτικὰ πλοιάρια (1927) καὶ 896 ἁλιεῖς (1928). Οἱ ἁλιευόμενοι ἰχθύες ἀνέρχονται (1927) εἰς 378.640 χλγρ. ἐτησίως, τὰ κεφαλόποδα εἰς 61.440 χλγρ. καὶ τὰ μαλακόστρακα εἰς 640 χλγρ. Καταναλίσκονται δὲ ἐτησίως ἢ ἐξάγονται ἁλίπαστοι περίφημοι εἰς τὰς ἑλληνικὰς ἀγορὰς («Καλλονιάτικες σαρδέλλες» καὶ «Βουβαρήσια»). Ἁλιευτικὰ σωματεῖα ὑπάρχουν 4. Ἁλυκαὶ (τοῦ ...) λειτουργοῦν δύο παλαιόταται ἐν τῷ κόλπῳ τῆς Καλλονῆς, ἔχουσαι ἔκτασιν (τετρ. μέτρα) τὴν ...

Digitized by Google

| | | *Καλλονῆς* | *Πολυχνίτου* | *Σύνολον* |
|---|---|---|---|---|
| Ἐξωτερ. δεξαμεναὶ (γκιόλια) | ἀριθ. | 45 | 41 | 86 |
| | ἔκτασ. | 315 000 | 350.000 | 665.000 |
| Ἐσωτερ. δεξαμεναὶ (ψῆστρες) | ἀριθ. | 25 | 21 | 46 |
| | ἔκτασ. | 220.000 | 305.000 | 525.000 |
| Δεξαμ. κρυσταλλώσ. (τηγάνια) | ἀριθ. | 9 | 23 | 95 |
| | ἔκτασ. | 82.000 | 135.000 | 217.000 |
| Ἱπποδύναμις | | 40 | 55 | 95 |
| Ἐργάται | | 100—160 | 100—160 | 200—320 |

Ὑπάρχουν ἐπίσης ἐγκαταλελειμμέναι ἡ τοῦ *Περάματος* ἀπὸ ἑξηκονταετίας καὶ ἡ τῆς *Ἀποθήκας*. Ἐπὶ τουρκοκρατίας ἀπέδιδε τὸ μονοπώλιόν των εἰς τὸ δημόσιον 2—3 ἑκατομμύρια γρόσια, νῦν δὲ ἡ ἀπόδοσις ἔχει ὡς ἑξῆς (συμποσουμένη διὰ τὰ ἔτη 1923—1929 εἰς 20,3% τῆς πανελληνίου παραγωγῆς) εἰς τόννους:

| | *Καλλονῆς* | *Πολυχνίτου* | *Σύνολον* |
|---|---|---|---|
| 1919 | — | 5.615 | 5.615 |
| 1920 | — | 8.231 | 8.231 |
| 1921 | — | 9.088 | 9.088 |
| 1922 | — | 8 789 | 9.789 |
| 1923 | 3.021 | 8.564 | 11.585 |
| 1924 | 4.615 | 8.196 | 12 811 |
| 1925 | 6.076 | 8.4 1 | 14 567 |
| 1926 | 9.544 | 8.070 | 17.614 |
| 1927 | 120407 | 9.099 | 21.506 |
| 1928 | — | — | — |
| 1929 | (10 423) | (8.389) | (18 812) |
| Σύνολον | 46.081 | 82.532 | 128.618 |

***Ορυκτὸς πλοῦτος.*** Μοναδικαὶ ἐπιχειρήσεις κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη εἶναι αἱ τοῦ τάλκου καὶ λευκολίθου. Ἡ ἐξόρυξις καὶ κατεργασία τοῦ *τάλκου* (σαπουνόχωμα), παλαιοτάτη, ἐνεργεῖται ἐν Γέρᾳ, Παλαιοχωρίῳ, Πλωμαρίῳ, κ. ἄ.· ἐργάζονται (1924) 250 ὀρύκται καὶ λειτουργοῦν 5 ἀτμοκίνητα ταλκοτριβεῖα, 3 ὑδραυλικὰ μετὰ στροβίλων καὶ 5 κοινοὶ ὑδρόμυλοι (110 ἵππων, 200—250 ἐργάται)· *Λευκολίθου* ἀφρύκτου ἐπιχειρήσεις ἐλειτούργησαν ἡ τοῦ Πολυχνίτου (Τραγάκης) καὶ ἡ τῆς Μικρᾶς Λίμνης (W. Huyzer) κατὰ τὰ 1927 — 1928, ἡ κίνησίς των δὲ εἰς τόννους, ἐργάτας καὶ ἡμερομίσθια ἔχει οὕτω:

| | | *Τόννοι* | *Ἐργάται* | *Ἡμερομ.* |
|---|---|---|---|---|
| Πολυχνῖτος | 1927 | 600 | 25 | 3.566 |
| | 1928 | 900 | 36 | 9.893 |
| Μ. Λίμνη | 1927 | 900 | 9 | 2 206 |
| Σύνολον 1927—28 | | 2.400 | 60 | 15 665 |

Ὁ λευκόλιθος τῆς Μυτιλήνης περιεκτικότητος Mg $Co_3$ 96 (Πολυχνῖτος)—95 (Μ. Λίμνη), θεωρεῖται ἀνώτερος τοῦ εὐβοϊκοῦ, περιέχων ὀλιγωτέραν ἄσβεστον. Ἐπίσης γίνεται μικρὰ ἐξαγωγὴ *μελαντηρίτου* (καραμπογιὰ) εἰς τὰς κοιλάδας Ἄγρας, Στύψης, Τελωνίων κ. ἄ., χρησιμοποιουμένου ἐπιτοπίως διὰ τὴν βυρσοδεψίαν. *Λατομεῖα* κοινῶν λίθων λειτουργοῦν παρὰ τὴν πόλιν (Λιμενικῶν ἔργων, κ. ἄ.).

***Ἐκμετάλλευσις θερμοπηγῶν.*** Ἅπασαι αἱ θερμοπηγαὶ τῆς νήσου εὑρίσκονται ἐν ἐκμεταλλεύσει ἐν γένει περιωρισμένῃ. Τὰ ὕδατα αὐτῶν (βλ. *[Γεωλογία]*), ἅπαντα ἀλκαλικά, εἶναι τριῶν κατηγοριῶν: λουτρὰ ἐξωτερικῆς χρήσεως (Ἐφταλοῦ, Θερμή, Κρυφτὴ Παναγιά, Λισβόρι, Πολυχνῖτος), καθαρκτικὰ ἐσωτερικῆς χρήσεως (Ἁγία Βαρβάρα, Λιώτα) καὶ μεικτὰ (κόλπου Γέρας, Κουρτζῆ). Τὰ πρῶτα ἐνδεικνύονται διὰ χρονίους ρευματισμούς, ἀρθριτισμοὺς καὶ δερματικὰς παθήσεις, ἐκ τῶν τρίτων αἱ θέρμαι Κουρτζῆ διὰ τὰ ἀνωτέρω καὶ διὰ τὰ νοσήματα ἥπατος, νεφρῶν καὶ γενικῶς εἰς τὰς ἐμφράξεις τῆς κάτω κοιλίας, τὰ λοιπὰ δὲ καὶ διὰ τὰς παθήσεις τοῦ στομάχου. Ἡ *Θερμὴ* (ἀρχ. Θέρμα), ἐκμεταλλευομένη συνεχῶς ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος, ἐκηρύχθη (1930) λουτρόπολις, (μέσος ἐτήσιος ἀριθμὸς λουομένων 1.200). Ἡ τοῦ *Κουρτζῆ*, ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος ἐκμεταλλευομένη καὶ εἶτα καταχωσθεῖσα, ἀπεκαλύφθη τῷ 1883 καὶ λειτουργεῖ μὲ συγχρόνους ἐγκαταστάσεις. Ἀπὸ τῆς ἀρχαιότητος ἐπίσης γνωστὰ ἦσαν τὰ *Θερμέλια* (30′ ἀπὸ τῆς Μόριας), ἀνεκμετάλλευτα νῦν, καὶ τὰ ὕδατα τῆς *Κυδώνας*, ἐπίσης ἀνεκμετάλλευτα. Αἱ ὑπόλοιποι λειτουργοῦν ἀτελῶς ἢ καὶ ὑποτυπωδῶς. Ἐξ αὐτῶν ἡ τοῦ κόλπου *Γέρας* ἐπλουτίσθη ὑπὸ τοῦ Χουσεΐν Καπετὰν πασᾶ (ΙΗ′ αἰών), ἡ τῆς *Κρυφῆς Παναγιᾶς* ἀνεκαλύφθη τῷ 1864, τῶν λοιπῶν δὲ ἡ ἐκμετάλλευσις εἶναι γνωστὴ ὑπὸ τῶν τελευταίων τουρκικῶν χρόνων.

***Βιομηχανία.*** Ἀρκούντως ἀνεπτυγμένη, βάσιν ἔχει τὰ ἐλαιώδη προϊόντα. Ἡ *ἐλαιουργία*, μηχανοκίνητος κατὰ 88%, διαθέτει 141 ἐργοστάσια (24% τῶν ἐν Ἑλλάδι), 340 ὑδραυλ. πιεστήρια, 3.800 ἐργάτας καὶ ὑπαλλήλους, 2.685 ἵππων δύναμιν (27% τῆς πανελληνίου), 2 ραφινερίας (ἵδρ. 1928) καὶ ἐλαχίστας ἐπιχειρήσεις ξυλομαγκάνων. Εἰς τὸ πλῆθος τῶν ἐργοστασίων (ἔγκαιρος πίεσις τοῦ ἐλαικάρπου) ὀφείλεται ἡ ἀνωτέρα ποιότης τοῦ ἐλαίου καὶ ἡ ἔλλειψις ὀξυτήτων. Ἄλλοτε ἐλειτούργουν ἐλάχιστα μηχανοκίνητα ἐλαιοτριβεῖα (1888: 18 ἐργοστ., 290 ἵππ.) καὶ ἡ παραμονὴ τοῦ καρποῦ εἰς ἀποθήκας («ἐμπατὲς») ἀπέδιδε κατώτερον ἔλαιον. Ἡ παραγωγὴ ἄλλοτε ἀνερχομένη εἰς 200—220 000 καντάρια (1852) ἕως 300.000 (1890), νῦν (1/5 τῆς πανελληνίου) ἔχει οὕτω:

| | *Μετρικοὶ στατῆρες* | *% ἐπὶ τῆς πανελληνίου* |
|---|---|---|
| 1919 | 24.320 | 4,4 |
| 1920 | 36 .768 | 25,8 |
| 1921 | 28.807 | 6,5 |
| 1922 | 151.170 | 18,4 |
| 1923 | 30 707 | 5,8 |
| 1924 | 285.183 | 27,5 |
| 1925 | 57.708 | 9,1 |
| 1926 | 232 281 | 37,8 |
| 1927 | 83.307 | 11,5 |
| 1928 | 252.538 | 25,2 |
| Συνολικὴ | 1.514.789 | 19,5 |
| Μέση ἐτησία | 151.478,9 | 19,5 |

Ἡ *σαπωνοποιία*, ἀνέκαθεν ἀνεπτυγμένη (1462), διέθετε (1859), μόνον ἐν τῇ πρωτευούσῃ, 350 ἐργοστάσια καὶ σμηγματοποιεῖα («κιρχανέδες»). Σήμερον ὑπάρχουν 58 σαπωνοποιεῖα, ἡ μέση δὲ ἐτησία παραγωγή των, ἀνερχομένη τελευταίως εἰς 8—10 ἑκατομμ. χλγρ. (1891: 11.500.000 χλγρ.), κατῆλθεν ἐσχάτως. Παράγεται σάπων λευκός, πράσινος (πυρηνοσάπων) καὶ ἀρωματικός, ἄλλοτε δὲ καὶ ὑδαρὴς («τρεμούλα») ἐκ τοῦ στακτονέρου («κατάσταγμα»). Τὸ ἔλαιον τῆς Μυτιλήνης ἀποδίδει 150% περίπου σάπωνα.

Ἡ *πυρηνελαιουργία* διαθέτει ὀκτὼ ἐργοστάσια (Λουτρά, Ντίπι, Πάφλα, Πλουμάρι, Πολυχνῖτος), ὧν λειτουργοῦν (1928) τὰ 5, ἔχοντα 370 ἵππων δύναμιν, 48 ἀτμοκίνητα ἐκχυλιστήρια καὶ 14 ἀποστακτῆρας· χρησιμοποιοῦν 150 ἐργάτας καὶ κατεργάζονται μόνον ἐγχώριον ἐλαιοπυρῆνα· ἄλλοτε ἐγίνετο εἰσαγωγὴ καὶ ἐξ Ἀνατολῆς, ἐσχάτως ἐπαναληφθεῖσα.

Ἡ βιομηχανία τῶν *ἐλαιοπάνων* διαθέτει (1924) 2 ἐργοστάσια (Μυτιλήνη, Ἁγία Παρασκευή), μὲ 50 ἐργάτας, χειροτεχνικὴ δὲ κατασκευὴ γίνεται εἰς τὰ ἐν Ἁγιάσσῳ καὶ Πολυχνίτῳ 35 ὑφαντήρια (κρεββαταὶ 70, ἀνέμαι 100, ἐργάτρ. 150)· αἱ ὑπολειπόμεναι ὗλαι χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν παρασκευὴν χωρικῶν ἐνδυμασιῶν («ὑφαντῶν») καὶ ταπήτων.

Αἱ λοιπαὶ ἐν τῇ νήσῳ βιομηχανίαι ἔχουν ὡς ἀκολούθως: Ἡ *βυρσοδεψία* διαθέτει 2 ἐργοστάσια (Γέρα, Πλουμάρι) μὲ 174 ἵππων δύναμιν καὶ 260 ἐργάτας, καὶ 10 χειροκίνητα βυρσοδεψεῖα· γίνεται παραγωγὴ βακετῶν, πελμάτων, προβιῶν, σαγρέδων καὶ τελατινιῶν, ἀνερχομένη ἄλλοτε εἰς 900.000 χλγρ. Εἰς τὴν ἐν γένει *δερματοβιομηχανίαν* ἀσχολοῦνται 1.662 ἄτομα. Λειτουργεῖ ἐπίσης ἐργοστάσιον *δεψικῶν ἐκχυλισμάτων* (Γέρα), τὸ πρῶτον ἐν Ἑλλάδι ἱδρυθὲν (1923), καὶ παράγει (1925: 636.503 χλγρ.) τανίνην βαλανιδίου ἰδίως καὶ μιμόζης, μυροβολὰμ καὶ πευκοφλοιοῦ (ἐργάτ. 60, ἵππ. 110). Διὰ τὴν *καπνοβιομηχανίαν* ὑπάρχει τὸ καπνεργοστάσιον Μυτιλήνης (1928: 2 μηχαν., 23 ἐργάτ., ἐπιχειρήσεις σιγαροποιίας 3) καὶ ξέναι ἐπιχειρήσεις ἐπεξεργασίας καπνοῦ (ἀπὸ τοῦ 1924), ἀπασχολοῦσαι 938 ἐργάτας (γυναῖκες 75.6 %)· πλὴν τῶν ἐγχωρίων κατεργάζονται αὐτόθι καὶ τὰ καπνὰ τῆς Λήμνου. Ἡ *οἰνοπνευματοποιία* (Μυτιλήνη, Πλουμάρι) διαθέτει 10 μεγάλα καὶ 45 μικρὰ ἐργοστάσια (1928: 350 ἐργ.)· κύριον προϊὸν τὸ «Μυτιληνιὸ ρακί». Ἡ *ἀλευροβιομηχανία* διαθέτει 20 μηχανοκίνητα ἐργοστάσια (κυλινδρόμυλοι 3) 289 ἵππων καὶ 15 ὑδρομύλους, ἐργάζονται δὲ ἐν αὐτῇ (1928) 250—300 ἐργάται· ἐπίσης λειτουργοῦν (1929) 2 ἐργοστάσια ζυμαρικῶν (ἵππ. 65, ἐργ. 15) καὶ 5 ἀτμοκίνητα ἀρτοποιεῖα. Εἰς τὴν *νηματουργίαν* (2 ἐργοστ.), ἐργάζονται 250 ἐργάται (γυναῖκ. 170), λειτουργοῦν δὲ 12 κλωστικαὶ μηχαναί, 3969 ἄτρακτοι καὶ 53 κρεββαταί. Ἐκ τῶν ἐργοστασίων *κεραμοποιίας* καὶ τούβλων σημαντικώτερα τὰ Ἡνωμένα Ἐργοστάσια Παμφύλλων, ὅπου καὶ χειροκίνητος βιομηχανία, καὶ αἱ κάμινοι Καλλονῆς. Εἰς βιοτεχνικὴν μορφὴν ἀκμάζουν ἡ *ἀγγειοπλαστικὴ* (Μανδαμάδος, Ἁγιάσσος) καὶ ἡ *ναυπηγία* (Μυτιλήνη, Πλουμάρι, Μόλυβος). Μικροτέρας σημασίας ἐπιχειρήσεις: *τσιμεντολίθων* (Πλουμάρι), *ταπητουργίας* (1929: 3 ἐργοστ., 27 ἱστοί, 59 ἐργάτριαι) εἰς Μυτιλήνην ἐν παρακμῇ, *ζαχαροπλαστικῆς* (1931: 2 ἐργοστ., 20 ἵππ., 30 ἐργ., 500.000 χλγρ. ἐτησ. παραγ.) εἰς Μυτιλήνην, *παγοποιίας* (1 ἐργοστ., ἐτησ. παραγ. 600—800 τόν.) εἰς Μυτιλήνην μὲ μικρὰν ἐξαγωγὴν ἐπὶ τῶν κατέναντι τουρκικῶν ἀκτῶν, *μηχανουργίας* (3 χυτήρια, 60 ἵππ., 25 ἐργ.), *ξυλουργίας* (5 ἐργοστ., 100 ἵππ., 27 ἐργάτ.) *κυτιοποιίας*, *τυπογραφίας* κ. ἄ., Δημοσίου *ἠλεκτροφωτισμοῦ* ἐπιχειρήσεις (ἐν συνόλῳ 26) λειτουργοῦν εἰς τὰς πόλεις, κωμοπόλεις καί τινα χωρία τῆς νήσου. *Σωματεῖα βιομηχάνων* παλλεσβικά: ἐργοστασιαρχῶν ἐν γένει, ποτοποιῶν, βυρσοδεψῶν, σαπωνουργείων, ἐλαιουργείων καὶ ὁ καπνεμπορικὸς σύλλογος καὶ τοπικά: ἐλαιουργείων Πλωμαρίου καὶ ὑφαντηρίων Ἁγιάσσου.

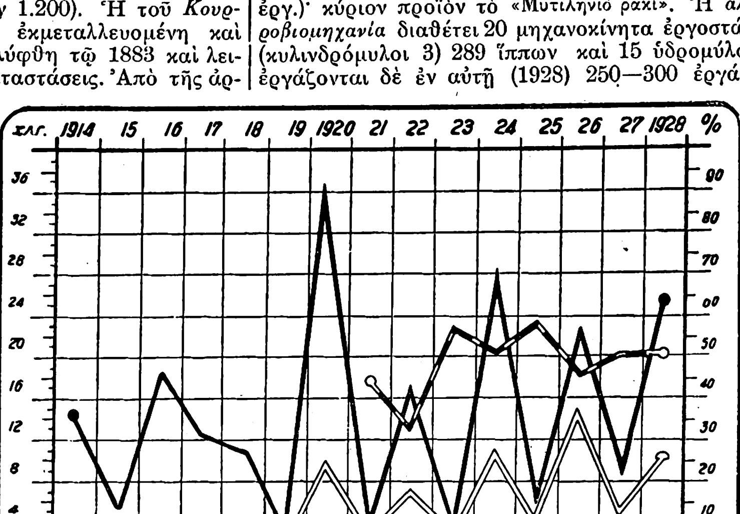


*Γραφικὴ παράστασις τῆς παραγωγῆς καὶ ἐξαγωγῆς ἐλαίου.*

[1=Ἡ παραγωγὴ κατὰ τὰ ἔτη 1914—1928 (παχεῖα γραμμὴ) εἰς ἑκατομμύρια χιλιογράμμων. 2=Ἡ ἀναλογία % τῆς παραγωγῆς τῆς νήσου ἐπὶ τῆς πανελληνίου τοιαύτης κατὰ τὰ ἔτη 1919—1928 (διπλῆ γραμμή). 3=Ἡ ἀναλογία % τῆς ἀξίας τοῦ ἐξαγομένου ἐλαίου ἐπὶ τῆς ὅλης ἀξίας τῶν ἐξαγομένων ἐγχωρίων εἰδῶν (διακεκομμένη γραμμὴ) κατὰ τὰ ἔτη 1921—1928. Αἱ κάθετοι γραμμαὶ δίδουν τὸν μέσον ὅρον ἑκάστου ποσοῦ κατὰ τὰ ἀνωτέρω διαστήματα.]

(Σχέδιον *Π. Ν. Παπᾶ*)

***Ἐμπόριον.*** Ἡ ἐμπορικὴ κίνησις συνίσταται εἰς τὴν ἐξαγωγὴν εἰδῶν ἐλαιουργίας, σαπωνουργίας καὶ καπνοῦ καὶ τὴν εἰσαγωγὴν εἰδῶν ἐπισιτισμοῦ κλπ. Ἡ μέση ἐτησία ἐξαγωγὴ τῶν τελευταίων ἐτῶν ἀνέρχεται εἰς 1.200.000 ἀγγλικὰς λίρας, ὧν τὰ 43 % ἀπ' εὐθείας μετὰ τοῦ ἐξωτερικοῦ, ἡ ἀντίστοιχος δὲ εἰσαγωγὴ εἰς 900.000 ἀγγλικὰς λίρας (μετὰ τοῦ ἐξωτερικοῦ 60 %)· γενικῶς μέχρι τοῦ 1925 ἡ ἐξαγωγὴ κατέλειπε περίσσευμα (50.000 λίρ. ἀγγλ. ἐτησίως), ἔκτοτε ὅμως μικρὸν ἔλλειμμα (1928: 3.690.000 δρχ.).

Κατὰ τὴν τελευταίαν δεκαετίαν τὰ 48,6 % τῆς ἐξαγωγῆς εἰς ἀξίαν ἀπετέλεσε τὸ ἔλαιον (1928: 51%), τὰ 19 % ὁ σάπων (1928: 6 %), καὶ 4,7% (1928: 7%) τὰ λοιπὰ προϊόντα ἐλαιοπαραγωγῆς (ἐλαιόπανα, ἐλαιοπυρήν, πυρηνέλαιον, πυρηνοσάπων)· ἤτοι τὸ σύνολον τῶν ἐξαγομένων προϊόντων ἐλαιοπαραγωγῆς ἀπετέλεσε περίπου τὰ 3/4 (1928: 64 %) τῆς ὅλης ἐξαγωγῆς, μετὰ δὲ τοῦ καπνοῦ, ἅλατος καὶ κατειργασμένων δερμάτων τὰ 9/10 αὐτῆς (1928: 89,5%). *Ἔλαιον* τῆς Μυτιλήνης καταναλίσκουν (1928): ἡ Ἰταλία (τὰ 43 % τῆς ἐξαγωγῆς), Ἡνωμ. Πολιτεῖαι (20,5 %), Μεγ. Βρεττανία (15 %), Γαλλία (7,5 %) καὶ ἡ Αἴγυπτος, Βουλγαρία, Ρουμανία, Συρία· ἡ παλαιοτέρα του ἐξαγωγὴ ἀνήρχετο εἰς 180.000 καντάρια ἀξίας 32—35 ἑκατομμ. γροσίων (1891). *Ἐλαῖαι* βρώσιμοι εἰς ἐλαχίστην ποσότητα ἐξάγονται εἰς Αἴγυπτον, Ρουμανίαν καὶ Βουλγαρίαν. *Λευκοῦ σάπωνος* ἐξήγοντο ἐτησίως 100.000 καντάρια ἀξίας 14—17 ἑκατομμ. γροσίων (1891), κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη 4 ἑκατομμ. χιλιόγραμμα, ἡ ἐξαγωγὴ δὲ τοῦ 1921—1922 ἀπετέλεσε σχεδὸν τὸ ἥμισυ (43—52 %) τῆς ἀξίας τῶν ἐξαχθέντων εἰδῶν· ἔκτοτε συνεχῶς μειοῦται, ἐνῷ σταθερῶς ἀνέρχεται ἡ ἐξαγωγὴ *πυρηνοσάπωνος*. Σάπωνας εἰσάγουν ἀπὸ παλαιοτάτων χρόνων ἡ Ρουμανία, Βουλγαρία, Τουρκία, νῦν δὲ καὶ ἡ Αἴγυπτος, Ἀγγλία καὶ Ἡνωμ. Πολιτεῖαι. *Πυρηνέλαια* ἐξάγονται εἰς Τουρκίαν καὶ Βουλγαρίαν· εἰς τὴν πρώτην καὶ τὸ πλεῖστον τῶν ἐξαγομένων *ἐλαιοπάνων*. *Ἐλαιοπυρὴν* ἐξάγεται μόνον εἰς τὰ ἐν Πειραιεῖ καὶ Χαλκίδι ἐργοστάσια. *Ὁ καπνὸς* (14 % τῆς ἀξίας τῆς ἐξαγωγῆς) ἐξάγεται εἰς Ἡνωμ. Πολιτείας, Ἰταλίαν, Γερμανίαν, Αἴγυπτον, Βέλγιον καὶ Ὁλλανδίαν. *Δέρματα κατειργασμένα* ἐξήγοντο ἄλλοτε εἰς Τουρκίαν καὶ Βουλγαρίαν, νῦν δὲ μόνον εἰς τὸ ἐσωτερικόν· ἐκ τῶν ἀκατεργάστων ἄνω τοῦ ἡμίσεος ἐξάγονται εἰς Ἀγγλίαν, Ἡνωμ. Πολιτείας, Τουρκίαν καὶ Γερμανίαν. *Δεψικὰ ἐκχυλίσματα* ἐξάγονται ἀπὸ τοῦ 1924· ἐξ αὐτῶν ἄνω τοῦ ἡμίσεος εἰς Βουλγαρίαν καὶ Ἰταλίαν. Ἐξάγονται ἔτι *ἐγχώρια νήματα* εἰς Βουλγαρίαν καὶ Ρουμανίαν, *ξηροὶ καρποὶ* (σῦκα, κάστανα), *νωπαὶ ὀπῶραι* (ἀχλάδια, κυδώνια κ. ἄ.) εἰς Αἴγυπτον, Δωδεκάνησον καὶ Τουρκίαν καὶ *βαλανίδια* (ἐπὶ τουρκοκρατίας 25—40.000 καντάρια, ἐπ' ἐσχάτων δὲ περὶ τὰ 785.000 χλγρ.). Γίνεται ἐπίσης ἐξαγωγή, μόνον εἰς ἀγορὰς τοῦ ἐσωτερικοῦ: ἅλατος, ταπήτων μικρᾶς ἀξίας, τυροῦ, ἁλιπάστων, σαπωνοχώματος, οἰνοπνευματωδῶν κ.ἄ. Τέλος μικραὶ ποσότητες ἐγχωρίων πηλίνων ἀγγείων ἐξάγονται εἰς Αἴγυπτον, Δωδεκάνησον καὶ Τουρκίαν.

Εἰς τὸν κατωτέρω πίνακα δίδονται τὰ κατὰ τὰ διάφορα εἴδη ποσὰ ἐξαγωγῆς τοῦ ἔτους 1928.

| | *Ποσὸν εἰς χιλιόγραμμα* Γενικῶς: | Ἐξωτερ.: | *Ἀξία* Εἰς δρχ.: |
|---|---|---|---|
| *Γεωργία* | | | |
| Καπνόφυλλα | 1.752.135 | 64 % | 60 296 |
| Ἐλαῖαι | 133 514 | 3 % | 1.583 |
| Ἀχλάδια | 304.248 | — | 1.188 |
| Κυδώνια | 103 655 | — | 324 |
| Ἄλλαι νωπαὶ ὀπῶραι | 406.957 | 2 % | 1.550 |
| Σῦκα ξηρὰ | 474 273 | 24 % | 8.131 |
| Κάστανα | 216.903 | 12 % | 935 |
| Ἄλλοι ξηροὶ καρποὶ | 2.700 | — | 40 |
| *Κτηνοτροφία* | | | |
| Τυρὸς (μυζήθρα) | 93 843 | — | 2 5 1 |
| Δέρματα ἀκατέργαστα | 18.460 | 67 % | 1.411 |

Digitized by Google

| | | | |
|---|---|---|---|
| *Δασικὰ εἴδη* | | | |
| Βαλανίδια | 383 287 | 15 % | 1.078 |
| Ρητίνη | 331.024 | — | 1.051 |
| Ἄσβεστος | 170.579 | 59 % | 105 |
| Πευκοφλοιὸς | 4.870 | 80 % | 15 |
| *Ἁλιεία. Ἁλυκαὶ* | | | |
| Ἰχθύες παρεσκευασμένοι | 45.662 | — | 1.200 |
| Ἅλας | 11.751.418 | — | 25.254 |
| *Βιομηχανία* | | | |
| Ἔλαιον | 9.108.942 | 54 % | 221.392 |
| Πυρηνέλαιον | 1.129.792 | 28 % | 13.805 |
| Ἐλαιοπυρὴν | 2 207.507 | — | 1.557 |
| Ἐλαιόπανα | 42 131 | 93 % | 5.592 |
| Σάπων λευκὸς | 1.823.304 | 13 % | 25.699 |
| Πυρηνοσάπων | 1.044.448 | 8 % | 11.815 |
| Ἐξειργασμ. δέρματα | 271.857 | — | 17 305 |
| Ἐκχυλίσματα δεψικὰ | 167.549 | 56 % | 1.253 |
| Τάπητες | 842 | — | 43 |
| Οἰνοπνευματώδη | 52.639 | — | 658 |
| Σύνολον ἀνωτέρω εἰδῶν | | | 400.861 |
| » γενικῆς ἐξαγωγῆς | | | 431.736 |

Τῆς εἰσαγωγῆς (1928) τὰ 37 % κατ' ἀξίαν ἀποτελοῦν τὰ σιτηρά, ἄλευρα, ὄσπρια καὶ γεώμηλα, τὰ 8 % τὸ βούτυρον, ἡ ὄρυζα καὶ σάκχαρις, ἀνὰ 7 % αἱ καύσιμοι μετὰ τῶν φωτιστικῶν ὑλῶν, τὰ οἰνοπνευματώδη μετὰ τοῦ καφὲ καὶ τεΐου, καὶ τὰ εἴδη ἐνδυμασίας, εἰς 6 % ἀνέρχονται τὰ μεταλλικὰ εἴδη, μηχαναὶ κ. τ. τ., 3 % αἱ βυρσοδεψικαὶ ὗλαι (δέρματα ἀκατέργαστα, ἐκχυλίσματα, λίπη) καὶ ἡ ὑπόλοιπος εἰσαγωγὴ περικλείει τὰ 25 %. Εἶχε δὲ ἡ εἰσαγωγὴ τῷ 1928 εἰς χιλ. δρχ. οὕτω:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Σιτηρά, ἄλευρα | 123.342 | Κλωσταί, βάμβαξ | 13.500 |
| Καύσιμος ὕλη | 13.336 | Ὑφάσματα | 18.508 |
| Φωτιστικὴ » | 18.825 | Βυρσοδεψίας ὗλαι | 13.215 |
| Βούτυρον, λῖπος | 3.370 | Ζῷα ζῶντα | 7 037 |
| Ὄρυζα | 8.803 | Ὄσπρια, γεώμηλα | 20 819 |
| Σάκχαρις | 24.071 | Οἰνοπνευματώδη | 20.177 |
| Καφές, τεῖον | 10.197 | Μηχαναί, μεταλ. εἴδη | 26 041 |
| Σύνολον ἀνωτέρω εἰδῶν | 324.242 | | |
| Γενικὸν σύνολον εἰσαγωγῆς | 435.426 | | |

Ἐπὶ τῆς νήσου λειτουργοῦσιν 224 εἰσαγ. οἶκοι ἐν ὅλῳ, 101 ἐξαγ. οἶκοι ἐλαίου, 11 καπνοῦ κ. ἄ. Τὰ κυκλοφορήσαντα κατὰ τὴν τριετίαν 1926—1928 κεφάλαια ἐξ ἀγοραπωλησιῶν, ἀνταλλαγῶν καὶ κατακυρώσεων πλειστηριασμῶν ὡς καὶ ἐξ ἐγγραφῶν, ἐκχωρήσεων καὶ ἐξαλείψεων ὑποθηκῶν ἀνῆλθον εἰς 317 ἑκατομμ. δρχ. καὶ ἡ ἀξία τῶν μεταβιβασθέντων ἀκινήτων εἰς 246 ἑκατομμ. δρχ. Ἐμπορικὰ σωματεῖα λειτουργοῦν: ἐμπόρων ἐλαίου (ἱδρ. 1918), ἀλευρεμπόρων (1927), ἐμπορομεσιτῶν καὶ προμηθευτῶν (1925), πρακτόρων ἀσφαλιστικῶν ἑταιρειῶν (1929), εἰσαγωγέων (1927) καὶ οἱ ἐμπορικοὶ σύλλογοι Μυτιλήνης (1915), Περάματος, Πλωμαρίου καὶ Πολυχνίτου. Τὸ Ἐμπορικὸν καὶ Βιομηχανικὸν Ἐπιμελητήριον Μυτιλήνης (ἱδρ. 1919), εἰς τὸ ὁποῖον ὑπήγετο (1923) καὶ ἡ Σάμος, ἔχει (1929) 1.700 μέλη.

***Ναυτιλία.*** Ἡ ναυτιλιακὴ κίνησις τῶν νεωτέρων χρόνων ἔχει βραχεῖαν παράδοσιν. Ἐνετάθη ἀπὸ τῆς καταστροφῆς τοῦ παλαιοῦ Πλωμαρίου καὶ τῆς παρὰ τὴν θάλασσαν συνοικήσεως τοῦ σημερινοῦ (1843—1844)· πλὴν δὲ τῶν Πλωμαριτῶν, ὧν τὰ πολλὰ ἀλλὰ μικρὰ σκάφη ἐλιμενίζοντο εἰς τὸν κόλπον τῆς Γέρας, ἐξέχοντα ἐφοπλισμὸν εἶχον οἱ Μολυβιᾶται Τοῦρκοι (60 βομβάρδες). Τῷ 1874 εἶχεν ἡ νῆσος περὶ τὰ 250 παντοειδῆ ἱστιοφόρα, κατὰ δὲ τὴν ἀπογραφὴν τοῦ 1929 ὁ ἐφοπλισμὸς αὐτῆς εἶχεν οὕτως εἰς σκάφη καὶ τόννους:

| | *Σκάφη* | *Χωρητικότης καθαρὰ* |
|---|---|---|
| Ἀτμόπλοια | 2 | 1.454 |
| Πλοῖα (ἀπὸ 10—30 τόννων) | 178 | 3 045 |
| Βενζινοκίνητα-Πετρελαιοκίνητα | 18 | 327 |
| Ἱστιοφόρα | 143 | 2.377 |
| Φορτηγίδες | 14 | 307 |
| Ἀνεμότρατες | 3 | 34 |
| Πλοιάρια (κάτω τῶν 10 τόννων): | 588 | 2.416 |
| Ἱστιοφόρα-λέμβοι | 561 | 2.284 |
| Βενζινάκατοι | 27 | 132 |
| Σύνολον | 768 | 6.915 |

Κατὰ χωρητικότητα μικρῶν πλοιαρίων ἡ νῆσος ἔρχεται τρίτη ἐν Ἑλλάδι (μετὰ τὴν Σῦρον καὶ Κέρκυραν), τὴν χωρητικότητα δὲ τῶν ἱστιοφόρων της ὑπερβαίνουν μόνον τὰ τοῦ Πειραιῶς, Σύρου καὶ Σπετσῶν. Σωματεῖα ναυτιλλομένων λειτουργοῦν: κυβερνητῶν ἱστιοφόρων ἐν Πλωμαρίῳ (ἱδρ. 1923), καὶ ἐν Μυτιλήνῃ: λεμβούχων (1924), πλοιάρχων μεταφορῶν οἰκοδομησίμων ὑλῶν (1926) καὶ πλοιοκτητῶν-κυβερνητῶν βενζινοπλοίων (1930). Ἡ ναυτιλιακὴ κίνησις ἐξέχει ἰδίως ἐν τῇ πόλει Μυτιλήνῃ (βλ. κατωτ.).

Τεχνητοὶ λιμένες ἄξιοι λόγου εἶναι ὁ τῆς πόλεως Μυτιλήνης (βλ. κατωτ.) καὶ ὁ τοῦ Πλωμαρίου τελειοποιούμενος ἀπὸ τοῦ 1928 (Νοέμβρ.) διὰ κατασκευῆς μεγάλου κυματοθραύστου (ἐγκριθ. δαπάνη 9.800.000 δρχ.). Ἥσσονος σημασίας ὁ λιμὴν Μολύβου καὶ ὁ τοῦ Γαβαθᾶ, ἀκμάσας κατὰ τὴν τουρκοκρατίαν, σπουδαῖος δὲ ὡς φυσικὸς λιμὴν ὁ τοῦ Σιγρίου.

***Πίστις. Συνεταιρισμοί.*** *Πιστωτικὰ ἱδρύματα* λειτουργοῦν τὰ τῶν τραπεζῶν Ἀγροτικῆς, Ἀθηνῶν, Ἀνατολῆς, Ἐθνικῆς, Ἑλλάδος, Ἐμπορικῆς καὶ Ἰονικῆς (ὑποκαταστήματα) καὶ Ῥάλλη - Πεσματζόγλου (ἕδρα)· ἄλλοτε ἤδρευεν ἐν Μυτιλήνῃ καὶ ἡ «Γεωργικὴ Τράπεζα Μυτιλήνης», ἱδρυθεῖσα περὶ τὸ 1890 μὲ μόνιμον ἔσοδον τὸν φόρον δεκάτης ἐλαίου, ἀπορροφηθεῖσα ὑπὸ τῆς νῦν Ἀγροτικῆς.

*Ἀστικοὶ συνεταιρισμοὶ* (περὶ τῶν ἀγροτικῶν βλ. [Γεωργ.]) λειτουργοῦν 6 προμηθευτικοί, 5 οἰκοδομικοί, 4 συνεταιρικοὶ καὶ εἷς πιστωτικός, ὑπαγόμενοι πάντες εἰς τὴν «Ἕνωσιν Συνεταιρισμῶν Λέσβου» (ἱδρ. 1931).

***Δημόσια καὶ δημοτικὰ ἔσοδα.*** Ἐπὶ τῆς νήσου λειτουργοῦν 3 οἰκονομικαὶ ἐφορεῖαι (Μολύβου, Μυτιλήνης, Πλωμαρίου) καὶ ἀντίστοιχα δημόσια ταμεῖα, ὧν αἱ εἰσπράξεις ἔχουν ὡς ἑξῆς (χιλ. δραχ.):

| | *1928* | *1929* | *1930* |
|---|---|---|---|
| Μυτιλήνης | 96.479.3 | 102 993 7 | 91.499.9 |
| Μολύβου | 10.171 2 | 11.304.7 | 11 082.0 |
| Πλωμαρίου | 9.010.7 | 9.808.2 | 9 940.5 |
| Σύνολον | 115.652.2 | 124.106.6 | 112 522.4 |

Αἱ τελωνειακαὶ ἀρχαὶ συνίστανται εἰς 3 *τελωνεῖα* (Γέρα, Μυτιλήνη, Πλωμάριον), 7 *ὑποτελωνεῖα* (Ἐρεσσός, Καλλονή, Μόλυβος, Πάφλα, Πέτρα, Πολυχνῖτος, Σίγρι), 8 *τελωνοσταθμαρχεῖα* (Ἀποθήκα, Ἀσπροπόταμος, Βατερά, Γαβαθᾶς, Μελίντα, Μερσίνια, Ντίπι, Σκαμιὰ) καὶ 6 *τελωνοφυλακεῖα* (Γενὶ-Λιμάνι, Θερμή, Λουτρά, Παναγιούδα, Παράκοιλα, Μυστιγνά)· αἱ εἰσπράξεις των ἔχουν ὡς ἑξῆς (1930—1931) εἰς δραχμάς:

| | |
|---|---|
| *Τελωνεῖα* | |
| Μυτιλήνης | 29 665.781 |
| Πλωμαρίου | 2 233.741 |
| Γέρας | 1.992 773 |
| Ὑποτελωνεῖα | 2 527.436 |
| Σύνολον | 36.419 734 |

*Οἱ δημοτικοὶ προϋπολογισμοὶ* τῆς νήσου συμποσοῦνται εἰς (1929—1930) 7.766.800 δρχ. (τῶν δύο δήμων Μυτιλήνης καὶ Πλωμαρίου). Π. Ν. Π.

— [ΠΟΛΙΤ. ΓΕΩΓΡ.] ***Πληθυσμός.*** Αἱ περὶ τοῦ πληθυσμοῦ τῆς νήσου πληροφορίαι ἄρχονται ἀπὸ τοῦ παρελθόντος αἰῶνος. Κατὰ τὴν ἀπογραφὴν τοῦ 1840 ἠρίθμει αὕτη 12.027 οἰκίας («χανέδες») καὶ 36.338 ἄνδρας («νοφούς»), ἤτοι περίπου 75.000 κατοίκους· κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ αὐτοῦ αἰῶνος εἶχε περὶ τὰς 60.000 κατοίκους καὶ ἐφεξῆς οὕτω:

| | |
|---|---|
| 1850 (κατὰ Σ. Ἀναγνώστην): | 85.000 |
| 1859 (κατὰ Γ. Ἀρχοντόπουλον): | 100.000 |
| 1874 (κατὰ Σ. Τάξην): | 120.000 |
| 1912 (Τουρκ. ἀπογραφή): | 125.753 |
| 1920 (Ἑλλην. ἀπογραφή): | 113.368 |
| 1928 ( » » ): | 137.160 |
| 1931 (ὑπολογ. Στατιστ. Ὑπηρεσίας): | 141.862 |

Ἐκ τῶν ἀλλοεθνῶν πληθυσμῶν: Τὸ φραγκικὸν στοιχεῖον *(Γενοᾶται)*, ἀπὸ τοῦ 1261 διατηροῦν ἐμπορικὴν ἀποικίαν καὶ ἐπὶ αἰῶνα κρατήσαν τὴν πολιτικὴν ἐξουσίαν, οὐδὲν κατέλιπεν ἴχνος. Οἱ *Τοῦρκοι*, ἀνερχόμενοι (1642) εἰς 600 ἑπήλυδας (γενιτζάρους καὶ ἀζάπηδες) καὶ διὰ τοῦ ἐξισλαμισμοῦ καὶ τοῦ ἐποικισμοῦ αὐξηθέντες, ἀπετέλουν τῷ 1840 τὰ 16 % τοῦ πληθυσμοῦ (6.122 ἄνδρες) καὶ τῷ 1913 τὰ 11 % (14.476 κάτ.). *Ἀρμένιοι* ὑπῆρχον παλαιότερον πολλοί, ἀναχωρήσαντες ὅμως ἀθρόοι τῷ 1366 εἰς Κῶν· μικρὰ παροικία αὐτῶν ὑπῆρχε καὶ μετέπειτα, νῦν δὲ (1931) 120 οἰκογένειαι ἐκ Νικομηδείας (1921) καὶ Σμύρνης (1922). *Ἰουδαῖοι* ὑπῆρχον πλεῖστοι, διατηροῦντες τὸν ΙΒ' αἰῶνα (κατὰ τὸν Βενιαμὶν Τουδέλα) 10 συναγωγάς· νῦν ἀπομένουν 3 οἰκογένειαι καὶ ἡ ἀνάμνησις τῆς παραμονῆς των εἰς διάφορα τοπωνύμια («Ὀβριακὴ» κόλπου Γέρας, «Ὀβριόκαστρο» κ.ἄ.). Τέλος ὑπάρχουν 15 οἰκογένειαι *Κιρκασίων* προσφύγων. Τὸ ἑλληνικὸν στοιχεῖον δεκατισθὲν κατὰ τὴν ἅλωσιν (παρέμειναν τότε ἐκ τῶν ἀστῶν μόνον οἱ *Θεοδωριανοί*) ἐνισχύθη μεγάλως ὑπὸ 30.593 *προσφύγων* (1928), ὧν οἱ 2.462 ἀπὸ τοῦ 1914 καὶ οἱ λοιποὶ ἀπὸ τοῦ 1922, ἐκ τῶν κατέναντι τῆς νήσου παραλίων. Ἡ *πυκνότης τοῦ πληθυσμοῦ* (96,98 κάτ. κατὰ τετραγ. χιλμ.), ὑπερβάλλεται μόνον ὑπὸ τῆς Κερκύρας, Ἀττικῆς (Ἀθηνῶν - Πειραιῶς) καὶ Ζακύνθου κατὰ σειράν. Ἐκ τοῦ πληθυσμοῦ τὰ 20,3 % εἶναι ἀστοὶ («Καστρινοί»· 1920: 16,1 %) ἐκ δὲ τῶν ἀγροτῶν τὰ 30,7 % κατοικοῦν χωρία ἄνω τῶν 3.000 κατοίκων (1920: 25,4 %). Ἡ φυσικὴ κίνησις τοῦ πληθυσμοῦ ἔχει ὡς ἑξῆς:

| | *1926* | *1927* | *1928* | *1929* | *1930* |
|---|---|---|---|---|---|
| Γάμοι | 1 229 | 1.189 | 992 | 1 200 | 1 013 |
| Γεννήσεις | 3 633 | 3 206 | 3 623 | 3.352 | 3.505 |
| Θάνατοι | 1.798 | 2.066 | 1.780 | 2.062 | 1.860 |
| Γεννήσ. ἐπὶ 1.000 θανάτ. | 2 020 | 1.551 | 2.035 | 1.625 | 1.879 |

Ὁ μέσος ἐτήσιος ὅρος διὰ τὴν πενταετίαν εἶναι: 1.124 γάμοι, 3.463 γεννήσεις καὶ 1.913 θάνατοι· ἤτοι 1.822 γεννήσεις ἐπὶ 1.000 θανάτων καὶ 26 ἐπὶ 1.000 κατοίκων ἔναντι 14 θανάτων ἐπὶ 1.000 κατοίκων. Ἡ μετανάστευσις παρατηρεῖται ἐνωρίτατα, ὀφειλομένη εἰς τὴν στενότητα τῆς νήσου καὶ τὰς διώξεις τῶν Τούρκων, ἐτονώθη δὲ ἀπὸ τοῦ καταστρεπτικοῦ παγετοῦ τοῦ 1850. Τὸν ΙΣΤ' πιθανῶς αἰῶνα ἀπῳκίσθησαν οἱ *Μυτιληνοὶ* ἐν Σάμῳ καὶ πρὸ 300—350 ἐτῶν αἱ *Κυδωνίαι* (Ἀϊβαλὶ) ὑπὸ τῶν διωχθέντων ἐκ τῆς Κυδωνίας (Μπαλτζίκ) τῆς Μυτιλήνης Ἑλλήνων· τῷ 1661 ὑπῆρχεν ἤδη εἰς Κωνσταντινούπολιν ἀδελφότης Μολυβιατῶν, διαδοχικῶς δὲ ἐδημιουργήθησαν παροικίαι καθ' ὅλην τὴν ἔκτασιν τῆς γειτνιαζούσης μικρασιατικῆς ἀκτῆς καὶ ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τῆς Μικρασίας (κάμπος Μαινεμένης, Μαγνησία, Κασαμπᾶ), μέχρις ἔτι τῆς Θρᾴκης (Ραιδεστὸς) καὶ τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Τακτικὴ περιοδικὴ ἀποδημία (30—35.000 ἀτόμων) ἐγίνετο ἀπὸ 23ης Ἀπριλίου (Ἁγ. Γεωργίου) μέχρις 26ης Ὀκτωβρίου (Ἁγ. Δημητρίου), ἰδίως ἐκ τῶν ΒΔ. χωρίων καὶ ἐκ Πλωμαρίου. Αἱ νῦν σπουδαιότεραι παροικίαι τοῦ ἐξωτερικοῦ εἶναι: τῶν Πλωμαριτῶν ἐν Ν. Ὑόρκῃ, Χάρτ - Φὸρτ κ.ἄ. τῆς Ἀμερικῆς (1.300 ἄτομα) καὶ ἐν Ἀβυσσηνίᾳ, Αἰγύπτῳ καὶ Ν. Ἀφρικῇ (550 ἄτ.), τῶν Καλλονιατῶν εἰς Χέβερ (Ἡνωμ. Πολιτεῖαι) καὶ ἐν τῇ Βραζιλίᾳ, τῶν Μανδαμαδιωτῶν εἰς Χέβερχιλλ (Ἡνωμ. Πολιτεῖαι) κ.ἄ. Κατ' ἔτος (1927—1930) μεταναστεύουν περίπου 200 ἄτομα.

***Διοίκησις.*** Ἡ νῆσος διαιρεῖται εἰς τρεῖς ἐπαρχίας (Μυτιλήνης, Μηθύμνης καὶ Πλωμαρίου) καὶ μετὰ τῆς Λήμνου καὶ Ἁγίου Εὐστρατίου ἀποτελεῖ τὸν νομὸν Λέσβου, εἰς ὃν ἄλλοτε περιελαμβάνετο καὶ ἡ Ἴμβρος καὶ Τένεδος (1912—1922) καὶ Σαμοθρᾴκη (1912—1924). Παλαιότερον ἦτο ἕδρα τῆς «Γενικῆς Διοικήσεως νήσων Αἰγαίου» (1915) καὶ τῆς «Γενικῆς Διοικήσεως Λέσβου» (1918 κ. ἑ.). Ἔχει δύο δήμους (Μυτιλήνης καὶ Πλωμαρίου) καὶ 63 κοινότητας ἀποτελουμένας ἐκ τῶν ἑξῆς 113 χωρίων καὶ συνοικισμῶν: Ἁγ. Μαρίνα, Ἁγ. Παρασκευή, Ἁγιάσσος, Ἅγ. Ἀνάργυροι, Ἅγ. Ἰσίδωρος, Ἄγρα, Ἀκλειδιοῦ, Ἀκράσι, Ἀκρωτήρι, Ἀλιφαντὰ (Ἐλεφαντά), Ἀμπελικό, Ἀνεμώτια, Ἀποθήκα, Ἄργενος, Ἀσώματος, Ἀφάλωνας, Βαλανιᾶς, Βαρειά, Βασιλικιώτης (Βασιλικά), Βατερά, Βατοῦσα, Βαφειός, Βοῦρκος, Βρησά, Γέλια, Γενὶ-λιμάνι, Δαμάντρι (μονή), Δάφια, Δρώτα, Ἐρεσσός, Θερμή, Ἵππειος, Καγιάνι, Καλαμιάρης, Καλλονὴ (Ἀγρῶνα), Κάμπος, Κάπη, Κάτω Τρίτος, Κατωχώρι, Κέντρο (Κέδρος), Κεράμι, Κεραμιά, Κλαπάδος, Κλειοῦ, Κλομηδάδος, Κουμκό, Κουρνέλα, Κράτηγος, Κώμη, Λάμπου μύλοι, Λαφιώνα, Λειμὼν (μονή), Λισβόρι, Λουτρά, Λωβοχώρι, Μανδαμάδος, Μεγαλοχώρι, Μελίντα, Μεσαγρός, Μεσότοπος, Μέσουνα, Μηλιές, Μόλυβος (Μήθυμνα), Μόρια, Μπαλτζίκι, Μπορός, Μυστιγνά, Μυτιλήνη, Μυχοῦ, Νεάπολις, Νυχτάντα, Παλαιόκηπος, Παλαιοχώρι, Παναγιούδα, Παπάδος, Παπιανά, Παράκοιλα, Πάφλα (Πάμφυλλα), Πέραμα, Πέτρα, Πηγή, Πλαγιά, Πλακάδος, Πληγώνι, Πλουμάρι (Πλωμάριον), Πολυχνῖτος, Πυργί, Πύργοι Θερμῆς, Ρεῦμα, Σίγρι, Σκάλα Ἐρεσσοῦ, Σκ. Καλλονῆς, Σκάλα Συκαμιᾶς, Σκαλοχώρι (Τσουκαλοχώρι), Σκόπελος, Σκούντα, Σκούταρος, Σουμούρια, Στύψη, Σ(υ)καμιά, Τελώνια (Ἄντισσα), Τζίθρα, Τζουμαϊλῆ, Τρίγωνας, Ὑψηλὸ (μονή), Ὑψηλομέτωπο, Φίλια, Φτερούντα, Χάλκας Μολύβου, Χάλικας (Ἄνω καὶ Κάτω) Μυτιλήνης, Χύδηρα. Τῷ 1920 ὑπῆρχον 61 κοινότητες καὶ 2 δῆμοι. Ἐκ τῶν ἀμιγῶν τουρκοχωρίων ἄλλα ἐξέλιπον (Ἅγιος Γιάννης, Κουκμίδος, Μανοῦλος, Σαμαβούτα, Σαπούνι, Συβιανὰ καὶ Χιλιοπηγάδα) καὶ ἄλλα κατῳκήθησαν ὑπὸ προσφύγων κ. ἄ. (Κεραμιά, Κλαπάδος, Κώμη, Μπαλτζίκι, Νυχτάντα, Σίγρι, Σουμούρια, Τζουμαϊλῆ).

***Συγκοινωνία.*** Τὸ ὁδικὸν δίκτυον διηνοίχθη καὶ ἐστρώθη κατὰ μέγα μέρος ὑπὸ τοῦ τουρκικοῦ ἐπαρχιακοῦ ταμείου ὁδοποιίας «γιὸλ παρασί». Ἤδη περιλαμβάνει συνολικῶς (1931) 610 χλμ. ἁμαξιτῶν ὁδῶν καὶ συνδέει ἀμέσως τὰ 98,90 % τοῦ πληθυσμοῦ τῆς νήσου ὡς ἑξῆς:

| | *Ἐθν.* | *Ἐπαρχ.* | *Κοινοτ.* | *Συνολ.* |
|---|---|---|---|---|
| Ὁδῶν ἀριθμὸς | 4 | 11 | 25 | [illegible] |
| Μῆκος κατασκευασμ. | 190 | 228 | 55 | [illegible] |
| » ὑπὸ κατασκευ. | 64 | 73 | — | [illegible] |
| Χωρία συνδεόμενα. | 39 | 29 | 31 | [illegible] |
| Κάτοικοι: ἀριθμὸς | 83 035 | 36.011 | 16.634 | [illegible] |
| ἀναλογία % | 60,5 | 26,2 | 12,2 | [illegible] |
| Ἐτησία χορήγησις | 3.500.000 | 1.800.000 | 1 600 000 | 6.900.000 |

Ἡ θαλασσία συγκοινωνία εἶναι τακτική, ἐξυπηρετουμένη διὰ τῶν τακτικῶν γραμμῶν Χίου—Πειραιῶς, καὶ περιφερειακῆς Β. Αἰγαίου μὲ προσεγγίσεις εἰς Μυτιλήνην, Μόλυβον, Σίγρι (γαιανθρακικὸς σταθμὸς τῆς «Ἀνων. Ἑταιρ. Γαιανθράκων καὶ Ἀνεμολογικὸς Σταθμός), Πλουμάρι καὶ Γέραν. Αἱ ἐπὶ τῆς νήσου τηλεγραφικαὶ γραμμαὶ ἔχουν (1931) μῆκος 325 χλμ., καὶ ἐξυπηρετοῦν 17 χωρία (72 246 κάτ.)· ἐπὶ πλέον λειτουργεῖ τὸ καλώδιον Μυτιλήνης (Πλουμάρι)—Χίου (Βροντάδος), δι' οὗ σύνδεσις μετὰ τῆς λοιπῆς Ἑλλάδος, ἀργεῖ δὲ τὸ Μυτιλήνης (Πευκάκια)—Μικρασίας (Ἀϊβαλί). Τὸ τηλεφωνικὸν δίκτυον ἐξυπηρετεῖ μόνον τὰς δημοσίας ὑπηρεσίας, συνδέον (1931) 38 χωρία (πλὴν τῶν συνδεομένων τηλεγραφικῶς) μὲ 44.444 κατοίκους. Ἡ ἀεροπορικὴ σύνδεσις ἤρξατο τῷ 1930 (Ἰαν.), κατασταθείσης τῆς πρωτευούσης σταθμοῦ τῆς γραμμῆς Πειραιῶς—Κωνσταντινουπόλεως (Aeroespresso). Ἀσύρματος τέλος θὰ ἐγκαθιδρυθῇ μὲ σταθμὸν δέκτου ἐν Θερμῇ καὶ πομποῦ ἐν Νεαπόλει. Αἱ δημόσιαι ὑπηρεσίαι συγκοινωνίας ἐπὶ τῆς νήσου εἶναι (1931): ἡ ἕδρα τῆς «Ι' περιφερείας Δημοσίων Ἔργων», ἡ «Νομομηχανικὴ ὑπηρεσία», ἡ «Διεύθυνσις» καὶ ἡ «Ἐπιθεώρησις Τ.Τ.Τ. Αἰγαίου», ἡ «Ὑπηρεσία κατασκευῆς καὶ συντηρήσεως Τ.Τ. γραμμῶν», τὸ «Ἀνταλλακτήριον ταχυδρομεῖον» Μυτιλήνης, 17 γραφεῖα α'-γ' τάξεως καὶ ἄλλα κατώτερα.

Digitized by Google

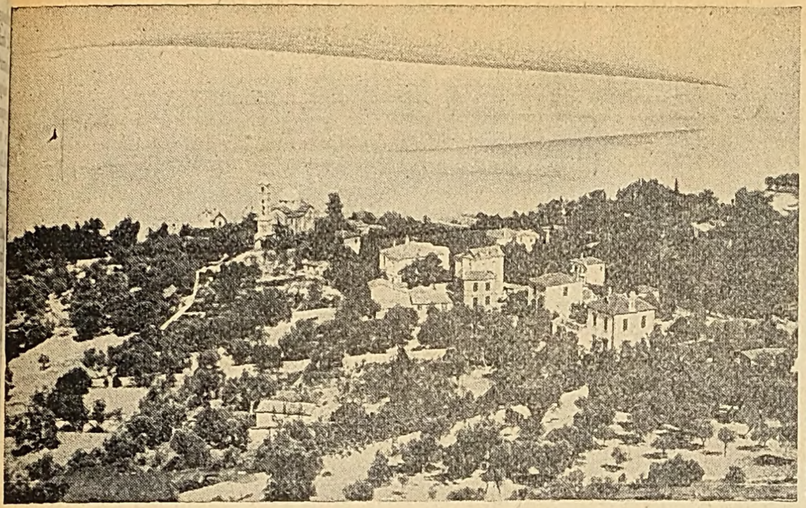
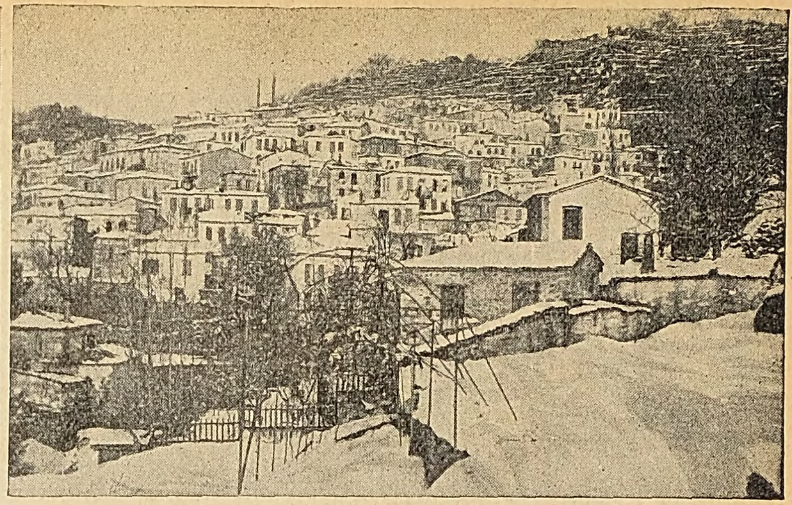

1) Ἄποψις τοῦ προαστείου Ἀκλειδιοῦ. 2) Τὸ ὑψηλότερον χωρίον τῆς νήσου «Ἁγιάσσος» [Φωτογρ. Ἀδελφῶν Χουτζαίου.]

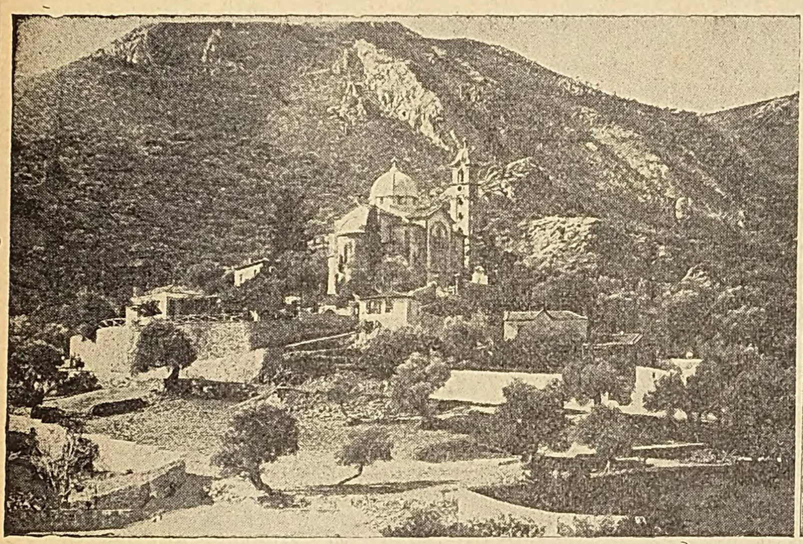
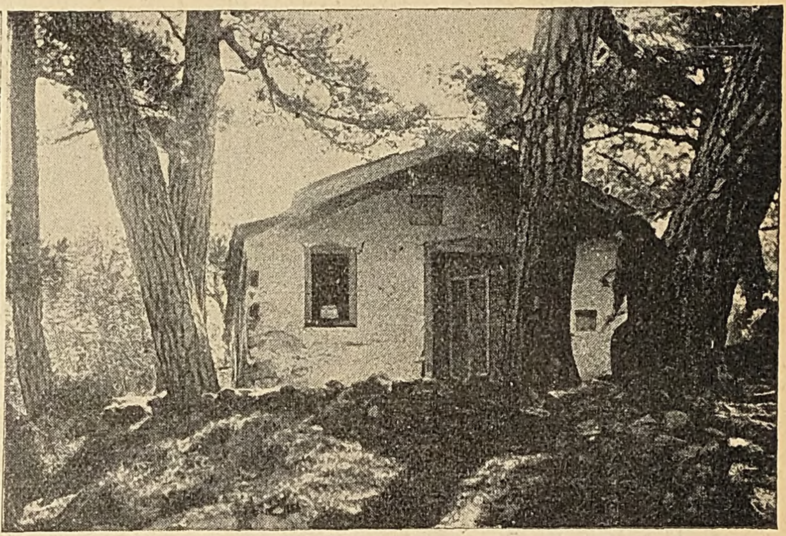

1) Ἡ Παναγία τοῦ Ἀκλειδιοῦ. [Φωτογρ. Φρὶτς Μράζ.] 2) Παναγία Πεντάτευχος. [Φωτογρ. Σίμ. Χουτζαίου.]

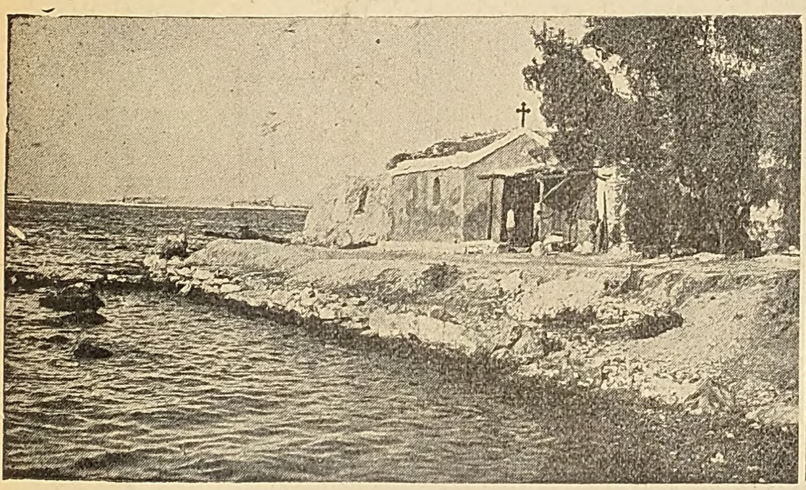
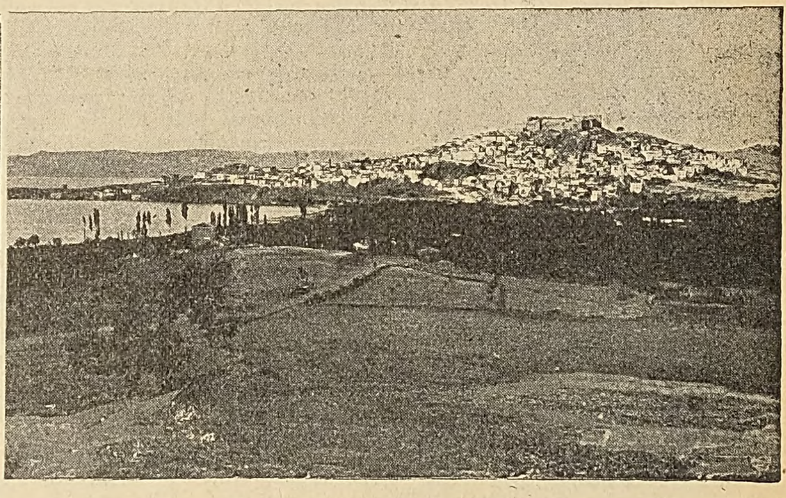

1) Ἅγιος Γιάννης Μυτιλήνης. 2) Ἄποψις Μολύβου ἀπὸ Νότου. [Φωτογρ. Ἀδελφῶν Χουτζαίου καὶ Φρὶτς Μράζ.]

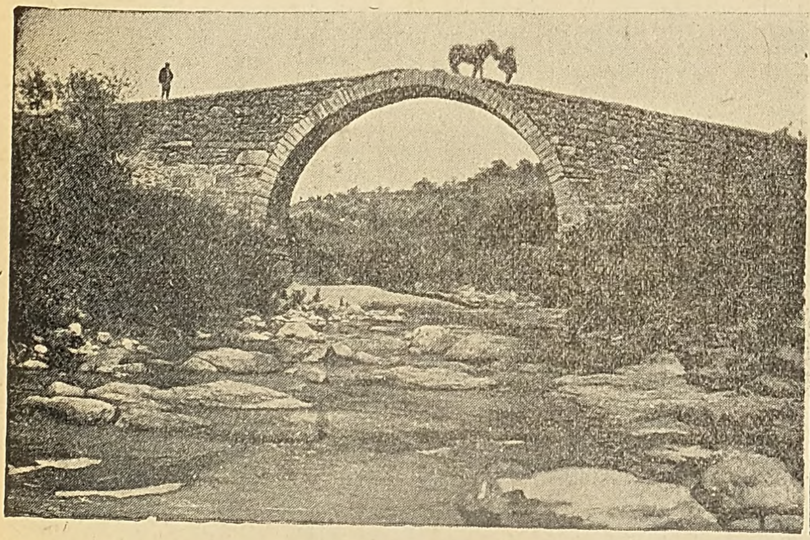
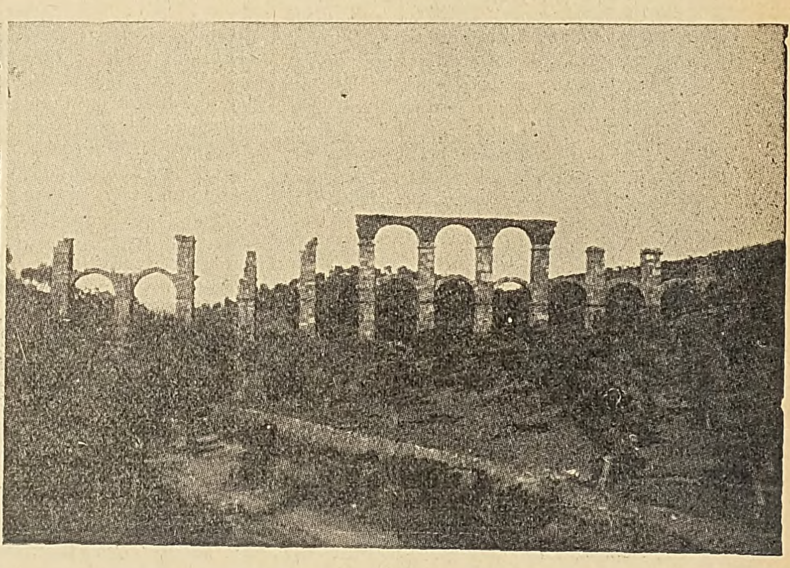

1) Τὸ γεφύρι τῆς Ἁγ. Παρασκευῆς : (ἄνοιγμα τόξου 11 μ., ὕψος κλειδὸς τόξου μέχρις ἐπιφανείας τοῦ ἐδάφους 8.55 μ., βάθρου ὕψ. 1.80 μ. καὶ πλάτος 2.90 μ. [Φωτογρ. Ἀδελφῶν Χουτζαίου.] 2) Τμῆμα τοῦ ἀρχαίου ὑδραγωγείου Μυτιλήνης («Καμάρες» Μόριας).



Digitized by Google

***Δημοσία ὑγεία.*** Γενικῶς ἡ Μυτιλήνη εἶναι νῆσος ὑγιεινή. Ἡ ἑλονοσία παλαιόθεν μαστίζουσα τὴν νῆσον, λόγῳ τοῦ πλήθους τῶν ἑλῶν, καταπολεμεῖται ἤδη καὶ βαίνει σταθερῶς ἐκλείπουσα. Τραχωματικοὶ ὑπάρχουν (1930) 950 ($7^0/_{00}$ κατοίκ.). Ἡ λέπρα μονίμως πλήσσουσα ἄλλοτε τὴν περιοχὴν Πλωμαρίου (ὅπου καὶ τὸ «Λωβοχώρι») ἐξηφανίσθη σχεδὸν ἀπὸ τοῦ 1927, κατὰ τελευταίαν δὲ ἔρευναν (1930) εὑρέθησαν 24 λεπροί. Ἡ πανώλης, τακτικῶς κατὰ θέρος πλήσσουσα τὴν νῆσον ἐπὶ τουρκοκρατίας, ἐξέλιπε δι' ἐντόνου ἀγῶνος (1923—1927).

Ἱδρύματα ὑγιεινῆς ὑπάρχουν εἰς μὲν τὴν πόλιν: Πολιτικὸν Νοσοκομεῖον (37 κλῖναι, ἵδρ. 1851) ὑπαγόμενον εἰς τὰ «Φιλανθρωπικὰ καταστήματα Μυτιλήνης», Προσφυγικὸν νοσοκομεῖον (75 κλ., 1914) δημόσιον, ἀφ' οὗ ἐξαρτᾶται τὸ «Νοσοκομεῖον Λοιμωδῶν νοσημάτων» (12 κλ., 1923), «Στρατιωτικὸν νοσοκομεῖον» (45 κλ.), «Δημόσιον Ἀπολυμαντήριον» (μόνιμος καὶ φορητὸς κλίβανος, 1914), παράρτημα τοῦ «Πατριωτικοῦ Ἱδρύματος» (1930), 4 ἰδιωτικαὶ κλινικαὶ (κλῖν. 43) καὶ 2 ἰδιωτικὰ μικροβιολογικὰ ἐργαστήρια. Εἰς τὴν ὕπαιθρον δέ: σανατόριον «Ὑγεία» (42 κλ.) ἀνεγειρόμενον ἐπὶ τοῦ Ὀλύμπου εἰς τὴν θέσιν «Σβυρνιοῦ» (7 χλμ. ἔξω τῆς Ἁγιάσσου), «Δημοτικὸν νοσοκομεῖον Πλωμαρίου» (ὑπὸ ἀνέγερσιν) καὶ «Κοινοτικὸν νοσοκομεῖον Ἁγιάσσου» (εἰς τὴν θέσιν «Καμπούδι»). Ὑπηρεσίαι δημοσίας ὑγιεινῆς εἶναι: ἡ νομιατρική, διαθέτουσα 1 νομίατρον, 3 ὑγειονομικοὺς ἰατροὺς καὶ 3 ἀστιάτρους πλὴν τῶν κοινοτικῶν καὶ δημοτικῶν· ὀργανώσεις δέ: ὁ παλαιότερος «Παλλεσβιακὸς σύνδεσμος ὑπὲρ τῆς ὑγείας τῶν παίδων» (ἵδρ. 1916) καὶ ἡ «Στέγη φυματιώντων» (1925). Ἄλση τεχνητὰ ἡ νῆσος ἔχει: τὰ «Πευκάκια» Μυτιλήνης καὶ τὰ ὑπὸ δημιουργίαν «Προφήτου Ἠλία» καὶ «Κουλφανίου» Πλωμαρίου, ὑφίστανται δὲ καὶ σχετικαὶ ὀργανώσεις: ὁ «Φιλοδασικὸς» Πολυχνίτου (ἵδρ. 1930) καὶ ἡ «Ἀγαθοεργὸς Ἀδελφότης» Καλλονῆς (1904) διὰ τὴν ἐπιχωμάτωσιν ἑλῶν καὶ δενδροφύτευσιν. Ἐκ τῶν ὑδρευτικῶν ἔργων σπουδαιότερα εἶναι τὰ Μυτιλήνης, Πλωμαρίου, Ἁγιάσσου κ. ἄ.

***Φυσικὴ ἀγωγή.*** Γυμναστήρια συστηματικὰ ὑπάρχουσι μόνον ἐν τῇ πρωτευούσῃ: τὸ γυμναστήριον «Πεδίον τοῦ Ἄρεως» (Μακρυγιαλός), τὸ ἐπ' αὐτοῦ ἱδρυθησόμενον μέγα «Στάδιον τοῦ Αἰγαίου» καὶ τὸ ὑπὸ δημιουργίαν σχολικὸν γυμναστήριον. Ἡ ἀθλητικὴ κίνησις τὰς ἀρχάς της ἔχει εἰς τὰς ὀργανώσεις «Ἄτλας» καὶ «Διαγόρας» (1908—1911), διαλυθείσας ἐπὶ τουρκοκρατίας ὡς ἐπαναστατικάς· ἔκτοτε ἡ πρώτη κίνησις ἐσημειώθη τῷ 1923 («Παλλεσβιακὸς Γυμναστικὸς Σύλλογος»), ἀκολούθως τῷ 1926 («Νίκη») καὶ τέλος ἡ ἀπὸ 1929 κ. ἑ. (17 σωματεῖα). Προσέτι λειτουργοῦν ἡ «Ἀθλητικὴ Λέσχη» (ἵδρ. 1931) καὶ ἡ «Ἕνωσις Ποδοσφαιρικῶν Σωματείων Αἰγαίου» (1930) ἐν Μυτιλήνῃ, ἡ «Λέσχη Ἐκδρομέων» (1927) καὶ ὁ φυσιολατρικὸς-πεζοπορικὸς «Ἥλιος» (1928). Κυνηγετικαὶ δ' ὀργανώσεις ὁ «Παλλεσβιακὸς κυνηγετικὸς σύλλογος» (1927) καὶ ὁ «Φιλοθηραματικὸς» (1929) ἐν Μυτιλήνῃ, καὶ 12 σωματεῖα ἐν τῇ ὑπαίθρῳ. Τέλος δὲ λειτουργεῖ τὸ «Σῶμα Ἑλλήνων Προσκόπων Λέσβου» καὶ ὁ «Σύνδεσμος Φυσικῆς Ἀγωγῆς» τῆς Καλλονῆς.

***Κοινωνικὴ Πρόνοια.*** Ἱδρύματα κοινωνικῆς προνοίας λειτουργοῦν (1931): ἐν τῇ πόλει τὰ «Φιλανθρωπικὰ καταστήματα», τὸ «Δημόσιον Γηροκομεῖον» (54 κλ., ἵδρ. 1922), τὸ «Ἐθνικὸν Ὀρφανοτροφεῖον ἀρρένων» (159 τρόφ., 1922) καὶ ὁ «Ἐθνικὸς Παιδοκομικὸς σταθμὸς» (60 τρόφ., 1929), ἐν δὲ τῇ ὑπαίθρῳ τὸ «Ταμεῖον Πτωχῶν» Καλλονῆς (1926) καὶ τὰ «Ρεπάνεια κτίρια» Πλωμαρίου. Ὀργανώσεις κοινωνικῆς ἀλληλεγγύης ὁ «Κεντρικὸς Πολυτεκνικὸς Σύλλογος» Μυτιλήνης (1929) μὲ 5 τμήματα ἐν τῇ ὑπαίθρῳ, ὁ «Σύνδεσμος κυριῶν πρὸς παροχὴν ἐργασίας» Μυτιλήνης (1923), 4 «φιλόπτωχοι ἀδελφότητες», 7 «ἀλληλοβοήθειαι», 3 «ἀγαθοεργοὶ ἀδελφότητες», 2 «φιλανθρωπικοὶ σύλλογοι», ὁ «Ὀρφανοτρόφος» Μυτιλήνης (1930) καὶ πλεῖστα σωματεῖα «κυριῶν καὶ δεσποινίδων». Ἐργατικῆς Προνοίας ὀργανισμοί: ἡ Περιφερειακὴ ὑπηρεσία τοῦ «Ταμείου Ἀσφαλίσεως Ἀρτεργατῶν» καὶ τὸ παράρτημα τοῦ «Ταμείου ἀσφαλίσεως Καπνεργατῶν» κ. ἄ. Ἡ νῆσος ὑπάγεται εἰς τὴν Β' Ἐπιθεώρησιν ἐργασίας.

***Προσφυγικὴ ἀποκατάστασις.*** Οἱ πρόσφυγες, ἀνερχόμενοι τῷ 1923 εἰς 47.382 καὶ τῷ 1925 εἰς 37.804, εἶναι σήμερον (ἀπογρ. 1928) 30.593 (τὰ 22.3 % τοῦ πληθυσμοῦ τῆς νήσου), ὧν τὰ 49 % (14.820) κατοικοῦν τὴν πόλιν. Εἶναι δὲ 96,4 % Μικρασιᾶται, 2 % Θρᾷκες, κ. ἄ. ὀλίγοι. Διὰ τὴν ἀστικὴν ἀποκατάστασιν ἀνηγέρθησαν ἐν τῇ πόλει δύο συνοικισμοὶ («Ἐπάνω Σκάλα», «Τσινὰρ-Τζαμί») ἐκ 450 συγκροτημάτων κατοικιῶν (οἰκογέν. 1.084, ἀξία 6 ἑκατ. δρχ.), ἀνεγείρεται νῦν ὁ συνοικισμὸς «Λαγκάδας» (ἔκτασις 38.423 τετρ. μ.), καὶ προβλέπονται $3^1/_2$ ἑκατομ. δρχ. διὰ τὴν «Προσφυγικὴν Ἀγορὰν» Μυτιλήνης· πλὴν τούτων, κατεῖχον τῷ 1928 τουρ. οἰκήματα τῆς πόλεως 1.100 οἰκογένειαι. Διὰ τὴν ἀγροτικὴν ἀποκατάστασιν ἀνηγέρθησαν: οἱ συνοικισμοὶ «Παναγιούδας» (οἰκογ. 100) καὶ «Σκάλας Λουτρῶν» (οἰκ. 50) ὑπὸ τῆς Ἐπιτρ. Ἀποκατ. προσφύγων καὶ ἄλλοι.

Ἀγροτικοὶ κλῆροι ὑπῆρχον ἀρχικῶς (1926) 6.231 καὶ νῦν (Ἰούνιος 1930) 2.022. Ἐκ τῶν μουσουλμανικῶν γαιῶν (κτήματα 9.653, στρεμμάτων 329.393, ἀξίας 867 ἑκατομμ. δρχ.) διενεμήθησαν (1931) 37.000 στρέμματα (11.8 %) ἀπεδόθησαν 9.675 (2.9 %) ἐξεποιήθησαν 68.273 (20.2 %), ἐλεύθερα δὲ διαχειριζόμενα ὑπὸ τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης ὑπολείπονται τὰ ὑπόλοιπα 65.1 %, διατιθέμενα πλὴν τῶν βοσκοτόπων (150.000 στρέμμ.) διὰ τὴν ἐφεξῆς ἀποκατάστασιν γηγενῶν καὶ προσφύγων ἀκτημόνων. Προσφυγικαὶ ὀργανώσεις ὑφίστανται γενικαί: ἡ «Ἕνωσις Προσφύγων Λέσβου» (ἵδρ. 1924) καὶ ἡ «Ἐθνικὴ Ἕνωσις Προσφύγων» (1928), ἀγροτικαί: ὁ «Σύνδεσμος ἐλαιοκτηματιῶν προσφύγων Λέσβου» (1924), ἡ «Ὁμοσπονδία ἀγροτικῶν προσφυγικῶν ὁμάδων Λέσβου» (1926) καὶ ὁ «Σύνδεσμος κληρούχων προσφύγων Μολύβου» (1929), 8 κατὰ χωρία ὀργανώσεις καὶ 14 κοινοτικαὶ κατὰ τόπους καταγωγῆς.

***Ἀσφάλεια.*** Τὴν ὑπηρεσίαν ἀσφαλείας διεξάγει ἡ «Διοίκησις Χωροφυλακῆς Λέσβου», διαθέτουσα 2 ὑποδιοικήσεις (Μηθύμνης, Πλωμαρίου), 6 ἀστυνομικὰ τμήματα, 20 σταθμοὺς καὶ 221 ἄνδρας. Τὴν ἀγροτικὴν ἀσφάλειαν διέπει ἴδιον διάταγμα «Περὶ ἀγροτικῆς ἀσφαλείας τῆς νήσου Λέσβου», (1924 Ἰανουρ. 4, ἐν συνδυασμῷ μὲ τὸ ἀπὸ 1926 Μαΐου 20), καθ' ὃ λειτουργοῦν: 9 «ἐποπτικὰ συμβούλια» ἀγροφυλακῆς εἰς τὰς 9 ἕδρας εἰρηνοδικείου, ὑφ' ἃ τὰ «ἀγροτικὰ συμβούλια» τῶν κοινοτήτων (1931: 67), ὑφ' ἃ οἱ ἀγροφύλακες καὶ ὑδρονομεῖς (256 τακτικοί, 100 ἔκτακτοι κατὰ τὴν ἐλαιοσυγκομιδήν). Προσέτι ἡ Μυτιλήνη εἶναι ἕδρα τῆς «Ἀνωτέρας Διοικήσεως Χωροφυλακῆς νήσων Αἰγαίου», «Κέντρου Ἐπιστρατεύσεως», τοῦ «22ου Στρατολογικοῦ Διαμερίσματος» καὶ τοῦ «22ου Συντάγματος Πεζικοῦ».

***Ἐγκληματικότης—Δικαιοσύνη.*** Τὴν δικαιοσύνην ἀσκοῦν τὸ πλημμελειοδικεῖον Μυτιλήνης (εἰς ὃ ὑπάγεται καὶ ἡ ἐπαρχία Λήμνου τοῦ νομοῦ Λέσβου), καὶ 8 πταισματοδικεῖα (Ἁγιάσσου, Ἐρεσσοῦ, Καλλονῆς, Μανδαμάδου, Μολύβου, Μυτιλήνης, Παπάδου, Πλωμαρίου, Πολυχνίτου). Δικαστικῶς ἡ νῆσος ὑπάγεται εἰς τὸ Ἐφετεῖον Αἰγαίου, εἶναι δὲ ἕδρα ἐπανορθωτικῶν φυλακῶν. Ἡ ἐγκληματικότης ἐν τῇ περιοχῇ τοῦ πλημμελειοδικείου Μυτιλήνης ἔχει ἐτησίως (τριετία 1926—1928) ὡς ἑξῆς: Διαπράττονται περίπου 65 ἀδικήματα ἐπὶ 10.000 κατοίκων (πανελληνίως: 81), ἐξ ὧν $152^0/_{00}$ κατὰ τῆς ζωῆς, $202^0/_{00}$ κατὰ τῆς τάξεως καὶ τῆς ἐξουσίας, $452^0/_{00}$ κατὰ τῆς περιουσίας καὶ $194^0/_{00}$ ἄλλης φύσεως. Ἡ γυναικεία ἐγκληματικότης ἀνέρχεται εἰς τὰ $51^0/_{00}$ ἐπὶ τῶν ἀδικημάτων ἐν γένει, $65^0/_{000}$ ἐπὶ τῶν κατοίκων καὶ $6^0/_{000}$ ἐπὶ τοῦ γυναικείου πληθυσμοῦ. Τῷ 1929 εἰσῆλθον εἰς τὰς φυλακὰς 883 ὑπόδικοι, κατάδικοι καὶ κρατούμενοι διὰ χρέη ($5^0/_{000}$ ἐπὶ τῶν κατοίκων)· ἐκ τῶν ὑποδικοκαταδίκων (730) 19 ἦσαν γυναῖκες ($26^0/_{00}$) καὶ ἐκ τῶν καταδίκων (530) 62 ἀνήλικοι ($117^0/_{00}$), οἱ κρατούμενοι δὲ τὴν 31ην Δεκεμβρίου 1929 ἀνήρχοντο εἰς 92 (6 ἐπὶ 10,000 κατοίκων τῆς δικαστικῆς περιφερείας). Κατὰ βαθμὸν ἀδικήματος οἱ καταδικασθέντες: κατὰ $877^0/_{00}$ ἦσαν πταῖσται, $120^0/_{00}$ πλημμελήσαντες καὶ $3^0/_{00}$ κακοῦργοι.

***Ἐκπαίδευσις.*** Ἡ νῆσος ὑπάγεται εἰς τὴν «Ζ' περιφέρειαν μέσης ἐκπαιδεύσεως» καὶ ἀποτελεῖ ἰδίαν περιφέρειαν (Λέσβου) δημοτικῆς τοιαύτης. Ἡ στοιχειώδης μόρφωσις (ἀνάγνωσις καὶ γραφή) ἔχει ὡς ἑξῆς % διὰ τὸν ἄνω τῶν 10 ἐτῶν πληθυσμόν:

| | | *1920* | *1928* |
|---|---|---|---|
| Ἄρρενες | ἐγγράμματοι | 63 5 | 89.4 |
| | ἀγράμματοι | 36.5 | 10.0 |
| Θήλεις | ἐγγράμματοι | 34 9 | 46.1 |
| | ἀγράμματοι | 61.8 | 53.5 |

Κατωτέρας ἐκπαιδεύσεως λειτουργοῦν ἐπὶ τῆς νήσου (1931): 100 δημόσια δημοτικὰ σχολεῖα μεικτὰ καὶ 2 ἰδιωτικά, συγκεντροῦντα 15.390 μαθητὰς ($112^0/_{00}$ ἐπὶ τοῦ πληθυσμοῦ), ὧν ἄρρενες 8.540 (55,9 %), ὑπὸ 289 λειτουργοὺς (1 κατὰ 53 μαθητάς). Μέσης ἐκπαιδεύσεως λειτουργοῦν: 2 γυμνάσια (Μυτιλήνης καὶ Πλωμαρίου) καὶ 5 ἡμιγυμνάσια (Ἁγίας Παρασκευῆς, Ἁγιάσσου, Παπάδου, Πέτρας, Πολυχνίτου) συγκεντροῦντα 991 μαθητὰς ($6,3^0/_{00}$ ἐπὶ τοῦ πληθυσμοῦ), ὧν ἄρρενες 832 ($84^0/_{00}$), ὑπὸ 37 λειτουργοὺς καὶ 1 τριτάξιον Ἀνώτερον Παρθεναγωγεῖον (μαθήτρ. 143, λειτουργ. 4). Πρακτικῆς καὶ τεχνικῆς ἐκπαιδεύσεως λειτουργοῦν: τὸ ἑξατάξιον «Πρακτικὸν Λύκειον» Μυτιλήνης (καθηγ. 10, μαθητ. 170, ὧν ἀρρ. 144), αἱ διτάξιοι «Γεωργικαὶ Σχολαὶ» Ἐρεσσοῦ καὶ Καλλονῆς (ἵδρυσ. 1930, μαθ. 30), ἡ ἰδιωτικὴ «Ἐμπορικὴ Σχολὴ Ἀγγελομάτη» (μαθητ. 60, καθηγ. 11, ἵδρυσ. 1927) καὶ τὸ «Ἑλληνογαλλικὸν Παρθεναγωγεῖον» (μαθήτρ. 80), τοῦ «Φιλεκπαιδευτικοῦ Συλλόγου Μυτιλήνης». Ἐπίσης ὑφίσταται νυκτερινὴ σχολὴ στοιχειώδους μορφώσεως (ἵδρ. 1926) τοῦ συλλόγου «Βερναρδάκης» καὶ κατώτερον μεικτὸν Ἀρμενικὸν σχολεῖον (μαθητ. 150, διδάσκ. 4, ἐτησ. ἐπιχορ. 120 λιρῶν τῆς Société des Bienfaisances Armeniennes τοῦ Καΐρου). Ἐλειτούργησεν ἔτι ἐπὶ πενταετίαν (1924—1929) τὸ «Μονοτάξιον Διδασκαλεῖον Μυτιλήνης» καὶ νῦν (1931—1932) ἱδρύεται πεντατάξιον τοιοῦτον. Ἐκ τῶν σχολικῶν κτηρίων τῆς νήσου (82 δημόσια, 18 μισθούμενα) 18 εἶναι ἀκατάλληλα, 14 παλαιὰ ἐπισκευασθέντα κατὰ τὴν λήξασαν πενταετίαν, 34 νεόδμητα κατὰ τὸ αὐτὸ διάστημα καὶ 22 ἀνεγειρόμενα ἢ περατούμενα, διὰ συνολικῆς δαπάνης περίπου 50.000.000 δραχ. Ἐκπαιδευτικὰ κληροδοτήματα ὑφίστανται: διὰ κτήρια σχολικὰ τὰ «Βουρνάζειον», «Βοστάνειον», «Κομνηνάκειον» καὶ τοῦ «Μητρέλια» καὶ διὰ σπουδὰς τὸ «Καραντώνειον» καὶ «Σημαντήρειον» κλπ. Μαθητικὰ συσσίτια ἐλειτούργησαν (1931) 2 ἐν Μυτιλήνῃ διὰ μαθητὰς τῶν δημοτικῶν σχολείων (τρόφιμοι 350).

***Ἐκκλησία.*** Ἡ νῆσος διοικητικῶς ὑπήγετο εἰς τὸ Οἰκουμενικὸν πατριαρχεῖον Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἀπὸ τοῦ 1928 εἰς τὴν αὐτοκέφαλον Ἐκκλησίαν τῆς Ἑλλάδος. Διαιρεῖται εἰς 3 ἐκκλησιαστικὰς ἐπαρχίας, ὧν παλαιαὶ αἱ *Μυτιλήνης* καὶ *Μηθύμνης* (βλ. [*Ἐκκλησ. Ἱστορ.*]), νεωτέρα δὲ ἡ τοῦ *Πλωμαρίου*, σχηματισθεῖσα τῷ 1924 (Ὀκτώβρ.) διὰ τοῦ τόμου 3902 ἐκ τμήματος τῆς ἐπαρχίας Μυτιλήνης διὰ τὴν τοποθέτησιν τοῦ πρῴην Καλλιπόλεως καὶ Μαδύτου, μεθ' οὗ τὸν θάνατον θὰ διαλυθῇ. Ὑπὸ τὴν δικαιοδοσίαν αὐτῶν ὑπάγονται:

| | *Μυτιλ.* | *Μηθ.* | *Πλωμ.* |
|---|---|---|---|
| Ἐνοριακοὶ Ναοὶ | 51 | 32 | 23 |
| Ἐφημέριοι | 63 | 41 | 24 |
| Μοναχοὶ | 21 | 20 | — |
| Μοναχαὶ | — | 24 | — |

Μοναὶ ὑπάρχουν: ἡ τοῦ Λειμῶνος (μοναχ. 20) μετὰ τῆς Μυρσινιωτίσσης (μοναχαὶ 24) γυναικείου αὐτῆς προσαρτήματος, ἡ τοῦ Ὑψηλοῦ (μοναχ. 17) καὶ ἡ τοῦ Δαμανδρίου (μοναχ. 4).

Ξέναι Ἐκκλησίαι: ἡ τῶν *Δυτικῶν* (ἀριθμουμένων εἰς 100 περίπου) ἐν τῇ πρωτευούσῃ, διατηροῦσα ἀστικὸν μονύδριον (Φραγκισκανῶν), ὑπαγομένη μέχρι τοῦ 1922 εἰς τὴν καθολικὴν ἐπισκοπὴν Σμύρνης καὶ νῦν (1931) ὑπαχθησομένη εἰς τὴν τῆς Χίου· καὶ ἡ τῶν *Ἀρμενίων* ἐν τῇ πρωτευούσῃ.

***Γράμματα καὶ τέχναι.*** Ἡ διανοητικὴ κίνησις εἶναι ἀρκούντως προηγμένη. Ὑπάρχει ἐν τῇ πρωτευούσῃ ἡ παλαιὰ βιβλιοθήκη τοῦ γυμνασίου (τόμ. 5.000) καὶ μικρότερα ἀναγνωστήρια εἰς Πλωμάριον («Βενιαμίν», ἵδρ. 1878), Καλλονὴν («Ἀρίσβη», ἵδρ. 1905, τόμ. 1.000), Σκόπελον («Ἀναγέννησις»), Ἁγιάσσον· λειτουργοῦν ἐπίσης εἰς πλείστας κοινότητας λέσχαι διατηροῦσαι μικρὰς βιβλιοθήκας (Βρησά, Πολυχνῖτος κ. ἄ.). Ὡς ἱστορικὸν ἀρχεῖον δύναται νὰ θεωρηθῇ ἡ βιβλιοθήκη τῆς μονῆς Λειμῶνος (χειρόγρ. 375, τόμ. 2.500), διαφωτίζουσα τὴν ἀπὸ τοῦ 1527 καὶ ἑξῆς ἱστορίαν τῆς νήσου, ἱδρύεται δὲ (1931) καὶ τὸ «Μουσεῖον πόλεως» τῆς Μυτιλήνης. Σχετικαὶ ὀργανώσεις λειτουργοῦσαι ἐν τῇ πρωτευούσῃ: ὁ «Ἀργύρης Ἐφταλιώτης» (1927), «Βερναρδάκης» (1925), «Φιλοβιβλικὸς» (1929), «Esperanto» καὶ «Virina Esperanto» (1929). Αἴθουσαι θεαμάτων ἱδρύονται: τὸ Δημοτικὸν θέατρον Μυτιλήνης (7 ἑκατομμ. δραχ.) καὶ ἡ «Ἀντωνάκειος αἴθουσα δημοσίων θεαμάτων» Πλωμαρίου. Ὀργανώσεις σχετικαί, ἐν τῇ πρωτευούσῃ: «Φιλοτεχνικὸς» (ἵδρ. 1917), «Μαντολινάτα» (1924), «Φιλόμουσοι» (1927) καὶ εἰς τὰ χωρία: «Ὅμιλος Ἐρασιτεχνῶν» (Καλλονῆς, Ἁγιάσσου), «Φιλοτεχνικὸς» (Μόλυβος), «Νέοι» (Μεσαγρός), «Προοδευτικὸς σύλλογος» (Τελώνια) κ. ἄ.

***Τύπος.*** Ἡ τυπογραφία εἰσήχθη ἔτη τινὰ πρὸ τοῦ 1879. Νῦν ἐκδίδονται ἡμερησίως αἱ πρωϊναὶ «Ἐλεύθερος λόγος» (ἵδρ. 1916), «Ταχυδρόμος» (ἵδρ. 1925), «Δημοκράτης» (ἵδρ. 1928), «Νέος Κῆρυξ» (ἵδρ. 1920), περιοδικῶς δὲ ἡ σατιρικὴ «Σκορπιὸς» (ἵδρ. 1910) ἑβδομαδιαία, τὸ «Δελτίον τῆς μητροπόλεως Μηθύμνης» (ἵδρ. 1931), ἡ «Ἁγιάσσος» (ἵδρ. 1931), καὶ τὸ «Δελτίον τοῦ Ἐμπορικοῦ καὶ Βιομηχανικοῦ Ἐπιμελητηρίου» (ἵδρ. 1923) ἐτησίως. Ἡ κίνησις τοῦ μυτιληναϊκοῦ τύπου εἶχε περίπου ὡς ἑξῆς κατὰ τὸν διαρρεύσαντα χρόνον: Πολιτικαὶ ἐφημερίδες ἐξεδόθησαν ἐν τῇ πρωτευούσῃ ἡ «Σάλπιγξ» (1909—1929) ἡμερησία, ἡ «Λέσβος» (1910—1915) ἡμερησία, ὁ «Ἀγὼν» (1911) συγχωνευθεὶς μετὰ τοῦ «Λαοῦ» (1911) εἰς τὴν ἐργατικὴν ἐφημερίδα «Λαϊκὸς ἀγών». Κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἐξεδόθησαν αἱ ἐφημερίδες «Θάρρος» (1915), «Φιλελεύθερος», «Κῆρυξ», ἡ «Πρόοδος» καὶ ἡ ἑβδομαδιαία «Λαϊκὴ Φωνή»· κατὰ τὴν περίοδον 1920—1923 ἐξεδόθη ἡ «Ἕνωσις» (1921) ἡ εἶτα «Φῶς», ἡ ἑβδομαδιαία ἐφεδρικὴ «Καμπάνα» (1922), ἡ μοναδικὴ εἰς τὴν δημοτικὴν γραφομένη πολιτικὴ ἐφημερίς, ὁ «Ἔφεδρος» καὶ ὁ «Νέος Φιλελεύθερος». Εἰς τὰ χωρία ἐξεδόθησαν ἐπίσης τινά, βραχύβια συνήθως, φύλλα. Αἱ περιοδικαὶ ἐκδόσεις ἔχουν παλαιοτέραν ἱστορίαν: ὁ «Πιττακὸς» τοῦ Γ. Χαραλαμπίδου καὶ ὁ «Πανδέκτης» ἐξεδόθησαν περὶ τὸ 1879 καὶ ἀργότερον ἡ «Σαπφὼ» (1881) τοῦ Γ. Ἀρχοντοπούλου, ἡ «Χαραυγὴ» (1910—1914) τῶν Μαν. Μπάλλη καὶ Δ. Ἀλβανοῦ, συνεχισθεῖσα ἐν Ἀθήναις, ἡ μηνιαία «Μόρφωσις» (1911) καὶ τὸ «Πανελλήνιον Ἡμερολόγιον» τῆς ἐφημερίδος Λέσβος· ἀπὸ δὲ τοῦ 1922, αἱ μηνιαῖαι «Λεσβιακὲς Σελίδες» (1925), συγκεντρώσασαι τὴν διανοητικὴν κίνησιν τῆς ἐποχῆς, τὰ «Λεσβιακὰ Φύλλα» (1929) κ. ἄ. Σατιρικὰ φύλλα ἐξεδόθησαν: ὁ «Μυτιληνιὸς» (1907—1909), ὁ «Σατανᾶς» (1911), ὁ «Βούρδουλας» τῆς Κωνσταν-

Digitized by Google

τινουπόλεως (μετὰ τὸ 1922) κτλ. Προσφυγικαὶ τέλος ἐκδόσεις: ἡ «Προσφυγικὴ Φωνὴ» (1922 καὶ 1928) καὶ ἄλλαι τινὲς βραχύβιοι.

***Συνδικαλισμός.*** Πρῶται γνωσταὶ ἐπαγγελματικαὶ ὀργανώσεις τῆς νήσου εἶναι ἡ «Συνάφεια τῶν καζάζιδων καὶ ραπτῶν», ὑπάρχουσα ἤδη τῷ 1850, καὶ ἡ «Ἐργατικὴ Ἀδελφότης» περὶ τὸ 1880· ἀκολούθως ἱδρύθησαν τὰ σωματεῖα κτιστῶν καὶ ἰδιωτικῶν ὑπαλλήλων (περὶ τὸ 1909).

Νῦν λειτουργοῦν ἄνω τῶν 35 ἐργατικὰ σωματεῖα (3.500 μέλη περίπου) ὑπὸ τὸ «Παλλεσβιακὸν Ἐργατικὸν Κέντρον» (ἵδρ. 1917), περὶ τὰ 50 σωματεῖα ἐπαγγελματιῶν ὑπὸ τὸν «Σύνδεσμον Ἐπαγγελματικῶν σωματείων Λέσβου» (ἵδρ. 1919). Ἐπίσης ὑπαλληλικὰ τά: «Παλλεσβιακὸς δημοδιδασκαλικὸς σύνδεσμος» (1914), «Αἰγαιοπελαγιτικὴ Ἕνωσις Τ. Τ. Τ.» (1919), «Ἕνωσις κατωτέρων δικαστικῶν ὑπαλλήλων» (1921), «Σύνδεσμος δικαστικῶν κλητήρων» (1925), «Λέσχη δημοσίων ὑπαλλήλων» (1923), «Ἕνωσις κοινοτικῶν γραμματέων» (1930), «Ἕνωσις δημοτ. καὶ κοινοτ. ὑπαλλήλων Λέσβου» (1931) ἅπαντα ἐν Μυτιλήνῃ· καὶ ἐν Πλωμαρίῳ «Σύνδεσμος δημοσ. ὑπαλλήλων» (1928). Ἐπιστημονικὰ δέ: «Ἰατρικὸς σύνδεσμος Λέσβου» (1917), «Φαρμακευτ. σύνδ. Λέσβου» (1924), «Ὀδοντοϊατρ. σύλλογος» (1924), «Ἕνωσις συντακτῶν λεσβ. ἐφημερίδων» (1929) καὶ «Σύλλογος μαιῶν» (1930), κ.ἄ. ἄλλης φύσεως (βλ. ἐν [*Οἰκον. Γεωγρ.*]). Ἐπίσης λειτουργοῦν διάφοροι ὀργανώσεις ἐφέδρων, παλαιῶν πολεμιστῶν, ἀναπήρων, πολεμοπαθῶν, τῶν ἐν τῷ ἐξωτερικῷ Μυτιληναίων (Χέβερχιλλ, Χέβερ, κ. ἀ.), ἡ ἐν Ἀθήναις «Ἕνωσις Λεσβίων» κτλ.

Ἡ νῆσος ἀποτελεῖ ἰδίαν ἐκλογικὴν περιφέρειαν («Πρωτοδικείου Μυτιλήνης») μετὰ τῆς Λήμνου, καὶ ἔχει 6 ἕδρας ἐν τῇ βουλῇ καὶ 2 ἐν τῇ γερουσίᾳ. Οἱ μετέχοντες τῶν ἐκλογῶν ἐν τῇ περιφερείᾳ ἀνέρχονται εἰς 21,704 (1931) ἕως 25.821 (1928).

Π. Ν. Π.

— [ΙΣΤΟΡΙΑ] ***Ὄνομα τῆς νήσου.*** Ποικίλα ὀνόματα φέρονται ἀρχαιότερα τοῦ ἐπικρατήσαντος «*Λέσβος*», ἀναφερόμενα εἰς τοὺς πρώτους κατοίκους τῆς νήσου («Αἰθιόπη», «Ἴσσα», «Μακαρία», «Μακάρων νῆσος», «Μυτωνίς», «Πελασγία») ἢ τὰς ἰδιότητας τῆς φύσεώς της: «Λασία» (δασύδενδρος), «Ἱμερτὴ» (ποθητή). Τὸ ὄνομα δὲ «Λέσβος» κατὰ μὲν τὴν παράδοσιν ὀφείλεται εἰς τὸν ἐκ τῶν οἰκιστῶν αὐτῆς *Λέσβον* γαμβρὸν τοῦ Μάκαρος, ἢ τὴν θυγατέρα τοῦ τελευταίου *Λέσβην*· κατὰ πολλοὺς τῶν ἐπιστημόνων σχετίζεται μὲ τὰς λέξεις «λέσπις» ἢ «λίσπος» καὶ σημαίνει τὴν ἐκ τοῦ πελάγους ἀναδυομένην πέτραν, κατὰ δὲ τὸν Bochart παράγεται ἐκ τοῦ φοινικικοῦ «ἐσβοῦ» (=ἑπτά)· πρὸς τὸ ὄνομα τοῦτο συνδέονται ἴσως τὰ σημερινὰ τοπωνύμια «Λεσβάδος» (παρὰ τὸν Μανδαμάδον) καὶ «Λισβόρι». Τὸ ὄνομα τῆς πρωτευούσης «Μυτιλήνη» (τουρκ. «Μεντιλὶ ἀντασί»), ἀποδιδόμενον εἰς *Μυτίλην* τινὰ οἰκιστὴν ἢ τὴν *Μυτιλήνην* θυγατέρα τοῦ Μάκαρος ἢ τὸν υἱόν της *Μύτωνα* (ὅθεν καὶ παρ' ἀρχαίοις ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος «Μυτωνὶς» καὶ οἱ κάτοικοι «Μύτωνες», «Μυτωναῖοι»,) πιθανώτατα σχετίζεται μὲ τὰ ἄφθονα ἐν τῇ νήσῳ ὄστρεα καὶ ἄλλα θαλάσσια εἴδη (: μυτίλος, μύτης, μύτις, κ.τ.τ.). Ἐπεκράτησε δὲ ὡς ὄνομα τῆς νήσου ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τῆς Β' μ. Χ. χιλιετηρίδος, τῆς πρωτευούσης ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος ὀνομασθείσης «Κάστρο» (ὁ πολίτης «Καστρινός»). Τέλος ἡ νῆσος ἀπεκλήθη ὑπὸ τῶν Τούρκων καὶ «Ἀλτὶν ἀντασὶ» (=χρυσῆ νῆσος) καὶ «Ραβζάϊ μεμαλὶκ ντεβλετὶ ἀλιγιὲ» (=κῆπος τῆς αὐτοκρατορίας).

ΑΡΧΑΙΟΙ ΧΡΟΝΟΙ. Οἱ ἀρχαιότ. συνοικισμοὶ ἀνάγονται εἰς τὴν Δ' π. Χ. χιλιετηρίδα (3300 π. Χ., κ. ἑ.), ὁ πολιτισμός των δὲ στενότατα συνδέεται μετὰ τοῦ τρωαδικοῦ, ὡς καί τινες τῶν μύθων καὶ τοπωνυμίων. Αἱ περὶ τῶν πρώτων κατοίκων τῆς νήσου παραδόσεις στρέφονται περὶ ἀποικισμοὺς Πελασγικῶν καὶ Αἰολικῶν φύλων. Ὡς Πελασγοὶ οἰκισταὶ ἀναφέρονται: *Ξάνθος* ὁ Τριόπου ἐξ Ἄργους, διὰ Λυκίας ἐλθών, ὀνομάσας τὴν νῆσον Πελασγίαν καὶ ἱδρύσας ἐπ' αὐτῆς ὁμώνυμον πόλιν «Ξάνθον»· ἔτι δὲ ὁ *Πύλαιος*, ἐπώνυμος τοῦ ἐπὶ τῆς Λέσβου «Πυλαίου» ὄρους. Τοῦ πελασγικοῦ ἐποικισμοῦ κατάλοιπα εἶναι τὸ ἐκ τῶν ὀνομάτων τῆς νήσου «Ἴσσα» (συγγ. τῷ «Λάρισσα»), ἡ ἅπαξ ἀναφερομένη πόλις «Μέταον» (ἀπὸ τοῦ Πελασγοῦ ἥρωος Μέτα) καὶ τὸ ὄνομα τῶν βράχων «Λαρισσαῖαι Πέτραι» (καὶ νῦν ἔτι «Λάρσος»), ἐφ' ὧν πιθανῶς ὑπῆρχε πελασγικὴ ἀκρόπολις. Πρὸς τὸν πελασγικὸν συνοικισμὸν συνέδεσαν παλαιότεροι ἐρευνηταὶ καὶ τοὺς περὶ *Μάκαρος* ἢ *Μακαρέως* μύθους, ἐξ Ἀχαΐας ὁρμηθέντος, κατοικήσαντος τὴν ἐκ τοῦ ἐπὶ Δευκαλίωνος κατακλυσμοῦ ἐρημωθεῖσαν νῆσον καὶ ἐκεῖθεν καταλαβόντος τὴν Χίον, Σάμον, Ρόδον, Κῶν κ. ἄ. («Μακάρων νῆσοι»). Κατά τινας καὶ καρικὰ φῦλα κατῴκησαν τότε τὴν νῆσον, σχετίζουν δὲ πρὸς αὐτὰ τὸν Μάκαρα (=Κᾶρα), τὴν παρ' Ἡσυχίῳ ἑρμηνείαν τῆς λέξεως Αἰθίοψ («Αἰθίοψ· ὁ Λέσβιος»), τὸ ἐκ τῶν παλαιῶν τῆς νήσου ὀνομάτων «Αἰθιοπία» καὶ τὸ ἕτερον «Αἴγειρα» (=μέλαινα, κατὰ Kassinger), ἔτι δὲ τοὺς μύθους τοῦ Πέλοπος (φερομένου πατρὸς τῆς Μυτιλήνης, ἧς υἱὸς ὁ Μάκαρ) καὶ συνδεομένου μὲ τὸ πανάρχαιον τῆς νήσου μαντεῖον τοῦ Ναπαίου Ἀπόλλωνος. Νεώτεραι ὅμως συγκρίσεις τάσσουν τοὺς μύθους τούτους εἰς τοὺς μετέπειτα αἰολικοὺς ἀποικισμοὺς ἐκ Βοιωτίας καὶ Θεσσαλίας· τοῦτο ἀποδεικνύουν ἡ ἐθνολογικὴ ποικιλία τῶν ἀποίκων τοῦ Μάκαρος («λαοὶ ἠθροισμένοι οἱ μὲν Ἴωνες, οἱ δ' ἐξ ἄλλων ἐθνῶν παντοδαπῶν συνερρυκότες»), ἡ μυθολογουμένη γενεαλογία τοῦ Μάκαρος καταγομένου ἐκ τοῦ Αἰόλου καὶ ἡ γενεαλογία τοῦ γαμβροῦ του Λέσβου (υἱὸς τοῦ Θεσσαλοῦ ἥρωος Λαπίθου, ἔγγονος τοῦ Αἰόλου καὶ αὐτός).

Οἱ αἰολικοὶ ἀποικισμοὶ ἤρχισαν ἀπὸ τὰ μέσα τῆς Β' π. Χ. χιλιετηρίδος, συνδέονται δὲ οἱ παλαιότεροι πρὸς τὴν ἐξάπλωσιν τῶν Ἀχαιοαιολέων ἐπὶ τῆς Μεσογείου (ΙΔ' αἰὼν) καὶ οἱ νεώτεροι πρὸς τὸν ἀναγκαστικόν των ἐκπατρισμὸν ἐκ τῆς ἠπειρωτικῆς Ἑλλάδος κατὰ τὴν κάθοδον τῶν Δωριέων (ΙΒ' αἰών). Κατὰ τοὺς μύθους διακρίνονται δύο ὁμάδες οἰκητόρων: οἱ περὶ τὸν Μάκαρα καὶ οἱ ἐκ τοῦ Ὀρέστου Πενθιλίδαι. Ἐν τῇ Ἰλιάδι ἤδη καλεῖται ἡ νῆσος «Μάκαρος ἕδος», πλούσιοι δὲ μῦθοι συνδέουν αὐτὸν καὶ τὴν νῆσον. Σύζυγοί του εἶναι: ἡ *Λέσβος*, ἡ *Μυτιλήνη*, (ἢ καὶ μήτηρ του ἢ μάμμη ἢ θυγάτηρ) καὶ ἡ *Ἄντισσα* (ἐπίσης καὶ ὡς θυγάτηρ του φερομένη)· τέκνα του θεωροῦνται ἐν ἄλλοις καὶ πᾶσαι σχεδὸν αἱ λεσβιακαὶ πόλεις: *Ἀγαμήδη*, *Ἄντισσα*, *Ἀρίσβη*, *Ἐρεσός*, *Ἴσσα*, *Μήθυμνα*, *Μυτιλήνη*, *Πύρρα*· γαμβροί του: ὁ σύζυγος τῆς Μηθύμνης *Λεπέτυμνος* (ἐπώνυμος τοῦ ἐπὶ τῆς νήσου ὁμωνύμου ὄρους) καὶ ὁ σύζυγος τῆς ἰδίας ἢ τῆς Μυτιλήνης ἢ Μακαρίας τινὸς *Λέσβος*, ὅστις «κατά τι πυθόχρηστον μεθ' οἰκητόρων πλεύσας τήν τε νῆσον Λέσβον ὠνόμασε καὶ τοὺς λαοὺς Λεσβίους προσηγόρευσε»· τέλος ἔγγονός του: ὁ ἐκ τῆς Μυτιλήνης *Μύτων* οἰκιστὴς τῆς πρωτευούσης τῆς νήσου.

Κατὰ τοὺς ἄλλους μύθους πρῶτος ὁ *Ὀρέστης* μετὰ τοῦ *Πεισάνδρου* ἔστειλαν ἀποικίαν ἐκ Λακεδαίμονος, εἶτα ὁ υἱός του *Πενθίλος* καὶ τέλος *Ἀρχέλαος* ἢ *Ἐχέλας* ὁ Πενθίλου συνοδευόμενος ὑπὸ τῶν ἡρώων *Ἐνάλου καὶ Σμινθέου*. Ἄλλη ἐκδοχὴ φέρει μὴ ἐπιτυχόντας πλήρως τοῦ σκοποῦ των πάντας πλὴν τοῦ *Γρᾶ* (υἱοῦ τοῦ Ἐχέλα ἢ Πενθίλου) ἄγοντος σὺν ἄλλοις καὶ Λακεδαιμονίους. Ἡ ποικιλία τῶν μύθων δεικνύει ὅτι οἱ ἄποικοι οὗτοι ἦσαν παντοδαποὶ («αἴολοι») τὴν καταγωγὴν καὶ τὸν τόπον τῆς ἐξορμήσεως (Πελοπόννησος, Βοιωτία, Θεσσαλία, Μικρασία διὰ Θρᾴκης) καὶ ὅτι ὁ αἰολικὸς ἀποικισμὸς τῆς νήσου συνετελέσθη μετ' ἀλλεπαλλήλους καὶ μακροχρονίους ἐπιχειρήσεις. Εἰς αὐτὸν τὸν ἀποικισμὸν ὀφείλεται ἡ περίφημος «συγγένεια» τῶν Λεσβίων πρὸς τοὺς Λακεδαίμονας καὶ Βοιωτοὺς (Θουκυδ. Γ' 2) καὶ γλωσσικὴ συγγένεια τῆς Λέσβου πρὸς τὴν Βοιωτίαν καὶ Θεσσαλίαν.

Ἡ νῆσος ἐχρησίμευσεν ὡς σταθμὸς νέων Ἀχαιοαιολέων κατὰ τὴν πρὸς Ἑλλήσποντον ἐξόρμησιν καὶ τὴν ἅλωσιν τῆς Τροίας, μετὰ πολεμικὴν ὑποταγὴν τῶν πρώτων ἀποίκων. Παρ' Ὁμήρῳ βασιλεὺς τῆς νήσου εἶναι ὁ *Φόρβας*, ὅτε ὁ Ἀχιλλεύς, κατακτήσας αὐτήν, ὡδήγησεν εἰς Τροίαν τὴν βασιλόπαιδα *Διομήδην*, ἐνῷ ὁ Ἀγαμέμνων ὡδήγει τὰς ἑπτὰ γυναῖκας, τὰς ὁποίας ἔπειτα ὑπεσχέθη εἰς τὸν Ἀχιλλέα πρὸς κατάπαυσιν τῆς μεταξύ των ἔριδος. Μετὰ τὸν φόνον τοῦ Θερσίτου αὐτόθι καθαίρεται ὁ Ἀχιλλεὺς ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως θύσας εἰς τὸν Ἀπόλλωνα καὶ τὴν Ἄρτεμιν, εἰς Λέσβον δὲ θάπτεται ὑπὸ τοῦ Ἀχιλλέως καὶ Αἴαντος ὁ Παλαμήδης, καὶ μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Τροίας ἐδῶ συναντῶνται οἱ ἀρχηγοὶ (Διομήδης, Μενέλαος, Ὀδυσσεύς), συσκεπτώμενοι περὶ τῆς ἐπιστροφῆς (Ὀδύσ. γ' 167). Τότε ἐγένετο καὶ πάλη τοῦ Ὀδυσσέως πρὸς τὸν Λέσβιον βασιλέα *Φιλομηλεΐδην* ἢ κατὰ Εὐστάθιον δόλιος φόνος τοῦ Φιλομηλεΐδου.

Ἐπιδρομὴν ἀσιατικῶν φύλων ἴσως ὑποδηλοῖ ὁ μῦθος, καθ' ὃν Μύριννα ἡ βασίλισσα τῶν Ἀμαζόνων κατέκτησε τὴν Λέσβον, ἱδρύσασα «πόλιν Μυτιλήνην ὁμώνυμον τῇ μετασχούσῃ τῆς στρατείας ἀδελφῇ» (Διόδωρ. Γ' 55).

***Ἀρχαϊκοὶ χρόνοι.*** Διὰ τὰς ἀρχικὰς πρὸς ἀλλήλας σχέσεις τῶν λεσβιακῶν πόλεων ἐλλείπουν πληροφορίαι, πλὴν μόνον ὅτι οἱ Μηθυμναῖοι ἤδη πρὸ τοῦ Ε' αἰῶνος εἶχον ἐξανδραποδίσει τὴν Ἀρίσβην. Φαίνεται ὅτι ἅπασαι αἱ πόλεις εἶχον συνασπισθῆ ἐπ' ἴσοις ἢ ὡς ὑποτελεῖς εἰς τοὺς Μυτιληναίους, διότι ὁ μὲν Ἡρόδοτος σχεδὸν πάντοτε διὰ κοινοῦ ὀνόματος (Λέσβιοι) ἀναγράφει τοὺς νησιώτας ἢ μόνον «Μυτιληναίους» ἀναφέρει, ἡ δὲ νομισματοκοπία κατὰ πόλεις εἶναι πολὺ μεταγενεστέρα καὶ ἡ τὸ πρῶτον γνωστὴ δρᾶσις ἄλλης πλὴν τῆς Μυτιλήνης πόλεως ἀναφέρεται εἰς τὰ πελοποννησιακά. Περὶ τὸ 608—606 π. Χ. οἱ Ἀθηναῖοι διὰ τοῦ Φρύνωνος ἐπέτυχον τὴν ἅλωσιν τοῦ τρωϊκοῦ Σιγείου, ἀποικίας τῶν Μυτιληναίων. Τότε ὁ Πιττακὸς ἐφόνευσε τὸν Φρύνωνα καὶ ἐλύθησαν αἱ ἐχθροπραξίαι διὰ διαιτησίας τοῦ Κορινθίου Περιάνδρου· ἀλλὰ καὶ νέος Σιγειακὸς πόλεμος, τῶν Μυτιληναίων ὁρμωμένων ἐκ τοῦ γειτονικοῦ Ἀχιλλείου, ἐγένετο μετ' οὐ πολύ, ἡγεμονεύοντος ἐν Σιγείῳ τοῦ Πεισιστρατίδου Ἡγησιστράτου, ἀπολήξας εἰς τὴν ὁριστικὴν ἀπώλειαν τοῦ Σιγείου. Κατὰ τοὺς χρόνους τούτους περίπου ἐξηλείφθη ἡ τυραννὶς ἐν Μυτιλήνῃ. Σειρὰ τυράννων (Πενθιλίδαι, Κλεανακτίδαι, Μεγαλάγυρος, Μέλαγχρος, Μυρσίλος) ἀλληλοδιαδόχως κατελύθησαν, ἔδρασαν δὲ κατ' αὐτῶν ὁ Μεγακλῆς καὶ ὁ Σμέρδις, ἰδίως ὅμως ὁ Πιττακὸς καὶ ὁ Ἀλκαῖος μετὰ τῶν ἀδελφῶν του Κίκιδος καὶ Ἀντιμενίδα· τότε ἐγράφησαν καὶ τὰ «στασιωτικὰ» τοῦ Ἀλκαίου. Ἐπηκολούθησαν διενέξεις τοῦ θαρρήσαντος πλήθους καὶ τῶν εὐγενῶν, ἐπειδὴ δὲ συνέπεσε καὶ ὁ Σιγειακὸς πόλεμος, ἡ πόλις περιέβαλε τὸν Πιττακὸν δι' ἐκτάκτου ἐξουσίας («αἰσυμνητεία») πρὸς ἐκκαθάρισιν τῆς καταστάσεως. Ἡ δικτατορικὴ ἐξουσία του ἐξήγειρε πλείστους, οἵτινες ἐκπατρισθέντες τότε (ἐν αὐτοῖς καὶ ἡ Σαπφώ), ἐπανῆλθον μὲ ἐπὶ κεφαλῆς τὸν Ἀλκαῖον κατὰ τοῦ Πιττακοῦ, ὅστις τελικῶς νικήσας μετὰ δεκαετίαν «εἰς τάξιν ἀγαγὼν τὸ πολίτευμα κατέθετο τὴν ἀρχὴν» καὶ ἐτιμήθη διὰ κτηματικῶν δωρεῶν («Πιττάκειος γῆ»). Ὅτε (μέσα ΣΤ' αἰῶνος) ὁ Κροῖσος ἠνάγκασε τοὺς Μικρασιάτας εἰς «φόρου ἀπαγωγὴν» ἐφείσθη τῶν νησιωτῶν, ἐν οἷς καὶ οἱ Λέσβιοι, καὶ κατὰ προτροπὴν τοῦ Πιττακοῦ ἢ Βίαντος «ξεινίην συνεθήκατο» μὲ αὐτούς. Εἰς τὸν Κῦρον πιθανῶς ὑπετάγησαν οἱ Λέσβιοι οἰκειοθελῶς, προβλέποντες τὴν κατ' αὐτῶν ἐπιδρομὴν τοῦ Πέρσου στρατηγοῦ Ἁρπάγου, εἰς τὸ αἰολικὸν στράτευμα τοῦ ὁποίου κατελέγοντο ἴσως ὅτε ἐστράτευσε κατὰ τῆς Λυκίας. Τῷ 570 π. Χ. οἱ Μυτιληναῖοι, μόνοι τῶν Αἰολέων, κατελέγοντο εἰς τοὺς ἱδρυτὰς τοῦ ἐν Αἰγύπτῳ ἐμπορικοῦ σταθμοῦ «Ἑλλήνιον». Τῷ 550 π. Χ. οἱ Λέσβιοι ἐβοήθησαν τοὺς Μιλησίους κατὰ τοῦ Σαμίου Πολυκράτους, ὑποχρεωθέντες μετὰ τὴν ἧτταν νὰ σκάψουν ὅλην τὴν πέριξ τῆς Σάμου τάφρον. Τῷ 527—526 π. Χ. μετέσχον καὶ οἱ Μυτιληναῖοι τῆς εἰς Αἴγυπτον ἐκστρατείας τοῦ Καμβύσου, καθ' ἣν ἐθανατώθησαν 10 Αἰγύπτιοι ἀνθ' ἑκάστου φονευθέντος Μυτιληναίου. Ναυτικὴν βοήθειαν παρέσχον ἐπίσης οἱ Λέσβιοι τῷ 512 εἰς τὸν Πέρσην Ὀτάνην τὸν Σισάμνου κατὰ τῆς Λήμνου καὶ Ἴμβρου καὶ τῷ 513 π. Χ. εἰς τὸν Δαρεῖον κατὰ τῶν Σκυθῶν. Τότε Κώης ὁ Ἐρξάνδρου ἔλαβε παρὰ τῶν Περσῶν τὴν τυραννίδα τῆς Μυτιλήνης. Ἀπόπειρα ἀποτινάξεως τοῦ περσικοῦ ζυγοῦ ἐγένετο κατὰ τὴν ἰωνικὴν ἐπανάστασιν (499), ὁπότε οἱ Λέσβιοι κατ' ἐπανάληψιν μετέσχον τῆς ἐναντίον τῶν Περσῶν δράσεως, ἰδίᾳ δὲ τῆς ἐν Λάδῃ καὶ ἐν Μαλήνῃ ναυμαχίας, μεθ' ἣν ὑπετάγησαν ὑπὸ τοῦ περσικοῦ στόλου (492). Καὶ πάλιν ὑπὸ τοὺς Πέρσας, μετέσχον οἱ Λέσβιοι μετὰ τῶν Τενεδίων εἰς τὴν ἐκστρατείαν τοῦ Ξέρξου διὰ 40 πλοίων, ὁριστικῶς δὲ ἀπέστησαν τῶν Περσῶν, γενόμενοι δεκτοὶ εἰς τὸ «συμμαχικὸν» τῶν Ἑλλήνων μετὰ τὴν Μυκάλῃ (479) ναυμαχίαν· ἐκινδύνευσεν ὅμως ἡ νῆσος νὰ παραδοθῇ εἰς τοὺς Ἴωνας πρὸς ἐποικισμὸν καὶ ἐπικαρπίαν ὡς «μηδίσασα» κατὰ τὸν πόλεμον.

***Πελοποννησιακὸς πόλεμος.*** Τῆς ἀττικοδηλιακῆς συμμαχίας (478) μετέσχεν ἡ νῆσος ἐπὶ ἴσοις, μὴ καταβάλλουσα φόρον οὔτε πεζικόν, ἀλλὰ μόνον ναυτικῶς βοηθοῦσα. Ὡς τοιαύτη σύμμαχος μετέσχε τῆς ἐκστρατείας κατὰ Σάμου (440/1) παρασχοῦσα μετὰ τῶν Χίων εἰς μὲν τὴν ἐν Τραγίᾳ ναυμαχίαν 25 πλοῖα, κατὰ δὲ τὴν δευτέραν πολιορκίαν τοῦ Περικλέους 30 πλοῖα. Τοὺς χρόνους τούτους περίπου συνήφθη ἡ σύμβασις τῆς Μυτιλήνης μετὰ τῆς Φωκαίας διὰ τὴν κοπὴν κοινοῦ ἠλεκτρίνου νομίσματος, ἧς σῴζεται πλῆρες τὸ κείμενον. Πρὸ τῆς ἐνάρξεως τοῦ Πελοποννησιακοῦ οἱ Μυτιληναῖοι ἐπρότειναν εἰς τοὺς Λακεδαιμονίους ἀποστασίαν ἀπὸ τῶν Ἀθηνῶν, ἀρξαμένου δὲ τοῦ πολέμου οἱ Μυτιληναῖοι ἀπέστειλαν κατὰ τὴν προσβολὴν τῆς Ἐπιδαύρου ὑπὸ τοῦ Περικλέους 50 πλοῖα μετὰ τῆς Χίου καὶ μετέσχον εἰς τὴν ὑπὸ τοῦ Ἅγνωνος προσβολὴν τῆς Ποτιδαίας τῷ 429. Ἡ μελετωμένη ἀποστασία ἐπραγματοποιήθη τῷ 428 (θέρος), τῇ εἰσηγήσει τῶν Βοιωτῶν· ἔκτοτε ἡ νῆσος ἀπέβη ἓν τῶν σπουδαιοτέρων κέντρων τοῦ πολέμου καὶ ἤρξατο ἐπ' αὐτῆς ὁ μακροχρόνιος ἀνταγωνισμὸς Μυτιληναίων καὶ Μηθυμναίων. Αἱ παρασκευαὶ τῆς ἀποστασίας κατηγγέλθησαν ὑπὸ τῶν μόνων ἐπὶ τῆς νήσου ἀττικιζόντων Μηθυμναίων, τῶν Τενεδίων καὶ τῶν ἐν Μυτιλήνῃ προξένων τῶν Ἀθηναίων, ἀλλ' οἱ Ἀθηναῖοι ἠρκέσθησαν εἰς τὴν ἀποστολὴν πρεσβείας. Ἀποτυχόντες δέ, ἐφυλάκισαν τοὺς ἐν Ἀθήναις Μυτιληναίους, κατέσχον 10 πλοῖά των καὶ ἔστειλαν ὑπὸ Κλεϊπίδην τὸν Δεινίου 40 πλοῖα μὲ σκοπὸν τὴν δι' αἰφνιδιασμοῦ ἅλωσιν τῆς Μυτιλήνης, ἀποτυχοῦσαν λόγῳ ἐνημερώσεως τῶν Μυτιληναίων ὑπὸ κατασκόπου. Μετὰ ἀποτυχόντα ἔκπλουν τῶν Μυτιληναίων, συνήφθη ἀνακωχή, καθ' ἣν ἀπεστάλησαν πρεσβεῖαι, μία εἰς Ἀθήνας φροντίζουσα διὰ τὴν ἀνάκλησιν τοῦ στόλου, καὶ ἑτέρα εἰς Σπάρτην ζητοῦσα βοήθειαν. Τῆς πρώτης ἀπέτυχεν ὁ σκοπός, καὶ ἡ Μυτιλήνη ἐπολιορκεῖτο ἐκ νέου συστηματικῶς βοηθείᾳ Ἰμβρίων, Λημνίων κ. ἄ. Τὴν Μυτιλήνην ἐβοήθουν μόνον οἱ ἐπὶ τῆς νήσου συμμαχικαὶ πόλεις· ἐν τῷ μεταξὺ ὅμως ἐγένοντο ἐν Ὀλυμπίᾳ δεκτοὶ οἱ Μυτιληναῖοι εἰς τὴν Λακωνικὴν συμμαχίαν καὶ ὠργανοῦτο ἀποστολὴ εἰς Μυτιλήνην 40 πλοίων ὑπὸ τὸν Ἀλκίδαν. Μετά τινας ἐπιχειρήσεις τῶν Μυτιληναίων κατὰ τῆς Μηθύμνης καὶ τῶν Μηθυμναίων κατὰ τῆς Ἀντίσσης (φθινόπωρον 428) ἐπῆλθε Πάχης ὁ Ἐπικούρου, ἄγων ἐξ Ἀθηνῶν 1000 ὁπλίτας καὶ στενῶς πολιορκήσας τὴν Μυτιλήνην. Ὅτε δὲ τὸ ἔαρ τοῦ 427 ἔφθασεν εἰς Μυτιλήνην **Σάλαιθος**

Digitized by Google

ὁ Λακεδαιμόνιος, ὅπως ἐξωθήσῃ τὸν λαὸν εἰς ἔξοδον, ἐστασίασε τὸ διὰ πρώτην φορὰν ἐξοπλιζόμενον πλῆθος καὶ ὀργανωθὲν «κατὰ συλλόγους» ἠξίου ἄρτον καὶ εἰρήνην. Τότε προκειμένης ἐπικρατήσεως τῶν στασιαστῶν, «οἱ ἐν τοῖς πράγμασι δυνατοί» ἐπροτίμησαν τὴν συνθήκην, καθ' ἣν ὁ μὲν Πάχης εἰσῆλθεν εἰρηνικῶς (427 θέρος), ἀπέστειλε τοὺς λακωνίσαντας εἰς Τένεδον καὶ διὰ θαλάσσης εἰσῆλθεν εἰς Ἄντισσαν, οἱ δὲ Μυτιληναῖοι ἔπεμψαν πρέσβεις εἰς Ἀθήνας. Ὁ πρὸς βοήθειάν των πλέων Ἀλκίδας ἐπέστρεψεν· ὁ δὲ Πάχης, κυριεύσας καὶ τὴν Πύρραν καὶ Ἐρεσόν, ἀπέστειλεν εἰς Ἀθήνας τὸν Σάλαιθον, τοὺς ἐν Τενέδῳ καὶ πάντα ὕποπτον. Οἱ Ἀθηναῖοι ἀπεφάσισαν τότε, προτάσει Κλέωνος τοῦ Κλεαινέτου, τὴν ὁμαδικὴν θανάτωσιν τῶν ἐνηλίκων Μυτιληναίων καὶ τὸν ἐξανδραποδισμὸν τῶν ὑπολοίπων· εἰς νέαν ὅμως ἐκκλησίαν τοῦ δήμου ἐπεκράτησεν ὁ μετριοπαθὴς Διόδοτος ὁ Εὐκράτους καὶ καθ' ἣν στιγμὴν ὁ Πάχης ἤρχετο τῆς ἐφαρμογῆς τῆς πρώτης ἀποφάσεως, ἐνετάλη νὰ κατεδαφίσῃ τὰ τείχη μόνον καὶ νὰ διανείμῃ τὴν γῆν εἰς 3000 κλήρους, ἐνῷ ἐν Ἀθήναις ἐθανατοῦντο περίπου 1.000 Μυτιληναῖοι· οἱ λόγοι τοῦ Κλέωνος καὶ Διδότου καὶ ὁ τῶν εἰς Ὀλυμπίαν Μυτιληναίων πρέσβεων εἶναι οἱ περίφημοι λόγοι τοῦ γ′ βιβλίου τοῦ Θουκυδίδου. Ἔκτοτε περιῆλθον εἰς τοὺς Ἀθηναίους καὶ αἱ ἀσιατικαὶ κτήσεις τῆς Μυτιλήνης, οἱ δὲ Ἀθηναῖοι κληροῦχοι τῆς νήσου ἠρκέσθησαν εἰς τὴν εἴσπραξιν ἐτησίου μισθώματος δύο μνῶν κατὰ κλῆρον.

Ἐπὶ τετραετίαν οἱ Λέσβιοι φυγάδες ὠργανούμενοι ἐπὶ τῆς Μικρασίας κατέλαβον (423 θέρος) τὸ Ροίτειον καὶ τὴν Ἄντανδρον καὶ παρεσκεύαζον τὴν ἀπελευθέρωσιν τῆς νήσου καὶ τῶν ἀπολεσθεισῶν ἀποικιῶν της· ἐξεβλήθησαν ὅμως τῶν θέσεών των ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων στρατηγῶν Δημοδόκου καὶ Ἀριστείδου. Σύμμαχος, ἀναγκαστικὴ νῦν, μετέσχεν ἡ Λέσβος τῶν ἐν Μήλῳ ἀθηναϊκῶν ἐπιχειρήσεων (416) καὶ τῆς εἰς Συρακούσας ἐκστρατείας (415/3)· εἰς τὴν τελευταίαν μετέσχον μόνον οἱ Μηθυμναῖοι, μόνοι ἐπ' ἴσοις σύμμαχοι τῶν Ἀθηνῶν.

Μετὰ τὴν καταστροφὴν τῆς Σικελίας, εἰσηγήσει καὶ πάλιν τῶν Βοιωτῶν, ἡ νῆσος διὰ πρεσβείας (413 χειμὼν) ἔπεισε τὸν ἐν Δεκελείᾳ Ἆγιν νὰ ἀποστείλῃ εἰς Λέσβον ὑπὸ τὸν Ἀλκαμένη 300 ἄνδρας καὶ 20 πλοῖα καὶ παρασκευάσῃ νέαν ἀποστασίαν. Προηγήθη ὅμως ἀποστασία τῶν Χίων καὶ Ἐρυθραίων, μεθ' ἣν οἱ Χῖοι (13 πλοῖα) ἔπλευσαν ἐπὶ Λέσβον ἀποστήσαντες σύμπασαν τὴν νῆσον (412 θέρος). Ἀμέσως τότε οἱ Ἀθηναῖοι ἔπεμψαν εἰς Μυτιλήνην 20 πλοῖα ὑπὸ τοὺς Λέοντα καὶ Διομέδοντα, καταλαβόντας αἰφνιδιαστικῶς τὰ πλοῖα τῶν Χίων ἐν Μυτιλήνῃ καὶ τὴν πόλιν. Ὁ δὲ καταφθάσας Λακεδαιμόνιος ναύαρχος Ἀστύοχος εἰς Πύρραν καὶ Ἐρεσόν, ἀντὶ νὰ ἐπέλθῃ κατὰ τῆς Μυτιλήνης, ἠρκέσθη νὰ ἐνισχύσῃ διὰ ξηρᾶς τὴν Ἐρεσόν, Ἄντισσαν καὶ Μήθυμναν «ἄρχοντα προστάξας» τὸν Ἐτεόνικον· τὰ πάντα ὅμως εὑρίσκων ἐναντία, συνέλεξε τὸ στράτευμα εἰς Χίον καὶ ἡ νῆσος περιῆλθεν εἰς τοὺς Ἀθηναίους.

Νέαι προτάσεις ἀποστασίας ἐγένοντο (412 θέρος) πρὸς τὸν Ἀστύοχον ἐν Κύμῃ καὶ Φωκαίᾳ, ἀποτυχοῦσαι λόγῳ τῆς ἀρνήσεως τῶν Κορινθίων καὶ ἄλλων, ὡς καὶ αἱ κατὰ τὸ ἴδιον ἔτος γενόμεναι πρὸς τὸν ἐν Χίῳ Παιδάριτον. Τὸ ἑπόμενον ἔτος (411 θέρος) ἐνισχύθη ὑπὸ τοῦ Θρασύλου ἡ φρουρὰ τῆς Μηθύμνης καὶ κατεστάθησαν φύλακες παραμονεύοντες τὴν διὰ τοῦ διέκπλου πρὸς Ἑλλήσποντον δίοδον τοῦ Μινδάρου, ἐνῷ οἱ ἐν Κύμῃ Μηθυμναῖοι φυγάδες, ὑπὸ Ἀνάξανδρον τὸν Θηβαῖον, ἀποτυχόντες τὴν ἅλωσιν τῆς Μηθύμνης, ἐξήγειραν τὴν Ἐρεσόν. Κατ' αὐτῆς ἐπῆλθον ὁ Θράσυλος καὶ ὁ ἐκ Σάμου ἀφιχθεὶς Θρασύβουλος μετὰ 67 πλοίων, ἀλλὰ μαθόντες τὴν διέλευσιν τοῦ Μινδάρου κατέλιπον τὴν πολιορκίαν διώκοντες αὐτόν.

Μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Τέω ὑπὸ τῶν Λακεδαιμονίων (407), ὁ Καλλικρατίδας κατέλαβεν ἐξ ἐφόδου καὶ ἐλεηλάτησε τὴν ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων ἔμφρουρον Μήθυμναν· πληροφορηθεὶς δὲ τὸν ἐπίπλουν 70 ἀθηναϊκῶν πλοίων ὑπὸ τὸν Κόνωνα, Λέοντα καὶ Ἐρασινίδην, ἔπλευσε κατ' αὐτῶν. Ὁ Κόνων κατιδὼν τὴν δύναμιν τοῦ ἐχθροῦ, μετὰ μικρὰν σύγκρουσιν, εἰσῆλθεν εἰς Μυτιλήνην· ἀπολέσας δὲ αὐτόθι 30 πλοῖα, ἀνέσυρε τὰ πλεῖστα τῶν λοιπῶν ὑπὸ τὰ τείχη, ἄλλα δὲ πληρώσας λίθων ἐβύθισεν εἰς τὴν εἴσοδον τοῦ λιμένος καὶ ἀπεσύρθη εἰς τὴν ἀκρόπολιν. Ὁ Καλλικρατίδας καταλαβὼν τὰ πέριξ ὥρμησε τὴν ἑπομένην πρὸς «λύσιν τοῦ διαφράγματος» τῶν λιθοφόρων πλοίων, ἐπέτυχε δὲ τοῦτο καὶ καθωρμίσθη ὑπὸ τὰ τείχη, κατόπιν ἰδιοτύπων μαχῶν, καθ' ἃς οἱ Λακεδαιμόνιοι ἐναυμάχουν καὶ οἱ Ἀθηναῖοι ἀπὸ τῶν λιθοφόρων πλοίων καὶ τῶν χηλῶν τοῦ λιμένος ἠγωνίζοντο ὡς ἐν ξηρᾷ («τὴν ναυμαχίαν ἅμα καὶ πεζὴν ἐποιοῦντο μάχην»). Τότε ὁ Καλλικρατίδας, μετακαλέσας τοὺς Μηθυμναίους καὶ τὸ ἀπὸ τῆς Χίου στράτευμα, «περιεστρατοπέδευσε τὴν πόλιν καὶ πανταχόθεν προσβολὰς ἐποιεῖτο». Ὁ ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων σταλεὶς Διομέδων μόλις εἰσῆλθεν εἰς τὸν «Μυτιληναῖον Εὔριπον», ἀπώλεσε 10 πλοῖα καὶ διέφυγε μετὰ τῶν ὑπολειφθέντων δύο. Τότε ὠργανώθη ἡ περιώνυμος ἐκστρατεία, τῆς ὁποίας ἀποτέλεσμα ἦτο ἡ ἐν Ἀργινούσαις ναυμαχία (406), καθ' ἣν ἡττήθη κατὰ κράτος ὁ Καλλικρατίδας καὶ ὁ ἐν τῇ πολιορκίᾳ ἀντικαταστάτης του Ἐτεόνικος κατέλιπε κρύφα τὴν Μυτιλήνην, διακομισθεὶς εἰς Χίον (στόλος) καὶ Πύρραν ἢ Μήθυμναν (πεζοί). Ἔκτοτε ἡ νῆσος κατείχετο ὑπὸ τῶν Ἀθηναίων μέχρι τῆς ἐν Αἰγὸς ποταμοῖς ἥττης (405), ὅτε ὁ Λύσανδρος πλεύσας μετὰ 200 πλοίων εἰς Λέσβον «κατεστρέψατο τάς τε ἄλλας πόλεις ἐν αὐτῇ καὶ Μυτιλήνην».

***Δ′ Αἰών.*** Τὸ ὑπὸ τῆς Σπάρτης ἐπιβληθὲν δεκαρχικὸν πολίτευμα διετηρήθη ἐν Λέσβῳ μέχρι τῆς ναυμαχίας τῆς Κνίδου, μεθ' ἣν (394 θέρος) πρώτη ἡ Μυτιλήνη ἐξέβαλε τοὺς Λακεδαιμονίους. Μετὰ δὲ τὴν μετάστασιν τοῦ Βυζαντίου πρὸς τοὺς Ἀθηναίους (390), ὁ Θρασύβουλος μὲ 40 πλοῖα εἰσῆλθεν ἀκωλύτως εἰς Μυτιλήνην (389), ὅπου συντάξας 400 ἐπιβάτας, τοὺς ἐκ τῶν λοιπῶν λακωνιζουσῶν πόλεων τῆς νήσου ἀττικίζοντας φυγάδας καὶ πλείστους Μυτιληναίους ἐπῆλθε κατὰ τῆς Μηθύμνης, ἣν προήσπιζον καὶ οἱ λακωνίζοντες φυγάδες Μυτιληναῖοι. Κατὰ τὴν σύγκρουσιν ἐφονεύθη ὁ Λάκων ἁρμοστὴς Θηρίμαχος, μεθ' ὃ ὑπετάγησαν, βίᾳ ἢ «καθ' ὁμολογίαν», πᾶσαι αἱ λοιπαὶ πόλεις καὶ συνελέγη ἀμέσως συμμαχικὴ δύναμις κατὰ τῆς Ρόδου. Μετέσχε τότε ἡ νῆσος τοῦ Κορινθιακοῦ πολέμου (395—387) ὡς μέλος τῆς κορινθιακῆς συμμαχίας, κατὰ τὴν Ἀνταλκίδειον εἰρήνην (387) ἀφέθη αὐτόνομος, περιέπεσεν εἶτα εἰς τὴν ἐξουσίαν τῶν Σπαρτιατῶν (385) καὶ τέλος προσεκλήθη εἰς τὴν δευτέραν ἀθηναϊκὴν συμμαχίαν (375) διὰ πρέσβεων. Τότε ἦρχεν ἐν Μηθύμνῃ ὁ, κατὰ Ἰσοκράτην, ἀγαθὸς καὶ ἥσυχος ἀττικίζων τύραννος Κλέομμις ὁ Ἀπολλοδώρου. Μετὰ ἔτη πολλὰ (351 π. Χ.) εἶχεν ἤδη περιπέσει ἡ νῆσος εἰς βαρυτάτην ὀλιγαρχίαν· τότε ἦρχεν ἐν Μυτιλήνῃ (347 π. Χ.) ὁ τύραννος Κάμμης, ἐχθρὸς τῶν Ἀθηναίων, καὶ ἐξωρίσθη τῆς νήσου ὁ μουσικὸς Ἀγήνωρ ὁ Μυτιληναῖος, ὑπὲρ τῆς ἐπαναφορᾶς τοῦ ὁποίου ὁ Ἰσοκράτης (351 π. Χ.) ἔγραψε τὴν Η′ ἐπιστολήν του («Τοῖς Μυτιληναίων ἄρχουσιν»).

***Ἀλεξανδρινοὶ χρόνοι.*** Μετὰ τὴν ἐν Γρανικῷ μάχην (334), οἱ Μυτιληναῖοι, καταλύσαντες τὴν ὀλιγαρχίαν, συνῆψαν συμμαχίαν μετὰ τοῦ Ἀλεξάνδρου, τὸν ὁποῖον ἐβοήθησαν ναυτικῶς καὶ εἰς τοῦ ὁποίου τὸ στράτευμα κατέλαβον ὑψηλὰς θέσεις οἱ Μυτιληναῖοι Ἐρίγυιος καὶ Λαομέδων οἱ Λαρίχου. Τῷ 333 π. Χ. ὅμως, Μέμνων ὁ Ρόδιος καὶ μετὰ τὸν θάνατόν του οἱ Αὐτοφραδάτης καὶ Φαρνάβαζος ὁ Ἀρταβάζου ἀποκατέστησαν ἐπὶ τῆς νήσου τὴν περσικὴν κυριαρχίαν διὰ στόλου 300 πλοίων· ἀμέσως κατελήφθη ἡ Ἄντισσα, Μήθυμνα καὶ Πύρρα, ἡ δὲ Μυτιλήνη μετὰ μακρὰν πολύνεκρον πολιορκίαν. Κατὰ τὴν γενομένην συνθήκην (συμμαχία μετὰ τῶν Περσῶν κατὰ τὸ πρότυπον τῆς Ἀνταλκιδείου) ἐξεδιώχθησαν «οἱ ξένοι οἱ παρ' Ἀλεξάνδρου κατὰ συμμαχίαν ἥκοντες», καθῃρέθησαν «αἱ πρὸς Ἀλεξάνδρου στῆλαι», ἐπανῆλθον οἱ ἀριστοκράται (καὶ ἐξ αὐτῶν κατεστάθη τύραννος ἐν Μυτιλήνῃ ὁ Διογένης), ἀπεδόθη τὸ ἥμισυ τῶν κατασχεθεισῶν περιουσιῶν των καὶ ἐγκατεστάθη περσικὴ φρουρὰ ὑπὸ Λυκομήδη τὸν Ρόδιον. Ἐξεδιώχθησαν ὅμως οἱ Πέρσαι μετ' οὐ πολὺ ἐκ Λέσβου ὑπὸ Ἡγελόχου τοῦ Ἱπποστράτου, ὅστις ἄγων στόλον ἐξ Αἰγύπτου, συνέλαβεν ἐν Χίῳ τὸν τύραννον Μηθύμνης Ἀριστόνικον, ἐξέβαλεν ἐκ Μυτιλήνης τοὺς ὑπὸ τὸν Ἀθηναῖον Χάρητα τὸν Θεοχάρους δισχιλίους Πέρσας φρουρούς, «ὁμολογίᾳ προσηγάγετο» τὰς ὑπολοίπους πόλεις καὶ ἐθανάτωσε τὸν Ἀριστόνικον. Εἰς τὴν περίοδον αὐτὴν τοποθετητέα τὰ διασωθέντα κατὰ τῆς τυραννίδος ψηφίσματα τῶν Ἐρεσίων, καθ' ἃ ἐθανατώθησαν οἱ τύραννοι Ἀγώνιππος, Εὐρυσίλαος κ. ἄ. καὶ ἐκηρύχθησαν ἐναγεῖς οἱ ἀπόγονοί των. Ἡ νῆσος διετήρει σχέσεις μετὰ Ἀντιγόνου τοῦ Μονοφθάλμου καὶ Ἀριδδαίου Φιλίππου (τέλη Δ′ αἰῶνος), μεθ' ὃ (Γ′ αἰὼν) περιῆλθε σχεδὸν εἰς τοὺς Πτολεμαίους, οἵτινες καὶ θείων τιμῶν ἔτυχον: ἐν Ἐρεσῷ ἱδρύθη «Πτολέμαιον» πρὸς τιμὴν τῶν Πτολεμαίων Β′ καὶ Γ′ (285—221 π. Χ.) ἀνακηρυχθέντων «θεῶν εὐεργετῶν» καὶ κατεστάθησαν γυμνικοὶ κ. ἄ. ἀγῶνες («Πτολεμαεῖοια», «ἀ ἀμέρα ἀ τῷ βασίλεος», κ. τ. τ.)

Περὶ τοὺς χρόνους τούτους ὑπέφερεν ἡ νῆσος ὑπὸ Αἰτωλῶν πειρατῶν καὶ ἐγένετο (220 ἢ 193 π. Χ.) συνθήκη πρὸς τοὺς Αἰτωλούς, καθ' ἣν ἀπηγορεύετο ἡ σύλληψις Μυτιληναίων καὶ ἐλυτρώθησαν οἱ αἰχμαλωτισθέντες. Τῷ 207 π. Χ. Λέσβιοι πρέσβεις ἐμεσίτευον παρὰ τοῖς Αἰτωλοῖς πρὸς συνθηκολόγησιν μετὰ Φιλίππου Ε′. Κατὰ τὸν πόλεμον Περγαμηνῶν καὶ Βιθυνῶν προσεβλήθη ὑπὸ τῶν τελευταίων ἡ Μήθυμνα καὶ κατὰ τὴν γενομένην συνθήκην (205 π. Χ.) Ἀτάλλου Α′ Σωτῆρος καὶ Προυσίου ὡρίζοντο 100 τάλαντα ὑπὸ τοῦ δευτέρου πρὸς τὴν Μήθυμναν καί τινας ὁμοιοπαθεῖς πόλεις. Τῷ 190 π. Χ. κατὰ τὸν πόλεμον Ρωμαίων καὶ Συρίας κατελήφθη ἡ ἐπὶ τῆς Ἀσίας «Περαία Μυτιληναίων» ὑπὸ τοῦ Ἀντιόχου Γ′ τοῦ Μεγάλου. Κατὰ τὸν μακεδονικὸν πόλεμον (172—168) οἱ Ἀντισσαῖοι παρέσχον καταφύγιον εἰς τὸν ναύαρχον τοῦ Περσέως Ἀντήνορα, κατὰ τὴν λῆξιν ὅμως τοῦ πολέμου (168 π. Χ.) ἐτιμωρήθησαν ὑπὸ τῶν Ρωμαίων διὰ κατασκαφῆς τῆς πόλεώς των καὶ συνοικήσεως εἰς Μήθυμναν.

***Ρωμαϊκοὶ χρόνοι.*** Ἡ ρωμαϊκὴ κυριαρχία ἐπὶ τῆς νήσου συνεπληρώθη περὶ τὸ 88 π. Χ. ὑπὸ Μάρκου Μινουκίου Θέρμου καταστρέψαντος τὴν Μυτιλήνην εἰς ἐκδίκησιν τοῦ θανάτου τοῦ Μανλίου Ἀκυλίου, ὅστις καταφυγὼν καὶ «νοσοκομούμενος» εἰς Μυτιλήνην, ηὐτοκτόνησε, προκειμένου νὰ παραδοθῇ δέσμιος ὑπὸ τῶν Μυτιληναίων εἰς τὸν Μιθριδάτην ΣΤ′ Εὐπάτορα. Ὑπὸ τοὺς Ρωμαίους ἐν τούτοις νέα ὤθησις πρὸς ἀνάπτυξιν τοῦ τόπου ἐδόθη διὰ σειρᾶς προνομιῶν, ἀρχομένων ἀπὸ τῆς μερικῆς ἀστικῆς αὐτονομίας τῆς παρασχεθείσης εἰς τοὺς Μυτιληναίους (62 π. Χ.) ὑπὸ τοῦ Πομπηΐου διὰ προσωπικῆς ἐπεμβάσεως τοῦ ἱστορικοῦ Θεοφάνους τοῦ Μυτιληναίου. Ὁ Πομπήϊος ἀνεκηρύχθη τότε «σώτηρ καὶ κτίστας τῶ δάμου», ὁ Θεοφάνης «Ζεὺς ἐλευθέριος», ὁ υἱός του Μ. Πομπήϊος Θεοφάνης «εὐεργέτης καὶ κτίστας» καὶ ἀναλόγως ἐτιμήθησαν οἱ ἀπόγονοί του μέχρις ἕκτης ἔτι γενεᾶς. Κατὰ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον παρέμεινεν εἰς Μυτιλήνην ἡ σύζυγος τοῦ Πομπηΐου Κορνηλία καὶ ὁ υἱός του Σέξτος, οὓς μετὰ τὴν ἧτταν τῶν Φαρσάλων (48 π. Χ.) παρέλαβε φεύγων εἰς Αἴγυπτον. Ἐπὶ Καίσαρος, πρὸς ὃν εἶναι γνωσταὶ δύο πρεσβεῖαι ὑπὸ τὸν ρήτορα Ποτάμωνα τὸν Λεσβώνακτος, ἐξεχωρήθησαν νέαι ἐλευθερίαι. Τῆς πρώτης πρεσβείας, συγχαρητηρίου διὰ τὴν νίκην τῶν Φαρσάλων, μετέσχον ὁ ρήτωρ Κριναγόρας ὁ Καλλίου κ. ἄ. Ἡ δευτέρα (45 π. Χ.), ἐπέτυχε τὴν ἀνανέωσιν τῆς προϋπαρχούσης συμμαχίας καὶ τῶν προνομιῶν. Τῷ 36 π. Χ. ὁ Σέξτος μετὰ τὴν ὑπὸ τοῦ Ἀγρίππα ἧτταν, παραμένων εἰς Μυτιλήνην συνεκέντρωσε διαφόρους Μυτιληναίους φίλους τοῦ πατρός του ἢ τυχοδιώκτας καὶ ἄλλους ἐκ Σικελίας καὶ ἀνέλαβε τὸ «στρατηγικὸν σχῆμα», προτιθέμενος νὰ καταλάβῃ τὴν Μυτιληναίων Περαίαν ἐπὶ τῆς μικρασιατικῆς ἀκτῆς καὶ νὰ προσεταιρισθῇ τοὺς Πάρθους· ἀπεχώρησεν ὅμως ἐκ Λέσβου εἰς Νικομήδειαν, μαθὼν τὴν κατ' αὐτοῦ παρὰ τοῦ Ἀντωνίου ἀποστολὴν στόλου. Τῷ 26—25 π. Χ. νέα πρεσβεία ἀπεστέλλετο εἰς τὸν ἐν Ταρρακῶνι Αὔγουστον, ἐπιτυχοῦσα τὴν σύναψιν συνθήκης οὐδετερότητος καὶ συμμαχίας Μυτιληναίων καὶ συγκλήτου, ἀνάλογον τῆς ὁποίας ἐπέτυχε καὶ ἡ Μήθυμνα. Ἡ συναγωγὴ τῶν ἀποφάσεων τῆς Μυτιλήνης καὶ τῆς συγκλήτου, τῆς σχετικῆς ἀλληλογραφίας καὶ ἄλλαι πράξεις ἀπετέλεσαν τὸ ἐν Μυτιλήνῃ «Ποταμώνειον» μνημεῖον, τοῦ ὁποίου ἱκαναὶ πλάκες ἐσώθησαν ἐντετειχισμέναι εἰς τὸ αὐτόθι φρούριον· διὰ τὰς ὑπηρεσίας αὐτὰς προσεφέρθησαν ἐν Μυτιλήνῃ εἰς τὸν Ποτάμωνα καὶ τὰ φερώνυμα κτήματα («Ποταμώνεια»).

Τῷ 23 π. Χ. διέτριβεν ἐν Μυτιλήνῃ ὁ ὑπὸ δυσμένειαν Ἀγρίππας, ἐντολῇ τοῦ Αὐγούστου, ὅστις εἶχε καταστήσει τὴν νῆσον ἕνα τῶν ἐπισημοτέρων τόπων περιορισμοῦ. Τῷ 18 μ. Χ. μετέβη εἰς Μυτιλήνην ὁ Γερμανικός, γενόμενος πρόξενος νέων προνομίων καὶ ὀνομασθεὶς «πάτηρ πάτριδος». Κατέστη δὲ σὺν τῷ χρόνῳ ἐπιφανὴς ἡ νῆσος, ὥστε ὁ Τιβέριος (32 μ. Χ.), καὶ αὐτὸς ἀνακηρυχθεὶς «τᾶς πόλιος ἐπιφανέστατος κτίστας», νὰ θεωρήσῃ εὐδαιμονίαν τὴν εἰς Λέσβον ἐξορίαν καὶ νὰ στερήσῃ αὐτῆς τὸν Ἰούνιον Γαλλίωνα. Ἀλλ' αἱ σὺν τῷ χρόνῳ παρασχεθεῖσαι εὐεργεσίαι πιθανῶς ἠρθησαν ἐπὶ Οὐεσπασιανοῦ (70 μ. Χ.), ὅτε καὶ ἐγένετο ρωμαϊκὴ ἐπαρχία ἡ νῆσος ἕως τοῦ Ἀδριανοῦ (138—161 μ. Χ.) ὅστις, ἀποκαταστήσας τὰ πρότερα, ἀνεκηρύχθη «σώτηρ καὶ οἰκιστάς», «Ζεὺς Ἐλευθέριος καὶ Ὀλυμπιόκτιστος». Καθ' ὅλον τὸ διάστημα τοῦτο διεμορφώθη σύστημα συνθηκῶν («ὁμονοιῶν») τῆς Μυτιλήνης μετὰ τῶν γειτονικῶν πολιτειῶν: μετὰ τῆς Περγάμου ἐπὶ Ποτάμωνος (Α′ π. Χ. αἰών), Ἀντωνίνου Πίου (138—161) καὶ Οὐαλλεριανοῦ (253—260), μετὰ τοῦ Ἀδραμυττίου ἐπὶ Ποτάμωνος καὶ ἐπὶ Λευκίου Οὐήρου (161—169), μετὰ τοῦ Βυζαντίου ἐπὶ Οὐαλλεριανοῦ κ.ἄ. Ἤδη δὲ προϋπῆρχε καὶ τετραμερὴς συμμαχία Μυτιλήνης, Ἐφέσου, Περγάμου καὶ Σμύρνης.

Ἰδιάζουσα εἶναι ἡ τότε ἐπὶ τῆς νήσου ἀναπτυχθεῖσα Καισαρολατρεία (Kaiserkult). Ἀπεδόθησαν εἰς ἐξέχοντα πρόσωπα τοῦ καισαρικοῦ οἴκου ποικίλαι κοσμικαὶ τιμαί, προτομαὶ Καισάρων καὶ συγγενῶν των ἐκόσμησαν τὰ λεσβιακὰ νομίσματα, πρὸ παντὸς ὅμως ἐλατρεύθησαν ὡς «θεοὶ νέοι», «σέβαστοι καὶ εὐσεβεῖς». Οἱ αὐτοκράτορες ἐπεκλήθησαν διὰ τῶν δικῶν προσωνυμιῶν («μέγιστος», «ἐλευθέριος», «ὀλύμπιος», «ὀλυμπιόκτιστος») καὶ αἱ γυναῖκες δι' ἰδιοτήτων τῆς Ἀφροδίτης («Νέα θεὰ Ἀφροδίτη», «Ἀφροδίτη γενέτειρα»), τῆς Δήμητρος («θεὰ Αἴολις Καρποφόρος») ἢ ἄλλων («νέα θεὰ Βολλάα»). Εἰς ἀπείρους ἐπιγραφὰς ἀναφέρονται τελούμεναι κατὰ τακτὰς περιόδους αἱ «τῶν σεβάστων καὶ τῷ οἴκῳ αὔτων τείμαι» («νέα μυστήρια», «Καισάρεια», «Σεβάστεια», «γενέθλια», κ. ἄ.) ὡς καὶ διάφοροι λειτουργοὶ διὰ τὰς ἐν γένει τελετὰς πρὸς τιμὴν τοῦ αὐτοκρατορικοῦ οἴκου («προθύτας τοῦ θειοτάτου αὐτοκράτορος», «ἴρευς καὶ ἀρχίρευς τῶν σεβάστων», «ἰρατεύσας τῷ οἴκῳ τῶν σεβάστων») ἢ συγκεκριμένων προσώπων (γυμνασίαρχος τῆς Ἀγριπ-

Digitized by Google

πίνης, ἀγωνοθέτης τοῦ Γαΐου Γερμανικοῦ, κ. ἄ.). Ὀφείλεται δὲ ἡ ἀνάπτυξις τῆς λατρείας αὐτῆς εἰς γενικωτέρους ἀλλὰ καὶ εἰς τοπικοὺς λόγους, ὡς τὰ ἀλλεπάλληλα προνόμια, δι' ὧν ἐξαιρετικῶς περιέβαλον οἱ Ρωμαῖοι τὴν Μυτιλήνην.

***Ναυτιλία καὶ ἀποικίαι.*** Πλὴν τῆς περιφήμου ἀμπελουργίας, κυρία πηγὴ πλουτισμοῦ τῆς νήσου ἦτο ἡ ναυτιλία. Μετὰ τὰς μυθικὰς ἀποικίας τοῦ Μάκαρος εἰς Χίον, Σάμον, Κῶν, Ρόδον κ. ἄ. («Μακάρων νῆσοι»), μαρτυρούσας τουλάχιστον παναρχαίαν στενὴν ἐπαφὴν τῶν νήσων αὐτῶν, ἡ μετέπειτα ἱστορία τῆς Λέσβου εἶναι ἱστορία μακρινῶν τυχοδιωκτικῶν ταξιδίων καὶ ναυτικῶν συμμαχιῶν καὶ πολέμων· ὁ Ἀντιμενίδας, ἀδελφὸς τοῦ Ἀλκαίου, ἐπολέμησεν ἐν Βαβυλωνίᾳ, ὁ Χάραξος, ἀδελφὸς τῆς Σαπφοῦς, διεξῆγε ζωηρὸν ἐμπόριον ἐν Αἰγύπτῳ, νῆσος *Λέσβος* ὑπῆρχεν ἐπὶ τοῦ Νείλου καὶ εἰς τὸ ἐν Αἰγύπτῳ *Ἑλλήνιον* μόνοι τῶν Αἰολέων μετεῖχον οἱ Μυτιληναῖοι ἔμποροι. Ὅλη ἡ ἔναντι τῆς νήσου ἀκτὴ ἔβριθεν ἀποικιῶν («σχεδὸν δέ τι καὶ μητρόπολις ἡ Λέσβος ὑπάρχει τῶν αἰολικῶν πόλεων», *Στράβ.* 616), ὥστε νὰ καλῆται «Μυτιληναίων αἰγιαλὸς» ἢ «Περαία», ἐφ' ἧς «αἱ τῶν Μυτιληναίων κῶμαι» ἢ «πόλεις αἱ ἀκταῖαι»: *Ἄντανδρος* (νῦν Σκάλα Ἀβτζιλάρ), *Ἀταρνεὺς* (Ντικελῆ), *Ἄττεα* (Ἀγιασμάτ), *Ἡράκλεια* (Νεμροὺντ Καλεσί), *Κορυφαντὶς* (Ἐσκὶ-Μεζαρλίκ), *Πιτάνη* (Τσανταρλῆ) κ. ἄ. μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Καΐκου. Ἐπὶ τῆς Τρῳάδος ὑπῆρχον ἀποικίαι: τὸ *Ἀχίλλειον* (Κοὺμ-Καλέ), ἡ *Ἀρίσβη*, τὸ *Ροίτειον* (Παλαιοχώρι τοῦ Ἐρένκιοϊ) καὶ τὸ *Σίγειον* (Γενὶ Σεχὶρ) τῶν Μυτιληναίων, ἡ *Ἄσσος* (Μπεχρὰν Καλεσὶ) τῶν Μηθυμναίων, ἴσως δὲ καὶ ἡ *Θήβη* κ. ἄ. Καὶ ἐπ' αὐτῆς τῆς Θρᾴκης ἡ *Αἶνος*, *Ἀλωπεκόννησος* (Σούβλας κάβος), *Μάδυτος*, *Σηστὸς* (Μπόγιαλι Καλεσὶ) κ. ἄ. Ταύτας ἀπέβαλον οἱ Λέσβιοι σὺν τῷ χρόνῳ καὶ ἰδίως κατὰ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον.

***Δημόσιος βίος.*** Ἡ μορφὴ τῶν λεσβιακῶν πολιτευμάτων ἐξηρτήθη ἐκ τῶν ἑκάστοτε ἐπικρατησασῶν μερίδων (μηδίζοντες, ἀττικίζοντες, λακωνίζοντες κ.οὕ.κ.). Ἀντιπροσωπευτικὰ σώματα καὶ λαϊκαὶ σύνοδοι ἦσαν ἡ βουλὴ (ἀ βόλλα) καὶ ἡ ἐκκλησία τοῦ δήμου (ὁ δᾶμος)· τῆς πρώτης ἀξιωματοῦχοι ἦσαν «ὁ βόλλαρχος» καὶ «ὁ γραμματεὺς τᾶς βόλλας»· κατὰ τοὺς ρωμαϊκοὺς χρόνους (Β' μ. Χ. αἰὼν) ὑπῆρχε τὸ «κοινὸν Λεσβίων» καὶ πολιτικαὶ ρωμαϊκαὶ ἐξουσίαι («οἱ Ρώμαοι» ἐν Μηθύμνῃ). Ἐν Μηθύμνῃ ὑπῆρχε καὶ ὀργάνωσις: κατὰ φυλὰς («Αἰολίς», κτλ.) μὲ τακτικὰς συνόδους τῶν «συμφυλετῶν» καὶ ἀξίωμα τὴν «φυλαρχίαν»· καὶ κατὰ χιλιοστύας («αἱ χελληστύες») μὲ ἀξίωμα τὴν «χελληστυαρχίαν» καὶ τακτικὰς ἐπίσης συνόδους («Ἐρυθρεῖς», «Πρωτεῖς», «Σκυρεῖς», «Φωκεῖς», κ. ἄ.). Ἄλλα ἀξιώματα ἦσαν τὸ πρυτανικὸν («πρότανις») καὶ τὸ στρατηγικὸν («στρόταγος», «στρόταγος ὁ ἔναρχος»). Δημόσια ἐπίσης ὑπουργήματα γνωστὰ ἐξ ἐπιγραφῶν εἶναι τὰ τοῦ: «ἀγορανόμου», «ἀρχιάτρου», «γραμματέως», «δογματογράφου», «ἐξεταστοῦ», «ἐπόπτου», «ταμίου», «φίσκου», ἡ «ἐκδικία», «νομοφυλακία», «παιδονομία» κ. ἄ. Τινῶν ἐκ τούτων ἡ ἀκριβὴς ἔννοια ἀγνοεῖται, ἄλλων δὲ συμπίπτει πρὸς τὴν καθ' ὅλας τὰς ἀρχαίας πόλεις κοινήν. Πλὴν τούτων ἀξιώματα πανηγυρικοῦ χαρακτῆρος ἦσαν τὰ τοῦ: «ἀγωνοθέτου», «γυμνασιάρχων» (τῶν νέων, τῶν ἐφήβων), «δρομαγέτου», «ἱεροκήρυκος» κ. ἄ. Περὶ τοῦ δικαίου ἐλάχιστα εἶναι γνωστά, ἐκ δὲ τῶν νομοθετῶν ἀναφέρονται ὁ Μακαρεὺς («νόμον ἔγραψε πολλὰ τῶν κοινῇ συμφερόντων περιέχοντα»), Πιττακὸς («τοῖς μεθύουσι διπλᾶ τὰ ἐπιτίμια» κ. ἄ.) καὶ ὁ Ποτάμων («νομοθέτας» ἐν ἐπιγραφαῖς).

***Μετρολογία.*** Μονάδες μήκους γνωσταί: ὁ «δάκτυλος», ἡ «παλαιστὴ» (παλαίστα) καὶ ὁ πῆχυς. Ἐπιφανείας: τὸ ρωμαϊκὸν «ἰούγερον», ὁ «μόρος» καὶ τὸ «ἡμιμόριον». Διὰ τὴν μέτρησιν ὑγρῶν: ὁ «ξέστης», ἴσως δὲ καὶ ἡ «λάγηνος», ἐξ ἧς τὸ σημερινὸν «λαγήνι» (διὰ τὸ ἔλαιον, χλγρ. 8,160—8,196). Διὰ τὴν μέτρησιν στερεῶν ὑπῆρχεν ἴσως ὁ «μόδιος» ἐξ οὗ τὸ σημερινὸν «μόδι» (διὰ τὸν ἐλαιόκαρπον, 640 χλγρ.), εὑρέθησαν δὲ σταθμία «μνᾶς» (466 γραμ.) καὶ «πενταμναίου» (2.160 γρμ.) μολύβδινα. Νομισματικὰς μονάδας εἶχον τοὺς χρυσοῦς «στατῆρας», τὰς «ἀλεξανδρείας» κ. ἄ. «δραχμὰς» καὶ τὸ «δηνάριον». Ἡ μέτρησις τοῦ χρόνου ἐγίνετο εἰς ἔτη («κατ' ἐνίαυτον») καὶ κατὰ πρυτάνεις («ἐπὶ προτάνιος») καὶ στρατηγοὺς ἢ βασιλεῖς ἐπὶ Πτολεμαίων· ἐκ τοῦ μηνολογίου τῶν λεσβιακῶν πόλεων εἶναι γνωστοὶ οἱ μῆνες: «Ἀπολλώνιος», «Διονύσιος», «Πτολεμαῖος» (Μήθυμνα), «Θεοδαίσιος», «Κορύδιος», «Πανθήϊος», «Πομπήϊος», «Φράτριος» (Μυτιλήνη), «Ἀγερράνιος», «Ὁμολόϊος» (Ἐρεσσός), πάντες ἀναφερόμενοι εἰς λατρευτικὰς τελετάς.

***Τέχναι καὶ γράμματα.*** Ἐπὶ τῆς Λέσβου ἀνεπτύχθη διανοητικὴ κίνησις, ὑπερβαλλομένη μόνον ὑπὸ τῆς ἐν Ἀθήναις. Κατ' ἐξοχὴν λεσβιακὴ τέχνη ἦτο ἡ *μουσική*, πρὸς τὴν ἀνάπτυξιν τῆς ὁποίας ἐπὶ τῆς νήσου πλεῖστοι μῦθοι συνεδέθησαν: ὁ Μακαρεὺς ἔχει θεραπαινίδας διὰ τὴν σύζυγόν του τὰς Μούσας, πρὸς ἃς «στήλας χαλκᾶς» καὶ θείας τιμὰς κατέστησεν ἡ θυγάτηρ του Μεγακλώ· ἐπίσης τοῦ Ὀρφέως ἡ κεφαλὴ μετὰ τὸν φόνον του φέρεται ὑπὸ τῶν κυμάτων εἰς Λέσβον ὅπου ἐτάφη, ὁ ἴδιος δὲ ἐνοικεῖ εἰς ἄντρον τῆς νήσου καὶ χρησμοδοτεῖ καὶ ἡ παρουσία του καθιστᾷ μουσικωτάτους οὐ μόνον τοὺς κατοίκους, ἀλλὰ καὶ τὰ ζῷα τῆς νήσου. Ὠργανωμέναι σχολαὶ ὑπῆρχον ἡ τοῦ Τερπάνδρου, κατὰ τὴν παράδοσιν διασώσαντος τὴν νῆσον ἐκ τῆς διαφθορᾶς διὰ τῆς μουσικῆς, καὶ αἱ περίφημοι τῆς Σαπφοῦς καὶ τῶν ἀντιτέχνων Γοργοῦς καὶ Ἀνδρομέδας, συγκεντροῦσαι παντοδαπὰς Ἑλληνίδας: Μιλησίας, Κολοφωνίας, Σαλαμινίας κ.ἄ. Πλείστας μουσικὰς εὑρέσεις συνδέει ἡ παράδοσις μὲ τὴν Λέσβον· ἀποδίδονται εἰς τοὺς Λεσβίους ἡ ἑπτάχορδος καὶ ἐννεάχορδος λύρα, διάφορα ἀσιατικὰ ὄργανα καὶ τὸ πλῆκτρον, οἱ κιθαρῳδικοὶ καὶ λυρικοὶ νόμοι, τὰ σκολιὰ μέλη, ὁ ἔλεγος καὶ αὐτὸς ὁ διθύραμβος, γενικὴ δὲ «μετάστασις τῆς ἔμπροσθεν μουσικῆς» ἀποδίδεται εἰς τὸν Τέρπανδρον. Γνωστοὶ Λέσβιοι μουσικοὶ οἱ Μυτιληναῖοι Φρῦνις, Ἀρχύτας καὶ Ἀγήνωρ, οἱ Μηθυμναῖοι Τέρπανδρος, Ἀριστοκλείδης καὶ Κρατῖνος, ὁ Ἀντισσαῖος Ἀρίων, ἡ Ἐρεσσία Σαπφώ, ὁ Κηπίων, Εὐαινετίδης κ. ἄ. Τὴν *ποίησιν* ἐξεπροσώπησαν οἱ ἐπικοὶ Λέσχης ὁ Πυρραῖος καὶ Τέλεσις ὁ Μηθυμναῖος, οἱ μελικοὶ Ἀλκαῖος ὁ Μυτιληναῖος καὶ Σαπφὼ καὶ οἱ ἐπιγραμματοποιοὶ Ἀλφειὸς ὁ Μυτιληναῖος καὶ Ξενοφάνης. Ἰδιαζόντως ἤκμασεν ἡ *ἱστοριογραφία* μὲ τοὺς περὶ τῆς νήσου γράψαντας Ἑλλάνικον τὸν Μυτιληναῖον («Λεσβιακά», «Μυτιληναίων Πολιτεία», «Ἀντισσαίων πολιτεία»), Θεόλυτον τὸν Μηθυμναῖον («Μηθυμναίων ἢ Λεσβίων ὧροι»), Μυρσίλον τὸν Μηθυμναῖον («Λεσβιακά»), Σκάμωνα τὸν Μυτιληναῖον («Περὶ Λέσβου») καὶ τοὺς ἄλλα γράψαντας Ἑρμείαν τὸν Μηθυμναῖον καὶ Χάρητα, Θεοφάνη καὶ Ἡράκλειτον τοὺς Μυτιληναίους. *Ρήτορες* ὑπῆρξαν οἱ παλαιότεροι Ποτάμων, Λεσβοκλῆς καὶ Αἰσχίνης καὶ οἱ τῶν ρωμαϊκῶν χρόνων Ποτάμων, Διοφάνης, Κρινογόρας καὶ Λεσβῶναξ, πάντες Μυτιληναῖοι. *Γραμματικοί*: ὁ ἐξηγητὴς τῆς Σαπφοῦς καὶ τοῦ Ἀλκαίου Καλλίας ὁ Μηθυμναῖος, ὁ τεχνοκρίτης Ἀδαῖος ὁ Μυτιληναῖος, ὁ πολυγράφος Διονύσιος ὁ Σκυτοβραχίων καὶ ἕτερος Λεσβῶναξ. Ἡ *φιλοσοφία* ἀνεπτύχθη ἰδίως ἀπὸ τοῦ Ἀριστοτέλους, περιπατητικοὶ δὲ ἦσαν οἱ Ἐρέσσιοι Θεόφραστος καὶ Φανίας (γράψας «Περὶ πρυτάνεων Ἐρεσίων»), Ἐχεκρατίδας ὁ Μηθυμναῖος, Κράτιππος καὶ Ἀριστοτέλης οἱ Μυτιληναῖοι· παλαιότατος δὲ ὁ ἐκ τῶν ἑπτὰ σοφῶν Πιττακὸς ὁ Μυτιληναῖος (βλ. καὶ [*Ἀρχαιολ.*].)

***Λατρεία.*** Κατὰ τοὺς ἱστορικοὺς χρόνους ἡ λεσβιακὴ λατρεία ἀπετέλει σύμφυρμα αἰολικῶν στοιχείων καὶ ἄλλων ἐπιδράσεων. Προεξάρχουσαν θέσιν εἶχεν ὁ *Ἀπόλλων* ὡς «Ναπαῖος» μετὰ παναρχαίου μαντείου ἐν Νάπῃ καὶ «Μαλόεις» μὲ ὕπαιθρον πανήγυριν ἔξω τῆς Μυτιλήνης, καὶ ὑπὸ ἄλλας ἐπικλήσεις. Ναοί του ὑπῆρχον πλεῖστοι (καὶ ἐπὶ τοῦ Λεπετύμνου), συνεδέετο δὲ ἡ λατρεία του πρὸς τὴν τῆς *Ἀρτέμιδος*, ἥτις ἐτιμᾶτο ἐν Θέρμᾳ διὰ τῆς σπουδαιοτάτης «θερμιακᾶς παναγύριος» ὑπὸ τὰς ἐπικλήσεις «Μεγάλη Ἄρτεμις Θερμία» καὶ «Εὐάκοος» ὡς προστάτρια τῶν θερμῶν πηγῶν. Ὁ *Ζεὺς* ἐλατρεύετο ἐν Μυτιλήνῃ, Μηθύμνῃ καὶ Ἐρεσῷ ὑπὸ διαφόρους ἐπωνυμίας, συνεδέετο δὲ στενῶς ἡ λατρεία του ἐν Μυτιλήνῃ μετὰ τοῦ Ποσειδῶνος καὶ Πλούτωνος, διὸ καὶ ἀπεκαλοῦντο συνολικῶς «θεοὶ ἀκραῖοι Μυτιληναίων» καὶ «πανασφάλιοι». Ὁ *Ποσειδῶν* ἐτιμᾶτο ἐν Μυτιλήνῃ, ὅπου καὶ ἑορτὴ «Ποσίδεα», καὶ ἐν Ἐρεσῷ. Ἡ χθονία δυὰς τῆς *Δήμητρος* καὶ *Περσεφόνης* ἐτιμᾶτο πρὸ παντὸς ἐν Μυτιλήνῃ, ὅπου ὑπῆρχε κληρονομικὸν ἱερατικὸν γένος (ἐκ τοῦ Ποτάμωνος) καὶ ἐτελοῦντο μυστήρια. Ὁ *Ἀσκληπιὸς* κατ' ἐξοχὴν ἐλατρεύετο ἐν Μυτιλήνῃ μὲ ἐπιφανὲς «Ἀσκλαπίειον». ἔνθα πολλαὶ ἀποφάσεις τοῦ δήμου καὶ κληρονομικὸν ἱερατεῖον («ἴρευς διὰ γένεος Λεσβίοις»). Ὁ *Διόνυσος* (Ζόνυσσος), γνωστὸς ἐν Μυτιλήνῃ καὶ Μηθύμνῃ διὰ τῶν πανηγυρικῶν «διονυσίων», ἐλατρεύετο καὶ ἐν Βρήσῃ καὶ Ἀντίσσῃ. Ὁ *Ἑρμῆς* ἐτιμᾶτο ἐν Ἐρεσῷ καὶ Μυτιλήνῃ, ὅπου καὶ «κοινὸν Ἑρμαΐσταν». Ὁ *Ἡρακλῆς* ἐλατρεύετο ἐν Μηθύμνῃ (ἑορτὴ «Ἡράκλεια») καὶ ἡ *Ἥρα* ἐν Μυτιλήνῃ (ἱερὸν ἔνθα αἱ «γυναικῶν κρίσεις» ἢ «καλλιστεῖα») καθὼς καὶ ἡ *Ἀφροδίτη* ὡς «Πειθώ». Ἐξ Αἰγύπτου δὲ εἰσαχθεῖσα ἡ *Ἶσις* ἐν Μυτιλήνῃ («Πελαγία», «Εὐάκοος») καὶ ὁ *Σάραπις* ἐν Μυτιλήνῃ («ἥλιος μέγας Σάραπις») καὶ Μηθύμνῃ («σύνοδος Σαραπιαστῶν» καὶ ἑορτὴ «μεγάλα Σαραπίεια»). Ἥρωες τιμώμενοι παλαιότατα ἦσαν ὁ Τάνταλος (μὲ ἱερὸν ἐν Πολίῳ) καὶ οἱ Λαμπετός, Λεπέτυμνος σύζυγος τῆς Μηθύμνης, Παλαμήδης, Τράμβηλος, ὡς καὶ ἄπειροι ἄλλαι θεότητες. Θρησκευτικὰ δὲ θέσμια ἀναφέρονται πλεῖστα, ὡς αἱ γυναικεῖαι «παννυχίδες» ἐν Μηθύμνῃ, αἱ ἀνὰ «πεμπετηρίδα» ἑορταὶ τῆς Μηθύμνης καὶ Ἐρεσοῦ, αἱ «μεσοστραφωνίαι» κ. ἄ.

***Τὰ ἤθη.*** Διαδεδομέναι τὰ μάλιστα ἦσαν, ἰδίως κατὰ τὴν μεταγενεστέραν ἀρχαιότητα, ποικίλαι κατηγορίαι διὰ τὰ ἤθη τῶν Λεσβίων, κυρίως δὲ τρεῖς: 1) Γενικὴ ἔκλυσις, ἐξ ἧς μεγίστη διάδοσις τῆς πορνείας («λεσβίς· ἡ λαικαστρίς», κατὰ Φερεκράτη) καὶ τῶν ἀφροδισίων νοσημάτων, ὥστε νὰ λέγηται «παρὰ Λεσβίοις πρῶτον ἡ γυνὴ ἔπαθε». Ἡ Μήθυμνα μάλιστα, τῆς ὁποίας οἱ κάτοικοι μόνον «τὸ κατακεῖσθαι καὶ πίνειν» ἐγνώριζον, εἶχον πληρωθῆ μαστρωπῶν, τὰς ὁποίας ὁ τύραννος Κλεoμένης ἐξωλόθρευσε διὰ καταποντισμοῦ (*Ἀθήναιος* Ι', 442 f.). 2) Ὁμοφυλοφιλία μεταξὺ τῶν γυναικῶν· ὥστε αἱ μὲν Λεσβίδες νὰ ἀποκληθοῦν «ἀρρενοποιοί, γυναιξὶ πλησιάζουσαι ὥσπερ ἄνδρες» (*Λουκιαν.* Ἑταιρ. διάλ. 5), καὶ ἰδίως ἡ Σαπφὼ (masula Sappho, παρ' Ὁρατίῳ, Αὐσωνίῳ, κλπ.), «λεσβιᾶσαι» δὲ νὰ σημαίνῃ «παρανόμως πλησιᾶσαι» (σχολ. *Ἀριστοφ.* Βάτρ. 1335). 3) Αἰδοιολειχισμός· ὥστε παροιμιωδῶς νὰ σημαίνῃ «λεσβιᾶσαι· αἰσχρῶς μολῦναι τὸ στόμα» (*Αἴλιος Διον.*) καὶ «λεσβιεῖν· πρὸς ἄνδρα στοματεύειν» (*Ἡσύχ.*). Χωρὶς νὰ ἔχουν τὴν εὐρύτητα ἣν εἰς αὐτὰς προσέδωκαν ἡ ἀττικὴ κωμῳδία καὶ οἱ γραμματικοί, φαίνεται ὅτι αἱ ἀνωτέρω πληροφορίαι ἔχονται πάντως τῆς πραγματικότητος καὶ ὅτι ὑπῆρξε τοιαύτη τις πρόσκαιρος κατάστασις, ἴσως ἀποτέλεσμα ἀσιατικῶν ἐπιδράσεων.

Π. Ν. Π.

ΒΥΖΑΝΤΙΝΟΙ ΧΡΟΝΟΙ. Τῶν πρώτων βυζαντινῶν χρόνων μόνον λείψανον ὑπάρχει, πλὴν τῶν ἐκκλησιαστικῶν, ἐπιγραφὴ ἐν Μεσοτόπῳ (Corp. Inscr. Lat. (141996—141997), ἀναγομένη εἰς τὴν βασιλείαν τῶν *Κωνσταντίνων* Α' καὶ Β' καὶ τοῦ *Κώνσταντος* (324—350), Ἡ ἱστορία τῶν ἐφεξῆς χρόνων βρίθει ἐπιδρομῶν. Ἐλεηλατήθη τὸ πρῶτον ἡ νῆσος ὑπὸ τῶν Σκυθῶν (376), ἐπὶ Ἰουστινιανοῦ ὑπὸ 400 Βανδάλων αἰχμαλώτων τοῦ Βελισσαρίου, ἀποστελλομένων εἰς τὰς Ἀν. ἐπαρχίας καὶ στασιασάντων αὐτόθι κατὰ τὸν πλοῦν (*Προκόπ.*, Βανδ. Β' 14). Τῷ 769 ἐπέδραμον Σλάβοι, τὸ δὲ 821—822 ὁ κατὰ τοῦ Μιχαὴλ Β' Τραυλοῦ ἀγωνισθεὶς *Θωμᾶς ὁ ἐκτομίας*· ἄγων οὗτος στίφη Αἰγυπτίων, Ἀράβων, Ἰνδῶν, Καυκασίων, Οὕνων, Περσῶν καὶ Σλάβων, κατέκτησεν ἐπὶ βραχὺ τὴν Μυτιλήνην, καταστήσας, αὐτὴν ὁρμητήριον τῶν μετέπειτα ἐπιχειρήσεών του (*Κίνναμ.* Ζ' 3, *Συνεχ. Θεοφ.* Β' 13). Τὸ 851 περίπου ἐπέδραμον Σαρακηνοὶ πειραταὶ ὑπό τινα *Νίσιριν*, αἰχμαλωτίσαντες καὶ Θεοκτίστην τὴν Λεσβίαν, τῷ 864 οἱ Ρῶσοι καὶ τῷ 881 καὶ πάλιν Σαρακηνοὶ ὑπὸ τὸν *Σαΐντ* ἐμίρην τῆς Κρήτης, διώκοντες τὸν εἰς Σάμον βυζαντινὸν στόλον. Τῷ 1027 ἐγένετο δευτέρα ρωσικὴ ἐπιδρομή, μεθ' ἣν ἡ τοῦ *Τζαχᾶ* (1092) γαμβροῦ τοῦ σουλτάνου τοῦ Ἰκονίου Κιλὶτζ Ἀρσλάν. Οὗτος κυριεύσας τὰς Κλαζομενὰς καὶ Φώκαιαν, ἐπέτυχε δι' ἀπειλῶν τὴν ἀποχώρησιν τοῦ κουράτορος τῆς νήσου Ἀλωποῦ καὶ κατέλαβε τὴν νῆσον πλὴν τῆς Μηθύμνης, ἐγκαίρως ὀχυρωθείσης ὑπὸ τοῦ Ἀλεξίου Α' Κομνηνοῦ. Ἐξεδίωξεν αὐτὸν ὁ Κωνσταντῖνος Δαλασσηνός, ἀλλ' ἀνέκτησε καὶ πάλιν τὴν Μυτιλήνην ὁ Τζαχᾶς, ἐπωφεληθεὶς τῶν ἀλλαχοῦ περισπασμῶν τοῦ Βυζαντίου, καὶ κατέστησε φρούραρχον τὸν ἀδελφόν του *Γαλαβάτζην*. Τότε κατεστάθη ὁ Δαλασσηνὸς ἀρχηγὸς τοῦ κατὰ τῆς Μυτιλήνης στόλου καὶ ὁ μέγας δοὺξ Ἰωάννης Δούκας τῶν πεζικῶν δυνάμεων· ὁ τελευταῖος ἀποβιβασθεὶς ἐπολιόρκει στενῶς τὴν πρωτεύουσαν, συνῆψε πλείστας μάχας καὶ παρέλαβεν αὐτὴν διὰ συνθήκης, μεθ' ἣν ὀλίγου δεῖν νὰ ἀπαγάγῃ ὁ Τζαχᾶς τοὺς ἐγκρίτους Μυτιληναίους, ἂν μὴ ἐπενέβαινεν ὁ Δαλασσηνὸς (*Ἄννα Κομν.* Ζ' 8. 9. Η' 3. Θ' 1). Τῷ 1128 ἐδηώθη ἡ Μυτιλήνη ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν τοῦ Δομινίκου *Μικιέλη*, ἐπιστρέφοντος ἐκ τῆς πολιορκίας τῆς Τύρου καὶ ὁρμηθέντος ἐκ Χίου, καὶ ἄλλα ἄλλοτε ὑπὸ Ἑνετῶν ἔπαθεν (*Κίνναμ.* ΣΤ' 10) μέχρι τοῦ 1204, ὅτε, διανεμηθείσης τῆς αὐτοκρατορίας ὑπὸ τῶν Λατίνων, περιῆλθεν ἡ Μυτιλήνη εἰς τὸν *Βαλδουῖνον Α'*. Ἀνακτηθεῖσα τῷ 1224 ὑπὸ τοῦ Ἰωάννου Γ' Δούκα Βατάτζη, προσηρτήθη ὁριστικῶς εἰς τὸ Βυζάντιον τῷ 1261. Τῷ 1260 ἐπίσημος ἐνετικὸς κατάλογος περιελάμβανε τὸ φρούριον τῆς πρωτευούσης μεταξὺ τῶν ὀχυρωτάτων καὶ διενεργούντων πειρατείαν.

Ἀπὸ τοῦ ἰδίου ἔτους τῆς ἀνακτήσεως τῆς νήσου ὑπὸ τοῦ Βυζαντίου, κατεστάθη ἐν Μυτυλήνῃ ἡ πρώτη αὐτόθι γενοατικὴ παροικία διὰ τῆς συνθήκης τοῦ Νυμφαίου, ἣν ὑπέγραφον καὶ δύο τῆς μετέπειτα ἀρξάσης ἐν Μυτιλήνῃ οἰκογενείας τῶν Γατελούζων. Τῷ 1292 ὑπέστη ἡ νῆσος ἐπιδρομὴν τῶν Καταλανῶν τοῦ Ρογήρου De Lluria, μεθ' ἣν νέαν παρὰ τοῦ Ρογήρου De Flor (1303), καθ' ἣν ἤδη εἶχεν ἀναπτυχθῆ ἡ γενοατικὴ παροικία, ὥστε νὰ λυτρώσῃ διὰ 1000 ὑπερπύρων τὸν ἐνταῦθα αἰχμαλωτισθέντα αὐθέντην τῆς Ἄσσου Μαχράμην.

Τῷ 1325 (Μαρτίου 26) ψιλῷ ὀνόματι παρεχωρήθη ἡ νῆσος εἰς τὸν Γενοάτην Μαρτῖνον Ζαχαρίαν ὑπὸ τοῦ Φιλίππου Α' τοῦ Τάραντος, συζύγου (1315) τῆς Αἰκατερίνης Βαλεσιανῆς, διεκδικούσης τὰ δικαιώματα τῶν Βαλδουΐνων. Τῷ 1327 ἐξετοπίσθησαν εἰς Μυτιλήνην ὕποπτοι θρακικοὶ πληθυσμοὶ ὑπὸ τοῦ Μανουὴλ Λασκάρεως καὶ Ἀνδρονίκου Τορνίκη. Ἐπὶ Ἀνδρονίκου Γ' Παλαιολόγου ἐχρησίμευσεν ἡ νῆσος ὁρμητήριον τῶν Βυζαντινῶν κατὰ τοῦ ἐν Χίῳ Μαρτίνου Ζαχαρία. Τῷ 1333 ἐκυριεύθη ὑπὸ τοῦ Γενοάτου τυχοδιώκτου καὶ ἐπικαρπωτοῦ τῆς Φωκαίας Δομινίκου Κατάνια (Cataneo). Ἄγων οὗτος στόλον ἐκ πλοίων γενοατικῶν, σικελικῶν, τῶν Ἰωαννιτῶν τῆς Ρόδου καὶ τοῦ δουκὸς τοῦ Αἰγαίου, κατέλαβεν ἀπροσδοκήτως τὴν πρωτεύουσαν, εἶτα τὰ λοιπὰ φρούρια πλὴν τῆς Ἐρεσοῦ καὶ Μηθύμνης, καὶ ἐκτοπίσας πολὺν πληθυσμόν, κατέστησεν αὐτόθι τὴν ἕδραν του, μετεκάλεσε τὴν οἰκογένειάν του καὶ ἐσκόπει τὴν ἅλω-

Digitized by Google

σιν πασῶν τῶν βυζαντινῶν νήσων. Μετὰ τὴν καταστολὴν τῆς στάσεως τῶν Γενοατῶν τοῦ Γαλατᾶ, ὁ αὐτοκράτωρ ἐξεστράτευσε κατὰ τῆς Μυτιλήνης ἄγων 84 πλοῖα. Ἀμέσως διέρρευσαν οἱ σύμμαχοι τοῦ Κατάνια, πέντε δὲ πλοῖα αὐτοῦ ὁρμοῦντα εἰς τὸν κόλπον τῆς Καλλονῆς ἐκυριεύθησαν ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος, πλέοντος ἐξ Ἐρεσσοῦ καὶ εἰδοποιηθέντος ἐκ τῆς βίγλας τοῦ χιακοῦ Στροβίλου. Ἀρχικῶς ἐπολιορκήθη ἡ Φώκαια τῇ βοηθείᾳ τῶν Τούρκων σατραπῶν τῆς Μαγνησίας καὶ Ἀϊδινίου Σαρουχάν, Ἀϊντὶν καὶ Σουλάϊμασα, ἡ δὲ πόλις Μυτιλήνη παρημελήθη ἢ ἀραιῶς ἐπολιορκήθη ὑπὸ τοῦ Ἀλεξίου Φιλανθρωπηνοῦ. Γενομένης εἰρήνης οἱ Γενοᾶται παρέμενον κύριοι τῆς Φωκαίας, ἀποδίδοντες τὴν Μυτιλήνην ἣν κατέλαβεν ὁ Φιλανθρωπηνὸς (1336), φυγαδεύσας διὰ δωροδοκίας τοὺς 500 μισθοφόρους φρουροὺς τοῦ Κατάνια (*Γρηγορ.* ΙΑ-ΙΒ', *Καντακουζ.* Β' 29—31, Γ' 63). Κατὰ τὴν πρώτην αὐτὴν γενοατοκρατίαν ἐκυκλοφόρησαν καὶ ἐν Μυτιλήνῃ τὰ κατὰ παραχάραξιν τῶν ἐνετικῶν δουκᾶτα τοῦ Κατάνια. Τῷ 1344 ἡ Μυτιλήνη ἐποφθαλμιᾶτο ὑπὸ τοῦ Ἀλεξίου Ἀποκαύκου, ἀναμιχθέντος εἰς τὰς δυναστικὰς ἔριδας τοῦ Βυζαντίου καὶ ζητοῦντος αὐτὴν «εἰς διηνεκῆ τινα κλῆρον», καὶ ἄλλοτε ὑπ' ἄλλων (*Γρηγορ.* ΙΔ' 4.5). Τοὺς αὐτοὺς χρόνους ἐπόρθησεν αὐτὴν ὁ υἱὸς τοῦ Ἀϊντὶν Ὁμοὺρ «ἀρχηγὸς τῶν ἐν τῇ Σμύρνῃ πολιχνίων» (*Μιχ. Δούκ.* ΚΖ').

Κατὰ τὴν βυζαντινὴν ἐπ' αὐτῆς κυριαρχίαν, ἡ νῆσος ὑπήγετο ἀρχικῶς (395) εἰς τὸν ἀνθύπατον τῶν νήσων (Notitia dignitatum κ. τ. λ.), ἐπὶ τοῦ Ἱεροκλέους (ἀρχαὶ ΣΤ' αἰῶνος) εἰς τὴν «κθ' ἐπαρχίαν τῶν νήσων» καὶ ἐπὶ τῆς μακεδονικῆς δυναστείας (Θ'—ΙΑ' αἰὼν) ἦτο τουρμαχᾶτον (ἕδρα τούρμας) τοῦ «ζ' θέματος Αἰγαίου Πελάγους» (*Πορφυρογ.*, Θέμ. ΙΑ' ιζ'). Ἐχρησιμοποιήθη διηνεκῶς ὡς τόπος ἐπιφανῶν ἐξοριῶν, μεταξὺ δὲ τῶν αὐτόθι περιορισθέντων (Θ'—ΙΑ' αἰὼν) ὑπῆρξαν: ἡ αὐτοκράτειρα Εἰρήνη αὐτόθι ἀποθανοῦσα, Συμεὼν ὁ Μάγιστρος, ὁ ἅγιος Ἰγνάτιος Ρανγκαβέ, ὁ Νικόλαος Στουδίτης, οἱ Στέφανος καὶ Κωνσταντῖνος Λεκαπηνοί, ὧν ὁ πρῶτος μετὰ 11 ἔτη ἐδηλητηριάσθη ἐν Μυτιλήνῃ ὑπὸ τῆς Θεοφανοῦς, οἱ Λέων κουροπαλάτης καὶ Νικηφόρος πατρίκιος Φωκάδες, ὧν ὁ πρῶτος συνωμοτῶν καὶ τυφλωθεὶς ἐν Μυτιλήνῃ ἀπέδρασε διὰ δωροδοκίας τῶν φυλάκων, ὁ Ἰωάννης Ὀρφανοτρόφος, τυφλωθεὶς καὶ ἀποθανὼν αὐτόθι, καὶ ὁ αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος Θ' ὁ Μονομάχος. Ἐπίσης ἐν Μυτιλήνῃ κατέφυγεν ὁ παραιτηθεὶς Θεόδωρος Δούκας Λάσκαρις. Ἐκ τῆς διαμονῆς τῶν προσωπικοτήτων αὐτῶν πιθανολογεῖται τὸ ὄνομα τοῦ μεσαιωνικοῦ φρουρίου καὶ νῦν χωρίου «Βασιλικά».

***Γενοατοκρατία.*** Τοῦ ἐν Μυτιλήνῃ ἄρξαντος γενοατικοῦ οἴκου τῶν Γατελούζων πρῶτοι γνωστοὶ πρόγονοι εἶναι: μέλος τι τοῦ μεγάλου συμβουλίου τῆς Γενούης (1157), μεθ' ὃ οἱ τὴν συνθήκην τοῦ Νυμφαίου (1261) ὑπογράψαντες δύο Γατελοῦζοι, εἶτα ἄλλοι καὶ ὁ Ὀμπέρτο πρέσβυς ἐν Κωνσταντινουπόλει (1341). Τούτου ὁ ἀνεψιὸς *Φραγκῖσκος*, ἀναζητῶν (1353) ἐμπορικὰς περιπετείας ἐν τῷ Αἰγαίῳ, ἡγούμενος δύο γαλερῶν, καὶ βοηθήσας τὸν Ἰωάννην Ε' Παλαιολόγον εἰς τὰς δυναστικὰς ἔριδας, ἔλαβε σύζυγον τὴν ἀδελφήν του Μαρίαν καὶ ὡς προῖκα τὴν ἐπικαρπίαν τῆς Μυτιλήνης (1355), ὅπου κατέστησεν ἀνεξάρτητον κρατίδιον. ἐπεκταθὲν βραδύτερον. Ἐφρόντισε διὰ τὴν ἐκ Μυτιλήνης ἀναχώρησιν τῶν Ἀρμενίων (1366), ἀνίδρυσε τὸ φρούριον τῆς πρωτευούσης (1373) καὶ ἐκραγέντος τοῦ τετάρτου μεταξὺ Γενούης καὶ Ἑνετίας πολέμου ἀντιμετώπισεν ἐπιδρομὴν μοίρας τοῦ ἐνετικοῦ στόλου τοῦ Βεττὸρ Πιζάνι κατακαύσαντος προάστειά τινα τῆς Μυτιλήνης (1379)· ἐφονεύθη κατὰ τὸν σεισμὸν τοῦ 1384 (Αὔγ. 6) μετὰ τῶν υἱῶν του Ἀνδρέου καὶ Δομινίκου. Ἐπὶ Φραγκίσκου, κατεστάθη αὐθέντης τῆς Αἴνου ὁ ἀδελφός του Νικόλαος (1356), ἐπεκτείνας τὴν κυριαρχίαν τῶν Γατελούζων ἐπὶ τῆς Θρᾴκης καὶ τῶν παρακειμένων νήσων καὶ γενόμενος κηδεμὼν τοῦ ἐν Μυτιλήνῃ ἀνεψιοῦ του Ἰακώβου ἢ *Φραγκίσκου Β'* μέχρι τοῦ 1391. Ὁ Φραγκῖσκος Β' ἐπέτυχε παρὰ τῆς Χιακῆς Μαόνας τὴν εἰς τὴν Μυτιλήνην παραχώρησιν, ὑπὸ τύπον ἐμφυτεύσεως, τῆς ἐπικαρπίας τῆς Παλαιᾶς Φωκαίας (1402), ἣν διέσωσεν ἀπὸ τοῦ ἐπιδραμόντος Ταμερλάνου, καὶ τῷ 1403 ἐβοήθησε διὰ τεσσάρων πλοίων τὸν Μπουσικὼ κατὰ τοῦ βασιλέως τῆς Κύπρου Ἰανοῦ. Ἀπέθανε τῷ 1404 (Ὀκτ. 6) καὶ ἐκ τῶν υἱῶν του ὁ Παλαμήδης διεδέχθη τὸν θεῖόν του Νικόλαον εἰς τὴν αὐθεντίαν τῆς Αἴνου (1409), ὁ Δορῖνος ἀργότερον ἔλαβε τὴν ἐπικαρπίαν τῆς Φωκαίας, τὴν δὲ διαδοχὴν τῆς Μυτιλήνης ὁ *Ἰάκωβος*, κηδεμονευόμενος καὶ αὐτὸς ὑπὸ τοῦ θείου του Νικολάου μέχρι τοῦ 1409. Ἀποθανὼν οὗτος τῷ 1428, κατέλιπε διάδοχον τὸν ἀδελφόν του *Δορῖνον* («Ντορῆς» ἢ «Νοταρᾶς Παλαιολόγος» τῶν βυζαντινῶν συγγραφέων). Ἐπ' αὐτοῦ τὸ γατελουζιακὸν κράτος ἔλαβεν εὐρείας διαστάσεις: τῷ 1420 εἶχεν ἤδη προσαρτηθῆ εἰς τὴν Μυτιλήνην ἡ Θάσος, ἧς διοικητὴς ἦτο τῷ 1444 ὁ υἱὸς τοῦ Δορίνου Φραγκῖσκος· τῷ 1433 ἦτο ἤδη προσηρτημένη εἰς τὴν Αἶνον ἡ Σαμοθρᾴκη καὶ τῷ 1440, διὰ τοῦ θανάτου τῆς Εὐγενίας θυγατρὸς τοῦ Φραγκίσκου Β' Γατελούζου καὶ συζύγου τοῦ Ἰωάννου Παλαιολόγου δεσπότου Σηλυμβρίας, περιήρχετο εἰς τὴν Μυτιλήνην ὁ ὀχυρὸς «Κόκκινος» τῆς Λήμνου. Ἐξ ἄλλου ὅμως ἐπὶ Δορίνου ἤρξατο ἡ εἰς τοὺς Τούρκους ὑποτέλεια: ἤδη τῷ 1437 ἔδιδεν εἰς Μουρὰτ τὸν Α' φόρον ὑποτελείας καὶ τῷ 1450 ὁ Βούλγαρος ἐξωμότης Μπαλτάογλου («Πάλδας» ἢ «Παιτόγλης» τῶν Βυζαντινῶν) κατέστρεφε τὴν ἀνθοῦσαν Καλλονήν, ᾐχμαλώτιζε 3.000 ἄτομα, ἐπροξένει ζημίας 150.000 δουκάτων καὶ ηὔξανεν εἰς 2.000 δουκᾶτα τὸν ὑποτελικὸν φόρον. Τότε ἔδρασεν ἡ ἡρωῒς Ὀριέττα Ντόρια, συγκρατήσασα τὴν κλονιζομένην φρουρὰν τοῦ Μολύβου. Τῷ 1449 παρῃτήθη ὁ γέρων Δορῖνος ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ του *Δομινίκου* («Κυριακοῦ» τῶν Βυζαντινῶν), τοῦ ὁποίου ὁ νεώτερος ἀδελφὸς Νικόλαος κατέστη διοικητὴς τῆς Λήμνου. Ἐπ' αὐτοῦ ἐγένετο νέα πρόσκαιρος ἐπέκτασις (1453) τῶν Γατελούζων, μὲ τὴν εὐκαιρίαν συγχαρητηρίου πρεσβείας εἰς τὸν Μωάμεθ Β' ἐξ Αἴνου καὶ Μυτιλήνης ἐπὶ τῇ ἁλώσει τῆς Κωνσταντινουπόλεως, καὶ τῇ συνδρομῇ τοῦ τουρκοφίλου Κριτοβούλου. Ἐπετεύχθη τότε ἡ παραχώρησις ὅλης τῆς Λήμνου εἰς τὴν Μυτιλήνην ἔναντι ἐτησίου φόρου 2.325 δουκάτων (τῆς Μυτιλήνης ηὐξήθη εἰς 3.000) καὶ τῆς Ἴμβρου εἰς τὴν Αἶνον ἔναντι 1.200 δουκάτων ἐτησίως· ὀλίγου δεῖν δὲ προσηρτᾶτο καὶ ἡ Σκῦρος εἰς τὴν Μυτιλήνην, ἂν μὴ ὑπερίσχυε τὸ αὐτόθι ἐνετόφιλον κόμμα. Πάντα ὅμως ἀνετράπησαν ἅμα τῇ ἑδραιώσει τῶν Τούρκων. Ἐν Μυτιλήνῃ ἐσιτίζετο καὶ ἐχρησιμοποιεῖτο ὡς ἐπὶ τῶν Ἐξωτερικῶν ὑπουργὸς τῶν Γατελούζων ὁ πιθανῶς Λέσβιος ἱστορικὸς Δούκας· μετά τι ἀνεπιτυχὲς διάβημα τούτου παρὰ τῷ σουλτάνῳ, ἐταξίδευσεν ὁ ἴδιος ὁ Δομίνικος εἰς Θρᾴκην, ὅπου μόλις κατώρθωσε νὰ ἐξευμενίσῃ τὸν σουλτᾶνον διὰ τῆς αὐξήσεως τοῦ φόρου τῆς Μυτιλήνης εἰς 4.000 δουκᾶτα καὶ τῆς παραδόσεως τῆς Θάσου. Τῷ 1455 (Ἰαν. 30) ἀπέθανεν ὁ Δορῖνος καὶ τὸ αὐτὸ ἔτος (Ἰούνιος) ἐνεργείαις τοῦ ναυάρχου Γιουνοὺς («Γενούζης», «Ἰωνούζης») οἱ Τοῦρκοι ἐζήτησαν 10.000 δουκᾶτα καὶ κατέλαβον τὴν γατελουζιακὴν Φώκαιαν (1455, Δεκ. 24). Ἐπηκολούθησεν ἀφαίρεσις ὑπὸ τῶν Τούρκων καὶ τῆς Αἴνου, Ἴμβρου, Σαμοθρᾴκης, ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ προσφυγῆς τῶν κληρονόμων τοῦ Παλαμήδους εἰς τὸν σουλτᾶνον, καὶ τῷ 1456 (Μάϊος) ἀφῃρεῖτο καὶ ἡ Λῆμνος. Ὁ διοικητὴς αὐτῆς Νικόλαος Γαλετοῦζος διὰ τῆς διαγωγῆς του προὐκάλεσε προσφυγὴν τῶν Λημνίων εἰς τὸν σουλτᾶνον, ὅστις ἀπέστειλε διοικητὴν τὸν Χαμζᾶ, συνοδείᾳ τοῦ ναυάρχου Ἰσμαήλ. Ταυτοχρόνως ἀπέστειλεν ὁ Δομίνικος 2 πλοῖα καὶ 100 ἄνδρας, τῶν ὁποίων οἱ ἀρχηγοὶ ὑπερβάντες τὸν Νικόλαον εἰς ὠμότητας ᾐχμαλωτίσθησαν ἐν τῷ «Παλαιοκάστρῳ» ὑπὸ τῶν Λημνίων καὶ παρεδόθησαν εἰς τοὺς Τούρκους. Ἐπικειμένης πλέον τῆς ἁλώσεως αὐτῆς τῆς Μυτιλήνης, ἡ Γένουα ἔστειλεν ἐνίσχυσιν, ὑποσχομένη καὶ παροχὴν τηλεβόλων καὶ πυρίτιδος, καὶ ἀπηύθυνεν ἔκκλησιν εἰς τὸν πάπαν Κάλλιξτον Γ', τὸν Ἀλφόνσον Ε' τῆς Πορτογαλίας καὶ Ἐρρῖκον ΣΤ'. Ὅτε ὅμως ἔφθασε παπικὸς στόλος ὑπὸ τὸν καρδινάλιον Σκαράμπι, ὁ Δομίνικος ἠρνήθη νὰ διακόψῃ τὸν φόρον ὑποτελείας. Ἐν τούτοις τουρκικὸς στόλος ὑπὸ τὸν Ἰσμαήλ, λεηλατήσας τὰ Β. τῆς νήσου, ἐπολιόρκησε τὸν Μόλυβον, ἀποχωρήσας μὲ μεγάλας ἀπωλείας (1456, Αὔγ. 9) χάρις εἰς τὴν ἄμυναν τῆς ἐγχωρίου φρουρᾶς, ἐνῷ ἡ παρευρισκομένη παπικὴ δύναμις ἐτράπη εἰς Χίον, ἐπιστρέψασα μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τῶν Τούρκων. Ὁ Δομίνικος ἀπελπισθεὶς ἐν τέλει περὶ τῆς χρησιμότητος τῆς γενοατικῆς παρεμβάσεως ἐπεδίωξε καὶ ἐπέτυχε νὰ συμφιλιωθῇ προσκαίρως μὲ τοὺς Τούρκους. Ἡ ἐνέργειά του ὅμως αὕτη ἐγένετο ἀφορμὴ διὰ τὸν ἀδελφόν του *Νικόλαον*, ὅστις τὸν ἐφόνευσε δῆθεν ὡς τουρκόφιλον.

Ὁ Νικόλαος, ἀφοῦ ἀκάρπως προσεπάθησε νὰ ἐπιτύχῃ τὴν συνδρομὴν τοῦ δουκὸς τῆς Καλαυρίας καὶ τοῦ Κάρολου Η' τῆς Γαλλίας (1459), ἠσχολήθη μὲ τὴν ἐπισκευὴν τοῦ φρουρίου τῆς πρωτευούσης (1460). Τῷ 1462 ὅμως εὑρέθη ἐνώπιον ἀποφασιστικῆς τῶν Τούρκων ἐπιθέσεως: ὁ Μωάμεθ Β' συνεκέντρωσε πλῆθος πεζικῆς δυνάμεως καὶ 2.000 γενιτσάρους εἰς Ἁγιασμάτι καὶ 125 πλοῖα καὶ 45 φορτηγὰ πλήρη σπουδαίων πολιορκητικῶν μηχανῶν ἐκ Σινώπης εἰς Ἅγιον Γεώργιον καὶ ἀνέθηκε τὰς ἐπιχειρήσεις εἰς τὸν Μαχμοὺτ πασᾶν. Ἡ πολιορκία ἤρξατο τὴν 1ην Σεπτεμβρίου, μετὰ προηγηθεῖσαν ἀποτυχῆ ἔξοδον τῶν Γενοατῶν. Τὴν τετάρτην ἡμέραν ὑπῆρχον εἰς τὸ κάστρον 20.000 ἄμαχοι καὶ 5.000 μαχηταί, ἐν οἷς 2 τάγματα Ροδίων, καὶ 110 Καταλανοὶ μισθοφόροι ἐκ Χίου. Τὴν πέμπτην ἡμέραν ἀπεβιβάσθησαν 6 βαρέα τηλεβόλα. Πρῶτος ἔπεσεν ὁ ἐν τῷ λιμένι πύργος καὶ εἶτα (Σεπτ. 13) τὸ χαμηλότερον φρούριον τῆς Μυτιλήνης «Μελανοῦδι». Τοῦτο ἐπέφερε τὸν πανικὸν καὶ τὴν ἀποστολὴν διμελοῦς πρεσβείας (Σεπτ. 15), ἥτις ἐπέτυχε τὴν ἀβίαστον ἀποχώρησιν τῶν Γενοατῶν ἐπὶ τῇ παραδόσει καὶ τῶν λοιπῶν κάστρων. Διεπεραιώθη ὁ Μωάμεθ εἰς τὴν «Ἐπάνω Σκάλαν» τῆς Μυτιλήνης καὶ ἐξετελέσθη ὁ δεύτερος ὅρος, ἀλλ' ἐπηκολούθησεν ἁρπαγὴ 800 νεανίδων καὶ ἡ αἰχμαλωσία ὅλων τῶν εὐγενῶν, ἐν οἷς καὶ ὁ Νικόλαος καὶ ὁ Λατῖνος ἐπίσκοπος Λεονάρδος (Σεπτ. 17), ἴσως δὲ τότε ἀπέθανε καὶ ὁ Δούκας. Τὴν ἅλωσιν τινὲς (Heyd, Finlay) ἀπέδωκαν ἀστηρίκτως εἰς τοὺς Ἕλληνας.

Ἐκ τῶν ἀπομεινάντων Γατελούζων ὁ ἐξάδελφος τοῦ Νικολάου Δορῖνος, στερηθεὶς (1455) τῆς Αἴνου καὶ βραχὺ ἄρξας σουλτανικῇ δωρεᾷ ἐν τῇ βουλγαρικῇ Ζίχνᾳ, ἀπῆλθεν εἰς Δύσιν· ἐκεῖ ἐπώλησε τὰ ἡμίση τῶν δικαιωμάτων του εἰς τὸν πενθερόν του Μᾶρκον Ντόρια, ἐπιφυλάξας δι' ἑαυτὸν μόνον τὴν Μυτιλήνην ἢ τὴν Αἶνον, εἰς ἣν περίπτωσιν ὁ Μᾶρκος βοηθούμενος ὑπὸ τῶν Γάλλων ἐξεδίωκε τοὺς Τούρκους, καὶ ἀπέθανεν ἄτεκνος.

Σπουδαῖαι ἐπιγαμίαι εἶχον καταστήσει ἰσχυροὺς τοὺς Γατελούζους τῆς Μυτιλήνης. Μετὰ τῶν *Παλαιολόγων* συνέδεσαν αὐτοὺς οἱ γάμοι τῆς Μαρίας Παλαιολογίνας καὶ Φραγκίσκου τοῦ Α', τοῦ Ἰωάννου Παλαιολόγου (δεσπότου Σηλυμβρίας) καὶ τῆς Εὐγενίας θυγατρὸς τοῦ Φραγκίσκου Β', καὶ τοῦ τελευταίου τῶν Παλαιολόγων μετὰ τῆς Κατερίνας θυγατρὸς τοῦ Δορίνου. Μὲ τοὺς *Κομνηνοὺς* δὲ ὁ γάμος τοῦ Ἀλεξάνδρου (υἱοῦ Ἀλεξίου Δ' τῆς Τραπεζοῦντος) καὶ τῆς Μαρίας θυγατρὸς τοῦ Δορίνου (ὅστις ἀπεκαλεῖτο «ἀδελφὸς καὶ συμπεθαιρὸς τῆς ἁγίας Βασιλείας»). Ἐπίσης συνεδέθησαν μὲ ἡγεμόνας τῶν Βαλκανίων (Στέφανος *Λαζάρεβιτς*, δεσπότης τῆς Σερβίας, καὶ Ἑλένη θυγάτηρ Φραγκίσκου τοῦ Α'), καὶ Φράγκους τοῦ Αἰγαίου, ὡς οἱ *Ἰουστινιᾶναι* τῆς Χίου (Μαρία Λόγγαινα καὶ Δομίνικος) ἢ οἱ *Κρίσπαι* δοῦκες τοῦ Αἰγαίου (Τζινέβρα θυγάτηρ τοῦ Δορίνου καὶ Ἰάκωβος Β'). Τέλος καὶ μὲ δυτικοὺς οἴκους συνεδέθησαν. Ὁ Ἰάκωβος Γατελοῦζος ἔσχε σύζυγον τὴν Βαλεντίναν *Ντόρια* ἢ τὴν Μπόναν θυγατέρα τοῦ *Ἀμεδαίου Η' τῆς Σαβοΐας* ἢ πιθανῶς ἀμφοτέρας διαδοχικῶς, αἱ ἀδελφαί του Κωνσταντία καὶ Τζινέβρα ἐνυμφεύθησαν τοὺς Ἰωάννην καὶ Λουδοβῖκον *Γκαλεάτσο ντὲ Κάμπο-Φρεγκόζο*, ἄλλη δὲ ἀδελφή του τὸν Πέτρον *ντεΐ Γκριμάλντι*, διάδοχον τῆς Νικαίας καὶ τοῦ Μονακό· Ντόρια τέλος ἦτο καὶ ἡ σύζυγος τοῦ Παλαμήδους.

Ἐκ τῶν ἐπιγαμιῶν αὐτῶν οἱ Γατελοῦζοι ἔσχον καὶ εὐρυτέραν δρᾶσιν. Καθ' ὅλην δὲ τὴν γενοατοκρατίαν κατέστη ἡ Μυτιλήνη ἐπιφανὴς τόπος διπλωματικῶν κ. ἄ. διεθνῶν συγκεντρώσεων ἐν Ἀνατολῇ. Ἡ ἐξωτερικὴ πολιτικὴ τῶν Γατελούζων ἦτο πολιτικὴ καιροσκόπων ἀριστοκρατῶν ἐμπόρων, κατὰ τὸ συμφέρον ἐνετοφίλων ἢ γενοατῶν, τουρκοφίλων ἢ συγγενῶν τῆς βυζαντινῆς δυναστείας. Μετὰ τῶν Ἑνετῶν συνήθως αἱ σχέσεις των ὑπῆρξαν τεταμέναι, εἰς ὃ ὀφείλεται καὶ ὁ πρόσκαιρος ἐμπορικὸς ἀποκλεισμὸς εἰς Κρήτην τῆς μυτιληναϊκῆς ἐξαγωγῆς. Ἔναντι τοῦ Βυζαντίου ἐτήρησαν φιλικὴν στάσιν· ἡ Μυτιλήνη ἦτο ὁρμητήριον τοῦ Βυζαντινοῦ στόλου ἐπὶ Φραγκίσκου τοῦ Α', ὅστις καὶ στρατιωτικὰς συμβουλὰς κατὰ τῶν Τούρκων ἔδωκε (1357) καὶ ἐπολέμησεν εἰς τὴν πολιορκίαν τῆς Καλλιπόλεως καὶ τὴν ἅλωσιν τῆς Σηλυμβρίας (1366)· ἐπίσης ὁ Φραγκῖσκος Β' ἐπολέμησεν ἐν Κωνσταντινουπόλει κατὰ τοῦ Βαγιαζὴτ Α' (1396), καὶ ὁ Ἰάκωβος ἐβοήθησε τὸν Ἰωάννην Ζ' Παλαιολόγον κατὰ τῆς Θεσσαλονίκης (1403). Ἐν τούτοις, λόγῳ ἰδίᾳ τῆς γεωγραφικῆς θέσεως τῆς Μυτιλήνης, ἡ πολιτικὴ τῶν Γατελούζων ἀπέναντι τῶν Τούρκων ὑπῆρξεν ἀλλοπρόσαλλος. Ὁ Φραγκῖσκος Β' ὀργανωτὴς τῆς συμμαχίας Μυτιλήνης-Ρόδου, Κύπρου-Χίου καὶ Γενοατῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως κατὰ Μουρὰτ τοῦ Α' (1388, Νοέμβρ. 2), δὲν δυσκολεύεται ν' ἀφήσῃ τὰ σχέδιά του καὶ ὅτε ὁ Boucicault ἐστέλλετο ὑπὸ τοῦ Καρόλου ΣΤ' πρὸς βοήθειαν τοῦ Μανουὴλ Β', καίτοι φιλοξενήσας αὐτὸν, εἰδοποίησε τοὺς Τούρκους σχετικῶς (1399). Ὁ Ἰάκωβος ἐμποδίζει τὸν Luis Asiner νὰ διώξῃ τοὺς Τούρκους εἰς τὰ μυτιληναϊκὰ ὕδατα, μετέχει τῆς πολιορκίας τῆς Σμύρνης μὲ τοὺς Τούρκους, τῷ 1415 ἀνανεοῖ τὴν ἀντιτουρκικὴν ἕνωσιν, ἐνῷ καὶ πάλιν βοηθεῖ βραδύτερον τὸν Μωάμεθ Α' καὶ Μουρὰτ Β' κατὰ τοῦ Τζουνεῒτ βέη τοῦ Ἀϊδινίου καὶ Σμύρνης. Ὁ δὲ Δορῖνος, πενθερὸς τοῦ Κωνσταντίνου Παλαιολόγου, ἐπιτεθεὶς κατὰ τῶν μικρασιατικῶν παραλίων καὶ ζημιώσας τοὺς Τούρκους περὶ τὰ 150.000 σκοῦδα (1452), ἀποφεύγει νὰ βοηθήσῃ τὴν πολιορκουμένην Κωνσταντινούπολιν (1453), συγχαίρει σχετικῶς τὸν Μωάμεθ Β', φιλοξενεῖ δουλοπρεπῶς τὸν Τοῦρκον ναύαρχον Χαμζᾶ (1455) πλέοντα κατὰ τῆς Ρόδου καὶ βοηθεῖ τὸν σουλτᾶνον τῆς Αἰγύπτου, ἐπιτιμηθεὶς δι' αὐτὸ ὑπὸ τῆς Γενούης. Ἡ γατελουζιακὴ πολιτεία τῆς Μυτιλήνης εἶχε μᾶλλον, ὡς προελέχθη, ἐμπορικὸν καὶ ναυτιλιακὸν ἢ φεουδαρχικὸν χαρακτῆρα. Αἱ γαλέραι τῆς νήσου διέπλεον τὸ Αἰγαῖον τρομοκρατοῦσαι τοὺς Κρῆτας καὶ Εὐβοεῖς Ἑνετοὺς ἐμπόρους καὶ ἔφθανον μέχρι τῆς Δαμιέττης προκαλοῦσαι ἀντίποινα τῶν Σαρακηνῶν. Γνωστὸν ἐξαγόμενον προϊὸν τῆς ἐποχῆς ἦτο ἡ μυτιληναϊκὴ στυπτηρία, τὴν ὁποίαν ἀπὸ τοῦ 1437 ἐξεμεταλλεύετο γενοατικὴ ἑταιρεία καὶ κατὰ τῆς ὁποίας εἶχον λάβει προστατευτικὰ μέτρα ἐν Κρήτῃ οἱ Ἑνετοὶ (1361). Εἰσήγετο δὲ σῖτος ἐκ Μικρασίας σημαντικός, δι' ὃ ὁ Βαγιαζὴτ Α', ἐπιζητῶν τὴν λιμοκτονίαν τῆς νήσου, ἀπέκλεισε τὴν εἰς Μυτιλήνην ἐξαγωγήν του.

Οἱ Γατελοῦζοι ἔκοψαν χρυσᾶ δουκᾶτα, ἀργυρᾶ τσεκίνια καὶ χαλκᾶ σκοῦδα. Τὰ πρῶτα ἐγένοντο

Digitized by Google

κατὰ παραχάραξιν τῶν ἐνετικῶν ὑπὸ τῶν Ἀρμενίων τῆς Μυτιλήνης καὶ ἐπροκάλεσαν πλείστας διπλωματικὰς ἐπεμβάσεις(1357,1428 καὶ1444)καὶ τὴν ἐκβολὴν τῶν Ἀρμενίων ἐκ τῆς νήσου εἰς Κῶν. Τὰ χρυσᾶ ἔφερον τὴν γνωστὴν ἐνετικὴν νομισματικὴν ῥῆσιν: sit tibi, Christe, datus, quem tu regis, iste ducatus καὶ τὰ ἀργυρᾶ: agnus dei, qui tolis pecata mundi, aivuva nos ἢ miserare nos ἢ παραπλησίας παραλλαγάς· ἅπαντα δὲ τὸ ὄνομα τοῦ ἡγεμόνος μὲ τὴν φράσιν dominus Metelinis κατὰ διαφόρους παραλλασσούσας γραφάς. Συνήθεις τύποι: τὸ οἰκόσημον τῶν Γατελούζων καὶ τὸ τῶν Παλαιολόγων ἢ συνένωσις τῶν δύο εἰς μίαν ἐξεικόνισιν, ὁ θεῖος ἀμνὸς κρατῶν σημαίαν, Ἰησοῦς εὐλογῶν, ἅγιος κρατῶν εὐαγγέλιον καὶ τείνων σημαίαν πρὸς γονυπετῆ ἄρχοντα κλπ. Τὴν νομισματολογίαν τῆς Μυτιλήνης ἐμελέτησαν καὶ ἐδημοσίευσαν οἱ Φριντλαῖντερ (1842, 1851), Καῖνε (1849), Σβάϊτσερ (1856), Προμί, Ντεσὰν καὶ Νορμπὲρ (1868), ἁπάσης δὲ τῆς ἐργασίας συναγωγὴν ἔκαμε (βλ. *[Βιβλιογραφ.]*) ὁ Π. Λάμπρος. Π. Ν. Π.

ΕΠΙ ΤΟΥΡΚΟΚΡΑΤΙΑΣ. Ἀμέσως μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς πρωτευούσης, πλέων ἐκ Χίου ὁ Ἐνετὸς Βεττὸρ Καπέλλο μὲ 29 γαλέρας προσεπάθησε νὰ ἐξεγείρῃ κατὰ τῶν Τούρκων τοὺς κατοίκους τοῦ καστελλίου τῶν Ἁγ. Θεοδώρων, τούτων δ' ἀρνηθέντων ἀπῆλθεν ἄπρακτος. Τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1464 ὁ Ἐνετὸς ναύαρχος Ὀρσᾶτος Ἰουστινιάνης ἐπολιόρκησεν ἐπὶ 6 ἑβδομάδας τὴν Μυτιλήνην καὶ συνάψας δύο μάχας ἀπῆλθεν εἰς Εὔβοιαν ἐπὶ τῷ ἀκούσματι τῆς ἐλεύσεως τουρκικοῦ στόλου, παραλαβὼν πλείστους ἐνετοφίλους νησιώτας καὶ ἄλλους πέμψας εἰς Κρήτην· ἐπέστρεψε δὲ ἐκ νέου, ἐπιχειρήσας ἀλλ' ἀποτυχὼν νὰ ἀποστήσῃ τὸ κάστρον τῶν Ἁγίων Θεοδώρων. Ὠργανωμένη ἐκστρατεία κατὰ τῆς Μυτιλήνης ἐγένετο ὑπὸ τοῦ Λουδοβίκου ΙΒ' τῆς Γαλλίας, μὲ ἀρχηγοὺς τοῦ στόλου τὸν Βέλγον αὐθέντην τοῦ Ravensteyn Φίλιππον ντὲ Κλὲβ (Ἰούλιος—Ὀκτώβριος 1501). Διοικητὴς τῆς νήσου ἦτο ὁ Χερσέκογλου (Ἑρσὲκ-Ζαντὲ) Ἀχμὲτ πασᾶς, προσωπικῶς παρισταμένου καὶ τοῦ μπεηλέρμπεη τῆς Ἀνατολῆς Σινὰν πασᾶ· ὀλίγου δεῖν δὲ τότε ἐκυριεύετο ἡ πρωτεύουσα, ἂν μὴ νύκτωρ διαπεραιούμεναι ἐξ Ἀσίας ἐνισχύσεις ἐδίωκον κατὰ κράτος τοὺς Γάλλους καὶ τοὺς μετ' αὐτῶν Ἐνετούς. Ἄλλην ἐκστρατείαν ἐπεχείρησεν ὁ μέγας μάγιστρος τῶν Ἰωαννιτῶν τῆς Ῥόδου Πέτρος ντ' Ὠμπυσσὸν (1501), ἀποτυχοῦσαν ἐκ διχοστασίας τῶν στιφῶν του, καὶ ἑτέραν οἱ Ἐνετοὶ (1502), «ὡς ἱστὸς ἀράχνης», κατὰ Ὑψηλάντην, διαλυθέντες ἐπὶ τῇ ἐμφανίσει 50 τουρκικῶν κατέργων. Τῷ 1544 (Ἰούν. 10), ὁ Βαρθολομαῖος Ταλαμόνιος, ἐκδικούμενος τὴν καταστροφὴν τῆς Ταλαμόνας ὑπὸ τοῦ Μυτιληναίου τὴν καταγωγὴν Βαρβαρόσσα καὶ τοῦ Σαλὰχ-ρεΐς, ἐλεηλάτησε τὴν Μυτιλήνην ἄγων παπικὰς τριήρεις. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην (1550) ἐγένετο ὁ ὑπὸ τοῦ Κιλὶτς πασᾶ ἐποικισμὸς τῆς Σάμου, εἰς ὃν τότε ἴσως μετέσχον ὁμαδικῶς καὶ οἱ Μυτιληναῖοι, ἀποικίσαντες τοὺς ἐν Σάμῳ *Μυτιληνιούς*. Τῷ 1690 καὶ 1698 οἱ Ἐνετοὶ ἠνώχλουν τὸν ἐν Μυτιλήνῃ τουρκικὸν στόλον, τῷ δὲ 1695 μετὰ τὰς ἐν Οἰνούσαις ζημίας του ὁ Κονταρίνι κατέφυγεν εἰς τὸν κόλπον τῆς Γέρας· ἐπισκευάσας δὲ τὸν στόλον καὶ νέας παθὼν ζημίας, κατέφυγεν εἰς τὸ Σίγριον. Κατὰ τὸν Ἀγγλογαλλικὸν πόλεμον ἐγένετο ἡ Μυτιλήνη κέντρον μυστικῆς ναυτολογίας καὶ ἀνεφοδιασμοῦ τῶν πειρατικῶν πλοίων ἀμφοτέρων τῶν ἀντιπάλων (1756).

Κατὰ τὴν περίοδον αὐτὴν πλεῖστα ὑπέστη ὁ πληθυσμός. Ἠρημώθησαν τὰ χωρία Κυδώνα, Πολύγειρος κ. ἄ., ἐξισλαμίσθη σύμπας ὁ Κλαπάδος, ἐγένοντο ἐπιδρομαὶ Σαρακηνῶν εἰς Ἀνοικτόν, Παπιανά, κ. ἄ., Μυτιληναῖοι ἁλιεῖς ἀπήγοντο καὶ ἐφονεύοντο εἰς Δαρδανέλλια ὡς κατάσκοποι τῆς Ῥωσίας, τῷ δὲ 1709 συμμορία ὑπὸ τοὺς Ἀλῆν καὶ Μεχμὲτ Ντορμοὺζ κατελεηλάτησε τὴν Μονὴν τῆς Μυρσινιωτίσσης.

Κατὰ τοὺς πρώτους χρόνους τοῦ Ῥωσοτουρκικοῦ πολέμου οἱ Ψαριανοὶ ἐξετέλεσαν πλείστας ἐπιδρομὰς κατὰ τῆς νήσου, κατέλαβον ἐξ ἐφόδου καὶ ἐλεηλάτησαν τὸ Πλουμάρι καὶ τὴν Πλαγιὰν καὶ μετέσχον τῶν κατὰ τῆς νήσου ἐπιχειρήσεων τῶν Ῥώσων. Ἡ πρώτη ἐγένετο τῷ 1770 (Ἰούλ. 10) διὰ 45 πλοίων, καθ' ἥν, ἐνῷ οἱ Τοῦρκοι ἐτράπησαν εἰς τὰ ὄρη, τὰ ἀγήματα προέβησαν εἰς γενικὴν λεηλασίαν καὶ πυρπόλησιν ἑτοίμων πρὸς καθέλκυσιν τουρκικῶν γαλιονιῶν, ἀναχωρήσαντα ἄνευ ἐνοχλήσεως μετὰ δύο ἡμέρας (Ἰούλ. 12)· ἐπηκολούθησε γενικὴ σφαγὴ τῶν κατοίκων ὑπὸ τοῦ τουρκικοῦ ὄχλου (Ἰούλ. 14), καθ' ἣν ἐπικινδύνως ἐτραυματίσθη ὁ αὐτόθι ἐξόριστος πατριάρχης Μελέτιος ὁ Β'. Δευτέρα ῥωσικὴ ἐπιδρομὴ ἐγένετο τῷ 1773· ἐνεφανίσθησαν 80 πλοῖα (Ὀκτώβρ. 29), συνεχῶς βομβαρδίσαντα τὸ φρούριον (Ὀκτ. 31), μεθ' ὃ ἐγένοντο δύο ἀποβιβάσεις (Νοέμβρ. 2), μία εἰς τὸν Β. λιμένα ὑπὸ τὸν Φὸν Τόλλ, ἄγοντα 1 τάγμα καὶ 2.000 Ἕλληνας καὶ Ἀλβανούς, καὶ ἑτέρα εἰς τὸν Ν. λιμένα ὑπὸ τὸν Πέτρον Δολγουρούκη, ὑφ' ὃν καὶ τάγμα Ἑλλήνων, Ἀλβανῶν καὶ Σκλαβούνων τοῦ κόμιτος Βόϊνοβιτς. Οἱ Τοῦρκοι ὠχυρώθησαν εἰς τὸ φρούριον, ἀπαγαγόντες τὸν Μελέτιον καὶ τὸν Μυτιλήνης Γεράσιμον, ἐνῷ τὰ ἄτακτα ἀποβατικὰ ἐπεδόθησαν εἰς τὴν λεηλασίαν. Τὴν ἑπομένην (Νοεβρ. 3) ἐγένετο ἀποτυχοῦσα τουρκικὴ ἔξοδος, μεθ' ἣν ἀποβιβασθεὶς ὁ ναύαρχος Σαμ. Γρέϋγ ἐπεχείρησεν ἀποτυχοῦσαν ἀπαγωγὴν τρ ῶν ἀκαθελκύστων τουρκικῶν πλοίων εἰς Πάρον καὶ ἅλωσιν τοῦ «Καστρελιοῦ». Εἶτα ὁ στόλος ἀπεχώρησε, πλὴν ἑνὸς πλοίου αἰχμαλωτισθέντος μετὰ τοῦ πληρώματος. Ἐπυρπολήθησαν τότε τὰ τουρκικὰ πλοῖα καὶ πλεῖστα σεράγια (Μουχαφούζ, Ὀσμᾶν πασᾶ κ. ἄ.), ἐξ οὗ ἠπειλήθησαν σφαγαί, ἰδίως δὲ ἐκινδύνευσεν ὁ πατριάρχης, διασωθεὶς ὑπὸ τοῦ διοικητοῦ καὶ ἀποφυλακισθεὶς (Νοεβρ. 7) ὑπὸ τοῦ ἀφιχθέντος ναυάρχου Τζεζάερλι Χασὰν πασᾶ.

***Κατὰ τὸν Ἀγῶνα.*** Ἡ πρώτη ἐπαναστατικὴ κίνησις ἀνάγεται εἰς τὸ 1817, ὅτε κατελθὼν ἐξ Ὀδησσοῦ ὁ Μυτιληναῖος ἔμπορος *Παλαιολόγος Λεμονῆς* ἐκατήχησε τὸν Μυτιλήνης *Καλλίνικον*, τοὺς ἀδελφούς του *Γιαννάκην* ἢ «Κοντογδῆν» καὶ *Γεώργιον*, τὸν γαμβρόν του κοτζάμπασην *Χατζηγόρην Ἰωάννου*, τὸν *Δημήτριον Παλαιολόγον* κ. ἄ. καὶ συνέστησεν ἑταιρείαν, ἧς τὸ συνυποσχετικὸν ὑπέγραψαν δώδεκα. Ἐπροδόθησαν ὅμως ὑπὸ τοῦ Χατζηγιωργάκη Μάνδρα καὶ ἐξ αὐτῶν ὁ μὲν Χατζηγρηγόρης συνελήφθη ἀμέσως, ὁ δὲ Γιαννάκης καταφυγὼν ἐπὶ τοῦ Ὀλύμπου παρεδόθη πρὸς ἀποφυγὴν σφαγῶν· ἀμφότεροι ἀπηγχονίσθησαν (1817, Μάϊος). Ἐν τῇ ξένῃ ἐξηκολούθησεν ἡ εἰς τὴν Φιλικὴν Ἑταιρείαν κατήχησις διαφόρων Μυτιληναίων, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἐν Ἰασίῳ ὁ *Βενιαμὶν ὁ Λέσβιος* (1819), ἐν Γαλατσίῳ ὁ ἱεροδιάκονος *Νεόφυτος* κατηχήσας καὶ τὸν ἔμπορον *Γιαννοῦκον Κωνσταντίνου* (1820) καὶ ἐν Ὀδησσῷ οἱ ἔμποροι *Π. Ι. Μπερτουμές*, κατηχήσας τὸν ἀδελφόν του *Σῖμον Μπερτουμὲν* καὶ τὸν *Δ. Ζᾶνον*, καὶ οἱ *Δ. Ἰωαννόπουλος, Παλαιολ. Βάγιας* καὶ *Μιχ. Τσοχατζόπουλος* (1821). Τῷ 1821 ὁ Ῥῶσος ἐν Χίῳ ἀντιπρόξενος Μυλωνᾶς κατέστρωσε «σχέδιον στρατηγικὸν περὶ τῆς Χίου καὶ Μυτιλήνης» καὶ διεμήνυσεν αὐτὸ διὰ τοῦ Θ. Νέγρη εἰς τὸν Ἰ. Τουμπάζην (Ἀπρίλ. 22)· συνίστατο τοῦτο εἰς τὴν ἀποβίβασιν 500 ναυτῶν καὶ τὴν ἐξέγερσιν τῶν χωρικῶν, δὲν ἐπραγματοποιήθη ὅμως, ἐνῷ τὸ αὐτὸ ἔτος οἱ ἐν τῷ φρουρίῳ Σίγρι κατασταθέντες Τοῦρκοι πεζοναῦται ἐλεηλάτησαν τὴν μονὴν Ὑψηλοῦ, καὶ ἐν Μυτιλήνῃ διεσώθησαν (27 Μαΐου) οἱ Χριστιανοὶ ὑπὸ τοῦ Μουσταφᾶ Κουλαξὶζ ἀπὸ ἀγρίαν σφαγήν. Τῷ 1822 ὁ Λεμονῆς ἐπέτυχεν ἐξουσιοδότησιν τῆς Διοικήσεως τῆς Ἑλλάδος, ὅπως ἐξεγείρῃ τὴν Μυτιλήνην καὶ σχετικὸν ἔγγραφον τοῦ Κωλέτη (Ἀπριλ. 9) πρὸς τὸν Λυκοῦργον Λογοθέτην καὶ τοὺς Ψαριανούς, οἵτινες ὅμως προβάλλοντες τὴν πρόσφατον καταστροφὴν τῆς Χίου καὶ τὸ ἀπόρθητον τῶν φρουρίων τῆς Μυτιλήνης, ἔπεισαν αὐτὸν νὰ παραιτηθῇ τῆς προσπαθείας. Τὸ αὐτὸ ἔτος ὁ διοικητὴς τῆς νήσου Μουσταφᾶ Κουλαξίζ, ἀφοπλίσας τοὺς κατοίκους, ἔκτισε περὶ τὴν πόλιν ἰσχυρὸν περίβολον, ἐφρόντισε διὰ τὴν ἀντικατάστασιν τοῦ στρατιωτικοῦ διοικητοῦ καὶ (1823, Ἰούν.) μέσῳ τῶν Ἑλλήνων προκρίτων προέτεινεν εἰς τοὺς Ψαριανοὺς ἐτήσιον «φόρον οὐχὶ εὐκαταφρόνητον», διὰ νὰ ἀφήσουν τὴν Μυτιλήνην ἥσυχον ἀπὸ τὰς ἐπιδρομάς. Ἀσμένως ἀπεδέχθη αὐτὸ ἡ βουλὴ τῶν Ψαρῶν, ἀλλ' ὅτε ἀπεστάλη εἰς Μυτιλήνην ὁ Μιτυληναῖος ἀγωνιστὴς *Θεόδωρος Ἀλκαῖος* (1823, Σεπτ.) ὁ Μουσταφᾶ, φοβούμενος τὸν παραπλέοντα Τοῦρκον ναύαρχον, προέτεινεν ἀναβολὴν τῆς συμφωνίας. Τὸ ἴδιον ἔτος ἐλαφυραγωγήθη καὶ πάλιν τὸ Πλουμάρι ὑπὸ τῶν Ψαριανῶν, τῷ δὲ 1824 τὰ Τελώνια καὶ ἡ Ἐρεσσὸς ὑπὸ γενιτσάρων ἀποστελλομένων εἰς Ψαρὰ καὶ τῷ 1825 (Μάϊος) κατεστράφη τὸ Σίγρι ὑπὸ τοῦ εἰς Ἑλλήσποντον πλέοντος Σαχτούρη.

Ἐκ τῆς θέσεώς της ἡ Μυτιλήνη ἐγένετο σταθμὸς τοῦ τουρκικοῦ στόλου καθ' ὅλην τὴν ἐπανάστασιν· διετέλεσεν ὁρμητήριον τοῦ Χοσρὲφ κατὰ τῆς Σάμου, τοῦ Καραλῆ κατὰ τῆς Χίου κ. ἄ., ὑπῆρξε τόπος συγκεντρώσεως τῶν ἐξ Ἀσίας στρατευμάτων ἢ τῶν διὰ Κωνσταντινούπολιν αἰχμαλώτων (Χῖοι, Ψαριανοὶ) καὶ καταφύγιον τοῦ διωκομένου τουρκικοῦ στόλου. Εὑρίσκετο ὑπὸ τὴν ἐπιτήρησιν τοῦ ἑλληνικοῦ στόλου, ὁ «Τηλέγραφος» τῶν Ψαρῶν ἐπιτυχῶς παρηκολούθει τὸ Σίγρι καὶ εἰς τὰ ὕδατα τῆς Μυτιλήνης ἐγένοντο ἱκαναὶ ναυμαχίαι. Τῷ 1821 (Μάϊος 26 — 27) ἐπυρπολήθη παρὰ τοῦ Παπανικολῆ εἰς τὸν ὅρμον τῆς *Ἐρεσσοῦ* τὸ ἐκ Σιγρίου καὶ εἰς Χίον πλέον δίκροτον «Κινούμενον Ὄρος» ὑπὸ τὸν Ὀσμὰν Γκέκα ἢ Μπεκτασῆ Ἀρναούτ, ἐγένοντο ἐπιτυχεῖς ἀποβάσεις τοῦ Ν. Γουδῆ καὶ Γ. Λεμπέση καὶ ἐδιώχθη μέχρις Ἴμβρου ὁ ἐκ Μοσχονησίων διὰ Σιγρίου εἰδοποιηθεὶς καὶ ἐπερχόμενος τουρκικὸς στόλος. Τότε ἐχρησιμοποιήθη τὸ πρῶτον πυρπολικὸν τοῦ ἀγῶνος, ἐν Ἐρεσσῷ κατασκευασθὲν ὑπὸ τοῦ Ἰω. Παπατούκου. Τῷ 1824 ἐδιώχθη ἐπιτυχῶς ὑπὸ τῶν Βώκου, Καλογιάννη, Νικοδήμου, Ῥομπότση, Φιλιπέγγου κ. ἄ. ὁ στόλος τοῦ Αἰγυπτίου Ἰμπραήμ, ἀπὸ Καραμπουρνοῦ μέχρις *Ἐρεσσοῦ* (Σεπτ. 24), ὅπου ἐγένετο καὶ σύντομος ναυμαχία (Σεπτ. 25), ἀπώλεσαν δὲ οἱ Αἰγύπτιοι 2 κορβέτας καὶ 1 δικάταρτον κατὰ τὴν δίωξιν καὶ 1 κορβέταν καὶ 4 βρίκια κατὰ τὴν προσάραξιν. Τῷ 1826 εἰς τὸ *στενὸν τῆς Μυτιλήνης* συνεκρούσθησαν (Αὔγ. 27—28) ὁ Μιαούλης καὶ ὁ Ταχίρ, σχόντες ἴσας ζημίας, καὶ ὁ τουρκικὸς στόλος ἐδιώχθη ἐπιτυχῶς ἀπὸ Μπαμπᾶ ἕως Σμύρνης (Αὔγ. 29—30). Ἐπίσης ἔξω τῆς Μιτυλήνης (1828, Μάϊος) ἐβύθισαν ὁ Μιαούλης καὶ ὁ Κανάρης δικάταρτον καὶ φρεγάταν τουρκικὴν καὶ ἄλλοτε ἄλλαι ἥσσονος σημασίας ἐπιχειρήσεις ἐγένοντο εἰς τὰ ὕδατα τῆς νήσου. Ἔξω δὲ αὐτῆς ἔδρασαν πλεῖστοι Μυτιληναῖοι ἀγωνισταί, οἱ: *Π. Ι. Μανιάτης, Ι. Κ. Μυτιληναῖος, Μιχ. Παλαιολόγος* κ. ἄ.

Ἡ ἐφεξῆς μέχρι τῆς ἀπελευθερώσεως ἱστορία τῆς νήσου εἶναι σύντομος. Τῷ 1855 διετέλεσε κέντρον στρατολογίας διὰ τὰ ἐν Κριμαίᾳ συμπολεμοῦντα μὲ τοὺς Τούρκους ἀγγλικὰ σώματα (Land Trasport Corps), συνεχῶς δὲ ἐγένετο ἀντικείμενον βλέψεων τῶν μεσογειακῶν δυνάμεων ὡς προσκειμένη εἰς τὰ Δαρδανέλλια.

Ἀπὸ τοῦ Ἰταλοτουρκικοῦ πολέμου (1911—1912) ηὐξήθη ἡ φρουρὰ τῆς Μυτιλήνης καὶ ὠργανώθησαν αἱ πρῶται ἐν τῷ ἐσωτερικῷ τῆς νήσου ἀμυντικαὶ θέσεις ἐπὶ τοῦ «Σκοτεινοῦ Βουνοῦ»· κατὰ τὸν πόλεμον αὐτόν, μόνον τῇ ἐπεμβάσει τῆς Αὐστρίας καὶ ἐκ φόβου ὅτι θὰ ἐζήτει αὕτη, ὡς ἐγκαίρως ὑπέμνησε, τὰ ἐκ τοῦ ἄρθρου 7 τῆς μετ' αὐτῆς συνθήκης ἀνταλλάγματα, παρῃτήθη ἡ Ἰταλία τῆς σχεδιασθείσης καταλήψεως τῆς Μυτιλήνης.

Ἐπὶ τουρκοκρατίας, ἐν ἔτει 1867 (Μάρτ.—Φεβρ.) ἰσχυροὶ σεισμοὶ κατέστρεψαν σημαντικῶς τὴν πρωτεύουσαν (Μαρτ. 7) καὶ τὰ χωρία τῆς Καλλονῆς, τὸν Μανδαμάδον, Μόλυβον, Παράκοιλα καὶ Πέτραν· τῷ δὲ 1889 (Ὀκτ. 14) ἐκ σεισμοῦ πάλιν (25 νεκροὶ) κατέρρευσε τὸ φρούριον τοῦ Σιγρίου καὶ κατεστράφησαν αἱ μοναὶ Λειμῶνος καὶ Ὑψηλοῦ καὶ τὰ χωρία Ἄγρα, Βατοῦσα, Ἐρεσσός, Μεσότοπος, Σίγρι, Στύψη, Τζίθρα καὶ Χύδηρα.

***Διοίκησις.*** Παλαιότατα ἡ νῆσος ἀπετέλει σαντζάκιον ὑπὸ τὸν ναύαρχον διοικητὴν τοῦ «ἐγιαλετίου τῶν νήσων»· ἀκολούθως ἐγένετο ἕδρα τῆς πρώτης διοικήσεως τοῦ «βιλαετίου τῶν νήσων» (ἕδρα τοῦ βιλαετίου ἡ Ῥόδος) καὶ ἀπὸ τοῦ Ἰταλοτουρκικοῦ πολέμου ἕδρα τοῦ βιλαετίου αὐτοῦ. Ἀρχικῶς πολιτικοὶ διοικηταὶ τῆς νήσου ἦσαν οἱ ἐξ ἐνοικιάσεως ἔχοντες τὴν ἐπικαρπίαν τῶν δημοσίων προσόδων αὐτῆς («ναζίρηδες»), ἐξ αὐτῶν δὲ διεκρίθησαν κατὰ τὸν ΙΗ' αἰῶνα οἱ Μπεκὴρ καὶ Ὀμέρ, καταστήσαντες ἕδραν τῆς νήσου τὰ παρὰ τὴν Καλλονὴν τουρκοχώρια, καὶ κατὰ τὸν ΙΘ' οἱ Μουσταφᾶ (1822—1829) καὶ Ἰσμαὴλ (1829—1840) πασᾶδες ἐκ τοῦ διακεκριμένου καὶ πλουσίου οἴκου τῶν Κουλαξὶζ-ζαντέδων. Οἱ κυβερνῆται οὗτοι, οἵτινες ὑπεχρεοῦντο νὰ διατηροῦν 1 ἢ 2 γαλέρας, ἀντικατεστάθησαν διὰ τακτικῶν ὑπαλλήλων («μουτεσαρίφηδων») ἀπὸ τοῦ 1839· πρῶτος τοιοῦτος ὁ ἀνωτέρω Ἰσμαήλ. Διεκρίνετο ἡ νῆσος εἰς τρεῖς «καζᾶδες» (Μυτιλήνης, Μολύβου, Καλλονῆς), παρὰ τοὺς «καϊμακάμηδες» τῶν ὁποίων ὑπῆρχον, πρὸ τοῦ 1839, οἱ «καζαβεκίληδες» καὶ εἶτα οἱ «ἀζᾶδες», ἐκπρόσωποι τοῦ πληθυσμοῦ. «Ναχιέδες» (δῆμοι) ὑπῆρχον ὀκτὼ (Ἁγιάσσου, Βασιλικῶν, Γέρας, Καλλονῆς, Μολύβου, Μυτιλήνης, Πλωμαρίου καὶ Σιγρίου), συγκεντροῦντες (1912) 90 ἐπίσημα χωρία· παρὰ τοὺς «μουδίρηδες» (δημάρχους) ὑπῆρχον πρὸ τοῦ 1839 οἱ «κοτζαμπασῆδες» καὶ εἶτα αἱ «δημογεροντίαι» ἢ «προεστᾶτα» (ἄλλως «δωδεκάδα», «κλῆρα» κ. τ. τ.).

***Δικαιοσύνη.*** Πλὴν τῶν «καδήδων» (Καλλονῆς, Μολύβου, Μυτιλήνης) ὑπῆρχον τρία σώματα. Τὸ «Μουακεμὲ» (=δικαστήριον) ἐξεδίκαζεν ὑποθέσεις ἀκινήτου ἰδιοκτησίας. Τὸ «Μεντζλὶς ὀντασὶ» (=συμβούλιον), ἀποτελούμενον ὑπὸ τοῦ μητροπολίτου, τοῦ μουφτῆ, τοῦ καδῆ Μυτιλήνης καὶ ἀνὰ 4 Τούρκους καὶ Χριστιανοὺς προκρίτους ἐξεδίκαζεν ὑπὸ τὴν προεδρίαν τοῦ πασᾶ παντοῖα ζητήματα. Τὸ «Τιτζαρὲτ Μεντζλὶς» (=ἐμπορικὸν συμβούλιον), ἀποτελούμενον ἐξ Ἑλλήνων, Τούρκων καὶ Εὐρωπαίων καὶ συστηθὲν τῷ 1852, ἐξεδίκαζε τὰς ἐμπορικὰς ὑποθέσεις κατὰ τὸν γαλλικὸν κώδικα. Χρέη εἰρηνοδικῶν ἐξετέλουν αἱ δημογεροντίαι, ἐφέτου δὲ ὁ πασᾶς τοῦ Αἰγαίου κατὰ τὰς περιοδείας του.

***Δημόσιαι πρόσοδοι.*** Αἱ κατ' ἀποκοπὴν ἐνοικιαζόμεναι δημόσιαι πρόσοδοι («μακτού»), εἰσπραττόμεναι ὑπὸ τῶν ναζίρηδων, συνίσταντο κυρίως εἰς τὴν ἄμεσον φορολογίαν τῆς παραγωγῆς («οὐσούρ») κατὰ τὸ $^1/_5$ διὰ τοὺς Χριστιανοὺς καὶ κατὰ τὸ $^1/_7$ διὰ τοὺς Τούρκους (1813). Πλὴν αὐτῆς διεμορφώθη σὺν τῷ χρόνῳ καὶ σύστημα μερικωτέρων φορολογιῶν. Τινὲς τῶν ναζίρηδων (Μουσταφᾶ Κουλαξὶζ) εἶχον τὸ μονοπώλιον τοῦ ἐξωτερικοῦ ἐμπορίου καὶ ἀναγκαστικῶς ἠγόραζον τὴν ἐλαιοπαραγωγὴν τῆς νήσου, ἀφήνοντες εἰς τοὺς Χριστιανοὺς μόνον τὸ πρὸς διατροφήν των («γιεμεκλὶκ») ἔλαιον. Διὰ τοῦ χάτι-σερὶφ (1839) ὡρίσθη ἐνιαύσιος γενικὸς φόρος («βεργγὶ») 949.510 γροσίων δι' ὅλην τὴν νῆσον καὶ ἡ δεκάτη τῆς παραγωγῆς, καταργηθέντος (τυπικῶς μόνον) παντὸς ἄλλου. Μετὰ εἰκοσαετίαν περίπου ηὐξήθη ὁ ἐνιαύσιος φόρος κατὰ 22 % (1.162.544 γρόσια), κατανεμηθεὶς κατὰ τὰ $^7/_8$ εἰς τὸν ἑλληνικὸν καὶ κατὰ τὸ $^1/_8$ εἰς τὸν τουρκικὸν πληθυσμόν, προσετέθη δὲ καὶ στρατιωτικὸς φόρος («μπεντελὶ ἀσκὲρ») 650.000 γροσίων ἀντὶ τοῦ ποτὲ χαρατσίου, ἀνερχομένου εἰς 500.000 γρόσια. Τότε ἀπέδιδε τὸ τελωνεῖον τῆς νήσου

Digitized by Google

*Ἐνδυμασίαι χωρικῶν γυναικῶν : 1) «Μασούριασμα» νήματος. 2) Ἁγιασσώτισσα στὴν ἐκκλησία. 3) Τὸ πηγάδι τοῦ χωριοῦ.* [Φωτογρ. Σίμ. Χουτζαίου.]

2.000.000 γρόσια ἐτησίως, τὸ μονοπώλιον τοῦ ἅλατος 2—3.000.000 γρ., ἐκ τῆς δεκάτης ἡ τῶν ἐλαιῶν ἀνήρχετο εἰς 9—12.000 καντάρια, ἡ τῶν βαλανιδίων εἰς 1.500 καντάρια, ἡ τῶν ὀπωρῶν εἰς 1.000.000 γρόσια, ὑπῆρχε δὲ καὶ ποιμνιακὸς φόρος 1 ½—5 γρ. κατὰ κεφαλήν. Ἡ ὅλη παραγωγὴ τῷ 1874 ἀπέδιδε περὶ τὰς 80.000 λίρας εἰς τὸ δημόσιον, τὸ δὲ 1909 οἱ ἄμεσοι καὶ ἔμμεσοι ἀπὸ τῆς νήσου εἰσπράξεις ἦσαν περίπου 400.000 λίραι.

***Ὀχύρωσις.*** Ἐκ τῶν παλαιῶν φρουρίων διετήρησαν οἱ Τοῦρκοι τρία: τὸ τῆς Μυτιλήνης, ἐπισκευασθὲν τὸ 1677 ὑπὸ τοῦ βοϊβόδα Ἐμποὺ Μπεκήρ, τὸ τοῦ Μολύβου καὶ τὸ τῆς Καλλονῆς («Καλλόνια-Χισσάρ»)· τὸ τελευταῖον ἐγκατέλειψαν, ἀνεγείραντες διὰ τῆς φορολογίας (1757) τῶν περιφερειῶν Ἐρεσσοῦ, Ὑψηλοῦ καὶ Τελωνίων τὸ φρούριον Σιγρίου. Εἰς αὐτὰ ὑπῆρχον ἐπιτηρηταί, εἰσπράττοντες μέρος τῶν δημοσίων προσόδων καὶ ὑπαγόμενοι εἰς τὸν φρούραρχον τῆς νήσου. Εἰς τὴν πρωτεύουσαν ὑπῆρχε ναυπηγεῖον («ταρσανᾶς») ἱδρυθὲν ὑπὸ τοῦ Τζεζάερλη Χασὰν καὶ διατηρηθὲν μέχρι τῶν μέσων τοῦ ΙΘ΄ αἰῶνος.

Ἡ νῆσος ἐχρησίμευσε καὶ ἐπὶ τουρκοκρατίας ὡς ἐπιφανὴς τόπος ἐξοριῶν, περιωρίσθησαν δὲ ἐπὶ τῆς Μυτιλήνης ὁ βεζύρης Τσορλουλοὺ Ἀλῆ-πασᾶς (1710), αὐτόθι θανατωθείς, ὁ βεζύρης Μπαλτατζῆς Μεχμὲτ πασᾶς (1711), ὁ βοϊβόδας Ἰωάννης Ρακοβίτζας (1732 — 1733), ὁ μέγας βεζύρης Χεκίμογλου Ἀλῆ-πασᾶς (1743), ὁ πασᾶς τοῦ Βιδινίου Μουσταφᾶς (1765) αὐτόθι θανατωθείς, ὁ βοϊβόδας Στέφανος Ρακοβίτζας (1765 — 1766), ὁ Κωνσταντῖνος Μουρούζης (1819) κ.ἄ., ἐν οἷς καὶ οἱ πατριάρχαι Μελέτιος ὁ Β΄ (1769 — 1774) καὶ Προκόπιος ὁ Πελεκάσης (1789).

***Πληθυσμός.*** Ἡ νῆσος κατῳκεῖτο τότε κατὰ ἄθλια χωρίδια, ὧν ἐπισημότερα τὰ ἑπτὰ «χωριὰ τῆς Καλλονῆς» καὶ τὰ ὀκτὼ «χωριὰ τῆς Γέρας» εἰς τὴν θέσιν τῶν παρακμασασῶν ὁμωνύμων πόλεων καὶ αἱ 19 «κατοῦνες τοῦ Πλουμαριοῦ», ἐξ ὧν συνῳκίσθη ἡ ὁμώνυμος σημερινὴ πόλις. Διὰ τοῦ ἐποικισμοῦ ἢ τοῦ ἐξισλαμισμοῦ εἶχον δημιουργηθῆ 16 περίπου ἀμιγῆ τουρκοχώρια, ὧν τὰ πλεῖστα ἐξέλιπον τελείως ἢ κατοικοῦνται ὑπὸ προσφύγων· ἐξέλιπον ἐπίσης δεκάδες ἐπιφανῶν ἑλληνικῶν χωρίων γνωστῶν ἐξ ἐγχωρίων κωδίκων, καταλιπόντα τὸ ὄνομά των εἰς διαφόρους ἀγροτικὰς θέσεις.

*Μεσαιωνικὴ ἐνδυμασία ἀστῆς Μυτιληναίας καὶ χωρικῶν τῆς Πέτρας.* [Χαλκογρ. Tournefort.]

***Ἐκπαίδευσις.*** Τὸ πρῶτον γνωστὸν σχολεῖον τῆς Μυτιλήνης (εἰς «Σαρῆ-Μπαμπᾶ») ἱδρύθη ὑπὸ τοῦ καπουκεχαγιᾶ *Σταυράκη* (1744, Αὔγ.) συμβαλόντων τῶν υἱῶν του Γεωργάκη σπαθάρη καὶ Γιαννάκη κουπάρη, τῆς κοινότητος καὶ τοῦ προεστῶτος Μανωλάκη Χατζηγιώργη. Τῷ 1812 *Βενιαμὶν ὁ Λέσβιος* ἐπεχείρησε νὰ ἱδρύσῃ σχολὴν ἐν Μυτιλήνῃ, προσκρούσας ὅμως εἰς κυβερνητικὴν ἀπαγόρευσιν περιωρίσθη εἰς διδασκαλίαν ἐν τῷ μητροπολιτικῷ μεγάρῳ τῆς Καλλονῆς. Εἰς αὐτὸν ὀφείλεται ἡ ἐπακολουθήσασα ὤθησις· τότε δὲ περίπου ἐδίδασκον οἱ *Ἰγνάτιος Σαρδέλλης* (Μυτιλήνη), *Νικήτας ὁ Σύμιος* (Μόλυβος), *Φιλόθεος ὁ Σκυριανὸς* (Πλουμάρι), *Ἀκίνδυνος ὁ Ἰβηρίτης* (Ἁγιάσσος) κ.ἄ. Τῷ 1813 (Ἰούνιος) ἱδρύθη ἡ σχολὴ τῆς Καλλονῆς ἐποπτεύοντος τοῦ Μηθύμνης *Παναρέτου*. Ἤρχισεν ἔπειτα ἀθρόα ἡ ἵδρυσις ἀλληλοδιδακτηρίων, τῷ 1840 ἐκτίσθη τὸ Γυμνάσιον Μυτιλήνης καὶ πρὸ τοῦ 1874 τὸ τουρκικὸν Ἰδαδιέ. Τῷ 1840 ἐλειτούργουν 46 δημοτικὰ ἀρρεναγωγεῖα, 3 παρθεναγωγεῖα καὶ 8 ἑλληνικαὶ σχολαί· τῷ 1876: 56 δημοτικὰ ἀρρένων (2.500 μαθηταί), 17 παρθεναγωγεῖα, 1 γυμνάσιον (Μυτιλήνη), 1 ἡμιγυμνάσιον (Πλωμαρίου) καὶ 7 ἑλληνικαὶ σχολαί· καὶ τῷ 1912: 55 δημοτικὰ ἀρρένων (μαθητ. 10.550, διδάσκ. 131), 27 παρθεναγωγεῖα (μαθήτρ. 3.950, διδ. 75), 1 γυμνάσιον, 2 ἡμιγυμνάσια (Ἁγιάσσου, Πλωμαρίου) καὶ 10 ἀστικαὶ σχολαί.

***Λαϊκὸν ἔνδυμα.*** Κατὰ τοὺς χρόνους τούτους ἐπεκράτησε τὸ σημερινὸν λαϊκὸν ἔνδυμα, τὰ «βρακιὰ» ἢ «βρατσιά», ἡ νησιώτικη δηλαδὴ βράκα διὰ τοὺς ἄνδρας («βρακᾶδες») καὶ τὸ τουρκικὸν σαλβάρι διὰ τὰς γυναῖκας («βρακοῦσες»). Τὴν ἀνδρικὴν ἐνδυμασίαν ἀποτελοῦν: τὸ «βρακί», μέλαν ἢ βαθυκύανον, μόλις καλύπτον τὸ γόνυ καὶ κρατούμενον ἀπὸ μέλαν ζω-

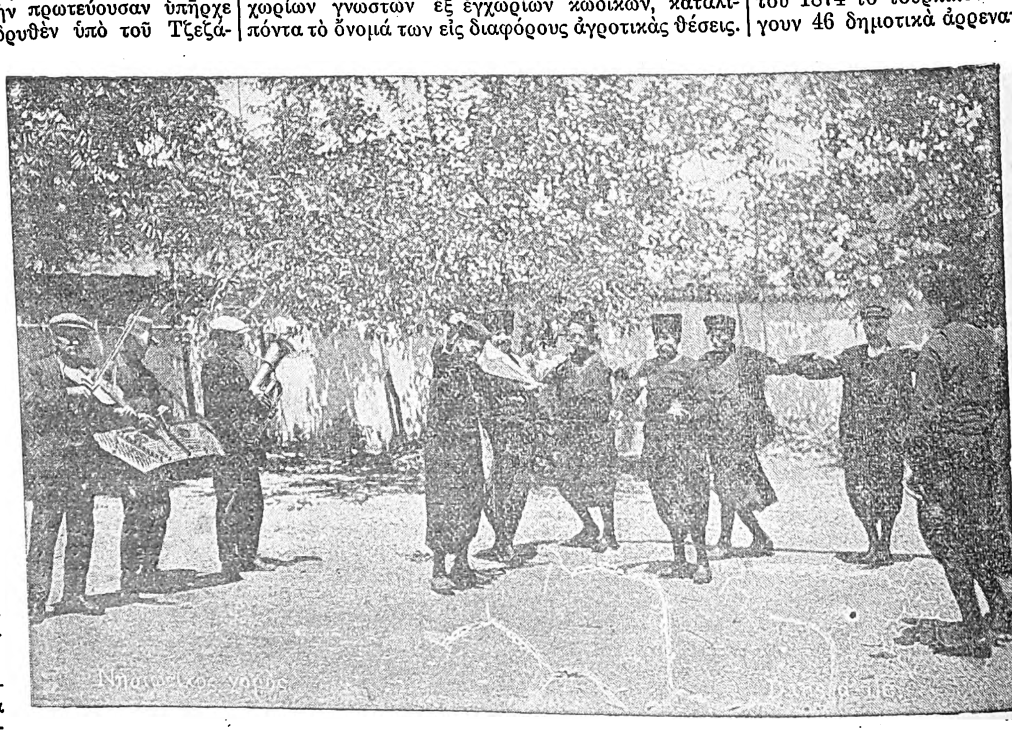

*Ὁ τακτικὸς κυριακάτικος χορὸς τοῦ μυτιληναϊκοῦ χωριοῦ.* [Φωτογρ. Σίμ. Χουτζαίου.]

Digitized by Google

νάρι»· τὸ «κάμ(ι)σο», ὑποκάμισον, μέλαν συνήθως μάλλινον, καὶ ἐπ' αὐτοῦ ἡ «σαλταμάρκα», βαθυκύανον σταυρωτὸν γιλέκον, βελούδινον ἐνίοτε μὲ χωρικὰ κεντήματα («γαϊτάνια») καὶ διακοσμητικὰς σειρὰς κομβίων· ἡ «πατατούκα», βαρὺς ἐπενδύτης βαθέος χρώματος μάλλινος· ἡ «μαντήλα» μέλαν μανδήλιον, χρησιμοποιούμενον καὶ ὡς κεφαλόδεσμος ἀλλὰ κυρίως ριπτόμενον ὡς στόλισμα εἰς τοὺς ὤμους· ἡ «κατσούλα», πίλημα μέλαν βελούδινον ἢ ἐξ ἀστραχὰν καὶ παλαιότερα τὸ κόκκινον ἑλληνικὸν «φέσι»· περικνημῖδες μέχρι τοῦ γόνατος καὶ σκαρπίνια ἐγχώρια. Τὴν γυναικείαν στολὴν ἀπαρτίζουν: τὰ «βρακιά», ἀλλεπάλληλα, πλέον τοῦ ἑνός, ἐνίοτε ἕως ἓξ (διαφόρου προορισμοῦ ἕκαστον), ποικιλόχρωμα, καλύπτοντα τὸν πόδα μέχρι τοῦ ἀστραγάλου· τὸ «ρουσικό», ὑποκαμισοειδὲς ζακέτον πολύχρωμον, ἐνίοτε κεντητόν· τὸ «σουρτοῦχο» (ἢ «κοντογούνι»), μάλλινος ἢ ἐκ δορᾶς ἐπενδύτης χειμερινός· ἡ «φοινίκα» (ἢ «μαντήλα»), ποικιλόχρωμος κεφαλόδεσμος παλαιότατα ἀντικαθιστώμενος ὑπὸ τοῦ γυναικείου φεσίου· καὶ ὡς ὑπόδησις συνήθη σκαρπίνια («μποτίνια»») ἢ ἰδιάζοντα χονδροειδῆ χωρικὰ ὑποδήματα («κουντοῦρες»). Ὁ τρόπος τῆς κομμώσεως (συνήθεις αἱ πλεξίδες: «βουρλίδες»), τῆς διαρρυθμίσεως τοῦ κεφαλοδέσμου καὶ αἱ λεπτομέρειαι εἰς τὸ σχῆμα τοῦ βρακιοῦ ἀποτελοῦν τοὺς κατὰ χωρία συρμούς. Σύνηθες κόσμημα: μία ἢ περισσότεραι σειραὶ («ἁρμαθιὲς») φλωρίων («πενταχοσάρες», «τρακοσάρες» κτλ.) περὶ τὸν τράχηλον. Αἱ ἀνωτέρω στολαί, ἐλαφρῶς ἐξευρωπαϊσμέναι (ἀντικατάστασις τῆς βράκας μόνον ὑπὸ περισκελίδος ἢ φούστας) ἀποτελοῦν τὰ «φράγκικα», μεγάλως διαδιδόμενα ἐσχάτως ἐν τῇ ὑπαίθρῳ. Π. Ν. Π.

ΝΕΩΤΕΡΟΙ ΧΡΟΝΟΙ. ***Ἡ κατάληψις.*** Ἡ ἀπόφασις τῆς καταλήψεως τῆς Μυτιλήνης ὑπὸ τῆς Ἑλλάδος (6η Νοεμβρ. 1912) ἐλήφθη καθ' ὁδηγίας τοῦ Κλεμανσώ, ἀποβλέποντος δι' αὐτῆς εἰς τὴν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας ἀπόσπασιν τῆς Δωδεκανήσου· ἀνάλογος πρότασις εἶχεν ἀπορριφθῆ κατὰ τὰς ἀρχὰς τοῦ πολέμου ἐκ φόβου ἀπαιτήσεως ἀντισταθμισμάτων παρὰ τῆς Βουλγαρίας. Τὴν 7ην Νοεμβρίου ἀπέπλευσεν ἐκ Λήμνου μοῖρα 3 θωρηκτῶν, 3 ἀντιτορπιλλικῶν, 2 τορπιλοβόλων, 1 ναρκοβόλου καὶ 1 μεταγωγικοῦ, καταπλεύσασα εἰς Μυτιλήνην τὴν ἐπομένην ταυτοχρόνως μὲ ἑτέραν ἐκ Πειραιῶς μοῖραν 2 εὐδρόμων, 2 ἀντιτορπιλλικῶν, καὶ 2 μεταγωγικῶν. Ἡ ἀποβατικὴ δύναμις ἀπετελεῖτο ἐξ ἀνεξαρτήτου τάγματος, 4 λόχων, 3 μυδραλλιοβόλων καὶ 4 ἀποβατικῶν πυροβόλων· ἡ τουρκικὴ δύναμις (1650 στρατ., 1000 ἀντάρται, 500 Χριστιανοί), διεσκορπισμένη εἰς Οὐτζὰν κ. ἀ., εἶχε τὸ κύριον σῶμά της εἰς Μόλυβον· ἀρχηγὸς τῶν ἑλληνικῶν δυνάμεων ἦτο ὁ ναύαρχος Κουντουριώτης καὶ τῶν τουρκικῶν ὁ Γκανῆ πασᾶς. Ἅμα τῷ κατάπλῳ ἐτοποθετήθησαν ναυτικαὶ περίπολοι εἰς τὰ στόμια τοῦ διέκπλου τῆς Μυτιλήνης («Ἱέραξ» πρὸς Β., «Ἀσπὶς» πρὸς Ν.) καὶ πρὸ τοῦ Β. λιμένος («Ψαρά»), ἐνῷ εἰς τὸν Ν. λιμένα ἐγένετο ἡ ἀπόβασις, μετὰ ἀποτυχούσας διαπραγματεύσεις καὶ ἀποχώρησιν τῶν Τούρκων εἰς τὸ ἐσωτερικὸν τῆς νήσου. Ἐσχηματίσθη ἐγχωρία πολιτοφυλακή, κατεστάθησαν διοικηταὶ στρατιωτικὸς (Κ. Μελᾶς) καὶ πολιτικὸς (Ξεν. Στελλάκης) καὶ ἀπεχώρησεν ὁ στόλος, παραμεινάσης μοίρας 2 εὐδρόμων, 2 ἀντιτορπιλλικῶν καὶ 2 τορπιλλοβόλων. Μεθ' ὃ (Νοέμ. 10) κατελήφθη τὸ Πλωμάριον, πλεισταχοῦ δὲ κατελύθησαν ὑπὸ τῶν δημογεροντιῶν αἱ ἀρχαὶ καὶ ἐγένοντο πολιτοφυλακαί. Ἡ κατάληψις τῶν ΒΔ. τῆς νήσου ἐγένετο μετὰ μῆνα, κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ ὁποίου ὠργανώθησαν οἱ Τοῦρκοι καὶ προέβησαν εἰς σφαγὰς ἐν τῇ ὑπαίθρῳ, ἰδίως ἐν Πέτρᾳ, ὅπου ἐνεφανίσθη μὲν τὸ τορπιλλοβόλον «14» (Νοεμβρ. 9) καὶ ἀπεχώρησαν αἱ τουρκικαὶ ἀρχαί, ἀλλ' ἀπέπλευσε τὴν ἐπομένην. Τὴν 29ην Νοεμβρίου ἀφίχθη εἰς Μυτιλήνην μετ' ἐνισχύσεων (λόχος 210 Λεσβίων ἐθελοντῶν ἐξ Ἀμερικῆς, 165 ἄνδρες, 1 ὀρειβ. πυροβόλον) ὁ συνταγματάρχης Ἀπ. Συρμακέζης, ἀρχηγὸς τῶν ἐπιχειρήσεων τῆς προωθήσεως, τὴν 30ὴν ἐγένετο ἡ ἐκκίνησις τῶν ὅλων δυνάμεων (1.700 ἄνδρες, 8 πυροβ.), ἐνῷ τὴν 1ην Δεκεμβρίου ἀφιχθεῖσαι ἐκ Θεσσαλονίκης ἐνισχύσεις (1 τάγμα, 100 πεζοναῦται) ἀπετέλεσαν δευτέραν πτέρυγα ἄλλοθεν πορευθεῖσαν. Οἱ Τοῦρκοι συνεποσοῦντο εἰς 3.627 ἄνδρας (1.500 νιζάμ, 1.800 ρεδίφ, 300 μπασιμπουζοῦκοι, 27 ἀξιωμ.). Τὴν 4ην ἡ ἀριστερὰ πτέρυξ μεθ' ἧς ὁ ἀρχηγός, διὰ τῆς γραμμῆς «Λάμπου Μύλοι-Κρύο Νερὸ-Καλλονὴ» καὶ μετὰ ἀσημάντους συγκρούσεις εὑρίσκετο εἰς Δάφια, ἡ δεξιὰ διὰ «Θερμῆς-Φεράνας - Μυλοποτάμου - Ἁγίας Παρασκευῆς-Κατσαρᾶ-Ἀρίσβης» εἶχε καταστήσει προφυλακὰς ἐπὶ τοῦ Γερανίου, εἰς Πέτραν δὲ εἶχε καταπλεύσει μοῖρα εὐδρόμων πρὸς ἐνίσχυσιν τῆς τελειωτικῆς ἐπιθέσεως κατὰ τοῦ «Σκοτεινοῦ βουνοῦ»· αὐθημερὸν οἱ Τοῦρκοι πυρπολήσαντες τὴν Πέτραν καὶ κατασφάξαντες τοὺς κατοίκους ἀπεχώρησαν εἰς Συκαμιάν. Τὴν ἑπομένην (Δεκ. 5) ἡ ἀριστερὰ ἐπιδιώκουσα σύνδεσιν μετὰ τῆς μοίρας, ἐβάδισε πρὸς τὸ Σκοτεινὸ διὰ τῆς Μονῆς Λειμῶνος, προσβληθεῖσα κατὰ τὴν διὰ τοῦ στενοῦ «Σκοτεινοῦ-Ὀξειᾶς Πέτρας» δίοδόν της· κατέλαβεν ὅμως τὴν δεξιὰ τῆς ὁδοῦ κορυφογραμμὴν τοῦ Σκοτεινοῦ, μαχομένη μέχρι τῆς νυκτὸς καὶ ἐπιχειρήσασα ἀποτυχόντα νυκτερινὸν αἰφνιδιασμόν. Τὴν ἰδίαν ἡμέραν ἐνισχύθη (λόχος Λεσβίων, 2 πυροβ.) ἡ δεξιά, ἥτις τὴν ἐπομένην (Δεκ. 6) κατέλαβε τὸν Πετσοφᾶν καὶ κατέστησε προφυλακὰς ἔξω τοῦ Κλαπάδου· ἡ ἀριστερά, καταλαβοῦσα τὰ ΒΑ. τῆς Φίλιας ὑψώματα καὶ τὴν Ὀξειὰν Πέτραν, ἠπείλει ὑπερφαλαγγισμὸν τῶν Τούρκων. Τὴν ἐπομένην (Δεκ. 7), μετὰ συντόμους διαπραγματεύσεις, ἐσυνεχίσθη ἀμφοτέροθεν ἡ περίσφιγξις τῶν τουρκικῶν θέσεων μέχρι τοῦ μεσονυκτίου, ὅτε ἐλήφθησαν προτάσεις τοῦ Γκανῆ, ἐνῷ τουρκικὸν τμῆμα (205 ἄνδρ.) ἐξορμῆσαν, κατῆλθε καὶ παρεδόθη εἰς τὸν στόλον. Τὴν ἐπομένην (Δεκ. 8) κατῆλθον οἱ ἐναπομείναντες (1.500 ὁπλ., 9 ἀξιωμ.) εἰς Κλαπάδον, μεταφερθέντες εἰς τὸ φρούριον τοῦ Μολύβου καὶ ἐκεῖθεν εἰς Πειραιᾶ· τὴν ἑσπέραν διελύθησαν αἱ ἑλληνικαὶ θέσεις καὶ ἀπεστάλησαν ἀποσπάσματα εἰς τὴν ὕπαιθρον. Αἱ ὁλικαὶ ἀπώλειαι τοῦ ἑλληνικοῦ στρατεύματος ἀνῆλθον εἰς 15 νεκροὺς καὶ 81 τραυματίας.

***Μετὰ τὴν κατάληψιν.*** Ὁριστικῶς εἰς τὴν Ἑλλάδα παρεχωρήθη ἡ νῆσος ὑπὸ τῶν ἐκτελεστριῶν δυνάμεων τῶν ἄρθρων 5 τῆς Συνθήκης τοῦ Λονδίνου καὶ 15 τῆς Ἀθηνῶν (1914, Φεβρ. 13), ὑπὸ τὸν ὅρον τῆς ἀποχυρώσεως (démilitarisation) τῆς νήσου, τῆς διώξεως τοῦ μετὰ τῆς Ἀσίας λαθρεμπορίου καὶ τῆς προστασίας τῶν Μουσουλμάνων. Μέχρις ὅμως τοῦ Εὐρωπαϊκοῦ πολέμου οἱ Τοῦρκοι ἀπέβλεπον εἰς ἀποκατάστασιν τῆς ἐπικυριαρχίας αὐτῶν ἐπὶ τῆς νήσου. Κατὰ τὸν μέγαν πόλεμον ἡ Μυτιλήνη ἐχρησιμοποιήθη ὡς βάσις συμμαχικοῦ στόλου καὶ ἀεροπλάνων, ἰδίως οἱ δύο κόλποι καὶ ἡ Θερμή. Τῷ 1920 (Αὐγ. 10) διὰ τῆς συνθήκης τῶν Σεβρῶν ἀνεγνωρίσθησαν τὰ ἐπ' αὐτῆς ἑλληνικὰ δικαιώματα, διὰ δὲ τῆς συνθήκης τῆς Λωζάννης (1922, Ὀκτωβρ. 11) καθιερώθη ἐκ νέου ἡ ἀποχύρωσις τῆς Μυτιλήνης καὶ διὰ τῆς συμβάσεως τῆς ἀνταλλαγῆς (1923, Ἰαν. 30) ἀνεχώρησαν καὶ οἱ ὀλίγοι Τοῦρκοι, οἱ ὑπολειφθέντες ἐκ τοῦ ἀπὸ τοῦ 1912 ἀρξαμένου ἀβιάστου καὶ ἑκουσίου ἐκπατρισμοῦ. Κατὰ τὴν Μικρασιατικὴν καταστροφὴν (1922, Σεπτ.) δὶς προσεβλήθη ἡ νῆσος ὑπὸ τουρκικῶν ἀεροπλάνων, ἐν αὐτῇ δ' ἐξερράγη τὸ ἐπαναστατικὸν κίνημα τοῦ 1922. Π. Ν. Π.

—[ΕΚΚΛΗΣ. ΙΣΤΟΡ.] Ὁ Χριστιανισμὸς ἐκηρύχθη τὸ πρῶτον ἐν Μυτιλήνῃ τῷ 52 μ. Χ. ὑπὸ τοῦ Παύλου. Πρώτη ἐπισκοπικὴ ἕδρα τῆς νήσου γνωστὴ εἶναι ἡ τῆς *Μυτιλήνης*, τῆς ὁποίας πρῶτος γνωστὸς ἐπίσκοπος ὁ Εὐάγριος, μετασχὼν τῆς ἐν Σελευκείᾳ (359) τοπικῆς συνόδου· παρέμεινε δὲ μοναδικὴ ἐπὶ τῆς νήσου τοὐλάχιστον μέχρι τοῦ 451, ὁπότε ὁ Μυτιλήνης Φλωρέντιος τιτλοφορεῖται ἔτι ἐπίσκοπος «Λέσβου»· ἡ τῆς *Μηθύμνης* ἀναφέρεται τὸ πρῶτον ἀπὸ τοῦ 553, ὅτε ὁ πρῶτος γνωστὸς αὐτῆς ἐπίσκοπος Χριστόδωρος μετέσχε τῆς Ε΄ ἐν Κωνσταντινουπόλει οἰκουμενικῆς συνόδου. Κατὰ τοὺς ΙΓ΄ καὶ ΙΖ΄ αἰῶνας ἀναφέρεται καὶ χωροεπισκοπὴ *Ἐρεσσοῦ* ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Μυτιλήνης, μόνος δὲ γνωστὸς ἱεράρχης ἐν τῇ ἕδρᾳ ταύτῃ ὁ Θεόδωρος (β΄ ἥμισυ ΙΓ΄ αἰῶνος). Ἐπίσης ἀναφέρεται καὶ εἷς τιτουλάριος ἐπίσκοπος *Μακαριουπόλεως* ὑπὸ τὸν μητροπολίτην Μηθύμνης, ὁ Νικηφόρος (1800).

Ἡ ἑκάστοτε εὐρύτης τῆς ἐπισκοπικῆς ἕδρας τῆς Μυτιλήνης ἐποίκιλλεν, ὡς δείκνυται ἐκ τῶν διασωθέντων τίτλων τῶν κατὰ καιροὺς ἱεραρχῶν: «Μυτιλήνης καὶ τῶν νήσων» (359, Εὐάγριος), «Λέσβου καὶ Προσελήνης» (431, Ἰωάννης), «Λέσβου, Τενέδου, Προσελήνης, Αἰγιάλων» (451, Φλωρέντιος), «Μυτιλήνης, Τενέδου, Μοσχονησίων, Ἐρεσσοῦ» (1565, Ἰγνάτιος), «Μυτιλήνης, Ἐρεσσοῦ τε καὶ Τενέδου» (1692) καὶ «Μυτιλήνης καὶ Λήμνου» (1611, Κωνστάντιος). Τὸ πρῶτον τιτλοφορεῖται δὲ ἡ ἕδρα τῆς Μυτιλήνης μητρόπολις ἀπὸ τοῦ 458 (Εὐνόϊος «ἐπίσκοπος μητροπόλεως Μυτιλήνης»). Κατὰ τάξιν ἡ μητρόπολις Μυτιλήνης ἦτο: ἐπὶ Λέοντος τοῦ Σοφοῦ (866—912) 47η, ἐπὶ Ἀνδρονίκου Β΄ Παλαιολόγου (1282—1328) 49η μέχρις Ἀνδρονίκου Γ΄ Παλαιολόγου (1328—1341), ὅτε ἐγένετο 52α, τῷ 1867 32α καὶ εἶτα 30ή. Κατέβαλλεν εἰς τὸ πατριαρχεῖον (1324) 50 ὑπέρπυρα ἐτησίως, τὰ εἰσοδήματά της δὲ ἀνήρχοντο (1852) εἰς 2.500 λίρας. Κατ' ἐπίδοσιν («προεδρικῶς») ἱεράρχης Μυτιλήνης διετέλεσεν ὁ Σάρδεων Ματθαῖος (1331 «μητροπολίτης Σάρδεων, ὑπέρτιμος, ἔξαρχος Λυδίας καὶ πρόεδρος Μυτιλήνης»).

Ἡ ἐπισκοπὴ Μηθύμνης, καίτοι στενοτέρας δικαιοδοσίας, ἤκμασεν ἀρκούντως, κυρίως δὲ κατὰ τὴν τουρκοκρατίαν, ὅτε ἡ ἕδρα της μετεφέρθη εἰς Καλλονὴν (1531, Ἰγνάτιος), ὅπου παρέμεινεν ὁριστικῶς. Τὸν τίτλον τοῦ μητροπολίτου ἔλαβον οἱ ἱεράρχαι της τοὐλάχιστον ἀπὸ τοῦ 1341 (Μαλαχίας «μητροπολίτης Μηθύμνης καὶ ὑπέρτιμος») καὶ τοῦ ἀρχιεπισκόπου ἐπὶ Γαβριὴλ τοῦ εἶτα πατριάρχου (ἀρχαὶ ΙΖ΄ αἰῶνος). Κατὰ τάξιν ἦτο παλαιότατα 50ὴ ἐπισκοπή, ἐπὶ Λέοντος Σοφοῦ 73η ἢ 76η, ἐπὶ Ἀνδρονίκου Β΄ Παλαιολόγου 86η, ἐπὶ Ἀνδρονίκου τοῦ Γ΄ ἀπὸ 85η ἐγένετο 79η καὶ τῷ 1860 36η. Κατέβαλλεν εἰς τὸ πατριαρχεῖον (1324) 50 ὑπέρπυρα καὶ εἶχεν εἰσόδημα (1852) 1.300 λιρῶν.

Ἡ ὀρθόδοξος ἐκκλησία τῆς Μυτιλήνης καὶ ἐπὶ Γενοατῶν καὶ Τούρκων σχεδὸν δὲν ἐθίγη. Οἱ Γατελοῦζοι διετήρησαν τὰς ὀρθοδόξους ἐπισκοπὰς καὶ εἶχον ἀγαθὰς σχέσεις πρὸς τὸ πατριαρχεῖον. Τάσεις γενικωτέρας ἐπικαθήσεως ἔδειξεν ἡ Ἁγία Ἕδρα κατὰ τὴν παρακμὴν τῶν Γατελούζων, σπεύσασα νὰ ὀνομάσῃ τὴν νῆσον terra nostra, θεωροῦσα ὅτι ἐβοήθησε τοὺς Μυτιληναίους κατὰ τοῦ Ἰσμαὴλ ἐν Μολύβῳ (1456), ἐνῷ τότε ἀχαρακτηρίστως ἐγκατέλιπε τοὺς ἐγχωρίους ἡ παπικὴ δύναμις τοῦ Ραϋμόνδου ντὲ Σισκάρ. Οἱ Τοῦρκοι πλὴν φορολογικῶν τινων πιέσεων οὐδὲν ἄλλο ἔπραξαν· τὴν ποινικὴν τιμωρίαν τῶν κληρικῶν καὶ μοναχῶν εἶχον ἀπαραβίαστον οἱ μητροπολῖται, καὶ αἱ ἐκκλησιαστικαὶ περιουσίαι μετά τινας κατὰ τὰ πρῶτα ἔτη ἀναγκαστικὰς ἐκποιήσεις, ἐξαγορασθεῖσαι ὑπὸ τῶν μονῶν (1579), ἐκηρύχθησαν ἀπαραβίαστοι (1590).

***Μοναχικὸς βίος.*** Τὴν πρώτην μονὴν ἀναφέρει ἡ παράδοσις τῷ 851, ἐξ ἧς ἀνηρπάγη ἡ ἁγία Θεοκτίστη ἡ Λεσβία ὑπὸ Σαρακηνῶν, κυρίως εἰπεῖν ὅμως ἀνεπτύχθη ὁ μοναχικὸς βίος μετὰ Βασίλειον τὸν Βουλγαροκτόνον καὶ πρὸ τοῦ 1200 καὶ εἶτα μετὰ τὸ 1527 διὰ τοῦ ἁγίου Ἰγνατίου, κατήντησε δὲ νὰ γεμίσῃ μοναστηρίων ὅλη ἡ νῆσος. Ἐπισημότερα τούτων: —1) Ἡ μονὴ *Κρυοκόπου* (Κριοκόπου ἢ Κρεωκόπου). Μέχρι τοῦ 1331 κατεσχημένη ὑπὸ τῆς ἐν Κωνσταντινουπόλει μονῆς τῶν Ὁδηγῶν, ἀπεδόθη τότε εἰς τὸν Μηθύμνης καὶ ἤκμασεν ἐπὶ μακρόν· τὸ 1601 ἐξωλοθρεύθη ὑπὸ λοιμοῦ, κατὰ τὰ ἔτη δὲ 1673 καὶ 1792 ἀναφέρεται ἀνήκουσα εἰς τὸ ἐν Χρυσουπόλει τέμενος τοῦ σεΐχ Μαχμοὺτ Ἀζίζ· τῷ 1798 ἐνετάλησαν ὑπὸ τῶν πατριαρχείων οἱ μοναχοὶ τοῦ Λειμῶνος νὰ γίνουν «νέοι κτίτορες» αὐτῆς, ἀλλὰ παρὰ τὰς προσπαθείας Ἰωακεὶμ τοῦ Δ΄ (1880) πρὸς ἀπόδοσιν τῶν κτημάτων της ὑπὸ τῶν Τούρκων, παρέμεινε διαλελυμένη· τὰ ἐρείπιά της 30΄ ΒΔ. τοῦ χωρίου Τζίθρα παρὰ τὴν κορυφὴν Χάλακα καὶ τὸ ρεῦμα Περιβολῆς. —2) *Ψηλὸ Μοναστήρι* (ἢ Μονὴ Ὑψηλοῦ, παλαιότερον μονὴ τοῦ Ζήσιρα, Ζήρα, Σήσηρος κ. τ. λ.), ἀναφερομένη ἀπὸ τοῦ 1331, ἀκμάζει μέχρι τοῦ νῦν ὡς ἐνοριακὴ τοῦ Μιτυλήνης καὶ ἐγένετο ἐπ' ἐσχάτων ἰδιόρρυθμος. Τῷ 1593 ἀνεκαινίσθη ἡ παλαιὰ αὐτῆς ἐκκλησία καὶ τῷ 1834 ἐκτίσθη νέα ἐπ' αὐτῆς. Εἶχε περιουσίαν (1876) 12.000 χρυσῶν λιρῶν καὶ ἐτήσιον εἰσόδημα (1926) 900 λιρῶν. Κεῖται ἐπὶ τοῦ Ὀρδύμνου καὶ ἡ ἀνάβασίς της γίνεται ἀπὸ τοῦ 80οῦ χιλιομέτρου τῆς ἀπὸ Μυτιλήνης εἰς Σίγριον ὁδοῦ διὰ κλιμακωτοῦ (3.000 βαθμῖδες) πλακοστρώτου. —3) Μονὴ *Μυρσινιώτισσας*. Ἀποδοθεῖσα τῷ 1331 εἰς τὸν Μηθύμνης ὑπὸ τῆς σφετεριστρίας Κωνσταντινουπολιτικῆς μονῆς τοῦ Καλέως, ἐγένετο τῷ 1487 πατριαρχικὸν σταυροπήγιον καὶ τῷ 1527 γυναικεῖον προσάρτημα τῆς μονῆς Λειμῶνος ὑπὸ τοῦ ἁγ. Ἰγνατίου. Νῦν ἀριθμεῖ (1931) 20 μοναχάς. Κεῖται εἰς τὰς ΝΑ. κλιτῦς τοῦ Δρακοντιτσιοῦ, 30΄ ἀπὸ τοῦ Λειμῶνος.—4) Μονὴ *Λειμῶνος*. Πατριαρχικὸν σταυροπήγιον, οἰκογενειακὸν κτῆμα τοῦ ἁγ. Ἰγνατίου, διοργανωθεῖσα ὡς κοινόβιον ὑπ' αὐτοῦ (1527) δι' ἀγορᾶς καὶ ἄλλων κτημάτων· συνεχῶς πλουτιζομένη εἶτα ἐκ δωρεῶν τῶν πολιτῶν καὶ ἑδραιωθεῖσα δι' ἀπείρων φιρμανίων καὶ σιγιλλίων, ἀπέκτησε μεγίστην περιουσίαν (τὸ $^1/_4$ τοῦ κάμπου τῆς Καλλονῆς). Ἔχει ἐτήσιον εἰσόδημα (1926) 685.633 δρχ. Ἄλλοτε εἶχεν ἄνω τῶν 200 μοναχῶν καὶ νῦν (1931) 24. Περὶ τὸ 1880 εἶχε παρεισδύσει ἐν αὐτῇ παροδικῶς τὸ ἰδιόρρυθμον πολίτευμα. Κεῖται 30΄ ΒΔ. τῆς Καλλονῆς ἐν ὡραιοτάτῃ κοιλάδι, ἔχει ἀξίους λόγου ξενῶνας καὶ ὡραίαν ἐκκλησίαν (Ταξιάρχην) ἁγιορειτικοῦ ρυθμοῦ. —5) *Περιβολή* («Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου»). Γυναικεῖον ἐξάρτημα τῆς μονῆς Κρυοκόπου, 30΄ Β. αὐτῆς, ἀναφερόμενον εἰς φιρμάνια ἀπὸ τοῦ 1590, εἶτα ἐνοριακὴ μονὴ μὲ 5 (1928) μοναχάς, διαλελυμένη νῦν. —6) Μονὴ *Πιθάρι* («Ταξιάρχης»)· ἀναφέρεται ἀπὸ τοῦ 1770 τοὐλάχιστον καὶ κεῖται ἐν φάραγγι, 30΄ Α. τῆς Ἐρεσσοῦ (1920 μοναχ. 7), ἐσχάτως διαλυθεῖσα. —7) *Δαμάντρι* («Κοίμησις τῆς Θεοτόκου»)· ἐνοριακὴ τῆς Μυτιλήνης, Α. τοῦ Πολυχνίτου εἰς τὴν θέσιν ὁμωνύμου πρὸς αὐτὴν ἐκλιπόντος χωρίου, γνωστὴ ἀπὸ τοῦ 1712· μοναχοὶ (1931) 4.

Ἥσσονος σημασίας μοναστήρια: Πρὸ τῆς τουρκοκρατίας εἰς μὲν τὴν ἐπαρχίαν Μηθύμνης τὰ κατὰ τὸ 1331 γνωστά: Καλῆς Λαγκάδας καὶ Ξηροκαστρινῆς, ὅπου τὰ ὁμώνυμα νῦν τοπωνύμια, τῆς Ἁγίας Θεοφανοῦς παρὰ τὸν Γαβαθᾶν, τῆς Ὁδηγητρίας εἰς τὸ «Κάστρο τῶν Ἁγίων Θεοδώρων» καὶ τὸ Βοῦρκος ἐκτὸς αὐτοῦ, τῶν Ἁγίων Πέντε παρὰ τὴν Φτεροῦντα, τοῦ Σωτῆρος Χριστοῦ παρὰ τὴν Ἐρεσσόν, νῦν μετόχιον τῆς μονῆς Ὑψηλοῦ, καὶ αἱ ἀγνώστου θέσεως Ἁγίου Νικολάου, Κληματίου, Κρύου Νεροῦ (Ἁγίου Γεωργίου), Ἁγίων Θεοδώρων καὶ Κεραμεῶνος. Εἰς δὲ τὴν ἐπαρχίαν Μυτιλήνης ἡ Κοίμησις τῆς Θεοτόκου (1150) ἡ νῦν «Παναγία τῆς Ἁγιάσσου», τὰ Κάτω Πτώματα (Ἅγιος Μηνᾶς) τῷ 1225—1324, τοῦ Ὁσίου Γρηγορίου (1215/54 — 1324), ὑφ' ἣν ἡ τῆς Γλίστρας (Ἁγίου Ἀνδρέου), καὶ ἡ Δαφνέα (Ὁσίων πατέρων) παρὰ τὸ Πολυχνῖτον, ἡ τοῦ Ὁσίου Γρηγορίου παρὰ τὸν Σκόπελον (1246), ἡ τῶν Ἀριστῶν ἐπὶ νησιδίου τῆς Γέρας καὶ αἱ παρὰ τὸν Πολυχνῖτον τοῦ Γίδωνος (Θεοτόκου Ὁδηγητρίας) καὶ Ἀκρωνησιώτου (Ταξιάρχου Μιχαὴλ) τῷ 1324.



Digitized by Google

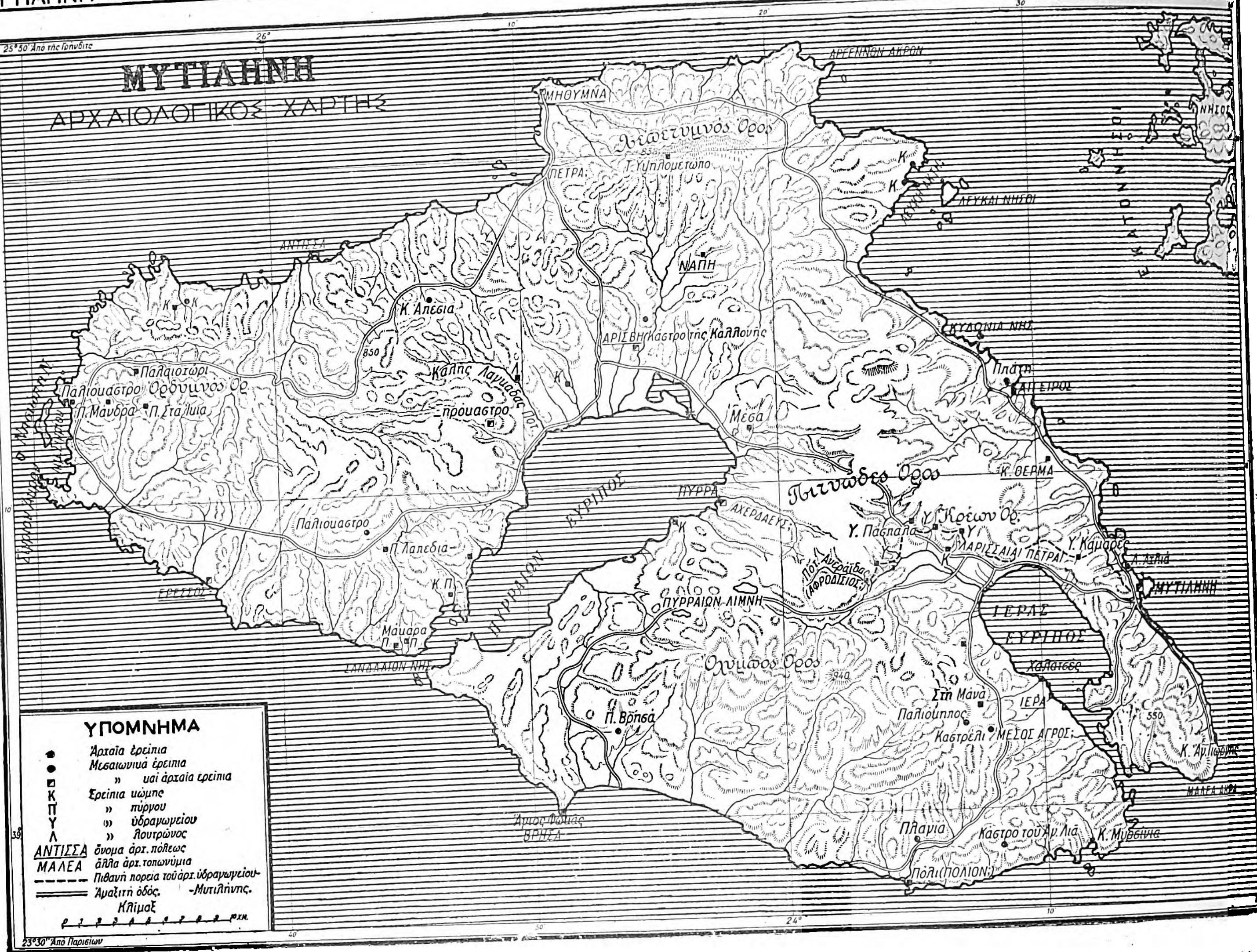


Κατὰ δὲ τὴν τουρκοκρατίαν εἶναι γνωσταί: τοῦ Καλαμίου (Ἁγίου Ἀντωνίου 1492 κ.ἑ.) παρὰ τὴν Βατοῦσαν, τοῦ Ἁγίου Πέτρου (1574), ἐξάρτημα τῆς προηγουμένης, τοῦ Παρασιγίου (Ἁγίου Γεωργίου 1492—1672), νῦν ἠρειπωμένον ἐξάρτημα τοῦ Λειμῶνος, ἡ Ἡράτεια (1579) καὶ αἱ ἐκ φιρμανίου τοῦ 1792 γνωσταί: Ἁγίου Γεωργίου παρὰ τὸν Πολυχνῖτον, Ἁγίου Πέτρου καὶ Ἁγίου Νικολάου παρὰ τὰ Βασιλικά, Ἀμπέλου (Ἁγίου Γεωργίου) παρὰ τὰ Τελώνια· καὶ Τατάρια (Ἁγίου Γεωργίου) παρὰ τὴν Ἐρεσσόν.

***Δυτικὴ Ἐκκλησία.*** Χρονολογεῖται ἀπὸ τῆς ἐγκαταστάσεως τῶν Γατελούζων (1355) μέχρι νῦν, ἐπισκοπικὴ δὲ αὐτῆς ἕδρα εἶναι γνωστὴ ἀπὸ τοῦ 1402 μέχρι τῆς πτώσεως τῶν Γατελούζων (1462). Διότι ὁ μὲν ἀρχιεπίσκοπος Μυτιλήνης Ἰωάννης (1205) ὁ ὑπὸ τοῦ Ἀλβερίχου ἄνευ ἐνδείξεως δόγματος ἀναφερόμενος, ἦτο πιθανώτατα ὀρθόδοξος ἱεράρχης, ὁ Λουδοβῖκος Μπράβο ὁ εἰς τὸν Φραγκῖσκον Α' Γατελοῦζον ἀποσταλεὶς (1356) ὑπὸ τοῦ Βατικανοῦ ἦτο μᾶλλον σύμβουλος καὶ δὲν κατέλαβεν ἐπισκοπικὴν ἕδραν, οἱ δὲ μετὰ τὴν ἅλωσιν ἀναφερόμενοι ὑπὸ τοῦ Wadding Ἄγγελος de Barbianis διάδοχος (1482, Αὐγ. 19) Λεονάρδου τινὸς episcopi Mutilensis εἶναι ἀμφισβητήσιμον ἂν ὑπῆρξαν ἱεράρχαι Μυτιλήνης· τοιαύτη ἕδρα (episc. Mutilensis) δὲν ἀναφέρεται οὔτε εἰς τὰ libri consistoriales οὔτε εἰς τὸ provinciale Romanum. Μόνοι γνωστοὶ Λατῖνοι ἐπίσκοποι Μυτιλήνης εἶναι ὁ Ἀμβρόσιος de Abiate (1402), ἀναφερόμενος ὑπὸ τοῦ Φοντάνα, ὁ Ἄγγελος πρὸ τοῦ 1431, ὁ ἀρχιεπίσκοπος Hughectus de Valentia διάδοχος αὐτοῦ (1431, Σεπτ. 26), ὁ Δωρόθεος πρὸ τοῦ 1444 καὶ ὁ Λεονάρδος Λόγγος ὁ Χῖος (1444—1462), γνωστοὶ ἀπὸ τοῦ Μπρεμόν. Τέλος ὁ Wadding ἀναφέρει καί τινα Ἰωάννην de Falconeio «Episopum Berratinensis ἢ Bernitinensis εἰς τὴν Λεσβίαν νῆσον ὑπὸ τὸν Μυτιληναῖον ἀρχιεπίσκοπον» μέχρι τοῦ 1456 (Ἰουλ. 9)· τοιαύτη ἕδρα εἶναι ἄγνωστος, ἴσως δὲ πρόκειται περὶ ἐσφαλμένης ἀναγραφῆς τοῦ τίτλου της καὶ εἶναι ὁ Ἰωάννης οὗτος προσωρινὸς διάδοχος τοῦ ἀποδημήσαντος τῷ 1453 Λεονάρδου τοῦ Χίου. Πλὴν τῆς Μυτιλήνης, λατινικὴ ἕδρα ὑπῆρχε καὶ εἰς Μήθυμναν, ἀμφοτέρων ὅμως τὸ εἰσόδημα ἀνήρχετο (1456) μόλις τὰ 150 φλωρίνια, δι' ὃ ἥνωσεν αὐτὰς Κάλλιξτος ὁ Γ' (1455 — 1458)· κατὰ δὲ τὸν λατιν. κώδικα 18.298 τῆς βιβλιοθήκης τοῦ Μονάχου, ὑπῆρχον 3 ἐν ὅλῳ λατινικαὶ ἀρχιεπισκοπαὶ ἐπὶ τῆς νήσου. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο δυτικοὶ ναοὶ ἀναφέρονται: ὁ «Ἅγιος Ἰωάννης Βαπτιστὴς» ἱδρυθεὶς ὑπὸ Φραγκίσκου Α', καὶ ἡ «Ἁγία Καλὴ» (1462) ἐν τῇ πρωτευούσῃ παρὰ τὴν ἀστικὴν μονὴν τῶν Μετανοούντων ἐπὶ τῆς πλατείας τῶν δημοσίων ἐκτελέσεων· ἀμφότεροι ἐξέλιπον, νῦν δὲ ὑφίσταται ὁ τῶν «Εἰσοδίων τῆς Θεοτόκου».

***Μουσουλμᾶνοι.*** Τὰ πρῶτα μουσουλμανικὰ τεμένη ἵδρυσαν ἐντὸς τοῦ φρουρίου ὁ Μωάμεθ Β («Κουλὲ Τζαμισῆ») καὶ ὁ μέγας βεζύρης του («Μαχμοὺτ Τζαμισῆ»). Ἐκ τῶν μεταγενεστέρων ἱδρυμάτων ἀξιολογώτερα τὰ ἐν τῇ πρωτευούσῃ «Γενὶ Τζαμί», «Σαρῆ Μπαμπᾶ Τεκές», «Καντρὶ-Ντερκιαχὶ» καὶ ὁ μεντρεσὲς τοῦ Κάστρου. Κατὰ τὴν κατάληψιν (1912) συνολικῶς ὑπῆρχον 25 τεμένη ἐπὶ τῆς νήσου.

— [ΓΛΩΣΣΑ] Βλ. λ. *λεσβιακὴ* διάλεκτος.

— [ΑΡΧΑΙΟΛΟΓ.] Ἐξαιρουμένων τῶν παρατηρήσεων καὶ πληροφοριῶν τῶν ἀναφερομένων ὑπὸ παλαιοτέρων περιηγητῶν, ἡ ἱστορία τῆς ἐρεύνης τοῦ λεσβιακοῦ ἐδάφους ἔχει ὡς ἑξῆς. Πρῶτος εὐρυτέραν περιήγησιν ἐπιχειρήσας εἶναι ὁ Pococke (1739), μεθ' ὃν δύο ταξίδια ἐξετέλεσεν ὁ καὶ χαρτογραφήσας τὴν νῆσον κόμις Choiseul-Gouffier (1776)· τοῦ Sestini (1782) ἡ ἐργασία ἀφορᾷ ἰδίως τὴν ἐπιγραφικήν. Ἀκολουθοῦν ὁ Olivier (1798), ὁ Raczynsky (1814), ὁ Richter (1816), οἱ Michaud καὶ Poujoulat (1830) καὶ ὁ Prokesch-Osten (1825—1826) πολύτιμος διὰ τὰς εἰδήσεις του. Μεθ' οὓς ἀποκλειστικῶς διὰ τὴν ἀρχαιολογίαν ἐρευνήσαντες ὁ Newton, διπλωματικὸς πράκτωρ τῆς Ἀγγλίας ἐν Μυτιλήνῃ (1852—1855), μετὰ τοῦ Δομινίκου Ἔλλις Colnaghi, ὁ A. Conze (1858) συστηματικῶς περιηγηθεὶς σύμπασαν τὴν νῆσον καὶ εἶτα ὁ R. Koldewey, ἀποσταλεὶς ὑπὸ τοῦ Γερμανικοῦ Ἀρχαιολογικοῦ Ἰνστιτούτου, ἐπιμελῶς συγκεντρώσας εἰς σχέδια πᾶν τὸ διασωζόμενον, στενῶς δὲ συνεργασθεὶς μετὰ τοῦ H. Kiepert καὶ H. G. Lolling καὶ ἐκτελέσας τὴν πρώτην ἀνασκαφὴν (1885—1886) εἰς Μέσα. Ταύτης προγενεστέρα (1884—1885) μόνον ἡ δαπάναις τῶν μονῶν Ὑψηλοῦ καὶ Πιθαρίου ἀποκάλυψις τῆς ἐν Ἐρεσσῷ παλαιοχριστιανικῆς βασιλικῆς τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου. Ἀμέσως μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς νήσου τὸ ὑπουργεῖον τῆς Παιδείας διὰ τοῦ Ν. Κυπαρίσση (1913) ἐξετέλεσε δοκιμαστικὴν σκαφὴν εἰς τὸ φρούριον Μυτιλήνης, μεθ' ἣν συστηματικῶς μέχρι νῦν ἀνασκάπτουν ἡ Ἀρχαιολογικὴ Ἑταιρεία διὰ τοῦ Δ. Εὐαγγελίδη (1919 κ. ἑ.) καὶ ἡ Ἀγγλικὴ Σχολὴ Ἀθηνῶν διὰ τῆς Winifred Lamb (1928 κ. ἑ.). Ὁ πρῶτος ἀνέσκαψεν ἐν Κλοπεδῇ, Μυτιλήνῃ, Μολύβῳ, Ὑψηλομετώπῳ καὶ Ἐρεσσῷ, ἔνθα διὰ τοῦ Γ. Χαβιαρίδου μερικῶς ἀπεκάλυψε παλαιοχριστιανικὴν βασιλικήν, ὁλοκληρωτικῶς ἀνασκαφεῖσαν ὑπὸ τοῦ ὑπουργείου Παιδείας διὰ τοῦ Ἀ. Ὀρλάνδου (1927—1928) μελετήσαντος καὶ τὰς λοιπὰς βασιλικὰς τῆς νήσου. Ἡ Lamb ἐξετέλεσεν ἀνασκαφὰς ἐν Μολύβῳ (1928), Θερμῇ (1929 κ.ἑ.) καὶ Ἀντίσσῃ (1931)· αἱ δύο τελευταῖαι συνεχίζονται.

***Ἀρχαιολογικοὶ χῶροι.*** Ἐπίσημοι πόλεις τῆς νήσου ἦσαν ἡ Ἄντισσα, Ἀρίσβη, Ἐρεσός, Μήθυμνα, Μυτιλήνη καὶ Πύρρα.

*Μυτιλήνη* (βλ. *Μυτιλήνη* πόλις).

*Μήθυμνα* (ὁ σημερινὸς «Μόλυβος»). Σώζονται ἐλάχιστα τμήματα τοῦ περιβόλου τοῦ Β. μέρους, λείψανα οἰκημάτων ἀρχαϊκῶν (800—700 π. Χ.) καὶ ρωμαϊκῶν, λείψανα τοῦ λιμένος (ὅπου καὶ ὁ νῦν), ἔτι δὲ σαρκοφάγοι (ΣΤ'—Γ' αἰών), τάφοι καὶ λείψανα τοῦ ὑδραγωγείου, ὑπὸ τὸ νεώτερον. Κτηρίων λείψανα εἰς τὸ νεκροταφεῖον Ἁγ. Μαρίνης καὶ εἰς τὸ φρούριον καὶ ὄστρακα ἀγγείων, ἰδίως ρωμαϊκά, πλεισταχοῦ. Ἐξαφανισθέντα κτήρια (ἐξ ἐπιγραφῶν γνωστά): ἱερὰ Ἀθηνᾶς καὶ Σαμοθρακιστῶν, πρυτανεῖον, κ.ἄ. Μεταξὺ Μηθύμνης καὶ Μολύβου ὑπάρχει πλήρης ἱστορικὴ συνέχεια.

*Ἄντισσα* (ἐπὶ τῆς χερσονήσου Ὀβριόκαστρο, Α. τοῦ ποταμοῦ Βούλγαρη) Σώζονται: ἐπὶ τῆς χερσονήσου ἀρχαῖα ὑλικὰ εἰς τὰς μεσαιωνικὰς ὀχυρώσεις καὶ τμῆμα ἀναλήμματος τῆς ἀκροπόλεως· ἐπὶ τοῦ ἰσθμοῦ ἀρχαῖοι πλίνθοι· ἐπὶ τοῦ παρακειμένου λόφου τμῆμα πολυγωνικοῦ περιβόλου καὶ ἐρείπια οἰκῶν· παρ' αὐτὸν δὲ ὕφαλα λείψανα τοῦ λιμένος. Ἐπίσης ἀγγεῖα κτλ. ἀπὸ τῶν ἀρχῶν τῆς χαλκῆς ἐποχῆς, τῆς ὁποίας τὰ κατολισθήσαντα κτίσματα ἐκάλυψεν ἡ θάλασσα. Ἡ Ἄντισσα κατεστράφη τῷ 168 π. Χ., εἶτα ἀπετέλεσε γενοατικὸν συνοικισμὸν καὶ φρούριον («Κάστρο τῶν Γενοβέζων»), ἐγκαταλειφθεῖσα κατὰ τὴν τουρκοκρατίαν.

*Πύρρα* (ἐπὶ τῆς Α. ἀκτῆς τοῦ κόλπου Καλλονῆς ΝΔ. τοῦ Καβουροπόταμου). Σώζονται τμήματα τοῦ πολυγωνικοῦ περιβόλου (ὑψόμ. 79) καὶ ἴχνη 3 εἰσόδων, ὕφαλα λιμενικὰ λείψανα, ἀνάλημμα παραλιακῆς ἀρτηρίας, ἴχνη ναοῦ (κατὰ Koldewey) καὶ ἴχνη λατομείου. Ἡ πόλις κατεστράφη ἐκ σεισμοῦ (231 π. Χ.)· τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα κατῳκεῖτο μόνον τὸ «προάστειον» αὐτῆς, τοποθετούμενον εἰς τὴν θέσιν Ἀχλαδερὴ (ΝΔ. τῆς πόλεως), ὅπου ρωμαϊκὰ ἐρείπια. Κατὰ τὸν μεσαίωνα κατῳκεῖτο καὶ πάλιν ὁ τόπος, παρέμεινε δὲ ἐξ αὐτοῦ τὸ ὄνομα τῆς θέσεως: Πεῖρα (ΙΗ' αἰών), Μπίρα (νῦν).

*Ἀρίσβη* («Παλαιόκαστρο» τῆς Καλλονῆς). Διατηρεῖται τμῆμα τοῦ περιβόλου μετὰ τετραπλεύρου πύργου, ἴχνη δύο εἰσόδων, ἐνδιαφέροντα λείψανα οἰκιῶν Ἰλιακοῦ τύπου, ὄστρακα ἀγγείων καὶ ἀρχαῖοι πλίνθοι. Τὴν Ἀρίσβην ἀναφέρει ὁ Ἡρόδοτος ὡς ἀρχαιότατα ἐξανδραποδισθεῖσαν ὑπὸ τῶν Μηθυμναίων, ὁ Στράβων ὡς ποτὲ ὑπάρξασαν («πόλις ἦν») καὶ ὁ Πλίνιος ὡς ἐρειπωθεῖσαν ὑπὸ σεισμοῦ. Ἐπ' αὐτῆς τὸ βυζαντινὸν «Κάστρο τῆς Καλλονῆς»,

Digitized by Google

τὸ εἶτα τουρκικὸν «Καλλόνια-Χισάρ» ἢ «Χισάρ-Κιοΐ».
*Ἐρεσσὸς* (Ν. τοῦ ποταμίου Πετσούλης). Σώζονται μέρη τοῦ παλαιοῦ πολυγωνικοῦ περιβόλου καὶ ἀλεξανδρινοῦ ἰσοδομικοῦ τοιούτου, σημαντικὰ ἐρείπια οἰκιῶν (καὶ πολυγωνικῶν) κατὰ τὰς κλιτῦς ἐπὶ σπουδαίων ἐπίσης ἀναλημμάτων («ροϊδότοιχοι» τῶν χωρικῶν), λείψανα τοῦ λιμένος, ἴχνη δύο νεκροπόλεων καὶ ἔργα τοιχοποιίας εἰς τὴν κοίτην τοῦ ποταμίου Χάλανδρα. Ἐξαφανισθέντα κτήρια: «Ἀθήναιον», «Πτολεμαΐον», «Φιλίππειον», ἀγορὰ κ. ἄ. Παλαιοχριστιανικὰ λείψανα: δύο βασιλικαί, κ. ἄ. Ἐπὶ τῆς ἀρχαίας πόλεως τὸ βυζαντινὸν «Κάστρο τῆς Ἐρεσοῦ» καὶ παρ᾽ αὐτὴν ἡ σημερινὴ Ἐρεσσὸς («Ἡ Ἐρσό»).

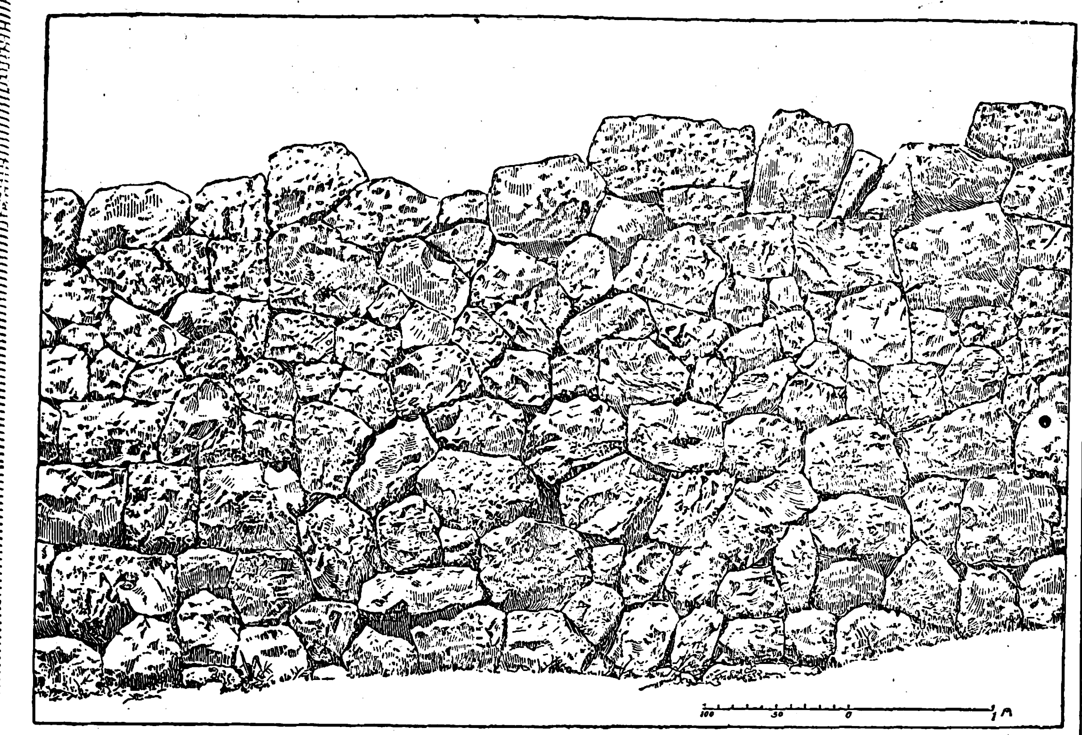


*Ὁ «καλότοιχος» τῆς Ἀποθήκας ἀπὸ ΝΑ.*
[Σχέδιον ἐκ φωτογραφίας τοῦ R. Koldewey.]

Τὰ ἐδάφη τῶν πόλεων περίπου εἶχον οὕτως: Ἡ «Ἐρεσία γῆ» ὡρίζετο ἀπὸ Β. ὑπὸ τῆς «Ἀντισσαίας» (ἀρχ. πῦργοι Σιγρίου), ἥτις ἀπ᾽ Α. συνείχετο μετὰ τῆς «Μηθυμναίας» (παρὰ τὴν νῦν Φίλιαν)· αὕτη, κατερχομένη μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐρίπου Πυρραίων, ὡρίζετο ἀπὸ Δ. ὑπὸ τῆς Ἐρεσίας (Ξηρόκαστρο) καὶ ἀπὸ Ν. ὑπὸ τῆς «Πυρραίας» (θέσις Μέσα) καὶ «Μυτιληναίας» (ὕπερθεν τῆς Θερμῆς)· ἡ τελευταία κατεῖχε σύμπασαν τὴν χερσόνησον τοῦ Ὀλύμπου, μικρὸν καταλείπουσα εἰς τὴν Πυρραίαν, τὴν χερσόνησον τῆς Ἀμαλῆς καὶ τὰ περὶ τὴν Μόριαν καὶ Θερμὴν μέρη.

Εἰς τὸ ἔδαφος τῆς Μυτιλήνης σπουδαῖος ὁ ἐρειπιὼν τῆς *Θερμῆς* (ἡ ἀρχ. «Θέρμα»), εἰς τὸν ὁποῖον ἓξ ἀλλεπάλληλοι προϊστορικοὶ συνοικισμοὶ σύγχρονοι: δύο (Θερμὴ I καὶ II, οἱ μᾶλλον ἐκτεταμένοι), πρὸς τὸ κατώτερον στρῶμα τῆς Τροίας (3300—2700 π. Χ.), τρεῖς (Θερμὴ IV, IVa καὶ V) πρὸς τὸ δεύτερον τρωϊκὸν (2400—1900 π. Χ.) καὶ εἷς ἐνδιάμεσος (Θερμὴ III, ἀρκούντως κατεστραμμένος)· ὁ ἀνώτερος, ἐπὶ ἐπιπέδου ἐδάφους, χωρίζεται εἰς τμήματα διὰ δρόμων. Ἡ ἀνασκαφὴ συνεχίζεται· εὑρέθησαν λείψανα οἰκιῶν ἄφθονα, περιβόλου, ὁδῶν καὶ βόθρων· ἀγγεῖα, εἰδώλια καὶ ἐργαλεῖα ποικίλων χρόνων. Ἔξω τοῦ περιβόλου ἐρείπια πτωχοτέρου συνοικισμοῦ συγχρόνου τῆς Τροίας VI (1500—1000 π. Χ.). Παρὰ τὰς θερμοπηγὰς ἄφθονα λείψανα ἀνθούσης θρησκευτικῆς κινήσεως, ἰδίως ρωμαϊκά: βάσεις ἀγαλμάτων, λείψανα μαρμαρίνων κτηρίων, θησαυρὸς ἐπιγραφῶν. Ἥσσονος σημασίας τὰ λείψανα τῶν νησίδων *Γαρμπιᾶς* (ἀρχ. «Σανδάλιον») καὶ *Κυδώνα* (ἡ ἀρχ. «Κυδωνία»), ὁ ναὸς τοῦ *Ἁγίου Φωκᾶ* (ἡ ἀρχ. «Βρῆσα») οἱ ἀρχαῖοι συνοικισμοὶ τῆς *Πλαγιᾶς*, τῶν *Μερσινίων*, οἱ ἀπὸ *Περάματος* ἕως *Χαλατσῶν* (ἡ ἀρχ. πόλις «Ἱερά»), τῶν *Λάμπου Μύλων*, τὰ ἀρχαῖα κτίσματα τοῦ *Κάτω Τρίτου* καὶ τῆς θέσεως *Μάνα* καὶ τὰ λείψανα *Ἀχλιᾶς*, *Ἀγρελιᾶς*, *Πληγωνιοῦ*, *Καρήνης* κ. ἄ.

Εἰς τὸ ἔδαφος τῆς Μηθύμνης σπουδαιότερα τὰ ἐν *Κλοπεδῇ* ἐρείπια (μεταξὺ Καλλονῆς—Ἁγ. Παρασκευῆς), ἔνθα: Λείψανα πολυγωνικοῦ τείχους καὶ ἐπὶ τοῦ ὑψιπέδου Κεραμιδωτὴ (1 ὥραν Δ. τῆς Ἁγ. Παρασκευῆς) ἐρείπια ἀρχαϊκοῦ ναοῦ (ΣΤ´ αἰών), ἴσως τοῦ «Ναπαίου Ἀπόλλωνος», καὶ ἄλλου νεωτέρου παρακειμένου· λείψανα τοῦ ναοῦ τούτου ἐντετειχισμένα εἰς τὸ Γεφύρι τοῦ Ἁγίου Θεράποντος, 1 ὥραν πρὸς ΒΑ. Ἥσσονος σημασίας τὰ λείψανα τοῦ *Ὑψηλομετώπου* (ἀρχαῖος συνοικισμός), τῶν ὅρμων *Παλιοῦ* καὶ *Ἀνοικτοῦ*, τοῦ *Κλομηδάδου* (ἡ ἀρχ. πόλις «Νάπη»;), τῆς *Ἁγίας Παρασκευῆς* (τεῖχος καὶ ὄστρακα), τῶν *Μυστεγνῶν* (ἡ ἀρχ. πόλις «Αἴγειρος») κ. ἄ.

Εἰς τὸ ἔδαφος τῆς Ἀντίσσης: ἡ παρὰ τὸν ὅρμον *Λάψαρνα* μεσόγειος ἀρχαία κώμη καὶ τὸ *Παλαιοχώρι* (Δ. τοῦ Ὀρδύμνου) ὅπου ὄστρακα ἀγγείων.

Εἰς τὸ ἔδαφος τῆς Πύρρας ὁ ναὸς τῶν *Μέσων* (ΝΑ. τῆς ἁλυκῆς Καλλονῆς), παρ᾽ ὃν σύστημα ἀρχαίων οἰκημάτων, καὶ πρὸς Ν. δύο διακεκριμένοι ἐρειπιῶνες, ἔτι δὲ καὶ ἐλάχιστα λείψανα παραλίου κώμης Ν. τῆς Πύρρας (Koldewey).

στηριζομένου ὑπὸ ἐξαισίου πολυγωνικοῦ ἀναλήμματος («καλότοιχος» τῶν χωρικῶν), οὗ σώζεται μῆκος 40 μέτρων καὶ λείψανα ἐλάχιστα πύργου. Καὶ τοῦ *Ξηροκάστρου*, ὅπου λείψανα πύργου (7.10×8.20 μ.) κατοπτεύοντος τὸν κόλπον Καλλονῆς καὶ τὴν μέχρις Ἀρίσβης πεδιάδα, ὀχυρώσεων καὶ πιθανῶς μικροῦ ἀρχαίου συνοικισμοῦ· ἐνταῦθα εἶτα τὸ μεσαιωνικὸν μονύδριον «Παναγιὰ Ξηροκαστρινή». Ἥσσονος σημασίας: οἱ πύργοι τῶν *Μακάρων*, τοῦ *Κάμπου Κρούσου*, τοῦ *Σιγρίου*, τῆς *Ἄγρας* καὶ τῶν *Παρακοίλων*, ἔνθα καὶ λείψανα ἀρχαίας ἀμπελουργίας (ἀναλήμματα, πιεστήρια) κ. ἄ.

Ἀρχαῖα λείψανα ἀσφαλῶς ὑπῆρχον καὶ εἰς θέσεις δηλουμένας διὰ τῶν τοπωνυμίων: «Τσόνια» (κιόνια), «Κιουποῦ-γερὶ» (=πιθότοποι) «Παλαιόκαστρο», «Βίγλα», κ.τ.λ. Ἀρχαῖαι δὲ πόλεις, ὧν οὐδὲν διεσώθη λείψανον, αἱ: «Πενθίλη» (ἴσως κατὰ τὴν θέσιν Πεντσίλι τῆς Ἁγιάσσου), «Πόλιον» (ἴσως κατὰ τὸν κωνικὸν λόφον Πόλι παρὰ τὸ Πλουμάρι) «Μέταον» (ἴσως κατὰ τὰ Α. τοῦ Πολίου ὑψώματα Μέτι), «Κίθος» (γνωστὴ μόνον ἐκ νομισμάτων), «Ἀγαμήδη» (παρὰ τὴν Πύρραν), «Χρύση», «Ξάνθος» καὶ «Ὑπερδέξιον».

***Ἐπιγραφαί.*** Ἄπειροι ἠσχολήθησαν μὲ τὴν ἐπιγραφικὴν τῆς νήσου, ἀπὸ Κυριακοῦ τοῦ Ἀγκωνιάτου (1441, 1444—1447), περιελθόντος τὴν Μυτιλήνην, ἕως τοῦ Paton, ὅστις (1895—1896), ἐν χώρῳ ἐργασθείς, συνεκέντρωσεν ὅλον τὸ μέχρι τότε ὑλικὸν ἐντολῇ τῆς Πρωσσικῆς Ἀκαδημίας. Συμπλήρωμα τῆς ἐκδόσεως τοῦ Paton: ἡ ἔκδοσις τοῦ *Π. Παπαγεωργίου* (Unedierte Inschriften von Mytiline) τῷ 1900, συμπληρωθεῖσα καὶ αὐτὴ ὑπὸ τοῦ ἰδίου (1913). Μέχρι τότε ἀνήρχοντο αἱ γνωσταὶ λεσβιακαὶ ἐπιγραφαὶ εἰς 682.

***Νομίσματα.*** Πρῶτος ἐκτεταμένην συλλογὴν ἐξέδωκεν ὁ Plehn ἐκ τῶν παρὰ Eckhel, Mionnet καὶ Rasche ἐκδοθέντων νομισμάτων· συστηματικῶς δὲ τὰ νομίσματα ἐμελέτησεν ὁ Head. Τὰ νομίσματα τῆς νήσου δύνανται νὰ διακριθοῦν εἰς τὰ ἀρχαϊκὰ (παννησιωτικὰ κατὰ τὸ πολὺ) καὶ τὰ μεταγενέστερα (κατὰ πόλεις). Τὰ πρῶτα εἶναι: α) Σειρὰ στατήρων καὶ μικροτέρων κλασμάτων ἠλέκτρου ἀξέστου νοοτροπίας, ἀνεπίγραφα καὶ μὲ τύπους «λεοντοκεφαλήν», καὶ «ἀνθρώπινον ὀφθαλμόν». β) Σειρὰ εὐτελοῦς ἢ κεκραμένου ἀργύρου (Ε´ αἰών) φοινικικοῦ ἢ περσικοῦ σταθμικοῦ κανόνος, σφαι-

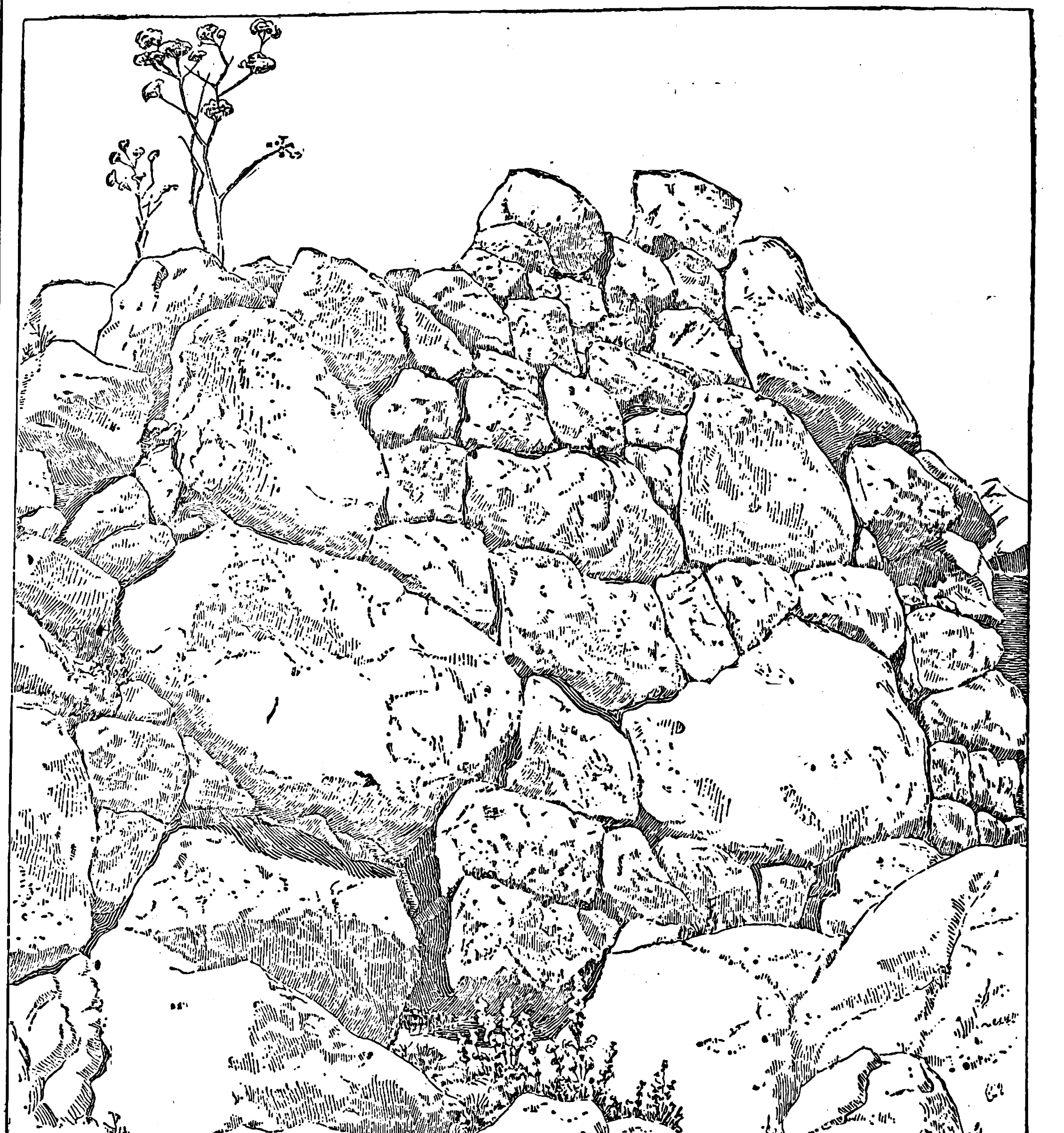

*Τμῆμα τοῦ ἀρχαιοτέρου πολυγωνικοῦ περιβόλου τῆς Ἐρεσοῦ, ἐπὶ βράχου ἐκτισμένον.*
[Σχέδιον ἐκ φωτογραφίας τοῦ R. Koldewey.]

Εἰς τὸ ἔδαφος τῆς Ἐρεσσοῦ σημαντικά: τὰ ἐρείπια τῆς *Ἀποθήκας*, ὅπου λείψανα συνοικισμοῦ ἀρχαιοτάτου, θεμέλια ἀρχαίου κτηρίου (4 δωμάτια)

Digitized by Google

ρικά, ἀνεπίγραφα μὲ τοὺς ὡς ἄνω τύπους καὶ τὸ «γοργόνειον», «κάπρον» καὶ «μόσχον». γ) Ἕκται ἠλέκτρου (480—350 π. Χ.) ἐκ τῶν διὰ τῆς πρὸς τὴν Φώκαιαν συνθήκης ἐκδοθεισῶν· ἐπιγράφονται ΛΕ(Σ), Α(Ν),Μ καὶ διακρίνονται εἰς μίαν κλάσιν (ἕως 400 π. Χ.), ἔχουσαι ἔγκοιλον τὸν ὀπισθότυπον (ὡς καὶ πάντα τὰ προγενέστερα), καὶ ἑτέραν, ἀφ' ἧς ἄρχεται ὁ ἀνάγλυφος ὀπισθότυπος· νεώτεροι τύποι: διάφοροι θεότητες (Ἀθηνᾶ, Ἀπόλλων, Δημήτηρ, Διόνυσος, Ἡρακλῆς κ.τ.λ.), ζῶα (ἀλέκτωρ, ἵππος, κριός, ταῦρος), λύρα, τρίπους κ. ἄ. Κατὰ πόλεις τὰ νομίσματα τῆς νήσου ἔχουν οὕτως:

*Αἴγειρος*. Χαλκᾶ ἕως τοῦ 300 π.Χ. Ἐπιγραφή: ΑΙΓΙ.

*Ἄντισσα*. Χαλκᾶ τοῦ 300—168 π. Χ. Ἐπιγραφὴ ΑΝ(ΤΙΣ).

*Ἐρεσός*. Χαλκᾶ μετὰ τὸ 300 καὶ ἐπὶ αὐτοκρατόρων (Καλιγούλας ἕως Φιλίππου). Ἐπιγρ.: ΕΡΕΣΙ.

*Κίθος*. Ἀργυρᾶ ἀρχαϊκοῦ ἀττικοῦ κανόνος. Ἐπιγραφή: ΚΙΘ(Ι).

*Μήθυμνα*. Ἀργυρᾶ εὐβοϊκο-ἀττικοῦ κανόνος (500 π. Χ.), φοινικικοῦ (400—387), ἀττικοῦ (μετὰ τὰ 300) καὶ ἀλεξανδρινὰ τετράδραχμα (200 κ. ἑ.). Χαλκᾶ: αὐτοκρατορικὰ (Αὔγουστος - Σεβῆρος). Ἐπιγραφή: ΜΑΘΥ(ΜΝΑΙΩΝ) κ. ἄ.

*Μυτιλήνη*. Ἀργυρᾶ ἕως τοῦ τέλους τοῦ Δ' αἰῶνος, ὧν τινα φοινικικοῦ κανόνος. Χαλκᾶ: σχεδὸν ὅλα νεώτερα τῶν ἀργυρῶν.

Πλὴν αὐτῶν εἶναι γνωσταί: α) σειρὰ ἀργυρῶν καὶ χαλκῶν μὲ τὴν ἐπιγραφὴν ΑΙΟΛΕ, ἀνήκοντα εἰς Αἰολικὴν συμπολιτείαν τοῦ Γ' αἰῶνος καὶ κοπένταἐν Μηθύμνῃ (Imhoof), ἴσως ὅμως καὶ ἀνήκοντα εἰς τὸ ἐν Θράκῃ Αἰόλειον, καὶ β) σειρὰ χαλκῶν μὲ τὴν ἐπιγραφὴν ΚΟΙΝΟΝ ΛΕΣΒΙΩΝ ἐπὶ Μ. Αὐρηλίου καὶ Κομμόδου.

*Νομίσματα Μυτιλήνης πρὸς τιμὴν ἐπισήμων γυναικῶν.*

1) Ἰουλίας Πρόκλας [ἐπιγρ.: Ἰου(λίαν) Πρόκ(λαν) (ἡρ)ωΐδα]. 2) Ναυσικᾶς τινὸς [ἐπιγρ.: Ναυσικᾶν ἡρωΐδα. 3) Φλαβίας Νικομάχιδος [ἐπιγρ.: Φλα(βια) Νεικόμ-αχις Μυτιλη(ναίων)]. 4) Σαπφοῦς.

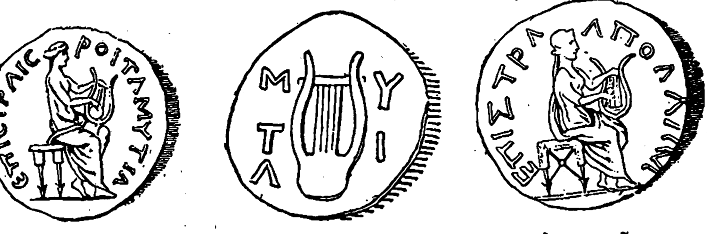

*Ὀπισθότυποι νομισμάτων τῆς Μυτιλήνης μετὰ τῶν ἐπιγραφῶν:*

1) Ἐπὶ στρατηγοῦ Ἱεροίτα Μυτιλ(ηναίων). — 2) Μυ - τι - λ(ηναίων). —3) Ἐπὶ στρα(τηγοῦ) Ἀπολλωνί(ου).

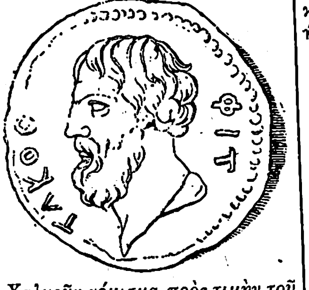

*Χαλκοῦν νόμισμα πρὸς τιμὴν τοῦ Πιττακοῦ. Ἐπιγρ. Φιτ-τακός.*

***Ἀρχιτεκτονική.***

*Τειχοποιία*. Προϊστορικοῦ περιβόλου ἐξ ἀργολίθων δεῖγμα: ἐν Θερμῇ V (ΝΔ. τμῆμα, πάχος ἕως 4,30 μ.). Συνήθης ἡ πολυγωνικὴ τοιχοδομία, ἧς δείγματα τείχη: α) πελασγικὰ ἐξ ἀκατεργάστων μεγαλολίθων (Ἄντισσα, Ἀρίσβη, Πύρρα)· β) τεχνικώτερον κατὰ τὰς ἁρμογὰς ἐξειργασμένα (Ἀρίσβη, καλότοιχος Ἀποθήκας) καὶ γ) ἐξ ἐπιμήκων πολυγωνικῶν λίθων ἄριστα ἐξειργασμένων καὶ στερεῶς ἁρμοζομένων· κλασσικὸς τύπος ὁ περίβολος Μυτιλήνης (Ε' αἰών). Ἰσοδομικῆς τοιχοδομίας μόνον ὁ νεώτερος περίβολος τῆς Ἐρεσοῦ καὶ οἱ κατοπτευτικοὶ αὐτῆς πύργοι (Δ' αἰών, τέλη). Ὀχυρωτικοὶ πύργοι: ἰδίως κατα τὰς πύλας τῶν τειχῶν (Ἀρίσβη, Ἐρεσός, Ξηρόκαστρο). Αἱ ἐξωτερικαὶ πλευραὶ τῶν τειχῶν ἐκ τραχείτου συνήθως (ἐν Μυτιλήνῃ καὶ μάρμαρον).

*Οἰκήματα*. Ἐκ τοιχαρίων ἡμιαψιδωτὰ ἢ ἐπιμήκη ὀρθογώνια εἰς τὰ ἀνώτερα στρώματα τῆς Θερμῆς, τοῦ τύπου τοῦ «μεγάρου» ἐν Ἀρίσβῃ καὶ Θερμῇ V ἐπίσης ἐκ τοιχαρίων, καὶ ἐκ πολυγωνικῶν μεγαλολίθων εἰς Ἐρεσσόν.

*Ναοί*. Προϊστορικαὶ ἑστίαι καὶ βωμοὶ καθ' ὅλα τὰ στρώματα τῆς Θερμῆς. Μεταγενέστερα ἱδρύματα: α) *Κλοπεδῆς* (Ἀπόλλωνος Ναπαίου ;). Εἷς ἀρχαιότερος (18,40×37,50) τοῦ ΣΤ' αἰῶνος κατεστραμμένος πλήρως, παρ' ὃν νεώτερος (16,25×26,70 μ.), ἴσως καὶ αὐτὸς ἀρχαϊκός. Κρηπίδωμα ἐπὶ 6—7 δόμων, κίονες ἀρράβδωτοι αἰολικοὶ 8×17 (διάστυλα 1,27 μ., διάμετρος βάσεως 0.82), θριγκὸς ξύλινος μετὰ κεραμικῆς ἐπενδύσεως. Σπουδαίως συμβάλλοντα εἰς τὴν μελέτην τοῦ αἰολικοῦ τύπου τὰ κιονόκρανα (ἄνωθεν προσκεφαλαίου κειμένου ἐν μέσῳ δύο ραβδίων). Βάσεις ἀνατολικοῦ ρυθμοῦ (ὡς ἐν Σεντζιρλῇ) ἐκ παχέος τόρου καὶ ραβδίου μετὰ πλέγματος (ὕψος βάσεως μετὰ σφονδύλου ἕως 0,73 μ., ὕψ. τόρου 0,15, ὕψ. ραβδίου 0,04). β') *Μέσων*. Ὁ πρῶτος γνωστὸς ἰωνικὸς ψευδοπερίπτερος ναὸς (ἀρχαὶ Δ' αἰῶνος, 23,75×41,52 μ.). Περίστασις 8×14 κιόνων. Τριμερὴς (πρόδομος, σηκός, ὀπισθόδομος). Ὑλικά: τραχειτικοὶ τόφφοι, λιπαρίτης, μάρμαρον. Ἄφθονα λείψανα φυτικοῦ διακόσμου. γ') *Βρήσης* (Διονύσου Βρησαγενοῦς). Μικρὸς δωρικὸς μαρμάρινος, ἐν παραστάσι, ἀτελῶς γνωστῶν διαστάσεων (ὕψ. κιόνων 3,57 μ., πάχος 0,66, μεταξόνιον 1,96) τοῦ Α' π. Χ. αἰῶνος.

*Λιμενικὰ ἔργα*. Καταφανῆ ἐν Μυτιλήνῃ (Ε' αἰών) καὶ Ἐρεσσῷ, ὕφαλα δὲ ἢ ἴχνη ἔργων πολλαχοῦ. Συνήθης ἐργασία: ἰσοδομικὴ τοιχοδομία ἐξωτερικῶν πλευρῶν τῆς προβλῆτος καὶ πλήρωσις τῶν διαμέσων διὰ λιθαρίων ἀσβεστοπαγῶν καὶ γῆς.

*Κεφαλὴ Ἀθηνᾶς.*

[Ἐκ τῆς συλλογῆς Μυτιλήνης.]

*Ὑδραγωγεῖον* ἀξιόλογον τὸ ἐν Μυτιλήνῃ (βλ. *Μυτιλήνη πόλις*) καὶ *θέατρον* ὡσαύτως.

***Κεραμεική.*** Προϊστορικὰ εὑρήματα τὰ ἐν Θερμῇ καὶ Ἀντίσσῃ ἰδίως. Τὰ πρῶτα συνίστανται εἰς εἰδώλια πήλινα καὶ πλῆθος ἀγγείων, ὧν: τὰ κατώτερα (Θερμὴ I—II) στιλπνὰ μελαμβαφῆ, ἐγχάρακτα ἢ γραπτὰ διὰ κοινῶν κοσμημάτων· τὰ ἀνώτερα (Θερμὴ IV—V) χονδροειδέστερα μὲ παχυτέρας γραμμὰς (ἐρυθρά, καστανόχροα, φαιά) καὶ τὰ μεσαῖα μεταβατικῆς τεχνικῆς. Ἐν Ἀντίσσῃ: λείψαν ακεραμεικῆς τῶν ἀρχῶν τῆς χαλκῆς ἐποχῆς, μηκυναϊκὰ ἀγγεῖα καὶ μυνίεια πήλινα σκεύη σύγχρονα τῆς Τροίας VI (1500—1000 π.Χ.), καὶ ἐνδιαφέροντα ὑστερομυκηναϊκὰ σκεύη ὡς τὰ ἐν Τροίᾳ VII (1000—700 π. Χ.). Ἐρυθροβαφῆ οἰκιακὰ σκεύη χαρακτηριστικὰ τῆς Τροίας VI καὶ ἐν τῷ ἔξω τῆς Θερμῆς συνοικισμῷ, ἐν Κλοπεδῇ δὲ ἐρυθρομέλανα, χονδροειδῆ, σφαιρικά, μὲ τραχεῖαν ἐπιφάνειαν καὶ ἐξ ἀκαθαρίστου πηλοῦ τρωαδικῆς ἐπίσης τεχνοτροπίας. Μυκηναϊκὰ λείψανα καὶ εἰς Μυτιλήνην, μεταγενεστέρας κεραμεικῆς ἀρχαϊκοὶ μέλανες καὶ φαιοὶ κύλικες εἰς Ἄντισσαν, τῶν ἀκολούθων δὲ ἐποχῶν πλεῖστα ἀγγεῖα κοινῆς διακοσμήσεως, μελαμβαφῆ κ.λ.π. (πλειστακοῦ).

***Πλαστική.*** Λέσβιος καλλιτέχνης μόνον ὁ Λεσβόθεμις εἶναι γνωστός, ἐκ τῶν ξένων δὲ ἐν Μυτιλήνῃ ἐργασθέντων ὁ Ὀλύνθιος Δωρόθεος ὁ Ἡγησάνδρου. Εὑρήματα περίοπτα ὀλίγα· παλαιότερα τὰ προϊστορικὰ εἰδώλια τῆς Θερμῆς, προγενέστερα τῶν πηλίνων, ἐγχάρακτα· ἐκ τῶν νεωτέρων: χάλκινος Ἔρως (ἐν Μολύβῳ), ἀντίγραφον τῆς ἐν Κήποις Ἀφροδίτης τοῦ Ἀλκαμένους (ρωμαϊκόν), κ. ἄ., τὰ πλεῖστα ρωμαϊκά.

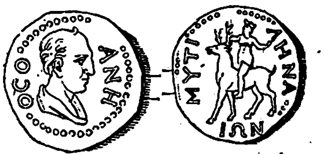

*Νόμισμα πρὸς τιμὴν τοῦ Θεοφάνους.*

Προσθία ὄψις: (Θεο-(φ)άνης. Ὀπισθία: Μυτι-ληνα-ί-ων).

***Σκεύη καὶ ἐργαλεῖα.*** Χαλκᾶ σκεύη εὑρέθησαν δι' ὅλας τὰς ἐποχὰς ἐν Θερμῇ, ὧν τινα κατασκευασθέντα ἐν χώρῳ· γεωμετρικοῦ ρυθμοῦ τὰ ἐν Κλοπεδῇ (νησιωτικὴ περόνη, ἀγγείδιον λεκανοειδές). Λίθινα ἐργαλεῖα, ἰδίως ἐκ πυρίτου, εἰς Θερμήν, εἰς τὰ αὐτὰ στρώματα μετὰ ὀστεΐνων εὐαρίθμων σκευῶν. Μεταγενέστερα: τὰ ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Ἐρεσσοῦ λείψανα σταφυλοπιεστηρίων (Παράκοιλα, Τριάντα, κτλ.) καὶ οἱ ἀλλαχοῦ ἐλαιόμυλοι.

***Ζωγραφική.*** Μοναδικὸν λείψανον: ἡ βάσις γραπτοῦ τοίχου ρωμαϊκῆς οἰκίας τοῦ Β'—Γ' μ. Χ. αἰῶνος (Μυτιλήνη) μὲ κρεμαστὰ ἔγκαρπα καὶ πτηνὸν (τετραχρωμία ἐπὶ λευκοῦ βάθους).

***Μωσαϊκά.*** Διάφορα λείψανα, ἰδίως ρωμαϊκαὶ τρίχρωμοι καὶ τετράχρωμοι συνθέσεις ἐν Μυτιλήνῃ (Ἅγιος Θεράπων, κ.ἄ.). (Βλ. καὶ [*χριστιανικὴ τέχνη*].)

***Σαρκοφάγοι.*** Κυρίως μονολιθικαὶ ἐκ τραχείτου τινὲς παλαιότεραι (ΣΤ' αἰών) καὶ αἱ λοιπαὶ ρωμαϊκαί. Μαρμαρίνη εὑρέθη ἐν Ἐρεσσῷ (Α. τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου), Κλαζομενία δὲ τῆς β' διαιρέσεως τοῦ Kjellberg (ΙΣΤ' αἰών), μὲ πλουσίαν φυτικὴν καὶ γεωμετρικὴν γραπτὴν διακόσμησιν, ἐν Μολύβῳ.

ΜΕΣΑΙΩΝΙΚΑ ΚΤΙΣΜΑΤΑ. Πρωτεύουσαι πόλεις τῆς νήσου ἦσαν κατὰ τὸν μεσαίωνα ἡ *Μυτιλήνη*, ὁ *Ἐρεσὸς* καὶ ἡ *Καλλονή*. Ὑπῆρχεν ἔτι καὶ πλῆθος περιτειχίστων *Μόλυβος* (ἀρχ. Μήθυμνα), ἡ κωμῶν («καστέλια») ἀπὸ τῆς βυζαντινῆς ἐποχῆς καὶ ἄλλαι ἀπὸ τῆς γενοατοκρατίας. Σπουδαιότεραι αὐτῶν αἱ νῦν ὑπάρχουσαι *Κεραμιά*, *Βασιλικά*, *Πέτρα*, *Παράκοιλα* καὶ αἱ μὴ διασωθεῖσαι *Ἅγιοι Θεόδωροι*, *Αὐγερινός*, *Γέρα*, κ. ἄ.

Λείψανα μεσαιωνικῶν κτισμάτων διασῴζονται εἰς τὰ ἑξῆς σημεῖα τῆς νήσου: *Μυτιλήνη* (βλ. *Μυτιλήνη πόλις*).—*Πλάτη*: λείψανα ταπεινῶν οἰκημάτων καὶ πύργου. — *Ἀνοιχτός*: λείψανα χωρίου μὲ ἀκμάζουσαν ἀγγειοπλαστικήν, ὅθεν ἡ νῦν ἐν Μανδαμάδῳ ἀκμάζουσα κεραμεικὴ («μανταμαδιώτικα λαγήνια»). — *Μόλυβος*: τὸ βυζαντινὸν - γενοατικὸν φρούριον ἀρκούντως διατηρούμενον μὲ τουρκικὰς ἐπισκευάς.— Ἀπέ-

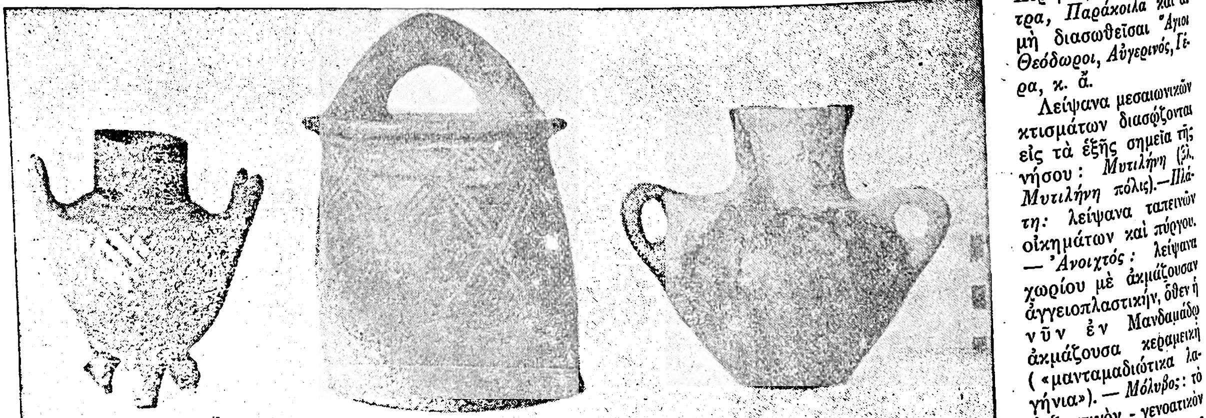

*Προϊστορικὰ ἐγχάρακτα πήλινα ἀγγεῖα ἐκ Θερμῆς.*

[Ἐθνικὸν μουσεῖον Ἀθηνῶν.]

Digitized by Google

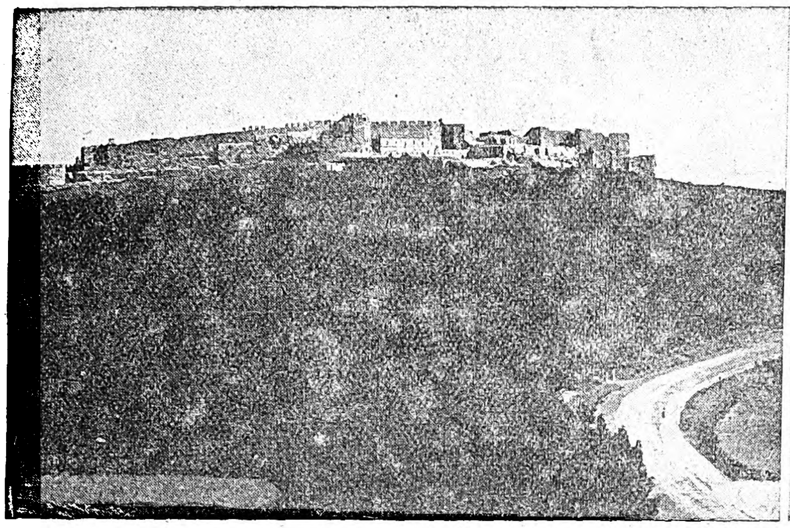

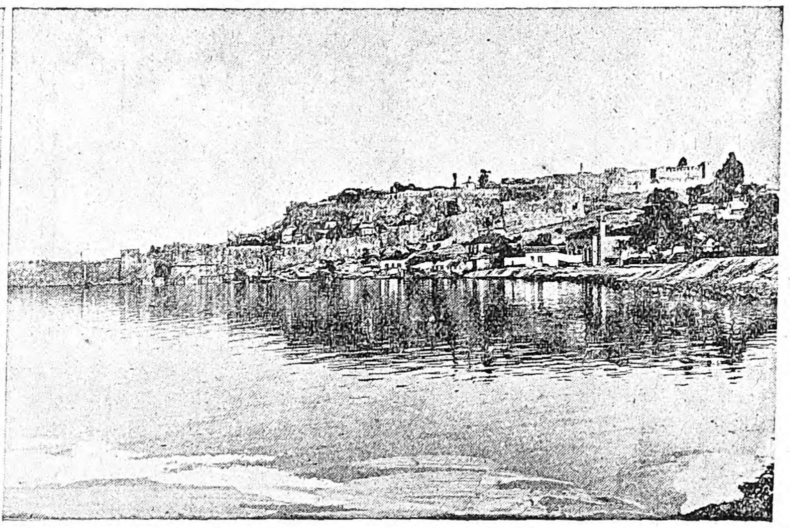

*Τὸ γενοατικὸν «Κάστρον τῆς Μυτιλήνης».*
[1= Ν. πλευρά, ἄλσος «Πευκάκια» καὶ τμῆμ τοῦ παραλίου περιπάτου. (Φωτογρ. Φρὶτς Μράζ). 2=Β. πλευρὰ καὶ Β. λιμὴν μετὰ τοῦ «Ντενὶζ Τζαμί».]

*στα:* λείψανα κώμης μὲ ἀκμάζουσαν ἀγγειοπλαστικήν, ὅθεν τὸ ὄνομα τοῦ παρακειμένου νῦν Τσουκαλοχωριοῦ. — *Ὀβριόκαστρο* (ἄλλως «Κάστρο τῶν Γενοβέζων»), ἐπὶ τῆς ἀρχαίας Ἀντίσσης, ὅπου ἐρείπια περιβόλου μὲ πυργοειδῆ ἀντερίσματα, ὃν προασπίζει δεύτερος εὐρύτερος μὲ στρογγύλους πύργους, κ. ἄ.—*Λάψαρνα:* λείψανα μεγάλης μεσογείου κώμης μετὰ ἐκκλησιῶν. — *Ἐρεσσός*: τὸ φρούριον μὲ στρογγύλον πύργον πρὸς Ν., δεξαμενὰς γενοατικάς, σήραγγας κ. ἄ. —*Ξηρόκαστρο* (ἄλλως «Παναγία Ξηροκαστριανή»), ἐπὶ ἀρχαίου συνοικισμοῦ: λείψανα ὀχυρώσεων, οἰκημάτων καὶ μονυδρίου.—*Καλλονὴ* («Καλλόνια - Χισσάρ», «Χισσάρ-κιοϊ»), ἐπὶ τῆς ἀρχαίας Ἀρίσβης: λείψανα ὀχυρώσεων, δεξαμενῶν κ. ἄ. μετὰ τουρκικῶν ἐπισκευῶν.—*Πύρρα:* λείψανα ποικίλα ἐκκλησιῶν κ. ἄ. παρὰ τὸν ἀρχαῖον ἐρειπιῶνα.—*Βρησά:* θεμέλια γενοατικοῦ «παλαιόπυργου» παρὰ τὸν Ἁλμυροπόταμον.

Ἐπίσης ἀσήμαντα λείψανα καὶ εἰς τὰς διὰ τοῦ τοπωνυμίου *Παλαιόκαστρο* δηλουμένας θέσεις: Β. τοῦ Σιγρίου, Α. τῶν ὑψωμάτων Μέτι (παρὰ τὸ Πλο μ ίρι), παρὰ τὸν Μεσαγρόν, κ. ἄ. Μεσαιωνικαὶ σκοπιαὶ ἢ ὀχυρώσεις ὑπῆρχον εἰς τὰς θέσεις *Καστέλι* ἢ *Κάστελος* (Βατούσης, Ἁγιάσσου, Παπάδου, Μηλιῶν, κ. ἄ.), *Βίγλα* (Βατούσας κ. ἄ.), κ.τ.τ. Ἀδήλων δὲ ἐπακριβῶν χρόνων, πάντως μεταγενεστέρων, τὰ ἐρείπια τῶν θέσεων *Καλαμιὰ* καὶ *Τριψύχι* (τοῦ χωρίου Μπορός), *Πατέλα* (τῆς Μελίντας), *Κῆπος Πατρικιοῦ* (Παπάδου), *Μονοσάδο* (Κάτω Τρίτος), *Μάγγαινα* (Ἵππειος), *Παπαδούλα* (Κεραμιά), κ.ἄ.

Π. Ν. Π.

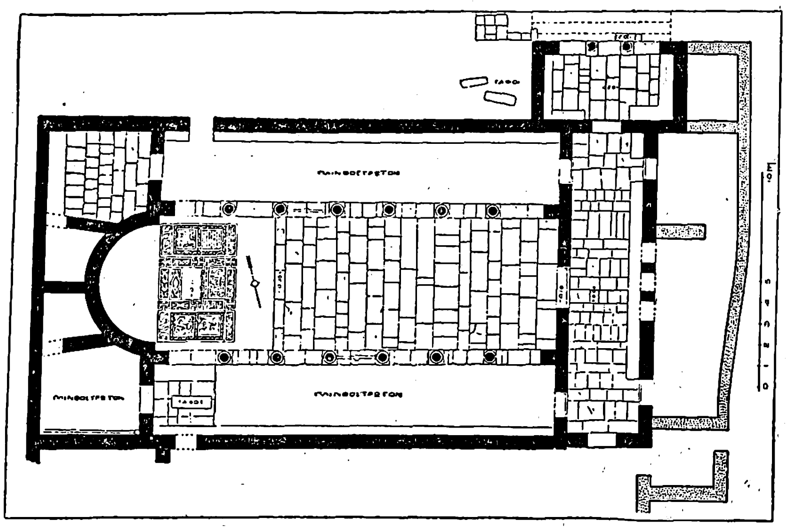

*Κάτοψις βασιλικῆς Ὑψηλομετώπου.* Τοίχων: *πάχος 0.65—0.70 μ., ὕψ. ἕως 1 μ.* Γενικὸν διάγραμμα: *15.80—30.10 μ. (ἐξωτ. διαστάσεις).* Πρόπυλον: *3.05×6.20 (ἐσωτ. διαστ.).* Νάρθηξ: *3.40×14.25.* Κλιτῶν ἐλεύθ. ἄνοιγμα: *μεσαῖον 6.40. μ. πλάγια 3.40.* Ψηφιδωτά: *5.70×3.80 μ.*
[Σχέδιον Α. Κ. Ὀρλάνδου.]

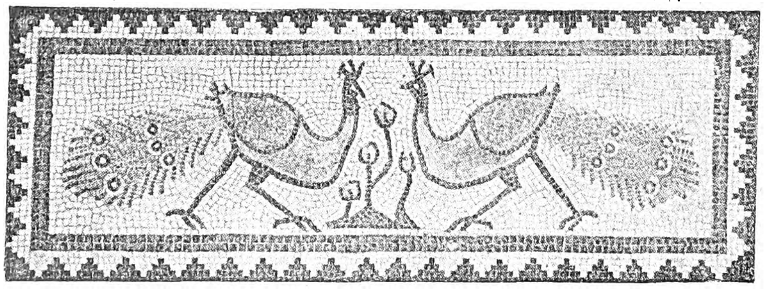

*Παγώνια τῶν μαιάνδρων τοῦ ψηφιδωτοῦ δαπέδου τῆς βασιλικῆς Ἁγ. Ἀνδρέου.*
[Κατὰ Α. Κ. Ὀρλάνδον.]

ΧΡΙΣΤΙΑΝΙΚΗ ΤΕΧΝΗ. ***Ἀρχιτεκτονική.*** Μᾶλλον ἀξιόλογα ἀλλ' ἀτελῶς διατηρηθέντα μνημεῖα εἶναι αἱ ἀσιατίζοντος ἑλληνιστικοῦ ρυθμοῦ παλαιοχριστ ανικαὶ βασιλικαί. Ἡ τοῦ Ὑψηλομετώπου (β΄ ἥμισυ ΣΤ΄ αἰῶνος), καταστραφεῖσα ἐξ ἐμπρησμοῦ κεῖται 30΄ Ν. τοῦ ἀνωτέρω χωρίου, παρὰ τὸ παρεκκλήσιον Ἅγιος Δημήτριος. Ἦτο τρίκλιτος, διώροφος, μὲ ἁψῖδα ἱεροῦ ἐν ὀρθογωνιῳ ἐγγεγραμμένην κατὰ τὸ συριακὸν πρότυπον, σχηματιζομένων ἑκατέρωθεν δύο παστοφορίων, καὶ εἶχε πρόπυλον Ν. τοῦ νάρθηκος· σῴζονται οἱ κατώτεροί της τοῖχοι, δύο τάφοι καί τινα μεταγενέστερα προσκτίσματα. Ἡ τῆς Ἐρεσσοῦ (α΄ ἥμισυ Ε΄ αἰῶνος) κεῖται κατὰ τὴν θέσιν τῆς ἀρχαίας Ἐρεσσοῦ, 100 μ. ἀπὸ τῆς ἀκτῆς. Σῴζονται καὶ αὐτῆς μόνον οἱ κατώτεροι τοῖχοι· ἦτο τρίκλιτος, διώροφος, ἔχουσα κλιμακοστάσιον, τραπεζιόσχημον πρόσκτισμα, πρὸς τὸ ὁποῖον συνέχεται τὸ ἐκκλησίδιον τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου, καὶ 2 συληθέντας τάφους· ἀγνοεῖται ὁ ἀριθμὸς τῶν κιόνων τῶν κλιτῶν. Ἡ παρὰ τὴν θέσιν Ἀφεντέλλη βασιλικὴ (β΄ ἥμισυ Ε΄ αἰῶνος) κεῖται Δ. τῆς προηγουμένης, παρὰ τὴν ἀκτήν, καὶ ἐθεωρεῖτο ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων ὡς σχολεῖον τοῦ Ἐρεσίου φιλοσόφου Θεοφράστου· σῴζονται αὐτῆς μόνον τὰ θεμέλια τῶν τοίχων καὶ ὁ στυλοβάτης τοῦ τέμπλου· ἦτο τρίκλιτος (πιθανῶς 12 κίονες κατὰ κλίτος), ὁ νάρθηξ κατὰ τὴν Β. πλευρὰν ἐσχημάτιζε κόγχην καὶ τὸ ἱερὸν περιεγράφετο ἐν ὀρθογωνίῳ, προσεγγίζον τὴν συριακὴν τεχνοτροπίαν περισσότερον τῆς βασιλικῆς Ὑψηλομετώπου· ἐφωτίζετο δι' ὑελοστασίων· ὁμοκέντρως πρὸς τὴν ἁψῖδα καὶ ἐντὸς αὐτῆς, ἐν τῷ ἱερῷ, ὑπῆρχε σύνθρονον, καὶ ὁ Α. τοῖχός της ἐσυνεχίζετο πρὸς Β. καὶ Ν. Πρωτοβυζαντινὴ ἐπίσης βασιλικὴ ὑπάρχει εἰς Μυτιλήνην ἐν τῷ Κάστρῳ. Μεταγενεστέρας βυζαντινῆς τεχνοτροπίας θεωρεῖται ὁ εἰς Ἐπάνω Πύργους Θερμῆς ναὸς τῆς Κοιμήσεως τῆς Θεοτόκου («Τρουλλωτή»), μεταγενεστέρα δὲ ἀλλὰ γραφικωτάτη εἶναι ἡ ἐν τῷ σπηλαίῳ λαξευτὴ «Ἁγία Παρασκευὴ» (6.40×4.10 μ.) παρὰ τὴν ὁμώ υ ιον κώμην.

***Γλυπτική.*** Τὸν πλουσιώτερον γλυπτὸν διάκοσμον διέσωσεν ἡ βασιλικὴ τοῦ Ὑψηλομετώπου: ἰωνιζούσας βάσεις καὶ ἀρραβδώτους κορμοὺς κιόνων, κιονόκρανα ἰωνικὰ (τύπος ἑλίκων καὶ ἐργασία κατὰ συριακὰ πρότυπα), ὑψηλὰ κιονόκρανα παραθύρων (μὲ κάλαθον ὑδροχαρῶν φυτῶν), προσκεφάλαια πλουσίως διακοσμημένα, θωρακεῖα ἀμφίγλυπτα, τμῆμα κοσμήτου, μαρμαρίνη ἁγία τράπεζα, κ. ἄ. Μᾶλλον συληθεῖσα ἡ βασιλικὴ Ἀφεντέλλη: διεσώθησαν ἐλάχισται ἰωνικαὶ βάσεις, κιονόκρανα μετ' ἐπιθήματος, ἀμφίγλυπτα θωρακεῖα, κιονίσκοι τοῦ τέμπλου ἀρράβδωτοι (κιονόκρανον καλαθόσχημον ὑπὲρ παχεῖαν σπεῖραν), κιονίσκος τῆς ἁγίας τραπέζης καὶ λείψανα περιρραντηρίου. Τῆς ἐν Ἐρεσσῷ: μόλις διεσώθησαν δύο ἀμφίγλυπτα θωρακεῖα, μεσοκιονίσκος παραθύρου καί τινες ἀρράβδωτοι γρανιτικοὶ κίονες. Ξυλογλυπτικῆς μνημεῖα σπουδαιότερα: ὁ ἐβένινος Ταξιάρχης τοῦ Μανδαμάδου (Η΄ αἰών;) τὸ τέμπλον τῆς Μεταμορφώσεως ἐν Μεγαλοχωρίῳ, ἔργον χιακῆς οἰκογενείας ξυλογλυπτῶν τοῦ παρελθόντος αἰῶνος, καὶ τὸ τέμπλον τῆς Ζωοδόχου Πηγῆς ἐν Βρησᾷ (1815).

***Ψηφιδωτά.*** Σπουδαιότερον τὸ ψηφιδωτὸν δάπεδον τοῦ μεσαίου κλίτους τῆς βασιλικῆς Ἐρεσσοῦ: ἀποτελεῖ κλειστὸν σχέδιον μέχρι τῆς σολέας,

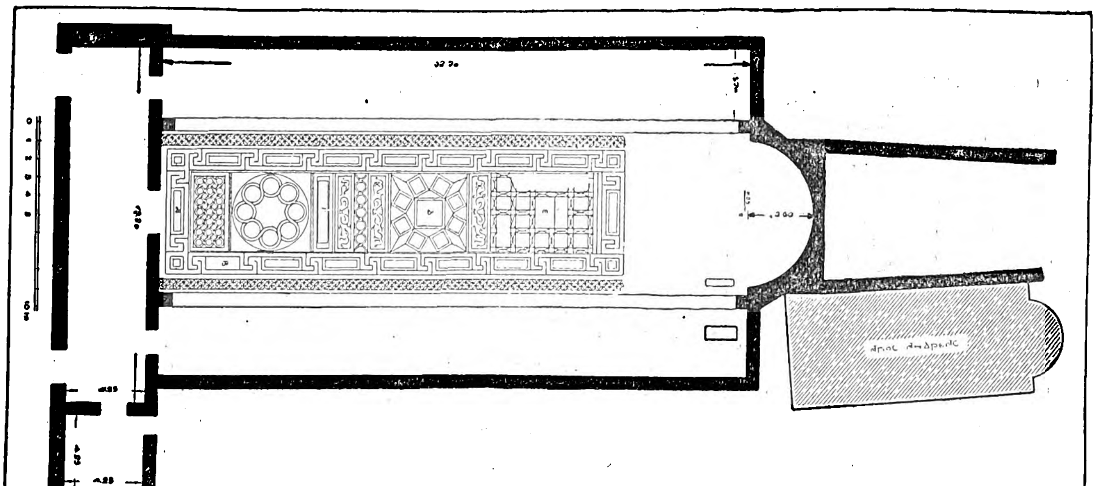

*Κάτοψις βασιλικῆς Ἁγ. Ἀνδρέου.* Τοίχων: *πάχος 0,70, ὕψος 1—1,15 μ.* Νάρθηξ: *4,25×19,20 (ἐσωτ. διαστ.).* Κυρίως ναός: *17,70×32,20 (ἐσωτ. διαστ.).* Κλιτῶν ἐλεύθ. ἄνοιγμα: *μεσαῖον 8,80, πλάγια 3,70.* Κλιμακοστάσιον: *4,25×4,25 (ἐσωτ. διαστ.).* Ψηφιδωτά: *8,50×25,00 μ.*
[Σχέδιον Α. Κ. Ὀρλάνδου.]

Digitized by Google

περιτρεχόμενον ὑπὸ μαιάνδρου, οὗτινος τὰ ὀρθογώνια πληροῦν 13 ζεύγη ἑξαισίων παγωνίων· τὸ περίκλειστον (3 διάχωρα) πληροῦν γεωμετρικὸς (συριακοὶ τροχοί, κ. ἄ.), φυτικὸς καὶ ζωϊκὸς διάκοσμος. Τὰ ψηφιδωτὰ τῆς βασιλικῆς Ἀφεντέλλη καλύπτουν ὅλον τὸ μεσαῖον κλίτος καὶ τὴν ἀψῖδα τοῦ ἱεροῦ, ἐν ᾗ μεγαλοπρεπὴς σύνθεσις ζεύγους παγωνίων ἐν τῷ μέσῳ βλαστάνοντος κανθάρου· τὸ λοιπὸν (4 διάχωρα) ἔχει καθαρῶς γεωμετρικὴν σύνθεσιν. Τὰ ψηφιδωτὰ τοῦ Ὑψηλομετώπου, ἄκομψα κάπως, καλύπτουν τὴν σολέαν καὶ περιέχουν (3 διάχωρα ἀκανονίστως ὑποδιαιρούμενα) γεωμετρικὰ φυτικὰ καὶ ζωϊκὰ κοσμήματα σκληροτάτων χρωματισμῶν. Σύγχρονα πρὸς τὰ τῆς βασιλικῆς Ἐρεσσοῦ εἶναι καὶ τὰ εἰς δύο διαμερίσματα παλαιοχριστιανικοῦ κτηρίου κατὰ τὰς Δ. κλιτῦς τῆς ἀκροπόλεως Ἐρεσσοῦ.

*Ζωγραφική.* Ἡ ἐκκλησιαστικὴ ζωγραφικὴ τῆς νήσου ἐλάχιστα ἔχει νὰ ἐπιδείξῃ, ἐν οἷς αἱ τοιχογραφίαι τῶν ναῶν Ἁγίων Πάντων ἐν τῷ νεκροταφίῳ τῆς Μονῆς Ὑψηλοῦ (1438—1683) καὶ τοῦ Σωτῆρος Χριστοῦ αὐτόθι, τοῦ Ἁγίου Νικολάου ἐν Τζίθρᾳ (ἀγιορειτικὸν ὕφος, 1544), τοῦ ναοῦ τῆς Μονῆς Περιβολῆς (μουσεῖον τοιχογραφιῶν), ὁ Ἅγιος Ἰγνάτιος τῆς ἐκκλησίας τῆς Μονῆς Λειμῶνος (ΙΖ' αἰῶν) κ. ἄ. Ἐπίσης ἀξιόλογοι: κινηταί τινες εἰκόνες ὡς αἱ τῆς Μονῆς Κρεοκόπου (ΙΖ' αἰών), ὧν τινες εἰς Τελώνια, καὶ αἱ ἔγχρωμοι λειογραφίαι διαφόρων χειρογράφων τῆς Μονῆς Λειμῶνος.

***Ἀρχαιολογικαὶ ὑπηρεσίαι.*** Ἡ νῆσος ὑπάγεται εἰς τὴν ΙΒ' ὀρχαιολογικὴν περιφέρειαν καὶ εἶναι ἕδρα τοῦ ἐπιθεωρητοῦ ἀρχαιοτήτων νήσων Αἰγαίου καὶ ἐπιμελητοῦ. Μουσείων συστηματικῶν στερεῖται· ἐκ τῶν συλλογῶν (δημοσίων) ἀξία λόγου ἡ τῆς Μυτιλήνης καὶ τῆς Ἐρεσσοῦ. Κατὰ τὸ παρελθὸν ἀρχαιολογικαὶ συλλογαὶ ὑπῆρχον εἰς τὰς ἑλληνικὰς σχολὰς καὶ τὰς ἐκκλησίας. Ὁ πλουτισμὸς τῆς συλλογῆς Μυτιλήνης ἐγένετο (1913) μὲ πυρῆνα τὰς συγκεντρωθείσας ἐγχωρίας ἀρχαιότητας καὶ τὰς ἐξ Ἴμβρου Καστελλορίζου, Λήμνου, Σαμοθράκης καὶ Τενέδου, πλεῖσται δὲ εὑρισκόμεναι εἰς τὸ Ἐθνικὸν Μουσεῖον Ἀθηνῶν θὰ ἐπιστραφοῦν μετὰ τὴν ἵδρυσιν τοῦ «μουσείου πόλεως Μυτιλήνης». Προτάσεις ἱδρύσεως μουσείου ἐγένοντο (1931) καὶ ὑπὸ τοῦ Ἰνστιτούτου Ροκφέλλερ.

— [ΦΙΛΟΤΕΛ.] Ἰδιότυπα γραμματόσημα ἀπέκτησεν ἡ Μυτιλήνη τὴν ἐπομένην (9 Νοεμβρ. 1912) τῆς καταλήψεως ὑπὸ τῆς Ἑλλάδος, κυκλοφορήσαντα ἐπ' ὀλίγας ἡμέρας. Συνίσταντο ταῦτα ἐκ δύο σειρῶν: α') Σειρὰ ἐκ 16 τουρκικῶν γραμματοσήμων ἐπισημανθέντων διὰ τοῦ ἐπισήματος:

Ἑλληνικὴ
Κατοχὴ
Μυτιλήνης

Ἦσαν ταῦτα τὰ ὑπ' ἀριθμοὺς 41, 125, 127, 133, 1 1,144—149,151—152 καὶ 155—158 τῶν καταλόγων Yvert-Tellier, ἐκυκλοφόρησαν δὲ ὑπὸ τὴν παλαιάν των ἀξίαν: 2, 5, 10 καὶ 20 παράδων καὶ 1, 2, 2 ½ καὶ 10 γροσίων. Καὶ β') Σειρὰ ἐκ 4 τουρκικῶν γραμματοσήμων (ὑπ' ἀριθμοὺς 144, 147, 148α καὶ 156) ἐπισημανθέντων μὲ τὸ αὐτὸ ὡς ἄνω ἐπίσημα ἀλλὰ καὶ διὰ νέας ἀξίας 25 καὶ 50 λεπτῶν (ΛΕΠΤΑ) καὶ μιᾶς καὶ δύο δραχμῶν (ΔΡΑΧΜΗ, ΔΙΔΡΑΧΜΟΝ). Συνολικῶς αἱ σειραὶ αὗται περιελάμβανον γραμματόσημα αὐθεντικῶς ἐπισημανθέντα ἀξίας μόλις 155 τουρκικῶν λιρῶν, ἐκυκλοφόρησαν ὑπὸ ποικίλας αὐθεντικὰς παραλλαγὰς ἐπισημάνσεως (κυανῆ, διπλῆ ἢ ἀνεστραμμένη ἐπισήμανσις, διπλῆ ἐκτύπωσις τῆς νέας ἀξίας, τυπογραφικὰ λάθη περὶ τὰ 22 κ.ἄ.) καὶ ἔχουν μεγάλην φιλοτελικὴν ἀξίαν καὶ ὑψηλὰς ἐμπορικὰς τιμάς, εὐρύτατα παραποιηθέντα κατὰ τὸ ἐπίσημα.

Ἑτέρα περιζήτητος σειρὰ εἶναι ἡ ἐκ τῶν ὡς ἄνω ἐπισημασθέντων γραμματοσήμων, τῶν ἐπὶ πλέον φερόντων τὴν ἐν Πλωμαρίῳ χρησιμοποιηθεῖσαν πολεμικὴν ταχυδρομικὴν σφαγῖδα τὴν ἀναγράφουσαν

ΕΛΛΗΝΙΚΗ
ΚΑΤΟΧΗ
ΠΛΩΜΑΡΙΟΥ
10 ΝΟΕΜ. 912

Ἐχρησιμοποιήθη ἡ σφραγὶς αὕτη ἀπὸ τῆς καταλήψεως τοῦ Πλωμαρίου (1912, Νοέμ. 10) ἐπὶ 10—15 ἡμέρας, ἐσφραγίσθησαν δὲ δι' αὐτῆς μόλις 500 ἐπιστολαὶ φέρουσαι τουρκικὰ γραμματόσημα 20 παράδων καὶ 1 γροσίου, ἄνευ νέας ἀξίας ἢ μετὰ τῆς νέας τοιαύτης (δραχμῆς καὶ διδράχμου), καὶ ὀλίγα δεκάλεπτα ἑλληνικὰ τῆς σειρᾶς τῆς «Ἑλληνικῆς Διοικήσεως».

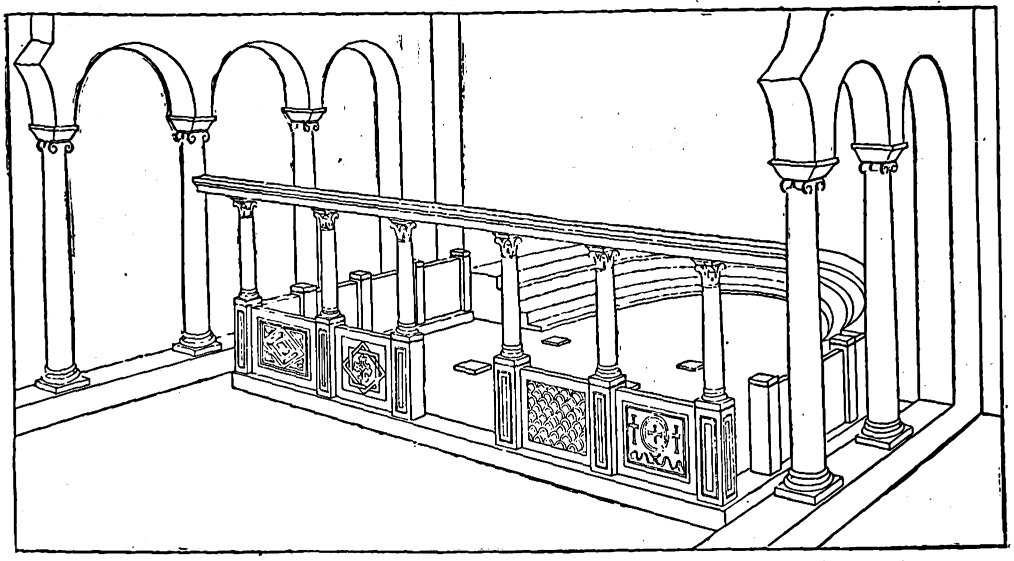

*Κιονοστοιχίαι, τέμπλον καὶ σύνθρονον τῆς βασιλικῆς Ἀφεντέλλη:* Σύνθρονον: *ὕψος 1 μ. πλάτος περιβάλλ. διαδρόμου 0.40, σειραὶ ἑδωλίων 3 (ὕψος 0,25 μ.—0,35, πλάτος 0,35 καὶ 0.85).* Τέμπλον: *ὁλικὸν ὕψος ἄνευ ἐπιστυλίου 2.50 μ., στυλοβάτης 0,20, πεσσοὶ θωρακίου 1 μ. κιονίσκοι 1.30 μ.), ὕψος παραφράγματος 1.10 μ. (στυλοβάτης 0.20, θωράκιον 0.90).*
[Ἀναπαράστασις Α. Κ. Ὀρλάνδου.]

Ἐπὶ τουρκοκρατίας ὑπῆρχεν ἐν Μυτιλήνῃ ἑλληνικὸν ταχυδρομεῖον, τοῦ ὁποίου αἱ ἐπιστολαὶ ἐσφραγίζοντο διὰ τοῦ ὑπ' ἀριθμὸν 137 ταχυδρομικοῦ σημάντρου.
Π. Ν. ΠΑΠΑΣ

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Γενικὰ βοηθήματα:* *Ἀρχοντόπουλος Γ.*, Σύντομος τοπογραφία τῆς νήσου Λέσβου ἢ Μυτιλήνης (Σμύρνη, 1859).— *Ἀριστείδης Γ.*, Πάρεργά τινα περὶ Λέσβου («Πανδώρα» 1859, σελ. 253—256).—*Τοῦ ἰδίου*, Τετραλογία πανηγυρικὴ (Ἀθῆναι. 1863).— *Βρανᾶς Δ.*, Φιλολογικαὶ μελέται («Ἐφημερὶς τῶν Φιλομαθῶν» 1857. σελ. 52).— *Choiseul-Gouffier*, Voyage pittoresque (Paris, 1782, 1809, 1842, Bruxelles 1842).— *Dapper Olf.*, Nauckeurige Beschrywing der Eilanden in de Archipel der Middelantsche Zee (Amsterdam 1688, σελ. 92—99 καὶ γαλλ. μετάφ. 1703, σελ. 326—329).— *Γεωργιάδης Γ.* καὶ *Βερναρδάκης Δ.*, Νομὸς Λέσβου (1931, Νομαρχιακὴ στατιστικὴ καὶ ἱστορικὴ εἰκονογρ. ἔκδοσις).— *Γῶγος Π.*, Ἱστορία τῆς Λέσβου (Κωνσταντινούπολις, 1887).— *Καλλοναῖος*, Σκίτσα Καλλονῆς (Ἀθῆναι, 1927).— *Lauria G. A.*, Creta - Rodi - Lesbo (Napoli, 1873).— *Newton C. T.*, Travels and discoveries in

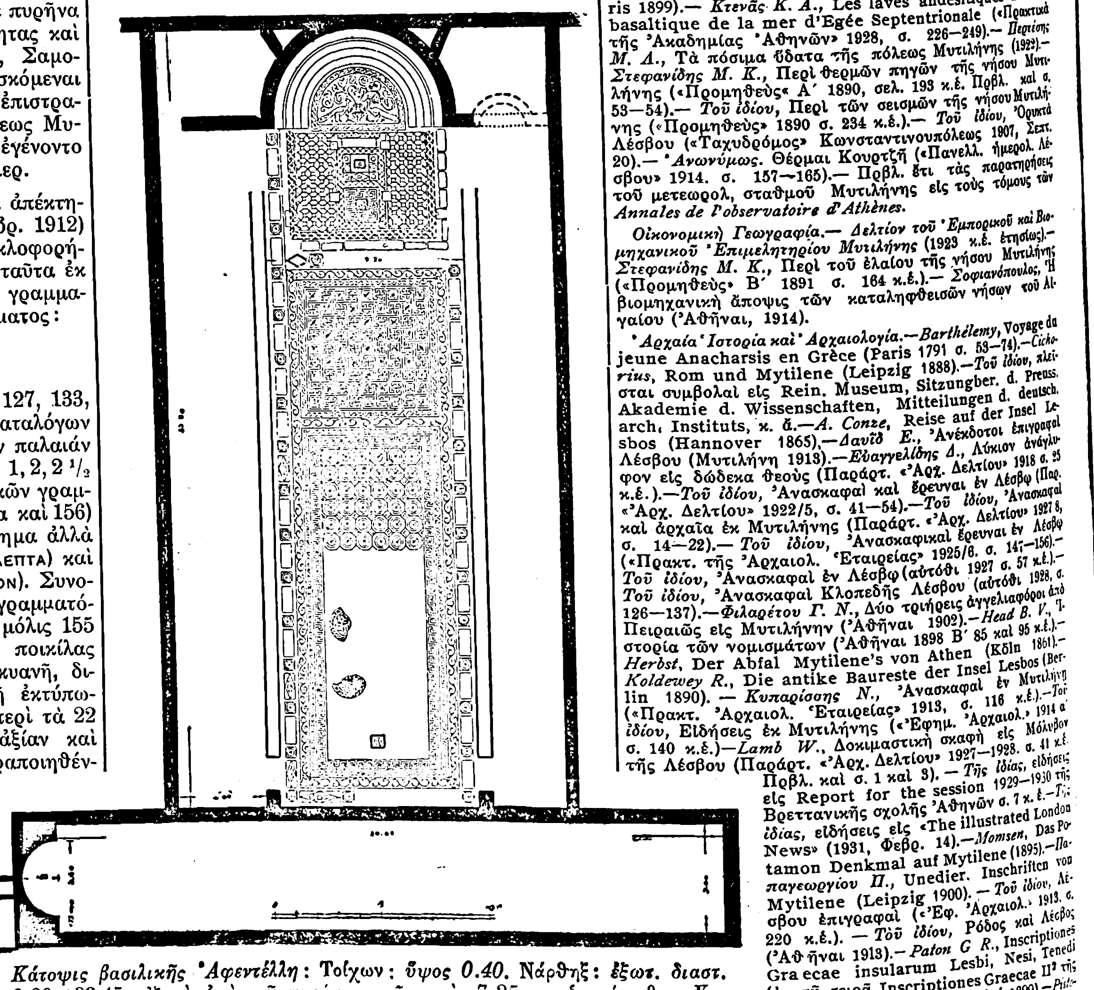

*Κάτοψις βασιλικῆς* Ἀφεντέλλη: Τοῖχων: *ὕψος 0.40.* Νάρθηξ: *ἐξωτ. διαστ. 6.30×33.45, ἐξοχὴ ἀπὸ τοῦ κυρίως ναοῦ κατὰ 7.25 μ. ἑκατέρωθεν.* Κυρίως ναός: *19.15×35.77 (ἐξωτ. διαστ.).* Κλιτῶν ἐλεύθ. ἄνοιγμα: *μεσαῖον 9.20 μ., πλάγια 4 μ.* Προσπέλασις: *ἄγνωστος.* Ψηφιδωτά: *ὅλον τὸ μεσαῖον κλίτος.*
[Σχέδιον Α. Κ. Ὀρλάνδου.]

the Levant (London, 1865 Α'. σελ. 46, κ.ἑ. Β' 1—21).— *Μαριγλῆς*, Mitteilungen über die Insel Lesbos (ἐν Schlerzer, Smyrna. Wien 1873).— *Μιχαηλίδης*, Λόγος περὶ Λέσβου («Θηβαΐς» Ἑρμούπολ. 1841).— *Michaud-Poujoulat*, Correspondance de l'Orient 1830—1831 (Paris, 1833—1834, A: XV. XVI. B: LXX, LXXI).—*Olivier G. A.*, Voyage dans l'empire Ottoman (Paris, An V- 1804, A 265 κ.ἑ. B. 207 κ.ἑ.).—*Pococke R.*, A description of the East (London 1743—1747). — *Prokesch v. Osten A.*, Denkwürdigkeiten und Erinnerungen aus dem Orient (Stuttgart 1836—1837).- *Raczynski*, Malerische Reise in einige Provinzen d. Osman. Reichs (μετάφρ. ἐκ τοῦ πολων., Breslau, 1828).—*Sherling*, Lesbos (ἐν Pauly-Wissowa, Realencyklop. XII 1925: 2107—2133). —*Στεφανίδης Μ. Κ.*, Χυμεία καὶ Λέσβος (1909). — *Τάξης Σ. Γ.*, Συνοπτικὴ ἱστορία καὶ τοπογραφία τῆς νήσου Λέσβου (Κωνσταντινούπολις, 1874, Κάϊρον, 1909).— *Tournefort*, Relation d'un voyage de l'Orient (Amsterdam, 1718). — *Zander*, Beitrage z. Kunde der Insel Lesbos (Hamburg 1825). —*Ἀνωνύμως*, Συνοπτικὴ περιγραφὴ τῆς νήσου Λέσβου (Ἀθῆναι, 1885).— *Ὁμοίως*, Ἡ Μυτιλήνη (ἐν «Πανελλ. Ἡμερολ. Λέσβου» 1914, σ. 39—50).—Πρβλ. ἔτι τὴν εἰς τὰ περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας τῆς νήσου χρήσιμον ὕλην, τὰς ἐκδόσεις τῆς «*Γενικῆς Στατιστικῆς Ὑπηρεσίας τῆς Ἑλλάδος*» καὶ τῶν ἄλλων δημοσίων ὑπηρεσιῶν καί: «Διάφοροι μελέται περὶ τῶν νήσων» (Α' Λέσβος, 1913) ἐκδ. ὑπὸ τῆς «*Γενικῆς Διοικήσεως νήσων Αἰγαίου*».

*Γεωλογία καὶ Φυσικὴ Γεωγραφία:* *Ἀριστείδης Γ. Δ.*, Περὶ τῶν θερμῶν ὑδάτων τῆς νήσου Λέσβου («Πανδώρα» ΙΔ' 1864 σ. 623 κ.ἑ.). — *De Launay*, Histoire géologique de Mételin et de Thasos («Revue Archéologique» 1888, σ. 242 κ.ἑ.)— *Τοῦ ἰδίου*, Description géologique des îles de Mételin et de Thasos («Archives des Missions scientifiques» III série 1890).— *Τοῦ ἰδίου*, La géologie de l'île de Mételin («Comptes-Rendus des séances de la Société Géologique» 1897).— *Τοῦ ἰδίου*, La géologie de l'île de Mételin, Lemnos, Thasos («Annales des Mines» 1898 σ. 157 κ.ἑ.). — *Τοῦ ἰδίου*, Mételin et ses sources thermales («La nature» 1915, Nov. 15).— *Δελτίον ἰαματικῶν πηγῶν*, ἀρ. 1, 1930 (σ. 1 κ.ἑ. καὶ 10).— *Φαχρῆ μπέη*, Οἱ ἐν Μυτιλήνῃ ὑπόγειοι κρότοι («Ταχυδρόμος» Κωνσταντινουπόλεως 1905, Ἀπρ. 29).— *Fouqué*, Études sur quelques rochers de Milo, Péloponnèse, Mételin et Santorin («Bulletin de la Société d. Mines» 1894 ἀρ. 7 καὶ 8).— *Κανταρτζῆς (Candargy) Κ. Α.*, Flore de l'île de Lesbos; plantes sauvages et cultivées (Uster - Zürich 1889).— *Τοῦ ἰδίου*. Flore de Lesbos (Paris, 1899).— *Κανιαρτζῆς Π. Κ.*, Quinze cents plantes de Lesbos («Verhandl. d. Bot. Ver. d. Prov. Brandenburg» 1888).— *Τοῦ ἰδίου*, Supplément de la flore de Lesbos (Revue Méd.—Pharmacétique» Κωνσταντινούπολις 1892).— *Τοῦ ἰδίου*, La végétation de l'île de Lesbos (Paris 1899).— *Κτενᾶς Κ. Α.*, Les laves andésitiques à facies basaltique de la mer d'Egée Septentrionale («Πρακτικὰ τῆς Ἀκαδημίας Ἀθηνῶν» 1928, σ. 226—249).— *Περιέσης Μ. Δ.*, Τὰ πόσιμα ὕδατα τῆς πόλεως Μυτιλήνης (1922).— *Στεφανίδης Μ. Κ.*, Περὶ θερμῶν πηγῶν τῆς νήσου Μυτιλήνης («Προμηθεὺς» Α' 1890, σελ. 193 κ.ἑ. Πρβλ. καὶ σ. 53—54).— *Τοῦ ἰδίου*, Περὶ τῶν σεισμῶν τῆς νήσου Μυτιλήνης («Προμηθεὺς» 1890 σ. 234 κ.ἑ.).— *Τοῦ ἰδίου*, Ὀρυκτὰ Λέσβου («Ταχυδρόμος» Κωνσταντινουπόλεως 1907, Σεπτ. 20).— *Ἀνωνύμως*. Θέρμαι Κουρτζῆ («Πανελλ. ἡμερολ. Λέσβου» 1914. σ. 157—165).— Πρβλ. ἔτι τὰς παρατηρήσεις τοῦ μετεωρολ. σταθμοῦ Μυτιλήνης εἰς τοὺς τόμους τῶν *Annales de l'observatoire d'Athènes.*

*Οἰκονομικὴ Γεωγραφία.— Δελτίον τοῦ Ἐμπορικοῦ καὶ Βιομηχανικοῦ Ἐπιμελητηρίου Μυτιλήνης* (1923 κ.ἑ. ἐτησίως).— *Στεφανίδης Μ. Κ.*, Περὶ τοῦ ἐλαίου τῆς νήσου Μυτιλήνης («Προμηθεὺς» Β' 1891 σ. 164 κ.ἑ.).— *Σοφιανόπουλος*, Ἡ βιομηχανικὴ ἄποψις τῶν καταληφθεισῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου (Ἀθῆναι, 1914).

*Ἀρχαία Ἱστορία καὶ Ἀρχαιολογία.—Barthélemy*, Voyage du jeune Anacharsis en Grèce (Paris 1791 σ. 53—74).—*Cichorius*, Rom und Mytilene (Leipzig 1888).—*Τοῦ ἰδίου*, πλεῖσται συμβολαὶ εἰς Rein. Museum, Sitzungber. d. Preuss. Akademie d. Wissenschaften, Mitteilungen d. deutsch. arch. Instituts, κ. ἄ.—*A. Conze*, Reise auf der Insel Lesbos (Hannover 1865).—*Δαυῒδ Ε.*, Ἀνέκδοτοι ἐπιγραφαὶ Λέσβου (Μυτιλήνη 1913).—*Εὐαγγελίδης Δ.*, Λύκιον ἀνάγλυφον εἰς δώδεκα θεοὺς (Παράρτ. «Ἀρχ. Δελτίου» 1918 σ. 25 κ.ἑ.).—*Τοῦ ἰδίου*, Ἀνασκαφαὶ καὶ ἔρευναι ἐν Λέσβῳ (Παρ. «Ἀρχ. Δελτίου» 1922/5, σ. 41—54).—*Τοῦ ἰδίου*, Ἀνασκαφαὶ καὶ ἀρχαῖα ἐκ Μυτιλήνης (Παράρτ. «Ἀρχ. Δελτίου» 1927/8, σ. 14—22).— *Τοῦ ἰδίου*, Ἀνασκαφικαὶ ἔρευναι ἐν Λέσβῳ («Πρακτ. τῆς Ἀρχαιολ. Ἑταιρείας» 1925/6. σ. 147—156).— *Τοῦ ἰδίου*, Ἀνασκαφαὶ ἐν Λέσβῳ (αὐτόθι 1927 σ. 57 κ.ἑ.).— *Τοῦ ἰδίου*, Ἀνασκαφαὶ Κλοπεδῆς Λέσβου (αὐτόθι 1928, σ. 126—137).—*Φιλαρέτου Γ. Ν.*, Δύο τριήρεις ἀγγελιαφόροι ἀπὸ Πειραιῶς εἰς Μυτιλήνην (Ἀθῆναι 1902).—*Head B. V.*, Ἱστορία τῶν νομισμάτων (Ἀθῆναι 1898 Β' 85 καὶ 95 κ.ἑ.).— *Herbst*, Der Abfal Mytilene's von Athen (Köln 1861).— *Koldewey R.*, Die antike Baureste der Insel Lesbos (Berlin 1890). — *Κυπαρίσσης Ν.*, Ἀνασκαφαὶ ἐν Μυτιλήνῃ («Πρακτ. Ἀρχαιολ. Ἑταιρείας» 1913, σ. 116 κ.ἑ.).—*Τοῦ ἰδίου*, Εἰδήσεις ἐκ Μυτιλήνης («Ἐφημ. Ἀρχαιολ.» 1914 σ. 140 κ.ἑ.)—*Lamb W.*, Δοκιμαστικὴ σκαφὴ εἰς Μόλυβον τῆς Λέσβου (Παράρτ. «Ἀρχ. Δελτίου» 1927—1928. σ. 41 κ.ἑ. Πρβλ. καὶ σ. 1 καὶ 3). — *Τῆς ἰδίας*, εἰδήσεις εἰς Report for the session 1929—1930 τῆς Βρεττανικῆς σχολῆς Ἀθηνῶν σ. 7 κ. ἑ.—*Τῆς ἰδίας*, εἰδήσεις εἰς «The illustrated London News» (1931, Φεβρ. 14).—*Momsen*, Das Potamon Denkmal auf Mytilene (1895).—*Παπαγεωργίου Π.*, Unedier. Inschriften von Mytilene (Leipzig 1900). — *Τοῦ ἰδίου*, Λέσβου ἐπιγραφαὶ («Ἐφ. Ἀρχαιολ.» 1913. σ. 220 κ.ἑ.). — *Τοῦ ἰδίου*, Ρόδος καὶ Λέσβος (Ἀθῆναι 1913).— *Paton G R.*, Inscriptiones Graecae insularum Lesbi, Nesi, Tenedi (ἐν τῇ σειρᾷ Inscriptiones Graecae ΙΙ² τῆς Πρωσσ. Ἀκαδημίας. Berolini 1899).—*Pistorius*, Beiträge z. Geschichte v. Lesbos im IV Jhdrt (ἐν Jenaer hist. Arbeiten 5: 1913 σ. 9 κ.ἑ.).—*Plehn S. L.*, Lesbiacorum liber

Digitized by Google

(Berolini 1826 καὶ μετάφρ. Εὐστ. Γεωργιάδου: Ἀθῆναι 1849).—*Ραγκαβῆς Ι. Ρ.*, Τὰ ἑλληνικὰ (τόμ. Γ 1854 σ. 274—305). —*Sestini*, Viaggi e opusculi diversi (Berlino 1817).—*Στεφανίδης Μ. Κ.*, Τὸ μέλαν χρῶμα τῶν ἀρχαίων Λεσβιακῶν ἀγγείων («Ἀθηνᾶ» 1903 σ. 498 κ. ἑ.).—*Wilhelm A.*, Δόγμα Αἰτωλῶν ὑπὲρ Μυτιληναίων («Ἐφημ. Ἀρχαιολ». 1914 α΄, σ. 84—87).

*Μεσαιωνικὴ Ἱστορία.*—*Ἀριστείδης Γ.*, Περὶ τῆς κατὰ τὸν μεσαίωνα καταστάσεως τῆς Λέσβου («Πανδώρα» ΙΓ΄ 1862 σ. 257 κ. ἑ.).— *Buondelmonti Chr.*, Librum insularum archipelagi (ἔκδ. L. de Sinner, Lipsiae 1824 σ. 114—116 καὶ 217—219).—*Τοῦ ἰδίου*, ἑλληνικὴ παραλλαγὴ εἰς κώδικα τοῦ Σεραγίου (ἔκδ. Legrand, Paris 1887 σ. 76—78 καὶ 233 κ.ἑ.).—*Broquière Bertrandon de la*—, Le voyage d' Outremer (ἔκδ. Ch. Scheffer, Paris 1892).—*Δελῆς Ι.*, Οἱ Γατελοῦζοι ἐν Λέσβῳ (Ἀθῆναι 1901). — *Λάμπρου Σπ.*, σημαντικαὶ συμβολαὶ εἰς τοὺς τόμους Α΄-Ζ΄, Ι΄-ΙΕ΄ καὶ ΙΖ΄ τοῦ «Νέου Ἑλληνομνήμονος» περὶ τῶν Γατελούζων τῆς Μυτιλήνης.—*Λάμπρου Π.*, Les monnaies des Gattilusio (ἐν G. Schlumberger, Numismatique de l' Orient latin, Paris 1878 σ. 435—444. Πρβλ. καὶ 996).—*Leo Chiensis*, De Lesbo a Turcis capta (Regim. 1866 καὶ ἐν Hopf, Chroniques Grécoromaines). — *Miller W.*, The Gattiluj of Lesbos (ἐν Byzant. Zeitschrift 1913 σ. 416—447 καὶ ἐν Essays on the Latin Orient τοῦ ἰδίου, Cambridge 1921 σ. 313—354).—*Τοῦ ἰδίου*, συμβολαὶ εἰς τὴν ἱστορίαν τῶν Γατελούζων εἰς τοὺς τόμ. ΣΤ΄—Η΄ τοῦ «Νέου Ἑλληνομνήμονος». — *Muralt Ed.*, Essai de chronographie byzantine (St. Petersbourg 1855 καὶ 1871). —*Noiret H.*, Documents inédits (Paris 1891. σ. 107, 127, 161, 230—231, 541 κ. ἄ.).—*Σάθας*, Monuments Grecs (τόμ. Α΄ 43—44. 231. 244, Β΄ χάρτης ἐκτὸς κειμένου καὶ σ. 127, Γ΄ ὁμοίως καὶ σ. 24—25, 118—120, Ε΄ 48, ΣΤ΄ 93 καὶ 97—99).—*Στεφανίδης Μ. Κ.*, Ἡ Γατελούζειος ἐπιγραφὴ («Ν. Ἑλληνομνήμων» 1911. σ. 94 κ.ἑ.),—Ἐπίσης πρβλ. τοὺς τόμους τῶν *Atti della società ligura di storia patria* καὶ *Giornale ligustico de archeologia* δημοσιευόμενα ἐν Γενούῃ καὶ βρίθοντα ἐγγράφων ἀφορώντων τὴν γενοατοκρατίαν ἐν Μυτιλήνῃ.

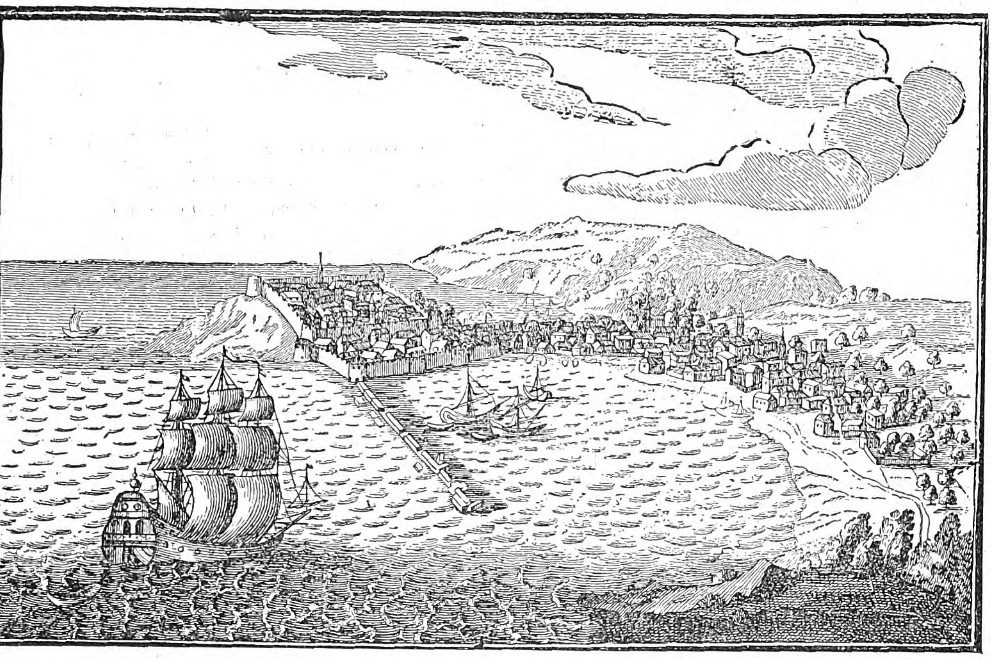

*Ἡ μεσαιωνικὴ Μυτιλήνη ἀπὸ βορρᾶ.*

[Χαλκογραφία Tournefort.]

*Τουρκοκρατία.* — *Ἀναγνώστης Σ. Α.*, Ἡ Λεσβιὰς ᾠδὴ (Σμύρνη 1850).—*Ἀριστείδης Γ. Α.*, Βενιαμὶν ὁ Λέσβιος (Ἀθῆναι 1880).—*Auton J.*, Chroniques (Paris 1834—1835, 4 τ. ἔκδ. P.-L. Jacob).—*Bellon du Mans P.*, Les observations κτλ. (Anvers 1555 σ. 148 κ.ἑ.).—*Τοῦ ἰδίου* (Bellonius Cenomanus), Plurimarum singulorium κτλ. (Anwerpiae 1589 σ.194 κ.ἑ.).—*Bisani A*, A pituresque tour (London 1793, σ.30 κ.ἑ.).—*Blancard Th.*, Les Mavroyéni (τόμ, Α΄ σ. 119—132. Paris, 1909).—*Βλασσόπουλος Χρ.*, Ἡμερολόγιον τοῦ Ἀγῶνος (Ἀθῆναι 1931).—*Bouhours P.*, Histoire de Pierre d'Aubusson.—*Chesneau I.*, Le voyage de Monsieur d'Aramon (Paris 1887).—*De la Gravière J.*, Doria et Barberoussé (Paris 1886 σ. 58 κ.ἑ., 78 κ.ἑ.).—*Δήμου Φ.*, Ἱστορία τῆς τουρκοκρατουμένης Λέσβου (Μυτιλήνη 1931).—*Φορόπουλος Ι.*, Ἔγγραφα τοῦ πατριαρχειακοῦ ἀρχειοφυλακείου («Ἐκκλ. Ἀλήθεια» 1900 σ. 300 κ.ἑ. Πρβλ. καὶ 344).—*Fresne-Canaye Ph.*, Le voyage du Levant 1573 (Paris 1897).—*Γούδας Α.*, Βίοι παράλληλοι (τόμ. Ζ΄ Ἀθῆναι 1875 σ. 449 κ.ἑ.).—*Journal der Kriegsoperationen der russischen Flotte* v. Jahre 1770—1774 (ἐν A. L. Schözer's, Briefwechel XLVIII σ. 344 κ.ἑ.). —*Κοντογιάννης Π. Μ.*, Οἱ Ἕλληνες κατὰ τὸν α΄ ρωσοτουρκικὸν πόλεμον (Ἀθῆναι 1903 σ. 212, 270—275, 319, 427 κ.ἄ.). —*Maurand J.*, Itinéraire 1544 (Paris 1899).—*Μαυρόπουλος Β.*, Τουρκικὰ ἔγγραφα (Ἀθῆναι 1920).—*Μελέτιος Κωνσταντινουπόλεως*, Ἱστορικὸν ἀπομνημόνευμα («Πανδώρα» 1860, σ. 572 κ.ἑ.).—*Μοσχίδης Α.*, Βενιαμὶν ὁ Λέσβιος («Νέα Ζωὴ» Γ΄ 493 κ.ἑ.).—*Νικόδημος Κ.*, Ὑπόμνημα τῆς νήσου Ψαρῶν (Ἀθῆναι 1862 Α΄ 21, 27 κ.ἑ. 77 κ.ἑ., 161 κ.ἑ., 241 κ.ἑ.).—*Τοῦ ἰδίου*, Ἀπομνημονεύματα (Ἀθῆναι 1862, σ.7 κ.ἑ.).—*Οἰκονόμου Μ.*, Ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς παλιγγενεσίας (Ἀθῆναι 1873).—*Ὀρλάνδος Α.*, Ναυτικὰ (Ἀθῆναι 1869).—*Sainte Beuve*, Chio, Lesbo, Candie («Globe» 1824 Νοεβρ. 4).—*Στεφανίδης Σ.*, Βενιαμὶν ὁ Λέσβιος («Νέα Ἡμέρα» Τεργέστης 1804 ἀριθμ. 1552—1556.—*Streeck*, Pierre d' Aubusson (Chemnitz 1873). —*Thénaud J.*, Le voyage d' outremer 1512 (Paris 1884).—*Ὑψηλάντης Α. Κ.*, Τὰ μετὰ τὴν ἅλωσιν (Κων/λις 1870).—Ἐπίσης βλέπε καὶ τὰς λοιπὰς ἐκδόσεις τῆς σειρᾶς: *Ch. Scheffer* καὶ *H. Gordier*, Récueil des voyages et des documents pour servir à l'histoire de la géographie depuis le XIII jusqu' à la fin du XVI siècle.

*Νεωτέρα Ἱστορία.*—*Ἀθάνατος Κ.*, Τὸ ἐθνικὸν κίνημα Χίου καὶ Μυτιλήνης.—*Ancel J.*, Manuel histor. de la question d'Orient (Paris 1923).—*Ἀντωνόπουλος Στ.*, Αἱ συνθῆκαι Λονδίνου, Βουκουρεστίου καὶ Ἀθηνῶν (Ἀθῆναι 1917).—*Ἐλευθεριάδης Π. Μ.*, Ἡ τρομοκρατία τῆς Πέτρας («Σάλπιγξ» Μυτιλήνης 1912, Δεκ. 11).—*Κυπριανὸς Ὀ.*, Σκέψεις καὶ ἀναμνήσεις («Πανελλ. ἡμερ. Λέσβου» 1914, σ. 235—249).—*Παρίτσης Ν.*, Ἡ παράδοσις τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ Μυτιλήνης («Σάλπιγξ» 1912, Δεκ. 9, 10 καὶ 15).—*Στρατηγόπουλος*, Ἡ εἰς Λέσβον ἐκστρατεία (Καλάμαι 1914).—*Τανάγρας Ἀ.*, Ἡ κατάληψις τῆς Λέσβου καὶ Χίου (Ἀθῆναι 1914).—*Χονδρὸς Γ.*, Λέσβος (ἐν «Στρατ.-Ναυτ. Ἐγκυκλ.»).—*Ἀνωνύμως*, Ἡ κατάληψις τῆς Μυτιλήνης (Ἀθῆναι 1915).

*Ἐκκλησιαστικὴ ἱστορία.*— *Ἀλεξούδης Α.*, κατάλογοι μητροπολιτικοὶ ἐν «Νεολόγῳ» Κωνσταντινουπόλεως (1891).—*Βράνης Β.*, Περιγραφὴ τῆς ἐν Λέσβῳ κωμοπόλεως Ἁγιάσσου (Σμύρνη 1861).— Διαθήκη τοῦ Ἁγίου *Ἰγνατίου* (Κωνσταντινούπολις 1822).— *Δρᾶκος Ε. Ι.*, Λεσβιακὰ (Ἀθῆναι 1899).— *Τοῦ ἰδίου*, Ἐκκλησ. ἱστορία τῆς Λέσβου (Ἀθῆναι 1900).— *Τοῦ ἰδίου*, Μελέτη ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας τῆς Λέσβου (Δράμα 1928).— *Τοῦ ἰδίου*, Ἁγιολογία τῆς Λέσβου (1928. Καὶ ἐν «Ἐλευθ. Λόγῳ» Μυτιλ. 1926, Αὐγ. 12—13).— *Τοῦ ἰδίου*, μελέται εἰς «Ἱερὸν Σύνδεσμον» (1899 σ. 277 κ.ἑ.) καὶ «Ἐκκλησίαν» Ἀθηνῶν (1926, Ἰαν. 5).— *Καρυδώνης Σ.*, Τὰ ἐν Καλλονῇ τῆς Λέσβου σταυροπ. πατριαρχ. μοναστήρια (1900).—*Κομβόπουλος Β.*, Ἡ ἐν Λέσβῳ μονὴ Ὑψηλοῦ («Πανελλ. Ἡμερολ. Λέσβου» 1914. σ. 169—179).— *Lequien*, Oriens Christianus (Parisiis 1740, Α΄ 953—961. Γ΄ 991—994). — *Νουλέλλης Θ.*, Εὕρεσις ὀκτὼ χειρογράφων («Ξενοφάνης» 1909 σ. 280 κ.ἑ.) καὶ Περιγραφὴ χειρογράφων (αὐτόθι. σ.533 κ.ἑ.).—*Ὀρλάνδος Α. Κ.*, Ὁ Μεδρεσὲς τοῦ Κάστρου τῆς Μυτιλήνης (Ἡμερολ. τῆς Μεγ. Ἑλλάδος» 1929, σ. 121 κ.ἑ.).—*Τοῦ ἰδίου*, Παλαιοχριστιανικαὶ βασιλικαὶ τῆς Λέσβου («Πρακτικ. Ἀκαδημ. Ἀθηνῶν» 1928, σ. 322 κ.ἑ. «Ἀρχ. Δελτίον» 1929, καὶ εἰς ἴδιον τεῦχος 1931).— *Παπαδόπουλος-Κεραμεὺς Α.*, Κατάλογος τῶν ἐν ταῖς βιβλιοθήκαις τῆς νήσου Λέσβου ἑλληνικῶν χειρογράφων («Παράρτ. τοῦ ΙΕ΄—ΙΗ΄ τόμ. τοῦ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἑλλην. Φιλολογικοῦ Συλλόγου» 1884).— *Παυλίδης*, Αἱ μοναὶ τῆς Λέσβου.

*Γλῶσσα καὶ Λαογραφία.*— *Ἀναγνώστης Σπ.*, Λεσβιακὰ (Ἀθῆναι 1903. Σπουδαιότατον: γλωσσάριον, γραμματική. μῦθοι, τραγούδια, κτλ.).— *Bechtel*, Die griechische Dialekte I (Berlin 1921).— *Βεργαδάκης Δ. Γρ.*, Τραγούδια τῆς Λέσβου («Λαογραφία» Δ΄ 697 κ.ἑ.).— *Buck D.*, Introduction to the study of the greek dialects (Boston 1928).— *Χατζιδάκις Γ.*, Μεσαιωνικὰ καὶ νέα ἑλληνικὰ (2 τόμ. Ἀθῆναι. 1927).— *Ἐμμανουὴλ Εὐρ. Ι.*, Παραμύθια Μολίβου («Νουμᾶς» Ε΄ 228 κ.ἑ.).— *Fick A.*, Die Sprachform der lesb. Lyrik (ἐν Bezzembergers, Beitr. z. Kunde d. indogerm. Sprach. XVII 177 κ.ἑ.).— *Führer A.*, Ueber die Stellung des lesbischen z. dem Verwandten Dialekten (αὐτόθι VI 282 κ.ἑ.). —*Τοῦ ἰδίου*, Ueber den lesb. Dialekt (Arnsberg 1881).—*Γεωργάκης Π.* καὶ *Pineau L.*, Le folk-lore de Lesbos (Paris, 1894) ἐφ' οὗ κρίσις τοῦ *Ν. Πολίτη* («Ἑστία» 1895) καὶ ἀπάντησις τοῦ *Γεωργάκη* («Ἀμάλθεια» 1895, Ἀπρ. 21).— *Γῶγος*, Ἔθιμα τῶν ἐν Λέσβῳ γάμων («Πανδώρα» ΙΓ΄ σελ. 307 κ.ἑ., 469 κ.ἑ.).—*Kretshmer P.*, Das heutige lesb. Dialekt (εἰς «Schrift. d. Balkan Komission, linguist. Abt.» III 1, 1905).—*Τοῦ ἰδίου*, Vorhäufiger Bericht ü. eine ling. Studienreise nach Lesbos (εἰς «Anzeiger Akad. Wien» 1902 σ. 18 κ.ἑ.— *Παπαδόπουλος Α.*, Γραμματικὴ τῶν βορείων ἰδιωμάτων τῆς ἑλληνικῆς γλώσσης (Ἀθῆναι 1927).—*Πελὶς Ἀβέτ*, Γύρω στὴ λαογραφία τοῦ νησιοῦ («Ταχυδρόμος» Μυτιλ. 1929, Νοεμβρίου 25 κ.ἑ.).—*Wheeler*, Lesbic Dialect (ἐν Johnson's Univ. Encycl., New York 1894 V, 196 κ.ἑ.).— Ἐπίσης παράβαλε τὰ ἀποσπάσματα τῶν εἰς τὸ τοπικὸν ἰδίωμα γραψάντων Λεσβίων ποιητῶν (περὶ τῶν ὁποίων βλ. ἐν λ. Ἀλκαῖος, Σαπφώ, κτλ.).

*Τὸ ἄγαλμα τῆς Ἐλευθερίας, μνημεῖον τῶν πεσόντων Μυτιληναίων (ἀξίας 400.000 δρχ.) ἐπὶ τῆς θέσεως τοῦ παλαιοῦ «Καστρελιοῦ» εἰς τὸ Β. κέρας τοῦ Ν. λιμένος.*

[Φωτογρ. Ἀδελφῶν Χουτζαίου.]

*Φιλοτέλεια:* Βάσις ἡ μελέτη τοῦ κόμιτος *De Fayolle*, Les Surcharges de Mytilène (ἐν τῇ «Révue Philatélique Française», 1913 Ἰουν. 20, Nº 257), ἧς καὶ ἑλλην. μετάφρασις: Αἱ ἐπισημάνσεις τῆς Μυτιλήνης (ἐν τῇ «Φιλοτελείᾳ» Ἀθηνῶν 1931 ἀρ. 74—76, σελ.47 κ.ἑ.).—Βλ. ἐπίσης *Μπήνου Χρ.*, Ἡ πολεμικὴ σφραγὶς Πλωμαρίου (αὐτόθι 1930, ἀρ. 71 σελ. 234) καὶ τὰ ἐπίσης ἐν τῇ «Φιλοτελείᾳ» σημειώματα τῶν *Ἀργυροπούλου Ἀλ.* (1926. ἀρ. 27, σελ. 52). *Ζερβοπούλου Α.* (αὐτόθι), *Κιτσούκη Ἀθ.* (1924, σελ. 134), *Νικολαΐδου Ν.Σ.* (1926 ἀρ. 28, σελ. 65), *Σολιώτη Ι.* (1926, ἀρ. 26, σελ. 24) κ.ἄ. (1924, σελ. 103, κτλ.).

Π. Ν. ΠΑΠΑΣ

**—Μυτιλήνη, *πόλις*.** Πόλις τῆς Ἑλλάδος ἐπὶ τῆς ὁμωνύμου νήσου, πρωτεύουσα ὁμωνύμου δήμου, ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Λέσβου. Κεῖται κατὰ τὴν Α. ἀκτὴν τῆς νήσου, ἐπὶ τῶν κλιτύων τῶν Α. λόφων τῆς Οὐτζᾶς καὶ ἐπὶ τῆς προσκειμένης χερσοννήσου *Κάστρο* (Β. πλ. 39° 5′ 19″ 1/5, Α. μῆκ. 26° 35′2″1/5 ἀπὸ Γκρήνουϊτς: φάρος Μυτιλήνης) καὶ ἔχει (1928) 27.870 κατοίκ. (1920: 18.314), ὧν πρόσφυγες 13.080.

— *[Γεωγρ.]* Τῆς πόλεως μικρὸν τμῆμα ἐκτείνεται ἐπὶ πεδινοῦ τόπου, ἡ λοιπὴ δὲ ἀποτελεῖται ἐκ χαρακτηριστικῶν νησιωτικῶν ἀνηφορικῶν συνοικιῶν. Συνίσταται ἐκ δύο μερῶν: τῶν συνοικιῶν τῶν ΝΔ. καὶ Β. κλιτύων τοῦ Κάστρου («Κιόσκι», «Κουλμπάρα» κτλ.) καὶ τοῦ ἐπὶ τῆς κυρίως στερεᾶς μέρους· τοῦτο συνέχεται μετὰ τοῦ πρώτου διὰ τῆς «Ἀγορᾶς» (ὁ καταχωσθεὶς ἀρχ. πορθμὸς «Μυτιληναίων Εὔριπος») καὶ ἐκτείνεται πρὸς Β. ὀλίγον πέραν τοῦ Βορείου λιμένος («Ἐπάνω Σκάλα», ἀρχ. «Μαλόεις λιμήν»), πρὸς Α. κατὰ τὰ περικλείοντα τὴν πόλιν ὑψώματα (συνοικίαι: «Βουναράκι», «Λαγκάδα», «Τζοῦφλος», «Σαρῆ-Μπαμπᾶ» κλπ. ἀπὸ Ν. πρὸς Β.) καὶ πρὸς Ν. πέραν τοῦ Νοτίου λιμένος (ἀρχ. «λιμὴν τριηρικός», ὁ νῦν ἐμπορικὸς) πρὸς τὰς ἐξοχικὰς συνοικίας «Γαϊδαρανήφορος», «Χρυσομαλοῦσα», «Σουράδα» καὶ «Μακρύγιαλος»· αὐτόθεν ἄρχονται κατὰ σειρὰν πρὸς Ν. τὰ παράλια προάστεια «Ἀκλειδιοῦ», «Βαριά», «Νεάπολις» καὶ «Κράτηγος» καὶ τὰ τούτων παράλληλα μεσόγεια «Χάλικας», «Κουμκό», «Ἀκρωτῆρι», «Καγιάνι», «Πληγώνι», «Ἁγία Μαρίνα», ἅπαντα θέρετρα τῶν Μυτιληναίων ἐπὶ τῶν Α. λόφων καὶ κρασπέδων τῆς Ἀμαλῆς. Κύριαι ἀρτηρίαι τῆς πόλεως: ἡ Ἀγορά, ἡ Προκυμαία καὶ ἡ Ἁλυσίδα, κῆπος: ὁ Δημοτικὸς ἐπὶ τοῦ Ν. λιμένος καὶ ἄλσος τὰ «Πευκάκια» τῶν Ν. κλιτύων τοῦ Κάστρου· αἱ λοιπαὶ ὁδοὶ εἶναι δαιδαλώδεις, στενοὶ καὶ συχνὰ κλιμακωτοὶ ὡραῖοι δρομίσκοι.

Ἡ πόλις εἶναι ἕδρα τῶν κεντρικῶν ἀρχῶν, ὀργανώσεων καὶ ἱδρυμάτων τῆς νήσου καὶ τοῦ νομοῦ, ἠλεκτροφωτίζεται καὶ ὑδρεύεται ἐκ τῶν πηγῶν τῆς Καρυώνας τοῦ Ὀλύμπου (μέχρι τοῦδε ἐκ Κρατήγου καὶ Οὐτζᾶς) δι' ἐσχάτως γενομένων ἔργων (ὕδραγ. 22 χλμ., ἀξία 18 ἑκατομμ. δρχ.). Ὁ πληθυσμὸς τοῦ δήμου ηὐξήθη αἰσθητῶς κατὰ τὰ τελευταῖα ἔτη διὰ τῶν προσφύγων (47 % τοῦ ὅλου πληθυσμοῦ) παρουσιάζει δὲ (1928—1930) ἀναλογίαν 1548 γεννήσεων ἐτησίως ἐπὶ 1.000 θανάτων καὶ ἐτησίαν ὑπεροχὴν γεννήσεων: 8,1 ἐπὶ 1.000 κατοίκων.

Ἡ πόλις ἔχει ἀκμάζουσαν ποτοποιίαν, σαπωνοποιίαν, ἀλευροποιίαν καὶ ἐλαιουργίαν. Ἐκ τῶν 1.448 ἐπιχειρήσεων τοῦ δήμου (1930): 838 εἶναι ἐμπορικαί, 600 βιομαχανικαὶ καὶ 10 συγκοινωνιῶν, ἀπασχολοῦσαι αἱ πρῶται 792 ἐργάτας καὶ ὑπαλλήλους, αἱ δεύτεραι 1.225 καὶ αἱ τελευταῖαι 226 (σύνολον: 2.243). Ἑδρεύουν ἐν Μυτιλήνῃ ὑπὲρ τὰ 20 τοπικὰ σωματεῖα ἐπαγγελματιῶν, ἰσάριθμα ἐργατικὰ καὶ ὅλαι αἱ παννησιωτικαὶ ἐπαγγελματικαὶ ὀργανώσεις.

Ὁ παλαιὸς λιμὴν τῆς πόλεως, ἄλλοτε κλείων δι' ἁλύσεως («Ἁλυσίδα»), εἶχεν ὁπωσοῦν τελειοποιηθῆ ἐπὶ τουρκοκρατίας, ἤδη δὲ μεταβάλλεται ἄρδην ἀπὸ τοῦ 1927. Θὰ ἔχῃ θαλασσίαν ἐπιφάνειαν 253.709 τετρ. μ. (ὧν 89.933 τοῦ ἐσωτ. λιμένος), βάθος 7 μ. καὶ προκυμαίαν μήκους 1778 μ. καὶ πλάτους 16—40 μ. (ἐγκριθ. δαπάνη 55.000.000 δρχ.). Ἀριθμὸς ἐργατῶν θαλάσσης (1931): 174. Εἶναι ὁ πρῶτος νησιωτικὸς λιμὴν τοῦ κράτους μετὰ τὸ Ἡράκλειον εἰς κίνησιν ἱστιοφόρων, καὶ ὑπερέχουν αὐτὸν εἰς κίνησιν ἀτμοπλοίων τὸ Ἡράκλειον, ἡ Κέρκυρα καὶ ἡ Σύρος. Ἔχει τὴν πρώτην μετὰ τὸν Πειραιᾶ ἱστιοφόρον συγκοινωνίαν μετὰ τῆς Τουρκίας, μεθ' ἧς τὴν δι' ἀτμοῦ συγκοινωνίαν ὑπερβάλλει μόνον ἡ Χίος. Ἡ ναυτιλιακὴ αὐτοῦ κίνησις (κατάπλοι) ἔχει οὕτω:

| | *1926* | *1929* |
|---|---|---|
| *Ἀτμόπλοια:* σκάφη................ | 793 | 831 |
| τόννοι............ | 713.608 | 538.666 |

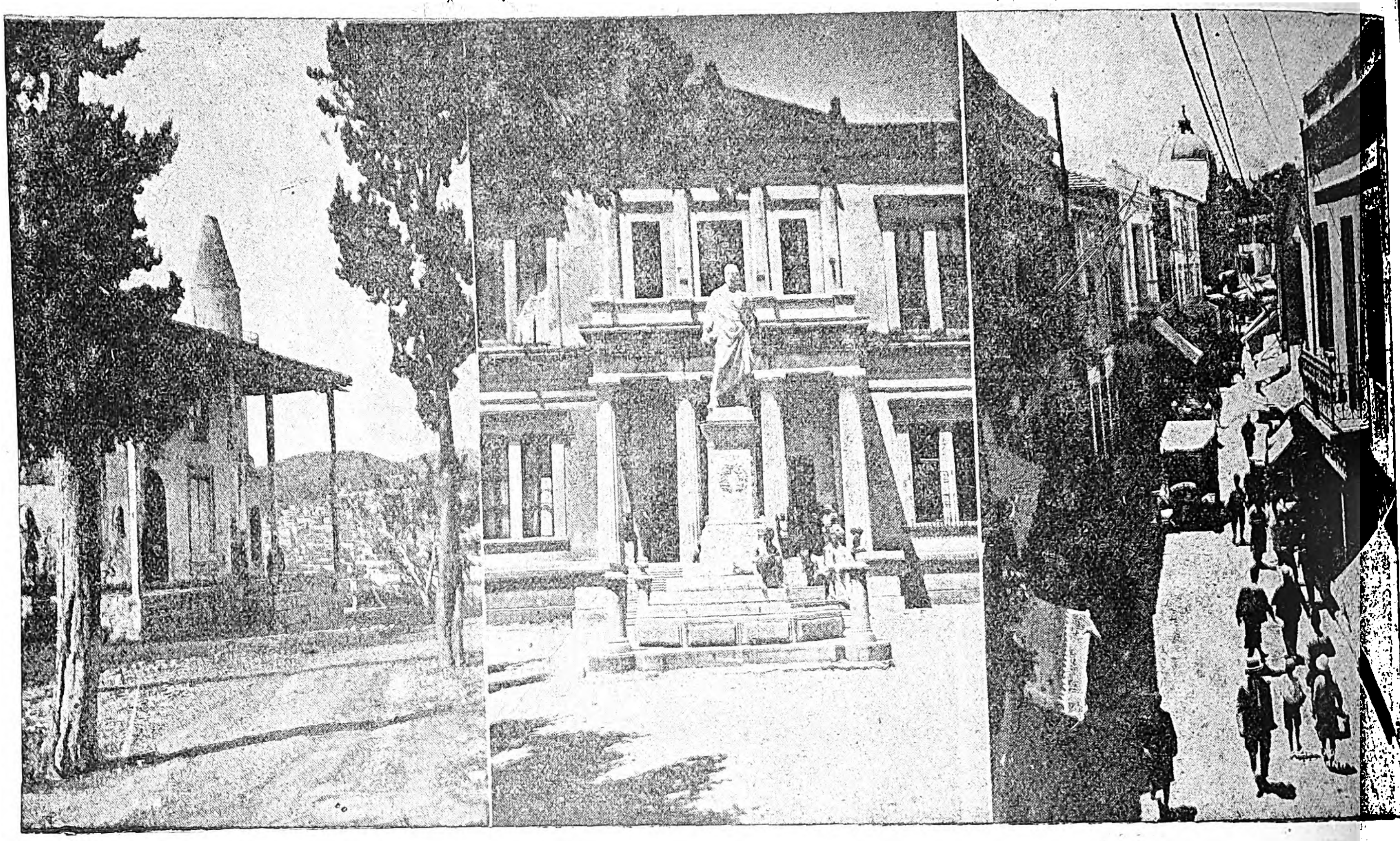

*1) Ὁ παρὰ τὸ Κάστρο Τεκὲς «Καντρὶ Ντερκιαχί». 2) Πρόσοψις Γυμνασίου Μυτιλήνης. 3) Ἡ ἀγορὰ Μυτιλήνης.*
[Φωτογρ. Ἀδελφῶν Χουτζαίου καὶ Φρὶτς Μράζ.]

| | | | |
|---|---|---|---|
| *Ἱστιοφόρα :* | σκάφη | 143 | 343 |
| | τόννοι | 7.082 | 16.894 |
| *Σύνολον :* | σκάφη | 936 | 1174 |
| | τόννοι | 720.690 | 555.560 |
| *Ἀκτοπλοΐα :* | σκάφη | 690 | 955 |
| | τόννοι | 329.169 | 207.305 |

Ἡ δὲ ἐμπορικὴ κίνησις (τόννοι), ἡ κατὰ σημαίας (σκάφη) καὶ ἡ ἐπιβατικὴ (ἀφίξεις-ἀναχωρήσεις) ἔχει ὡς ἀκολούθως:

| | *1926* | *1929* |
|---|---|---|
| *Σημαῖαι :* | | |
| Ἀγγλικὴ | 226 | 26 |
| Βουλγαρικὴ | 26 | 32 |
| Ἑλληνικὴ | 291 | 316 |
| Ἰταλικὴ | 139 | 145 |
| *Ἐμπορεύματα :* | | |
| Εἰσαγωγὴ | 32.561 | 47.500 |
| Ἐξαγωγὴ | 13.000 | 17.652 |
| *Ἐπιβάται* | 24.891 | 34.702 |

Ἡ Μυτιλήνη διεξάγει σπουδαῖον διαμετακομιστικὸν ἐμπόριον μετὰ τῆς Τουρκίας καὶ τὸ μεγαλύτερον μέρος τοῦ ἐξαγωγικοῦ καὶ εἰσαγωγικοῦ ἐμπορίου τῆς νήσου, ἔχον ὡς ἑξῆς εἰς χιλιάδας δραχμῶν:

| | *1926* | *1929* |
|---|---|---|
| Ἐξαγωγὴ | 84.781 | 101.279 |
| Εἰσαγωγὴ | 149.501 | 158.228 |
| Τελων. εἰσπράξεις | 27.326 | 37.948 |

— *[Ἱστορ.]* Ἡ πρώτη πόλις εἶχεν ἱδρυθῆ πιθανῶς ἐπὶ τῆς χερσονήσου τοῦ Κάστρου, ἥτις ἀπετέλει τότε κεχωρισμένην νησῖδα μέχρι τοὐλάχιστον τῶν πρώτων χριστιανικῶν χρόνων, ἡνώθη δὲ βραδύτερον μετὰ τῆς νήσου διὰ προσχώσεων. Τὰ πρῶτα εὑρήματα ἀνάγονται εἰς τὴν μυκηναϊκὴν ἐποχήν. Κατὰ τοὺς κλασσικοὺς χρόνους ἡ πόλις εἶχεν ἤδη ἐπεκταθῆ καὶ ἐπὶ τῆς ἠπείρου, συνεδέοντο δὲ τὰ δύο μέρη («εἴσω» καὶ «ἔξω πόλις») διὰ καλλιμαρμάρων γεφυρῶν. Ἡ ἀρχαία Μυτιλήνη εἶχε περίβολον 5 χλμ. περίπου, ἔκτασιν 140 ἑκταρίων (κατὰ Koldewey) καὶ πληθυσμὸν 6.000—7.000 (κατὰ Beloch). Τῆς παλαιᾶς ἀκροπόλεως (ὑψόμ. 55 μ.) ἐλάχιστα ἐσώθησαν, τοῦ δὲ περιβόλου (Ε΄ αἰῶνος) θεμέλια καὶ ἴχνη πύλης εἰς τὰ Δ. ὑψώματα τῆς ἠπείρου. Λιμένας εἶχε δύο ἑκατέρωθεν τοῦ πορθμοῦ τοῦ χωρίζοντος τὴν νησῖδα: νότιον «κλειστὸν τριηρικὸν ναυσὶ πεντήκοντα» καὶ βόρειον «μέγαν καὶ βαθὺν χώμασι σκεπαζόμενον» κατὰ τοὺς πρώτους χριστιανικοὺς χρόνους (*Στράβων* 617)· τοῦ τελευταίου (Ε΄ αἰῶν.) σῴζονται ἴχνη τῶν χηλῶν. Ἡ πόλις μεγαλοπρεπῶς ἐκτισμένη (oppidum magnificenter edificatum, *Βιτρούβ*. I, 6, 1) εἶχεν ἀγοράν, πρυτανεῖον, Ἀσκληπιεῖον, Ἀθήναιον κ. ἄ. ἱερά, θέατρον, ὡς πρότυπον διὰ τὴν Ρώμην χρησιμοποιηθὲν ὑπὸ τοῦ Πομπηΐου (55 π. Χ.), ὑδραγωγεῖον μέγιστον κ. ἄ. Διεσώθησαν ἐρείπια τοῦ θεάτρου (ἑλληνιστικῶν χρόνων): ἑδώλια μαρμάρινα, ὁ πλουσιώτατα διακοσμούμενος θρόνος τοῦ Ποτάμωνος (νῦν χρησιμοποιούμενος ὡς μητροπολιτικός) κ. ἄ., ρωμαϊκὰ μωσαϊκὰ πολλαχοῦ, στοϊκὸν οἰκοδόμημα ἐν Ἐπάνω Σκάλᾳ (Δ΄ αἰῶνος), ἑλληνιστικὸν κτίσμα εἰς Τσινὰρ-τζαμί, λείψανα ἀρχαϊκῶν τάφων, ὄστρακα μυκηναϊκῶν ἀγγείων, ἴχνη δύο νεκροπόλεων παρακτίως κατὰ τὰς ἐξόδους τῆς πόλεως, διάφορα εὑρήματα κατὰ τὸν Ἅγ. Θεράποντα, θεωρηθέντα ὡς λείψανα σχολῆς τῆς Σαπφοῦς ἢ ναοῦ τοῦ Ἀπόλλωνος, ἄλλα παρὰ τὸν Ἅγ. Θεόδωρον (Α. τῆς ἀγορᾶς) καὶ τμήματα τοῦ ὑδραγωγείου (αὐγουστείων χρόνων). Τὸ τελευταῖον (μήκους 26 χλμ.), ἀρχόμενον ἀπὸ τῶν Δ. κλιτύων τοῦ Ὀλύμπου (θέσις «Καρήνη») καὶ ἔχον χωρητικότητα 127.000 κυβ. μ. (κοίτη 0.35—0.64×0.80—0.65) ἦτο ἐμπλέκτου τοιχοδομίας ἐκ τραχείτου ἢ καὶ μαρμάρου· διεσώθησαν τμήματα εἰς τὰς θέσεις Ἀνεράϊδας ποτάμι, Πασπαλᾶ, Λάμπου Μύλοι, Κουρτζῆ καὶ Καμάρες Μόριας, ἔνθα τρεῖς ἀλλεπάλληλοι σειραὶ τόξων (ὕψ. 27 μ., μῆκ. 144. μ., τόξα 15).

Τῶν πρώτων χριστιανικῶν χρόνων μνημεῖον ἡ παλαιοβυζαντινὴ βασιλικὴ τοῦ Κάστρου, μεταβληθεῖσα εἰς τζαμίον· ἐκ δὲ τῶν βυζαντινῶν μνημείων τὸ ἀρκούντως διασωζόμενον φρούριον, πλήρως ἀνακαινισθὲν (1373 καὶ 1460) ὑπὸ τῶν Γατελούζων. Εἰς τούτων τὰ ἀνάκτορα συνεκεντροῦντο πλεῖσται προσωπικότητες τῆς Δύσεως καὶ τοῦ Βυζαντίου, εἶχε δ' ἐπ' αὐτῶν ἡ Μυτιλήνη (1462) 20.000 περίπου κατοίκους.

Κατὰ τὴν τουρκοκρατίαν ἡ πόλις περιέπεσεν εἰς ἀθλιότητα· οὐδὲν ἐγένετο πλὴν διαφόρων τζαμίων («Κουλὲ τζαμισί», «Μαχμοὺτ πασᾶ τζαμισί» 1462), τοῦ μὴ διασωθέντος πύργου τοῦ Β. λιμένος, τῆς ἀνακαινίσεως τοῦ φρουρίου (1675) καὶ τοῦ ὡραιοτάτου μεντρεσὲ τοῦ Κάστρου· οὗτος (18,5×21 μ.), διώροφος, ἐξ ἐρυθρωποῦ πωρολίθου, ἔχει ὡραίαν στοὰν μὲ τόξα διπλῆς καμπυλότητος, στέγασιν ἐκ σκαφοειδῶν θόλων καὶ φουρνικῶν καὶ ὀξυκόρυφα παράθυρα, ἀποτελεῖ δὲ σπουδαιότατον μνημεῖον. Νέαν ὤθησιν ἔδωκεν ὁ ναύαρχος Χατζῆ Χασὰν πασᾶ ἐλ Τζεζάερλι, ἔχων αὐτόθι θερινὰ ἐνδιαιτήματα, ἐκ δωρεᾶς (1817) τοῦ δραγομάνου Νικ. Μαυρογένη· πρῶτος αὐτὸς κατέστησεν ὑδραγωγεῖον καὶ ἀνήγειρε περιφήμους κρήνας («σουτερεζί») ἀντὶ τῶν φρεάτων, ἀνήγειρε τὸ «Κιόσκι» πλουτίσας αὐτὸ διὰ πιδάκων καὶ πάρκου («Ὀρντουγιερί»), ὠργάνωσε διαφόρους κήπους ἐν οἷς ὁ «Χαζνεντὰρ Μπαχτσεσί» καὶ ὁ νῦν δημοτικὸς («Πασᾶ Μπαχτσεσί») καὶ ἔκτισε τὸ ναύσταθμον («Ταρσανᾶ») καὶ τὴν πρώτην ἀποβάθραν («Πετρόσκαλα»), ἀνακαινισθεῖσαν τῷ 1903. Μετὰ τὴν πυρκαϊὰν τοῦ 1814 ἤρξαντο νέαι οἰκοδομήσεις· τῷ 1821 ἀνηγέρθη ὁ ὀχυρωτικὸς

*Ὀρφανοτροφεῖον Μυτιλήνης.*
[Φωτογρ. Στυλ. Βασιλείου]

Digitized by Google

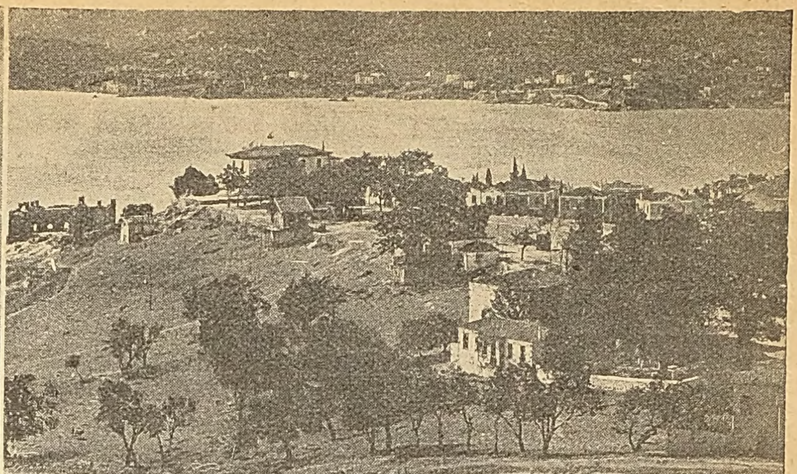

1) Ἄποψις τῆς Μυτιλήνης ἀπὸ ΝΔ. 2) «Κιόσκι» καὶ εἴσοδος Ν. λιμένος ἀπὸ βορρᾶ (Φωτογρ. 1915 μὲ τὸ κατεδαφισθὲν «Καστρέλι»).

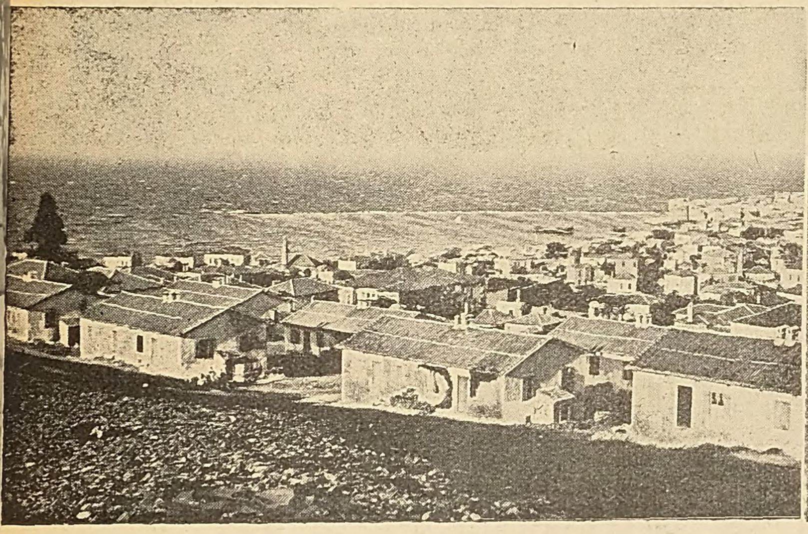
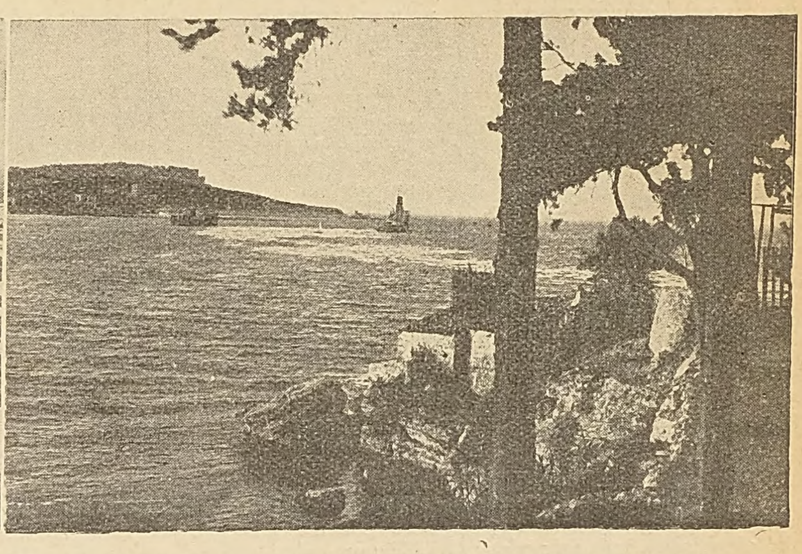

1) Ἡ «Ἐπάνω Σκάλα ἀπὸ τοῦ προσφυγικοῦ συνοικισμοῦ. 2) Εἴσοδος τοῦ Ν. λιμένος ἀπὸ νότου καὶ τμῆμα τοῦ Κάστρου.

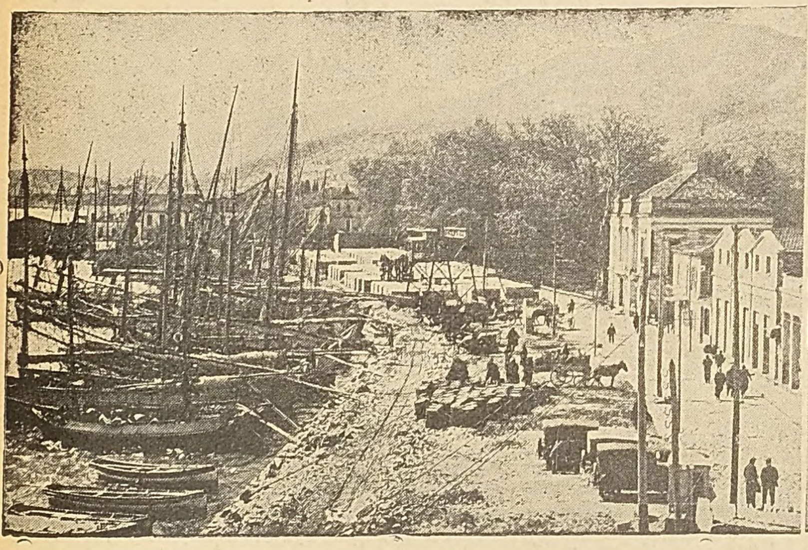
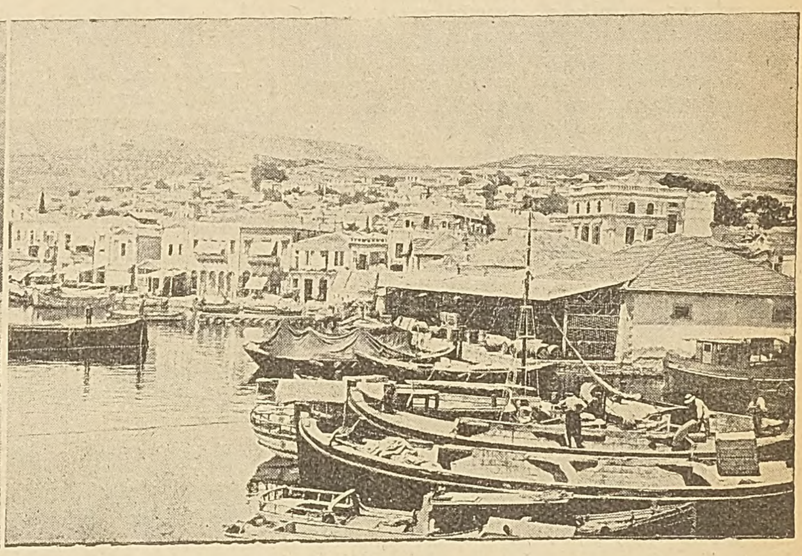

1) Λιμενικὰ ἔργα Μυτιλήνης, δημαρχεῖον καὶ δημοτικὸς κῆπος. 2) Τὸ τελωνεῖον πρὸ τῆς εὐρύνσεως τῆς Προκυμαίας.

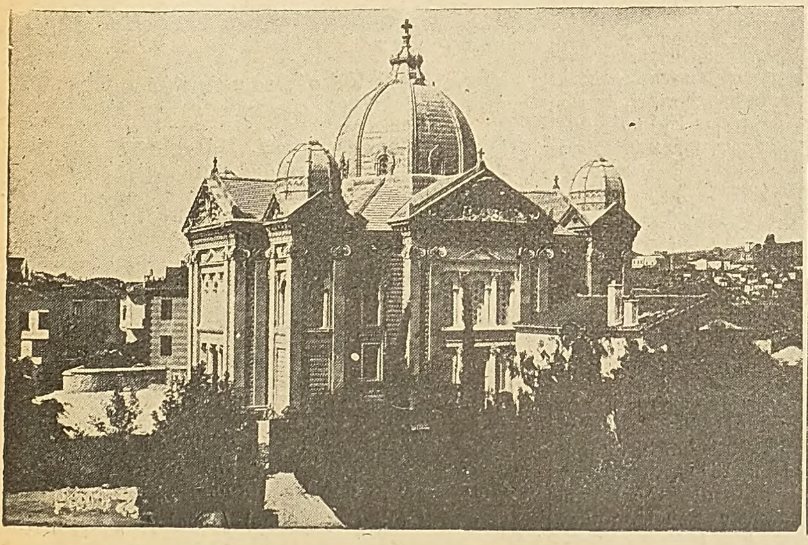
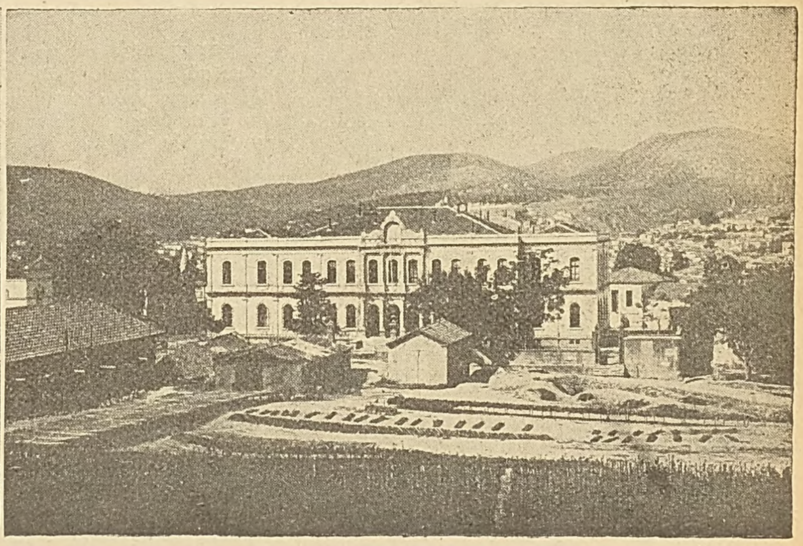

1) Ὁ Ἅγιος Θεράπων. 2) Τὸ Δικαστικὸν Μέγαρον [Φωτογραφία Φρὶτς Μρὰξ καὶ Ἀδελφῶν Χουτζαίου.]



Digitized by Google

ρίβολος ὑπὸ τοῦ Μουσταφᾶ πασᾶ Κουλαξὶζ ζαντέ, μὲ τὰς δύο του πύλας: «Γκιουμοὺς καποὺ» (Ἀργυρᾶ πύλη) πρὸς Ν. καὶ «Βίγλα καποὺ» πρὸς Β. Μετὰ τὴν πυρκαϊὰν τοῦ 1851 ἐκτίσθη τὸ πρῶτον λιθίνη ἡ ἀγορά, μεθ' ὃ τὰ ὡραῖα τεμένη «Γενὶ τζαμὶ» (Νέον τέμενος) καὶ τὸ παράκτιον «Ντενὶζ τζαμὶ» (Παράλιον τέμενος), τὸ νομαρχιακὸν μέγαρον, τὸ λιμεναρχεῖον καὶ τὸ δημαρχεῖον ὑπὸ τοῦ δήμου, τὸ Ἰδαδιὲ (=τουρκικὸν γυμνάσιον, νῦν ὀρφανοτροφεῖον), τὰ μαρμάρινα οἰκοδομήματα τοῦ γυμνασίου καὶ τοῦ διοικητηρίου (νῦν δικαστικὸν μέγαρον), ὁ Ἅγιος Θεράπων, ὁ μητροπολιτικὸς ναὸς τοῦ Ἁγίου Ἀθανασίου κ.ἄ. Κατὰ τὴν τουρκοκρατίαν οἱ Τοῦρκοι (1852: 2.000) κατῴκουν ἰδιαιτέρως τὴν «Ἐπάνω Σκάλαν» καὶ τὸ Κάστρο.

Ἀπὸ τῆς ἀπελευθερώσεως ἐπεξετάθη ἡ πόλις κατὰ τὰς πρὸς Ν. ἐξοχάς, ὅπου ὡραιόταται ἐπαύλεις, πρὸς Β. διὰ τῶν συνοικισμῶν («Τσινὰρ Τζαμί», «Ἐπάνω Σκάλας») κ. ἄ. Ἐκ τῶν κυριωτέρων κτισμάτων τῆς ἐποχῆς αὐτῆς εἶναι τὸ κολοσσιαῖον ἡρῷον, οἱ προσφυγικοὶ συνοικισμοὶ κ.ἄ., ἐκ τῶν ἀνεγειρομένων δὲ (1931): τὸ Δημοτικὸν Νοσοκομεῖον, ὁ συνοικισμὸς Λαγκάδας, τὰ λιμενικὰ ἔργα, τὸ κτήριον τῆς Ἐθνικῆς Τραπέζης κλπ. καὶ ἐκ τῶν ὑπὸ ἀνέγερσιν τὸ Στάδιον τοῦ Αἰγαίου, ἡ Προσφυγικὴ καὶ ἡ Δημοτικὴ ἀγορά. Π. Ν. ΠΑΠΑΣ

—**Μυτιλήνης** ***δῆμος*** *[Γεωγρ.]*. Δῆμος τοῦ νομοῦ Λέσβου τῆς ἐπαρχίας Μυτιλήνης· κάτ. (1931) 30.496, πρωτ. *Μυτιλήνη*. Κατέχει ὅλην τὴν Α. ἀκτὴν τῆς χερσονήσου Ἀμαλῆς τῆς νήσου Μυτιλήνης καὶ ὅλην τὴν πρὸς Β. τοῦ Καγιανίου περιοχήν, τὴν μεταξὺ κόλπου Γέρας καὶ διέκπλου τῆς Μυτιλήνης, περιλαμβάνει δὲ τὰ κάτωθι χωρία καὶ συνοικισμούς: *Ἀκλειδιοῦ, Ἀκρωτήρι, Ἀλιφαντά, Βαριά, Κέντρο, Κουμκό, Πληγώνι, Πυργὶ* καὶ *Χάλικας* (Ἄνω καὶ Κάτω). Ἄλλοτε (1920) εἶχε 20.081 κατ., μὴ περιλαμβάνων τότε τὰ χωρία Ἀκλειδιοῦ, Βαριά, Κουμκὸ καὶ Πληγώνι, ὑπαγόμενα τότε εἰς τὴν κοινότητα Καγιανίου. Ὁ προϋπολογισμὸς τοῦ δήμου Μυτιλήνης τῷ 1929 ἀνήρχετο εἰς 6.511.500 δραχ. Ἡ ἐτησία ἐν αὐτῷ παραγωγὴ ἔχει, κατ' ἀνώτατον ὅριον, ὡς ἀκολούθως εἰς χιλιόγραμμα:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Ἔλαιον | 195.000 | Σιτηρὰ | 55.000 |
| Ἐλαῖαι | 125.000 | Καπνὸς | 50.00 |
| Λαχανικὰ | 90.000 | Ὄσπρια | 2.000 |

Π. Ν. Π.

—**Μυτιλήνης** ***διέκπλους*** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ἐπίσημος τοῦ Αἰγαίου διέκπλους (Mytileni channel), δι' οὗ ἐπικοινωνεῖ πρὸς νότον ὁ Ἀδραμυττηνὸς κόλπος καὶ ὃν διαπλέουν τὰ ἀπὸ Σμύρνης πρὸς λιμένα Μυτιλήνης πλοῖα. Σχηματίζεται ἐκ δυσμῶν μὲν ὑπὸ τῆς ἀνατολικῆς πλευρᾶς τῆς Λέσβου, ἐξ ἀνατολῶν δὲ ὑπὸ τῆς μικρασιατικῆς ἀκτῆς, τῆς ἀπὸ Μοσχονησίων μέχρις ἀκρωτηρίου Μὰλ-Τεπέ. Φωτίζονται δὲ τὰ στόμιά του τὸ μὲν βόρειον διὰ τοῦ φάρου Ἄγκα τῆς νήσου Ἐλιὸς (τουρκική), τὸ δὲ νότιον διὰ τοῦ φάρου Ἄγκα-Νταλὲν τοῦ ἀκρωτηρίου Ἀγρελιὸς τῆς νήσου Μυτιλήνης.

—**Μυτιλήνης** ***ἐπαρχία*** *[Γεωγρ.]*. Ἐπαρχία τοῦ νομοῦ Λέσβου ἐπὶ τῆς νήσου Μυτιλήνης· κάτ. (1928) 77.958, ἕδρα *Μυτιλήνη*. Κατέχει τὰς Α. ἀκτὰς τῆς νήσου, ὅλην τὴν χερσόνησον τῆς Ἀμαλῆς καὶ τὰς Α. καὶ Β. κλιτῦς τοῦ Ὀλύμπου. Περιλαμβάνει ὁμώνυμον δῆμον καὶ 29 κοινότητας, ἐν αἷς τὰ χωρία καὶ συνοικισμοί: *Ἁγία Μαρίνα, Ἁγιάσσος, Ἅγιοι Ἀνάργυροι, Ἀκλειδιοῦ, Ἀκρωτήρι, Ἀλιφαντά, Ἀφάλωνας, Βαριά, Γενὶ-Λιμάνι, Δαμανδρίου Μονή, Θερμή, Ἵππειος, Καγιάνι, Καλαμιάρης, Κάμπος, Κάπη, Κάτω Τρίτος, Κέντρο, Κεραμιά, Κλειοῦ, Κουμκό, Κράτηγος, Κώμη, Λάμπου Μύλοι, Λουτρά, Μανδαμάδος, Μεσαγρός, Μόρια, Μπαλτζίκι, Μυστιγνά, Μυτιλήνη, Μ(υ)χοῦ, Νεάπολις, Νυχτάντα, Παλαιόκηπος, Παναγιούδα, Παπάδος, Πά(μ)φ(υ)λλα, Πέραμα, Πηγή, Πλακάδος, Πληγώνι, Πολυχνῖτος, Πυργί, Πύργοι Θερμῆς, Σκάλα Πολυχνίτου* (Ἐλπίς), *Σκόπελος, Σκούντα* καὶ *Χάλικας* (Ἄνω καὶ Κάτω). Κατέχει ἣν περιοχὴν εἶχεν ἡ ἄλλοτε «Περιφέρεια Μυτιλήνης», ἥτις, μὴ περιλαμβάνουσα τὴν κοινότητα Πολυχνίτου εἶχεν 23 κοινότητας, 1 δῆμον καὶ (1920) 54.914 κατ. Π. Ν. Π.

**Μυτιληνοὶ** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Σάμου, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται μεσογείως μεταξὺ τοῦ Λιμένος Βαθέος (χλμ. 12), μεθ' οὗ συνδέεται δι' ἁμαξιτοῦ ὁδοῦ, καὶ τῆ Χώρας (ὧραι 2), παράγει δὲ ἔλαιον, οἶνον, σιτηρὰ κ.ἄ. γεωργικὰ προϊόντα καὶ ἔχει μικρὰν κτηνοτροφίαν. Παρ' αὐτὴν κεῖται ἡ γέφυρα τοῦ Χησίου. Εἶναι ἐκ τῶν μᾶλλον προηγμένων κέντρων τῆς Σάμου, συγκοινωνεῖ δὲ τακτικῶς μετὰ τῆς πρωτευούσης δι' αὐτοκινήτων λεωφορείων. Τὰ ἐγγὺς σῳζόμενα λείψανα λατομείων ἀνάγονται εἰς τὴν ἐποχὴν τοῦ Πολυκράτους. Οἱ Μυτιληνοὶ εἶναι ἕδρα ἀστυνομικοῦ σταθμοῦ, ταχυδρομικοῦ καὶ τηλεφωνικοῦ γραφείου, ἡμιγυμνασίου, δύο δημοτικῶν σχολείων, ἔχουν δὲ πολλὰ ἐπαγγελματικὰ καὶ ψυχαγωγικὰ σωματεῖα. Κάτ. (1928) 5.519. Χ. Δ.

**Μυτίλης** *[Μυθολ.]*. Μυθολογούμενος οἰκιστὴς καὶ ἐπώνυμος ἥρως τῆς Μυτιλήνης (βλ. καὶ *Μύτων*). Π. Ν. Π.

**μυτιλίδαι** (οἱ) (Mytilidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια μαλακίων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *πεταλοβραγχίων*, περιλαμβάνουσι θαλάσσια μαλάκια μικροῦ ἢ μετρίου μεγέθους μὲ κόγχην ἐπιμήκη διηνεῳγμένην κατὰ μῆκος. Τὸ ἐντὸς τῆς κόγχης ζῷον κατὰ τὸ κέντρον τοῦ σώματος φέρει θηλοειδῆ πόδα, ἐφ' οὗ ὑπάρχει ἀδὴν νηματοποιός, ὁ βύσσος, ὅστις ἐκκρίνει ἰξώδη οὐσίαν καὶ δι' οὗ τὸ ζῷον προσκολλᾶται ἐπὶ στερεῶν ὑποθεμάτων. Ἐκ τῶν γνωστοτέρων γενῶν τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *μυτίλος* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοζῳολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυτιλιδῶν* (περὶ τὰ 400 εἴδη) ἀμφίβολα εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων τῆς κατωτέρας σιλουρίου ὑποδιαπλάσεως τοῦ παλαιοζωικοῦ. Βέβαια καὶ ἀσφαλῆ λείψανα εὑρίσκονται πολλαχοῦ ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς δεβονίου τοῦ παλαιοζωϊκοῦ μέχρι σήμερον. Ἐκλείψαντα γένη τῆς οἰκογενείας εἶναι ὁ *παχυμύτιλος*, ὁ *ψευδοπαχυμύτιλος*, ἡ *σεπτιόλα*, ὁ *ναγιαδίτης*. Γ. Κ. Γ.

**μυτίλος** (ὁ) (Mytilus) *[Ζῳολ.]*. Γένος μαλακίων τῆς οἰκογενείας τῶν *μυτιλιδῶν*, περιλαμβάνον θαλάσσια μαλάκια μὲ κόγχην τριγωνικὴν ἄνευ γιγγλύμου. Οἱ μυτίλοι ἑνοῦνται μεταξύ των διὰ τοῦ βύσσου αὐτῶν βοτρυοειδῶς, προσκολλῶνται δὲ ἐπὶ διαφόρων ὑποθεμάτων, πετρῶν, ξύλων, βράχων κτλ. Τὸ γένος περιλαμβάνει περὶ τὰ 60 εἴδη, ἀπαντῶντα εἰς πάσας τὰς θαλάσσας τῆς γῆς. Ἀξιολογώτερον πάντων εἶναι ὁ *μυτίλος ὁ ἐδώδιμος* ἢ *μύτιλος* ἢ *μύαξ* (Mytilus edulis) καὶ *μύδι*. Ἡ κόγχη του ἔχει χρῶμα πορφυροκυανοῦν ἐξωτερικῶς καὶ ἰῶδες ἐσωτερικῶς. Τὸ ἐντὸς τῆς κόγχης ζῷον ἔχει χρῶμα ζωηρῶς κίτρινον μὲ πόδα χονδρὸν ἐν σχήματι γλώσσης καὶ φαιόν.

*Μυτίλος ὁ ἐδώδιμος.*

Ἀπαντᾷ εἰς πάντα σχεδὸν τὰ παράλια τῆς Εὐρώπης, συνήθως συνηνωμένος κατὰ πυκνὰς ὁμάδας μετ' ἄλλων ὁμοίων του ζῴων. Συλλέγονται ἀφθόνως ἐπὶ τῶν βραχωδῶν ἀκτῶν διὰ τὸ νοστιμώτατον κρέας των. Σπανίως τρώγονται ὠμοὶ οἱ μυτίλοι, συνήθως μαγειρεύονται μὲ ὄρυζαν κτλ. Οἱ μυτίλοι τρωγόμενοι ὠμοὶ ἐπιφέρουσιν ἐνίοτε τοπικὴν στομαχικὴν δηλητηρίασιν, σπανίως δὲ καὶ συμπτώματα τοπικῆς παραλύσεως· ἡ δηλητηρίασις προέρχεται ἔκ τινος ἰδίας οὐσίας δηλητηριώδους *μυτιλοτοξίνης*, ἥτις εὑρίσκεται εἰς τὸ εἶδος *μυτίλος ὁ τοξικός*, ὅστις προσομοιάζει πολλάκις καταπληκτικῶς πρὸς τὸν μυτίλον τὸν ἐδώδιμον. Οἱ μυτίλοι πολλάκις χρησιμοποιοῦνται καὶ ὑπὸ τῶν ἁλιέων ὡς δόλωμα. Δ. Ν. Π.

—*[Παλαιοζῳολ.]* Ἀπολιθωμένα λείψανα *μυτίλων* εὑρίσκονται ἐντὸς στρωμάτων διαφόρων διαπλάσεων ἀπὸ τῆς τριασίου τοῦ μεσοζωϊκοῦ μέχρι σήμερον. Ἐν Ἑλλάδι λείψανα αὐτῶν εὑρέθησαν: α) Ἐντὸς τῶν μεταμορφωμένων μελανῶν φυλλιτῶν τῆς τριασίου διαπλάσεως τῆς δυτικῆς Κρήτης. β) Ἐντὸς τῶν μειοκαινικῶν πορωδῶν κογχιτῶν ἀσβεστολίθων τῶν λατομείων τῆς χερσονήσου τοῦ Πειραιῶς τὸ εἶδος *μύτιλος edulis*. γ) Ἐντὸς τῶν ὑποπλειοκαινικῶν στρωμάτων τοῦ Ἰσθμοῦ τῆς Κορίνθου τὰ εἴδη *μυτίλος minimus* καὶ *μυτίλος edulis*. Γ. Κ. Γ.

**μυτιλοτροφεῖον** (τὸ) *[Ἰχθυολ.]*. Καλεῖται τὸ μέρος, ὅπου διατρέφονται καὶ καλλιεργοῦνται οἱ *μυτίλοι*.

**μύτος** (ὁ)· μεγάλη μύτη: «τί μύτος εἶναι αὐτός;».

**μυττωτοδοχεῖον** (τό). Παλαιὰ ὀνομασία, ἐν χρήσει εἰς τὰς ἀπογραφὰς τῶν πολεμικῶν πλοίων καὶ τῶν ἐν ταῖς ἀποθήκαις τοῦ ναυστάθμου εἰδῶν, σημαίνουσα *μουσταρδιέρα*. Ἡ ἀνεπιτυχὴς αὕτη ὀνομασία, δεδομένου ὅτι μυττωτὸς δὲν εἶναι ὁ ἐκ σινάπεως πολτὸς ἀλλ' ἡ «σκορδαλιά», ἐγκετελείφθη σιωπηρῶς Σ. Ε. Λ.

**μυττωτὸς** (ὁ), καὶ ***μυσσωπός***. Χυλῶδες ἔδεσμα, εἶδος σάλτσας, παρασκευαζόμενον ἐκ σκόρδων καὶ ἄλλων παρομοίων συστατικῶν βαρείας ὀσμῆς, ἐν τῷ ὁποίῳ οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες ἔρριπτον ἢ καὶ διὰ τοῦ ὁποίου ἐπήλειφον διάφορα φαγητὰ καὶ ἰδίως ἰχθῦς. Β. Δ. Θ.

**Μύτων** *[Μυθολ.]*. Λέσβιος ἥρως, υἱὸς τοῦ Ποσειδῶνος καὶ τῆς Μυτιλήνης, ἐπώνυμος τῆς νήσου, ὀνομασθείσης ἐξ αὐτοῦ *Μυτωνίδος* καὶ τῆς πρωτευούσης αὐτῆς Μυτιλήνης. Π. Ν. Π.

**Μυτωνὶς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἑτέρα ὀνομασία τῆς ἀρχαίας Λέσβου καὶ τῶν γυναικῶν αὐτῆς ἀπὸ τοῦ ἥρωος *Μύτωνος*. Π. Ν. Π.

**Μύφφλινγκ** (Müffling), ***Κάρολος*** *βαρῶνος φὸν*—. Πρῶσσος στρατάρχης (1775—1851). Ἔλαβε μέρος εἰς τοὺς ἐναντίον τῆς Γαλλίας πολέμους, ὑπηρέτησεν εἰς τὸ ἐπιτελεῖον τοῦ Μπλύχερ, διετέλεσεν ἀρχηγὸς τοῦ ἐπιτελείου τῆς στρατιᾶς τοῦ Ρήνου καὶ μετὰ τὴν δευτέραν κατάληψιν τῶν Παρισίων διοικητὴς τῆς πόλεως ταύτης. Τῷ 1820 διωρίσθη ἀρχηγὸς τοῦ γενικοῦ ἐπιτελείου τοῦ πρωσσικοῦ στρατοῦ καὶ τῷ 1829 ἀπεστάλη εἰς Κωνσταντινούπολιν, ὅπως μεσολαβήσῃ παρὰ τῇ Ὑψηλῇ Πύλῃ ὑπὲρ τῆς μετὰ τῆς Ρωσίας εἰρήνης. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς: «Ἡ Πρωσσορωσικὴ ἐκστρατεία τοῦ ἔτους 1813» (2α ἔκδ. 1815), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῶν μεγάλων ἐπιχειρήσεων καὶ μαχῶν» (1825), «Ἡ στρατηγικὴ τοῦ Ναπολέοντος ἐν ἔτει 1813» (1827), «Ἀπὸ τὴν ζωήν μου» δημοσιευθὲν μετὰ θάνατον. Γ. Ε. Κ.

**Μυχάλη** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἄλλη ὀνομασία τῆς χερσονησώδους προβολῆς τῆς *Μυκάλης*. Ὀφείλεται δὲ κατὰ Στέφανον τὸν Βυζάντιον ἡ ὀνομασία τῆς προβολῆς ταύτης «ἐπεὶ ἐν μυχῷ κεῖται τῆς Ἰκαρικῆς ἁλός». Σ. Ε. Λ.

**μύχιος,** *—α, —ον* (τό)· ὁ οἱονεὶ ἐν τῷ μυχῷ, ἐν τῷ βάθει εὑρισκόμενος, ἐσώτατος, ἐνδόμυχος: «οὐδεὶς γνωρίζει τὰς μυχίας σκέψεις του».

**μυχὸς** (ὁ)· τὸ ἐσώτατον σημεῖον κοιλότητος ἢ ὡς κοιλότητος λαμβανομένης: «ὁ μυχὸς τοῦ κόλπου,—τοῦ λιμένος»· || «ὁ μυχὸς τῆς οἰκίας» ἢ μᾶλλον ἀπομεμακρυσμένη γωνία ἀπὸ τῆς εἰσόδου.

—*[Ὠκεανογρ.]* *Μυχὸς* κόλπου ἢ ὅρμου εἶναι ἡ ἐσωτάτη ἐν τῇ ἀκτῇ εἴσδυσις αὐτοῦ. Ἐὰν ὅμως ὁ μυχὸς χαρακτηρίζεται εἰδικῶς (π. χ. βορειοδυτικὸς κλπ.), τότε ὑπονοεῖται ἡ εἰς τοιαύτην διεύθυνσιν, πρὸς τὴν ἀκτὴν τοῦ κόλπου ἢ τοῦ ὅρμου, ἐσωτάτη εἴσδυσις. Οἱ μυχοὶ δύο κολπώσεων, ὅταν σχηματίζωνται ἑκατέρωθεν ἰσθμοῦ στενοῦ εἰς πλάτος, ὀνομάζονται *ἀμφίπυγοι*, ὡς καὶ αἱ κολπώσεις. Κ. Κ. Κ.

**Μυχὸς** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὁ ὕστατος πρὸς δυσμὰς λιμὴν τῆς Φωκίδος «προσαγορευθεὶς Μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος [τούτου] ὑπὸ τῷ Ἑλικῶνι καὶ τῇ Ἄσκρῃ κείμενος» (*Στράβ.* θ, 409, 423). Ὑπὸ τῶν ἐντοπίων καλεῖται σήμερον *Γιανιτσό*, ὑπὸ δὲ τῶν ναυτικῶν *Ζαλίτσα* (Zalitza, πλάτ. 38° 16′ 20″ Β., μῆκ. 22° 47′ 10″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1600: Gulf of Corinth). Σ. Ε. Λ.

**Μυχοῦ** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ νομοῦ Λέσβου, τῆς ἐπαρχίας Μυτιλήνης, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κάτ. (1928) 201. Ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Π. Ν. Π.

**μύω** (ἀρχ.)· ἐπὶ ὀφθαλμῶν καὶ χειλέων, κλείομαι, συγκλείομαι· || καὶ μεταβ., κλείω: «ὕπνος ἔμυσε κόρας».

**μυῶ** *(—έω)*, ἀόρ. *ἐμύησα—ἐμυήθην*, παρακ. παθ. μετχ. *μεμυημένος*· εἰσάγω τινὰ εἰς τὰ μυστήρια, κατηχῶ, διδάσκω μυστικὰς τελετάς: «ἐμυήθη εἰς τὸν τεκτονισμόν»· || συνεκδ., ἀποκαλύπτω εἴς τινα μυστικὴν ὀργάνωσιν, ἵνα προσλάβω καὶ αὐτὸν ὡς μέλος· || *μεμυημένοι* (οἱ)· οἱ κατηχημένοι, οἱ ἐν γνώσει μυστικῆς τινος ὑποθέσεως.

**μυώδης** (ὁ, ἡ), *—ες* (τό)· ὁ πλήρης μυώνων, ὁ ἔχων παχεῖς μῦς: «ἔντονος καὶ μυώδης κατὰ τὸ σῶμα».

**μύωμα,** *—ατος* (τὸ) *[Δερματολ.]*. Τὰ μυώματα τοῦ δέρματος εἶναι ὄγκοι καλοήθεις, οἱ ὁποῖοι σχηματίζονται ἀπὸ τὸν μυϊκὸν ἱστὸν τοῦ δέρματος, σπανιώτερον δὲ ἀπὸ τὰ αἱμοφόρα ἀγγεῖα. Τὰ λειομυώματα ταῦτα τοῦ δέρματος ἀναπτύσσονται συνηθέστερον εἰς γυναῖκας προκεχωρημένης ἡλικίας, κατ' ἀρχὰς ὑπὸ μορφὴν μικρῶν κηλίδων ἐρυθρῶν, αἱ ὁποῖαι σὺν τῷ χρόνῳ μεγεθύνονται καὶ σχηματίζουσι σκληρά, στρογγύλα ὀγκίδια μεγέθους κεφαλῆς βελόνης μέχρι φουντουκίου. Τὰ ὀγκίδια ταῦτα εἶναι ἐπώδυνα, ἀναφαίνονται εἰς ὅλα τὰ μέρη τοῦ σώματος, συνηθέστερον ὅμως εἰς τὰ ἄκρα καὶ τὸν θώρακα, οὐδέποτε δὲ προσβάλλουσι τὸ τριχωτὸν τῆς κεφαλῆς μέρος καὶ τὰς παλάμας. Ἡ διάγνωσις εἶναι εὔκολος, βεβαιοῦται δὲ πάντοτε ἀσφαλῶς διὰ τῆς παθολογικοανατομικῆς μικροσκοπικῆς ἐξετάσεως ἑνὸς ὀγκιδίου. Ἡ πρόγνωσις εἶναι πάντοτε καλή. Θεραπευτικῶς συνιστῶνται αἱ ἀκτῖνες Ραῖντγκεν, ἐσωτερικῶς δὲ τὸ ἀρσενικόν. Κ. Κ. Κ.

**μυών,** *—ῶνος* (ὁ)· σύνδεσμος πολλῶν μυῶν τοῦ ἀνθρώπου, σαρκῶδες μέρος τοῦ σώματος.

**Μυωνία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Λοκρῶν Ὀζολῶν, κειμένη 30 στάδια Β.Δ. τῆς Ἀμφίσσης ἐπί τινος ὑψηλῆς τοποθεσίας. Εἶχεν ἄλσος καὶ ναὸν τῶν Μειλιχίων θεῶν, εἰς τοὺς ὁποίους ἐτελοῦντο νυκτεριναὶ θυσίαι, κατὰ τὰς ὁποίας ἔπρεπε τὰ κρέατα τῶν θυσιῶν νὰ καταναλωθῶσι πρὸ τῆς ἀνατολῆς τοῦ ἡλίου. Ἐπίσης ὑπὲρ τὴν πόλιν ὑπῆρχε καὶ τέμενος τοῦ Ποσειδῶνος μετὰ ναοῦ (Ποσειδώνιον). Ὁ κάτοικος αὐτῆς ἐκαλεῖτο *Μύων* ἢ *Μυονεύς*. Α. Θ. Σ.

—**Μυωνίας,** ***τέως δῆμος***—*[Γεωγρ.]*. Παλαιὸς δῆμος τῆς ἐπαρχίας Παρνασσίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, περιλαμβάνων τὰς σημερινὰς κοινότητας *Ἁγίας Εὐθυμίας, Βουνιχώρας* καὶ *Πεντεορίων*. Εἶχε πρωτεύουσαν τὴν Ἁγίαν Εὐθυμίαν καὶ ἠρίθμει κατ. 3.000 περίπου. Χ. Δ.

**μυωξίδαι** (οἱ) (Myoxidae) *[Ζῳολ.]*. Οἰκογένεια ζῴων θηλαστικῶν τοῦ ἀθροίσματος τῶν τρωκτι-

Digitized by Google

κῶν, περιλαβάνουσα μικρὰ τρωκτικά, νυκτόβια, ἀπαντῶντα εἰς τὰς χώρας τοῦ βορείου ἡμισφαιρίου τῆς γῆς. Γνωστότερον γένος εἶναι ὁ *μυωξὸς* (βλ. λ.). Δ. Ν. Π.

—[*Παλαιοζωολ.*] Λείψανα ἀπολιθωμένα *μυωξιδῶν* εὑρέθησαν ἐντὸς στρωμάτων τῆς τριτογενοῦς διαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ ἐν Εὐρώπῃ. Ἐκλείψαντα γένη τῆς οἰκογενείας ταύτης εἶναι ὁ *ἐλιόμυς*, ὁ *μουσκαρδῖνος* καὶ ἡ *λειθία*. Γ. Κ. Γ.

**μυωξὸς** (ὁ) (Myoxus) [*Ζωολ.*]. Γένος θηλαστικῶν τῆς οἰκογενείας τῶν *μυωξιδῶν*, περιλαμβάνον μικρὰ τρωκτικά, παραπλήσια τῶν σκιούρων, μὲ σῶμα βραχὺ καὶ εὔρωστον, οὐρὰν μακρὰν καὶ πολὺ τριχωτήν, κεφαλὴν εὐμεγέθη καὶ τριγωνικήν, ὀφθαλμοὺς μικροὺς καὶ στρογγύλους, ὦτα μετρίου μήκους καὶ ἠνωρθωμένα καὶ τρίχωμα πυκνόν.

*Μυωξὸς ὁ κοινός.*

Γνωστὰ ἀρκετὰ εἴδη, ὧν ἀξιολογώτερα εἶναι: *μυωξὸς ὁ κοινὸς* (Myoxus glis) ἢ *ἐλειός*, ὅστις ζῇ εἰς πλεῖστα δάση τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς βορείου καὶ μέσης Ἀσίας. Οἱ Ρωμαῖοι διέτρεφον τὸ ζῷον τοῦτο καὶ τὸ προσέφερον ὡς πολύτιμον ἔδεσμα εἰς τὰ συμπόσιά των. Παρ' ἡμῖν, καὶ ἰδίως ἐν Πελοποννήσῳ, ἀπαντᾷ ὁ *μυωξὸς ἡ δρυὰς* (Myoxus dryas), ὅστις φέρει πάντα τὰ χαρακτηριστικὰ τοῦ γένους καὶ χρῶμα φαιοτεφρομελανόν. Δ. Ν. Π.

—[*Παλαιοζωολ.*] Ἀμφίβολα λείψανα *μυωξῶν* εὑρέθησαν ἐντὸς τῶν ἠωκαινικῶν στρωμάτων τῶν φωσφοριτῶν καὶ τῆς παρισινῆς γύψου, βέβαια δὲ καὶ ἀσφαλῆ ἐντὸς στρωμάτων τῆς μειοκαίνου ὑποδιαπλάσεως τοῦ καινοζωϊκοῦ. Γ. Κ. Γ.

**μυωπάζω·** εἶμαι μύωψ, δὲν βλέπω μακράν· || μεταφ., δὲν προβλέπω τὰ ἐγγύς, τὰ ἐπικείμενα γενονότα.

**μυώπη** (ἡ) (Myope) [*Ζωολ.*]. Γένος ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων* τῆς οἰκογενείας τῶν *μυωπιδῶν*, περιλαμβάνον μυίας μετρίου μεγέθους καὶ γενικῶς φαιοῦ ἢ μελανοφαίου χρώματος, ἰθαγενεῖς τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μυωπία** (ἡ)· ἡ κατάστασις τῶν ὀφθαλμῶν τοῦ *μύωπος*, τὸ νὰ μὴ διακρίνῃ τις σαφῶς τ' ἀντικείμενα ἀπὸ μακρᾶς ἀποστάσεως.

—[*Ὀφθαλμολογ.*] Οἱ ἀρχαῖοι Ἕλληνες ἐκάλουν *μύωπας* «τοὺς τὰ μὲν ἐγγὺς βλέποντας, τὰ δὲ πόρρωθεν μὴ ὁρῶντας» (*Γαληνός*, Kühn, XIV. 776). Ὠνομάσθησαν δὲ οἱ τοιοῦτοι μύωπες, διότι ἵνα εὐκρινῶς ἴδωσι, μύουσιν ἤτοι συνάγουσι τὰ βλέφαρα, δι' ὃ ὁ Ἀριστοτέλης καὶ ὁ Ἀλέξανδρος ὁ Ἀφροδισιεὺς ἐρωτῶσιν εἰς τὰ προβλήματά των «διατί οἱ μύωπες συνάγοντες τὰ βλέφαρα ὁρῶσι» (*Ἀριστοτ.* προβλ. 16ον). Καὶ πράγματι οὕτω ποιοῦσιν οἱ μύωπες, διότι οὕτω σχηματίζουσι στενοσχιδὲς διόπτρον, καὶ διορθοῦσι τὰ ἀσαφῆ ἐπὶ τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς των σχηματιζόμενα εἴδωλα.

***Αἰτιολογία.*** Τὴν ἀκριβῆ αἰτιολογίαν τῆς μυωπίας δὲν γνωρίζομεν, μεταξὺ ὅμως τῶν προκαλούντων αὐτὴν πολλαπλῶν συνθηκῶν ἡ κληρονομικότης εἶναι ἡ σπουδαιοτέρα, διότι ὄχι μόνον παρετηρήθη (σπανίως) μυωπία εἰς τὰ ἐκ μυώπων γονέων νεογνά, ἀλλὰ καὶ ἀρκετὰ συχνὰ διεπιστώθη, ὅτι τέκνα γονέων ἢ προγόνων μυώπων φέρουσιν ἐν ἑαυτοῖς τὴν μυωπικὴν διάθεσιν, ἥτις εἴτε αὐτομάτως εἴτε συνεπείᾳ αἰτίας τινὸς (κατάχρησις ἀναγνώσεως κτλ.) παρουσιάζει μυωπικὰς ἀλλοιώσεις τοῦ βολβοῦ καὶ τοῦ βυθοῦ τοῦ ὀφθαλμοῦ, κυρίως κατὰ τὴν παιδικὴν ἡλικίαν. Οἱ ἀρχαῖοι ἔλεγον ὅτι ἡ μυωπία εἶναι νόσος ἐκ γενετῆς (Γαληνός, Ἀέτιος, Ὀρειβάσιος, Παῦλος, Ἀκτουάριος): «Μύωπες λέγονται, οἱ ἐκ γενετῆς τὰ μὲν σμικρὰ καὶ σύνεγγυς βλέποντες, τὰ δὲ μεγάλα καὶ πόρρω βλέπειν μὴ δυνάμενοι, τά τε γεγραμμένα ἀναγινώσκοντες συνεγγίζουσι τοῖς ὀφθαλμοῖς· καὶ οἱ μὲν ἀνωμάλους, σκορδόφθαλμοι ἔστιν· οἱ δὲ ὁμαλοὺς ἔχουσι τοὺς ὀφθαλμούς· ἀνίατος δὲ ἐστιν ἡ τοιαύτη διάθεσις» (*Ἀέτιος*).

Ἡ μυωπία συχνότερον ἐκδηλοῦται κατὰ τὴν παιδικὴν ἡλικίαν καὶ δὴ κατὰ τὰ ἔτη τῆς σχολικῆς φοιτήσεως, δι' ὃ καὶ μυωπίαι τινὲς ὠνομάσθησαν σχολικαὶ ἢ τῶν μαθητῶν. Ὁ μαθητὴς κατὰ τὴν ἀνάγνωσιν πλησιάζει πρὸς τὸ βιβλίον καὶ συνεπῶς συγκλίνει τοὺς βολβούς. Ἐν τοιαύτῃ περιπτώσει οἱ ἐξωτερικοὶ μύες καὶ πρὸ πάντων οἱ δύο λοξοὶ καὶ ὁ ἔσω ὀρθὸς (Guerin 1769) πιέζουσι τὸν βολβόν, οὕτινος τὸ σφαιρικὸν σχῆμα μεταβάλλεται εἰς ἐπίμηκες. Ὁ βολβὸς οὗτος ὅταν ἐκ γενετῆς παρουσιάζῃ ἐλάττωσιν τῆς ἀντιστάσεως τοῦ ὀπισθίου αὐτοῦ τμήματος, ὅταν δηλαδὴ αἱ πέριξ τοῦ ὀπτικοῦ νεύρου ἶνες τοῦ σκληροῦ, ἀντὶ νὰ εἶναι συνυφασμέναι καθέτως καὶ ὁριζοντίως, ὥστε νὰ παρουσιάζουν ἀντίστασιν εἰς τὰς διαφόρους πιέσεις, ἔχουσι μόνον ὁριζοντίαν διάθεσιν (Rochon-Duvigneaud), τότε ὁ τοιοῦτος βολβὸς παρουσιάζει καὶ σχετικὴν ἐλάττωσιν τῆς ἀντιστάσεώς του εἰς τὰς διαφόρους πιέσεις. Οὕτω δὲ εἰς πρώτην εὐκαιρίαν τὸ πέριξ τῆς θηλῆς καὶ δὴ τὸ πρὸς τὴν ὠχρὰν κηλῖδα ὀπίσθιον τμῆμα τοῦ βολβοῦ ἐκτανύεται, ὑποχωρεῖ καὶ μεταβάλλεται εἰς σταφύλωμα (Scarpa 1802), ὁ δὲ βολβὸς οὕτω ἐπιμηκυνόμενος γίνεται μυωπικός. Εἰς ἄλλας περιπτώσεις, ἄνευ αἰτίας φανερᾶς, πέριξ τῆς θηλῆς ἀναπτύσσεται χρονία καὶ ἀβληχρὰ παθολογικὴ ἐπεξεργασία, καθ' ἣν ὁ μὲν σκληρὸς καὶ ὁ χοριοειδὴς λεπτύνονται, τὰ χρωστικὰ κύτταρα τοῦ τελευταίου ἀτροφοῦσι, διαθρύπτονται, ἀπορροφοῦνται καὶ καταστρέφονται, ὁ δ' ἀμφιβληστροειδὴς ἐπίσης λεπτυνόμενος παρουσιάζει συμπύκνωσιν τῶν χρωστικῶν αὐτοῦ κυττάρων πέριξ τῶν ὁρίων τοῦ λεπτυνθέντος τμήματός του. Οὕτω σκληρός, χοριοειδὴς καὶ ἀμφιβληστροειδὴς ἐκτανύονται καὶ κοιλαίνονται πέριξ τῆς θηλῆς καὶ σχηματίζουσι τὴν λεγομένην «μυωπικὴν ἡμισέληνον» ἢ «σταφύλωμα», τὸ ὁποῖον βλέπομεν διὰ τοῦ ὀφθαλμοσκοπίου.

Εἴπομεν ἀνωτέρω ὅτι τὸ σταφύλωμα γεννᾶται συνεπείᾳ πιέσεως. Τὸ τοιοῦτον, ὅσον καὶ ἂν εἶναι εὐλογοφανές, δὲν ἀποτελεῖ ὅμως καὶ ἀπαράβατον κανόνα, διότι πλειστάκις παρετηρήθησαν σταφυλώματα εἰς χωρικούς, οἵτινες οὐδέποτε ἀνέγνωσαν, οὔτε ἐκ τοῦ πλησίον εἰργάσθησαν (Jäger 1861), καὶ ὅμως παρ' αὐτοῖς ἀνεπτύχθησαν μυωπικαὶ ἀλλοιώσεις τοῦ βυθοῦ. Ἐπίσης παρόμοιαι ἀλλοιώσεις παρετηρήθησαν καὶ εἰς μονοφθάλμους, οἵτινες δὲν συγκλίνουσι τὸν βολβὸν κατὰ τὴν ἀνάγνωσιν (Albrecht 1882). Τοῦτο σημαίνει ὅτι ἀρκεῖ τις νὰ εἶναι γεννημένος μὲ τάσιν πρὸς ἐπιμήκυνσιν τοῦ βολβοῦ, διὰ νὰ ἐξελιχθῇ εἰς μύωπα κατὰ τὴν περίοδον τῆς ἀναπτύξεως τοῦ βολβοῦ (παιδικὴν καὶ νεανικήν), ἔστω καὶ ἐὰν κατὰ τύχην ἐγεννήθη μὲ βολβὸν βραχύν. Ὁ τοιοῦτος βολβός, καὶ ἐὰν δὲν ἐπιμηκυνθῇ ἀρκούντως, θὰ θεωρηθῇ μυωπικὸς (ἀρκεῖ νὰ φέρῃ τὸ κλασσικὸν καὶ χαρακτηριστικὸν σταφύλωμα) καὶ χωρὶς νὰ εἶναι σκιασκοπικῶς τοιοῦτος. Πάντως γνωρίζομεν ὅτι εἰς τὸν ὀπίσθιον πόλον τοῦ σκληροῦ ὑπάρχει, ἐκ καταβολῆς, ἀσθενὲς σημεῖον, καὶ τοῦτο εἶναι ὁ «ὕβος τοῦ Ammon» (1829, 1859).

Εἰς πλεῖστα περιστατικὰ μυωπικῶν ἀλλοιώσεων παρετηρήθη κληρονομικὴ σύφιλις, εἰς ἑτέρας δὲ προηγήθη γενική τις λοίμωξις, ὡς τυφοειδὴς πυρετός, φυματίασις (Sonder 1920) κ. τ. λ.

***Συμπτώματα.*** Συχνὰ καὶ δὴ κατὰ τὰς μεγάλας μυωπίας, ἕνεκεν τοῦ ὑπερβολικοῦ μεγέθους τῶν βολβῶν παρατηρεῖται καὶ μικρὸς ἐξόφθαλμος. «Τὰ μὲν γὰρ ἐξόφθαλμα οὐχ εὐωπὰ πόρρωθεν, τὰ δὲ ἐντὸς ἔχοντα τὰ ὄμματα ἐν κοίλῳ κείμενα ὁρατικὰ τῶν πόρρωθεν» (*Ἀριστοτ.*). Αἱ κόραι τῶν μυώπων συνήθως εἶναι διεσταλμέναι καὶ τὸ βλέμμα ἀπλανές. Μύωπές τινες, καὶ μάλιστα ὅταν ἀφαιρέσωσι τὰ διόπτρα των, παρουσιάζουσι μικρὸν ἐσωτερικὸν στραβισμὸν ἀμφοτέρων τῶν ὀφθαλμῶν. Τοῦτο ὀφείλεται εἰς τὸ ὅτι αἱ ὀπτικαὶ γραμμαὶ τῶν ὀφθαλμῶν τούτων σχηματίζουσι μετὰ τοῦ ἄξονος τοῦ κερατοειδοῦς μικρὰν γωνίαν (γωνία α, strabisme convergeant apparent). Ἄλλοτε τοὐναντίον οἱ μεγάλου βαθμοῦ μύωπες, οἵτινες εἶναι καὶ ὀλίγον ἐξόφθαλμοι, παρουσιάζουν ἑτερόφθαλμον ἐξωτερικὸν στραβισμὸν (σκορδόφθαλμοι τοῦ Ἀετίου). Οὗτοι, ἕνεκεν τῆς μεγάλης αὐτῶν μυωπίας, διὰ πᾶσαν ἐκ τοῦ πλησίον ἐργασίαν πλησιάζουν τόσον πολὺ τοὺς ὀφθαλμούς των πρὸς τὰ διάφορα ἀντικείμενα, ὥστε ἡ ἀμφοτερόφθαλμος ὅρασις ἀποκλείεται, ὁ ἕτερος δὲ τῶν βολβῶν τίθεται εἰς ἐξωτερικὸν στραβισμόν. Ὁ μύωψ ἀναγινώσκων πλησιάζει ὑπὲρ τὸ δέον πρὸς τὰ γράμματα, ὅταν δὲ δὲν παρουσιάζῃ ἀλλοιώσεις τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος, βλέπει θαυμάσια, καὶ μάλιστα διακρίνει λεπτομερείας, ἃς ὁ ἐμμέτρωψ δυσκολεύεται νὰ ἴδῃ καὶ ὁ ὑπερμέτρωψ δὲν βλέπει. Τὸ τοιοῦτον συμβαίνει, διότι ὁ μύωψ βλέπει τὰ μικρὰ ἀντικείμενα καὶ γράμματα ὑπὸ μεγαλυτέραν γωνίαν. Διὰ τὸν αὐτὸν λόγον οἱ μύωπες γράφουσι συνήθως μικρὰ γράμματα καὶ ἔχουν ἐπίδοσιν εἰς τὰς λεπτεπιλέπτους ἐργασίας. Ἡ τοιαύτη ἱκανότης τῶν μυώπων ἦτο ἀνέκαθεν γνωστὴ (*Ἀριστοτ.*, προβλ. 8).

Ὁ λόγος, διὰ τὸν ὁποῖον ἀντιθέτως οἱ μύωπες δὲν διακρίνουσι καλῶς τὰ μακρὰν ἀντικείμενα, εἶναι ὁ ἑξῆς. Αἱ διαστάσεις τοῦ βολβοῦ εἰς τοὺς ἐνηλίκους εἶναι 24 χιλιοστόμετρα κατὰ τὸν ἐμπροσθοπίσθιον καὶ ὁριζόντιον ἄξονα. Εἰς τοιούτους ὀφθαλμούς, αἱ ἐκ τοῦ ἀπείρου προερχόμεναι παράλληλοι ἀκτῖνες, διαθλώμεναι, σχηματίζουσι τὴν κυρίαν αὐτῶν ἑστίαν ἐπὶ τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος. Πρακτικῶς αἱ ἀκτῖνες αἱ ἐκπεμπόμεναι ἐκ γραμμάτων κειμένων εἰς ἀπόστασιν 5 μέτρων ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ καὶ ἐχόντων ὕψος ἑνὸς ἑκατοστομέτρου (βλ. λ. *ἐμμέτρωψ* καὶ *ὀπτότυπον* Γαληνοῦ), θλώμεναι, σχηματίζουσι τὸ εἴδωλον αὐτῶν ἐπὶ τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος. Ἐν τῇ ὀφθαλμολογικῇ ὀπτικῇ ὁ τοιοῦτος ὀφθαλμὸς ὀνομάζεται συμβατικῶς ἐμμέτρωψ, τὸ δὲ ἄπω σημεῖον τῆς εὐκρινοῦς ὁράσεώς του (ponctum remotum) εὑρίσκεται εἰς τὸ ἄπειρον. (Γενικῶς ἀκτῖνες προερχόμεναι ἐξ ἀντικειμένων ὕψους 1 χ.σ.μ. καὶ ἐξ ἀποστάσεως 5 μέτρων δύνανται νὰ θεωρηθῶσιν ὡς προερχόμεναι ἀπὸ τὸ ἄπειρον.) Εἰς τὸν μυωπικὸν ὅμως ὀφθαλμόν, ὅστις εἶναι ἐπιμηκέστερος, ἡ ἑστία τῶν ἐκ τοῦ ἀπείρου προερχομένων ἀκτίνων σχηματίζεται ἔμπροσθεν τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς ἐντὸς τοῦ ὑαλοειδοῦς, καὶ τὸ ἐπὶ τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος σχηματιζόμενον εἴδωλον θὰ εἶναι ἀσαφὲς καὶ ὁ μύωψ δὲν θὰ βλέπῃ εὐκρινῶς. Ὁ μυωπικὸς ὀφθαλμὸς ἵνα εὐκρινῶς ἴδῃ πλησιάζει πρὸς τ' ἀντικείμενα διὰ νὰ ἐπιτύχῃ τὸν σαφῆ σχηματισμὸν τοῦ εἰδώλου ἐπὶ τῆς ὠχρᾶς αὐτοῦ κηλῖδος. Ἐν τῇ πράξει, ἵνα ἐπιτύχωμεν τὸ αὐτὸ ἀποτέλεσμα, χωρὶς νὰ πλησιάσῃ ὁ μύωψ πρὸς τὸ ἀντικείμενον, θέτομεν πρὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ ἀμφίκοιλον φακόν.

***Ὀφθαλμοσκοπικὰ συμπτώματα.*** Τὸ σπουδαιότερον σύμπτωμα τῆς μυωπίας εἶναι ἡ περὶ τὴν θηλὴν καὶ δὴ τὸ πρὸς τὸ ἔξω τμῆμα αὐτῆς, τὸ πρὸς τὴν ὠχρὰν κηλῖδα, παρατηρούμενον ἡμισεληνοειδὲς σταφύλωμα. Τὰ σταφυλώματα παρουσιάζονται ὑπὸ μορφὴν λευκωπῆς μηνοειδοῦς πλακὸς περιοριζομένης ἀπὸ μελανῆς παρυφῆς. Τὸ λευκωπὸν χρῶμα αὐτῶν ὀφείλεται εἰς τὸν σκληρόν, ὅστις διαφαίνεται ὄπισθεν τοῦ ἀτροφήσαντος χοριοειδοῦς, ἡ δὲ μελανὴ παρυφὴ ἀποτελεῖται ἀπὸ συμπύκνωσιν τῶν μελαγχρωστικῶν κυττάρων τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς. Κατὰ τὰς μικρὰς μυωπίας τὸ σταφύλωμα εἶναι ἐλάχιστον ἢ καὶ ἐλλείπει παντελῶς (μυωπία ἀξονική). Ὅσον ὅμως ἡ μυωπία εἶναι μεγαλυτέρα, τόσον καὶ τὸ σταφύλωμα εἶναι ἐκτενέστερον, δυνάμενον νὰ κυκλώσῃ τὴν θηλήν, νὰ φθάσῃ μέχρι τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος καὶ νὰ καταλάβῃ αὐτήν, καθὼς καὶ ὅλον τὸ ὀπίσθιον τμῆμα τοῦ βολβοῦ (μυωπία ὑψηλή, προϊοῦσα, κακοήθης). Τέλος κατὰ τὰς μεγάλας μυωπίας παρατηροῦνται θολερότητες τοῦ ὑαλοειδοῦς, καταρράκται, νυκταλωπίαι, ἀποκολλήσεις τοῦ ἀμφιβληστροειδοῦς καὶ μάλιστα ὅταν ὑπάρχουν περιφερικαὶ ἀλλοιώσεις αὐτοῦ.

***Διάγνωσις.*** α') *Διὰ τῆς ὀφθαλμοσκοπίας.* Ἡ τελικὴ καὶ ἐπιστημονικὴ διάγνωσις τῆς μυωπίας γίνεται διὰ τῆς ὀφθαλμοσκοπικῆς ἐξετάσεως καὶ δὴ διὰ τῆς πιστοποιήσεως τοῦ μηνοειδοῦς σταφυλώματος. Δυνάμεθα μάλιστα νὰ καθορίσωμεν καὶ τὸν βαθμὸν τῆς μυωπίας, ἐξετάζοντες διὰ τοῦ διαθλαστικοῦ ὀφθαλμοσκοπίου καὶ δι' ὀρθοῦ εἰδώλου. Καθιερώθη νὰ λέγεται μικρὰ πᾶσα μέχρι —3 διοπτριῶν μυωπία, μετρία μέχρι —6 διοπτριῶν καὶ μεγάλη, ὅταν ἡ μυωπία ὑπερβαίνῃ τὰς —6 διοπτρίας. Παρετηρήθησαν μυωπίαι μέχρι —27 καὶ —40 διοπτριῶν.

β') *Διὰ τῆς σκιασκοπίας.* Ἡ ἐξέτασις τῆς κόρης διὰ τῆς μεθόδου τοῦ ἐπιπέδου κατόπτρου (βλ. *σκιασκοπία*) μᾶς δίδει σκιὰν κινουμένην κατ' ἀντίθετον φορὰν πρὸς τὰς κινήσεις τοῦ κατόπτρου. Πρὸς ἀκριβῆ προσδιορισμὸν τοῦ βαθμοῦ τῆς μυωπίας θέτομεν ἔμπροσθεν τῶν ὀφθαλμῶν σειρὰν μυωπικῶν ὑέλων, ἕως ὅτου ἐπιτύχωμεν τὴν μεταστροφὴν τῆς σκιᾶς, ἥτις πλέον ἀκολουθεῖ τὴν αὐτὴν φορὰν μὲ τὰς κινήσεις τοῦ κατόπτρου. Προσθέτοντες μίαν διοπτρίαν εἰς τὸν ἀριθμὸν τῆς ὑέλου, μὲ τὴν ὁποίαν ἐπιτυγχάνεται τὸ ἀνωτέρω ἀποτέλεσμα, ἔχομεν τὸν βαθμὸν τῆς μυωπίας.

γ') *Διὰ τῶν ἀμφικοίλων ὑέλων.* Θέτομεν ἀλληλοδιαδόχως ἔμπροσθεν τοῦ ὀφθαλμοῦ σειρὰν ἀμφικοίλων φακῶν, μέχρις ὅτου ἐπιτύχωμεν εὐκρινῆ ἀπὸ μακρὰν ἀνάγνωσιν, τῶν ἐχόντων ὕψος ἑνὸς ἑκατοστομέτρου γραμμάτων τοῦ ὀπτοτύπου. Ὁ ἀριθμὸς τοῦ τελευταίου φακοῦ μᾶς δίδει καὶ τὸν βαθμὸν τῆς μυωπίας. Κατὰ τὰς μεγάλας μυωπίας, ὁ βαθμὸς αὐτῶν εἶναι πάντοτε μικρότερος τοῦ ἀριθμοῦ τοῦ ἀμφικοίλου φακοῦ μὲ τὸν ὁποῖον ἐπιτυγχάνεται ἡ τελειοτέρα ὅρασις. Ἐάν, παραδείγματος χάριν, ὁ φακὸς εἶναι —20 διοπτριῶν, ἡ μυωπία θὰ εἶναι —15 διοπτριῶν.

***Θεραπεία.*** Ἀπὸ ἀνατομοπαθολογικῆς ἀπόψεως ἡ μυωπία εἶναι *νόσος* ἀνίατος. Ὅταν ὅμως λάβωμεν ὡς βάσιν τὴν φυσικοοπτικὴν ἔννοιαν τῆς μυωπίας, τότε καὶ ἡ θεραπεία αὐτῆς συνταυτίζεται μὲ τὴν διαπλαστικὴν διόρθωσιν τοῦ μυωπικοῦ ὀφθαλμοῦ. Ἡ μυωπία, ὅπως εἴπομεν, διορθοῦται, δυνάμεθα δηλαδὴ τῇ ἀρωγῇ τῶν διόπτρων νὰ ἐπιτύχωμεν βελτίωσιν τῆς ὀξύτητος τῆς ὁράσεως. Καὶ διὰ μὲν τὴν ἐκ τοῦ πλησίον ὅρασιν ἀναγράφομεν τὸν ἀσθενέστερον φακόν, διὰ τοῦ ὁποίου ἐπιτυγχάνεται ἡ εὐκρινὴς ἀνάγνωσις εἰς ἀπόστασιν 35 ἑκατοστομέτρων, διὰ δὲ τὴν διὰ μακρὰν ὅρασιν, ἐπίσης τὸν ἀσθενέστερον φακόν, διὰ τοῦ ὁποίου ὁ μύωψ κατορθώνει νὰ ἴδῃ καὶ ἐξ ἀποστάσεως 5 μέτρων τὰ ἔχοντα ὕψος ἑνὸς ἑκατοστομέτρου στοιχεῖα τῶν ὀπτοτύπων.

Ὅταν ὑπάρχουσι μεγάλαι ἀλλοιώσεις τοῦ βυθοῦ καὶ δὴ τῆς ὠχρᾶς κηλῖδος, τότε ἡ διὰ τῶν ὑέλων διόρθωσις τῆς μυωπίας δὲν εἶναι διόλου ἱκανοποιητική.

***Προφύλαξις.*** Αὕτη συνίσταται εἰς τὸ νὰ ἐμποδίσῃ τις τὴν αὔξησιν τοῦ βαθμοῦ τῆς μυωπίας, ἐπιτυγχάνεται δέ, ὅταν ὁ μύωψ φέρῃ κατάλληλα διόπτρα διὰ μακρὰν καὶ ἐν ἀνάγκῃ καὶ διὰ πλησίον (ὅταν παρουσιάζῃ μυωπίαν ἀνωτέραν τῶν —2 διοπτριῶν μὲ μικρὸν σταφύλωμα πέριξ τῆς θηλῆς). Ἐκτὸς τῶν ὑέλων, ὅταν ὁ μύωψ γράφῃ ἢ

Digitized by Google

ἀναγινώσκη, πρέπει νὰ κρατῇ τὴν κεφαλὴν καὶ τὸν κορμὸν αὐτοῦ εὐθέως ἐν σχέσει μὲ τὸ βιβλίον ἢ γραπτόν, ὅπερ πάλιν δέον νὰ εὑρίσκεται εἰς ἀπόστασιν 35 ἑκατοστομέτρων ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν του. Τὸ μέγεθος τῶν γραμμάτων, ἅτινα ὁ μύωψ ἀναγινώσκει, πρέπει νὰ εἶναι ὄχι μικρότερον τῶν 2 χιλιοστομέτρων, τὸ δὲ πάχος αὐτῶν ὄχι λεπτότερον τοῦ τετάρτου τοῦ χιλιοστομέτρου. Ἐκτὸς τῶν ἀνωτέρω, τὸ φῶς πρέπει πάντοτε νὰ εἶναι ἀρκετόν, οὕτως ὥστε νὰ μὴ ἀναγκάζεται ὁ μύωψ νὰ πλησιάζῃ πρὸς τὸ βιβλίον ἢ γραπτὸν αὐτοῦ. Αἱ ὡς ἄνω προφυλάξεις, ἀκολουθούμεναι κατὰ γράμμα, εἶναι δυνατὸν νὰ ἐμποδίσουν τὴν αὔξησιν τῶν μικρῶν, τῶν μετρίων, ἐνίοτε δὲ καὶ τῶν μεγάλων μυωπιῶν, αἵτινες εἶναι δυνατὸν νὰ σταθεροποιηθοῦν εἰς ὡρισμένον βαθμόν, ὅταν μάλιστα τὸ ἄτομον διέλθῃ τὴν ἡλικίαν τῶν 22 ἐτῶν.

Τὰ ἀνωτέρω διδόμενα ἐν τούτοις δὲν εἶναι καὶ θεμελιώδη, διότι γνωρίζομεν ὅτι ὑπάρχουν μυωπίαι αἵτινες ἀενάως αὐξάνουσι, χωρὶς ποτὲ οἱ παρουσιάζοντες αὐτὰς ἀσθενεῖς νὰ κάμουν κατάχρησιν ἀναγνώσεως ἢ οἱασδήποτε ἐκ τοῦ πλησίον ἐργασίας (κακοήθης προϊοῦσα μυωπία).

Εἴπομεν ἤδη ὅτι ὁ μυωπικὸς βολβὸς κατὰ κανόνα εἶναι ἐπιμηκέστερος τῶν 24 χιλιοστομέτρων καὶ ὅτι ἡ ἐπιμήκυνσις αὕτη ἑδράζει κατὰ τὸ ὀπίσθιον αὐτοῦ τμῆμα. Ἐνδεχόμενον ὅμως ἡ ἐπιμήκυνσις νὰ συμβῇ καὶ κατὰ τὸν πρόσθιον πόλον τοῦ ὀφθαλμοῦ, ὅταν αὐξηθῇ ἡ κυρτότης τοῦ κερατοειδοῦς, ὅπως εἰς τὸν κερατόκωνον καὶ τὴν κερατεκτασίαν. Ἄλλοτε ὁ κερατοειδὴς δὲν ὑπερκυρτοῦται, ἀλλ' αὐξάνει ἡ διαθλαστικὴ ἀξία ἢ ἡ πυκνότης τοῦ φακοῦ (ἀρχόμενος καταρράκτης), ἄλλοτε δὲ ὁ φακὸς παρουσιάζει κῶνον ἢ μετατοπίζεται πρὸς τὰ ἐμπρός. Εἰς τὰς τοιαύτας καταστάσεις, αἵτινες καλοῦνται ψευδομυωπίαι, ἢ πλαστικαὶ μυωπίαι, ἡ δι' ὑέλων διόρθωσις εἶναι συνήθως ἀνεπαρκεστάτη.

Τέλος σημειοῦμεν ὅτι πρὸς θεραπείαν τῶν μεγάλων μυωπιῶν (ἄνω τῶν —13 διοπτριῶν) προὐτάθη καὶ συχνάκις ἐξετελέσθη ἡ ἀφαίρεσις τοῦ φακοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Γαληνὸς* (Kühn. XIX 436). *Ὀρειβάσιος* «Σύνοψις» (τ. ν. κεφ. νδ' σελ. 457). *Ἀριστοτέλης* «Προβλήματα ὅσα περὶ ὀφθαλμοὺς» (Tauchinitianae, Sectio 31, σελ. 278 πρόβλημα 8, σελ. 280 πρόβλ. 15.16, σελ. 282 πρόβλ. 26). *Ἀλέξανδρος Ἀφροδισιεὺς* (Ideler, t. I, σ. 23, πρόβλ. 74). *Παῦλος Αἰγινήτης* (Aldus, βιβλ. III, σ. 36). *Ἀέτιος* (Aldus, βιβλ. VII, κεφ. μξ', σ. 132). *Ἀκτουάριος* (Ideler, t. II, σ. 449). *Druaul-Dufesco* (Annal. d' ocul. 1922, p. 321, 495, 709). *Von Ammon* (ἐν Annal. d' ocul. 1859, t. 42, p. 136). *Motais* (ἐν Bulletin Médical 1899, Juin 12), *Hunt* (ἐν New York Medical journal, 1883, Mars). *A. Cohn* (ἐν Annal. d' ocul, 1881, t. 85, p. 188). *Nuel* (ἐν Archives d' ophtalmologie, 1891, p. 56). Α. ΓΑΒΡΙΗΛΙΔΗΣ

**μυωπίδαι** (οἱ) (Myopidae) *[Ζωολ.]*. Οἰκογένεια ἐντόμων διπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *βραχυελύτρων*, περιλαμβάνουσα ἀρκετὰ γένη, ὧν ἀξιολογώτερον εἶναι ἡ *μυώπη* (βλ. λ.) Δ. Ν. Π.

**μυωπικός**,—*ή*,—*όν*· ὁ πάσχων μυωπίαν (καὶ ἐπὶ ἀνθρώπου καὶ ἐπὶ ὀφθαλμοῦ).

**μύωπος** (ὁ) (Myopus) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων διπτέρων τῆς οἰκογενείας τῶν *κωνωπιδῶν*, περιλαμβάνον εἴδη τινὰ κωνώπων ὁμοιάζοντα καταπληκτικῶς πρὸς τὰς σφῆκας καὶ ἐνδιαιτώμενα ἐπὶ τῶν ἀνθέων. Ἀπαντῶσι πανταχοῦ σχεδὸν τῆς Εὐρώπης. Δ. Ν. Π.

**μύωψ**,—ωπος (ὁ)· ὁ μύων, ὁ καμμύων τοὺς ὀφθαλμούς, ὁ μὴ βλέπων μακράν, κοιν. *κοντόφθαλμος*.

**Μὼ** (Meaux) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ Σηκουάνα-Μάρνη, κειμένη ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ Μάρνη, 50 χλμ. πρὸς ΒΒΑ. τῆς πόλεως Μελέν. Ἔχει ὡραίαν μητρόπολιν (ΙΒ'—ΙΔ' αἰῶνος) καὶ εἶναι ἕδρα ἐπισκοπῆς, τῆς ὁποίας τὸν τίτλον ἔφερε μεταξὺ ἄλλων καὶ ὁ πολὺς Βοσσουέτος, ἀποκληθεὶς «ὁ ἀετὸς τοῦ Μώ». Λατομεῖα, τυροκομεῖα, ἀλευροβιομηχανία. Κάτ. 13.000. Ἡ Μὼ ἐπολιορκήθη ἀνεπιτυχῶς τῷ 1520 ὑπὸ τῶν Ἄγγλων, κατὰ δὲ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον, καθ' ὃν ὑπέστη πολλὰς ζημίας, ἦτο ἡ πλησιεστέρα πρὸς τοὺς Παρισίους (45 χλμ.) πόλις, μέχρι τῆς ὁποίας ἔφθασαν οἱ Γερμανοὶ διαρκούσης τῆς μεγάλης ἐναντίον τῆς Γαλλικῆς πρωτευούσης προελάσεως των. Κατείχετο ὑπὸ τῶν Γερμανῶν ἐπ' ὀλίγας μόνον ὥρας, μεταξὺ τῆς 6 καὶ 7 Σεπτεμβρίου 1914. Χ. Δ.

**Μωὰβ** *[Βιβλ.]*. Υἱὸς τοῦ Λὼτ ἐκ τῆς πρεσβυτέρας αὐτοῦ θυγατρός, γενόμενος γενάρχης τῶν *Μωαβιτῶν* (Γέν. ιθ', 37).

**Μωὰβ** *[Γεωγρ.]*. Τμῆμα τῆς Ὑπεριορδανίας ἀνατολικῶς τῆς Νεκρᾶς θαλάσσης καὶ τοῦ κάτω Ἰορδάνου. Ἡ ἔκτασίς του δὲν ἦτο ἡ αὐτὴ πάντοτε ἐν τῇ ἀρχαιότητι, ἀλλὰ διέφερεν ἀναλόγως τῆς πολιτικῆς ἐπεκτάσεως ἢ μειώσεως τῶν Μωαβιτῶν. Ἐν τῇ Γραφῇ περιλαμβάνεται ὡς «Πεδίον Μωὰβ» τὸ κατέναντι τῆς Ἰεριχοῦς καὶ ἐκεῖθεν τοῦ Ἰορδάνου τμῆμα τῆς κοιλάδος Γώρ, τὸ περικλειόμενον ὑπὸ τῶν βραχωδῶν ὀρέων Μωάβ, ὧν μία κορυφὴ εἶναι τὸ Νεβώ, ὅπου ἀπέθανε ὁ Μωϋσῆς. Τὸ ὑψηλὸν ὀροπέδιον τὸ ἐκτεινόμενον πρὸς Α. διατέμνεται ἀπὸ πλουσίας κοιλάδας καὶ γόνιμα ὑψώματα, ἀρδευόμενον ὑπὸ τοῦ Ἀρνών, τοῦ Σερὲτ καὶ ἄλλων μικροτέρων. Σῖτος, ἄμπελοι καὶ ὀπωροφόρα δένδρα ηὐδοκίμουν ἐν τῇ ἀρχαιότητι καθὼς καὶ ἡ κτηνοτροφία. Πρωτεύουσαν εἶχε τὴν *Ἂρ-Μωὰβ* (*Ἀρεόπολις*) ἢ *Ῥαββὰθ-Μωάβ* (=ἕδραν τοῦ Μωὰβ) καὶ τὴν *Κὶρ-Μωὰβ* τὸ σημερινὸν *Κερχέτ*, φρούριον ὀχυρώτατον, διατηροῦν καὶ σήμερον τείχη καὶ πύργους. Εἰς τοῦτο ἐξωρίζοντο οἱ Αἰγύπτιοι πρίγκιπες καὶ σουλτᾶνοι ἐπὶ τῆς ἀραβικῆς κατοχῆς καὶ τῶν Μαμελούκων. Γ. Λ. Α.

**Μωαβίας Α'**. Πρῶτος Ἄραψ χαλίφης τῆς ἐν Δαμασκῷ κυβερνησάσης δυναστείας τῶν Ὀμεϊαδῶν (Ὀμαγιαδῶν), υἱὸς τοῦ ἐκ τῶν ἰσχυόντων ἐν Μέκκᾳ μελῶν τῆς οἰκογενείας τῶν Κορεϊσιτῶν Ἄμπου-Σοφιάν, ἐγγόνου τοῦ Ὀμάϊα (ἐξ οὗ καὶ τὸ ὄνομα Ὀμεϊάδαι). Τόσον ὁ πατὴρ ὅσον καὶ ἡ μήτηρ τοῦ Μωαβία ἐπολέμησαν κατ' ἀρχὰς λυσσωδῶς τὸν Μωάμεθ καὶ τὰς θρησκευτικὰς ἰδέας του· ὅταν ὅμως ὁ ἀπόστολος τῆς νέας θρησκείας νικήσας ἐκυρίευσε τὴν Μέκκαν, ἠσπάσθησαν μεθ' ὁλοκλήρου τῆς οἰκογενείας των τὸ μωαμεθανικὸν θρήσκευμα. Ὁ Μωαβίας ἰσχυρίσθη ἐξ ὑστέρων, ὅτι αὐτὸς εἶχεν ἤδη δεχθῆ τὸν Ἰσλαμισμὸν ἐν τῷ κρυπτῷ, τηρήσας τοῦτο μυστικὸν καὶ ἀποκαλυφθεὶς μόνον ἀφοῦ προσῆλθεν εἰς αὐτὸ καὶ ὁ πατήρ του. Ἴσως διὰ τοῦτο ὁ Μωάμεθ προσέλαβε τὸν νεαρὸν Μωαβίαν ὡς γραμματέα του. Ὅτε δὲ ὁ χαλίφης Ἄμπου-Μπὲκρ ἀπέστειλε στρατὸν πρὸς κατάκτησιν τῆς Συρίας, ὁ Μωαβίας διωρίσθη ὑπαρχηγὸς ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ πρεσβυτέρου ἀδελφοῦ του Γεζίτ. Τῷ 639 διωρίσθη ὑπὸ τοῦ χαλίφου Ὀμὰρ διοικητὴς Δαμασκοῦ καὶ Παλαιστίνης, εἰς τὰς ἐπαρχίας δὲ ταύτας ὁ χαλίφης Ὀθμὰν (Ὀσμὰν) προσέθεσε τὴν Βόρειον Συρίαν καὶ τὴν Μεσοποταμίαν. Εὐθὺς κατόπιν ἀνετέθη εἰς τὸν Μωαβίαν ἡ ἀρχηγία τῶν πολεμικῶν δυνάμεων τῶν Ἀράβων εἰς τὸν κατὰ τῶν Βυζαντινῶν πόλεμον. Ὁ Μωαβίας ἐξώπλισε τότε τὸν πρῶτον ἀραβικὸν πολεμικὸν στόλον καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν κατὰ τῆς Κύπρου. Οἱ Ἄραβες ἔμειναν εἰς τὰ παράλια τῆς νήσου δύο ἔτη λεηλατοῦντες πόλεις καὶ χωρία. Ἐγκατεστάθησαν εἰς τὴν Κωνσταντίαν καὶ τὴν Σαλαμῖνα, θὰ ἔμενον δὲ ἐκεῖ πολὺν καιρὸν ἀκόμη, ἂν μὴ ἔφθανεν ἡ εἴδησις ὅτι ὁ κουβικουλάριος Κακόριζος ἤρχετο μὲ μέγαν στόλον καὶ στρατόν, ὅπως ἐλευθερώσῃ τὴν νῆσον. Συγχρόνως ὁ Μωαβίας ἐπεχείρησεν ἀνεπιτυχεῖς ἐπιδρομὰς κατὰ τῆς Ἰσαυρίας καὶ τῆς Ἀρμενίας. Ἐνώπιον τῆς τοιαύτης ἐξαπλώσεως τῶν ἀραβικῶν ἐπιδρομῶν ὁ αὐτοκράτωρ τοῦ Βυζαντίου Κώνστας ὁ Β' ἀπεφάσισε νὰ στείλῃ εἰς Δαμασκὸν πρεσβείαν, ὅπως ζητήσῃ διετῆ ἀνακωχήν, προτείνων νὰ πληρώνῃ φόρον καὶ νὰ δώσῃ ὅμηρον. Οἱ Ἄραβες ἐδέχθησαν τὰς προτάσεις ταύτας, ἀλλὰ μόλις παρῆλθον τὰ δύο ἔτη, ἔστειλαν στόλον κατὰ τῆς Ῥόδου. Τότε ἀπεκόμισαν καὶ τὸν ἐπὶ τῆς παραλίας τοῦ λιμένος κατακείμενον Κολοσσὸν τῆς Ῥόδου, τοῦ ὁποίου φορτώσαντες τὰ τεμάχια ἐπὶ 900 καμήλων, ὡς λέγει ὁ Θεοφάνης, ἐπώλησαν ὡς ὀρείχαλκον εἰς ἕνα Ἰουδαῖον μεταπράτην. Ἐκ Ῥόδου ὁ ἀραβικὸς στόλος πλέων πρὸς Β. διῆλθε τὸ στενὸν τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ ἔφθασε μέχρι τῆς Χαλκηδόνος (Καδικιοϊ), ὅπου ὅμως τὸ μεγαλύτερον αὐτοῦ μέρος κατεποντίσθη ὑπὸ φοβερᾶς θαλασσοταραχῆς (653), ὀλίγα δὲ μόνον πλοῖα κατώρθωσαν νὰ ἐπανέλθουν εἰς Συρίαν. Μετὰ δύο ἔτη (655) ὁ Μωαβίας ἐξώπλισε μὲ μεγάλην μυστικότητα ἰσχυρὸν στόλον, ἐνῷ ὁ ἴδιος ἐπεχείρει ἐπιδρομὰς κατὰ τῆς Καππαδοκίας, ἀποκρύπτων τὰ πραγματικά του σχέδια. Ὁ Κώνστας ὅμως, πληροφορηθεὶς τὰ περὶ τοῦ στόλου χάρις εἰς δύο Χριστιανοὺς αἰχμαλώτους, δραπετεύσαντας ἐκ Δαμασκοῦ, παρεσκεύασε καὶ αὐτὸς μεγάλην ναυτικὴν δύναμιν καὶ τεθεὶς ὁ ἴδιος ἐπὶ κεφαλῆς ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν τῶν Ἀράβων. Οἱ δύο στόλοι συνηντήθησαν εἰς τὰ παράλια τῆς Λυκίας, ὅπου συνεκροτήθη μεγάλη ναυμαχία, γνωστὴ ἐν τῇ ἀραβικῇ ἱστορίᾳ ὡς «ναυμαχία τῶν ἱστῶν», ὡς ἐκ τοῦ πλήθους τῶν συμμετασχόντων πλοίων. Ναύαρχος τῶν Ἀράβων ἦτο ὁ ἐξωμότης Χριστιανὸς Ἀμπουλαμπάρ. Ὁ Βυζαντινὸς στόλος ἡττήθη κατὰ κράτος, κυρίως, διότι κατὰ τὴν κρίσιμον στιγμὴν ὁ αὐτοκράτωρ ἐγκαταλείψας τὴν ναυαρχίδα ἔφυγε διὰ πλοιαρίου εἰς Κωνσταντινούπολιν.

Ἡ ἐπιτυχία αὕτη τῶν Ἀράβων θὰ εἶχεν ἴσως καὶ ἄλλας συνεπείας εἰς βάρος τοῦ Βυζαντινοῦ κράτους, ἂν μὴ ὁ Μωαβίας εἶχε ν' ἀντιμετωπίσῃ ἐσωτερικοὺς περισπασμούς, προκαλουμένους ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν τοῦ ἀνεψιοῦ τοῦ Μωάμεθ, Ἄλη, ὅστις κατώρθωσε ν' ἀνακηρυχθῇ χαλίφης, ἀφοῦ ἐπελθὼν μὲ μέγαν στρατὸν ἐκ Κούφας κατέλαβε τὴν Μεδίναν, ὅπου εἶς τῶν ὀπαδῶν του ἐφόνευσε τὸν Ὀθμάν. Ὁ Μωαβίας ἐκάλεσε τοὺς πιστοὺς εἰς ἀντίστασιν κατὰ τοῦ Ἄλη, ὅστις, βλέπων ὅτι ἡ Μέκκα ἦτο ἐναντίον του, μετέφερε τὴν ἕδραν του εἰς Κοῦφαν τῆς Μεσοποταμίας καὶ ἐκέρδισε τὴν πρώτην μεγάλην μάχην παρὰ τὴν Χορέϊμαν (656). Ἐπελθὼν κατόπιν κατὰ τοῦ Μωαβία συνῆψε μετ' αὐτοῦ μάχην τῇ 26 Ἰουλίου 657 ἐν Σιφίν, Ν. τῆς Ῥάκκα, παρὰ τὸν Εὐφράτην, διαρκέσασαν μετὰ διαφόρων διακοπῶν ἐπὶ δύο μῆνας, ἐν μέσῳ συζητήσεων καὶ διαπραγματεύσεων ἐπὶ τῇ βάσει τῶν ῥητῶν τοῦ Κορανίου, περὶ τοῦ ποῖος εἶναι ὁ νόμιμος χαλίφης καὶ ἂν ὁ Μωαβίας δικαιοῦται νὰ ζητήσῃ τὴν τιμωρίαν τῶν φονέων τοῦ Ὀθμάν. Ἐπὶ τέλους ἀνετέθη εἰς δύο διαιτητάς, ἕνα ἑκατέρωθεν, ἵνα κρίνωσιν ἂν ὁ Ἄλη εἶναι νόμιμος χαλίφης. Οἱ διαιτηταὶ ἀπεφάνθησαν ὅτι ἡ χαλιφεία τοῦ Ἄλη πρέπει νὰ ἀκυρωθῇ καὶ ν' ἀνατεθῇ εἰς συμβούλιον προκρίτων ἡ ἐκλογὴ τοῦ νέου χαλίφου. Ὁ Ἄλη ἠρνήθη νὰ συμμορφωθῇ πρὸς τὴν ἀπόφασιν ταύτην καὶ οὕτως ὁ Μωαβίας ἀπέβαινεν ὁ ὑπερασπιστὴς τῆς ἐννόμου τάξεως. Ἐπὶ τρία ἔτη ὁ ἀραβικὸς κόσμος ἔμεινε διῃρημένος καὶ ἐκτεθειμένος εἰς ἀλληλοσπαραγμόν, τόσον, ὥστε μία ὁμὰς Ἀράβων, οἱ λεγόμενοι Χαριτζῖται, ἀποσπασθέντες προηγουμένως εἰς ἰδιαιτέραν μωαμεθανικὴν αἵρεσιν, ἀπεφάσισαν νὰ φονεύσουν τοὺς ἀρχηγοὺς τῶν δύο ἀντιμαχομένων στρατοπέδων, ὅπως ἐξασφαλίσωσι τὴν εἰρήνην. Καὶ αἱ μὲν κατὰ τοῦ Μωαβία καὶ τοῦ Ἄμρ ἀπόπειραι ἀπέτυχον, μόνος δὲ ὁ Ἄλη ἐδολοφονήθη τῇ 22 Ἰανουαρίου 661 ἐν Κούφᾳ. Προηγουμένως ἀκόμη (τὸν Ἰούλιον 660) ὁ Μωαβίας ἀνεκήρυξεν ἑαυτὸν χαλίφην ἐν Ἱερουσαλήμ, ἀμέσως δὲ ὁλόκληρος ἡ Συρία, ἡ Αἴγυπτος καὶ ἡ Παλαιστίνη ἐδήλωσαν ὑποταγὴν εἰς αὐτόν. Ὁ Μωαβίας μετέφερε τότε τὴν πρωτεύουσάν του εἰς Δαμασκόν. Ἐνῷ ὅμως οἱ ὀπαδοὶ τοῦ Ἄλη παρεσκευάζοντο εἰς ἀντίστασιν, ἀνακηρύξαντες χαλίφην τὸν πρωτότοκον υἱὸν τοῦ Ἄλη Χασάν, οὗτος ἐπώλησεν ἀντὶ βαρυτάτου τιμήματος τὴν ὑποταγήν του εἰς τὸν Μωαβίαν καὶ ἀπεσύρθη μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του Χουσεὶν εἰς Μεδίναν. Οἱ στρατηγοὶ τοῦ Μωαβία ὑπέταξαν ἐντὸς ὀλίγου χρόνου τὴν Μεσοποταμίαν, τὴν Ἀραβίαν καὶ τὰς περσικὰς ἐπαρχίας. Τὸ θέρος τοῦ 661 ὁλόκληρος ὁ ἀραβικὸς κόσμος ἀνεγνώρισε χαλίφην τὸν Μωαβίαν. Οὗτος διενοήθη εὐθὺς κατόπιν νὰ πραγματοποιήσῃ τὸ μουσουλμανικὸν ὄνειρον τῆς κατακτήσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἥτις ἀναφέρεται εἰς τὸ Κοράνιον ὡς κάποια μεμακρυσμένη γῆ τῆς ἐπαγγελίας. Τὰ ἀραβικὰ στρατεύματα κατακλύσαντα τὴν Μικρὰν Ἀσίαν ἐνεφανίσθησαν πρὸ τῆς Χαλκηδόνος, ἀπέναντι τῆς πρωτευούσης τοῦ βυζαντινοῦ κράτους, ἐνῷ συγχρόνως ἄλλος ἀραβικὸς στρατὸς ἐξηπλοῦτο εἰς τὰ βόρεια τῆς Ἀφρικῆς μέχρι τοῦ Μαρόκκου. Αἱ ἀραβικαὶ πολεμικαὶ ἐπιχειρήσεις κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως διήρκεσαν ἑπτὰ ἔτη (673—679) διακοπτόμεναι τὸν χειμῶνα, καθ' ὃν οἱ Ἄραβες ἀπεσύροντο εἰς Κύζικον. Οἱ Βυζαντινοὶ ἀνθίσταντο ἡρωϊκῶς, προξενοῦντες εἰς τοὺς Ἄραβας μεγάλας ἀπωλείας χάρις εἰς τὸ ὑγρὸν πῦρ, ἐνῷ συγχρόνως νόσοι ἐπιδημικαί, ἡ εὐλογία καὶ ἡ πανώλης, ἐθέριζον τοὺς Ἄραβας. Ἐπὶ τέλους ὁ Μωαβίας ἔστειλε κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ τὸν υἱόν του Γεζίτ. Ἀλλ' ὅλαι αἱ προσπάθειαι τῶν Ἀράβων εἰς οὐδὲν ἴσχυσαν. Ὁ ἀποχωρῶν ἀραβικὸς στρατὸς ἐδεκατίσθη καθ' ὁδὸν ἐκ τῶν ἐπιθέσεων τῶν Βυζαντινῶν, ὁ δὲ ἀραβικὸς στόλος φέρων μέρος τοῦ στρατοῦ κατεποντίσθη παρὰ τὸ Σύλαιον ἀκρωτήριον. Ὁ Μωαβίας, εὑρισκόμενος εἰς δύσκολον θέσιν, ὡς ἐκ τῶν εἰς Συρίαν καὶ Παλαιστίνην, καθ' ὑποκίνησιν τῶν Βυζαντινῶν, εἰσβαλόντων Μαρδαϊτῶν, ἐζήτησεν εἰρήνην, τὴν ὁποίαν ὁ αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος ὁ Πωγωνᾶτος ἐδέχθη καὶ ἀπέστειλεν εἰς Δαμασκὸν τὸν πατρίκιον Ἰωάννην Πιτζιγαύδην, ὅστις, γενόμενος δεκτὸς ὑπὸ τοῦ Μωαβίου μετὰ μεγάλων τιμῶν, ὑπηγόρευσε τοὺς ὅρους τῆς εἰρήνης. Ὁ αὐτοκράτωρ παρεχώρει εἰς τὸν χαλίφην τριακονταετῆ ἀνακωχὴν ἔναντι πληρωμῆς τριῶν χιλιάδων «χρυσῶν» κατ' ἔτος καὶ πεντήκοντα ἀραβικῶν ἵππων καλοῦ γένους, ἐνῷ συγχρόνως οἱ Ἄραβες θὰ ἀπέδιδον καὶ 3.000 Χριστιανοὺς αἰχμαλώτους.

Τοιαύτη ἦτο ἡ μετὰ τὴν μακρὰν κατὰ τοῦ Βυζαντίου ἐκστρατείαν ἐξασθένησις τοῦ ἀραβικοῦ κράτους, ὥστε διεκόπη πᾶσα πολεμικὴ αὐτοῦ δρᾶσις, ἐν μέσῳ δὲ τῆς εἰρήνης ταύτης καὶ ὑπὸ τὴν ἀπογοήτευσιν, τὴν ὁποίαν ἐπροξένησεν εἰς αὐτὸν ἡ ἀποτυχία τῆς κατὰ τοῦ Βυζαντίου ἐκστρατείας ὁ Μωαβίας ἀπέθανε τῷ 680 ἐν Δαμασκῷ, εἰς ἡλικίαν 75 ἐτῶν. Οἱ ἀντίπαλοι τοῦ υἱοῦ καὶ διαδόχου του Γεζὶτ ἰσχυρίσθησαν, ὅτι ὁ Μωαβίας ἦτο οἰνοπότης, ἔκδοτος εἰς τὰς ἡδονὰς καὶ μὴ τηρῶν τὰς θρησκευτικὰς διατάξεις. Γεγονὸς εἶναι, ὅτι καθ' ὅλην τὴν διάρκειαν τῆς βασιλείας του ὁ βίος ἐν Δαμασκῷ καὶ Συρίᾳ ἦτο αὐστηρός, ἀντιθέτως πρὸς τὴν ἐν τῇ τότε πρωτευούσῃ τῆς Ἀραβίας τῇ Μεδίνᾳ, ἐπικρατοῦσαν ἔκλυσιν τῶν ἠθῶν. Εἶναι ἐπίσης γεγονός, ὅτι παραλαβὼν τὸ ἀραβικὸν κράτος σχεδὸν ἐν διαλύσει, ἕρμαιον τῆς θρησκευτικῆς ἀναρχίας, διῃρημένον εἰς δύο ἀντίθετα στρατόπεδα, ἀφῆκεν αὐτὸ μὲ καλὴν ὀργάνωσιν, αὐστηρὰν δικαιοσύνην καὶ διοίκησιν καλῶς λειτουργοῦσαν, χάρις εἰς τὴν χρησιμοποίησιν τοῦ βυζαντινοῦ κυβερνητικοῦ προσωπικοῦ, τὸ ὁποῖον εὗρεν ἐν Συρίᾳ. Δὲν ἐδίστασε ν' ἀναθέσῃ ὕψιστα τοῦ κράτους ἀξιώματα εἰς Χριστιανούς, μεταξὺ δὲ ἄλλων τὸ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Οἰκονομικῶν εἰς τὸν πατέρα τοῦ Ἁγίου Ἰωάννου τοῦ Δαμασκηνοῦ, τὸν Σαρτζοὺν (Σέργιον). Ἀκόμη καὶ ἡ μᾶλλον εὐνοουμένη σύζυγος τοῦ Μωαβίου, ἡ Μαϊσούν, μήτηρ τοῦ διαδόχου Γεζίτ, ἦτο Χριστιανή, διατηρήσασα

Digitized by Google

τὴν θρησκείαν της καὶ μετὰ τὸν γάμον της. Ἐν γένει δὲ ὁ Μωαβίας θεωρεῖται ὡς ἀνὴρ προοδευτικώτατος, εἰσαγαγὼν τοὺς Ἄραβας εἰς τὴν ὁδὸν τῆς προόδου καὶ τοῦ πολιτισμοῦ. Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

— **Μωαβίας Β΄.** Τρίτος χαλίφης τῆς δυναστείας τῶν Ὀμεϊαδῶν, υἱὸς τοῦ Γεζὶτ καὶ ἔγγονος Μωαβίου τοῦ Α΄. Διεδέχθη τὸν πατέρα του τὸν Νοέμβριον τοῦ 683, εἰς ἡλικίαν εἴκοσι ἐτῶν. Ἀνάπηρος καὶ ἀσθενικός, χαρακτῆρος ἀδυνάτου, δὲν εἶχε τὴν δύναμιν ν' ἀντιμετωπίσῃ τὴν ἀναρχίαν, ἥτις ἐπηκολούθησε τὸν θάνατον τοῦ πατρός του. Ἡ ὅλη βασιλεία του διήρκεσε μόλις 40 ἡμέρας, διότι βλέπων τὴν ἀπελπιστικὴν κατάστασιν τοῦ κράτους, ἐκάλεσε τὸ συμβούλιον τῆς ἀντιβασιλείας καὶ ἀνεκοίνωσε τὴν παραίτησίν του. Ἀποσυρθείς, διήρχετο τὸν καιρόν του ἀναγινώσκων τὸ Κοράνιον. Ἦτο ὁ τελευταῖος ἡγεμὼν τοῦ πρεσβυτέρου κλάδου τῶν Ὀμεϊαδῶν. Ν. Μ.

**Μωαβῖται** (οἱ). Ἀπόγονοι τοῦ *Μωάβ*, υἱοῦ τοῦ Λώτ, ἐκ τῆς πρεσβυτέρας του θυγατρός, οἵτινες κατῴκησαν τὴν ἀπ' αὐτῶν κληθεῖσαν χώραν τοῦ *Μωάβ*, ἐξώσαντες τοὺς ἰθαγενεῖς Ὀμμίν. Βραδύτερον οἱ Ἀμορραῖοι ἀπώθησαν αὐτοὺς πρὸς Ν. μέχρι τοῦ Ἀρνῶνος, ὅστις ἀπετέλεσε τὸ βόρειον σύνορον τῆς χώρας των, ὥστε ὅταν ἦλθον οἱ Ἑβραῖοι ὑπὸ τὸν Μωϋσέα κατῴκουν τὴν σημερινὴν περιφέρειαν τοῦ Κεράκ, ἀνατολικῶς τῆς Νεκρᾶς θαλάσσης. Ὁ Μωϋσῆς ἐζήτησε παρ' αὐτῶν τὴν ἐλευθέραν διάβασιν διὰ τοῦ ἐδάφους των. Οἱ Μωαβῖται δὲν ἔφερον ἀντίρρησιν, ἀλλ' ὁ βασιλεύς των Βαλὰκ ἔφερεν ἀπὸ τὸν Εὐφράτην τὸν θεοφιλῆ προφήτην Βαλαὰμ διὰ νὰ τοὺς ἀφορίσῃ. Δυστυχῶς διὰ τοὺς Ἑβραίους ἡ ἀκόλαστος λατρεία τοῦ Μωαβίτου θεοῦ Βαὰλ-Φεὼρ καὶ τὰ θέλγητρα τῶν Μωαβιτίδων ἔφερον μεγαλυτέραν φθορὰν εἰς αὐτοὺς ἀπὸ μίαν μάχην. Ἑξήκοντα ἔτη μετὰ τὸν θάνατον Ἰησοῦ τοῦ Ναυῆ ὁ βασιλεὺς τῆς Μωὰβ Ἐγλώμ, συμμαχήσας μετὰ τῶν Ἀμμωνιτῶν καὶ Ἀμαλικιτῶν, ὑπέταξε τοὺς Ἑβραίους καὶ ἐκυριάρχησεν αὐτῶν ἐπὶ 18 ἔτη. Ἀλλ' ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ Ἀώδ, οἱ δὲ Ἑβραῖοι ἐπωφεληθέντες τῆς προξενηθείσης συγχύσεως, ἔσφαξαν δεκακισχιλίους Μωαβίτας. Ἔκτοτε δὲν ἀπαντῶμεν αὐτοὺς μέχρι τῶν ἡμερῶν τοῦ Σαούλ. Φαίνεται ὅμως, ὅτι περὶ τὰ τέλη τῆς περιόδου τῶν Κριτῶν, οἱ Μωαβῖται ἔζων ἐν ἁρμονίᾳ πρὸς τοὺς Ἑβραίους, διότι ἐκ τῆς ἱστορίας τῆς Ῥοὺθ πληροφορούμεθα, ὅτι, ἐπελθούσης πείνης ἐν Ἰουδαίᾳ, μετέβησαν Ἑβραῖοι εἰς Μωὰβ καὶ ἐνυμφεύθησαν ἰθαγενεῖς γυναῖκας. Ἐπὶ Σαοὺλ ὅμως τοὺς ἐπανευρίσκομεν μεταξὺ τῶν ἐχθρῶν τῶν Ἑβραίων. Ὁ Δαυῒδ τοὺς κατέστησε φόρου ὑποτελεῖς, κατὰ δὲ τὸ ἐπακολουθῆσαν τὸν θάνατον τοῦ Σολομῶντος σχίσμα Ἰουδαίων καὶ Ἰσραηλιτῶν ἀπέτινον τὸν φόρον τοῦτον εἰς κτήνη πρὸς τοὺς βασιλεῖς τοῦ Ἰσραήλ. Κατὰ τὸ βιβλίον τῶν «Χρονικῶν» οἱ Μωαβῖται συμμαχήσαντες μετὰ τῶν Ἐδωμιτῶν, ἐνήργησαν πόλεμον ἐπιθετικὸν κατὰ τοῦ Ἰουδαίου βασιλέως Ἰωσαφὰτ καὶ μετὰ 50 ἔτη κατὰ τοῦ Ἰωᾶ. Ὁ Ἠσαΐας, προφητεύων κατὰ τῶν Μωαβιτῶν, ὁμιλεῖ περὶ πολλῶν πόλεων, κειμένων μεταξὺ Ὑαββὼκ καὶ Ἀρνῶνος ἐπὶ τῶν ἐπικρατειῶν Γὰδ καὶ Ρουβήμ, ὡς μωαβιτικῶν. Βραδύτερον εὑρίσκομεν τοὺς Μωαβίτας συμμαχοῦντας μετὰ τῶν Ἀσσυρίων ἐναντίον τῶν Ἑβραίων. Ἐν τούτοις, ὅταν τὰ ἀσσυριακὰ στρατεύματα ἀπεχώρησαν ἐκ Παλαιστίνης, οἱ Μωαβῖται μετά τινων ἄλλων γειτονικῶν λαῶν ἐζήτησαν νὰ παρασύρουν τὸν Σεδεκίαν ν' ἀποστῇ τοῦ ὅρκου πίστεως, τὸν ὁποῖον εἶχε δώσει εἰς τὸν Ναβουχοδονόσορα. Ἔκτοτε δὲν γίνεται πλέον λόγος περὶ αὐτῶν, ἔκ τινος δὲ χωρίου τοῦ Δανιὴλ (ΙΑ΄, 41) φαίνεται ὅτι δὲν ἐκακούχησαν ἐπὶ τῶν Μακεδόνων, ὁ δὲ Ἰώσηπος τοὺς ἀναφέρει μεταξὺ τῶν Ἀράβων, τοὺς ὁποίους ὑπέταξεν ὁ Ἰουδαῖος βασιλεὺς Ἀλέξανδρος ὁ Ἰαννεύς. Περὶ τῆς πολιτικῆς καὶ θρησκευτικῆς τῶν Μωαβιτῶν ὀργανώσεως ἔχομεν ὀλίγας πληροφορίας. Εἶχον μοναρχικὸν πολίτευμα, φαίνεται δ' ὅτι καὶ μετὰ τὴν ὑποταγήν των εἰς τοὺς Ἑβραίους διετήρησαν τοὺς βασιλεῖς των. Ἐμετρίαζεν ὅμως τὴν δύναμιν τοῦ μονάρχου γερουσία ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῶν ἐπιφανῶν φατριῶν. Ἡ θρησκεία των ἦτο ἡδυπαθὴς φυσιολατρεία, ἀναφέρονται δὲ παρ' αὐτοῖς καὶ ἀνθρωποθυσίαι. Γ. Λ. Α.

**Μωάμεθ** (ἀραβ. *Μωχάμμετ*, τουρκ. *Μεχμέτ*). Σύνηθες τουρκικὸν καὶ ἀραβικὸν ὄνομα, ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ ἀρχηγοῦ τῆς μουσουλμανικῆς θρησκείας. Ἡ λέξις σημαίνει τὸν ἄξιον ἐπαίνου καὶ ἐξυμνήσεως. Οἱ Τοῦρκοι προφέρουσι *Μωχάμμετ* μόνον τὸν προφήτην, πάντας δὲ τοὺς λοιποὺς *Μεχμέτ*.

Ἑλληνιστὶ ἐπεκράτησε ν' ἀποδίδεται ὡς *Μωάμεθ* παρεκτὸς τοῦ προφήτου καὶ ὁ σουλτᾶνος Μωάμεθ Β΄ ὁ πορθητὴς τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Λεξικογραφικῶς ἐνταῦθα παρατίθενται *Μωάμεθ ὁ προφήτης* καὶ *Μωάμεθ Β΄ ὁ πορθητής*, πάντες δὲ οἱ ἄλλοι φέροντες τὸ ὄνομα τοῦτο εἰς τὰς λέξεις *Μεχμὲτ* καὶ *Μωχάμμετ*.

— **Μωάμεθ.** Ὁ προφήτης καὶ ἱδρυτὴς τῆς θρησκείας τοῦ Ἰσλαμισμοῦ, ἥτις ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ καλεῖται καὶ *Μωαμεθανισμός*. Ἐγεννήθη ἐν Μέκκᾳ τῆς Ἀραβίας τὴν 20ὴν Ἀπριλίου, κατ' ἄλλους μὲν τοῦ 567, κατ' ἄλλους δὲ τοῦ 569 ἢ 570 ἢ 571, καὶ ἀπέθανεν ἐν Μεδίνᾳ τῇ 7ῃ ἢ 8ῃ Ἰουνίου 632. Περὶ τῆς ζωῆς καὶ τοῦ ἔργου αὐτοῦ ἠσχολήθησαν πλεῖστοι ἱστορικοὶ ὅλων σχεδὸν τῶν ἐθνῶν καὶ ὅλων τῶν ἐποχῶν, ἡ δὲ περὶ αὐτοῦ βιβλιογραφία εἶναι πλουσιωτάτη καὶ ποικιλωτάτη. Παρὰ ταῦτα ὅμως, πολλὰ σημεῖα ἐκ τῆς ζωῆς αὐτοῦ δὲν εἶναι τελείως ἐξηκριβωμένα ἱστορικῶς, καθότι λόγῳ τῆς θρησκευτικῆς καὶ προφητικῆς αἴγλης μὲ τὴν ὁποίαν περιεβλήθη, παρεισέφρησαν εἰς τὰς βιογραφίας του, ἰδίως τῶν Ἀράβων ἱστορικῶν, πλεῖστοι θρῦλοι, ἐκ τῶν ἀναριθμήτων, οἵτινες ἐδημιουργήθησαν πέριξ αὐτοῦ, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου πολλοὶ τῶν Χριστιανῶν ἰδίως ἱστορικῶν διεστρέβλωσαν μειωτικῶς δι' αὐτὸν τὰ γεγονότα, ἐκ θρησκευτικοῦ ἀνταγωνισμοῦ.

Ὁ Μωάμεθ κατήγετο ἐκ πτωχῆς καὶ ταπεινῆς μᾶλλον οἰκογενείας, οἱ Ἄραβες ὅμως ἱστορικοὶ προσπαθοῦν νὰ ἀναγάγουν τὴν καταγωγήν του εἰς τὴν ἡρωϊκὴν καὶ ἔνδοξον οἰκογένειαν τῶν Κορεϊσιτῶν, ἡ ὁποία εἶχε πλουτίσει κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην σημαντικῶς καὶ εἶχε μεγάλην ἰσχὺν ἐν Μέκκᾳ, ὅπου εἶχεν ἀνατεθῆ εἰς αὐτὴν καὶ ἡ φύλαξις τοῦ ἱεροῦ προσκυνήματος τῆς *Καάβας*. Ὁ πατήρ του Ἀμπνταλλὰ ἦτο υἱὸς τοῦ Ἀμπντὲλ Μοτάλεμπ, υἱοῦ τοῦ Χάσιμ, ὃν οἱ Ἄραβες ἱστορικοὶ ἐμφανίζουν ὡς ἀρχηγέτην οἰκογενείας (τῶν Χασιμιτῶν) ἀποτελούσης κλάδον τῶν Κορεϊσιτῶν, εἰς τοὺς ὁποίους ἐπίσης ἀνάγουν τὴν καταγωγὴν καὶ τῆς μητρὸς τοῦ Μωάμεθ Ἀμινέ.

*Μωάμεθ, κατὰ παλαιὸν ἔντυπον.*

Ἡ γέννησίς του ἐσημειώθη, κατὰ τὰς μουσουλμανικὰς παραδόσεις, διὰ γεγονότων θαυμαστῶν. Περὶ τῆς βρεφικῆς δὲ καὶ παιδικῆς ἡλικίας αὐτοῦ δὲν ὑπάρχουν ἐξηκριβωμέναι πληροφορίαι, ἀλλὰ μόνον μῦθοι, δι' ὧν καταβάλλεται προσπάθεια νὰ καταδειχθῇ ὅτι πράγματι ἦτο προωρισμένον εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ἐκ Θεοῦ τὸ βρέφος ἐκεῖνο ν' ἀποβῇ ἄνθρωπος πανίσχυρος, ὁ ὁποῖος θὰ ἵδρυεν ἀπέραντον κράτος καὶ θὰ ἐγίνετο ὁ ἀρχηγὸς νέας θρησκείας. Ὁ πατήρ του, ἀποθανὼν δύο μῆνας πρὸ τῆς γεννήσεως τοῦ Μωάμεθ, ἀφῆκεν εἰς αὐτὸν μόνον πέντε καμήλους, ὀλίγα πρόβατα καὶ μίαν δούλην ἐξ Αἰθιοπίας καλουμένην Μπαρακάτ. Ἐπειδὴ δὲ ἡ μήτηρ του Ἀμινέ, συνεπείᾳ τῆς λύπης διὰ τὸν θάνατον τοῦ συζύγου της, εἶδε στειρεύουσαν τὴν πηγὴν τοῦ στήθους της, ἠναγκάσθη νὰ παραδώσῃ τὸ τέκνον της εἰς Βεδουΐνην τινά, τὴν Χαλιμὰ σύζυγον Σααδίτου ποιμένος, διὰ νὰ τὸ γαλουχήσῃ. Ἡ Χαλίμα ἀφηγήθη βραδύτερον περὶ τοῦ παιδίου πολλὰ θαυμαστά, ἐπέστρεψε δ' αὐτὸ μετ' οὐ πολὺ εἰς τὴν μητέρα του, διότι ἐφοβεῖτο τὰς ἐπισκέψεις τῶν πνευμάτων, μὲ τὰ ὁποῖα διετείνετο ὅτι τοῦτο εὑρίσκετο εἰς ἐπικοινωνίαν. Ὁ Μωάμεθ ἔμεινεν οὕτω μετὰ τῆς μητρός του μέχρι τοῦ ἕκτου ἔτους τῆς ἡλικίας του, ὅτε αὕτη τὸν παρέλαβε μεθ' ἑαυτῆς εἰς Μεδίναν, πρὸς ἐπίσκεψιν συγγενῶν της. Κατὰ τὴν ἐπιστροφὴν ἡ μήτηρ τοῦ Μωάμεθ ἀπέθανεν, ἡ δὲ πιστὴ δούλη Μπαρακὰτ ἀνέλαβεν ἔκτοτε τὴν φροντίδα τοῦ παιδίου, ὡς δευτέρα μήτηρ του, καὶ τὸ μετέφερεν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ πάππου του Ἀμπντὲλ Μοτάλεμπ, ὅπου ἔμεινε δύο ἔτη. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Ἀμπντὲλ Μοτάλεμπ ἀνέλαβε τὴν φροντίδα διὰ τὸν Μωάμεθ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Ἀμποῦ Τάλεμπ, ὁ ὁποῖος κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην εἶχεν ἀναλάβει τὴν φρούρησιν τῆς Καάβας. Θεωρεῖται πιθανὸν ὅτι ἡ ἀνατροφὴ ἧς ἔτυχεν ὁ Μωάμεθ ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ φρουροῦ τῆς Καάβας καὶ αἱ διάφοροι τελεταὶ εἰς τὰς ὁποίας παρίστατο ἐξήσκησαν ἐπίδρασιν ἐπὶ τοῦ πνεύματός του καὶ τὸν ἔκαμαν νὰ ἐνδιαφερθῇ διὰ τὰ θρησκευτικὰ ζητήματα. Καθ' ὅλα τὰ δεδομένα ἡ ἐκπαίδευσις ἧς ἔτυχεν οὗτος δὲν ἦτο καλυτέρα τῆς τῶν ἄλλων Ἀραβοπαίδων, δὲν ἐδιδάχθη δὲ οὔτε γραφήν, οὔτε ἀνάγνωσιν. Ἐξ ἄλλου ὅμως εἶναι βέβαιον ὅτι ὁ Μωάμεθ ἀπὸ παιδικῆς ἡλικίας ἦτο σοβαρός, ὀξύνους καὶ παρατηρητικός, μὲ γόνιμον καὶ τολμηρὰν φαντασίαν. Λόγῳ τῆς κατ' ἔτος συρροῆς προσκυνητῶν ἐν Μέκκᾳ, ὁ κάτοικος αὐτῆς ἠδύνατο ν' ἀποκτήσῃ ποικίλας γνώσεις, πράγματι δὲ φαίνεται ὅτι ὁ Μωάμεθ ἐπωφελήθη τοῦ πλεονεκτήματος τούτου καὶ ἀπέκτησε πολλὴν μάθησιν, ἣν καὶ διετήρησε χάρις εἰς τὴν ἰσχυρὰν μνήμην του. Εἰς ἡλικίαν δώδεκα ἐτῶν ἡ πνευματικὴ ἀνάπτυξίς του ἦτο ἐξαιρετική, εἶχε δὲ ἀφυπνισθῆ ἐν αὐτῷ τὸ φύσει ἐρευνητικόν του πνεῦμα. Διὰ νὰ κερδίζῃ τὰ πρὸς τὸ ζῆν ἦτο ἠγαγκασμένος κατ' ἀρχὰς νὰ καταγίνεται εἰς τὰ ποιμενικὰ ἔργα. Βραδύτερον ὅμως ἡ ἄφιξις καὶ ἡ ἀναχώρησις τῶν καραβανίων τῆς Συρίας καὶ τῆς Ὑεμένης, εἰς τὰ ὁποῖα μετεῖχεν ὁ θεῖός του Ἀμποῦ Τάλεμπ ἐξῆψε τὴν φαντασίαν του καὶ τὸν πόθον νὰ ἐπισκεφθῇ ξένας χώρας. Μίαν ἡμέραν ὁ θεῖός του, κατόπιν τῶν παρακλήσεών του, ἐπείσθη καὶ τὸν παρέλαβε μεθ' ἑαυτοῦ εἰς τὴν Συρίαν. Τὸ καραβάνιον, ἀφοῦ διῆλθεν ἐγγὺς τῆς χώρας τῶν Μωαβιτῶν καὶ τῶν Ἀμμωνιτῶν, ἔφθασεν εἰς Βόσραν, εἰς τὰ σύνορα τῆς Συρίας, ἐν τῇ χώρᾳ τῆς φυλῆς Μανασσῆ, πέραν τοῦ Ἰορδάνου. Ἡ Βόσρα (ἢ Βόστρη), πόλις τῶν Λευϊτῶν ἄλλοτε, κατῳκεῖτο τότε ὑπὸ τῶν Νεστοριανῶν Χριστιανῶν καὶ ἦτο ἐμπορικὸν κέντρον συχναζόμενον κατ' ἔτος ὑπὸ τῶν καραβανίων. Ἐκεῖ τὸ καραβάνιον ἐστάθμευσε καὶ κατεσκήνωσεν ἐγγὺς ἑνὸς μοναστηρίου Νεστοριανῶν, τοῦ ὁποίου οἱ μοναχοὶ ἐδείχθησαν φιλόξενοι πρὸς τὸν Ἀμποῦ Τάλεμπ καὶ τὸν ἀνεψιόν του.

Εἷς ἐκ τούτων ὀνόματι Σέργιος ἢ κατ' ἄλλους Μπαΐρας ἢ Βαΐρας, κατεπλάγη ἐκ τῆς πνευματικῆς ἀναπτύξεως τοῦ παιδίου καὶ τοῦ πρὸς μάθησιν πόθου του, συνωμίλησε δὲ κατ' ἐπανάληψιν μαζί του, ἰδίως διὰ ζητήματα θρησκευτικά, τὰ ὁποῖα πρὸ πάντων ἐνδιέφερον τὸν μικρὸν Μωάμεθ, καὶ ἐναντίον τῆς εἰδωλολατρείας, εἰς τὴν ὁποίαν οὗτος εἶχεν ἀνατραφῆ. Ὅταν ὁ Μωάμεθ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Μέκκαν, ἐφαίνετο λίαν ἐξημμένος καὶ ἐπηρεασμένος ἀπὸ τὰς διηγήσεις, τὰς ὁποίας εἶχεν ἀκούσει εἰς τὴν ἔρημον περὶ διαφόρων θαυμάτων, καὶ ἀπὸ τὰς συνομιλίας του εἰς τὸ μοναστήριον τῶν Νεστοριανῶν. Ἐφεξῆς ὁ Μωάμεθ ἐρρίφθη εἰς τὸν ἀγῶνα τῆς ζωῆς καὶ συνώδευε τοὺς θείους του εἰς διαφόρους ἀποστολάς. Εἰς ἡλικίαν 16 ἐτῶν ἠκολούθησε τὸν θεῖόν του Ζομπεῖρ εἰς Ὑεμένην καὶ κατόπιν ἐγένετο ὑπασπιστής του, ὅταν οὗτος ἀπεστάλη ἐπὶ κεφαλῆς σώματος Κορεϊσιτῶν πρὸς βοήθειαν τῶν Κενανιτῶν ἐναντίον τῆς φυλῆς Χαουαζάν. Βραδύτερον ἐταξίδευε καὶ μόνος εἰς Συρίαν, Ὑεμένην καὶ ἀλλαχοῦ ὡς ἀντιπρόσωπος διαφόρων ἐμπόρων εἰς καραβάνια καὶ ὡς ὁδηγὸς καραβανίων. Μετεῖχεν ἐξ ἄλλου τῶν πανηγύρεων, αἵτινες ἐν Ἀραβίᾳ δὲν ἦσαν μόνον ἐμπορικαὶ συγκεντρώσεις, ἀλλὰ καὶ σκηναὶ ποιητικῶν διαγωνισμῶν μεταξὺ τῶν φυλῶν. Κατὰ τὰς πανηγύρεις ταύτας ἐγίνοντο καὶ ἀφηγήσεις ἐκ τῶν λαϊκῶν παραδόσεων τῶν σχετικῶν μὲ τὰς διαφόρους θρησκείας, αἵτινες ἐπεκράτουν μεταξὺ τῶν Ἀράβων. Ἐκ τῶν πηγῶν τούτων ὁ Μωάμεθ ἤντλει βαθμηδὸν ποικίλας πληροφορίας περὶ τῶν θρησκειῶν καὶ τῶν δογμάτων, αἵτινες ἐχρησίμευσαν βραδύτερον εἰς αὐτὸν διὰ τὴν δημιουργίαν καὶ τὴν συστηματοποίησιν τῆς διδασκαλίας του.

Κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην ἔζη ἐν Μέκκᾳ χήρα τις, ὀνόματι Χαντίτζα ἢ Κατίτζα, ἐκ τῆς φυλῆς τῶν Κορεϊσιτῶν, τῆς ὁποίας ὁ δεύτερος σύζυγος, πλούσιος ἔμπορος, μόλις εἶχεν ἀποθάνει. Αὕτη, τῇ συστάσει τοῦ ἀνεψιοῦ της Χουζίμα, ὅστις ἐγνώριζε τὸν Μωάμεθ καὶ ἐξετίμησε τὴν ἐμπορικήν του ἱκανότητα καὶ ἀκεραιότητα, προσέλαβεν αὐτὸν ὡς διευθυντὴν τῶν ἐπιχειρήσεών της. Ὑπὸ τὴν ἰδιότητά του ταύτην ὁ Μωάμεθ ἐταξίδευσε πολλάκις εἰς τὴν Συρίαν καὶ τὴν Νότιον Ἀραβίαν, ἐπιτυγχάνων πάντοτε εἰς τὰς ἐπιχειρήσεις του καὶ ἀποσπῶν τὰ συγχαρητήρια τῆς χήρας διὰ τὰς ἀξιολόγους ὑπηρεσίας του. Βραδύτερον ἡ χήρα ἠράσθη τοῦ Μωάμεθ, ὁ ὁποῖος, κατὰ τοὺς Ἄραβας ἱστορικούς, ἦτο ὡραῖος καὶ χαρίεις, καὶ τὸν ἔπεισε νὰ τὴν νυμφευθῇ, παρὰ τὴν διαφορὰν τῆς ἡλικίας των, δεδομένου ὅτι αὐτὸς μὲν ἦγε τότε τὸ 25ον ἔτος, ἡ δὲ Κατίτζα τὸ 40όν. Διὰ τοῦ γάμου τούτου ὁ Μωάμεθ ἀπέβη εἷς τῶν πλουσιωτέρων κατοίκων τῆς Μέκκας, ἐνῷ συγχρόνως διὰ τῆς ἠθικῆς του ἀξίας εἶχεν ἀποκτήσει μεγάλην ἐπιρροὴν μεταξὺ τῶν συμπολιτῶν του. «Ὁ Ἀλλάχ, γράφει ὁ ἱστορικὸς Ἀμπουλφέντα, ἐπροίκισεν αὐτὸν μὲ ὅλα τὰ προτερήματα, τὰ ὁποῖα πρέπει νὰ κοσμοῦν ἕνα τίμιον ἄνθρωπον· ἦτο τόσον ἁγνὸς καὶ τόσον εἰλικρινής, τελείως ἀπηλλαγμένος ἀπὸ πονηρὰς σκέψεις, ὥστε ἐπωνομάσθη Ἀλ Ἀμὶν (ὁ Πιστός). Τόση δὲ ἦτο ἡ ἐμπιστοσύνη πρὸς τὴν τιμιότητά του, ὥστε συχνάκις ἐκλήθη ὡς διαιτητὴς εἰς διενέξεις μεταξὺ συμπολιτῶν του». Ἐκ τοῦ γάμου τούτου μὲ τὴν Κατίτζαν ἐγεννήθησαν τέσσαρες θυγατέρες καὶ εἷς υἱός, ὁ Κασίμ, ὅστις ὅμως ἀπέθανεν εἰς μικρὰν ἡλικίαν.

Ἐπὶ πολλὰ ἔτη μετὰ τὸν γάμον του ὁ Μωάμεθ ἐξηκολούθει τὰς ἐμπορικὰς ἐπιχειρήσεις, ἐπισκεπτόμενος τὰς μεγάλας ἀραβικὰς ἀγορὰς καὶ ἀναλαμβάνων μακρινὰ ταξίδια μὲ τὰ καραβάνια. Ἀλλὰ τὴν ἐποχὴν αὐτὴν τὸ ἐμπόριον δὲν ἀπέδιδε πλέον ἱκανὰ κέρδη. Ἤδη ὅμως ὁ Μωάμεθ ἦτο τόσον πλούσιος ὥστε νὰ δύναται ν' ἀπασχοληθῇ μὲ ὅ,τι, ἀπὸ τῆς παιδικῆς του ἡλικίας, τὸν ἐνδιέφερε. Κατὰ τὰ ταξίδιά του ἐλάμβανε συχνὰ τὴν εὐκαιρίαν νὰ συζητῇ ἐπὶ θρησκευτικῶν θεμάτων μὲ Χριστιανοὺς καὶ Ἰουδαίους, ἐνῷ ἐξ ἄλλου αἱ ἀραβικαὶ ἔρημοι μὲ τὰς προλήψεις τῶν φυλῶν παρεῖχον ἄφθονον ὑλικὸν διὰ τὰς ἐνθουσιώδεις

Digitized by Google

ὀνειροπολήσεις του. Μετὰ τὸν γάμον του εἶχεν ἐντὸς τῆς οἰκίας του καὶ πολύτιμον σύμβουλον, τὸν ἐξάδελφον τῆς συζύγου του Οὐάρακα, ὁ ὁποῖος ἤσκησε μεγάλην ἐπιρροὴν ἐπὶ τῶν περὶ θρησκείας ἀντιλήψεων του. Ὁ Οὐάρακα ἦτο ἑβραϊκῆς καταγωγῆς, εἶχε δὲ προσχωρήσει εἰς τὸν Χριστιανισμὸν καὶ ἐνδιεφέρετο διὰ τὰ μεταφυσικὰ ζητήματα καὶ τὴν ἀστρολογίαν. Οὗτος ἀναφέρεται ἐπίσης ὡς ὁ πρῶτος μεταφραστὴς ἀποσπασμάτων τῆς Παλαιᾶς καὶ τῆς Καινῆς Διαθήκης εἰς τὴν ἀραβικήν, πιστεύεται δὲ ὅτι ὁ Μωάμεθ παρ' αὐτοῦ ἔλαβε πληροφορίας περὶ τῶν Γραφῶν, ὡς καὶ περὶ πολλῶν παραδόσεων τοῦ Βισνοῦ καὶ τοῦ Ταλμούδ, τὰς ὁποίας κατόπιν μετέφερεν εἰς τὸ Κοράνιον. Αἱ ποικίλαι αὗται γνώσεις, τὰς ὁποίας ἀπεθησαύρισε χάρις εἰς τὴν ἀφαντάστως ἰσχυρὰν μνήμην του, τὸν διέθετον ἐναντίον τῆς ἐπικρατούσης ἐν Ἀραβίᾳ καὶ ἀσκουμένης ἐν τῇ Καάβᾳ εἰδωλολατρείας. Ἐφόσον δὲ συνέκρινε τὴν λατρείαν τῶν εἰδώλων πρὸς τὰς πνευματικὰς θρησκείας, ἐπὶ τοσοῦτον κατεδίκαζεν αὐστηρότερον τὸν χονδροειδῆ ἐκεῖνον εἰδωλολατρικὸν τύπον. Ἔκτοτε ἤρχισε νὰ ἐπικρατῇ ἐν τῷ πνεύματί του ἡ ἔμμονος ἰδέα τῆς ἀνάγκης θρησκευτικῆς ἀναμορφώσεως.

Ὁ Μωάμεθ ἐπίστευεν ὅτι ὁ Θεὸς ἀπέστειλε κατὰ διαφόρους περιόδους τοὺς προφήτας του πρὸς τοὺς ἀνθρώπους, διὰ νὰ τοὺς ἐπαναφέρουν εἰς τὸν δρόμον τῆς ἀληθείας. Καὶ ἀνεγνώριζεν ὡς τοιούτους τὸν Νῶε, τὸν Ἀβραάμ, τὸν Μωϋσῆν καὶ τὸν Ἰησοῦν Χριστόν. Ἕκαστος ἐξ αὐτῶν ἐκήρυξε τὴν ἀληθινὴν θρησκείαν, ἀλλ' οἱ μετ' αὐτοὺς ἄνθρωποι ἐπανῆλθον εἰς τὴν διαφθορὰν καὶ ἦτο ἀνάγκη νὰ ἐμφανισθῇ νέος προφήτης, ἐντεταλμένος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ νὰ ὁδηγήσῃ πάλιν τὴν ἁμαρτωλὴν ἀνθρωπότητα εἰς τὴν εὐθεῖαν ὁδόν. Ἡ πιθανότης τοιούτου ἐνδεχομένου φαίνεται ὅτι ἐπὶ τοσοῦτον ἀπησχόλει τὸ πνεῦμά του, ὥστε ὁ Μωάμεθ κατέστη σκεπτικός, ἤρχισε νὰ ἀπομακρύνεται ὁλονὲν περισσότερον τῆς κοινωνίας καὶ ἐζήτησε τὴν μόνωσιν ἐν σπηλαίῳ τοῦ ὄρους Χίρα, τρεῖς λεύγας βορείως τῆς Μέκκας, ὅπου, ὡς οἱ Χριστιανοὶ ἀναχωρηταί, ἔμενεν ἐπὶ ἡμέρας καὶ νύκτας προσευχόμενος καὶ σκεπτόμενος. Τόσον ἔντονος ἀπασχόλησις τῆς διανοίας του ἐπὶ ἑνὸς ζητήματος δὲν ἦτο δυνατὸν ἢ νὰ ἐπιδράσῃ ἐπ' αὐτοῦ, ὁ δὲ Μωάμεθ ἤρχισε νὰ περιπίπτῃ εἰς ἐκστάσεις καὶ νὰ ἔχῃ καταληψίας. Πολλάκις ἔχανε τὴν συναίσθησιν τῶν πέριξ καὶ ἔπιπτε κατὰ γῆς ἀναίσθητος. Αἱ κρίσεις αὗται ἀποδίδονται εἰς ἐπιληψίαν, ἥτις ἐπιστεύετο ἄλλοτε ὅτι προσήφθη εἰς αὐτὸν συκοφαντικῶς ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν του καί τινων Χριστιανῶν συγγραφέων. Ἐν τούτοις φαίνεται ὅτι τὰ περὶ ἀσθενείας αὐτοῦ ἐβεβαιώθησαν ὑπό τινων ἐκ τῶν παλαιοτέρων Μουσουλμάνων συγγραφέων, ἐπὶ τῇ βάσει τῶν λεχθέντων ὑπὸ τῶν οἰκείων του. Ἡ Ἀϊσᾶ, μία τῶν συζύγων του, καὶ ὁ Ζεΐντ, εἷς τῶν μαθητῶν του, ἀναφέρονται ὡς μαρτυρήσαντες περὶ τῆς ἀσθενείας του. Οἱ πιστοί του ἐφρόνουν ἐν τούτοις ὅτι κατὰ τὰς κρίσεις ταύτας ἀπεκαλύπτοντο εἰς τὸν Μωάμεθ αἱ θεῖαι ἀλήθειαι.

Ἡ πρώτη τῶν ἀποκαλύψεων τούτων ἐγένετο ὑπὸ ἀγγέλου ἐμφανισθέντος εἰς τὸν Μωάμεθ ἐπὶ τοῦ ὄρους Χίρα, τῷ 610, ὅτε δηλαδὴ οὗτος ἦγε τὸ τεσσαρακοστὸν ἔτος τῆς ἡλικίας του. Τὰ τῆς ἀποκαλύψεως διηγοῦνται Μουσουλμᾶνοι συγγραφεῖς ὡς μεταδοθέντα ὑπ' αὐτοῦ τοῦ προφήτου, γίνεται δὲ σχετικὸς λόγος περὶ αὐτῆς καὶ εἰς τὸ Κοράνιον. Ὁ Μωάμεθ διήρχετο, κατὰ τὸ σύνηθες, τὸν μῆνα, ὁ ὁποῖος βραδύτερον ὠνομάσθη τοῦ Ραμαζανίου, εἰς τὸ σπήλαιον τοῦ ὄρους Χίρα, προσπαθῶν διὰ νηστειῶν, προσευχῶν καὶ σκέψεων ν' ἀνυψώσῃ τὸ πνεῦμά του, ἵνα τοῦτο φθάσῃ εἰς τὴν θείαν ἀλήθειαν, Ἦτο ἡ νὺξ ἡ καλουμένη ὑπὸ τῶν Ἀράβων Ἄλ Κάντερ ἢ τῆς Θείας Ἐντολῆς, καθ' ἥν, ἐνῷ ὁ Μωάμεθ ἔκειτο κατὰ γῆς, ἤκουσε φωνὴν καλοῦσαν αὐτὸν καὶ εἶδε νὰ πίπτῃ ἐπ' αὐτοῦ τόσον ἰσχυρὸν κῦμα φωτός, ὥστε ἐλιποθύμησεν. Ὅταν ἀνέκτησε τὰς αἰσθήσεις του, εἶδεν ἄγγελον, εἰς σχῆμα ἀνθρώπου, ὅστις, πλησιάσας αὐτόν, ἐξεδίπλωσε ὕφασμα μετάξινον, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ὑπῆρχον γράμματα. «Ἀνάγνωσε!» εἶπεν ὁ ἄγγελος. «Δὲν γνωρίζω ἀνάγνωσιν», ἀπήντησεν ὁ Μωάμεθ. «Ἀνάγνωσε, ἐπανέλαβεν ὁ ἄγγελος, ἐν ὀνόματι τοῦ Κυρίου δημιουργοῦ τῶν πάντων, τοῦ Κυρίου ὅστις ἔπλασε τὸν ἄνθρωπον ἐκ θρόμβου αἵματος. Ἀνάγνωσε ἐν ὀνόματι τοῦ Ὑψίστου, ὅστις ἐδίδαξεν εἰς τὸν ἄνθρωπον τὴν χρῆσιν τῆς γραφίδος, ὅστις ἔρριψεν ἐπὶ τῆς ψυχῆς τοῦ ἀνθρώπου τὴν ἀκτῖνα τῆς γνώσεως καὶ διδάσκει εἰς αὐτόν, ὅ,τι οὗτος πρότερον ἠγνόει». Μόλις ὁ ἄγγελος ἐτελείωσε τοὺς λόγους τούτους, ὁ Μωάμεθ ᾐσθάνθη αἴφνης τὸ πνεῦμά του νὰ φωτίζεται μὲ οὐράνιον φῶς καὶ ἀνέγνωσεν ὅσα ἐγράφοντο ἐπὶ τοῦ ὑφάσματος, ἅτινα ἦσαν ἡ ἐντολὴ τοῦ Θεοῦ, ἡ περιληφθεῖσα κατόπιν εἰς τὸ Κοράνιον. Ὅταν ὁ Μωάμεθ ἐτελείωσε τὴν ἀνάγνωσιν, ὁ ἀπεσταλμένος τοῦ οὐρανοῦ, ἀνήγγειλεν: «Ὦ Μωάμεθ, ἀληθῶς εἶσαι προφήτης τοῦ Θεοῦ! Εἶμαι ὁ ἄγγελος Γαβριήλ». Ὁ Μωάμεθ ἐπέστρεψε τὴν πρωΐαν τρέμων καὶ τεταραγμένος πρὸς τὴν Κατίτζαν, ἀγνοῶν ἐὰν ὅσα ἤκουσε καὶ εἶδεν ἦσαν ἀληθῆ καὶ ἐὰν ἦτο πράγματι ὁ προφήτης ὁ ἐντεταλμένος νὰ ἐπιτελέσῃ τὴν μεταρρύθμισιν, ἥτις ἦτο τὸ ἀντικείμενον τῶν σκέψεών του ἢ ἐὰν εἶδεν ἁπλῆν ἀπατηλὴν ὀπτασίαν ἤ, ἔτι χειρότερον, ἐπεσκέφθη αὐτὸν πνεῦμα κακοποιόν. Ἡ Κατίτζα ὅμως εἶχε πίστιν, ἥτις συνεδυάζετο πρὸς τὴν εὐπιστίαν ἀγαπώσης συζύγου, καὶ εἶδεν εἰς τὴν ἐμφάνισιν τοῦ ἀγγέλου τὴν πλήρωσιν τῶν πόθων τοῦ ἀνδρός της καὶ τὸ τέλος τῶν παροξυσμῶν καὶ τῶν στερήσεων. Ἡ Κατίτζα ἔσπευσε νὰ ἀνακοινώσῃ ὅσα ἤκουσεν εἰς τὸν ἐξάδελφόν της Οὐάρακα, ὁ ὁποῖος ἀμέσως καὶ μετὰ χαρᾶς ἐπίστευσεν εἰς τὸ ἄγγελμα. Βεβαιοῦται δὲ ὅτι ἡ πίστις τῆς Κατίτζα καὶ ὁ ζῆλος τοῦ Οὐάρακα συνέβαλον, ὥστε νὰ ἐξαλειφθοῦν αἱ ἀμφιβολίαι ἐκ τοῦ πνεύματος τοῦ Μωάμεθ, ὁ ὁποῖος οὕτως ἀπεφάσισε νὰ ἀναλάβῃ τὸ νέον κήρυγμα.

Κατ' ἀρχὰς ὁ Μωάμεθ ὡμίλησε περὶ τῆς ἀποκαλύψεως τοῦ ἀρχαγγέλου Γαβριὴλ καὶ εἰς τὸν δοῦλόν του Ζεΐντ, ὅστις ὑπῆρξεν ἐπίσης εἷς ἀπὸ τοὺς πρώτους πιστεύσαντας. Τὰ πρῶτα ὅμως βήματα αὐτοῦ εἰς τὸ προφητικὸν στάδιον ἦσαν λίαν κινδυνώδη καὶ διστακτικά, ἐγένοντο δὲ ἐν μυστικότητι. Εἶχεν, ἄλλωστε, νὰ φοβῆται τὴν ἐχθρότητα πάντων, τόσον τῶν συγγενῶν του, τῶν ὁποίων ἡ δύναμις ἐβασίζετο ἐπὶ τῆς εἰδωλολατρείας, ὅσον καὶ τῶν ἄλλων ἀντιζήλων φυλῶν. Ἕνεκα τούτου ἡ νέα θρησκεία διεδίδετο μυστικῶς καὶ βραδέως, εἰς τρόπον ὥστε οἱ προσήλυτοι τῶν τριῶν πρώτων ἐτῶν δὲν ὑπερέβαινον τοὺς τεσσαράκοντα· καὶ αὐτοί, ἄλλως τε, ἦσαν κατὰ τὸ πλεῖστον νέοι, ξένοι καὶ δοῦλοι, συνερχόμενοι μυστικῶς διὰ νὰ προσευχηθοῦν, εἴτε εἰς τὴν οἰκίαν τινὸς ἐκ τῶν προσηλύτων, εἴτε εἰς σπήλαιόν τι παρὰ τὴν Μέκκαν. Οἱ κυριώτεροι τούτων ἦσαν, πλὴν τῆς συζύγου του Κατίτζα καὶ τοῦ ἐξαδέλφου της Οὐάρακα, ὁ ἐξάδελφός του Ἀλῆς, ὁ κατόπιν πενθερός του Ἀμποῦ Μπέκρ, ὁ μετέπειτα καλίφης Ὀσμὰν κλπ. Παρὰ τὴν τηρουμένην ἐν τούτοις μυστικότητα δὲν κατωρθώθη νὰ ἀποφύγουν τοὺς διωγμοὺς τῶν φανατικῶν εἰδωλολατρῶν, οἵτινες ἀνακαλύψαντες τὰ κρησφύγετά των ἐπετίθεντο ἐναντίον των καὶ τοὺς ἐκακοποίουν. Εἰς μίαν συμπλοκὴν ἐντὸς σπηλαίου ὁ ὀπαδὸς τοῦ Μωάμεθ ὁπλοποιὸς Σάαντ ἐτραυμάτισεν εἰς τὴν κεφαλὴν ἕνα τῶν ἐπιτεθέντων καὶ ἐγένετο ὀνομαστὸς μεταξὺ τῶν πιστῶν, διότι ἦτο ὁ πρῶτος ὁ ὁποῖος ἔχυσεν αἷμα ὑπὲρ τοῦ Ἰσλαμισμοῦ. Αἱ ἀντιδράσεις αὗται καὶ οἱ διωγμοὶ ἀπησχόλουν μεγάλως τὸν Μωάμεθ καὶ ηὔξανον τὴν ταραχὴν τοῦ πνεύματός του καὶ τὸν κατέστησαν σκεπτικόν, βλοσυρὸν καὶ ἀφῃρημένον. Οἱ περὶ αὐτὸν ἤρχισαν νὰ φοβῶνται μήπως ἀσθενήσῃ, ἐνῷ οἱ ἐχθροί του διέδιδον ὅτι ὁ Μωάμεθ παρεφρόνησε. Συνέπεια τῆς τοιαύτης πνευματικῆς καὶ σωματικῆς καταστάσεώς του ἦτο νέα ὀπτασία ἢ ἀποκάλυψις, καθ' ἣν διετάχθη «νὰ ἐγερθῇ, νὰ διδάξῃ καὶ νὰ δοξάσῃ τὸν Κύριον». Κατόπιν τῆς νέας ταύτης ἐντολῆς, παρουσιάσθη διὰ πρώτην φορὰν δημοσίᾳ ὡς προφήτης, τὸ πέμπτον ἔτος ἀπὸ τῆς ἐνάρξεως τῆς διδασκαλίας του. Κατὰ τὴν συγκέντρωσιν ὅμως ἥτις εἶχε λάβει χώραν εἰς τὸν λόφον Σάφα παρὰ τὴν Μέκκαν καὶ καθ' ἣν προσῆλθον κυρίως οἱ συγγενεῖς του, ὁ Μωάμεθ ὀλίγον ἔλειψε νὰ λιθοβοληθῇ. Παρὰ ταῦτα δὲν ἀπηλπίσθη καὶ ἐξηκολούθησε τὸ κήρυγμά του, ὅπερ, καίτοι συνήντησε μεγίστην ἐχθρότητα μεταξὺ τοῦ καλοῦ κόσμου, ἤρχισεν ἐν τούτοις μικρὸν κατὰ μικρὸν νὰ κατακτᾷ ὀπαδούς, ἰδίως παρὰ τῷ λαῷ καὶ μεταξὺ τῶν γυναικῶν. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μωάμεθ ἀφῆκε πᾶσαν ἐπιφύλαξιν, ἢ μᾶλλον ᾐσθάνετο ἤδη μεγαλύτερον ἐνθουσιασμὸν καὶ ἤρχισε κηρύττων πρὸς πάντας τὴν νέαν θρησκείαν καὶ ἐξαγγέλλων ὅτι εἶναι προφήτης 'σταλεὶς ὑπὸ τοῦ θεοῦ διὰ νὰ καταλύσῃ τὴν εἰδωλολατρείαν καὶ νὰ μετριάσῃ τὴν αὐστηρότητα τοῦ ἰουδαϊκοῦ καὶ τοῦ χριστιανικοῦ νόμου. Οἱ λόφοι Σάφα καὶ Κουμπεΐς, θεωρούμενοι ἱεροὶ διότι ἐκεῖ ἔμειναν ὁ Ἄγαρ καὶ ὁ Ἰσμαήλ, ἦσαν τὰ εὐνοούμενα ὑπ' αὐτοῦ διὰ τὸ κήρυγμά του μέρη, καὶ τὸ ὄρος Χίρα κατέστη τὸ Σινᾶ τοῦ Μωάμεθ, ὅπου οὗτος ἀπεσύρετο ἑκάστοτε εἰς τὰς παραφορὰς τοῦ ἐνθουσιασμοῦ του, διὰ νὰ ἐπιστρέψῃ κατόπιν ἐκ τῆς μονώσεώς του φέρων νέας ἀποκαλύψεις. Αἱ τοιαῦται ἀποκαλύψεις ἐξηκολούθησαν γινόμεναι κατὰ καιροὺς εἰς τὸν Μωάμεθ καθ' ὅλον τὸν βίον του. Ταύτας κατόπιν ὑπηγόρευεν εἰς γραφεῖς, οἱ δὲ ὀπαδοί του τὰς ἀπεστήθιζον. Μετὰ τὸν θάνατόν του τὸ σύνολον αὐτῶν συνεσκευάσθη εἰς ἓν βιβλίον, ὅπερ ἀπετέλεσε τὸ *Κοράνιον* (βλ. λ.).

Παραλλήλως ὅμως πρὸς τὴν αὔξησιν τοῦ θάρρους καὶ τοῦ ἐνθουσιασμοῦ τοῦ Μωάμεθ πρὸς τὸ κήρυγμά του, ηὔξανεν ὁλονὲν καὶ ἡ κατ' αὐτοῦ ἐχθρότης τῆς πλειοψηφίας τῶν κατοίκων τῆς Μέκκας, οἵτινες γνωρίσαντες αὐτὸν ἀπὸ μικρᾶς ἡλικίας καὶ συναναστραφέντες μετ' αὐτοῦ ἐπὶ τόσα ἔτη, εἰς τρόπον ὥστε νὰ γνωρίζουν πάσας τὰς λεπτομερείας τῆς ζωῆς του, δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ τὸν ἀνεχθοῦν ὡς προφήτην ἀπεσταλμένον ὑπὸ τοῦ θεοῦ. Μεγαλύτερον ἐμπόδιον εἰς τὴν ἐξάπλωσιν τῆς νέας θρησκείας του καὶ ἀπὸ αὐτοὺς τοὺς διωγμοὺς καὶ τὴν βίαν, ἀπετέλεσαν αἱ εἰρωνεῖαι, τὰ σκώμματα καὶ ἰδίως οἱ σατιρικοὶ εἰς βάρος του στίχοι τοῦ νεαροῦ ποιητοῦ Ἄμρου, οἵτινες εἶχον διαδοθῆ εὐρύτατα. Ἐν τῷ μεταξὺ ἐπειδὴ πολλοὶ τῶν ὀπαδῶν του ἤρχισαν νὰ αἰσθάνωνται ὅτι δὲν εἶναι ἀσφαλεῖς ἐν Μέκκᾳ, ἀπεφάσισαν νὰ μεταναστεύσουν εἰς τὴν Ἀβησσυνίαν, ὅπου ὑπῆρχον πληροφορίαι ὅτι θὰ ἐγίνοντο ἀνεκτοὶ ὑπὸ τῶν Νεστοριανῶν κατοίκων της. Ἡ πρώτη αὕτη μετανάστευσις ἐγένετο ὑπὸ μικρᾶς ὁμάδος ἐξ ἕνδεκα ἀνδρῶν καὶ τεσσάρων γυναικῶν, ἥτις ἀνεχώρησεν ἐκ Μέκκας εἰς τὸν λιμένα τῆς Τζέντας καὶ ἐκεῖθεν διὰ δύο ἀβησσυνιακῶν πλοίων ἔφθασεν εἰς τὴν Ἀβησσυνίαν. Τὸ γεγονὸς τοῦτο συνέβη τὸ πέμπτον ἔτος ἀφ' ὅτου ὁ Μωάμεθ ἤρχισε κηρύττων τὴν νέαν θρησκείαν, καλεῖται δὲ «πρώτη Ἐγίρα» (ἀραβ. Χέτζρα=φυγή, χωρισμός, μετανάστευσις), πρὸς διάκρισιν ἀπὸ τῆς «δευτέρας Ἐγίρας», τῆς φυγῆς τοῦ προφήτου ἀπὸ τῆς Μέκκας εἰς τὴν Μεδίναν. Ἡ καλὴ ὑποδοχή, ἧς ἔτυχον οἱ φυγάδες, ἔπεισε καὶ ἄλλους νὰ τοὺς μιμηθοῦν, οὕτω δ' ὁ ἀριθμὸς τῶν ἐν Ἀβησσυνίᾳ Μουσουλμάνων ἀνῆλθεν εἰς ὀγδοήκοντα ἄνδρας καὶ δεκαοκτὼ γυναῖκας, ἐκτὸς τῶν παιδίων. Ἐν τῷ μεταξὺ ὁ Μωάμεθ, παραμείνας εἰς Μέκκαν, ἐξηκολούθει νὰ κηρύττῃ καὶ νὰ ὑφίσταται παντοίας ταπεινώσεις καὶ διωγμούς. Ἐπὶ τέλους ἀπεφάσισε νὰ καταφύγῃ εἰς οἰκίαν φίλου του παρὰ τὸν λόφον Σάμα, ἀλλὰ καὶ ἐκεῖ ὑπέστη πολλὰς ἐπιθέσεις. Παρὰ τὰς διώξεις ὅμως ταύτας οἱ ὀπαδοί του συνεχῶς ηὔξανον, οἱ δὲ Κορεϊσῖται ἀπεφάσισαν νὰ τὸν ἐγκλείσουν εἰς τὸν παρὰ τὴν Μέκκαν πύργον τοῦ θείου του Ἀμποῦ Τάλεμπ, ὅπου τὸν ὑπέβαλον εἰς αὐστηρὰν ἀπομόνωσιν, ἀπαγορεύσαντες πᾶσαν ἐπικοινωνίαν παντὸς κατοίκου τῆς Μέκκας μετ' αὐτοῦ καὶ τῶν ἐν τῷ πύργῳ ἐγκλεισθέντων ὀπαδῶν του. Ὁ ἀποκλεισμὸς οὗτος διήρκεσεν ἐπὶ τρία ἔτη, μετὰ τὴν πάροδον τῶν ὁποίων ἐπετράπη εἰς τὸν Μωάμεθ νὰ ἐπανέλθῃ εἰς τὴν Μέκκαν, τῇ ἐπεμβάσει τοῦ θείου καὶ προστάτου του Ἀμποῦ Τάλεμπ, ὁ ὁποῖος μετ' ὀλίγον ἀπέθανε. Μετ' αὐτὸν ἀπέθανε καὶ ἡ σύζυγος τοῦ Μωάμεθ Κατίτζα. Μετὰ τὸν θάνατόν της ἔλαβε πολλὰς ἄλλας συζύγους, καίτοι διὰ τοὺς ὀπαδούς του εἶχε θεσπίσει τέσσαρας μόνον. Ἕνα μῆνα μετὰ τὸν θάνατον τῆς Κατίτζας ἐξέλεξεν ὡς σύζυγόν του ὡραίαν κορασίδα, τὴν Ἀϊσᾶν, θυγατέρα τοῦ πιστοῦ ὀπαδοῦ του Ἀμποῦ Μπέκρ, ἡ ὁποία ἦτο ἡλικίας ἑπτὰ μόνον ἐτῶν. Ἕνεκα δὲ τούτου, μολονότι ὑπὸ τὸ θερμὸν κλῖμα τῆς Ἀραβίας αἱ νεάνιδες ἀναπτύσσονται ταχέως, ὁ γάμος ἀνεβλήθη νὰ γίνῃ μετὰ δύο ἔτη. Τὴν σύζυγον ταύτην, τὴν ὁποίαν ἐνυμφεύθη εἰς τὴν ἄνθησιν τῆς ζωῆς της, ὁ Μωάμεθ ἠγάπησε μετὰ πάθους, ὅσον δὲν ἠγάπησεν ἄλλην ἐκ τῶν μετέπειτα συζύγων του.

Κατὰ τὰ ἐπακολουθήσαντα ἔτη ὁ Μωάμεθ κατώρθωσε ν' ἀποκτήσῃ καὶ νέους ὀπαδούς, ἰδίως μεταξὺ τῶν προσκυνητῶν τῆς Καάβας. Μεταξὺ τούτων ἦσαν καὶ πολλοὶ κάτοικοι τῆς πόλεως Μεδίνας, οἵτινες μεταβάντες εἰς τὴν πόλιν των διέδωσαν εὐρύτερον τὴν νέαν θρησκείαν. Τοῦτο ἐξηρέθισεν ἔτι πλέον τοὺς κατοίκους τῆς Μέκκας, οἵτινες ἐπανειλημμένως ἀπεπειράθησαν νὰ δολοφονήσουν τὸν Μωάμεθ. Οὗτος ἐπὶ τέλους, πρὸ τοῦ ἀμέσου κινδύνου, συνεβούλευσε τοὺς ὀπαδούς του νὰ ἀναχωρήσουν ἐκ Μέκκας καὶ νὰ μεταβοῦν εἰς τὴν Μεδίναν. Ἐπίσης δὲ καὶ αὐτὸς τὴν 13ην ἢ 22αν Σεπτεμβρίου ἢ καὶ κατ' ἄλλους ὑπολογισμοὺς τὸν Ἰούνιον ἢ Ἰούλιον τοῦ 622, ἐν μέσῳ κινδύνων καὶ περιπετειῶν καὶ καταδιωκόμενος ὑπὸ τῶν Κορεϊσιτῶν, κατώρθωσε νὰ φθάσῃ εἰς τὴν Μεδίναν, ὅπου ἐγένετο ἐνθουσιωδῶς δεκτὸς ὑπὸ τῶν ὀπαδῶν του. Ἡ φυγὴ αὕτη ἀπὸ Μέκκας εἰς Μεδίναν, ἡ γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «Ἐγίρα», καθωρίσθη ὡς ἀπαρχὴ νέας χρονολογίας διὰ τοὺς Μουσουλμάνους, διατηρουμένης ἐν χρήσει μέχρι σήμερον. Ἡ Μεδίνα μέχρι τῆς ἐποχῆς ἐκείνης ἐκαλεῖτο Γιατρὶμπ ἢ Ὑαθρὶμπ (ἢ Λατρίππα ἢ Ἰαθρίππα τῶν ἀρχαίων), ὠνομάσθη δὲ Μεδίνα ἐκ τοῦ Μαντινὲ ἀνναμπὶ (ὅπερ σημαίνει ἡ πόλις τοῦ προφήτου), ἐξ οὗ προῆλθεν ἐπὶ τὸ συντομώτερον τὸ Ἀλμαντίνα καὶ κατόπιν τὸ Μεδίνα.

Ἡ ἄφιξις τοῦ Μωάμεθ εἰς τὴν Μεδίναν σημειώνει νέαν περίοδον εἰς τὴν ζωὴν αὐτοῦ. Ἐντὸς ὀλίγου εὑρέθη ἐκεῖ ἐπὶ κεφαλῆς μεγάλης καὶ ἰσχυρᾶς μερίδος, ἀποτελουμένης ἀφ' ἑνὸς μὲν ἀπὸ τοὺς ἐκ Μέκκας προσελθόντας ὀπαδούς του, τοὺς καλουμένους «Μοχατζερὶν» ἢ «Φυγάδας», ἀφ' ἑτέρου δὲ ἀπὸ τοὺς ἐκ Μεδίνας προσηλύτους. Οἱ πλεῖστοι τῶν τελευταίων τούτων ἀνῆκον εἰς τὰς ἰσχυρὰς φυλὰς τῶν Ἀουσιτῶν καὶ τῶν Χασραδιτῶν. Εἰς τὸν Ἰσλαμισμὸν εἶχον προσέλθει κατὰ τὴν ἐποχὴν ἐκείνην καί τινες ἀκόμη ἐκ τῶν Χριστιανῶν τῆς Μεδίνας. Ἀλλ' ὁ Μωάμεθ εἶχε στρέψει τὴν προσοχήν του πρὸς τοὺς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ Ἰουδαίους, τοὺς ὁποίους ἤλπιζε νὰ προσηλυτίσῃ, διότι ἦσαν πολλοὶ καὶ πλούσιοι. Πρὸς τὸν σκοπὸν τοῦτον προέβη εἰς πολλὰς παραχωρήσεις πρὸς αὐτούς, παραδεχθεὶς τὰς νηστείας των, ἐπιτρέψας εἰς τοὺς προσηλυτιζομένους νὰ τηροῦν τὸ Σάββατον καὶ ὁρίσας ὅπως οἱ προσευχόμενοι στρέφουν τὸ πρόσωπον πρὸς τὴν Ἱερουσαλήμ. Ἐπειδὴ ὅμως οἱ Ἰουδαῖοι δὲν ἐδείχθησαν πρόθυμοι νὰ δεχθοῦν τὴν νέαν θρησκείαν, ὁ Μωάμεθ ἦρε κατόπιν πάσας τὰς παραχωρήσεις ταύτας, ὁρίσας ὡς «Κίμπλα», ἤτοι σημεῖον πρὸς ὃ ἔδει νὰ στρέφωνται οἱ προσευχόμενοι, τὴν Μέκκαν. Ἐκ τῶν πρω-

Digitized by Google

των μελημάτων του ὑπῆρξεν ἐν Μεδίνᾳ καὶ ἡ ἀνέγερσις ἰδιαιτέρου τεμένους, εἰς τὸ ὁποῖον νὰ κηρύττῃ οὗτος καὶ νὰ προσεύχωνται οἱ πιστοί. Τὸ τέμενος ἐκεῖνο σώζεται μέχρι σήμερον, ἐπανειλημμένως μεγεθυνθὲν καὶ ἐξωραϊσθέν, φέρον πάντοτε τὸ ὄνομα «Μεσγιὲτ ἀλ Νέμπι» (=τέμενος τοῦ Προφήτου).

Τὸ κυριώτερον ὅμως χαρακτηριστικὸν τῆς ἐν Μεδίνῃ διαμονῆς του εἶναι ἡ ριζικὴ μεταβολή, ἥτις ἐπῆλθεν ἐν αὐτῷ ὅσον ἀφορᾷ τὸν τρόπον τοῦ προσηλυτισμοῦ νέων ὀπαδῶν καὶ τῆς διαδόσεως τῆς νέας θρησκείας. Ἐνῷ μέχρι τοῦδε ἐκήρυττε τὴν ἀγαθότητα, τὴν καλωσύνην, τὴν ἀγάπην καὶ ὑφίστατο ἄνευ ἀνταποδόσεως, ἀλλὰ μετὰ καρτερικῆς ὑπομονῆς, τοὺς ἐξευτελισμοὺς καὶ τὰ ραπίσματα, οὐδόλως ἀφιστάμενος τῆς διδασκαλίας τοῦ Ἰησοῦ, αἴφνης ἤλλαξε μέθοδον προσηλυτισμοῦ καὶ ἀντὶ τῆς πειθοῦς καὶ τοῦ λόγου ἤρχισε νὰ μεταχειρίζεται τὸ ξίφος, ὁρίσας ὅτι «τὸ ξίφος εἶναι ἡ κλεὶς τοῦ παραδείσου καὶ τῆς κολάσεως...Οἱ κηρύττοντες τὴν πίστιν μου ἃς μὴ συζητοῦν, ἃς φονεύσουν τοὺς ἀρνουμένους νὰ ὑπακούσουν εἰς τὸν νόμον. Ὁ μαχόμενος ὑπὲρ τῆς ἀληθοῦς πίστεως, εἴτε πέσῃ, εἴτε νικήσῃ, θὰ ἀνταμειφθῇ γενναίως». Ἡ ἀλλαγὴ αὕτη ὀφείλεται εἰς τὴν ἰσχὺν τὴν ὁποίαν ᾐσθάνετο ὅτι εἶχεν ἤδη ἀποκτήσει καὶ εἰς τὴν ἀνάγκην ὅπως ἐπιβληθῇ καὶ πολιτικῶς, διὰ νὰ δυνηθῇ νὰ ἐφαρμόσῃ πλήρως καὶ ἀπροσκόπτως τὰς ἰδέας του καὶ τὰς μεταρρυθμίσεις του ἐφ' ὁλοκλήρου τοῦ κοινωνικοῦ συνόλου.

Αἱ πρῶται πολεμικαὶ ἐπιχειρήσεις τοῦ Μωάμεθ προδίδουν τὸ πάθος του κατὰ τῶν Κορεϊσιτῶν. Διηυθύνετο κατὰ τῶν καραβανίων τῆς Μέκκας, τὰς τρεῖς δὲ πρώτας ἐπιθέσεις ἐπεχείρησεν αὐτὸς οὗτος προσωπικῶς. Διὰ τῶν ἐπιθέσεων τούτων ἐναντίον πλουσίων ἰδιωτῶν καὶ καραβανίων, δι' ὧν ἐπλούτιζον οἱ πτωχοὶ ἰδίως Μεδιναῖοι, κατέστη δυνατὸν νὰ προσηλυτισθῇ μέγας ἀριθμὸς ὀπαδῶν καὶ πολεμιστῶν, οἵτινες προσήρχοντο εἰς τὰς τάξεις του κυρίως ἐπὶ τῇ ἐλπίδι πλουσίας λείας. Κατὰ τὸ δεύτερον ἔτος τῆς Ἐγίρας ὁ Μωάμεθ, διαθέτων ἱκανὰς δυνάμεις προσέβαλε μέγα καραβάνιον, εἰς βοήθειαν τοῦ ὁποίου εἶχον προστρέξει ὑπερδισχίλιοι πεζοὶ καὶ ἱππεῖς ἐκ Μέκκας. Ὁ Μωάμεθ κατώρθωσε νὰ νικήσῃ τοὺς ἀντιπάλους, νὰ φονεύσῃ πολλοὺς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν καὶ ἀσπόνδων ἐχθρῶν του καὶ νὰ συλλάβῃ πλείσους αἰχμαλώτους, τοὺς ὁποίους ἀπέλυσε κατόπιν ἀντὶ ἁδρῶν λύτρων, διανεμηθέντων εἰς τοὺς στρατιώτας του. Ἡ νίκη αὕτη, γνωστὴ ὑπὸ τὸ ὄνομα «νίκη τοῦ Μπεντέρ», ἐσημείωσε νέον σταθμὸν εἰς τὴν σταδιοδρομίαν τοῦ Μωάμεθ, ὁ ὁποῖος οὕτως ἀπέκτησε καὶ μεγάλην στρατηγικὴν φήμην καὶ κατέστη σεβαστὸς εἰς τὰς διαφόρους ἀραβικὰς γειτονικὰς φυλάς. Ἤδη ὁ Μωάμεθ εἶχε καταστῆ ὁ ἀπόλυτος κύριος καὶ κυβερνήτης τῆς Μεδίνας καὶ μεγάλου τμήματος τῆς περιοχῆς της. Ἐπειδὴ δὲ πολλοὶ Ἰουδαῖοι ἐκ τῶν κατοικούντων περὶ τὴν Παλαιστίνην ἐδεικνύοντο ἐχθρικοὶ πρὸς αὐτόν, ὁ Μωάμεθ ἐξεστράτευσεν ἐπανειλημμένως ἐναντίον αὐτῶν καὶ τοὺς κατενίκησε. Κατὰ τὸ ἕκτον ἔτος ἀπὸ τῆς Ἐγίρας οἱ Μεκκανοὶ ὀργανώσαντες σημαντικὸν στρατὸν ἐξεστράτευσαν κατὰ τῆς Μεδίνας καὶ δώσαντες μάχην παρ' αὐτὴν πλησίον τοῦ χωρίου Ὀχὸντ ἐνίκησαν τὰ στρατεύματα τοῦ Μωάμεθ, ἀλλὰ δὲν κατώρθωσαν νὰ καταλάβουν τὴν πόλιν καὶ ἠναγκάσθησαν νὰ συνάψουν ἐτησίαν ἀνακωχήν. Βραδύτερον ὁ Μωάμεθ ἐξεστράτευσε κατὰ τῆς ὀχυρᾶς ἰουδαϊκῆς πόλεως Χαϊμπάρ, τὴν ὁποίαν μετὰ μακρὰν καὶ σκληρὰν πολιορκίαν κατώρθωσε νᾶ καταλάβῃ, φονεύσας ἐν αὐτῇ περὶ τοὺς 700 Ἰουδαίους.

Ἐν τῷ μεταξύ, ἐφ' ὅσον ἡ δύναμις τοῦ Μωάμεθ ηὔξανε, καὶ αἱ βλέψεις αὐτοῦ ὡς πολιτικοῦ ηὐρύνοντο· ὠργάνωσεν ἐκστρατείας ἐναντίον διαφόρων φυλῶν ὑπὸ τὴν διοίκησιν διαφόρων ἀξιωματικῶν, ἀλλὰ δὲν παρέβλεπε καὶ τὰ διπλωματικὰ μέσα. Οὕτως ὁ Μωάμεθ ἀπέστειλε πρεσβείας πρὸς διαφόρους ἡγεμόνας, ζητῶν παρ' αὐτῶν ν' ἀσπασθοῦν τὸν Ἰσλαμισμόν. Οὐσιαστικῶς, ἐζήτει νὰ ἀναγνωρίσουν αὐτόν, ὑπὸ τὴν ἀποστολικὴν ἰδιότητά του, ὡς ἀνώτερόν των. Αἱ κυριώτεραι τῶν ἀποστολῶν τούτων εἶναι αἱ πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Περσῶν Χοσρόην Β' καὶ ἡ πρὸς τὸν Βυζαντινὸν αὐτοκράτορα Ἡράκλειον. Καὶ ὁ μὲν Χοσρόης, εὑρισκόμενος εἰς τὴν ἀκμὴν τῆς δόξης του, ἔσχισε τὴν ἐπιστολὴν τοῦ Μωάμεθ· ὁ Ἡράκλειος ὅμως προσηνέχθη πρὸς τὸν ἀπεσταλμένον τοῦ Μωάμεθ φιλικῶς καὶ τοῦ ἀπέστειλε διάφορα δῶρα χωρὶς νὰ ἀπαντήσῃ, θεωρῶν αὐτὸν ὡς ἁπλοῦν φανατικὸν φύλαρχον, ἄνευ μεγάλης στρατιωτικῆς σημασίας. Ἑτέρας ἐπιστολὰς ὁ Μωάμεθ εἶχεν ἀποστείλει καὶ πρὸς τὸν Χριστιανὸν βασιλέα τῆς Ἀβησσυνίας, τὸν ἡμιανεξάρτητον διοικητὴν τῆς Αἰγύπτου Μακουκᾶν καὶ ἄλλους ξένους ἡγεμόνας. Παρ' ὅλων ὅμως ἔλαβεν ἀορίστους ἢ ὑβριστικὰς ἀπαντήσεις.

Ὁ ὑποτελὴς μάλιστα τοῦ Βυζαντίου ἡγεμὼν Ἀμροὺ ἐφόνευσεν ἕνα τῶν ἀπεσταλμένων τοῦ Μωάμεθ, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἠνάγκασε τὸν τελευταῖον τοῦτον ν' ἀποστείλῃ ἐναντίον του τρισχιλίους ἄνδρας, οἵτινες κατ' ἀρχὰς ἀπεκρούσθησαν, φονευθέντος καὶ τοῦ ἀρχηγοῦ των Ζεΐντ, κατόπιν ὅμως κατώρθωσαν νὰ κατατροπώσωσι τὰ στρατεύματα τοῦ Ἀμρού, ἀποτελούμενα ἐξ Ἑλλήνων. Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ Μεκκανοὶ ἐπωφεληθέντες τῆς περιπλοκῆς ταύτης τοῦ Μωάμεθ, παρεβίασαν τὴν συνθήκην, πρᾶγμα τὸ ὁποῖον ἔδωσεν ἀφορμὴν εἰς αὐτὸν νὰ προπαρασκευάσῃ σοβαρὰν ἐκστρατείαν κατὰ τῆς Μέκκας, ἣν κατόπιν σφοδροῦ ἀγῶνος, κατώρθωσεν ἐπὶ τέλους νὰ καταλάβῃ τῷ 630. Ὁ Μωάμεθ ἐσεβάσθη τοὺς κατοίκους, συλλαβὼν καὶ καταδικάσας μόνον τοὺς ἀρχηγοὺς καὶ καταστρέψας τὰ εἴδωλα τῆς πόλεως. Μετὰ τὴν κατάληψιν τῆς Μέκκας, ἅπασαι σχεδὸν αἱ φυλαὶ τῆς Ἀραβίας προσῆλθον εἰς τὸν Ἰσλαμισμόν, ἢ ἀνεγνώρισαν τὴν κυριαρχίαν τοῦ Μωάμεθ, ὁ ὁποῖος εἶχεν ἀποβῆ ὁ ἰσχυρότερος ἡγεμὼν καὶ φύλαρχος τῆς χώρας.

Ἡ αὔξησις ὅμως τῆς δυνάμεως τοῦ Μωάμεθ ἐφείλκυσε τὴν προσοχὴν τοῦ αὐτοκράτορος Ἡρακλείου, ὁ ὁποῖος τέλος ἀπεφάσισε νὰ συγκεντρώσῃ στρατεύματα εἰς τὰ σύνορα τῆς Συρίας, ὅπως προλάβῃ τὰς ἐνδεχομένας ἐπιδρομὰς αὐτοῦ. Ὁ Μωάμεθ πληροφορηθεὶς τοῦτο ἔσπευσε νὰ καταρτίσῃ ἰσχυρὰν στρατιωτικὴν δύναμιν, ἐπὶ κεφαλῆς τῆς ὁποίας ἔφθασε μέχρι τῶν συνόρων τῆς Συρίας, καθυποτάξας ἐν τῷ μεταξὺ πλείστας φυλὰς καὶ ἀποκομίσας πλούσια λάφυρα. Ἐπειδὴ ὅμως ὁ στρατός του ἐν τῷ μεταξὺ εἶχεν ἐξαντληθῆ, ἀφ' ἑτέρου δὲ εἶχε πληροφορίας ὅτι ὁ Ἡράκλειος συνεκέντρωνε μεγάλην στρατιὰν διὰ νὰ τοῦ ἐπιτεθῇ, ἔκρινε καλόν, κατόπιν συμβουλίου τῶν στρατηγῶν του, νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς Μεδίναν. Ὁ θάνατος τοῦ υἱοῦ του Ἰμπραΐμ, ἐπισυμβὰς τὸν Ἰανουάριον τοῦ 632, ὑπῆρξε καίριον πλῆγμα διὰ τὸν Μωάμεθ, ὁ ὁποῖος συνεπείᾳ τούτου καταληφθεὶς ὑπὸ λύπης, ἠσθένησεν ἐκ σφοδροῦ πυρετοῦ. Αἰσθανόμενος δὲ ἑαυτὸν ὁλονὲν ἐξαντλούμενον, ἠθέλησε νὰ κάμῃ τὸ τελευταῖον προσκήνυμά του εἰς τὴν Μέκκαν, ὅπου ἐξέθηκεν εἰς τοὺς πιστούς του τοὺς τελευταίους νόμους καὶ τὰ διδάγματά του. Μετὰ τὸ προσκύνημα τοῦτο ἐπέστρεψεν εἰς Μεδίναν, ὅπου μετ' ὀλίγον ἐτελεύτησε τὴν 7ην ἢ 8ην Ἰουνίου 632, ταφεὶς ἐν τῇ οἰκίᾳ, ἐν τῇ ὁποίᾳ ἀπέθανεν. Ἡ θέσις αὕτη κατέστη ἔκτοτε ἱερὸν προσκύνημα τῶν Μουσουλμάνων, περὶ αὐτὴν δὲ ἐκτίσθη τέμενος. Ὀλίγον πρὸ τοῦ θανάτου του διώρισεν ἀρχηγὸν τοῦ στρατοῦ του τὸν Ζεΐντ, υἱὸν τοῦ Οὐζαμάν, καὶ συμβούλους αὐτοῦ τὸν πενθερόν του Ἀμποῦ Μπὲκρ καὶ τὸν Ἀλῆν, σύζυγον τῆς θυγατρός του Φατιμέ. Κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ θανάτου του ὁ Μωάμεθ κατέλιπεν ἐννέα συζύγους.

Ὁ Μωάμεθ ἀποτελεῖ ἐν τῇ ἱστορίᾳ τῆς ἀνθρωπότητος ἰδιαίτερον ἐντελῶς τύπον καὶ κατατάσσεται μεταξὺ τῶν μεγάλων νομοθετῶν καὶ κατακτητῶν, κατορθώσας νὰ ἐπιβληθῇ ἐπὶ ἑνὸς ὁλοκλήρου ἔθνους καὶ ν' ἀποβῇ ὁ προφήτης μιᾶς νέας θρησκείας, ἥτις ὑπῆρξεν ἡ ψυχὴ καὶ ὁ δημιουργὸς ἑνὸς νέου πολιτισμοῦ. «Διὰ τὸ ἔθνος τῶν Ἀράβων—γράφει ὁ Καρλάϋλ—ἡ θρησκεία τοῦ Μωάμεθ ὑπῆρξεν ἀναγέννησις ἐκ τοῦ σκότους εἰς τὸ φῶς. Ἡ Ἀραβία ὀφείλει τὴν ζωτικότητά της εἰς τὴν θρησκείαν αὐτὴν καὶ μόνον. Οἱ Ἄραβες ἦσαν πτωχὸς ποιμενικὸς λαός, ὅστις ἀπὸ κτίσεως κόσμου ἐπλανᾶτο τῇδε κακεῖσε εἰς τὰς ἐρήμους του. Πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον ἐστάλη οὐρανόθεν προφήτης, εἰς τοὺς λόγους τοῦ ὁποίου ἐπίστευσε. Καὶ οἱ ἄσημοι οὗτοι νομάδες, οἱ νᾶνοι, ἔγιναν γίγαντες. Ἑκατὸν ἔτη βραδύτερον κατέχουν τὴν Γρανάδαν ἐν τῇ Δύσει καὶ τὴν Ντελχὶ ἐν τῇ Ἄπω Ἀνατολῇ, ἀήττητοι εἰς τὰ πεδία τῶν μαχῶν, ἐν μέσῳ τῆς λάμψεως τῆς δόξης καὶ τοῦ ἀπλέτου φωτὸς τῆς μεγαλοφυΐας τοῦ προφήτου των. Ἡ Ἀραβία διαχέει τὸ φῶς αὐτῆς ἐπὶ μακροὺς αἰῶνας εἰς μέγα μέρος τοῦ κόσμου. Ἡ πίστις εἶναι μεγάλη καὶ σκορπίζει ζωήν. Ἡ ἱστορία ἑνὸς λαοῦ εἶναι γόνιμος, ἐνθαρρυντική, ζωτική, ἐφ' ὅσον ὁ λαὸς πιστεύει. Ὁ μέγας ἀνὴρ εἶναι κεραυνὸς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐκσφενδονιζόμενος, οἱ δὲ κοινοὶ ἄνθρωποι ἀναμένουν αὐτὸν ὡς καύσιμον ὕλην καὶ τότε ἀναφλέγονται καὶ αὐτοὶ μοιραίως».

[Βλ. καὶ λ. *Ἰσλαμισμός*, καὶ *Κοράνιον*.]

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Rampoldi*, Vita di Maometo (1822).—*Weil*, Mohammed der Prophet, sein Leben und seine Lehre (1843).—*W. Irving*, Mohammed and his Successors (1850, ἑλλην. μετάφρ. 1930).—*Sprenger*, Life of Mohammed (1859).—*Reinaud*, Notice sur Mahomet (1860).—*Barthélemy-Saint-Hilaire*, Mahomed et le Coran (1865).—*Renan* Mahomet et les origines de l'islamisme, ἐν ταῖς Études d'histoire religieuse.—*S. W. Koelle*, Mohammed and Mohammedanism (1889).—*H. Grimme*, Mohammed (1892 καὶ 1904).—*F. Buhl*, Mohammeds Liv (1903).—*A. Wollaston*, Muhammad, His Life and Doctrines (1904).—*D. Margoliouth*, Mohammed and the rise of Islam (1905).—*Pr. Caetani*, Annali dell'Islam (1905—1907).—*J. T. Andrae*, Die Person Muhammeds in Lehre und Glauben seiner Gemeinde (1917).

Μ. Δ. Β.

—**Μωάμεθ *Α'***. Σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας· βλ. *Μεχμὲτ Α'*.

—**Μωάμεθ Β', *ὁ κατακτητής***. Σουλτᾶνος τῆς Ὀθωμανικῆς αὐτοκρατορίας (1451—1481), υἱὸς τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Β' ἔκ τινος δούλης, γεννηθεὶς τῷ 1430. Νεώτατος, δεκατετραετὴς μόλις, ἀνεπλήρωσε δὶς ἐν τῇ ἐνασκήσει τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας τὸν πατέρα του καὶ τέλος διεδέχθη αὐτὸν ἀποθανόντα τῷ 1451. Ἦτο τότε 21 ἐτῶν καὶ ἀμέσως ἐφρόντισε ν' ἀπαλλαγῇ παντὸς μέλους τῆς πατρικῆς οἰκογενείας, δυναμένου νὰ ἀπειλήσῃ τὸν θρόνον του. Τοιουτοτρόπως τὸν μὲν ἑτεροθαλῆ ἀδελφόν του, τὸν πορφυρογέννητον Ἀχμέτ, ἐδολοφόνησεν ἐν τῷ λουτρῷ, τὴν δὲ μητέρα τούτου, θυγατέρα τοῦ σατράπου τῆς Σινώπης Ἰσφεντιάρογλου, ἔδωσεν ὡς σύζυγον εἰς ἕνα δοῦλον τῶν παλατίων, καὶ τέλος τὴν ἑτέραν σύζυγον τοῦ πατρός του, τὴν Χριστιανὴν Μάρω, θυγατέρα τοῦ ἡγεμόνος τῆς Σερβίας Γεωργίου, ἔπεμψεν εἰς τὸν πατέρα της.

Ἅμα τῇ εἰδήσει τῆς εἰς τὸν θρόνον ἀναρρήσεως τοῦ νέου σουλτάνου ἅπαντα τὰ γειτονικὰ κράτη (Βυζάντιον, Οὐγγαρία, Βλαχία, Τραπεζοῦς, Λέσβος, Ραγούζα, Χίος κλπ.) ἔσπευσαν νὰ ἀποστείλωσιν εἰς Ἀδριανούπολιον πρέσβεις, ἵνα τὸν συγχαρῶσι καὶ ἐπικυρώσωσι τὰς ὑφισταμένας συνθήκας. Μόνον ὁ τῆς Καραμανίας ἡγεμὼν Ἰμπραὴμ βέης διετέθη εὐθὺς ἐξ ἀρχῆς ἐχθρικῶς πρὸς αὐτὸν καὶ ἀντὶ νὰ ἀνανεώσῃ τὰς συνθήκας, εἰσέβαλεν εἰς τὰς ὀθωμανικὰς χώρας, ἵνα ἀνακτήσηται ὅσας ἐπαρχίας εἶχον ἁρπάσει ἀπ' αὐτοῦ οἱ προγενέστεροι σουλτᾶνοι. Ὁ Μωάμεθ Β' ἔπεμψεν ἀμέσως κατὰ τοῦ Ἰμπραὴμ ἰσχυρὰ στρατεύματα ὑπὸ τὸν Ἰσὰκ-πασᾶν, ἐν τέλει δ' ἐστράτευσε καὶ ὁ ἴδιος ἐναντίον του.

Αἱ μεταξὺ Τουρκίας καὶ Βυζαντίου σχέσεις ἦσαν φιλικαὶ κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους τοῦ σουλτάνου Μουρὰτ Β', κατὰ πόσον ὅμως θὰ ἐξηκολούθουν τοιαῦται δὲν εἶναι δύσκολον ν' ἀποφανθῇ τις, ὅταν ἀνασκοπήσῃ τὴν κατάστασιν, οἵα ἦτο, ὅταν ὁ Μωάμεθ Β' ἀνήρχετο ἐπὶ τοῦ θρόνου τῶν Ὀσμανιδῶν. Ἡ Τουρκία ἦτο τότε μία ἀχανὴς αὐτοκρατορία, περιλαμβάνουσα τὴν δυτικὴν Μικρασίαν καὶ μέγα μέρος τῆς Βαλκανικῆς χερσονήσου. Ἀφ' ἑτέρου τὸ Βυζαντινὸν κράτος δὲν ὑπῆρχε πλέον. Μία σκιὰ αὐτοῦ ἐπλανᾶτο ἀκόμη ἐντὸς τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, σκιὰ εἰς τὴν ὁποίαν μάτην προσεπάθει νὰ δώσῃ ζωὴν ὁ πρό τινων ἐτῶν ἀνελθὼν ἐπὶ τοῦ σεσαθρωμένου ἐκείνου θρόνου Κωνσταντῖνος ΙΑ' ὁ Παλαιολόγος. Δὲν ἦτο ἄρα δυνατὸν ὁ Μωάμεθ Β', ἀνὴρ εἰς ἄκρον φιλόδοξος καὶ πολυπράγμων, νὰ ἀνεχθῇ ἐπὶ πολὺ τὴν ἐν τῷ μέσῳ τῶν κτήσεών του ἐξακολούθησιν τῆς ὑπάρξεως τοῦ οἰκτροῦ ἐκείνου ὑπολείμματος τῆς πάλαι ποτὲ πανισχύρου Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας. Ὁπωσδήποτε ὅμως τὸ τέλος τοῦ Βυζαντίου ἐπέσπευσεν ἡ ἀσύνετος πρὸς τὸν νέον σουλτᾶνον πολιτική του. Εἰς Κωνσταντινούπολιν εἶχε καταφύγει ἀπό τινων ἐτῶν, ἐπὶ σουλτάνου Μουρὰτ Β', ὁ Τοῦρκος ἡγεμονίδης Ὀρχάν, συγγενὴς τοῦ Μουρὰτ καὶ ἀνταπαιτητὴς τοῦ θρόνου του. Τὸ Βυζάντιον φιλοξενοῦν τὸν φυγάδα ἐκεῖνον ἠπείλει διαρκῶς τὴν ἐσωτερικὴν γαλήνην τοῦ τουρκικοῦ κράτους, ἐν τέλει δ' ἐπέτυχε μίαν χρηματικὴν ἐπιχορήγησιν ἐκ 300 χιλ. ἄσπρων (ἣν ὁ Μουρὰτ κατέβαλε διὰ τὰς δαπάνας τῆς συντηρήσεως τοῦ Ὀρχάν), ἀναλαβὼν ἅμα τὴν ὑποχρέωσιν νὰ μὴ ἐπιτρέψῃ εἰς τὸν Ὀρχὰν ν' ἀπομακρυνθῇ τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Ἤδη ὅμως οἱ ἐν Βυζαντίῳ, ἐπωφελούμενοι τῆς εἰς τὸν θρόνον ἀνόδου τοῦ νέου σουλτάνου Μωάμεθ Β' καὶ τῆς ἐκστρατείας αὐτοῦ κατὰ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Καραμανίας, ἔπεμψαν πρέσβεις εἰς Ἀδριανούπολιν, ἀξιοῦντες αὔξησιν τῆς καταβαλλομένης ἐπιχορηγήσεως καὶ ἀπειλοῦντες, ἐν περιπτώσει ἀπορρίψεως τῆς αἰτήσεως ταύτης, νὰ ἀφήσωσιν ἐλεύθερον τὸν Ὀρχάν, ἵνα διεκδικήσῃ τὰ ἐπὶ τοῦ θρόνου τῶν Ὀσμανιδῶν δικαιώματά του. Συγχρόνως ἀφικνοῦντο παρὰ τῷ σουλτάνῳ, προτείνοντες εἰρήνην, οἱ πρέσβεις τοῦ ἡγεμόνος τῆς Καραμανίας, καὶ οὕτως ἐξέλιπον οἱ λόγοι, ἐπὶ τῶν ὁποίων ἐστήριζε τὰς ἐλπίδας του τὸ Βυζάντιον. Ὁ Μωάμεθ ἔσπευσε νὰ δεχθῇ τὴν προτεινομένην αὐτῷ εἰρήνην, ἵνα ἀπερίσπαστος στραφῇ κατὰ τῆς Κωνσταντινουπόλεως, ἀπέπεμψε τοὺς Βυζαντινοὺς πρέσβεις, διέταξε νὰ παύσῃ ἡ καταβολὴ τῆς ὑπὲρ τοῦ Ὀρχὰν ἐπιχορηγήσεως καὶ ἤρξατο παρασκευαζόμενος, ἵνα καταφέρῃ τὸ τελειωτικὸν κτύπημα κατὰ τῆς ἑτοιμοθανάτου Βυζαντινῆς αὐτοκρατορίας. Ἐν πρώτοις ἀπεφάσισε ν' ἀποκλείσῃ πανταχόθεν τὴν Κωνσταντινούπολιν, ἵνα παρακωλύσῃ τὸν ἐπισιτισμὸν αὐτῆς καὶ τὴν ἄφιξιν πάσης ἐνισχύσεως ἔξωθεν. Τὸ ἐγχείρημα ἦτο εὔκολον, διότι ἦτο ἤδη κύριος ὅλων τῶν διὰ ξηρᾶς ὁδῶν, ἀπὸ τῆς θαλάσσης δὲ ἐδέσποζεν ἀφ' ἑνὸς τῶν Δαρδανελλίων καὶ ἐπετήρει ἀφ' ἑτέρου τὸν Βόσπορον διὰ τοῦ ἐπὶ τῆς ἀσιατικῆς ἀκτῆς φρουρίου, τοῦ Ἀνατὸλ-χισὰρ ἢ Γκιουζὲλ-χισάρ, τὸ ὁποῖον εἶχεν ἀνεγείρει πρὸ ἐτῶν ὁ σουλτᾶνος Βαγιαζὶτ Α' (1389—1413). Διὰ ν' ἀποκλείσῃ στενότερον τὴν τελευταίαν ταύτην διὰ τοῦ Βοσπόρου διάβασιν, δι' ἧς διήρχοντο τὰ ἐκ τῶν λιμένων τοῦ Εὐξείνου σιτοφόρα πλοῖα, ἤρξατο ἀνεγείρων κατὰ τὸ ἔαρ τοῦ 1452 ἐπὶ τῆς εὐρωπαϊκῆς ἀκτῆς καὶ ἔναντι τοῦ Ἀνατὸλ-χισὰρ ἕτερον ἰσχυρὸν φρούριον: τὸ Ρούμελι-χισάρ. Ἡ εἴδησις αὕτη κατετάραξε τοὺς ἐν Κωνσταντινουπόλει καὶ ὁ βασιλεὺς Κωνσταντῖνος ΙΑ' ἔπεμψε πρὸς τὸν Μωάμεθ Β' πρέσβεις, παρακαλῶν ἵνα μὴ ἐπιμείνῃ εἰς τὴν ἀνέγερσιν τοῦ ἐν λόγῳ φρουρίου· ἀλλ' οὗτος ἀπέπεμψεν αὐτούς, ἀπειλήσας ὅτι θὰ τοὺς ἐκδάρῃ ζῶντας ἐὰν ἐπανήρχοντο ἵνα ἐπαναλάβωσι τὴν τοιαύτην παράκλησιν.

Digitized by Google

Ἡ ἀνέγερσις τοῦ νέου φρουρίου, ἐκτελουμένη ἐν πάσῃ σπουδῇ διὰ χιλιάδων ἐργατῶν, ὑπὸ τὴν προσωπικὴν ἐπίβλεψιν αὐτοῦ τοῦ σουλτάνου, ἀπεπερατώθη ἐντὸς τριῶν μηνῶν. Ἐν τῷ μεταξὺ συνεχεῖς συγκρούσεις μεταξὺ Τούρκων καὶ Ἑλλήνων ἀνὰ τὰ προάστεια τοῦ Βοσπόρου ἐξετράχυνον τὴν κατάστασιν ἐπὶ τοσοῦτον, ὥστε κατὰ μῆνα Ἰούλιον 1452 ἐκηρύχθη ἐπισήμως ὁ πόλεμος. Τὴν 28 Αὐγούστου ὁ Μωάμεθ ἐνήργησε γενικὴν κατόπτευσιν τῶν τειχῶν τῆς Κωνσταντινουπόλεως καὶ εἶτα ἀπῆλθεν εἰς Ἀδριανούπολιν, ἵνα προπαρασκευασθῇ διὰ τὴν ἐπίθεσιν, ἤρξατο δὲ συγκεντρῶν ἐκεῖ πολυάριθμα στρατεύματα ἐξ ὅλων τῶν ἐπαρχιῶν τῆς αὐτοκρατορίας του, ἐνῷ συγχρόνως ἔπεμπεν ἑτέραν στρατιὰν ὑπὸ τὸν Τουρχὰν πασᾶν εἰς Πελοπόννησον, ἵνα προλάβῃ πᾶσαν ἐκεῖθεν ἀποστολὴν ἐνισχύσεων εἰς Κωνσταντινούπολιν. Σοβαρώταται ἦσαν ἰδίως αἱ εἰς βαρὺ πυροβολικὸν προετοιμασίαι τοῦ Μωάμεθ. Ἐν τέλει, ἀρχομένου τοῦ Ἀπριλίου 1453, ἔφθασε μετὰ τῆς φοβερᾶς αὐτοῦ στρατιᾶς (ἧς τὴν δύναμιν ἄλλοι μὲν ἀναβιβάζουσιν εἰς 80 χιλ. ἀνδρῶν, ἄλλοι εἰς 180, ἄλλοι εἰς 300 καὶ ἄλλοι εἰς 400 χιλ.) πρὸ τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Τὴν 5 Ἀπριλίου ἐστρατοπέδευσεν εἰς ἀπόστασιν $2^1/_2$ μιλλίων ἀπὸ τῶν τειχῶν καὶ τὴν ἐπομένην ἤρχισε τὴν τακτικὴν τῆς πόλεως πολιορκίαν. Μετά τινας δ' ἡμέρας (12 Ἀπριλίου) κατέπλεεν αὐτόθι καὶ ὁ τουρκικὸς στόλος ἐκ τοῦ ἐν Καλλιπόλει ναυστάθμου του. Ἑπτακισχίλιοι μόλις στρατιῶται (ὧν 5 χιλ. Ἕλληνες καὶ 2 χιλ. ἐπίκουροι, Ἰταλοὶ κυρίως) ὑπερήσπιζον τὴν πόλιν. Αἱ δυνάμεις τῶν ἀντιπάλων ἦσαν ἐντελῶς ἄνισοι, ἀλλ' ὁ ἀγὼν κυρίως διεξήγετο μεταξὺ τῶν δύο ἐξ ἴσου ἰσχυρᾶς θελήσεως ἀρχηγῶν: τοῦ Κωνσταντίνου καὶ τοῦ Μωάμεθ. Ὁ πρῶτος ὡρκίσθη νὰ μὴ παραδώσῃ τὴν πόλιν, ὁ δὲ δεύτερος εἶχεν ἀμετάτρεπτον ἀπόφασιν νὰ κυριεύσῃ αὐτήν. Ἐπέτυχεν ὁ δεύτερος, ἀφοῦ ὅμως ἐξέλιπεν ὁ ἀντίπαλός του. Μετὰ 53 ἡμερῶν αἱματηροτάτους ἀγῶνας οἱ πολιορκηταὶ κατώρθωσαν, περὶ τὰ ἐξημερώματα τῆς 29ης Μαΐου, νὰ εἰσέλθωσιν ἀπαρατήρητοι διά τινος πυλίδος ἐντὸς τῆς πόλεως (ἄγνωστον πῶς, διὰ προδοσίας ἢ ἐκ μοιραίας ἀπροσεξίας τῶν ἀμυνομένων) καὶ νὰ γίνουν κύριοι αὐτῆς, ἀφοῦ ἐφόνευσαν τὸν Κωνσταντῖνον καὶ τοὺς περὶ αὐτὸν εὐαρίθμους ἥρωας, καθ' ἣν στιγμὴν οὗτοι ἐδόξαζον τὸν Θεόν, διότι εἶχον κατορθώσει νὰ ἀποκρούσωσι πρὸ ὀλίγου τὴν φοβερωτέραν ὅλων τῶν ἐχθρικῶν ἐφόδων.

Μετὰ 20 ἡμέρας ἀπὸ τῆς ἁλώσεως, ἤτοι τὴν 18ην Ἰουνίου, ὁ Μωάμεθ ἀπῆλθεν εἰς Ἀδριανούπολιν, ὅπόθεν ἀπηύθυνεν ἐπιστολὰς ἀγγέλλουσας τὴν νίκην του πρὸς τὸν σάχην τῆς Περσίας, τὸν σουλτᾶνον τῆς Αἰγύπτου καὶ τὸν σερίφην τῆς Μέκκας. Συγχρόνως συνέρρεον εἰς Ἀδριανούπολιν πρέσβεις τῶν διαφόρων κρατῶν, ἵνα συγχαρῶσι τὸν Μωάμεθ ἐπὶ τῇ νίκῃ, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἰσχυρὸν σῶμα ὑπὸ τὸν Τουρχὰν πασᾶν ἐστράτευσεν εἰς Πελοπόννησον, ἵνα ἐνισχύσῃ τοὺς ἐκεῖ δεσπότας Δημήτριον καὶ Θωμᾶν Παλαιολόγους (φόρου ὑποτελεῖς τοῦ σουλτάνου) κατὰ τῶν στασιασάντων ἐναντίον των ἀρχόντων.

Ἀρχομένου τοῦ ἔαρος 1454 ὁ Μωάμεθ ἐστράτευσε κατὰ τῆς Σερβίας καὶ ἀφοῦ ἐδῄωσε τὴν χώραν ἐπανῆλθεν εἰς Ἀδριανούπολιν, ἄγων πλῆθη αἰχμαλώτων καὶ λείαν ἄφθονον, ἐνῷ τὰς ἐπιχειρήσεις κατὰ τῶν Σέρβων καὶ τῶν συμμάχων Οὐγγρων ἐσυνέχιζεν ὁ Φιρούς βέης. Οὗτος ὅμως μετ' οὐ πολὺ ἠχμαλωτίσθη καὶ ὁ Μωάμεθ ἠναγκάσθη νὰ στρατεύσῃ ἐκ νέου κατὰ τῆς Σερβίας. Ὅταν ἔφθασε παρὰ τὸ Πιρότ, οἱ Οὗγγροι ὑπὸ τὸν Οὐνυάδην ἀπῆλθον εἰς τὰ ἴδια, ὁ δὲ ἡγεμὼν τῶν Σέρβων Γεώργιος ἠναγκάσθη νὰ συνθηκολογήσῃ. Συγχρόνως περίπου εἰρήνευε καὶ μετὰ τῆς Ἑνετίας καὶ οὕτως ἠδυνήθη ἐπί τινα χρόνον νὰ ἀσχοληθῇ περὶ τὸν οἰκισμὸν καὶ τὴν ἀνοικοδόμησιν ἐν γένει τῆς Κωνσταντινουπόλεως. Τῷ 1455 ἐπεχείρησε νέαν κατὰ τῆς Σερβίας ἐκστρατείαν καὶ ἀφοῦ ἐξεπόρθησε διάφορα αὐτῆς φρούρια ἐπανῆλθεν εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἐνῷ ὁ στόλος του ἐπεχείρει ἀκάρπους ἐκστρατείας κατὰ τῆς Χίου, τῆς Ρόδου καὶ λοιπῶν νήσων τοῦ Αἰγαίου καὶ κατελάμβανε τὴν Φώκαιαν, τὴν Αἶνον, τὴν Θάσον, τὴν Σαμοθράκην, τὴν Ἴμβρον καὶ τὴν Λῆμνον (1455—1456).

Ἀρχομένου τοῦ ἔαρος 1456 ὁ Μωάμεθ εἰσέβαλε καὶ πάλιν εἰς Σερβίαν καὶ τὴν 13 Ἰουνίου ἐστρατοπέδευε πρὸ τοῦ Βελιγραδίου, τὸ ὁποῖον ἤρξατο πολιορκῶν μετὰ 150 χιλ. στρατοῦ καὶ 300 πυροβόλων (ὧν 27 βαρέα), ἐνῷ 200 αὐτοῦ πλοῖα ἀνέπλεον τὸν Δούναβιν, ἵνα ματαιώσωσι πᾶσαν ἐξ Οὐγγαρίας ἐνόχλησιν. Μετὰ αἱματηροτάτους ἀγῶνας ὁ τουρκικὸς στόλος κατεστράφη ἐν τῷ Δουνάβει, αὐτὸς δὲ ὁ Μωάμεθ, μετὰ ἐπανειλημμένας ἀτυχεῖς ἀποπείρας πρὸς ἐκπόρθησιν τῆς πόλεως, ὑπέστη δεινὴν ἧτταν καὶ ἠναγκάσθη νὰ λύσῃ τὴν πολιορκίαν καὶ νὰ ὑποχωρήσῃ εἰς Σόφιαν, ἀφοῦ ἀπώλεσε μέγα μέρος τοῦ στρατοῦ του καὶ ὁλόκληρον τὸ πυροβολικὸν αὐτοῦ, τὸ ὁποῖον περιῆλθεν εἰς χεῖρας τῶν πολεμίων. Τὸ ἐπιὸν ἔτος ἐστράτευσε (1457) καὶ πάλιν κατὰ τῆς Σερβίας, Οὐγγαρίας καὶ Ἀλβανίας. Ἡ ἐκστρατεία αὕτη, ἥτις παρετάθη μέχρι τοῦ 1459, κατέληξεν εἰς τὴν πλήρη ὑποταγὴν τῆς Σερβίας.

Ἐν τῷ μεταξύ, ἤτοι τῷ 1458, ὁ Μωάμεθ ἐστράτευσεν εἰς Πελοπόννησον καὶ κατέλαβε τὰς βορείους αὐτῆς ἐπαρχίας, ὁ δὲ στρατηγός του Ὀμὰρ καὶ τὰς Ἀθήνας, ἃς καὶ ἐπεσκέφθη ὁ Μωάμεθ κατὰ τὴν ἐκ Πελοποννήσου ἐπάνοδόν του (λήγοντος τοῦ Αὐγούστου 1458), διαμείνας ἐν τῇ πόλει ἐπὶ 4 ἡμέρας, θαυμάζων τὰ ἀρχαῖα αὐτῆς μνημεῖα καὶ ἐπιδαψιλεύων χάριτας εἰς τοὺς κατοίκους. Ἐπεσκέφθη ὡσαύτως τὰς Θήβας καὶ τὰς Πλαταιὰς καὶ τέλος τὴν Χαλκίδα, εἰς τὴν ὁποίαν εἰσῆλθεν ἐν πομπῇ τὴν 2 Σεπτεμβρίου 1458. Τῷ 1460 καθυπέταξεν ἐντελῶς τὴν Πελοπόννησον, πλὴν τῆς Κορώνης, Μεθώνης, Πύλου, Ναυπλίου καὶ Μονεμβασίας, ἐνῷ ἐξηκολούθουν αἱ ἐν Ἀλβανίᾳ ἐχθροπραξίαι. Κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος κατέλαβε τὴν Ἄμαστριν καὶ τὴν Σινώπην, εἶτα δὲ καὶ τὴν Τραπεζοῦντα, καταλύσας τὴν ἐκεῖ αὐτοκρατορίαν τῶν Κομνηνῶν.

Τὸ ἐπιὸν ἔτος ὁ Μωάμεθ ἐστράτευσε κατὰ τοῦ ἡγεμόνος τῆς Βλαχίας Βλὰδ-Δρακοὺλ καὶ μετὰ αἱματηροτάτους ἀγῶνας ἐξηνάγκασεν αὐτὸν νὰ ἀπέλθῃ εἰς Οὐγγαρίαν. Τῷ 1462 κατέλαβε, κατόπιν βραχείας ἀντιστάσεως, τὴν Μυτιλήνην, καταλύσας τὴν ἐκεῖ ἡγεμονίαν τῶν Κατελούζων, κατὰ τὸ ἔαρ δὲ τοῦ ἐπιόντος ἔτους (1463), εἰσβαλὼν εἰς Βοσνίαν, ἐξεπόρθησε τὰ διάφορα αὐτῆς φρούρια, ᾐχμαλώτισε τὸν ἡγεμόνα τῆς χώρας καὶ ὑπεχρέωσε τοὺς Βοσνίους νὰ ὑπηρετῶσιν εἰς τὸν τουρκικὸν στρατόν· ἀλλὰ συγχρόνως νέαι ἀνεπήδων κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος (1463) ἀνωμαλίαι εἴς τε τὰς εὐρωπαϊκὰς καὶ τὰς ἀσιατικὰς ἐπαρχίας. Ἐν Εὐρώπῃ ἤρχιζεν ὁ μακρὸς ἐκεῖνος πόλεμος πρὸς τοὺς Ἑνετοὺς καὶ λοιπὰς χριστιανικὰς δυνάμεις, ἐν Ἀλβανίᾳ ἐξηκολούθει ὁ πόλεμος κατὰ τοῦ Σκεντέρμπεη, ἐν Ἀσίᾳ δὲ ἐπανεστάτουν προκαλοῦντες αἱματηρὰς προστριβὰς οἱ διάφοροι Μουσουλμᾶνοι τοπάρχαι τῆς Καραμανίας, τῆς Ἀλαΐας, τῆς Ἀρμενίας καὶ αἱ ἐπὶ τῶν ὀρέων τῆς Κιλικίας ἐγκατεστημέναι ταταρικαὶ φυλαὶ τῶν Τοργκοὺτ καὶ τῶν Βαρσάν. Δι' ἐπανειλημμένων καὶ πολυετῶν ἐκστρατειῶν ὁ Μωάμεθ ἐξώντωσε τοὺς ἐν Ἀσίᾳ ἀντιπάλους του, ἐδῄωσε τὴν Σκλαβινίαν, τὴν Καρνιόλαν καὶ τὴν Στυρίαν καὶ ἐξεπόρθησε δι' αἱματηρῶν ἐφόδων τὴν Χαλκίδα (12 Ἰουλ. 1470). Ἐν τῷ μεταξὺ οἱ στόλοι τῆς Ἑνετίας καὶ οἱ τῶν ἄλλων χριστιανικῶν δυνάμεων, διατρέχοντες τὴν ἀνατολικὴν Μεσόγειον, ἐδῄουν τὰς τουρκικὰς κτήσεις (Σμύρνην, Μυτιλήνην, Ἀττάλειαν κλπ.), ἐνῷ ὁ Μωάμεθ ἐχύρωνε τὰ πρὸς τὴν Οὐγγαρίαν καὶ τὴν Κροατίαν σύνορα αὐτοῦ καὶ συγχρόνως ἐνήργει κατ' ἔτος καταστρεπτικὰς εἰς τὰς χώρας ἐκείνας, καθὼς καὶ εἰς τὴν Βόρειον Ἀλβανίαν καὶ τὴν Μολδαβίαν, ἐπιδρομὰς (1470—1475).

*Μωάμεθ Β', ὁ κατακτητής.*

[Προσωπογραφία τοῦ Τζεντίλε Μπελλίνι.

Τῷ 1475 κατέλαβε τὴν πόλιν Καφφᾶν (ἐπὶ τῶν ρωσικῶν ἀκτῶν τοῦ Εὐξείνου), καὶ ἐξησφάλισε τὴν κατοχὴν τῆς Ταυρικῆς χερσονήσου. Τῷ 1476, στρατεύσας πάλιν κατὰ τῆς Οὐγγαρίας καὶ Μολδαβίας, ἐνίκησε κατὰ κράτος παρὰ τὸ Ρσμποένι τὸν ἡγεμόνα Στέφανον, ἐνῷ ἕτερον τουρκικὸν σῶμα εἰσέβαλλε διὰ τοῦ Δουνάβεως εἰς Οὐγγαρίαν, Κροατίαν, Δαλματίαν, Καρινθίαν, Στυρίαν κτλ., ἐδῄου αὐτὰς καὶ ἀπῆγε χιλιάδας αἰχμαλώτων. Τῷ 1477—1478 ἀπεπειράθη νὰ καταλάβῃ τὴν ὑπὸ τῶν Ἑνετῶν κατεχομένην Ναύπακτον, ἀλλ' ἀπεκρούσθη, ὡς ἐπίσης ἀπεκρούσθησαν αἱ ἐπιθέσεις αὐτοῦ κατὰ τῶν Ἑνετῶν εἰς Ἰζόντζο, Ταλιαμέντο καὶ Πιάβε, καθὼς καὶ αἱ κατὰ τῆς Κρόϊας καὶ Σκόδρας ἐν Ἀλβανίᾳ. Ἐν τέλει κατέλαβεν ἅπαντα τὰ φρούρια τῆς Βορείου Ἀλβανίας (Κρόϊα, Σκόδρα, Ἀλέσιον κτλ.), ὑπογράψας τὴν 26ην Ἰανουαρίου 1479 τὴν μετὰ τῆς Ἑνετίας εἰρήνην. Ἐν τούτοις δὲν ἠννόει νὰ ἀναπαυθῇ. Ἅμα τῷ ἔαρι τοῦ ἐπιόντος ἔτους (1480) ἔπεμπε πάλιν τοὺς φοβεροὺς ἀκιντζῆδές του κατὰ τῆς Οὐγγαρίας, Τρανσυλβανίας, Καρινθίας κτλ. καὶ συγχρόνως ἀφ' ἑνὸς μὲν προσέβαλλε τὸ ἐν Ἀρμενίᾳ ὀχυρὸν κάστρον Τουρούλ, ἵνα τιμωρήσῃ τὸν τοπάρχην τοῦ μέρους ἐκείνου διὰ τὴν μετὰ τοῦ Οὐζοὺν-Χασὰν συμμαχίαν του, ἀφ' ἑτέρου δὲ προήρχετο εἰς σοβαρὰς προστριβὰς μετὰ τοῦ σουλτάνου τῆς Αἰγύπτου ἕνεκα τῆς ἀναμίξεως τούτου εἰς τὰ μικρασιατικὰ πράγματα, ἐνῷ συγχρόνως ἔπεμπε τοὺς στόλους του κατὰ τῶν ἱπποτῶν τῆς Ρόδου καὶ κατὰ τῆς Ν. Ἰταλίας. Καὶ ἀπέτυχον μὲν αἱ κατὰ τῆς Ρόδου καὶ τῶν παρακειμένων νησίδων ἐπιθέσεις, ἀλλ' ἐξεπορθήθη ἡ ὀχυρὰ Ὑδροῦς (Otranto) τῆς Ἰταλίας κατόπιν αἱματηροτάτων ἀγώνων. Ἅπαντες οἱ κάτοικοι τῆς πόλεως ταύτης, ἀνερχόμενοι εἰς 22 χιλιάδας, ἐξωλοθρεύθησαν, 12 χιλιάδων σφαγέντων καὶ 10 χιλιάδων ἀπαχθέντων εἰς αἰχμαλωσίαν. Ὁ διοικητὴς τῆς πόλεως καὶ ὁ ἐπίσκοπος αὐτῆς ἐπριονίσθησαν ζῶντες διὰ πρίονος.

Αὗται ἦσαν αἱ τελευταῖαι τοῦ Μωάμεθ πολεμικαὶ πράξεις, διότι συνεκέντρωσε μέν, ἅμα τῷ ἔαρι τοῦ ἐπιόντος ἔτους (1481), τὰ στρατεύματά του εἰς τὴν ἀπέναντι τῆς Κωσταντινουπόλεως μικρασιατικὴν ἀκτήν, καὶ ἐκίνησε πρὸς νέαν ἐκστρατείαν, ἄγνωστον κατὰ τίνος, ἀλλὰ δὲν ἠδυνήθη νὰ πραγματοποιήσῃ αὐτήν. Ἡ ὑγεία του εἶχεν ἤδη κλονισθῆ σοβαρῶς καὶ ἐνῷ ἐστρατοπέδευεν εἰς Χουνκιὰρ-Τσαϊρὶ (μεταξὺ Χαλκηδόνος καὶ Γκέμπζε), ἀναμένων μάτην νὰ ἀνακτήσῃ τὰς δυνάμεις του, ἀπέθανε τὴν 3ην Μαΐου 1481, χωρὶς νὰ ἀνακοινώσῃ εἰς οὐδένα κατὰ τίνος ἐξεστράτευε, κατὰ τοῦ σουλτάνου τῆς Αἰγύπτου ἢ κατὰ τῶν ἱπποτῶν τῆς Ρόδου, ὅπερ καὶ πιθανώτερον. Ἐξέπνευσε μὲ τὸ παράπονον ὅτι δὲν προέλαβε νὰ κατακτήσῃ τὴν Ἰταλίαν καὶ τὴν Ρόδον. Εἰς τὸν θρόνον διεδέχθη αὐτὸν ὁ πρωτότοκος υἱός του Βαγιαζὶτ Β'.

Ὁ Μωάμεθ Β' ὑπῆρξεν ἀναμφισβητήτως μία τῶν ἐπιβλητικωτέρων μορφῶν τῆς παγκοσμίου ἱστορίας καὶ εἷς τῶν μεγίστων σουλτάνων, ἂν μὴ ὁ μέγιστος τῆς μεγάλης Ὀθωμανικῆς αὐτοκρατορίας.

Ὡς ἄτομον ἦτο γενναῖος, δραστήριος καὶ φιλόδοξος, μὴ διστάζων νὰ φέρεται μετὰ ὠμῆς σκληρότητος χάριν τῆς πραγματοποιήσεως τῶν σκοπῶν του, σύμφωνα πάντοτε μὲ τὴν ἐποχήν, εἰς τὴν ὁποίαν ἔζησεν. Ἦτο συγχρόνως εὐρείας σπουδῆς κάτοχος, εἷς τῶν πλέον πεπαιδευμένων ἡγεμόνων τῆς ἐποχῆς του. Ὁ Ἕλλην ἱστορικὸς Γεώργιος Φραντζῆς, ὅστις τὸν ἐγνώρισε προσωπικῶς, ἐγκωμιάζει αὐτὸν ὡς γινώσκοντα, πλὴν τῆς τουρκικῆς, καὶ τὴν ἑλληνικήν, τὴν λατινικήν, τὴν ἀραβικήν, τὴν χαλδαϊκὴν καὶ τὴν περσικήν, καὶ ὡς ἀναγινώσκοντα τοὺς βίους τοῦ Μεγ. Ἀλεξάνδρου, τοῦ Μεγ. Κωνσταντίνου καὶ τοῦ Θεοδοσίου καὶ προσπαθοῦντα νὰ ὑπερβάλῃ αὐτούς. Ἐπροστάτευε τοὺς σοφοὺς καὶ τὰς ἐπιστήμας, ὁ ἴδιος δ' ἐκαλλιέργει τὰ γράμματα καὶ τὴν ποίησιν, σῴζονται δὲ καὶ ἐπιστολαί του συντεταγμέναι εἰς γλῶσσαν τουρκικήν, ἑλληνικὴν καὶ χαλδαϊκήν, καὶ αἵτινες ἐδημοσιεύθησαν ἐν Λυῶνι τῷ 1529 ἐν λατινικῇ μεταφράσει ὑπὸ τοῦ Landini. Ὑπεστηρίχθη ἐν τούτοις κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους ὅτι οὔτε τὴν λατινικὴν ἐγνώριζεν ὁ ἴδιος, τὴν δὲ ἑλληνικὴν ὡμίλει μόνον. Ὡς βασιλεὺς θεωρεῖται καὶ ὁ θεμελιωτὴς τῆς μεγάλης τουρκικῆς αὐτοκρατορίας τῶν Ὀσμανιδῶν. Διὰ τῆς κατακτήσεως τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἐπέτυχε τὴν ἕνωσιν τῶν ἀσιατικῶν μετὰ τῶν εὐρωπαϊκῶν αὐτῆς κτήσεων καὶ συγχρόνως ἐγένετο τελείως κύριος τῆς σημαντικωτάτης θαλασσίας ὁδοῦ Αἰγαίου - Μαύρης θαλάσσης, διὰ δὲ τῆς κατακτήσεως τῆς Πελοποννήσου, τῆς Ἀλβανίας καὶ τῆς Σερβίας ἐκυριάρχησεν ὁλοκλήρου τῆς χερσονήσου τοῦ Αἵμου, καὶ τέλος διὰ τῆς καταπολεμήσεως τῶν Οὔγγρων, τῶν Πολωνῶν, τῶν Βλάχων κλπ. ἐξησφάλισε τὰ πρὸς Β. ὅρια τῆς αὐτοκρατορίας του, ἐνῷ ἀφ' ἑτέρου διὰ τῆς καταλύσεως τῆς Ἑλληνικῆς αὐτοκρατορίας τῆς Τραπεζοῦντος καὶ διὰ τῆς ἐξοντώσεως τῶν διαφόρων Τούρκων καὶ ἄλλων ἡγεμονίσκων ἐν Μ. Ἀσίᾳ (ἐν Καραμανίᾳ, Κιλικίᾳ, Ἀρμενίᾳ κλπ.) ἐξησφάλισε τὸ ἐν Ἀσίᾳ κράτος του. Τὸ τουρκικὸν ἔθνος τιμᾷ μέχρι σήμερον αὐτὸν ὡς τὸν ἀνδρειότατον καὶ πολεμικώτατον τῶν σουλτάνων του καὶ ἀφ' ἑνὸς μὲν κοσμεῖ τὸ ὄνομά του διὰ τοῦ τίτλου τοῦ «Φατίχ», ἤτοι τοῦ «Κατακτητοῦ», ἀφ' ἑτέρου δὲ ἀναγνωρίζει αὐτὸν ὡς προαγωγὸν τῆς παιδείας, ὡς διακοσμητὴν καὶ ὡς μέγαν νομοθέτην τῆς μεγάλης αὐτοκρατορίας του, τοὺς τίτλους δὲ τούτους δικαιολογεῖ ἡ πρὸς τὰ γράμματα καὶ τοὺς λογίους εὔνοιά του, τὸ πλῆθος τῶν ὑπ' αὐτοῦ ἀνεγερθεισῶν οἰκο-

Digitized by Google

δομῶν (ἀνακτόρων, τεμενῶν, νοσοκομείων, πτωχοκομείων, σχολείων κλπ.) καὶ ἡ τῇ ἐπιμελείᾳ αὐτοῦ καταρτισθεῖσα νομοθεσία (κανουναμέ).

'Αλλ' ὁ Μωάμεθ Β' ὑπῆρξε κυρίως ἀνὴρ στρατιωτικός, πεπροικισμένος διὰ πολλῶν ἐκ τῶν φυσικῶν ἐκείνων ἀρετῶν, αἵτινες χαρακτηρίζουσι τοὺς μεγάλους στρατηγούς. Ἦτο ἐπινοητικὸς εἰς ἔργα τολμηρὰ καὶ πρὸ παντὸς ἀνὴρ ἰσχυρᾶς θελήσεως, πρωτοβουλίας καὶ αὐτοπεποιθήσεως. Πᾶσαν αὐτοῦ ἐκστρατείαν, πᾶσαν αὐτοῦ στρατιωτικὴν ἐπιχείρησιν συνελάμβανε καὶ ἀπεφάσιζεν ὁ ἴδιος, χωρὶς νὰ καθιστᾷ κοινωνοὺς τῶν σκοπῶν του οὐδὲ τοὺς πλέον ἐμπίστους τῶν ἀνωτάτων λειτουργῶν τῆς αὐτοκρατορίας του. Πρωτίστη αὐτοῦ ἀρχή, κατὰ τὰ πολεμικὰ αὐτοῦ ἐγχειρήματα, ἦν ἡ μυστικότης. Παρασκευαζόμενός ποτε διὰ μεγάλην τινὰ ἐκστρατείαν καὶ ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ ἀρχηγοῦ τοῦ στρατοῦ περὶ τοῦ ἀντικειμενικοῦ αὐτῆς σκοποῦ, ἀπήντησεν ἐν ὀργῇ: «Ἐὰν καὶ μία θρὶξ τοῦ γενείου μου ἐγνώριζε τὸν σκοπόν μου, θὰ ἀπέσπων πάραυτα αὐτὴν καὶ θὰ τὴν ἔκαιον».

Ἑτέρα μεγάλη ἀρετὴ αὐτοῦ ἦτο ἡ ἰσχυρὰ θέλησίς του καὶ ἡ ἐπιμονὴ πρὸς ἐπίτευξιν τοῦ ἐπιδιωκομένου σκοποῦ. Κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Κωνσταντινουπόλεως, μὴ δυνάμενος νὰ εἰσαγάγῃ τὸν στόλον του ἐντὸς τοῦ Κερατίου κόλπου, οὗτινος τὴν εἴσοδον ἔφρασσεν ἡ περίφημος ἐκείνη ἄλυσις, δὲν ἀπεθαρρύνθη οὐδὲ παρῃτήθη τοῦ σκοποῦ του. Παρεσκεύασε μετὰ τέχνης καὶ μυστικότητος τὴν ἐκτέλεσιν εὐφυοῦς σχεδίου καὶ ἐντὸς ὀλίγου μετεβίβασε διὰ ξηρᾶς 70 περίπου πολεμικὰ πλοῖα ἀπὸ τῆς παραλίας τοῦ Βοσπόρου (ἀκτὴ τοῦ Ντολμᾶ Μπαξέ), ὕπερθεν τῶν ὑψωμάτων τοῦ Σταυροδρομίου, καὶ τὰ καθείλκυσεν ἐντὸς τοῦ Κερατίου κόλπου πρὸς μεγίστην κατάπληξιν καὶ δέος τῶν πολιορκουμένων. Πρῶτος αὐτὸς ἐξ ἄλλου διεῖδε τὴν σημασίαν τοῦ βαρέος πυροβολικοῦ καὶ χρησιμοποιῶν τὴν ειδικότητα τοῦ Πολωνοῦ Urban κατεσκεύασε μεγάλα πυροβόλα καὶ εἰσήγαγεν αὐτὰ ἐν εὐρείᾳ κλίμακι εἰς τὰ στρατεύματά του.

Ὡς βασιλεὺς ὁ Μωάμεθ Β' ἐπέδρασεν ὅσον οὐδεὶς ἄλλος ἐπὶ τῆς τύχης καὶ τῆς ἐξελίξεως τοῦ ἑλληνικοῦ ἔθνους. Ὁ σύγχρονος αὐτοῦ Ἕλλην ἱστορικὸς Κριτόβουλος ὁ Ἴμβριος (1467) ἀποκαλεῖ αὐτὸν «φιλέλληνα». Ὁ παράδοξος οὗτος χαρακτηρισμὸς αἰτιολογεῖται ἐκ τοῦ ὅτι, ὄχι βεβαίως ἐκ συμπαθείας ἁπλῶς πρὸς τὸ ἔθνος, ἀλλὰ καὶ ἐκ λόγων πολιτικῆς σκοπιμότητος, ἐχορήγησεν εἰς τὰ πατριαρχεῖα εὐρέα προνόμια, τὰ ὁποῖα ἐσεβάσθησαν οἱ διάδοχοί του. Διὰ τῶν προνομίων ἐκείνων δὲν ἐξησφαλίζετο μόνον ἡ ἐλευθέρα ἐνάσκησις τῆς θρησκείας, ἀλλ' ἐδίδετο εἰς τὸ ἑλληνικὸν ἔθνος πλήρης, οὕτως εἰπεῖν, αὐτονομία ὑπὸ τὴν ἀνωτάτην διοίκησιν τοῦ πατριάρχου, ὑπαγομένων ἐπὶ πλέον ὑπ' αὐτὸν ὅλων ἐν γένει τῶν ὑπὸ τοὺς Τούρκους χριστιανικῶν λαῶν (Ἀλβανῶν, Βουλγάρων, Σέρβων, Ρουμάνων κλπ.). Τὰ πατριαρχεῖα, ἀντικαταστήσαντα τὰ παλάτια τῶν Βυζαντινῶν βασιλέων, ἀπετέλουν οὕτως εἰπεῖν κυβέρνησιν ἰδίου κράτους, συνεννοουμένην ἀπ' εὐθείας μετὰ τῶν ξένων χωρῶν. Βεβαίως, ἐπαναλαμβάνομεν, τὴν τοιαύτην ἀπέναντι τοῦ ἑλληνικοῦ ἔθνους πολιτικὴν τοῦ Μωάμεθ Β' δὲν ἐρρύθμιζεν ἡ αἰσθηματολογία μόνον, ἀλλὰ καὶ ἀνωτέρα τις σκοπιμότης. Διατελῶν οὗτος ἐν πλήρει γνώσει τῶν ἐρίδων μεταξὺ τῆς δυτικῆς καὶ τῆς ἀνατολικῆς Ἐκκλησίας, τῶν βλέψεων τῶν παπῶν καὶ τῶν δυτικῶν κρατῶν ἐπὶ τῆς Ἀνατολῆς, ἔκρινεν ὅτι εἶχε συμφέρον νὰ φανῇ εὔνους πρὸς τοὺς κατακτηθέντας Χριστιανούς, καὶ δὴ τοὺς Ἕλληνας, ἵνα θέσῃ φραγμὸν κατὰ πάσης ἔξωθεν ἐκμεταλλεύσεως. Τοιαύτη ὑπῆρξεν ἡ ἔναντι τοῦ ἡμετέρου ἔθνους πολιτικὴ τοῦ Μωάμεθ Β' καὶ τῶν πλείστων διαδόχων αὐτοῦ. Ν. ΚΑΛΟΜΕΝΟΠΟΥΛΟΣ

—**Μωάμεθ Γ'.** Σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας (βλ. *Μεχμὲτ Γ'*).

—**Μωάμεθ Δ'.** Σουλτᾶνος τῆς Τουρκίας (βλ. *Μεχμὲτ Δ'*).

**μωαμεθανικός,** *—ή, —όν·* ὁ ἀναφερόμενος εἰς τοὺς Μωαμεθανούς, ὁ τῶν Μωαμεθανῶν: «μωαμεθανικὴ θρησκεία», «τεμένη μωαμεθανικά».

**μωαμεθανισμὸς** (ὁ)· τὸ δόγμα τῆς μωαμεθανικῆς θρησκείας, ἄλλως *ἰσλαμισμός* (βλ. λ.).

**Μωαμεθανὸς** (ὁ)· ὁ ὀπαδὸς τῆς θρησκείας τοῦ Μωάμεθ.

**μωβεΐνη** (ἡ) *[Ὀργ. Χημ.]*. Τὸ πρῶτον συνθετικῶς παρασκευασθὲν χρῶμα τῆς ἀνιλίνης. Ἔχει τὸν τύπον $C_{27}H_{24}N_4$ καὶ ἀνήκει εἰς τὴν τάξιν τῶν *ἰνδουλινῶν* καὶ *σαφρανινῶν*. Ἡ ἀνακάλυψις αὐτῆς ἐγένετο τῷ 1856 ὑπὸ τοῦ Perkin δι' ὀξειδώσεως τῆς ἀλλυλοτολουϊδίνης. Δὲν ἔχει βιομηχανικὴν ἀξίαν. Σ. Γ.

**Μώγκαμ** (Maugham)· βλ. λ. *Μώμ.*

**Μωγκὲν** (Mauguin), ***Φραγκῖσκος.*** Περίφημος Γάλλος δικηγόρος καὶ πολιτικὸς (1785—1854). Διεκρίθη κυρίως ὡς δικηγόρος μεγάλων δικῶν, τὰς περισσοτέρας τῶν ὁποίων ἐκέρδισε χάρις εἰς τὴν μεγάλην ρητορικήν του δεινότητα καὶ τὴν νομομάθειάν του. Ἀποκτήσας μεγάλην δημοτικότητα, ἐξελέγη ἐπανειλημμένως βουλευτής. Ἐν τῇ βουλῇ συνέπραξε μετὰ τῆς ἄκρας ἀριστερᾶς καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐπανάστασιν τῆς Ἰταλίας τῷ 1848. Αἱ ἀγορεύσεις του ἐδημοσιεύθησαν εἰς τὰ «Χρονικὰ τῶν Δικαστηρίων». Μ. Δ. Β.

**μωγκινίτης** (ὁ) *[Χημ.]*. Ἄχρουν δηλητηριωδέστατον ἰσχυρῶς νυσσούσης ὀσμῆς ἀέριον, ἀντιστοιχοῦν εἰς τὴν σύστασιν τοῦ χλωροκυανίου ClCN. Ἐχρησιμοποιήθη κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον. Σ. Γ.

**Μωδαία,** ἡ ***Μώδα*** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὄνομα ἀρχαίας κρητικῆς πόλεως, ἥτις πιθανῶς ἔκειτο πλησίον τοῦ Πολυρρηνίου, οὐχὶ μακρὰν τοῦ ὁποίου εὑρέθησαν παρὰ τὸ Μάλεμε ἀρχαιολογήματα προϊστορικά, ὑπάρχει δὲ χωρίον *Μόδι*. Τὰ νομίσματα αὐτῆς φέρουν κεφαλὴν Διὸς γενειῶντος ἐπὶ τῆς μιᾶς ὄψεως καὶ ἐπὶ τῆς ἄλλης κεφαλὴν ταύρου καὶ τὴν λέξιν: ΜΟΔΑΙ[ΩΝ (ἢ ΝΩ). Τὸ ὄνομα τῆς πόλεως δὲν παρεδόθη, ἀλλ' ἐπλάσθη ὑπὸ τῶν νεωτέρων ἀρχαιολόγων, κατόπιν τῆς εὑρέσεως τῶν ἀνωτέρω νομισμάτων. Ε. Γ.

**Μωδεΐν** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Παλαιστίνης. Ἔκειτο πλησίον τῆς θαλάσσης, παρὰ τὸ σημερινὸν Λύδδα καὶ ἐπὶ ὅρους βορείως τῆς Διοσπόλεως. Εἶναι ὀνομαστὴ ἐν τῇ ἱερᾷ ἱστορίᾳ ὡς πατρὶς τῶν Μακκαβαίων. —Ω.

**Μώδι** *[Γεωγρ.]*. —1) Στενὴ καὶ ἐπιμήκης νησὶς (πλάτ. 37°30'25'' Β., μήκ. 23°32'00'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1657: Gulf of Athens) εἰς $^2/_3$ μιλλ. ΝΑ. τῆς ἀνατολικῆς ἐσχατιᾶς τοῦ Πόρου, δεξιὰ τῷ εἰσπλέοντι τὸν κόλπον τοῦ Μοναστηρίου. Παρουσιάζουσα κεφαλὴν ἀποτόμως ὀρθουμένην (334 ποδ.) ἐμφανίζει, ἀπὸ πολλῶν διευθύνσεων ὁρωμένη, σχῆμα ὀκλάζοντος λέοντος, δι' ὃ καὶ *Λεοντάρι* ὑπὸ πολλῶν ὀνομάζεται. —2) Ὕφορμος τῆς ἀκτῆς Χαρασῶνα τῆς ΝΔ. πλευρᾶς τῆς Σύρου (πλάτ. 37°24'00'' Β., μήκ. 24°52'00'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1542: Syra island). Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην, ἀναφέρεται εἰς τὸν χάρτην τοῦ Ν. Γ. Κοτσοβίλλη («Νῆσος Σύρος» 1892). —3) Νησὶς τοῦ ἀθροίσματος τῶν Δραγονέρων πρὸ τοῦ κόλπου τοῦ Ἀστακοῦ (βλ. χάρτην ἐν τ. Ε', σ. 879). Σ. Ε. Λ.

**Μωζὶ ντ' Αἰγκρεμὸν** (Maugis d'Aigremont). Μεσαιωνικὸν ἔπος τοῦ ΙΓ' αἰῶνος, ἀναφερόμενον εἰς τὰ κατορθώματα τοῦ υἱοῦ τοῦ Μπεβ ντ' Αἰγκρεμόν, Μωζί, ὁ ὁποῖος ἀπαχθεὶς ὑπὸ τῶν Σαρακηνῶν κατὰ τὴν ἡμέραν τῆς γεννήσεώς του καὶ ἀνατραφεὶς ἐν Σικελίᾳ ὑπὸ τῆς νύμφης Ὀριάνδης διέπραξε διάφορα θαυμαστὰ κατορθώματα, εἰλημμένα ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἐκ τοῦ κύκλου ἄλλων ὁμοίων ἐπῶν, καὶ ἰδίως τοῦ «Λανσελὸ ντὺ Λάκ». Μ. Δ. Β.

**Μωθὼ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Ἀραβίας (ἀραβ. =τόπος θανάτου), «ἐν ᾗ ἔθανεν Ἀντίγονος ὁ Μακεδὼν ὑπὸ Ραβίλου τοῦ βασιλέως τῶν Ἀραβίων» *(Στεφ. Βυζαντ.* 466,5). Τὸ ἐθνικὸν *Μωθηνός*. Σ. Ε. Λ.

**Μωκάδιος ἀκτὴ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία βυζαντινὴ μικρασιατικῆς κολπώσεως τοῦ Βοσπόρου. Πιθανῶς εἶναι ἡ ἀκτὴ τῆς μεταξὺ τῶν ἀκρωτηρίων Μαϊτζὰρ Μπουρνοῦ (Ἀργυρώνειον) καὶ Ἀνατολὶ-καβὰκ (Χαλκηδονίων ἱερόν, πλάτ. 41°13' Β., μήκ. 29°09' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1198: The Bosporus) διανοιγομένης κολπώσεως Μαϊτζάρ. Σ. Ε. Λ.

**Μωκατιανα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ἀρχαῖος πύργος τῆς Ἄνω Μοισίας ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Δουνάβεως, παρὰ τὴν πόλιν Ρατιαρίαν (Ἀρτσάρ), τὸν ὁποῖον, ὡς ἀναφέρει ὁ Προκόπιος (Περὶ κτισμ. Δ', 6, 25), ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανὸς (527—565) εἰς «φρούριον τελεώτατον κατεστήσατο». Α. Θ. Σ.

**Μωκηνσία** ***(Κινστέρνα)*** *[Βυζαντ.]*. Μία τῶν 21 γνωστῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει κινστερνῶν (δεξαμενῶν), κειμένη πρὸς Β. τῶν Ὑψωμαθείων. Α. Θ. Σ.

**Μωκησσὸς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Μικρᾶς Ἀσίας ἐν Καππαδοκίᾳ, ἐπί τινος παραποτάμου τοῦ Ἅλυος, ΝΑ. τῆς Ἀγκύρας. Τὸ ἀπὸ πολλοῦ χρόνου ἐν κακῇ καταστάσει φρούριον αὐτῆς ἀνῳκοδόμησεν ὁ αὐτοκράτωρ Ἰουστινιανός. Προικίσας δὲ τὴν πόλιν διὰ ξενώνων, λουτρώνων καὶ ἄλλων δημοσίων κτηρίων, ἀνέδειξεν αὐτὴν ἕδραν μητροπολίτου. Ὑπὸ Κωνσταντίνου τοῦ Πορφυρογεννήτου ἀναφέρεται ὡς μία τῶν ὀκτὼ πόλεων τῆς ἐπαρχίας Καππαδοκίας. Τὴν θέσιν αὐτῆς ἐπέχει ἡ σημερινὴ κωμόπολις *Κὶρ-Σεχὶρ* ἢ *Κὶρ-Σεχρῆ* (=πόλις τοῦ βουνοῦ), ἕδρα διοικήσεως τοῦ νομοῦ Ἀγκύρας, ἀριθμοῦσα μέχρι τῆς μικρασιατικῆς καταστροφῆς 8.000 κατοίκους, τὸ πλεῖστον Ἕλληνας, μεταναστεύσαντας τῷ 1923 εἰς Ἑλλάδα. Α. Θ. Σ.

**Μώκιος,** ***μάρτυς.*** Ρωμαῖος τὸ γένος τυγχάνων, ἠσπάσατο τὸν Χριστιανισμὸν καὶ ἐχειροτονήθη ἱερεὺς ἐν Μακεδονίᾳ. Συλληφθεὶς ὅμως ἐπὶ Διοκλητιανοῦ καὶ ὑποστὰς πλεῖστα βασανιστήρια ἀπεκεφαλίσθη ἐν Βυζαντίῳ, ὅπου ἐπὶ Κωνσταντίνου τοῦ Μεγάλου ἱδρύθη ναὸς ἐπ' ὀνόματί του. Ἑορτάζεται τῇ 11 Μαΐου. Τ. Ε. Ε.

—**Μωκίου, ναὸς Ἁγίου** —. Μία τῶν ἀρχαιοτάτων τοῦ Βυζαντίου ἐκκλησιῶν, ἀνεγερθεῖσα ὑπὸ τοῦ Μεγάλου Κωνσταντίνου (324—337) ἐπὶ τῆς θέσεως παλαιοῦ ἐθνικοῦ ναοῦ, παρὰ τὸ σημερινὸν Ἐξωκιόνιον (Ἕξ Μάρμαρα). Ἐτιμήθη ἐπ' ὀνόματι τοῦ μάρτυρος Μωκίου, οὗτινος τὸ σῶμα ἐτέθη ὑπὸ τὴν ἁγίαν Τράπεζαν, διότι ἐκεῖ εἶχε φονευθῆ οὗτος ὑπὸ τῶν ἐθνικῶν. Ἐπὶ Θεοδοσίου Α' (379—395) ἡ ἐκκλησία αὕτη ἐδόθη εἰς τοὺς Ἀρειανούς, ἐπικληθέντας ἐκ τούτου καὶ *ἐξωκιονίτας*· μετὰ ἑπτὰ ἔτη καταπεσοῦσα ἀνηγέρθη πολὺ βραδύτερον ὑπὸ τοῦ αὐτοκράτορος Ἰουστινιανοῦ Α' (527—565), κατόπιν δὲ ἀνεκαινίσθη ὑπὸ τοῦ Βασιλείου τοῦ Μακεδόνος (867—886). Εἰς τὴν ἐκκλησίαν ταύτην μετέβαινον δὶς τοῦ ἔτους ἐν πομπῇ οἱ αὐτοκράτορες τοῦ Βυζαντίου: τὴν ἑσπέραν τῆς Κυριακῆς τοῦ Ἀντίπασχα καὶ τὴν ἡμέραν τῆς Μεσοπεντηκοστῆς. Τὴν 11ην Μαΐου 903, ἡμέραν τῆς Μεσοπεντηκοστῆς, ὑπέστη ἐντὸς τοῦ ναοῦ δολοφονικὴν ἐπίθεσιν ὁ αὐτοκράτωρ Λέων ΣΤ' καὶ ἔκτοτε κατηργήθη ἡ ἐκεῖ μετάβασις τῶν αὐτοκρατόρων κατὰ τὴν ἐν λόγῳ ἑορτήν. Κατὰ τοὺς τελευταίους αἰῶνας τῆς αὐτοκρατορίας μόνον ἐρείπια τοῦ ναοῦ ἐσῴζοντο. Ν. ΚΛΣ

**Μωκλαὶρ** (Mauclair), ***Κάμιλλος.*** Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1872. Ὑπέστη, τόσον ὡς πρὸς τὸ ὕφος, ὅσον καὶ ὡς πρὸς τὰς ἰδέας, τὴν ἐπίδρασιν τοῦ Mallarmé, τοῦ Barrès καὶ τοῦ Maeterlink. Συνειργάσθη εἰς διάφορα περιοδικὰ καὶ ἐφημερίδας καὶ συνέγραψε: «Stéphane Mallarmé; Eleusis» (1894), δοκίμιον αἰσθητικῆς καὶ μεταφυσικῆς, «Sonatine d'automne» (1894) ποιήματα, «Jules Laforgue» (1896), τὰ μυθιστορήματα: «Couronne de clarté» (1895), «Les clefs d'or» (1897), «L'Orient vierge» (1897), «Le soleil des morts» (1898), «L'ennemie des rêves» (1899), τὴν μελέτην: «L'art en silence» (1900) κλπ. Θ. Π.

**Μώλεια** (τά) *[Ἀρχ.]*. Τὴν ὀνομασίαν ταύτην (ἐκ τοῦ *μῶλος*=*μάχη*) ἔφερεν ἀρκαδικὴ ἑορτὴ εἰς ἀνάμνησιν τῆς μονομαχίας μεταξὺ τοῦ μυθικοῦ Ἀρηϊθόου καὶ τοῦ βασιλέως τῆς Τεγέας Λυκούργου, υἱοῦ τοῦ Ἀλέου. Καθ' Ὅμηρον, ὁ Ἀρηΐθοος, ὁ ἐπικαλούμενος Κορυνήτης, ὡς φέρων σιδηροῦν ρόπαλον, ἐφονεύθη ὑπὸ τοῦ Λυκούργου δι' ἑνὸς μόνου κτυπήματος λόγχης κατὰ τὴν συνάντησιν αὐτῶν ἔν τινι στενωπῷ. Ἔκτοτε οἱ Ἀρκάδες ἑώρταζον τὸ γεγονὸς τοῦτο ἐν τῷ τόπῳ ἐκείνῳ, κληθέντι *Μωλύχιον*, ὡς παραδίδει ὁ Ἡσύχιος. Κατὰ τὸν Παυσανίαν, ἡ στενωπὸς αὕτη ἦτο ἐν τῇ περιοχῇ τῆς Μαντινείας, ὑπῆρχε δ' ἐκεῖ τύμβος, τὸν ὁποῖον οἱ κάτοικοι ἐκάλουν *Ἀρηΐθοον*. Ὁ Fougères ταυτίζει τὴν ἀρχαίαν ἐκείνην θέσιν μὲ λοφίσκον κείμενον πλησίον τοῦ σημερινοῦ χωρίου Τσιπιανά, φρονεῖ δὲ ὅτι ἡ ἑορτὴ τῶν Μωλείων ἦτο ἀρχικῶς βοιωτική, μεταπλασθεῖσα εἰς ἀρκαδικὴν ἐπὶ τῇ μεταναστεύσει Βοιωτῶν εἰς τὴν κεντρικὴν Ἀρκαδίαν· κατὰ τὴν ἑορτὴν ταύτην ἑλατρεύετο ἀφ' ἑνὸς μὲν ὁ μυθικὸς ἥρως τῆς βοιωτικῆς Ἄρνης Ἀρήϊθοος ἐν ὑποστάσει Ἱππείου Ποσειδῶνος, ὡς θεοῦ τῶν πηγῶν καὶ τῶν ὑδάτων, τὰ ὁποῖα διατηροῦσι τὴν βλάστησιν, ἀπαραίτητον τροφὴν διὰ τὴν συντήρησιν τῶν πολεμικῶν ἵππων, ἀφ' ἑτέρου δὲ ὁ Λυκοῦργος, ἡλιακὸς ἥρως ἐν ὑποστάσει Λυκαίου Διός, ὅστις καταστρέφει πολλάκις διὰ τῆς θερμότητος τὴν βλάστησιν. Ὁ μῦθος οὗτος ἦτο σύμβολον τῆς μάχης μεταξὺ τοῦ ποσειδωνιακοῦ στοιχείου καὶ τοῦ ἡλιακοῦ τοιούτου, ἤτοι μεταξὺ τῆς ὑγρασίας καὶ τῆς ξηρασίας, τῆς καλλιεργημένης γῆς καὶ τῆς ἀγόνου τοιαύτης, ὡς συμβαίνει πολλάκις εἰς τὰς ἀποκεκλεισμένας πεδιάδας τῆς Ἀρκαδίας. Β. Δ. Θ.

**μωλιάτικα** (τά), ἢ ***μολιάτικα***· τὰ δικαιώματα τοῦ μώλου, τὸ πληρωνόμενον ποσὸν ὑπὸ τῶν προσορμιζομένων πλοίων διὰ τὰ ἔξοδα τοῦ μώλου.

**Μῶλντεν** (Malden) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡν. Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Μασσαχουσσέτης. Κάτ. 50.313. Εἶναι πόλις βιομηχανικωτάτη μὲ 242 ἐργοστάσια, παράγοντα κυρίως καουτσοὺκ καὶ χημικὰ προϊόντα. Κεῖται πρὸς Β. τῆς Βοστώνης καὶ εἶναι σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον. Μ. Δ. Β.

**μῶλος** (ὁ), ἡ ***χηλὴ*** (ἐνίοτε ***βραχίων*** ἢ ***λιμενοβραχίων***). Πρόβολος ἐκπορευόμενος ἐκ τῆς ξηρᾶς, ἐν εἴδει βραχίονος, προωρισμένος νὰ περιβάλλῃ καὶ προφυλάττῃ ὡρισμένην ὑδατίνην ἐπιφάνειαν, ἥτις χρησιμοποιεῖται ὡς λιμήν. Ἐνίοτε καλοῦσι *μώλους*, προβόλους καθέτους ἢ κεκλιμένους τῇ ἀκτῇ, οἱ ὁποῖοι, περιβαλλόμενοι ὑπὸ κρηπιδοτοίχων, χρησιμοποιοῦνται διὰ τὴν προσέγγισιν πλοίων καὶ τὴν διενέργειαν πράξεων. Εἰς τὰ ἔργα ταῦτα πρέπει νὰ δίδεται μᾶλλον τὸ ὄνομα *προβλῆς* ἢ *ἀποβάθρα*.

Συχνὰ ὅμως ἀπαντῶνται καὶ ἔργα ἐκπληροῦντα τὸν διπλοῦν σκοπὸν τῆς χηλῆς καὶ τῆς ἀποβάθρας, διδομένων εἰς τὸ ἔργον τῶν καταλλήλων διαστάσεων καὶ κρηπιδουμένης τῆς ἐσωτερικῆς πλευρᾶς αὐτοῦ. Παράδειγμα τοιούτου μώλου ἀποτελεῖ ὁ μῶλος Θεμιστοκλέους ἐν Πειραιεῖ.

Οἱ μῶλοι ἀποτελοῦσιν, ὁμοῦ μετὰ τῶν κυματο-



Digitized by Google

θραυστῶν καὶ τῶν βραχιόνων, τὰ καλούμενα ἐξωτερικὰ ἔργα τῶν λιμένων, τὰ ὁποῖα παρέχουσιν εἰς αὐτοὺς τὴν ἀπαιτουμένην ἀσφάλειαν διὰ τὰ ἐλλιμενισμένα πλοῖα. Κατασκευάζουσι συνήθως εἰς τοὺς λιμένας δύο μώλους, ἐκ τῶν ὁποίων ὁ εἷς, ἐκτεθειμένος εἰς τὴν ἀνοικτὴν θάλασσαν, ἔχει νὰ ὑποστῇ τὰς τρικυμίας μεθ' ὅλης αὐτῶν τῆς σφοδρότητος, καὶ καλεῖται *προσήνεμος μῶλος*, ὁ δὲ ἕτερος, πολὺ μικρότερος καὶ ἀσθενέστερος συνήθως τοῦ προηγουμένου, προφυλάσσει τὸν λιμένα ἀπὸ τοὺς ἐκ τῆς γειτονικῆς ἀκτῆς ἀσθενεῖς κυματισμοὺς καὶ καλεῖται *ὑπήνεμος μῶλος* ἢ *ἀντιβραχίων*.

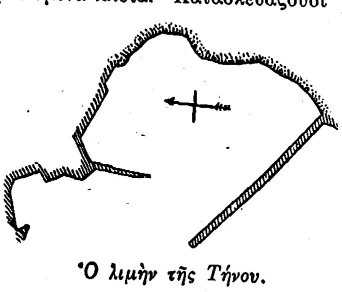

*Ὁ λιμὴν τῆς Τήνου.*

Εἰς τοὺς μώλους δίδουσιν ἐν κατόψει σχῆμα εὐθύγραμμον, τεθλασμένον ἢ καμπύλον, κατασκευάζουσι δὲ αὐτοὺς καθέτους ἢ κεκλιμένους ὡς πρὸς τὴν ἀκτήν, συνεχεῖς συνήθως, ἐνίοτε ὅμως καὶ διακεκοσμημένους ἀναλόγως τῶν ἑκάστοτε τοπικῶν συνθηκῶν. Περὶ τῶν διαφόρων τρόπων κατασκευῆς αὐτῶν βλ. *λιμενικὰ ἔργα*.

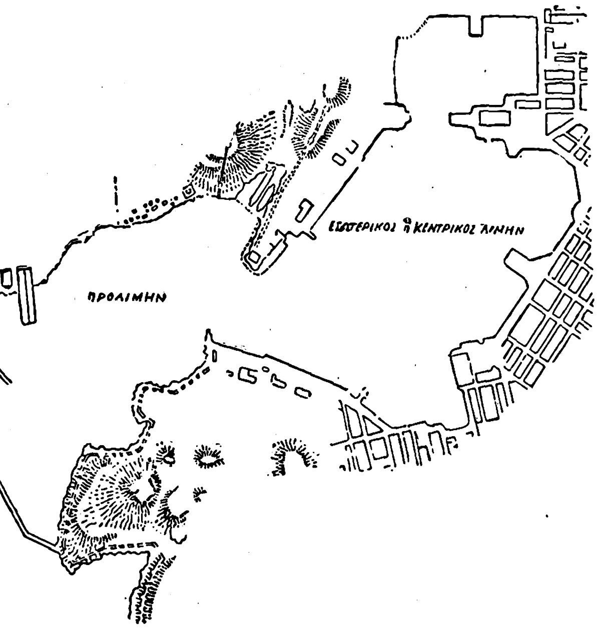


*Ὁ λιμὴν Πειραιῶς μετὰ τῶν μώλων αὐτοῦ.*

Ἡ διατομὴ τῶν μώλων ἔχει ποικίλας μορφάς, βασιζομένας ἀφ' ἑνὸς μὲν εἰς τὸν τρόπον τῆς προσβολῆς τῶν ἔργων ὑπὸ τῶν κυμάτων, ἀφ' ἑτέρου δὲ ἐπὶ τῶν διαφόρων ἐδαφολογικῶν συνθηκῶν τοῦ

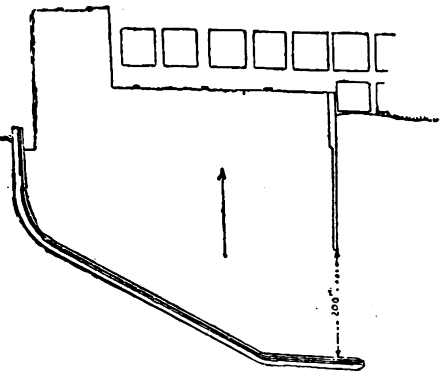

*Οἱ μῶλοι τοῦ λιμένος Καλαμῶν.*

πυθμένος, ἐπὶ τοῦ ὁποίου ἐδράζεται τὸ ἔργον. Ὡς πρὸς τὴν ἐνέργειαν τῶν κυμάτων ἐπὶ τῶν διαφόρων ἔργων, ἔχει παρατηρηθῆ ὅτι ταῦτα ἐνεργοῦσι διαφόρως εἰς τὸ ἔξαλον ἢ εἰς τὸ ὕφαλον τμῆμα

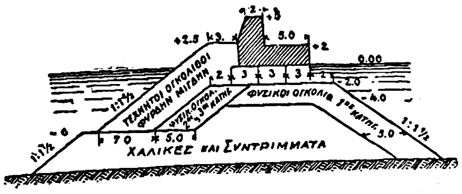


*Τομὴ τοῦ μώλου Ἄνδρου.*

αὐτῶν, ἐπὶ πλέον δὲ ὅτι ἡ ἔντασις τῆς ἐνεργείας ταύτης ἔχει τὴν μεγαλυτέραν τιμὴν αὐτῆς εἰς τὴν ἴσαλον γραμμὴν καὶ βαίνει ἐλαττουμένη ἀπὸ ταύτης πρὸς τὸν πυθμένα, εἰς τρόπον ὥστε ἀπὸ ὡρισμένου ὁρίου, μεταβλητοῦ εἰς τοὺς διαφόρους τόπους, καὶ πέραν ἡ προσβολὴ τῶν κυμάτων εἶναι τόσον μικρά, ὥστε νὰ μὴ προξενῇ σοβαρὰς ζημίας, καὶ κατὰ τὴν διάρκειαν τῶν μεγαλυτέρων ἀκόμη τρικυμιῶν.

Ἕνεκα τούτων, αἱ διάφοροι διατομαὶ δέον νὰ ὦσιν ἰσχυρότεραι παρὰ τὴν ἴσαλον γραμμήν, παρὰ εἰς τὰ βαθύτερα αὐτῶν σημεῖα. Ἡ ἀνάγκη τῆς διαφορᾶς ταύτης τῆς ἀντοχῆς τῶν διαφόρων μερῶν τῶν διατομῶν ἐπαυξάνεται ἔτι πλέον ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι τὰ κύματα, θραυόμενα εἰς τὴν ἐπιφάνειαν, ὅταν ἔχουν μέγα σχετικῶς ὕψος, ἢ ὅταν προσκρούωσιν ἐπὶ τῶν ἔργων, ἀποκτῶσι καὶ μεταφορικὰς κινήσεις, τεινούσας νὰ παρασύρωσι τὰ διάφορα ὑλικά, ἐκ τῶν ὁποίων ἀποτελεῖται τὸ παρὰ τὴν ἐπιφάνειαν τμῆμα τῆς διατομῆς, καὶ νὰ καταστρέψωσιν οὕτω αὐτήν.

Πάντες οἱ ἀνωτέρω λόγοι ἀναγκάζουσι τοὺς κατασκευαστὰς νὰ χρησιμοποιῶσιν εἰς τὰ ὑψηλότερα μὲν σημεῖα τῶν διατομῶν τὰ ὀγκωδέστερα καὶ ἀνθεκτικώτερα ὑλικά, εἰς τὰ βαθύτερα δὲ τὰ μικρότερα καὶ ἀσθενέστερα.

Ἀναλόγως ἐξ ἄλλου τῆς μορφῆς τῆς διατομῆς τοῦ ἔργου, εἶναι διάφορος καὶ ὁ τρόπος τῆς προσβολῆς αὐτοῦ ὑπὸ τῶν κυμάτων. Ἂν τὸ ἔργον παρουσιάζῃ κατακόρυφα μέτωπα πρὸς τὴν διεύθυνσιν τῶν κυμάτων, τότε τὰ τελευταῖα ἐπιδρῶσι μεθ' ὅλης τῆς ὠστικῆς ἐνεργείας αὐτῶν ἐπὶ τῶν ἔργων, τὰ ὁποῖα δέον τότε νὰ εἶναι εὐσταθέστερα. Ἂν τὸ ἔργον παρουσιάζῃ μέτωπα κεκλιμένα, ἓν μέρος τῆς ὠστικῆς δυνάμεως τοῦ κύματος, καὶ δὴ ἡ κατακόρυφος συνιστῶσα αὐτῆς, ἐπαυξάνει τὴν εὐστάθειαν τοῦ ἔργου διὰ τῆς αὐξήσεως τοῦ βάρους τοῦ ἔργου. Ἡ τελευταία αὕτη αὔξησις γίνεται ἔτι μεγαλυτέρα καὶ ἐκ τοῦ γεγονότος ὅτι μετὰ τὴν θραῦσιν τῶν κυμάτων τὰ πρὸς τὰ ἄνω ἐκτοξευόμενα ὕδατα ἐπαναπίπτουσι μεθ' ὁρμῆς ἐπὶ τοῦ ἔργου, καθηλώνουσα οὕτως εἰπεῖν ταῦτα ἐπὶ τοῦ πυθμένος. Ἐπειδὴ ἡ ἐνέργεια τῶν πρὸς τὰ ἄνω ἐκτοξευομένων ὑδάτων εἶναι πολὺ ἰσχυρά, δέον ν' ἀποφεύγωνται εἰς τὰ ἔργα αἱ πρὸς τὸ πέλαγος ἐξέχουσαι ἐπιφάνειαι. Παρὰ τὰ ἀνωτέρω, ἐπειδὴ

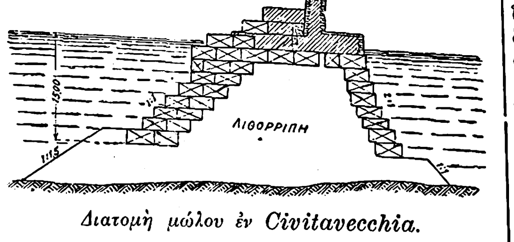


*Διατομὴ μώλων ἐν Civitavecchia.*

εἰς τὰ κεκλιμένα ταῦτα μέτωπα δημιουργεῖται τὸ φαινόμενον τῆς ραχίας, καθ' ὃ θραύονται τὰ κύματα δίδοντα εἰς τὰ μόρια τοῦ ὕδατος καὶ μεταφορικὴν ἱκανότητα, εἶναι προτιμοτέρα ἡ χρησιμο-

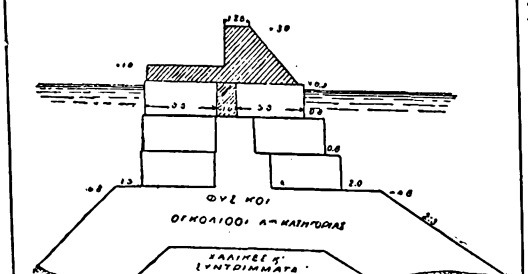

*Διατομὴ τοῦ μώλου Τηγανίου.*

ποίησις διατομῶν μὲ ἀπότομα, κατακόρυφα ἢ σχεδὸν κατακόρυφα μέτωπα, καὶ ἡ χρῆσις τοιούτων διατομῶν εἶναι ἐπιβεβλημένη ἐκεῖ ἔνθα ἡ φύσις τοῦ πυθμένος εἶναι καλή, ἀποκλείουσα ὑποσκαφὰς καὶ ὑποχωρήσεις.

Ἕτερος παράγων ἐπηρεάζων τὰ μέγιστα τὴν

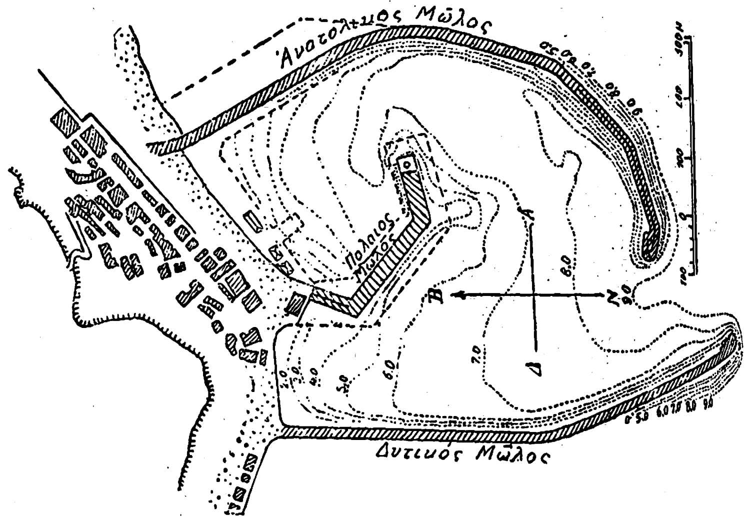


*Ὁ λιμὴν Ἐμπεδοκλέους, ἐν Ν. Σικελίᾳ.*

μορφὴν τῆς διατομῆς εἶναι καὶ ἡ ποιότης καὶ τὸ εἶδος τῶν ἐν τῷ τόπῳ ὑπαρχόντων ὑλικῶν, τὰ ὁποῖα θὰ χρησιμοποιηθῶσι διὰ τὴν κατασκευὴν τοῦ ἔργου.

Ἀναλόγως τῶν τοπικῶν συνθηκῶν καὶ τῶν προηγουμένως ἐκτεθέντων, ἡ ἐγκαρσία τομὴ τῶν μώ-

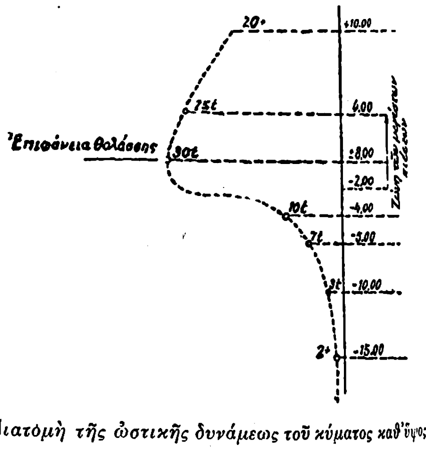


*Διατομὴ τῆς ὠστικῆς δυνάμεως τοῦ κύματος καθ' ὕψος.*

λων, ἡ διατομὴ δηλαδὴ αὐτῶν, ἔχει ποικίλας μορφάς. Οὕτως ἔχομεν μώλους ἀποτελουμένους ἐξ ὁλοκλήρου ἐκ λιθορριπῶν ἀπὸ φυσικοὺς ὀγκολίθους, ὅπως ὁ μῶλος τοῦ λιμένος Τήνου, ἢ ἐκ λιθορριπῶν μικτῶν ἐκ φυσικῶν καὶ τεχνητῶν ὀγκολίθων, ὅπως ὁ μῶλος τοῦ λιμένος Πλωμαρίου (βλ. μορφὴν διατομῆς εἰς τ. ΙΣΤ', σ. 180). Παρουσιάζουν οἱ μῶλοι καὶ διατομὴν μικτήν, ἀποτελουμένην ἐκ λιθορριπῶν εἰς τὰ κατώτερα αὐτῶν σημεῖα καὶ ἐξ ὀγκολίθων κτιστῶν ἢ χυτῶν, κοινῶν ἢ κυψελωτῶν, τοποθετουμένων κανονικῶς εἰς τὰ ἀνώτερα καὶ ἀβαθέστερα αὐτῶν σημεῖα, μὲ τὸ πρὸς τὸ πέλαγος μέτωπον κατακόρυφον ἢ κλιμακωτόν. Ἐνίοτε ἐλλείπει τελείως ἡ ἐκ λιθορριπῆς ὑποδομή, κατασκευάζονται δὲ καὶ ἐξ ὁλοκλήρου ἐκ τοιχοποιίας, προκειμένου περὶ μικρῶν βαθῶν, ἢ τόπων ὑποκειμένων εἰς παλιρροίας, ὁπότε εἶναι δυνατὴ ἡ πρὸς κατασκευὴν τοιχοποιίας ἐργασία κατὰ τὴν ὥραν τῆς ἀμπώτιδος. Πολλάκις προασπίζουσι τοὺς ἔχοντας τὰς τελευταίας ταύτας μορφὰς μώλους, ἐνισχύοντες αὐτοὺς ἐξωτερικῶς διὰ λιθορριπῶν ἐκ φυσικῶν καὶ τεχνητῶν ὀγκολίθων, ἐξικνουμένων ἀπὸ τῶν λιθορριπῶν τῆς ὑποδομῆς μέχρι καὶ ἄνω τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης. Ἡ ἐνίσχυσις αὕτη εἶναι δυνατὸν νὰ γίνῃ καθ' ὅλον τὸ μῆκος τοῦ μώλου ἢ καὶ ἐπὶ μέρους

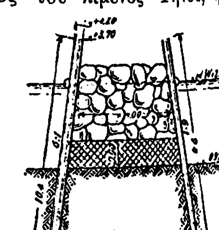

*Διατομὴ μώλου μετὰ ξυλίνων μετώπων.*

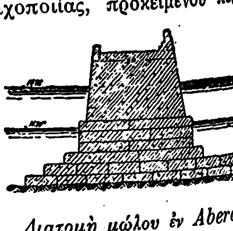

*Διατομὴ μώλου ἐν Aberdeen (Ἀγγλία) ἐκ πιεστοῦ σκυροδέματος ἐπὶ ὑποδομῆς ἐκ σακκογκολίθων.*

Digitized by Google

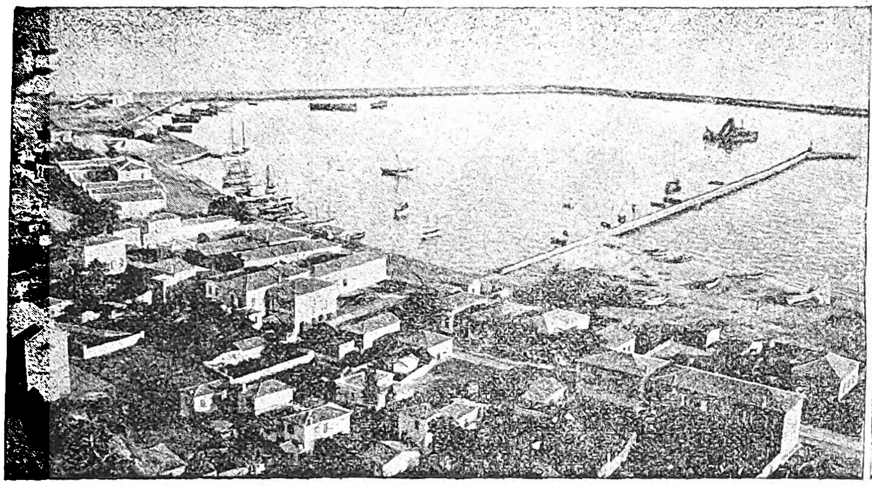

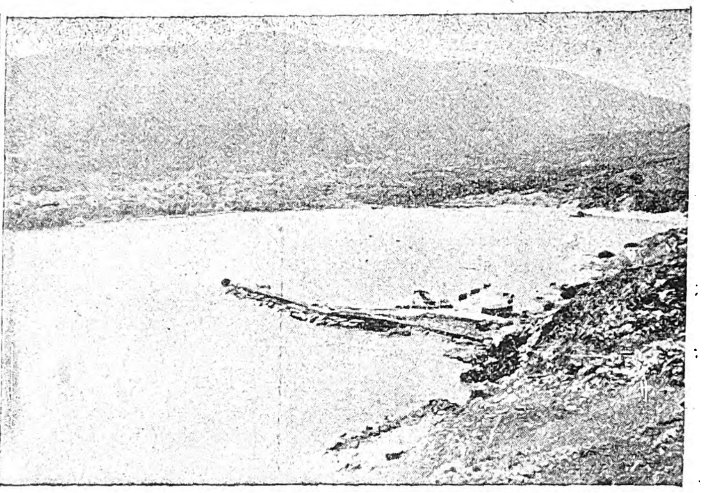

*1) Ὁ μῶλος τοῦ Καρλοβασίου.-2) Ὁ μῶλος τοῦ Πλωμαρίου.*

μόνον αὐτοῦ, τοῦ πλέον ἐκτεθειμένου εἰς τὰς ὁρμὰς τῶν κυμάτων. Τῆς τελευταίας ταύτης μορφῆς εἶναι οἱ μῶλοι τῶν λιμένων Ἄνδρου, Καρλοβασίου, Τηγανίου καὶ ἄλλοι.

Ἐφαρμόζονται ἐπίσης διατομαί, εἰς ὄχι συχνὰς ὅμως περιπτώσεις, καὶ προκειμένων συνήθως μικρῶν βαθῶν, εἰς τὰς ὁποίας γίνεται χρῆσις ξυλείας, φακέλων, χυτοῦ σκυροδέματος, σακκογκολίθων κ.λ.π. Σχεδὸν πάντοτε κατασκευάζουσιν, ὅπου ἡ σφοδρότης τῶν κυμάτων εἶναι μεγάλη, ὑπὲρ τὸ κύριον σῶμα τοῦ μώλου καὶ μίαν τοιχοποιίαν, φθάνουσαν ἐνίοτε εἰς ὕψος πέντε καὶ πλέον μέτρων ἀπὸ τῆς ἐπιφανείας τῆς θαλάσσης, προωρισμένην νὰ ἐμποδίσῃ τὴν ὑπερπήδησιν τοῦ μώλου ὑπὸ τῶν κυμάτων καὶ τὴν δημιουργίαν θαλασσοταραχῆς ἐκ τούτου εἰς τὸν λιμένα. Ἡ τοιχοποιία αὕτη ἐπιδρᾷ δι' ὁλοκλήρου τοῦ βάρους αὐτῆς, μὴ ἐλαττουμένου ὑπὸ τῆς ἀντώσεως. λίαν εὐνοϊκῶς ἐπὶ τῆς εὐσταθείας τοῦ ὅλου ἔργου. Τὸ γεγονὸς δὲ τοῦτο ἀποτελεῖ ἕτερον σοβαρώτατον λόγον κατασκευῆς τῆς τοιχοποιίας ταύτης, φερομένης ὑπὸ τὸ ὄνομα ὑπερασπιστήριος τοῖχος ἢ προασπιστικὴ τοιχοποιία.

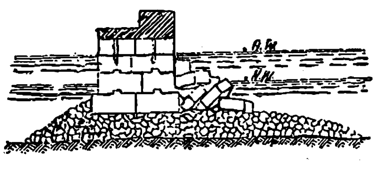

*Μῶλος ἐν Mormugao, ἐκ τεχνητῶν ὀγκολίθων μετὰ ἐπικλινῶν ἁρμῶν ἑδράσεως.*

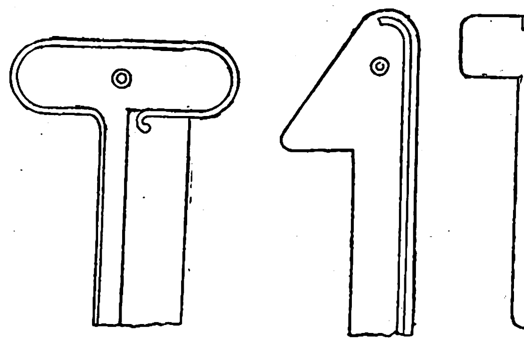

*Τύποι τῆς μορφῆς ἀκρομωλίων.*

Αἱ ἐκ λιθορριπῶν διατομαὶ ἐνδείκνυνται διὰ πυθμένας κακῆς ποιότητος, ἀποτελουμένους ἐξ ἀσταθοῦς ἰλύος, ἥτις ἔχει λίαν μικρὰν ἀντοχήν. Οἱ ἄλλοι τύποι, ὅπου χρησιμοποιοῦνται ὀγκόλιθοι κανονικῶς τοποθετημένοι, ἐφαρμόζονται μόνον προκειμένου περὶ πυθμένων ἀποδεδειγμένης καὶ μεγάλης σχετικῶς ἀντοχῆς, διότι λόγῳ τοῦ μεγάλου καὶ συγκεντρωμένου βάρους αὐτῶν, δημιουργοῦσιν ἰσχυρὰς πιέσεις ἐπὶ τοῦ πυθμένος καὶ ὑπάρχει κίνδυνος καταστροφῆς αὐτῶν.

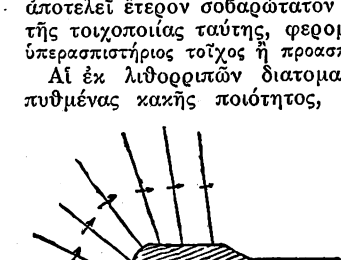

***Περιστροφὴ κυμάτων περὶ ἀκρομώλιον.***

Ἓν λίαν ἐνδιαφέρον σημεῖον τῆς κατασκευῆς εἶναι τὸ *ἀκρυμώλιον* ἢ *ἀκροχήλιον*, τὸ ἄκρον δηλαδὴ ἢ τὸ τέρμα τοῦ μώλου πρὸς τὸ πέλαγος.

Τὸ τμῆμα τοῦτο τῆς κατασκευῆς, λόγῳ τοῦ ὅτι εἶναι τὸ πλέον προκεχωρημένον πρὸς τὴν θάλασσαν, ἔχει νὰ ὑποστῇ τὰς πλέον ἰσχυρὰς ἐπιθέσεις τῶν τρικυμιῶν. Ἐπειδή, ἐκτὸς τούτου, τὰ ἀκρομώλια φθάνουσιν εἰς τὰ μεγαλύτερα βάθη, παρὰ τὰ λοιπὰ τμήματα τοῦ ἔργου, καὶ εἶναι ἀνάγκη ἐπὶ πλέον νὰ βασισθῶσιν ἐπ' αὐτῶν οἱ φανοὶ τοῦ στομίου τοῦ λιμένος, κατασκευάζονται ταῦτα μὲ διαστάσεις μεγαλυτέρας τῶν τοῦ λοιποῦ σώματος τοῦ μώλου, καὶ δὴ κατὰ τρόπον ὁ ὁποῖος δέον νὰ ἐξασφαλίζῃ πλήρως τὴν εὐστάθειαν καὶ ἀντοχὴν αὐτῶν. Πρέπει νὰ καταβάλλεται προσοχὴ διὰ τὴν ἐκλογὴν τῆς διατάξεως καὶ τοῦ σχήματος τοῦ ἀκρομωλίου, κατὰ τρόπον, ὥστε νὰ καθίσταται δυνατὸν νὰ ἐμποδίζῃ τοῦτο τὴν εἴσοδον τῶν κυμάτων ἐντὸς τοῦ λιμένος, ἢ τοὐλάχιστον νὰ μὴ ἐνισχύῃ τὰ τυχὸν ἐν τῷ λιμένι εἰσερχόμενα κύματα, πρᾶγμα ὅπερ συμβαίνει ὅταν ἐπιτρέπῃ τὴν περὶ αὐτὸ περιστροφὴν τῶν κυμάτων. Μετὰ τὴν κατασκευὴν τῶν ἔργων παίζει σπουδαιότατον ρόλον διὰ τὴν διάρκειαν αὐτῶν ἡ συντήρησις αὐτῶν καὶ ἡ προφύλαξις ἀπὸ τῶν διαφόρων ἐπιβλαβῶν ἐπιρροῶν. Α. Α. Κ.

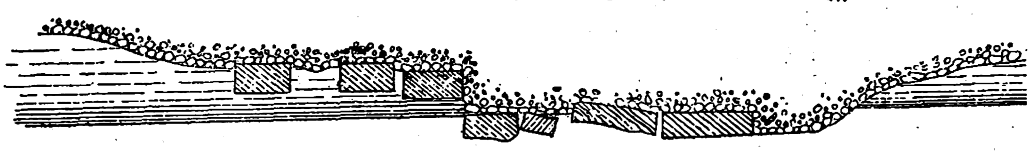

*Διατομὴ ἐμφαίνουσα τὰς ζημίας τοῦ μώλου Κατακώλου.*

**Μῶλος** *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς ἐπαρχίας Λοκρίδος τοῦ νομοῦ Φθιώτιδος καὶ Φωκίδος, ἀποτελοῦσα ἰδίαν ὁμώνυμον κοινότητα. Κεῖται ἐγγὺς τῆς ΝΑ. εἰσόδου τῶν Θερμοπυλῶν ἐν τῇ μεταξὺ τοῦ Καλλιδρόμου ὄρους καὶ τῆς παραλίας τοῦ Μαλιακοῦ μικρᾷ πεδιάδι καὶ ἦτο ἄλλοτε πρωτεύουσα τοῦ τέως δήμου Θερμοπυλῶν. Παράγει σιτηρά, βάμβακα, ὄσπρια, οἶνον κ.ἄ. καὶ ἔχει εἰρηνοδικεῖον, τελωνοσταθμαρχεῖον, ἀστυνομικὸν σταθμόν, ταχυδρομικὸν καὶ τηλεφωνικὸν γραφεῖον, ἡμιγυμνάσιον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 1.577. Χ. Δ.

— **Μῶλος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Λιμὴν τοῦ δυτικοῦ τμήματος τῆς Β. ἀκτῆς τῆς νήσου Ὕδρας (πλάτ. 37° 19′ 10″ Β., μῆκ. 23° 25′ 00″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1525: Hydra, Spezzia and Dhokos islands). Ἀνοικτὸς πρὸς Β., ἔχει πρὸ αὐτοῦ τὰς νησῖδας *Κιβωτὸν* καὶ *Ἑρμονήσι*. Σ. Ε. Λ.

— **Μῶλος** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. —1) Ἀκρωτήριον τῆς νοτίας ἀκτῆς τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου (πλάτ. 38° 50′ 25″ Β., μῆκ. 22° 39′ 25″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1556: Gulf of Volo with the Oreos and Talanta channels), Ἀν. κέρας τοῦ ὅρμου Ἁγίας Τριάδος. Εἰς 1½ μίλλ. δυτικῶς ἡ ἐκβολὴ τοῦ Σπερχειοῦ. Σ.Ε.Λ.

—2) Ἀκρωτήριον τῆς Νισύρου, σχηματίζον νοτίως αὐτοῦ τὸν λιμένα *Μανδράκι*, ἡ ΒΔ τῆς νήσου ἐσχατιὰ (πλάτ. 36° 36′ 40″ Β., μῆκ. 27° 09′ 40″ Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 1898: Kos, Niseros and Piskopi islands). Σ. Ε. Λ.

**μῶλυ** (τό), *—εος*. Μυθῶδες παρ' Ὁμήρῳ φυτόν, ἔχον μαγικὴν δύναμιν καὶ παρὰ μεταγενεστέροις εἶδος σκορόδου. Τὸ ὁμηρικὸν μῶλυ, παραπλησίως πρὸς τὸν μανδραγόραν, ἔφερε κακὸν εἰς τοὺς ἐκριζοῦντας αὐτὸ θνητούς, ἐδόθη δὲ ὑπὸ τοῦ Ἑρμοῦ πρὸς τὸν Ὀδυσσέα ὡς ἀντίδοτον κατὰ τῶν θελγήτρων καὶ μαγικῶν φαρμάκων τῆς Κίρκης (*Ὀδυσ.* κ, 305)· εἶχε λευκὸν ἄνθος («γάλακτι εἴκελον») καὶ μέλαιναν ρίζαν. Τὸ μεταγενέστερον *μῶλυ* τῶν ἀρχαίων ἦτο βολβῶδες φυτόν, προσομοιάζον κατὰ τὴν ρίζαν πρὸς τὸ κρόμμυον καὶ κατὰ τὰ φύλλα πρὸς τὸ σκόροδον (βλ. καὶ *μώλυζα*) ἢ τὴν ἄγρωστιν, καὶ ἔχον ἄνθη ὅμοια πρὸς λευκοΐου γαλακτόχροα καὶ μικρότερα τῶν τοῦ ἴου καὶ καυλὸν λεπτὸν μήκους 4 παλαιστῶν (*Διοσκ.* 3, 54 καὶ *Θεοφρ.*, Φυτ. ἱστ. 9, 15, 7). Κατὰ Θεόφραστον ἐφύετο περὶ τὴν Κυλλήνην καὶ Φενεὸν καὶ ἦτο αὐτὸ τοῦτο τὸ ὁμηρικόν. Ἀπ' αὐτοῦ τὸ allium moly τοῦ Λινναίου, κιτρινωπὸν σκοροδοειδὲς φυτόν· τὸ ἄλλως «χρυσοῦν σκόροδον». —Π.

**μώλυζα** (ἡ). Φυτὸν τῶν ἀρχαίων ὑπὸ τοῦ Γαληνοῦ ὁριζόμενον ὡς «σκόροδον ἁπλῆν τὴν κεφαλὴν ἔχον καὶ μὴ διαλυομένην εἰς ἄλγιθας» (βλ. καὶ λ. *μῶλυ*). —Π.

**μώλυζα** (ἡ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *κρόμμυον τὸ σκορδόπρασον*.

**Μῶλυς** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Λίβυσσα πόλις ἀρχαιοτάτη, ἀναφερομένη ὑπὸ τοῦ Ἑκαταίου ἐν τῇ περιηγήσει τῆς Λιβύης. Τὸ ἐθνικὸν *Μωλύτης* (*Στεφ. Βυζαντ.* 466, 5). Ταυτότης ἄγνωστος. Σ. Ε. Λ.

**μωλύτης** (ὁ) (Molytes) *[Ζωολ.]*. Γένος ἐντόμων κολεοπτέρων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *φυτοφάγων* τῆς οἰκογενείας τῶν *κουρκουλιονιδῶν*, περιλαμβάνον ἐλάχιστα εἴδη κανθάρων ἀπαντώντων ἐν Εὐρώπῃ καὶ ἐνδιαιτωμένων ἐπὶ διαφόρων φυτῶν. Δ. Ν. Π.

**μωλώνω**, καὶ ***μολώνω***· κατασκευάζω μῶλον, βραχίονα λιμενικόν.

**μωλωπίζω**· κάμνω μώλωπας, κτυπῶ τινα οὕτως ὥστε νὰ σχηματισθοῦν μώλωπες: «τὸν ἐμωλώπισε εἰς τὴν κεφαλήν, εἰς τὸ στῆθος».

**μωλωπισμὸς** (ὁ)· τὸ ἀποτέλεσμα τοῦ μωλωπίζω, σχηματισμὸς μωλώπων.

**μώλωψ**, *—ωπος* (ὁ). Οὕτω καλεῖται ἡ ἐπὶ τῆς δερματικῆς ἐπιφανείας τοῦ σώματος ἐπιπολαία συλλογὴ αἵματος, ἐκτάσεως περιωρισμένης, ἥτις προέρχεται ἐκ τραυματικοῦ πλήγματος καὶ ἀποτελεῖ ὄγκον μικρόν, ὑποστρόγγυλον, μαλθακὸν ἐν τῇ ἀρχῇ, χροιᾶς κυανῆς πρὸς τὸ ἰῶδες· παράγεται δὲ διὰ θλάσεως μοίρας τινὸς τοῦ σώματος, ἰδίᾳ ἐκεῖ ἔνθα τὸ δέρμα ἐπικάθηται τῶν ὀστῶν, οἷον ἐπὶ τοῦ κρανίου, τῆς κνήμης, κλπ. Ἀλλὰ καὶ ὅταν τὸ πλῆγμα κατηνέχθη κατὰ λοξὴν διάμετρον ἀναπτύσσεται μώλωψ, καθόσον προκαλεῖται ἀποκόλλησις τοῦ δέρματος, σχηματισμὸς ὑπὸ τὸ δέρμα κοιλότητός τινος καὶ συλλογὴ ἐν αὐτῇ αἵματος προερχομένου ἐκ τῆς ρήξεως τῶν τρωθέντων ἀγγείων. Μ. Ν. Κ.

**Μώμ**, ἡ ***Μάομ*** (Maugham), ***Γουλιέλμος-Σόμερσετ***. Ἄγγλος δραματικὸς συγγραφεὺς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1874. Ἐσπούδασε τὴν ἰατρικήν, ἀλλὰ μετὰ τὴν μεγάλην ἐπιτυχίαν τοῦ πρώτου μυθιστορήματός του «Ἡ Λίζα ἀπὸ τὸ Λέμπεθ» (1897) ἐγκατέλειψε τὴν ἰατρικὴν καὶ ἀφωσιώθη τελείως εἰς τὴν λογοτεχνίαν, γράψας ἐν συνεχείᾳ τὰ μυθιστορήματα: «Προσανατολισμοί» (1899), «Ὁ ἥρως» (1901), «Κυρία Κράντοκ» (1902) κτλ. Ἐπιδοθεὶς ἐν τῷ μεταξὺ καὶ εἰς τὸ θέατρον, ἔγραψε πλεῖστα θεατρικὰ ἔργα, τὰ ὁποῖα ἐπαιχθησαν μετὰ μεγίστης ἐπιτυχίας καὶ κατέστησαν αὐτὸν γνωστότατον καὶ ἔξω τῆς Ἀγγλίας, ὅπου τὰ ἔργα του ἐπαίχθησαν ἐπίσης ἐπιτυχῶς, μεταφρασθέντα εἰς πολλὰς γλώσσας. Τὰ κυριώτερα τῶν θεατρικῶν του ἔργων εἶναι: «Ναυαγός» (1902), «Λαίδη Φρέντερικ» (1907), «Ὁ ἐξερευνητής» (1908), «Πηνελόπη», «Σμίθ» (1909), «Ἡ γῆ τῆς ἐπαγγελίας» (1914), «Καρολίνα» (1916), «Τὸ γράμμα» (1927), «Ἡ πιστὴ σύζυγος» (1927) κτλ. Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπηρέτησεν ὡς ἰατρὸς εἰς

Digitized by Google

τὸ γαλλικὸν μέτωπον καὶ βραδύτερον ἐν τῇ ἀγγλικῇ μυστικῇ ἀστυνομίᾳ. Μ. Δ. Β.

— **Μώμ**, ἢ *Μάομ* (Maugham), ***Ρέτζιναλντ-Κάρολος-Φοῦλκε.*** Ἄγγλος διπλωμάτης καὶ ἐξερευνητής, γεννηθεὶς τῷ 1866. Ὑπηρέτησεν εἰς διαφόρους προξενικὰς θέσεις ἐν Ἀφρικῇ, ἐν Χιλῇ κτλ. καὶ προέβη εἰς πολλὰς ἐπιτοπίας ἐξερευνήσεις, ἀποτέλεσμα τῶν ὁποίων εἶναι τὰ λίαν ἐνδιαφέροντα αὐτοῦ ἔργα: «Ἡ πορτογαλικὴ Ἀνατολικὴ Ἀφρικὴ» (1906), «Περὶ τῆς γλώσσης τῶν Τσὶ-Μακούα» (1909), «Ζαμβεζία» (1910), «Ἡ δημοκρατία τῆς Λιβερίας» (1920) κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μωμενὲ-Τορτέλλι** (Maumené-Tortelli), ***δείκτης***· ὁ ἄλλως *θερμοθειικὸς* δείκτης (βλ. λ.).

**μωμόγερον** (τὸ) *[Λαογρ.].* Οὕτως ἐκαλεῖτο ἐν Χαλδίᾳ καὶ Πόντῳ τοπικὸν ἔθιμον, καθ' ὃ κατὰ τὴν μεταξὺ τῶν Χριστουγέννων καὶ Θεοφανίων χρονικὴν περίοδον μετημφιέζοντο οἱ νέοι ἰδίως καὶ ἐπισκεπτόμενοι φιλικὰς οἰκογενείας «ἔπαιζαν τὰ μωμογέρια», τουτέστιν ἐξετέλουν διαφόρους κινήσεις, ἐχόρευον καὶ ἐμόρφαζον, χωρὶς «νὰ ἐβγάλνε λαλίαν». Φαίνεται ὑπόλειμμα διονυσιακῆς τινος ἑορτῆς ἢ μυστηρίου τοῦ μεσαίωνος. Ε. Ι. Χ.

**Μῶμος** *[Μυθολ.].* Υἱὸς τοῦ Ὕπνου καὶ τῆς Νυκτὸς κατὰ τὸν Ἡσίοδον (Θεογ. 214), θεωρούμενος ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ὡς θεὸς τῆς χλεύης καὶ τῆς κατακρίσεως. Κατὰ τὴν μυθολογίαν, κληθεὶς νὰ κρίνῃ τὸν ὑπὸ τοῦ Ἡφαίστου πλασθέντα ἄνθρωπον, κατέκρινε τὸν δημιουργόν του, «διότι μὴ καὶ θυρίδας ἐποίησεν αὐτῷ κατὰ τὸ στέρνον, ὡς ἀναπασθεισῶν γνώρισμα γίγνεσθαι ἅπασιν ἃ βούλεται καὶ ἐπινοεῖ εἰ ψεύδεται ἢ ἀληθεύει» (*Λουκ.* Ἑρμότ. 20). Κατὰ τὸν μῦθον ἔσκασεν ἐκ πείσματος, διότι δὲν εὗρέ τι νὰ ψέξῃ εἰς τὴν Ἀφροδίτην. Παρίστων δ' αὐτὸν οἱ ἀρχαῖοι μὲ προσωπίδα καὶ ῥάβδον καταλήγουσαν εἰς ὁμοίωμα γυναικείας κεφαλῆς. Α. Θ. Σ.

**μῶμος** (ὁ)· μομφὴ ἄδικος, σκῶμμα· || ὡς κύριον ὄν, ὁ εὑρετικὸς εἰς μομφάς, φιλοκατήγορος.

— **«Μῶμος».** Σατιρικὸν φύλλον ἐν Ἑρμουπόλει, ἱδρυθὲν τῷ 1891. —Π.

**μωμοσκόπος** (ὁ, ἡ)· ὁ ἐξετάζων τὰ πρὸς θυσίαν ζῷα μήπως ἔχουν μῶμόν τινα· || ὁ ἀναζητῶν παρὰ τοῖς ἄλλοις ἐλαττώματα, φιλοκατήγορος.

**Μωμπέζ** (Maubeuge) *[Γεωγρ.].* Πόλις τῆς Γαλλίας ἐν τῷ νομῷ τοῦ Βορρᾶ, κειμένη ἐπὶ τοῦ Σάμπρ. Κάτ. 21.250. Ἔχει σιδηρουργεῖα καὶ ὑψικαμίνους. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον κατελήφθη ὑπὸ τῶν Γερμανῶν, οἵτινες καὶ τὴν διετήρησαν μέχρι τῆς 9 Νοεμβρίου 1918, καθ' ἣν ἀνακατελήφθη ὑπὸ τῆς 3ης βρεττανικῆς στρατιᾶς. Κ.Δ.

— *[Στρατ. Ἱστορ.]* Ἡ *Μωμπέζ*, ἅτε εὑρισκομένη παρὰ τὴν γαλλοβελγικὴν μεθόριον καὶ συγχρόνως ἐπὶ μιᾶς τῶν κυρίων ἐκ Γερμανίας διὰ Βελγίου πρὸς Γαλλίαν ἀρτηριῶν, εἶχε μεταβληθῆ ἀπὸ τῆς ἐποχῆς τοῦ Βωμπὰν εἰς φρούριον, κατὰ δὲ τὴν νεωτέραν ἐποχὴν εἶχε διαρρυθμισθῆ συμφώνως πρὸς τὰς συγχρόνους ὀχυρωτικὰς ἀρχάς, ἀποτελέσασα ὀχυρὸν ἀνασχέσεως (ἔρυμα), ἔχον κεντρικὸν πυρῆνα καὶ ἓξ ὀχυρὰ κατανεμημένα περὶ αὐτὸ ἐπὶ περιφερικῆς ἀναπτύξεως 30 χιλιομέτρων, μὲ τὰ βαρέα δὲ πυροβόλα ἐγκατεστημένα ἐντὸς ἰσχυρῶν σκεπάστρων ἐκ σκυροκονιάματος. Ἐπειδὴ κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου οἱ Γάλλοι εἶχον τάξει ὡς φρουρὰν τοῦ ὀχυροῦ Μωμπὲζ περὶ τὰς 50.000 ἄνδρας (ἐφέδρους καὶ ἐθνοφρουρούς) μετὰ 300 φρουριακῶν πυροβόλων (παλαιοῦ συστήματος), δι' αὐτὸ ἐξηναγκάσθησαν οἱ Γερμανοί, κατὰ τὴν διὰ Βελγίου πρὸς τὴν βορειοανατολικὴν Γαλλίαν προέλασίν των, νὰ ἐκτελέσουν κατ' αὐτοῦ περίσχεσιν ἀρχικῶς, τακτικὴν δὲ πολιορκίαν ἀπὸ τῆς 26ης Αὐγούστου 1914 δι' ἑνὸς σώματος στρατοῦ (τοῦ ἐφεδρικοῦ 7ου, τοῦ καταστάντος ἐλευθέρου μετὰ τὴν πτῶσιν τῆς Ναμύρ). Οἱ Γερμανοὶ κατώρθωσαν διὰ δραστικοῦ βομβαρδισμοῦ ὑπὸ τοῦ βαρέος των πυροβόλου τῶν 42 ἑκατοστῶν νὰ καταστρέψωσι τὰ γαλλικὰ ὀχυρὰ καὶ πυροβόλα, ἐπειδὴ δὲ πᾶσαι αἱ γαλλικαὶ ἀπόπειραι πρὸς ἔξοδον ἀπέβησαν ἄκαρποι, ἐξηναγκάσθησαν τέλος νὰ παραδοθῶσιν εἰς τοὺς Γερμανοὺς τὴν 7ην Σεπτεμβρίου 1914. Ν. Θ. Κ.

**Μωμπρεΐγ** (Maubreil), ***Μαρία-Ἀρμάνδος, κόμις ντὲ Γκερρὶ ντὲ—.*** Γάλλος τυχοδιώκτης (1784—1868). Κληρονομήσας μεγάλην περιουσίαν, ἠκολούθησε κατ' ἀρχὰς τὸ στρατιωτικὸν στάδιον, μετὰ τὴν ἔκρηξιν δὲ τῆς Γαλλικῆς Ἐπαναστάσεως ἐτάχθη ἐναντίον αὐτῆς. Βραδύτερον ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν Ναπολέοντα καὶ ἐγένετο σταβλάρχης τοῦ Ἱερωνύμου Βοναπάρτου, βασιλέως τῆς Βεστφαλίας. Ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῆς Ἱσπανίας, διακριθεὶς κατὰ τὴν μάχην τῆς Ἀλκαντάρα, καὶ κατόπιν ἐπεδόθη εἰς διαφόρους ἐπιχειρήσεις καὶ στρατιωτικὰς προμηθείας, ἀπὸ τὰς ὁποίας ὑπέστη μεγάλας ζημίας. Πρὸς ἐπανόρθωσιν τῶν ζημιῶν του τούτων εἶχε κατορθώσει νὰ ὑπογράψῃ μετὰ τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Στρατιωτικῶν συμβόλαιον, δυνάμει τοῦ ὁποίου ἀνελάμβανε τὴν προμήθειαν διαφόρων εἰδῶν εἰς τὰς γαλλικὰς φρουρὰς τῆς Ἱσπανίας. Ὁ Ναπολέων ὅμως παρημπόδισε τὴν ἐφαρμογὴν τοῦ συμβολαίου. Ἕνεκα τούτου ὁ Μωμπρεΐγ ἐγένετο ἔκτοτε ἄσπονδος ἐχθρὸς τοῦ Ναπολέοντος, ὅταν δὲ τῷ 1814 οἱ σύμμαχοι εἰσῆλθον εἰς Παρισίους, οὗτος ἐτάχθη μὲ τοὺς ὀπαδοὺς τῶν Βουρβώνων. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην λέγεται ὅτι ὁ Ταλεϋράνδος ἀνέθεσεν εἰς τὸν Μωμπρεΐγ τὴν δολοφονίαν τοῦ Ναπολέοντος καὶ τῶν ἀδελφῶν του Ἰωσὴφ καὶ Ἱερωνύμου. Πρὸς τοῦτο εἶχεν ἐφοδιάσει αὐτὸν μὲ ἔγγραφα διαφόρων ὑπηρεσιῶν, διὰ τῶν ὁποίων διετάσσοντο πᾶσαι αἱ στρατιωτικαὶ καὶ πολιτικαὶ ἀρχαὶ νὰ τοῦ παρέχουν πᾶσαν διευκόλυνσιν. Ὁ Μωμπρεΐγ ὅμως ἐχρησιμοποίησε τὰ ἔγγραφα ταῦτα, ὅπως κατάσχῃ τὰς ἀποσκευὰς τῆς βασιλίσσης τῆς Βεστφαλίας, ἐνῷ αὕτη εὑρίσκετο καθ' ὁδόν, φεύγουσα ἐκ Παρισίων, ἀπὸ τὰς ὁποίας ἔκλεψε τὰ κοσμήματα, ἀξίας πολλῶν ἑκατομμυρίων. Συνεπείᾳ ὅμως καταγγελίας τῆς κλοπῆς ὑπὸ τῆς βασιλίσσης πρὸς τὸν ἐξάδελφόν της αὐτοκράτορα τῆς Ρωσίας, ἡ γαλλικὴ κυβέρνησις ἠναγκάσθη νὰ συλλάβῃ τὸν Μωμπρεΐγ. Λόγῳ τῶν ἐγγράφων, τὰ ὁποῖα παρουσίασεν ὁ Μωμπρεΐγ καὶ διὰ τῶν ὁποίων ἀπεδεικνύετο ὅτι ἐξετέλει «μυστικὴν ἀποστολήν», τὸ δικαστήριον ἐκηρύχθη ἀναρμόδιον νὰ τὸν δικάσῃ, τὴν δὲ 18ην Μαρτίου 1815, μετὰ τὴν ἐπάνοδον τοῦ βασιλέως εἰς Παρισίους, ἀφέθη ἐλεύθερος· συλληφθεὶς ὅμως κατόπιν ἐπρόκειτο νὰ δικασθῇ, ἀλλὰ κατώρθωσε νὰ δραπετεύσῃ καὶ νὰ καταφύγῃ εἰς Βρυξέλλας. Ἐκεῖ διῆλθε περιπετειώδη βίον, μέχρι τῆς παλινορθώσεως τῶν Βουρβώνων, ὁπότε ἐπανῆλθεν εἰς Παρισίους. Ἀλλὰ μετ' ὀλίγον συνελήφθη ὡς ἀναμιγνυόμενος εἰς διαφόρους συνωμοσίας καὶ παρεπέμφθη εἰς δίκην, διὰ νὰ δικασθῇ καὶ διὰ τὴν κλοπὴν τῶν κοσμημάτων. Τὴν παραμονὴν ὅμως τῆς δίκης κατώρθωσε καὶ πάλιν νὰ δραπετεύσῃ, τὸ δὲ δικαστήριον τὸν κατεδίκασεν ἐρήμην εἰς πέντε ἐτῶν φυλάκισιν. Ἐκ τῆς Ἀγγλίας, ὅπου εἶχε καταφύγει ὁ Μωμπρεΐγ, ἀπηύθυνε πρὸς τοὺς ἀντιπροσώπους τῶν Μεγάλων Δυνάμεων, οἵτινες εἶχον συγκεντρωθῆ εἰς τὸ Αἲξ-λὰ-Σαπέλ, ὑπόμνημα, ἐν τῷ ὁποίῳ ἀπεκάλυπτε καὶ κατήγγελλε τὴν Πρωσσίαν, τὴν Ρωσίαν καὶ ὀνομαστὶ πάντας τοὺς ἀναμιχθέντας εἰς τὴν ὑπόθεσιν τῆς ἀναθέσεως εἰς αὐτὸν νὰ δολοφονήσῃ τὸν Ναπολέοντα. Τὸ ὑπόμνημα τοῦτο ἐπροξένησε μέγαν θόρυβον καθ' ἅπασαν τὴν Εὐρώπην. Ἐξορισθεὶς τότε ἐξ Ἀγγλίας, μετέβη ἐκ νέου εἰς Παρισίους καὶ παρουσιάσθη θαρραλέως εἰς τὴν ἀστυνομίαν, ἥτις τὸν συνέλαβεν, ἀλλὰ μετ' ὀλίγον τὸν ἀπέλυσεν. Ἐπὶ τέλους, κατόπιν αἰτήσεώς του, ἡ βουλὴ ἐψήφισεν εἰς αὐτὸν μικρὰν σύνταξιν πρὸς ἀποζημίωσίν του διὰ τὴν καταστροφὴν τῆς περιουσίας του συνεπείᾳ τῶν διαφόρων πολέμων. Μετά τινα ὅμως ἔτη ἀφανείας, κατὰ τὴν διάρκειαν ἐπισήμου τελετῆς εἴς τινα ἐκκλησίαν, ἐρράπισε τὸν Ταλλεϋράνδον καὶ συλληφθεὶς κατεδικάσθη εἰς πέντε ἐτῶν φυλάκισιν. Μετὰ τὴν ἔκτισιν τῆς ποινῆς του ἐταξίδευσεν εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας, τὴν Ἀγγλίαν καὶ τὴν Γερμανίαν καὶ ἐπὶ πολὺ ἐθεωρεῖτο ὡς ἀποθανών, τοῦ θανάτου του ἀναγραφέντος καὶ εἰς διάφορα βιογραφικὰ ἐγχειρίδια καὶ λεξικὰ τῆς ἐποχῆς. Τὸ 1867 ὅμως τὸ ὄνομά του ἀνεφάνη ἐκ νέου ἐπὶ σκηνῆς, συνεπείᾳ δολοφονίας τῆς συζύγου του, κοινῆς τινος γυναικός, ἣν εἶχε νυμφευθῆ τῷ 1866 καὶ τὴν ὁποίαν ἐλέγετο ὅτι ἐδολοφόνησε, διότι δὲν τοῦ ἔδιδε χρήματα. Καταδικασθεὶς εἰς εἰκοσαετῆ φυλάκισιν, ἀπέθανε μετὰ ἓν ἔτος εἰς τὴν φυλακήν. Μ. Δ. Β.

**Μῶννα** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Νῆσος κατὰ τὴν ΒΔ. ἄκραν τῆς Ἀλουΐωνος (βλ. *Μόνα*).

**Μωνουρὺ** (Maunoury), ***Μαυρίκιος.*** Γάλλος πολιτικὸς (1863—1925). Ἦτο ἀνεψιὸς τοῦ στρατάρχου *Μιχαὴλ Ἰωσὴφ Μωνουρὺ* καὶ ἐσπούδασε τὴν μηχανικὴν καὶ τὰ ἐμπορικὰ εἰς Παρισίους. Ἀναμιχθεὶς εἰς τὴν πολιτικὴν ἐξελέγετο βουλευτὴς ἀπὸ τοῦ 1910—1924 καὶ ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ἀποικιῶν τῷ 1914 καὶ τῶν Ἐσωτερικῶν τῷ 1922—1924. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων τὸ ἔργον «Περὶ ἐμπορικῆς ἐπωνυμίας». Μ. Δ. Β.

— **Μωνουρὺ** (Maunoury), ***Μιχαήλ.*** Γάλλος στρατάρχης (1847—1923). Μετέσχε τοῦ Γαλλογερμανικοῦ πολέμου 1870. Ἀπὸ τοῦ 1910—1912, φέρων τὸν βαθμὸν τοῦ ἀντιστρατήγου, διετέλεσε στρατιωτικὸς διοικητὴς τῶν Παρισίων καὶ ὡς τοιοῦτος ἀπεστρατεύθη, καταληφθεὶς ὑπὸ τοῦ ὁρίου ἡλικίας. Κατὰ τὴν ἔναρξιν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ἀνεκλήθη εἰς τὴν ἐνεργὸν ὑπηρεσίαν καὶ ἀνέλαβε τὴν διοίκησιν τῆς 6ης στρατιᾶς, καταστὰς πασίγνωστος ὡς ἐκ τῆς ἐπιτυχοῦς του δράσεως κατὰ τὴν μάχην τοῦ Μάρνη (ἀρχὰς Σεπτεμβρίου 1914), καθ' ἣν ὅμως τραυματισθεὶς εἰς τοὺς ὀφθαλμοὺς ἠναγκάσθη ν' ἀφήσῃ τάχιστα τὴν διοίκησιν ταύτην. Προήχθη τότε εἰς στρατάρχην καί, μετὰ τὴν σχετικὴν ἴασιν του διετέλεσε στρατιωτικὸς διοικητὴς τῶν Παρισίων (1915—1916). Ν. Θ. Κ.

**Μώνρω** (Munro), ***Οὔγος-Ἀνδρέας-Τζόνστον.*** Ἄγγλος λατινιστὴς (1819—1885). Διετέλεσε καθηγητὴς τῆς λατινικῆς φιλολογίας ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς δευτέρας. Τὸ ἀξιολογώτερον τῶν ἔργων αὐτοῦ, εἰς ὃ ὀφείλει καὶ τὴν φήμην του, εἶναι ἡ ἔκδοσις καὶ ἡ μετάφρασις τοῦ Λουκρητίου (2 τόμοι, 1864). Ἐξέδωκεν ἐπίσης τὸν Ὁράτιον καὶ ἄλλους συγγραφεῖς. Λ. Δ.

**Μῶνστερ** (Munster) *[Γεωγρ.].* Μία τῶν τεσσάρων μεγάλων διοικητικῶν περιφερειῶν, εἰς τὰς ὁποίας διαιρεῖται τὸ ἐλεύθερον ἰρλανδικὸν κράτος. Κεῖται πρὸς τὸ ΝΔ. τμῆμα τῆς νήσου, μεταξὺ τῶν περιφερειῶν τοῦ Κώννωτ, τοῦ Λένστερ, τῆς θαλάσσης τῆς Μάγχης καὶ τοῦ Ἀτλαντικοῦ καὶ ἔχει ἐπιφάνειαν 24.130 τ. χλμ. καὶ 969.902 κατ. Πρὸ τῆς νορμανδικῆς κατακτήσεως τὸ Μῶνστερ διῃρεῖτο εἰς δύο βασίλεια: τὸ *Βόρειον* καὶ τὸ *Νότιον Μῶνστερ*. Ἤδη περιλαμβάνει τὰς κομητείας Κλαίαρ, Κὸρκ (ἀνατολικὴν καὶ δυτικήν), Κέρρυ, Λίμερικ, Τιππεραίρυ καὶ Γουώτερφορντ. Μ. Δ. Β.

**Μὼντ** (Maude), *σὲρ* ***Φρειδερῖκος-Στάνλεϋ.*** Ἄγγλος στρατηγὸς (1864—1917). Ἐπολέμησε κατ' ἀρχὰς (1899—1901) εἰς τὸν νοτιοαφρικανικὸν πόλεμον καὶ διεκρίθη κατὰ τὴν κατάληψιν τῆς Πραιτωρίας. Κατόπιν διετέλεσε στρατιωτικὸς γραμματεὺς τοῦ γενικοῦ διοικητοῦ τοῦ Καναδᾶ. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ἐπολέμησεν ἐν τῷ γαλλικῷ μετώπῳ μέχρι τοῦ 1915 καὶ τὸν Αὔγουστον τοῦ ἰδίου ἔτους ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ἐκστρατείαν τῶν Δαρδανελλίων ὡς διοικητὴς τῆς 13ης ἀγγλικῆς μεραρχίας. Τῷ 1916 ἀπεστάλη μετὰ τῆς μεραρχίας του εἰς τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς ἀνακατάληψιν τῆς Κοὺτ-ἐλ-Ἀμάρα, ἣν καὶ κατέλαβε τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1916. Τὸν Μάρτιον τοῦ 1917 κατέλαβε τὴν Βαγδάτην, ἔνθα καὶ ἀπέθανεν ἐκ χολέρας τὸν Νοέμβριον τοῦ ἰδίου ἔτους. Μ. Δ. Β.

**Μωντουΐ** (Mauduit), ***Ἰάκωβος.*** Γάλλος συνθέτης (1557—1627). Ὡς καὶ οἱ πλεῖστοι ἐκ τῶν συγχρόνων του, ἠκολούθησε τὰς τάσεις τῶν οὑμανιστῶν, ἐπιζητήσας νὰ δημιουργήσῃ ἔργα συμφώνως μὲ τὰς θεωρίας τῆς μετρικῆς τῶν ἀρχαίων Ἑλλήνων. Τὰ ὀλίγα ἐκ τῶν περισωθέντων κοσμικῶν ᾀσμάτων του διακρίνονται διὰ τὸν εὔθυμον αὐτῶν χαρακτῆρα ὃν δανείζεται ἐκ τῶν λαϊκῶν τραγουδιῶν. Ἐκ τῆς ὑπολοίπου δημιουργικῆς του ἐργασίας περιῆλθον μέχρις ἡμῶν τεμάχιά τινα θρησκευτικῆς μουσικῆς, περιληφθέντα ἐν τῷ ἔργῳ «Quaestiones celeberrimae in Genesini» τοῦ Μερσὲν (1623). Γ. Σ.

— **Μωντουΐ** (Maud'Huy), ***Λουδοβῖκος.*** Γάλλος στρατηγὸς (1857—1921). Ὑπῆρξεν εἷς τῶν μᾶλλον διακεκριμένων ἀξιωματικῶν τῆς προπολεμικῆς ἐποχῆς, διατελέσας καθηγητὴς τῆς τακτικῆς τοῦ πεζικοῦ παρὰ τῷ σχολείῳ πολέμου τῆς Γαλλίας. Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον διῴκησε στρατιὰν καὶ κατόπιν ὁμάδα στρατιῶν. Συνέγραψεν «Infanterie» (1911). Ν. Θ. Κ.

**Μωντρὲλ** (Maundrell). Ἄγγλος ἱεροκήρυξ, ὁ τελευταῖος ἀξιόλογος περιηγητὴς τοῦ ΙΖ' αἰῶνος. Ἔγραψεν: «A journey from Aleppo to Jerusalem, at easter A. D. 1697» (Ὀξφόρδη 1703), ἐπανεκδοθὲν πολλάκις μετά τινος ἄλλου ὁδοιπορικοῦ τοῦ ἰδίου ἀνὰ τὰς ὄχθας τοῦ Εὐφράτου καὶ τὴν Μεσοποταμίαν. Εἶναι ἀξιόλογον διὰ τὴν γεωγραφίαν τῶν ἁγίων Γραφῶν καὶ τὰς βιβλικὰς ἀρχαιότητας. Γ. Λ. Α.

**μῶνυξ,** *—υχος* (ὁ, ἡ)· ὁ ἔχων ἕνα ὄνυχα, μονόχηλος, οἷον ὁ ἵππος, ὁ ὄνος, ὁ ἡμίονος (ἀντὶ *μονῶνυξ*).

**μώνυχα** (τὰ) (Solidungula) *[Ζωολ.].* Κατηγορία ζῴων τοῦ ἀθροίσματος τῶν *περιττοδακτύλων*. Καλοῦνται καὶ *μόνοπλα*, διότι οἱ δάκτυλοι αὐτῶν ἔχουσι μετασχηματισθῆ εἰς ἕνα καὶ μόνον δάκτυλον, τὸν μέσον, οὗ τὸ ἄκρον φέρει ὄνυχα, ὅστις καλεῖται ὁπλή. Τὰ μεταταρσικὰ καὶ μετακαρπικὰ ὀστᾶ εἶναι λίαν μακρά, ὁ δὲ βραχίων καὶ ὁ μηρὸς τόσον βραχέα, ὥστε ἡ ἄρθρωσις τοῦ ἀγκῶνος ὡς καὶ ἡ τοῦ γόνατος εὑρίσκονται ἐπὶ τῆς κάτω γραμμῆς τοῦ κορμοῦ. Εἰς ἑκάστην σιαγόνα φέρουσιν ἑκατέρωθεν 6 κοπτῆρας καὶ 6 ἀδαμαντοπτύχους τραπεζίτας, μεταξὺ τῶν ὁποίων ὑπάρχει μέγα χάσμα, εἰς ὃ εἰς τὰ γένη τῆς οἰκογενείας τῶν ἱππιδῶν παρεμβάλλεται ὁ χαλινός. Γενικῶς τὰ μώνυχα εἶναι ὡραιότατα ζῷα μὲ σῶμα κομψὸν καὶ εὐκίνητον. Ἐνδιαιτῶνται κατ' ἀγέλας εἰς τὰς πεδιάδας, τὰς στέππας καὶ τὰς ἐρήμους τοῦ παλαιοῦ καὶ νέου κόσμου καὶ τρέφονται ἐκ χόρτου. Κυριωτέρα οἰκογένεια τῆς κατηγορίας αὐτῆς εἶναι οἱ *ἱππίδαι*. Δ. Ν. Π.

**Μωνυχία** *[Ἀρχ. Γεωγρ.].* Ἄλλη γραφὴ τῆς *Μουνυχίας* (βλ. λ.). Σ. Ε. Λ.

**Μωπασσὰν** (Maupassant), ***Ἐρρῖκος-Ρενὲ-Ἀλβέρτος Γκὺ ντὲ —.*** Γάλλος μυθιστοριογράφος καὶ διηγηματογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1850 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1893. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ κολλέγιον τοῦ Ὑβετώ, εἶτα εἰς τὸ Λύκειον τῆς Ρουέννης καὶ κατόπιν εἰργάσθη ἐπὶ δωδεκαετίαν εἰς τὰ ὑπουργεῖα τῶν Ναυτικῶν καὶ τῆς Δημοσίας Ἐκπαιδεύσεως,

Digitized by Google

Εἰς τὰ πρῶτά του φιλολογικὰ βήματα καθωδηγήθη ὑπὸ τοῦ οἰκογενειακοῦ του φίλου G. Flaubert, ἐμφανισθεὶς διὰ πρώτην φορὰν εἰς τὰ «Soirées de Médan» (1880), μὲ τὸ μέγα διήγημά του «Boule de Suif», ὅπερ ὁ Flaubert ἐχαρακτήρισεν ὡς ἀριστούργημα. Τὸ αὐτὸ ἔτος ἐδημοσίευσε καὶ τὴν ποιητικὴν συλλογήν: «Des Vers», ἡ ὁποία περιελάμβανε μὲν ἱκανὰ ἀξιόλογα ποιήματα, ἀλλὰ δὲν ἀπεκάλυπτε ποιητικὴν πρωτοτυπίαν, ἐνῷ ἀντιθέτως τὸ διήγημά του ἐδείκνυε σπανίας ἱκανότητας παρατηρητοῦ καὶ διηγητοῦ.

Γκὺ ντὲ Μωπασσάν.

Τὰ ἀκόλουθα ἔτη ἐδημοσίευσε σειρὰν διηγημάτων, ὅπου ἡ ζωὴ τῶν Νορμανδῶν χωρικῶν, τῶν γυναικῶν, τῶν μικροαστῶν, τῶν φοιτητῶν κλπ. περιεγράφετο μὲ τόσην ἀμείλικτον πιστότητα, ὥστε προὐκάλει ἐνίοτε τὰς διαμαρτυρίας ἐκείνων, οἱ ὁποῖοι εἶχον χρησιμεύσει ὡς πρότυπα εἰς τὸν συγγραφέα: «Maison Tellier» (1881), τῆς «Mademoiselle Fifi» (1883), τῶν «Contes de la bécasse» (1883), τῶν «Soeurs Rondoli» (1884), τῆς «Miss Harriett» (1884). Κατὰ τὴν αὐτὴν ἐποχὴν ἤρχισε ν' ἀσχολῆται καὶ μὲ τὸ μυθιστόρημα, εἰς τὸ ὁποῖον διεκρίθη ἐξ ἴσου ὅσον καὶ εἰς τὸ διήγημα. Τὰ κυριώτερα ἐκ τῶν μυθιστορημάτων του εἶναι: «Une vie» (1883), «Bel-Ami» (1885), «Mont-Oriol» (1887), «Le Horla» (1887), «Pierre et Jean» (1888), «Fort comme la mort» (1889). Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης τὰ διηγήματα: «Au Soleil» (1884), «Clair de lune» (1884), «Yvette» (1886), «Contes du jour et de la nuit» (1885), «Sur l'eau» (1885), «Monsieur Parent» (1886), «La petite Roque» (1886), «Toine» (1886), «Le rosier de M. Husson» (1888), «La main gauche» (1887), «Histoire d' une fille de ferme» (1890), «La vie errante» (1890), «L'inutile beauté» (1890), «Trois contes» (1892), «Homme de lettres» (1892), ἀνεβίβασε δ' ἐπὶ τῆς σκηνῆς τὰ θεατρικὰ ἔργα «Musotte» (1893) μετὰ τοῦ J. Normand καὶ «La paix du ménage» (1893). Ἐνῷ ἀκόμη εὑρίσκετο ἐν πλήρει φιλολογικῇ δράσει, προσεβλήθη ὑπὸ ἐγκεφαλικῆς νόσου, ἐκ τῆς ὁποίας καὶ ἀπέθανεν. Ὁ Μωπασσὰν εἶναι εἷς ἐκ τῶν μεγαλυτέρων διηγηματογράφων καὶ ὁ μεγαλύτερος νατουραλιστὴς συγγραφεὺς τῆς Γαλλίας. Τὸ ὕφος του εἶναι ἀκριβὲς καὶ διαυγές, ἡ περιγραφή του ἀντικειμενική, ἡ δὲ παρατήρησις ὀξεῖα, ἀποκαλύπτουσα ἀνήσυχον καὶ ἡδονιστικὸν πνεῦμα καὶ ἀφήνουσα τὴν ἐντύπωσιν ἀπαισιοδοξίας καὶ θλίψεως. Εἰς τὴν ἑλληνικὴν ἔχουν μεταφρασθῆ ἱκανὰ ἐκ τῶν διηγημάτων του εἰς περιοδικὰ καὶ εἰς αὐτοτελεῖς τόμους.

[Πρβλ. *E. Maynial*: «La vie et l'oeuvre de Guy de Maupassant».] —Ω.

**Μωπερτουΐ** (Maupertuis), ***Πέτρος-Λουδοβῖκος-Μορὼ ντὲ—***. Γάλλος γεωμέτρης, γεννηθεὶς ἐν Σαὶν-Μαλὸ τῷ 1698 καὶ ἀποθανὼν ἐν Βασιλείᾳ τῷ 1759. Κατ' ἀρχὰς ἐχρημάτισε στρατιωτικός, βραδύτερον δ' ἠσχολήθη μὲ τὴν μελέτην τῶν μαθηματικῶν καὶ ἐτάχθη ὑπὲρ τοῦ Νεύτωνος καὶ κατὰ τοῦ Καρτεσίου. Τῷ 1723 ἐγένετο μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἐπιστημῶν. Ὅταν αἱ ἐν Γαλλίᾳ γενόμεναι μετρήσεις ἐπὶ τοῦ μεσημβρινοῦ τῆς γῆς ὑπὸ τοῦ Κασσίνι κατέληξαν εἰς πορίσματα, τὰ ὁποῖα ἔδιδον εἰς τὴν γῆν φοειδὲς σχῆμα, ὁ Godin, ὁ Bouguer καὶ ὁ La Condamine ἠναγκάσθησαν νὰ ἀρχίσουν νέας μετρήσεις εἰς τὸ Περού. Ὁ Μωπερτουΐ επεφορτίσθη μὲ τὴν ἡγεσίαν ταυτοχρόνου ἀποστολῆς εἰς τὸν Βόρειον πόλον. Τὸ τελικὸν πόρισμα τῶν ἐρευνῶν ὑπῆρξεν εὐνοϊκὸν διὰ τὴν θεωρίαν τῆς διαπλατύνσεως καὶ ὁ Μωπερτουΐ ἐπέστρεψεν εἰς Παρισίους τῷ 1737, ἐπιδείξας μεγάλην μαχητικότητα εἰς τὴν ἀνασκευὴν καὶ τὴν καταπολέμησιν τῶν πορισμάτων προγενεστέρων μετρήσεων τῆς γῆς. Κατόπιν ἐγένετο ἀλληλοδιαδόχως μέλος τῆς Βασιλικῆς Ἑταιρείας τοῦ Λονδίνου καὶ τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας (1743). Τὸ ἑπόμενον ἔτος ἐδέχθη εὐχαρίστως τὴν πρόσκλησιν τοῦ βασιλέως τῆς Πρωσσίας, ὅστις ἤθελε νὰ τὸν τάξῃ ἐπὶ κεφαλῆς τῆς νέας του Ἀκαδημίας, ἐκτιμήσας τὰς ἱκανότητάς του κατὰ τὸ 1741, ὁπότε τὸν εἶχε παραλάβει μεθ' ἑαυτοῦ εἰς Σιλεσίαν. Μεταβὰς εἰς Βερολῖνον ὁ Μωπερτουΐ ἀπέκτησεν ἀμέσως πολλοὺς ἐχθρούς, ἐν οἷς καὶ τὸν Koenig, ὅστις κατώρθωσε νὰ τὸν ἐκδιώξῃ τῆς Ἀκαδημίας, διότι ἐτόλμησε νὰ διαμφισβητήσῃ τὴν ἀνακάλυψιν τοῦ ἀξιώματος τῆς ἥσσονος ἐνεργείας. Ἐχθρός του ὑπῆρξεν ἐπίσης ὁ Βολταῖρος, κακῶς διατεθεὶς ἐναντίον του ἐκ τῆς συμπεριφορᾶς του πρὸς τὸν Koenig καὶ γράψας ἐπὶ τῇ εὐκαιρίᾳ ταύτῃ τὸ «Micromegas», καὶ «Docteur Akakia, médecin du pape». Προσβληθεὶς ὑπὸ νόσου τοῦ στήθους, ἐπέστρεψεν εἰς Γαλλίαν (1756) καὶ κατόπιν ἀπέθανεν ἐν Βασιλείᾳ. Τὰ ἔργα τοῦ Μωπερτουΐ εἶναι ὀλίγα, σπουδαιότερα δὲ τούτων τὰ ἑξῆς: «Balistique arithmétique», «Commentaire de la douzième section du premier livre des principes de Newton», ἀμφότερα ἐν τῷ «Recueil de l'Académie des sciences» (1732), «Discours sur la figure des astres» (1732), «Astronomie nautique» (1743), «Essai de philosophie morale» (1751). —Ω.

Μορὼ ντὲ Μωπερτουΐ.

**Μωπερτουΐ** (Maupertuis) *[Γεωγρ.]*. Κώμη τῆς Γαλλίας, ἐν τῷ νομῷ τῆς Βιέν, πρὸς Ν. τοῦ Πουατιέ. Εἶναι ὀνομαστὴ ἐν τῇ ἱστορίᾳ ἐκ τῆς παρ' αὐτὴν μάχης, καθ' ἣν οἱ Ἄγγλοι, ὑπὸ τὸν καλούμενον *Μέλανα πρίγκιπα*, υἱὸν τοῦ Ἐδουάρδου τῆς Ἀγγλίας, ἐνίκησαν τοὺς Γάλλους καὶ συνέλαβον αἰχμάλωτον τὸν βασιλέα αὐτῶν Ἰωάννην τὴν 19 Σεπτεμβρίου 1356. Μ. Δ. Β.

**Μωποῦ** (Maupeou), ***Ρενὲ-Νικόλαος***. Γάλλος δικαστικὸς καὶ πολιτικὸς (1714—1792), γενόμενος τῷ 1768 καγκελλάριος τῆς Γαλλίας. Ἦτο φιλοχρήματος καὶ διαβολεύς, προσκεκολλημένος εἰς τὰς παλαιὰς πολιτικὰς μεθόδους καὶ ἐχθρὸς πάσης νεωτεριστικῆς τάσεως. Ἡ δρᾶσίς του ἐσημειώθη ἰδίᾳ κατὰ τὰ ζητήματα τὰ δημιουργηθέντα μεταξὺ τοῦ παρλαμέντου καὶ τῆς αὐλῆς, ὁπότε (1771) δὲν ἐδίστασε νὰ καταργήσῃ ἐξ τῶν κυριωτέρων παρλαμέντων τῆς χώρας καὶ νὰ ἐξορίσῃ 80 ἐκ τῶν μελῶν αὐτῶν καὶ πεντηκοντάδα ἄλλων πολιτικῶν ἀνδρῶν. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ' ὁ Μωποῦ ἐξωρίσθη (1774) εἰς τὰ ἐν Thuit κτήματά του, ὅπου καὶ παρέμεινεν ἐπὶ εἰκοσαετίαν μέχρι τοῦ θανάτου του, κατηργήθη δὲ τότε ὁ θεσμὸς τῶν «συμβούλων τοῦ βασιλέως», τὸν ὁποῖον εἶχε καθιδρύσει, καὶ ἐπανῆλθεν ἐν ἰσχύϊ ὁ τῶν παρλαμέντων. Τῷ 1772 ἐξεδόθη συλλογὴ ἐγγράφων σχετιζομένων πρὸς τὰς πολιτικὰς αὐτοῦ ἐνεργείας («Κῶδιξ τῶν παρλαμέντων, ἢ Συλλογὴ ἐδίκτων ἀπὸ Δεκεμβρ. 1770 μέχρι Δεκεμβρ. 1771»), εἰς τὴν ἐθνικὴν δὲ βιβλιοθήκην τῆς Γαλλίας ἀπόκειται τὸ χειρόγραφον τῶν «Πεπραγμένων», δι' ὧν ἐδικαιολόγει πρὸς τὸν βασιλέα τὰ ἐναντίον τῶν παρλαμέντων μέτρα του. —Ω.

**Μὼρ** (More), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος πολιτικὸς (βλ. *Μῶρος*).

— **Μὼρ** (More), ***Ἐρρῖκος***. Ἄγγλος φιλόσοφος, (1614—1687). Ὑπῆρξεν ἐκπρόσωπος τῆς μυστικιστικῆς καὶ θεοσοφικῆς κινήσεως τοῦ πανεπιστημίου τῆς Κανταβριγίας καὶ ἔνθερμος ὀπαδὸς τῶν νεοπλατωνικῶν. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, ἐν οἷς διακρίνεται τὸ ὑπὸ τὸν τίτλον «Διάλογοι τῶν θεῶν». Α. Δ.

— **Μὼρ** (Mohr), ***Κάρολος***· βλ. *Μόρ*.

**μώρα** (ἡ)· νωθρότης διανοητική, ἀπουσία σκέψεως: «μὲ εἶχε πιάσει μιὰ μώρα καὶ δὲν ἀντελήφθην τί ἔγινε» ‖ ἰδιωμ., τὸ καθ' ὕπνους πλάκωμα, βραχνᾶς (ἐκ τοῦ *μωρὸς—μώρα*, καθὼς *νεκρὸς—νέκρα*, *ξερὸς—ξέρα* κτλ.).

**Μωραΐνη** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τοῦ δήμου Φιλιατρῶν τῆς ἐπαρχίας Τριφυλίας τοῦ νομοῦ Μεσσηνίας. Κάτ. (1928) 177. Χ. Δ.

**μωραίνω**, ἀόρ. *ἐμώρανα — ἐμωράνθην*, παραχ. παθητ. μετοχ. *μεμωραμένος*· ποιῶ τινα μωρόν, ἀνόητον: «μωραίνει Κύριος, ὃν βούλεται ἀπολέσαι» ‖ ἀμεταβ. εἶμαι μωρός, μωρολογῶ.

**Μωραϊτάκης**, ***Χρύσανθος***. Ἀγωνιστὴς ἐκ Μεσολογγίου, μετασχὼν τῶν ἀγώνων τῆς πόλεως μὲ τὸ ἰδιόκτητον πλοῖόν του «Μποῦγος». Διετέλεσε πειρατὴς καὶ ὑπηρέτησεν εἰς τὸ ναυτικὸν τοῦ Ἀλῆ πασᾶ. Μὲ τὸ πλοῖόν του ἐνήργει, ἐν μέσῳ μυρίων κινδύνων, τὸν ἐφοδιασμὸν τῆς πολιορκημένης πόλεως ἐκ τῶν Ἰονίων νήσων, ὅτε δὲ τὸ ᾐχμαλώτισαν, ἀνέλαβε τὴν κυβέρνησιν τοῦ πολεμικοῦ «Ὑάκινθος» καὶ ἀκολούθως τῆς «Ἐλβετίας». Ἀπέθανεν ἐν Μεσολογγίῳ μετὰ τὴν ἀποκατάστασιν, κηδευθεὶς μετὰ μεγάλων τιμῶν. Χ. Γ. Ε.

**Μωραΐτης** (ὁ), θηλ. *Μωραΐτισσα*· ὀρθότερον *Μοραΐτης—Μοραΐτισσα*· ὁ κάτοικος τοῦ Μοριᾶ ἢ ὁ καταγόμενος ἀπὸ τὸν Μοριᾶν, Πελοποννήσιος.

**Μωραΐτης**, ***Ἀνδρέας***, ἢ ***Παπούλης***. Κερκυραῖος λόγιος καὶ κληρικός, ἐκ Πελοποννήσου καταγόμενος. Ἐσπούδασεν εἰς τὸ φροντιστήριον Καββαδίου καὶ κατόπιν ἐδίδασκε λατινικὴν γλῶσσαν καὶ γεωμετρίαν. Ἔγραψεν: «Ἐφύμνιον σεμνολόγημα δηλωτικὸν ὅτι ἡ λαμπροτάτη Κέρκυρα ἔν τε τῇ ἔξω θρησκείᾳ καὶ τῇ ἡμετέρᾳ ὀρθοδόξῳ πίστει ἦν καὶ ἔστι φιλόξενος». Ἀπέθανεν ἐν Κερκύρᾳ τῷ 1784. Λ. Χ. Ζ.

— **Μωραΐτης**, ***Μιχαήλ***. Μακεδονομάχος, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1856. Τῷ 1886 κατετάχθη εἰς τὸ στράτευμα μὲ τὸν βαθμὸν ἀνθυπολοχαγοῦ τοῦ πεζικοῦ. Μετέσχε τοῦ πολέμου τοῦ 1897, τῷ δὲ 1905, σχηματίσας ἴδιον σῶμα, ἐξῆλθεν εἰς τὴν περιφέρειαν Βοδενῶν (Μακεδονίας). Προσβληθεὶς ἐξ ἀπίνης ὑπὸ τοῦ τουρκικοῦ στρατοῦ παρὰ τὴν θέσιν Λιβάδια, ἐφονεύθη τὴν 19 Μαΐου 1905. Ν. ΚΛΣ

**Μωραϊτίδης**, ***Ἀλέξανδρος***. Ἕλλην διηγηματογράφος καὶ πεζογράφος. Ἐξάδελφος τοῦ Παπαδιαμάντη καὶ καταγόμενος ἐξ οἰκογενείας κληρικῶν, ὡς ἐκεῖνος, ἐγεννήθη τῷ 1851 ἐν Σκιάθῳ, ἔνθα καὶ διήκουσε τὰ ἐγκύκλια μαθήματα. Ἐτράπη ἀκολούθως εἰς τὴν σπουδὴν τῆς ἑλληνικῆς φιλολογίας καὶ ἐγένετο διδάκτωρ τοῦ πανεπιστημίου Ἀθηνῶν. Κατόπιν ἐχρημάτισε δημοσιογράφος ἐν τῇ «Ἐφημερίδι» τοῦ Κορομηλᾶ καὶ καθηγητὴς ἐπὶ μακρὸν εἰς γυμνάσια τῶν Ἀθηνῶν. Ἐτιμήθη διὰ τοῦ Ἐθνικοῦ Ἀριστείου τῶν γραμμάτων (1914). Ἐταξίδευσεν εἰς Ἅγιον Ὄρος, βραχὺ δὲ πρὸ τοῦ θανάτου του ἠσπάσθη τὸν μοναχικὸν βίον, ἀναχωρήσας εἰς Σκίαθον, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1929 ἐξ ἐπιπλοκῆς κήλης.

Ἀλέξ. Μωραϊτίδης.

Εἰς τοὺς κύκλους τῶν γραμμάτων ὁ Μωραϊτίδης ἐνεφανίσθη κυρίως ἀπὸ τῆς «Ἀκροπόλεως» διὰ τοῦ Γαβριηλίδου. Συνειργάσθη δ' ἔκτοτε εἰς πλεῖστα περιοδικά, ἐφημερίδας καὶ ἡμερολόγια καὶ ἔγραψε τὰ ἑξῆς: «Βάρδας Καλλέργης» (1875), πεντάπρακτον ἱστορικὸν δρᾶμα, «Δημήτριος ὁ Πολιορκητής» (1876), ἱστορικὸν μυθιστόρημα τῆς ἑλληνιστικῆς ἐποχῆς, «Τοῦ ἐν Ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Βασιλείου τοῦ Μεγάλου Ὁμιλίαι εἰς τοὺς Ψαλμούς» (1914), μετάφρασις, «Γρηγορίου τοῦ Ναζιανζηνοῦ: Παρθενίας ἐγκώμιον» (1926), δύο μακρὰ ποιήματα ἐκ τῶν ἐπῶν αὐτοῦ, μεταφρασθέντα ἐμμέτρως εἰς τὴν νεοελληνικὴν διάλεκτον, «Γρηγόριος Ναζιανζηνός» ποιήματα ἐκ τῶν ἐπῶν αὐτοῦ ἐμμέτρως μεταφρασθέντα, «Προφήτου Ἐλισαίου: Ἀκολουθία πανηγυρικὴ μετὰ παρακλητικοῦ κανόνος» βραβευθὲν ὑπὸ τῆς Ἱερᾶς Συνόδου, «Ἀκολουθία εἰς τὴν εὕρεσιν τῆς ἐν Σκιάθῳ θαυματουργοῦ εἰκόνος Παναγίας Κονιστρίας». Πλὴν τῶν ἀνωτέρω, τὰ «Ἅπαντα» τοῦ συγγραφέως τιμητικῶς συνεκεντρώθησαν καὶ ἐδημοσιεύθησαν (ἔκδοσις Σιδέρη) εἰς ἐξ τόμους «Διηγημάτων» (1921 — 1928) καὶ ἰσαρίθμους (1924 — 1926) παντοίων ἐντυπώσεων, ταξιδιωτικῶν καὶ ἄλλων, μελετημάτων, θρησκευτικῶν ἄρθρων κ. λ. π. ὑπὸ τὸν τίτλον «Μὲ τοῦ Βορριᾶ τὰ κύματα». Ἀνέκδοτα κατελείφθησαν τὰ ἔργα: «Μιχαὴλ Κομνηνός, Δεσπότης τῆς Ἠπείρου» (1874), «Ἡ καταστροφὴ τῶν Ψαρῶν», «Ἡ ἅλωσις τῆς Κωνσταντινουπόλεως», «Τιμολέων», ἅπαντα δραματικὰ ἔργα, ὧν τὸ δεύτερον ἐδιδάχθη ἀπὸ σκηνῆς.

Ὁ πολυγραφώτατος καὶ πεπαιδευμένος οὗτος πεζογράφος ἀνήκει εἰς τὴν μετὰ τὸ ρωμαντικὸν καὶ τὸ ἱστορικὸν μυθιστόρημα («Πάπισσα Ἰωάννα») ἐρχομένην σχολὴν τῶν πραγματιστῶν Ἑλλήνων διηγηματογράφων, καὶ δὴ τὴν πρώτην περίοδον αὐτῆς, τὴν τῆς ἠθογραφίας. Ἀποκληθεὶς «Διόσκουροι» μετὰ τοῦ πολλὰ τὰ κοινὰ παρουσιάζοντος Παπαδιαμάντη, ὁ Μωραϊτίδης ἔρχεται πολὺ μετ' αὐτόν. Γλῶσσά του εἶναι ἡ καθαρεύουσα, ἧς ὑπῆρξεν ἐκ τῶν stylistes, ὄχι ὅμως καὶ ἄνευ ἐξαιρέσεων, προκειμένου ἰδίᾳ περὶ χαρακτηριστικῶν ἰδιωτισμῶν, ἢ ἀντικειμένων τοπικοῦ πολιτισμοῦ. Ὁ ἀττικισμός, προερχόμενος ἐκ τῆς ἐνδελεχοῦς μελέτης τῶν προσφιλεστάτων αὐτῷ πατέρων τῆς Ἐκκλησίας, προσέδωκεν εἰς τὸ ὕφος αὐτοῦ καθαρότητα, εὐκαμψίαν, κομψότητα καὶ χάριν. Τὸν λόγον συγκροτεῖ ὁτὲ μὲν κατὰ τὴν λογικὴν ἑνότητα, ὁτὲ δὲ κατὰ τὸν ἀνυπόστατον ρυθμὸν τῆς ἀττικῆς πεζογραφίας, δεξιῶς χειριζόμενος ἐκτάσεις καὶ συστολὰς περιόδων καὶ ἐπιφέρων τομὰς καὶ διασταρώσεις καὶ ἀντιδιαστολάς, κόσμιος δὲ περὶ τὰς ἐμφάσεις καὶ ἐγκρατὴς περὶ τὰς παρηχήσεις. Τῶν ἐπιθέτων αὐτοῦ ἡ ἐπιτεταμένη ὑπερβολικότης προέρχεται ἐκ τῆς αὐτῆς παιγνιώδους αἰτίας, ἐξ ἧς καὶ ἡ συνηθεστάτη χρῆσις ὑποκοριστικῶν· ὑποκοριστικὴ δὲ τρόπον τινὰ δύναται ν' ἀποκληθῇ καὶ ἡ ἔκφρασις αὐτοῦ ἐν τῷ συνόλῳ της. Εὐγενολόγος καὶ λογοπαίκτης, εἶναι ἀνθρωπιστὴς κατὰ τὴν αἰσθή-

Digitized by Google

ματα ἀπέναντι τῶν τύπων αὐτοῦ, πρόθυμος καὶ ἐνθουσιώδης ἐν τῇ ἐπιδοκιμασίᾳ, μακρόθυμος καὶ συγγνώμων ἐν τῇ ἀποδοκιμασίᾳ, ἕτερον καὶ τοῦτο χαρακτηριστικὸν χριστιανικῆς θρησκευτικότητος. Οἱ τύποι αὐτοῦ εἶναι κατὰ κανόνα ἀφελεῖς καὶ πένητες νησιῶται. Οὐχ ἧττον αἱ περιπέτειαι αὐτῶν εἶναι ἐνίοτε κωμικαί, αἱ δὲ λύσεις κατὰ τὸ πλεῖστον εὐτυχεῖς. Ἡ περιγραφικότης τέλος τοῦ συγγραφέως εἶναι λεπτομερὴς καὶ διεξοδική, σύμμετρος κατὰ τὴν ἔκτασιν, σαφὴς κατὰ πάντα τὰ σημεῖα καὶ ἐμπεποτισμένη ὁμοίως διὰ τῆς ποιήσεως ἀττικῆς πεζογραφίας.

[*Ἠλ. Π. Βουτιερίδη*, «Ἀλέξανδρος Παπαδιαμάντης καὶ Ἀλέξανδρος Μωραϊτίδης» 1931.] ΤΕΛΛΟΣ ΑΓΡΑΣ

**Μωραΐτικα** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς ἐπαρχίας καὶ τοῦ νομοῦ Κερκύρας, ἕδρα ὁμωνύμου κοινότητος. Κεῖται ἐν τῷ τέως δήμῳ Μελιτειέων τῆς Μέσης Κερκύρας καὶ ἔχει ταχυδρομικὸν γραφεῖον καὶ δημοτικὸν σχολεῖον. Κάτ. (1928) 222. Ἡ κοινότης περιλαμβάνει καὶ τὰ χωρία *Βραγκανιώτικα*, *Ἐπισκοπιανὰ* καὶ *Μεσογγή*. Χ. Δ.

**Μωραϊτίνης**, *Ἀριστείδης*. Ἕλλην νομομαθὴς καὶ πολιτικός, γεννηθεὶς ἐν Σμύρνῃ τῷ 1806 καὶ ἀποθανὼν ἐν Ἀθήναις τῷ 1875. Ἐσπούδασεν ἐν Ἰταλίᾳ καὶ Γαλλίᾳ νομικά, κατόπιν δὲ κατῆλθε, τῇ προτροπῇ τοῦ Ἰωάννου Καποδιστρίου, εἰς Ἑλλάδα, ὅπως ὑπηρετήσῃ αὐτήν. Κατὰ τὴν σύστασιν τῶν ἐν Ἑλλάδι δικαστηρίων διωρίσθη πρόεδρος πρωτοδικῶν ἐν Λακωνίᾳ τῷ 1829, εἶτα δὲ προήχθη εἰς πρόεδρον ἐφετῶν ἐν Ναυπλίῳ καὶ κατόπιν εἰς τὸ ἐφετεῖον Ἀθηνῶν, τῷ δὲ 1861 ἐγένετο πρόεδρος τοῦ Ἀρείου Πάγου. Μετὰ τὴν ἔξωσιν τοῦ Ὄθωνος ἐξελέγη ἀντιπρόσωπος τῆς ἑλληνικῆς κοινότητος Σμύρνης ἐν τῇ συνελεύσει τοῦ 1863, ὅτε δὲ συνεκλήθη

*Ἀριστείδης Μωραϊτίνης.*

αὕτη, τὴν 12 Φεβρουαρίου, καὶ ἀνέλαβε τὴν ἐκτελεστικὴν ἐξουσίαν, ὁ Μωραϊτίνης προήδρευσε τῆς ἐπιτροπῆς τῆς διαχειρισθείσης τὴν ἐξουσίαν ταύτην. Ἐξελέγη πρόεδρος τῆς συνελεύσεως κατ' ἐπανάληψιν, ὡς τοιοῦτος δὲ ὑπεδέχθη εἰς Πειραιᾶ τὸν βασιλέα Γεώργιον. Τὴν 20ὴν Δεκεμβρίου 1867 ἐσχημάτισε προσωρινὴν κυβέρνησιν, ἀπὸ δὲ τοῦ 1868 ἐπανῆλθεν εἰς τὰ δικαστικά του καθήκοντα. Θ. Β.

— **Μωραϊτίνης**, *Ἀριστείδης*. Ἕλλην ἀντιπλοίαρχος, ἀεροπόρος τοῦ πολεμικοῦ ναυτικοῦ, γεννηθεὶς τῷ 1891. Ἀποφοιτήσας ἐκ τῆς σχολῆς τῶν ναυτικῶν Δοκίμων τῷ 1910, κατετάχθη ὡς σημαιοφόρος ἐν τῷ πολεμικῷ ναυτικῷ. Κατὰ τὸν Ἑλληνοτουρκικὸν πόλεμον τοῦ 1912—1913 ὑπηρέτησεν ὡς ὕπαρχος τοῦ τορπιλλοβόλου 14, κατόπιν δέ, κατὰ τὸν ἐπακολουθήσαντα Ἑλληνοβουλγαρικόν, ἐπετάχθε τὸ πρῶτον ὡς παρατηρητὴς ὑπὲρ τὰ Δαρδανέλλια ἐπὶ ἀεροπλάνου, ὅπερ ἐχείριζεν ὁ ὑπολοχαγὸς τοῦ μηχανικοῦ Μ. Μουτούσης. Ἔκτοτε ἐπεδόθη εἰδικῶς εἰς τὴν ἀεροπλοΐαν, ὅτε δὲ τὸ πρῶτον ἐλειτούργησεν ἀεροπορικὴ σχολὴ ἐν τῷ πολεμικῷ ναυτικῷ τῷ 1914, ἐμαθήτευσεν ἐν αὐτῇ. Ἀποφοιτήσας τῆς σχολῆς ταύτης, ἀνεδείχθη ταχέως χάρις εἰς τὸ ὑπερβολικὸν θάρρος του καὶ τὴν ἔμφυτον πρὸς τὴν ἀεροπλοΐαν κλίσιν του. Τῷ 1916 μετέβη εἰς Θεσσαλονίκην καὶ ὠργάνωσε τὴν 1ην μοῖραν τῆς ναυτικῆς ἀεροπορίας. Ἡ τολμηροτάτη δρᾶσίς του εἰς τὸ μακεδονικὸν μέτωπον, βομβαρδισμοὶ ἡμέρας τε καὶ νυκτός, ἀναγνωρίσεις, διώξεις κτλ. ἐκίνησαν τὸν σεβασμὸν καὶ τὴν ἐκτίμησιν τῶν συμμάχων. Χάρις εἰς τὴν ἀκάματον δραστηριότητά του συνιστᾶτο κατόπιν 2α μοῖρα τῆς ναυτικῆς ἀεροπορίας ἐν Μούδρῳ, ἔνθα καὶ μετέφερε τὴν ἕδραν του. Ἄλλοτε μόνος, ἄλλοτε ἐπὶ κεφαλῆς Ἑλλήνων ἢ συμμάχων ἀεροπόρων, ἐνήργει βομβαρδισμούς, ἀναγνωρίσεις ἢ διώξεις εἰς τὴν Μακεδονίαν, τὰ Δαρδανέλλια, τὴν Μ. Ἀσίαν, προκαλῶν πάντοτε τὸν θαυμασμὸν τῶν συμμαχικῶν στρατιῶν. Ἡ παράτολμος ἐν τῷ λιμένι Κωνσταντινουπόλεως κατὰ τοῦ γερμανικοῦ εὐδρόμου μάχης «Γκαῖμπεν» ἀεροπορικὴ ἐπίθεσίς του ἀπέσπασε τὰ συγχαρητήρια τῶν συμμάχων. Ἐν τῷ μεταξὺ εἶχε προαχθῆ εἰς πλωτάρχην καὶ μετ' οὐ πολὺ εἰς ἀντιπλοίαρχον. Τὸν Δεκέμβριον τοῦ 1918, ἐπιστρέφων δι' ἀεροπλάνου εἰς Ἀθήνας ἐκ Θεσσαλονίκης, ἔνθα εἶχε μεταβῆ πρὸς ἐπιθεώρησιν τοῦ ὑπὸ τῶν Γάλλων ἐγκαταλειφθέντος ἀεροπορικοῦ ὑλικοῦ, ἐξηφανίσθη, οὐδενὸς ἴχνους του ἀνευρεθέντος (εἰκόνα του βλ. ἐν τ. Α', σελ. 789). Γ. Ν. Ν.

— **Μωραϊτίνης**, *Περικλῆς*. Ἕλλην ἀξιωματικός, γεννηθεὶς τῷ 1837 ἐν Ναυπλίῳ καὶ φονευθεὶς ἐν Κύθνῳ τὴν 1 Μαρτίου 1862. Ἐσπούδασεν ἐν τῷ στρατιωτικῷ σχολείῳ τῶν Εὐελπίδων, ἐξ οὗ ἀπεφοίτησε τῷ 1859. Λόγῳ συμμετοχῆς του εἰς τὴν ἐπαναστατικὴν κατὰ τοῦ Ὄθωνος κίνησιν, εἶχεν ἀπομακρυνθῆ τῶν Ἀθηνῶν καὶ τοποθετηθῆ εἰς Σῦρον. Τὴν 28 Φεβρουαρίου 1862 ὁ Μωραϊτίνης μετὰ τοῦ ὑπολοχαγοῦ Λεωτσάκου ὕψωσαν τὴν σημαίαν τῆς ἐπαναστάσεως ἐν Σύρῳ καὶ καταλαβόντες τὸ ἀτμόπλοιον «Καρτερία» μετ' ἐλαχίστων ἀνδρῶν ἔπλευσαν εἰς Κύθνον, ὅπως παραλάβωσι τοὺς ἐκεῖ ἐξορίστους, μεταξὺ τῶν ὁποίων ἦσαν οἱ ἄλλοτε ὑπουργοὶ Ἐπαμ. Δεληγεώργης, Δημ. Καλλιφρονᾶς καὶ Ἀθ. Πετσάλης. Ἡ κυβέρνησις ὅμως, εἰδοποιηθεῖσα ἐγκαίρως ὑπὸ τῶν ἀρχῶν περὶ τῶν συμβάντων, ἀπέστειλε πρὸς καταδίωξίν των τὴν κορβέτταν «Ἀμαλία», φέρουσαν λόχον τακτικοῦ στρατοῦ, διαταχθέντα νὰ παρεμποδίσῃ τοὺς ἐπαναστάτας νὰ πλεύσωσιν εἰς Χαλκίδα ἑτοίμην πρὸς ἐπανάστασιν.

*Περικλῆς Μωραϊτίνης.*

Καὶ οἱ μὲν ἐπαναστάται ἐπρόφθασαν ν' ἀποβιβασθῶσιν εἰς Κύθνον, ἀλλ' ἀμέσως ἠκολούθησεν αὐτοὺς ὁ στρατός, γενομένης δὲ μάχης ἐφονεύθησαν οἱ Μωραϊτίνης, Λεωτσάκος καὶ Σκαρβέλης, οὕτω δὲ κατεστάλη ἡ στάσις. Ὁ θάνατος τῶν τριῶν τούτων ἀνδρῶν προεκάλεσε γενικὴν θλῖψιν καὶ συνετέλεσε μεγάλως εἰς τὸ κίνημα τῆς 10 Ὀκτωβρίου 1862, ὅτε ἀνετράπη ἡ βαυαρικὴ δυναστεία. Οἱ ποιηταὶ τῆς ἐποχῆς ἐθρήνησαν τὸν θάνατον των καὶ πολλαὶ ἀπεδόθησαν τιμαὶ εἰς τὴν μνήμην αὐτῶν. Θ. Β.

— **Μωραϊτίνης**, *Τίμος*. Ἕλλην θεατρικὸς συγγραφεὺς καὶ χρονογράφος, γεννηθεὶς ἐν Ἀθήναις τῷ 1875. Ὑπῆρξεν ἐπὶ μακρὰ ἔτη χρονογράφος τοῦ «Ἐμπρὸς» καὶ ἄλλων ἐφημερίδων, ἀσχοληθεὶς δὲ μὲ τὸ θέατρον, ἀνεβίβασεν ἐπὶ σκηνῆς πολλὰς κωμῳδίας, στεφθείσας ὑπὸ πλήρους ἐπιτυχίας: «Μαραθώνιος δρόμος» (1906), «Πρωθυπουργίνα» (1908), «Τὸ τσάϊ τῆς Νίτσας» (1912), «Τὸ παλιοκόριτσο» (1921), «Ἡ ἐπιστροφὴ τῶν θεῶν» (1923), «Ἕνα ταξιδάκι στὴ σελήνη» (1924), «Δακτυλογράφος ζητεῖ θέσιν» (1925), «Μοντέρνο σπίτι», (1926), «Αἰωνία ζωὴ» (1929), «Ἱστορία τῆς Ἀθήνας» (1931). Τὸν Μωραϊτίνην διακρίνει δροσερὸν καὶ σπινθηροβόλον πνεῦμα καὶ ρωμαντικὴ διάθεσις ἐπιστροφῆς πρὸς τὸ παρελθόν, ὡς ὡραιότερον καὶ ἁγνότερον. Συνέγραψεν ἐπίσης τὸ μυθιστόρημα «Ὁλόκληρη ζωὴ» (1923) καὶ τὴν ποιητικὴν συλλογὴν «Φθινοπωρινὰ» (1926).

**Μωράκης**. Ὄνομα ἐπιφανοῦς κρητικῆς οἰκογενείας τῶν Σφακίων, καταγομένης ἐκ τῆς παλαιᾶς οἰκογενείας τῶν *Μαυροπατέρων*, κλάδου τῆς βυζαντινῆς οἰκογενείας τῶν *Σκορδυλῶν*. Τῆς οἰκογενείας ταύτης σπουδαιότερα μέλη ὑπῆρξαν:

—1) ***Μωράκης***, ***Ἀνδρουλιός***. Ἐγεννήθη ἐν τῷ χωρίῳ Ἀσκύφῳ τῶν Σφακίων περὶ τὸ 1730 καὶ νεώτατος ἐπεδόθη εἰς τὸ ναυτικόν. Συμμετέσχεν ὡς ἀρχηγὸς τῶν συγχωρίων του εἰς τὴν ἐπανάστασιν τοῦ 1770, μετὰ τὴν ἀποτυχίαν τῆς ὁποίας ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ναυτικόν του ἐπάγγελμα, ὑπηρέτησεν εἰς τὸν ρωσικὸν στόλον τῆς Μεσογείου καὶ ἔλαβε μέρος εἰς τὰς ἐν τῷ Αἰγαίῳ ἐπιχειρήσεις τοῦ Λάμπρου Κατσώνη μέχρι τῆς συντριβῆς τούτου (1792), ὅτε ἐπανῆλθεν εἰς τὸ ἐμπορικὸν αὐτοῦ πλοῖον. Μυηθεὶς ἐγκαίρως εἰς τὰ τῆς Φιλικῆς Ἑταιρείας, ἐχρησιμοποιήθη, παρ' ὅλον τὸ προβεβηκὸς τῆς ἡλικίας του, εἰς διαφόρους πολιτικὰς θέσεις μέχρι τέλους τοῦ Ἀγῶνος (1830). Τῷ 1833, μετὰ τὴν ἐν Μουρνιαῖς τῆς Κυδωνίας στασιαστικὴν συγκέντρωσιν τῶν Κρητῶν, συνελήφθη ὑπὸ τῶν Τούρκων ἐν Ἀσκύφῳ καὶ ἀπηγχονίσθη ἐκεῖ ἄνευ δίκης τὴν 18ην Νοεμβρίου 1833.

—2) ***Μωράκης***, ***Γεώργιος***. Πρωτόπαπας Σφακίων, υἱὸς τοῦ προηγουμένου, γεννηθεὶς ἐν Ἀσκύφῳ τῷ 1760. Μετέσχε τῆς Ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 μέχρι τέλους αὐτῆς (1830), ὅτε κατέφυγεν εἰς Πελοπόννησον, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1847.

—3) ***Μωράκης***, ***Ἀναγνώστης***, ἐπονομασθεὶς ***Πρωτοπαπαδάκης***. Υἱὸς τοῦ προηγουμένου, φονευθεὶς κατὰ τὴν ἐπίθεσιν πρὸς ἐκπόρθησιν τῆς Μαλάξας (20 Ἰουλίου 1822).

—4) ***Μωράκης***, ἢ ***Πρωτοπαπαδάκης***, ***Μανοῦσος***. Ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου, διακριθεὶς κατὰ τὸν Ἀγῶνα διὰ τὰς τολμηρὰς αὐτοῦ ἐνέδρας, καθ' ἃς ἐδεκάτιζε τοὺς Τούρκους. Τραυματισθεὶς σοβαρῶς εἰς τὸν πόδα, διεκομίσθη εἰς Ναύπλιον, ὅπου καὶ ἀπέθανε (1829).

—5) ***Μωράκης***, ἢ ***Πρωτοπαπαδάκης***, ***Πωλιός***. Νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προηγουμένου. Μετέσχεν ὡς ὁπλαρχηγὸς εἰς τὴν Ἐπανάστασιν (1821—1830), λαβὼν πλεῖστα τραύματα εἰς διαφόρους ἐν Κρήτῃ καὶ Πελοποννήσῳ μάχας. Ἀπέθανεν ἐν Ναυπλίῳ τῷ 1834.

— 6) ***Μωράκης***, ἢ ***Πρωτοπαπαδάκης***, ἢ ***Ἀναγνωστάκης***, ***Ἐμμανουήλ***. Υἱὸς τοῦ Ἀναγνώστου. Μετέσχε τῆς ἐν Κρήτῃ ἐπαναστάσεως τοῦ 1821 καὶ διακριθεὶς εἰς πλείστας μάχας ἔπεσε γενναίως μαχόμενος παρὰ τὸ φρούριον τῆς Κισάμου περὶ τὰ τέλη Ἀπριλίου 1823.

—7) ***Μωράκης***, ἢ ***Πωλιουδάκης***, ***Ἐμμανουήλ***. Υἱὸς τοῦ ὑπ' ἀριθ. 5, διακριθεὶς ὡς ὁπλαρχηγὸς κατὰ τὴν ἐν Κρήτῃ ἐπανάστασιν (1821—1830), μετὰ τὸ πέρας τῆς ὁποίας καταφυγὼν εἰς Ἑλλάδα ἐτιμήθη διὰ τοῦ βαθμοῦ λοχαγοῦ τῆς φάλαγγος.

—8) ***Μωράκης***, ***Παῦλος***. Διεκρίθη ὡς ἀρχηγὸς τοῦ ἀνατολικοῦ τμήματος τῆς ἐπαρχίας Σφακίων κατὰ τὴν Κρητικὴν ἐπανάστασιν 1866—1869, συμμετασχὼν εἰς πάσας τὰς ἐν τοῖς νομοῖς Χανίων καὶ Ρεθύμνου πολεμικὰς ἐπιχειρήσεις καὶ διακριθεὶς πανταχοῦ διὰ τὸν ἡρωϊσμόν του. Μετὰ τὸ πέρας τοῦ ἀγῶνος κατέφυγεν εἰς Ἀθήνας, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῷ 1883. Ν. ΚΑΛΟΜΕΝΟΠΟΥΛΟΣ

**Μώραλης** ***Δεφτερδάρ***. Ἕλλην λόγιος τῶν μέσων τοῦ ΙΖ' αἰῶνος, καταλαβὼν ἐν Τουρκίᾳ ὕψιστα πολιτικὰ ἀξιώματα. Ἐκαλεῖτο οὕτως ὡς καταγόμενος ἐκ Πελοποννήσου. Ἐγκατασταθεὶς ἐν Κωνσταντινουπόλει, ἀνήχθη εἰς τὸ ἀξίωμα τοῦ ὑπουργοῦ τῶν Οἰκονομικῶν, τὰ μέγιστα ἰσχύων παρὰ τῇ βαλιδὲ σουλτάνᾳ. Τῆς εὐνοίας αὐτῆς ἐπωφελούμενος ἐχρηματίζετο, ἰδίως παρὰ τῶν ὑπαλλήλων τοῦ κράτους, ἀναβιβάζων καὶ καταβιβάζων διὰ τῶν δολοπλοκιῶν ὑπουργοὺς καὶ μεγιστᾶνας μεθ' ὅλην τὴν κατ' αὐτοῦ ἀντίδρασιν τῶν ἀγάδων τῶν γενιτσάρων, οἵτινες ἡμέραν τινὰ μάλιστα διήρπασαν καὶ τὰ μέγαρα αὐτοῦ. Ἐφιλοδόξησε δὲ νὰ ἀναγορευθῇ καὶ μέγας βεζύρης, ἀλλ' ὁ ἀντ' ἐκείνου ὑψωθεὶς εἰς τὸ ἀνώτατον τοῦτο ἀξίωμα διοικητὴς Χαλεπίου Ἰψὼρ πασᾶς, ἰσχυρὸς ἀντίπαλος αὐτοῦ, μόλις ἔλαβε τὰ ἡνία τοῦ κράτους ἐξώρισεν αὐτὸν εἰς Κύπρον. Καθ' ὁδὸν ὅμως διέταξε τὸν ἀποκεφαλισμὸν αὐτοῦ (Ἀπρίλιος τοῦ 1656) καὶ τὴν κατάσχεσιν τῶν ἐν Πελοποννήσῳ κτημάτων, τῶν ἐν Κωνσταντινουπόλει μεγάρων του καὶ πάσης τῆς κινητῆς περιουσίας αὐτοῦ. Τ. Ε. Ε.

**Μωρατινίστης** ***Καλύβια*** *[Γεωγρ.]*· βλ. λ. *Καλύβια* Μωρατινίστης.

**μωρέ**· κλητικὸν ἐπιφώνημα, συνήθως πρὸς ἄνδρας, ἀλλὰ καὶ πρὸς γυναῖκας καὶ παιδία, μηδεμίαν ἐμφαῖνον ἀπρέπειαν: «μωρὲ Γιάννη», «μωρὲ Μαρία», «μωρὲ παιδί»· || χάριν ἐπιτάσεως τῆς κλήσεως συνεκφέρεται καὶ τὸ *σύ*: «μωρὲ σὺ Γιάννη» || εἰς τὸ θηλυκὸν λέγεται τὸ *μωρή*, ἀλλὰ θεωρεῖται συνήθως ὑβριστικὸν ἢ χυδαῖον, ἀντιστοιχεῖ δὲ κυρίως εἰς τὸ *βρὲ* (βλ. λ.): «μωρὴ Μαρία» ἢ «μωρὴ σὺ Μαρία»· || ἡ χρῆσις τῆς λέξεως ὡς ἐπιφωνήματος ἦτο ἤδη ἀπὸ τῶν χρόνων τοῦ Χριστοῦ, ἀλλ' ἐθεωρεῖτο τοῦτο ἀνοίκειον καὶ ἀπρεπές: «ὃς δ' ἂν εἴπῃ (τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ) μωρέ, ἔνοχος ἔσται εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρὸς» (*Ματθ*. 5,22).

**μωρέα** (ἡ)· ἀντὶ *μορέα* (βλ. λ.).

**Μωρέας** (ὁ)· κοιν. ὄνομα τῆς Πελοποννήσου (βλ. *Μορέας*).

**Μωρεὰς** (Moréas), ***Ζάν***. Τὸ γαλλικὸν φιλολογικὸν ψευδώνυμον (πιθανώτατα ἐκ τοῦ *Μωρέας*=Πελοπόννησος) τοῦ Ἕλληνος ποιητοῦ Ἰ. Παπαδιαμαντοπούλου. Πρὸς πατρὸς ἔγγονος τοῦ ἡρωϊκῶς πεσόντος κατὰ τὴν πολιορκίαν τοῦ Μεσολογγίου Ἰωάννου Παπαδιαμαντοπούλου, πρὸς μητρὸς δὲ δισέγγονος τοῦ πυρπολητοῦ Τομπάζη, ἐγεννήθη ἐν Ἀθήναις τὸν Ἀπρίλιον τοῦ 1856 ἐκ πατρὸς τοῦ Ἀδαμ. Παπαδιαμαντοπούλου, μαθητοῦ τοῦ νομοδιδασκάλου Φ. Σαβινὺ καὶ βραδύτερον διαπρεποῦς νομικοῦ καὶ ἀρεοπαγίτου. Προοριζόμενος ὡσαύτως διὰ τὰς σπουδὰς τοῦ δικαίου, ἀπεστάλη πρὸς

*Ζὰν Μωρεάς.*

τοῦτο εἰς Μόναχον καὶ ἐκεῖθεν αὐτοβούλως ἐταξίδευσε διαδοχικῶς εἰς Φραγκφούρτην, Ἀϊδελβέργην, Στουττγάρδην, Γενεύην, Ρῆνον, Ἰταλίαν καὶ Παρισίους. Ἐνωρίτατα ὅμως ἐκπαιδευθεὶς εἰς τὴν γαλλικὴν γλῶσσαν καὶ φιλολογίαν ὑπὸ τοῦ λεξικογράφου Βαρβάτη καὶ ὑπὸ τῆς θείας του Γάλλου ἠθοποιοῦ Dumeny, συνάμα δὲ ζωηρὰν καὶ πρώϊμον αἰσθανόμενος πρὸς τὴν ποίησιν κλίσιν, ἣν ἐξεδήλωσε διὰ μεταφράσεων καὶ πρωτοτύπου ἔργου, ὁ Μωρεάς, καταλείπων τὰς μελέτας τοῦ δικαίου, εἰσῆλθεν εἰς τοὺς τότε φιλολογικοὺς κύκλους τῶν Παρισίων τῆς Λατινικῆς συνοικίας καὶ ἰδίᾳ τὸν τῶν Ὑδροπαθῶν (ἀγνώστου προελεύσεως τίτλος, ὑφ' ὃν χαρακτηρίζεται ὁμὰς ἔχουσα ὡς πυρῆνα τοὺς διαδόχους τοῦ Ζολᾶ, ρεαλιστὰς πεζογράφους τῆς τρίτης περιόδου τοῦ νατουραλισμοῦ). Ἐπανα-

Digitized by Google

κάμψας ἐπὶ βραχὺ μετὰ τριετῆ ἀπουσίαν, ἐγνώρισεν εἰς τοὺς οἰκείους αὐτοῦ τὴν ἀπόφασιν ὅπως παραμείνῃ ὁριστικῶς ἐν Παρισίοις καὶ γράψῃ εἰς τὴν γαλλικὴν γλῶσσαν. Ἔκτοτε δὶς ἐπεσκέφθη τὴν Ἑλλάδα, τῷ 1897 καὶ τῷ 1906, ἐξ ἀφορμῆς τῆς διδασκαλίας τῆς κλασσικῆς του τραγῳδίας «Ἰφιγένεια» ἀπὸ τοῦ Ἀθηναϊκοῦ σταδίου ὑπὸ τοῦ ζεύγους τῶν ἠθοποιῶν Συλβαὶν τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας. Ἐντὸς ὀλίγου δ' ἀνῆλθεν εἰς τ' ἀνώτατα ἐπίπεδα τῶν γαλλικῶν γραμμάτων, καταστὰς ὁ προσωπικὸς καὶ θαυμαστὸς φίλος ἁπάντων τῶν συγχρόνων αὐτοῦ Γάλλων ποιητῶν, καὶ ἰδίᾳ τοῦ Βερλαίν, τοῦ Μαλλαρμὲ καὶ τοῦ Ἄγγλου Ὄσκὰρ Οὐάϊλδ. Κατ' ἐξοχὴν ἐντρυφῶν εἰς τὰς φιλολογικὰς συζητήσεις («τίποτε ἄλλο ἐκτὸς τῆς φιλολογίας δὲν μ' ἐνδιαφέρει»), ὁ ποιητὴς ἐμίσει τὴν γραφίδα, ἡ δ' «ἐργασία του συνίστατο ἅπασα εἰς τὴν ἀπόλαυσιν τῆς γεγωνυίᾳ τῇ φωνῇ συνθέσεως ἢ ἀπαγγελίας στίχων» *(Charles Maurras)*. Ἀποστρεφόμενος τὸν κατ' ἐπάγγελμα ἄνθρωπον τῶν γραμμάτων, ἀπέζησεν ἔκτοτε, διαιτώμενος μετὰ φειδοῦς καὶ λιτότητος, ἐξ εἰσοδήματος ἀκινήτου ἐν Πάτραις. Περὶ τὸ πέρας τοῦ βίου, πολιτογραφηθεὶς Γάλλος πολίτης καὶ ἀξιωθεὶς διπλώματος τῆς Λεγεῶνος τῆς Τιμῆς, ἐφέρετο ὑποψήφιος τῆς Γαλλικῆς Ἀκαδημίας τῶν Ἀθανάτων. Ἀλλ' ἡ χρῆσις οἰνοπνευματωδῶν καὶ ἡ κακὴ δίαιτα, ἡ ἀνεπάρκεια ἀναπαύσεως καὶ ὕπνου, καθ' ὅσον ὁ Μωρεὰς ἐνησμενίζετο νὰ διάγῃ τὰς νύκτας παρὰ τὰς ὄχθας τοῦ Σηκουάνα, κατακλινόμενος ἅμα τῷ ὄρθρῳ, ὑπέσκαψαν τὴν ὑγείαν αὐτοῦ ἀνεπανορθώτως, προξενήσαντα τὸν ἐξ ἀσθενείας τοῦ ἥπατος θάνατόν του ἐν τῷ νοσοκομείῳ Saint Maudé κατὰ Μάρτιον τοῦ 1910. Ὁ νεκρὸς αὐτοῦ ἀπετεφρώθη, τῇ τελευταίᾳ βουλήσει του, ἐν τῷ κοιμητηρίῳ Père-Lachaise.

Εἰς τὰ ἑλληνικὰ γράμματα ὁ Μωρεὰς ἐνεφανίσθη ὑπὸ τὸ πραγματικόν του ὄνομα ἀπὸ τῶν στηλῶν τοῦ «Ἀττικοῦ Μηνύτορος» διὰ καλλιτεχνικῶν, αἰσθητικῶν καὶ ποιητικῶν ἄρθρων. Τῷ 1874 μετέφρασε ποίημα τοῦ Göthe, ποιήματα τοῦ Heine καὶ τὴν «Φωλεὰν τῶν Κοράκων» τοῦ A. Houssay, μετά τινα δὲ χρόνον, ἡμιτελές, τὸ πρῶτον μέρος τοῦ «Βερθέρου». Τέλος τῷ 1878, ἐξέδωκεν ὑπὸ τὸν τίτλον «Τρυγόνες καὶ Ἔχιδναι» πρωτότυπον συλλογὴν ποιημάτων του, περιέχουσαν καὶ ἱκανὰ στιχουργήματα γαλλιστί.

Ἐν Γαλλίᾳ ὁ Μωρεὰς ἐνεφανίσθη ἀπὸ τοῦ «Nouvelle Rive Gauche» καὶ «Lutèce» (1883), συνεργασθεὶς ἔκτοτε εἰς σωρείαν γαλλικῶν περιοδικῶν καὶ ἐφημερίδων, ἐν οἷς αἱ «Revue Indépendant», «Wallonie», «Figaro», «Écho de Paris», «La Plume», «Mercure de France», «Temps», «Ermitage» κλπ. Ἔργα αὐτοῦ εἰς βιβλία ἐξεδόθησαν τὰ ἀκόλουθα: «Les Syrtes» (1884), «Les Cantilènes» (1886), ποιήματα· «Le Thé chez Miranda» (1886), «Les demoiselles Goubert» (1888), μυθιστορήματα ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Paul Adam· «Les premières armes du Symbolisme» (1839), ἐπιστολαὶ καὶ προκηρύξεις· «Le Pèlerin Passionné» (1891), «Autant en emporte le vent» (1893), ποιήματα, «Eriphyle (ἐπύλλιον) et Quatres Sylves» (1894), ποιήματα· «Jean de Paris» (1898), «Les Stances» (I καὶ II βιβλ. 1899, III—VI βιβλ. 1901), ποιήματα· «Feuillets» (1902), ἄρθρα· «Le voyage de Grèce» (1902), ἐντυπώσεις· «Iphigénie» (1904), δρᾶμα, διδαχθὲν τῷ 1903 ἐν τῷ ἀρχαϊκῷ θεάτρῳ τῆς Ὀράγγης καὶ ἀναβιβασθὲν κατὰ τὸ αὐτὸ ἔτος ὑπὸ τοῦ θιάσου τῆς Γαλλικῆς Κωμῳδίας· «Contes de la vieille France» (1904), διηγήματα· «Paysages et sentiments» (1906), μελετήματα καὶ ἐντυπώσεις. Μεταθανάτια ἔργα τοῦ Μωρεὰς ἐδημοσιεύθησαν: τὸ VII βιβλίον τῶν «Stances» (ἀπὸ τοῦ «Figaro» τοῦ 1903), κατελήφθησαν δ' εἰς χεῖρας τοῦ Maurice Barrès ἀνέκδοτα τὰ ἔργα· «Variations sur la vie et les livres» (βραδύτερον ἐκδοθέν), ἀποσπάσματα ἐκ τῶν τραγῳδιῶν «Αἴας» καὶ «Φιλοκτήτης», «Oeuvres et Jours de poètes» (ἐκδοθὲν ἐπίσης), «Études critiques» καὶ «Après le Décameron», διηγήματα. Παρὰ τὴν ἀποδοκιμασίαν τοῦ ποιητοῦ, ποιήματα αὐτοῦ ἐμελοποιήθησαν ὑπὸ τῶν Γάλλων συνθετῶν Pierre de Bréville, Gaston Dubreih, Ernest Chausson, Gabriel Fabre κ.ἄ. Ἐκ τῆς ἑλληνικῆς εἰς τὴν γαλλικὴν ὁ Μωρεὰς μετέφρασέ τινας «Ἰάμβους καὶ Ἀναπαίστους» τοῦ Κωστῆ Παλαμᾶ, ποιήματα τοῦ μαθητοῦ καὶ φίλου του Πέτρου Ζητουνιάτου, ὡς καί τινα ἐκ τῶν δημωδῶν ἑλληνικῶν «Παραλογῶν», ἐν ταῖς «Cantilènes» αὐτοῦ.

Τὸ γαλλικὸν ἔργον τοῦ Μωρεάς, καὶ ἰδίᾳ αἱ Stances, ἔσχε μεγίστην ἐπίδρασιν ἐν Ἑλλάδι διὰ τοὺς ποιητὰς τῆς μετὰ τὸ 1900 γενεᾶς. Πλήρεις μεταφράσεις αὐτῶν ἐξεπονήθησαν ὑπὸ τοῦ Μιλτ. Μαλακάση, μετὰ μακρᾶς εἰσαγωγῆς (1920), καὶ Τέλλου Ἄγρα (1921), ἀποσπασματικὰ δὲ εἰς βιβλία μὲν ὑπὸ τοῦ Σ. Σκίπη καὶ Κλ. Παράσχου, εἰς περιοδικὰ δὲ καὶ ἐφημερίδας ὑπὸ πλείστων ἄλλων, ἐν οἷς τοῦ Κωστῆ καὶ Λεάνδρου Παλαμᾶ, τοῦ Π. Ζητουνιάτη, τοῦ Παύλου Γνευτοῦ, τοῦ Θρ. Ζωϊοπούλου, Δημ. Δημακοπούλου, Α. Σκιαδαρέση, Α. Πάλλη κλπ. Τὴν «Ἰφιγένειαν» αὐτοῦ μετέφρασε καὶ ἐδίδαξεν ἀπὸ τοῦ θεάτρου Κοτοπούλη ὁ Λ. Παλαμᾶς (1912). Τὴν «Ἐριφύλην» ἐρρύθμως ὁ Κ. Παλαμᾶς («Παναθήναια», 1910). Ἐκλογὴν ἐξ ὅλου τοῦ πρὸ τῶν «Στροφῶν» ποιητικοῦ του ἔργου μετέφρασεν ἐπίσης ὁ Τ. Ἄγρας. Ἐκ δὲ τῶν πεζῶν αὐτοῦ ἔργων «Contes de la Vieille France» ἐδημοσιεύθησαν ἐν τῷ «Ἡμερολογίῳ Σκόκκου» καὶ τοῖς «Παναθηναίοις», ἔνθα καὶ μετάφρασις ἐκ τοῦ «Voyage en Grèce». Ἀποσπάσματα ἐκ πεζῶν ἐπίσης μελετημάτων ἐδημοσίευσεν ὁ Ἀπ. Μελαχρινὸς ἐν τῷ περιοδικῷ «Ζωῇ» (1922). Πάντες σχεδὸν οἱ ἀνωτέρω μεταφρασταὶ φέρουν, εἰς περίοδόν τινα κατὰ τὸ μᾶλλον ἢ ἧττον ἐκτεταμένην, ἰσχυρὰν τὴν σφραγίδα τῆς ἐπιδράσεως τοῦ ποιητοῦ.

Διὰ τὴν Ἑλλάδα ὁ Μωρεὰς ὑπῆρξεν ὁ ἀντίτυπος τοῦ Σολωμοῦ τύπος. Ἐνῷ ἐκεῖνος, κατὰ σημαντικὸν μέρος τοῦ ἔργου καὶ τῆς δόξης Ἰταλός, ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἑπτάνησον, ὄχι μόνον ἀφοσιωθεὶς εἰς τὴν ἐκμάθησιν καὶ τὴν καλλιέργειαν τῆς γλώσσης καὶ εἰς τὴν προαγωγὴν τῆς ἐλευθερίας καὶ τοῦ πολιτισμοῦ τῆς Ἑλλάδος, ἀλλὰ καὶ τὴν περαιτέρω αὐτοῦ φήμην διὰ παντὸς συνάψας πρὸς τὰ ὅρια τῆς λαλουμένης νεοελληνικῆς, ὁ Μωρεάς, ἐπαναλαμβάνων ὅ,τι ὁ Γκαῖτε περὶ τῆς ἀνεπαρκείας καὶ βαρβαρότητος τῆς γερμανικῆς γλώσσης, μετέστη εἰς τὸ γαλλικὸν περιβάλλον, πρὸς ἱκανοποιητικὴν ἐκδήλωσιν τοῦ ποιητικοῦ του δαιμονίου, ἀφιερωθεὶς ἔκτοτε εἰς τὴν γνῶσιν, τὴν αἴσθησιν καὶ τὴν χρῆσιν τῆς γαλλικῆς γλώσσης, μετὰ τῆς ὁποίας συνέδεσε καὶ τὸ ποιητικόν του ὄνομα. Ὅσον ἀφορᾷ ὅμως τὸ περιεχόμενον τοῦ ἔργου, καίτοι ἀμφότερα διαπνέονται ὑπὸ τοῦ κατ' οὐσίαν λυρισμοῦ, διαφέρουν ὅμως ἀπ' ἀλλήλων κατὰ τὴν στενήν, τὴν τυπικὴν τοῦ λυρισμοῦ ἔννοιαν, καθ' ὅσον μέγα μέρος τοῦ λυρισμοῦ τοῦ Μωρεάς, ἰδίᾳ δὲ περὶ τὸ τέλος, εἶναι καθαρῶς ὑποκειμενικόν, ἐνῷ ὁ πλεῖστος Σολωμὸς εἶναι ἀντικειμενικὸς καὶ καταλήγει εἰς ἐπικὸν ποιητήν. Στερεῖται δ' ὁ Μωρεὰς καὶ τῶν πρὸς τὸν ἰδεαλισμὸν καὶ τὴν θρησκευτικότητα ζωηρῶν τοῦ Σολωμοῦ τάσεων. Ἀλλ' ὡς πρὸς τὴν περὶ ποιήσεως ἀντίληψιν ταυτίζονται αἱ ἀρχαὶ ἀμφοτέρων, θεωρούντων τὴν συνεχῆ καὶ ἐξαιρετικὴν καλλιέργειαν αὐτῆς ὡς τὸ ὕψιστον ἀγαθόν, ἀποβλεπόντων δὲ εἰς τὸ ὑλικὸν ὄργανον μετ' ἰδανικῆς ἐκλεκτικότητος, προσοχῆς ἄκρας καὶ περιτέχνου αἰσθητικῆς. Τὸ «νόημα τῆς τέχνης» τοῦ Σολωμοῦ ὑπενθυμίζει ἐν πολλοῖς τὸ δόγμα τῆς τελειότητος τοῦ Μωρεὰς ὄχι ὅμως ἄσχετον καὶ πρὸς τὴν παρὰ τῷ Boileau ἔννοιαν τοῦ *Sublime* («Δὲν ὑπάρχουν κλασσικοὶ καὶ ρωμαντικοί». «Ὑπάρχουν πολλαὶ ὡραιότητες ἄσχετοι πρὸς τὴν τελειότητα». «Μόνον τῶν ὡραιοτάτων πραγμάτων ἄξια εἶναι ἡ τελειότης». «Mais la perfection est chose plus celée», «Ὁ Μπωντελαὶρ εἶναι μέγας ποιητής, ἀλλ' ὄχι καθαρὸς—pur—ποιητής» κλ.).

Διὰ τὸν Μωρεὰς ὅθεν ἀληθεύει ὄχι μόνον τοῦτο, ὅτι ἐν τῷ βραχεῖ ἑλληνικῷ αὐτοῦ ἔργῳ περιέχεται τὸ σπέρμα καὶ ὁλοκλήρου τοῦ μετέπειτα *(Παλαμᾶς)* ἢ μᾶλλον τῶν δύο πρώτων καὶ τῆς τελευταίας ποιητικῆς του συλλογῆς, ἀλλ' ἔτι πλέον, ὅτι ἡ γαλλικὴ ποίησις, ζωηρῶς ἄλλως τε κατὰ τοὺς χρόνους ἐκείνους τοῦ ρωμαντισμοῦ ἐπιδῶσα ἐφ' ἁπάσης τῆς ἑλληνικῆς, ἐλάλει ἤδη ἀπ' ἀρχῆς εἰς τοὺς ἑλληνικούς του στίχους. Εἶναι δ' ἡ γλῶσσα τῶν «Τρυγόνων καὶ Ἐχιδνῶν» ἡ συνυφασμένη πρὸς τὸν ρωμαντισμὸν καθαρεύουσα, ἡ μετρικὴ ποικιλωτάτη, συχνάκις τροχαϊκή, ἡ στιχουργία ἐνίοτε νόθος (τροχαϊκὸς δεκαεξασύλλαβος), τὰ θέματα κατὰ τὸ περιβάλλον καὶ τοὺς χρόνους, τὰ δὲ αἰσθήματα ἡ ἐρωτικὴ περιπάθεια ἐναλλασσομένη πρὸς ζοφερὰν μελαγχολίαν. Ὅθεν καὶ μετὰ πενταετίαν ἐμφανισθεῖσαι σποράδην «Syrtes», αἱ ὑπὸ τῆς γαλλικῆς κριτικῆς χαρακτηρισθεῖσαι ὡς τελοῦσαι ὑπὸ τὴν ἐπίδρασιν τῆς décadence τοῦ Βερλαὶν καὶ τοῦ Μπωντελαίρ, δὲν ἀπέχουν κατά τινα μέρη («Remembrances» «Conte d'amour») εἰμὴ ἐλάχιστον ἀπὸ τῶν «Τρυγόνων καὶ Ἐχιδνῶν», οὐδαμῶς δὲ ἀπὸ τῶν εἰς τὰς τελευταίας ταύτας περιλαμβανομένων γαλλικῶν ποιημάτων.

Ἀνάπτυξις κατ' οὐσίαν καὶ διεύρυνσις τοῦ ἔργου τούτου παρουσιάζεται ἐν τῇ τρίτῃ αὐτοῦ συλλογῇ «Cantilènes». Ὁ λυρισμὸς ἐν αὐταῖς καθίσταται μεγαλοπρεπέστερος, τὴν προϊοῦσαν δ' ἐπισημότητα τοῦ τόνου κοσμεῖ ἡ χρῆσις ἀθρόων λεπτομερειῶν ἐκ τοῦ μεσαιωνικοῦ πολιτισμοῦ, τὸν πρὸς τὸν ὁποῖον πλήρη συγχρονισμὸν προσπαθεῖ νὰ ἐπιτύχῃ. Ἐν τούτῳ τῷ σταδίῳ αὐτοῦ ὁ ποιητὴς οὐ μόνον προσεχώρησεν εἰς τὸν συμβολισμόν, ἀλλ' ἐγένετο καὶ σχολάρχης αὐτοῦ καὶ διάδοχος τοῦ Paul Fort. Διὰ προκηρύξεων, συνεντεύξεων, ἄρθρων καὶ ἐρευνῶν ὁ Μωρεὰς ἔλαβεν ὄντως ἐνεργότατον μέρος εἰς τὴν ἐγκατάστασιν τῆς συμβολικῆς ποιητικῆς καὶ στιχουργίας. Ἀλλ' ἡ νέα συλλογή του «Le Pèlerin Passionné» καὶ ἡ προκήρυξις, ἣν προέταξεν, ὑπῆρξαν στοιχεῖα νέας σχολῆς, ἧς ἵδρυεν αὐτοπροσώπως ὁ ποιητής, τῆς τῶν ***Romanistes*** ἢ τῆς ***École romane***, καὶ τῆς ὁποίας μαθηταὶ ἐγένοντο ἡ τετρακτὺς τῶν ποιητῶν Ernest Raynaud, Raymond de la Tailhède, Maurice Duplessys, καὶ Laurent Tailhade, ὡς καὶ ὁ Charle Maurras. Τῆς σχολῆς ταύτης ἀρχὴ διεκηρύχθη ἡ μελέτη τῆς γαλλικῆς παραδόσεως, καὶ δὴ τῆς μακροτάτης τοῦ ἱπποτικοῦ μυθιστορήματος, καὶ ἡ ἐκεῖθεν ἄντλησις ποιητικῶν θεμάτων. Ἀλλ' ἐντὸς βραχέος χρόνου ὁ Μωρεὰς πάλιν ἀνέτρεξεν εἰς ἀπωτέρας πηγάς, ἀχθεὶς ἐκ τοῦ Ronsard εἰς τὸν Βιργίλιον καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Ἀλεξανδρινὴν ἑλληνιστικὴν ποίησιν· ἀποκηρύξας δὲ ἅπαν τὸ προηγούμενον αὐτοῦ ἔργον, ἐξέδωκε τὴν «Ériphyle» καὶ τὰς «Sylves». Ἡ συνεχὴς ἀναδρομὴ αὐτοῦ ἐπερατώθη ὁριστικῶς εἰς τὴν κλασσικὴν ἑλληνικὴν ἀρχαιότητα, καὶ δὴ εἰς τὸν Σοφοκλῆ καὶ Εὐριπίδη, ὑπὸ τοιαύτην δ' ἐπίδρασιν συνέθεσε τὰς «Stances»· ἡ δὲ διασκευὴ καὶ διδασκαλία τῆς «Ἰφιγενείας» (ἐν Αὐλίδι), ἀποτελέσασα τὴν ἑκουσίαν ἀπόσπασιν αὐτοῦ ἀπὸ τῶν τάξεων καὶ τῶν τάσεων τοῦ συμβολισμοῦ, ὑπῆρξεν ἐν σμικρῷ τὸ ἀντίστροφον φαινόμενον τοῦ «Κρόμβελλ» καὶ τοῦ «Ἐρνάνη» τοῦ Β. Οὐγκώ, δι' ὧν ὁ ρωμαντισμὸς ἐξετόπισε τότε τὸν κλασσικισμὸν ἀπὸ τῆς γαλλικῆς λογοτεχνίας. Ἡ τραγῳδία του συνεχίζετο πρὸς τὴν ὁμώνυμον τοῦ Ρακίνα («ἡ Ἰφιγένεια τοῦ Μωρεὰς εἶναι ὕμνος, τοῦ δὲ Ρακίνα ἐλεγεία»), διὰ δὲ τὸ λοιπὸν ποιητικόν του ἔργον ὁ ποιητὴς ἐχαρακτηρίζετο ὡς μεγαλομαθητὴς μεταξὺ τοῦ Βινὺ καὶ τοῦ Λαμαρτίνου, τοῦ Ronsard καὶ τοῦ Malherbe, τοῦ Thibaut καὶ τοῦ Chenier, καὶ ὡς ὁ ἀναγεννητὴς τοῦ κλασσικοῦ πνεύματος ἐν τῷ ΙΘ' αἰῶνι. Αὕτη ἡ τεχνοτροπία του εἶναι, διὰ τὴν Ἑλλάδα καὶ τὴν Γαλλίαν, καὶ ἡ συνδεθεῖσα πρὸς τὸ ποιητικόν του ὄνομα, ὡς νεοκλασσικοῦ, σύγχρονος δὲ πρὸς αὐτὴν καὶ οὐχὶ προγενεστέρα εἶναι καὶ ἅπασα ἡ προσωπικὴ κριτικὴ θεωρία τοῦ Μωρεάς. Εἶναι δ' αὕτη ἀξιωματικὴ καὶ οὐχὶ διαλεκτικὴ κατὰ τὴν λογικὴν ὑφήν, προκλητικῶς δογματική, κατὰ δὲ τὴν ἀξιολογίαν ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον μονομερής, ὡς στρεφομένη ἀποκλειστικῶς πρὸς τοὺς ποιητὰς—μέχρι καὶ τῶν ἀσημάντων—τοὺς καλλιεργήσαντας τὴν κλασσικὴν παράδοσιν εἰς τὰ γαλλικὰ γράμματα. Τῶν καθαρῶς φιλολογικῶν μελετημάτων τούτων τοῦ Μωρεὰς τὸ ὕφος εἶναι ἐστερημένον χρώματος, εἶναι δὲ καὶ πλημμελὲς ὑπὸ ἔποψιν συνθέσεως καὶ ἐξαντλήσεως τῶν πραγματευομένων θεμάτων.

Τὸν τύπον τοῦ Μωρεὰς χαρακτηρίζει ἐντόνως ἡ ἔννοια τοῦ ποιητικοῦ δαιμονίου. Ἡ ἐκ φύσεως παρ' αὐτῷ ὑπέρμετρος ἀνάπτυξις τοῦ δαιμονίου τούτου, ἐν αἰσθητῇ δυσαναλογίᾳ πρὸς παράλληλόν τινα ἐσωτερικήν, πνευματικὴν καὶ ἠθικὴν ζύμωσιν, ἐπέφερε δυσαρμονίαν, τῆς ὁποίας ἐκδήλωσις ὑπῆρξεν ἡ κατὰ συνέπειαν μοιραία μεταβατικότης τοῦ Μωρεάς, ἡ ἀρξαμένη ἀπὸ τῆς μιᾶς εἰς ἑτέραν πατρίδα καὶ γλῶσσαν μεταστάσεως, καὶ συνεχισθεῖσα διὰ τῶν ἐναλλὰξ προσχωρήσεων καὶ ἀποσκιρτήσεων ἀπὸ σχολῆς εἰς σχολήν. Ἡ δημιουργικότης δηλαδὴ αὐτοῦ ὑπῆρξεν, ἢ τοὐλάχιστον περιωρίσθη, καθαρῶς μορφική, ἡ δὲ ζωηρά του περιωπὴ στρέφεται ἀμέσως πρὸς τὴν ποίησιν. Ἀμφότερα ταῦτα ἱκανοποιητικῶς ἑρμηνεύουν καὶ τὸ θέλγητρον ὅπερ ἀπορρέει ἐκ τοῦ ἔργου του, καίτοι ἀφισταμένου τῶν λυρικῶν τόπων καὶ ἱστορικοῦ ὄντος κατὰ μέγα μέρος, πολλαχοῦ δὲ καὶ πολυτρόπως δυσχεροῦς περὶ τὴν κατανόησιν. Ἀλλὰ τοιαῦτα προσόντα δὲν ἠδύναντο, φυσικῷ τῷ λόγῳ, νὰ διατηρῶνται ἐπὶ πολύ. Ἡ ἀναζήτησις ποιητικοῦ περιεχομένου, γινομένη μετ' ἀπολύτου ἐκλεκτικότητος, δὲν ἠδύνατο νὰ ἐπεκταθῇ πέραν κορυφαίων τινῶν θεμάτων, μεθ' ὃ ἐξηντλεῖτο ταχέως. Παρίστατο οὕτως ἐκ δύο αἰτιῶν ἡ ἀνάγκη μεταφορᾶς τῶν αὐτῶν θεμάτων εἰς νέον περιβάλλον καὶ ἡ χρῆσις νέας ποιητικῆς μορφῆς.

Ἀλλ' ἐνταῦθα παρουσιάζεται καὶ ἡ ἑτέρα ἄμεσος συνέπεια τῆς ἰσχυρᾶς του ποιητικῆς ἰδιοσυγκρασίας· εἶναι δὲ αὕτη ἡ ὑποκειμενικὴ καὶ οὐχὶ ἀντικειμενικὴ ἀντίληψις τῶν ἰδεῶν καὶ τῶν δεδομένων ἑκάστης σχολῆς. Οὕτως ὁ συμβολισμός, ὅστις δὲν δύναται ὄντως νὰ νοηθῇ, εἰμὴ ὑπὸ τῶν μεμυημένων εἰς τὴν ἐσωτερικὴν ἐξέλιξιν τῆς γαλλικῆς ποιήσεως, ματαίως εἵλκυσε τὸν Μωρεάς. Ὡς ὁ ρωμαντισμός, προελθὼν ἐξ Ἀγγλίας, οὕτω καὶ ὁ ἐν τοῖς κόλποις του ἀναπτυχθεὶς συμβολισμός, ἐκηρύχθη ὑπὸ τοῦ Μαλλαρμέ, κατόπιν τῆς μελέτης τοῦ Ἔδγαρ Πόε καὶ τῶν Ἄγγλων λυρικῶν, διεποτίσθη δὲ καὶ ὑπὸ τῆς γερμανικῆς μεταφυσικῆς φιλοσοφίας, ἀποτελῶν οὕτω τὴν τρίτην κατὰ σειρὰν ἀπὸ τοῦ μεσαίωνος κρᾶσιν τοῦ λατινικοῦ πρὸς τὸ ἀγγλοσαξωνικὸν πνεῦμα. Ὑπὸ τοιαύτην δέ τινα σύστασιν, ὁ συμβολισμὸς ἑρμηνευτέος ὡς πνευματικὸς ὑποκειμενισμὸς καὶ ὡς ἡ ἀντίστροφος τοῦ διονυσιακοῦ πνεύματος ῥοπή. Ἀλλ' ὁ Μωρεὰς ὑπῆρξε κακὸς μαθητὴς τούτου. Ὁ συμβολισμός του παρουσιάζεται ὡς ἁπλῆ ἀντίδρασις πρὸς τὸ Παρνασσικὸν ἰδεῶδες. Πράγματι περιωρίσθη εἰς τὸ ν' ἀκολουθῇ τὰς εὐρυτάτας περὶ μουσικότητος ἀρχὰς τῆς «Ποιητικῆς» τοῦ Verlaine, καὶ τούτων τινὰς ἀπορρίπτων («rien qui pose!»), ἀγνοῶν δὲ τὰς ἀρχὰς τοῦ Mallarmé («ὑποταγὴ τῆς ἁρμονίας εἰς τοὺς κανόνας τοῦ λόγου»). Εἰς τὰς προκηρύξεις του ὁ Μωρεὰς ἀντιλαμβάνεται τὸν συμβολισμὸν περιγραφικῶς, εἰς δὲ τὸ ἔργον του πραγματοποιεῖ αὐτὸν ἱστορικῶς, τείνων ἔκτοτε πρὸς τὴν École romane.

Ἐννοεῖ τέλος τὸν συμβολισμόν, «ὡς ἐὰν ἁπλῶς ἐπρόκειτο περὶ γραφῆς ἐννοιῶν τινων δι' ἰταλικῶν ἢ κεφαλαίων τυπογραφικῶν χαρακτήρων» ***(A. France)***. Ὁπωσδήποτε τῶν περὶ συμβολισμοῦ ἀποφθεγμάτων τοῦ Μωρεὰς ἡ πραγματοποίησις εὑρῆται οὐχὶ ἐν

Digitized by Google

ἑπομένῳ τινὶ ἔργῳ, ἀλλ' ἐν ταῖς ἤδη προηγηθείσαις «Cantilènes». Ἡ τοιαύτη δὲ πρωθύστερος σχέσις μεταξὺ ἀρχῶν καὶ ἔργου, τοῦ δευτέρου προτρέχοντος πάντοτε τῶν πρώτων, σημειοῦται ἐν ταῖς ποιητικαῖς τύχαις τοῦ Μωρεᾶς καὶ περαιτέρω. Ὁ «Pélerin Passionné», γραφόμενος μετὰ τὸ περὶ συμβολισμοῦ μανιφέστον, ἀνήκει εἰς τὴν École romane, ἥτις ἕπεται αὐτοῦ· ἡ δὲ «Eriphyle», αἱ «Sylves» καὶ ἡ «Enone», γραφεῖσαι ὑπὸ τὸ κράτος τῶν ἰδεῶν τῆς École romane, στρέφονται ἐξ ὁλοκλήρου πρὸς τὸν λατινικὸν καὶ τὸν ἑλληνιστικὸν κλασσικισμόν. Τούτων ἕπεται τὸ περὶ ἐπανόδου εἰς τὰς κλασσικὰς πηγὰς κήρυγμα τοῦ Μωρεᾶς, ὡς ἐφαρμογὴ δὲ παρουσιάζεται ἡ «Ἰφιγένεια», τῆς ὁποίας, καίτοι διασκευαστής, ὁ Μωρεᾶς ἀνακηρύσσεται δραματουργός. Ἀλλ' ὡς ὑπῆρξε πρίγκιψ μέν, ἀλλὰ κακὸς μαθητὴς τοῦ συμβολισμοῦ, οὕτω ἐγένετο καὶ τοῦ κλασσικισμοῦ κακὸς διδάσκαλος, καθ' ὅσον τὸ πρωτότυπον αὐτοῦ ἔργον τῆς περιόδου ταύτης, αἱ «Stances», ἐμφανίζονται περικεχυμέναι δι' ἀφθόνου χροιᾶς ρωμαντικῆς. Ὁ Μωρεᾶς ἀντελήφθη τὴν κλασσικὴν ἀρχαιότητα διὰ μέσου τῶν κεκτημένων ἤδη μονίμων ποιητικῶν ἰδιοτήτων αὐτοῦ καὶ ἰδίως τῆς ἀπεράντου μουσικότητος, ἥτις ἐδέσποζεν ἐν τῇ ποιητικῇ αὐτοῦ συνειδήσει. Ἵνα συμβιβάσῃ δὲ τὴν τοιαύτην ἀντίφασιν, ἐκήρυξε τέλος ἀπὸ τῆς ἐπιθανατίου κλίνης τὴν οὐτοπίαν τῆς διακρίσεως μεταξὺ κλασσικῶν καὶ ρωμαντικῶν. Τοιουτοτρόπως ὅμως δὲν κατέλιπεν οὔτε ἐπίδρασίν τινα, οὔτε γνησίους διαδόχους, ἡ δὲ περὶ αὐτὸν τεθρυπόστατος πλειὰς ἐτράπη καὶ αὐτὴ ἐπὶ τὸν πεπατημένον καὶ τυπικὸν ψευδοκλασσικισμόν, τὸν μετὰ τὴν Ἀναγέννησιν, ἐπηρεαζομένη μᾶλλον ἐκ τοῦ ἔργου τοῦ Chenier καὶ μέρους τοῦ ἔργου τοῦ Samain, δι' ὃ καὶ πικρῶς ὁ Μωρεᾶς ἐμέμφθη τὴν εἱμαρμένην (Stances).

Ὅθεν ὁ Μωρεᾶς παραμένει προσωπικὸς ποιητής, ἐν πολλοῖς ἀπαραμίλλητος. Αἱ ἐκ τῶν σπουδῶν γνώσεις αὐτοῦ καὶ καθ' ἑαυτὰς μὲν λίαν ἐκτεταμέναι καὶ συνεχεῖς, ἀλλὰ καὶ διὰ τῆς ἰσχυρᾶς φαντασίας κατὰ πολὺ προεκτεινόμεναι, διετέλεσαν ἀπαύστως εἰς ἀντίστροφον λόγον πρὸς τὸ ποσὸν τῆς παραγωγῆς, ἥτις ὑπῆρξε σχετικῶς ἐλαχίστη. Φύσει προωρισμένος πρὸς τοῦτο, προσέδωκεν ὅμως εἰς τὸ βραχύπνουν ἐπίγραμμα ὑψηλὴν τελειότητα καὶ βάθος αἰσθήματος καὶ φαντασίας. Ἡ συλλογὴ τῶν ποιητικῶν στοιχείων τελεῖται πάντοτε παρ' αὐτῷ διὰ μέσου ἁγνῶς ποιητικοῦ κριτηρίου, ἡ δ' ἑνότης τῆς διαθέσεως, αὐτὴ καθορίζουσα τοῦ ποιήματος τὸ μῆκος, διατηρεῖται ἀπαραμείωτος μέχρι τοῦ τέλους. Ἔλλειψις παντὸς ρητορισμοῦ, ἐξ ἄλλου δὲ καλλιέργεια τοῦ ἐμφύτου αὐτῷ πλαστικοῦ ἐνστίκτου συνδυάζονται πρὸς ἀναζητήσεις ἐν τῇ ὕλῃ τοῦ λόγου, καθαρῶς πνευματικῆς χροιᾶς. Τὸν ἰδιάζοντα παρὰ τοῖς décadents αἰσθητισμὸν καὶ ἐγκεφαλισμὸν κέκτηται ὁ Μωρεᾶς εἰς βαθμὸν αἰσθητῶς ἀνώτερον καὶ λυρικώτερον, συνεισφέρει δὲ καὶ καλλιεργεῖ αὐτὸν μετὰ πεποιθήσεως, εἰλικρινείας καὶ πάθους. Οὕτω ἐν τῷ «Pélerin passionné» καταφανὴς εἶναι ἡ πρόθεσις ὅπως προκληθῇ παρὰ τῷ ἀναγνώστῃ ἡ αἴσθησις μιᾶς ἀτόνου κυανῆς χροιᾶς, ἀποτελούσης οἱονεὶ τὴν ἀτμόσφαιραν τοῦ ἔργου. Τοιαύτη ποιητικὴ ὡδήγησε μετ' οὐ πολὺ εἰς τὴν σύνθεσιν τῶν βραχυτάτων Stances, ἔνθα καὶ ὁριστικῶς ἀπεκρυσταλλώθη.

Ἀντιστρόφως πρὸς τὸν Chenier, ὅστις ἐσχεδίαζεν ἐν πεζῷ, ὁ Μωρεᾶς κατενόησε τὴν στιχουργικὴν στροφὴν ὡς καθαυτὸ μουσικὸν ὄργανον, ὁπόθεν ὁ ποιητὴς δέον μουσικοὺς κυρίως τόνους νὰ ἀντλήσῃ· Εἶναι δ' οἱ τόνοι, οὓς ὁ Μωρεᾶς ἤντλησεν ἐντεῦθεν, ἐξαιρετικοὶ ὅλως μεταξὺ τῆς νεωτέρας γαλλικῆς ποιήσεως. Εἰδικώτερον, ἡ στιχουργία τοῦ Μωρεᾶς εἶναι τὸ λαμπρὸν ὄργανον παρηχήσεων, καλλιεργείας τῶν ὑγροτήτων τῶν φθόγγων (ἰδίᾳ τοῦ λάμβδα καὶ τοῦ νῦ) καὶ παραγωγῆς παντοειδοῦς ρηματικῆς μουσικότητος. Ἐπεκτείνων τὴν προσπάθειαν ταύτην καὶ ἐν αὐτῇ τῇ μετρικῇ συστάσει τῆς στιχουργίας, ὁ ποιητὴς μετεχειρίσθη μετὰ μεγαλοπρεποῦς ἐλαστικότητος τὸν vers libéré, οὗτινος ἡ πρώτη ἐμφάνισις ἐγένετο παρὰ τῷ Οὐγκὼ καὶ τοῖς λοιποῖς ρωμαντικοῖς. Ἔτι πλέον, ὁ Μωρεᾶς κατέστη διὰ τοῦ «Pélerin passionné» εἷς, ἂν ὄχι ὁ πρῶτος, τῶν εἰσηγητῶν τοῦ ἐλευθέρου μέτρου (vers libre) καὶ δὴ διὰ τοῦ ποιήματος «Le chevalier aux blanches armes», συναγωνισθεὶς εἰς προτεραιότητα τὸν Kahn, ἀλλὰ καὶ τοὺς Laforgue καὶ Rimbeaud. Ἐνόει δὲ διὰ τούτου τὴν ἐν μέτρῳ ἀναβίωσιν τῆς ἀρχαίας προσῳδίας, τὴν χρῆσιν περιττοσυλλάβων ἐπ' ἀόριστον μέτρων ἐν τῇ αὐτῇ στροφῇ «ἀνωμαλίαν τινὰ σωφρόνως διατεταγμένην». Ἀρχομένης ὅμως τῆς κλασσικῆς αὐτοῦ τεχνοτροπίας, ὁ Μωρεᾶς ἐγκατέλιπεν ἀποτόμως τὴν στιχουργικὴν ταύτην, προσαρμοζόμενος, φυσικῷ τῷ λόγῳ, πρὸς τὸν Ἀλεξανδρινὸν δωδεκασύλλαβον τῆς γαλλικῆς παραδόσεως, ὄχι ἄνευ καταφανοῦς δυσκολίας κατ' ἀρχὰς καὶ ἱκανῆς χαλαρότητος («Sylves»), ἀλλὰ καὶ μετ' αὐξούσης βαθμηδὸν πειθαρχίας. Τὰς ἀρετὰς τοῦ ἐλευθέρου στίχου χαρακτηρίζων «φαντασιώδεις» καὶ τὰς ἐπιτυχίας «ὑλιστικάς», παραδέχεται ἤδη εὐγένειαν καὶ ἀκρίβειαν ἐν τῇ παραδεδομένῃ μετρικῇ, ἥτις, διὰ συνεχοῦς ἀσκήσεως, δὲν ἀποκλείει καὶ τὴν ἐπ' ἄπειρον ποικιλίαν τῶν ρυθμῶν. Ὑπὸ ἔποψιν δὲ ὁμοιοκαταληξίας, ἐξαιρουμένης τῆς σεμνότητος τῶν «Stances», παρουσιάζει ἄφθονα εὑρήματα ἀπροσδοκήτου, συνδυάζων τὴν «ἠχηρὰν καὶ σφυρήλατον, ἐν ἐναλλαγῇ πρὸς τὴν δυσδιάκριτον καὶ φευγαλέαν». Ἐντεῦθεν καὶ ἡ ροπὴ αὐτοῦ πρὸς τὴν «assonance» (παρήχησιν) καὶ ἐνίοτε πρὸς τὸν πλήρη «vers blanc». Ὑπὸ τυπικὴν ἔποψιν οὐδέποτε ἀπομακρύνεται τοῦ τονικοῦ ἰάμβου, ποιεῖται δὲ διὰ μετρικοὺς λόγους καὶ τὴν ἔκθλιψιν τῶν e ἀφώνων (ἀτόπως ὅλως καὶ ἐν ταῖς Sylves). Τέλος, ἀπὸ ἀπόψεως λεκτικοῦ, θεωρητικῶς καὶ ἐξ ἀποστάσεως ἐνδιαφερόμενος καὶ διὰ τὸ ἑλληνικὸν γλωσσικὸν ζήτημα ὁ Μωρεᾶς («τρέμω μὴ ἀπομακρυνθῆτε ἀπὸ τοὺς ἀρχαίους»), καὶ ζῶν εἰς ποιητικοὺς χρόνους, καθ' οὓς εἶχεν ἐκλίπει ἡ γραμματικὴ καὶ συντακτικὴ ἁπλότης τῶν ἀντιπροσώπων τοῦ ρωμαντισμοῦ, ἐκαλλιέργησε τὴν σπανιότητα, κατὰ δεκάδας εἰσάγων ἐκ τῶν μελετῶν αὐτοῦ ἀπηρχαιωμένας γαλλικὰς λέξεις καὶ γραφὰς ἔτι (encor, les ciels, ore, avecque), ἐν ταὐτῷ πρὸς τὰς ἐννοίας παρῳχημένου πολιτισμοῦ, αἵτινες οὐχὶ σπανίως εἶναι καὶ ἡ ἀποκλειστικὴ αἰτία τῆς ἀσαφείας καὶ δυσχερείας κατανοήσεως τῶν κειμένων του. Ἡ ὑφὴ τοιούτου κειμένου, εἰς περιτέχνως ὑπερβατὴν σύνταξιν, ἐχαρακτηρίσθη ὑπὸ τῆς κριτικῆς ὡς «style rocaille». Πάντα δὲ τὰ λοιπὰ στοιχεῖα τῆς ποιητικῆς παρουσιάζονται ἐν ὁράσει (μεταφορὰ κλπ.).

Ἀπὸ ἀπόψεως κύκλου θεμάτων, τὰ πλεῖστα τῶν ποιημάτων τοῦ Μωρεᾶς εἶναι ἐλεγεῖαι, συχνοτάτη δ' ἐν αὐτοῖς ἡ ἀποστροφή. Αἱ «Stances» εἶναι τὸ βιβλίον, ἐν ᾧ τὸ περιέχον, τουτέστιν ἡ μορφή, δὲν ταυτίζεται ἀπολύτως, ὡς ἐν τοῖς λοιποῖς, μετὰ τοῦ περιεχομένου. Τοὐναντίον, ὑπὸ τὸ ἀπέριττον αὐτῶν ἔνδυμα ἀναπτύσσεται ἁπλῆ τις καὶ βαθεῖα φιλοσοφία, κρᾶμα στωϊκῆς καὶ ἐπικουρείου, ἀπορρέουσα ἐκ τοῦ διανυθέντος βίου. Ἡ πεπρωμένη ρευστότης τοῦ χρόνου, τῶν πραγμάτων καὶ τῶν καταστάσεων, ἡ μεσότης καὶ μεῖξις, ἡ ἐκ τῆς πικρᾶς πείρας ἡδυπάτη σοφία καὶ ἡ ἀνάγκη πρὸς συνεχῆ μεταβολήν, ἥτις κατὰ βάθος δὲν ἀποτελεῖ εἰμὴ κυκλικὴν ἐπάνοδον πρὸς τὴν ἀφετηρίαν, εἶναι τὰ ἀδιαλείπτως ἐπανερχόμενα θέματα ἐν ταῖς «Stances».

Ἐκ τῶν ἀνθρωπίνων ἀπολαύσεων καὶ αἰσθημάτων οὐδ' ἅπαξ μνημονεύεται ἐν αὐταῖς ὁ ἔρως, ἡ δὲ φιλία συνάπτεται πρὸς πρόσωπα εἴτε ἀντάξια αὐτῆς ἀλλὰ μὴ ἐπιζῶντα, εἴτε πρὸς σύγχρονα, ἀλλ' ἐπίορκα· διὰ δὲ τὴν φήμην καὶ τὴν δόξαν μόνον τὴν ἐκ τῆς ἀχαριστίας ἀγανάκτησιν αἰσθάνεται ὁ ποιητής, ἐκτὸς ὅταν ἀποδίδῃ ταύτην εἰς τὴν ἐπιταγὴν ἀγνώστου τινός, οὐδὲν ἧττον δὲ δικαίας εἱμαρμένης. Σαρκαστὴς ἐνίοτε, καταφεύγει, ἀμυνόμενος κατὰ τῆς θλιβερᾶς μονώσεως καὶ τοῦ ἐπερχομένου γήρατος, εἰς τὴν Ποίησιν, μόνην φίλην, ἀλλ' ἰδίως εἰς τὴν Φύσιν, ὡς οἱ ἄσωτοι υἱοὶ καὶ οἱ ἱκέται, τῆς ὁποίας ὄντως τὰ ἁγνὰ καὶ πλήρη μελαγχολίας, ἀλλὰ καὶ νοημάτων, θέλγητρα αἰσθάνεται δι' ὅλης αὐτοῦ τῆς φθαρτῆς ὑπάρξεως. Ἄγεται οὕτω πρὸς τὴν ἤρεμον θεωρίαν (contemplation) τοῦ περιβάλλοντος, ἥτις παραβάλλεται πρὸς τὴν ἐπακολουθήσασαν τὴν ἔξωσιν, ἀνάκτησιν τοῦ Παραδείσου τοῦ Μίλτωνος *(Godefroy)* καὶ ἥτις ἀπετύπωσεν ἐν τοῖς τελευταίοις βιβλίοις τῶν «Stances», τὴν τοσάκις ὑμνηθεῖσαν ἐγκαρτέρησιν ἀπέναντι τῆς μνήμης, τοῦ παρόντος καὶ τοῦ θανάτου. Πρὸς ταύτην ἀραιῶς ἐναλλάσσεται ἡ νοσταλγία τῆς ἐγκαταλειφθείσης πατρίδος, ὑπὸ τὸ πρῖσμα τῆς ἀρχαιότητος ἀναπολουμένης, ἥτις ἐνσαρκώνει ἐν τῷ κόσμῳ, κατὰ τὸν Μωρεᾶς, τὴν ἔννοιαν τῆς ἰδανικῆς τελειότητος.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. Ἀναμνηστικὸν (ἀρ. 229) τεῦχος τοῦ περιοδικοῦ «Παναθήναια» (1910).—«Poètes d'Aujourd' hui» ὑπὸ *A. van Bever* et *Paul Léotaud* (1919).—*Anatole France*: «La vie littéraire», τόμ. IV (1892).—*Jean de Gourmont*: «Jean Moréas» (1905).—*Remy de Gourmont*: «Le livre des masques» (1896).—*Charles Maurras*: «Jean Moréas» (1891).

ΤΕΛΛΟΣ ΑΓΡΑΣ

**Μωρεπὰ** (Maurepas), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος-Φελιππώ, κόμις ντὲ*—**. Γάλλος πολιτικὸς (1701—1781). Ἦτο υἱὸς τοῦ Ἱερωνύμου κόμιτος ντὲ Μωρεπά, ὑπουργοῦ καὶ γραμματέως τοῦ βασιλέως καὶ διοικητοῦ διαφόρων ἐπαρχιῶν. Ἀποχωρήσαντος τοῦ πατρός του κατέλαβε τὰς θέσεις αὐτοῦ, τῷ δὲ 1723 ἐγένετο ὑπουργὸς τῶν Ναυτικῶν, τῷ 1738 μέγας θησαυροφύλαξ καὶ τῷ 1778 πρωθυπουργός. Ἐπέδειξε μεγάλην διοικητικὴν ἱκανότητα καὶ δραστηριότητα ὑπὲρ τῶν δημοσίων πραγμάτων· ἐξώπλισεν ἐν Τουλῶνι στόλον 14 πλοίων πρὸς καταπολέμησιν τοῦ Ἄγγλου ναυάρχου Μαθιέ, ἐξωράϊσε τοὺς Παρισίους, ἔκλεισε τὰ χαρτοπαίγνια καὶ διωργάνωσε σημαντικὰς ἐπιστημονικὰς ἀποστολὰς εἰς τὸν Β. Πόλον καὶ τὸν Ἰσημερινόν. Ἦτο ἄσπονδος ἐχθρὸς ὅλων τῶν ἐρωμένων τοῦ Λουδοβίκου ΙΕ', ἕνεκα δὲ τούτου, τῷ 1749, συνεπείᾳ δηκτικοῦ ἐπιγράμματός του κατὰ τῆς Πομπαδούρ, περιέπεσεν εἰς δυσμένειαν καὶ ἐξωρίσθη εἰς Μπουργκ καὶ Ποντσαρτραίν. Μετὰ τὴν ἀνάρρησιν ὅμως εἰς τὸν θρόνον τοῦ Λουδοβίκου ΙΣΤ' ἀνεκλήθη ὑπ' αὐτοῦ καὶ διωρίσθη πρωθυπουργός. Κατὰ τὴν ἐποχὴν ταύτην ὁ Μωρεπὰ ἀπέκτησε μεγάλην ἰσχύν, προέβη δὲ εἰς κήρυξιν πολέμου κατὰ τῆς Ἀγγλίας. Προσέλαβεν ὡς ὑπουργοὺς τὸν Νεκκὲρ καὶ τὸν Τυργκώ, ἀλλὰ τοὺς ἀπεμάκρυνε κατόπιν, μόλις ὑπωπτεύθη ὅτι ἡ ἰσχὺς αὐτῶν ὑπῆρχε κίνδυνος νὰ ἐπισκιάσῃ τὴν ἰδικήν του. Τῷ 1790—1792 ἐδημοσιεύθησαν εἰς 4 τόμους «Ἀπομνημονεύματά» του, ἅτινα ὅμως θεωροῦνται ὡς παραποιημένα. Μ. Δ. Β.

**Μωρέττης** (Moretti). Ὄνομα οἰκογενείας ἐξ Ἰταλίας, ἓν τῶν μελῶν τῆς ὁποίας, ὁ *Κάρολος* (1763—1829), ὑπηρέτησεν ὑπὸ τὸν Μ. Ναπολέοντα, πληγωθεὶς κατὰ τὴν εἰς Αἴγυπτον ἐκστρατείαν. Ἔγραψε διαφόρους ἱστορικὰς μελέτας καὶ ἀπεβίωσεν ἐν Πάτραις.

— **Μωρέττης, *Ἄγγελος***. Ἰατρός, γεννηθεὶς ἐν Ζακύνθῳ τῷ 1871. Ἐξέδωκεν ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ τὴν πολιτικὴν ἐφημερίδα: «Φωνὴ τοῦ λαοῦ» καὶ τὸ λεύκωμα: «Ἅπαντα τοῦ Σολωμοῦ» (1903). Λ. Χ. Ζ.

**μωρία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μωροῦ, ἀνοησία, βλακεία || λόγος ἢ πρᾶξις μωρά: «αὐτὸ ποὺ κάμνεις—, ποὺ λὲς εἶναι μωρία».

— *[Ἰατρ.]* Καλεῖται *μωρία* ὁ μέτριος βαθμὸς τῆς συμφύτου διανοητικῆς ἐξασθενήσεως. Καὶ ἐν μὲν τῇ μικρᾷ ἡλικίᾳ παρατηρεῖται ἐπίσχεσις ἀναπτύξεως τοῦ λόγου καὶ βραδύτης ἐμφανίσεως αὐτοῦ, δυσχέρεια μαθήσεως καὶ ἀπομνημονεύσεως τῶν λέξεων, καὶ ἐν γένει μεγίστη καθυστέρησις διανοητικὴ ἐν σχέσει πρὸς τοὺς ὁμηλίκους. Τὰ παιδία ταῦτα δὲν παίζουσι μὲ τὰ ζῷα, ἅτινα φοβοῦνται, δὲν ἀποχωρίζονται τῆς μητρὸς αὐτῶν μέχρι τῆς ἀνδρικῆς ἡλικίας, διότι φοβοῦνται, δὲν ἐξέρχονται τῆς οἰκίας καὶ εἶναι τὸ παίγνιον τῶν ὁμηλίκων. Ἐπὶ πλέον δὲν μανθάνουν γράμματα, ἢ μανθάνουν ἐλάχιστα, δὲν δύνανται νὰ ἐκτελοῦν ἀριθμητικὰς πράξεις, εἰμὴ τὰς ἁπλουστάτας ἢ καὶ οὐδεμίαν, ἢ οὐδὲν ἐπάγγελμα κατορθώνουν νὰ ἐκμάθουν. Ἀφιέμενα μόνα πλανῶνται ἢ κλείονται ἐν τῇ οἰκίᾳ. Τὰ ἠθικὰ συναισθήματα σχεδὸν δὲν ὑπάρχουσιν ἢ ὑπάρχοντα εἶναι ἀποτέλεσμα μηχανικῆς, οὕτως εἰπεῖν, ἕξεως καὶ ἀγνοίας. Ἐμφανίζουσι συνήθως πλείστας σωματικὰς ἀνωμαλίας, ἐν αἷς τὸ ὑπερμέγεθες τῶν γεννητικῶν ὀργάνων εἰς τὰ ἄρρενα παιδία εἶναι κύριον φαινόμενον, ὡς καὶ διάφοροι παραμορφώσεις τῆς κεφαλῆς. Ἡ κατάλληλος αὐτῶν ἀγωγὴ εἰς εἰδικὰ ἰατροπαιδαγωγικὰ ἰνστιτοῦτα καθιστᾷ ἱκανὰ διά τινα ἐπαγγέλματα, μὴ ἀπαιτοῦντα διάνοιαν καὶ πρωτοβουλίαν, ἀλλὰ ἐκτελούμενα ὑπὸ καθοδήγησιν. Τ. Λ. Ζ.

— **«Μωρίας *ἐγκώμιον*»** (Encomium moriae). Ἔργον τοῦ Ντεζιντερίου *Ἐράσμου* (βλ. λ.), ἐκ τῶν εὐφυεστέρων καὶ δημοφιλεστέρων, ἐκδοθὲν τὸ πρῶτον ἐν Παρισίοις τῷ 1509 καὶ ἔκτοτε ἀριθμήσαν πλείστας ἐκδόσεις. Ἐγράφη μετὰ τὴν ἐξ Ἰταλίας ἐπιστροφὴν τοῦ Ἐράσμου, ὁ ὁποῖος σαρκάζει ἐν αὐτῷ δηκτικώτατα ὅλας τὰς μορφὰς τῆς ἀνθρωπίνης μωρίας, ἔχων ὡς στόχον τοὺς θεολόγους, τοὺς καλογήρους, τὸν ἀνώτερον κλῆρον, τοὺς πάπας, τοὺς πρίγκιπας καὶ ὅλους ἐν γένει τοὺς μεγάλους. Σ. Ν. Θ.

**Μωριὰκ** (Mauriac), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος ποιητὴς καὶ μυθιστοριογράφος, γεννηθεὶς τῷ 1885. Ἔγραψε ποιήματα καὶ μυθιστορήματα, ἀναδειχθεὶς κυρίως μεταξὺ τῶν πρωτοπόρων τοῦ γαλλικοῦ περιοδικοῦ «Cahiers Verts» καὶ καταστὰς γνωστὸς εἰς τὸν φιλολογικὸν κόσμον κατ' ἀρχὰς ἐξ ἐνθουσιώδους κριτικῆς τοῦ Μωρὶς Μπαρρὲς διὰ τὴν ποιητικήν του συλλογὴν «Τὰ ἑνωμένα χέρια». Τὰ μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον δημοσιευθέντα τρία αὐτοῦ μυθιστορήματα: «Τὸ φίλημα εἰς τὸν λεπρὸν» (1922), «Ὁ ποταμὸς τοῦ πυρὸς» (1923) καὶ «Ἡ γεννήτρια» (1924), ἔτυχον εὐμενεστάτης ὑποδοχῆς καὶ ηὔξησαν ἔτι μᾶλλον τὴν φήμην του ὡς ἑνὸς ἐκ τῶν καλυτέρων Γάλλων συγγραφέων τῆς ἐποχῆς του. Μεταξὺ τῶν ἄλλων ἔργων του εἶναι: «Ἡ σὰρξ καὶ τὸ αἷμα» (1920), «Προαισθήματα» (1921), «Ἡ Ἔρημος τοῦ Ἔρωτος» (1925), «Καταιγίδες» ποιήματα (1925), «Τερέζα Ντεκερού» (1927), «Τὸ ρωμάντσο» (1928), «Τὰ πεπρωμένα» (1928), «Ὁ βίος τοῦ Ἰωάννου Ρακίνα» (1928). Κατὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον ὑπηρέτησεν ἐν Θεσσαλονίκῃ εἰς τὴν ὑγειονομικὴν ὑπηρεσίαν τοῦ γαλλικοῦ στρατοῦ. Μ. Δ. Β.

**Μωρίας *λόφος*** *[Γεωγρ.]*. Εἷς τῶν ἐξ λόφων ... ὁ ἀνατολικὸς τῆς Ἱερουσαλήμ, ἐφ' οὗ ἱδρύετο ὁ Ναὸς τοῦ Σολομῶντος, τοῦ ὁποίου ἀναγνωρίζεται ἀκόμη τὸ θεμελιῶδες ἔδαφος ἐν τῷ περιβόλῳ τοῦ σημερινοῦ Χαρὰμ ἐλ Σερίφ, ὅπου τὸ τέμενος Ὀμάρ. Ὁ λόφος ὡρίζετο πρὸς Β. ὑπὸ τοῦ λόφου Βεζεθᾶ, πρὸς Α. ὑπὸ τῆς κοιλάδος τοῦ Ἰωσαφὰτ ἢ χειμάρρου τῶν Κέδρων, πρὸς Ν. ὑπὸ τοῦ λόφου Ὀφὲλ καὶ πρὸς Δ. χωρίζεται διὰ τῆς κοιλάδος τῶν Τυροποιῶν ἀπὸ τῶν λόφων Ἄκρας (ἰσοπεδωθέντος ὑπὸ τῶν Μακκαβαίων) καὶ Σιών. Ἔχει μῆκος ἀπὸ Β. πρὸς Ν. 470 μ. καὶ πλάτος 300. Τὸ ὄνομά του σημαίνει «Ὁ θεὸς εἶδεν». Κατὰ τὴν παράδοσιν, εἰς τὸν λόφον τοῦτον ἐτελέσθη ἡ θυσία τοῦ Ἀβραὰμ (1890 π.Χ.). Ἐπ' αὐτοῦ ἔκειτο ὁ ἀγρὸς Ὀρὰν τοῦ Ἰεβουσαίου, ὅπου ὁ Ἰεχωβᾶ διὰ τοῦ προφήτου Γὰδ διέταξε τὸν Δαβὶδ μετανοήσαντα διὰ τὴν ἀπογραφὴν τοῦ λαοῦ του νὰ κτίσῃ βωμὸν καὶ νὰ τελέσῃ θυσίαν. Ὁ προφητάναξ ἀπεφάσισε νὰ κτίσῃ ἐπ' αὐτοῦ ναὸν

ἀλλ' εἰδοποιήθη ὑπὸ τοῦ Θεοῦ ὅτι ἡ τιμὴ αὕτη ἐπεφυλάσσετο εἰς τὸν υἱόν του Σολομῶντα. Γ. Λ. Α.

**Μωριᾶς** (ὁ) *[Γεωγρ.]*. Κοινὸν σημερινὸν ὄνομα τῆς Πελοποννήσου (βλ. λ. *Μορέας*).

—**Μωριᾶς** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἄκρια-Ἄνω, τῆς ἐπαρχίας Μονοφατσίου τοῦ νομοῦ Ἡρακλείου. Κάτ. (1928) 73. Ε. Γ.

**Μῶρις** (Maurice), ***Φρειδερῖκος***. Ἄγγλος θεολόγος (1805—1872). Τῷ 1840 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀγγλικῆς φιλολογίας καὶ ἱστορίας, τῷ δὲ 1846 καὶ τῆς θεολογίας ἐν τῷ βασιλικῷ κολλεγίῳ τοῦ Λονδίνου. Ἐξ ἀμφοτέρων τῶν θέσεων τούτων ἐπαύθη τῷ 1853, ἕνεκα τῆς περί της αἰωνίου κολάσεως διδασκαλίας αὐτοῦ. Διατελέσας ἐπὶ ἔτη ἀρχηγὸς τοῦ χριστιανικοῦ σοσιαλισμοῦ ἐν Λονδίνῳ, ἔρριψε πρῶτος τὴν ἰδέαν τῆς ἱδρύσεως ἀνωτέρας σχολῆς διὰ τοὺς ἐργάτας, ἥτις καὶ ἱδρύθη τῷ 1854. Τῷ 1866 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἠθικῆς φιλοσοφίας ἐν Καΐμπριτζ, ἔνθα ἀπὸ τοῦ 1871 ἕδρα καὶ ὡς ἱερεύς. Ἔγραψε διάφορα ἔργα, μεγάλην δ' ἐντύπωσιν προὐξένησαν αἱ ἐν εἴδει κηρυγμάτων παραδόσεις αὐτοῦ, ἐκδοθεῖσαι κατόπιν ὑπὸ τοὺς τίτλους: «Πατριάρχαι καὶ νομοθέται τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης» (1851) καὶ «Προφῆται καὶ βασιλεῖς τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης» (1853). Κ. Ι. Δ.

**Μωρὶς** (Maurice), ***Ἰωάννης-Κάρολος-Φραγκῖσκος Μωρὶς-Ντεκόμπ***, γνωστότερος ὑπὸ τὸ ὄνομα ***Κάρολος*** —. Γάλλος συγγραφεὺς καὶ δημοσιογράφος (1782—1869). Διετέλεσε γραμματεὺς τοῦ Γκιζὸ καὶ τοῦ Καρνό, ἔγραψε διάφορα θεατρικὰ ἔργα, συνειργάσθη εἰς πολλὰς ἐφημερίδας καὶ περιοδικά, ἵδρυσε τῷ 1818 τὸ περιοδικὸν «Camp volant», τὸ ὁποῖον κατόπιν μετεβλήθη ἀλληλοδιαδόχως εἰς «Journal des théâtres», «Le Courrier des spectacles» καὶ «Le Courrier des théâtres» (1823). Μεταξὺ τῶν πολλῶν κωμῳδιῶν του, διακρινομένων διὰ τὴν δηκτικότητά των καὶ τὸ πνευματῶδες τοῦ διαλόγου, εἶναι: «Le parleur éternel» (1805), «Mascarille» (1812), «Les fausses apparenccs» (1816) κτλ. Μεταξὺ τῶν ἄλλων του ἔργων τὰ κυριώτερα εἶναι: «Ἀνεκδοτικὴ ἱστορία τοῦ συγχρόνου θεάτρου καὶ τῆς φιλολογίας» (1856), «Τὸ γαλλικὸν θέατρον» (1859) κτλ. Μ. Δ. Β.

— **Μωρὶς** (Maurice), ***Ἰωάννης-Φρειδερῖκος Θεόδωρος, βαρῶνος***. Γάλλος μαθηματικὸς (1775—1851). Ἐγεννήθη ἐν Γενεύῃ, ὅπου ἐσπούδασε μαθηματικὰ καὶ διετέλεσε κατόπιν καθηγητὴς εἰς τὸ ἐκεῖ πολυτεχνεῖον. Μεταβὰς εἰς Παρισίους συνεδέθη μὲ τοὺς ὀνομαστοτέρους μαθηματικοὺς καὶ γεωμέτρας τῆς ἐποχῆς, μετὰ δὲ τὴν ἕνωσιν τῆς Ἑλβετίας μετὰ τῆς Γαλλίας διωρίσθη εἰς διαφόρους ἀνωτάτας διοικητικὰς θέσεις. Ὑπῆρξε μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιστημῶν καὶ ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων διαφόρους μελέτας ἐπὶ γεωμετρικῶν καὶ μαθηματικῶν θεμάτων, δημοσιευθείσας ὑπὸ τοὺς τίτλους «Σημειώσεις» καὶ «Ὑπομνήματα». Μ. Δ. Β.

**Μωρισὼ** (Mauriceau), ***Φραγκῖσκος***. Γάλλος χειρουργὸς (1637—1709). Ἔγραψε: «Πραγματεία περὶ τῶν νοσημάτων τῶν ἐγγύων γυναικῶν καὶ τῶν νεωστὶ τεκουσῶν» (1668), «Παρατηρήσεις ἐπὶ τῆς κυήσεως καὶ τοῦ τοκετοῦ τῶν γυναικῶν καὶ ἐπὶ τῶν νόσων αὐτῶν» (1695). Ὑπὸ τὸ ὄνομα αὐτοῦ φέρεται μαιευτικὸς χειρισμός. Μ. Ν. Κ.

— **Μωρισὼ** ***χειρισμός***. Ἐφαρμόζεται εἰς τὴν ἰσχιακὴν προβολὴν τοῦ ἐμβρύου, ὁπότε, μετὰ τὴν ἔξοδον ἢ ἐξαγωγὴν τοῦ κορμοῦ, παραμένει τελευταία καὶ μόνη, ἐν τῇ πυελικῇ κοιλότητι, ἡ κεφαλὴ τοῦ ἐμβρύου, ὁ δὲ μαιευτὴρ ἀναγκάζεται νὰ προβῇ εἰς τὴν ἐξαγωγὴν ταύτης διὰ τοῦ χειρισμοῦ Μωρισώ. Δι' αὐτοῦ ἐπιδιώκομεν: τὴν κάμψιν τῆς κεφαλῆς τοῦ ἐμβρύου, τὸν προσανατολισμὸν ταύτης διὰ τοῦ ἰνίου πρὸς τὰ πρόσω καὶ τοῦ προσώπου πρὸς τὰ ὀπίσω, τὴν ἐξωγωγὴν τῆς κεφαλῆς διὰ μέσου τοῦ κατωτέρου τμήματος τῆς μήτρας καὶ τοῦ στομίου τοῦ κολεοῦ. Διὰ τὴν κάμψιν τῆς κεφαλῆς, ὁ μαιευτήρ, ἐν ὀρθίᾳ στάσει εὑρισκόμενος, εἰσάγει τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐντὸς τῶν γεννητικῶν ὀργάνων, τὴν χεῖρα ἐκείνην ἥτις διὰ τῆς παλάμης αὐτῆς ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὴν κοιλιακὴν ἐπιφάνειαν τοῦ ἐμβρύου (χεὶρ δεξιὰ εἰς τὰς δεξιὰς θέσεις, χεὶρ ἀριστερὰ εἰς τὰς ἀριστερὰς θέσεις), πρὸς ἀναζήτησιν τοῦ στόματος τοῦ ἐμβρύου, ἐν τῷ ὁποίῳ εἰσάγει τὸν δείκτην καὶ τὸν μέσον δάκτυλον βαθέως, εἰς τρόπον ὥστε τὸ ἔρεισμα νὰ ληφθῇ ἐπὶ τῆς γλώσσης καὶ οὐχὶ ἐπὶ τῆς εὐθραύστου κάτω γνάθου. Τὸ δὲ σῶμα τοῦ ἐμβρύου εὑρίσκεται τοποθετημένον ἱππαστὶ ἐπὶ τοῦ ἀντιστοίχου ἀντιβραχίου. Ἡ ἑτέρα χεὶρ τοῦ μαιευτῆρος, τῆς ὁποίας ἡ παλάμη ἀντιστοιχεῖ πρὸς τὴν ραχιαίαν ἐπιφάνειαν τοῦ ἐμβρύου, φέρεται διὰ τοῦ δείκτου καὶ τοῦ μέσου δακτύλου ἱππεύουσα ἐπὶ τῶν ὤμων τοῦ ἐμβρύου, ἀλλ' οὐχὶ κεκυρτωμένων ἀγκιστροειδῶς, πρὸς ἀποφυγὴν κατάγματος τῶν κλειδῶν. Οἱ ἐν τῷ στόματι εἰσαχθέντες δάκτυλοι ἀσκοῦσιν ἕλξεις ἐκ τῶν ἄνω ἐπὶ τὰ κάτω, τῶν ὁποίων ἀποτέλεσμα εἶναι ἡ κάμψις τῆς κεφαλῆς. Διὰ τὴν στροφὴν τῆς κεφαλῆς εἰς ἰνιοηβικὴν θέσιν, ἀμφότεραι αἱ ὡς ἄνω τοποθετημέναι χεῖρες, ἐνεργοῦσαι ἀπὸ συμφώνου ταυτοχρόνως, ἀλλὰ κατ' ἀντίθετον διεύθυνσιν ἀλλήλων, ἐκτελοῦσι τὴν ἐνδοπυελικὴν στροφὴν τῆς κεφαλῆς, εἰς τρόπον ὥστε νὰ φέρωσι τὸ πρόσωπον πρὸς τὸ ἱερὸν ὀστοῦν καὶ τὸ ἰνίον ἐπὶ τὰ πρόσω, ἀκριβῶς ἐπὶ τῆς μέσης γραμμῆς, ὄπισθεν τῆς ἡβικῆς συμφύσεως. Ἡ δὲ ἐξαγωγὴ τῆς κεφαλῆς ἐκτελεῖται εἰς δύο χρόνους: α') Καταβιβάζομεν διὰ συνδεδυασμένων ἕλξεων ἀμφοτέρων τῶν χειρῶν, τῆς ἐν τῷ στόματι χειρὸς ἐνεργούσης πάντοτε ἰσχυρότερον τῆς ἐπὶ τῶν ὤμων στηριζομένης, τὴν κεφαλὴν ἑλκομένην ἐξ ὁλοκλήρου μέχρι τοῦ περινεϊκοῦ ἐδάφους, εἰς τρόπον ὥστε ἡ ὑπινιακὴ χώρα, ὁ αὐχήν, νὰ εὑρίσκηται ὑπὸ τὴν ἡβικὴν σύμφυσιν. β') Ἀνυψοῦμεν τότε μόνον τὸ σῶμα τοῦ ἐμβρύου ὡσεὶ κατεκλίνομεν τὸ παιδίον ὕπτιον ἐπὶ τῆς κοιλίας τῆς μητρὸς αὐτοῦ, τῶν δακτύλων ἑλκόντων τὸ στόμα ἐν πρώτοις ἐπὶ τὰ κάτω καὶ ἐπὶ τὰ πρόσω, εἶτα κατ' εὐθεῖαν ἐπὶ τὰ πρόσω, καὶ εἶτα ἐκ τῶν κάτω ἐπὶ τὰ ἄνω. Μ. Ν. Κ.

**μωρὸ** (τό)· οὐδέτ. τοῦ ἐπιθ. *μωρός*, ὡς οὐσ., τὸ νήπιον, τὸ βρέφος: «νάνι τὸ μωρό μου νάνι». Ὑποκορ. *μωρουδάκι*, *μωρέλλι*.

**Μωρὸ** *[Παραλ. Γεωγρ.]*. Ὀνομασία τριῶν νησίδων τῶν Θεσσαλικῶν Σποράδων. —1) Παρὰ τὴν ΒΑ. ἄκραν τῆς συγχρόνου Ἁλοννήσου (πλάτ. 39°16'20'' Β., μῆκ. 23°59'30'' Ἀν., χάρτης ἀγγλ. 2072: Scopelos Group), ἔναντι τοῦ ἀκρωτηρίου Γρεγάλε. —2) Μεταξὺ Γιούρων, Πράσσου καὶ Πελαγονησίου (πλάτ. 39° 20' 50'' Β., μῆκ. 24° 07' 40'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. ὁ ἀνωτέρω). Εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην σημειοῦται ὡς Kubi. —3) Βραχονησὶς τῆς ΝΔ. ἐσχατιᾶς τῆς Σκιάθου (πλάτ. 39°08'00'' Β., μῆκ. 23°25' 30'' Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. ὁ ἀνωτέρω). Ἀνώνυμος εἰς τὸν ἀγγλικὸν χάρτην. Σ. Ε. Λ.

**Μωροθόδωρος**. Βυζαντινὸς ἄρχων ἐν Φιλαδελφείᾳ (βλ. λ. *Μαγκαφᾶς Θεόδωρος*).

**Μωρολέων, *Λέων***. Βυζαντινὸς στρατηγὸς (βλ. λ. Λέων ὁ Μωρολέων).

**μωρολόγημα** (τὸ)· λόγος μωρός, ἄλλως *μωρολογία*.

**μωρολογία** (ἡ)· λόγος μωρός, ἀνοησία, φλυαρία: «ἄφησε τὶς μωρολογίες», «τί μωρολογίες εἶναι αὐτὰ ποῦ λές».

**μωρολόγος** (ὁ, ἡ)· ὁ λέγων μωρίας, ἀνόητος, εὐήθης, φλύαρος.

**μωρολογῶ** (—*έω*)· λέγω μωρίας, ἀνοηταίνω, φλυαρῶ: «διαρκῶς μωρολογεῖς».

**Μωρονικήτας** *[Γεωγρ.]*. Συνοικισμὸς τῆς κοινότητος Βρουχᾶ τῆς ἐπαρχίας Μεραμβέλλου τοῦ νομοῦ Λασιθίου. Κάτ. (1928) 49. Ε. Γ.

**Μωρὸν Ὕδωρ** *[Ἀρχ. Γεωγρ.]*. Ὅρμος τῆς Παμφυλίας μεταξὺ Ποσιδαρισοῦντος (Ἀδρατσιὰν) καὶ Ἄκρας Ἱερᾶς (Χελιδόνια). Εἶναι ὁ ἀνώνυμος νῦν ὕφορμος (πλάτ. 36° 14' 2/3 Β., μῆκ. 30° 30' 1/2 Ἀν., χάρτ. ἀγγλ. 236: Rhodos to Kara Burnù) κατὰ τὸ ΝΑ. κέρας τοῦ κόλπου τῆς Ἀτταλείας καὶ κατέναντι τῆς νησῖδος Γραμποῦζα. Σ. Ε. Λ.

**μωροπιστία** (ἡ)· τὸ γνώρισμα τοῦ μωροπίστου, εὐπιστία, ἀβασάνιστος ἀποδοχὴ τῶν λεγομένων.

**μωρόπιστος**, —*η*, —*ο*· δημοτ., ὁ εὐκόλως πιστεύων, ὁ ἄνευ βασάνου ἀποδεχόμενος τοὺς λόγους τῶν ἄλλων, εὔπιστος, ἀφελής, ἄκριτος.

**μωροπονηριὰ** (ἡ)· ἄλλως *κουτοπονηριὰ* (βλ. λ.).

**Μῶρος, *Βασίλειος***. Κερκυραῖος κληρικὸς (1813—1888). Ἐσπούδασε θεολογίαν ἐν τῇ ἀκαδημίᾳ τοῦ Γκίλφορδ, κατόπιν δὲ διετέλεσεν ἐπὶ εἰκοσιπενταετίαν ἐφημέριος τῆς ἐν Μάντσεστερ τῆς Ἀγγλίας ἑλληνικῆς κοινότητος. Π. Θ. Σ.

**Μῶρος** (Moore, ἢ More, ἢ Morus), ***Θωμᾶς***. Ἄγγλος πολιτικὸς καὶ συγγραφεύς, γεννηθεὶς ἐν Λονδίνῳ τῇ 7 Φεβρουαρίου 1478 καὶ καρατομηθεὶς ἐν τῇ αὐτῇ πόλει τὴν 6 Ἰουλίου 1535. Υἱὸς δικαστοῦ, ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ κολλέγιον Ἁγίου Ἀντωνίου τοῦ Λονδίνου, ἐπιδείξας ἐνωρὶς ἐκπληκτικὴν νοημοσύνην, κατόπιν δὲ προσελήφθη εἰς τὸν οἶκον τοῦ καρδιναλίου Morton, ἀρχιεπισκόπου τοῦ Καντέρμπουρυ, ὅστις ἐφρόντισε διὰ τὴν ἀνάπτυξιν τῆς μορφώσεώς του, προβλέπων τὸ λαμπρόν του μέλλον. Ὁ Μῶρος ἀπεπεράτωσε τὰς σπουδάς του ἐν Ὀξφόρδῃ, ὅπου ἔσχε μεγάλας ἐπιτυχίας καὶ ἤρχισε ν' ἀσχολῆται μὲ τὴν ποίησιν, συνθέτων λατινιστὶ καὶ ἀγγλιστὶ ποιήματα, μέτρια μὲν κατὰ τὴν μορφήν, ἀλλὰ πλήρη ὑψηλῶν καὶ εὐγενῶν ἰδεῶν. Ἐθαύμαζε τὸν Πὶκ τῆς Μιράντολας, τοῦ ὁποίου συνέγραψε τὴν βιογραφίαν καὶ μετέφρασεν εἰς ἀγγλικοὺς στίχους τοὺς «Δώδεκα κανόνας διὰ τὴν καθοδήγησιν ἑνὸς ἀνθρώπου εἰς τὴν πνευματικὴν μάχην». Συνεδέθη πρὸς τὸν Ἔρασμον, τὸν ὁποῖον ἐξέπληξε μὲ τὴν βαθεῖάν του μόρφωσιν καὶ τὴν γλυκύτητα τοῦ χαρακτῆρος. Σχεδὸν μόλις ἀποφοιτήσας τοῦ πανεπιστημίου ὁ Μῶρος ἦτο γνωστὸς εἰς ὁλόκληρον τὴν Εὐρώπην ὡς εἷς ἐκ τῶν ἀρχηγῶν τῆς νέας διανοητικῆς κινήσεως. Οἱ σοφοὶ τῆς Ὀξφόρδης τὸν ὑπέβλεπον καὶ προσεπάθουν νὰ προκαλέσουν τὴν ἐναντίον του δυσμένειαν τοῦ Ἑρρίκου τοῦ Ζ', ὅστις ἐμίσει τὰς φιλελευθέρας σκέψεις καὶ εἶχε καταπολεμηθῆ εἰς τὰς χρηματιστηριακάς του ἀκρότητας ὑπὸ τοῦ Μώρου, ἐκλεγέντος τῷ 1504 βουλευτοῦ. Εὐτυχῶς ὁ Μῶρος εἰς τὴν περίστασιν ταύτην ἐπροστατεύθη ὑπὸ τοῦ ἀρχιεπισκόπου Warham καὶ ἀπέφυγε τὰς συνεπείας μιᾶς τοιαύτης δυσμενείας. Τῷ 1505 συνεζεύχθη τὴν Jane Colte, κόρην χαρίεσσαν καὶ εὐφυᾶ, ἡ ὁποία ὅμως ἀπέθανε προώρως, τῷ 1511, καταλιποῦσα αὐτῷ τέσσαρα τέκνα. Τῷ 1508 μετὰ τοῦ Ἐράσμου ἐπεσκέφθη τὰ πανεπιστήμια τοῦ Λουβαὶν καὶ τῶν Παρισίων, τῷ δὲ 1511 συνεζεύχθη τὴν Middleton, μεγαλυτέραν του κατὰ 7 ἔτη, ἀλλὰ καλὴν καὶ ἀφωσιωμένην.

Ἡ ἀνάρρησις εἰς τὸν θρόνον Ἑρρίκου τοῦ Η', ἥτις ἔδωσεν εἰς ὁλόκληρον τὴν Ἀγγλίαν ἓν αἴσθημα ἀνακουφίσεως, ἐνέπνευσεν εἰς τὸν Μῶρον ποίημα, ὅπερ ἐπέσυρε τὴν προσοχὴν τοῦ ἀνωτάτου ἄρχοντος. Ὁ Μῶρος παρουσιάσθη πρὸ τοῦ βασιλέως ὑπὸ τοῦ Wolsey, ἤρεσεν εἰς αὐτὸν καὶ ἐπεφορτίσθη μὲ διαφόρους ἀποστολὰς εἰς τὴν Φλάνδραν (1515), τὴν Γαλλίαν (1517) κλπ. Ἐν μέσῳ τόσων ἀσχολιῶν εὗρε τὸν καιρὸν νὰ συγγράψῃ τὸ μνημειῶδες ἔργον του «De insula Utopia» (1518), ὅπερ τὸν κατέστησε περίφημον, ἀποτελοῦν τὸ κατ' ἐξοχὴν βιβλίον τῆς ἀγγλικῆς ἀναγεννήσεως. Εἰς τὸ ἔργον τοῦτο ὁ Μῶρος ἠσχολήθη μὲ τὸ πολιτικὸν μέρος τῆς ἀνθρωπίνης κοινωνίας καὶ ἐπετέθη κατὰ τοῦ κρατοῦντος συστήματος.

Ὅλα τὰ προβλήματα, τὰ ὁποῖα τίθενται ἐπὶ τῶν ἡμερῶν μας μὲ τόσην ὀξύτητα, προβλήματα τῆς

*Θωμᾶς Μῶρος.*

ἐργασίας, τοῦ ἐγκλήματος, τῆς κυβερνήσεως κλπ., τὰ ἔθεσε καὶ ἐπεχείρησε νὰ τὰ λύσῃ. Τὸ κρατοῦν κοινωνικὸν σύστημα, λέγει, εἶναι συνωμοσία τοῦ πλουσίου κατὰ τοῦ πτωχοῦ. «Ὁ πλούσιος προσπαθεῖ νὰ μειώσῃ τὸ ἡμερομίσθιον τοῦ πτωχοῦ, εἴτε διὰ προσωπικοῦ δόλου, εἴτε διὰ νομοθετικῶν καὶ γενικῶν μέτρων, εἰς τρόπον ὥστε αἱ ἤδη ὑπάρχουσαι καταχρήσεις (διότι εἶναι κατάχρησις οἱ περισσότερον ἐξυπηρετοῦντες τὸ κράτος ἐλάχιστα νὰ ὑπολογίζωνται) ἔτι μᾶλλον νὰ ἐπιδεινοῦνται ὑπὸ τῶν νόμων τοῦ κράτους». Ἐν τῇ Οὐτοπίᾳ, τῇ νήσῳ ταύτῃ ἥτις οὐδαμοῦ ὑπάρχει (οὐ τόπος), ἡ νομοθεσία ἔχει ὡς σκοπὸν τὴν κοινωνικήν, βιομηχανικήν, διανοητικὴν καὶ θρησκευτικὴν εὐημερίαν τῆς κοινότητος ἐν συνόλῳ καὶ τῆς ἐργαζομένης τάξεως εἰδικῶς. Ὅλοι ἐργάζονται εἰς τὴν ἰδεώδη ταύτην νῆσον, ἀλλὰ ὄχι ἐξαντλητικῶς. Ἡ ἡμέρα εἶναι διῃρημένη ὡς ἑξῆς: ἓξ ὧραι ἐργασίας, δέκα ὧραι ἀναπαύσεως καὶ πνευματικῆς καλλιεργείας καὶ ὀκτὼ ὧραι ὕπνου. Οἱ ἐργάται πρέπει νὰ μορφώνωνται, «διότι εἷς ἐκ τῶν οὐσιωδῶν ὅρων τοῦ κοινοῦ ἀγαθοῦ εἶναι τὸ νὰ ἔχουν εἰς τὴν διάθεσίν των ὥρας τινὰς ἀναπαύσεως πρὸς πνευματικὴν καλλιέργειαν». Αἱ σχολαὶ εἶναι πολυάριθμοι καὶ αἱ οἰκίαι ἄνετοι, εὐκόλως δ' ἀντιλαμβάνεταί τις τὰ ἐπὶ τῆς ὑγείας ἀγαθὰ ἀποτελέσματα τοῦ ἀέρος, τοῦ φωτός, τῆς ἀνέσεως καὶ τῆς καθαριότητος. Ἡ πρόληψις τοῦ ἐγκλήματος ἀξίζει περισσότερον ἀπὸ τὴν τιμωρίαν του. «Ἂν λυπῆσθε διότι οἱ ἄνθρωποι τοῦ λαοῦ εἶναι ἀμόρφωτοι καὶ διεφθαρμένοι ἐκ παίδων καὶ ἂν τοὺς τιμωρῆτε κατόπιν, ὅταν ἐνηλικιωθοῦν, δι' ἐγκλήματα, τὰ ὁποῖα, οὕτως εἰπεῖν, ἐθήλασαν μὲ τὸ μητρικὸν γάλα, τί ἄλλο κάνετε παρὰ νὰ δημιουργῆτε κλέπτας καὶ νὰ τοὺς τιμωρῆτε ἔπειτα;». Ἡ τιμωρία πρέπει νὰ εἶναι ἀνάλογος πρὸς τὸ ἔγκλημα· ἡ



Digitized by Google

σκληρότης εἰς τὰς ποινὰς εἶναι ἀπορριπτέα. Αἱ ποιναὶ δὲν πρέπει νὰ στεροῦν τὸν κατάδικον τῆς ἐλπίδος ὅτι θὰ δυνηθῇ ν' ἀνακτήσῃ τὴν ἐλευθερίαν του ἂν παράσχῃ βραδύτερον δείγματα ἐπιθυμίας ὅπως ζήσῃ ἐφεξῆς ὡς τίμιος ἄνθρωπος. Ὁ γάμος ἐν τῇ Οὐτοπίᾳ λαμβάνει χώραν μεταξὺ μεμνηστευμένων, μόνον μετὰ ἀμοιβαίαν γνῶσιν τῆς ψυχικῆς των καταστάσεως. Ἂν παρουσιάζεται ἀσυμφωνία χαρακτήρων, τότε ἐπιβάλλεται καὶ ἐπιτρέπεται τὸ διαζύγιον κατὰ κοινὴν συγκατάθεσιν. Ἡ μοιχεία τιμωρεῖται διὰ θανάτου, ὅλαι δ' αἱ θρησκεῖαι εἶναι ἀνεκταί. «Ἡ θρησκεία πρέπει νὰ προπαγανδίζεται μόνον διὰ τῆς πειθοῦς καὶ οὐχὶ διὰ τῆς βίας», ἡ δὲ δημοσία λατρεία πρέπει νὰ γίνεται κατὰ τοιοῦτον τρόπον, ὥστε «ὅλοι ὅσοι πιστεύουν εἰς τὴν Ἁγίαν Γραφὴν καὶ ζῶσι κατὰ τὰ προστάγματά της, νὰ δύνανται νὰ μετέχουν αὐτῆς ἄνευ ἀμφιβολίας, φόβου καὶ ὑποκρισίας».

Ἡ ἐπιτυχία τοῦ «De insula Utopia» ὑπῆρξε τεραστία. Προὐκάλεσεν εἰς ὁλόκληρον τὴν Εὐρώπην θαυμασμόν. Ὁ Μῶρος διωρίσθη διαδοχικῶς θησαυροφύλαξ τοῦ βασιλέως (1521), σπῆκερ τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων (1523), καγκελλάριος τοῦ δουκάτου τῆς Λαγκαστρίας (1525) καὶ τέλος μέγας καγκελλάριος τῆς Ἀγγλίας (1529). Ἐν τῷ μεταξὺ ἐτάχθη ἐναντίον τοῦ Λουθήρου, κατὰ τὸν μέγαν θρησκευτικὸν ἀγῶνα τῶν χρόνων ἐκείνων, καὶ ἐδημοσίευσε μάλιστα βίαιον λίβελλον κατ' αὐτοῦ. Κατόπιν ἠθέλησε νὰ ἐφαρμόσῃ τὰ σχέδια θρησκευτικῶν μεταρρυθμίσεων τοῦ Colet καὶ τοῦ Ἐράσμου, κατεπολέμησε ζωηρῶς τοὺς διαμαρτυρομένους καὶ θὰ ἔφερεν εἰς πέρας τὸ ἔργον του, ἂν δὲν ἀνέκυπτε τὸ ζήτημα τοῦ διαζυγίου Ἐρρίκου τοῦ Η', ἐπειγομένου νὰ συζευχθῇ τὴν ἐρωμένην του Ἄνναν Βολεῦν. Ὁ πάπας ἠρνεῖτο νὰ χορηγήσῃ τὸ διαζύγιον, ὁ δὲ Κρόμβελ συνεβούλευσε τότε τὸν βασιλέα νὰ ἀγνοήσῃ τὸν πάπαν καὶ ν' ἀνακηρύξῃ ἑαυτὸν ἀρχηγὸν τῆς ἀγγλικῆς Ἐκκλησίας, διὰ νὰ λάβῃ τὸ διαζύγιόν του ἀπὸ τὰς ἰδικάς του ἐκκλησιαστικὰς ἀρχάς. Ὁ Μῶρος δὲν ἠδύνατο νὰ ἐγκρίνῃ μίαν τοιαύτην λύσιν καὶ ἀφωσιώθη εἰς διοικητικὰς καὶ δικαστικὰς μεταρρυθμίσεις. Ὅταν ὅμως ὑπεχρεώθη ν' ἀναγνώσῃ ἐνώπιον τῆς βουλῆς τῶν Κοινοτήτων τὰς γνωμοδοτήσεις τῶν πανεπιστημίων τῆς Κανταβριγίας καὶ τῆς Ὀξφόρδης ἐπὶ τῆς νομιμότητος τοῦ διαζυγίου, παρῃτήθη τῆς θέσεώς του (1532). Ἀλλ' ὁ Κρόμβελ δὲν ἱκανοποιήθη μὲ τὴν ἐξαφάνισιν ταύτην τοῦ Μώρου ἀπὸ τῆς πολιτικῆς κονίστρας. Εἰσήγαγε νόμον, ὅστις ἐπεκύρου τὸν νέον γάμον τοῦ βασιλέως καὶ ὑπεχρέωνεν ὅλους τοὺς ὑπηρετήσαντας αὐτὸν νὰ δηλώσουν ὅτι πιστεύουν εἰς τὴν ἰσχὺν τοῦ διαζυγίου (1534). Ὁ Μῶρος ἀπεποιήθη νὰ προβῇ εἰς τὴν δήλωσιν ταύτην, εἰσήχθη εἰς δίκην καὶ κατεδικάσθη εἰς θάνατον. Ἀνῆλθεν ἐπὶ τῆς λαιμητόμου γαλήνιος, κύριος ἑαυτοῦ καὶ εἴρων, ὅπως ἦτο πάντοτε. Ἡ κεφαλή του ἐξετέθη εἰς κοινὴν θέαν εἰς τὴν γέφυραν του Λονδίνου.

Ὁ θάνατος τοῦ ἐντίμου τούτου ἀνδρὸς ἐξέπληξε τὴν Εὐρώπην. Οἱ καθολικοὶ τὸν ἀνεκήρυξαν μάρτυρα, τὴν δὲ 9ην Δεκεμβρίου 1886 ὁ πάπας Λέων ΙΓ' τὸν εἰσήγαγεν εἰς τὴν χορείαν τῶν μαρτύρων. Τὰ συγγράμματα τοῦ Ἐράσμου καὶ αἱ βιογραφίαι αἱ δημοσιευθεῖσαι ὑπὸ τοῦ γαμβροῦ του καὶ τῶν ἐγγόνων του ἀπεκάλυψαν μέχρι τῶν τελευταίων λεπτομερειῶν τὴς τὴν ἠθικήν, ἁγνὴν καὶ εὐγενῆ ζωὴν τοῦ Μώρου. Τὸ ἔργον του «De insula Utopia» ἔσχε πολυαρίθμους ἐκδόσεις καὶ μεταφράσεις. Ἄλλα ἔργα του εἶναι: λατινικὴ μετάφρασις τῶν «Διαλόγων» τοῦ Λουκιανοῦ ἐν συνεργασίᾳ μετὰ τοῦ Ἐράσμου (1506), «Epigrammata» (1518), «Epistola ad germanum Brixium» (1520), «Epistola contra Pomeranum» (1568), «Dissertatio epistolica de aliquot sui temporis Theologastrorum ineptiis» (1625), «A mery jest how a sergeant would learne to playe the frere» (1557), «Lif of John Picus earl of Mirandula» (1510), «History of Richard III» (1543) κτλ.

Ὁ Θωμᾶς Μῶρος ἀνήκει εἰς τὴν κατηγορίαν τῶν διανοητῶν ἐκείνων, οἵτινες ἀπὸ τοῦ Πλάτωνος μέχρι τοῦ Owen ἐπεζήτησαν διὰ τῶν ἔργων των νὰ βελτιώσουν τὴν ζωὴν τῶν ἀνθρώπων καὶ νὰ ἐξασφαλίσουν εἰς αὐτοὺς κοινωνικὴν ὀργάνωσιν ἀνταποκρινομένην εἰς τὰ συμφέροντα ὄχι μιᾶς τάξεως ἀλλὰ τοῦ συνόλου. Ζῶν εἰς μίαν ἐποχὴν δεινῆς ἐξαθλιώσεως τῶν λαϊκῶν μαζῶν ἐν Ἀγγλίᾳ, κατέκρινε δριμέως τὸ κρατοῦν ἄδικον κοινωνικὸν καθεστὼς καὶ ἀντιπαρέβαλε τὴν Οὐτοπίαν του, ὅπου κυριαρχεῖ ὁ ὀρθὸς λόγος καὶ ἡ φροντὶς διὰ τὸ κοινὸν συμφέρον, εἰς τὴν στυγνὴν πραγματικότητα τῶν χρόνων του. Τὸ βασικὸν σφάλμα τόσον αὐτοῦ ὅσον καὶ ὅλων τῶν ὁμοίων του διανοητῶν εἶναι ὅτι ἐπίστευσαν πλέον τοῦ δέοντος εἰς τὴν καλὴν θέλησιν τῶν ἀνθρώπων καὶ ἐνόμισαν ὅτι ἡ κοινωνικὴ ἀδικία εἶναι ἀποτέλεσμα ἀγνοίας καλυτέρων μεθόδων κοινωνικῆς ὀργανώσεως, καὶ ὄχι ἀντικειμενικῶν ὅρων. Ἐκ τῆς Οὐτοπίας του ἐπεκράτησε νὰ ὀνομάζωνται οὐτοπισταὶ ὅλοι ἐκεῖνοι οἱ κοινωνιολόγοι, οἱ ὁποῖοι, χωρὶς νὰ ἐρευνοῦν τοὺς νόμους, τοὺς διέποντας μίαν δεδομένην κοινωνίαν, ἐπιδίδονται εἰς τὴν σύνταξιν μεταρρυθμιστικῶν σχεδίων ἀνεφαρμόστων.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *W. Roper*, Vita T Mori (London 1626).—*F. Warrer*, Memoirs of the life of sir T. More (London 1758).—*Mackintosh*, Life of sir T. More (London 1830).—*C. Dareste*, T. Morus et Campanella (Paris 1843).—*Walter*, Life and times of sir T. More (London 1847).—*Rudhart*, T. Morus aus der Quellen bearbeitet (Nuremberg 1829).—*Bridgett*, Lite of blessed T. More (London 1891).—*W, Hutton*, Life and Writings of Sir Thomas More (1891). Θ. Π.

**Μῶρος** (Moro). Καλεῖται οὕτως ἐν Ζακύνθῳ ἡ ἐν τῇ πόλει ὀρειχαλκίνη προτομὴ τοῦ πρώτου ἁρμοστοῦ τῶν Ἰονίων νήσων, ἐπὶ ἀγγλοκρατίας, Θωμᾶ Μαίτλανδ, περιωνύμου διὰ τὸ ἀπολυταρχικὸν καὶ ἀνελεύθερον αὐτοῦ, διὸ καὶ χρησιμεύει αὕτη ὑπὸ τοῦ λαοῦ ὡς φόβητρον τῶν παίδων. Λ. Χ. Ζ.

**μωρός**, *—ά, —όν*· ὁ ἀμβλὺς τὸν νοῦν, ὁ νωθρὸς τὴν διανόησιν, ἀνόητος, εὐήθης, ἄκριτος, κοιν. *κουτός*· ‖ ἡ κλητικὴ *μωρὲ* καὶ ἡ ἐκ ταύτης *βρὲ* ὡς προσφώνησις ἢ ἐπιφώνημα (βλ. τὰς λ.).—Ἐπίρρ. *μωρῶς*.

**μωροσίταρο** (τὸ) *[Βοτ.]*. Κοινὴ ὀνομασία τοῦ φυτοῦ *ἀραβόσιτος ὁ κοινός*.

**μωρόσοφος** (ὁ, ἡ)· ὁ μωρὸς ἅμα καὶ σοφός, μωρὸς πιστεύων ἑαυτὸν σοφόν.

**μωρότης**, *—ητος* (ἡ)· ἡ κατάστασις τοῦ μωροῦ, μωρία, ἠλιθιότης.

**Μώρου** *Βιάγκου* (Moro Bianco). Κοντόσταβλος ἐν τῇ ὑπηρεσίᾳ τῆς Βενετίας, ἡ ὁποία διὰ τὰς στρατιωτικὰς ὑπηρεσίας του παρεχώρησε (31 Ἰουλίου 1501) εἰς αὐτὸν φέουδον ἐν Ζακύνθῳ, τὸ ὁποῖον κατόπιν περιῆλθεν εἰς τὴν οἰκογένειαν Κανάλε. Λ. Χ. Ζ.

**Μωρουὰ** (Maurois), *Ἀνδρέας*. Γάλλος συγγραφεύς, γεννηθεὶς τῷ 1885. Ἔγραψε μυθιστορήματα, διηγήματα, μελέτας καὶ διεκρίθη κυρίως ὡς βιογράφος διαφόρων μεγάλων ἀνδρῶν, ἀναγαγὼν τὴν βιογραφίαν εἰς ἰδιαίτερον λογοτεχνικὸν εἶδος καὶ καταστὰς ἐκ τῶν μᾶλλον ἀναγινωσκομένων σήμερον Γάλλων συγγραφέων. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: «Ἡ σιωπὴ τοῦ συνταγματάρχου Μπράμπλε» (1918), αἱ βιογραφίαι «Ἄριελ, ἢ ὁ βίος τοῦ Σέλλεϋ» (1923) «Διάλογοι» (1925) «Βερνάρδος Κεναί» (1926) «Ὁ βίος τοῦ Δισραέλι» (1927), «Μελέτη περὶ Ντίκενς» (1927), «Δὸν Ζουὰν ἢ ἡ ζωὴ τοῦ Βύρωνος» (1927), καθὼς καὶ τὰ ἔργα «Οὔτε ἄγγελος, οὔτε κτῆνος» (1919), «Οἱ λόγοι τοῦ ἰατροῦ Ο'Γκραντὺ» (1920), «Μέϊπ» (1926), «Τέσσαρες ἀγγλικαὶ μελέται» (1927), «Κλίματα» (1928). Κατὰ τὴν διάρκειαν τοῦ Παγκοσμίου πολέμου ὑπηρέτησεν εἰς τὸ γαλλικὸν ἐπιτελεῖον ὡς διερμηνεύς. Μ. Δ. Β.

*Ἀνδρέας Μωρουά.*

**μωρουδάκι** (τό)· ὑποκορ. τοῦ *μωρὸ* (βλ. λ.).

**Μωρρὰς** (Maurras), *Κάρολος*. Σύγχρονος Γάλλος συγγραφεὺς καὶ δημοσιολόγος, ἀρχηγὸς τῶν ἐν Γαλλίᾳ βασιλοφρόνων. Ἐγεννήθη τῷ 1868 ἐν Μαρτίγκ τῆς νοτίου Γαλλίας καὶ ἐσπούδασεν εἰς τὸ καθολικὸν κολλέγιον τοῦ Αἲξ ἐν Προβηγκίᾳ, τυχὼν ἰσχυρᾶς κλασσικῆς, ἑλληνικῆς καὶ λατινικῆς μορφώσεως. Ἐνωρίς, ἐπίσης, ἐμελέτησε τὸν Αὔγουστον Κόντ, τοῦ ὁποίου ἡ θετικὴ διδασκαλία ἐπηρέασεν ὅλην τὴν μεταγενεστέραν σκέψιν του. Δεκαεπτὰ ἐτῶν μετέβη εἰς Παρισίους μὲ τὸν σκοπὸν νὰ ἀφιερωθῇ εἰς τὰ γράμματα. Ἐγνωρίσθη ἐκεῖ μὲ τὸν Μ. Μπαρρές, τὸν Ἀνατὸλ Φράνς, τὸν Ἰ. Μωρεάς, οἱ ὁποῖοι τὸν ἐνίσχυσαν εἰς τὰς πρώτας προσπαθείας του, καὶ τῶν τριῶν δὲ τούτων ἡ ἐπίδρασις ἐπὶ τῆς σκέψεως τοῦ Μωρρὰς εἶναι φανερά. Ἐν τῷ μεταξὺ ἀρχίζει νὰ δημοσιεύῃ ποιήματα καὶ κριτικὰ εἰς τὰ λογοτεχνικὰ περιοδικὰ καὶ εἰσέρχεται συγχρόνως εἰς τὴν δημοσιογραφίαν. Αἱ κριτικαί του εἶναι συστηματικαὶ καὶ ὡδηγημέναι ἀπὸ σαφῶς καθωρισμένας ἀρχάς, ἀντιρρωμαντικάς· ἔχουν ζωηρότητα καὶ πολεμικότητα, καὶ ἀρχίζουν νὰ δημιουργοῦν πραγματικὸν ἐνδιαφέρον γύρο εἰς τὸ ὄνομά του. Ἀλλ' ἡ δημοσιογραφία ἔχει μεγάλα θέλγητρα δι' αὐτόν· τῷ 1896 ἀποστέλλεται εἰς τοὺς Ὀλυμπιακοὺς ἀγῶνας τῶν Ἀθηνῶν ἀπὸ τὴν «Gazette de France», τῆς ὁποίας εἶναι συντάκτης. Ἐπιστρέφει μὲ ἕνα βιβλίον ταξιδιωτικῶν ἐντυπώσεων, τὸ «Anthinéa», ἐνθουσιασμένος ἀπὸ τὴν γνωριμίαν του μὲ τὴν ἑλληνικὴν γῆν. Τὸ ταξίδιόν του αὐτὸ ἔχει καὶ ἀποφασιστικὴν σημασίαν καθ' ὅσον ἀφορᾷ εἰς τὴν διαμόρφωσιν τῶν πολιτικῶν του πεποιθήσεων· ἀπὸ τοῦδε καὶ εἰς τὸ ἑξῆς κυριώτερον ἔργον τοῦ Μωρράς, ἀποκλειστικόν του ἔργον (politique d'abord, «πρωτίστως ἡ πολιτική», γίνεται τὸ σύνθημά του) εἶναι ἡ παλινόρθωσις τῆς βασιλικῆς οἰκογενείας ἡ ἀνασύστασις τῆς κληρονομικῆς μοναρχίας ἐν Γαλλίᾳ. Ὁ βασιλισμὸς τοῦ Μωρρὰς ἔχει πολλαπλᾶς ἀφορμάς. Ἀσφαλῶς ἡ κυριωτέρα ψυχολογικὴ ἀφορμὴ ὑπῆρξεν ἡ κακὴ διαρρύθμισις τῶν πραγμάτων τῆς τρίτης δημοκρατίας κατὰ τὰ πρῶτά της ἔτη· ὁ κλασσικός του ἐπίσης πόθος τῆς ἰσορροπίας, τῆς ἁρμονίας καὶ τῆς ἱεραρχίας, τῶν ὁποίων εὕρισκε τὰ πρότυπα εἰς τὸν χρυσοῦν αἰῶνα τῆς Γαλλίας, τὸν ὤθει κατ' ἀκολουθίαν καὶ πρὸς τὸ πολίτευμα τῆς περιόδου ἐκείνης. Τῷ 1900 ἀναλαμβάνει, διὰ τὴν «Gazette de France», τὴν «ἔρευναν περὶ τῆς μοναρχίας», ἡ ὁποία θὰ γίνῃ ὁ θεμέλιος λίθος τοῦ ἀναγεννωμένου μοναρχικοῦ ἀγῶνος. Ὁ Μωρρὰς συνεργάζεται μὲ τὸν Ἐρ. Βωζουά, ἱδρύουν τὴν «Γαλλικὴν Δρᾶσιν», ἀπὸ δὲ τῆς ἐκδόσεως τῆς ὁμωνύμου ἐφημερίδος (1908) εἰσέρχεται εἰς τὴν σύνταξιν αὐτῆς, ἀναλαμβάνων καὶ τὴν διεύθυνσίν της μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Βωζουά. Ἡ ζωή του ἔκτοτε συνεδέθη μὲ τὴν ζωὴν τῆς ἐφημερίδος του, ἡ ὁποία ἡγεῖται πάντοτε τοῦ ἐν Γαλλίᾳ βασιλικοῦ ἀγῶνος.

*Κάρ. Μωρράς.*

Ὡς συγγραφεύς, ὁ Κάρολος Μωρρὰς εἶναι ὀπαδὸς τῆς παραδόσεως, τὸ δὲ ὕφος του θεωρεῖται ἐκ τῶν ἀρίστων. Ἡ ποιητική του συλλογή, ἡ ἐκδοθεῖσα τῷ 1925 ὑπὸ τὸν τίτλον «La musique intérieur», ἐπῃνέθη πολύ. Ἡ ἐπίδρασίς του ἐπὶ τῆς γαλλικῆς νεολαίας ὑπῆρξε μεγίστη· ἀπὸ τοὺς ἰδικούς του δὲ ἀγῶνας δυνάμεθα νὰ θεωρήσωμεν ὅτι ἐξηρτήθη κατὰ μέγα μέρος τὸ ἐν Γαλλίᾳ νεοκλασσικὸν κίνημα. Χαρακτηριστικὴ εἶναι ἡ ἔκφρασις τοῦ Γάλλου κριτικοῦ Α. Τερίβ, προκειμένου περὶ τοῦ ἔργου τοῦ Μωρράς: «εἴτε τὸ θέλομεν εἴτε ὄχι, ζῶμεν εἰς μίαν ἀτμοσφαῖραν ποτισμένην ἀπὸ Μωρρασισμόν».

Πλήρη βιβλιογραφίαν του, μέχρι τοῦ 1930, ἐξέδωκε τὸ βιβλιοπωλεῖον «Les Amis des Beaux livres» ὑπὸ τὸν τίτλον: «L'Œuvre de Charles Maurras». Κ. Θ. Δ.

**Μῶρρυ** (Murray) *[Γεωγρ.]*. Ποταμὸς τῆς Αὐστραλίας. Πηγάζει ἐκ τῶν δυτικῶν κλιτύων τῶν Αὐστραλιανῶν Ἄλπεων καὶ σχηματίζεται παρὰ τὰ σύνορα τῶν διαμερισμάτων Γκράνθαμ καὶ Γουίκλω ἐκ τῆς ἑνώσεως τῶν ποταμῶν *Χόθαμ* καὶ *Γουΐλιαμ*. Ῥέει κατ' ἀρχὰς πρὸς Δ. εἰσερχόμενος εἰς τὸ διαμέρισμα τοῦ Οὐέλλινγκτον καὶ κατόπιν εἰς τὸ τοῦ Μῶρρυ, στρεφόμενος δὲ πρὸς τὰ ΒΔ. χύνεται μετὰ ῥοῦν 1.632 χλμ. παρὰ τὸν ὅρμον Ἐνκάουντερ εἰς τὴν μεγάλην λιμνοθάλασσαν Ἀλεξανδρίναν, χωριζομένην ἀπὸ τῆς ξηρᾶς διὰ στενῆς λωρίδος γῆς. Ἀποτελεῖ τὸ ὅριον μεταξὺ τῶν πολιτειῶν Νέας Νοτίας Οὐαλλίας καὶ Βικτωρίας καὶ σχηματίζει ὑδατοπέδιον 910.000 τ. χλμ. Ὁ ποταμὸς οὗτος εἶναι ὁ μεγαλύτερος τῆς Αὐστραλίας καὶ ἔχει κυριωτέρους παραποτάμους τὸν *Μωρρωμπίτζη* καὶ τὸν *Ντάρλινγκ*. Εἶναι πλωτὸς κατὰ τὸ θέρος μέχρι τῆς πόλεως Ἄλμπορυ, εἰς δὲ τὰ μικρὰ πλοῖα μέχρις ἀποστάσεως 1.061 χλμ. ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν του. Μ. Δ. Β.

**Μῶρρυ** (Murray), *Ἀλέξανδρος*. Σκῶτος φιλόλογος (1775—1813). Ἐσπούδασε φιλολογίαν εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἐδιμβούργου, τῷ δὲ 1812 διωρίσθη ἐν αὐτῷ καθηγητὴς τῶν ἀνατολικῶν γλωσσῶν. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Περὶ τῆς φιλολογίας τῶν ἀνατολικῶν λαῶν» (1812) καὶ «Ἱστορία τῶν εὐρωπαϊκῶν γλωσσῶν», ἐν τῇ ὁποίᾳ, διὰ τῆς συγκριτικῆς μεθόδου, προσπαθεῖ νὰ ἀποδείξῃ τὴν ἑνότητα τῶν γλωσσῶν διὰ τῆς ἀνευρέσεως νέων πρωταρχικῶν ῥιζῶν· τὸ ἔργον τοῦτο ἐδημοσιεύθη μετὰ τὸν θάνατόν του, τῷ 1823, εἰς δύο τόμους. Μ. Δ. Β.

— **Μῶρρυ** (Murray), *Ἀλέξανδος Στούαρτ*. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος (1841—1904). Ἐσπούδασεν ἐν Ἐδιμβούργῳ καὶ Βερολίνῳ καὶ τῷ 1867 διωρίσθη βοηθὸς τοῦ διευθυντοῦ τῶν ἑλληνορρωμαϊκῶν ἀρχαιοτήτων τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου σὲρ Καρόλου Νιοῦτον, ὃν διεδέχθη τῷ 1886. Μ. Δ. Β.

— **Μῶρρυ** (Murray), *Γεώργιος-Ροβέρτος-Μίλν*. Ἄγγλος ἀρχαιολόγος, γεννηθεὶς τῷ 1858. Διετέλεσεν ἐπιμελητὴς τοῦ Βρεττανικοῦ μουσείου καὶ ἔγραψεν: «Ἐγχειρίδιον μυθολογίας» (1873), «Ἱστορία τῆς ἑλληνικῆς γλυπτικῆς» (1880—1883), «Ὁδηγὸς ἑλληνικῆς ἀρχαιολογίας» (1892) κ. ἄ., καθὼς καὶ πολυαρίθμους μελέτας καὶ μονογραφίας περὶ τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς τέχνης, δημοσιευθείσας εἰς διάφορα περιοδικά. Μ. Δ. Β.

— **Μῶρρυ** (Murray), *Γιλβέρτος*. Σύγχρονος Ἄγγλος ἑλληνιστής, γεννηθεὶς ἐν Σίδνεϋ τῆς Αὐστραλίας τῷ 1866, ἀλλ' ἐγκατασταθεὶς ἐν Λονδίνῳ ἀπὸ τοῦ 1877. Τῷ 1889 διωρίσθη καθηγητὴς τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς ἐν τῷ πανεπιστημίῳ τῆς Γλασκώβης, ἀπὸ δὲ τοῦ 1908 ἐν Ὀξφόρδῃ. Τυγχάνει μέλος τῆς Βρεττανικῆς Ἀκαδημίας καὶ πολλῶν ἄλλων ἐπιστημονικῶν ἑταιρειῶν. Ὁ Μῶρρυ εἰργάσθη μετὰ ζήλου καὶ ὑπὲρ τῆς διεθνοῦς συνεννοήσεως

Digitized by Google

σεως, μετέσχε δὲ μετὰ τὸν Παγκόσμιον πόλεμον τῆς παρὰ τῷ ὑπουργείῳ τῶν Ἐξωτερικῶν ἐπιτροπῆς πρὸς σύνταξιν τοῦ σχεδίου τοῦ συμφώνου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, εἰς τὴν συνέλευσιν τῆς ὁποίας παρεκάθησε τῷ 1921—1923 ὡς μέλος τῆς αὐστραλιανῆς ἀντιπροσωπείας καὶ τῷ 1924 ὡς μέλος τῆς βρεττανικῆς. Διετέλεσεν ἀπὸ τῆς πρώτης στιγμῆς μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῆς πνευματικῆς συνεργασίας, ἐχρημάτισε δὲ καὶ πρόεδρος αὐτῆς τῷ 1928. Ἐξ ὅλων τῶν ζητημάτων, εἰς ἃ ἠσχολήθη ἡ Κοινωνία, ὁ Μῶρρυ ἐνδιεφέρθη κυρίως διὰ τὴν προστασίαν τῶν μειονοτήτων. Ὑπῆρξεν ἐκ τῶν εἰσηγητῶν τοῦ ἀγγλικοῦ συλλόγου τῆς Κοινωνίας τῶν Ἐθνῶν, τοῦ ὁποίου διετέλεσε πρόεδρος ἀπὸ τοῦ 1918 ἕως τὸ 1919 καὶ πάλιν ἀπὸ τοῦ 1923 καὶ ἑξῆς.

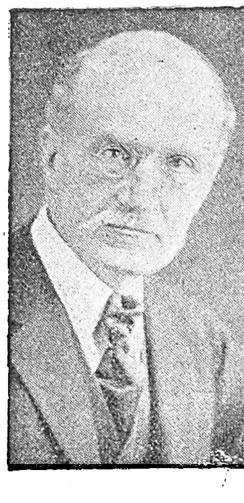

*Γιλβέρτος Μῶρρυ.*

Ὁ Μῶρρυ ἐδημοσίευσε τῷ 1897 «Ἱστορίαν τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς λογοτεχνίας» (ἥτις μετεφράσθη εἰς τὴν ἑλληνικὴν ὑπὸ *Σ. Μενάρδου*, 1922), κατέστη δὲ εὐφήμως γνωστὸς εἰς τὸ ἀγγλικὸν ἀναγνωστικὸν κοινὸν διὰ τὰς ἐπιτυχεῖς ἐμμέτρους μεταφράσεις του τῶν ἔργων τοῦ Εὐριπίδου. Πολλαὶ ἐκ τῶν μεταφράσεων τούτων ἐδιδάχθησαν καὶ ἀπὸ σκηνῆς ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ. Ἐπίσης ἐδημοσίευσε καὶ τὰ ἑξῆς: «Ἡ γένεσις τοῦ ἑλληνικοῦ ἔπους» (1907, β' ἔκδ. 1911, γ' ἔκδ. 1924) καὶ «Τέσσαρες σταθμοὶ τῆς ἑλληνικῆς θρησκείας» (1913, β' ἔκδ. ὑπὸ τὸν τίτλον «Πέντε σταθμοὶ κλπ.» 1925), «Ἡ ἐξωτερικὴ πολιτικὴ τοῦ σὲρ Ἔδουαρδ Γκρέϋ» (1915), «Πίστις, πόλεμος καὶ πολιτική» (1918), «Religio Grammatici» (1918), «Πρόβλημα ἐξωτερικῆς πολιτικῆς» (1921), «Ὁ Εὐριπίδης καὶ ἡ ἐποχή του» (1918), «Οἱ στωϊκοὶ χρόνοι» (1915), «Αἱ κλασσικαὶ ἐν τῇ ποιήσει παραδόσεις» (1927) κλπ.

Σ. Ν. Φ.

— **Μῶρρυ** (Murray), ***Δαυΐδ.*** Ἀμερικανὸς παιδαγωγὸς (1830—1895). Ἐσπούδασε μαθηματικὰ καὶ φυσικὰς ἐπιστήμας καὶ τῷ 1872 μετέβη εἰς τὴν Ἰαπωνίαν, ὅπως μελετήσῃ τὸ ἐκεῖ ἰσχῦον παιδαγωγικὸν σύστημα. Ἡ κυβέρνησις ὅμως τοῦ Τόκιο διώρισεν αὐτὸν κατόπιν γενικὸν ἐπιθεωρητὴν τῆς δημοσίας ἐκπαιδεύσεως, θέσιν τὴν ὁποίαν διετήρησεν ἐπὶ ἓξ ἔτη, κατὰ τὰ ὁποῖα εἰσήγαγε μεγάλας καὶ σημαντικὰς μεταρρυθμίσεις εἰς τὴν ἰαπωνικὴν παιδείαν. Μετὰ τὴν ἐπιστροφήν του εἰς τὰς Ἡνωμένας Πολιτείας (1880) διωρίσθη πρύτανις τοῦ πανεπιστημίου τῆς Νέας Ὑόρκης, παραμείνας εἰς τὴν θέσιν ταύτην ἐννέα ἔτη. Ἔγραψεν: «Ἱστορία τῆς ἰαπωνικῆς παιδαγωγικῆς» (1876), «Ἱστορία τῆς Ἰαπωνίας» (1894), «Ἱστορία τῆς παιδαγωγικῆς ἐν Νέᾳ Ἰερσέῃ» (1899) κ.ἄ.

Μ. Δ. Β.

— **Μῶρρυ** (Murray), *σὲρ* ***Ἰάκωβος-Αὔγουστος-Ἐρρῖκος.*** Ἄγγλος φιλόλογος καὶ λεξικογράφος (1837—1915). Διετέλεσε κατ' ἀρχὰς δημοδιδάσκαλος, διευθυντὴς κολλεγίου καὶ εἰς ἄλλας θέσεις, τῷ δὲ 1878 κατόπιν συνεννοήσεως μετὰ τοῦ πανεπιστημίου τῆς Ὀξφόρδης, ἀνέλαβε τὴν ἔκδοσιν «Νέου ἱστορικοῦ ἀγγλικοῦ λεξικοῦ», ὅπερ εἶναι γνωστότερον ὑπὸ τὸ ὄνομα «Τὸ λεξικὸν τῆς Ὀξφόρδης» (The Oxford dictionary). Γνώστης πλείστων ἀρχαίων γλωσσῶν καὶ εὐρυτάτης ἐγκυκλοπαιδικῆς μορφώσεως, ἤρχισεν ἀπὸ τοῦ 1879 τὴν προπαρασκευὴν τοῦ λεξικοῦ τούτου, τῷ δὲ 1883 ἐξέδωκε τὸν πρῶτον τόμον. Μέχρι τοῦ 1915 εἶχεν ἐκδώσει 10 τόμους, ὁ δὲ θάνατος κατέλαβεν αὐτόν, ἐνῷ συνέτασσε τὴν λέξιν «Trink-Turn Down». Τὸ λεξικὸν τοῦτο θεωρεῖται ἐκ τῶν τελειοτέρων τοῦ εἴδους του, περιέχον πάσας τὰς λέξεις τὰς χρησιμοποιουμένας εἰς τὸν γραπτὸν λόγον, ἀρχαίας καὶ νέας, πάντας τοὺς νεολογισμοὺς καὶ τοὺς ἀρχαϊσμούς, τὰς ποικίλας ἐκδοχὰς τῶν λέξεων κατὰ τὰς διαφόρους ἐποχὰς καὶ τοὺς συγγραφεῖς κτλ. Ἔγραψεν ἐπὶ πλέον: «Μία ἑβδομὰς ἐν μέσῳ τῶν ἀρχαιοτήτων τοῦ Ὄρκνεϋ» (1861), «Ἡ διάλεκτος τῶν νοτίων κομιτειῶν τῆς Σκωτίας» (1873), ἐξέδωσε πολλοὺς ἀρχαίους Ἄγγλους συγγραφεῖς κ. ἄ.

Μ. Δ. Β.

—**Μῶρρυ** (Murray, ἢ Moray), ***Ἰάκωβος-Στούαρτ,*** *κόμις τοῦ —.* Ἀντιβασιλεὺς τῆς Σκωτίας (1531—1570). Ἦτο νόθος υἱὸς τοῦ Ἰακώβου Ε' τῆς Σκωτίας καὶ τῆς Μαργαρίτας Ἔρσκιν. Προοριζόμενος διὰ τὸ μοναχικὸν στάδιον, ἐσπούδασε κατ' ἀρχὰς εἰς τὸ μοναστήριον τοῦ Ἁγίου Ἀνδρέου καὶ κατόπιν συνώδευσε τὴν ἑτεροθαλῆ ἀδελφήν του Μαρίαν Στούαρτ εἰς τὴν Γαλλίαν. Μὴ αἰσθανόμενος ὅμως κλίσιν πρὸς τὸν μοναχικὸν βίον, κατετάχθη εἰς τὸν στρατὸν καὶ διεκρίθη ἐπὶ κεφαλῆς σκωτικῶν δυνάμεων, αἵτινες κατετρόπωσαν τοὺς Ἄγγλους, οἵτινες εἶχον ἀποβιβασθῆ εἰς τὸ Φάϊφ τῷ 1549. Τῷ 1561, μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν τῆς βασιλίσσης Μαρίας εἰς Σκωτίαν, ἐγένετο ὁ κυριώτερος αὐτῆς σύμβουλος, ἀλλὰ βραδύτερον (1565), ἕνεκα τῆς ἀντιδράσεως αὐτοῦ εἰς τοὺς γάμους τῆς ἀδελφῆς του μετὰ τοῦ Ντάρνλυ καὶ τῶν συμπαθειῶν του πρὸς τοὺς διαμαρτυρομένους, περιέπεσεν εἰς δυσμένειαν καὶ ἠναγκάσθη νὰ καταφύγῃ εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Μετὰ τὴν καθαίρεσιν τῆς Μαρίας (1567) ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Σκωτίαν καὶ διωρίσθη ἀντιβασιλεύς. Βραδύτερον ὅμως ἐπεζήτησε διὰ κρυφίων ἐνεργειῶν νὰ ἐπαναφέρῃ τὸν ἀδελφόν του εἰς τὴν ἀρχήν, ἀλλὰ δὲν ἐπρόφθασε νὰ πραγματοποιήσῃ τὰ σχέδιά του, διότι ἐδολοφονήθη ὑπὸ τοῦ Χάμιλτον ντὲ Μπόθβελλω. Ὁ Μῶρρυ διεκρίνετο διὰ τὰς μεγάλας διοικητικὰς καὶ πολιτικάς του ἀρετάς, καίτοι ὅμως εἰς τὸν διοικητικόν του βίον ἦτο ἠθικώτατος, ἡ πολιτική του δρᾶσις κατέστη ὀνομαστὴ διὰ τὰ ἀνήθικα μέσα, τὰ ὁποῖα ἐχρησιμοποίει πρὸς πραγματοποίησιν τῶν σκοπῶν του.

Μ. Δ. Β.

—**Μῶρρυ** (Murray), ***Ἰωάννης.*** Σκῶτος χημικὸς (1778—1820). Ἔγραψε: «Στοιχεῖα χημείας» (1801), «Στοιχεῖα φαρμακολογίας» (1804) καὶ «Σύστημα χημείας» (1806).

— **Μῶρρυ** (Murray), ***Ἰωάννης.***—1) Διάσημος Ἄγγλος ἐκδότης (1778—1843). Ἦτο υἱὸς τοῦ βιβλιοπώλου *Ἰωάννου Μὰκ Μῶρρυ*, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ὁποίου ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ πατρικοῦ βιβλιοπωλείου, ὅπερ κατέστησεν ἓν τῶν σπουδαιοτέρων τῆς Ἀγγλίας. Ταχέως ἐπεδόθη καὶ εἰς ἐκδοτικὰς ἐργασίας, συγκεντρώσας περὶ ἑαυτὸν τοὺς ἐξοχωτέρους συγγραφεῖς τῆς ἐποχῆς του, μεταξὺ τῶν ὁποίων κατελέγοντο ὁ Βύρων, ὁ Σκώτ, ὁ Ἴρβιγκ, καὶ καταστήσας τὸν ἐκδοτικὸν αὐτοῦ οἶκον κέντρον μεγάλης πνευματικῆς κινήσεως. Μεταξὺ τῶν ἐκδόσεών του καταλέγονται ἡ τῷ 1809 ἱδρυθεῖσα περίφημος «Τριμηνιαία Ἐπιθεώρησις» (Quarterly Review) καὶ ἡ «Οἰκογενειακὴ Βιβλιοθήκη» (1830—1841), ἥτις ἀπετέλεσε τὸ πρῶτον βῆμα εἰς τὸ μεγάλως κατόπιν ἀναπτυχθὲν σύστημα τῶν λαϊκῶν βιβλιοθηκῶν. Ὁ Μῶρρυ διεκρίνετο διὰ τὴν ἐλευθεριότητα καὶ τὴν γενναιότητά του εἰς τὰς ἀμοιβὰς τῶν συγγραφέων, πληρώσας 20.000 λίρας στερλίνας εἰς τὸν Βύρωνα διὰ τὴν ἔκδοσιν διαφόρων ποιημάτων του, 5.000 εἰς τὸν Θωμᾶν Μοὺρ διὰ τὴν συγγραφὴν τῆς βιογραφίας τοῦ Βύρωνος, 3.000 εἰς τὸν Κράϊνκελ διὰ τὰ «Διηγήματά» του, ἀπεκλήθη δ' ἕνεκα τούτου ὑπὸ τοῦ Βύρωνος «Ὁ ἄναξ τῶν ἐκδοτῶν».

— 2) Ἄγγλος ἐκδότης (1808—1892), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Μετὰ τὸν θάνατον τοῦ πατρός του ἀνέλαβε τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου, ἀναπτύξας ἔτι μᾶλλον τὰς ἐργασίας του καὶ γενόμενος ἰδίως γνωστὸς ἐκ τῆς ἐκδόσεως τῶν περιφήμων «Ὁδηγῶν διὰ τοὺς ταξιδιώτας («Handbooks for travellers»), οἵτινες ἐχρησίμευσαν κατόπιν ὡς πρότυπα διὰ παρομοίας ἐκδόσεις ἐν Γαλλίᾳ καὶ Γερμανίᾳ (Guides bleus καὶ Baedeker). Ἐξέδωκεν ἐπίσης καὶ πλεῖστα ἐπιστημονικὰ βιβλία, μεταξὺ τῶν ὁποίων τὰ ἔργα τοῦ Ἅλλαμ, τοῦ Μπάρρω, τοῦ Οὐΐλκινσον, τοῦ Γκρότε, τοῦ Μότλυ, τοῦ Λύελ, τοῦ Λάϋαρντ, τοῦ Μοῦρτσον, τοῦ Λίβινγκστον, τοῦ Δαρβίνου, τοῦ Στίλμαν, τοῦ Κάμπελ, τοῦ Σαμουὴλ Σμάϊλς κ. ἄ.

— 3) Ἄγγλος ἐκδότης (1851—1928), υἱὸς τοῦ προηγουμένου. Διεδέχθη τὸν πατέρα του εἰς τὴν διεύθυνσιν τοῦ ἐκδοτικοῦ του οἴκου καὶ ἀντεπροσώπευσε τοὺς ἀγγλικοὺς ἐκδοτικοὺς οἴκους εἰς διάφορα διεθνῆ ἐκδοτικὰ συνέδρια. Ὁ ἀδελφός του *Ἀλέξανδρος - Ἐρρῖκος - Ἅλλαμ*, γεννηθεὶς τῷ 1854, διετέλεσε κατ' ἀρχὰς συνδιευθυντὴς μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ του τοῦ ἐκδοτικοῦ οἴκου τοῦ πατρός των, καὶ ἀπὸ τοῦ 1928, μετὰ τὸν θάνατον τοῦ ἀδελφοῦ του, ἀνέλαβε μόνος τὴν διεύθυνσιν. Κατέγινε καὶ εἰς τὴν ζωγραφικήν, ἐκθέσας εἰς πολλὰς ἐκθέσεις διάφορα ἔργα, ἰδίως τοπία, ἀπὸ τὰ πολυάριθμα ταξίδιά του εἰς τὴν Εὐρώπην, τὰς Ἰνδίας, τὴν Αὐστραλίαν, τὴν Αἴγυπτον, τὴν Ἀλγερίαν κτλ.

Μ. Δ. Β.

—**Μῶρρυ** (Murray), ***Ἰωάννης.*** Ἄγγλος φυσικὸς καὶ διάσημος ὠκεανογράφος (1841—1914). Τὰς πρώτας ἐπιστημονικὰς αὐτοῦ σπουδὰς ἔκαμεν ἐν Καναδᾷ, συνεπλήρωσε δ' αὐτὰς ἀπὸ τοῦ 1858 εἰς τὸ πανεπιστήμιον τοῦ Ἐδιμβούργου. Τῷ 1868 ἐπεχείρει τὸ πρῶτον αὐτοῦ ὠκεανογραφικὸν ταξίδιον, μετέχων ἑνὸς μακροῦ πλοῦ εἰς Σπιτσβέργην καὶ ἀνὰ τὰς πολικὰς θαλάσσας. Τῷ 1872 ἀπετέλεσε μέλος τοῦ ἐπιστημονικοῦ ἐπιτελείου τοῦ πλοίου «Challenger», ὅπερ ἐξετέλεσε, διὰ λογαριασμὸν τῆς Ἀγγλίας τὴν περίφημον ἀπομείνασαν περιήγησιν ἀνὰ τὰς κυριωτέρας θαλάσσας τοῦ κόσμου πρὸς διερεύνησιν τῶν φυσικῶν καὶ βιολογικῶν συνθηκῶν εἰς τὰς μεγάλας ὠκεανίους λεκάνας. Ἡ ἐξερεύνησις αὕτη ἐσυνεχίσθη ἐπὶ τετραετίαν καὶ ἐπερατώθη μόλις τῷ 1876. Εἰς τὸν Μῶρρυ δὲ μετὰ τοῦ Wyville Thomson ἀνετέθη κατόπιν ἡ μέριμνα τῆς ταξινομήσεως καὶ τῆς πρὸς τὸν ἐπιστημονικὸν κόσμον ἀνακοινώσεως τῶν θαυμασίων ἀποτελεσμάτων τῆς ἀποστολῆς ἐκείνης εἰς ὅ,τι ἰδίως ἀφορᾷ τὴν πανίσκην τῶν ἀβύσσων. Ἡ δημοσίευσις αὐτῶν («Ἐπιστημονικὰ συμπεράσματα τοῦ ταξιδίου τοῦ πλοίου Challenger») διήρκεσεν ἐπὶ 15ετίαν ὅλην (1880—1895) καὶ ἀπετέλεσε πρωτίστης τάξεως ἐπιστημονικὸν σύγγραμμα. Κατὰ τὸ διάστημα τοῦτο ὁ Μῶρρυ μετέσχε πολλῶν ἄλλων ὠκεανογραφικῶν ἀποστολῶν, ἐξερευνήσας ἐν τοῖς ἄλλοις μὲ τὰ πλοῖα «Triton» καὶ «Knight Errant» τὴν περὶ τὰς Φερόας νήσους θάλασσαν (1880—1882), καθὼς καὶ τὸν δαίδαλον τῶν διαύλων, οἵτινες περιβάλλουν τὴν βόρειον Σκωτίαν. Τῷ 1899 ἀντεπροσώπευσε τὴν Ἀγγλίαν εἰς τὸ διεθνὲς ὑδρογραφικὸν συνέδριον τῆς Στοκχόλμης, ἐχρημάτισε δὲ πρόεδρος τῆς Γεωγραφικῆς Ἑταιρείας τῆς Σκωτίας καὶ μέλος τῶν κυριωτέρων ἐπιστημονικῶν ἐν Εὐρώπῃ σωματείων. Ἔγραψε πολυάριθμα καὶ σημαντικὰ ἔργα ἐπὶ τῆς φυσικῆς, τῆς μετεωρολογίας καὶ τῆς βιολογίας τῶν ὠκεανῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων, παρεκτὸς τῆς προμνημονευθείσης ἐκθέσεώς του ἐπὶ τοῦ ταξιδίου τοῦ «Challenger», προέχουν ἰδίᾳ: «Ἡ ἐξερεύνησις τῶν ἀνταρκτικῶν περιοχῶν» (1886), «Περὶ τῶν ἐτησίως πιπτουσῶν βροχῶν ἐπὶ τῆς γῆς καὶ τῆς σχέσεως αὐτῶν πρὸς τὴν ἐτησίαν ροὴν τῶν ποταμῶν» (1887), «Περὶ τοῦ ὕψους τῆς ξηρᾶς καὶ τοῦ βάθους τῶν ὠκεανῶν» (1888) κλπ. Ἐξαιρετικῶς ἐνδιαφέρουσα εἶναι ἡ συλλογὴ ἀποθεμάτων τοῦ θαλασσίου βυθοῦ, ἣν κατήρτισεν ἐν Ἐδιμβούργῳ καὶ τὴν ὁποίαν ἰδιαιτέρως ἐμελέτησεν. Ἀπὸ τοῦ 1889 εἶχεν ἀπονεμηθῆ εἰς τὸν Μῶρρυ, εἰς ἔνδειξιν τιμῆς πρὸς τὸ ἐπιστημονικὸν ἔργον του, ὁ τίτλος τοῦ βαρωνέτου.

—Ω.

—**Μῶρρυ** (Murray), ***Κάρολος.*** Φιλέλλην λόρδος, υἱὸς τοῦ δουκὸς τῆς Ἀθώλης. Κατελθὼν εἰς τὴν ἀγωνιζομένην Ἑλλάδα μετὰ τοῦ λόρδου Βύρωνος, ἐπολέμησεν ἔν τε Μεσολογγίῳ καὶ παρὰ τὴν Γαστούνην, ὅπου καὶ ἀπέθανε τῇ 11 Αὐγούστου 1824, πολλὰ δαπανήσας ὑπὲρ τοῦ Ἀγῶνος.

Τ. Ε. Ε.

—**Μῶρρυ** (Murray), ***Λίντλεϋ.*** Ἀγγλοαμερικανὸς γραμματικὸς (1745—1826). Ἐσπούδασε νομικά, ἀλλὰ βραδύτερον κατέγινεν εἰς φιλολογικὰς μελέτας καὶ ἐγκατασταθεὶς εἰς τὴν Ἀγγλίαν ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Γραμματικὴ τῆς ἀγγλικῆς γλώσσης» (1795), ἔργον ὅπερ ἐπὶ 50 ἔτη ἐν Ἀγγλίᾳ καὶ Ἀμερικῇ ἀπετέλει τὸ μοναδικὸν σχολικὸν βιβλίον τοῦ εἴδους του, «Ἀγγλικὰ ἀναγνώσματα» (1802) καὶ ἄλλα.

Μ. Δ. Β.

**Μωρρωμπίντζη** (Murrumbidgee) *[Γεωγρ.].* Ποταμὸς τῆς Αὐστραλίας, πρὸς τὰ ΝΑ. τῆς νήσου, δεξιὸς παραπόταμος τοῦ Μῶρρυ. Πηγάζει ἐκ τῶν Αὐστραλιακῶν Ἄλπεων καὶ ἔχει μῆκος 2.070 χλμ., ὧν τὰ 800 χλμ. ἀπὸ τῆς συμβολῆς του εἶναι πλωτὰ εἰς μικρὰ πλοῖα κατὰ τὴν ἐποχὴν τῆς ἀνυψώσεως τῶν ὑδάτων. Ἔχει πολλοὺς παραποτάμους, μεταξὺ τῶν ὁποίων εἶναι ὁ Κουντραμπίντζη, ὁ Ταρκούττα, ὁ Μόττα καὶ παρὰ τὴν συμβολήν του ὁ ἀβαθὴς Λάκλαν.

Μ. Δ. Β.

**Μώρυ** (Maury), ***Ματθαῖος.*** Ἀμερικανὸς ὑδρογράφος (1806—1873), καταγόμενος ἐκ γαλλικῆς οἰκογενείας προτεσταντῶν, μεταναστευσάσης εἰς Ἀμερικὴν μετὰ τὴν ἀνάκλησιν τοῦ ἐδίκτου τῆς Νάντης. Ἀπὸ τοῦ 1845 ἤρχισε δημοσιεύων «Χάρτας τῶν ἀνέμων καὶ τῶν ρευμάτων», ἐξέδωκε δὲ βραδύτερον σύγγραμμα, ἀποδεικνύων νέας ὁδοὺς ναυσιπλοΐας, αἵτινες ἐγένοντο κατὰ τὸ πλεῖστον ἀποδεκταὶ ὑπὸ τῶν ναυτιλλομένων. Μεταξὺ τῶν μετέπειτα ἔργων του ἀξιόλογοι ἰδίως εἶναι αἱ παρατηρήσεις του ἐπὶ τῶν διαβατικῶν ἀνέμων ἐν τῷ Ἀτλαντικῷ ὠκεανῷ καὶ περὶ τοῦ «Ρεύματος τοῦ κόλπου» (Gulf-Stream) κλπ., καθὼς καὶ τὸ σύγγραμμά του «Φυσικὴ γεωγραφία τῶν θαλασσῶν» (1856), μεταφρασθὲν εἰς ὅλας σχεδὸν τὰς γλώσσας. Ὁ Μώρυ θεωρεῖται ὁ ἱδρυτὴς τῆς ναυτικῆς μετεωρολογίας. Τῷ 1853 συνεκροτήθη τῇ πρωτοβουλίᾳ αὐτοῦ ἐν Βρυξέλλαις συνέδριον ναυτικῶν, ἐν τῷ ὁποίῳ καθιερώθη ἡ ἀποδοχὴ ὁμοιομόρφου συστήματος ναυτικῶν παρατηρήσεων. Ἐκ τῶν ἔργων του ἄξια μνείας εἶναι ἀκόμη: «Περὶ τῆς πιθανῆς σχέσεως μεταξὺ τοῦ μαγνητισμοῦ καὶ τῆς κυκλοφορίας τοῦ ἀτμοσφαιρικοῦ ἀέρος» (1851) καὶ «Ἀκολουθητέαι ὁδοὶ διὰ τὰ διαπλέοντα τὸν Ἀτλαντικὸν σκάφη» (1854).

—Ω.

**Μωρὺ** (Maury), ***Ἀλφρέδος.*** Γάλλος ἱστορικὸς καὶ ἀρχαιολόγος (1817—1892). Ὑπάλληλος ἐν ἀρχῇ τῆς βασιλικῆς βιβλιοθήκης, ἐγκατέλιπε τὴν θέσιν ταύτην διὰ ν' ἀκολουθήσῃ σπουδὰς ἰατρικῆς, νομικῆς, ἀρχαιολογίας καὶ ἀρχαίων καὶ συγχρόνων γλωσσῶν. Ἐγένετο κατόπιν βιβλιοθηκάριος τῶν ἀνακτόρων τοῦ Κεραμεικοῦ (1860) καὶ καθηγητὴς τῆς ἱστορίας καὶ τῆς ἠθικῆς εἰς τὸ Κολλέγιον τῆς Γαλλίας. Συνειργάσθη εἰς τὴν «Ἱστορίαν τοῦ Ἰουλίου Καίσαρος» τοῦ Ναπολέοντος Γ' καὶ ἐγένετο τῷ 1868 γενικὸς διευθυντὴς τῶν ἀρχείων τοῦ κράτους, εἶχε δ' ἐκλεγῆ ἀπὸ τοῦ 1857 μέλος τῆς Ἀκαδημίας τῶν ἐπιγραφῶν καὶ τῶν γραμμάτων. Ἐκ τῶν πολυαρίθμων ἔργων του, ἐν τοῖς ὁποίοις καταδεικνύεται ἡ μεγάλη του πολυμάθεια καὶ ἡ πολυσχιδής, ἡ ἀληθῶς ἐγκυκλοπαιδική, μόρφωσίς του ἀναφέρονται ἰδίᾳ: «Αἱ νηρηΐδες τοῦ μεσαίωνος» (1843), «Ἱστορία τῶν μεγάλων δασῶν τῆς Γαλατίας καὶ τῆς ἀρχαίας Γαλλίας καὶ ἔρευναι ἐπὶ τῆς ἱστορίας τῶν δα-

Digitized by Google

σῶν τῆς Ἀγγλίας, Γερμανίας καὶ Ἰταλίας κλπ.» (1850). «Ἱστορία τῶν θρησκευμάτων τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος» (1859), «Ψυχολογικαὶ μελέται περὶ τοῦ ὕπνου καὶ τῶν ὀνείρων» (1861), «Δοξασίαι καὶ παραδόσεις τῆς ἀρχαιότητος, αἱ θρησκεῖαι τῶν Περσῶν καὶ τῶν Ἰνδῶν» (1863) κλπ. —Ω.

**— Μωρὺ** (Maury), ***Ἰωάννης-Σιφφρὲν*** (Siffrein). Γάλλος καρδινάλιος, συγγραφεὺς καὶ πολιτικὸς ρήτωρ (1746—1817). Ἐσπούδασεν ἐν Ἀβινιόν, ἐγκατεστάθη δὲ κατόπιν εἰς Παρισίους, ὅπου ἐγένετο ταχέως γνωστὸς ἐξ ἑνὸς ἐπικηδείου ἐγκωμίου του εἰς τὸν ἀποθανόντα δελφῖνον καὶ ἑνὸς πανηγυρικοῦ του εἰς τὸν βασιλέα Στανίσλαον (1766). Γενόμενος ἱερεύς, ἐξεφώνησεν ἐνώπιον τῆς αὐλῆς λόγον πανηγυρικὸν τοῦ ἁγίου Λουδοβίκου (1772) καταθέλξαντα τοὺς ἀκροατάς του, οἵτινες δὲν συνεκρατοῦντο ἀπὸ τοῦ νὰ τὸν διακόπτουν διὰ χειροκροτημάτων. Αἱ ρητορικαί του αὗται ἐπιτυχίαι τοῦ προσεπόρισαν τὸ ἀββαεῖον τῆς Φρενὰντ καὶ τὸν τίτλον τοῦ ἀκαδημαϊκοῦ (1785). Διατελῶν κατόπιν βουλευτὴς εἰς τὴν Συνέλευσιν τῶν Τάξεων, ἔφυγε πρὸς καιρὸν εἰς τὸ ἐξωτερικὸν μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς Βαστίλλης, ἀλλ' ἐπανῆλθε ταχέως καὶ ἀνεδείχθη ἐν τῇ ἐθνοσυνελεύσει ὡς ὁ κατ' ἐξοχὴν ρήτωρ τῆς δεξιᾶς, ὑπερασπίζων τὰς ἀπόψεις τοῦ βασιλέως, τὰ προνόμια τοῦ κλήρου καὶ τὰς κτήσεις τῆς Ἐκκλησίας. Παρὰ τὰς συχνὰς ρητορικάς του ὑπερβολάς, ἡ εὐγλωττία του κατέπλησσεν, ἡ δὲ ψυχραιμία καὶ ἡ ἑτοιμότης του ἀπέμειναν παροιμιώδεις. Μετὰ τὴν ἀνακήρυξιν τῆς δημοκρατίας ἐγκατέλιπε τὴν Γαλλίαν καὶ μετέβη εἰς Ρώμην, ὅπου ὁ πάπας Πίος ΣΤ' τὸν διώρισεν ἐπίτιμον ἐπίσκοπον Νικαίας, νούντσιον κατὰ τὴν στέψιν τοῦ αὐτοκράτορος Φραγκίσκου Β' εἰς Φραγκφούρτην, ἐπίσκοπον τοῦ Μοντεφιασκόνε καὶ τέλος καρδινάλιον (1794). Ὑπὸ τοῦ Ναπολέοντος διωρίσθη κατόπιν ἀρχιεπίσκοπος Παρισίων, ὁ δὲ Μωρὺ ἀπεδέχθη τὸ ἀξίωμα τοῦτο παρὰ τὴν θέλησιν καὶ ἄνευ τῆς ἐγκρίσεως τοῦ πάπα. Μετὰ τὴν παλινόρθωσιν τῶν Βουρβώνων ἔφυγεν εἰς Ρώμην, ὅπου ὅμως ἐνεκλείσθη εἰς τὸ φρούριον τοῦ Ἁγίου Ἀγγέλου καὶ δὲν ἐπανέκτησε τὴν ἐλευθερίαν του παρὰ μόνον ἀφοῦ παρῃτήθη τοῦ ἐπισκοπικοῦ ἀξιώματος. Παρεκτὸς τοῦ περιφήμου συγγράμματός του: «Ἐγχειρίδιον τῆς ἀπὸ τοῦ ἄμβωνος ρητορικῆς», ἐδημοσιεύθη ἐπίσης (1842) μία συλλογὴ λόγων καὶ πανηγυρικῶν του ὑπὸ τὸν τίτλον «Ἐκλογὴ ἔργων τοῦ καρδιναλίου Μωρύ». — Ω.

**— Μωρὺ** (Maury), ***Ἰωάννης***. Γάλλος φιλέλλην κατελθὼν εἰς τὴν ἐπαναστατημένην Ἑλλάδα καὶ λαβὼν μέρος εἰς διαφόρους μάχας καὶ ἰδίως ἐν Χαϊδαρίῳ πρὸ τῶν Ἀθηνῶν καὶ κατὰ τὴν πολιορκίαν τῆς Ἀκροπόλεως. Ἐγκατασταθεὶς ἐν Ἀθήναις ἀπέθανεν αὐτόθι.

**Μώρυα** (Morya) *[Γεωγρ.]*. Πριγκιπάτον τῶν Δυτικῶν Ἰνδιῶν εἰς τὴν χερσόνησον τοῦ Κάτς, ὑπαγόμενον εἰς τὴν διοίκησιν τῆς Βομβάης, φόρου ὑποτελὲς εἰς τὴν Ἀγγλίαν. Ἔκτασις 2.700 τετραγ. χιλιομ. Κάτ. 91.000. Πρωτεύουσα ἡ *Μώρυα* ἢ *Μόρβι*.

**μωρώνω,** ἀόρ. ἐμώρωξα· Ἰδιωματ., ἐπὶ τῶν βρεφῶν, καθησυχάζω, καταπραΰνω, κάμνω τὸ μικρὸ νὰ μὴ κλαίῃ: «μώρωξέ το τὸ παιδί», «δὲ μωρώνει μὲ τίποτε».

**μωσαϊκὴ** (ἡ) (mosaïque) *[Φυτοπαθολ.]*. Φυτονόσος προσβάλλουσα τὰ γεώμηλα, τὴν τομάταν, τὸν καπνόν, τὸ σακχαροκάλαμον κ.λ.π. Ἡ μωσαϊκὴ ὀφείλεται, κατὰ τὰς μέχρι σήμερον μελέτας, εἰς εἰδικοὺς διηθητοὺς ἰούς, οἱ ὁποῖοι μεταδίδονται διὰ τῶν σπόρων, τῆς κόπρου καὶ δι' ἡμιπτέρων νυσσόντων (κυρίως ἀφίδων). Οὐδεμία θεραπεία τῆς νόσου ὑπάρχει. Δυνάμεθα νὰ προλάβωμεν τὴν ἐμφάνισίν της διὰ διαλογῆς τοῦ σπόρου, χρήσεως διὰ σπορεῖα χώματος καὶ κόπρου καθαρᾶς καὶ ἐκριζώσεως καὶ καύσεως τῶν προσβεβλημένων φυτῶν. Ε. Τ. Ε.

**Μωσαϊκὸν** *[Γεωγρ.]*. Χωρίον τῆς κοινότητος Ἀμβροσίας τῆς ἐπαρχίας Κομοτινῆς τοῦ νομοῦ Ροδόπης. Κάτ. (1928) 249. Χ. Δ.

**μωσαϊκὸν** (τό). Τὸ *ψηφιδωτὸν* (βλ. λ.) ‖ σύνθεμα ἐκ πλείστων μέν, ἐλαχίστων δὲ καθ' ἑαυτὰ ἀνομοιογενῶν στοιχείων ‖ συνήθως ἐπὶ κακῷ, σύμφυρμα. Ὁ ὅρος ἐναλλάσσεται μὲ τὸν τοῦ *ψηφιδωτοῦ* δι' ὅ,τι ἀφορᾷ τὰ παλαιότερα, ἐπεκράτησε δὲ δι' ὅ,τι ἀφορᾷ τὰ νεώτερα.

— *[Ἐγκυκλ.]* Τὰ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους δομούμενα *μωσαϊκὰ* συνίστανται κυρίως ἐκ τεμαχίων κεραμεικῶν εἴτε μαρμάρων ἢ ἄλλων λίθων εἴτε ὑάλου, συγκολλωμένων πρὸς ἄλληλα διὰ κονίας τινός. Ἡ ὕαλος παράγεται διὰ προσθήκης εἰδικῶν μεταλλικῶν οὐσιῶν εἰς τὰ συνήθη πρῶτα ὑλικὰ τῆς ὑαλουργίας ἐπὶ σκοπῷ ἐπαυξήσεως τῆς πυκνότητος καὶ σκληρότητος τοῦ προϊόντος καὶ ἀναλόγου χρωματισμοῦ αὐτοῦ (σμάλτα). Χύνεται εἰς πλακοῦντας ἢ ράβδους, ἀπὸ τῶν ὁποίων κόπτονται τὰ τεμάχια (τέσσερα), τοποθετούμενα ἐν τῷ μωσαϊκῷ μετά τινος τῶν ἐκ τμήσεως ἐπιφανειῶν ἐν τῷ προσώπῳ. Λεπτὰ φύλλα μετάλλου, χρυσοῦ ἢ ἀργύρου π. χ., δύνανται νὰ τοποθετηθῶσιν ἐπὶ τοῦ πλακοῦντος ἢ τῆς ράβδου τῆς ὑάλου, ἐπ' αὐτοῦ νὰ χυθῇ νέον λεπτὸν στρῶμα ὑάλου καὶ τὸ σύνολον νὰ ἀνατακῇ ἐν καμίνῳ πρὸς λῆψιν τῶν διακριομένων ὡς μεταλλικῶν τεσσέρων. Μωσαϊκὰ ἐξ ὑάλου χρησιμοποιοῦνται κυρίως εἰς διακόσμησιν τοίχων καὶ ὀροφῶν. Τὰ γνωστὰ ὑπὸ τὴν διάκρισιν Terrazzo μωσαϊκὰ δαπέδων εἶναι διαφόρων συστάσεων μετὰ ψηφίδων μαρμάρων ἢ ἄλλων σκληρῶν πετρωμάτων ὡς βάσεως. Τὸ βενετικὸν ἐπίστρωμα ἔχει ὡς κολλητικὴν ὕλην καλὸν ἀσβεστοκονίαμα, ἐπιτίθεται δὲ ἐπὶ ὑποστρώματος ἐκ θραυσμάτων κεράμων, φυράματος ἀσβέστου καὶ ἀλεύρου ὀπτοπλίνθων. Τὸ ρωμαϊκὸν μωσαϊκὸν (Stuc-pierre) συνίσταται ἐκ ψηφίδων πετρωμάτων συγκολλωμένων δι' ὑδραυλικοῦ κονιάματος. Ἡ Pietra nova ἐκ ψηφίδων λευκοῦ ἀσβεστολίθου μετὰ λευκῆς κονίας Πορτλάνδης. Αἱ κονίαι δύνανται νὰ χρωματισθῶσι διὰ γεωδῶν χρωμάτων. Αἱ ἐπιστρώσεις γίνονται εἰς δάπεδα ἄνευ ἁρμῶν ἐπὶ ὑποστρώματος ἐκ φυρτοῦ κονιάματος. Σχέδια διακοσμητικὰ γίνονται δι' ἰχναρίων ἐκ ξύλου, ἅτινα ἀφαιροῦνται μετὰ τὴν πῆξιν, τὸ δὲ ἀπομένον κενὸν πληροῦται διὰ νέου ἀναλόγου μίγματος. Τὰ μωσαϊκὰ εἶναι μετὰ τὴν σκλήρυνσιν αὐτῆν ἐπιδεκτικὰ λειάνσεως καὶ στιλβώσεως. Ἀντὶ δαπέδων ἄνευ ἁρμῶν χρησιμοποιοῦνται πρὸς ἐπιστρώσεις καὶ πλακίδια ὅμοιως παραχθέντα. Ἡ κατὰ τοὺς τελευταίους χρόνους διάδοσις τῶν μωσαϊκῶν ἐν τῇ δομικῇ εἶναι σημαντική. Α. Ι. Σ.

**μωσαϊκός,** —*ή*, —*όν*· ὁ ἀνήκων ἢ ἀναφερόμενος εἰς τὸν *Μωϋσῆν* ‖ ὁ ἀναφερόμενος εἰς τὸ *μωσαϊκόν*.

**— μωσαϊκὰ ᾠά.** Ἐκλήθησαν οὕτω ὑπὸ τοῦ Χάϊδερ τὰ ᾠὰ ἐκεῖνα, εἰς τὰ ὁποῖα τὰ ἐκ τῆς κατατμήσεως αὐτῶν, μετὰ τὴν γονιμοποίησίν των, προερχόμενα πρῶτα κύτταρα εἶναι ἄνισα καὶ διάφορα μεταξύ των. Τοιαῦτα ᾠὰ εἶναι τὰ ᾠὰ τοῦ βατράχου, ὡς καὶ πολλῶν μαλακίων, σκωλήκων κλπ. (βλ. *ὀντογένεια, κατάτμησις* κλπ.). Θ. ΒΛ.

**— μωσαϊκὴ κατάτμησις.** Ἡ κατάτμησις τοῦ γονιμοποιηθέντος ᾠοῦ εἰς ἄνισα καὶ ἀνόμοια μεταξύ των κύτταρα, ἐκ τῶν ὁποίων κατόπιν προέρχονται διάφοροι χῶραι τοῦ ἐμβρύου (βλ. *μωσαϊκὰ ᾠά*). Θ. ΒΛ.

**— μωσαϊκὸν δάπεδον** (Mosaic pavement) *[Τεχν.]*. Τὸ σύμβολον τοῦτο, ληφθὲν ἐκ τοῦ ναοῦ τοῦ Σολομῶντος (*Βασιλ.* Α' 6, 36), συμβολίζει τὸν πρόναον αὐτοῦ καὶ ὑπενθυμίζει τὸν πλοῦτον καὶ τὴν ποικιλίαν τῶν θείων δώρων ὡς καὶ τὸ μεταβλητὸν τῆς ἀνθρωπίνης τύχης. Κ. Κ. Κ.

**— μωσαϊκὸς ἄργυρος** *[Χημ. Τεχνολ.]*. Ἀποτελεῖται ἀπὸ 3 μ. βισμουθίου, 3 μ. κασσιτέρου καὶ 1.5 μ. ὑδραργύρου. Χρησιμεύει πρὸς ψευδῆ ἐπαργύρωσιν ὀρειχάλκου καὶ χαλκοῦ, δι' ἐπιτρίψεως τῶν ἀντικειμένων αὐτῶν διὰ κόνεως ἀποτελουμένης ἐξ ἴσων μερῶν τέφρας ὀστῶν καὶ μωσαϊκοῦ ἀργύρου. Κ. Γ. Μ.

**— Μωσαϊκὸς νόμος** *[Παλ. Διαθ.]*. Οὕτω λέγεται τὸ σύνολον τῶν ἐν τῇ Πεντατεύχῳ περιεχομένων διατάξεων, αἵτινες, κατὰ τὴν αὐτόθι ἀποκρυσταλλουμένην συνείδησιν τοῦ ἰσραηλιτικοῦ λαοῦ, ἐδόθησαν εἰς αὐτὸν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ διὰ τοῦ Μωϋσέως. Ἐν τῇ ἁγίᾳ Γραφῇ λέγεται καὶ ἁπλῶς *ὁ νόμος*, δηλαδὴ ὁ κατ' ἐξοχὴν νόμος, καὶ τὴν ὀνομασίαν ταύτην φέρει ἡ Πεντάτευχος τοῦ Μωϋσέως ἀπὸ τοῦ κυριωτάτου περιεχομένου αὐτῆς. Ἡ περὶ θείας καταγωγῆς τοῦ Μωσαϊκοῦ νόμου ἐκδοχὴ τῆς ἰσραηλιτικῆς παραδόσεως, ἣν υἱοθέτησε καὶ ἡ χριστιανική, δὲν ἀποκλείει οὐδαμῶς τὴν εὐρεῖαν συμμετοχὴν τοῦ ἀνθρωπίνου παράγοντος εἰς τὴν συγκρότησιν αὐτοῦ (μεγαλοφυΐα, πεῖρα τοῦ Μωϋσέως κλπ.). Θεμελιώδης προϋπόθεσις τῶν νόμων τούτων εἶναι ἡ ἰδέα τῆς θεοκρατίας, καθ' ἣν ὁ ἀνώτατος ἄρχων τοῦ ἰσραηλιτικοῦ λαοῦ εἶναι ὁ Θεός, ὅστις ἐν τῇ δικαιοδοσίᾳ αὐτοῦ ὡς ἀνωτάτου νομοθέτου δίδει τοὺς νόμους εἰς τὸν περιούσιον αὐτοῦ λαόν. Ἀποτέλεσμα δὲ τοῦ θεοκρατικοῦ χαρακτῆρος τοῦ ἰσραηλιτικοῦ πολιτεύματος ἦτο ἡ παρὰ τῷ λαῷ τούτῳ συνύφανσις τοῦ θρησκευτικοῦ μετὰ τοῦ πολιτικοῦ βίου καὶ ἡ ἐν τῇ νομοθεσίᾳ αὐτοῦ συνύφανσις θρησκευτικῶν καὶ ἀστικῶν διατάξεων. Ὡς βάσις τῆς νομοθεσίας ταύτης ὑπόκειται ὁ θρησκευτικὸς καὶ ἠθικὸς περιεχομένου *δεκάλογος*, τῶν ἐντολῶν τοῦ ὁποίου ἀνάπτυξις καὶ ἐφαρμογὴ εἶναι αἱ πολυαριθμόταται διατάξεις αὐτῆς. Εἶναι δὲ αἱ διατάξεις αὗται, ἀναλόγως τοῦ περιεχομένου αὐτῶν, τριῶν εἰδῶν, θρησκευτικοηθικαί, τελετουργικαὶ καὶ ἀστικαί. Αἱ ἠθικαὶ διατάξεις τοῦ μωσαϊκοῦ νόμου συμπίπτουσι πρὸς τὰ παραγγέλματα τοῦ λεγομένου φυσικοῦ (ἠθικοῦ) νόμου. Διὰ τῶν τελετουργικῶν διατάξεων, αἵτινες καταλαμβάνουσι μέγιστον μέρος τῆς νομοθεσίας ταύτης, ρυθμίζεται ἡ ἐξωτερικὴ καὶ ἰδίᾳ ἡ δημοσία λατρεία τοῦ Ἰσραήλ. Αἱ δὲ λοιπαὶ διατάξεις ἀποτελοῦσιν οἱονεὶ τὸν ἀστικὸν κώδικα τοῦ λαοῦ τούτου. Αἱ ποικίλαι αὗται διατάξεις, δι' ὧν κατὰ ταῦτα ἐρρυθμίζετο ὁ ὅλος βίος τοῦ ἰσραηλιτικοῦ λαοῦ καὶ προσεδίδετο εἰς αὐτὸν κατ' ἐξοχὴν θρησκευτικὸς χαρακτήρ, δὲν ἐκτίθενται κατὰ συστηματικὴν τάξιν ἐν τοῖς μετὰ τὴν Γένεσιν βιβλίοις τῆς Πεντατεύχου. Ἀφετηρία εἶναι ὁ *Δεκάλογος*, ὅστις καὶ προηγεῖται, ἕπεται τὸ λεγόμενον *βιβλίον τῆς διαθήκης*, ὅπερ εἶναι ἐξήγησις καὶ ἀνάπτυξις τῶν δέκα ἐντολῶν, ἐπακολουθοῦσι δ' αἱ τελετουργικαὶ διατάξεις, αἵτινες καταλαμβάνουσι μέρος τῆς *Ἐξόδου* καὶ τῶν *Ἀριθμῶν* καὶ τοῦ *Δευτερονομίου* καὶ τὸ μέγιστον μέρος τοῦ *Λευιτικοῦ* καὶ συνυφαίνονται ἐνίοτε μετ' ἄλλων διατάξεων. Συγκρινόμενος πρὸς ἄλλας παλαιὰς νομοθεσίας ὁ μωσαϊκὸς νόμος ὑπερέχει αὐτῶν, καθ' ὅσον εἶναι καὶ φιλανθρωπότερος καὶ καθόλου εἰπεῖν ἠθικώτερος, διαπνέεται δὲ καὶ ὑπὸ πνεύματος θρησκευτικοῦ ὑψηλοτέρου.

Ἐνῷ πρὸ τῆς βαβυλωνίου αἰχμαλωσίας ὁ ἰσραηλιτικὸς λαός, ὡς βλέπομεν ἐν τῇ Π. Διαθήκῃ, δὲν ἐδεικνύετο πάντοτε πιστὸς εἰς τὸν Μωσαϊκὸν νόμον, ἀλλὰ πολλάκις, συμφώνως πρὸς τὸ παράδειγμα τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, καὶ μάλιστα πολλῶν βασιλέων, προσεκολλήθη εἰς τὴν εἰδωλολατρείαν, ἐφ' ᾧ καὶ ἠλέγχετο ὑπὸ τῶν προφητῶν, ἀλλ' ὅμως μετὰ τὴν εἰρημένην αἰχμαλωσίαν καὶ ὑπὸ τὴν ἐντύπωσιν τῶν μεγάλων συμφορῶν αὐτοῦ ἐμφανίζεται ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον προσηλωμένος εἰς αὐτόν.

Ὑπὸ τὴν δοθεῖσαν δ' ὅμως ὑπὸ τῶν λεγομένων γραμματέων (νομοδιδασκάλων, νομικῶν) κατεύθυνσιν, ἡ προσοχὴ ἐστράφη μᾶλλον εἰς τὸ γράμμα ἢ εἰς τὸ πνεῦμα τοῦ νόμου καὶ δὴ κυρίως τοῦ τελετουργικοῦ μέρους αὐτοῦ, ἐδημιουργήθη δὲ σὺν τῷ χρόνῳ ἡ διεστραμμένη ἀντίληψις περὶ ἐξωτερικῆς ὑποτελείας εἰς τὸν νόμον ἄνευ συμμετοχῆς τοῦ φρονήματος. Καὶ ὡς ἐὰν μὴ ἤρκει τοῦτο, διὰ τῆς πολυμόχθου ἐργασίας τῶν γραμματέων, τῆς τε ἑρμηνευτικῆς καὶ τῆς ἐπεξεργαστικῆς, διεμορφώθη κατὰ μικρὸν πέριξ τοῦ νόμου ἕτερος νόμος, προφορικὸς τὸ πρῶτον (ἡ λεγομένη παράδοσις τῶν πρεσβυτέρων), ὅστις περιεβλήθη τέλος κῦρος ἴσον ἢ καὶ ἀνώτερον τοῦ βιβλικοῦ καὶ οὕτω τὸ δυσβάστακτον φορτίον τοῦ Μωσαϊκοῦ νόμου κατέστη ἔτι μᾶλλον βαρὺ καὶ ἀνύποιστον, ὡς βλέπομεν καὶ ἐν τῇ Κ. Διαθήκῃ.

Ἀπὸ χριστιανικῆς ἀπόψεως ὁ Μωσαϊκὸς νόμος ἐχρησίμευσεν εἰς τὸ νὰ προπαρασκευασθῇ δι' αὐτοῦ ἡ ἔλευσις τοῦ Μεσσίου, ἣν ἰδέαν κατὰ κλασσικὸν τρόπον ἐκφράζει ἡ ρήτρα τοῦ Ἀπ. Παύλου «ὁ νόμος παιδαγωγὸς ἡμῖν γέγονεν εἰς Χριστὸν» (Γαλατ. γ' 24). Π. Ι. Μ.

— *[Ἑβραιολ.]* Ὁ *Μωσαϊκὸς νόμος* διετήρησε καὶ μεταχριστιανικῶς ὅλην τὴν βαρύτητά του διὰ τὴν ἐσωτερικὴν ζωὴν τοῦ ἰουδαϊσμοῦ μὲ τὴν οὐσιώδη διαφορὰν ὅτι ἡ περὶ τοὺς πρώτους αἰῶνας π. Χ. ἀρχίσασα νομολογικὴ ἀνάπτυξις τοῦ προφορικοῦ καλουμένου νόμου («Τορὰ σὲ μπε' αλ' πὲ») διηύρυνεν ἐπὶ τὸ ἐλαστικώτερον, καὶ κατὰ συνέπειαν ἐπὶ τὸ φιλελευθερώτερον, τὸ νομολογικὸν περιεχόμενόν του. Ἡ προοδευτικὴ ἀντίληψις τῶν Φαρισαίων, ἀντιθέτως πρὸς τὴν κοινῶς ἐπικρατοῦσαν γνώμην, ἦλθεν εἰς ρῆξιν πρὸς τὴν ἀκαμψίαν καὶ τὴν συντηρητικότητα τοῦ Σαδδουκαϊσμοῦ, ὅστις οὐδεμίαν ἠνείχετο ἑρμηνείαν τοῦ μωσαϊκοῦ κειμένου, ἀντίθετον πρὸς τὴν ἀρχαιόθεν καθιερωμένην. Οὕτω ἀνεπτύχθη ἡ ἀπέραντος διακλάδωσις τῆς «Ἀλαχὰ» (βλ. λ.), ἥτις ἐρειδομένη ἐπὶ τοῦ γράμματος τοῦ μωσαϊκοῦ κειμένου προσπαθεῖ νὰ προσδώσῃ λύσεις εἰς προβλήματα συγχρονισμένης φύσεως, ἅτινα οὐδὲ κἂν ἐπρόβαλλον πρὸ τῶν ὀμμάτων τῶν προηγουμένων γενεῶν λόγῳ τῆς διαφόρου συνθετικότητος τῆς θρησκευτικῆς ζωῆς τοῦ Ἰσραήλ. Ἡ νέα ὅμως σύνθεσις τοῦ ἰουδαϊσμοῦ, μετὰ τὴν ἀπώλειαν τῆς ἐθνικῆς τῶν Ἰσραηλιτῶν ἀνεξαρτησίας καὶ τὴν ἀπομάκρυνσιν αὐτῶν ἐκ τῆς ἐθνικῆς των κοιτίδος, ἐπέβαλε τὴν ἀντιμετώπισιν νέου προβλήματος, τοῦ ποία τουτέστι δέον νὰ εἶναι ἡ σχέσις τοῦ μωσαϊσμοῦ ὡς θρησκείας, ἔναντι τοῦ νομικοῦ καθεστῶτος (ντινὰ ντεμαλχουτὰ) τῆς χώρας, ἐν ᾗ διαβιοῖ ἑκάστη ἰουδαϊκὴ παροικία. Ἡ ἀπάντησις ἐδόθη ἐκ μέρους τοῦ Μὰρ Σαμουὴλ φθεγγομένου ὅτι: «ὁ νόμος τοῦ κράτους εἶναι καθ' ὅλα νόμος». Παλαιότερον ἐρρυθμίζοντο κατὰ τὸν Μωσαϊκὸν νόμον οὐ μόνον τὰ τελετουργικὰ καὶ θρησκευτικὰ καθήκοντα τὰ ἀναγόμενα εἰς τὴν καζουϊστικήν, ἀλλὰ καὶ πᾶσαι αἱ σχέσεις αἱ ἀναφερόμεναι εἰς τό τε οἰκογενειακόν, κληρονομικόν, ἐμπράγματον καὶ ποινικὸν δίκαιον. Ἐν τούτοις κατὰ τοὺς τελευταίους αἰῶνας ἠτόνησε τὸ ποινικόν, καὶ αἱ μεταξὺ τῶν ἀτόμων διαφοραὶ ἐλύοντο ὑπὸ τῶν κρατικῶν δικαστηρίων. † Γ. ΕΛΙΓΙΑ

**— μωσαϊκὸς χρυσὸς** *[Χημ. Τεχνολ.]*. Καλεῖται οὕτω καταλλήλως παρασκευαζόμενος θειοῦχος κασσίτερος. Διὰ τὴν παρασκευὴν αὐτοῦ στερεὸν ἀμάλγαμα συγκείμενον ἐκ 12 μ. κασσιτέρου καὶ 6 μ. ὑδραργύρου κονιοποιεῖται, μείγνυται μετὰ 7 μ. ἀνθέων θείου καὶ 6 μ. χλωριούχου ἀμμωνίου καὶ τὸ μεῖγμα θερμαίνεται ἐντὸς ὑαλίνων φιαλῶν φερομένων ἐπὶ ἀμμολούτρου ἐπὶ 3—4 ὥρας, ἐφ' ὅσον ἐκλύονται ἀτμοὶ καὶ εἶτα θερμαίνεται μέχρις ἠπίας ἐρυθροπυρώσεως. Ἀκολούθως ἀφίνονται αἱ φιάλαι ὅπως ψυχθῶσι, θραύονται καὶ λαμβάνεται ὁ ἐντὸς αὐτῶν σχηματισθεὶς θειοῦχος κασσίτερος. Ὁ μωσαϊκὸς χρυσὸς ἀποτελεῖ χρυσοκίτρινα, διαφανῆ, στιλπνὰ πετάλια, λιπαρᾶς ἀφῆς, εἰδ. βά-

Digitized by Google

ρους 4.6, λίαν μόνιμα, μὴ προσβαλλόμενα ὑπὸ ὑδροχλωρικοῦ ὀξέος, ὅπερ ἀπ' ἐναντίας διαλύει τὸν διὰ καθιζήσεως παρασκευαζόμενον θειοῦχον ψευδάργυρον. Καὶ τὸ νιτρικὸν ὀξὺ σχεδὸν δὲν προσβάλλει αὐτόν. Ὁ μωσαϊκὸς χρυσὸς εὑρίσκει ἐφαρμογὴν ὡς χρῶμα τῆς ζωγραφικῆς πρὸς ψευδεῖς ἐπιχρυσώσεις γυψίνων ἀντικειμένων, χάρτου, χαρτονίου, ξύλου κλπ. Κ. Γ. Μ.

**μωσαϊσμὸς** (ὁ)· τὸ δόγμα τοῦ Μωϋσέως, ἡ νομοθεσία τοῦ Μωϋσέως.

**Μωσκατὶν** (Muscatine) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ τῆς Ἀϊόβα. Κάτ. 16.178. Εἶναι πρωτεύουσα ὁμωνύμου κομητείας καὶ κεῖται ἐπὶ τῆς δεξιᾶς ὄχθης τοῦ Μισσισιπῆ. Ἔχει σημαντικὸν ἐμπόριον, ξυλουργεῖα, ναυπηγεῖα μικρῶν πλοίων κλπ. Μ. Δ. Β.

**Μωσκῆγκον** (Muskegon) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ Μίχιγκαν, παρὰ τὰς ἐκβολὰς τοῦ ποταμοῦ Μωσκῆγκον εἰς τὴν λίμνην Μίχιγκαν. Κάτ. 43.088. Εἶναι σημαντικὸν σιδηροδρομικὸν κέντρον καὶ πόλις βιομηχανική, μὲ χυτήρια, ἀλευρομύλους, ἐργοστάσια μηχανημάτων κτλ. Μ. Δ. Β.

**Μωσκότζη** (Muskogee) *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῶν Ἡνωμένων Πολιτειῶν τῆς Β. Ἀμερικῆς, ἐν τῇ πολιτείᾳ Ὀκλαχόμα. Κάτ. 30.277. Κεῖται παρὰ τὸν ποταμὸν Ἀρκανσάς, ΒΑ. τῆς πόλεως Ὀκλαχόμα. Παρ' αὐτὴν ὑπάρχουν σημαντικὰ γαιανθρακωρυχεῖα. Μ. Δ. Β.

**Μωσλεμᾶς.** Ἄραψ στρατηγὸς (βλ. λ. *Μασαλμᾶς*).

**Μῶσον** (Mawson), *Θωμᾶς*. Σύγχρονος Ἄγγλος ἀρχιτέκτων καὶ πολεοδόμος. Εἰδικευμένος εἰς τὴν ἐκτέλεσιν σχεδίων πόλεων, ἐκλήθη ὑπὸ τῆς ἑλληνικῆς κυβερνήσεως καὶ ἐξεπόνησε σχέδια τῶν πόλεων Ἀθηνῶν καὶ Θεσσαλονίκης, τὰ ὁποῖα ὅμως ἔμειναν ἀνεφάρμοστα, ἰδίως τὸ τῶν Ἀθηνῶν, ὅπερ κατηδάφιζε τὸ μεγαλύτερον μέρος τῆς πόλεως, διὰ νὰ δημιουργήσῃ ἐπ' αὐτῶν ἐντελῶς νέαν πόλιν. Ἐπίσης ἐχάραξε καὶ τὰ σχέδια τῶν πόλεων Κάλγκαρυ, Μπάνφ, Βανκοῦβερ, Μπόλτον, Νόρθαμπτον, Ἐξέτερ, Σάουθπορτ κτλ. Κατέγινεν ὡσαύτως καὶ εἰς τὴν δενδροκομίαν καὶ τὴν χάραξιν σχεδίων κήπων εἰς διαφόρους πόλεις τῆς Ἀγγλίας καὶ τοῦ ἐξωτερικοῦ καὶ διετέλεσε πρόεδρος τοῦ ἀγγλικοῦ ἰνστιτούτου σχεδίων πόλεων, μέλος τῆς ἐπιτροπῆς τῶν καλῶν τεχνῶν κτλ. Ἔγραψε μεταξὺ ἄλλων: «Ἡ τέχνη τῆς κατασκευῆς σχεδίων κήπων», «Βιομηχανικὰ χωρία», «Τὸ Μπόρντεν πάρκ τῆς Ὀττάβας», «Ἡ Μπόλτον» κτλ. Μ. Δ. Β.

—**Μῶσον** (Mauson), *σὲρ Ντούγκλας*. Ἄγγλος γεωλόγος, γεννηθεὶς τῷ 1882. Ἀπὸ τοῦ 1929 διατελεῖ καθηγητὴς εἰς τὸ πανεπιστήμιον τῆς Ἀδελαΐδος. Τῷ 1908 ἔλαβε μέρος εἰς τὴν ὑπὸ τὸν Σάκλετον ἀποστολὴν πρὸς ἐξερεύνησιν τοῦ Νοτίου πόλου, κατόπιν δ' ἡγήθη τῆς πρὸς ἐξερεύνησιν τοῦ αὐτοῦ πόλου ἀποσταλείσης (1911—1914) αὐστραλιακῆς ἀποστολῆς. Συνέγραψε διαφόρους μελέτας, ὧν σπουδαιοτέρα: «Εἰς τὴν πατρίδα τῶν χιονοστροβίλων» (1915, 2 τόμ.). Γ. Κ. Γ.

**Μώσπρατ** (Muspratt). —1) ***Ἰάκωβος.*** Ἄγγλος χημικὸς καὶ μεγαλοβιομήχανος, γεννηθεὶς τῷ 1793 εἰς Dublin καὶ ἀποθανὼν τῷ 1886. Τῷ 1823 ἵδρυσεν εἰς τὸ Λίβερπουλ τὸ πρῶτον ἐργοστάσιον σόδας καὶ βραδύτερον μεγάλα χημικὰ ἐργοστάσια εἰς Widnes καὶ Flint. Εἶναι ὁ πρῶτος ὅστις ἐχρησιμοποίησε τοὺς πυρίτας διὰ τὴν παρασκευὴν τοῦ θειικοῦ ὀξέος.

—2) ***Ἰάκωβος Σέρινταν.*** Υἱὸς τοῦ ἀνωτέρω, γεννηθεὶς τῷ 1821 καὶ ἀποθανὼν τῷ 1871. Ἐσπούδασε χημικὸς καὶ εἶναι ὁ ἱδρυτὴς τοῦ Κολλεγίου τῆς Χημείας τῆς Λίβερπουλ (1848). Ἔγραψε περὶ τῆς ἐφηρμοσμένης χημείας «Dictionary» (1853, γερμανικὴ 4η ἔκδοσις 1886). Σ. Γ.

**Μωσσὰκ** (Maussac), ***Φίλιππος-Ἰάκωβος, ντέ***—. Γάλλος ἑλληνιστὴς καὶ κριτικὸς (1590—1650). Ἐσπούδασε φιλολογίαν καὶ περιηγήθη ἱκανὰς πόλεις τῆς Εὐρώπης πρὸς συμπλήρωσιν τῶν σπουδῶν του, συνδεθεὶς μὲ τοὺς ὀνομαστοτέρους σοφοὺς τῆς ἐποχῆς καὶ ἀποκτήσας καὶ αὐτὸς φήμην ὀνομαστοῦ κριτικοῦ καὶ σοφοῦ ἑλληνιστοῦ. Ἐδημοσίευσε μεταξὺ ἄλλων: «Harpocrationis lexicon cum notis» (1614), «Psellus, de lapidum virtibus» (1615), «Aristotelis historia animalium» (1619), μετὰ σχολίων καὶ λατινικῆς μεταφράσεως κ. τ. λ. Μ. Δ. Β.

**Μωτοὺρ** (Mautour), ***Φιλιβέρτος - Βερνάρδος Μορὼ ντὲ*** —. Γάλλος φιλόλογος καὶ ἀρχαιολόγος (1654—1737). Κατέγινε μετὰ ζήλου εἰς τὴν συγκέντρωσιν ἐνδιαφερουσῶν ἀρχαιοτήτων καὶ νομισμάτων καὶ κατεῖχε σπουδαιοτάτην συλλογὴν αὐτῶν. Ἐδημοσίευσεν ἐπίσης διάφορα ἔργα ἀναφερόμενα εἰς τὴν ἀρχαιολογίαν καὶ τὴν μυθολογίαν, ἰδίως τὴν ρωμαϊκήν, καὶ ἦτο μέλος τῆς ἀκαδημίας τῶν Ἐπιγραφῶν. Μεταξὺ τῶν ἔργων του εἶναι: «Παρατηρήσεις ἐπὶ τοῦ μνημείου τοῦ εὑρεθέντος ἐν τῇ μητροπόλει τῶν Παρισίων» (1711), «Νέοι μῦθοι» κλπ. Μ.Δ.Β.

**Μωϋσῆς.** Ἀρχηγός, ἐλευθερωτής, νομοθέτης καὶ προφήτης τῶν Ἰσραηλιτῶν, ἐκ τῶν μεγίστων ἀνδρῶν τῆς παγκοσμίου ἱστορίας, κυρία πηγὴ τοῦ βίου τοῦ ὁποίου εἶναι τὰ 4 τελευταῖα βιβλία τῆς Πεντατεύχου. Κατήγετο ἐκ τῆς φυλῆς Λευῒ καὶ ἦτο υἱὸς τοῦ Ἀμβρὰμ καὶ τῆς Ἰωχαβέδ, γεννηθεὶς ἐν Αἰγύπτῳ κατὰ τὸν χρόνον τῆς σκληρᾶς τῶν Ἰσραηλιτῶν καταδυναστεύσεως ὑπὸ τῶν φαραώ. Ἀρτιγέννητον βρέφος ὄν, ἐκρύβη κατ' ἀρχὰς ὑπὸ τῆς μητρός του, παρὰ τὴν βασιλικὴν διαταγήν, τὴν ἐπιβάλλουσαν ἐξόντωσιν παντὸς γεννωμένου ἄρρενος, ἔπειτα δ' ἐξετέθη παρὰ τὸν ποταμὸν Νεῖλον, ἔνθα εὑροῦσα υἱοθέτησεν αὐτὸν ἡ θυγάτηρ τοῦ φαραώ, ἡ λεγομένη κατά τινα παράδοσιν Θέρμουθις, καὶ ὠνόμασεν αὐτὸν Μωϋσῆν, ὅπερ κατὰ μὲν τὴν ἑβραϊκὴν τῆς λέξεως ἐτυμολογίαν σημαίνει τὸν ἐκ τῶν ὑδάτων διασωθέντα, κατὰ δὲ τὴν αἰγυπτιακὴν δηλοῖ τὸ παιδίον. Ὁ Μωϋσῆς ἐπαιδεύθη ἐν τῇ αἰγυπτιακῇ αὐλῇ, κατὰ τὴν ἰουδαϊκὴν παράδοσιν, «ἐν πάσῃ σοφίᾳ τῶν Αἰγυπτίων», χωρὶς οὔτε τῆς πατρίου πίστεως, οὔτε τῆς ἐθνικῆς του συνειδήσεως νὰ ἀπαλλοτριωθῇ (πρβλ. Πράξεων ζ' 22 καὶ *Φίλωνος* Βίον Μωϋσέως, Α' 606). Ἀνδρωθεὶς ἦλθεν εἰς ἐπικοινωνίαν πρὸς τοὺς καταδυναστευομένους ὁμοφύλους του, ὧν τὰ δεινὰ συνεκίνησαν αὐτόν. Ὅτε δὲ ἀντελήφθη ὅτι ἐγένετο γνωστὸς φόνος διαπραχθεὶς ὑπ' αὐτοῦ κατὰ Αἰγυπτίου τινὸς τύπτοντος Ἰσραηλίτην, ἠναγκάσθη νὰ ἀπομακρυνθῇ τῆς Αἰγύπτου καὶ νὰ προσφύγῃ εἰς τὴν γῆν Μαδιάμ, πρὸς δυσμὰς τοῦ Αἰλανιτικοῦ κόλπου, ἔνθα συνεζεύχθη μετὰ Σεπφώρας, τῆς θυγατρὸς τοῦ ἱερέως τῆς Μαδιὰμ Ἰοθόρ. Ἀλλ' οὔτε ἐν τῇ ξένῃ ταύτῃ χώρᾳ δὲν ἐλησμόνησεν ὁ Μωϋσῆς τὸν λαὸν καὶ τὸν Θεὸν τῶν πατέρων του, ὡς γίνεται δῆλον ἐκ τῶν ὀνομάτων, ἅτινα ἔδωκεν εἰς τοὺς δύο υἱούς του, *Γηρσάμ*, ὅπερ ὑπενθύμιζεν εἰς αὐτὸν ὅτι εἶναι «πάροικος ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ», καὶ *Ἐλιέζερ*, ὅπερ σημαίνει ὁ Θεὸς βοηθός. Ἡμέραν τινά, βόσκων ἐπὶ τοῦ ὄρους Χωρὴβ τὰ πρόβατα τοῦ πενθεροῦ του, προσεκλήθη ὑπὸ τοῦ Θεοῦ διὰ τοῦ ὁράματος τῆς φλεγομένης καὶ μὴ κατακαιομένης βάτου νὰ ἀναλάβῃ τὸ βαρύτατον ἔργον τῆς ἀπελευθερώσεως καὶ εἰς τὴν γῆν Χαναὰν ἐπαναφορᾶς τοῦ λαοῦ του, ὅπερ ἔργον καὶ ἐδέχθη μετὰ πολλοὺς δισταγμούς, ἀφοῦ ἀπεκαλύφθη εἰς αὐτὸν τὸ νέον ὄνομα τοῦ Θεοῦ (Ἰαβὲ) καὶ δὴ ἀφοῦ διεβεβαιώθη καὶ περὶ τῆς παρασχεθησομένης εἰς αὐτὸν ὑπερφυσικῆς συνδρομῆς τοῦ Θεοῦ (Ἐξόδ. γ' 1—δ' 17). Προσλαβὼν δὲ ὡς συνεργάτην, ἐπειδὴ αὐτὸς ἦτο «ἰσχνόφωνος καὶ βραδύγλωσσος», τὸν ἀδελφόν του Ἀαρών, ἐνεφανίσθη εἰς τὸν νέον φαραώ, ὅστις ἦτο πιθανῶς Ἀμένωφις ὁ Β' (1461—1436), καὶ ἐζήτησε παρ' αὐτοῦ τὴν ἄδειαν νὰ ἐπιστρέψῃ εἰς τοὺς Ἰσραηλίτας καὶ νὰ λατρεύσῃ τὸν Θεόν του. Εἰς ἀπάντησιν ὅμως οὗτος διέταξε τὴν συντονωτέραν καταδυνάστευσιν αὐτῶν, μέχρις οὗ, πιεζόμενος ὑπὸ τῶν φοβερῶν «δέκα πληγῶν», δι' ὧν διεπιστώθη εἰς τοὺς Αἰγυπτίους ἡ μεγάλη ὑπεροχὴ τοῦ Θεοῦ τοῦ Ἰσραήλ, ἠναγκάσθη νὰ ἐπιτρέψῃ εἰς τὸν λαὸν τοῦτον νὰ ἐξέλθῃ ἐκ τῆς Αἰγύπτου ὑπὸ τὴν ἀρχηγίαν τοῦ Μωϋσέως. Ἐν τῇ βιβλικῇ παραδόσει ἐμφανίζεται ὁ Μωϋσῆς λαμβάνων πληρεξουσιότητα παρὰ τοῦ Θεοῦ νὰ ἐπιβάλῃ τὰς «πληγὰς» ταύτας διὰ τῆς χρησιμοποιήσεως ὡς ὀργάνου αὐτοῦ («προφήτου») τοῦ Ἀαρών. Ἐπὶ τῇ θαυμαστῇ διὰ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης διαβάσει, ἥτις κατὰ τὴν αὐτὴν παράδοσιν ἐπετεύχθη τῇ μεσολαβήσει τοῦ Μωϋσέως, καὶ καθόλου ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ τῶν Ἰσραηλιτῶν, ἐποίησεν οὗτος θερμὴν καὶ ὡραίαν εὐχαριστήριον πρὸς τὸν Θεὸν ᾠδήν: «Ἄσωμεν τῷ Κυρίῳ ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται», ἥτις ψαλεῖσα τότε ὑφ' ὅλου τοῦ λαοῦ, προεξαρχούσης τῆς ἀδελφῆς τοῦ Μωϋσέως Μαριάμ, μετὰ τυμπάνων καὶ χορῶν, φαίνεται ὅτι ἐπηυξήθη βραδύτερον. Βαδίζων ὁ Μωϋσῆς μετὰ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ πρὸς τὸ ὄρος Σινᾶ, ἐδέχθη παρὰ τὸ Ραφιδεὶν τὴν ἐπίσκεψιν τοῦ πενθεροῦ του Ἰοθόρ, ὅστις ἔδωκεν εἰς αὐτὸν πολύτιμον συμβουλὴν πρὸς διευκόλυνσιν τῆς διακυβερνήσεως τοῦ λαοῦ. Ἐπὶ δὲ τοῦ ὄρους Σινᾶ (τῆς νοτίας κορυφῆς τοῦ Χωρὴβ) ἐμεσολάβησε, κατὰ τὴν ἐν τῇ εἰρημένῃ παραδόσει ἀποκεκρυσταλλωμένην ἐθνικὴν συνείδησιν τοῦ Ἰσραήλ, εἰς τὴν ἐν μέσῳ ἐκτάκτων γεγονότων σύναψιν τῆς μεταξὺ τούτου καὶ τοῦ Ἰαβὲ συμφωνίας («διαθήκης») καὶ εἰς τὴν μετάδοσιν τοῦ λεγομένου δεκαλόγου, τοῦ θεμελιώδους νόμου τῆς συμφωνίας ἐκείνης καὶ ἄλλων τινῶν βασικῶν ἀστικῶν διατάξεων, ἃς κατέγραψεν εἰς «τὸ βιβλίῳ τῆς διαθήκης». Κατὰ τὴν αὐτὴν παράδοσιν, ἐντολῇ τοῦ Ἰαβέ, ὁ Μωϋσῆς ἐμερίμνησε περὶ τῆς κατασκευῆς προχείρου καὶ δὴ φορητοῦ ναοῦ, τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, μετὰ τῆς κιβωτοῦ τῆς διαθήκης καὶ τῶν ἄλλων ἐξαρτημάτων αὐτῆς, τῶν Ἰσραηλιτῶν συνεισφερόντων εἰς τοῦτο ὅσα πολύτιμα ἀντικείμενα εἶχον. Βραδύτερον δέ, ἀναλόγως τῶν ἐμφανιζομένων περιστάσεων, συνετάξε ὁ Μωϋσῆς, ἐπὶ τῇ βάσει τῆς ἐπὶ τοῦ Σινᾶ νομοθεσίας, καὶ ἄλλους νόμους ἀστικῆς καὶ τελετουργικῆς φύσεως, ἐντολῇ τοῦ Ἰαβέ, κατὰ τὴν αὐτὴν παράδοσιν (βλ. λ. *Μωσαϊκὸς νόμος*). Περὶ δὲ τὰς ἀρχὰς τοῦ δ' ἔτους ἀπὸ τῆς ἐξόδου ἐξ Αἰγύπτου, μετὰ τὴν ἐπιθεώρησιν καὶ ἀρίθμησιν τοῦ λαοῦ, ἀνεχώρησεν ὁ Μωϋσῆς μετ' αὐτοῦ ἐκ τοῦ Σινᾶ καὶ ἐσυνέχισε τὴν πρὸς τὴν γῆν τῆς ἐπαγγελίας διὰ μέσου τῆς ἐρήμου Φαρὰν ἐπίπονον καὶ κινδυνώδη πορείαν αὐτοῦ μέχρι τῶν προθύρων τῆς γῆς Χαναάν, τῆς Κάδης Βαρνῆ. Δυσπιστήσας ὅμως ὁ λαὸς ἐκεῖ περὶ τοῦ δυνατοῦ τῆς καταλήψεως τῆς χώρας ταύτης, ἐστασίασε κατὰ τοῦ Μωϋσέως καὶ τοῦ Ἀαρὼν καὶ ἀνεζήτησε νέους ἀρχηγούς, οἵτινες θὰ ἐπανῆγον αὐτὸν εἰς τὴν Αἴγυπτον· ἐφ' ᾧ καὶ παρὰ τὴν κατανυκτικωτάτην μεσιτείαν τοῦ Μωϋσέως κατεδικάσθη οὗτος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, κατὰ τὴν βιβλικὴν παράδοσιν, νὰ μὴ εἰσέλθωσιν εἰς τὴν γῆν τῆς ἐπαγγελίας αἱ ἄνω τῆς ἡλικίας τῶν 20 ἐτῶν γενεαὶ αὐτοῦ. Ἀποτέλεσμα δὲ τῆς καταδίκης ταύτης ἦτο ἡ ἐπὶ 38 ἔτη περιπλάνησις τοῦ λαοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καθ' ὅλον τὸν χρόνον τῆς μακρᾶς ταύτης ἐπὶ κεφαλῆς τῶν Ἰσραηλιτῶν πορείας διὰ μέσου τῶν ἐρήμων εἶχε ν' ἀντιμετωπίσῃ ὁ Μωϋσῆς ὄχι μόνον ἐξωτερικοὺς κινδύνους καὶ πολυειδεῖς στερήσεις, ἀλλὰ καὶ διαρκεῖς γογγυσμοὺς καὶ ἀντιζηλίας, ὧν δὲν ἔμειναν ἀμέτοχοι οὐδ' αὐτοὶ οἱ ἀδελφοί του, καὶ στάσεις τοῦ δυσπειθαρχήτου καὶ δυσκυβερνήτου τούτου λαοῦ. Τοὺς παντοίους δὲ τούτους κινδύνους ἀντεμετώπισεν ἐπιτυχῶς μετὰ τῆς θαυμαστῆς πραότητος, τῆς συνέσεως καὶ τῆς ἀκραδάντου εἰς τὸν Θεὸν πίστεως αὐτοῦ. Μετὰ τὴν ἔκτισιν τῆς ποινῆς τοῦ λαοῦ, ὁ Μωϋσῆς μετὰ πολλοὺς ἀγῶνας, οὓς διεξήγαγε βοηθούμενος καὶ ὑπὸ Ἰησοῦ τοῦ Ναυῆ ἐναντίον τῶν Ἀμορραίων, τῶν Μαδιανιτῶν κ. ἄ. κατέλαβε τὴν πρὸς ἀνατολὰς τοῦ Ἰορδάνου χώραν. Ὑπῆρξεν ὅμως καὶ αὐτὸς θῦμα τοῦ σκληροτραχήλου λαοῦ του, παρασυρθεὶς ἐν δυσκολωτάτῃ τινὶ στιγμῇ εἰς δυσπιστίαν πρὸς τὸν Θεόν, κατὰ τὴν βιβλικὴν παράδοσιν (Ἀριθμ. κζ' 14, Ψαλμοὶ ρε' 33) καὶ τιμωρηθεὶς ἐπὶ τούτῳ ὑπ' αὐτοῦ νὰ μὴ εἰσέλθῃ μηδὲ αὐτὸς εἰς τὴν γῆν τῆς ἐπαγγελίας, ἣν περίλυπος ἐθεάθη μακρόθεν ἐκ τοῦ ὄρους Ναβαῦ. Ἐν ταῖς στέππαις τῆς Μωὰβ ὁ Μωϋσῆς, κατὰ τὰς παραμονὰς τοῦ θανάτου του, ὑπέμνησεν εἰς τὸν λαὸν τὸ ἔσχατον τὰς πρὸς αὐτὸν εὐεργεσίας τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ θερμῶν παραινετικῶν λόγων προσεπάθησε νὰ ἐξηγήσῃ καὶ ἐντυπώσῃ εἰς αὐτὸν τὰ κυριώτερα σημεῖα τῆς θείας ἀποκαλύψεως (Δευτερονόμιον) καὶ ἔδωκεν εἰς αὐτὸν τὰς τελευταίας παραγγελίας. Ἀφοῦ δὲ κατέστησε διάδοχον αὐτοῦ τὸν Ἰησοῦν τοῦ Ναυῆ καὶ ἔψαλε τὸ κύκνειον αὐτοῦ ᾆσμα πρὸς τὸν Θεὸν (Δευτερον. λβ') καὶ ηὐλόγησε τὰς δώδεκα φυλάς, ἀπέθανεν ἐν ἡλικίᾳ 120 ἐτῶν ἐπὶ τῆς κορυφῆς Φασγὰ τοῦ ὄρους Ναβαῦ καὶ ἐτάφη ἐν τόπῳ, ὅστις κατ' αὐτὴν τὴν Γραφὴν παρέμεινεν ἄγνωστος (Δευτερ. λδ' 6). Ἡ σκοτεινὴ αὐτὴ περὶ τῆς ταφῆς τοῦ Μωϋσέως μαρτυρία τῆς Βίβλου ἔδωκε τὸ πάλαι τροφὴν εἰς ποικίλους θρύλους (βλ. λ. *Μιχαὴλ* καὶ λ. *Μωϋσέως ἀνάληψις*) καὶ κατὰ τοὺς νεωτέρους χρόνους εἰς παντοίας εἰκασίας, ἐξ ὧν ἀναφέρομεν τὴν τοῦ συγχρόνου Γερμανοῦ ἑρμηνευτοῦ E. Sellin, ἰσχυριζομένου ὅτι ὁ Μωϋσῆς θὰ ἐθανατώθη ὑπὸ τῶν Ἰσραηλιτῶν.

Εἰς τὸν Μωϋσῆν ἀποδίδεται ὑπὸ τῆς βιβλικῆς καὶ τῆς μεταγενεστέρας ἰουδαϊκῆς, ὡς καὶ ὑπὸ τῆς χριστιανικῆς παραδόσεως ἡ συγγραφὴ τῆς Πεντατεύχου. Ἐν δὲ τῷ Ψαλτηρίῳ φέρεται καὶ ψαλμός τις (ὁ πθ') ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ ἀνδρὸς τούτου. Ἐν τῇ συνειδήσει τοῦ ἰσραηλιτικοῦ λαοῦ, τῇ ἀποκρυσταλλουμένῃ ἐν τῇ Παλαιᾷ Διαθήκῃ, ὁ ἀνὴρ οὗτος, ὅστις ὑπῆρξεν ὁ συνετός, γενναῖος καὶ μεγαλόψυχος ἡγέτης καὶ ἐλευθερωτὴς καὶ νομοθέτης αὐτοῦ καὶ ὁ ἐμπεπνευσμένος διερμηνευτὴς καὶ ἐκτελεστὴς τῶν θείων βουλῶν, ἐθεωρήθη πάντοτε ὡς ὁ μέγιστος τῶν προφητῶν τῆς Παλαιᾶς Διαθήκης (Δευτερονομ. λδ' 10). Καὶ αὐτὴ δὲ ἡ ἀρνητικὴ κριτικὴ (*Βελχάουζεν* κλπ.), καίπερ ὑποβάλλουσα εἰς αὐστηρότατον καὶ αὐθαιρετώτατον πολλάκις ἔλεγχον τὰς σχετικὰς βιβλικὰς διηγήσεις, ὧν πολλὰς ἐκδέχεται ὡς θρύλους, ἐξαιρέσει ἐλαχίστων τινῶν λογίων ἀρνουμένων αὐτὴν τὴν ἱστορικότητα τοῦ Μωϋσέως, θεωρεῖ αὐτὸν ὡς μέγαν ἄνδρα, ὡς δημιουργὸν τοῦ ἰσραηλιτικοῦ ἔθνους, ὡς νομοθέτην καὶ δὴ ὡς μεγίστην θρησκευτικὴν προσωπικότητα, ἥτις δῆθεν ἀνύψωσε τὴν θρησκείαν τῶν ἰσραηλιτικῶν φυλῶν ἀπὸ τοῦ πολυδαιμονισμοῦ κλπ. εἰς τὸν λεγόμενον ἑνοθεϊσμὸν δι' ἐπιβολῆς τοῦ Ἰαβὲ ὡς ἐθνικοῦ αὐτῶν Θεοῦ.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *Rawlinson*, «Moses, his life and times» (1887).—*Weiss*, «Moses und sein Volk» (1885).—*Hoberg*, «Moses und der Pentateuch» (1904).—*Gressmann*, «Moses und seine Zeit» (1913).—*E. Sellin*, «Mose» (1922).—*Sanda*, «Moses und der Pentateuch» (1924). Π. Ι. ΜΠΡΑΤΣΙΩΤΗΣ

— ***Μωϋσέως ἀνάληψις*** *[Ἰουδ. Φιλολ.]*. Ἀπόκρυφον ἰουδαϊκὸν βιβλίον, γραφὲν κατὰ τὸν Α' μ. Χ. αἰῶνα καὶ δὴ πιθανῶς ἑβραϊστί, ἔπειτα δὲ μεταφρασθὲν ἑλληνιστὶ καὶ ἐντεῦθεν λατινιστί, ἀλλὰ μὴ σῳζόμενον ἐν οὐδεμιᾷ γλώσσῃ ὁλόκληρον. Ἐν τῷ σῳζομένῳ τμήματι αὐτοῦ ἐμφανίζεται ὁ Μωϋσῆς προλέγων εἰς τὸν διάδοχόν του Ἰησοῦν τοῦ Ναυῆ τὰς μελλούσας τύχας τοῦ Ἰσραήλ. Ἡ κυρία ὑπόθεσις τοῦ βιβλίου, δηλαδὴ ἡ ἀνάληψις τοῦ Μωϋσέως, περιελαμβάνετο ἐν τῷ μὴ σῳζομένῳ β' μέρει τοῦ βιβλίου, ἔνθα ἐγένετο λόγος περὶ τῆς μεταξὺ ἀρχαγγέλου Μιχαὴλ καὶ Σατανᾶ ἔριδος

Digitized by Google

περὶ τὸν νεκρὸν τοῦ Μωϋσεως καὶ ὁπόθεν κατὰ τὸν Ὠριγένη κατάγεται τὸ παρὰ παλαιοῖς συγγραφεῦσι καὶ δὴ καὶ παρὰ τῷ ἀποστόλῳ Ἰούδᾳ (ἐπιστολῆς Ἰούδα στ. 9) ἀπαντῶν σχετικὸν χωρίον (βλ. λ. *Μιχαήλ*).

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *R. Charles*, «The assumption of Moses» (1897). — *C. Clemen*, «Die Himmelfahrt des Mose (1904).

Π. Ι. Μ.

— **Μωϋσέως *ἀποκάλυψις*** [*Ἰουδ. Φιλολ.*]. Οὕτω χαρακτηρίζονται ἐνίοτε διάφορα ἰουδαϊκὰ ἀπόκρυφα βιβλία, τὸ βιβλίον τῶν *Ἰωβηλαίων* (βλ. λ.) καὶ τὰ ὑπὸ τὸ ὄνομα τοῦ *Ἀδὰμ* φερόμενα βιβλία.

— **Μωϋσῆς.** Ὅσιος καὶ ἀναχωρητής, ὅστις διὰ τῆς εἰς τὰ θεῖα προσκολλήσεώς του ἔτυχεν οὐρανίας ἐλλάμψεως καὶ ἐδίδαξε τόν τε μάρτυρα Κασσιανὸν καὶ τὸν ἅγιον Γερμανὸν περὶ διακρίσεως.

— **Μωϋσῆς** (ἀρμεν. *Μοβσὲς*) ***ὁ Χωρηνός***. Ὁ διασημότερος τῶν Ἀρμενίων ἱστορικῶν, καταγόμενος ἐκ *Χωρνί*, πόλεως τῆς ἀρμενικῆς ἐπαρχίας Τουρουμπεράν. Ἐθεωρεῖτο ἄλλοτε ὡς ὁ Ἡρόδοτος τῶν Ἀρμενίων, ἀλλὰ μετὰ τὰς νεωτέρας ἱστορικὰς ἐρεύνας ἀπώλεσε πολὺ ἐκ τοῦ κύρους του. Καθ' ἃ ἀναφέρει ἡ εἰς αὐτὸν ἀποδιδομένη «Ἱστορία τῆς Ἀρμενίας», ἦτο μαθητὴς τῶν δύο πατέρων τῆς ἀρμενικῆς γραφῆς καὶ φιλολογίας, τοῦ καθολικοῦ (πατριάρχου) Σαχὰκ καὶ τοῦ πρεσβυτέρου Μεσρώπ, οἵτινες ἀπέστειλαν αὐτὸν περὶ τὸ 431 μ. Χ. εἰς Ἀλεξάνδρειαν, ὅπως σπουδάσῃ τὴν ἑλληνικὴν καὶ προπαρασκευασθῇ διὰ τὴν μετάφρασιν τῶν ἑλληνικῶν συγγραμμάτων εἰς τὴν ἀρμενικὴν γλῶσσαν. Ἀφοῦ ἀπεπεράτωσε τὰς σπουδάς του ἐν Ἀλεξανδρείᾳ, ἠθέλησε νὰ μεταβῇ εἰς Ἑλλάδα, ἀλλὰ τὸ φέρον αὐτὸν πλοῖον παρεσύρθη ὑπὸ ἐναντίων ἀνέμων εἰς Ἰταλίαν. Ἐπεσκέφθη τότε τὴν Ρώμην, ὁπόθεν ἦλθεν εἰς Ἀθήνας καὶ περὶ τὰ τέλη τοῦ 440 μετέβη εἰς Κωνσταντινούπολιν, μεθ' ὃ ἐπανῆλθεν εἰς Ἀρμενίαν, ὅπου ἐπεδόθη εἰς τὴν μετάφρασιν τῶν Ἑλλήνων συγγραφέων. Καὶ ἐν μὲν τῇ «Ἱστορίᾳ τῆς Ἀρμενίας», τῆς ὁποίας φέρεται ὡς ὁ συγγραφεύς, περιγράφεται ὡς γέρων καὶ ἀνάπηρος, διαθέτων ὅλον τὸν καιρόν του εἰς μεταφράσεις. Ὑπὸ νεωτέρων ὅμως Ἀρμενίων ἱστορικῶν λέγεται ὅτι προεχειρίσθη ἐπίσκοπος τοῦ Μπαγρεβὰν καὶ ὅτι ἀποθανὼν εἰς ἡλικίαν 120 ἐτῶν ἐτάφη εἰς τὴν ἀρμενικὴν μονὴν τοῦ Μούς. Τὸ ἔτος τοῦ θανάτου του τοποθετεῖται ὑπό τινων παρὰ τὸ 489.

Ἡ εἰς Μωϋσῆν τὸν Χωρηνὸν ἀποδιδομένη «Ἱστορία τῆς Ἀρμενίας» ἤ, κατὰ τὸν ἀκριβέστερον τίτλον της, «Γενεαλογικὴ ἀφήγησις τῆς Μεγάλης Ἀρμενίας», ἀποτελεῖται ἐκ τριῶν βιβλίων καὶ προχωρεῖ μέχρι τοῦ θανάτου τοῦ ἀνωτέρω μνημονευθέντος ἁγίου Μεσρώπ, ἤτοι μέχρι τοῦ δευτέρου ἔτους τῆς βασιλείας τοῦ Σασανίδου σάχου τῆς Περσίας Ἰσδιγέρτου τοῦ Β' (17 Φεβρουαρίου 440). Εἶναι συμπίλημα ἐκ προγενεστέρων ἀρμενικῶν καὶ ἄλλων πηγῶν, μεταξὺ τῶν ὁποίων καὶ ἡ ἱστορία τοῦ «Ἰουδαϊκοῦ πολέμου» τοῦ Ἰωσήπου, κυρίως δὲ τῆς ἱστορίας τοῦ Μὰρ Ἀμπᾶς Κατίνα, γράψαντος περὶ τὸ 383 μ. Χ. Ἀφ' ἑτέρου ὁ Χωρηνὸς ἀναφέρεται καὶ εἰς πολλοὺς Ἕλληνας ἱστορικούς, τῶν ὁποίων ἔμαθε τὰ ὀνόματα ἐκ τῆς συνεχοῦς ἀναγνώσεως τοῦ Εὐσεβίου, ἀλλ' οἵτινες δὲν ἦτο δυνατὸν νὰ ἔγραψαν τὰ εἰς αὐτοὺς ἀποδιδόμενα. Ἄλλως τε καὶ τὸ γραφόμενον ὑπὸ τοῦ Χωρηνοῦ ὅτι βασίζεται κυρίως ἐπὶ Ἑλλήνων συγγραφέων ἐλέγχεται ἀνακριβές, διότι τὸ ἔργον του ἔχει ἀρμενικὰς πηγάς, μεταξὺ δὲ ἄλλων καὶ δημώδη ἀρμενικὰ ᾄσματα. Ἀλλ' ἂν τοῦτο φαίνεται ἐνδιαφέρον διὰ τὴν ἱστορίαν τῆς θρησκείας καὶ τὴν μυθολογίαν τῶν Ἀρμενίων, ἡ ἀξία του διὰ τὴν πολιτικὴν ἱστορίαν τῆς Ἀρμενίας ἐμειώθη πολὺ σήμερον κατόπιν ἐπισταμένης μελέτης. Εἶναι ἱστορία οὐχὶ τοῦ ἀρμενικοῦ λαοῦ, ἀλλ' ὡρισμένης κατηγορίας ἀριστοκρατικῶν οἰκογενειῶν προσκειμένων πρὸς τοὺς Βαγρατίδας, ἐν ἀντιθέσει πρὸς τοὺς ἄλλους Ἀρμενίους ἱστορικούς, οἵτινες ἔγραψαν ὑπὲρ τῶν Μαμιγονιδῶν (Μαμιγκονιάν). Τὰ μέχρι τοῦ Γ' μ. Χ. αἰῶνος ἀναφερόμενα γεγονότα οὐδόλως συμπίπτουσι πρὸς τὰ ὑπὸ τῶν συγχρόνων Ἑλλήνων καὶ Λατίνων ἱστορικῶν ἀναφερόμενα. Ἀλλὰ καὶ τὰ περὶ τοῦ ἀρμενικοῦ Χριστιανισμοῦ δὲν φαίνονται ἀξιόπιστα. Αἱ χρονολογίαι καὶ δὴ αἱ σύγχρονοι τοῦ Μωϋσέως συγχέονται· περιπίπτει οὗτος εἰς ἱστορικὰς ἀνακριβείας, προκειμένου καὶ περὶ τοῦ ἰδίου ἀκόμη προσώπου. Τὴν σύγχυσιν ἐπιτείνει ἡ «Γεωγραφία» τοῦ Μωϋσέως, τῆς ὁποίας διάφορα χωρία δεικνύουσιν ὅτι ἐγράφη ὑπὸ ἀνθρώπου ζήσαντος κατὰ τὸν Ι' μ. Χ. αἰῶνα. Καὶ ἀπέδειξε μὲν τὰ χωρία ταῦτα ὡς παρεμβολὰς μεταγενεστέρας ὁ νεώτερος Ἀρμένιος ἱστορικὸς Ἰντζιτζιάν, πάντως ὅμως ἡ ἐν αὐτῇ διαίρεσις τοῦ περσικοῦ κράτους καταδεικνύει ὅτι πρόκειται περὶ ἔργου γραφέντος ἑκατὸν σχεδὸν ἔτη μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Χωρηνοῦ. Ρῶσος ἱστορικὸς θεωρεῖ τὸ ἔργον τοῦτο βασιζόμενον ἐμμέσως εἰς τὸν Πτολεμαῖον καὶ ἀνῆκον εἰς τὸν Ζ' μ. Χ. αἰῶνα.

Ἄλλο ἔργον ἀποδιδόμενον εἰς τὸν Χωρηνὸν εἶναι μία «Ρητορικὴ» εἰς δέκα βιβλία, τῆς ὁποίας τὰ παραδείγματα εἶναι εἰλημμένα ἐκ τοῦ Λιβανίου, Ἑρμογένους καὶ Ἀφθονίου. Φαίνεται δὲ ὅτι ὁ συγγραφεὺς αὐτῆς ἐγνώριζε καὶ ἀπολεσθέντα ἔργα τῆς ἀρχαίας ἑλληνικῆς φιλολογίας, ὡς τὰς «Πελειάδας» τοῦ Εὐριπίδου. Ἄλλα ἔργα ἀποδιδόμενα εἰς τὸν Χωρηνὸν εἶναι ἡ «Ἱστορία τῆς Θεοτόκου καὶ τῆς ἁγίας αὐτῆς εἰκόνος», ὁ «Πανηγυρικὸς τῆς ἁγίας Χριψιμέ», «Ὁμιλίαι» καὶ ἔμμετροι ἐκκλησιαστικοὶ ὕμνοι καὶ «Σχόλια εἰς γραμματικήν», βασιζόμενα ἐπὶ τῆς «Γραμματικῆς τέχνης» Διονυσίου τοῦ Θρᾳκός.

ΒΙΒΛΙΟΓΡΑΦΙΑ. *A. von Gutschmid*, «Glaubwürdigkeit der Armenischen Geschichte des Moses von Khoren» (1876). — *A. Carrière* «Nouvelles sources de Moïse de Khoren» (Βιέννη 1893), ὅστις τοποθετεῖ τὸν Χωρηνὸν εἰς τὴν Η' μ. Χ. ἑκατονταετηρίδα. — *Ι. Χαλατιάντζ*, «Ἀρμιάνσιε ἔπος» (Μόσχα 1896), φρονῶν ἐπίσης ὅτι ὁ Χωρηνὸς ἔζησε κατὰ τὴν αὐτὴν ἐποχήν.

Ν. ΜΟΣΧΟΠΟΥΛΟΣ

**Μωϋσῆς**, ἢ ***Μοΐσσι*** (Moissi), ***Ἀλέξανδρος***. Γερμανὸς ἠθοποιός, ἑλληνικῆς καταγωγῆς, γεννηθεὶς ἐν Τεργέστῃ τῷ 1880. Ἤρχισε τὸ στάδιόν του ἐν Τεργέστῃ καὶ Βιέννῃ καὶ κατόπιν ἔπαιξεν εἰς τὰ μεγαλύτερα θέατρα τῆς Αὐστρίας καὶ τῆς Γερμανίας, περιηγηθεὶς βραδύτερον καὶ τὰς εὐρωπαϊκὰς πρωτευούσας καὶ τὴν Ἀμερικὴν καὶ διακριθεὶς ὡς δραματικὸς ἠθοποιὸς καὶ τραγῳδὸς πρώτης τάξεως. Τὰς μεγαλυτέρας ἐπιτυχίας ἐσημείωσεν εἰς τὰ δράματα «Βρυκόλακας» τοῦ Ἴψεν, «Ρωμαῖος καὶ Ἰουλιέττα», «Ἀμλέτος» καὶ «Ὀθέλλος» τοῦ Σαίξπηρ, «Οἰδίπους τύραννος» τοῦ Σοφοκλέους, καθὼς καὶ τὰ ἔργα τοῦ Τολστόϊ, τοῦ Χόφμαν, τοῦ Χόφφμανσταλ, τοῦ Χάουπμαν, τοῦ Σῶ, τοῦ Τσέχωφ κτλ.

Μ. Δ. Β.

**Μωϋσιάδης, *Στέφανος***, ὁ καὶ ***Κούτρας*** ἐπονομασθείς. Ἐκ τῶν ἀρίστων καὶ λογίων μουσικοδιδασκάλων τῆς παρελθούσης ἑκατονταετηρίδος, γεννηθεὶς ἐν Σαλματομβρουκίῳ Κωνσταντινουπόλεως καὶ ἀποθανὼν ἐν ἡλικίᾳ 79 ἐτῶν, τῷ 1881. Τὴν ἐκκλησιαστικὴν μουσικὴν ἐδιδάχθη παρὰ Πέτρῳ Συμεὼν τῷ Ἁγιοταφίτῃ, οὗτινος ἐμιμήθη καὶ τὸ ὕφος. Ἀπεδοκίμασε τὸ Λέσβιον σύστημα, ἐδίδαξε δὲ τὴν μουσικὴν εἰς τὴν Πατριαρχικὴν Μουσικὴν Σχολὴν (1866). Ἐδημοσίευσεν εἰς διαφόρους ἐφημερίδας τῆς Κωνσταντινουπόλεως, Τεργέστης καὶ Σμύρνης διαφόρους διατριβὰς καὶ μελέτας περὶ τῆς βυζαντινῆς μουσικῆς, συνέγραψε δὲ καὶ θεωρητικὸν αὐτῆς ὑπὸ τὸν τίτλον «Θρίαμβος τῆς Μουσικῆς», ἀνέκδοτον παραμεῖναν. Ἐμελοποίησε πλεῖστα ἔντεχνα μουσουργήματα, ὧν τινα ἐδημοσιεύθησαν ἐν τῇ ὑπὸ τοῦ Γ. Πρωγάκη ἐκδοθείσῃ «Μουσικῇ Συλλογῇ» (Κωνσταντινούπολις 1909).

Ν.Α.Χ.

**Μωχάμμετ.** Ἀραβικὸν ὄνομα, καταστὰν σπουδαῖον εἰς τοὺς μουσουλμανικοὺς λαοὺς ἐκ τοῦ ἱδρυτοῦ τῆς μωαμεθανικῆς θρησκείας. Ἑλληνιστὶ ἡ λέξις ἀπεδόθη διὰ τοῦ *Μωάμεθ* (βλ. λ.), τουρκιστὶ δὲ διὰ τοῦ *Μεχμὲτ* (βλ. λ.)

— **Μωχάμμετ.** Βασιλεὺς τῶν Ἰνδιῶν (βλ. λ. *Μεχμέτ, βασιλεὺς τῶν Ἰνδιῶν*).

— **Μωχάμμετ *Ἄλη***. Ἱδρυτὴς τῆς παρούσης αἰγυπτιακῆς δυναστείας. Ἦτο τὸ δέκατον ἕβδομον τέκνον τοῦ Ἰμπραὴμ ἀγᾶ, Τουρκαλβανοῦ ἀγροφύλακος, μετὰ δὲ τὸν ἀποκεφαλισμὸν τοῦ πατρός του ὑπὸ τῶν Τούρκων υἱοθετήθη ὑπὸ τοῦ τσορμπατζῆ τῆς Πράουτσας, παλαιοῦ φίλου τοῦ πατρός του, ὅστις καὶ τὸν ἀνέθρεψε μὲ τὸν ἴδιόν του υἱὸν Ἀλῆν. Τῷ 1787 διωρίσθη ὑπὸ τοῦ τσορμπατζῆ τούτου μπουλούκμπασης καὶ ἐνυμφεύθη συγγενῆ τοῦ τσορμπατζῆ, λίαν εὔπορον. Ἐκ τοῦ γάμου του τούτου ὁ Μωχάμμετ Ἄλη ἀπέκτησε πέντε υἱούς, ἐν οἷς τὸν Ἰμπραήμ, τὸν Ἰουσοὺν καὶ τὸν Ἰσμαήλ, πατέρα τοῦ νῦν βασιλέως Φουάτ. Ἐν συνόλῳ εἰς τὸ χαρέμιον τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη ἐγεννήθησαν 84 τέκνα, ἐξ ὧν ἀπέμειναν ὁ Ἰμπραήμ, ὁ Σαΐτ, ὁ Χουσσέν, ὁ Χαλίμ, ὁ Μεχμὲτ Ἀλῆς καὶ δύο θυγατέρες, ἡ σύζυγος τοῦ ἀντιναυάρχου Μωχαρρὲμ βέη καὶ ἡ χήρα τοῦ διαβοήτου Ἀχμὲτ βέη Δεφτερδάρ. Περὶ τῆς δράσεως τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη, βλ. εἰς λ. *Αἴγυπτος* (τ. Β' σ. 596, 597, 608, 609 καὶ 610 α', β'). Ἐκ τῶν ποικίλων ἔργων τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη ἀξιοσημείωτος εἶναι καὶ ἡ ἵδρυσις τῆς ἀρχαιολογικῆς ὑπηρεσίας (1835) καὶ ἡ εἰς Σουδὰν πορεία του (1840), ἔνθα ἵδρυσε τὸ Χαρτοὺμ καὶ κατήργησε τὴν δουλεμπορίαν. Τότε τὸν συνώδευσεν ὁ Τοσίτσας καὶ ἄλλοι Ἕλληνες. Τὴν γραφὴν καὶ τὴν ἀνάγνωσιν ἐδιδάχθη εἰς προβεβηκυῖαν ἡλικίαν ἀπὸ μίαν εὐνοουμένην του. Ἀξιοσημείωτον ἐπίσης εἶναι ὅτι παρὰ τὴν ἐκστρατείαν του κατὰ τῆς Ἑλλάδος οὐδέποτε ἔπαυσεν ἐκτιμῶν τὴν συνεργασίαν καὶ φιλίαν τῶν Ἑλλήνων, ὧν πολλοὺς ἀνέδειξεν ἐν Αἰγύπτῳ. Καὶ πρὸς τοὺς ἐξ Ἑλλάδος δὲ αἰχμαλώτους ἐδείχθη γενναῖος, ἀπελευθερώσας πολλούς. Ἀπέθανε τῷ 1844 καὶ ἐτάφη ἐντὸς τοῦ τζαμίου, τὸ ὁποῖον ἔκτισεν ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως. Ὡραῖος ἔφιππος ἀνδριάς του κοσμεῖ τὴν φερώνυμόν του πλατεῖαν τῆς Ἀλεξανδρείας. Ὁ πρὸ τῆς οἰκίας του ἐν τῇ γενετείρᾳ του Καβάλλᾳ χῶρος μετεβλήθη εἰς πλατεῖαν, ἐφ' ἧς θέλει ἀνεγερθῇ ἀνδριὰς τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη, κατασκευασθεὶς δαπάναις τῶν ἐν Αἰγύπτῳ Ἑλλήνων.

Γ. Λ. Λ.

*Μωχάμμετ Ἄλη.*

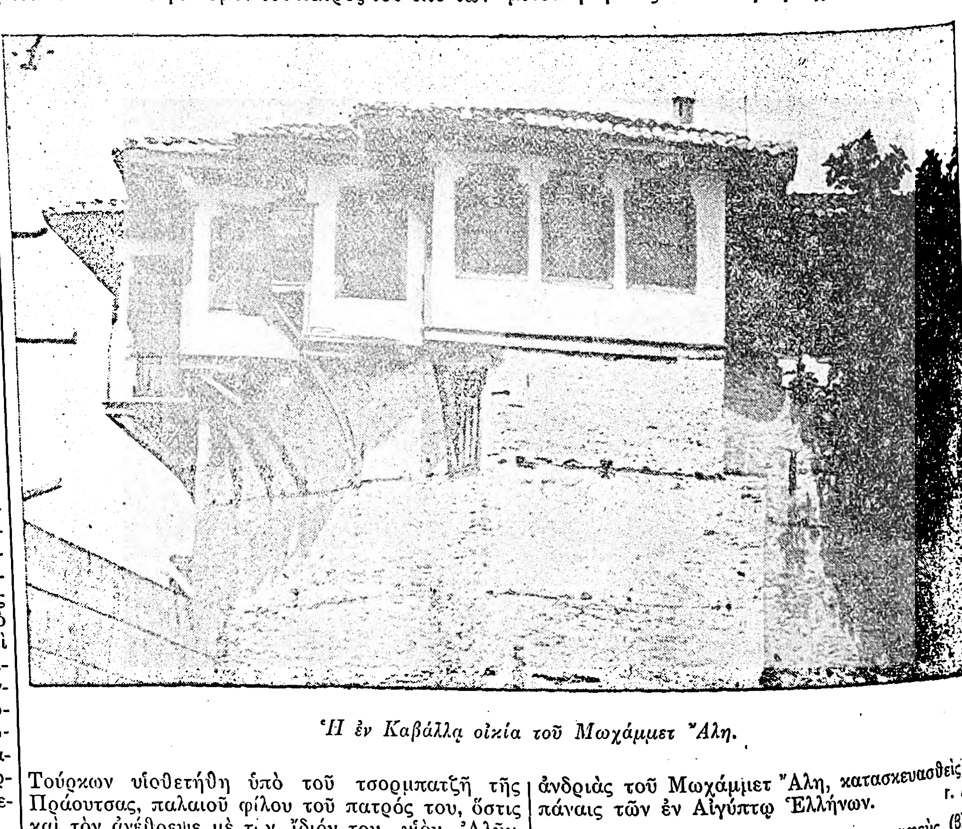

*Ἡ ἐν Καβάλλᾳ οἰκία τοῦ Μωχάμμετ Ἄλη.*

— **Μωχάμμετ *Ἐμίν***. Ρῶσος συγγραφεὺς (βλ. λ. *Ἐμίν*, Θεόδωρος Ἀλεξάνδροβιτς).

— **Μωχάμμετ *Μελὲκ ἐλ Νάσσερ ἔμπν Καλαούν***. Υἱὸς τοῦ Καλαούν, ἀνηγορεύθη σουλτᾶνος τῆς Αἰγύπτου τῷ 1293 εἰς ἡλικίαν 9 ἐτῶν,

Digitized by Google

διαδεχθεὶς τὸν ἀδελφόν του Χαλήλ. Ὁ κηδεμών του Ζεϋν ἐδ Δὶν Κετβογκᾶ τὸν ἐξεθρόνισε μετὰ ἓν ἔτος, ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ἡττηθεὶς οἰκτρῶς ἐν Συρίᾳ ὑπὸ τῶν Τατάρων ἐξεθρονίσθη τῷ 1296 καὶ τὸν διεδέχθη ὁ ἄλλοτε δοῦλος τοῦ Καλαοὺν ἐμίρης Χασσὰμ ἐδ Δὶν Λαγκίν, ὅστις ὡδήγησε τοὺς ἐκ Συρίας πρόσφυγας. Τοῦτον δολοφονηθέντα ὑπό τινος τῶν Μαμελούκων του τῷ 1299, διεδέχθη ἐπὶ 24 ὥρας ὁ ἐμίρης Σεϋφ ἐδ Δὶν Ταάτζη, καὶ κατόπιν ἀνεκλήθη ἐκ τῆς ἐξορίας του ἐν Κερὰκ (ΝΑ. τῆς Νεκρᾶς θαλάσσης) ὁ ἤδη πλέον 15ετὴς Μωχάμμετ Μελὲκ ἐλ Νάσσερ. Μετά τινας μῆνας ἠναγκάσθη νὰ ἐκστρατεύσῃ κατὰ τῶν Τατάρων εἰς Συρίαν, νικηθέντες ὅμως οἱ Αἰγύπτιοι εἰς τὴν Ἔμεσσαν ὑπεχώρησαν πρὸς τὴν Αἴγυπτον. Ὁ σουλτᾶνος κατώρθωσε ν' ἀνασυντάξῃ ἐκεῖ τὸν στρατόν του, ἐνῷ ταυτοχρόνως ἔφερεν ἐξ Αἰγύπτου ἐνισχύσεις, μετὰ δὲ τὴν νικηφόρον μάχην εἰς τὴν πεδιάδα ἐλ Σάφερ, καθ' ἣν οἱ Τάταροι ἔπαθον πανωλεθρίαν, νικητὴς ἐπέστρεψεν εἰς Κάϊρον, εἰσελθὼν θριαμβευτικῶς διὰ τῆς σῳζομένης ἀκόμη πύλης Μπάμπ ἐλ Νάσρ (= πύλη τῆς Νίκης). Πληροφορηθεὶς τὴν κατ' αὐτοῦ ἐξυφαινομένην συνωμοσίαν, προσεποιήθη ὅτι θὰ μετέβαινε νὰ προσκυνήσῃ εἰς τὴν Μέκκαν, παρέλαβε δὲ μεθ' ἑαυτοῦ σῶμα ἐκλεκτῶν καὶ πιστῶν Μαμελούκων, τὸ χαρέμιόν του καὶ ὅσους ἠδυνήθη θησαυροὺς καὶ κατηυθύνθη εἰς Κεράκ, ὅπου ὠχυρώθη, ἀποστείλας ἅμα εἰς Κάϊρον τὴν παραίτησίν του (1308). Οἱ ἐμίραι τοῦ Καΐρου ἐξέλεξαν τότε σουλτᾶνον τοῦ Ρούκν ἐδ Δὶν Βεϋβὰρς ὑπὸ τὸ ὄνομα ἐλ Μελὲκ ἐλ Μοταφφέρ, ἐπιλεγόμενον καὶ Δζαχενκίρ. Μαθὼν τὴν ἐκλογὴν ταύτην ὁ Μωχάμμετ ἐλ Νάσσερ μετεμελήθη διὰ τὴν παραίτησίν του καὶ μεταβὰς εἰς Δαμασκόν, ἀφοῦ ἀνεγνωρίσθη ὑπὸ τῶν ἐκεῖ ἐμιρῶν, ὥδευσε κατὰ τοῦ Καΐρου. Ὁ Βεϋβὰρς συναισθανόμενος ὅτι δὲν θὰ ἠδύνατο ν' ἀντισταθῇ ἔφυγεν εἰς Ἄνω Αἴγυπτον, ὅπου ἐφονεύθη κατὰ διαταγὴν τοῦ Μωχάμμετ, ὅστις ἀναλαβὼν τὸν θρόνον διὰ τρίτην ταύτην φορὰν ἐβασίλευσεν ἀκόμη 33 ἔτη ἐν πλήρει εἰρήνῃ. Ἐπεδόθη εἰς τὸν ἐξωραϊσμὸν τοῦ Καΐρου, κτίσας τὸ τζαμίον Νασρίγιε, πολλὰ σχολεῖα καὶ τὸ περίφημον νοσοκομεῖον Μοριστάν. Ἀπέθανε τῷ 1341, ἀφήσας 8 υἱούς, οἵτινες πάντες διαδοχικῶς καὶ ἐφημέρως ἐβασίλευσαν. Γ. Λ. Α.

**Μωχαμμὲτ-ἀμπὰτ** *[Γεωγρ.]*. Πόλις τῆς Ἀν. Περσίας, ἐν τῷ Χορασάν, εἰς ἀπόστασιν 140 χλμ. ΒΔ. τῆς Μεσχέτ, παρὰ τὰς Β. ὑπωρείας τοῦ ὄρους Γκιουλιστάν.

**μὼψ** (ὁ)· ἄκλιτον· εἶδος κυνὸς τῆς ποικιλίας τῶν μπουλντὼκ (γαλλ. mops).

# ΤΕΛΟΣ ΤΟΥ ΔΕΚΑΤΟΥ ΕΒΔΟΜΟΥ ΤΟΜΟΥ

Digitized by Google